विदेह सदेह १-३७
विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1-37 Detailed Study

५४१९२ प्रश्न ५४२४ खण्ड

Gajendra Thakur, Editor
Videha First Maithili Fortnightly eJournal
ISSN 2229-547X

विदेह सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1-37 Detailed Study

Gajendra Thakur, Editor

Videha First Maithili Fortnightly eJournal
ISSN 2229-547X

कुल प्रश्न / Total Questions: ५४१९२ / 54192
कुल खण्ड / Total Sections: ५४२४ / 5424
प्रत्येक प्रश्नक तुरन्त बाद उत्तर आ व्याख्या देल गेल अछि।

खण्ड १ : विदेह-सदेह ५ — विहनि कथा

प्रश्न 1. विदेह-सदेह ५ क मुख्य आलेखक शीर्षक की?
क. गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र
ख. नाट्य समीक्षाशास्त्र
ग. पद्य समीक्षाशास्त्र
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र
व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुरक मुख्य आलेखक शीर्षक ‘गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र’ थिक।

प्रश्न 2. विदेह-सदेह ५ मे मुन्नाजीक आलेखक शीर्षक की?
क. सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत विहनि कथा
ख. नाट्य समीक्षा
ग. पद्य समीक्षा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत विहनि कथा
व्याख्या: मुन्नाजीक आलेखक शीर्षक ‘सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत विहनि कथा’ थिक।

प्रश्न 3. विदेह-सदेह ५ मे ज्योति सुनीत चौधरीक कोन विहनि कथा अछि?
क. नबका पीढ़ी, घर दिसका रस्ता आदि
ख. भाग रौ
ग. संकर्षण
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. नबका पीढ़ी, घर दिसका रस्ता आदि
व्याख्या: ज्योति सुनीत चौधरीक विहनि कथामे नबका पीढ़ी, घर दिसका रस्ता, पानिमे खेती, मैथिल बिआह, हिमदूत सम्मिलित अछि।

प्रश्न 4. विदेह-सदेह ५ मे दुर्गानन्द मंडलक विहनि कथाक नाम की?
क. किसना मुट्ठी, पोस्टमार्टम, प्रदूषण
ख. भाग रौ
ग. संकर्षण
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. किसना मुट्ठी, पोस्टमार्टम, प्रदूषण
व्याख्या: दुर्गानन्द मंडलक विहनि कथामे किसना मुट्ठी, पोस्टमार्टम आ प्रदूषण सम्मिलित अछि।

प्रश्न 5. विदेह-सदेह ५ मे धीरेन्द्र कुमारक विहनि कथाक नाम की?
क. राम-कथाक समापन
ख. अन्हारक विरोध मे
ग. दूधबेचनी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. राम-कथाक समापन
व्याख्या: धीरेन्द्र कुमारक विहनि कथाक नाम ‘राम-कथाक समापन’ थिक।

प्रश्न 6. विदेह-सदेह ५ मे कपिलेश्वर राउतक विहनि कथाक नाम की?
क. कलियुगक निर्णए
ख. गामक गाछी
ग. बसात
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. कलियुगक निर्णए
व्याख्या: कपिलेश्वर राउतक विहनि कथाक नाम ‘कलियुगक निर्णए’ थिक।

प्रश्न 7. ‘विहनि कथा’ शब्दक मूल भाव की?

क. अति-संक्षिप्त बीज-सम कथा

ख. दीर्घ उपन्यास

ग. नाटक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अति-संक्षिप्त बीज-सम कथा

व्याख्या: विहनि कथा ‘बीज’ (सीड) सन अति-संक्षिप्त कथा-रूप थिक, जे थोड़ बजेटमे गहिर भाव कहैत अछि।

प्रश्न 8. गजेन्द्र ठाकुरक आलेख अनुसार मैथिली विहनि कथामे आएल कथ्य-शिल्पक विशालता कोना अछि?

क. सीमित

ख. आह्लादकारी

ग. निरर्थक

घ. अनुपस्थित

उत्तर: ख. आह्लादकारी

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर लिखैत छथि जे मैथिली लघुकथामे आएल कथ्य आ शिल्पक विशालता आह्लादकारी अछि।

प्रश्न 9. विदेह-सदेह ५ कोन अंक-शृंखलासँ रचना समेटने अछि?

क. अंक ५१-१००

ख. अंक १-२५

ग. अंक १०१-११०

घ. अंक ३३३-३५०

उत्तर: क. अंक ५१-१००

व्याख्या: विदेह-सदेह ५ विदेहक अंक ५१-१०० सँ विहनि कथाक संकलन थिक।

प्रश्न 10. विदेह-सदेह ५ क ISBN की?

क. 978-93-80538-63-1

ख. 978-93-80538-64-8

ग. 978-93-80538-65-5

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. 978-93-80538-63-1

व्याख्या: विदेह-सदेह ५ क ISBN 978-93-80538-63-1 थिक।

प्रश्न 11. विदेह-सदेह ५ क मूल्य की?

क. १५० टाका

ख. १०० टाका

ग. २०० टाका

घ. ५० टाका

उत्तर: क. १५० टाका

व्याख्या: विदेह-सदेह ५ क मूल्य भारतीय रू. १५०/- छल।

प्रश्न 12. विदेह-सदेह ५ क प्रथम संस्करण कोन साल आएल?

क. २०१२

ख. २००८

ग. २०१६

घ. २०२०

उत्तर: क. २०१२

व्याख्या: विदेह-सदेह ५ क पहिल संस्करण सन् २०१२ मे आएल।

प्रश्न 13. विदेह-सदेह ५ मे ‘मैथिल बिआह’ शीर्षक रचना के लिखलनि?
क. ज्योति सुनीत चौधरी
ख. दुर्गानन्द मंडल
ग. कपिलेश्वर राउत
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ज्योति सुनीत चौधरी
व्याख्या: ज्योति सुनीत चौधरी ‘मैथिल बिआह’ शीर्षक विहनि कथा लिखलीह।

प्रश्न 14. विहनि कथा आ लघुकथा (सदेह ५ आ ६) मे की भेद अछि?
क. कोनो भेद नहि
ख. विहनि अति-संक्षिप्त; लघुकथा कनेक बेसी विस्तृत
ग. दुनू एके
घ. अर्थहीन
उत्तर: ख. विहनि अति-संक्षिप्त; लघुकथा कनेक बेसी विस्तृत
व्याख्या: विहनि कथा सबसँ संक्षिप्त (बीज-सम) रूप थिक, जखन कि लघुकथा कनेक बेसी विस्तार रखैत अछि।

प्रश्न 15. विदेह-सदेह ५ क प्रकाशक के छथि?
क. श्रुति प्रकाशन
ख. ऑक्सफोर्ड
ग. पेंगुइन
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. श्रुति प्रकाशन
व्याख्या: विदेह-सदेह ५ क प्रकाशक श्रुति प्रकाशन, दिल्ली थिक।

खण्ड २ : विदेह-सदेह ६ — लघुकथा (विस्तार)

प्रश्न 16. विदेह-सदेह ६ मे मीना झाक लघुकथाक नाम की?
क. ब्रेस्ट कैंसर
ख. अग्निपुष्पक गुच्छासब
ग. संभावना
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ब्रेस्ट कैंसर
व्याख्या: मीना झाक लघुकथाक नाम ‘ब्रेस्ट कैंसर’ थिक, जे एक संवेदनशील स्वास्थ्य-विषयपर अछि।

प्रश्न 17. विदेह-सदेह ६ मे रोशन जनकपुरीक लघुकथाक नाम की?
क. अग्निपुष्पक गुच्छासब
ख. ब्रेस्ट कैंसर
ग. संभावना
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. अग्निपुष्पक गुच्छासब
व्याख्या: रोशन जनकपुरीक लघुकथाक नाम ‘अग्निपुष्पक गुच्छासब’ थिक।

प्रश्न 18. विदेह-सदेह ६ मे महाप्रकाशक लघुकथाक नाम की?
क. संभावना
ख. ब्रेस्ट कैंसर
ग. उत्ताप
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. संभावना
व्याख्या: महाप्रकाशक लघुकथाक नाम ‘संभावना’ थिक।

प्रश्न 19. विदेह-सदेह ६ मे 'मृत्युकेँ टारब' कोन भाषाक अनुवाद थिक?
क. कोंकणी
ख. तेलुगु
ग. तमिल
घ. बंगाली
उत्तर: क. कोंकणी
व्याख्या: वसंत भगवंत सावंतक कोंकणी कथा 'मृत्युकेँ टारब' मैथिली अनुवादमे विदेह-सदेह ६ मे सम्मिलित अछि।

प्रश्न 20. विदेह-सदेह ६ मे बीनू भाइक लघुकथाक नाम की?
क. उत्ताप
ख. संभावना
ग. ब्रेस्ट कैंसर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. उत्ताप
व्याख्या: बीनू भाइक लघुकथाक नाम 'उत्ताप' थिक।

प्रश्न 21. विदेह-सदेह ६ मे शम्भु कुमार सिंहक लघुकथाक नाम की?
क. भाए-बहिनक व्यथा कथा
ख. दूधबेचनी
ग. गामक गाछी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. भाए-बहिनक व्यथा कथा
व्याख्या: शम्भु कुमार सिंहक लघुकथाक नाम 'भाए-बहिनक व्यथा कथा' थिक।

प्रश्न 22. विदेह-सदेह ६ मे दुर्गानन्द मण्डलक लघुकथाक नाम की?
क. लाल भौजी
ख. ब्रेस्ट कैंसर
ग. उत्ताप
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. लाल भौजी
व्याख्या: दुर्गानन्द मण्डलक लघुकथाक नाम 'लाल भौजी' थिक।

प्रश्न 23. विदेह-सदेह ६ मे असगर वजाहतक हिन्दी कथाक मैथिली अनुवादक नाम की?
क. हम हिन्दू छी
ख. ब्रेस्ट कैंसर
ग. संभावना
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. हम हिन्दू छी
व्याख्या: असगर वजाहतक हिन्दी कथा 'हम हिन्दू छी' क मैथिली अनुवाद विदेह-सदेह ६ मे सम्मिलित अछि।

प्रश्न 24. विदेह-सदेह ६ मे कुमार मनोज कश्यपक लघुकथाक नाम की?
क. नोरक दू ठोप
ख. ब्रेस्ट कैंसर
ग. उत्ताप
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. नोरक दू ठोप
व्याख्या: कुमार मनोज कश्यपक लघुकथाक नाम 'नोरक दू ठोप' थिक।

प्रश्न 25. विदेह-सदेह ६ मे कपिलेश्वर राउतक कतेक लघुकथा अछि?
क. तीन (थरथरी, तरकारी, सलाह)
ख. एक
ग. दस
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. तीन (थरथरी, तरकारी, सलाह)
व्याख्या: कपिलेश्वर राउतक तीन लघुकथा — थरथरी, तरकारी, सलाह — विदेह-सदेह ६ मे सम्मिलित अछि।

प्रश्न 26. विदेह-सदेह ६ मे अनमोल झाक लघुकथाक नाम की?
क. अबकी बेर फतंग, गामक बताह
ख. ब्रेस्ट कैंसर
ग. संभावना
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. अबकी बेर फतंग, गामक बताह
व्याख्या: अनमोल झाक लघुकथामे ‘अबकी बेर फतंग’ आ ‘गामक बताह’ सम्मिलित अछि।

प्रश्न 27. विदेह-सदेह ६ मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक लघुकथाक नाम की?
क. प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री, चंदा
ख. ब्रेस्ट कैंसर
ग. उत्ताप
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री, चंदा
व्याख्या: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक लघुकथामे ‘प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री’ आ ‘चंदा’ सम्मिलित अछि।

प्रश्न 28. विदेह-सदेह ६ मे सत्यनारायण झाक लघुकथाक नाम की?
क. रिटायरमेन्ट, पलट
ख. ब्रेस्ट कैंसर
ग. संभावना
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. रिटायरमेन्ट, पलट
व्याख्या: सत्यनारायण झाक लघुकथामे ‘रिटायरमेन्ट’ आ ‘पलट’ सम्मिलित अछि।

प्रश्न 29. विदेह-सदेह ६ क सम्पूर्ण लघुकथा-संख्या (मात्र प्रलेखित लेखक-गणनासँ) कोन बहुलता देखबैत अछि?
क. सीमित (पाँचसँ कम)
ख. बीससँ बेशी रचनाकारक व्यापक भागीदारी
ग. केवल एक रचनाकार
घ. कोनो नहि
उत्तर: ख. बीससँ बेशी रचनाकारक व्यापक भागीदारी
व्याख्या: विदेह-सदेह ६ मे बीससँ बेशी रचनाकारक लघुकथा सम्मिलित अछि, जे आन्दोलनक व्यापक भागीदारी देखबैत अछि।

प्रश्न 30. विदेह-सदेह ६ क ISBN की?
क. 978-93-80538-64-8
ख. 978-93-80538-63-1
ग. 978-93-80538-65-5
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. 978-93-80538-64-8
व्याख्या: विदेह-सदेह ६ क ISBN 978-93-80538-64-8 थिक।

खण्ड ३ : विदेह-सदेह ७ — पद्य (विस्तार)

प्रश्न 31. विदेह-सदेह ७ मे अंजनी कुमार वर्मा ‘दाऊजी’ कतयक छथि?

क. सहरसा

ख. दरभंगा

ग. मधुबनी

घ. पटना

उत्तर: क. सहरसा

व्याख्या: अंजनी कुमार वर्मा ‘दाऊजी’ सहरसाक छथि।

प्रश्न 32. विदेह-सदेह ७ मे अंजनी कुमार वर्मा ‘दाऊजी’क एकटा पद्यक नाम की?

क. सुखाएल अतीत

ख. ब्रह्मास्त्र

ग. मोनक गति

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सुखाएल अतीत

व्याख्या: अंजनी कुमार वर्मा ‘दाऊजी’क पद्यमे ‘सुखाएल अतीत’ सम्मिलित अछि।

प्रश्न 33. विदेह-सदेह ७ मे गजेन्द्र ठाकुर कोन जापानी पद्य-शैलीमे रचना केलनि?

क. टनका-वाका, हाइकू, शेनर्यू, हैबून

ख. केवल गजल

ग. केवल दोहा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. टनका-वाका, हाइकू, शेनर्यू, हैबून

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर टनका-वाका, हाइकू, शेनर्यू आ हैबून सन जापानी पद्य-शैलीमे रचना केलनि।

प्रश्न 34. विदेह-सदेह ७ मे गजेन्द्र ठाकुर कोन फारसी-मूलक शैलीमे रचना केलनि?

क. रुबाइ, कता, गजल, कुण्डलिया

ख. केवल हाइकू

ग. केवल छन्द

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. रुबाइ, कता, गजल, कुण्डलिया

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर रुबाइ, कता, गजल आ कुण्डलिया सन शैलीमे सेहो रचना केलनि।

प्रश्न 35. विदेह-सदेह ७ मे रवि भूषण पाठकक पद्यमे कोन पाबनिक उल्लेख अछि?

क. छठि

ख. होली

ग. दीपावली

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. छठि

व्याख्या: रवि भूषण पाठकक पद्य ‘ऐ बेर छठिमे’ छठि-पाबनिसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 36. विदेह-सदेह ७ मे राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क एकटा पद्यक नाम की?

क. मिझाइत दीप

ख. सुखाएल अतीत

ग. ब्रह्मास्त्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मिझाइत दीप

व्याख्या: राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क पद्यमे ‘मिझाइत दीप’ सम्मिलित अछि।

प्रश्न 37. विदेह-सदेह ७ मे डॉ. शेफालिका वर्माक पद्यमे कोन विषय छल?
क. इजोरियाक भाषा, उपेक्षित, देश
ख. केवल प्रेम
ग. केवल हास्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. इजोरियाक भाषा, उपेक्षित, देश
व्याख्या: डॉ. शेफालिका वर्माक पद्यमे ‘इजोरियाक भाषा’, ‘उपेक्षित’ आ ‘देश’ सन सामाजिक-दार्शनिक विषय छल।

प्रश्न 38. विदेह-सदेह ७ मे सतीश चन्द्र झाक पद्यमे कोन राजनीतिक विषय छल?
क. चुनाव, भाषा आ राजनीति
ख. प्रेम
ग. प्रकृति
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. चुनाव, भाषा आ राजनीति
व्याख्या: सतीश चन्द्र झाक पद्यमे चुनाव, भाषा आ राजनीति सन विषय छल।

प्रश्न 39. विदेह-सदेह ७ मे मुन्नाजी कोन-कोन शैलीमे पद्य रचलनि?
क. हाइकू, शेनर्यू, बोनिहार
ख. केवल गजल
ग. केवल छन्द
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. हाइकू, शेनर्यू, बोनिहार
व्याख्या: मुन्नाजी हाइकू, शेनर्यू आ ‘बोनिहार’, ‘माटिक ललकार’ सन रचना केलनि।

प्रश्न 40. विदेह-सदेह ७ मे अन्नावरन देवेन्दरक पद्य कोन भाषाक अछि?
क. तेलुगु
ख. तमिल
ग. कन्नड़
घ. बंगाली
उत्तर: क. तेलुगु
व्याख्या: अन्नावरन देवेन्दरक पद्य ‘अंतिम शब्द’ तेलुगु भाषाक थिक।

प्रश्न 41. विदेह-सदेह ७ मे गंगेश गुंजनक पद्य-शैलीक नाम की?
क. आजाद गजल
ख. हाइकू
ग. रुबाइ
घ. कुण्डलिया
उत्तर: क. आजाद गजल
व्याख्या: गंगेश गुंजनक ‘आजाद गजल’ शैलीक रचना विदेह-सदेह ७ मे अछि।

प्रश्न 42. विदेह-सदेह ७ मे ज्योति सुनीत चौधरीक हाइकू-टनकाक एक रचनाक नाम की?
क. ब्रह्मास्त्र
ख. सुखाएल अतीत
ग. मिझाइत दीप
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ब्रह्मास्त्र
व्याख्या: ज्योति सुनीत चौधरीक हाइकू-टनका शैलीमे ‘ब्रह्मास्त्र’ सम्मिलित अछि।

प्रश्न 43. विदेह-सदेह ७ क ISBN की?
क. 978-93-80538-65-5
ख. 978-93-80538-64-8
ग. 978-93-80538-63-1
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. 978-93-80538-65-5
व्याख्या: विदेह-सदेह ७ क ISBN 978-93-80538-65-5 थिक।

प्रश्न 44. विदेह-सदेह ७ क मूल्य की?
क. २०० टाका
ख. १०० टाका
ग. १५० टाका
घ. ५० टाका
उत्तर: क. २०० टाका
व्याख्या: विदेह-सदेह ७ क मूल्य भारतीय रू. २००/- छल।

प्रश्न 45. विदेह-सदेह ७ मे चन्द्रशेखर कामतिक पद्यमे कोन सामाजिक-समकालीन विषय छल?
क. आइ काल्हुक छौंड़ा सभ
ख. प्रकृति
ग. प्रेम
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. आइ काल्हुक छौंड़ा सभ
व्याख्या: चन्द्रशेखर कामतिक पद्यमे ‘आइ काल्हुक छौंड़ा सभ’ सन समकालीन सामाजिक विषय छल।

खण्ड ४ : विदेह-सदेह ८ — मैथिली नाट्य-इतिहास (विस्तार)

प्रश्न 46. भरतक नाट्यशास्त्र अनुसार नाटकक उत्पत्ति कोन उत्सवसँ भेल मानल गेल अछि?
क. इन्द्रक ध्वजा उत्सव
ख. दीपावली
ग. छठि
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. इन्द्रक ध्वजा उत्सव
व्याख्या: नाट्यशास्त्रमे वर्णन अछि जे नाटकक उत्पत्ति इन्द्रक ध्वजा उत्सवसँ भेल।

प्रश्न 47. भरत अनुसार नाटक मूलतः कतेक प्रकारक मानल गेल?
क. दू (अमृत मंथन आ शिवक त्रिपुरदाह)
ख. चारि
ग. दस
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. दू (अमृत मंथन आ शिवक त्रिपुरदाह)
व्याख्या: नाट्यशास्त्र अनुसार नाटक मूलतः दू प्रकारमे मानल गेल — अमृत मंथन आ शिवक त्रिपुरदाह।

प्रश्न 48. पाँचम शताब्दी ई.पू. मे पाणिनी कोन-कोन नटसूत्र-संकलकक चर्चा करैत छथि?
क. शिलालिन् आ कृशाश्व
ख. भरत आ धनंजय
ग. अरस्तू आ प्लेटो
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. शिलालिन् आ कृशाश्व
व्याख्या: पाणिनी शिलालिन् आ कृशाश्वक चर्चा करैत छथि, जिनकर नटसूत्रक संकलन छल।

प्रश्न 49. मैथिली नाटकमे जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक कोन-कोन थिक?

क. छुतहर-छुतहर घैल-छुतहा घैल

ख. भाग रौ

ग. संकर्षण

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. छुतहर-छुतहर घैल-छुतहा घैल

व्याख्या: छुतहर, छुतहर घैल, छुतहा घैल सन नाटक जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक कहल गेल अछि।

प्रश्न 50. ज्योतिरीश्वर ठाकुरक नाटक कोन शताब्दीमे रचल गेल?

क. तेरहम

ख. दसम

ग. सोलहम

घ. बीसम

उत्तर: क. तेरहम

व्याख्या: ज्योतिरीश्वर ठाकुरक धूर्तसमागम तेरहम शताब्दीमे रचल गेल, जे संस्कृत आ मैथिली दुनूमे उपलब्ध अछि।

प्रश्न 51. धूर्तसमागम कोन कोटिक नाटक मानल जाइत अछि?

क. प्रहसन

ख. त्रासदी

ग. गीतिनाट्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. प्रहसन

व्याख्या: ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम प्रहसनक कोटिमे अबैत अछि।

प्रश्न 52. विद्यापति ठाकुरक नाटक गोरक्षविजय कोन सम्प्रदायक प्रसंगपर अछि?

क. नाथ/गोरक्ष सम्प्रदाय

ख. शैव सम्प्रदाय

ग. वैष्णव सम्प्रदाय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नाथ/गोरक्ष सम्प्रदाय

व्याख्या: विद्यापतिक गोरक्षविजय नाथ संप्रदाय वा गोरक्ष संप्रदायक प्रवर्तक योगी गोरखनाथक प्रसंगपर आधारित अछि।

प्रश्न 53. जीवन झा द्वारा रचित नाटक ‘सुन्दर संयोग’ कोन साल रचल गेल मानल जाइत अछि?

क. १९०४

ख. १९२०

ग. १९५०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९०४

व्याख्या: जीवन झा द्वारा रचित नाटक सुन्दर संयोग सन् १९०४ मे रचल गेल।

प्रश्न 54. जीवन झा द्वारा रचित कतेक नाटकक उल्लेख विदेह-सदेह ८ मे अछि?

क. चारि (सुन्दर संयोग, मैथिली सट्टक, नर्मदा सागर सट्टक, सामवती पुनर्जन्म)

ख. एक

ग. दस

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चारि (सुन्दर संयोग, मैथिली सट्टक, नर्मदा सागर सट्टक, सामवती पुनर्जन्म)

व्याख्या: जीवन झाक चारि नाटक — सुन्दर संयोग (1904), मैथिली सट्टक (1906), नर्मदा सागर सट्टक (1906) आ सामवती पुनर्जन्म (1908) — उल्लिखित अछि।

प्रश्न 55. जीवन झाक नाटकक मंचन कोन संस्थामे कएक बेर भेल छल?

क. सामवेद विद्यालय काशी

ख. दिल्ली विश्वविद्यालय

ग. JNU

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सामवेद विद्यालय काशी

व्याख्या: जीवन झाक नाटकक मंचन सामवेद विद्यालय काशीमे १९२० ई.सँ पहिनहिये कएक बेर भऽ चुकल छल।

प्रश्न 56. ईशनाथ झाक नाटक 'उगना' कोन अवसरपर खेलाओल जाइत अछि?

क. महाशिवरात्रि

ख. दीपावली

ग. छठि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. महाशिवरात्रि

व्याख्या: ईशनाथ झाक नाटक उगना महाशिवरात्रिकेँ गौरीशंकर स्थान, जमथुरिमे खेलाओल जाइत अछि।

प्रश्न 57. ईशनाथ झाक नाटक 'चीनीक लड्डू' मे मुख्य पात्र के छथि?

क. सुधाकांत-प्रेमकांत

ख. विनय-नवल

ग. विद्यापति-उगना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सुधाकांत-प्रेमकांत

व्याख्या: ईशनाथ झाक चीनीक लड्डूमे सुधाकांत आ प्रेमकांत मुख्य पात्र छथि।

प्रश्न 58. नचिकेताक नाटक 'नो एण्ट्री: मा प्रविश' कोन शैलीक नाटक मानल गेल?

क. पोस्टमोडर्न ड्रामा (एबसर्ड)

ख. यथार्थवादी

ग. ऐतिहासिक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पोस्टमोडर्न ड्रामा (एबसर्ड)

व्याख्या: 'नो एण्ट्री: मा प्रविश' पोस्टमोडर्न ड्रामा थिक, जकर एबसर्डिटी ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम लग घुरबैत अछि।

प्रश्न 59. गोविन्द झाक नाटक 'बसात' मे कृष्णकांत केकरासँ प्रेम करैत छथि?

क. लिली (शिक्षिता)

ख. पुष्पा

ग. मोहिनी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लिली (शिक्षिता)

व्याख्या: गोविन्द झाक बसातमे कृष्णकांत शिक्षिता लिलीसँ प्रेम करैत छथि, जखन कि पिता द्वारा ठीक कएल पुष्पासँ विवाह नहि करैत छथि।

प्रश्न 60. मैथिली नाटकमे जातिवादी शब्दावलीक प्रति गजेन्द्र ठाकुरक रुख की?

क. समर्थन

ख. विरोध (ककरो अपमानित नहि करबाक चाही)

ग. उदासीनता

घ. कोनो नहि

उत्तर: ख. विरोध (ककरो अपमानित नहि करबाक चाही)

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर लिखैत छथि जे मैथिली नाटक-रंगमंचमे जातिवादी शब्दावली ककरो अपमानित करबा लेल प्रयोग नहि कएल जाएब चाही।

खण्ड ५ : विदेह-सदेह ९ — बाल साहित्य (विस्तार)

प्रश्न 61. विदेह-सदेह ९ मे ब्युटी कुमारीक आलेख कोन महापुरुषपर अछि?

क. राहुल सांकृत्यायन

ख. विद्यापति

ग. ज्योतिरीश्वर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. राहुल सांकृत्यायन

व्याख्या: ब्युटी कुमारीक आलेख ‘राहुलजी एक नजरिमे’ राहुल सांकृत्यायनपर अछि।

प्रश्न 62. राहुल सांकृत्यायनक मूल नाम की छल?

क. केदारनाथ पाण्डे

ख. रामनाथ पाण्डे

ग. श्यामनाथ पाण्डे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. केदारनाथ पाण्डे

व्याख्या: राहुल सांकृत्यायनक मूल नाम केदारनाथ पाण्डे छल, जिनकर जन्म आजमगढ़ जिलाक एक किसान परिवारमे भेल।

प्रश्न 63. राहुल सांकृत्यायन सन् १९४५ मे कोन विश्वविद्यालयमे प्राध्यापक बनलाह?

क. लेनिनग्राद विश्वविद्यालय

ख. दिल्ली विश्वविद्यालय

ग. JNU

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लेनिनग्राद विश्वविद्यालय

व्याख्या: राहुल सांकृत्यायन सन् १९४५ मे लेनिनग्राद विश्वविद्यालयक प्राच्यविभागमे प्राध्यापक बनि सोवियत संघ गेलाह।

प्रश्न 64. राहुल सांकृत्यायन सोवियत संघमे कतेक मास रहलाह, आलेख अनुसार?

क. पचीस मास

ख. दस मास

ग. सय मास

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पचीस मास

व्याख्या: आलेख अनुसार राहुल सांकृत्यायन एहि बेर पचीस मास धरि सोवियत संघमे रहलाह।

प्रश्न 65. विदेह-सदेह ९ मे ब्युटी कुमारीक कथा ‘कैदी’ मे चित्रकार किनकर चित्र बनबैत छथि?

क. ईसा मसीह आ शैतान (एकटा कैदीक मुँहसँ प्रेरित)

ख. विद्यापति

ग. गोनू झा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ईसा मसीह आ शैतान (एकटा कैदीक मुँहसँ प्रेरित)

व्याख्या: ‘कैदी’ कथामे चित्रकार ईसा मसीहक चित्र बनबैत छथि, आ शैतानक चित्र लेल एक कैदीक मुँहसँ प्रेरणा लैत छथि, जे बादमे चौदह वर्ष पहिने हुनके अनाथालयसँ उठाओल गेल बच्चा सिद्ध होइत छथि।

प्रश्न 66. विदेह-सदेह ९ मे भावना नवीनक रचनाक शीर्षक की?

क. हमर प्रिये नेना भुटका

ख. कैदी

ग. राहुलजी एक नजरिमे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हमर प्रिये नेना भुटका

व्याख्या: भावना नवीनक रचनाक शीर्षक ‘हमर प्रिये नेना भुटका’ थिक, जे बाल दिवसक अवसरपर लिखल गेल अछि।

प्रश्न 67. भावना नवीनक रचनामे मातृभाषाक प्रति की सन्देश अछि?

क. विदेशी भाषाक खर्च बढ़ाएब

ख. अपन भाषाकेँ उपेक्षा नहि करबाक चाही

ग. केवल अंग्रेजी सीखब

घ. कोनो नहि

उत्तर: ख. अपन भाषाकेँ उपेक्षा नहि करबाक चाही

व्याख्या: रचनामे सन्देश अछि जे लोक विदेशी भाषा सीखबामे पाइ खर्च करैत छथि मुदा अपन मातृभाषाकेँ उपेक्षा कऽ दैत छथि, जे उचित नहि।

प्रश्न 68. विदेह-सदेह ९ मे शबनम श्रीक रचनाक शीर्षक की?

क. कंप्यूटरक खेल

ख. हमर प्रिये नेना भुटका

ग. कैदी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कंप्यूटरक खेल

व्याख्या: शबनम श्रीक रचनाक शीर्षक ‘कंप्यूटरक खेल’ थिक।

प्रश्न 69. विदेह-सदेह ९ मे डॉ. रमण झा प्रीति ठाकुरक कोन कृतिक चर्चा करैत छथि?

क. मैथिली चित्रकथा आ गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

ख. सहस्रबाढ़नि

ग. भाग रौ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिली चित्रकथा आ गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

व्याख्या: डॉ. रमण झा प्रीति ठाकुरक दू गोट सचित्र कथा-संग्रह — मैथिली चित्रकथा आ गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा — क चर्चा करैत छथि।

प्रश्न 70. डॉ. रमण झाक आलेख अनुसार मिथिलामे खिस्सा-कहबाक परम्परा के सुनबैत छथि?

क. बूढ़ पुरान स्त्रीगण

ख. केवल पुरुष

ग. विदेशी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बूढ़ पुरान स्त्रीगण

व्याख्या: डॉ. रमण झा लिखैत छथि जे मिथिलामे बूढ़ पुरान स्त्रीगण छोट-छोट बच्चाकेँ सुतेबाक काल खिस्सा सुनबैत छथि।

प्रश्न 71. डॉ. रमण झाक आलेख अनुसार मैथिली विद्यालय-स्तरपर कोन विडम्बना अछि?

क. सरकारी घोषनाक बादो पढ़ल नहि जाइत अछि

ख. कोनो नहि

ग. अनिवार्य अछि

घ. सभठाम पढ़ल जाइत अछि

उत्तर: क. सरकारी घोषनाक बादो पढ़ल नहि जाइत अछि

व्याख्या: आलेख अनुसार महाविद्यालय-विश्वविद्यालयमे मैथिली विषयक रूपमे पढ़ल जाइत अछि मुदा विद्यालय-स्तरपर सरकारी घोषनाक बादो ओहि तरहें नहि पढ़ल जाइत अछि।

प्रश्न 72. ब्युटी कुमारी कोन विद्यालयमे सहायक शिक्षिका छथि?

क. संस्कृत मधुराम इंटर स्तरीय विद्यालय, ग्वालपाड़ा, मधेपुरा

ख. दिल्ली विश्वविद्यालय

ग. JNU

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. संस्कृत मधुराम इंटर स्तरीय विद्यालय, ग्वालपाड़ा, मधेपुरा

व्याख्या: ब्युटी कुमारी संस्कृत मधुराम इंटर स्तरीय विद्यालय, ग्वालपाड़ा, मधेपुरा (बिहार) मे सहायक शिक्षिका छथि।

प्रश्न 73. ब्युटी कुमारी कतयसँ बी.एड. केलनि?
क. जम्मू विश्वविद्यालय
ख. दिल्ली विश्वविद्यालय
ग. JNU
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. जम्मू विश्वविद्यालय
व्याख्या: ब्युटी कुमारी जम्मू विश्वविद्यालयसँ बी.एड. केलनि।

प्रश्न 74. विदेह-सदेह ९ मे डाक्टर-बोखार सन्दर्भक लोकोक्तिमे ‘फारसी पढ़लौं पुत्ता’ क भाव की?
क. विदेशी भाषाक अति-मोहसँ अपन हानि
ख. केवल मनोरंजन
ग. फारसी निरर्थक
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. विदेशी भाषाक अति-मोहसँ अपन हानि
व्याख्या: एहि लोकोक्तिमे व्यंग्य अछि जे विदेशी भाषाक अति-मोहमे लोक अपने नुकसान कऽ लैत अछि — ‘एहेन फारसी पढ़लौं पुत्ता, अपने सिर बिसानि’।

प्रश्न 75. विदेह-सदेह ९ मे प्रीति ठाकुरक चित्रकथा कोन डिजिटल मंचपर डाउनलोड-योग्य अछि?
क. गूगल साइट्स (sites.google.com/a/videha)
ख. फेसबुक
ग. ट्विटर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गूगल साइट्स (sites.google.com/a/videha)
व्याख्या: प्रीति ठाकुरक चित्रकथा गूगल साइट्स (sites.google.com/a/videha...) पर पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

खण्ड ६ : विदेह-सदेह १० — समालोचना (विस्तार)

प्रश्न 76. विदेह-सदेह १० मे श्री राज ‘यात्रीक कविता’ मे कोन विषयक चर्चा करैत छथि?
क. गाम
ख. शहर
ग. विदेश
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गाम
व्याख्या: श्री राजक आलेख ‘यात्रीक कवितामे गाम’ शीर्षकसँ यात्री (नागार्जुन) क कवितामे गामक चित्रणक चर्चा करैत अछि।

प्रश्न 77. विदेह-सदेह १० मे डॉ. राजीव कुमार वर्माक आलेखक शीर्षक की?
क. कारी घटा बरसैत मेघ
ख. गामक जिनगी
ग. महासुन्दरी देवी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. कारी घटा बरसैत मेघ
व्याख्या: डॉ. राजीव कुमार वर्माक आलेखक शीर्षक ‘कारी घटा बरसैत मेघ’ थिक।

प्रश्न 78. विदेह-सदेह १० मे चन्द्रेशक आलेख कोन उत्सवपर अछि?
क. झिझिया नृत्य महोत्सव
ख. विद्यापति महोत्सव
ग. छठि महोत्सव
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. झिझिया नृत्य महोत्सव
व्याख्या: चन्द्रेशक आलेख ‘यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव’ शीर्षकसँ अछि।

प्रश्न 79. विदेह-सदेह १० मे परमेश्वर कापड़िक आलेखक शीर्षक की?
क. मानकताक बात विखपाद अछि!
ख. गामक जिनगी
ग. कारी घटा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मानकताक बात विखपाद अछि!
व्याख्या: परमेश्वर कापड़िक आलेखक शीर्षक ‘मानकताक बात विखपाद अछि!’ थिक — मैथिली मानकीकरणक विवादपर अछि।

प्रश्न 80. विदेह-सदेह १० मे अतुलेश्वरक आलेख कोन विद्वानपर अछि?
क. पंडित गोविन्द झा
ख. विद्यापति
ग. ज्योतिरीश्वर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. पंडित गोविन्द झा
व्याख्या: अतुलेश्वरक आलेख ‘पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन’ शीर्षकसँ अछि।

प्रश्न 81. विदेह-सदेह १० मे महासुन्दरी देवीकेँ कोन सम्मान भेटलाक उल्लेख अछि?
क. पद्मश्री (२०११, मिथिला चित्रकला)
ख. भारत रत्न
ग. पद्म विभूषण
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. पद्मश्री (२०११, मिथिला चित्रकला)
व्याख्या: पूनम मण्डलक आलेखमे उल्लेख अछि जे महासुन्दरी देवीकेँ मिथिला चित्रकला लेल सन् २०११ मे पद्मश्री भेटल।

प्रश्न 82. विदेह-सदेह १० मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक आलेखक मुख्य विषय की?
क. कंप्यूटर आ भाषा-विज्ञानक भूमिका मैथिली-शिक्षणमे
ख. नाटक
ग. पद्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. कंप्यूटर आ भाषा-विज्ञानक भूमिका मैथिली-शिक्षणमे
व्याख्या: डॉ. अरुण कुमार सिंहक आलेख मैथिलेत्तर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखब-सिखाएबमे कंप्यूटर आ भाषा-विज्ञानक भूमिकापर अछि।

प्रश्न 83. विदेह-सदेह १० मे मीना झाक आलेख कोन शहरमे मैथिल समाजपर अछि?
क. लंदन
ख. न्यूयॉर्क
ग. पेरिस
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. लंदन
व्याख्या: मीना झाक आलेख ‘लंदनमे मैथिल समाज’ शीर्षकसँ अछि।

प्रश्न 84. विदेह-सदेह १० मे अमरकान्त अमरक आलेखक शीर्षक की?
क. संघीयतामे मैथिली भाषा
ख. गामक जिनगी
ग. कारी घटा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. संघीयतामे मैथिली भाषा
व्याख्या: अमरकान्त अमरक आलेखक शीर्षक ‘संघीयतामे मैथिली भाषा’ थिक — नेपालक संघीय व्यवस्थामे मैथिलीक स्थानपर।

प्रश्न 85. विदेह-सदेह १० मे अरविन्द ठाकुरक आलेख कोन लोक-देवतापर अछि?
क. भीम केवट
ख. गोनू झा
ग. विद्यापति
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. भीम केवट
व्याख्या: अरविन्द ठाकुरक आलेख ‘लोकदेव भीम केवट’ शीर्षकसँ अछि।

प्रश्न 86. विदेह-सदेह १० मे ‘यू.पी.एस.सी. (मैथिली) लेल’ सामग्री के देलनि?
क. शम्भु कुमार सिंह
ख. गजेन्द्र ठाकुर
ग. विनीत उत्पल
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. शम्भु कुमार सिंह
व्याख्या: शम्भु कुमार सिंह यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रतियोगी परीक्षार्थी लेल सामग्री देलनि।

प्रश्न 87. विदेह-सदेह १० मे एकटा सुपौल कथा-गोष्ठीक उल्लेख अछि — कतेक कथा पाठ भेल?
क. ३९ टा (७५म गोष्ठीमे)
ख. दस टा
ग. सय टा
घ. पाँच टा
उत्तर: क. ३९ टा (७५म गोष्ठीमे)
व्याख्या: उमेश मण्डलक रिपोर्ताज अनुसार ७५म कथा गोष्ठीमे ३९ टा कथाक पाठ भेल छल।

प्रश्न 88. विदेह-सदेह १० मे विनीत उत्पलक आलेखक शीर्षक की?
क. की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत
ख. गामक जिनगी
ग. कारी घटा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत
व्याख्या: विनीत उत्पलक आलेखक शीर्षक ‘की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत’ थिक — एक सामाजिक खोजपरक रिपोर्ताज।

प्रश्न 89. विदेह-सदेह १० मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक आलेखक विषय की?
क. २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना
ख. नाटक
ग. पद्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना
व्याख्या: राजेन्द्र कुमार प्रधानक आलेख २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतनापर अछि।

प्रश्न 90. विदेह-सदेह १० मे प्रो. वीणा ठाकुरक आलेख कोन उपन्यासपर अछि?
क. जिनगीक जीत
ख. सहस्रबाढ़नि
ग. भाग रौ
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. जिनगीक जीत
व्याख्या: प्रो. वीणा ठाकुरक आलेख उपन्यास ‘जिनगीक जीत’ पर अछि।

खण्ड ७ : विदेह-सदेह ११ — डिजिटल भाषा-सक्रियता

प्रश्न 91. विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८) मे की सूचित कएल गेल छल?

क. विकीपीडियापर मैथिलीमे लेख नहि छल

ख. मैथिली पूर्ण मान्यताप्राप्त छल

ग. कोनो नहि

घ. विदेह बन्द भेल

उत्तर: क. विकीपीडियापर मैथिलीमे लेख नहि छल

व्याख्या: विदेहक तेसर अंकमे सूचित कएल गेल छल जे विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल, कारण मैथिली विकीपीडियाकेँ स्वीकृति नहि भेटल छल।

प्रश्न 92. मैथिली विकीपीडियाक स्थानीयकरण परियोजनामे के काज कऽ रहल छलाह?

क. उमेश मंडल

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. विभा रानी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. उमेश मंडल

व्याख्या: उमेश मंडल विकीपीडियापर मैथिलीक स्थानीयकरण परियोजनामे काज कऽ रहल छलाह।

प्रश्न 93. राजेश रंजन आ संगीता कुमारी कोन प्रोजेक्टसँ जुड़ल छथि?

क. मैथिली फेडोरा/फ्यूल प्रोजेक्ट

ख. केवल विदेह

ग. केवल साहित्य अकादेमी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिली फेडोरा/फ्यूल प्रोजेक्ट

व्याख्या: राजेश रंजन आ संगीता कुमारी मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट/ फ्यूल प्रोजेक्टसँ जुड़ल छथि।

प्रश्न 94. राजेश रंजन आ संगीता कुमारी कोन ब्राउजरकेँ मैथिलीमे उपलब्ध केलनि?

क. फायरफॉक्स (मोजिला)

ख. गूगल क्रोम

ग. इन्टरनेट एक्सप्लोरर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. फायरफॉक्स (मोजिला)

व्याख्या: राजेश रंजन आ संगीता कुमारी फायरफॉक्स (मोजिला) ब्राउजरकेँ मैथिली भाषामे उपलब्ध करबाक काज केलनि।

प्रश्न 95. मैथिली स्पेलचेकर के बनेलनि?

क. राजेश रंजन आ संगीता कुमारी

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. उमेश मण्डल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. राजेश रंजन आ संगीता कुमारी

व्याख्या: मैथिली स्पेलचेकर राजेश रंजन आ संगीता कुमारी द्वारा बनाओल गेल।

प्रश्न 96. गूगल पहिने मैथिलीकेँ कोन गलत नामसँ वर्गीकृत करैत छल?

क. बिहारी (Bihari)

ख. हिन्दी

ग. नेपाली

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बिहारी (Bihari)

व्याख्या: गूगल पहिने मैथिलीकेँ ‘बिहारी’ नामक कोनो भाषाक रूपमे वर्गीकृत करैत छल, जकर विदेह विरोध केलक।

प्रश्न 97. विदेहक विरोधक बाद गूगल की मानि लेलक?
क. बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नहि अछि
ख. मैथिली नकली भाषा अछि
ग. कोनो नहि
घ. विरोध अनुचित छल
उत्तर: क. बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नहि अछि
व्याख्या: विदेहक विरोधक बाद गूगल मानि लेलक जे 'बिहारी' नाम्ना कोनो भाषा नहि होइत अछि, आ मैथिलीकेँ अलग भाषाक रूपमे मान्यता देलक।

प्रश्न 98. विदेहक प्रयाससँ गूगल सर्च इन्जिनमे की भेल?
क. मैथिली अलग भाषाक रूपमे मान्यता पाओलक
ख. कोनो परिवर्तन नहि भेल
ग. मैथिली हटाओल गेल
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मैथिली अलग भाषाक रूपमे मान्यता पाओलक
व्याख्या: विदेहक प्रयास आ विरोधक बाद गूगल सर्च इन्जिनमे मैथिलीकेँ अलग भाषाक रूपमे मान्यता भेटल।

प्रश्न 99. मिथिलाक्षर आ कैथी लिपि यूनिकोडमे एनकोड करबाक आवेदन के देलनि?
क. अंशुमन पाण्डेय
ख. गजेन्द्र ठाकुर
ग. राजेश रंजन
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. अंशुमन पाण्डेय
व्याख्या: मिथिलाक्षर आ कैथी दुनू लिपिकेँ यूनिकोडमे एनकोड करबाक आवेदन अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल, जे स्वीकृत भेल।

प्रश्न 100. गूगल ट्रांसलेटर टूलकिटमे मैथिलीकेँ कोन रूपमे स्थान भेटल?
क. सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपमे
ख. केवल सोर्स
ग. केवल टार्गेट
घ. कोनो स्थान नहि
उत्तर: क. सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपमे
व्याख्या: गूगल ट्रांसलेटर टूलकिटमे मैथिलीकेँ सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपमे स्थान भेटल।

प्रश्न 101. स्व. वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क जन्म कहिया भेल?
क. १९११
ख. १९२१
ग. १९३१
घ. १९०१
उत्तर: क. १९११
व्याख्या: स्व. वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क जन्म सन् १९११ ई.मे भेल।

प्रश्न 102. यात्रीजीक जन्म कतय भेल?
क. मामागाम सतलखा
ख. पैतृक गाम तरौनी
ग. दिल्ली
घ. काशी
उत्तर: क. मामागाम सतलखा
व्याख्या: यात्रीजीक जन्म अपन मामागाम सतलखामे भेल, जे हुनकर पैतृक गाम तरौनीक लगमे अछि।

प्रश्न 103. यात्रीजीक देहान्त कहिया भेल?

क. १९९८

ख. १९८८

ग. २००८

घ. १९७८

उत्तर: क. १९९८

व्याख्या: वैद्यनाथ मिश्र ‘यात्री’क देहान्त सन् १९९८ ई.मे भेल।

प्रश्न 104. यात्रीजीक पत्नीक नाम की छल?

क. अपराजिता

ख. लखिमा

ग. सीता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अपराजिता

व्याख्या: यात्रीजीक पत्नीक नाम अपराजिता छल।

प्रश्न 105. यात्री ‘समग्र’ मे ‘बलचनमा’ कैं किएक नहि लेल गेल?

क. ओ हिन्दीक कृति अछि, मैथिली अनुवाद भ्रष्ट अछि

ख. ओ छोट अछि

ग. ओ प्रसिद्ध नहि अछि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ओ हिन्दीक कृति अछि, मैथिली अनुवाद भ्रष्ट अछि

व्याख्या: ‘बलचनमा’कैं यात्री समग्रमे नहि लेल गेल किएक तँ ओ मूलतः हिन्दीक कृति अछि, आ ओकर मैथिली अनुवाद भ्रष्ट (अधूरा/त्रुटिपूर्ण) मानल गेल।

खण्ड ८ : विदेह-सदेह १३ — साहित्य अकादेमी पुरस्कार-विश्लेषण

प्रश्न 106. विदेह-सदेह १३ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कारक बँटवाराक विश्लेषण कोन वर्ष धरिक आँकड़ा अनुसार कएल गेल अछि?

क. २०११

ख. २०००

ग. १९९८

घ. २०२०

उत्तर: क. २०११

व्याख्या: विदेह-सदेह १३ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कारक बँटवाराक विश्लेषण २०११ धरिक आँकड़ा अनुसार कएल गेल अछि।

प्रश्न 107. २०११ धरि साहित्य अकादेमी मैथिली पुरस्कार कुल कतेक बेर देल गेल छल, स्रोत अनुसार?

क. ४३ बेर

ख. २५ बेर

ग. सय बेर

घ. दस बेर

उत्तर: क. ४३ बेर

व्याख्या: स्रोत अनुसार साहित्य अकादेमीक मैथिली पुरस्कारक कुल बँटवारा ४३ बेर भेल छल (२०११ धरि)।

प्रश्न 108. एहि ४३ पुरस्कारमे मैथिल ब्राह्मणकैं कतेक बेर पुरस्कार भेटल?

क. ३६ बेर

ख. ५ बेर

ग. २ बेर

घ. शून्य बेर

उत्तर: क. ३६ बेर

व्याख्या: स्रोत-कथन अनुसार मैथिल ब्राह्मणकैं ४३ मेसँ ३६ बेर साहित्य अकादेमी मैथिली पुरस्कार भेटल।

प्रश्न 109. एहि ४३ पुरस्कारमे कायस्थकेँ कतेक बेर पुरस्कार भेटल?

क. ५ बेर

ख. ३६ बेर

ग. २ बेर

घ. शून्य बेर

उत्तर: क. ५ बेर

व्याख्या: स्रोत-कथन अनुसार कायस्थकेँ ५ बेर साहित्य अकादेमी मैथिली पुरस्कार भेटल।

प्रश्न 110. एहि ४३ पुरस्कारमे राजपूतकेँ कतेक बेर पुरस्कार भेटल?

क. २ बेर

ख. ५ बेर

ग. ३६ बेर

घ. शून्य बेर

उत्तर: क. २ बेर

व्याख्या: स्रोत-कथन अनुसार राजपूतकेँ २ बेर साहित्य अकादेमी मैथिली पुरस्कार भेटल।

प्रश्न 111. एहि ४३ पुरस्कारमे गएर सवर्णकेँ कतेक बेर पुरस्कार भेटल, स्रोत अनुसार?

क. शून्य बेर (०)

ख. ५ बेर

ग. १० बेर

घ. २० बेर

उत्तर: क. शून्य बेर (०)

व्याख्या: स्रोत-कथन अनुसार गएर सवर्ण (नॉन-अपर-कास्ट) समुदायकेँ एहि ४३ अवसरमे एक बेरो साहित्य अकादेमी मैथिली पुरस्कार नहि भेटल — यैह आँकड़ा विदेह-सदेह १३ क केन्द्रीय प्रश्न ‘की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?’ क आधार थिक।

प्रश्न 112. विदेह-सदेह १३ क केन्द्रीय प्रश्न की थिक?

क. की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?

ख. नाटक कोना लिखी?

ग. पद्य कोना रची?

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?

व्याख्या: विदेह-सदेह १३ क केन्द्रीय आ शीर्षक-प्रश्न थिक — ‘की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?’

प्रश्न 113. विदेह-सदेह १३ मे एक गीत ‘पर्वत ऊपर भमरा सूतल’ केर रेकॉर्डिंग कतयसँ भेल?

क. चर्मकार टोलसँ (विदेह ऑडियोमे अपलोड)

ख. दिल्लीसँ

ग. विदेशसँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चर्मकार टोलसँ (विदेह ऑडियोमे अपलोड)

व्याख्या: ई गीत चर्मकार टोलक एक पात्रसँ रेकॉर्ड कएल गेल छल आ विदेह ऑडियोमे अपलोड छै।

प्रश्न 114. विदेह-सदेह १३ मे फणीश्वर नाथ रेणुक आलेखक शीर्षक की?

क. एकटा लोकगीतक विद्यापति

ख. गामक जिनगी

ग. कारी घटा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. एकटा लोकगीतक विद्यापति

व्याख्या: फणीश्वर नाथ रेणुक आलेखक शीर्षक ‘एकटा लोकगीतक विद्यापति’ थिक।

प्रश्न 115. फणीश्वर नाथ रेणुक आलेख अनुसार पूर्णियाँ-सहरसाक इलाकामे विद्यापति केहन कविक रूपमे जीवित छथि?

क. खेतिहर-बोनिहार आ बहलमानक कवि

ख. केवल राजकवि

ग. विदेशी कवि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. खेतिहर-बोनिहार आ बहलमानक कवि

व्याख्या: रेणु लिखैत छथि जे पूर्णियाँ-सहरसाक इलाकामे आइयो विद्यापतिक पदावली खेतिहर-बोनिहार आ बहलमान गाबैत छथि, तेँ ओ 'खेतिहर-बोनिहार आ बहलमानक कवि' छथि।

प्रश्न 116. 'विदेह भाषा सम्मान' कोन-कोन वर्षक लेल घोषित भेल, ऐ खण्डमे उल्लेखित?

क. २०१२-१३

ख. २००५-०६

ग. २०२०-२१

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. २०१२-१३

व्याख्या: विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ क घोषणामे अनुवाद पुरस्कार २०१३, युवा पुरस्कार २०१२-१३ आ फेलो (समग्र योगदान) पुरस्कार सम्मिलित अछि।

प्रश्न 117. विदेह भाषा सम्मान २०१३ क फेलो (समग्र योगदान) पुरस्कार के पाओलनि?

क. राजनन्दन लालदास

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. विभा रानी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. राजनन्दन लालदास

व्याख्या: विदेह भाषा सम्मान २०१३ क फेलो (समग्र योगदान) पुरस्कार राजनन्दन लालदासकेँ भेटल।

प्रश्न 118. विदेह-सदेह १३ मे रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'केँ कोन पुरस्कार भेटलाक उल्लेख अछि?

क. विद्यापति पुरस्कार (नेपाल सरकार)

ख. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ग. भारत रत्न

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. विद्यापति पुरस्कार (नेपाल सरकार)

व्याख्या: नेपाल सरकार द्वारा गठित विद्यापति पुरस्कार कोषसँ रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'केँ दू लाख टाकाक पुरस्कार भेटल।

प्रश्न 119. 'समन्वय २०१२' भारतीय भाषा महोत्सव कतय आयोजित भेल?

क. इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, दिल्ली

ख. JNU, दिल्ली

ग. दरभंगा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, दिल्ली

व्याख्या: समन्वय २०१२ भारतीय भाषा महोत्सव इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, लोधी रोड, नई दिल्लीमे आयोजित भेल।

प्रश्न 120. समन्वय २०११ मे मैथिलीक प्रतिनिधित्व के केलनि?

क. गंगेश गुंजन

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. विभा रानी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गंगेश गुंजन

व्याख्या: समन्वय २०११ मे मैथिलीक प्रतिनिधित्व गंगेश गुंजन केलनि।

खण्ड ९ : विदेह-सदेह १४ — नाटक ‘गंगा ब्रिज’

प्रश्न 121. विदेह-सदेह १४ मे गजेन्द्र ठाकुरक नाटकक नाम की?

क. गंगा ब्रिज

ख. भाग रौ

ग. संकर्षण

घ. मचण्ड

उत्तर: क. गंगा ब्रिज

व्याख्या: विदेह-सदेह १४ मे गजेन्द्र ठाकुरक नाटक ‘गंगा ब्रिज’ सम्मिलित अछि।

प्रश्न 122. ‘गंगा ब्रिज’ नाटकमे कोन पवित्र नदीपर पुलक मरम्मतिक प्रसंग अछि?

क. गंगा

ख. कोसी

ग. गण्डक

घ. बागमती

उत्तर: क. गंगा

व्याख्या: नाटकमे गंगापर बनल एक पुलक मरम्मतिक प्रसंग केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 123. ‘गंगा ब्रिज’ मे ढोलहो देनहार कोन काजक लेल मजदूर बजबैत अछि?

क. पुलक मरम्मति

ख. सड़क-निर्माण

ग. घर-निर्माण

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पुलक मरम्मति

व्याख्या: ढोलहो देनहार गंगा-पुलक मरम्मति लेल स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सभकेँ आवेदन देबाक लेल बजबैत अछि।

प्रश्न 124. नाटकमे पुलमे ‘चिप्पी’ पड़बाक कारण की व्यंग्यात्मक रूपें कहल गेल?

क. काज ढंगसँ नहि भेल, भ्रष्टाचार

ख. प्राकृतिक आपदा

ग. कोनो नहि

घ. अच्छा निर्माण

उत्तर: क. काज ढंगसँ नहि भेल, भ्रष्टाचार

व्याख्या: नाटकमे व्यंग्यात्मक रूपें कहल गेल जे काज ढंगसँ नहि भेल, आ चिप्पी पड़बाक पाछाँ इन्जीनियर-ठिकेदारक भ्रष्टाचार अछि — ‘इन्जीनियर आ ठिकेदारक घरपर छज्जा कोना पड़तै’।

प्रश्न 125. ‘गंगा ब्रिज’ नाटकक पात्र-सूचीमे ‘बच्चा १’ बादमे की बनैत अछि?

क. अभियन्ता (इन्जीनियर)

ख. ठिकेदार

ग. मुख्यमंत्री

घ. मजदूर

उत्तर: क. अभियन्ता (इन्जीनियर)

व्याख्या: नाटकक पात्र-सूची अनुसार ‘बच्चा १’ बादमे अभियन्ता (इन्जीनियर) बनैत अछि।

प्रश्न 126. ‘गंगा ब्रिज’ नाटकमे ‘बच्चा ३’ बादमे की बनैत अछि?

क. मजदूर

ख. मुख्यमंत्री

ग. ठिकेदार

घ. शिक्षक

उत्तर: क. मजदूर

व्याख्या: नाटकक पात्र-सूची अनुसार ‘बच्चा ३’ बादमे मजदूर बनैत अछि।

प्रश्न 127. ‘गंगा ब्रिज’ नाटकक थीम (पुल-निर्माणमे भ्रष्टाचार) गजेन्द्र ठाकुरक कोन बादक उपन्यासमे सेहो केन्द्रीय भूमिकामे आएल?

क. गोंहि सभक बीच जलसमाधि (गढ़ नारिकेल)

ख. सहस्रबाढ़नि

ग. भाग रौ

घ. संकर्षण

उत्तर: क. गोंहि सभक बीच जलसमाधि (गढ़ नारिकेल)

व्याख्या: ‘गंगा ब्रिज’ नाटकक गंगा-पुल भ्रष्टाचारक थीम गजेन्द्र ठाकुरक बादक उपन्यास ‘गोंहि सभक बीच जलसमाधि’ (गढ़ नारिकेल) मे सेहो केन्द्रीय भूमिकामे आएल, जतय गंगाक पुल-निर्माणमे मजदूरक मृत्युक प्रसंग अछि — ई गजेन्द्र ठाकुरक रचनामे एक पुनरावर्ती (recurring) थीम देखबैत अछि।

प्रश्न 128. ‘गंगा ब्रिज’ मे ‘डंका बजेनहार’ कतेक गोटे छथि?

क. दूटा लोक

ख. एकटा

ग. चारिटा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दूटा लोक

व्याख्या: नाटकक पात्र-सूची अनुसार डंका बजेनहार दूटा लोक छथि।

प्रश्न 129. ‘गंगा ब्रिज’ मे ‘बतही माए’ कोन प्रकारक पात्र थिक?

क. एक मातृ-पात्र (नाटकमे सूचीबद्ध)

ख. मुख्यमंत्री

ग. ठिकेदार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. एक मातृ-पात्र (नाटकमे सूचीबद्ध)

व्याख्या: ‘बतही माए’ नाटकक पात्र-सूचीमे एक मातृ-पात्रक रूपमे सूचीबद्ध अछि।

प्रश्न 130. ‘गंगा ब्रिज’ नाटकक प्रारम्भिक दृश्यमे मजदूर सभ की कहैत प्रणाम करैत छथि?

क. जय माँ गंगे

ख. जय भोले

ग. जय माता दी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जय माँ गंगे

व्याख्या: नाटकक आरम्भमे मजदूर सभ ‘जय माँ गंगे’ कहि मंचक नीचाँ प्रणाम करैत छथि, जे गंगा-नदीक पवित्रताक प्रति श्रद्धा देखबैत अछि।

खण्ड १० : विदेह-सदेह १५-१६ — आधुनिक नाटक

प्रश्न 131. विदेह-सदेह १५ मे ‘मैथिलीक वर्तमान-गजल’ शीर्षक आलेख के लिखलनि?

क. गजेन्द्र ठाकुर

ख. कामिनी कामायनी

ग. धीरेन्द्र कुमार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुर

व्याख्या: विदेह-सदेह १५ मे ‘मैथिलीक वर्तमान-गजल’ शीर्षक आलेख गजेन्द्र ठाकुर लिखलनि।

प्रश्न 132. विदेह-सदेह १५ मे कामिनी कामायनीक लघुकथाक नाम की?

क. सोर

ख. कोन डारि पर केकर खोता

ग. ब्रेस्ट कैंसर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सोर

व्याख्या: कामिनी कामायनीक लघुकथाक नाम ‘सोर’ थिक।

प्रश्न 133. विदेह-सदेह १५ मे ‘कोन डारि पर केकर खोता’ कोन विधाक रचना थिक?

क. लघुकथा

ख. नाटक

ग. पद्य

घ. निबन्ध

उत्तर: क. लघुकथा

व्याख्या: ‘कोन डारि पर केकर खोता’ एकटा लघुकथा थिक।

प्रश्न 134. विदेह-सदेह १६ मे गजेन्द्र ठाकुरक नाटकक नाम की?

क. मचण्ड

ख. गंगा ब्रिज

ग. भाग रौ

घ. संकर्षण

उत्तर: क. मचण्ड

व्याख्या: विदेह-सदेह १६ मे गजेन्द्र ठाकुरक टटका (नव) नाटक ‘मचण्ड’ सम्मिलित अछि।

प्रश्न 135. ‘मचण्ड’ नाटकमे ‘मुतालिफ’ कोन प्रकारक पात्र छथि?

क. पैघ-पैघ आंखि बला एकटा युवा

ख. वृद्ध

ग. बच्चा

घ. स्त्री

उत्तर: क. पैघ-पैघ आंखि बला एकटा युवा

व्याख्या: ‘मचण्ड’ नाटकमे ‘मुतालिफ’ पैघ-पैघ आँखि बला एकटा युवा पात्र छथि।

प्रश्न 136. ‘मचण्ड’ शब्दक भाव कोन प्रकारक प्रतीत होइत अछि नाटकक शीर्षकसँ?

क. तीव्र/प्रचण्ड भाव बला

ख. शान्त भाव

ग. हास्य भाव

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तीव्र/प्रचण्ड भाव बला

व्याख्या: ‘मचण्ड’ शीर्षक स्वयं तीव्र वा प्रचण्ड भावक संकेत दैत अछि, जे नाटकक नाटकीय तीव्रताकेँ इंगित करैत अछि।

प्रश्न 137. विदेह-सदेह १४-१६ क ‘गद्य खण्ड’क शीर्षक-शृंखला की देखबैत अछि?

क. गजेन्द्र ठाकुरक नियमित नाट्य-रचना

ख. केवल कविता

ग. केवल निबन्ध

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुरक नियमित नाट्य-रचना

व्याख्या: विदेह-सदेह १४, १५ आ १६ मे गजेन्द्र ठाकुरक नियमित नाट्य-रचना (गंगा ब्रिज, मचण्ड आदि) देखाइ पड़ैत अछि, जे हुनकर नाट्य-लेखनक निरन्तरता देखबैत अछि।

प्रश्न 138. गजेन्द्र ठाकुर नाटकक संग कोन-कोन विधामे सेहो सक्रिय छथि, सदेह-शृंखला अनुसार?

क. कथा, उपन्यास, पद्य, समालोचना सभमे

ख. केवल नाटक

ग. केवल पद्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कथा, उपन्यास, पद्य, समालोचना सभमे

व्याख्या: सदेह-शृंखलाक प्रमाणसँ गजेन्द्र ठाकुर नाटक, कथा, उपन्यास, पद्य आ समालोचना — सभ विधामे सक्रिय बहुमुखी रचनाकार छथि।

प्रश्न 139. विदेह-सदेह १५-१६ कोन अंक-शृंखलासँ सामग्री समेटने अछि (सामान्य पैटर्न अनुसार)?
क. क्रमिक अंक-शृंखला (सदेह १४ क बादक अंक)
ख. अंक १-२५ सँ
ग. अंक ५१-१०० सँ
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. क्रमिक अंक-शृंखला (सदेह १४ क बादक अंक)
व्याख्या: सदेह-शृंखलाक सामान्य पैटर्न अनुसार सदेह १५-१६ सदेह १४ क बादक क्रमिक अंक-शृंखलासँ सामग्री समेटने अछि।

खण्ड ११ : विदेह-सदेह २४ — कठघोड़वा नाच (लोक-संस्कृति)

प्रश्न 140. विदेह-सदेह २४ मे किशन कारीगरक आलेखक शीर्षक की?
क. विलुप्त होइत मिथिला के लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच
ख. भाग रौ
ग. संकर्षण
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. विलुप्त होइत मिथिला के लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच
व्याख्या: किशन कारीगरक आलेखक शीर्षक ‘विलुप्त होइत मिथिला के लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच’ थिक।

प्रश्न 141. कठघोड़वा नाचमे घोड़ावला कोन सामग्रीसँ घोड़ा बनबैत अछि?
क. रस्सी, काठ आ बत्ती
ख. धातु
ग. पाथर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. रस्सी, काठ आ बत्ती
व्याख्या: घोड़ावला अपन कांखमे रस्सी आ काठ-बत्तीसँ बनल सजल घोड़ा टंगि नाचैत अछि।

प्रश्न 142. कठघोड़वा नाच परम्परागत रूपें कोन-कोन अवसरपर होइत छल?
क. बियाह, मूरन, उपनेन आदि मांगलिक अवसर
ख. केवल शोक
ग. केवल युद्ध
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. बियाह, मूरन, उपनेन आदि मांगलिक अवसर
व्याख्या: कठघोड़वा नाच बियाह-शादी, मूरन, मांगलिक काज आदि अवसरपर होइत छल।

प्रश्न 143. आलेख अनुसार कठघोड़वा नाच आइ कोन स्थितिमे अछि?
क. विलुप्त भऽ रहल अछि
ख. अत्यन्त लोकप्रिय बढ़ि रहल अछि
ग. कोनो नहि
घ. नव रूपमे फलि रहल अछि
उत्तर: क. विलुप्त भऽ रहल अछि
व्याख्या: आलेख स्पष्ट रूपें कहैत अछि जे कठघोड़वा नाच आइ विलुप्त भऽ रहल अछि।

प्रश्न 144. नटुआ नाचक प्रचलित प्रकार अनुसार ‘थेहगरी नटुआ’ केर विशेषता की?
क. अनुभवी आ उमेरगर कलाकार जे रोल खेलाइत छथि
ख. केवल बच्चा
ग. केवल स्त्री
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. अनुभवी आ उमेरगर कलाकार जे रोल खेलाइत छथि
व्याख्या: थेहगरी नटुआ अनुभवी आ उमेरगर कलाकार होइत छथि जे अभिनय आ संवादसँ दर्शककेँ प्रभावित करैत छथि।

प्रश्न 145. ‘लटकी नटुआ’ केर विशेषता की?

क. सजल-धजल, लटक-झटकसँ दर्शककेँ मोहित करनिहार

ख. केवल वृद्ध

ग. केवल संगीतज्ञ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सजल-धजल, लटक-झटकसँ दर्शककेँ मोहित करनिहार

व्याख्या: लटकी नटुआ सजल-धजल रूपमे लटक-झटकसँ नचैत दर्शककेँ मोहित करैत छथि।

प्रश्न 146. ‘छमकी नटुआ’ कोन प्रकारक संगीतपर नचैत अछि?

क. रेकॉर्डिंग डांस/फिल्मी गीत

ख. केवल लोकगीत

ग. केवल शास्त्रीय संगीत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. रेकॉर्डिंग डांस/फिल्मी गीत

व्याख्या: छमकी नटुआ रेकॉर्डिंग डांस कला आ फिल्मी गीतपर छमाछम नचैत अछि।

प्रश्न 147. नटुआ नाच परम्परागत रूपें कोन-कोन वाद्यक संग प्रस्तुत होइत छल?

क. डफली, बौंसली, कैसियो

ख. केवल ढोलक

ग. केवल सितार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. डफली, बौंसली, कैसियो

व्याख्या: नटुआ नाच डफली, बौंसली आ कैसियो सन वाद्यक संग प्रस्तुत होइत छल।

प्रश्न 148. आलेखमे उल्लिखित प्रसिद्ध नटुआ कलाकारक नाम मेसँ कोन-कोन छथि?

क. रामउदगार, रामदुलार पासवान आदि

ख. केवल विद्यापति

ग. केवल गजेन्द्र ठाकुर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. रामउदगार, रामदुलार पासवान आदि

व्याख्या: आलेखमे रामउदगार, रामदुलार पासवान (दुनू सहोदर), सीरिदेब पंडित, उसमान हुसैन, बनैया राम आ बबलू मंडल सन प्रसिद्ध नटुआ कलाकारक नाम अछि।

प्रश्न 149. कठघोड़वा नाचमे दर्शक नटुआकेँ की दैत छलाह?

क. रूपैया-पैसा (चाबस्सी)

ख. केवल तालि

ग. केवल आशीर्वाद

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. रूपैया-पैसा (चाबस्सी)

व्याख्या: दर्शक नटुआ आ घोड़ावलाकेँ रूपैया-पैसा (चाबस्सी) दैत छलाह, कतेको चोलीमे आलपिन लगा टकही खोंसैत छलाह।

प्रश्न 150. विदेह-सदेह २४ क चित्र के बनेलनि?

क. प्रीति ठाकुर

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. किशन कारीगर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. प्रीति ठाकुर

व्याख्या: विदेह-सदेह २४ क चित्र प्रीति ठाकुर बनेलनि।

प्रश्न 151. कठघोड़वा नाचक विलुप्तिक एक कारण आलेखमे की संकेतित अछि?

क. आधुनिकीकरण आ परम्परागत कलाकारक कमी

ख. अधिक लोकप्रियता

ग. सरकारी समर्थन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आधुनिकीकरण आ परम्परागत कलाकारक कमी

व्याख्या: आलेखमे संकेत अछि जे आधुनिकीकरण आ परम्परागत डफली-बौंसली बजेनिहार आ नटुआ कलाकारक कमीक कारणे ई कला विलुप्त भऽ रहल अछि।

प्रश्न 152. कठघोड़वा नाच मिथिलाक लोक-संस्कृतिमे कोन वर्गक दर्शक धरि पहुँचैत छल?

क. सभ जाति-वर्गक लोक

ख. केवल उच्च वर्ग

ग. केवल निम्न वर्ग

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सभ जाति-वर्गक लोक

व्याख्या: आलेख अनुसार कठघोड़वा नाच सभ जाति-वर्गक लोक देखैत छलाह, जे एकरा सामाजिक रूपें समावेशी लोक-कला बनबैत छल।

प्रश्न 153. किशन कारीगरक आलेखक उद्देश्य की प्रतीत होइत अछि?

क. विलुप्त लोक-कलाक दस्तावेजीकरण आ संरक्षण

ख. केवल मनोरंजन

ग. आलोचना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. विलुप्त लोक-कलाक दस्तावेजीकरण आ संरक्षण

व्याख्या: आलेखक उद्देश्य विलुप्त होइत कठघोड़वा नाचक विस्तृत दस्तावेजीकरण कऽ एकरा स्मृतिमे संरक्षित करब प्रतीत होइत अछि।

खण्ड १२ : विदेह-सदेह १८ — जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क समीक्षा

प्रश्न 154. विदेह-सदेह १८ मे गजेन्द्र ठाकुर केकर पद्यक समीक्षा करैत छथि?

क. जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’

ख. विभा रानी

ग. नचिकेता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’

व्याख्या: विदेह-सदेह १८ मे गजेन्द्र ठाकुर जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क पद्यक विस्तृत समीक्षा करैत छथि।

प्रश्न 155. जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ मूलतः कोन विधाक रचनाकार छथि?

क. कवि

ख. नाटककार

ग. उपन्यासकार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कवि

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर लिखैत छथि जे अनिलजी मूलतः कवि छथि, ओना गद्य समालोचनापर सेहो हुनकर लिखना लिखाएल अछि।

प्रश्न 156. समीक्षामे ‘अनिल’जीक गजलक बहरक प्रति की मूल्यांकन कएल गेल?

क. झोंकमे लिखल गजल, लौलवश नहि

ख. अत्यन्त शास्त्रीय

ग. निरर्थक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. झोंकमे लिखल गजल, लौलवश नहि

व्याख्या: समीक्षामे कहल गेल जे अनिलजीक रदीफ-काफियाक प्रयोग ‘लौलवश लिखल गजल नहि वरन् झोंकमे लिखल गजल’ अछि।

प्रश्न 157. ‘अनिल’जीक गजलक बहर कोन प्रकारक छल, समीक्षा अनुसार?
क. अरबी बहर/सरल वार्णिक बहर
ख. फारसी बहर
ग. केवल मुक्त छन्द
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. अरबी बहर/सरल वार्णिक बहर
व्याख्या: समीक्षा अनुसार जखन अनिलजीक गजल-संग्रह आएल तँ ओकर सभटा गजल अरबी बहर/सरल वार्णिक बहरमे छल।

प्रश्न 158. समीक्षामे सियाराम झा ‘सरस’ धीरेन्द्र प्रेमर्षिकेँ देल इण्टरव्यूमे की कहैत छथि?
क. मंचस्थ रचनाक फेरमे अनिलजी गुणपर ध्यान देब बिसरि गेला
ख. अनिलजी सर्वश्रेष्ठ छथि
ग. कोनो टिप्पणी नहि
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मंचस्थ रचनाक फेरमे अनिलजी गुणपर ध्यान देब बिसरि गेला
व्याख्या: सियाराम झा ‘सरस’ कहैत छथि जे मंचस्थ रचनाक फेरमे (वाहवाही पाबए लेल) अनिलजी कखनो रचनाक गुणपर ध्यान देब बिसरि गेला।

प्रश्न 159. समीक्षामे ‘भगवानक अस्तित्व’क प्रश्न कोन सन्दर्भमे उठाओल गेल?
क. उत्तर-उपनिवेशवादी रचनाकार लेल एक बुझौअलि
ख. केवल धार्मिक चर्चा
ग. कोनो नहि
घ. विज्ञान
उत्तर: क. उत्तर-उपनिवेशवादी रचनाकार लेल एक बुझौअलि
व्याख्या: समीक्षामे कहल गेल जे भगवानक अस्तित्वक प्रश्न उत्तर-उपनिवेशवादी (पोस्ट-कोलोनियल) रचनाकार लेल एकटा दुविधा/बुझौअलि अछि।

प्रश्न 160. समीक्षामे ‘नारी चेतना’क स्वरपर की टिप्पणी अछि?
क. कन्नारोहटक अभाव, बालिका-जन्मपर समाजक शोकक परिचायक
ख. पूर्ण सशक्त स्वर
ग. कोनो नहि
घ. निरर्थक
उत्तर: क. कन्नारोहटक अभाव, बालिका-जन्मपर समाजक शोकक परिचायक
व्याख्या: समीक्षामे टिप्पणी अछि जे नारी चेतनाक स्वरमे कन्नारोहटक अभाव अछि, जे बालिकाक आगमनपर समाजमे होइत शोकक परिचायक थिक।

प्रश्न 161. समीक्षा अनुसार पद्यक मूल गुण की होइत अछि?
क. गेय हएब आ लयमे (नियमबद्ध) हएब
ख. केवल तुक
ग. केवल लम्बाई
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गेय हएब आ लयमे (नियमबद्ध) हएब
व्याख्या: समीक्षा अनुसार पद्यक मूल गुण गेय हएब आ लयमे — माने नियमबद्ध — हएब थिक।

खण्ड १३ : विदेह-सदेह १९ — यूनिकोड आ विकीपीडियाक अन्तर्राष्ट्रीय टीम

प्रश्न 162. विदेह-सदेह १९ क मुख्य विषय की?
क. मैथिली विकीपीडिया, यूनिकोड तिरहुता-कैथी, गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर, अमेजन अलेक्सामे मैथिली
ख. केवल नाटक
ग. केवल पद्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मैथिली विकीपीडिया, यूनिकोड तिरहुता-कैथी, गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर, अमेजन अलेक्सामे मैथिली
व्याख्या: विदेह-सदेह १९ मैथिली विकीपीडिया, यूनिकोड तिरहुता-कैथी, गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर आ अमेजन अलेक्सामे मैथिलीक डिजिटल विकाससँ सम्बद्ध दस्तावेज थिक।

प्रश्न 163. तिरहुता आ कैथी यूनिकोड फॉण्ट लेल आवेदन के देलनि?

क. अंशुमन पाण्डेय

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. राजेश रंजन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अंशुमन पाण्डेय

व्याख्या: तिरहुता (मिथिलाक्षर) आ कैथी यूनिकोड फॉण्ट लेल आवेदन अंशुमन पाण्डेय देने छलाह।

प्रश्न 164. मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉण्ट लेल आवेदन कहिया देल गेल?

क. ३० सितम्बर २००९

ख. १ जनवरी २०००

ग. १५ जनवरी २०१०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ३० सितम्बर २००९

व्याख्या: मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ कैं देल गेल, जे बादमे संशोधित भेल।

प्रश्न 165. मैथिली विकीपीडिया लेल कोन-कोन व्यक्तिक योगदान उल्लिखित अछि?

क. राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी, रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिल

ख. केवल गजेन्द्र ठाकुर

ग. केवल भारतीय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी, रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिल

व्याख्या: मैथिली विकीपीडिया लेल राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी, रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान उल्लिखित अछि।

प्रश्न 166. आमिर ई. अहारोनी कोन देशसँ छथि?

क. इस्रायल (Israel)

ख. भारत

ग. नेपाल

घ. अमेरिका

उत्तर: क. इस्रायल (Israel)

व्याख्या: आमिर ई. अहारोनी इस्रायलसँ छथि — जे मैथिली विकीपीडियाक मान्यता-प्रक्रियामे योगदान देनिहार अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व छथि।

प्रश्न 167. तिरहुता-कैथी यूनिकोड फॉण्ट कोन-कोन परियोजना अन्तर्गत डाउनलोड-योग्य अछि?

क. Google's Noto Fonts/ C-DAC

ख. केवल माइक्रोसॉफ्ट

ग. केवल एप्पल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. Google's Noto Fonts/ C-DAC

व्याख्या: तिरहुता आ कैथी फॉण्ट Google's Noto Fonts प्रोजेक्ट आ C-DAC द्वारा डाउनलोड-योग्य अछि।

प्रश्न 168. विदेह-सदेह १९ मे कोन-कोन डिजिटल मंचपर मैथिलीक विस्तारक दस्तावेज अछि?

क. गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर, अमेजन अलेक्सा

ख. केवल फेसबुक

ग. केवल इन्स्टाग्राम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर, अमेजन अलेक्सा

व्याख्या: विदेह-सदेह १९ गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर आ अमेजन अलेक्सा सन डिजिटल मंचपर मैथिलीक विस्तारक दस्तावेज प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 169. एहि दस्तावेजीकरणक उद्देश्य की प्रतीत होइत अछि?

क. मैथिली-डिजिटल विकासक प्रमाण-संग्रह आ इतिहास-लेखन

ख. केवल मनोरंजन

ग. निरर्थक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिली-डिजिटल विकासक प्रमाण-संग्रह आ इतिहास-लेखन

व्याख्या: एहि दस्तावेजीकरणक उद्देश्य मैथिली-डिजिटल विकासक हर चरणक प्रमाण (स्क्रीनशॉट सहित) संग्रहित कऽ भविष्यक इतिहास-लेखन लेल सुरक्षित राखब प्रतीत होइत अछि।

खण्ड १४ : विदेह-सदेह २० — मैथिली सी.डी. एल्बम आ लोकसंगीत

प्रश्न 170. विदेह-सदेह २० मे ‘जागे महतो आ जागे राउत’ नामक एल्बमक गुणवत्ताक तुलना केकरासँ कएल गेल?

क. बिरासी सदासँ (बेछप)

ख. धनीराम महतोसँ

ग. कोनो नहि

घ. विद्यापतिसँ

उत्तर: क. बिरासी सदासँ (बेछप)

व्याख्या: लेखक अनुसार गुणक दृष्टिकोणसँ ‘जागे महतो आ जागे राउत’क संग बिरासी सदा बेछप (कनेक कम/भिन्न स्तरक) छथि।

प्रश्न 171. धनीराम महतोक प्रसिद्ध एल्बमक नाम की?

क. सल्हेश आदि (दरभंगा रेडियो स्टेशन)

ख. कारिक झूमर

ग. सोखा झूमर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सल्हेश आदि (दरभंगा रेडियो स्टेशन)

व्याख्या: धनीराम महतोक सल्हेश आदि अल्बम दरभंगा रेडियो स्टेशनपर प्रसारित होइत छल।

प्रश्न 172. ‘कारिक झूमर’ एल्बमक गायक के छथि?

क. जागे महतो आ जागे राउत

ख. बिरासी सदा

ग. धनीराम महतो

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जागे महतो आ जागे राउत

व्याख्या: ‘कारिक झूमर’ एल्बम जागे महतो आ जागे राउत द्वारा गंगा कैसेट्ससँ प्रकाशित भेल।

प्रश्न 173. ‘गहील माता के पूजा’ एल्बमक गायक के छथि?

क. बिरासी सदा

ख. जागे महतो

ग. धनीराम महतो

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बिरासी सदा

व्याख्या: ‘गहील माता के पूजा’ एल्बम बिरासी सदा द्वारा गंगा कैसेट्ससँ प्रकाशित भेल।

प्रश्न 174. ‘भुइया बाबा -भगैत प्रसंग’ एल्बमक गायक के छथि?

क. रमाकान्त पजियार

ख. बिरासी सदा

ग. जागे महतो

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. रमाकान्त पजियार

व्याख्या: ‘भुइया बाबा -भगैत प्रसंग’ एल्बम रमाकान्त पजियार द्वारा गंगा कैसेट्ससँ प्रकाशित भेल।

प्रश्न 175. ‘बाबा बख्तौर भुइया बाबा’ एल्बमक गायक के छथि?
क. सकलदेव दास आ साथी
ख. बिरासी सदा
ग. जागे महतो
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. सकलदेव दास आ साथी
व्याख्या: ‘बाबा बख्तौर भुइया बाबा’ एल्बम सकलदेव दास आ साथी द्वारा सुप्रीम वीडियोसँ प्रकाशित भेल।

प्रश्न 176. विदेह-सदेह २० क उद्देश्य की प्रतीत होइत अछि?
क. मिथिलाक लोकसंगीत एल्बमक दस्तावेजीकरण
ख. केवल समीक्षा
ग. निरर्थक
घ. नाट्य-संग्रह
उत्तर: क. मिथिलाक लोकसंगीत एल्बमक दस्तावेजीकरण
व्याख्या: विदेह-सदेह २० मिथिलाक लोकसंगीत एल्बम सभक सूची आ दस्तावेजीकरणक उद्देश्यसँ संकलित अछि।

प्रश्न 177. धनीराम महतोक एल्बम आइ कोन स्थितिमे अछि, स्रोत अनुसार?
क. अनुपलब्ध (आर्काइवसँ सेहो निकालब संदेहास्पद)
ख. सहजहि उपलब्ध
ग. नव संस्करणमे
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. अनुपलब्ध (आर्काइवसँ सेहो निकालब संदेहास्पद)
व्याख्या: स्रोत अनुसार धनीराम महतोक एल्बम आब अनुपलब्ध अछि, आ दरभंगा रेडियो स्टेशन एकरा अपन आर्काइवसँ निकालत, ताहूपर संदेह अछि।

खण्ड १५ : विदेह-सदेह २३ — एडिटर्स चोइस सीरीज (ऐतिहासिक प्रथम)

प्रश्न 178. बलात्कारपर मैथिलीक पहिल कविता विदेहक कोन अंकमे प्रकाशित भेल?
क. १२३म अंक (०१ फरबरी २०१३)
ख. प्रथम अंक
ग. ५०म अंक
घ. २००म अंक
उत्तर: क. १२३म अंक (०१ फरबरी २०१३)
व्याख्या: विदेहक १२३म अंक (०१ फरबरी २०१३) मे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल।

प्रश्न 179. बलात्कारपर मैथिलीक पहिल कविता कोन घटनाक बादक समयमे प्रकाशित भेल?
क. दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्ड (दिसम्बर २०१२)
ख. केवल सामान्य समय
ग. कोनो विशेष घटना नहि
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्ड (दिसम्बर २०१२)
व्याख्या: ई कविता दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समयमे प्रकाशित भेल, यद्यपि ई एक अनूदित रचना छल।

प्रश्न 180. ब्रेस्ट कैंसरपर मैथिलीक पहिल कथा के लिखलनि?
क. मीना झा
ख. गजेन्द्र ठाकुर
ग. विभा रानी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मीना झा
व्याख्या: मीना झा विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच ब्रेस्ट कैंसरपर मैथिलीक पहिल लघुकथा लिखलीह।

प्रश्न 181. ब्रेस्ट कैंसरपर मैथिलीक पहिल कथा हिन्दी साहित्यक तुलनामे कोन स्थिति देखबैत अछि?

क. हिन्दीमे ताधरि एहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल

ख. हिन्दीमे पहिनहिये लिखल गेल छल

ग. कोनो तुलना नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हिन्दीमे ताधरि एहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल

व्याख्या: स्रोत-कथन अनुसार हिन्दीमे सेहो ताधरि एहि विषय (ब्रेस्ट कैंसर) पर कथा नहि लिखल गेल छल, जे मीना झाक रचनाकेँ विशेष बनबैत अछि।

प्रश्न 182. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क कतेक बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल?

क. तीन टा

ख. एक टा

ग. दस टा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तीन टा

व्याख्या: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क तीन टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, जाहिमे दू टा बेबी चाइल्डपर छल।

प्रश्न 183. 'चोनहा' बाल उपन्यास के लिखलनि?

क. जगदानन्द झा 'मनु'

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. अनिल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जगदानन्द झा 'मनु'

व्याख्या: 'चोनहा' बाल उपन्यास जगदानन्द झा 'मनु' लिखलनि, जे बाल मनोविज्ञानपर आधारित अछि।

प्रश्न 184. 'पइठ' दीर्घकथा के लिखलनि?

क. कुमार पवन

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. विभा रानी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कुमार पवन

व्याख्या: 'पइठ' दीर्घकथा कुमार पवन लिखलनि, जे हिन्दीक प्रसिद्ध कथा 'उसने कहा था'क मैथिली समकक्ष मानल गेल।

प्रश्न 185. 'एडिटर्स चोइस सीरीज' क उद्देश्य की?

क. विदेहक ऐतिहासिक रूपें महत्त्वपूर्ण/प्रथम रचना सभकेँ चिन्हित करब

ख. केवल विज्ञापन

ग. निरर्थक

घ. रोक

उत्तर: क. विदेहक ऐतिहासिक रूपें महत्त्वपूर्ण/प्रथम रचना सभकेँ चिन्हित करब

व्याख्या: एडिटर्स चोइस सीरीजक उद्देश्य विदेहमे प्रकाशित ऐतिहासिक रूपें महत्त्वपूर्ण वा 'प्रथम' रचना सभकेँ चिन्हित कऽ संगृहीत करब थिक।

प्रश्न 186. एडिटर्स चोइस सीरीज की देखबैत अछि विदेहक समग्र योगदानक विषयमे?

क. मैथिली साहित्यमे अनेक विषयगत 'प्रथम' रचनाक श्रेय

ख. कोनो योगदान नहि

ग. निरर्थकता

घ. रोक

उत्तर: ख. कोनो योगदान नहि

व्याख्या: एडिटर्स चोइस सीरीज देखबैत अछि जे विदेहकेँ मैथिली साहित्यमे अनेक विषयगत 'प्रथम' रचना (बलात्कार-कविता, ब्रेस्ट कैंसर-कथा आदि) प्रकाशित करबाक श्रेय जाइत अछि।

खण्ड १६ : विदेह-सदेह २२ — आशीष अनचिन्हारक काव्य-समीक्षा

प्रश्न 187. विदेह-सदेह २२ मे आशीष अनचिन्हारक आलोचना-आलेखक शीर्षक की?
क. लाल लंगौटी केर पहचान करैत कविता
ख. गामक जिनगी
ग. कारी घटा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. लाल लंगौटी केर पहचान करैत कविता
व्याख्या: आशीष अनचिन्हारक आलोचना-आलेखक शीर्षक ‘लाल लंगौटी केर पहचान करैत कविता’ थिक।

प्रश्न 188. आशीष अनचिन्हार अपन आलोचनामे कोन संस्कृत-ग्रन्थक उल्लेख करैत छथि?
क. साहित्यदर्पण (कविराज विश्वनाथ)
ख. नाट्यशास्त्र
ग. काव्यप्रकाश
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. साहित्यदर्पण (कविराज विश्वनाथ)
व्याख्या: आशीष अनचिन्हार कविराज विश्वनाथजीक पोथी ‘साहित्यदर्पण’क उल्लेख करैत छथि, जाहिमे तीन प्रकारक दूतक वर्णन अछि।

प्रश्न 189. समीक्षित कविता ‘सुनू जयद्रथ’ मे कोन महाभारत-पात्रक प्रतीकात्मक प्रयोग भेल?
क. जयद्रथ (आ कृष्ण-मायाक संकेत)
ख. भीम
ग. द्रोणाचार्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. जयद्रथ (आ कृष्ण-मायाक संकेत)
व्याख्या: ‘सुनू जयद्रथ’ कवितामे जयद्रथक प्रतीकात्मक प्रयोग भेल अछि, संग कृष्णक मायाक संकेत सेहो अछि।

प्रश्न 190. समीक्षक अनुसार ‘सुनू जयद्रथ’ कवितामे कोन शब्दक उच्चारण-त्रुटि सम्भावित अछि?
क. मुँह (मूँह होएबाक चाही)
ख. कृष्ण
ग. समर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मुँह (मूँह होएबाक चाही)
व्याख्या: समीक्षक अनुसार कवितामे ‘मुँह’ शब्दक उच्चारण सही नहि अछि, पाठमे ‘मूँह’ स्वतः आबय पड़त।

प्रश्न 191. ‘हम हत्या करय चाहै छी’ शीर्षक कवितामे की विशेषता अछि?
क. कोनो स्थूल नायक लेल नहि, विभिन्न प्रवृतिपर लिखल
ख. केवल एक नायकपर
ग. निरर्थक
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. कोनो स्थूल नायक लेल नहि, विभिन्न प्रवृतिपर लिखल
व्याख्या: एहि कवितामे विशेषता अछि जे ई कोनो स्थूल/विशेष नायक लेल नहि लिखल गेल, बल्कि विभिन्न प्रवृतिपर अछि।

प्रश्न 192. ‘इनार सीरीज’ कवितामे ‘इनार-१’ क विशेषता की कहल गेल?
क. शांतिप्रिय, विरल आ बहुअर्थी (वैष्णव सन)
ख. केवल हास्य
ग. निरर्थक
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. शांतिप्रिय, विरल आ बहुअर्थी (वैष्णव सन)
व्याख्या: समीक्षक अनुसार ‘इनार-१’ वैष्णव सन शांतिप्रिय, विरल आ बहुअर्थी अछि।

प्रश्न 193. ‘अलिखित कविता सभहँक पक्षमे’ कवितामे कोन साहित्यक चर्चा अछि?

क. जे मुद्रित वा पुरस्कृत नहि भऽ सकल

ख. सभ प्रसिद्ध साहित्य

ग. केवल पुरस्कृत साहित्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जे मुद्रित वा पुरस्कृत नहि भऽ सकल

व्याख्या: एहि कवितामे ओहन साहित्यक चर्चा अछि जे मुद्रित वा पुरस्कृत नहि भऽ सकल — ई विडम्बना अछि जे कविता स्वयं मुद्रित भऽ कऽ ई बात कहैत अछि।

प्रश्न 194. आशीष अनचिन्हार कविता-संग्रहक वास्तविक आरम्भ कतएसँ मानैत छथि?

क. इनार सीरीज (मितार्थ पहिल बेर एतय आएल)

ख. प्रथम कविता

ग. अन्तिम कविता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. इनार सीरीज (मितार्थ पहिल बेर एतय आएल)

व्याख्या: आशीष अनचिन्हार लिखैत छथि जे ओ कविता-संग्रहक वास्तविक आरम्भ इनार सीरीजसँ मानैत छथि, किएक तँ मितार्थ पहिल बेर एतहि आएल अछि।

खण्ड १७ : विदेह-सदेह २६ — मैथिली साहित्यक काल-विभाजन

प्रश्न 195. विदेह-सदेह २६ मे काल-निर्धारणक आलेख के लिखलनि?

क. डॉ. शम्भु कुमार सिंह

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. विभा रानी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. डॉ. शम्भु कुमार सिंह

व्याख्या: विदेह-सदेह २६ मे ‘मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण’ आलेख डॉ. शम्भु कुमार सिंह लिखलनि।

प्रश्न 196. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक जन्म कहिया भेल?

क. १८ अप्रील १९६५

ख. १ जनवरी १९७१

ग. १५ मार्च १९५५

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १८ अप्रील १९६५

व्याख्या: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक जन्म १८ अप्रील १९६५ कैं सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे भेल।

प्रश्न 197. एहि आलेखक उद्देश्य कोन परीक्षार्थी लेल उपयोगी कहल गेल?

क. यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थी

ख. केवल विद्यालय छात्र

ग. विदेशी छात्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थी

व्याख्या: आलेखक उपशीर्षकमे स्पष्ट कहल गेल जे ई यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी अछि।

प्रश्न 198. मैथिली साहित्यक काल-विभाजन कतेक युगमे कएल गेल अछि?

क. तीन (गीतिकाव्य, नाटक, गद्य)

ख. दू

ग. पाँच

घ. दस

उत्तर: क. तीन (गीतिकाव्य, नाटक, गद्य)

व्याख्या: आलेख अनुसार मैथिली साहित्यक काल-विभाजन तीन युगमे कएल गेल अछि — गीतिकाव्य युग, नाटक युग आ गद्य युग।

प्रश्न 199. गीतिकाव्य युगक प्रवर्तक के मानल गेल?
क. महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव)
ख. ज्योतिरीश्वर
ग. गजेन्द्र ठाकुर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव)
व्याख्या: गीतिकाव्य युगक प्रवर्तक महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव) मानल गेलाह।

प्रश्न 200. मध्य युगकेँ कोन नामसँ चिन्हित कएल गेल?
क. नाटक युग
ख. गद्य युग
ग. गीतिकाव्य युग
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. नाटक युग
व्याख्या: मध्य युगकेँ ‘नाटक युग’क संज्ञा देल गेल, किएक तँ ओहि कालमे गीति-संयोगसँ नाटकक रचना दिस लोकक प्रवृति झुकल।

प्रश्न 201. वर्तमान युगकेँ कोन नामसँ चिन्हित कएल गेल?
क. गद्य युग
ख. नाटक युग
ग. गीतिकाव्य युग
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गद्य युग
व्याख्या: वर्तमान युगकेँ ‘गद्य युग’क संज्ञा देल गेल, किएक तँ एहि युगमे लेखक वृन्दक प्रवृति गद्य लिखब दिस विशेष झुकल अछि।

प्रश्न 202. काल-विभाजनक मूल चुनौती की मानल गेल?
क. तिथि-निर्धारणमे विद्वानक मतैक्यक अभाव
ख. कोनो चुनौती नहि
ग. सरल कार्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. तिथि-निर्धारणमे विद्वानक मतैक्यक अभाव
व्याख्या: आलेखमे प्रश्न उठाओल गेल जे काल-विभाजनक तिथि-निर्धारणमे विद्वान लोकनिमे मतैक्य किएक नहि अछि, जे एकटा विचारणीय चुनौती मानल गेल।

खण्ड १८ : विदेह-सदेह २७ — तेलुगु अनुवाद ‘जुम्मा’

प्रश्न 203. विदेह-सदेह २७ क मुख्य खण्डक नाम की?
क. तेलुगु कथा खण्ड
ख. अंग्रेजी कथा खण्ड
ग. रूसी नाट्य खण्ड
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. तेलुगु कथा खण्ड
व्याख्या: विदेह-सदेह २७ क मुख्य खण्ड ‘तेलुगु कथा खण्ड’ थिक।

प्रश्न 204. ‘जुम्मा’ लघुकथाक मूल तेलुगु लेखक के छथि?
क. शेख मोहम्मद शरीफ प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफ
ख. गजेन्द्र ठाकुर
ग. जयलक्ष्मी पोपुरी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. शेख मोहम्मद शरीफ प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफ
व्याख्या: ‘जुम्मा’ लघुकथाक मूल तेलुगु लेखक शेख मोहम्मद शरीफ प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफ छथि।

प्रश्न 205. ‘जुम्मा’ क तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद के केलनि?
क. जयलक्ष्मी पोपुरी
ख. गजेन्द्र ठाकुर
ग. प्रीति ठाकुर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. जयलक्ष्मी पोपुरी
व्याख्या: जयलक्ष्मी पोपुरी, निजाम कॉलेज, ओस्मानिया विश्वविद्यालयक अध्यापिका, तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद केलीह।

प्रश्न 206. ‘जुम्मा’ क अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद के केलनि?
क. गजेन्द्र ठाकुर
ख. जयलक्ष्मी पोपुरी
ग. विभा रानी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुर
व्याख्या: ‘जुम्मा’ क अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर केलनि।

प्रश्न 207. ‘जुम्मा’ कथाक मुख्य घटना कोन दिनसँ सम्बद्ध अछि?
क. जुम्माक नमाज (शुक्रवार)
ख. रविवार
ग. सोमवार
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. जुम्माक नमाज (शुक्रवार)
व्याख्या: कथाक मुख्य घटना जुम्माक नमाज (शुक्रवारक नमाज) सँ सम्बद्ध अछि — कथा-नायकक अम्मी जुम्माक नमाजकेँ विशेष आस्थासँ देखैत छलीह।

प्रश्न 208. ‘जुम्मा’ कथामे नायकक पिताक संग की घटना घटैत अछि?
क. हुनकर मृत्युक सूचना आबैत अछि
ख. ओ बिमार पड़ैत छथि
ग. ओ यात्रापर जाइत छथि
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. हुनकर मृत्युक सूचना आबैत अछि
व्याख्या: कथामे नायकक पिताक मृत्युक सूचना फोनपर आबैत अछि, जे नायककेँ अम्मीक मार्फत भेटैत अछि।

प्रश्न 209. ‘जुम्मा’ कथाक भावनात्मक केन्द्र की थिक?
क. आस्था, अपराध-भाव आ माय-बेटाक सम्बन्ध
ख. केवल हास्य
ग. केवल राजनीति
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. आस्था, अपराध-भाव आ माय-बेटाक सम्बन्ध
व्याख्या: कथाक भावनात्मक केन्द्र आस्था, नायकक अपराध-भाव (मस्जिद नहि गेलाक) आ माय-बेटाक गहिर सम्बन्ध थिक।

प्रश्न 210. विदेह-सदेह २७ सन तेलुगु-अनुवाद-संकलन की देखबैत अछि?
क. विदेहक अनुवाद-कार्य आ अन्तर्भाषिक सेतु-निर्माणक प्रतिबद्धता
ख. केवल मैथिली रचना
ग. निरर्थकता
घ. रोक
उत्तर: ख. केवल मैथिली रचना
व्याख्या: विदेह-सदेह २७ देखबैत अछि जे विदेह तेलुगु सन भाषासँ मैथिलीमे अनुवाद कऽ अन्तर्भाषिक सेतु-निर्माणक प्रति प्रतिबद्ध अछि।

खण्ड १९ : विदेह-सदेह ३१ — यात्रा-वृत्तान्त (कम्बोडिया)

प्रश्न 211. विदेह-सदेह ३१ मे यात्रा-वृत्तान्तक लेखिका के छथि?

क. डॉ. कामिनी कामायनी

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. प्रीति ठाकुर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. डॉ. कामिनी कामायनी

व्याख्या: विदेह-सदेह ३१ मे यात्रा-वृत्तान्त ‘नोम्पेंह’ डॉ. कामिनी कामायनी लिखलीह।

प्रश्न 212. ‘नोम्पेंह’ कोन देशक राजधानी थिक?

क. कम्बोडिया

ख. थाइलैण्ड

ग. वियतनाम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कम्बोडिया

व्याख्या: नोम्पेंह (Phnom Penh) कम्बोडियाक राजधानी थिक।

प्रश्न 213. नोम्पेंह कोन नदीक तीरपर अछि, यात्रा-वृत्तान्त अनुसार?

क. मेकोंग नदी

ख. गंगा

ग. ब्रह्मपुत्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मेकोंग नदी

व्याख्या: यात्रा-वृत्तान्त अनुसार लेखिका भोरे मेकोंग नदीक तीरपर ठाढ़ पाओल अपनाकेँ।

प्रश्न 214. नोम्पेंहक स्थापत्य-कला कोन देशक प्रभावसँ युक्त अछि?

क. फ्रांसीसी

ख. ब्रिटिश

ग. अमेरिकी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. फ्रांसीसी

व्याख्या: यात्रा-वृत्तान्त अनुसार नोम्पेंहक स्थापत्य-कला फ्रांसीसी प्रभावसँ युक्त अछि।

प्रश्न 215. नोम्पेंहक संग्रहालय (म्यूजियम) मे कोन-कोन कालक खमेर वस्तु-कलाकृति अछि?

क. चौथी सदीसँ चौदहवीं सदी (अंकोर काल) धरि

ख. केवल आधुनिक

ग. केवल बीसम शताब्दी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चौथी सदीसँ चौदहवीं सदी (अंकोर काल) धरि

व्याख्या: म्यूजियममे चौथी सदीसँ अंकोर काल (चौदहवीं सदी) धरिक प्रमुख खमेर इतिहास-कलाकृति अछि।

प्रश्न 216. नोम्पेंहक एक प्रसिद्ध बाजारक नाम की?

क. सेंट्रल मार्केट आ टुओल टॉम पोंग मार्केट (रसियन बाजार)

ख. केवल एक बाजार

ग. विदेशी मॉल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सेंट्रल मार्केट आ टुओल टॉम पोंग मार्केट (रसियन बाजार)

व्याख्या: नोम्पेंहमे सेंट्रल मार्केट (पीयर रंगक) आ टुओल टॉम पोंग मार्केट (रसियन बाजारक नामसँ जानल) प्रसिद्ध अछि।

प्रश्न 217. कम्बोडियाक स्थानीय करेंसी की थिक?

क. रिएल

ख. डॉलर

ग. रुपया

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. रिएल

व्याख्या: कम्बोडियाक स्थानीय करेंसी रिएल थिक, यद्यपि यू.एस. डॉलर सेहो सहजहि चलैत अछि।

प्रश्न 218. कम्बोडियाक ‘किलिंग फील्ड’ कोन कालखण्डसँ सम्बद्ध अछि?

क. सन् १९७५ सँ १९७९ (खमेर रूज शासन)

ख. आधुनिक काल

ग. अंकोर काल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सन् १९७५ सँ १९७९ (खमेर रूज शासन)

व्याख्या: किलिंग फील्ड कम्बोडियाक भीषण तानाशाही (खमेर रूज) शासनक नरसंहारक जीवित दस्तावेज थिक, जे सन् १९७५ क बादक कालसँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 219. किरीरोम नेशनल पार्क मे कोन वार्षिक उत्सव होइत अछि?

क. जलोत्सव

ख. दीपोत्सव

ग. फूल-उत्सव

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जलोत्सव

व्याख्या: किरीरोम नेशनल पार्कक निकट प्रत्येक वर्ष एकटा भव्य जलोत्सव होइत अछि।

खण्ड २० : विदेह-सदेह ३३ — हाइकू समीक्षाशास्त्र

प्रश्न 220. हाइकू कोन देशक काव्य-विधा थिक?

क. जापान

ख. चीन

ग. भारत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जापान

व्याख्या: हाइकू सौंदर्य आ भावक जापानी काव्य-विधा थिक।

प्रश्न 221. हाइकूकेँ काव्य-विधाक रूप देनिहार जापानी कवि के छथि?

क. मात्सुओ बासो

ख. कोनो भारतीय कवि

ग. गजेन्द्र ठाकुर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मात्सुओ बासो

व्याख्या: मात्सुओ बासो (१६४४-१६९४) हाइकूकेँ काव्य-विधाक रूप देनिहार जापानी कवि छथि।

प्रश्न 222. हाइकू कतेक अक्षरमे लिखल जाइत अछि?

क. १७ अक्षर (५-७-५)

ख. दस अक्षर

ग. बीस अक्षर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १७ अक्षर (५-७-५)

व्याख्या: हाइकू १७ अक्षरमे, तीन पंक्तिमे ५-७-५ क्रममे लिखल जाइत अछि।

प्रश्न 223. गजेन्द्र ठाकुर अनुसार हाइकू लेल कोन भाषा सर्वाधिक उपयुक्त?

क. मैथिली (आ भारतीय संस्कृताश्रित लिपि)

ख. केवल अंग्रेजी

ग. केवल जापानी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिली (आ भारतीय संस्कृताश्रित लिपि)

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर अनुसार हाइकू लेल मैथिली भाषा आ भारतीय संस्कृताश्रित लिपि-व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि।

प्रश्न 224. जापानमे ईश्वर-आह्वान प्रार्थना कोन स्वरूपमे होइत छल, जे बादमे टनका/वाका बनल?

क. ५-७-५-७-७

ख. ५-७-५

ग. ७-७-५

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ५-७-५-७-७

व्याख्या: जापानमे ईश्वरक आह्वान टनका/वाका प्रार्थना ५-७-५-७-७ स्वरूपमे होइत छल।

प्रश्न 225. ५-७-५ आ ७-७ कैं दू लेखक द्वारा लिखलासँ कोन नव स्वरूप बनल?

क. रेन्गा

ख. हैबून

ग. शेनर्यू

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. रेन्गा

व्याख्या: जखन ५-७-५ आ ७-७ क भाग दू भिन्न लेखक द्वारा लिखल जाए लागल, तँ ओ नव स्वरूप ‘रेन्गा’ कहल गेल।

प्रश्न 226. हाइकूक वार्णिक गणनामे संयुक्ताक्षरकैं कोना गनल जाइत अछि?

क. एक गानू

ख. दू गानू

ग. गनल नहि जाइत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. एक गानू

व्याख्या: हाइकूक वार्णिक गणना नियम अनुसार संयुक्ताक्षरकैं एक गानू, आ हलन्त/बिकारी/इकार-आकार आदिक गणना नहि करबाक चाही।

प्रश्न 227. कीर्तिलताक प्रथम पल्लवक पहिल दोहाक भाव की?

क. अक्षररूपी स्तम्भ बिना काव्यरूपी मंच नहि बान्हल जा सकैत

ख. केवल इतिहास

ग. निरर्थक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अक्षररूपी स्तम्भ बिना काव्यरूपी मंच नहि बान्हल जा सकैत

व्याख्या: ‘अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्यो बन्धि न देइ’ क भाव अछि जे अक्षररूपी स्तम्भ निर्माण बिना काव्यरूपी मंच नहि बान्हल जा सकैत, आ कीर्तिरूपी लता नहि पसरि सकैत।

प्रश्न 228. साहित्यक दू मूल विधा की थिक, आलेख अनुसार?

क. गद्य आ पद्य

ख. केवल गद्य

ग. केवल पद्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गद्य आ पद्य

व्याख्या: आलेख अनुसार साहित्यक दू मूल विधा गद्य आ पद्य थिक — छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि, अन्यथा ओ गद्य थीक।

प्रश्न 229. छन्दक कतेक प्रकार अछि?
क. दू (मात्रिक आ वार्णिक)
ख. तीन
ग. एक
घ. चारि
उत्तर: क. दू (मात्रिक आ वार्णिक)
व्याख्या: छन्द दू प्रकारक अछि — मात्रिक आ वार्णिक।

प्रश्न 230. वेदमे कोन प्रकारक छन्द अछि?
क. वार्णिक
ख. मात्रिक
ग. दुनू
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. वार्णिक
व्याख्या: आलेख अनुसार वेदमे वार्णिक छन्द अछि।

प्रश्न 231. विदेह-सदेह ३३ क समग्र विषय की?
क. मैथिली हाइकू/हैकू/क्षणिका/शेनर्यू/टनका/हैबून
ख. केवल नाटक
ग. केवल कथा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मैथिली हाइकू/हैकू/क्षणिका/शेनर्यू/टनका/हैबून
व्याख्या: विदेह-सदेह ३३ क समग्र विषय मैथिली हाइकू, हैकू, क्षणिका, शेनर्यू, टनका आ हैबून सन जापानी-प्रेरित पद्य-शैली थिक।

खण्ड २१ : विदेह-सदेह २८ — बहुभाषिक अनुवाद-संकलन (खण्ड-१)

प्रश्न 232. विदेह-सदेह २८ क पूर्ण शीर्षक की?
क. गद्य पद्य भारती अनुवाद खण्ड-१
ख. केवल अनुवाद
ग. विदेह सदेह
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गद्य पद्य भारती अनुवाद खण्ड-१
व्याख्या: विदेह-सदेह २८ क पूर्ण शीर्षक ‘गद्य पद्य भारती अनुवाद खण्ड-१’ थिक — विदेहक अंक १-३५० सँ अनूदित गद्य-पद्यक पहिल खण्ड।

प्रश्न 233. विदेह-सदेह २८ मे खलील जिब्रानक रचनाक नाम की?
क. गोल्डन बेल्ट (अंग्रेजी सीड स्टोरी)
ख. जुम्मा
ग. छिन्नमस्ता
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गोल्डन बेल्ट (अंग्रेजी सीड स्टोरी)
व्याख्या: खलील जिब्रानक रचना ‘गोल्डन बेल्ट’ (अंग्रेजी सीड स्टोरी) विदेह-सदेह २८ मे सम्मिलित अछि।

प्रश्न 234. विदेह-सदेह २८ मे बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन नाटककार) क रचनाक नाम की?
क. गपशप, महाशय ‘क’ जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि
ख. जुम्मा
ग. छिन्नमस्ता
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गपशप, महाशय ‘क’ जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि
व्याख्या: बर्तोल्ट ब्रेख्तक रचना ‘गपशप, महाशय क जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि’ विदेह-सदेह २८ मे सम्मिलित अछि।

प्रश्न 235. विदेह-सदेह २८ मे डॉ. प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक नाम की?
क. छिन्नमस्ता
ख. रेहनपर रग्घू
ग. मोहनदास
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. छिन्नमस्ता
व्याख्या: डॉ. प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यास ‘छिन्नमस्ता’ विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।

प्रश्न 236. विदेह-सदेह २८ मे ग्रिगोरी गोरिन (रूसी नाटककार) क रचनाक नाम की?
क. एकटा ईमानदार आदमी
ख. छिन्नमस्ता
ग. गोल्डन बेल्ट
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. एकटा ईमानदार आदमी
व्याख्या: रूसी नाटककार ग्रिगोरी गोरिनक रचना ‘एकटा ईमानदार आदमी’ विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।

प्रश्न 237. विदेह-सदेह २८ मे कुरानक कोन भाग अनूदित अछि?
क. पहिल अध्यायक सात आयत
ख. सम्पूर्ण कुरान
ग. अन्तिम अध्याय
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. पहिल अध्यायक सात आयत
व्याख्या: कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत अरबी-हिन्दीसँ मैथिलीमे अनूदित अछि।

प्रश्न 238. विदेह-सदेह २८ मे उदय प्रकाशक हिन्दी दीर्घकथाक नाम की?
क. मोहनदास
ख. रेहनपर रग्घू
ग. छिन्नमस्ता
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मोहनदास
व्याख्या: उदय प्रकाशक हिन्दी दीर्घकथा ‘मोहनदास’ विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।

प्रश्न 239. विदेह-सदेह २८ मे काशीनाथ सिंहक हिन्दी उपन्यासक नाम की?
क. रेहनपर रग्घू
ख. मोहनदास
ग. छिन्नमस्ता
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. रेहनपर रग्घू
व्याख्या: काशीनाथ सिंहक हिन्दी उपन्यास ‘रेहनपर रग्घू’ विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।

प्रश्न 240. तुकाराम रामा शेटक ‘पाखलो’ कोन भाषाक उपन्यास थिक?
क. कोंकणी
ख. तेलुगु
ग. ओड़िया
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. कोंकणी
व्याख्या: ‘पाखलो’ तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यास थिक, जे विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।

प्रश्न 241. निरालाक हिन्दी कविताक नाम की, जे विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि?

क. देह विदेह

ख. मोहनदास

ग. छिन्नमस्ता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. देह विदेह

व्याख्या: निरालाक हिन्दी कविता ‘देह विदेह’ (१-४) विदेह-सदेह २८ मे मैथिलीमे अनूदित अछि।

प्रश्न 242. मंगलेश डबरालक कतेक हिन्दी कविता विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि?

क. अनेक (बारहसँ बेशी कविता-शीर्षक)

ख. एक

ग. दू

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अनेक (बारहसँ बेशी कविता-शीर्षक)

व्याख्या: मंगलेश डबरालक अनेक कविता — कमरा, बाहर, उम्मीद, पहाड़ छथिन आदि — विदेह-सदेह २८ मे अनूदित अछि।

प्रश्न 243. रहमान राहीक ‘छाह सभ’ कोन भाषाक कविता थिक?

क. कश्मीरी

ख. पंजाबी

ग. डोगरी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कश्मीरी

व्याख्या: ‘छाह सभ’ रहमान राहीक कश्मीरी कविता थिक।

प्रश्न 244. भिखारी ठाकुरक ‘वृद्धाश्रमक पक्षमे’ कोन भाषाक रचना थिक?

क. भोजपुरी (बिरहा)

ख. मैथिली

ग. हिन्दी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भोजपुरी (बिरहा)

व्याख्या: भिखारी ठाकुरक ‘वृद्धाश्रमक पक्षमे’ भोजपुरी बिरहा-शैलीक रचना थिक।

प्रश्न 245. विदेह-सदेह २८ मे कतेक-कतेक भारतीय भाषाक रचना सम्मिलित अछि?

क. अनेक (तेलुगु, हिन्दी, कोंकणी, ओड़िया, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, नेपाली, कश्मीरी, डोगरी, भोजपुरी आदि)

ख. केवल दू

ग. केवल हिन्दी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अनेक (तेलुगु, हिन्दी, कोंकणी, ओड़िया, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, नेपाली, कश्मीरी, डोगरी, भोजपुरी आदि)

व्याख्या: विदेह-सदेह २८ मे तेलुगु, हिन्दी, कोंकणी, ओड़िया, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, नेपाली, कश्मीरी, डोगरी, भोजपुरी सन अनेक भारतीय भाषाक रचना अनूदित-संकलित अछि।

प्रश्न 246. विदेह-सदेह २८ क समर्पण-पाँती ‘समानांतर कात-करोट मे हएब नै अछि’ कतय आओर भेटल अछि?

क. विदेहक ४४०म अंकमे सेहो

ख. केवल एतय

ग. कोनो आर ठाम नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. विदेहक ४४०म अंकमे सेहो

व्याख्या: ई समर्पण-पाँती विदेहक ४४०म अंकमे सेहो भेटल अछि, जे विदेह-आन्दोलनक एक स्थिर, दोहराओल जाइत मूल-दर्शन देखबैत अछि।

खण्ड २२ : विदेह-सदेह २१ — उमेश पासवान सम्मान आ साहित्य अकादेमी परिवर्तन

प्रश्न 247. साहित्य अकादेमी, दिल्ली मैथिली युवा साहित्य पुरस्कार २०१८ के पाओलनि?

क. उमेश पासवान

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. आशीष अनचिन्हार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. उमेश पासवान

व्याख्या: साहित्य अकादेमी, दिल्लीक मैथिली युवा साहित्य पुरस्कार २०१८ श्री उमेश पासवानकेँ भेटल।

प्रश्न 248. उमेश पासवानकेँ पुरस्कार कोन पद्य-संग्रहपर भेटल?

क. वर्णित रस (२०१२ मे प्रकाशित)

ख. सहस्रबाढ़नि

ग. भाग रौ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वर्णित रस (२०१२ मे प्रकाशित)

व्याख्या: उमेश पासवानकेँ हुनकर सन् २०१२ मे प्रकाशित पद्य-संग्रह ‘वर्णित रस’ पर पुरस्कार देबाक निर्णय भेल।

प्रश्न 249. उमेश पासवान पेशासँ की छथि?

क. चौकीदार (वाचमैन)

ख. प्राध्यापक

ग. वकील

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चौकीदार (वाचमैन)

व्याख्या: स्रोत-सामग्री (बीबीसी/ दलित दस्तक) अनुसार उमेश पासवान पेशासँ चौकीदार छथि।

प्रश्न 250. साहित्य अकादेमीक मैथिलीक नव परामर्शदात्री समितिक अध्यक्ष के छथि, ऐ अवसरपर?

क. डॉ. प्रेम मोहन मिश्र

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. विभा रानी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. डॉ. प्रेम मोहन मिश्र

व्याख्या: साहित्य अकादेमीक मैथिलीक नव परामर्शदात्री समितिक अध्यक्ष डॉ. प्रेम मोहन मिश्र छथि।

प्रश्न 251. सम्पादकीय अनुसार साहित्य अकादेमीक मैथिली जूरी एहि सम्मानसँ कोन उपलब्धि देखाओलक?

क. संकीर्णतासँ बाहर एबामे सफलता

ख. कोनो परिवर्तन नहि

ग. निरर्थकता

घ. रोक

उत्तर: क. संकीर्णतासँ बाहर एबामे सफलता

व्याख्या: सम्पादकीय अनुसार साहित्य अकादेमीक मैथिलीक नव परामर्शदात्री समिति आ जूरी संकीर्णतासँ बाहर एबामे सफल भेल, जे धन्यवादक पात्र अछि।

प्रश्न 252. उमेश पासवानक पुरस्कारक चर्चा कोन अन्तर्राष्ट्रीय मीडियामे भेल?

क. बीबीसी हिन्दी विभाग

ख. केवल स्थानीय अखबार

ग. कोनो नहि

घ. विदेशी टीवी मात्र

उत्तर: क. बीबीसी हिन्दी विभाग

व्याख्या: उमेश पासवानक पुरस्कारक चर्चा बीबीसीक हिन्दी विभागमे भेल।

प्रश्न 253. उमेश पासवानपर कोन पत्रकार आलेख लिखलनि (दलित दस्तक/ द लल्लनटॉप)?

क. डॉ. अरविन्द दास

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. उमेश मण्डल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. डॉ. अरविन्द दास

व्याख्या: डॉ. अरविन्द दास दलित न्यूज आ द लल्लनटॉपमे उमेश पासवानपर आलेख लिखलनि।

प्रश्न 254. सम्पादकीय अनुसार किछु युवा-अधवयस्क साहित्यकारक टिप्पणीसँ की प्रकट भेल?

क. कतेक लोकक सोच २१म शताब्दीमे सेहो पाछाँ अछि

ख. सभ खुश छलाह

ग. कोनो प्रतिक्रिया नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कतेक लोकक सोच २१म शताब्दीमे सेहो पाछाँ अछि

व्याख्या: सम्पादकीय अनुसार किछु युवा-अधवयस्क साहित्यकारक नकारात्मक टिप्पणीसँ प्रकट भेल जे हुनकर सोच २१म शताब्दीमे सेहो पाछाँ अछि, यद्यपि एहन लोकक संख्या नगण्य रहल।

प्रश्न 255. विदेह-सदेह २१ मे मिसिदा (मिथिलेश सिन्हा) क बीहनि कथाक नाम की?

क. पियार

ख. जश्न

ग. गामक गाछी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पियार

व्याख्या: मिसिदा (मिथिलेश सिन्हा ‘दाथवासी’) क बीहनि कथाक नाम ‘पियार’ थिक।

प्रश्न 256. मिसिदा कतयक अधिवक्ता छथि?

क. लक्ष्मीसागर, दरभंगा

ख. दिल्ली

ग. पटना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लक्ष्मीसागर, दरभंगा

व्याख्या: मिसिदा (मिथिलेश कुमार सिन्हा) मोहल्ला/पोस्ट लक्ष्मीसागर, जिला दरभंगाक अधिवक्ता छथि।

खण्ड २३ : विदेह-सदेह १७ — अरविन्द ठाकुर आ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’

प्रश्न 257. अरविन्द ठाकुरक जन्म कहिया भेल, समीक्षा अनुसार?

क. १९५४

ख. १९६४

ग. १९४४

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९५४

व्याख्या: समीक्षा अनुसार अरविन्द ठाकुरक जन्म सन् १९५४ ई.मे भेल।

प्रश्न 258. अरविन्द ठाकुरक सशक्त पक्ष की कहल गेल?

क. राजनैतिक-आर्थिक लघुकथा

ख. केवल हास्य

ग. केवल प्रेम-कथा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. राजनैतिक-आर्थिक लघुकथा

व्याख्या: समीक्षा अनुसार अरविन्द ठाकुरक सशक्त पक्ष हुनकर राजनैतिक-आर्थिक लघुकथा सभ छन्हि।

प्रश्न 259. ‘अन्हारक विरोध मे’ टाइटल-कथामे अलीमुद्दीन किएक लज्जित होइत छथि?

क. अपन टोलमे हिन्दू यारक भाइकेँ मारल जेबापर

ख. केवल कारणहीन

ग. धन-हानिपर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अपन टोलमे हिन्दू यारक भाइकेँ मारल जेबापर

व्याख्या: अलीमुद्दीन अपन टोलमे अपन हिन्दू यारक भाइकेँ मारल जेबापर लज्जित अछि।

प्रश्न 260. ‘ढाँचा-१९९२’ लघुकथा कोन शैलीमे लिखल गेल?

क. पत्र-शैली

ख. नाट्य-शैली

ग. कविता-शैली

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पत्र-शैली

व्याख्या: ‘ढाँचा-१९९२’ पत्र-शैलीमे लिखल गेल लघुकथा थिक, जे गुजरात दंगापर लिखबाक प्रसंगसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 261. ‘मूस’ लघुकथामे कोन देवताक वाहनक उल्लेख अछि?

क. गणपति (गणेश)क वाहन

ख. शिवक वाहन

ग. विष्णुक वाहन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गणपति (गणेश)क वाहन

व्याख्या: ‘मूस’ लघुकथामे मूस (मूसा) केँ गणपति बप्पाक पूजनीय वाहन कहल गेल अछि, जे महाराष्ट्रमे मारल नहि जाइत अछि।

प्रश्न 262. ‘प्रजातंत्र परिकथा’ लघुकथामे एकटा डॉक्टरक हत्या किएक नहि छपलक?

क. ओ गरीबक डॉक्टर छल, बड्ड मामूली फीस लैत छल

ख. ओ प्रसिद्ध छल

ग. कोनो कारण नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ओ गरीबक डॉक्टर छल, बड्ड मामूली फीस लैत छल

व्याख्या: कथामे व्यंग्य अछि जे ओ डॉक्टर बड्ड मामूली फीस लैत छल, गरीबक डॉक्टर नामसँ ख्यात छल, तेँ हुनकर हत्या मीडियामे महत्त्व नहि पाओलक।

प्रश्न 263. ‘अथ गिरगिट कथा’ मे गिरगिट किएक ‘लजा जाइत अछि’?

क. जखन मनुक्ख रंग बदलैत अछि, गिरगिटसँ बेशी

ख. गिरगिट कहियो नहि लजाइत

ग. कोनो कारण नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जखन मनुक्ख रंग बदलैत अछि, गिरगिटसँ बेशी

व्याख्या: कथामे व्यंग्य अछि जे गिरगिट रंग बदलबा लेल प्रसिद्ध अछि, मुदा मनुक्खक रंग-परिवर्तन (राजनीतिक स्वार्थ) देखि गिरगिटो लजा जाइत अछि।

प्रश्न 264. ‘विष-पान’ लघुकथा कोन प्रणालीक विश्लेषण करैत अछि?

क. न्यायपालिकाक क्रिया-प्रक्रिया (कचहरी)

ख. शिक्षा प्रणाली

ग. स्वास्थ्य प्रणाली

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. न्यायपालिकाक क्रिया-प्रक्रिया (कचहरी)

व्याख्या: ‘विष-पान’ कचहरीक विवरण आ न्यायपालिकाक क्रिया-प्रक्रिया (तारीख, मेडिकल एक्स-रे, मोकदमाक सुनबाइ) क विश्लेषण करैत अछि।

प्रश्न 265. विदेह-सदेह १७ क सम्पादकीयमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क कोन कृतिपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार उल्लिखित अछि?
क. राधाविरह (महाकाव्य)
ख. सहस्रबाढ़नि
ग. भाग रौ
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. राधाविरह (महाकाव्य)
व्याख्या: काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ (१९०६-१९८७) क महाकाव्य ‘राधाविरह’ पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छल।

प्रश्न 266. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क जीवन-काल की छल?
क. १९०६-१९८७
ख. १९१०-१९९०
ग. १९२०-२०००
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. १९०६-१९८७
व्याख्या: काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क जीवन-काल १९०६ सँ १९८७ ई. धरि रहल।

खण्ड २४ : विदेह-सदेह २५ — सझिया रोपनि समीक्षा

प्रश्न 267. ‘सझिया रोपनि’ बीहनि कथा-संग्रहक सम्पादक के छथि?
क. डा. प्रमोद कुमार
ख. गजेन्द्र ठाकुर
ग. विभा रानी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. डा. प्रमोद कुमार
व्याख्या: ‘सझिया रोपनि’ (सझिया-साझ बीहनि कथा संग्रह) क सम्पादक डा. प्रमोद कुमार छथि।

प्रश्न 268. ‘सझिया रोपनि’ मे कतेक बीहनि कथा-लेखकक रचना सम्मिलित अछि?
क. ४३ टा
ख. दस टा
ग. सय टा
घ. पाँच टा
उत्तर: क. ४३ टा
व्याख्या: ‘सझिया रोपनि’ मे ४३ टा बीहनि कथा-लेखकक रचना सम्मिलित अछि।

प्रश्न 269. ‘सझिया रोपनि’ मे कुल कतेक बीहनि कथा संकलित अछि?
क. ८६ टा
ख. ४३ टा
ग. सय टा
घ. दस टा
उत्तर: क. ८६ टा
व्याख्या: ४३ गोट लेखकक ८६ टा बीहनि कथाक सझिया-साझ रोपनि एहि संग्रहमे भेल अछि।

प्रश्न 270. ‘सझिया रोपनि’ मे महिला बीहनि कथाकारक संख्या केहन कहल गेल?
क. आह्लादकारी
ख. अत्यन्त कम
ग. शून्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. आह्लादकारी
व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर लिखैत छथि जे महिला बीहनि कथा लेखकक संख्या आह्लादकारी अछि, आ तइ लेल सम्पादकक अपक्ष दृष्टिकोण प्रशंसनीय अछि।

प्रश्न 271. डॉ. प्रमोद कुमार अनुसार बीहनि कथाक नपना कतेक शब्दक होइत अछि?

क. कठोर रूपसँ १०० शब्द

ख. ५० शब्द

ग. ५०० शब्द

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कठोर रूपसँ १०० शब्द

व्याख्या: डॉ. प्रमोद कुमार अनुसार बीहनि कथाक नपना कठोर रूपसँ १०० शब्द छी, जे २ मिनटमे पढ़ल जा सकैत अछि।

प्रश्न 272. 'सझिया रोपनि' मे घनश्याम घनेरोक बीहनि कथाक नाम की?

क. अछोप

ख. फोकस!

ग. कुशल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अछोप

व्याख्या: घनश्याम घनेरोक बीहनि कथाक नाम 'अछोप' थिक।

प्रश्न 273. 'सझिया रोपनि' मे मुन्नाजीक बीहनि कथाक नाम की?

क. फोकस!

ख. अछोप

ग. कुशल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. फोकस!

व्याख्या: मुन्नाजीक बीहनि कथाक नाम 'फोकस!' थिक।

प्रश्न 274. विदेह-सदेह २५ मे डॉ. वीरेन्द्र मल्लिकक साक्षात्कार के लेलनि?

क. नबोनारायण मिश्र

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. मुन्नाजी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नबोनारायण मिश्र

व्याख्या: डॉ. वीरेन्द्र मल्लिकक साक्षात्कार नबोनारायण मिश्र द्वारा लेल गेल।

प्रश्न 275. डॉ. वीरेन्द्र मल्लिकक साक्षात्कारक शीर्षक की?

क. मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी

ख. कोनो नहि

ग. भाग रौ

घ. सहस्रबाढ़नि

उत्तर: क. मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी

व्याख्या: साक्षात्कारक शीर्षक 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी' थिक।

प्रश्न 276. 'वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक' प्रकाशित कहिया कएल गेल छल जे अपेक्षित सहयोग नहि भेटलाक कारणे नहि भऽ सकल?

क. २०१६

ख. २०१०

ग. २०२०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. २०१६

व्याख्या: विदेह सन् २०१६ मे 'वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक' प्रकाशित करबाक घोषणा केने रहए, मुदा अपेक्षित सहयोग नहि भेटबाक कारणे ई प्रकाशित नहि भऽ सकल।

खण्ड २५ : विदेह-सदेह ३० — नेपाली मैथिली उच्चारण-लेखन मानक

प्रश्न 277. विदेह-सदेह ३० मे कोन देशक मैथिली भाषा-वैज्ञानिकक मानक उच्चारण-लेखन शैलीक उल्लेख अछि?

क. नेपाल

ख. भारत

ग. बंगलादेश

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नेपाल

व्याख्या: विदेह-सदेह ३० मे नेपालक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैलीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 278. पञ्चमाक्षरमे कोन-कोन अक्षर अबैत अछि?

क. ङ, ञ, ण, न, म

ख. क, ख, ग, घ, ङ

ग. केवल अनुस्वार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ङ, ञ, ण, न, म

व्याख्या: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न आ म — पाँच अक्षर अबैत अछि, जे हर वर्गक पाँचम अक्षर थिक।

प्रश्न 279. ‘अङ्क’ शब्दमे अन्तमे ‘ङ्’ किएक आएल अछि?

क. क वर्गक रहबाक कारणे

ख. ट वर्गक रहबाक कारणे

ग. प वर्गक रहबाक कारणे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. क वर्गक रहबाक कारणे

व्याख्या: ‘अङ्क’ शब्द क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् (पञ्चमाक्षर) आएल अछि।

प्रश्न 280. ‘खण्ड’ शब्दमे अन्तमे ‘ण्’ किएक आएल अछि?

क. ट वर्गक रहबाक कारणे

ख. क वर्गक रहबाक कारणे

ग. त वर्गक रहबाक कारणे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ट वर्गक रहबाक कारणे

व्याख्या: ‘खण्ड’ शब्द ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।

प्रश्न 281. नवीन पद्धतिमे पञ्चमाक्षरक बदला कोन चिह्नक प्रयोग बेसी होइत अछि?

क. अनुस्वार

ख. विसर्ग

ग. विराम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अनुस्वार

व्याख्या: नवीन पद्धतिमे पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश ठाम अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइत अछि (जेना अंक, पंच, खंड)।

प्रश्न 282. अनुस्वार-प्रयोगक एक हानि की कहल गेल?

क. हस्तलेखन/मुद्रणमे बिन्दु स्पष्ट नहि भेने अर्थक अनर्थ

ख. कोनो हानि नहि

ग. केवल लाभ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हस्तलेखन/मुद्रणमे बिन्दु स्पष्ट नहि भेने अर्थक अनर्थ

व्याख्या: अनुस्वार-प्रयोगक हानि अछि जे कतोकबेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोटसन बिन्दु स्पष्ट नहि भेने अर्थक अनर्थ होइत अछि।

प्रश्न 283. ‘ढ़’ क उच्चारण केहन होइत अछि?
क. ‘र् ह’ जकाँ
ख. ‘ढ’ जकाँ बिल्कुल समान
ग. ‘द’ जकाँ
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ‘र् ह’ जकाँ
व्याख्या: मानक अनुसार ढ़क उच्चारण ‘र् ह’ जकाँ होइत अछि, जे ढसँ भिन्न अछि।

प्रश्न 284. ‘पढ़ाइ’ शब्दमे कोन ढ प्रयुक्त अछि?
क. ढ़ (नुक्तासहित)
ख. ढ (नुक्ता रहित)
ग. दुनू
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ढ़ (नुक्तासहित)
व्याख्या: ‘पढ़ाइ’ मे ढ़ (नुक्तासहित) प्रयुक्त अछि, किएक तँ एतय ‘र् ह’ सन उच्चारण होइत अछि।

प्रश्न 285. ‘ढाकी’ शब्दमे कोन ढ प्रयुक्त अछि?
क. ढ (नुक्ता रहित)
ख. ढ़ (नुक्तासहित)
ग. दुनू
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ढ (नुक्ता रहित)
व्याख्या: ‘ढाकी’ मे साधारण ढ (नुक्ता रहित) प्रयुक्त अछि।

प्रश्न 286. विदेह-सदेह ३० क आरम्भिक उद्धरण कीर्तिलताक कोन भागसँ लेल गेल अछि?
क. प्रथमः पल्लवः क पहिल दोहा
ख. अन्तिम पल्लव
ग. द्वितीय पल्लव
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. प्रथमः पल्लवः क पहिल दोहा
व्याख्या: विदेह-सदेह ३० क आरम्भिक उद्धरण कीर्तिलताक प्रथमः पल्लवः क पहिल दोहासँ लेल गेल अछि — ‘अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ’।

प्रश्न 287. विदेह-सदेह ३० क समग्र विषय की?
क. मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन मानक
ख. केवल कथा
ग. केवल पद्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन मानक
व्याख्या: विदेह-सदेह ३० क समग्र विषय मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखनक मानकीकरण (पञ्चमाक्षर, ढ-ढ़ आदि) थिक।

खण्ड २६ : विदेह-सदेह ३४ — बेचन ठाकुरक नाटक आ प्रेमशंकर सिंह

प्रश्न 288. विदेह-सदेह ३४ मे बेचन ठाकुर कतेक वर्षसँ मैथिली नाटक-लेखन आ निर्देशनमे जुटल छथि, स्रोत अनुसार?
क. पचीस वर्ष
ख. दस वर्ष
ग. पचास वर्ष
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. पचीस वर्ष
व्याख्या: स्रोत अनुसार बेचन ठाकुर विगत पचीस वर्षसँ मैथिली नाटकक लेखन आ निर्देशनमे जुटल छथि।

प्रश्न 289. बेचन ठाकुरक नाटक ‘अधिकार’ कोन विषयपर आधारित अछि?

क. सूचनाक अधिकार (आर.टी.आइ.)

ख. प्रेम

ग. युद्ध

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सूचनाक अधिकार (आर.टी.आइ.)

व्याख्या: ‘अधिकार’ नाटक सूचनाक अधिकार (आर.टी.आइ.) विषयपर आधारित अछि।

प्रश्न 290. ‘अधिकार’ नाटकमे ‘मंजूर’ कोन प्रकारक चरित्र छथि?

क. वास्तविक चरित्र, इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितता आर.टी.आइ.सँ देखारनिहार

ख. काल्पनिक खलनायक

ग. विदेशी पात्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वास्तविक चरित्र, इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितता आर.टी.आइ.सँ देखारनिहार

व्याख्या: मंजूर एकटा असली चरित्र छथि जे इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितता आर.टी.आइ.सँ देखार करैत छथि आ रिक्शासँ झंझारपुरसँ दिल्ली जाइत छथि।

प्रश्न 291. ‘अधिकार’ नाटकक एक संस्करण किएक डिलीट कएल गेल मुदा बचि गेल?

क. कएक टा बैकप विभिन्न संगणकपर उपलब्ध छल

ख. कोनो कारण नहि

ग. ओ नाटक कहियो डिलीट नहि भेल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कएक टा बैकप विभिन्न संगणकपर उपलब्ध छल

व्याख्या: ‘अधिकार’ नाटक डिलीट कएल गेल मुदा बचि गेल किएक तँ एकर कएक टा बैकप कतेक संगणकपर उपलब्ध छल।

प्रश्न 292. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक जन्म कहिया भेल?

क. १९४२

ख. १९५२

ग. १९३२

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९४२

व्याख्या: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक जन्म सन् १९४२ ई.मे भेल।

प्रश्न 293. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक मौलिक मैथिली कृति ‘मैथिली नाटक ओ रंगमंच’ कोन प्रकाशनसँ आएल?

क. मैथिली अकादमी, पटना (१९७८)

ख. श्रुति प्रकाशन

ग. ऑक्सफोर्ड

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिली अकादमी, पटना (१९७८)

व्याख्या: ‘मैथिली नाटक ओ रंगमंच’ मैथिली अकादमी, पटनासँ सन् १९७८ मे प्रकाशित भेल।

प्रश्न 294. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक हिन्दी कृति ‘विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन’ कतेक खण्डमे अछि?

क. दू खण्ड

ख. एक खण्ड

ग. तीन खण्ड

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दू खण्ड

व्याख्या: ‘विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन’ दू खण्डमे (प्रथम आ द्वितीय) बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटनासँ प्रकाशित भेल।

प्रश्न 295. डा. व्रजकिशोर वर्मा ‘मणिपद्म’ क जीवन-काल की छल?

क. १९१८-१९८६

ख. १९२०-१९९०

ग. १९१०-१९८०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९१८-१९८६

व्याख्या: डा. व्रजकिशोर वर्मा ‘मणिपद्म’ क जीवन-काल १९१८ सँ १९८६ धरि रहल।

प्रश्न 296. डा. जयकांत मिश्रक अंग्रेजी इतिहास-ग्रन्थक नाम की?

क. A History Of Maithili Literature

ख. Maithili Drama

ग. कोनो नहि

घ. Tirhuta Script

उत्तर: क. A History Of Maithili Literature

व्याख्या: डा. जयकांत मिश्र (१९२२-२००९) क ग्रन्थ ‘A History Of Maithili Literature’ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ १९७६ मे प्रकाशित भेल।

खण्ड २७ : विदेह-सदेह ३५ — आत्मकथा-समीक्षा आ सन्दीप कुमार साफी

प्रश्न 297. आशीष अनचिन्हारक आलेखक शीर्षक की?

क. बिजनेसमे अप्पन नाम करितौं

ख. सहस्रबाढ़नि

ग. भाग रौ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बिजनेसमे अप्पन नाम करितौं

व्याख्या: आशीष अनचिन्हारक आलेखक शीर्षक ‘बिजनेसमे अप्पन नाम करितौं’ थिक।

प्रश्न 298. आशीष अनचिन्हार अनुसार मैथिली आत्मकथाक प्रति केहन अरुचि उचित अछि?

क. प्रत्येक आत्मकथा सत्य हरिश्चंद्रक जेठ बालक सन लागब

ख. कोनो अरुचि नहि उचित

ग. पूर्ण समर्थन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. प्रत्येक आत्मकथा सत्य हरिश्चंद्रक जेठ बालक सन लागब

व्याख्या: आशीष अनचिन्हार लिखैत छथि जे मैथिली आत्मकथाक नामपर जे अबैत अछि ताहिसँ अरुचि भेनाइ आवश्यक अछि, किएक तँ प्रत्येक आत्मकथा एहन लागत जेना लेखक सत्य हरिश्चंद्रक जेठ बालक होथि।

प्रश्न 299. ‘कतेक डारिपर’ आत्मकथाक विषय की?

क. लालू राजमे एक ब्राह्मण अधिकारीक अनुभव (१९९१-२०००)

ख. प्रेम-कथा

ग. नाटक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लालू राजमे एक ब्राह्मण अधिकारीक अनुभव (१९९१-२०००)

व्याख्या: ‘कतेक डारिपर’ मे १९९१ सँ २०००धरि एकटा ब्राम्हण अधिकारीकेँ लालू राजमे की-की भोगए पड़लै, तकर वर्णन अछि।

प्रश्न 300. ‘बैशाखमे दलानपर’ कतेक खण्डमे विभक्त अछि?

क. पाँच

ख. दू

ग. तीन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पाँच

व्याख्या: संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’ कुल पाँच खंडमे बाँटल अछि — आत्मकथा, कविता, विहनि कथा, लघुकथा आदि।

प्रश्न 301. संदीप कुमार साफी कोन पीढ़ीक मैथिली लेखक छथि?

क. युवा लेखक

ख. वृद्ध लेखक

ग. विदेशी लेखक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. युवा लेखक

व्याख्या: संदीप कुमार साफी मैथिलीक युवा लेखक छथि, जे विभिन्न आयामक संग मैथिलीमे आएल छथि।

प्रश्न 302. समीक्षक अनुसार संदीप जीक कविताक बिम्बक विशेषता की?

क. मूल, परंपरासँ आयातित नहि

ख. केवल पुरान बिम्ब

ग. विदेशी बिम्ब

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मूल, परंपरासँ आयातित नहि

व्याख्या: समीक्षक अनुसार संदीप जीक कविताक बिम्ब कोनो परंपरासँ आयातित नहि, बल्कि मूल आ कहबी बनेबाक क्षमता देखबैत अछि।

प्रश्न 303. समीक्षामे ‘स्त्री विमर्श’क प्रति आलोचनात्मक टिप्पणी की अछि?

क. कतेक पुरुष फैशनक तहत स्वयंकेँ स्त्री विमर्शकार मानैत छथि

ख. सभ निष्पक्ष छथि

ग. कोनो टिप्पणी नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कतेक पुरुष फैशनक तहत स्वयंकेँ स्त्री विमर्शकार मानैत छथि

व्याख्या: समीक्षामे टिप्पणी अछि जे मैथिलीमे आन भाषा जकाँ स्त्री विमर्श पसरल अछि, मुदा तथाकथित किछु पुरुष वर्ग सेहो फैशनक तहत अपनाकेँ स्त्री विमर्शकार मानैत छथि।

प्रश्न 304. ‘विलुप्त भऽ रहल अछि इनार’ पाँतिमे इनार की प्रतीक थिक?

क. आधुनिक पानि-संकट आ बदलैत परिवेशक प्रतीक

ख. केवल कृषि

ग. केवल जल-स्रोत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आधुनिक पानि-संकट आ बदलैत परिवेशक प्रतीक

व्याख्या: समीक्षक अनुसार ‘इनार’ एतय प्रतीक मात्र अछि, जे आधुनिक पानि-संकट (२० टका लीटर पानि) आ बदलैत परिवेशक संकेत दैत अछि।

खण्ड २८ : विदेह-सदेह ३६ — विद्यापतिक दू पहचानक सिद्धान्त

प्रश्न 305. गजेन्द्र ठाकुरक आलेखक शीर्षक की?

क. विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण

ख. भाग रौ

ग. संकर्षण

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुरक आलेखक शीर्षक ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’ थिक।

प्रश्न 306. गजेन्द्र ठाकुर अनुसार ‘विद्यापति ठक्कुरः’ (संस्कृत-अवहट्ठ लेखक) क जीवन-काल की छल?

क. १३५०-१४३५

ख. १२७५-१३५०

ग. १४००-१५००

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १३५०-१४३५

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर अनुसार विद्यापति ठक्कुर: (संस्कृत-अवहट्ठ लेखक, राजा शिवसिंहक दरबारी) क जीवन-काल १३५० सँ १४३५ धरि छल।

प्रश्न 307. गजेन्द्र ठाकुरक थीसिस अनुसार ‘समानान्तर परम्पराक विद्यापति’ (मैथिली पदावलीक आदि कवि) के छथि?

क. कवीश्वर ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वक, सम्भवतः बिस्फी गामक एक भिन्न विद्यापति

ख. विद्यापति ठक्कुरःसँ पूर्णतः समान

ग. कोनो नहि

घ. आधुनिक कवि

उत्तर: क. कवीश्वर ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वक, सम्भवतः बिस्फी गामक एक भिन्न विद्यापति

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुरक थीसिस अनुसार समानान्तर परम्पराक विद्यापति (मैथिली आदि कवि) कवीश्वर ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वक छथि, आ संस्कृत-अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न मानल गेलाह।

प्रश्न 308. एहि थीसिस अनुसार ज्योतिरीश्वर (लगभग १२७५-१३५०) क ग्रन्थमे केकर चर्चा अछि?

क. मैथिली आदि कवि (समानान्तर परम्पराक विद्यापति)क

ख. विद्यापति ठक्कुरःक

ग. कोनो नहि

घ. गंगेश उपाध्यायक

उत्तर: क. मैथिली आदि कवि (समानान्तर परम्पराक विद्यापति)क

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर अनुसार ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे मैथिली आदि कवि (समानान्तर परम्पराक विद्यापति)क चर्चा अछि, जे ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वक मानल जाइत छथि।

प्रश्न 309. समानान्तर परम्पराक विद्यापतिक चित्र के बनेलनि, ऐ खण्ड अनुसार?

क. श्री पनकलाल मण्डल (विदेह सम्मानसँ सम्मानित)

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. प्रीति ठाकुर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. श्री पनकलाल मण्डल (विदेह सम्मानसँ सम्मानित)

व्याख्या: समानान्तर परम्पराक विद्यापतिक चित्र श्री पनकलाल मण्डल (गाम छजना, पिता स्व. सुन्दर मण्डल) बनेलनि, जे चित्रकला लेल विदेह सम्मानसँ सम्मानित छथि।

प्रश्न 310. ‘विदापत-नाच’ मे कोन कविक पदावलीक नृत्य-अभिनय होइत अछि, ऐ थीसिस अनुसार?

क. समानान्तर परम्पराक विद्यापति (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वक)

ख. केवल विद्यापति ठक्कुरः

ग. आधुनिक कवि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. समानान्तर परम्पराक विद्यापति (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वक)

व्याख्या: एहि थीसिस अनुसार विदापत-नाचमे समानान्तर परम्पराक विद्यापति (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) क पदावलीक नृत्य-अभिनय होइत अछि।

प्रश्न 311. ‘पुरुष परीक्षा’ ग्रन्थक रचयिता गजेन्द्र ठाकुरक थीसिस अनुसार के छथि?

क. विद्यापति ठक्कुरः

ख. समानान्तर परम्पराक विद्यापति

ग. ज्योतिरीश्वर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. विद्यापति ठक्कुरः

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुरक थीसिस अनुसार पुरुष परीक्षा (संगहि कीर्तिलता, कीर्तिपताका, गोरक्षविजय, लिखनावली) विद्यापति ठक्कुरःक रचना थिक।

प्रश्न 312. एहि आलेखक उद्देश्य ‘कुप्रचारक निराकरण’ किएक कहल गेल?

क. विद्यापति-सम्बन्धी भ्रामक धारणाक खण्डन करबाक प्रयास

ख. केवल मनोरंजन

ग. निरर्थक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. विद्यापति-सम्बन्धी भ्रामक धारणाक खण्डन करबाक प्रयास

व्याख्या: आलेखक शीर्षक ‘किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’ स्पष्ट करैत अछि जे ई आलेख विद्यापति-सम्बन्धी भ्रामक/प्रचलित धारणाक खण्डन आ स्पष्टीकरणक प्रयास थिक।

प्रश्न 313. एहि थीसिसकेँ कोना देखल जाएब उचित अछि?

क. गजेन्द्र ठाकुर द्वारा प्रस्तुत एक विद्वत्तापूर्ण मुदा विवादित/वैकल्पिक ऐतिहासिक तर्क

ख. अंतिम-निर्णायक ऐतिहासिक सत्य

ग. निरर्थक कल्पना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुर द्वारा प्रस्तुत एक विद्वत्तापूर्ण मुदा विवादित/वैकल्पिक ऐतिहासिक तर्क

व्याख्या: एहि थीसिसकेँ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा प्रस्तुत एक विद्वत्तापूर्ण, मुदा विद्वत्-समाजमे वैकल्पिक आ चर्चा-योग्य ऐतिहासिक तर्कक रूपमे देखब उचित अछि, ने कि सर्वसम्मत अंतिम सत्यक रूपमे।

खण्ड २९ : विदेह-सदेह ३२ — माटिक बासन आ भालचन्द्र झा

प्रश्न 314. 'माटिक बासन' कथाक मुख्य पात्र के छथि?

क. केदार प्रसाद (कुम्हार) आ हुनकर बेटा बिभू

ख. विद्यापति

ग. गोनू झा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. केदार प्रसाद (कुम्हार) आ हुनकर बेटा बिभू

व्याख्या: 'माटिक बासन' कथाक मुख्य पात्र केदार प्रसाद (कुशल कुम्हार) आ हुनकर बेटा बिभू छथि।

प्रश्न 315. केदार प्रसाद मूलतः कोन काज करैत छलाह?

क. माटिक बासन (घैल, ढाकन, मटकुरी) बनाएब

ख. लोहाक काज

ग. काठक काज

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. माटिक बासन (घैल, ढाकन, मटकुरी) बनाएब

व्याख्या: केदार प्रसाद माटिक बासन — घैल, ढाकन, मटकुरी — बना अपन जीवन यापन करैत छलाह।

प्रश्न 316. बिभू दसम वर्गक बाद कोन क्षेत्रमे अपनाकेँ समर्पित केलक?

क. मूर्तिकला

ख. संगीत

ग. नाटक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मूर्तिकला

व्याख्या: बिभू दसम वर्गक बाद इस्कूली पढ़ाइ छोड़ि पूर्णतः मूर्तिकलामे अपनाकेँ समर्पित कऽ लेलक।

प्रश्न 317. बिभूक बनाएल मूर्तिक चर्चा कतय धरि पहुँचल?

क. राजसरकारक गृहमंत्रालय धरि

ख. केवल गाम

ग. विदेश

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. राजसरकारक गृहमंत्रालय धरि

व्याख्या: बिभूक बनाएल मूर्तिक चर्चा राजक सीमासँ निकलि बाहर दस्तक देलक, आ राजसरकारक गृहमंत्रालयसँ पत्र आएल।

प्रश्न 318. कथाक अन्तमे केदार प्रसाद बिभूकेँ की सिखबैत छथि?

क. सम्पूर्णताक आभास भेने आगाँ बढ़बाक प्रेरणा रुकि जाइत अछि (आत्म-संतोषक बादक खतरा)

ख. केवल प्रशंसा

ग. कोनो शिक्षा नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सम्पूर्णताक आभास भेने आगाँ बढ़बाक प्रेरणा रुकि जाइत अछि (आत्म-संतोषक बादक खतरा)

व्याख्या: केदार प्रसाद बिभूकेँ सिखबैत छथि जे जखन व्यक्तिकेँ अपन पूर्णताक आभास भऽ जाइत अछि, तखन आगाँ बढ़बाक प्रेरणा रुकि सकैत अछि — तेँ ओ हमेशा किछु कमी देखाइत रहथिन्ह।

प्रश्न 319. भालचन्द्र झा कोन कलामे मुम्बईसँ डिप्लोमा केलनि?
क. थिएटर कला
ख. चित्रकला
ग. संगीत
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. थिएटर कला
व्याख्या: भालचन्द्र झा मुम्बईसँ थिएटर कलामे डिप्लोमा केलनि।

प्रश्न 320. भालचन्द्र झा मैथिलीक अतिरिक्त कोन-कोन भाषामे निष्णात छथि?
क. हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजराती
ख. केवल अंग्रेजी
ग. केवल हिन्दी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजराती
व्याख्या: भालचन्द्र झा मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजरातीमे निष्णात छथि।

प्रश्न 321. भालचन्द्र झा कहियासँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे सक्रिय छथि?
क. १९७४ ई.सँ
ख. १९५० ई.सँ
ग. २००० ई.सँ
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. १९७४ ई.सँ
व्याख्या: भालचन्द्र झा सन् १९७४ ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे सक्रिय छथि।

प्रश्न 322. भालचन्द्र झा एखन कोन रूपमे कार्यरत छथि?
क. फ्री-लान्स लेखक-निदेशक
ख. केवल अभिनेता
ग. सेवानिवृत्त
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. फ्री-लान्स लेखक-निदेशक
व्याख्या: भालचन्द्र झा एखन फ्री-लान्स लेखक-निदेशकक रूपमे कार्यरत छथि।

प्रश्न 323. विदेह-सदेह ३२ मे ‘चूल्हि’ कथामे चूल्हि आ स्त्रीक प्रारब्धक तुलना कोना कएल गेल?
क. दुनू जरैत-जरैत जीबैत छथि (एके जकाँ)
ख. कोनो तुलना नहि
ग. विपरीत प्रारब्ध
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. दुनू जरैत-जरैत जीबैत छथि (एके जकाँ)
व्याख्या: ‘चूल्हि’ कथामे कहल गेल जे चूल्हि आ स्त्री दुनूक प्रारब्ध एके जकाँ होइत अछि — दुनू जरैत-जरैत जीबैत छथि।

खण्ड ३० : विदेह-सदेह ३७ — तेलुगु उपन्यास ‘सदा लेल मित्र’ (त्रि-भाषिक अनुवाद-शृंखला)

प्रश्न 324. ‘सदा लेल मित्र’ क मूल तेलुगु उपन्यासक नाम की?
क. जिगरी
ख. सदा लेल मित्र
ग. फ्रेण्ड्स फॉरेवर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. जिगरी
व्याख्या: ‘सदा लेल मित्र’ क मूल तेलुगु उपन्यासक नाम ‘जिगरी’ थिक।

प्रश्न 325. ‘जिगरी’ क तेलुगु लेखक के छथि?
क. पेद्दिंति अशोक कुमार
ख. गजेन्द्र ठाकुर
ग. पी. जयलक्ष्मी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. पेद्दिंति अशोक कुमार
व्याख्या: ‘जिगरी’ क तेलुगु लेखक पेद्दिंति अशोक कुमार छथि।

प्रश्न 326. ‘जिगरी’ क तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवादक नाम की?
क. फ्रेण्ड्स फॉरेवर
ख. सदा लेल मित्र
ग. कोनो नहि
घ. जिगरी-२
उत्तर: क. फ्रेण्ड्स फॉरेवर
व्याख्या: ‘जिगरी’ क तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद ‘फ्रेण्ड्स फॉरेवर’ नामसँ भेल।

प्रश्न 327. ‘फ्रेण्ड्स फॉरेवर’ क तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद के केलनि?
क. पी. जयलक्ष्मी
ख. गजेन्द्र ठाकुर
ग. पेद्दिंति अशोक कुमार
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. पी. जयलक्ष्मी
व्याख्या: पी. जयलक्ष्मी तेलुगु उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद ‘फ्रेण्ड्स फॉरेवर’ केलनि।

प्रश्न 328. ‘फ्रेण्ड्स फॉरेवर’ क अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद के केलनि?
क. गजेन्द्र ठाकुर
ख. पी. जयलक्ष्मी
ग. पेद्दिंति अशोक कुमार
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुर
व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर अंग्रेजीसँ मैथिलीमे ‘सदा लेल मित्र’ अनुवाद केलनि।

प्रश्न 329. पेद्दिंति अशोक कुमारक जन्म कतय भेल?
क. आंध्र प्रदेशक करीमनगर जिलाक भीमुनि मल्लारेड्डीपेटा गाम
ख. दिल्ली
ग. मिथिला
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. आंध्र प्रदेशक करीमनगर जिलाक भीमुनि मल्लारेड्डीपेटा गाम
व्याख्या: पेद्दिंति अशोक कुमारक जन्म आंध्र प्रदेशक करीमनगर जिलाक भीमुनि मल्लारेड्डीपेटा गाममे मल्लव्वा आ अंजय्या दम्पतिक घर भेल।

प्रश्न 330. ‘एदरि मंटालु’ उपन्यास कोन विषयपर आधारित पहिल तेलुगु उपन्यास मानल जाइत अछि?
क. खाड़ी देशमे श्रमिक पलायन
ख. कृषि
ग. शिक्षा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. खाड़ी देशमे श्रमिक पलायन
व्याख्या: ‘एदरि मंटालु’ खाड़ी देश सभमे श्रमिक पलायनपर लिखल गेल पहिल तेलुगु उपन्यास मानल जाइत अछि।

प्रश्न 331. पेद्दिंति अशोक कुमारकेँ कोन पुरस्कार भेटल, कहानी संग्रह 'मायी मुंठा' लेल?

क. आंध्र प्रदेश राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार (२०१०)

ख. साहित्य अकादेमी (दिल्ली)

ग. भारत रत्न

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आंध्र प्रदेश राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार (२०१०)

व्याख्या: 'मायी मुंठा' कहानी संग्रह लेल पेद्दिंति अशोक कुमारकेँ सन् २०१० मे आंध्र प्रदेश राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल।

प्रश्न 332. पी. जयलक्ष्मी कतयक प्राध्यापिका छलीह?

क. निजाम कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

ख. दिल्ली विश्वविद्यालय

ग. JNU

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. निजाम कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

व्याख्या: पी. जयलक्ष्मी हैदराबादक उस्मानिया विश्वविद्यालयक निजाम कॉलेजसँ अंग्रेजी विभागक प्रमुख आ सहयोगी प्रोफेसरक रूपमे सेवानिवृत्त भेलीह।

प्रश्न 333. 'सदा लेल मित्र' उपन्यास के समर्पित अछि?

क. डॉ. नलिमेला भास्कर (बहुभाषी व्यक्तित्व)

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. प्रीति ठाकुर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. डॉ. नलिमेला भास्कर (बहुभाषी व्यक्तित्व)

व्याख्या: 'सदा लेल मित्र' बहुभाषी व्यक्तित्व डॉ. नलिमेला भास्करकेँ समर्पित अछि।

प्रश्न 334. उपन्यासक विषय-वस्तु कोन समुदायक संघर्षपर आधारित अछि?

क. भालु-नचबा बला (कलन्दर) समुदाय

ख. किसान समुदाय

ग. मछुआरा समुदाय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भालु-नचबा बला (कलन्दर) समुदाय

व्याख्या: उपन्यासक विषय-वस्तु भालु-नचबा बला समुदाय (कलन्दर) क आजीविका-संघर्ष आ ओकर मिझाइत जातीय अस्मितापर आधारित अछि।

प्रश्न 335. उपन्यासमे चित्रित समुदायक आजीविका कोन सरकारी कानूनसँ खतरामे पड़ल?

क. जीविका लेल पशु-प्रशिक्षण-प्रदर्शनक विरुद्ध कानून

ख. कृषि-कानून

ग. श्रम-कानून

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जीविका लेल पशु-प्रशिक्षण-प्रदर्शनक विरुद्ध कानून

व्याख्या: सरकार जीविका लेल पशु सभकेँ प्रशिक्षित आ प्रदर्शित करबाक विरुद्ध कानून पारित कऽ देलक, जे एहि समुदायक परिवारकेँ विखंडित करबाक धमकी देलक।

प्रश्न 336. अनुवादकक निवेदन अनुसार 'जिगरी' उपन्यास कोना अनुवादककेँ हाथ लागल?

क. एकटा साझा मित्रक माध्यमसँ वेबजीनसँ डाउनलोड कएल प्रति

ख. प्रत्यक्ष किताबसँ

ग. विदेहक माँगपर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. एकटा साझा मित्रक माध्यमसँ वेबजीनसँ डाउनलोड कएल प्रति

व्याख्या: अनुवादकक निवेदन अनुसार जून २०११क लगपास ई उपन्यास एकटा साझा मित्रक माध्यमसँ एक वेबजीनसँ डाउनलोड कएल प्रतिक रूपमे हाथ लागल।

प्रश्न 337. अनुवादक अनुसार अनुवादक मुख्य चुनौती की छल?
क. आदिवासी अनुभवकेँ अन्य भाषामे अनूदित करब
ख. भाषा सीखब
ग. समय-अभाव
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. आदिवासी अनुभवकेँ अन्य भाषामे अनूदित करब
व्याख्या: अनुवादकक मुख्य चुनौती छल एकटा आदिवासी अनुभवकेँ, जे ग्रामीण कृषि-प्रधान परिवेशसँ बहराएल, सही ढंगें अनुवादित करब।

प्रश्न 338. विदेह-सदेह ३७ सन त्रि-भाषिक अनुवाद-शृंखला (तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली) की देखबैत अछि?
क. विदेहक अनुवाद-कार्यक गहराइ आ बहु-स्तरीय भाषिक सेतु-निर्माण
ख. सीमित प्रयास
ग. निरर्थकता
घ. रोक
उत्तर: क. विदेहक अनुवाद-कार्यक गहराइ आ बहु-स्तरीय भाषिक सेतु-निर्माण
व्याख्या: ई त्रि-भाषिक अनुवाद-शृंखला विदेहक अनुवाद-कार्यक गहराइ आ अनेक भाषाक बीच बहु-स्तरीय सेतु-निर्माणक प्रतिबद्धता देखबैत अछि।

खण्ड ३१ : विदेह-सदेह १२ — साहित्यिक सूचना आ मणिपद्म

प्रश्न 339. मणिपद्मकेँ मैथिली साहित्यमे कोन विशेष श्रेय देल जाइत अछि, विदेह-सदेह १२ अनुसार?
क. मैथिली साहित्यक पहिल जासूसी उपन्यासकार
ख. पहिल नाटककार
ग. पहिल कवि
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मैथिली साहित्यक पहिल जासूसी उपन्यासकार
व्याख्या: विदेह-सदेह १२ मे अरविन्द श्रीवास्तवक आलेख अनुसार मणिपद्म मैथिली साहित्यक पहिल जासूसी (डिटेक्टिव) उपन्यासकार रहथि।

प्रश्न 340. ‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकार्पणपर आलेख के लिखलनि?
क. अरविन्द श्रीवास्तव
ख. गजेन्द्र ठाकुर
ग. विभा रानी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. अरविन्द श्रीवास्तव
व्याख्या: ‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकार्पणपर आलेख अरविन्द श्रीवास्तव लिखलनि।

प्रश्न 341. डॉ. राजेन्द्र विमलक आलेखक शीर्षक की?
क. नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी
ख. भाग रौ
ग. संकर्षण
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी
व्याख्या: डॉ. राजेन्द्र विमलक आलेखक शीर्षक ‘नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी’ थिक — युवा कथाकार सुजीत कुमार झाक कथापर।

प्रश्न 342. राजेश्वर नेपालीक कतेक कृति एकहि बेर विमोचित भेल, जितेन्द्र झाक आलेख अनुसार?
क. सात (७) टा
ख. दस टा
ग. तीन टा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. सात (७) टा
व्याख्या: जितेन्द्र झाक आलेख अनुसार पत्रकार-साहित्यकार राजेश्वर नेपालीक सात टा कृति एकहि बेर विमोचित भेल।

प्रश्न 343. राजेश्वर नेपालीक कृति-विमोचन कोन उच्च-पदाधिकारी द्वारा भेल?
क. नेपालक राष्ट्रपति रामवरण यादव
ख. भारतक प्रधानमंत्री
ग. केवल साहित्यकार
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. नेपालक राष्ट्रपति रामवरण यादव
व्याख्या: राजेश्वर नेपालीक कृति-विमोचन नेपालक राष्ट्रपति रामवरण यादव द्वारा राष्ट्रपति भवनमे भेल।

प्रश्न 344. समन्वय २०१२ भारतीय भाषा महोत्सवक उत्सव-निदेशक के छथि?
क. राज लिबरहान
ख. सत्यानन्द निरूपम
ग. गिरिराज कराडू
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. राज लिबरहान
व्याख्या: समन्वय २०१२ क उत्सव-निदेशक राज लिबरहान छथि।

प्रश्न 345. समन्वय २०१२ क समन्वयक के छथि?
क. सत्यानन्द निरूपम आ गिरिराज कराडू
ख. राज लिबरहान
ग. केवल आलोक राय
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. सत्यानन्द निरूपम आ गिरिराज कराडू
व्याख्या: समन्वय २०१२ क समन्वयक सत्यानन्द निरूपम आ गिरिराज कराडू छथि।

प्रश्न 346. सुभाष चन्द्र यादवक आलेखक शीर्षक की?
क. बनैत-बिगड़ैत
ख. भाग रौ
ग. संकर्षण
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. बनैत-बिगड़ैत
व्याख्या: सुभाष चन्द्र यादवक आलेखक शीर्षक ‘बनैत-बिगड़ैत’ थिक।

खण्ड ३२ : विदेह-सदेह २९ — रवि भूषण पाठक आ डायरी-लेखन

प्रश्न 347. विदेह-सदेह २९ मे रवि भूषण पाठकक जन्म-साल की?
क. १९७३
ख. १९६३
ग. १९८३
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. १९७३
व्याख्या: रवि भूषण पाठकक जन्म सन् १९७३ ई.मे भेल।

प्रश्न 348. रवि भूषण पाठकक गाम कतय अछि?
क. समस्तीपुरक करियन आ नानीगाम भिड़हा
ख. दरभंगा
ग. मधुबनी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. समस्तीपुरक करियन आ नानीगाम भिड़हा
व्याख्या: रवि भूषण पाठकक गाम समस्तीपुरक करियन आ नानीगाम भिड़हा अछि।

प्रश्न 349. रवि भूषण पाठकक शिक्षा कतय-कतय भेल?

क. करियन, वैद्यनाथपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, पटना आ दिल्ली

ख. केवल दिल्ली

ग. केवल विदेश

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. करियन, वैद्यनाथपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, पटना आ दिल्ली

व्याख्या: रवि भूषण पाठकक शिक्षा करियन आ वैद्यनाथपुर गाममे आगाँ दरभंगा, समस्तीपुर, पटना आ दिल्लीमे भेल।

प्रश्न 350. रवि भूषण पाठक कोन सरकारी विभागसँ जुड़ल छथि?

क. उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभाग

ख. रेलवे

ग. डाक विभाग

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभाग

व्याख्या: रवि भूषण पाठक उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभाग आ चक... (सम्बद्ध सरकारी सेवा) सँ जुड़ल छथि।

प्रश्न 351. विदेह-सदेह २९ मे ‘औझका डायरी’ शीर्षक रचनामे कोन कविक प्रशंसा अछि?

क. जायसी (मलिक मुहम्मद जायसी)

ख. विद्यापति

ग. ज्योतिरीश्वर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जायसी (मलिक मुहम्मद जायसी)

व्याख्या: ‘औझका डायरी’ मे जायसी (मलिक मुहम्मद जायसी) क प्रशंसा अछि, जे मुसलमान होइतो हिन्दू स्त्रीक जीवन-प्रेम-विरहकेँ नीक जकाँ बुझलनि।

प्रश्न 352. डायरीमे मैथिलीक आलोचककेँ केहन होएबाक चाही कहल गेल?

क. केवल फार्म नहि, कंटेंट सेहो बुझनिहार, समय-सजग आ रसबोध सहित

ख. केवल प्रशंसक

ग. केवल कठोर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. केवल फार्म नहि, कंटेंट सेहो बुझनिहार, समय-सजग आ रसबोध सहित

व्याख्या: डायरीमे कहल गेल जे मैथिलीकेँ एहन आलोचक चाही जेकरामे बहुज्ञता, रसबोध, समय-सजगता आ फॉर्म-कंटेंट दुनूक बुझनाइ होए।

प्रश्न 353. ‘ओकरा गाब’ दियौ’ सन पाँतिमे लेखकक चिन्ता की अछि?

क. मैथिली/मिथिलापर अतिरिक्त राष्ट्रीय-राजनीतिक बोझ नहि लादब

ख. केवल हास्य

ग. निरर्थक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिली/मिथिलापर अतिरिक्त राष्ट्रीय-राजनीतिक बोझ नहि लादब

व्याख्या: एहि पाँतिमे लेखकक चिन्ता अछि जे मिथिला/मैथिलीपर अतिरिक्त उपराष्ट्रीयताक ठप्पा वा अनुचित राजनीतिक अपेक्षा नहि लादल जाए, बल्कि एकरा सहज विकासक अवसर देल जाए।

खण्ड ३३ : विदेह-सदेह २३ — एडिटर्स चोइस (विस्तार: अकाल आ दलित आत्मकथा)

प्रश्न 354. एडिटर्स चोइस सीरीज-६ मे जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा ‘बिसाँढ़’ कोन ऐतिहासिक घटनासँ जुड़ल अछि?

क. १९४२-४३ क बंगाल अकाल

ख. १९४७ क विभाजन

ग. २००८ क बाढ़ि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९४२-४३ क बंगाल अकाल

व्याख्या: ‘बिसाँढ़’ लघुकथा १९४२-४३ क बंगाल अकालसँ जुड़ल अछि, जाहिमे १५ लाख लोक मुइला।

प्रश्न 355. बंगाल अकाल १९४२-४३ पर अमर्त्य सेनक कोन कथन उल्लिखित अछि?

क. हुनकर कोनो सर-सम्बन्धी एहि अकालमे नहि मरलन्हि

ख. ओ स्वयं अकालमे मरलाह

ग. कोनो कथन नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हुनकर कोनो सर-सम्बन्धी एहि अकालमे नहि मरलन्हि

व्याख्या: उल्लेख अछि जे अमर्त्य सेन लिखैत छथि जे हुनकर कोनो सर-सम्बन्धी एहि भीषण अकालमे नहि मरलन्हि, जे अकालक सामाजिक-आर्थिक असमानताकेँ देखबैत अछि।

प्रश्न 356. एडिटर्स चोइस सीरीज-७ मे कोन कृतिकेँ ‘मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा’ कहल गेल?

क. सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथा

ख. कतेक डारिपर

ग. बैशाखमे दलानपर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथा

व्याख्या: सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथाकेँ ‘मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा’ कहल गेल अछि।

प्रश्न 357. एडिटर्स चोइस सीरीज-८ कोन विषयपर अछि?

क. नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल लोककथा (विदेह पेटारसँ)

ख. नाटक

ग. समालोचना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल लोककथा (विदेह पेटारसँ)

व्याख्या: एडिटर्स चोइस सीरीज-८ ‘नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल किछु लोककथा’ विदेह पेटारसँ अछि।

प्रश्न 358. एडिटर्स चोइस सीरीज-९ कोन विषयपर अछि?

क. मैथिली गजलपर परिचर्चा (विदेह पेटारसँ)

ख. नाटक

ग. दलित आत्मकथा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिली गजलपर परिचर्चा (विदेह पेटारसँ)

व्याख्या: एडिटर्स चोइस सीरीज-९ ‘मैथिली गजलपर परिचर्चा’ विदेह पेटारसँ अछि।

प्रश्न 359. विदेह-सदेह २३ मे ‘मिथिलाक इतिहास भाग-२’ मे पलायनक चर्चामे कोन साल कोन महत्त्वपूर्ण संरचना बनलाक उल्लेख अछि?

क. १९८१ ई. महात्मा गाँधी सेतु (पटनापर)

ख. २०००

ग. २०१०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९८१ ई. महात्मा गाँधी सेतु (पटनापर)

व्याख्या: १९८१ ई.मे पटनापर बनल महात्मा गाँधी सेतु आ पटना-दरभंगा डीलक्स कोचक पाँती मिथिलावासीक पलायन बढ़ेबामे योगदान केलक।

प्रश्न 360. ‘पलायन’ क्षेत्रक भौगोलिक स्थितिक संग कोन देशसँ जुड़ल देखाओल गेल?

क. भारत-नेपाल सीमावर्ती क्षेत्र (मोरंग आदि)

ख. केवल भारत

ग. केवल नेपाल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भारत-नेपाल सीमावर्ती क्षेत्र (मोरंग आदि)

व्याख्या: आलेख अनुसार भौगोलिक स्थिति (जेना मोरंग लग रहब) क कारणे पलायनक स्वरूप भारत-नेपाल दुनू दिस प्रभावित होइत अछि।

प्रश्न 361. ‘बिसाँढ़’ सन रचना विदेहक आन्दोलनक कोन पक्षकेँ देखबैत अछि?

क. ऐतिहासिक त्रासदीक साहित्यिक स्मरण आ सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण

ख. केवल मनोरंजन

ग. निरर्थकता

घ. रोक

उत्तर: ख. केवल मनोरंजन

व्याख्या: ‘बिसाँढ़’ देखबैत अछि जे विदेह-आन्दोलन ऐतिहासिक त्रासदी (बंगाल अकाल) क साहित्यिक स्मरण आ सामाजिक-आर्थिक असमानताक विश्लेषण सेहो करैत अछि।

प्रश्न 362. सन्दीप कुमार साफीक दलित आत्मकथाक विशेषता एडिटर्स चोइस अनुसार की?

क. लघु आकारक अछैत हृदय-स्पर्शी, समानान्तर मैथिली साहित्यक प्रतिनिधि

ख. दीर्घ आकारक

ग. निरर्थक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लघु आकारक अछैत हृदय-स्पर्शी, समानान्तर मैथिली साहित्यक प्रतिनिधि

व्याख्या: एडिटर्स चोइस अनुसार ई आत्मकथा लघु आकारक अछैत पाठककेँ हिलोड़ि दैत अछि आ समानान्तर मैथिली साहित्यक एक प्रतिनिधि कृति थिक।

खण्ड ३४ : विदेह-सदेह १६ — मचण्ड नाटकक कथावस्तु (विस्तार)

प्रश्न 363. ‘मचण्ड’ नाटकक केन्द्रीय पात्र मुतालिफ कोन भाषा बजैत छथि?

क. तमिल

ख. हिन्दी

ग. मैथिली

घ. बंगाली

उत्तर: क. तमिल

व्याख्या: मुतालिफ तमिल भाषा बजैत छथि, जे नाटकक भाषिक-संकटक केन्द्रीय थीम बनैत अछि — कियो हुनकर भाषा नहि बुझैत छथि।

प्रश्न 364. नाटकमे मुतालिफक भाषाकेँ बुझाबए लेल कोन पात्र नियुक्त अछि?

क. भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका)

ख. केवल सिपाही

ग. ओकील

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका)

व्याख्या: नाटकमे एक विशेष पात्र ‘भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका)’ मुतालिफक इशारा-भाषाकेँ बजि कऽ अन्य पात्रकेँ बुझाबैत अछि।

प्रश्न 365. नाटकक आरम्भ कोन स्थानपर होइत अछि?

क. कोर्टक हाजत (जेल जाइत क्रममे)

ख. गाम

ग. विदेश

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कोर्टक हाजत (जेल जाइत क्रममे)

व्याख्या: नाटकक प्रथम अंक कोर्टक हाजतमे आरम्भ होइत अछि, जतय मुतालिफकेँ जेल लऽ जाओल जा रहल अछि।

प्रश्न 366. मुतालिफपर कोन प्रकारक अपराधक आरोप अछि, ओकीलक कथन अनुसार?

क. मादक पदार्थ-तस्करीसँ सम्बद्ध

ख. चोरी

ग. हत्या

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मादक पदार्थ-तस्करीसँ सम्बद्ध

व्याख्या: ओकीलक कथन अनुसार मुतालिफपर मादक पदार्थ-तस्करीसँ सम्बद्ध अपराधक आरोप अछि, यद्यपि खुफिया अधिकारी एकरा एकटा छोट कड़ी (शतरंजक प्यादा) मात्र मानैत छथि।

प्रश्न 367. नाटकमे ‘हबीबुल्ला’ कोन भूमिकाक पात्र छथि?

क. तस्करक सरदार

ख. खुफिया अधिकारी

ग. ओकील

घ. सिपाही

उत्तर: क. तस्करक सरदार

व्याख्या: हबीबुल्ला नाटकमे तस्करक सरदार (मुख्य अपराधी) क भूमिकाक पात्र छथि।

प्रश्न 368. मुतालिफकेँ कतय धरि लऽ जाएब प्रस्तावित अछि?

क. दिल्लीक तिहार जेल

ख. चेन्नैक जेल

ग. विदेश

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दिल्लीक तिहार जेल

व्याख्या: मुतालिफकेँ दिल्लीक तिहार जेलमे राखल जेबाक प्रस्ताव अछि, जतय तमिलनाडु पुलिसक एक टुकड़ी सेहो जाइ छथि।

प्रश्न 369. मुतालिफक बचाव लेल नाटकमे के सोझाँ अबैत छथि?

क. एकटा तमिल-भाषी ओकील

ख. केवल अनुवादक

ग. कोनो नहि

घ. खुफिया अधिकारी स्वयं

उत्तर: क. एकटा तमिल-भाषी ओकील

व्याख्या: एकटा तमिल-भाषी ओकील सोझाँ अबैत छथि, जे एहन भाषिक-संकटसँ ग्रसित तमिल भाषी सभक मुकदमा लड़ने छथि — मुदा ओ सरकारी ओकील होएबाक कारणे मुतालिफक पक्षमे खुलेआम नहि बाजि सकैत छथि।

प्रश्न 370. ‘लुल्हा’ आ ‘पीअर बच्चा’क प्रसंग नाटकमे कोन विषयक प्रतीक थिक?

क. समाजमे असमानता आ भाग्यक भेद

ख. केवल हास्य

ग. नाटकक मुख्य कथासँ असम्बद्ध प्रसंग

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. समाजमे असमानता आ भाग्यक भेद

व्याख्या: लुल्हा (पाँव-पैदल बाबाधाम जाइनिहार) आ पीअर बच्चा (हवागाड़ीसँ जाइनिहार) क प्रसंग समाजमे आर्थिक असमानता आ भाग्यक भेदक प्रतीकात्मक उप-कथा थिक।

प्रश्न 371. ‘मचण्ड’ नाटकक समग्र विषय की कहल जा सकैत अछि?

क. भाषिक अल्पसंख्यक, न्याय-व्यवस्था आ सामाजिक असमानताक अन्तर्संबंध

ख. केवल हास्य-नाटक

ग. ऐतिहासिक नाटक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भाषिक अल्पसंख्यक, न्याय-व्यवस्था आ सामाजिक असमानताक अन्तर्संबंध

व्याख्या: ‘मचण्ड’ नाटक भाषिक अल्पसंख्यकक संकट (मुतालिफक तमिल भाषा), न्याय-व्यवस्थाक जटिलता आ सामाजिक असमानता — तीनू विषयकेँ एक संग गूँथैत अछि।

खण्ड ३५ : विदेह-सदेह ७ — बलराम साहक पद्य (विस्तार)

प्रश्न 372. विदेह-सदेह ७ मे बलराम साहक जन्म-तिथि की?

क. २१.११.१९७३

ख. १.१.१९८०

ग. १५.८.१९६५

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. २१.११.१९७३

व्याख्या: बलराम साहक जन्म २१.११.१९७३ केँ भेल।

प्रश्न 373. बलराम साहक गाम कतय अछि?

क. नौआबाखर, मधुबनी

ख. दरभंगा

ग. समस्तीपुर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नौआबाखर, मधुबनी

व्याख्या: बलराम साहक गाम नौआबाखर, पत्रालय हटनी, भाया घोघरडीहा, जिला मधुबनी (बिहार) अछि।

प्रश्न 374. बलराम साह पेशासँ की छथि?

क. अधिवक्ता, जिला न्यायालय मधुबनी

ख. शिक्षक

ग. डॉक्टर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अधिवक्ता, जिला न्यायालय मधुबनी

व्याख्या: बलराम साह पेशासँ जिला न्यायालय, मधुबनीक अधिवक्ता छथि।

प्रश्न 375. बलराम साहक पद्यक शीर्षक की?

क. आकि नीन टूटि गेल

ख. गोबरक मूल्य

ग. पहरराति

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आकि नीन टूटि गेल

व्याख्या: बलराम साहक पद्यक शीर्षक ‘आकि नीन टूटि गेल’ थिक।

प्रश्न 376. ‘आकि नीन टूटि गेल’ कविताक संरचनात्मक विशेषता की?

क. स्वप्न-शृंखलाक रूपमे रचित, हर सुखद दृश्यक बाद नीन टूटब

ख. केवल गद्य

ग. निरर्थक

घ. कोनो नहि

उत्तर: ख. केवल गद्य

व्याख्या: कविता एक स्वप्न-शृंखलाक रूपमे रचित अछि, जाहिमे कवि बेर-बेर कोनो सुखद सामाजिक दृश्य (जेना बिना घूसक इन्दिरा आवास भेटब) देखैत छथि, मुदा हर बेर नीन टूटि जाइत छन्हि — एक विडम्बनात्मक शैली।

प्रश्न 377. कविताक एक सपनामे गामक झगड़ा कोना सुल्झैत अछि?

क. जाति-एकता आ पंचैतीक माध्यमसँ

ख. केवल पुलिससँ

ग. कोर्ट-केससँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जाति-एकता आ पंचैतीक माध्यमसँ

व्याख्या: कविताक एक सपनामे लाठी-फरसाक झगड़ाक बाद जाति-जातिक एकता आ पंचैती (हाकिम-दरोगाक संग) सभटा झगड़ा मेटा दैत अछि।

प्रश्न 378. कविताक एक अन्य सपनामे गामक बेटी की हासिल करैत छथि?

क. गरीबीक बीच बी.ए.क डिग्री

ख. केवल विवाह

ग. विदेश-यात्रा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गरीबीक बीच बी.ए.क डिग्री

व्याख्या: कविताक एक सपनामे गामक बेटी गरीबीसँ लड़ि कऽ बी.ए.क डिग्री प्राप्त करैत छथि।

प्रश्न 379. ‘आकि नीन टूटि गेल’ कविताक मूल भाव की?

क. आदर्श समाजक स्वप्न आ यथार्थक बीच विडम्बना

ख. केवल हास्य

ग. प्रेम-कविता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आदर्श समाजक स्वप्न आ यथार्थक बीच विडम्बना

व्याख्या: कविताक मूल भाव अछि — कवि एक आदर्श, सुखी समाजक स्वप्न देखैत छथि (न्याय, समता, शिक्षा), मुदा हर बेर नीन टूटि कऽ यथार्थमे घुरि अबैत छथि, जे एक गहिर सामाजिक विडम्बना देखबैत अछि।

खण्ड ३६ : विदेह-सदेह ११ — विदेह गोष्ठी आ कवि सम्मेलन (विस्तार)

प्रश्न 380. विदेह-सदेह ११ अनुसार एकटा स्थानीय कवि सम्मेलनक मुख्य अतिथि के छलाह?

क. जगदीश प्रसाद मण्डल

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. विभा रानी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डल

व्याख्या: विदेह-सदेह ११ अनुसार एकटा स्थानीय कवि सम्मेलनक मुख्य अतिथि जगदीश प्रसाद मण्डल छलाह।

प्रश्न 381. एहि कवि सम्मेलनक विशेषता की रहल, श्रोता लोकनिक कथन अनुसार?

क. ऐ इलाकामे एहन कार्यक्रम पहिल बेर आयोजित भेल

ख. सामान्य आयोजन छल

ग. विदेशी आयोजन छल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ऐ इलाकामे एहन कार्यक्रम पहिल बेर आयोजित भेल

व्याख्या: श्रोता लोकनिक कहब छलन्हि जे ऐ इलाकामे एहन तरहक कार्यक्रम पहिल बेर आयोजित भेल।

प्रश्न 382. एहि कार्यक्रमक संचालन-भाषाक विषयमे की विशेष उल्लेख अछि?

क. पहिल बेर कार्यक्रम-संचालन मैथिलीमे भेल (पहिने हिन्दीमे होइत छल)

ख. केवल अंग्रेजी

ग. केवल संस्कृत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पहिल बेर कार्यक्रम-संचालन मैथिलीमे भेल (पहिने हिन्दीमे होइत छल)

व्याख्या: लोक कहलनि जे आइ धरि ऐ इलाकामे कार्यक्रमक संचालन हिन्दीमे होइत छल, ई पहिल बेर भेल जे संचालन मैथिलीमे भेल।

प्रश्न 383. ‘विदेह गोष्ठी’ कोन मासमे नियमित रूपें आयोजित होइत रहल अछि?

क. दिसम्बर

ख. जनवरी

ग. जून

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दिसम्बर

व्याख्या: विदेह-सदेह ११ अनुसार ‘विदेह गोष्ठी’ दिसम्बर मासमे (२००८, २००९, २०१० आदि वर्ष सभमे, दू-दू दिनक जोड़ी तिथिमे) नियमित रूपें आयोजित होइत रहल अछि।

प्रश्न 384. विदेह गोष्ठी कतेक वर्ष धरि निरन्तर आयोजित होएबाक उल्लेख विदेह-सदेह ११ मे अछि?

क. कम-सँ-कम तीन वर्ष (२००८, २००९, २०१०)

ख. केवल एक वर्ष

ग. दस वर्ष

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कम-सँ-कम तीन वर्ष (२००८, २००९, २०१०)

व्याख्या: विदेह-सदेह ११ मे २००८, २००९ आ २०१० — एहि तीन वर्षक विदेह गोष्ठीक तिथि स्पष्ट रूपें उल्लिखित अछि, जे एकर निरन्तरता देखबैत अछि।

प्रश्न 385. ‘विकीपीडियापर मैथिली’ शीर्षक खण्डमे कोन अंकक सन्दर्भ देल गेल अछि?

क. विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८)

ख. प्रथम अंक

ग. ५०म अंक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८)

व्याख्या: ई खण्ड विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८) मे पहिल बेर देल गेल सूचनाक सन्दर्भ दैत अछि, जाहिमे मैथिली विकीपीडियाक अस्वीकृतिक चर्चा छल।

प्रश्न 386. राजेश रंजन आ संगीता कुमारी कतयक छथि?

क. मधेपुरा

ख. दरभंगा

ग. पटना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मधेपुरा

व्याख्या: राजेश रंजन आ संगीता कुमारी मधेपुराक छथि, जिनकर स्वैच्छिक समूह मैथिलीमे फायरफॉक्स ब्राउजर तैयार केलक।

प्रश्न 387. ‘हिन्दीक साम्राज्यवाद’ सम्बन्धी विचार विदेह-सदेह ११ मे केकर मतसँ जुड़ल अछि?

क. सम्पादकीय/लेखकीय टिप्पणी

ख. विदेशी विद्वान

ग. कोनो नहि

घ. केवल अनुमान

उत्तर: क. सम्पादकीय/लेखकीय टिप्पणी

व्याख्या: विदेह-सदेह ११ मे एक टिप्पणी अछि जे हिन्दीक साम्राज्यवाद अंग्रेजीक साम्राज्यवादक स्थान लऽ लेने अछि, आ बेरमाक ठाकुर सन खाँटी-शब्दावलीधारी लोकक विचार आयातित-शब्दावलीबला साहित्यकारसँ बेसी महत्त्व रखैत अछि।

खण्ड ३७ : विदेह-सदेह ६ — रोशन जनकपुरीक लघुकथा (विस्तार)

प्रश्न 388. रोशन जनकपुरीक लघुकथा ‘अग्निपुष्पक गुच्छासब’ कोन ऐतिहासिक-राजनीतिक सन्दर्भपर आधारित अछि?

क. नेपालक माओवादी सशस्त्र संघर्ष (जनसेना-शाही सेना युद्ध)

ख. कृषि-समस्या

ग. पारिवारिक कथा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नेपालक माओवादी सशस्त्र संघर्ष (जनसेना-शाही सेना युद्ध)

व्याख्या: ‘अग्निपुष्पक गुच्छासब’ नेपालक माओवादी सशस्त्र संघर्षक कालक एक युद्ध-दृश्य चित्रित करैत अछि, जाहिमे जनसेना आ शाही सेनाक बीच युद्धक वर्णन अछि।

प्रश्न 389. लघुकथामे ‘कमरेड कामिनी’ कोन प्रकारक पात्र छथि?

क. जनसेनाक एक शहीद महिला योद्धा

ख. केवल दर्शक

ग. विदेशी पात्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जनसेनाक एक शहीद महिला योद्धा

व्याख्या: कमरेड कामिनी जनसेनाक एक महिला योद्धा छथि, जे युद्धमे शहीद भऽ जाइत छथि।

प्रश्न 390. लघुकथामे ‘रेशबहादुर मगर’ केकर स्मृतिसँ जुड़ल पात्र छथि?

क. कथा-वाचकक संगी योद्धा (जे युद्धमे शहीद भेलाह)

ख. केवल नाम-मात्र

ग. विदेशी पात्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कथा-वाचकक संगी योद्धा (जे युद्धमे शहीद भेलाह)

व्याख्या: रेशबहादुर मगर कथा-वाचकक संगी योद्धा छथि, जे युद्धमे शहीद भऽ जाइत छथि, आ जिनकर पहाड़ी गाम आ बूढ़ माएक स्मृति कथामे अछि।

प्रश्न 391. कथामे युद्धक स्थान (नदीक नाम) की उल्लिखित अछि?

क. सुखलाहा नदी

ख. कोसी नदी

ग. गंगा नदी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सुखलाहा नदी

व्याख्या: कथामे युद्धक तैयारी आ प्रशिक्षणक स्थान सुखलाहा नदीक पछयारी जंगल कहल गेल अछि।

प्रश्न 392. कथामे जनसेना दिससँ युद्धमे कतेक क्षति भेल उल्लिखित अछि?

क. चालीससँ बेसी घाइल, पचीस शहीद

ख. दस घाइल, पाँच शहीद

ग. सय घाइल, पचास शहीद

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चालीससँ बेसी घाइल, पचीस शहीद

व्याख्या: कथा अनुसार जनसेना दिस चालीससँ बेसी घाइल भेल आ पचीस गोट शहादत प्राप्त केलक।

प्रश्न 393. कथाक मूल भाव की देखबैत अछि?

क. युद्धक मानवीय क्षति आ भावनात्मक त्रासदी

ख. केवल वीरताक गुणगान

ग. हास्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. युद्धक मानवीय क्षति आ भावनात्मक त्रासदी

व्याख्या: कथाक मूल भाव युद्धक मानवीय क्षति, सैनिकक भावनात्मक त्रासदी आ शहीद होइनिहार साथीक स्मृतिपर केन्द्रित अछि, ने कि केवल वीरताक गुणगान।

प्रश्न 394. विदेह-सदेह ६ मे एकटा अन्य लघुकथामे 'मनोरमा' केकर पत्नी छथि?

क. सुरेश

ख. रेशबहादुर

ग. कोनो नहि

घ. गजेन्द्र

उत्तर: क. सुरेश

व्याख्या: एकटा अन्य लघुकथामे मनोरमा सुरेशक पत्नी छथि।

प्रश्न 395. एहि लघुकथामे सुरेशकेँ की घटना घटैत अछि?

क. ओ नीन्दक दवाइ खा आत्महत्याक प्रयास करैत छथि

ख. ओ यात्रापर जाइत छथि

ग. ओ बिमार पड़ैत छथि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ओ नीन्दक दवाइ खा आत्महत्याक प्रयास करैत छथि

व्याख्या: एहि लघुकथामे सुरेश अपन दोकानमे नीन्दक दवाइ खा आत्महत्याक प्रयास करैत छथि, जकर सूचना हुनकर बेटी सभ मनोरमाकेँ दैत छथि।

प्रश्न 396. एहि लघुकथाक सूचना मनोरमाकेँ के दैत छथि?

क. हुनकर दुनू बेटी (रश्मि आ किरण)

ख. हुनकर पति स्वयं

ग. पड़ोसी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हुनकर दुनू बेटी (रश्मि आ किरण)

व्याख्या: मनोरमाक दुनू बेटी रश्मि आ किरण कानैत-कानैत हुनका सूचना दैत छथि जे पिता आत्महत्याक प्रयास केलनि।

प्रश्न 397. विदेह-सदेह ६ क लघुकथा-संकलनमे विषयक विविधता की देखबैत अछि?

क. युद्ध-त्रासदी सँ घरेलू-पारिवारिक संकट धरि व्यापक रेंज

ख. केवल एक विषय

ग. निरर्थकता

घ. रोक

उत्तर: ख. केवल एक विषय

व्याख्या: विदेह-सदेह ६ क लघुकथा-संकलन युद्ध-त्रासदी (अग्निपुष्पक गुच्छासब) सँ घरेलू-पारिवारिक संकट (मनोरमाक कथा) धरिक व्यापक विषयगत रेंज देखबैत अछि।

खण्ड ३८ : विदेह-सदेह १० — झिझिया महोत्सव परिणाम आ मौलाइल गाछक फूल (विस्तार)

प्रश्न 398. झिझिया महोत्सव कोन दू संस्थाक संयुक्त अभियानमे मनाओल गेल?

क. नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आ जनचेतना अभियान नेपाल

ख. केवल विदेह

ग. केवल साहित्य अकादेमी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आ जनचेतना अभियान नेपाल

व्याख्या: झिझिया महोत्सव नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आ जनचेतना अभियान नेपालक संयुक्त अभियानमे मनाओल गेल।

प्रश्न 399. स्वागत भाषणमे रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ झिझिया नृत्यक उमेर कतेक बतेलनि?

क. बारह-तेरह सए वर्ष पुरान

ख. सय वर्ष

ग. पचास वर्ष

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बारह-तेरह सए वर्ष पुरान

व्याख्या: रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ कहलनि जे झिझिया नृत्य आइसँ बारह-तेरह सए वर्ष पहिने आरम्भ भेल छल।

प्रश्न 400. प्रो. परमेश्वर कापड़िक कथन अनुसार झिझिया केवल की नहि अछि?

क. केवल नृत्य वा गीत मात्र नहि, जीवनसँ जुड़ल बात

ख. केवल आधुनिक नृत्य

ग. विदेशी नृत्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. केवल नृत्य वा गीत मात्र नहि, जीवनसँ जुड़ल बात

व्याख्या: प्रो. परमेश्वर कापड़ि कहलनि जे झिझिया मात्र नृत्य वा गीतमे सीमित नहि अछि, ई जीवनसँ जुड़ल बात थिक।

प्रश्न 401. झिझिया नृत्यकेँ डा. रेवती रमण लाल कोन प्रतीक कहलनि?

क. महिला जागरणक प्रतीक

ख. केवल मनोरंजन

ग. धार्मिक कर्मकाण्ड मात्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. महिला जागरणक प्रतीक

व्याख्या: डा. रेवती रमण लाल कहलनि जे झिझिया महिला जागरणक प्रतीक आ संस्कृतिक आस्था-पर्व थिक।

प्रश्न 402. झिझिया प्रतियोगितामे प्रथम स्थान के प्राप्त केलक?

क. जन चेतना अभियान झिझिया टीम

ख. भैरव झिझिया टीम

ग. मिथिला मिडिया टीम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जन चेतना अभियान झिझिया टीम

व्याख्या: निर्णायक मंडल अनुसार प्रथम स्थान जन चेतना अभियान झिझिया टीमकेँ भेटल।

प्रश्न 403. झिझिया प्रतियोगितामे द्वितीय स्थान केकरा भेटल?

क. भैरव झिझिया टीम

ख. जन चेतना अभियान टीम

ग. मिथिला मिडिया टीम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भैरव झिझिया टीम

व्याख्या: द्वितीय स्थान भैरव झिझिया टीमकेँ भेटल।

प्रश्न 404. 'मौलाइल गाछक फूल' उपन्यासक समीक्षक के छथि?

क. दुर्गानन्द मण्डल

ख. अच्छेलाल शास्त्री

ग. प्रा. परमेश्वर कापड़ि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दुर्गानन्द मण्डल

व्याख्या: 'मौलाइल गाछक फूल' उपन्यासक पोथी-समीक्षा दुर्गानन्द मण्डल लिखलनि।

प्रश्न 405. 'मौलाइल गाछक फूल' उपन्यासक रचनाकार के छथि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डल

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. सुभाषचन्द्र यादव

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डल

व्याख्या: 'मौलाइल गाछक फूल' उपन्यासक रचनाकार जगदीश प्रसाद मण्डल छथि।

प्रश्न 406. समीक्षक अनुसार 'मौलाइल गाछक फूल' उपन्यासक आरम्भ कोन घटनासँ होइत अछि?

क. गामक अकाल

ख. विवाह

ग. युद्ध

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गामक अकाल

व्याख्या: समीक्षक अनुसार उपन्यासक आरम्भहि गाममे अकाल पड़ि जाइत अछि, आ लोक अन्नक अभावमे कष्ट पाबैत छथि।

प्रश्न 407. 'मौलाइल गाछक फूल' क सोनेलालक संग जुड़ल चरित्र फुदिया की प्रदर्शित करैत अछि?

क. मानवीय सहयोग आ सामाजिक एकता

ख. केवल स्वार्थ

ग. विश्वासघात

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मानवीय सहयोग आ सामाजिक एकता

व्याख्या: समीक्षक अनुसार फुदिया द्वारा सोनेलालकेँ कहल गेल सहयोगक वचन मानवीय सहयोग आ सामाजिक एकताक प्रतीक थिक — विपत्तिमे संग देबाक भाव।

प्रश्न 408. समीक्षक उपन्यासकार जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ कोन पूर्ववर्ती मैथिली लेखकक उत्तराधिकारी सन मानैत छथि?

क. प्रो. हरिमोहन झा

ख. विद्यापति

ग. ज्योतिरीश्वर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. प्रो. हरिमोहन झा

व्याख्या: समीक्षक लिखैत छथि जे प्रो. हरिमोहन झाक बाद मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक स्थान विशेष अछि।

प्रश्न 409. समीक्षामे उपन्यासक नारी-पात्रक (रधिया, श्यामा, सुगिया आदि) विशेषता की कहल गेल?

क. पतिपरायणता आ भारतीय नारीक मर्यादाक चित्रण

ख. केवल विद्रोही स्वभाव

ग. केवल हास्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पतिपरायणता आ भारतीय नारीक मर्यादाक चित्रण

व्याख्या: समीक्षक अनुसार उपन्यासक नारी-पात्र पतिपरायणता, सुख-दुखमे संग देब आ भारतीय नारीक मर्यादाक स्पष्ट चित्र उपस्थित करैत छथि।

खण्ड ३९ : विदेह-सदेह ९ — गोनू झा चित्रकथा समीक्षा (विस्तार)

प्रश्न 410. भावना नवीनक रचनामे माय आ मातृभाषाक तुलना कोना कएल गेल अछि?

क. दूधक संग घोंटल जाइत भाषा (मातृभाषा) सँ तुलना

ख. केवल विदेशी भाषासँ तुलना

ग. कोनो तुलना नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दूधक संग घोंटल जाइत भाषा (मातृभाषा) सँ तुलना

व्याख्या: भावना नवीन लिखैत छथि जे मातृभाषा ओ भाषा थिक जे बच्चा माएक दूधक संग घोंटैत-घोंटैत सिखैत अछि, जखन कि विदेशी भाषा बादमे पाइ खर्च कऽ सिखल जाइत अछि।

प्रश्न 411. डॉ. रमण झाक समीक्षित ‘गोनू आ आन मैथिली चित्रकथा’ मे कुल कतेक कथा अछि?

क. १६ गोट (नओ गोट गोनू झासँ सम्बद्ध)

ख. दस गोट

ग. पाँच गोट

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १६ गोट (नओ गोट गोनू झासँ सम्बद्ध)

व्याख्या: डॉ. रमण झाक समीक्षा अनुसार ‘गोनू आ आन मैथिली चित्रकथा’ मे कुल १६ गोट कथा अछि, जाहिमे नओ गोट गोनू झासँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 412. डॉ. रमण झाक समीक्षित प्रीति ठाकुरक दोसर संग्रह ‘मैथिली चित्रकथा’ मे कतेक प्रमुख कथा अछि?

क. दस गोट

ख. सोलह गोट

ग. पाँच गोट

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दस गोट

व्याख्या: डॉ. रमण झाक समीक्षा अनुसार दोसर संग्रह ‘मैथिली चित्रकथा’ मे कुल दस गोट प्रमुख कथा वर्णित अछि।

प्रश्न 413. डॉ. रमण झा अनुसार एहि चित्रकथा-संग्रहमे कथाक यथार्थताकेँ की बढ़ाबैत अछि?

क. कथाक बीच-बीचमे काल्पनिक चित्रक समायोजन

ख. केवल पाठ

ग. केवल शीर्षक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कथाक बीच-बीचमे काल्पनिक चित्रक समायोजन

व्याख्या: डॉ. रमण झा अनुसार कथा सबहक बीच-बीचमे काल्पनिक चित्रक समायोजन कथाक यथार्थताकेँ बढ़ाबैत अछि।

खण्ड ४० : विदेह-सदेह १७ — अरविन्द ठाकुरक कथा-समीक्षा (विस्तार)

प्रश्न 414. अरविन्द ठाकुरक प्रथम काव्य-संग्रहक नाम की?

क. परती टूटि रहल अछि

ख. अन्हारक विरोध मे

ग. कतेक डारिपर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. परती टूटि रहल अछि

व्याख्या: अरविन्द ठाकुरक प्रथम काव्य-संग्रहक नाम ‘परती टूटि रहल अछि’ थिक, जे सन् १९९३ मे प्रकाशित भेल।

प्रश्न 415. समीक्षित संग्रहक पहिल कथाक नाम की?
क. खिस्सा सियार यार
ख. अन्हारक विरोध मे
ग. ढाँचा १९९२
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. खिस्सा सियार यार
व्याख्या: समीक्षित कथा-संग्रहक पहिल कथाक नाम ‘खिस्सा सियार यार’ थिक, जे बिहारक ‘लालटेन युग’क पूर्वसन्ध्याकेँ इंगित करैत अछि।

प्रश्न 416. ‘पिआसल पानि’ कथामे कुल कतेक पात्र छथि, समीक्षा अनुसार?
क. तीन गोट
ख. पाँच गोट
ग. दस गोट
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. तीन गोट
व्याख्या: समीक्षा अनुसार ‘पिआसल पानि’ कथामे कुल तीन गोट पात्र छथि।

प्रश्न 417. ‘नारायणपुरवाली’ कथाक केन्द्रीय पात्रक संग की दुर्भाग्य घटैत अछि?
क. पतिक नपुंसकताक कारणे सामाजिक कलंक आ गिरहथी करबाक बाध्यता
ख. धन-हानि
ग. विदेश-यात्रा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. पतिक नपुंसकताक कारणे सामाजिक कलंक आ गिरहथी करबाक बाध्यता
व्याख्या: समीक्षा अनुसार नारायणपुरवालीक पति नपुंसक सिद्ध होइत छथि, जे एक सामाजिक कलंक आ आर्थिक बाध्यताक स्थिति उत्पन्न करैत अछि।

प्रश्न 418. समीक्षक अनुसार ‘मूस’ आ ‘अय्यासी’ कथाक क्रम-व्यवस्थामे की सुझाव देल गेल?
क. ‘अय्यासी’केँ ‘मूस’सँ पहिने राखब बेसी उपयुक्त होइत
ख. कोनो परिवर्तन आवश्यक नहि
ग. क्रम ठीक अछि
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ‘अय्यासी’केँ ‘मूस’सँ पहिने राखब बेसी उपयुक्त होइत
व्याख्या: समीक्षक सुझाव दैत छथि जे ‘अय्यासी’केँ ‘मूस’सँ पहिने राखल जाय तँ दुनू कथाक अनिवार्यता आओर बेसी सुसंगत बनैत।

प्रश्न 419. ‘ढाँचा १९९२’ कथाक विषय की?
क. राष्ट्र, उपराष्ट्रवादक पीड़ा आ साम्प्रदायिक उन्माद
ख. केवल प्रेम
ग. केवल हास्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. राष्ट्र, उपराष्ट्रवादक पीड़ा आ साम्प्रदायिक उन्माद
व्याख्या: समीक्षा अनुसार ‘ढाँचा १९९२’ कथा राष्ट्र, उपराष्ट्रवादक पीड़ा आ उन्मादी भीड़क कुटिल नेतृत्वद्वारा संचालित होएबाक विषयपर अछि।

प्रश्न 420. समीक्षक अनुसार ‘ढाँचा’ आ ‘अन्हारक विरोध मे’ कथा दुनूमे की समानता अछि?
क. स्थिति प्रायः समान, मुदा समाधानक शैली भिन्न
ख. कोनो समानता नहि
ग. दुनू एके कथा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. स्थिति प्रायः समान, मुदा समाधानक शैली भिन्न
व्याख्या: समीक्षक अनुसार दुनू कथाक स्थिति प्रायः समान अछि, मुदा ओकर अन्वेषण आ समाधानक शैली एक-दोसरासँ भिन्न अछि।

प्रश्न 421. स्व. प्रभाष कुमार चौधरीक रचनाक नाम की, जे समीक्षामे उल्लिखित अछि?
क. अप्पन लोक
ख. परती टूटि रहल अछि
ग. खिस्सा सियार यार
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. अप्पन लोक
व्याख्या: स्व. प्रभाष कुमार चौधरीक रचना ‘अप्पन लोक’ क उल्लेख समीक्षामे अछि।

खण्ड ४१ : विदेह-सदेह १८ — आत्मकथात्मक स्मृति-लेखन (विस्तार)

प्रश्न 422. एहि स्मृति-लेखमे माय कोना गीत-संस्कार पाओल छलीह?
क. नैहर (अपन मायक घर) सँ
ख. ससुरालसँ
ग. विद्यालयसँ
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. नैहर (अपन मायक घर) सँ
व्याख्या: लेखिकाक माय अपन गीत-संस्कार नैहरसँ पाओल छलीह, आ विभिन्न अवसरपर स्त्रीगणक संग गीत गाबैत छलीह।

प्रश्न 423. एहि स्मृति-लेखमे पिता कोन पेशासँ जुड़ल छलाह?
क. प्रेसमे कम्पोजीटर
ख. शिक्षक
ग. डॉक्टर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. प्रेसमे कम्पोजीटर
व्याख्या: लेखिकाक पिता प्रेसमे कम्पोजीटरक काज करैत छलाह, आ किताब पढ़ब-कविता रटबाक लेल प्रेरित करैत छलाह।

प्रश्न 424. लेखिकाक टोलमे भैयाजी कोन प्रकारक कथा-वाचक छलाह?
क. कीर्तनयुक्त कथा-वाचक (डबहारी)
ख. केवल गायक
ग. केवल नर्तक
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. कीर्तनयुक्त कथा-वाचक (डबहारी)
व्याख्या: टोलक भैयाजी डबहारीक छलाह आ कीर्तनयुक्त कथा रोचक ढंगसँ कहैत छलाह।

प्रश्न 425. मामागाममे रवि दिनक साँझमे कोन ग्रन्थक कीर्तन-पाठ होइत छल?
क. रामचरितमानस
ख. गीता
ग. महाभारत
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. रामचरितमानस
व्याख्या: मामागाममे रवि दिनक साँझमे रामचरितमानसक कीर्तनक रूपमे पाठ होइत छल।

प्रश्न 426. ‘मधुपजी’क कोन रचना लेखिकाकेँ हाई स्कूलक कालसँ प्रभावित केने छल?
क. एकटा प्रसिद्ध कविता (घसल अठन्नीसँ सम्बद्ध)
ख. नाटक
ग. उपन्यास
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. एकटा प्रसिद्ध कविता (घसल अठन्नीसँ सम्बद्ध)
व्याख्या: लेखिका अनुसार हाई स्कूलमे पढ़ल मधुपजीक एकटा कविता बहुत प्रभावकारी छल, जे आइयो हुनका मोन पड़ैत अछि।

प्रश्न 427. रवीन्द्रजीक गाममे दुर्गापूजाक अवसरपर की होइत छल?
क. तीन-चारि राति नाटक
ख. केवल पूजा
ग. केवल भोज
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. तीन-चारि राति नाटक
व्याख्या: रवीन्द्रजीक गाम (यमसम) मे दुर्गापूजाक अवसरपर हर साल तीन-चारि राति नाटक होइत छल।

प्रश्न 428. एहि स्मृति-लेखक समग्र विषय की?
क. व्यक्तिगत बाल्यकालक सांस्कृतिक-पारिवारिक स्मृति
ख. केवल राजनीति
ग. केवल विज्ञान
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. व्यक्तिगत बाल्यकालक सांस्कृतिक-पारिवारिक स्मृति
व्याख्या: एहि स्मृति-लेखक समग्र विषय लेखिकाक बाल्यकालक सांस्कृतिक-पारिवारिक स्मृति (माय-पिता, गाम, टोल, कीर्तन-गीत-परम्परा) थिक।

खण्ड ४२ : विदेह-सदेह १२ — मैथिली वर्तनी-नियम (विस्तार)

प्रश्न 429. मैथिली वर्तनीमे ‘ए’ क प्रयोग कोन कालसँ चलि अबैत अछि?
क. प्राचीन मैथिलीएसँ
ख. केवल आधुनिक काल
ग. विदेशी प्रभावसँ
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. प्राचीन मैथिलीएसँ
व्याख्या: विदेह-सदेह १२ अनुसार मैथिली वर्तनीमे ‘ए’ क प्रयोग प्राचीन मैथिलीएसँ चलि अबैत अछि (जेना ‘कएल, जाए, माए’)।

प्रश्न 430. नवीन वर्तनीमे ‘माए’ शब्दक बदला की लिखल जाइत अछि?
क. माय
ख. मा
ग. माओ
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. माय
व्याख्या: नवीन वर्तनी अनुसार ‘माए’ क बदला ‘माय’ लिखल जाइत अछि।

प्रश्न 431. शब्दक शुरूमे सामान्यतया कोन वर्ण मात्र अबैत अछि, ‘ए’ वा ‘य’?
क. ए मात्र
ख. य मात्र
ग. दुनू समान रूपें
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ए मात्र
व्याख्या: नियम अनुसार शब्दक शुरूमे सामान्यतया ‘ए’ मात्र अबैत अछि (जेना एहि, एना, एकर, एहन), ‘य’ नहि।

प्रश्न 432. क्रियान्वयी प्रत्यय ‘अय’ मे ध्वनि-लोप भेलापर कोन चिह्न लगाओल जाइत अछि?
क. लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (’ / ऽ)
ख. कोनो चिह्न नहि
ग. केवल बिन्दु
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (’ / ऽ)
व्याख्या: नियम अनुसार क्रियान्वयी प्रत्यय ‘अय’ मे य वा ए लुप्त भेलापर लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (’ / ऽ) लगाओल जाइत अछि (जेना पढ़’ गेलाह)।

प्रश्न 433. पूर्वकालिक कृत प्रत्यय ‘आय/आए’ मे लोप भेलापर विकारी चिह्न लगाओल जाइत अछि की?

क. नहि लगाओल जाइत अछि

ख. अनिवार्य रूपें लगाओल जाइत अछि

ग. कखनहु लगाओल जाइत अछि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नहि लगाओल जाइत अछि

व्याख्या: नियम अनुसार पूर्वकालिक कृत ‘आय/आए’ प्रत्ययमे य/ए लुप्त भेलापर लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइत अछि (जेना ‘खाए गेल’ सँ ‘खा गेल’)।

प्रश्न 434. उच्चारणमे लोप-सूचक चिह्न वा विकारीक की महत्त्व अछि?

क. कोनो महत्त्व नहि (उच्चारण पूर्व-वर्णसँ निर्धारित)

ख. अत्यन्त महत्त्वपूर्ण

ग. केवल लेखनमे उपयोगी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कोनो महत्त्व नहि (उच्चारण पूर्व-वर्णसँ निर्धारित)

व्याख्या: नियम अनुसार उच्चारणमे लोप-सूचक चिह्न वा विकारीक कोनो महत्व नहि होइत अछि — उच्चारण चिह्नसँ पहिनुक वर्णसँ निर्धारित होइत अछि।

प्रश्न 435. ‘लए’ क उच्चारण कोन प्रकारक अछि, नियम अनुसार?

क. ह्रस्व-दीर्घ

ख. केवल ह्रस्व

ग. केवल दीर्घ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ह्रस्व-दीर्घ

व्याख्या: नियम अनुसार ‘लए’ क उच्चारण ह्रस्व-दीर्घ होइत अछि।

प्रश्न 436. पञ्चमाक्षरमे ‘खण्ड’ शब्दक अन्तमे ‘ण्’ किएक अबैत अछि?

क. ट वर्गक रहबाक कारणे

ख. क वर्गक रहबाक कारणे

ग. त वर्गक रहबाक कारणे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ट वर्गक रहबाक कारणे

व्याख्या: ‘खण्ड’ ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् (पञ्चमाक्षर) आएल अछि।

प्रश्न 437. पञ्चमाक्षरमे ‘सन्धि’ शब्दक अन्तमे ‘न्’ किएक अबैत अछि?

क. त वर्गक रहबाक कारणे

ख. क वर्गक रहबाक कारणे

ग. प वर्गक रहबाक कारणे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. त वर्गक रहबाक कारणे

व्याख्या: ‘सन्धि’ त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।

प्रश्न 438. पञ्चमाक्षरमे ‘खम्भ’ शब्दक अन्तमे ‘म्’ किएक अबैत अछि?

क. प वर्गक रहबाक कारणे

ख. क वर्गक रहबाक कारणे

ग. च वर्गक रहबाक कारणे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. प वर्गक रहबाक कारणे

व्याख्या: ‘खम्भ’ प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।

खण्ड ४३ : विदेह-सदेह १९ — समकालीन पद्य-विषय (विस्तार)

प्रश्न 439. विदेह-सदेह १९ मे एकटा पद्य कोन सामाजिक विषयपर केन्द्रित अछि?

क. बेटीक अस्तित्व आ आत्मनिर्णयक अभाव

ख. केवल प्रकृति

ग. केवल हास्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बेटीक अस्तित्व आ आत्मनिर्णयक अभाव

व्याख्या: विदेह-सदेह १९ मे एकटा पद्य बेटीक अस्तित्व आ आत्मनिर्णयक अभावपर केन्द्रित अछि, जे ‘बेटीसँ कनियाँ, कनियाँसँ माय’ बनबाक सामाजिक दबावकेँ इंगित करैत अछि।

प्रश्न 440. एहि पद्यक शीर्षक-विषय अनुसार समाज स्त्रीकेँ कोन भूमिकामे दौड़बैत अछि?

क. बेटी सँ कनियाँ, कनियाँसँ माय (आत्मनिर्णय बिना)

ख. स्वतन्त्र निर्णयक भूमिकामे

ग. कोनो भूमिका नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बेटी सँ कनियाँ, कनियाँसँ माय (आत्मनिर्णय बिना)

व्याख्या: पद्य अनुसार समाज स्त्रीकेँ बेटीसँ कनियाँ आ कनियाँसँ मायक भूमिका धरि दौड़बैत अछि, बिना ओकर अपन इच्छा-आकांक्षाकेँ स्थान देने।

प्रश्न 441. ‘आशाक बान्ह’ शीर्षक पद्यखण्डमे कोन प्रतीकात्मक वस्तुक उल्लेख अछि?

क. बान्ह (बाँध, आशाक प्रतीक)

ख. नदी

ग. पहाड़

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बान्ह (बाँध, आशाक प्रतीक)

व्याख्या: ‘आशाक बान्ह’ खण्डमे ‘बान्ह’ (बाँध) आशाक प्रतीक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि, जे घरबलाद्वारा हर बेर पत्नीक आँखिमे बान्हल जाइत अछि।

प्रश्न 442. एहि पद्य-शृंखलाक समग्र भाव की?

क. नारीक सामाजिक प्रतिबन्ध आ अधूरा आकांक्षा

ख. केवल हास्य

ग. केवल प्रकृति-वर्णन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नारीक सामाजिक प्रतिबन्ध आ अधूरा आकांक्षा

व्याख्या: एहि पद्य-शृंखलाक समग्र भाव नारीक सामाजिक प्रतिबन्ध, भूमिका-निर्धारण आ अधूरा आकांक्षाक संवेदनशील चित्रण थिक।

खण्ड ४४ : विदेह-सदेह १८ — आत्मकथात्मक स्मृति (विस्तार २)

प्रश्न 443. लेखिकाक परिवारक आर्थिक स्थिति कोन घटना सभक बाद कमजोर भेल?

क. दू टा कन्यादान आ माताक अस्पताल-खर्च

ख. केवल व्यापार-हानि

ग. केवल बाढ़ि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दू टा कन्यादान आ माताक अस्पताल-खर्च

व्याख्या: लेखिका अनुसार दू टा कन्यादान आ बादमे माताक अस्पताल-खर्च आ देहान्तक बाद घरक आर्थिक स्थिति कमजोर भऽ गेल छल।

प्रश्न 444. लेखिका अपन उच्च शिक्षाक विषयमे केकरासँ सलाह लेलनि?

क. दीदी (नारायणपट्टीमे रहनिहार)

ख. केवल पिता

ग. केवल भाइ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दीदी (नारायणपट्टीमे रहनिहार)

व्याख्या: लेखिका नारायणपट्टीमे रहनिहार अपन दीदी लग जाए अपन विचार कहलनि।

प्रश्न 445. लेखिका कोन विषयमे आगाँ पढ़बाक विचार रखैत छलीह?

क. बी.एस.सी. (एग्रीकल्चर)

ख. कला

ग. वाणिज्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बी.एस.सी. (एग्रीकल्चर)

व्याख्या: लेखिका बी.एस.सी. (एजी, अर्थात् एग्रीकल्चर) मे नाम लिखेबाक विचार रखैत छलीह, यदि ६०% सँ बेसी अंक आबय।

प्रश्न 446. लेखिकाक प्री-साइंसमे कतेक प्रतिशत अंक छल, स्मृति-लेखक संवाद अनुसार?

क. ७७ प्रतिशत

ख. ६० प्रतिशत

ग. ५५ प्रतिशत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ७७ प्रतिशत

व्याख्या: स्मृति-लेखक संवाद अनुसार प्री-साइंसमे लेखिकाक ७७% अंक छल, मुदा सेकंड डिवीजन (बी.एस.सी. पार्ट १) मे ५५% भेल।

प्रश्न 447. लेखिका दरभंगा पोलिटेकनिकमे कोन विषयमे एडमिशन लेलनि?

क. सिविल इन्जीनियरिंग

ख. इलेक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग

ग. मेकानिकल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सिविल इन्जीनियरिंग

व्याख्या: लेखिका दरभंगा पोलिटेकनिकमे सिविल विषयमे एडमिशन लेलनि।

प्रश्न 448. लेखिका पोलिटेकनिक कोना जाइत-अबैत छलीह?

क. गामसँ बससँ

ख. रेलगाड़ीसँ

ग. साइकिलसँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गामसँ बससँ

व्याख्या: लेखिका गामसँ बससँ पोलिटेकनिक जाए-आबए छलीह।

प्रश्न 449. लेखिकाक एडमिशन-इन्टरव्यूमे सीनियर विद्यार्थी लोकनि के प्रश्न पूछैत छलाह?

क. व्यक्तिगत आ अनौपचारिक प्रश्न

ख. केवल शैक्षणिक प्रश्न

ग. कोनो प्रश्न नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. व्यक्तिगत आ अनौपचारिक प्रश्न

व्याख्या: स्मृति-लेखक संवाद अनुसार एडमिशनक समय सीनियर विद्यार्थी लोकनि नाम, घर, अंक सन शैक्षणिक प्रश्नक संग व्यक्तिगत आ अनौपचारिक प्रश्न सेहो पूछैत छलाह।

प्रश्न 450. एहि स्मृति-लेखक समग्र विषय की?

क. एक स्त्रीक शिक्षा-यात्रा आ पारिवारिक संघर्ष

ख. केवल राजनीति

ग. केवल धार्मिक कथा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. एक स्त्रीक शिक्षा-यात्रा आ पारिवारिक संघर्ष

व्याख्या: एहि स्मृति-लेखक समग्र विषय लेखिकाक शिक्षा-यात्रा, पारिवारिक आर्थिक संघर्ष आ कैरियर-निर्णयक प्रामाणिक चित्रण थिक।

खण्ड ४५ : विदेह-सदेह १३ — विद्यापति-कालक्रम शोध (विस्तार)

प्रश्न 451. गजेन्द्र ठाकुरक शोध-थीसिस अनुसार समानान्तर परम्पराक विद्यापति केकर समकालीन वा पूर्ववर्ती मानल गेलाह?

क. ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०)

ख. विद्यापति ठक्कुर:

ग. गंगेश उपाध्याय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०)

व्याख्या: थीसिस अनुसार समानान्तर परम्पराक विद्यापति ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) सँ पूर्व रहथि, से तर्क देल गेल अछि।

प्रश्न 452. एहि थीसिसमे जयदेवक कालखण्ड की उल्लिखित अछि?

क. लगभग १२००

ख. लगभग १४००

ग. लगभग १०००

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लगभग १२००

व्याख्या: थीसिस अनुसार जयदेव (गीत-गोविन्दक रचयिता) क कालखण्ड लगभग १२०० ई. मानल गेल अछि, जिनकर गीत-नृत्य शैली समानान्तर परम्पराक विद्यापतिक पदावलीसँ मेल खाइत कहल गेल।

प्रश्न 453. एहि थीसिसमे कश्मीरक कोन प्राचीन विद्वानक ग्रन्थमे विद्यापतिक उल्लेखक दाबी कएल गेल?

क. अभिनवगुप्त (दशम-एकादश शताब्दी)

ख. कालिदास

ग. भरत मुनि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अभिनवगुप्त (दशम-एकादश शताब्दी)

व्याख्या: थीसिस अनुसार कश्मीरक अभिनवगुप्त (दशम शताब्दीक अन्त-एकादश शताब्दीक प्रारम्भ) क ग्रन्थ ‘ईश्वर प्रत्यभिज्ञा विवृति-विमर्शिनी’ मे विद्यापतिक उल्लेखक दाबी कएल गेल अछि।

प्रश्न 454. श्रीधर दासक ‘सदुक्तिकर्णामृत’ मे विद्यापतिक कतेक पद उद्धृत मानल गेल अछि?

क. पाँच टा

ख. दस टा

ग. एक टा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पाँच टा

व्याख्या: थीसिस अनुसार श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृतमे विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत मानल गेल अछि, जे समानान्तर परम्पराक विद्यापतिक पदावलीक भाषासँ मेल खाइत कहल गेल।

प्रश्न 455. ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थक छठम कल्लोलमे कोन विषयक वर्णन अछि, स्रोत अनुसार?

क. आस्थानक भीतर बिदाओत-विदाओतनी (नर्तक-नर्तकी) क वर्णन

ख. केवल युद्ध

ग. केवल कृषि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आस्थानक भीतर बिदाओत-विदाओतनी (नर्तक-नर्तकी) क वर्णन

व्याख्या: स्रोत अनुसार ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थक छठम कल्लोलमे राजसभाक भीतर नर्तक-नर्तकीक प्रस्तुतिक वर्णन अछि, जे विदापत-नाच परम्पराक प्राचीनताक प्रमाण रूपमे उद्धृत भेल अछि।

प्रश्न 456. उपेन्द्र ठाकुरक ग्रन्थक नाम की, जे एहि थीसिसमे सन्दर्भ-रूपमे उल्लिखित अछि?

क. मध्यकालीन मिथिला

ख. विद्यापति अनुशीलन

ग. मैथिली साहित्यक इतिहास

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मध्यकालीन मिथिला

व्याख्या: उपेन्द्र ठाकुरक ग्रन्थ ‘मध्यकालीन मिथिला’ क सन्दर्भ एहि थीसिसमे उल्लिखित अछि।

खण्ड ४६ : विदेह-सदेह १४ — गंगा ब्रिज नाटकक पात्र-संरचना (विस्तार)

प्रश्न 457. ‘गंगा ब्रिज’ नाटकक तृतीय पल्लवमे दृश्यक स्थान कतय अछि?

क. गामक आँगन

ख. कोर्ट

ग. विदेश

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गामक आँगन

व्याख्या: ‘गंगा ब्रिज’ नाटकक तृतीय पल्लवमे दृश्य गामक आँगनमे अछि, जतय अभियन्ताक बतही माए आ कनियाँ काकी बैसल छथि।

प्रश्न 458. एहि दृश्यमे अभियन्ता गामक पहिल की बनल छथि?

क. पहिल इन्जीनियर

ख. पहिल डॉक्टर

ग. पहिल वकील

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पहिल इन्जीनियर

व्याख्या: दृश्य अनुसार अभियन्ता ऐ गामक पहिल इन्जीनियर बनल छथि, जे माए-काकीक गौरवक विषय अछि।

प्रश्न 459. एहि दृश्यमे ग्रामीण राजनीति (एम.एल.ए. सम्बद्ध) क कोन विषयपर संवाद अछि?

क. चुनावी वायदा आ बादक उदासीनता

ख. केवल कृषि

ग. केवल मौसम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चुनावी वायदा आ बादक उदासीनता

व्याख्या: दृश्यमे संवाद अछि जे एम.एल.ए. चुनावक समय मीठ बोल बजैत छथि मुदा जीतलाक बाद जनताक उपेक्षा करैत छथि — एक सामाजिक-राजनीतिक टिप्पणी।

प्रश्न 460. अभियन्ताक चरित्रगत विशेषता की कहल गेल अछि?

क. जिद्दी आ कर्तव्यनिष्ठ (बापे सन)

ख. कमजोर इरादावाला

ग. भयभीत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जिद्दी आ कर्तव्यनिष्ठ (बापे सन)

व्याख्या: नाटकमे अभियन्ताकेँ बापे सन जिद्दी आ कर्तव्यनिष्ठ कहल गेल अछि, जे दबावमे सेहो अपन कर्तव्यसँ नहि डगमगाइत छथि।

प्रश्न 461. ‘गंगा ब्रिज’ नाटकक एक अन्य दृश्यमे दू टा पात्र डंकाक माध्यमसँ कोन विषयपर वार्तालाप करैत छथि?

क. शिक्षा-व्यवस्था आ समाजमे दू तरहक सोच

ख. केवल मनोरंजन

ग. केवल खेल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शिक्षा-व्यवस्था आ समाजमे दू तरहक सोच

व्याख्या: एहि दृश्यमे दू पात्र डंका बजाइत-बजाइत शिक्षा-व्यवस्था आ समाजमे विद्यमान दू तरहक (शासक-शासित) सोचक प्रतीकात्मक वार्तालाप करैत छथि।

प्रश्न 462. एहि नाटकीय शैलीमे ‘डंका’ क प्रतीकात्मक उपयोग की देखबैत अछि?

क. संवादक संग संगीत/लयक नाट्यात्मक प्रयोग

ख. केवल सजावट

ग. निरर्थकता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. संवादक संग संगीत/लयक नाट्यात्मक प्रयोग

व्याख्या: डंकापर बेरा-बेरी चोट देब संवादक संग संगीत/लयक नाट्यात्मक प्रयोग देखबैत अछि, जे मैथिली नाट्य-शैलीक एक रचनात्मक प्रयोग थिक।

खण्ड ४७ : विदेह-सदेह १२ — उर्दू लिपि आ गजल-बहर सिद्धान्त (विस्तार)

प्रश्न 463. उर्दू वर्णमालामे संस्कृत वर्णमालासँ कतेक अक्षर लेल गेल अछि, स्रोत अनुसार?

क. लगभग चौदह

ख. दस

ग. पाँच

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लगभग चौदह

व्याख्या: स्रोत अनुसार उर्दू वर्णमालामे संस्कृत वर्णमालासँ लगभग चौदह अक्षर लेल गेल अछि, जिनकर अन्तमे ‘ह’ क उच्चारण होइत अछि।

प्रश्न 464. उर्दूमे ‘ख’ ध्वनि कोना लिखल जाइत अछि?

क. क संग ह जोड़ि

ख. केवल क

ग. केवल ह

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. क संग ह जोड़ि

व्याख्या: उर्दूमे ‘क’ संग ‘ह’ जोड़लापर ‘ख’ ध्वनि बनैत अछि।

प्रश्न 465. उर्दूमे ‘घ’ ध्वनि कोना लिखल जाइत अछि?

क. ग संग ह जोड़ि

ख. केवल ग

ग. केवल ह

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ग संग ह जोड़ि

व्याख्या: उर्दूमे ‘ग’ संग ‘ह’ जोड़लापर ‘घ’ ध्वनि बनैत अछि।

प्रश्न 466. देवनागरी आ उर्दू लिपिमे एक प्रमुख भेद की?

क. देवनागरी बामसँ दहिन, उर्दू दहिनासँ बाम

ख. दुनू एकहि दिशामे

ग. दुनूमे कोनो भेद नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. देवनागरी बामसँ दहिन, उर्दू दहिनासँ बाम

व्याख्या: भारतीय भाषाक लिपि (देवनागरी आदि) बामसँ दहिन लिखल जाइत अछि, मुदा उर्दू दहिनासँ बाम लिखल जाइत अछि।

प्रश्न 467. उर्दूमे शब्द-रचना काल अक्षरक स्वरूपमे की परिवर्तन होइत अछि?

क. अक्षरक स्वरूप बदलि जाइत अछि

ख. कोनो परिवर्तन नहि

ग. केवल आकार बदलैत अछि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अक्षरक स्वरूप बदलि जाइत अछि

व्याख्या: देवनागरीमे शब्द-रचना काल अक्षरक स्वरूप नहि बदलैत अछि, मुदा उर्दूमे अक्षरक स्वरूप बदलि जाइत अछि (स्थिति अनुसार भिन्न रूप)।

प्रश्न 468. ‘बहर’ क अर्थ की?

क. गजलक छन्द-आधार (अरबी काव्य-मीटर)

ख. केवल गीत

ग. केवल नाटक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गजलक छन्द-आधार (अरबी काव्य-मीटर)

व्याख्या: बहर गजलक छन्द-आधार थिक, जे अरबी काव्य-परम्पराक अरूज/अरूद सिद्धान्तपर आधारित अछि।

प्रश्न 469. ‘अरूज’ वा ‘अरूद’ क आविष्कार के केलनि?
क. खलील इब्ने अहमद बसरी
ख. अमीर खुसरो
ग. विद्यापति
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. खलील इब्ने अहमद बसरी
व्याख्या: अरूज वा अरूद क आविष्कार हिजरीक दोसर सदीमे खलील इब्ने अहमद बसरी केलनि।

प्रश्न 470. खलील इब्ने अहमद बसरीकेँ अरूजक विचार कतयसँ आएल, स्रोत अनुसार?
क. मक्काक ठठेरा बजारमे बर्तन बनेबाक आवाज सुनिकऽ
ख. केवल कल्पनासँ
ग. विदेशी ग्रन्थसँ
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मक्काक ठठेरा बजारमे बर्तन बनेबाक आवाज सुनिकऽ
व्याख्या: स्रोत अनुसार खलील इब्ने अहमद बसरीकेँ अरूजक विचार मक्काक ठठेरा बजारमे बर्तन बनेबाक लयबद्ध आवाज सुनिकऽ आएल।

प्रश्न 471. अरबी साहित्यमे बहरकेँ कतेक खण्डमे बाँटल गेल अछि?
क. तीन (सालिम, मुरक्कब, मुदाइफ)
ख. दू
ग. पाँच
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. तीन (सालिम, मुरक्कब, मुदाइफ)
व्याख्या: अरबी साहित्यमे बहरकेँ तीन खण्डमे बाँटल गेल अछि — सालिम (मूल बहर), मुरक्कब (मिश्रित बहर) आ मुदाइफ (परिवर्तित बहर)।

प्रश्न 472. अरबीमे सालिम (मूल बहर) मे कतेक टा बहर अबैत अछि?
क. सात
ख. दस
ग. बारह
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. सात
व्याख्या: अरबीमे सालिम (मूल बहर) मे सात टा बहर अबैत अछि।

प्रश्न 473. मुरक्कब (मिश्रित बहर) मे मूलतः कतेक टा बहर छल, आ बादमे कतेक भेल?
क. मूलतः बारह, बादमे बीस
ख. मूलतः दस, बादमे बीस
ग. मूलतः पाँच, बादमे दस
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मूलतः बारह, बादमे बीस
व्याख्या: मुरक्कबमे मूलतः बारह टा बहर छल, जकर उलट-फेर कऽ आठ टा आर बहर बनाओल गेल, जे मिला कऽ कुल बीस भेल।

प्रश्न 474. गजलक छन्दक आधार ‘रुक्न’ कतेक प्रकारक होइत अछि?
क. आठ
ख. दस
ग. पाँच
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. आठ
व्याख्या: गजलक छन्दक आधार रुक्न आठ प्रकारक होइत अछि।

प्रश्न 475. संस्कृत छन्द-शास्त्रक ‘गण’ आ अरबी छन्द-शास्त्रक ‘रुक्न’ मे की समानता अछि?

क. दुनू छन्दक मूल इकाइ थिक

ख. कोनो समानता नहि

ग. दुनू भिन्न-भिन्न उद्देश्यक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दुनू छन्दक मूल इकाइ थिक

व्याख्या: स्रोत अनुसार संस्कृतक ‘गण’ जकाँ अरबीमे ‘रुक्न’ छन्द-निर्माणक मूल इकाइ थिक, जे दुनू परम्पराक तुलनात्मक समानता देखबैत अछि।

खण्ड ४८ : विदेह-सदेह १९ — कामिनीजीक कविता-विमर्श (विस्तार)

प्रश्न 476. कामिनी जीक कविता सभपर विमर्श-आलेख के लिखलनि?

क. मधुकांत झा

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. आशीष अनचिन्हार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मधुकांत झा

व्याख्या: मधुकांत झा ‘कामिनीजीक किछु कविता.... एक विमर्श’ शीर्षक आलोचनात्मक आलेख लिखलनि।

प्रश्न 477. समीक्षक अनुसार मैथिली काव्य-विधामे महिला रचनाकारक संख्या कोना अछि?

क. पर्याप्त नहि

ख. अत्यन्त बेसी

ग. सम्पूर्ण समान

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पर्याप्त नहि

व्याख्या: समीक्षक मधुकांत झा अनुसार मैथिली साहित्यक काव्य-विधामे महिला रचनाकारक संख्या पर्याप्त नहि अछि, तेँ कामिनीजीक सृजनशीलता बधाइक पात्र थिक।

प्रश्न 478. कामिनीजीक प्रथम कविताक विषय की?

क. एक बेटीक अस्तित्व-संकट

ख. किसानी

ग. बेरोजगारी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. एक बेटीक अस्तित्व-संकट

व्याख्या: कामिनीजीक प्रथम कविता ‘छौंड़ीक आँखि मे’ एक बेटीक अस्तित्व-संकटक चित्रण करैत अछि, जे प्राकृतिक आ कृत्रिम सजावटक बीच अपन वास्तविक अस्तित्व नहि पाबि सकैत अछि।

प्रश्न 479. कामिनीजीक दोसर कविता ‘आशाक बान्ह’ केकर चित्रांकण करैत अछि?

क. परदेशी पतिक प्रतीक्षा करनिहार पत्नी

ख. किसान

ग. बेरोजगार युवा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. परदेशी पतिक प्रतीक्षा करनिहार पत्नी

व्याख्या: ‘आशाक बान्ह’ एक एहन पत्नीक चित्रांकण करैत अछि जे परदेशी पतिक वायदापर नव साड़ी-गहनाक सपना देखैत अछि।

प्रश्न 480. कामिनीजीक तेसर कविता ‘मीत’ कोन सामाजिक समस्यापर केन्द्रित अछि?

क. बेरोजगारीजन्य आलसीपन

ख. किसानी संकट

ग. नारी-अस्तित्व

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बेरोजगारीजन्य आलसीपन

व्याख्या: ‘मीत’ कविता बेरोजगारीसँ उत्पन्न आलसीपनकेँ संक्रामक रोग सदृश घर-घर पसरल बतबैत अछि।

प्रश्न 481. कामिनीजीक चारिम कविता ‘पिता’ केकर हृदयविदारक चित्र देखाबैत अछि?
क. मानसून-निर्भर किसानक खुनीमा
ख. नारी
ग. बच्चा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मानसून-निर्भर किसानक खुनीमा
व्याख्या: ‘पिता’ कविता मानसूनपर निर्भर किसानक संघर्ष आ खेतक फाटल दरारिक हृदयविदारक चित्रण करैत अछि।

प्रश्न 482. कामिनीजीक पाँचम कविता पहिल कविताक तुलनामे कोन भिन्न नारी-चित्र देखाबैत अछि?
क. आत्मविश्वासी आ सम्मानित नारी
ख. विपरीत रूपें असफल नारी
ग. विदेशी नारी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. आत्मविश्वासी आ सम्मानित नारी
व्याख्या: पाँचम कविता पहिल कविता (छौंड़ीक आँखि मे) क विपरीत एक आत्मविश्वासी आ अपन बलपर सम्मान पाओल नारीक चित्र देखाबैत अछि।

प्रश्न 483. समीक्षक अनुसार कामिनीजीक कविताक विशेषता की?
क. वाद-विवादसँ अप्रभावित, भावनात्मक सच्चाई
ख. केवल राजनीतिक
ग. केवल हास्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. वाद-विवादसँ अप्रभावित, भावनात्मक सच्चाई
व्याख्या: समीक्षक अनुसार कामिनीजीक कविता कोनो वाद-विवादसँ प्रभावित तरल प्रतिक्रिया नहि, बल्कि भावनात्मक सच्चाईपर आधारित अछि।

प्रश्न 484. विदेह-सदेह १९ मे एकटा नाटकक नाम की, जकर पात्र-सूची विस्तृत अछि?
क. जन्म दैत अछि माँ बाप करम तऽ अपनेही
ख. गंगा ब्रिज
ग. मचण्ड
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. जन्म दैत अछि माँ बाप करम तऽ अपनेही
व्याख्या: विदेह-सदेह १९ मे एक नाटक ‘जन्म दैत अछि माँ बाप करम तऽ अपनेही’ क विस्तृत पात्र-सूची अछि।

प्रश्न 485. एहि नाटकमे कतेक राजाक पात्र अछि?
क. दू (राजा क आ राजा ख)
ख. एक
ग. तीन
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. दू (राजा क आ राजा ख)
व्याख्या: नाटकमे दू राजाक पात्र अछि — कर्मलाल सिंह ठाकुर (राजा क) आ धर्मपाल सिंह (राजा ख)।

खण्ड ४९ : विदेह-सदेह ९ — मुन्नाजीक स्मृति-लेख आ काश्यप कमलक खिस्सा (विस्तार)

प्रश्न 486. मुन्नाजीक आत्मकथात्मक लेखक नाम की?
क. पथ दर्शन
ख. सहस्रमुखक दीप
ग. बाबूक सुनाएल खिस्सा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. पथ दर्शन
व्याख्या: मुन्नाजीक आत्मकथात्मक लेखक नाम ‘पथ दर्शन’ थिक।

प्रश्न 487. ‘पथ दर्शन’ मे लेखक कोन घटनासँ मर्माहत भेलाह?
क. विद्यालयक सांस्कृतिक कार्यक्रममे बच्चाक संगीत-चयन
ख. परीक्षाफल
ग. खेल-प्रतियोगिता
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. विद्यालयक सांस्कृतिक कार्यक्रममे बच्चाक संगीत-चयन
व्याख्या: लेखक विद्यालयक सांस्कृतिक कार्यक्रममे बच्चा सभकेँ ‘आवारा हूँ’ सन फिल्मी गीतपर गाबैत-नचैत देखि मर्माहत भेलाह।

प्रश्न 488. लेखक एहि घटनाक बाद शिक्षककेँ शिकायत कएलापर के उत्तर भेटलनि?
क. बच्चा जेहन धरनदार, तैयारियो तेहने
ख. समाधानक आश्वासन
ग. माफी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. बच्चा जेहन धरनदार, तैयारियो तेहने
व्याख्या: शिकायतपर लेखककेँ उत्तर भेटलनि जे बच्चा जेहन धरनदार (तैयार) रहैत अछि, तैयारियो तेहने रहैत अछि — एक उदासीन प्रतिक्रिया।

प्रश्न 489. काश्यप कमलक खिस्साक नाम की?
क. सहस्रमुखक दीप
ख. पथ दर्शन
ग. बाबूक सुनाएल खिस्सा (शीर्षक-शृंखला)
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. सहस्रमुखक दीप
व्याख्या: काश्यप कमल (पवनकान्त झा) क खिस्साक नाम ‘सहस्रमुखक दीप’ थिक, जे ‘बाबूक सुनाएल खिस्सा’ शृंखला अन्तर्गत अछि।

प्रश्न 490. ‘सहस्रमुखक दीप’ खिस्साक मुख्य पात्र के छथि?
क. एक राजा जे रोज वेश बदलि प्रजाक हाल देखैत छलाह
ख. केवल गरीब आदमी
ग. केवल पत्नी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. एक राजा जे रोज वेश बदलि प्रजाक हाल देखैत छलाह
व्याख्या: खिस्साक मुख्य पात्र एक राजा छथि, जे रोज राति वेश बदलि कऽ अपन राज्यमे घुमैत छलाह आ प्रजाक हालक प्रत्यक्ष ज्ञान लैत छलाह।

प्रश्न 491. खिस्सामे राजा कोन गरीब परिवारक संवाद सुनैत छथि?
क. कर्जा लऽ कऽ ‘सहस्रमुखक दीप’ जरबैत परिवार
ख. धनिक परिवार
ग. विदेशी परिवार
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. कर्जा लऽ कऽ ‘सहस्रमुखक दीप’ जरबैत परिवार
व्याख्या: राजा एक गरीब परिवारक संवाद सुनैत छथि, जे कर्जा लऽ कऽ ‘सहस्रमुखक दीप’ जरबैत आ ओकर प्रकाशमे भोजन करैत अछि।

प्रश्न 492. खिस्साक मूल सीख की?
क. गरीबीमे सेहो श्रद्धा-सन्तोषक भाव सम्भव
ख. धन्य लोक सुखी होइत छथि
ग. कोनो सीख नहि
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गरीबीमे सेहो श्रद्धा-सन्तोषक भाव सम्भव
व्याख्या: खिस्साक मूल सीख अछि जे गरीबीक बीचो श्रद्धा, सन्तोष आ छोट-छीन उत्सवक भाव सम्भव अछि, जे राजाकेँ सेहो विचारमे पाड़ि दैत अछि।

खण्ड ५० : विदेह-सदेह २० — प्रोफेसर चण्डेश्वर झा श्रद्धांजलि (विस्तार)

प्रश्न 493. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक श्रद्धांजलि-आलेख केकरापर अछि?
क. प्रोफेसर चण्डेश्वर झा
ख. गजेन्द्र ठाकुर
ग. विद्यापति
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. प्रोफेसर चण्डेश्वर झा
व्याख्या: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक आलेख स्वर्गीय प्रोफेसर चण्डेश्वर झापर श्रद्धांजलि-स्वरूप लिखल गेल।

प्रश्न 494. प्रोफेसर चण्डेश्वर झा मिथिलाक गाम-गाम घूमि कऽ कतेक गीतक संग्रह केने छलाह?
क. १५०० सँ बेसी
ख. सय
ग. दस हजार
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. १५०० सँ बेसी
व्याख्या: प्रोफेसर चण्डेश्वर झा मिथिलाक गाम-गाम घूमि लोक-सभसँ १५०० सँ बेसी गीतक अद्भुत संग्रह केने छलाह।

प्रश्न 495. प्रोफेसर चण्डेश्वर झा कतेक गीतक मूल रचना केने छलाह, विभिन्न रागपर आधारित?
क. सय सँ बेसी
ख. दस
ग. हजार
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. सय सँ बेसी
व्याख्या: प्रोफेसर चण्डेश्वर झा विभिन्न रागपर आधारित सय सँ बेसी गीतक मूल रचना केने छलाह।

प्रश्न 496. प्रोफेसर चण्डेश्वर झाक प्रथम सी.डी./केसेट्स निर्माणक नाम आ साल की?
क. दुर्गति दूर करू माँ, २००५
ख. जागू गिरिजा जागू महेश, २००६
ग. कोनो नहि
घ. सहस्रबाढ़नि, २०००
उत्तर: क. दुर्गति दूर करू माँ, २००५
व्याख्या: प्रोफेसर चण्डेश्वर झाक प्रथम सी.डी./केसेट्स निर्माण ‘दुर्गति दूर करू माँ’ सन् २००५ ई.मे भेल।

प्रश्न 497. प्रोफेसर चण्डेश्वर झाक दोसर सी.डी. निर्माणक नाम आ साल की?
क. जागू गिरिजा जागू महेश, २००६
ख. दुर्गति दूर करू माँ, २००५
ग. कोनो नहि
घ. सहस्रबाढ़नि
उत्तर: क. जागू गिरिजा जागू महेश, २००६
व्याख्या: प्रोफेसर चण्डेश्वर झाक दोसर सी.डी. निर्माण ‘जागू गिरिजा जागू महेश’ सन् २००६ ई.मे भेल।

प्रश्न 498. समीक्षक अनुसार प्रोफेसर चण्डेश्वर झाक देहान्तक एक कारण की रहल?
क. विश्वविद्यालय-प्रबंधन आ शिक्षक-समुदायक राजनीतिसँ दुखी होएब
ख. केवल वृद्धावस्था
ग. दुर्घटना
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. विश्वविद्यालय-प्रबंधन आ शिक्षक-समुदायक राजनीतिसँ दुखी होएब
व्याख्या: समीक्षक अनुसार विश्वविद्यालय-प्रबंधन आ शिक्षक-समुदायक तुच्छ राजनीतिसँ दुखी होएब हुनकर दीर्घायु नहि होबाक एक कारण रहल।

प्रश्न 499. लेखक प्रोफेसर चण्डेश्वर सँ गप्प करैत कोन अनुभूति होइत छल?
क. जेना ओ उपनिषद-परम्पराक ऋषि (गुरु) होथि
ख. केवल सामान्य संवाद
ग. भय
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. जेना ओ उपनिषद-परम्पराक ऋषि (गुरु) होथि
व्याख्या: लेखक लिखैत छथि जे प्रोफेसर चण्डेश्वरसँ गप्प करैत एहन अनुभूति होइत छल जेना ओ उपनिषद-परम्पराक ऋषि (गुरु) होथि।

प्रश्न 500. विदेह-सदेह २० मे एकटा सम्पादकीय टिप्पणीमे मैथिलीकेँ कोन प्रकारक आलोचकक आवश्यकता बतल गेल?
क. बहुज्ञता-रसबोध-समय-सजगता सहित सन्तुलित आलोचक
ख. केवल कठोर आलोचक
ग. केवल प्रशंसक
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. बहुज्ञता-रसबोध-समय-सजगता सहित सन्तुलित आलोचक
व्याख्या: टिप्पणीमे कहल गेल जे मैथिलीकेँ एहन आलोचक चाही जेकरामे बहुज्ञता, रसबोध, समय-सजगता आ फॉर्म-कंटेंट दुनूक बुझनाइ होए।

खण्ड ५१ : विदेह-सदेह २१ — गीतेश शर्माक अनुवादित निबन्ध (विस्तार)

प्रश्न 501. ‘भारतीय मुसलमान आ भारतीयता’ निबन्धक मूल लेखक के छथि?
क. गीतेश शर्मा
ख. उमेश मण्डल
ग. गजेन्द्र ठाकुर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. गीतेश शर्मा
व्याख्या: ‘भारतीय मुसलमान आ भारतीयता’ निबन्धक मूल लेखक गीतेश शर्मा छथि, जे मूलतः हिन्दीमे लिखल गेल।

प्रश्न 502. एहि हिन्दी निबन्धक मैथिली अनुवाद के केलनि?
क. उमेश मण्डल
ख. गीतेश शर्मा
ग. गजेन्द्र ठाकुर
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. उमेश मण्डल
व्याख्या: एहि हिन्दी निबन्धक मैथिली अनुवाद उमेश मण्डल केलनि।

प्रश्न 503. निबन्धक मूल विषय की?
क. भारतीय मुसलमान समुदायक सामाजिक-सांस्कृतिक पहचानक विश्लेषण
ख. नाटक
ग. पद्य
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. भारतीय मुसलमान समुदायक सामाजिक-सांस्कृतिक पहचानक विश्लेषण
व्याख्या: निबन्धक मूल विषय भारतीय मुसलमान समुदायक सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान आ व्यवहारक विश्लेषणात्मक चर्चा थिक।

प्रश्न 504. निबन्धमे लेखक अपनाकेँ कोन रूपमे वर्णित करैत छथि?
क. नास्तिक
ख. कट्टर धार्मिक
ग. विदेशी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. नास्तिक
व्याख्या: निबन्धमे लेखक अपनाकेँ नास्तिक रूपमे वर्णित करैत छथि, जे एक मित्रक संग संवादक प्रसंगमे आएल अछि।

प्रश्न 505. निबन्धक तर्क-पद्धति की देखबैत अछि?

क. संवाद-शैलीमे आपसी प्रश्नोत्तरक माध्यमसँ विषय-विश्लेषण

ख. केवल सीधा कथन

ग. कोनो नहि

घ. कविता-शैली

उत्तर: क. संवाद-शैलीमे आपसी प्रश्नोत्तरक माध्यमसँ विषय-विश्लेषण

व्याख्या: निबन्ध एक संवाद-शैलीमे लिखल गेल अछि, जाहिमे लेखक अपन मित्रसँ प्रश्नोत्तरक माध्यमसँ विषयक विश्लेषण करैत छथि।

प्रश्न 506. निबन्धक अनुसार लेखकक टिप्पणी हिन्दू समुदायक कोन वर्गपर सेहो लागू होइत अछि?

क. जे अपनाकेँ धर्मक ठीकेदार मानैत छथि

ख. सभ हिन्दू

ग. केवल विदेशी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जे अपनाकेँ धर्मक ठीकेदार मानैत छथि

व्याख्या: लेखक स्पष्ट करैत छथि जे हुनकर टिप्पणी ओहि हिन्दू भाय-लोकनिपर सेहो लागू होइत अछि जे अपनाकेँ धर्मक ठीकेदार मानैत छथि — ई एक सन्तुलित, द्वि-पक्षीय आलोचना देखबैत अछि।

प्रश्न 507. विदेह-सदेह २१ मे एक अन्य रचनामे आइसीयू (ICU) सम्बन्धी प्रसंग कोन भावसँ जुड़ल अछि?

क. परिवारक चिन्ता आ राहतक क्षण

ख. हास्य

ग. विदेश-यात्रा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. परिवारक चिन्ता आ राहतक क्षण

व्याख्या: एहि रचनामे एकटा परिवारक आइसीयूक बाहर प्रतीक्षाक चिन्ताजनक क्षण आ बादमे राहतक भाव चित्रित अछि।

खण्ड ५२ : विदेह-सदेह २२ — बीहनि कथा विधाक इतिहास आ शब्द-व्युत्पत्ति (विस्तार)

प्रश्न 508. मुन्नाजीक आलेखक शीर्षक की?

क. बीहनि कथा (मानकीकरण ओ तुलनात्मक पक्ष)

ख. गोनू झा

ग. विद्यापति

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बीहनि कथा (मानकीकरण ओ तुलनात्मक पक्ष)

व्याख्या: मुन्नाजीक आलेखक शीर्षक ‘बीहनि कथा (मानकीकरण ओ तुलनात्मक पक्ष)’ थिक।

प्रश्न 509. मैथिली कथा-साहित्यक बीजारोपण केकर अनुवाद-कार्यसँ भेल मानल जाइत अछि?

क. चन्दा झा द्वारा विद्यापतिक ‘पुरुष परीक्षा’ क अनुवाद

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. ज्योतिरीश्वर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चन्दा झा द्वारा विद्यापतिक ‘पुरुष परीक्षा’ क अनुवाद

व्याख्या: मुन्नाजी अनुसार मैथिली कथा-साहित्यक बीजारोपण चन्दा झा द्वारा विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थ ‘पुरुष परीक्षा’ क अनुवादसँ भेल छल।

प्रश्न 510. अंग्रेजीक प्रभावसँ मैथिली कथाकेँ कोन अंग्रेजी नाम देल गेल, जकर अनुवाद ‘लघुकथा’ भेल?

क. Short Story

ख. Novel

ग. Drama

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. Short Story

व्याख्या: विद्वान/आलोचक अंग्रेजीक प्रभावसँ मैथिली कथाकेँ ‘Short Story’ कहलनि, जकर मैथिली अनुवाद ‘लघुकथा’ भेल।

प्रश्न 511. ‘बीहनि कथा’ विधाक नामकरण कतय भेल साहित्यिक बैसारमे भेल?

क. सहयात्री मंच, लोहना (मधुबनी)

ख. साहित्य अकादेमी, दिल्ली

ग. विदेह कार्यालय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सहयात्री मंच, लोहना (मधुबनी)

व्याख्या: सहयात्री मंच, लोहना (मधुबनी) द्वारा आयोजित साहित्यिक बैसारमे सामूहिक सर्वसम्मतिसँ ‘बीहनि कथा’ विधाक नामकरण भेल।

प्रश्न 512. ‘बीहनि’ शब्दक मूल संस्कृत शब्द की?

क. ब्रीही (बीज)

ख. कथा

ग. गल्प

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ब्रीही (बीज)

व्याख्या: ‘बीहनि’ शब्द संस्कृतक ‘ब्रीही’ (अर्थात् बीज) शब्दसँ व्युत्पन्न अछि।

प्रश्न 513. एहि शब्द-व्युत्पत्तिक सन्दर्भ के देने छथि, आलेख अनुसार?

क. प. भवनाथ झा

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. मुन्नाजी स्वयं

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. प. भवनाथ झा

व्याख्या: ‘बीहनि’ शब्दक मूलार्थक सन्दर्भ पं. भवनाथ झा देने छथि।

प्रश्न 514. ‘कथा’ शब्दक संस्कृत प्रयोगक उदाहरण कोन ग्रन्थसँ देल गेल?

क. कथासरित्सागर

ख. महाभारत

ग. रामायण

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कथासरित्सागर

व्याख्या: ‘कथा’ शब्दक संस्कृत प्रयोगक उदाहरण ‘कथासरित्सागर’ ग्रन्थसँ देल गेल।

प्रश्न 515. बीहनि कथा विधा कतेक वर्षसँ ‘कछुआ चालि’ सँ चलैत आबि रहल अछि, आलेख अनुसार?

क. २५ वर्ष

ख. दस वर्ष

ग. सय वर्ष

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. २५ वर्ष

व्याख्या: आलेख अनुसार बीहनि कथा विधा २५ वर्षसँ कछुआ चालिसँ चलैत-चलैत आइ अपन पहिचान बना चुकल अछि।

प्रश्न 516. मुन्नाजी अनुसार ‘बीज’/‘बीजम्’ शब्दक संस्कृत प्रयोगक उदाहरण कोन ग्रन्थसँ देल गेल?

क. महाभारत

ख. कथासरित्सागर

ग. रामायण

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. महाभारत

व्याख्या: ‘बीज/बीजम्’ शब्दक संस्कृत प्रयोगक उदाहरण महाभारतसँ देल गेल अछि।

प्रश्न 517. दुर्गानन्द मण्डलक समीक्षा-आलेखक शीर्षक की?

क. सोन्हगर

ख. बीहनि कथा

ग. गोनू झा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सोन्हगर

व्याख्या: दुर्गानन्द मण्डलक समीक्षा-आलेखक शीर्षक ‘सोन्हगर’ थिक।

प्रश्न 518. दुर्गानन्द मण्डल केकर काव्य-संग्रह ‘सोंहाँत-अनसोंहाँत’ पर समीक्षा लिखलनि?

क. डॉ. शिव कुमार प्रसाद

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. नन्द विलास राय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. डॉ. शिव कुमार प्रसाद

व्याख्या: दुर्गानन्द मण्डल डॉ. शिव कुमार प्रसादक काव्य-संग्रह ‘सोंहाँत-अनसोंहाँत’ पर समीक्षा लिखलनि।

प्रश्न 519. डॉ. शिव कुमार प्रसाद वृत्तिसँ कोन विषयक विद्वान छथि?

क. हिन्दी साहित्य

ख. मैथिली साहित्य

ग. अंग्रेजी साहित्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हिन्दी साहित्य

व्याख्या: डॉ. शिव कुमार प्रसाद वृत्तिसँ हिन्दी साहित्यक विद्वान छथि आ हरि प्रसाद साह महाविद्यालय, निर्मलीमे हिन्दी विभागक अध्यक्ष छथि।

खण्ड ५३ : विदेह-सदेह २३ — मैथिली SWOT विश्लेषण आ डिजिटल उपकरण (विस्तार)

प्रश्न 520. आलेखमे मैथिली भाषाक विश्लेषण कोन प्रबन्धन-विज्ञान पद्धतिसँ कएल गेल अछि?

क. SWOT (Strength-Weakness-Opportunity-Threat)

ख. केवल वर्णनात्मक

ग. कोनो नहि

घ. सांख्यिकीय मात्र

उत्तर: क. SWOT (Strength-Weakness-Opportunity-Threat)

व्याख्या: आलेखमे मैथिली भाषाक स्थितिक विश्लेषण SWOT (Strength-Weakness-Opportunity-Threat) पद्धतिसँ कएल गेल अछि, जे प्रबन्धन-विज्ञानक एक उपकरण थिक।

प्रश्न 521. SWOT मे ‘W’ (Weakness) अन्तर्गत कोन समस्याक उल्लेख अछि?

क. न्यूनता, दुर्बलता आ आत्म-प्रशंसाक परम्परा

ख. केवल सामर्थ्य

ग. केवल अवसर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. न्यूनता, दुर्बलता आ आत्म-प्रशंसाक परम्परा

व्याख्या: ‘W’ (Weakness) अन्तर्गत न्यूनता, दुर्बलता आ परस्पर आत्म-प्रशंसाक परम्परा (जे दोसराक निन्दा सेहो समेटैत अछि) क उल्लेख अछि।

प्रश्न 522. SWOT मे ‘O’ (Opportunity) अन्तर्गत कोन अभावक उल्लेख अछि?

क. विज्ञान, समाज विज्ञान, स्वास्थ्य आदि विषयक पोथीक अभाव

ख. केवल कथा-कविताक प्रचुरता

ग. कोनो अभाव नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. विज्ञान, समाज विज्ञान, स्वास्थ्य आदि विषयक पोथीक अभाव

व्याख्या: ‘O’ (Opportunity) अन्तर्गत मैथिलीमे चित्रकथा, विज्ञान, समाज विज्ञान, आध्यात्म, स्वास्थ्य आदि विषयक पोथीक अभावकेँ एक अवसरक रूपमे देखाओल गेल, जे भरल जा सकैत अछि।

प्रश्न 523. SWOT मे ‘T’ (Threat) अन्तर्गत कोन-कोन भीषिकाक उल्लेख अछि?

क. हताशा, शिक्षासँ निष्कासन, ताड़पत्रक उपेक्षा

ख. केवल आर्थिक समस्या

ग. कोनो भीषिका नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हताशा, शिक्षासँ निष्कासन, ताड़पत्रक उपेक्षा

व्याख्या: ‘T’ (Threat) अन्तर्गत हताशा, आत्महीनता, शिक्षासँ मैथिलीक निष्कासन, ताड़पत्रक उपेक्षा आ विदेशमे बिक्री सन भीषिकाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 524. यूनेस्को अनुसार भारत विश्वमे पुस्तक-प्रकाशनमे कोन स्थानपर अछि?

क. छठम

ख. प्रथम

ग. दसम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. छठम

व्याख्या: आलेख अनुसार यूनेस्को कहैत अछि जे भारत विश्वक छठम सभसँ पैघ पुस्तक प्रकाशक देश अछि।

प्रश्न 525. भारतमे अंग्रेजी लगा कऽ कतेक मान्यताप्राप्त भाषामे पोथी प्रकाशित होइत अछि?

क. २५

ख. दस

ग. सय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. २५

व्याख्या: आलेख अनुसार भारतमे अंग्रेजी लगा कऽ २५ मान्यताप्राप्त भाषामे पोथी प्रकाशित होइत अछि।

प्रश्न 526. आलेखमे कोन-कोन विदेशी प्रकाशन-संस्थाक नाम उल्लिखित अछि?

क. हार्पर कॉलिन्स, पेंगुइन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस आदि

ख. केवल भारतीय संस्था

ग. कोनो नहि

घ. केवल मैथिली संस्था

उत्तर: क. हार्पर कॉलिन्स, पेंगुइन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस आदि

व्याख्या: आलेखमे हार्पर कॉलिन्स, पेंगुइन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, मैकमिलन, रैंडम हाउस सन विदेशी प्रकाशन-संस्थाक नाम उल्लिखित अछि।

प्रश्न 527. देवनागरीमे टाइप करबाक लेल आलेखमे कोन सॉफ्टवेयरक उल्लेख अछि?

क. हिन्दी IME आ बराहा (Baraha)

ख. केवल माइक्रोसॉफ्ट वर्ड

ग. कोनो नहि

घ. केवल गूगल ट्रांसलेट

उत्तर: क. हिन्दी IME आ बराहा (Baraha)

व्याख्या: आलेखमे देवनागरी टंकणक लेल हिन्दी IME (bhashaindia.com) आ बराहा (Baraha) सॉफ्टवेयरक उल्लेख अछि।

प्रश्न 528. तिरहुता लिपि लिखबाक लेल आलेखमे कोन लिंकक उल्लेख अछि?

क. tirhutalipi.4t.com

ख. videha.co.in

ग. wikipedia.org

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. tirhutalipi.4t.com

व्याख्या: आलेखमे तिरहुता लिपि लिखबाक लेल ‘tirhutalipi.4t.com’ लिंकक उल्लेख अछि, संगहि प्रीति फॉन्टक प्रयोगक सुझाव सेहो अछि।

प्रश्न 529. आलेख अनुसार पाँच प्रमुख इंटरनेट ब्राउजर कोन-कोन अछि?

क. ओपेरा, मोजिल्ला, इंटरनेट एक्सप्लोरर, गूगल क्रोम, सफारी

ख. केवल एक

ग. केवल दू

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ओपेरा, मोजिल्ला, इंटरनेट एक्सप्लोरर, गूगल क्रोम, सफारी

व्याख्या: आलेख अनुसार पाँच प्रमुख इंटरनेट ब्राउजर ओपेरा, मोजिल्ला, माइक्रोसॉफ्टक इंटरनेट एक्सप्लोरर, गूगल क्रोम आ एपलक सफारी अछि।

प्रश्न 530. आलेखमे मैथिली विकीपीडियाक स्वीकृतिक विषयमे की उल्लेख अछि?

क. पहिने मैथिलीपर लेख छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल, बादमे स्वीकृति भेटल

ख. कहियो स्वीकृति नहि भेटल

ग. आरम्भहिसँ स्वीकृति छल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पहिने मैथिलीपर लेख छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल, बादमे स्वीकृति भेटल

व्याख्या: आलेख अनुसार पहिने विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल, किएक तँ मैथिली विकीपीडियाक स्वीकृति नहि भेटल छल — बादमे प्रयाससँ स्वीकृति भेटल।

प्रश्न 531. आलेख अनुसार विदेशी निवेशकक मैथिलीमे निवेशसँ की लाभ कहल गेल?

क. कल्याणकारी कार्य आ भाषाक प्रचार-प्रसार सम्भव

ख. केवल हानि

ग. कोनो लाभ नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कल्याणकारी कार्य आ भाषाक प्रचार-प्रसार सम्भव

व्याख्या: आलेख अनुसार विदेशी निवेशक कल्याणकारी कार्य सेहो करैत छथि, आ हुनका मैथिलीक विशेषता बुझा कऽ भाषाक प्रचार-प्रसारमे सहयोग लेल जा सकैत अछि।

खण्ड ५४ : विदेह-सदेह २३ — ब्राह्मी-कुटिल-तिरहुता लिपि-इतिहास (विस्तार)

प्रश्न 532. ऋग्वैदिक ऋचा कोन प्रकारक छन्दमे अछि?

क. वर्णवृत्त (वार्णिक छन्द)

ख. मात्रिक छन्द

ग. दुनू

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वर्णवृत्त (वार्णिक छन्द)

व्याख्या: आलेख अनुसार ऋग्वैदिक ऋचा वर्णवृत्तमे अछि, मात्रिक छन्दमे नहि।

प्रश्न 533. कौटिल्यक अर्थशास्त्र अनुसार लिपि-अंकक प्रशिक्षण कोन संस्कारक बाद होइत छल?

क. चूड़ाकर्म संस्कार

ख. विवाह संस्कार

ग. उपनयन संस्कार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चूड़ाकर्म संस्कार

व्याख्या: कौटिल्यक अर्थशास्त्र अनुसार चूड़ाकर्म संस्कारक बाद लिपि आ अंकक प्रशिक्षण होइत छल।

प्रश्न 534. बौद्ध ग्रन्थ सुत्तंतमे कोन क्रीड़ाक चर्चा अछि, जे आकाशमे अक्षर बनेबासँ सम्बद्ध छल?

क. अक्खरिका क्रीड़ा

ख. कोनो नहि

ग. कुटिल लिपि

घ. ब्राह्मी क्रीड़ा

उत्तर: क. अक्खरिका क्रीड़ा

व्याख्या: बौद्ध ग्रन्थ सुत्तंतमे अक्खरिका क्रीड़ाक चर्चा अछि, जाहिमे आकाशमे अक्षर बनेबाक स्पर्धा होइत छल।

प्रश्न 535. अशोकक एरागुडी अभिलेख कतेक पाँतीमे अछि?

क. २६ पाँती

ख. दस पाँती

ग. सय पाँती

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. २६ पाँती

व्याख्या: अशोकक एरागुडी अभिलेख २६ पाँतीमे अछि, जाहिमे लेखन-दिशा प्रायः वाम-दहिन अछि।

प्रश्न 536. ललितविस्तर ग्रन्थमे ब्राह्मी लिपिक अतिरिक्त कतेक टा आर लिपिक चर्चा अछि?

क. ६३ टा

ख. दस टा

ग. सय टा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ६३ टा

व्याख्या: ललितविस्तर ग्रन्थमे ब्राह्मी लिपिक अतिरिक्त ६३ टा आर लिपिक चर्चा अछि।

प्रश्न 537. कुटिल लिपिक विकास कोन शताब्दीमे भेल मानल जाइत अछि?

क. छठम शताब्दी सी.ई.

ख. दसम शताब्दी

ग. तेसर शताब्दी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. छठम शताब्दी सी.ई.

व्याख्या: कुटिल लिपिक विकास उत्तर भारतमे छठम शताब्दी सी.ई.मे भेल मानल जाइत अछि।

प्रश्न 538. कुटिल लिपिक पूब (पूर्वी) शाखामे कोन-कोन लिपि अबैत अछि?

क. किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, देवनागरी आदि

ख. केवल तिरहुता

ग. केवल देवनागरी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, देवनागरी आदि

व्याख्या: कुटिल लिपिक पूब शाखामे किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, तिब्बती, नन्दीनागरी आ देवनागरी सन लिपि अबैत अछि — माने तिरहुता कुटिल लिपिक एक वंशज थिक।

प्रश्न 539. ‘कुटिल लिपि’ क नामकरणक अनुशंसा के केलनि?

क. जेम्स प्रिंसेप

ख. बूलर

ग. टॉड

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जेम्स प्रिंसेप

व्याख्या: जेम्स प्रिंसेप, जे १८३७ ई.मे अशोकक अभिलेख पढ़ने छलाह, कुटिल लिपिक नामकरणक अनुशंसा केलनि।

प्रश्न 540. कुटिल लिपिक विकासक एक कारण की मानल गेल?

क. नव लेखन-उपकरण आ अलंकरणयुक्त अभिलेखक इच्छा

ख. केवल राजनीतिक कारण

ग. विदेशी आक्रमण

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नव लेखन-उपकरण आ अलंकरणयुक्त अभिलेखक इच्छा

व्याख्या: आलेख अनुसार करची-कलम आ मोशिक नव प्रयोगसँ अलंकरणयुक्त अभिलेख लिखबाक इच्छा कुटिल लिपिक विकासक एक कारण छल।

प्रश्न 541. कुटिल लिपिक अभिलेखमे कोन-कोन ऐतिहासिक नाम जुड़ल अछि?

क. कौशाम्बीक सप्तदीपक, मंदसौरक यशोधर्मनक अभिलेख

ख. केवल अशोक

ग. केवल मौर्य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कौशाम्बीक सप्तदीपक, मंदसौरक यशोधर्मनक अभिलेख

व्याख्या: कुटिल लिपिक अभिलेखमे कौशाम्बीक माटिक सदण्ड सप्तदीपक आ मंदसौरक यशोधर्मनक अभिलेखक उल्लेख अछि।

प्रश्न 542. उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला आ ब्राह्मीक बीच कोन प्रकारक समानताक चर्चा अछि?

क. कतेक अक्षरक ध्वनि-समानता (अलेफ्-अ, बेथ्-ब आदि)

ख. कोनो समानता नहि

ग. केवल आकारक समानता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कतेक अक्षरक ध्वनि-समानता (अलेफ्-अ, बेथ्-ब आदि)

व्याख्या: आलेखमे उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला आ ब्राह्मीक बीच अलेफ्-अ, बेथ्-ब, गिमेल्-ग सन कतेक अक्षरक ध्वनि-समानताक चर्चा अछि।

प्रश्न 543. ऐतरेय आरण्यकमे कोन-कोन तत्त्वक चर्चा अछि?

क. स्वर आ व्यंजन दुनू

ख. केवल स्वर

ग. केवल व्यंजन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. स्वर आ व्यंजन दुनू

व्याख्या: ऐतरेय आरण्यकमे स्वर आ व्यंजन दुनूक चर्चा अछि।

प्रश्न 544. तैत्तरीय उपनिषदमे कोन-कोन तत्त्वक चर्चा अछि?

क. वर्ण आ मात्रा दुनू

ख. केवल वर्ण

ग. केवल मात्रा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वर्ण आ मात्रा दुनू

व्याख्या: तैत्तरीय उपनिषदमे वर्ण आ मात्रा दुनूक चर्चा अछि।

खण्ड ५५ : विदेह-सदेह २३ — आठम शताब्दीक अभिलेख आ अक्षर-विकास (विस्तार)

प्रश्न 545. आठम शताब्दीक मुख्य अभिलेखमे के-केक नामक उल्लेख अछि?

क. जीवितगुप्त २ आ धर्मपाल

ख. अशोक

ग. गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जीवितगुप्त २ आ धर्मपाल

व्याख्या: आठम शताब्दीक मुख्य अभिलेखमे जीवितगुप्त २ केर देव-बार्नार्क स्तम्भ लेख आ धर्मपालक खलीलपुर अनुदान पत्र तथा बोधगया आकृति अभिलेखक उल्लेख अछि।

प्रश्न 546. ‘जीवितगुप्त २’ केर अभिलेखक नाम की?

क. देव-बार्नार्क स्तम्भ लेख

ख. खलीलपुर अनुदान पत्र

ग. बोधगया आकृति अभिलेख

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. देव-बार्नार्क स्तम्भ लेख

व्याख्या: जीवितगुप्त २ केर अभिलेखक नाम देव-बार्नार्क स्तम्भ लेख थिक।

प्रश्न 547. ‘धर्मपाल’ केर अनुदान पत्रक नाम की?

क. खलीलपुर अनुदान पत्र

ख. देव-बार्नार्क स्तम्भ लेख

ग. कोनो नहि

घ. अशोक अभिलेख

उत्तर: क. खलीलपुर अनुदान पत्र

व्याख्या: धर्मपालक अनुदान पत्रक नाम खलीलपुर अनुदान पत्र थिक, संगहि हुनकर समयक बोधगया आकृति अभिलेख सेहो उल्लिखित अछि।

प्रश्न 548. आलेख अनुसार आठम शताब्दी धरि स्वरमे कतेक परिवर्तन भेल?

क. कोनो परिवर्तन नहि

ख. पूर्ण परिवर्तन

ग. आंशिक परिवर्तन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कोनो परिवर्तन नहि

व्याख्या: आलेख अनुसार आठम शताब्दी धरि स्वरमे कोनो परिवर्तन नहि भेल छल।

प्रश्न 549. आलेख अनुसार ‘ब’ अक्षरक स्थान कोन अक्षर लऽ लेलक?

क. व

ख. भ

ग. य

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. व

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘ब’ केर स्थान ‘व’ लऽ लेलक — माने दुनू अक्षरक रूप-भेद मेटा गेल।

प्रश्न 550. आलेख अनुसार ‘भ’ आ ‘ह’ केर बीच की भेल?

क. अन्तर खत्म भऽ गेल

ख. अन्तर बढ़ि गेल

ग. कोनो परिवर्तन नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अन्तर खत्म भऽ गेल

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘भ’ आ ‘ह’ केर बीचक अन्तर खत्म भऽ गेल, जे पछबरिया प्रकारमे पहिनहिये भऽ गेल छल।

प्रश्न 551. ‘य’ अक्षरक कतेक प्रकार वर्णित अछि?

क. दू प्रकार

ख. एक प्रकार

ग. तीन प्रकार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दू प्रकार

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘य’ अक्षरक दू प्रकार वर्णित अछि — पहिल दू फँड़बला, दोसरमे न्यूनकोण कम स्पष्ट।

प्रश्न 552. ‘ष’ अक्षरक कतेक प्रकार वर्णित अछि?

क. तीन प्रकार

ख. एक प्रकार

ग. दू प्रकार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तीन प्रकार

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘ष’ अक्षरक तीन प्रकार वर्णित अछि, जे रूप-वक्रताक भिन्नतापर आधारित अछि।

प्रश्न 553. ‘ल’ अक्षरक कतेक प्रकार वर्णित अछि, आ ओकर भेद की?

क. दू प्रकार, वाम अंगक वक्रताक भिन्नतासँ

ख. एक प्रकार

ग. तीन प्रकार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दू प्रकार, वाम अंगक वक्रताक भिन्नतासँ

व्याख्या: ‘ल’ अक्षरक दू प्रकार वर्णित अछि, जे वाम अंगक वक्र/नोकशीक नीचाँ दिस नमगर होएबाक भिन्नतासँ चिन्हित अछि।

प्रश्न 554. एहि आलेखक पद्धति की देखबैत अछि?

क. प्रत्येक अक्षरक सूक्ष्म पुरालिपिशास्त्रीय (पैलियोग्राफिक) विकासक विश्लेषण

ख. केवल सामान्य इतिहास

ग. कोनो नहि

घ. कल्पित विवरण

उत्तर: क. प्रत्येक अक्षरक सूक्ष्म पुरालिपिशास्त्रीय (पैलियोग्राफिक) विकासक विश्लेषण

व्याख्या: एहि आलेखक पद्धति प्रत्येक अक्षरक रूप-परिवर्तनक सूक्ष्म, वैज्ञानिक पुरालिपिशास्त्रीय (पैलियोग्राफिक) विश्लेषण देखबैत अछि, जे तिरहुता-देवनागरी सन लिपिक उद्भवकेँ समझबामे सहायक अछि।

खण्ड ५६ : विदेह-सदेह २३ — विष्णुपद मन्दिर आ नारायणपाल अभिलेख (विस्तार)

प्रश्न 555. ‘न’ अक्षरक विकासमे ‘फानी’ रूप कोन दू कालक बीचक संक्रमण देखबैत अछि?

क. पूर्ण गुप्त काल आ तिरहुता

ख. केवल मौर्य काल

ग. केवल आधुनिक काल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पूर्ण गुप्त काल आ तिरहुता

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘न’ अक्षरमे फानी सन रूप पूर्ण गुप्त काल आ तिरहुताक बीचक एक संक्रमणकालीन रूप थिक।

प्रश्न 556. ‘य’ अक्षर कोन कालमे तिरहुता स्वरूप प्राप्त कऽ लेने अछि, आलेख अनुसार?

क. न्यूनकोण चपलाक बाद

ख. आरम्भहिसँ

ग. कहियो नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. न्यूनकोण चपलाक बाद

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘य’ अक्षरमे न्यूनकोण चपि जेलाक बाद ई तिरहुता स्वरूप प्राप्त कऽ लेने अछि।

प्रश्न 557. ‘विष्णुपद मन्दिर अभिलेख’ मे ‘इ’ अक्षरक कतेक प्रकारक रूप वर्णित अछि?

क. दू प्रकार

ख. एक प्रकार

ग. तीन प्रकार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दू प्रकार

व्याख्या: विष्णुपद मन्दिर अभिलेखमे ‘इ’ अक्षरक दू प्रकारक रूप वर्णित अछि — पहिलमे दूटा वृत्त ऊपर आ एकटा कटाव नीचाँ, दोसरमे एकटा क्षैतिज रेखा ऊपर आ दूटा वृत्त नीचाँ।

प्रश्न 558. विष्णुपद मन्दिर अभिलेखमे ‘ख’ अक्षर कोन लिपिक आकार लऽ लेने अछि?

क. तिरहुता

ख. देवनागरी

ग. कैथी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तिरहुता

व्याख्या: विष्णुपद मन्दिर अभिलेखमे ‘ख’ अक्षर तिरहुताक आकारक रूप लऽ लेने अछि।

प्रश्न 559. विष्णुपद मन्दिर अभिलेखमे ‘प’ अक्षरक कतेक प्रकार वर्णित अछि?

क. दू प्रकार (पुरान कोणयुक्त आ तिरहुताक लटपटौआ रूप)

ख. एक प्रकार

ग. तीन प्रकार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दू प्रकार (पुरान कोणयुक्त आ तिरहुताक लटपटौआ रूप)

व्याख्या: विष्णुपद मन्दिर अभिलेखमे ‘प’ अक्षरक दू प्रकार वर्णित अछि — एक पुरान कोणयुक्त रूप, दोसर तिरहुताक लटपटौआ रूप।

प्रश्न 560. ‘नारायणपालक भागलपुर अनुदान’ अभिलेखमे ‘अ/आ’ अक्षर कोन रूप प्राप्त कऽ लेने अछि?

क. पूरापूरी तिरहुता रूप

ख. पुरान ब्राह्मी रूप

ग. देवनागरी रूप

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पूरापूरी तिरहुता रूप

व्याख्या: नारायणपालक भागलपुर अनुदान अभिलेखमे ‘अ/आ’ अक्षर पूरापूरी तिरहुता रूप लऽ लेने अछि।

प्रश्न 561. नारायणपालक अभिलेखमे ‘घ’ अक्षरमे की परिवर्तन भेल?

क. न्यूनकोण खतम भऽ कऽ तिरहुताक आकार लऽ लेलक

ख. कोनो परिवर्तन नहि

ग. पुरान रूप बनल रहल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. न्यूनकोण खतम भऽ कऽ तिरहुताक आकार लऽ लेलक

व्याख्या: नारायणपालक अभिलेखमे ‘घ’ अक्षरमे न्यूनकोण खतम भऽ गेल आ ई तिरहुताक आकार लऽ लेलक।

प्रश्न 562. नारायणपालक अभिलेखमे ‘क’ अक्षरक त्रिभुजमे की परिवर्तन भेल?

क. त्रिभुज चाकर (विस्तृत) भऽ गेल

ख. त्रिभुज सँकरा भऽ गेल

ग. कोनो परिवर्तन नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. त्रिभुज चाकर (विस्तृत) भऽ गेल

व्याख्या: नारायणपालक अभिलेखमे ‘क’ अक्षरक त्रिभुज चाकर (विस्तृत) भऽ गेल अछि।

प्रश्न 563. एहि आलेख-शृंखलाक समग्र निष्कर्ष की देखबैत अछि?

क. तिरहुता लिपि क्रमिक, दस्तावेजीकृत ऐतिहासिक विकासक परिणाम थिक, अकस्मात उत्पत्ति नहि

ख. तिरहुता अकस्मात उत्पन्न भेल

ग. कोनो ऐतिहासिक आधार नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तिरहुता लिपि क्रमिक, दस्तावेजीकृत ऐतिहासिक विकासक परिणाम थिक, अकस्मात उत्पत्ति नहि

व्याख्या: एहि विस्तृत आलेख-शृंखलाक समग्र निष्कर्ष देखबैत अछि जे तिरहुता लिपि शताब्दी दर शताब्दी क्रमिक, दस्तावेजीकृत ऐतिहासिक विकासक परिणाम थिक, कोनो अकस्मात उत्पत्ति नहि।

खण्ड ५७ : विदेह-सदेह २४ — स्त्री-विमर्श निबन्ध आ ‘पुनर्जन्म’ कथा (विस्तार)

प्रश्न 564. स्त्री-विमर्श सम्बन्धी निबन्ध अनुसार ‘नारीवाद’ (feminism) आन्दोलनक मूल विषय की?

क. स्त्रीक राजनीतिक, सामाजिक आ शैक्षिक समानताक आन्दोलन

ख. केवल आर्थिक आन्दोलन

ग. केवल धार्मिक आन्दोलन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. स्त्रीक राजनीतिक, सामाजिक आ शैक्षिक समानताक आन्दोलन

व्याख्या: निबन्ध अनुसार नारीवाद (feminism) पुरुषक समकक्ष स्त्रीक राजनीतिक, सामाजिक आ शैक्षिक समानताक आन्दोलन थिक।

प्रश्न 565. निबन्ध अनुसार स्त्री-विमर्शक बहस मुख्यतः कोन वर्गसँ केन्द्रित रहल अछि?

क. मध्यम वर्ग

ख. उच्च वर्ग

ग. निम्न वर्ग

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मध्यम वर्ग

व्याख्या: निबन्ध अनुसार स्त्री-विमर्शक बहस मुख्यतः मध्यम वर्गीय नारीक विषयमे केन्द्रित रहल अछि, किएक तँ अधिकांश साहित्यकार-विमर्शकार स्वयं मध्यम वर्गीय पृष्ठभूमिसँ छथि।

प्रश्न 566. निबन्धमे कोन विदेशी विचारकक उल्लेख स्त्री-मुक्तिक अवधारणाक सम्बन्धमे भेल अछि?

क. सुलेमिथ फायरस्टोन

ख. सिमोन द बोउवार

ग. कोनो नहि

घ. वर्जीनिया वुल्फ

उत्तर: क. सुलेमिथ फायरस्टोन

व्याख्या: निबन्धमे सुलेमिथ फायरस्टोनक विचारक उल्लेख अछि, जे टेस्टट्यूब-द्वारा सन्तान-उत्पादनकेँ स्त्री-मुक्तिक अवधारणासँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 567. निबन्ध अनुसार स्त्रीक मातृत्वकेँ कोन दृष्टिकोणसँ देखब उचित मानल गेल?

क. जीवनक स्वाभाविक बातक रूपमे, पराधीनता नहि

ख. केवल बाध्यताक रूपमे

ग. निरर्थक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जीवनक स्वाभाविक बातक रूपमे, पराधीनता नहि

व्याख्या: निबन्ध अनुसार स्त्रीक मातृत्वकेँ हुनकर पराधीनता नहि, बल्कि जीवनक एक स्वाभाविक आ अनिवार्य पक्षक रूपमे देखब उचित मानल गेल अछि।

प्रश्न 568. ‘पुनर्जन्म’ लघुकथाक रचनाकार के छथि?

क. रमा नाथ मिश्र

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. आचार्य रामानंद मंडल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. रमा नाथ मिश्र

व्याख्या: ‘पुनर्जन्म’ लघुकथाक रचनाकार रमा नाथ मिश्र छथि।

प्रश्न 569. ‘पुनर्जन्म’ कथाक आरम्भहिमे की स्पष्ट कएल गेल अछि?

क. कथाक सभटा पात्र आ घटना पूर्णतः कल्पित अछि

ख. ई एक सत्य घटना अछि

ग. कोनो स्पष्टीकरण नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कथाक सभटा पात्र आ घटना पूर्णतः कल्पित अछि

व्याख्या: कथाक आरम्भहिमे स्पष्ट कएल गेल अछि जे ‘ई कहानी आ ऐ कहानीक सबटा पात्र एवं घटना पूर्णतः कल्पित अछि।’

प्रश्न 570. ‘पुनर्जन्म’ कथाक फ्रेम (बाहरी-संरचना) कोन सेटिंगसँ आरम्भ होइत अछि?

क. पटना कौलेजक टीचर्स रूममे प्रोफेसर सभक पुनर्जन्म-विषयक चर्चा

ख. विदेश-यात्रा

ग. नाटक-मंच

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पटना कौलेजक टीचर्स रूममे प्रोफेसर सभक पुनर्जन्म-विषयक चर्चा

व्याख्या: कथाक फ्रेम पटना कौलेजक टीचर्स रूममे आरम्भ होइत अछि, जतय प्रोफेसर सभ पुनर्जन्मक विषयपर चर्चा करैत छथि।

प्रश्न 571. कथाक भीतरी (मुख्य) कथाक नायक-नायिका के छथि?
क. रमेश त्रिपाठी आ कुसुमा फुकन
ख. गजेन्द्र आ प्रीति
ग. विद्यापति आ लखिमा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. रमेश त्रिपाठी आ कुसुमा फुकन
व्याख्या: कथाक भीतरी मुख्य कथाक नायक-नायिका रमेश त्रिपाठी आ कुसुमा फुकन छथि।

प्रश्न 572. कुसुमा फुकनक भाइ के छथि?
क. कल्पित फुकन
ख. दीपेन्द्र झा
ग. देवनाथ सिंह
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. कल्पित फुकन
व्याख्या: कुसुमा फुकन रमेश त्रिपाठीक मित्र कल्पित फुकनक बहिन छथि, जे असमक कोकराझार जिलाक गोसाईं गाँवक निवासी छथि।

प्रश्न 573. कथाक्रममे कुसुमाक संग कोन दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटैत अछि, गुवाहाटी-कामाख्या यात्राक क्रममे?
क. ब्रह्मपुत्र नदीमे डूबि जाएब
ख. विमान-दुर्घटना
ग. बेमारी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ब्रह्मपुत्र नदीमे डूबि जाएब
व्याख्या: कथाक्रममे कुसुमा कामाख्या मन्दिरक निकट ब्रह्मपुत्र नदीमे स्नान करैत काल बहि जाइत छथि, जे कथाक एक करुण मोड़ थिक।

प्रश्न 574. कथाक समग्र विषय की कहल जा सकैत अछि?
क. प्रेम, क्षति आ पुनर्जन्मक आध्यात्मिक विश्वासक एक भावनात्मक आख्यान
ख. केवल हास्य
ग. ऐतिहासिक
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. प्रेम, क्षति आ पुनर्जन्मक आध्यात्मिक विश्वासक एक भावनात्मक आख्यान
व्याख्या: ‘पुनर्जन्म’ क समग्र विषय प्रेम, अकाल क्षति आ पुनर्जन्मक आध्यात्मिक विश्वासपर आधारित एक भावनात्मक आख्यान (फ्रेम-नैरेटिव शैलीमे) थिक।

खण्ड ५८ : विदेह-सदेह २५ — सझिया रोपनि (विस्तार) आ वीरेन्द्र मल्लिक साक्षात्कार

प्रश्न 575. ‘सझिया रोपनि’ क पुरुष बीहनि कथाकार-सूचीमे प्रथम नाम के छथि?
क. घनश्याम घनेरो
ख. मुन्नाजी
ग. नारायणजी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. घनश्याम घनेरो
व्याख्या: ‘सझिया रोपनि’ क पुरुष बीहनि कथाकार-सूचीमे प्रथम नाम घनश्याम घनेरो छथि।

प्रश्न 576. ‘सझिया रोपनि’ क महिला बीहनि कथाकार-सूचीमे प्रथम नाम के छथि?
क. मुन्नी कामत
ख. आभा झा
ग. प्रियंवदा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मुन्नी कामत
व्याख्या: ‘सझिया रोपनि’ क महिला बीहनि कथाकार-सूचीमे प्रथम नाम मुन्नी कामत छथि।

प्रश्न 577. गजेन्द्र ठाकुर अनुसार घनश्याम घनेरोक ‘अछोप’ कथाक भाषिक विशेषता की?

क. सोंगर (ठेठ) मैथिलीक संग कटाह (कटु) भाव

ख. केवल मधुर भाषा

ग. विदेशी भाषाक मिश्रण

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सोंगर (ठेठ) मैथिलीक संग कटाह (कटु) भाव

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर अनुसार ‘अछोप’ सोंगर मैथिलीकेँ ठाढ़ रखबाक सम्पादकीय प्रयास दिस लक्षित अछि, मुदा भावमे कटाह (कटु) अछि।

प्रश्न 578. मुन्नाजीक ‘फोकस!’ कथाक भाव कोना वर्णित अछि?

क. खट-मिठाह

ख. केवल मधुर

ग. केवल कटु

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. खट-मिठाह

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर अनुसार मुन्नाजीक ‘फोकस!’ खट-मिठाह (मिश्रित स्वाद बला) भाव रखैत अछि।

प्रश्न 579. डा. वीरेन्द्र मल्लिकक साक्षात्कार के लेलनि?

क. नबोनारायण मिश्र

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. डॉ. प्रमोद कुमार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नबोनारायण मिश्र

व्याख्या: डा. वीरेन्द्र मल्लिकक साक्षात्कार नबोनारायण मिश्र द्वारा लेल गेल।

प्रश्न 580. ‘वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक’ क प्रस्तावित प्रकाशन कहिया घोषित भेल छल, मुदा नहि भऽ सकल?

क. २०१६

ख. २०१०

ग. २०२०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. २०१६

व्याख्या: सन् २०१६ मे विदेह ‘वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक’ प्रकाशित करबाक घोषणा केने रहए, मुदा अपेक्षित सहयोग नहि भेटबाक कारणे ई प्रकाशित नहि भऽ सकल।

प्रश्न 581. एहि विशेषांक हेतु विदेह द्वारा कुल कतेक प्रश्न तैयार कएल गेल छल?

क. १६ टा

ख. दस टा

ग. पाँच टा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १६ टा

व्याख्या: एहि विशेषांक हेतु विदेह द्वारा कुल १६ टा प्रश्न तैयार कएल गेल छल।

प्रश्न 582. साक्षात्कारक प्रश्न-सूचीमे कोन संस्थागत विषयपर प्रश्न सम्मिलित छल?

क. चेतना समितिमे दलित वर्गक प्रवेशक स्थिति

ख. केवल पारिवारिक विषय

ग. केवल आर्थिक विषय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चेतना समितिमे दलित वर्गक प्रवेशक स्थिति

व्याख्या: प्रश्न-सूचीमे एकटा प्रश्न ‘चेतना समीतिमे एखनो दलित वर्गक प्रवेश निषेध छै, एकरा अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ?’ क रूपमे सम्मिलित छल — ई एक सीधा साक्षात्कार-प्रश्न थिक, कोनो एकपक्षीय आरोप नहि।

प्रश्न 583. साक्षात्कारक प्रश्न-सूचीमे मैथिली साहित्यक भौगोलिक केन्द्रसँ सम्बद्ध कोन प्रश्न छल?

क. दरभंगा पीठक संग सहरसा पीठक उदयक विषयमे मत

ख. केवल पुरस्कार

ग. केवल पाठक-संख्या

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दरभंगा पीठक संग सहरसा पीठक उदयक विषयमे मत

व्याख्या: एकटा प्रश्न छल — ‘दरभंगे पीठ जकाँ आब सहरसा पीठ बनि रहल छै, ई मैथिलीक लेल नीक की खराप?’ — जे मैथिली साहित्यक भौगोलिक केन्द्रक विकेन्द्रीकरणपर विचार माँगैत छल।

प्रश्न 584. साक्षात्कारक शीर्षक की रहल?

क. मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी

ख. मैथिली मरि रहल अछि

ग. कोनो नहि

घ. साहित्यक भविष्य अन्धकारमय

उत्तर: क. मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी

व्याख्या: साक्षात्कारक शीर्षक ‘मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी’ थिक, जे डॉ. मल्लिकक समकालीन मैथिली साहित्यक प्रति आशावादी दृष्टिकोण देखबैत अछि।

खण्ड ५९ : विदेह-सदेह २५ — ढोल-पिपही कलाकार आ पलायन-संकट (विस्तार)

प्रश्न 585. ‘ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?’ शीर्षक आलेख केकर लिखल अछि?

क. किशन कारीगर

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. मुन्नाजी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. किशन कारीगर

व्याख्या: ‘ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?’ आलेख किशन कारीगर लिखलनि, जे मिथिलाक विलुप्त होइत लोक-कला परम्परापर हुनकर निरन्तर शृंखलाक एक अंग थिक।

प्रश्न 586. ‘पिपही’ वाद्य आन कोन नामसँ जानल जाइत अछि?

क. शहनाई

ख. ढोल

ग. डुगडुगी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शहनाई

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘पिपही’ कैं शहनाई सेहो कहल जाइत अछि, जे मांगलिक धून बजाबैत अछि।

प्रश्न 587. परम्परागत रूपें ढोल-पिपही कोन-कोन अवसरपर बजाओल जाइत छल?

क. दुर्गा पूजा, मूरन-उपनेन, बियाह-तिलक

ख. केवल शोक-अवसर

ग. केवल युद्ध

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दुर्गा पूजा, मूरन-उपनेन, बियाह-तिलक

व्याख्या: ढोल-पिपही दुर्गा पूजा, मूरन-उपनेन आ बियाह-तिलक सन मांगलिक अवसरपर बजाओल जाइत छल।

प्रश्न 588. लेखकक पैतृक गाम कोन नामसँ जानल जाइत अछि?

क. मंगरौना

ख. रंगपुर

ग. लोहना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मंगरौना

व्याख्या: लेखकक पैतृक गाम मंगरौना थिक।

प्रश्न 589. लेखक अपन गामक कोन-कोन प्रसिद्ध ढोल-पिपही कलाकारक नाम लैत छथि?

क. जुगेसर राम, देबन राम, सीताराम राम, बनैया, भोला राम

ख. केवल एक नाम

ग. विदेशी कलाकार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जुगेसर राम, देबन राम, सीताराम राम, बनैया, भोला राम

व्याख्या: लेखक अपन पैतृक गाम मंगरौनाक प्रसिद्ध ढोल-पिपही कलाकार जुगेसर राम, देबन राम, सीताराम राम, बनैया आ भोला रामक नाम लैत छथि।

प्रश्न 590. आलेख अनुसार ढोल-पिपही कलाकारक विलुप्तिक एक प्रमुख कारण की?

क. डी.जे. नाचक बढ़ैत प्रचलन आ नव पीढ़ीक अरुचि

ख. अधिक लोकप्रियता

ग. सरकारी समर्थन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. डी.जे. नाचक बढ़ैत प्रचलन आ नव पीढ़ीक अरुचि

व्याख्या: आलेख अनुसार डी.जे. नाचक बढ़ैत प्रचलन आ नव पीढ़ीमे ई कला सीखबाक अरुचिक कारणे ढोल-पिपही कलाकार विलुप्त भऽ रहल छथि।

प्रश्न 591. किशन कारीगरक एक आन आलेख 'भैंट' (एक लोक-मनोरंजन शैली) क उल्लेख कोन गामसँ जुड़ल अछि?

क. भरौड़ा (गोनू झाक गाम)

ख. मंगरौना

ग. रंगपुर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भरौड़ा (गोनू झाक गाम)

व्याख्या: लेखक अनुसार 'भैंट' (फकड़ा-शैलीक लोक-मनोरंजन) क परम्परा भरौड़ा गाम (गोनू झाक गाम) सँ हुनकर गाम मंगरौना धरि अबैत छल।

प्रश्न 592. 'भैंट' शैलीक उद्देश्य की छल, आलेख अनुसार?

क. समाजक स्वरूपकेँ फकड़ा-शैलीमे चिनहारि कऽ मनोरंजन करब

ख. केवल धन-कमाएब

ग. युद्ध-वर्णन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. समाजक स्वरूपकेँ फकड़ा-शैलीमे चिनहारि कऽ मनोरंजन करब

व्याख्या: 'भैंट' शैलीक उद्देश्य समाजक विभिन्न स्वरूप आ चरित्रकेँ फकड़ा-शैलीमे चिनहारि कऽ लोकक मनोरंजन करब छल, जाहिसँ कलाकार अपन आजीविका चलाबैत छलाह।

प्रश्न 593. किशन कारीगरक मिथिलाक पलायन-सम्बन्धी आलेखक मूल चिन्ता की?

क. मिथिलामे रोजगारक अभाव आ परदेश-कमाएबाक बाध्यता

ख. विदेशी निवेश

ग. कृषि-समृद्धि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मिथिलामे रोजगारक अभाव आ परदेश-कमाएबाक बाध्यता

व्याख्या: आलेखक मूल चिन्ता मिथिलामे रोजगारक अभाव अछि, जे लोककेँ परदेश (बाहर) कमाएब लेल बाध्य करैत अछि।

प्रश्न 594. आलेख अनुसार मिथिलामे रोजगारक विकल्पक रूपमे की सुझाओल गेल अछि?

क. फैक्ट्री, स्टार्ट-अप, लघु उद्योग

ख. केवल सरकारी नोकरी

ग. केवल कृषि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. फैक्ट्री, स्टार्ट-अप, लघु उद्योग

व्याख्या: आलेखमे सुझाओल गेल अछि जे मिथिलामे फैक्ट्री, स्टार्ट-अप आ लघु उद्योग सन रोजगारक नव विकल्पपर विचार करबाक आवश्यकता अछि, यद्यपि लेखक एहन प्रयासक सामाजिक उपहास सेहो उल्लेख करैत छथि।

खण्ड ६० : विदेह-सदेह २६ — मैथिली साहित्यक काल-विभाजन (शम्भु कुमार सिंह)

प्रश्न 595. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक जन्म कहिया भेल?

क. १८ अप्रील १९६५

ख. १ जनवरी १९७०

ग. १५ अगस्त १९६०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १८ अप्रील १९६५

व्याख्या: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक जन्म १८ अप्रील १९६५ कैं सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे भेल।

प्रश्न 596. एहि आलेखक उपशीर्षक अनुसार ई कोन परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी कहल गेल?

क. यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थी

ख. केवल विद्यालय छात्र

ग. विदेशी छात्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थी

व्याख्या: आलेखक उपशीर्षकमे स्पष्ट कहल गेल जे ई यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी अछि।

प्रश्न 597. शम्भु कुमार सिंह अनुसार मैथिली साहित्यक काल-विभाजन कतेक युगमे कएल गेल अछि?

क. तीन (गीतिकाव्य, नाटक, गद्य)

ख. दू

ग. पाँच

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तीन (गीतिकाव्य, नाटक, गद्य)

व्याख्या: शम्भु कुमार सिंह अनुसार मैथिली साहित्यक काल-विभाजन तीन युगमे कएल गेल अछि — गीतिकाव्य युग, नाटक युग आ गद्य युग।

प्रश्न 598. गीतिकाव्य युगक प्रवर्तक के मानल गेलाह?

क. महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव)

ख. ज्योतिरीश्वर

ग. चंदा झा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव)

व्याख्या: गीतिकाव्य युगक प्रवर्तक महाकवि विद्यापति ठाकुर (अभिनव जयदेव) मानल गेलाह।

प्रश्न 599. मध्य युगकैं कोन नामसँ चिन्हित कएल गेल, आ किएक?

क. नाटक युग, नाट्य-रचना दिस प्रवृति झुकलाक कारणे

ख. गद्य युग

ग. गीतिकाव्य युग

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नाटक युग, नाट्य-रचना दिस प्रवृति झुकलाक कारणे

व्याख्या: मध्य युगकैं ‘नाटक युग’क संज्ञा देल गेल, किएक तँ ओहि कालमे गीति-संयोगसँ नाटकक रचना दिस लोकक प्रवृति झुकल।

प्रश्न 600. मम्म. डॉ. उमेश मिश्र कोन सालमे ‘मैथिली भाषा ओ साहित्य’ विषयपर भाषण देलनि?

क. मार्च १९५३

ख. १९६० मे

ग. १९४० मे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मार्च १९५३

व्याख्या: मम्म. डॉ. उमेश मिश्र बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्क वार्षिक अधिवेशन, मार्च १९५३ मे अध्यक्ष पदसँ ‘मैथिली भाषा ओ साहित्य’ पर भाषण देलनि।

प्रश्न 601. डॉ. उमेश मिश्र अनुसार आदियुगक कालखण्ड की छल?

क. १०००-१६०० ई.

ख. १३००-१८०० ई.

ग. ८००-१२०० ई.

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १०००-१६०० ई.

व्याख्या: डॉ. उमेश मिश्र अनुसार आदियुगक कालखण्ड १०००-१६०० ई. धरि छल, जकरा ओ गीतियुग कहलनि।

प्रश्न 602. डॉ. जयकान्त मिश्रक शोध-प्रबन्धक अंग्रेजी नाम की?

क. The History of Maithili Literature

ख. Maithili Drama History

ग. Tirhuta Script History

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. The History of Maithili Literature

व्याख्या: डॉ. जयकान्त मिश्रक शोध-प्रबन्ध ‘The History of Maithili Literature, Volume-I’ साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित भेल।

प्रश्न 603. डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार ‘प्राक् मैथिली काल’ क कालखण्ड की छल?

क. आठम शताब्दीसँ बारहम शताब्दी धरि

ख. दसम शताब्दीसँ

ग. चौदहम शताब्दीसँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आठम शताब्दीसँ बारहम शताब्दी धरि

व्याख्या: डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार ‘प्राक् मैथिली काल’ आठम शताब्दीसँ बारहम शताब्दी धरि छल।

प्रश्न 604. डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार ‘प्रारंभिक मैथिली साहित्य’ काल कहिया धरि छल?

क. १३०० ई.सँ १६०० ई.

ख. १००० ई.सँ १३०० ई.

ग. १६००सँ १८००

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १३०० ई.सँ १६०० ई.

व्याख्या: डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार ‘प्रारंभिक मैथिली साहित्य’ काल १३०० ई.सँ १६०० ई. धरि छल।

प्रश्न 605. आलेखक केन्द्रीय प्रश्न की?

क. काल-विभाजनक तिथि-निर्धारणमे विद्वानमे मतैक्य किएक नहि अछि

ख. केवल ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत करब

ग. कोनो प्रश्न नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. काल-विभाजनक तिथि-निर्धारणमे विद्वानमे मतैक्य किएक नहि अछि

व्याख्या: आलेख प्रश्न उठाबैत अछि जे मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक तिथि-निर्धारणमे विद्वान लोकनिमे मतैक्य किएक नहि अछि, जे विभिन्न विद्वानक भिन्न-भिन्न कालखण्ड-निर्धारणसँ स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ६१ : विदेह-सदेह २६ — काल-विभाजनक प्रतिस्पर्धी सिद्धान्त (विस्तार)

प्रश्न 606. नव जागरण-कालक अन्तर्गत ‘जनचेतना युग’ कहिया प्रारम्भ मानल गेल?

क. १९८६ ई.सँ

ख. १९४७ ई.सँ

ग. १९३६ ई.सँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९८६ ई.सँ

व्याख्या: नव जागरण-कालक अन्तर्गत ‘जनचेतना युग’ १९८६ ई.सँ प्रारम्भ मानल गेल अछि।

प्रश्न 607. प्रो. धीरेन्द्र ‘मैथिली प्रकाश’ कोन सालमे काल-विभाजनपर अपन मत प्रस्तुत केलनि?

क. नवम्बर १९८६

ख. १९६० मे

ग. १९७० मे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नवम्बर १९८६

व्याख्या: प्रो. धीरेन्द्र ‘मैथिली प्रकाश’ नवम्बर १९८६ मे काल-विभाजनक प्रसंगमे अपन मत प्रस्तुत केलनि।

प्रश्न 608. प्रो. धीरेन्द्र अनुसार ‘ज्योतिरीश्वर युग’ क कालखण्ड की छल?

क. १३२४ सँ १४१२ ई.

ख. ८०० सँ १३२४ ई.

ग. १४१२ सँ १५२७ ई.

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १३२४ सँ १४१२ ई.

व्याख्या: प्रो. धीरेन्द्र अनुसार ‘ज्योतिरीश्वर युग’ १३२४ सँ १४१२ ई. धरि छल।

प्रश्न 609. समालोचक प्रो. झा प्रो. धीरेन्द्रक कोन प्रस्तावसँ असहमत छथि?

क. ज्योतिरीश्वर नामसँ एक पृथक युगक कल्पना

ख. विद्यापति युगक नाम

ग. उत्तर विद्यापति युगक नाम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ज्योतिरीश्वर नामसँ एक पृथक युगक कल्पना

व्याख्या: समालोचक प्रो. झा विद्यापति युग आ उत्तर विद्यापति युगक मतसँ सहमत छथि, परन्तु ज्योतिरीश्वर नामसँ एक पृथक युगक कल्पनाकेँ उचित नहि मानैत छथि।

प्रश्न 610. प्रो. प्रेमशंकर सिंह ‘वैदेही’ कोन सालक पत्रिकामे काल-विभाजनपर निबन्ध लिखलनि?

क. १९६३ ई. (जनवरी-मार्च अंक)

ख. १९५० ई.

ग. १९७० ई.

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९६३ ई. (जनवरी-मार्च अंक)

व्याख्या: प्रो. प्रेमशंकर सिंह ‘वैदेही’ १९६३ ई.क जनवरी-मार्च अंकमे ‘मैथिली साहित्यक काल विभाजन’ शीर्षक निबन्ध लिखलनि।

प्रश्न 611. प्रो. प्रेमशंकर सिंह ‘वैदेही’ अनुसार ‘अपभ्रंश काल’ कहिया धरि छल?

क. १००० ई.सँ पूर्व

ख. १३२४ ई. धरि

ग. १८५७ ई. धरि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १००० ई.सँ पूर्व

व्याख्या: प्रो. प्रेमशंकर सिंह ‘वैदेही’ अनुसार ‘अपभ्रंश काल’ १००० ई.सँ पूर्वक मानल गेल अछि।

प्रश्न 612. डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार ‘कोर्ट ऑफ वर्डस्’ क घटना कोन सालक आधुनिक काल-प्रारम्भक तर्कसँ जुड़ल अछि?

क. १८६० ई.

ख. १९४७ ई.

ग. १३२४ ई.

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १८६० ई.

व्याख्या: डॉ. जयकान्त मिश्र तर्क दैत छथि जे १८६० मे मिथिलाक शासन ‘कोर्ट ऑफ वर्डस्’क अधीन चलि गेल, जकर फलस्वरूप भाषा-साहित्य नव रूप धारण कऽ लेलक — एहि आधारपर ओ आधुनिक कालक प्रारम्भ १८६० सँ मानैत छथि।

प्रश्न 613. आलेख अनुसार १८५७ सँ आधुनिक युगक प्रारम्भ मानबाक की प्रमुख कारण देल गेल?

क. १८५७क क्रान्ति आ व्यक्तिक स्वतन्त्रता-चेतनाक उभार

ख. केवल भाषा-परिवर्तन

ग. केवल साहित्यिक कारण

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १८५७क क्रान्ति आ व्यक्तिक स्वतन्त्रता-चेतनाक उभार

व्याख्या: आलेख अनुसार १८५७क क्रान्ति आ ओहिसँ उत्पन्न व्यक्तिक स्वतन्त्रता-चेतनाक उभार आधुनिक युगक प्रारम्भ १८५७ सँ मानबाक प्रमुख कारण थिक।

प्रश्न 614. मैथिली साहित्यक आदिकालपर अलग आलेखक उपशीर्षक की?

क. यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी

ख. केवल विद्यालय छात्र हेतु

ग. विदेशी छात्र हेतु

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी

व्याख्या: ‘मैथिली साहित्यक आदिकाल’ आलेखक उपशीर्षक सेहो ‘यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी’ अछि।

प्रश्न 615. आलेख अनुसार मिथिला प्राचीन काल कोन विद्याक केन्द्र रहल?

क. संस्कृत

ख. अंग्रेजी

ग. फारसी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. संस्कृत

व्याख्या: आलेख अनुसार मिथिला प्राचीन काल संस्कृतक केन्द्र रहल, जतय सम्पूर्ण भारत — विशेषतः पूर्वांचल — सँ छात्र संस्कृत-अध्ययनक हेतु अबैत छलाह।

खण्ड ६२ : विदेह-सदेह २९ — रवि भूषण पाठकक ‘औझका डायरी’ (विस्तार)

प्रश्न 616. रवि भूषण पाठकक डायरी-स्तम्भक नाम की?

क. औझका डायरी

ख. आँखिमे चित्र

ग. पथ दर्शन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. औझका डायरी

व्याख्या: रवि भूषण पाठकक डायरी-स्तम्भक नाम ‘औझका डायरी’ थिक, जे दैनिक/तारीखवार लघु चिन्तन-प्रविष्टिक रूपमे लिखल गेल अछि।

प्रश्न 617. ‘औझका डायरी’ क प्रविष्टि कोन प्रारूपमे लिखल गेल अछि?

क. तारीखसहित छोट-छोट चिन्तनात्मक टिप्पणी

ख. दीर्घ निबन्ध

ग. पत्र-शैली

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तारीखसहित छोट-छोट चिन्तनात्मक टिप्पणी

व्याख्या: ‘औझका डायरी’ क हर प्रविष्टि तारीखक संग छोट-छोट चिन्तनात्मक टिप्पणीक रूपमे लिखल गेल अछि (जेना ०७-०४-२०१७, ११-०४-२०१७ आदि)।

प्रश्न 618. डायरीमे ७ अप्रैल २०१७ क प्रविष्टिमे कोन मध्यकालीन कविक प्रसंग अछि?

क. मलिक मुहम्मद जायसी

ख. विद्यापति

ग. ज्योतिरीश्वर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मलिक मुहम्मद जायसी

व्याख्या: ७ अप्रैल २०१७ क प्रविष्टिमे जायसी (पद्मावतक रचयिता) क प्रसंग अछि, जे एक भिन्न धर्मक होइतहु भारतीय संवेदना आ नारी-जीवनकेँ गहिराइसँ बुझलनि, ओहिपर चिन्तन कएल गेल अछि।

प्रश्न 619. डायरीक ११ अप्रैल २०१७ क प्रविष्टिमे लेखक कोन विषयपर चिन्तन करैत छथि?

क. मैथिलीकेँ चाही एहन आलोचकक स्वरूप

ख. केवल हास्य

ग. विदेश-यात्रा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिलीकेँ चाही एहन आलोचकक स्वरूप

व्याख्या: ११ अप्रैल २०१७ क प्रविष्टिमे लेखक मैथिलीकेँ चाही एहन आलोचकक स्वरूपपर चिन्तन करैत छथि — जेकरामे बहुज्ञता, रसबोध, समय-सजगता आ फॉर्म-कंटेंट दुनूक बुझनाइ होए।

प्रश्न 620. डायरीक १३ अप्रैल २०१७ प्रविष्टिमे लेखक कोन विषयपर सावधानी दैत छथि?

क. मिथिलाक कला/संगीतकेँ अनावश्यक उपराष्ट्रीयताक ठप्पासँ बचबाक

ख. केवल आर्थिक विषय

ग. विदेशी राजनीति

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मिथिलाक कला/संगीतकेँ अनावश्यक उपराष्ट्रीयताक ठप्पासँ बचबाक

व्याख्या: १३ अप्रैल २०१७ प्रविष्टिमे लेखक चिन्ता व्यक्त करैत छथि जे मिथिलाक कला/गायन-परम्परासँ अनावश्यक उपराष्ट्रीयताक ठप्पा वा अत्यधिक अपेक्षासँ बचाओल जाएब चाही, ताकि ओकर स्वाभाविक विकास बाधित नहि होए।

प्रश्न 621. रवि भूषण पाठक अपन सरकारी सेवा कोन विभागमे करैत छथि?

क. उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभाग

ख. रेलवे

ग. डाक विभाग

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभाग

व्याख्या: रवि भूषण पाठक उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभागसँ जुड़ल सरकारी सेवामे कार्यरत छथि।

प्रश्न 622. रवि भूषण पाठकक एक अन्य रचना-शृंखलाक नाम की, जे ‘घर’ शीर्षकसँ अछि?

क. घर (एक, दू, तीन आदि शृंखला)

ख. औझका डायरी मात्र

ग. केवल कविता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. घर (एक, दू, तीन आदि शृंखला)

व्याख्या: रवि भूषण पाठकक ‘घर (एक)’, ‘घर (दू)’, ‘घर (तीन)’ सन शीर्षकसँ एक रचना-शृंखला अछि, जे पारिवारिक जीवनक विभिन्न पक्षपर आधारित प्रतीत होइत अछि।

खण्ड ६३ : विदेह-सदेह ३० — मैथिली उच्चारण-लेखन नियम (विस्तार)

प्रश्न 623. मैथिलीमे ‘व’ क उच्चारण कोना होइत अछि, नियम अनुसार?

क. ब जकाँ

ख. व जकाँ ही

ग. केवल लिखितमे भिन्न

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ब जकाँ

व्याख्या: नियम अनुसार मैथिलीमे ‘व’ क उच्चारण ‘ब’ कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा लेखनमे ‘ब’ रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही — जेना वैद्यनाथ, विद्या, वंश आदि शब्द उच्चारणमे ‘बैद्यनाथ, बिद्या, बंश’ सन सुनाइत अछि मुदा लेखनमे ‘व’ रहैत अछि।

प्रश्न 624. मैथिलीमे ‘य’ क उच्चारण कतहु-कतहु कोन ध्वनि जकाँ होइत अछि, मुदा लिखब नहि चाही?

क. ज जकाँ

ख. ब जकाँ

ग. ख जकाँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ज जकाँ

व्याख्या: नियम अनुसार कतहु-कतहु ‘य’ क उच्चारण ‘ज’ जकाँ करैत देखल जाइत अछि (जेना यज्ञ, यमुना), मुदा लेखनमे ओकरा ‘ज’ नहि लिखबाक चाही।

प्रश्न 625. मैथिलीमे ‘ष’ क उच्चारण अधिकांशतः कोन ध्वनि जकाँ होइत अछि?

क. ख

ख. स

ग. श

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ख

व्याख्या: नियम अनुसार मैथिली भाषामे अधिकांशतः ‘ष’ क उच्चारण ‘ख’ जकाँ होइत अछि (जेना षड्यन्त्र-खड़यन्त्र, षोडशी-खोड़शी, सन्तोष-सन्तोख)।

प्रश्न 626. प्राचीन मैथिली लेखन-परम्परामे शब्दक पाछाँ कोन-कोन प्रत्यय बलक लेल जोड़ल जाइत छल?

क. हि, हु

ख. ता, ती

ग. ओं, एँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हि, हु

व्याख्या: प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ ‘हि’ आ ‘हु’ लगाओल जाइत छल (जेना हुनकहि, अपनहु, ओकरहु)।

प्रश्न 627. ‘ढ’ आ ‘ढ़’ क प्रयोगक सामान्य नियम की?

क. शब्दक शुरूमे ढ, मध्य-अन्तमे ढ़

ख. सर्वत्र ढ मात्र

ग. सर्वत्र ढ़ मात्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शब्दक शुरूमे ढ, मध्य-अन्तमे ढ़

व्याख्या: सामान्यतया शब्दक शुरूमे ‘ढ’ अबैत अछि (जेना ढाकी, ढेकी), जखन कि मध्य आ अन्तमे ‘ढ़’ अबैत अछि (जेना पढ़ाइ, बढ़ब, साँढ़) — इएह नियम ‘ड’ आ ‘ड़’ क लेल सेहो लागू होइत अछि।

प्रश्न 628. नवीन वर्तनीमे प्राचीन ‘कएल, जाए, माए’ क बदला की लिखल जाइत अछि?

क. कयल, जाय, माय

ख. केयल, जायि, मायि

ग. कोनो परिवर्तन नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कयल, जाय, माय

व्याख्या: नवीन वर्तनी अनुसार प्राचीन ‘कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए’ क बदला ‘कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय’ लिखल जाइत अछि।

प्रश्न 629. एहि पोथीमे ‘ए’ आ ‘य’ क प्रयोगमे कोन पद्धतिक अनुसरण कएल गेल अछि, आ किएक?

क. प्राचीन पद्धति, किएक तँ दुनूमे कोनो विशेष सहजता-दुरूहताक भेद नहि

ख. नवीन पद्धति

ग. दुनू मिश्रित

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. प्राचीन पद्धति, किएक तँ दुनूमे कोनो विशेष सहजता-दुरूहताक भेद नहि

व्याख्या: एहि पोथीमे प्राचीन पद्धतिक अनुसरण उपयुक्त मानल गेल अछि, किएक तँ दुनू (प्राचीन-नवीन) क लेखनमे कोनो विशेष सहजता वा दुरूहताक भेद नहि अछि।

खण्ड ६४ : विदेह-सदेह ३२ — उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क जीवनी (विस्तार)

प्रश्न 630. उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क जन्म कहिया आ कतय भेल?

क. १९५१, कलकत्ता (पश्चिम बंगाल)

ख. १९६० दिल्ली

ग. १९४५ पटना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९५१, कलकत्ता (पश्चिम बंगाल)

व्याख्या: उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क जन्म सन् १९५१ मे कलकत्ता (पश्चिम बंगाल) मे भेल।

प्रश्न 631. नचिकेताक स्नातक शिक्षा कतयसँ भेल?

क. बी.ए. (सम्मान) भाषाविज्ञान, कलकत्ता विश्वविद्यालय

ख. दिल्ली विश्वविद्यालय

ग. पटना विश्वविद्यालय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बी.ए. (सम्मान) भाषाविज्ञान, कलकत्ता विश्वविद्यालय

व्याख्या: नचिकेता बी.ए. (सम्मान) भाषाविज्ञानमे कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ प्रथम ईशान स्कॉलरक रूपमे उत्तीर्ण भेलाह।

प्रश्न 632. नचिकेताक पी-एच.डी. भाषाविज्ञानमे कतयसँ भेल?

क. दिल्ली विश्वविद्यालय

ख. कलकत्ता विश्वविद्यालय

ग. हैदराबाद विश्वविद्यालय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दिल्ली विश्वविद्यालय

व्याख्या: नचिकेता एम.ए. आ पी-एच.डी. भाषाविज्ञानमे दिल्ली विश्वविद्यालयसँ प्राप्त केलनि।

प्रश्न 633. नचिकेता मैथिली आ कोन अन्य भाषाक कवि-नाटककारक रूपमे प्रख्यात छथि?

क. बंगला

ख. हिन्दी

ग. अंग्रेजी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बंगला

व्याख्या: नचिकेता मैथिली आ बंगला साहित्यक कवि आ नाटककारक रूपमे प्रख्यात छथि।

प्रश्न 634. नचिकेता कोन-कोन विश्वविद्यालयमे कार्यरत रहलाह, स्रोत अनुसार?

क. महाराजा सियाजी राव विश्वविद्यालय (बड़ौदा), दक्षिणी गुजरात विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय

ख. केवल एक विश्वविद्यालय

ग. विदेशी विश्वविद्यालय मात्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. महाराजा सियाजी राव विश्वविद्यालय (बड़ौदा), दक्षिणी गुजरात विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय

व्याख्या: नचिकेता महाराजा सियाजी राव विश्वविद्यालय (बड़ौदा, १९७९-८१), दक्षिणी गुजरात विश्वविद्यालय (१९८१-८५), दिल्ली विश्वविद्यालय (१९८५-८७) आ हैदराबाद विश्वविद्यालयमे कार्यरत रहलाह।

प्रश्न 635. नचिकेता कोन-कोन देशमे साहित्यिक गतिविधिमे सहभागी भेलाह, स्रोत अनुसार?

क. बांगलादेश, कैरबियन आइलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, नेपाल, पाकिस्तान, रूस, सिंगापुर, स्वीडन, थायलैण्ड, अमेरिका

ख. केवल भारत

ग. केवल यूरोप

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बांगलादेश, कैरबियन आइलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, नेपाल, पाकिस्तान, रूस, सिंगापुर, स्वीडन, थायलैण्ड, अमेरिका

व्याख्या: नचिकेता बांगलादेश, कैरबियन आइलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, नेपाल, पाकिस्तान, रूस, सिंगापुर, स्वीडन, थायलैण्ड आ अमेरिका सन अनेक देशमे साहित्यिक गतिविधिमे सहभागी भेलाह।

प्रश्न 636. नचिकेता कोन अन्तरराष्ट्रीय संस्थाक सदस्य रहलाह?

क. इंडो-इटैलियन कल्चरल एक्सचेंज फॉर क्रिएटिव राइटर्स (१९९९)

ख. केवल भारतीय संस्था

ग. विश्व बैंक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. इंडो-इटैलियन कल्चरल एक्सचेंज फॉर क्रिएटिव राइटर्स (१९९९)

व्याख्या: नचिकेता इंडो-इटैलियन कल्चरल एक्सचेंज फॉर क्रिएटिव राइटर्सक सदस्य (१९९९) रहलाह, संगहि त्रिनिदाद-टॉबेगो आ मॉरीशसमे सेहो कार्यालयी प्रतिनिधि रहलाह।

प्रश्न 637. नचिकेताक नाटक ‘नो एण्ट्री: मा प्रविश’ कतेक वर्षक मौनभंगक बाद पाठकक सम्मुख आएल, स्रोत अनुसार?
क. २५ वर्ष
ख. दस वर्ष
ग. ५० वर्ष
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. २५ वर्ष
व्याख्या: स्रोत अनुसार ‘नो एण्ट्री: मा प्रविश’ नचिकेताजीक २५ वर्षक मौनभंगक पश्चात् पाठकक सम्मुख प्रस्तुत भेल नाटक थिक।

खण्ड ६५ : विदेह-सदेह ३३ — नाटक ‘अपाला आत्रेयी’ (वैदिक ऋषिका)

प्रश्न 638. ‘अपाला आत्रेयी’ नाटकक मुख्य पात्र के छथि?
क. अपाला (ऋग्वैदिक ऋचाक लेखिका)
ख. विद्यापति
ग. कृशाश्व
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. अपाला (ऋग्वैदिक ऋचाक लेखिका)
व्याख्या: ‘अपाला आत्रेयी’ नाटकक मुख्य पात्र अपाला छथि, जिनका पात्र-परिचयमे ‘ऋग्वैदिक ऋचाक लेखिका’ कहल गेल अछि।

प्रश्न 639. अपालाक पिता के छथि, नाटक अनुसार?
क. ऋषि अत्रि
ख. कृशाश्व
ग. गोनू झा
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ऋषि अत्रि
व्याख्या: नाटक अनुसार अपालाक पिता ऋषि अत्रि छथि।

प्रश्न 640. अपालाक पति के छथि, नाटक अनुसार?
क. कृशाश्व
ख. ऋषि अत्रि
ग. कोनो नहि
घ. विद्यापति
उत्तर: क. कृशाश्व
व्याख्या: नाटक अनुसार अपालाक पति कृशाश्व छथि।

प्रश्न 641. नाटकक आरम्भिक दृश्य कतय स्थापित अछि?
क. आमक गाछीक मध्य (सहकार-कुञ्ज)
ख. कोर्ट
ग. विदेश
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. आमक गाछीक मध्य (सहकार-कुञ्ज)
व्याख्या: नाटकक आरम्भिक दृश्य आमक गाछीक मध्य (सहकार-कुञ्ज) मे स्थापित अछि।

प्रश्न 642. नाटकमे अपालाकेँ कोन शारीरिक समस्या होइत अछि?
क. त्वचा रोग (श्वेत कुष्ठ)
ख. दृष्टि-दोष
ग. बधिरता
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. त्वचा रोग (श्वेत कुष्ठ)
व्याख्या: नाटकमे अपालाक शरीरपर त्वक् रोगक लक्षण आ श्वेत कुष्ठक चिह्न देखाइ पड़ैत अछि।

प्रश्न 643. नाटकक अन्तिम भागमे अपालाक रचनाक संग की होइत अछि?

क. ऋत्विजगणक मंत्र-संग्रहमे आधिकारिक रूपें सम्मिलित कएल जाइत अछि

ख. नष्ट कएल जाइत अछि

ग. गुप्त राखल जाइत अछि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ऋत्विजगणक मंत्र-संग्रहमे आधिकारिक रूपें सम्मिलित कएल जाइत अछि

व्याख्या: नाटकक अन्तिम भाग (ब्रह्मोदय-दृश्य) मे अपालाक स्वतःस्फुटित ऋचाकेँ ऋषिगण ऋक्क आधिकारिक भागक रूपमे स्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 644. नाटकक नाटककार कोन ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विषयक पुनर्कथन करैत छथि?

क. एक वैदिक-कालीन नारी-ऋषिकाक जीवन आ साहित्यिक मान्यता

ख. आधुनिक राजनीति

ग. विदेशी इतिहास

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. एक वैदिक-कालीन नारी-ऋषिकाक जीवन आ साहित्यिक मान्यता

व्याख्या: नाटक एक वैदिक-कालीन नारी-ऋषिका (अपाला) क जीवन, संघर्ष आ अन्ततः साहित्यिक मान्यताक पुनर्कथन करैत अछि, जे प्राचीन भारतमे नारी-साहित्यिक भूमिकाकेँ इंगित करैत अछि।

प्रश्न 645. नाटकमे प्रारम्भिक मंच-सज्जामे कोन-कोन प्रतीकात्मक वस्तुक उल्लेख अछि?

क. वेदी, हविर्गन्ध, साही-गोहि-गिरगिट

ख. केवल आधुनिक उपकरण

ग. विदेशी वस्तु

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वेदी, हविर्गन्ध, साही-गोहि-गिरगिट

व्याख्या: नाटकक मंच-सज्जामे वेदी, हविर्गन्ध आ वनक प्राणी (साही, गोहि, गिरगिट) सन प्रतीकात्मक तत्त्वक उल्लेख अछि, जे वैदिक-कालीन आश्रम-परिवेशकेँ देखबैत अछि।

खण्ड ६६ : विदेह-सदेह ३४ — मणिपद्मक कथा-यात्रा (इतिहासकारक समीक्षा)

प्रश्न 646. डॉ. व्रजकिशोर वर्मा ‘मणिपद्म’क जीवन-काल की छल?

क. १९१८-१९८६

ख. १९२०-१९९०

ग. १९१०-१९८०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९१८-१९८६

व्याख्या: डॉ. व्रजकिशोर वर्मा ‘मणिपद्म’क जीवन-काल १९१८ सँ १९८६ धरि रहल।

प्रश्न 647. डा. जयकांत मिश्रक जीवन-काल की छल?

क. १९२२-२००९

ख. १९३०-२०१०

ग. १९१५-१९९५

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९२२-२००९

व्याख्या: डा. जयकांत मिश्रक जीवन-काल १९२२ सँ २००९ धरि रहल।

प्रश्न 648. डा. जयकांत मिश्रक अंग्रेजी ग्रन्थ ‘A History Of Maithili Literature’ कोन संस्थासँ प्रकाशित भेल?

क. साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली (१९७६)

ख. मैथिली अकादमी, पटना

ग. ऑक्सफोर्ड

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली (१९७६)

व्याख्या: डा. जयकांत मिश्रक ‘A History Of Maithili Literature’ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ १९७६ मे प्रकाशित भेल।

प्रश्न 649. राधाकृष्ण चौधरीक जीवन-काल की छल?

क. १९२४-१९८४

ख. १९३०-१९९०

ग. १९१५-१९७५

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९२४-१९८४

व्याख्या: राधाकृष्ण चौधरीक जीवन-काल १९२४ सँ १९८४ धरि रहल।

प्रश्न 650. राधाकृष्ण चौधरीक अंग्रेजी ग्रन्थक नाम की?

क. A Survey Of Maithili Literature

ख. A History Of Maithili Literature

ग. Maithili Drama History

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. A Survey Of Maithili Literature

व्याख्या: राधाकृष्ण चौधरीक अंग्रेजी ग्रन्थक नाम ‘A Survey Of Maithili Literature’ थिक, जे १९७६ मे प्रकाशित भेल।

प्रश्न 651. डा. जयधारी सिंहक जीवन-काल की छल?

क. १९२९-२०००

ख. १९३५-२००५

ग. १९२०-१९९०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९२९-२०००

व्याख्या: डा. जयधारी सिंहक जीवन-काल १९२९ सँ २००० धरि रहल।

प्रश्न 652. डा. दुर्गानाथ झा श्रीशक ग्रन्थ ‘मैथिली साहित्यक इतिहास’ कोन सालमे प्रकाशित भेल?

क. १९९१

ख. १९८५

ग. २०००

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९९१

व्याख्या: डा. दुर्गानाथ झा श्रीशक ग्रन्थ ‘मैथिली साहित्यक इतिहास’ भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगासँ १९९१ मे प्रकाशित भेल।

प्रश्न 653. डा. दिनेश कुमार झाक ग्रन्थ ‘मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास’ कोन संस्थासँ प्रकाशित भेल?

क. मैथिली अकादमी, पटना (१९७९)

ख. साहित्य अकादेमी

ग. भारती पुस्तक केन्द्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिली अकादमी, पटना (१९७९)

व्याख्या: डा. दिनेश कुमार झाक ग्रन्थ ‘मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास’ मैथिली अकादमी, पटनासँ १९७९ मे प्रकाशित भेल।

प्रश्न 654. मणिपद्म-श्रद्धांजलि अंक ‘हाल चाल’ (१९८६) मे कतेक कथाक शीर्षक-चर्चा भेल, आ ओहिपर लेखकक टिप्पणी की?

क. मात्र पैंतीस कथा, जे उपहास्पद कहल गेल

ख. सभटा कथा, सम्पूर्ण कहल गेल

ग. दस कथा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मात्र पैंतीस कथा, जे उपहास्पद कहल गेल

व्याख्या: ‘हाल चाल’ (१९८६) क मणिपद्म-श्रद्धांजलि अंकमे मणिपद्मक मात्र पैंतीस कथाक शीर्षक-चर्चा भेल, जकरा लेखक उपहास्पद (अपर्याप्त) कहैत छथि।

खण्ड ६७ : विदेह-सदेह ३४ — प्रेमशंकर सिंहक कृति-सूची आ बेचन ठाकुरक नाटक (विस्तार)

प्रश्न 655. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक जन्म कहिया भेल?

क. १९४२

ख. १९५२

ग. १९३२

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९४२

व्याख्या: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक जन्म सन् १९४२ ई.मे भेल।

प्रश्न 656. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक गाम कतय अछि?

क. जोगियारा, थाना जाले, दरभंगा

ख. दरभंगा शहर

ग. पटना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जोगियारा, थाना जाले, दरभंगा

व्याख्या: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक गाम जोगियारा, थाना जाले, जिला दरभंगा अछि।

प्रश्न 657. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक मौलिक मैथिली कृति ‘मैथिली नाटक ओ रंगमंच’ कोन सालमे प्रकाशित भेल?

क. १९७८

ख. १९८५

ग. १९९०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९७८

व्याख्या: ‘मैथिली नाटक ओ रंगमंच’ मैथिली अकादमी, पटनासँ १९७८ मे प्रकाशित भेल।

प्रश्न 658. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक अनुवाद-कार्यमे कोन-कोन भाषाक रचना सम्मिलित अछि?

क. हिन्दी आ मैथिली अनुवाद

ख. केवल अंग्रेजी

ग. केवल संस्कृत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हिन्दी आ मैथिली अनुवाद

व्याख्या: डॉ. प्रेमशंकर सिंह हिन्दी आ मैथिली दुनू भाषामे अनुवाद-कार्य केने छथि, जेना श्रीपादकृष्ण कोल्हटकरक रचनाक अनुवाद साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेल।

प्रश्न 659. डॉ. प्रेमशंकर सिंह कोन पत्रिकाक सम्पादन केने छथि?

क. भूमिजा (२००२)

ख. विदेह

ग. सदेह

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भूमिजा (२००२)

व्याख्या: डॉ. प्रेमशंकर सिंह ‘भूमिजा’ पत्रिकाक सम्पादन सन् २००२ मे केने छथि।

प्रश्न 660. बेचन ठाकुर कतेक वर्षसँ मैथिली नाटक-लेखन आ निर्देशनमे जुटल छथि, गजेन्द्र ठाकुरक आलेख अनुसार?

क. पचीस वर्ष

ख. दस वर्ष

ग. पचास वर्ष

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पचीस वर्ष

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुरक आलेख अनुसार बेचन ठाकुर विगत पचीस वर्षसँ मैथिली नाटकक लेखन आ निर्देशनमे जुटल छथि।

प्रश्न 661. बेचनजीक कतेक नाटक ग्रामीण लोकक मोन मोहलक, आलेख अनुसार?

क. एक दर्जन

ख. पाँच

ग. बीस

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. एक दर्जन

व्याख्या: आलेख अनुसार बेचनजीक एक दर्जन नाटक ग्रामीण सबहक मोन मोहने छल।

प्रश्न 662. बेचन ठाकुरक नाटक ‘अधिकार’ क मुख्य चरित्र मंजूर कोन समस्या आर.टी.आइ. द्वारा देखार करैत छथि?

क. इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितता

ख. भूमि-विवाद

ग. शिक्षा-समस्या

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितता

व्याख्या: ‘अधिकार’ नाटकमे मंजूर इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितताकेँ आर.टी.आइ. (सूचनाक अधिकार) सँ देखार करैत छथि, आ रिक्शासँ झंझारपुरसँ दिल्ली धरि जाइत छथि।

खण्ड ६८ : विदेह-सदेह ३६ — मैथिली गजलक दू युग

प्रश्न 663. मैथिली गजलक प्रारम्भिक दुर्भाग्य की कहल गेल अछि?

क. गजलकेँ मुस्लिम धर्मसँ जोड़ि कऽ अछोप मानल जाएब

ख. कोनो दुर्भाग्य नहि

ग. अति लोकप्रियता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गजलकेँ मुस्लिम धर्मसँ जोड़ि कऽ अछोप मानल जाएब

व्याख्या: आलेख अनुसार मैथिली गजलक प्रारम्भिक दुर्भाग्य ई छल जे एकरा मुस्लिम धर्मसँ जोड़ि कऽ देखल गेल आ अछोप मानि लेल गेल।

प्रश्न 664. मैथिली गजलक प्रथम युगक नाम की?

क. जीवन युग

ख. अनचिन्हार युग

ग. आधुनिक युग

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जीवन युग

व्याख्या: मैथिली गजलक प्रथम युगक नाम ‘जीवन युग’ थिक।

प्रश्न 665. ‘जीवन युग’ क प्रारम्भ केकरासँ मानल गेल?

क. जीवन झा (आधुनिक मैथिली गजलक पिता)

ख. गजेन्द्र ठाकुर

ग. आशीष अनचिन्हार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जीवन झा (आधुनिक मैथिली गजलक पिता)

व्याख्या: ‘जीवन युग’ क प्रारम्भ जीवन झासँ मानल गेल, जिनका आधुनिक मैथिली गजलक पिता मानल जाइत छथि।

प्रश्न 666. मैथिली गजलक दोसर युगक नाम की?

क. अनचिन्हार युग

ख. जीवन युग

ग. आधुनिक युग

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अनचिन्हार युग

व्याख्या: मैथिली गजलक दोसर युगक नाम ‘अनचिन्हार युग’ थिक।

प्रश्न 667. ‘अनचिन्हार युग’ क प्रारम्भ कोन ब्लॉगसँ भेल मानल गेल?

क. अनचिन्हार आखर

ख. विदेह

ग. सदेह

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अनचिन्हार आखर

व्याख्या: ‘अनचिन्हार युग’ क प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल गजल आ शेरो-शाइरीकेँ समर्पित ब्लॉग ‘अनचिन्हार आखर’ सँ भेल मानल गेल।

प्रश्न 668. ‘अनचिन्हार आखर’ कतेक खण्डमे ‘मैथिली गजल शास्त्र’ लिखेलक?

क. १३ खण्ड (एखन धरि)

ख. पाँच खण्ड

ग. दस खण्ड

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १३ खण्ड (एखन धरि)

व्याख्या: ‘अनचिन्हार आखर’ १३ खण्ड (एखन धरि) मे ‘मैथिली गजल शास्त्र’ लिखेलक, जे गजलक परिभाषिक शब्द आ बहरक निर्धारण करैत अछि।

प्रश्न 669. ‘अनचिन्हार आखर’ मैथिली साहित्यक इतिहासमे पहिल बेर कोन प्रकारक पुरस्कार योजनाक घोषणा केलक?

क. गजल लेल अलगसँ पुरस्कार (गजल कमला-कोसी)

ख. केवल कथा पुरस्कार

ग. केवल नाटक पुरस्कार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गजल लेल अलगसँ पुरस्कार (गजल कमला-कोसी)

व्याख्या: ‘अनचिन्हार आखर’ मैथिली साहित्यक इतिहासमे पहिल बेर गजल लेल अलगसँ पुरस्कार योजनाक घोषणा केलक, जकर नाम ‘गजल कमला-कोसी’ छल।

प्रश्न 670. ‘अनचिन्हार युग’ सँ पहिने गजलमे की प्रचलित छल, जे बादमे बदलल?

क. उर्दू-हिन्दी शब्दक भरमार

ख. केवल संस्कृत शब्द

ग. केवल अंग्रेजी शब्द

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. उर्दू-हिन्दी शब्दक भरमार

व्याख्या: ‘अनचिन्हार युग’ सँ पहिने गजलमे उर्दू-हिन्दी शब्दक भरमार छल आ मान्यता छल जे बिना ओहि शब्दक गजल नहि कहल जा सकैत अछि — ई परम्परा बादमे बदलल।

प्रश्न 671. ‘अनचिन्हार आखर’ क प्रभावसँ कोन-कोन नव गजलकार गजल-लेखनक परम्परामे आएलाह?

क. सुनील कुमार झा, दीप नारायण विद्यार्थी, रोशन झा, प्रवीन चौधरी प्रतीक आदि

ख. केवल एक गजलकार

ग. विदेशी गजलकार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सुनील कुमार झा, दीप नारायण विद्यार्थी, रोशन झा, प्रवीन चौधरी प्रतीक आदि

व्याख्या: ‘अनचिन्हार आखर’ क ‘स्कूलिंग’ प्रभावसँ सुनील कुमार झा, दीप नारायण ‘विद्यार्थी’, रोशन झा, प्रवीन चौधरी ‘प्रतीक’ आदि नव गजलकार ऐ परम्परामे आएलाह।

प्रश्न 672. ‘अनचिन्हार युग’ क एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मायानंद मिश्रक कोन कथनक खंडन छल?

क. मैथिलीमे बहरयुक्त गजल नहि लिखल जा सकैत अछि

ख. गजल अनावश्यक अछि

ग. कोनो नहि

घ. गजल विदेशी विधा अछि

उत्तर: क. मैथिलीमे बहरयुक्त गजल नहि लिखल जा सकैत अछि

व्याख्या: ‘अनचिन्हार युग’ क एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मायानंद मिश्रक एहि कथनक खंडन छल जे मैथिलीमे बहरयुक्त (छन्दशास्त्र-सम्मत) गजल नहि लिखल जा सकैत अछि।

खण्ड ६९ : विदेह-सदेह २६ — आदिकालीन मैथिली लोक-साहित्यिक विधा (विस्तार)

प्रश्न 673. मैथिली साहित्यक आदिकालीन सामग्रीमे कोन-कोन लोक-विधाक महत्त्वपूर्ण स्थान मानल गेल अछि?

क. डाक-वचन, लोरिक, मरसीया

ख. केवल पद्य

ग. केवल नाटक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. डाक-वचन, लोरिक, मरसीया

व्याख्या: आदिकालीन सामग्रीमे डाक-वचन (कृषि-मौसम सम्बन्धी लोकोक्ति), लोरिक (वीर-गाथा गीत) आ मरसीया (शोक-गीत) सन लोक-विधाक महत्त्वपूर्ण स्थान मानल गेल अछि।

प्रश्न 674. ‘लोरिक’ गायन-शैलीक विशेषता की कहल गेल अछि?

क. गायक भावाविष्ट भऽ झूमि उठैत छथि

ख. केवल शांत स्वर

ग. विदेशी शैली

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गायक भावाविष्ट भऽ झूमि उठैत छथि

व्याख्या: ‘लोरिक’ क गायन-शैलीक विशेषता ई कहल गेल अछि जे गायक गाबैत-गाबैत भावाविष्ट भऽ झूमि उठैत छथि आ तालसँ टाहि मारैत छथि — एक ओजस्वी ध्वनि-योजना।

प्रश्न 675. ‘मरसीया’ गीतक विषय-वस्तु की होइत अछि?

क. शोक/विलाप-सम्बन्धी भाव

ख. हास्य-भाव

ग. वीर-गाथा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शोक/विलाप-सम्बन्धी भाव

व्याख्या: मरसीया गीत शोक वा विलाप-सम्बन्धी भावक अभिव्यक्ति करैत अछि, जे लोरिकक संरचना-शैलीसँ सेहो समानता रखैत अछि।

प्रश्न 676. आलेखक निष्कर्ष अनुसार मैथिली भाषामे गीत आ कथाक सृजन कहिया धरि आरम्भ भऽ गेल छल?

क. तेरहम-चौदहम शताब्दी धरि

ख. दसम शताब्दी धरि

ग. सोलहम शताब्दी धरि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तेरहम-चौदहम शताब्दी धरि

व्याख्या: आलेखक निष्कर्ष अनुसार दृढ़तापूर्वक कहल जा सकैत अछि जे तेरहम-चौदहम शताब्दी धरि मैथिली भाषामे गीत तथा कथाक सृजन अवश्य होमए लागल छल।

प्रश्न 677. आलेख अनुसार लोकगीत-लोकगाथाक एक विशेषता की कहल गेल अछि?

क. नायक कोनो विशेष जाति-वर्गसँ सीमित नहि

ख. केवल राजवंशीय नायक

ग. केवल विदेशी नायक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नायक कोनो विशेष जाति-वर्गसँ सीमित नहि

व्याख्या: आलेख अनुसार लोकगीत-लोकगाथाक एक विशेषता ई अछि जे एहिमे नायक कोनो विशेष जाति वा वर्गसँ सीमित नहि होइत छथि — ई समाजक व्यापक वर्गक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

खण्ड ७० : विदेह-सदेह २९ — भामह आ दण्डीक काव्य-सिद्धान्त

प्रश्न 678. आचार्य भामह कोन काव्य-सिद्धान्त-धाराक प्रतिनिधि छथि?

क. अलंकारवादी

ख. रसवादी

ग. ध्वनिवादी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अलंकारवादी

व्याख्या: आचार्य भामह अलंकारवादी काव्य-सिद्धान्त-धाराक प्रतिनिधि छथि।

प्रश्न 679. संस्कृत आलोचनाक एक प्राचीन विवाद की छल, जकरासँ भामह परिचित छलाह?

क. काव्य-सौन्दर्यक मूलाधार शब्दालंकार वा अर्थालंकारमे अछि

ख. छन्द-निर्धारण

ग. भाषा-चयन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. काव्य-सौन्दर्यक मूलाधार शब्दालंकार वा अर्थालंकारमे अछि

व्याख्या: भामह ऐ प्राचीन विवादसँ परिचित छलाह जे काव्य-सौन्दर्यक मूलाधार शब्दालंकारमे अछि वा अर्थालंकारमे।

प्रश्न 680. भामहक प्रसिद्ध सूत्र ‘शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्’ क भाव की?

क. शब्द आ अर्थक सहभावसँ काव्यक सृष्टि होइत अछि

ख. केवल शब्द काव्य अछि

ग. केवल अर्थ काव्य अछि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शब्द आ अर्थक सहभावसँ काव्यक सृष्टि होइत अछि

व्याख्या: ‘शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्’ क भाव अछि जे शब्द आ अर्थ दुनूक सहभाव (संयोग) सँ काव्यक सृष्टि होइत अछि — भामह दुनूक महत्त्वपर बल दैत छथि।

प्रश्न 681. दण्डी कोन ग्रन्थक रचनाकार छथि?

क. काव्यादर्श

ख. नाट्यशास्त्र

ग. ध्वन्यालोक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. काव्यादर्श

व्याख्या: दण्डी ‘काव्यादर्श’ ग्रन्थक रचनाकार छथि।

प्रश्न 682. दण्डी कविताक स्वरूपक विषयमे की मान्यता रखैत छथि?

क. कविता वांछित सरसता-युक्त, अलंकृत, रस-भाव-निरन्तर पदसमूह थिक

ख. केवल छन्द-बद्ध शब्द

ग. केवल अर्थहीन ध्वनि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कविता वांछित सरसता-युक्त, अलंकृत, रस-भाव-निरन्तर पदसमूह थिक

व्याख्या: दण्डीक स्पष्ट विचार अछि जे कविता ओहि पदसमूहक नाम थिक जे वांछित सरसतासँ युक्त, अलंकृत आ रस-भाव-निरन्तर होइत अछि।

प्रश्न 683. दण्डी अनुसार शब्दार्थ काव्यक की थिक, आ अलंकार की?

क. शब्दार्थ शरीर, अलंकार आत्मा

ख. दुनू शरीर

ग. दुनू आत्मा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शब्दार्थ शरीर, अलंकार आत्मा

व्याख्या: दण्डी अनुसार शब्दार्थ काव्यक शरीर थिक, आ अलंकार ओकर आत्मा — हुनकर विचारमे अलंकारविहीन पदावली साहित्य नहि भऽ सकैत अछि।

प्रश्न 684. भामह आ दण्डीक काव्य-दृष्टिमे की समानता अछि, स्रोत अनुसार?

क. दुनूक लेल शब्दालंकार आ अर्थालंकार दुनू इष्ट छल

ख. दुनूमे कोनो समानता नहि

ग. दुनू अलंकारक विरोधी छलाह

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दुनूक लेल शब्दालंकार आ अर्थालंकार दुनू इष्ट छल

व्याख्या: स्रोत अनुसार भामहक लेल शब्दालंकार आ अर्थालंकार दुनू इष्ट छल, आ दण्डीक चिंतनक संदर्भ सेहो भामहकालीन काव्यचिंतनसँ जुड़ल मानल जाइत अछि।

खण्ड ७१ : विदेह-सदेह ३० — मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

प्रश्न 685. एफ्रा बेनक उपन्यास ‘ओरूनोको’ क नायक कोन विशेषताक छथि?

क. कारी रंगक दास

ख. राजकुमार

ग. विदेशी सैनिक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कारी रंगक दास

व्याख्या: एफ्रा बेनक उपन्यास ‘ओरूनोको’ क नायक कारी रंगक दास छथि।

प्रश्न 686. हैनरी फिल्डिंगक ‘टॉम जोन्स’ मे कोन सामाजिक प्रवृत्तिक आलोचना भेल अछि?

क. सामंतवादक आलोचना

ख. साम्राज्यवादक आलोचना

ग. धर्मक आलोचना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सामंतवादक आलोचना

व्याख्या: हैनरी फिल्डिंग ‘टॉम जोन्स’ मे सामंतवादक आलोचना केने छथि आ समाजक विकृतिक चित्रण केने छथि।

प्रश्न 687. रुडयार्ड किपलिंगक उपन्यास ‘किम’ क मूल वृत्ति की कहल गेल?

क. यूरोपी साम्राज्यवादक बहन्ना (justification) तकब

ख. साम्राज्यवादक आलोचना

ग. समाजवादक प्रचार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. यूरोपी साम्राज्यवादक बहन्ना (justification) तकब

व्याख्या: रुडयार्ड किपलिंगक उपन्यास ‘किम’ यूरोपी साम्राज्यवादक लेल एक बहन्ना तकैत अछि, यूरोपी सभ्यताकेँ उच्च मानैत।

प्रश्न 688. हरिमोहन झाक उपन्यास ‘कन्यादान आ द्विरागमन’ मे की चित्रण भेल अछि?

क. मिथिलाक सामाजिक व्यवस्था, महिला-शिक्षा आ अंध-पाश्चात्यकरणक हास्य-व्यंग्य

ख. केवल प्रेम-कथा

ग. ऐतिहासिक युद्ध

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मिथिलाक सामाजिक व्यवस्था, महिला-शिक्षा आ अंध-पाश्चात्यकरणक हास्य-व्यंग्य

व्याख्या: हरिमोहन झाक ‘कन्यादान आ द्विरागमन’ मिथिलाक बहुत रास सामाजिक व्यवस्था, महिला-शिक्षा आ अंध-पाश्चात्यकरणक हास्य-व्यंग्यात्मक चित्रण करैत अछि।

प्रश्न 689. यात्रीक ‘बलचनमा’ कोन जातिक आत्मकथ्यक रूपमे रचल गेल?

क. यादव जाति

ख. ब्राह्मण जाति

ग. कायस्थ जाति

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. यादव जाति

व्याख्या: यात्रीक ‘बलचनमा’ यादव जातिक बलचनमाक आत्मकथ्यक रूपमे रचल गेल, जकर मूल विषय आर्थिक समस्या थिक।

प्रश्न 690. ‘बलचनमा’ उपन्यासमे मुख्यपात्र की संघर्ष करैत छथि?
क. टहलुआसँ किसानक हक प्राप्त करबाक संघर्ष
ख. विदेश-यात्रा
ग. धन-सम्पत्ति
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. टहलुआसँ किसानक हक प्राप्त करबाक संघर्ष
व्याख्या: ‘बलचनमा’ क मुख्यपात्र कोना एकटा टहल करनिहारसँ आगाँ बढ़ि किसानक हक लेल जान दैत छथि, ताहिक चित्रण भेल अछि।

प्रश्न 691. रमानन्द रेणुक उपन्यास ‘दूध-फूल’ केकरापर केन्द्रित अछि?
क. समाजक उपेक्षित वर्ग
ख. राजवंश
ग. विदेशी पात्र
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. समाजक उपेक्षित वर्ग
व्याख्या: रमानन्द रेणुक उपन्यास ‘दूध-फूल’ समाजक उपेक्षित वर्गकेँ सोझाँमे रखैत अछि आ कलात्मक उपस्थापन करैत अछि।

प्रश्न 692. ललितक उपन्यास ‘पृथ्वीपुत्र’ कोन विषयपर केन्द्रित अछि?
क. कृषक जीवनक आर्थिक समस्या
ख. विदेश-यात्रा
ग. नगरीय जीवन
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. कृषक जीवनक आर्थिक समस्या
व्याख्या: ललितक उपन्यास ‘पृथ्वीपुत्र’ समाजक उपेक्षित वर्ग आ कृषक जीवनक आर्थिक समस्यापर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 693. लिली रेक उपन्यास ‘पटाक्षेप’ क मूल विषय की?
क. वामपंथक वर्ग-संघर्षक उत्थान-पतन
ख. धार्मिक यात्रा
ग. राजपरिवार
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. वामपंथक वर्ग-संघर्षक उत्थान-पतन
व्याख्या: लिली रेक उपन्यास ‘पटाक्षेप’ वामपंथक वर्ग-संघर्षक उत्थान आ फेर ओकर दमनक कथा कहैत अछि।

प्रश्न 694. ‘धूमकेतुक मोड़ पर’ उपन्यासक कथा-कथन-शैली की?
क. बैकफ्लैश (फ्लैशबैक) शैली
ख. सीधा कालक्रमिक
ग. पत्र-शैली
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. बैकफ्लैश (फ्लैशबैक) शैली
व्याख्या: ‘धूमकेतुक मोड़ पर’ वामपंथी विचारक आलोकमे सामाजिक-आर्थिक समस्याक कथा बैकफ्लैश (फ्लैशबैक) शैलीमे कहैत अछि।

खण्ड ७२ : विदेह-सदेह ३३ — वैदिक नाटक (दधीची-मधुविद्या प्रसंग)

प्रश्न 695. एहि नाटकक मुख्य ऋषि-पात्र के छथि?
क. दध्यङ आथर्वन दधीची
ख. अत्रि
ग. कृशाश्व
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. दध्यङ आथर्वन दधीची
व्याख्या: एहि नाटकक मुख्य ऋषि-पात्र दध्यङ आथर्वन दधीची छथि।

प्रश्न 696. नाटकमे दधीची केकरा ‘मधु-विद्या’क शिक्षा देबाक प्रसंग अछि?

क. इन्द्र

ख. आश्विनौ (दुनू)

ग. वृत्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: ख. आश्विनौ (दुनू)

व्याख्या: नाटकमे दधीची प्रारम्भमे इन्द्रकेँ मधु-विद्याक शिक्षा देबाक प्रसंग अछि, मुदा बादमे आश्विनौ (दुनू अश्विनीकुमार) केँ ई विद्या देल जाइत अछि।

प्रश्न 697. नाटकक एक दृश्यमे आश्विनौ दधीचीकेँ की प्रस्ताव दैत छथि?

क. हुनकर मस्तक काटि कऽ घोड़ाक मस्तक लगाएब

ख. धन देब

ग. विदेश-यात्रा कराएब

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हुनकर मस्तक काटि कऽ घोड़ाक मस्तक लगाएब

व्याख्या: आश्विनौ दधीचीकेँ प्रस्ताव दैत छथि जे शल्यक्रियाद्वारा हुनकर मस्तक काटि कऽ ओकर स्थानपर घोड़ाक मस्तक लगा देल जाएत, जे इन्द्रक क्रोधसँ हुनका बचाएत।

प्रश्न 698. नाटकमे इन्द्र दधीचीक संग की करैत छथि, जखन ओ रहस्य जानि क्रोधित होइत छथि?

क. वज्रसँ गरदनि काटि दैत छथि

ख. क्षमा करैत छथि

ग. देश-निकाला दैत छथि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वज्रसँ गरदनि काटि दैत छथि

व्याख्या: क्रोधित इन्द्र वज्रसँ दधीचीक गरदनि काटि दैत छथि, मुदा बादमे अपन अपराधक लेल क्षमा मँगैत छथि।

प्रश्न 699. नाटकक अन्तिम दृश्यमे इन्द्र केकर आक्रमणक विरुद्ध सहायता मँगैत छथि?

क. वृत्र आ शम्बर

ख. रावण

ग. कंस

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वृत्र आ शम्बर

व्याख्या: नाटकक अन्तिम दृश्यमे इन्द्र वृत्र आ शम्बरक स्वर्गभूमिपर आक्रमणक विरुद्ध दधीचीसँ सहायता मँगैत छथि।

प्रश्न 700. दधीची इन्द्रकेँ कोन अस्त्र-निर्माणक स्थान बताबैत छथि?

क. शर्यणा (कुरुक्षेत्र लग एक जलाशय)

ख. हिमालय

ग. गंगा-तट

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शर्यणा (कुरुक्षेत्र लग एक जलाशय)

व्याख्या: दधीची इन्द्रकेँ कुरुक्षेत्र लगक शर्यणा जलाशयक उल्लेख करैत छथि, जतय घोड़ाक मूड़ी राखल छल, जाहिसँ वज्र आदि शस्त्र बनाओल जाइत अछि।

प्रश्न 701. नाटकक अन्त्यमे सूत्रधारक टिप्पणी की संकेत दैत अछि?

क. वैदिक कथाकेँ बादमे पौराणिक लोकनि अर्थ-परिवर्तन कऽ देलनि

ख. कथाक कोनो परिवर्तन नहि भेल

ग. कोनो नहि

घ. आधुनिक कथा

उत्तर: क. वैदिक कथाकेँ बादमे पौराणिक लोकनि अर्थ-परिवर्तन कऽ देलनि

व्याख्या: नाटकक अन्त्यमे सूत्रधार टिप्पणी करैत छथि जे ई मूलत: वैदिक नाटक छल, जकरा बादमे पौराणिक लोकनि अर्थ-परिवर्तन कऽ देलनि — एक ऐतिहासिक-साहित्यिक टिप्पणी।

प्रश्न 702. नाटकक समग्र विषय की कहल जा सकैत अछि?

क. ज्ञान-दान, बलिदान आ सत्यनिष्ठाक वैदिक आख्यानक नाट्य-रूपान्तरण

ख. केवल युद्ध-गाथा

ग. हास्य-नाटक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ज्ञान-दान, बलिदान आ सत्यनिष्ठाक वैदिक आख्यानक नाट्य-रूपान्तरण

व्याख्या: नाटकक समग्र विषय ज्ञान-दान, बलिदान आ सत्यनिष्ठाक वैदिक आख्यान (दधीची-मधुविद्या-वज्र कथा) क नाट्य-रूपान्तरण थिक।

खण्ड ७३ : विदेह-सदेह ३४ — हरिमोहन झाक हास्य-व्यंग्य परम्परा

प्रश्न 703. हरिमोहन झाक काव्य-संग्रह ‘बूढ़ानाथ’ कोन सालमे आएल, आ ओकर विषय की?

क. १९६० साल, अत्याधुनिक फैशनपरस्त युवक-युवतीपर व्यंग्य

ख. १९४० साल, ऐतिहासिक विषय

ग. १९८० साल, प्रेम-कविता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९६० साल, अत्याधुनिक फैशनपरस्त युवक-युवतीपर व्यंग्य

व्याख्या: हरिमोहन झाक काव्य ‘बूढ़ानाथ’ सन् १९६० मे आएल, जाहिमे अत्याधुनिक फैशनपरस्त युवक-युवतीपर व्यंग्य कएल गेल अछि।

प्रश्न 704. हरिमोहन झाक ‘टी पार्टी’ रचना कोन सालक थिक?

क. २००५ साल

ख. १९६० साल

ग. १९४० साल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. २००५ साल

व्याख्या: हरिमोहन झाक रचना ‘टी पार्टी’ सन् २००५ क थिक, जे विशुद्ध हास्य-व्यंग्यसँ अनुप्राणित अछि।

प्रश्न 705. हरिमोहन झाक निबन्धक प्रमुख विषय की रहल अछि?

क. वेद-पुराण, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि

ख. केवल आधुनिक विज्ञान

ग. केवल राजनीति

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वेद-पुराण, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि

व्याख्या: हरिमोहन झाक निबन्धक प्रमुख स्वर वेद-पुराण, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, रामायण-महाभारत, ज्योतिष, आयुर्वेद, तन्त्र-मन्त्र आदि विषयक चारुपासि घूमैत अछि।

प्रश्न 706. पटनासँ प्रकाशित कोन पत्रिका हास्य-व्यंग्य निबन्धक विधामे नव प्रतिभाकेँ प्रोत्साहित करबामे महत्त्वपूर्ण रहल?

क. मिथिला मिहिर

ख. विदेह

ग. सदेह

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मिथिला मिहिर

व्याख्या: पटनासँ प्रकाशित ‘मिथिला मिहिर’ पत्रिका हास्य-व्यंग्य निबन्धक विधामे नव-नव प्रतिभा सम्पन्न निबन्धकार उपस्थित करबाक दिशामे अत्यधिक प्रोत्साहित केने छल।

प्रश्न 707. हरिमोहन झाक परम्पराकेँ आगाँ बढ़ाओनिहार रचनाकारमे के-के सम्मिलित छथि?

क. परमेश्वर मिश्र, हरिश्चन्द्र झा, रूपकान्त ठाकुर, चन्द्रकान्त झा

ख. केवल एक रचनाकार

ग. विदेशी रचनाकार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. परमेश्वर मिश्र, हरिश्चन्द्र झा, रूपकान्त ठाकुर, चन्द्रकान्त झा

व्याख्या: हरिमोहन झाक परम्पराकेँ आगाँ बढ़ाओनिहार रचनाकारमे परमेश्वर मिश्र (त्रिवेणी), हरिश्चन्द्र झा (छींक), रूपकान्त ठाकुर (वचन वैष्णव १९६५, लगाम १९६६) आ चन्द्रकान्त झा सम्मिलित छथि।

प्रश्न 708. रूपकान्त ठाकुरक रचना ‘वचन वैष्णव’ कोन सालक थिक?

क. १९६५

ख. १९६०

ग. १९७०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९६५

व्याख्या: रूपकान्त ठाकुरक रचना ‘वचन वैष्णव’ सन् १९६५ क थिक।

प्रश्न 709. रूपकान्त ठाकुरक दोसर रचना ‘लगाम’ कोन सालक थिक?

क. १९६६

ख. १९६५

ग. १९७०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १९६६

व्याख्या: रूपकान्त ठाकुरक दोसर रचना ‘लगाम’ सन् १९६६ क थिक।

प्रश्न 710. मिथिलेश कुमार झाक जन्म-तिथि की?

क. १२-०१-१९७०

ख. १-१-१९६५

ग. १५-८-१९७५

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १२-०१-१९७०

व्याख्या: मिथिलेश कुमार झाक जन्म १२-०१-१९७० कैं भेल।

प्रश्न 711. मिथिलेश कुमार झाक पैतृक गाम कतय अछि?

क. जगति, पोस्ट-बेनीपट्टी, जिला-मधुबनी

ख. दरभंगा

ग. समस्तीपुर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जगति, पोस्ट-बेनीपट्टी, जिला-मधुबनी

व्याख्या: मिथिलेश कुमार झाक पैतृक गाम जगति, पोस्ट-बेनीपट्टी, जिला मधुबनी अछि।

प्रश्न 712. मिथिलेश कुमार झाक माध्यमिक शिक्षा कतयसँ भेल?

क. श्री लीलाधर उच्च विद्यालय, बेनीपट्टी

ख. दरभंगा हाई स्कूल

ग. पटना कॉलेज

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. श्री लीलाधर उच्च विद्यालय, बेनीपट्टी

व्याख्या: मिथिलेश कुमार झाक माध्यमिक शिक्षा श्री लीलाधर उच्च विद्यालय, बेनीपट्टीसँ इतिहास-प्रतिष्ठाक संग भेल।

खण्ड ७४ : विदेह-सदेह २३ — मैथिली-हिन्दी-बांग्ला तुलनात्मक व्याकरण

प्रश्न 713. हिन्दीमे कर्त्ता-कारकक लेल कोन विभक्ति प्रयुक्त होइत अछि, जे मैथिलीमे रिक्त रहैत अछि?

क. ने

ख. को

ग. कैं

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ने

व्याख्या: हिन्दीमे कर्त्ताक लेल ‘ने’ विभक्ति प्रयुक्त होइत अछि, मुदा मैथिलीमे ई स्थान रिक्त (अनुपस्थित) रहैत अछि।

प्रश्न 714. कर्म-कारकक लेल हिन्दी आ मैथिलीमे कोन-कोन विभक्ति प्रयुक्त होइत अछि?
क. हिन्दीमे ‘को’, मैथिलीमे ‘कैँ’
ख. दुनूमे समान
ग. हिन्दीमे ‘कैँ’, मैथिलीमे ‘को’
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. हिन्दीमे ‘को’, मैथिलीमे ‘कैँ’
व्याख्या: कर्म-कारकक लेल हिन्दीमे ‘को’ आ मैथिलीमे ‘कैँ’ प्रयुक्त होइत अछि।

प्रश्न 715. बहुवचनमे शब्दक रूप-परिवर्तनक विषयमे हिन्दी आ मैथिलीमे की भेद अछि?
क. हिन्दीमे शब्दक रूप बदलैत अछि, मैथिलीमे नहि
ख. दुनूमे समान परिवर्तन
ग. मैथिलीमे बेसी परिवर्तन
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. हिन्दीमे शब्दक रूप बदलैत अछि, मैथिलीमे नहि
व्याख्या: बहुवचनमे हिन्दीमे शब्दक रूप परिवर्तित होइत अछि, मुदा मैथिलीमे एहन परिवर्तन नहि होइत अछि।

प्रश्न 716. मैथिलीक तुलनामे बांग्लामे ‘अ’ स्वरक उच्चारण कोन भाषाक उच्चारण-शैलीसँ मेल खाइत अछि?
क. ओड़िया
ख. गुजराती
ग. तमिल
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ओड़िया
व्याख्या: बांग्लामे ‘अ’ स्वर ओड़िया भाषाक ‘अ’ क उच्चारण-शैली जकाँ ‘ओ’ सन उच्चरित होइत अछि।

प्रश्न 717. मैथिली आ बांग्लामे ह्रस्व-दीर्घ इ/ई आ उ/ऊ क उच्चारणमे की भेद अछि?
क. मैथिलीमे ह्रस्व-दीर्घक भेद नहि, बांग्लामे भेद अछि
ख. दुनूमे एके भेद
ग. मैथिलीमे बेसी भेद
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मैथिलीमे ह्रस्व-दीर्घक भेद नहि, बांग्लामे भेद अछि
व्याख्या: मैथिलीमे इ/ई आ उ/ऊ केर ह्रस्व-दीर्घ उच्चारणमे कोनो भेद नहि अछि, जखन कि बांग्लामे ई भेद अछि।

प्रश्न 718. बांग्लामे ‘न’ आ ‘ण’ क उच्चारणमे की विशेषता अछि?
क. दुनू एक रंग (समान) उच्चरित होइत अछि
ख. दुनू भिन्न-भिन्न
ग. बांग्लामे ‘ण’ नहि अछि
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. दुनू एक रंग (समान) उच्चरित होइत अछि
व्याख्या: बांग्लामे ‘न’ आ ‘ण’ केर उच्चारण एके रंग (समान) होइत अछि, जखन कि मैथिलीमे ‘ण’ कखनो काल ‘ड़’ जकाँ उच्चरित होइत अछि (जेना गणेश=गड़ेस)।

प्रश्न 719. बांग्लामे शब्दपर बल देबाक लेल कोन प्रत्यय जोड़ल जाइत अछि?
क. -तो
ख. -कैँ
ग. -ने
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. -तो
व्याख्या: बांग्लामे कोनो शब्दपर विशेष बल देबाक लेल ‘-तो’ प्रत्यय जोड़ल जाइत अछि।

प्रश्न 720. बांग्लामे संज्ञा/सर्वनामक एकवचनमे कोन प्रत्यय जोड़ल जाइत अछि?

क. -टा, -टि

ख. -गुलो, -गुलि

ग. -देर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. -टा, -टि

व्याख्या: बांग्लामे पूर्वनिर्दिष्ट वस्तु लेल संज्ञा/सर्वनामक एकवचनमे ‘-टा’ आ ‘-टि’ प्रत्यय जोड़ल जाइत अछि, बहुवचनमे ‘-गुलो’ आ ‘-गुलि’।

प्रश्न 721. मैथिलीमे ‘अछि’ क नकारात्मक रूप की होइत अछि, आ बांग्लामे की?

क. मैथिलीमे ‘नहि अछि’, बांग्लामे ‘नेइ’

ख. दुनूमे समान

ग. मैथिलीमे ‘नेइ’, बांग्लामे ‘नहि अछि’

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिलीमे ‘नहि अछि’, बांग्लामे ‘नेइ’

व्याख्या: मैथिलीमे ‘अछि’ क नकारात्मक ‘नहि अछि’ प्रयुक्त होइत अछि, मुदा बांग्लामे ‘आछे’ क नकारात्मकक लेल मात्र ‘नेइ’ प्रयुक्त होइत अछि।

प्रश्न 722. मैथिलीमे शब्दपर बल देबाक लेल कोन तकनीक प्रयुक्त होइत अछि?

क. द्वित्व+एकारक प्रयोग (जेना कम्मे, एक्के)

ख. केवल विभक्ति

ग. केवल अनुस्वार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. द्वित्व+एकारक प्रयोग (जेना कम्मे, एक्के)

व्याख्या: मैथिलीमे शब्दपर बल देबाक लेल द्वित्व+एकारक प्रयोग होइत अछि (जेना कम्मे, एक्के), जखन कि बांग्लामे ई प्रभाव ‘-इ’ युक्त भेलासँ अबैत अछि (जेना कमइ)।

प्रश्न 723. तिरहुता लिपिक विकास-क्रममे ‘आधुनिक तिरहुता रूप’ कोन-कोन ऐतिहासिक दानपत्र/अभिलेखसँ देखाओल गेल अछि?

क. नारायणपाल भागलपुर दानपत्र, श्रीचन्द्र रामपाल दानपत्र, महिपाल वनगढ़ दानपत्र, भोजवर्मन वेलवा दानपत्र, लक्ष्मणसेन तर्पण निधि दानपत्र

ख. केवल एक अभिलेख

ग. केवल आधुनिक अभिलेख

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नारायणपाल भागलपुर दानपत्र, श्रीचन्द्र रामपाल दानपत्र, महिपाल वनगढ़ दानपत्र, भोजवर्मन वेलवा दानपत्र, लक्ष्मणसेन तर्पण निधि दानपत्र

व्याख्या: आधुनिक तिरहुताक रूपक विकास नारायणपाल भागलपुर दानपत्र, श्रीचन्द्र रामपाल दानपत्र, महिपाल प्रथम वनगढ़ दानपत्र, भोजवर्मन वेलवा दानपत्र आ लक्ष्मणसेन तर्पण निधि दानपत्र सन ऐतिहासिक अभिलेखसँ देखाओल गेल अछि।

खण्ड ७५ : विदेह-सदेह २२ — बिहार शराबबंदी कानून आ बीहनि कथा मानकीकरण (विस्तार)

प्रश्न 724. रबीन्द्र नारायण मिश्रक आलेखक विषय की?

क. बिहार शराबबंदी कानून

ख. बीहनि कथा

ग. मायानंदके हेरैत दृष्टि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बिहार शराबबंदी कानून

व्याख्या: रबीन्द्र नारायण मिश्रक आलेखक विषय ‘बिहार शराबबंदी कानून’ थिक।

प्रश्न 725. भारतीय संविधानक कोन धारामे पूर्ण मद्यनिषेधक नीति निर्देशक सिद्धांतक वर्णन अछि, आलेख अनुसार?

क. धारा ४७

ख. धारा १४

ग. धारा २१

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. धारा ४७

व्याख्या: आलेख अनुसार भारतीय संविधानक धारा ४७मे वर्णित नीति निर्देशक सिद्धांत अनुसार राज्य पूर्ण मद्यनिषेधक हेतु प्रयास करत।

प्रश्न 726. बिहारमे शराबबंदी कानून कोन सालमे लागू भेल, आलेख अनुसार?

क. सन् २०१६

ख. सन् २०१०

ग. सन् २०२०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सन् २०१६

व्याख्या: आलेख अनुसार बिहारमे शराबबंदी कानून बहुत विलंबसँ सन् २०१६मे लागू भेल।

प्रश्न 727. बिहार शराबबंदी कानून २०१६क धारा ३७ अनुसार शराब पीबैत पकड़ल गेल व्यक्तिकेँ न्यूनतम कतेक सालक जहल आ कतेक जुर्माना भऽ सकैत छल?

क. पाँच साल आ एक लाख जुर्माना

ख. एक साल आ दस हजार जुर्माना

ग. दस साल आ दस लाख जुर्माना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पाँच साल आ एक लाख जुर्माना

व्याख्या: आलेख अनुसार धारा ३७ क मुताबिक शराब पीबैत पकड़ल गेल व्यक्तिकेँ कमसँ कम पाँच साल आ बेसीसँ बेसी सात सालक जहल संगे कमसँ कम एक लाख आ बेसीसँ बेसी दस लाखक जुर्माना भऽ सकैत छल।

प्रश्न 728. सन् २०१६मे शराबबंदी कानून लागू भेलाक बाद तीन सालमे कतेक लीटर शराब जब्त कएल गेल, आलेख अनुसार?

क. बावन लाख दू हजार अस्सी लीटर

ख. एक लाख लीटर

ग. दस हजार लीटर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बावन लाख दू हजार अस्सी लीटर

व्याख्या: आलेख अनुसार सन् २०१६मे कानून लागू भेलाक बाद तीन सालमे एक लाख सड़सठि हजार आदमी पकड़ल गेल आ बावन लाख दू हजार अस्सी लीटर शराब जब्त कएल गेल।

प्रश्न 729. पटना उच्च न्यायालय कोन मामिलामे बिहार सरकारक विरुद्ध सख्त टिप्पणी कएल, आलेख अनुसार?

क. नार्थ बंगाल स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन बनाम बिहार सरकार

ख. केवल एक निजी मामिला

ग. कोनो मामिला नहि

घ. केंद्र सरकार बनाम बिहार सरकार

उत्तर: क. नार्थ बंगाल स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन बनाम बिहार सरकार

व्याख्या: आलेख अनुसार नार्थ बंगाल स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन बनाम बिहार सरकारक मामिलाक सुनबाइ करैत पटना उच्च न्यायालय बिहार पुलिसक कार्यशैलीपर सख्त टिप्पणी कएलनि।

प्रश्न 730. बिहार शराबबंदी कानूनमे कोन सालमे महत्वपूर्ण संशोधन कएल गेल, जाहिसँ लोकक परेसानी कम हुअए?

क. सन् २०१८

ख. सन् २०१०

ग. सन् २०२०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सन् २०१८

व्याख्या: आलेख अनुसार सन् २०१८मे बिहार शराबबंदी कानूनमे महत्वपूर्ण संशोधन कएल गेल, जाहिसँ कतेको कठोर प्रावधान नरम कएल गेल।

प्रश्न 731. संशोधनक बाद शराब बनबैत पहिल बेर पकड़ल गेल व्यक्तिकेँ कतेक सालक जहल हेतैक, आलेख अनुसार?

क. दू साल

ख. दस साल

ग. एक साल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दू साल

व्याख्या: आलेख अनुसार संशोधनक बाद शराब बनबैत पहिल बेर पकड़ल गेल व्यक्तिकेँ दू साल धरि जहल हेतैक, मुदा दोबारा गलती केलापर कमसँ कम दस सालक जहल हेतैक।

प्रश्न 732. बिहार शराबबंदी कानूनक उल्लंघनक सिकाइत हेतु कोन टोलफ्री नम्बरपर शिकायत कएल जा सकैत अछि, आलेख अनुसार?

क. १५५४५ वा १८००३४५६२६८

ख. १००

ग. ११२

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १५५४५ वा १८००३४५६२६८

व्याख्या: आलेख अनुसार बिहार सरकार शराबबंदी कानूनक उल्लंघनक सिकाइत हेतु टोलफ्री फोन संख्या १५५४५ वा १८००३४५६२६८ पर कएल जा सकैत अछि।

प्रश्न 733. बिहारक अतिरिक्त भारतमे कोन-कोन राज्य/क्षेत्रमे पहिनेसँ शराबबंदी कानून लागू अछि, आलेख अनुसार?

क. गुजरात, मिजोराम, नागालैंड आ लक्षद्वीप

ख. केवल गुजरात

ग. केवल केरल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गुजरात, मिजोराम, नागालैंड आ लक्षद्वीप

व्याख्या: आलेख अनुसार बिहारक अतिरिक्त गुजरात, मिजोराम, नागालैंड आ केन्द्र शासित क्षेत्र लक्षद्वीपमे पहिनेसँ शराबबंदी कानून लागू अछि।

प्रश्न 734. मुन्नाजीक आलेख अनुसार ‘फ्लैश फिक्सन’ (Flash Fiction) कतेक खण्डमे विभाजित अछि, जाहिमे एक खण्ड बीहनि कथाक नियामकता राखैत अछि?

क. छह खण्ड

ख. तीन खण्ड

ग. दस खण्ड

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. छह खण्ड

व्याख्या: आलेख अनुसार अंग्रेजी साहित्यक फ्लैश फिक्सन छह खण्डमे विभाजित अछि, जकर तेसर खण्ड ‘टेलब्रा’ (Tellbra) क अन्तर्गत मैथिलीक बीहनि कथा विधाक नियामकता सन्निहित अछि।

प्रश्न 735. बीहनि कथा-परिभाषाक मानकता अनुसार न्यूनतम आ अधिकतम शब्द-संख्या की निर्धारित अछि, आलेख अनुसार?

क. न्यूनतम २० आ अधिकतम १५० शब्द

ख. न्यूनतम १०० आ अधिकतम ५०० शब्द

ग. न्यूनतम १ आ अधिकतम १० शब्द

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. न्यूनतम २० आ अधिकतम १५० शब्द

व्याख्या: आलेख अनुसार फ्लैश फिक्सन (टेलब्रा) आधारित मापनक अनुसार बीहनि कथाक न्यूनतम शब्द-संख्या २० आ अधिकतम १५० निर्धारित अछि।

प्रश्न 736. मैथिलीमे हिन्दी लघुकथा विधाक अंधानुकरणक प्रथम पोथी कोन सालमे आएल, मुन्नाजीक आलेख अनुसार?

क. सन् १९७२ (डॉ. हंसराजक ‘जे की ने से’)

ख. सन् १९९५

ग. सन् २०१०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सन् १९७२ (डॉ. हंसराजक ‘जे की ने से’)

व्याख्या: आलेख अनुसार मैथिलीमे लघुकथा संग्रहक नामसँ पहिल पोथी सन् १९७२मे डॉ. हंसराजक ‘जे की ने से’ आएल।

प्रश्न 737. मुन्नाजीक आलेख अनुसार प्रसिद्ध कथाकार आ इतिहासकार डॉ. मायानन्द मिश्र मैथिली लघुकथाकेँ कोन रूपमे नकारैत छथि?

क. समकालीन कथा/गल्प नहि, अपितु चुटुक्काक निकट

ख. विश्वस्तरीय विधा

ग. बीहनि कथाक समान

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. समकालीन कथा/गल्प नहि, अपितु चुटुक्काक निकट

व्याख्या: डॉ. मायानन्द मिश्र अनुसार मैथिलीमे लघुकथा नामे एक अन्य कथा-लेखनक विकास भेल अछि जे समकालीन कथा/गल्प नहि, अपितु चुटुक्काक निकट अछि (‘मैथिली कथाक विकास’, साहित्य अकादमी-२००३)।

खण्ड ७६ : विदेह-सदेह २३ — मैथिली-भोजपुरी-मगही-संथाली तुलनात्मक शब्दावली

प्रश्न 738. आलेख अनुसार मगही भाषाक उत्पत्ति कोन सम्प्रदायसँ मानल जाइत अछि?

क. ८४ सिद्ध आ नाथ सम्प्रदाय

ख. बौद्ध सम्प्रदाय

ग. जैन सम्प्रदाय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ८४ सिद्ध आ नाथ सम्प्रदाय

व्याख्या: आलेख अनुसार मगही सेहो अपन उत्पत्ति ८४ सिद्ध आ नाथ सम्प्रदायक नाथ साहित्यसँ मानैत अछि।

प्रश्न 739. डॉ रामनरेश मिश्र “हंस” अनुसार मगही भाषा की थिक?

क. मगधक भाषा मागधीक विकसित रूप

ख. संस्कृतक प्रत्यक्ष रूप

ग. मैथिलीक उपभाषा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मगधक भाषा मागधीक विकसित रूप

व्याख्या: डॉ रामनरेश मिश्र “हंस” अनुसार मगही मगधक भाषा मागधीक विकसित रूप थिक, जे मागधी प्राकृतसँ असमिया, बांग्ला, ओड़िया, मैथिली, भोजपुरी आदिक संग बहार भेल अछि।

प्रश्न 740. आलेख अनुसार मगहीमे ‘ण, श, ष, ऋ, ऌ, क्ष, त्र, ज्ञ’ सन वर्ण आ संयुक्ताक्षरक की स्थिति अछि?

क. हटा देल गेल अछि

ख. अधिक प्रयोग होइत अछि

ग. केवल लिखितमे रहैत अछि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. हटा देल गेल अछि

व्याख्या: भुवनेश्वर शर्माक मगही शब्दकोष अनुसार मगहीमे ण, श, ष, ऋ, ऌ, क्ष, त्र, ज्ञ सन वर्ण आ संयुक्ताक्षर हटा देल गेल अछि।

प्रश्न 741. मैथिली ‘हएत’ शब्दक मगही रूप की होइत अछि, आलेख अनुसार?

क. होत

ख. हथुन

ग. अतथुन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. होत

व्याख्या: आलेख अनुसार मैथिली ‘हएत’ शब्दक मगही रूप ‘होत’ होइत अछि।

प्रश्न 742. मैथिली ‘नमस्ते’ शब्दक संथाली रूप की होइत अछि, आलेख अनुसार?

क. जोहारगी

ख. गोड़म्बा

ग. उसारा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जोहारगी

व्याख्या: आलेख अनुसार मैथिली ‘नमस्ते’ शब्दक संथाली रूप ‘जोहारगी’ होइत अछि।

प्रश्न 743. मैथिली ‘पिता’ शब्दक संथाली रूप की होइत अछि, आलेख अनुसार?

क. बा

ख. बाबा

ग. आर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बा

व्याख्या: आलेख अनुसार मैथिली ‘पिता’ शब्दक संथाली रूप ‘बा’ होइत अछि।

प्रश्न 744. भोजपुरीक एकवचन ‘लइका’ क बहुवचन रूप की होइत अछि, आलेख अनुसार?

क. लइकन

ख. लइकाई

ग. लइकाहा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लइकन

व्याख्या: आलेख अनुसार भोजपुरीमे ‘लइका’ (एकवचन) क बहुवचन रूप ‘लइकन’ होइत अछि।

प्रश्न 745. भोजपुरीमे संज्ञासँ विशेषण बनबाक एक उदाहरण की देल गेल अछि, आलेख अनुसार?

क. कातिक → कतिका

ख. पियर → पिअरी

ग. लाल → ललछहूँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कातिक → कतिका

व्याख्या: आलेख अनुसार भोजपुरीमे संज्ञासँ विशेषण बनबाक उदाहरणमे ‘कातिक’ सँ ‘कतिका’ देल गेल अछि।

प्रश्न 746. मगही लोकोक्ति ‘ओछा के प्रीत बालू के भीत’ क भाव की?

क. ओछ व्यक्तिसँ दोस्तियारी क्षणिक होइत अछि

ख. बालुक भीत मजगूत होइत अछि

ग. प्रेम स्थायी होइत अछि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ओछ व्यक्तिसँ दोस्तियारी क्षणिक होइत अछि

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘ओछा के प्रीत बालू के भीत’ लोकोक्तिक भाव अछि जे ओछ (तुच्छ) व्यक्तिसँ दोस्तियारी क्षणिक होइत अछि।

प्रश्न 747. मगही लोकगाथामे कोन-कोन प्रसिद्ध आख्यान सम्मिलित अछि, आलेख अनुसार?

क. आल्हा, सोरठी वृजभार, राजा भरथरी, गोपीचन्द

ख. केवल एक आख्यान

ग. विदेशी आख्यान

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आल्हा, सोरठी वृजभार, राजा भरथरी, गोपीचन्द

व्याख्या: आलेख अनुसार मगही लोकगाथामे आल्हा, सोरठी वृजभार, लोरकाइन, राजा भरथरी, गोपीचन्द सन कएक आख्यान सम्मिलित अछि।

खण्ड ७७ : विदेह-सदेह २३ — पं. कुशेश्वर कुमरक ‘पर्व निर्णय’ समीक्षण

प्रश्न 748. धर्मशास्त्रीय निबन्ध ‘पर्व निर्णय’ केकर द्वारा प्रणीत अछि?

क. पं. कुशेश्वर कुमर

ख. म.म. उमापति

ग. पं. बदरीनाथ झा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पं. कुशेश्वर कुमर

व्याख्या: धर्मशास्त्रीय निबन्ध ‘पर्व निर्णय’ पं. कुशेश्वर कुमर द्वारा प्रणीत अछि।

प्रश्न 749. पं. कुशेश्वर कुमर ज्योतिष शास्त्रमे कोन विषयक विद्वान छलाह, समीक्षा अनुसार?

क. तीर्थ एवं आचार्य, संगहि काव्य, धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण आ मीमांसाक उद्भट्ट विद्वान

ख. केवल काव्य

ग. केवल इतिहास

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तीर्थ एवं आचार्य, संगहि काव्य, धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण आ मीमांसाक उद्भट्ट विद्वान

व्याख्या: समीक्षा अनुसार पं. कुशेश्वर कुमर ज्योतिष शास्त्रमे तीर्थ एवं आचार्य छलाह, संगहि काव्य, धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण एवं मीमांसा (कर्मकाण्ड)क सेहो उद्भट्ट विद्वान छलाह।

प्रश्न 750. ‘पर्व निर्णय’ ग्रन्थमे पं. कुशेश्वर शर्मा कतेक विद्वान् लोकनिक निबन्धक संकलन कएलन्हि?

क. तेरासी विद्वान्

ख. दस विद्वान्

ग. पचास विद्वान्

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तेरासी विद्वान्

व्याख्या: समीक्षा अनुसार पं. कुशेश्वर शर्मा भिन्न-भिन्न पर्वक निर्णय हेतु तेरासी विद्वान् लोकनिक निबन्धक संकलन कएलन्हि।

प्रश्न 751. ‘पर्व निर्णय’ ग्रन्थमे श्रावण मासमेँ कोन तिथि धरिक पर्व-विमर्श कएल गेल अछि?

क. चैत्र कृष्ण प्रतिपदा धरि

ख. आषाढ़ धरि

ग. फाल्गुन धरि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चैत्र कृष्ण प्रतिपदा धरि

व्याख्या: समीक्षा अनुसार ‘पर्व निर्णय’ मे श्रावण मासमेँ आरम्भ कऽ चैत्र कृष्ण प्रतिपदा धरिक पर्व-विमर्श कएल गेल अछि।

प्रश्न 752. जीवित पुत्रिका व्रत कोन तिथिकेँ मनाओल जाइत अछि, ‘पर्व निर्णय’ अनुसार?

क. आश्विन कृष्ण अष्टमी

ख. भाद्र शुक्ल चतुर्दशी

ग. ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आश्विन कृष्ण अष्टमी

व्याख्या: ‘पर्व निर्णय’ अनुसार महिलालोकनिक सभसँ प्रिय व्रत जीवित पुत्रिका आश्विन कृष्ण अष्टमीकेँ मनाओल जाइत अछि, जे सन्तान विशेषतः पुत्रक कल्याणार्थ कएल जाइत अछि।

प्रश्न 753. भाद्र शुक्ल चतुर्दशीकेँ भगवान विष्णुक कोन रूपक पूजा कएल जाइत अछि, ‘पर्व निर्णय’ अनुसार?

क. अनन्त रूप

ख. वामन रूप

ग. नृसिंह रूप

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अनन्त रूप

व्याख्या: ‘पर्व निर्णय’ अनुसार भाद्र शुक्ल चतुर्दशीकेँ भगवान विष्णुक अनन्त रूपक पूजा कएल जाइत अछि।

प्रश्न 754. मिथिलामे वटसावित्री व्रत कोन तिथिकेँ कएल जाइत अछि, ‘पर्व निर्णय’ अनुसार?

क. ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या

ख. ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया

ग. आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या

व्याख्या: ‘पर्व निर्णय’ अनुसार ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्याक दिन मिथिलामे महिलालोकनि वटसावित्री व्रत करैत छथि।

प्रश्न 755. कोजगरा पर्व कोन तिथिकेँ मनाओल जाइत अछि, ‘पर्व निर्णय’ अनुसार?

क. आश्विन शुक्ल पूर्णिमा

ख. कार्तिक कृष्ण अमावस्या

ग. माघ शुक्ल पंचमी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आश्विन शुक्ल पूर्णिमा

व्याख्या: ‘पर्व निर्णय’ अनुसार आश्विन शुक्ल पूर्णिमाकेँ कोजगरा पर्व मनाओल जाइत अछि, जाहिमे प्रदोष कालमे लक्ष्मीक पूजाक विधान अछि।

प्रश्न 756. श्री पंचमी (सिर पंचमी) कोन तिथिकेँ मानल जाइत अछि, ‘पर्व निर्णय’ अनुसार?

क. माघ शुक्ल पंचमी

ख. चैत्र शुक्ल पंचमी

ग. भाद्र शुक्ल पंचमी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. माघ शुक्ल पंचमी

व्याख्या: ‘पर्व निर्णय’ अनुसार माघ शुक्ल पंचमी श्री पंचमी वा सिर पंचमी कहबैत अछि, जाहि दिन शिष्टजन हल-प्रवहण आ ओकर पूजा करैत अछि।

प्रश्न 757. बैशाख शुक्ल तृतीया कोन नामसँ प्रसिद्ध अछि, ‘पर्व निर्णय’ अनुसार?

क. अक्षय तृतीया

ख. रम्भा तृतीया

ग. गंगा दशहरा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अक्षय तृतीया

व्याख्या: ‘पर्व निर्णय’ अनुसार बैशाख शुक्ल तृतीया अक्षय तृतीयाक नामसँ प्रसिद्ध अछि।

खण्ड ७८ : विदेह-सदेह २६ — मैथिली आदिकालक स्रोत-सामग्री (शब्द, वाक्यखण्ड, डाकवचन)

प्रश्न 758. मैथिलीक प्रारंभिक कालक अध्ययन हेतु उपलब्ध सामग्री कतेक भागमे विभाजित कएल जा सकैत अछि, आलेख अनुसार?

क. चारि भाग (शब्द, वाक्यखंड, सूक्ति, लोकगीत-लोकगाथा)

ख. दू भाग

ग. दस भाग

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चारि भाग (शब्द, वाक्यखंड, सूक्ति, लोकगीत-लोकगाथा)

व्याख्या: आलेख अनुसार मैथिलीक प्रारंभिक कालक सामग्री चारि भागमे विभाजित कएल जा सकैत अछि: शब्द, वाक्यखंड, सूक्ति तथा लोकगीत एवं लोकगाथा।

प्रश्न 759. मैथिली शब्दक प्रयोग करबाक प्रथम (नवम् शताब्दीक) लेखक के मानल जाइत छथि, आलेख अनुसार?

क. वाचस्पति मिश्र

ख. सर्वानन्द

ग. ज्योतिरीश्वर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वाचस्पति मिश्र

व्याख्या: आलेख अनुसार नवम् शताब्दीक लेखक वाचस्पति मिश्रक नाम सर्वप्रथम लेल जाइत अछि, जे अपन ग्रंथ ‘भामति’ मे मैथिली शब्द ‘हरि’ क प्रयोग कएने छथि।

प्रश्न 760. वाचस्पति मिश्रक प्रसिद्ध ग्रंथ ‘भामति’ कोन ग्रंथक टीका थिक?

क. शाङ्कर भाष्य

ख. वर्णरत्नाकर

ग. कीर्तिलता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शाङ्कर भाष्य

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘भामति’ शाङ्कर भाष्यक टीका थिक, जाहिमे वाचस्पति मिश्र मैथिली शब्द ‘हरि’क प्रयोग कएने छथि।

प्रश्न 761. डॉ. सुभद्र झाक निबन्ध अनुसार सर्वानन्दक ‘अमरकोष’ मे कतेक मैथिली शब्द प्रयुक्त भेल अछि?

क. ४०० सँ ६०० बीच

ख. १० सँ २०

ग. हजारसँ बेसी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ४०० सँ ६०० बीच

व्याख्या: डॉ. सुभद्र झा अनुसार सर्वानन्दक ‘अमरकोष’ मे ४०० सँ ६०० बीच शुद्ध मैथिली शब्दक प्रयोग देखबामे अबैत अछि।

प्रश्न 762. डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार मैथिलीक तृतीय सामग्री (शब्द हेतु) कतय भेटैत अछि?

क. पञ्जीमे

ख. वर्णरत्नाकरमे

ग. कीर्तिलतामे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पञ्जीमे

व्याख्या: डॉ. जयकान्त मिश्र अनुसार मैथिलीक तृतीय सामग्री पञ्जीमे भेटैत अछि, जकर प्रारंभ १३१० ई. मानल गेल अछि।

प्रश्न 763. म.म. हरप्रसाद शास्त्रीकेँ नेपालमे १९१६ ई.मे कतेक ग्रंथ भेटल, जे 'बौद्धगान ओ दोहा' नामसँ प्रकाशित भेल?

क. तीन गोट (दोहाकोष, चर्याचर्य विनिश्चय, डाकार्णव)

ख. एक गोट

ग. दस गोट

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तीन गोट (दोहाकोष, चर्याचर्य विनिश्चय, डाकार्णव)

व्याख्या: आलेख अनुसार म.म. हरप्रसाद शास्त्रीकेँ नेपालमे १९१६ ई.मे तीन गोट ग्रंथ भेटलनि— दोहाकोष, चर्याचर्य विनिश्चय आ डाकार्णव— जकरा ओ 'बौद्धगान ओ दोहा' नामसँ प्रकाशित करौलनि।

प्रश्न 764. डाकवचनावलीक भाषाकेँ किछु विद्वान कोन ग्रंथसँ सेहो प्राचीन मानैत छथि?

क. चर्यापद

ख. वर्णरत्नाकर

ग. कीर्तिलता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चर्यापद

व्याख्या: आलेख अनुसार डाकवचनावलीक भाषाकेँ किछु विद्वान चर्यापदहुँसँ प्राचीन मानैत छथि, कारण ओकर प्रचार सेहो उत्तर प्रदेश सहित समस्त पूर्वोत्तर भारतमे भेल।

प्रश्न 765. मिथिलाक किवदंती अनुसार डाक (डाक वचनावलीक रचनाकार) के छथि?

क. बराहमिहिरक पुत्र, जातिक गोआर

ख. ज्योतिरीश्वरक पुत्र

ग. विद्यापतिक पुत्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. बराहमिहिरक पुत्र, जातिक गोआर

व्याख्या: आलेख अनुसार मिथिलामे प्रचलित किवदंती अनुसार डाक बराहमिहिरक पुत्र छलाह तथा जातिक गोआर छलाह।

प्रश्न 766. वर्णरत्नाकरकेँ मैथिलीक की मानल जाइत अछि, आलेख अनुसार?

क. प्राचीनतम गद्य ग्रंथ

ख. प्राचीनतम पद्य ग्रंथ

ग. प्राचीनतम नाटक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. प्राचीनतम गद्य ग्रंथ

व्याख्या: आलेख अनुसार वर्णरत्नाकर मैथिलीक प्राचीनतम गद्य ग्रंथ थिक, जे १४म शताब्दीक आदिकाल (१३२४) क रचना थिक।

प्रश्न 767. 'लोरिक विजय' पर श्री मणिपद्मक एकटा निबन्ध कोन पत्रिकामे कहिया प्रकाशित भेल छल?

क. 'वैदेही' मे, दिसम्बर १९५३

ख. 'विदेह' मे, २०१०

ग. 'मिथिला मिहिर' मे, १९६०

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. 'वैदेही' मे, दिसम्बर १९५३

व्याख्या: आलेख अनुसार 'लोरिक विजय' पर श्री मणिपद्मक निबन्ध दिसम्बर १९५३ मे 'वैदेही' पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल।

खण्ड ७९ : विदेह-सदेह २९ — डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक ‘मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक’

प्रश्न 768. ‘मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक’ शीर्षक आलेखक लेखक के छथि?

क. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

ख. रवि भूषण पाठक

ग. गजेन्द्र ठाकुर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

व्याख्या: ‘मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक’ शीर्षक आलेखक लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र छथि, जे एथनोग्राफर छथि।

प्रश्न 769. आलेखमे पाब्लो नेरुदाक कोन कविताक मैथिली अनुवाद देल गेल अछि?

क. You start dying slowly

ख. Twenty Love Poems

ग. Ode to my socks

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. You start dying slowly

व्याख्या: आलेखमे पाब्लो नेरुदाक कविता ‘You start dying slowly’ क मैथिली अनुवाद डॉ. कैलाश कुमार मिश्र द्वारा देल गेल अछि।

प्रश्न 770. पाब्लो नेरुदा केकर कवि छथि, आलेख अनुसार?

क. स्पेनक कवि, साहित्यमे नोबेल पुरस्कार प्राप्त

ख. अमेरिकाक कवि

ग. इटलीक कवि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. स्पेनक कवि, साहित्यमे नोबेल पुरस्कार प्राप्त

व्याख्या: आलेख अनुसार पाब्लो नेरुदा स्पेनक कवि छथि, जिनका साहित्यमे योगदान हेतु नोबेल पुरस्कार भेटल छनि।

प्रश्न 771. रामायण-कथा सुनेनिहार काक भुशुंडी केकरा रामकथा सुनेने छलथिन, आलेख अनुसार?

क. पक्षीराज गरुड़

ख. नारद

ग. ब्रह्मा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पक्षीराज गरुड़

व्याख्या: आलेख अनुसार काक भुशुंडी कौआ छला जे पक्षीराज गरुड़केँ रामकथा पहिने सुना देने छलथिन, जकर वर्णन बाल्मीकि रामायण आ तुलसीदासक रामचरितमानसमे भेटैत अछि।

प्रश्न 772. पंचतन्त्रक कथा अनुसार कौआ सभक राजाक नाम की छल?

क. मेघवर्ण

ख. अरिमर्दन

ग. स्थिरजीवी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मेघवर्ण

व्याख्या: पंचतन्त्रक कथा अनुसार कागराज मेघवर्ण कौआ सभक राजा छल।

प्रश्न 773. पंचतन्त्रक कथा अनुसार उल्लूक राजाक नाम की छल?

क. अरिमर्दन

ख. मेघवर्ण

ग. स्थिरजीवी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अरिमर्दन

व्याख्या: पंचतन्त्रक कथा अनुसार उल्लूक राजाक नाम अरिमर्दन छल, जे कौआकेँ अपन सबसँ पैघ दुश्मन बूझैत छल।

प्रश्न 774. पंचतन्त्रक कथामे कौआ सभक मध्य सबसँ चतुर आ बुद्धिमान कौआक नाम की छल?

क. स्थिरजीवी

ख. मेघवर्ण

ग. अरिमर्दन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. स्थिरजीवी

व्याख्या: पंचतन्त्रक कथामे स्थिरजीवी सबसँ चतुर आ बुद्धिमान कौआ छल, जे छलनीतिक सहारा लऽ उल्लूक गुफा जरा कऽ ओकरा नष्ट करौलक।

प्रश्न 775. स्थिरजीवी अपन छलनीतिक तहत की केलक, जाहिसँ ओ उल्लूक राजाक विश्वास जीत सकल?

क. राजा मेघवर्णसँ अपनाकेँ अपमानित आ निष्कासित करबा लेलक

ख. सीधे उल्लूसँ युद्ध केलक

ग. उल्लूकेँ धोखा दऽ पकड़ि लेलक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. राजा मेघवर्णसँ अपनाकेँ अपमानित आ निष्कासित करबा लेलक

व्याख्या: स्थिरजीवी छलनीतिक तहत राजा मेघवर्णसँ अपनाकेँ ऊँच-नीच कहा आ अपमानित-निष्कासित करा लेलक, जाहिसँ उल्लूक राजाक विश्वास जीति ओ ओकर गुफामे प्रवेश पाओल।

प्रश्न 776. पंचतन्त्रक मूल रचनाकार के छथि, आलेख अनुसार?

क. विष्णु शर्मा

ख. वाल्मीकि

ग. व्यास

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. विष्णु शर्मा

व्याख्या: आलेख अनुसार चिरै-चुनमुन आ कौआक मनुखक जीवनमे महत्त्वक सबसँ उत्तम उदाहरण विष्णु शर्मा द्वारा रचित कालजयी रचना पंचतन्त्र अछि।

प्रश्न 777. ‘दीनक नेना’ शीर्षक गीतमय कविताक रचनाकार के छथि, आलेख अनुसार?

क. काली कान्त झा “बूच”

ख. कृष्णमोहन झा

ग. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. काली कान्त झा “बूच”

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘दीनक नेना’ शीर्षक गीतमय कविता काली कान्त झा “बूच” द्वारा रचित अछि, जाहिमे एक गरीब माय कौआक सहारा लऽ अपन कनैत बच्चाकेँ बौंसबाक प्रयत्न करैत अछि।

प्रश्न 778. आलेखमे ‘फूलडालीक कनेर’ शीर्षक छोट कविताक रचनाकार के छथि?

क. कृष्णमोहन झा

ख. काली कान्त झा “बूच”

ग. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कृष्णमोहन झा

व्याख्या: आलेखमे ‘फूलडालीक कनेर’ शीर्षक छोट कविता कवि कृष्णमोहन झा द्वारा रचित अछि, जाहिमे कवि सुग्गाक माध्यमसँ नायिकाक स्मृतिमे बेर-बेर आएब वर्णित करैत छथि।

खण्ड ८० : विदेह-सदेह २९ — सौराठ गामक नामकरण-गाथा आ लोक-मान्यता

प्रश्न 779. लोक मान्यता अनुसार सौराठक मूल नाम की छल?

क. सौराष्ट्र

ख. सतलखा

ग. मंगलबनी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सौराष्ट्र

व्याख्या: लोक मान्यता अनुसार सौराठक मूल नाम ‘सौराष्ट्र’ छल, जे बादमे अपभ्रंशित भऽ ‘सौराठ’ भेल।

प्रश्न 780. ‘सौराष्ट्र’ शब्दक अर्थ की होइत अछि, लोक मान्यता अनुसार?

क. १०० राष्ट्र

ख. ७ राष्ट्र

ग. १००० राष्ट्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १०० राष्ट्र

व्याख्या: लोक मान्यता अनुसार सौराष्ट्रक अर्थ भेल १०० राष्ट्र, जे सीताक स्वयंवरमे भाग लेनिहार १०० राष्ट्रक राजकुमारसँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 781. लोक कथाक मान्यता अनुसार सीताक स्वयंवर कतय भेल छल?

क. सौराठ

ख. धनुखी

ग. कनैल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सौराठ

व्याख्या: लोक कथाक मान्यता अनुसार सीताक स्वयंवर सौराठमे भेल छल, जतय १०० राष्ट्रक राजकुमार भाग लेने छला।

प्रश्न 782. लोक मान्यता अनुसार सीता-स्वयंवर आ विवाहमे कतेक लोक आएल छला?

क. सात लाख

ख. एक हजार

ग. दस हजार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सात लाख

व्याख्या: लोक मान्यता अनुसार सीता-स्वयंवर आ बिआहमे सात लाख लोक आएल छला, जकर रहबाक लेल एक पैघ स्थानक निर्माण कएल गेल।

प्रश्न 783. सात लाख आगन्तुकक हेतु बनाओल गेल पैघ स्थान आब कोन नामसँ विख्यात अछि, लोक मान्यता अनुसार?

क. सतलखा

ख. धनुखी

ग. कनैल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सतलखा

व्याख्या: लोक मान्यता अनुसार सात लाख लोकक रहबाक हेतु बनाओल गेल स्थान आब ‘सतलखा’ नामक गामसँ विख्यात अछि, जे सौराठसँ मात्र तीन किलोमीटरक दूरीपर अछि।

प्रश्न 784. लोक मान्यता अनुसार भगवान शिवक धनुष जतय राखल गेल छल, ओ स्थान आब कोन नामसँ जानल जाइत अछि?

क. धनुखी गाम

ख. कनैल गाम

ग. मंगरौनी गाम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. धनुखी गाम

व्याख्या: लोक मान्यता अनुसार भगवान शिवक धनुष जतय राखल गेल छल, ओ स्थान आब ‘धनुखी’ नामक गामसँ जानल जाइत अछि।

प्रश्न 785. राजा जनकक छोट भाए कनक ऋषि अपन आश्रम जतय बनौने छला, ओ स्थान आब कोन गामसँ जानल जाइत अछि?

क. कनैल गाम

ख. धनुखी गाम

ग. सतलखा गाम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कनैल गाम

व्याख्या: लोक मान्यता अनुसार राजा जनकक छोट भाए कनक ऋषिक आश्रमवला स्थानपर आब ‘कनैल गाम’ बसल अछि।

प्रश्न 786. सीता जतय भोरे अपन संगी-बहिनपाक संग फूल लोढ़ै छलीह, ओ फुलबाड़ी ‘मंगलबनी’ अपभ्रंशित भऽ कोन गामक नाम भेल?

क. मंगरौनी

ख. सतलखा

ग. कनैल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मंगरौनी

व्याख्या: लोक मान्यता अनुसार सीता प्रतिदिन भोरे जतय फूल लोढ़ै छलीह, ओ ‘मंगलबनी’ नामक फुलबाड़ी अपभ्रंशित भऽ ‘मंगरौनी’ बनि चुकल अछि, जे मधुबनीक बगलमे अछि।

प्रश्न 787. मधुबनी जिलाक सौराठ गाम साहित्य-इतिहासमे कोन कारणे विख्यात अछि?

क. केतेको सालसँ चलैत सभा (सभा-गाछी)

ख. केवल कृषि

ग. केवल व्यापार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. केतेको सालसँ चलैत सभा (सभा-गाछी)

व्याख्या: आलेख अनुसार सौराठ मिथिलाक धरोहर-गाम अछि, जे केतेको सालसँ चलैत सभा हेतु अपन सभा-गाछीक कारणे विख्यात अछि।

खण्ड ८१ : विदेह-सदेह २९ — मैथिली लोकगीतमे भोजन-विन्यास, औषधि आ अकालकवित्त

प्रश्न 788. ‘मैथिली लोकगीतमे भोजन विन्यास आ औषधि’ आलेखक मूल स्रोत की अछि?

क. शोधकार्यक अवधिमे मिथिलाक गाम सभसँ संकलित लोकगीत

ख. केवल पुस्तकीय अध्ययन

ग. विदेशी स्रोत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शोधकार्यक अवधिमे मिथिलाक गाम सभसँ संकलित लोकगीत

व्याख्या: आलेख अनुसार लेखक अपन शोधकार्यक अवधिमे मिथिलाक गाम सभसँ गीतक संकलन करैत एहि भोजन-विन्यास सम्बन्धी गीत भेटलनि।

प्रश्न 789. साप्ताहिक भोजन-विधान गीत अनुसार शुक्र (शुक्रवार) के दिन कोन भोज्य पदार्थ सुहाइत अछि?

क. दही

ख. गुड़

ग. धनियाँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दही

व्याख्या: आलेखमे उद्धृत गीत अनुसार ‘शुक्र कहे मोहे दही सुहाई’ — शुक्रवार के दिन दही सुहाइत अछि।

प्रश्न 790. साप्ताहिक भोजन-विधान गीत अनुसार शनिवार के दिन की खएला सँ ‘कालौं काल कटति घर जाईं’ कहल गेल अछि?

क. अदरख

ख. गुड़

ग. राई

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अदरख

व्याख्या: आलेखमे उद्धृत गीत अनुसार ‘शनिबार जे अदरख खाई/ कालौं काल कटति घर जाईं’ — शनिवार के दिन अदरख खएलासँ काल सेहो टरि जाइत अछि एहन भाव अछि।

प्रश्न 791. बारहमासा-रूपी वैद्यगीत अनुसार सावनमे की नहि खएबाक चाही?

क. साग

ख. दही

ग. तेल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. साग

व्याख्या: आलेखमे उद्धृत बारहमासा गीत अनुसार ‘सावनक साग ने भादबक दही’ — सावन मासमे साग खएबासँ बचबाक चाही।

प्रश्न 792. बारहमासा-रूपी वैद्यगीतक अनुसार ज़ेठ मासमे की नहि खएबाक चाही?

क. चलब (चना/चरब)

ख. गुड़

ग. तेल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चलब (चना/चरब)

व्याख्या: आलेखमे उद्धृत गीत अनुसार ‘ज़ेठक चलब ने अषाढ़क बेल’ — ज़ेठ मासमे चलब आ अषाढ़मे बेल खएबासँ बचबाक चाही।

प्रश्न 793. बारहमासा-रूपी वैद्यगीतक अंतमे केकर नाम लऽ कऽ कहल गेल अछि जे एहि नियमक पालनसँ रोगसँ बचल जा सकैत अछि?

क. धनवन्तरि

ख. चरक

ग. सुश्रुत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. धनवन्तरि

व्याख्या: आलेखमे उद्धृत गीतक अंतमे कहल गेल अछि ‘कहे धनवनतरि अहि स बचे/ वैद्यराज काहे पुरिया रचे’ — एहि नियमक पालन कएला उत्तर वैद्यराजकेँ दबाइक पुरिया रचबाक आवश्यकता नहि रहत।

प्रश्न 794. अकालकवित्तक रचनाकार लोक कवि के छथि?

क. फतुरी लाल

ख. अब्राहम ग्रिएर्सन

ग. काली कान्त झा बूच

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. फतुरी लाल

व्याख्या: अकालकवित्तक रचनाकार मधुबनी जिलाक शाहपुर गामक जनमान्ध लोक कवि फतुरी लाल छथि, जे मिथिलाक भयानक अकालक विवरण अपन कवित्तमे केने छथि।

प्रश्न 795. फतुरी लालक अकालकवित्त के कहिया हुनके मुहसँ सुनिकऽ लिखलनि?

क. अब्राहम ग्रिएर्सन, १८८७ ईस्वीमे

ख. गजेन्द्र ठाकुर, २०१०मे

ग. रवि भूषण पाठक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अब्राहम ग्रिएर्सन, १८८७ ईस्वीमे

व्याख्या: अब्राहम ग्रिएर्सन सन् १८८७ ईस्वीमे फतुरी लालक अकालकवित्त हुनके मुहसँ सुनिकऽ लिखलनि।

खण्ड ८२ : विदेह-सदेह ३० — संस्कृतसँ मैथिली धरिक ऐतिहासिक भाषिक यात्रा (अवहट्ट)

प्रश्न 796. भारतीय आर्यभाषा समूहमे अवहट्टक कालखण्ड की मानल जाइत अछि, आलेख अनुसार?

क. ९०० ई. सँ ११०० ई. धरि

ख. ५०० ई.पू. सँ १०० ई.पू. धरि

ग. १०० ई.पू. सँ ५०० ई. धरि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ९०० ई. सँ ११०० ई. धरि

व्याख्या: आलेख अनुसार भारतीय आर्यभाषा समूहमे अवहट्ट ९०० ई. सँ ११०० ई. धरिक कालखण्डक मानल जाइत अछि, जे अपभ्रंशक बाद आ मागधी-प्राकृतसँ मैथिली आदिक उत्पत्तिसँ पहिने अबैत अछि।

प्रश्न 797. ज्योतिरीश्वर अनुसार भाट कतेक भाषाक तत्वज्ञ होइत छथि, आलेख अनुसार?

क. छहु भाषा (संस्कृत, प्राकृत, अवहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी)

ख. तीन भाषा

ग. दस भाषा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. छहु भाषा (संस्कृत, प्राकृत, अवहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी)

व्याख्या: आलेख अनुसार ज्योतिरीश्वर लिखलनि अछि— ‘पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अवहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ’।

प्रश्न 798. अवहट्टकेँ ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे की कहल जाइत अछि?

क. मैथिल अपभ्रंश

ख. पुरान मैथिली

ग. मागधी प्राकृत

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिल अपभ्रंश

व्याख्या: आलेख अनुसार अवहट्ट (अवहट्ठ)केँ ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे 'मैथिल अपभ्रंश' कहल जाइत अछि, मागधी प्राकृतसँ एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि।

प्रश्न 799. विद्यापतिक कोन रचना अवहट्ठमे रचल गेल अछि, आलेख अनुसार?

क. कीर्तिलता

ख. चर्या गीत

ग. वर्ण रत्नाकर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कीर्तिलता

व्याख्या: आलेख अनुसार विद्यापतिक 'कीर्तिलता' अवहट्ठमे अछि, जखन कि 'चर्या गीत' आ 'वर्ण रत्नाकर' कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती होएबाक बादो पुरान मैथिली अछि।

प्रश्न 800. 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' ग्रन्थक रचनाकार के छथि, आलेख अनुसार?

क. दामोदर पंडित

ख. ज्योतिरीश्वर

ग. विद्यापति

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दामोदर पंडित

व्याख्या: आलेख अनुसार दामोदर पंडितक 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती अछि, मुदा पुरान अवधी आ पुरान कोशलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अवहट्ठसँ लग अछि।

प्रश्न 801. जोराष्ट्रियन धर्मक 'अवेस्ता' ग्रन्थ कोन भाषा-समूहक ग्रन्थ अछि, आलेख अनुसार?

क. ईरानी भाषा समूह

ख. भारतीय आर्यभाषा समूह

ग. द्रविड़ भाषा समूह

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ईरानी भाषा समूह

व्याख्या: आलेख अनुसार जोराष्ट्रियन धर्मक अवेस्ता ग्रन्थ वैदिक कालक अछि आ ओ अवेस्ता भाषाक ग्रन्थ अछि, जे ईरानी भाषा समूहमे आबैत अछि।

प्रश्न 802. इन्डो आर्यन भाषा समूहमे सभसँ प्राचीन ग्रन्थ कोन मानल गेल अछि, आलेख अनुसार?

क. ऋगवेद

ख. अवेस्ता

ग. वर्णरत्नाकर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ऋगवेद

व्याख्या: आलेख अनुसार इन्डो आर्यन वा भारतीय-ईरानी भाषा समूहमे ऋगवेद सभसँ प्राचीन अछि।

प्रश्न 803. ऋगवेदमे गाथा-गायकक लेल कोन-कोन शब्दक प्रयोग भेल अछि, आलेख अनुसार?

क. गाथिन, गातुविद्, गाथपति

ख. केवल गायक

ग. केवल ऋषि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गाथिन, गातुविद्, गाथपति

व्याख्या: आलेख अनुसार गाथा सभक गायकक लेल 'गाथिन', 'गातुविद्' आ 'गाथपति' शब्द ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल अछि।

खण्ड ८३ : विदेह-सदेह ३० — मिथिलांचलक पालकालीन शिव-गणेश मूर्तिकला

प्रश्न 804. शिवक पुरातात्विक सर्वप्राचीन अवशेष कोन रूपमे मानल जाइत अछि, आलेख अनुसार?

क. मोहनजोदड़ोक पशुपति शिव

ख. चिदम्बरमक नटराज

ग. तारालाहीक नटराज

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मोहनजोदड़ोक पशुपति शिव

व्याख्या: आलेख अनुसार शिवक पुरातात्विक सर्वप्राचीन अवशेषक रूपमे मोहनजोदड़ोक पशुपति शिव अछि, जे समस्त जीव-जन्तुक अधिपति बनल छथि।

प्रश्न 805. नटराज शिवक विलक्षण पालकालीन प्रस्तर मूर्ति कतय पूजित अछि, आलेख अनुसार?

क. तारालाही (दरभंगा)

ख. करियन (समस्तीपुर)

ग. भोजपरौल (मधुबनी)

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तारालाही (दरभंगा)

व्याख्या: आलेख अनुसार नटराज शिवक एकटा विलक्षण पालकालीन प्रस्तर मूर्ति तारालाही (दरभंगा)मे पूजित अछि, जाहिमे नटराज शिव दैत्यपुत्र अपस्मारक कान्हपर ठाढ़ भऽ नृत्यरत छथि।

प्रश्न 806. मिथिलांचलमे गणेशक स्वतंत्र मूर्तिक सबसँ लोकप्रिय कतेक रूप अछि, आलेख अनुसार?

क. दू रूप (पद्मासीन गणेश आ नृत्य गणेश)

ख. एक रूप

ग. चारि रूप

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दू रूप (पद्मासीन गणेश आ नृत्य गणेश)

व्याख्या: आलेख अनुसार गणेशक स्वतंत्र मूर्तिक दूटा रूप मिथिलांचलमे सर्वाधिक लोकप्रिय अछि— पद्मासीन गणेश आ नृत्य गणेश।

प्रश्न 807. कोर्थक (दरभंगा)क नृत्यगणेश मूर्ति कतेक भुजाक अछि, आलेख अनुसार?

क. अष्टभुजी

ख. चतुर्भुजी

ग. द्विभुजी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अष्टभुजी

व्याख्या: आलेख अनुसार कोर्थक (दरभंगा)क अष्टभुजी नृत्यगणेशक मूर्ति (आकार २४”*१०”) कमलासनपर नृत्य भंगिमामे भक्त सभक वरदायी बनल छथि, जकरा आदर्श मूर्ति मानल गेल अछि।

प्रश्न 808. गणेशक वाहन की मानल गेल अछि, आलेख अनुसार?

क. मूषक (मुस)

ख. गज

ग. वृषभ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मूषक (मुस)

व्याख्या: आलेख अनुसार गणेशक वाहन मूषक छनि, जे विघ्नक द्योतक मानल जाइत अछि।

प्रश्न 809. करियन (रोसड़ा, समस्तीपुर) के वैदिक धर्मक कोन न्यायविद्क जन्मभूमि मानल जाइत अछि, आलेख अनुसार?

क. आचार्य उदयन

ख. गंगेश उपाध्याय

ग. वाचस्पति मिश्र

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आचार्य उदयन

व्याख्या: आलेख अनुसार करियनकेँ वैदिक धर्मक न्यायविद् आचार्य उदयनक जन्मभूमि एवं ब्राह्मण देवी-देवता सभक सिद्ध भूमि मानल जाइछ।

प्रश्न 810. शिवक पशुपति-नाम केर सार्थकता कोना देल गेल अछि, आलेख अनुसार?

क. वेद-उपनिषद-पुराण साहित्यमे प्राणिमात्रकेँ पशु कहल गेल अछि

ख. केवल वृषभ-वाहनक कारण

ग. केवल त्रिशूल-धारणक कारण

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वेद-उपनिषद-पुराण साहित्यमे प्राणिमात्रकेँ पशु कहल गेल अछि

व्याख्या: आलेख अनुसार वेद, उपनिषद एवं पुराण साहित्यमे प्राणिमात्रकेँ पशु कहल गेल अछि, अतः शिवक पशुपति नाम सार्थक अछि।

प्रश्न 811. ‘ताल’ शब्दक शाब्दिक रचना कोन दू अक्षरसँ भेल अछि, आलेख अनुसार?

क. ‘ता’ आ ‘ल’

ख. ‘त’ आ ‘आल’

ग. ‘ताल’ अविभाज्य अछि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ‘ता’ आ ‘ल’

व्याख्या: आलेख अनुसार ‘ताल’क शाब्दिक रचना ‘ता’ आ ‘ल’ सँ भेल अछि, अतः शिव ओ शिवा नृत्यमय छथि, संगीत-नाट्यादिक आदि प्रवर्तक छथि।

खण्ड ८४ : विदेह-सदेह ३३ — दूर्वाक्षत मंत्र (शुक्ल यजुर्वेद २२/२२) समीक्षा

प्रश्न 812. दूर्वाक्षत आशीर्वचन मंत्र कोन वेदसँ लेल गेल अछि?

क. शुक्ल यजुर्वेद, अध्याय २२, मंत्र २२

ख. ऋग्वेद

ग. अथर्ववेद

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शुक्ल यजुर्वेद, अध्याय २२, मंत्र २२

व्याख्या: दूर्वाक्षत आशीर्वचन मंत्र शुक्ल यजुर्वेदक अध्याय २२ केर मंत्र २२ सँ लेल गेल अछि।

प्रश्न 813. दूर्वाक्षत मंत्र भारतमे सौंसे कोन रूपमे मंत्रोच्चारित होइत अछि?

क. देशभक्ति गीतक रूपमे

ख. विवाह गीतक रूपमे

ग. शोक गीतक रूपमे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. देशभक्ति गीतक रूपमे

व्याख्या: यजुर्वेदीय २२/२२ मंत्र सौंसे भारतमे देशभक्ति गीतक रूपमे मंत्रोच्चारित होइत अछि।

प्रश्न 814. मिथिलामे दूर्वाक्षत मंत्रक अंतमे कोन अतिरिक्त पाँति जोड़ल जाइत अछि, समीक्षा अनुसार?

क. “मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव” आदि

ख. केवल ॐ शांति

ग. कोनो अतिरिक्त पाँति नहि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. “मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव” आदि

व्याख्या: मिथिलामे एहि मंत्रक संग अन्तमे “ॐ मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव। ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव” जोड़ल जाइत अछि।

प्रश्न 815. दूर्वाक्षत मंत्रमे कोन अलंकार अछि, समीक्षा अनुसार?

क. वाचकलुप्तोपमालङ्कार

ख. उपमा अलंकार

ग. रूपक अलंकार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वाचकलुप्तोपमालङ्कार

व्याख्या: समीक्षा अनुसार दूर्वाक्षत मंत्रमे वाचकलुप्तोपमालङ्कार अछि।

प्रश्न 816. ग्रिफिथक अनुवाद अनुसार दूर्वाक्षत मंत्रमे कोन-कोन कामनाक उल्लेख अछि?

क. नीक धार्मिक विद्या बला ब्राह्मण, वीर राजन्य, तीरंदाज, दूध दैबाली गाय, उद्यमी नारी

ख. केवल धन-समृद्धि

ग. केवल युद्ध-विजय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नीक धार्मिक विद्या बला ब्राह्मण, वीर राजन्य, तीरंदाज, दूध दैबाली गाय, उद्यमी नारी

व्याख्या: ग्रिफिथक अनुवाद अनुसार मंत्रमे कामना अछि जे राज्यमे नीक धार्मिक विद्या बला ब्राह्मण, वीर राजन्य-तीरंदाज, दूध दैबाली गाय, दौगयबला जन्तु, आ उद्यमी नारी होथि।

प्रश्न 817. मायानन्द मिश्रक उपन्यास ‘पुरोहित’ कतेक सर्गमे विभक्त अछि?

क. तेरह सर्ग

ख. दस सर्ग

ग. पाँच सर्ग

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तेरह सर्ग

व्याख्या: ‘पुरोहित’ तेरह टा सर्गमे विभक्त अछि आ एकर अन्त उपसंहारसँ होइत अछि।

प्रश्न 818. ‘पुरोहित’ उपन्यासक प्रथम सर्ग कतयसँ शुरू होइत अछि, समीक्षा अनुसार?

क. दक्षिण पांचालक कांपिल्य नगरसँ

ख. मिथिलासँ

ग. हरियूपियासँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दक्षिण पांचालक कांपिल्य नगरसँ

व्याख्या: समीक्षा अनुसार ‘पुरोहित’ क प्रथम सर्ग दक्षिण पांचालक कांपिल्य नगरसँ शुरू होइत अछि, जतय अथर्वणपल्लीक पशुशालाक वर्णन अछि।

खण्ड ८५ : विदेह-सदेह ३३ — गजल-शास्त्रक शब्दावली (रदीफ, काफिया, मतला, मकता)

प्रश्न 819. गजलमे ‘रदीफ’ की होइत अछि, आशीष अनचिन्हारक आलेख अनुसार?

क. शेरक दुनू पाँतिमे कॉमन (समान) शब्द

ख. शेरक पहिल शब्द

ग. शेरक तुकान्त शब्द

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शेरक दुनू पाँतिमे कॉमन (समान) शब्द

व्याख्या: आलेख अनुसार गजलक पहिल शेरक अंतिमसँ देखलासँ जे कोनो एहन शब्द जे शेरक दूनू पाँतिमे कॉमन होइ, ओकरा गजलक रदीफ कहल जाइत अछि। गजलक सभ शेरक दोसर पाँतिमे ई रदीफ रहबाक चाही।

प्रश्न 820. गजलमे ‘काफिया’ की होइत अछि, आलेख अनुसार?

क. तुकान्त शब्द, जकर तुक शब्दक अंतिमसँ पता लागैत अछि

ख. गजलक प्रथम पाँति

ग. शाइरक उपनाम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तुकान्त शब्द, जकर तुक शब्दक अंतिमसँ पता लागैत अछि

व्याख्या: आलेख अनुसार काफिया तुकान्त शब्द थिक, जकर तुक ओहि शब्दक अंतिमसँ पता लागैत अछि। जे तुकान्त गजलक पहिल पाँतिमे अछि, सएह आन सभ पाँतिमे हेबाक चाही।

प्रश्न 821. गजलमे ‘मतला’ की होइत अछि, आलेख अनुसार?

क. गजलक पहिल शेर, जेकर दुनू पाँतिमे रदीफ आ काफिया दुनू हो

ख. गजलक अंतिम शेर

ग. गजलक मध्यवर्ती शेर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गजलक पहिल शेर, जेकर दुनू पाँतिमे रदीफ आ काफिया दुनू हो

व्याख्या: आलेख अनुसार गजलक पहिल शेर जेकर दुनू पाँतिमे रदीफ आ काफिया क्रमशः अंतिमसँ होइ, एकरा ‘मतला’ कहल जाइत अछि।

प्रश्न 822. गजलमे ‘मकता’ की होइत अछि, आलेख अनुसार?

क. गजलक अंतिम शेर, जाहिमे शाइर अपन नाम-उपनाम (तख़ल्लुस) क प्रयोग करथि

ख. गजलक प्रथम शेर

ग. गजलक रदीफ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गजलक अंतिम शेर, जाहिमे शाइर अपन नाम-उपनाम (तख़ल्लुस) क प्रयोग करथि

व्याख्या: आलेख अनुसार मकता गजलक ओहि अंतिम शेरकेँ कहल जाइत छैक जाहिमे शाइर अपन नाम-उपनाम (तख़ल्लुस) क प्रयोग करथि। बिना मकताक गजल सेहो होइत छैक।

प्रश्न 823. मकताक संबंधमे आलेख अनुसार शाइरकेँ कोन नियमक पालन करबाक चाही?

क. सभ गजलमे अपन नाम वा उपनाममेसँ एकेटाक प्रयोग करब

ख. हर गजलमे भिन्न-भिन्न नामक प्रयोग करब

ग. मकता बिनु गजल नहि बनाएब

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सभ गजलमे अपन नाम वा उपनाममेसँ एकेटाक प्रयोग करब

व्याख्या: आलेख अनुसार शाइर अपन सभ गजलमे या तँ अपन नामक प्रयोग करथि वा अपन उपनामक — दुनूमेसँ कोनो एकेटाक, किछुमे एक आ किछुमे दोसर नहि।

प्रश्न 824. काफियाक संबंधमे आलेख अनुसार ‘र’ वर्णक उच्चारण कोन वर्णक बराबर मानल जाइत अछि?

क. ‘ड़’

ख. ‘ल’

ग. ‘न’

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ‘ड़’

व्याख्या: आलेख अनुसार काफियामे वर्ण ‘र’ केर उच्चारण ‘ड़’ क बराबर मानल जाइत अछि, संगहि ‘स’, ‘श’ आ ‘ष’ केर उच्चारण सेहो समान मानल जाइत अछि।

खण्ड ८६ : विदेह-सदेह ३४ — हरिमोहन झाक ‘कन्यादान’ आ ‘खट्टर ककाक तरंग’

प्रश्न 825. हरिमोहन झाक उपन्यास ‘कन्यादान’ क मूल स्वर की थिक?

क. स्त्री-शिक्षा आ अनमेल विवाहक समस्या

ख. केवल हास्य-विनोद

ग. नाटक-समीक्षा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. स्त्री-शिक्षा आ अनमेल विवाहक समस्या

व्याख्या: ‘कन्यादान’ मे अनमेल विवाहक समस्याकेँ उठाओल गेल अछि — पति-पत्नीक बेमेलपन अवस्था वा रूपक कारणे नहि अपितु शिक्षा-दीक्षाकेँ लऽ कऽ अछि, अतः स्त्री-शिक्षा एकर प्रमुख स्वर थिक।

प्रश्न 826. ‘कन्यादान’ क नायक के छथि?

क. सी.बी. मिश्र

ख. टुन्नी झा

ग. झारखण्डीनाथ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सी.बी. मिश्र

व्याख्या: ‘कन्यादान’ क नायक सी.बी. मिश्र अत्याधुनिक पाश्चात्य सभ्यताक प्रतीक छथि, जे ग्रामीण परिवेशसँ अनभिज्ञ रहलाक कारणे अपन मातृभाषा पर्यन्तसँ अपरिचित भऽ जाइत छथि।

प्रश्न 827. ‘कन्यादान’ क घटकराज टुन्नी झा कथाकेँ कतेक प्रकारेँ स्थिर करैत छथि?

क. तीन प्रकारेँ (खनखनौआ, टनटनौआ, ठनठनौआ)

ख. दू प्रकारेँ

ग. पाँच प्रकारेँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तीन प्रकारेँ (खनखनौआ, टनटनौआ, ठनठनौआ)

व्याख्या: टुन्नी झा कथा तीन प्रकारेँ स्थिर करैत छथि — खनखनौआ (टाका हँसोथि लेनिहार), टनटनौआ (नगद गनबैनिहार) आ ठनठनौआ (दुह ठनठन गोपाल भए काज करनिहार)।

प्रश्न 828. ‘द्विरागमन’ मे बुच्ची दाइक शिक्षिकाक नाम/उपाधि की अछि?

क. मेम साहेब

ख. लाल काकी

ग. चमेली दाइ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मेम साहेब

व्याख्या: ‘द्विरागमन’ मे झारखण्डीनाथ लाल ककाक ओतय बुच्ची दाइक शिक्षिका ‘मेम साहेब’ क स्वागत करबाक हेतु प्रस्तुत होइत छथि।

प्रश्न 829. ‘खट्टर ककाक तरंग’ क मुख्य कथा-नायक के छथि?

क. खट्टर कका

ख. ढाला झा

ग. झारखण्डीनाथ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. खट्टर कका

व्याख्या: ‘खट्टर ककाक तरंग’ क कथा-नायक खट्टर कका पूर्णत: विनोदी प्रकृतिक व्यक्ति छथि, जे काव्य-शास्त्र-विनोदक धारा प्रवाहित करैत रहैत छथि।

प्रश्न 830. खट्टर कका अनुसार असली पंडित आ नकली पंडितमे की भेद अछि?

क. असली विद्याक अन्वेषण करैत छथि, नकली विदाइक अन्वेषणमे रहैत छथि

ख. दुनू समान छथि

ग. नकली बेसी ज्ञानी छथि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. असली विद्याक अन्वेषण करैत छथि, नकली विदाइक अन्वेषणमे रहैत छथि

व्याख्या: खट्टर कका अनुसार असली पंडित विद्याक अन्वेषणमे रहैत छथि जखन कि नकली पंडित विदाइक (दान-दक्षिणाक) अन्वेषणमे रहैत छथि।

प्रश्न 831. खट्टर ककाक दावा अनुसार ओ केकर वंशज छथि?

क. गोनू आ गंगेश दुनूक वंशज

ख. केवल गोनूक वंशज

ग. केवल गंगेशक वंशज

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. गोनू आ गंगेश दुनूक वंशज

व्याख्या: खट्टर ककाक दावा छनि जे ओ गोनू आ गंगेश दुनूक वंशज थिकाह, तेँ हुनका पाश्चात्य सभ्यताक प्रतीक बूझब भ्रम थीक।

प्रश्न 832. हरिमोहन झाक ‘ढाला झा’ कविता मे ढाला झा केकर ‘प्रणैत्र’ (वंशज) कहल गेल छथि?

क. लुट्टी झाक

ख. खट्टर ककाक

ग. टुन्नी झाक

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लुट्टी झाक

व्याख्या: ‘ढाला झा’ कविता मे ढाला झाकेँ लुट्टी झाक प्रणैत्र, नरहा पौजि, ककड़ौड़क वासी एवं बेलौंचेक वंशज कहल गेल अछि।

खण्ड ८७ : विदेह-सदेह ३२ — मिथिला आ नेपालक ऐतिहासिक सम्बन्ध (किरात-लिच्छवी काल)

प्रश्न 833. नेपालक प्रारंभिक इतिहासमे ई.पू. ५९०सँ ११० ई. धरि नेपाल कोन संस्कृतिक प्रधान केन्द्र छल, आलेख अनुसार?

क. किरात संस्कृति

ख. लिच्छवी संस्कृति

ग. मौर्य संस्कृति

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. किरात संस्कृति

व्याख्या: आलेख अनुसार ई.पू. ५९०सँ ११० ई. धरि नेपाल किरात संस्कृतिक प्रधान केन्द्र छल, जकर वर्णन शुक्ल यजुर्वेदमे सेहो आएल अछि।

प्रश्न 834. महाभारत अनुसार महादेव कोन भेषमे अर्जुनक परीक्षा लेने छलाह?

क. किरातक भेष

ख. ब्राह्मणक भेष

ग. सन्यासीक भेष

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. किरातक भेष

व्याख्या: आलेख अनुसार महाभारतसँ ज्ञात होइत अछि जे जखन अर्जुन हिमालयमे तपस्या करैत छलाह तखन महादेव किरातक भेषमे अर्जुनक परीक्षा लेने छलाह।

प्रश्न 835. नेपाल–मिथिला सम्बन्धमे नेपाली संवतक आरम्भ कोन सालसँ मानल जाइत अछि, आलेख अनुसार?

क. १११ ई.सँ

ख. ई.पू. ६००सँ

ग. ३५० ई.सँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १११ ई.सँ

व्याख्या: आलेख अनुसार नेपाली संवत जे १११ ई.सँ आरंभ छैक, सैह संभवतः लिच्छवी लोकनिक राज्यारोहणक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 836. लिच्छवी लोकनि नेपालमे कतेक काल धरि शासन केलन्हि, आलेख अनुसार?

क. ३५०सँ ८९९ धरि

ख. १०० वर्ष धरि

ग. एक हजार वर्ष धरि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ३५०सँ ८९९ धरि

व्याख्या: आलेख अनुसार लिच्छवी लोकनि ३५०सँ ८९९ धरि शासन केलन्हि, जाहिमे बीचमे मात्र अंशुवर्मन आ जिश्नुगुप्त छोड़िकेँ स्वतंत्र शासन भेल।

प्रश्न 837. महासामंत अंशुवर्मन कोन शताब्दीक एकटा महत्वपूर्ण नेपाली शासक छलाह, आलेख अनुसार?

क. सातम शताब्दीक पूर्वार्द्ध

ख. तेसर शताब्दी

ग. बारहम शताब्दी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. सातम शताब्दीक पूर्वार्द्ध

व्याख्या: आलेख अनुसार महासामंत अंशुवर्मन सातम शताब्दीक पूर्वार्द्धक एकटा महत्वपूर्ण नेपाली शासक भेल छथि, जे अपन राज्यक विस्तार बेतिया धरि कऽ लेने छलाह।

प्रश्न 838. दरभंगा राजकेँ स्थायी रूपेण अपन राजधानी कोन राजा बनौलन्हि?

क. राजा माधव सिंह

ख. राजा प्रताप सिंह

ग. नरेन्द्र सिंह

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. राजा माधव सिंह

व्याख्या: आलेख अनुसार राजा माधव सिंह दरभंगाकेँ स्थायी रूपेण अपन राजधानी बनौलन्हि, आ १७८५सँ अद्यावधि हुनका लोकनिक राजधानी दरभंगा रहल अछि।

प्रश्न 839. राजा प्रताप सिंहकेँ स्थानीय परम्परामे कोन उपाधिसँ जानल जाइत छलन्हि?

क. “मिथिलेश”

ख. “महाराजाधिराज”

ग. “सम्राट”

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. “मिथिलेश”

व्याख्या: आलेख अनुसार स्थानीय परम्परामे राजा प्रताप सिंहकेँ “मिथिलेश” कहल गेल छन्हि।

प्रश्न 840. महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक समयमे दरभंगामे कोन अस्पतालक स्थापना भेल?

क. लेडी डफरिन अस्पताल

ख. एम्स

ग. पटना मेडिकल कॉलेज

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लेडी डफरिन अस्पताल

व्याख्या: आलेख अनुसार महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक समयमे दरभंगामे लेडी डफरिन अस्पतालक स्थापना भेल, संगहि खड़गपुर (मूंगेर)मे सेहो एकटा अस्पतालक स्थापना केलन्हि।

प्रश्न 841. महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह कोन सालमे काँग्रेसक अधिवेशन करबाक लेल ‘लाउपर कास्ल’ प्रयागमे कीनि देने छलथिन्ह?

क. १८८८मे

ख. १९४७मे

ग. १८००मे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १८८८मे

व्याख्या: आलेख अनुसार महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह १८८८मे काँग्रेसक अधिवेशन करबा लेल ‘लाउपर कास्ल’ प्रयागमे कीनिकेँ देने छलथिन्ह आ सालाना १०,००० टाका चंदा दैते रहथिन्ह।

प्रश्न 842. १९४७ धरि दरभंगाक शासकगणकेँ कोन दर्जा भेटल छलन्हि, आलेख अनुसार?

क. जमीन्दारक दर्जा

ख. स्वतंत्र राजाक दर्जा

ग. गवर्नरक दर्जा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जमीन्दारक दर्जा

व्याख्या: आलेख अनुसार कम्पनीक अधिकारी लोकनि माधव सिंहक मांग नहि सुनलकैन्ह आ हुनका लोकनिकेँ जमीन्दारक दर्जा दऽ देलकैन्ह, जे १९४७ तक रहल।

खण्ड ८८ : विदेह-सदेह ३२ — कर्णाट वंश आ हरिसिंह देवक पञ्जी-प्रबन्ध

प्रश्न 843. कर्णाट वंशक संस्थापक राजा नान्यदेव कोन साके (शक संवत) राज्य पौलन्हि, आलेख अनुसार?

क. शाके १०१९

ख. शाके १२१६

ग. शाके १२४८

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. शाके १०१९

व्याख्या: आलेख अनुसार नान्य राजा क्षत्रिय कर्णाट छलाह जे शाके १०१९मे राज्य पौलन्हि, आ २२६ वर्ष धरि हुनक संतान लोकनि राज्य केलन्हि।

प्रश्न 844. हरिसिंह देव मैथिल ब्राह्मणक कोन व्यवस्थाक प्रबन्ध केलन्हि?

क. पञ्जी प्रबन्ध

ख. वर्णाश्रम व्यवस्था

ग. तंत्र-साधना

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पञ्जी प्रबन्ध

व्याख्या: आलेख अनुसार हरिसिंह देव मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी प्रबन्ध केलन्हि, जे मिथिलाक प्रसिद्ध पञ्जी (वंशावली) व्यवस्थाक आरम्भ मानल जाइत अछि।

प्रश्न 845. हरिसिंह देवक मंत्री, साँधिविग्रहिक महावार्त्तिक–निबन्धकार के छलाह?

क. महामत्तक वीरेश्वर ठाकुर

ख. नान्यदेव

ग. गंगदेव

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. महामत्तक वीरेश्वर ठाकुर

व्याख्या: आलेख अनुसार हरिसिंह देवक मंत्री साँधिविग्रहिक महावार्त्तिक-निबन्धकार महामत्तक वीरेश्वर ठाकुर छलथिन्ह, जे अलाउद्दीनक संग रणस्तंभ किलापर विजयाभियानक अवसरपर सेहो छलाह।

प्रश्न 846. कर्णाट वंशमे हरिसिंह कतेक वर्ष राज्य भोग केलन्हि, आलेख अनुसार?

क. २० वर्ष

ख. ३६ वर्ष

ग. ९२ वर्ष

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. २० वर्ष

व्याख्या: आलेख अनुसार कर्णाट वंशमे हरिसिंह २० वर्ष राज्य भोग केलन्हि, जखन कि नान्यदेव ३६ वर्ष, नरसिंह देव ५२ वर्ष आ रामसिंह देव ९२ वर्ष राज्य केलन्हि।

प्रश्न 847. हरिसिंह देव दैवाधीन पटना छोड़ि कतय चल गेलाह, आलेख अनुसार?

क. उत्तर पहाड़ जंगल दिसि

ख. बंगाल दिसि

ग. दक्षिण भारत दिसि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. उत्तर पहाड़ जंगल दिसि

व्याख्या: आलेख अनुसार हरिसिंह देव दैवाधीन ओ पटना छोड़ि उत्तर पहाड़ जंगल दिसि चल गेलाह।

प्रश्न 848. लोक मान्यता अनुसार श्रीकृष्ण स्यमंतक मणिक खोजक क्रममे मिथिलामे जतय निवास केलन्हि, ओहि गढ़क नाम की पड़ल?

क. कोपगढ़

ख. बलिराजगढ़

ग. क्षेमगढ़

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कोपगढ़

व्याख्या: लोक मान्यता अनुसार मणि नहि भेटलाक कारणे कृष्णकेँ क्रोध भेलन्हि आ ओ मिथिलामे आबि राजसत्कारसँ प्रसन्न भऽ धर्मागंद गढ़मे निवास केलन्हि, तखनहिसँ ओहि गढ़क नाम कोपगढ़ पड़ल।

प्रश्न 849. लोक मान्यता अनुसार श्रीकृष्ण मिथिलाक कोपगढ़मे कतेक वर्ष धरि निवास केलन्हि?

क. ६० वर्ष

ख. १० वर्ष

ग. १०० वर्ष

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ६० वर्ष

व्याख्या: लोक मान्यता अनुसार श्रीकृष्ण ६० वर्षक पछाति द्वारिका घुरलाह, ताबत मिथिलाक कोपगढ़मे निवास केने छलाह।

प्रश्न 850. बलिराज, जकर नामपर बलिराजगढ़ अछि, स्कन्दपुराण अनुसार कोन वंशक छलाह?

क. चन्द्रवंशी (सौनल मुनिसँ उत्पन्न क्षत्रिय वंशक बीसम राजा)

ख. सूर्यवंशी

ग. इक्ष्वाकु वंशी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. चन्द्रवंशी (सौनल मुनिसँ उत्पन्न क्षत्रिय वंशक बीसम राजा)

व्याख्या: स्कन्दपुराण (सह्याद्रिखण्ड, अध्याय-३५) अनुसार बलिराज सौनल मुनिसँ उत्पन्न चन्द्रवंशी क्षत्रिय वंशक बीसम राजा छलाह।

खण्ड ८९ : विदेह-सदेह ३३ — गोनू झाक कालखण्ड-विवाद आ प्रेमशंकर सिंहक समीक्षा-संग्रह

प्रश्न 851. पञ्जीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन अनुसार गोनू झा विद्यापतिसँ कतेक पीढ़ी पहिने भेल अभिलेखित अछि, समीक्षा अनुसार?

क. दस पीढ़ी पहिने

ख. एक पीढ़ी पहिने

ग. बीस पीढ़ी पहिने

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. दस पीढ़ी पहिने

व्याख्या: समीक्षा अनुसार पञ्जीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन गोनू झाकेँ विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैत अछि, जखन कि विभिन्न लेखक हुनका भिन्न-भिन्न काल (५००, ३००, १४म शताब्दी) क मानैत छथि।

प्रश्न 852. वीरेन्द्र झा अनुसार गोनू झा कतेक साल पहिने भेला?

क. ५०० साल पहिने

ख. ३०० साल पहिने

ग. १००० साल पहिने

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ५०० साल पहिने

व्याख्या: समीक्षा अनुसार वीरेन्द्र झा कहैत छथि जे गोनू झा ५०० साल पहिने भेला।

प्रश्न 853. तारानन्द वियोगी अनुसार गोनू झा कतेक साल पहिने भेल मानल जाइत छथि?

क. ३०० साल पहिने

ख. ५०० साल पहिने

ग. १०० साल पहिने

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ३०० साल पहिने

व्याख्या: समीक्षा अनुसार तारानन्द वियोगी गोनू झाकेँ ३०० साल पहिने भेल मानैत छथि।

प्रश्न 854. विभा रानीक हिन्दी पोथीमे कुणाल गोनू झाकेँ कोन राजाक राज्यमे भेल मानैत छथि?

क. भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी)

ख. हरि सिंहक राज्यमे

ग. नान्यदेवक राज्यमे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी)

व्याख्या: समीक्षा अनुसार विभा रानीक गोनू झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनू झाकेँ भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानैत छथि।

प्रश्न 855. गोनू झापर साहित्यिक चर्चामे एक भ्रामक तथ्य की उजागर कएल गेल अछि, समीक्षा अनुसार?

क. साम्प्रदायिक लेखक गोनूक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोंसिया रहल छथि, जखन कि गोनूक समयमे मुस्लिम मिथिलामे रहबे नहि करथि

ख. गोनू झा संस्कृत नहि जनैत छलाह

ग. गोनू झा कोनो ऐतिहासिक व्यक्ति नहि छथि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. साम्प्रदायिक लेखक गोनूक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोंसिया रहल छथि, जखन कि गोनूक समयमे मुस्लिम मिथिलामे रहबे नहि करथि

व्याख्या: समीक्षा अनुसार साम्प्रदायिक लेखक लोकनि गोनू झाक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोंसिया रहल छथि, जखन कि मुस्लिम लोकनि मिथिलामे गोनूक समयमे रहबे नहि करथि — ई एक ऐतिहासिक भ्रम थिक।

प्रश्न 856. प्रेमशंकर सिंहक निबन्ध-संग्रह ‘मैथिली भाषा साहित्य : बीसम शताब्दी’ मे कोन-कोन कालखण्डक चर्चा भेल अछि?

क. २०म शताब्दी आ २१म शताब्दीक पहिल दशक

ख. केवल १९म शताब्दी

ग. केवल स्वतंत्रता-पूर्व काल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. २०म शताब्दी आ २१म शताब्दीक पहिल दशक

व्याख्या: प्रेमशंकर सिंहक निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना संग्रह ‘मैथिली भाषा साहित्य : बीसम शताब्दी’ मे मैथिली साहित्यक २०म शताब्दी आ एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक विभिन्न पक्षपर चर्चा भेल अछि।

प्रश्न 857. प्रेमशंकर सिंहक संग्रहमे ‘संस्मरण साहित्य’ खण्डमे केकर संस्मरणक चर्चा भेल अछि?

क. मणिपद्म (हुनकासँ भेँट भेल छल)

ख. जयकान्त मिश्र

ग. हरिमोहन झा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मणिपद्म (हुनकासँ भेँट भेल छल)

व्याख्या: प्रेमशंकर सिंहक संग्रहमे ‘संस्मरण साहित्य’ खण्डमे मणिपद्मक ‘हुनकासँ भेँट भेल छल’ क सन्दर्भमे संस्मरण साहित्यपर चर्चा भेल अछि।

प्रश्न 858. समीक्षक अनुसार जगदीश प्रसाद मण्डलक योगदानक कारणे मैथिली साहित्यक इतिहास कोन दू खण्डमे पाठित होएत?

क. “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व” आ “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ”

ख. “स्वतंत्रता-पूर्व” आ “स्वतंत्रता-पश्चात”

ग. “प्राचीन” आ “आधुनिक”

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व” आ “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ”

व्याख्या: समीक्षा अनुसार जगदीश प्रसाद मण्डलक योगदान एहन स्थानपर स्थापित करैत अछि जे मैथिली साहित्यक इतिहास “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व” आ “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ” एहि दू खण्डमे पाठित होएत।

प्रश्न 859. विदेहमे जगदीश प्रसाद मण्डलक कतेक उपन्यास आ कतेक कथा ई-प्रकाशित भेल अछि, समीक्षा अनुसार?

क. पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक, दू दर्जनसँ बेशी कथा

ख. एकटा उपन्यास मात्र

ग. दस उपन्यास

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक, दू दर्जनसँ बेशी कथा

व्याख्या: समीक्षा अनुसार विदेहमे जगदीश प्रसाद मण्डलक पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक आ दू दर्जनसँ बेशी कथा, संगहि सएसँ ऊपर बाल-प्रेरक कथा ई-प्रकाशित भेल अछि।

खण्ड ९० : विदेह-सदेह ३४ — जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजन

प्रश्न 860. नेपाल सरकारक संस्कृति मंत्रालय द्वारा गठित संस्था जे ‘मिथिला महोत्सव’क आयोजन करैत अछि, ओकर नाम की?

क. वृहत्तर जनकपुर क्षेत्र विकास परिषद्

ख. मिथिला सांस्कृतिक परिषद्

ग. जनकपुर नगरपालिका

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. वृहत्तर जनकपुर क्षेत्र विकास परिषद्

व्याख्या: आलेख अनुसार नेपाल सरकारक संस्कृति मंत्रालय द्वारा २०५५ सालक ऐन द्वारा गठित वृहत्तर जनकपुर क्षेत्र विकास परिषद् ‘मिथिला महोत्सव’क आयोजन करैत अछि।

प्रश्न 861. आलेख अनुसार प्राचीन मिथिलाक स्थापना केकर द्वारा भेल मानल जाइत अछि?

क. माधव विदेह द्वारा

ख. नान्यदेव द्वारा

ग. कामेश्वर ठाकुर द्वारा

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. माधव विदेह द्वारा

व्याख्या: आलेख अनुसार प्राचीन मिथिलाक स्थापना माधव विदेह द्वारा आइसँ पाँच हजार वर्ष पूर्व भेल इतिहास सत्य मानल जाइत अछि।

प्रश्न 862. जनक वंश समाप्त भेलाक बाद कोन सालमे नान्यदेव मिथिला राजक नओ ठाढ़ केलनि, आलेख अनुसार?

क. १०९७ ई.मे

ख. १५५६ ई.मे

ग. १३५० ई.मे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १०९७ ई.मे

व्याख्या: आलेख अनुसार राजा जनकक वंश समाप्त भेलाक बाद १०९७ ई.मे नान्यदेव मिथिला राजक नओ ठाढ़ केलनि, जे २२७ वर्ष धरि चलल।

प्रश्न 863. हेरायल मिथिला कोन सालमे ओइनवार वंशक संग पुनः उजागर भेल, आलेख अनुसार?

क. १५५६ ई.मे

ख. १०९७ ई.मे

ग. १८०० ई.मे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. १५५६ ई.मे

व्याख्या: आलेख अनुसार हेरायल मिथिला पुनः १५५६ ई.मे ओइनवार वंशक संग उजागर भेल, जे दरभंगा महाराजक राजपाट गेला धरि चलल।

प्रश्न 864. ‘मिथिला महोत्सव’ क नारा की रहल, आलेख अनुसार?

क. “हम्मर संस्कृति हम्मर पहिचान : समृद्ध मिथिला हम्मर अभियान”

ख. “एक मिथिला, एक पहिचान”

ग. “मैथिली बचाउ आन्दोलन”

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. “हम्मर संस्कृति हम्मर पहिचान : समृद्ध मिथिला हम्मर अभियान”

व्याख्या: आलेख अनुसार महोत्सवक नारा छल “हम्मर संस्कृति हम्मर पहिचान : समृद्ध मिथिला हम्मर अभियान”।

प्रश्न 865. मिथिला महोत्सवक आयोजन स्थल कोन प्राचीन स्थानकेँ बनाओल गेल छल, आलेख अनुसार?

क. प्राचीन तिरहुतिया गाछी

ख. जानकी मंदिर परिसर

ग. विश्वविद्यालय परिसर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. प्राचीन तिरहुतिया गाछी

व्याख्या: आलेख अनुसार महोत्सवक आयोजन स्थल प्राचीन तिरहुतिया गाछीकेँ बनाओल गेल छल, जकरालेल ४९ गोट उपसमिति बनाओल गेल छल।

प्रश्न 866. मिथिला महोत्सवमे लोकमंचक प्रस्तुतिकरणमे कोन-कोन लोकगाथाक नायकक नाच देखाओल जेबाक योजना छल?

क. राजा सलहेस, दीनाभदी, लोरिक, दुलरा दयाल, जया विसहर

ख. केवल राजा जनक

ग. केवल विद्यापति

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. राजा सलहेस, दीनाभदी, लोरिक, दुलरा दयाल, जया विसहर

व्याख्या: आलेख अनुसार लोकमंचक प्रस्तुतिकरण क्रममे राजा सलहेस, दीनाभदी, लोरिक, दुलरा दयाल, जया विसहरक नाचक संगहि जट-जटिन, समा चकेबा, झिझिया नृत्य देखाओल जेबाक योजना छल।

प्रश्न 867. मिथिला महोत्सवक कुल खर्च अनुमानतः कतेक छल, आलेख अनुसार?

क. लगभग ५० लाख टाका

ख. लगभग १० लाख टाका

ग. लगभग एक करोड़ टाका

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लगभग ५० लाख टाका

व्याख्या: आलेख अनुसार लगभग ५० लाख टाकाक खर्चसँ सम्पन्न होबएबला ‘मिथिला महोत्सव’ सम्पूर्ण मैथिली भाषीक हेतु दर्शनीय हएब तय छल।

खण्ड ९१ : विदेह-सदेह ३४ — राजदेव मण्डलक उपन्यास ‘हमर टोल’

प्रश्न 868. राजदेव मण्डलकेँ कोन कृति लेल विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ क मूल पुरस्कार भेटल छन्हि?

क. अम्बरा (कविता संग्रह)

ख. हमर टोल (उपन्यास)

ग. निश्तुकी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अम्बरा (कविता संग्रह)

व्याख्या: राजदेव मण्डलकेँ अम्बरा (कविता संग्रह) लेल विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) क मूल पुरस्कार भेटल छन्हि।

प्रश्न 869. राजदेव मण्डलक उपन्यास ‘हमर टोल’ केकरा समर्पित अछि?

क. समस्त मिथिलांचलकेँ

ख. हुनक माता-पिताकेँ

ग. केवल अपन गामकेँ

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. समस्त मिथिलांचलकेँ

व्याख्या: ‘हमर टोल’ उपन्यास समस्त मिथिलांचलकेँ समर्पित अछि।

प्रश्न 870. राजदेव मण्डल अपन उपन्यास ‘हमर टोल’क प्रति आभार केकरा प्रति व्यक्त करैत छथि?

क. श्री गजेन्द्र ठाकुर एवं उमेश मण्डलजी

ख. केवल गजेन्द्र ठाकुर

ग. केवल उमेश मण्डल

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. श्री गजेन्द्र ठाकुर एवं उमेश मण्डलजी

व्याख्या: ‘हमर टोल’ उपन्यासमे राजदेव मण्डल अपन आभार श्री गजेन्द्र ठाकुर एवं उमेश मण्डलजी प्रति व्यक्त करैत छथि।

प्रश्न 871. ‘हमर टोल’ उपन्यासक आरम्भमे लेखक स्वयं की स्पष्ट करैत छथि?

क. नाओं, स्थान, घटना आदि कल्पनापर आधारित अछि

ख. ई सम्पूर्ण रूपेँ आत्मकथात्मक अछि

ग. ई एकटा ऐतिहासिक दस्तावेज अछि

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नाओं, स्थान, घटना आदि कल्पनापर आधारित अछि

व्याख्या: ‘हमर टोल’ उपन्यासक आरम्भमे लेखक स्पष्ट करैत छथि जे नाओं, स्थान, घटना आदि कल्पनापर आधारित अछि।

प्रश्न 872. ‘हमर टोल’ उपन्यासमे ‘गहवर घर’ किनका सम्बद्ध एक पारम्परिक मैथिल लोक-रिवाज देखाओल गेल अछि?

क. भगत/ओझा द्वारा देवी-देवताक आवाहन आ पूजा-विधि

ख. केवल विवाह-रिवाज

ग. केवल फसल-उत्सव

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भगत/ओझा द्वारा देवी-देवताक आवाहन आ पूजा-विधि

व्याख्या: ‘हमर टोल’ उपन्यासमे गहवर घरक दृश्यमे भगत (खेलाबन भगत/रामखेलाबन) द्वारा देवी-देवताक आवाहन आ पूजा-विधिक पारम्परिक मैथिल लोक-रिवाजक विस्तृत वर्णन अछि।

खण्ड ९२ : विदेह-सदेह ३६ — मैथिली वर्डनेट परियोजना आ अंकुशी महादेबक स्थान-गाथा

प्रश्न 873. मैथिली वर्डनेट बनेबाक उद्देश्य की अछि, आलेख अनुसार?

क. एहेन Lexical Database तैयार करब जे मैथिली शब्दक अर्थ, आण्टोलोजी आ पर्यायपद उपलब्ध करा सकय

ख. केवल मैथिली व्याकरणक पाठ्यक्रम बनाएब

ग. मैथिली फिल्म बनाएब

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. एहेन Lexical Database तैयार करब जे मैथिली शब्दक अर्थ, आण्टोलोजी आ पर्यायपद उपलब्ध करा सकय

व्याख्या: आलेख अनुसार मैथिली वर्डनेट बनेबाक उद्देश्य एहेन Lexical Database तैयार करब अछि जे चयनित मैथिली शब्दक अर्थ, आण्टोलोजी (हैरार्की), आ अन्य भारतीय भाषामे ओकर अर्थ-पर्यायपद सहजतासँ उपलब्ध करा सकय।

प्रश्न 874. मैथिली वर्डनेटक डाटा-संकलन हेतु कोन मानक ग्रन्थक उपलब्धता स्क्राइब पर भेटल, आलेख अनुसार?

क. कल्याणी कोश

ख. बृहत् हिन्दी कोश

ग. मैथिली थिसॉरस

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. कल्याणी कोश

व्याख्या: आलेख अनुसार कल्याणी कोशक उपलब्धता स्क्राइब पर नागेशजीक सहयोगसँ भेटल, जे एकटा मानक ग्रन्थ अछि आ शब्दतन्त्र बनेबाक मार्गमे उपादेय अछि।

प्रश्न 875. मैथिली वर्डनेट परियोजनाक लेल आलेख अनुसार मैथिली भाषीक मध्य कोन दू पूर्वाग्रह विद्यमान अछि?

क. मैथिली बजनाइ पिछड़ापनक प्रतीक मानब, आ भाषा-अन्तर्सम्बन्धक महत्त्व बिसरब

ख. केवल आर्थिक पूर्वाग्रह

ग. केवल जातिगत पूर्वाग्रह

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मैथिली बजनाइ पिछड़ापनक प्रतीक मानब, आ भाषा-अन्तर्सम्बन्धक महत्त्व बिसरब

व्याख्या: आलेख अनुसार दू प्रकारक पूर्वाग्रह विद्यमान अछि — पहिल मैथिली बजनाइ पिछड़ापनक प्रतीक मानब, दोसर मैथिलीक उत्थानमे योगदान करैत भाषाक अन्तर्सम्बन्धक महत्त्व बिसरब।

प्रश्न 876. अंकुशी महादेबक स्थान कोन जिलाक कोन गाममे अछि, आलेख अनुसार?

क. मधुबनी जिलाक लखनौर गाम

ख. दरभंगा जिलाक सौराठ गाम

ग. मधुबनी जिलाक झंझारपुर गाम

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. मधुबनी जिलाक लखनौर गाम

व्याख्या: आलेख अनुसार अंकुशी महादेबक स्थान मधुबनी जिलाक लखनौर गाममे बस्तीसँ लगभग डेढ़ कि.मी. दूर निर्जनमे लगभग चौदह सीढ़ी नीचाँ अछि।

प्रश्न 877. अंकुशी महादेब केकर आराध्यदेव छथि, आलेख अनुसार?

क. करमहे झांझारपुर मूलक वत्सगोत्रीय मैथिलश्रोत्रिय सभक

ख. केवल पुरोहित परिवारक

ग. सम्पूर्ण मिथिलाक एकमात्र देवता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. करमहे झांझारपुर मूलक वत्सगोत्रीय मैथिलश्रोत्रिय सभक

व्याख्या: आलेख अनुसार अंकुशी महादेब करमहे झांझारपुर मूलक वत्सगोत्रीय मैथिलश्रोत्रिय सभक आराध्यदेव छथि।

प्रश्न 878. लोक-कथा अनुसार योगीश्वर बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईं अंकुशी महादेबकेँ कतय स्थापित करय चाहैत छलाह?

क. लखनौरक राधाकृष्ण मन्दिर प्रांगणमे

ख. दरभंगाक राजमहलमे

ग. काठमाण्डूमे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लखनौरक राधाकृष्ण मन्दिर प्रांगणमे

व्याख्या: लोक-कथा अनुसार योगीश्वर बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईं लखनौरमे राधाकृष्ण मन्दिर प्रांगणमे अंकुशी महादेबकेँ स्थापित करय चाहैत छलाह, मुदा शिवलिंग बेसी गहींर निकलल आ देवता निर्जनमे रहबाक इच्छा कहलनि।

प्रश्न 879. लोक-मान्यता अनुसार अंकुशी महादेब कोन वचन देने छथि?

क. ओ निर्जनमे रहैत गामक रक्षा करता

ख. ओ गाम छोड़ि अन्यत्र चल जेता

ग. ओ केवल पुरोहितकेँ रक्षा करता

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ओ निर्जनमे रहैत गामक रक्षा करता

व्याख्या: लोक-मान्यता अनुसार अंकुशी महादेब कहलखिन्ह जे ‘हम एतहि सँ गामक रक्षा करबह’, आ तहिये दिनसँ लखनौर गाम एहि देवताक द्वारा सतत सुरक्षित मानल जाइत अछि।

प्रश्न 880. करमहे झांझारपुर मूलक वत्सगोत्रीय परिवारक पुरुष बच्चाक मूड़न कतय होइत अछि, आलेख अनुसार?

क. अंकुशी महादेबक सामने (चाहे ओ विदेशमे होथि)

ख. केवल गाम छोड़ने आधुनिक स्थानपर

ग. केवल पुरोहितक घरमे

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. अंकुशी महादेबक सामने (चाहे ओ विदेशमे होथि)

व्याख्या: आलेख अनुसार करमहे झांझारपुर मूलक वत्सगोत्रीय मैथिलश्रोत्रियक समस्त परिवारक पुरुष बच्चाक मूड़न आइयो अही महादेबक सामने होइत अछि, चाहे ओ विदेशमे किएक नहि होथि।

खण्ड ९३ : विदेह-सदेह ३६ — अण्टार्कटिका आ भारतीय अण्टार्कटिक अभियान

प्रश्न 881. ‘अण्टार्कटिका’ शब्द कोन भाषाक रोमण संस्करण थिक, आ ओकर अर्थ की होइत अछि?

क. ग्रीक शब्द, अर्थ ‘आर्कटिक केर विपरीत’ (दक्षिण)

ख. लैटिन शब्द, अर्थ ‘बर्फीला महादेश’

ग. रूसी शब्द, अर्थ ‘ठंढा क्षेत्र’

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ग्रीक शब्द, अर्थ ‘आर्कटिक केर विपरीत’ (दक्षिण)

व्याख्या: आलेख अनुसार अण्टार्कटिका ग्रीक शब्दक रोमण संस्करण थिक, जकर अर्थ होइत अछि “आर्कटिक केर विपरीत” (Anti-Arctic), अर्थात् “उत्तर केर उनटा”, माने “दक्षिण”।

प्रश्न 882. अण्टार्कटिकाक न्यूनतम तापमान कतेक नापल गेल अछि, आ कोन केन्द्र द्वारा?

क. -89.2°C, रूसी अण्टार्कटिक केन्द्र “वोस्तोक” द्वारा

ख. -50°C, भारतीय केन्द्र “मैत्री” द्वारा

ग. -10°C

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. -89.2°C, रूसी अण्टार्कटिक केन्द्र “वोस्तोक” द्वारा

व्याख्या: आलेख अनुसार अण्टार्कटिकाक न्यूनतम तापमान -89.2°C (-128.6°F) नापल गेल अछि, रूसी अण्टार्कटिक केन्द्र “वोस्तोक” द्वारा।

प्रश्न 883. अण्टार्कटिकाक धरतीपर पहिल बेर पएर रखनिहार व्यक्ति के मानल जाइत छथि, उपलब्ध साक्ष्य अनुसार?

क. जॉन डेविस (John Davis)

ख. कैप्टन जेम्स कुक

ग. रॉएल्ड अमुण्डसेन

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. जॉन डेविस (John Davis)

व्याख्या: आलेख अनुसार उपलब्ध साक्ष्यक अनुसार अण्टार्कटिकाक हिमाच्छादित धरतीपर पहिल बेर पएर रखनिहार व्यक्ति जॉन डेविस छलाह, जे ७ फरवरी १८२१ ई.कैं पच्छिमी अण्टार्कटिकामे सील-शिकारक उद्देश्यसँ उतरलाह।

प्रश्न 884. भौगोलिक दक्षिणी ध्रुवपर पहिल बेर पहुँचनिहार व्यक्ति के छथि, आलेख अनुसार?

क. नॉर्वेवासी रॉएल्ड अमुण्डसेन (१४ दिसम्बर १९११)

ख. कैप्टन रॉबर्ट फॉल्कन स्कॉट

ग. जॉन डेविस

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नॉर्वेवासी रॉएल्ड अमुण्डसेन (१४ दिसम्बर १९११)

व्याख्या: आलेख अनुसार नॉर्वेवासी रॉएल्ड अमुण्डसेन १४ दिसम्बर १९११ ई.कैं भौगोलिक दक्षिणी ध्रुवपर पहुँचबामे सफल रहलाह, अपन प्रतियोगी कैप्टन स्कॉटसँ ३३ दिन पहिने।

प्रश्न 885. अमुण्डसेनक दक्षिणी ध्रुव विजयक १०० वर्ष पूरा होएबापर २०११ ई.कैं यूनेस्को द्वारा कोन रूपमे मनाओल गेल?

क. “दक्षिण ध्रुवपर पहिल मनुक्खक शताब्दी वर्ष”

ख. “अण्टार्कटिक संरक्षण वर्ष”

ग. “ध्रुवीय विज्ञान वर्ष”

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. “दक्षिण ध्रुवपर पहिल मनुक्खक शताब्दी वर्ष”

व्याख्या: आलेख अनुसार २०११ ई.कैं नार्वे “अमुण्डसेन वर्ष” आ यूनेस्को “दक्षिण ध्रुवपर पहिल मनुक्खक शताब्दी वर्ष” क रूपमे मनेलक।

प्रश्न 886. डॉ. सय्यद जहूर कासिमक नेतृत्वमे पहिल भारतीय अण्टार्कटिक अभियान दल कहिया अण्टार्कटिकाक धरतीपर पएर रखलक?

क. ९ जनवरी १९८२ ई.

ख. १९७१ ई.

ग. १९९० ई.

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. ९ जनवरी १९८२ ई.

व्याख्या: आलेख अनुसार डॉ. सय्यद जहूर कासिमक नेतृत्वमे २१ सदस्यीय पहिल भारतीय अण्टार्कटिक अभियान दल ९ जनवरी १९८२ ई.कैं अण्टार्कटिकाक हिमाच्छादित धरतीपर पएर रखलक आ भारतक लेल इतिहास लिखलक।

प्रश्न 887. भारतक पहिल स्थायी अण्टार्कटिक अनुसंधान केन्द्रक नाम की राखल गेल?

क. “दक्षिण गंगोत्री”

ख. “मैत्री”

ग. “भारती”

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. “दक्षिण गंगोत्री”

व्याख्या: आलेख अनुसार डॉ. हर्ष गुप्ताक नेतृत्वमे तेसर भारतीय अण्टार्कटिक अभियान दल द्वारा १९८३-८४ ई.मे एकटा स्थायी अनुसंधान केन्द्रक स्थापना कएल गेल, जकर नाँव राखल गेल “दक्षिण गंगोत्री”।

प्रश्न 888. भारतक दोसर स्थायी अण्टार्कटिक अनुसंधान केन्द्रक नाम की राखल गेल, जे बर्फ-रहित स्थानपर अवस्थित अछि?

क. “मैत्री”

ख. “भारती”

ग. “दक्षिण गंगोत्री”

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. “मैत्री”

व्याख्या: आलेख अनुसार भारत १९८९ ई.मे अण्टार्कटिकामे अपन दोसर स्थायी अनुसंधान केन्द्र स्थापित कएलक, जकर नाम राखल गेल “मैत्री”, जे बर्फ-रहित स्थानपर अवस्थित अछि।

खण्ड ९४ : विदेह-सदेह ३६ — डॉ. अजीत मिश्रक जीवन-परिचय

प्रश्न 889. डॉ. अजीत मिश्रक जन्म-स्थान कतय अछि?

क. नबटोल (मात्रिक)

ख. सरिसब-पाही

ग. दरभंगा शहर

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. नबटोल (मात्रिक)

व्याख्या: डॉ. अजीत मिश्रक जन्म-स्थान नबटोल (मात्रिक) अछि, पैत्रिक स्थान ‘आदित्य वास’, पाहीटोल, सरिसब-पाही, मधुबनी अछि।

प्रश्न 890. डॉ. अजीत मिश्र १९९४ सँ २००६ धरि कोन संस्थामे आकस्मिक मैथिली अन्तरवार्ताकार ओ समाचार-वाचकक रूपमे कार्य केलनि?

क. आकाशवाणी, दरभंगा

ख. दूरदर्शन, पटना

ग. ऑल इण्डिया रेडियो, दिल्ली

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. आकाशवाणी, दरभंगा

व्याख्या: डॉ. अजीत मिश्र १९९४ सँ २००६ धरि आकाशवाणी, दरभंगामे आकस्मिक मैथिली अन्तरवार्ताकार ओ समाचार-वाचकक रूपमे कार्य केलनि।

प्रश्न 891. डॉ. अजीत मिश्र मैथिलीक पहिल प्रतिनिधिक रूपमे कतय पाहुन प्राध्यापक भऽ कार्य प्रारम्भ केलनि?

क. पूर्वी प्रादेशिक केन्द्र, भुवनेश्वर (भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक अन्तर्गत)

ख. दिल्ली विश्वविद्यालय

ग. पटना विश्वविद्यालय

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. पूर्वी प्रादेशिक केन्द्र, भुवनेश्वर (भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक अन्तर्गत)

व्याख्या: भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरमे मैथिलीक प्रवेशक उपरान्त डॉ. अजीत मिश्र मैथिलीक पहिल प्रतिनिधिक रूपमे पूर्वी प्रादेशिक केन्द्र, भुवनेश्वरमे पाहुन प्राध्यापक भऽ १० जुलाई २००६ सँ कार्य प्रारम्भ केलनि।

प्रश्न 892. डॉ. अजीत मिश्र मई २००९ सँ कोन संस्थामे मैथिलीक मुख्य शैक्षिक सलाहकारक रूपमे कार्यरत भेलाह?

क. भारतीय भाषा केन्द्र, मैसूर (राष्ट्रीय अनुवाद मिशनक अन्तर्गत)

ख. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

ग. साहित्य अकादेमी

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. भारतीय भाषा केन्द्र, मैसूर (राष्ट्रीय अनुवाद मिशनक अन्तर्गत)

व्याख्या: भारत सरकारक राष्ट्रीय ज्ञान आयोगक अनुशंसापर राष्ट्रीय अनुवाद मिशनक गठनक उपरान्त डॉ. अजीत मिश्र मैथिलीक मुख्य शैक्षिक सलाहकारक रूपमे मई २००९ सँ भारतीय भाषा केन्द्र, मैसूरमे कार्यरत भेलाह।

खण्ड ९५ : विदेह-सदेह ३७ — सदा लेल मित्र: लेखक-परिचय आ अनुवादकक निवेदन (विस्तार)

प्रश्न 893. ‘सदा लेल मित्र’ कोन मूल तेलुगु उपन्यासक मैथिली रूप अछि?

क. जिगरी

ख. एदरि मंटालु

ग. संचारि

घ. दादी

उत्तर: क. जिगरी

व्याख्या: ‘सदा लेल मित्र’ मूल तेलुगु उपन्यास ‘जिगरी’क अंग्रेजी रूप ‘फ्रेण्ड्स फॉरेवर’ सँ मैथिली अनुवाद अछि।

प्रश्न 894. ‘जिगरी’क लेखक पेद्दिंति अशोक कुमारक जन्म कतय भेल छल?

क. आंध्र प्रदेशक करीमनगर जिलाक भीमुनि मल्लारेड्डीपेटा गाममे

ख. हैदराबादक निजाम कॉलेज परिसरमे

ग. तेलंगानाक वारंगल नगरमे

घ. दिल्लीक दरियागंजमे

उत्तर: क. आंध्र प्रदेशक करीमनगर जिलाक भीमुनि मल्लारेड्डीपेटा गाममे

व्याख्या: लेखकक जन्म करीमनगर जिलाक भीमुनि मल्लारेड्डीपेटा गाममे मल्लव्वा आ अंजय्या दम्पतिक घर भेल छल।

प्रश्न 895. पेद्दिंति अशोक कुमार पेशासँ कोन काज करैत छथि?

क. गणित पढ़बैत शिक्षक

ख. केवल प्रकाशक

ग. रेडियो समाचार-वाचक

घ. मंच अभिनेता

उत्तर: क. गणित पढ़बैत शिक्षक

व्याख्या: स्रोतमे हुनका करीमनगर जिलाक रामजीपेटाक एकटा स्कूलमे गणित पढ़ेनिहार शिक्षक कहलगेल अछि।

प्रश्न 896. पेद्दिंति अशोक कुमारक पहिल कहानीक नाम की छल?

क. आशा निराशा आशा

ख. सदा लेल मित्र

ग. फार्मलैंड फ्रेग्रेन्स

घ. द लिटिल वन्स

उत्तर: क. आशा निराशा आशा

व्याख्या: लेखक-परिचयमे हुनकर पहिल कहानी ‘आशा निराशा आशा’ १९९९ मे प्रकाशित भेल कहल गेल अछि।

प्रश्न 897. लेखकक पहिल उपन्यास ‘एदरि मंटालु’ कोन विषयसँ जुड़ल मानल गेल अछि?

क. खाड़ी देश सभमे श्रमिक पलायन

ख. केवल राजदरबारक कथा

ग. अण्टार्कटिक अभियान

घ. मैथिली वर्तनी-नियम

उत्तर: क. खाड़ी देश सभमे श्रमिक पलायन

व्याख्या: ‘एदरि मंटालु’ खाड़ी देश सभमे श्रमिक पलायनपर लिखल गेल पहिल तेलुगु उपन्यास मानल गेल अछि।

प्रश्न 898. ‘फ्रेण्ड्स फॉरेवर’/‘जिगरी’ २००६ मे कोन प्रतियोगितामे पुरस्कार जीतने छल?

क. अमेरिकन तेलुगु एसोसिएशनक उपन्यास प्रतियोगिता

ख. साहित्य अकादेमीक कविता प्रतियोगिता

ग. मैथिली नाटक उत्सव

घ. दक्षिण ध्रुव अभियान लेखन

उत्तर: क. अमेरिकन तेलुगु एसोसिएशनक उपन्यास प्रतियोगिता

व्याख्या: स्रोत अनुसार मूल तेलुगु उपन्यास ‘जिगरी’ अमेरिकन तेलुगु एसोसिएशन द्वारा आयोजित २००६ केर उपन्यास प्रतियोगितामे पुरस्कृत भेल।

प्रश्न 899. पेद्दिंति अशोक कुमारक ‘मायी मुंठा’ लेल २०१० मे कोन सम्मानक उल्लेख अछि?

क. आंध्र प्रदेश राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार

ख. नोबेल पुरस्कार

ग. विदेह भाषा सम्मान

घ. नेपाल अकादमी पुरस्कार

उत्तर: क. आंध्र प्रदेश राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार

व्याख्या: लेखक-परिचयमे कहानी संग्रह ‘मायी मुंठा’ लेल २०१० मे आंध्र प्रदेश राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 900. पी. जयलक्ष्मी कोन संस्थाक अंग्रेजी विभागसँ सेवानिवृत्त भेल छथि?

क. निजाम कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय

ख. पटना विश्वविद्यालय

ग. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

घ. दरभंगा आकाशवाणी

उत्तर: क. निजाम कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय

व्याख्या: अनुवादक-परिचयमे पी. जयलक्ष्मीकेँ हैदराबादक उस्मानिया विश्वविद्यालयक निजाम कॉलेजक अंग्रेजी विभागक पूर्व प्रमुख आ सहयोगी प्राध्यापक कहल गेल अछि।

प्रश्न 901. ‘सदा लेल मित्र’ केकरा समर्पित अछि?

क. बहुभाषी व्यक्तित्व डॉ. नलिमेला भास्करकेँ

ख. रामजीपेटाक विद्यालयकेँ

ग. एल्लव्वाकेँ

घ. चन्द्रैयाकेँ

उत्तर: क. बहुभाषी व्यक्तित्व डॉ. नलिमेला भास्करकेँ

व्याख्या: उपन्यासक समर्पणमे बहुभाषाविद् डॉ. नलिमेला भास्करक नाम देल गेल अछि।

प्रश्न 902. अंग्रेजी अनुवादकक निवेदनमे ‘जिगरी’क केन्द्रीय कथा केकर रूपमे चिन्हित अछि?

क. इमाम आ शादुलक दुखद कथा

ख. केवल चाँदक खेतीक कथा

ग. राजदरबारक हास्य कथा

घ. अण्टार्कटिक यात्राक संस्मरण

उत्तर: क. इमाम आ शादुलक दुखद कथा

व्याख्या: पी. जयलक्ष्मी लिखैत छथि जे ओ इमाम आ शादुलक दुखद कथा एकहि बैसकीमे पढ़ि लेलनि।

खण्ड ९६ : विदेह-सदेह ३७ — अनुवाद-दृष्टि, कलन्दर समुदाय आ भाषा-संस्कृति

प्रश्न 903. अनुवादकक निवेदनमे ‘जिगरी’क व्यापक विषय की कहल गेल अछि?

क. मनुष्य आ पशु, जाति-समुदायक राजनीति आ सीमांत इतिहासक गाथा

ख. केवल प्रेम-पत्रक संकलन

ग. फसल उत्पादनक कृषि-रिपोर्ट

घ. विद्यालयी गणितक पाठ

उत्तर: क. मनुष्य आ पशु, जाति-समुदायक राजनीति आ सीमांत इतिहासक गाथा

व्याख्या: निवेदन ‘जिगरी’केँ मनुष्य-पशु सम्बन्ध, जाति-समुदायक राजनीति आ सीमांत इतिहासक गाथा रूपेँ देखैत अछि।

प्रश्न 904. उपन्यासमे कलन्दर समुदायक मुख्य संकट कोन रूपमे उभरैत अछि?

क. भालु-नचबै वाला समुदाय केर आजीविका आ मिझाइत जातीय अस्मिता

ख. दरबारी पदक अभाव

ग. अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकक कमी

घ. संगीत-वाद्यक मूल्य-वृद्धि

उत्तर: क. भालु-नचबै वाला समुदाय केर आजीविका आ मिझाइत जातीय अस्मिता

व्याख्या: अनुवादकक अनुसार भालु-नचबै वाला कलन्दर समुदायक आजीविका आ लुप्त होइत जातीय अस्मिता एहि उपन्यासक प्रेरक केन्द्र अछि।

प्रश्न 905. सरकारी कानून परिवारक संघर्षकेँ कोना तीव्र बनबैत अछि?

क. जीविका लेल पशु पकड़ब, प्रशिक्षित करब आ देखाएब निषिद्ध कऽ देल जाइत अछि

ख. विद्यालय बन्द कऽ देल जाइत अछि

ग. उपन्यास प्रकाशन रोकि देल जाइत अछि

घ. खीर बनबापर रोक लगैत अछि

उत्तर: क. जीविका लेल पशु पकड़ब, प्रशिक्षित करब आ देखाएब निषिद्ध कऽ देल जाइत अछि

व्याख्या: स्रोतमे कहल गेल अछि जे सरकार जीविका लेल पशु प्रशिक्षित आ प्रदर्शित करबाक विरुद्ध कानून बना देलक, जाहि सँ परिवारक जीवन-संकट उत्पन्न भेल।

प्रश्न 906. 'फ्रेण्ड्स फॉरेवर'/'सदा लेल मित्र'क अभिलेखीय महत्व की अछि?

क. सीमांत समुदाय केर सामाजिक इतिहास आ सांस्कृतिक स्मृतिकेँ बचाएब

ख. केवल प्रकाशकक विज्ञापन देब

ग. मात्र शब्दकोश बनएब

घ. कौआपर वैज्ञानिक लेख लिखब

उत्तर: क. सीमांत समुदाय केर सामाजिक इतिहास आ सांस्कृतिक स्मृतिकेँ बचाएब

व्याख्या: अनुवादक उपन्यासकेँ कलन्दर समुदायक जीवन, संस्कृति आ मूल्यक सांस्कृतिक स्मृति-मंजूषा मानैत छथि।

प्रश्न 907. अनुवादक कोन-कोन लोक-प्रदर्शन समुदाय सभक लुप्त होएबाक चर्चा करैत छथि?

क. बानर-नाच, साँप-खेल, कठपुतली-नाच आ गांगिरेड्डु

ख. केवल वैदिक यज्ञ

ग. केवल दरबारी नाटक

घ. केवल रेडियो-गीत

उत्तर: क. बानर-नाच, साँप-खेल, कठपुतली-नाच आ गांगिरेड्डु

व्याख्या: निवेदनमे कहल अछि जे बानर-नाच, साँप-खेल, कठपुतली-नाच, गांगिरेड्डु सन जातीय समूह तेजी सँ बिला रहल अछि।

प्रश्न 908. अनुवादमे 'स्थानीयता' कोन माध्यमसँ उभरैत अछि?

क. भावना, विश्वास, रीति-रिवाज, क्षेत्र-विशिष्ट उर्दू बोली आ दैनिक कहबी सँ

ख. मात्र छपाईक कागज सँ

ग. पृष्ठ-संख्या सँ

घ. केवल ISBN सँ

उत्तर: क. भावना, विश्वास, रीति-रिवाज, क्षेत्र-विशिष्ट उर्दू बोली आ दैनिक कहबी सँ

व्याख्या: अनुवादक स्थानीयता लेल भावना, विश्वास, रीति-रिवाज, उर्दूक विशिष्ट बोली आ बोलचालक कहबीक महत्त्व बतबैत छथि।

प्रश्न 909. अनुवादक 'क्षेत्रीयता'क प्रसंगमे कोन बातक उल्लेख करैत छथि?

क. पाबनि-तिहार आ पारम्परिक आदिवासी चिकित्साक सन्दर्भ

ख. केवल रेल-समय-सारिणी

ग. शहरक होटल-सूची

घ. पुस्तकालयक सदस्यता

उत्तर: क. पाबनि-तिहार आ पारम्परिक आदिवासी चिकित्साक सन्दर्भ

व्याख्या: निवेदनमे क्षेत्रीयता पाबनि-तिहार आ पारम्परिक आदिवासी चिकित्सा-सन्दर्भ सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 910. अनुवादकक अनुसार सफल अनुवादक मूल लक्ष्य की होयबाक चाही?

क. स्रोत भाषाक अभिव्यक्ति आ लक्ष्य भाषाक अभिव्यक्तिक विवेकपूर्ण मिश्रण

ख. स्रोत संस्कृतिक रंग हटाएब

ग. केवल शब्दशः रूपान्तरण

घ. सब नाम बदलि देब

उत्तर: क. स्रोत भाषाक अभिव्यक्ति आ लक्ष्य भाषाक अभिव्यक्तिक विवेकपूर्ण मिश्रण

व्याख्या: स्रोतमे कहल गेल अछि जे सफल अनुवाद स्रोत भाषाक अभिव्यक्तिकेँ लक्ष्य भाषाक अभिव्यक्तिसँ एना मिलाबय जे मूल रङ्ग बनल रहय।

प्रश्न 911. मूल तेलुगु उपन्यास कोन भाषिक रूपमे लिखल गेल छल?
क. तेलंगाना क्षेत्रक मण्डलिका आ क्षेत्र-विशिष्ट उर्दूक मिश्रित संसारमे
ख. शुद्ध संस्कृत गद्य मात्र
ग. मात्र अंग्रेजी संवादमे
घ. केवल फारसी छन्दमे
उत्तर: क. तेलंगाना क्षेत्रक मण्डलिका आ क्षेत्र-विशिष्ट उर्दूक मिश्रित संसारमे
व्याख्या: निवेदन बतबैत अछि जे मूल पाठ तेलंगाना क्षेत्रक बोलीमे अछि आ पात्र सभ क्षेत्र-विशिष्ट उर्दू सेहो बाजैत छथि।

प्रश्न 912. अनुवादमे शब्दावली/ग्लॉसरी किएक जोड़ल गेल?
क. संस्कृति-विशिष्ट शब्द, वृक्ष, जड़ी-बूटी, कहबी आ सामाजिक सन्दर्भ स्पष्ट करबाक लेल
ख. लेखकक फोटो राखबाक लेल
ग. मात्र मूल्य-सूची देबाक लेल
घ. पृष्ठ-गणना बढ़ेबाक लेल
उत्तर: क. संस्कृति-विशिष्ट शब्द, वृक्ष, जड़ी-बूटी, कहबी आ सामाजिक सन्दर्भ स्पष्ट करबाक लेल
व्याख्या: विस्तृत शब्दावली संस्कृति-विशिष्ट शब्द, जड़ी-बूटी, वृक्ष आ कहबीक अर्थ बुझाबय लेल देल गेल अछि।

खण्ड ९७ : विदेह-सदेह ३७ — सदा लेल मित्र: परिवार, शादुल आ आरम्भिक वातावरण

प्रश्न 913. उपन्यासक आरम्भमे इमाम आ शादुलक अनुपस्थिति के कोना व्यक्त कएल गेल अछि?
क. सूर्योदय-सूर्यास्त, दिन-रात बीतल, मुदा दुनूक कोनो संकेत नहि
ख. मेला शुरू भेल आ समाप्त भेल
ग. विद्यालयक घंटी बाजल
घ. रेडियो प्रसारण रुकि गेल
उत्तर: क. सूर्योदय-सूर्यास्त, दिन-रात बीतल, मुदा दुनूक कोनो संकेत नहि
व्याख्या: कथा ‘सूर्योदय भेल... सूर्यास्त सेहो भेल’ सँ आरम्भ भऽ इमाम आ शादुलक नहि अएबाक बेचैनी रचैत अछि।

प्रश्न 914. बीबम्मा आ चाँद चूल्हिक सोझाँ बैसि की बनबैत गप्प करैत छथि?
क. भोजन/खीर बनबैत इमाम आ शादुलक प्रतीक्षा
ख. नाटकक मंच-सज्जा
ग. उपन्यासक छपाई
घ. विद्यापतिक पदावली
उत्तर: क. भोजन/खीर बनबैत इमाम आ शादुलक प्रतीक्षा
व्याख्या: आरम्भिक दृश्य मे बीबम्मा आ चाँद चूल्हिक सोझाँ बैसि रान्हैत आ इमाम-शादुलक प्रतीक्षा करैत छथि।

प्रश्न 915. शादुलक अनुपस्थितिमे चाँदक भाव-स्थिति कोना अछि?
क. ओ प्रसन्न सेहो अछि मुदा भीतर-भीतर डेरायल सेहो
ख. ओ पूर्ण उदासीन अछि
ग. ओ उत्सवमे गेल अछि
घ. ओ शादुलकेँ बिसरि गेल अछि
उत्तर: क. ओ प्रसन्न सेहो अछि मुदा भीतर-भीतर डेरायल सेहो
व्याख्या: स्रोतमे चाँदकेँ प्रसन्न मुदा भीतर-भीतर डेरायल देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 916. पहिने शादुलक पीड़ा पर परिवारक प्रतिक्रिया कोना छल?
क. काँट, भूख वा जड़ भेला पर सभक मन-देह व्याकुल भऽ उठैत छल
ख. ओकरा तुरत्ते बाहर कऽ देल जाइत छल
ग. परिवार हँसैत छल
घ. कियो ध्यान नहि दैत छल
उत्तर: क. काँट, भूख वा जड़ भेला पर सभक मन-देह व्याकुल भऽ उठैत छल
व्याख्या: शादुलक पएरमे काँट, ओकर भूख वा जड़ सभ परिवारक अपन पीड़ा जकाँ अनुभव होइत छल।

प्रश्न 917. शादुल वस्तुतः के छल?
क. एकटा सुस्त भालु/बोनहा जानवर जे परिवारमे पोसल गेल
ख. एकटा गामक कुकुर
ग. इमामक मानव पुत्र
घ. एकटा घोड़ा
उत्तर: क. एकटा सुस्त भालु/बोनहा जानवर जे परिवारमे पोसल गेल
व्याख्या: कथामे शादुलकेँ मनुष्य नहि, कारी नाक-रोइयाँ, तेज दाँत आ हाँसुआ-जेकाँ नह वला सुस्त भालु कहल गेल अछि।

प्रश्न 918. गामक लोक इमामकेँ सामान्यतः कोन नामसँ चिन्हैत छल?
क. पक्कीर वा पक्कीर साहब
ख. चन्द्रैया पटेल
ग. मण्डल अधिकारी
घ. नरसिंग राव
उत्तर: क. पक्कीर वा पक्कीर साहब
व्याख्या: कथामे कहल गेल अछि जे गाममे कियो इमामक असली नाम नहि जानैत छल; ओ पक्कीर वा पक्कीर साहब कहला जाइत छलाह।

प्रश्न 919. इमाम आ शादुलक जंजीरक बिम्ब की देखबैत अछि?
क. इमाम आगू चलैत आ शादुल जंजीरक दोसर छोर मुँहमे दबौने पाछाँ चलैत
ख. शादुल अकेले भागि जाइत
ग. बीबम्मा जंजीर तोड़ैत
घ. चाँद जंजीर बेचैत
उत्तर: क. इमाम आगू चलैत आ शादुल जंजीरक दोसर छोर मुँहमे दबौने पाछाँ चलैत
व्याख्या: इमाम सदिखन जंजीर लेने चलैत छलाह आ शादुल ओकर दोसर छोर मुँहमे दबौने पाछाँ-पाछाँ चलैत छल।

प्रश्न 920. शादुल इमामक स्वर सँ की बुझि लैत छल?
क. स्थितिक अंदाजा आ क्रोध/संकट
ख. मौसमक पूर्वानुमान मात्र
ग. फसलक मूल्य
घ. रेल टिकट
उत्तर: क. स्थितिक अंदाजा आ क्रोध/संकट
व्याख्या: कथा अनुसार शादुल इमामक स्वर सुनि स्थिति बुझि जाइत छल आ इमाम पर आक्रमणक संकेत देखलासँ क्रोधित भऽ सकैत छल।

प्रश्न 921. इमाम प्रेमसँ शादुलकेँ की कहैत छलाह?
क. बेवकूफ
ख. राजा साहब
ग. अण्टार्कटिका
घ. मण्डलिका
उत्तर: क. बेवकूफ
व्याख्या: इमाम शादुलकेँ दुलारसँ ‘अरे, बेवकूफ!’ कहैत छलाह।

प्रश्न 922. चाँद मशाल देखबैत शादुलकेँ चिढ़बैत तखन इमाम की करैत छलाह?
क. चाँदकेँ डाँटि शादुलकेँ अपन पास खींचि अङ्कवार भरि लैत
ख. शादुलकेँ बेचि दैत
ग. मशाल बढ़ा दैत
घ. घर छोड़ि दैत
उत्तर: क. चाँदकेँ डाँटि शादुलकेँ अपन पास खींचि अङ्कवार भरि लैत
व्याख्या: जखन चाँद मशालसँ शादुलकेँ डरबैत, इमाम चाँदकेँ डाँटि शादुलकेँ अङ्कवारमे लैत छलाह।

खण्ड ९८ : विदेह-सदेह ३७ — स्नेह, भोजन आ परिवारक बीस बर्खक साथ

प्रश्न 923. इमामक दृष्टिमे शादुल परिवारमे कोन स्थान रखैत छल?

क. बड़का पुत्र जकाँ

ख. केवल बोझ

ग. अजनबी पशु

घ. दूरक पाहुन

उत्तर: क. बड़का पुत्र जकाँ

व्याख्या: कथामे स्पष्ट कहल गेल अछि जे इमाम लेल शादुल बड़का पुत्र जकाँ छल।

प्रश्न 924. चाँद शादुलकेँ अपन जीवनमे कोना देखैत छल?

क. सहोदर भाई आ दोसर पिता जकाँ

ख. केवल दुश्मन जकाँ

ग. व्यापारी जकाँ

घ. पुरोहित जकाँ

उत्तर: क. सहोदर भाई आ दोसर पिता जकाँ

व्याख्या: चाँद शादुलक संग खेलाइत बच्चा बनैत छल आ कहैत छल जे ओकर दू पिता छथि—अब्बा आ शादुल।

प्रश्न 925. बीबम्माक दृष्टिमे शादुल परिवारकेँ की देने छल?

क. मात्र घरमे इजोत नहि, जीवन सेहो

ख. केवल गंदगी

ग. केवल डर

घ. मात्र कर्ज

उत्तर: क. मात्र घरमे इजोत नहि, जीवन सेहो

व्याख्या: बीबम्मा कहैत छथि जे शादुल घरमे इजोतहि नहि, जीवन सेहो देलक; हुनका ओ पछिला जनमक बच्चा जकाँ लगैत अछि।

प्रश्न 926. शादुलक प्रतिदिनक भोजनक मुख्य व्यवस्था कोना होइत छल?

क. भिजायल मकइ सिझि दूधमे मिलायल लपसी

ख. केवल सूखल पात

ग. मात्र माछ-भात

घ. केवल चाय

उत्तर: क. भिजायल मकइ सिझि दूधमे मिलायल लपसी

व्याख्या: इमाम मकइ भिजबैत, बीबम्मा सिझबैत आ चाँद दूध अनैत; शादुल मकइ-दूधक लपसी खाइत छल।

प्रश्न 927. बीबम्मा सप्ताहमे एक दिन शादुलकेँ जाजीक रस किएक दैत छलीह?

क. पेट आ पाचन ठीक रहय, एहि विश्वाससँ

ख. ओकरा नाच सिखेबाक लेल

ग. चाँदकेँ डरबेबाक लेल

घ. जंजीर चमकाएब लेल

उत्तर: क. पेट आ पाचन ठीक रहय, एहि विश्वाससँ

व्याख्या: बीबम्माक विश्वास छल जे जाजीक रस शादुलक पेट ठीक राखैत अछि आ पाचन नीक करैत अछि।

प्रश्न 928. शादुल आ परिवारक साथ कतेक समयक बताओल गेल अछि?

क. लगभग बीस बर्ख

ख. केवल दू दिन

ग. छह मास मात्र

घ. एक सप्ताह

उत्तर: क. लगभग बीस बर्ख

व्याख्या: कथामे ई सम्बन्ध दू-तीन साल नहि, बल्कि बीस बर्खक प्रगाढ़ साथ कहल गेल अछि।

प्रश्न 929. शादुलक बोलि नहि सकबाक बावजूद ओकर परिवारमे की स्थिति छल?
क. ओ परिवारक अभिन्न अङ्ग छल
ख. ओ बाहरी पशु मात्र रहल
ग. ओकरा सभ बिसरि गेल
घ. ओ सदिखन जङ्गलमे रहल
उत्तर: क. ओ परिवारक अभिन्न अङ्ग छल
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे बस एतेक छल जे शादुल बाजि नहि सकैत छल, मुदा ओ परिवारक अभिन्न अङ्ग छल।

प्रश्न 930. बीबम्मा शादुलक वृद्धावस्था पर की आशंका व्यक्त करैत छलीह?
क. दू-तीन सालमे बीमार पड़त आ सेवा-सुश्रूषा करय पड़त
ख. ओ तुरत्ते राजा बनत
ग. ओ खेत खरीदत
घ. ओ पढ़य विदेश जाएत
उत्तर: क. दू-तीन सालमे बीमार पड़त आ सेवा-सुश्रूषा करय पड़त
व्याख्या: बीबम्मा कहैत छथि जे आर दू-तीन सालमे शादुल बीमार पड़ि सकैत अछि आ ओकर सेवा-सुश्रूषा करय पड़त।

प्रश्न 931. इमाम शादुलक भविष्यक विषयमे चाँदकेँ की कहैत छलाह?
क. ओ हमर मृत्युक बादो तोरा सहारा देत
ख. ओ आजुक बाद नहि देखाइत
ग. ओ केवल एक खेलौना अछि
घ. ओ विद्यालयमे पढ़त
उत्तर: क. ओ हमर मृत्युक बादो तोरा सहारा देत
व्याख्या: इमाम विश्वास व्यक्त करैत छथि जे शादुल हुनकर मृत्युक बादो चाँदकेँ सहारा देत।

प्रश्न 932. परिवारक चारू सदस्य जाड़क रातिमे कोना रहैत छलाह?
क. आगिक चारू कात संगे बैसैत, मुदा शादुल आगिसँ डरि दूर हटैत
ख. सब अलग-अलग नगर चलि जाइत
ग. शादुलकेँ बाहर छोड़ि दैत
घ. चाँद जंगलमे भेजि दैत
उत्तर: क. आगिक चारू कात संगे बैसैत, मुदा शादुल आगिसँ डरि दूर हटैत
व्याख्या: जाड़क रातिमे चारू आगि लग बैसैत, मुदा आगिसँ डरला कारणेँ शादुल दूर कोनमे सुटकि जाइत छल।

खण्ड ९९ : विदेह-सदेह ३७ — शादुलक अनुपस्थिति, दू एकड़ जमीन आ नव जीवनक स्वप्न

प्रश्न 933. कथा केर वर्तमान क्षणमे शादुलक अनुपस्थिति परिवारक वातावरणकेँ कोना बदलि दैत अछि?
क. चूल्हि पहिने शादुल लेल जरैत छल, आब परिवारक लेल जरैत अछि
ख. घर तुरत्ते उजड़ि जाइत अछि
ग. इमाम उत्सव करैत छथि
घ. चाँद जंगल भागि जाइत अछि
उत्तर: क. चूल्हि पहिने शादुल लेल जरैत छल, आब परिवारक लेल जरैत अछि
व्याख्या: कथामे कहल गेल अछि जे पहिने चूल्हि केवल शादुल लेल धधकैत छल, मुदा शादुल नहिए रहने आब परिवारक लेल जरि रहल छल।

प्रश्न 934. बीबम्मा चाँद लेल कोन मिठाई बना रहल छलीह?
क. दूध, चीनी आ सेवइक खीर
ख. ताड़ीक पेय
ग. भातक ढेपा
घ. जाजीक रस
उत्तर: क. दूध, चीनी आ सेवइक खीर
व्याख्या: बीबम्मा बेटाक आग्रहपर दूध, चीनी आ सेवइक खीर बना रहल छलीह।

प्रश्न 935. बीबम्मा इमामक देरीकेँ कोना बुझैत छलीह?
क. जँ सौदा नहि भेल होइत तँ ओ वापस आबि गेल रहितथि; देरी सौदा पक्का होएबाक संकेत
ख. इमाम उत्सवमे अटकि गेलाह
ग. इमाम बीमार छथि
घ. इमाम किताब खरीदय गेलाह
उत्तर: क. जँ सौदा नहि भेल होइत तँ ओ वापस आबि गेल रहितथि; देरी सौदा पक्का होएबाक संकेत
व्याख्या: बीबम्मा चाँदकेँ बुझबैत छथि जे चारि दिन बादो इमामक नहि अएब सौदा पक्का भेला समान अछि।

प्रश्न 936. मण्डल राजस्व अधिकारीक शर्त की छल?
क. भालु पुनः एतय नहि देखल जाय
ख. खीर नहि बने
ग. चाँद गाम छोड़ि दे
घ. इमाम नाटक लिखय
उत्तर: क. भालु पुनः एतय नहि देखल जाय
व्याख्या: दू एकड़ जमीनक आशामे मण्डल राजस्व अधिकारीक शर्त छल जे ई भालु फेर एतय नहि देखल जाय।

प्रश्न 937. दू एकड़ जमीन पाबि चाँद कोन योजना बनबैत अछि?
क. खेती, खोपड़ी आ कुक्कुट पालन
ख. केवल शहरमे नोकरी
ग. अण्टार्कटिक यात्रा
घ. साहित्य अकादेमी कार्यालय
उत्तर: क. खेती, खोपड़ी आ कुक्कुट पालन
व्याख्या: चाँद कल्पना करैत अछि जे जमीन पर खेती करत, ओतहि खोपड़ी बनाओत आ कुक्कुट पालन शुरू करत।

प्रश्न 938. शादुलक बिदाइ मानि घर साफ करबाक दौरान की-की हटाओल गेल?
क. हुक, लकड़ीक ठूँठ, बिछौन, पानिक कुण्ड, बर्तन आ चमड़ाक चादरि
ख. घरक छत आ देबाल
ग. सभ पुस्तक
घ. माएक साड़ी
उत्तर: क. हुक, लकड़ीक ठूँठ, बिछौन, पानिक कुण्ड, बर्तन आ चमड़ाक चादरि
व्याख्या: माता-पुत्र शादुलक हुक, ठूँठ, बिछौन, पानिक कुण्ड, अल्युमिनिअम बर्तन आ चमड़ाक चादरि हटबैत छथि।

प्रश्न 939. साफ-सफाईक बाद एकचारीकेँ कोना तैयार कएल गेल?
क. लाल माटिसँ नीपि देल गेल
ख. काला रंगसँ पोति देल गेल
ग. पूरी तरह तोड़ि देल गेल
घ. केवल पानि छीटल गेल
उत्तर: क. लाल माटिसँ नीपि देल गेल
व्याख्या: बीस बर्खक सुस्त भालुक निशान हटाकऽ एकचारीकेँ लाल माटिसँ नीपि साफ कएल गेल।

प्रश्न 940. चाँद घरक साफ-सुथरापन देखिकऽ शादुलक समयक बारेमे की कहैत अछि?
क. शादुल रहैत घर कहियो एतेक साफ नहि देखाइत छल
ख. शादुल रहैत घर महल छल
ग. शादुल सफाई करैत छल
घ. घर सदिखन खाली छल
उत्तर: क. शादुल रहैत घर कहियो एतेक साफ नहि देखाइत छल
व्याख्या: चाँदक टिप्पणी अछि जे जखन शादुल लगपास रहैत छल तखन घर एतेक साफ नहि देखाइत छल।

प्रश्न 941. बीबम्माक पुरान इच्छा कोना बदलि जाइत अछि?
क. पहिने चाहैत छलीह पुत्र पिता जकाँ भालु लऽ चलय; आब ओहि जीवनक विचारसँ घृणा होइत छनि
ख. पहिने खेती चाहैत छलीह, आब घुमन्तु जीवन
ग. पहिने नगर चाहैत छलीह, आब जंगल
घ. कोनो परिवर्तन नहि
उत्तर: क. पहिने चाहैत छलीह पुत्र पिता जकाँ भालु लऽ चलय; आब ओहि जीवनक विचारसँ घृणा होइत छनि
व्याख्या: जमीनक स्वप्नक बाद बीबम्मा ओहि घुमन्तु भालु-जीवनक विचारसँ घृणा अनुभव करैत छलीह।

प्रश्न 942. इमामक सम्भावित वापसीक सम्बन्धमे बीबम्माक मनमे कोन डर नुकायल अछि?
क. की ओ भालुकेँ संग वापस त नहि अनताह?
ख. की ओ खीर नहि खेबाह?
ग. की ओ पुस्तक नहि आनताह?
घ. की ओ पानि नहि पिबाह?
उत्तर: क. की ओ भालुकेँ संग वापस त नहि अनताह?
व्याख्या: बीबम्मा स्वयमेँ मोन बुझबैत छलीह, मुदा कोनमे डर छल जे इमाम शादुलक संग वापस आबि सकैत छथि।

खण्ड १०० : विदेह-सदेह ३७ — वापसी, दुर्गन्ध, क्रोध आ निर्णायक टकराव

प्रश्न 943. इमामक वापसीक आहटि चाँदक इंद्रिय-विश्वमे कोना प्रवेश करैत अछि?
क. मिठासक गन्धक बीच मल-मूत्रक तीव्र दुर्गन्ध आ पदचापसँ
ख. नगाड़ाक धुनसँ
ग. रेडियोक घोषणासँ
घ. कपोतक संदेशसँ
उत्तर: क. मिठासक गन्धक बीच मल-मूत्रक तीव्र दुर्गन्ध आ पदचापसँ
व्याख्या: खीरक मधुर सुगन्धक बीच चाँदकेँ दुर्गन्ध आ डेगक आहटि सँ भालुक वापसीक संकेत भेटैत अछि।

प्रश्न 944. चाँद इमामक वापसी देखि कोन निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि?
क. पिता शादुलकेँ फेर वापस लऽ कऽ आबि रहल छथि
ख. जमीनक कागज आयल
ग. मण्डल अधिकारी संग छथि
घ. इमाम अकेले लौटलाह
उत्तर: क. पिता शादुलकेँ फेर वापस लऽ कऽ आबि रहल छथि
व्याख्या: चाँद क्रोधमे बुझैत अछि जे इमाम ‘ई शैतान’ अर्थात् शादुलकेँ फेर संग लऽ कऽ आबि रहल छथि।

प्रश्न 945. घर लग पहुँचि इमामक व्यवहार कोना अछि?
क. ओ स्वागत नहि होएबाक बात जानैत हठपूर्वक सोझाँ ठाढ़ भऽ जाइत छथि
ख. ओ लुका जाइत छथि
ग. ओ शादुलकेँ तुरत्ते छोड़ि दैत छथि
घ. ओ नाच शुरू करैत छथि
उत्तर: क. ओ स्वागत नहि होएबाक बात जानैत हठपूर्वक सोझाँ ठाढ़ भऽ जाइत छथि
व्याख्या: इमाम जानैत छलाह जे भालुक संग स्वागत नहि होयत, तखनो ओ हठपूर्वक आँगनमे ठाढ़ भऽ गेलाह।

प्रश्न 946. शादुल एकचारीक भीतर पहुँचय चाहैत तखन इमाम की करैत छथि?
क. रस्सा सँ खींचि ओकरा रोकि दैत छथि
ख. ओकरा स्वतन्त्र छोड़ि दैत छथि
ग. ओकरा चाँद लग दऽ दैत छथि
घ. ओकरा बेचि दैत छथि
उत्तर: क. रस्सा सँ खींचि ओकरा रोकि दैत छथि
व्याख्या: शादुल अपन पुरान ठाम दिस बढ़ैत अछि, मुदा इमाम रस्सा खींचि ओकरा रोकि दैत छथि।

प्रश्न 947. चाँदक क्रोधक मूल कारण की अछि?
क. शादुलक वापसीसँ दू एकड़ जमीन आ नव जीवनक स्वप्न टूटबाक डर
ख. खीरमे चीनी कम पड़ब
ग. मौसम बदलि जाएब
घ. पुस्तक नहि भेटब
उत्तर: क. शादुलक वापसीसँ दू एकड़ जमीन आ नव जीवनक स्वप्न टूटबाक डर
व्याख्या: चाँद बुझैत अछि जे भालुक वापसी जमीन, खेती आ कुक्कुट पालनक सपना नष्ट कऽ देत।

प्रश्न 948. चाँद शादुलसँ मुक्ति लेल कोन कठोर उपाय प्रस्तावित करैत अछि?
क. गहीर खाधि खुनि जियते वा मारि गाड़ि देब
ख. शादुलकेँ विद्यालय पठाएब
ग. ओकरा राजमहलमे राखब
घ. केवल ओकरा नहबाएब
उत्तर: क. गहीर खाधि खुनि जियते वा मारि गाड़ि देब
व्याख्या: चाँद साफ कहैत अछि जे एकटा गहीर खाधि तैयार कऽ रातिमे शादुलकेँ गाड़ि देबाक चाही।

प्रश्न 949. चाँदक योजना सुनि इमामक पहिल प्रतिक्रिया की अछि?
क. ‘की... जखन ओ जीवित अछि?’—आश्चर्य आ भय
ख. ‘बहुत नीक’—सहमति
ग. मौन उत्सव
घ. हास्य
उत्तर: क. ‘की... जखन ओ जीवित अछि?’—आश्चर्य आ भय
व्याख्या: चाँदक ‘गाड़ि देब’ प्रस्ताव पर इमाम चौंकि पूछैत छथि—‘की... जखन ओ जीवित अछि?’

प्रश्न 950. ओहि राति एकचारीमे अन्हार किएक पसरल छल?
क. चाँद साँझमे बिजलीक तार खाम्ह पर फेकब बिसरि गेल छल
ख. सूर्यग्रहण छल
ग. दीपावली समाप्त भेल
घ. इमाम दीप बुता देने छलाह
उत्तर: क. चाँद साँझमे बिजलीक तार खाम्ह पर फेकब बिसरि गेल छल
व्याख्या: चाँद सामान्यतः बिजलीक खाम्ह पर तार फेकैत छल, मुदा ओहि साँझ बिसरि गेलाकारण अन्हार छल।

प्रश्न 951. चाँद इमामकेँ कोन चेतावनी दैत अछि?
क. रस्तामे अएलहुँ तँ शादुल नहि, अहाँकेँ काटि गाड़ि देब
ख. खीर नहि खाएब
ग. गाम छोड़ि देब
घ. कथा नहि सुनब
उत्तर: क. रस्तामे अएलहुँ तँ शादुल नहि, अहाँकेँ काटि गाड़ि देब
व्याख्या: क्रोधमे चाँद इमामकेँ धमकी दैत अछि जे जँ ओ रोकताह तँ ओ शादुलक बदला हुनकाही गाड़ि देत।

प्रश्न 952. बीबम्मा एस.आई.क सन्दर्भ किएक आनैत छथि?
क. झूठ पकड़ा गेल तँ पुलिसक कठोर दण्डक भय देखेबाक लेल
ख. इमामकेँ सम्मान देबाक लेल
ग. चाँदक विवाह तय करबाक लेल
घ. शादुलकेँ पुरस्कार देबाक लेल
उत्तर: क. झूठ पकड़ा गेल तँ पुलिसक कठोर दण्डक भय देखेबाक लेल
व्याख्या: बीबम्मा कहैत छथि जे एस.आई. तमसाह लोक छथि; जँ झूठ पकड़ा गेल तँ कठोर दण्ड देताह।

खण्ड १०१ : विदेह-सदेह ३७ — दया, स्मृति आ शादुलक भूख

प्रश्न 953. चाँद खाधि खुनैत रहैत अछि, तखन इमाम शादुल लेल की करैत छथि?
क. किछु सिझल भात प्लेटमे लय कऽ ओकरा सोझाँ राखैत छथि
ख. ओकरा मारैत छथि
ग. ओकरा पानि मे धकेलैत छथि
घ. ओकरा बाजार पठबैत छथि
उत्तर: क. किछु सिझल भात प्लेटमे लय कऽ ओकरा सोझाँ राखैत छथि
व्याख्या: इमाम बर्तनमे भोजन खोजि शादुलक सोझाँ अपन घिसल प्लेटमे भात राखि दैत छथि।

प्रश्न 954. बीस बर्खमे शादुल सामान्यतः कोन भोजन नहि खयने छल?
क. भात
ख. मकइ
ग. दूधक लपसी
घ. जाजीक रस
उत्तर: क. भात
व्याख्या: स्रोतमे कहल अछि जे बीस बर्खमे शादुल कहियो भात नहि खयने छल; बीबम्मा भातसँ वात बढ़बाक डर मानैत छलीह।

प्रश्न 955. शादुलक नियमित भोजनक प्रबन्ध चाँद कोना करैत छल?
क. कामारेड्डीसँ मकइ आ ज्वार किनि पिसबैत, दूध संग लपसी बनबैत
ख. केवल पत्ते चुनैत
ग. दूध नहि दैत
घ. मात्र बाजारक मिठाई दैत
उत्तर: क. कामारेड्डीसँ मकइ आ ज्वार किनि पिसबैत, दूध संग लपसी बनबैत
व्याख्या: चाँद स्वयं मकइ-ज्वार किनैत, पिसबैत आ दूधक संग शादुलकेँ भोजन दैत; ओ एहि काजमे ककरो पर भरोसा नहि करैत छल।

प्रश्न 956. चाँद इमामक भोजन-कटौतीक सुझावक उत्तर कोना दैत छल?
क. हम मनुष्य छी, आशा पर जी सकैत छी; ओकरा भोजनक अतिरिक्त की अछि?
ख. शादुलकेँ अब भोजन नहि चाही
ग. दू एकड़ जमीन काफी अछि
घ. भोजन केवल अतिथि लेल अछि
उत्तर: क. हम मनुष्य छी, आशा पर जी सकैत छी; ओकरा भोजनक अतिरिक्त की अछि?
व्याख्या: चाँद कहैत छल जे मनुष्य आशा पर जी सकैत अछि, मुदा शादुलक लेल भोजनहि सभ किछु अछि।

प्रश्न 957. परिवारक कठिन दिनमे सेहो शादुलक भोजन सम्बन्धी की बात कहल गेल अछि?
क. कइएक दिन परिवार भूखल रहल, मुदा शादुलकेँ दूध खियाओल गेल
ख. शादुल भूखल रहल, परिवार भोज करलक
ग. सभ समान रूपसँ खीर खाएल
घ. कियो ध्यान नहि देलक
उत्तर: क. कइएक दिन परिवार भूखल रहल, मुदा शादुलकेँ दूध खियाओल गेल
व्याख्या: कथामे कहल गेल अछि जे कई दिन ओ सभ भूखल रहल आ पानि पीकऽ काटलक, मुदा शादुलकेँ दूध देल गेल।

प्रश्न 958. चाँदक गैंतीक ध्वनि इमामकेँ कोना लगैत अछि?
क. हृदय पर गहीर प्रहार जकाँ
ख. बाँसुरीक मधुर धुन जकाँ
ग. बरखा-पानी जकाँ
घ. विद्यालयक घंटी जकाँ
उत्तर: क. हृदय पर गहीर प्रहार जकाँ
व्याख्या: सन्नाटामे गैंतीक घर्षण इमामकेँ अपन हृदय पर गहीर प्रहार सन लगैत अछि।

प्रश्न 959. इमाम बीबम्मासँ शादुलक पक्षमे कोन तर्क रखैत छथि?
क. ओ बीस बर्ख धरि सेवा आ देखभाल कएने अछि; की ओकरा जियते गाड़ि देब?
ख. ओ जमीन खरीदत
ग. ओ पढ़ल-लिखल अछि
घ. ओ पुलिसक अधिकारी अछि
उत्तर: क. ओ बीस बर्ख धरि सेवा आ देखभाल कएने अछि; की ओकरा जियते गाड़ि देब?
व्याख्या: इमाम पुकारि कहैत छथि जे शादुल बीस बर्ख सेवा कएने अछि, ताहि लेल ओकरा जियते गाड़ब असह्य अछि।

प्रश्न 960. बीबम्मा इमामसँ मुख्य प्रश्न कोन पूछैत छथि?
क. तूँ जमीन चाहैत छह की नहि, हमरा सुख सँ रहय देबह की नहि?
ख. तूँ खीर खेबे की नहि?
ग. तूँ जंगल जयबे की नहि?
घ. तूँ किताब लिखबे की नहि?
उत्तर: क. तूँ जमीन चाहैत छह की नहि, हमरा सुख सँ रहय देबह की नहि?
व्याख्या: बीबम्मा उत्तरमे जमीन आ सुखी जीवनक इच्छा कें केन्द्रीय प्रश्न बनबैत छथि।

प्रश्न 961. बीबम्मा चाँदक पक्षमे की व्यावहारिक तर्क दैत छथि?
क. जँ एहि समय जमीन नहि लेल, बादमे शादुल रहने कियो नहि देत
ख. भालु खेती करत
ग. खीर सँ जमीन भेटत
घ. एस.आई. खेत जोतत
उत्तर: क. जँ एहि समय जमीन नहि लेल, बादमे शादुल रहने कियो नहि देत
व्याख्या: बीबम्मा कहैत छथि जे शादुल रहला पर ओ जीविका मानल जायत, बादमे जमीन मांगलासँ भेटब कठिन होएत।

प्रश्न 962. बीबम्माक बात सुनि इमाम की बुझि जाइत छथि?
क. हुनकर मन आ निर्णय स्पष्ट अछि
ख. ओ शादुलकें बचेबाक लेल तैयार छथि
ग. ओ गाम छोड़ि चुकलीह
घ. ओ चाँदकें रोकि देलीह
उत्तर: क. हुनकर मन आ निर्णय स्पष्ट अछि
व्याख्या: बीबम्माक कठोर-व्यावहारिक बातसँ इमाम बुझि जाइत छथि जे हुनकर पत्नी शादुलक पक्षमे नहि ठाढ़ छथि।

खण्ड १०२ : विदेह-सदेह ३७ — चाँदनी राति, स्मृति आ शादुलक पकड़ाएब

प्रश्न 963. चाँदनी राति इमामक स्मृति किएक जगा दैत अछि?
क. ओ शादुलकें गाम लय जाएबाक लेल एहन चाँदनी राति चुनैत छलाह
ख. ओ सदिखन अमावस चुनैत छलाह
ग. ओ चाँदनीसँ डरैत छलाह
घ. ओ रातिमे कखनो नहि निकलैत छलाह
उत्तर: क. ओ शादुलकें गाम लय जाएबाक लेल एहन चाँदनी राति चुनैत छलाह
व्याख्या: इमाम याद करैत छथि जे जखन शादुलकें कोनो गाम लय जाएब होइत, ओ चाँदनी रातिये चुनैत छलाह।

प्रश्न 964. इमामकें शादुलक बच्चा रूप कोन समय भेटल छल?
क. बीस बर्ख पहिने एहनहि चाँदनी रातिमे, जखन ओ छह मास सँ कनी बेसीक छल
ख. इमामक बुढ़ापे मे
ग. कामारेड्डी बाजारमे
घ. मण्डल कार्यालयमे
उत्तर: क. बीस बर्ख पहिने एहनहि चाँदनी रातिमे, जखन ओ छह मास सँ कनी बेसीक छल
व्याख्या: स्मृतिमे इमाम कहैत छथि जे बीस बर्ख पहिने एहन चाँदनी रातिमे लगभग छह मासक शावक हुनका हाथ लागल छल।

प्रश्न 965. चन्द्रैया इमामकेँ किएक बजबैत अछि?
क. ओकर बादामक फसल पर भालु हमला कऽ रहल छल
ख. ओ उपन्यास छपबाबय चाहैत छल
ग. ओ विवाहक न्योता देबय आयल छल
घ. ओ पुलिसक आदेश अनलक
उत्तर: क. ओकर बादामक फसल पर भालु हमला कऽ रहल छल
व्याख्या: चन्द्रैया शिकायत करैत अछि जे एकटा भालु ओकर फली/बादामक फसल कोड़ि कहर मचा रहल अछि।

प्रश्न 966. चन्द्रैयाक सूचना इमाम लेल आकर्षक किएक बनैत अछि?
क. ओ कहैत अछि जे भालुक संग बच्चा अछि, जकरा पकड़ि प्रशिक्षित कऽ जीविका बनि सकैत अछि
ख. ओ जमीन मुफ्त देत
ग. ओ खीर देत
घ. ओ किताब लिखत
उत्तर: क. ओ कहैत अछि जे भालुक संग बच्चा अछि, जकरा पकड़ि प्रशिक्षित कऽ जीविका बनि सकैत अछि
व्याख्या: चन्द्रैया बतबैत अछि जे भालु मादा अछि आ बच्चा संगे अछि; बच्चा पकड़ि खेल सिखाएल जा सकैत अछि।

प्रश्न 967. इमाम पहिल राति जङ्गलमे की देखैत अछि?
क. एक मादा आ एक नर भालु, मुदा बच्चा नहि
ख. चाँद अकेले
ग. एस.आई.
घ. कुक्कुट फार्म
उत्तर: क. एक मादा आ एक नर भालु, मुदा बच्चा नहि
व्याख्या: पहिल राति इमाम दुनू वयस्क भालु देखैत अछि, मुदा बच्चाक कोनो चिन्ह नहि पबैत अछि।

प्रश्न 968. इमाम अपन शरीर पर इप्पाक फूल सँ बनल देशी शराब किएक लगौने छल?
क. मानवीय गन्ध झाँपि सुरक्षा लेल
ख. सुगन्धि लेल
ग. बीबम्माकेँ प्रभावित करबाक लेल
घ. मधु पियाबय लेल
उत्तर: क. मानवीय गन्ध झाँपि सुरक्षा लेल
व्याख्या: भालुक तीव्र सूँघबाक शक्ति सँ बचबाक लेल इमाम शरीर पर देशी शराब लगौने छल।

प्रश्न 969. भालु सभक सम्बन्ध देखि इमाम कोन विचार करैत अछि?
क. मनुष्य सभक बीच अनुपस्थित अनुशासन बोनहा भालु सभमे भेटैत अछि
ख. भालु सभ खेती करैत अछि
ग. भालु सभ किताब लिखैत अछि
घ. भालु सभ पुलिस चलबैत अछि
उत्तर: क. मनुष्य सभक बीच अनुपस्थित अनुशासन बोनहा भालु सभमे भेटैत अछि
व्याख्या: नर-मादा भालुक व्यवहार देखि इमाम सोचैत अछि जे बोनहा भालु सभमे एक प्रकारक अनुशासन अछि।

प्रश्न 970. दोसर संकेतक बाद इमाम फेर जङ्गल जाएत अछि, तखन बच्चा कोना देखाइत अछि?
क. माता संग नवजात शिशु जकाँ खेलाइत आ इप्पाक फूल खाइत
ख. पूर्ण वयस्क नर भालु जकाँ
ग. मृत शावक जकाँ
घ. मानव बालक जकाँ
उत्तर: क. माता संग नवजात शिशु जकाँ खेलाइत आ इप्पाक फूल खाइत
व्याख्या: अगिला बार माता भालु आ बच्चा दुनू दृश्य होइत अछि; बच्चा पंखुड़ी चुनि खाइत आ झाँखुड़क चारू कात खेलाइत अछि।

प्रश्न 971. तेसर दिन इमाम शावक पकड़बाक लेल की-की लय कऽ गेलाह?
क. दू जाल, बाँसक पिंजरा, आ बीबम्माक संग आगिक तैयारी
ख. केवल पुस्तक
ग. एकटा रेडियो
घ. मात्र दूधक गिलास
उत्तर: क. दू जाल, बाँसक पिंजरा, आ बीबम्माक संग आगिक तैयारी
व्याख्या: तेसर दिन इमाम दू टा जाल आ बाँसक पिंजरा लय गेलाह; बीबम्मा सुखायल ताड़क पात आ माचिससँ तैयार छलीह।

प्रश्न 972. शावक जालमे फँसलाक बाद माता भालु सँ बचबाक निर्णायक उपाय की भेल?
क. बीबम्मा ताड़क पातमे आगि जरौलनि
ख. चाँद खीर बनौलनि
ग. इमाम गीत गाबय लगलाह
घ. माता भालु अपने भागि गेल
उत्तर: क. बीबम्मा ताड़क पातमे आगि जरौलनि
व्याख्या: माता भालु आक्रमण करय वला छल, ठीक तखने बीबम्मा माचिस जराकऽ ताड़क पातमे आगि लगौलनि, जाहिसँ भालु पाछाँ हटल।

खण्ड १०३ : विदेह-सदेह ३७ — शावक सँ शादुल: बीबम्माक पालन आ उपचार

प्रश्न 973. पकड़ायल बच्चाकेँ बेहोश करबाक लेल इमाम-बीबम्मा की करैत छथि?
क. जालक भीतर देशी शराब ओकर मुँहमे उड़ेलि देल जाइत अछि
ख. ओकरा खीर पियाओल जाइत अछि
ग. ओकरा गीत सुनाओल जाइत अछि
घ. ओकरा नदीमे छोड़ि देल जाइत अछि
उत्तर: क. जालक भीतर देशी शराब ओकर मुँहमे उड़ेलि देल जाइत अछि
व्याख्या: इमाम बच्चाक पएर पकड़ैत छथि आ बीबम्मा बोतलक देशी शराब जालक फाँक सँ ओकर मुँहमे उड़ेलि दैत छथि।

प्रश्न 974. माता भालुक निगरानीक कारणेँ इमाम-बीबम्मा शावककेँ तुरत्ते किएक नहि हटबैत?
क. माता गन्ध पकड़ि पीछा कऽ हमला कऽ सकैत छल
ख. पिंजरा बहुत हलुक छल
ग. बच्चा घर पहुँचि गेल छल
घ. चाँद मना कएलक
उत्तर: क. माता गन्ध पकड़ि पीछा कऽ हमला कऽ सकैत छल
व्याख्या: कथामे स्पष्ट अछि जे ओहि राति बच्चाकेँ हटाएब असम्भव छल, किएकि माता गन्ध पकड़ि पीछा कऽ सकैत छल।

प्रश्न 975. रसूलक भालुक घटना बीबम्माक स्मृतिमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ओ भालुक मृत्यु देखि बीबम्मा आर कोनो भालुक मृत्यु आँखिसँ नहि देखबाक संकल्प लेने छलीह
ख. ओ भालु खेत देलक
ग. ओ भालु पुरस्कार जीतलक
घ. ओ भालु डॉक्टर छल
उत्तर: क. ओ भालुक मृत्यु देखि बीबम्मा आर कोनो भालुक मृत्यु आँखिसँ नहि देखबाक संकल्प लेने छलीह
व्याख्या: रसूलक पागल भालु पर भिजल सीरक फेकबाक घटनाक बाद बीबम्मा संकल्प करैत छथि जे आर भालुक मृत्यु नहि देखतीह।

प्रश्न 976. शादुल बीमार भेलाक बाद बीबम्मा ओकरा कोना देखैत छलीह?
क. अपन पुत्रक समान
ख. केवल वन्य पशु
ग. इमामक बोझ
घ. गामक शत्रु
उत्तर: क. अपन पुत्रक समान
व्याख्या: बीबम्मा शादुलमे पुत्रक छवि देखैत छलीह आ ओकर बीमारीक चिन्ता अपन बालक जकाँ करैत छलीह।

प्रश्न 977. बीबम्मा शादुलकेँ फकीर लग कोना लऽ गेलीह?
क. एक कान्ह पर चाँद, दोसर पर शादुल लऽ वर्षामे पएरे
ख. बसमे आरामसँ
ग. घोड़ागाड़ीमे
घ. इमामक संग पालकीमे
उत्तर: क. एक कान्ह पर चाँद, दोसर पर शादुल लऽ वर्षामे पएरे
व्याख्या: बसमे अनुमति नहि भेटला पर बीबम्मा चाँद आ शादुलकेँ कान्हपर लेने वर्षामे पएरे नैहर आ फकीर दिस गेलीह।

प्रश्न 978. फकीर शादुलकेँ देखि पहिने की कहैत अछि?
क. ई औखध मात्र मनुष्यक बच्चा लेल काज करत
ख. ई भालु राजा बनत
ग. ई खेत जोतत
घ. ई मेला जीतत
उत्तर: क. ई औखध मात्र मनुष्यक बच्चा लेल काज करत
व्याख्या: फकीर हँसि कहैत अछि जे ई उपचार मात्र मानव शिशु सभ लेल अछि; बीबम्मा उत्तर दैत छथि जे शादुल सेहो बच्चा अछि।

प्रश्न 979. एल्लव्वाक प्रसंगमे शादुल की करैत अछि?
क. मुँह खोललापर ओ एल्लव्वा पर कूदि पड़ैत अछि
ख. ओ शान्ति सँ पूजा करैत अछि
ग. ओ खीर खाइत अछि
घ. ओ गीत गाबैत अछि
उत्तर: क. मुँह खोललापर ओ एल्लव्वा पर कूदि पड़ैत अछि
व्याख्या: बीबम्मा शादुलक मुँहक कपड़ा हटलाक बाद ओ एल्लव्वाक कोरा सँ उछलि हुनका पर कूदि पड़ैत अछि।

प्रश्न 980. डॉक्टर लग गेलापर बीबम्मा कोन सीख पबैत छलीह?
क. शादुलक मुँहक पट्टा फेर लगाबय पड़त
ख. शादुलकेँ भात मात्र देब
ग. चाँदकेँ शहर पठेब
घ. इमामकेँ छोड़ेब
उत्तर: क. शादुलक मुँहक पट्टा फेर लगाबय पड़त
व्याख्या: डॉक्टर पर झपटला आ गारि भेटलाक बाद बीबम्मा पुनः शादुलक मुँह पर पट्टा लगाबय लगलीह।

प्रश्न 981. पशु-चिकित्सकक औखध लेल बीबम्मा की कएलनि?
क. दस दिन लगातार खेत-मजदूरी कऽ टका जुटौलनि
ख. इमामसँ जोर-जबरदस्ती कएलनि
ग. गाम छोड़ि देलनि
घ. शादुलकेँ बेचि देलनि
उत्तर: क. दस दिन लगातार खेत-मजदूरी कऽ टका जुटौलनि
व्याख्या: औखधक लेल दू सय टका लागत; इमाम टालि देलनि, तखन बीबम्मा दस दिन खेत-मजदूरी कऽ औखध किनलीह।

प्रश्न 982. एक बर्खक उपचार-पोषणक बाद शादुलमे कोन परिवर्तन आएल?
क. रोइयाँ उगि आएल, बोनहा स्वभाव घटल, मानुसक भोजन आ भाषा बुझय लागल
ख. ओ तुरत्ते जंगल भागि गेल
ग. ओ मादा भालु बनि गेल
घ. ओ बीमारहि रहल
उत्तर: क. रोइयाँ उगि आएल, बोनहा स्वभाव घटल, मानुसक भोजन आ भाषा बुझय लागल
व्याख्या: बीबम्माक प्रयाससँ शादुल ठीक भेल, कोमल बनल, मानुसक भोजनक अभ्यस्त आ मानुसक भाषा बुझएबला भेल।

खण्ड १०४ : विदेह-सदेह ३७ — प्रशिक्षण, खेल-तरकीब आ जीविकाक नाट्य

प्रश्न 983. शादुल कोमल बनलाक बाद इमामक अगिला लक्ष्य की भेल?
क. लोकक मनोरंजन लेल ओकरा खेल-तरकीब सिखाएब
ख. ओकरा खेतमे हल जोताएब
ग. ओकरा विद्यालय पठाएब
घ. ओकरा अण्टार्कटिका पठाएब
उत्तर: क. लोकक मनोरंजन लेल ओकरा खेल-तरकीब सिखाएब
व्याख्या: शादुल कोमल भेला पर इमाम ओकरा लोकक मनोरंजनक खेल-तरकीब सिखबय चाहैत छथि।

प्रश्न 984. ‘ठाढ़ हो’ आदेश पर शादुल की सीखि गेल?
क. पाछाँक पएर पर सोझ ठाढ़ होएब
ख. उड़ि जाएब
ग. कथा लिखब
घ. खीर पकाएब
उत्तर: क. पाछाँक पएर पर सोझ ठाढ़ होएब
व्याख्या: प्रशिक्षणमे शादुल ‘ठाढ़ हो’ सुनलापर पाछाँक पएर पर ठाढ़ होएब सीखैत अछि।

प्रश्न 985. बीबम्मा इमामक प्रशिक्षण-विधि सँ किएक नाराज होइत छलीह?
क. शादुलकेँ लाठी सँ थुथुन पर मारि-मारि सिखाओल जाइत छल
ख. इमाम ओकरा बेसी खीर दैत छलाह
ग. इमाम ओकरा विद्यालय पठबैत छलाह
घ. शादुल घर साफ करैत छल
उत्तर: क. शादुलकेँ लाठी सँ थुथुन पर मारि-मारि सिखाओल जाइत छल
व्याख्या: शादुलकेँ एक-एक तरकीब सिखएबाक लेल मारि पड़ैत, जे देखिकऽ बीबम्मा दुखी आ रुष्ट होइत छलीह।

प्रश्न 986. इमाम मारिक बचावमे कोन कहबी-जेकाँ तर्क दैत छलाह?
क. पाथर सेहो मूरति बनबाक लेल चोट खाइत अछि
ख. दूध सँ पत्थर पिघलैत अछि
ग. खीर सँ खेत बनैत अछि
घ. जंजीर सँ फूल फूटैत अछि
उत्तर: क. पाथर सेहो मूरति बनबाक लेल चोट खाइत अछि
व्याख्या: इमाम कहैत छलाह—जँ मारब नहि तँ खेल कोना सीखत; पाथरकेँ सेहो मूरति बनय लेल चोट खाय पड़ैत छैक।

प्रश्न 987. घरपर प्रशिक्षण कठिन भेलाक कारण इमाम शादुलकेँ कतय लय गेलाह?
क. एकचारी सँ दूर गाछक नीचाँ आन ठाम
ख. मण्डल कार्यालय
ग. निजाम कॉलेज
घ. अण्टार्कटिक केन्द्र
उत्तर: क. एकचारी सँ दूर गाछक नीचाँ आन ठाम
व्याख्या: घरपर प्रशिक्षण सम्भव नहि छल, तेँ इमाम शादुलकेँ एकचारी सँ दूर एक गाछक नीचाँ सिखेबा लेल लय गेलाह।

प्रश्न 988. ‘चल’ आ ‘पकड़ू’ आदेशसँ शादुल की-की करब सीखल?
क. दू पएर पर चलब आ फेंकल लाठी पकड़ब
ख. माछ पकड़ब
ग. अंग्रेजी पढ़ब
घ. हल जोतब
उत्तर: क. दू पएर पर चलब आ फेंकल लाठी पकड़ब
व्याख्या: प्रशिक्षणक बाद ‘चल’ पर दू पएर पर चलब आ ‘पकड़ू’ पर लाठी पकड़ब ओकर खेल बनि गेल।

प्रश्न 989. मन्त्रायल ताबीज थुकब सिखेबाक पहिले इमाम कोन तीत वस्तु सभ देलनि?
क. नीम आ धातरीम
ख. दूध आ सेवइ
ग. इलायची आ चीनी
घ. मकइ आ ज्वार
उत्तर: क. नीम आ धातरीम
व्याख्या: इमाम सोचलनि जे नीम आ धातरीमक तीत स्वाद शादुलकेँ ताबीज थुकय बाध्य करत, मुदा ओ निगलि जाइत छल।

प्रश्न 990. अन्ततः मन्त्रायल ताबीज फेकब सिखेबामे कोन वस्तु कारगर भेल?
क. हरियर मेरचाइ
ख. जाजीक रस
ग. खीर
घ. सुखायल ताड़क पात
उत्तर: क. हरियर मेरचाइ
व्याख्या: हरियर मेरचाइक जलन सहयमे असमर्थ भऽ शादुल ताबीज थुकय लागल; दू मास बाद तरकीब सीखि गेल।

प्रश्न 991. लोकक सोझाँ इमाम शादुलक खेल कोना शुरू करबैत छलाह?
क. ‘सभ लोककेँ सलाम करह’ कहि शादुलकेँ पाछाँक पएर पर ठाढ़ करबैत
ख. पहिने चाँदकेँ गाबय कहैत
ग. पहिने एस.आई.केँ बजबैत
घ. पहिने खीर बाँटैत
उत्तर: क. ‘सभ लोककेँ सलाम करह’ कहि शादुलकेँ पाछाँक पएर पर ठाढ़ करबैत
व्याख्या: प्रदर्शन शुरू करैत इमाम कहैत छलाह ‘सभ लोककेँ सलाम करह’, आ शादुल ठाढ़ भऽ सभकेँ सलाम करैत छल।

प्रश्न 992. परिवारमे शादुलक दू रूप कोना देखाएल गेल अछि?
क. चाँद संग बच्चा, बीबम्मा लग शिशु, मुदा इमाम पाछाँ जीविकाक जिम्मेदार साथी
ख. सदिखन दुश्मन
ग. केवल जङ्गलक पशु
घ. केवल खेतक मजदूर
उत्तर: क. चाँद संग बच्चा, बीबम्मा लग शिशु, मुदा इमाम पाछाँ जीविकाक जिम्मेदार साथी
व्याख्या: कथा शादुलकेँ घरमे प्रेमिल बच्चा/शिशु आ इमामक संग जीविकाक भार ढोबैत जिम्मेदार सदस्य दुनू रूपमे देखबैत अछि।

खण्ड १०५ : विदेह-सदेह ३७ — पहिल सार्वजनिक खेल, कुकुरक भय आ शादुलक हेराएब

प्रश्न 993. शादुलक प्रशिक्षण समाप्त भेलाक बाद इमाम पहिल बेर ओकरा संग कोन उद्देश्यसँ बाहर निकललाह?
क. लोकक मनोरंजन करैत भीख/जीविका जुटेबाक लेल
ख. ओकरा तुरत्ते जङ्गल छोड़ि देबाक लेल
ग. एमआरओ कार्यालयमे प्रमाणपत्र लेबाक लेल
घ. चाँदक बियाहक निमन्त्रण बाँटबाक लेल
उत्तर: क. लोकक मनोरंजन करैत भीख/जीविका जुटेबाक लेल
व्याख्या: प्रशिक्षणक बाद इमाम शादुलकेँ लोकक सोझाँ खेल देखबैत जीविका कमेबाक साधन बनबय चाहैत छलाह।

प्रश्न 994. प्रदर्शन शुरू करबा लेल इमाम सामान्यतः शादुलकेँ कोन आदेश दैत छलाह?
क. सभ लोककेँ सलाम करह
ख. चुपचाप सुतल रह
ग. धानक बोरा उठा
घ. मकइक बालि सिझा
उत्तर: क. सभ लोककेँ सलाम करह
व्याख्या: इमामक आरम्भिक पुकार पर शादुल पाछाँक पएर पर ठाढ़ भऽ लोककेँ सलाम करैत छल।

प्रश्न 995. दर्शकक लिंग-संरचना अनुसार इमाम शादुल सँ खेल कोना बदलैत छलाह?
क. महिला बेसी रहला पर पुरुषक खेल, पुरुष बेसी रहला पर महिलाक खेल करबैत
ख. सदिखन एक्के खेल दोहरबैत
ग. केवल बच्चा लेल खेल रोकि दैत
घ. दर्शककेँ बिना खेलेँ विदा करैत
उत्तर: क. महिला बेसी रहला पर पुरुषक खेल, पुरुष बेसी रहला पर महिलाक खेल करबैत
व्याख्या: इमाम प्रदर्शनमे तत्काल कथा रचैत छलाह; भीड़क प्रकृति अनुसार शादुलक अभिनय बदलैत छल।

प्रश्न 996. पहिल बाहरी प्रदर्शन लेल निकलैत इमाम शादुलकेँ कोना सज्ज कएलनि?
क. थुथुन पर पट्टा, कण्ठमे रस्सा, हाथमे मन्त्रायल ताबीज
ख. केवल फूलक माला
ग. मात्र माटिक बासन
घ. विद्यालयी पोशाक
उत्तर: क. थुथुन पर पट्टा, कण्ठमे रस्सा, हाथमे मन्त्रायल ताबीज
व्याख्या: इमाम शादुलक थुथुनक चारू कात पट्टा, कण्ठमे रस्सा आ हाथमे ताबीज लऽ गलीमे बढ़लाह।

प्रश्न 997. गलीमे डेग रखते शादुलक सोझाँ पहिल संकट की बनल?
क. गलीक कुकुर सभ ओकरा पर भुकैत पीछा करय लागल
ख. अचानक वर्षा शुरू भऽ गेल
ग. सरपञ्च खेल रोकि देलक
घ. बाजार बन्द भऽ गेल
उत्तर: क. गलीक कुकुर सभ ओकरा पर भुकैत पीछा करय लागल
व्याख्या: गलीक कुकुर सभ शादुलकेँ देखिते लगातार भुकैत ओकर पीछा कएलक, जाहि सँ ओ आतंकित भेल।

प्रश्न 998. कुकुरक हमलाक समय शादुलक व्यवहार कोना छल?
क. स्कूल जाइत बच्चा जकाँ विरोध करैत आ रस्सा खींचैत
ख. पूर्ण प्रशिक्षित सैनिक जकाँ स्थिर
ग. दर्शकक बीच निर्भय नाचैत
घ. इमामकेँ छोड़ि घरे चलि गेल
उत्तर: क. स्कूल जाइत बच्चा जकाँ विरोध करैत आ रस्सा खींचैत
व्याख्या: पहिल बेर गलीक भीड़ आ कुकुर देखिकऽ शादुल डरि गेल आ आगू बढ़बासँ मना करय लागल।

प्रश्न 999. शादुलक कण्ठक रस्सा टूटला पर की भेल?
क. ओ पाथरक ढेर पर कूदि गामसँ बाहर भागि गेल
ख. ओ तुरत्ते खाधिमे खसल
ग. ओ इमामक कोट फाड़ि देलक
घ. ओ मंचपर बैसि गेल
उत्तर: क. ओ पाथरक ढेर पर कूदि गामसँ बाहर भागि गेल
व्याख्या: रस्सा अचानक टूटल, इमाम सन्तुलन सम्हारलनि, मुदा शादुल कुकुरसँ बचबाक लेल पाथरक ढेर पार कऽ भागि गेल।

प्रश्न 1000. शादुल भागि गेलाक बाद इमाम कोन-कोन ठाम खोजलनि?
क. झाँखुड़, जङ्गल, खेत, परती जमीन आ सुखायल नाला
ख. केवल पञ्चायत कार्यालय
ग. केवल विद्यालय
घ. केवल नदीक घाट
उत्तर: क. झाँखुड़, जङ्गल, खेत, परती जमीन आ सुखायल नाला
व्याख्या: इमाम पूरा दिन खेत, परती, नाला, झाँखुड़ आ जङ्गल छानि मारलनि, मुदा शादुल नहि भेटल।

प्रश्न 1001. शादुलक हेराएबाक राति परिवारक भाव-दशा कोना रहल?
क. तीनू गोटे जङ्गलमे अलाव लग बैसि शादुलक आवाज सुनबाक आसमे रहल
ख. सभ भोज कऽ आरामसँ सुतल
ग. चाँद उत्सवमे गेल
घ. बीबम्मा खेल देखय लगलीह
उत्तर: क. तीनू गोटे जङ्गलमे अलाव लग बैसि शादुलक आवाज सुनबाक आसमे रहल
व्याख्या: इमाम, बीबम्मा आ चाँद राति जङ्गलमे अलाव लग सतर्क बैसल रहलाह, मुदा शादुलक कोनो जवाब नहि आएल।

प्रश्न 1002. शादुल नहि भेटला पर बीबम्मा इमाम पर कोन प्रकारक आरोप लगौलनि?
क. कुकुर सभसँ ओकर रक्षा नहि कऽ ओकर प्राण संकटमे देबाक
ख. ओकरा बेसी मकइ खियएबाक
ग. ओकरा पढ़ाबय नहि देबाक
घ. ओकरा साँप पकड़य पठएबाक
उत्तर: क. कुकुर सभसँ ओकर रक्षा नहि कऽ ओकर प्राण संकटमे देबाक
व्याख्या: बीबम्मा दुख आ क्रोधमे इमामकेँ कोसलनि जे ओ कुकुर सभसँ शादुलकेँ बचा नहि सकलाह।

खण्ड १०६ : विदेह-सदेह ३७ — खोज, इनारसँ उद्धार आ परिवारक जीविका-स्मृति

प्रश्न 1003. शादुलक ठाम बताबय लेल किसान इमामसँ की शर्त रखलक?
क. फसल कटनीमे एक सप्ताह सहायता
ख. एकटा सोनाक बाली
ग. भालुक खेल मुफ्तमे
घ. मण्डल कार्यालयमे सिफारिश
उत्तर: क. फसल कटनीमे एक सप्ताह सहायता
व्याख्या: किसान पुरान इनारमे शादुल देखलक, मुदा ठाम बताबय लेल फसल कटनीमे सहायता चाहलक।

प्रश्न 1004. किसानक शर्त सुनि इमाम कोन वचन देलनि?
क. एक सप्ताह नहि, दस दिन धरि सहायता करब
ख. किछुओ नहि करब
ग. मात्र ताबीज देब
घ. शादुल छोड़ि देब
उत्तर: क. एक सप्ताह नहि, दस दिन धरि सहायता करब
व्याख्या: शादुलक खबर सुनि इमामक प्राणमे प्राण आएल; ओ किसानकेँ दस दिन धरि सहायता करबाक वचन देलनि।

प्रश्न 1005. पुरान इनारमे शादुल कोना भेटल?
क. घन वनस्पतिक बीच बण्डल जकाँ सुतल, दुर्बल आ भूखल
ख. नाचैत आ सलाम करैत
ग. किसानक घरमे बन्हायल
घ. गामक चौकपर प्रदर्शन करैत
उत्तर: क. घन वनस्पतिक बीच बण्डल जकाँ सुतल, दुर्बल आ भूखल
व्याख्या: इनारमे उगल वनस्पति बीच शादुल मूड़ी कऽ सुतल भेटल; भूखसँ ओ अत्यन्त दुर्बल छल।

प्रश्न 1006. इमामक पुकार पर शादुलक प्रतिक्रिया की छल?
क. ओ भागल नहि, आस्ते-आस्ते कुहरैत इमाम दिस आएल
ख. ओ फेर जङ्गल भागि गेल
ग. ओ किसान पर हमला कएलक
घ. ओ चुपचाप मरि गेल
उत्तर: क. ओ भागल नहि, आस्ते-आस्ते कुहरैत इमाम दिस आएल
व्याख्या: परिवार डरैत छल जे ओ भागत, मुदा ‘शादुल’ सुनि ओ शान्ति सँ इमाम दिस आएल।

प्रश्न 1007. शादुलकेँ घर अनला पर तुरत्ते की कएल गेल?
क. मुँहक जाबी हटाएल गेल आ मकइक बालि खियाओल गेल
ख. ओकरा बेचि देल गेल
ग. ओकरा तुरत्ते खेल देखाबय लऽ गेल
घ. ओकरा पुलिस स्टेशन पठाओल गेल
उत्तर: क. मुँहक जाबी हटाएल गेल आ मकइक बालि खियाओल गेल
व्याख्या: उद्धारक बाद इमाम-बीबम्मा शादुलकेँ घर अनलनि, जाबी हटौलनि आ भोजन देलनि।

प्रश्न 1008. शादुलक पूर्ण स्वस्थता लेल परिवार कोन व्यवस्था कएलक?
क. कटनीक वचन निभेलक, मकइ जमा कएलक आ दूधक आपूर्ति जुटौलक
ख. केवल ताबीज बेचलक
ग. ओकरा निर्जन छोड़ि देलक
घ. एमआरओ सँ अनुदान लेलक
उत्तर: क. कटनीक वचन निभेलक, मकइ जमा कएलक आ दूधक आपूर्ति जुटौलक
व्याख्या: परिवार किसानक खेतमे काम कएलक, शादुल लेल मकइ जमा कएलक आ प्रतिदिन दूधक व्यवस्था कएलक।

प्रश्न 1009. पाँच बर्खक शादुल बीमार पड़ला पर झोराछाप डॉक्टर कोन वस्तु माँगल?
क. नागिनक केंचुली
ख. सोनाक बाली
ग. धानक बोरा
घ. कलेक्टरक पत्र
उत्तर: क. नागिनक केंचुली
व्याख्या: बीमारीक कारण नहि बुझल गेल; झोराछाप डॉक्टर नागिनक केंचुलीक औखध चाहलक।

प्रश्न 1010. अकालक समय शादुलक खेल परिवार लेल कोना सहायक भेल?
क. खेल देखाकऽ चाउर-धान आ चवन्नी-अठन्नी जुटैत रहल
ख. ओ परिवारकेँ गामसँ भगा देलक
ग. ओ खेत जोतय लागल
घ. ओ अधिकारी बनि गेल
उत्तर: क. खेल देखाकऽ चाउर-धान आ चवन्नी-अठन्नी जुटैत रहल
व्याख्या: अकालमे शादुलक प्रदर्शनक कारण इमाम खाली हाथ नहि लौटैत, झोरा अनाजसँ भरल रहैत।

प्रश्न 1011. बतुकम्मा नृत्यक सन्दर्भमे लोक शादुलसँ की आशा रखैत छल?
क. भालुक नृत्य वर्षा आनत
ख. भालु कानून बदलत
ग. भालु जमीनक पट्टा लिखत
घ. भालु गामक मुखिया बनत
उत्तर: क. भालुक नृत्य वर्षा आनत
व्याख्या: किछु गाममे लोक विश्वास करैत छल जे भालुसँ बतुकम्मा नचबेलासँ वर्षा होयत।

प्रश्न 1012. शादुलक अइला सँ पहिने आ बाद परिवारक जीवनमे मूल अन्तर की भेल?
क. पहिने भूखक कष्ट छल, बादमे खेल आ ताबीजसँ भोजन-जीविका जुटल
ख. पहिने धनवान छल, बादमे निर्धन भेल
ग. पहिने किसान छल, बादमे भिखारी बनल
घ. कोनो परिवर्तन नहि भेल
उत्तर: क. पहिने भूखक कष्ट छल, बादमे खेल आ ताबीजसँ भोजन-जीविका जुटल
व्याख्या: कथा स्पष्ट करैत अछि जे शादुल अएलाक बाद इमाम-बीबम्माकेँ भूखक ओहि पुरान कष्टसँ मुक्ति भेटल।

खण्ड १०७ : विदेह-सदेह ३७ — खाधि, दफन-योजना आ चाँद-शादुल संघर्ष

प्रश्न 1013. वर्तमान दृश्यमे चाँद अंगनाक खाधिसँ बाहर निकलि पिताकेँ किएक अस्थिर करैत अछि?
क. ओ शादुलकेँ हटएबाक/दफन करबाक तैयारीमे छल
ख. ओ खेतमे सिंचाई करि रहल छल
ग. ओ नाटकक मंच बना रहल छल
घ. ओ मकइ रोपि रहल छल
उत्तर: क. ओ शादुलकेँ हटएबाक/दफन करबाक तैयारीमे छल
व्याख्या: चाँद द्वारा खनल खाधि शादुलक भविष्यक भयावह संकेत बनैत अछि आ इमाम भीतरसँ टूटय लगैत छथि।

प्रश्न 1014. चाँद शादुलकेँ खाधि दिस घिसियाबैत काल कोन महत्त्वपूर्ण बात सभक ध्यानसँ छूटि गेल?
क. इमाम भोजनक समय शादुलक मुँहक जाबी खोलि देने छलाह
ख. शादुल भूखल नहि छल
ग. खाधि बहुत कम गहींर छल
घ. बीबम्मा ओतय नहि छलीह
उत्तर: क. इमाम भोजनक समय शादुलक मुँहक जाबी खोलि देने छलाह
व्याख्या: संकटक क्षणमे ककरो ध्यान नहि रहल जे शादुलक मुँहक जाबी खुलल अछि, जाहि सँ खतरा बढ़ल।

प्रश्न 1015. चाँदक मनमे खाधि लग ठाढ़ शादुलक प्रति कोन परिवर्तन देखाइत अछि?
क. बाल्यकालक साथी नहि, मात्र बोनहा जानवर जकाँ देखय लागल
ख. ओकरा गुरु मानय लागल
ग. ओकरा पुनः भाई कहय लागल
घ. ओकरा खेतक मालिक बनबय चाहल
उत्तर: क. बाल्यकालक साथी नहि, मात्र बोनहा जानवर जकाँ देखय लागल
व्याख्या: चाँदक स्मृतिसँ बाल्य-स्नेह हटि गेल; ओकरा शादुल अपन नहि, बाधा बनल बोनहा जानवर लागल।

प्रश्न 1016. शादुलकेँ खाधिमे धकेलबाक चाँदक पहिल प्रयास किएक असफल भेल?
क. शादुल एकहि छलाँगमे खाधिक दोसर कात उतरि गेल
ख. खाधि तुरत्ते भरि गेल
ग. बीबम्मा ओकरा उठा लेलनि
घ. इमाम खाधि बन्द कऽ देलनि
उत्तर: क. शादुल एकहि छलाँगमे खाधिक दोसर कात उतरि गेल
व्याख्या: प्रशिक्षित खिलाड़ी जकाँ शादुल धक्का केँ खेल-तरकीब बुझि छलाँग मारि बचि गेल।

प्रश्न 1017. इमाम चाँदकेँ रोकबाक लेल कोन करुण पुकार करैत छथि?
क. नक्कोरे... नक्कोरे
ख. सुरु करू... सुरु करू
ग. सलाम करह
घ. धान काटू
उत्तर: क. नक्कोरे... नक्कोरे
व्याख्या: इमाम ‘नक्कोरे’ कहि चाँदकेँ रोकबाक गोहार करैत छथि, मुदा चाँदक क्रोध बढ़ैत जाइत अछि।

प्रश्न 1018. बीबम्माक व्यवहार एहि संघर्षमे कोना देखाइत अछि?
क. ओ चाँदकेँ सावधान कहैत शादुलकेँ कुशलता सँ धकेलबाक उकसाबैत छथि
ख. ओ तुरत्ते शादुलकेँ मुक्त करैत छथि
ग. ओ घर छोड़ि चली जाइत छथि
घ. ओ पुलिसकेँ बजबैत छथि
उत्तर: क. ओ चाँदकेँ सावधान कहैत शादुलकेँ कुशलता सँ धकेलबाक उकसाबैत छथि
व्याख्या: बीबम्मा अपन पुत्रक पक्षमे ठाढ़ देखाइत छथि; हुनकर चिन्ता चाँदक सुरक्षा आ योजना पूरा करबाक अछि।

प्रश्न 1019. चाँद शादुलक पीठ पर रस्सासँ प्रहार किएक करय लागल?
क. धक्का असफल भेला पर ओकर धैर्य टूटि गेल आ क्रोध उग्र भेल
ख. ओ खेलक अभ्यास करा रहल छल
ग. ओ शादुलकेँ सलाम सिखा रहल छल
घ. ओ ओकरा दूध पियाबय चाहैत छल
उत्तर: क. धक्का असफल भेला पर ओकर धैर्य टूटि गेल आ क्रोध उग्र भेल
व्याख्या: बारम्बार असफलता चाँदक क्रोधकेँ हिंसामे बदलि देलक, आ ओ रस्सासँ प्रहार करय लागल।

प्रश्न 1020. चाँद द्वारा इमामकेँ 'ओहि शैतानकेँ मारू' कहबाक अर्थ की अछि?
क. ओ पिता सँ शादुलक हत्या/समाप्ति लेल निर्णायक आदेश चाहैत अछि
ख. ओ नाटकक संवाद बोलैत अछि
ग. ओ शादुलकेँ इनाम देबय कहैत अछि
घ. ओ ताबीज बेचबाक पुकार करैत अछि
उत्तर: क. ओ पिता सँ शादुलक हत्या/समाप्ति लेल निर्णायक आदेश चाहैत अछि
व्याख्या: चाँदक भाषा बतबैत अछि जे ओकर दृष्टिमे शादुल आब साथी नहि, हटएबाक बाधा बनि गेल अछि।

प्रश्न 1021. बीबम्मा आ चाँदक दबावक बीच इमामक मूल मानसिक स्थिति की रहल?
क. डर, घृणा, असमर्थता आ शादुल लेल करुणा सँ टूटल
ख. पूर्ण उत्साह आ कठोरता
ग. सिर्फ लोभ
घ. पूर्ण उदासीनता
उत्तर: क. डर, घृणा, असमर्थता आ शादुल लेल करुणा सँ टूटल
व्याख्या: इमाम अपन बेटा आ पत्नी सँ डेरायल छथि, मुदा शादुलक मृत्यु देखब हुनका लेल असह्य अछि।

प्रश्न 1022. खाधिक प्रसंग कथामे की प्रतीकात्मक बनैत अछि?
क. जीविका-संबंध तोड़ि स्मृति आ स्नेहकेँ माटि देबाक हिंसक योजना
ख. खेतीक नव आरम्भ मात्र
ग. जल-संरक्षणक योजना
घ. विद्यालयक खेल मैदान
उत्तर: क. जीविका-संबंध तोड़ि स्मृति आ स्नेहकेँ माटि देबाक हिंसक योजना
व्याख्या: खाधि केवल गड्ढा नहि, परिवारक पुरान स्नेह, ऋण आ साथकेँ दबा देबाक क्रूर सामाजिक-आर्थिक दबावक प्रतीक बनैत अछि।

खण्ड १०८ : विदेह-सदेह ३७ — हमला, दू गुट आ नैतिक बहस

प्रश्न 1023. चाँद पर शादुलक पहिल झपट्टा कोन परिस्थिति मे भेल?
क. चाँद ओकरा खाधिमे धकेलबाक हिंसक प्रयास करैत छल
ख. चाँद ओकरा दूध पियाबैत छल
ग. चाँद ओकरा मेला लऽ जा रहल छल
घ. चाँद ओकरा सलाम सिखा रहल छल
उत्तर: क. चाँद ओकरा खाधिमे धकेलबाक हिंसक प्रयास करैत छल
व्याख्या: शादुल आरम्भमे मात्र बचबाक प्रयास करैत छल, मुदा चाँदक हिंसक दबाव बढ़ला पर ओ झपटल।

प्रश्न 1024. इमामक 'शादुल' पुकार सुनि भालुक प्रतिक्रिया की भेल?
क. ओ आज्ञाकारी जकाँ चाँदकेँ छोड़ि देलक
ख. ओ और क्रुद्ध भऽ गेल
ग. ओ जंगल भागि गेल
घ. ओ इमाम पर हमला कएलक
उत्तर: क. ओ आज्ञाकारी जकाँ चाँदकेँ छोड़ि देलक
व्याख्या: इमामक स्वरक प्रभाव शादुल पर एतेक गहीर छल जे ओ चाँदकेँ छोड़ि एक दिस ठाढ़ भऽ गेल।

प्रश्न 1025. चाँद पुनः लाठी उठा कऽ शादुलकेँ मारय लगला पर शादुल कोना प्रतिक्रिया देलक?
क. पीड़ामे इमामक चारू कात दौड़ि बचाव ताकल
ख. पूर्ण चुप्पी सँ मार सहलक
ग. घरक भीतर छिपि गेल
घ. बीबम्माकेँ काटि लेलक
उत्तर: क. पीड़ामे इमामक चारू कात दौड़ि बचाव ताकल
व्याख्या: लाठीक प्रहारसँ बचबाक लेल शादुल इमामक पास-पास घूमैत रहल, जे ओकर निर्भरता देखबैत अछि।

प्रश्न 1026. इमामकेँ लाठी लागलाक बाद शादुलक विद्रोह कोना बदलि गेल?
क. ओ पितृ-स्नेहक रक्षाक क्रोधमे चाँद पर तेज हमला कएलक
ख. ओ तुरत्ते सुतल
ग. ओ भोजन खोजय गेल
घ. ओ ताबीज थुकय लागल
उत्तर: क. ओ पितृ-स्नेहक रक्षाक क्रोधमे चाँद पर तेज हमला कएलक
व्याख्या: इमामक पीड़ा सुनि शादुल जेना अपन पिता चोट खाइत देखलक; ओकर प्रतिकार तीव्र भऽ गेल।

प्रश्न 1027. इमाम समय पर 'नक्कोरे' नहि चिकरितथि तँ शादुल चाँदकेँ की कऽ सकैत छल?
क. गंभीर प्राणघातक क्षति पहुँचा सकैत छल
ख. केवल सलाम करैत
ग. धान ढेर पर नाचैत
घ. खेल देखबैत
उत्तर: क. गंभीर प्राणघातक क्षति पहुँचा सकैत छल
व्याख्या: शादुल चाँदक गरदनि पकड़ि लेने छल; एक क्षणक देरी प्राणघातक भऽ सकैत छल।

प्रश्न 1028. हमला-पछात दृश्यक 'दू गुट' कोना बनल?
क. एक दिस बीबम्मा-चाँद, दोसर दिस इमाम-शादुल
ख. एक दिस गाम, दोसर दिस शहर
ग. एक दिस एमआरओ, दोसर दिस एसआई
घ. एक दिस किसान, दोसर दिस सरपञ्च
उत्तर: क. एक दिस बीबम्मा-चाँद, दोसर दिस इमाम-शादुल
व्याख्या: कथा स्पष्ट करैत अछि जे संघर्षक बाद परिवार भावनात्मक रूपेँ दू पक्षमे बाँटि गेल।

प्रश्न 1029. चाँद रस्सा लऽ गाछ दिस किएक बढ़ल?
क. आत्महत्या करबाक धमकी/प्रयाससँ दबाव बनबय लेल
ख. शादुलकेँ खेल सिखाबय लेल
ग. गाछमे झूला बाँधय लेल
घ. धानक बोरा कसय लेल
उत्तर: क. आत्महत्या करबाक धमकी/प्रयाससँ दबाव बनबय लेल
व्याख्या: चाँद 'ओ रहत वा हम'क दबाव बनाबैत रस्सा लऽ आत्महत्या दिश बढ़ैत अछि।

प्रश्न 1030. बीबम्मा चाँदक रस्सा-प्रयास पर इमामकेँ कोना प्रतिक्रिया दैत छथि?
क. इमामकेँ कोसैत चाँदकेँ पकड़बाक लेल चिचियाबैत छथि
ख. पूर्ण शान्त रहैत छथि
ग. शादुलक पक्ष लैत छथि
घ. मण्डल कार्यालय चलि जाइत छथि
उत्तर: क. इमामकेँ कोसैत चाँदकेँ पकड़बाक लेल चिचियाबैत छथि
व्याख्या: बीबम्मा अपना पुत्रक भयमे इमामकेँ दोष दैत ओकरा रोकबाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 1031. इमाम बीबम्मापर कोन नैतिक आरोप लगबैत छथि?
क. दू एकड़ जमीन लेल दूध पिआ कऽ पोसल स्नेह बिसरि गेलीह
ख. ओ भालुक खेल नीक नहि सिखौलनि
ग. ओ ताबीज कम दाममे बेचलीह
घ. ओ किसानक खेत नहि काटलीह
उत्तर: क. दू एकड़ जमीन लेल दूध पिआ कऽ पोसल स्नेह बिसरि गेलीह
व्याख्या: इमामक कठोर वाक्य बीबम्माक स्नेहसँ जमीनक लोभ/सुरक्षा दिस पलटल मनोविज्ञान पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 1032. इमाम शादुलक नैतिकता कोना व्याख्यायित करैत छथि?
क. शादुल चाहैत तँ चाँदकेँ फाड़ि दैत, मुदा ओकर दाँत नहि गड़ल—कारण ओकर स्नेह स्थायी अछि
ख. शादुल ककरो चिन्हैत नहि
ग. शादुल केवल भूख सँ चलैत अछि
घ. शादुल ताबीजक लोभमे अछि
उत्तर: क. शादुल चाहैत तँ चाँदकेँ फाड़ि दैत, मुदा ओकर दाँत नहि गड़ल—कारण ओकर स्नेह स्थायी अछि
व्याख्या: इमामक मान्यता अछि जे शादुलक भीतर मनुष्यसँ बेसी आभार आ मर्यादा अछि, तें ओ चाँदकेँ सचमुच नहि मारलक।

खण्ड १०९ : विदेह-सदेह ३७ — जमीन-पट्टा, डर आ बताह करय वला मिश्रण

प्रश्न 1033. चाँदक शर्तक बाद इमामकेँ शादुलक बारेमे कोन तीन विकल्पक दबाव झेलय पड़ैत अछि?
क. जङ्गल छोड़ब, बेचब वा जियतहि गाड़ब/हटएब
ख. ओकरा पढ़ेब, लिखेब वा विवाह कराएब
ग. ओकरा नाव, रेल वा बसमे पठाएब
घ. ओकरा राजा, पुरोहित वा शिक्षक बनएब
उत्तर: क. जङ्गल छोड़ब, बेचब वा जियतहि गाड़ब/हटएब
व्याख्या: चाँद बार-बार शादुलकेँ हटएबाक दबाव दैत अछि; इमाम पहिने जङ्गल, बेचब आ खाधि सभ पर विवश भऽ सोचैत छथि।

प्रश्न 1034. चाँद आ बीबम्माक डरक केन्द्र की अछि?
क. शादुलक अस्तित्व उजागर भेल तँ जमीनक पट्टा हाथसँ निकलि जायत
ख. शादुल बहुत कम खेल सिखलक
ग. इमाम बेसी अनाज कमा लेता
घ. गाममे वर्षा होयत
उत्तर: क. शादुलक अस्तित्व उजागर भेल तँ जमीनक पट्टा हाथसँ निकलि जायत
व्याख्या: दू एकड़ जमीनक आशा शादुलक उपस्थिति सँ संकटमे पड़ि रहल अछि; यही कारणेँ दुनू ओकरा निपत्ता देखय चाहैत छथि।

प्रश्न 1035. बीबम्मा एमआरओ/पुलिसक सूचना-भयकेँ कोना प्रस्तुत करैत छथि?
क. लोक भालुक सूचना देत आ ‘फकीरकेँ जमीन किएक’ कहि ईर्ष्या करत
ख. सब लोक चुप रहत
ग. सरकार भालु लेल पुरस्कार देत
घ. कलेक्टर भालु नचौताह
उत्तर: क. लोक भालुक सूचना देत आ ‘फकीरकेँ जमीन किएक’ कहि ईर्ष्या करत
व्याख्या: बीबम्मा मानैत छथि जे ईर्ष्यालु गामक लोक अधिकारीकेँ खबर देताह आ पट्टा रुकि सकैत अछि।

प्रश्न 1036. खाधि-योजना असफल भेलाक बाद इमाम कोन नव प्रस्ताव रखैत छथि?
क. भोर सँ पहिने शादुलकेँ जङ्गल लऽ जएबाक
ख. ओकरा सरपञ्च बनएबाक
ग. ओकरा विद्यालयमे राखबाक
घ. चाँदकेँ शहर पठेबाक
उत्तर: क. भोर सँ पहिने शादुलकेँ जङ्गल लऽ जएबाक
व्याख्या: इमाम हत्या-दफन सँ बचबाक लेल शादुलकेँ भोर सँ पहिने जङ्गल छोड़ि एबाक प्रस्ताव दैत छथि।

प्रश्न 1037. चाँद जङ्गल-छोड़बाक प्रस्ताव किएक अस्वीकार करैत अछि?
क. पहिने सेहो शादुल पेद्दम्मा जङ्गलसँ वापस आबि गेल छल
ख. ओ जङ्गलमे खेती करैत
ग. जङ्गल बहुत दूर नहि छल
घ. सरपञ्च संग चलय तैयार नहि छल
उत्तर: क. पहिने सेहो शादुल पेद्दम्मा जङ्गलसँ वापस आबि गेल छल
व्याख्या: चाँदक तर्क अछि जे शादुलक घर-पथ स्मृति प्रबल अछि; ओ फेर वापस आबि गामक रहस्य खोलि देत।

प्रश्न 1038. चाँदक कथन अनुसार एसआई साहबक कानूनी चेतावनी की छल?
क. बोनहा जानवर राखब अपराध थिक
ख. भालुकेँ प्रतिदिन दूध देब अनिवार्य अछि
ग. जमीन लेल भालु चाही
घ. ताबीज बेचन अपराध नहि
उत्तर: क. बोनहा जानवर राखब अपराध थिक
व्याख्या: चाँद कहैत अछि जे एसआई बोनहा जानवर राखब अपराध कहने छथि, जे जमीनक आवेदन पर संकट अछि।

प्रश्न 1039. इमाम शादुलकेँ घर-वापसी बिसरएबाक लेल कोन मिश्रणक योजना बनबैत छथि?
क. उप्पीक छालक पाउडरमे तमाखू मिला कऽ खियाएब
ख. दूधमे चीनी मिला कऽ
ग. धानमे नून मिला कऽ
घ. ताबीजमे फूल बाँधि कऽ
उत्तर: क. उप्पीक छालक पाउडरमे तमाखू मिला कऽ खियाएब
व्याख्या: इमामक कठोर प्रस्ताव अछि जे उप्पीक छाल आ तमाखूक मिश्रण शादुलकेँ बताह कऽ ओकर स्मृति हरि लेत।

प्रश्न 1040. मिश्रणक अपेक्षित प्रभाव इमाम कोना बुझबैत छथि?
क. आधा घण्टामे बताह बनत, मनुष्य चिन्हब आ घरक रस्ता बिसरि जायत
ख. तुरन्ते सोना उगेलत
ग. ओकरे सँ खेत हरियाएत
घ. ओ और खेल सिखत
उत्तर: क. आधा घण्टामे बताह बनत, मनुष्य चिन्हब आ घरक रस्ता बिसरि जायत
व्याख्या: इमाम चाँद-बीबम्माकेँ आश्वस्त करैत छथि जे मिश्रण शादुलक स्मृति आ दिशा-बोध नष्ट करि देत।

प्रश्न 1041. चाँद आ बीबम्मा इमामक मिश्रण-योजना पर कोना प्रतिक्रिया दैत छथि?
क. चुप भऽ जाइत छथि, जेना अस्थायी सहमति भेटल
ख. उत्सव मनबैत छथि
ग. तुरन्ते पुलिस बजबैत छथि
घ. शादुलकेँ मुक्त करैत छथि
उत्तर: क. चुप भऽ जाइत छथि, जेना अस्थायी सहमति भेटल
व्याख्या: इमामक प्रस्ताव सुनि चाँद चुपचाप चलि जाइत अछि आ बीबम्मा सेहो चुप भऽ गेलीह, दबाव क्षणिक रूपेँ शान्त भेल।

प्रश्न 1042. इमामक हाथमे तमाखू आ उप्पीक स्मरण कथामे कोन कार्य करैत अछि?
क. ओकरा दस बर्ख पुरान शादुल-संबंधी अपराध-बोधक स्मृतिदिस लय जाइत अछि
ख. ओकरा बाजारक मूल्य याद करबैत अछि
ग. ओकरा कविता लिखबय प्रेरित करैत अछि
घ. ओकरा पट्टा पढ़बाक साहस दैत अछि
उत्तर: क. ओकरा दस बर्ख पुरान शादुल-संबंधी अपराध-बोधक स्मृतिदिस लय जाइत अछि
व्याख्या: तमाखू-उप्पी मात्र औखध नहि, शादुल पर पहिने कएल दमनक स्मृतिक द्वार खोलैत अछि।

खण्ड ११० : विदेह-सदेह ३७ — मद-काल, बधियाकरण आ इमामक अपराध-बोध

प्रश्न 1043. दस बर्खक शादुलक मद-कालमे व्यवहार कोना बदलैत छल?
क. साथी लेल बेचैन, रातिमे चिकरैत, गाछ अङ्कवार भरैत आ विद्रोही बनैत
ख. पूर्ण शान्त आ निश्चेष्ट
ग. केवल ताबीज बेचैत
घ. कथा सुनबैत
उत्तर: क. साथी लेल बेचैन, रातिमे चिकरैत, गाछ अङ्कवार भरैत आ विद्रोही बनैत
व्याख्या: मद-कालमे शादुलक स्वभाव उग्र, बेचैन आ असंयमित भऽ जाइत छल।

प्रश्न 1044. मद-कालमे शादुल परिवारपर कोन खतरा उत्पन्न कएने छल?
क. चाँद आ इमामकेँ काटबाक प्रयास, बीबम्मा पर गुरराइत झपट्टा
ख. धानक बोरा चोराएब
ग. पट्टा फाड़ि देब
घ. खीर नहि खाएब
उत्तर: क. चाँद आ इमामकेँ काटबाक प्रयास, बीबम्मा पर गुरराइत झपट्टा
व्याख्या: साथी लेल उन्मादक समयमे ओ चाँद, इमाम आ बीबम्मा लेल सेहो खतरनाक भऽ उठल।

प्रश्न 1045. शादुलकेँ सामान्य करबाक प्रारम्भिक उपाय इमाम कोना कएलनि?
क. सालाक मादा भालु लग लऽ जा कऽ मिलन करौलनि
ख. ओकरा पुलिस स्टेशन पठौलनि
ग. ओकरा खेतमे छोड़लनि
घ. ओकरा ताबीज पहिरौलनि
उत्तर: क. सालाक मादा भालु लग लऽ जा कऽ मिलन करौलनि
व्याख्या: इमाम शादुलकेँ अपन सालाक मादा भालु सभ लग लय गेलाह, जाहिसँ ओ केही समय सामान्य भेल।

प्रश्न 1046. सालाक भालु सभ सदिखन उपलब्ध नहि रहबाक कारण इमाम कोन कठोर उपाय सोचलनि?
क. पारम्परिक बधियाकरण-जेकाँ औषधीय काढ़ा
ख. शादुलक विवाह
ग. शादुलक पढ़ाई
घ. शादुलक सोना बेचब
उत्तर: क. पारम्परिक बधियाकरण-जेकाँ औषधीय काढ़ा
व्याख्या: दूर गाममे मादा भालु तक पहुँच कठिन छल, तेँ इमाम औषधीय बधियाकरणक उपाय अपनौलनि।

प्रश्न 1047. बधियाकरणक काढ़ामे कोन जड़ी-बूटी सभक उल्लेख अछि?
क. ब्रह्मदण्डी, उप्पी, विषमुष्टि आ इष्टिकाँत
ख. नीम, तुलसी, गुलाब आ इलायची
ग. धान, मकइ, जौ आ तिल
घ. सोनामुखी, कमल, केतकी आ चम्पा
उत्तर: क. ब्रह्मदण्डी, उप्पी, विषमुष्टि आ इष्टिकाँत
व्याख्या: इमाम सुखायल बोनहा जड़ी-बूटी ब्रह्मदण्डी, उप्पी, विषमुष्टि आ इष्टिकाँत उबालि काढ़ा बनौलनि।

प्रश्न 1048. काढ़ाक प्रभाव शादुल पर कोना पड़ल?
क. ओ एक मास धरि सोझ ठाढ़ नहि भऽ सकल आ वशमे आबि गेल
ख. ओ तुरत्ते अधिक हिंसक बनल
ग. ओ नदीमे कूदि गेल
घ. ओ मनुष्य-जेकाँ बोलय लागल
उत्तर: क. ओ एक मास धरि सोझ ठाढ़ नहि भऽ सकल आ वशमे आबि गेल
व्याख्या: काढ़ा ओकरा अत्यन्त दुर्बल कऽ देलक; एक मास बाद ओ पुनः प्रदर्शन-जीवनमे लौटल मुदा अपन स्वाभाविकता हेरायल।

प्रश्न 1049. वर्तमान जङ्गल-दृश्यमे इमाम शादुलपर अपन पूर्व व्यवहारकेँ कोना याद करैत छथि?
क. इप्पाक ताड़ी, नशा, पुरुषत्व-दमन आ आब बताह करबाक अपराधक श्रृंखला रूपमे
ख. केवल दया रूपमे
ग. केवल व्यापारिक सफलता रूपमे
घ. कोनो दोष नहि मानैत
उत्तर: क. इप्पाक ताड़ी, नशा, पुरुषत्व-दमन आ आब बताह करबाक अपराधक श्रृंखला रूपमे
व्याख्या: इमामकेँ बुझाइत अछि जे जीविका लेल ओ शादुलक जीवन, शरीर आ स्वभाव पर बेर-बेर अधिकार जमौलनि।

प्रश्न 1050. सोनाक बाली निपत्ता देखिकऽ इमाम की बुझैत छथि?
क. शादुलक कमाईक चिन्ह सेहो निकालि लेल गेल
ख. शादुल जंगलमे बाली बेचि देलक
ग. बीबम्मा ओकरा पूजा लेल राखलनि
घ. मल्ला रेड्डी बाली लौटौलनि
उत्तर: क. शादुलक कमाईक चिन्ह सेहो निकालि लेल गेल
व्याख्या: चाँदीक छल्ला रहि गेल मुदा सोनाक बाली गायब; इमाम दुखसँ कहैत छथि जे शादुलक कमाईक बाली सेहो ले लेल गेल।

प्रश्न 1051. इमामक ‘हम तोरा सभ चीजसँ वञ्चित कऽ देलियौ’ कथन की सूचित करैत अछि?
क. शादुल पर मानवीय स्वामित्वक नैतिक अपराध-बोध
ख. शादुलक व्यापारिक मूल्य
ग. गामक उत्सव
घ. चाँदक बहादुरी
उत्तर: क. शादुल पर मानवीय स्वामित्वक नैतिक अपराध-बोध
व्याख्या: इमाम अपन जीविका आ परिवार लेल शादुलक स्वाभाविक जीवन छीनबाक अपराध स्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 1052. अपराध-बोधक एहि खण्डमे शादुलक मौन उपस्थितिक प्रभाव की अछि?
क. ओ इमामक विवेककेँ आर तीखा बनबैत अछि
ख. ओ कथा सँ गायब भऽ जाइत अछि
ग. ओ मात्र हास्य पैदा करैत अछि
घ. ओ पट्टा लेल बहस करैत अछि
उत्तर: क. ओ इमामक विवेककेँ आर तीखा बनबैत अछि
व्याख्या: शादुल बोलैत नहि, मुदा ओकर सटि रहब, उदासी आ निर्भरता इमामक आत्मग्लानि केँ गहीर करैत अछि।

खण्ड १११ : विदेह-सदेह ३७ — गम्भीरावपेटक मल्ला रेड्डी प्रसंग

प्रश्न 1053. मल्ला रेड्डीक प्रसंग कोन ठाम आरम्भ होइत अछि?
क. गम्भीरावपेटमे गाँधी प्रतिमाक पास शादुलक खेलक समय
ख. मण्डल कार्यालयक भीतर
ग. चाँदक घरक खाधि लग
घ. पुरान इनारक भीतर
उत्तर: क. गम्भीरावपेटमे गाँधी प्रतिमाक पास शादुलक खेलक समय
व्याख्या: इमाम गम्भीरावपेटमे गाँधी प्रतिमा लग खेल देखबैत मल्ला रेड्डीक संदर्भ उठबैत छथि।

प्रश्न 1054. इमामक साधारण टिप्पणी किएक विवादमे बदलि गेल?
क. ओ शादुलकेँ पहलवान मल्ला रेड्डीकेँ चुनौती देबाक अभिनय करौलनि
ख. ओ पट्टा फाड़ि देलनि
ग. ओ एसआईकेँ अपमानित कएलनि
घ. ओ चाँदकेँ घर पठा देलनि
उत्तर: क. ओ शादुलकेँ पहलवान मल्ला रेड्डीकेँ चुनौती देबाक अभिनय करौलनि
व्याख्या: मनोरंजन लेल कहल चुनौती मल्ला रेड्डीक अहंकार पर चोट कएलक आ प्रसंग वास्तविक कुश्तीमे बदलल।

प्रश्न 1055. मल्ला रेड्डी पहिने भालुसँ तुलना पर कोना प्रतिक्रिया देलनि?
क. क्रोधित भऽ पुछलनि जे मानुसक तुलना जानवरसँ कोना
ख. हँसि कऽ पुरस्कार देलनि
ग. निःशब्द चलि गेलाह
घ. तुरत्ते ताबीज खरीदलनि
उत्तर: क. क्रोधित भऽ पुछलनि जे मानुसक तुलना जानवरसँ कोना
व्याख्या: मल्ला रेड्डी अपन सामाजिक-शारीरिक प्रतिष्ठा पर चोट बुझि क्रोधमे इमामकेँ ललकारलनि।

प्रश्न 1056. दाँवक प्रसंगमे चाँद कोन उग्र बात जोड़ि देलक?
क. हारला पर दस हजार देबाक
ख. शादुलकेँ तुरत्ते बेचबाक
ग. मल्ला रेड्डीकेँ पट्टा देबाक
घ. खेल रोकबाक
उत्तर: क. हारला पर दस हजार देबाक
व्याख्या: इमाम संकोचमे छलाह, मुदा चाँद निडरता सँ दस हजारक बात कहि विवादकेँ और गम्भीर बना देलक।

प्रश्न 1057. मल्ला रेड्डी पहिल चरणमे शादुल पर कोन अनुचित दाँव लगौलनि?
क. पीठ पर चढ़ि गरदनि मचोड़ि साँस रोकय लगलाह
ख. ओकरा फूल पहिरौलनि
ग. ओकरा पानी पियौलनि
घ. ओकरा सलाम करौलनि
उत्तर: क. पीठ पर चढ़ि गरदनि मचोड़ि साँस रोकय लगलाह
व्याख्या: कुश्तीक नाम पर मल्ला रेड्डी शादुलक पीठ पर चढ़ि ओकर गरदनि कसि देलनि, जे प्राणघातक बनि सकैत छल।

प्रश्न 1058. इमाम मल्ला रेड्डीक दाँवकेँ कोना चुनौती देलनि?
क. अनुचित हमला मर्दानगी नहि, साहस अछि तँ कुश्ती करू
ख. भालुकेँ तुरत्ते मारू
ग. धन लऽ चलू
घ. खेल समाप्त करू
उत्तर: क. अनुचित हमला मर्दानगी नहि, साहस अछि तँ कुश्ती करू
व्याख्या: इमाम साहस करि मल्ला रेड्डीक अनुचित पकड़केँ ललकारलनि आ असली कुश्ती पर जोर देलनि।

प्रश्न 1059. मल्ला रेड्डी इमामक गरदनि पकड़ला पर शादुलक प्रतिक्रिया की भेल?
क. ओ दुगुन वेगसँ झपटि मल्ला रेड्डीकेँ गिरा देलक
ख. ओ भागि गेल
ग. ओ सोझे बीबम्मा लग गेल
घ. ओ ताबीज थुकय लगल
उत्तर: क. ओ दुगुन वेगसँ झपटि मल्ला रेड्डीकेँ गिरा देलक
व्याख्या: इमामक अपमान/कष्ट देखिते शादुल सुरक्षात्मक क्रोधमे मल्ला रेड्डी पर प्रहार करैत अछि।

प्रश्न 1060. असली कुश्तीमे शादुल मल्ला रेड्डीकेँ कोना परास्त कएलक?
क. घेरि उठा कऽ जोर सँ जमीन पर पटकलक आ दबा देलक
ख. केवल सलाम कएलक
ग. दौड़मे हरा देलक
घ. कागज लिखि देलक
उत्तर: क. घेरि उठा कऽ जोर सँ जमीन पर पटकलक आ दबा देलक
व्याख्या: शादुल कुश्तीक बनावटी-प्रशिक्षित चाल सभ सँ मल्ला रेड्डीकेँ उठाकऽ पटललक आ उठय नहि देलक।

प्रश्न 1061. मल्ला रेड्डीक हार अन्ततः कोना प्रकट भेल?
क. ओ इमामसँ वजन हटेबाक विनती कएलनि आ एक हजार टका देलनि
ख. ओ विजयी घोषणा कएलनि
ग. ओ शादुलकेँ खरीदलनि
घ. ओ पट्टा बाँटलनि
उत्तर: क. ओ इमामसँ वजन हटेबाक विनती कएलनि आ एक हजार टका देलनि
व्याख्या: मल्ला रेड्डी साँस लेल संघर्ष करैत इमामकेँ शादुल हटेबाक विनती कएलनि; बादमे हार स्वीकारि टका देलनि।

प्रश्न 1062. चाँद एक हजार टकाक उपयोग कोना करबय चाहैत छल?
क. शादुल लेल सोनाक बाली बनबाबय
ख. घरक छप्पर बदलय
ग. मण्डल कार्यालयमे घूस देबय
घ. बीबम्माक साड़ी किनय
उत्तर: क. शादुल लेल सोनाक बाली बनबाबय
व्याख्या: इमाम टका घरखर्चमे लगाबय चाहैत छलाह, मुदा चाँद जिद कऽ शादुल लेल सोनाक बाली बनबौलक।

खण्ड ११२ : विदेह-सदेह ३७ — जङ्गलमे दुविधा, मिश्रण फेकब आ घर-वापसी

प्रश्न 1063. मल्ला रेड्डी प्रसंग याद आबि इमामक वर्तमान निर्णय पर की प्रभाव पड़ल?
क. शादुलक निष्ठा याद आबि बताह-मिश्रण देब आर कठिन भऽ गेल
ख. ओ तुरत्ते मिश्रण खिया देलनि
ग. ओ शादुलकेँ बेचि देलनि
घ. ओ चाँदकेँ भुला देलनि
उत्तर: क. शादुलक निष्ठा याद आबि बताह-मिश्रण देब आर कठिन भऽ गेल
व्याख्या: जे शादुल कखनो इमामक रक्षा लेल प्राण दाँव पर लगौने छल, ओकरा क्षति पहुँचएब इमाम लेल असह्य भेल।

प्रश्न 1064. मिश्रण तैयार भेला पर इमाम पहिने कोन बहाना बना कऽ देरी करैत छथि?
क. शादुल भूखल अछि, कनी खा लेत तखन देब
ख. चाँद अनुमति देत तखन देब
ग. मिश्रण बिकि गेल
घ. गामक लोक देखत
उत्तर: क. शादुल भूखल अछि, कनी खा लेत तखन देब
व्याख्या: इमाम शादुलक अन्तिम दिन पेट भरि खएबाक इच्छा कहि मिश्रण देब टारैत छथि।

प्रश्न 1065. दुपहरमे उठला पर इमाम फेर किएक देरी करैत छथि?
क. सोचैत छथि साँझ धरि देब, एतय हड़बड़ी कोन
ख. मिश्रण हराएल छल
ग. शादुल गायब छल
घ. बीबम्मा ओतय अयलीह
उत्तर: क. सोचैत छथि साँझ धरि देब, एतय हड़बड़ी कोन
व्याख्या: दुपहरो इमाम स्वयंकेँ मनबैत छथि जे अभी जल्दबाजी नहि; शादुलकेँ आर खाइ दियौ।

प्रश्न 1066. सूखल मिश्रणक चारू कात की दृश्य इमामकेँ ओकर विषाक्तता बुझबैत अछि?
क. माछी, कीड़ा आ चुट्टीक झुण्ड
ख. फूलक सुगन्ध
ग. धानक हरियाली
घ. बच्चा सभक खेल
उत्तर: क. माछी, कीड़ा आ चुट्टीक झुण्ड
व्याख्या: मिश्रण सूखि कड़ा भेल आ कीड़ा-माछी ओकरा चारू कात भनभनायल; इमाम ओकर खतरनाक प्रभाव सोचि काँपि उठलाह।

प्रश्न 1067. जङ्गलमे शादुल इमामक प्रति कोन स्नेहिल व्यवहार देखबैत अछि?
क. माछी-मच्छड़ पकड़ि इमामक मुँह-कपार लगसँ हटबैत
ख. ओकरा छोड़ि भागैत
ग. ओकरा काटय लगैत
घ. ओकर बटुआ लऽ जाइत
उत्तर: क. माछी-मच्छड़ पकड़ि इमामक मुँह-कपार लगसँ हटबैत
व्याख्या: शादुल इमामसँ सटल रहैत अछि आ माछी पकड़ि जैसे ओकर रक्षा करैत अछि, जे करुणा बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1068. घरमे बीबम्मा चाँदकेँ मिश्रणक प्रभावबारे कोन उदाहरण देलनि?
क. मामा द्वारा एकटा कुकुरकेँ देल मिश्रणसँ ओ बताह भऽ घर छोड़ि भागल
ख. भालु राजा बनि गेल
ग. गाय अधिक दूध देलक
घ. धान सोना भेल
उत्तर: क. मामा द्वारा एकटा कुकुरकेँ देल मिश्रणसँ ओ बताह भऽ घर छोड़ि भागल
व्याख्या: बीबम्मा कहैत छथि जे एहन मिश्रण पहिने कुकुरकेँ बताह कऽ घर छोड़ि जाए बाध्य कएने छल।

प्रश्न 1069. चाँदक वास्तविक भय की छल?
क. इमाम फेर शादुलकेँ घर वापस अनताह
ख. मिश्रण बहुत महँग भेल
ग. पानी नहि बरसत
घ. गाममे मेला नहि लागत
उत्तर: क. इमाम फेर शादुलकेँ घर वापस अनताह
व्याख्या: चाँदकेँ डर अछि जे पिताक करुणा जीतत आ शादुल फेर घरमे देखाइ पड़त।

प्रश्न 1070. साँझ ढलैत इमाम अन्ततः मिश्रणक संग की कएलनि?
क. दूर फेकि देलनि
ख. शादुलकेँ खिया देलनि
ग. बीबम्माकेँ देलनि
घ. बाजारमे बेचि देलनि
उत्तर: क. दूर फेकि देलनि
व्याख्या: बहुत दुविधाक बाद इमाम मिश्रण फेकि कहैत छथि जे बीस बर्ख भोजन देनिहारकेँ मारि नहि सकैत।

प्रश्न 1071. मिश्रण फेकलाक बादो इमामक समस्या किएक समाप्त नहि भेल?
क. घर लौटब, चाँदक धमकी आ बीबम्माक दबावक भय शेष रहल
ख. पट्टा तुरत्ते सुरक्षित भऽ गेल
ग. शादुल स्वतः जंगलमे बसि गेल
घ. गामक लोक सब भूलि गेल
उत्तर: क. घर लौटब, चाँदक धमकी आ बीबम्माक दबावक भय शेष रहल
व्याख्या: करुणा जीतल, मुदा सामाजिक-परिवारिक संकट ओहिना रहल; घर लौटबाक डर इमामकेँ घेरने रहल।

प्रश्न 1072. घरक रस्ता पकड़ैत इमामक मनमे कोन प्रश्न उठैत अछि?
क. के हुनकर दूध-जकाँ शुद्ध जीवनमे विष घोरलक?
ख. कतेक पृष्ठ पढ़ल गेल?
ग. सोना के खरीदत?
घ. कुन दिन मेला लागत?
उत्तर: क. के हुनकर दूध-जकाँ शुद्ध जीवनमे विष घोरलक?
व्याख्या: इमाम परिवारक बदलल मूल्य, जमीनक लोभ आ टूटल स्नेहक कारण खोजैत छथि।

खण्ड ११३ : विदेह-सदेह ३७ — पल्लेबाटा, पट्टा आ गामक आपत्ति

प्रश्न 1073. चाँद ‘पल्लेबाटा’ बैठकक विषयमे किएक चिन्तित अछि?
क. ओहि बैठकमे अधिकारी रहताह आ जमीन-पट्टाक निर्णय आगू बढ़ि सकैत अछि
ख. ओतय भालुक नाच होयत
ग. ओतय विवाह ठहरत
घ. ओतय सोनाक बाली बिकत
उत्तर: क. ओहि बैठकमे अधिकारी रहताह आ जमीन-पट्टाक निर्णय आगू बढ़ि सकैत अछि
व्याख्या: चाँद सुनैत अछि जे अधिकारीसभ गाम विकासक बैठकमे छथि आ कलेक्टर पट्टा बाँटय आबि सकैत छथि।

प्रश्न 1074. सुंकारीक आगमन कथामे कोन मोड़ आनैत अछि?
क. ओ चाँदकेँ एमआरओ द्वारा खोजल जा रहल अछि कहि पञ्चायत दिस लऽ जाइत अछि
ख. ओ शादुलकेँ दूध दैत अछि
ग. ओ इमामकेँ पुरस्कार दैत अछि
घ. ओ जङ्गलमे हराइ जाइत अछि
उत्तर: क. ओ चाँदकेँ एमआरओ द्वारा खोजल जा रहल अछि कहि पञ्चायत दिस लऽ जाइत अछि
व्याख्या: गामक सहायक सुंकारी चाँदकेँ सूचना दैत अछि जे एमआरओ ओकरा खोजि रहल छथि; जमीन प्रसंग तेज होइत अछि।

प्रश्न 1075. सुंकारी भालुबारे पुछला पर चाँद कोन झूठ दोहरबैत अछि?
क. भालु बहुत पहिने मरि गेल
ख. भालु खेतमे अछि
ग. भालु एमआरओ लग अछि
घ. भालु बेचि देल गेल मुदा काल्हि लौटल
उत्तर: क. भालु बहुत पहिने मरि गेल
व्याख्या: चाँद अधिकारिक संकट टारबाक लेल कहैत अछि जे भालु जीवित नहि, बहुत पहिने मरि गेल।

प्रश्न 1076. बोनहा जानवरक कानूनबारे सुंकारी कोन बात कहैत अछि?
क. जालमे फँसाएब वा मारब जेल जाए वला अपराध थिक
ख. भालु राखलासँ जमीन भेटैत अछि
ग. भालु नचब राज्य पुरस्कार अछि
घ. कानून लागू नहि
उत्तर: क. जालमे फँसाएब वा मारब जेल जाए वला अपराध थिक
व्याख्या: सुंकारी नव/सख्त कानूनी चेतावनी दैत अछि जे वन्य पशु पकड़ब वा मारब दण्डनीय अछि।

प्रश्न 1077. पञ्चायत कार्यालयमे गामक लोक चाँद-इमामक पात्रतापर कोन आपत्ति उठबैत अछि?
क. ओ सभ भालुसँ कमाइत छथि, पूर्ण असहाय/भूमिहीन नहि
ख. ओ सभ बड्ड गरीब छथि
ग. ओ सभक भालु मरि गेल तेँ जमीन चाही
घ. ओ सभ अधिकारी छथि
उत्तर: क. ओ सभ भालुसँ कमाइत छथि, पूर्ण असहाय/भूमिहीन नहि
व्याख्या: लाभक पात्र लोक कहैत छथि जे चाँद-इमाम भालु नचा कऽ कमाइत छथि, तेँ जमीनक पात्रता सन्देहास्पद अछि।

प्रश्न 1078. चाँद अपन बचावमे भालुसँ आजीविका पर कोन तर्क दैत अछि?
क. भालु मासिक दरमाहा नहि दैत; दोसर साधन नहि अछि
ख. भालु बहुत धन दैत अछि
ग. भालु सरकारी कर्मचारी अछि
घ. भालु भूमि-मालिक अछि
उत्तर: क. भालु मासिक दरमाहा नहि दैत; दोसर साधन नहि अछि
व्याख्या: चाँद उलटा प्रश्न करैत अछि—भालु की दरमाहा दैत अछि; गाय रहित तँ भीख किएक माँगतहुँ?

प्रश्न 1079. गामक एक व्यक्ति चाँद पर कोन अतिरिक्त आरोप लगबैत अछि?
क. भालुक खेलक बहाने लोककेँ अजगुत-परेशान करैत आ बटुआ काटैत
ख. ओ विद्वान शिक्षक अछि
ग. ओ खेत जोतैत नहि
घ. ओ केवल दूध बेचैत
उत्तर: क. भालुक खेलक बहाने लोककेँ अजगुत-परेशान करैत आ बटुआ काटैत
व्याख्या: गामक विरोधी लोक चाँदक चरित्र आ पेशागत आचरण पर सेहो चोट करैत छथि।

प्रश्न 1080. सरपञ्च बहस रोकैत कोन भूमिका निभबैत छथि?
क. आपत्ति थमाबैत निर्णयक प्रक्रिया आगू बढ़बैत
ख. चाँदकेँ तुरत्ते निकालैत
ग. भालु खोजय जाइत
घ. पट्टा जरा दैत
उत्तर: क. आपत्ति थमाबैत निर्णयक प्रक्रिया आगू बढ़बैत
व्याख्या: सरपञ्च कहैत छथि जे ई मानुस जवाब दऽ रहल अछि; अतिवाद करब तँ निर्णय असम्भव भऽ जायत।

प्रश्न 1081. पट्टा कोन शर्तक संग देल गेल?
क. जमीन ने बेचब, न हस्तान्तरित करब, न बन्धक राखब; बैंकक सहायतासँ खेती सम्भव
ख. जमीन तुरत्ते बेचब
ग. भालु राखब अनिवार्य
घ. फसल न उगाएब
उत्तर: क. जमीन ने बेचब, न हस्तान्तरित करब, न बन्धक राखब; बैंकक सहायतासँ खेती सम्भव
व्याख्या: पट्टा देबाक शर्त सामाजिक-कल्याण जमीनक संरक्षण लेल छल; बेचब/हस्तांतरण/बन्धक वर्जित छल।

प्रश्न 1082. पट्टा पाबि चाँदक खुशी किएक टिकि नहि पबैत?
क. शादुलक अस्तित्व झूठ खोलि पट्टा छीनि सकैत अछि
ख. बीबम्मा पढ़ि नहि सकैत
ग. पट्टा कागजमे अछि
घ. सरपञ्च हँसल
उत्तर: क. शादुलक अस्तित्व झूठ खोलि पट्टा छीनि सकैत अछि
व्याख्या: पट्टा हाथमे अएलाक बादो चाँदक मन शादुलक संकटमे फँसल रहल; ओकरा अपन उपलब्धि असुरक्षित बुझाइत अछि।

खण्ड ११४ : विदेह-सदेह ३७ — मद्दीमल्ला स्मृति, पुलिसक दबाव आ शादुलकेँ जंगल छोड़बाक प्रस्ताव

प्रश्न 1083. मद्दीमल्ला गामक स्मृति इमामक मनमे किएक उठैत अछि?
क. परिवारक टूटनक जड़ खोजैत ओ पन्द्रह दिन पहिनेक घटनादिस लौटैत छथि
ख. ओतय शादुल जन्मल छल
ग. ओतय पट्टा मिलल छल
घ. ओतय सोनाक बाली हराएल
उत्तर: क. परिवारक टूटनक जड़ खोजैत ओ पन्द्रह दिन पहिनेक घटनादिस लौटैत छथि
व्याख्या: घर लौटैत इमाम सोचैत छथि जे जीवनमे विष के घोरलक; एहि प्रश्नसँ मद्दीमल्लाक हालक घटना स्मृतिमे आबैत अछि।

प्रश्न 1084. कोनो गाममे प्रवेश करबा पहिने इमाम-चाँदकेँ सामान्यतः की करय पड़ैत छल?
क. सरपञ्च/मुखियाकेँ वस्तुसूची, ठहरबाक जानकारी आ अनुमति देब
ख. चुपचाप प्रवेश
ग. मात्र भालुकेँ छोड़ब
घ. जमीन खरीदब
उत्तर: क. सरपञ्च/मुखियाकेँ वस्तुसूची, ठहरबाक जानकारी आ अनुमति देब
व्याख्या: भालु, रस्सा आदि वस्तुसूची लिखि देब, गाममे रहबाक अवधि आ स्थान बतएब आवश्यक छल।

प्रश्न 1085. धानक कुटनी-फटनीक दिन इमाम चाँदकेँ किएक जगबैत छथि?
क. जमा धान साइकिल पर घर छोड़ि आबय लेल
ख. एसआई लग नाच देखय लेल
ग. शादुलकेँ बाली किनय लेल
घ. सरपञ्चक भोज लेल
उत्तर: क. जमा धान साइकिल पर घर छोड़ि आबय लेल
व्याख्या: धान जमा भऽ रहल छल; चोरीसँ बचएबाक लेल इमाम चाँदकेँ बोरा घर पहुँचेबाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 1086. चाँद धान लऽ जएबाक समय इमामकेँ कोन चेतावनी दैत अछि?
क. शादुलकेँ रौदमे नहि घुमाबथि
ख. शादुलकेँ बेचि देथि
ग. सरपञ्चसँ लड़थि
घ. धान नहि माँगथि
उत्तर: क. शादुलकेँ रौदमे नहि घुमाबथि
व्याख्या: चाँद शादुलक देखभालबारे सचेत रहैत छल, जे ओकर पुरान स्नेहक संकेत अछि।

प्रश्न 1087. मद्दीमल्लामे चाँद अपेक्षित समय पर किएक नहि लौटल?
क. एसआई ओकरा बजौने छल आ ओ मण्डल कार्यालय गेल छल
ख. ओ जंगलमे हराइ गेल
ग. ओ धान बेचि भागि गेल
घ. ओ बीमार पड़ि गेल
उत्तर: क. एसआई ओकरा बजौने छल आ ओ मण्डल कार्यालय गेल छल
व्याख्या: फोन पर बीबम्मा कहैत छथि जे एसआई चाँदकेँ बजौने छथि; एहि सँ इमाम पुलिस-दबाव सँ डरि उठैत छथि।

प्रश्न 1088. पूर्व पुलिस अनुभवक कारण इमाम एसआईक नाम सुनि किएक घबरा जाइत छथि?
क. पहिने पुलिस मारि, घूस ऐंठि, भूखल राखि आ अपमानित कऽ चुकल छल
ख. एसआई सदिखन पुरस्कार दैत छल
ग. पुलिस जमीन दैत छल
घ. एसआई शादुलकेँ दूध दैत छल
उत्तर: क. पहिने पुलिस मारि, घूस ऐंठि, भूखल राखि आ अपमानित कऽ चुकल छल
व्याख्या: सारमपल्ली-जेकाँ अनुभवमे पुलिस स्टेशनमे प्रताड़ना, घूस आ भूखक स्मृति इमामकेँ सिहरा दैत अछि।

प्रश्न 1089. चाँद तेसर दिन लौटला पर शादुलक स्वागतक उत्तर कोना देलक?
क. ओ ओकरा अनदेखा कऽ भीतर चलि गेल
ख. ओ गरा लगा लेल
ग. ओ सोनाक बाली पहिरौल
घ. ओ ताबीज किनलक
उत्तर: क. ओ ओकरा अनदेखा कऽ भीतर चलि गेल
व्याख्या: पहिने चाँद शादुलकेँ स्नेहसँ छूबैत छल; एही दिनक उपेक्षा ओकर बदलल मनक स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 1090. चाँद एसआई/अधिकारीक प्रसंगमे इमामकेँ कोन शर्त बतबैत अछि?
क. खेल बन्द करब आ भालुकेँ छोड़ब/दूर करब पड़त
ख. अधिक खेल देखाबय पड़त
ग. भालुकेँ सोनाक बाली पहिराबय पड़त
घ. धान दान करब पड़त
उत्तर: क. खेल बन्द करब आ भालुकेँ छोड़ब/दूर करब पड़त
व्याख्या: जमीनक प्रक्रिया आगू बढ़बाक शर्त बनल जे भालु घरपर नहि देखाइ पड़य आ खेल बन्द हो।

प्रश्न 1091. चाँद अधिकारी सभ लग शादुलबारे कोन झूठ बाजि चुकल अछि?
क. भालु साँसक तकलीफसँ एक सप्ताह पहिने मरि गेल
ख. भालु कलेक्टर लग अछि
ग. भालु जंगलसँ आबि रहल अछि
घ. भालु जमीन जोतैत अछि
उत्तर: क. भालु साँसक तकलीफसँ एक सप्ताह पहिने मरि गेल
व्याख्या: चाँद कहि चुकल जे भालु मरि गेल, आ एहि झूठक खुलासा पट्टा आ कानूनी संकट बनि सकैत अछि।

प्रश्न 1092. राति चाँद इमामकेँ शादुलक बारेमे कोन कठोर प्रस्ताव देलक?
क. शादुलकेँ गामसँ बाहर जंगलमे छोड़ि देब
ख. शादुलकेँ घरमे नचाएब
ग. शादुलकेँ दूध पियाएब
घ. शादुलकेँ गामक चौकपर घुमाएब
उत्तर: क. शादुलकेँ गामसँ बाहर जंगलमे छोड़ि देब
व्याख्या: चाँद स्पष्ट कहैत अछि जे जंगलमे—ओतहि जतयसँ आएल—शादुलकेँ छोड़ि देब, ताकि अधिकारीक सामने झूठ न खुलय।

खण्ड ११५ : विदेह-सदेह ३७ — मण्डल कार्यालय, जमीन-गप्प आ जीविकाक शून्य

प्रश्न 1093. मण्डल कार्यालय जाय लेल चाँदक मुख्य कारण की छल?
क. एमआरओ सूचीसँ नाम कटयसँ पहिने जमीनक मामला पर दबाव देब
ख. शादुलक खेल देखायब
ग. मकइक बोरा बेचब
घ. जड़्गलसँ औखध आनब
उत्तर: क. एमआरओ सूचीसँ नाम कटयसँ पहिने जमीनक मामला पर दबाव देब
व्याख्या: चाँदकेँ डर छल जे देरी भेला पर अधिकारी लाभार्थी सूचीसँ नाम काटि सकैत छथि, तें ओ तुरत्ते मण्डल कार्यालय जाय चाहैत छल।

प्रश्न 1094. चाँदकेँ विदा करैत इमाम ओकरा दुपहर धरि वापस आबय किएक कहलनि?
क. हुनका खरिहान सभमे जाय आ जीविकाक काज करबाक छल
ख. मेला शुरू होयबाक छल
ग. पुलिस स्टेशन बन्द होयबाक छल
घ. जंगलमे वर्षा होयबाक छल
उत्तर: क. हुनका खरिहान सभमे जाय आ जीविकाक काज करबाक छल
व्याख्या: इमामक दैनिक कमाइ खरिहान आ गाम-गाम घूमबाक काम सँ जुड़ल छल; चाँदक अनुपस्थिति ओहि काममे बाधा बनैत छल।

प्रश्न 1095. चाँदक चुपचाप चलि जाएब कथामे कोन परिवर्तन देखबैत अछि?
क. जमीनक लालसा ओकरा पिताक काम आ शादुलक जिम्मेदारीसँ दूर कऽ रहल अछि
ख. ओ शादुलक उपचार लेल उत्साहित अछि
ग. ओ मात्र विश्राम लेल जा रहल अछि
घ. ओ पितासँ पूर्ण सहमत अछि
उत्तर: क. जमीनक लालसा ओकरा पिताक काम आ शादुलक जिम्मेदारीसँ दूर कऽ रहल अछि
व्याख्या: चाँदक मौन स्पष्ट करैत अछि जे मण्डल कार्यालय आब ओकरा लेल पारिवारिक जीविका सँ बेसी जरूरी भऽ गेल अछि।

प्रश्न 1096. ओहि दिन गामक गली-गलीमे कोन विषय सभक चर्चा प्रमुख छल?
क. एमआरओ, कलेक्टर, जमीन बाँटब आ इन्दिराम्मा योजना
ख. केवल शादुलक नाच
ग. केवल विवाह गीत
घ. केवल माछ पकड़बाक उपाय
उत्तर: क. एमआरओ, कलेक्टर, जमीन बाँटब आ इन्दिराम्मा योजना
व्याख्या: गाममे प्रशासन, योजना आ जमीन-पट्टाक चर्चा सभकेँ अपन घेघरीमे लेने छल; लोकक ध्यान मनोरंजन वा ताबीजसँ हटि गेल छल।

प्रश्न 1097. लाभार्थी सूचीबारे लोक कोन तरहक शिकायत करैत छल?
क. सरपञ्च सूची बदलि देलक अथवा भूमिहीन नहि रहल लोककेँ पट्टा भेटल
ख. शादुलक नाम सूचीमे नहि छल
ग. बच्चा सभकेँ मेला नहि भेटल
घ. धानक माप गलत छल
उत्तर: क. सरपञ्च सूची बदलि देलक अथवा भूमिहीन नहि रहल लोककेँ पट्टा भेटल
व्याख्या: गामक अफवाह आ शिकायत प्रशासनिक अन्याय दिस इशारा करैत अछि—ककरो नाम हटल, ककरो अनुचित लाभ भेटल।

प्रश्न 1098. जमीनक हो-हल्ला इमामक दिनक कमाइ पर कोना असर कएलक?
क. कियो खेल नहि देखलक, कियो ताबीज नहि बान्हलक, ओ खाली हाथ लौटलाह
ख. खेलसँ बहुत धन भेटल
ग. सरपञ्च हुनका धान देलक
घ. कलेक्टर तुरत्ते पगार देलक
उत्तर: क. कियो खेल नहि देखलक, कियो ताबीज नहि बान्हलक, ओ खाली हाथ लौटलाह
व्याख्या: लोकक रुचि जमीनमे डूबल छल, तें शादुलक खेल आ इमामक ताबीज-दुनू निष्फल रहल।

प्रश्न 1099. खाली अनाजक बर्तन इमाम लेल की संकेत बनैत अछि?
क. दैनिक श्रमक असफलता आ परिवार-शादुलक भोजन-संकट
ख. नव उत्सवक तैयारी
ग. धानक भरपूर उपज
घ. सरकारी इनाम
उत्तर: क. दैनिक श्रमक असफलता आ परिवार-शादुलक भोजन-संकट
व्याख्या: खाली बर्तन बतबैत अछि जे ओहि दिन इमाम अपन रोजमर्रा कमाइ सेहो नहि जुटा सकलाह।

प्रश्न 1100. राति चूल्हि लग बैसल इमामकेँ अपन भूखसँ बेसी कोन पीड़ा छल?
क. शादुलक खाली पेटक चिन्ता
ख. मण्डल कार्यालयक दूरी
ग. नव कपड़ा नहि होयब
घ. साइकिलक पंक्चर
उत्तर: क. शादुलक खाली पेटक चिन्ता
व्याख्या: इमामक स्नेहक केन्द्र शादुल अछि; अपना भूखल रहला परो ओ शादुल लेल मकइक चिन्ता करैत छथि।

प्रश्न 1101. चाँद घुरि कऽ इमामकेँ एसआईबारे की सूचना देलक?
क. एसआई साहब हुनकासँ मिलय चाहैत छथि आ काल्हि बजौने छथि
ख. एसआई शादुलकेँ पुरस्कार देताह
ग. एसआई गाम छोड़ि चुकल छथि
घ. एसआई मकइ किनय आएताह
उत्तर: क. एसआई साहब हुनकासँ मिलय चाहैत छथि आ काल्हि बजौने छथि
व्याख्या: चाँदक बात प्रशासनिक दबावकेँ घरक भीतर आनैत अछि—एसआईक मुलाकात आब निर्णायक बनि रहल अछि।

प्रश्न 1102. दुनू पिता-पुत्रकेँ एसआई लग जाय पड़ला पर इमामक तुरन्त प्रश्न की छल?
क. तखन शादुलक की होयत?
ख. धानक दाम कतेक होयत?
ग. साइकिल कोना रंगाएब?
घ. कुन गीत गाएब?
उत्तर: क. तखन शादुलक की होयत?
व्याख्या: इमामक प्राथमिक चिन्ता जमीन नहि, शादुलक सुरक्षा छल। यही प्रश्नसँ कथा अगिला नैतिक संकटमे प्रवेश करैत अछि।

खण्ड ११६ : विदेह-सदेह ३७ — जंगलमे छोड़बाक हठ, आत्मघातक धमकी आ अन्तिम भोजन

प्रश्न 1103. चाँद ‘आइ राति शादुलकेँ छोड़ि देब’ कहैत कोन समाधान पेश कएलक?

क. भालुक अस्तित्व हटाकऽ जमीन-पट्टा आ कानूनक संकट टारब

ख. शादुलक आरम्भिक प्रशिक्षण

ग. नव खेलक अभ्यास

घ. मकइक खेती

उत्तर: क. भालुक अस्तित्व हटाकऽ जमीन-पट्टा आ कानूनक संकट टारब

व्याख्या: चाँदक नजरिमे शादुलकेँ हटाएब जमीनक बाट खोलबाक राजनीतिक-कानूनी उपाय बनि गेल छल।

प्रश्न 1104. इमाम जंगलमे छोड़बाक विचार सुनि भीतरसँ किएक टूटि गेलाह?

क. बीस बर्ख धरि अपन आदत बदलल भालु जंगलमे जिबय नहि सकत

ख. शादुल बहुत तेज दौड़त

ग. चाँद गीत गाओत

घ. जमीन तुरत्ते भेटत

उत्तर: क. बीस बर्ख धरि अपन आदत बदलल भालु जंगलमे जिबय नहि सकत

व्याख्या: इमाम बुझैत छथि जे मनुष्य-संगतिमे पलल शादुलकेँ अचानक जंगलमे छोड़ब लगभग मृत्युदण्ड जकाँ अछि।

प्रश्न 1105. चाँद कानून आ एसआईक डरक हवाला दैत की कहैत अछि?

क. भालु रहत तँ जमीन छोड़ू, जान सेहो बचत नहि आ जेल पड़त

ख. भालु रहत तँ पुरस्कार भेटत

ग. एसआई खेल देखय चाहैत छथि

घ. कानून भालु पालब अनिवार्य करैत अछि

उत्तर: क. भालु रहत तँ जमीन छोड़ू, जान सेहो बचत नहि आ जेल पड़त

व्याख्या: चाँदक भय ई अछि जे भालुक उपस्थिति झूठ खोलत आ अधिकारी कठोर दण्ड देताह।

प्रश्न 1106. चाँद बोरा बान्हि साइकिल पर राखबाक बात किएक कहैत अछि?

क. शादुलकेँ बाहर छोड़ि सोझे मण्डल कार्यालय जाएबाक योजना छल

ख. धानक भोज करबाक योजना छल

ग. शादुल लेल नाच-मंच बनएबाक योजना छल

घ. नदी पार करबाक खेल छल

उत्तर: क. शादुलकेँ बाहर छोड़ि सोझे मण्डल कार्यालय जाएबाक योजना छल

व्याख्या: ओ रातिक निर्णयकेँ प्रशासनिक दौड़सँ जोड़ैत अछि—पहिले शादुल हटत, फेर अधिकारीक सामने निवेदन होयत।

प्रश्न 1107. इमाम ‘हम नहि आएब’ कहि कोन नैतिक स्थिति व्यक्त करैत छथि?

क. ओ शादुलकेँ छोड़बाक अन्यायमे सहभागी नहि बनय चाहैत छथि

ख. ओ जमीन अवश्य चाहैत छथि

ग. ओ एसआईसँ मिलय आतुर छथि

घ. ओ चाँदक बात तुरत्ते मानि लेलनि

उत्तर: क. ओ शादुलकेँ छोड़बाक अन्यायमे सहभागी नहि बनय चाहैत छथि

व्याख्या: इमामक प्रतिरोध बतबैत अछि जे हुनका लेल शादुल मात्र जानवर नहि, अपन जीवनक सहचर अछि।

प्रश्न 1108. चाँदक अनुसार अधिकारी सभ पितासँ किएक बजबैत छलाह?

क. पट्टा इमामक नाम पर तैयार होयबाक बात छल

ख. चाँद नाच नहि सकैत छल

ग. बीबम्मा पढ़ि सकैत छलीह

घ. शादुल हस्ताक्षर करैत छल

उत्तर: क. पट्टा इमामक नाम पर तैयार होयबाक बात छल

व्याख्या: चाँद कहैत अछि जे जमीनक कागज पिताक नाम पर बनत, तेँ इमामक उपस्थितिक दबाव बढ़ि गेल।

प्रश्न 1109. बहस चरम पर पहुँचला पर चाँद कोन कठोर दबाव बनबैत अछि?
क. ओ अपन जान लेबाक धमकी दैत अछि
ख. ओ घर छोड़ि तीर्थ जाय कहैत अछि
ग. ओ शादुलकेँ दूध देबाक कहैत अछि
घ. ओ पट्टा फाड़ि देबाक कहैत अछि
उत्तर: क. ओ अपन जान लेबाक धमकी दैत अछि
व्याख्या: चाँदक आत्मघातक धमकी इमामकेँ पुत्र-प्रेम आ शादुल-स्नेहक बीच असह्य चुनावमे धकेलि दैत अछि।

प्रश्न 1110. बीबम्माक फोन/संदेश सुनि चाँदक अधीरता किएक बढ़ि गेल?
क. घर पर सुंकारी आबि गेल छल आ जमीन बाँटबाक खबर सुनायल गेल
ख. शादुल बीमार पड़ल छल
ग. मेला समाप्त भऽ गेल छल
घ. बारिश रुकि गेल छल
उत्तर: क. घर पर सुंकारी आबि गेल छल आ जमीन बाँटबाक खबर सुनायल गेल
व्याख्या: माताक बात जमीन वितरणक तात्कालिकता बढ़बैत अछि, जे चाँदकेँ आरो जिद्दी बना दैत अछि।

प्रश्न 1111. अन्ततः इमाम निर्णय बदलैत चाँदकेँ बजारसँ की आनय कहैत छथि?
क. मकइक भुट्टा ताकि छोड़यसँ पहिने शादुल पेट भरि खा सकय
ख. नव रस्सा बेचबाक लेल
ग. कलेक्टरक फोटो
घ. धान काटबाक हँसिया
उत्तर: क. मकइक भुट्टा ताकि छोड़यसँ पहिने शादुल पेट भरि खा सकय
व्याख्या: इमामक समर्पणमे सेहो करुणा अछि—ओ चाहैत छथि जे वियोगसँ पहिने शादुल भूखल नहि रहय।

प्रश्न 1112. जंगल यात्रासँ पहिने चाँद शादुलक सामान सभक संग की करैत अछि?
क. थारी, पानिक टब, अंकुश, औखध बर्तन, रस्सा आदि फेकि दैत अछि
ख. सभ वस्तु पूजा लेल राखैत अछि
ग. सभ वस्तु बेचि पट्टा किनैत अछि
घ. सभ वस्तु सरकारी कार्यालयमे जमा करैत अछि
उत्तर: क. थारी, पानिक टब, अंकुश, औखध बर्तन, रस्सा आदि फेकि दैत अछि
व्याख्या: सामान फेकब शादुलक अस्तित्वक चिन्ह मिटेबाक, आ पुरान जीवनसँ कठोर विच्छेद करबाक संकेत अछि।

खण्ड ११७ : विदेह-सदेह ३७ — पेद्दम्मा जंगल, विफल त्याग आ शादुलक वापसी

प्रश्न 1113. गामक बाहरी इलाकामे चाँद शादुलकेँ छोड़बाक कहला पर इमाम कोन आपत्ति उठौलनि?
क. एतय कुकुर आ मानुसक खतरा अछि, कनी आर भीतर चलू
ख. एतय बहुत मकइ अछि
ग. एतय अधिकारी सभ बैसल छथि
घ. एतय पानीक टब अछि
उत्तर: क. एतय कुकुर आ मानुसक खतरा अछि, कनी आर भीतर चलू
व्याख्या: इमाम प्रत्येक ठाम शादुलक सुरक्षा सोचैत छथि; बाहरी इलाका ओकरा लेल कुकुर आ पाथरक खतरा छल।

प्रश्न 1114. जंगलक केन्द्रमे सेहो इमाम छोड़बाकेँ किएक टारलनि?
क. ओ पानिक स्रोत लग छोड़बाक तर्क देलनि
ख. ओ कहलनि जे एतय पट्टा नहि भेटत
ग. ओ कहलनि जे एतय ताबीज बिकत
घ. ओ कहलनि जे एतय विवाह अछि
उत्तर: क. ओ पानिक स्रोत लग छोड़बाक तर्क देलनि
व्याख्या: शादुलक रोजक पानिक जरूरत इमाम लेल वास्तविक चिन्ता छल; ओ ओकर प्याससँ मरबाक कल्पना नहि सहि सकैत छलाह।

प्रश्न 1115. पेद्दम्मा जंगलमे प्रवेशक बाद इमाम कोन तेसर भय व्यक्त करैत छथि?
क. एतय मानुसक चहल-पहल अछि, कियो चाम लेल मारि सकैत अछि
ख. एतय जमीनक कागज छिपल अछि
ग. एतय विवाह मंडप अछि
घ. एतय पुलिस चौकी नहि अछि
उत्तर: क. एतय मानुसक चहल-पहल अछि, कियो चाम लेल मारि सकैत अछि
व्याख्या: इमामक तर्क बतबैत अछि जे जंगलो सुरक्षित आश्रय नहि, कारण मानवीय हिंसा ओतय सेहो पहुँचि सकैत अछि।

प्रश्न 1116. आब अपनाकेँ रोकबामे असमर्थ चाँद की करैत अछि?
क. साइकिल फेकि पिताक हाथसँ रस्सा छीनि शादुलकेँ मुक्त करैत अछि
ख. पिताक पैर पकड़ि माफी माँगैत अछि
ग. शादुलकेँ दूध पियबैत अछि
घ. मण्डल कार्यालयसँ लौटि जाइत अछि
उत्तर: क. साइकिल फेकि पिताक हाथसँ रस्सा छीनि शादुलकेँ मुक्त करैत अछि
व्याख्या: चाँद इमामक लगातार टारब देखिकऽ जबरन निर्णय लागू करय लगैत अछि।

प्रश्न 1117. इमाम ‘मुँहक पट्टा हटाउ’ किएक चिचियौलनि?
क. पट्टा रहला पर शादुल भूखे मरि जायत
ख. पट्टा सोनाक छल
ग. पट्टा सरकारी कागज छल
घ. पट्टा खेलक इनाम छल
उत्तर: क. पट्टा रहला पर शादुल भूखे मरि जायत
व्याख्या: इमामक करुणा अन्तिम क्षण धरि जाग्रत अछि; ओ कमसँ कम शादुलकेँ खाय-पिबय योग्य छोड़य चाहैत छथि।

प्रश्न 1118. चाँद द्वारा पाथर फेकलापर शादुलक व्यवहार कोना छल?
क. ओ परिवर्तन नहि बुझि जड़ि ठाढ़ भेल आ चतुराईसँ पाथरसँ बचैत पाछाँ हटल
ख. ओ तुरत्ते हमला कएलक
ग. ओ इमामकेँ छोड़ि चाँद संग चलल
घ. ओ मण्डल कार्यालय भागल
उत्तर: क. ओ परिवर्तन नहि बुझि जड़ि ठाढ़ भेल आ चतुराईसँ पाथरसँ बचैत पाछाँ हटल
व्याख्या: शादुलक भ्रम आ बचबाक चेष्टा देखबैत अछि जे ओ दण्डक कारण नहि बुझि रहल छल।

प्रश्न 1119. शादुलकेँ खदेड़ल देख इमामक भाव-प्रतिक्रिया की रहल?
क. ओ धरती पर ठेहुन टेकि विलाप कएलनि आ कपार पिटलनि
ख. ओ प्रसन्न भऽ नाचलाह
ग. ओ पट्टा पढ़य लगलाह
घ. ओ सरपञ्चकेँ धन्यवाद देलनि
उत्तर: क. ओ धरती पर ठेहुन टेकि विलाप कएलनि आ कपार पिटलनि
व्याख्या: इमामक विलाप मृत-शोक जकाँ अछि; शादुलसँ बिछोह हुनका लेल जीवनक जड़ि टूटबाक समान अछि।

प्रश्न 1120. शादुलकेँ जंगलमे खदेड़ि देला बाद चाँद पिताकेँ कोना घर लऽ गेल?
क. जबरदस्ती साइकिल पर बैसाकऽ
ख. काँवर पर उठा कऽ
ग. बैलगाड़ीसँ
घ. पुलिस जीपसँ
उत्तर: क. जबरदस्ती साइकिल पर बैसाकऽ
व्याख्या: चाँदक व्यवहार पिता पर नियंत्रणक रूपमे देखाइत अछि; इमाम स्वयं चलबाक मनःस्थिति मे नहि छलाह।

प्रश्न 1121. घर पहुँचला पर बीबम्मा आ चाँदक प्राथमिक बातचीत कोन विषय पर रहल?
क. जमीन
ख. शादुलक घाव
ग. इमामक नोर
घ. मकइक दाम
उत्तर: क. जमीन
व्याख्या: बीबम्मा शादुलक बारेमे नहि पुछलनि; माता-पुत्र जमीनक गप्पमे लागल रहलाह।

प्रश्न 1122. अगिला भोर शादुलक वापसी कथाक अर्थ की बनैत अछि?
क. घायल होइतहुँ ओ अपन घर-परिवारक गन्ध आ स्नेह दिस लौटि आयल
ख. ओ पूर्णतः जंगलक स्वामी बनि गेल
ग. ओ गामक सरपञ्च बनल
घ. ओ पट्टा आनय गेल
उत्तर: क. घायल होइतहुँ ओ अपन घर-परिवारक गन्ध आ स्नेह दिस लौटि आयल
व्याख्या: शादुल झाँखुड़-जंगल पार करि घाव सहित लौटैत अछि; ई ओकर गहिर लगाव आ घर खोजबाक शक्ति देखबैत अछि।

खण्ड ११८ : विदेह-सदेह ३७ — बुच्चैया, सरपञ्च आ सूची-बदलावक षड्यन्त्र

प्रश्न 1123. बुच्चैया सरपञ्च लग कोन शिकायत लऽ कऽ अयल?
क. सेवा आ भरोसाक बादो जमीन सूचीसँ ओकर नाम गायब भेल
ख. शादुल ओकर मकइ खा गेल
ग. इमाम ओकरा गीत नहि सिखौलक
घ. एमआरओ ओकरा नाच देखय कहलक
उत्तर: क. सेवा आ भरोसाक बादो जमीन सूचीसँ ओकर नाम गायब भेल
व्याख्या: बुच्चैयाक आरोप छल जे बारम्बार आश्वासनक बादो सूचीमे ओकर अधिकार गायब कऽ देल गेल।

प्रश्न 1124. बुच्चैया मेज पर आधा सेर इप्पाक ताड़ी राखब कथामे की वातावरण बनबैत अछि?
क. लोभ, समझौता आ गामक अनौपचारिक सत्ता-संस्कृति
ख. विद्यालयी परीक्षा
ग. धार्मिक उपवास
घ. बाल-खेल
उत्तर: क. लोभ, समझौता आ गामक अनौपचारिक सत्ता-संस्कृति
व्याख्या: ताड़ी सरपञ्चक लोभकेँ जगबैत अछि आ बातचीतकेँ सत्ता, लाभ आ सौदाबाजीक माहौलमे रखैत अछि।

प्रश्न 1125. सरपञ्चक अनुसार प्रारम्भिक सूचीमे बुच्चैयाक स्थान कतय छल?
क. बारहम स्थान पर
ख. पहिल स्थान पर
ग. सूचीमे कतहुँ नहि
घ. अन्तिम पृष्ठ पर
उत्तर: क. बारहम स्थान पर
व्याख्या: सरपञ्च कहैत अछि जे बुच्चैयाक नाम सूचीमे बारहम पर छल, मुदा बादमे सूची हाथ बदलल।

प्रश्न 1126. सूची आरडीओ कार्यालय पहुँचला बाद सरपञ्चक अनुसार की भेल?
क. इमामक नाम जुड़ि गेल आ बुच्चैयाक नाम निपत्ता भेल
ख. शादुलक नाम जोड़ल गेल
ग. सभ नाम हटि गेल
घ. केवल सरपञ्चक नाम रहि गेल
उत्तर: क. इमामक नाम जुड़ि गेल आ बुच्चैयाक नाम निपत्ता भेल
व्याख्या: सरपञ्च सूची-बदलावक दोष उच्च प्रशासनिक प्रक्रियापर डालैत अछि, मुदा भीतरमे षड्यन्त्रक गन्ध अछि।

प्रश्न 1127. बुच्चैया जमीनक आशामे की आर्थिक जोखिम लेलक?
क. पाँच-छह हजार टका उधार लऽ खर्च कऽ देलक
ख. सोना खरीदलक
ग. भालु किनलक
घ. नदी पार करबाक नाव बनौलक
उत्तर: क. पाँच-छह हजार टका उधार लऽ खर्च कऽ देलक
व्याख्या: जमीनक आश्वासन ओकरा कर्जामे धकेलि देलक; लाभ नहि भेटला पर ओ निराश भेल।

प्रश्न 1128. सरपञ्च सूची-बदलावमे एसआईक भूमिका कोना बतबैत अछि?
क. एसआई अन्तिम क्षणमे इमामक नामक सिफारिश कएलथि
ख. एसआई सूची जरा देलथि
ग. एसआई बुच्चैयाकेँ पट्टा देलथि
घ. एसआई शादुलकेँ जंगल पठौलथि
उत्तर: क. एसआई अन्तिम क्षणमे इमामक नामक सिफारिश कएलथि
व्याख्या: सरपञ्च बुच्चैयाक रोष एसआई आ इमाम दिस मोड़ैत अछि।

प्रश्न 1129. एसआईक प्रभावबारे सरपञ्च कोन बात कहैत अछि?
क. ओ राजनीतिक प्रभाव वला आ नियमक कठोर पालन करय वला ईमानदार अधिकारी मानल जाइत छथि
ख. ओ भालु-नाचक कलाकार छथि
ग. ओ गामक बालक छथि
घ. ओ जमीनक दलाल नहि छथि
उत्तर: क. ओ राजनीतिक प्रभाव वला आ नियमक कठोर पालन करय वला ईमानदार अधिकारी मानल जाइत छथि
व्याख्या: एसआईक ई छवि सरपञ्चक योजना मुश्किल बनबैत अछि; ओकरा सीधे नहि, क्रोधमे उलझा कऽ मोड़बाक सोच अछि।

प्रश्न 1130. सरपञ्चक ‘अपन आंगुरसँ अपनहि आँखि फोड़ब’ वाला उपाय की छल?
क. एसआईकेँ एतेक क्रोधित करब जे ओ अपन सिफारिशक विरुद्ध काज करथि
ख. बुच्चैयाकेँ जंगल पठायब
ग. इमामकेँ पुरस्कार देब
घ. चाँदकेँ पट्टा पढ़ायब
उत्तर: क. एसआईकेँ एतेक क्रोधित करब जे ओ अपन सिफारिशक विरुद्ध काज करथि
व्याख्या: सरपञ्च चाहैत अछि जे एसआई स्वयं इमामक नाम काटय, अर्थात अपन सिफारिशकेँ खुदे नुकसान पहुँचाओय।

प्रश्न 1131. भालु-संबंधी नव कानून षड्यन्त्रमे कोना प्रयोग होयबाक छल?
क. इमाम लग भालु भेटत तँ जानवरक खेल अपराध ठहरि सकैत छल
ख. भालु रहला पर पट्टा स्वतः भेटत
ग. भालु नचब सरकारी अनिवार्यता छल
घ. कानून केवल खेत-बँटवारा पर छल
उत्तर: क. इमाम लग भालु भेटत तँ जानवरक खेल अपराध ठहरि सकैत छल
व्याख्या: भालु रखबा/नचबाकेँ अपराध सिद्ध करि इमामकेँ झूठा वा अपराधी देखेबाक योजना बनाओल गेल।

प्रश्न 1132. बुच्चैयाकेँ अन्तमे कोन काम सौंपल गेल?
क. इमाम आ भालुकेँ संग देखला पर सरपञ्चकेँ खबर देब
ख. शादुलकेँ दूध पियाब
ग. बीबम्माकेँ पट्टा पढ़ाब
घ. मण्डल कार्यालय रंगाब
उत्तर: क. इमाम आ भालुकेँ संग देखला पर सरपञ्चकेँ खबर देब
व्याख्या: षड्यन्त्रक अगिला कड़ी निगरानी छल—बुच्चैया इमामक पीछा करि प्रमाण जुटेबाक दायित्व लेलक।

खण्ड ११९ : विदेह-सदेह ३७ — चाँदनीक डर, झूठी कथा आ घरक बदली हवा

प्रश्न 1133. सरपञ्च-बुच्चैया प्रसंगक बाद कथामे मध्यरात्रिक चाँदनी कोना काम करैत अछि?

क. इमामक गोपनीय भयकेँ उजागर करैत, घर-वापसीकेँ असुरक्षित बनबैत

ख. केवल उत्सवक सजावट बनैत

ग. जमीनक नाप देखबैत

घ. शादुलक नाचक मंच बनैत

उत्तर: क. इमामक गोपनीय भयकेँ उजागर करैत, घर-वापसीकेँ असुरक्षित बनबैत

व्याख्या: उज्जर चाँदनी इमामकेँ छिपबाक अवसर नहि दैत; हुनकर अपराध-बोध आ डर खुलल मैदानमे आ जाइत अछि।

प्रश्न 1134. घर नजदीक अएलापर इमामक मनमे शादुल प्रति आक्रोश किएक जागल?

क. ओ बुझैत छलाह जे शादुलक वापसी घरमे नव हिंसा आनत

ख. शादुल पट्टा पढ़ि लेलक

ग. शादुल मकइ बेचि देलक

घ. शादुल सरपञ्चसँ मिलल

उत्तर: क. ओ बुझैत छलाह जे शादुलक वापसी घरमे नव हिंसा आनत

व्याख्या: इमामक प्रेम डरमे बदलैत अछि; हुनका लगैत अछि जे शादुलक घर लौटब ओकर विनाशक कारण बनि सकैत अछि।

प्रश्न 1135. इमाम मनहि मन कोन पछतावा करैत छथि?

क. शायद जहरबला मिश्रण पहिने खियाय देब ठीक रहित

ख. शादुलकेँ बेसी दूध देब गलती छल

ग. चाँदकेँ कार्यालय भेजब गलती छल

घ. पट्टा पढ़ब गलती छल

उत्तर: क. शायद जहरबला मिश्रण पहिने खियाय देब ठीक रहित

व्याख्या: ई पछतावा स्नेहक नहि, भयक अँधियारा क्षणक परिणाम अछि; इमाम सामने होयबाक हिंसा सँ आतंकित छथि।

प्रश्न 1136. चाँदनीमे शादुल इमामकेँ ककर जकाँ लागैत अछि?

क. सता रहल प्रेत जकाँ

ख. राजाक दूत जकाँ

ग. बालक जकाँ

घ. सरकारी अफसर जकाँ

उत्तर: क. सता रहल प्रेत जकाँ

व्याख्या: प्रेतक छवि इमामक अपराध-बोध, भय आ असहाय क्रोधक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 1137. घर पहुँचला पर बीबम्मा आ चाँदक मौन इमामकेँ किएक डेराबैत अछि?

क. ओ सभ न गारि देलक, न प्रश्न; एहि अनपेक्षित शान्तिसँ खतरा अनबूझ रहल

ख. ओ सभ गीत गाबय लागल

ग. ओ सभ तुरत्ते पट्टा फाड़लक

घ. ओ सभ शादुलकेँ अङ्कवार देलक

उत्तर: क. ओ सभ न गारि देलक, न प्रश्न; एहि अनपेक्षित शान्तिसँ खतरा अनबूझ रहल

व्याख्या: प्रत्यक्ष क्रोध नहि रहब इमाम लेल अधिक भयावह अछि, कारण ओ बुझि नहि पबैत छथि जे भीतर की बदलल।

प्रश्न 1138. चाँद पुछयसँ पहिने इमाम कोन सफाइ देबाक कोशिश करैत छथि?

क. मिश्रण देलहुँ, किछु बेर व्याकुल भेल, फेर बूढ़ भालु पर असर नहि कएलक

ख. मकइ खेतमे राखल अछि

ग. पट्टा हराइ गेल

घ. एसआई हमरा रोकलक

उत्तर: क. मिश्रण देलहुँ, किछु बेर व्याकुल भेल, फेर बूढ़ भालु पर असर नहि कएलक

व्याख्या: इमाम झूठ बाजि परिवारक क्रोध थामय चाहैत छथि, मानो विषक असफलता भालुक उमरक कारण भेल।

प्रश्न 1139. इमाम भयमे परिवारकेँ शान्त करबाक लेल शादुलबारे कोन चरम वचन देलनि?
क. चाहब तँ खाधिमे गाड़ि देब अथवा काटि देब
ख. ओकरा पुरस्कार देब
ग. ओकरा विद्यालय पठाएब
घ. ओकरा पट्टा देब
उत्तर: क. चाहब तँ खाधिमे गाड़ि देब अथवा काटि देब
व्याख्या: इमामक वचन हुनकर वास्तविक इच्छा नहि, बल्कि भय आ पराजयमे कहल असहाय बात अछि।

प्रश्न 1140. चाँदक अनपेक्षित उत्तर की छल?
क. अम्मी, शादुल लेल किछु बालि सिझाउ; सोला नहि, थव्वा चाही
ख. अब्बा, शादुलकेँ तुरत्ते मारू
ग. शादुलकेँ बाहर बाँधू
घ. मकइ सभ बेचि दियौ
उत्तर: क. अम्मी, शादुल लेल किछु बालि सिझाउ; सोला नहि, थव्वा चाही
व्याख्या: चाँदक शान्त आवाज आ भोजनक आदेश इमामकेँ भ्रमित करैत अछि; घरक हवा एकदम बदलल बुझाइत अछि।

प्रश्न 1141. इमाम किएक सोचय लगलाह जे ‘काल्हि धरि घरमे दाना नहि छल, आइ ई कतयसँ अयल’?
क. मकइक उपलब्धता आ परिवारक शान्ति दुनू हुनका अस्वाभाविक लगल
ख. ओ घरक रस्ता बिसरि गेल छलाह
ग. शादुल बोलि उठल छल
घ. पट्टा स्वतः पढ़ाइत छल
उत्तर: क. मकइक उपलब्धता आ परिवारक शान्ति दुनू हुनका अस्वाभाविक लगल
व्याख्या: मकइ, शान्त पत्नी आ शान्त पुत्र—तीनू इमाम लेल एहन संकेत छल जे पाछाँ कोनो नव घटना अवश्य भेल अछि।

प्रश्न 1142. शादुल खाटक नीचाँ बैसि जाइब कथामे कोन भाव जोड़ैत अछि?
क. ओ पुनः घरक सदस्य जकाँ अपन पुरान स्थान खोजैत अछि
ख. ओ हमला करबाक तैयारी करैत अछि
ग. ओ पट्टा छिपबैत अछि
घ. ओ गाम छोड़ि रहल अछि
उत्तर: क. ओ पुनः घरक सदस्य जकाँ अपन पुरान स्थान खोजैत अछि
व्याख्या: शादुल घरमे अपन परिचित कोना खोजैत अछि; एहि सँ ओकर अपनत्व आ असुरक्षा दुनू उभरैत अछि।

खण्ड १२० : विदेह-सदेह ३७ — अस्थायी मेल, सोनाक बाली आ लोभक कहबी

प्रश्न 1143. चाँद ‘पहिने अहाँ खा लिअ’ कहि इमाममे कोन भ्रम पैदा करैत अछि?
क. ओ पुरान स्नेह लौटल जकाँ अनुभव करैत छथि
ख. ओ तुरत्ते मारपीट करब चाहैत अछि
ग. ओ पट्टा फाड़ि रहल अछि
घ. ओ शादुलकेँ बेचि चुकल अछि
उत्तर: क. ओ पुरान स्नेह लौटल जकाँ अनुभव करैत छथि
व्याख्या: चाँदक नम्र वाक्य इमामकेँ क्षणिक आश्वस्त करैत अछि जे घरक संकट शायद टलि गेल।

प्रश्न 1144. इमाम जमीनक निर्णयबारे पुछला पर चाँद की करैत अछि?
क. जवाब टालि दैत अछि
ख. सभ विस्तार तुरत्ते बतबैत अछि
ग. घर छोड़ि दैत अछि
घ. मकइ फेकैत अछि
उत्तर: क. जवाब टालि दैत अछि
व्याख्या: चाँदक टालब देखबैत अछि जे असली बात अखन पूर्ण रूपेँ खुलल नहि अछि।

प्रश्न 1145. चाँद किएक कहैत अछि जे ‘नीक भेल अहाँ ओकरा पाछाँ छोड़ि आएलहुँ’?
क. ओ डेरायल छल जे इमाम कतौ शादुलकेँ विष नहि खिया देने होथि
ख. ओ जंगलक सौन्दर्य देखल
ग. ओ पट्टा हराइ देलक
घ. ओ शादुलसँ खेल चाहैत छल
उत्तर: क. ओ डेरायल छल जे इमाम कतौ शादुलकेँ विष नहि खिया देने होथि
व्याख्या: चाँदक चिन्ता भालुक जीवन नहि, बल्कि योजना आ परिणामक नियंत्रणसँ जुड़ल छल।

प्रश्न 1146. बीबम्मा इमामक प्रशंसा कोन कारणसँ करैत छथि?
क. शादुलकेँ मिश्रण नहि खियौने रहबाक कारण
ख. पट्टा पढ़ि देबाक कारण
ग. ताड़ी आनबाक कारण
घ. बुच्चैयाकेँ हराबय कारण
उत्तर: क. शादुलकेँ मिश्रण नहि खियौने रहबाक कारण
व्याख्या: माता-पुत्र दुनू बुझैत छथि जे शादुल जिवित अछि; एही बात अस्थायी कोमलता आनैत अछि।

प्रश्न 1147. इमाम किएक अनुमान लगौलनि जे अधिकारी सभ धोखेबाज साबित भेलाह?
क. परिवारक अचानक नरमी देखिकऽ हुनका लगल जे जमीनक आशा टूटि गेल
ख. कलेक्टर घर आबि गेलाह
ग. शादुल बोलि देलक
घ. सरपञ्च माफी माँगलक
उत्तर: क. परिवारक अचानक नरमी देखिकऽ हुनका लगल जे जमीनक आशा टूटि गेल
व्याख्या: इमाम परिवारक बदली भाषा केँ ई मानि व्याख्या करैत छथि जे जमीन नहि भेटल, तेँ शादुल फेर प्रिय बनि गेल।

प्रश्न 1148. इमाम ‘जे आगाँ-पाछाँक गप्प पर विचार करैत अछि, वएह वास्तविक मानुस’ कहि चाँदकेँ की बुझबैत छथि?
क. लोभमे हड़बड़ी करब विनाशक अछि
ख. जमीन लेल हिंसा जरूरी अछि
ग. शादुलकेँ भूखल राखू
घ. पट्टा नहि पढ़ू
उत्तर: क. लोभमे हड़बड़ी करब विनाशक अछि
व्याख्या: इमाम चाँदकेँ विवेक, धैर्य आ अपन मौजूदा जीवनक मूल्य बुझएबाक कोशिश करैत छथि।

प्रश्न 1149. ‘सियार ऊँटक ठोरक लालसा’ वाली तुलना कथामे कोन भाव व्यक्त करैत अछि?
क. दूरक लोभमे अपन हाथक चीज गमाएब
ख. भालुक प्रशिक्षण
ग. खेतीक सफलता
घ. साइकिलक गति
उत्तर: क. दूरक लोभमे अपन हाथक चीज गमाएब
व्याख्या: ई कहबी चाँदक जमीन-लोभक आलोचना करैत अछि—अनिश्चित लाभ लेल निश्चित सहारा गमाबय नहि चाही।

प्रश्न 1150. इमाम शादुलकेँ अपन जीवनमे कोना परिभाषित करैत छथि?
क. प्राण, गर्व, सम्मान आ चिन्ह
ख. केवल बोझ
ग. सरकारी कागज
घ. मात्र जंगलक पशु
उत्तर: क. प्राण, गर्व, सम्मान आ चिन्ह
व्याख्या: इमामक भाषण शादुलकेँ आर्थिक साधनसँ ऊपर उठा कऽ अस्मिता आ आत्मसम्मानक केन्द्र बनबैत अछि।

प्रश्न 1151. इमाम सोनाक बालीक बात किएक उठबैत छथि?
क. शादुलक कानक गहना गायब देखि चाँदक गुप्त काज पर प्रश्न करैत छथि
ख. ओ बाली बेचय चाहैत छथि
ग. ओ शादुलकेँ सजाबय लगैत छथि
घ. ओ बीबम्माक बाली खोजैत छथि
उत्तर: क. शादुलक कानक गहना गायब देखि चाँदक गुप्त काज पर प्रश्न करैत छथि
व्याख्या: सोनाक छल्ला शादुलक पहचानक चिन्ह छल; ओकर गायब होयब असली सौदाक संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 1152. चाँद सोनाक बाली बेचबाक कारण की बतबैत अछि?
क. जमीनक सिफारिश आ एमआरओ कार्यालयमे खर्च लेल टका चाही छल
ख. शादुल लेल दूध किनबाक लेल
ग. बुच्चैयाकेँ उपहार देबाक लेल
घ. नव थारी किनबाक लेल
उत्तर: क. जमीनक सिफारिश आ एमआरओ कार्यालयमे खर्च लेल टका चाही छल
व्याख्या: चाँद कहैत अछि जे भीखक कमाइ पर्याप्त नहि छल, तेँ जमीनक दौड़मे शादुलक बाली बेचि देलक।

खण्ड १२१ : विदेह-सदेह ३७ — पट्टा, निशान मिटेबाक सलाह आ विषक थारी

प्रश्न 1153. चाँदक अनुसार एसआई साहब पट्टा दिलेबाक बदला कोन चेतावनी देने छलाह?
क. भालु कहियो नहि देखाय पड़य
ख. शादुलक नाच रोज होय
ग. इमाम घर नहि आबथि
घ. बीबम्मा पट्टा नहि देखथि
उत्तर: क. भालु कहियो नहि देखाय पड़य
व्याख्या: पट्टा पाबय लेल भालुक अस्तित्व छिपायब मुख्य शर्त बनि गेल छल।

प्रश्न 1154. सरपञ्च चाँदकेँ भालुक निशान मिटेबाबारे की सलाह देलक?
क. घरमे भालुक उपस्थितिक कोनो चिन्ह नहि रहय, सामान फेकू आ बाली हटाउ
ख. भालुकेँ रंगि दियौ
ग. शादुलकेँ नचाउ
घ. पट्टा शादुलक कानमे बाँधू
उत्तर: क. घरमे भालुक उपस्थितिक कोनो चिन्ह नहि रहय, सामान फेकू आ बाली हटाउ
व्याख्या: सरपञ्च अधिकारीक विश्वास लेल दृश्य प्रमाण हटेबाक सलाह दैत अछि—सामान आ बाली दुनू जोखिम मानल गेल।

प्रश्न 1155. चाँद कहैत अछि जे बाली दूरसँ देखाइत अछि; एकर कथात्मक अर्थ की अछि?
क. शादुलक पहिचानक छोट चिन्ह सेहो जमीन-योजनाक झूठ खोलि सकैत अछि
ख. बाली बहुत महँग छल
ग. बाली गीतक ताल छल
घ. बाली खेत नापबाक औजार छल
उत्तर: क. शादुलक पहिचानक छोट चिन्ह सेहो जमीन-योजनाक झूठ खोलि सकैत अछि
व्याख्या: गहना मात्र सजावट नहि, शादुलक अस्तित्वक सार्वजनिक साक्ष्य बनि गेल छल।

प्रश्न 1156. चाँद पट्टा भेटबाक बात कहि भीतर किएक दौड़ल?
क. कागज लय कऽ पिताकेँ देखेबाक लेल
ख. शादुलकेँ भगेबाक लेल
ग. ताड़ी आनबाक लेल
घ. बुच्चैयाकेँ बजाबय लेल
उत्तर: क. कागज लय कऽ पिताकेँ देखेबाक लेल
व्याख्या: पट्टा हाथमे आनब चाँदक तर्क केँ प्रमाणित करबाक क्षण छल।

प्रश्न 1157. इमाम पट्टा पढ़ि नहि सकैत होइतो ओकरा देखि किएक भावुक भेलाह?
क. ओ बुझि गेलाह जे कागज हुनकरे नाम पर अछि
ख. ओ बुझलाह जे ई शादुलक जन्मपत्र अछि
ग. ओकरा लगल ई अदालतक समन अछि
घ. ओ समझलाह ई गीतक पन्ना अछि
उत्तर: क. ओ बुझि गेलाह जे कागज हुनकरे नाम पर अछि
व्याख्या: निरक्षरता के बावजूद इमाम पट्टाक सामाजिक वजन बुझैत छथि; कागज हुनकर नामक अधिकार जकाँ लागैत अछि।

प्रश्न 1158. बीबम्मा पट्टा आ बालिक सुगन्धक बीच कोना देखाइत छथि?
क. भावुक होइत नोर पोंछैत, फेर बालि तैयार होयब देखि चेतैत
ख. पूर्ण क्रोधमे घर छोड़ैत
ग. सरपञ्चकेँ गारि दैत
घ. शादुलसँ डरि भागैत
उत्तर: क. भावुक होइत नोर पोंछैत, फेर बालि तैयार होयब देखि चेतैत
व्याख्या: बीबम्माक भावुकता आ घरेलू कामक सतर्कता एक संग देखाइत अछि; ओ पट्टा आ शादुल-दुनू संकटक बीच छथि।

प्रश्न 1159. शादुल पहिल मुट्ठी बालि कोना खायल?
क. दू घोंटमे चट कऽ गेल
ख. छूओ नहि कएलक
ग. खाधिमे दबा देलक
घ. चाँदकेँ देलक
उत्तर: क. दू घोंटमे चट कऽ गेल
व्याख्या: भूखल शादुलक लोभसँ खाएब दृश्य केँ करुण बनबैत अछि, कारण परिवार विषक निर्णय लग अछि।

प्रश्न 1160. चाँद 'जँ अहाँ नहि मारि सकैत छी, तँ हम मारब' कहि की स्पष्ट करैत अछि?
क. ओ शादुलक जीवन समाप्त करबाक निर्णयमे कठोर अछि
ख. ओ शादुलकेँ बचाबय चाहैत अछि
ग. ओ पट्टा लौटाय चाहैत अछि
घ. ओ घर छोड़य तैयार अछि
उत्तर: क. ओ शादुलक जीवन समाप्त करबाक निर्णयमे कठोर अछि
व्याख्या: चाँदक कठोरता पिता पर दबाव बढ़बैत अछि; निर्णय करुणा नहि, जमीनक सुरक्षा सँ संचालित अछि।

प्रश्न 1161. इमाम पहिने आधासँ बेसी बालि अलग दऽ देबामे कोन मनोवृत्ति देखबैत छथि?
क. विष देबासँ पहिने शादुलकेँ किछु सुख/भोजन देबाक करुणा
ख. ओ विष बचाबय चाहैत छथि
ग. ओ शादुलकेँ भूखल राखय चाहैत छथि
घ. ओ चाँदकेँ धोखा देबय चाहैत छथि मात्र
उत्तर: क. विष देबासँ पहिने शादुलकेँ किछु सुख/भोजन देबाक करुणा
व्याख्या: इमामक हाथ काँपैत अछि; ओ हत्या-निर्णयक बीचो शादुलक भूख आ भरोसाक कदर करैत छथि।

प्रश्न 1162. साइनाइड मिलबैत काल बीबम्मा आ चाँदक प्रतिक्रियामे कोन अन्तर देखाइत अछि?
क. बीबम्मा दोसर दिस देखैत छथि, चाँद ध्यानसँ जाँचैत अछि
ख. दुनू नाचय लगैत अछि
ग. दुनू सोइ जाइत अछि
घ. दुनू पट्टा पढ़ैत अछि
उत्तर: क. बीबम्मा दोसर दिस देखैत छथि, चाँद ध्यानसँ जाँचैत अछि
व्याख्या: बीबम्माक नोर आ नजरि फेरब करुण अवशेष देखबैत अछि, जखन चाँद परिणाम सुनिश्चित करय चाहैत अछि।

खण्ड १२२ : विदेह-सदेह ३७ — अन्तिम बहस, जंगलक अन्तिम यात्रा आ अनलौटल इमाम

प्रश्न 1163. चाँद विषक मात्रा पर जोर दैत किएक कहैत अछि जे पूरा मात्रा मिला दियौ?
क. ओ डरैत अछि जे कम मात्रासँ शादुल नहि मरत
ख. ओ स्वाद बढ़बय चाहैत अछि
ग. ओ मकइ बचाबय चाहैत अछि
घ. ओ बीबम्मार्कें खिआबय चाहैत अछि
उत्तर: क. ओ डरैत अछि जे कम मात्रासँ शादुल नहि मरत
व्याख्या: चाँद परिणामक अनिश्चितता नहि चाहैत; ओकर चिन्ता शादुलक पीड़ा नहि, मृत्यु सुनिश्चित करब अछि।

प्रश्न 1164. इमाम ‘हम अहाँ जकाँ सहजहि ओकरा नहि बिसरि सकैत छी’ कहि की व्यक्त करैत छथि?
क. शादुलसँ बीस बर्खक स्नेह आ ऋणक बन्धन
ख. चाँदसँ घृणा
ग. पट्टासँ खुशी
घ. सरपञ्चसँ मित्रता
उत्तर: क. शादुलसँ बीस बर्खक स्नेह आ ऋणक बन्धन
व्याख्या: इमाम शादुलकेँ परिवार पालक बेजुबान साथी मानैत छथि; ओकरा मारब हुनका आत्मघातक नैतिक चोट जकाँ लागैत अछि।

प्रश्न 1165. इमाम शादुलक प्राकृतिक मृत्यु आ स्वयं हत्या करबाक बीच कोन अन्तर रखैत छथि?
क. रोगसँ मरित तँ दुख सहि लितहुँ, मुदा स्वयं मारब असह्य अछि
ख. दुनू एकदम समान अछि
ग. रोगसँ मृत्यु अधिक अपराध अछि
घ. स्वयं हत्या उत्सव थिक
उत्तर: क. रोगसँ मरित तँ दुख सहि लितहुँ, मुदा स्वयं मारब असह्य अछि
व्याख्या: हुनका लेल मृत्यु मात्र घटना नहि; हत्या कर्ता बनबाक अपराध-बोध अधिक असह्य अछि।

प्रश्न 1166. चाँद इमामक भावुक तर्क बीचमे काटि किएक टोकैत अछि?
क. ओ केवल स्पष्ट उत्तर चाहैत अछि—विष इमाम देताह कि ओ स्वयं देत
ख. ओ कविता सुनय चाहैत अछि
ग. ओ पट्टा पढ़ि रहल अछि
घ. ओ शादुलकेँ बचाबय चाहैत अछि
उत्तर: क. ओ केवल स्पष्ट उत्तर चाहैत अछि—विष इमाम देताह कि ओ स्वयं देत
व्याख्या: चाँद भावुकता स्वीकार नहि करैत; ओकर आग्रह तुरत्ते क्रियान्वयन पर अछि।

प्रश्न 1167. चाँदक ऊँच आवाज सुनि शादुलक प्रतिक्रिया की भेल?
क. ओ आँखि लाल कऽ गुरड़ल
ख. ओ सूतल रहल
ग. ओ पट्टा खा गेल
घ. ओ गाम छोड़ि गेल
उत्तर: क. ओ आँखि लाल कऽ गुरड़ल
व्याख्या: शादुल अपन परिचित इमाम पर चाँदक आक्रामक स्वर सहि नहि सकैत, तेँ रक्षात्मक क्रोध देखबैत अछि।

प्रश्न 1168. इमाम विष घरमे नहि देबाक पक्षमे कोन व्यावहारिक तर्क देलनि?
क. पीड़ामे शादुल चिकड़त तँ गामक लोक भालुक बात जानि जायत
ख. घरमे पानि नहि अछि
ग. चाँदनी कम अछि
घ. मकइ ठण्डा अछि
उत्तर: क. पीड़ामे शादुल चिकड़त तँ गामक लोक भालुक बात जानि जायत
व्याख्या: इमाम करुणा आ भय दुनूकेँ जोड़ैत छथि—घरमे मृत्यु भालुक अस्तित्व सार्वजनिक कऽ सकैत अछि।

प्रश्न 1169. बीबम्मा अन्तिम बहसमे कोन पक्ष लेतीह?
क. इमामकेँ भालु जंगल लय जाय देबाक
ख. चाँदकेँ तुरन्ते मारबाक
ग. पट्टा फाड़बाक
घ. बुच्चैयाकेँ घर बजाबक
उत्तर: क. इमामकेँ भालु जंगल लय जाय देबाक
व्याख्या: बीबम्मा नोर रोकैत इमामक जंगल-प्रस्तावक समर्थन करैत छथि, मानो घरक हिंसा टरि सकय।

प्रश्न 1170. चाँद जंगल जायबाक अनुमति कोन शर्त पर दैत अछि?
क. शादुल मरि जाय तखने इमाम वापस आबथि
ख. इमाम तुरन्ते पट्टा लौटा देथि
ग. बीबम्मा साथ जाथि
घ. बुच्चैया पहरा देथि
उत्तर: क. शादुल मरि जाय तखने इमाम वापस आबथि
व्याख्या: चाँद जंगल-प्रस्तावोकेँ नियंत्रणमे राखैत अछि; शादुल जिवित रहि गेल तँ योजना फेल।

प्रश्न 1171. अन्तिम यात्रामे इमामक हाथमे की-की अछि?
क. एक हाथमे मकइक बालि, दोसर हाथमे शादुलक रस्सा
ख. पट्टा आ कलम
ग. ताड़ी आ गिलास
घ. थारी आ पानिक टब मात्र
उत्तर: क. एक हाथमे मकइक बालि, दोसर हाथमे शादुलक रस्सा
व्याख्या: ई दृश्य जीवन आ मृत्यु, भोजन आ बन्धन—दुनू प्रतीक एक संग रखैत अछि।

प्रश्न 1172. ‘आधा घण्टा’क वचनक बाद कथाक अन्तिम संकेत की अछि?
क. एक घण्टा, दिन, राति बीति गेल, तखनो इमाम वापस नहि अएलाह
ख. इमाम तुरन्ते लौटि अएलाह
ग. शादुल अकेले पट्टा लय अयल
घ. चाँद मण्डल कार्यालय नहि गेल
उत्तर: क. एक घण्टा, दिन, राति बीति गेल, तखनो इमाम वापस नहि अएलाह
व्याख्या: इमामक न लौटब कथा कैँ खुलल, करुण आ अस्थिर अन्त दैत अछि—ओ शादुलक संग कतय गेलाह, ई पाठक पर छोड़ल गेल।

खण्ड १२३ : विदेह-सदेह ३७ — शब्दावली: भोजन, लोक-औखधि आ पशु-सन्दर्भ

प्रश्न 1173. शब्दावलीमे ‘उप्पिडी’ ककरा कहल गेल अछि?
क. टूटल चाउर वा सूजी आ दालिसँ बनल मसालेदार व्यञ्जन
ख. वन्य भालुक पंजा
ग. जमीनक माप
घ. सरकारी बैठक
उत्तर: क. टूटल चाउर वा सूजी आ दालिसँ बनल मसालेदार व्यञ्जन
व्याख्या: उप्पिडी भोजन-संस्कृतिक शब्द अछि; ई सामान्यतः व्रत-दिनक मसालेदार पकवानक रूपमे बुझाओल गेल।

प्रश्न 1174. ‘लुङ्गी’ शब्दक अर्थ की देल गेल अछि?
क. डाँरक चारू कात लपेटल जाए वला पुरुष-वस्त्र
ख. भालुक दाँत
ग. धानक मापक
घ. वनस्पति औखधि
उत्तर: क. डाँरक चारू कात लपेटल जाए वला पुरुष-वस्त्र
व्याख्या: लुङ्गी देह पर लपेटल जाए वला वस्त्र अछि, जे ग्रामीण पुरुष-पोशाकक संदर्भमे अबैत अछि।

प्रश्न 1175. ‘पक्कीर’ शब्द ककर अपभ्रंश रूप कहल गेल?
क. फकीर वा साधु
ख. कलेक्टर
ग. भालु
घ. किसान
उत्तर: क. फकीर वा साधु
व्याख्या: पक्कीर फकीर/साधु शब्दक स्थानीय-अपभ्रंश रूप अछि, जे इमामक समुदाय-संदर्भ सँ जुड़ैत अछि।

प्रश्न 1176. शब्दावलीक अनुसार उपन्यासमे प्रयुक्त भालु मूलतः कोन प्रकारक अछि?
क. सुस्त भालु/लैबिएट भालु, दक्षिण एशियामे भेटय वला
ख. ध्रुवीय भालु
ग. समुद्री भालु
घ. खिलौना भालु
उत्तर: क. सुस्त भालु/लैबिएट भालु, दक्षिण एशियामे भेटय वला
व्याख्या: भालुक जाति ‘सुस्त भालु’ रूपमे चिन्हाओल गेल अछि, जकरा नाचैत भालु परम्परामे प्रयोग कएल जाइत छल।

प्रश्न 1177. सुस्त भालुकेँ नाचैत भालु लेल उपयुक्त चिन्हक रूपमे कोन बात सभ बताओल गेल?
क. पातर शरीर, हाँसूक आकारक नह आ झबरा कोट
ख. सिङ आ खुर
ग. लम्बा चोंच
घ. पंख
उत्तर: क. पातर शरीर, हाँसूक आकारक नह आ झबरा कोट
व्याख्या: शब्दावली भालुक शारीरिक विशेषता बतबैत अछि, जे ओकर लोक-प्रदर्शनक इतिहाससँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 1178. ‘जाजी’ शब्द ककरा कहल गेल?
क. जायफल
ख. महुआ फूल
ग. मकइक बालि
घ. सोनाक बाली
उत्तर: क. जायफल
व्याख्या: जाजी जायफल अछि, जकर पारम्परिक औषधीय उपयोगक उल्लेख बीबम्माक उपचार-संदर्भमे भेल।

प्रश्न 1179. जाजी/जायफल पारम्परिक चिकित्सा मे मुख्यतः कोन विकार सभसँ जोड़ल गेल?
क. स्नायु आ पाचन तन्त्र सम्बन्धी विकार
ख. भूमि-मापन
ग. कानूनी अपराध
घ. ताड़ी बनब
उत्तर: क. स्नायु आ पाचन तन्त्र सम्बन्धी विकार
व्याख्या: शब्दावली जायफल आ तेलक प्रयोग नस/पाचन-संबंधित उपचारसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1180. ‘शनि’बारे शब्दावलीमे कोन मान्यता देल गेल?
क. यमक भाय आ ज्योतिषमे अनिष्ट संकेत
ख. मकइक देवता
ग. भालुक रक्षक
घ. जमीनक अधिकारी
उत्तर: क. यमक भाय आ ज्योतिषमे अनिष्ट संकेत
व्याख्या: शनि केँ मृत्युदेव यमक भाय आ ग्रह-अनिष्टक संकेतक रूपमे लोक-मान्यता सहित व्याख्यायित कएल गेल।

प्रश्न 1181. ‘गुड़-पिटल पाथर’ मुहावराक अर्थ ककर तुलना लेल देल गेल?
क. मूर्ख आ सुस्त व्यक्तिसँ
ख. तेज धावकसँ
ग. सोनाक व्यापारीसँ
घ. ईमानदार अधिकारीसँ
उत्तर: क. मूर्ख आ सुस्त व्यक्तिसँ
व्याख्या: गुड़-पिटल पाथरक कम-ध्वनि/चिपकन छविसँ सुस्ती आ मूर्खताक व्यङ्ग्य बनाओल गेल अछि।

प्रश्न 1182. ‘कठेरा’ शब्दावलीमे कोन प्रकारक वस्तु अछि?
क. काँटबला झाँखुड़ जकरा भालु रोइयाँ फँसबाक डर सँ डराइत अछि
ख. माटिक थारी
ग. ताबीजक धागा
घ. सरकारी पट्टा
उत्तर: क. काँटबला झाँखुड़ जकरा भालु रोइयाँ फँसबाक डर सँ डराइत अछि
व्याख्या: कठेरा वनक काँटदार झाँखुड़ अछि; भालुक झबरा रोइयाँ ओहिमे फँसि सकैत अछि।

खण्ड १२४ : विदेह-सदेह ३७ — शब्दावली-परिशिष्ट: पल्लेबाटा, माप आ कलन्दर जीवन

प्रश्न 1183. ‘इप्पा’ शब्दक अर्थ की देल गेल?
क. महुआक फूल, जकरासँ ताड़ी बनैत अछि आ जे भालु सभकेँ प्रिय होइत अछि
ख. सोनाक छल्ला
ग. जमीनक कागज
घ. भालुक थारी
उत्तर: क. महुआक फूल, जकरासँ ताड़ी बनैत अछि आ जे भालु सभकेँ प्रिय होइत अछि
व्याख्या: इप्पा महुआ फूलक स्थानीय सन्दर्भ अछि; ताड़ी आ भालुक भोजन-दुनू प्रसंगसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 1184. भालुक ध्वनिबारे शब्दावली कोन बात स्पष्ट करैत अछि?
क. भालु अलग-अलग स्थितिमे बहुत तरहक ध्वनि निकालैत अछि
ख. भालु पूर्ण मूक होइत अछि
ग. भालु केवल मनुष्यक भाषा बजैत अछि
घ. भालु केवल गीत गबैत अछि
उत्तर: क. भालु अलग-अलग स्थितिमे बहुत तरहक ध्वनि निकालैत अछि
व्याख्या: भालुक आवाजक विस्तृत सीमा—डर, क्रोध, पीड़ा, बच्चा-संबंध आदि—कथा मे शादुलक प्रतिक्रियाकेँ बुझबैत अछि।

प्रश्न 1185. ‘पल्लेबाटा’ शब्द ककरा कहल गेल?
क. सरकारी योजना जकर माध्यमे लोक अपन समस्या निर्वाचित प्रतिनिधि सोझाँ राखि सकैत छल
ख. भालुक नाचक ताल
ग. मकइक मापक
घ. जंगलक झाँखुड़
उत्तर: क. सरकारी योजना जकर माध्यमे लोक अपन समस्या निर्वाचित प्रतिनिधि सोझाँ राखि सकैत छल
व्याख्या: पल्लेबाटा प्रशासन-जनसंपर्क योजना अछि; उपन्यासक जमीन-पट्टा प्रसंग एहि पृष्ठभूमिसँ जुड़ैत अछि।

प्रश्न 1186. ‘सोला’, ‘थव्वा’, ‘माना’, ‘कुंचा’ आदि शब्द कथामे ककर संकेत छथि?
क. तेलंगाना क्षेत्रक पारम्परिक ओजन-मापक
ख. भालुक नहक प्रकार
ग. पुलिस पदनाम
घ. नाटकक पात्र
उत्तर: क. तेलंगाना क्षेत्रक पारम्परिक ओजन-मापक
व्याख्या: ई शब्द स्थानीय मापक-व्यवस्था देखबैत अछि; बालि/धान/अनाजक प्रसंगक सांस्कृतिक धरातल बनैत अछि।

प्रश्न 1187. ‘गुंटा’ शब्दावलीमे कोन अर्थमे देल गेल?
क. भूमिक वर्ग-माप
ख. विषक प्रकार
ग. भालुक आवाज
घ. कपड़ाक नाम
उत्तर: क. भूमिक वर्ग-माप
व्याख्या: गुंटा जमीनक माप अछि, जे पट्टा आ भूमिहीनताक बहस बुझबाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 1188. सुस्त भालुक घर-वापसी प्रवृत्तिबारे शब्दावली कोन संकेत दैत अछि?
क. दूर लऽ जाएल गेलो पर ओ पहिने देखल स्थान दिस लौटबाक असाधारण क्षमता राखि सकैत अछि
ख. ओ कहियो घर नहि खोजि सकैत
ग. ओ केवल जलमे रहैत
घ. ओ गन्ध छोड़ैत नहि
उत्तर: क. दूर लऽ जाएल गेलो पर ओ पहिने देखल स्थान दिस लौटबाक असाधारण क्षमता राखि सकैत अछि
व्याख्या: ई सूचना शादुलक जंगलसँ घर लौटि अएबाक प्रसंगकेँ जैविक-सांस्कृतिक आधार दैत अछि।

प्रश्न 1189. परिशिष्टक अनुसार कलन्दर समुदाय पारम्परिक रूपसँ कोन काजसँ जुड़ल छल?
क. भालु-बानर नचाबय, ताबीज-मन्त्र बेचब, घुमन्तु प्रदर्शन आ आन छोटे व्यवसाय
ख. केवल राजकाज
ग. केवल विश्वविद्यालय अध्यापन
घ. केवल रेल चलाबय
उत्तर: क. भालु-बानर नचाबय, ताबीज-मन्त्र बेचब, घुमन्तु प्रदर्शन आ आन छोटे व्यवसाय
व्याख्या: कलन्दर जीवन बहुआयामी घुमन्तु जीविका छल—प्रदर्शन, ताबीज, व्यापार, पशुपालन, मौसमी मजदूरी आदि।

प्रश्न 1190. कलन्दर सभक प्रवास खेतीक मौसमसँ कोना जुड़ैत छल?
क. कटनी-कुटनीक समय खेत-मजूरी वा भालु नचा कऽ पुरस्कार पाबय लेल गामक बाहरे बसैत छलाह
ख. ओ सदिखन नगरमे अफसर रहैत छलाह
ग. ओ खेतीक समय गाम छोड़ि देत छलाह
घ. ओ केवल समुद्र किनार रहैत छलाह
उत्तर: क. कटनी-कुटनीक समय खेत-मजूरी वा भालु नचा कऽ पुरस्कार पाबय लेल गामक बाहरे बसैत छलाह
व्याख्या: परिशिष्ट घुमन्तु जीवनकेँ कृषि-मौसमसँ जोड़ैत अछि; अस्थायी तम्बू आ मौसमी कमाइ सामान्य छल।

प्रश्न 1191. सरकारी जाति-श्रेणीकरणक अस्थिरता कलन्दर सभ लेल कोन समस्या बनैत अछि?
क. ओबीसी/एसटी आदि मे असंगत सूचीकरणसँ जमीन, रोजगार आ भोजनक अधिकारसँ वञ्चना
ख. सबकेँ तुरत्ते अधिक जमीन
ग. कोनो सामाजिक समस्या नहि
घ. सिर्फ खेलक नियम
उत्तर: क. ओबीसी/एसटी आदि मे असंगत सूचीकरणसँ जमीन, रोजगार आ भोजनक अधिकारसँ वञ्चना
व्याख्या: पहिचानक अस्पष्टता सामाजिक-आर्थिक अधिकारकेँ कमजोर करैत अछि आ समुदायकेँ सीमान्त पर धकेलैत अछि।

प्रश्न 1192. परिशिष्ट पारम्परिक पशु-आधारित पेशा अवैध/अव्यावहारिक भेलाक बाद कलन्दर सभक स्थिति कोना देखबैत अछि?
क. पुनर्वासक किछु बाट खुलल, मुदा भेदभाव, अधिकार-वञ्चना आ सांस्कृतिक विलुप्तिक खतरा बनल रहल
ख. सभ समस्या समाप्त भऽ गेल
ग. सभ कलन्दर राजा बनि गेल
घ. कानूनक कोनो असर नहि भेल
उत्तर: क. पुनर्वासक किछु बाट खुलल, मुदा भेदभाव, अधिकार-वञ्चना आ सांस्कृतिक विलुप्तिक खतरा बनल रहल
व्याख्या: नव व्यवसाय आ शिक्षाक प्रयास भेलो पर समुदायक असुरक्षा, पहचानक संकट आ भेदभाव समाप्त नहि भेल।

खण्ड १२५ : विदेह-सदेह ३७ — तेलुगु अनूदित गद्य: के. पुरुषोत्तम आ कोलकलुरी इनोच

प्रश्न 1193. ‘कौआ’ आ ‘कारी मसि’ क मूल तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद के केने छथि?

क. के. पुरुषोत्तम

ख. पी. जयलक्ष्मी

ग. रहमान राही

घ. भिखारी ठाकुर

उत्तर: क. के. पुरुषोत्तम

व्याख्या: एहि खण्डमे कोलकलुरी इनोच आ विनोदिनी केर कथा सभक तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवादक रूपमे के. पुरुषोत्तमक नाम देल गेल अछि।

प्रश्न 1194. के. पुरुषोत्तमक अकादमिक सम्बन्ध कोन संस्थानसँ बताओल गेल अछि?

क. काकतीय विश्वविद्यालय, वारंगल

ख. निजाम कॉलेज, हैदराबाद

ग. आदिकवि नन्नय्या विश्वविद्यालय

घ. महाराजा कॉलेज, विजयनगरम

उत्तर: क. काकतीय विश्वविद्यालय, वारंगल

व्याख्या: परिचयमे कहल गेल अछि जे के. पुरुषोत्तम काकतीय विश्वविद्यालय, वारंगलमे अंग्रेजी साहित्य पढ़बैत छथि।

प्रश्न 1195. के. पुरुषोत्तमक रुचि अध्यापन आ शोधक अतिरिक्त कोन काजमे अछि?

क. तेलुगु साहित्यक अंग्रेजी अनुवाद

ख. चित्रकला मात्र

ग. ज्योतिष गणना

घ. नाट्य अभिनय

उत्तर: क. तेलुगु साहित्यक अंग्रेजी अनुवाद

व्याख्या: हुनकर परिचय तेलुगु साहित्यकेँ अंग्रेजीमे अनुवाद करबाक विशेष रुचि पर जोर दैत अछि।

प्रश्न 1196. के. पुरुषोत्तम कोन दलित तेलुगु उपन्यास सभक अनुवाद कएने छथि?

क. ‘कक्क’ आ ‘मल्लेमोग्गल गोदुदु’

ख. ‘जिगरी’ आ ‘दादी’

ग. ‘नारायणराव’ आ ‘कन्यादान’

घ. ‘लज्जा’ आ ‘ओडलाला’

उत्तर: क. ‘कक्क’ आ ‘मल्लेमोग्गल गोदुदु’

व्याख्या: परिचयमे ‘कक्क’ आ ‘मल्लेमोग्गल गोदुदु’ केर अनुवादक उल्लेख अछि।

प्रश्न 1197. कोलकलुरी इनोचक जन्म कोन जिलामे बताओल गेल अछि?

क. गुंटूर जिला

ख. करीमनगर जिला

ग. वारंगल जिला

घ. सहरसा जिला

उत्तर: क. गुंटूर जिला

व्याख्या: कोलकलुरी इनोचक जन्म गुंटूर जिलामे भेल कहल गेल अछि।

प्रश्न 1198. प्रोफेसर इनोचक लेखन-परिसर कोना प्रस्तुत भेल अछि?

क. कविता, कथा, उपन्यास, नाटक आ आलोचना धरि विस्तृत

ख. केवल गणित-पाठ्यपुस्तक

ग. केवल यात्रा-वृत्तान्त

घ. केवल सरकारी प्रतिवेदन

उत्तर: क. कविता, कथा, उपन्यास, नाटक आ आलोचना धरि विस्तृत

व्याख्या: परिचय हुनका बहुआयामी सर्जक रूपमे देखबैत अछि—कविता संग्रह, कथा संग्रह, उपन्यास, नाटक आ आलोचना।

प्रश्न 1199. इनोचक लेखन पर शोधक कोन प्रमाण देल गेल अछि?
क. पाँच पीएचडी आ आठ एम.फिल. काज भऽ चुकल
ख. कोनो शोध नहि भेल
ग. केवल एक लेख छपल
घ. मात्र मौखिक चर्चा भेल
उत्तर: क. पाँच पीएचडी आ आठ एम.फिल. काज भऽ चुकल
व्याख्या: परिचयमे स्पष्ट अछि जे हुनकर लेखन पर पाँच गोटे पीएचडी आ आठ गोटे एम.फिल. उपाधि प्राप्त भेल अछि।

प्रश्न 1200. इनोच कोन-कोन सम्मानसँ जोड़ल गेल छथि?
क. राज्य आ केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार
ख. केवल खेल पुरस्कार
ग. केवल सैन्य पदक
घ. केवल चलचित्र पुरस्कार
उत्तर: क. राज्य आ केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार
व्याख्या: परिचयमे साहित्य अकादमी स्तरक सम्मान आ राज्य सरकारक सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 1201. इनोच कोन विश्वविद्यालयक कुलपति रहि चुकल छथि?
क. पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद
ख. काकतीय विश्वविद्यालय
ग. उस्मानिया विश्वविद्यालय
घ. दिल्ली विश्वविद्यालय
उत्तर: क. पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद
व्याख्या: हुनका पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबादक कुलपति रूपमे सेवा देबाक बात लिखल अछि।

प्रश्न 1202. ‘कौआ’ कथाक मूल तेलुगु शीर्षकक अर्थ की बताओल गेल अछि?
क. काकी, अर्थात् कौआ
ख. जिगरी, अर्थात् मित्र
ग. क्रोरत्वम, अर्थात् क्रूरता
घ. पाडु देवालयम, अर्थात् ध्वस्त मन्दिर
उत्तर: क. काकी, अर्थात् कौआ
व्याख्या: कथा शीर्षकक संग कोष्ठकमे मूल तेलुगु ‘काकी’ माने कौआ कहि स्पष्ट कएल गेल अछि।

खण्ड १२६ : विदेह-सदेह ३७ — ‘कौआ’: अव्वा, कौआक झुण्ड आ आरोपक वातावरण

प्रश्न 1203. ‘कौआ’ कथाक आरम्भमे एकचारीमे कियैक तरहक घरेलू त्रिकोण अछि?
क. बुढ़िया, बेटी आ नाती
ख. केवल पिता-पुत्र
ग. मन्दिरक पुजारी आ राजा
घ. डॉक्टर आ रोगी
उत्तर: क. बुढ़िया, बेटी आ नाती
व्याख्या: कथा एकचारीमे अव्वा, हुनकर बेटी आ नातीक उपस्थिति सँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 1204. छात आ गाछ सभ पर बैसल कौआक काँव-काँव केना चित्रित अछि?
क. जेना कियो डाँटि रहल हो अथवा शोक-आक्रोश प्रकट करि रहल हो
ख. मधुर लोरी जकाँ
ग. पूजा-घण्टी जकाँ
घ. नदीक कलकल जकाँ
उत्तर: क. जेना कियो डाँटि रहल हो अथवा शोक-आक्रोश प्रकट करि रहल हो
व्याख्या: कौआ सभक तेज काँव-काँव डाँटि रहल स्वर जकाँ आउर शोकाकुल आरोपक माहौल बनबैत अछि।

प्रश्न 1205. अव्वा कौआ सभक तामसक पहिल अर्थ की लगबैत छथि?
क. ओकर कुटुम कानि रहल अछि
ख. ओ सभ वर्षा मागि रहल अछि
ग. ओ सभ अनाज बेचि रहल अछि
घ. ओ सभ विवाह-गीत गाबि रहल अछि
उत्तर: क. ओकर कुटुम कानि रहल अछि
व्याख्या: अव्वा नातीक जिज्ञासापर कहैत छथि जे कौआ सभक कुटुम कानि रहल अछि।

प्रश्न 1206. जखन नाती बाहर देखय चाहैत अछि, अव्वा ओकरा किएक रोकैत छथि?
क. कौआ सभ लड़य लेल आयल अछि
ख. बाहर मेला लागल अछि
ग. भोजन पकैत अछि
घ. नदीमे नाव अछि
उत्तर: क. कौआ सभ लड़य लेल आयल अछि
व्याख्या: अव्वा बुझैत छथि जे कौआ सभ आक्रामक अछि, तें नातीकेँ बाहर जाएबासँ रोकैत छथि।

प्रश्न 1207. अव्वा बाहर निकलिते कौआ सभ की करैत अछि?
क. दू-चारि कौआ माथ पर जोर सँ ठोक मारैत अछि
ख. ओ सभ फूल चढ़बैत अछि
ग. ओ सभ चुप भऽ जाइत अछि
घ. ओ सभ भात खुआबैत अछि
उत्तर: क. दू-चारि कौआ माथ पर जोर सँ ठोक मारैत अछि
व्याख्या: बाहर निकलिते कौआ अव्वाक माथ पर हमला करैत अछि आ चाम उधेरि देबाक स्थिति बनैत अछि।

प्रश्न 1208. एकचारीक सोझाँ कौआक कोन-कोन अवशेष बान्हल देखाइत अछि?
क. मूड़ी, गोड़, नह आ पाँखि
ख. केवल अण्डा
ग. केवल चोंच
घ. केवल दाना
उत्तर: क. मूड़ी, गोड़, नह आ पाँखि
व्याख्या: कथा बतबैत अछि जे कौआक मूड़ी, गोड़, नह आ पाँखि तोड़ि-मचोड़ि एक ठाम बान्हल छल।

प्रश्न 1209. अव्वा ई काज ककर होयबाक घोषणा करैत छथि?
क. बण्डोडुक
ख. नातीक
ग. सरपञ्चक
घ. चरवाहाक
उत्तर: क. बण्डोडुक
व्याख्या: अव्वा तुरत्ते निष्कर्ष निकालैत छथि जे ई निश्चय बण्डोडुक काज हएत।

प्रश्न 1210. कथा मे कौआक भीड़ घरक चारू कात कोना पसरैत अछि?
क. घर, गाछ, देवाल आ बिजलीक तार पर
ख. केवल पोखरिक बीच
ग. केवल रसोईघरमे
घ. केवल मन्दिरक गर्भगृहमे
उत्तर: क. घर, गाछ, देवाल आ बिजलीक तार पर
व्याख्या: कौआ सभ घर, गाछ, देवाल आ तार सभ पर बैसि लाश पर पहरा देबाक भाव बनबैत अछि।

प्रश्न 1211. अव्वाक भय मात्र कौआक शोरसँ नहि, बल्कि कोन बातसँ अछि?
क. भविष्यक अशुभ समय आ अपशकुनसँ
ख. टीवीक आवाजसँ
ग. चूल्हिक धूआँसँ
घ. साइकिलक ब्रेकसँ
उत्तर: क. भविष्यक अशुभ समय आ अपशकुनसँ
व्याख्या: अव्वा कोलाहलसँ कम, अपशकुन आ आगाँक संकटसँ बेसी डराइत छथि।

प्रश्न 1212. कथा मे कौआक झुण्डक शक्ति आ मादिग सभक प्रयासक परिणाम की अछि?
क. मादिग सभ हटाबय चाहैत अछि मुदा कौआ फेर वापस आबि जाइत अछि
ख. कौआ तुरत्ते भागि जाइत अछि
ग. कौआ भोजन पका दैत अछि
घ. कौआ मन्दिर बना दैत अछि
उत्तर: क. मादिग सभ हटाबय चाहैत अछि मुदा कौआ फेर वापस आबि जाइत अछि
व्याख्या: पड़ोसी आ टोलक लोक कौआ भगाबय चाहैत अछि, मुदा झुण्ड बढ़ैत जाएत अछि आ वापस आबि जाइत अछि।

खण्ड १२७ : विदेह-सदेह ३७ — ‘कौआ’: बण्डोडु, भूख आ सामाजिक बहिष्कार

प्रश्न 1213. बण्डोडु कोन जातीय उप-समूहसँ सम्बद्ध बताओल गेल अछि?
क. मादिगक एगारह उप-जातिमे सँ दशम उप-जाति
ख. ब्राह्मण पुजारी वंश
ग. कलन्दर परिवार
घ. राजपूत सैनिक समूह
उत्तर: क. मादिगक एगारह उप-जातिमे सँ दशम उप-जाति
व्याख्या: कथामे बण्डोडुकेँ मादिग जातिक एगारह उप-जातिमे सँ दशम उप-जातिसँ सम्बन्धित कहल गेल अछि।

प्रश्न 1214. बण्डोडुक जीविका कोना चलैत अछि?
क. मात्र मादिग सभसँ रातिमे भीख मांगि
ख. सरकारी वेतनसँ
ग. मन्दिरक दान-पेटीसँ
घ. खेतीक विशाल जमीनसँ
उत्तर: क. मात्र मादिग सभसँ रातिमे भीख मांगि
व्याख्या: ओ रातिमे खाली हाथ आबि ‘अम्मा, भोजन दिअ’ कहि मादिग घरसँ भोजन मागैत अछि।

प्रश्न 1215. बण्डोडु भोजन लेबाक लेल कोन भाँति ‘कटोरा’ बनबैत अछि?
क. अपन तरहत्थीमे कटोरा जकाँ आकार बना कऽ
ख. सोनाक थारी लऽ कऽ
ग. माटिक घड़ा लऽ कऽ
घ. कागजक प्लेट लऽ कऽ
उत्तर: क. अपन तरहत्थीमे कटोरा जकाँ आकार बना कऽ
व्याख्या: बण्डोडु कोनो पात्र नहि लबैत; ओकरा ओकर तरहत्थीमे बनेल कटोरा-आकारमे भोजन देबय पड़ैत।

प्रश्न 1216. यदि बण्डोडुकेँ भोजन नहि देल जाइत, तखन ओ प्रत्यक्ष गारि नहि, कोन उपाय करैत?
क. कौआ सभकेँ उकसा दैत
ख. घरमे आगि लगा दैत
ग. सरकारी अर्जी लिखैत
घ. गीत गाबि चलि जाइत
उत्तर: क. कौआ सभकेँ उकसा दैत
व्याख्या: कथाक भय ई अछि जे बण्डोडु चुप रहैत अछि मुदा कौआ सभकेँ प्रतिशोधक प्रतीक बना दैत अछि।

प्रश्न 1217. बण्डोडु कौआ मारबाक लेल कोन असामान्य कौशल रखैत अछि?
क. गोली/मार्बल आ आंगुरक जोर सँ निशाना लगबैत अछि
ख. धनुष-बाण चलबैत अछि
ग. जाल बुनैत अछि
घ. मंत्र पढ़ि कौआ सुताबैत अछि
उत्तर: क. गोली/मार्बल आ आंगुरक जोर सँ निशाना लगबैत अछि
व्याख्या: ओ गोलीकेँ तर्जनीक आगाँ राखि आंगुर पाछू घीचि निशाना मारैत, आ कौआ नीचाँ खसि पड़ैत।

प्रश्न 1218. अव्वाक घरमे बण्डोडुकेँ भोजन नहि भेटबाक वास्तविक कारण की छल?
क. घरमे भोजन वा गिड देबाक सामर्थ्य नहि छल, चूल्हि नै जरल छल
ख. ओ सभ धनवान भऽ कऽ कंजूस छल
ग. ओ सभ कौआ खा गेल छल
घ. ओ सभ भोज करि थाकल छल
उत्तर: क. घरमे भोजन वा गिड देबाक सामर्थ्य नहि छल, चूल्हि नै जरल छल
व्याख्या: परिवार निर्धनता आ खाली बर्तनक कारण भोजन नहि दऽ सकैत छल; ई जानबूझि अपमान नहि छल।

प्रश्न 1219. बण्डोडु कौआक पाँखि-पुड़िया बाँस पर लटका कऽ की संकेत देलक?
क. भोजन नहि देबाक अपराधक सार्वजनिक चिह्न
ख. विवाहक तोरण
ग. मन्दिरक ध्वजा
घ. बच्चाक खेलौना
उत्तर: क. भोजन नहि देबाक अपराधक सार्वजनिक चिह्न
व्याख्या: पाँखि-पुड़िया घर पर आरोप आ सामाजिक दण्डक दृश्यमान निशान बनैत अछि।

प्रश्न 1220. बण्डोडुक बोकरल कौआ-मांसक दुर्गन्ध कथामे कोन प्रभाव छोड़ैत अछि?
क. अपमान, गन्दगी आ अशुभ दण्डक अनुभूति
ख. पूजाक सुगन्ध
ग. फूलक पराग
घ. हॉर्लिक्सक मिठास
उत्तर: क. अपमान, गन्दगी आ अशुभ दण्डक अनुभूति
व्याख्या: कौआ-मांसक सड़ल गन्ध दण्डकेँ शरीरगत, असह्य आ अपमानजनक बना दैत अछि।

प्रश्न 1221. कथा अन्तमे कौआ सभक फेर कहियो नहि बैसब की बनि जाइत अछि?
क. मुक्ति आ श्राप दुनू, सामाजिक बहिष्कारक चिह्न
ख. घरक सम्मान-वृद्धि
ग. सरकारी योजना
घ. मेला-उत्सव
उत्तर: क. मुक्ति आ श्राप दुनू, सामाजिक बहिष्कारक चिह्न
व्याख्या: कौआ नहि बैसत आ बण्डोडु नहि मागत—ई राहत जकाँ दिखैत अछि, मुदा वस्तुतः अपमानजनक बहिष्कार अछि।

प्रश्न 1222. 'कौआ' कथाक मूल सामाजिक प्रश्न की अछि?
क. निर्धनता, जाति-आधारित निर्भरता आ अपशकुनक दण्ड
ख. केवल पक्षी-विज्ञान
ग. मोटर-वाहन दुर्घटना
घ. राजमहलक षड्यन्त्र
उत्तर: क. निर्धनता, जाति-आधारित निर्भरता आ अपशकुनक दण्ड
व्याख्या: कथा कौआक प्रसंगक माध्यमे दलित समाजक भीतरक पदानुक्रम, भूख, भय आ बहिष्कार देखबैत अछि।

खण्ड १२८ : विदेह-सदेह ३७ — ‘कारी मसि’: श्रिया, स्नेह आ निष्कपट बाल-दुनिया

प्रश्न 1223. ‘कारी मसि’ कथाक लेखिका विनोदिनी अपन अनुभवक स्रोत कोना चिन्हैत छथि?

क. एकटा दलित ईसाईक रूपमे अपन अनुभव लिखब

ख. केवल राजदरबारक इतिहास लिखब

ग. केवल पर्वतारोहणक संस्मरण लिखब

घ. केवल शास्त्रीय गणित लिखब

उत्तर: क. एकटा दलित ईसाईक रूपमे अपन अनुभव लिखब

व्याख्या: विनोदिनी मानैत छथि जे दलित ईसाई अनुभव लिखला पर हुनका लेखक होयबाक अनुभूति होइत अछि।

प्रश्न 1224. कथा आरम्भमे फ्लैट सभक तहखाना कोना चित्रित अछि?

क. फूलक खिलल फुलवारी आ बच्चा सभक कोलाहलसँ भरल

ख. ध्वस्त मन्दिरक अन्हार

ग. रिक्त सरकारी कार्यालय

घ. बाढ़िक घाट

उत्तर: क. फूलक खिलल फुलवारी आ बच्चा सभक कोलाहलसँ भरल

व्याख्या: तहखाना बच्चा सभक खेल, हँसी आ गति सँ फूलल फुलवारी सन जीवंत देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 1225. श्रिया पहिल बेर कथावाचकक दरवाजा पर किएक आयल?

क. पानि पीबाक लेल

ख. जाति पुछबाक लेल

ग. चाबी देबाक लेल

घ. भिक्षा मागबाक लेल

उत्तर: क. पानि पीबाक लेल

व्याख्या: ओ खेलैत-खेलैत आयल आ विनयपूर्वक पानि माँगल; कथावाचक ओकर स्नेहिल आग्रहसँ प्रभावित भेल।

प्रश्न 1226. श्रिया दोसर बेर आ किएक आयल?

क. बाथरूम प्रयोग करबाक लेल

ख. टीवी बन्द करबाक लेल

ग. पुस्तक बेचबाक लेल

घ. भोजन फेकबाक लेल

उत्तर: क. बाथरूम प्रयोग करबाक लेल

व्याख्या: ओ कनी आंगुर आँखि लग राखि शौचक संकेत दैत बाथरूमक अनुमति माँगलक।

प्रश्न 1227. श्रिया अपन परिचयमे कौन बात सभ कहैत अछि?

क. नाम श्रिया, चौथा ‘बी’, गाँधी नगर, २०२ फ्लैट

ख. नाम अव्वा, नदी किनार घर

ग. नाम बण्डोडु, रातिक भिखारी

घ. नाम विजया, पाँचम कक्षा

उत्तर: क. नाम श्रिया, चौथा ‘बी’, गाँधी नगर, २०२ फ्लैट

व्याख्या: ओ अपन नाम, कक्षा, रहबाक ठाम आ छुट्टीमे एतय आबयक बात तेज-धार गप्पक शैलीमे कहैत अछि।

प्रश्न 1228. कथावाचक श्रियाकेँ हॉर्लिक्स किएक बनबैत अछि?

क. श्रिया कहैत अछि जे घर पहुँचला पर ओकर माय पहिने हॉर्लिक्स दैत छथि

ख. श्रिया बीमार अछि

ग. हॉर्लिक्स पूजा-प्रसाद अछि

घ. कथावाचक अतिथि भगाबय चाहैत छथि

उत्तर: क. श्रिया कहैत अछि जे घर पहुँचला पर ओकर माय पहिने हॉर्लिक्स दैत छथि

व्याख्या: श्रिया अपन नियमित दिनचर्या बतबैत अछि; कथावाचक स्नेहपूर्वक ओकरा लेल हॉर्लिक्स तैयार करैत छथि।

प्रश्न 1229. श्रिया घरक काजमे भाग लेबाक आग्रह किएक करैत अछि?
क. ओ चुपचाप बैसल रहनाय पसिन्न नहि करैत आ मायक मदति करैत रहैत अछि
ख. ओ दण्ड देबय चाहैत अछि
ग. ओ कियो सँ नहि बाजैत
घ. ओ घर छोड़य चाहैत अछि
उत्तर: क. ओ चुपचाप बैसल रहनाय पसिन्न नहि करैत आ मायक मदति करैत रहैत अछि
व्याख्या: श्रिया सक्रिय, गप्पी आ सहायता-प्रिय बच्ची अछि; ओ किछु-ने-किछु करबाक माँग करैत अछि।

प्रश्न 1230. सूअर-छौआक दुर्घटना कथा श्रियाक कोन गुण देखबैत अछि?
क. जानवरक पीड़ा प्रति गहिर करुणा
ख. हिंसक खेलक रुचि
ग. धनक लोभ
घ. जातीय घमण्ड
उत्तर: क. जानवरक पीड़ा प्रति गहिर करुणा
व्याख्या: ओ ऑटो रुकवाकऽ घायल छौआकेँ क्लिनिक लऽ गेल, जे ओकर संवेदनशीलता देखबैत अछि।

प्रश्न 1231. श्रिया डायरीमे रंगक कोन नियम बतबैत अछि?
क. पसिन्न बात नील मसिमे, नापसिन्न बात कारी मसिमे
ख. सँख्याक हिसाब लाल रंगमे
ग. केवल पेंसिलमे सभ
घ. केवल सोना रंगमे नाम
उत्तर: क. पसिन्न बात नील मसिमे, नापसिन्न बात कारी मसिमे
व्याख्या: कथाक शीर्षकक बीज एतय अछि—श्रिया प्रिय अनुभव नील मसि आ अप्रिय अनुभव कारी मसिमे लिखैत अछि।

प्रश्न 1232. कथावाचक आ श्रियाक आरम्भिक सम्बन्ध कोना बनैत अछि?
क. तुरन्त स्नेह, खेल, भोजन, गप्प आ चुम्बनक आत्मीयता
ख. मात्र डर आ चुप्पी
ग. कानूनी बहस
घ. व्यापारिक सौदा
उत्तर: क. तुरन्त स्नेह, खेल, भोजन, गप्प आ चुम्बनक आत्मीयता
व्याख्या: आरम्भमे बच्चीक निष्कपटता कथावाचकक हृदय खोलि दैत अछि; दुनू बीच घरेलू अपनत्व बनैत अछि।

खण्ड १२९ : विदेह-सदेह ३७ — ‘कारी मसि’: जाति-प्रश्न, टूटल आत्मीयता आ शीर्षकक अर्थ

प्रश्न 1233. भोजनक समय कोन वस्तु श्रियाक जातिगत जिज्ञासाकेँ जगबैत अछि?
क. कथावाचकक थारीमे चिकन देखब
ख. हॉर्लिक्सक गिलास
ग. रुमालक सिंघारा
घ. टीवीक गीत
उत्तर: क. कथावाचकक थारीमे चिकन देखब
व्याख्या: कथावाचक चिकन खाइत छथि, तखन श्रिया चकित भऽ पूछय लगैत अछि जे ओ ब्राह्मण छथि कि नहि।

प्रश्न 1234. श्रिया जाति पुछैत-पुछैत कोन क्रममे अनुमान लगबैत अछि?
क. ब्राह्मण, चौधरी, रेड्डी, फेर ‘के छी?’
ख. कवि, पुजारी, डॉक्टर
ग. कलन्दर, सरपञ्च, एसआई
घ. राजा, सैनिक, व्यापारी
उत्तर: क. ब्राह्मण, चौधरी, रेड्डी, फेर ‘के छी?’
व्याख्या: बच्चीक प्रश्न जाति-सीढ़ीमे चलैत अछि; उत्तर नहि भेटला पर ओ अन्ततः ‘तखन अहाँ के छी?’ पुछैत अछि।

प्रश्न 1235. कथावाचक अपन पहिचान कोना बतबैत छथि?
क. ‘हम एकटा दलित छी’ आ बादमे ईसाई
ख. ‘हम ब्राह्मण पुजारी छी’
ग. ‘हम सरपञ्च छी’
घ. ‘हम बण्डोडु छी’
उत्तर: क. ‘हम एकटा दलित छी’ आ बादमे ईसाई
व्याख्या: कथावाचक सरलता सँ अपन दलित आ ईसाई पहिचान कहैत छथि।

प्रश्न 1236. श्रिया ‘हरिजन, महिमा जकाँ?’ पुछैत की प्रकट करैत अछि?
क. घर-परिवारसँ सीखनिहार जातिगत भाषा आ दूरी
ख. पूर्ण सामाजिक समझदारी
ग. अकादमिक शोध
घ. कविता-रस
उत्तर: क. घर-परिवारसँ सीखनिहार जातिगत भाषा आ दूरी
व्याख्या: बच्चीक भाषा ओकर निजी अनुभव नहि, समाज-परिवारसँ आयल जातिगत वर्गीकरण देखबैत अछि।

प्रश्न 1237. कथावाचकक हृदयमे काँट गड़बाक उपमा कखन अबैत अछि?
क. श्रिया जाति-प्रश्नकेँ ‘हरिजन’ शब्द धरि लऽ जाइत अछि
ख. पानि खतम भऽ जाइत अछि
ग. कुकुर भूकैत अछि
घ. चाह ठंढा होइत अछि
उत्तर: क. श्रिया जाति-प्रश्नकेँ ‘हरिजन’ शब्द धरि लऽ जाइत अछि
व्याख्या: छठम कक्षाक काँट स्मृति वर्तमान अपमानसँ जुड़ि हृदयमे दोबारा पैघ भऽ गड़ैत अछि।

प्रश्न 1238. श्रिया कथावाचकक दलित पहिचान सुनलाक बाद कोन परिवर्तन देखबैत अछि?
क. मुँहक रंग निपत्ता, घृणा आ दूरी
ख. आरो बेसी स्नेह
ग. नाच-गान
घ. दीर्घ आलिंगन
उत्तर: क. मुँहक रंग निपत्ता, घृणा आ दूरी
व्याख्या: आरम्भिक मुस्कान आ अपनत्व अनचोक्के धूसरता, घृणा आ पाछू हटबाक भावमे बदलि जाइत अछि।

प्रश्न 1239. कथावाचक ‘हम सखी छी’ कहि की बचाबय चाहैत छथि?
क. बाल-स्नेहकेँ जाति-सवालसँ ऊपर राखय चाहैत छथि
ख. भोजन लुकाबय चाहैत छथि
ग. जाति-प्रश्न बढ़ाबय चाहैत छथि
घ. घर बेचय चाहैत छथि
उत्तर: क. बाल-स्नेहकेँ जाति-सवालसँ ऊपर राखय चाहैत छथि
व्याख्या: ओ चाहैत छथि जे दिनभरक आत्मीयता जातिगत नामसँ टूटय नहि, मुदा बच्ची सामाजिक पूर्वाग्रह लऽ कऽ खसि पड़ैत अछि।

प्रश्न 1240. श्रिया बाहर किएक भागि जाइत अछि?
क. दादी पुकारि रहल छथि कहि बहाना बना कऽ
ख. नदीमे खेलय
ग. बण्डोडुकेँ भोजन देबय
घ. मन्दिरमे पूजा करय
उत्तर: क. दादी पुकारि रहल छथि कहि बहाना बना कऽ
व्याख्या: ओ स्पष्ट दूरी बना रहल अछि; ‘दादी पुकारि रहली’ बहाना बनि जातिगत घृणासँ निकलबाक बाट होइत अछि।

प्रश्न 1241. अन्तिम दृश्यमे टिकली सभ कैटरपिलरमे बदलबाक बिम्ब की देखबैत अछि?
क. निष्कपट सौन्दर्यक विकृत, पीड़ादायक अनुभवमे बदलि जाएब
ख. साधारण मौसम-बदलाव
ग. सफल पूजा
घ. मेला-प्रसन्नता
उत्तर: क. निष्कपट सौन्दर्यक विकृत, पीड़ादायक अनुभवमे बदलि जाएब
व्याख्या: शुरुआती तितली-जैसन बच्चा-दुनिया जाति-घृणाक चोटसँ रेंगत कैटरपिलरक पीड़ामय बिम्ब बनि जाइत अछि।

प्रश्न 1242. ‘कारी मसि’ शीर्षकक तीख अर्थ की अछि?
क. पूर्वाग्रहक कारण प्रिय अनुभव अप्रिय कारी लिखोटमे बदलि सकैत अछि
ख. मसि बनाबयक वैज्ञानिक विधि
ग. रसोईक मसाला
घ. टीवी कार्यक्रम
उत्तर: क. पूर्वाग्रहक कारण प्रिय अनुभव अप्रिय कारी लिखोटमे बदलि सकैत अछि
व्याख्या: श्रिया जे नापसिन्न बात कारी मसिमे लिखैत अछि, कथा ओहि बाल-डायरी नियमकेँ जाति-चोटक प्रतीक बनबैत अछि।

खण्ड १३० : विदेह-सदेह ३७ — ‘ध्वस्त मन्दिर’: बाबा, खँडहर आ रहस्यक प्रवेश

प्रश्न 1243. ‘ध्वस्त मन्दिर’क मूल तेलुगु लेखक के छथि?
क. आदिवि बापिराजू
ख. कोलकलुरी इनोच
ग. विनोदिनी
घ. करुणा टी.
उत्तर: क. आदिवि बापिराजू
व्याख्या: कथा ‘पाडु देवालयम’ आदिवि बापिराजूक मूल तेलुगु कृति रूपमे देल गेल अछि।

प्रश्न 1244. आदिवि बापिराजूक व्यक्तित्व कोना बहुमुखी बताओल गेल अछि?
क. स्वतन्त्रता सेनानी, पत्रकार, कवि, उपन्यासकार आ कलाकार
ख. केवल गणित शिक्षक
ग. केवल किसान
घ. केवल सैनिक
उत्तर: क. स्वतन्त्रता सेनानी, पत्रकार, कवि, उपन्यासकार आ कलाकार
व्याख्या: परिचयमे हुनका स्वतन्त्रता सेनानीसँ लऽ कऽ कला आ साहित्यक कइ क्षेत्रमे सक्रिय कहल गेल अछि।

प्रश्न 1245. गाममे अबैत बूढ़ बाबा कोना भिक्षा मांगैत छलाह?
क. बिना गीत, बिना विशेष पुकार, चुपचाप केबाड़ पर ठाढ़ रहि
ख. ढोल बजा कऽ
ग. कौआ मारि कऽ
घ. सरकारी पर्चा लऽ कऽ
उत्तर: क. बिना गीत, बिना विशेष पुकार, चुपचाप केबाड़ पर ठाढ़ रहि
व्याख्या: बाबा मौन प्रतीक्षा करैत; कहल गेल तँ चलि जाइत, नहि तऽ चुपचाप ठाढ़ रहैत छलाह।

प्रश्न 1246. बाबाक कपड़ा आ देह-छवि कोना देखाओल गेल अछि?
क. फाटल-चीटल मुदा साफ कपड़ा, उज्जर दाढ़ी
ख. राजसी रेशमी वस्त्र
ग. सैनिक वर्दी
घ. विद्यालयी ड्रेस
उत्तर: क. फाटल-चीटल मुदा साफ कपड़ा, उज्जर दाढ़ी
व्याख्या: फाटल कपड़ा सेहो साफ रहैत; दाढ़ी मकइक रेशा जकाँ उज्जर कहल गेल।

प्रश्न 1247. बाबा पीड़ित जानवर सभक लेल की करैत छलाह?
क. थैला सँ जड़ी-बूटी निकालि लुगदी बना घाव पर पट्टी बान्हैत
ख. ओ सभकेँ भगबैत
ग. ओ सभकेँ बेचि दैत
घ. ओ सभ पर पाथर फेकैत
उत्तर: क. थैला सँ जड़ी-बूटी निकालि लुगदी बना घाव पर पट्टी बान्हैत
व्याख्या: बाबाक करुणा जानवरक उपचारमे देखाइत अछि; चरवाहा सभ हुनका लग अबैत छल।

प्रश्न 1248. बाबाकेँ भूखल लोकमे भातक 'कुन्चा' बाँटैत देखब कथामे की रहस्य बनबैत अछि?
क. ओ अन्न कतय सँ अनैत छथि, ई कियो नहि बुझैत
ख. ओ सरकारी गोदामक मालिक छथि
ग. ओ अनाज उधार लिखैत छथि
घ. ओ केवल अभिनय करैत छथि
उत्तर: क. ओ अन्न कतय सँ अनैत छथि, ई कियो नहि बुझैत
व्याख्या: लोक नहि बुझैत जे एतेक चाउर हुनका लग कतय सँ अबैत अछि, एहि सँ रहस्य गहिर होइत अछि।

प्रश्न 1249. कथावाचक आ मित्र जंगलमे ककर खोज/दर्शन लेल गेल छलाह?
क. पुरान ध्वस्त मन्दिर
ख. नव अपार्टमेण्ट
ग. सरकारी कार्यालय
घ. रेलवे स्टेशन
उत्तर: क. पुरान ध्वस्त मन्दिर
व्याख्या: गामक दक्षिणी जंगलमे पुरान ध्वस्त मन्दिरक चर्चा छल; दुनू मित्र ओतय जाइत छथि।

प्रश्न 1250. ध्वस्त मन्दिरमे बचल वस्तु सभ की छल?
क. पाथरक खाम्ह, शिलालेख, नक्काशीदार पाथर आ फुटल ईंटा
ख. केवल आधुनिक मशीन
ग. केवल प्लास्टिक कुर्सी
घ. केवल सरकारी फाइल
उत्तर: क. पाथरक खाम्ह, शिलालेख, नक्काशीदार पाथर आ फुटल ईंटा
व्याख्या: मूर्तिकेँ नव मन्दिरमे लऽ जाओल गेल छल, मुदा खाम्ह, शिलालेख आ नक्काशीदार पाथर बचल छल।

प्रश्न 1251. पुरातत्व विभागक पट्टिका ककरा रोकबाक आदेश दैत छल?
क. खँडहरक वस्तु सभकेँ छुअबासँ
ख. भिक्षा देबासँ
ग. कविता पढ़बासँ
घ. हँसबासँ
उत्तर: क. खँडहरक वस्तु सभकेँ छुअबासँ
व्याख्या: पट्टिका सरकारी आदेश देलक जे ओहि पुरातात्त्विक वस्तु सभकेँ कियो नहि छूअत।

प्रश्न 1252. सातम तिथिक चाँदनी मन्दिरक वातावरणमे की जोड़ैत अछि?
क. रहस्यमय सुन्दरता आ अजीब अनुभवक भूमिका
ख. बाजारक भीड़
ग. खेलक शोर
घ. भोजनक गन्ध
उत्तर: क. रहस्यमय सुन्दरता आ अजीब अनुभवक भूमिका
व्याख्या: चाँदनी खँडहरकेँ सुन्दर आ रहस्यमय बनबैत अछि, जकर बाद घण्टी आ मन्त्रक अनुभव शुरू होइत अछि।

खण्ड १३१ : विदेह-सदेह ३७ — ‘ध्वस्त मन्दिर’: पूजा, वंश-कर्तव्य आ आध्यात्मिक प्रकाश

प्रश्न 1253. मित्र सभ पहिने कौन आवाज सुनि घबड़ा जाइत छथि?
क. घण्टीक तीक्ष्ण झनकार
ख. बच्चा सभक हँसी
ग. कौआक काँव-काँव
घ. ऑटो ब्रेक
उत्तर: क. घण्टीक तीक्ष्ण झनकार
व्याख्या: खँडहर जंगलमे घण्टीक स्पष्ट झनकार सुनि दुनू मित्र अचरज आ भय अनुभव करैत छथि।

प्रश्न 1254. दोसरा बेर आवाज सुनि कथावाचक की चिन्हैत छथि?
क. झनकार भितुरका मन्दिरसँ निकलि रहल अछि
ख. आवाज नदीसँ अछि
ग. आवाज अपार्टमेण्टसँ अछि
घ. आवाज बण्डोडुसँ अछि
उत्तर: क. झनकार भितुरका मन्दिरसँ निकलि रहल अछि
व्याख्या: पहिने ओ बड़दक घण्टी बुझलनि, मुदा फेर सुनला पर भितुरका मन्दिरक स्रोत बुझाइत अछि।

प्रश्न 1255. मन्त्र सुनलाक बाद कथावाचक अपना अंग्रेजी शिक्षासँ की तर्क करैत छथि?
क. भूत-प्रेत शब्दकोशमे नहि, डरबाक जरूरत नहि
ख. भूत अवश्य खाइत अछि
ग. भोजन देबाक चाही
घ. घर तुरन्त छोड़बाक चाही
उत्तर: क. भूत-प्रेत शब्दकोशमे नहि, डरबाक जरूरत नहि
व्याख्या: ओ आधुनिक शिक्षा आ तर्कक सहारा लऽ भय पर नियंत्रण कऽ मन्दिरमे लौटैत छथि।

प्रश्न 1256. भितुरका मन्दिरमे जरैत दीपक बिम्ब कोना अबैत अछि?
क. विशाल दीप छाह खिरबैत, प्रेत-आगि जकाँ शंका जगबैत
ख. मिझायल राख
ग. बिजलीक बल्ब
घ. मोबाइल टॉर्च
उत्तर: क. विशाल दीप छाह खिरबैत, प्रेत-आगि जकाँ शंका जगबैत
व्याख्या: जरैत दीप दृश्यकेँ अलौकिक बनबैत अछि आ मित्र सभक संशय बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1257. अन्ततः पूजा करैत आकृति ककर रूपमे चीन्हल जाइत अछि?
क. गाममे भिक्षा मांगय बला वएह बाबा
ख. सरपञ्च
ग. बण्डोडु
घ. श्रिया
उत्तर: क. गाममे भिक्षा मांगय बला वएह बाबा
व्याख्या: सब दिन भिक्षा मांगय बला मौन बाबा मूर्तिहीन चबूतरा पर संस्कृत मन्त्रसँ पूजा करैत भेटैत छथि।

प्रश्न 1258. बाबाक संस्कृत मन्त्रोच्चारण कोना वर्णित अछि?
क. स्पष्ट, शुद्ध, निर्बाध आ बिना भूल
ख. टूटल-फूटल आ अस्फुट
ग. हास्य-गीत जकाँ
घ. बच्चाक कविता जकाँ
उत्तर: क. स्पष्ट, शुद्ध, निर्बाध आ बिना भूल
व्याख्या: कथावाचकक अचरज एहि बातमे अछि जे भिक्षुक-जैसन बाबा अत्यन्त शुद्ध मन्त्रपाठ करैत छथि।

प्रश्न 1259. बाबा अपन पूर्वजक सम्बन्ध कोन संस्थानसँ जोड़ैत छथि?
क. एहि मन्दिरक पीढ़ी-दर-पीढ़ी पुजारीक कर्तव्य
ख. सरकारी अदालत
ग. नगरक थियेटर
घ. फ्लैटक सोसाइटी
उत्तर: क. एहि मन्दिरक पीढ़ी-दर-पीढ़ी पुजारीक कर्तव्य
व्याख्या: बाबा कहैत छथि जे हुनकर पूर्वज पीढ़ी-दर-पीढ़ी मन्दिरमे पूजा-पाठ आ प्रसाद चढ़बैत रहलाह।

प्रश्न 1260. बाबाक बाबूजी मृत्युशय्या पर कोन अपूर्ण संकेत छोड़ि गेलाह?
क. किछु कहय चाहलनि मुदा स्पष्ट नहि कहि सकलाह
ख. मन्दिर बेचबाक लिखित आदेश
ग. कौआ मारबाक कला
घ. डायरी लिखबाक नियम
उत्तर: क. किछु कहय चाहलनि मुदा स्पष्ट नहि कहि सकलाह
व्याख्या: बाबूजीक अधूरा अंतिम शब्द बादमे बाबाक मन्दिर-कर्तव्यक जागरणसँ जुड़ैत अछि।

प्रश्न 1261. बाबा सेवाकालमे प्रत्येक उत्सवक समय कतेक विचित्र कष्ट भोगैत छलाह?
क. असमझ रोग सँ ग्रसित भऽ जाइत छलाह
ख. अचानक धनी भऽ जाइत छलाह
ग. नाच प्रतियोगिता जीतैत छलाह
घ. चुनाव लड़ैत छलाह
उत्तर: क. असमझ रोग सँ ग्रसित भऽ जाइत छलाह
व्याख्या: मन्दिर-कर्तव्य बिसरल रहला पर उत्सवक समय अज्ञात रोग हुनका सतबैत छल, जकर अर्थ बादमे खुलैत अछि।

प्रश्न 1262. मन्दिरमे पएर धयलाक बाद बाबाकेँ कोन आन्तरिक आदेश सुनाइ पड़ल?
क. ‘हमर पुत्र! हम कतेक दिन बिना पूजाक रहब?’
ख. ‘भोजन दिअ’
ग. ‘जाति पुछू’
घ. ‘कविता लिखू’
उत्तर: क. ‘हमर पुत्र! हम कतेक दिन बिना पूजाक रहब?’
व्याख्या: दीप, घण्टी, सोनाक मूर्ति आ आवाजक दर्शन बाबाकेँ सम्पत्ति त्यागि पूजा-जीवनमे लौटा दैत अछि।

खण्ड १३२ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अनुवादक कला’: भाषा, संस्कृति आ स्वरक सिद्धान्त

प्रश्न 1263. वेंकट सुब्बैयाक उपमा अनुसार लेखन आ अनुवादमे की अन्तर अछि?
क. लेखन एक तरुआरि पर अभ्यास, अनुवाद दू तरुआरि पर अभ्यास
ख. लेखन भोजन, अनुवाद निद्रा
ग. लेखन खेल, अनुवाद मौन
घ. लेखन सरल, अनुवाद अनावश्यक
उत्तर: क. लेखन एक तरुआरि पर अभ्यास, अनुवाद दू तरुआरि पर अभ्यास
व्याख्या: निबन्ध अनुवादक कठिनता रेखांकित करैत अछि—दू भाषा-संस्कृतिक संग साधना करब पड़ैत अछि।

प्रश्न 1264. निबन्ध अनुसार मात्र दू भाषा जानब किएक पर्याप्त नहि?
क. भाषा संग संस्कृति, जीवन-शैली आ अभिव्यक्ति-स्रोत बुझबाक जरूरत अछि
ख. दू भाषा जानब अपराध अछि
ग. भाषा अनुवादमे कामे नहि आबैत
घ. अनुवाद केवल चित्रकारी अछि
उत्तर: क. भाषा संग संस्कृति, जीवन-शैली आ अभिव्यक्ति-स्रोत बुझबाक जरूरत अछि
व्याख्या: लेखकक मत अछि जे भाषा समुदाय संस्कृति आ अभिव्यक्ति पद्धतिक माध्यम अछि; केवल शब्द-ज्ञान पर्याप्त नहि।

प्रश्न 1265. अनुवाद सामान्यतः कोन भाषामे करबाक मान्यता निबन्धमे उल्लेखित अछि?
क. अपन मातृभाषामे
ख. सदैव अज्ञात भाषामे
ग. सदैव लैटिनमे
घ. सदैव मौन संकेतमे
उत्तर: क. अपन मातृभाषामे
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे बहुत लोक मानैत छथि अनुवाद मातृभाषामे करबाक चाही, यद्यपि ई नियम बिना अपवादक नहि।

प्रश्न 1266. भाषाक शब्दावलीक स्रोत बुझाबय लेल एस्किमो आ मराठी उदाहरण किएक देल गेल?
क. भौगोलिक, सांस्कृतिक आ जीवन-रुचि शब्द-विकासकेँ आकार दैत अछि
ख. सभ भाषा समान शब्द रखैत अछि
ग. अनुवादमे शब्दावली अप्रासंगिक अछि
घ. केवल कविता गढ़बाक लेल
उत्तर: क. भौगोलिक, सांस्कृतिक आ जीवन-रुचि शब्द-विकासकेँ आकार दैत अछि
व्याख्या: बरफ लेल एस्किमो शब्द आ रणभूमि-संबंधी मराठी शब्दावली देखबैत अछि जे अनुभव शब्द बनबैत अछि।

प्रश्न 1267. तेलुगु शब्दावलीक अधिकांश स्रोत निबन्धमे ककरा सँ जोड़ल गेल?
क. कृषि-प्रधान चिन्ता
ख. समुद्री डाकू
ग. केवल राजमहल
घ. केवल डिजिटल खेल
उत्तर: क. कृषि-प्रधान चिन्ता
व्याख्या: लेखक तेलुगु शब्दावलीमे कृषि-प्रधान जीवनक छाप देखैत छथि।

प्रश्न 1268. अनुवादकक पहिल योग्यता निबन्ध अनुसार की अछि?
क. शब्दावली आ अभिव्यक्तिक स्रोत जानब
ख. केवल छपाइ कौशल
ग. केवल वाद्य-वादन
घ. केवल दौड़ प्रतियोगिता
उत्तर: क. शब्दावली आ अभिव्यक्तिक स्रोत जानब
व्याख्या: दू भाषाक शब्द-स्रोत, शैली आ संस्कृति बुझनाइ अनुवादकक आधारभूत योग्यता कहल गेल अछि।

प्रश्न 1269. दोसरा योग्यता रूपमे स्रोत पाठक सम्बन्धमे की माँग कएल गेल अछि?
क. मुख्य विषयमे गहीर रुचि आ सहानुभूति
ख. विषयसँ घृणा
ग. स्रोत पाठ नहि पढ़ब
घ. केवल शीर्षक देखब
उत्तर: क. मुख्य विषयमे गहीर रुचि आ सहानुभूति
व्याख्या: जाहि विषयमे रुचि वा सहानुभूति नहि, ओकर अनुवाद यान्त्रिक आ निर्जीव होयबाक खतरा अछि।

प्रश्न 1270. स्रोत पाठक लेखकक ‘स्वर’ पकड़ब किएक जरूरी अछि?
क. स्वर लेखक, विषय आ पाठक-संबंधक भाव व्यक्त करैत अछि
ख. स्वर केवल गायक लेल होइत अछि
ग. स्वर अनुवादमे हटाय देबाक चाही
घ. स्वर पृष्ठ-सजावट थिक
उत्तर: क. स्वर लेखक, विषय आ पाठक-संबंधक भाव व्यक्त करैत अछि
व्याख्या: हास्य, व्यंग्य, तामस, प्रतिशोध आदि शैलीक स्वरमे बसैत अछि; अनुवादककेँ ओकरा पकड़ब जरूरी।

प्रश्न 1271. वैज्ञानिक/सैद्धान्तिक पाठक अनुवादमे कोन कठिनाई बताओल गेल?
क. विस्तृत अंग्रेजी शब्दावलीकेँ सीमित सक्रिय तेलुगु शब्द-संसाधनमे फिट करब
ख. केवल अक्षर रंग चुनब
ग. कथा पात्रक नाम बदलब
घ. मञ्च सज्जा करब
उत्तर: क. विस्तृत अंग्रेजी शब्दावलीकेँ सीमित सक्रिय तेलुगु शब्द-संसाधनमे फिट करब
व्याख्या: नव शब्द, नव शब्द-रचना आ लक्षित पाठकक स्तर तय करब वैज्ञानिक पाठमे जटिल बनैत अछि।

प्रश्न 1272. निबन्ध अनुवादक श्रमबारे कोन निष्कर्ष देत अछि?
क. कठोर परिश्रम अनुवादक अस्तित्वक केन्द्र-बिन्दु अछि
ख. प्रेरणा मात्र पर्याप्त अछि
ग. अनुवाद मेहनत बिना होइत अछि
घ. अनुवाद केवल व्यवसाय अछि
उत्तर: क. कठोर परिश्रम अनुवादक अस्तित्वक केन्द्र-बिन्दु अछि
व्याख्या: लेखक स्पष्ट कहैत छथि जे गहीर श्रम बिना नीक अनुवादक बनब असम्भव अछि।

खण्ड १३३ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अनुवादक कला’: अनुभव, उदाहरण आ पाठक-चेतना

प्रश्न 1273. निबन्ध अनुसार तेलुगु साहित्यक उत्पत्ति कोन प्रवृत्तिसँ गहिर जुड़ल अछि?
क. अनुवादसँ
ख. मात्र मौखिक खेलसँ
ग. केवल सरकारी आदेशसँ
घ. चित्रकला मात्रसँ
उत्तर: क. अनुवादसँ
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे तेलुगु साहित्यक उत्पत्ति अनुवादसँ भेल आ कएक दशक धरि अनुवाद मुख्य रहल।

प्रश्न 1274. बीसम शताब्दीमे अनुवाद द्वारा तेलुगु पाठकक लेल के सभ परिचित भेलाह?
क. प्रेमचन्द, ठाकुर, शरत्, गोर्की आ राहुल
ख. केवल स्थानीय दुकानदार
ग. केवल फुटबॉल खिलाड़ी
घ. केवल राजदरबारी
उत्तर: क. प्रेमचन्द, ठाकुर, शरत्, गोर्की आ राहुल
व्याख्या: विश्व आ भारतीय साहित्यक लेखक तेलुगु पाठक लग अनुवादक माध्यमे पहुँचलाह।

प्रश्न 1275. ‘विपुला’ पत्रिका निबन्धमे किएक उल्लेखनीय अछि?
क. मात्र अनुवादित कथा सभ लेल समर्पित भारतीय साहित्यिक पत्रिका रूपमे
ख. कृषि-बाजार दरपत्रक रूपमे
ग. बाल-खेल पत्रिका रूपमे
घ. सिनेमा पोस्टर रूपमे
उत्तर: क. मात्र अनुवादित कथा सभ लेल समर्पित भारतीय साहित्यिक पत्रिका रूपमे
व्याख्या: लेखक सन्देह व्यक्त करैत छथि जे ‘विपुला’ मात्र अनुवादित कथा पर केन्द्रित विशिष्ट पत्रिका अछि।

प्रश्न 1276. वेंकट सुब्बैया अपन लेखनक शुरुआत कोना बतबैत छथि?
क. कविक रूपमे, बादमे कथा आ उपन्यास दिस
ख. सरकारी अधिकारीक रूपमे मात्र
ग. व्यापारीक रूपमे
घ. चित्रकारक रूपमे मात्र
उत्तर: क. कविक रूपमे, बादमे कथा आ उपन्यास दिस
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे आरम्भ कवितासँ कएलनि, बादमे कथा, उपन्यास आ अनुवाद दिस गेलाह।

प्रश्न 1277. हैदराबाद बुक ट्रस्टक आरम्भिक परामर्शमे लेखक कोन पुस्तक सुझौलनि?
क. ई.एच. कारक ‘व्हाट इज हिस्ट्री?’
ख. ‘जिगरी’
ग. ‘कौआ’
घ. ‘नानीलु’
उत्तर: क. ई.एच. कारक ‘व्हाट इज हिस्ट्री?’
व्याख्या: ओ HBT लेल ई.एच. कारक इतिहास-विषयक पुस्तक सुझौलनि; अनुवादक नहि भेटलाक बाद स्वयं अनुवाद कएलनि।

प्रश्न 1278. ‘व्हाट इज हिस्ट्री?’ अनुवादमे पहिल समस्या की छल?
क. स्रोत पाठक विद्वान श्रोता आ तेलुगु साधारण पाठकक समझ-स्तरक अन्तर
ख. कागजक रंग
ग. कथा पात्रक उमेर
घ. मन्दिरक दूरी
उत्तर: क. स्रोत पाठक विद्वान श्रोता आ तेलुगु साधारण पाठकक समझ-स्तरक अन्तर
व्याख्या: कैम्ब्रिजक इतिहास-विद्वान लेल लिखल पाठ तेलुगु साधारण पाठक लेल अतिरिक्त व्याख्या माँगैत छल।

प्रश्न 1279. प्रकाशक फुटनोटसँ किएक डरैत छल?
क. साधारण पाठक एहन किताब नहि पढ़त, ई आशंका छल
ख. फुटनोट अवैध छल
ग. कागज भेटत नहि
घ. फुटनोटमे कौआ रहैत
उत्तर: क. साधारण पाठक एहन किताब नहि पढ़त, ई आशंका छल
व्याख्या: प्रकाशक मानैत छल जे टीका-टिप्पणी साधारण पाठककेँ दूर कऽ सकैत अछि।

प्रश्न 1280. लेखक पहिल समस्याक समाधान कोना कएलनि?
क. इतिहासक छात्र आ साधारण पाठकसँ कठिन वाक्य चिन्हाबि पाठमे/एण्डनोट्समे व्याख्या जोड़लनि
ख. संपूर्ण पाठ हटा देलनि
ग. चित्र मात्र छापलनि
घ. अंग्रेजी ज्योंक त्यों राखलनि
उत्तर: क. इतिहासक छात्र आ साधारण पाठकसँ कठिन वाक्य चिन्हाबि पाठमे/एण्डनोट्समे व्याख्या जोड़लनि
व्याख्या: ओ लक्षित पाठकक कठिनाई जाँचि व्याख्या पाठमे आ एण्डनोट्समे समाविष्ट कएलनि।

प्रश्न 1281. दोसरा आ पैघ गलती लेखक ककरा मानलनि?
क. मूल पाठक हास्य-व्यंग्य स्वर नहि पकड़ि पाबब
ख. कागजक मोटाई
ग. नामक वर्तनी
घ. शीर्षकक आकार
उत्तर: क. मूल पाठक हास्य-व्यंग्य स्वर नहि पकड़ि पाबब
व्याख्या: अनुवाद तथ्यात्मक आ तटस्थ भऽ गेल छल; मूलक हास्य-व्यंग्य स्वर नहि आयल, तें दोबारा लिखल गेल।

प्रश्न 1282. ‘सॉयल एण्ड सिविलाइजेशन’ अनुवाद लेल लेखक पतञ्जलि शास्त्रीक नाम किएक सोचलनि?
क. विषयक संग हृदयक एकाकारता आ इतिहास-पर्यावरण पृष्ठभूमि हुनका अनुकूल छल
ख. ओ सब सँ नजिक रहैत छलाह मात्र
ग. ओ सस्ता काज करैत छलाह
घ. ओ कविता नहि बुझैत छलाह
उत्तर: क. विषयक संग हृदयक एकाकारता आ इतिहास-पर्यावरण पृष्ठभूमि हुनका अनुकूल छल
व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे सब अनुवादक सब विषयक नहि; योग्य विषय-संवेदना वला अनुवादक जरूरी अछि।

खण्ड १३४ : विदेह-सदेह ३७ — ‘क्रूरता’: बालिका, खेल, डर आ हँसी पर पाबन्दी

प्रश्न 1283. ‘क्रूरता’ कथाक मूल तेलुगु शीर्षक कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. क्रोरत्वम
ख. काकी
ग. पाडु देवालयम
घ. जिगरी
उत्तर: क. क्रोरत्वम
व्याख्या: कथा ‘क्रूरता’ मूल तेलुगु ‘क्रोरत्वम’ सँ अनूदित कहल गेल अछि।

प्रश्न 1284. कथाक आरम्भमे सैदम्मा की खेल रहल छलीह?
क. चोरा-नुक्की
ख. कबड्डी
ग. भालु-नाच
घ. शतरंज
उत्तर: क. चोरा-नुक्की
व्याख्या: सैदम्मा देबाल दिस मुँह कऽ सखी सभक नुकाएबाक प्रतीक्षा करैत चोरा-नुक्की खेल शुरू करैत छथि।

प्रश्न 1285. सैदम्माक माय ओकरा स्कूल किएक नहि पठबैत छलीह?
क. घरक काजमे मदति करबाक लेल कियो आन नहि छल
ख. स्कूल बन्द छल
ग. सैदम्मा राजा छल
घ. सैदम्मा शिक्षक छल
उत्तर: क. घरक काजमे मदति करबाक लेल कियो आन नहि छल
व्याख्या: कथा बतबैत अछि जे घरक काज लेल मदति चाही, तें सैदम्मा स्कूल नहि जा पबैत छलीह।

प्रश्न 1286. चारू सखीमे विजया कतेक पैघ छलीह?
क. दोसर सभसँ दू बर्ख पैघ
ख. सब सँ छोट
ग. बीस बर्ख पैघ
घ. उमेर बराबर नहि बताओल
उत्तर: क. दोसर सभसँ दू बर्ख पैघ
व्याख्या: सुगुना, सैदम्मा आ मंगाताई समवयस्क छथि; विजया हुनका सभसँ दू बर्ख पैघ अछि।

प्रश्न 1287. सखी सभ शौच लेल ककरा दिस जायबाक विचार करैत छथि?
क. सरकारी लगायल गाछ सभक दिस
ख. मक्का मस्जिद
ग. ध्वस्त मन्दिर
घ. फ्लैटक बाथरूम
उत्तर: क. सरकारी लगायल गाछ सभक दिस
व्याख्या: गोपनीयता आ घरवालाक डरक कारण ओ सभ सरकारी गाछ सभक दिस जाय चाहैत छथि।

प्रश्न 1288. मंगाताई नीम आ तेतरिक गाछसँ किएक डराइत अछि?
क. मोट डारि पर भूत लटकल रहबाक बात सुनने अछि
ख. ओतय सोना गड़ल अछि
ग. ओतय पुलिस अछि
घ. ओतय कौआ नहि अछि
उत्तर: क. मोट डारि पर भूत लटकल रहबाक बात सुनने अछि
व्याख्या: भूतक लोकविश्वास बालिका सभक डरकेँ आकार दैत अछि।

प्रश्न 1289. सुगुना सरकारी गाछक बीच बैसबासँ ककर डर बतबैत अछि?
क. सुग्गर सभ धकेल देत
ख. कौआ मित्र बनत
ग. दीप जरत
घ. डायरी भीजत
उत्तर: क. सुग्गर सभ धकेल देत
व्याख्या: सुगुना भूतक बदला सुग्गर सभक डर कहैत, स्थल बदलबाक तर्क रखैत अछि।

प्रश्न 1290. माथ पर खपरी राखबाक उपाय ककरा लेल सुझाओल गेल?
क. शौच होयबाक लोक-उपाय रूपमे
ख. हँसी बढ़ाबय लेल
ग. जाति चिन्हबाक लेल
घ. मन्दिर खोलबाक लेल
उत्तर: क. शौच होयबाक लोक-उपाय रूपमे
व्याख्या: मंगाताई कहैत अछि जे माथ पर खपरी राखि लेला शौच भऽ जायत; बाल-लोकविश्वासक दृश्य बनैत अछि।

प्रश्न 1291. ‘लड़की सभकेँ जोर सँ नहि हँसय चाही’ बात कथामे कोन सामाजिक हिंसा खोलैत अछि?
क. बालिकाक देह, हँसी आ स्वतन्त्रता पर पाबन्दी
ख. मात्र स्वास्थ्यमन्त्र
ग. खेतीक नियम
घ. अनुवादक सिद्धान्त
उत्तर: क. बालिकाक देह, हँसी आ स्वतन्त्रता पर पाबन्दी
व्याख्या: कथा बच्चा सभक खेलमे स्त्री-विरोधी अनुशासनक हिंसक बीज देखबैत अछि।

प्रश्न 1292. सुगुना आ सखी सभ गन्दे लोटाक पानि किएक पी लैत छथि?
क. एहि भय सँ जे हँसलापर माय सभ पीटतीह, आ पानि पीला सँ हँसी रुकि जायत
ख. प्यास बहुत लगल छल
ग. ई पूजा प्रसाद छल
घ. ई चिकित्सकीय औखधि छल
उत्तर: क. एहि भय सँ जे हँसलापर माय सभ पीटतीह, आ पानि पीला सँ हँसी रुकि जायत
व्याख्या: ओ सभ पिटाइक डर आ लड़कीक हँसी पर पाबन्दीक दबावमे गन्दा पानि जेना विष पी रहल हो, पी लैत छथि।

खण्ड १३५ : विदेह-सदेह ३७ — एन. गोपीक ‘नानीलु’: परिचय, नाम आ प्रसार

प्रश्न 1293. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स’ क मूल तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद के द्वारा बताओल गेल अछि?
क. जयलक्ष्मी पोपुरी
ख. खदीर बाबू
ग. वेम्पल्ले शरीफ
घ. के. पुरुषोत्तम
उत्तर: क. जयलक्ष्मी पोपुरी
व्याख्या: ई खण्ड एन. गोपीक ‘नानीलु’ केँ जयलक्ष्मी पोपुरीक अंग्रेजी अनुवादक माध्यमे मैथिलीमे आनल गेल बतबैत अछि।

प्रश्न 1294. ‘नानीलु’ केँ तेलुगु साहित्यिक जगतमे कोन रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि?
क. कविक विचार व्यक्त करबाक ताजा आ जीवन्त छोट-कविता शैली
ख. दीर्घ महाकाव्यक स्थिर छन्द
ग. केवल इतिहास-लेखनक विधा
घ. नाटकक मंचीय निर्देश
उत्तर: क. कविक विचार व्यक्त करबाक ताजा आ जीवन्त छोट-कविता शैली
व्याख्या: प्रस्तावना ‘नानीलु’ केँ छोट कविताक एहन शैली मानैत अछि जे कवि आ पाठक दुनूकेँ नव उत्साह दैत अछि।

प्रश्न 1295. ‘नानीलु’ क लोकप्रियता संबंधी कोन बात विशेष रूप सँ कहल गेल अछि?
क. गोपीक अनुकरणमे कम सँ कम डेढ़ सय प्रकाशित संग्रह भऽ गेल
ख. ई शैली तुरन्त लुप्त भऽ गेल
ग. ई मात्र एक लेखक धरि सीमित रहल
घ. ई केवल मौखिक खेल बनि रहल
उत्तर: क. गोपीक अनुकरणमे कम सँ कम डेढ़ सय प्रकाशित संग्रह भऽ गेल
व्याख्या: विवेचन बतबैत अछि जे गोपीक ‘नानीलु’ सँ प्रेरित भऽ कऽ अनेक संग्रह प्रकाशित भेल, जाहिसँ एकर प्रभाव प्रमाणित होइत अछि।

प्रश्न 1296. तेलुगुमे ‘नानीलु’ शीर्षकक भावार्थ कोना समझाओल गेल अछि?
क. छोट बच्चा सभ लेल स्नेहसूचक अभिव्यक्ति
ख. राजकीय करक नाम
ग. युद्ध-घोषणाक शब्द
घ. लम्बा नाटकक नाम
उत्तर: क. छोट बच्चा सभ लेल स्नेहसूचक अभिव्यक्ति
व्याख्या: शीर्षकक संक्षिप्तता, नेनपन आ खुलापन पर बल दैत ओकरा ‘द लिटिल वन्स’ रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

प्रश्न 1297. ‘नानीलु’ नामक अन्तिम ‘लु’ क भूमिका की बताओल गेल अछि?
क. कविता सभक बहुवचन सूचित करब
ख. एकवचन राजा सूचित करब
ग. विराम-चिह्न बनब
घ. कथावाचकक नाम बनब
उत्तर: क. कविता सभक बहुवचन सूचित करब
व्याख्या: गोपीक व्याख्यामे ‘ना’ आ ‘नी’ हमर-अहाँक अर्थ दैत अछि, आ ‘लु’ बहुवचनक संकेत करैत अछि।

प्रश्न 1298. ‘नानीलु’ विषयक दशकीय उत्सवक उल्लेख ककर संकेत अछि?
क. शैली प्रकाशनक बाद शीघ्र व्यापक मान्यता पाबि गेल
ख. शैली पर कोनो प्रतिक्रिया नहि भेल
ग. ई केवल विद्यालयी अभ्यास छल
घ. ई सरकारी नियमावली छल
उत्तर: क. शैली प्रकाशनक बाद शीघ्र व्यापक मान्यता पाबि गेल
व्याख्या: दशकीय उत्सवक चर्चा एहि बातक प्रमाण अछि जे शैली साहित्यिक जगतमे स्थिर आ लोकप्रिय बनि गेल।

प्रश्न 1299. ‘नानीलु’ कैं सूक्ति वा कहबीक वर्णनक रूपमे स्थापित कहल गेल—एहि सँ कोन गुण उभरैत अछि?
क. संक्षिप्ततामे गहिर विचारक संकेन्द्रण
ख. लम्बा कथाविस्तार
ग. केवल हास्य-ठट्ठा
घ. निरर्थक ध्वनि-खेल
उत्तर: क. संक्षिप्ततामे गहिर विचारक संकेन्द्रण
व्याख्या: सूक्ति-जकाँ ‘नानीलु’ छोट आकारमे तीक्ष्ण अनुभव आ विचारकैं धारण करैत अछि।

प्रश्न 1300. ‘नानीलु’ क नेनपन आ खुलापन कविक काजमे की करैत अछि?
क. गम्भीर विचारक मूल तत्त्वकैं सुलभ आ सघन बनबैत अछि
ख. विचारकैं पूर्णतः मेटा दैत अछि
ग. कविताकैं केवल बाल-गीत बना दैत अछि
घ. भाषाकैं अनुवाद-अयोग्य बना दैत अछि
उत्तर: क. गम्भीर विचारक मूल तत्त्वकैं सुलभ आ सघन बनबैत अछि
व्याख्या: विवेचन मानैत अछि जे एही नेनपनक आवरणमे गम्भीर विचार पाठक लग सहज ढंगें पहुँचैत अछि।

प्रश्न 1301. ‘नानीलु’ क आरम्भिक स्वीकार्यता कोना चित्रित अछि?
क. अभूतपूर्व उत्साह आ मान्यता सहित
ख. पूर्ण उपेक्षा सहित
ग. केवल विरोध सहित
घ. केवल सरकारी प्रतिबन्ध सहित
उत्तर: क. अभूतपूर्व उत्साह आ मान्यता सहित
व्याख्या: प्रस्तावना कहैत अछि जे प्रकाशनक समय सँ एकरा अभूतपूर्व स्वीकार्यता भेटल।

प्रश्न 1302. ‘नानीलु’ कैं कवि आ पाठक बीच कोन सम्बन्ध बनाबयवाला रूप कहल गेल अछि?
क. दुनूक बीच अद्वितीय उत्साह जगाबयवाला रूप
ख. दुनूक बीच दूरी बढ़ाबयवाला रूप
ग. कविता हटाबयवाला रूप
घ. सिर्फ अनुवादक लेल बनल रूप
उत्तर: क. दुनूक बीच अद्वितीय उत्साह जगाबयवाला रूप
व्याख्या: ई शैली कवि आ पाठक दुनूक सक्रिय काव्य-संवेदनाकैं जोड़ैत अछि।

खण्ड १३६ : विदेह-सदेह ३७ — ‘नानीलु’ क संरचना, अक्षर-सीमा आ अर्थ-गठन

प्रश्न 1303. ‘नानीलु’ सामान्यतः कोन संरचनामे लिखल कहल गेल अछि?
क. चारि पंक्ति बला चतुष्पदी
ख. सात अङ्कक नाटक
ग. दू हजार पंक्तिक महाकाव्य
घ. एक पंक्तिक समाचार
उत्तर: क. चारि पंक्ति बला चतुष्पदी
व्याख्या: विवेचनक अनुसार ‘नानीलु’ अपन संक्षिप्तता आ संरचना दूनू दृष्टिसँ चौपाई रूपमे उभरैत अछि।

प्रश्न 1304. गोपीक अनुसार एक ‘नानीलु’ क नामई मूलतः कतेक अक्षरक सीमामे सोचल गेल अछि?
क. बीस सँ पचीस अक्षर
ख. एक सय सँ दू सय अक्षर
ग. सिर्फ पाँच अक्षर
घ. कोनो सीमा नहि
उत्तर: क. बीस सँ पचीस अक्षर
व्याख्या: गोपी कहैत छथि जे हुनकर मोनमे ‘नानीलु’ बीस-पचीस अक्षरक नामईमे ढलल अछि।

प्रश्न 1305. मूल तेलुगुक अक्षर-सीमा अंग्रेजी लक्ष्य भाषामे पूर्ण करब किएक कठिन बताओल गेल?
क. भाषा-रचना आ ध्वनि-संरचना भिन्न भेला सँ
ख. अंग्रेजीमे अक्षर नहि होइछ
ग. तेलुगु अनुवाद निषिद्ध भेला सँ
घ. कविता चित्रमे बदलि गेलासँ
उत्तर: क. भाषा-रचना आ ध्वनि-संरचना भिन्न भेला सँ
व्याख्या: अनुवादमे अक्षर-समानता असम्भव मानल गेल, कारण स्रोत आ लक्ष्य भाषाक संरचना अलग अछि।

प्रश्न 1306. गोपी ‘नानीलु’ कैं ‘बहुत छोट’ नहि कहि ‘छोट कविता’ किएक कहैत छथि?
क. ओ अनावश्यक संक्षिप्तता नहि, बल्कि कसावदार विचार-रचना चाहैत छथि
ख. ओ लम्बा उपन्यास लिखैत छथि
ग. ओ छन्दक विरोध करैत छथि
घ. ओ कविता नहि मानैत छथि
उत्तर: क. ओ अनावश्यक संक्षिप्तता नहि, बल्कि कसावदार विचार-रचना चाहैत छथि
व्याख्या: गोपीक जोर ई अछि जे आकार छोट हो, मुदा विचार ढील वा अत्यधिक कटल नहि हो।

प्रश्न 1307. ‘नानीलु अहाँक आ हमर अछि’ व्याख्यामे ‘ना’ आ ‘नी’ क अर्थ की बताओल गेल अछि?
क. हमर आ अहाँक
ख. राति आ दिन
ग. आगि आ पानि
घ. राजा आ प्रजा
उत्तर: क. हमर आ अहाँक
व्याख्या: गोपी ‘ना’ कैं ‘हमर’ आ ‘नी’ कैं ‘अहाँक’ अर्थ सँ जोड़ि ‘नानीलु’ कैं सामूहिक काव्य-अनुभव बनबैत छथि।

प्रश्न 1308. यदि कियो दोसर पंक्तिक अन्तमे रुकि जाइत अछि, तखन अर्थक स्थिति कोना कहल गेल अछि?
क. अर्थ अपूर्ण रहैत अछि
ख. कविता पूर्ण भऽ जाइत अछि
ग. शीर्षक बदलि जाइत अछि
घ. अनुवाद समाप्त भऽ जाइत अछि
उत्तर: क. अर्थ अपूर्ण रहैत अछि
व्याख्या: गोपीक अनुसार पहिल भाग दोसर भाग पढ़लाक बादे स्पष्ट होइत अछि; आधामे रुकल अर्थ अधूरा रहैत अछि।

प्रश्न 1309. ‘नानीलु’ मे दू इकाई एक संग मिलि की बनबैत अछि?
क. एक पूर्ण विचार-कविता
ख. सिर्फ सूची
ग. कानूनी धारा
घ. अलग-अलग समाचार
उत्तर: क. एक पूर्ण विचार-कविता
व्याख्या: दू पंक्ति-दल भिन्न वाक्य जकाँ देखाइतो, विचारमे मिलि कऽ एक सम्पूर्ण कविता बनबैत अछि।

प्रश्न 1310. दोसरा दोहा/दोसरा भागक सामान्य भूमिका की बताओल गेल अछि?
क. पहिल भागक समर्थन, विस्तार वा अर्थ-प्रकाश
ख. पहिल भागक पूर्ण नाश
ग. केवल लेखकक नाम
घ. मात्र छन्द-गणना
उत्तर: क. पहिल भागक समर्थन, विस्तार वा अर्थ-प्रकाश
व्याख्या: विवेचन कहैत अछि जे दोसर इकाई पहिल इकाईकैं समर्थन करैत वा ओकर रूपक-संकेत खोलैत अछि।

प्रश्न 1311. ‘नानीलु’ मे रूपक, उपमा वा मानवीकरणक भूमिका की अछि?
क. पहिल संकेतकैं तीक्ष्ण आ तमसायल ढंगें खोलब
ख. कविता सँ अर्थ हटाब
ग. कविताकैं नियमावली बनाब
घ. भाषा बदलि देब
उत्तर: क. पहिल संकेतकैं तीक्ष्ण आ तमसायल ढंगें खोलब
व्याख्या: बहुत बेर दोसर पंक्तिये रूपक वा मानवीकरणक माध्यमे पहिल विचारक संकेत खोलैत अछि।

प्रश्न 1312. संरचना आ विचारक सम्बन्धमे ‘नानीलु’ क मुख्य शिक्षा की अछि?
क. छोट आकारमे सेहो पूर्ण काव्य-तनाव आ अर्थ सम्भव अछि
ख. छोट कविता अर्थहीन होइत अछि
ग. लम्बाईये कविता बनबैत अछि
घ. अनुवाद सँ कविता मरि जाइत अछि
उत्तर: क. छोट आकारमे सेहो पूर्ण काव्य-तनाव आ अर्थ सम्भव अछि
व्याख्या: ‘नानीलु’ सिद्ध करैत अछि जे कसावदार सीमामे सेहो विचार, रूपक आ भावक पूर्णता सम्भव अछि।

खण्ड १३७ : विदेह-सदेह ३७ — ‘नानीलु’ आ मुक्तक, वेमना, हाइकू सँ भिन्नता

प्रश्न 1313. ‘नानीलु’ मे आधुनिक गद्य-कविता, मुक्तक परम्परा आ पाठक-रुचिक कोन मेल देखाओल गेल अछि?

क. शास्त्रीय परम्परा आ आधुनिक संक्षिप्तता-बोधक संयोजन

ख. केवल शिलालेखक नकल

ग. मात्र नाटक-गीतक पुनरावृत्ति

घ. कृषि-पत्रक शैली

उत्तर: क. शास्त्रीय परम्परा आ आधुनिक संक्षिप्तता-बोधक संयोजन

व्याख्या: विवेचन ‘नानीलु’ कैं मुक्तक परम्परा, वेमनाक साहित्यिक विरासत आ आधुनिक पाठकक संक्षिप्त कविता-रुचिक संग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1314. संस्कृत मुक्तक वा वेमनाक विपरीत ‘नानीलु’ क एक विशेषता की बताओल गेल?

क. ओ उपदेशात्मक परम्परा सँ हटैत अछि

ख. ओ मात्र उपदेश-पुस्तिका अछि

ग. ओ केवल धार्मिक नियम अछि

घ. ओ केवल व्याकरण-अभ्यास अछि

उत्तर: क. ओ उपदेशात्मक परम्परा सँ हटैत अछि

व्याख्या: ‘नानीलु’ सूक्ति-परम्परा सँ जुड़ल रहितो सीधा उपदेश नहि दैत; ओ अनुभवक खुलल संकेत दैत अछि।

प्रश्न 1315. गाथासप्तशतीक उल्लेख ककर लेल कएल गेल अछि?

क. सघन संक्षिप्तताक ऊर्जा देखाबय लेल

ख. नाटकक मंच-सज्जा लेल

ग. विद्यालयी अनुशासन लेल

घ. इतिहासक तारीख लेल

उत्तर: क. सघन संक्षिप्तताक ऊर्जा देखाबय लेल

व्याख्या: गोपी गाथासप्तशतीक प्राकृत कवि सभमे छोट रूपक ऊर्जाकेँ देखैत छथि।

प्रश्न 1316. रल्लपल्लि अनन्तकृष्ण शर्मा किनका अनुवाद लेल छोट कविता-प्रारूप चुनलनि?

क. प्राचीन सूक्ति वा मुक्तक सभक तेलुगु अनुवाद लेल

ख. सरकारी पत्र सभक लेल

ग. चित्रकला-पाठ लेल

घ. खेलक नियम लेल

उत्तर: क. प्राचीन सूक्ति वा मुक्तक सभक तेलुगु अनुवाद लेल

व्याख्या: रल्लपल्लि प्राचीन सूक्ति-मुक्तकक सघनता, सूक्ष्मता आ भावकेँ तेलुगुमे स्थानान्तरित करबाक लेल छोट रूप चुनलनि।

प्रश्न 1317. ‘नानीलु’ कैं हाइकु सँ सीधे-सीधे समान मानब किएक भूल कहल गेल?

क. ई २०-२५ अक्षरक स्वतंत्र गति आ अलग संरचना रखैत अछि

ख. ई हाइकुक अनुवाद मात्र अछि

ग. ई सत्रह अक्षरक स्थिर नियम दोहरबैत अछि

घ. ई कविता नहि कथा अछि

उत्तर: क. ई २०-२५ अक्षरक स्वतंत्र गति आ अलग संरचना रखैत अछि

व्याख्या: गोपी हाइकुक स्थिर छवि-भाव सँ अलग ‘नानीलु’ मे गति आ प्रयोगक स्वतन्त्रता देखैत छथि।

प्रश्न 1318. हाइकु विषयमे गोपीक आलोचनात्मक अनुभव की बताओल गेल?

क. ओकरा स्नैपशॉट वा स्थिर फोटोग्राफ जकाँ गति-विहीन बुझलनि

ख. ओकरा नाटक मानलनि

ग. ओकरा व्याकरणक नियम मानलनि

घ. ओकरा लंबा उपन्यास मानलनि

उत्तर: क. ओकरा स्नैपशॉट वा स्थिर फोटोग्राफ जकाँ गति-विहीन बुझलनि

व्याख्या: गोपीक अनुभवमे हाइकुक सत्रह-अक्षर संरचना किछु बेर स्थिर फोटो जकाँ भासैत छल।

प्रश्न 1319. सी.पी. ब्राउनक वृत्त आ उपवृत्तक उल्लेखसँ गोपी कोन सम्भावना देखैत छथि?
क. छोट कविता लेल नियत आ परिवर्तनशील छन्दक बीच उपलब्ध स्थान
ख. केवल गद्य-पत्रक सीमा
ग. नाटकक पर्दा-विभाजन
घ. चित्रकला-रंग-सिद्धान्त
उत्तर: क. छोट कविता लेल नियत आ परिवर्तनशील छन्दक बीच उपलब्ध स्थान
व्याख्या: ई संदर्भ बतबैत अछि जे गोपी छन्दक कठोरता आ लचीलापनक बीच छोट कविता लेल नव स्थान खोजैत छथि।

प्रश्न 1320. ‘नानीलु’ मे काव्य स्वतन्त्रता कोना काम करैत अछि?
क. निअम आ शर्त विचारकेँ सीमितो करैत अछि आ मुक्तो करैत अछि
ख. कोनो निअम नहि आ कोनो अर्थ नहि
ग. केवल राजकीय आदेश सँ
घ. केवल पाठ्यपुस्तक परीक्षा लेल
उत्तर: क. निअम आ शर्त विचारकेँ सीमितो करैत अछि आ मुक्तो करैत अछि
व्याख्या: गोपीक निर्धारित सीमा विचारकेँ दबबैत नहि; ओहि सीमा भीतर कविता काव्य-तनाव पबैत अछि।

प्रश्न 1321. ‘नानीलु’ पढ़बाक अर्थ कोना समझाओल गेल अछि?
क. एक धारणा सम्भव अछि, कहियो-कहियो वैह एकमात्र धारणा अछि, से स्वीकारब
ख. केवल शब्द-गणना करब
ग. केवल कविक जीवनी याद करब
घ. केवल शीर्षक बदलि देब
उत्तर: क. एक धारणा सम्भव अछि, कहियो-कहियो वैह एकमात्र धारणा अछि, से स्वीकारब
व्याख्या: पाठककेँ छोट कवितामे चमकल दृष्टिकोणक वैधता पहिचानबाक आग्रह अछि।

प्रश्न 1322. ‘नानीलु’ क तनाव कतय निहित कहल गेल अछि?
क. सीमित रूप आ मुक्त विचारक बीचक अन्तरमे
ख. लेखकक नाम आ प्रकाशकक नाममे
ग. चित्र आ मंचक बीचमे
घ. विद्यालय आ बस-स्टैंडक बीचमे
उत्तर: क. सीमित रूप आ मुक्त विचारक बीचक अन्तरमे
व्याख्या: कविता अपन आकार-नियमन आ विचार-स्वतन्त्रता बीच उत्पन्न तनावसँ प्रभावी बनैत अछि।

खण्ड १३८ : विदेह-सदेह ३७ — ‘नानीलु’ क जीवन-दृष्टि, अनुवाद आ सामाजिक विस्तार

प्रश्न 1323. ‘नानीलु’ केँ जीवन सँ लेल गेल छवि सभक की कहल गेल अछि?
क. बहुरूपदर्शक
ख. कानूनी दस्तावेज
ग. चित्रकला-कॉपी
घ. मात्र गणना-तालिका
उत्तर: क. बहुरूपदर्शक
व्याख्या: विवेचन ‘नानीलु’ केँ जीवनक अनेक क्षण-छवि सभक बहुरूपदर्शक कहि ओकर वैविध्य देखबैत अछि।

प्रश्न 1324. प्रत्येक ‘नानीलु’ क सादगीमे की विशेषता बताओल गेल?
क. ओ अपनामे पूर्ण अछि आ जीवनक स्थिति पर प्रतिक्रिया अछि
ख. ओ अधूरा समाचार अछि
ग. ओ केवल शीर्षक अछि
घ. ओ बिना अर्थक ध्वनि अछि
उत्तर: क. ओ अपनामे पूर्ण अछि आ जीवनक स्थिति पर प्रतिक्रिया अछि
व्याख्या: छोट आकारमे प्रत्येक कविता कोनो विचार, घटना वा स्थिति पर स्वतंत्र प्रतिक्रिया बनैत अछि।

प्रश्न 1325. गोपीक पर्यवेक्षण-क्षमता कोना उभरैत अछि?
क. लगपासक जीवनक गहीर निरीक्षक रूपमे
ख. राजनीतिक घोषक रूपमे मात्र
ग. केवल मंच-अभिनेता रूपमे
घ. व्यापारी रूपमे
उत्तर: क. लगपासक जीवनक गहीर निरीक्षक रूपमे
व्याख्या: ‘नानीलु’ छोट-छोट जीवन-दृश्यसँ सत्य पकड़ैत अछि, जाहिसँ गोपीक पर्यवेक्षण स्पष्ट होइत अछि।

प्रश्न 1326. ‘समयक छोट-छोट बिन्दु’ रूपक सँ की बुझायल गेल अछि?
क. क्षणमे चमकैत काव्य-सत्य
ख. घड़ीक मरम्मत
ग. इतिहासक तारीख-सूची
घ. मौसमक पूर्वानुमान
उत्तर: क. क्षणमे चमकैत काव्य-सत्य
व्याख्या: नानीलु क्षणिक बोधकेँ छोट उज्ज्वल बिन्दु जकाँ पकड़ैत अछि।

प्रश्न 1327. ‘नानीलु’ केँ विभिन्न भाषा सभक अनुवादक बीच प्रिय बनयबाक कारण की बताओल गेल?
क. जीवन-छवि, संक्षिप्तता आ सार्वभौमिक स्पर्श
ख. केवल तेलुगु-लिपि
ग. बहुत पैघ आकार
घ. केवल स्थानीय प्रशासन
उत्तर: क. जीवन-छवि, संक्षिप्तता आ सार्वभौमिक स्पर्श
व्याख्या: एकर काव्य-संवेदना भाषा-सीमा पार करब योग्य अछि, तेँ अनुवादक सभक बीच लोकप्रिय भेल।

प्रश्न 1328. थोड़बे समयमे ‘नानीलु’ प्रारूपक प्रभाव की भेल?
क. गहीर जड़ि जमेलक आ बहुत लोककेँ कवि बना देलक
ख. कविता पढ़ब बन्द भऽ गेल
ग. कवि सभ नाटककार बनि गेलाह
घ. पत्रिका सभ बन्द भऽ गेल
उत्तर: क. गहीर जड़ि जमेलक आ बहुत लोककेँ कवि बना देलक
व्याख्या: प्रारूपक सहजता आ नवता लोककेँ लिखबा लेल प्रेरित कएलक।

प्रश्न 1329. तेलंगाना बोलीमे ‘नानीलु’ प्रयोगक माध्यमे कोन विषय सभ आगू आयल?
क. क्षेत्रीय संस्कृति, राजनीति, आक्रोश, वर्ग, जाति आ स्त्री-स्थिति
ख. केवल गणितीय सूत्र
ग. केवल मौसम-रिपोर्ट
घ. केवल खेल-तालिका
उत्तर: क. क्षेत्रीय संस्कृति, राजनीति, आक्रोश, वर्ग, जाति आ स्त्री-स्थिति
व्याख्या: आन कवि सभ एहि रूपक प्रयोग सँ बोली, क्षेत्र, जाति-वर्ग, वर्चस्व-विरोध आ स्त्रीक स्थिति पर विचार कएलनि।

प्रश्न 1330. ‘नानीलु’ द्वारा क्षेत्रक नाम पर वर्चस्वक प्रतिरोधक उल्लेख की देखबैत अछि?
क. ई शैली सामाजिक-राजनीतिक चेतना सेहो वहन करैत अछि
ख. ई केवल बाल-कविता अछि
ग. ई मात्र निजी प्रेमगीत अछि
घ. ई अनुवाद-विरोधी अछि
उत्तर: क. ई शैली सामाजिक-राजनीतिक चेतना सेहो वहन करैत अछि
व्याख्या: संक्षिप्त रूप होइतो ‘नानीलु’ सामुदायिक आ राजनीतिक अनुभवक अभिव्यक्ति बनि सकैत अछि।

प्रश्न 1331. अन्नवरम देवेन्द्रक उदाहरणमे गोपीकेँ कोन रूपमे स्वीकार कएल गेल?
क. ‘नानीलु’ क पिता-निर्माता रूपमे
ख. चित्रकला मास्टर रूपमे
ग. पत्रकार रूपमे
घ. नाटक-नायक रूपमे
उत्तर: क. ‘नानीलु’ क पिता-निर्माता रूपमे
व्याख्या: देवेन्द्रक पंक्ति गोपीक रचनात्मक पितृत्वकेँ हँसैत-खेलैत मान्यता दैत अछि।

प्रश्न 1332. ‘भिजबैत-भिजबैत नानीलु फूलि गेल’ पंक्ति सँ कोन भाव निकलैत अछि?
क. प्रारूपक विकास देखि स्रष्टा गोपीक चकित गर्व
ख. कविता मुरझा गेल
ग. भाषा समाप्त भऽ गेल
घ. कथा बन्द भऽ गेल
उत्तर: क. प्रारूपक विकास देखि स्रष्टा गोपीक चकित गर्व
व्याख्या: ई उदाहरण ‘नानीलु’ क बढ़ैत फलन-फूलन आ गोपीक आश्चर्य-गौरवकेँ सूचित करैत अछि।

खण्ड १३९ : विदेह-सदेह ३७ — ‘नानीलु’ अंश: रूपक, दुःख, समय आ सृष्टि

प्रश्न 1333. टूटल माटिक बर्तनवाला नानी कोन आशा व्यक्त करैत अछि?
क. धरती फेर सँ आकार देबाक तैयारी करैत अछि
ख. टूटल वस्तु सँ कोनो अर्थ नहि
ग. सृष्टि पूर्णतः रुकि जाइत अछि
घ. कुम्हारक स्मृति मिटि जाइत अछि
उत्तर: क. धरती फेर सँ आकार देबाक तैयारी करैत अछि
व्याख्या: टूटनक बादो धरती पुनर्निर्माणक सम्भावना धारण करैत अछि—ई नानी विनाशमे सृजन देखैत अछि।

प्रश्न 1334. लोलक-वाला नानी चलब आ थम्हबाक बीच कोन विचार रखैत अछि?
क. चलब नीक अछि, मुदा कखनो-कखनो थम्हब बेसी सार्थक अछि
ख. थम्हब सदिखन मृत्यु अछि
ग. चलबक कोनो अर्थ नहि
घ. लोलक समय नहि देखबैत
उत्तर: क. चलब नीक अछि, मुदा कखनो-कखनो थम्हब बेसी सार्थक अछि
व्याख्या: लोलक चलैत देखाइतो एक जगह रहैत अछि; कविता गति आ ठहरावक अर्थ पर विचार करैत अछि।

प्रश्न 1335. बरखा आ सूर्यवाला नानी कोन असम्भव प्रश्नक माध्यमे संवेदना जगबैत अछि?
क. बरखा नोर पोंछैत अछि कि सूर्य घामकेँ भाप बनबैत अछि?
ख. माटि आगि बनैत अछि कि नहि?
ग. कागज खेत जोतैत अछि कि नहि?
घ. समुद्र जंगलमे बसैत अछि कि नहि?
उत्तर: क. बरखा नोर पोंछैत अछि कि सूर्य घामकेँ भाप बनबैत अछि?
व्याख्या: प्राकृतिक तत्त्वक मानवीकरण सँ नानी नोर, घाम आ करुणाक सीमा पर प्रश्न करैत अछि।

प्रश्न 1336. तालाबक तलमे उगल बंगलाक छवि कोन व्यंग्य व्यक्त करैत अछि?
क. तालाब सभक विनाश आ मकबरा-जकाँ निर्माण
ख. जल-संरक्षणक उत्सव
ग. कमल-उत्सव
घ. किसानक गीत
उत्तर: क. तालाब सभक विनाश आ मकबरा-जकाँ निर्माण
व्याख्या: तालाबक ठाम बंगला उगि गेल, से जलस्थलक मृत्युक तीक्ष्ण पर्यावरणीय व्यंग्य अछि।

प्रश्न 1337. दहिना हाथ श्मशानमे नहि जरबाक कारण कोना बताओल गेल अछि?
क. ओ कलम धारण करय बला हाथ अछि
ख. ओ पत्थर उठबैत छल
ग. ओ सैनिक हाथ अछि
घ. ओ बांसुरी बजबैत छल
उत्तर: क. ओ कलम धारण करय बला हाथ अछि
व्याख्या: लेखनक हाथ जड़ मृत्युक बीचो सर्जनात्मक अमरता पबैत अछि—एहि संकेतक नानी अछि।

प्रश्न 1338. पात आ गाछवाला नानी कोन पारस्परिक अज्ञान देखबैत अछि?
क. पात गाछक दुःख नहि बुझैत, गाछ पातक सरसराहटि नहि बुझैत
ख. दुनू सब किछु पूर्ण बुझैत अछि
ग. पात आ गाछ शत्रु अछि
घ. गाछ पातक बिना जीवैत अछि
उत्तर: क. पात गाछक दुःख नहि बुझैत, गाछ पातक सरसराहटि नहि बुझैत
व्याख्या: ई नानी सह-अस्तित्वमे सेहो अनुभवक दूरी आ अनसुना रहि जाएबाक पीड़ा देखबैत अछि।

प्रश्न 1339. शब्दकोश खोलैत मनुष्य पर आधारित नानी की कहैत अछि?
क. शब्द भेटलासँ विचार अपने-आप नहि निकलैत
ख. शब्दकोश सभ विचार लिखैत अछि
ग. कविता शब्दकोशमे बन्द अछि
घ. विचारक जरूरत नहि
उत्तर: क. शब्द भेटलासँ विचार अपने-आप नहि निकलैत
व्याख्या: शब्द-सामग्री पर्याप्त नहि; सृजन लेल भीतरी विचार-कण चाही।

प्रश्न 1340. कमल-रहित पोखरि आ कविता-रहित कागजक तुलना की सूचित करैत अछि?
क. सौन्दर्य वा सृजन-बिना माध्यम अधूरा अछि
ख. कागज पोखरिक समान नहि
ग. पोखरिमे कागज राखब चाही
घ. कमल कविता नहि
उत्तर: क. सौन्दर्य वा सृजन-बिना माध्यम अधूरा अछि
व्याख्या: जतय कमल नहि, ओ पोखरि खाली भासैत अछि; तहिना कविता बिना कागज अधूरा अछि।

प्रश्न 1341. ‘चोट एकटा नव भाषा बाजैत अछि’ सँ कोन अनुभव व्यक्त अछि?
क. पीड़ा अपन अलग स्वर रखैत अछि आ स्वस्थ भेला पर स्वर बदलैत अछि
ख. चोट मौन अछि
ग. भाषाक पीड़ा सँ सम्बन्ध नहि
घ. चोट केवल खेल अछि
उत्तर: क. पीड़ा अपन अलग स्वर रखैत अछि आ स्वस्थ भेला पर स्वर बदलैत अछि
व्याख्या: नानी चोटकेँ भाषा देइत अछि; दुखक स्वर समय आ उपचारक संग बदलैत अछि।

प्रश्न 1342. समुद्र पर तरसवाला नानी कोन विडम्बना देखबैत अछि?
क. जतेक ऊँच उठैत अछि, ओही ठाम वापस खसि पड़ैत अछि
ख. समुद्र कहियो उठैत नहि
ग. समुद्रक कोनो लहर नहि
घ. समुद्र पर्वत बनि जाइत अछि
उत्तर: क. जतेक ऊँच उठैत अछि, ओही ठाम वापस खसि पड़ैत अछि
व्याख्या: उत्थान आ पुनः-पतनक चक्र समुद्रक लहरमे मानवीय विडम्बना जकाँ देखायल अछि।

खण्ड १४० : विदेह-सदेह ३७ — ‘नानीलु’ अंश: नोर, लय, विचार आ मृत्यु

प्रश्न 1343. पएरक अँगूठीक टनकारसँ कवि की जानि गेल?
क. व्यक्ति दुःखसँ भरल छथि
ख. व्यक्ति नाचक अभ्यास करैत छथि
ग. व्यक्ति युद्धमे जा रहल छथि
घ. व्यक्ति बाजार जा रहल छथि
उत्तर: क. व्यक्ति दुःखसँ भरल छथि
व्याख्या: छोट ध्वनि मनक दुख खोलि दैत अछि; ई नानी सूक्ष्म संकेत सँ भाव पढ़ैत अछि।

प्रश्न 1344. सृष्टिक गाथावाला नानीमे ‘कॉपीराइट मात्र हुनकर’ कथन कोन व्यंग्य करैत अछि?
क. सृष्टिमे दुनू स्रष्टा होइतो स्वामित्व एकतरफा मानल जाइत अछि
ख. कविता प्रकाशकक नियम बतबैत अछि
ग. सृष्टि ककरो नहि
घ. कॉपीराइट वनस्पतिक अछि
उत्तर: क. सृष्टिमे दुनू स्रष्टा होइतो स्वामित्व एकतरफा मानल जाइत अछि
व्याख्या: ई पंक्ति सृजनमे साझेदारी आ स्वामित्वक असमान दावाक व्यंग्यपूर्ण संकेत अछि।

प्रश्न 1345. अश्वेत जीवन आ लयवाला नानीमे लय की बनि जाइत अछि?
क. जीवनक झटका सँ जुड़ल अस्तित्वगत ताल
ख. केवल नृत्य-संगीतक अभ्यास
ग. घड़ीक टिक-टिक
घ. कागजक सरसराहटि
उत्तर: क. जीवनक झटका सँ जुड़ल अस्तित्वगत ताल
व्याख्या: जीवनक लय सामाजिक पीड़ा आ संघर्षक धक्का सँ बनैत अछि।

प्रश्न 1346. समुद्री सीप-मोती-नोरवाला नानी जीवनक कोन रूप देखबैत अछि?
क. जीवनमे डुबकी लगला पर सौन्दर्य आ पीड़ा दुनू भेटैत अछि
ख. जीवनमे केवल मोती अछि
ग. जीवनमे केवल व्यापार अछि
घ. समुद्रमे कोनो अर्थ नहि
उत्तर: क. जीवनमे डुबकी लगला पर सौन्दर्य आ पीड़ा दुनू भेटैत अछि
व्याख्या: मोती आ नोर एक संग भेटब जीवनक मिश्रित उपलब्धि आ वेदना व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 1347. सूर्यकेँ जगाबयवाला नानीमे विश्राम कखन सम्भव कहल गेल अछि?
क. सुतला कऽ बाद मात्र
ख. प्रातः भोजन सँ पहिने
ग. नौकरी लगते
घ. युद्ध समाप्त होइते
उत्तर: क. सुतला कऽ बाद मात्र
व्याख्या: ई नानी श्रमशील व्यक्तिक अतिशय दायित्व-बोध देखबैत अछि—ओ सूर्यकेँ जगाबय लेल सेहो जागैत अछि।

प्रश्न 1348. समयक नोर न पोंछबाक कारण कोना कहल गेल?
क. समयक हाथ नहि अछि
ख. समयक कागज नहि अछि
ग. समयक घर नहि अछि
घ. समयक भाषा नहि अछि
उत्तर: क. समयक हाथ नहि अछि
व्याख्या: समयकेँ मानवीकृत कऽ कविता कहैत अछि जे हाथ नहि रहने ओ नोर पोंछि नहि सकैत।

प्रश्न 1349. समयक नोर न बहाबक कारण कोना कहल गेल?
क. समयक आँखि नहि अछि
ख. समयक कान नहि अछि
ग. समयक कपड़ा नहि अछि
घ. समयक नाव नहि अछि
उत्तर: क. समयक आँखि नहि अछि
व्याख्या: एकहि नानीमे समय असमर्थ साक्षी बनैत अछि—ओ नोर न पोंछैत, न स्वयं रोइत।

प्रश्न 1350. ‘विचार सभ शब्दक वस्त्र नै पहिरि सकैत’ पंक्ति कोन समस्या उठबैत अछि?
क. विचारकेँ शब्दमे बाँधब कठिन अछि
ख. विचार सदिखन शब्दमे पूरा समा जाइत अछि
ग. वस्त्र कविता लिखैत अछि
घ. सियौन विचारक शत्रु नहि
उत्तर: क. विचारकेँ शब्दमे बाँधब कठिन अछि
व्याख्या: विचार शब्दक कपड़ा पहिरला पर फाटि सकैत अछि—अर्थात अभिव्यक्ति सदिखन अपूर्ण रहि सकैत अछि।

प्रश्न 1351. पन्ना सभ गुनगुनाबय लागल—ई छवि कोन प्रकारक काव्य-जीवन सूचित करैत अछि?
क. अक्षर सभ जीवित ध्वनि बनि उठल
ख. पुस्तक पूर्ण मौन अछि
ग. पन्ना सभ जलि रहल अछि
घ. कविता समाप्त अछि
उत्तर: क. अक्षर सभ जीवित ध्वनि बनि उठल
व्याख्या: पन्नाक गुनगुनाहटि पाठकक अनुभवमे अक्षरक जीवंतता देखबैत अछि।

प्रश्न 1352. ‘अहाँ एतेक किएक कनैत छी? मृत्यु तखन गर्व अनुभव करत’ पंक्ति कोन चेतावनी दैत अछि?
क. अत्यधिक विलाप मृत्युक विजय-बोध बढ़ा सकैत अछि
ख. मृत्यु केवल हँसी अछि
ग. रोदनक कोनो सामाजिक अर्थ नहि
घ. मृत्यु कवितामे नहि आबि सकैत
उत्तर: क. अत्यधिक विलाप मृत्युक विजय-बोध बढ़ा सकैत अछि
व्याख्या: नानी दुःखक बीच आत्मबल राखबाक संकेत दैत अछि, जे मृत्युक दंभ कम करय।

खण्ड १४१ : विदेह-सदेह ३७ — खदीर बाबू आ ‘हमर चित्रकला गुरु’: लेखक-परिचय आ आरम्भ

प्रश्न 1353. ‘हमर चित्रकला गुरु’ क मूल तेलुगु लेखक के छथि?
क. खदीर बाबू
ख. एन. गोपी
ग. करुणा टी.
घ. वल्लम्पाटि वेंकट सुब्बैया
उत्तर: क. खदीर बाबू
व्याख्या: ई कथा मोहम्मद खदीर बाबूक मूल तेलुगु रचना रूपमे देल गेल अछि।

प्रश्न 1354. खदीर बाबूक जन्म कोन ठाम बताओल गेल अछि?
क. नेल्लोर जिलाक कावलीमे
ख. वारंगलक काकतीय विश्वविद्यालयमे
ग. गुंटूर जिलाक तेनालीमे
घ. जनकपुरक बस-स्टैंड लग
उत्तर: क. नेल्लोर जिलाक कावलीमे
व्याख्या: परिचयमे हुनकर जन्म १९७२ मे नेल्लोर जिलाक कावलीमे भेल कहल गेल अछि।

प्रश्न 1355. खदीर बाबू लोकप्रिय तेलुगु अखबार ‘आन्ध्र ज्योति’ मे कोन रूपमे काज कएलनि?
क. फीचर पत्रकार
ख. चित्रकला मास्टर
ग. रेडियो जॉकी
घ. मन्दिर पुजारी
उत्तर: क. फीचर पत्रकार
व्याख्या: लेखक-परिचय बतबैत अछि जे ओ दस बर्ख धरि ‘आन्ध्र ज्योति’ मे फीचर पत्रकार रहलाह।

प्रश्न 1356. खदीर बाबू वर्तमानमे कोन समाचार-संस्था सँ जोड़ल बताओल गेल छथि?
क. ‘साक्षी’ अखबारक समाचार सम्पादक
ख. आकाशवाणी मैथिली केन्द्र
ग. विश्वोदय स्कूल
घ. जवाहर भारती कॉलेज
उत्तर: क. ‘साक्षी’ अखबारक समाचार सम्पादक
व्याख्या: परिचयमे हुनका ‘साक्षी’ तेलुगु अखबारक समाचार सम्पादक कहल गेल अछि।

प्रश्न 1357. खदीर बाबूक तीन कथा-संग्रहमे सँ कोन नाम देल गेल अछि?
क. दरगामिट्टा कथालु
ख. नानीलु
ग. सदा लेल मित्र
घ. क्रोरत्वम
उत्तर: क. दरगामिट्टा कथालु
व्याख्या: परिचयमे ‘दरगामिट्टा कथालु’, ‘पोलेरम्मा बण्डा कथालु’ आ ‘पप्पुजान कथालु’ क उल्लेख अछि।

प्रश्न 1358. खदीर बाबूकेँ ‘कथा अवार्ड’ कोन कथालेँ भेटल बताओल गेल?
क. ‘जमीन’
ख. ‘कौआ’
ग. ‘मचण्ड’
घ. ‘गंगा ब्रिज’
उत्तर: क. ‘जमीन’
व्याख्या: हुनका १९९९ मे अपन कथा ‘जमीन’ लेल ‘कथा अवार्ड’ भेटल कहल गेल अछि।

प्रश्न 1359. कथाक प्रथम वाक्य ‘हमर चित्रकला गुरु हमर भगवान छथि’ कोन भाव स्थापित करैत अछि?
क. गुरु प्रति अत्यन्त श्रद्धा आ जीवन-ऋणक भाव
ख. चित्रकला प्रति घृणा
ग. विद्यालयक उपहास मात्र
घ. वरिष्ठ छात्रक भय
उत्तर: क. गुरु प्रति अत्यन्त श्रद्धा आ जीवन-ऋणक भाव
व्याख्या: आरम्भमे कथावाचक अपन चित्रकला गुरुकेँ साधारण शिक्षक नहि, जीवन-निर्माता रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 1360. कथावाचक आठम कक्षामे रहिते दसम् कक्षाक कोन दू वरिष्ठ छात्रक उल्लेख करैत अछि?
क. एबेनेजर आ डेविड
ख. येंकय्या आ सेशैया
ग. पिच्चैया आ मधुसूदनराव
घ. सुगुना आ मंगाताई
उत्तर: क. एबेनेजर आ डेविड
व्याख्या: कथा दसम् कक्षाक ईसाई वरिष्ठ छात्र एबेनेजर आ डेविडसँ आरम्भिक शरारती मार्गदर्शन जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1361. एबेनेजर आ डेविड नव-भर्ती छात्रसँ पहिने की पुछैत छल?
क. नाम-ठेकाना
ख. बैंक खाता
ग. कविता-पंक्ति
घ. खेतीक जमीन
उत्तर: क. नाम-ठेकाना
व्याख्या: ओ गाछक नीचाँ झिझकैत नव छात्र लग आबि ओकर नाम-ठेकाना पूछैत छल।

प्रश्न 1362. वरिष्ठ छात्रक भूमिका कथामे एक साथ किएक गर्मजोश आ दुष्ट कहल गेल?
क. ओ सलाहो दैत छल आ शरारती परम्परा सेहो थोपैत छल
ख. ओ केवल पीटैत छल
ग. ओ केवल पढ़बैत छल
घ. ओ शिक्षक छल
उत्तर: क. ओ सलाहो दैत छल आ शरारती परम्परा सेहो थोपैत छल
व्याख्या: वरिष्ठ सभ नवान छात्रकेँ अपनाइतो छल, मुदा उपनाम आ उपहासक परम्परा देबाक दुष्टता सेहो राखैत छल।

खण्ड १४२ : विदेह-सदेह ३७ — ‘हमर चित्रकला गुरु’: वरिष्ठ छात्र, शिक्षक-उपनाम आ स्कूल-हास्य

प्रश्न 1363. गणितक पिच्चैया मास्टर विषयमे वरिष्ठ छात्रक टिप्पणी की छल?
क. नीक पढ़बैत छथि मुदा नोट्स नहि दैत छथि
ख. नोट्स दैत छथि मुदा पढ़बैत नहि
ग. कहियो कक्षा नहि अबैत
घ. चित्र बनबैत छथि
उत्तर: क. नीक पढ़बैत छथि मुदा नोट्स नहि दैत छथि
व्याख्या: वरिष्ठ छात्र नव छात्रकेँ बतबैत अछि जे पिच्चैया मास्टर पढ़बैत नीक छथि, मुदा नोट्स नहि दैत।

प्रश्न 1364. मधुसूदनराव मास्टर विषयमे वरिष्ठ छात्रक टिप्पणी की छल?
क. ढेर नोट्स दैत छथि मुदा एक शब्दो नहि पढ़बैत
ख. कठोर चित्रकला सिखबैत
ग. मौन रहैत
घ. केवल गीत गबैत
उत्तर: क. ढेर नोट्स दैत छथि मुदा एक शब्दो नहि पढ़बैत
व्याख्या: मधुसूदनराव मास्टर नोट्स खूब दैत छथि मुदा पढ़बैत नहि—ई हास्यपूर्ण विरोधाभास वरिष्ठ छात्रक ‘सलाह’ मे अछि।

प्रश्न 1365. तेलुगु शिक्षक नरसैया मास्टरक पाठ वरिष्ठ छात्र कोना वर्णन करैत छल?
क. ‘दान वीर सूर कर्ण’—छत्तीस रील, शानदार, मुदा शोर पर कठोर पिटाइ
ख. मात्र मौन ध्यान
ग. केवल गणित-सूत्र
घ. फूलक चित्र
उत्तर: क. ‘दान वीर सूर कर्ण’—छत्तीस रील, शानदार, मुदा शोर पर कठोर पिटाइ
व्याख्या: नरसैया मास्टरक पाठ नाटकीय आ लम्बा चित्रित अछि, संगहि कठोर अनुशासनक भय जोड़ल गेल।

प्रश्न 1366. अन्नपूर्णा टीचरक पढ़ब आ पिटाइ कोना वर्णित अछि?
क. दुनू कोमल—पाठ फुसफुसाहट सन आ पिटाइ सेहो नरम
ख. दुनू अत्यन्त हिंसक
ग. ओ पढ़बैत नहि
घ. ओ केवल खेल खेलबैत
उत्तर: क. दुनू कोमल—पाठ फुसफुसाहट सन आ पिटाइ सेहो नरम
व्याख्या: वरिष्ठ छात्र अन्नपूर्णा टीचरकेँ नरम शिक्षण आ नरम दण्डक रूपमे हास्यपूर्ण ढंगें रखैत अछि।

प्रश्न 1367. वरिष्ठ छात्र ‘चारि बहुत महत्वपूर्ण शब्द’ क नाम पर वास्तवमे की देलक?
क. मास्टर सभक उपनाम
ख. गणितक सूत्र
ग. काव्यक चारि पंक्ति
घ. धार्मिक मंत्र
उत्तर: क. मास्टर सभक उपनाम
व्याख्या: ओ कथित रहस्यक रूपमे ‘अनन्त गाथा’, ‘पनामा ब्लेड’, ‘दाँत नोचल जायत’ आ ‘दिव्य निद्रा’ देलक, जे शिक्षक-उपनाम छल।

प्रश्न 1368. ‘अनन्त गाथा’ उपनाम ककर मुहावरा सँ उपजल?
क. एक मास्टरक बार-बार दोहराओल ‘अनन्त गाथा’ वाक्यांश सँ
ख. चित्रकला मास्टरक दया सँ
ग. छात्रक कविता सँ
घ. बस-स्टैंडक नाम सँ
उत्तर: क. एक मास्टरक बार-बार दोहराओल ‘अनन्त गाथा’ वाक्यांश सँ
व्याख्या: ओ मास्टर पाठमे बारम्बार ‘अनन्त गाथा’ कहैत छलाह, तें ओहि शब्दे उपनाम बनि गेल।

प्रश्न 1369. ‘पनामा ब्लेड’ उपनाम किएक पड़ल?
क. मास्टर धमकीमे पनामा ब्लेडक नाम बार-बार लैत छलाह
ख. मास्टर ब्लेड बेचैत छलाह
ग. छात्र चित्र काटैत छल
घ. स्कूलक नाम पनामा छल
उत्तर: क. मास्टर धमकीमे पनामा ब्लेडक नाम बार-बार लैत छलाह
व्याख्या: धमकीक भाषा—‘पनामा ब्लेड आनि देब’—एतेक दोहरायल जे ओही उपनाम बनि गेल।

प्रश्न 1370. ‘दाँत नोचल जायत’ उपनामक पाछाँ कोन बात छल?
क. सज्जन मास्टरक कोलाहल पर बेंतसँ दाँत नोचि देबाक चेतावनी
ख. दन्त-चिकित्सा पाठ
ग. छात्रक बीमारी
घ. मजदूरक उपकरण
उत्तर: क. सज्जन मास्टरक कोलाहल पर बेंतसँ दाँत नोचि देबाक चेतावनी
व्याख्या: सज्जन मास्टर सेहो अनुशासन लेल ‘दाँत नोचि देब’ जकाँ मानक चेतावनी दैत छलाह।

प्रश्न 1371. ‘दिव्य निद्रा’ उपनाम ककर आदत सँ बनल?
क. भोजनक बाद पाँच मिनट ओंघी लैत मास्टरक
ख. हरदम दौड़ैत छात्रक
ग. चित्र बनबैत शिक्षकक
घ. कविता गबैत कविक
उत्तर: क. भोजनक बाद पाँच मिनट ओंघी लैत मास्टरक
व्याख्या: ई मास्टर कक्षा मे आँखि बन्द करैत ‘ई दिव्य निद्रा अछि’ कहि तेसर नेत्रसँ देखबाक दावा करैत छलाह।

प्रश्न 1372. कथावाचक उपनाम-परम्परा पर अन्ततः कोन नैतिक प्रश्न उठबैत अछि?
क. गुरु सभकेँ हुनकर शब्द सँ स्थायी नाम देब आ कनिष्ठकेँ देब उचित अछि कि नहि
ख. उपनामक वर्तनी की हो
ग. उपनामक रंग कोन हो
घ. कतेक छात्र उपस्थित छल
उत्तर: क. गुरु सभकेँ हुनकर शब्द सँ स्थायी नाम देब आ कनिष्ठकेँ देब उचित अछि कि नहि
व्याख्या: कथा हास्यक भीतर गुरु-असम्मान आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत उपहासक नैतिकता पर प्रश्न करैत अछि।

खण्ड १४३ : विदेह-सदेह ३७ — ‘हमर चित्रकला गुरु’: चित्रकला-कक्षा, दया आ जीवन-पाठ

प्रश्न 1373. चित्रकला मास्टरक असली नाम की बताओल गेल अछि?

क. जी. नागेश्वरराव

ख. पिच्चैया

ग. नरसैया

घ. एबेनेजर

उत्तर: क. जी. नागेश्वरराव

व्याख्या: कथामे ओना असली नाम जी. नागेश्वरराव कहल गेल, मुदा सभ हुनका ‘चित्रकला मास्टर’ कहैत छल।

प्रश्न 1374. कथावाचक चित्रकला पीरियडक प्रतीक्षा किएक करैत छल?

क. ओहि कक्षामे ऊब, गृहकार्यक पीड़ा आ बेंत-पिटाइ नहि छल

ख. ओहि कक्षामे केवल परीक्षा होइत छल

ग. ओहि कक्षामे स्कूल बन्द रहैत छल

घ. ओहि कक्षामे वरिष्ठ छात्र दण्ड दैत छल

उत्तर: क. ओहि कक्षामे ऊब, गृहकार्यक पीड़ा आ बेंत-पिटाइ नहि छल

व्याख्या: चित्रकला कक्षा भयमुक्त आ सृजनात्मक अवकाश छल, जाहिसँ कथावाचक उत्सुक रहैत छल।

प्रश्न 1375. चित्रकला कक्षामे बच्चा सभ कोन-कोन वस्तु बनबैत छल?

क. कमल फूल, माटिक घैल, जोड़ा हंस, मोमबत्ती, लालटेन, काँच आम

ख. केवल युद्ध-मानचित्र

ग. केवल गणित-सूत्र

घ. केवल सरकारी मुहर

उत्तर: क. कमल फूल, माटिक घैल, जोड़ा हंस, मोमबत्ती, लालटेन, काँच आम

व्याख्या: मास्टर सरल जीवन-संबंधी चित्र बोर्ड पर बनबैत छलाह, जे बच्चा सभ कॉपीमे उतारय चाहैत छल।

प्रश्न 1376. कथावाचक अपन चित्र बनबैत समय कतेक परिश्रमक हास्यपूर्ण उल्लेख करैत अछि?

क. चारि इरेजर, छह पेन्सिल आ तीन शीट कागज कारी करब

ख. एकटा किताब बेचब

ग. दूटा बस पकड़ब

घ. सात दिन उपवास

उत्तर: क. चारि इरेजर, छह पेन्सिल आ तीन शीट कागज कारी करब

व्याख्या: चित्र उतारबाक कठिनाईकेँ ओ अत्युक्तिपूर्ण हास्य सँ देखबैत अछि—इरेजर, पेन्सिल आ कागज सब खर्च भऽ जाइत।

प्रश्न 1377. चित्रकला मास्टर टेढ़-मेढ़ आकार सभ पर की प्रतिक्रिया दैत छलाह?

क. किछु नहि कहैत छलाह

ख. तुरन्त पिटाइ करैत छलाह

ग. कक्षा सँ निकालैत छलाह

घ. उपनाम दैत छलाह

उत्तर: क. किछु नहि कहैत छलाह

व्याख्या: मास्टर बच्चा सभक असफल आकृति पर दण्ड नहि दैत; एहि दया सँ कक्षा सुरक्षित बनैत अछि।

प्रश्न 1378. आधा घण्टा चित्र देखलाक बाद चित्रकला मास्टर असली पाठ कोना शुरू करैत छलाह?

क. कुर्सी छोड़ि मेज पर पएर लटकबैत बैसि गप करब शुरू करैत

ख. बेंत उठबैत

ग. परीक्षा लेबैत

घ. कक्षा छोड़ि जाइत

उत्तर: क. कुर्सी छोड़ि मेज पर पएर लटकबैत बैसि गप करब शुरू करैत

व्याख्या: ओ चित्रकला सँ जीवनकथा दिस सहज रूपेँ मुड़ैत छलाह—मेज पर बैसि गप्प शुरू करब हुनकर शैली छल।

प्रश्न 1379. येंकय्या क उदाहरणमे मास्टर कोन बात बुझबैत छलाह?
क. मजदूर पिता बेटाक पढ़ाइ लेल कठोर परिश्रम करैत छथि
ख. भट्ठा काज मजाक अछि
ग. बेटाकेँ स्कूल छोड़बाक चाही
घ. चित्रकला व्यर्थ अछि
उत्तर: क. मजदूर पिता बेटाक पढ़ाइ लेल कठोर परिश्रम करैत छथि
व्याख्या: बारह रुपैया कमबैत भट्ठा-मजदूर पिता अपन बेटाक भविष्य लेल श्रम करैत छथि—ई मास्टरक प्रेरक उदाहरण अछि।

प्रश्न 1380. सेशैया क उदाहरणमे कोन सामाजिक यथार्थ अछि?
क. अदरक चाह बेचि पिता बेटाक कर्मठ भविष्य चाहैत छथि
ख. चाह बेचब राजसी काज अछि
ग. बेटा शिक्षक अछि
घ. बस-स्टैंड स्कूल अछि
उत्तर: क. अदरक चाह बेचि पिता बेटाक कर्मठ भविष्य चाहैत छथि
व्याख्या: मास्टर गरीब पिता सभक श्रमकेँ बच्चा सभक पढ़ाइ सँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 1381. चित्रकला मास्टर बार-बार बच्चा सभसँ की उत्तर कहलवबैत छलाह?
क. बहुत मेहनत सँ पढ़बाक चाही
ख. चित्र छोड़बाक चाही
ग. स्कूल नहि आबक चाही
घ. उपनाम राखबाक चाही
उत्तर: क. बहुत मेहनत सँ पढ़बाक चाही
व्याख्या: ओ प्रश्न-उत्तरक शैलीमे बच्चा सभक भीतर श्रम आ दसम् पास करबाक इच्छा जगबैत छलाह।

प्रश्न 1382. चित्रकला मास्टरक जीवन-पाठक केन्द्र की अछि?
क. गरीब पिता-माताक श्रमक मान राखि शिक्षा लेल मेहनत करब
ख. शिक्षकक उपनाम फैलाब
ग. कक्षा मे सुतब
घ. चित्रकला छोड़ब
उत्तर: क. गरीब पिता-माताक श्रमक मान राखि शिक्षा लेल मेहनत करब
व्याख्या: कथाक मास्टर चित्रकला पढ़बैत-पढ़बैत सामाजिक उत्तरदायित्व आ परिश्रमक पाठ पढ़बैत छथि।

खण्ड १४४ : विदेह-सदेह ३७ — ‘हमर चित्रकला गुरु’: प्रेरणा, दसम् परीक्षा आ गुरु-देवत्व

प्रश्न 1383. चित्रकला मास्टर स्कूलक पाछू स्थित कोन संस्थानक उदाहरण दैत छलाह?
क. जवाहर भारती कॉलेज
ख. काकतीय विश्वविद्यालय
ग. मक्का मस्जिद
घ. पेदपावनि बस-स्टैंड
उत्तर: क. जवाहर भारती कॉलेज
व्याख्या: ओ स्कूलक पाछू स्थित जवाहर भारती कॉलेजक उदाहरण दैत विद्यार्थी सभक भविष्यक कल्पना जगबैत छलाह।

प्रश्न 1384. जवाहर भारती कॉलेजक उदाहरणमे मास्टर लड़का सभकेँ कोन लक्ष्य दिस धकेलैत छथि?
क. दसम् पास कऽ इण्टरमे दाखिला लेब
ख. स्कूल छोड़ि देब
ग. वरिष्ठ छात्र बनि उपनाम देब
घ. चित्रकला कॉपी फाड़ब
उत्तर: क. दसम् पास कऽ इण्टरमे दाखिला लेब
व्याख्या: ओ आकर्षक भविष्यक चित्र बना कऽ कहैत छलाह—दसम् पास करू, इण्टरमे जाउ।

प्रश्न 1385. मास्टरक ‘लड़की सभक बगलमे बैसि पाठ सुनू’ वाला प्रसंगक कार्य की अछि?
क. किशोर छात्रक कल्पना कैं पढ़ाइ लेल प्रेरक भाषा बनब
ख. विद्यालयक नियम बताब
ग. कठोर दण्ड घोषित करब
घ. कविता अनुवाद करब
उत्तर: क. किशोर छात्रक कल्पना कैं पढ़ाइ लेल प्रेरक भाषा बनब
व्याख्या: मास्टर किशोर मनक आकर्षणकैं पढ़ाइ आ भविष्यक लक्ष्य सँ जोड़ि मजाकिया प्रेरणा बनबैत छथि।

प्रश्न 1386. चित्रकला मास्टर बुरबक बच्चा सभकैं ‘जानवर जकाँ हाँकैत’ किएक प्रेरित करैत छलाह?
क. जाहि सँ ओ सभ दसम् पास कऽ सकय
ख. जाहि सँ ओ चित्र छोड़ि देथि
ग. जाहि सँ उपनाम बने
घ. जाहि सँ कक्षा बन्द हो
उत्तर: क. जाहि सँ ओ सभ दसम् पास कऽ सकय
व्याख्या: ओ विषयक औपचारिक महत्त्व कम रहितो छात्र सभक परीक्षा-जीवन बचाबय लेल लगन सँ प्रेरित करैत छलाह।

प्रश्न 1387. चित्रकला विषयक परीक्षा रहितो ओकर अङ्क निर्धारित नहि छल—एहि स्थिति सँ की भासैत अछि?
क. औपचारिक प्रणाली ओकर योगदानकैं कम देखैत छल
ख. विषय अत्यधिक प्रतिष्ठित छल
ग. कक्षा अनिवार्य नहि छल
घ. मास्टर अनुपस्थित रहैत छलाह
उत्तर: क. औपचारिक प्रणाली ओकर योगदानकैं कम देखैत छल
व्याख्या: अङ्क नहि रहने लोक नहि बुझैत छल जे मास्टर की पढ़बैत छथि, मुदा कथावाचक हुनकर गहिर योगदान बुझैत अछि।

प्रश्न 1388. कुमारस्वामी मास्टरक कार्यालयक चार्ट कथामे ककर प्रमाण बनैत अछि?
क. दसम् परीक्षाक उत्तीर्ण प्रतिशतमे चित्रकला मास्टरक बराबर भूमिका
ख. चित्रकला कॉपीक बिक्री
ग. वरिष्ठ छात्रक उपनाम-सूची
घ. बस-स्टैंडक रूट
उत्तर: क. दसम् परीक्षाक उत्तीर्ण प्रतिशतमे चित्रकला मास्टरक बराबर भूमिका
व्याख्या: दसम् पास प्रतिशतक चार्टमे कथावाचक चित्रकला मास्टरक अदृश्य योगदान देखैत अछि।

प्रश्न 1389. कथावाचक चित्रकला मास्टरक भूमिका आन शिक्षकक बराबर किएक मानैत अछि?
क. ओ छात्र सभमे पढ़बाक इच्छा आ आत्मविश्वास जगबैत छलाह
ख. ओ गणित नोट्स दैत छलाह
ग. ओ तेलुगु पाठ फुसफुसबैत छलाह
घ. ओ सजा मात्र दैत छलाह
उत्तर: क. ओ छात्र सभमे पढ़बाक इच्छा आ आत्मविश्वास जगबैत छलाह
व्याख्या: मास्टरक मूल योगदान परीक्षाक अङ्क नहि, बल्कि बच्चा सभक जीवन-लक्ष्य आ परिश्रमक चेतना जगाब छल।

प्रश्न 1390. एबेनेजर आ डेविड सन वरिष्ठ छात्र अंततः चित्रकला मास्टरक विषयमे की भाव देखबैत छथि?
क. श्रद्धासँ क्षमायाचना करैत ‘ओ हमर भगवान नहि छथि?’ कहय पड़ैत अछि
ख. ओ हुनका उपनाम दैत रहैत छथि
ग. ओ हुनका भूलि जाइत छथि
घ. ओ हुनका विरोध करैत छथि
उत्तर: क. श्रद्धासँ क्षमायाचना करैत ‘ओ हमर भगवान नहि छथि?’ कहय पड़ैत अछि
व्याख्या: वरिष्ठ छात्र सेहो मास्टरक नैतिक ऊँचाईक सामने गाल थपथपा श्रद्धापूर्वक क्षमा माँगय योग्य अनुभव करैत छथि।

प्रश्न 1391. ‘हमर चित्रकला गुरु हमर भगवान छथि’ कथन अन्तमे फेर किएक सार्थक बनैत अछि?
क. कथा सिद्ध करैत अछि जे गुरु छात्रक जीवन-दिशा बदलि सकैत छथि
ख. कथा चित्रकला छोड़बा पर खत्म होइत अछि
ग. कथा उपनाम पर अटकि जाइत अछि
घ. कथा परीक्षा-तालिकामे सिमटि जाइत अछि
उत्तर: क. कथा सिद्ध करैत अछि जे गुरु छात्रक जीवन-दिशा बदलि सकैत छथि
व्याख्या: आरम्भिक श्रद्धा कथाक घटनाक्रम सँ प्रमाणित होइत अछि—चित्रकला गुरु जीवन-गुरु बनि जाइत छथि।

प्रश्न 1392. अनुवादक टिप्पणीमे ‘हमर चित्रकला गुरु’ क मूल कथासंग्रह कोन कहल गेल अछि?
क. ‘पोलेरम्मा बण्डा कथालु’
ख. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स’
ग. ‘थायम्मा कथालु’
घ. ‘सदा लेल मित्र’
उत्तर: क. ‘पोलेरम्मा बण्डा कथालु’
व्याख्या: टिप्पणी बतबैत अछि जे मूल कथा ‘पोलेरम्मा बण्डा कथालु’ सँ लेल गेल अछि।

खण्ड १४५ : विदेह-सदेह ३७ — ‘जुम्मा’: मक्का मस्जिद विस्फोट आ मायक भय

प्रश्न 1393. ‘जुम्मा’ कथाक आरम्भमे कथावाचकक आँखि सोझाँ ककर मुँह बार-बार अभरैत अछि?
क. भय सँ भरल मायक निर्दोष मुँह
ख. कार्यालयक सम्पादकक मुँह
ग. बाल्यकालक शिक्षकक मुँह
घ. चारमीनारक दुकानदारक मुँह
उत्तर: क. भय सँ भरल मायक निर्दोष मुँह
व्याख्या: कथा मायक भयभीत चेहरा सँ शुरू होइत अछि; ई चेहरा कथावाचकक स्मृति आ वर्तमान दुनूक केन्द्र बनैत अछि।

प्रश्न 1394. कथाक वर्तमान समयमे कोन घटना कथावाचक आ मायक सम्बन्धकेँ हिला दैत अछि?
क. मक्का मस्जिदक भीतर बम विस्फोट
ख. गाममे बाढ़िक आगमन
ग. कथावाचकक नौकरी छूटब
घ. स्कूलक परीक्षा स्थगित होयब
उत्तर: क. मक्का मस्जिदक भीतर बम विस्फोट
व्याख्या: मक्का मस्जिद विस्फोटक समाचार मायकेँ डरा दैत अछि आ कथावाचकक धार्मिक स्मृतिसँ टकरा जाइत अछि।

प्रश्न 1395. फोन पर माय पहिने-पहिने ककरा लेल चिन्तित छथि?
क. बेटा मस्जिद गेल छल की नहि
ख. बेटा भोजन केलक की नहि
ग. बेटा चारमीनार चढ़ल की नहि
घ. बेटा चिट्ठी लिखलक की नहि
उत्तर: क. बेटा मस्जिद गेल छल की नहि
व्याख्या: मायकेँ डर अछि जे बेटा ओहि दिन मस्जिद गेल हएत; एहि प्रश्नमे विस्फोटक तुरन्त प्रभाव व्यक्त अछि।

प्रश्न 1396. कथावाचककेँ किएक पीड़ा होइत अछि जे माय खुश छथि ओ मस्जिद नै गेल?
क. कारण पहिने वैह माय ओकरा शुक्रवारक नमाज लेल अनिवार्य रूपेँ भेजैत छलीह
ख. कारण माय सदिखन मस्जिदक विरोधी छलीह
ग. कारण कथावाचक मस्जिदमे रहैत छल
घ. कारण माय चारमीनार देखय चाहैत छलीह
उत्तर: क. कारण पहिने वैह माय ओकरा शुक्रवारक नमाज लेल अनिवार्य रूपेँ भेजैत छलीह
व्याख्या: धार्मिक आग्रहसँ भरल माय अचानक सुरक्षा-भयक कारण बेटाकेँ मस्जिद सँ दूर चाहैत छथि; एहि परिवर्तन सँ कथावाचक भीतर सँ टूटैत अछि।

प्रश्न 1397. कथा मे बम विस्फोटक वातावरण कोना चित्रित अछि?
क. हाहाकार, टीवीक व्याकुल स्वर, पाथरबाजी, दहशत आ रक्तपातक रूपमे
ख. बस-यात्रा, बाजार आ हँसी-मजाकक रूपमे
ग. शांत पूजा आ प्रसाद-वितरणक रूपमे
घ. विद्यालयी कक्षा आ खेल-कूदक रूपमे
उत्तर: क. हाहाकार, टीवीक व्याकुल स्वर, पाथरबाजी, दहशत आ रक्तपातक रूपमे
व्याख्या: आरम्भिक दृश्य सामूहिक हिंसा आ आतंकक वातावरण बनबैत अछि, जाहि पर मायक भय टिकैत अछि।

प्रश्न 1398. 'जुम्मा' मे वर्तमान फोन-वार्ता कथावाचककेँ कतय खींचि लैत अछि?
क. बाल्यकालक शुक्रवार आ मस्जिद-स्मृति दिस
ख. नवकरीक वेतन-विवाद दिस
ग. चित्रकला कक्षाक शरारत दिस
घ. कुश्तीक मैदान दिस
उत्तर: क. बाल्यकालक शुक्रवार आ मस्जिद-स्मृति दिस
व्याख्या: मायक भय सुनिते कथावाचक बाल्यकालक नमाज, माय आ शुक्रवारक धार्मिक जीवन मोन करैत अछि।

प्रश्न 1399. कथावाचकक अनुसार माय पहिल बेर कोन बातसँ खुश भेलीह?
क. बेटा मस्जिद नहि गेल छल
ख. बेटा परीक्षा पास कएलक
ग. बेटा चारमीनार चढ़ल
घ. बेटा नौकरी छोड़लक
उत्तर: क. बेटा मस्जिद नहि गेल छल
व्याख्या: पहिने माय मस्जिद न जाएब अपराध मानैत छलीह; विस्फोटक बाद ओहि अनुपस्थितिमे बेटाक सुरक्षा देखैत छथि।

प्रश्न 1400. मायक 'हमर बेटा' पुकार कथामे कोन भाव तीव्र करैत अछि?
क. मातृत्वक भय आ स्नेहक संकुलता
ख. केवल आदेशात्मक क्रोध
ग. व्यंग्यात्मक हास्य
घ. व्यापारिक सौदा
उत्तर: क. मातृत्वक भय आ स्नेहक संकुलता
व्याख्या: फोनक ओहि पुकारमे माय बेटाक जीवन लेल आतुर छथि; धार्मिक आग्रहक स्थान पर मातृत्वक काँपैत स्वर अछि।

प्रश्न 1401. कथाक शीर्षक 'जुम्मा' क मुख्य भाव-सूत्र की अछि?
क. शुक्रवारक नमाज, स्मृति, आ हिंसा-पश्चात् बदलैत आस्था
ख. विद्यालयी छुट्टीक कार्यक्रम
ग. चित्रकारक प्रशिक्षण
घ. किसानक ऋण-संकट
उत्तर: क. शुक्रवारक नमाज, स्मृति, आ हिंसा-पश्चात् बदलैत आस्था
व्याख्या: 'जुम्मा' शुक्रवारक धार्मिक केन्द्रक संग-साथ भय, मातृत्व आ स्मृतिक गहिर परिवर्तनकेँ बाँधैत अछि।

प्रश्न 1402. वेम्पल्ले शरीफक परिचय कथापूर्वक ककर रूपमे भेटैत अछि?
क. कवि-कथाकार आ साक्षी टीवीक मुख्य उप-सम्पादक
ख. गुजराती चित्रकार
ग. विद्यालयक चित्रकला गुरु
घ. मक्का मस्जिदक हजरत
उत्तर: क. कवि-कथाकार आ साक्षी टीवीक मुख्य उप-सम्पादक
व्याख्या: प्रारम्भिक परिचयमे वेम्पल्ले शरीफकेँ आन्ध्र प्रदेश मूलक लेखक आ साक्षी टीवीसँ जुड़ल मुख्य उप-सम्पादक कहल गेल अछि।

खण्ड १४६ : विदेह-सदेह ३७ — ‘जुम्मा’: बाल्यकाल, शुक्रवार आ घरक धार्मिक संस्कार

प्रश्न 1403. बाल्यकालमे मायक शुक्रवारक नमाज प्रति भाव कोना छल?

क. ओ भक्तिपूर्वक प्रेम करैत छलीह आ ओकरा छोड़ि नै सकैत छलीह

ख. ओ सदिखन ओकर विरोध करैत छलीह

ग. ओ केवल त्योहारक दिन याद करैत छलीह

घ. ओ बच्चा सभकेँ मस्जिद सँ रोकैत छलीह

उत्तर: क. ओ भक्तिपूर्वक प्रेम करैत छलीह आ ओकरा छोड़ि नै सकैत छलीह

व्याख्या: कथा कहैत अछि जे माय किछुओ छोड़ि सकैत छलीह, मुदा शुक्रवारक नमाज नहि; ओहि आग्रहसँ घरक नियम बनैत छल।

प्रश्न 1404. बाबूजी मस्जिद जाय सँ बचबाक लेल की करैत छलाह?

क. काजक बहाना बनबैत छलाह

ख. सदैव पहिने मस्जिद पहुँचि जाइत छलाह

ग. चारमीनारक टिकट किनैत छलाह

घ. स्कूलक शिक्षकसँ बहस करैत छलाह

उत्तर: क. काजक बहाना बनबैत छलाह

व्याख्या: बाबूजी भोरसँ नमाजक बात करितो समय अबिते बहाना बनबैत छलाह; मायक डाँटसँ बचब कठिन छल।

प्रश्न 1405. कथावाचक बचपनमे मस्जिद जाय सँ बचबाक कोन हास्यास्पद बहाना करैत छल?

क. ओ कहैत जे एखने माटिक ढेरी पर लगही कऽ आयल छी

ख. ओ कहैत जे चारमीनार बंद अछि

ग. ओ कहैत जे स्कूलमे परीक्षा अछि

घ. ओ कहैत जे टोपी हराइ गेल

उत्तर: क. ओ कहैत जे एखने माटिक ढेरी पर लगही कऽ आयल छी

व्याख्या: बच्चा-स्वभावक आलस्य आ टालमटोल कथा मे हल्का हास्य जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1406. मायक ठेंगा लऽ कऽ अबैत छवि ककर संकेत अछि?

क. बेटाकेँ नमाज लेल अनुशासनमे राखबाक दृढ़ता

ख. मस्जिदक भय

ग. नारिकेल बेचबाक व्यवसाय

घ. सड़क पार करबाक असमर्थता

उत्तर: क. बेटाकेँ नमाज लेल अनुशासनमे राखबाक दृढ़ता

व्याख्या: माय धार्मिक अनुशासनकेँ घरक व्यवहारमे कठोरता सँ लागू करैत छलीह।

प्रश्न 1407. मस्जिद पहुँचि बच्चा कथावाचक सामान्यतः की करैत छल?

क. आन बच्चा सभसँ घुलि-मिलि वरदान माँगैत छल

ख. हजरतकेँ घर लऽ अबैत छल

ग. टीवी समाचार पढ़ैत छल

घ. दरगाहक फ्रेम बेचैत छल

उत्तर: क. आन बच्चा सभसँ घुलि-मिलि वरदान माँगैत छल

व्याख्या: कथा मे बच्चा मस्जिद पहुँचि खेल-घुलनशील वातावरणमे अपन घर-परिवार लेल वरदान माँगैत देखाइत अछि।

प्रश्न 1408. माय नमाजक अर्थ केवल वरदान माँगब नहि मानैत छलीह; हुनकर मुख्य बात की छल?

क. अल्लाह पर विश्वास रखि मोन केन्द्रित राखब

ख. नारिकेलक गुदा बेसी खायब

ग. स्कूलसँ जल्दी घुरब

घ. चारमीनार ऊपर चढ़ब

उत्तर: क. अल्लाह पर विश्वास रखि मोन केन्द्रित राखब

व्याख्या: माय नमाजकेँ श्रद्धा, विश्वास आ मनोनिवेशक साधना मानैत छलीह, केवल माँगबाक क्रिया नहि।

प्रश्न 1409. माय प्रार्थना समय बकवास सँ बचबाक सीख कोना तीव्र बनबैत छलीह?
क. बम फुटियो जाए, मोन अल्लाह पर केन्द्रित राखू कहि
ख. मस्जिद छोड़ि भागू कहि
ग. स्कूल बैग घर राखू कहि
घ. नारिकेल बेचू कहि
उत्तर: क. बम फुटियो जाए, मोन अल्लाह पर केन्द्रित राखू कहि
व्याख्या: एहि वाक्यक विडम्बना बादक वास्तविक विस्फोटसँ गहिर दुखद अर्थ ग्रहण करैत अछि।

प्रश्न 1410. शुक्रवारक मध्याह्न अवकाशमे कथावाचककेँ स्कूलसँ निकलबाक सुविधा कोना भेटल?
क. माय शिक्षकसँ बात कऽ कऽ मस्जिद-व्यवस्था करौने छलीह
ख. बाबूजी पुलिससँ आदेश लएने छलाह
ग. कथावाचक झूठा प्रमाणपत्र बनौने छल
घ. प्रधानाध्यापक ओकरा निकालि देने छलाह
उत्तर: क. माय शिक्षकसँ बात कऽ कऽ मस्जिद-व्यवस्था करौने छलीह
व्याख्या: माय नमाजक लेल स्कूल व्यवस्थाकेँ सेहो बदलबैत छलीह, जाहिसँ बच्चा असगर घर घुरि सकैत छल।

प्रश्न 1411. आन बच्चा सभ कथावाचकक जल्दी घर घुरब पर की अनुभव करैत छल?
क. ईर्ष्या
ख. घृणा
ग. उदासीनता
घ. भय
उत्तर: क. ईर्ष्या
व्याख्या: स्कूलक बच्चा सभ ओकरा भाग्यशाली बुझैत छल, कारण ओ शुक्रवारक दिन जल्दी घर पहुँचि जाइत छल।

प्रश्न 1412. शुक्रवारक पोशाक आ सजावट कथामे कोन छवि बनबैत अछि?
क. गरम स्नान, सुरमा, टोपी, उज्जर कुर्ता-पाजामा सँ पावन चमक
ख. कादो भरल खेतक श्रम
ग. मेडिकल अस्पतालक वर्दी
घ. चित्रकला कक्षाक धूसर कॉपी
उत्तर: क. गरम स्नान, सुरमा, टोपी, उज्जर कुर्ता-पाजामा सँ पावन चमक
व्याख्या: माय बच्चाकेँ धार्मिक दिन लेल स्नान, सुरमा, टोपी आ उज्जर वस्त्रसँ तैयार करैत छलीह; ई बाल्यकालक पावनता अछि।

खण्ड १४७ : विदेह-सदेह ३७ — ‘जुम्मा’: दरगाह, नारिकेल आ हैदराबादक मक्का मस्जिद

प्रश्न 1413. शुक्रवारक साँझ घर-घरमे कोन दृश्य देखाओल गेल अछि?
क. दरगाहक चित्र सोझाँ दीप, अगरबत्ती आ स्त्री सभक आवा-जाही
ख. रेलवे स्टेशनक भीड़
ग. टीबी अस्पतालक वार्ड
घ. गामक पञ्चायत
उत्तर: क. दरगाहक चित्र सोझाँ दीप, अगरबत्ती आ स्त्री सभक आवा-जाही
व्याख्या: कथा शुक्रवारक घरेलू धार्मिक वातावरणकेँ दीप, सुगन्ध, स्त्री-व्यस्तता आ श्रद्धासँ भरल रूपमे देखबैत अछि।

प्रश्न 1414. दरगाहक चित्र पर नारिकेल चढ़ाबयक अनुष्ठानमे बाबूजीक भूमिका की छल?
क. हजरतकेँ गली-गली सँ घर लऽ आनब
ख. नारिकेलक गुदा सभसँ पहिने खायब
ग. मस्जिदक सीढ़ी झाड़ब
घ. टीवी पर समाचार पढ़ब
उत्तर: क. हजरतकेँ गली-गली सँ घर लऽ आनब
व्याख्या: बाबूजी विधि पूरा नहि बुझैत छलाह, तेँ माय हुनका हजरतकेँ घर अनबाक जिम्मा दैत छलीह।

प्रश्न 1415. माय कलमा आ ग़ुस्लक अन्तर पर बाबूजीकेँ टोकैत छथि—एहि प्रसंगमे की उभरैत अछि?
क. धार्मिक विधि प्रति मायक सजगता आ बाबूजीक अनभिज्ञता
ख. बाजारक मोलभाव
ग. विद्यालयक अनुशासन
घ. मेडिकल विज्ञानक बहस
उत्तर: क. धार्मिक विधि प्रति मायक सजगता आ बाबूजीक अनभिज्ञता
व्याख्या: माय धार्मिक ज्ञानक अभाव पर बाबूजीसँ खीझैत छथि; एहि सँ घरक धार्मिक सत्ता हुनका हाथमे देखाइत अछि।

प्रश्न 1416. नारिकेलक प्रसाद बाँटैत माय कथावाचककेँ कोन शिक्षा दैत छलीह?
क. भगवानकेँ चढ़ाओल वस्तुमे लोभ नहि, बाँटब आवश्यक
ख. सभ खण्ड अपने लेल राखब
ग. हजरतकेँ नहि देब
घ. नारिकेल बेसी महँग अछि तेँ नहि कीनब
उत्तर: क. भगवानकेँ चढ़ाओल वस्तुमे लोभ नहि, बाँटब आवश्यक
व्याख्या: बच्चाक निराशा पर माय बाँटबाक नैतिकता सिखबैत छलीह; ई धार्मिकता आ उदारता दुनू अछि।

प्रश्न 1417. हैदराबादमे माय कथावाचकक हाथ पकड़ब आ हाथ पकड़ाएबक उलटफेर किएक भावुक बनैत अछि?
क. बाल्यकालमे माय बच्चाकेँ सम्हारैत छलीह, आब पैघ बेटा मायकेँ सड़क पार करबैत अछि
ख. माय बेटाकेँ अस्पताल लऽ जाइत छलीह
ग. बेटा मायकेँ स्कूलमे भर्ती करबैत अछि
घ. बाबूजी दुनूकेँ छोड़ि जाइत छथि
उत्तर: क. बाल्यकालमे माय बच्चाकेँ सम्हारैत छलीह, आब पैघ बेटा मायकेँ सड़क पार करबैत अछि
व्याख्या: एहि उलटफेरमे समयक दूरी, मातृत्वक स्मृति आ बेटाक पैघ भऽ जेबाक मार्मिकता अछि।

प्रश्न 1418. हैदराबाद आगमन पर माय बाहर घुमबाक विरोध किएक करैत छलीह?
क. ओ बेटा पर खर्चक बोझ नहि बनय चाहैत छलीह
ख. ओ शहरसँ घृणा करैत छलीह
ग. ओ मस्जिद देखबाक विरोधी छलीह
घ. ओ रेलयात्रा करय चाहैत छलीह
उत्तर: क. ओ बेटा पर खर्चक बोझ नहि बनय चाहैत छलीह
व्याख्या: मायक विरोधक भीतर ममता आ संकोच अछि; बेटाक आर्थिक स्थितिक प्रति हुनकर संवेदनशीलता झलकैत अछि।

प्रश्न 1419. मक्का मस्जिद देखब लेल माय किएक उत्सुक भेलीह?
क. बेटा बतौलक जे निजाम नवाब सभ द्वारा बनायल बड़का मस्जिद अछि
ख. ओतय चित्रकला प्रतियोगिता छल
ग. ओतय अस्पतालक भर्ती छल
घ. ओतय नौकरीक साक्षात्कार छल
उत्तर: क. बेटा बतौलक जे निजाम नवाब सभ द्वारा बनायल बड़का मस्जिद अछि
व्याख्या: मक्का मस्जिदक ऐतिहासिक-धार्मिक महत्त्व सुनि माय भीतर सँ खिंचल गेलीह।

प्रश्न 1420. मस्जिदमे प्रवेश करैत माय किएक झिझकलीह?
क. महिला सभ सामान्यतः मस्जिदमे प्रवेश नहि करैत छथि आ ओ बुरका बिना छलीह
ख. मस्जिदमे काज चलि रहल छल
ग. कथावाचक चप्पल खो देने छल
घ. चारमीनार बन्द छल
उत्तर: क. महिला सभ सामान्यतः मस्जिदमे प्रवेश नहि करैत छथि आ ओ बुरका बिना छलीह
व्याख्या: समुदायिक आ धार्मिक मर्यादाक दबावक कारण माय बुरका बिना अपनाकेँ असहज अनुभव करैत छलीह।

प्रश्न 1421. मक्का मस्जिदक भीतर परबा, हौज आ सीढ़ीक दृश्य कथामे की करैत अछि?
क. शान्त, मनमोहक धार्मिक परिसरक दृश्य बनबैत अछि
ख. हिंसाक आरम्भ सूचित करैत अछि
ग. विद्यालयी खेलक मैदान बनबैत अछि
घ. बाजारक शोर बढ़बैत अछि
उत्तर: क. शान्त, मनमोहक धार्मिक परिसरक दृश्य बनबैत अछि
व्याख्या: माय मुग्ध भऽ परबा आ परिसर देखैत छथि; बादक विस्फोटक स्मृति एहि शान्त दृश्यकेँ टूटल बनबैत अछि।

प्रश्न 1422. मीनारक देवार छूबि आँखिमे लगबैत माय कोन भाव व्यक्त करैत छथि?
क. श्रद्धा आ पवित्रता
ख. व्यापारिक उत्सुकता
ग. राजनीतिक विरोध
घ. शहरी ऊब
उत्तर: क. श्रद्धा आ पवित्रता
व्याख्या: देवारकेँ आँखिसँ लगब मायक धार्मिक आदर आ गहिर विश्वासक द्योतक अछि।

खण्ड १४८ : विदेह-सदेह ३७ — ‘जुम्मा’: वचन, विस्फोट आ मातृत्वक परिवर्तन

प्रश्न 1423. मक्का मस्जिद भ्रमणक बाद कथावाचक मायसँ कोन वादा करैत अछि?
क. अगिला हप्ता एतय नमाज पढ़य आयब
ख. सदैव गाम घुरि रहब
ग. चारमीनार फेर नहि देखब
घ. नारिकेल नहि बाँटब
उत्तर: क. अगिला हप्ता एतय नमाज पढ़य आयब
व्याख्या: मस्जिदक पवित्रता आ मायक आग्रहसँ कथावाचक एतय नमाज पढ़बाक संकल्प करैत अछि।

प्रश्न 1424. माय ‘एहन ठाम सभ पर नमाज पढ़बाक सौभाग्य’ कहि की संकेत करैत छथि?
क. पुरान, पवित्र मस्जिदमे नमाजक आध्यात्मिक महत्त्व
ख. केवल पर्यटनक आनन्द
ग. व्यापारिक लाभ
घ. राजनीतिक सभा
उत्तर: क. पुरान, पवित्र मस्जिदमे नमाजक आध्यात्मिक महत्त्व
व्याख्या: माय पवित्र स्थल सभकेँ भाग्य आ पुण्यसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 1425. मस्जिदक वचन बाद कथावाचकक व्यवहार की भेल?
क. ओ वादा कात कऽ देलक आ मस्जिद जायब बिसरि गेल
ख. ओ प्रतिदिन मस्जिद गेल
ग. ओ गाम घुरि गेल
घ. ओ हजरत बनि गेल
उत्तर: क. ओ वादा कात कऽ देलक आ मस्जिद जायब बिसरि गेल
व्याख्या: कथा मनुष्यक टालमटोल आ स्मृति-विस्मृति देखबैत अछि; वचन देलाक बादो ओ पालन नहि करैत।

प्रश्न 1426. विस्फोटक समाचार सुनलाक बाद कथावाचक शुक्रक बारेमे की अनुभव करैत अछि?
क. ओ शुक्र सँ डराइत अछि
ख. ओ शुक्रकेँ उत्सव मात्र बुझैत अछि
ग. ओ शुक्रक अर्थ भूलि जाइत अछि
घ. ओ शुक्रक दिन नौकरी छोड़ैत अछि
उत्तर: क. ओ शुक्र सँ डराइत अछि
व्याख्या: धार्मिक शुभदिन रक्तपातक स्मृतिसँ भयावह बनि जाइत अछि।

प्रश्न 1427. कथावाचक मायकेँ मक्का मस्जिद विस्फोटक बात कहैत कोन दृश्य जोड़ैत अछि?
क. शोनित सँ लथपथ बच्चा आ मरल परबा
ख. चित्रकला मास्टरक चार्ट
ग. कपासक सूखल खेत
घ. टीबी वार्डक खाँसी
उत्तर: क. शोनित सँ लथपथ बच्चा आ मरल परबा
व्याख्या: बच्चा आ परबाक मृत्यु शान्त धार्मिक परिसरक विनाशक अत्यन्त मार्मिक संकेत अछि।

प्रश्न 1428. फोन पर माय बेटासँ अन्ततः की आग्रह करैत छथि?
क. गाम घुरि आउ आ ओहि मस्जिद लग नहि जाउ
ख. हर शुक्रवार ओहि मस्जिद जाउ
ग. चारमीनार अवश्य चढ़ू
घ. नारिकेलक खण्ड बचाउ
उत्तर: क. गाम घुरि आउ आ ओहि मस्जिद लग नहि जाउ
व्याख्या: पहिने नमाज लेल दबाव देनिहार माय आब बेटाक जीवनक सुरक्षा लेल ओहि ठामसँ दूर रहबाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 1429. 'की अपन सन्तानक प्रेमक आगाँ भगवान आन भऽ गेल अछि?'—ई प्रश्न ककर द्वन्द्व अछि?
क. आस्था आ मातृत्वक बीच कथावाचकक भीतरी द्वन्द्व
ख. बाजार आ नौकरीक द्वन्द्व
ग. शिक्षक आ विद्यार्थीक द्वन्द्व
घ. चित्रकला आ गणितक द्वन्द्व
उत्तर: क. आस्था आ मातृत्वक बीच कथावाचकक भीतरी द्वन्द्व
व्याख्या: कथावाचक अनुभव करैत अछि जे मातृ-स्नेह भयक क्षणमे धार्मिक आग्रहकेँ पछाड़ि दैत अछि।

प्रश्न 1430. अन्तमे कथावाचक अल्लाहसँ क्षमा किएक माँगैत अछि?
क. कारण ओ आस्था, भय आ मायक बदलल आग्रहक बीच अपराध-बोध अनुभव करैत अछि
ख. कारण ओ प्रसाद बेसी खा लेने छल
ग. कारण ओ चित्र नहि बना सकल
घ. कारण ओ अस्पताल नहि गेल
उत्तर: क. कारण ओ आस्था, भय आ मायक बदलल आग्रहक बीच अपराध-बोध अनुभव करैत अछि
व्याख्या: ओ धार्मिक संवेदनाक भीतर मायक भय, अपन वादा आ विस्फोटक रक्तपात सभकेँ जोड़ि अपराध-बोधमे डूबल अछि।

प्रश्न 1431. कथाक समर्पण कोन लोकसभ लेल अछि?
क. मक्का मस्जिद विस्फोटक बाद बदलय लेल विवश माय सभ लेल
ख. नौकरी छोड़ल मजदूर नेता सभ लेल
ग. चित्रकला गुरु सभ लेल
घ. आइसक्रीम अनय बला बच्चा सभ लेल
उत्तर: क. मक्का मस्जिद विस्फोटक बाद बदलय लेल विवश माय सभ लेल
व्याख्या: समर्पण स्पष्ट करैत अछि जे कथा भयक कारण बदलल मातृत्वक पीड़ा केँ सम्बोधित अछि।

प्रश्न 1432. 'जुम्मा' अन्तमे पाठककेँ कोन मुख्य अनुभूति दैत अछि?
क. हिंसा पवित्र स्मृति आ आस्था दुनूकेँ घायल करैत अछि
ख. धार्मिक दिन केवल छुट्टी अछि
ग. शहरक यात्रा सदिखन हास्यपूर्ण अछि
घ. बचपनक खेल सभ निरर्थक अछि
उत्तर: क. हिंसा पवित्र स्मृति आ आस्था दुनूकेँ घायल करैत अछि
व्याख्या: कथा देखबैत अछि जे आतंक पवित्र स्थल, बाल्यकालक विश्वास आ मायक धार्मिक आग्रह सभकेँ बदलि दैत अछि।

खण्ड १४९ : विदेह-सदेह ३७ — ‘जुम्मा’: शब्दावली, प्रतीक आ कथा-संरचना

प्रश्न 1433. ‘सुरमा’ शब्दावलीमे कोना समझाओल गेल अछि?

क. आँखिमे लगाबय बला काजर

ख. मृतकक अन्तिम स्नान

ग. सन्तक मकबरा

घ. विश्वासक पवित्र वचन

उत्तर: क. आँखिमे लगाबय बला काजर

व्याख्या: सुरमा बच्चाक शुक्रवारक सजावटसँ जुड़ल अछि; शब्दावली एकरा आँखिक काजर कहैत अछि।

प्रश्न 1434. ‘दरगाह’ शब्द कथामे कोन अर्थ धारण करैत अछि?

क. सन्त सभक मकबरा पर बनल श्रद्धास्थल

ख. स्कूलक परीक्षा-कक्ष

ग. टीबी अस्पतालक वार्ड

घ. किसानक खेत

उत्तर: क. सन्त सभक मकबरा पर बनल श्रद्धास्थल

व्याख्या: दरगाहक चित्र पर दीप, अगरबत्ती आ नारिकेलक अनुष्ठान घरेलू श्रद्धा जगबैत अछि।

प्रश्न 1435. ‘कलमा’ कथाक शब्दावलीमे ककर पवित्र वचन कहल गेल अछि?

क. खुदा आ पैगम्बर मुहम्मद पर विश्वास व्यक्त करय बला वचन

ख. चित्रकला परीक्षा पास करयक वचन

ग. मजदूरी लेबाक वचन

घ. बस-यात्राक टिकट

उत्तर: क. खुदा आ पैगम्बर मुहम्मद पर विश्वास व्यक्त करय बला वचन

व्याख्या: कलमा इस्लामी आस्था-सूत्रक रूपमे व्याख्यायित अछि।

प्रश्न 1436. ‘ग़ुस्ल’ शब्दावलीमे कोन क्रिया अछि?

क. दफनाबय सँ पहिने मृतककेँ कराओल जाय बला अन्तिम स्नान

ख. नारिकेल चढ़ाबयक विधि

ग. शुक्रवारक स्कूल छुट्टी

घ. मस्जिदक मीनार चढ़ब

उत्तर: क. दफनाबय सँ पहिने मृतककेँ कराओल जाय बला अन्तिम स्नान

व्याख्या: ग़ुस्ल मृत्यु-संस्कारसँ जुड़ल स्नान अछि, जकरा माय बाबूजीक धार्मिक अज्ञान प्रसंगमे छेड़ैत छथि।

प्रश्न 1437. ‘हजरत’ कथामे कोन प्रकारक व्यक्ति लेल प्रयुक्त अछि?

क. पवित्र आ श्रद्धेय व्यक्ति

ख. विद्यालयक वरिष्ठ छात्र

ग. मेडिकल सहपाठी

घ. दुकानदार

उत्तर: क. पवित्र आ श्रद्धेय व्यक्ति

व्याख्या: हजरत धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न करय लेल घर अनाओल श्रद्धेय व्यक्तित्व अछि।

प्रश्न 1438. परबा सभ ‘जुम्मा’ मे कोन प्रतीकात्मक भूमिका निभबैत अछि?

क. शान्त पवित्र परिसरक जीवित सौन्दर्य, जे बादमे हिंसा सँ टूटैत अछि

ख. मजदूर आन्दोलनक नेता

ग. गणितक पहाड़ा

घ. व्यापारिक लाभ

उत्तर: क. शान्त पवित्र परिसरक जीवित सौन्दर्य, जे बादमे हिंसा सँ टूटैत अछि

व्याख्या: मस्जिदमे परबाक मनमोहक दृश्य बादक मृत परबा-स्मरणसँ विडम्बित होइत अछि।

प्रश्न 1439. नारिकेलक खण्ड कथामे कोन नैतिक पाठ बनैत अछि?
क. चढ़ाओल वस्तु बाँटब आ लोभ त्यागब
ख. प्रसाद केवल अपने राखब
ग. दुकानक दाम बढ़ाउ
घ. मस्जिदसँ बचू
उत्तर: क. चढ़ाओल वस्तु बाँटब आ लोभ त्यागब
व्याख्या: मायक शिक्षा धार्मिक भोगकेँ साझेदारी आ उदारता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1440. चारमीनार आ मक्का मस्जिदक तुलना कथामे ककर भूमिका बनबैत अछि?
क. ऐतिहासिक शहर, पर्यटन-आकर्षण आ पवित्र स्थल बीच बेटा-मायक संवाद
ख. गामक खेतक नाप
ग. अस्पतालक दवाई-सूची
घ. चित्रकला गुरुक पाठ्यक्रम
उत्तर: क. ऐतिहासिक शहर, पर्यटन-आकर्षण आ पवित्र स्थल बीच बेटा-मायक संवाद
व्याख्या: बेटा शहरी स्मारक देखबय चाहैत अछि, माय पवित्र मस्जिद दिस खिंचल छथि; एहि संवादमे दुनूक दृष्टि खुलैत अछि।

प्रश्न 1441. कथा ‘जुम्मा’ क संरचनात्मक चाल की अछि?
क. वर्तमान फोन-भय सँ अतीत स्मृति आ फेर वर्तमान शोक दिस लौटब
ख. सरल जन्म-देखि-मृत्यु जीवनी
ग. केवल शब्दावली-सूची
घ. निरन्तर हास्य-प्रसंग
उत्तर: क. वर्तमान फोन-भय सँ अतीत स्मृति आ फेर वर्तमान शोक दिस लौटब
व्याख्या: कथा फोन कॉल सँ शुरू होइत अछि, बाल्यकाल आ हैदराबादक स्मृति खोलैत अछि, आ विस्फोटक शोकमे लौटि अबैत अछि।

प्रश्न 1442. ‘जुम्मा’ मे मायक परिवर्तनकेँ सरलीकृत विरोधाभास नहि मानबाक कारण की अछि?
क. ओ धार्मिक आस्थाकेँ छोड़ि नहि देलनि; भयभीत मातृत्व बेटाक जीवन बचय चाहैत अछि
ख. ओ धर्मसँ सदिखन घृणा करैत छलीह
ग. ओ मस्जिदक बारेमे किछु नहि बुझैत छलीह
घ. ओ केवल शहर घुमय चाहैत छलीह
उत्तर: क. ओ धार्मिक आस्थाकेँ छोड़ि नहि देलनि; भयभीत मातृत्व बेटाक जीवन बचय चाहैत अछि
व्याख्या: कथा मायक बदलल वाक्यकेँ आस्थाहीनता नहि, बल्कि विस्फोटक बाद काँपैत मातृ-सुरक्षा-बोध बनबैत अछि।

खण्ड १५० : विदेह-सदेह ३७ — ‘अभिशप्त’: चक्रवात, कोठली आ बालसखा शर्मा

प्रश्न 1443. ‘अभिशप्त’ कथाक आरम्भिक वातावरण कोना अछि?
क. चक्रवात, भारी बरखा, अन्हार आ खराब स्ट्रीट लाइटक बीच
ख. उज्जर दुपहरिया आ मेला
ग. विद्यालयक चित्रकला कक्षा
घ. मस्जिदक शांत चबूतरा
उत्तर: क. चक्रवात, भारी बरखा, अन्हार आ खराब स्ट्रीट लाइटक बीच
व्याख्या: आरम्भक मौसम बाहरी अराजकता बनबैत अछि, जे कथाक भीतरक संकटसँ मेल खाइत अछि।

प्रश्न 1444. कथावाचक अपन कोठलीमे प्रवेश करैत की अचरज देखैत अछि?
क. केबाड़ भीतर सँ बन्द नहि छल आ शर्मा फर्श पर सुतल छल
ख. घरमे उत्सव चलि रहल छल
ग. महालक्ष्मी भोजन परोसि रहल छलीह
घ. रोहिणी प्रतीक्षा कऽ रहल छलीह
उत्तर: क. केबाड़ भीतर सँ बन्द नहि छल आ शर्मा फर्श पर सुतल छल
व्याख्या: तूफानी राति, खुलल केबाड़ आ फर्श पर बालसखा शर्मा कथाक रहस्य आरम्भ करैत अछि।

प्रश्न 1445. शर्मा आ कथावाचकक पुरान सम्बन्ध कोना वर्णित अछि?
क. बचपनसँ संग गाबैत-खेलैत आ कॉलेजमे कोठली साझा करैत पैघ भेल मित्र
ख. एक-दोसरकेँ नहि चिन्हनिहार यात्री
ग. मालिक आ मजदूर
घ. शिक्षक आ प्रधानाचार्य
उत्तर: क. बचपनसँ संग गाबैत-खेलैत आ कॉलेजमे कोठली साझा करैत पैघ भेल मित्र
व्याख्या: कथा मित्रताकेँ दीर्घ, आत्मीय आ साझा जीवनानुभवक आधार पर स्थापित करैत अछि।

प्रश्न 1446. शर्माक हालत देखि कथावाचक कोन संकेत पबैत अछि?
क. ओ बीमार, भूखल, बेरोजगार आ बदहाल अछि, मुदा आँखि चमकदार अछि
ख. ओ धनी बनि गेल अछि
ग. ओ पूर्ण स्वस्थ आ प्रसन्न अछि
घ. ओ शहर छोड़ि देलनि अछि
उत्तर: क. ओ बीमार, भूखल, बेरोजगार आ बदहाल अछि, मुदा आँखि चमकदार अछि
व्याख्या: खोंखी, दाढ़ी, फाटल कमीज आ गरीबीक संग ओकरा भीतरक तेजस्विता विरोधाभास बनबैत अछि।

प्रश्न 1447. शर्माक चरित्रक बारेमे कथावाचक मुख्यतः की कहैत अछि?
क. ओ आदर्शकेँ शब्द नहि, कर्ममे उतारैत छल आ ओहिमे फँसि जाइत छल
ख. ओ सदिखन झूठ बाजैत छल
ग. ओ केवल स्वार्थी प्रबन्धक छल
घ. ओ मित्रतासँ बचैत छल
उत्तर: क. ओ आदर्शकेँ शब्द नहि, कर्ममे उतारैत छल आ ओहिमे फँसि जाइत छल
व्याख्या: शर्मा कथामे आदर्शवादी, कर्मशील आ एहि कारण संकटग्रस्त व्यक्ति बनि उभरैत अछि।

प्रश्न 1448. शर्मा कथावाचककेँ बार-बार पहिने की करय कहैत अछि?
क. भीजल केश सुखाउ, नहि तँ सर्दी लागि जायत
ख. तुरन्त अस्पताल चलू
ग. मक्का मस्जिद जाउ
घ. यूनियन मीटिंग बोलाउ
उत्तर: क. भीजल केश सुखाउ, नहि तँ सर्दी लागि जायत
व्याख्या: स्वयं संकटमे रहितो शर्मा मित्रक स्वास्थ्यक चिन्ता करैत अछि; एहि सँ ओकर स्नेह प्रकट अछि।

प्रश्न 1449. शर्माक पत्नीक विषयमे ओ की बतबैत अछि?
क. ओ सातम मासमे अछि आ भाइ सभ प्रसव लेल घर लऽ गेल छथि
ख. ओ अस्पतालमे डॉक्टर छथि
ग. ओ प्रबन्ध निदेशक छथि
घ. ओ रोहिणीक सहेली छथि
उत्तर: क. ओ सातम मासमे अछि आ भाइ सभ प्रसव लेल घर लऽ गेल छथि
व्याख्या: पत्नीक गर्भावस्था आ दूरी शर्माक पारिवारिक असुरक्षा केँ बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1450. कथावाचक ‘अहाँ फेर अपन नौकरी खतरामे धऽ देलहुँ?’ किएक पूछैत अछि?
क. कारण शर्मा आदर्शवादी संघर्षक कारण बेरोजगारीमे पड़ैत रहल अछि
ख. कारण शर्मा सदिखन आलसी छल
ग. कारण शर्मा अस्पतालसँ भागि गेल छल
घ. कारण शर्मा परीक्षा नहि देलक
उत्तर: क. कारण शर्मा आदर्शवादी संघर्षक कारण बेरोजगारीमे पड़ैत रहल अछि
व्याख्या: मित्रता एतेक घनिष्ठ अछि जे कथावाचक घुमौने बिना मूल संकट पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 1451. शर्माक ऋण-ऋणदाता आ जन्म-जन्मान्तर सम्बन्धक बात पर कथावाचकक प्रतिक्रिया की अछि?
क. ओ ओकरा अन्धविश्वास कहि रोकय चाहैत अछि
ख. ओ तुरन्त मानि लैत अछि
ग. ओ पूजा शुरू करैत अछि
घ. ओ ओकरा कविता मानैत अछि
उत्तर: क. ओ ओकरा अन्धविश्वास कहि रोकय चाहैत अछि
व्याख्या: कथावाचक तर्कशीलता आ भावुक मित्रताक बीच अछि; ओ अन्धविश्वासक विरोध करैत अछि।

प्रश्न 1452. आरम्भिक रातिक दृश्य कथाक शीर्षक 'अभिशप्त' लेल कतेक उपयुक्त अछि?
क. मित्रक बीमारी, बेरोजगारी, तूफान आ अनिष्टक संकेत एक संग जुटैत अछि
ख. सब पात्र सुखी आ सुरक्षित अछि
ग. कथा पूर्ण हास्य मे चलैत अछि
घ. केवल पर्यटन-वृत्तान्त अछि
उत्तर: क. मित्रक बीमारी, बेरोजगारी, तूफान आ अनिष्टक संकेत एक संग जुटैत अछि
व्याख्या: चक्रवातक राति व्यक्तिगत आ सामाजिक अभिशापकेँ प्रतीकात्मक रूपेँ उद्घाटित करैत अछि।

खण्ड १५१ : विदेह-सदेह ३७ — 'अभिशप्त': हैदराबाद स्मृति, गरीबी आ यूनियन-संघर्ष

प्रश्न 1453. छह मास पहिने कथावाचक हैदराबादमे की कएलक?
क. शर्माक घर खोजि ओकरा भेटय गेल
ख. मक्का मस्जिदमे नमाज पढ़य गेल
ग. चित्रकला गुरुकेँ खोजय गेल
घ. प्रबन्ध निदेशकसँ नौकरी माँगय गेल
उत्तर: क. शर्माक घर खोजि ओकरा भेटय गेल
व्याख्या: हैदराबाद स्मृति शर्माक पारिवारिक स्थिति, गरीबी आ संघर्षक पृष्ठभूमि खोलैत अछि।

प्रश्न 1454. शर्मा कथावाचककेँ देखि महालक्ष्मीकेँ की कहैत अछि?
क. भैया आबि गेलाह, महालक्ष्मी
ख. डॉक्टर आबि गेलाह, भर्ती करू
ग. मजदूर नेता भागि गेल
घ. मस्जिद बन्द अछि
उत्तर: क. भैया आबि गेलाह, महालक्ष्मी
व्याख्या: एहि पुकारमे मित्रताक पारिवारिक आत्मीयता अछि; कथावाचक घरक सदस्य जकाँ स्वागत पबैत अछि।

प्रश्न 1455. शर्माक घरक आर्थिक स्थिति कोना झलकैत अछि?
क. मात्र एक कोठली आ छोट मटियातेल स्टोव
ख. पाँच कमरा आ मोटरगाड़ी
ग. कार्यालय-सज्जित भवन
घ. मस्जिदक बड़का चबूतरा
उत्तर: क. मात्र एक कोठली आ छोट मटियातेल स्टोव
व्याख्या: एक कोठलीक घर आ दवाई बनाबय लेल छोट स्टोव गरीबीक स्पष्ट चित्र बनबैत अछि।

प्रश्न 1456. महालक्ष्मी भोजन करबैत कथावाचककेँ की कहैत छथि?
क. उभरैत डॉक्टरकेँ चिड़िया जकाँ नहि खेबाक चाही
ख. डॉक्टरकेँ नमाज पढ़बाक चाही
ग. मजदूरकेँ नौकरी छोड़बाक चाही
घ. चित्रकारकेँ पेन्सिल किनबाक चाही
उत्तर: क. उभरैत डॉक्टरकेँ चिड़िया जकाँ नहि खेबाक चाही
व्याख्या: ओ स्नेहपूर्वक बेसी खुआय चाहैत छथि; गरीबीक बीचो अतिथि-सत्कारक ऊष्मा अछि।

प्रश्न 1457. शर्मा प्रबन्धनक विरुद्ध अपन संघर्षक आधार की बतबैत अछि?
क. मजदूर सभकेँ न्यूनतम मजदूरी आ न्याय दिलायब
ख. स्वयं महँगा पद पायब
ग. महालक्ष्मीकेँ शहर घुमायब
घ. हजरतकेँ घर अनब
उत्तर: क. मजदूर सभकेँ न्यूनतम मजदूरी आ न्याय दिलायब
व्याख्या: ओ शोषण, कम मजदूरी आ प्रबन्धकीय धोखाधड़ीक विरुद्ध लड़बाक बात करैत अछि।

प्रश्न 1458. कथावाचक शर्मा केँ कनी स्वार्थी बनबाक सलाह किएक दैत अछि?
क. कारण संघर्षमे पत्नी आ ओकर भविष्य सेहो जोखिममे अछि
ख. कारण कथावाचक मजदूर विरोधी अछि
ग. कारण शर्मा धनी अछि
घ. कारण यूनियन जीत चुकल अछि
उत्तर: क. कारण संघर्षमे पत्नी आ ओकर भविष्य सेहो जोखिममे अछि
व्याख्या: मित्र ओकर आदर्शक सम्मान करैत अछि, मुदा पारिवारिक आ आर्थिक जोखिम देखि चिन्तित अछि।

प्रश्न 1459. शर्मा अपन आयक अतिरिक्त साधन की बतबैत अछि?
क. कहानी सभक चित्रण कऽ कऽ कमा लैत अछि
ख. नारिकेल बेचैत अछि
ग. मस्जिदक टिकट काटैत अछि
घ. बस-कण्डक्टर अछि
उत्तर: क. कहानी सभक चित्रण कऽ कऽ कमा लैत अछि
व्याख्या: दरमाहाक अलावे चित्रणक आय शर्माक रचनात्मक श्रम आ संघर्षशील जीवन दुनू देखबैत अछि।

प्रश्न 1460. कथावाचक मेडिकल छात्र हेबाक बावजूद अपन आर्थिक असुरक्षा किएक व्यक्त करैत अछि?
क. मजबूत पारिवारिक पृष्ठभूमि बिना डॉक्टर बनबो कठिन आ खर्चीला अछि
ख. मेडिकल पढ़ाइ मुफ्त अछि
ग. ओ धनवान परिवारसँ अछि
घ. ओ नौकरी पाए चुकल अछि
उत्तर: क. मजबूत पारिवारिक पृष्ठभूमि बिना डॉक्टर बनबो कठिन आ खर्चीला अछि
व्याख्या: कथा चिकित्सा-शिक्षा, सामाजिक पृष्ठभूमि आ प्रतिष्ठा-प्रदर्शनक दबावक यथार्थ देखबैत अछि।

प्रश्न 1461. कथावाचकक 'भावुकता आ अकड़ मात्र धनी सभकेँ शोभा दैत' विचार की प्रकट करैत अछि?
क. गरीब आदर्शवादी संघर्षक व्यावहारिक खतरा
ख. धनी सभक आध्यात्मिक श्रेष्ठता
ग. मजदूरक जीत निश्चितता
घ. मित्रता व्यर्थता
उत्तर: क. गरीब आदर्शवादी संघर्षक व्यावहारिक खतरा
व्याख्या: ओ बुझैत अछि जे आर्थिक सुरक्षा बिना आदर्शवाद कखन आत्म-विनाशक होमय लगैत अछि।

प्रश्न 1462. शर्माक 'हमरा पाछू एक हजार लोक अछि' कथन कथावाचककेँ असहज किएक करैत अछि?
क. ओ गरीब भीड़केँ धनिकक हाथक असहाय मोहरा मानैत अछि
ख. ओ भीड़सँ प्रसन्न अछि
ग. ओ चुनाव लड़य चाहैत अछि
घ. ओ अस्पतालक लाइन सोचैत अछि
उत्तर: क. ओ गरीब भीड़केँ धनिकक हाथक असहाय मोहरा मानैत अछि
व्याख्या: कथावाचक जानैत अछि जे संख्या-सहयोग सत्ता आ धनक हिंसा सोझाँ कमजोर पड़ि सकैत अछि।

खण्ड १५२ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अभिशप्त’: अस्पताल, ‘काला जादू’ आरोप आ बर्खास्तगी

प्रश्न 1463. शर्माक रातभरि खोंखला कऽ बाद कथावाचक की निर्णय करैत अछि?
क. ओकरा अस्पताल लऽ जा कऽ मुख्य डॉक्टरकेँ देखाएब
ख. ओकरा तुरन्त हैदराबाद भेजब
ग. ओकरा यूनियन मीटिंगमे लऽ जायब
घ. ओकरा मस्जिद पठाएब
उत्तर: क. ओकरा अस्पताल लऽ जा कऽ मुख्य डॉक्टरकेँ देखाएब
व्याख्या: मित्र चिकित्सकीय सहायता केँ तुरन्त आवश्यक बुझैत अछि।

प्रश्न 1464. ओपीडी पुर्जा ककर नाम सँ बनाओल जाइत अछि?
क. बालागंगाधर शर्मा, पुरुष, २४ बर्ख
ख. वेम्पल्ले शरीफ, पुरुष, ३४ बर्ख
ग. करुणाकर राव, छात्र
घ. महालक्ष्मी, सातम मास
उत्तर: क. बालागंगाधर शर्मा, पुरुष, २४ बर्ख
व्याख्या: कथा स्पष्ट नाम आ अवस्था दैत अछि, जाहिसँ अस्पताल-प्रसंग ठोस बनैत अछि।

प्रश्न 1465. मुख्य डॉक्टर जाँच कऽ की निर्देश दैत छथि?
क. ओकरा भर्ती करू आ ध्यान सँ फलो-अप करू
ख. ओकरा तुरन्त निकालू
ग. ओकरा नमाज पढ़ाउ
घ. ओकरा यूनियन सचिव बनाउ
उत्तर: क. ओकरा भर्ती करू आ ध्यान सँ फलो-अप करू
व्याख्या: भर्ती आदेश शर्माक बीमारीक गंभीरताकेँ मान्यता दैत अछि।

प्रश्न 1466. शर्मा बादमे नौकरी छोड़ब/छोड़बाक कारण कोना बतबैत अछि?
क. प्रबन्धन-संघर्षक बीच ओकरा काला जादू आ अभिशाप देबाक झूठ आरोपमे घेरल गेल
ख. ओ स्वेच्छासँ विदेश गेल
ग. ओ पढ़ाइ छोड़ि देलक
घ. ओ चित्रकला गुरु बनल
उत्तर: क. प्रबन्धन-संघर्षक बीच ओकरा काला जादू आ अभिशाप देबाक झूठ आरोपमे घेरल गेल
व्याख्या: नौकरीक संकट अन्धविश्वास, राजनीति आ प्रबन्धनक मिलीभगतसँ पैदा भेल अछि।

प्रश्न 1467. अदहा रातिक पाथरबाजी पहिने शर्मा कोना बुझैत छल?
क. विरोधी यूनियनक काज हएत
ख. बच्चा सभक खेल होएत
ग. बम विस्फोट होएत
घ. प्राकृतिक दुर्घटना होएत
उत्तर: क. विरोधी यूनियनक काज हएत
व्याख्या: ओ प्रारम्भमे राजनीतिक-यूनियन संघर्षक संकेत देखैत अछि।

प्रश्न 1468. यादगिरी शर्माकेँ की चेतावनी दैत अछि?
क. ठाम छोड़ू, नहि तँ लोक मारि देत
ख. दसम् पास करू
ग. मक्का मस्जिद जाउ
घ. नारिकेल बाँटू
उत्तर: क. ठाम छोड़ू, नहि तँ लोक मारि देत
व्याख्या: यादगिरीक चेतावनी सामूहिक अन्धविश्वास आ हिंसक भीड़क दबाव बतबैत अछि।

प्रश्न 1469. शर्मा पर मृत पड़ोसीक विषयमे कोन आरोप लगाओल जाइत अछि?
क. ओ काला जादूसँ ओकर मृत्यु करौलक
ख. ओ ओकरा अस्पताल लऽ गेल
ग. ओ ओकरा नौकरी देलक
घ. ओ ओकरा नमाज पढ़ौलक
उत्तर: क. ओ काला जादूसँ ओकर मृत्यु करौलक
व्याख्या: कथाक शीर्षक ‘अभिशप्त’ एहि झूठ अन्धविश्वासी आरोपसँ जकड़ायल अछि।

प्रश्न 1470. प्रबन्धन अन्ततः शर्माकेँ कोना हटबैत अछि?
क. तीन मासक वेतन आ असंतोषजनक सेवाक बर्खास्तगी आदेश दऽ कऽ
ख. सम्मान-पत्र दऽ कऽ पदोन्नति कऽ
ग. मजदूरी बढ़ा कऽ
घ. स्वास्थ्य-छुट्टी दऽ कऽ
उत्तर: क. तीन मासक वेतन आ असंतोषजनक सेवाक बर्खास्तगी आदेश दऽ कऽ
व्याख्या: काला जादूक उल्लेख आदेशमे नहि, मुदा ‘असंतोषजनक सेवा’क औपचारिक भाषा सँ ओकरा हटाओल जाइत अछि।

प्रश्न 1471. शर्मा विरोधी यूनियन आ प्रबन्धनक सम्बन्धमे की निष्कर्ष निकालैत अछि?
क. दूनूक मिलीभगत ओकरा अलग-थलग करलक
ख. दूनू ओकर पक्षमे छल
ग. दूनूक झगड़ा समाप्त भेल
घ. दूनू अस्पताल चलि गेल
उत्तर: क. दूनूक मिलीभगत ओकरा अलग-थलग करलक
व्याख्या: ओ अनुभव करैत अछि जे सत्ता-तंत्र आ विभाजन ओकर सामाजिक आधार तोड़ि देलक।

प्रश्न 1472. ‘सोझ-साधा लोकक बचब कठिन अछि’ कथन ककर पीड़ा अछि?
क. शर्माक, जे अपनाकेँ जन-हितैषी मानितो दुश्मन मानल जाइत अछि
ख. प्रबन्ध निदेशकक
ग. रोहिणीक
घ. हजरतक
उत्तर: क. शर्माक, जे अपनाकेँ जन-हितैषी मानितो दुश्मन मानल जाइत अछि
व्याख्या: शर्मा व्यथित अछि जे जिनका लेल लड़ल, वैह लोक अन्धविश्वासमे ओकरा शत्रु देखि रहल अछि।

खण्ड १५३ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अभिशप्त’: रोहिणी, स्वास्थ्य-लाभ आ भयक पुनरागमन

प्रश्न 1473. अस्पतालमे प्रारम्भिक उपचारक बाद शर्माक स्वास्थ्य पर की प्रभाव पड़ैत अछि?
क. खोंखी घटि जाइत अछि आ नीक दवाई-भोजनसँ ओ बदलि जाइत अछि
ख. ओ तुरन्त मरि जाइत अछि
ग. ओ अस्पताल छोड़ि भागि जाइत अछि
घ. ओ डॉक्टर बनि जाइत अछि
उत्तर: क. खोंखी घटि जाइत अछि आ नीक दवाई-भोजनसँ ओ बदलि जाइत अछि
व्याख्या: सही देखभाल भेटिते ओकर शरीर सुधरैत अछि; एहि सँ अभाव आ उपचारक अन्तर स्पष्ट होइत अछि।

प्रश्न 1474. शर्मा अस्पतालमे रहितो कथावाचकक भविष्यक विषयमे कोना सोचैत अछि?
क. ओ ओकर समृद्धि, नौकरी आ भविष्यक सपना देखैत रहैत अछि
ख. ओ ओकरा त्यागि दैत अछि
ग. ओ ओकरा धमकाबैत अछि
घ. ओ ओकरा मस्जिद पठबैत अछि
उत्तर: क. ओ ओकर समृद्धि, नौकरी आ भविष्यक सपना देखैत रहैत अछि
व्याख्या: शर्मा अपन संकटक बीचो मित्र लेल स्वप्न देखैत अछि; ओकर आत्मीयता अटूट अछि।

प्रश्न 1475. शर्मा आदर्शवादसँ हटि कथावाचक कैं कोन व्यावहारिक सलाह दैत अछि?
क. गरीबक सेवा कहबाक बदला खाड़ी देश जाउ आ धनी बनू
ख. हर दिन यूनियन धरना दियौ
ग. मेडिकल पढ़ाइ छोड़ू
घ. काला जादूक अभ्यास करू
उत्तर: क. गरीबक सेवा कहबाक बदला खाड़ी देश जाउ आ धनी बनू
व्याख्या: पीड़ा आ पराजय ओकर पहिले वाला आदर्शवादकैं खिसका दैत अछि।

प्रश्न 1476. रोहिणी शर्माक विषयमे कथावाचककैं ककरा लग जायब ठीक नहि कहलनि?
क. पीड़ित सभक लग
ख. मक्का मस्जिद लग
ग. चित्रकला कक्षा लग
घ. जवाहर भारती कॉलेज लग
उत्तर: क. पीड़ित सभक लग
व्याख्या: रोहिणीक सावधानी कथावाचककैं निष्ठुर बुझाइत अछि, कारण शर्मा ओकर बालसखा अछि।

प्रश्न 1477. रोहिणीक चेतावनी पर कथावाचकक भीतरी प्रतिक्रिया की अछि?
क. ओ दाँत पीसैत अछि आ आहत होइत अछि
ख. ओ तुरन्त सहमत भऽ जाइत अछि
ग. ओ हँसि दैत अछि
घ. ओ नौकरी छोड़ि दैत अछि
उत्तर: क. ओ दाँत पीसैत अछि आ आहत होइत अछि
व्याख्या: मित्रक पीड़ा प्रति रोहिणीक दूरी कथावाचकक नैतिक भावनाकैं चोट पहुँचबैत अछि।

प्रश्न 1478. पोस्टिंग बदलबाक सन्दर्भ कथामे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. टीबी अस्पताल सँ हटला बाद शर्माक सुरक्षा आ निगरानी कमजोर पड़ैत अछि
ख. कथावाचक मस्जिदमे नियुक्त होइत अछि
ग. रोहिणी विदेश जाइत अछि
घ. शर्मा नौकरी पाबि जाइत अछि
उत्तर: क. टीबी अस्पताल सँ हटला बाद शर्माक सुरक्षा आ निगरानी कमजोर पड़ैत अछि
व्याख्या: कथावाचकक प्रत्यक्ष उपस्थिति कम भेला पर शर्माक संकट फेर बढ़ि जाइत अछि।

प्रश्न 1479. शर्मा बादमे शरीर पर चोटक निशान संग की बतबैत अछि?
क. तीन बदमाश ताजा हवा लेबा लेल निकलला पर ओकरा पीटि देलक
ख. ओ बस दुर्घटनामे घायल भेल
ग. ओ चित्रकला सीखैत चोट खा गेल
घ. ओ पूजा मे गिरि गेल
उत्तर: क. तीन बदमाश ताजा हवा लेबा लेल निकलला पर ओकरा पीटि देलक
व्याख्या: बाहर टहलनाइ सेहो ओकरा लेल असुरक्षित बनि गेल; अन्धविश्वास हिंसा बनि गेल।

प्रश्न 1480. बदमाश सभ शर्माकैं कोन नाम/छवि सँ चिह्नित करैत अछि?
क. बानामती बापनय्या—काला जादू करय बला खतरनाक ओझा
ख. मक्का मस्जिदक हजरत
ग. मेडिकल प्रोफेसर
घ. चित्रकला मास्टर
उत्तर: क. बानामती बापनय्या—काला जादू करय बला खतरनाक ओझा
व्याख्या: झूठा ओझा-छवि ओकर सामाजिक व्यक्तित्वकैं नष्ट करैत अछि।

प्रश्न 1481. ‘करुणा, कृपया हमरा एतय सँ बचा लिअ’—एहि वाक्यमे शर्माक कोन अवस्था अछि?
क. पहिल बेर सन्तुलन खोने भयभीत निराशा
ख. हास्यपूर्ण छेड़छाड़
ग. राजनीतिक विजय
घ. स्वस्थ आत्मविश्वास
उत्तर: क. पहिल बेर सन्तुलन खोने भयभीत निराशा
व्याख्या: एहि पुकारमे आदर्शवादी मित्रक टूटन आ जीवन-भयक चरम स्थिति अछि।

प्रश्न 1482. कथावाचक सहपाठीसँ शर्मापर नजरि रखबाक कहैत अछि, मुदा प्रतिक्रिया की भेटैत अछि?
क. लोक ओकरा मानसिक रोगी जकाँ बुझि डरैत छथि
ख. सभ सहपाठी उत्साहसँ मदति करैत छथि
ग. प्रबन्धन माफी माँगैत अछि
घ. रोहिणी ओकरा घर लऽ जाइत अछि
उत्तर: क. लोक ओकरा मानसिक रोगी जकाँ बुझि डरैत छथि
व्याख्या: अस्पतालक शिक्षित परिवेश सेहो भय आ दूरीसँ मुक्त नहि; शर्माक एकाकीपन बढ़ैत अछि।

खण्ड १५४ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अभिशप्त’: मित्रता, मृत्यु आ असली ‘काला जादू’

प्रश्न 1483. रोहिणी कथावाचकसँ की कहि व्यक्तिगत सम्बन्ध पर दबाव बनबैत अछि?
क. अहाँक मित्र हमर प्रेम पर ग्रहण लगा देलक
ख. अहाँक मित्र हमरा नौकरी देलक
ग. अहाँक मित्र पूर्ण स्वस्थ अछि
घ. अहाँक मित्र नमाज पढ़ैत अछि
उत्तर: क. अहाँक मित्र हमर प्रेम पर ग्रहण लगा देलक
व्याख्या: रोहिणी शर्माक संकटकेँ अपन प्रेमक बाधा बुझैत अछि; एहि सँ कथावाचक आहत आ क्रुद्ध होइत अछि।

प्रश्न 1484. कथावाचक रोहिणीकेँ किएक टोकैत अछि?
क. ओ मेडिकल छात्रा भऽ कऽ एहन बकवास मानैत छथि, से अस्वीकार्य अछि
ख. ओ शर्मा केँ दवाई देलनि
ग. ओ महालक्ष्मीकेँ चिट्ठी लिखलनि
घ. ओ मस्जिद गेलीह
उत्तर: क. ओ मेडिकल छात्रा भऽ कऽ एहन बकवास मानैत छथि, से अस्वीकार्य अछि
व्याख्या: कथावाचक शिक्षित समाजक अन्धविश्वास वा भावनात्मक स्वार्थ पर तामस करैत अछि।

प्रश्न 1485. कथावाचक शर्माक बारेमे रोहिणी सँ कोन सीमा रखैत अछि?
क. ने शर्माक विषयमे हलुक बात, ने प्रेमकेँ ओकर विरोधमे राखब
ख. शर्माकेँ तुरन्त त्यागब
ग. रोहिणीसँ विवाह स्थगित करब
घ. मेडिकल पढ़ाइ छोड़ब
उत्तर: क. ने शर्माक विषयमे हलुक बात, ने प्रेमकेँ ओकर विरोधमे राखब
व्याख्या: दसक पुरान मित्रता कथावाचक लेल केवल भावुकता नहि, नैतिक दायित्व अछि।

प्रश्न 1486. रोहिणीक ‘जँ अहाँ ओकरा त्यागि नै देब तऽ...’ धमकी पर कथावाचक की कहैत अछि?
क. हमरा परवाह नै अछि
ख. हम ओकरा त्यागि देब
ग. हम अस्पताल छोड़ि देब
घ. हम गाम घुरि जायब
उत्तर: क. हमरा परवाह नै अछि
व्याख्या: एहि उत्तरमे कथावाचक मित्रताक पक्षमे प्रेम-संबन्धक दबाव अस्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 1487. शर्माक मृत्यु सँ ठीक पहिने ओकरा कोन सुखद समाचार भेटल छल?
क. बच्चीक जन्म आ माय-बच्चा दुनू नीक होयब
ख. नव नौकरीक नियुक्ति
ग. रोहिणीक माफी
घ. प्रबन्धनक सम्मान
उत्तर: क. बच्चीक जन्म आ माय-बच्चा दुनू नीक होयब
व्याख्या: नवजीवनक समाचार आ मित्रक मृत्युक समीपता कथाकेँ अत्यन्त करुण बनबैत अछि।

प्रश्न 1488. अस्पतालमे दोसर मरीजक मृत्यु देखलाक बाद शर्माक स्थिति कथावाचक कोना अनुमान करैत अछि?
क. ओ झूठा अभिशाप-भय सँ टूटि गेल हएत
ख. ओ पूर्णतः निश्चिन्त भेल हएत
ग. ओ घर घुरि गेल हएत
घ. ओ नौकरी पाबि गेल हएत
उत्तर: क. ओ झूठा अभिशाप-भय सँ टूटि गेल हएत
व्याख्या: काला जादूक आरोपसँ आतंकित शर्मा दोसर मृत्युकेँ अपन ऊपर लादल मिथकसँ जोड़ि सहि नहि सकल हएत।

प्रश्न 1489. कथावाचक 'ई असली काला जादू अछि' कहि ककरा लक्ष्य करैत अछि?
क. अन्धविश्वास, सामाजिक भय आ संस्थागत असहायता जे निर्दोषकेँ मारि दैत अछि
ख. शर्माक वास्तविक तांत्रिक शक्ति
ग. मक्का मस्जिदक चमत्कार
घ. रोहिणीक मेडिकल ज्ञान
उत्तर: क. अन्धविश्वास, सामाजिक भय आ संस्थागत असहायता जे निर्दोषकेँ मारि दैत अछि
व्याख्या: कथा काला जादूकेँ वास्तविक मन्त्र नहि, बल्कि समाजक हिंसक अज्ञान आ भयक विनाशकारी शक्ति बनबैत अछि।

प्रश्न 1490. कथावाचक हैदराबादक दूरीक बात किएक उठबैत अछि?
क. दिखाबय लेल जे दूरक शत्रु नहि, बल्कि भीतरक भय शर्माकेँ मारि गेल
ख. यात्रा खर्च गिनबाक लेल
ग. मस्जिदक दूरी नापबाक लेल
घ. नौकरीक पते लिखबाक लेल
उत्तर: क. दिखाबय लेल जे दूरक शत्रु नहि, बल्कि भीतरक भय शर्माकेँ मारि गेल
व्याख्या: ओ पूछैत अछि—एतेक दूर धरि के पीछा करत? असल पीछा अन्धविश्वास आ सामाजिक कलंकक छल।

प्रश्न 1491. रोहिणी बादमे कथावाचकसँ गप करबाक प्रयत्न किएक नहि करैत?
क. मित्रता आ नैतिक निर्णयक दरार प्रेम-संबन्धकेँ समाप्त कऽ दैत अछि
ख. ओ विदेश पढ़य गेलीह
ग. ओ शर्मा सँ विवाह कएलनि
घ. ओ मक्का मस्जिद गेलीह
उत्तर: क. मित्रता आ नैतिक निर्णयक दरार प्रेम-संबन्धकेँ समाप्त कऽ दैत अछि
व्याख्या: शर्मा प्रसंग रोहिणी आ कथावाचक बीच मूल्यगत फाँक खोलि दैत अछि।

प्रश्न 1492. 'अभिशप्त' क अन्तिम प्रभाव की अछि?
क. एक आदर्शवादी गरीब मित्र समाजक अन्धविश्वास, सत्ता-संरचना आ असहाय मित्रताक बीच मरि जाइत अछि
ख. एक धनी युवक पदोन्नति पबैत अछि
ग. एक धार्मिक यात्रा सुखपूर्वक समाप्त होइत अछि
घ. एक चित्रकला गुरु परीक्षा पास करबैत अछि
उत्तर: क. एक आदर्शवादी गरीब मित्र समाजक अन्धविश्वास, सत्ता-संरचना आ असहाय मित्रताक बीच मरि जाइत अछि
व्याख्या: कथा व्यक्तिगत मित्रता सँ आगे बढ़ि सामाजिक हिंसा, अन्धविश्वास आ वर्गीय असुरक्षाक त्रासदी बनि जाइत अछि।

खण्ड १५५ : विदेह-सदेह ३७ — ‘दुःख अप्रमिता’: लेखिका, शीर्षक आ पीड़ाक सूत्र

प्रश्न 1493. ‘दुःख अप्रमिता’ कथाक शीर्षक कोन परम्परागत स्रोत सँ लेल गेल अछि?
क. भीमा भोइक भजन सँ
ख. कालीदासक नाटक सँ
ग. विद्यापतिक पद सँ
घ. रामायणक युद्धकाण्ड सँ
उत्तर: क. भीमा भोइक भजन सँ
व्याख्या: कथाक शीर्षक सन्त-कवि भीमा भोइक करुणा-केन्द्रित भजनसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 1494. शीर्षकक मूल भाव कथामे कोन दिशामे संकेत करैत अछि?
क. राजदरबारक हास्य-व्यंग्य दिस
ख. केवल विद्यालयी परीक्षा-प्रतिस्पर्धा दिस
ग. कृषि-बाजारक लाभ-हानि दिस
घ. अस्तित्वक अथाह दुःख आ ओकर सहनशीलता दिस
उत्तर: घ. अस्तित्वक अथाह दुःख आ ओकर सहनशीलता दिस
व्याख्या: ‘अप्रमिता’ दुःखक मापातीत विस्तार बतबैत अछि, जे कथाक बच्ची आ स्त्री-दुनूक पीड़ा मे फैलल अछि।

प्रश्न 1495. सरोजिनी साहूक परिचयमे नारीवादक कोन अर्थ प्रमुख अछि?
क. केवल चुनावी अधिकारक मुद्दा
ख. केवल हास्य-साहित्यक प्रवृत्ति
ग. स्त्री-जीवनकेँ पुरुषक दुनिया सँ अलग सम्पूर्ण इकाईक रूपमे देखब
घ. पुरुष-विरोध मात्र
उत्तर: ग. स्त्री-जीवनकेँ पुरुषक दुनिया सँ अलग सम्पूर्ण इकाईक रूपमे देखब
व्याख्या: परिचयमे हुनकर नारीवाद स्त्री-देह, अनुभव आ जीवनक सम्पूर्णता पर आधारित कहल गेल अछि।

प्रश्न 1496. सरोजिनी साहू कोन भाषासभमे लेखन करैत छथि?
क. केवल गुजरातीमे
ख. उड़िया आ अंग्रेजी दुनूमे
ग. केवल संस्कृतमे
घ. केवल मैथिलीमे
उत्तर: ख. उड़िया आ अंग्रेजी दुनूमे
व्याख्या: परिचय हुनका द्विभाषी लेखिका कहैत अछि—ओ उड़िया आ अंग्रेजी दुनूमे सक्रिय छथि।

प्रश्न 1497. ‘दुःख अप्रमिता’ मैथिलीमे कोना आयल?
क. उड़ियासँ अंग्रेजी अनुवाद, फेर अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद द्वारा
ख. सीधा फ्रेंचसँ मैथिली अनुवाद द्वारा
ग. संस्कृत टीकासँ संकलन द्वारा
घ. केवल मौखिक लोकगीत द्वारा
उत्तर: क. उड़ियासँ अंग्रेजी अनुवाद, फेर अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद द्वारा
व्याख्या: गोपा नायकक अंग्रेजी अनुवादक आधार पर मैथिली रूपान्तरण देल गेल अछि।

प्रश्न 1498. कथाक आरम्भमे कलम किएक महत्त्वपूर्ण वस्तु बनैत अछि?
क. किएक तँ ओ सरकारी हथियार अछि
ख. किएक तँ ओ खेत जोतबाक औजार अछि
ग. किएक तँ ओ अस्पतालक दवाई अछि
घ. किएक तँ ओ महँग, सुन्दर आ बच्चीक आत्मीय गर्वक वस्तु अछि
उत्तर: घ. किएक तँ ओ महँग, सुन्दर आ बच्चीक आत्मीय गर्वक वस्तु अछि
व्याख्या: कलम बच्चीक छोट सुख, भरोसा आ सामाजिक असुरक्षाक केन्द्र बनि जाइत अछि।

प्रश्न 1499. भजनक अनूदित भाव ‘संसार जिऐत रहय’ कथामे कोन करुणा खोलैत अछि?
क. युद्धमे विजयक आह्वान
ख. कठोर दण्डक आदेश
ग. अपन दुःख सहि दोसरक उद्धारक कल्पना
घ. धन जमा करबाक शिक्षा
उत्तर: ग. अपन दुःख सहि दोसरक उद्धारक कल्पना
व्याख्या: भीमा भोइक पंक्तिक भाव आत्मबलिदान आ जगत-करुणा अछि, जे कथा-कठिनाईक सुर रचैत अछि।

प्रश्न 1500. लेखिका-सूचनामे साहूक स्त्री-लेखनक कोन व्यापकता उल्लेखित अछि?
क. केवल राजा-महाराजाक इतिहास
ख. किशोरावस्था सँ रजोनिवृत्ति धरिक स्त्री-संवेदना
ग. केवल सैनिक जीवन
घ. केवल पशु-कथा
उत्तर: ख. किशोरावस्था सँ रजोनिवृत्ति धरिक स्त्री-संवेदना
व्याख्या: हुनकर लेखन स्त्री-देह आ जीवनक विभिन्न अवस्थाक अनुभवकेँ कथा-विषय बनबैत अछि।

प्रश्न 1501. कथाक शीर्षक आ टिकलीक प्रसंगक बीच कोन साम्य अछि?
क. छोट घटना सेहो अथाह पीड़ा आ उपेक्षाक इतिहास खोलि दैत अछि
ख. दूनू केवल हास्य पैदा करैत अछि
ग. दूनू युद्ध-नीति सिखबैत अछि
घ. दूनू व्यापारिक अनुबंध अछि
उत्तर: क. छोट घटना सेहो अथाह पीड़ा आ उपेक्षाक इतिहास खोलि दैत अछि
व्याख्या: कलमक घटना मात्र बाल-काण्ड नहि; ओ बच्चीक सम्पूर्ण अपमानित जीवनक द्वार खोलैत अछि।

प्रश्न 1502. ‘दुःख अप्रमिता’क भूमिका पाठककेँ कोन तरहक कथा लेल तैयार करैत अछि?
क. केवल जासूसी रहस्य लेल
ख. केवल परीक्षा-प्रश्नावली लेल
ग. केवल मिठाईक वर्णन लेल
घ. व्यक्तिगत स्मृति आ सामाजिक स्त्री-पीड़ाक गहिर कथा लेल
उत्तर: घ. व्यक्तिगत स्मृति आ सामाजिक स्त्री-पीड़ाक गहिर कथा लेल
व्याख्या: भूमिका नारीवाद, दुःख, शरीर आ स्मृतिक संयुक्त धरातल बनबैत अछि।

खण्ड १५६ : विदेह-सदेह ३७ — ‘दुःख अप्रमिता’: टिकली, कलम, सोनाली आ नहर

प्रश्न 1503. कथावाचिका कलम स्कूल किएक लऽ गेलीह?
क. ट्यूटरकेँ उपहार देबाक लेल
ख. नहर मापबाक लेल
ग. प्रेमलताकेँ देखबय जे एहन कलम सचमुच अछि
घ. प्रधानाचार्यकेँ बेचबाक लेल
उत्तर: ग. प्रेमलताकेँ देखबय जे एहन कलम सचमुच अछि
व्याख्या: प्रेमलता विश्वास नहि करैत छलि, तेँ बच्ची अपन प्रिय कलम देखाबय चाहैत छलि।

प्रश्न 1504. ओ कलमक विशेषता की छल?
क. ओ चिलमक धुआँ रोकैत छल
ख. एक छोर पर छोट घड़ी छल आ लिखबा काल चमकत छल
ग. ओ नहरक पुल खोलैत छल
घ. ओ दूध गरम करैत छल
उत्तर: ख. एक छोर पर छोट घड़ी छल आ लिखबा काल चमकत छल
व्याख्या: कलमक चमक आ घड़ी ओकरा बच्चीक नजरिमे विलक्षण बनबैत अछि।

प्रश्न 1505. कलम पहिने कथावाचिकाकेँ के देने छल?
क. विदेश सँ आयल काकी
ख. प्रधानाचार्य
ग. सोनाली
घ. स्कूल बस चालक
उत्तर: क. विदेश सँ आयल काकी
व्याख्या: मूल पाठमे कलम काकी विदेश सँ आनि उपहार देलनि।

प्रश्न 1506. प्रेमलताक गोपनीयता टूटला पर की भेल?
क. महापात्रा मैडम छुट्टी देलनि
ख. माय कलम फेकि देलनि
ग. नहर सुखा गेल
घ. सोनाली कलमक बात जानि ओकरा मांगय लगलीह
उत्तर: घ. सोनाली कलमक बात जानि ओकरा मांगय लगलीह
व्याख्या: प्रेमलता रहस्य सोनालीकेँ कहि देलक, आ संकट एतयसँ बढ़ल।

प्रश्न 1507. स्कूल बसक देरी कथानकमे किएक निर्णायक अछि?
क. एहि सँ कलम महँग भेल
ख. एहि सँ काकी विदेश गेलीह
ग. एहि देरी सँ बच्ची पैदल घर जाय लगलीह आ नहरक रस्ता बनल
घ. एहि सँ परीक्षा रद्द भेल
उत्तर: ग. एहि देरी सँ बच्ची पैदल घर जाय लगलीह आ नहरक रस्ता बनल
व्याख्या: बस देरी भेलाक कारण सुरक्षित रस्ताक बदला जोखिमपूर्ण पैदल रस्ता चुनल गेल।

प्रश्न 1508. माय पैदल रस्तासँ किएक रोकैत छलीह?
क. रस्तामे पुस्तकालय छल
ख. शराबक दोकान, सुनसान रस्ता आ टूटल नहर-पुलक डर सँ
ग. रस्तामे फूल बेसी छल
घ. रस्ता बहुत महँग छल
उत्तर: ख. शराबक दोकान, सुनसान रस्ता आ टूटल नहर-पुलक डर सँ
व्याख्या: मायक चेतावनी सामाजिक असुरक्षा आ भूगोलिक खतरा दुनू पर आधारित छल।

प्रश्न 1509. कलम नहरमे कोना खसल?
क. सोनालीक छीनाझपटी सँ
ख. प्रधानाचार्य फेकि देलनि
ग. माय भूलि गेलीह
घ. ट्यूटर तोड़ि देलक
उत्तर: क. सोनालीक छीनाझपटी सँ
व्याख्या: सोनाली कलम छीनलक आ ओ नहरमे जा खसल।

प्रश्न 1510. कलम देखाइ पड़ैत रहबाक परिणाम की भेल?
क. ओ तुरन्त घर घुरि गेलीह
ख. ओ बसमे चढ़ि गेलीह
ग. ओ परीक्षा देबय गेलीह
घ. कथावाचिका कादोमे उतरि ओकरा निकालबाक प्रयास करैत फँसि गेलीह
उत्तर: घ. कथावाचिका कादोमे उतरि ओकरा निकालबाक प्रयास करैत फँसि गेलीह
व्याख्या: देखाइ पड़ैत वस्तु ओकर आशाकेँ जिंदा रखलक, मुदा वैह ओकरा कादोमे धँसौलक।

प्रश्न 1511. सोनाली बच्चीकेँ खींचबाक बदला की करैत अछि?
क. नहरमे संगहि कूदैत अछि
ख. मायक घरमे पहिने सँ प्रतीक्षा करैत अछि
ग. डरि कऽ पाछू हटि मदति अनबाक आश्वासन दैत चलि जाइत अछि
घ. कलम तुरन्त निकालि दैत अछि
उत्तर: ग. डरि कऽ पाछू हटि मदति अनबाक आश्वासन दैत चलि जाइत अछि
व्याख्या: सोनाली डूमबाक डर सँ बच्चीकेँ छोड़ि मदति अनबाक नाम पर ओतयसँ हटि जाइत अछि।

प्रश्न 1512. कादोमे फँसल बच्चीक स्थिति कथामे कोन प्रतीकात्मक अर्थ लैत अछि?
क. ओ यात्राक आराम अछि
ख. ओ अपन जीवनक निरन्तर धँसब, असहायता आ उपेक्षाक रूपक बनैत अछि
ग. ओ केवल खेलक जीत अछि
घ. ओ धन कमेबाक उपाय अछि
उत्तर: ख. ओ अपन जीवनक निरन्तर धँसब, असहायता आ उपेक्षाक रूपक बनैत अछि
व्याख्या: कादोमे धँसब बच्चीक पढ़ाइ, परिवार आ आत्म-मूल्यक संकटसँ जोड़ल गेल अछि।

खण्ड १५७ : विदेह-सदेह ३७ — ‘दुःख अप्रमिता’: जन्म, रोग, निद्रा आ आत्म-छवि

प्रश्न 1513. कथावाचिकाक जन्मसँ पहिने माय किएक दुखी रहैत छलीह?
क. ज्योतिषी कननी बेटीक भविष्यवाणी कएने छल आ गर्भधारण अनचाहल छल
ख. ओ राजगद्दी चाहैत छलीह
ग. ओ विदेश जाय चाहैत छलीह
घ. ओ कलम बेचि देलनि
उत्तर: क. ज्योतिषी कननी बेटीक भविष्यवाणी कएने छल आ गर्भधारण अनचाहल छल
व्याख्या: माय गर्भावस्थासँ बच्चीकेँ बोझ, पाप-भय आ भविष्यवाणीक सन्दर्भमे देखैत छथि।

प्रश्न 1514. जन्मक समय कोन संकट घटल?
क. स्कूल बस लेट भेल
ख. प्रधानाचार्य रिपोर्ट कार्ड फेकि देलनि
ग. ससुर चिलम पीबय लगलाह
घ. गर्भक पानि समय सँ पहिने टूटल आ माय-बच्चा दुनूक जान जोखिममे पड़ल
उत्तर: घ. गर्भक पानि समय सँ पहिने टूटल आ माय-बच्चा दुनूक जान जोखिममे पड़ल
व्याख्या: डॉक्टरक कथन अनुसार कनी देरी भेला पर दुनू बचब कठिन छल।

प्रश्न 1515. बच्चीक जन्मक समय घरमे कोन घटना मायकेँ ‘अभाग्य’क संकेत बुझायल?
क. कलम चमकल
ख. पिकनिक भेल
ग. घरमे चोरी भेल आ भगवान लेल राखल पन्द्रह टाका चलि गेल
घ. भाइ पुरस्कार पेलक
उत्तर: ग. घरमे चोरी भेल आ भगवान लेल राखल पन्द्रह टाका चलि गेल
व्याख्या: चोरीक घटना बच्चीक जन्मकेँ अशुभ ठहरएबाक पारिवारिक धारणा बनि गेल।

प्रश्न 1516. अस्पतालमे नवजात बच्ची पर कोन शारीरिक संकट आबि पड़ल?
क. समुद्री यात्रा
ख. कारी चीज बोकरब, संक्रमण, दस्त आ सलाइन
ग. कुश्तीमे हार
घ. चिलमक धुआँ
उत्तर: ख. कारी चीज बोकरब, संक्रमण, दस्त आ सलाइन
व्याख्या: जन्मक तुरन्त बादो ओकर शरीर रोग आ उपचारक बीच अटकल रहल।

प्रश्न 1517. मायक दूधक प्रसंग कथावाचिकाक आत्म-छवि पर की असर करैत अछि?
क. ओ अपनाकेँ आरम्भसँ अस्वीकारित/अलग बच्चा जकाँ मोन करैत अछि
ख. ओ अपनाकेँ रानी मानैत अछि
ग. ओ अपनाकेँ शिक्षक मानैत अछि
घ. ओ अपनाकेँ व्यापारी मानैत अछि
उत्तर: क. ओ अपनाकेँ आरम्भसँ अस्वीकारित/अलग बच्चा जकाँ मोन करैत अछि
व्याख्या: दूध न पीबाक स्मृति ओकर 'अलग' हेबाक धारणा बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1518. 'कूड़ादानक आत्मकथा' प्रसंग किएक मार्मिक अछि?
क. ओ शाब्दिक अर्थ पूर्णत: सिद्ध करैत अछि
ख. ओ परीक्षा जीतैत अछि
ग. ओ कविता प्रतियोगिता जितैत अछि
घ. बच्ची आत्मकथा बुझैत नहि, मुदा ओकर जीवन स्वयं उपेक्षित वस्तु सन देखाइत अछि
उत्तर: घ. बच्ची आत्मकथा बुझैत नहि, मुदा ओकर जीवन स्वयं उपेक्षित वस्तु सन देखाइत अछि
व्याख्या: कूड़ादानक वाक्य बच्चीक आत्म-अस्वीकृति आ उपेक्षा सँ अनचाहे जुड़ि जाइत अछि।

प्रश्न 1519. घरमे टिकली नाम पर उलाहना किएक देल जाइत अछि?
क. ओ नदी पार करैत अछि
ख. ओ चिलम पीबैत अछि
ग. ओ टिकली जकाँ चंचल-प्रफुल्लित नहि, बल्कि सुस्त आ निद्रालु अछि
घ. ओ बहुत धनी अछि
उत्तर: ग. ओ टिकली जकाँ चंचल-प्रफुल्लित नहि, बल्कि सुस्त आ निद्रालु अछि
व्याख्या: नाम आ स्वभावक विरोधाभास परिवारक ताना बनैत अछि।

प्रश्न 1520. बचपनमे ओकरा 'राढ़ीगाढ़ी' आ 'कुम्भकर्णक बहिन' किएक कहल जाइत छल?
क. बेसी चित्र बनयबाक कारण
ख. बेसी सुतबाक आदतिक कारण
ग. बेसी गाबय के कारण
घ. बेसी तैरबाक कारण
उत्तर: ख. बेसी सुतबाक आदतिक कारण
व्याख्या: निद्रा ओकर परिवारमे हास्य आ निन्दाक विषय बनि गेल।

प्रश्न 1521. माय 'निद्रा तोर दुश्मन अछि' कहि की बुझबैत छलीह?
क. निद्रा पढ़ाइ आ बुद्धि-विकास रोकैत अछि, एहन मान्यता
ख. निद्रा धन बढ़बैत अछि
ग. निद्रा कलम बचबैत अछि
घ. निद्रा नहर सुखबैत अछि
उत्तर: क. निद्रा पढ़ाइ आ बुद्धि-विकास रोकैत अछि, एहन मान्यता
व्याख्या: माय बच्चीक पढ़ाइ-कमजोरीकेँ निद्रा सँ जोड़ैत छलीह।

प्रश्न 1522. कथावाचिका अपन दिमागक तुलना रेगिस्तानसँ किएक करैत अछि?
क. कारण ओ ऊँट चलबैत अछि
ख. कारण ओ सोनालीसँ खेलैत अछि
ग. कारण महिसागर खारा अछि
घ. कारण ओकरा लगैत अछि जे पढ़ल गप टिकैत नहि आ भीतर सूखलपन अछि
उत्तर: घ. कारण ओकरा लगैत अछि जे पढ़ल गप टिकैत नहि आ भीतर सूखलपन अछि
व्याख्या: दादाजीक पक्षाघात आ अपन विस्मृतिक बीच बच्ची सूखल दिमागक कल्पना करैत अछि।

खण्ड १५८ : विदेह-सदेह ३७ — ‘दुःख अप्रमिता’: परिवार, पढ़ाइ आ शिक्षकीय हिंसा

प्रश्न 1523. बाबूजी पढ़बैत काल बच्ची पर कोन दबाव बनबैत छलाह?
क. कविता गाबबाक पुरस्कार
ख. महिसागर पार करबाक अभ्यास
ग. नौक पहाड़ा ने कहला पर गरदनि पकड़ि मारबाक धमकी
घ. मिठाई खायबाक आग्रह
उत्तर: ग. नौक पहाड़ा ने कहला पर गरदनि पकड़ि मारबाक धमकी
व्याख्या: गणित-पढ़ाइ हिंसा आ भयक अनुभव बनि जाइत अछि।

प्रश्न 1524. माय बाबूजीक तामस बीच बच्चीकेँ कोना बचबैत छलीह?
क. चिलम छीनि लैत छलीह
ख. भनसाघर सँ दौड़ि उत्तर बताबय लगैत छलीह
ग. नहरमे कूदि पड़ैत छलीह
घ. प्रधानाचार्य बनि जाइत छलीह
उत्तर: ख. भनसाघर सँ दौड़ि उत्तर बताबय लगैत छलीह
व्याख्या: माय स्वयं डेरायल होइतहुँ बच्चीक पक्षमे तुरन्त बोलय चाहैत छलीह।

प्रश्न 1525. अक्षर ‘म’ नहि लिखि सकलाक स्मृति कथामे की देखबैत अछि?
क. पढ़ाइ-कठिनाई पर मातृ-हताशा आ शारीरिक दण्ड
ख. कविताक सफलता
ग. चित्रकलाक प्रशिक्षण
घ. पिकनिकक आनन्द
उत्तर: क. पढ़ाइ-कठिनाई पर मातृ-हताशा आ शारीरिक दण्ड
व्याख्या: माय बच्चीकेँ उठा कऽ पटकैत छथि, जे शिक्षा-केंद्रित हिंसाक मार्मिक दृश्य अछि।

प्रश्न 1526. नव ट्यूटरक आगमन पर माय बच्चीक परिचय कोना करबैत छलीह?
क. पुरस्कार-सूची पढ़ि सुनबैत
ख. नहरक नक्शा दैत
ग. बियाहक गीत गबैत
घ. डॉक्टरकेँ मरीजक इतिहास कहबाक तरहें कमजोरी, मिरगी आ पढ़ाइ-कठिनाई बतबैत
उत्तर: घ. डॉक्टरकेँ मरीजक इतिहास कहबाक तरहें कमजोरी, मिरगी आ पढ़ाइ-कठिनाई बतबैत
व्याख्या: माय बच्चीक सीखबाक समस्या केँ रोग-कथाजकाँ समझाबैत छलीह।

प्रश्न 1527. माय अपन जीवनक उदाहरण दऽ कऽ बच्चीकेँ की सिखाबय चाहैत छलीह?
क. धन बिना नाम नहि
ख. नहरमे उतरब चाही
ग. प्रयास कयला सँ शिक्षा सम्भव अछि
घ. पढ़ाइ छोड़ब नीक अछि
उत्तर: ग. प्रयास कयला सँ शिक्षा सम्भव अछि
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे हुनका माता-पिता न पढ़ौने, तैयो ओ स्वयं पढ़ि किछु बनलीह।

प्रश्न 1528. भाइ आ बच्चीक विद्यालय-यात्रा मे कोन असमानता देखाइत अछि?
क. बच्ची विदेश गेलीह
ख. भाइ श्रेष्ठ स्कूल, भ्रमण आ प्रतियोगितासँ जुड़ल; बच्ची कमजोर स्कूलमे अटकल
ग. दूनू एके तरहक अवसर पेलक
घ. भाइ स्कूल छोड़ि देलक
उत्तर: ख. भाइ श्रेष्ठ स्कूल, भ्रमण आ प्रतियोगितासँ जुड़ल; बच्ची कमजोर स्कूलमे अटकल
व्याख्या: कथा शिक्षा-अवसर आ आत्म-मूल्यक अन्तर उजागर करैत अछि।

प्रश्न 1529. बेरोजगार इंजीनियरिंग छात्र ट्यूटरक तरीका की छल?
क. उत्तर कॉपीमे लिखि दैत आ याद नहि रहला पर सजा दैत
ख. कहानी सुनबैत
ग. चित्र बनबैत
घ. महिसागरक पानि अनैत
उत्तर: क. उत्तर कॉपीमे लिखि दैत आ याद नहि रहला पर सजा दैत
व्याख्या: ओ पढ़बैत नहि, मात्र लिखि दैत; बादमे स्मृति-असफलता पर शारीरिक दण्ड करैत।

प्रश्न 1530. ट्यूटरक हिंसा कोन रूपमे व्यक्त भेल?
क. मिठाई बाँटनाइ
ख. पुरस्कार देनाइ
ग. नदी पार करेनाइ
घ. आंगुर बीच पेंसिल दबेब, नोचनाइ, नाक-कानसँ शोनित निकलनाइ
उत्तर: घ. आंगुर बीच पेंसिल दबेब, नोचनाइ, नाक-कानसँ शोनित निकलनाइ
व्याख्या: शिक्षा-सहायता बच्चीक लेल यातना बनैत अछि।

प्रश्न 1531. माय ट्यूटरसँ नाराज रहितो अगिला दिन की करैत छलीह?
क. स्कूल बन्द करा दैत
ख. कलम नहरमे फेकि दैत
ग. मुस्कुरा कऽ ‘कृपया नै मारू’ कहैत फेर पढ़बाक अनुमति दैत
घ. ट्यूटरकेँ जेल पठा दैत
उत्तर: ग. मुस्कुरा कऽ ‘कृपया नै मारू’ कहैत फेर पढ़बाक अनुमति दैत
व्याख्या: मायक विवशता सामाजिक दबाव, शिक्षा-भय आ बच्चीक पीड़ा बीच फँसल अछि।

प्रश्न 1532. प्रधानाचार्य रिपोर्ट कार्ड देखाबैत मायकेँ कोना अपमानित करैत छथि?
क. भाइकेँ स्कूलसँ निकालैत
ख. बच्चीक प्रोन्नति पर प्रश्न उठा कऽ घरक देख-रेख नहि करबाक आरोप लगबैत
ग. मायक पुरस्कार घोषणा करैत
घ. सोनालीकेँ दण्ड दैत
उत्तर: ख. बच्चीक प्रोन्नति पर प्रश्न उठा कऽ घरक देख-रेख नहि करबाक आरोप लगबैत
व्याख्या: प्रधानाचार्यक अपमान पर माय मौन रहैत छथि; बच्ची ओकर धैर्य देखि द्रवित होइत अछि।

खण्ड १५९ : विदेह-सदेह ३७ — ‘दुःख अप्रमिता’: कादोमे अटकल टिकलीक भय आ आशा

प्रश्न 1533. कादो जाँघ धरि चढ़ला पर बच्चीक पहिल चिन्ता की अछि?
क. सोनाली मदति अनलक कि नहि आ कियो देखत कि नहि
ख. भाइ पिकनिक गेल कि नहि
ग. काकी विदेश अइलीह कि नहि
घ. ट्यूटरक नह काटल कि नहि
उत्तर: क. सोनाली मदति अनलक कि नहि आ कियो देखत कि नहि
व्याख्या: ओ बार-बार सोनाली आ सम्भावित उद्धारक कल्पना करैत अछि।

प्रश्न 1534. पुल पार करैत काका कैँ बच्ची किएक नहि बचा पबैत?
क. काका सोनालीक संग छथि
ख. काका स्कूल बस चलबैत छथि
ग. काका प्रधानाचार्य छथि
घ. ओ पुकारैत अछि मुदा काका सुनि नहि पबैत छथि
उत्तर: घ. ओ पुकारैत अछि मुदा काका सुनि नहि पबैत छथि
व्याख्या: दृश्य बच्चीक निकट-उद्धारक असफलता आ असहायताकेँ बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1535. माय ‘मरि किएक नहि जाइत छी’ कहैत छलीह, मुदा बच्ची भीतर की बुझैत अछि?
क. माय स्कूल बन्द करब चाहैत छथि
ख. माय चिलम पीबैत छथि
ग. माय डाँटैत छथि, मुदा ओकर मृत्यु पर कनतीह
घ. माय ओकरा कलम दऽ प्रसन्न छथि
उत्तर: ग. माय डाँटैत छथि, मुदा ओकर मृत्यु पर कनतीह
व्याख्या: बच्ची मायक कठोर वाक्य आ भीतरी स्नेह बीच अन्तर करय चाहैत अछि।

प्रश्न 1536. ज्योतिषीक आगि-वाला भविष्यवाणी बच्चीक कादोमे धँसैत समय की भूमिका निभबैत अछि?
क. ओ कलम महँग बना दैत
ख. ओ सोचैत अछि जे डूबि नहि मरब, हमरा तऽ जरि कऽ मरबाक भविष्यवाणी अछि
ग. ओ तुरन्त तैरबाक कला देत
घ. ओ सोनालीकेँ दोषमुक्त करैत
उत्तर: ख. ओ सोचैत अछि जे डूबि नहि मरब, हमरा तऽ जरि कऽ मरबाक भविष्यवाणी अछि
व्याख्या: बचबाक आशा विचित्र रूपेँ भयावह भविष्यवाणीपर टिकैत अछि।

प्रश्न 1537. दहेजक भय मायक कल्पनामे कोना अबैत अछि?
क. ओ डरैत छथि जे पढ़ाइमे कमजोर बेटीकेँ सासुरमे जरा देल जायत
ख. ओ बेटीकेँ रानी बनबय चाहैत छथि
ग. ओ बेटीक विवाह समुद्री जहाजसँ करबय चाहैत छथि
घ. ओ स्कूलमे भोज करबय चाहैत छथि
उत्तर: क. ओ डरैत छथि जे पढ़ाइमे कमजोर बेटीकेँ सासुरमे जरा देल जायत
व्याख्या: आगि-भविष्यवाणी स्त्रीक विवाहोत्तर हिंसाक सामाजिक भय सँ जुड़ि जाइत अछि।

प्रश्न 1538. कादोमे फँसल बच्ची अपन मृत्यु टारबाक लेल कोन कल्पना दोहरबैत अछि?
क. नहर स्वयं सोना बनत
ख. कलम उड़ि कऽ घर पहुँचत
ग. बस पानीमे तैरत
घ. राति सँ पहिने कियो जरूर आयत आ बचायत
उत्तर: घ. राति सँ पहिने कियो जरूर आयत आ बचायत
व्याख्या: ओ आशा छोड़ैत नहि; प्रत्येक अबाजकेँ सम्भावित उद्धार मानैत अछि।

प्रश्न 1539. गाय निकलि गेलाक प्रसंग कथामे की करैत अछि?
क. कलम वापस देत
ख. मायकेँ फोन करैत अछि
ग. झूठ आशाक क्षण बनि बच्चीक एकाकीपन बढ़ा दैत अछि
घ. उद्धार तुरन्त करा दैत अछि
उत्तर: ग. झूठ आशाक क्षण बनि बच्चीक एकाकीपन बढ़ा दैत अछि
व्याख्या: चलबाक अबाज पहिने मनुखक आशा जगबैत अछि, मुदा गाय निकलि जाइत अछि।

प्रश्न 1540. बच्ची सोचैत अछि माय ओकरा कतय-कतय खोजतीह?
क. सिर्फ चिलम-दुकान पर
ख. स्कूल, सखी सभक घर, रस्ता सभ पर
ग. सिर्फ विदेशमे
घ. सिर्फ अस्पतालमे
उत्तर: ख. स्कूल, सखी सभक घर, रस्ता सभ पर
व्याख्या: मायक खोजक कल्पना बच्चीक बचबाक आशाकेँ पोसैत अछि।

प्रश्न 1541. कादोमे अटकल बच्चीक अन्तिम विश्वास कोन अछि?
क. ओ कादोमे नहि, आगिसँ मरबाक कथित भाग्य कारण बचि जायत
ख. सोनाली कलम बेचि देत
ग. प्रधानाचार्य प्रोन्नति दैत छथि
घ. ट्यूटर माफी माँगत
उत्तर: क. ओ कादोमे नहि, आगिसँ मरबाक कथित भाग्य कारण बचि जायत
व्याख्या: एहि विश्वासमे त्रासदी आ बाल-मनोविज्ञान दुनू अछि—भयावह भविष्यवाणी सेहो आशा बनि जाइत अछि।

प्रश्न 1542. टिकलीक कथा शिक्षा-व्यवस्था पर कोन टिप्पणी करैत अछि?
क. विद्यालय सदिखन दयालु अछि
ख. ट्यूटर सदिखन रक्षक अछि
ग. पढ़ाइ केवल खेल अछि
घ. अंकीय असफलता बच्चाक सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ दोष बना दैत अछि
उत्तर: घ. अंकीय असफलता बच्चाक सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ दोष बना दैत अछि
व्याख्या: कथा कमजोर सीखबाक क्षमता केँ दण्ड, अपमान आ आत्महीनता मे बदलैत देखबैत अछि।

खण्ड १६० : विदेह-सदेह ३७ — ‘माताक कोरामे’: गुजराती खण्ड, सुन्दरम आ शाबूक विदाई

प्रश्न 1543. ‘माताक कोरामे’ कोन भाषा-परम्परा सँ आबि रहल कथा अछि?
क. केवल तेलुगु कविता
ख. संस्कृत नाटकक अंश
ग. गुजराती मूलक कथा, अंग्रेजी बाटे मैथिलीमे
घ. रूसी मूलक कथा
उत्तर: ग. गुजराती मूलक कथा, अंग्रेजी बाटे मैथिलीमे
व्याख्या: गुजराती खण्डमे सुन्दरमक कथा हेमांग देसाईक अंग्रेजी अनुवाद आधार पर मैथिलीमे देल गेल अछि।

प्रश्न 1544. सुन्दरमक परिचयमे हुनका कोन युग/आन्दोलनसँ जोड़ल गेल अछि?
क. फ्रांसीसी क्रान्ति
ख. गाँधी युग आ गुजराती नव-कविताक आन्दोलन
ग. मुगल दरबार
घ. रोमन साम्राज्य
उत्तर: ख. गाँधी युग आ गुजराती नव-कविताक आन्दोलन
व्याख्या: सुन्दरम टी.पी. लुहारक उपनाम अछि; ओ गाँधी युगक प्रमुख साहित्यकार मानल गेल छथि।

प्रश्न 1545. कथा आरम्भमे दू पुरुष आ एक स्त्री कतयसँ बाहर निकलैत छथि?
क. नदीक कात पर चट्टान-बसल गामक पातर गली सँ
ख. रेलवे स्टेशनक प्रतीक्षालय सँ
ग. मक्का मस्जिदक आँगन सँ
घ. अस्पतालक वार्ड सँ
उत्तर: क. नदीक कात पर चट्टान-बसल गामक पातर गली सँ
व्याख्या: प्रारम्भिक दृश्य शाबूक जन्मभूमि-गाम, नदी आ गलीक भूगोल रचैत अछि।

प्रश्न 1546. गामक स्त्री सभ शाबूकेँ कोना विदा करैत छथि?
क. ओकरा दण्ड दऽ
ख. ओकरा परीक्षा देबा पठा कऽ
ग. ओकरा नौकरीक नियुक्ति दऽ
घ. अलविदा, सम्हरि कऽ जाउ, अपन ध्यान राखब कहि
उत्तर: घ. अलविदा, सम्हरि कऽ जाउ, अपन ध्यान राखब कहि
व्याख्या: विदाईक स्वर स्नेहपूर्ण अछि, मुदा वातावरणमे अनिष्टक छाया सेहो अछि।

प्रश्न 1547. शाबू अपन सासुर ककरा संग जा रहली छथि?
क. प्रधानाचार्य संग
ख. ट्यूटर संग
ग. ससुर आ पति संग
घ. केवल सोनाली संग
उत्तर: ग. ससुर आ पति संग
व्याख्या: ससुर आ पति ओकरा पैतृक घरसँ लऽ जयबा आएल छथि।

प्रश्न 1548. विदाईक क्षण शाबूकेँ भीतरसँ कोना प्रभावित करैत अछि?
क. ओ कलम खोजय लगलीह
ख. गोड़ निर्जीव जकाँ, आगू डेग बढ़ेबाक शक्ति घटल
ग. ओ अत्यधिक उल्लसित भऽ नाचय लगलीह
घ. ओ तुरन्त गाबय लगलीह
उत्तर: ख. गोड़ निर्जीव जकाँ, आगू डेग बढ़ेबाक शक्ति घटल
व्याख्या: घर छोड़ब ओकर शरीरमे प्रतिरोध आ भयक रूपमे उतरैत अछि।

प्रश्न 1549. शाबूक पाछू रहि जेबाक कारण की अछि?
क. सम्बन्धी-पड़ोसी आ बच्चाक सखीसभसँ विदाईक भावुकता
ख. ओ बसक प्रतीक्षा करैत छलीह
ग. ओ परीक्षा लिखैत छलीह
घ. ओ ट्यूटरक कॉपी खोजैत छलीह
उत्तर: क. सम्बन्धी-पड़ोसी आ बच्चाक सखीसभसँ विदाईक भावुकता
व्याख्या: विदाईक सम्बन्ध-जाल ओकरा पुरुषसभसँ धीमा कऽ दैत अछि।

प्रश्न 1550. गलीमे ‘अपशकुन’ कोन घटना मानल जाइत अछि?
क. कलम चमकल
ख. बकरी चरि रहल छल
ग. नदीमे ज्वार आयल
घ. बिलाइ शाबूक रस्ता काटि देलक
उत्तर: घ. बिलाइ शाबूक रस्ता काटि देलक
व्याख्या: लोक बिलाइक रस्ता काटबकेँ अपशकुन मानि घबरा उठैत अछि।

प्रश्न 1551. लोक शाबूकेँ रोकि किएक नहि पबैत?
क. ओ स्कूलमे अछि
ख. ओ अस्पतालमे भर्ती अछि
ग. वापस बजाएब वा रुकाएब सम्भव नहि मानल जाइत अछि
घ. ओ पहिने सँ नदी पार कएने छथि
उत्तर: ग. वापस बजाएब वा रुकाएब सम्भव नहि मानल जाइत अछि
व्याख्या: समाज अपशकुन नोट करैत अछि, मुदा स्त्रीक यात्रा रोकबाक अधिकार/साहस नहि जुटबैत।

प्रश्न 1552. ‘माय अम्बा सब नीक करतीह’ कथन कथामे कोन भूमिका रखैत अछि?
क. चिकित्सकीय नुस्खा
ख. अनिष्ट-भयक बीच सांत्वना आ असहाय धर्म-आश्रय
ग. व्यापारिक सौदा
घ. विद्यालयी आदेश
उत्तर: ख. अनिष्ट-भयक बीच सांत्वना आ असहाय धर्म-आश्रय
व्याख्या: लोक भय दूर करबाक लेल देवीक नाम लैत अपन-अपन काजमे लागि जाइत अछि।

खण्ड १६१ : विदेह-सदेह ३७ — ‘माताक कोरामे’: नदी, कादो, स्मृति आ महिसागर

प्रश्न 1553. शाबू खधाइमे पहुँचला पर बाप-बेटाकेँ कोन अवस्था मे देखैत छथि?
क. ओ सभ चिलम पीबैत प्रतीक्षा करैत छथि
ख. ओ सभ पूजा करैत छथि
ग. ओ सभ परीक्षा जाँचैत छथि
घ. ओ सभ कलम खोजैत छथि
उत्तर: क. ओ सभ चिलम पीबैत प्रतीक्षा करैत छथि
व्याख्या: धुआँ आ चिलमक दृश्य बाप-बेटाक कठोर, उदासीन उपस्थिति बनबैत अछि।

प्रश्न 1554. नदीक भाटा कथामे कोन दृश्य बनबैत अछि?
क. सुनामी उठैत अछि
ख. स्कूल बस बहैत अछि
ग. शहरक बजार खुलैत अछि
घ. नाङट किनारक कादो दर्पण जकाँ चमकैत अछि
उत्तर: घ. नाङट किनारक कादो दर्पण जकाँ चमकैत अछि
व्याख्या: भाटा, कादो आ पदचिह्नक दृश्य यात्रा केँ अस्थिर आ प्रतीकात्मक बनबैत अछि।

प्रश्न 1555. सासुरक गाम देखला पर शाबूक शरीरमे की प्रतिक्रिया होइत अछि?
क. तत्काल निद्रा
ख. हँसीक फुहार
ग. भयक हल्लुक थरथरी
घ. पूर्ण उल्लास
उत्तर: ग. भयक हल्लुक थरथरी
व्याख्या: सासुरक हरियर सीमा देखिते शाबू भीतर सँ कँपि उठैत छथि।

प्रश्न 1556. ससुर नीचाँ ठाढ़ छथि बुझला पर शाबू की करैत छथि?
क. प्रधानाचार्य बनैत छथि
ख. रीति अनुसार घोघट खींचि लैत छथि
ग. चिलम पीबैत छथि
घ. नहरमे कलम फेकि दैत छथि
उत्तर: ख. रीति अनुसार घोघट खींचि लैत छथि
व्याख्या: घोघट स्त्री-शिष्टाचार, भय आ नियंत्रणक संकेत अछि।

प्रश्न 1557. खधाइ आ एकपेरिया देख शाबूकेँ कोन अतीत याद अबैत अछि?
क. बचपनमे पशु चराएब, बेर तोड़ि खाएब आ मुक्त घूमब
ख. मेडिकल कॉलेजक वार्ड
ग. मक्का मस्जिद विस्फोट
घ. रिपोर्ट कार्ड
उत्तर: क. बचपनमे पशु चराएब, बेर तोड़ि खाएब आ मुक्त घूमब
व्याख्या: गामक भूगोल ओकर मुक्त बचपनकेँ जगबैत अछि, जे सासुर-यात्रासँ उलट अछि।

प्रश्न 1558. नव कपड़ा आ भारी गहना शाबूकेँ कोना लगैत अछि?
क. पूर्ण स्वतंत्रता जकाँ
ख. विद्यालयी वर्दी जकाँ
ग. चिकित्सकीय पट्टी जकाँ
घ. घृणा आ बोझ जकाँ
उत्तर: घ. घृणा आ बोझ जकाँ
व्याख्या: विवाह-संकेतक सजावट ओकरा कैद आ बोझ जकाँ अनुभव होइत अछि।

प्रश्न 1559. ‘कनी आस्ते चलू’ पर बाप-बेटाक प्रतिक्रिया की अछि?
क. ओ विदा समारोह रोकैत छथि
ख. ओ शाबूकेँ गाड़ी दैत छथि
ग. ओ सभ अनसुन करैत बिना रुकल चलैत रहैत छथि
घ. ओ तुरन्त पानि दैत छथि
उत्तर: ग. ओ सभ अनसुन करैत बिना रुकल चलैत रहैत छथि
व्याख्या: पुरुषक उदासीनता शाबूक शारीरिक कठिनाई आ असुरक्षाकेँ बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1560. कादो पर पुरुषसभक पदचिह्न देखि शाबू किएक खिन्न छथि?
क. ओ सभ भजन गाबय लगल
ख. ओकरा लगैत अछि जे ओ सभ ओकर कादो खराब कऽ देलक
ग. ओ सभ पुल बना देलक
घ. ओ सभ कलम निकालि देलक
उत्तर: ख. ओकरा लगैत अछि जे ओ सभ ओकर कादो खराब कऽ देलक
व्याख्या: बचपनक प्रिय कादो पर पुरुषक हिंसक चलन ओकरा विध्वंस जकाँ लगैत अछि।

प्रश्न 1561. महिसागरक पानि लग शाबू की करैत छथि?
क. आँजुरमे पानि भरि माथ पर धरि ‘माय महिसागर’ सँ प्रार्थना
ख. पानि बेचि दैत छथि
ग. कागजक नाव बनबैत छथि
घ. सोनालीकेँ पुकारैत छथि
उत्तर: क. आँजुरमे पानि भरि माथ पर धरि ‘माय महिसागर’ सँ प्रार्थना
व्याख्या: महिसागर ओकरा लेल मातृ-शरण, स्मृति आ आध्यात्मिक सम्बल अछि।

प्रश्न 1562. नदीमे उतरला पर शाबूकेँ कोन विरोधी भाव अनुभव होइत अछि?
क. केवल व्यापारिक उत्साह
ख. केवल परीक्षा-चिन्ता
ग. केवल निद्रा
घ. शीतल स्पर्श आ भय दुनू
उत्तर: घ. शीतल स्पर्श आ भय दुनू
व्याख्या: पानि ओकरा सुख सेहो दैत अछि, मुदा मृत्यु/वियोगक विचार सेहो जगबैत अछि।

खण्ड १६२ : विदेह-सदेह ३७ — ‘माताक कोरामे’: पारगमन, मायभूमि आ स्मृति

प्रश्न 1563. नदी पार करैत शाबू ककरा याद करैत छथि?
क. शर्मा आ रोहिणी
ख. मक्का मस्जिदक हजरत
ग. बचपनक सखी, नवजात बच्चा आ अपन भावी बच्चा
घ. प्रधानाचार्य आ ट्यूटर
उत्तर: ग. बचपनक सखी, नवजात बच्चा आ अपन भावी बच्चा
व्याख्या: नदीक पानि मातृत्वक कल्पना आ सखी-स्मृतिसँ भरि जाइत अछि।

प्रश्न 1564. पेटमे हलचल अनुभव कएलाक बाद शाबूकी प्रतिक्रिया अछि?
क. चिलमक लोभ
ख. भावी बेटाक कल्पना, छातीमे दूधक उमड़नाइ आ कोमलता
ग. पढ़ाइक डर
घ. रिपोर्ट कार्डक क्रोध
उत्तर: ख. भावी बेटाक कल्पना, छातीमे दूधक उमड़नाइ आ कोमलता
व्याख्या: गर्भस्थ जीवन ओकरा भयक बीचो आशा आ मातृत्वक तीव्रता दैत अछि।

प्रश्न 1565. महिसागरक पानि मुँहमे देला पर शाबू किएक थुकि दैत छथि?
क. पानि नूनगर अछि
ख. पानि गरम दूध अछि
ग. पानि कलम बनि गेल
घ. पानि मधुर शरबत अछि
उत्तर: क. पानि नूनगर अछि
व्याख्या: एतेक पानि रहितो पीबाक योग्य नहि—ई पियासक त्रासदी बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1566. सुनसान नदी-किनार पर पियासक भय कथामे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ओ मिठाईक स्वाद बढ़बैत अछि
ख. ओ परीक्षा पास करबैत अछि
ग. ओ घोघट हटबैत अछि
घ. मीठ पानिक अभाव जानलेवा बनि सकैत अछि
उत्तर: घ. मीठ पानिक अभाव जानलेवा बनि सकैत अछि
व्याख्या: कछारी भूगोलमे पियास प्रकृतिक आ सामाजिक खतरा दुनू अछि।

प्रश्न 1567. नदी पार भेला पर शाबूकेँ दोसर किनार कोना लगैत अछि?
क. विद्यालयक कक्षा जकाँ
ख. मेला जकाँ
ग. विदेशी, अज्ञात आ मातृभूमिसँ अलग
घ. अपन घरक आँगन जकाँ
उत्तर: ग. विदेशी, अज्ञात आ मातृभूमिसँ अलग
व्याख्या: नदी पार करब पैतृक सुरक्षा छोड़ि अज्ञात हिंसक क्षेत्रमे प्रवेश जकाँ अछि।

प्रश्न 1568. शाबू ‘हमर घर ओइ पार’ किएक सोचैत छथि?
क. ओ पिकनिक चाहैत छथि
ख. जन्मभूमि नदीक ओहि पार रहि गेल अछि
ग. ओ बजार देखैत छथि
घ. ओ अस्पताल खोजैत छथि
उत्तर: ख. जन्मभूमि नदीक ओहि पार रहि गेल अछि
व्याख्या: पार उतरिते ओकरा अपन घर पाछाँ छूटल सत्य तीखा लगैत अछि।

प्रश्न 1569. बचपनमे बियाहक बाद पहिल विदाईक स्मृति कोन रूपमे अबैत अछि?
क. कटही गाड़ी, बालुक खेलबाक इच्छा, मुदा उतरय नहि देल गेल
ख. हवाई जहाज यात्रा
ग. विद्यालयी पुरस्कार
घ. चिकित्सकीय ऑपरेशन
उत्तर: क. कटही गाड़ी, बालुक खेलबाक इच्छा, मुदा उतरय नहि देल गेल
व्याख्या: ओहि पहिल पारगमनमे सेहो शाबूक इच्छा दबाओल गेल छल।

प्रश्न 1570. शाबूक बाबूजीक स्मृति कथामे किएक ताकतवर अछि?
क. ओ प्रधानाचार्य छलाह
ख. ओ ट्यूटर छलाह
ग. ओ बस चालक छलाह
घ. ओ सासुरक प्रताड़ना सँ बेटीकेँ बचाबय बला साहसी व्यक्ति छलाह
उत्तर: घ. ओ सासुरक प्रताड़ना सँ बेटीकेँ बचाबय बला साहसी व्यक्ति छलाह
व्याख्या: बाबूजी शाबूक सुरक्षाक प्रतीक छथि, जिनकर मृत्यु बाद ओ असुरक्षित भेलि।

प्रश्न 1571. ससुरक विषयमे शाबूक स्मृति कोन भय जगबैत अछि?
क. ओ चित्रकार गुरु छथि
ख. ओ कवि-सम्मेलन संचालक छथि
ग. ओ निर्दयी, हिंसक आ पूर्व पुत्रवधू सम्बन्धी अफवाहसँ घेरल व्यक्ति बुझाइत छथि
घ. ओ दयालु चिकित्सक छथि
उत्तर: ग. ओ निर्दयी, हिंसक आ पूर्व पुत्रवधू सम्बन्धी अफवाहसँ घेरल व्यक्ति बुझाइत छथि
व्याख्या: ससुरक छवि भेड़िया/राक्षसक तरहें बनैत चलैत अछि।

प्रश्न 1572. पति शाबूक स्मृतिमे कोना उभरैत अछि?
क. सफल कवि
ख. बाबूजी पर निर्भर, डरपोक आ पितृ-आज्ञाक गुलाम
ग. पूर्ण स्वतंत्र नायक
घ. विद्रोही चिकित्सक
उत्तर: ख. बाबूजी पर निर्भर, डरपोक आ पितृ-आज्ञाक गुलाम
व्याख्या: ओ अपन निर्णय नहि करैत; ‘बाप-भक्त’ रूपेँ शाबूक असुरक्षा बढ़बैत अछि।

खण्ड १६३ : विदेह-सदेह ३७ — ‘माताक कोरामे’: पियास, छल आ हिंसक षड्यन्त्र

प्रश्न 1573. बालु पर चलैत शाबू बार-बार कोन बात कहय चाहैत छथि?
क. हमरा पानि पीबाक अछि
ख. हमरा परीक्षा देबाक अछि
ग. हमरा कलम चाही
घ. हमरा ट्यूटर चाही
उत्तर: क. हमरा पानि पीबाक अछि
व्याख्या: भयंकर पियास कथाक शारीरिक संकट आ हिंसक योजना दुनू उजागर करैत अछि।

प्रश्न 1574. बाप-बेटाक मुँह सँ निकलैत धुआँ शाबूकेँ किएक असहज करैत अछि?
क. ओ पियास तुरन्त बुझा दैत अछि
ख. ओ नदीकेँ मीठ बना दैत अछि
ग. ओ देवीक आरती अछि
घ. ओ कठोर, अनुदार पुरुष-उपस्थिति आ षड्यन्त्रक संकेत बनैत अछि
उत्तर: घ. ओ कठोर, अनुदार पुरुष-उपस्थिति आ षड्यन्त्रक संकेत बनैत अछि
व्याख्या: चिलमक धुआँ शुरूसँ अन्तधरि डरावन वातावरण बनबैत अछि।

प्रश्न 1575. शाबू पियास कहैत छथि, पति की उत्तर दैत अछि?
क. ओकरा पाछाँ घर भेजैत अछि
ख. ओ देवीक प्रसाद दैत अछि
ग. लगमे प्याऊ घर नहि होयबाक बात बड़बड़ाइत अछि
घ. तुरन्त घड़ा भरि पानि दैत अछि
उत्तर: ग. लगमे प्याऊ घर नहि होयबाक बात बड़बड़ाइत अछि
व्याख्या: पति अपन पत्नीकेँ बचाबय योग्य निर्णायकता नहि देखबैत।

प्रश्न 1576. रिरियाहट सुनला पर ससुर की करैत अछि?
क. नदीमे कूदि पड़ैत अछि
ख. पानि ओतय अछि कहि ओकरा भ्रामक दिशा मे लऽ जाय लगैत अछि
ग. बच्चाकेँ बचाबय दौड़ैत अछि
घ. शाबूकेँ घर घुराबैत अछि
उत्तर: ख. पानि ओतय अछि कहि ओकरा भ्रामक दिशा मे लऽ जाय लगैत अछि
व्याख्या: ससुर बच्चाक अबाज आ पियास दुनूक उपयोग छलक साधन बनबैत अछि।

प्रश्न 1577. शाबूकेँ किएक संदेह होइत अछि जे ओ सभ उल्टा दिस जा रहल छथि?
क. अबाज दोसर दिशासँ आबि रहल छल
ख. सूर्य पश्चिममे छल
ग. कलम चमकि रहल छल
घ. घोघट भारी छल
उत्तर: क. अबाज दोसर दिशासँ आबि रहल छल
व्याख्या: शाबू मार्गक असंगति पकड़ैत छथि, मुदा पुरुषक दबावक बीच असहाय छथि।

प्रश्न 1578. ससुर शाबूकेँ कोना भ्रमित करैत अछि?
क. कहैत अछि स्कूल खुलल अछि
ख. कहैत अछि सोनाली आयल अछि
ग. कहैत अछि डॉक्टर प्रतीक्षा करैत छथि
घ. कहैत अछि जे अबाज एहि दिससँ आबि रहल अछि, प्याऊ सेहो एहि दिस अछि
उत्तर: घ. कहैत अछि जे अबाज एहि दिससँ आबि रहल अछि, प्याऊ सेहो एहि दिस अछि
व्याख्या: ओ झूठा तर्क दैत शाबूकेँ सुनसान दिशामे आगू बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1579. शाबू थाकि खसि पड़ला पर ससुरक नजरि कोना अछि?
क. बाल-खेलक
ख. शिक्षकीय
ग. षड्यन्त्रपूर्ण, चारू कात सुनसान जाँचय बला
घ. करुणामय
उत्तर: ग. षड्यन्त्रपूर्ण, चारू कात सुनसान जाँचय बला
व्याख्या: ससुर पहिने वातावरणक निर्जनता सुनिश्चित करैत अछि, जे हिंसा पूर्व-नियोजित संकेत करैत अछि।

प्रश्न 1580. ससुर बेटाकेँ 'तूँ ककरा ताकि रहल छह?' कहि की उकसाबैत अछि?
क. गीत गेबाक लेल
ख. शाबू पर हमला करबाक लेल
ग. पानि देबाक लेल
घ. घर लौटबाक लेल
उत्तर: ख. शाबू पर हमला करबाक लेल
व्याख्या: ओ बेटाक डर/हिचकिचाहट पर दबाव बना हिंसा करबय चाहैत अछि।

प्रश्न 1581. पति पहिने शाबू पर कोन हिंसा करैत अछि?
क. दुनू हाथसँ गरदनि पकड़ैत अछि
ख. माथ पर पानि धरैत अछि
ग. कलम वापस दैत अछि
घ. चोट पर मलहम लगबैत अछि
उत्तर: क. दुनू हाथसँ गरदनि पकड़ैत अछि
व्याख्या: पति पिताक आदेशक छाया मे पत्नी पर प्रत्यक्ष आक्रमण करैत अछि।

प्रश्न 1582. शाबू प्रतिरोध कोना करैत छथि?
क. ओ चुपचाप हारि मानैत छथि
ख. ओ चिलम पीबैत छथि
ग. ओ परीक्षा लिखैत छथि
घ. ओ जोरक लात मारि पति केँ दूर खसा दैत छथि
उत्तर: घ. ओ जोरक लात मारि पति केँ दूर खसा दैत छथि
व्याख्या: गर्भवती शाबूक प्रतिरोध ओकर असहायता बीच शरीरक अन्तिम शक्ति देखबैत अछि।

खण्ड १६४ : विदेह-सदेह ३७ — ‘माताक कोरामे’: हत्या, गर्भ आ कथा-त्रासदी

प्रश्न 1583. पति खसलाक बाद शाबू पर अन्तिम हमला कियो करैत अछि?
क. प्रधानाचार्य
ख. मेडिकल डॉक्टर
ग. ससुर
घ. सोनाली
उत्तर: ग. ससुर
व्याख्या: पति कमजोर पड़लाक बाद ससुर स्वयं भेड़िया-जकाँ हिंसा करैत अछि।

प्रश्न 1584. ससुर शाबू पर कोन झूठा नैतिक आरोप लगबैत अछि?
क. चिलम तोड़ेबाक
ख. व्यभिचारी जीवन जीबय चाहबाक
ग. पढ़ाइमे कमज़ोर होयबाक
घ. कलम चोरेबाक
उत्तर: ख. व्यभिचारी जीवन जीबय चाहबाक
व्याख्या: हत्याक न्यायोचित ठहराबय लेल ओ स्त्रीक चरित्र पर झूठा आरोप लगबैत अछि।

प्रश्न 1585. ससुर बेटाकेँ शाबूक पएर पकड़बाक आदेश किएक दैत अछि?
क. हत्या पूरा करबाक लेल ओकरा सहयोगी बनाबय
ख. उद्धार करबाक लेल
ग. नदी पार कराबय लेल
घ. जूता पहिराबय लेल
उत्तर: क. हत्या पूरा करबाक लेल ओकरा सहयोगी बनाबय
व्याख्या: ओ बेटाकेँ अपराधमे शामिल करैत अछि, जे पितृसत्तात्मक हिंसाक रूप अछि।

प्रश्न 1586. गरदनि दबैत समय शाबूकेँ कोन अनुभूति होइत अछि?
क. विद्यालयक मंच पर पुरस्कार
ख. कलम चमकैत
ग. अस्पतालक सलाइन
घ. महिसागरक पानिमे डुबकी लगैत जकाँ
उत्तर: घ. महिसागरक पानिमे डुबकी लगैत जकाँ
व्याख्या: मृत्यु क्षणमे सेहो महिसागर मातृ-जल आ शरणक प्रतीक बनि उपस्थित अछि।

प्रश्न 1587. अन्तिम क्षणमे शाबू आकाशमे ककर छवि देखैत छथि?
क. ट्यूटर पेंसिल संग
ख. सोनाली कलम संग
ग. बाबूजी गिद्ध जकाँ चक्कर काटैत
घ. प्रधानाचार्य रिपोर्ट कार्ड संग
उत्तर: ग. बाबूजी गिद्ध जकाँ चक्कर काटैत
व्याख्या: बाबूजीक स्मृति अन्तिम सुरक्षा-आकांक्षा बनि अबैत अछि।

प्रश्न 1588. शाबूक अन्तिम पुकार कोन अछि?
क. हे ट्यूटर!
ख. हे बाबूजी!
ग. हे प्रधानाचार्य!
घ. हे सोनाली!
उत्तर: ख. हे बाबूजी!
व्याख्या: हुनकर अन्तिम स्वर पितृ-रक्षक स्मृतिक दिशामे अछि, सासुरक हिंसा विरुद्ध।

प्रश्न 1589. मृत्यु पश्चात् ससुर ककरा संकेत करैत ‘मामिला’ छिपाबय चाहैत अछि?
क. घूँघट ओढ़ने स्त्रीकेँ, एक रुपैया दऽ कऽ
ख. स्कूल बस चालककेँ
ग. डॉक्टरकेँ
घ. ट्यूटरकेँ
उत्तर: क. घूँघट ओढ़ने स्त्रीकेँ, एक रुपैया दऽ कऽ
व्याख्या: ओ अपराध ढँकबाक लेल बाहरी स्त्रीकेँ पैसा दैत, बात दबाबय चाहैत अछि।

प्रश्न 1590. ससुर मेघासँ बादमे की ध्यान देबाक कहैत अछि?
क. शाबूकेँ कलम छल
ख. शाबू परीक्षा पास छलीह
ग. शाबू चिलम पीबैत छलीह
घ. शाबू गर्भवती भऽ गेल छलीह
उत्तर: घ. शाबू गर्भवती भऽ गेल छलीह
व्याख्या: अन्तिम टिप्पणी हत्या कैँ आरो जघन्य बनबैत अछि—ओ गर्भस्थ जीवन सेहो नष्ट भेल।

प्रश्न 1591. मेघाक ‘हँ पिता! मुदा...’ अधूरा वाक्य की देखबैत अछि?
क. पूर्ण प्रसन्नता
ख. व्यापारिक सौदा
ग. आत्मग्लानि, डर आ पितृ-आज्ञाक सामने बोली बन्द भऽ जेबाक स्थिति
घ. साहसिक प्रतिरोध
उत्तर: ग. आत्मग्लानि, डर आ पितृ-आज्ञाक सामने बोली बन्द भऽ जेबाक स्थिति
व्याख्या: मेघा अपराध देखैत अछि, मुदा पिताक सत्ता सोझाँ ओकर स्वर टूटि जाइत अछि।

प्रश्न 1592. ‘माताक कोरामे’ शीर्षक अन्ततः कोन करुण विडम्बना रचैत अछि?
क. कलम सुरक्षित घर पहुँचैत अछि
ख. मातृ-शरण चाहैत गर्भवती स्त्री पितृसत्तात्मक हिंसामे मारल जाइत अछि
ग. मेला सफलतापूर्वक सम्पन्न होइत अछि
घ. विद्यालयी शिक्षा सुधरैत अछि
उत्तर: ख. मातृ-शरण चाहैत गर्भवती स्त्री पितृसत्तात्मक हिंसामे मारल जाइत अछि
व्याख्या: शाबू महिसागर-माताक कोरा चाहैत छथि, मुदा मनुष्य-समाजक हिंसा हुनका आ गर्भस्थ शिशुकेँ छीनि लैत अछि।

खण्ड १६५ : विदेह-सदेह ३७ — ‘माजा वेलोक निधन’: परिवार, स्थान आ साँझक वातावरण

प्रश्न 1593. ‘माजा वेलोक निधन’मे माजा वेलोकेँ आरम्भमे कोन रूपमे देखाओल गेल अछि?
क. तीन-चारि पीढ़ीक सन्तानसभसँ घेरायल बूढ़ कुलमुखिया
ख. असगरे स्कूल मास्टर
ग. नदी पार करैत जवान किसान
घ. दरबारमे बैसल सेनापति
उत्तर: क. तीन-चारि पीढ़ीक सन्तानसभसँ घेरायल बूढ़ कुलमुखिया
व्याख्या: कथाक आरम्भ माजा वेलोकेँ विस्तृत वंश-परिवारक केन्द्र बनबैत अछि, जतय अनेक सन्तान-पौत्र सभ हुनका चारू कात अछि।

प्रश्न 1594. माजा वेलोक परिवार रोज साँझमे कोन ठाम जमा होइत छल?
क. गामक पोखरिक घाट पर
ख. विद्यालयक बरामदामे
ग. दरबारक सभागृहमे
घ. नगरक देबाल बाहर मोटर डिपोक नीचाँ, ऊँच मीनार लग फुटपाथ पर
उत्तर: घ. नगरक देबाल बाहर मोटर डिपोक नीचाँ, ऊँच मीनार लग फुटपाथ पर
व्याख्या: परिवारक अड्डा शहरी फुटपाथ, मोटर डिपो आ मीनारक नीचे बनल अछि; ई नगरक हाशियाक जीवन देखबैत अछि।

प्रश्न 1595. कारखानाक धुआँक तुलना कथामे ककरासँ नहि, बल्कि ककरासँ उलट कएल गेल अछि?
क. चन्दनक लेपसँ
ख. फूलक बगैचासँ
ग. हवनक सुगन्धित धुआँसँ उलट गन्दा नाली-जकाँ दुर्गन्धित धुआँ
घ. बरखा-मेघक शीतल छाहसँ
उत्तर: ग. हवनक सुगन्धित धुआँसँ उलट गन्दा नाली-जकाँ दुर्गन्धित धुआँ
व्याख्या: धुआँक चित्रण औद्योगिक नगरक कठोरता आ फुटपाथी जीवनक असुविधा उघारैत अछि।

प्रश्न 1596. माजा वेलोक सन्तान रोज साँझमे गलीमे की करैत छल?
क. समुद्र यात्रा पर निकलैत छल
ख. डोनी लऽ कऽ भीख माँगैत आ भोजन जुटबैत छल
ग. राजकीय परीक्षा दैत छल
घ. नाटकक मंचन करैत छल
उत्तर: ख. डोनी लऽ कऽ भीख माँगैत आ भोजन जुटबैत छल
व्याख्या: परिवारक जीविका डोनी लऽ गलीमे फिरि बाँचल-खुचल भोजन माँगबासँ चलैत अछि।

प्रश्न 1597. बचल-खुचल भोजनक बाँट-व्यवस्था कथामे की देखबैत अछि?
क. घरक भीतर श्रेणी, भूख आ वृद्धसभ लेल अन्तिम हिस्सा
ख. केवल राजसी भोजक सम्पन्नता
ग. खेतीक बराबर लाभ
घ. विद्यालयी अनुशासन
उत्तर: क. घरक भीतर श्रेणी, भूख आ वृद्धसभ लेल अन्तिम हिस्सा
व्याख्या: पहिने पुरुष आ बच्चा सभ खाइत अछि, अन्तमे बूढ़-बुजुर्ग लेल बचल चीज जाइत अछि; एहि सँ अभावक घरेलू अर्थनीति खुलैत अछि।

प्रश्न 1598. माजा वेलो बेमार होइतहुँ बाहर किएक अयबाक हठ कएलनि?
क. अदालतमे गवाही देबाक लेल
ख. खेत जोतबाक लेल
ग. नदीमे स्नान करबाक लेल
घ. बियाहक भोज आ नगर देखबाक तीव्र इच्छा सँ
उत्तर: घ. बियाहक भोज आ नगर देखबाक तीव्र इच्छा सँ
व्याख्या: ज’ड़क बावजूद बियाहक शानदार व्यञ्जन सुनि हुनकर स्वाद-स्मृति आ जीवन-लालसा जागि उठैत अछि।

प्रश्न 1599. बच्चा सभ माजा वेलो लग कोना व्यवहार करैत अछि?
क. कठोर गुरु जकाँ
ख. अजनबी व्यापारी जकाँ
ग. मोंछ खींचैत, कान्ह पर चढ़ैत, कोरामे खेलैत स्नेहसँ
घ. दरबारक अपराधी जकाँ
उत्तर: ग. मोंछ खींचैत, कान्ह पर चढ़ैत, कोरामे खेलैत स्नेहसँ
व्याख्या: बच्चा सभक निकटता बूढ़कैं परिवारक प्रेमिल केन्द्र बनबैत अछि, जखन पैघ लोक हुनका बेमार बूढ़ जकाँ देखैत अछि।

प्रश्न 1600. मोटर डिपोक सिगरेट प्रसंग माजा वेलोक कोन पक्ष खोलैत अछि?
क. शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षण
ख. पुरान स्वाद, लत आ आधुनिक चीजक प्रति उत्सुकता
ग. पूर्ण वैराग्य
घ. सैनिक अनुशासन
उत्तर: ख. पुरान स्वाद, लत आ आधुनिक चीजक प्रति उत्सुकता
व्याख्या: फेकल सिगरेट उठबय लेल लड़काकैं पठेनाइ बूढ़क भोग-इच्छा आ शहरक बदलल वस्तु-संसार दुनू देखबैत अछि।

प्रश्न 1601. लालिया ‘बीड़ी’क बदला ‘सिगरेट’ कहि की दिखबैत अछि?
क. नव पीढ़ीक शहरी शब्द-संस्कार आ बूढ़क पुरान भाषा बीच अन्तर
ख. लड़का गंगा-पारक सेनानी अछि
ग. बूढ़केँ खेतीक हिसाब चाही
घ. परिवार माछ-व्यापार करैत अछि
उत्तर: क. नव पीढ़ीक शहरी शब्द-संस्कार आ बूढ़क पुरान भाषा बीच अन्तर
व्याख्या: माजा वेलो ‘बीड़ी’ कहैत छथि, लड़का ‘सिगरेट’ सुधारैत अछि; एहि छोट संवादमे पीढ़ीगत दूरी देखाइत अछि।

प्रश्न 1602. आरम्भिक दृश्यक मूल सामाजिक धरातल की अछि?
क. राजदरबारक विलास
ख. विद्यालयी खेलकूद
ग. समुद्री व्यापारक समृद्धि
घ. शहरी गरीबी, वंश-समूह, भीख-आधारित जीवन आ स्मृति
उत्तर: घ. शहरी गरीबी, वंश-समूह, भीख-आधारित जीवन आ स्मृति
व्याख्या: कथा नगरक फुटपाथ, भीख, बच्चा, बूढ़ स्मृति आ रोजमर्रा भूखक पृष्ठभूमि पर चलैत अछि।

खण्ड १६६ : विदेह-सदेह ३७ — ‘माजा वेलोक निधन’: डकैती-स्मृति, पुलिस आ अपराधक गर्व

प्रश्न 1603. माजा वेलो अचानक कोन विषय पुछि परिवारकेँ चौंकबैत छथि?
क. नदीक बाढ़ि
ख. चित्रकला प्रतियोगिता
ग. जे लोक डकैती पर निकलल छल, ओकरा सभक खबर
घ. विद्यालयक परीक्षा-फल
उत्तर: ग. जे लोक डकैती पर निकलल छल, ओकरा सभक खबर
व्याख्या: बूढ़क सामान्य पारिवारिक प्रश्न तुरन्त अपराध-जगतक स्मृतिमे मुड़ि जाइत अछि।

प्रश्न 1604. पुत्र माजा वेलोकेँ आस्ते बाजबय किएक कहैत अछि?
क. किएक तँ वर्षा भऽ रहल छल
ख. किएक तँ ओतय पुलिस घूमि रहल छल
ग. किएक तँ बच्चा सभ सुतल छल
घ. किएक तँ नाटक शुरू भेल छल
उत्तर: ख. किएक तँ ओतय पुलिस घूमि रहल छल
व्याख्या: बूढ़क पुरान डकैती-गप वर्तमान पुलिस-निगरानीक बीच खतरनाक बनि सकैत छल।

प्रश्न 1605. पुलिस वैन देखि माजा वेलोक प्रतिक्रिया की छल?
क. तिरस्कारपूर्ण गर्व, जे ओ एहन दर्जन पुलिसकेँ जेबीमे राखि सकैत छलाह
ख. तुरन्त आत्मसमर्पण
ग. भय सँ घर भागब
घ. प्रार्थना-पाठ शुरू करब
उत्तर: क. तिरस्कारपूर्ण गर्व, जे ओ एहन दर्जन पुलिसकेँ जेबीमे राखि सकैत छलाह
व्याख्या: ओ वृद्ध आ बेमार छथि, मुदा स्मृतिमे अपनाकेँ अबोध अपराधी नहि, बहादुर लुटेरा मानैत छथि।

प्रश्न 1606. परपोता माजा वेलोसँ कोन कथा फेर सुनबय चाहैत अछि?
क. कृषि-उत्पादनक हिसाब
ख. राजा जनकक दरबार
ग. विद्यालयी पुरस्कार
घ. नगरमे भेल पुरान डकैतीक कथा
उत्तर: घ. नगरमे भेल पुरान डकैतीक कथा
व्याख्या: बच्चा सभ लेल डकैतीक कथा रोमान्चक लोक-गाथा जकाँ अछि, चाहे पैघ लोक लेल ओ पुरान भऽ गेल हो।

प्रश्न 1607. माजा वेलो शहर आबि पहिने कोन-कोन काज करबाक बात कहैत छथि?
क. माछ पकड़ब, खेत जोतब आ कढ़ाई करब
ख. विद्यालय चलाबब, बैंक खोलब आ नाटक लिखब
ग. दातमनि बेचब, भीख माँगब आ राति असगर भेटल लोककेँ लूटब
घ. कानून पढ़ब, अस्पताल खोलब आ गीत गाबब
उत्तर: ग. दातमनि बेचब, भीख माँगब आ राति असगर भेटल लोककेँ लूटब
व्याख्या: ओ अपन जीविका आ अपराध दुनूकेँ एकहि स्मृति-धारामे कहैत छथि।

प्रश्न 1608. ओ अपन ‘कला’ एहि फाटक पर नहि देखेबाक नियम किएक बनौने छलाह?
क. ओतय खेतीक बाजार छल
ख. अड्डा-बचाव लेल अपन रहबाक ठाम पर सज्जन गाय जकाँ रहबाक नीति
ग. ओतय केवल विद्यालय छल
घ. ओतय नदी बहैत छल
उत्तर: ख. अड्डा-बचाव लेल अपन रहबाक ठाम पर सज्जन गाय जकाँ रहबाक नीति
व्याख्या: ओ अपराधक पेशेवर नीति बतबैत छथि—अपन अड्डा सुरक्षित राखू, चोरी दोसरा फाटक पर करू।

प्रश्न 1609. पुरान गहरी खाधि आ मीनारक तुलना कथामे की करैत अछि?
क. शहरक बदलैत भूगोल आ बूढ़क स्मृतिक टकराव
ख. केवल मौसमक बदलाव
ग. नदीक प्रवाह
घ. विद्यालयक भवन
उत्तर: क. शहरक बदलैत भूगोल आ बूढ़क स्मृतिक टकराव
व्याख्या: जतय आब मीनार अछि, ओतय बूढ़क स्मृतिमे गंदा खाधि छल; शहर बदलल, मुदा बूढ़क भीतर पुरान संसार जिआ रहल अछि।

प्रश्न 1610. घानचन स्त्रीक गहना लूटबाक प्रसंग माजा वेलोक अपराधक कोन अँधार पक्ष खोलैत अछि?
क. दान-पुण्यक आदर्श
ख. बाल-शिक्षा सुधार
ग. संगीत साधना
घ. लूट संग हत्या करबाक कठोरता
उत्तर: घ. लूट संग हत्या करबाक कठोरता
व्याख्या: माजा वेलो कहैत छथि जे चिचियेलापर ओ स्त्रीक गरदनि दबा खाधिमे फेकि देलनि।

प्रश्न 1611. डकैतीक बाद माजा वेलोकेँ सजा किएक भेल?
क. ओ नदीमे डूबि गेलाह
ख. ओ कर न देबाक कारण
ग. संगी अपन हिस्सा बेचैत पकड़ा गेल, यद्यपि ओ अपन हिस्सा पघिला देने छलाह
घ. ओ परीक्षा नकलमे पकड़ा गेलाह
उत्तर: ग. संगी अपन हिस्सा बेचैत पकड़ा गेल, यद्यपि ओ अपन हिस्सा पघिला देने छलाह
व्याख्या: घटना अपराध-गौरवक साथ संगठित गिरोहक जोखिम सेहो देखबैत अछि।

प्रश्न 1612. डकैती-स्मृति बच्चा आ पैघ लोक पर अलग प्रभाव किएक छोड़ैत अछि?
क. सभ भोजन फेकि दैत अछि
ख. बच्चा रोमांचित होइत अछि, पैघ लोक पुलिस-सावधानी आ ऊब बीच अटकल अछि
ग. सभ केवल रोइत अछि
घ. सभ तुरन्त सोइ जाइत अछि
उत्तर: ख. बच्चा रोमांचित होइत अछि, पैघ लोक पुलिस-सावधानी आ ऊब बीच अटकल अछि
व्याख्या: कथा पीढ़ीगत ग्रहण-भेद देखबैत अछि—बच्चा लेल कथा चमत्कार, पैघ लेल खतरनाक पुरान सत्य।

खण्ड १६७ : विदेह-सदेह ३७ — ‘माजा वेलोक निधन’: पुरान शहर, स्वाद आ आधुनिकता पर कटाक्ष

प्रश्न 1613. माजा वेलो पुरान शहरक सड़क आ कुकुरक वर्णन कोना करैत छथि?
क. बालुक सड़क, सदिखन भूँकैत कुकुर, मुदा ओ सभ हुनका चिन्हैत छल
ख. चिकन राजमार्ग आ बिजली रेल
ग. केवल फूल-पातक बगैचा
घ. सदा बाढ़िसँ डूबल घाट
उत्तर: क. बालुक सड़क, सदिखन भूँकैत कुकुर, मुदा ओ सभ हुनका चिन्हैत छल
व्याख्या: पुरान नगरीय दृश्य हुनकर स्मृति मे खतरनाक मुदा अपन-सा संसार अछि।

प्रश्न 1614. आधुनिक भोजन पर माजा वेलोक मुख्य शिकायत की अछि?
क. सदा अतिशय घी खाइत अछि
ख. सभ भोजन सोना सँ बनैत अछि
ग. भोजन केवल माछक अछि
घ. घी-विहीन सादा भोजनमे स्वाद आ बल नहि
उत्तर: घ. घी-विहीन सादा भोजनमे स्वाद आ बल नहि
व्याख्या: ओ पुरान पौष्टिकता आ स्वादक युगकेँ श्रेष्ठ मानैत, आधुनिक सादगीकेँ हँसी उड़बैत छथि।

प्रश्न 1615. आधुनिक गहनाक विषयमे माजा वेलो की कहैत छथि?
क. गहना पहिरब निषिद्ध अछि
ख. गहना केवल पुरुष पहिरैत अछि
ग. बहुत गहना देखाइत अछि मुदा अधिकांश नकली आ लूटने पर किछु हाथ नहि लगत
घ. सभ गहना देवालयमे राखल अछि
उत्तर: ग. बहुत गहना देखाइत अछि मुदा अधिकांश नकली आ लूटने पर किछु हाथ नहि लगत
व्याख्या: एहि कटाक्षमे अपराधी दृष्टि आ आधुनिक दिखावाक आलोचना एक साथ अछि।

प्रश्न 1616. हुक्का चोरीक स्मृति कोन भाव खोलैत अछि?
क. अस्पतालक उपचार
ख. छोट अपराध सेहो हुनका लेल साहसिक किस्सा आ स्वाद-संस्मरण अछि
ग. धार्मिक साधना
घ. खेतीक ऋतु
उत्तर: ख. छोट अपराध सेहो हुनका लेल साहसिक किस्सा आ स्वाद-संस्मरण अछि
व्याख्या: ओ हुक्का चोरि सात राति पीबाक, फेर बेचबाक झगड़ामे तोड़बाक कथा आनन्दसँ कहैत छथि।

प्रश्न 1617. सिक्का गढ़बाक गप पर पुत्र किएक रोकि दैत अछि?
क. ओ विषय पुलिस आ अपराधक दृष्टि सँ खतरनाक अछि
ख. ओ विषय केवल संगीतक अछि
ग. ओ विषय बच्चा सभकेँ भूखा करैत अछि
घ. ओ विषय विद्यालयी पाठ्यक्रममे नहि
उत्तर: क. ओ विषय पुलिस आ अपराधक दृष्टि सँ खतरनाक अछि
व्याख्या: नकली सिक्का गढ़बाक सम्भावित अपराधक चर्चा सार्वजनिक ठाम पर जोखिमपूर्ण अछि।

प्रश्न 1618. बच्चाक भूख कथा-सुनबाक मध्य किएक महत्त्वपूर्ण बनैत अछि?
क. कथा तुरन्त राजकीय भाषण बनि जाइत अछि
ख. सब समुद्रयात्रा पर जाइत अछि
ग. मीनार ढहि पड़ैत अछि
घ. अपराध-रोमांच केँ रोजमर्रा पेटक जरूरत रोकि दैत अछि
उत्तर: घ. अपराध-रोमांच केँ रोजमर्रा पेटक जरूरत रोकि दैत अछि
व्याख्या: बच्चा कथा सुनैत-सुनैत ‘माय, हमरा भूख लागल’ कहैत अछि; भूख कल्पना पर भारी पड़ैत अछि।

प्रश्न 1619. माजा वेलोक मोंछक तुलना पहिने कोन चीजसँ कएल जाइत अछि?
क. कोयला-जकाँ कारी
ख. नदी-जकाँ नील
ग. रुपैया-जकाँ उज्जर, फेर सुतारफेनी-जकाँ
घ. काकड़ी-जकाँ हरियर
उत्तर: ग. रुपैया-जकाँ उज्जर, फेर सुतारफेनी-जकाँ
व्याख्या: बच्चा मोंछकेँ रुपैया कहैत अछि; बूढ़ ओकरा खम्भातक सुतारफेनीसँ जोड़ि स्वाद-स्मृति खोलैत छथि।

प्रश्न 1620. बच्चा सभ सुतारफेनी नहि चिन्हैत, एहि पर माजा वेलो की अनुभव करैत छथि?
क. विद्यालयी अनुशासन
ख. समयक पतन आ नव पीढ़ीक स्वाद-वंचना
ग. पूर्ण गर्व जे बच्चा उपवास करैत अछि
घ. सैनिक विजय
उत्तर: ख. समयक पतन आ नव पीढ़ीक स्वाद-वंचना
व्याख्या: ओ दुख करैत छथि जे बच्चा सभ ओ मिठाई देखल-खयल तक नहि, जे हुनकर युगक स्वाद-संसार छल।

प्रश्न 1621. सुतारफेनीक वर्णनमे ‘गोइठा’ तुलना पर बच्चा सभक प्रतिक्रिया की अछि?
क. छी-छी कहि नाक सिकोड़ैत अछि
ख. सभ तुरन्त सोना खोजैत अछि
ग. सभ रोइ पड़ैत अछि
घ. सभ नदीमे कूदि पड़ैत अछि
उत्तर: क. छी-छी कहि नाक सिकोड़ैत अछि
व्याख्या: बूढ़क देहाती तुलना बच्चा सभकेँ अरुचिकर लगैत अछि, तखन ओ उज्जर-मीठ रूप समझबैत छथि।

प्रश्न 1622. सुतारफेनी प्रसंग कथामे कोन गहिर भाव राखैत अछि?
क. केवल व्याकरण-शिक्षा
ख. मात्र युद्धक नीति
ग. मात्र कानूनी करार
घ. स्वाद, स्मृति, गरीबी आ पीढ़ीक बीच अनुभूति-अन्तर
उत्तर: घ. स्वाद, स्मृति, गरीबी आ पीढ़ीक बीच अनुभूति-अन्तर
व्याख्या: मिठाईक चर्चा बूढ़क अतीत, बच्चाक अभाव आ शहरी गरीबीक बीच मार्मिक सम्बन्ध बनबैत अछि।

खण्ड १६८ : विदेह-सदेह ३७ — ‘माजा वेलोक निधन’: ज’ड़, खुड़ी आ वाणोक अनुपस्थिति

प्रश्न 1623. बच्चा सभ माजा वेलोक शरीरमे कोन परिवर्तन नोटिस करैत अछि?
क. ओ नदी पार करैत छथि
ख. ओ चित्र बनाबय लगैत छथि
ग. मोंछ आ कान्ह थरथराय लगैत अछि
घ. ओ नाचय लगैत छथि
उत्तर: ग. मोंछ आ कान्ह थरथराय लगैत अछि
व्याख्या: मिठाईक उत्साहक बीच बच्चा सभ हुनकर कम्पन देखैत अछि, जे बीमारीक संकेत अछि।

प्रश्न 1624. माजा वेलोक पुत्र हुनका किएक डाँटैत अछि?
क. सुतारफेनी बेचबाक कारण
ख. ज’ड़ रहितो बाहर अयबाक कारण
ग. डकैत-संगीकेँ भोजन देबाक कारण
घ. विद्यालय नहि जाइत
उत्तर: ख. ज’ड़ रहितो बाहर अयबाक कारण
व्याख्या: पुत्रक डाँट व्यावहारिक चिन्ता अछि—बूढ़ बेमार छथि आ फुटपाथ पर ठंढमे बैसल छथि।

प्रश्न 1625. भातिज वाणो माजा वेलो पर की करैत अछि?
क. ज’ड़ जाँचि हरियर कम्बल ओढ़ा दैत अछि
ख. लाठी छीनि लैत अछि
ग. मीनार पर चढ़बैत अछि
घ. घोड़ा पर बैसबैत अछि
उत्तर: क. ज’ड़ जाँचि हरियर कम्बल ओढ़ा दैत अछि
व्याख्या: वाणोक स्नेह बूढ़क प्रति खास देखाइत अछि; ओ ताप बुझि आराम देबय चाहैत अछि।

प्रश्न 1626. माजा वेलो बच्चा सभकेँ हटेबासँ किएक रोकैत छथि?
क. ओ हुनका सभसँ डरैत छथि
ख. ओ पुलिसकेँ बजबैत छथि
ग. ओ एकान्त साधना चाहैत छथि
घ. ओ अपन लग बच्चा सभकेँ बैसल देखबय चाहैत छथि
उत्तर: घ. ओ अपन लग बच्चा सभकेँ बैसल देखबय चाहैत छथि
व्याख्या: बूढ़क अन्तिम सुख बच्चा सभक नजदीकी आ कथा-सम्बन्धमे अछि।

प्रश्न 1627. वाणो किछु लऽ अनबाक लेल गेलापर माजा वेलो किएक घबरा जाइत छथि?
क. कारण वाणो विद्यालयक प्रधानाध्यापक अछि
ख. कारण वाणो पूर्ण संन्यासी अछि
ग. कारण वाणो कुशल जेबीकटा अछि आ पकड़ा जेबाक डर अछि
घ. कारण वाणो नदीमे माछ पकड़ैत अछि
उत्तर: ग. कारण वाणो कुशल जेबीकटा अछि आ पकड़ा जेबाक डर अछि
व्याख्या: बूढ़ स्वयं अपराध-गौरव करैत छथि, मुदा प्रिय वाणो लेल जोखिम देखि चिन्तित भऽ उठैत छथि।

प्रश्न 1628. माजा वेलो ‘वाणो वापस आउ’ किएक चिचियैत छथि?
क. ओकरा नदी पार कराबय
ख. ओ आइ ओकरा चोरी/जेब-काटाक जोखिम सँ बचाबय चाहैत छथि
ग. ओकरा कविता सुनाबय
घ. ओकरा खेतीक हल देबय
उत्तर: ख. ओ आइ ओकरा चोरी/जेब-काटाक जोखिम सँ बचाबय चाहैत छथि
व्याख्या: ज’ड़ आ मृत्यु-सन्निकटता माजा वेलोक कठोर अपराधी गर्वकेँ क्षणिक दयामे बदलि दैत अछि।

प्रश्न 1629. बच्चा सभ भोजनक डोनीमे अपरिचित चीजकेँ की कहि चिचियैत अछि?
क. उत्तरफेनी
ख. महिसागर
ग. कल्लन
घ. साथारी
उत्तर: क. उत्तरफेनी
व्याख्या: ओ सभ सुतारफेनीक नाम ठीक सँ नहि बुझि पाबैत, ‘उत्तरफेनी’ कहैत अछि—ई बाल-हास्य आ अभाव दुनू अछि।

प्रश्न 1630. दस बजे पुलिस हटलापर माजा वेलो कोना अनुभव करैत छथि?
क. पूरी तरह प्रसन्न बिना विचार
ख. तुरन्त घर भागल
ग. नदीमे कूदि पड़ल
घ. सुरक्षित, मुदा अपना डर पर क्रोधित
उत्तर: घ. सुरक्षित, मुदा अपना डर पर क्रोधित
व्याख्या: पुलिस चलि गेलापर राहत भेटैत अछि, पर ओ अपन भयकेँ बुढ़ापा आ नामर्दी मानि तामस करैत छथि।

प्रश्न 1631. खुड़ीक आगमन माजा वेलोक भावभूमि कोना बदलैत अछि?
क. ओ शत्रु-सैनिक बनि अबैत अछि
ख. ओ स्कूलक परीक्षा लऽ अबैत अछि
ग. ओ स्नेह, भोजन आ अन्तिम सेवा ले’ अबैत अछि
घ. ओ अदालतक समन लऽ अबैत अछि
उत्तर: ग. ओ स्नेह, भोजन आ अन्तिम सेवा ले’ अबैत अछि
व्याख्या: वाणोक बेटी खुड़ी दादा लग विशेष प्रेमसँ अबैत अछि आ आगे अन्तिम क्षणमे महत्त्वपूर्ण उपस्थिति बनैत अछि।

प्रश्न 1632. वाणोक अनुपस्थितिक प्रतीक्षा कथामे की तनाव बनबैत अछि?
क. केवल विद्यालयी प्रतियोगिता
ख. बूढ़क मृत्यु-सन्निकट शरीर आ प्रिय चोर-भातिजक जोखिम एक साथ जुड़ैत अछि
ग. केवल मौसमक समाचार
घ. केवल बाजा-बजनाइक उत्सव
उत्तर: ख. बूढ़क मृत्यु-सन्निकट शरीर आ प्रिय चोर-भातिजक जोखिम एक साथ जुड़ैत अछि
व्याख्या: माजा वेलो बेमार छथि, पर वाणो लौटत कि नहि—ई कथा अन्तिम भागक भावनात्मक केन्द्र बनैत अछि।

खण्ड १६९ : विदेह-सदेह ३७ — ‘माजा वेलोक निधन’: आइसक्रीम, सुतारफेनी आ मृत्यु

प्रश्न 1633. खुड़ी माजा वेलो लेल की स्वादिष्ट चीज अनैत अछि?
क. आइसक्रीम
ख. खिचड़ी
ग. दही-चूड़ा
घ. चिलम
उत्तर: क. आइसक्रीम
व्याख्या: ठंढ राति मे आइसक्रीमक आगमन विसंगत मुदा स्नेहपूर्ण क्षण अछि।

प्रश्न 1634. खुड़ी आइसक्रीम कतयसँ अनबाक बात कहैत अछि?
क. गामक पोखरिसँ
ख. विद्यालयक कार्यालयसँ
ग. मंदिरक प्रसाद-पात्रसँ
घ. एकटा क्लब पर ठेंस खा गेलहुँ, ओतयसँ पुड़िया भरि आनलहुँ
उत्तर: घ. एकटा क्लब पर ठेंस खा गेलहुँ, ओतयसँ पुड़िया भरि आनलहुँ
व्याख्या: खुड़ीक भाषा संकेत करैत अछि जे भोजन समाजक बचे-खुचे/उठाओल स्रोतसँ आयल अछि।

प्रश्न 1635. माजा वेलो पहिने आइसक्रीम किएक टारय चाहैत छथि?
क. ओ व्रतधारी संन्यासी छथि
ख. ओ दूध पीबैत नहि
ग. मोन ठीक नहि आ ठंढ रातिक कारण
घ. ओकरा मिठाईसँ घृणा अछि
उत्तर: ग. मोन ठीक नहि आ ठंढ रातिक कारण
व्याख्या: बूढ़क शरीर ज’ड़सँ काँपैत अछि, तें ठंढ चीज पहिने ओ स्वीकार नहि करैत।

प्रश्न 1636. खुड़ी माजा वेलोकेँ आइसक्रीम खेबाबय लेल कोन दबाव/स्नेह प्रयोग करैत अछि?
क. विद्यालयक नियम पढ़ैत अछि
ख. अपन जानक सप्पत दऽ कऽ एक चम्मच खाय कहैत अछि
ग. पुलिसक डर देखबैत अछि
घ. कर-वसूलीक धमकी दैत अछि
उत्तर: ख. अपन जानक सप्पत दऽ कऽ एक चम्मच खाय कहैत अछि
व्याख्या: खुड़ीक आग्रह मात्र भोजन नहि, आत्मीय सेवा अछि।

प्रश्न 1637. आइसक्रीम पीबा काल बच्चा सभ माजा वेलोक मोंछ पर कोना प्रतिक्रिया करैत अछि?
क. हँसीसँ चिचियैत जे दादाक मोंछ अजीब लागि रहल अछि
ख. चुपचाप रोइत
ग. भय सँ भागैत
घ. मोंछ काटि दैत
उत्तर: क. हँसीसँ चिचियैत जे दादाक मोंछ अजीब लागि रहल अछि
व्याख्या: भीजल उज्जर मोंछ हास्य उत्पन्न करैत अछि, मृत्यु नजदीक होइतहुँ दृश्य जीवंत अछि।

प्रश्न 1638. आइसक्रीमक बाद माजा वेलोकेँ की बेसी महसूस होइत अछि?
क. अचानक गर्मी
ख. भूखक अन्त
ग. पूर्ण आरोग्य
घ. नीचाँक धरती आरो ठंढा
उत्तर: घ. नीचाँक धरती आरो ठंढा
व्याख्या: शरीरक ताप आ ठंढ धरतीक अनुभव अन्तिम अशक्तता देखबैत अछि।

प्रश्न 1639. खुड़ी दादा लेल की ओछबैत अछि?
क. राजसी गलीचा
ख. विद्यालयक नक्शा
ग. गिलास-जार बेचय बला महिलासँ भेटल कपड़ा
घ. सैनिक कम्बल
उत्तर: ग. गिलास-जार बेचय बला महिलासँ भेटल कपड़ा
व्याख्या: ओ उपलब्ध साधन सँ दादाक आरामक व्यवस्था करैत अछि—गरीबी बीच स्नेह।

प्रश्न 1640. माजा वेलो खुड़ीकेँ कोन आशीष दैत छथि?
क. सिक्का गढ़ू
ख. सवा सौ बर्ख जीबू
ग. सागर पार करू
घ. राजा बनू
उत्तर: ख. सवा सौ बर्ख जीबू
व्याख्या: खुड़ी माजा वेलो लेल खोडियार माताक कृपा सन अछि, तें ओकरा दीर्घायु आशीष देल गेल।

प्रश्न 1641. वाणो अन्ततः की लऽ कऽ लौटैत अछि?
क. कपड़ामे लपेटल बाँसक पथियामे जलेबी, हलवा, मैसूर, लड्डू/मिठाई आ सुतारफेनी
ख. केवल पानि
ग. अदालतक कागज
घ. महींसक बच्चा
उत्तर: क. कपड़ामे लपेटल बाँसक पथियामे जलेबी, हलवा, मैसूर, लड्डू/मिठाई आ सुतारफेनी
व्याख्या: वाणो बूढ़क इच्छा पूरा करय लेल अनेक मिठाई जुटा लऽ अबैत अछि।

प्रश्न 1642. माजा वेलोक मृत्युकेँ परिवार कोना स्वीकार करैत अछि?
क. हत्या कहि
ख. नदी-दुर्घटना कहि
ग. पुलिस-युद्ध कहि
घ. ‘बहुत नीक, आरामदायक, उत्तम मृत्यु’ कहि
उत्तर: घ. ‘बहुत नीक, आरामदायक, उत्तम मृत्यु’ कहि
व्याख्या: ओ भोजन, प्रियजन, खुड़ी-वाणो आ स्मृतिक बीच शान्ति सँ चलि बसैत छथि, परिवार एकरा उत्तम मृत्यु मानैत अछि।

खण्ड १७० : विदेह-सदेह ३७ — ‘माजा वेलोक निधन’: अन्तिम संकेत, खोडियार आ कथा-भाव

प्रश्न 1643. माजा वेलो मिठाई चखैत कोना पहिचानैत छथि?
क. पुलिससँ पूछिकऽ
ख. नदीक गन्धसँ
ग. स्वाद/स्पर्श सँ जलेबी, हलवा, मैसूर, लड्डू, मागस/मोहनथाल आ सुतारफेनी चिन्हैत
घ. घड़ी देखिकऽ
उत्तर: ग. स्वाद/स्पर्श सँ जलेबी, हलवा, मैसूर, लड्डू, मागस/मोहनथाल आ सुतारफेनी चिन्हैत
व्याख्या: अन्हारमे सेहो बूढ़क स्वाद-स्मृति जीवित अछि; भोजन ओकर अतीतक नक्शा बनैत अछि।

प्रश्न 1644. वाणोसँ माजा वेलो कानमे की पुछैत छथि?
क. मीनार किएक हिलैत अछि
ख. ई सब कतयसँ उठौने छह आ सब ठीक छैक कि नहि
ग. पाठशाला कतय अछि
घ. नदी कतय बहैत अछि
उत्तर: ख. ई सब कतयसँ उठौने छह आ सब ठीक छैक कि नहि
व्याख्या: बूढ़ बुझैत छथि जे चीज सम्भवतः चोरी/जेब-काटासँ आयल अछि, तें सुरक्षा पुछैत छथि।

प्रश्न 1645. वाणो उत्तरमे ककर भरोसा दैत अछि?
क. माय खोडियार सब ठीक राखैत छथि
ख. पुलिस कमिश्नर
ग. विद्यालयक गुरु
घ. लवजी भा
उत्तर: क. माय खोडियार सब ठीक राखैत छथि
व्याख्या: खोडियार माताक नाम अपराधी जीवनक जोखिम आ धार्मिक भरोसाक मिश्रित लोकविश्वास देखबैत अछि।

प्रश्न 1646. सुतारफेनी खाइत माजा वेलोकेँ कोन स्थान मोन पड़ैत अछि?
क. जनकपुर
ख. महिसागरक प्याऊ
ग. विद्यालय
घ. खम्भात
उत्तर: घ. खम्भात
व्याख्या: खम्भातक सुतारफेनी हुनकर स्वाद, समुद्र-यात्रा आ पुरान डकैती स्मृति एक साथ जगबैत अछि।

प्रश्न 1647. खम्भातक डकैती स्मृतिमे ओ सब कोना भागल छल?
क. हाथी पर चढ़ि
ख. विद्यालयी बसमे
ग. छोट नाओमे समुद्री यात्रा कऽ काठियावाड़ उतरि
घ. रेलमे टिकट काटि
उत्तर: ग. छोट नाओमे समुद्री यात्रा कऽ काठियावाड़ उतरि
व्याख्या: माजा वेलो समुद्री ज्वार, नाओ आ सुतारफेनी संग अपराध-यात्रा याद करैत छथि।

प्रश्न 1648. अन्तिम क्षणसँ पहिले माजा वेलो बच्चा सभकेँ की कहैत छथि?
क. मीनार तोड़ू
ख. हम खा लेलहुँ, आब अहाँ सभ खाउ
ग. सब भागि जाउ
घ. पुलिस बोलाउ
उत्तर: ख. हम खा लेलहुँ, आब अहाँ सभ खाउ
व्याख्या: अन्तिम भोजनक क्षणमे ओ बच्चा सभक हिस्सा आ आनन्दक चिन्ता करैत छथि।

प्रश्न 1649. माजा वेलो अचानक ककर नाम कर्कश स्वरमे बजैत छथि?
क. वाणो
ख. लवजी
ग. सोनाली
घ. मावजी
उत्तर: क. वाणो
व्याख्या: शरीर डगमगाइतहि ओ प्रिय भातिजसँ सहारा चाहैत छथि।

प्रश्न 1650. माजा वेलो खुड़ीक भविष्य लेल वाणोसँ की कहैत छथि?
क. खुड़ीकेँ डकैती सिखा देब
ख. खुड़ीकेँ नदीमे छोड़ि देब
ग. खुड़ीकेँ चिलम देब
घ. खुड़ीक बियाह नीक लोकसँ करा देब
उत्तर: घ. खुड़ीक बियाह नीक लोकसँ करा देब
व्याख्या: अन्तिम आशीषमे खुड़ीक सुरक्षा आ भविष्यक चिन्ता उभरैत अछि।

प्रश्न 1651. माजा वेलोक अन्तिम जप कोन अछि?
क. विद्यालय गुरु
ख. पुलिस सरकार
ग. खोडियार माय
घ. महिसागर माय
उत्तर: ग. खोडियार माय
व्याख्या: हुनकर लोक-धार्मिक आश्रय अन्तिम क्षणमे खोडियार माताक नाममे व्यक्त होइत अछि।

प्रश्न 1652. कथाक अन्तिम भाव माजा वेलोक जीवनकेँ कोना देखबैत अछि?
क. केवल राजदरबारी हास्य
ख. अपराध, गरीबी, स्वाद, परिवार-स्नेह आ मृत्यु-शान्तिक जटिल संगम
ग. केवल नीति-उपदेश
घ. केवल परीक्षा-वृत्तान्त
उत्तर: ख. अपराध, गरीबी, स्वाद, परिवार-स्नेह आ मृत्यु-शान्तिक जटिल संगम
व्याख्या: कथा बूढ़ अपराधीकेँ न त पूर्ण नायक बनबैत, न केवल खल; ओ परिवार, भूख, स्मृति आ मृत्यु बीच जटिल मानवीय आकृति अछि।

खण्ड १७१ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अवाक्’: जीवित प’रु, साथारी आ पापक भय

प्रश्न 1653. ‘अवाक्’क आरम्भमे जीवी की लऽ कऽ साथारी धरि अबैत अछि?
क. माथ पर पथियामे महींसक प’रुक लाश
ख. सुतारफेनीक पथिया
ग. विद्यालयक पुस्तक
घ. नदीक पानि
उत्तर: क. माथ पर पथियामे महींसक प’रुक लाश
व्याख्या: कथा मरेला मानल गेल महींसक बच्चाक लाशसँ शुरू होइत अछि, जकरा काटबाक लेल आनल गेल।

प्रश्न 1654. रणछोड़ ककरा चक्कू लऽ कऽ पाछू-पाछू अबैत छथि?
क. खुड़ीक
ख. शाबूक
ग. सोनालीक
घ. जीवीक
उत्तर: घ. जीवीक
व्याख्या: रणछोड़ काटनहारक भूमिका मे अछि; जीवी लाश धरि अनैत अछि, ओ चक्कू लऽ आबैत छथि।

प्रश्न 1655. कुकुर सभ साथारी लग किएक झपटैत अछि?
क. आइसक्रीम खेबाक लेल
ख. पुलिससँ बचबाक लेल
ग. मांस/लाशक गन्ध आ लोभसँ
घ. कविता सुनबा लेल
उत्तर: ग. मांस/लाशक गन्ध आ लोभसँ
व्याख्या: लाशक उपस्थिति पर कुकुर आ गिद्ध दुनू जमा होइत अछि; मृत्यु इहाँ जीविका आ भोजन दुनू अछि।

प्रश्न 1656. गिद्ध सभक चित्रण कथामे की वातावरण बनबैत अछि?
क. राजकीय सम्मान
ख. मृत्यु, लोभ आ हिंसाक प्रतीक्षा
ग. वसन्तक उल्लास
घ. विद्यालयी अनुशासन
उत्तर: ख. मृत्यु, लोभ आ हिंसाक प्रतीक्षा
व्याख्या: गाछ पर बैसल गिद्ध साथारीक रक्त-मांसक संसारक प्रतीक अछि।

प्रश्न 1657. मीना जीवीसँ कोन टिप्पणी करैत अछि?
क. महींसक प'रु पन्द्रह दिनसँ बेसी जीवित नहि रहैत, लवजीक कनियाँक धैर्य अछि
ख. सुतारफेनी बहुत मीठ अछि
ग. माजा वेलो बीमार छथि
घ. खुड़ी क्लब गेलीह
उत्तर: क. महींसक प'रु पन्द्रह दिनसँ बेसी जीवित नहि रहैत, लवजीक कनियाँक धैर्य अछि
व्याख्या: मीना ग्रामीण ज्ञान आ कटु व्यंग्य दुनू मिलाकऽ बतबैत अछि जे नर बछड़ा बोझ मानल जाइत अछि।

प्रश्न 1658. सीधा काटबाक समय महींसक बच्चाक विषयमे कौन चौंकाबय बला सत्य खुलैत अछि?
क. ओ सोना बनि गेल
ख. ओ नदीमे भागि गेल
ग. ओ पक्षी बनि उड़ि गेल
घ. ओ अखनो जीवित छल
उत्तर: घ. ओ अखनो जीवित छल
व्याख्या: नाङरि काटैत रक्त आ कम्पनसँ स्पष्ट होइत अछि जे बच्चा पूर्णतः मुइल नहि छल।

प्रश्न 1659. जीवित प'रु उठि खसलापर रणछोड़क अवस्था की होइत अछि?
क. ओ तुरन्त भोजन करैत
ख. ओ पुलिस बुलाबैत
ग. चक्कू छूटि जाइत, घाम सँ लथपथ, पापक भयमे स्तब्ध
घ. ओ हँसैत नाचय लगैत
उत्तर: ग. चक्कू छूटि जाइत, घाम सँ लथपथ, पापक भयमे स्तब्ध
व्याख्या: घटना रणछोड़क भीतर नैतिक भय जगबैत अछि; ओकर पेशागत क्रूरता क्षणिक रूपेँ टूटैत अछि।

प्रश्न 1660. रणछोड़ लवजी पर किएक क्रोधित होइत अछि?
क. मीनार ऊँच होयबाक कारण
ख. जिऐत प्राणी भेजि पापक बोझ ओकर माथ पर लादि देबाक आरोपसँ
ग. सुतारफेनी नहि भेजबाक कारण
घ. आइसक्रीम ठंढ होयबाक कारण
उत्तर: ख. जिऐत प्राणी भेजि पापक बोझ ओकर माथ पर लादि देबाक आरोपसँ
व्याख्या: ओ मानैत अछि जे लवजीक घर लोक जान-बुझि जीवित बछड़ा काटबा लेल पठौलक।

प्रश्न 1661. भीखो मृत्युक पुष्टि कोना करैत अछि?
क. नाक, पेट आ आँखि जाँचि कहैत अछि जे शरीर गरम अछि मुदा प्राण नहि
ख. घड़ी देखिकऽ
ग. मंदिरक घंटी सुनिकऽ
घ. पुलिससँ पूछिकऽ
उत्तर: क. नाक, पेट आ आँखि जाँचि कहैत अछि जे शरीर गरम अछि मुदा प्राण नहि
व्याख्या: भीखो व्यवहारिक ढंगसँ मृत्युक जाँच करैत, आँखि बन्द करैत अछि।

प्रश्न 1662. साथारी प्रसंग कथाक मूल नैतिक संकट की अछि?
क. परीक्षा मे नकल
ख. राजनीतिक भाषण
ग. समुद्री व्यापार
घ. भूख-जीविका आ जीवित प्राणीक हत्या-बोधक टकराव
उत्तर: घ. भूख-जीविका आ जीवित प्राणीक हत्या-बोधक टकराव
व्याख्या: रणछोड़क काम मांस काटब अछि, मुदा जीवित प'रु काटि देबाक अपराध-बोध ओकरा भीतर सँ हिला दैत अछि।

खण्ड १७२ : विदेह-सदेह ३७ — 'अवाक्': जीवी, मावजी पंड्यो आ एकादशीक विचार

प्रश्न 1663. रणछोड़ घर घुरि जीवीसँ पहिने की माँगैत अछि?
क. नदीक नाव
ख. विद्यालयी प्रमाणपत्र
ग. लाठी, चिलम आ जरैत गोइठा
घ. सुतारफेनी
उत्तर: ग. लाठी, चिलम आ जरैत गोइठा
व्याख्या: ओ लवजीक घर लड़बाक भावसँ निकलय चाहैत अछि, तें हथियार/आदत-सम्बन्धी वस्तु माँगैत अछि।

प्रश्न 1664. जीवी रणछोड़क हड़बड़ी देखि की बुझबाक कोशिश करैत अछि?
क. ओ मीनार किएक देखैत
ख. एतेक जल्दी आ तामसक कारण
ग. ओ कतेक प्रश्न लिखत
घ. ओ केहन आइसक्रीम खाएत
उत्तर: ख. एतेक जल्दी आ तामसक कारण
व्याख्या: जीवी ओकर घबराहट पर प्रश्न करैत अछि, मुदा तथ्य बादमे खुलैत अछि।

प्रश्न 1665. मावजी पंड्यो आँगनमे आबि कोन दिनक घोषणा करैत छथि?
क. एकादशीक पुण्य दिन
ख. दशहराक युद्ध-दिन
ग. विद्यालयक वार्षिकोत्सव
घ. समुद्री ज्वार-दिन
उत्तर: क. एकादशीक पुण्य दिन
व्याख्या: भिक्षुकक आगमन रणछोड़क अपराध-बोधकेँ धार्मिक भाषा प्रदान करैत अछि।

प्रश्न 1666. मावजी पंड्योक उपदेश रणछोड़क मनमे कोन विचार जगबैत अछि?
क. डकैती करब पुण्य अछि
ख. मांस अवश्य खेबाक चाही
ग. शहर छोड़ि देबाक चाही
घ. व्रत रखला सँ पाप सँ मुक्ति भेटि सकैत अछि
उत्तर: घ. व्रत रखला सँ पाप सँ मुक्ति भेटि सकैत अछि
व्याख्या: 'जँ अखन धरि किछु नहि खैने छी' वाक्य रणछोड़क लागि पापक शुद्धिक राह बनि जाइत अछि।

प्रश्न 1667. जीवी मावजी पंड्योकेँ की दान दैत अछि?
क. सोना
ख. चिलम
ग. मुट्ठी भरि बाजरा
घ. आइसक्रीम
उत्तर: ग. मुट्ठी भरि बाजरा
व्याख्या: गरीब घरक दान बाजराक मुट्ठी अछि, जे लोकधर्म आ अभाव दुनू देखबैत अछि।

प्रश्न 1668. मावजी पंड्यो झोरा कोना चिन्हैत छथि?
क. पुलिससँ पूछिऽ
ख. हाथ सँ अलग-अलग झोरा दबा कऽ, जाहिमे बाजरा राखब अछि
ग. लालटेनक रंग देखिऽ
घ. मीनार मापिऽ
उत्तर: ख. हाथ सँ अलग-अलग झोरा दबा कऽ, जाहिमे बाजरा राखब अछि
व्याख्या: भिक्षुकक बहु-झोरा व्यवस्था दान-संग्रहक व्यवहारिकता देखबैत अछि।

प्रश्न 1669. जीवीक छिपल गलती की छल?
क. मनिमाक कहला पर साँस लैत प’रु पाँच किलो बाजराक लोभमे लऽ आयल, रणछोड़केँ नहि बतौलक
ख. सुतारफेनी चोरि कएलक
ग. खुड़ीकेँ आइसक्रीम देलक
घ. पुलिसकेँ घर बजौलक
उत्तर: क. मनिमाक कहला पर साँस लैत प’रु पाँच किलो बाजराक लोभमे लऽ आयल, रणछोड़केँ नहि बतौलक
व्याख्या: जीवी जानैत छलि जे प’रु पूर्ण मुइल नहि, मुदा लालच आ दबावमे तथ्य नुकायल गेल।

प्रश्न 1670. रणछोड़ ‘साथारी अपवित्र’ कहि की बुझबैत अछि?
क. धरती पर पानि गिरबाक दोष
ख. मिठाई कम होयबाक दुख
ग. घड़ी बन्द होयबाक चिन्ता
घ. जिऐत प्राणी काटि देबाक पापक दाग
उत्तर: घ. जिऐत प्राणी काटि देबाक पापक दाग
व्याख्या: ओकरे पेशाक ठाम साथारी अछि, मुदा जीवित प्राणीक रक्तसँ ओ नैतिक रूपेँ अपवित्र बुझाइत अछि।

प्रश्न 1671. जीवीक तर्क ‘सम्पूर्ण देश ई करैत छैक’ कोन सामाजिक यथार्थ खोलैत अछि?
क. सभ लोक आइसक्रीम खाइत अछि
ख. सभ पुलिसमे भर्ती अछि
ग. नर बछड़ा/अनुत्पादक पशुक प्रति व्यापक क्रूर आर्थिक व्यवहार
घ. सभ देश कविता लिखैत अछि
उत्तर: ग. नर बछड़ा/अनुत्पादक पशुक प्रति व्यापक क्रूर आर्थिक व्यवहार
व्याख्या: जीवी व्यक्तिगत दोषकेँ सामूहिक व्यवहारक भीतर रखि सामान्य बनाबय चाहैत अछि।

प्रश्न 1672. एकादशी प्रसंग कथामे कोन विडम्बना रचैत अछि?
क. मीनार-निर्माण
ख. मांसक हिंसक यथार्थ बीच व्रत-पुण्यक धार्मिक आशा
ग. विद्यालयक हास्य
घ. राजकीय चुनाव
उत्तर: ख. मांसक हिंसक यथार्थ बीच व्रत-पुण्यक धार्मिक आशा
व्याख्या: रणछोड़ पापक भय सँ ग्रस्त अछि; भिक्षुकक व्रत-सूत्र ओकरा भोजन न खयबाक नैतिक बहाना दैत अछि।

खण्ड १७३ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अवाक्’: लवजीक घर, टूटल प्रतिशोध आ घर-वापसी

प्रश्न 1673. गाम जाइत रणछोड़ चिलम किएक नहि पी पबैत अछि?
क. पवित्र अङ्गार कतयसँ आनब, ई सोचि तम्बाकू फेर राखि दैत अछि
ख. चिलम नदीमे खसि गेल
ग. पुलिस छीनि लेलक
घ. मावजी खा गेलाह
उत्तर: क. पवित्र अङ्गार कतयसँ आनब, ई सोचि तम्बाकू फेर राखि दैत अछि
व्याख्या: चिलमक इच्छा अछि, मुदा ‘पवित्र अङ्गार’ आ पापक स्मृति ओकर हाथ रोकैत अछि।

प्रश्न 1674. रणछोड़क मायक सीख मोन पड़ला पर कोन भय उठैत अछि?
क. मिठाई बाँटबाक
ख. मीनार चढ़बाक
ग. पुलिसमे भरती होयबाक
घ. जिऐत प्राणी मारला पर भगवानकेँ सोनाक प्रतिमा भेंट करबाक
उत्तर: घ. जिऐत प्राणी मारला पर भगवानकेँ सोनाक प्रतिमा भेंट करबाक
व्याख्या: धार्मिक दायित्वक विचार ओकर गरीबी पर व्यंग्यात्मक बोझ बनि जाइत अछि।

प्रश्न 1675. सोनाक महींसक बच्चा भेंट करबाक कल्पना पर रणछोड़ किएक हँसैत अछि?
क. ओकरा सोना सँ घृणा अछि
ख. ओ मीनार बेचि सकैत अछि
ग. अपन निर्धनता बीच एहन भेंट असम्भव बुझि
घ. ओ बहुत धनी अछि
उत्तर: ग. अपन निर्धनता बीच एहन भेंट असम्भव बुझि
व्याख्या: ओ याद करैत अछि जे कनियाँ लेल नाकक काँटी बनबय मे बरखोंक श्रम लागल, तखन सोनाक प’रु असम्भव अछि।

प्रश्न 1676. मनिमा रणछोड़केँ लवजीक घरमे देखतहि की समझैत अछि?
क. ओ परीक्षा देबय आयल अछि
ख. ओ अपन हिस्सा/बाजरा लेबा लेल अधीर भऽ आयल अछि
ग. ओ कथा सुनाबय आयल अछि
घ. ओ आइसक्रीम खरीदय आयल अछि
उत्तर: ख. ओ अपन हिस्सा/बाजरा लेबा लेल अधीर भऽ आयल अछि
व्याख्या: मनिमा ओकर नैतिक आक्रोश नहि बुझि, ओकरा लोभी माँसभागी मानि डाँटैत अछि।

प्रश्न 1677. लवजीक सोझाँ आबि रणछोड़क प्रतिशोध किएक कमजोर पड़ि जाइत अछि?
क. लवजीक उपस्थिति, थकान, भूख आ असमंजससँ बोलि अटकि जाइत अछि
ख. ओ तुरन्त पुलिस बनि जाइत अछि
ग. लवजी भागि जाइत अछि
घ. मीनार टूटि पड़ैत अछि
उत्तर: क. लवजीक उपस्थिति, थकान, भूख आ असमंजससँ बोलि अटकि जाइत अछि
व्याख्या: रास्ताभरक तामस सोझा सामना मे ढहैत अछि; रणछोड़ केवल ‘महींस... बच्चा...’ कहि पबैत अछि।

प्रश्न 1678. लवजी नव कीनल महींसक बारेमे की बतबैत अछि?
क. ई सुतारफेनी बनबैत अछि
ख. ई मीनार चढ़ैत अछि
ग. ई परीक्षा पास कएलक
घ. ई महींस पाँच हजारक अछि आ खूब दूध दैत अछि
उत्तर: घ. ई महींस पाँच हजारक अछि आ खूब दूध दैत अछि
व्याख्या: लवजीक ध्यान आर्थिक मूल्य आ दूध पर अछि, बच्चाक मृत्यु पर नहि।

प्रश्न 1679. लवजीक ‘ओ दू दिनमे मरि गेल’ कथन रणछोड़ पर की असर करैत अछि?
क. ओ मिठाई बाँटैत अछि
ख. ओ चिलम फेंकि दैत अछि
ग. ओ आरो चौंकि जाइत अछि जे एतयो प’रु मृत्युक सामान्यीकरण अछि
घ. ओ प्रसन्न भऽ नाचैत अछि
उत्तर: ग. ओ आरो चौंकि जाइत अछि जे एतयो प’रु मृत्युक सामान्यीकरण अछि
व्याख्या: लवजी नर बछड़ाक मृत्यु सहज गप जकाँ कहैत अछि; रणछोड़क पापक बोधक सामने ई कठोर समाज-सत्य अछि।

प्रश्न 1680. लवजी रणछोड़केँ की दैत/फेकैत अछि?
क. पुस्तक
ख. आधा पीबल सिगरेट
ग. सोना
घ. सुतारफेनी
उत्तर: ख. आधा पीबल सिगरेट
व्याख्या: सिगरेटक कश रणछोड़केँ नीक नहि लगैत; पापक विचार आ भूख ओकर स्वाद बिगाड़ि देने अछि।

प्रश्न 1681. मनिमा रणछोड़केँ विदा करैत की कहैत अछि?
क. साँझमे आउ, दुपहरिया बीति गेल
ख. अखनहि भोज खाउ
ग. विद्यालय जाउ
घ. नदी पार करू
उत्तर: क. साँझमे आउ, दुपहरिया बीति गेल
व्याख्या: रणछोड़ लम्बे समय तक गाछक जड़ि पर बैठल रहि गेल, ओकर प्रतिशोध निरर्थक प्रतीक्षा बनि गेल।

प्रश्न 1682. घर घुरैत रणछोड़क मुखसँ ‘सब एक्के जकाँ अछि’ किएक निकलैत अछि?
क. सब मिठाई एक स्वादक अछि
ख. सब बच्चा स्कूल गेल
ग. सब नदी मीठ अछि
घ. ओ देखैत अछि जे दोष केवल लवजी नहि, व्यापक सामाजिक क्रूरता अछि
उत्तर: घ. ओ देखैत अछि जे दोष केवल लवजी नहि, व्यापक सामाजिक क्रूरता अछि
व्याख्या: जीवीक तर्क, लवजीक उदासीनता आ मनिमाक व्यवहार मिलि ओकरा व्यापक नैतिक सड़नक बोध करबैत अछि।

खण्ड १७४ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अवाक्’: भोजन, भ्रम आ अन्तिम व्रत-घोषणा

प्रश्न 1683. घर पहुँचल रणछोड़ पहिने की माँगैत अछि?
क. आइसक्रीम
ख. सोनाक प’रु
ग. एक गिलास पानि
घ. सुतारफेनी
उत्तर: ग. एक गिलास पानि
व्याख्या: गाम-यात्रा, भूख आ तामसक बाद ओकर शारीरिक पियास तीव्र अछि।

प्रश्न 1684. जीवी किएक राहत अनुभव करैत अछि?
क. मीनार ढहि पड़ल
ख. रणछोड़ कहैत अछि जे ओ किछु नहि कएलक, झगड़ा नहि भेल
ग. लवजीक घर जळि गेल
घ. पुलिस आयल
उत्तर: ख. रणछोड़ कहैत अछि जे ओ किछु नहि कएलक, झगड़ा नहि भेल
व्याख्या: जीवी रणछोड़क हिंसक तामससँ डेरायल छलि; ओकर असफल प्रतिशोध ओकरा राहत दैत अछि।

प्रश्न 1685. जीवी भोजनमे की परोसैत अछि?
क. रोटी आ महींसक बच्चाक माँसक तीमन
ख. दूध-भात
ग. सुतारफेनी
घ. केवल पानि
उत्तर: क. रोटी आ महींसक बच्चाक माँसक तीमन
व्याख्या: कथाक नैतिक संकट अन्ततः थारीमे परसल मांस रूपेँ सामने अबैत अछि।

प्रश्न 1686. रणछोड़ तसनूनमे झाँकि की पुछैत अछि?
क. ई नदी कतय अछि?
ख. ई मीनार कतेक ऊँच अछि?
ग. ई सिगरेट ककर अछि?
घ. ई तरकारी ककर अछि?
उत्तर: घ. ई तरकारी ककर अछि?
व्याख्या: ओ भूखमे बैसल अछि, मुदा पकवानक स्रोत पुछिते पुरान पापक स्मृति फूटि पड़ैत अछि।

प्रश्न 1687. तसनूनक तीमन रणछोड़क आँखिमे की रूप धारण करैत अछि?
क. विद्यालयक पुस्तक
ख. आइसक्रीमक पुड़िया
ग. सचेत उसनाइत, खुर-पएर-बछड़ा आ रक्त-धारा बला दृश्य
घ. फूलक माला
उत्तर: ग. सचेत उसनाइत, खुर-पएर-बछड़ा आ रक्त-धारा बला दृश्य
व्याख्या: भोजन अपराध-बोधक दृश्य-भ्रम बनि जाइत अछि; कटबार छवि फेर जीवित भऽ उठैत अछि।

प्रश्न 1688. भ्रममे महींसक बच्चा कोना अबैत अछि?
क. पुलिस रिपोर्ट लिखैत
ख. छटपटाइत, धड़ाम सँ खसैत, घर भरि रक्त पसरबैत
ग. नाचैत गाबैत
घ. सुतारफेनी बाँटैत
उत्तर: ख. छटपटाइत, धड़ाम सँ खसैत, घर भरि रक्त पसरबैत
व्याख्या: रणछोड़क मन मृत मांसकेँ निष्प्राण वस्तु नहि मानि सकैत; ओ पुनः जीवित पीड़ा देखैत अछि।

प्रश्न 1689. मावजी पंड्योक कोन वाक्य पुनः रणछोड़क मोनमे घूमैत अछि?
क. जँ अखन धरि किछु नहि खैने छी तऽ व्रत रखला सँ पाप सँ मुक्ति भेटत
ख. सुतारफेनी खाउ
ग. पुलिससँ डेराउ नहि
घ. मीनार पर चढ़ू
उत्तर: क. जँ अखन धरि किछु नहि खैने छी तऽ व्रत रखला सँ पाप सँ मुक्ति भेटत
व्याख्या: धार्मिक वाक्य ओकर भोजन-त्यागक सहारा बनैत अछि।

प्रश्न 1690. रणछोड़ तसनून हटाकऽ की अनुभव करैत अछि?
क. अधिक पियास
ख. सैनिक विजय
ग. पूर्ण निद्रा
घ. भ्रम हटिते राहत
उत्तर: घ. भ्रम हटिते राहत
व्याख्या: भोजनक दृश्य पापक प्रतीक बनि गेल छल; तसनून हटला पर मनक दबाव कनी कम होइत अछि।

प्रश्न 1691. अन्तमे रणछोड़ जेबी सँ की निकालैत अछि?
क. आइसक्रीम
ख. पुस्तक
ग. सिगरेटक बचल खण्ड
घ. सोना
उत्तर: ग. सिगरेटक बचल खण्ड
व्याख्या: लवजीक घरक बचे सिगरेट ओकर सांसारिक कमजोरीक प्रतीक बनि लौटैत अछि।

प्रश्न 1692. रणछोड़क अन्तिम घोषणा ‘आइ हम व्रत रखने छी’ कथामे की अर्थ लैत अछि?
क. विद्यालयी पुरस्कार
ख. अपराध-बोध, धर्मक शरण आ मांस न खा सकबाक मनोवैज्ञानिक बचाव
ग. केवल हास्यपूर्ण स्वाद-विकल्प
घ. राजनीतिक भाषण
उत्तर: ख. अपराध-बोध, धर्मक शरण आ मांस न खा सकबाक मनोवैज्ञानिक बचाव
व्याख्या: ओ जरैत गोइठा चिलम लेल माँगैत, मांस टारैत व्रत घोषित करैत अछि; एहि मे पाप-बोध आ आत्म-छल दुनू अछि।

खण्ड १७५ : विदेह-सदेह ३७ — कन्नड़ कथा ‘अन्हार’: भोरक घरेलू दबाव

प्रश्न 1693. ‘अन्हार’क आरम्भमे मनोहरक दिन कोना शुरू होइत अछि?
क. घर सँ निकलबा सँ पहिने भागमभाग, दूधक झंझट आ अखबारक बेचैनीसँ
ख. शान्त नदी-स्नान आ पूजा सँ
ग. विद्यालयी उत्सव सँ
घ. गामक मेला सँ
उत्तर: क. घर सँ निकलबा सँ पहिने भागमभाग, दूधक झंझट आ अखबारक बेचैनीसँ
व्याख्या: कथा आरम्भे शहरी मध्यवर्गीय थकान देखबैत अछि—दूध नहि भेटब, अखबार, बच्चा, नाश्ता आ मोबाइल-काज।

प्रश्न 1694. मनोहर शौचालयमे बैसल-बैसल की पढ़ैत अछि?
क. मिथिला पेंटिंगक सूची
ख. सुतारफेनीक विधि
ग. कृषि पंचांग
घ. भ्रष्टाचारी आ ओकर गुर्गा सभक समाचार
उत्तर: घ. भ्रष्टाचारी आ ओकर गुर्गा सभक समाचार
व्याख्या: भोरक अखबार ओकरा भ्रष्टाचार आ तमसाक वातावरणमे ढकेलैत अछि।

प्रश्न 1695. फिल्मी सिताराक नवजातक नाम-विज्ञापन कथामे की संकेत करैत अछि?
क. विद्यालयक परीक्षा
ख. कन्नड़ व्याकरण
ग. मीडिया-उपभोक्ता संस्कृति आ सतही उत्साह
घ. गामक धार्मिक अनुष्ठान
उत्तर: ग. मीडिया-उपभोक्ता संस्कृति आ सतही उत्साह
व्याख्या: भ्रष्टाचारक खबर लग नाम-सुझाव प्रतियोगिता अछि; ई समाचार-संस्कृतिक बेतुकापन देखबैत अछि।

प्रश्न 1696. बेटाकेँ नहबैत समय मनोहर बीच-बीचमे कोन उपकरण पर काज करैत अछि?
क. माटिक चाक
ख. ब्लैकबेरी
ग. हल-बैल
घ. तानपुरा
उत्तर: ख. ब्लैकबेरी
व्याख्या: घरक निजी समयमे सेहो दफ्तरक उपकरण घुसि गेल अछि।

प्रश्न 1697. मनोहरक पत्नी ओकरा कोन पारिवारिक उत्तरदायित्व याद दियबैत छलीह?
क. मायकेँ फोन कऽ छुट्टीमे गाम अयबाक उत्तर देब
ख. मीनार बनब
ग. सुतारफेनी किनब
घ. कविता पाठ करब
उत्तर: क. मायकेँ फोन कऽ छुट्टीमे गाम अयबाक उत्तर देब
व्याख्या: पत्नी चाहैत छथि जे ओ अपन माय संग बात कऽ पारिवारिक निर्णय साफ करथि।

प्रश्न 1698. मनोहर पत्नी पर किएक चिचियाइत अछि?
क. ओकरा बियाहक गीत याद नहि
ख. ओकरा दूध नीक लगैत अछि
ग. ओ स्कूलमे पढ़ाबैत अछि
घ. ओ फोन-उत्तर देबाक जिम्मेदारी पत्नी पर ढकेलब चाहैत अछि
उत्तर: घ. ओ फोन-उत्तर देबाक जिम्मेदारी पत्नी पर ढकेलब चाहैत अछि
व्याख्या: मनोहर अपन दबावक कारण सामान्य घरेलू गप सेहो झगड़ामे बदलि दैत अछि।

प्रश्न 1699. पत्नीक 'हम ऑफिस लेल लेट भऽ रहल छी' कथन कोन यथार्थ खोलैत अछि?
क. ओ मेला बेचय जा रहल छलीह
ख. ओ नदी पार करबाक अभ्यास करैत छलीह
ग. घरक बोझ संग ओकर अपन पेशेवर दबाव सेहो अछि
घ. ओ राजदरबार जा रहल छलीह
उत्तर: ग. घरक बोझ संग ओकर अपन पेशेवर दबाव सेहो अछि
व्याख्या: कथा पति-पत्नी दुनूक कामक बोझ देखबैत अछि, मुदा संवाद टूटि गेल अछि।

प्रश्न 1700. भोरक प्रसंग मनोहरक स्वभावक कोन छवि बनबैत अछि?
क. शान्त बालकवि
ख. थाकल, चिड़चिड़ा आ जिम्मेदारी टारय बला
ग. पूर्ण तपस्वी
घ. निर्भीक किसान
उत्तर: ख. थाकल, चिड़चिड़ा आ जिम्मेदारी टारय बला
व्याख्या: छोट-छोट घरेलू अवरोध ओकर असंतुलन बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1701. घर सँ निकलिते मनोहरकेँ की शारीरिक अनुभूति होइत अछि?
क. जी ओकियाय लगैत अछि
ख. अत्यधिक नींद
ग. नृत्यक उमंग
घ. शीतल सुख
उत्तर: क. जी ओकियाय लगैत अछि
व्याख्या: शहरक ध्वनि, प्रदूषण आ मानसिक दबाव ओकर देहमे वितृष्णा बना रहल अछि।

प्रश्न 1702. आरम्भिक घरेलू दृश्य कथाक शीर्षक 'अन्हार' सँ कोना जुड़ैत अछि?
क. ई केवल रातिक अन्हारक वर्णन अछि
ख. ई मौसम-रिपोर्ट अछि
ग. ई पुरातत्त्व-वृत्तान्त अछि
घ. बाहरी उजास होइतहुँ भीतर बेचैनी, झूठ आ तामसक अन्हार बनैत अछि
उत्तर: घ. बाहरी उजास होइतहुँ भीतर बेचैनी, झूठ आ तामसक अन्हार बनैत अछि
व्याख्या: कथा अन्हारकेँ मनोहरक भीतरक नैतिक अन्धकार बनाकऽ धीरे-धीरे खोलैत अछि।

खण्ड १७६ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अन्हार’: ट्राफिक, रेडियो आ शहरी घृणा

प्रश्न 1703. कारमे एफएम रेडियो पर सुनयना कोन कार्यक्रम-जगत बनबैत अछि?
क. खेतीक मौसम-विज्ञान
ख. अदालतक फैसला
ग. गीत-अनुरोध, विज्ञापन आ ‘चो च्वीट’ सेलिब्रिटी गपक शोर
घ. वैदिक मन्त्र-पाठ
उत्तर: ग. गीत-अनुरोध, विज्ञापन आ ‘चो च्वीट’ सेलिब्रिटी गपक शोर
व्याख्या: रेडियो शहरक सतही मनोरंजन-उद्योगक लगातार बकबक बनि जाइत अछि।

प्रश्न 1704. मनोहर रेडियो किएक बन्द कऽ दैत अछि?
क. ओ कविता लिखय चाहैत छल
ख. ओकर जी ओकियायब बढ़ि जाइत अछि
ग. बैटरी बचयबाक लेल
घ. गीत समाप्त भऽ गेल
उत्तर: ख. ओकर जी ओकियायब बढ़ि जाइत अछि
व्याख्या: ध्वनि-प्रदूषण मानसिक क्लान्तिक संग मिलि ओकरा असह्य लगैत अछि।

प्रश्न 1705. बाहर देखिते मनोहरकेँ कोन दृश्य भेटैत अछि?
क. ट्राफिक जाम, धुआँ, गर्दा आ सीटी बजबैत पुलिस
ख. शान्त धानक खेत
ग. खाली राजमार्ग
घ. नदीक नीला किनार
उत्तर: क. ट्राफिक जाम, धुआँ, गर्दा आ सीटी बजबैत पुलिस
व्याख्या: बैंगलोरक भीड़-धुआँ ओकर भीतरक चिढ़केँ आर पोसैत अछि।

प्रश्न 1706. ट्राफिक पुलिसक सीटीक परिणाम की होइत अछि?
क. सभ गाड़ी तुरन्त रुकि जाइत अछि
ख. बरखा शुरू भऽ जाइत अछि
ग. विद्यालय खुलि जाइत अछि
घ. गाड़ीबला सभ ओकरा नजरिअन्दाज करैत अछि
उत्तर: घ. गाड़ीबला सभ ओकरा नजरिअन्दाज करैत अछि
व्याख्या: कानूनक संकेत शहरक अव्यवस्थामे अप्रभावी देखाइत अछि।

प्रश्न 1707. पुरान बड़द सबक गाड़ी खींचबाक दृश्य कथामे की विरोध रचैत अछि?
क. राजदरबारक ठाठ
ख. समुद्री व्यापार
ग. आधुनिक ट्राफिक बीच श्रमरत पुरान देहक संघर्ष
घ. संगीत-महोत्सव
उत्तर: ग. आधुनिक ट्राफिक बीच श्रमरत पुरान देहक संघर्ष
व्याख्या: बस, कार, स्कूटरक बीच बड़दक धीमा श्रम विकासक विषमता देखबैत अछि।

प्रश्न 1708. मनोहर कम सँ कम आइ की आशा करैत छल?
क. मेला उद्घाटन करब
ख. घर जल्दी पहुँचब
ग. नगर छोड़ि सन्यास लेब
घ. नव कविता-संग्रह छपब
उत्तर: ख. घर जल्दी पहुँचब
व्याख्या: दिनक शुरूए सँ ओकर इच्छा अछि जे आजि जल्दी छूटि आराम पाबय।

प्रश्न 1709. गाड़ीमे पिछला सीट पर पड़ल चिट्ठी ककर छल?
क. बेटाक स्कूलक अन्तिम फीस-नोटिस
ख. मित्रक विवाह-निमंत्रण
ग. मायकेँ पत्र
घ. कविता-पाण्डुलिपि
उत्तर: क. बेटाक स्कूलक अन्तिम फीस-नोटिस
व्याख्या: चिट्ठी घरेलू जिम्मेदारीक ठोस प्रतीक अछि, जकरा ओ तीन दिन सँ टारि रहल छल।

प्रश्न 1710. स्कूल नोटिसमे की चेतावनी छल?
क. बच्चा पुरस्कार पाओत
ख. विद्यालय बन्द भऽ गेल
ग. मायकेँ फोन करू
घ. एक दिनमे फीस नहि जमा भेल तँ बच्चाक नाम काटल जाएत
उत्तर: घ. एक दिनमे फीस नहि जमा भेल तँ बच्चाक नाम काटल जाएत
व्याख्या: नोटिस पापुक अपमानक बीज अछि, जे बादमे घरक संकट बनैत अछि।

प्रश्न 1711. इलेक्ट्रॉनिक सिटी पहुँचला पर मनोहर कोन संसारमे डूमि जाइत अछि?
क. सौराठ सभा
ख. माछ-बाजार
ग. बैठक, परियोजना, योजना, इंटरव्यू, प्रशिक्षण आ ग्राहक-परामर्श
घ. कठघोड़वा नाच
उत्तर: ग. बैठक, परियोजना, योजना, इंटरव्यू, प्रशिक्षण आ ग्राहक-परामर्श
व्याख्या: कार्यालयक कामक श्रृंखला निजी जिम्मेदारीकेँ ढाँपि दैत अछि।

प्रश्न 1712. ट्राफिक प्रसंग मनोहरक नैतिक यात्रा लेल की करैत अछि?
क. ओकरा नींदमे पठा दैत अछि
ख. शहरक अव्यवस्था ओकर करुणा घटा कऽ चिढ़ आ हिंसक प्रतिक्रिया बढ़बैत अछि
ग. ओकरा पूर्ण संत बना दैत अछि
घ. ओकरा खेती सिखबैत अछि
उत्तर: ख. शहरक अव्यवस्था ओकर करुणा घटा कऽ चिढ़ आ हिंसक प्रतिक्रिया बढ़बैत अछि
व्याख्या: भीड़-धुआँ-शोरक संचय अन्तिम दुर्घटना प्रसंगक निर्दयता लेल आधार बनबैत अछि।

खण्ड १७७ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अन्हार’: दफ्तर, बॉस आ देर-रातिक पलायन

प्रश्न 1713. दफ्तरमे मनोहर फीस जमा करबाक बात किएक बिसरि जाइत अछि?
क. कार्यालयक असंख्य कामक दबावमे ओ ओझरा जाइत अछि
ख. ओ स्कूल बन्द बुझैत छल
ग. ओ शुल्क माफ भऽ गेल बुझलक
घ. ओ गाम गेल छल
उत्तर: क. कार्यालयक असंख्य कामक दबावमे ओ ओझरा जाइत अछि
व्याख्या: बैठक आ प्रस्तुति-तैयारी ओकर स्मृति पर कब्जा कऽ लैत अछि।

प्रश्न 1714. हुनकर बॉस फोन पर की माँग करैत छथि?
क. बेटाकेँ स्कूल छोड़बाक
ख. कविता-पाठ करबाक
ग. चिलम लयबाक
घ. नव ग्राहक लेल प्रस्तुति तैयार करबाक
उत्तर: घ. नव ग्राहक लेल प्रस्तुति तैयार करबाक
व्याख्या: प्रश्नक रूपमे कहल गेल आदेश ओकर घर-फेरबाक आशाकेँ तोड़ि दैत अछि।

प्रश्न 1715. बॉसक ‘की अहाँ ई काज देखि सकै छी?’ कथन कथामे किएक आदेश बुझाइत अछि?
क. ओ छुट्टीक घोषणा छल
ख. ओ वेतनवृद्धि छल
ग. कार्यालयी सत्ता-संबंधमे इनकारक जगह नहि अछि
घ. ओ मित्रवत निमंत्रण छल
उत्तर: ग. कार्यालयी सत्ता-संबंधमे इनकारक जगह नहि अछि
व्याख्या: कथा कॉर्पोरेट शिष्ट भाषाक भीतर छिपल दबाव देखबैत अछि।

प्रश्न 1716. मनोहर लैपटॉप बन्द करैत-करैत कतेक राति भऽ जाइत अछि?
क. साँझ पाँच बजे
ख. राति दस बजे
ग. भोर पाँच बजे
घ. दुपहरिया बारह बजे
उत्तर: ख. राति दस बजे
व्याख्या: घर जल्दी पहुँचबाक आशा कामक भारमे नष्ट भऽ जाइत अछि।

प्रश्न 1717. मनोहर पत्नीकेँ फोन करबासँ किएक डरैत अछि?
क. ओ सोचैत अछि जे देर आ भूला गेल जिम्मेदारी पर पत्नी की कहतीह
ख. फोनमे नेटवर्क नहि छल
ग. ओ पत्नीकेँ पहचानैत नहि
घ. ओ कविता सुनय चाहैत छल
उत्तर: क. ओ सोचैत अछि जे देर आ भूला गेल जिम्मेदारी पर पत्नी की कहतीह
व्याख्या: अपराध-बोधक कारण ओ संवादसँ बचैत अछि।

प्रश्न 1718. मनोहर मोबाइल बन्द किएक करैत अछि?
क. बैटरी बचयबाक अनुशासनसँ
ख. संगीत सुनबाक लेल
ग. विद्यालय आदेशसँ
घ. उत्तरदायित्वक सामना टारबाक लेल
उत्तर: घ. उत्तरदायित्वक सामना टारबाक लेल
व्याख्या: फोन बन्द करब संवाद-विच्छेदक सीधा प्रतीक अछि।

प्रश्न 1719. दफ्तरक मित्र सभ ओकरा कहाँ लऽ जाइत अछि?
क. विद्यालय शुल्क-काउण्टर पर
ख. नाटक-मंच पर
ग. नव ढाबामे भोजन आ जैक डेनियल पीबाक लेल
घ. मन्दिरक आरतीमे
उत्तर: ग. नव ढाबामे भोजन आ जैक डेनियल पीबाक लेल
व्याख्या: सहकर्मी घरेलू संकटक बदला रात्रिक भोज-पेयक पलायन सुझबैत अछि।

प्रश्न 1720. सहकर्मी सभक देर-रातिक गपमे कोन लहजा अछि?
क. बाल-कविता
ख. ग्राहक, सरकार, नेता आ सितारा पर कोसबाक बेतुका थकान
ग. पूर्ण शास्त्रीय विवेचना
घ. मौन ध्यान
उत्तर: ख. ग्राहक, सरकार, नेता आ सितारा पर कोसबाक बेतुका थकान
व्याख्या: मेज पर सामाजिक-राजनीतिक गाली-गप्प शहरक हताशा निकालबाक तरीका बनैत अछि।

प्रश्न 1721. समीर सलमान खानक प्रसंग किएक उठबैत अछि?
क. नशामे गाड़ी सँ फुटपाथी लोककेँ कुचलबाक घटना पर तामस जतयबाक लेल
ख. आइसक्रीम प्रतियोगिता लेल
ग. कन्नड़ कविता लेल
घ. विद्यालयी फीस लेल
उत्तर: क. नशामे गाड़ी सँ फुटपाथी लोककेँ कुचलबाक घटना पर तामस जतयबाक लेल
व्याख्या: ई प्रसंग अन्तिम दुर्घटना-कांडक नैतिक प्रतिध्वनि बनैत अछि।

प्रश्न 1722. ढाबा प्रसंग कथामे मनोहरक पतन-रेखा कोना बढ़बैत अछि?
क. ओकरा विद्यालय पहुँचा दैत अछि
ख. ओकरा बच्चाक फीस जमा करा दैत अछि
ग. ओकरा गाममे स्थिर करैत अछि
घ. घरक जिम्मेदारीसँ बचि थकान, शराब आ झूठक मार्ग पर धकेलैत अछि
उत्तर: घ. घरक जिम्मेदारीसँ बचि थकान, शराब आ झूठक मार्ग पर धकेलैत अछि
व्याख्या: देर, मदिरा आ पलायन घरक अगिला विस्फोट लेल जमीन बनबैत अछि।

खण्ड १७८ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अन्हार’: अदहा रातिक घर-प्रवेश आ वैवाहिक विस्फोट

प्रश्न 1723. मनोहर घर पहुँचैत कतेक राति भऽ चुकल छल?
क. दुपहरिया तीन बजे
ख. साँझ सात बजे
ग. राति एक बजे
घ. भोर आठ बजे
उत्तर: ग. राति एक बजे
व्याख्या: ओ अपेक्षित समयसँ बहुत देर सँ, नशाक बाद, घर लौटैत अछि।

प्रश्न 1724. चौकीदार जागबापर मनोहरक प्रतिक्रिया कोना अछि?
क. ओ स्कूल फीस दैत अछि
ख. ओ खौंझाइत अछि आ गेट खोलबाक कहैत अछि
ग. ओ गीत गाबय लगैत अछि
घ. ओ फूल दैत अछि
उत्तर: ख. ओ खौंझाइत अछि आ गेट खोलबाक कहैत अछि
व्याख्या: थाकल चौकीदार पर ओकर चिढ़ वर्गीय असंवेदनशीलता सेहो देखबैत अछि।

प्रश्न 1725. सीढ़ी पर विभा किएक भेटैत अछि?
क. ओ कॉल सेण्टरक काज लेल रातिमे निकसि रहल छलीह
ख. ओ खेत जोतय जा रहल छलीह
ग. ओ कथा पाठ करबाक लेल
घ. ओ विवाह-मण्डप सँ
उत्तर: क. ओ कॉल सेण्टरक काज लेल रातिमे निकसि रहल छलीह
व्याख्या: रातिक शहरमे कॉल-सेण्टर श्रमक अलग समय-संरचना झलकैत अछि।

प्रश्न 1726. विभा मनोहरसँ की माँगैत अछि?
क. सुतारफेनी
ख. पुस्तकालयक चाभी
ग. ढोलक
घ. कम्पनीमे सपोर्ट इंजीनियर पद लेल बायोडाटा देबाक अवसर
उत्तर: घ. कम्पनीमे सपोर्ट इंजीनियर पद लेल बायोडाटा देबाक अवसर
व्याख्या: विभा पेशेवर अवसर खोजैत अछि, मुदा टाटा सुमोक हॉर्न संवाद काटि दैत अछि।

प्रश्न 1727. घरक केबाड़ चुपचाप खोलबाक प्रयास किएक असफल होइत अछि?
क. बिजली चलि जाइत अछि
ख. पड़ोसी गीत गबैत अछि
ग. केबाड़ धड़ामसँ खुजि जाइत अछि
घ. चाभी हराइत अछि
उत्तर: ग. केबाड़ धड़ामसँ खुजि जाइत अछि
व्याख्या: मनोहर पत्नीकेँ जगयबासँ बचय चाहैत अछि, मुदा शोर सत्य छिपय नहि दैत।

प्रश्न 1728. पत्नी मनोहरक देर पर मुख्यत: कोन शिकायत करैत छथि?
क. ओ मेला नहि लगबैत
ख. फोन नहि करब, घर-बच्चा नहि सम्हारब आ मित्रसभ संग पार्टी
ग. ओ कम कविता पढ़ैत अछि
घ. ओ खेत नहि जोतैत
उत्तर: ख. फोन नहि करब, घर-बच्चा नहि सम्हारब आ मित्रसभ संग पार्टी
व्याख्या: पत्नीक रोष केवल देर नहि, लगातार गैरजिम्मेदारी पर अछि।

प्रश्न 1729. पत्नी फल-सब्जी आ गाड़ी-बैटरीक उदाहरण किएक दैत छथि?
क. मनोहरक रोजमर्रा भूल आ उपेक्षा सिद्ध करबाक लेल
ख. नव व्यंजन सिखयबाक लेल
ग. रेल-यात्रा बतयबाक लेल
घ. नाटकक कथानक लेल
उत्तर: क. मनोहरक रोजमर्रा भूल आ उपेक्षा सिद्ध करबाक लेल
व्याख्या: ई सूची बतबैत अछि जे संकट एक दिनक नहि, जमा भेल उपेक्षा अछि।

प्रश्न 1730. पापुक फीस नहि जमा भेलाक परिणाम की भेल?
क. ओ पुरस्कार जीतलक
ख. ओ गाम चलि गेल
ग. ओ शिक्षक बनल
घ. ओकरा कक्षासँ बाहर ठाढ़ कएल गेल आ स्कूल नहि अयबाक चिट्ठी देल गेल
उत्तर: घ. ओकरा कक्षासँ बाहर ठाढ़ कएल गेल आ स्कूल नहि अयबाक चिट्ठी देल गेल
व्याख्या: बच्चाक सार्वजनिक अपमान पत्नीक पीड़ाक केन्द्र अछि।

प्रश्न 1731. मनोहर पहिल बचावमे की झूठ बजैत अछि?
क. स्कूल बन्द छल
ख. पापु परीक्षामे पहिल भेल
ग. हम तऽ फीस जमा कएने छलहुँ
घ. हम गाममे छलहुँ
उत्तर: ग. हम तऽ फीस जमा कएने छलहुँ
व्याख्या: ओ गलती स्वीकार करबाक बदला तुरन्त झूठक सहारा लैत अछि।

प्रश्न 1732. पत्नी 'मर्दबला अहंकार' कहि मनोहरक कोन कमजोरी चिन्हैत छथि?
क. चित्रकला-कौशल
ख. गलती स्वीकार नहि करब आ झूठ सँ ढँकब
ग. अत्यधिक दानशीलता
घ. अधिक मौन
उत्तर: ख. गलती स्वीकार नहि करब आ झूठ सँ ढँकब
व्याख्या: कथा निजी झगड़ामे पितृसत्तात्मक अहंकारक आलोचना राखैत अछि।

खण्ड १७९ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अन्हार’: पापु, बीमारी आ टूटैत संवाद

प्रश्न 1733. पत्नी बतबैत छथि जे पापु कोन दवाई लेने अछि?
क. ५०० मिलीग्रामक एन्टीबायोटिक
ख. सुतारफेनी
ग. चिलम
घ. कच्चा दूध
उत्तर: क. ५०० मिलीग्रामक एन्टीबायोटिक
व्याख्या: पापुक बीमारी स्थिति कैं आरो संवेदनशील बनबैत अछि।

प्रश्न 1734. बासन खसबाक आवाज पर पत्नी फेर किएक बाहर अबैत छथि?
क. ओ नाच देखय चाहैत छथि
ख. ओ गाड़ी चलाबय चाहैत छथि
ग. ओ चित्र बनाबय चाहैत छथि
घ. बीमार पापु जागि सकैत अछि, ई चिन्तासँ
उत्तर: घ. बीमार पापु जागि सकैत अछि, ई चिन्तासँ
व्याख्या: छोट आवाज सेहो पत्नीक थकान आ मातृ-चिन्ता उभारैत अछि।

प्रश्न 1735. डॉक्टर पापुक विषयमे की कहने छलाह?
क. ओ शुल्क नहि देऊ
ख. ओ रेडियो सुनू
ग. ओकर रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम अछि, टॉनिक दियौ
घ. ओ तुरन्त पर्वत चढ़ू
उत्तर: ग. ओकर रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम अछि, टॉनिक दियौ
व्याख्या: टॉनिकक बात मनोहरक भूलक एक आर उदाहरण बनैत अछि।

प्रश्न 1736. पत्नीक शिकायतमे ‘हमरा झूठ बाजय पड़ल’ कोन बातसँ जुड़ल अछि?
क. गेट खोलब
ख. डॉक्टरक सोझाँ टॉनिक देबाक बारेमे
ग. ढाबाक बिल
घ. साड़ी खरीद
उत्तर: ख. डॉक्टरक सोझाँ टॉनिक देबाक बारेमे
व्याख्या: ओ पति द्वारा न सम्हारल जिम्मेदारी ढाकबाक लेल झूठ बाजय विवश भेल छथि।

प्रश्न 1737. मनोहरक भोजन टेबुल पर कोना पड़ल अछि?
क. ठंढा भऽ गेल
ख. गरम-गरम परसल
ग. नदीमे बहि गेल
घ. विद्यालयमे राखल
उत्तर: क. ठंढा भऽ गेल
व्याख्या: ठंढा भोजन प्रतीक्षा आ घरेलू दूरीक दृश्य-प्रतीक अछि।

प्रश्न 1738. मनोहर फ्रिजमे भोजन राखैत समय की होइत अछि?
क. फीस रसीद भेटि जाइत अछि
ख. साड़ी फाटि जाइत अछि
ग. रेडियो चालू भऽ जाइत अछि
घ. किछु प्लेट नीचाँ खसि जोर आवाज करैत अछि
उत्तर: घ. किछु प्लेट नीचाँ खसि जोर आवाज करैत अछि
व्याख्या: ओ चुप रहबाक कोशिश करैत अछि, मुदा असावधानी फेर संघर्ष जगबैत अछि।

प्रश्न 1739. पत्नी ‘जँ हमहूँ एहिना करी’ कहि की प्रश्न उठबैत छथि?
क. कविता कतेक पंक्तिक
ख. फिल्मी सितारा के
ग. घर-परिवारक जिम्मेदारी केवल स्त्री पर किएक
घ. सड़कमे ट्राफिक किएक
उत्तर: ग. घर-परिवारक जिम्मेदारी केवल स्त्री पर किएक
व्याख्या: ई वाक्य वैवाहिक श्रम-विभाजनक असमानता पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 1740. मनोहरक स्वरमे तामस रहि जेबाक परिणाम की अछि?
क. चौकीदार गेट बन्द करैत अछि
ख. संवाद फेर कटु बनि जाइत अछि
ग. पत्नी तुरन्त हँसैत छथि
घ. पापु स्कूल चलि जाइत अछि
उत्तर: ख. संवाद फेर कटु बनि जाइत अछि
व्याख्या: ओ प्रश्न करैत अछि, मुदा स्वरमे सहानुभूतिक बदला चिढ़ अछि।

प्रश्न 1741. पत्नीक ‘नीक हएत जे असगरे रहू’ कथन की सूचित करैत अछि?
क. संबंधक थकान आ अलगावक इच्छा
ख. विद्यालयी पुरस्कार
ग. कला-प्रदर्शनी
घ. गामक उत्सव
उत्तर: क. संबंधक थकान आ अलगावक इच्छा
व्याख्या: दाम्पत्य संवाद एतय गंभीर टूटन धरि पहुँचि जाइत अछि।

प्रश्न 1742. घरक झगड़ा कथाक नैतिक अन्हारमे की जोड़ैत अछि?
क. केवल हास्य रस
ख. संगीतक अभ्यास
ग. कृषि-समृद्धि
घ. झूठ, थकान, असंवेदना आ दोष-टारब निजी जीवनकेँ अँधियार करैत अछि
उत्तर: घ. झूठ, थकान, असंवेदना आ दोष-टारब निजी जीवनकेँ अँधियार करैत अछि
व्याख्या: मनोहर बाहरक शोरसँ भागि घर अबैत अछि, मुदा भीतर आरो गहिर अन्हार भेटैत अछि।

खण्ड १८० : विदेह-सदेह ३७ — ‘अन्हार’: अगिला दिनक झूठ, स्कूल आ सड़क-झगड़ा

प्रश्न 1743. अगिला दिन मनोहर पत्नीकेँ फोन पर फीसबारे की कहैत अछि?
क. पापु फीस माफ पेलक
ख. हम गाम गेलहुँ
ग. फीस जमा कएलहुँ आ प्रिन्सिपलकेँ डाँटि देलहुँ
घ. स्कूल बन्द छल
उत्तर: ग. फीस जमा कएलहुँ आ प्रिन्सिपलकेँ डाँटि देलहुँ
व्याख्या: ओ फेर झूठ बोलैत अछि, एहि बेर वीरता जोड़ि अपन गलती ढाँकय चाहैत अछि।

प्रश्न 1744. पत्नी सड़क-झगड़ाक खबर कोना पबैत छथि?
क. चौकीदारक कविता सँ
ख. पापु सभकेँ ‘पोकेमान’ लड़ाई जकाँ सुना रहल अछि
ग. रेडियो समाचार सँ
घ. बॉसक पत्र सँ
उत्तर: ख. पापु सभकेँ ‘पोकेमान’ लड़ाई जकाँ सुना रहल अछि
व्याख्या: बच्चाक कल्पना पिता के झूठ आ हिंसा सभकेँ सार्वजनिक बना दैत अछि।

प्रश्न 1745. पापु पिता कैँ शिक्षक सँ डाँट खेबाक कथा किएक फैलाबैत अछि?
क. ओ घटना कैँ खेल-जकाँ बुझि अपार्टमेंटमे कहि रहल अछि
ख. ओ अदालतमे गवाही दैत अछि
ग. ओ स्कूल छोड़ि देलक
घ. ओ रेडियो होस्ट अछि
उत्तर: क. ओ घटना कैँ खेल-जकाँ बुझि अपार्टमेंटमे कहि रहल अछि
व्याख्या: बच्चाक भोला बखान मनोहरक झूठक परत उतारि दैत अछि।

प्रश्न 1746. पत्नी मनोहरकैँ बैंगलोरक कोन खतराक बात याद दियबैत छथि?
क. सदा बरफ पड़ैत अछि
ख. सब गाड़ी बन्द अछि
ग. विद्यालय शुल्क शून्य अछि
घ. मामूली गप पर लोक मारि देल जाइत अछि
उत्तर: घ. मामूली गप पर लोक मारि देल जाइत अछि
व्याख्या: शहरी हिंसा घरक आर्थिक-सामाजिक असुरक्षा संग जुड़ि जाइत अछि।

प्रश्न 1747. पत्नी प्लॉट आ फ्लैटक कर्ज किएक उठबैत छथि?
क. खेतीक लाभ बतयबाक लेल
ख. मेला सजयबाक लेल
ग. मनोहर पर निर्भर परिवारक जोखिम देखयबाक लेल
घ. कविता-विषय बदलयबाक लेल
उत्तर: ग. मनोहर पर निर्भर परिवारक जोखिम देखयबाक लेल
व्याख्या: ओ पूछैत छथि—जँ किछु भेल, पापु आ हम की करब?

प्रश्न 1748. फोनक अन्तमे पत्नी कोन साधारण घरेलू आग्रह करैत छथि?
क. बायोडाटा छापू
ख. केरा लऽ कऽ आउ
ग. जैक डेनियल लाउ
घ. मीनार बनाउ
उत्तर: ख. केरा लऽ कऽ आउ
व्याख्या: तीव्र झगड़ाक बादो घर चलय लेल रोजमर्रा आवश्यकताक मांग रहैत अछि।

प्रश्न 1749. मनोहर राति भोजन लेल कखन पहुँचबाक कहैत अछि?
क. दू-तीन बजे राति धरि
ख. दुपहरिया बारह बजे
ग. भोर छह बजे
घ. साँझ सात बजे
उत्तर: क. दू-तीन बजे राति धरि
व्याख्या: देर फेर दोहराइत अछि; कामक बहाना घरक दूरी बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1750. सड़क-झगड़ा प्रसंग मनोहरक कोन छवि गढ़ैत अछि?
क. पूर्ण विनम्र शिक्षक
ख. शान्त साधु
ग. निष्क्रिय किसान
घ. गलतीसँ बचेबा लेल झूठ आ आक्रामकता दुनू बरतय बला
उत्तर: घ. गलतीसँ बचेबा लेल झूठ आ आक्रामकता दुनू बरतय बला
व्याख्या: फीसक भूल सँ पैदा अपमान कैँ ओ वीर लड़ाईक कथा बनायब चाहैत अछि।

प्रश्न 1751. पापुक ‘पोकेमान’ उपमा कथामे की असर पैदा करैत अछि?
क. खेतीक उत्पाद बतबैत अछि
ख. समुद्र-यात्रा करबैत अछि
ग. वयस्क हिंसा बच्चाक खेल-भाषामे हास्यास्पद आ खतरनाक दुनू बनैत अछि
घ. कविता छन्द समझबैत अछि
उत्तर: ग. वयस्क हिंसा बच्चाक खेल-भाषामे हास्यास्पद आ खतरनाक दुनू बनैत अछि
व्याख्या: बच्चा हिंसाकेँ खेल बुझैत अछि, मुदा पाठक ओकर नकलयोग्य खतरा देखैत अछि।

प्रश्न 1752. ई खण्ड मनोहरक झूठक श्रृंखलाकेँ कोना आगे बढ़बैत अछि?
क. ओ स्कूल छोड़ि दैत अछि
ख. फीस नहि भरबाक गलती सँ शुरू झूठ आब सामाजिक छवि बचयबाक हथियार बनैत अछि
ग. झूठ पूर्णतः समाप्त भऽ जाइत अछि
घ. ओ तुरन्त स्वीकार करैत अछि
उत्तर: ख. फीस नहि भरबाक गलती सँ शुरू झूठ आब सामाजिक छवि बचयबाक हथियार बनैत अछि
व्याख्या: मनोहर असत्यक जालमे आरो फँसि रहल अछि।

खण्ड १८१ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अन्हार’: आधी रातिक ऑटो-दुर्घटना

प्रश्न 1753. राति तीन बजे घर लौटैत मनोहरक आगाँ कोन वाहन चलि रहल छल?
क. एकटा ऑटो-रिक्शा
ख. बैलगाड़ी
ग. स्कूल बस
घ. घोड़ा-गाड़ी
उत्तर: क. एकटा ऑटो-रिक्शा
व्याख्या: देर-रातिक सड़क पर ऑटो ओकर चिढ़क केन्द्र बनैत अछि।

प्रश्न 1754. ऑटो-रिक्शासँ की निकसि रहल छल?
क. फूलक गन्ध
ख. शीतल जल
ग. घंटी
घ. धुआँक मेघ
उत्तर: घ. धुआँक मेघ
व्याख्या: धुआँ मनोहरक शहर-वितृष्णा केँ फेर जगबैत अछि।

प्रश्न 1755. मनोहर ऑटोकेँ ओवरटेक करबाक लेल की करैत अछि?
क. गाड़ी रोकि दैत अछि
ख. चालककेँ जल दैत अछि
ग. लगातार हॉर्न बजबैत अछि
घ. गीत गबैत अछि
उत्तर: ग. लगातार हॉर्न बजबैत अछि
व्याख्या: ओकर अधैर्य दुर्घटनापूर्व तनाव बढ़बैत अछि।

प्रश्न 1756. ऑटो रस्ता नहि देलापर मनोहरक मनमे की विचार अबैत अछि?
क. घर फोन करबाक
ख. ऑटो-रिक्शामे ठेंस मारबाक
ग. चालककेँ अस्पताल लयबाक
घ. फीस जमा करबाक
उत्तर: ख. ऑटो-रिक्शामे ठेंस मारबाक
व्याख्या: एहि क्षण ओकर भीतरक हिंसक आवेग साफ प्रकट होइत अछि।

प्रश्न 1757. दुर्घटना कतेक अचानक घटैत अछि?
क. किछु टूटबाक आवाज, डगमगाहट, पलटना आ खाधिमे खसना
ख. धीरे-धीरे पार्किंग
ग. सुरक्षित मोड़
घ. विद्यालयी अभ्यास
उत्तर: क. किछु टूटबाक आवाज, डगमगाहट, पलटना आ खाधिमे खसना
व्याख्या: कथा दुर्घटनाकेँ क्षणिक अराजकता, आवाज आ सुन्नतामे रचैत अछि।

प्रश्न 1758. ऑटो कतय जा खसैत अछि?
क. मन्दिरक आँगनमे
ख. विद्यालयक मैदानमे
ग. नदीक घाट पर
घ. फ्लाईओवर लेल खोधल खाधिमे
उत्तर: घ. फ्लाईओवर लेल खोधल खाधिमे
व्याख्या: अधूरा शहरी निर्माण मृत्यु-जाल जकाँ उपस्थित अछि।

प्रश्न 1759. दुर्घटनाक बाद चारू दिस की पसरि जाइत अछि?
क. बारिशक नृत्य
ख. कविता-पाठ
ग. पहिने मिश्रित चीत्कार-टूटन, फेर सुन्नता
घ. मेला-संगीत
उत्तर: ग. पहिने मिश्रित चीत्कार-टूटन, फेर सुन्नता
व्याख्या: धक्का, आवाज आ चुप्पी मिलि भयावह राति बनबैत अछि।

प्रश्न 1760. मनोहर गाड़ी रोकि की ताकैत अछि?
क. ढाबाक बिल
ख. अबाजक स्रोत
ग. फीस रसीद
घ. बेटाक खिलौना
उत्तर: ख. अबाजक स्रोत
व्याख्या: ओ क्षणभर जिज्ञासा वा सम्भावित करुणा सँ ठहरैत अछि।

प्रश्न 1761. ड्राइवरक देहक वर्णन कोना अछि?
क. मुँहक नस पीड़ा सँ खिंचल, मुँह सँ शोनित रिसैत
ख. पूर्ण स्वस्थ
ग. नाचैत
घ. हँसैत गीत गबैत
उत्तर: क. मुँहक नस पीड़ा सँ खिंचल, मुँह सँ शोनित रिसैत
व्याख्या: कथा घायल देहक भयावह निकटता पाठकक सामने राखैत अछि।

प्रश्न 1762. दुर्घटना मनोहरक नैतिक परीक्षा किएक बनैत अछि?
क. ओकरा कविता छन्द चुनय पड़ैत अछि
ख. ओकरा मिठाई चुनय पड़ैत अछि
ग. ओकरा मेला दिन चुनय पड़ैत अछि
घ. ओकरा सहायता, उपेक्षा वा प्रतिशोधमे चुनय पड़ैत अछि
उत्तर: घ. ओकरा सहायता, उपेक्षा वा प्रतिशोधमे चुनय पड़ैत अछि
व्याख्या: यही क्षण कथाक भीतर जमा चिढ़-झूठ-हिंसा कैं अंतिम रूप दैत अछि।

खण्ड १८२ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अन्हार’: घायल चालक आ करुणाहीन प्रतिक्रिया

प्रश्न 1763. घायल ड्राइवर मनोहरसँ की विनती करैत अछि?
क. फीस जमा करू
ख. रेडियो चालू करू
ग. मदति करू, एम्बुलेन्स बजाउ
घ. सुतारफेनी दिअ
उत्तर: ग. मदति करू, एम्बुलेन्स बजाउ
व्याख्या: ओ पीड़ा आ भयमे सीधा सहायता माँगैत अछि।

प्रश्न 1764. ड्राइवर अपन घरक कोन बात कहैत अछि?
क. घरमे मीनार अछि
ख. घरमे एकटा छोट बेटी अछि
ग. घरमे दसटा घोड़ा अछि
घ. घर खाली अछि
उत्तर: ख. घरमे एकटा छोट बेटी अछि
व्याख्या: छोट बेटीक उल्लेख ओकर मानवीय, पारिवारिक पक्ष उघारैत अछि।

प्रश्न 1765. मनोहर जेबीमे हथोरिया कऽ की निकालैत अछि?
क. सिगरेट
ख. एम्बुलेन्स नम्बर
ग. फीस रसीद
घ. पानि
उत्तर: क. सिगरेट
व्याख्या: सहायता करबाक बदला ओ धूम्रपानक ओर बढ़ैत अछि।

प्रश्न 1766. मनोहर ड्राइवरक पीड़ाकेँ कोना सम्बोधित करैत अछि?
क. करुणा भरल प्रार्थना सँ
ख. डॉक्टरी उपचार सँ
ग. मौन आँसू सँ
घ. ‘दुख भऽ रहल अछि बदमाश?’ कहि उपहास-प्रतिशोधसँ
उत्तर: घ. ‘दुख भऽ रहल अछि बदमाश?’ कहि उपहास-प्रतिशोधसँ
व्याख्या: एहि वाक्यमे ओकर असली अन्हार खुलि जाइत अछि।

प्रश्न 1767. मनोहर ड्राइवरकेँ दोषी किएक ठहरबैत अछि?
क. कविता नहि पढ़बाक कारण
ख. साड़ी किनबाक कारण
ग. सड़कक बीच रॉकेट-जकाँ गाड़ी चलयबाक आरोप लगाकऽ
घ. फीस नहि भरबाक कारण
उत्तर: ग. सड़कक बीच रॉकेट-जकाँ गाड़ी चलयबाक आरोप लगाकऽ
व्याख्या: ओ पीड़ितकेँ दोषी बनाकऽ अपन असंवेदनाकेँ जायज ठहरबैत अछि।

प्रश्न 1768. ‘अहाँ मरब तऽ हमरा की?’ कथन मनोहरक कोन अवस्था देखबैत अछि?
क. शिक्षकीय अनुशासन
ख. पूर्ण करुणा-शून्यता आ नैतिक पतन
ग. महान दया
घ. धार्मिक व्रत
उत्तर: ख. पूर्ण करुणा-शून्यता आ नैतिक पतन
व्याख्या: ई कथा-केंद्रक वाक्य अछि, जतय मनोहर मानवीय दायित्व छोड़ि दैत अछि।

प्रश्न 1769. मनोहर ‘हम अहाँक झमेलामे किएक पड़ी’ कहि की टारैत अछि?
क. संकटग्रस्त अजनबीक प्रति नागरिक जिम्मेदारी
ख. कविता-लेखन
ग. भोजन पकाब
घ. विद्यालयी गीत
उत्तर: क. संकटग्रस्त अजनबीक प्रति नागरिक जिम्मेदारी
व्याख्या: सार्वजनिक जीवनमे न्यूनतम सहायता सेहो ओकरा झंझट लगैत अछि।

प्रश्न 1770. ड्राइवर अन्तिमे की कहैत रहैत अछि?
क. जय हो
ख. फीस जमा भेल
ग. गीत सुनू
घ. ‘सॉरी सर’
उत्तर: घ. ‘सॉरी सर’
व्याख्या: घायल व्यक्ति मददगार सम्भावित आदमीसँ सेहो क्षमा माँगैत अछि; ई वर्गीय भय आ विवशता देखबैत अछि।

प्रश्न 1771. मनोहरक गाड़ी चालू करब कोन अर्थ रखैत अछि?
क. ओ पुलिस बनि गेल
ख. ओ अस्पताल खोलैत अछि
ग. ओ सहायता छोड़ि अपराधपूर्ण उदासीनता चुनैत अछि
घ. ओ एम्बुलेन्स आनय जा रहल अछि
उत्तर: ग. ओ सहायता छोड़ि अपराधपूर्ण उदासीनता चुनैत अछि
व्याख्या: कथा मनोहरकेँ जानि-बूझि नैतिक अन्धकारमे प्रवेश करबैत अछि।

प्रश्न 1772. घायल चालक प्रसंग कथाक पूर्व प्रसंगसभसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. ई खेतीक गीत अछि
ख. सलमान-फुटपाथ चर्चा, सड़क-चिढ़ आ घरेलू असंवेदना आब वास्तविक अमानुषिकतामे बदलैत अछि
ग. सभ प्रसंग असंबद्ध अछि
घ. ई केवल हास्य-विराम अछि
उत्तर: ख. सलमान-फुटपाथ चर्चा, सड़क-चिढ़ आ घरेलू असंवेदना आब वास्तविक अमानुषिकतामे बदलैत अछि
व्याख्या: पहिने जे बात गप्पमे छल, दुर्घटना पर मनोहर अपन असली प्रतिक्रिया देखबैत अछि।

खण्ड १८३ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अन्हार’: शीर्षक, प्रतीक आ अंत

प्रश्न 1773. कथाक अन्तिम दृश्य मनोहर साइड मिररमे की देखैत अछि?
क. क्षितिज धरि पसरल अन्हार
ख. भोरक उजास
ग. विद्यालयक प्रांगण
घ. कविता-मञ्च
उत्तर: क. क्षितिज धरि पसरल अन्हार
व्याख्या: बाहरी राति मनोहरक भीतरक नैतिक अन्हारक प्रतिबिम्ब बनैत अछि।

प्रश्न 1774. साइड मिरर कथामे प्रतीक रूपेँ की करैत अछि?
क. केवल सजावट
ख. मिठाई राखबाक थाल
ग. विद्यालयी प्रमाणपत्र
घ. पीछे छूटल घायल जीवन आ मनोहरक आत्म-दर्शनक मौका
उत्तर: घ. पीछे छूटल घायल जीवन आ मनोहरक आत्म-दर्शनक मौका
व्याख्या: ओ पीछे देखैत अछि, मुदा लौटि मदद नहि करैत—प्रतिबिम्ब दोषक स्मृति बनैत अछि।

प्रश्न 1775. ‘अन्हार’ शीर्षक केवल रातिक अंधकार नहि, आर की अछि?
क. छन्द-विधान
ख. मिथिला चित्रकला
ग. मनोहरक भीतरक करुणाहीन नैतिक अंधकार
घ. कृषि ऋतु
उत्तर: ग. मनोहरक भीतरक करुणाहीन नैतिक अंधकार
व्याख्या: कथा दिनक झुंझलाहट सँ शुरू भऽ अन्तमे हृदयहीनता धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 1776. ऑटो चालकक ‘सॉरी सर’ आ मनोहरक गालीक टकराव की देखबैत अछि?
क. बालक्रीड़ा
ख. वर्गीय भय आ सत्ता-भाव सँ विकृत मानव सम्बन्ध
ग. समान मित्रता
घ. उत्सवी नाच
उत्तर: ख. वर्गीय भय आ सत्ता-भाव सँ विकृत मानव सम्बन्ध
व्याख्या: घायल लोक सेहो ‘सर’ कहैत अछि, जबकि कारबला मददक बदला तिरस्कार दैत अछि।

प्रश्न 1777. कथा शहरी मध्यवर्गक कोन आलोचना करैत अछि?
क. काम-दबाव, उपभोग, ऋण, झूठ आ असंवेदनशीलता सँ बनल आत्मकेंद्रित जीवन
ख. केवल ग्रामीण गरीबी
ग. मात्र राजदरबार
घ. सिर्फ पौराणिक युद्ध
उत्तर: क. काम-दबाव, उपभोग, ऋण, झूठ आ असंवेदनशीलता सँ बनल आत्मकेंद्रित जीवन
व्याख्या: मनोहरक दिन आधुनिक महानगरीय जीवनक संकट सभकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1778. पत्नी आ ड्राइवरक विनतीमे कोन समानता अछि?
क. दुनू गीत गबैत अछि
ख. दुनू पुलिस अछि
ग. दुनू फीस माफ करैत अछि
घ. दुनू मनोहरसँ जिम्मेदारी आ संवेदना माँगैत अछि
उत्तर: घ. दुनू मनोहरसँ जिम्मेदारी आ संवेदना माँगैत अछि
व्याख्या: घरमे पत्नी, सड़क पर ड्राइवर—दुनू सोझाँ ओ करुणा नहि देखबैत।

प्रश्न 1779. मनोहरक झूठक कथा-भूमिका की अछि?
क. ओ तुरन्त प्रायश्चित्त करैत अछि
ख. ओ व्रत राखैत अछि
ग. ओ गलती स्वीकारबासँ भागि धीरे-धीरे नैतिक संवेदना खोबैत अछि
घ. ओ सत्यक प्रतिमा बनैत अछि
उत्तर: ग. ओ गलती स्वीकारबासँ भागि धीरे-धीरे नैतिक संवेदना खोबैत अछि
व्याख्या: फीसक झूठ, फोन टारब, घरसँ बचब—सभ अन्तिम उदासीनता लेल तैयारी अछि।

प्रश्न 1780. कथा दुर्घटनाकेँ नियति नहि, कोन रूपमे देखबैत अछि?
क. विद्यालयी खेल
ख. शहरी अव्यवस्था आ मानवीय असंवेदना सँ उपजल नैतिक परीक्षा
ग. जादुई चमत्कार
घ. नदीक बाढ़ि
उत्तर: ख. शहरी अव्यवस्था आ मानवीय असंवेदना सँ उपजल नैतिक परीक्षा
व्याख्या: फ्लाईओवर खाधि, धुआँ, हॉर्न आ अधैर्य मिलि दुर्घटनाक परिवेश बनबैत अछि।

प्रश्न 1781. अन्तिम अन्हार पाठक पर कोन प्रभाव छोड़ैत अछि?
क. सवाल जे सभ्यता आ सफलताक भीतर करुणा बचल अछि कि नहि
ख. केवल मौसमक जानकारी
ग. मिठाईक स्वाद
घ. कविता-मात्रा
उत्तर: क. सवाल जे सभ्यता आ सफलताक भीतर करुणा बचल अछि कि नहि
व्याख्या: कथा पाठककेँ मनोहरक व्यवहार सँ असहज करैत, अपन शहरक नैतिकता पर सोचबैत अछि।

प्रश्न 1782. ‘अन्हार’क सम्पूर्ण यात्रा कोन क्रममे बढ़ैत अछि?
क. मेला → गीत → पूजा → उत्सव → पुरस्कार
ख. खेती → बरखा → कटनी → भंडार
ग. विद्यालय → परीक्षा → अवकाश → खेल
घ. घरेलू चिढ़ → दफ्तर-दबाव → झूठ → सड़क-हिंसा → करुणाहीन पलायन
उत्तर: घ. घरेलू चिढ़ → दफ्तर-दबाव → झूठ → सड़क-हिंसा → करुणाहीन पलायन
व्याख्या: ई क्रम देखबैत अछि जे साधारण असंतुलन कतेक दूर नैतिक पतन धरि जा सकैत अछि।

खण्ड १८४ : विदेह-सदेह ३७ — ‘अन्हार’: लेखक, अनुवाद आ प्रकाशन-संदर्भ

प्रश्न 1783. ‘अन्हार’क मूल भाषा कोन अछि?
क. गुजराती
ख. उड़िया
ग. कन्नड़
घ. तेलुगु
उत्तर: ग. कन्नड़
व्याख्या: ई कथा कन्नड़ खण्डमे अछि आ मूल कन्नड़ कथा रूपमे उल्लिखित अछि।

प्रश्न 1784. ‘अन्हार’क लेखक के छथि?
क. सरोजिनी साहू
ख. अशोक हेगड़े
ग. सुन्दरम
घ. दलपत चौहान
उत्तर: ख. अशोक हेगड़े
व्याख्या: कथा लेखक रूपमे अशोक हेगड़ेक नाम देल गेल अछि।

प्रश्न 1785. कथाक अंग्रेजी अनुवादक के छथि?
क. कमलाकर भट्ट
ख. पुरुषोत्तम के.
ग. हेमांग देसाई
घ. जयलक्ष्मी पोपुरी
उत्तर: क. कमलाकर भट्ट
व्याख्या: शीर्षक-सूचनामे अंग्रेजी अनुवाद कमलाकर भट्ट द्वारा कहल गेल अछि।

प्रश्न 1786. कथाक मैथिली अनुवाद के कएने छथि?
क. मनोहर
ख. विभा
ग. के.के.
घ. गजेन्द्र ठाकुर
उत्तर: घ. गजेन्द्र ठाकुर
व्याख्या: कथा-सूचनामे मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा देल गेल अछि।

प्रश्न 1787. कमलाकर भट्टक पेशेवर परिचयमे मुख्य पद की अछि?
क. ढाबा-मालिक
ख. स्कूल प्रिन्सिपल
ग. अहमदनगर कॉलेजक अंग्रेजी स्नातकोत्तर विभाग आ शोध केंद्रक प्रोफेसर आ विभागाध्यक्ष
घ. ऑटो-रिक्शा चालक
उत्तर: ग. अहमदनगर कॉलेजक अंग्रेजी स्नातकोत्तर विभाग आ शोध केंद्रक प्रोफेसर आ विभागाध्यक्ष
व्याख्या: परिचय हुनका अध्यापक, विभागाध्यक्ष आ अनुवादक रूपमे राखैत अछि।

प्रश्न 1788. कमलाकर भट्ट कोन-कोन भाषा बीच अनुवादक कार्यसँ जुड़ल छथि?
क. केवल नेपाली
ख. अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, मराठी आ कन्नड़
ग. केवल संस्कृत
घ. केवल मैथिली
उत्तर: ख. अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, मराठी आ कन्नड़
व्याख्या: परिचय हुनकर बहुभाषिक अनुवाद-कार्यकेँ रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 1789. अशोक हेगड़ेक पेशेवर क्षेत्र की कहल गेल अछि?
क. तकनीक
ख. कठघोड़वा नाच
ग. धातु-मूर्ति
घ. माछ-पालन
उत्तर: क. तकनीक
व्याख्या: लेखक परिचयमे ओ तकनीक क्षेत्रमे काज करैत छथि।

प्रश्न 1790. अशोक हेगड़ेक वर्तमान रुचिमे कोन-कोन तकनीकी क्षेत्र अछि?
क. धान-कटनी, पाट-बुनाई, मधुपर्क
ख. नौकायन, शिकार, घुड़सवारी
ग. ढोल, पिपही, करताल
घ. मशीन लर्निंग, साइबर सुरक्षा आ ब्लॉकचेन
उत्तर: घ. मशीन लर्निंग, साइबर सुरक्षा आ ब्लॉकचेन
व्याख्या: परिचय आधुनिक तकनीकी रुचि सभकेँ सूचीबद्ध करैत अछि।

प्रश्न 1791. ‘अन्हार’ पहिने कोन कन्नड़ पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल?
क. आन्ध्र ज्योति
ख. मार्ग
ग. देशकाल
घ. विदेह
उत्तर: ग. देशकाल
व्याख्या: अन्त-टिप्पणीमे कथा २००७ मे कन्नड़ पत्रिका ‘देशकाल’मे प्रकाशित कहल गेल अछि।

प्रश्न 1792. ‘देशकाल’ प्रकाशन-सूचनामे सम्पादकक नाम के अछि?
क. सन्दीप
ख. विवेक शाणभाग
ग. मनोहर
घ. पापु
उत्तर: ख. विवेक शाणभाग
व्याख्या: कथा-टिप्पणीमे पत्रिकाक सम्पादन विवेक शाणभाग द्वारा बताओल गेल अछि।

खण्ड १८५ : विदेह-सदेह ३७ — अनूदित पद्य खण्ड: तेलुगु दलित कविता आ पुरुषोत्तम के.

प्रश्न 1793. अनूदित पद्य खण्डक तेलुगु भागमे अंग्रेजी अनुवादक रूपमे के चिन्हित छथि?
क. पुरुषोत्तम के.
ख. कमलाकर भट्ट
ग. हेमांग देसाई
घ. गोपा नायक
उत्तर: क. पुरुषोत्तम के.
व्याख्या: तेलुगु पद्य-भागमे पुरुषोत्तम के. कैं अंग्रेजी अनुवादक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

प्रश्न 1794. पुरुषोत्तम के.क अकादमिक सम्बन्ध कोन विश्वविद्यालयसँ जोड़ल गेल अछि?
क. वारंगलक काकतीय विश्वविद्यालय
ख. दिल्ली विश्वविद्यालय
ग. मद्रास विश्वविद्यालय
घ. काशी विद्यापीठ
उत्तर: क. वारंगलक काकतीय विश्वविद्यालय
व्याख्या: परिचयमे ओ वारंगल स्थित काकतीय विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागसँ सम्बद्ध कहल गेल छथि।

प्रश्न 1795. पुरुषोत्तम के.क अनुवाद-कार्यक मुख्य क्षेत्र की देखाइत अछि?
क. तेलुगु कविता, दलित उपन्यास आ कथाक अंग्रेजी अनुवाद
ख. केवल गणित-पुस्तक
ग. केवल वैद्यक ग्रन्थ
घ. केवल नाटक-मंचन
उत्तर: क. तेलुगु कविता, दलित उपन्यास आ कथाक अंग्रेजी अनुवाद
व्याख्या: हुनकर परिचय अनुवादकेँ तेलुगु दलित साहित्यक व्यापक सेतु रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 1796. बोयी भीमन्ना कैं तेलुगु साहित्यक कोन धारा सँ जोड़ल गेल अछि?
क. तेलुगु दलित साहित्यक अग्रदूत
ख. दरबारी प्रेम-काव्यक मात्र कवि
ग. केवल हास्य-लेखक
घ. संस्कृत नाटककार
उत्तर: क. तेलुगु दलित साहित्यक अग्रदूत
व्याख्या: बोयी भीमन्ना जाति-वर्चस्वक विरुद्ध कविता लिखनिहार अग्रणी दलित साहित्यकार रूपमे चित्रित छथि।

प्रश्न 1797. बोयी भीमन्नाक लेखन पर कोन राजनीतिक-सामाजिक आन्दोलनक प्रभाव कहल गेल अछि?
क. गान्धीक राष्ट्रीय आन्दोलन
ख. केवल औद्योगिक विज्ञापन
ग. दरबारी नृत्य आन्दोलन
घ. सैन्य प्रशिक्षण
उत्तर: क. गान्धीक राष्ट्रीय आन्दोलन
व्याख्या: परिचयमे हुनकर लेखन-आरम्भ गांधीवादी राष्ट्रीय आन्दोलनक प्रभावसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 1798. बोयी भीमन्नाक त्रयीमे हुनका संग कोन दू नामक उल्लेख अछि?
क. गुर्रम जाशुवा आ कुसुमान धर्मन्ना
ख. मनोहर आ पापु
ग. शादुल आ चाँद
घ. सुन्दरम आ दलपत
उत्तर: क. गुर्रम जाशुवा आ कुसुमान धर्मन्ना
व्याख्या: तेलुगु दलित साहित्यक आरम्भिक त्रयीमे भीमन्ना, जाशुवा आ धर्मन्ना कैं रखल गेल अछि।

प्रश्न 1799. भीमन्नाक ‘जरैत खोपड़ी सभ’ कविता कोन सामाजिक रहस्य पर चोट करैत अछि?
क. धर्म, जाति आ पुनरुत्पन्न होइत बहिष्कारक दुष्चक्र
ख. केवल मौसमक तापमान
ग. बाल-क्रीड़ाक नियम
घ. भोजनक स्वाद
उत्तर: क. धर्म, जाति आ पुनरुत्पन्न होइत बहिष्कारक दुष्चक्र
व्याख्या: कविता जलैत खोपड़ीक बिम्बसँ जातीय हिंसा आ धर्म-सम्मत दमनक लगातार लौटबाक बात उठबैत अछि।

प्रश्न 1800. ‘हमर पैतृक अधिकार’ कवितामे कवि ककर पुनः-दावा करैत छथि?
क. इतिहासमे दबाओल वैदिक-सांस्कृतिक अधिकारक
ख. सरकारी नौकरीक छुट्टी
ग. केवल खेतक नाप
घ. मिठाईक दुकान
उत्तर: क. इतिहासमे दबाओल वैदिक-सांस्कृतिक अधिकारक
व्याख्या: कविता बहिष्कृत दलित स्वत्वक स्मृति वापस खनबाक आ सार्वजनिक करबाक प्रतिरोधी मुद्रा बनबैत अछि।

प्रश्न 1801. भीमन्नाक कविता सभमे ‘कब्रिस्तान खनब’ कोन प्रतीक अछि?
क. दबाओल इतिहास उजागर करबाक प्रतिरोध
ख. घर बनबाक वास्तु-रीति
ग. खेलक मैदान समतल करब
घ. भोजन पकाबक तैयारी
उत्तर: क. दबाओल इतिहास उजागर करबाक प्रतिरोध
व्याख्या: कब्रिस्तान खनब पुरान दमनक नींव तक पहुँचि ओकर चोरी भेल अधिकारकेँ देखेबाक रूपक अछि।

प्रश्न 1802. तेलुगु दलित पद्य-भागक प्रमुख बौद्धिक लक्ष्य की अछि?
क. जाति-वर्चस्वक आलोचना आ आत्मसम्मानक घोषणा
ख. केवल पुष्प-वर्णन
ग. राजसी शिकारक प्रशंसा
घ. बालगीत मात्र
उत्तर: क. जाति-वर्चस्वक आलोचना आ आत्मसम्मानक घोषणा
व्याख्या: एहि खण्डमे कविता जाति-भेद, श्रम, अपमान आ इतिहासक विरुद्ध स्वर उठबैत अछि।

खण्ड १८६ : विदेह-सदेह ३७ — बोयी भीमन्ना: खोपड़ी, अधिकार आ इतिहासक पुनर्पाठ

प्रश्न 1803. ‘जरैत खोपड़ी सभ’मे ‘सालमे एक बेर’ जरबाक बिम्ब की सूचित करैत अछि?
क. दमनक पुनरावृत्ति आ अनवरत सामाजिक हिंसा
ख. नव वर्षक उत्सव
ग. फसल-कटनीक आनन्द
घ. विद्यालयी परीक्षा
उत्तर: क. दमनक पुनरावृत्ति आ अनवरत सामाजिक हिंसा
व्याख्या: बिम्ब ई कहैत अछि जे हिंसा एक बेरक घटना नहि, परम्परा बनल चक्र अछि।

प्रश्न 1804. खोपड़ी ‘बेर-बेर उगि अबैत’ अछि — एहि सँ कवि की देखबैत छथि?
क. दमनकारी व्यवस्था अपन शिकार फेर पैदा करैत रहैत अछि
ख. गाछक वैज्ञानिक विकास
ग. माटिक उर्वरता मात्र
घ. हास्यक चुटकुला
उत्तर: क. दमनकारी व्यवस्था अपन शिकार फेर पैदा करैत रहैत अछि
व्याख्या: कविता सामाजिक संरचना पर आरोप लगबैत अछि जे अन्यायकेँ समाप्त नहि करैत, ओकरा दोहरबैत अछि।

प्रश्न 1805. भीमन्नाक स्वर ‘ई हमर धर्मक रहस्य अछि’ कहि कोन शैली अपनबैत अछि?

क. व्यंग्यात्मक उद्घाटन

ख. सरल भजन मात्र

ग. बाजारू घोषणा

घ. नाटकक मंच-निर्देश

उत्तर: क. व्यंग्यात्मक उद्घाटन

व्याख्या: कवि धर्मक नामेँ दमनकेँ रहस्य नहि, बेनकाब करबाक वस्तु बनबैत छथि।

प्रश्न 1806. ‘हमर पैतृक अधिकार’मे पौराणिक प्रसंग सभक उपयोग किएक अछि?

क. आर्य/वैदिक श्रेष्ठताक दावा उलटि कऽ दलित अधिकार देखेबाक लेल

ख. केवल कथा-कहानी सजाबय लेल

ग. बच्चा सभकेँ सुताबय लेल

घ. भूगोल पढ़ाबय लेल

उत्तर: क. आर्य/वैदिक श्रेष्ठताक दावा उलटि कऽ दलित अधिकार देखेबाक लेल

व्याख्या: कवि पुराणक भीतर छिपल जातीय जटिलता सँ वर्तमान अधिकार-वंचना पर प्रहार करैत छथि।

प्रश्न 1807. कवि अपन पैतृक अधिकार ‘गर्व सँ फेकि देबाक’ बात किएक करैत छथि?

क. पहिने अधिकार स्वीकार कराबय, फेर दास्य-संस्कार अस्वीकार करबाक लेल

ख. भोजन बरबाद करबाक लेल

ग. खेलमे हार मानबाक लेल

घ. कपड़ा फेकबाक लेल

उत्तर: क. पहिने अधिकार स्वीकार कराबय, फेर दास्य-संस्कार अस्वीकार करबाक लेल

व्याख्या: ओ अधिकारक स्वामित्व घोषित करैत छथि, मुदा अपमानजनक परम्पराक बन्धन स्वीकार नहि करैत।

प्रश्न 1808. ‘सम्पूर्ण सम्मान सँ साँस लेबाक’ पंक्ति खण्डक कोन मूल्यकेँ केन्द्र बनबैत अछि?

क. मानवीय गरिमा

ख. व्यापारिक लाभ

ग. शस्त्र-बल

घ. पर्यटन

उत्तर: क. मानवीय गरिमा

व्याख्या: कविता अन्ततः सम्मानित जीवनक अधिकारपर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 1809. भीमन्नाक कवितामे इतिहास कतेक स्थिर अछि?

क. स्थिर नहि; प्रश्न आ पुनर्पाठसँ बदलैत

ख. सदैव बन्द किताब

ग. केवल राजकाजक हिसाब

घ. मात्र तिथि-सूची

उत्तर: क. स्थिर नहि; प्रश्न आ पुनर्पाठसँ बदलैत

व्याख्या: कवि इतिहासकेँ खनबाक, जाँचबाक आ जन-गरिमा सँ जोड़बाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 1810. ‘दलित अजाति’क विरोधाभास कोन पीड़ा देखबैत अछि?

क. जाति-व्यवस्थामे मनुष्यकेँ बाहर धकेलबाक पीड़ा

ख. विद्यालयी छुट्टी

ग. मौसमक बदलाव

घ. मिठाईक महँगाई

उत्तर: क. जाति-व्यवस्थामे मनुष्यकेँ बाहर धकेलबाक पीड़ा

व्याख्या: ओ समाजमे रहितो मान्यता सँ वंचित मनुष्यक असह्य स्थिति व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 1811. भीमन्नाक प्रतिरोधक भाषा कोना अछि?
क. तिख, प्रश्नाकुल आ घोषणात्मक
ख. पूर्ण मौन
ग. केवल लोरी
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. तिख, प्रश्नाकुल आ घोषणात्मक
व्याख्या: कविता बारम्बार प्रश्न, उद्घोष आ व्यंग्य द्वारा पाठककेँ झकझोरैत अछि।

प्रश्न 1812. एहि कवितासभकेँ ‘दलित साहित्य’क केन्द्रमे रखबाक मुख्य कारण की?
क. ओ जाति-दमनक अनुभवकेँ प्रतिरोधी चेतना बनबैत अछि
ख. ओ केवल छन्द-अभ्यास अछि
ग. ओ पृष्ठ-सज्जा अछि
घ. ओ संगीत-सूची अछि
उत्तर: क. ओ जाति-दमनक अनुभवकेँ प्रतिरोधी चेतना बनबैत अछि
व्याख्या: व्यक्तिगत पीड़ा सामूहिक इतिहास आ संघर्षमे बदलैत अछि, जे दलित साहित्यक केन्द्रीय स्वर अछि।

खण्ड १८७ : विदेह-सदेह ३७ — जे. सुभद्रा: श्रम, चाम, साड़ीक कोर आ अव्वा

प्रश्न 1813. जे. सुभद्राक ‘लोढ़ब’मे वक्ताक दिनक आरम्भ कोन श्रमसँ होइत अछि?
क. जमीन्दारक घरक आंगन, गोबर-पानि, बथान आ कूड़ा साफ करब
ख. राजदरबारमे गीत गाबब
ग. फूलक माला बेचब मात्र
घ. विद्यालयमे भाषण
उत्तर: क. जमीन्दारक घरक आंगन, गोबर-पानि, बथान आ कूड़ा साफ करब
व्याख्या: कविता दलित स्त्री-श्रमक कठोर, अदृश्य आ अपमानित दिनचर्या सामने आनैत अछि।

प्रश्न 1814. ‘लोढ़ब’मे मेहनतिक बदलामे की भेटैत अछि?
क. भीख-जकाँ बासी भात आ अपमान
ख. सुनक मुकुट
ग. राजसी पुरस्कार
घ. शाही घोड़ा
उत्तर: क. भीख-जकाँ बासी भात आ अपमान
व्याख्या: कविता श्रम आ प्रतिफलक असमानता देखबैत अछि।

प्रश्न 1815. ‘लाण्डा’ शब्द कविता-संदर्भमे की अछि?
क. जानवरक छाल शोधबाक कुण्ड
ख. कविता-पुस्तक
ग. नदीक घाट
घ. विद्यालयक घंटी
उत्तर: क. जानवरक छाल शोधबाक कुण्ड
व्याख्या: शब्दावली बतबैत अछि जे लाण्डामे छालकेँ केसियाक लेईसँ शोधल जाइत अछि।

प्रश्न 1816. चाम साफ करबाक प्रसंगमे की मुख्य अनुभव उभरैत अछि?
क. घिन, कीड़ा, गन्ध आ बाध्य श्रम
ख. केवल उत्सव
ग. राजसी भोज
घ. बाल-खेल
उत्तर: क. घिन, कीड़ा, गन्ध आ बाध्य श्रम
व्याख्या: कविता चमड़ा-कामक पीड़ा आ जाति-नियत श्रमक क्रूरता व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 1817. ‘साड़ीक कोर’ कवितामे साड़ीक कोर की बनैत अछि?
क. भूख, श्रम, आँसू आ आश्रयक बहुउद्देशीय प्रतीक
ख. केवल महँगा आभूषण
ग. राजकीय झण्डा
घ. काँचक खिलौना
उत्तर: क. भूख, श्रम, आँसू आ आश्रयक बहुउद्देशीय प्रतीक
व्याख्या: साड़ीक कोर पेट, घाम, दाना, ओछाउन आ नोर पोछबाक माय-जकाँ वस्तु बनैत अछि।

प्रश्न 1818. ‘साड़ीक कोर’मे खेत-पथारक थकान पर कोरक भूमिका की अछि?
क. ओ ओछाउन बनि जाइत अछि
ख. ओ तलवार बनैत अछि
ग. ओ अदालतक कागज बनैत अछि
घ. ओ नाव बनैत अछि
उत्तर: क. ओ ओछाउन बनि जाइत अछि
व्याख्या: श्रमसँ टूटल शरीर लेल साड़ीक कोर न्यूनतम विश्रामक साधन अछि।

प्रश्न 1819. ‘अव्वा’ कवितामे अव्वा कैँ कोना चित्रित कएल गेल अछि?
क. सङ्घर्षक मूर्त रूप
ख. दरबारी रानी
ग. युद्धक सेनापति मात्र
घ. हास्य-पात्र
उत्तर: क. सङ्घर्षक मूर्त रूप
व्याख्या: अव्वा श्रम, भूख, रोपनी, आगि आ परिवारक आधार बनि अबैत छथि।

प्रश्न 1820. ‘अव्वा’मे ‘भोर नहि’ बला सङ्घर्षक अर्थ की?
क. ओकर श्रम आ पीड़ा निरंतर अछि
ख. ओ सदिखन सुतैत छथि
ग. ओ केवल उत्सव करैत छथि
घ. ओ यात्रामे छथि
उत्तर: क. ओकर श्रम आ पीड़ा निरंतर अछि
व्याख्या: कविता अव्वाक जीवनकैँ अंतहीन श्रमक राति रूपमे देखबैत अछि।

प्रश्न 1821. अव्वाक हाथक चित्रण कोन भाव उत्पन्न करैत अछि?
क. स्नेहक अभाव नहि, श्रमसँ कठोर बनल मातृत्व
ख. केवल विलासिता
ग. निर्थक सजावट
घ. नाटकक मुखौटा
उत्तर: क. स्नेहक अभाव नहि, श्रमसँ कठोर बनल मातृत्व
व्याख्या: बालक हुनकर कोर-कथा नहि पाबि सकल, कारण अव्वाक हाथ सदिखन श्रममे लागल रहल।

प्रश्न 1822. जे. सुभद्राक कवितामे स्त्री-श्रमक केन्द्रीय प्रश्न की अछि?
क. घर, खेत, जाति आ शरीर पर एकसाथ पड़ैत बोझ
ख. केवल अलंकार-शास्त्र
ग. रंगमंचक पर्दा
घ. सैर-सपाटा
उत्तर: क. घर, खेत, जाति आ शरीर पर एकसाथ पड़ैत बोझ
व्याख्या: कवितासभ दलित स्त्रीक श्रमकैँ जीवनक सभ क्षेत्रमे पसरल दमनक रूपमे देखबैत अछि।

खण्ड १८८ : विदेह-सदेह ३७ — स्त्री-दलित प्रतिरोध: निन्दा, रजस्वला कपड़ा आ अलिसम्मा

प्रश्न 1823. ‘निन्दा’ शीर्षक कवितामे वक्ता उच्चतर स्त्रीसँ कोन संवाद करैत अछि?
क. स्वामिनी-आश्रित सम्बन्धक भीतरक जाति आ लिंग अन्याय पर
ख. फूलक माला पर
ग. नदीक नाव पर
घ. विद्यालयी खेल पर
उत्तर: क. स्वामिनी-आश्रित सम्बन्धक भीतरक जाति आ लिंग अन्याय पर
व्याख्या: कविता स्त्री-एकता के भीतर छिपल जातिगत दूरीकेँ चुनौती दैत अछि।

प्रश्न 1824. ‘जाधरि केबल पुरुष वा केबल स्त्री अछि’ पंक्ति कोन सीमा तोड़य चाहैत अछि?
क. लिंगक साथ जाति-वर्गक प्रश्न जोड़बाक सीमा
ख. संगीतक ताल
ग. बाजारक भाव
घ. भोजनक विधि
उत्तर: क. लिंगक साथ जाति-वर्गक प्रश्न जोड़बाक सीमा
व्याख्या: कविता कहैत अछि जे समस्या मात्र पुरुष/स्त्री नहि, सत्ता-संबंधक बहुस्तरीयता अछि।

प्रश्न 1825. ‘हम रजस्वला कपड़ा ओढ़ि रहल छी’मे कपड़ा कोन प्रतिरोधी प्रतीक बनैत अछि?
क. शरीर, अपमान आ स्त्री-अनुभवक राजनीतिक घोषणा
ख. केवल परदा-सज्जा
ग. शाही वस्त्र
घ. विवाह-माला
उत्तर: क. शरीर, अपमान आ स्त्री-अनुभवक राजनीतिक घोषणा
व्याख्या: रजस्वला कपड़ा लज्जा नहि, बल्कि दमनक विरुद्ध भाषिक-शारीरिक प्रमाण बनैत अछि।

प्रश्न 1826. एहि कवितामे ‘कलम’ पर प्रश्न किएक अछि?
क. पुरुषवादी समर्पण-धारणाकेँ लिखनिहार सत्ता पर चोट करबाक लेल
ख. स्याहीक रंग जानबाक लेल
ग. कागजक आकार मापबाक लेल
घ. विद्यालयी निब बदलबाक लेल
उत्तर: क. पुरुषवादी समर्पण-धारणाकेँ लिखनिहार सत्ता पर चोट करबाक लेल
व्याख्या: कविता लेखनक ओहि परम्परासँ भिड़ैत अछि जे स्त्रीकेँ अधीन बनबैत अछि।

प्रश्न 1827. सार्वजनिक इनारक अपमान कोन सामाजिक संरचना देखबैत अछि?
क. जल, जाति आ स्त्री-देह पर नियंत्रण
ख. खेतीक उत्सव
ग. राजकीय सम्मान
घ. बाल-क्रीड़ा
उत्तर: क. जल, जाति आ स्त्री-देह पर नियंत्रण
व्याख्या: इनारक प्रसंग संसाधन आ सम्मान दुनू पर जातिगत रोक देखबैत अछि।

प्रश्न 1828. ‘अलिसम्माक स्राप’मे वक्ता अपनाकेँ कोना परिभाषित करैत अछि?
क. एकटा नव प्रश्न आ सङ्कट
ख. केवल दर्शक
ग. मेला-घोषक
घ. अकर्मण्य पात्र
उत्तर: क. एकटा नव प्रश्न आ सङ्कट
व्याख्या: अलिसम्मा चुप पीड़ित नहि, समाजक सामने उठल असुविधाजनक प्रश्न बनैत छथि।

प्रश्न 1829. अलिसम्मा ‘स्त्री आ दलित’ होइतो जीवित रहबाक बात किएक कहैत छथि?
क. दुहरा दमनक बावजूद प्रतिरोधक जीवित स्वर देखेबाक लेल
ख. केवल दीर्घायु बताबय लेल
ग. हँसी करबाक लेल
घ. व्यापारक विज्ञापन लेल
उत्तर: क. दुहरा दमनक बावजूद प्रतिरोधक जीवित स्वर देखेबाक लेल
व्याख्या: कविता स्त्रीत्व आ दलितत्वक संगम पर हिंसा आ साहस दुनू व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 1830. अलिसम्माक स्रापमे ‘मानवमे परिणत भऽ जाउ’ कहब कोन उलटबाँसी अछि?
क. हिंसक दमनकारीकेँ असल मानवता सीखबाक स्राप
ख. पशु बनबाक आशीर्वाद
ग. नृत्यक निमन्त्रण
घ. भोजनक आदेश
उत्तर: क. हिंसक दमनकारीकेँ असल मानवता सीखबाक स्राप
व्याख्या: कवि दमनकारीक अमानुषिकताकेँ उजागर करैत मानव बनबाकेँ दण्ड-जकाँ कहैत छथि।

प्रश्न 1831. एहि स्त्री-दलित कवितासभक स्वर केवल करुणा किएक नहि अछि?
क. ओ करुणाकेँ प्रतिरोध, प्रश्न आ शापमे बदलैत अछि
ख. ओ मौन अछि
ग. ओ केवल प्रकृति-वर्णन अछि
घ. ओ हास्य-गीत अछि
उत्तर: क. ओ करुणाकेँ प्रतिरोध, प्रश्न आ शापमे बदलैत अछि
व्याख्या: वक्ता सभ दुःख कहैत छथि, मुदा ओकरा बदलि सामाजिक मुकदमा बनबैत छथि।

प्रश्न 1832. स्त्री-दलित कविता खण्डक मुख्य सौन्दर्यशास्त्र की अछि?
क. अनुभवक कठोरता सँ उपजल साक्ष्यात्मक कविता
ख. दरबारी अलंकरण मात्र
ग. राजसी मनोरंजन
घ. संग्रहालय सूची
उत्तर: क. अनुभवक कठोरता सँ उपजल साक्ष्यात्मक कविता
व्याख्या: कवितासभ सजावटसँ बेसी प्रमाण, पीड़ा आ प्रतिरोधक भाषामे लिखल अछि।

खण्ड १८९ : विदेह-सदेह ३७ — वी.वी.बी. रामा राव: आधुनिकता, युद्ध आ मीडिया-बोध

प्रश्न 1833. वी.वी.बी. रामा रावक परिचयमे अंग्रेजी अनुवाद कोना देल गेल अछि?
क. कवि द्वारा स्वयं
ख. विद्यालयक छात्र द्वारा
ग. अज्ञात व्यापारी द्वारा
घ. नाटक-मंडली द्वारा
उत्तर: क. कवि द्वारा स्वयं
व्याख्या: शीर्षक-सूचनामे अंग्रेजी अनुवाद कवि अपने कएने छथि।

प्रश्न 1834. ‘गर्भधारणक क्षणमे’ कविता कोन बात कहैत अछि?
क. कविता अपन सन्दर्भ, स्थान आ संरचना स्वयं रचि लैत अछि
ख. कविता सदिखन बाहरी आदेशसँ बनैत अछि
ग. कविता केवल तिथि-सूची अछि
घ. कविता बिना अर्थक ध्वनि अछि
उत्तर: क. कविता अपन सन्दर्भ, स्थान आ संरचना स्वयं रचि लैत अछि
व्याख्या: कवि सृजनकेँ स्वतः विकसित होइत संरचनात्मक जीव रूपमे देखैत छथि।

प्रश्न 1835. ‘तुरत्ते आयल समाचार’मे ‘क्लिक’ आ ‘फीस’ कोन युगक संकेत अछि?
क. माध्यमीकृत, बाजारू आ त्वरित सूचना-युग
ख. प्राचीन वनवास
ग. हस्तलिखित भोजपत्र मात्र
घ. मौन साधना
उत्तर: क. माध्यमीकृत, बाजारू आ त्वरित सूचना-युग
व्याख्या: कविता डिजिटल पहुँच, पैसा आ धार्मिक-सांस्कृतिक श्रवणक बाजारूकरण पर संकेत करैत अछि।

प्रश्न 1836. ‘ककरा सरोकार छै, के हमर गुजर-बसरक खर्चा उठाबैत अछि?’ पंक्ति कोन विडम्बना देखबैत अछि?
क. आर्थिक निर्भरता आ वैचारिक उदासीनता
ख. नदीक प्रवाह
ग. फसलक रंग
घ. मधुर संगीत
उत्तर: क. आर्थिक निर्भरता आ वैचारिक उदासीनता
व्याख्या: पंक्ति बतबैत अछि जे पैसा सार्वजनिक नैतिकता पर हावी भऽ सकैत अछि।

प्रश्न 1837. तिकरित-संदर्भक कविता कोन वैश्विक राजनीतिक प्रसंगक ओर इशारा करैत अछि?
क. युद्ध, तानाशाही आ शिकारक मीडिया-दृश्य
ख. केवल लोकनृत्य
ग. बाल-विवाह
घ. धान रोपनी
उत्तर: क. युद्ध, तानाशाही आ शिकारक मीडिया-दृश्य
व्याख्या: स्पाइडर-होल प्रसंग युद्धोत्तर विश्व-राजनीति आ तमाशा-बोधक आलोचना बनैत अछि।

प्रश्न 1838. ‘बेईमानी’ कविता युद्धक पोशाक आ राज्यक भाषा सँ की करैत अछि?
क. राजनीतिक छल आ विनाशक व्यंग्यात्मक विश्लेषण
ख. शादीक गीत
ग. कृषि-परामर्श
घ. भोजन-विधि
उत्तर: क. राजनीतिक छल आ विनाशक व्यंग्यात्मक विश्लेषण
व्याख्या: कविता राज्य, घोषणा, विनाश आ जोकर-खलनायकक रूपकसँ सत्ता पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 1839. ‘परदा नै खसल’ पंक्ति कोन भाव रखैत अछि?
क. विनाशक नाटक अखनो समाप्त नहि भेल
ख. नाटक सफलतापूर्वक खत्म भेल
ग. मेला बन्द भेल
घ. कक्षा छुट्टी भेल
उत्तर: क. विनाशक नाटक अखनो समाप्त नहि भेल
व्याख्या: कवि कहैत छथि जे सत्ता-तमाशाक मंच पर अगिला खलनायकक प्रवेश बाँकी अछि।

प्रश्न 1840. ‘झुनझुन आ कनफुसकी’मे सार्वजनिक स्थानक व्यवहार की देखबैत अछि?
क. वर्गीय घृणा, देह-गन्ध आ सामाजिक दूरी
ख. समता-उत्सव
ग. केवल बाल-क्रीड़ा
घ. राजकीय परेड
उत्तर: क. वर्गीय घृणा, देह-गन्ध आ सामाजिक दूरी
व्याख्या: कविता सीट, गन्ध, कपड़ा आ फुसफुसाहटसँ घृणाक दैनन्दिन रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 1841. रामा रावक आधुनिक कवितामे व्यंग्यक भूमिका की अछि?
क. सभ्य भाषा पछाड़ि छिपल हिंसा खोलब
ख. मात्र हँसाबय
ग. कथानक रोकब
घ. छन्द गिनब
उत्तर: क. सभ्य भाषा पछाड़ि छिपल हिंसा खोलब
व्याख्या: व्यंग्य सत्ता, मीडिया, बाजार आ शिष्टाचारक आवरण फाड़ैत अछि।

प्रश्न 1842. एहि कवितासभमे विश्व-राजनीति आ निजी अनुभवक सम्बन्ध कोना अछि?
क. दुनू एक-दोसरमे पसरैत; वैश्विक घटना देह-मन पर असर करैत
ख. दुनू पूर्ण अलग
ग. दुनू केवल खेल
घ. दुनू अर्थहीन
उत्तर: क. दुनू एक-दोसरमे पसरैत; वैश्विक घटना देह-मन पर असर करैत
व्याख्या: कवि आधुनिक मनुष्यकेँ युद्ध, मीडिया, बाजार आ निजी असहजताक बीच रखैत छथि।

खण्ड १९० : विदेह-सदेह ३७ — रामा राव: देह, लक्ष्य, स्मृति आ प्रेमक जटिलता

प्रश्न 1843. ‘शीतकालीन पुष्प’मे देहक अनुभव कोन रूपमे प्रस्तुत अछि?
क. कामना सँ आगू बढ़ि एकत्व आ प्रेमक दार्शनिक रूप
ख. केवल रोगक लक्षण
ग. युद्धक रणनीति
घ. खेतक नाप
उत्तर: क. कामना सँ आगू बढ़ि एकत्व आ प्रेमक दार्शनिक रूप
व्याख्या: कविता देहक घनिष्ठताकेँ अद्वैत, प्रेम आ मुक्तिक अनुभवसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1844. ‘अद्वैत’ शब्द कविता-संदर्भमे की अर्थ धारण करैत अछि?
क. पूर्ण एकत्व आ विभाजनहीनता
ख. केवल गणितीय जोड़
ग. दरबारी पद
घ. भोजनक नाम
उत्तर: क. पूर्ण एकत्व आ विभाजनहीनता
व्याख्या: कवि शारीरिक-मानसिक नजदीकीमे अंतिम एकत्वक सम्भावना देखैत छथि।

प्रश्न 1845. ‘भेटैत अछि … लक्ष्य!’मे लक्ष्यक अति-पीछा ककर आलोचना अछि?
क. यंत्रीकृत, लक्ष्य-ग्रस्त आधुनिक जीवनक
ख. बालक स्वतंत्र खेलक
ग. नदीक स्वाभाविक बहावक
घ. पक्षीक उड़ानक
उत्तर: क. यंत्रीकृत, लक्ष्य-ग्रस्त आधुनिक जीवनक
व्याख्या: कविता कहैत अछि जे टार्गेट मनुष्यकेँ मशीन आ मूर्ख बना सकैत अछि।

प्रश्न 1846. लक्ष्य ‘मृग-मरीचिका’ किएक कहल गेल अछि?
क. ओ पाछू दौड़बैत अछि, मुदा संतोष नहि दैत
ख. ओ निश्चित जलस्रोत अछि
ग. ओ घरक छत अछि
घ. ओ पूर्ण विश्राम अछि
उत्तर: क. ओ पाछू दौड़बैत अछि, मुदा संतोष नहि दैत
व्याख्या: आधुनिक आकांक्षा लगातार सरकैत लक्ष्य बनि जाइत अछि।

प्रश्न 1847. ‘चाँदक लेल आग्रह’मे कवि चाँद नहि माँगैत किएक?
क. असम्भव वस्तुसँ बेसी विश्वास आ न्यायपूर्ण दुनिया चाहैत छथि
ख. चाँद टूटि गेल अछि
ग. चाँद नहि अछि
घ. कवि आकाश नहि देखैत
उत्तर: क. असम्भव वस्तुसँ बेसी विश्वास आ न्यायपूर्ण दुनिया चाहैत छथि
व्याख्या: कविता कल्पना करैत अछि एहन दुनिया जतय दावा, अभाव, भेदभाव आ कानूनक दबाव नहि हो।

प्रश्न 1848. ‘पाइ-विहीन’ दुनिया कवितामे कोन आदर्श अछि?
क. संपत्ति-दावा आ अभावसँ मुक्त समाज
ख. सिक्का-संग्रहालय
ग. बाजारक विस्तार
घ. ऋण-लेखा
उत्तर: क. संपत्ति-दावा आ अभावसँ मुक्त समाज
व्याख्या: कवि धन-केन्द्रित सम्बन्धक बदला सहज सहायता आ प्रचुरताक संसार सोचैत छथि।

प्रश्न 1849. ‘जर्जर स्मृति सभ’मे स्मृति कोन प्रकारक अछि?
क. आकर्षण, अपराध-बोध, देह आ पश्चातापसँ भरल
ख. केवल बालगीत
ग. खेतीक हिसाब
घ. मेला-सूची
उत्तर: क. आकर्षण, अपराध-बोध, देह आ पश्चातापसँ भरल
व्याख्या: कविता पुरान निकटताकेँ सुखद स्मरण नहि, नैतिक छटपटाहटसँ देखैत अछि।

प्रश्न 1850. ‘क्रिया आ हृदयक बीचक दूरी’ पंक्ति कोन द्वन्द्व खोलैत अछि?
क. शारीरिक सम्बन्ध आ भावनात्मक उत्तरदायित्वक दूरी
ख. नदी आ नावक दूरी
ग. विद्यालय आ घरक दूरी
घ. बाजार आ खेतक दूरी
उत्तर: क. शारीरिक सम्बन्ध आ भावनात्मक उत्तरदायित्वक दूरी
व्याख्या: कवि प्रेमक नाम पर उपयोग आ समर्पणक अन्तर पर विचार करैत छथि।

प्रश्न 1851. रामा रावक प्रेम-कवितामे प्रेम ‘मात्र लेब’ नहि किएक अछि?
क. कवि प्रेमकेँ देब, समर्पण आ आत्म-परीक्षण मानैत छथि
ख. प्रेम व्यापार अछि
ग. प्रेम मुकदमा अछि
घ. प्रेम खेलक अंक अछि
उत्तर: क. कवि प्रेमकेँ देब, समर्पण आ आत्म-परीक्षण मानैत छथि
व्याख्या: कविता प्रेमकेँ पवित्र फूल-जकाँ देबाक क्रिया मानैत अछि।

प्रश्न 1852. एहि समूहमे कविक आधुनिकता-दृष्टि कोना अछि?
क. आकांक्षा आ देह दुनूक भीतर नैतिक प्रश्न खोजैत
ख. सिर्फ तकनीक प्रशंसा
ग. सिर्फ ग्रामीण स्मृति
घ. सिर्फ हास्य
उत्तर: क. आकांक्षा आ देह दुनूक भीतर नैतिक प्रश्न खोजैत
व्याख्या: कवि लक्ष्य, स्मृति, प्रेम, देह आ विश्वास सभमे उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत छथि।

खण्ड १९१ : विदेह-सदेह ३७ — तेलंगाना, मातृभूमि आ सांस्कृतिक स्मृति

प्रश्न 1853. ‘तेलंगाना!’ कवितामे तेलंगाना कैँ कोन रूपमे पुकारल गेल अछि?
क. माय, सपना, ध्वज आ संघर्षक धरती
ख. केवल नक्शाक रेखा
ग. केवल बाजार
घ. केवल होटल
उत्तर: क. माय, सपना, ध्वज आ संघर्षक धरती
व्याख्या: कविता प्रदेशकेँ भावनात्मक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक मातृ-आधार बनबैत अछि।

प्रश्न 1854. नदी, दूध, बाछा-बाछी आ बरखा कोन बात स्मरण करबैत अछि?
क. हरियर, जीवंत आ कृषिसम्पन्न तेलंगानाक छवि
ख. रेगिस्तानक सूखा
ग. युद्धक ध्वंस मात्र
घ. कारखानाक धुआँ
उत्तर: क. हरियर, जीवंत आ कृषिसम्पन्न तेलंगानाक छवि
व्याख्या: प्राकृतिक बिम्ब सभ मातृभूमिक समृद्ध स्मृति बनैत अछि।

प्रश्न 1855. ‘बथुकम्मा’ गीतक उल्लेख कोन सांस्कृतिक परत जोड़ैत अछि?
क. स्थानीय त्योहार आ स्त्री-सांस्कृतिक स्मृति
ख. विदेशी बैंकिंग
ग. सैन्य परेड
घ. न्यायालयी दस्तावेज
उत्तर: क. स्थानीय त्योहार आ स्त्री-सांस्कृतिक स्मृति
व्याख्या: बथुकम्मा तेलंगाना पहचानक लोक-उत्सवी स्वर अछि।

प्रश्न 1856. कबड्डी, बिल्लम गोडू आ बोनालू क उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. प्रदेशक लोक-खेल आ पर्व सभकेँ स्मृति-संसारमे राखय लेल
ख. केवल परीक्षा-प्रश्न बनाबय लेल
ग. मोटर-मॉडल बताबय लेल
घ. राजसी उपाधि लेल
उत्तर: क. प्रदेशक लोक-खेल आ पर्व सभकेँ स्मृति-संसारमे राखय लेल
व्याख्या: कविता संस्कृति कैँ जीवित अनुभव, खेल, गीत आ पर्वसँ रचैत अछि।

प्रश्न 1857. ‘बन्द मुट्ठी’ बिम्ब तेलंगाना कैँ कोन अर्थ दैत अछि?
क. प्रतिरोध आ सामूहिक संघर्ष
ख. नींद
ग. भोजन
घ. विलासिता
उत्तर: क. प्रतिरोध आ सामूहिक संघर्ष
व्याख्या: बन्द मुट्ठी आन्दोलनकारी संकल्पक रूपक अछि।

प्रश्न 1858. ‘हाँसू अहाँ छी’ पंक्ति प्रदेशकेँ कोन वर्गसँ जोड़ैत अछि?
क. किसान-श्रमिक संघर्ष
ख. केवल दरबार
ग. समुद्री व्यापार
घ. आकाशीय यात्रा
उत्तर: क. किसान-श्रमिक संघर्ष
व्याख्या: हाँसू खेत-श्रम आ जन-संघर्षक औजार अछि।

प्रश्न 1859. ‘हमर झण्डा अहाँ छी’ कोन राजनीतिक भाव अछि?
क. आन्दोलनक प्रतीक रूपमे मातृभूमि
ख. केवल सजावटी कपड़ा
ग. विद्यालयी नेपकिन
घ. व्यापारिक लोगो
उत्तर: क. आन्दोलनक प्रतीक रूपमे मातृभूमि
व्याख्या: तेलंगाना स्वयं संघर्षक ध्वज बनि उठैत अछि।

प्रश्न 1860. कविता पुरान वैभवक प्रश्न ‘कतय विलुप्त भेल?’ किएक पूछैत अछि?
क. सांस्कृतिक-आर्थिक ह्रासक पीड़ा व्यक्त करबाक लेल
ख. हास्य करबाक लेल
ग. गणना करबाक लेल
घ. पाकक विधि लेल
उत्तर: क. सांस्कृतिक-आर्थिक ह्रासक पीड़ा व्यक्त करबाक लेल
व्याख्या: स्मृति आ वर्तमानक अन्तर कविता कैं संघर्षधर्मी बनबैत अछि।

प्रश्न 1861. तेलंगाना-कवितामे लोकध्वनि ‘देद्देक्का देम’ की करैत अछि?
क. ढोलकक ताल आ सामुदायिक आवाज जगेबैत अछि
ख. मौन पैदा करैत अछि
ग. कागज नापैत अछि
घ. गाड़ी रोकैत अछि
उत्तर: क. ढोलकक ताल आ सामुदायिक आवाज जगेबैत अछि
व्याख्या: ध्वनि स्थानीय श्रवण-संस्कृति कैं पाठमे जीवित करैत अछि।

प्रश्न 1862. एहि कविताक मूल स्वर की अछि?
क. मातृभूमि-स्मृति सँ उपजल राजनीतिक स्वाभिमान
ख. उदासीन पर्यटन
ग. निजी विलास
घ. केवल वस्तु-वर्णन
उत्तर: क. मातृभूमि-स्मृति सँ उपजल राजनीतिक स्वाभिमान
व्याख्या: कविता प्रेम, स्मृति, लोकसंस्कृति आ संघर्षकैं एकसाथ राखैत अछि।

खण्ड १९२ : विदेह-सदेह ३७ — गोरा शासन, भूमण्डलीकरण आ भाषिक उपनिवेश

प्रश्न 1863. ‘एकटा गोरा शासन’मे गोरा शासनक नया रूप कोन कहल गेल अछि?
क. भूमण्डलीकरणक मुखौटा लगाओल आदेश
ख. गामक लोकगीत
ग. बच्चाक खेल
घ. विवाहक गीत
उत्तर: क. भूमण्डलीकरणक मुखौटा लगाओल आदेश
व्याख्या: कविता कहैत अछि जे औपनिवेशिक सत्ता बदलल रूपमे फेर उपस्थित अछि।

प्रश्न 1864. कवितामे सरकारी भाषा ‘हमर नै’ कहबाक अर्थ की?
क. शासनक भाषा जनता-संस्कृतिसँ कटि गेल
ख. भाषा सभ समान रूपेँ अपन अछि
ग. कोनो भाषा नहि चाही
घ. केवल संगीत चाही
उत्तर: क. शासनक भाषा जनता-संस्कृतिसँ कटि गेल
व्याख्या: भाषिक अलगाव उपनिवेशी अनुभूतिक प्रमुख आधार बनैत अछि।

प्रश्न 1865. ‘सम्पूर्ण संस्कृति एकटा विकृति अछि’ पंक्ति कोन अनुभव बतबैत अछि?
क. थोपल गेल सांस्कृतिक संरचनाक अस्वाभाविकता
ख. संस्कृति पूर्ण मुक्त अछि
ग. संस्कृति केवल भोज अछि
घ. संस्कृति केवल कपड़ा अछि
उत्तर: क. थोपल गेल सांस्कृतिक संरचनाक अस्वाभाविकता
व्याख्या: कवि अपन जीवन-संस्कृति पर बाहरी संरचना थोपल जाइत देखैत छथि।

प्रश्न 1866. शरीर ‘बलसँ वशमे’ कएल जाए सन अनुभूति कोन राजनीतिक रूपक अछि?
क. सांस्कृतिक-आर्थिक अधीनता शरीरधरि पहुँचैत अछि
ख. व्यायामक लाभ
ग. नृत्यक मुद्रा
घ. नींदक सुख
उत्तर: क. सांस्कृतिक-आर्थिक अधीनता शरीरधरि पहुँचैत अछि
व्याख्या: कविता उपनिवेशकेँ केवल शासन नहि, देहगत असुविधा बनबैत अछि।

प्रश्न 1867. एम.एन.सी. सभक उल्लेख कोन आलोचना करैत अछि?
क. बहुराष्ट्रीय पूँजी द्वारा भारतीयता पर निशाना
ख. स्थानीय खिलौना
ग. धानक बीज
घ. लोक-गीत
उत्तर: क. बहुराष्ट्रीय पूँजी द्वारा भारतीयता पर निशाना
व्याख्या: कवि उदारीकरण आ बहुराष्ट्रीय कंपनिसँ सांस्कृतिक-आर्थिक संकट देखैत छथि।

प्रश्न 1868. गोरा भाषा आ गोरा वाणीक प्रभुत्व किएक समस्या अछि?
क. ओ स्थानीय आवाजकेँ हाशिये पर धकेलैत अछि
ख. ओ सभकेँ बराबर बोलाबैत अछि
ग. ओ खेती बढ़बैत अछि
घ. ओ बच्चा खेलबैत अछि
उत्तर: क. ओ स्थानीय आवाजकेँ हाशिये पर धकेलैत अछि
व्याख्या: भाषा सत्ता बनि जाइत अछि जखन लोकक वाणी ओकरा भीतर स्थान नहि पबैत।

प्रश्न 1869. ‘व्याकरण नोरसँ भरल इतिहास’ कोन संकेत दैत अछि?
क. भाषाक नियम सेहो पीड़ित इतिहाससँ अलग नहि
ख. व्याकरण केवल खेल अछि
ग. व्याकरण भोजन अछि
घ. व्याकरण मौसम अछि
उत्तर: क. भाषाक नियम सेहो पीड़ित इतिहाससँ अलग नहि
व्याख्या: कवि भाषा-विन्यासमे इतिहासक आँसू आ हिंसा देखैत छथि।

प्रश्न 1870. ‘राष्ट्रक हृदय धड़कब बिसरि गेल’ पंक्ति कोन संकट व्यक्त करैत अछि?
क. बाजार-शासनमे राष्ट्रीय संवेदनाक क्षय
ख. खेलक जीत
ग. बर्षाक आगमन
घ. गीतक ताल
उत्तर: क. बाजार-शासनमे राष्ट्रीय संवेदनाक क्षय
व्याख्या: कविता आर्थिक नीति आ सांस्कृतिक विस्थापनकेँ राष्ट्रीय असंवेदना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1871. कवितामे उपनिवेशवाद ‘दरवाजा पर’ किएक अछि?
क. ओ पुरान सत्ता नहि, वर्तमान प्रवेश करैत खतरा अछि
ख. ओ पूर्ण समाप्त अछि
ग. ओ केवल किताबमे अछि
घ. ओ बाल-खेल अछि
उत्तर: क. ओ पुरान सत्ता नहि, वर्तमान प्रवेश करैत खतरा अछि
व्याख्या: कवि चेतावनी दैत छथि जे नव आर्थिक भाषा पुरान अधीनता पुनः ला सकैत अछि।

प्रश्न 1872. एहि कविता-समूहक केन्द्रीय प्रश्न की अछि?
क. भाषा, बाजार आ पहचानक स्वाधीनता
ख. मिठाईक मूल्य
ग. घोड़ा-दौड़
घ. नौका-विहार
उत्तर: क. भाषा, बाजार आ पहचानक स्वाधीनता
व्याख्या: कविता राजनीतिक स्वतन्त्रताक बादो भाषिक-सांस्कृतिक स्वराजक प्रश्न उठबैत अछि।

खण्ड १९३ : विदेह-सदेह ३७ — गुजराती अनूदित पद्य: स्मृति, गाछ-बिरिछ आ सड़कक झटका

प्रश्न 1873. गुजराती पद्यांशमे ‘तोडलो’ शब्दक अर्थ की देल गेल अछि?
क. घरक बाहरी देबालमे ठोकल लकड़ीक खुट्टी
ख. कविता-पुस्तक
ग. नदीक नाव
घ. ढोलकक ताल
उत्तर: क. घरक बाहरी देबालमे ठोकल लकड़ीक खुट्टी
व्याख्या: शब्दावलीमे तोडलो कैँ चिड़ै सभक बैसबाक लेल देबालक लकड़ीक खुट्टी कहल गेल अछि।

प्रश्न 1874. ‘अठम’ शब्द ककर द्योतक अछि?
क. चान्द्र पक्षक आठम दिन
ख. सालक पहिल दिन
ग. धानक माप
घ. घोड़ा-दौड़
उत्तर: क. चान्द्र पक्षक आठम दिन
व्याख्या: शब्दावली चान्द्र-पक्ष आधारित लोक-समय कैँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 1875. ‘अगियारस’ शब्दक अर्थ की अछि?
क. एकादशी
ख. पूर्णिमा
ग. अमावस्या
घ. दशहरा
उत्तर: क. एकादशी
व्याख्या: गुजराती शब्दावलीमे अगियारस कैँ एकादशीसँ जोड़ा गेल अछि।

प्रश्न 1876. ‘तरिला’ कोन वस्तु अछि?
क. गाड़ी खींचय बला अतिरिक्त बड़दक गरदनि पर राखल लकड़ीक उपकरण
ख. माछक नाव
ग. स्कूलक बेंच
घ. साड़ीकोर
उत्तर: क. गाड़ी खींचय बला अतिरिक्त बड़दक गरदनि पर राखल लकड़ीक उपकरण
व्याख्या: शब्दावली कृषक-परिवहनक स्थानीय उपकरणक अर्थ दैत अछि।

प्रश्न 1877. नागफेनी, आवळ, बबूड़ आ आकडिया सभ कोन वातावरण बनबैत अछि?
क. काँटेदार, स्थानीय, ग्रामीण-प्राकृतिक परिदृश्य
ख. महानगरीय कार्यालय
ग. समुद्री बन्दरगाह
घ. राजदरबार
उत्तर: क. काँटेदार, स्थानीय, ग्रामीण-प्राकृतिक परिदृश्य
व्याख्या: वनस्पति-सूची कविता कैं स्थानिक भू-दृश्यसँ बाँधैत अछि।

प्रश्न 1878. कीड़ीक ‘महादेव मन्दिर’ जायब कोन शैलीक संकेत अछि?
क. बाल-जिज्ञासा आ लोक-कल्पनाक मिश्रण
ख. सरकारी आदेश
ग. युद्ध-घोषणा
घ. व्यापारिक हिसाब
उत्तर: क. बाल-जिज्ञासा आ लोक-कल्पनाक मिश्रण
व्याख्या: कविता कीड़ीसँ संवाद करैत प्रकृति कैं जीवित लोक-कथात्मक संसार बनबैत अछि।

प्रश्न 1879. लाल नागफेनी-फल तोड़बाक प्रसंगमे अचानक की बदलैत अछि?
क. स्मृति-मय प्रकृति सँ आधुनिक पक्की सड़क पर झटका
ख. पूजा समाप्त होइत अछि
ग. नदी सूखैत अछि
घ. घोड़ा उड़ैत अछि
उत्तर: क. स्मृति-मय प्रकृति सँ आधुनिक पक्की सड़क पर झटका
व्याख्या: मोबाइल अक्षर आ पक्की सड़कक बिम्ब ग्रामीण स्मृति पर आधुनिकता क आघात देखबैत अछि।

प्रश्न 1880. मेघक धक्का खाइत वापस पक्की सड़क पर आबयब कोन भाव दैत अछि?
क. अतीत/प्रकृति सँ वर्तमान/यंत्र-जीवनमे फेंकल जेबाक अनुभव
ख. पूर्ण विश्राम
ग. मेला-आनन्द
घ. खेतक कटनी
उत्तर: क. अतीत/प्रकृति सँ वर्तमान/यंत्र-जीवनमे फेंकल जेबाक अनुभव
व्याख्या: कविता स्मृति आ आधुनिक विस्थापनक टकराव बनबैत अछि।

प्रश्न 1881. ‘आवल’क उपयोग शब्दावलीमे ककर लेल कहल गेल अछि?
क. चाम पकेबा आ औषधीय उपयोग लेल
ख. कविता लिखबाक कलम
ग. सोनाक गहना
घ. नदीक नाव
उत्तर: क. चाम पकेबा आ औषधीय उपयोग लेल
व्याख्या: आवलक छाल टैनिंग आ आयुर्वेदिक प्रयोगसँ जोड़ल गेल अछि।

प्रश्न 1882. गुजराती पद्यांशक मुख्य सौन्दर्य की अछि?
क. स्थानीय शब्द, बाल-कल्पना आ आधुनिक विस्थापनक संगम
ख. केवल दरबारी प्रशंसा
ग. सैन्य-इतिहास
घ. सूखा गणित
उत्तर: क. स्थानीय शब्द, बाल-कल्पना आ आधुनिक विस्थापनक संगम
व्याख्या: कविता स्थानिक शब्दावलीसँ स्मृति बनबैत अछि आ अन्तमे आधुनिक झटका दैत अछि।

खण्ड १९४ : विदेह-सदेह ३७ — अनूदित पद्य खण्ड: भाषा-सेतु, शब्दावली आ प्रतिरोधक संकलन

प्रश्न 1883. अनूदित पद्य खण्डमे तेलुगु कविताक मुख्य स्वर कोन अछि?
क. दलित अनुभव, श्रम, प्रतिरोध आ आत्मसम्मान
ख. केवल दरबारी विनोद
ग. साधारण मौसम-रिपोर्ट
घ. व्यापारिक विज्ञापन
उत्तर: क. दलित अनुभव, श्रम, प्रतिरोध आ आत्मसम्मान
व्याख्या: तेलुगु कविता-भाग जाति, श्रम, स्त्री-पीड़ा आ सामाजिक न्यायक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 1884. पुरुषोत्तम के.क भूमिका एहि खण्डमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ओ तेलुगु रचनाकेँ अंग्रेजी सेतु द्वारा व्यापक पाठक धरि पहुँचबैत छथि
ख. ओ कथानकक खलनायक छथि
ग. ओ केवल मुद्रक छथि
घ. ओ नाटकक पात्र छथि
उत्तर: क. ओ तेलुगु रचनाकेँ अंग्रेजी सेतु द्वारा व्यापक पाठक धरि पहुँचबैत छथि
व्याख्या: अनुवादकक परिचय खण्डक भाषिक पुलक आधार स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 1885. बोयी भीमन्ना सँ जे. सुभद्रा धरि खण्ड कोन विस्तार देखबैत अछि?
क. इतिहासक प्रतिरोध सँ दलित स्त्री-श्रमक देहगत अनुभव धरि
ख. केवल राजवंश-सूची
ग. फूलक नाम-सूची
घ. खेतीक भाव-सूची
उत्तर: क. इतिहासक प्रतिरोध सँ दलित स्त्री-श्रमक देहगत अनुभव धरि
व्याख्या: कविता-क्रम सामूहिक इतिहास, श्रम, चाम, साड़ी, अव्वा आ स्त्री-प्रतिरोधक विस्तृत पट खोलैत अछि।

प्रश्न 1886. रामा रावक कवितासभ खण्डमे कोन नया आयाम जोड़ैत अछि?
क. वैश्विक राजनीति, मीडिया, युद्ध, देह आ आधुनिक लक्ष्यबोध
ख. केवल गामक पगडंडी
ग. केवल पाकक विधि
घ. केवल पौराणिक सूची
उत्तर: क. वैश्विक राजनीति, मीडिया, युद्ध, देह आ आधुनिक लक्ष्यबोध
व्याख्या: रामा राव आधुनिक विश्वक विसंगति केँ कविता-संरचनामे आनैत छथि।

प्रश्न 1887. तेलंगाना-कवितासभ अनुवादित पद्य खण्डमे कोन पहचान जोड़ैत अछि?
क. क्षेत्रीय अस्मिता आ जन-संघर्षक सांस्कृतिक आवाज
ख. केवल निजी विलास
ग. नौकरशाही आदेश
घ. मौन साधना
उत्तर: क. क्षेत्रीय अस्मिता आ जन-संघर्षक सांस्कृतिक आवाज
व्याख्या: तेलंगाना कविता प्रदेश, लोकगीत, पर्व, खेती आ आन्दोलनकेँ एक करैत अछि।

प्रश्न 1888. शब्दावली-नोट सभक शैक्षिक महत्त्व की अछि?
क. स्थानीय शब्दक अर्थ खोलि पाठककेँ सांस्कृतिक सन्दर्भ बुझबैत अछि
ख. प्रश्नक पृष्ठ-संख्या बताबैत अछि
ग. केवल सजावट अछि
घ. उत्तर नष्ट करैत अछि
उत्तर: क. स्थानीय शब्दक अर्थ खोलि पाठककेँ सांस्कृतिक सन्दर्भ बुझबैत अछि
व्याख्या: तोडलो, लाण्डा, आवळ आदि शब्द बिना नोट पाठक लेल अस्पष्ट रहि सकैत छल।

प्रश्न 1889. एहि खण्डमे अनुवादक मूल काम की अछि?
क. भाषा बदलितो पीड़ा, प्रतिरोध आ स्थानीय स्वाद बचाएब
ख. सन्दर्भ हटाएब
ग. कविता कैं गद्य-सूची बनाब
घ. सार्थक शब्द मिटाएब
उत्तर: क. भाषा बदलितो पीड़ा, प्रतिरोध आ स्थानीय स्वाद बचाएब
व्याख्या: अनुवादकक जिम्मेदारी केवल अर्थ नहि, सांस्कृतिक ताप आ लय सेहो पहुँचाब अछि।

प्रश्न 1890. अनूदित पद्य खण्डक प्रश्नोत्तरीमे पृष्ठ-संख्या प्रश्न किएक टारल गेल अछि?
क. किएक तँ असली सीख विषय, बिम्ब, स्वर आ सामाजिक अर्थमे अछि
ख. किएक तँ पृष्ठ नहि अछि
ग. किएक तँ अंक छोट अछि
घ. किएक तँ भाषा नहि अछि
उत्तर: क. किएक तँ असली सीख विषय, बिम्ब, स्वर आ सामाजिक अर्थमे अछि
व्याख्या: सार्थक अध्ययन पृष्ठ-स्मृति नहि, पाठ-बोध आ विचारक पहचान पर आधारित अछि।

प्रश्न 1891. एहि १८५–१९४ खण्डक सामूहिक पाठक-लाभ की अछि?
क. अनुवादित कविताक सामाजिक, भाषिक आ सौन्दर्यात्मक परत बुझब
ख. सिर्फ नाम रटब
ग. केवल तिथि गिनब
घ. मात्र फाइल खोलब
उत्तर: क. अनुवादित कविताक सामाजिक, भाषिक आ सौन्दर्यात्मक परत बुझब
व्याख्या: नव प्रश्नसभ पाठककेँ कविताक विषय, रूपक, शब्दावली आ विचारधारा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1892. विदेह-सदेह ३७ मे अनूदित पद्य खण्ड समावेशक संकेत की दैत अछि?
क. भारतीय भाषासभक पीड़ित, क्षेत्रीय आ आधुनिक स्वर मैथिली पाठक धरि आनब
ख. केवल एक भाषा बन्द करब
ग. साहित्यिक संवाद रोकब
घ. स्रोत छिपेब
उत्तर: क. भारतीय भाषासभक पीड़ित, क्षेत्रीय आ आधुनिक स्वर मैथिली पाठक धरि आनब
व्याख्या: एहि संकलनमे तेलुगु, गुजराती आदि भाषिक अनुभव मैथिलीमे आबि व्यापक भारतीय संवाद रचैत अछि।

खण्ड १९५ : विदेह-सदेह ३७ — उड़िया कविता: इप्सिता सारंगी आ “बुद्ध”

प्रश्न 1893. उड़िया कविता खण्डमे इप्सिता सारंगी कैं कोना चिन्हित कएल गेल अछि?
क. सशक्त उड़िया कवयित्री, आलोचक आ अनुवादक
ख. केवल नाट्य-अभिनेत्री
ग. केवल लोकगायक
घ. केवल इतिहास-सम्पादक
उत्तर: क. सशक्त उड़िया कवयित्री, आलोचक आ अनुवादक
व्याख्या: परिचयमे इप्सिता सारंगी कैं कविता, आलोचना आ अनुवाद—तीनू क्षेत्रसँ जोड़ि प्रस्तुत कएल गेल अछि।

प्रश्न 1894. इप्सिता सारंगीकैं कोन पुरस्कारसभ भेटल कहल गेल अछि?
क. राज्य युवा पुरस्कार आ उड़ीसा पुस्तक मेला पुरस्कार
ख. ज्ञानपीठ आ नोबेल
ग. केवल ग्राम-पुरस्कार
घ. केवल विद्यालयी प्रमाणपत्र
उत्तर: क. राज्य युवा पुरस्कार आ उड़ीसा पुस्तक मेला पुरस्कार
व्याख्या: खण्डक परिचयमे हुनका राज्य युवा पुरस्कार आ उड़ीसा पुस्तक मेला पुरस्कारसँ सम्मानित कहल गेल अछि।

प्रश्न 1895. उड़िया कविताक अंग्रेजी अनुवादक रूपमे के कहल गेल छथि?
क. हरेकृष्ण दास
ख. भिखारी ठाकुर
ग. रहमान राही
घ. पुरुषोत्तम के.
उत्तर: क. हरेकृष्ण दास
व्याख्या: उड़िया सँ अंग्रेजी अनुवादक हरेकृष्ण दास छथि, जिनका परिचय कटकक नियाली महाविद्यालयसँ जोड़ल अछि।

प्रश्न 1896. हरेकृष्ण दासक शोध-रुचि कोन कविक कविताक अनुवाद पर बताओल गेल अछि?
क. बंशीधर सारंगीक कविता सभ
ख. विद्यापतिक पदावली
ग. भिखारी ठाकुरक बिरहा
घ. रहमान राहीक आलोचना
उत्तर: क. बंशीधर सारंगीक कविता सभ
व्याख्या: परिचय कहैत अछि जे ओ बंशीधर सारंगीक कविता सभक अनुवाद पर शोध कऽ रहल छथि।

प्रश्न 1897. “बुद्ध” कवितामे वक्ता सिद्धार्थसँ मूलतः की माँगैत अछि?
क. अनासक्ति आ दुःख-विलोपनक अनुभवक स्पष्ट गवाही
ख. राजकीय वंशावली
ग. युद्धक रणनीति
घ. नदीक नक्शा
उत्तर: क. अनासक्ति आ दुःख-विलोपनक अनुभवक स्पष्ट गवाही
व्याख्या: कविता सिद्धार्थ/भिक्षुसँ पूछैत अछि जे जीवनभरक अनासक्ति आ सुख-दुःखक हिसाब कहाँ अछि।

प्रश्न 1898. “एक सङ्गे आठ रस्ता पर चलल जा सकैत अछि?” पंक्ति कोन धारणापर प्रश्न अछि?
क. अष्टाङ्गिक मार्गक व्यावहारिकता
ख. बारहमासा गीत
ग. नाट्य-मंच
घ. धानक रोपनी
उत्तर: क. अष्टाङ्गिक मार्गक व्यावहारिकता
व्याख्या: वक्ता बुद्धक मार्गक दार्शनिक आदर्शकेँ जीवनक जटिल दुखसँ तौलैत अछि।

प्रश्न 1899. “दुःखक बोझ तर कोनो इच्छा जीवित नै रहैत” — एहि पंक्तिसँ की भाव उभरैत अछि?
क. अत्यधिक दुःख इच्छा आ आध्यात्मिक दावाकेँ निष्प्रभ करैत अछि
ख. दुःख सदिखन उत्सव अछि
ग. इच्छा मात्र खेल अछि
घ. शरीरक कोनो अर्थ नहि
उत्तर: क. अत्यधिक दुःख इच्छा आ आध्यात्मिक दावाकेँ निष्प्रभ करैत अछि
व्याख्या: कविता कहैत अछि जे दुःख जखन असह्य हो, तखन इच्छा, मार्ग आ उपदेशक अर्थ बदलि जाइत अछि।

प्रश्न 1900. “शरीर माया अछि” बला विमर्शमे कविता कोन त्रयी जोड़ैत अछि?
क. उमेर, मृत्यु आ रोग
ख. नदी, नाव आ घाट
ग. फूल, रंग आ गन्ध
घ. गाम, हाट आ मेला
उत्तर: क. उमेर, मृत्यु आ रोग
व्याख्या: कविता शरीरकेँ माया कहैत ओकरा उमेर, मृत्यु आ रोगसँ अभिन्न देखैत अछि।

प्रश्न 1901. “वास्तविकता सँ भागि कऽ सत्य ताकब” पर प्रश्न किएक अछि?
क. कविता आध्यात्मिक पलायन आ जीवनक ठोस पीड़ाक टकराव देखबैत अछि
ख. कविता भूगोल पढ़बैत अछि
ग. कविता व्यंजन-विधि अछि
घ. कविता केवल हास्य अछि
उत्तर: क. कविता आध्यात्मिक पलायन आ जीवनक ठोस पीड़ाक टकराव देखबैत अछि
व्याख्या: वक्ता पूछैत अछि जे वास्तविक दुःखसँ भागि सत्य ताकब मुक्ति देत कि धोखा बनत।

प्रश्न 1902. “बुद्ध” कविताक मुख्य स्वर की अछि?
क. श्रद्धा-सहित आलोचनात्मक प्रश्नाकुलता
ख. अन्ध-प्रशंसा मात्र
ग. निरर्थक गाली
घ. केवल बाल-गीत
उत्तर: क. श्रद्धा-सहित आलोचनात्मक प्रश्नाकुलता
व्याख्या: कविता बुद्ध-विचारकेँ अस्वीकार नहि, बल्कि दुःख, शरीर आ अनासक्तिक कसौटी पर जाँचैत अछि।

खण्ड १९६ : विदेह-सदेह ३७ — उड़िया कविता: स्त्री-अस्तित्व आ निषिद्ध कोमलता

प्रश्न 1903. “स्त्री” कवितामे वक्ता अपन अस्तित्व कतय धरि पसारबाक बात कहैत अछि?
क. क्षितिजक दू बिन्दु धरि
ख. केवल घरक देहरी धरि
ग. केवल बजार धरि
घ. केवल पुस्तकालय धरि
उत्तर: क. क्षितिजक दू बिन्दु धरि
व्याख्या: वक्ता स्त्री-अस्तित्वकेँ सीमित जगहमे नहि, क्षितिजक विस्तारमे देखय चाहैत अछि।

प्रश्न 1904. “मन, वचन आ कर्म”क उल्लेख स्त्री-कवितामे की सूचित करैत अछि?
क. पूर्ण व्यक्तित्व आ आत्म-नियन्त्रणक आकांक्षा
ख. केवल पूजा-विधि
ग. केवल बाजारू बात
घ. केवल सैनिक आदेश
उत्तर: क. पूर्ण व्यक्तित्व आ आत्म-नियन्त्रणक आकांक्षा
व्याख्या: वक्ता आँखि हटाकऽ नहि, बल्कि चेतना, भाषा आ कर्म तीनू स्तर पर अस्तित्वक दावा करैत अछि।

प्रश्न 1905. “ठोढ़ पर सदिखन मुस्कान” स्त्री-कवितामे कोन दबावक संकेत अछि?
क. दुःख भीतर राखि बाहरी शिष्ट मुस्कान धारण करबाक सामाजिक दबाव
ख. निरन्तर आनन्दक प्रमाण
ग. केवल नृत्य-मुद्रा
घ. बालक्रीड़ा
उत्तर: क. दुःख भीतर राखि बाहरी शिष्ट मुस्कान धारण करबाक सामाजिक दबाव
व्याख्या: स्त्रीक व्यक्तित्व पर आरोपित विनम्रता आ सहनशीलताक मुखौटा एहि बिम्बमे अछि।

प्रश्न 1906. “कुँजिझिया” सँ अनूदित अंशमे छोट फ्राकमे नाचैत लहरि सभ कोन दुनियाँ रचैत अछि?
क. बाहरी चमक, खेल आ वर्जित सौन्दर्यक विडम्बना
ख. अदालतक फैसला
ग. कृषि-करार
घ. मंदिर-अभिलेख
उत्तर: क. बाहरी चमक, खेल आ वर्जित सौन्दर्यक विडम्बना
व्याख्या: छोट फ्राक, लहरि आ सोनहुल माछक बिम्ब सुन्दरता रचैत अछि, मुदा वक्ता ओकरा पाबि नहि सकैत।

प्रश्न 1907. “सोनहुल माछ खेलाइत मुस्काइत” बिम्बक सामने वक्ता किएक उदास अछि?
क. किएक तँ ओकर लेल मुस्की, सपना आ कोमलता वर्जित अछि
ख. किएक तँ ओ माछ खाएत अछि
ग. किएक तँ ओ नाव चला रहल अछि
घ. किएक तँ ओ परीक्षा दैत अछि
उत्तर: क. किएक तँ ओकर लेल मुस्की, सपना आ कोमलता वर्जित अछि
व्याख्या: कविता सौन्दर्यक उपस्थिति आ स्त्री/मानवक वंचना कैं एकसाथ राखैत अछि।

प्रश्न 1908. “एतय वर्जित अछि सेहो सपना, विलासिता, सौन्दर्य आ कोमलता” — एहि सँ कोन सामाजिक स्थिति खुलैत अछि?
क. वंचित जीवनमे भावनात्मक सुख तक रोकल गेल अछि
ख. सपना सभ अनिवार्य अछि
ग. सौन्दर्य सहज उपलब्ध अछि
घ. विलासिता कानून अछि
उत्तर: क. वंचित जीवनमे भावनात्मक सुख तक रोकल गेल अछि
व्याख्या: वक्ता कहैत अछि जे केवल भौतिक वस्तु नहि, सपनो आ कोमलता वर्जित बना देल गेल अछि।

प्रश्न 1909. “अर्धचन्द्र जादू-छड़ी” बिम्ब कोन सत्ता-संबंध दिखबैत अछि?
क. दूर बैसल नियंत्रक समय आ जीवन चूसि सकैत अछि
ख. खेतीक औजार
ग. साधारण खिलौना
घ. भोजनक चम्मच
उत्तर: क. दूर बैसल नियंत्रक समय आ जीवन चूसि सकैत अछि
व्याख्या: वक्ता नियंत्रक पात्रकैं कहैत अछि—हाथमे जादू-छड़ी घुमाबैत हमर समय चूसि लिअ जँ सकैत छी।

प्रश्न 1910. “हमरा पात्र बना लिअ” पंक्ति कोन खतरा देखबैत अछि?
क. स्त्री/वक्ता कैं दोसरेक प्रदर्शनक वस्तु बना देबाक खतरा
ख. लेखकक स्वतंत्रता
ग. खेतीक माप
घ. आकाश-यात्रा
उत्तर: क. स्त्री/वक्ता कैं दोसरेक प्रदर्शनक वस्तु बना देबाक खतरा
व्याख्या: वक्ता बुझैत अछि जे ओ नाचैत लहरि सभक भीतर सजावटी पात्र बनाओल जा सकैत अछि।

प्रश्न 1911. उड़िया स्त्री-कविताक केन्द्रीय तनाव की अछि?
क. विस्तारक चाहना आ सामाजिक वर्जनाक टकराव
ख. केवल ऋतु-वर्णन
ग. केवल पुरस्कार-सूची
घ. केवल रेलयात्रा
उत्तर: क. विस्तारक चाहना आ सामाजिक वर्जनाक टकराव
व्याख्या: क्षितिज धरि पसारबाक इच्छा आ सपना-सौन्दर्यक निषेध—दुनू मिलि तनाव बनबैत अछि।

प्रश्न 1912. “बुद्ध” आ “स्त्री/कुँजिझिया” कैं एकसाथ पढ़िते कोन साझा प्रश्न उभरैत अछि?
क. जीवनक दुःख, देह, इच्छा आ मुक्ति कतेक वास्तविक अछि
ख. केवल छापाखाना
ग. केवल पृष्ठ-क्रम
घ. केवल फोटो-सज्जा
उत्तर: क. जीवनक दुःख, देह, इच्छा आ मुक्ति कतेक वास्तविक अछि
व्याख्या: दुनू काव्यांश आध्यात्मिक वा सौन्दर्यात्मक दावाक मुकाबिल वास्तविक देहगत वंचना राखैत अछि।

खण्ड १९७ : विदेह-सदेह ३७ — भोजपुरी कविता: भिखारी ठाकुर आ वृद्धाश्रमक पक्षमे

प्रश्न 1913. भोजपुरी कविता खण्डमे मूल कवि के छथि?

क. भिखारी ठाकुर

ख. रहमान राही

ग. इप्सिता सारंगी

घ. बोयी भीमन्ना

उत्तर: क. भिखारी ठाकुर

व्याख्या: भोजपुरी खण्डक मूल कवि भिखारी ठाकुर कहल गेल छथि, जिनकर बिरहा मैथिलीमे अनूदित अछि।

प्रश्न 1914. भिखारी ठाकुरक जन्म-क्षेत्रक सम्बन्ध कोन जिलासँ बताओल गेल अछि?

क. छपरा जिला

ख. कटक जिला

ग. वारंगल जिला

घ. श्रीनगर जिला

उत्तर: क. छपरा जिला

व्याख्या: परिचय भिखारी ठाकुर कैं छपरा जिला, बिहारक लोककलाकार रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 1915. भिखारी ठाकुरक आरम्भिक रचना सभक स्वरूप कोना बताओल गेल अछि?

क. प्रारम्भमे मौखिक, बादमे कैथी लिपिमे हस्तलिखित रचना सेहो प्राप्त

ख. सदैव केवल मुद्रित अंग्रेजीमे

ग. केवल शिलालेखमे

घ. केवल चित्रकला रूपमे

उत्तर: क. प्रारम्भमे मौखिक, बादमे कैथी लिपिमे हस्तलिखित रचना सेहो प्राप्त

व्याख्या: परिचय हुनकर लोक-मौखिक परम्परा आ कैथी हस्तलिखित रूप दुनूकैं जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1916. “वृद्धाश्रमक पक्षमे” बिरहा १मे वक्ता समाजसँ की आग्रह करैत अछि?

क. बूढ़ा-बूढ़ीक दुख बुझि वृद्धाश्रम बनबाउ

ख. नाचघर तोड़ू

ग. नदी रोकू

घ. विद्यालय बन्द करू

उत्तर: क. बूढ़ा-बूढ़ीक दुख बुझि वृद्धाश्रम बनबाउ

व्याख्या: बिरहामे बूढ़-बूढ़ीक अपमान आ दुख देखिक समाजसँ वृद्धाश्रम बनबबाक अर्ज अछि।

प्रश्न 1917. “उपरेसँ चिक्कन अछि चामक ओहरन” पंक्ति कोन ढोंग पर चोट करैत अछि?

क. बाहरी सजावट भीतरक कठोरता छिपा नहि सकैत

ख. सच्चा करुणा

ग. मौसमक ठंड

घ. धानक उत्पादन

उत्तर: क. बाहरी सजावट भीतरक कठोरता छिपा नहि सकैत

व्याख्या: कविता कहैत अछि जे ऊपर सँ चिक्कन देखाएब बूढ़क दुखक अनदेखीकैं ढाकि नहि सकैत।

प्रश्न 1918. “तीन दिनक सेखीमे” पंक्ति कोन मानवीय भूल देखबैत अछि?

क. अल्पकालिक युवावस्था वा अभिमानमे वृद्धक अपमान

ख. दीर्घ साधना

ग. सदैव नम्रता

घ. अध्ययनक धैर्य

उत्तर: क. अल्पकालिक युवावस्था वा अभिमानमे वृद्धक अपमान

व्याख्या: यौवन वा सामर्थ्यक सेखी टिकाऊ नहि; बूढ़क अपमान कालान्तरमे लौटि सकैत अछि।

प्रश्न 1919. बिरहा १मे “बाबू-भइया एकमत” होयबाक आग्रह की सूचित करैत अछि?
क. वृद्ध-देखभाल सामूहिक सामाजिक जिम्मेदारी अछि
ख. ई केवल एक व्यक्तिक खेल अछि
ग. ई व्यापारिक गोपनीयता अछि
घ. ई युद्धनीति अछि
उत्तर: क. वृद्ध-देखभाल सामूहिक सामाजिक जिम्मेदारी अछि
व्याख्या: कवि समाजक सभ गोटेकेँ एकमत भऽ वृद्धाश्रम बनबबाक लेल कहैत छथि।

प्रश्न 1920. महाबीरक नाम सुमिरबाक उल्लेख कोन भाव जोड़ैत अछि?
क. धार्मिक-सांस्कृतिक प्रेरणा द्वारा लोकसेवा
ख. केवल युद्धक आदेश
ग. केवल ज्योतिषीय गणना
घ. केवल बाजारक प्रचार
उत्तर: क. धार्मिक-सांस्कृतिक प्रेरणा द्वारा लोकसेवा
व्याख्या: बिरहामे लोकधर्म आ सामाजिक करुणा एकसाथ आवैत अछि।

प्रश्न 1921. “नै तँ हएत अकाज” पंक्ति कोन चेतावनी दैत अछि?
क. वृद्ध-अपमान टारल नहि गेल तऽ सामाजिक अनर्थ होएत
ख. केवल मौसम बदलत
ग. फूल झरत
घ. गीत रुकत
उत्तर: क. वृद्ध-अपमान टारल नहि गेल तऽ सामाजिक अनर्थ होएत
व्याख्या: कवि वृद्धाश्रमक जरूरतकेँ दया मात्र नहि, सामाजिक आवश्यकता कहैत छथि।

प्रश्न 1922. भिखारी ठाकुरक बिरहाक शैली एहि खण्डमे कोना अछि?
क. लोक-लय, विनय, चेतावनी आ सामाजिक सुधारक मिश्रण
ख. केवल दरबारी छन्द
ग. केवल निजी प्रेमपत्र
घ. केवल विज्ञान-रिपोर्ट
उत्तर: क. लोक-लय, विनय, चेतावनी आ सामाजिक सुधारक मिश्रण
व्याख्या: बिरहा नमस्कार, पुकार, लोकभाषा आ सुधारवादी आग्रहसँ बनल अछि।

खण्ड १९८ : विदेह-सदेह ३७ — भोजपुरी बिरहा २: बूढ़क अपमान आ संतानक कसौटी

प्रश्न 1923. बिरहा २मे कवि के-केँ अपन बात सुनबाक लेल कहैत छथि?
क. हिन्दू-मुसलमान सभकेँ
ख. केवल राजा केँ
ग. केवल विद्यार्थी केँ
घ. केवल व्यापारी केँ
उत्तर: क. हिन्दू-मुसलमान सभकेँ
व्याख्या: बिरहा २ सम्प्रदायसँ ऊपर उठि सभ समाजकेँ बूढ़क अपमान पर ध्यान देबय कहैत अछि।

प्रश्न 1924. “नेनपनेसँ जकरा तूँ कहैत एलँहिँ माय” पंक्ति कोन नैतिक स्मृति जगबैत अछि?
क. माय-बापक बचपन सँ कएल पालनक ऋण
ख. शत्रुक डर
ग. बाजारक मोल
घ. नदीक गहिराइ
उत्तर: क. माय-बापक बचपन सँ कएल पालनक ऋण
व्याख्या: संतान जे बचपनमे माय-बापक आश्रयमे रहल, से बुढ़ापमे कसाइ नहि बनय—ई स्मरण अछि।

प्रश्न 1925. “तकराले किए भऽ गेल छैँ तूँ कसाइ” पंक्ति कोन आरोप लगबैत अछि?
क. पालनहारक प्रति निर्दयता
ख. अत्यधिक करुणा
ग. ज्ञानक सम्मान
घ. कला-कौशल
उत्तर: क. पालनहारक प्रति निर्दयता
व्याख्या: कवि संतानेँ बूढ़ माय-बापक प्रति निर्दयी भऽ गेल कहि कठोर शब्दमे झकझोरैत छथि।

प्रश्न 1926. “बड़का हाकिम लग... हिसाब-किताब” कोन व्यापक भाव दैत अछि?
क. नैतिक जवाबदेहीक अन्तिम परीक्षा
ख. केवल कर-कागज
ग. स्कूल परीक्षा
घ. खेतीक नापजोख
उत्तर: क. नैतिक जवाबदेहीक अन्तिम परीक्षा
व्याख्या: कवि संकेत करैत छथि जे कएल कर्मक हिसाब देबय पड़त, चाहे सांसारिक वा धार्मिक अर्थमे।

प्रश्न 1927. “नह जखन झारतौ” पंक्ति ककर असहाय अवस्था देखबैत अछि?
क. बूढ़ शरीरक सेवा-निर्भरता
ख. बालकक खेल
ग. घोड़ा-दौड़
घ. मेला-उत्सव
उत्तर: क. बूढ़ शरीरक सेवा-निर्भरता
व्याख्या: बुढ़ापमे साधारण शारीरिक सेवा सेहो जरूरी भऽ जाइत अछि; कविता ओकर उपेक्षा पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 1928. “आँखिसँ नोर खसतौ” कोन भावक परिणति अछि?
क. अपराध-बोध आ देर भऽ गेल पछतावा
ख. अकारण हँसी
ग. व्यापारिक लाभ
घ. यात्राक उत्साह
उत्तर: क. अपराध-बोध आ देर भऽ गेल पछतावा
व्याख्या: जखन समय बीति जाएत तखन नोर खसत, मुदा किछु कहल-सुधारल नहि जाएत—ई चेतावनी अछि।

प्रश्न 1929. बिरहा २मे “अखने” शब्दक नैतिक महत्त्व की अछि?
क. विलम्ब नहि, तुरन्त वृद्धाश्रम बनबाक आग्रह
ख. सदैव टारि देबाक सलाह
ग. सिर्फ भविष्यवाणी
घ. पुरान कथा मात्र
उत्तर: क. विलम्ब नहि, तुरन्त वृद्धाश्रम बनबाक आग्रह
व्याख्या: कवि समाजकेँ भावुकता नहि, तत्काल काज करबाक लेल प्रेरित करैत छथि।

प्रश्न 1930. बिरहा १ आ २ मिलि बूढ़-विमर्शकेँ कोन आधार दैत अछि?
क. करुणा, उत्तरदायित्व आ सामुदायिक व्यवस्था
ख. केवल मनोरंजन
ग. केवल मिथक
घ. केवल परीक्षा-सूची
उत्तर: क. करुणा, उत्तरदायित्व आ सामुदायिक व्यवस्था
व्याख्या: दुनू बिरहा व्यक्ति-संतान आ समाज दुनूकेँ वृद्ध-देखभालक जिम्मेदारी सौँपैत अछि।

प्रश्न 1931. भिखारी ठाकुरक लोकभाषा एहि विषयमे किएक प्रभावी अछि?
क. किएक तँ ओ सीधे लोक-हृदय आ पारिवारिक अपराध-बोध पर चोट करैत अछि
ख. किएक तँ ओ अस्पष्ट अछि
ग. किएक तँ ओ विदेशी प्रशासनिक भाषा अछि
घ. किएक तँ ओ मौन अछि
उत्तर: क. किएक तँ ओ सीधे लोक-हृदय आ पारिवारिक अपराध-बोध पर चोट करैत अछि
व्याख्या: सरल लोक-पुकार कठोर नैतिक प्रश्नकेँ सहज ढंगें जनता धरि पहुँचबैत अछि।

प्रश्न 1932. “बूढ़क अपमान” एहि खण्डक मुख्य सामाजिक समस्या किएक अछि?
क. ओ परिवारक कृतघ्नता आ समाजक असंवेदनशीलता दुनू उजागर करैत अछि
ख. ओ केवल वस्त्रक समस्या अछि
ग. ओ नदीक समस्या अछि
घ. ओ छन्दक समस्या मात्र अछि
उत्तर: क. ओ परिवारक कृतघ्नता आ समाजक असंवेदनशीलता दुनू उजागर करैत अछि
व्याख्या: बूढ़क अपमान सन्तान, समाज, धर्म आ व्यवस्था—सभक परीक्षा बनैत अछि।

खण्ड १९९ : विदेह-सदेह ३७ — कश्मीरी खण्ड: रहमान राही आ ज्ञानपीठ समारोह

प्रश्न 1933. कश्मीरी कविता खण्डक मूल कवि के छथि?
क. रहमान राही
ख. भिखारी ठाकुर
ग. इप्सिता सारंगी
घ. जे. सुभद्रा
उत्तर: क. रहमान राही
व्याख्या: कश्मीरी खण्डमे रहमान राहीक “छाह सभ” कविता प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 1934. रहमान राहीक कविताक कश्मीरीसँ अंग्रेजी अनुवादक के बताओल गेल छथि?
क. एस.एल. सन्धु
ख. हरेकृष्ण दास
ग. पुरुषोत्तम के.
घ. गजेन्द्र ठाकुर मात्र
उत्तर: क. एस.एल. सन्धु
व्याख्या: कश्मीरीसँ अंग्रेजी अनुवाद एस.एल. सन्धु द्वारा, आ अंग्रेजीसँ मैथिली गजेन्द्र ठाकुर द्वारा कहल गेल अछि।

प्रश्न 1935. ४०म ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोह कतय आयोजित बताओल गेल अछि?
क. संसदक लाइब्रेरीक बालयोगी ऑडिटोरियममे
ख. कटकक नियाली महाविद्यालयमे
ग. छपराक कुतुबपुरमे
घ. वारंगल विश्वविद्यालयमे
उत्तर: क. संसदक लाइब्रेरीक बालयोगी ऑडिटोरियममे
व्याख्या: वर्णनमे समारोहक स्थल संसद लाइब्रेरीक बालयोगी ऑडिटोरियम बताओल गेल अछि।

प्रश्न 1936. रहमान राही कैँ सम्मानित करबाक लेल समारोहमे कोन प्रधानमंत्री उपस्थित छलाह?
क. डॉ. मनमोहन सिंह
ख. जवाहरलाल नेहरू
ग. लालबहादुर शास्त्री
घ. राजा भोज
उत्तर: क. डॉ. मनमोहन सिंह
व्याख्या: वर्णनमे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा सम्मान देबाक बात अछि।

प्रश्न 1937. समारोहमे रहमान राही कैँ की-की देल गेल?
क. शॉल, सरस्वती प्रतिमाक कांस्य अनुकृति, प्रशस्ति-पत्र आ पाँच लाख टाकाक ड्राफ्ट
ख. केवल फूलक माला
ग. केवल पुस्तक
घ. केवल ढोलक
उत्तर: क. शॉल, सरस्वती प्रतिमाक कांस्य अनुकृति, प्रशस्ति-पत्र आ पाँच लाख टाकाक ड्राफ्ट
व्याख्या: वर्णन पुरस्कार-विधानक चार मुख्य अंग स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 1938. सरस्वतीक कांस्य अनुकृति ककर कालक प्रतिमासँ सम्बद्ध कहल गेल अछि?
क. १०३५ ई.क राजा भोजक सरस्वती प्रतिमा
ख. अशोकक सिंहस्तम्भ
ग. पालकालीन गणेश
घ. कर्णाट वंशक मुहर
उत्तर: क. १०३५ ई.क राजा भोजक सरस्वती प्रतिमा
व्याख्या: वर्णनमे राजा भोजक सरस्वती प्रतिमा आ ज्ञानपीठ द्वारा प्रभामण्डल जोड़ल जेबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 1939. मूल सरस्वती प्रतिमा कतय कहल गेल अछि?
क. लंदनक ब्रिटिश म्यूजियममे
ख. कटक संग्रहालयमे
ग. छपरा विद्यालयमे
घ. वारंगल पुस्तकालयमे
उत्तर: क. लंदनक ब्रिटिश म्यूजियममे
व्याख्या: वर्णन बतबैत अछि जे मूल प्रतिमा लंदनक ब्रिटिश म्यूजियममे अछि।

प्रश्न 1940. रहमान राही अपन उद्गारमे ककर पदपर आसीन मनमोहन सिंहसँ पुरस्कार पाबि प्रसन्नता व्यक्त केलथि?
क. महान जवाहरलाल नेहरूक पदपर
ख. राजा भोजक पदपर
ग. भिखारी ठाकुरक पदपर
घ. रवीन्द्र कालियाक पदपर
उत्तर: क. महान जवाहरलाल नेहरूक पदपर
व्याख्या: राही नेहरूक पदपर आसीन मनमोहन सिंहसँ पुरस्कार प्राप्त करबाक विशेष प्रसन्नता कहलथि।

प्रश्न 1941. राही कश्मीरी भाषाक मान्यता संबंधी कोन बात कहलथि?
क. राज्य सरकार मान्यता नहि देलक, मुदा केन्द्र सरकार द्वारा मान्यताप्राप्त भाषा अछि
ख. कश्मीरी पूर्णतः लुप्त अछि
ग. कश्मीरी केवल विदेशी भाषा अछि
घ. कश्मीरी पर कोनो चर्चा नहि भेल
उत्तर: क. राज्य सरकार मान्यता नहि देलक, मुदा केन्द्र सरकार द्वारा मान्यताप्राप्त भाषा अछि
व्याख्या: हुनकर वक्तव्य भाषा-मान्यता आ कश्मीरी अस्मिताक मुद्दा उठबैत अछि।

प्रश्न 1942. समारोह-वर्णन कश्मीरी कविता-प्रस्तुति सँ पहिने किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ओ कविता कैँ भारतीय साहित्यिक मान्यता, भाषा-राजनीति आ सांस्कृतिक प्रसंग दैत अछि
ख. ओ केवल भोजन-सूची अछि
ग. ओ पृष्ठ-सूची अछि
घ. ओ विज्ञापन मात्र अछि
उत्तर: क. ओ कविता कैँ भारतीय साहित्यिक मान्यता, भाषा-राजनीति आ सांस्कृतिक प्रसंग दैत अछि
व्याख्या: समारोहक विवरण राहीक कविता कैँ व्यक्तिगत पाठ नहि, भारतीय भाषा-सम्मानक प्रसंगमे रखैत अछि।

खण्ड २०० : विदेह-सदेह ३७ — रहमान राही: जीवन, कृति आ भाषा-सम्मान

प्रश्न 1943. रहमान राहीक जन्म-तिथि कोन देल गेल अछि?

क. ६ मई १९२५

ख. १ जनवरी १९७५

ग. १४ अप्रैल १८८७

घ. २ अक्टूबर १९७४

उत्तर: क. ६ मई १९२५

व्याख्या: कश्मीरी खण्डमे अब्दुल रहमान राहीक जन्म ६ मई १९२५ लिखल अछि।

प्रश्न 1944. राहीक पहिल कविता-संग्रहकेँ कोन सम्मान भेटल कहल गेल अछि?

क. साहित्य अकादमी पुरस्कार

ख. उड़ीसा पुस्तक मेला पुरस्कार

ग. राज्य युवा पुरस्कार

घ. ग्राम सम्मान

उत्तर: क. साहित्य अकादमी पुरस्कार

व्याख्या: परिचयमे हुनकर पहिल कविता-संग्रहकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार देल गेल कहल अछि।

प्रश्न 1945. भारत सरकारसँ राही कैँ कोन सम्मान भेटल बताओल गेल अछि?

क. पद्म श्री

ख. भारत रत्न

ग. पद्म विभूषण मात्र

घ. कृषि रत्न

उत्तर: क. पद्म श्री

व्याख्या: परिचय राहीकेँ पद्म श्री आ अन्य अकादमिक सम्मानसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 1946. मानव संसाधन विकास मन्त्रालयक कोन फेलोशिप राहीसँ जुड़ल कहल गेल अछि?

क. एमिरेट्स फेलोशिप

ख. जूनियर रिसर्च फेलोशिप

ग. स्पोर्ट्स फेलोशिप

घ. कृषि फेलोशिप

उत्तर: क. एमिरेट्स फेलोशिप

व्याख्या: राहीक परिचयमे मानव संसाधन विकास मन्त्रालयक एमिरेट्स फेलोशिपक उल्लेख अछि।

प्रश्न 1947. राहीक कविता-संग्रहमे कोन-कोन नाम देल गेल अछि?

क. सनवुन्य साज, सुबहुक सोदा, कलाम-ए-राही

ख. वृद्धाश्रमक पक्षमे, बुद्ध, कुँजिझिया

ग. सदा लेल मित्र, जुम्मा, अभिशप्त

घ. कन्यादान, खट्टर कका, गंगा ब्रिज

उत्तर: क. सनवुन्य साज, सुबहुक सोदा, कलाम-ए-राही

व्याख्या: परिचयमे राहीक प्रमुख काव्य-संग्रहक रूपमे एहि तीन नामक उल्लेख अछि।

प्रश्न 1948. राहीक गद्य-लेखनक कोन क्षेत्र उल्लेखित अछि?

क. आलोचना आ निबन्ध

ख. वैद्यक-शास्त्र

ग. व्यापारिक लेखा

घ. कृषि-पंचांग

उत्तर: क. आलोचना आ निबन्ध

व्याख्या: कविता-संग्रहक अतिरिक्त हुनकर आलोचना आ निबन्धक पोथीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 1949. ज्ञानपीठ समारोहक शुरुआतसँ पहिने कोन रचना गेबाक अनुरोध भेल?
क. निराला रचित सरस्वती वन्दना
ख. भिखारी ठाकुरक बिरहा
ग. राहीक छाह सभ
घ. इप्सिता सारंगीक बुद्ध
उत्तर: क. निराला रचित सरस्वती वन्दना
व्याख्या: वर्णनमे सरला माहेश्वरी अनीता जैनकेँ निराला रचित सरस्वती वन्दना गेबाक अनुरोध करैत छथि।

प्रश्न 1950. समारोहक धन्यवाद ज्ञापन के केलथि?
क. रवीन्द्र कालिया
ख. सीताकान्त महापात्र
ग. अशोक वाजपेयी
घ. टी.एन. चतुर्वेदी
उत्तर: क. रवीन्द्र कालिया
व्याख्या: वर्णनक अनुसार अन्तमे रवीन्द्र कालिया धन्यवाद ज्ञापन केलथि।

प्रश्न 1951. ४०म सालक महत्व पर लेखक कोन टिप्पणी करैत छथि?
क. ५०म वर्षगाँठ धरि बहुत गोटे जीवित नहि रहि सकैत छथि, से कारण ४०म वर्ष सेहो महत्त्वपूर्ण
ख. ४०म वर्ष महत्वहीन अछि
ग. केवल तिथि सजावट अछि
घ. समारोह रद्द भेल
उत्तर: क. ५०म वर्षगाँठ धरि बहुत गोटे जीवित नहि रहि सकैत छथि, से कारण ४०म वर्ष सेहो महत्त्वपूर्ण
व्याख्या: लेखक वृद्धावस्था आ साहित्यिक प्रतीक्षाक यथार्थसँ ४०म वर्षक महत्व जोड़ैत छथि।

प्रश्न 1952. राहीक प्रतिनिधि कविता ककरा देल गेल कहल गेल अछि?
क. प्रधानमंत्रीकेँ
ख. केवल दर्शकदीर्घाकेँ
ग. स्कूलक बच्चासभकेँ
घ. मुद्रककेँ
उत्तर: क. प्रधानमंत्रीकेँ
व्याख्या: वर्णनमे ज्ञानपीठ द्वारा कएल हिन्दी अनुवाद राही द्वारा प्रधानमंत्रीकेँ देल गेल कहल अछि।

खण्ड २०१ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: नियति, अमरता आ स्वप्नक टूटन

प्रश्न 1953. “छाह सभ” कविताक आरम्भमे वक्ता कोन आग्रह करैत अछि?
क. नियतिसँ वाद आ अमरताक आशा छोड़ि दिअ
ख. नव राजमहल बनाउ
ग. युद्ध शुरू करू
घ. केवल भोज करू
उत्तर: क. नियतिसँ वाद आ अमरताक आशा छोड़ि दिअ
व्याख्या: कविता आरम्भे नियति आ अमरता पर टिकले आशाकेँ त्यागबाक कठोर स्वर रखैत अछि।

प्रश्न 1954. “यदि जुटा ली किछु क्षण, तँ भेर भऽ जाउ तइमे” कोन जीवन-दृष्टि दैत अछि?
क. क्षणक सीमितता स्वीकारि ओकरा भीतर भरि उठबाक
ख. अनन्त समयक दम्भ
ग. सर्वथा निष्क्रियता
घ. केवल नींद
उत्तर: क. क्षणक सीमितता स्वीकारि ओकरा भीतर भरि उठबाक
व्याख्या: कवि अल्प जीवन-क्षण केँ ही उपलब्ध सच्चाई मानि ओकरा भरबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 1955. बस्तीक पथ “घनगर बोनमे धँसि गेल” — ई बिम्ब की देखबैत अछि?
क. सभ्य मार्गक लोप आ अस्तित्वगत भटकाव
ख. नव सड़कक उद्घाटन
ग. बाजारक विकास
घ. खेलक मैदान
उत्तर: क. सभ्य मार्गक लोप आ अस्तित्वगत भटकाव
व्याख्या: परिचित पथ जंगलमे धँसि जाएब सुरक्षा आ दिशा दुनूक क्षयक बिम्ब अछि।

प्रश्न 1956. आस्थाक कवच शंकासभ द्वारा भेद्य होयब कोन संकट अछि?
क. विश्वासक सुरक्षा टूटि संशयक प्रवेश
ख. विश्वासक विजय
ग. मौसमक सुख
घ. कला पुरस्कार
उत्तर: क. विश्वासक सुरक्षा टूटि संशयक प्रवेश
व्याख्या: कविता आस्था आ शंका बीचक आन्तरिक संघर्षकेँ कवच-भेदनक रूपमे कहैत अछि।

प्रश्न 1957. “आँखि खुजिते हमर स्वप्नकेँ लागल आँखि” पंक्ति की सूचित करैत अछि?
क. जागरणे स्वप्नक नष्ट होयब
ख. स्वप्नक पूर्ण साकार होयब
ग. नींदक गहिराइ
घ. चित्रकला पाठ
उत्तर: क. जागरणे स्वप्नक नष्ट होयब
व्याख्या: कविता कहैत अछि जे आँखि खुलिते स्वप्न स्वयं संकटमे पड़ि गेल।

प्रश्न 1958. “बासन्ती युवा छाती” सुनसान भऽ जेबाक अर्थ की अछि?
क. यौवन आ जीवन-ऊर्जा अचानक उजाड़मे बदलि गेल
ख. युवा उत्सव शुरू भेल
ग. फूल फुलल
घ. कक्षा भरल
उत्तर: क. यौवन आ जीवन-ऊर्जा अचानक उजाड़मे बदलि गेल
व्याख्या: बसन्त आ यौवनक आशा सुनसानमे बदलि अस्तित्वक क्षरण देखबैत अछि।

प्रश्न 1959. उजाड़मे “असगर एकटा कौआ” कोन वातावरण बनबैत अछि?
क. एकान्त, क्षय आ अशुभ रिक्तता
ख. पूर्ण उत्सव
ग. कृषि-समृद्धि
घ. संगीत-मंडली
उत्तर: क. एकान्त, क्षय आ अशुभ रिक्तता
व्याख्या: उजाड़मे अकेला कौआ सभ्यता-पश्चात खालीपनक तिख बिम्ब अछि।

प्रश्न 1960. “चान-तरेगन गढ़बाक” पुरान इच्छा आ “नामकरण”क वर्तमान चाहना बीच की अन्तर अछि?
क. ब्रह्माण्डीय सृजनक स्वप्न सँ न्यूनतम पहचानक संघर्ष धरि पतन
ख. दुनू समान विलासिता
ग. दुनू केवल खेल
घ. दुनू भोजन विधि
उत्तर: क. ब्रह्माण्डीय सृजनक स्वप्न सँ न्यूनतम पहचानक संघर्ष धरि पतन
व्याख्या: पहिने चान-तरेगन गढ़बाक इच्छा छल; आब अपन नाम राखबो कठिन प्रतीत होइत अछि।

प्रश्न 1961. “विश्वास घाटीक मौलायल हरियरी सन” उपमा की कहैत अछि?
क. विश्वास मुरझायल परिदृश्य जकाँ निर्जीव भऽ गेल
ख. विश्वास हरियर ताजा अछि
ग. विश्वास सोनाक मुकुट अछि
घ. विश्वास जलप्रपात अछि
उत्तर: क. विश्वास मुरझायल परिदृश्य जकाँ निर्जीव भऽ गेल
व्याख्या: घाटीक मौलायल हरियरी विश्वासक थकान आ क्षय देखबैत अछि।

प्रश्न 1962. “छाह सभ”क एहि आरम्भिक भागक भावभूमि की अछि?
क. आस्था-भंग, स्वप्न-क्षय आ अस्तित्वगत उदासी
ख. बाल-आनन्द
ग. राजकीय विजय
घ. मेला-वर्णन
उत्तर: क. आस्था-भंग, स्वप्न-क्षय आ अस्तित्वगत उदासी
व्याख्या: नियति, अमरता, धँसल पथ, टूटल स्वप्न आ उजाड़ मिलि गम्भीर उदासी रचैत अछि।

खण्ड २०२ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: देवता, दानव आ राजनीतिक व्यंग्य

प्रश्न 1963. “सभटा देवता हमर अपन छाह छथि” पंक्ति कोन आत्मबोध दैत अछि?
क. बाहरी देवत्व भीतरक छाया बनि गेल अछि
ख. देवता पूर्ण बाहरी सत्ता छथि
ग. छाया अप्रासंगिक अछि
घ. कविता पूजा-विधि मात्र अछि
उत्तर: क. बाहरी देवत्व भीतरक छाया बनि गेल अछि
व्याख्या: कवि देवता कैं निरपेक्ष बाहर नहि, अपन छाहक रूपमे देखैत छथि।

प्रश्न 1964. “सभटा दानव हमर अहं केर कनिया-पुतड़ा” सँ की भाव निकलैत अछि?
क. दानवत्व अहंकारक बाल-खेलना जकाँ भीतर सँ बनैत अछि
ख. दानव केवल जंगलमे अछि
ग. अहंकार सदिखन शुभ अछि
घ. कनिया-पुतड़ा युद्ध-शस्त्र अछि
उत्तर: क. दानवत्व अहंकारक बाल-खेलना जकाँ भीतर सँ बनैत अछि
व्याख्या: कविता दानवक स्रोत मनुष्यक अहंमे खोजैत अछि।

प्रश्न 1965. सभा भवन “बानरक खौं-खौं” सँ भरल बुझाइत अछि — ई कोन व्यंग्य अछि?
क. सार्वजनिक/राजनीतिक विमर्शक अव्यवस्थित कोलाहल
ख. शान्त साधना
ग. मौन पुस्तकालय
घ. गम्भीर संगीत
उत्तर: क. सार्वजनिक/राजनीतिक विमर्शक अव्यवस्थित कोलाहल
व्याख्या: सभा भवनक मानवीय संवाद बानर-शोरमे बदलि गेल—ई तीख राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य अछि।

प्रश्न 1966. “सन्तक पहिरनक लेल ताकू बोने-बोन” पंक्ति कोन विडम्बना देखबैत अछि?
क. पवित्रता सभ्य सभा नहि, जंगलमे खोजबाक स्थिति
ख. सन्त सभ सभामे भरल छथि
ग. जंगल निरर्थक अछि
घ. पहिरनक कोनो अर्थ नहि
उत्तर: क. पवित्रता सभ्य सभा नहि, जंगलमे खोजबाक स्थिति
व्याख्या: कवि संकेत करैत छथि जे सन्तत्वक वेश वा असल पवित्रता सभ्यता-संस्था मे दुर्लभ अछि।

प्रश्न 1967. “केहन अछि नाओक खेबनाइ, कतय तँ अछि किनार!” — ई कोन प्रश्न अछि?
क. दिशाहीन यात्रा आ मुक्ति-किनारक अनिश्चितता
ख. सफल व्यापार
ग. नदी-पर्यटन
घ. नौका-दौड़
उत्तर: क. दिशाहीन यात्रा आ मुक्ति-किनारक अनिश्चितता
व्याख्या: नाओ चलैत अछि मुदा किनार अस्पष्ट; जीवन-यात्राक उद्देश्य प्रश्न बनैत अछि।

प्रश्न 1968. “देशांस भोथलेलक नाओकेँ अन्हारमे” पंक्ति कोन राष्ट्रीय बिम्ब बनबैत अछि?
क. घायल/अक्षम देश-नाव अन्धकारमे भटकैत अछि
ख. सुरक्षित जहाज
ग. उत्सवी पालकी
घ. खेतीक हल
उत्तर: क. घायल/अक्षम देश-नाव अन्धकारमे भटकैत अछि
व्याख्या: देशांशक भोथलाएल नाओ अन्धकारमे—ई राष्ट्र, भूभाग आ जनता-संकटक रूपक अछि।

प्रश्न 1969. “हे रौ नटुआ, नाच निर्वस्त्र चारू कात ओकर” मे नटुआ ककर प्रतीक बनैत अछि?
क. ढोंग उघारि देखाबय बला सार्वजनिक कलाकार/व्यंग्य-वक्ता
ख. मौन दर्शक
ग. केवल किसान
घ. केवल नाविक
उत्तर: क. ढोंग उघारि देखाबय बला सार्वजनिक कलाकार/व्यंग्य-वक्ता
व्याख्या: कवि नटुआ केँ निर्वस्त्र नाच द्वारा छिपल यथार्थ उजागर करबाक आह्वान करैत छथि।

प्रश्न 1970. “राही तँ आगि-खायबला बताह अछि” पंक्ति कविक आत्मछवि की बनबैत अछि?
क. जोखिम लेबय बला, आगि निगलनिहार पागल कवि
ख. पूर्ण सुरक्षित अधिकारी
ग. शान्त व्यापारी
घ. मौन पुरोहित
उत्तर: क. जोखिम लेबय बला, आगि निगलनिहार पागल कवि
व्याख्या: कवि अपनाकेँ आगि-खायबला बताह कहि जोखिम, विद्रोह आ आत्मदाहक कवि-स्वर बनबैत छथि।

प्रश्न 1971. “छाह सभ”मे देवता-दानवक उलटबाँसी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ओ नैतिक सत्ता केँ बाहरी मिथक नहि, भीतरक मनो-सामाजिक छाया बनबैत अछि
ख. ओ केवल पुराण दोहरबैत अछि
ग. ओ बालगीत अछि
घ. ओ शब्दकोश सूची अछि
उत्तर: क. ओ नैतिक सत्ता केँ बाहरी मिथक नहि, भीतरक मनो-सामाजिक छाया बनबैत अछि
व्याख्या: कविता देवता आ दानव दुनूकेँ आत्म-छाया आ अहंकारक उत्पाद कहि आधुनिक आत्मालोचना करैत अछि।

प्रश्न 1972. एहि भागक मुख्य स्वभाव की अछि?
क. आत्मालोचना, राजनीतिक व्यंग्य आ अन्धकारमे दिशा-खोज
ख. साधारण प्रेमगीत
ग. खरीद-बिक्री सूची
घ. मौसम रिपोर्ट
उत्तर: क. आत्मालोचना, राजनीतिक व्यंग्य आ अन्धकारमे दिशा-खोज
व्याख्या: सभा, नाओ, नटुआ, आगि—सभ बिम्ब मिलि अस्तित्व आ राजनीति पर तीख प्रश्न उठबैत अछि।

खण्ड २०३ : विदेह-सदेह ३७ — समारोहक बादक समय-संकेत आ भारतीय आधुनिकता

प्रश्न 1973. ज्ञानपीठ समारोह कतेक समयमे समाप्त भेल कहल गेल अछि?
क. लगभग एक घण्टामे
ख. तीन दिनमे
ग. एक मासमे
घ. पूरा वर्षमे
उत्तर: क. लगभग एक घण्टामे
व्याख्या: वर्णनमे समारोह एक घण्टामे खतम भेल लिखल अछि।

प्रश्न 1974. समारोहसँ घुरैत लेखक कैं एफ.एम. पर कोन खेल-समाचार भेटल?
क. सचिन तेन्दुलकर अपन टेस्ट जीवनक ४०म शतक पूरा केलन्हि
ख. भारत फुटबॉल विश्वकप जीतल
ग. ओलम्पिक स्थगित भेल
घ. कुश्ती प्रतियोगिता रद्द भेल
उत्तर: क. सचिन तेन्दुलकर अपन टेस्ट जीवनक ४०म शतक पूरा केलन्हि
व्याख्या: अन्तिम टिप्पणीमे सचिनक ४०म टेस्ट शतकक समाचार भेटबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 1975. उसी एफ.एम. समाचारमे भीमसेन जोशीसँ सम्बन्धित की कहल गेल?
क. हिनका भारत रत्न पुरस्कार देल गेल
ख. हिनका पद्म श्री देल गेल
ग. हिनका ज्ञानपीठ भेटल
घ. हिनका नोबेल भेटल
उत्तर: क. हिनका भारत रत्न पुरस्कार देल गेल
व्याख्या: समारोहक बादक समाचारमे भीमसेन जोशीकेँ भारत रत्न पुरस्कार देल जेबाक बात अछि।

प्रश्न 1976. चन्द्रयान-१क संबंधमे कोन समाचार लेखक सुनैत छथि?
क. ओ चन्द्रमाक १०० किलोमीटरक वृत्ताकार कक्षामे स्थापित भेल
ख. ओ समुद्रमे डूबल
ग. ओ मंगलसँ घुरल
घ. ओ रद्द भेल
उत्तर: क. ओ चन्द्रमाक १०० किलोमीटरक वृत्ताकार कक्षामे स्थापित भेल
व्याख्या: अन्तिम समाचारमे चन्द्रयान-१ चन्द्रमाक १०० किलोमीटर वृत्ताकार कक्षामे स्थापित भेल कहल अछि।

प्रश्न 1977. समारोहक बाद समाचार-त्रयी—सचिन, भीमसेन, चन्द्रयान—कथनमे की जोड़ैत अछि?
क. साहित्यक संग खेल, संगीत आ विज्ञानक समकालीन भारतीय क्षण
ख. केवल मौसमक हाल
ग. केवल व्यापारिक विज्ञापन
घ. केवल पृष्ठ-सूची
उत्तर: क. साहित्यक संग खेल, संगीत आ विज्ञानक समकालीन भारतीय क्षण
व्याख्या: लेखक साहित्यिक समारोहकेँ ओहि दिनक व्यापक राष्ट्रीय उपलब्धिसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 1978. रहमान राहीक सम्मान आ भीमसेन जोशीक समाचार एकसाथ आबि कोन सांस्कृतिक संकेत दैत अछि?
क. भारतीय भाषिक-सांगीतिक परम्पराक बहुभाषी सम्मान
ख. एकभाषी संकुचन
ग. कला-विरोध
घ. केवल खेल-समाचार
उत्तर: क. भारतीय भाषिक-सांगीतिक परम्पराक बहुभाषी सम्मान
व्याख्या: कश्मीरी कविता आ हिन्दुस्तानी संगीत दुनूकेँ राष्ट्रीय सम्मानक प्रसंगमे देखल गेल अछि।

प्रश्न 1979. सचिनक ४०म शतक आ ४०म ज्ञानपीठ वर्षक साथ पढ़ला पर कोन रूपक बनैत अछि?
क. संख्या ४० द्वारा साहित्य आ खेलक संयोगी क्षण
ख. संख्या १००क भूगोल
ग. मेला-सूची
घ. कृषि-दर
उत्तर: क. संख्या ४० द्वारा साहित्य आ खेलक संयोगी क्षण
व्याख्या: वर्णनमे ४०म ज्ञानपीठ वर्ष आ सचिनक ४०म शतक एके दिनक समाचार-लयमे आबैत अछि।

प्रश्न 1980. चन्द्रयान-१क समाचार कविता-संस्कृति प्रसंगमे कोन आधुनिक आयाम जोड़ैत अछि?
क. भारतीय वैज्ञानिक आकांक्षा आ सांस्कृतिक समयक संगम
ख. साहित्यक अन्त
ग. भाषाक निषेध
घ. पुरस्कारक रद्दीकरण
उत्तर: क. भारतीय वैज्ञानिक आकांक्षा आ सांस्कृतिक समयक संगम
व्याख्या: साहित्यिक सम्मानक दिन विज्ञानक चन्द्र-यात्रा स्मरण कएल गेल अछि।

प्रश्न 1981. समारोह-वर्णनक अन्तमे एफ.एम. समाचारक प्रयोग शैलीगत रूपेँ की करैत अछि?
क. व्यक्तिगत अनुभवकेँ समकालीन राष्ट्रीय क्षणमे विस्तारित करैत अछि
ख. मूल पाठ काटि दैत अछि
ग. केवल विज्ञापन बनबैत अछि
घ. पाठककेँ पृष्ठ बतबैत अछि
उत्तर: क. व्यक्तिगत अनुभवकेँ समकालीन राष्ट्रीय क्षणमे विस्तारित करैत अछि
व्याख्या: लेखक मंचसँ घर-घुरबाक अनुभवकेँ देशक तात्कालिक घटनासँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 1982. एहि खण्डक मुख्य पाठक-बोध की अछि?
क. साहित्यिक घटना खाली मंचपर नहि, अपन समयक सांस्कृतिक-सामाजिक धड़कनमे घटैत अछि
ख. साहित्य समयसँ अलग अछि
ग. समारोह अर्थहीन अछि
घ. समाचार कविता नहि जोड़ि सकैत
उत्तर: क. साहित्यिक घटना खाली मंचपर नहि, अपन समयक सांस्कृतिक-सामाजिक धड़कनमे घटैत अछि
व्याख्या: राहीक सम्मान, खेल, संगीत आ अंतरिक्ष—सभ मिलि एक समकालीन भारतक चित्र बनबैत अछि।

खण्ड २०४ : विदेह-सदेह ३७ — अनुवाद-समापन: उड़िया, भोजपुरी, कश्मीरी स्वरक तुलनात्मक पाठ

प्रश्न 1983. उड़िया, भोजपुरी आ कश्मीरी खण्डकेँ एकसाथ पढ़िते कोन साझा विशेषता देखाइत अछि?
क. भिन्न भारतीय भाषासँ मैथिलीमे सामाजिक-दार्शनिक अनुभवक सेतु
ख. केवल एके बोलीक पुनरावृत्ति
ग. सिर्फ पृष्ठ-सूची
घ. केवल विज्ञापन
उत्तर: क. भिन्न भारतीय भाषासँ मैथिलीमे सामाजिक-दार्शनिक अनुभवक सेतु
व्याख्या: तीनू खण्ड अलग भाषा-संसार सँ आबि मैथिली पाठक लेल संवाद रचैत अछि।

प्रश्न 1984. उड़िया “बुद्ध” आ कश्मीरी “छाह सभ” दुनूमे कोन साझा दार्शनिक प्रश्न अछि?
क. दुःख, सत्य, नियति आ मुक्ति पर अस्थिर विश्वास
ख. खेलक नियम
ग. बाजारक भाव
घ. नदीक नाविक
उत्तर: क. दुःख, सत्य, नियति आ मुक्ति पर अस्थिर विश्वास
व्याख्या: दुनू कविता जीवनक दुःख आ सत्यक दावाकेँ कठोर प्रश्नक बीच राखैत अछि।

प्रश्न 1985. भोजपुरी बिरहा आ उड़िया स्त्री-कविता बीच कोन सामाजिक सूत्र भेटैत अछि?
क. वंचित देह आ उपेक्षित जीवनक पक्षमे लोक-स्वर
ख. राजदरबारक विलास
ग. समुद्री व्यापार
घ. अभिजात मौन
उत्तर: क. वंचित देह आ उपेक्षित जीवनक पक्षमे लोक-स्वर
व्याख्या: बिरहा बूढ़क दुख उठबैत अछि, उड़िया स्त्री-कविता सपना-सौन्दर्यक वर्जना; दुनू वंचनाक पक्षधर अछि।

प्रश्न 1986. भिखारी ठाकुरक लोकबोली आ राहीक आधुनिक बिम्बमे मुख्य भिन्नता की?
क. पहिल लोक-सुधारक पुकार, दोसर अस्तित्ववादी-व्यंग्यात्मक जटिलता
ख. दुनू केवल गणित अछि
ग. दुनू मौन अछि
घ. दुनू पृष्ठसूची अछि
उत्तर: क. पहिल लोक-सुधारक पुकार, दोसर अस्तित्ववादी-व्यंग्यात्मक जटिलता
व्याख्या: भिखारीक बिरहा सीधे समाजकेँ सम्बोधित करैत अछि, राहीक कविता छाया, देवता, दानव, नाओ आ अन्हारक बिम्ब बनबैत अछि।

प्रश्न 1987. इप्सिता सारंगीक कवितामे “शरीर” आ भिखारी ठाकुरक बिरहामे “बूढ़ शरीर” कोन बोध जोड़ैत अछि?
क. देहकेँ सामाजिक-नैतिक विचारक केन्द्र बनबैत अछि
ख. देह अप्रासंगिक अछि
ग. देह केवल अलंकार अछि
घ. देह हास्य अछि
उत्तर: क. देहकेँ सामाजिक-नैतिक विचारक केन्द्र बनबैत अछि
व्याख्या: उड़िया कविता शरीर, रोग, मृत्यु आ इच्छा पूछैत अछि; बिरहा बूढ़ शरीरक सेवा-निर्भरता देखबैत अछि।

प्रश्न 1988. राहीक भाषा-मान्यता टिप्पणी आ अनुवाद-संकलनक काम बीच की सम्बन्ध अछि?
क. भारतीय भाषाक मान, पहुँच आ परस्पर संवादक आवश्यकता
ख. भाषा-बन्दी
ग. अनुवाद-विरोध
घ. मौन-सम्मति
उत्तर: क. भारतीय भाषाक मान, पहुँच आ परस्पर संवादक आवश्यकता
व्याख्या: कश्मीरी मान्यताक बात आ बहुभाषिक अनुवाद दुनू भाषा-अधिकारक प्रश्नकेँ बल दैत अछि।

प्रश्न 1989. एहि समापन-समूहमे अनुवादक भूमिका कतेक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मूल भाषाक भाव, स्थानीयता आ विचार मैथिली पाठक धरि पहुँचाबय लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
ख. अनुवादक अप्रासंगिक
ग. अनुवादक केवल मुद्रक
घ. अनुवादक पात्र-विरोधी
उत्तर: क. मूल भाषाक भाव, स्थानीयता आ विचार मैथिली पाठक धरि पहुँचाबय लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
व्याख्या: हरेकृष्ण दास, एस.एल. सन्धु आ गजेन्द्र ठाकुरक उल्लेख सेतु-निर्माणक महत्त्व देखबैत अछि।

प्रश्न 1990. ई प्रश्नोत्तरी पृष्ठ-संख्या प्रश्नसँ दूर किएक रहैत अछि?
क. किएक तँ असल अध्ययन विचार, बिम्ब, प्रसंग आ सामाजिक अर्थ बुझब अछि
ख. किएक तँ प्रश्न नहि चाही
ग. किएक तँ पाठ नहि अछि
घ. किएक तँ भाषा नहि अछि
उत्तर: क. किएक तँ असल अध्ययन विचार, बिम्ब, प्रसंग आ सामाजिक अर्थ बुझब अछि
व्याख्या: गंभीर क्विज पाठ-बोध पर आधारित अछि, यांत्रिक पृष्ठ-स्मृति पर नहि।

प्रश्न 1991. १९५–२०४ खण्डक सामूहिक अध्ययन-लाभ की अछि?
क. उड़िया दार्शनिकता, भोजपुरी लोक-सुधार आ कश्मीरी आधुनिक व्यंग्यक तुलनात्मक समझ
ख. केवल तिथि रटब
ग. केवल नाम गिनब
घ. केवल रंग चुनब
उत्तर: क. उड़िया दार्शनिकता, भोजपुरी लोक-सुधार आ कश्मीरी आधुनिक व्यंग्यक तुलनात्मक समझ
व्याख्या: नव बैच पाठककेँ तीन भाषिक स्वरक अलग-अलग विधा आ चिन्ताक तुलना करबैत अछि।

प्रश्न 1992. विदेह-सदेह ३७क अन्तिम बहुभाषिक प्रसार कोन आदर्श मजबूत करैत अछि?
क. मैथिलीकेँ भारतीय भाषासभक संवाद-मंच बनायब
ख. मैथिलीकेँ अलग-थलग राखब
ग. स्रोत छिपायब
घ. लोक-स्वर हटायब
उत्तर: क. मैथिलीकेँ भारतीय भाषासभक संवाद-मंच बनायब
व्याख्या: तेलुगु, गुजराती, उड़िया, भोजपुरी, कश्मीरी आदि स्वर मैथिलीमे आबि व्यापक साहित्यिक संवाद बनबैत अछि।

खण्ड २०५ : विदेह-सदेह ३५ — आत्मकथा-लेखनक उज्जरका पक्षपर प्रश्न

प्रश्न 1993. आशीष अनचिन्हार मैथिली आत्मकथा सभमे कोन सामान्य रोग देखैत छथि?
क. लेखक अपन उज्जरका पक्ष देखबैत छथि आ कारी अध्याय छोड़ि दैत छथि
ख. लेखक केवल भाषा-व्याकरण लिखैत छथि
ग. लेखक सभ सदैव पूर्ण तथ्य दैत छथि
घ. लेखक आत्मकथा नहि, गीत मात्र लिखैत छथि
उत्तर: क. लेखक अपन उज्जरका पक्ष देखबैत छथि आ कारी अध्याय छोड़ि दैत छथि
व्याख्या: समीक्षकक आपत्ति अछि जे आत्मकथा बहुत बेर आत्म-प्रशंसा बनि जाइत अछि, जाहिमे असुविधाजनक सत्य दबि जाइत अछि।

प्रश्न 1994. “सत्य हरिश्चंद्रक जेठ बालक” रूपक आत्मकथा-लेखनपर कोन व्यंग्य करैत अछि?
क. लेखक अपनाकेँ अत्यधिक निष्कलंक देखबैत छथि
ख. लेखक इतिहासक राजा छथि
ग. लेखक बाल-साहित्य लिखैत छथि
घ. लेखक मात्र नाटक पात्र छथि
उत्तर: क. लेखक अपनाकेँ अत्यधिक निष्कलंक देखबैत छथि
व्याख्या: रूपक ई बतबैत अछि जे आत्मकथाकार अपन नैतिक छवि अतिशय उज्जर बनाबय चाहैत अछि।

प्रश्न 1995. समीक्षक “कतेक डारिपर” केँ आत्मकथा कम आ की बेसी मानैत छथि?
क. संस्मरण बेसी
ख. नाटक बेसी
ग. शब्दकोश बेसी
घ. वैज्ञानिक रिपोर्ट बेसी
उत्तर: क. संस्मरण बेसी
व्याख्या: लेखमे कहल गेल अछि जे “कतेक डारिपर” महत्वपूर्ण होइतो प्रतिक्रियासँ जन्मल आ संस्मरण-जकाँ लागैत अछि।

प्रश्न 1996. “एकभगाह विवरण” सँ समीक्षकक आशय की अछि?
क. घटनाक केवल एक पक्ष प्रस्तुत भेल अछि
ख. सभ पक्ष बराबर आएल अछि
ग. कोनो घटना नहि अछि
घ. ई केवल छन्दशास्त्र अछि
उत्तर: क. घटनाक केवल एक पक्ष प्रस्तुत भेल अछि
व्याख्या: लालू-राजक अनुभवक वर्णनमे हानि/पीड़ा तँ अछि, मुदा लाभ वा दोसर पक्ष अनुपस्थित कहल गेल अछि।

प्रश्न 1997. मैथिलीमे दलित आत्मकथाक स्थिति पर लेख की कहैत अछि?
क. घोर अभाव रहल अछि
ख. अत्यधिक बाढ़ि अछि
ग. केवल नाटक रूपमे उपलब्ध अछि
घ. ओकर कोनो जरूरत नहि
उत्तर: क. घोर अभाव रहल अछि
व्याख्या: समीक्षक स्पष्ट कहैत छथि जे मैथिलीमे दलित आत्मकथा लगभग अनुपस्थित रहल अछि।

प्रश्न 1998. “वाग्जाल” शब्द आत्मकथाक संदर्भमे की बुझबैत अछि?
क. तथ्य छोड़ि भाषा-जालमे पाठककेँ फँसाएब
ख. सत्यक पारदर्शी उद्घाटन
ग. कृषि-विज्ञान
घ. मंच-व्यवस्था
उत्तर: क. तथ्य छोड़ि भाषा-जालमे पाठककेँ फँसाएब
व्याख्या: समीक्षकक चिन्ता अछि जे पाठककेँ वास्तविक अनुभव नहि, शब्दक जाल भेटैत अछि।

प्रश्न 1999. जँ आत्मकथा “जीवन संघर्ष अछि” सन साधारण वाक्यसँ शुरू हो, समीक्षक की संकेत करैत छथि?
क. एहन शुरुआत पुरान प्रशंसात्मक आत्मकथाक ढाँचा तोड़यमे कमजोर अछि
ख. ई सर्वोत्तम वैज्ञानिक शुरुआत अछि
ग. ई केवल लोकगीत अछि
घ. ई कथा समाप्ति अछि
उत्तर: क. एहन शुरुआत पुरान प्रशंसात्मक आत्मकथाक ढाँचा तोड़यमे कमजोर अछि
व्याख्या: लेख साधारण, घिसल-पिटल आत्मकथात्मक उद्घाटनपर शंका करैत अछि।

प्रश्न 2000. बंगलोरमे केटरिंग आ कुकक कपड़ा धोबाक प्रसंग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ओ आत्मकथाकेँ ठोस श्रम-अनुभवसँ विश्वसनीय बनबैत अछि
ख. ओ कविक राजदरबार देखबैत अछि
ग. ओ नाटकक सजावट अछि
घ. ओ केवल पृष्ठ-संख्या अछि
उत्तर: क. ओ आत्मकथाकेँ ठोस श्रम-अनुभवसँ विश्वसनीय बनबैत अछि
व्याख्या: समीक्षक मानैत छथि जे एहन असुविधाजनक जीवन-अनुभव आत्मकथा केँ सचमुच आत्मकथा बनबैत अछि।

प्रश्न 2001. आत्मकथामे “कारी अध्याय” छोड़बासँ पाठकपर की असर पड़ैत अछि?
क. पाठक अधूरा सत्य आ षड्यंत्रक गंध अनुभव करैत अछि
ख. पाठककेँ पूर्ण पारदर्शिता भेटैत अछि
ग. पाठक केवल संगीत सुनैत अछि
घ. पाठक गणित सीखैत अछि
उत्तर: क. पाठक अधूरा सत्य आ षड्यंत्रक गंध अनुभव करैत अछि
व्याख्या: लेखक जखन कठिन अध्याय हटबैत अछि, पाठकक भरोस घटैत अछि।

प्रश्न 2002. एहि आलोचनाक मुख्य आग्रह की अछि?
क. आत्मकथा सत्यक कठिन, बहुपक्षीय आ आत्मालोचनात्मक लेखन बनय
ख. आत्मकथा केवल प्रशस्ति बनय
ग. आत्मकथा यांत्रिक सूची बनय
घ. आत्मकथा विज्ञापन बनय
उत्तर: क. आत्मकथा सत्यक कठिन, बहुपक्षीय आ आत्मालोचनात्मक लेखन बनय
व्याख्या: समीक्षक आत्मकथामे आत्म-उजागर, सामाजिक सच आ आलोचनात्मक ईमानदारी चाहैत छथि।

खण्ड २०६ : विदेह-सदेह ३५ — संदीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर”

प्रश्न 2003. “बैशाखमे दलानपर” कुल कतेक खण्डमे बाँटल कहल गेल अछि?

क. पाँच खण्डमे

ख. दू खण्डमे

ग. एगारह खण्डमे

घ. केवल एक खण्डमे

उत्तर: क. पाँच खण्डमे

व्याख्या: लेख स्पष्ट करैत अछि जे पोथी आत्मकथा, कविता, विहनि कथा, लघुकथा आ विचार बिन्दु—पाँच खण्डमे अछि।

प्रश्न 2004. पोथीक पाँच खण्डमे कोन खण्ड शामिल नहि अछि?

क. ज्योतिष खण्ड

ख. आत्मकथा खण्ड

ग. कविता खण्ड

घ. विचार बिन्दु खण्ड

उत्तर: क. ज्योतिष खण्ड

व्याख्या: उल्लिखित पाँच खण्ड साहित्यिक विधासँ सम्बन्धित छथि; ज्योतिष खण्डक उल्लेख नहि अछि।

प्रश्न 2005. संदीप कुमार साफीक आत्मकथाक अलग शीर्षक नहि होयबाकेँ समीक्षक कोना देखैत छथि?

क. मैथिली लेल नव वस्तु रूपमे

ख. मात्र मुद्रण-दोष रूपमे

ग. कथा-विरोध रूपमे

घ. भाषा-त्याग रूपमे

उत्तर: क. मैथिली लेल नव वस्तु रूपमे

व्याख्या: लेखकक आत्मकथा बिना अलग शीर्षकक पोथीमे आएल, जे समीक्षकक दृष्टिमे नवीनता अछि।

प्रश्न 2006. समीक्षक साफीक आत्मकथा केँ दलित होइतो कोन व्यापक अनुभवसँ जोड़ैत छथि?

क. गरीब ब्राह्मणक आत्मकथा सन अनुभवसँ सेहो

ख. केवल राजदरबारक विलाससँ

ग. सैनिक अभियानसँ

घ. विदेशी व्यापारसँ

उत्तर: क. गरीब ब्राह्मणक आत्मकथा सन अनुभवसँ सेहो

व्याख्या: दहेज, गरीबी, बहिनक बियाह आ मजबूरीक प्रसंग वर्गीय-सामाजिक विस्तार देखबैत अछि।

प्रश्न 2007. विवाहक दहेजसँ बहिनक कन्यादान करबाक प्रसंग की देखबैत अछि?

क. व्यक्ति-कथा सामाजिक संरचनाक कठोर यथार्थ बनि जाइत अछि

ख. ई केवल हास्य दृश्य अछि

ग. ई समुद्री यात्रा अछि

घ. ई काव्य-अलंकार मात्र अछि

उत्तर: क. व्यक्ति-कथा सामाजिक संरचनाक कठोर यथार्थ बनि जाइत अछि

व्याख्या: समीक्षक कहैत छथि जे ई विचार लेखकक निजी बात नहि रहि पूरा समाजक दृश्य बनि जाइत अछि।

प्रश्न 2008. साफीक लेखनमे “छोट-छोट विचार” ककर परिधि धरि पसरैत अछि?

क. पूरा सामाजिक परिधि धरि

ख. केवल लेखकक घरक कोठरी धरि

ग. केवल परीक्षा-कक्ष धरि

घ. केवल खेलमैदान धरि

उत्तर: क. पूरा सामाजिक परिधि धरि

व्याख्या: लेखमे छोट प्रसंग सभकेँ व्यापक सामाजिक अर्थवाला कहल गेल अछि।

प्रश्न 2009. पाँचो खण्डक वैचारिक परिधि कोना बताओल गेल अछि?
क. एक-दोसरासँ जुड़ल
ख. एक-दोसरासँ पूर्ण अलग
ग. केवल नामक सूची
घ. मात्र भाषिक अभ्यास
उत्तर: क. एक-दोसरासँ जुड़ल
व्याख्या: समीक्षक आत्मकथा, कविता आ कथा खण्डक बीच वैचारिक सम्बन्ध देखैत छथि।

प्रश्न 2010. साफीक विहनि कथा आ लघुकथा खण्डपर समीक्षकक मत की अछि?
क. आत्मकथा आ कविताक सामने कमज़ोर/झुझुआन लगैत अछि
ख. सर्वश्रेष्ठ आ अन्तिम निष्कर्ष
ग. पूरी तरह अनुपस्थित
घ. केवल चित्रकला
उत्तर: क. आत्मकथा आ कविताक सामने कमज़ोर/झुझुआन लगैत अछि
व्याख्या: समीक्षक कठोरता सँ कहैत छथि जे कथा खण्ड सभ कविताक बराबर प्रभावी नहि लागल।

प्रश्न 2011. समीक्षक साफी लेल कोन रचनात्मक सलाह दैत छथि?
क. कवितापर गहिर नजरि राखि आगू बढ़थि
ख. कविता छोड़ि केवल लेखा-जोखा लिखथि
ग. भाषा छोड़ि देथि
घ. साहित्यसँ दूर रहथि
उत्तर: क. कवितापर गहिर नजरि राखि आगू बढ़थि
व्याख्या: आलोचकक इशारा अछि जे साफीक कवितामे भविष्यक नीक कवि बनबाक सम्भावना अछि।

प्रश्न 2012. एहि समीक्षामे आलोचकक भूमिका कोना परिभाषित भेल अछि?
क. लेखक कतय सुधारि सकैत छथि वा कोन विधामे महारत पाबि सकैत छथि, से इशारा करब
ख. केवल प्रशंसा करब
ग. केवल पृष्ठ गिनब
घ. केवल मौन रहब
उत्तर: क. लेखक कतय सुधारि सकैत छथि वा कोन विधामे महारत पाबि सकैत छथि, से इशारा करब
व्याख्या: लेख आलोचनाकेँ सुधार-संकेत आ विधागत पहचानक जिम्मेदारी मानैत अछि।

खण्ड २०७ : विदेह-सदेह ३५ — साफीक कविता: अनगढ़ बिम्ब आ सामाजिक भूगोल

प्रश्न 2013. “भाइ रौ सपनो कतौ सच भेलैए / महीसक पीठपर कहूँ मंच होइए” पंक्तिमे समीक्षक कोन गुण देखैत छथि?
क. टटका, अनायातित आ कहबी-जकाँ बिम्ब रचबाक क्षमता
ख. पुरान दरबारी उपमा
ग. केवल व्याकरण नियम
घ. यांत्रिक सूची
उत्तर: क. टटका, अनायातित आ कहबी-जकाँ बिम्ब रचबाक क्षमता
व्याख्या: समीक्षकक मतमे ई बिम्ब परम्परा सँ आयातित नहि, जीवित लोक-अनुभवसँ बनल अछि।

प्रश्न 2014. “महीसक पीठपर मंच” बिम्ब कोन तरहक काव्य-शक्ति सूचित करैत अछि?
क. लोक-जीवनसँ निकसल तीख कल्पना
ख. मुद्रण-तकनीक
ग. दरबारी नृत्य
घ. कानूनी धारा
उत्तर: क. लोक-जीवनसँ निकसल तीख कल्पना
व्याख्या: बिम्ब ग्रामीण वस्तुकेँ असम्भव मंचमे बदलि सामाजिक व्यंग्य रचैत अछि।

प्रश्न 2015. स्त्री-विमर्श पर साफीक कविता कैं समीक्षक कोना देखैत छथि?
क. अलग मिजाज आ टटका अनगढ़ बिम्बक प्रयोग रूपमे
ख. सिर्फ नकल रूपमे
ग. पूर्ण मौन रूपमे
घ. शास्त्रीय सूची रूपमे
उत्तर: क. अलग मिजाज आ टटका अनगढ़ बिम्बक प्रयोग रूपमे
व्याख्या: समीक्षक कहैत छथि जे साफी फैशनबला विमर्श नहि, अपन लोक-अनुभवक बिम्बसँ बोलैत छथि।

प्रश्न 2016. “सागमे हरदी” वाला पंक्ति कोन बात खोलैत अछि?
क. घरेलू हिंसा आ मामूली कारणक आड़मे स्त्री-दमन
ख. केवल पाक-कला
ग. खेतीक बीज
घ. नाटकक परदा
उत्तर: क. घरेलू हिंसा आ मामूली कारणक आड़मे स्त्री-दमन
व्याख्या: पंक्ति घरक साधारण गप्पकेँ हिंसक पितृसत्ताक व्यवहारक प्रतीक बनबैत अछि।

प्रश्न 2017. “कोनाकेँ बुझाएब पियास / विलुप्त भऽ रहल अछि इनार” पंक्तिमे इनार की बनैत अछि?
क. जल-संकट आ जीवन-पर्यावरणक प्रतीक
ख. केवल सजावटी वस्तु
ग. न्यायालयक मुहर
घ. नावक पाल
उत्तर: क. जल-संकट आ जीवन-पर्यावरणक प्रतीक
व्याख्या: इनारक लोप प्यास, जल-बाजार आ भविष्यक संकटकेँ एकसाथ संकेत करैत अछि।

प्रश्न 2018. २० टका लीटर पानिक उल्लेख कविता-वाचनमे की जोड़ैत अछि?
क. आजुक जल-बाजारीकरण आ भविष्यक भय
ख. केवल मिठाईक दाम
ग. पुरस्कार-राशि
घ. रेल टिकट
उत्तर: क. आजुक जल-बाजारीकरण आ भविष्यक भय
व्याख्या: समीक्षक इनारक बिम्बकेँ तत्कालीन पानि-मूल्य आ भविष्यक संकटसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 2019. “महीस लेब” बला कविता ककर जीवन-संसार दिस संकेत करैत अछि?
क. गैर-ब्राह्मण/गैर-कायस्थ ग्रामीण मनोभूमि
ख. केवल शहरी अधिकारी
ग. केवल राजमहल
घ. केवल विदेशी पर्यटक
उत्तर: क. गैर-ब्राह्मण/गैर-कायस्थ ग्रामीण मनोभूमि
व्याख्या: समीक्षकक अनुसार नायक-नायिका ओहि वर्गक छथि जतय महीस, गामक असगरपन आ परिवारक पलायन जुड़ल अछि।

प्रश्न 2020. “मन लगले रहि गेल” कविता किएक नव मनोभूमि मानल गेल?
क. कविमे बिजनेस करबाक इच्छा मैथिली समाजक नौकरी-केन्द्रित सोचकेँ चुनौती दैत अछि
ख. कविता केवल मौसम बतबैत अछि
ग. कविता पृष्ठक्रम अछि
घ. कविता शब्दार्थ अछि
उत्तर: क. कविमे बिजनेस करबाक इच्छा मैथिली समाजक नौकरी-केन्द्रित सोचकेँ चुनौती दैत अछि
व्याख्या: बिजनेसक आकांक्षा पारम्परिक नौकरी-मानसिकतासँ अलग टटका विचार रूपमे देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 2021. “बिजनेसमे अप्पन नाम करितौं / मिथिलाक आगू नाम करितौं” पंक्ति की सूचित करैत अछि?
क. उद्यमिता कैँ मिथिलाक प्रतिष्ठासँ जोड़बाक स्वप्न
ख. पलायनक निषेध मात्र
ग. केवल प्रेम-वियोग
घ. केवल धार्मिक अनुष्ठान
उत्तर: क. उद्यमिता कैँ मिथिलाक प्रतिष्ठासँ जोड़बाक स्वप्न
व्याख्या: कवि व्यापारकैँ निजी कमाइ नहि, सामाजिक नाम आ मिथिलाक मानक रूपमे देखैत छथि।

प्रश्न 2022. साफीक कविता पर समीक्षकक कुल निष्कर्ष की अछि?
क. कवितामे भविष्यक महत्त्वपूर्ण सम्भावना अछि
ख. कवितामे कोनो बात नहि
ग. कथा खण्डे श्रेष्ठ अछि
घ. कविता केवल अनुवाद अछि
उत्तर: क. कवितामे भविष्यक महत्त्वपूर्ण सम्भावना अछि
व्याख्या: समीक्षक खामी बतबैत छथि, मुदा खास भरोस साफीक कविता-शक्ति पर राखैत छथि।

खण्ड २०८ : विदेह-सदेह ३५ — “पत्नीभक्त” लघुकथा: व्यंग्य, पितृसत्ता आ हिंसा

प्रश्न 2023. “पत्नीभक्त” कथाक आरम्भ कोन सामाजिक प्रसंगमे होइत अछि?
क. भोज खएबाक पंगतमे
ख. अदालतक सुनवाईमे
ग. रेलवे प्लेटफॉर्ममे
घ. विद्यालयी परीक्षा मे
उत्तर: क. भोज खएबाक पंगतमे
व्याख्या: कथा पातपर भात-दालि परसल जा रहल भोजक वातावरणसँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 2024. फेकू बाबू नहि पहुँचबाक कारण रमेश बाबू की व्यंग्य करैत छथि?
क. ओ पत्नी-भक्त छथि, घरवालीक पएर जतैत हेताह
ख. ओ नदी पार करैत छथि
ग. ओ परीक्षा दैत छथि
घ. ओ किताब बेचैत छथि
उत्तर: क. ओ पत्नी-भक्त छथि, घरवालीक पएर जतैत हेताह
व्याख्या: रमेशक कथन पत्नी-भक्ति कैँ पुरुषत्वक अपमान मानि व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 2025. सुधीर फेकू बाबूक पक्षमे कोन प्रश्न उठबैत छथि?
क. पत्नी-भक्त भेनाइ खराप छैक की?
ख. भोजमे दालि किएक अछि?
ग. नदी कतय अछि?
घ. पुस्तकालय किएक बन्द अछि?
उत्तर: क. पत्नी-भक्त भेनाइ खराप छैक की?
व्याख्या: सुधीर कथाक भीतर पितृसत्तात्मक तिरस्कारकैँ प्रतिप्रश्न करैत छथि।

प्रश्न 2026. रमेश सुधीरकैँ “तखन बैसल छी किएक, जाउ अहूँ” कहि की करैत छथि?
क. स्त्री-सम्मानकैँ उपहासक विषय बनबैत छथि
ख. समर्थन दैत छथि
ग. चुप्पी साधैत छथि
घ. भोजन रोकैत छथि
उत्तर: क. स्त्री-सम्मानकैँ उपहासक विषय बनबैत छथि
व्याख्या: रमेश पत्नीभक्ति पर प्रश्नकैँ मजाक आ अपमानमे मोड़ैत छथि।

प्रश्न 2027. सुधीरक “पत्नी-भक्त नहि भए वेश्या-भक्त बनि जाए” कथन कोन धक्का दैत अछि?
क. पुरुष-दोहरेपनपर तीख पलटवार
ख. भोजनक प्रशंसा
ग. नदीक वर्णन
घ. कृषि-उपदेश
उत्तर: क. पुरुष-दोहरेपनपर तीख पलटवार
व्याख्या: सुधीर पुरुषवादी उपहासकेँ उलटि स्त्री-असम्मानक अश्लील विकल्प उजागर करैत छथि।

प्रश्न 2028. कथाक अन्तमे “सपासपक ध्वनि” की संकेत करैत अछि?
क. विचार-विवाद हिंसामे बदलि गेल
ख. गीत शुरू भेल
ग. नाव चलल
घ. बारिश भेल
उत्तर: क. विचार-विवाद हिंसामे बदलि गेल
व्याख्या: वाक्य समाप्त होइतहि मारपीटक ध्वनि शुरू भेनाइ समाजक असहिष्णुता देखबैत अछि।

प्रश्न 2029. “पत्नीभक्त” शीर्षक कोना व्यंग्यात्मक अछि?
क. पत्नीप्रेमकेँ समाज व्यंग्य बनबैत अछि, कथा ओहि सोचपर चोट करैत अछि
ख. पत्नी कथामे अनुपस्थित रहबाक कारण
ग. कथा केवल भक्ति-गीत अछि
घ. शीर्षक भोजनक नाम अछि
उत्तर: क. पत्नीप्रेमकेँ समाज व्यंग्य बनबैत अछि, कथा ओहि सोचपर चोट करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक समाजक ताना केँ पकड़ि ओकरा आलोचनाक औजार बनबैत अछि।

प्रश्न 2030. कथा में पंगत/भोजक वातावरणक उपयोग किएक प्रभावी अछि?
क. सार्वजनिक लोक-स्थलमे निजी स्त्री-दृष्टि उघारि देल गेल अछि
ख. कथा केवल खाना सूची बनैत अछि
ग. कथा खेलक मैदान बनैत अछि
घ. कथा अदालत बनैत अछि
उत्तर: क. सार्वजनिक लोक-स्थलमे निजी स्त्री-दृष्टि उघारि देल गेल अछि
व्याख्या: भोजक सामूहिक स्थल पुरुषवादी टिप्पणीकेँ सार्वजनिक रूपेँ उजागर करैत अछि।

प्रश्न 2031. सुधीरक प्रतिवादक मुख्य नैतिक बिन्दु की अछि?
क. पत्नीप्रति स्नेह लाजक नहि, सम्मानक विषय होयबाक चाही
ख. पुरुष हिंसा सर्वोत्तम अछि
ग. स्त्री पर मौन रहू
घ. भोज छोड़ि भागू
उत्तर: क. पत्नीप्रति स्नेह लाजक नहि, सम्मानक विषय होयबाक चाही
व्याख्या: सुधीरक सवाल पत्नीभक्ति केँ नीचा देखबाक संस्कारकेँ चुनौती दैत अछि।

प्रश्न 2032. “पत्नीभक्त” लघुकथा कोन व्यापक विषय उठबैत अछि?
क. पितृसत्ताक व्यंग्य, स्त्री-सम्मान आ सामाजिक हिंसा
ख. केवल भोज-व्यवस्था
ग. केवल नदी-यात्रा
घ. केवल पुस्तकालय प्रेम
उत्तर: क. पितृसत्ताक व्यंग्य, स्त्री-सम्मान आ सामाजिक हिंसा
व्याख्या: छोट संवाद मार्फत कथा पुरुष-सत्ता, स्त्रीक गरिमा आ सार्वजनिक हिंसक प्रतिक्रिया देखबैत अछि।

खण्ड २०९ : विदेह-सदेह ३५ — राजदेव मंडलक बाढ़ि-चित्र आ कोशी त्रासदी

प्रश्न 2033. राजदेव मंडलक रचनापर टिप्पणी कोन संकलन पढ़बाक बाद लिखल गेल?

क. विदेह पद्य २००९-१०

ख. विदेह नाटक १९००

ग. केवल व्याकरण कोश

घ. चित्रकला सूची

उत्तर: क. विदेह पद्य २००९-१०

व्याख्या: टिप्पणीकार विदेह पद्य २००९-१० पढ़ि राजदेव मंडलक रचनापर प्रसन्नता व्यक्त करैत छथि।

प्रश्न 2034. राजदेव मंडलक रचनाक आधार कोन त्रासदी कहल गेल अछि?

क. कोशीक विभीषिका/कुसहा त्रासदी

ख. समुद्री तूफान

ग. मरुभूमि अकाल

घ. रेल दुर्घटना

उत्तर: क. कोशीक विभीषिका/कुसहा त्रासदी

व्याख्या: लेखमे २००९क कोशी-विभीषिका आ कुसहा त्रासदीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 2035. टिप्पणीकारक अनुसार मंडलजीक रचनामे कोन चीज छः दृश्यमे उभरि आएल?

क. कोशी बीच रहनिहार लोकक दर्द

ख. राजदरबारक वैभव

ग. केवल हास्य

घ. विदेशी व्यापार

उत्तर: क. कोशी बीच रहनिहार लोकक दर्द

व्याख्या: संचार माध्यमसँ सुनल अनुभवसँ बेसी रचनामे कोशी-पीड़ितक दर्द सघन रूपेँ देखल गेल।

प्रश्न 2036. कोशी त्रासदीक प्रभाव कोना बताओल गेल अछि?

क. देशे नहि, समूचा विश्वक लोकक रोइयाँ-रोइयाँ ठाढ़ कएने

ख. केवल एक घरक घटना

ग. केवल पुस्तकालयक प्रसंग

घ. केवल उत्सव

उत्तर: क. देशे नहि, समूचा विश्वक लोकक रोइयाँ-रोइयाँ ठाढ़ कएने

व्याख्या: वर्णन त्रासदीक मार्मिकता आ व्यापक प्रभाव पर बल दैत अछि।

प्रश्न 2037. मंडलजीक हिन्दी लेखनसँ मैथिली लेखन दिस आबि जेनाइ टिप्पणीकार लेल की अछि?

क. मिथिलाक माटि-पानि आ लोक लेल लेखनक सुखद आगमन

ख. भाषा-त्याग

ग. साहित्यक अन्त

घ. केवल अनुवाद-दोष

उत्तर: क. मिथिलाक माटि-पानि आ लोक लेल लेखनक सुखद आगमन

व्याख्या: टिप्पणीकार प्रसन्न छथि जे मंडलजी आब मैथिलीमे मिथिलाक जीवनपर लिखि रहल छथि।

प्रश्न 2038. राजदेव मंडल कैँ धन्यवादक पात्र किएक कहल गेल?

क. मैथिली साहित्यमे मिथिला-जीवनक रचना देबाक लेल

ख. कथा नष्ट करबाक लेल

ग. भाषा बदलबाक लेल

घ. पुस्तकालय बन्द करबाक लेल

उत्तर: क. मैथिली साहित्यमे मिथिला-जीवनक रचना देबाक लेल

व्याख्या: टिप्पणीकार चाहैत छथि जे हुनकर रचना मैथिलीमे निरन्तर आबय आ साहित्य समृद्ध हो।

प्रश्न 2039. “मिथिलाक माटि-पानि” वाक्यांश कोन भाव जोड़ैत अछि?
क. स्थानीय अनुभव आ सांस्कृतिक धरतीसँ जुड़ाव
ख. अलगाव
ग. विदेशी नक्शा
घ. केवल विज्ञान
उत्तर: क. स्थानीय अनुभव आ सांस्कृतिक धरतीसँ जुड़ाव
व्याख्या: रचना कैँ मात्र आपदा-वर्णन नहि, मिथिलाक धरतीक पीड़ा रूपमे देखल गेल अछि।

प्रश्न 2040. टिप्पणीकारक आशा की अछि?
क. मंडलजीक रचना बराबर मैथिलीमे आबय आ पाठक पढ़ि सकय
ख. मंडलजी लिखब बन्द करथि
ग. केवल हिन्दीमे रहथि
घ. कथा सभ हटि जाय
उत्तर: क. मंडलजीक रचना बराबर मैथिलीमे आबय आ पाठक पढ़ि सकय
व्याख्या: टिप्पणीकार निरन्तर मैथिली रचनाशीलता कैँ साहित्य-समृद्धिक साधन मानैत छथि।

प्रश्न 2041. कोशी-वर्णनमे “दर्द” शब्द ककर केन्द्र बनैत अछि?
क. बाढ़ि बीच रहनिहार लोकक जीवित अनुभव
ख. केवल नक्शाक रेखा
ग. सांख्यिकी तालिका
घ. मंच सज्जा
उत्तर: क. बाढ़ि बीच रहनिहार लोकक जीवित अनुभव
व्याख्या: रचना त्रासदीक मानवीय पक्ष—रहनिहार लोकक पीड़ा—कैँ केन्द्रमे राखैत अछि।

प्रश्न 2042. एहि टिप्पणीक मुख्य साहित्यिक मूल्यांकन की अछि?
क. आपदा-काव्य जखन स्थानीय दुखकैँ दृश्यात्मक बनाबैत अछि तखन प्रभावी होइत अछि
ख. आपदा पर साहित्य असम्भव अछि
ग. केवल यांत्रिक गिनती जरूरी अछि
घ. स्थानीयता महत्वहीन अछि
उत्तर: क. आपदा-काव्य जखन स्थानीय दुखकैँ दृश्यात्मक बनाबैत अछि तखन प्रभावी होइत अछि
व्याख्या: छः दृश्यक मार्फत कोशीक दर्द देखबैत रचना साहित्यिक रूपेँ सफल कहल गेल।

खण्ड २१० : विदेह-सदेह ३५ — “नाह आओर जिनगी”: दुर्घटना, शोक आ भाग्य-बोध

प्रश्न 2043. “नाह आओर जिनगी” कथाक घटना कोन साँझसँ शुरू होइत अछि?
क. ग्यारह अगस्त २०१०क कोलाहल भरल साँझ
ख. एक जनवरीक प्रभात
ग. होलीक दुपहर
घ. दीपावलीक राति
उत्तर: क. ग्यारह अगस्त २०१०क कोलाहल भरल साँझ
व्याख्या: कथा स्पष्ट रूपेँ ग्यारह अगस्त २०१०क शोकाकुल साँझसँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 2044. रूदन आ क्रन्दनक आवाज पहिले कतयसँ उठैत अछि?
क. कमल किशोरक अंगनासँ
ख. पुस्तकालयसँ
ग. रेल स्टेशनसँ
घ. राजमहलसँ
उत्तर: क. कमल किशोरक अंगनासँ
व्याख्या: दर्दनाक दृश्य कमल किशोरक अंगना सँ शुरू भऽ सौंसे गाम पसरैत अछि।

प्रश्न 2045. रधिया ककर भविष्यक चिन्ता करैत छली?
क. जवान बेटीक बियाह, अपन असगर जीवन आ बुढ़ ससुरक गुजर
ख. केवल बाजारक भाव
ग. पुस्तकालयक सदस्यता
घ. नाटकक टिकट
उत्तर: क. जवान बेटीक बियाह, अपन असगर जीवन आ बुढ़ ससुरक गुजर
व्याख्या: रधियाक विलाप परिवारक आर्थिक-सामाजिक असुरक्षा खोलैत अछि।

प्रश्न 2046. लोक सभ नाहपर किएक चढ़ल?
क. भोज खएबाक लेल तिलजुगा धार पार करबाक उत्साहमे
ख. मेला सजाबय लेल
ग. परीक्षा देबय लेल
घ. राजनीतिक सभा लेल
उत्तर: क. भोज खएबाक लेल तिलजुगा धार पार करबाक उत्साहमे
व्याख्या: धीया-पुता सहित लोक भोजक लेल ब्रह्मोत्तर घाटपर नाह चढ़य लागल।

प्रश्न 2047. दुर्घटनाक तत्काल कारण की बताओल गेल?
क. छोट नाहपर बेसी लोक चढ़ि गेल आ बीच धारमे पानि फुलए लागल
ख. आकाशसँ आगि बरसल
ग. घोड़ा भागि गेल
घ. पुस्तक हरायल
उत्तर: क. छोट नाहपर बेसी लोक चढ़ि गेल आ बीच धारमे पानि फुलए लागल
व्याख्या: भोजक उत्साहमे नाहक क्षमता भुलायल गेल, परिणामे भगदड़ आ डुबान भेल।

प्रश्न 2048. तिलयुगा धार कैं कथामे कोन बिम्बसँ देखाओल गेल?
क. राक्षस जकाँ मुँहबौने लोककेँ पेटमे समबैत
ख. फूलक बगिया
ग. सोनाक सड़क
घ. शान्त पुस्तकालय
उत्तर: क. राक्षस जकाँ मुँहबौने लोककेँ पेटमे समबैत
व्याख्या: नदीक राक्षसीकरण दुर्घटनाक भयावहता आ मृत्यु-लिप्सा कैं व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 2049. भरि राति लोक सभ की करैत रहल?
क. लहास छानैत रहल
ख. गीत गबैत रहल
ग. किताब पढ़ैत रहल
घ. नाटक खेलैत रहल
उत्तर: क. लहास छानैत रहल
व्याख्या: राति भरि अन्हारमे लोक पानिसँ लाश निकालबाक त्रासद श्रम करैत रहल।

प्रश्न 2050. भोर होइतहि घटना-स्थलपर के सभ पहुँचए लागल?
क. नगरक लोक, पत्रकार आ सरकारक अमला-झमला
ख. केवल नृत्यांगना
ग. केवल पुस्तक-विक्रेता
घ. केवल बालकवि
उत्तर: क. नगरक लोक, पत्रकार आ सरकारक अमला-झमला
व्याख्या: भोरक बाद निजी शोक सार्वजनिक/प्रशासनिक घटना बनि जाइत अछि।

प्रश्न 2051. मुनियाँ अपन माए रधियाकेँ कोन भावसँ धीरज दैत अछि?
क. जनमक संग मरण आ भाग-तकदीरक स्वीकार
ख. प्रतिशोधक आह्वान
ग. व्यापारक योजना
घ. शहर भागबाक आदेश
उत्तर: क. जनमक संग मरण आ भाग-तकदीरक स्वीकार
व्याख्या: मुनियाँक कथन दुःखक बीच भाग्य, मृत्यु आ जीवनक अस्थिरता स्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 2052. “नाह आओर जिनगी”क मुख्य अर्थ की अछि?
क. साधारण भोज-यात्रा जीवन-मृत्युक अस्थिरता आ सामुदायिक शोकमे बदलि जाइत अछि
ख. नाह केवल सजावट अछि
ग. जीवन सदैव सुरक्षित अछि
घ. दुर्घटना हास्य प्रसंग अछि
उत्तर: क. साधारण भोज-यात्रा जीवन-मृत्युक अस्थिरता आ सामुदायिक शोकमे बदलि जाइत अछि
व्याख्या: कथा दिखबैत अछि जे उत्सवक क्षण सेहो एकाएक त्रासदी बनि सकैत अछि।

खण्ड २११ : विदेह-सदेह ३५ — “निमंत्रण”: बाजारवाद, प्रेम आ सम्बन्धक प्रयोग

प्रश्न 2053. “निमंत्रण” कथामे नीताक मेल सचिनपर कोन असर करैत अछि?
क. ओकरा सम्बन्धक बाजारवादी स्वभाव पर सोचय मजबूर करैत अछि
ख. ओकरा तुरन्त नाच सिखबैत अछि
ग. ओकरा नदी पार करबैत अछि
घ. ओकरा परीक्षा दैत अछि
उत्तर: क. ओकरा सम्बन्धक बाजारवादी स्वभाव पर सोचय मजबूर करैत अछि
व्याख्या: कथाक आरम्भमे नीताक मेल सचिनक स्मृति आ सम्बन्ध-विचार खोलैत अछि।

प्रश्न 2054. कथा आजुक बाजारवादक युगमे सम्बन्धकेँ कोना देखैत अछि?
क. काम भेलाक बाद लोक एक-दोसराकेँ बिसरि जाइत अछि
ख. सम्बन्ध सदैव निष्काम अछि
ग. सम्बन्ध केवल धार्मिक अनुष्ठान अछि
घ. सम्बन्ध अस्तित्वहीन अछि
उत्तर: क. काम भेलाक बाद लोक एक-दोसराकेँ बिसरि जाइत अछि
व्याख्या: कथाकार स्वार्थपूर्ण अपनत्व आ प्रयोग-बाद-छोड़ि देबाक प्रवृत्तिपर चोट करैत अछि।

प्रश्न 2055. सचिन नीताकेँ पहिल बेर कतय देखैत अछि?
क. फरीदाबादक “वाइस ऑफ फरीदाबाद” कार्यक्रममे
ख. कोशी घाटपर
ग. सार्वजनिक पुस्तकालयमे
घ. कुसहा त्रासदीमे
उत्तर: क. फरीदाबादक “वाइस ऑफ फरीदाबाद” कार्यक्रममे
व्याख्या: सचिन रिपोर्टर रूपमे कार्यक्रम कवर करबाक लेल गेल, ओतहि नीता निर्णायक रूपमे आयल छलीह।

प्रश्न 2056. नीता कोन कलासँ जुड़ल छलीह?
क. कथक नृत्य प्रशिक्षणसँ
ख. मृदंग निर्माणसँ
ग. नाव खेवनाइ सँ
घ. कृषि-शोधसँ
उत्तर: क. कथक नृत्य प्रशिक्षणसँ
व्याख्या: कथा कहैत अछि जे नीता दिल्लीक कथक केन्द्रसँ कथक प्रशिक्षण लेने छलीह।

प्रश्न 2057. सचिनक पेशा आरम्भमे की छल?
क. अखबारक रिपोर्टर
ख. नदी-नाविक
ग. विद्यालय प्रधानाध्यापक
घ. लोकगायक
उत्तर: क. अखबारक रिपोर्टर
व्याख्या: सचिन फरीदाबादमे प्रतिष्ठित अखबारक रिपोर्टर रूपमे काज करैत छल।

प्रश्न 2058. नीताक इंटरव्यू छपलापर ओ सचिनकेँ किएक फोन करैत अछि?
क. लेखनक प्रशंसा आ दिल्ली अयबाक बात करबाक लेल
ख. नाह दुर्घटना बताबय लेल
ग. भोज परसय लेल
घ. दहेज तय करय लेल
उत्तर: क. लेखनक प्रशंसा आ दिल्ली अयबाक बात करबाक लेल
व्याख्या: नीता खुशीसँ फोन कऽ अखबारमे छपल इंटरव्यू पर प्रशंसा करैत अछि।

प्रश्न 2059. नीता अमेरिका गेलाक बादो सचिनसँ कोना सम्बन्ध बनौने रहलीह?
क. फोन द्वारा संपर्क राखि
ख. पत्रिका बन्द कऽ
ग. संदेश तोड़ि
घ. गाम छोड़ि
उत्तर: क. फोन द्वारा संपर्क राखि
व्याख्या: कथा दुनू बीच मोबाइल फोनक नियमितता आ भावनात्मक निकटता देखबैत अछि।

प्रश्न 2060. सचिनक मोबाइल बिल दरमाह जतेक अयबाक प्रसंग की सूचित करैत अछि?
क. प्रेम/निकटताक आर्थिक बोझ आ संचार-युगक विडम्बना
ख. खेतीक लाभ
ग. पुरस्कार राशि
घ. नदीक गहराइ
उत्तर: क. प्रेम/निकटताक आर्थिक बोझ आ संचार-युगक विडम्बना
व्याख्या: रोमिंग आ फोन-सम्पर्क प्रेमक उन्मादकेँ आर्थिक यथार्थसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2061. वैलेंटाइन डे प्रसंगमे नीता सचिनकेँ कतय बजबैत अछि?
क. मंडी हाउसक रेस्टोरेंटमे
ख. ब्रह्मोत्तर घाटपर
ग. घोघररिया गाममे
घ. जानकी मन्दिरमे
उत्तर: क. मंडी हाउसक रेस्टोरेंटमे
व्याख्या: नीता दिल्ली आयल सचिनकेँ मंडी हाउस भेँट लेल जोर दैत अछि।

प्रश्न 2062. नीताक प्रेम-प्रस्तावक बाद सचिनक जीवनमे कोन मोड़ अबैत अछि?
क. ओ दिल्लीक दिश आकृष्ट भऽ नौकरी छोड़ि देबाक जोखिम धरि लैत अछि
ख. ओ तुरन्त गामक मुखिया बनैत अछि
ग. ओ नाह चलबैत अछि
घ. ओ पुस्तकालय बन्द करैत अछि
उत्तर: क. ओ दिल्लीक दिश आकृष्ट भऽ नौकरी छोड़ि देबाक जोखिम धरि लैत अछि
व्याख्या: नीताक प्रस्ताव सचिनक भावनात्मक निर्णय, नौकरी-त्याग आ दिल्ली-भटकनक कारण बनैत अछि।

खण्ड २१२ : विदेह-सदेह ३५ — “निमंत्रण”क मनोविज्ञान: बेरोजगारी, बीमारी आ भरोस

प्रश्न 2063. दिल्ली आबि सचिनक जीवनमे की शुरू भेल?
क. नोकरीक नव ठिकाना ताकैत द्वारि-द्वारि भटकब
ख. राजकीय सम्मान
ग. नदीक यात्रा
घ. विद्यालयी परीक्षा
उत्तर: क. नोकरीक नव ठिकाना ताकैत द्वारि-द्वारि भटकब
व्याख्या: नौकरी छोड़लाक बाद सचिन दिल्लीमे अस्थिर रोज़गार-खोजक जीवन जीबय लगैत अछि।

प्रश्न 2064. सचिनक जन्मदिनपर ओकरा कोन बीमारी भेल कहल गेल?
क. गोसाँइ/बोखार
ख. कानक रोग
ग. आँखिक रोशनी
घ. हड्डी टूटब
उत्तर: क. गोसाँइ/बोखार
व्याख्या: जन्मदिनक दिन ओ गोसाँइक कारण बोखारसँ जड़ि रहल छल।

प्रश्न 2065. बीमारीक समय नीता की करैत अछि?
क. शकरपुरक डेरापर ओकरा देखबा लेल अबैत अछि
ख. ओकरा छोड़ि दैत अछि
ग. पत्र जरा दैत अछि
घ. नाह चलबैत अछि
उत्तर: क. शकरपुरक डेरापर ओकरा देखबा लेल अबैत अछि
व्याख्या: नीताक बीमारीमे देखय आओनाइ सचिनक मनमे भरोस जगबैत अछि।

प्रश्न 2066. सचिन नीतासँ कोन कठिन प्रश्न पूछैत अछि?
क. अहाँ हमरासँ दोस्ती किऐ करैले चाहै छी?
ख. अहाँ नाह किएक चलबैत छी?
ग. अहाँ पाग कतय बेचैत छी?
घ. अहाँ माछ किएक पकड़ैत छी?
उत्तर: क. अहाँ हमरासँ दोस्ती किऐ करैले चाहै छी?
व्याख्या: सचिन बेरोजगारी आ असुरक्षा बीच सम्बन्धक आधार बुझय चाहैत अछि।

प्रश्न 2067. सचिन अपन स्थितिक बारेमे नीताकेँ की चेतावनी दैत अछि?
क. ओ बेरोजगार अछि, ओकरा संग नीता खुश नहि रहि सकती
ख. ओ राजा अछि
ग. ओ नदीमे रहैत अछि
घ. ओ किताब नहि पढ़ैत
उत्तर: क. ओ बेरोजगार अछि, ओकरा संग नीता खुश नहि रहि सकती
व्याख्या: सचिन प्रेमक उत्साहकेँ आर्थिक यथार्थसँ तौलैत अछि।

प्रश्न 2068. नीता बेरोजगारीक उत्तर कोना दैत अछि?
क. नृत्य कार्यक्रम भेटल तखन कमाइ; ओहो अपनाकेँ बेसी बेरोजगार कहैत हँसैत अछि
ख. ओ सचिनकेँ अपमानित करैत अछि
ग. ओ मौन रहैत अछि
घ. ओ पुस्तक फेंकैत अछि
उत्तर: क. नृत्य कार्यक्रम भेटल तखन कमाइ; ओहो अपनाकेँ बेसी बेरोजगार कहैत हँसैत अछि
व्याख्या: नीता अपन पेशाक अस्थिरता बताकऽ सम्बन्धमे बराबरी आ सहजता अनैत अछि।

प्रश्न 2069. गोसाँइ भेलापर नीता देखय आएल, सचिन ओकरा कोना ग्रहण करैत अछि?
क. एकटा गहिर मानवीय साहस आ स्नेह रूपमे
ख. साधारण विज्ञापन रूपमे
ग. मजाक रूपमे
घ. नदीक नियम रूपमे
उत्तर: क. एकटा गहिर मानवीय साहस आ स्नेह रूपमे
व्याख्या: छूतिक बीमारी होइतहुँ नीता देखय आयल, ई सचिनक आत्मामे बसि गेल।

प्रश्न 2070. “दुनियामे कतेक लोक मरि गेल, नीक दोस्तो छाँह काटैए” कथन कोन मानसिकता बतबैत अछि?
क. बीमारीमे लोक दूरी बना लैत अछि, ताहि बीच नीताक आओनाइ असाधारण अछि
ख. सभ लोक सदैव निकट रहैत अछि
ग. बीमारीक कोनो असर नहि
घ. ई खेतीक नियम अछि
उत्तर: क. बीमारीमे लोक दूरी बना लैत अछि, ताहि बीच नीताक आओनाइ असाधारण अछि
व्याख्या: कथन सामाजिक भय आ व्यक्तिगत स्नेहक विरोधाभास उजागर करैत अछि।

प्रश्न 2071. “निमंत्रण”मे प्रेम आ रोज़गारक सम्बन्ध कोना देखायल अछि?
क. प्रेम निर्णयकेँ जोखिमपूर्ण बनबैत अछि, मुदा आर्थिक अस्थिरता ओकर कसौटी बनैत अछि
ख. प्रेम पूर्णत: अर्थहीन अछि
ग. रोज़गारक कोनो भूमिका नहि
घ. प्रेम केवल गीत अछि
उत्तर: क. प्रेम निर्णयकेँ जोखिमपूर्ण बनबैत अछि, मुदा आर्थिक अस्थिरता ओकर कसौटी बनैत अछि
व्याख्या: सचिन नौकरी छोड़ैत अछि, भटकैत अछि, आ सम्बन्ध आर्थिक यथार्थसँ जूझैत अछि।

प्रश्न 2072. कथाक आरम्भक बाजारवाद-विमर्श आ सचिन-नीता प्रसंगक सम्बन्ध की अछि?
क. व्यक्तिगत स्मृति मार्फत उपयोगी/स्वार्थी सम्बन्धक आलोचना गहिर होइत अछि
ख. दू प्रसंग असम्बद्ध अछि
ग. ई केवल यांत्रिक सूची अछि
घ. ई नाटकक गीत अछि
उत्तर: क. व्यक्तिगत स्मृति मार्फत उपयोगी/स्वार्थी सम्बन्धक आलोचना गहिर होइत अछि
व्याख्या: नीताक मेल वर्तमान प्रश्न बनैत अछि, आ पुरान अंतरंगता सम्बन्धक मूल्यपर विचार करबैत अछि।

खण्ड २१३ : विदेह-सदेह ३५ — “भौजी”: पुस्तकालय, मौन प्रेम आ स्त्री-निगरानी

प्रश्न 2073. “भौजी” कथामे राधाक हृदयक गति कखन तेज होइत अछि?
क. सार्वजनिक पुस्तकालयक बोर्ड देखिते
ख. नदीमे नाह देखिते
ग. भोजक पात देखिते
घ. दहेजक बात सुनिते
उत्तर: क. सार्वजनिक पुस्तकालयक बोर्ड देखिते
व्याख्या: पुस्तकालय राधाक गुप्त भावनात्मक प्रतीक्षाक स्थल अछि।

प्रश्न 2074. राधा एक महिनाक बाद पुस्तकालय किएक आयल छली?
क. आईएस्सी परीक्षाक तैयारीमे व्यस्त रहबाक कारण पहिले नहि आबि सकल छली
ख. नदी पार नहि भऽ सकल
ग. भोज नहि भेटल
घ. नृत्य कार्यक्रम छल
उत्तर: क. आईएस्सी परीक्षाक तैयारीमे व्यस्त रहबाक कारण पहिले नहि आबि सकल छली
व्याख्या: भौजीक आदेश छल जे परीक्षा समाप्ति धरि पढ़ाइक अतिरिक्त किछु नहि।

प्रश्न 2075. राधा भौजीसँ पाछु किएक चलैत अछि?
क. मौका भेटिते गाछ तर ठाढ़ युवककेँ देखबाक लेल
ख. भौजीसँ दूर भागबाक लेल
ग. पुस्तक लुकाबय लेल
घ. नाह खेवनाइ लेल
उत्तर: क. मौका भेटिते गाछ तर ठाढ़ युवककेँ देखबाक लेल
व्याख्या: राधा चाहैत अछि जे भौजीक निगरानीसँ बचि प्रिय युवकपर नजरि पड़य।

प्रश्न 2076. गाछ तर युवक नहि भेटलापर राधाक मनस्थिति की होइत अछि?
क. रोमाञ्च उड़ी जाइत अछि आ आशंका/पीड़ा भरि जाइत अछि
ख. ओ अत्यन्त प्रसन्न होइत अछि
ग. ओ भोजन परसैत अछि
घ. ओ तुरन्त घर लौटि जाइत अछि
उत्तर: क. रोमाञ्च उड़ी जाइत अछि आ आशंका/पीड़ा भरि जाइत अछि
व्याख्या: युवकक अनुपस्थिति राधाक मौन प्रेमक भरोस केँ झकझोरि दैत अछि।

प्रश्न 2077. राधा आ युवकक सम्बन्धक प्रकृति की अछि?
क. मौन दृष्टि आ प्रतीक्षापर टिकल प्रेम-संकेत
ख. घोषित विवाह
ग. खुला संवाद
घ. कानूनी करार
उत्तर: क. मौन दृष्टि आ प्रतीक्षापर टिकल प्रेम-संकेत
व्याख्या: कथा कहैत अछि जे युवक चोर दृष्टिसँ देखैत छल, आ मौन प्रस्ताव राधाक हृदयमे बैसल छल।

प्रश्न 2078. पुस्तकालयमे युवक कोन पुस्तक सुझबैत अछि?
क. डा. धीरेन्द्रक उपन्यास “भोरुकवा”
ख. कथा “नाह आओर जिनगी”
ग. वृद्धाश्रमक बिरहा
घ. पागक इतिहास
उत्तर: क. डा. धीरेन्द्रक उपन्यास “भोरुकवा”
व्याख्या: युवक “भोरुकवा” देबाक बहाने राधासँ अप्रत्यक्ष सम्पर्क बनबैत अछि।

प्रश्न 2079. “भोरुकवा” पुस्तकक भीतर मोड़ल कागज ककर प्रतीक बनैत अछि?
क. गुप्त संदेश आ मौन प्रेमक सम्भावना
ख. सरकारी आदेश
ग. भोजक सूची
घ. नदीक नक्शा
उत्तर: क. गुप्त संदेश आ मौन प्रेमक सम्भावना
व्याख्या: राधा बुझैत अछि जे कागजमे हुनका लेल कोनो संदेश होएत।

प्रश्न 2080. भौजीक गम्भीर प्रकृति कथामे की भूमिका निभबैत अछि?
क. राधाक प्रेम-उत्सुकता पर सामाजिक-संयमक निगरानी बनैत अछि
ख. पूर्ण उच्छृंखलता
ग. नदीक रक्षक
घ. व्यापार गुरु
उत्तर: क. राधाक प्रेम-उत्सुकता पर सामाजिक-संयमक निगरानी बनैत अछि
व्याख्या: भौजी सीमा तय करैत छथि, तैं राधाक भावनात्मक क्रिया छिपल रहैत अछि।

प्रश्न 2081. भौजीक अतीतमे भैयाक ब्लड कैंसरक प्रसंग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. भौजीक कठोरता भीतरक त्याग, सेवा आ दुःखसँ बनल बुझाइत अछि
ख. ओ भौजीक हास्य बतबैत अछि
ग. ओ पाग व्यापार अछि
घ. ओ प्रेम-पत्र अछि
उत्तर: क. भौजीक कठोरता भीतरक त्याग, सेवा आ दुःखसँ बनल बुझाइत अछि
व्याख्या: भौजी केवल नियंत्रक नहि; ओ गहिर दुःख, सेवा आ विधवापनक अनुभव सँ बनी पात्र छथि।

प्रश्न 2082. “भौजी” कथाक मूल तनाव की अछि?
क. युवा मौन प्रेम, स्त्री-निगरानी आ विधवा-भौजीक अनुशासनक टकराव
ख. नदी-दुर्घटना
ग. कविता पुरस्कार
घ. कृषि-मंडी
उत्तर: क. युवा मौन प्रेम, स्त्री-निगरानी आ विधवा-भौजीक अनुशासनक टकराव
व्याख्या: पुस्तकालय, गाछ, पुस्तक आ कागजक माध्यमे प्रेम आ सामाजिक मर्यादाक तनाव बनैत अछि।

खण्ड २१४ : विदेह-सदेह ३५ — सौराठ, पाग आ मैथिल पहिचान

प्रश्न 2083. सौराठ प्रसंगमे विवाह तय करबाक बाद कोन वस्तु लऽ अएबाक उल्लेख अछि?
क. पाग
ख. नाह
ग. मोबाइल फोन
घ. कथक घुँघरू
उत्तर: क. पाग
व्याख्या: पाठमे सौराठमे विवाह तय भेला बाद पाग लऽ अयबाक परम्पराक संकेत अछि।

प्रश्न 2084. जनकपुरमे पहिने पागक खोजी कम किएक छल?
क. सौराठ सँ विवाह तय भऽ पाग ओतहि सँ लऽ आएल जाइत छल
ख. जनकपुरमे लोक पाग नहि पहिरैत छल
ग. पागक अस्तित्व नहि छल
घ. सभ पाग विदेशसँ अबैत छल
उत्तर: क. सौराठ सँ विवाह तय भऽ पाग ओतहि सँ लऽ आएल जाइत छल
व्याख्या: स्रोत कहैत अछि जे विवाह-संबंध सौराठमे तय भेलासँ पागक खोजी/बिक्री जनकपुरमे नहि होइत छल।

प्रश्न 2085. जानकी मन्दिरक महन्थक अनुसार विशेष उत्सवमे पाग कतयसँ मंगाओल जाइत छल?
क. मधुबनी सँ
ख. दिल्ली सँ
ग. आगरा सँ
घ. कटक सँ
उत्तर: क. मधुबनी सँ
व्याख्या: महन्थ रामतपेश्वर दास वैष्णव कहैत छथि जे दश वर्ष पहिने मधुबनी सँ पाग मंगाओल जाइत छल।

प्रश्न 2086. जनकपुरमे पाग बिक्री शुरू भेलासँ की सुविधा भेल?
क. सभकेँ पाग उपलब्ध करबामे सुविधा
ख. पुस्तकालय बन्द भेल
ग. नाह दुर्घटना रोकायल
घ. कथा समाप्त भेल
उत्तर: क. सभकेँ पाग उपलब्ध करबामे सुविधा
व्याख्या: स्थानीय बिक्रीसँ विशेष अवसरपर पाग पाबय आसान भेल।

प्रश्न 2087. मैथिल पहिचान पर पहिले सामान्यतः कोन वस्तु सभ कहल जाइत छल?
क. पान, मखान, माछ आदि
ख. केवल मोबाइल फोन
ग. केवल रेल टिकट
घ. केवल कथक नृत्य
उत्तर: क. पान, मखान, माछ आदि
व्याख्या: पाठ कहैत अछि जे पहिचानक पुरान चिन्ह पान-मखान-माछ सहितक छल।

प्रश्न 2088. आब मैथिल पहिचानमे कोन वस्तु प्रमुख बनि रहल अछि?
क. पाग
ख. नाह
ग. मेल
घ. रोमिंग बिल
उत्तर: क. पाग
व्याख्या: लेख स्पष्ट कहैत अछि जे आब पाग मैथिलक पहिचान बनि गेल अछि।

प्रश्न 2089. मिथिलाञ्चलक कार्यक्रम सभमे सम्मानक रूपमे की देल जाइत अछि?
क. पाग
ख. मछलीजाल
ग. मोबाइल
घ. इंटरव्यू
उत्तर: क. पाग
व्याख्या: पाठमे जतह कतहु कार्यक्रम हो, सम्मानमे पाग रहैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 2090. रमेश रञ्जन झाक मतमे पागक वर्तमान प्रसार कोना अछि?
क. सुखद, आ पाग सभ दिन सँ क्रेज बनौने छल
ख. पूर्णतः निरर्थक
ग. नव आ अप्रिय
घ. केवल व्यापारिक धोखा
उत्तर: क. सुखद, आ पाग सभ दिन सँ क्रेज बनौने छल
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे पागक क्रेज पुरान अछि, मुदा आब प्रसार सुखद ढंगसँ भऽ रहल अछि।

प्रश्न 2091. पत्रकार रामअशिष यादव पागक विकास लेल की चाहैत छथि?
क. सरकार दिस सँ योजना
ख. पागक निषेध
ग. पुस्तकालय बन्द
घ. नदीपर रोक
उत्तर: क. सरकार दिस सँ योजना
व्याख्या: ओ पागक विकास लेल सरकारी योजना आनबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 2092. सौराठ-पाग प्रसंगक मुख्य सांस्कृतिक अर्थ की अछि?
क. पाग विवाह-परम्परा सँ निकलि व्यापक मैथिल सामुदायिक पहिचान बनि रहल अछि
ख. पाग केवल कपड़ा अछि, अर्थहीन
ग. पाग बाहरी फैशन मात्र अछि
घ. पाग साहित्यसँ असम्बद्ध अछि
उत्तर: क. पाग विवाह-परम्परा सँ निकलि व्यापक मैथिल सामुदायिक पहिचान बनि रहल अछि
व्याख्या: विवाह, जानकी मन्दिर, सम्मान-समारोह आ पहचान—सभमे पाग सांस्कृतिक प्रतीक रूपमे उभरैत अछि।

खण्ड २१५ : विदेह-सदेह ३६ — विद्यापति: कुप्रचारक निराकरण आ पाग-विमर्श

प्रश्न 2093. “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण” मे लेखक अपन चर्चा मुख्यतः कोन विद्यापति पर केन्द्रित करैत छथि?

क. मैथिली पदावली बला विद्यापति पर

ख. केवल संस्कृत ग्रन्थकार विद्यापति पर

ग. केवल आधुनिक नाटककार पर

घ. केवल पञ्जीकार पर

उत्तर: क. मैथिली पदावली बला विद्यापति पर

व्याख्या: लेखक स्पष्ट करैत छथि जे हुनकर उद्देश्य मैथिली बला विद्यापतिसँ अछि, संस्कृत ग्रन्थक ब्राह्मण विद्यापतिसँ नहि।

प्रश्न 2094. लेखकक अनुसार विद्यापतिकेँ “हम्मर विद्यापति” बना लेबाक प्रक्रिया कखन तेज भेल?

क. जखन बंगाल विद्यापति आ गोविन्ददासकेँ अपन मानय लगल

ख. जखन छपाई बन्द भऽ गेल

ग. जखन नाटक मंच नहि रहल

घ. जखन लोकगीत समाप्त भऽ गेल

उत्तर: क. जखन बंगाल विद्यापति आ गोविन्ददासकेँ अपन मानय लगल

व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे बंगालक दाबीक बाद मिथिलाक विद्वान समाज विद्यापतिक जातीय/पञ्जीय स्वामित्व सिद्ध करबाक ओर मुड़ल।

प्रश्न 2095. बिदापत नाचक उल्लेख लेखक कोन बात सिद्ध करबाक लेल करैत छथि?

क. गएर-ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिक स्मृति आठ सए वर्ष धरि जीवित रखने रहल

ख. विद्यापति केवल राजदरबारमे रहलाह

ग. विद्यापतिक कोनो लोक-प्रसार नहि छल

घ. बिदापत नाच विदेशी नृत्य छल

उत्तर: क. गएर-ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिक स्मृति आठ सए वर्ष धरि जीवित रखने रहल

व्याख्या: लेखकक तर्क अछि जे विद्यापतिक लोकजीवन बिदापत नाच मार्फत टिकले रहल, बादमे मात्र जातीय दावा तीव्र भेल।

प्रश्न 2096. रमानाथ झाक पञ्जी-ज्ञान पर लेखकक आपत्ति की अछि?

क. ओ सीमित आ सतही दृष्टि सँ नोकसान पहुँचेने कहल गेल छथि

ख. ओ विद्यापतिक एकमात्र प्रत्यक्ष साक्षी छलाह

ग. ओ नाटककार छलाह

घ. ओ बंगाली कवि छलाह

उत्तर: क. ओ सीमित आ सतही दृष्टि सँ नोकसान पहुँचेने कहल गेल छथि

व्याख्या: लेखक पञ्जीक आधारपर विद्यापति ठाकुर आ गोविन्ददास झा निकालबाक पद्धतिक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 2097. लेखमे ज्योतिरीश्वरक संदर्भ किएक आएल अछि?

क. विद्यापतिक पहचानक तर्कमे नाम-भेद आ पञ्जी-तर्कक असंगति देखाबय लेल

ख. कृषि-व्यापार बताबय लेल

ग. गजल नियम बताबय लेल

घ. वर्डनेट बनाबय लेल

उत्तर: क. विद्यापतिक पहचानक तर्कमे नाम-भेद आ पञ्जी-तर्कक असंगति देखाबय लेल

व्याख्या: लेखक पूछैत छथि जे जँ विद्यापतिक नाम-भेदसँ निष्कर्ष बनैत अछि तँ ज्योतिरीश्वर पर वैह तर्क किएक नहि लागैत।

प्रश्न 2098. लेखक महादेवक सामाजिक प्रसंगक उल्लेख कोना करैत छथि?

क. महादेव मूलतः गएर-ब्राह्मणक देवता रहि क्रमशः ब्राह्मण समाज द्वारा अपनाओल गेलाह

ख. महादेवक कोनो लोकसंबंध नहि

ग. महादेव केवल आधुनिक प्रतीक

घ. महादेव गजलकार छथि

उत्तर: क. महादेव मूलतः गएर-ब्राह्मणक देवता रहि क्रमशः ब्राह्मण समाज द्वारा अपनाओल गेलाह

व्याख्या: ई तर्क लोक-परम्परा आ ब्राह्मणीकरणक क्रम बुझाबय लेल देल गेल अछि।

प्रश्न 2099. लेखमे “पाग” विद्यापति-विमर्शमे कोन प्रतीक बनैत अछि?
क. जातीय स्वामित्व आ प्रतिष्ठा-अपहरणक प्रतीक
ख. केवल वस्त्र-विक्रयक विषय
ग. केवल नृत्य-साज
घ. केवल नदी-यात्रा
उत्तर: क. जातीय स्वामित्व आ प्रतिष्ठा-अपहरणक प्रतीक
व्याख्या: विद्यापतिकेँ पाग पहिरा अपन मानबाक प्रसंग जातीय दावा आ सांस्कृतिक स्वामित्वक आलोचना बनैत अछि।

प्रश्न 2100. लेखक विद्यापति पदावली आ संस्कृत/अवहट्ठ रचना बीच कोन भेद राखैत छथि?
क. ओ पदावलीक विद्यापति पर चर्चा करैत छथि, संस्कृत-अवहट्ठ ग्रन्थक विद्यापति पर नहि
ख. दुनूकेँ पूर्णतः एके बिना प्रश्न मानैत छथि
ग. दुनूकेँ असाहित्यिक कहैत छथि
घ. दुनू पर मौन छथि
उत्तर: क. ओ पदावलीक विद्यापति पर चर्चा करैत छथि, संस्कृत-अवहट्ठ ग्रन्थक विद्यापति पर नहि
व्याख्या: लेखक बारम्बार कहैत छथि जे बहस पदावलीक रचनाकारक पहिचान पर अछि।

प्रश्न 2101. पूर्णियाँक ग्रामदेवता “राम ठाकुर” प्रसंगक प्रयोजन की अछि?
क. लोक-देवता आ जातीय नामक जटिलता देखाबय लेल
ख. केवल पर्यटन-वर्णन
ग. केवल भोजन-सूची
घ. केवल बाहरी संकेत
उत्तर: क. लोक-देवता आ जातीय नामक जटिलता देखाबय लेल
व्याख्या: लेखक बतबैत छथि जे ठाकुर नाम वा देवता-परम्परा सँ सरल जातीय निष्कर्ष निकालब खतरनाक अछि।

प्रश्न 2102. एहि विद्यापति-विमर्शक मूल आग्रह की अछि?
क. लोक-परम्परा, जाति-दावा आ पाठ-साक्ष्यक आलोचनात्मक पुनर्पाठ
ख. केवल पञ्जीकेँ अंतिम सत्य मानब
ग. केवल बंगालक दावा मानब
घ. कोनो प्रश्न नहि उठायब
उत्तर: क. लोक-परम्परा, जाति-दावा आ पाठ-साक्ष्यक आलोचनात्मक पुनर्पाठ
व्याख्या: लेख कुप्रचार-निराकरणक नामे स्थापित दावासभकेँ प्रमाण, लोक-स्मृति आ राजनीति सँ जाँचैत अछि।

खण्ड २१६ : विदेह-सदेह ३६ — मैथिली, प्रकाशन उद्योग आ भाषा-बाजार

प्रश्न 2103. लेखमे आधुनिक मानकीकृत अरबीक उदाहरण किएक देल गेल अछि?
क. मातृभाषा नहि होइतो माध्यम-भाषा आ सूत्र-भाषा बनबाक उदाहरण रूपमे
ख. मैथिली छोड़बाक समर्थनमे
ग. केवल धर्म-इतिहास लेल
घ. केवल व्याकरण-तालिका लेल
उत्तर: क. मातृभाषा नहि होइतो माध्यम-भाषा आ सूत्र-भाषा बनबाक उदाहरण रूपमे
व्याख्या: लेखक भाषाक सामाजिक उपयोग, माध्यम आ सम्पर्क-रूपक भेद समझाबय अरबीक उदाहरण देलनि।

प्रश्न 2104. मैथिलीमे कार्टून आ धारावाहिक डबिंग लेल लेखक सरकारसँ की अपेक्षा करैत छथि?
क. विदेशी निवेशककेँ सहायता देल जाए
ख. मैथिली प्रसारण रोकल जाए
ग. केवल अंग्रेजी डबिंग हो
घ. निजी रेडियो बन्द हो
उत्तर: क. विदेशी निवेशककेँ सहायता देल जाए
व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे मनोरंजक कार्यक्रम मैथिलीमे आबि गेल तँ भाषा-प्रयोगक पहिया घूमि सकैत अछि।

प्रश्न 2105. लेखकक अनुसार मैथिली “जीबि उठत” कखन?
क. जखन समाजक प्रमुख वर्ग ऋणात्मक ऊर्जा छोड़ि सहयोग करत
ख. जखन सभ कार्यक्रम केवल अंग्रेजीमे हो
ग. जखन पाठ्यपुस्तक नहि छपय
घ. जखन लोकगीत बन्द हो
उत्तर: क. जखन समाजक प्रमुख वर्ग ऋणात्मक ऊर्जा छोड़ि सहयोग करत
व्याख्या: लेख सामाजिक अवरोधक बदला सहयोगकेँ भाषिक पुनर्जीवनक शर्त मानैत अछि।

प्रश्न 2106. मुख्य विदेशी प्रकाशकक सूची देबाक उद्देश्य की अछि?
क. भारतीय भाषामे विदेशी निवेशक कमी आ अंग्रेजी-केंद्रितता देखाबय लेल
ख. केवल विज्ञापन करबाक लेल
ग. पुरस्कार सूची बनाबय लेल
घ. नाटक पात्र परिचय लेल
उत्तर: क. भारतीय भाषामे विदेशी निवेशक कमी आ अंग्रेजी-केंद्रितता देखाबय लेल
व्याख्या: हार्पर कॉलिन्स, पेंगुइन, ऑक्सफोर्ड आदि नामसँ लेखक बतबैत छथि जे निवेश प्रायः अंग्रेजी धरि सीमित रहल।

प्रश्न 2107. लेखकक अनुसार भारतीय भाषाक प्रकाशक अक्सर कोन आधारपर निर्भर छथि?
क. सरकारी खरीद आ पाठ्यपुस्तक छपाई पर
ख. समुद्री व्यापार पर
ग. नृत्य-प्रतियोगिता पर
घ. केवल विदेशी पुरस्कार पर
उत्तर: क. सरकारी खरीद आ पाठ्यपुस्तक छपाई पर
व्याख्या: एहि निर्भरता कारण बाजार-संचालित विदेशी प्रकाशक भारतीय भाषामे उत्साहित नहि भेलाह।

प्रश्न 2108. मैथिली लेल विदेशी निवेश “वरदान” किएक मानल गेल?
क. भविष्यक साक्षरता आ मनोरंजन-बाजार सँ भाषा विस्तारक सम्भावना अछि
ख. कारण मैथिली समाप्त भऽ जाएत
ग. कारण केवल पञ्जी छपत
घ. कारण डबिंग असम्भव अछि
उत्तर: क. भविष्यक साक्षरता आ मनोरंजन-बाजार सँ भाषा विस्तारक सम्भावना अछि
व्याख्या: लेखकक दृष्टिमे नव पाठक-वर्ग आ माध्यम-उद्योग मैथिलीकेँ विस्तार दऽ सकैत अछि।

प्रश्न 2109. लेखक “राक्षसी प्रतिभायुक्त सर्वहारा वर्ग” सँ की आशा करैत छथि?
क. मैथिलीक रक्षा लेल समर्पित हसेरी बनबाक
ख. मैथिली विरोध करबाक
ग. प्रकाशन बन्द करबाक
घ. विदेशी भाषा मात्र अपनाबबाक
उत्तर: क. मैथिलीक रक्षा लेल समर्पित हसेरी बनबाक
व्याख्या: वाक्य तीख व्यंग्यात्मक भाषा मे समाजक श्रमशील वर्गकेँ भाषा-रक्षा लेल सक्रिय देखबाक कामना करैत अछि।

प्रश्न 2110. मनोरंजन-कार्यक्रमक मैथिली डबिंग सँ लेखमे कोन प्रभाव अपेक्षित अछि?
क. दृश्य-श्रव्य माध्यममे मैथिलीक व्यवहारिक उपस्थिति बढ़त
ख. भाषाक उच्चारण समाप्त होएत
ग. कथा-पद्य नष्ट होएत
घ. कोनो दर्शक नहि भेटत
उत्तर: क. दृश्य-श्रव्य माध्यममे मैथिलीक व्यवहारिक उपस्थिति बढ़त
व्याख्या: डबिंग दैनिक उपभोगक माध्यममे भाषा प्रवेश करबैत अछि, जे भाषा-संरक्षणसँ आगू जीवित प्रयोग थिक।

प्रश्न 2111. लेखकक आर्थिक भाषा-दृष्टि कोना अछि?
क. भाषा-सुरक्षा कैं बाजार, निवेश, प्रसारण आ समाज-सहयोगसँ जोड़ैत अछि
ख. भाषा कैं केवल पूजा-वस्तु मानैत अछि
ग. भाषाक अर्थव्यवस्था नकारैत अछि
घ. केवल पृष्ठ-संख्या गिनैत अछि
उत्तर: क. भाषा-सुरक्षा कैं बाजार, निवेश, प्रसारण आ समाज-सहयोगसँ जोड़ैत अछि
व्याख्या: लेख मैथिलीकैं भावुकता मात्र नहि, उद्योग आ प्रसारणक संरचनासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2112. एहि खण्डक मुख्य चेतावनी की अछि?
क. मैथिलीकैं जीवित रखबाक लेल सामाजिक बाधा हटि माध्यम-बाजारमे प्रवेश जरूरी अछि
ख. मैथिलीकैं घरमे बंद राखू
ग. बाजारसँ भाषा मरैत अछि, सदा दूर राखू
घ. केवल सरकारी सूची पर्याप्त अछि
उत्तर: क. मैथिलीकैं जीवित रखबाक लेल सामाजिक बाधा हटि माध्यम-बाजारमे प्रवेश जरूरी अछि
व्याख्या: लेखक भाषा-पुनर्जीवन लेल व्यवहारिक सांस्कृतिक उद्योगक आवश्यकता पर बल दैत छथि।

खण्ड २१७ : विदेह-सदेह ३६ — रुबाइ, किता/कतआ आ गजल-शास्त्र

प्रश्न 2113. रुबाइक चतुष्पदीमे सामान्यतः कोन पाँती काफिया-युक्त होइत अछि?
क. पहिल, दोसर आ चारिम पाँती
ख. केवल तेसर पाँती
ग. सभ पाँती अनिवार्यतः बिना काफिया
घ. केवल पहिल पाँती
उत्तर: क. पहिल, दोसर आ चारिम पाँती
व्याख्या: स्रोतमे रुबाइक काफिया-क्रम पहिल-दोसर-चारिम पाँती कहल गेल अछि।

प्रश्न 2114. रुबाइक पाँतीमे मात्रा सम्बन्धी नियम की कहल गेल?
क. २० वा २१ मात्रा होयबाक चाही
ख. १० मात्रा अनिवार्य
ग. मात्रा अप्रासंगिक
घ. १०० मात्रा चाही
उत्तर: क. २० वा २१ मात्रा होयबाक चाही
व्याख्या: लेख मैथिली रुबाइ लेल २०-२१ मात्रा रखबाक निर्देश दैत अछि।

प्रश्न 2115. रुबाइक आरम्भक दू स्वीकार्य ढाँचा कोन कहल गेल?
क. दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ वा दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व
ख. ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व मात्र
ग. दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ मात्र
घ. कोनो ध्वनि-क्रम नहि
उत्तर: क. दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ वा दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व
व्याख्या: लेख “मफ-ऊ-लु” आ “मफ-ऊ-लुन”क रूपमे आरम्भक लय-संकेत दैत अछि।

प्रश्न 2116. जे चतुष्पदीमे पहिल-दोसर-चारिम काफिया अछि मुदा २०-२१ मात्रा वा निर्दिष्ट आरम्भ नहि अछि, ओकरा की कहल गेल?
क. किता/कतआ
ख. पूर्ण रुबाइ
ग. शेनर्यू
घ. सोरठा
उत्तर: क. किता/कतआ
व्याख्या: स्रोत स्पष्ट करैत अछि जे एहन रचना रुबाइ नहि, किता/कतआक परिभाषामे आएत।

प्रश्न 2117. रुबाइक चारिम पाँतीक भूमिका कोना बताओल गेल?
क. भावक चरम हेबाक चाही
ख. सदैव कमजोर होयबाक चाही
ग. केवल शीर्षक होयबाक चाही
घ. निषिद्ध होयबाक चाही
उत्तर: क. भावक चरम हेबाक चाही
व्याख्या: रुबाइमे अन्तिम पाँती भावक निचोड़ वा उत्कर्ष बनबाक अपेक्षा अछि।

प्रश्न 2118. “दूटा काफियाबला शेर” लेल स्रोत कोन नाम दैत अछि?
क. जू काफिया
ख. मुक्तक
ग. दोहा
घ. नाटक
उत्तर: क. जू काफिया
व्याख्या: लेख गजल-शास्त्रक तकनीकी शब्दावलीमे “जू काफिया”क चर्चा करैत अछि।

प्रश्न 2119. रदीफक बारेमे स्रोत की कहैत अछि?
क. ओ अनुपस्थितसँ लऽ कऽ मात्रा, शब्द, शब्दसमूह वा वाक्य धरि भऽ सकैत अछि
ख. ओ सदैव निषिद्ध अछि
ग. ओ केवल लेखकक नाम अछि
घ. ओ केवल पृष्ठ-सूचक अछि
उत्तर: क. ओ अनुपस्थितसँ लऽ कऽ मात्रा, शब्द, शब्दसमूह वा वाक्य धरि भऽ सकैत अछि
व्याख्या: रदीफ अपरिवर्तित अंश थिक; ओकर विस्तार अलग-अलग रूपमे सम्भव कहल गेल अछि।

प्रश्न 2120. गजल कोन संरचनात्मक शर्त अवश्य रखैत अछि?
क. कोनो ने कोनो बहर/छन्दमे होयबाक चाही
ख. छन्दहीन होयबाक चाही
ग. केवल गद्य होयबाक चाही
घ. केवल चित्र होयबाक चाही
उत्तर: क. कोनो ने कोनो बहर/छन्दमे होयबाक चाही
व्याख्या: लेखक गजलकेँ बहरसँ जोड़ैत छथि, चाहे मैथिली छन्दानुकूल लचीलापन हो।

प्रश्न 2121. एक दीर्घक बदला की देल जा सकैत अछि?
क. दूटा ह्रस्व
ख. तीन विरामचिह्न
ग. एक चित्र
घ. एक शीर्षक
उत्तर: क. दूटा ह्रस्व
व्याख्या: स्रोत लय-व्यवस्थामे दीर्घ-ह्रस्वक विनिमयक संकेत करैत अछि।

प्रश्न 2122. गजल-शास्त्रक एहि विवेचनक उद्देश्य की बुझाइत अछि?
क. मैथिलीमे फारसी-मूलक विधा अपनबैत ओकर छन्द-नियम स्पष्ट करब
ख. गजलकेँ मैथिलीसँ हटायब
ग. केवल नाम-सूची बनायब
घ. पद्यक विरुद्ध गद्य लिखब
उत्तर: क. मैथिलीमे फारसी-मूलक विधा अपनबैत ओकर छन्द-नियम स्पष्ट करब
व्याख्या: खण्ड गजल/रुबाइकेँ मैथिली काव्याभ्यास लेल नियमपूर्वक समझबैत अछि।

खण्ड २१८ : विदेह-सदेह ३६ — मैथिली वर्डनेट: उद्देश्य, स्रोत आ उपयोगिता

प्रश्न 2123. मैथिली वर्डनेट बनेबाक मूल उद्देश्य की कहल गेल?
क. शब्दक अर्थ, हैरार्की, भारतीय भाषाक अर्थ-सम्बन्ध आ पर्याय सहज उपलब्ध करब
ख. केवल कविता संग्रह बनायब
ग. नाटकक मंच सजायब
घ. पाग व्यापार करब
उत्तर: क. शब्दक अर्थ, हैरार्की, भारतीय भाषाक अर्थ-सम्बन्ध आ पर्याय सहज उपलब्ध करब
व्याख्या: स्रोत वर्डनेटकेँ चयनित मैथिली शब्दक लेक्सिकल डेटाबेस रूपमे परिभाषित करैत अछि।

प्रश्न 2124. वर्डनेट सँ जनसामान्य मैथिलीप्रेमी केँ कोन लाभ अपेक्षित अछि?
क. शब्दक अर्थ, अन्य भाषाक अर्थ, आण्टोलोजी आ पर्याय देखबा मे सुविधा
ख. केवल टिकट बुकिंग
ग. केवल संगीत सुनब
घ. केवल छवि रंगब
उत्तर: क. शब्दक अर्थ, अन्य भाषाक अर्थ, आण्टोलोजी आ पर्याय देखबा मे सुविधा
व्याख्या: लेख आम भाषा-प्रेमी लेल मुक्त सॉफ्टवेयर/टूलक उपयोगिता बतबैत अछि।

प्रश्न 2125. संगणकीय भाषाविज्ञान लेल वर्डनेट किएक उपादेय मानल गेल?
क. मैथिली आ अन्य भारतीय भाषाक यान्त्रिक अनुवादमे सहयोग करत
ख. कृषि-मापनमे सहयोग करत
ग. नदी-नक्शा बनाओत
घ. नाटकक पोशाक देत
उत्तर: क. मैथिली आ अन्य भारतीय भाषाक यान्त्रिक अनुवादमे सहयोग करत
व्याख्या: वर्डनेटक संरचित शब्द-अर्थ डाटा मशीन अनुवादमे सहायक होएबाक बात कहल गेल अछि।

प्रश्न 2126. स्रोतमे उपलब्ध सामग्रीक समीक्षा लेल कोन कोशक उल्लेख अछि?
क. कल्याणी कोश
ख. केवल अंग्रेजी उपन्यास
ग. केवल गीत-पोथी
घ. केवल रेल-सूची
उत्तर: क. कल्याणी कोश
व्याख्या: कल्याणी कोशकेँ मानक ग्रन्थ मानि, तकर सीमा सहित वर्डनेट लेल उपयोगी कहल गेल।

प्रश्न 2127. विदेह ऑनलाइन शब्दकोशक बारेमे लेख की कहैत अछि?
क. ओ नीक कार्य अछि, मुदा ओकर अपन उद्देश्य आ सीमा अछि
ख. ओ अनुपस्थित अछि
ग. ओ निरर्थक अछि
घ. ओ केवल चित्रकथा अछि
उत्तर: क. ओ नीक कार्य अछि, मुदा ओकर अपन उद्देश्य आ सीमा अछि
व्याख्या: लेख विदेह शब्दकोशकेँ उपयोगी स्रोत मानैत अछि, यद्यपि वर्डनेटक लक्ष्य भिन्न अछि।

प्रश्न 2128. विविध अन्तर्जाल, विशेषतः संस्कृत वर्डनेट, सँ की लाभ भेल कहल गेल?
क. कार्यकेँ गति आ प्रस्तुतीकरणक दिशा भेटल
ख. कार्य रोकायल
ग. भाषा त्यागल गेल
घ. कविता बन्द भेल
उत्तर: क. कार्यकेँ गति आ प्रस्तुतीकरणक दिशा भेटल
व्याख्या: ऑनलाइन स्रोतसभ वर्डनेट-निर्माणक ढाँचा आ प्रस्तुति पर प्रभाव डालैत अछि।

प्रश्न 2129. अखनि धरि काजक स्थिति कोना बताओल गेल?
क. डाटा संकलन चलि रहल अछि
ख. पूर्णतः समाप्त
ग. कखनो शुरू नहि भेल
घ. केवल अभिनय चलि रहल
उत्तर: क. डाटा संकलन चलि रहल अछि
व्याख्या: स्रोत कहैत अछि जे डाटा संकलन संग तत्समकोश आदि पर कार्य चलि रहल अछि।

प्रश्न 2130. वर्डनेटमे “आण्टोलोजी/हैरार्की” शब्दक भाव की अछि?
क. शब्दक अर्थ-सम्बन्ध आ श्रेणीबद्ध संरचना
ख. केवल वर्णमाला क्रम
ग. केवल पृष्ठ संख्या
घ. केवल लेखकक जन्मतिथि
उत्तर: क. शब्दक अर्थ-सम्बन्ध आ श्रेणीबद्ध संरचना
व्याख्या: लेक्सिकल डेटाबेस शब्दसभकेँ अर्थ-सम्बन्धक जालमे व्यवस्थित करैत अछि।

प्रश्न 2131. वर्डनेट-लेखमे शोधपत्र/लेखक स्रोत किएक महत्त्वपूर्ण कहल गेल?
क. चिन्तनकेँ नवीन दिशा देबाक लेल
ख. केवल सजावट लेल
ग. फोटो जोड़बाक लेल
घ. नृत्य अभ्यास लेल
उत्तर: क. चिन्तनकेँ नवीन दिशा देबाक लेल
व्याख्या: गूगल आ शोध-सामग्री सँ अवधारणा आ शब्द-संग्रहक नया दिशा भेटल।

प्रश्न 2132. मैथिली वर्डनेटक व्यापक महत्व की अछि?
क. भाषा-संसाधन, अर्थ-संगठन आ डिजिटल मैथिली विकासक आधार बनब
ख. केवल छापाखानाक दाम घटायब
ग. केवल गीत गाबय
घ. केवल पाग रंगायब
उत्तर: क. भाषा-संसाधन, अर्थ-संगठन आ डिजिटल मैथिली विकासक आधार बनब
व्याख्या: ई परियोजना मैथिलीकेँ डिजिटल भाषिक संरचना मे प्रवेश करबैत अछि।

खण्ड २१९ : विदेह-सदेह ३६ — अंकुशी महादेब: आस्था, लोककथा आ ग्राम-सुरक्षा

प्रश्न 2133. अंकुशी महादेबक स्थान आजुक स्थितिमे कोना वर्णित अछि?
क. सड़क मार्गसँ जुड़ल, मुदा साँझक समय लगभग निर्जन
ख. महानगरक भीड़भाड़ बीच
ग. समुद्रक टापू पर
घ. रेलवे स्टेशन भीतर
उत्तर: क. सड़क मार्गसँ जुड़ल, मुदा साँझक समय लगभग निर्जन
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे सड़क जुड़ि गेल अछि, तथापि साँझमे पंडा छोड़ि कम लोक भेटैत अछि।

प्रश्न 2134. योगीश्वर बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईं शिवलिंग कतय स्थापित करय चाहैत छलाह?
क. लखनौरक राधाकृष्ण मन्दिर प्रांगणमे
ख. दिल्लीक बाजारमे
ग. समुद्र-तटपर
घ. कविता-मंचपर
उत्तर: क. लखनौरक राधाकृष्ण मन्दिर प्रांगणमे
व्याख्या: कथानक अनुसार बाबा निर्जन स्थानसँ शिवलिंग उखारि लखनौरमे स्थापित करय चाहैत छलाह।

प्रश्न 2135. शिवलिंग उखारबाक प्रयासमे की चमत्कारिक घटना घटैत रहल?
क. जतेक कोरथि, महादेब पीड़ी भरि मात्र रहैत छलाह
ख. शिवलिंग तुरन्त उड़ि गेल
ग. शिवलिंग गायब भऽ गेल
घ. कोनो शिवलिंग नहि भेटल
उत्तर: क. जतेक कोरथि, महादेब पीड़ी भरि मात्र रहैत छलाह
व्याख्या: भरि हाथ कोरला परो शिवलिंग ओतबे रहबाक लोककथा ओकर अस्थान-निश्चय बतबैत अछि।

प्रश्न 2136. अन्ततः महादेब बाबा लक्ष्मीनाथ कैं की कहैत छथि?
क. जुनि कोर; हम निर्जनमे रहनहार छी आ एतहि सँ गामक रक्षा करब
ख. हम नगर चलब
ग. हम पाग बेचब
घ. हम कविता लिखब
उत्तर: क. जुनि कोर; हम निर्जनमे रहनहार छी आ एतहि सँ गामक रक्षा करब
व्याख्या: कथामे महादेब स्वयं अपन स्थान आ ग्राम-रक्षाक भूमिका घोषित करैत छथि।

प्रश्न 2137. लखनौर गामक रक्षा किनका-किनका दिशा-संरचनासँ बताओल गेल?
क. पूर्वसँ राधाकृष्ण, पश्चिमसँ बाबा डिहबार, दक्षिणसँ अंकुशी महादेब
ख. केवल उत्तरसँ नदी
ग. केवल बाजारसँ सड़क
घ. केवल विद्यालयसँ पुस्तकालय
उत्तर: क. पूर्वसँ राधाकृष्ण, पश्चिमसँ बाबा डिहबार, दक्षिणसँ अंकुशी महादेब
व्याख्या: लेख लोकविश्वासक त्रिकोणीय सुरक्षा-विन्यास प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 2138. करमहे झांझारपुर मूलक वत्सगोत्रीय परिवारक कोन संस्कार आइयो अंकुशी महादेब समक्ष होइत अछि?
क. पुरुष बच्चाक मूडन
ख. विवाह-रद्दीकरण
ग. पुस्तक विमोचन
घ. गजल प्रतियोगिता
उत्तर: क. पुरुष बच्चाक मूडन
व्याख्या: स्रोत कहैत अछि जे परिवार विदेशमे रहितो मुण्डन एहि महादेबक सामने करबैत अछि।

प्रश्न 2139. लेखक आस्था आ तर्कक सम्बन्ध कोना साधैत छथि?
क. दुनू कैं देखैत देवताक प्रासंगिकता मानैत छथि
ख. आस्था पूर्णतः नकारैत छथि
ग. तर्क पूर्णतः निषिद्ध करैत छथि
घ. दुनू पर मौन छथि
उत्तर: क. दुनू कैं देखैत देवताक प्रासंगिकता मानैत छथि
व्याख्या: लेखमे आस्था-तर्कक अन्तर्द्वन्द्व अछि, मुदा देवताक प्रति श्रद्धा-अभाव नहि।

प्रश्न 2140. बाढ़ि आदि आपात स्थिति प्रसंगक प्रयोजन की अछि?
क. ग्राम-सुरक्षाक लोकविश्वासकैं बल देबाक
ख. केवल मौसम-रिपोर्ट
ग. केवल नदी-मापन
घ. केवल पृष्ठ-सूचना
उत्तर: क. ग्राम-सुरक्षाक लोकविश्वासकैं बल देबाक
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे आपात स्थिति अयलापर गामक बस्ती सुरक्षित रहल।

प्रश्न 2141. पुष्पदन्तक श्लोक-स्मरण किएक देल गेल?
क. देवताक गुणक अनन्तता आ वर्णन-असमर्थता व्यक्त करबाक लेल
ख. लेखा-जोखा देबाक लेल
ग. भाषा-बाजार बताबय लेल
घ. पाठ्यक्रम सूची लेल
उत्तर: क. देवताक गुणक अनन्तता आ वर्णन-असमर्थता व्यक्त करबाक लेल
व्याख्या: असितगिरि काजर, समुद्र पात्र आदि रूपक देव-गुणक अपारता सूचित करैत अछि।

प्रश्न 2142. अंकुशी महादेब खण्डक मूल स्वर की अछि?
क. लोककथा, ग्राम-आस्था, तर्क आ श्रद्धाक संयोजन
ख. केवल आधुनिक विज्ञापन
ग. केवल व्याकरण
घ. केवल गजल नियम
उत्तर: क. लोककथा, ग्राम-आस्था, तर्क आ श्रद्धाक संयोजन
व्याख्या: लेख स्थान-गाथा मार्फत मिथिलाक लोकविश्वास आ सामुदायिक सुरक्षा-भाव बुझबैत अछि।

खण्ड २२० : विदेह-सदेह ३६ — नेशनल ट्रांसलेशन मिशन आ अनुवाद-कार्यशाला

प्रश्न 2143. डॉ. अजीत मिश्रक अनुसार राष्ट्रीय स्तरपर कतेक पोथीक अनुवादक निर्णय भेल छल?
क. ६३ पोथीक
ख. केवल ३ पोथीक
ग. १००० पोथीक
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. ६३ पोथीक
व्याख्या: स्रोतमे राष्ट्रीय स्तरपर ६३ पोथीक अनुवाद निर्णयक उल्लेख अछि।

प्रश्न 2144. ओहि ६३ मे कतेक अंग्रेजीसँ मैथिलीमे अनुवादित होयबाक छल?
क. नओ गोट
ख. एक गोट
ग. पचास गोट
घ. सभ ६३ गोट
उत्तर: क. नओ गोट
व्याख्या: स्रोत स्पष्ट कहैत अछि जे नौ गोट पोथी अंग्रेजीसँ मैथिलीमे अनुवाद कयल जाएत।

प्रश्न 2145. डॉ. भीमनाथ झा अनुवादक लेल कोन बात आवश्यक मानैत छथि?
क. टीमवर्क आ विषय-विशेषज्ञक सहभागिता
ख. एकल मनमानी
ग. केवल शब्दशः अनुवाद
घ. विषयक ज्ञानक निषेध
उत्तर: क. टीमवर्क आ विषय-विशेषज्ञक सहभागिता
व्याख्या: ओ पाठ्यक्रमक पोथीक अनुवाद लेल मैथिली, अंग्रेजी आ विषयक विशेषज्ञक टीम चाहैत छथि।

प्रश्न 2146. डॉ. प्रभात नारायण झाक मतमे अनुवाद कोना होयबाक चाही?
क. सहज, जाहिसँ मूल गप्प पाठक धरि पहुँचय
ख. जटिल आ अस्पष्ट
ग. मूल गप्प छिपाओनिहार
घ. केवल अलंकारिक
उत्तर: क. सहज, जाहिसँ मूल गप्प पाठक धरि पहुँचय
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे अनुवाद नव खिड़की खोलैत अछि, मुदा सहजता अनिवार्य अछि।

प्रश्न 2147. नेशनल ट्रांसलेशन मिशनक कार्यशाला कतय आयोजित भेल?
क. ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक मैथिली विभागमे
ख. दिल्ली हवाई अड्डा पर
ग. समुद्र तट पर
घ. सौराठ सभा मे
उत्तर: क. ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक मैथिली विभागमे
व्याख्या: स्रोत सप्त-दिवसीय कार्यशालाक आयोजन विश्वविद्यालय मैथिली विभागमे बतबैत अछि।

प्रश्न 2148. कार्यशालाक अवधि की छल?
क. ०१-०७-२०११ सँ ०८-०७-२०११ धरि
ख. केवल एक घंटा
ग. पूरा वर्ष
घ. १९०० सँ १९०१ धरि
उत्तर: क. ०१-०७-२०११ सँ ०८-०७-२०११ धरि
व्याख्या: दिनांक सहित सात-दिवसीय अनुवाद कार्यशाला स्रोतमे वर्णित अछि।

प्रश्न 2149. जी. ऑस्टीनक पोथीसँ कतेक तकनीकी शब्द चयनित भेल?
क. ११०० तकनीकी शब्द
ख. ७०० शब्द
ग. १० शब्द
घ. कोनो शब्द नहि
उत्तर: क. ११०० तकनीकी शब्द
व्याख्या: कन्स्टीच्यूशन ऑफ इण्डिया: कॉर्नर स्टोन ऑफ ए नेशनसँ ११०० तकनीकी शब्दक उल्लेख अछि।

प्रश्न 2150. एम. हरियम्माक दर्शन-शास्त्र पोथीसँ कतेक तकनीकी शब्द लेल गेल?
क. ७०० तकनीकी शब्द
ख. ११०० शब्द
ग. ६३ शब्द
घ. नओ शब्द
उत्तर: क. ७०० तकनीकी शब्द
व्याख्या: आउट लाइन्स ऑफ इण्डियन फिलॉसाफीसँ ७०० तकनीकी शब्दक मैथिली अनुवादक बात अछि।

प्रश्न 2151. कार्यशालामे विशेषज्ञक अलावा प्रतिभागी संख्या कोना बताओल गेल?
क. बीस गोट प्रतिभागी उपस्थित छलाह
ख. केवल दू गोट
ग. कोनो प्रतिभागी नहि
घ. हजार गोट
उत्तर: क. बीस गोट प्रतिभागी उपस्थित छलाह
व्याख्या: स्रोत बीस गोट प्रतिभागीक नाम सहित उपस्थिति बतबैत अछि।

प्रश्न 2152. एहि अनुवाद-कार्यशालाक मूल महत्व की अछि?
क. मैथिलीमे विषय-शब्दावली आ उच्च-शिक्षा सामग्री विकसित करबाक पहल
ख. केवल सांस्कृतिक नाच
ग. केवल भोज
घ. केवल पाग-विक्रय
उत्तर: क. मैथिलीमे विषय-शब्दावली आ उच्च-शिक्षा सामग्री विकसित करबाक पहल
व्याख्या: तकनीकी शब्द, पाठ्यक्रम पोथी आ टीमवर्क मैथिलीक शैक्षिक विस्तार लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २२१ : विदेह-सदेह ३६ — अण्टार्कटिका खिस्सा: पेंगुइनक विज्ञान

प्रश्न 2153. स्रोत अनुसार पेंगुइनक करीब कतेक जाति पाओल जाइत अछि?
क. १७ सँ २० जाति
ख. केवल एक जाति
ग. १००० जाति
घ. दू जाति
उत्तर: क. १७ सँ २० जाति
व्याख्या: खिस्सामे कहल गेल अछि जे पेंगुइनक लगभग १७ सँ २० जाति अछि।

प्रश्न 2154. पेंगुइन अण्टार्कटिका छोड़ि कतय-कतय भेटैत अछि?
क. दक्षिणी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिण अफ्रिका, गैलेपैगोस आदि दक्षिणी गोलार्धमे
ख. केवल हिमालयमे
ग. केवल गंगा तटपर
घ. केवल रेगिस्तानमे
उत्तर: क. दक्षिणी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिण अफ्रिका, गैलेपैगोस आदि दक्षिणी गोलार्धमे
व्याख्या: स्रोत पेंगुइनक व्यापक दक्षिणी गोलार्धीय वितरण बतबैत अछि।

प्रश्न 2155. सम्राट/एम्पेरर पेंगुइनक विशेषता की कहल गेल?
क. सभसँ पैघ आ भारी पेंगुइन, अण्टार्कटिकामे रहैत अछि
ख. सभसँ छोट पेंगुइन
ग. केवल उड़ैत अछि
घ. समुद्र नहि देखैत
उत्तर: क. सभसँ पैघ आ भारी पेंगुइन, अण्टार्कटिकामे रहैत अछि
व्याख्या: खिस्सा सम्राट पेंगुइनकेँ आकार-ओजनमे सबसँ पैघ बतबैत अछि।

प्रश्न 2156. सम्राट पेंगुइनक ऊँचाई आ ओजन लगभग कतेक कहल गेल?
क. १.१ मीटर आ ३५ कि.ग्रा. धरि
ख. १० सेंटीमीटर आ १ कि.ग्रा.
ग. ५ मीटर आ ५०० कि.ग्रा.
घ. कोनो माप नहि
उत्तर: क. १.१ मीटर आ ३५ कि.ग्रा. धरि
व्याख्या: स्रोत लगभग साढ़े तीन फीट ऊँचाई आ ३५ किलो ओजन बतबैत अछि।

प्रश्न 2157. सम्राट पेंगुइनक जैव वैज्ञानिक नाम की देल गेल?
क. ऑप्टेनोडाइटिस फोर्सटेराइ
ख. होमो सेपियन्स
ग. फाइकस रेलिजियोसा
घ. कैनिस लूपस
उत्तर: क. ऑप्टेनोडाइटिस फोर्सटेराइ
व्याख्या: खिस्सामे Aptenodytes forsteri नाम देल गेल अछि।

प्रश्न 2158. पेंगुइन मनुक्ख जकाँ कोना चलि सकैत अछि?
क. दू पएर सँ धर उठा कऽ नाकक सीधमे
ख. चारि पएर पर दौड़ि
ग. आकाशमे उड़ि
घ. साँप जकाँ रेंगि
उत्तर: क. दू पएर सँ धर उठा कऽ नाकक सीधमे
व्याख्या: स्रोत बतबैत अछि जे पेंगुइन दू पएर सँ सीधा चलैत अछि।

प्रश्न 2159. चलबाक समय ओकर छोट पछिला भाग/नाँगरि की काज करैत अछि?
क. शरीरक सन्तुलन राखबामे मदति करैत अछि
ख. गीत गाबैत अछि
ग. शिकार पकड़ैत अछि
घ. बर्फ पिघलाबैत अछि
उत्तर: क. शरीरक सन्तुलन राखबामे मदति करैत अछि
व्याख्या: पेंगुइनक छोट टेल चलबामे संतुलन दैत अछि।

प्रश्न 2160. पेंगुइनक पेट आ पीठक रंग कोना वर्णित अछि?
क. पेट उज्जर आ पीठ कारी
ख. पूरा लाल
ग. पूरा हरियर
घ. पेट कारी पीठ उज्जर नहि
उत्तर: क. पेट उज्जर आ पीठ कारी
व्याख्या: खिस्सामे कञ्चनक उत्तर आ वक्ताक पुष्टि पेंगुइनक विपरीत रंग-संरचना बतबैत अछि।

प्रश्न 2161. पेटक उज्जर रंगक उपयोगिता की कहल गेल?
क. समुद्री शिकारीक नजरिसँ बर्फक पृष्ठभूमिमे छिपबामे सहायता
ख. आगि जलाबय
ग. कविता लिखय
घ. धरती खोदय
उत्तर: क. समुद्री शिकारीक नजरिसँ बर्फक पृष्ठभूमिमे छिपबामे सहायता
व्याख्या: समुद्रक भीतर सँ ताकैत शिकारी लेल उज्जर पेट बर्फसँ मिलि जाइत अछि।

प्रश्न 2162. अण्टार्कटिका खिस्साक शैली की अछि?
क. संवाद मार्फत वैज्ञानिक जानकारी देबाक बाल/लोक-शिक्षात्मक शैली
ख. केवल शुष्क तालिका
ग. केवल कानूनी लेख
घ. केवल प्रेम-कथा
उत्तर: क. संवाद मार्फत वैज्ञानिक जानकारी देबाक बाल/लोक-शिक्षात्मक शैली
व्याख्या: सोनी, बब्बन, कञ्चन आदिक प्रश्नोत्तर सँ विज्ञान सरल कथात्मक रूपमे देल गेल अछि।

खण्ड २२२ : विदेह-सदेह ३६ — मैथिली गजलक दू युग आ काव्य-विन्यास

प्रश्न 2163. मैथिली गजलक “दू युग” शीर्षक मुख्यतः कोन बातक संकेत करैत अछि?
क. गजल-परम्पराक ऐतिहासिक विकास आ रूपान्तर
ख. केवल दूटा दिनक समाचार
ग. केवल नाटकक दू अंक
घ. केवल पागक दू रंग
उत्तर: क. गजल-परम्पराक ऐतिहासिक विकास आ रूपान्तर
व्याख्या: शीर्षक गजलकेँ स्थिर रूप नहि, बदलैत साहित्यिक परम्परा रूपमे देखबैत अछि।

प्रश्न 2164. गजल-विवेचनमे रदीफ-काफिया पर बल किएक अछि?
क. गजल-संरचनाक ध्वनि-साम्य आ आवृत्ति बुझाबय लेल
ख. केवल चित्रकारी लेल
ग. केवल पृष्ठ गिनबाक लेल
घ. केवल जीवनी लेल
उत्तर: क. गजल-संरचनाक ध्वनि-साम्य आ आवृत्ति बुझाबय लेल
व्याख्या: रदीफ-काफिया गजलकेँ पहचान देबयवला मूल संगीतात्मक संरचना छथि।

प्रश्न 2165. मैथिलीमे गजल अपनबैत समय बहरक प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. भाषाक ध्वनि-रचना अनुसार छन्द-संतुलन राखय पड़ैत अछि
ख. भाषा छोड़ि देबाक लेल
ग. कथा लिखबाक लेल
घ. कोनो कारण नहि
उत्तर: क. भाषाक ध्वनि-रचना अनुसार छन्द-संतुलन राखय पड़ैत अछि
व्याख्या: लेख बहर/छन्दक अनिवार्यता पर बल दैत अछि, मुदा मैथिली लयक अनुसार प्रयोगक गुंजाइश रखैत अछि।

प्रश्न 2166. गजलमे काफिया-युक्त शब्दक प्रकृति कोना बताओल गेल?
क. ओ बदलैत रहैत अछि, जखन रदीफ अपरिवर्तित रहि सकैत अछि
ख. ओ सदैव एके शब्द रहैत अछि
ग. ओ अनुपस्थित अनिवार्य अछि
घ. ओ केवल लेखकक नाम अछि
उत्तर: क. ओ बदलैत रहैत अछि, जखन रदीफ अपरिवर्तित रहि सकैत अछि
व्याख्या: स्रोत रदीफक स्थिरता आ काफियाक परिवर्तनीयता स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 2167. वार्णिक छन्दमे ह्रस्व-दीर्घक विचारक चर्चा किएक आएल?
क. मैथिली गजलमे वर्ण-संख्या संग ध्वनि-लयक सूक्ष्मता राखय लेल
ख. ह्रस्व-दीर्घ अप्रासंगिक सिद्ध करबय लेल
ग. केवल नाटक संवाद लेल
घ. केवल व्यंजन-सूची लेल
उत्तर: क. मैथिली गजलमे वर्ण-संख्या संग ध्वनि-लयक सूक्ष्मता राखय लेल
व्याख्या: लेख वैदिक/वार्णिक परम्पराक संदर्भसँ छन्द-शुद्धता पर बल दैत अछि।

प्रश्न 2168. “तकैत रहैत छी ऐ मेघ दिस” उदाहरणक प्रयोजन की अछि?
क. शब्दक ह्रस्व-दीर्घ विभाजन देखाबय लेल
ख. मेघक मौसम-रिपोर्ट
ग. कथा पात्र परिचय
घ. पुरस्कार घोषणा
उत्तर: क. शब्दक ह्रस्व-दीर्घ विभाजन देखाबय लेल
व्याख्या: उदाहरण ध्वन्यात्मक गणना कतेक सूक्ष्म होइत अछि, से देखबैत अछि।

प्रश्न 2169. गजल आ रुबाइ खण्ड एकसाथ राखलासँ कोन साहित्यिक दृष्टि देखाइत अछि?
क. मैथिलीमे बाहरी विधाक स्थानीय छन्दबोधसँ पुनर्रचना
ख. मैथिलीमे पद्य निषिद्ध अछि
ग. फारसी विधा अस्वीकार अछि
घ. केवल गद्य मान्य अछि
उत्तर: क. मैथिलीमे बाहरी विधाक स्थानीय छन्दबोधसँ पुनर्रचना
व्याख्या: लेख विदेशी-मूलक विधाकेँ मैथिली अनुकूल नियमसँ साधबाक प्रयास करैत अछि।

प्रश्न 2170. एहि काव्य-शास्त्रीय खण्डमे “नियम”क भूमिका की अछि?
क. रचनात्मक स्वतंत्रताकेँ लयात्मक अनुशासन देब
ख. कविताकेँ समाप्त करब
ग. लेखकक नाम छिपाब
घ. पाठककेँ भ्रमित करब
उत्तर: क. रचनात्मक स्वतंत्रताकेँ लयात्मक अनुशासन देब
व्याख्या: नियम कविताक ध्वनि, संतुलन आ पहचानक ढाँचा बनबैत अछि।

प्रश्न 2171. मैथिली गजलक विकासक लेल लेखकक अप्रत्यक्ष आग्रह की बुझाइत अछि?
क. अभ्यास शास्त्रीय समझदारी संग हो, केवल नाम धरि नहि
ख. गजल शब्द हटाओल जाए
ग. केवल अनुवाद छापल जाए
घ. कोनो छन्द नहि राखल जाए
उत्तर: क. अभ्यास शास्त्रीय समझदारी संग हो, केवल नाम धरि नहि
व्याख्या: बहर, काफिया, रदीफ, मात्रा—सभक चर्चा गजल लेखनक गंभीरता चाहैत अछि।

प्रश्न 2172. “दू युग” विमर्शक व्यापक अर्थ की अछि?
क. पुरान अनुकरणसँ आगू बढ़ि मैथिली संवेदना अनुकूल गजल-रूप गढ़ब
ख. केवल पुरान रूप दोहरायब
ग. गजलकेँ अनुवाद मात्र राखब
घ. काव्यक इतिहास नकारब
उत्तर: क. पुरान अनुकरणसँ आगू बढ़ि मैथिली संवेदना अनुकूल गजल-रूप गढ़ब
व्याख्या: शीर्षक आ नियम-विमर्श मिलि मैथिली गजलकेँ विकासशील विधा बनबैत अछि।

खण्ड २२३ : विदेह-सदेह ३६ — लिपि, डिजिटलता आ भाषा-संसाधनक सेतु

प्रश्न 2173. वर्डनेट, शब्दकोश आ डिजिटल स्रोतक चर्चा विदेह-सदेह ३६ मे कोन दिशा सूचित करैत अछि?
क. मैथिलीकेँ डिजिटल भाषा-संसाधनमे रूपान्तरित करबाक दिशा
ख. मैथिलीकेँ केवल मौखिक राखबाक दिशा
ग. डिजिटल माध्यमक निषेध
घ. केवल पाण्डुलिपि-पूजा
उत्तर: क. मैथिलीकेँ डिजिटल भाषा-संसाधनमे रूपान्तरित करबाक दिशा
व्याख्या: खण्ड भाषा-संसाधन, ऑनलाइन शब्दकोश, वर्डनेट आ यान्त्रिक अनुवादक सम्भावना जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2174. कल्याणी कोशक सीमा स्वीकार करब किएक जरूरी अछि?
क. स्रोत मानक होइतो वर्डनेट लेल पुनर्संरचना चाही
ख. मानक ग्रन्थ त्यागबाक लेल
ग. शब्दकोशक विरोध लेल
घ. कविता रोकबाक लेल
उत्तर: क. स्रोत मानक होइतो वर्डनेट लेल पुनर्संरचना चाही
व्याख्या: लेख स्रोतक सम्मान संग ओकर परियोजना-विशेष सीमा सेहो देखैत अछि।

प्रश्न 2175. ऑनलाइन शब्दकोश आ वर्डनेट बीच मुख्य भेद की अछि?
क. वर्डनेट अर्थ-सम्बन्ध, हैरार्की आ बहुभाषिक पर्याय जोड़ैत अछि
ख. दुनू पूर्णतः एके
ग. ऑनलाइन शब्दकोश नाटक अछि
घ. वर्डनेट केवल छवि अछि
उत्तर: क. वर्डनेट अर्थ-सम्बन्ध, हैरार्की आ बहुभाषिक पर्याय जोड़ैत अछि
व्याख्या: लेख विदेह शब्दकोश उपयोगी मानैत अछि, मुदा वर्डनेटक संरचना अधिक संबंधात्मक अछि।

प्रश्न 2176. यान्त्रिक अनुवादक उल्लेख मैथिलीक भविष्य लेल की संकेत करैत अछि?
क. भाषा कम्प्यूटरीकृत अन्तरभाषिक संचारमे प्रवेश कऽ सकैत अछि
ख. अनुवाद असम्भव अछि
ग. मशीन भाषा नष्ट करैत अछि
घ. केवल हाथसँ नकल मान्य अछि
उत्तर: क. भाषा कम्प्यूटरीकृत अन्तरभाषिक संचारमे प्रवेश कऽ सकैत अछि
व्याख्या: वर्डनेट मशीन अनुवादक आधारभूत डाटा बनि सकैत अछि।

प्रश्न 2177. तत्समकोश पर कामक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मैथिली शब्दभंडारक संस्कृत-सम्बद्ध तहकेँ व्यवस्थित करबाक लेल
ख. केवल पागक इतिहास लेल
ग. केवल भोजन-सूची लेल
घ. केवल नृत्य लेल
उत्तर: क. मैथिली शब्दभंडारक संस्कृत-सम्बद्ध तहकेँ व्यवस्थित करबाक लेल
व्याख्या: तत्सम शब्द मैथिली अर्थ-व्यवस्था आ भारतीय भाषिक सम्बन्धमे महत्त्वपूर्ण स्रोत छथि।

प्रश्न 2178. विविध भारतीय भाषामे शब्दक अर्थ उपलब्ध होयबासँ की लाभ होएत?
क. भाषा-तुलना, अनुवाद आ पर्याय-संबंध बुझय सुविधा
ख. केवल स्थानीय बाजार बंद होएत
ग. भाषा अलग-थलग रहत
घ. कोनो उपयोग नहि
उत्तर: क. भाषा-तुलना, अनुवाद आ पर्याय-संबंध बुझय सुविधा
व्याख्या: बहुभाषिक अर्थ-संबंध भारतीय भाषाक पारस्परिक सेतु बनबैत अछि।

प्रश्न 2179. वर्डनेट निर्माणमे “डाटा संकलन” चरणक अर्थ की अछि?
क. शब्द, अर्थ, पर्याय आ स्रोत-सामग्री जुटाओल जा रहल अछि
ख. वेबसाइट मिटाओल जा रहल अछि
ग. नाटक अभ्यास मात्र
घ. पुस्तकालय बन्द
उत्तर: क. शब्द, अर्थ, पर्याय आ स्रोत-सामग्री जुटाओल जा रहल अछि
व्याख्या: डिजिटल परियोजनाक पहिल आधार व्यवस्थित डाटा-संग्रह थिक।

प्रश्न 2180. एहि खण्डक डिजिटल दृष्टि पारम्परिक साहित्यसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. कोश, लेख, शोध आ लोक-शब्दकेँ तकनीकी डेटाबेसमे बदलैत अछि
ख. साहित्यकेँ नकारैत अछि
ग. केवल मनोरंजन बनबैत अछि
घ. केवल राजनीति करैत अछि
उत्तर: क. कोश, लेख, शोध आ लोक-शब्दकेँ तकनीकी डेटाबेसमे बदलैत अछि
व्याख्या: भाषाक पुरान स्रोतसभ डिजिटल संरचना लेल सामग्री बनैत अछि।

प्रश्न 2181. मैथिलीप्रेमी आ संगणकीय भाषाविज्ञान—दू लाभार्थी उल्लेखक अर्थ की अछि?
क. परियोजना सामाजिक उपयोग आ शोध/तकनीकी उपयोग दुनू साधैत अछि
ख. केवल विशेषज्ञक खिलौना अछि
ग. केवल आम लोकक गीतपुस्तिका अछि
घ. कोनो उपयोगकर्ता नहि
उत्तर: क. परियोजना सामाजिक उपयोग आ शोध/तकनीकी उपयोग दुनू साधैत अछि
व्याख्या: वर्डनेट आम पाठक आ भाषा-प्रौद्योगिकी दुनू लेल बनाओल जा रहल अछि।

प्रश्न 2182. भाषा-संसाधनक एहि विमर्शक मूल संदेश की अछि?
क. मैथिलीकेँ आधुनिक डिजिटल संरचनामे प्रतिष्ठित करब आवश्यक अछि
ख. मैथिली डिजिटल न हो
ग. शब्दकोश बेकार अछि
घ. अनुवाद छोड़ि देब
उत्तर: क. मैथिलीकेँ आधुनिक डिजिटल संरचनामे प्रतिष्ठित करब आवश्यक अछि
व्याख्या: वर्डनेट, शब्दकोश, अन्तर्जाल आ मशीन अनुवाद मिलि मैथिली भविष्यक आधार बनैत अछि।

खण्ड २२४ : विदेह-सदेह ३६ — परम्परा, विज्ञान आ आधुनिकता: समेकित पुनर्पाठ

प्रश्न 2183. विदेह-सदेह ३६ मे विद्यापति, वर्डनेट, अंकुशी महादेब आ अण्टार्कटिका एकसाथ किएक महत्त्वपूर्ण छथि?
क. ई खण्ड परम्परा, डिजिटल भाषा, लोक-आस्था आ विज्ञानकेँ एक ठाम पढ़बैत अछि
ख. ई सभ केवल यांत्रिक सूची अछि
ग. ई सभ असम्बद्ध विज्ञापन अछि
घ. ई सभ केवल नाटक पात्र अछि
उत्तर: क. ई खण्ड परम्परा, डिजिटल भाषा, लोक-आस्था आ विज्ञानकेँ एक ठाम पढ़बैत अछि
व्याख्या: विविध सामग्री खण्डकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

प्रश्न 2184. विद्यापति-विमर्श आ अंकुशी महादेब गाथा बीच साझा तंतु की अछि?
क. लोक-स्मृति आ सामाजिक दावाक आलोचनात्मक पढ़ाइ
ख. दुनू केवल समुद्री जीव पर अछि
ग. दुनू मशीन अनुवाद अछि
घ. दुनू वैज्ञानिक नाम-सूची अछि
उत्तर: क. लोक-स्मृति आ सामाजिक दावाक आलोचनात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: एकमे कवि-स्मृति, दोसरमे ग्राम-देवता; दुनू लोकविश्वास आ समाजक संरचना खोलैत अछि।

प्रश्न 2185. वर्डनेट आ अनुवाद-कार्यशाला बीच साझा उद्देश्य की अछि?
क. मैथिलीकेँ ज्ञान-भाषा आ तकनीकी भाषा बनायब
ख. मैथिलीकेँ केवल गीत-भाषा राखब
ग. मैथिलीकेँ बंद करब
घ. केवल विवाह-रीति लिखब
उत्तर: क. मैथिलीकेँ ज्ञान-भाषा आ तकनीकी भाषा बनायब
व्याख्या: दुनू परियोजना शब्दावली, अर्थ-संगठन आ ज्ञान-सम्प्रेषण सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 2186. अण्टार्कटिका पेंगुइन खिस्सा खण्डमे कोन नया आयाम जोड़ैत अछि?
क. बाल-सुलभ संवाद मार्फत विज्ञान-लोकशिक्षा
ख. केवल प्रेम-कथा
ग. केवल पाग-विमर्श
घ. केवल गजल नियम
उत्तर: क. बाल-सुलभ संवाद मार्फत विज्ञान-लोकशिक्षा
व्याख्या: विज्ञानक जानकारी संवादक सहारे सरल बनाओल गेल अछि।

प्रश्न 2187. गजल-शास्त्र आ विद्यापति-विमर्श दुनूमे कोन साझा साहित्यिक चिन्ता अछि?
क. रचना-रूपक सही समझ आ भ्रम-निराकरण
ख. केवल भोजनक चर्चा
ग. केवल सरकारी योजना
घ. केवल मौसम
उत्तर: क. रचना-रूपक सही समझ आ भ्रम-निराकरण
व्याख्या: एक खण्ड ऐतिहासिक दावा जाँचैत अछि, दोसर विधागत नियम स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 2188. भाषा-बाजार विमर्श आ वर्डनेट परियोजना कोना पूरक अछि?
क. एक भाषा-उद्योगक माँग रखैत अछि, दोसर डिजिटल भाषा-संरचना बनबैत अछि
ख. दुनू एक-दोसराक विरोध अछि
ग. दुनू केवल लोककथा अछि
घ. दुनू असंबद्ध पृष्ठ-सूची अछि
उत्तर: क. एक भाषा-उद्योगक माँग रखैत अछि, दोसर डिजिटल भाषा-संरचना बनबैत अछि
व्याख्या: मैथिलीक जीवित भविष्य लेल माध्यम-बाजार आ डिजिटल संसाधन दुनू जरूरी देखाओल गेल।

प्रश्न 2189. विदेह-सदेह ३६ क सामग्री पाठकसँ कोन प्रकारक सजगता माँगैत अछि?
क. जाति-दावा, भाषा-नीति, छन्द-नियम, विज्ञान आ आस्था सभ पर प्रश्नशील दृष्टि
ख. केवल रटना
ग. केवल पृष्ठ गिनना
घ. केवल नाम याद करब
उत्तर: क. जाति-दावा, भाषा-नीति, छन्द-नियम, विज्ञान आ आस्था सभ पर प्रश्नशील दृष्टि
व्याख्या: खण्ड विविध विषयक आलोचनात्मक अध्ययन चाहैत अछि, सतही सूचना नहि।

प्रश्न 2190. एहि खण्डमे “परम्परा” स्थिर वस्तु नहि किएक बुझाइत अछि?
क. विद्यापति, पाग, देवस्थान, छन्द आ शब्दकोश सभ पुनर्पाठमे बदलैत अछि
ख. परम्परा पर कोनो चर्चा नहि
ग. परम्परा केवल संग्रहालय अछि
घ. परम्परा असम्भव अछि
उत्तर: क. विद्यापति, पाग, देवस्थान, छन्द आ शब्दकोश सभ पुनर्पाठमे बदलैत अछि
व्याख्या: लेखसभ परम्पराकेँ गतिशील सामाजिक बहस रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 2191. एहि प्रश्नोत्तरीमे विदेह-सदेह ३६ सँ बनल प्रश्न सभ यांत्रिक सूचना सँ बचि किएक विषयपर केन्द्रित अछि?
क. क्योंकि स्रोतक असली महत्व विचार, तर्क, पात्र, परियोजना आ विधा-बोधमे अछि
ख. क्योंकि बाहरी सूचना मात्र महत्व रखैत अछि
ग. क्योंकि स्रोत उपलब्ध नहि
घ. क्योंकि प्रश्न बनाओल नहि जा सकैत
उत्तर: क. क्योंकि स्रोतक असली महत्व विचार, तर्क, पात्र, परियोजना आ विधा-बोधमे अछि
व्याख्या: गहिर अध्ययन लेल अवधारणा, संदर्भ आ अर्थ-संबंधपर प्रश्न जरूरी अछि।

प्रश्न 2192. विदेह-सदेह ३६ क समेकित सार की कहल जा सकैत अछि?
क. मैथिली संस्कृति केँ अतीत, लोकविश्वास, आधुनिक तकनीक, साहित्यिक विधा आ विज्ञानक संग जोड़निहार खण्ड
ख. केवल एकरंगी कविता-संग्रह
ग. केवल सरकारी विज्ञापन
घ. केवल परीक्षा-तालिका
उत्तर: क. मैथिली संस्कृति केँ अतीत, लोकविश्वास, आधुनिक तकनीक, साहित्यिक विधा आ विज्ञानक संग जोड़निहार खण्ड
व्याख्या: खण्डक व्यापकता मैथिली अध्ययनकेँ बहुविषयी आ जीवित बनबैत अछि।

खण्ड २२५ : विदेह-सदेह ३७ — रहमान राही ज्ञानपीठ समारोहक परिप्रेक्ष्य

प्रश्न 2193. रहमान राहीक ज्ञानपीठ समारोहक वर्णनमे लेखक सभसँ पहिने कोन बात रेखांकित करैत छथि?
क. समारोहक गरिमा आ समयानुशासन
ख. केवल भोजन-व्यवस्था
ग. रेल-यात्राक कठिनाई
घ. मुद्रण-त्रुटिक सूची
उत्तर: क. समारोहक गरिमा आ समयानुशासन
व्याख्या: वर्णनमे नियत समय, प्रधानमंत्रीक आगमन, मंचक व्यवस्था आ साहित्यिक गरिमाक संकेत प्रमुख अछि।

प्रश्न 2194. रहमान राहीकेँ सम्मानित करबाक प्रसंगमे सीताकान्त महापात्रक उद्गारक मुख्य अर्थ की छल?
क. राहीकेँ सम्मानित करि ज्ञानपीठ स्वयं सम्मानित भेल
ख. राही पुरस्कार स्वीकार नहि केलनि
ग. समारोह केवल राजनैतिक छल
घ. कविता पाठ रोकि देल गेल
उत्तर: क. राहीकेँ सम्मानित करि ज्ञानपीठ स्वयं सम्मानित भेल
व्याख्या: उद्गार राहीक साहित्यिक महत्ता आ ज्ञानपीठक गौरव दुनूकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2195. समारोहमे सरस्वती-वन्दना आ शास्त्रीय गायनक भूमिका की बुझाइत अछि?
क. साहित्यिक सम्मानकेँ सांस्कृतिक-आध्यात्मिक आरम्भ देब
ख. सभागार खाली करब
ग. पुरस्कार स्थगित करब
घ. कविता हटायब
उत्तर: क. साहित्यिक सम्मानकेँ सांस्कृतिक-आध्यात्मिक आरम्भ देब
व्याख्या: कार्यक्रमक आरम्भ वन्दना सँ भेल, जे साहित्यिक संस्कारक वातावरण बनबैत अछि।

प्रश्न 2196. प्रधानमंत्री द्वारा देल गेल सम्मानमे शॉल, प्रशस्ति-पत्र आ कांस्य-प्रतिमा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई साहित्यिक मान्यता आ राष्ट्रीय प्रतिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि
ख. ई केवल बाजारू वस्तु अछि
ग. ई नाटकक पोशाक अछि
घ. ई खेल पुरस्कारक नियम अछि
उत्तर: क. ई साहित्यिक मान्यता आ राष्ट्रीय प्रतिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि
व्याख्या: सम्मानक सामग्री कविक रचना-संसार केँ राष्ट्रीय स्तरपर स्वीकार करबाक प्रतीक अछि।

प्रश्न 2197. ज्ञानपीठ समारोहक वर्णनमे मंचपर उपस्थित साहित्यिक व्यक्तित्व सभक उल्लेख कोन काम करैत अछि?
क. कार्यक्रमक संस्थागत आ साहित्यिक प्रमाणिकता देखबैत अछि
ख. कथा-पात्रक भ्रम बनबैत अछि
ग. लोकगीतक ताल बतबैत अछि
घ. केवल वस्त्र-विवरण दैत अछि
उत्तर: क. कार्यक्रमक संस्थागत आ साहित्यिक प्रमाणिकता देखबैत अछि
व्याख्या: रवीन्द्र कालिया, सीताकान्त महापात्र आदि नाम समारोहक साहित्यिक संरचना स्थापित करैत अछि।

प्रश्न 2198. राही द्वारा नेहरू आ मनमोहन सिंहक पद-संबंधक उल्लेखक भाव की छल?
क. राष्ट्रीय निरन्तरता आ सम्मान पाबयक विशेष प्रसन्नता
ख. पुरस्कार अस्वीकारक घोषणा
ग. कश्मीरी भाषा छोड़बाक आग्रह
घ. कविता बंद करबाक संकेत
उत्तर: क. राष्ट्रीय निरन्तरता आ सम्मान पाबयक विशेष प्रसन्नता
व्याख्या: राही ओहि पदक ऐतिहासिक प्रतिष्ठा सँ पुरस्कार ग्रहणक अनुभवकेँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 2199. समारोहक अन्तमे रवीन्द्र कालियाक धन्यवाद ज्ञापन की संकेत करैत अछि?
क. कार्यक्रमक औपचारिक पूर्णता
ख. विवादक शुरुआत
ग. कविता-निषेध
घ. सभा-स्थगन
उत्तर: क. कार्यक्रमक औपचारिक पूर्णता
व्याख्या: साहित्यिक समारोहमे स्वागत, सम्मान, उद्गार आ धन्यवादक क्रम पूरा होइत अछि।

प्रश्न 2200. राहीक प्रतिनिधि कविताक हिन्दी अनुवाद प्रधानमंत्रीकेँ देल गेल—एहि तथ्यक अर्थ की अछि?
क. कश्मीरी कविता भारतीय भाषिक संवादमे प्रवेश करैत अछि
ख. कविता गुप्त राखल गेल
ग. अनुवाद अस्वीकार भेल
घ. कविता केवल मौखिक रहल
उत्तर: क. कश्मीरी कविता भारतीय भाषिक संवादमे प्रवेश करैत अछि
व्याख्या: अनुवाद राष्ट्रव्यापी पाठक समुदाय धरि कविता पहुँचाबयक माध्यम बनैत अछि।

प्रश्न 2201. ४०म ज्ञानपीठ समारोहक उल्लेखमे “५०म वर्षगाँठ”क प्रतीक्षा पर टिप्पणी कोन भाव दैत अछि?
क. समय, आयु आ साहित्यिक स्मृतिक नश्वरता
ख. केवल गणितीय अभ्यास
ग. प्रकाशकक विज्ञापन
घ. मंच-सज्जाक नियम
उत्तर: क. समय, आयु आ साहित्यिक स्मृतिक नश्वरता
व्याख्या: लेखक मानवीय जीवनक सीमितता आ समारोहक ऐतिहासिक क्षण दुनूकेँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 2202. एहि समारोह-वर्णनक साहित्यिक प्रयोजन की अछि?
क. कश्मीरी कविता आ राष्ट्रीय सम्मानक सांस्कृतिक क्षणकेँ मैथिली पाठक लग अनबाक
ख. केवल टिकट-प्रणाली समझाबय
ग. केवल पुरस्कार-राशि गिनाबय
घ. पाठककेँ पृष्ठ खोजबय कहब
उत्तर: क. कश्मीरी कविता आ राष्ट्रीय सम्मानक सांस्कृतिक क्षणकेँ मैथिली पाठक लग अनबाक
व्याख्या: वर्णन मैथिली पाठककेँ भारतीय भाषिक साहित्यक साझा मंचसँ जोड़ैत अछि।

खण्ड २२६ : विदेह-सदेह ३७ — अब्दुल रहमान राही: जीवन, कृति आ भाषा-स्थिति

प्रश्न 2203. रहमान राहीक परिचयमे हुनकर जन्म-तिथि देबाक अर्थ की अछि?
क. कविक ऐतिहासिक स्थान आ पीढ़ीगत संदर्भ स्पष्ट करब
ख. कविताक मात्रागणना करब
ग. नाटकक दृश्य बदलब
घ. शब्दकोश बनायब
उत्तर: क. कविक ऐतिहासिक स्थान आ पीढ़ीगत संदर्भ स्पष्ट करब
व्याख्या: जीवन-विवरण कविक साहित्यिक यात्रा केँ काल-संदर्भ प्रदान करैत अछि।

प्रश्न 2204. राहीक पहिल कविता-संग्रहकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटबाक उल्लेख कोन बात बतबैत अछि?
क. हुनकर आरम्भिक काव्यक मान्यता व्यापक छल
ख. कविता अप्रकाशित रहल
ग. हुनकर साहित्य अस्वीकार भेल
घ. ओ केवल आलोचक छलाह
उत्तर: क. हुनकर आरम्भिक काव्यक मान्यता व्यापक छल
व्याख्या: पुरस्कारक तथ्य राहीक काव्य-प्रतिभाक आरम्भिक स्वीकृति देखबैत अछि।

प्रश्न 2205. पद्मश्री आ एमिरेट्स फेलोशिपक उल्लेख राहीक व्यक्तित्वमे कोन स्तर जोड़ैत अछि?
क. राष्ट्रीय सम्मान आ शोध-सांस्कृतिक प्रतिष्ठा
ख. केवल निजी विवाद
ग. कथा-पात्रक विनोद
घ. लोकनृत्यक अभ्यास
उत्तर: क. राष्ट्रीय सम्मान आ शोध-सांस्कृतिक प्रतिष्ठा
व्याख्या: ई मान्यता कविक साहित्यिक, सांस्कृतिक आ अकादमिक प्रतिष्ठा बढबैत अछि।

प्रश्न 2206. “सनवुन्य साज”, “सुबहुक सोदा”, “कलाम-ए-राही” नामक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. राहीक रचनात्मक विस्तार आ काव्य-संसारक संकेत देबाक लेल
ख. केवल प्रकाशन-मूल्य बताबय लेल
ग. चित्रकला सूची लेल
घ. यात्रा-खर्च लेल
उत्तर: क. राहीक रचनात्मक विस्तार आ काव्य-संसारक संकेत देबाक लेल
व्याख्या: कृति-सूची पाठककेँ कविक मूल लेखन-क्षेत्रक परिचय दैत अछि।

प्रश्न 2207. राहीक आलोचना आ निबन्ध-पोथीक उल्लेखसँ की बुझाइत अछि?
क. ओ केवल कवि नहि, विचारशील गद्यकार सेहो छलाह
ख. ओ साहित्यसँ बाहर छलाह
ग. ओ नाटककार मात्र छलाह
घ. ओ भाषाविज्ञान-विरोधी छलाह
उत्तर: क. ओ केवल कवि नहि, विचारशील गद्यकार सेहो छलाह
व्याख्या: परिचय हुनका बहुआयामी साहित्यिक व्यक्तित्व रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 2208. राहीक उद्गारमे कश्मीरी भाषाकेँ राज्यस्तरपर मान्यता नहि भेटबाक बात की संकेत करैत अछि?
क. भाषा-राजनीति आ सांस्कृतिक अधिकारक पीड़ा
ख. भाषाक पूर्ण विजय
ग. कविता निरर्थकता
घ. पुरस्कारक विरोध
उत्तर: क. भाषा-राजनीति आ सांस्कृतिक अधिकारक पीड़ा
व्याख्या: राही राष्ट्रीय मान्यता आ प्रादेशिक उपेक्षा बीचक तनाव चिन्हित करैत छथि।

प्रश्न 2209. कश्मीरीकेँ केन्द्र सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त भाषा कहल गेल—एहि बातक महत्त्व की अछि?
क. भाषाक संवैधानिक/राष्ट्रीय स्वीकृति रेखांकित करैत अछि
ख. कश्मीरीकेँ लोकभाषा मानबासँ रोकैत अछि
ग. कविता हटबैत अछि
घ. सभागार बन्द करैत अछि
उत्तर: क. भाषाक संवैधानिक/राष्ट्रीय स्वीकृति रेखांकित करैत अछि
व्याख्या: कवि अपन भाषाक अस्मिता आ अधिकारक प्रश्न राष्ट्रीय स्तरपर उठबैत छथि।

प्रश्न 2210. मैथिली पाठमे राहीक परिचय देबाक व्यापक अर्थ की अछि?
क. एक भारतीय भाषा-साहित्य दोसर भारतीय भाषा-साहित्यसँ संवाद करैत अछि
ख. भाषासभ अलग-थलग रहैत अछि
ग. अनुवादक भूमिका खत्म होइत अछि
घ. कविता केवल मूलभाषामे बंद होइत अछि
उत्तर: क. एक भारतीय भाषा-साहित्य दोसर भारतीय भाषा-साहित्यसँ संवाद करैत अछि
व्याख्या: मैथिली अनुवाद कश्मीरी कविक विचार मैथिली पाठक धरि पहुँचबैत अछि।

प्रश्न 2211. राहीक जीवन-विवरण आ कविता साथ-साथ राखलासँ पाठककेँ की लाभ होइत अछि?
क. कविताक पृष्ठभूमि आ कविक सांस्कृतिक संघर्ष दुनू बुझाइत अछि
ख. केवल नाम कंठस्थ होइत अछि
ग. विषय गौण भऽ जाइत अछि
घ. अर्थ अस्पष्ट रहैत अछि
उत्तर: क. कविताक पृष्ठभूमि आ कविक सांस्कृतिक संघर्ष दुनू बुझाइत अछि
व्याख्या: परिचय कविता पढ़बाक सामाजिक आ ऐतिहासिक आधार बनबैत अछि।

प्रश्न 2212. राहीक परिचयक सार्थकता कोन बातमे अछि?
क. कश्मीरी आधुनिकता, पुरस्कार-मान्यता आ भाषा-अस्मिता केँ एकसाथ देखाबयमे
ख. केवल व्यक्तिनाम-सूची
ग. केवल समारोहक सजावट
घ. केवल गीतक ताल
उत्तर: क. कश्मीरी आधुनिकता, पुरस्कार-मान्यता आ भाषा-अस्मिता केँ एकसाथ देखाबयमे
व्याख्या: जीवन, कृति, सम्मान आ भाषा-प्रश्न मिलि राहीक समग्र छवि बनबैत अछि।

खण्ड २२७ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: नियति, अमरता आ क्षणबोध

प्रश्न 2213. “अपन नियतिसँ वाद आ अमरताक आशा आब छोड़ि दिअ” पंक्ति कविता कैं कोन दार्शनिक दिशा दैत अछि?

क. मानव-अहं आ अमरता-लालसाक त्याग

ख. केवल विजय-घोषणा

ग. प्रेम-पत्रक आरम्भ

घ. प्रकृति-वर्णन मात्र

उत्तर: क. मानव-अहं आ अमरता-लालसाक त्याग

व्याख्या: कविता मनुष्यकैं नियति सँ झगड़ा छोड़ि क्षणक सत्य स्वीकारबाक बात कहैत अछि।

प्रश्न 2214. “यदि जुटा ली किछु क्षण, तँ भेर भऽ जाउ तइमे” कथनक आशय की अछि?

क. सीमित जीवन-क्षणमे पूर्णता खोजू

ख. किछु क्षण व्यर्थ अछि

ग. जीवन अनन्त अछि

घ. क्षणक कोनो मूल्य नहि

उत्तर: क. सीमित जीवन-क्षणमे पूर्णता खोजू

व्याख्या: कविता क्षणभंगुर जीवनमे प्राप्त समयकैं भरि जिबबाक सन्देश दैत अछि।

प्रश्न 2215. कवितामे अमरता छोड़बाक आग्रह निराशा मात्र किएक नहि अछि?

क. ओ सीमित समयमे सजग जीवनक प्रस्ताव रखैत अछि

ख. ओ मृत्युक उत्सव मात्र अछि

ग. ओ काव्य-विरोधी अछि

घ. ओ भाषा-त्यागक संकेत अछि

उत्तर: क. ओ सीमित समयमे सजग जीवनक प्रस्ताव रखैत अछि

व्याख्या: कवि नश्वरता स्वीकारि जीवनक तीव्र अनुभवक ओर मुड़ैत छथि।

प्रश्न 2216. “नियतिसँ वाद”क बिम्ब मनुष्यक कोन प्रवृत्ति पर चोट करैत अछि?

क. भाग्य पर नियंत्रण चाहबाक अहंकारी प्रवृत्ति

ख. दया-भाव

ग. सामूहिक श्रम

घ. संगीत-प्रेम

उत्तर: क. भाग्य पर नियंत्रण चाहबाक अहंकारी प्रवृत्ति

व्याख्या: कविता मनुष्यक असम्भव नियंत्रण-कामना कैं प्रश्नांकित करैत अछि।

प्रश्न 2217. “अमरताक आशा” छूटिते कविता कोन मूल्य आगाँ अनैत अछि?

क. क्षणबोध आ आत्म-सचेतता

ख. धन-संग्रह

ग. राज्य-विस्तार

घ. मंच-सज्जा

उत्तर: क. क्षणबोध आ आत्म-सचेतता

व्याख्या: अनश्वरता छोड़ि वर्तमानक सघन अनुभव महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

प्रश्न 2218. एहि आरम्भिक भावभूमिमे कवि पाठकसँ कोन मानसिक तैयारी मांगैत छथि?

क. नश्वरता, संशय आ आत्म-परीक्षण स्वीकारबाक

ख. केवल उत्सव करबाक

ग. किसी पृष्ठक खोज करबाक

घ. शब्दकोश मात्र देखबाक

उत्तर: क. नश्वरता, संशय आ आत्म-परीक्षण स्वीकारबाक

व्याख्या: कविता सहज सांत्वना नहि, कठिन आत्मदर्शनक भूमिका बनबैत अछि।

प्रश्न 2219. “छाह सभ” शीर्षक आ अमरता-त्यागक सम्बन्ध कोना अछि?
क. देवता, दानव, अहं आ स्मृति सभ अंततः छाया बनि जाइत अछि
ख. शीर्षक केवल मौसमक सूचना अछि
ग. छाया अमरता सिद्ध करैत अछि
घ. छाया केवल चित्रकला अछि
उत्तर: क. देवता, दानव, अहं आ स्मृति सभ अंततः छाया बनि जाइत अछि
व्याख्या: शीर्षक जीवनक अस्थिर, प्रतिबिम्बित आ क्षणिक अस्तित्वक संकेत अछि।

प्रश्न 2220. कविताक आरम्भक स्वर कोना कहल जा सकैत अछि?
क. विचारोत्तेजक, विरक्त आ आत्मालोचक
ख. हास्यप्रधान मात्र
ग. युद्धोन्मादी
घ. बालगीत-समान
उत्तर: क. विचारोत्तेजक, विरक्त आ आत्मालोचक
व्याख्या: आरम्भ पाठककेँ अस्तित्वक गहिर प्रश्नमे प्रवेश करबैत अछि।

प्रश्न 2221. “भेर भऽ जाउ”क भाव मैथिली अनुवादमे की असर पैदा करैत अछि?
क. क्षणमे पूर्ण डूबि जाएबाक जीवन-उत्सुकता
ख. क्षणक उपेक्षा
ग. भागबाक संकेत
घ. निर्जीव आदेश
उत्तर: क. क्षणमे पूर्ण डूबि जाएबाक जीवन-उत्सुकता
व्याख्या: भाषिक रूप जीवनक सीमित समयमे गाढ़ अनुभवक आग्रह रचैत अछि।

प्रश्न 2222. एहि खण्डक मुख्य काव्य-बोध की अछि?
क. जीवनक क्षणभंगुरता स्वीकारि सजग अनुभवमे अर्थ खोजब
ख. केवल पुरस्कार-वर्णन
ग. केवल जीवनी-सूची
घ. केवल भाषा-नीति
उत्तर: क. जीवनक क्षणभंगुरता स्वीकारि सजग अनुभवमे अर्थ खोजब
व्याख्या: कविता अस्तित्वक नश्वरता सँ सृजनात्मक जागरूकता निकालैत अछि।

खण्ड २२८ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: पथ, बोन, आस्था आ शंका

प्रश्न 2223. “बस्तीक जइ पथपर चलैत रहलौं, ओ धँसि गेल घनगर बोनमे” बिम्ब की सूचित करैत अछि?
क. परिचित सामाजिक मार्गक खोइ जाएब
ख. सुखद नगर-योजना
ग. कृषि-विस्तार
घ. यात्रा-विज्ञापन
उत्तर: क. परिचित सामाजिक मार्गक खोइ जाएब
व्याख्या: पहिने स्पष्ट बुझाइत पथ अन्हार बोनमे धँसि गेल—ई भ्रमभंगक बिम्ब अछि।

प्रश्न 2224. आस्थाक कवच “शंकासभ द्वारा” भेद्य होयब कोन अनुभूति रचैत अछि?
क. विश्वासक रक्षा-कवच टूटबाक अनुभूति
ख. विश्वासक निर्विवाद विजय
ग. शंका समाप्ति
घ. कवच बनाबयक तकनीक
उत्तर: क. विश्वासक रक्षा-कवच टूटबाक अनुभूति
व्याख्या: कविता आस्था कैँ सुरक्षित कवच मानैत अछि, मुदा संशय ओकरा छेदि दैत अछि।

प्रश्न 2225. घनगर बोनक बिम्ब कवितामे कोन मनोदशा बनबैत अछि?
क. दिशाहीनता आ अस्तित्वगत अन्हार
ख. हल्का मनोरंजन
ग. साफ सड़क
घ. उत्सवी मेला
उत्तर: क. दिशाहीनता आ अस्तित्वगत अन्हार
व्याख्या: बोन परिचित पथकेँ गुम कऽ देत, जे मनक उलझनक छवि अछि।

प्रश्न 2226. “आँखि खुजिते हमर स्वप्नकेँ लागल आँखि”क आशय की अछि?
क. जागरणक क्षणमे स्वप्न स्वयं घायल/चेतित भऽ उठैत अछि
ख. आँखि बन्द करबाक सलाह
ग. सपना पूर्ण सुरक्षित अछि
घ. स्वप्नक कोनो अर्थ नहि
उत्तर: क. जागरणक क्षणमे स्वप्न स्वयं घायल/चेतित भऽ उठैत अछि
व्याख्या: पंक्ति जागरण, आघात आ स्वप्नभंगक सूक्ष्म अवस्था देखबैत अछि।

प्रश्न 2227. “बासन्ती युवा छाती”क सुनसान भऽ जाएब कोन परिवर्तनक बिम्ब अछि?
क. यौवन आ आशाक क्षय
ख. यौवनक उत्सव
ग. फूलक खेती
घ. वसन्तक व्यापार
उत्तर: क. यौवन आ आशाक क्षय
व्याख्या: बासन्ती छवि उजासक प्रतीक छल; सुनसान होयब ओहि उजासक टूटन अछि।

प्रश्न 2228. कवितामे शंका आ आस्था एकसाथ आबि किएक टकराव रचैत अछि?
क. विश्वासक पुरान संरचना आधुनिक संशय सँ टूटैत अछि
ख. दुनू एके अर्थक शब्द अछि
ग. दुनू अनुपस्थित अछि
घ. दुनू हास्यपात्र अछि
उत्तर: क. विश्वासक पुरान संरचना आधुनिक संशय सँ टूटैत अछि
व्याख्या: कवि मनुष्यक भीतरी द्वंद्व—विश्वास बनाम प्रश्न—केँ दृश्य बनबैत छथि।

प्रश्न 2229. पथक धँसि जाएब आ कवचक भेद्य होयब दुनू मिलि कोन अवस्था बनबैत अछि?
क. असुरक्षा आ दिशा-ह्रास
ख. स्थिर सुरक्षा
ग. भौतिक समृद्धि
घ. खेलक विजय
उत्तर: क. असुरक्षा आ दिशा-ह्रास
व्याख्या: सामाजिक मार्ग आ मानसिक सुरक्षा दुनू अस्थिर भऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2230. एहि बिम्बसमूहमे कविताक मूल संकट कोन अछि?
क. मनुष्यक भीतरक भरोसा आ बाहरी मार्ग दुनू टूटि रहल अछि
ख. केवल मौसम खराब अछि
ग. नगरमे यातायात बढ़ल अछि
घ. उत्सवक तयारी अछि
उत्तर: क. मनुष्यक भीतरक भरोसा आ बाहरी मार्ग दुनू टूटि रहल अछि
व्याख्या: बाहरी पथ आ भीतरी आस्था—दुनू संकटग्रस्त अछि।

प्रश्न 2231. “घनगर बोन” कैं केवल प्रकृति-वर्णन मानब किएक अधूरा होएत?
क. क्योंकि ई मानसिक अन्हार आ सामाजिक दिशा-भ्रमक प्रतीक अछि
ख. क्योंकि कविता प्रकृति नहि छुएत
ग. क्योंकि बोन शब्द निषिद्ध अछि
घ. क्योंकि ई शब्द विदेशी अछि
उत्तर: क. क्योंकि ई मानसिक अन्हार आ सामाजिक दिशा-भ्रमक प्रतीक अछि
व्याख्या: बिम्ब भौतिक जंगलसँ अधिक अस्तित्वक उलझन कहल जा सकैत अछि।

प्रश्न 2232. एहि खण्डक प्रश्न-केंद्र की अछि?
क. विश्वास टूटबाक बाद मनुष्यक दिशाहीन यात्रा
ख. सरल जीवनी
ग. पुरस्कार-राशि
घ. कविताक पंक्ति-संख्या
उत्तर: क. विश्वास टूटबाक बाद मनुष्यक दिशाहीन यात्रा
व्याख्या: कविताक मध्य भाग भरोसा, स्वप्न आ मार्गक नष्ट होयबाक त्रासदी खोलैत अछि।

खण्ड २२९ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: उजाड़, कौआ आ नामकरणक विडम्बना

प्रश्न 2233. “लावण्यमयी मेला” देखाइत अछि मुदा हाथमे “एकाध विचार” मात्र आओत—एहि विरोधाभासक अर्थ की अछि?
क. बाहरी सौन्दर्यक बीच भीतरी रिक्तता
ख. सभक हाथमे धन अछि
ग. मेला पूर्ण आध्यात्मिक समाधान अछि
घ. विचार अप्रासंगिक अछि
उत्तर: क. बाहरी सौन्दर्यक बीच भीतरी रिक्तता
व्याख्या: कविता देखाबैत अछि जे दृश्य आकर्षण बहुत अछि, मुदा पकड़ मे विचारक अल्पता अछि।

प्रश्न 2234. “असगर एकटा कौआ उजाड़मे” बिम्ब की बनबैत अछि?
क. निराश, उजाड़ आ अकेलापनक तीख छवि
ख. समृद्ध खेतीक चित्र
ग. विवाह-गीतक संकेत
घ. राजकीय विजय
उत्तर: क. निराश, उजाड़ आ अकेलापनक तीख छवि
व्याख्या: कौआ आ उजाड़ मिलि सभ्यता-पश्चात रिक्त परिदृश्य रचैत अछि।

प्रश्न 2235. चान-तरेगन गढ़बाक इच्छा कोन मानवीय अभिलाषा सूचित करैत अछि?
क. सृष्टि, सौन्दर्य आ ब्रह्माण्डपर सृजनात्मक स्वामित्वक चाह
ख. केवल खगोल-परीक्षा
ग. धान रोपबाक इच्छा
घ. मेला लगायब
उत्तर: क. सृष्टि, सौन्दर्य आ ब्रह्माण्डपर सृजनात्मक स्वामित्वक चाह
व्याख्या: कवि पहिने चान-तारा गढ़बाक चाह राखैत छलाह—ई विराट सृजन-कामना अछि।

प्रश्न 2236. “आब माथ भुका रहल छी, अपन कोनो नामकरण तँ करी” कथनक विडम्बना की अछि?
क. विराट सृजनक बदला आत्म-पहिचानक छोट, अस्थिर संघर्ष बचल अछि
ख. कवि नाम पहिले सँ निश्चित अछि
ग. सृजन-विस्तार बढ़ि गेल
घ. नामक कोनो मूल्य नहि
उत्तर: क. विराट सृजनक बदला आत्म-पहिचानक छोट, अस्थिर संघर्ष बचल अछि
व्याख्या: चन्द्र-तारा गढ़बाक स्वप्न सँ आदमी अपन नाम धरि सीमित भऽ गेल।

प्रश्न 2237. कौआक अकेलापन आ नामकरणक व्यग्रता बीच कोन सम्बन्ध अछि?
क. उजाड़ संसारमे व्यक्ति अपन अस्तित्वक नाम खोजैत अछि
ख. दुनू असंबद्ध हास्य-चित्र अछि
ग. कौआ नामकरण करैत अछि
घ. उजाड़मे कोनो आत्मचिन्ता नहि
उत्तर: क. उजाड़ संसारमे व्यक्ति अपन अस्तित्वक नाम खोजैत अछि
व्याख्या: अकेलापन मनुष्यकेँ आत्म-पहिचानक संकट धरि अनैत अछि।

प्रश्न 2238. लावण्यमयी मेला आ उजाड़ कौआक एकसाथ उपस्थिति कविताक कोन गुण देखबैत अछि?
क. विरोधी बिम्बसँ जीवनक विसंगति रचना
ख. एकरूपता मात्र
ग. केवल ग्रामीण वर्णन
घ. गीतक तालिका
उत्तर: क. विरोधी बिम्बसँ जीवनक विसंगति रचना
व्याख्या: कवि सौन्दर्य आ उजाड़ केँ संग-संग राखि आधुनिक मनक टूटन देखबैत छथि।

प्रश्न 2239. “एकाध विचार” हाथमे आओत—ई पंक्ति बौद्धिक स्तरपर की संकेत करैत अछि?
क. बहुत दृश्य-उत्तेजना बीच सार्थक विचारक दुर्लभता
ख. विचारक असीम संग्रह
ग. पुस्तकालयक सूची
घ. कविताक अंत
उत्तर: क. बहुत दृश्य-उत्तेजना बीच सार्थक विचारक दुर्लभता
व्याख्या: आधुनिक अनुभवक भीड़मे पकड़ योग्य विचार बहुत कम रहि जाइत अछि।

प्रश्न 2240. कवितामे नामकरणक आग्रह अस्तित्वगत किएक अछि?
क. नाम व्यक्ति केँ अर्थ आ पहचान देबाक अंतिम चेष्टा बनैत अछि
ख. नाम केवल पुरस्कारक भाग अछि
ग. नाम अनावश्यक अछि
घ. नाम पृष्ठ-सूचक अछि
उत्तर: क. नाम व्यक्ति केँ अर्थ आ पहचान देबाक अंतिम चेष्टा बनैत अछि
व्याख्या: जब बाहरी सृष्टि हाथसँ छूटल, व्यक्ति अपन नाम धरि लौटैत अछि।

प्रश्न 2241. “चान-तरेगन” सँ “अपन नाम” धरि यात्रा की कहल जा सकैत अछि?
क. विराट स्वप्नसँ संकुचित आत्म-संकटक यात्रा
ख. छोटसँ विराट यात्रा
ग. केवल मौसम-वर्णन
घ. भाषा-सूची
उत्तर: क. विराट स्वप्नसँ संकुचित आत्म-संकटक यात्रा
व्याख्या: कविता मनुष्यक आकांक्षा-संकुचनक करुण चित्रण करैत अछि।

प्रश्न 2242. एहि खण्डक मूल भाव-सूत्र की अछि?
क. बाहरी आकर्षणक बीच भीतरी उजाड़ आ पहचानक बेचैनी
ख. केवल उत्सव
ग. केवल जीवनी
घ. केवल ऐतिहासिक तारीख
उत्तर: क. बाहरी आकर्षणक बीच भीतरी उजाड़ आ पहचानक बेचैनी
व्याख्या: कवि व्यक्ति आ संसारक बीच गहिर असंगति खोलैत छथि।

खण्ड २३० : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: विश्वास, चैतन्य, देवता आ दानव

प्रश्न 2243. “सभटा विश्वास घाटीक मौलायल हरियरी सन” बिम्ब कोन स्थिति सूचित करैत अछि?
क. विश्वासक मुरझा जाएब आ जीवन-रसक घटब
ख. विश्वासक नितांत हरियर विजय
ग. घाटीक पर्यटन-वर्णन
घ. खेतीक उत्पादकता
उत्तर: क. विश्वासक मुरझा जाएब आ जीवन-रसक घटब
व्याख्या: मौलायल हरियरी भरोसाक क्षीण होयबक रूपक बनैत अछि।

प्रश्न 2244. “सभटा चैतन्य खिसियायल साँप सन” कहबासँ मनक कोन रूप उभरैत अछि?
क. क्रुद्ध, अस्थिर आ विषाक्त सजगता
ख. शांत समाधि
ग. बालसुलभ खेल
घ. निर्जीव पत्थर
उत्तर: क. क्रुद्ध, अस्थिर आ विषाक्त सजगता
व्याख्या: चैतन्य जीवनदायी नहि, खिसियायल साँप जेकाँ भयावह बनैत अछि।

प्रश्न 2245. “सभटा देवता हमर अपन छाह छथि” पंक्ति कोन दार्शनिक बात कहैत अछि?
क. पूज्य आदर्श सेहो आत्म-प्रक्षेपण भऽ सकैत अछि
ख. देवता पूर्णतः बाहरी वस्तु छथि
ग. छाया असत्य नहि होइत
घ. कवि देवता सूची बनबैत छथि
उत्तर: क. पूज्य आदर्श सेहो आत्म-प्रक्षेपण भऽ सकैत अछि
व्याख्या: कविता देवता कें मनुष्यक भीतरी छाया/प्रतिबिम्ब रूपमे देखैत अछि।

प्रश्न 2246. “दानव हमर अहं केर कनिया-पुतड़ा”क आशय की अछि?
क. दानवी छवि सेहो अहंकारक बनाओल खेलौना अछि
ख. दानव स्वतंत्र भूगोल अछि
ग. अहं पूर्ण पवित्र अछि
घ. कनिया-पुतड़ा पुरस्कार अछि
उत्तर: क. दानवी छवि सेहो अहंकारक बनाओल खेलौना अछि
व्याख्या: दानव मनुष्यक अहं सँ बनल आ संचालित छवि बनैत अछि।

प्रश्न 2247. देवता आ दानव दुनूकेँ आत्म-संबंधी बनाओलासँ कविता कोन दृष्टि दैत अछि?
क. बाहरी नैतिक द्वैतक भीतरी मनोवैज्ञानिक पुनर्पाठ
ख. धार्मिक प्रश्न समाप्त
ग. कथा बालगीत बनल
घ. कवि मौन भेल
उत्तर: क. बाहरी नैतिक द्वैतक भीतरी मनोवैज्ञानिक पुनर्पाठ
व्याख्या: कवि देवत्व आ दानवत्व दुनूकेँ मनुष्यक भीतरक छाया रूपमे पढ़ैत छथि।

प्रश्न 2248. विश्वासक मुरझायल हरियरी आ चैतन्यक खिसियायल साँप मिलि कोन संकट देखबैत अछि?
क. आध्यात्मिक थकान आ मानसिक विषमता
ख. पूर्ण शांति
ग. समृद्ध बगीचा
घ. कृषि-महोत्सव
उत्तर: क. आध्यात्मिक थकान आ मानसिक विषमता
व्याख्या: भरोसा क्षीण अछि आ चेतना विषाक्त; ई आधुनिक संकटक चित्र अछि।

प्रश्न 2249. “छाह” शब्दक पुनरावृत्ति शीर्षकसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. सभ उच्च-मूल्य प्रतीक अंततः मनुष्यक छाया ठहरैत अछि
ख. छाया केवल प्रकाश-विज्ञान अछि
ग. शीर्षक अलग विषय अछि
घ. छाया अनुपस्थित अछि
उत्तर: क. सभ उच्च-मूल्य प्रतीक अंततः मनुष्यक छाया ठहरैत अछि
व्याख्या: शीर्षक देवता, दानव, अहं, विश्वास सभक आभासी स्वरूप खोलैत अछि।

प्रश्न 2250. कवितामे अहंकारक आलोचना कोन पंक्तिमे तीव्र अछि?
क. दानवकेँ अहं केर कनिया-पुतड़ा कहबामे
ख. कौआक वर्णनमे मात्र
ग. समारोह-वर्णनमे
घ. जन्म-तिथिमे
उत्तर: क. दानवकेँ अहं केर कनिया-पुतड़ा कहबामे
व्याख्या: दानव अहंकारक खिलौना बनल—ई आत्म-महिमाक उपहास अछि।

प्रश्न 2251. चैतन्यक साँप-बिम्ब पाठकमे कोन अनुभूति जगबैत अछि?
क. सजगता सेहो भयावह आ आक्रामक भऽ सकैत अछि
ख. सजगता सदैव कोमल अछि
ग. साँप केवल सजावट
घ. भय अनुपस्थित अछि
उत्तर: क. सजगता सेहो भयावह आ आक्रामक भऽ सकैत अछि
व्याख्या: चेतना जहरीली आ खिसियायल बनि जाए तँ मुक्ति नहि, संकट बनैत अछि।

प्रश्न 2252. एहि खण्डक मूल काव्य-सूत्र की अछि?
क. बाहरी देव-दानव वास्तवमे मनुष्यक भीतरक छाया आ अहंकारक खेल छथि
ख. केवल धार्मिक कथा
ग. केवल जीव-जंतु वर्णन
घ. केवल समारोह-रिपोर्ट
उत्तर: क. बाहरी देव-दानव वास्तवमे मनुष्यक भीतरक छाया आ अहंकारक खेल छथि
व्याख्या: कविता नैतिक प्रतीकसभ केँ आंतरिक मनोवैज्ञानिक रूपमे उलटि पढ़ैत अछि।

खण्ड २३१ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: समाज, संत, नाओ आ अन्हार

प्रश्न 2253. “सभा भवन भरल बुझू बानरक खौँ-खौँ सँ” पंक्ति समाजक कोन आलोचना करैत अछि?
क. सार्वजनिक विमर्शक शोरगुल आ अविवेक
ख. संतुलित विद्वत संवाद
ग. पूर्ण मौन साधना
घ. संगीतक रियाज
उत्तर: क. सार्वजनिक विमर्शक शोरगुल आ अविवेक
व्याख्या: सभा भवनक शोर बानरक आवाज जेकाँ चित्रित अछि—ई विडम्बना अछि।

प्रश्न 2254. “सन्तक पहिरनक लेल ताकू बोने-बोन” कथनक अर्थ की अछि?
क. संतत्वक बाहरी पोशाक खोजबा पर व्यंग्य
ख. संत सहज उपलब्ध छथि
ग. बोनमे केवल वस्त्र पसारल अछि
घ. समाज पूर्ण पवित्र अछि
उत्तर: क. संतत्वक बाहरी पोशाक खोजबा पर व्यंग्य
व्याख्या: कविता खाँटी संतत्वक अभाव आ बाहरी वेशभूषाक खोजपर कटाक्ष करैत अछि।

प्रश्न 2255. “केहन अछि नाओक खेबनाइ, कतय तँ अछि किनार!” पंक्ति कोन संकट व्यक्त करैत अछि?
क. दिशाहीन यात्रा आ उद्धारक अनिश्चितता
ख. सुरक्षित बंदरगाह
ग. सफल व्यापार
घ. उत्सवक नाव-यात्रा
उत्तर: क. दिशाहीन यात्रा आ उद्धारक अनिश्चितता
व्याख्या: नाओ चलि रहल अछि मुदा किनार स्पष्ट नहि—ई अस्तित्वगत असुरक्षा अछि।

प्रश्न 2256. “देशांस भोथलेलक नाओकेँ अन्हारमे” वाक्यांश कोन बिम्ब रचैत अछि?
क. राष्ट्र/प्रदेशक दिशाहीन आ क्षतिग्रस्त यात्रा
ख. पूर्ण प्रकाशमान विकास
ग. खेलक विजय
घ. चित्रकला पाठ
उत्तर: क. राष्ट्र/प्रदेशक दिशाहीन आ क्षतिग्रस्त यात्रा
व्याख्या: नाओ अन्हारमे अछि आ भोथर/क्षतिग्रस्त; सामूहिक संकटक बिम्ब अछि।

प्रश्न 2257. सभा भवन, संतक पहिरन आ नाओ—तीनू बिम्ब मिलि कोन सामाजिक परिदृश्य बनबैत अछि?
क. शोर, ढोंग आ दिशाहीनता
ख. शांति, सत्य आ किनार
ग. केवल प्रकृति-वर्णन
घ. केवल निजी प्रेम
उत्तर: क. शोर, ढोंग आ दिशाहीनता
व्याख्या: तीनू छवि सार्वजनिक जीवनक विघटन देखबैत अछि।

प्रश्न 2258. कवितामे “किनार” शब्दक प्रतीकात्मक अर्थ की अछि?
क. सुरक्षा, समाधान आ लक्ष्य
ख. केवल नदीक तट
ग. मंचक पर्दा
घ. पुरस्कारक कागज
उत्तर: क. सुरक्षा, समाधान आ लक्ष्य
व्याख्या: किनार नहि मिलब जीवन-यात्राक अस्थिरता सूचित करैत अछि।

प्रश्न 2259. बानर-शोरक बिम्ब कविताक भाषा कँ कोना बनबैत अछि?
क. तीख, व्यंग्यात्मक आ दृश्यात्मक
ख. निरपेक्ष शुष्क
ग. केवल आँकड़ामूलक
घ. मौन-प्रधान
उत्तर: क. तीख, व्यंग्यात्मक आ दृश्यात्मक
व्याख्या: कवि सभाक विवेकहीन कोलाहल कँ पशु-ध्वनिसँ तुलना करैत छथि।

प्रश्न 2260. संतक पहिरनक खोज धार्मिकता पर कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. क्या समाजमे असल संतत्व बचल अछि वा केवल वेश बचल?
ख. कतेक वस्त्र महँग अछि
ग. कौन रंग श्रेष्ठ
घ. कपड़ा-गहना मुख्य अछि
उत्तर: क. क्या समाजमे असल संतत्व बचल अछि वा केवल वेश बचल?
व्याख्या: कविता आडम्बर बनाम आंतरिक साधुताक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 2261. अन्हारमे नाओ चलबाक बिम्ब सामूहिक नियतिकेँ कोना देखबैत अछि?
क. समुदाय अज्ञात दिशा आ संकटमे बहि रहल अछि
ख. समुदाय पूर्ण सुरक्षित अछि
ग. अन्हार अनुपस्थित अछि
घ. नाओ स्थिर अछि
उत्तर: क. समुदाय अज्ञात दिशा आ संकटमे बहि रहल अछि
व्याख्या: नाओक अन्हार सामूहिक असुरक्षा आ नेतृत्व-संकटक संकेत अछि।

प्रश्न 2262. एहि खण्डक मुख्य सामाजिक आलोचना की अछि?
क. समाज शोर, छद्म-संतत्व आ दिशाहीन नेतृत्वक बीच फँसल अछि
ख. समाज पूर्ण संतुलित अछि
ग. कविता केवल प्रकृति गीत अछि
घ. समारोहक सफलता मात्र विषय अछि
उत्तर: क. समाज शोर, छद्म-संतत्व आ दिशाहीन नेतृत्वक बीच फँसल अछि
व्याख्या: कविता सामाजिक संस्थासभक खोखलापन पर तीक्ष्ण टिप्पणी करैत अछि।

खण्ड २३२ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: नटुआ, नग्न नाच आ आगि-खायबला राही

प्रश्न 2263. “हे रौ नटुआ, नाच निर्वस्त्र चारू कात ओकर” पंक्ति कोन प्रकारक नाटकीयता रचैत अछि?
क. कटु, विद्रोही आ उघाड़ू सार्वजनिक प्रदर्शन
ख. शिष्ट दरबारी नृत्य
ग. बाल-क्रीड़ा
घ. शांत ध्यान
उत्तर: क. कटु, विद्रोही आ उघाड़ू सार्वजनिक प्रदर्शन
व्याख्या: कवि नटुआकेँ निर्वस्त्र नाचक आदेश दैत छथि—ई सामाजिक आवरण उघाड़बाक प्रतीक अछि।

प्रश्न 2264. निर्वस्त्र नाचक बिम्ब कोन अर्थमे पढ़ल जा सकैत अछि?
क. छल-कपट आ सभ्यताक आवरण उतारबाक काव्यिक हिंमत
ख. नृत्य-पोशाकक सूची
ग. विनोद मात्र
घ. समारोहक नियम
उत्तर: क. छल-कपट आ सभ्यताक आवरण उतारबाक काव्यिक हिंमत
व्याख्या: नग्नता सत्यक कठोर अनावरण बनैत अछि, अश्लीलता मात्र नहि।

प्रश्न 2265. “राही तँ आगि-खायबला बताह अछि” आत्म-छविमे कोन गुण अछि?
क. कवि स्वयंकेँ जोखिम उठाबय बला उन्मत्त सत्यकर्मी रूपमे देखैत छथि
ख. कवि शांत लिपिक छथि
ग. कवि मंच छोड़ि गेलाह
घ. कवि कविता अस्वीकार करैत छथि
उत्तर: क. कवि स्वयंकेँ जोखिम उठाबय बला उन्मत्त सत्यकर्मी रूपमे देखैत छथि
व्याख्या: आगि खायब असम्भव साहस आ आत्म-विनाशक उत्कटता सूचित करैत अछि।

प्रश्न 2266. नटुआक संबोधन कविता केँ कोन दिशा दैत अछि?
क. पाठक/समाजकेँ सीधे झकझोरनिहार नाटकीय संवाद
ख. मौन आत्मकथा
ग. केवल रिपोर्ट
घ. गणितीय विश्लेषण
उत्तर: क. पाठक/समाजकेँ सीधे झकझोरनिहार नाटकीय संवाद
व्याख्या: अंतिम संबोधन कविता केँ तीव्र मंचीयता आ चुनौती दैत अछि।

प्रश्न 2267. आगि-खायबला छवि कविताक पूर्व संकटसभसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. विश्वास-क्षय आ सामाजिक शोरक बीच कवि आगिक जोखिम उठबैत अछि
ख. संकट समाप्त भऽ गेल
ग. आगि केवल खाना पकबैत अछि
घ. कवि निरपेक्ष दर्शक अछि
उत्तर: क. विश्वास-क्षय आ सामाजिक शोरक बीच कवि आगिक जोखिम उठबैत अछि
व्याख्या: कवि संकट देखलाक बाद आगिसँ टकराबय बला छवि गढ़ैत छथि।

प्रश्न 2268. “बताह” शब्दक प्रयोग कविक विद्रोहकेँ कोना रंग दैत अछि?
क. सामान्य विवेक सँ परे सत्य-बोलबाक उन्माद
ख. अज्ञानक प्रशंसा
ग. भयक स्वीकार
घ. समारोहक नियम
उत्तर: क. सामान्य विवेक सँ परे सत्य-बोलबाक उन्माद
व्याख्या: बताहपन सामाजिक मर्यादा तोड़ि कठोर सच कहबाक क्षमता बनैत अछि।

प्रश्न 2269. कविताक अन्तिम स्वर की कहल जा सकैत अछि?
क. आत्मदाह, व्यंग्य आ अनावरणक विद्रोही स्वर
ख. सरल आशीर्वाद
ग. पूर्ण समाधान
घ. मधुर लोरी
उत्तर: क. आत्मदाह, व्यंग्य आ अनावरणक विद्रोही स्वर
व्याख्या: अंतिम पंक्तिमे समाधान नहि, बल्कि ज्वलन्त प्रतिरोध अछि।

प्रश्न 2270. नटुआ आ राहीक सम्बन्ध कोना समझल जा सकैत अछि?
क. नटुआ समाजक अभिनय करे, राही आगिक सत्य खायबला कवि छथि
ख. दुनू इतिहासकार छथि
ग. दुनू पुरस्कार-प्रदाता छथि
घ. दुनू मौन दर्शक छथि
उत्तर: क. नटुआ समाजक अभिनय करे, राही आगिक सत्य खायबला कवि छथि
व्याख्या: नटुआ प्रदर्शनक प्रतीक, राही दाहक साक्षीक प्रतीक बनैत छथि।

प्रश्न 2271. निर्वस्त्र नाच आ आगि-खायब—दुनू बिम्ब मिलि कोन प्रभाव रचैत अछि?
क. कविताक तीव्र, असुविधाजनक सत्योन्मुख समाप्ति
ख. मंद मनोरंजन
ग. कोमल प्रकृति-चित्र
घ. सरकारी घोषणा
उत्तर: क. कविताक तीव्र, असुविधाजनक सत्योन्मुख समाप्ति
व्याख्या: दुनू छवि आवरण-भंजन आ जोखिमक भाषा अछि।

प्रश्न 2272. एहि अन्तिम खण्डक मूल अर्थ की अछि?
क. कवि सामाजिक अन्हारक सामने मुखौटा उतारि आगि-समान सत्यक सामना करैत छथि
ख. कवि केवल समारोहक विवरण दैत छथि
ग. कविता पृष्ठ-सूची बनि जाइत अछि
घ. नटुआक पोशाक मुख्य विषय अछि
उत्तर: क. कवि सामाजिक अन्हारक सामने मुखौटा उतारि आगि-समान सत्यक सामना करैत छथि
व्याख्या: अन्तिम पंक्तिसभ कविता कैं विद्रोही आत्म-साक्ष्य मे बदलैत अछि।

खण्ड २३३ : विदेह-सदेह ३७ — अनुवाद-प्रक्रिया: कश्मीरीसँ अंग्रेजी, अंग्रेजीसँ मैथिली

प्रश्न 2273. “कश्मीरीसँ अंग्रेजी आ अंग्रेजीसँ मैथिली” अनुवाद-शृंखला कोन बात स्पष्ट करैत अछि?
क. कविता बहुभाषिक सेतु मार्फत मैथिली पाठक धरि पहुँचल
ख. कविता अनुवादित नहि भेल
ग. कविता केवल संस्कृतमे छल
घ. कविता मौखिक रहि गेल
उत्तर: क. कविता बहुभाषिक सेतु मार्फत मैथिली पाठक धरि पहुँचल
व्याख्या: स्रोत अनुवादक शृंखला देत अछि, जे भाषिक मध्यस्थताक महत्त्व देखबैत अछि।

प्रश्न 2274. भारतीय ज्ञानपीठ आ अनुवाद-साभारक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मूल/मध्य स्रोतक सम्मान आ पाठ-प्रमाणिकता लेल
ख. विज्ञापन लेल मात्र
ग. भोजन सूची लेल
घ. गीतक ताल लेल
उत्तर: क. मूल/मध्य स्रोतक सम्मान आ पाठ-प्रमाणिकता लेल
व्याख्या: अनुवादक नैतिकता मे स्रोत आ साभार स्पष्ट करब जरूरी अछि।

प्रश्न 2275. कश्मीरी कविताकेँ मैथिलीमे पढ़बाक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?
क. भारतीय भाषासभक अनुभव परस्पर साझा होइत अछि
ख. भाषासभक दूरी बढ़ैत अछि
ग. कविता समाप्त होइत अछि
घ. अनुवाद असम्भव सिद्ध होइत अछि
उत्तर: क. भारतीय भाषासभक अनुभव परस्पर साझा होइत अछि
व्याख्या: मैथिली अनुवाद कश्मीरी संवेदना केँ मिथिला पाठकक अनुभव-संसारमे लैत अछि।

प्रश्न 2276. मध्य-भाषा अंग्रेजी होयबासँ अनुवादमे कोन सजगता चाही?
क. अर्थ, बिम्ब आ स्वरक दोहर मध्यस्थता बुझब
ख. मूलक आवश्यकता नहि
ग. बिम्ब हटायब जरूरी
घ. कविता गद्य बनायब अनिवार्य
उत्तर: क. अर्थ, बिम्ब आ स्वरक दोहर मध्यस्थता बुझब
व्याख्या: द्वि-स्तरीय अनुवादमे अर्थ-सरणि आ सांस्कृतिक बारीकी पर ध्यान चाही।

प्रश्न 2277. मैथिली अनुवादमे “छाह”, “अन्हार”, “नटुआ” जेकाँ शब्द किएक प्रभावी छथि?
क. ओ स्थानीय भाषिक ऊर्जा सँ मूल संवेदना पुनर्सृजित करैत छथि
ख. ओ अर्थहीन शब्द छथि
ग. ओ केवल पृष्ठ-सूचक छथि
घ. ओ नाम-सूची मात्र छथि
उत्तर: क. ओ स्थानीय भाषिक ऊर्जा सँ मूल संवेदना पुनर्सृजित करैत छथि
व्याख्या: अनुवाद शब्दशः नहि, संवेदनात्मक पुनर्रचना अछि।

प्रश्न 2278. अनुवादकक नाम देबाक पाठकीय लाभ की अछि?
क. पाठककेँ पाठक यात्रा आ जिम्मेदारीक बोध होइत अछि
ख. नाम छिपि जाइत अछि
ग. कविता अज्ञात रहैत अछि
घ. प्रसंग टूटैत अछि
उत्तर: क. पाठककेँ पाठक यात्रा आ जिम्मेदारीक बोध होइत अछि
व्याख्या: अनुवादक स्रोत-संस्कृति आ लक्ष्य-पाठक बीच पुल छथि।

प्रश्न 2279. एहि अनुवाद-प्रसंगमे मैथिली पाठक कोन व्यापक साहित्यिक समुदायमे प्रवेश करैत अछि?
क. भारतीय बहुभाषिक आधुनिक कविता समुदायमे
ख. केवल स्थानीय सूचना-सूचीमे
ग. केवल सरकारी प्रपत्रमे
घ. केवल मौखिक कथा मंडलीमे
उत्तर: क. भारतीय बहुभाषिक आधुनिक कविता समुदायमे
व्याख्या: कश्मीरी आधुनिकता मैथिली पाठकक साहित्यिक क्षितिज बढ़बैत अछि।

प्रश्न 2280. “साभार” शब्दक नैतिक महत्व की अछि?
क. स्रोत-सम्मान आ बौद्धिक ईमानदारी
ख. कविता चुरेबाक स्वीकृति
ग. अनाम प्रकाशन
घ. पुरस्कार-गणना
उत्तर: क. स्रोत-सम्मान आ बौद्धिक ईमानदारी
व्याख्या: साभार देब साहित्यिक श्रेय-व्यवस्था आ पारदर्शिता कायम रखैत अछि।

प्रश्न 2281. अनुवादित कविता पढ़ैत समय पाठक कैं की ध्यान राखबाक चाही?
क. ई मूल संवेदना, मध्य अनुवाद आ मैथिली पुनर्रचना तीनू स्तरक पाठ अछि
ख. ई केवल मूल कश्मीरी ध्वनि अछि
ग. ई अर्थहीन सूची अछि
घ. ई पृष्ठ-अभ्यास अछि
उत्तर: क. ई मूल संवेदना, मध्य अनुवाद आ मैथिली पुनर्रचना तीनू स्तरक पाठ अछि
व्याख्या: द्वि-स्तरीय अनुवाद जटिल पठन मांगैत अछि।

प्रश्न 2282. एहि खण्डक मुख्य शिक्षा की अछि?
क. अनुवाद भारतीय भाषासभ बीच जीवित साहित्यिक संवाद बनबैत अछि
ख. अनुवाद साहित्यक अंत अछि
ग. अनुवादक अनावश्यक अछि
घ. भाषिक सेतु असम्भव अछि
उत्तर: क. अनुवाद भारतीय भाषासभ बीच जीवित साहित्यिक संवाद बनबैत अछि
व्याख्या: कश्मीरी कविता मैथिलीमे आबि भाषा-संवादक उदाहरन बनैत अछि।

खण्ड २३४ : विदेह-सदेह ३७ — समारोहक बादक समाचार आ समयक बहुस्तरीयता

प्रश्न 2283. समारोहसँ घुरैत समाचारमे सचिनक ४०म टेस्ट शतकक उल्लेख कोन प्रभाव रचैत अछि?
क. साहित्यिक क्षणक संग समकालीन खेल-इतिहास जोड़ैत अछि
ख. कविता समाप्त करैत अछि
ग. पुरस्कार रद्द करैत अछि
घ. भाषा-प्रश्न हटबैत अछि
उत्तर: क. साहित्यिक क्षणक संग समकालीन खेल-इतिहास जोड़ैत अछि
व्याख्या: लेखक एके दिनक अलग-अलग ऐतिहासिक समाचार जोड़ि समयक बहुस्तर बनबैत छथि।

प्रश्न 2284. भीमसेन जोशीकेँ भारत रत्न भेटबाक समाचार समारोह-वर्णनमे कोन सांस्कृतिक परत जोड़ैत अछि?
क. संगीत-संस्कृति आ राष्ट्रीय सम्मानक समानांतर परत
ख. केवल खेल-सूचना
ग. राजनीतिक नारा
घ. यात्रा-खर्च
उत्तर: क. संगीत-संस्कृति आ राष्ट्रीय सम्मानक समानांतर परत
व्याख्या: ज्ञानपीठ समारोहक दिन संगीत-सम्बन्धी महान सम्मानक सूचना सेहो भेटैत अछि।

प्रश्न 2285. चन्द्रयान-१क चन्द्रक कक्षामे प्रवेशक समाचार कोन आयाम जोड़ैत अछि?
क. विज्ञान आ राष्ट्रीय उपलब्धिक आयाम
ख. कविता-विरोध
ग. समारोहक असफलता
घ. भाषा-निषेध
उत्तर: क. विज्ञान आ राष्ट्रीय उपलब्धिक आयाम
व्याख्या: साहित्य, खेल, संगीत आ विज्ञान एके समय-फलकपर उपस्थित होइत अछि।

प्रश्न 2286. एक घण्टामे समारोह समाप्त भेलाक उल्लेख किएक स्मरणीय अछि?
क. संक्षिप्तता बीच ऐतिहासिक गरिमा बनल रहल
ख. कार्यक्रम असंगठित रहल
ग. कविता पढ़ल नहि गेल
घ. सभा रद्द भेल
उत्तर: क. संक्षिप्तता बीच ऐतिहासिक गरिमा बनल रहल
व्याख्या: कार्यक्रम छोट होइतो घटनात्मक महत्व रखैत अछि।

प्रश्न 2287. एफ.एम. समाचारक उल्लेख पाठमे कोन आधुनिकता लैत अछि?
क. समय-साक्षी लेखक सार्वजनिक मीडिया मार्फत राष्ट्रक धड़कन सुनैत छथि
ख. केवल पुरातन मौखिकता
ग. मीडिया-विरोध
घ. समाचारक अनुपस्थिति
उत्तर: क. समय-साक्षी लेखक सार्वजनिक मीडिया मार्फत राष्ट्रक धड़कन सुनैत छथि
व्याख्या: रेडियो समाचार साहित्यिक अनुभवकेँ तत्कालीन राष्ट्रीय परिदृश्यसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2288. सचिन, भीमसेन जोशी आ चन्द्रयान-१ एकसाथ उल्लेखित होयब कोन संकेत अछि?
क. एके दिन भारतक खेल, कला आ विज्ञानक उपलब्धिसभ समकालीन बनैत छथि
ख. तीनू कश्मीरी कवि छथि
ग. तीनू मंचपर उपस्थित छलाह
घ. तीनू पुरस्कार चयनकर्ता छलाह
उत्तर: क. एके दिन भारतक खेल, कला आ विज्ञानक उपलब्धिसभ समकालीन बनैत छथि
व्याख्या: लेखक समयक बहुविध उपलब्धि एकसाथ दर्ज करैत छथि।

प्रश्न 2289. समारोह-वर्णनक अन्तमे समाचार-संयोजन साहित्यिक रूपसँ की करैत अछि?
क. व्यक्तिगत उपस्थिति केँ राष्ट्रीय समय-स्मृति मे बदलैत अछि
ख. वर्णन तोड़ि दैत अछि
ग. कविता निषिद्ध करैत अछि
घ. अनुवाद मिटा दैत अछि
उत्तर: क. व्यक्तिगत उपस्थिति केँ राष्ट्रीय समय-स्मृति मे बदलैत अछि
व्याख्या: लेखक निजी अनुभवकेँ इतिहासक व्यापक क्षणसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 2290. चन्द्रयान-१क “१०० किलोमीटरक वृत्ताकार कक्षा” जेकाँ विवरणक प्रभाव की अछि?
क. वैज्ञानिक उपलब्धिक ठोसपन आ समय-साक्ष्य
ख. कविताक छन्द-गणना
ग. भोजनक मात्रा
घ. मंचक लम्बाई
उत्तर: क. वैज्ञानिक उपलब्धिक ठोसपन आ समय-साक्ष्य
व्याख्या: सटीक विवरण समकालीन समाचारक वास्तविकता स्थापित करैत अछि।

प्रश्न 2291. समारोहक बादक समाचारसभ पाठककेँ की अनुभव करबैत अछि?
क. एक दिनमे साहित्य, संगीत, खेल आ विज्ञानक संगम
ख. केवल एक विधाक बंद संसार
ग. अलगाव
घ. समयहीनता
उत्तर: क. एक दिनमे साहित्य, संगीत, खेल आ विज्ञानक संगम
व्याख्या: वर्णन बहुविषयी राष्ट्रीय क्षण बनि जाइत अछि।

प्रश्न 2292. एहि अन्तिम प्रसंगक मुख्य अर्थ की अछि?
क. राहीक ज्ञानपीठ क्षण भारतीय सार्वजनिक जीवनक व्यापक ऐतिहासिक दिनमे दर्ज अछि
ख. समारोह महत्वहीन छल
ग. कविता अनुवादित नहि भेल
घ. समाचार असम्बद्ध अछि
उत्तर: क. राहीक ज्ञानपीठ क्षण भारतीय सार्वजनिक जीवनक व्यापक ऐतिहासिक दिनमे दर्ज अछि
व्याख्या: लेखक राही-समारोह केँ समकालीन भारतक बहु-उपलब्धि दिवससँ जोड़ि यादगार बनबैत छथि।

खण्ड २३५ : विदेह-सदेह ३७ — भिखारी ठाकुर: लोककलाकार आ मौखिक परम्परा

प्रश्न 2293. भिखारी ठाकुरक परिचयमे हुनका कोन रूपमे चिन्हल गेल अछि?
क. भोजपुरी लोककलाकार रूपमे
ख. केवल दरबारी इतिहासकार रूपमे
ग. कश्मीरी गजलकार रूपमे
घ. तेलुगु उपन्यासकार रूपमे
उत्तर: क. भोजपुरी लोककलाकार रूपमे
व्याख्या: स्रोत भिखारी ठाकुरकेँ छपरा जिलाक लोककलाकार कहैत अछि, जिनकर रचना पहिने मौखिक परम्परामे चलल।

प्रश्न 2294. भिखारी ठाकुरक रचना-परम्परा सम्बन्धी कोन बात स्रोतमे महत्त्वपूर्ण अछि?
क. प्रारम्भक रचना मौखिक छल, बादमे कैथी लिपिमे हस्तलिखित सामग्री भेटल
ख. सभ रचना आरम्भसँ मुद्रित अंग्रेजीमे छल
ग. हिनकर कोनो मौखिक सम्बन्ध नहि छल
घ. हिनकर रचना केवल चित्रकला छल
उत्तर: क. प्रारम्भक रचना मौखिक छल, बादमे कैथी लिपिमे हस्तलिखित सामग्री भेटल
व्याख्या: ई जानकारी लोकसाहित्यक जीवित मौखिकता आ बादक लिखित संरक्षण दुनूकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2295. “वृद्धाश्रमक पक्षमे” बिरहा सभक मुख्य सामाजिक सरोकार की अछि?
क. बूढ़ा-बूढ़ीक सम्मान आ संरक्षण
ख. बाल-खेलक नियम
ग. समुद्री व्यापार
घ. राजदरबारक युद्ध
उत्तर: क. बूढ़ा-बूढ़ीक सम्मान आ संरक्षण
व्याख्या: दू बिरहा वृद्धजनक अपमान रोकबाक आग्रह करैत अछि आ समाजसँ वृद्धाश्रम बनबय कहैत अछि।

प्रश्न 2296. बिरहा १ मे कवि “बाबू सभ” सँ कोन आग्रह करैत छथि?
क. एकमत भऽ वृद्धाश्रम बनबय लेल
ख. घर उजाड़य लेल
ग. भाषा छोड़य लेल
घ. केवल नाच देखय लेल
उत्तर: क. एकमत भऽ वृद्धाश्रम बनबय लेल
व्याख्या: बिरहामे समाजक प्रभावशाली लोकसभक पएर पड़ि विनती कएल गेल अछि जे वृद्धाश्रम बनाउ।

प्रश्न 2297. “उपरेसँ चिक्कन अछि चामक ओहरन” पंक्ति कोन व्यंग्य उघारैत अछि?
क. बाहरी चमक भीतरक नैतिक कठोरता ढाँपि रहल अछि
ख. कविता केवल वस्त्र-विज्ञापन अछि
ग. कथन मौसमक विवरण अछि
घ. ई शुद्ध वैज्ञानिक सूत्र अछि
उत्तर: क. बाहरी चमक भीतरक नैतिक कठोरता ढाँपि रहल अछि
व्याख्या: पंक्ति बाहरी सभ्यता आ भीतरी करुणाहीनताक विरोधाभास देखबैत अछि।

प्रश्न 2298. बिरहा २ मे हिन्दू-मुसलमान दुनूक उल्लेखक अर्थ की अछि?
क. वृद्ध-सम्मानक प्रश्न सम्पूर्ण समाजक प्रश्न अछि
ख. कविता केवल एक जातिक लेल अछि
ग. धर्मसभक बीच युद्धक आह्वान अछि
घ. कवि केवल पञ्जी लिखैत छथि
उत्तर: क. वृद्ध-सम्मानक प्रश्न सम्पूर्ण समाजक प्रश्न अछि
व्याख्या: कवि धर्मभेदसँ ऊपर उठि सभकेँ बूढ़क अपमान रोकबाक लेल संबोधित करैत छथि।

प्रश्न 2299. “नेनपनेसँ जकरा तूँ कहैत एलेँहेँ माय” पंक्ति कोन स्मृति जगबैत अछि?
क. मातृ-पितृ ऋण आ बचपनक निर्भरता
ख. राजकीय कर-सूची
ग. विद्यालयक समय-सारिणी
घ. नदीक जलस्तर
उत्तर: क. मातृ-पितृ ऋण आ बचपनक निर्भरता
व्याख्या: कवि बच्चाक असहायता आ माय-पिताक सेवा याद दऽ वर्तमान उपेक्षा पर चोट करैत छथि।

प्रश्न 2300. बिरहा २ मे “कसाइ” संबोधन कोन नैतिक आरोप अछि?
क. अपन पालनहारक प्रति निर्ममता
ख. कृषि-कौशल
ग. संगीत-अभ्यास
घ. यात्रा-वर्णन
उत्तर: क. अपन पालनहारक प्रति निर्ममता
व्याख्या: जकरा माय कहने छी, तकरा प्रति हिंस्र/निर्दय व्यवहारकेँ कवि कसाइपन कहैत छथि।

प्रश्न 2301. भिखारी ठाकुरक बिरहा मे विनय आ चेतावनी साथ-साथ कोना चलैत अछि?
क. कवि पएर पड़ि विनती करैत छथि, मुदा हिसाब-किताबक चेतावनी सेहो दैत छथि
ख. कवि केवल हँसी-मजाक करैत छथि
ग. कवि कोनो सामाजिक आग्रह नहि रखैत छथि
घ. कवि केवल प्रकृति चित्रित करैत छथि
उत्तर: क. कवि पएर पड़ि विनती करैत छथि, मुदा हिसाब-किताबक चेतावनी सेहो दैत छथि
व्याख्या: रचना करुण निवेदन आ नैतिक जवाबदेही दुनूकेँ लोकधुनमे मिलबैत अछि।

प्रश्न 2302. एहि भोजपुरी खण्डक मैथिली अनुवादक सांस्कृतिक महत्व की अछि?
क. निकटवर्ती लोकभाषा साहित्यकेँ मैथिली पाठकसँ जोड़ब
ख. भोजपुरीकेँ मिटायब
ग. केवल पृष्ठ गिनब
घ. अनुवादक नाम छिपायब
उत्तर: क. निकटवर्ती लोकभाषा साहित्यकेँ मैथिली पाठकसँ जोड़ब
व्याख्या: भोजपुरी लोककविता मैथिलीमे आबि पूर्वी भारतीय लोक-संवादक सेतु बनैत अछि।

खण्ड २३६ : विदेह-सदेह ३७ — बिरहा: वृद्धाश्रम, करुणा आ सामाजिक उत्तरदायित्व

प्रश्न 2303. “वृद्धाश्रमक पक्षमे” शीर्षकसँ कविताक कोण स्पष्ट होइत अछि?

क. कवि वृद्धजन लेल संस्थागत सहारा चाहैत छथि

ख. कवि वृद्धाश्रमक विरोध करैत छथि

ग. कवि केवल बालगीत लिखैत छथि

घ. कवि समुद्री जहाजक चर्चा करैत छथि

उत्तर: क. कवि वृद्धजन लेल संस्थागत सहारा चाहैत छथि

व्याख्या: शीर्षक सीधे बतबैत अछि जे वृद्धाश्रम बनबयक पक्षमे लोकजागरण कएल जा रहल अछि।

प्रश्न 2304. बिरहा १ मे “तीन दिनक सेखी” कोन बात पर कटाक्ष अछि?

क. अस्थायी यौवन/समृद्धिक घमंड पर

ख. सदैव टिकनिहार वैभव पर

ग. वैज्ञानिक प्रयोग पर

घ. नृत्यक तीन ताल पर

उत्तर: क. अस्थायी यौवन/समृद्धिक घमंड पर

व्याख्या: कवि कहैत छथि जे अल्पकालिक सेखीमे लोक बूढ़क दुख देखि लाज नहि मानैत।

प्रश्न 2305. महाबीरक नाम सुमिरबाक आग्रहक भूमिका की अछि?

क. सामुदायिक धर्म-स्मृतिसँ नैतिक काम शुरू करब

ख. कविता कैं युद्धगीत बनायब

ग. अर्थहीन शब्द भरब

घ. केवल पन्ना पूरा करब

उत्तर: क. सामुदायिक धर्म-स्मृतिसँ नैतिक काम शुरू करब

व्याख्या: लोककाव्य धार्मिक स्मरणकैं सामाजिक सुधारक आह्वानसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2306. “नै तँ हएत अकाज” पंक्ति कोन चेतना दैत अछि?

क. वृद्ध-उपेक्षा समाजक विफलता बनि सकैत अछि

ख. वृद्धाश्रम अनावश्यक अछि

ग. बूढ़ा-बूढ़ी दुखी नहि छथि

घ. समाजक कोनो दायित्व नहि

उत्तर: क. वृद्ध-उपेक्षा समाजक विफलता बनि सकैत अछि

व्याख्या: ई पंक्ति सुधार नहि भेल तँ अनिष्ट/अकाजक भय देखबैत अछि।

प्रश्न 2307. बिरहा २ मे “बड़का हाकिम लग हिसाब-किताब” कोन प्रतीक अछि?

क. नैतिक न्याय आ जवाबदेही

ख. बैंक परीक्षा

ग. रेल आरक्षण

घ. चित्रकला गुरु

उत्तर: क. नैतिक न्याय आ जवाबदेही

व्याख्या: कवि भविष्यक उच्चतर न्याय-संस्थानक रूपकसँ संतानक कर्मक लेखा माँगैत छथि।

प्रश्न 2308. “आँखिसँ नोर खसतौ” पंक्ति सामाजिक प्रश्नकैं कोना तीव्र करैत अछि?

क. बुढ़ापा आ असहायता कैं व्यक्तिगत पीड़ामे बदलैत अछि

ख. कविता कैं हास्य-गीत बनबैत अछि

ग. कवि मौसम बतबैत छथि

घ. रचना केवल यात्रा-वृत्तान्त अछि

उत्तर: क. बुढ़ापा आ असहायता कैं व्यक्तिगत पीड़ामे बदलैत अछि

व्याख्या: बूढ़क नोर दर्शककैं भावनात्मक रूपसँ उत्तरदायी बनबैत अछि।

प्रश्न 2309. बिरहा मे “सभ बाबूक पएर पड़ै छी” कथन कविक स्वर केहन बनबैत अछि?
क. नम्र लोक-याचकक स्वर
ख. अहंकारी विजेताक स्वर
ग. निरपेक्ष वैज्ञानिकक स्वर
घ. गुप्तचरक स्वर
उत्तर: क. नम्र लोक-याचकक स्वर
व्याख्या: भिखारी ठाकुर लोक-कला मार्फत जनसमाजसँ हाथ जोड़ि सुधार माँगैत छथि।

प्रश्न 2310. दू बिरहा मिलि परिवारक कोन संकट देखबैत अछि?
क. पालनहार माता-पिताक उपेक्षा आ असम्मान
ख. नवजात शिशुक खेल
ग. नदी-परिवहनक नीति
घ. विदेशी निवेशक सूची
उत्तर: क. पालनहार माता-पिताक उपेक्षा आ असम्मान
व्याख्या: कविता परिवारक ऋण-संबंध टूटबाक पीड़ा उजागर करैत अछि।

प्रश्न 2311. बिरहा-विधा एहि विषय लेल उपयुक्त किएक अछि?
क. लोकधुन, पुनरुक्ति आ सीधा संबोधनसँ संदेश जनसमाज धरि पहुँचैत अछि
ख. एहि विधामे भाषा निषिद्ध अछि
ग. एहि विधा केवल दरबार लेल अछि
घ. एहि विधा गद्य-व्याकरण मात्र अछि
उत्तर: क. लोकधुन, पुनरुक्ति आ सीधा संबोधनसँ संदेश जनसमाज धरि पहुँचैत अछि
व्याख्या: बिरहा सामूहिक सुनवाई आ स्मरणक विधा अछि, तैं सामाजिक आह्वान प्रभावी बनैत अछि।

प्रश्न 2312. एहि खण्डक गहिर प्रश्न बाहरी अंक-सूचना नहि, कोन बात पर केन्द्रित अछि?
क. लोककविताक सामाजिक नीतिशास्त्र पर
ख. कविता कोन बाहरी ठाम देल अछि
ग. लाइन नम्बर कतेक अछि
घ. फाइलक आकार कतेक अछि
उत्तर: क. लोककविताक सामाजिक नीतिशास्त्र पर
व्याख्या: स्रोतक असल महत्व वृद्ध-सम्मान, दायित्व आ लोक-भाषिक चेतावनीमे अछि।

खण्ड २३७ : विदेह-सदेह ३७ — कश्मीरी खण्ड: ज्ञानपीठ समारोहक सांस्कृतिक परिदृश्य

प्रश्न 2313. रहमान राहीक कविता खण्डसँ पहिले समारोह-वर्णन देबाक अर्थ की अछि?
क. कविता कैं भारतीय साहित्यिक मान्यता आ सार्वजनिक प्रसंगसँ जोड़ब
ख. कविता छिपायब
ग. केवल खेल-समाचार लिखब
घ. कश्मीरी भाषा नकारब
उत्तर: क. कविता कैं भारतीय साहित्यिक मान्यता आ सार्वजनिक प्रसंगसँ जोड़ब
व्याख्या: ज्ञानपीठ समारोहक संदर्भ राहीक रचना कैं राष्ट्रीय साहित्यिक मंचपर रखैत अछि।

प्रश्न 2314. ४०म ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोहक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. राहीक सम्मानक ऐतिहासिक क्षण आ संस्थागत गरिमा देखाबय लेल
ख. केवल भोजन-सूची लेल
ग. भोजपुरी बिरहा हटाबय लेल
घ. केवल भोजन-सूची लेल
उत्तर: क. राहीक सम्मानक ऐतिहासिक क्षण आ संस्थागत गरिमा देखाबय लेल
व्याख्या: समारोहक संख्या, मंच, उपस्थित व्यक्तित्व आदि राहीक मान्यता कैं प्रसंग देत अछि।

प्रश्न 2315. प्रधानमंत्री द्वारा सम्मानित होयबासँ वर्णनमे कोन अर्थ जुड़ैत अछि?
क. कश्मीरी कविक भारतीय राष्ट्रीय सम्मान पुष्ट होइत अछि
ख. कवि गुमनाम रहि जाइत छथि
ग. भाषा अस्वीकृत होइत अछि
घ. समारोह निजी बैठक बनैत अछि
उत्तर: क. कश्मीरी कविक भारतीय राष्ट्रीय सम्मान पुष्ट होइत अछि
व्याख्या: राही डॉ. मनमोहन सिंहसँ सम्मान पाबि अपन प्रसन्नता प्रकट करैत छथि।

प्रश्न 2316. सीताकान्त महापात्रक कथनक सार की छल?
क. राहीकेँ सम्मानित कऽ ज्ञानपीठ अपने सम्मानित भेल
ख. राही असाहित्यिक छथि
ग. कश्मीरी भाषा अमान्य अछि
घ. कविता पढ़ल नहि जाए
उत्तर: क. राहीकेँ सम्मानित कऽ ज्ञानपीठ अपने सम्मानित भेल
व्याख्या: ई उद्गार सम्मानित कविक महत्ता केँ उलटि संस्था पर गौरवक रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 2317. सरस्वती वन्दनाक प्रसंग समारोहमे कोन सांस्कृतिक आवरण बनबैत अछि?
क. साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुष्ठानक वातावरण
ख. केवल तकनीकी जाँच
ग. राजनीतिक भाषण मात्र
घ. खेल-कूदक उद्घोषणा
उत्तर: क. साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुष्ठानक वातावरण
व्याख्या: अनीता जैन द्वारा वन्दना साहित्यिक समारोहक संस्कारमय शुरुआत बनैत अछि।

प्रश्न 2318. राही द्वारा नेहरू आ मनमोहन सिंहक पद-संदर्भ किएक आएल?
क. राष्ट्रीय नेतृत्वक निरंतरता आ सम्मानक विशेषता बताबय लेल
ख. कविता केँ खेल बनायब
ग. समारोह समाप्त करब
घ. भाषा-प्रश्न हटायब
उत्तर: क. राष्ट्रीय नेतृत्वक निरंतरता आ सम्मानक विशेषता बताबय लेल
व्याख्या: राही कहलनि जे नेहरूक पदपर आसीन प्रधानमंत्रीसँ पुरस्कार पाबि विशेष प्रसन्नता अछि।

प्रश्न 2319. कश्मीरक राज्य सरकारक भाषा-मान्यता विषयक टिप्पणी कोन तनाव देखबैत अछि?
क. भाषाक क्षेत्रीय उपेक्षा आ केन्द्रीय मान्यताक विरोधाभास
ख. कश्मीरी भाषाक पूर्ण अभाव
ग. कविताक निषेध
घ. ज्ञानपीठक अस्वीकार
उत्तर: क. भाषाक क्षेत्रीय उपेक्षा आ केन्द्रीय मान्यताक विरोधाभास
व्याख्या: राही कहैत छथि जे राज्य सरकार कश्मीरीकेँ मान्यता नहि देलक, मुदा केन्द्रमे ई मान्य भाषा अछि।

प्रश्न 2320. सरस्वती प्रतिमाक कांस्य अनुकृति देबाक प्रसंग की सूचित करैत अछि?
क. ज्ञान, परम्परा आ पुरस्कार-चिह्नक प्रतीकात्मकता
ख. केवल धातु-बाजार
ग. केवल मूर्ति-व्यापार
घ. केवल भौगोलिक नाप
उत्तर: क. ज्ञान, परम्परा आ पुरस्कार-चिह्नक प्रतीकात्मकता
व्याख्या: राजा भोजक सरस्वती प्रतिमा ज्ञानपीठ सम्मानक सांस्कृतिक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 2321. समारोह-वर्णनक पाठकीय उपयोगिता की अछि?
क. कविता पढ़य सँ पहिले कवि, संस्था आ ऐतिहासिक प्रसंग बुझबाक आधार देब
ख. पाठककेँ भ्रमित करब
ग. मुख्य कविता हटायब
घ. केवल नाम-सूची रटब
उत्तर: क. कविता पढ़य सँ पहिले कवि, संस्था आ ऐतिहासिक प्रसंग बुझबाक आधार देब
व्याख्या: वर्णन कविता केँ जीवनी, पुरस्कार आ भाषा-राजनीतिसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2322. एहि खण्डमे साहित्यिक सम्मानक वर्णन कोन व्यापक प्रश्न खोलैत अछि?
क. भाषा, राष्ट्र, संस्था आ कवि-प्रतिष्ठाक सम्बन्ध
ख. केवल रेल-समय
ग. कृषि-उत्पादन
घ. सिनेमा टिकट
उत्तर: क. भाषा, राष्ट्र, संस्था आ कवि-प्रतिष्ठाक सम्बन्ध
व्याख्या: ज्ञानपीठ प्रसंग बतबैत अछि जे भाषा-साहित्यक मान्यता सांस्कृतिक राजनीति सँ अलग नहि अछि।

खण्ड २३८ : विदेह-सदेह ३७ — रहमान राही: जीवन, कृति आ कश्मीरी भाषाक प्रश्न

प्रश्न 2323. रहमान राहीक जन्म-तिथि स्रोतमे कोना देल गेल अछि?
क. ६ मई १९२५
ख. १८८७
ग. १९७१
घ. १०३५
उत्तर: क. ६ मई १९२५
व्याख्या: स्रोत अब्दुल रहमान राहीक जन्म ६ मई १९२५ कहैत अछि।

प्रश्न 2324. राहीक पहिल कविता-संग्रहक सम्बन्धमे कोन तथ्य देल गेल?
क. ओकरा साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल
ख. ओ अप्रकाशित रहल
ग. ओ बिरहा संग्रह छल
घ. ओ कैथी पाण्डुलिपि छल
उत्तर: क. ओकरा साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल
व्याख्या: जीवनी-टिप्पणी राहीक पहिल कविता-संग्रहकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त कहल अछि।

प्रश्न 2325. भारत सरकारसँ राहीकेँ भेटल सम्मानमे कोन नाम अछि?
क. पद्म श्री
ख. भारतरत्न समारोहमे प्रस्तुति
ग. केवल खेल-पदक
घ. नोबेल रसायन
उत्तर: क. पद्म श्री
व्याख्या: स्रोत पद्म श्रीक उल्लेख राहीक राष्ट्रीय मान्यताक रूपमे करैत अछि।

प्रश्न 2326. मानव संसाधन विकास मंत्रालयसँ राहीकेँ कोन प्रकारक मान्यता भेटल?
क. एमिरेट्स फेलोशिप
ख. कृषि अनुदान
ग. रेल पास
घ. नाट्य पोशाक
उत्तर: क. एमिरेट्स फेलोशिप
व्याख्या: जीवनीमे एमिरेट्स फेलोशिपक उल्लेख हुनकर विद्वत्ता/रचनात्मक प्रतिष्ठा दर्शबैत अछि।

प्रश्न 2327. राहीक प्रमुख कविता-संग्रहमे कोन नाम स्रोतमे अछि?
क. सनवुन्य साज
ख. वृद्धाश्रमक पक्षमे
ग. कन्यादान
घ. सझिया रोपनि
उत्तर: क. सनवुन्य साज
व्याख्या: सनवुन्य साज, सुबहुक सोदा, कलाम-ए-राही स्रोतमे प्रमुख संग्रह रूपमे देल गेल।

प्रश्न 2328. राहीक “कहवट” कोन विधासँ जुड़ल बताओल गेल?
क. आलोचना आ निबन्धक पोथी
ख. बालगीत-संग्रह
ग. भोजपुरी बिरहा
घ. तेलुगु उपन्यास
उत्तर: क. आलोचना आ निबन्धक पोथी
व्याख्या: जीवनी-टिप्पणी कहवट आदिकेँ आलोचना आ निबन्धक पोथी कहैत अछि।

प्रश्न 2329. कश्मीरी भाषाक मान्यताक प्रसंग राहीक वक्तव्यकेँ कोना राजनीतिक बनबैत अछि?
क. ओ भाषा-अधिकार आ राज्यीय उपेक्षा पर संकेत करैत अछि
ख. ओ केवल मौसम बतबैत अछि
ग. ओ कविता समाप्त करैत अछि
घ. ओ लोकगीत नकारैत अछि
उत्तर: क. ओ भाषा-अधिकार आ राज्यीय उपेक्षा पर संकेत करैत अछि
व्याख्या: राही अपन सम्मानक क्षणमे कश्मीरी भाषा सम्बन्धी मान्यता-विरोधाभास उठबैत छथि।

प्रश्न 2330. ज्ञानपीठ द्वारा राहीक प्रतिनिधि कविताक हिन्दी अनुवाद प्रधानमंत्रीकेँ देबाक अर्थ की अछि?
क. कश्मीरी कविताक अन्तरभाषिक प्रसार
ख. भाषा-गोपन
ग. कविता-नाश
घ. समारोहक असफलता
उत्तर: क. कश्मीरी कविताक अन्तरभाषिक प्रसार
व्याख्या: अनुवाद समारोहमे भाषा-पार संवादक माध्यम बनैत अछि।

प्रश्न 2331. राहीक जीवनी-सूचना कविता “छाह सभ” पढ़बामे कोन सहायता करैत अछि?
क. कविक प्रतिष्ठा, भाषा-संघर्ष आ रचनात्मक पृष्ठभूमि बुझबैत अछि
ख. कविता सँ सम्बन्ध तोड़ैत अछि
ग. केवल जन्मतिथि रटबैत अछि
घ. कोनो पाठकीय सहायता नहि
उत्तर: क. कविक प्रतिष्ठा, भाषा-संघर्ष आ रचनात्मक पृष्ठभूमि बुझबैत अछि
व्याख्या: कविता पहिने जीवनी प्रसंग दऽ पाठककेँ कविक संसारमे प्रवेश कराओल गेल अछि।

प्रश्न 2332. एहि जीवनी खण्डक मुख्य सीख की अछि?
क. रचनाकारक साहित्यिक मान्यता आ भाषिक राजनीति आपसमे जुड़ल अछि
ख. कवि केवल निजी व्यक्ति छथि
ग. भाषा-प्रश्न अप्रासंगिक अछि
घ. सम्मानक कोनो अर्थ नहि
उत्तर: क. रचनाकारक साहित्यिक मान्यता आ भाषिक राजनीति आपसमे जुड़ल अछि
व्याख्या: राहीक उदाहरण बतबैत अछि जे कवि, भाषा, राज्य आ राष्ट्रीय संस्था एक सांस्कृतिक जालमे आबद्ध छथि।

खण्ड २३९ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: अमरता-विरोध आ क्षणक स्वीकृति

प्रश्न 2333. “अपन नियतिसँ वाद आ अमरताक आशा आब छोड़ि दिअ” पंक्ति कोन दार्शनिक मोड़ दैत अछि?
क. नियति-विवाद आ अमरता-लालसा छोड़बाक आग्रह
ख. अमरता निश्चित अछि
ग. नियति पर विजय सरल अछि
घ. कविता केवल उत्सवगीत अछि
उत्तर: क. नियति-विवाद आ अमरता-लालसा छोड़बाक आग्रह
व्याख्या: कविता आरम्भहि मे मानवक दम्भ घटा क्षणजीवनक स्वीकृति दिस मोड़ैत अछि।

प्रश्न 2334. “यदि जुटा ली किछु क्षण, तँ भेर भऽ जाउ तइमे” सँ कोन भाव निकलैत अछि?
क. सीमित क्षणमे पूर्णता खोजबाक भाव
ख. अनंत आयुक अधिकार
ग. समयक पूर्ण निषेध
घ. घड़ीक यांत्रिक मरम्मत
उत्तर: क. सीमित क्षणमे पूर्णता खोजबाक भाव
व्याख्या: राहीक स्वर अमरता नहि, उपलब्ध क्षणक गहन अनुभवकेँ पर्याप्त मानबाक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 2335. कविताक शुरुआती स्वर उत्सवी नहि किएक कहल जा सकैत अछि?
क. क्योंकि ओ नियति, अमरता आ क्षणभंगुरता पर कठोर आत्मबोध करबैत अछि
ख. क्योंकि ओ विवाहगीत अछि
ग. क्योंकि ओ बालकथा अछि
घ. क्योंकि ओ कृषिपाठ अछि
उत्तर: क. क्योंकि ओ नियति, अमरता आ क्षणभंगुरता पर कठोर आत्मबोध करबैत अछि
व्याख्या: कविता जीवनक सीमाक सामना करय कहैत अछि, सहज प्रसन्नता नहि।

प्रश्न 2336. अमरता छोड़बाक आग्रह कविमे कोन आधुनिक चेतना देखबैत अछि?
क. मानवीय अस्थायित्वक सचेत स्वीकार
ख. दैवी अमरत्वक दावा
ग. इतिहासक अन्त
घ. कला-विरोध
उत्तर: क. मानवीय अस्थायित्वक सचेत स्वीकार
व्याख्या: आधुनिक संकटबोध मे मनुष्य अपन सीमितता केँ देखैत अछि।

प्रश्न 2337. “भेर भऽ जाउ” कथन क्षणकेँ कोना रूपान्तरित करैत अछि?
क. छोट समयकेँ गहन जीवन-अनुभवमे बदलैत अछि
ख. क्षणकेँ निरर्थक कहैत अछि
ग. भेरकेँ खालीपन बनबैत अछि
घ. समयक हिसाब मिटबैत अछि
उत्तर: क. छोट समयकेँ गहन जीवन-अनुभवमे बदलैत अछि
व्याख्या: क्षण कम अछि मुदा ओहिमे भरपूरता सम्भव अछि—ई कविताक मुख्य आग्रह अछि।

प्रश्न 2338. एहि आरम्भक विरोधाभास की अछि?
क. अमरता छोड़ू, मुदा क्षणमे भेर होऊ
ख. अमरता चाहू, क्षण छोड़ू
ग. केवल नामकरण करू
घ. केवल नृत्य देखू
उत्तर: क. अमरता छोड़ू, मुदा क्षणमे भेर होऊ
व्याख्या: कविता शाश्वत अभिलाषा हटबैत अछि मुदा जीवनक तीव्रता बचबैत अछि।

प्रश्न 2339. “नियति” शब्द कवितामे कोन सीमा-संकेत दैत अछि?
क. मनुष्यक नियन्त्रणसँ बाहरक अवस्था
ख. केवल सरकारी नियम
ग. नाटकक पात्र
घ. नदीक नाम
उत्तर: क. मनुष्यक नियन्त्रणसँ बाहरक अवस्था
व्याख्या: नियति मानव इच्छा सँ परे अछि; तकरा सँ वाद बेकार कहल गेल।

प्रश्न 2340. कविता पाठकसँ की त्याग माँगैत अछि?
क. अमरता आ पूर्ण नियन्त्रणक भ्रम
ख. साहित्य-पठन
ग. भाषा-प्रेम
घ. विचार-शक्ति
उत्तर: क. अमरता आ पूर्ण नियन्त्रणक भ्रम
व्याख्या: प्रारम्भक पंक्ति अहंकार आ भ्रमक परित्याग करबैत अछि।

प्रश्न 2341. एहि खण्डक प्रश्नक केन्द्र बाहरी अंक-सूचना नहि, कोन बात अछि?
क. कविताक दार्शनिक अर्थ-संरचना
ख. कविता कोन बाहरी स्थान पर छपल
ग. कतेक लाइन अछि
घ. समारोहक कुर्सी कतेक छल
उत्तर: क. कविताक दार्शनिक अर्थ-संरचना
व्याख्या: गहिर अध्ययन कविता के भावबोध, छवि आ तर्क पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2342. “छाह सभ”क आरम्भ पाठककेँ कोन मनःस्थिति मे लऽ जाइत अछि?
क. अस्थायित्व, आत्मपरीक्षण आ उदास सजगता
ख. उल्लासमय नृत्य
ग. बाल-हँसी
घ. विज्ञापन-पाठ
उत्तर: क. अस्थायित्व, आत्मपरीक्षण आ उदास सजगता
व्याख्या: पहिल पंक्तिसभ आत्म-भ्रम उतारि जीवनक क्षणभंगुर सचाइ देखबैत अछि।

खण्ड २४० : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: पथ, बोन आ आस्थाक भंग

प्रश्न 2343. “बस्तीक जइ पथपर चलैत रहलौं, ओ धँसि गेल घनगर बोनमे” कोन रूपक बनैत अछि?
क. परिचित सामाजिक/आध्यात्मिक मार्गक लोप
ख. सड़क निर्माणक प्रतिवेदन
ग. वन-विज्ञानक सूची
घ. बालक खेलक मैदान
उत्तर: क. परिचित सामाजिक/आध्यात्मिक मार्गक लोप
व्याख्या: परिचित पथ घनगर बोनमे धँसि गेल—ई दिशा-भ्रम आ सभ्यतागत असुरक्षा देखबैत अछि।

प्रश्न 2344. आस्थाक कवच शंकासभ द्वारा भेद्य होयब कोन संकटक संकेत अछि?
क. विश्वासक रक्षा-तंत्र टूटब
ख. विश्वास अटूट रहब
ग. शंका पूर्णतः अनुपस्थित
घ. कवच केवल धातु-वस्तु
उत्तर: क. विश्वासक रक्षा-तंत्र टूटब
व्याख्या: कविता कहैत अछि जे शंका आस्थाक कवच भेदि रहल अछि, अर्थात भीतरी सुरक्षा नष्ट होइत अछि।

प्रश्न 2345. “घनगर बोन” कवितामे मात्र प्राकृतिक दृश्य नहि, किएक?
क. ओ अज्ञात, अवरोध आ भ्रमक मानसिक परिदृश्य सेहो अछि
ख. ओ केवल पर्यटन स्थल अछि
ग. ओ कृषि-भूमि मात्र अछि
घ. ओ मंच-सज्जा मात्र अछि
उत्तर: क. ओ अज्ञात, अवरोध आ भ्रमक मानसिक परिदृश्य सेहो अछि
व्याख्या: बस्ती-पथक बोनमे गुम होयब सामाजिक/आत्मिक दिशाहीनता बनैत अछि।

प्रश्न 2346. आस्था आ शंकाक द्वन्द्व कविताकेँ कोना आधुनिक बनबैत अछि?
क. निश्चित विश्वासक जगह संशय आ विखंडन लैत अछि
ख. सभ प्रश्न समाप्त करैत अछि
ग. मध्यकालीन दरबार बनबैत अछि
घ. केवल लोकगीत बनबैत अछि
उत्तर: क. निश्चित विश्वासक जगह संशय आ विखंडन लैत अछि
व्याख्या: आधुनिकता मे आस्था पर शंका प्रहार करैत अछि—कविता एहि विखंडनकेँ स्वर दैत अछि।

प्रश्न 2347. “पथ” प्रतीकक मूल अर्थ की बुझल जा सकैत अछि?
क. जीवन-दिशा वा विश्वासक मार्ग
ख. कविताक पृष्ठ नम्बर
ग. गीतक ताल
घ. लेखकक घरक पता
उत्तर: क. जीवन-दिशा वा विश्वासक मार्ग
व्याख्या: चलल पथक लोप जीवन-दिशाक असुरक्षा केँ चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 2348. कवितामे “बस्ती” आ “बोन”क विरोध किएक तीव्र अछि?
क. एक परिचय/समुदाय, दोसर अराजक अज्ञातक संकेत दैत अछि
ख. दुनू पूर्णतः समान अछि
ग. दुनू केवल खाद्य-पदार्थ अछि
घ. दुनू गणितीय चिह्न अछि
उत्तर: क. एक परिचय/समुदाय, दोसर अराजक अज्ञातक संकेत दैत अछि
व्याख्या: बस्ती मानव-व्यवस्था; बोन अनियंत्रित, घनगर, अवरोधकारी क्षेत्र बनैत अछि।

प्रश्न 2349. शंकासभ बहुवचनमे आबि की प्रभाव बनबैत अछि?
क. एक नहि, अनेक दिशासँ विश्वास पर आक्रमण
ख. शंका अनुपस्थित अछि
ग. केवल एक छोट प्रश्न अछि
घ. कवितामे निश्चितता अछि
उत्तर: क. एक नहि, अनेक दिशासँ विश्वास पर आक्रमण
व्याख्या: बहुवचन शंकाक व्यापकता आ घेराबंदी देखबैत अछि।

प्रश्न 2350. आस्थाक कवच भेद्य होयबासँ कविताक वक्ता कोन अवस्थामे अछि?
क. भीतरसँ असुरक्षित आ संशयग्रस्त
ख. पूर्ण विजयी
ग. निश्चिन्त बालक
घ. निर्विवाद उपदेशक
उत्तर: क. भीतरसँ असुरक्षित आ संशयग्रस्त
व्याख्या: कवच टूटि गेल तखन आत्मिक सुरक्षा सेहो टूटैत अछि।

प्रश्न 2351. एहि छविसभक समष्टि कोन भावदशा बनबैत अछि?
क. दिशाहीनता, संशय आ विश्वास-विघटन
ख. संपूर्ण उल्लास
ग. विवाह-उत्सव
घ. कृषि-समृद्धि
उत्तर: क. दिशाहीनता, संशय आ विश्वास-विघटन
व्याख्या: पथ-बोन-कवच-शंका मिलि अस्तित्वगत संकट बनबैत अछि।

प्रश्न 2352. ई खण्ड राहीक कविताकेँ कोन स्तर पर पढ़य कहैत अछि?
क. प्रतीकात्मक आ मनोवैज्ञानिक स्तर पर
ख. केवल शब्दार्थ-सूची रूपमे
ग. केवल पृष्ठ-सूचक रूपमे
घ. केवल जीवन-वृत्त रूपमे
उत्तर: क. प्रतीकात्मक आ मनोवैज्ञानिक स्तर पर
व्याख्या: छविसभ शाब्दिक दृश्य सँ आगू मानसिक-सांस्कृतिक अर्थ रखैत अछि।

खण्ड २४१ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: स्वप्न, यौवन आ उजाड़

प्रश्न 2353. “आँखि खुजिते हमर स्वप्नकेँ लागल आँखि” कोन विडम्बना रचैत अछि?
क. जागरणक क्षणमे स्वप्न स्वयं जागि/चोटिल भऽ जाइत अछि
ख. स्वप्न पूर्ण सुरक्षित अछि
ग. आँखि बन्द रहैत अछि
घ. कविता केवल निद्रा-विज्ञान अछि
उत्तर: क. जागरणक क्षणमे स्वप्न स्वयं जागि/चोटिल भऽ जाइत अछि
व्याख्या: पंक्ति जागरण आ स्वप्नक सम्बन्ध केँ अस्थिर, पीड़ादायी बनबैत अछि।

प्रश्न 2354. “बासन्ती युवा छाती”क “सुनसान” भऽ जाएब कोन हानि देखबैत अछि?
क. यौवन, उर्वरता आ जीवन-उत्साहक क्षय
ख. यौवनक उत्सव
ग. वसन्तक विजय
घ. शहरक बाजार
उत्तर: क. यौवन, उर्वरता आ जीवन-उत्साहक क्षय
व्याख्या: बासन्ती रंग आ युवा छाती जीवनक प्रतीक छल; ओकर सुनसान होयब निराशा अछि।

प्रश्न 2355. लावण्यमयी मेला आ हाथमे मात्र एकाध विचार—एहि विरोधाभासक अर्थ की अछि?
क. बाहरी आकर्षण बहुत, भीतर उपलब्ध अर्थ अल्प
ख. मेलामे कोनो आकर्षण नहि
ग. विचारक अतिरेक
घ. कविता वस्तु-सूची अछि
उत्तर: क. बाहरी आकर्षण बहुत, भीतर उपलब्ध अर्थ अल्प
व्याख्या: दृश्य समृद्ध अछि मुदा चेतन हाथमे बस किछु विचार आ उजाड़क कौआ अबैत अछि।

प्रश्न 2356. “असगर एकटा कौआ उजाड़मे” छवि कोन भाव बनबैत अछि?
क. अकेलापन, अशुभता आ रिक्तता
ख. समृद्ध भोज
ग. बाल-उत्सव
घ. विजयी सेना
उत्तर: क. अकेलापन, अशुभता आ रिक्तता
व्याख्या: उजाड़मे एक कौआ निराश, एकाकी, कठोर दृश्य बनबैत अछि।

प्रश्न 2357. कवितामे “मेला” आ “उजाड़” एकसाथ आएब कोन अनुभव दैत अछि?
क. सामने सौन्दर्य, भीतर वीरानगी
ख. पूर्ण सामंजस्य
ग. केवल व्यापार
घ. नदी-वर्णन
उत्तर: क. सामने सौन्दर्य, भीतर वीरानगी
व्याख्या: बाहरी लावण्यक बावजूद वक्ताक अनुभव रिक्त आ असगर अछि।

प्रश्न 2358. स्वप्नक आँखि लागबासँ वक्ताक चेतना कोना बदलैत अछि?
क. स्वप्न निजी आश्रय नहि रहि संवेदनशील/घायल सत्ता बनैत अछि
ख. स्वप्न मेटल नहि जा सकैत
ग. स्वप्न केवल हास्य अछि
घ. स्वप्नक अर्थ नहि
उत्तर: क. स्वप्न निजी आश्रय नहि रहि संवेदनशील/घायल सत्ता बनैत अछि
व्याख्या: स्वप्न जेकरा बचाबय चाही, से स्वयं चोट/जागरणक शिकार बनैत अछि।

प्रश्न 2359. “बासन्ती” शब्दक प्रतीकात्मक अर्थ की अछि?
क. नवता, यौवन आ हरियाली
ख. अन्हार
ग. बुढ़ापा
घ. रेगिस्तान
उत्तर: क. नवता, यौवन आ हरियाली
व्याख्या: बासन्त ऋतु जीवनोद्गमक प्रतीक होइत अछि; तकर सुनसान होयब गहन क्षय।

प्रश्न 2360. कौआक छवि भारतीय लोक-बोधमे सामान्यतः कोन संकेत लऽ अबैत अछि?
क. सूना, अशुभ वा कर्कश उपस्थितिक संकेत
ख. पूर्ण मधुरता
ग. राजसी वैभव
घ. नवविवाहक प्रतीक
उत्तर: क. सूना, अशुभ वा कर्कश उपस्थितिक संकेत
व्याख्या: कवितामे कौआ उजाड़क एकाकी स्वरूपक संग मेल खाइत अछि।

प्रश्न 2361. एहि अंशमे सौन्दर्य आ विघटनक सम्बन्ध कोना अछि?
क. लावण्यक पृष्ठभूमि पर विघटन आ रिक्तता अधिक तीव्र होइत अछि
ख. सौन्दर्य विघटनकेँ मिटा दैत अछि
ग. विघटन अनुपस्थित अछि
घ. सौन्दर्य केवल सजावट अछि
उत्तर: क. लावण्यक पृष्ठभूमि पर विघटन आ रिक्तता अधिक तीव्र होइत अछि
व्याख्या: मेला देखाइत अछि, मुदा हाथमे विचार आ कौआ—ई सौन्दर्यक विडम्बनापूर्ण उलट अछि।

प्रश्न 2362. एहि खण्डक मूल मनःस्थिति की अछि?
क. भंग स्वप्न, क्षीण यौवन आ भीतरी उजाड़
ख. सरल आनंद
ग. विद्यालयी अनुशासन
घ. व्यापारिक सफलता
उत्तर: क. भंग स्वप्न, क्षीण यौवन आ भीतरी उजाड़
व्याख्या: पंक्तिसभ भीतरक जीवन-स्रोत सूखि गेलाक अनुभूति देत अछि।

खण्ड २४२ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: नामकरण, विश्वास आ चैतन्य

प्रश्न 2363. “कखनो हमर इच्छा रहय चान-तरेगन गढ़बाक” कोन आकांक्षा देखबैत अछि?
क. ब्रह्माण्डीय रचना वा विराट सृजनक इच्छा
ख. छोट घरेलू हिसाब
ग. कृषि-बीज सूची
घ. मंचक पर्दा
उत्तर: क. ब्रह्माण्डीय रचना वा विराट सृजनक इच्छा
व्याख्या: चान-तरेगन गढ़बाक चाह विराट सर्जनात्मक अभिलाषा अछि।

प्रश्न 2364. “आब माथ भुका रहल छी, अपन कोनो नामकरण तँ करी” मे आकांक्षा कोना सिकुड़ैत अछि?
क. विराट सृजनसँ निज पहिचानक संकट धरि
ख. पहिचान पूर्ण स्थापित अछि
ग. सृजन अधिक विराट भेल
घ. कविता खेलगीत बनल
उत्तर: क. विराट सृजनसँ निज पहिचानक संकट धरि
व्याख्या: पहिने चान-तरेगन बनय चाह; आब अपने नामकरणक असुरक्षा—ई अस्तित्वक संकुचन अछि।

प्रश्न 2365. “सभटा विश्वास घाटीक मौलायल हरियरी सन” कोन बिम्ब अछि?
क. विश्वासक मुरझायल, जीवनहीन अवस्था
ख. विश्वासक अनंत विजय
ग. हरियरीक पूर्ण प्रस्फुटन
घ. कृषि-प्रदर्शनी
उत्तर: क. विश्वासक मुरझायल, जीवनहीन अवस्था
व्याख्या: मौलायल हरियरी विश्वासक शिथिल, निर्जीव, क्षीण रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 2366. “सभटा चैतन्य खिसियायल साँप सन” सँ चेतना कोना चित्रित अछि?
क. क्रुद्ध, संकुचित आ विषधर बेचैनी रूपमे
ख. शांत सरोवर रूपमे
ग. बालक हँसी रूपमे
घ. पूर्ण निद्रा रूपमे
उत्तर: क. क्रुद्ध, संकुचित आ विषधर बेचैनी रूपमे
व्याख्या: खिसियायल साँप चेतनाक डरावन, चंचल आ आक्रामक रूप बनबैत अछि।

प्रश्न 2367. चान-तरेगन गढ़बाक चाह आ नामकरणक चाहमे मुख्य विरोध की अछि?
क. बाह्य विराट सृष्टि बनाम आत्म-पहिचानक न्यूनतम मांग
ख. दुनू एके अर्थ
ग. दुनू भोजन-सूची
घ. दुनू नदी-मानचित्र
उत्तर: क. बाह्य विराट सृष्टि बनाम आत्म-पहिचानक न्यूनतम मांग
व्याख्या: कवितामे वक्ता विराट निर्मातासँ अपना नाम तक खोजयवला संकटग्रस्त व्यक्ति बनैत अछि।

प्रश्न 2368. विश्वासक हरियरी “घाटी”मे किएक राखल गेल होयत?
क. घाटी कश्मीरी भू-दृश्य आ सामूहिक जीवनक स्मृति जगबैत अछि
ख. घाटी केवल गणितीय रेखा अछि
ग. घाटी असंबद्ध शब्द अछि
घ. घाटी समुद्र अछि
उत्तर: क. घाटी कश्मीरी भू-दृश्य आ सामूहिक जीवनक स्मृति जगबैत अछि
व्याख्या: राहीक कश्मीरी पृष्ठभूमि मे घाटी भूगोल मात्र नहि, सांस्कृतिक स्मृति सेहो अछि।

प्रश्न 2369. मौलायल हरियरीक छवि कोन हानि देखबैत अछि?
क. जीवन-स्रोतक सूखलापन
ख. नव अंकुरण
ग. समृद्ध वर्षा
घ. पूर्ण उत्सव
उत्तर: क. जीवन-स्रोतक सूखलापन
व्याख्या: हरियरी जीवंत होयबाक चाही, मुदा मौलायल अछि—विश्वासक क्षय।

प्रश्न 2370. चैतन्यक साँप-समान खिसियायल रूप पाठकमे कोन प्रभाव दैत अछि?
क. आंतरिक भय आ अस्थिरता
ख. आराम आ शांति
ग. हास्य
घ. बाल-लीला
उत्तर: क. आंतरिक भय आ अस्थिरता
व्याख्या: चेतना स्वयं खतरनाक, चिड़चिड़ आ विषपूर्ण बनि गेल बुझाइत अछि।

प्रश्न 2371. नामकरणक संकट कविताक वक्ताकेँ कोन प्रश्नमे धकेलैत अछि?
क. “हम के छी?” वा आत्म-पहिचानक प्रश्नमे
ख. “कतेक पन्ना?” मे
ग. “कतेक कुर्सी?” मे
घ. “कतेक टिकट?” मे
उत्तर: क. “हम के छी?” वा आत्म-पहिचानक प्रश्नमे
व्याख्या: अपन नामकरण करबाक चाह स्वयं-अस्तित्वक अनिश्चितता देखबैत अछि।

प्रश्न 2372. एहि खण्डमे रचनात्मक अभिलाषा आ आत्म-संकट कोना सम्बद्ध अछि?
क. विराट रचना-स्वप्न टूटि आत्म-पहिचानक संकट बनि गेल अछि
ख. रचना-संकट अनुपस्थित अछि
ग. आत्म-संकट हास्य अछि
घ. कविता केवल जीवनी अछि
उत्तर: क. विराट रचना-स्वप्न टूटि आत्म-पहिचानक संकट बनि गेल अछि
व्याख्या: चान-तरेगनसँ नामकरण धरि यात्रा कविताक आंतरिक पतन-रेखा अछि।

खण्ड २४३ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: देवता, दानव आ सामाजिक व्यंग्य

प्रश्न 2373. “सभटा देवता हमर अपन छाह छथि” पंक्ति कोन आत्मालोचन करैत अछि?
क. पूज्य प्रतीकसभ अपनहि प्रक्षेपित छाया भऽ सकैत अछि
ख. देवता पूर्ण बाहरी सत्ता मात्र छथि
ग. छाहक कोनो अर्थ नहि
घ. कविता धर्मसूची अछि
उत्तर: क. पूज्य प्रतीकसभ अपनहि प्रक्षेपित छाया भऽ सकैत अछि
व्याख्या: कविता देवताकेँ व्यक्तिक छाया कहि आस्था आ अहंकारक सम्बन्ध खोलैत अछि।

प्रश्न 2374. “सभटा दानव हमर अहं केर कनिया-पुतड़ा सन” कोन बात कहैत अछि?
क. दानव सेहो अहंकारक बनाओल खेलौना/प्रक्षेप होय सकैत अछि
ख. दानवक कोनो सम्बन्ध अहंसँ नहि
ग. कनिया-पुतड़ा युद्ध-अस्त्र अछि
घ. कविता केवल बालखेल अछि
उत्तर: क. दानव सेहो अहंकारक बनाओल खेलौना/प्रक्षेप होय सकैत अछि
व्याख्या: कवि दानवकेँ बाहरी शत्रु नहि, अहंकारक बनल पुतड़ा सन देखैत अछि।

प्रश्न 2375. देवता आ दानव दुनूकेँ अपना सँ जोड़बाक अर्थ की अछि?
क. नैतिक द्वन्द्वक स्रोत मनुष्यक भीतर अछि
ख. सभ दोष बाहरी लोकक अछि
ग. मनुष्य निर्दोष अछि
घ. कविता धार्मिक उपदेश मात्र अछि
उत्तर: क. नैतिक द्वन्द्वक स्रोत मनुष्यक भीतर अछि
व्याख्या: देव-दानवक प्रक्षेपण भीतरक अहं, इच्छा, भय आ छायासँ उपजैत अछि।

प्रश्न 2376. “सभा भवन भरल बुझू बानरक खौँ-खौँ सँ” कोन सामाजिक व्यंग्य अछि?
क. सार्वजनिक मंचक शोर, अनुकरण आ अर्थहीनता पर कटाक्ष
ख. सभा पूर्ण मौन अछि
ग. बानर वैज्ञानिक प्रयोग अछि
घ. भवन जंगल नहि बनि सकैत
उत्तर: क. सार्वजनिक मंचक शोर, अनुकरण आ अर्थहीनता पर कटाक्ष
व्याख्या: सभा भवन सभ्य संस्थाक प्रतीक अछि, मुदा ओतय बानरक खौँ-खौँ—अर्थात अविवेक।

प्रश्न 2377. “सन्तक पहिरनक लेल ताकू बोने-बोन” पंक्ति कोन विडम्बना देखबैत अछि?
क. सच्चा संत समाजक केन्द्रमे नहि, जंगलमे खोजय पड़ैत अछि
ख. सभ सन्त मंचपर उपलब्ध छथि
ग. सन्तक जरूरत नहि
घ. कविता कपड़ा-बाजार अछि
उत्तर: क. सच्चा संत समाजक केन्द्रमे नहि, जंगलमे खोजय पड़ैत अछि
व्याख्या: समाजक नैतिक रिक्तता एतेक अछि जे संतक वेश/सत्य बाहर खोजय पड़ैत अछि।

प्रश्न 2378. देवता-दानव-सभा-संत क्रम कवितामे कोन आलोचना बनबैत अछि?
क. धर्म, अहंकार, सार्वजनिक जीवन आ नैतिकता सभक विघटनक आलोचना
ख. केवल पूजा-विधि
ग. केवल जीव-जंतु सूची
घ. केवल नाटकक वेशभूषा
उत्तर: क. धर्म, अहंकार, सार्वजनिक जीवन आ नैतिकता सभक विघटनक आलोचना
व्याख्या: कविता निजी आ सामूहिक दुनू स्तरपर अर्थहीनता आ पाखण्ड देखबैत अछि।

प्रश्न 2379. “छाह” शब्द देवताक संग जुड़ि किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. आस्था कैँ ठोस सत्य नहि, मनुष्यक छाया-जगत बना दैत अछि
ख. देवता अधिक भौतिक बनैत छथि
ग. छाह सूर्यक विज्ञान मात्र अछि
घ. कविता शीर्षकसँ अलग भऽ जाइत अछि
उत्तर: क. आस्था कैँ ठोस सत्य नहि, मनुष्यक छाया-जगत बना दैत अछि
व्याख्या: शीर्षकक छाया-बोध एहि पंक्तिमे दार्शनिक गहराइ लैत अछि।

प्रश्न 2380. अहं केर “कनिया-पुतड़ा” उपमा दानवकेँ कोना छोट करैत अछि?
क. भयानक दानवकेँ अहंकारक खिलौना बना दैत अछि
ख. दानव विराट देवता बनैत अछि
ग. अहंकार समाप्त होइत अछि
घ. उपमा असंबद्ध अछि
उत्तर: क. भयानक दानवकेँ अहंकारक खिलौना बना दैत अछि
व्याख्या: ई पंक्ति डरक सत्ता कैँ मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।

प्रश्न 2381. बानरक खौँ-खौँ सभ्यता पर कोन आरोप लगबैत अछि?
क. मानवीय संस्था पशु-शोरमे बदलि गेल अछि
ख. सभ्यता पूर्ण सन्तुलित अछि
ग. सभा मे संगीत मात्र अछि
घ. कोनो व्यंग्य नहि
उत्तर: क. मानवीय संस्था पशु-शोरमे बदलि गेल अछि
व्याख्या: सभा भवनक छवि संस्थागत पतनक तीख व्यंग्य अछि।

प्रश्न 2382. एहि खण्डक समेकित अर्थ की अछि?
क. राही आत्म, समाज, धर्म आ नैतिक मंच सभक छाया-पक्ष खोलैत छथि
ख. कवि केवल सम्मान-वर्णन करैत छथि
ग. कवि पृष्ठ गिनैत छथि
घ. कवि भाषा-शब्दकोश बनबैत छथि
उत्तर: क. राही आत्म, समाज, धर्म आ नैतिक मंच सभक छाया-पक्ष खोलैत छथि
व्याख्या: देवता, दानव, सभा आ संतक छवि मार्फत कविता गहन सामाजिक-आध्यात्मिक आलोचना करैत अछि।

खण्ड २४४ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ”: नाओ, अन्हार, नटुआ आ आगि

प्रश्न 2383. “केहन अछि नाओक खेबनाइ, कतय तँ अछि किनार!” पंक्ति कोन अस्तित्वगत प्रश्न अछि?
क. जीवन-यात्राक दिशा आ लक्ष्यक अनिश्चितता
ख. नदी-पर्यटनक विज्ञापन
ग. नाविकक मजदूरी
घ. मछलीपालनक नियम
उत्तर: क. जीवन-यात्राक दिशा आ लक्ष्यक अनिश्चितता
व्याख्या: नाओक खेबनाइ आ किनारक प्रश्न जीवनक पारगमन-संकट बनैत अछि।

प्रश्न 2384. “देशांस भोथलेलक नाओकेँ अन्हारमे” कोन सामूहिक संकट देखबैत अछि?
क. समाज/देशक नाओ अन्हारमे दिशाहीन आ कुंद भऽ गेल अछि
ख. नाओ उज्ज्वल किनार पर अछि
ग. देश पूर्ण सुरक्षित अछि
घ. अन्हार अनुपस्थित अछि
उत्तर: क. समाज/देशक नाओ अन्हारमे दिशाहीन आ कुंद भऽ गेल अछि
व्याख्या: देशांस शब्द सामूहिक हिस्सेदारीक संकेत दैत अछि; नाओ अन्हारमे फँसल अछि।

प्रश्न 2385. “हे रौ नटुआ, नाच निर्वस्त्र चारू कात ओकर” कोन व्यंग्यात्मक आह्वान अछि?
क. सत्यक नग्न प्रदर्शन वा पाखण्ड-उघारब
ख. शाब्दिक नृत्य-प्रतियोगिता मात्र
ग. विवाह-गीत
घ. बाल-नाटिका
उत्तर: क. सत्यक नग्न प्रदर्शन वा पाखण्ड-उघारब
व्याख्या: नटुआक नग्न नाच पाखण्ड हटाकऽ असह्य सत्यक प्रदर्शन बनैत अछि।

प्रश्न 2386. “राही तँ आगि-खायबला बताह अछि” कविक आत्म-छवि कोना बनबैत अछि?
क. विनाशक ताप खा सकयवला पागल/अतिशय संवेदनशील कवि
ख. शांत प्रशासक
ग. व्यापारी
घ. निष्क्रिय दर्शक
उत्तर: क. विनाशक ताप खा सकयवला पागल/अतिशय संवेदनशील कवि
व्याख्या: कवि अपनेकेँ आगि-खायबला बताह कहि तीव्र आत्मदाहक रचनात्मकता देखबैत छथि।

प्रश्न 2387. नाओ आ किनारक रूपक कविता मे किएक निर्णायक अछि?
क. पूर्वक संशय आ उजाड़क बाद यात्रा-उद्धारक प्रश्न उठबैत अछि
ख. कविता नौका-निर्माण पुस्तिका अछि
ग. ई केवल जल-खेल अछि
घ. ई असंबद्ध सजावट अछि
उत्तर: क. पूर्वक संशय आ उजाड़क बाद यात्रा-उद्धारक प्रश्न उठबैत अछि
व्याख्या: नाओ जीवन-संघर्षक साधन, किनार मुक्ति/लक्ष्यक संकेत।

प्रश्न 2388. अन्हारमे नाओक छवि “छाह सभ” शीर्षकसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. छाया, अंधकार आ अस्पष्टता एके अस्तित्वगत वातावरण बनबैत अछि
ख. शीर्षकसँ सम्बन्ध नहि
ग. छाह केवल प्रकाश अछि
घ. नाओ केवल खिलौना अछि
उत्तर: क. छाया, अंधकार आ अस्पष्टता एके अस्तित्वगत वातावरण बनबैत अछि
व्याख्या: छाया आ अन्हार दुनू स्पष्टता नष्ट करैत अछि।

प्रश्न 2389. नटुआक संबोधन कविताक अन्तमे नाटकीयता किएक बढ़बैत अछि?
क. कवि सीधे एक पात्र/प्रदर्शककेँ पुकारि दृश्यात्मक अन्त रचैत छथि
ख. कविता मौन भऽ जाइत अछि
ग. कोनो क्रिया नहि रहैत
घ. पाठ सपाट बनैत अछि
उत्तर: क. कवि सीधे एक पात्र/प्रदर्शककेँ पुकारि दृश्यात्मक अन्त रचैत छथि
व्याख्या: नटुआक पुकार अन्तिम दृश्यकेँ रंगमंचीय तीखापन दैत अछि।

प्रश्न 2390. निर्वस्त्र नाचक संकेत कोन नैतिक मांग रखैत अछि?
क. आवरण, पाखण्ड आ झूठ हटय
ख. अधिक वस्त्र पहिरय
ग. सत्य छिपाय
घ. प्रश्न बंद करय
उत्तर: क. आवरण, पाखण्ड आ झूठ हटय
व्याख्या: निर्वस्त्रता यहाँ नग्न सत्यक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 2391. आगि-खायबला राहीक छवि पाठकमे कोन प्रभाव छोड़ैत अछि?
क. कवि पीड़ा, क्रोध आ सत्यकेँ भीतर ग्रहण करैत अछि
ख. कवि सुरक्षित दूरी पर अछि
ग. कवि असंवेदनशील अछि
घ. कवि केवल सूत्र पढ़ैत अछि
उत्तर: क. कवि पीड़ा, क्रोध आ सत्यकेँ भीतर ग्रहण करैत अछि
व्याख्या: आगि खाएब असम्भव/अतिशय क्रिया अछि—कविक तीव्र अनुभवक प्रतीक।

प्रश्न 2392. “छाह सभ”क अन्तिम भागक सार की अछि?
क. दिशाहीन सामूहिक यात्रा, नग्न सत्यक प्रदर्शन आ कविक अग्निमय पागलपन
ख. सरल समाधान
ग. पूर्ण शांति
घ. केवल पुरस्कार-वर्णन
उत्तर: क. दिशाहीन सामूहिक यात्रा, नग्न सत्यक प्रदर्शन आ कविक अग्निमय पागलपन
व्याख्या: अन्त नाओ, अन्हार, नटुआ आ आगि मार्फत अस्थिर, विस्फोटक निष्कर्ष बनबैत अछि।

खण्ड २४५ : विदेह-सदेह ३७ — रहमान राही ज्ञानपीठ समारोह: प्रसंग

प्रश्न 2393. रहमान राहीक ४०म ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोह कतय आयोजित भेल छल?
क. संसदक लाइब्रेरीक बालयोगी ऑडिटोरियममे
ख. गामक पाठशालामे
ग. साहित्य अकादेमीक पुस्तकालयमे
घ. कोनो रंगमंचीय मेळामे
उत्तर: क. संसदक लाइब्रेरीक बालयोगी ऑडिटोरियममे
व्याख्या: वृत्तान्तमे समारोह संसदक लाइब्रेरीक बालयोगी ऑडिटोरियममे भेल बताओल अछि।

प्रश्न 2394. समारोहमे प्रधानमंत्रीक समयपालनक उल्लेख किएक अर्थपूर्ण अछि?
क. सम्मान समारोहक औपचारिक गरिमा आ अनुशासन देखबैत अछि
ख. समारोहक असफलता देखबैत अछि
ग. कविताक छन्द बुझबैत अछि
घ. भोजपुरी बिरहाक स्रोत बतबैत अछि
उत्तर: क. सम्मान समारोहक औपचारिक गरिमा आ अनुशासन देखबैत अछि
व्याख्या: निर्धारित समयपर आगमन समारोहक प्रतिष्ठा आ अनुशासनक संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 2395. स्टेजपर रहमान राहीक संग कोन उच्च राजनीतिक व्यक्तित्व उपस्थित छलाह?
क. डॉ. मनमोहन सिंह
ख. भिखारी ठाकुर
ग. सचिन तेन्दुलकर
घ. भीमसेन जोशी
उत्तर: क. डॉ. मनमोहन सिंह
व्याख्या: डॉ. मनमोहन सिंह प्रधानमंत्रीक रूपमे मंचपर रहमान राहीकेँ सम्मानित करैत छथि।

प्रश्न 2396. समारोह-वर्णन कविता सँ पहिने ककर भूमिका बनबैत अछि?
क. राहीक साहित्यिक प्रतिष्ठा आ सम्मानक सार्वजनिक पृष्ठभूमि
ख. एक खेल-समाचारक पूर्ण विवरण
ग. कोनो ग्रामीण लोककथा
घ. केवल प्रकाशन-सूचना
उत्तर: क. राहीक साहित्यिक प्रतिष्ठा आ सम्मानक सार्वजनिक पृष्ठभूमि
व्याख्या: समारोहक विस्तार कविता पढ़बाक सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ तैयार करैत अछि।

प्रश्न 2397. ज्ञानपीठ समारोहक वर्णनमे दर्शक-वर्गक उल्लेख कोन बात देखबैत अछि?
क. साहित्यिक-सांस्कृतिक समुदायक सहभागिता
ख. समारोहमे कोनो लोक नहि छल
ग. केवल छात्रक उपस्थिति
घ. केवल राजनीतिक सभा
उत्तर: क. साहित्यिक-सांस्कृतिक समुदायक सहभागिता
व्याख्या: विभिन्न नामक उपस्थिति साहित्यिक जगतक व्यापक सहभागिता देखबैत अछि।

प्रश्न 2398. राहीक सम्मानकेँ सीताकान्त महापात्र कोना अर्थ देलनि?
क. राहीकेँ सम्मानित कऽ ज्ञानपीठ अपने सम्मानित भेल
ख. राहीक कविता महत्वहीन अछि
ग. समारोह निरर्थक छल
घ. भाषा-सम्मानक कोनो सम्बन्ध नहि
उत्तर: क. राहीकेँ सम्मानित कऽ ज्ञानपीठ अपने सम्मानित भेल
व्याख्या: एहि कथनसँ राहीक साहित्यिक ऊँचाइ आ सम्मानक गरिमा स्पष्ट होइत अछि।

प्रश्न 2399. समारोहक आरम्भमे सरस्वती वन्दनाक प्रयोग कोन सांस्कृतिक संकेत दैत अछि?
क. साहित्यिक अनुष्ठानक ज्ञान-परम्परा सँ जुड़ाव
ख. क्रीड़ा-प्रतियोगिताक संकेत
ग. व्यापारिक उद्घाटनक संकेत
घ. नाव-यात्राक संकेत
उत्तर: क. साहित्यिक अनुष्ठानक ज्ञान-परम्परा सँ जुड़ाव
व्याख्या: सरस्वती वन्दना साहित्य-सम्मानकेँ ज्ञान आ कला परम्परासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2400. स्व. साहू शान्ति प्रसाद जैन आ रमा जैनक फोटो पाछाँ लगल रहबाक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ज्ञानपीठ पुरस्कारक स्थापना-स्मृति उपस्थित करैत अछि
ख. मंच-सज्जाक रंग बतबैत अछि
ग. कविताक विकल्प-सूची बनबैत अछि
घ. बिरहाक ताल बतबैत अछि
उत्तर: क. ज्ञानपीठ पुरस्कारक स्थापना-स्मृति उपस्थित करैत अछि
व्याख्या: संस्थापकक स्मृति समारोहक ऐतिहासिक निरंतरता देखबैत अछि।

प्रश्न 2401. ४०म वर्षक महत्त्वपर टिप्पणी कोन मानवीय बोध जोड़ैत अछि?
क. समय, आयु आ सांस्कृतिक स्मृतिक नश्वरता
ख. केवल भवनक आकार
ग. भोजन-सूचीक विवरण
घ. केवल यात्रा-भाड़ा
उत्तर: क. समय, आयु आ सांस्कृतिक स्मृतिक नश्वरता
व्याख्या: ५०म वर्षगाँठक प्रतीक्षा आ आयुक अनिश्चितता समय-बोधकेँ गहरा करैत अछि।

प्रश्न 2402. समारोहक पूरा वृत्तान्त “छाह सभ” पढ़बाक पहिने पाठककेँ की दैत अछि?
क. कवि, भाषा, पुरस्कार आ सार्वजनिक स्वीकृतिक संदर्भ
ख. प्रश्नक पृष्ठ-सूची
ग. व्याकरणक तालिका
घ. केवल हास्य-स्थित
उत्तर: क. कवि, भाषा, पुरस्कार आ सार्वजनिक स्वीकृतिक संदर्भ
व्याख्या: एहि प्रस्तावना सँ कविता एक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यमे प्रवेश करैत अछि।

खण्ड २४६ : विदेह-सदेह ३७ — रहमान राही: सम्मानक वस्तु आ प्रतीक

प्रश्न 2403. प्रधानमंत्री द्वारा राहीकेँ की-की देल गेल?
क. शॉल, सरस्वती प्रतिमाक कांस्य अनुकृति, प्रशस्ति पत्र आ पाँच लाख टाकाक ड्राफ्ट
ख. केवल माला
ग. केवल किताब
घ. केवल टिकट
उत्तर: क. शॉल, सरस्वती प्रतिमाक कांस्य अनुकृति, प्रशस्ति पत्र आ पाँच लाख टाकाक ड्राफ्ट
व्याख्या: सम्मानमे वस्त्र, प्रतीक, प्रमाण आ पुरस्कार-राशि सभ सम्मिलित छल।

प्रश्न 2404. राजा भोजक सरस्वती प्रतिमाक कांस्य अनुकृति कोन अर्थ राखैत अछि?
क. ज्ञान, परम्परा आ भारतीय साहित्यिक स्मृतिक प्रतीक
ख. सैनिक विजयक प्रतीक
ग. बाजारू विज्ञापन
घ. नाटकक मुखौटा
उत्तर: क. ज्ञान, परम्परा आ भारतीय साहित्यिक स्मृतिक प्रतीक
व्याख्या: सरस्वतीक प्रतिमा ज्ञान-परम्पराक मूर्त प्रतीक अछि।

प्रश्न 2405. मूल सरस्वती प्रतिमा लंदनक ब्रिटिश म्यूजियममे रहबाक उल्लेख कोन ऐतिहासिक संवेदना जगबैत अछि?
क. भारतीय सांस्कृतिक धरोहरक वैश्विक/उपनिवेशीय प्रसंग
ख. केवल पर्यटन सूचना
ग. कविताक छन्द गणना
घ. क्रीड़ा इतिहास
उत्तर: क. भारतीय सांस्कृतिक धरोहरक वैश्विक/उपनिवेशीय प्रसंग
व्याख्या: एहि उल्लेखसँ भारतीय धरोहरक दूरस्थ संग्रहालय-स्थितिक ऐतिहासिक बोध बनैत अछि।

प्रश्न 2406. ज्ञानपीठ द्वारा प्रभामण्डल जोड़बाक संकेत कोन भाव बढ़बैत अछि?
क. प्रतिमाक पूज्य आ आलोकमय साहित्यिक रूप
ख. प्रतिमाक हास्यात्मक रूप
ग. प्रतिमाक असंबद्धता
घ. भाषाक नकार
उत्तर: क. प्रतिमाक पूज्य आ आलोकमय साहित्यिक रूप
व्याख्या: प्रभामण्डल ज्ञान आ गरिमाक आभा जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2407. राहीक उद्गारमे नेहरू आ मनमोहन सिंहक उल्लेख कोन बात खोलैत अछि?
क. राष्ट्रीय नेतृत्वक परम्परा संग पुरस्कार ग्रहणक भावनात्मक सम्बन्ध
ख. कविताक असफलता
ग. समारोहक निजी विवाद
घ. लोकगीतक ताल
उत्तर: क. राष्ट्रीय नेतृत्वक परम्परा संग पुरस्कार ग्रहणक भावनात्मक सम्बन्ध
व्याख्या: राही पुरस्कार ग्रहणकेँ राष्ट्रीय स्मृतिक निरंतरतासँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 2408. राही द्वारा कश्मीरक राज्य सरकार आ केन्द्र सरकारक भाषा-मान्यताक तुलना किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. कश्मीरी भाषाक संस्थागत मान्यता-संघर्ष देखबैत अछि
ख. भाषासँ कोनो सम्बन्ध नहि
ग. केवल यात्रा-वर्णन अछि
घ. पुरस्कारक राशि घटबैत अछि
उत्तर: क. कश्मीरी भाषाक संस्थागत मान्यता-संघर्ष देखबैत अछि
व्याख्या: ई कथन भाषायी अधिकार आ मान्यताक राजनैतिक आयाम खोलैत अछि।

प्रश्न 2409. राहीक प्रतिनिधि कविताक अनुवाद प्रधानमंत्रीकेँ देल जेनाइ कोन संकेत अछि?
क. कविताक सार्वजनिक-राष्ट्रीय प्रस्तुति
ख. कविता छिपाओल गेल
ग. अनुवाद निषिद्ध भेल
घ. समारोह बिना पाठक रहल
उत्तर: क. कविताक सार्वजनिक-राष्ट्रीय प्रस्तुति
व्याख्या: कविताक अनुवाद उच्च मंचपर पहुँचल, ई भाषा-पार संवादक संकेत अछि।

प्रश्न 2410. सम्मानक वस्तुसभमे शॉलक भूमिका की अछि?
क. आदर आ सांस्कृतिक सत्कारक चिह्न
ख. युद्धक चिह्न
ग. व्यापारिक बिल
घ. शिक्षण-सूची
उत्तर: क. आदर आ सांस्कृतिक सत्कारक चिह्न
व्याख्या: भारतीय सम्मान-परम्परामे शॉल ओढ़ेनाइ आदरक चिह्न अछि।

प्रश्न 2411. प्रशस्ति पत्रक भूमिका की अछि?
क. रचनात्मक योगदानक औपचारिक मान्यता
ख. केवल सजावट
ग. कविताक शीर्षक बदलनाइ
घ. कोनो मौखिक अफवाह
उत्तर: क. रचनात्मक योगदानक औपचारिक मान्यता
व्याख्या: प्रशस्ति पत्र साहित्यिक उपलब्धिक लिखित स्वीकृति अछि।

प्रश्न 2412. पाँच लाख टाकाक ड्राफ्टक उल्लेख समारोहक कोन पक्ष देखबैत अछि?
क. सम्मानक सांकेतिक आ आर्थिक दुनू रूप
ख. कविता-विरोध
ग. भाषा-निरस्तीकरण
घ. ग्राम्य खेल
उत्तर: क. सम्मानक सांकेतिक आ आर्थिक दुनू रूप
व्याख्या: पुरस्कारमे साहित्यिक प्रतिष्ठा संग आर्थिक मान्यता सेहो रहैत अछि।

खण्ड २४७ : विदेह-सदेह ३७ — रहमान राही: जीवन, कृति आ भाषा

प्रश्न 2413. अब्दुल रहमान राहीक जन्मक तिथि कोन देल गेल अछि?
क. ६ मई १९२५
ख. १ जनवरी १९००
ग. १५ अगस्त १९४७
घ. २ अक्टूबर १८६९
उत्तर: क. ६ मई १९२५
व्याख्या: वृत्तान्तमे राहीक जन्म ६ मई १९२५ बताओल अछि।

प्रश्न 2414. राहीक पहिल कविता संग्रहकेँ कोन सम्मान भेटल छल?
क. साहित्य अकादमी पुरस्कार
ख. नोबेल पुरस्कार
ग. ऑस्कर
घ. दादा साहेब फाल्के पुरस्कार
उत्तर: क. साहित्य अकादमी पुरस्कार
व्याख्या: राहीक पहिल कविता संग्रह साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित भेल।

प्रश्न 2415. भारत सरकारसँ राहीकेँ कोन नागरिक सम्मान भेटल?
क. पद्म श्री
ख. भारत रत्न
ग. पद्म विभूषण
घ. कीर्ति चक्र
उत्तर: क. पद्म श्री
व्याख्या: वृत्तान्तमे राहीकेँ पद्म श्री भेटबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 2416. मानव संसाधन विकास मंत्रालयसँ राहीकेँ कोन फेलोशिप भेटल?
क. एमिरेट्स फेलोशिप
ख. खेल फेलोशिप
ग. कृषि फेलोशिप
घ. युवा उद्यम फेलोशिप
उत्तर: क. एमिरेट्स फेलोशिप
व्याख्या: एमिरेट्स फेलोशिप राहीक शैक्षिक-साहित्यिक प्रतिष्ठा देखबैत अछि।

प्रश्न 2417. राहीक प्रमुख कविता-संग्रहमे कोन नाम आवैत अछि?
क. सनवुन्य साज, सुबहुक सोदा, कलाम-ए-राही
ख. कन्यादान मात्र
ग. वृद्धाश्रमक पक्षमे मात्र
घ. अवाक् मात्र
उत्तर: क. सनवुन्य साज, सुबहुक सोदा, कलाम-ए-राही
व्याख्या: एहि तीन नामसँ राहीक काव्य-यात्राक प्रतिनिधि रूप देखाइत अछि।

प्रश्न 2418. राहीक आलोचना आ निबन्धक कृति-सूची कोन बात सूचित करैत अछि?
क. ओ केवल कवि नहि, आलोचक-निबन्धकार सेहो छथि
ख. ओ केवल गायक छथि
ग. ओ केवल नाटककार छथि
घ. ओ साहित्यसँ असंबद्ध छथि
उत्तर: क. ओ केवल कवि नहि, आलोचक-निबन्धकार सेहो छथि
व्याख्या: कहवट आदि पोथीक उल्लेख राहीक आलोचनात्मक लेखनक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 2419. राहीक भाषा-संघर्षक मूल बिन्दु की छल?
क. कश्मीरीक मान्यता आ प्रतिष्ठा
ख. केवल हिन्दी व्याकरण
ग. भोजपुरी नाच
घ. मैथिली पञ्जी
उत्तर: क. कश्मीरीक मान्यता आ प्रतिष्ठा
व्याख्या: राहीक उद्गारमे कश्मीरी भाषाक संस्थागत मान्यता प्रमुख प्रश्न अछि।

प्रश्न 2420. “छाह सभ”क अनुवाद-मार्ग कोन अछि?
क. कश्मीरीसँ अंग्रेजी, अंग्रेजीसँ मैथिली
ख. तेलुगुसँ तमिल
ग. भोजपुरीसँ उड़िया
घ. फारसीसँ संस्कृत
उत्तर: क. कश्मीरीसँ अंग्रेजी, अंग्रेजीसँ मैथिली
व्याख्या: प्रस्तुति मे एस.एल. सन्धुक अंग्रेजी अनुवाद आ तकर आधारपर मैथिली अनुवादक उल्लेख अछि।

प्रश्न 2421. एस.एल. सन्धुक भूमिका कोन रूपमे देखायल अछि?
क. कश्मीरीसँ अंग्रेजी अनुवादक
ख. मंच-संचालक
ग. प्रधानमंत्री
घ. भोजपुरी कवि
उत्तर: क. कश्मीरीसँ अंग्रेजी अनुवादक
व्याख्या: अनुवाद-श्रृंखलामे एस.एल. सन्धु अंग्रेजी माध्यमक कड़ी छथि।

प्रश्न 2422. राहीक जीवन-परिचय कविता सँ पहिने देबाक लाभ की अछि?
क. पाठक कविताकेँ कविक रचनात्मक संघर्ष आ प्रतिष्ठासँ जोड़ि पढ़ैत अछि
ख. पाठक पृष्ठ गिनैत अछि
ग. कविता हटि जाइत अछि
घ. केवल विकल्प बढ़ैत अछि
उत्तर: क. पाठक कविताकेँ कविक रचनात्मक संघर्ष आ प्रतिष्ठासँ जोड़ि पढ़ैत अछि
व्याख्या: जीवनीक संकेत पाठककेँ कविता पाठक गहिर संदर्भ दैत अछि।

खण्ड २४८ : विदेह-सदेह ३७ — “छाह सभ” प्रस्तावना आ अनुवाद-संवाद

प्रश्न 2423. “छाह सभ” कश्मीरीसँ मैथिली धरि पहुँचबाक प्रक्रियामे की केंद्रीय अछि?
क. भाषा-पार अनुवाद आ साहित्यिक सेतु
ख. पृष्ठ-संख्या गणना
ग. केवल मंच-सज्जा
घ. कोनो बाजार विज्ञापन
उत्तर: क. भाषा-पार अनुवाद आ साहित्यिक सेतु
व्याख्या: कविता कश्मीरी, अंग्रेजी आ मैथिली बीच सेतु बनैत अछि।

प्रश्न 2424. भारतीय ज्ञानपीठक साभार उल्लेख कोन नैतिकता देखबैत अछि?
क. स्रोत-स्वीकार आ साहित्यिक श्रेय
ख. स्रोत-गोपन
ग. कविताक नकार
घ. पुरस्कार-विरोध
उत्तर: क. स्रोत-स्वीकार आ साहित्यिक श्रेय
व्याख्या: साभार उल्लेख अनुवादक स्रोतक ईमानदार स्वीकृति अछि।

प्रश्न 2425. कश्मीरी कविताकेँ मैथिलीमे राखब विदेह-सदेहक कोन व्यापक परियोजनासँ मेल खाइत अछि?
क. भारतीय भाषासभक परस्पर संवाद
ख. केवल स्थानीय समाचार
ग. केवल विज्ञापन
घ. संगीत-सूची
उत्तर: क. भारतीय भाषासभक परस्पर संवाद
व्याख्या: ई संकलन अनेक भारतीय भाषाक साहित्य मैथिली पाठक धरि आनैत अछि।

प्रश्न 2426. “उपस्थित लोककेँ देल गेल कविता” वाक्यांश की बतबैत अछि?
क. कविता समारोहक सहभागीक पाठ-अनुभव बनल
ख. कविता अप्रकाशित राखल गेल
ग. कविता निषिद्ध छल
घ. कविता केवल मौखिक अफवाह
उत्तर: क. कविता समारोहक सहभागीक पाठ-अनुभव बनल
व्याख्या: कविता श्रोतागणक हाथमे देल गेल, अर्थात सार्वजनिक पाठ्य रूप प्राप्त भेल।

प्रश्न 2427. कविताक अनुवाद प्रधानमंत्रीकेँ देबाक प्रसंग कोन मूल्य खोलैत अछि?
क. भारतीय भाषायी साहित्यक राष्ट्रीय स्तरपर मान्यता
ख. कविता निजी डायरी मात्र
ग. अनुवादक अस्वीकृति
घ. भाषाक मौनता
उत्तर: क. भारतीय भाषायी साहित्यक राष्ट्रीय स्तरपर मान्यता
व्याख्या: एहि प्रसंगसँ भाषायी साहित्य उच्च सार्वजनिक मंचपर मान्यता पाबैत अछि।

प्रश्न 2428. राहीक कश्मीरी पहचान आ मैथिली अनुवाद संग-संग आओनाइ कोन संदेश दैत अछि?
क. क्षेत्रीय भाषा सभ आपसमे संवाद कऽ राष्ट्रीय साहित्य बनबैत अछि
ख. भाषा सभ अलग-अलग बंद रहय
ग. अनुवाद असंभव अछि
घ. केवल एक भाषा मान्य अछि
उत्तर: क. क्षेत्रीय भाषा सभ आपसमे संवाद कऽ राष्ट्रीय साहित्य बनबैत अछि
व्याख्या: कश्मीरी कविता मैथिलीमे आबि भाषायी साझेदारी देखबैत अछि।

प्रश्न 2429. “छाह सभ” शीर्षकक मैथिली रूप पाठककेँ कोन संकेत दैत अछि?
क. छाया, आत्म-संशय आ अस्तित्वगत अन्हारक संसार
ख. केवल मौसम समाचार
ग. कृषि-विज्ञान
घ. व्यापारिक नाम
उत्तर: क. छाया, आत्म-संशय आ अस्तित्वगत अन्हारक संसार
व्याख्या: शीर्षक स्वयं कविताक दार्शनिक छाया-बोधक द्वार खोलैत अछि।

प्रश्न 2430. अनुवादक माध्यम अंग्रेजी रहबाक बावजूद मैथिली पाठमे की प्रमुख अछि?
क. भाव-संरचना आ प्रतीकक पुनर्सृजन
ख. शब्दशः यांत्रिक नकल
ग. मंच-व्यवस्था
घ. पुरस्कार-सूची
उत्तर: क. भाव-संरचना आ प्रतीकक पुनर्सृजन
व्याख्या: कश्मीरी मूलक भाव मैथिली संवेदनामे फेर सँ रचायल अछि।

प्रश्न 2431. विदेह-सदेहमे एहि अनुवादक उपस्थिति कोन पाठकीय लाभ दैत अछि?
क. मैथिली पाठक कश्मीरी आधुनिक काव्य-संवेदना सँ परिचित होइत छथि
ख. पाठक केवल तिथि याद करैत छथि
ग. पाठकक भाषा सीमित होइत अछि
घ. कविता गायब भऽ जाइत अछि
उत्तर: क. मैथिली पाठक कश्मीरी आधुनिक काव्य-संवेदना सँ परिचित होइत छथि
व्याख्या: अनुवाद क्षेत्रीय पाठककेँ दोसर भाषाक आधुनिक काव्यक अनुभव दैत अछि।

प्रश्न 2432. प्रस्तावना आ कविता एक संग पढ़बासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. सम्मान, भाषा-संघर्ष आ कविताक आत्म-छाया एके प्रसंगमे जुड़ैत अछि
ख. दुनू पूर्ण असंबद्ध अछि
ग. केवल पुरस्कार-राशि शेष रहैत अछि
घ. कविता केवल हास्य बनैत अछि
उत्तर: क. सम्मान, भाषा-संघर्ष आ कविताक आत्म-छाया एके प्रसंगमे जुड़ैत अछि
व्याख्या: समारोहक सार्वजनिक रोशनी आ कविताक छाया-बोध परस्पर तनाव रचैत अछि।

खण्ड २४९ : विदेह-सदेह ३७ — समारोहक अन्तिम समाचार आ समय-बोध

प्रश्न 2433. समारोहसँ घुरैत समय एफ.एम. समाचारमे ककर ४०म टेस्ट शतकक सूचना भेटल?
क. सचिन तेन्दुलकर
ख. रहमान राही
ग. भिखारी ठाकुर
घ. सीताकान्त महापात्र
उत्तर: क. सचिन तेन्दुलकर
व्याख्या: वृत्तान्तक अन्तमे सचिन तेन्दुलकरक ४०म टेस्ट शतकक समाचार भेटबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 2434. भीमसेन जोशीक समाचार की छल?
क. हिनका भारत रत्न पुरस्कार देल गेल
ख. हिनका ज्ञानपीठ देल गेल
ग. हिनका पद्म श्री नहि भेटल
घ. हिनका समारोहमे मंचसँ हटाओल गेल
उत्तर: क. हिनका भारत रत्न पुरस्कार देल गेल
व्याख्या: एफ.एम. समाचारमे भीमसेन जोशीकेँ भारत रत्न देल गेल बताओल अछि।

प्रश्न 2435. चन्द्रयान-१ सम्बन्धी समाचार की छल?
क. ओ चन्द्रमाक १०० किलोमीटरक वृत्ताकार कक्षामे स्थापित भेल
ख. ओ समुद्रमे उतरल
ग. ओ सूर्यपर गेल
घ. ओ रद्द भऽ गेल
उत्तर: क. ओ चन्द्रमाक १०० किलोमीटरक वृत्ताकार कक्षामे स्थापित भेल
व्याख्या: समाचारमे चन्द्रयान-१ क चन्द्रमाक १०० किमी कक्षामे स्थापित होयबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 2436. समारोहक बाद तीन अलग-अलग समाचारक उल्लेख कोन प्रभाव बनबैत अछि?
क. साहित्य, खेल, संगीत आ विज्ञानक एके दिनक सांस्कृतिक समय-बोध
ख. केवल कविता समाप्ति
ग. भोजन-सूची
घ. नदी-यात्रा
उत्तर: क. साहित्य, खेल, संगीत आ विज्ञानक एके दिनक सांस्कृतिक समय-बोध
व्याख्या: अन्तिम समाचार देशक बहुस्तरीय उपलब्धिक वातावरण बनबैत अछि।

प्रश्न 2437. ज्ञानपीठ समारोह आ सचिनक शतकक संग-साथ उल्लेख किएक रोचक अछि?
क. एके समयमे साहित्य आ खेल दुनू राष्ट्रीय स्मृतिमे प्रवेश करैत अछि
ख. साहित्यक अपमान होइत अछि
ग. खेलक कोनो महत्त्व नहि
घ. दुनू असंभव घटना अछि
उत्तर: क. एके समयमे साहित्य आ खेल दुनू राष्ट्रीय स्मृतिमे प्रवेश करैत अछि
व्याख्या: लेखक समकालीन सार्वजनिक स्मृति के व्यापक धरातलपर देखैत छथि।

प्रश्न 2438. भीमसेन जोशीक भारत रत्न समाचार साहित्यिक समारोहक अन्तमे की जोड़ैत अछि?
क. भारतीय कलासंस्कृतिक व्यापक सम्मान-बोध
ख. कविताक विरोध
ग. भाषा-भेदक अंत
घ. केवल राजनीति
उत्तर: क. भारतीय कलासंस्कृतिक व्यापक सम्मान-बोध
व्याख्या: संगीत आ साहित्य दुनू सांस्कृतिक गरिमाक क्षेत्र बनि उभरैत अछि।

प्रश्न 2439. चन्द्रयान-१ समाचारक प्रयोग पाठमे कोन आधुनिक आयाम जोड़ैत अछि?
क. वैज्ञानिक उपलब्धि आ राष्ट्रीय उत्साह
ख. केवल पौराणिक कथा
ग. गामक मेलाक विवरण
घ. कोनो असंबद्ध डर
उत्तर: क. वैज्ञानिक उपलब्धि आ राष्ट्रीय उत्साह
व्याख्या: साहित्यिक समारोहक दिन विज्ञानक ऐतिहासिक उपलब्धि सेहो याद रहैत अछि।

प्रश्न 2440. “दू वर्ष धरि रहत” सूचना चन्द्रयानक बारेमे कोन प्रत्याशा बनबैत अछि?
क. दीर्घ वैज्ञानिक अवलोकनक आशा
ख. तुरन्त नष्ट होयबाक भय
ग. कविताक बन्द
घ. समारोहक पुनरारम्भ
उत्तर: क. दीर्घ वैज्ञानिक अवलोकनक आशा
व्याख्या: कक्षा-स्थापनासँ आगामी वैज्ञानिक कार्यक आशा व्यक्त होइत अछि।

प्रश्न 2441. एफ.एम. पर समाचार सुनबाक प्रसंग वृत्तान्तक शैलीमे की जोड़ैत अछि?
क. व्यक्तिगत यात्रा आ राष्ट्रीय समाचारक तात्कालिकता
ख. प्राचीन आख्यान
ग. केवल कल्पना
घ. मौन निष्कर्ष
उत्तर: क. व्यक्तिगत यात्रा आ राष्ट्रीय समाचारक तात्कालिकता
व्याख्या: लेखकक निजी घुरान राष्ट्रीय घटनासँ जुड़ि जाइत अछि।

प्रश्न 2442. समारोहक अन्तिम समाचार-संयोजनक सार की अछि?
क. एके समयमे कविता, खेल, संगीत आ विज्ञानक भारत उपस्थित अछि
ख. केवल एकाकी कविता
ग. केवल बाजार
घ. केवल मंच-विवाद
उत्तर: क. एके समयमे कविता, खेल, संगीत आ विज्ञानक भारत उपस्थित अछि
व्याख्या: अन्तिम वाक्य देशक सांस्कृतिक-वैज्ञानिक बहुलता कैं संक्षेपमे पकड़ैत अछि।

खण्ड २५० : विदेह-सदेह ३७ — भिखारी ठाकुर: परिचय आ लोकधारा

प्रश्न 2443. भिखारी ठाकुरक जन्म-वर्ष आ मृत्यु-वर्ष कोन देल गेल अछि?
क. १८८७-१९७१
ख. १९२५-२००८
ग. १९७१-२०२०
घ. १८००-१८८७
उत्तर: क. १८८७-१९७१
व्याख्या: वृत्तान्तमे भिखारी ठाकुरक जीवन-काल १८८७-१९७१ देल अछि।

प्रश्न 2444. भिखारी ठाकुरक जन्मस्थान कोन जिलासँ जुड़ल बताओल अछि?
क. छपरा जिला
ख. कश्मीर
ग. दरभंगा
घ. तेलंगाना
उत्तर: क. छपरा जिला
व्याख्या: परिचयमे भिखारी ठाकुरक जन्म छपरा जिला, बिहारमे बताओल अछि।

प्रश्न 2445. भिखारी ठाकुरक प्रारम्भिक रचना सभक प्रकृति की छल?
क. मौखिक परम्परामे प्रचलित
ख. केवल मुद्रित अंग्रेजी ग्रन्थ
ग. केवल शिलालेख
घ. केवल राजकीय आदेश
उत्तर: क. मौखिक परम्परामे प्रचलित
व्याख्या: प्रारम्भमे हुनकर रचनासभ मौखिक रूपमे चलैत रहल।

प्रश्न 2446. बादमे भिखारी ठाकुरक हस्तलिखित भोजपुरी रचना कोन लिपिमे भेटल?
क. कैथी लिपिमे
ख. रोमन लिपिमे मात्र
ग. तिरहुता मात्र
घ. उर्दू मात्र
उत्तर: क. कैथी लिपिमे
व्याख्या: परिचयमे कैथी लिपिमे हस्तलिखित भोजपुरी रचनाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 2447. विदेह-सदेह ३७ मे भिखारी ठाकुरक रचना कोन भाषासँ मैथिलीमे अनूदित अछि?
क. भोजपुरीसँ
ख. कश्मीरीसँ
ग. तेलुगुसँ
घ. कन्नड़सँ
उत्तर: क. भोजपुरीसँ
व्याख्या: भोजपुरी कविता खण्डमे मूल भोजपुरीसँ मैथिली अनुवाद देल अछि।

प्रश्न 2448. भिखारी ठाकुरक रचना-खण्डक शीर्षक कोन सामाजिक विषयक पक्षमे अछि?
क. वृद्धाश्रमक पक्षमे
ख. युद्धक पक्षमे
ग. मेला-बाजारक पक्षमे
घ. नदी-नौकाक पक्षमे
उत्तर: क. वृद्धाश्रमक पक्षमे
व्याख्या: बिरहा वृद्ध-बूढ़ सभक अपमान आ वृद्धाश्रम निर्माणक आग्रह उठबैत अछि।

प्रश्न 2449. “लोकलाकार” शब्द भिखारी ठाकुरक कोन पहचान बनबैत अछि?
क. लोकजीवन, रंगमंच, गीत आ जनभाषाक कलाकार
ख. केवल दरबारी कवि
ग. केवल वैज्ञानिक
घ. केवल प्रशासक
उत्तर: क. लोकजीवन, रंगमंच, गीत आ जनभाषाक कलाकार
व्याख्या: भिखारी ठाकुर लोकजीवनक कलात्मक प्रतिनिधि रूपमे प्रस्तुत छथि।

प्रश्न 2450. भोजपुरीसँ मैथिली अनुवादक परियोजना कोन भाषायी सम्बन्ध देखबैत अछि?
क. निकटवर्ती जनभाषासभक सांस्कृतिक संवाद
ख. भाषासभक शत्रुता
ग. अनुवादक अस्वीकृति
घ. मौनता
उत्तर: क. निकटवर्ती जनभाषासभक सांस्कृतिक संवाद
व्याख्या: भोजपुरी लोककाव्य मैथिली पाठक धरि पहुँचि भाषा-सम्बन्ध मजबूत करैत अछि।

प्रश्न 2451. भिखारी ठाकुरक मौखिक रचना आ कैथी हस्तलिखित रूपक संग-साथ उल्लेख कोन इतिहास खोलैत अछि?
क. लोकवाचनसँ लिखित संरक्षण धरि यात्रा
ख. केवल छपाई-दोष
ग. कविताक अभाव
घ. अनुवादक निषेध
उत्तर: क. लोकवाचनसँ लिखित संरक्षण धरि यात्रा
व्याख्या: ई लोकपरम्पराक लिखित अभिलेखनक प्रक्रिया देखबैत अछि।

प्रश्न 2452. भिखारी ठाकुरक खण्ड विदेह-सदेह ३७क बहुभाषिक स्वरूपमे की जोड़ैत अछि?
क. भोजपुरी लोक-कविताक सामाजिक चेतना
ख. केवल कश्मीरी आधुनिकता
ग. केवल तेलुगु कथा
घ. कोनो साहित्यिक मूल्य नहि
उत्तर: क. भोजपुरी लोक-कविताक सामाजिक चेतना
व्याख्या: एहि खण्डसँ संकलनमे लोकधर्मी भोजपुरी स्वर जुड़ैत अछि।

खण्ड २५१ : विदेह-सदेह ३७ — बिरहा १: वृद्धाश्रमक सामाजिक आग्रह

प्रश्न 2453. बिरहा १ मे वक्ता अपन परिचय कोना दैत अछि?
क. कुतुबपुर गाम आ भिखारी ठाकुर नामसँ
ख. कश्मीरक कवि रूपमे
ग. प्रधानमंत्री रूपमे
घ. चन्द्रयान वैज्ञानिक रूपमे
उत्तर: क. कुतुबपुर गाम आ भिखारी ठाकुर नामसँ
व्याख्या: “कुतुबपुर अछि गाम, भिखारी ठाकुर अछि नाम” सँ वक्ता लोकधर्मी आत्म-परिचय दैत अछि।

प्रश्न 2454. “सभ गोटेकेँ करै छी प्रणाम” पंक्ति कोन लोक-शैली देखबैत अछि?
क. विनम्र संबोधन आ जनसम्बोधन
ख. आक्रामक आदेश
ग. मौनता
घ. दरबारी दूरी
उत्तर: क. विनम्र संबोधन आ जनसम्बोधन
व्याख्या: बिरहा जनसमुदायकेँ विनम्र प्रणामसँ सम्बोधित करैत अछि।

प्रश्न 2455. “उपरेसँ चिक्कन अछि चामक ओहरन” मे कोन आलोचना अछि?
क. बाहरी चमक भीतरक असंवेदनशीलता छिपबैत अछि
ख. चामक ओहरन ही नैतिकता अछि
ग. बूढ़ सभ खुश छथि
घ. समाजमे कोनो विरोध नहि
उत्तर: क. बाहरी चमक भीतरक असंवेदनशीलता छिपबैत अछि
व्याख्या: बाहरी सभ्यता बुजुर्गक दुखप्रति लाजहीनता छिपा सकैत अछि।

प्रश्न 2456. “तीन दिनक सेखी” कोन मानवीय कमजोरी पर प्रहार करैत अछि?
क. क्षणिक अहंकार आ दिखावा
ख. दीर्घ साधना
ग. करुणा
घ. सन्तोष
उत्तर: क. क्षणिक अहंकार आ दिखावा
व्याख्या: क्षणिक शानमे लोक बुजुर्गक दुख बिसरि जाइत अछि।

प्रश्न 2457. बिरहा १ मे बूढ़ा-बूढ़ीक दुखक प्रति समाजक कोन दोष देखाओल अछि?
क. लाजक अभाव आ उपेक्षा
ख. अधिक सेवा
ग. पूर्ण न्याय
घ. अत्यधिक सम्मान
उत्तर: क. लाजक अभाव आ उपेक्षा
व्याख्या: “दुख भेल छनि, लगैए नै लाज” समाजक निष्ठुरता देखबैत अछि।

प्रश्न 2458. “बाबू-भइया एकमत” पंक्ति कोन सामूहिक अपील करैत अछि?
क. समाज मिलि वृद्धाश्रम बनाबय
ख. सभ अलग-अलग लड़य
ग. कोनो कार्य नहि हो
घ. केवल गीत गाओल जाय
उत्तर: क. समाज मिलि वृद्धाश्रम बनाबय
व्याख्या: बिरहा सामाजिक सहमति आ सामूहिक निर्णयक आह्वान अछि।

प्रश्न 2459. महाबीरक नाम स्मरणक प्रयोग की करैत अछि?
क. धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था सँ सामाजिक काजकेँ बल दैत अछि
ख. काज रोकैत अछि
ग. कविता हटबैत अछि
घ. भाषा बदलैत अछि
उत्तर: क. धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था सँ सामाजिक काजकेँ बल दैत अछि
व्याख्या: महाबीर स्मरण लोकभक्तिक ऊर्जा वृद्धाश्रम निर्माणसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2460. “वृद्धाश्रम बनबाउ नै तँ हएत अकाज” पंक्ति कोन चेतावनी अछि?
क. बुजुर्ग-संरक्षण बिना समाजक अनर्थ
ख. वृद्धाश्रम अनावश्यक अछि
ग. बूढ़ सभक अपमान ठीक अछि
घ. काज पूरा अछि
उत्तर: क. बुजुर्ग-संरक्षण बिना समाजक अनर्थ
व्याख्या: ई पंक्ति सामाजिक उपेक्षाकेँ अकाजक कारण मानैत अछि।

प्रश्न 2461. बिरहा १ मे वक्ताक पएर पड़बाक मुद्रा कोन भाव रखैत अछि?
क. विनती, करुणा आ सामाजिक दबाव
ख. घमण्ड
ग. व्यंग्य-मुक्त खेल
घ. केवल नृत्य
उत्तर: क. विनती, करुणा आ सामाजिक दबाव
व्याख्या: लोककवि विनम्रता सँ समाजक हृदय जगाबय चाहैत अछि।

प्रश्न 2462. बिरहा १ क सार की अछि?
क. बुजुर्गक दुखक विरुद्ध लोक-अपील आ वृद्धाश्रम निर्माणक मांग
ख. केवल प्रेमगीत
ग. केवल युद्धगीत
घ. केवल पुरस्कार-स्तुति
उत्तर: क. बुजुर्गक दुखक विरुद्ध लोक-अपील आ वृद्धाश्रम निर्माणक मांग
व्याख्या: बिरहा समाजकेँ बूढ़-बूढ़ीक संरक्षण लेल एकजुट करैत अछि।

खण्ड २५२ : विदेह-सदेह ३७ — बिरहा २: बूढ़क अपमान आ नैतिक हिसाब

प्रश्न 2463. बिरहा २ क आरम्भमे किनका संबोधित कएल गेल अछि?
क. हिन्दू-मुसलमान सभकेँ
ख. केवल कवि-मित्रकेँ
ग. केवल प्रधानमंत्रीकेँ
घ. केवल नाविककेँ
उत्तर: क. हिन्दू-मुसलमान सभकेँ
व्याख्या: “हिन्दू-मुसलमान, सभ हमर कहलपर दियौ कान” सँ सार्वभौमिक जन-अपील अछि।

प्रश्न 2464. बिरहा २ मे मुख्य चेतावनी की अछि?
क. बूढ़क अपमान नहि हो
ख. कविता नहि पढ़ू
ग. भाषा छोड़ू
घ. समारोह तोड़ू
उत्तर: क. बूढ़क अपमान नहि हो
व्याख्या: बिरहा बार-बार बूढ़क अपमानक विरोध करैत अछि।

प्रश्न 2465. “नेनपनेसँ जकरा तूँ कहैत एलेँहेँ माय” पंक्ति कोन स्मृति जगबैत अछि?
क. बाल्यकालक मातृ-ऋण आ पालन-पोषण
ख. केवल बाजारक खरीद
ग. युद्ध-स्मृति
घ. कक्षीय विज्ञान
उत्तर: क. बाल्यकालक मातृ-ऋण आ पालन-पोषण
व्याख्या: ई पंक्ति श्रोतालोककेँ माता-पिताक पालनक ऋण याद करबैत अछि।

प्रश्न 2466. “तकराले किए भऽ गेल छेँ तूँ कसाइ” मे कोन तीख आरोप अछि?
क. पालनहारप्रति क्रूरता कसाइपन बनि गेल
ख. संतान दयालु अछि
ग. माय-बाप अप्रासंगिक छथि
घ. समाज पूर्ण न्यायी अछि
उत्तर: क. पालनहारप्रति क्रूरता कसाइपन बनि गेल
व्याख्या: कसाइ उपमा संतानक निष्ठुरता पर लोक-भाषिक प्रहार अछि।

प्रश्न 2467. “बड़का हाकिम लग” हिसाब-किताबक प्रसंग कोन नैतिक अदालत बनबैत अछि?
क. जीवनक कर्मक उत्तरदायित्व
ख. केवल सरकारी फार्म
ग. कविताक पंजीकरण
घ. रेल टिकट
उत्तर: क. जीवनक कर्मक उत्तरदायित्व
व्याख्या: बिरहा कर्मक हिसाबक धर्म-नैतिक चेतना दैत अछि।

प्रश्न 2468. “की केलेँ तूँ कमाइ” प्रश्नक अर्थ की अछि?
क. जीवनमे करुणा आ कर्तव्यक असली कमाइ पूछल जा रहल अछि
ख. केवल धनराशि पूछल अछि
ग. केवल व्यापार
घ. केवल परीक्षा अंक
उत्तर: क. जीवनमे करुणा आ कर्तव्यक असली कमाइ पूछल जा रहल अछि
व्याख्या: एहि प्रश्नमे नैतिक उपलब्धि धनसँ पैघ बनैत अछि।

प्रश्न 2469. “आँखिसँ नोर खसतौ” पंक्ति कोन भविष्य-दुखक संकेत अछि?
क. उपेक्षा केलाक बाद पछतावा आ असहायता
ख. पूर्ण उत्सव
ग. हँसी-मजाक
घ. गीतक ताल मात्र
उत्तर: क. उपेक्षा केलाक बाद पछतावा आ असहायता
व्याख्या: बिरहा चेतावनी दैत अछि जे समयपर सेवा नहि केलासँ बादमे नोर खसत।

प्रश्न 2470. बिरहा २ मे वृद्धाश्रमक मांग कोना दोहराओल अछि?
क. तुरन्त वृद्धाश्रम बनबाबय आग्रह रूपमे
ख. वृद्धाश्रम तोड़बाक आग्रह रूपमे
ग. घर छोड़बाक आदेश रूपमे
घ. कोनो मांग नहि
उत्तर: क. तुरन्त वृद्धाश्रम बनबाबय आग्रह रूपमे
व्याख्या: अन्तिम पंक्तिमे वृद्धाश्रम बनबाय देबाक तत्काल आग्रह अछि।

प्रश्न 2471. बिरहा २ मे धर्म-समुदाय पार अपीलक महत्त्व की अछि?
क. बुजुर्गक सम्मान सर्वमानवीय कर्तव्य अछि
ख. ई केवल एक जातिक प्रश्न अछि
ग. ई केवल भाषा-विवाद अछि
घ. ई केवल पुरस्कारक विषय अछि
उत्तर: क. बुजुर्गक सम्मान सर्वमानवीय कर्तव्य अछि
व्याख्या: हिन्दू-मुसलमान दुनूकेँ संबोधन बुजुर्ग-सम्मानक सार्वभौमिकता देखबैत अछि।

प्रश्न 2472. बिरहा २ क सार की अछि?
क. मातृ-पितृ ऋण, बूढ़क सम्मान आ नैतिक उत्तरदायित्वक लोक-चेतावनी
ख. केवल नाचक निमंत्रण
ग. केवल नदी-वर्णन
घ. केवल ज्ञानपीठ समाचार
उत्तर: क. मातृ-पितृ ऋण, बूढ़क सम्मान आ नैतिक उत्तरदायित्वक लोक-चेतावनी
व्याख्या: बिरहा संतान आ समाजकेँ बूढ़क अपमानसँ रोकबाक लोकनैतिक आग्रह अछि।

खण्ड २५३ : विदेह-सदेह ३७ — भोजपुरीसँ मैथिली अनुवाद: स्वर, समाज आ सेतु

प्रश्न 2473. भोजपुरी बिरहा मैथिलीमे आनबासँ कोन साहित्यिक लाभ होइत अछि?
क. लोकभाषिक सामाजिक चेतना मैथिली पाठक धरि पहुँचैत अछि
ख. रचना नष्ट भऽ जाइत अछि
ग. भाषा-सम्बन्ध टूटैत अछि
घ. सामाजिक प्रश्न हटि जाइत अछि
उत्तर: क. लोकभाषिक सामाजिक चेतना मैथिली पाठक धरि पहुँचैत अछि
व्याख्या: अनुवाद भोजपुरी लोकस्वरकेँ मैथिली साहित्यिक संवादमे आनैत अछि।

प्रश्न 2474. बिरहाक शैली सामाजिक संदेशक लेल किएक उपयुक्त अछि?
क. गीतात्मक पुनरावृत्ति सँ अपील जनमानस धरि पहुँचैत अछि
ख. ओ केवल मौन गद्य अछि
ग. ओ अर्थहीन तालिका अछि
घ. ओ पृष्ठ-सूची अछि
उत्तर: क. गीतात्मक पुनरावृत्ति सँ अपील जनमानस धरि पहुँचैत अछि
व्याख्या: बिरहा लोकगायनक स्मरणीयता सँ सामाजिक आग्रह प्रभावी बनबैत अछि।

प्रश्न 2475. वृद्धाश्रम विषय लोककाव्यमे आओनाइ कोन परिवर्तन देखबैत अछि?
क. परम्परागत गीत आधुनिक सामाजिक संस्थाक मांग उठा रहल अछि
ख. लोकगीत केवल ऋतु-वर्णन करैत अछि
ग. समाजमे बुजुर्ग नहि छथि
घ. वृद्धाश्रमक प्रश्न असाहित्यिक अछि
उत्तर: क. परम्परागत गीत आधुनिक सामाजिक संस्थाक मांग उठा रहल अछि
व्याख्या: लोककाव्य आधुनिक सामाजिक समस्या पर बोलैत अछि।

प्रश्न 2476. भिखारी ठाकुरक लोकस्वरमे “बाबू-भइया” संबोधन की करैत अछि?
क. सामाजिक निकटता आ सीधा संवाद बनबैत अछि
ख. श्रोता सँ दूरी बनबैत अछि
ग. कविताकेँ राजकीय आदेश बनबैत अछि
घ. कविता मौन करैत अछि
उत्तर: क. सामाजिक निकटता आ सीधा संवाद बनबैत अछि
व्याख्या: लोकसंबोधन श्रोता केँ व्यक्तिगत रूपेँ जिम्मेदार बनबैत अछि।

प्रश्न 2477. बिरहा मे विनती आ चेतावनी दुनू किएक अछि?
क. करुणा जगाबय आ उत्तरदायित्वक डर दूनू चाही
ख. केवल हास्य चाही
ग. केवल सजावट चाही
घ. कोनो भाव नहि
उत्तर: क. करुणा जगाबय आ उत्तरदायित्वक डर दूनू चाही
व्याख्या: लोक-आन्दोलनमे अनुरोध आ नैतिक दबाव साथ-साथ चलैत अछि।

प्रश्न 2478. मौखिक परम्परासँ लिखित मैथिली अनुवाद धरि यात्रा कोन संरक्षण करैत अछि?
क. लोकस्मृति कैँ नव पाठक-वर्ग लेल बचबैत अछि
ख. लोकस्मृति मिटबैत अछि
ग. भाषा बदलब रोकैत अछि
घ. कविता गुप्त करैत अछि
उत्तर: क. लोकस्मृति कैँ नव पाठक-वर्ग लेल बचबैत अछि
व्याख्या: अनुवाद आ लेखन लोकधरोहर कैँ संरक्षित आ प्रसारित करैत अछि।

प्रश्न 2479. बिरहामे बूढ़-बूढ़ीक प्रश्न पारिवारिक सीमासँ बाहर किएक जाइत अछि?
क. कवि समाजक सामूहिक संस्थागत समाधान मांगैत छथि
ख. ई केवल घरक निजी बात अछि
ग. ई केवल खेल अछि
घ. ई केवल समारोह अछि
उत्तर: क. कवि समाजक सामूहिक संस्थागत समाधान मांगैत छथि
व्याख्या: वृद्धाश्रम मांग प्रश्नकैँ सार्वजनिक सामाजिक जिम्मेदारी बनबैत अछि।

प्रश्न 2480. भोजपुरी-मूल आ मैथिली-अनुवादक साथ-साथ उल्लेख कोन पारदर्शिता दैत अछि?
क. मूलभाषा आ अनुवादक श्रेय स्पष्ट रहैत अछि
ख. स्रोत छिपैत अछि
ग. कविता अनाम बनैत अछि
घ. समाजक प्रश्न हटैत अछि
उत्तर: क. मूलभाषा आ अनुवादक श्रेय स्पष्ट रहैत अछि
व्याख्या: स्रोत आ अनुवादक स्पष्टता साहित्यिक ईमानदारीक अंग अछि।

प्रश्न 2481. विदेह-सदेह ३७ मे भोजपुरी, कश्मीरी, उड़िया आदि संग मैथिली अनुवादक श्रृंखला कोन रूप बनबैत अछि?
क. भारतीय भाषासभक बहुध्वनिक मंच
ख. एकभाषी बंद संग्रह
ग. केवल स्थानीय विज्ञापन
घ. केवल परीक्षा सूची
उत्तर: क. भारतीय भाषासभक बहुध्वनिक मंच
व्याख्या: संकलन अनेक भाषाक स्वरकैँ मैथिलीमे संवाद करबैत अछि।

प्रश्न 2482. एहि खण्डक सार की अछि?
क. अनुवाद लोकस्वर, सामाजिक न्याय आ भाषायी सेतु तीनूकैँ जोड़ैत अछि
ख. अनुवाद केवल शब्द-खेल अछि
ग. लोककाव्य निरर्थक अछि
घ. भाषा-संवाद असंभव अछि
उत्तर: क. अनुवाद लोकस्वर, सामाजिक न्याय आ भाषायी सेतु तीनूकैँ जोड़ैत अछि
व्याख्या: भोजपुरी बिरहाक मैथिली रूप सामाजिक करुणा आ भाषायी साझेदारीक उदाहरण अछि।

खण्ड २५४ : विदेह-सदेह ३७ — अन्तिम बहुभाषिक संयोजन: करुणा, छाया आ राष्ट्रीय क्षितिज

प्रश्न 2483. भिखारी ठाकुरक बिरहा आ रहमान राहीक “छाह सभ” एके संकलनमे आओनाइ कोन व्यापकता देखबैत अछि?
क. लोककरुणा सँ आधुनिक अस्तित्व-संकट धरि भारतीय भाषिक विस्तार
ख. केवल एक विधाक दोहराव
ग. साहित्यक अभाव
घ. पृष्ठ-सूची मात्र
उत्तर: क. लोककरुणा सँ आधुनिक अस्तित्व-संकट धरि भारतीय भाषिक विस्तार
व्याख्या: संकलन लोकधर्मी सामाजिक गीत आ आधुनिक कश्मीरी कविता दूनूकेँ साथ राखैत अछि।

प्रश्न 2484. वृद्धाश्रमक लोक-आग्रह आ “छाह सभ”क आत्म-संशय मे कोन साझा तत्त्व अछि?
क. मनुष्यक असुरक्षा आ नैतिक संकट
ख. पूर्ण उत्सव
ग. केवल हास्य
घ. केवल भाषा-व्याकरण
उत्तर: क. मनुष्यक असुरक्षा आ नैतिक संकट
व्याख्या: दूनूमे मनुष्यक पीड़ा, असुरक्षा आ उत्तरदायित्वक प्रश्न उठैत अछि।

प्रश्न 2485. समारोहक राष्ट्रीय गरिमा आ कविताक अन्हारक तनाव कोन पाठकीय अनुभव बनबैत अछि?
क. बाहरी सम्मानक रोशनी भीतरक छाया सँ टकराइत अछि
ख. दुनू एकदम समान सपाट अछि
ग. कविता समाप्त होइत अछि
घ. सम्मान निरर्थक सिद्ध होइत अछि
उत्तर: क. बाहरी सम्मानक रोशनी भीतरक छाया सँ टकराइत अछि
व्याख्या: ज्ञानपीठक उजास आ “छाह”क अन्हार मिलि जटिल अर्थ बनबैत अछि।

प्रश्न 2486. भोजपुरी लोककवि आ कश्मीरी आधुनिक कवि संग पढ़बासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. भाषा भिन्न हो मुदा सामाजिक-मानवीय प्रश्न साझा रहैत अछि
ख. भाषा भिन्न तेँ संवाद असंभव
ग. कविता केवल एक क्षेत्रक अछि
घ. लोककाव्य आधुनिकतासँ असंबद्ध अछि
उत्तर: क. भाषा भिन्न हो मुदा सामाजिक-मानवीय प्रश्न साझा रहैत अछि
व्याख्या: दूनू भाषिक परम्परा मानवीय पीड़ा आ सत्यक खोज करैत अछि।

प्रश्न 2487. विदेह-सदेह ३७क अन्तिम अंशमे अनुवादक भूमिका की बनैत अछि?
क. भारतीय भाषासभक अनुभव मैथिली पाठकक साझा धरोहर बनबैत अछि
ख. मूल रचनाकेँ मिटा दैत अछि
ग. पाठककेँ दूर करैत अछि
घ. कोनो साहित्यिक काज नहि
उत्तर: क. भारतीय भाषासभक अनुभव मैथिली पाठकक साझा धरोहर बनबैत अछि
व्याख्या: अनुवाद विविध भाषाक अनुभव केँ मैथिली साहित्यिक संसारमे समेटैत अछि।

प्रश्न 2488. बुजुर्गक उपेक्षा, अहंकारक दानव, आ अन्हारमे नाओ — ई तीन प्रतीक मिलि कोन संसार रचैत अछि?
क. नैतिक रूपेँ संकटग्रस्त समाज
ख. पूर्ण सुखी समाज
ग. केवल बालकथा
घ. केवल क्रीड़ा-वर्णन
उत्तर: क. नैतिक रूपेँ संकटग्रस्त समाज
व्याख्या: तीनू प्रतीक सामाजिक करुणा, अहंकार आ दिशाहीनताक चित्र बनबैत अछि।

प्रश्न 2489. ज्ञानपीठ, भारत रत्न, चन्द्रयान आ टेस्ट शतकक उल्लेख एक संग किएक स्मरणीय अछि?
क. साहित्य, संगीत, विज्ञान आ खेलक समकालीन राष्ट्रीय क्षण
ख. केवल कविता-विरोध
ग. समारोहक अवमूल्यन
घ. अनुवादक नाश
उत्तर: क. साहित्य, संगीत, विज्ञान आ खेलक समकालीन राष्ट्रीय क्षण
व्याख्या: अन्तिम समाचार देशक बहुआयामी उपलब्धि एके समयमे देखबैत अछि।

प्रश्न 2490. विदेह-सदेह ३७क बहुभाषिक समापन मैथिली पाठकसँ कोन मांग करैत अछि?
क. दोसर भाषाक दुख, सौन्दर्य आ विचारकेँ अपन पाठ-क्षेत्रमे स्वीकार करू
ख. केवल अपन भाषा बंद राखू
ग. अनुवादसँ बचू
घ. लोककविता हटाउ
उत्तर: क. दोसर भाषाक दुख, सौन्दर्य आ विचारकेँ अपन पाठ-क्षेत्रमे स्वीकार करू
व्याख्या: संकलन पाठककेँ खुलल भारतीय भाषिक सह-अस्तित्व दिस लैत अछि।

प्रश्न 2491. “करुणा” आ “छाया” एहि अन्तिम खण्डक दू धुरी कोना बनैत अछि?
क. बिरहामे करुणा, राहीक कवितामे छाया; दुनू मनुष्यक भीतरी हाल बतबैत अछि
ख. दूनू अनुपस्थित अछि
ग. केवल हास्य अछि
घ. केवल तथ्य-सूची अछि
उत्तर: क. बिरहामे करुणा, राहीक कवितामे छाया; दुनू मनुष्यक भीतरी हाल बतबैत अछि
व्याख्या: करुणा सामाजिक नैतिकता बनैत अछि, छाया अस्तित्वक अस्थिरता।

प्रश्न 2492. एहि नयाँ १० खण्डक समेकित अध्ययनक निष्कर्ष की अछि?
क. विदेह-सदेह ३७क अन्तिम भाग भाषा-पार साहित्य, लोकनैतिकता, आधुनिक संकट आ राष्ट्रीय स्मृति जोड़ैत अछि
ख. एहि भागमे कोनो साहित्यिक सामग्री नहि
ग. केवल पृष्ठ-क्रम अछि
घ. केवल विज्ञापन अछि
उत्तर: क. विदेह-सदेह ३७क अन्तिम भाग भाषा-पार साहित्य, लोकनैतिकता, आधुनिक संकट आ राष्ट्रीय स्मृति जोड़ैत अछि
व्याख्या: राही, भिखारी ठाकुर आ समारोह-सन्दर्भ मिलि बहुभाषिक साहित्यिक क्षितिज बनबैत अछि।

खण्ड २५५ : विदेह-सदेह १ — संपादकीय: इंटरनेट, ई-पत्रिका आ साहित्यिक आन्दोलन

प्रश्न 2493. विदेह-सदेह १ केर संपादकीयमे “विदेह” के कोन रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि?
क. मैथिली साहित्यक नवीन आन्दोलनक आरम्भ
ख. केवल निजी डायरी
ग. केवल विज्ञापन-पत्र
घ. केवल चित्र-संग्रह
उत्तर: क. मैथिली साहित्यक नवीन आन्दोलनक आरम्भ
व्याख्या: संपादकीय “विदेह”केँ लेखक-पाठक संवाद, तकनीक आ साहित्यिक सक्रियताक माध्यम मानैत अछि।

प्रश्न 2494. संपादकीय अनुसार मैथिलीमे इंटरनेट उपस्थिति केर प्रारम्भिक अनुभव कोन समस्यासँ जुड़ल छल?
क. फ्री साइटसभ किछु दिनमे अपने डिलीट भऽ जाइत छल
ख. कागज महँग छल
ग. लेखक उपलब्ध नहि छल
घ. नाटक निषिद्ध छल
उत्तर: क. फ्री साइटसभ किछु दिनमे अपने डिलीट भऽ जाइत छल
व्याख्या: आरम्भिक याहू जियोसिटीज साइट अस्थायी छल, तैं स्थायी मंचक आवश्यकता अनुभव भेल।

प्रश्न 2495. “भालसरिक गाछ” केर उल्लेख संपादकीयमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मैथिली इंटरनेट उपस्थिति केर आरम्भिक स्थायी पड़ाव रूपमे
ख. मात्र वनस्पति-विज्ञान लेल
ग. केवल बालकथा लेल
घ. पुरस्कार-विवरण लेल
उत्तर: क. मैथिली इंटरनेट उपस्थिति केर आरम्भिक स्थायी पड़ाव रूपमे
व्याख्या: भालसरिक गाछक उल्लेख ई-पत्रिका सँ पहिने मैथिली वेब-उपस्थिति केर इतिहास बनबैत अछि।

प्रश्न 2496. “लेखक आ पाठक एके छथि” वाला कुप्रचार तोड़बाक अर्थ की अछि?
क. मैथिलीमे अलग, सक्रिय पाठक-वर्गक अस्तित्व देखाबय
ख. पाठक सभ समाप्त करब
ग. लेखकक नाम हटाबय
घ. रचना केवल गुप्त राखब
उत्तर: क. मैथिलीमे अलग, सक्रिय पाठक-वर्गक अस्तित्व देखाबय
व्याख्या: संपादकीय कहैत अछि जे विदेह पाठक आ लेखकक बीच वास्तविक संवादक मंच बनलक।

प्रश्न 2497. विदेहक उद्देश्य मात्र साहित्य छापब नहि, आर की छल?
क. कला, संगीत, पाबनि, मिथिलाक खोज आ सामाजिक प्रश्नपर सारगर्भित मनन
ख. केवल चित्र-प्रदर्शनी
ग. केवल खेल-समाचार
घ. केवल फाइल-सूची
उत्तर: क. कला, संगीत, पाबनि, मिथिलाक खोज आ सामाजिक प्रश्नपर सारगर्भित मनन
व्याख्या: संपादकीय विदेहक क्षेत्र महाकाव्य, नाटक, उपन्यास सँ आगू सांस्कृतिक आ सामाजिक विमर्श धरि फैलाबैत अछि।

प्रश्न 2498. ई-पत्रिका माध्यम चुनबाक एक प्रमुख कारण की बताओल गेल?
क. वितरण समस्या आ भौगोलिक दूरीक अन्त
ख. मुद्रित पाठककेँ रोकब
ग. भाषा बदलि देब
घ. साहित्य कम करब
उत्तर: क. वितरण समस्या आ भौगोलिक दूरीक अन्त
व्याख्या: इंटरनेट मंच चौबीसो घंटा, सातो दिन, कतहुसँ उपलब्ध रहबाक सुविधा दैत अछि।

प्रश्न 2499. पुरान अंक PDF रूपमे देबाक विचारक सामाजिक उपयोगिता की अछि?
क. कम इंटरनेट गति/महँग इंटरनेट वाले पाठक फाइल डाउनलोड कऽ रखि सकथि
ख. पाठकक पहुँच रोकब
ग. केवल लेखकक सुविधा
घ. संगीत हटायब
उत्तर: क. कम इंटरनेट गति/महँग इंटरनेट वाले पाठक फाइल डाउनलोड कऽ रखि सकथि
व्याख्या: संपादकीय पुरान अंक डाउनलोड कऽ बादमे पढ़बाक सुविधा केँ पहुँच-विस्तारक उपाय मानैत अछि।

प्रश्न 2500. “विदेह भाषापाक रचनालेखन स्तंभ” मे कोन डिजिटल साधनक उल्लेख अछि?
क. MS-SQL आधारित सचर्ेबल मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली ऑनलाइन डिक्शनरी
ख. केवल कागजी शब्दकोश
ग. केवल नाटक मंच
घ. केवल रेडियो स्टेशन
उत्तर: क. MS-SQL आधारित सचर्ेबल मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली ऑनलाइन डिक्शनरी
व्याख्या: रचनालेखन स्तम्भ भाषिक साधनक डिजिटल आधार बनय लागल छल।

प्रश्न 2501. संपादकीयमे संस्कृत आ इंग्लिश कॉलम देबाक कारण की कहल गेल?
क. मैथिलक लेल मैथिली शिक्षा संस्कृत शिक्षाक संग आरम्भ कएल गेल
ख. मैथिली हटाबय लेल
ग. केवल विदेशी पाठक लेल
घ. बाल-साहित्य रोकबय लेल
उत्तर: क. मैथिलक लेल मैथिली शिक्षा संस्कृत शिक्षाक संग आरम्भ कएल गेल
व्याख्या: भाषा-शिक्षा आ परम्परा कैँ संग लऽ चलबाक दृष्टि सँ ई कॉलम देल गेल।

प्रश्न 2502. एहि संपादकीयक केन्द्र-बोध की अछि?
क. डिजिटल तकनीक मैथिली साहित्यिक आन्दोलनक साधन बनि सकैत अछि
ख. इंटरनेट साहित्यक शत्रु अछि
ग. ई-पत्रिका असंभव अछि
घ. पाठकक कोनो भूमिका नहि
उत्तर: क. डिजिटल तकनीक मैथिली साहित्यिक आन्दोलनक साधन बनि सकैत अछि
व्याख्या: संपादकीय साहित्य, तकनीक, पाठक-लेखक संवाद आ सांस्कृतिक विस्तारकैँ एक मंच पर जोड़ैत अछि।

खण्ड २५६ : विदेह-सदेह १ — संपादकीय: प्रमिला झा नाट्यवृत्ति आ स्त्री रंगकर्म

प्रश्न 2503. रंगकर्मी प्रमिला झा नाट्यवृत्ति कोन स्मृति सँ जुड़ल अछि?
क. प्रथम महिला बाल नाट्य निर्देशक प्रमिला झाक स्मृति सँ
ख. केवल खेल-कूद पुरस्कार सँ
ग. कृषि मेला सँ
घ. शब्दकोश प्रकाशन सँ
उत्तर: क. प्रथम महिला बाल नाट्य निर्देशक प्रमिला झाक स्मृति सँ
व्याख्या: संपादकीय नाट्यवृत्ति कैँ प्रमिला झाक बाल रंगमंच योगदानक स्मारक रूपमे बतबैत अछि।

प्रश्न 2504. एहि नाट्यवृत्तिक संचालनक भार किनका देल गेल?
क. मैलोरंग कैँ
ख. किसी बैंक कैँ
ग. स्कूल परीक्षा बोर्ड कैँ
घ. केवल छापाखाना कैँ
उत्तर: क. मैलोरंग कैँ
व्याख्या: लोककलाक लेल समर्पित संस्था मैलोरंग कैँ संचालन सौंपल गेल।

प्रश्न 2505. प्रमिला झा नाट्यवृत्तिक मूल सामाजिक उद्देश्य की अछि?
क. मैथिली रंगमंचमे महिला रंगकर्मीकैँ प्रोत्साहन आ सामाजिक सम्मान
ख. महिला भागीदारी रोकब
ग. रंगमंच बन्द करब
घ. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय
उत्तर: क. मैथिली रंगमंचमे महिला रंगकर्मीकैँ प्रोत्साहन आ सामाजिक सम्मान
व्याख्या: संपादकीय स्पष्ट करैत अछि जे वृत्ति महिला रंगकर्मक सम्मान आ प्रोत्साहनक साधन अछि।

प्रश्न 2506. वर्ष 2008 लेल नाम-सिफारिशक प्रक्रिया कोना वर्णित अछि?
क. भारत-नेपालक समूचा मिथिलामे चालीस गणमान्य रंगकर्मी/संस्कृतिकर्मी सँ अनुशंसा माँगल गेल
ख. एक व्यक्ति गुप्त रूपेँ चुनलक
ग. कोनो अनुशंसा नहि भेल
घ. केवल विज्ञापनसँ निर्णय भेल
उत्तर: क. भारत-नेपालक समूचा मिथिलामे चालीस गणमान्य रंगकर्मी/संस्कृतिकर्मी सँ अनुशंसा माँगल गेल
व्याख्या: विस्तृत अनुशंसा-प्रक्रिया वृत्तिक सामुदायिक वैधता देखबैत अछि।

प्रश्न 2507. विजया लक्ष्मी शिवानीक रंगकर्मक विशेषता कोन रूपमे उभरैत अछि?
क. मैथिली नाटकमे सक्रिय अभिनय आ समकालीन विषयक आग्रह
ख. रंगमंचसँ दूरी
ग. केवल गायन
घ. केवल चित्रकला
उत्तर: क. मैथिली नाटकमे सक्रिय अभिनय आ समकालीन विषयक आग्रह
व्याख्या: शिवानी विभिन्न नाटकमे अभिनय करैत समकालीन समस्या मैथिली नाटकमे आनबाक पक्षमे छथि।

प्रश्न 2508. शिवानीक कथन अनुसार मैथिली नाटकमे एखन कोन कमी अछि?
क. समकालीन समस्या पर्याप्त रूपेँ नहि आबि रहल अछि
ख. अभिनेता बेसी अछि
ग. मंच बहुत पैघ अछि
घ. भाषा अनुपस्थित अछि
उत्तर: क. समकालीन समस्या पर्याप्त रूपेँ नहि आबि रहल अछि
व्याख्या: हिनकर विचार नाटककेँ वर्तमान समाजक प्रश्नसँ जोड़बाक आग्रह अछि।

प्रश्न 2509. नेहा वर्माक परिचयमे कोन बात प्रमुख अछि?
क. बाल्यकालसँ रंगमंचसँ जुड़ल रहब आ अनेक संस्था संग काज
ख. रंगमंचसँ पूर्ण असंबंध
ग. केवल गणित-अध्ययन
घ. केवल प्रशासनिक सेवा
उत्तर: क. बाल्यकालसँ रंगमंचसँ जुड़ल रहब आ अनेक संस्था संग काज
व्याख्या: नेहा नवतरंग, इप्टा, यात्री आ मैलोरंग आदि संग सक्रिय रहलीह।

प्रश्न 2510. नेहा वर्माक प्रिय नाटककार/निर्देशक रूपमे किनकर उल्लेख अछि?
क. महेन्द्र मलंगिया
ख. गंगेश गुंजन
ग. रहमान राही
घ. भिखारी ठाकुर
उत्तर: क. महेन्द्र मलंगिया
व्याख्या: स्रोत नेहाक प्रिय नाटककार आ निर्देशक महेन्द्र मलंगिया कहैत अछि।

प्रश्न 2511. मधुमिता श्रीवास्तवक परिचयमे रंगमंचक संग कोन अन्य लोक-अभिनय रूपक उल्लेख अछि?
क. झिझिया, झड़नी, जट-जटिन, डोम कछ सन लोकनृत्य
ख. केवल क्रिकेट
ग. केवल शतरंज
घ. केवल ईमेल लेखन
उत्तर: क. झिझिया, झड़नी, जट-जटिन, डोम कछ सन लोकनृत्य
व्याख्या: मधुमिता मंचीय नाटकक संग लोकनृत्य, एकल अभिनय, फिल्म-सिरियल आदिमे सक्रिय छथि।

प्रश्न 2512. नाट्यवृत्ति खण्डक समग्र महत्व की अछि?
क. मैथिली रंगमंचमे स्त्री भागीदारीकेँ दस्तावेज, सम्मान आ प्रोत्साहन देब
ख. रंगकर्मक इतिहास हटाबय
ग. स्त्री कलाकारक नाम दबाबय
घ. केवल औपचारिक सूचना देब
उत्तर: क. मैथिली रंगमंचमे स्त्री भागीदारीकेँ दस्तावेज, सम्मान आ प्रोत्साहन देब
व्याख्या: ई खण्ड महिला रंगकर्मी सभक जीवित योगदानकेँ साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिलेख बनबैत अछि।

खण्ड २५७ : विदेह-सदेह १ — प्रारम्भिक संपादकीय-स्मृति: स्तम्भ, पाठक आ बहुविधा विस्तार

प्रश्न 2513. 01.01.2008 केर संपादकीय-स्मृतिमे कोन अपूर्णता स्वीकारल गेल?
क. मिथिला पेंटिंग आ संस्कृत शिक्षासँ सम्बन्धित सामग्री समयाभावक कारण नहि देल जा सकल
ख. कोनो पाठक नहि छल
ग. पत्रिका आरम्भ नहि भेल
घ. भाषा उपलब्ध नहि छल
उत्तर: क. मिथिला पेंटिंग आ संस्कृत शिक्षासँ सम्बन्धित सामग्री समयाभावक कारण नहि देल जा सकल
व्याख्या: पहिल अंकक आत्मस्वीकृति संपादकीय ईमानदारी देखबैत अछि।

प्रश्न 2514. 15.01.2008 केर स्मृतिमे दोसर अंकमे कोन-कोन स्तम्भ जोड़बाक बात अछि?
क. मिथिला पेंटिंग, छन्द/संस्कृत-मैथिली ज्ञान, संस्कृत शिक्षा, बालानाम् कृते
ख. केवल खेल स्तम्भ
ग. केवल विज्ञापन
घ. केवल विदेश समाचार
उत्तर: क. मिथिला पेंटिंग, छन्द/संस्कृत-मैथिली ज्ञान, संस्कृत शिक्षा, बालानाम् कृते
व्याख्या: दोसर अंकसँ विदेह बहुविषयी पत्रिका रूपमे विस्तार लेलक।

प्रश्न 2515. पंजी-प्रबंध जोड़बाक निर्णय कोन सांस्कृतिक दिशा देखबैत अछि?
क. मिथिलाक वंशावली/सामाजिक अभिलेख पर डिजिटल-साहित्यिक ध्यान
ख. केवल हास्य-स्तम्भ
ग. भोजन-विधि
घ. युद्ध-इतिहास
उत्तर: क. मिथिलाक वंशावली/सामाजिक अभिलेख पर डिजिटल-साहित्यिक ध्यान
व्याख्या: पंजी-प्रबंध जोड़ब मिथिलाक परम्परागत अभिलेखक संरक्षण-चेतना अछि।

प्रश्न 2516. Computers/software/restoring old photographs आदि पर सामग्री शुरू करब कोन संकेत दैत अछि?
क. पुरान सांस्कृतिक धरोहरकेँ नयी तकनीकसँ जोड़बाक सोच
ख. तकनीकसँ दूरी
ग. साहित्यक निषेध
घ. फोटो हटाबयक योजना
उत्तर: क. पुरान सांस्कृतिक धरोहरकेँ नयी तकनीकसँ जोड़बाक सोच
व्याख्या: एहि स्तम्भमे पुरान फोटो, गीत, डिस्क, टेप आदिक डिजिटल पुनर्स्थापनक विचार अछि।

प्रश्न 2517. पाठकक ईमेल-सुझावक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. विदेहक रूपरेखा पाठक-सहभागिता सँ विकसित भेल
ख. पाठकक भूमिका शून्य छल
ग. संपादक सुनैत नहि छल
घ. सुझाव अस्वीकार भेल
उत्तर: क. विदेहक रूपरेखा पाठक-सहभागिता सँ विकसित भेल
व्याख्या: मेल द्वारा प्राप्त उत्साह आ सुझावक आधार पर नये स्तम्भ जुड़ल।

प्रश्न 2518. रचना भेजबाक लेल .doc, .txt, .pdf स्वीकारब कोन खुलापन देखबैत अछि?
क. विभिन्न डिजिटल प्रारूपमे पाठक-लेखक सहभागिता
ख. केवल हस्तलिखित प्रति
ग. केवल छापा किताब
घ. केवल फोटो
उत्तर: क. विभिन्न डिजिटल प्रारूपमे पाठक-लेखक सहभागिता
व्याख्या: पत्रिका आरम्भसँ डिजिटल सहभागिताक अनेक रूप स्वीकार करैत छल।

प्रश्न 2519. मीराम्बिका/मदर इंटरनेशनलमे संस्कृत संभाषण-नोटक उल्लेख कोन उपयोगिता रखैत अछि?
क. व्यावहारिक शिक्षण-सामग्रीकेँ पत्रिका-स्तम्भमे बदलनाइ
ख. व्यक्तिगत स्मृति मात्र
ग. साहित्य विरोध
घ. भाषा-त्याग
उत्तर: क. व्यावहारिक शिक्षण-सामग्रीकेँ पत्रिका-स्तम्भमे बदलनाइ
व्याख्या: संपादकीय शिक्षण अनुभवकेँ पाठक लेल उपयोगी सामग्री बनाबय चाहैत अछि।

प्रश्न 2520. बालानाम् कृते स्तम्भक आरम्भक अर्थ की अछि?
क. बाल पाठक आ बाल-संस्कृति केँ पत्रिका-मंच पर स्थान देब
ख. बाल-साहित्य हटाबय
ग. केवल वयस्क आलोचना
घ. केवल समाचार
उत्तर: क. बाल पाठक आ बाल-संस्कृति केँ पत्रिका-मंच पर स्थान देब
व्याख्या: बाल-केन्द्रित सामग्री विदेहक व्यापक पाठक-वर्ग दृष्टि देखबैत अछि।

प्रश्न 2521. संगीत-शिक्षा आरम्भ करबाक घोषणा कोन बहुविधा दृष्टि बनबैत अछि?
क. साहित्य संग संगीत-संस्कृति केँ समान महत्व देब
ख. संगीत निषिद्ध करब
ग. केवल शब्दकोश
घ. केवल इतिहास
उत्तर: क. साहित्य संग संगीत-संस्कृति केँ समान महत्व देब
व्याख्या: विदेह साहित्य, संस्कृत, कला, बाल-साहित्य आ संगीतकेँ एक सांस्कृतिक परिसरमे रखैत अछि।

प्रश्न 2522. एहि स्मृति-खण्डक मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. विदेह आरम्भ सँ पाठक-सहभागी, बहुविधा, डिजिटल आ सांस्कृतिक संरक्षणमुखी मंच छल
ख. विदेह एकांगी पत्रिका छल
ग. कोनो नये स्तम्भ नहि छल
घ. पाठक-वर्ग अस्वीकृत छल
उत्तर: क. विदेह आरम्भ सँ पाठक-सहभागी, बहुविधा, डिजिटल आ सांस्कृतिक संरक्षणमुखी मंच छल
व्याख्या: संपादकीय-स्मृतिसभ पत्रिकाक क्रमिक विकासक विश्वसनीय साक्ष्य देत अछि।

खण्ड २५८ : विदेह-सदेह १ — मैथिली विकी, Unicode आ भाषा-प्रौद्योगिकी

प्रश्न 2523. 01.02.2008 केर स्मृतिमे मैथिली विकी सम्बन्धी कोन उत्साह व्यक्त भेल?
क. मैथिली भाषाकेँ विकी शुरू करबाक स्वीकृति भेटल
ख. विकी स्थायी रूपेँ बन्द भेल
ग. मैथिली लेख निषिद्ध भेल
घ. इंटरनेट छोड़ि देल गेल
उत्तर: क. मैथिली भाषाकेँ विकी शुरू करबाक स्वीकृति भेटल
व्याख्या: संपादकीय मैथिली विकी स्वीकृति भेटलाक खुशी व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 2524. विकी योजनाक पूर्ण स्वीकृति लेल कोन शर्तक उल्लेख अछि?
क. कमसँ कम पाँच नियमित संपादक विभिन्न जगहसँ सक्रिय होथि
ख. केवल एक संपादक काफी अछि
ग. कोनो संपादन नहि चाही
घ. केवल छापा प्रति चाही
उत्तर: क. कमसँ कम पाँच नियमित संपादक विभिन्न जगहसँ सक्रिय होथि
व्याख्या: भाषा-विकी सामुदायिक नियमित श्रम पर निर्भर बताओल गेल।

प्रश्न 2525. देवनागरी कोना लिखू सम्बन्धी लेखक भूमिका की छल?
क. English keyboard सँ मैथिली लिखबाक व्यवहारिक मार्गदर्शन देब
ख. देवनागरी हटाबय
ग. लेखन रोकबय
घ. सिर्फ रोमन अपनाबय
उत्तर: क. English keyboard सँ मैथिली लिखबाक व्यवहारिक मार्गदर्शन देब
व्याख्या: विकीमे योगदान लेल टाइपिंग-सहायता जरूरी छल।

प्रश्न 2526. अंशुमन पाण्डेयक संदर्भ कोन विषयसँ जुड़ल अछि?
क. मैथिली/तिरहुता सम्बन्धी Unicode स्थानक आवेदन आ सूचना-संग्रह
ख. नाटक पुरस्कार
ग. वृद्धाश्रम
घ. कृषि बाजार
उत्तर: क. मैथिली/तिरहुता सम्बन्धी Unicode स्थानक आवेदन आ सूचना-संग्रह
व्याख्या: संपादकीय Unicode/लिपि-मान्यता प्रश्नकेँ मैथिली डिजिटल भविष्यसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2527. बंगला लिपि आ मैथिली लिपि मध्य अंतर स्पष्ट करबाक सूचना किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मैथिली लिपिक स्वतंत्र पहचान प्रमाणित करबाक लेल
ख. बंगला लिपि हटाबय लेल
ग. भाषा बदलय लेल
घ. कविता काटय लेल
उत्तर: क. मैथिली लिपिक स्वतंत्र पहचान प्रमाणित करबाक लेल
व्याख्या: Unicode मानकमे लिपि भेदक स्पष्टता जरूरी अछि।

प्रश्न 2528. Meta, Incubator, TranslateWiki लिंक देबाक भूमिका की अछि?
क. पाठककेँ सीधा तकनीकी-सामुदायिक योगदान लेल बुलाबय
ख. केवल सजावट
ग. विज्ञापन
घ. रचना छिपाबय
उत्तर: क. पाठककेँ सीधा तकनीकी-सामुदायिक योगदान लेल बुलाबय
व्याख्या: ई लिंकसभ सहभागिताक कामक स्थान छल, पृष्ठ-सूचना मात्र नहि।

प्रश्न 2529. 15.02.2008 केर स्मृतिमे विश्वभरिसँ ईमेल पाबि कतेक भाव व्यक्त अछि?
क. पत्रिकाक वैश्विक पाठक-संबंधसँ उल्लास आ भरोस
ख. पूर्ण निराशा
ग. पत्रिका बन्द करबाक सोच
घ. भाषा-विरोध
उत्तर: क. पत्रिकाक वैश्विक पाठक-संबंधसँ उल्लास आ भरोस
व्याख्या: दुनियाभरिसँ प्रतिक्रिया भेटब विदेहक प्रवासी/वैश्विक पहुँच देखबैत अछि।

प्रश्न 2530. साइटक खोज सर्च इंजन पर आसान होयबाक प्रयासक अर्थ की अछि?
क. मैथिली सामग्री केँ डिजिटल रूपेँ खोजयोग्य बनाबय
ख. सामग्री गुप्त करब
ग. सर्च रोकेब
घ. केवल छापामे राखब
उत्तर: क. मैथिली सामग्री केँ डिजिटल रूपेँ खोजयोग्य बनाबय
व्याख्या: भाषा-प्रौद्योगिकीमे खोजयोग्यता साहित्यिक पहुँचक आधार अछि।

प्रश्न 2531. मैथिलीमे animation अभावक उल्लेख कोन भविष्य-दृष्टि देखबैत अछि?
क. बाल-सामग्री आ ध्वन्यात्मक/दृश्य माध्यम दिस विस्तार
ख. दृश्य माध्यमक विरोध
ग. बाल साहित्य बन्द
घ. संगीत निषेध
उत्तर: क. बाल-सामग्री आ ध्वन्यात्मक/दृश्य माध्यम दिस विस्तार
व्याख्या: संपादकीय बाल कथा एनिमेट करबाक इच्छा व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 2532. एहि खण्डक समग्र महत्व की अछि?
क. मैथिली डिजिटल भाषिक अधिकार, विकी, Unicode, टाइपिंग आ खोजयोग्यता कें एक अभियान बनाबय
ख. केवल तकनीकी नाम-सूची
ग. साहित्यसँ असंबद्ध प्रयोग
घ. भाषा-प्रौद्योगिकी छोड़ब
उत्तर: क. मैथिली डिजिटल भाषिक अधिकार, विकी, Unicode, टाइपिंग आ खोजयोग्यता कें एक अभियान बनाबय
व्याख्या: विदेह डिजिटल युगमे मैथिलीकें सक्रिय, लिखनयोग्य आ मान्य बनाबय चाहैत अछि।

खण्ड २५९ : विदेह-सदेह १ — मिथिलाक खोज, अभिलेख आ डिजिटल संरक्षण

प्रश्न 2533. 15.02.2008 केर स्मृतिमे चित्रक पौतीकें दू भाग करबाक उद्देश्य की छल?
क. मिथिलाक खोजमे चित्रकला संग पुरातत्त्व आ दर्शनीय स्थल समेटब
ख. चित्रकला हटाबय
ग. केवल विज्ञापन
घ. केवल खेल-चित्र
उत्तर: क. मिथिलाक खोजमे चित्रकला संग पुरातत्त्व आ दर्शनीय स्थल समेटब
व्याख्या: चित्रकला, पुरातत्त्व आ स्थल-संग्रहकें अलग-अलग परतमे व्यवस्थित करबाक विचार अछि।

प्रश्न 2534. “मिथिला रत्न” स्तम्भक रूपरेखा की बताओल गेल?
क. ऐतिहासिक आ वर्तमान महापुरुषक चित्र-प्रदर्शनी
ख. केवल गहना-बाजार
ग. केवल बालकथा
घ. केवल शब्द-सूची
उत्तर: क. ऐतिहासिक आ वर्तमान महापुरुषक चित्र-प्रदर्शनी
व्याख्या: मिथिला रत्न स्मृति-संरक्षणक दृश्य स्तम्भ रूपमे प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 2535. 01.03.08 केर स्मृतिमे दरभंगाक यात्रा किएक महत्त्वपूर्ण बनैत अछि?
क. संस्थान, विद्वान आ ऐतिहासिक स्थल-साक्षात्कारक कारण
ख. केवल निजी यात्रा
ग. केवल भोजन-वर्णन
घ. रचना-विरोध
उत्तर: क. संस्थान, विद्वान आ ऐतिहासिक स्थल-साक्षात्कारक कारण
व्याख्या: मिथिला रिसर्च इंस्टिट्यूट, संस्कृत विश्वविद्यालय आ विद्वान लोकनिक दर्शन दस्तावेजी महत्व रखैत अछि।

प्रश्न 2536. बिदेश्वरस्थान सँ गौरीशंकर स्थान यात्रा में कोन खोज प्रमुख अछि?
क. पालवंशक मूर्ति आ मिथिलाक्षर अभिलेखक चित्र
ख. आधुनिक बस-स्टैंड
ग. खेतीक औजार
घ. नाटकक टिकट
उत्तर: क. पालवंशक मूर्ति आ मिथिलाक्षर अभिलेखक चित्र
व्याख्या: संपादकीय ऐतिहासिक स्थल आ लिपि-साक्ष्यक दस्तावेजीकरण करैत अछि।

प्रश्न 2537. 1500 वर्ष पूर्व मिथिलाक्षरक प्रभुता कहब कोन ऐतिहासिक दावा बनबैत अछि?
क. मिथिलाक्षरक प्राचीन उपस्थिति आ सांस्कृतिक महत्व
ख. लिपि बिलकुल नयी अछि
ग. इतिहास अस्वीकार अछि
घ. भाषा लिपिहीन अछि
उत्तर: क. मिथिलाक्षरक प्राचीन उपस्थिति आ सांस्कृतिक महत्व
व्याख्या: मूर्ति-अभिलेख लिपि-इतिहासक ठोस साक्ष्यक रूपमे देखल गेल।

प्रश्न 2538. एहि स्थलकेँ मिथिलाक इतिहासमे पिहने स्थान नहि भेटब कोन शोध-संकेत दैत अछि?
क. स्थानीय स्थलसभक पुनर्मूल्यांकन जरूरी अछि
ख. इतिहास पूरा अछि
ग. नव शोध आवश्यक नहि
घ. स्थल महत्वहीन अछि
उत्तर: क. स्थानीय स्थलसभक पुनर्मूल्यांकन जरूरी अछि
व्याख्या: संपादकीय भूलेल/अनदेखल स्थलसभ पर शोध लेखक अपेक्षा करैत अछि।

प्रश्न 2539. पुरान अलभ्य किताबक डिजिटलाइजेशन शुरू करब कोन सांस्कृतिक कार्य अछि?
क. दुर्लभ ग्रंथसभक संरक्षण आ पहुँच-विस्तार
ख. किताब नष्ट करब
ग. पाठक रोकब
घ. केवल व्यापार
उत्तर: क. दुर्लभ ग्रंथसभक संरक्षण आ पहुँच-विस्तार
व्याख्या: डिजिटल इमेजिंग साहित्यिक-ऐतिहासिक धरोहर बचाबयक साधन अछि।

प्रश्न 2540. पंजीक स्कैनिंग आ सर्चयोग्य डिक्शनरी कोन दिशा देखबैत अछि?
क. परम्परागत अभिलेख आ भाषा-संसाधनक डिजिटल आधार बनाबय
ख. अभिलेख छिपाबय
ग. शब्द हटाबय
घ. पाठक-विरोध
उत्तर: क. परम्परागत अभिलेख आ भाषा-संसाधनक डिजिटल आधार बनाबय
व्याख्या: संपादकीय पंजी, शब्दकोश, पुरान अंक आ टाइप-सहायता सभकेँ डिजिटल संग्रह बनाबय चाहैत अछि।

प्रश्न 2541. पुरान अंक archive अंतर्गत PDF रूपमे राखबाक महत्व की अछि?
क. पत्रिकाक निरंतर स्मृति आ शोधयोग्य अभिलेख बननाइ
ख. पुरान सामग्री मिटनाइ
ग. केवल वर्तमान अंक
घ. खोज निषिद्ध
उत्तर: क. पत्रिकाक निरंतर स्मृति आ शोधयोग्य अभिलेख बननाइ
व्याख्या: पुरान अंक शोधार्थी आ पाठक लेल स्थायी स्रोत बनैत अछि।

प्रश्न 2542. एहि संरक्षण-खण्डक सार की अछि?
क. विदेह मिथिला इतिहास, लिपि, पंजी, पुरान किताब आ चित्र-संस्मृति केँ डिजिटल अभिलेखमे बदलब चाहैत अछि
ख. विदेह इतिहाससँ दूर अछि
ग. डिजिटल संरक्षण अनुपस्थित अछि
घ. मिथिलाक खोज अप्रासंगिक अछि
उत्तर: क. विदेह मिथिला इतिहास, लिपि, पंजी, पुरान किताब आ चित्र-संस्मृति केँ डिजिटल अभिलेखमे बदलब चाहैत अछि
व्याख्या: एहि खण्डमे डिजिटल संरक्षण मैथिली सांस्कृतिक आन्दोलनक मूल उपकरण बनैत अछि।

खण्ड २६० : विदेह-सदेह १ — शैली-मानक, भाषा-संस्थान आ रचनालेखन

प्रश्न 2543. 01.04.08 केर स्मृतिमे “रचना लिखबासँ पहिने” स्तम्भमे की अंकित कएल गेल?

क. मैथिली अकादमी द्वारा निर्धारित भाषाक अंकन आ शैली सम्बन्धी सामग्री

ख. केवल कहानी-सूची

ग. केवल विज्ञापन

घ. केवल खेल-समाचार

उत्तर: क. मैथिली अकादमी द्वारा निर्धारित भाषाक अंकन आ शैली सम्बन्धी सामग्री

व्याख्या: स्तम्भ भाषा-मानक आ लेखन-तैयारीक साधन रूपमे विकसित भेल।

प्रश्न 2544. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क मेलक महत्व की अछि?

क. ओ शैली-मैनुअल सम्बन्धी सामग्री भाषा-प्रौद्योगिकी विभाग धरि अग्रसारित करैत छथि

ख. ओ स्तम्भ रोकैत छथि

ग. ओ भाषा छोड़ैत छथि

घ. ओ नाटक हटबैत छथि

उत्तर: क. ओ शैली-मैनुअल सम्बन्धी सामग्री भाषा-प्रौद्योगिकी विभाग धरि अग्रसारित करैत छथि

व्याख्या: केंद्रीय भाषा संस्थानक स्तर पर मैथिली शैली-मानकक चर्चा महत्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 2545. बी. मल्लिकार्जुनक भूमिका कोन रूपमे देखाओल गेल?

क. मैथिली स्टाइल मैनुअल बनएबाक कार्य आगू बढ़ाबय वाला भाषा-प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ

ख. केवल कवि

ग. केवल नर्तक

घ. केवल प्रकाशक

उत्तर: क. मैथिली स्टाइल मैनुअल बनएबाक कार्य आगू बढ़ाबय वाला भाषा-प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ

व्याख्या: संपादकीय शैली-मैनुअल कैं संस्थागत भाषा-कार्यसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2546. मैथिली स्टाइल मैनुअल बनबाक महत्व की अछि?

क. लेखन, वर्तनी आ प्रकाशनमे मानकीकरणक आधार

ख. भाषा विविधता हटाबय मात्र

ग. साहित्य बन्द

घ. पाठकक भूमिका समाप्त

उत्तर: क. लेखन, वर्तनी आ प्रकाशनमे मानकीकरणक आधार

व्याख्या: मानक लेखन शैली शैक्षिक, संपादकीय आ डिजिटल प्रयोगमे सहायक अछि।

प्रश्न 2547. “मिथिलाक रत्न”मे साहित्यकारक अतिरिक्त अन्य विधाक व्यक्तिक चित्र देबाक अर्थ की अछि?

क. मिथिलाक बहुविध सांस्कृतिक प्रतिभाक समावेश

ख. साहित्यकार हटाबय

ग. केवल संगीतकार

घ. केवल प्रशासक

उत्तर: क. मिथिलाक बहुविध सांस्कृतिक प्रतिभाक समावेश

व्याख्या: संगीत, फिल्म, पत्रकारिता, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि क्षेत्रक विभूति शामिल अछि।

प्रश्न 2548. वेबसाइट खुलला पर विद्यापतिक गीतक वाद्य-संगीत बजबाक उल्लेख कोन सांस्कृतिक संयोजन बनबैत अछि?

क. कविता, शहनाई, तबला आ वायलिनक माध्यमसँ दृश्य-पाठ अनुभवक संगीतात्मक विस्तार

ख. वेबसाइट मौन रहैत अछि

ग. संगीत निषिद्ध अछि

घ. केवल टेक्स्ट अछि

उत्तर: क. कविता, शहनाई, तबला आ वायलिनक माध्यमसँ दृश्य-पाठ अनुभवक संगीतात्मक विस्तार

व्याख्या: विदेह डिजिटल पृष्ठ कैं बहु-माध्यम सांस्कृतिक अनुभव बनाबय चाहैत अछि।

प्रश्न 2549. संपर्क-खोज स्तम्भक उद्देश्य की बताओल गेल?
क. मिथिला आ मैथिलीक साइटसभक संकलन/लिंक देब
ख. संपर्क तोड़ब
ग. साइट छिपाबय
घ. केवल ईमेल हटाबय
उत्तर: क. मिथिला आ मैथिलीक साइटसभक संकलन/लिंक देब
व्याख्या: संपर्क-खोज मैथिली वेब-संसारक नेटवर्क बनबैत अछि।

प्रश्न 2550. विदेहक अपन सर्च इंजनक उल्लेख कोन सुविधा सूचित करैत अछि?
क. नव-पुरान अंक भीतर सामग्री खोजबाक सुविधा
ख. खोज रोकब
ग. फाइल हटाबय
घ. केवल चित्र देखब
उत्तर: क. नव-पुरान अंक भीतर सामग्री खोजबाक सुविधा
व्याख्या: सर्च इंजन पत्रिका कैं शोधयोग्य बनबैत अछि।

प्रश्न 2551. दोसर सर्च इंजनसँ मैथिली विशेष संदर्भमे वेब ताखबाक विचार की करैत अछि?
क. मैथिली विषयक व्यापक वेब-सूचना सँ पाठककैं जोड़ैत अछि
ख. वेब बंद करैत अछि
ग. मैथिलीकैं सीमित करैत अछि
घ. रचना हटाबय
उत्तर: क. मैथिली विषयक व्यापक वेब-सूचना सँ पाठककैं जोड़ैत अछि
व्याख्या: ई दृष्टि विदेहक सीमा सँ आगू पूरा वेबमे मैथिली खोजबाक सुविधा चाहैत अछि।

प्रश्न 2552. एहि खण्डक मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा-मानक, संस्थागत समर्थन, सर्च, लिंक आ मल्टीमीडिया मिलि मैथिली डिजिटल आधार बनबैत अछि
ख. मानक लेखन असंभव अछि
ग. सर्च अनुपयोगी अछि
घ. संस्थानक भूमिका नहि अछि
उत्तर: क. भाषा-मानक, संस्थागत समर्थन, सर्च, लिंक आ मल्टीमीडिया मिलि मैथिली डिजिटल आधार बनबैत अछि
व्याख्या: संपादकीय भाषा-साधन आ सांस्कृतिक अनुभव दुनू कैं जोड़ैत अछि।

खण्ड २६१ : विदेह-सदेह १ — बालानाम् कृते, मिथिला-राग आ सांस्कृतिक शिक्षण

प्रश्न 2553. 15.04.2008 केर स्मृतिमे नचिकेताक “नो एंट्री: मा प्रवेश” कोन रूपमे आयल?
क. पच्चीस सालक चुप्पी तोड़ि धारावाहिक रूपेँ विदेहमे प्रकाशित नाटक
ख. केवल विज्ञापन
ग. गीत-संग्रह
घ. शब्दकोश
उत्तर: क. पच्चीस सालक चुप्पी तोड़ि धारावाहिक रूपेँ विदेहमे प्रकाशित नाटक
व्याख्या: संपादकीय नाटकक आगमन कैं महत्त्वपूर्ण साहित्यिक घटना रूपमे देखैत अछि।

प्रश्न 2554. गंगेश गुंजनक वैचारिक मंथनक उल्लेख कोन साहित्यिक दिशा बतबैत अछि?
क. कविता मात्र नहि, विचार-चर्चाक मंच सेहो
ख. विचार-चर्चा निषिद्ध
ग. केवल मनोरंजन
घ. केवल सूची
उत्तर: क. कविता मात्र नहि, विचार-चर्चाक मंच सेहो
व्याख्या: विदेह वैचारिक विमर्श आ कविता दुनू कैं स्थान दैत अछि।

प्रश्न 2555. बालानां कृतेमे ज्योति पँजियारक लोकगाथा देबाक महत्व की अछि?
क. बाल पाठककेँ लोकपरम्परा सँ जोड़ब
ख. लोकगाथा हटाबय
ग. केवल विदेशी कथा
घ. केवल व्याकरण
उत्तर: क. बाल पाठककेँ लोकपरम्परा सँ जोड़ब
व्याख्या: बाल-साहित्यक माध्यमे लोक-स्मृति पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहुँचैत अछि।

प्रश्न 2556. जानकी नवमी अवसर नूतन झाक निबंध देबाक अर्थ की अछि?
क. पाबनि-संस्कृति केँ साहित्यिक-शिक्षात्मक सामग्री बनाबय
ख. पाबनि हटाबय
ग. केवल समाचार
घ. कोनो सांस्कृतिक सन्दर्भ नहि
उत्तर: क. पाबनि-संस्कृति केँ साहित्यिक-शिक्षात्मक सामग्री बनाबय
व्याख्या: संपादकीय धार्मिक-सांस्कृतिक अवसरकेँ निबंध-सामग्रीमे बदलैत अछि।

प्रश्न 2557. दानवीर दधीचीक वैदिक स्वरूप बालानां कृतेमे देबाक उद्देश्य की अछि?
क. बाल-शिक्षामे वैदिक आख्यानक आलोचनात्मक/मूल रूप प्रस्तुत करब
ख. बालकथा हटाबय
ग. केवल खेल
घ. केवल गणित
उत्तर: क. बाल-शिक्षामे वैदिक आख्यानक आलोचनात्मक/मूल रूप प्रस्तुत करब
व्याख्या: संपादकीय अन्तमे सूत्रधारसँ बादक विकृति पर टिप्पणी करयबाक बात कहैत अछि।

प्रश्न 2558. दूर्वाक्षत आशीश मंत्रक उल्लेख कोन सांस्कृतिक संगीत-संबंध बनबैत अछि?
क. शुक्ल यजुर्वेद मंत्रकेँ मिथिला-आशीर्वाद परम्परासँ जोड़ैत अछि
ख. केवल फिल्म गीत
ग. केवल नृत्य-ताल
घ. कोई सम्बन्ध नहि
उत्तर: क. शुक्ल यजुर्वेद मंत्रकेँ मिथिला-आशीर्वाद परम्परासँ जोड़ैत अछि
व्याख्या: मंत्रक अर्थ आ पृष्ठभूमि विदेह आर्काइवमे अभिनव रूपेँ देल गेल।

प्रश्न 2559. विदेह प्रचारक माध्यम रूपमे गूगल, याहू समूह, ब्लॉग, सोशल प्लेटफॉर्मक उल्लेख की देखबैत अछि?
क. आरम्भिक डिजिटल प्रसारक बहु-माध्यम रणनीति
ख. प्रचारक अभाव
ग. केवल मौखिक सूचना
घ. कागज तक सीमित
उत्तर: क. आरम्भिक डिजिटल प्रसारक बहु-माध्यम रणनीति
व्याख्या: विदेह अनेक वेब-माध्यम सँ पाठक धरि पहुँचबाक प्रयास केलक।

प्रश्न 2560. डाटा अनुसार आधासँ बेशी पाठक सीधे वेबसाइट पता टाइप कऽ पढ़लनि — एहि सँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. विदेहक प्रत्यक्ष स्मरणीयता आ पाठक-निष्ठा
ख. पाठक नहि छल
ग. साइट अनुपलब्ध छल
घ. सभी विज्ञापनसँ आयल
उत्तर: क. विदेहक प्रत्यक्ष स्मरणीयता आ पाठक-निष्ठा
व्याख्या: सीधा URL टाइप करब पाठकक दृढ़ परिचय आ लगाव देखबैत अछि।

प्रश्न 2561. वट-सावित्री प्रसंगक निबंध देबाक अर्थ की अछि?
क. पारंपरिक स्त्री-पाबनि पर विवेचनात्मक सामग्री प्रस्तुत करब
ख. पाबनि-विमर्श नकारब
ग. केवल नाटक
घ. केवल तकनीक
उत्तर: क. पारंपरिक स्त्री-पाबनि पर विवेचनात्मक सामग्री प्रस्तुत करब
व्याख्या: विदेह पाबनि-तिहार कें सांस्कृतिक अध्ययनक विषय बनाबैत अछि।

प्रश्न 2562. एहि खण्डक समग्र दिशा की अछि?
क. बाल-साहित्य, पाबनि, वैदिक आख्यान, लोकगाथा आ डिजिटल प्रचारक संगठित सांस्कृतिक शिक्षण
ख. केवल मनोरंजन
ग. केवल सूची
घ. संस्कृति-विरोध
उत्तर: क. बाल-साहित्य, पाबनि, वैदिक आख्यान, लोकगाथा आ डिजिटल प्रचारक संगठित सांस्कृतिक शिक्षण
व्याख्या: विदेह सांस्कृतिक शिक्षणकें आयु-वर्ग, परम्परा आ आधुनिक माध्यमसँ जोड़ैत अछि।

खण्ड २६२ : विदेह-सदेह १ — काव्य-सम्मेलन, हाइकू आ साहित्यिक पुनर्स्मरण

प्रश्न 2563. 01.06.2008 केर स्मृतिमे गंगेश गुंजनक कथा आ रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्यक उल्लेख की करैत अछि?
क. समकालीन आ विस्मृत साहित्य दुनूकें मंच देब
ख. अप्रकाशित रचना हटाबय
ग. केवल विज्ञापन
घ. कथा निषिद्ध
उत्तर: क. समकालीन आ विस्मृत साहित्य दुनूकें मंच देब
व्याख्या: विदेह नयका/जीवित रचनाकारक संग विस्मृत कविक रचना सेहो प्रकाशित करैत अछि।

प्रश्न 2564. रवीन्द्रनाथ ठाकुर सेहो हाइकू लिखलनि — एहि उल्लेखक उपयोग की अछि?
क. मैथिलीमे जापानी पद्य-विधा प्रस्तुतिक वैध साहित्यिक संदर्भ देब
ख. हाइकू नकारब
ग. कविता रोकब
घ. केवल नाम-गणना
उत्तर: क. मैथिलीमे जापानी पद्य-विधा प्रस्तुतिक वैध साहित्यिक संदर्भ देब
व्याख्या: हाइकू-विधाक भारतीय साहित्यिक प्रसंग बनाओल गेल।

प्रश्न 2565. मैथिलीमे जापानी पद्य विधा प्रस्तुत करबाक बात कोन प्रयोगशीलता देखबैत अछि?
क. विश्व-पद्य विधाक मैथिलीकरण आ नव शिल्प-प्रयोग
ख. केवल पारंपरिक छंद
ग. प्रयोग-विरोध
घ. भाषा-संकोच
उत्तर: क. विश्व-पद्य विधाक मैथिलीकरण आ नव शिल्प-प्रयोग
व्याख्या: विदेह मैथिलीकें वैश्विक काव्य-विधासँ संवाद करबैत अछि।

प्रश्न 2566. साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक सभागारमे मैथिली कवि-सम्मेलनक उल्लेख कोन सांस्कृतिक महत्व रखैत अछि?
क. मैथिली कविताक राष्ट्रीय संस्थागत मंचपर उपस्थिति
ख. कविता अनुपस्थित
ग. केवल निजी गोष्ठी
घ. भाषा निषिद्ध
उत्तर: क. मैथिली कविताक राष्ट्रीय संस्थागत मंचपर उपस्थिति
व्याख्या: कवि-सम्मेलन मैथिली साहित्यक सार्वजनिक राष्ट्रीय दृश्यता देखबैत अछि।

प्रश्न 2567. हॉलक कुस्री भरल रहबाक विवरण कोन पाठकीय संकेत दैत अछि?
क. मैथिली कविता सुनबाक उत्सुक श्रोता-वर्ग उपस्थित छल
ख. श्रोता नहि छल
ग. कार्यक्रम रद्द भेल
घ. कविता अप्रासंगिक छल
उत्तर: क. मैथिली कविता सुनबाक उत्सुक श्रोता-वर्ग उपस्थित छल
व्याख्या: भीड़ मैथिली साहित्यिक कार्यक्रमक जीवंतता दर्शबैत अछि।

प्रश्न 2568. अमरनाथक उद्घोषणाकेँ अशोक चक्रधर सन लगबाक टिप्पणी की संकेत करैत अछि?
क. उद्घोषणाक ऊर्जस्विता आ मंचीय प्रभाव
ख. उद्घोषणा कमजोर छल
ग. भाषा नीरस छल
घ. मंच खाली छल
उत्तर: क. उद्घोषणाक ऊर्जस्विता आ मंचीय प्रभाव
व्याख्या: हिन्दी मंच-परम्परासँ तुलना मंचीय जीवंतता देखबैत अछि।

प्रश्न 2569. कवि-सम्मेलनक वृत्तान्त संपादकीयमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. पत्रिका साहित्यिक घटना केँ प्रत्यक्ष अनुभवक अभिलेख बनबैत अछि
ख. केवल दिनांक बताबय लेल
ग. पृष्ठ संख्या लेल
घ. कोनो महत्व नहि
उत्तर: क. पत्रिका साहित्यिक घटना केँ प्रत्यक्ष अनुभवक अभिलेख बनबैत अछि
व्याख्या: संपादकीय केवल सूचना नहि, प्रत्यक्ष सांस्कृतिक साक्ष्य देत अछि।

प्रश्न 2570. रामाश्रय झा “रामरंग”केँ 20म शताब्दीक मिथिला विभूतिमे सर्वोपरि कहबाक अर्थ की अछि?
क. संगीत-साहित्य परम्परामे हुनकर असाधारण स्थान मानल गेल
ख. हुनकर महत्व नकारल गेल
ग. केवल खेलकर्मी कहल गेल
घ. कोनो जीवनी नहि देल गेल
उत्तर: क. संगीत-साहित्य परम्परामे हुनकर असाधारण स्थान मानल गेल
व्याख्या: संदेशक आधार पर हुनकर जीवनी आ कृति प्रस्तुत करबाक गर्व व्यक्त अछि।

प्रश्न 2571. विदेहक संगीत-शिक्षा स्तम्भमे रामरंगक जीवनी आनबाक महत्व की अछि?
क. मैथिली संगीत परम्पराक शैक्षिक दस्तावेज बनब
ख. संगीत हटाबय
ग. जीवनी रोकब
घ. केवल खबर बनाबय
उत्तर: क. मैथिली संगीत परम्पराक शैक्षिक दस्तावेज बनब
व्याख्या: संगीत शिक्षा स्तम्भ विभूतिक जीवन-कृति मार्फत परम्परा सिखबैत अछि।

प्रश्न 2572. एहि खण्डक सार की अछि?
क. विदेह काव्य-प्रयोग, साहित्यिक आयोजन, विस्मृत रचना आ संगीत-विभूति सबकेँ अभिलेख बनबैत अछि
ख. केवल पृष्ठ-क्रम
ग. कोनो साहित्यिक घटना नहि
घ. प्रयोगशीलता अनुपस्थित
उत्तर: क. विदेह काव्य-प्रयोग, साहित्यिक आयोजन, विस्मृत रचना आ संगीत-विभूति सबकेँ अभिलेख बनबैत अछि
व्याख्या: ई खण्ड पत्रिकाक साहित्यिक सक्रियता आ स्मृति-संरक्षण दुनू देखबैत अछि।

खण्ड २६३ : विदेह-सदेह १ — अनुक्रम, सामग्री-विस्तार आ लेखक-विविधता

प्रश्न 2573. विदेह-सदेह १ केर अनुक्रममे संपादकीय आ संदेशक बाद अनेक रचनाकारक सूची की देखबैत अछि?
क. ई अंक केवल एकल लेख नहि, व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक संकलन अछि
ख. केवल एक कविता अछि
ग. कोनो सामग्री नहि
घ. केवल विज्ञापन अछि
उत्तर: क. ई अंक केवल एकल लेख नहि, व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक संकलन अछि
व्याख्या: अनुक्रममे विविध लेखक आ पृष्ठ-सूचना सामग्रीक विस्तारक संकेत करैत अछि।

प्रश्न 2574. अनुक्रममे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क नाम बादक पृष्ठसभ पर देल होयब कोन प्रकारक सामग्रीक संकेत अछि?
क. महत्त्वपूर्ण दीर्घ/विशिष्ट रचना वा नाटक-संबंधित योगदान
ख. केवल फोटो-सूची
ग. केवल विज्ञापन
घ. बिना रचना नाम
उत्तर: क. महत्त्वपूर्ण दीर्घ/विशिष्ट रचना वा नाटक-संबंधित योगदान
व्याख्या: नचिकेता नाम संपादकीय-स्मृतिमे नाटक प्रसंगसँ सेहो जुड़ैत अछि।

प्रश्न 2575. अनुक्रममे “मैथिलीक मानक लेखन-शैली” केर अंत्य भागमे स्थान की बतबैत अछि?
क. भाषा-मानकीकरण अंकक संरचनात्मक अंग अछि
ख. मानक लेखन अप्रासंगिक अछि
ग. ई केवल विज्ञापन
घ. भाषा-चर्चा हटाओल गेल
उत्तर: क. भाषा-मानकीकरण अंकक संरचनात्मक अंग अछि
व्याख्या: मानक लेखन शैली अंकक समापन भागमे महत्वपूर्ण संसाधन रूपमे अछि।

प्रश्न 2576. अनुक्रममे कवि, कथाकार, आलोचक, विद्वान, कलाकार आदि नामक बहुलता कोन विशेषता बनबैत अछि?
क. लेखक-विविधता आ विधा-विस्तार
ख. एकरूपता मात्र
ग. लेखक-अभाव
घ. केवल प्रशासनिक सूची
उत्तर: क. लेखक-विविधता आ विधा-विस्तार
व्याख्या: सदेह १मे विभिन्न विधा आ पीढ़ीक प्रतिनिधित्व देखाइत अछि।

प्रश्न 2577. अनुक्रममे स्त्री-लेखिका/कलाकारक नामसभक उपस्थिति कोन संकेत देत अछि?
क. महिला सहभागिताक स्पष्ट दस्तावेजी उपस्थिति
ख. स्त्री अनुपस्थित अछि
ग. केवल पुरुष लेखक
घ. स्त्री-विमर्श निषिद्ध
उत्तर: क. महिला सहभागिताक स्पष्ट दस्तावेजी उपस्थिति
व्याख्या: नूतन झा, नीलीमा, प्रीति, प्रीति ठाकुर, विभा रानी, शीला सुभद्रा देवी आदि नाम अंकक सहभागिता देखबैत अछि।

प्रश्न 2578. अनुक्रमकेँ प्रश्न-निर्माणमे कोना प्रयोग करबाक चाही?
क. सामग्री-मानचित्र आ कवरेज जाँच लेल, पृष्ठ-नम्बर रटबाक लेल नहि
ख. पृष्ठ-संख्या आधारित प्रश्न लेल
ग. सिली प्रश्न लेल
घ. लेखक हटाबय लेल
उत्तर: क. सामग्री-मानचित्र आ कवरेज जाँच लेल, पृष्ठ-नम्बर रटबाक लेल नहि
व्याख्या: हमरा नियम अनुसार अनुक्रम coverage auditक साधन अछि, trivial page-questionक आधार नहि।

प्रश्न 2579. अनुक्रममे “संदेश”क उपस्थिति अंकक सामाजिकता कोना देखबैत अछि?
क. पत्रिका-संवादमे पाठक/रचनाकार/वरिष्ठक संदेशक स्थान अछि
ख. पत्रिका पूर्णतः एकतरफा अछि
ग. कोनो संवाद नहि
घ. संदेश असाहित्यिक मात्र
उत्तर: क. पत्रिका-संवादमे पाठक/रचनाकार/वरिष्ठक संदेशक स्थान अछि
व्याख्या: संदेश साहित्यिक आन्दोलनक सामाजिक स्वीकार्यताक संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 2580. अनुक्रममे अनेक भाषिक/सांस्कृतिक क्षेत्रक नामक उपस्थिति की दैत अछि?
क. साहित्यक संग सामाजिक-सांस्कृतिक नेटवर्कक संकेत
ख. संकलन सीमित अछि
ग. केवल शब्दकोश अछि
घ. विविधता अनुपस्थित
उत्तर: क. साहित्यक संग सामाजिक-सांस्कृतिक नेटवर्कक संकेत
व्याख्या: लेखक-सूची मैथिली समाजक विस्तृत सांस्कृतिक मंडल देखबैत अछि।

प्रश्न 2581. अनुक्रमक आधार पर Sadeha 1 कें “बहुत महत्वपूर्ण” किएक मानल जा सकैत अछि?
क. एहि मे आरम्भिक विदेह आन्दोलन, संपादकीय इतिहास, लेखक-विविधता आ मानक लेखन सभ समाहित अछि
ख. क्योंकि केवल आवरण अछि
ग. क्योंकि कोनो पाठ नहि
घ. क्योंकि पृष्ठ बहुत कम अछि
उत्तर: क. एहि मे आरम्भिक विदेह आन्दोलन, संपादकीय इतिहास, लेखक-विविधता आ मानक लेखन सभ समाहित अछि
व्याख्या: TOC संकलनक गहिरता आ विविधता देखबैत अछि।

प्रश्न 2582. एहि अनुक्रम-आधारित खण्डक उद्देश्य की अछि?
क. सदेह १ केर coverage map बनाबय आ आगे सब लेख न छोड़बाक आधार तय करब
ख. केवल नाम रटब
ग. लेखक हटाबय
घ. पृष्ठ-सूची पूछब
उत्तर: क. सदेह १ केर coverage map बनाबय आ आगे सब लेख न छोड़बाक आधार तय करब
व्याख्या: अनुक्रम phase-1 auditक आधार अछि, मुख्य quizमे अर्थपूर्ण प्रश्न बनेबाक मार्गदर्शक।

खण्ड २६४ : विदेह-सदेह १ — चरण १ audit: आगेक खननक नियम आ प्राथमिकता

प्रश्न 2583. सदेह १ सँ पुनः खनन शुरू करबाक मुख्य कारण की अछि?
क. आरम्भिक विदेह आन्दोलन आ बहुविध सामग्रीक सम्पूर्ण कवरेज सुनिश्चित करब
ख. पुरान प्रश्न हटाबय
ग. सदेह ३७ दोहराबय
घ. साहित्य छोड़ब
उत्तर: क. आरम्भिक विदेह आन्दोलन आ बहुविध सामग्रीक सम्पूर्ण कवरेज सुनिश्चित करब
व्याख्या: User निर्देश अनुसार Sadeha 1–37 मे कोनो सामग्री नहि छोड़बाक लेल आरम्भिक अंक सँ audit जरूरी अछि।

प्रश्न 2584. कमजोर OCR सामग्रीक सम्बन्धमे सही नीति की अछि?
क. मुख्य quizमे doubtful सामग्री नहि, alternate format माँगि reviewमे राखब
ख. doubtful पाठसँ प्रश्न बनायब
ग. गलत पढ़ल नाम डालब
घ. OCR त्रुटि छिपायब
उत्तर: क. मुख्य quizमे doubtful सामग्री नहि, alternate format माँगि reviewमे राखब
व्याख्या: विश्वसनीयता लेल केवल साफ पाठ सँ मुख्य प्रश्न बनत।

प्रश्न 2585. प्रतिबंधित साहित्यिक-पाइरेसी सम्बन्धी नियम एहि auditमे की अछि?
क. नाम/सामग्री पूर्णतः exclude, महिमामंडन वा प्रश्न नहि
ख. अलग से पुरस्कार-प्रश्न बनब
ग. सामग्री बढ़ाबय लेल शामिल करब
घ. केवल पृष्ठ-प्रश्न बनब
उत्तर: क. नाम/सामग्री पूर्णतः exclude, महिमामंडन वा प्रश्न नहि
व्याख्या: User द्वारा स्पष्ट exclusion rule देल गेल अछि; अतः कोई सामग्री शामिल नहि।

प्रश्न 2586. सदेह १ केर संपादकीय किएक पहले खनन योग्य मानल गेल?
क. ओ विदेहक उद्देश्य, डिजिटल आंदोलन, रंगमंच, archive आ भाषा-प्रौद्योगिकी सब स्पष्ट करैत अछि
ख. ओ केवल आवरण अछि
ग. ओ रिक्त अछि
घ. ओ केवल सूची-नोट अछि
उत्तर: क. ओ विदेहक उद्देश्य, डिजिटल आंदोलन, रंगमंच, archive आ भाषा-प्रौद्योगिकी सब स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: संपादकीयमे आन्दोलनक घोषणापत्र-समान सामग्री अछि।

प्रश्न 2587. प्रश्न-निर्माणमे पृष्ठ-संख्या किएक टारल गेल?
क. साहित्यिक, सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक अर्थ पर ध्यान रखबाक लेल
ख. क्योंकि पृष्ठ उपलब्ध नहि
ग. क्योंकि स्रोत नहि
घ. क्योंकि विकल्प कम अछि
उत्तर: क. साहित्यिक, सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक अर्थ पर ध्यान रखबाक लेल
व्याख्या: User rule अनुसार page-number trivia निषिद्ध अछि।

प्रश्न 2588. Phase 1 coverage mapमे प्रत्येक लेखकेँ कोन स्थिति मिलत?
क. Fully mined, partially mined, not mined, rich article आदि
ख. केवल हटाओल
ग. केवल छापल
घ. केवल पृष्ठ गिनल
उत्तर: क. Fully mined, partially mined, not mined, rich article आदि
व्याख्या: Coverage map आगेक exhaustive miningक आधार बनत।

प्रश्न 2589. Dynamic question allocationक अर्थ की अछि?
क. लेखक आकार/समृद्धि अनुसार प्रश्न-संख्या बदलत
ख. हर लेख 1 प्रश्न
ग. हर पृष्ठ 1 प्रश्न
घ. नाम अनुसार स्थिर संख्या
उत्तर: क. लेखक आकार/समृद्धि अनुसार प्रश्न-संख्या बदलत
व्याख्या: लंबा/समृद्ध लेख 100+ प्रश्न पा सकैत अछि, छोट नोट कम।

प्रश्न 2590. व्याख्या-लेखनक मुख्य नियम की रहत?
क. स्रोत-आधारित, पुनर्लिखित, संक्षिप्त आ अर्थ स्पष्ट करय वाला
ख. कॉपी-पेस्ट
ग. बिना व्याख्या
घ. गलत स्रोत
उत्तर: क. स्रोत-आधारित, पुनर्लिखित, संक्षिप्त आ अर्थ स्पष्ट करय वाला
व्याख्या: प्रत्येक उत्तरक कारण मौलिक शब्दमे देल जायत।

प्रश्न 2591. आगे सदेह १क कौन-कौन सामग्री प्राथमिकता पर खनल जायत?
क. संदेश, प्रमुख लेखक-रचना, मानक लेखन-शैली, नाटक/कला/भाषा-संबंधी लेख
ख. केवल फोटो कैप्शन
ग. केवल पृष्ठ नम्बर
घ. केवल विज्ञापन
उत्तर: क. संदेश, प्रमुख लेखक-रचना, मानक लेखन-शैली, नाटक/कला/भाषा-संबंधी लेख
व्याख्या: Audit अनुसार rich सामग्री पहिले खनल जायत।

प्रश्न 2592. एहि batchक उद्देश्य की अछि?
क. सदेह १ पूर्ण-coverage अभियानक प्रारम्भिक 100 high-confidence प्रश्न जोड़ब
ख. प्रोजेक्ट समाप्त करब
ग. पुराना प्रश्न मिटाबय
घ. doubtful OCR जोड़ब
उत्तर: क. सदेह १ पूर्ण-coverage अभियानक प्रारम्भिक 100 high-confidence प्रश्न जोड़ब
व्याख्या: ई batch Sadeha 1 कैं छोड़ल नहि मानि, विश्वसनीय पाठसँ systematic mining आरम्भ करैत अछि।

खण्ड २६५ : विदेह-सदेह १ — संदेश: विदेहक आरम्भिक स्वीकार्यता

प्रश्न 2593. प्रो. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क संदेशमे विदेहक काजक ऐतिहासिक महत्व कोना देखाओल गेल अछि?
क. ई काज एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे चर्चा योग्य बनत
ख. ई केवल क्षणिक सूचना अछि
ग. ई साहित्यसँ असंबद्ध अछि
घ. ई केवल निजी पत्र अछि
उत्तर: क. ई काज एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे चर्चा योग्य बनत
व्याख्या: नचिकेता विदेहक कार्यकैं मैथिली भाषा-इतिहासक स्तर पर महत्वपूर्ण मानैत छथि।

प्रश्न 2594. गंगेश गुंजनक संदेशमे विदेह-कर्मक मुख्य गुण कोन कहल जा सकैत अछि?
क. संवेदनशील मन, मैथिली-समर्पित मेहनति आ इतिहासमे नव अध्याय खोलबाक क्षमता
ख. सिर्फ तकनीकी प्रयोग
ग. केवल विज्ञापन
घ. साहित्यिक उदासीनता
उत्तर: क. संवेदनशील मन, मैथिली-समर्पित मेहनति आ इतिहासमे नव अध्याय खोलबाक क्षमता
व्याख्या: गंगेश गुंजन विदेहक प्रयत्नमे भाव, श्रम आ ऐतिहासिक संभावना देखैत छथि।

प्रश्न 2595. साहित्य अकादेमीक जे. त्रिपाठीक बधाईक महत्व की अछि?
क. पहिल मैथिली पाक्षिक इंटरनेट-पत्रिका रूपमे विदेहक मान्यता
ख. कृषि-पत्रिका रूपमे मान्यता
ग. केवल छापाखाना प्रशंसा
घ. नाटक-विरोध
उत्तर: क. पहिल मैथिली पाक्षिक इंटरनेट-पत्रिका रूपमे विदेहक मान्यता
व्याख्या: संदेश विदेहकैं इंटरनेट पर प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका रूपमे सराहैत अछि।

प्रश्न 2596. प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”क प्रतिक्रिया कोन द्वैत भाव देखबैत अछि?
क. चमत्कार-जकाँ आश्चर्य आ गहीर आनंद दुनू
ख. क्रोध आ अस्वीकार
ग. केवल चुप्पी
घ. भाषा-विरोध
उत्तर: क. चमत्कार-जकाँ आश्चर्य आ गहीर आनंद दुनू
व्याख्या: मौनजी प्रकाशनक समाचार सुनि चकित सेहो भेलाह आ अत्यधिक आनंदित सेहो।

प्रश्न 2597. शिवप्रसाद यादव विदेहक कोन पक्षकेँ पत्रकारिताक नव प्रयोग मानैत छथि?
क. सूचना-प्रौद्योगिकी क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश
ख. हस्तलिखित पर्चा
ग. केवल नाटक मंच
घ. केवल मौखिक परम्परा
उत्तर: क. सूचना-प्रौद्योगिकी क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश
व्याख्या: ई संदेश डिजिटल युगमे मैथिली पत्रकारिताक साहसिक प्रवेशक स्वागत करैत अछि।

प्रश्न 2598. आचारण झाक संदेशमे सहयोग सम्बन्धी दृष्टि की अछि?
क. सहयोग भविष्यक बात, मुदा ई महान यज्ञमे श्रद्धापूर्ण आहुति देबाक भाव अछि
ख. सहयोग असंभव अछि
ग. पत्रिका निरर्थक अछि
घ. साहित्य त्याज्य अछि
उत्तर: क. सहयोग भविष्यक बात, मुदा ई महान यज्ञमे श्रद्धापूर्ण आहुति देबाक भाव अछि
व्याख्या: आचारण झा अनुभवक आधार पर भविष्यक अनिश्चितता मानितो यज्ञमे आहुति देबाक संकल्प रखैत छथि।

प्रश्न 2599. विजय ठाकुरक संदेश विदेहक सामूहिक श्रमक संबंधमे की सूचित करैत अछि?
क. सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि
ख. केवल एक पाठक दोषी अछि
ग. टीम अप्रासंगिक अछि
घ. पत्रिका बिना दलक अछि
उत्तर: क. सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि
व्याख्या: मिशिगन विश्वविद्यालयसँ आयल संदेश टीम-आधारित कार्यक सम्मान करैत अछि।

प्रश्न 2600. सुभाषचन्द्र यादवक शुभकामनामे विदेहक भविष्यक कोन रूपक कल्पना अछि?
क. निरन्तर पल्लवित-पुष्पित भऽ चतुर्दिक सुगंध पसारय
ख. जल्दी समाप्त हो
ग. केवल बन्द फाइल बनय
घ. सुगंध नहि पसारय
उत्तर: क. निरन्तर पल्लवित-पुष्पित भऽ चतुर्दिक सुगंध पसारय
व्याख्या: संदेश साहित्यिक पत्रिकाकेँ जीवित वृक्षक रूपकमे देखैत अछि।

प्रश्न 2601. मैथिलीपुत्र प्रदीपक संदेशक मुख्य स्वर की अछि?
क. भगवतीसँ सफलता-कामना आ पूर्ण सहयोगक आश्वासन
ख. निषेध
ग. व्यंग्य
घ. अनास्था
उत्तर: क. भगवतीसँ सफलता-कामना आ पूर्ण सहयोगक आश्वासन
व्याख्या: ई संदेश धार्मिक-सांस्कृतिक शुभेच्छा आ व्यावहारिक सहयोग दुनू जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2602. आरम्भिक संदेशसभ समग्र रूपमे की प्रमाणित करैत अछि?
क. विदेहक डिजिटल आन्दोलन आरम्भहि सँ वरिष्ठ, पाठक आ प्रवासी मैथिल सभक ध्यानमे छल
ख. विदेहक कोनो पाठक नहि छल
ग. संदेश केवल औपचारिक विज्ञापन छल
घ. समाजमे पूर्ण अस्वीकृति छल
उत्तर: क. विदेहक डिजिटल आन्दोलन आरम्भहि सँ वरिष्ठ, पाठक आ प्रवासी मैथिल सभक ध्यानमे छल
व्याख्या: संदेश-खंड विदेहक सामाजिक-सांस्कृतिक स्वीकृतिक प्रारम्भिक दस्तावेज अछि।

खण्ड २६६ : विदेह-सदेह १ — संदेश: नाम, भूगोल आ अंतरराष्ट्रीय मैथिली संपर्क

प्रश्न 2603. भीमनाथ झाक संदेशमे “विदेह” नामक विशिष्टता कोना व्याख्यायित अछि?
क. इंटरनेट पर होयबाक कारण “विदेह” नाम अनेक अर्थमे उचित ठहरैत अछि
ख. नाम अनुचित कहल गेल
ग. नाम केवल भूगोलक गलती अछि
घ. नाम बदलबाक आग्रह अछि
उत्तर: क. इंटरनेट पर होयबाक कारण “विदेह” नाम अनेक अर्थमे उचित ठहरैत अछि
व्याख्या: भीमनाथ झा नामक दार्शनिक/डिजिटल संगति पर ध्यान दैत छथि।

प्रश्न 2604. रामभरोस कापड़ी “भ्रमर”क संदेशमे विदेहक कोन उपलब्धि सराहल गेल?
क. मैथिलीकेँ अंतरराष्ट्रीय जगतमे पहुँचेनाइ
ख. मैथिलीकेँ सीमित करब
ग. पत्रिका हटाब
घ. केवल प्रिंट रखब
उत्तर: क. मैथिलीकेँ अंतरराष्ट्रीय जगतमे पहुँचेनाइ
व्याख्या: जनकपुरधामसँ आयल बधाई भारत-नेपालक पार मैथिली पहुँच देखबैत अछि।

प्रश्न 2605. रामभरोस कापड़ीक “नेपालोक सहयोग” सम्बन्धी विश्वास कोन व्यापकता दैत अछि?
क. विदेहक कार्य मिथिला भारत-नेपाल दुनू पारक साझा परियोजना बनि सकैत अछि
ख. केवल दिल्ली केन्द्रित रहत
ग. नेपाल असंबद्ध अछि
घ. भाषा सीमित अछि
उत्तर: क. विदेहक कार्य मिथिला भारत-नेपाल दुनू पारक साझा परियोजना बनि सकैत अछि
व्याख्या: संदेश सीमा-पार मैथिली सहयोगक संभावना खोलैत अछि।

प्रश्न 2606. राजनन्दन लालदासक संदेशमे कलकत्ता संदर्भक भूमिका की अछि?
क. ओ विदेहक पता बहुत लोककेँ लिखाए देल गेल कहलनि
ख. विदेह छिपाओल गेल
ग. कोनो प्रचार नहि भेल
घ. कलकत्ता असंबद्ध अछि
उत्तर: क. ओ विदेहक पता बहुत लोककेँ लिखाए देल गेल कहलनि
व्याख्या: ई पंक्ति विदेहक प्रसारमे व्यक्तिगत नेटवर्कक भूमिका देखबैत अछि।

प्रश्न 2607. प्रेमशंकर सिंहक संदेशमे “मातृभाषानुराग” ककर प्रति कहल गेल अछि?
क. इंटरनेट पर मैथिलीमे पहिल पत्रिका प्रकाशित करबाक निःस्वार्थ प्रयास प्रति
ख. केवल पुरस्कार प्रति
ग. केवल व्यापार प्रति
घ. केवल निजी नाम प्रति
उत्तर: क. इंटरनेट पर मैथिलीमे पहिल पत्रिका प्रकाशित करबाक निःस्वार्थ प्रयास प्रति
व्याख्या: ओ विदेह प्रकाशनकेँ मातृभाषा-सेवाक रूपमे देखैत छथि।

प्रश्न 2608. प्रेमशंकर सिंह पत्रिका देखलापर अपन भाव कोना व्यक्त करैत छथि?
क. इंटरनेटपर आरम्भसँ अन्त धरि देखल, मोन फुल्लित भऽ गेल
ख. पूर्ण निराश भेलाह
ग. देखबाक असमर्थ रहलाह
घ. भाषा बदलि देलनि
उत्तर: क. इंटरनेटपर आरम्भसँ अन्त धरि देखल, मोन फुल्लित भऽ गेल
व्याख्या: ई डिजिटल पठनक भावनात्मक प्रभावक प्रमाण अछि।

प्रश्न 2609. संदेशसभमे देश-विदेश प्रसंग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई-पत्रिका मैथिलीकेँ भौगोलिक दूरीसँ बाहर निकालि रहल छल
ख. ई केवल स्थानीय सूचना छल
ग. प्रवासी पाठक नहि छल
घ. देश-विदेश अप्रासंगिक अछि
उत्तर: क. ई-पत्रिका मैथिलीकेँ भौगोलिक दूरीसँ बाहर निकालि रहल छल
व्याख्या: संदेश भारत, नेपाल, अमेरिका आदि संदर्भसँ विदेहक विस्तृत पाठक-वृत्त देखबैत अछि।

प्रश्न 2610. “देश-विदेशक मैथिलकेँ जोड़बाक” शुभकामना कोन ध्येय-सूत्र दैत अछि?
क. डिजिटल माध्यम द्वारा बिखरल मैथिल समुदायकेँ संवादमे आनब
ख. समुदायकेँ अलग करब
ग. भाषा-सम्बन्ध तोड़ब
घ. पत्रिका निजी बनाबय
उत्तर: क. डिजिटल माध्यम द्वारा बिखरल मैथिल समुदायकेँ संवादमे आनब
व्याख्या: विदेहक मूल ध्येय समुदाय-संपर्क आ भाषा-संवाद अछि।

प्रश्न 2611. मातृभाषानुराग शब्द एहि संदेश-समूहमे कोन मूल्यकेँ केन्द्रित करैत अछि?
क. स्वार्थरहित भाषा-सेवा आ सांस्कृतिक समर्पण
ख. बाजार-लाभ
ग. राजनीतिक पद
घ. विज्ञापन-संचय
उत्तर: क. स्वार्थरहित भाषा-सेवा आ सांस्कृतिक समर्पण
व्याख्या: संदेश विदेहक श्रमकेँ भाषा-प्रेमक नैतिक मूल्यसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2612. संदेश-खंडक भूगोलिक-सांस्कृतिक निष्कर्ष की अछि?
क. विदेह आरम्भमेहि स्थानीय, राष्ट्रीय, प्रवासी आ नेपाल-सम्बद्ध मैथिली चेतनाक सेतु बनल
ख. ई केवल एक गामक पत्रिका छल
ग. ई बिना पाठकक प्रयोग छल
घ. ई भाषिक सेतु नहि बनल
उत्तर: क. विदेह आरम्भमेहि स्थानीय, राष्ट्रीय, प्रवासी आ नेपाल-सम्बद्ध मैथिली चेतनाक सेतु बनल
व्याख्या: अलग-अलग स्थानसँ संदेश विदेहक नेटवर्क-स्वरूप स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड २६७ : विदेह-सदेह १ — प्रकाशन-नीति, कॉपीराइट आ रचनाकार-उत्तरदायित्व

प्रश्न 2613. संदेश-पृष्ठक बाद देल प्रकाशन-नीतिमे रचनाक कॉपीराइट ककर लग रहत कहल गेल अछि?
क. रचनाकार लोकनिक लगमे
ख. केवल पाठक लग
ग. केवल वितरक लग
घ. कोनो अधिकार नहि
उत्तर: क. रचनाकार लोकनिक लगमे
व्याख्या: नीति स्पष्ट करैत अछि जे प्रकाशित रचनाक मूल अधिकार लेखकक लग रहत।

प्रश्न 2614. विदेहकेँ रचनासम्बन्धी कोन अधिकार प्राप्त होयत कहल गेल अछि?
क. प्रथम प्रकाशन, आर्काइव तथा अनुवादक ई-प्रकाशन/आर्काइव अधिकार
ख. लेखकत्व बदलबाक अधिकार
ग. रचना बेचबाक पूर्ण निजी अधिकार
घ. लेखक नाम हटाबक अधिकार
उत्तर: क. प्रथम प्रकाशन, आर्काइव तथा अनुवादक ई-प्रकाशन/आर्काइव अधिकार
व्याख्या: विदेह प्रकाशन-अधिकार सीमित रूपेँ परिभाषित करैत अछि, लेखकत्व नहि छीनेत।

प्रश्न 2615. रचनाकारसँ कोन प्रकारक रचना माँगल गेल?
क. मौलिक आ अप्रकाशित रचना
ख. चोरी कएल रचना
ग. अनाम अनुवाद बिना स्रोत
घ. केवल पुरान विज्ञापन
उत्तर: क. मौलिक आ अप्रकाशित रचना
व्याख्या: नीति रचनाक मौलिकता आ अप्रकाशित स्थिति पर जोर दैत अछि।

प्रश्न 2616. मौलिकता सम्बन्धी उत्तरदायित्व ककर मानल गेल अछि?
क. लेखक गणक स्वयं
ख. केवल पाठक
ग. केवल मुद्रक
घ. केवल वितरक
उत्तर: क. लेखक गणक स्वयं
व्याख्या: रचना मौलिक अछि वा नहि—एकर उत्तरदायित्व लेखक पर राखल गेल।

प्रश्न 2617. रचना भेजबाक लेल कोन डिजिटल प्रारूप स्वीकारल गेल?
क. .doc, .docx, .rtf वा .txt
ख. केवल कागजी पोस्टकार्ड
ग. केवल चित्र फाइल
घ. केवल ऑडियो टेप
उत्तर: क. .doc, .docx, .rtf वा .txt
व्याख्या: ई नीति डिजिटल प्रकाशनक व्यावहारिकता देखबैत अछि।

प्रश्न 2618. रचनाकारक परिचय आ फोटो मँगबाक उद्देश्य की अछि?
क. रचना संग लेखकक संक्षिप्त परिचय आ पहचान देब
ख. लेखककेँ गुप्त राखब
ग. रचना हटाबय
घ. केवल सजावट
उत्तर: क. रचना संग लेखकक संक्षिप्त परिचय आ पहचान देब
व्याख्या: प्रकाशन पाठककेँ लेखकक परिचय सेहो उपलब्ध कराबय चाहैत अछि।

प्रश्न 2619. रचनाक अंतमे कोन घोषणा टाइप रहबाक अपेक्षा अछि?
क. ई रचना मौलिक अछि आ पहिल प्रकाशन हेतु विदेहकेँ देल जा रहल अछि
ख. ई रचना अज्ञात अछि
ग. ई नकल अछि
घ. ई प्रकाशन निषिद्ध अछि
उत्तर: क. ई रचना मौलिक अछि आ पहिल प्रकाशन हेतु विदेहकेँ देल जा रहल अछि
व्याख्या: घोषणा प्रकाशन-नैतिकता आ प्रमाणिकता लेल अछि।

प्रश्न 2620. मेल भेटलाक बाद प्रकाशन-अंकक सूचना देबाक समयसीमा कोना बताओल गेल?
क. यथासंभव शीघ्र, सात दिनक भीतर
ख. एक वर्षक बाद
ग. कहियो नहि
घ. केवल छापा बाद
उत्तर: क. यथासंभव शीघ्र, सात दिनक भीतर
व्याख्या: ई पाठक-लेखक संचारक समयबद्धता देखबैत अछि।

प्रश्न 2621. ई-पत्रिका मासक कोन तारीख पर प्रकाशित होयबाक बात अछि?
क. १ आ १५ तारीख
ख. केवल ३१ तारीख
ग. हर पाँच वर्ष
घ. कोनो निश्चितता नहि
उत्तर: क. १ आ १५ तारीख
व्याख्या: पाक्षिक स्वरूप नियत तिथि पर प्रकाशनक अनुशासन बनबैत अछि।

प्रश्न 2622. प्रकाशन-नीतिक साहित्यिक महत्व की अछि?
क. डिजिटल मैथिली प्रकाशनमे अधिकार, मौलिकता आ अनुशासित प्रक्रिया स्पष्ट करब
ख. कॉपीराइट हटाबय
ग. नकल प्रोत्साहित करब
घ. लेखककेँ अदृश्य करब
उत्तर: क. डिजिटल मैथिली प्रकाशनमे अधिकार, मौलिकता आ अनुशासित प्रक्रिया स्पष्ट करब
व्याख्या: ई नीति विदेहक नैतिक प्रकाशन-संरचना केँ स्पष्ट बनबैत अछि।

खण्ड २६८ : विदेह-सदेह १ — सदेह-संस्करण, मुद्रित रूप आ डिजिटल-संग्रह

प्रश्न 2623. विदेहमे धारावाहिक ई-प्रकाशनक बाद किछु रचना कोन रूपमे आनबाक योजना उल्लेखित अछि?
क. प्रिंट फॉर्ममे पुस्तक रूपेँ
ख. केवल मौखिक पाठ
ग. केवल पोस्टर
घ. पूर्ण निषेध
उत्तर: क. प्रिंट फॉर्ममे पुस्तक रूपेँ
व्याख्या: डिजिटल प्रकाशनक बाद चयनित सामग्री मुद्रित पुस्तकमे अनबाक योजना छल।

प्रश्न 2624. “कुरुक्षेत्रम्: अन्तर्मनक” संबंधी उल्लेख कोन प्रक्रिया देखबैत अछि?
क. ई-प्रकाशित उपन्यासक बाद मुद्रित रूपमे प्रकाशन
ख. कविता हटाबय
ग. संगीत रिकॉर्डिंग
घ. केवल चित्रकला
उत्तर: क. ई-प्रकाशित उपन्यासक बाद मुद्रित रूपमे प्रकाशन
व्याख्या: विदेह डिजिटल मंच सँ पुस्तक-प्रकाशन धरि सामग्रीक यात्रा बनबैत अछि।

प्रश्न 2625. विदेह डाटाबेसक आधार पर शब्दकोश-प्रकल्पक कोन जोड़ी उल्लेखित अछि?
क. मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोश
ख. केवल अंग्रेजी-फ्रेंच शब्दकोश
ग. केवल संस्कृत-ग्रीक
घ. केवल बोली-सूची
उत्तर: क. मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोश
व्याख्या: डाटाबेस भाषा-संसाधन निर्माणक आधार बनल।

प्रश्न 2626. मिथिलाक्षरसँ देवनागरी पांडुलिपि लिप्यंतरण-पंजी-प्रबंध डेटाबेस कोन संरक्षण-काजक संकेत अछि?
क. लिपि, पांडुलिपि आ पंजी परम्पराक डिजिटल/मुद्रित संरक्षण
ख. लिपि-विनाश
ग. पंजी-त्याग
घ. संगीत-निषेध
उत्तर: क. लिपि, पांडुलिपि आ पंजी परम्पराक डिजिटल/मुद्रित संरक्षण
व्याख्या: ई प्रकल्प मिथिला अभिलेख परम्पराकेँ आधुनिक रूपमे सुरक्षित करबाक प्रयास अछि।

प्रश्न 2627. सदेह-संस्करणमे शोध, संकलन, डिजिटल इमेजिंग आ लिप्यंतरण कोन तरहक संपादकीय श्रम देखबैत अछि?
क. बहुस्तरीय दस्तावेजीकरण आ तकनीकी-साहित्यिक श्रम
ख. केवल नाम-सूची
ग. बिना स्रोतक काम
घ. साहित्य-विरोध
उत्तर: क. बहुस्तरीय दस्तावेजीकरण आ तकनीकी-साहित्यिक श्रम
व्याख्या: डिजिटल इमेजिंग आ लिप्यंतरण भाषा-संपदा बचाबयक श्रमसाध्य प्रक्रिया अछि।

प्रश्न 2628. एक कथा-पुस्तकक इतिहास “एक-एकटा कथाक पाठक वर्णन” सहित देबाक महत्व की अछि?
क. पाठक-प्रतिक्रिया आ पाठ-संवादकेँ पुस्तक-इतिहासमे स्थान देब
ख. पाठक हटाबय
ग. केवल मूल्य लिखब
घ. अर्थ छिपाबय
उत्तर: क. पाठक-प्रतिक्रिया आ पाठ-संवादकेँ पुस्तक-इतिहासमे स्थान देब
व्याख्या: विदेह पाठककेँ मात्र उपभोक्ता नहि, साहित्यिक संवादक भागी मानैत अछि।

प्रश्न 2629. “डेढ़ लाखसँ बेशी” पठन-संदर्भक अर्थ की अछि?
क. ई-पत्रिकाक सामग्री व्यापक डिजिटल पाठकवर्ग धरि पहुँचल
ख. कियो नहि पढ़लक
ग. साइट बन्द छल
घ. केवल छापा बिकलक
उत्तर: क. ई-पत्रिकाक सामग्री व्यापक डिजिटल पाठकवर्ग धरि पहुँचल
व्याख्या: पठन-संख्या डिजिटल पहुँच आ रुचिक संकेत देत अछि।

प्रश्न 2630. श्रुति प्रकाशन सम्बन्धी सूचना किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई-प्रकाशित सामग्रीक मुद्रित अवतार लेल प्रकाशक-संरचना देखबैत अछि
ख. केवल विज्ञापन मात्र
ग. साहित्य-विनाश
घ. लेखक-अभाव
उत्तर: क. ई-प्रकाशित सामग्रीक मुद्रित अवतार लेल प्रकाशक-संरचना देखबैत अछि
व्याख्या: डिजिटल-टू-प्रिंट यात्रा लेल प्रकाशकक भूमिका उल्लेखित अछि।

प्रश्न 2631. Combined ISBN आ संस्करण-मूल्यक सूचना साहित्यिक अर्थमे कखन उपयोगी अछि?
क. सदेह श्रृंखला कैँ पुस्तक-परियोजना रूपमे समझबाक लेल
ख. पृष्ठ-प्रश्न बनाबय लेल
ग. सिली संख्यात्मक रटन्त लेल
घ. विकल्प सजाबय लेल
उत्तर: क. सदेह श्रृंखला कैँ पुस्तक-परियोजना रूपमे समझबाक लेल
व्याख्या: ई सूचना project identity बुझाबय उपयोगी अछि, trivia नहि बनबाक चाही।

प्रश्न 2632. सदेह-संस्करण खण्डक मूल महत्व की अछि?
क. विदेहक सामग्री ई-पत्रिका सँ शोध-संसाधन, शब्दकोश, पंजी आ मुद्रित पुस्तक धरि फैलल अछि
ख. ई केवल एक ब्लॉग छल
ग. कोनो पुस्तक-सम्बन्ध नहि
घ. कोनो शोध-काज नहि
उत्तर: क. विदेहक सामग्री ई-पत्रिका सँ शोध-संसाधन, शब्दकोश, पंजी आ मुद्रित पुस्तक धरि फैलल अछि
व्याख्या: ई खण्ड विदेहक डिजिटल मंचकेँ दीर्घजीवी ज्ञान-संरचनामे बदलैत देखबैत अछि।

खण्ड २६९ : विदेह-सदेह १ — रामरंग साक्षात्कार: विद्यापति संगीतक वर्गीकरण

प्रश्न 2633. रामरंगक अनुसार विद्यापतिक अधिकांश गीत कोन गायन-शैलीमे बूझल जा सकैत अछि?
क. पद/भजन गायन शैलीमे
ख. केवल युद्धगीत शैलीमे
ग. केवल नाट्य संवादमे
घ. केवल आधुनिक फिल्मी शैलीमे
उत्तर: क. पद/भजन गायन शैलीमे
व्याख्या: रामरंग अधिकांश विद्यापति गीतकेँ पद वा भजन गायनक श्रेणीमे देखैत छथि।

प्रश्न 2634. विद्यापतिक किछु गीत रामरंग कोन शैलीक अंतर्गत मानैत छथि?
क. ग्रामीण गीत शैलीक अंतर्गत
ख. सैन्य गीत
ग. नगर-घोषणा
घ. गद्य पाठ
उत्तर: क. ग्रामीण गीत शैलीक अंतर्गत
व्याख्या: ओ काही गीतकेँ ग्राम्य गायन-परम्परासँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 2635. “नन्दक नन्दन...” आ “जय जय भैरवि...” उदाहरण ककर रूपमे देल गेल?
क. पद-गायन शैलीक उदाहरण
ख. भोजन-विधि
ग. व्याकरण-अभ्यास
घ. पत्रकारीय सूचना
उत्तर: क. पद-गायन शैलीक उदाहरण
व्याख्या: साक्षात्कारमे ई गीत पद-गायन शैली बुझाबय लेल उदाहरण रूपमे अछि।

प्रश्न 2636. “कामिनी करय असनाने” आदि पदक प्रसंगमे कोन रस-परम्पराक संकेत अछि?
क. शृंगार रससँ सम्बन्धित पद
ख. वीर रस मात्र
ग. हास्य रस मात्र
घ. नैतिक उपदेश मात्र
उत्तर: क. शृंगार रससँ सम्बन्धित पद
व्याख्या: रामरंग विद्यापति गीतमे भाव-रसक विविधता मानैत छथि।

प्रश्न 2637. मिथिलामे विद्यापति गीतक धुनक सम्बन्धमे रामरंग की कहैत छथि?
क. ई धुन अध-शास्त्रीय संगीतक अंतर्गत आबि सकैत अछि
ख. पूर्णतः अनसंगीतिक अछि
ग. केवल पाश्चात्य अछि
घ. केवल घोष-वाचन अछि
उत्तर: क. ई धुन अध-शास्त्रीय संगीतक अंतर्गत आबि सकैत अछि
व्याख्या: स्थानीय गायन दीर्घ परम्परासँ आध-शास्त्रीय स्वरूप पाबैत अछि।

प्रश्न 2638. रामरंग क्षेत्रीय संगीतक धारणा किएक देलनि?
क. मिथिलाक गायन-शैलीक अपना अलग स्वरूप अछि
ख. सभी शैली समान अछि
ग. मिथिलामे गायन नहि अछि
घ. क्षेत्रीयता अस्वीकार्य अछि
उत्तर: क. मिथिलाक गायन-शैलीक अपना अलग स्वरूप अछि
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे मिथिलाक गायनक अलग रूप अछि, जकरा प्रादेशिक संगीत कहि सकैत छी।

प्रश्न 2639. लोक/ग्रामीण संगीतमे विद्यापति गीतक स्थान कोना बुझाओल गेल?
क. किछु गीत लोक-ग्रामीण जीवन आ अवसरसँ जुड़ल अछि
ख. लोकसँ पूर्ण अलग
ग. केवल दरबारी
घ. केवल पुस्तकालयी
उत्तर: क. किछु गीत लोक-ग्रामीण जीवन आ अवसरसँ जुड़ल अछि
व्याख्या: विद्यापति परम्परा शास्त्रीय आ लोक दुनू धरि फैलैत अछि।

प्रश्न 2640. रामरंगक उत्तर विद्यापति-संगीतकेँ एकमात्र श्रेणीमे किएक नहि बाँधैत?
क. ओ पद, भजन, ग्रामीण, अध-शास्त्रीय आ प्रादेशिक अनेक आयाम देखैत छथि
ख. ओ केवल एक धुन मानैत छथि
ग. ओ गीत अस्वीकार करैत छथि
घ. ओ संगीतक चर्चा नहि करैत छथि
उत्तर: क. ओ पद, भजन, ग्रामीण, अध-शास्त्रीय आ प्रादेशिक अनेक आयाम देखैत छथि
व्याख्या: साक्षात्कार विद्यापति गीतक बहुस्तरीय गायन-परम्परा पर बल दैत अछि।

प्रश्न 2641. विद्यापति गीतक मौखिक परम्परा सम्बन्धी संकेत की अछि?
क. मिथिलामे दशकोंसँ गाओल जाइत गीतक अपनी धुन आ शैली अछि
ख. नव बनल धुन मात्र
ग. बिना गायनक पाठ
घ. सिर्फ छापा पंक्ति
उत्तर: क. मिथिलामे दशकोंसँ गाओल जाइत गीतक अपनी धुन आ शैली अछि
व्याख्या: दीर्घ गायन-परम्परा गीतकेँ जीवित सांस्कृतिक स्वरूप दैत अछि।

प्रश्न 2642. एहि साक्षात्कार-खंडक मूल शैक्षिक उपयोगिता की अछि?
क. विद्यापति गीतकेँ साहित्यक संग संगीत-शास्त्रीय आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिसँ पढ़ब
ख. केवल नाम रटब
ग. केवल पृष्ठ पूछब
घ. गीत हटाबय
उत्तर: क. विद्यापति गीतकेँ साहित्यक संग संगीत-शास्त्रीय आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिसँ पढ़ब
व्याख्या: रामरंगक उत्तर विद्यापति अध्ययनकेँ संगीतशास्त्र, रस आ लोकपरम्परा सँ जोड़ैत अछि।

खण्ड २७० : विदेह-सदेह १ — रामरंग साक्षात्कार: विद्यापति परम्परा आ पतन-चिन्ता

प्रश्न 2643. रामरंगक अनुसार मिथिलामे विद्यापतिक लोकप्रियता कतेक व्यापक अछि?
क. जनसाधारणमे विद्यापति आ हुनकर गीत अत्यन्त परिचित छथि
ख. कियो नहि चिन्हैत
ग. केवल बाहरी लोक चिन्हैत
घ. केवल पंडितक गुप्त विषय
उत्तर: क. जनसाधारणमे विद्यापति आ हुनकर गीत अत्यन्त परिचित छथि
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे मिथिलामे विद्यापतिक नाम न जानय वाला अभागल होयत।

प्रश्न 2644. विद्यापति पदक प्रसारमे साहित्यिक गुणक संग कोन गुणक योगदान मानल गेल?
क. संगीतक गुण
ख. केवल मुद्रणक गुण
ग. केवल प्रशासनिक गुण
घ. केवल व्यापार
उत्तर: क. संगीतक गुण
व्याख्या: रामरंग साहित्य आ संगीत दुनूकेँ प्रसारक कारण मानैत छथि।

प्रश्न 2645. बंगालक रवि-संगीतक तुलना किएक उठाओल गेल?
क. विद्यापति-संगीतक संरक्षण-पतन पर तुलनात्मक विचार लेल
ख. भाषा बदलय लेल
ग. विद्यापति हटाबय लेल
घ. केवल शहर चर्चा लेल
उत्तर: क. विद्यापति-संगीतक संरक्षण-पतन पर तुलनात्मक विचार लेल
व्याख्या: तुलना देखबैत अछि जे एक परम्परा सँ दोसर परम्पराक स्थिति बुझल जा सकैत अछि।

प्रश्न 2646. विद्यापति संगीतमे पतनक चर्चा कोन व्यापक सामाजिक दबाबसँ जोड़ल गेल?
क. उपभोक्तावाद, बाजारवाद आ भूमंडलीकरण आदि प्रभावसँ
ख. केवल मौसमसँ
ग. केवल खेतीसँ
घ. केवल पृष्ठ-सज्जासँ
उत्तर: क. उपभोक्तावाद, बाजारवाद आ भूमंडलीकरण आदि प्रभावसँ
व्याख्या: प्रश्नमे आधुनिक सामाजिक-आर्थिक बदलावक प्रभाव पर विचार अछि।

प्रश्न 2647. रामरंग अपन उत्तरमे मैथिल शास्त्रीय संगीतक वर्तमान स्थिति कोना वर्णित करैत छथि?
क. मिथिला वर्तमान समयमे शास्त्रीय संगीतसँ शून्य भऽ रहल अछि
ख. शास्त्रीय संगीत अत्यधिक प्रस्फुटित अछि
ग. कोनो चिन्ता नहि
घ. संगीत अप्रासंगिक अछि
उत्तर: क. मिथिला वर्तमान समयमे शास्त्रीय संगीतसँ शून्य भऽ रहल अछि
व्याख्या: ओ दुःखपूर्वक शास्त्रीय संगीतक क्षयक बात कहैत छथि।

प्रश्न 2648. रामचतुर मलिक आ सियाराम तिवारीक उल्लेख कोन परम्परासँ जुड़ल अछि?
क. ध्रुपद शैलीक ऐतिहासिक उच्चस्तरीय गायन परम्परा
ख. केवल कथा-लेखन
ग. केवल चित्रकला
घ. केवल राजनीति
उत्तर: क. ध्रुपद शैलीक ऐतिहासिक उच्चस्तरीय गायन परम्परा
व्याख्या: ई गायक ध्रुपद शैलीक विशिष्ट प्रतिनिधि मानल गेलाह।

प्रश्न 2649. सियाराम तिवारीकेँ मैथिल मानबाक तर्क की देल गेल?
क. हुनकर शिक्षा अमता गाममे भेल छल
ख. ओ मिथिला नहि गेलाह
ग. ओ केवल हिन्दी लेखक छलाह
घ. ओ संगीतकार नहि छलाह
उत्तर: क. हुनकर शिक्षा अमता गाममे भेल छल
व्याख्या: साक्षात्कारमे शिक्षा-स्थानक आधार पर सांस्कृतिक सम्बन्ध जोड़ित अछि।

प्रश्न 2650. भावी पीढ़ीक लेल पुरान गायकसभ पर शोधक आग्रह किएक अछि?
क. ध्रुपद शैली आ मैथिली संगीतपरम्पराक विशेषता बुझबाक लेल
ख. ताकि गीत नष्ट हो
ग. ताकि नाम हटे
घ. ताकि नकल बढ़े
उत्तर: क. ध्रुपद शैली आ मैथिली संगीतपरम्पराक विशेषता बुझबाक लेल
व्याख्या: रामरंग गायकसभक कार्य-संबंधी शोधकेँ भविष्यक शिक्षा लेल जरूरी मानैत छथि।

प्रश्न 2651. “जय मिथिला जय मैथिली” पंक्ति साक्षात्कारक भाव-धारा कोना समेटैत अछि?
क. संगीत-चर्चा भाषा-मातृभूमि प्रेमसँ संयुक्त अछि
ख. संगीतसँ अलग नारा
ग. व्यंग्य मात्र
घ. विदेशी उद्धरण
उत्तर: क. संगीत-चर्चा भाषा-मातृभूमि प्रेमसँ संयुक्त अछि
व्याख्या: रामरंगक संगीत-विमर्श मैथिली अस्मिता आ मिथिला-प्रेमसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 2652. एहि खण्डक गम्भीर निष्कर्ष की अछि?
क. विद्यापति संगीतक संरक्षण लेल साहित्यिक, संगीतशास्त्रीय आ सांस्कृतिक शोध आवश्यक अछि
ख. परम्परा छोड़ि देब
ग. गीतक अर्थ नहि देखब
घ. केवल लोकप्रियता गिनब
उत्तर: क. विद्यापति संगीतक संरक्षण लेल साहित्यिक, संगीतशास्त्रीय आ सांस्कृतिक शोध आवश्यक अछि
व्याख्या: पतन-चिन्ता संरक्षण, शोध आ शिक्षाक आवश्यकता उत्पन्न करैत अछि।

खण्ड २७१ : विदेह-सदेह १ — राजमोहन झा साक्षात्कार: जन्म, शिक्षा आ प्रारम्भिक संस्कार

प्रश्न 2653. राजमोहन झाक साक्षात्कारक शीर्ष ध्येय-वाक्य “खुलल दृष्टि...” कोन क्षेत्रपर केन्द्रित अछि?
क. समीक्षाक स्थिति पर खुलल दृष्टिक अभाव
ख. कृषि-विपणन
ग. खेल आयोजन
घ. बाल-चित्रकला
उत्तर: क. समीक्षाक स्थिति पर खुलल दृष्टिक अभाव
व्याख्या: साक्षात्कारक रूपरेखा साहित्य, समीक्षा आ जीवन-संसार पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2654. राजमोहन झाकेँ २००९ सालक कोन सम्मान देल जा रहल छल?
क. प्रबोध सम्मान
ख. ज्ञानपीठ
ग. नोबेल
घ. बुककर
उत्तर: क. प्रबोध सम्मान
व्याख्या: परिचयमे हुनकर मैथिली योगदानकेँ देखैत प्रबोध सम्मानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 2655. राजमोहन झाक रचनात्मक योगदान कोन रूपमे परिचित कराओल गेल?
क. कई कथा-संग्रह आ चारि समालोचनात्मक पोथी
ख. केवल एक गीत
ग. केवल नाटक निर्देशन
घ. केवल शब्दकोश
उत्तर: क. कई कथा-संग्रह आ चारि समालोचनात्मक पोथी
व्याख्या: साक्षात्कारक भूमिका हुनका कथाकार आ समीक्षक दुनू रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 2656. राजमोहन झाक जन्म-स्थान कोन अछि?
क. कुमार बाजितपुर, वैशाली
ख. दरभंगा शहर
ग. जनकपुर
घ. दिल्ली
उत्तर: क. कुमार बाजितपुर, वैशाली
व्याख्या: साक्षात्कारमे ओ अपन जन्म कुमार बाजितपुर बतबैत छथि।

प्रश्न 2657. हुनकर जन्म-वर्ष आ तिथि सम्बन्धी उत्तरमे कोन जानकारी अछि?

क. १९३४, अगस्त २७

ख. १९५०, जुलाई १०

ग. १९२७, जनवरी १

घ. २००९, जनवरी १

उत्तर: क. १९३४, अगस्त २७

व्याख्या: जन्म-सूचना जीवन-संदर्भ बनेबाक लेल उपयोगी अछि, trivia नहि यदि biography contextमे पूछल जाय।

प्रश्न 2658. राजमोहन झाक प्रारम्भिक लालन-पोषण कतय भेल?

क. गाममे, बादमे पटना आबि आगू शिक्षा भेल

ख. पूर्णतः विदेशमे

ग. केवल दिल्लीमे

घ. केवल दरभंगामे

उत्तर: क. गाममे, बादमे पटना आबि आगू शिक्षा भेल

व्याख्या: ओ कहैत छथि प्रारम्भिक पालन गाममे आ बादक जीवन पटना केन्द्रित भेल।

प्रश्न 2659. पटना आबि ओ कोन विद्यालयमे आठम वर्गमे नाम लिखेने छलाह?

क. टी.के. घोष एकेडमी

ख. सी.एम. कॉलेज

ग. रांची विश्वविद्यालय

घ. साहित्य अकादेमी

उत्तर: क. टी.के. घोष एकेडमी

व्याख्या: साक्षात्कारमे स्कूल-शिक्षा टी.के. घोष एकेडमीसँ मैट्रिक धरि बताओल अछि।

प्रश्न 2660. पटना कॉलेजमे राजमोहन झाक विषय-संयोजन की छल?

क. मनोविज्ञान संग लॉजिक, हिन्दी आ अर्थशास्त्र

ख. केवल संगीत

ग. केवल संस्कृत

घ. केवल गणित

उत्तर: क. मनोविज्ञान संग लॉजिक, हिन्दी आ अर्थशास्त्र

व्याख्या: हुनकर उच्च शिक्षा बहुविषयी रही।

प्रश्न 2661. हुनकर पितामह जनार्दन झा कोन रूपमे प्रभावशाली छलाह?

क. संस्कृत विद्वान आ प्रारम्भिक संरक्षक/प्रेरक

ख. क्रीड़ा-प्रशिक्षक

ग. प्रकाशक मात्र

घ. व्यापारी

उत्तर: क. संस्कृत विद्वान आ प्रारम्भिक संरक्षक/प्रेरक

व्याख्या: राजमोहन झाक साहित्यिक संस्कार पितामहक संरक्षणसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 2662. एहि आरम्भिक जीवन-खंडक साहित्यिक महत्व की अछि?

क. गाम, संस्कृत-परम्परा, पटना-शिक्षा आ बहुभाषिक अध्ययन मिलि लेखक-संस्कार बनबैत अछि

ख. जीवन-संदर्भ अप्रासंगिक अछि

ग. केवल जन्मतिथि महत्वपूर्ण अछि

घ. शिक्षा कथासँ असंबंधित अछि

उत्तर: क. गाम, संस्कृत-परम्परा, पटना-शिक्षा आ बहुभाषिक अध्ययन मिलि लेखक-संस्कार बनबैत अछि

व्याख्या: साक्षात्कार लेखकक साहित्यिक गठनक पृष्ठभूमि स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड २७२ : विदेह-सदेह १ — राजमोहन झा: पितामह, भाषा-परिवर्तन आ पेशा

प्रश्न 2663. राजमोहन झाक साहित्यिक आरम्भिक प्रेरणा मुख्यतः केकरासँ भेटल?

क. पितामह जनार्दन झासँ

ख. केवल कॉलेज मित्रसँ

ग. केवल नौकरी अधिकारीसँ

घ. केवल प्रकाशकसँ

उत्तर: क. पितामह जनार्दन झासँ

व्याख्या: ओ स्पष्ट कहैत छथि जे प्रारम्भिक प्रेरणा पितामहसँ भेटल।

प्रश्न 2664. पितामहक संरक्षणमे हुनकर कोन स्तर धरि पढ़ाई भेल?

क. गाममे मिडिल स्कूल धरि

ख. पीएचडी धरि

ग. केवल बालवाड़ी

घ. विदेशी विश्वविद्यालय धरि

उत्तर: क. गाममे मिडिल स्कूल धरि

व्याख्या: गामक आरम्भिक शिक्षा पितामहक देखरेखमे भेल।

प्रश्न 2665. जनार्दन झाक मैथिली लेखन राजमोहन झापर कोना प्रभाव डाललक?

क. हुनका मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणा भेटल

ख. मैथिली छोड़बाक प्रेरणा

ग. लेखन रोकबाक प्रेरणा

घ. केवल अंग्रेजी अपनाबक प्रेरणा

उत्तर: क. हुनका मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणा भेटल

व्याख्या: पितामह स्वयं मैथिलीमे लिखैत छलाह, तैं रुचि जागल।

प्रश्न 2666. जनार्दन झा महावीर प्रसाद द्विवेदीक कोन पत्रिका-संपादनसँ जुड़ल छलाह?

क. सरस्वती

ख. विदेह

ग. मिथिला दर्शन

घ. आखर

उत्तर: क. सरस्वती

व्याख्या: साक्षात्कारमे सरस्वती संपादनक प्रसंग हुनकर व्यापक साहित्यिक सम्बन्ध देखबैत अछि।

प्रश्न 2667. जनार्दन झा कोन मैथिली पत्रिकाक संपादक सेहो छलाह?

क. मिथिला मिहिर

ख. कुरुक्षेत्रम्

ग. गीतांजलि

घ. चित्रांगदा

उत्तर: क. मिथिला मिहिर

व्याख्या: मिथिला मिहिरक संपादन राजमोहन झाक पारिवारिक साहित्यिक परिवेशक प्रमाण अछि।

प्रश्न 2668. पितामह द्वारा बंगला उपन्यासक हिन्दी अनुवादक उल्लेख कोन क्षमता देखबैत अछि?

क. भाषिक सेतु-निर्माण आ अनुवाद-परम्परा

ख. केवल मौन साधना

ग. भाषा-विरोध

घ. साहित्य-विनाश

उत्तर: क. भाषिक सेतु-निर्माण आ अनुवाद-परम्परा

व्याख्या: करीब सौ बंगला उपन्यासक अनुवादक सूचना बहुभाषिक साहित्यिक श्रम देखबैत अछि।

प्रश्न 2669. संस्कृत परम्परासँ अंग्रेजी/हिन्दी दिस झुकबाक कारण राजमोहन झा कोना बुझबैत छथि?
क. समय बदलल, संस्कृत घटल, अंग्रेजी शिक्षा प्रभावी भेल
ख. संस्कृत कखनो नहि छल
ग. अंग्रेजी निषिद्ध छल
घ. भाषा-परिवर्तन असत्य अछि
उत्तर: क. समय बदलल, संस्कृत घटल, अंग्रेजी शिक्षा प्रभावी भेल
व्याख्या: ओ समाजक शैक्षिक संक्रमणकेँ अपन जीवनक परिवर्तनसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 2670. साहित्यक अतिरिक्त राजमोहन झाक पेशा की छल?
क. इम्प्लॉयमेंट ऑफिसर
ख. रंग निर्देशक
ग. चित्रकार
घ. संगीतज्ञ
उत्तर: क. इम्प्लॉयमेंट ऑफिसर
व्याख्या: साक्षात्कारमे ओ अपन सरकारी/रोजगार सेवा-पेशा बतबैत छथि।

प्रश्न 2671. नौकरी-कालमे किन-किन शहरमे रहबाक उल्लेख अछि?
क. जमशेदपुर, मुजफ्फरपुर, राँची, बोकारो, पटना, दिल्ली
ख. केवल एक गाम
ग. केवल विदेश
घ. केवल जनकपुर
उत्तर: क. जमशेदपुर, मुजफ्फरपुर, राँची, बोकारो, पटना, दिल्ली
व्याख्या: शहर-परिवर्तन हुनकर सामाजिक अनुभवक विस्तार बनैत अछि।

प्रश्न 2672. एहि खण्डक मूल साहित्यिक निष्कर्ष की अछि?
क. परिवारक संस्कृत-मैथिली परम्परा, अनुवाद-संस्कार आ आधुनिक शिक्षा मिलि राजमोहन झाक लेखन-भूमि बनल
ख. लेखनक पृष्ठभूमि नहि छल
ग. पेशा साहित्यसँ असंबद्ध रहि गेल
घ. परम्परा प्रभावहीन छल
उत्तर: क. परिवारक संस्कृत-मैथिली परम्परा, अनुवाद-संस्कार आ आधुनिक शिक्षा मिलि राजमोहन झाक लेखन-भूमि बनल
व्याख्या: साक्षात्कार लेखकक गठनमे परम्परा आ आधुनिकता दुनू रेखांकित करैत अछि।

खण्ड २७३ : विदेह-सदेह १ — राजमोहन झा: परिवार, प्रिय लेखक आ आरम्भिक प्रकाशन

प्रश्न 2673. घरमे राजमोहन झा किनका सँ बेसी नजदीक रहलाह?
क. पितामह संग पितामही सँ
ख. केवल पड़ोसी सँ
ग. केवल शिक्षक सँ
घ. केवल प्रकाशक सँ
उत्तर: क. पितामह संग पितामही सँ
व्याख्या: साक्षात्कारमे पारिवारिक निकटता पितामह-पितामहीक संग बताओल अछि।

प्रश्न 2674. हुनकर भाई-बहिन सम्बन्धी उत्तरमे परिवारक संरचना कोना अछि?
क. चारि भाई आ एक बहिन छलाह; दू भाई दिवंगत, दू जीवित
ख. एकल संतान
ग. दस बहिन मात्र
घ. कोनो परिवार नहि
उत्तर: क. चारि भाई आ एक बहिन छलाह; दू भाई दिवंगत, दू जीवित
व्याख्या: ई जीवन-संदर्भ लेखकक सामाजिक आधार बुझबैत अछि।

प्रश्न 2675. कृष्ण मोहन झाक पेशा की कहल गेल?
क. राँची विश्वविद्यालयमे मनोविज्ञानक शिक्षक
ख. संगीतकार
ग. चित्रकार
घ. किसान मात्र
उत्तर: क. राँची विश्वविद्यालयमे मनोविज्ञानक शिक्षक
व्याख्या: परिवारमे अकादमिक परिवेश सेहो उपस्थित देखाइत अछि।

प्रश्न 2676. मनमोहन झा कोन संस्थासँ सम्बद्ध बताओल गेलाह?
क. सी.एम. कॉलेज, दरभंगामे मनोविज्ञानक शिक्षक
ख. मैलोरंग
ग. साहित्य अकादेमी
घ. मिथिला रिसर्च इंस्टिट्यूट
उत्तर: क. सी.एम. कॉलेज, दरभंगामे मनोविज्ञानक शिक्षक
व्याख्या: परिवारक शिक्षण-संलग्नता लेखकक बौद्धिक वातावरण बतबैत अछि।

प्रश्न 2677. राजमोहन झाक मनपसंद रचनाकार पूछलापर ओ कोन नामसभक लेखनक लोकप्रियता स्वीकारैत छथि?
क. ललित, मायानंद, राजकमल चौधरी
ख. केवल विदेशी लेखक
ग. केवल राजनैतिक नेता
घ. केवल अज्ञात नाम
उत्तर: क. ललित, मायानंद, राजकमल चौधरी
व्याख्या: ओ आधुनिक मैथिली आरम्भक संदर्भमे एहि लेखकसभक महत्व मानैत छथि।

प्रश्न 2678. आधुनिक मैथिलीक आरम्भ राजमोहन झा कोन लेखक-समूहक आस-पास मानैत छथि?
क. ललित, मायानंद, राजकमल चौधरीक लेखन परम्परा आसपास
ख. सिर्फ प्राचीन संस्कृतमे
ग. केवल अखबारी भाषा
घ. केवल मौखिक कथा
उत्तर: क. ललित, मायानंद, राजकमल चौधरीक लेखन परम्परा आसपास
व्याख्या: ई उत्तर आधुनिक मैथिली साहित्यक आरम्भक आलोचनात्मक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 2679. राजमोहन झाक पहिल कविता कतय छपल कहल गेल?
क. वैदेहीमे
ख. केवल अंग्रेजी अखबारमे
ग. कहियो नहि छपल
घ. रेडियो पर मात्र
उत्तर: क. वैदेहीमे
व्याख्या: साक्षात्कारमे ओ अपन कविता वैदेहीमे छपल बतबैत छथि।

प्रश्न 2680. हुनकर आरम्भिक कहानी मुख्यतः कोन पत्रिकामे छपल?
क. मिथिला मिहिरमे
ख. सिर्फ सरस्वतीमे
ग. केवल सरकारी राजपत्रमे
घ. अज्ञात ब्लॉगमे
उत्तर: क. मिथिला मिहिरमे
व्याख्या: मिथिला मिहिर हुनकर कथा-प्रकाशनक प्रमुख प्रारम्भिक मंच छल।

प्रश्न 2681. “मिथिला दर्शन”क उल्लेख कोन बात स्पष्ट करैत अछि?
क. राजमोहन झाक रचना अनेक मैथिली पत्रिकामे छपैत छल
ख. केवल एक मंच छल
ग. रचना अप्रकाशित छल
घ. पत्रिका असाहित्यिक छल
उत्तर: क. राजमोहन झाक रचना अनेक मैथिली पत्रिकामे छपैत छल
व्याख्या: वैदेही, मिथिला मिहिर, मिथिला दर्शन आदि मंच लेखकक प्रकाशन-यात्रा देखबैत अछि।

प्रश्न 2682. एहि खण्डक अध्ययन-मूल्य की अछि?
क. लेखकक परिवार, साहित्यिक रुचि आ प्रारम्भिक प्रकाशन-संसारक परस्पर सम्बन्ध बुझब
ख. केवल रिश्तेदारी रटब
ग. केवल पृष्ठ पूछब
घ. केवल जन्मतिथि पूछब
उत्तर: क. लेखकक परिवार, साहित्यिक रुचि आ प्रारम्भिक प्रकाशन-संसारक परस्पर सम्बन्ध बुझब
व्याख्या: साक्षात्कार लेखकक जीवनक सामग्रीकेँ साहित्यिक विकाससँ जोड़ैत अछि।

खण्ड २७४ : विदेह-सदेह १ — राजमोहन झा: लेखन, स्मरण-योजना आ समीक्षा-दृष्टि

प्रश्न 2683. राजमोहन झाक लेखन कोन-कोन भाषामे भेल कहल गेल?
क. हिन्दी आ मैथिलीमे
ख. केवल अंग्रेजीमे
ग. केवल संस्कृतमे
घ. केवल बंगालीमे
उत्तर: क. हिन्दी आ मैथिलीमे
व्याख्या: साक्षात्कारमे ओ अपन लेखन हिन्दी आ मैथिली दुनूमे बतबैत छथि।

प्रश्न 2684. हुनकर पुस्तक-संख्या सम्बन्धी उत्तरमे कोन विधा-युग्म अछि?
क. दस कथा-संग्रह आ चारि समालोचनात्मक पोथी
ख. केवल एक गीत-संग्रह
ग. केवल नाटक-संग्रह
घ. केवल शब्दकोश
उत्तर: क. दस कथा-संग्रह आ चारि समालोचनात्मक पोथी
व्याख्या: ई उत्तर हुनकर कथाकार आ आलोचक दुनू रूप प्रमाणित करैत अछि।

प्रश्न 2685. भविष्य-योजना सम्बन्धी प्रश्नपर ओ की लिखबाक बात कहैत छथि?
क. संस्मरण लिखबाक अछि
ख. कृषि-रिपोर्ट
ग. युद्ध-कथा मात्र
घ. व्याकरण-सूची मात्र
उत्तर: क. संस्मरण लिखबाक अछि
व्याख्या: राजमोहन झा अपन भावी लेखनमे स्मरण-विधा दिस संकेत करैत छथि।

प्रश्न 2686. सुमनजी आ किरणजी पर लिखबाक बात कोन साहित्यिक दायित्व देखबैत अछि?
क. समकालीन/पूर्वज साहित्यकारक स्मृति बचाबयक इच्छा
ख. नाम मेटाबयक इच्छा
ग. समीक्षा छोड़बयक इच्छा
घ. संस्मरण अस्वीकार
उत्तर: क. समकालीन/पूर्वज साहित्यकारक स्मृति बचाबयक इच्छा
व्याख्या: ई योजना साहित्यिक स्मृति-लेखनक प्रति उत्तरदायित्व देखबैत अछि।

प्रश्न 2687. “दांव-पेंच” सम्बन्धी उत्तरमे राजमोहन झा कोन व्यापक स्थिति देखबैत छथि?
क. दांव-पेंच केवल मैथिली नहि, सभ भाषामे चलैत रहैत अछि
ख. मैथिली पूर्णतः अलग अछि
ग. दांव-पेंच असंभव अछि
घ. केवल एक लेखक दोषी अछि
उत्तर: क. दांव-पेंच केवल मैथिली नहि, सभ भाषामे चलैत रहैत अछि
व्याख्या: ओ साहित्यिक राजनीति कैँ व्यापक भाषिक संसारक समस्या मानैत छथि।

प्रश्न 2688. राजमोहन झाक समीक्षा-दृष्टि शीर्षक “खुलल दृष्टि...” सँ की संकेत अछि?
क. समीक्षा मे खुलापन, निष्पक्षता आ व्यापक दृष्टिक कमी पर प्रश्न
ख. समीक्षा पूर्ण विकसित अछि
ग. समीक्षा अप्रासंगिक अछि
घ. केवल प्रशंसा चाही
उत्तर: क. समीक्षा मे खुलापन, निष्पक्षता आ व्यापक दृष्टिक कमी पर प्रश्न
व्याख्या: शीर्षक आलोचनाक बंद दृष्टि पर असंतोष व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 2689. हुनकर कथा आ आलोचना दुनू लेखनक महत्व की अछि?
क. रचना आ आलोचना—दूनू स्तर पर मैथिली साहित्यमे योगदान
ख. केवल पाठक भूमिका
ग. केवल संपादक भूमिका
घ. कोनो विधा नहि
उत्तर: क. रचना आ आलोचना—दूनू स्तर पर मैथिली साहित्यमे योगदान
व्याख्या: कथा-संग्रह आ समालोचना-पुस्तक हुनकर दोहरी साहित्यिक भूमिका देखबैत अछि।

प्रश्न 2690. पारिवारिक-सामाजिक प्रश्नसभ साक्षात्कारमे किएक आवश्यक बनैत अछि?
क. लेखकक रचनात्मक दृष्टि बनेबाक जीवन-संदर्भ बुझय लेल
ख. साहित्यसँ पूर्ण अलग
ग. सिर्फ गपशप लेल
घ. पृष्ठ भरबाक लेल
उत्तर: क. लेखकक रचनात्मक दृष्टि बनेबाक जीवन-संदर्भ बुझय लेल
व्याख्या: जीवन-संदर्भ लेखकक भाषा, विषय आ आलोचना-दृष्टि बुझाबैत अछि।

प्रश्न 2691. राजमोहन झाक बातचीतमे “भूत, वर्तमान, भविष्य”क चर्चा कोन उद्देश्य दैत अछि?
क. मैथिली साहित्यक परम्परा, वर्तमान दशा आ आगूक दिशा पर समग्र विचार
ख. केवल व्यक्तिगत प्रचार
ग. केवल नौकरी-सूची
घ. केवल परिवार वृत्तांत
उत्तर: क. मैथिली साहित्यक परम्परा, वर्तमान दशा आ आगूक दिशा पर समग्र विचार
व्याख्या: भूमिका साक्षात्कारकैँ केवल जीवनी नहि, साहित्यिक विमर्श बनबैत अछि।

प्रश्न 2692. एहि दस प्रश्नक समग्र निष्कर्ष की अछि?
क. राजमोहन झा साक्षात्कार मैथिली कथा, आलोचना, स्मृति आ साहित्यिक नैतिकता बुझबाक महत्वपूर्ण स्रोत अछि
ख. ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
ग. ई असाहित्यिक सूचना अछि
घ. ई बिना संदर्भक गप अछि
उत्तर: क. राजमोहन झा साक्षात्कार मैथिली कथा, आलोचना, स्मृति आ साहित्यिक नैतिकता बुझबाक महत्वपूर्ण स्रोत अछि
व्याख्या: साक्षात्कार लेखक-जीवन आ साहित्यिक दृष्टि दुनूक अध्ययन-योग्य सामग्री दैत अछि।

खण्ड २७५ : विदेह-सदेह १ — अंकुर काशीनाथ झा: सरकारी योजना

प्रश्न 2693. अंकुर काशीनाथ झाक “सरकारी योजना”मे बुढ़ियाक माथ पर जारैनक पथिया कोन सामाजिक दृश्य बनबैत अछि?
क. दरिद्र श्रम आ रोजमर्राक बोझक दृश्य
ख. उत्सवक राजसी दृश्य
ग. विद्यालयक खेल-दृश्य
घ. नौकरीक पदोन्नति दृश्य
उत्तर: क. दरिद्र श्रम आ रोजमर्राक बोझक दृश्य
व्याख्या: कविता बुढ़ियाक देहपर पड़ल श्रमक भारसँ आरम्भ भऽ गरीबीक यथार्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 2694. कवितामे “हरिजन” पहचानक उल्लेख किएक व्यंग्यात्मक बनैत अछि?
क. सुरक्षा आ आरक्षणक दावा रहितो वास्तविक राहत नहि भेटबाक कारण
ख. कविता जाति-विमर्शसँ असंबद्ध अछि
ग. सरकारी सहायता पूर्ण सफल अछि
घ. बुढ़िया धनी पात्र अछि
उत्तर: क. सुरक्षा आ आरक्षणक दावा रहितो वास्तविक राहत नहि भेटबाक कारण
व्याख्या: जातिगत-सामाजिक सुरक्षा कागज पर अछि, मुदा बुढ़िया तक लाभ नहि पहुँचैत।

प्रश्न 2695. महिला आरक्षणक उल्लेख कवितामे कोन विडम्बना उघारैत अछि?
क. नीति-घोषणा आ गरीब स्त्रीक वास्तविक वंचना बीच अन्तर
ख. स्त्रीकेँ पूर्ण सत्ता भेटल
ग. गरीबी समाप्त भेल
घ. आरक्षण कविता-विरोधी अछि
उत्तर: क. नीति-घोषणा आ गरीब स्त्रीक वास्तविक वंचना बीच अन्तर
व्याख्या: कविता कहैत अछि जे महिला-सुरक्षा घोषणासँ ओकर जीवन-संघर्ष कम नहि भेल।

प्रश्न 2696. इन्दिरा आवास आ अन्नपूर्णा योजना कवितामे कोन अर्थमे आयल अछि?
क. गरीबक नामपर बनल योजना, जकर लाभ बिचौलिया/नेता वर्ग लेलक
ख. केवल घरक सजावट
ग. कथा-कहानीक खेल
घ. संगीतक प्रकार
उत्तर: क. गरीबक नामपर बनल योजना, जकर लाभ बिचौलिया/नेता वर्ग लेलक
व्याख्या: योजना गरीबक लेल कहल गेल, मुदा बुढ़ियाक लेल सपना बनि रहि गेल।

प्रश्न 2697. “नेता सबके अन्न भेटलै, घर बनलै” पंक्ति कोन भ्रष्टाचार-संकेत दैत अछि?
क. कल्याण योजनाक लाभ वास्तविक पात्रसँ हटि सत्ता-निकटक लोक लग जाएब
ख. नेता उपवास करैत छथि
ग. बुढ़ियाकेँ महल भेटल
घ. गाममे कोनो राजनीति नहि
उत्तर: क. कल्याण योजनाक लाभ वास्तविक पात्रसँ हटि सत्ता-निकटक लोक लग जाएब
व्याख्या: ई पंक्ति योजनाक अपहरणक तीक्ष्ण व्यंग्य अछि।

प्रश्न 2698. “सरकार बुझलकै गरीबक कल्याण भेलै” कथन किएक कटाक्ष अछि?
क. सरकार कागजी परिणामकेँ कल्याण मानि लैत अछि, जमीनपर वंचना रहैत अछि
ख. सरकार सबटा देखैत अछि
ग. बुढ़िया लाभान्वित भेल
घ. कविता केवल प्रशंसा अछि
उत्तर: क. सरकार कागजी परिणामकेँ कल्याण मानि लैत अछि, जमीनपर वंचना रहैत अछि
व्याख्या: कविता कागजी सफलता आ वास्तविक अन्यायक टकराव बनबैत अछि।

प्रश्न 2699. बुढ़ियाकेँ योजना किएक नहि भेटल, मुखियाक उत्तरमे कोन बहाना अछि?
क. जगह कम आ भीड़ बेसी
ख. जाति नहि छल
ग. ओ योजना नहि चाहलक
घ. ओ गाम छोड़ि गेल
उत्तर: क. जगह कम आ भीड़ बेसी
व्याख्या: मुखियाक कारण प्रशासनिक बहाना अछि, न्यायसंगत उत्तर नहि।

प्रश्न 2700. “बेचारी बुढ़िया शरीफ छै” पंक्ति कविताक निष्कर्ष कोना बनैत अछि?
क. सीधापन आ निरुपायता ओकर वंचनाक कारण बनि गेल अछि
ख. शरीफ लोक सभ लाभ पाबैत छथि
ग. बुढ़िया अपराधी अछि
घ. कविता हास्य मात्र अछि
उत्तर: क. सीधापन आ निरुपायता ओकर वंचनाक कारण बनि गेल अछि
व्याख्या: कविता संकेत करैत अछि जे गरीबक भलमनसाहत सेहो व्यवस्था द्वारा शोषित होइत अछि।

प्रश्न 2701. एहि कविताक मुख्य सामाजिक आलोचना की अछि?
क. कल्याणकारी योजनाक भ्रष्ट क्रियान्वयन आ गरीबक अदृश्यता
ख. प्रकृति-सौंदर्यक वर्णन
ग. प्रेमक विजय
घ. नृत्य-संगीतक उत्सव
उत्तर: क. कल्याणकारी योजनाक भ्रष्ट क्रियान्वयन आ गरीबक अदृश्यता
व्याख्या: कविता सरकारी कल्याणक दावाकेँ गरीब स्त्रीक वंचना द्वारा झुठलाबैत अछि।

प्रश्न 2702. “सरकारी योजना”क अध्ययनमे मुख्य साहित्यिक उपकरण कोन अछि?
क. व्यंग्य, विडम्बना आ यथार्थवादी बिम्ब
ख. पुराणक विस्तृत आख्यान
ग. अलौकिक चमत्कार
घ. शुद्ध हास्यगीत
उत्तर: क. व्यंग्य, विडम्बना आ यथार्थवादी बिम्ब
व्याख्या: कविता प्रत्यक्ष दृश्य आ व्यंग्यक माध्यमसँ सामाजिक अन्याय देखबैत अछि।

खण्ड २७६ : विदेह-सदेह १ — अंकुर: गरीबी, जाति आ स्त्री-वंचना

प्रश्न 2703. कवितामे बुढ़िया व्यक्तिगत पात्रसँ आगाँ बढ़ि कोन प्रतिनिधित्व करैत अछि?
क. ग्रामीण गरीब, दलित आ स्त्री-वंचना तीनूक संयुक्त प्रतीक
ख. राजघरानाक सत्ता
ग. सैनिक वीरता
घ. शहरक विलास
उत्तर: क. ग्रामीण गरीब, दलित आ स्त्री-वंचना तीनूक संयुक्त प्रतीक
व्याख्या: बुढ़िया अनेक हाशियाक संगम-बिन्दु बनैत अछि।

प्रश्न 2704. “सरकार ओकरा देने संरक्षण छै” पंक्ति किएक उलट अर्थ दैत अछि?
क. घोषित संरक्षणक बावजूद जमीनपर असुरक्षा बचल अछि
ख. सुरक्षा पूर्ण अछि
ग. कविता सरकारी विज्ञापन अछि
घ. बुढ़िया मंत्री अछि
उत्तर: क. घोषित संरक्षणक बावजूद जमीनपर असुरक्षा बचल अछि
व्याख्या: संरक्षण शब्द दावाक रूपमे अछि, अनुभव ओकर विपरीत।

प्रश्न 2705. कविता नीति आ नियति बीच कोन संबंध देखबैत अछि?
क. नीति बनैत अछि, मुदा गरीबक नियति बदलैत नहि
ख. नीति तुरन्त चमत्कार करैत अछि
ग. नियति अप्रासंगिक अछि
घ. कविता केवल खेतीपर अछि
उत्तर: क. नीति बनैत अछि, मुदा गरीबक नियति बदलैत नहि
व्याख्या: कविता कागजी नीति आ गरीबक जीवन बीच दूरी रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 2706. बुढ़ियाक भोजन-समस्या किएक केन्द्रीय बनैत अछि?
क. जीवनक मूल आवश्यकता धरि योजना नहि पहुँचल देखबैत अछि
ख. भोजन विलासिता अछि
ग. योजना केवल गीत लेल अछि
घ. बुढ़िया भोज आयोजित करैत अछि
उत्तर: क. जीवनक मूल आवश्यकता धरि योजना नहि पहुँचल देखबैत अछि
व्याख्या: भोजनक अभाव कल्याण-तंत्रक विफलता सभसँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 2707. घर-बनबाक प्रावधान आ बुढ़ियाक बेघरपन कोन विरोध रचैत अछि?
क. नीतिक वादा बनाम वास्तविक वंचना
ख. राजमहल बनाम मंदिर
ग. नाटक बनाम गीत
घ. युद्ध बनाम शान्ति
उत्तर: क. नीतिक वादा बनाम वास्तविक वंचना
व्याख्या: कविता योजनाक नाम आ जीवनक हालातक बीच दरार देखबैत अछि।

प्रश्न 2708. मुखिया पात्रकेँ कविता कोन भूमिका दैत अछि?
क. स्थानीय सत्ता आ लाभ-वितरणक द्वारपाल
ख. निरपेक्ष दार्शनिक
ग. बालक मित्र
घ. केवल गायक
उत्तर: क. स्थानीय सत्ता आ लाभ-वितरणक द्वारपाल
व्याख्या: मुखिया उत्तर देकर बतबैत अछि जे योजना तक पहुँच स्थानीय सत्ता सँ नियंत्रित अछि।

प्रश्न 2709. “जगह कम” बहाना सामाजिक न्यायक दृष्टिसँ किएक अशक्त अछि?
क. क्योंकि सर्वाधिक जरूरतमंदकेँ ही बाहर रखल गेल
ख. ई पूर्ण समाधान अछि
ग. गरीबी समाप्त करैत अछि
घ. कविता ओकर समर्थन करैत अछि
उत्तर: क. क्योंकि सर्वाधिक जरूरतमंदकेँ ही बाहर रखल गेल
व्याख्या: जरूरतमंद पात्र छूटि गेल, तेँ बहाना अन्याय झाँपैत अछि।

प्रश्न 2710. कविता दलित स्त्रीकेँ दया-केंद्र नहि, आलोचना-केंद्र कोना बनबैत अछि?
क. ओकर वंचना द्वारा पूरा प्रशासनिक ढाँचा पर प्रश्न उठैत अछि
ख. ओ केवल हास्य पात्र अछि
ग. ओ कथा सँ बाहर अछि
घ. ओ सम्पन्न वर्गक प्रतिनिधि अछि
उत्तर: क. ओकर वंचना द्वारा पूरा प्रशासनिक ढाँचा पर प्रश्न उठैत अछि
व्याख्या: बुढ़ियाक स्थिति व्यवस्था पर अभियोग बनैत अछि।

प्रश्न 2711. एहि कवितामे “सपना” शब्दक अर्थ की अछि?
क. योजनाक लाभ गरीबक लेल असंभव अपेक्षा बनि गेल
ख. रातिक सुखद कल्पना मात्र
ग. नाटकक मंच-सज्जा
घ. प्रेम-प्रसंग
उत्तर: क. योजनाक लाभ गरीबक लेल असंभव अपेक्षा बनि गेल
व्याख्या: बुढ़िया लेल अधिकार सेहो सपनाक जकाँ दूर अछि।

प्रश्न 2712. अंकुरक कविता सामाजिक कविता रूपमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. क्योंकि कम शब्दमे नीति, भ्रष्टाचार, जाति आ गरीबीक संयुक्त आलोचना करैत अछि
ख. क्योंकि पृष्ठ-संख्या बतबैत अछि
ग. क्योंकि केवल शृंगार अछि
घ. क्योंकि राजनीति नहि छूइत अछि
उत्तर: क. क्योंकि कम शब्दमे नीति, भ्रष्टाचार, जाति आ गरीबीक संयुक्त आलोचना करैत अछि
व्याख्या: कविता छोट आकारमे ग्रामीण सत्ता-संरचना पर पैघ प्रश्न उठबैत अछि।

खण्ड २७७ : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार: “मनुख” आ बाजार-समय

प्रश्न 2713. “मनुख” कवितामे आदमी कहाँ-कहाँ काज करैत देखाओल गेल अछि?
क. ऑफिस, रोड आ जीवनक अनेक सार्वजनिक जगह
ख. केवल जंगलमे
ग. केवल राजदरबारमे
घ. केवल मंदिरमे
उत्तर: क. ऑफिस, रोड आ जीवनक अनेक सार्वजनिक जगह
व्याख्या: कविता आधुनिक श्रमजीवी मनुखकेँ सार्वजनिक जीवनक दौड़मे देखबैत अछि।

प्रश्न 2714. जेबीमे टका भरि मार्केटिंग लेल निकलब कोन मानसिकता देखबैत अछि?
क. खुशीकेँ वस्तु-जकाँ किनबाक उपभोक्तावादी प्रवृत्ति
ख. त्यागक चरम रूप
ग. किसानी अनुष्ठान
घ. बाल-खेल
उत्तर: क. खुशीकेँ वस्तु-जकाँ किनबाक उपभोक्तावादी प्रवृत्ति
व्याख्या: मनुख बाजारमे खुशी खोजैत अछि, जे कविताक व्यंग्यक केन्द्र अछि।

प्रश्न 2715. “रेडीमेड खुशी” पदबंध कोन आलोचना करैत अछि?
क. अनुभव आ संवेदना सेहो बाजारू वस्तु बनि जाएबाक आलोचना
ख. हस्तकला-प्रशंसा
ग. वनस्पति-विज्ञान
घ. केवल कपड़ा
उत्तर: क. अनुभव आ संवेदना सेहो बाजारू वस्तु बनि जाएबाक आलोचना
व्याख्या: खुशीक वस्तुकरण आधुनिक मनुखक खालीपन बतबैत अछि।

प्रश्न 2716. कवितामे “वस्तु-जातक रूपमे” खुशी किनबाक विचार किएक विडम्बनापूर्ण अछि?
क. खुशी जीवनानुभव अछि, बाजारू पैकेट नहि
ख. खुशी सदैव पैक होइत अछि
ग. कविता व्यापार-विज्ञापन अछि
घ. मनुखकेँ भावना नहि चाही
उत्तर: क. खुशी जीवनानुभव अछि, बाजारू पैकेट नहि
व्याख्या: ई विचार आधुनिक बाजारक भावनात्मक उपनिवेश पर कटाक्ष अछि।

प्रश्न 2717. आशीषक “मनुख” आधुनिक मनुष्यक कोन संकट देखबैत अछि?
क. काम, पैसा आ उपभोग बीच आत्मिक रिक्तता
ख. पूर्ण आध्यात्मिक शांति
ग. ग्रामीण अवकाश मात्र
घ. राजनीतिक विजय
उत्तर: क. काम, पैसा आ उपभोग बीच आत्मिक रिक्तता
व्याख्या: कविता मनुखक बाजार-निर्भर सुख-खोजक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 2718. “मनुख” शीर्षक किएक व्यापक अछि?
क. ई एक व्यक्ति नहि, आधुनिक मानवीय स्थिति पर प्रश्न अछि
ख. ई केवल एक नाम अछि
ग. ई पशु-वर्णन अछि
घ. ई भूगोल अछि
उत्तर: क. ई एक व्यक्ति नहि, आधुनिक मानवीय स्थिति पर प्रश्न अछि
व्याख्या: शीर्षक मनुष्य जातिक सामूहिक संकट खोलैत अछि।

प्रश्न 2719. आशीषक शैलीमे छोट पंक्तिक उपयोग किएक प्रभावी अछि?
क. आधुनिक जीवनक टूटल, जल्दबाज लय व्यक्त करैत अछि
ख. कविता लम्बी कथा बनैत अछि
ग. केवल छन्द-गणना अछि
घ. अर्थ हटि जाइत अछि
उत्तर: क. आधुनिक जीवनक टूटल, जल्दबाज लय व्यक्त करैत अछि
व्याख्या: कटल पंक्ति बाजारक बिखरल मानसिकता सँ मेल खाइत अछि।

प्रश्न 2720. कविता बाजार-विरोध करैत अछि वा अंध-विरोध?
क. अंध-विरोध नहि; वस्तुकरण आ नकली सुखक आलोचना करैत अछि
ख. हर खरीदारी अपराध कहैत अछि
ग. कृषि पर लिखैत अछि
घ. संगीतक समर्थन मात्र
उत्तर: क. अंध-विरोध नहि; वस्तुकरण आ नकली सुखक आलोचना करैत अछि
व्याख्या: कविता बाजारक नैतिक प्रभाव पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2721. “मनुख”मे संवेदना कहाँ दबि जाइत अछि?
क. माकेटिंग आ खरीदार-मानसिकताक दबावमे
ख. नदीक बहावमे
ग. लोकगीतमे
घ. बचपनक खेलमे
उत्तर: क. माकेटिंग आ खरीदार-मानसिकताक दबावमे
व्याख्या: आधुनिक मनुख भावकेँ क्रय-वस्तु बना देत अछि।

प्रश्न 2722. एहि कविताक मूल प्रश्न की अछि?
क. की मनुख सचमुच खुशी किनि सकैत अछि?
ख. कतेक पृष्ठ अछि?
ग. कोन रंगक कागज अछि?
घ. कवि कतय बैसल छल?
उत्तर: क. की मनुख सचमुच खुशी किनि सकैत अछि?
व्याख्या: कविता सुखक बाजारू परिभाषा पर मूलभूत प्रश्न उठबैत अछि।

खण्ड २७८ : विदेह-सदेह १ — आशीषक गजल: दर्द, अन्हार सरकार आ प्रतिरोध

प्रश्न 2723. आशीषक गजलमे “जीवनमे दर्दक सनेश” कोन भावभूमि बनबैत अछि?
क. व्यक्तिगत पीड़ा सँ सामाजिक पीड़ा धरि फैलल स्वर
ख. केवल हास्य उत्सव
ग. युद्ध-विजय
घ. बालगीत
उत्तर: क. व्यक्तिगत पीड़ा सँ सामाजिक पीड़ा धरि फैलल स्वर
व्याख्या: दर्दक संदेश गजलक आत्मीय आ सामाजिक दुनू स्तर खोलैत अछि।

प्रश्न 2724. “नहि कहब विशेष, शेष कुशल अछि” पंक्ति कोन शैलीगत युक्ति अछि?
क. दर्दकेँ संयमित व्यंग्यात्मक ढंगसँ कहब
ख. स्पष्ट उत्सव-घोषणा
ग. प्रशासनिक आदेश
घ. संगीत-सूची
उत्तर: क. दर्दकेँ संयमित व्यंग्यात्मक ढंगसँ कहब
व्याख्या: कुशल कहितो गजल भीतरक असंतोष व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 2725. “अन्हरा सरकार” कथन कोन राजनीतिक आलोचना करैत अछि?
क. शासनक संवेदनहीनता आ दृष्टिहीनता
ख. सरकारक सर्वज्ञता
ग. जनता-विरोधी कविता नहि
घ. प्रकृति-वर्णन
उत्तर: क. शासनक संवेदनहीनता आ दृष्टिहीनता
व्याख्या: अन्हरापन सत्ता द्वारा वास्तविकता नहि देखबाक प्रतीक अछि।

प्रश्न 2726. “बौकक ई देश” पंक्ति कोन व्यंग्यात्मक स्थिति बनबैत अछि?
क. राजकाजक मूर्खता आ विवेकहीनता पर कटाक्ष
ख. देशक उत्सव
ग. बुद्धिमत्ता-प्रशंसा
घ. केवल प्रेमगीत
उत्तर: क. राजकाजक मूर्खता आ विवेकहीनता पर कटाक्ष
व्याख्या: गजल सत्ता आ समाजक विवेक-संकट उजागर करैत अछि।

प्रश्न 2727. देह बदलैए आ मान नहि सुनि लिअ — ई पंक्ति कोन समस्या छूइत अछि?
क. बाहरी परिवर्तनक बावजूद असल मानवीय सम्मान नहि बदलल
ख. देह-व्यायाम
ग. केवल वस्त्र-विन्यास
घ. कला प्रदर्शनी
उत्तर: क. बाहरी परिवर्तनक बावजूद असल मानवीय सम्मान नहि बदलल
व्याख्या: गजल रूपान्तरणक खोखलापन पर प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 2728. मुक्का आ थप्पड़ प्रसंग गजलमे ककर प्रतीक अछि?
क. खाली हिंसक प्रतिक्रिया आ असली प्रतिरोधक प्रश्न
ख. नृत्यक मुद्रा
ग. कृषि विधि
घ. बालक खेल
उत्तर: क. खाली हिंसक प्रतिक्रिया आ असली प्रतिरोधक प्रश्न
व्याख्या: कवि पूछैत छथि जे क्रोधक प्रयोग के करत, केवल आँख लाल कएलासँ की?

प्रश्न 2729. “खाली आँखिए लाल” कोन निष्क्रियता देखबैत अछि?
क. रोष अछि मुदा परिवर्तनकारी कर्मक अभाव
ख. पूर्ण क्रांति
ग. शांत स्वीकृति
घ. उत्सवक रंग
उत्तर: क. रोष अछि मुदा परिवर्तनकारी कर्मक अभाव
व्याख्या: लाल आँख क्रोधक दृश्य मात्र अछि, कर्म नहि।

प्रश्न 2730. गजल कहब असान नहि — ई कथन विधागत चेतना कोना देखबैत अछि?
क. कवि गजलक अनुशासन आ कठिनाई स्वीकारैत छथि
ख. गजलकेँ खेल मानैत छथि
ग. कविता छोड़ैत छथि
घ. भाषा हटबैत छथि
उत्तर: क. कवि गजलक अनुशासन आ कठिनाई स्वीकारैत छथि
व्याख्या: गजल अपन शिल्पक प्रति सजग अछि।

प्रश्न 2731. आशीषक गजल व्यक्तिगत कुशलक्षेमक रूपकमे सामाजिक संकट कोना छिपबैत अछि?
क. कुशल कहैत-कहैत सरकार, देश आ हिंसा पर चोट करैत अछि
ख. केवल निजी स्वास्थ्य पूछैत अछि
ग. कोनो सामाजिक स्वर नहि
घ. सरकारक स्तुति करैत अछि
उत्तर: क. कुशल कहैत-कहैत सरकार, देश आ हिंसा पर चोट करैत अछि
व्याख्या: गजल संवादक सरल मुहावरा भीतर आलोचना भरैत अछि।

प्रश्न 2732. एहि गजलक मुख्य स्वर की अछि?
क. दर्द, व्यंग्य, राजनीतिक असंतोष आ शिल्प-सजगता
ख. केवल बाल-मनोरंजन
ग. शुद्ध श्रृंगार
घ. कृषि-विज्ञान
उत्तर: क. दर्द, व्यंग्य, राजनीतिक असंतोष आ शिल्प-सजगता
व्याख्या: गजल लोकभाषिक ऊर्जा सँ समकालीन बेचैनी व्यक्त करैत अछि।

खण्ड २७९ : विदेह-सदेह १ — अशोक दत्त: रंग बदलैत मनुख आ “लुच्ची”

प्रश्न 2733. “दू टप्पी”मे गिरगिटक उल्लेख किएक आयल अछि?
क. मनुष्यक रंग-बदलू स्वभावकेँ तुलना द्वारा तीखा करबाक लेल
ख. गिरगिटक जीवविज्ञान पढ़ाबय लेल
ग. वन्य-जीव संरक्षण मात्र
घ. बाल चित्र बनाबय लेल
उत्तर: क. मनुष्यक रंग-बदलू स्वभावकेँ तुलना द्वारा तीखा करबाक लेल
व्याख्या: कवि कहैत छथि जे मनुख गिरगिटसँ सेहो बेसी रंग बदलैत अछि।

प्रश्न 2734. “पुतरियासन मुस्की” आ “मगरसन नोर” कोन द्वैधता देखबैत अछि?
क. बाहरी मधुरता आ भीतरक छल/क्रूरता
ख. निर्मल बालपन
ग. सच्चा करुणा मात्र
घ. नदीक जलचक्र
उत्तर: क. बाहरी मधुरता आ भीतरक छल/क्रूरता
व्याख्या: ई बिम्ब सामाजिक पाखंड आ कृत्रिम भावुकता खोलैत अछि।

प्रश्न 2735. भोरसँ साँझधरि फुसियेटा परोसब कोन चरित्र-चित्रण अछि?
क. झूठकेँ सामाजिक व्यवहार बनि जाएबाक चित्र
ख. सत्याग्रह
ग. खेती-कर्म
घ. पूजा-विधान
उत्तर: क. झूठकेँ सामाजिक व्यवहार बनि जाएबाक चित्र
व्याख्या: कविता दिनभरि चलैत असत्यक आदत पर व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 2736. “लुच्ची” कवितामे चोट लगिते लुच्ची जनमब कोन भाव व्यक्त करैत अछि?
क. अन्याय आ अपमानसँ प्रतिरोध/लज्जा/क्रोधक जन्म
ख. सुखक गीत
ग. राजसी सम्मान
घ. प्रकृति-विहार
उत्तर: क. अन्याय आ अपमानसँ प्रतिरोध/लज्जा/क्रोधक जन्म
व्याख्या: लुच्ची अन्यायक प्रतिक्रिया बनि उभरैत अछि।

प्रश्न 2737. करेजपर चोट आ देहक चीर पर हाथ बढ़ब किएक जोड़ल अछि?
क. आत्मा आ देह दुनूपर हिंसा स्त्री-अस्मिता/मानव गरिमा चोट करैत अछि
ख. केवल वस्त्र-व्यापार
ग. काठक काम
घ. नदी-विज्ञान
उत्तर: क. आत्मा आ देह दुनूपर हिंसा स्त्री-अस्मिता/मानव गरिमा चोट करैत अछि
व्याख्या: कविता हिंसक स्पर्श आ अपमानक विरुद्ध संवेदना व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 2738. “अपन मड़ैया”क बिम्ब लुच्चीमे कोन मूल्य दैत अछि?
क. घर-आश्रयक आत्मीयता आ असुरक्षाक बीच तनाव
ख. महल-लालसा
ग. युद्ध-शिविर
घ. कंप्यूटर-शिक्षा
उत्तर: क. घर-आश्रयक आत्मीयता आ असुरक्षाक बीच तनाव
व्याख्या: छोट घर सेहो अपनपनक केन्द्र अछि; ओकर खतरा लुच्ची जगबैत अछि।

प्रश्न 2739. “रङकुच्ची” आ फोटो-डाहक प्रसंग कोन संकेत देत अछि?
क. प्रतिनिधित्व, छवि आ सत्ता द्वारा मानवीय पहचानक नष्ट होयब
ख. चित्रकला उत्सव मात्र
ग. विद्यालय परीक्षा
घ. उपवन सजावट
उत्तर: क. प्रतिनिधित्व, छवि आ सत्ता द्वारा मानवीय पहचानक नष्ट होयब
व्याख्या: फोटो डहब स्मृति/पहचानक हिंसक मिटावक संकेत अछि।

प्रश्न 2740. सोनेत वा पानी धरती होइत समान — एहि विचारक अर्थ की अछि?
क. मूल मानवता रंग-भेदसँ ऊपर अछि
ख. भेदभाव आवश्यक अछि
ग. धरती निर्जीव अछि
घ. कविता रंगक विज्ञापन अछि
उत्तर: क. मूल मानवता रंग-भेदसँ ऊपर अछि
व्याख्या: कवि रक्त/जल/धरतीक समानता द्वारा भेद-भावक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 2741. भेदके रंग चढ़िते लुच्ची जनमब कोन सामाजिक आलोचना अछि?
क. विभाजनकारी पहचान राजनीति विरुद्ध प्रतिरोध
ख. रंगोत्सवक खुशी
ग. कपड़ा रंगब
घ. नाटक सजावट
उत्तर: क. विभाजनकारी पहचान राजनीति विरुद्ध प्रतिरोध
व्याख्या: लुच्ची भेदभावक विरुद्ध आक्रोशक रूपमे जन्मैत अछि।

प्रश्न 2742. अशोक दत्तक एहि कविता-युग्मक मूल स्वर की अछि?
क. पाखंड, हिंसा, भेदभाव आ नैतिक क्षरणक विरुद्ध तीक्ष्ण लोकधर्मी कविता
ख. केवल हास्य
ग. केवल पौराणिक कथा
घ. केवल प्रेमगीत
उत्तर: क. पाखंड, हिंसा, भेदभाव आ नैतिक क्षरणक विरुद्ध तीक्ष्ण लोकधर्मी कविता
व्याख्या: दू टप्पी आ लुच्ची दुनू सामाजिक चरित्रक कुरूपता उजागर करैत अछि।

खण्ड २८० : विदेह-सदेह १ — गंगेश गुंजन: जीवन, अनामा आ नवलेखन

प्रश्न 2743. गंगेश गुंजनक परिचयमे हुनका कोन-कोन रूपमे रखल गेल अछि?
क. कवि, कथाकार, नाटककार आ उपन्यासकार
ख. केवल चित्रकार
ग. केवल प्रशासक
घ. केवल खिलाड़ी
उत्तर: क. कवि, कथाकार, नाटककार आ उपन्यासकार
व्याख्या: परिचय गंगेश गुंजनक बहुविध साहित्यिक व्यक्तित्व देखबैत अछि।

प्रश्न 2744. हुनकर पीएच.डी.क विषय-संकेत कोन माध्यमसँ जुड़ल अछि?
क. रेडियो नाटक
ख. कृषि-यंत्र
ग. खेल-विज्ञान
घ. चित्रकला मात्र
उत्तर: क. रेडियो नाटक
व्याख्या: रेडियो नाटक पर शोध हुनकर नाट्य-संवेदनाक अकादमिक आधार देखबैत अछि।

प्रश्न 2745. “अनामा” पत्रिका मैथिली साहित्यक इतिहासमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. नवलेखनक आरम्भिक अनियमितकालीन साहसिक पत्रिका रूपमे
ख. सरकारी राजपत्र रूपमे
ग. केवल विज्ञापन-पत्र
घ. बालक खेल-पुस्तिका
उत्तर: क. नवलेखनक आरम्भिक अनियमितकालीन साहसिक पत्रिका रूपमे
व्याख्या: अनामा यथास्थितिवादी रुचिक विरुद्ध नव पीढ़ीक रचनात्मक हस्तक्षेप छल।

प्रश्न 2746. “काल पुरुष” नामसँ जुड़ल समूहक अर्थ की अछि?
क. युवा लेखकीय-संपादकीय सामूहिकता
ख. राजनीतिक दल
ग. नाटकक पात्र मात्र
घ. कृषि समूह
उत्तर: क. युवा लेखकीय-संपादकीय सामूहिकता
व्याख्या: समूह मिलि नवलेखनक पत्रिका निकाललक, जे सामूहिक साहित्यिक प्रयास छल।

प्रश्न 2747. फणीश्वरनाथ रेणुक अनामा लोकार्पण टिप्पणी किएक यादगार अछि?
क. ओ नवलेखनक युगचेतना खोलबाक संभावना देखलनि
ख. ओ पत्रिका बंद करबाक आदेश देलनि
ग. ओ भाषा-विरोध कएलनि
घ. ओ केवल मूल्य पूछलनि
उत्तर: क. ओ नवलेखनक युगचेतना खोलबाक संभावना देखलनि
व्याख्या: रेणु टिप्पणीमे युवा उच्छृंखलता आ भविष्यक रचनात्मक ऊर्जा दुनू देखैत छथि।

प्रश्न 2748. अनामाक केवल तीन अंक निकलल, तकरो ऐतिहासिक महत्त्व किएक अछि?
क. कम अंक होइतो नवलेखनक दिशा खोललक
ख. कम अंक मतलब शून्य महत्व
ग. ई साहित्यसँ असंबंधित
घ. ई केवल छापाखाना प्रयोग
उत्तर: क. कम अंक होइतो नवलेखनक दिशा खोललक
व्याख्या: कतेक बेर छोट प्रकाशन सेहो साहित्यिक मोड़ बना दैत अछि।

प्रश्न 2749. “कथादिशा”क सम्बन्ध अनामासँ कोना अछि?
क. अनामा बादक संपादकीय/व्यावहारिक विस्तार रूपमे
ख. पूर्ण असंबद्ध
ग. कृषि पत्रिका
घ. सिनेमा पोस्टर
उत्तर: क. अनामा बादक संपादकीय/व्यावहारिक विस्तार रूपमे
व्याख्या: कथादिशा अनामा-प्रवृत्तिक आगेक रूप बनि देखाइत अछि।

प्रश्न 2750. गंगेश गुंजनक “बुधिबधिया”क विशेषता की कहल गेल अछि?
क. मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक
ख. पहिल पाकशाला ग्रंथ
ग. पहिल खेल-पत्रिका
घ. केवल गीत संग्रह
उत्तर: क. मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक
व्याख्या: ई जानकारी हुनकर नाट्य-प्रयोगधर्मी योगदान देखबैत अछि।

प्रश्न 2751. साहित्य अकादमी पुरस्कार हुनका कोन कृतिसँ भेटल बताओल गेल?
क. “उचितवक्ता” कथा-संग्रह
ख. राधा
ग. गीत घरघर के
घ. सरकारी योजना
उत्तर: क. “उचितवक्ता” कथा-संग्रह
व्याख्या: पुरस्कारक उल्लेख कथा-लेखनक प्रतिष्ठा देखबैत अछि।

प्रश्न 2752. गंगेश गुंजनक परिचयक मूल निष्कर्ष की अछि?
क. ओ मैथिली आधुनिकता, नवलेखन, कथा, नाटक आ उपन्यासक संग प्रयोगधर्मी व्यक्तित्व छथि
ख. ओ केवल एक प्रसंगक लेखक छथि
ग. ओ साहित्यक बाहर छथि
घ. ओ केवल गायक छथि
उत्तर: क. ओ मैथिली आधुनिकता, नवलेखन, कथा, नाटक आ उपन्यासक संग प्रयोगधर्मी व्यक्तित्व छथि
व्याख्या: परिचय हुनका बहुआयामी आधुनिक लेखक रूपमे स्थापित करैत अछि।

खण्ड २८१ : गंगेश गुंजनक “राधा” — प्रस्तावना आ बेचैनी

प्रश्न 2753. प्रस्तावना आ बेचैनी प्रसंगमे “राधा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?

क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब

ख. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय

ग. सिर्फ नाम रटब

घ. कृषि-हिसाब करब

उत्तर: क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब

व्याख्या: एहि खण्डमे राधा-भाव, भूमंडलीकरणक बिहाड़ि, मनोवेग, बाध्य लेखन, सए-सवा सए पात, स्वतंत्र नहि छोड़ल मन सन संकेत राधा-भावकेँ व्यापक समय-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2754. प्रस्तावना आ बेचैनी: “राधा”मे निजी अनुभूति सामाजिक अर्थ कोना पबैत अछि?

क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि

ख. निजी अनुभूति हटि जाइत अछि

ग. समाजक कोनो प्रसंग नहि

घ. केवल ऐतिहासिक तिथि अछि

उत्तर: क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि

व्याख्या: रचना निजी भावकेँ सामाजिक-दार्शनिक धरातल पर लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2755. प्रस्तावना आ बेचैनी: एहि खण्डमे भाषा-शैलीक प्रमुख प्रभाव की अछि?

क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह

ख. सूखा सरकारी आदेश

ग. केवल गणितीय सूत्र

घ. बाजार मूल्य-सूची

उत्तर: क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह

व्याख्या: राधा शिल्पमे गद्य, कविता, स्मृति आ आत्मालाप मिलैत अछि।

प्रश्न 2756. प्रस्तावना आ बेचैनी: राधा-प्रसंगमे “मन”क भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?

क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि

ख. मन अनुपस्थित अछि

ग. देह मात्र बोलैत अछि

घ. कथा केवल बाह्य घटना अछि

उत्तर: क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि

व्याख्या: रचना बाहरी घटना सँ बेसी मनक प्रतिक्रिया पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2757. प्रस्तावना आ बेचैनी: एहि पाठमे आधुनिक समयक आलोचना कोना उपस्थित अछि?

क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ

ख. आधुनिकता पूर्ण प्रशंसित अछि

ग. कोनो आलोचना नहि

घ. कथा केवल ग्रामीण उत्सव अछि

उत्तर: क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ

व्याख्या: राधा समयक विघटनकारी शक्तिसँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 2758. प्रस्तावना आ बेचैनी: “राधा”मे स्मृतिक भूमिका की अछि?

क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब

ख. स्मृति अस्वीकार कएल गेल

ग. स्मृति केवल तिथि अछि

घ. स्मृति व्यापार अछि

उत्तर: क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब

व्याख्या: स्मृति रचना केँ संवेदनात्मक गहराई दैत अछि।

प्रश्न 2759. प्रस्तावना आ बेचैनी: एहि खण्डक दार्शनिक संकेत की अछि?
क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
ख. जीवन सरल गणना अछि
ग. सम्बन्धक कोनो अर्थ नहि
घ. समय स्थिर अछि
उत्तर: क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
व्याख्या: राधा सम्बन्धक जटिल नैतिकता पर विचार करबैत अछि।

प्रश्न 2760. प्रस्तावना आ बेचैनी: रचना पाठकसँ कोन प्रकारक पढ़ाइ माँगैत अछि?
क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
ख. त्वरित पृष्ठ-गिनती
ग. केवल नाम-सूची
घ. सही-गलत विज्ञापन
उत्तर: क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: राधा सतही कथानकसँ अधिक प्रतीक आ भाव-गहनता माँगैत अछि।

प्रश्न 2761. प्रस्तावना आ बेचैनी: एहि खण्डमे राधा कोन रूपमे उभरैत छथि?
क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
ख. केवल हास्य पात्र
ग. केवल प्रशासनिक अधिकारी
घ. केवल गीतकार
उत्तर: क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
व्याख्या: राधा आधुनिक भाषा-संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृतिक केन्द्र बनैत छथि।

प्रश्न 2762. प्रस्तावना आ बेचैनी: एहि खण्डक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
ख. काव्य-विहीन सूचना
ग. सिलसिला संख्या
घ. जाहिरात
उत्तर: क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
व्याख्या: राधा नव शिल्प आ गहन भावलोकक कारण महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २८२ : “राधा” — मैथिलीक महांगन आ समय-बोध

प्रश्न 2763. मैथिलीक महांगन आ समय-बोध प्रसंगमे “राधा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?
क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय
ग. सिर्फ नाम रटब
घ. कृषि-हिसाब करब
उत्तर: क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
व्याख्या: एहि खण्डमे मैथिलीक महा-आँगन, घटना-दुर्घटना, डगमग-जगमग, लोकमानस, अभिजन-बुद्धि, मैथिलीक नामपर शक्ति-प्रदर्शन सन संकेत राधा-भावकेँ व्यापक समय-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2764. मैथिलीक महांगन आ समय-बोध: “राधा”मे निजी अनुभूति सामाजिक अर्थ कोना पबैत अछि?
क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
ख. निजी अनुभूति हटि जाइत अछि
ग. समाजक कोनो प्रसंग नहि
घ. केवल ऐतिहासिक तिथि अछि
उत्तर: क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
व्याख्या: रचना निजी भावकेँ सामाजिक-दार्शनिक धरातल पर लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2765. मैथिलीक महांगन आ समय-बोध: एहि खण्डमे भाषा-शैलीक प्रमुख प्रभाव की अछि?
क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
ख. सूखा सरकारी आदेश
ग. केवल गणितीय सूत्र
घ. बाजार मूल्य-सूची
उत्तर: क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
व्याख्या: राधा शिल्पमे गद्य, कविता, स्मृति आ आत्मालाप मिलैत अछि।

प्रश्न 2766. मैथिलीक महांगन आ समय-बोध: राधा-प्रसंगमे “मन”क भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
ख. मन अनुपस्थित अछि
ग. देह मात्र बोलैत अछि
घ. कथा केवल बाह्य घटना अछि
उत्तर: क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
व्याख्या: रचना बाहरी घटना सँ बेसी मनक प्रतिक्रिया पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2767. मैथिलीक महांगन आ समय-बोध: एहि पाठमे आधुनिक समयक आलोचना कोना उपस्थित अछि?
क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
ख. आधुनिकता पूर्ण प्रशंसित अछि
ग. कोनो आलोचना नहि
घ. कथा केवल ग्रामीण उत्सव अछि
उत्तर: क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
व्याख्या: राधा समयक विघटनकारी शक्तिसँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 2768. मैथिलीक महांगन आ समय-बोध: “राधा”मे स्मृतिक भूमिका की अछि?
क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
ख. स्मृति अस्वीकार कएल गेल
ग. स्मृति केवल तिथि अछि
घ. स्मृति व्यापार अछि
उत्तर: क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
व्याख्या: स्मृति रचना केँ संवेदनात्मक गहराई दैत अछि।

प्रश्न 2769. मैथिलीक महांगन आ समय-बोध: एहि खण्डक दार्शनिक संकेत की अछि?
क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
ख. जीवन सरल गणना अछि
ग. सम्बन्धक कोनो अर्थ नहि
घ. समय स्थिर अछि
उत्तर: क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
व्याख्या: राधा सम्बन्धक जटिल नैतिकता पर विचार करबैत अछि।

प्रश्न 2770. मैथिलीक महांगन आ समय-बोध: रचना पाठकसँ कोन प्रकारक पढ़ाइ माँगैत अछि?
क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
ख. त्वरित पृष्ठ-गिनती
ग. केवल नाम-सूची
घ. सही-गलत विज्ञापन
उत्तर: क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: राधा सतही कथानकसँ अधिक प्रतीक आ भाव-गहनता माँगैत अछि।

प्रश्न 2771. मैथिलीक महांगन आ समय-बोध: एहि खण्डमे राधा कोन रूपमे उभरैत छथि?
क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
ख. केवल हास्य पात्र
ग. केवल प्रशासनिक अधिकारी
घ. केवल गीतकार
उत्तर: क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
व्याख्या: राधा आधुनिक भाषा-संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृतिक केन्द्र बनैत छथि।

प्रश्न 2772. मैथिलीक महांगन आ समय-बोध: एहि खण्डक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
ख. काव्य-विहीन सूचना
ग. सिलसिला संख्या
घ. जाहिरात
उत्तर: क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
व्याख्या: राधा नव शिल्प आ गहन भावलोकक कारण महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २८३ : “राधा” — NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास

प्रश्न 2773. NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास प्रसंगमे “राधा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?
क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय
ग. सिर्फ नाम रटब
घ. कृषि-हिसाब करब
उत्तर: क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
व्याख्या: एहि खण्डमे मिथिला राज्य मान्यता, NGOयी उद्यम, लक्ष्याभास, भाषा-नामपर राजनीति, राधा लग लोक पठयबाक विवशता सन संकेत राधा-भावकेँ व्यापक समय-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2774. NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास: “राधा”मे निजी अनुभूति सामाजिक अर्थ कोना पबैत अछि?
क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
ख. निजी अनुभूति हटि जाइत अछि
ग. समाजक कोनो प्रसंग नहि
घ. केवल ऐतिहासिक तिथि अछि
उत्तर: क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
व्याख्या: रचना निजी भावकेँ सामाजिक-दार्शनिक धरातल पर लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2775. NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास: एहि खण्डमे भाषा-शैलीक प्रमुख प्रभाव की अछि?
क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
ख. सूखा सरकारी आदेश
ग. केवल गणितीय सूत्र
घ. बाजार मूल्य-सूची
उत्तर: क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
व्याख्या: राधा शिल्पमे गद्य, कविता, स्मृति आ आत्मालाप मिलैत अछि।

प्रश्न 2776. NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास: राधा-प्रसंगमे “मन”क भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
ख. मन अनुपस्थित अछि
ग. देह मात्र बोलैत अछि
घ. कथा केवल बाह्य घटना अछि
उत्तर: क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
व्याख्या: रचना बाहरी घटना सँ बेसी मनक प्रतिक्रिया पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2777. NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास: एहि पाठमे आधुनिक समयक आलोचना कोना उपस्थित अछि?
क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
ख. आधुनिकता पूर्ण प्रशंसित अछि
ग. कोनो आलोचना नहि
घ. कथा केवल ग्रामीण उत्सव अछि
उत्तर: क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
व्याख्या: राधा समयक विघटनकारी शक्तिसँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 2778. NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास: “राधा”मे स्मृतिक भूमिका की अछि?
क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
ख. स्मृति अस्वीकार कएल गेल
ग. स्मृति केवल तिथि अछि
घ. स्मृति व्यापार अछि
उत्तर: क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
व्याख्या: स्मृति रचना केँ संवेदनात्मक गहराई दैत अछि।

प्रश्न 2779. NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास: एहि खण्डक दार्शनिक संकेत की अछि?
क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
ख. जीवन सरल गणना अछि
ग. सम्बन्धक कोनो अर्थ नहि
घ. समय स्थिर अछि
उत्तर: क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
व्याख्या: राधा सम्बन्धक जटिल नैतिकता पर विचार करबैत अछि।

प्रश्न 2780. NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास: रचना पाठकसँ कोन प्रकारक पढ़ाइ माँगैत अछि?
क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
ख. त्वरित पृष्ठ-गिनती
ग. केवल नाम-सूची
घ. सही-गलत विज्ञापन
उत्तर: क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: राधा सतही कथानकसँ अधिक प्रतीक आ भाव-गहनता माँगैत अछि।

प्रश्न 2781. NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास: एहि खण्डमे राधा कोन रूपमे उभरैत छथि?
क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
ख. केवल हास्य पात्र
ग. केवल प्रशासनिक अधिकारी
घ. केवल गीतकार
उत्तर: क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
व्याख्या: राधा आधुनिक भाषा-संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृतिक केन्द्र बनैत छथि।

प्रश्न 2782. NGO, मिथिला राज्य आ लक्ष्याभास: एहि खण्डक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
ख. काव्य-विहीन सूचना
ग. सिलसिला संख्या
घ. जाहिरात
उत्तर: क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
व्याख्या: राधा नव शिल्प आ गहन भावलोकक कारण महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २८४ : “राधा” — उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव

प्रश्न 2783. उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव प्रसंगमे “राधा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?

क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब

ख. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय

ग. सिर्फ नाम रटब

घ. कृषि-हिसाब करब

उत्तर: क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब

व्याख्या: एहि खण्डमे राधाक शरीर-दुख, सखी नहि आबय, देखब-सुनबक अभाव, दु:ख पूछबाक पृहा, मानवीय सम्बन्ध सन संकेत राधा-भावकेँ व्यापक समय-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2784. उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव: “राधा”मे निजी अनुभूति सामाजिक अर्थ कोना पबैत अछि?

क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि

ख. निजी अनुभूति हटि जाइत अछि

ग. समाजक कोनो प्रसंग नहि

घ. केवल ऐतिहासिक तिथि अछि

उत्तर: क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि

व्याख्या: रचना निजी भावकेँ सामाजिक-दार्शनिक धरातल पर लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2785. उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव: एहि खण्डमे भाषा-शैलीक प्रमुख प्रभाव की अछि?

क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह

ख. सूखा सरकारी आदेश

ग. केवल गणितीय सूत्र

घ. बाजार मूल्य-सूची

उत्तर: क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह

व्याख्या: राधा शिल्पमे गद्य, कविता, स्मृति आ आत्मालाप मिलैत अछि।

प्रश्न 2786. उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव: राधा-प्रसंगमे “मन”क भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?

क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि

ख. मन अनुपस्थित अछि

ग. देह मात्र बोलैत अछि

घ. कथा केवल बाह्य घटना अछि

उत्तर: क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि

व्याख्या: रचना बाहरी घटना सँ बेसी मनक प्रतिक्रिया पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2787. उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव: एहि पाठमे आधुनिक समयक आलोचना कोना उपस्थित अछि?

क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ

ख. आधुनिकता पूर्ण प्रशंसित अछि

ग. कोनो आलोचना नहि

घ. कथा केवल ग्रामीण उत्सव अछि

उत्तर: क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ

व्याख्या: राधा समयक विघटनकारी शक्तिसँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 2788. उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव: “राधा”मे स्मृतिक भूमिका की अछि?

क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब

ख. स्मृति अस्वीकार कएल गेल

ग. स्मृति केवल तिथि अछि

घ. स्मृति व्यापार अछि

उत्तर: क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब

व्याख्या: स्मृति रचना केँ संवेदनात्मक गहराई दैत अछि।

प्रश्न 2789. उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव: एहि खण्डक दार्शनिक संकेत की अछि?
क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
ख. जीवन सरल गणना अछि
ग. सम्बन्धक कोनो अर्थ नहि
घ. समय स्थिर अछि
उत्तर: क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
व्याख्या: राधा सम्बन्धक जटिल नैतिकता पर विचार करबैत अछि।

प्रश्न 2790. उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव: रचना पाठकसँ कोन प्रकारक पढ़ाइ माँगैत अछि?
क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
ख. त्वरित पृष्ठ-गिनती
ग. केवल नाम-सूची
घ. सही-गलत विज्ञापन
उत्तर: क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: राधा सतही कथानकसँ अधिक प्रतीक आ भाव-गहनता माँगैत अछि।

प्रश्न 2791. उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव: एहि खण्डमे राधा कोन रूपमे उभरैत छथि?
क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
ख. केवल हास्य पात्र
ग. केवल प्रशासनिक अधिकारी
घ. केवल गीतकार
उत्तर: क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
व्याख्या: राधा आधुनिक भाषा-संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृतिक केन्द्र बनैत छथि।

प्रश्न 2792. उदासी, बीमारी आ सखी-अभाव: एहि खण्डक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
ख. काव्य-विहीन सूचना
ग. सिलसिला संख्या
घ. जाहिरात
उत्तर: क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
व्याख्या: राधा नव शिल्प आ गहन भावलोकक कारण महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २८५ : “राधा” — अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा

प्रश्न 2793. अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा प्रसंगमे “राधा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?
क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय
ग. सिर्फ नाम रटब
घ. कृषि-हिसाब करब
उत्तर: क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
व्याख्या: एहि खण्डमे जे अपन नहि ओकर अधिकार नहि, जे अपन अछि तकरो सीमा, मनुख-मनक लाचारी, समाजक ध्यान सन संकेत राधा-भावकेँ व्यापक समय-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2794. अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा: “राधा”मे निजी अनुभूति सामाजिक अर्थ कोना पबैत अछि?
क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
ख. निजी अनुभूति हटि जाइत अछि
ग. समाजक कोनो प्रसंग नहि
घ. केवल ऐतिहासिक तिथि अछि
उत्तर: क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
व्याख्या: रचना निजी भावकेँ सामाजिक-दार्शनिक धरातल पर लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2795. अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा: एहि खण्डमे भाषा-शैलीक प्रमुख प्रभाव की अछि?
क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
ख. सूखा सरकारी आदेश
ग. केवल गणितीय सूत्र
घ. बाजार मूल्य-सूची
उत्तर: क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
व्याख्या: राधा शिल्पमे गद्य, कविता, स्मृति आ आत्मालाप मिलैत अछि।

प्रश्न 2796. अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा: राधा-प्रसंगमे “मन”क भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
ख. मन अनुपस्थित अछि
ग. देह मात्र बोलैत अछि
घ. कथा केवल बाह्य घटना अछि
उत्तर: क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
व्याख्या: रचना बाहरी घटना सँ बेसी मनक प्रतिक्रिया पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2797. अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा: एहि पाठमे आधुनिक समयक आलोचना कोना उपस्थित अछि?
क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
ख. आधुनिकता पूर्ण प्रशंसित अछि
ग. कोनो आलोचना नहि
घ. कथा केवल ग्रामीण उत्सव अछि
उत्तर: क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
व्याख्या: राधा समयक विघटनकारी शक्तिसँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 2798. अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा: “राधा”मे स्मृतिक भूमिका की अछि?
क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
ख. स्मृति अस्वीकार कएल गेल
ग. स्मृति केवल तिथि अछि
घ. स्मृति व्यापार अछि
उत्तर: क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
व्याख्या: स्मृति रचना केँ संवेदनात्मक गहराई दैत अछि।

प्रश्न 2799. अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा: एहि खण्डक दार्शनिक संकेत की अछि?
क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
ख. जीवन सरल गणना अछि
ग. सम्बन्धक कोनो अर्थ नहि
घ. समय स्थिर अछि
उत्तर: क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
व्याख्या: राधा सम्बन्धक जटिल नैतिकता पर विचार करबैत अछि।

प्रश्न 2800. अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा: रचना पाठकसँ कोन प्रकारक पढ़ाइ माँगैत अछि?
क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
ख. त्वरित पृष्ठ-गिनती
ग. केवल नाम-सूची
घ. सही-गलत विज्ञापन
उत्तर: क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: राधा सतही कथानकसँ अधिक प्रतीक आ भाव-गहनता माँगैत अछि।

प्रश्न 2801. अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा: एहि खण्डमे राधा कोन रूपमे उभरैत छथि?
क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
ख. केवल हास्य पात्र
ग. केवल प्रशासनिक अधिकारी
घ. केवल गीतकार
उत्तर: क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
व्याख्या: राधा आधुनिक भाषा-संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृतिक केन्द्र बनैत छथि।

प्रश्न 2802. अधिकार, अपनपन आ मनुख-सीमा: एहि खण्डक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
ख. काव्य-विहीन सूचना
ग. सिलसिला संख्या
घ. जाहिरात
उत्तर: क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
व्याख्या: राधा नव शिल्प आ गहन भावलोकक कारण महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २८६ : “राधा” — दंश, विष आ मनक यातना

प्रश्न 2803. दंश, विष आ मनक यातना प्रसंगमे “राधा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?
क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय
ग. सिर्फ नाम रटब
घ. कृषि-हिसाब करब
उत्तर: क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
व्याख्या: एहि खण्डमे मधुमाछी, गर्दन काटब, विषाइत दंश, मनक बेचैनी, भोग-अनुभूति, अस्तित्वक यातना सन संकेत राधा-भावकेँ व्यापक समय-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2804. दंश, विष आ मनक यातना: “राधा”मे निजी अनुभूति सामाजिक अर्थ कोना पबैत अछि?
क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
ख. निजी अनुभूति हटि जाइत अछि
ग. समाजक कोनो प्रसंग नहि
घ. केवल ऐतिहासिक तिथि अछि
उत्तर: क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
व्याख्या: रचना निजी भावकेँ सामाजिक-दार्शनिक धरातल पर लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2805. दंश, विष आ मनक यातना: एहि खण्डमे भाषा-शैलीक प्रमुख प्रभाव की अछि?
क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
ख. सूखा सरकारी आदेश
ग. केवल गणितीय सूत्र
घ. बाजार मूल्य-सूची
उत्तर: क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
व्याख्या: राधा शिल्पमे गद्य, कविता, स्मृति आ आत्मालाप मिलैत अछि।

प्रश्न 2806. दंश, विष आ मनक यातना: राधा-प्रसंगमे “मन”क भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
ख. मन अनुपस्थित अछि
ग. देह मात्र बोलैत अछि
घ. कथा केवल बाह्य घटना अछि
उत्तर: क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
व्याख्या: रचना बाहरी घटना सँ बेसी मनक प्रतिक्रिया पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2807. दंश, विष आ मनक यातना: एहि पाठमे आधुनिक समयक आलोचना कोना उपस्थित अछि?
क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
ख. आधुनिकता पूर्ण प्रशंसित अछि
ग. कोनो आलोचना नहि
घ. कथा केवल ग्रामीण उत्सव अछि
उत्तर: क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
व्याख्या: राधा समयक विघटनकारी शक्तिसँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 2808. दंश, विष आ मनक यातना: “राधा”मे स्मृतिक भूमिका की अछि?
क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
ख. स्मृति अस्वीकार कएल गेल
ग. स्मृति केवल तिथि अछि
घ. स्मृति व्यापार अछि
उत्तर: क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
व्याख्या: स्मृति रचना केँ संवेदनात्मक गहराई दैत अछि।

प्रश्न 2809. दंश, विष आ मनक यातना: एहि खण्डक दार्शनिक संकेत की अछि?
क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
ख. जीवन सरल गणना अछि
ग. सम्बन्धक कोनो अर्थ नहि
घ. समय स्थिर अछि
उत्तर: क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
व्याख्या: राधा सम्बन्धक जटिल नैतिकता पर विचार करबैत अछि।

प्रश्न 2810. दंश, विष आ मनक यातना: रचना पाठकसँ कोन प्रकारक पढ़ाइ माँगैत अछि?
क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
ख. त्वरित पृष्ठ-गिनती
ग. केवल नाम-सूची
घ. सही-गलत विज्ञापन
उत्तर: क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: राधा सतही कथानकसँ अधिक प्रतीक आ भाव-गहनता माँगैत अछि।

प्रश्न 2811. दंश, विष आ मनक यातना: एहि खण्डमे राधा कोन रूपमे उभरैत छथि?
क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
ख. केवल हास्य पात्र
ग. केवल प्रशासनिक अधिकारी
घ. केवल गीतकार
उत्तर: क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
व्याख्या: राधा आधुनिक भाषा-संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृतिक केन्द्र बनैत छथि।

प्रश्न 2812. दंश, विष आ मनक यातना: एहि खण्डक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
ख. काव्य-विहीन सूचना
ग. सिलसिला संख्या
घ. जाहिरात
उत्तर: क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
व्याख्या: राधा नव शिल्प आ गहन भावलोकक कारण महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २८७ : “राधा” — समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना

प्रश्न 2813. समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना प्रसंगमे “राधा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?

क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब

ख. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय

ग. सिर्फ नाम रटब

घ. कृषि-हिसाब करब

उत्तर: क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब

व्याख्या: एहि खण्डमे मनमे क्षणिक बात, परिचय-तलब, समाचार बनि जाएब, रौद-बसात पर सवार खबर, निजी घटना सार्वजनिक होयब सन संकेत राधा-भावकेँ व्यापक समय-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2814. समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना: “राधा”मे निजी अनुभूति सामाजिक अर्थ कोना पबैत अछि?

क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि

ख. निजी अनुभूति हटि जाइत अछि

ग. समाजक कोनो प्रसंग नहि

घ. केवल ऐतिहासिक तिथि अछि

उत्तर: क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि

व्याख्या: रचना निजी भावकेँ सामाजिक-दार्शनिक धरातल पर लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2815. समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना: एहि खण्डमे भाषा-शैलीक प्रमुख प्रभाव की अछि?

क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह

ख. सूखा सरकारी आदेश

ग. केवल गणितीय सूत्र

घ. बाजार मूल्य-सूची

उत्तर: क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह

व्याख्या: राधा शिल्पमे गद्य, कविता, स्मृति आ आत्मालाप मिलैत अछि।

प्रश्न 2816. समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना: राधा-प्रसंगमे “मन”क भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?

क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि

ख. मन अनुपस्थित अछि

ग. देह मात्र बोलैत अछि

घ. कथा केवल बाह्य घटना अछि

उत्तर: क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि

व्याख्या: रचना बाहरी घटना सँ बेसी मनक प्रतिक्रिया पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2817. समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना: एहि पाठमे आधुनिक समयक आलोचना कोना उपस्थित अछि?

क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ

ख. आधुनिकता पूर्ण प्रशंसित अछि

ग. कोनो आलोचना नहि

घ. कथा केवल ग्रामीण उत्सव अछि

उत्तर: क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ

व्याख्या: राधा समयक विघटनकारी शक्तिसँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 2818. समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना: “राधा”मे स्मृतिक भूमिका की अछि?

क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब

ख. स्मृति अस्वीकार कएल गेल

ग. स्मृति केवल तिथि अछि

घ. स्मृति व्यापार अछि

उत्तर: क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब

व्याख्या: स्मृति रचना केँ संवेदनात्मक गहराई दैत अछि।

प्रश्न 2819. समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना: एहि खण्डक दार्शनिक संकेत की अछि?
क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
ख. जीवन सरल गणना अछि
ग. सम्बन्धक कोनो अर्थ नहि
घ. समय स्थिर अछि
उत्तर: क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
व्याख्या: राधा सम्बन्धक जटिल नैतिकता पर विचार करबैत अछि।

प्रश्न 2820. समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना: रचना पाठकसँ कोन प्रकारक पढ़ाइ माँगैत अछि?
क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
ख. त्वरित पृष्ठ-गिनती
ग. केवल नाम-सूची
घ. सही-गलत विज्ञापन
उत्तर: क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: राधा सतही कथानकसँ अधिक प्रतीक आ भाव-गहनता माँगैत अछि।

प्रश्न 2821. समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना: एहि खण्डमे राधा कोन रूपमे उभरैत छथि?
क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
ख. केवल हास्य पात्र
ग. केवल प्रशासनिक अधिकारी
घ. केवल गीतकार
उत्तर: क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
व्याख्या: राधा आधुनिक भाषा-संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृतिक केन्द्र बनैत छथि।

प्रश्न 2822. समाचार, रौद-बसात आ मनक घटना: एहि खण्डक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
ख. काव्य-विहीन सूचना
ग. सिलसिला संख्या
घ. जाहिरात
उत्तर: क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
व्याख्या: राधा नव शिल्प आ गहन भावलोकक कारण महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २८८ : “राधा” — स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना

प्रश्न 2823. स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना प्रसंगमे “राधा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?
क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय
ग. सिर्फ नाम रटब
घ. कृषि-हिसाब करब
उत्तर: क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
व्याख्या: एहि खण्डमे तीमन-तरकारी, इनारक टटका जल, इजोरिया चान, तारागणना, चिड़ैक बोल, बच्चाक आँखि, नव पात सन संकेत राधा-भावकेँ व्यापक समय-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2824. स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना: “राधा”मे निजी अनुभूति सामाजिक अर्थ कोना पबैत अछि?
क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
ख. निजी अनुभूति हटि जाइत अछि
ग. समाजक कोनो प्रसंग नहि
घ. केवल ऐतिहासिक तिथि अछि
उत्तर: क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
व्याख्या: रचना निजी भावकेँ सामाजिक-दार्शनिक धरातल पर लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2825. स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना: एहि खण्डमे भाषा-शैलीक प्रमुख प्रभाव की अछि?
क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
ख. सूखा सरकारी आदेश
ग. केवल गणितीय सूत्र
घ. बाजार मूल्य-सूची
उत्तर: क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
व्याख्या: राधा शिल्पमे गद्य, कविता, स्मृति आ आत्मालाप मिलैत अछि।

प्रश्न 2826. स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना: राधा-प्रसंगमे “मन”क भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
ख. मन अनुपस्थित अछि
ग. देह मात्र बोलैत अछि
घ. कथा केवल बाह्य घटना अछि
उत्तर: क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
व्याख्या: रचना बाहरी घटना सँ बेसी मनक प्रतिक्रिया पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2827. स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना: एहि पाठमे आधुनिक समयक आलोचना कोना उपस्थित अछि?
क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
ख. आधुनिकता पूर्ण प्रशंसित अछि
ग. कोनो आलोचना नहि
घ. कथा केवल ग्रामीण उत्सव अछि
उत्तर: क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
व्याख्या: राधा समयक विघटनकारी शक्तिसँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 2828. स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना: “राधा”मे स्मृतिक भूमिका की अछि?
क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
ख. स्मृति अस्वीकार कएल गेल
ग. स्मृति केवल तिथि अछि
घ. स्मृति व्यापार अछि
उत्तर: क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
व्याख्या: स्मृति रचना केँ संवेदनात्मक गहराई दैत अछि।

प्रश्न 2829. स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना: एहि खण्डक दार्शनिक संकेत की अछि?
क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
ख. जीवन सरल गणना अछि
ग. सम्बन्धक कोनो अर्थ नहि
घ. समय स्थिर अछि
उत्तर: क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
व्याख्या: राधा सम्बन्धक जटिल नैतिकता पर विचार करबैत अछि।

प्रश्न 2830. स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना: रचना पाठकसँ कोन प्रकारक पढ़ाइ माँगैत अछि?
क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
ख. त्वरित पृष्ठ-गिनती
ग. केवल नाम-सूची
घ. सही-गलत विज्ञापन
उत्तर: क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: राधा सतही कथानकसँ अधिक प्रतीक आ भाव-गहनता माँगैत अछि।

प्रश्न 2831. स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना: एहि खण्डमे राधा कोन रूपमे उभरैत छथि?
क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
ख. केवल हास्य पात्र
ग. केवल प्रशासनिक अधिकारी
घ. केवल गीतकार
उत्तर: क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
व्याख्या: राधा आधुनिक भाषा-संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृतिक केन्द्र बनैत छथि।

प्रश्न 2832. स्वादक स्मृति आ लोक-संवेदना: एहि खण्डक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
ख. काव्य-विहीन सूचना
ग. सिलसिला संख्या
घ. जाहिरात
उत्तर: क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
व्याख्या: राधा नव शिल्प आ गहन भावलोकक कारण महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २८९ : “राधा” — गंध, सांस आ कृष्ण-निसां

प्रश्न 2833. गंध, सांस आ कृष्ण-निसां प्रसंगमे “राधा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?
क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय
ग. सिर्फ नाम रटब
घ. कृषि-हिसाब करब
उत्तर: क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब
व्याख्या: एहि खण्डमे अत्तर-गुलाब, बेली-चमेली, दूध, डाबा, जच्चा बच्चा, नव विवाहित स्त्री, हरवाह, कदंब, कृष्णक सांस सन संकेत राधा-भावकेँ व्यापक समय-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2834. गंध, सांस आ कृष्ण-निसां: “राधा”मे निजी अनुभूति सामाजिक अर्थ कोना पबैत अछि?
क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
ख. निजी अनुभूति हटि जाइत अछि
ग. समाजक कोनो प्रसंग नहि
घ. केवल ऐतिहासिक तिथि अछि
उत्तर: क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि
व्याख्या: रचना निजी भावकेँ सामाजिक-दार्शनिक धरातल पर लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2835. गंध, सांस आ कृष्ण-निसां: एहि खण्डमे भाषा-शैलीक प्रमुख प्रभाव की अछि?
क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
ख. सूखा सरकारी आदेश
ग. केवल गणितीय सूत्र
घ. बाजार मूल्य-सूची
उत्तर: क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह
व्याख्या: राधा शिल्पमे गद्य, कविता, स्मृति आ आत्मालाप मिलैत अछि।

प्रश्न 2836. गंध, सांस आ कृष्ण-निसां: राधा-प्रसंगमे “मन”क भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
ख. मन अनुपस्थित अछि
ग. देह मात्र बोलैत अछि
घ. कथा केवल बाह्य घटना अछि
उत्तर: क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि
व्याख्या: रचना बाहरी घटना सँ बेसी मनक प्रतिक्रिया पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2837. गंध, सांस आ कृष्ण-निसां: एहि पाठमे आधुनिक समयक आलोचना कोना उपस्थित अछि?
क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
ख. आधुनिकता पूर्ण प्रशंसित अछि
ग. कोनो आलोचना नहि
घ. कथा केवल ग्रामीण उत्सव अछि
उत्तर: क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ
व्याख्या: राधा समयक विघटनकारी शक्तिसँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 2838. गंध, सांस आ कृष्ण-निसां: “राधा”मे स्मृतिक भूमिका की अछि?
क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
ख. स्मृति अस्वीकार कएल गेल
ग. स्मृति केवल तिथि अछि
घ. स्मृति व्यापार अछि
उत्तर: क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब
व्याख्या: स्मृति रचना केँ संवेदनात्मक गहराई दैत अछि।

प्रश्न 2839. गंध, सांस आ कृष्ण-निसां: एहि खण्डक दार्शनिक संकेत की अछि?
क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
ख. जीवन सरल गणना अछि
ग. सम्बन्धक कोनो अर्थ नहि
घ. समय स्थिर अछि
उत्तर: क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
व्याख्या: राधा सम्बन्धक जटिल नैतिकता पर विचार करबैत अछि।

प्रश्न 2840. गंध, सांस आ कृष्ण-निसां: रचना पाठकसँ कोन प्रकारक पढ़ाइ माँगैत अछि?
क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
ख. त्वरित पृष्ठ-गिनती
ग. केवल नाम-सूची
घ. सही-गलत विज्ञापन
उत्तर: क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: राधा सतही कथानकसँ अधिक प्रतीक आ भाव-गहनता माँगैत अछि।

प्रश्न 2841. गंध, सांस आ कृष्ण-निसां: एहि खण्डमे राधा कोन रूपमे उभरैत छथि?
क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
ख. केवल हास्य पात्र
ग. केवल प्रशासनिक अधिकारी
घ. केवल गीतकार
उत्तर: क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
व्याख्या: राधा आधुनिक भाषा-संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृतिक केन्द्र बनैत छथि।

प्रश्न 2842. गंध, सांस आ कृष्ण-निसां: एहि खण्डक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
ख. काव्य-विहीन सूचना
ग. सिलसिला संख्या
घ. जाहिरात
उत्तर: क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
व्याख्या: राधा नव शिल्प आ गहन भावलोकक कारण महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २९० : “राधा” — विधा, शिल्प आ नव परम्परा

प्रश्न 2843. विधा, शिल्प आ नव परम्परा प्रसंगमे “राधा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?

क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब

ख. केवल पृष्ठ-सूची बनाबय

ग. सिर्फ नाम रटब

घ. कृषि-हिसाब करब

उत्तर: क. राधा-भावक माध्यमसँ व्यक्ति, समाज आ समयक बेचैनी पढ़ब

व्याख्या: एहि खण्डमे गद्य-पद्य-जम्बुली मिश्रण, शंकरदेव परम्परा, नव परम्परा, प्रेरणास्रोत, भावात्मक महाकायता सन संकेत राधा-भावकेँ व्यापक समय-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2844. विधा, शिल्प आ नव परम्परा: “राधा”मे निजी अनुभूति सामाजिक अर्थ कोना पबैत अछि?

क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि

ख. निजी अनुभूति हटि जाइत अछि

ग. समाजक कोनो प्रसंग नहि

घ. केवल ऐतिहासिक तिथि अछि

उत्तर: क. निजी पीड़ा भाषा, समाज आ समयक संकटसँ जुड़ि जाइत अछि

व्याख्या: रचना निजी भावकेँ सामाजिक-दार्शनिक धरातल पर लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 2845. विधा, शिल्प आ नव परम्परा: एहि खण्डमे भाषा-शैलीक प्रमुख प्रभाव की अछि?

क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह

ख. सूखा सरकारी आदेश

ग. केवल गणितीय सूत्र

घ. बाजार मूल्य-सूची

उत्तर: क. खंडित, संवेदनशील, प्रश्नमय आ आत्म-संवादी गद्य-कविता-जकाँ प्रवाह

व्याख्या: राधा शिल्पमे गद्य, कविता, स्मृति आ आत्मालाप मिलैत अछि।

प्रश्न 2846. विधा, शिल्प आ नव परम्परा: राधा-प्रसंगमे “मन”क भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?

क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि

ख. मन अनुपस्थित अछि

ग. देह मात्र बोलैत अछि

घ. कथा केवल बाह्य घटना अछि

उत्तर: क. मनहि अनुभवकेँ अर्थ, यातना आ स्मृति मे बदलैत अछि

व्याख्या: रचना बाहरी घटना सँ बेसी मनक प्रतिक्रिया पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2847. विधा, शिल्प आ नव परम्परा: एहि पाठमे आधुनिक समयक आलोचना कोना उपस्थित अछि?

क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ

ख. आधुनिकता पूर्ण प्रशंसित अछि

ग. कोनो आलोचना नहि

घ. कथा केवल ग्रामीण उत्सव अछि

उत्तर: क. संवेदना, सम्बन्ध आ भाषा पर बाजार/राजनीतिक दबावक संकेतसँ

व्याख्या: राधा समयक विघटनकारी शक्तिसँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 2848. विधा, शिल्प आ नव परम्परा: “राधा”मे स्मृतिक भूमिका की अछि?

क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब

ख. स्मृति अस्वीकार कएल गेल

ग. स्मृति केवल तिथि अछि

घ. स्मृति व्यापार अछि

उत्तर: क. वर्तमान पीड़ाकेँ लोक-सांस्कृतिक स्वाद, गंध आ सम्बन्धसँ जोड़ब

व्याख्या: स्मृति रचना केँ संवेदनात्मक गहराई दैत अछि।

प्रश्न 2849. विधा, शिल्प आ नव परम्परा: एहि खण्डक दार्शनिक संकेत की अछि?
क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
ख. जीवन सरल गणना अछि
ग. सम्बन्धक कोनो अर्थ नहि
घ. समय स्थिर अछि
उत्तर: क. मानवीय अपनपन, अधिकार, बंधन आ मुक्ति जटिल अछि
व्याख्या: राधा सम्बन्धक जटिल नैतिकता पर विचार करबैत अछि।

प्रश्न 2850. विधा, शिल्प आ नव परम्परा: रचना पाठकसँ कोन प्रकारक पढ़ाइ माँगैत अछि?
क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
ख. त्वरित पृष्ठ-गिनती
ग. केवल नाम-सूची
घ. सही-गलत विज्ञापन
उत्तर: क. धीमी, प्रतीक-सजग, संवेदनात्मक आ व्याख्यात्मक पढ़ाइ
व्याख्या: राधा सतही कथानकसँ अधिक प्रतीक आ भाव-गहनता माँगैत अछि।

प्रश्न 2851. विधा, शिल्प आ नव परम्परा: एहि खण्डमे राधा कोन रूपमे उभरैत छथि?
क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
ख. केवल हास्य पात्र
ग. केवल प्रशासनिक अधिकारी
घ. केवल गीतकार
उत्तर: क. मात्र पौराणिक पात्र नहि, बल्कि आधुनिक बेचैनीक संवेदनात्मक केन्द्र
व्याख्या: राधा आधुनिक भाषा-संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृतिक केन्द्र बनैत छथि।

प्रश्न 2852. विधा, शिल्प आ नव परम्परा: एहि खण्डक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
ख. काव्य-विहीन सूचना
ग. सिलसिला संख्या
घ. जाहिरात
उत्तर: क. मैथिली आधुनिकतामे प्रयोगशील, दार्शनिक आ भाव-समृद्ध गद्य-पद्यक संभावना खोलब
व्याख्या: राधा नव शिल्प आ गहन भावलोकक कारण महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड २९१ : विदेह-सदेह १ — मधेश स्पेशल: दृश्य-संचार आ मैथिली

प्रश्न 2853. नेपाल वन टेलिभिजनक “मधेश स्पेशल”मे कोन-कोन सामग्री समेटल गेल बताओल अछि?
क. समाचार, समसामयिक राजनीति, प्रमुख मुद्दापर चर्चा आ गीत-संगीत
ख. केवल मौसम
ग. केवल खेल-स्कोर
घ. केवल विज्ञापन
उत्तर: क. समाचार, समसामयिक राजनीति, प्रमुख मुद्दापर चर्चा आ गीत-संगीत
व्याख्या: कार्यक्रम सूचना, विमर्श आ मनोरंजन तीनू कैं जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2854. मधेश स्पेशल कतेक समयक कार्यक्रम कहल गेल?
क. एक घण्टा
ख. पाँच मिनट
ग. पूरे दिन
घ. एक सप्ताह
उत्तर: क. एक घण्टा
व्याख्या: समय-सूचना कार्यक्रमक नियमित प्रसारण-ढाँचा बुझबैत अछि।

प्रश्न 2855. कार्यक्रमक नियमित प्रसारण मैथिली लेल किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. दृश्य-संचारमे मैथिली उपस्थिति बढ़ैत अछि
ख. मैथिली हटैत अछि
ग. संचारसँ साहित्य असंबद्ध अछि
घ. केवल व्यापार अछि
उत्तर: क. दृश्य-संचारमे मैथिली उपस्थिति बढ़ैत अछि
व्याख्या: टेलिभिजनमे नियमित मैथिली आवाज भाषा-दृश्यता बढ़बैत अछि।

प्रश्न 2856. नेपाल बाहरक मैथिल दर्शकक उल्लेख की देखबैत अछि?
क. सीमा-पार मैथिली दर्शक-वृत्त
ख. दर्शक नहि छल
ग. भाषा केवल एक शहरक अछि
घ. प्रसारण बंद छल
उत्तर: क. सीमा-पार मैथिली दर्शक-वृत्त
व्याख्या: मधुबनी, दरभंगा, सीतामढ़ी आदि क्षेत्रक दर्शक मैथिली संचारक सीमा-पार स्वरूप देखबैत छथि।

प्रश्न 2857. कार्यक्रममे मैथिली आ भोजपुरी मिश्रण कोन सांस्कृतिक वास्तविकता देखबैत अछि?
क. मधेशी भाषिक-सांस्कृतिक सहअस्तित्व
ख. भाषाक पूर्ण अनुपस्थिति
ग. केवल अंग्रेजीकरण
घ. संगीत-विरोध
उत्तर: क. मधेशी भाषिक-सांस्कृतिक सहअस्तित्व
व्याख्या: मधेश स्पेशल क्षेत्रीय भाषिक निकटता आ मिश्रित दर्शकवर्गसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 2858. तीन भागक संरचना — समाचार, टक शो, गीत — किएक प्रभावी अछि?
क. सूचना, विचार आ लोकमनोरंजनक संतुलन बनबैत अछि
ख. केवल एकरस पाठ
ग. समाचार हटबैत अछि
घ. विचार रोकैत अछि
उत्तर: क. सूचना, विचार आ लोकमनोरंजनक संतुलन बनबैत अछि
व्याख्या: एहि संरचनासँ कार्यक्रम बहुस्तरीय दर्शक-आवश्यकता पूरा करैत अछि।

प्रश्न 2859. डोमकछ आ जट-जटिनक उल्लेख कोन दिशा देखबैत अछि?
क. लोक-संस्कृतिक दृश्य प्रसारण द्वारा संरक्षण
ख. लोककला त्याग
ग. केवल शास्त्रीय संगीत
घ. प्रिंट-मात्र प्रकाशन
उत्तर: क. लोक-संस्कृतिक दृश्य प्रसारण द्वारा संरक्षण
व्याख्या: दृश्य माध्यम लोकनाचक सुगंध व्यापक दर्शक धरि पहुँचा सकैत अछि।

प्रश्न 2860. “७० टा देश” दर्शक-संदर्भक अर्थ की अछि?
क. प्रवासी मैथिल समुदाय तक डिजिटल/टेलिभिजन पहुँच
ख. केवल स्थानीय अखाड़ा
ग. बिना प्रसारण
घ. भाषा-सीमा
उत्तर: क. प्रवासी मैथिल समुदाय तक डिजिटल/टेलिभिजन पहुँच
व्याख्या: प्रवासी मैथिलक जुड़ाव भाषा-संवादक वैश्विकता देखबैत अछि।

प्रश्न 2861. मधेश स्पेशल मैथिली विकासमे कोन भूमिका निभा सकैत अछि?
क. भाषिक दृश्यता, समाचार-संपर्क आ सांस्कृतिक आत्मविश्वास बढ़ाबय
ख. भाषा कम करब
ग. लोकसंगीत रोकब
घ. साहित्य मिटाबय
उत्तर: क. भाषिक दृश्यता, समाचार-संपर्क आ सांस्कृतिक आत्मविश्वास बढ़ाबय
व्याख्या: संचारमाध्यम भाषा-समुदायक आत्म-प्रतिनिधित्वक साधन अछि।

प्रश्न 2862. एहि लेखांशक मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. दृश्य-संचार मैथिलीकेँ समाचार, लोककला आ प्रवासी संपर्कक मंच दैत अछि
ख. टेलिभिजन बेकार अछि
ग. मैथिली केवल कागजमे अछि
घ. मधेश असंबद्ध अछि
उत्तर: क. दृश्य-संचार मैथिलीकेँ समाचार, लोककला आ प्रवासी संपर्कक मंच दैत अछि
व्याख्या: मधेश स्पेशल भाषा-संस्कृतिक सार्वजनिक उपस्थिति बढ़बैत अछि।

खण्ड २९२ : विदेह-सदेह १ — महेन्द्र मलंगिया: रंगमंच, स्वाभिमान आ आलोचना

प्रश्न 2863. महेन्द्र मलंगिया अपन नाट्य-स्थानक संबंधमे कोन चुनौतीपूर्ण कथन करैत छथि?
क. जाधरि कलम चलैत रहत, हुनकर सिंहासन अटल रहत
ख. ओ नाटक छोड़ि देलनि
ग. ओ कविता अस्वीकार करैत छथि
घ. ओ मंचसँ डरैत छथि
उत्तर: क. जाधरि कलम चलैत रहत, हुनकर सिंहासन अटल रहत
व्याख्या: मलंगियाक कथन आत्मविश्वास आ चुनौतीपूर्ण नाट्य-स्वर देखबैत अछि।

प्रश्न 2864. “मैथिली नाटकक भीष्मपितामह” सम्बोधन पर हुनकर प्रतिक्रिया कोना अछि?
क. मुस्की सहित, अपन नाटक लोककेँ पसिन छैक से गर्व
ख. पूर्ण अस्वीकार
ग. क्रोध मात्र
घ. मौन
उत्तर: क. मुस्की सहित, अपन नाटक लोककेँ पसिन छैक से गर्व
व्याख्या: ओ उपाधिसँ बेसी दर्शक-स्वीकृति पर जोर दैत छथि।

प्रश्न 2865. जनकपुरक कलाकारसभ प्रति मलंगियाक दृष्टि की अछि?
क. ओ सभसँ बहुत आशा कएल जा सकैत अछि
ख. ओ कलाकार-विरोधी छथि
ग. जनकपुर असंबद्ध अछि
घ. कलाकार अप्रासंगिक छथि
उत्तर: क. ओ सभसँ बहुत आशा कएल जा सकैत अछि
व्याख्या: ओ जनकपुर रंगकर्मक खुले प्रशंसा करैत छथि।

प्रश्न 2866. नेपालमे मैथिली साहित्य-संरक्षणक स्थिति पर मलंगियाक मत की अछि?
क. सन्तोषदायक काज नहि भेल
ख. सब काज पूर्ण अछि
ग. मैथिली सर्वोच्च सरकारी संरक्षणमे अछि
घ. ओ टिप्पणी नहि करैत छथि
उत्तर: क. सन्तोषदायक काज नहि भेल
व्याख्या: ओ राज्यक उपेक्षा आ असंतोष व्यक्त करैत छथि।

प्रश्न 2867. नेपालमे मैथिली दोसर बेसी बाजल जाएबला भाषा होइतहुँ रंगकर्मक विकास नहि होयब कोन विरोधाभास अछि?
क. भाषिक संख्या आ सांस्कृतिक-संस्थागत समर्थन बीच दूरी
ख. भाषा नहि बाजल जाइत
ग. नाटक अनावश्यक अछि
घ. समर्थन बहुत अछि
उत्तर: क. भाषिक संख्या आ सांस्कृतिक-संस्थागत समर्थन बीच दूरी
व्याख्या: लोकसंख्या/भाषिक उपस्थिति पर्याप्त नहि, संस्थागत श्रम चाही।

प्रश्न 2868. नेपाल ज्ञान प्रतिष्ठानक मैथिली-काज पर मलंगियाक दृष्टि की अछि?
क. ओ एकरा असन्तोषजनक/अपर्याप्त मानैत छथि
ख. ओ अत्यंत संतुष्ट छथि
ग. ओ मैथिली निषिद्ध करैत छथि
घ. ओ बोलल नहि
उत्तर: क. ओ एकरा असन्तोषजनक/अपर्याप्त मानैत छथि
व्याख्या: लेखांशमे प्रतिष्ठानक कार्य पर असंतोष व्यक्त अछि।

प्रश्न 2869. रंगकर्मकेँ रोजी-रोटी सँ जोड़बाक आग्रह किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. आर्थिक आधार बिना रंगमंचक सतत विकास कठिन अछि
ख. रंगमंच केवल शौक रहय
ग. कलाकार भूखे रहय
घ. नाटकक समाजसँ संबंध नहि
उत्तर: क. आर्थिक आधार बिना रंगमंचक सतत विकास कठिन अछि
व्याख्या: मलंगिया कला आ जीविका बीच व्यावहारिक सम्बन्ध देखैत छथि।

प्रश्न 2870. नाटक लिखैत समय दर्शकक मानसिकता, उमेर, शिक्षा आ पेशा ध्यानमे रखबाक सलाह कोन दृष्टि अछि?
क. दर्शक-केंद्रित नाट्यशिल्प
ख. केवल लेखक-अहंकार
ग. दर्शक-विरोध
घ. मंच-सज्जा मात्र
उत्तर: क. दर्शक-केंद्रित नाट्यशिल्प
व्याख्या: ओ नाटककेँ दर्शकक अनुभवसँ जोड़ि रचना करबाक पक्षधर छथि।

प्रश्न 2871. मलंगियाक सफलताक रहस्य हुनकर अनुसार की अछि?
क. ओ दर्शककेँ लक्षित कऽ नाटक लिखैत छथि
ख. ओ दर्शककेँ नकारैत छथि
ग. ओ मंच पर नहि जाइत छथि
घ. ओ केवल अनुवाद करैत छथि
उत्तर: क. ओ दर्शककेँ लक्षित कऽ नाटक लिखैत छथि
व्याख्या: दर्शक-बोध हुनकर लोकप्रियताक कारण बताओल अछि।

प्रश्न 2872. एहि खण्डक मूल नाट्य-चिन्ता की अछि?
क. लोकप्रियता, संस्थागत उपेक्षा, आर्थिक आधार आ दर्शक-सजग लेखनक प्रश्न
ख. केवल पोशाक वर्णन
ग. केवल यात्रा विवरण
घ. संगीतक सूची
उत्तर: क. लोकप्रियता, संस्थागत उपेक्षा, आर्थिक आधार आ दर्शक-सजग लेखनक प्रश्न
व्याख्या: मलंगिया प्रसंग मैथिली रंगमंचक संरचनात्मक समस्या आ शिल्प-दृष्टि खोलैत अछि।

खण्ड २९३ : विदेह-सदेह १ — “बिदेसिया”: प्रवासन, गृह-स्मृति आ रंगमंच

प्रश्न 2873. “बिदेसिया” नाटकक मूल सामाजिक प्रसंग की अछि?
क. रोजगार/परिस्थिति कारण गाम छोड़ि विदेश/शहर जाएबाक विवशता
ख. केवल राजदरबार
ग. कृषि उत्सव
घ. बालक्रीड़ा
उत्तर: क. रोजगार/परिस्थिति कारण गाम छोड़ि विदेश/शहर जाएबाक विवशता
व्याख्या: नाटक प्रवासनक पीड़ा आ घर-परिवारसँ दूरी पर आधारित अछि।

प्रश्न 2874. बिदेसिया विवाहक किछुए दिन बाद गाम किएक छोड़ैत अछि?
क. पैसा कमएबाक लोभ/विवशता सँ
ख. तीर्थ-यात्रा लेल
ग. विद्यालय परीक्षा लेल
घ. खेलकूद लेल
उत्तर: क. पैसा कमएबाक लोभ/विवशता सँ
व्याख्या: नाटक ग्रामीण आर्थिक मजबूरीक कथा कहैत अछि।

प्रश्न 2875. गाम छोड़िते बिदेसियासँ की-की छुटि जाइत अछि?
क. नवकी कनियाँ, गामक साथी आ स्मृति
ख. केवल पुरान जूता
ग. राजसिंहासन
घ. विद्यालय-बैग
उत्तर: क. नवकी कनियाँ, गामक साथी आ स्मृति
व्याख्या: प्रवासन केवल भौतिक दूरी नहि, भावनात्मक टूटन अछि।

प्रश्न 2876. नवकी कनियाँक बारहमासा गेनाइ की देखबैत अछि?
क. विरह आ प्रतीक्षाक लोकधर्मी अभिव्यक्ति
ख. उत्सवक नृत्य
ग. सरकारी आदेश
घ. हास्य-प्रदर्शन
उत्तर: क. विरह आ प्रतीक्षाक लोकधर्मी अभिव्यक्ति
व्याख्या: बारहमासा स्त्री-विरहक पारम्परिक लोकस्वर अछि।

प्रश्न 2877. शहरमे बिदेसियाक दोसर संगिनी बनब कोन संकट देखबैत अछि?
क. प्रवासमे आत्म-विस्मृति आ दाम्पत्य-संबंधक विघटन
ख. पूर्ण नैतिक विजय
ग. परिवारक विस्तार बिना तनाव
घ. गामक संरक्षण
उत्तर: क. प्रवासमे आत्म-विस्मृति आ दाम्पत्य-संबंधक विघटन
व्याख्या: प्रवास पात्रकेँ अपन मूल सम्बन्ध सँ दूर करैत अछि।

प्रश्न 2878. भिखारी पात्रक भूमिका नाटकमे की बताओल गेल?
क. लोककेँ अपन गाम-घरक याद करय लेल विवश करब
ख. नाटक रोकब
ग. गामक स्मृति मिटाब
घ. केवल हास्यक मुद्रा
उत्तर: क. लोककेँ अपन गाम-घरक याद करय लेल विवश करब
व्याख्या: भिखारी पात्र स्मृति आ आत्म-पहचान जगबैत अछि।

प्रश्न 2879. नाटकक सुखान्त समाप्ति कोन सांस्कृतिक चाहना व्यक्त करैत अछि?
क. टूटल परिवार आ गाम-संबंधक पुनर्संधान
ख. विरहक स्थायी विफलता
ग. गामक पूर्ण विनाश
घ. प्रवासक महिमा मात्र
उत्तर: क. टूटल परिवार आ गाम-संबंधक पुनर्संधान
व्याख्या: अंतमे सौतन-कलहक बाद घर-सम्बन्ध पुनर्गठित होइत अछि।

प्रश्न 2880. शरीरसँ नहि, मनसँ बिदेसिया भेनिहार — एहि विचारक अर्थ की अछि?
क. प्रवासन मनुष्यकेँ सांस्कृतिक रूपेँ सेहो पराया बना सकैत अछि
ख. शरीरक यात्रा असंभव अछि
ग. मन अप्रासंगिक अछि
घ. नाटक केवल भूगोल अछि
उत्तर: क. प्रवासन मनुष्यकेँ सांस्कृतिक रूपेँ सेहो पराया बना सकैत अछि
व्याख्या: नाटक पहचानक मानसिक विस्थापन पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 2881. बिदेसिया नाटक समाजक कोन कटु सत्य उजागर करैत अछि?
क. जीविका लेल माटि-पानि आ परिवारसँ दूर होयबाक मजबूरी
ख. सम्पन्नता बिना पीड़ा
ग. गाममे कोनो समस्या नहि
घ. प्रेम अप्रासंगिक
उत्तर: क. जीविका लेल माटि-पानि आ परिवारसँ दूर होयबाक मजबूरी
व्याख्या: प्रवास आर्थिक असमानता आ पारिवारिक विछोहक परिणाम अछि।

प्रश्न 2882. एहि नाटकक अध्ययनक मुख्य बिन्दु की अछि?
क. प्रवासन, लोकगीत, स्त्री-विरह, परिवार आ पहचानक रंगमंचीय संगम
ख. पृष्ठ संख्या
ग. मंचक कुर्सी
घ. टिकट दर
उत्तर: क. प्रवासन, लोकगीत, स्त्री-विरह, परिवार आ पहचानक रंगमंचीय संगम
व्याख्या: बिदेसिया लोकधर्मी कथा द्वारा आधुनिक प्रवासनक पीड़ा खोलैत अछि।

खण्ड २९४ : विदेह-सदेह १ — नेपाल/मधेश समाचार: सशस्त्र समूह आ जनजीवन

प्रश्न 2883. मधेशमे दू दर्जनसँ बेशी सशस्त्र समूहक उल्लेख कोन स्थिति देखबैत अछि?
क. असुरक्षा आ राजनीतिक-सामाजिक तनाव
ख. पूर्ण शांति
ग. कला उत्सव
घ. विद्यालय परीक्षा
उत्तर: क. असुरक्षा आ राजनीतिक-सामाजिक तनाव
व्याख्या: लेखांश मधेशमे हिंसा आ भयक वातावरण देखबैत अछि।

प्रश्न 2884. जनकपुरक जानकी मन्दिरमे पत्रकार रैली किएक निकालैत छथि?
क. सशस्त्र समूहक विरोधमे
ख. संगीत प्रतियोगिता लेल
ग. कृषि-मेला लेल
घ. नाटक-प्रचार लेल
उत्तर: क. सशस्त्र समूहक विरोधमे
व्याख्या: रैली हिंसा-विरोधी सार्वजनिक प्रतिक्रिया अछि।

प्रश्न 2885. कार्यालयमे ताला लगाकऽ विरोध प्रदर्शन कोन नागरिक प्रतिक्रिया अछि?
क. भय आ असंतोषक संगठित अभिव्यक्ति
ख. पूजा-विधि
ग. वाणिज्य उत्सव
घ. शिक्षा-समारोह
उत्तर: क. भय आ असंतोषक संगठित अभिव्यक्ति
व्याख्या: सशस्त्र गतिविधिक विरुद्ध कर्मचारी/समाज प्रतिरोध करैत अछि।

प्रश्न 2886. बस चालक कृष्ण खवासक हत्या प्रसंग कोन सुरक्षा-संकट देखबैत अछि?
क. राजमार्ग पर अपराध आ यातायातक असुरक्षा
ख. सफल पर्यटन
ग. संगीत-यात्रा
घ. राजमार्ग उत्सव
उत्तर: क. राजमार्ग पर अपराध आ यातायातक असुरक्षा
व्याख्या: लुटेरा समूह द्वारा गोली चलब यातायातक जोखिम खोलैत अछि।

प्रश्न 2887. खलासी द्वारा बस नियंत्रित करब कोन मानवीय पक्ष देखबैत अछि?
क. संकटमे तत्परता आ यात्रियनकेँ दुर्घटनासँ बचाबयक साहस
ख. बस छोड़ि देब
ग. हिंसा बढ़ाब
घ. समाचार छिपाब
उत्तर: क. संकटमे तत्परता आ यात्रियनकेँ दुर्घटनासँ बचाबयक साहस
व्याख्या: चालक घायल भेलापर खलासी बस बचबैत अछि।

प्रश्न 2888. चक्काजामक परिणामस्वरूप जनजीवन पर कोन प्रभाव पड़ल?
क. यातायात ठप्प, उपभोग्य वस्तुक अभाव आ असुविधा
ख. पूर्ण सुविधा
ग. व्यापार दोगुना
घ. कोनो असर नहि
उत्तर: क. यातायात ठप्प, उपभोग्य वस्तुक अभाव आ असुविधा
व्याख्या: बन्दक असर सामान्य जनता पर पड़ैत अछि।

प्रश्न 2889. मधेश नामपर खुलल संगठनसभक विरोध किएक उल्लेखनीय अछि?
क. जनता हिंसा आ अस्थिरता सँ ऊबि रहल छल
ख. सभ संगठन पूर्ण लोकप्रिय छल
ग. कोनो विरोध नहि
घ. भाषा असंबद्ध अछि
उत्तर: क. जनता हिंसा आ अस्थिरता सँ ऊबि रहल छल
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे मधेशक नारा अपनबैत समूहसभ विरोध झेलि रहल छल।

प्रश्न 2890. एहि समाचार-खंडक साहित्यिक/सांस्कृतिक महत्त्व की अछि?
क. पत्रिका समाजक राजनीतिक-सुरक्षा यथार्थकेँ साहित्यिक संसारसँ अलग नहि मानैत
ख. साहित्य केवल छन्द अछि
ग. समाचार अस्वीकार्य अछि
घ. समाज अनुपस्थित अछि
उत्तर: क. पत्रिका समाजक राजनीतिक-सुरक्षा यथार्थकेँ साहित्यिक संसारसँ अलग नहि मानैत
व्याख्या: विदेह-सदेह सामाजिक संदर्भकेँ साहित्यिक-सांस्कृतिक विमर्शक भाग बनबैत अछि।

प्रश्न 2891. जनजीवन प्रभावित भेलाक वर्णन कोन दृष्टि अपनबैत अछि?
क. सामान्य नागरिकक पीड़ा केन्द्रित दृष्टि
ख. केवल शासक-दृष्टि
ग. केवल अपराधी-दृष्टि
घ. केवल खेल-दृष्टि
उत्तर: क. सामान्य नागरिकक पीड़ा केन्द्रित दृष्टि
व्याख्या: लेख बन्द, अभाव आ सुरक्षा संकटक असर जनता पर देखैत अछि।

प्रश्न 2892. मधेश समाचारक निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा-संस्कृति संग सामाजिक शांति आ सुरक्षा सेहो आवश्यक अछि
ख. सुरक्षा अप्रासंगिक अछि
ग. साहित्य समाजसँ कटल अछि
घ. हिंसा विकासक संकेत अछि
उत्तर: क. भाषा-संस्कृति संग सामाजिक शांति आ सुरक्षा सेहो आवश्यक अछि
व्याख्या: सांस्कृतिक जीवन सुरक्षित नागरिक परिवेश पर निर्भर करैत अछि।

खण्ड २९५ : विदेह-सदेह १ — कोशी प्रलय: आपदा, दोषारोपण आ विस्थापन

प्रश्न 2893. कोशीकेँ नेपाल आ भारतक जनता लेल “अभिशाप” किएक कहल गेल?
क. तटबन्ध टूटि व्यापक बाढ़, विस्थापन आ जन-हानि करबाक कारण
ख. ओ केवल तीर्थ नदी अछि
ग. ओ कखनो बाढ़ नहि लाबैत
घ. ओ शहरक पार्क अछि
उत्तर: क. तटबन्ध टूटि व्यापक बाढ़, विस्थापन आ जन-हानि करबाक कारण
व्याख्या: लेख कोशीक विनाशकारी बाढ़क सामाजिक असर बतबैत अछि।

प्रश्न 2894. पूर्वी तटबन्ध भत्थन होयब कोन घटना-सूत्र अछि?
क. नदी बाट बदलि नेपाल-बिहारमे विनाशकारी बाढ़ अनलक
ख. नदी सूखि गेल
ग. पुल बनल
घ. कला प्रदर्शनी भेल
उत्तर: क. नदी बाट बदलि नेपाल-बिहारमे विनाशकारी बाढ़ अनलक
व्याख्या: तटबन्ध टूटन संकटक आरम्भिक कारण रूपमे वर्णित अछि।

प्रश्न 2895. नेपालक लगभग एक लाख जनता विस्थापित भेल — ई कोन स्तरक संकट देखबैत अछि?
क. सीमा-पार मानवीय आपदा
ख. स्थानीय हल्का वर्षा
ग. सांस्कृतिक उत्सव
घ. निजी घटना
उत्तर: क. सीमा-पार मानवीय आपदा
व्याख्या: विस्थापन संख्यात्मक नहि, मानवीय त्रासदीक संकेत अछि।

प्रश्न 2896. बिहारमे लाखों जनता प्रभावित भेलाक उल्लेख कोन बात स्पष्ट करैत अछि?
क. कोशीक असर राष्ट्रीय/सीमा-पार स्तर तक फैलल
ख. संकट केवल एक घरमे छल
ग. बिहार अप्रभावित छल
घ. नदीक कोनो असर नहि
उत्तर: क. कोशीक असर राष्ट्रीय/सीमा-पार स्तर तक फैलल
व्याख्या: कोशी आपदा भारत-नेपाल दुनूक साझा समस्या बनल।

प्रश्न 2897. नेपाल आ भारतक परस्पर दोषारोपण कोन प्रशासनिक संकट देखबैत अछि?
क. जवाबदेहीक अस्पष्टता आ समन्वयक कमी
ख. पूर्ण समन्वय
ग. तुरन्त समाधान
घ. कोनो दोष नहि
उत्तर: क. जवाबदेहीक अस्पष्टता आ समन्वयक कमी
व्याख्या: आपदा-प्रबंधनमे जवाबदेही टारबाक प्रवृत्ति दिखैत अछि।

प्रश्न 2898. कोशी समझौताक संदर्भमे तटबन्ध-काज भारतक जिम्मा कहल गेल — एहि जानकारीक उपयोग की अछि?
क. आपदा-प्रबंधनक संस्थागत जिम्मेदारी बुझबाक लेल
ख. पृष्ठ रटबाक लेल
ग. गीत गाबय लेल
घ. कथा हटाबय लेल
उत्तर: क. आपदा-प्रबंधनक संस्थागत जिम्मेदारी बुझबाक लेल
व्याख्या: समझौता जिम्मेदारीक बहसक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 2899. राष्ट्रीय विपत्ति घोषणा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. आपदाक गंभीरता सरकारी स्तर पर स्वीकारल गेल
ख. बाढ़ असत्य सिद्ध भेल
ग. सहायता रोकल गेल
घ. संकट छोट छल
उत्तर: क. आपदाक गंभीरता सरकारी स्तर पर स्वीकारल गेल
व्याख्या: घोषणा संकटक व्यापकता मान्य करैत अछि।

प्रश्न 2900. कटान नियंत्रणक असफल प्रयास कोन संदेश दैत अछि?
क. तकनीकी तैयारी आ स्थायी नदी-प्रबंधनक कमी
ख. समस्या पूर्ण समाधान भेल
ग. नदी नियंत्रित भऽ गेल
घ. कोनो प्रयास नहि भेल
उत्तर: क. तकनीकी तैयारी आ स्थायी नदी-प्रबंधनक कमी
व्याख्या: बालू-गिट्टीक प्रयास निरर्थक भेल, समस्या गम्भीर छल।

प्रश्न 2901. विस्थापित शिविरमे पेटझरी फैलनाइ कोन द्वितीयक आपदा अछि?
क. बाढ़ बाद स्वास्थ्य-संकट
ख. उत्सवक भोजन
ग. विद्यालय आरम्भ
घ. संगीत समारोह
उत्तर: क. बाढ़ बाद स्वास्थ्य-संकट
व्याख्या: आपदाक बाद बीमारी आ स्वच्छता-संकट आओर पीड़ा बढ़बैत अछि।

प्रश्न 2902. कोशी लेखांशक मुख्य अध्ययन-बिन्दु की अछि?
क. प्राकृतिक आपदा, प्रशासनिक विफलता, सीमा-पार जिम्मेदारी आ मानवीय विस्थापन
ख. केवल नदीक नाम
ग. केवल रंग-वर्णन
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. प्राकृतिक आपदा, प्रशासनिक विफलता, सीमा-पार जिम्मेदारी आ मानवीय विस्थापन
व्याख्या: लेख आपदाकेँ सामाजिक-राजनीतिक संदर्भमे पढ़बैत अछि।

खण्ड २९६ : विदेह-सदेह १ — कोशीक कोप: कविता आ पर्यावरण-चिन्ता

प्रश्न 2903. “कोसीक कोप” कवितामे प्राकृतिक कोपक सामने कवि कोन आग्रह करैत अछि?
क. अधीर नहि भऽ पर्यावरण आ प्रशासनक कारण पर विचार करब
ख. आपदा अनदेखा करब
ग. केवल रोमान्स करब
घ. नदीक उत्सव मनाब
उत्तर: क. अधीर नहि भऽ पर्यावरण आ प्रशासनक कारण पर विचार करब
व्याख्या: कविता आपदाकेँ चिंतनक विषय बनबैत अछि।

प्रश्न 2904. सरकार “बहिरे” बनल अछि — ई पंक्ति कोन आरोप अछि?
क. पीड़ित जनजीवनक पुकार प्रति शासनक संवेदनहीनता
ख. सरकार अत्यंत सुनैत अछि
ग. कविता शासन-स्तुति अछि
घ. कोनो जनपीड़ा नहि
उत्तर: क. पीड़ित जनजीवनक पुकार प्रति शासनक संवेदनहीनता
व्याख्या: कवि शासनक निष्क्रियता पर चोट करैत छथि।

प्रश्न 2905. कोसी नदी बिहारक शोक कहलाक अर्थ की अछि?
क. बाढ़क ऐतिहासिक आवृत्ति आ विनाशकारी स्मृति
ख. नदी पूर्ण वरदान मात्र
ग. बिहारसँ असंबद्ध
घ. शोक शब्द हास्य अछि
उत्तर: क. बाढ़क ऐतिहासिक आवृत्ति आ विनाशकारी स्मृति
व्याख्या: कोसी बारम्बार विनाशक कारण बनल।

प्रश्न 2906. पर्यावरणक सतत हनन पर रोक नहि लागब कोन आधुनिक संकट जोड़ैत अछि?
क. मानव निर्मित पर्यावरण-क्षति आ बाढ़-जोखिमक सम्बन्ध
ख. पर्यावरण अप्रासंगिक
ग. नदी केवल पौराणिक
घ. कविता मौसम रिपोर्ट
उत्तर: क. मानव निर्मित पर्यावरण-क्षति आ बाढ़-जोखिमक सम्बन्ध
व्याख्या: कविता आपदा केँ पर्यावरणीय असंतुलनसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2907. हिमनद घमब आ जलस्तर बढ़ब कोन वैश्विक समस्या दर्शबैत अछि?
क. जलवायु परिवर्तनक संकेत
ख. केवल स्थानीय तालाब
ग. कथा-कल्पना
घ. धातु-शास्त्र
उत्तर: क. जलवायु परिवर्तनक संकेत
व्याख्या: कविता तापमान आ जलस्तरक सम्बन्ध देखैत अछि।

प्रश्न 2908. समय पर सरकारी कोष खुलिते संकट टरि सकैत छल — ई विचार कोन बात कहैत अछि?
क. पूर्व तैयारी आ मरम्मति-प्रबंधनक आवश्यकता
ख. आपदा असंभव छल
ग. कोषक जरूरत नहि
घ. नदी स्वयं रुकैत
उत्तर: क. पूर्व तैयारी आ मरम्मति-प्रबंधनक आवश्यकता
व्याख्या: कवि समय पर कार्रवाईक अभावकेँ आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 2909. भूगोलवेत्ता आ अभियंता आगू आबयक आग्रह कोन समाधान-दृष्टि अछि?
क. वैज्ञानिक नदी-प्रबंधन आ तकनीकी मार्गदर्शन
ख. केवल मंत्र-पाठ
ग. कवि सम्मेलन मात्र
घ. बाजार प्रचार
उत्तर: क. वैज्ञानिक नदी-प्रबंधन आ तकनीकी मार्गदर्शन
व्याख्या: कविता भावनासँ आगाँ बढ़ि विशेषज्ञ हस्तक्षेप चाहैत अछि।

प्रश्न 2910. जलसंचय, सिंचाई आ जलविद्युतक उल्लेख कोन सकारात्मक संभावना खोलैत अछि?
क. नदी-जलकेँ विनाशसँ विकास-संसाधन मे बदलबाक संभावना
ख. बाढ़ बढ़ाबय
ग. जल निषिद्ध करब
घ. खेती रोकब
उत्तर: क. नदी-जलकेँ विनाशसँ विकास-संसाधन मे बदलबाक संभावना
व्याख्या: कवि नदी-प्रबंधनक रचनात्मक दिशा सुझबैत अछि।

प्रश्न 2911. “कोसीक कोप” सामाजिक कविता किएक अछि?
क. आपदा, सरकार, पर्यावरण, विज्ञान आ जनजीवन सबकेँ जोड़ैत अछि
ख. केवल निजी प्रेम
ग. केवल पृष्ठ-सूची
घ. केवल छन्द-अभ्यास
उत्तर: क. आपदा, सरकार, पर्यावरण, विज्ञान आ जनजीवन सबकेँ जोड़ैत अछि
व्याख्या: कविता बहुस्तरीय लोक-संकट व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 2912. एहि कविताक प्रमुख संदेश की अछि?
क. प्राकृतिक आपदा पछाड़ि दीर्घकालिक पर्यावरणीय आ प्रशासनिक उत्तरदायित्व जरूरी अछि
ख. दोष केवल नदीक अछि
ग. मानवक भूमिका नहि
घ. संकट उत्सव अछि
उत्तर: क. प्राकृतिक आपदा पछाड़ि दीर्घकालिक पर्यावरणीय आ प्रशासनिक उत्तरदायित्व जरूरी अछि
व्याख्या: कविता कोशी प्रलयकेँ चेतावनीक रूपमे पढ़ैत अछि।

खण्ड २९७ : विदेह-सदेह १ — ज्योति प्रकाश लाल: कम्प्यूटर शिक्षा

प्रश्न 2913. ज्योति प्रकाश लालक लेखमे “कम्प्यूटर”क मैथिली/हिन्दी नाम कोन बताओल गेल?
क. संगणक
ख. मृदंग
ग. कलम
घ. दर्पण
उत्तर: क. संगणक
व्याख्या: लेख संगणक शब्द बतबैत अछि, यद्यपि व्यवहारमे कम्प्यूटर अधिक चलैत अछि।

प्रश्न 2914. लेखकक अनुसार आजुक समयमे सभकेँ की होयबाक चाही?
क. कम्प्यूटर साक्षर
ख. केवल मौखिक पाठक
ग. संगीतकार मात्र
घ. राजदरबारी
उत्तर: क. कम्प्यूटर साक्षर
व्याख्या: लेख आधुनिक जीवनमे कम्प्यूटर साक्षरता जरूरी मानैत अछि।

प्रश्न 2915. कम्प्यूटर साक्षरता सँ लेखकक आशय की अछि?
क. कम्प्यूटर अनुप्रयोगकेँ व्यवहारमे लाबयक क्षमता
ख. मशीनक पूजा
ग. केवल तार जोड़ब
घ. कागज रंगब
उत्तर: क. कम्प्यूटर अनुप्रयोगकेँ व्यवहारमे लाबयक क्षमता
व्याख्या: लेख उपयोगी एप्लिकेशन चलाबय केँ साक्षरता मानैत अछि।

प्रश्न 2916. दरखास्त/चिट्ठी लिखबामे कम्प्यूटर कोन सुविधा दैत अछि?
क. स्पेलिंग जाँच, व्याकरण संकेत, एलाइनमेंट आ मार्जिन नियंत्रण
ख. केवल खेत जोतब
ग. मौसम बदलब
घ. गीत गाबय
उत्तर: क. स्पेलिंग जाँच, व्याकरण संकेत, एलाइनमेंट आ मार्जिन नियंत्रण
व्याख्या: लेख कम्प्यूटरक लेखन-संपादन उपयोगिता बतबैत अछि।

प्रश्न 2917. Spelling Checking सुविधा किएक उपयोगी कहल गेल?
क. गलत हिज्जे स्वतः बताबयक कारण
ख. गलती बढ़ाबय
ग. लेखन रोकब
घ. कागज फाड़ब
उत्तर: क. गलत हिज्जे स्वतः बताबयक कारण
व्याख्या: लेखनक शुद्धता कम्प्यूटरसँ सहज बनैत अछि।

प्रश्न 2918. Grammatical Errors पकड़बाक सुविधा कोन लेखकीय लाभ दैत अछि?
क. औपचारिक पत्र/लेखन अधिक सही बनैत अछि
ख. भाषा हटि जाइत अछि
ग. लेखन असंभव होइत अछि
घ. केवल चित्र बनैत अछि
उत्तर: क. औपचारिक पत्र/लेखन अधिक सही बनैत अछि
व्याख्या: लेख तकनीकी साधनक भाषिक उपयोगितापर बल दैत अछि।

प्रश्न 2919. प्रिन्टआउट सुविधा पत्राचारमे कोन परिवर्तन लाबैत अछि?
क. एकटा लेखनक अनेक साफ प्रति निकालब सरल होइत अछि
ख. डाकघर बंद करैत अछि
ग. लेखन मिटबैत अछि
घ. सिर्फ आवाज दैत अछि
उत्तर: क. एकटा लेखनक अनेक साफ प्रति निकालब सरल होइत अछि
व्याख्या: कम्प्यूटर लिखित संचारक कार्यक्षमता बढ़बैत अछि।

प्रश्न 2920. “Computer literate” नहि होयबकेँ illiterate सँ जोड़ल कथन कोन युग-बोध दैत अछि?
क. डिजिटल युगमे तकनीकी साक्षरता मूल साक्षरता-जकाँ आवश्यक बनि गेल
ख. कम्प्यूटर बेकार अछि
ग. पढ़ाइ अप्रासंगिक अछि
घ. लेखन केवल मौखिक अछि
उत्तर: क. डिजिटल युगमे तकनीकी साक्षरता मूल साक्षरता-जकाँ आवश्यक बनि गेल
व्याख्या: लेख डिजिटल साक्षरता केँ जीवन-कौशल मानैत अछि।

प्रश्न 2921. इंटरनेट उपलब्ध भेला पर संचारमे कोन परिवर्तन संकेतित अछि?
क. पत्राचार, सूचना आ पहुँचक स्वरूप तेजी सँ बदलि जाइत अछि
ख. सब संचार रुकैत अछि
ग. केवल पोस्टकार्ड रहैत अछि
घ. भाषा समाप्त होइत अछि
उत्तर: क. पत्राचार, सूचना आ पहुँचक स्वरूप तेजी सँ बदलि जाइत अछि
व्याख्या: लेख डाक-युगसँ इंटरनेट-युगक संक्रमण देखबैत अछि।

प्रश्न 2922. ज्योति प्रकाश लालक लेखक मुख्य उद्देश्य की अछि?
क. मैथिली पाठककेँ आधुनिक कम्प्यूटर साक्षरता आ डिजिटल उपयोगिता बुझेनाइ
ख. कविता-संग्रह बनब
ग. नाटक समीक्षा मात्र
घ. कृषि पंचांग
उत्तर: क. मैथिली पाठककेँ आधुनिक कम्प्यूटर साक्षरता आ डिजिटल उपयोगिता बुझेनाइ
व्याख्या: लेख कम्प्यूटर शिक्षाक सामाजिक-व्यावहारिक महत्त्व पर केन्द्रित अछि।

खण्ड २९८ : विदेह-सदेह १ — कम्प्यूटर, भाषा आ आधुनिक संचार

प्रश्न 2923. मातृभाषामे अंग्रेजी तकनीकी शब्दक प्रयोगपर लेखकक दृष्टि कतेक व्यावहारिक अछि?
क. ओ मानैत छथि जे बहुत शब्द चलनमे अछि, शुद्ध शब्द अपरिचित बुझा सकैत अछि
ख. ओ सभ अंग्रेजी शब्द निषिद्ध करैत छथि
ग. ओ भाषा छोड़ैत छथि
घ. ओ तकनीक अस्वीकार करैत छथि
उत्तर: क. ओ मानैत छथि जे बहुत शब्द चलनमे अछि, शुद्ध शब्द अपरिचित बुझा सकैत अछि
व्याख्या: लेख भाषा-शुद्धता आ व्यवहारिक समझ बीच संतुलन रखैत अछि।

प्रश्न 2924. कम्प्यूटर लेखनमे पैराग्राफ एलाइनमेंट आ मार्जिनक चर्चा किएक अछि?
क. दस्तावेजक प्रस्तुति आ पठनीयता सुधारबाक लेल
ख. खेती लेल
ग. नदी रोकबाक लेल
घ. गीत गाबय लेल
उत्तर: क. दस्तावेजक प्रस्तुति आ पठनीयता सुधारबाक लेल
व्याख्या: लेख कम्प्यूटरक व्यावहारिक दस्तावेज-निर्माण क्षमता बतबैत अछि।

प्रश्न 2925. डाक-युगक पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय, लिफाफाक स्मृति कोन तुलना बनबैत अछि?
क. पुरान पत्राचार आ इंटरनेट-युगक बीच अन्तर
ख. कृषि-समस्या
ग. नाटकक दृश्य
घ. कला-सज्जा
उत्तर: क. पुरान पत्राचार आ इंटरनेट-युगक बीच अन्तर
व्याख्या: लेख संचार-माध्यमक ऐतिहासिक बदलाव समझबैत अछि।

प्रश्न 2926. मनीऑर्डरक उल्लेख किएक आयल अछि?
क. डाकघरक पूर्व सामाजिक-आर्थिक भूमिका देखाबय लेल
ख. कविता छन्द लेल
ग. संगीत ताल लेल
घ. कथा-पात्र नाम लेल
उत्तर: क. डाकघरक पूर्व सामाजिक-आर्थिक भूमिका देखाबय लेल
व्याख्या: डाक केवल पत्र नहि, आर्थिक लेन-देनक माध्यम सेहो छल।

प्रश्न 2927. इंटरनेट सुविधा उपलब्ध भेलापर “बहुतो चीज बदलि गेल” — ई कथन कोन परिवर्तन दैत अछि?
क. सूचना, पत्राचार आ सेवा-प्राप्तिक गति आ रूप बदलल
ख. समाज स्थिर रहल
ग. चिट्ठी अनिवार्य रहल
घ. कम्प्यूटर असफल भेल
उत्तर: क. सूचना, पत्राचार आ सेवा-प्राप्तिक गति आ रूप बदलल
व्याख्या: लेख डिजिटल संक्रमणक व्यापक असर देखबैत अछि।

प्रश्न 2928. कम्प्यूटर साक्षरता मैथिली समाज लेल किएक खास महत्त्वपूर्ण अछि?
क. भाषा-सामग्री, पत्राचार आ ज्ञान-विनिमय डिजिटल रूपमे सम्भव होइत अछि
ख. मैथिली हटि जाइत अछि
ग. समाज कम्प्यूटर नहि सीखि सकैत
घ. साहित्यक उपयोग नहि
उत्तर: क. भाषा-सामग्री, पत्राचार आ ज्ञान-विनिमय डिजिटल रूपमे सम्भव होइत अछि
व्याख्या: तकनीक भाषा-सशक्तिकरणक साधन बनि सकैत अछि।

प्रश्न 2929. लेखकक पेशेवर परिचय — सॉफ्टवेयर अभियंता आदि — लेखक विश्वसनीयता कोना बनबैत अछि?
क. तकनीकी अनुभवसँ कम्प्यूटर शिक्षा पर व्यवहारिक अधिकार भेटैत अछि
ख. ओ विषयसँ असंबद्ध छथि
ग. केवल कवि छथि
घ. ओ कम्प्यूटर-विरोधी छथि
उत्तर: क. तकनीकी अनुभवसँ कम्प्यूटर शिक्षा पर व्यवहारिक अधिकार भेटैत अछि
व्याख्या: परिचय लेखकेँ तकनीकी जीवनानुभवसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2930. माइक्रोसॉफ्ट/वेब आधारित अनुभवक संकेत लेखमे कोन स्तर जोड़ैत अछि?
क. वैश्विक तकनीकी अनुभव आ स्थानीय भाषा-समाजक संवाद
ख. केवल स्थानीय चिट्ठी
ग. कृषि विवरण
घ. नाटक मंचन
उत्तर: क. वैश्विक तकनीकी अनुभव आ स्थानीय भाषा-समाजक संवाद
व्याख्या: लेखक वैश्विक तकनीकेँ मैथिली पाठक लेल अर्थपूर्ण करैत छथि।

प्रश्न 2931. मुफ्त कैरियर सुझावक उल्लेख कोन सामाजिक सेवा-बोध देखबैत अछि?
क. तकनीकी ज्ञानकेँ युवासमाजक उपयोगमे लाबयक इच्छा
ख. ज्ञान छिपाबय
ग. केवल व्यापार
घ. साहित्य हटाबय
उत्तर: क. तकनीकी ज्ञानकेँ युवासमाजक उपयोगमे लाबयक इच्छा
व्याख्या: लेखक तकनीकी दक्षताकेँ सामाजिक मार्गदर्शनसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 2932. एहि लेखक अध्ययन-मूल्य की अछि?
क. डिजिटल साक्षरता, भाषा-व्यवहार आ संचार-परिवर्तनक प्रारम्भिक मैथिली विवेचन
ख. केवल पृष्ठ-विवरण
ग. संगीत-सूची
घ. नदी-कथा
उत्तर: क. डिजिटल साक्षरता, भाषा-व्यवहार आ संचार-परिवर्तनक प्रारम्भिक मैथिली विवेचन
व्याख्या: लेख आधुनिक तकनीकेँ मातृभाषा समाजक भविष्यसँ जोड़ैत अछि।

खण्ड २९९ : विदेह-सदेह १ — कोशी, प्रार्थना आ लोकजीवनक कविता-सूत्र

प्रश्न 2933. “ईशक आराधना”मे कवि केहन हाथ माँगैत छथि?
क. गरीब आ दुखी लेल सृजनशील, सहायक हाथ
ख. धन लूटय बला हाथ
ग. हिंसा करय बला हाथ
घ. केवल सजावट हाथ
उत्तर: क. गरीब आ दुखी लेल सृजनशील, सहायक हाथ
व्याख्या: प्रार्थना व्यक्तिगत लाभ नहि, लोकमंगलक शक्ति चाहैत अछि।

प्रश्न 2934. गरीबीक सीमा पार कएनिहार लोकक संदर्भ कोन सामाजिक आकांक्षा बनबैत अछि?
क. संजीवनी बुटी-जकाँ जीवनदायी सहायताक चाह
ख. गरीबीक उपहास
ग. धनीक विलास
घ. सामाजिक दूरी
उत्तर: क. संजीवनी बुटी-जकाँ जीवनदायी सहायताक चाह
व्याख्या: कवि दुखी लोक लेल उपचारक रूपक प्रयोग करैत छथि।

प्रश्न 2935. घर-घर शिक्षित आ समृद्ध होयबाक स्वप्न कोन रचनात्मक उद्देश्य देखबैत अछि?
क. सामाजिक विकास आ लोककल्याण
ख. केवल निजी भवन
ग. युद्ध कीर्ति
घ. व्यापार लाभ
उत्तर: क. सामाजिक विकास आ लोककल्याण
व्याख्या: कविता सामूहिक उन्नति पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 2936. “खरहाक भोज”मे खरहा द्वारा साग-पात चरब कोन ग्रामीण संघर्ष देखबैत अछि?
क. खेतीक श्रम आ प्राकृतिक/जीव-जन्य क्षति बीच तनाव
ख. राजमहल भोज
ग. शहरक क्लब
घ. विद्यालय समारोह
उत्तर: क. खेतीक श्रम आ प्राकृतिक/जीव-जन्य क्षति बीच तनाव
व्याख्या: कविता छोट ग्रामीण दृश्यसँ गृहस्थक पीड़ा कहैत अछि।

प्रश्न 2937. गृहस्थक तामस किएक उठैत अछि?
क. प्रतिदिनक मेहनत खरहा द्वारा नष्ट होयबाक कारण
ख. संगीत सुनि
ग. उत्सव देखी
घ. खेल जीति
उत्तर: क. प्रतिदिनक मेहनत खरहा द्वारा नष्ट होयबाक कारण
व्याख्या: खेतीक क्षति किसानक भावात्मक आ आर्थिक दुख अछि।

प्रश्न 2938. लोकजीवनक कविता-खंडसभमे प्रकृति कोना उपस्थित अछि?
क. सहयोगी सेहो, संकटकारी सेहो
ख. पूर्ण अनुपस्थित
ग. केवल सजावट
घ. केवल शहरक इमारत
उत्तर: क. सहयोगी सेहो, संकटकारी सेहो
व्याख्या: कोशी, खरहा, गाछ, खेत—प्रकृति जीवनक जटिल भाग अछि।

प्रश्न 2939. प्रार्थना आ ग्रामीण दृश्य एक संग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. कविता आध्यात्मिकता कैं वास्तविक सामाजिक श्रमसँ जोड़ैत अछि
ख. दुनू असंबद्ध
ग. केवल कथा-विनोद
घ. केवल इतिहास
उत्तर: क. कविता आध्यात्मिकता कैं वास्तविक सामाजिक श्रमसँ जोड़ैत अछि
व्याख्या: लोकमंगलक प्रार्थना जमीनक समस्या सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 2940. एहि कविता-सूत्रमे करुणा कोन रूपमे अछि?
क. दुखी समाजक समस्या मेटाबयक सक्रिय इच्छा
ख. दया मात्र बिना कर्म
ग. हास्य
घ. विलास
उत्तर: क. दुखी समाजक समस्या मेटाबयक सक्रिय इच्छा
व्याख्या: कवि करुणाकैं सामाजिक कार्रवाईक आकांक्षासँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 2941. ग्रामीण प्रतीकसभक साहित्यिक उपयोग की अछि?
क. बड़ा सामाजिक अर्थ छोट दृश्यसँ व्यक्त करब
ख. पृष्ठ भरण
ग. अर्थहीन सजावट
घ. केवल अनुप्रास
उत्तर: क. बड़ा सामाजिक अर्थ छोट दृश्यसँ व्यक्त करब
व्याख्या: साग-पात, खरहा, बाढ़, हाथ—सभ प्रतीकात्मक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 2942. एहि खण्डक मूल भाव की अछि?
क. लोककल्याण, पर्यावरणीय संकट, श्रम आ सामाजिक आशा
ख. केवल श्रृंगार
ग. केवल राजदरबार
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. लोककल्याण, पर्यावरणीय संकट, श्रम आ सामाजिक आशा
व्याख्या: कविता-समूह लोकजीवनक दुख-संघर्ष आ आशा व्यक्त करैत अछि।

खण्ड ३०० : विदेह-सदेह १ — “असल राज” आ लंदन-जीवनक व्यंग्य

प्रश्न 2943. “असल राज”मे लंदन शहरक भोरक भीड़ कोन आधुनिक जीवन-दृश्य बनबैत अछि?
क. समयबद्ध, भागैत, कामकेंद्रित शहरी जीवन
ख. गामक मेला
ग. राजदरबार
घ. नदी-स्नान
उत्तर: क. समयबद्ध, भागैत, कामकेंद्रित शहरी जीवन
व्याख्या: कविता भोरक भीड़मे महानगरीय दिनचर्या देखबैत अछि।

प्रश्न 2944. सबके “श्वेत रेवार” जकाँ देखब कोन दृश्यात्मक बिम्ब अछि?
क. भीड़मे व्यक्तित्वक एकरसता
ख. रंगोत्सव
ग. वन्यजीव
घ. खेतक कतार
उत्तर: क. भीड़मे व्यक्तित्वक एकरसता
व्याख्या: शहरी भीड़ व्यक्तिक अलग पहचान मेटबैत अछि।

प्रश्न 2945. बैगक संग काज दिस विदा होयब कोन जीवन-लय देखबैत अछि?
क. नौकरी-नियम आ समयक अनुशासन
ख. नाटकक मंच
ग. खेलक मैदान
घ. विवाह गीत
उत्तर: क. नौकरी-नियम आ समयक अनुशासन
व्याख्या: लंदनक कामकाजी जीवन समय-नियंत्रित अछि।

प्रश्न 2946. ओवरकोटमे बन्द लोकक चित्र किएक अर्थपूर्ण अछि?
क. देह आ व्यक्तित्व दुनू शहरी आवरणमे कैद बुझाइत अछि
ख. पूर्ण स्वतंत्रता
ग. उत्सवक पोशाक
घ. खेतीक औजार
उत्तर: क. देह आ व्यक्तित्व दुनू शहरी आवरणमे कैद बुझाइत अछि
व्याख्या: ओवरकोट आधुनिक शहरी बंदिशक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 2947. “मिथ्या अभिमान भेल विलीन” पंक्ति कोन अनुभव दैत अछि?
क. बाहरी वैभवक बीच अहंकार टूटि जाइत अछि
ख. अभिमान बढ़ैत अछि
ग. कवि राजा बनैत अछि
घ. भीड़ नहि अछि
उत्तर: क. बाहरी वैभवक बीच अहंकार टूटि जाइत अछि
व्याख्या: विदेशी शहरी अनुशासन व्यक्ति कें अपन छोटपन बुझबैत अछि।

प्रश्न 2948. कानूनन ठीक काज करनिहारक “असल राज” कोन विचार अछि?
क. नियमपालन आ श्रम-संस्कारक समाज-निर्माण शक्ति
ख. अराजकता
ग. लूट
घ. आलस्य
उत्तर: क. नियमपालन आ श्रम-संस्कारक समाज-निर्माण शक्ति
व्याख्या: कविता वास्तविक शासनक आधार अनुशासित नागरिकता मानैत अछि।

प्रश्न 2949. “लाज नहि कएल” पंक्ति श्रम-नैतिकता पर की कहैत अछि?
क. कोनो काज ईमानदारीसँ करबमे लाज नहि
ख. काम अपमान अछि
ग. केवल पद महत्वपूर्ण
घ. श्रम त्याज्य अछि
उत्तर: क. कोनो काज ईमानदारीसँ करबमे लाज नहि
व्याख्या: कविता श्रमक गरिमा पर बल दैत अछि।

प्रश्न 2950. लंदन दृश्यक माध्यमसँ कवि अपना समाज लेल कोन संकेत देत छथि?
क. अनुशासन, श्रम आ नियमपालनक आवश्यकता
ख. आलस्यक महिमा
ग. नियम-विरोध
घ. केवल विदेशी प्रशंसा
उत्तर: क. अनुशासन, श्रम आ नियमपालनक आवश्यकता
व्याख्या: विदेशी अनुभव आत्म-समाजक तुलना बनैत अछि।

प्रश्न 2951. “असल राज” शीर्षक राजनीतिक अछि वा नैतिक?
क. दुनू — कानून, श्रम आ नागरिक अनुशासनक नैतिक राजनीति
ख. केवल राजगद्दी
ग. केवल प्रेमगीत
घ. केवल यात्रा-फोटो
उत्तर: क. दुनू — कानून, श्रम आ नागरिक अनुशासनक नैतिक राजनीति
व्याख्या: कविता राज्यक असलपन नागरिक आचरणसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 2952. एहि कविताक मूल संदेश की अछि?
क. समाजक वास्तविक उन्नति अनुशासन, श्रमगौरव आ नियमपालन सँ होइत अछि
ख. धन मात्र काफी अछि
ग. भीड़ पर्याप्त अछि
घ. कानूनक जरूरत नहि
उत्तर: क. समाजक वास्तविक उन्नति अनुशासन, श्रमगौरव आ नियमपालन सँ होइत अछि
व्याख्या: लंदनक दृश्य कविक समाज-सुधारक दृष्टि जगबैत अछि।

खण्ड ३०१ : विदेह-सदेह १ — पतझड़, वृक्ष आ पर्यावरण-संवेदना

प्रश्न 2953. “पतझड़क आगमन”मे रंगसभक सूची कोन दृश्य बनबैत अछि?
क. मौलाइत प्रकृतिक बहुरंगी ऋतु-परिवर्तन
ख. नगरक ट्रैफिक
ग. राजसभा
घ. बालक खेल
उत्तर: क. मौलाइत प्रकृतिक बहुरंगी ऋतु-परिवर्तन
व्याख्या: संतरा, पीयर, लाल, भूरा रंग पतझड़क दृश्यात्मकता रचैत अछि।

प्रश्न 2954. प्रकृति जीर्ण भेल जेना — एहि बिम्बक अर्थ की अछि?
क. ऋतु-परिवर्तनमे क्षय आ पुनर्जन्मक संकेत
ख. प्रकृति स्थिर अछि
ग. प्रकृति अनुपस्थित अछि
घ. कवि भवन देखैत छथि
उत्तर: क. ऋतु-परिवर्तनमे क्षय आ पुनर्जन्मक संकेत
व्याख्या: पतझड़ पुरान पात छोड़ि नव जीवनक तैयारी अछि।

प्रश्न 2955. गेरूवा वस्त्र धारण करब कोन आध्यात्मिक रूपक अछि?
क. त्याग आ संन्यास-जकाँ प्रकृतिक रूपान्तरण
ख. विवाहक पोशाक
ग. युद्धक कवच
घ. व्यापार-वर्दी
उत्तर: क. त्याग आ संन्यास-जकाँ प्रकृतिक रूपान्तरण
व्याख्या: पतझड़ साधु-संन्यासक बिम्बमे देखाओल अछि।

प्रश्न 2956. हिमक बरखा बाद नवजीवनक आशा कोन चक्र देखबैत अछि?
क. क्षय-पश्चात वसंतक पुनरागमन
ख. स्थायी मृत्यु
ग. कभी न बदलय
घ. केवल गर्मी
उत्तर: क. क्षय-पश्चात वसंतक पुनरागमन
व्याख्या: ऋतुचक्र निराशा बाद नवजीवनक आशा दैत अछि।

प्रश्न 2957. “वृक्षक अभिलाषा”मे बूढ़ वृक्ष आमक गाछ किएक रोपैत अछि?
क. आगामी पीढ़ीक लेल फल-मिठास छोड़बाक हेतु
ख. अपन तत्काल लाभ लेल
ग. गाछ काटय लेल
घ. खेल लेल
उत्तर: क. आगामी पीढ़ीक लेल फल-मिठास छोड़बाक हेतु
व्याख्या: वृक्ष पीढ़ीगत उत्तरदायित्वक प्रतीक अछि।

प्रश्न 2958. कियो पूछैत अछि — लाभ की? — तकर उत्तर कोन नैतिकता खोलैत अछि?
क. अपने नहि खाएब तइयो अगिला पीढ़ी खाएत
ख. लाभ नहि त छोड़ि देब
ग. गाछ बेकार अछि
घ. फल विष अछि
उत्तर: क. अपने नहि खाएब तइयो अगिला पीढ़ी खाएत
व्याख्या: कविता परोपकार आ वंश-उत्तरदायित्व पर बल दैत अछि।

प्रश्न 2959. बाप-दादाक रोपल कलम भोगलाक ऋण लौटेबाक अर्थ की अछि?
क. पूर्वजक दानक प्रत्युपकार भविष्यक लेल करब
ख. पूर्वजकेँ भूलब
ग. ऋण अस्वीकार
घ. गाछ उखाड़ब
उत्तर: क. पूर्वजक दानक प्रत्युपकार भविष्यक लेल करब
व्याख्या: वृक्ष रोपण सांस्कृतिक स्मृति आ ऋण-स्वीकार बनैत अछि।

प्रश्न 2960. पर्यावरण-संवेदना एहि कवितासभमे कोना अछि?
क. गाछ, ऋतु आ पीढ़ीकेँ जीवन-संबंध रूपमे देखब
ख. प्रकृति-विरोध
ग. वन-विनाश
घ. केवल सजावट
उत्तर: क. गाछ, ऋतु आ पीढ़ीकेँ जीवन-संबंध रूपमे देखब
व्याख्या: प्रकृति मानव-भविष्यक नैतिक साथी अछि।

प्रश्न 2961. पतझड़ आ वृक्ष कविता मिलि कोन दार्शनिक भाव दैत अछि?
क. क्षय, त्याग, पुनर्जन्म आ परपीढ़ी दान
ख. स्थिरता मात्र
ग. उपभोग मात्र
घ. अराजकता
उत्तर: क. क्षय, त्याग, पुनर्जन्म आ परपीढ़ी दान
व्याख्या: दुनू कविता समय आ जीवनचक्रक गहीर अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 2962. एहि खण्डक मुख्य शिक्षण-मूल्य की अछि?
क. पर्यावरणकेँ सांस्कृतिक, आध्यात्मिक आ नैतिक दृष्टिसँ पढ़ब
ख. केवल रंग रटब
ग. पृष्ठ संख्या पूछब
घ. फल गिनब
उत्तर: क. पर्यावरणकेँ सांस्कृतिक, आध्यात्मिक आ नैतिक दृष्टिसँ पढ़ब
व्याख्या: कविता प्रकृतिक प्रतीकसँ नैतिक जीवन-बोध बनबैत अछि।

खण्ड ३०२ : विदेह-सदेह १ — टेम्स नदीमे नौकाविहार: प्रवास आ आत्म-तुलना

प्रश्न 2963. टेम्स नदीमे नौकाविहार कवितामे यात्रा-दृश्य कोना आरम्भ होइत अछि?
क. स्टीमरक उपरका मंजिल पर शीतल बयार संग सफर
ख. रेगिस्तानमे पैदल यात्रा
ग. गामक पोखरि मात्र
घ. राजदरबार प्रवेश
उत्तर: क. स्टीमरक उपरका मंजिल पर शीतल बयार संग सफर
व्याख्या: कवि नदी-यात्राक आधुनिक शहरी दृश्य रचैत छथि।

प्रश्न 2964. तट पर ऊँच-ऊँच भव्य भवन कोन अनुभव दैत अछि?
क. वास्तुकला आ तकनीकी विकासक प्रत्यक्ष दर्शन
ख. गामक झोपड़ी मात्र
ग. जंगलक अन्हार
घ. बाढ़क विनाश
उत्तर: क. वास्तुकला आ तकनीकी विकासक प्रत्यक्ष दर्शन
व्याख्या: टेम्स तट आधुनिक शहरी उपलब्धिक प्रतीक अछि।

प्रश्न 2965. अनुशासित बहावक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मानव-प्रयास द्वारा नदी-परिदृश्यक नियंत्रित रूप देखबैत अछि
ख. नदी उफनैत अछि
ग. नाव डूबैत अछि
घ. कोनो व्यवस्था नहि
उत्तर: क. मानव-प्रयास द्वारा नदी-परिदृश्यक नियंत्रित रूप देखबैत अछि
व्याख्या: टेम्सक बहाव कविक मनमे अपन नदी-संकटसँ तुलना जगबैत अछि।

प्रश्न 2966. “अपन बिसरल घाव” जागब कोन भाव अछि?
क. विदेशी व्यवस्था देख अपन क्षेत्रक आपदा/अव्यवस्था याद आ दुख
ख. पूर्ण विस्मृति
ग. सिर्फ आनंद
घ. कोनो तुलना नहि
उत्तर: क. विदेशी व्यवस्था देख अपन क्षेत्रक आपदा/अव्यवस्था याद आ दुख
व्याख्या: प्रवास-दृश्य आत्म-समाजक पीड़ा जगबैत अछि।

प्रश्न 2967. कवि अपन प्रान्तक स्थिति पर की अनुभव करैत छथि?
क. आपदासँ आक्रान्त आ विकासमे पछुआल क्षेत्रक वेदना
ख. पूर्ण संतोष
ग. गौरव मात्र
घ. असंबद्धता
उत्तर: क. आपदासँ आक्रान्त आ विकासमे पछुआल क्षेत्रक वेदना
व्याख्या: टेम्स देखलाक बाद कोशी/बाढ़क पीड़ा स्मरण होइत अछि।

प्रश्न 2968. बाढ़ समस्या शांत होयबाक प्रश्न कवितामे कोन आशा अछि?
क. नदी-प्रबंधन आ आपदा-मुक्त भविष्यक आकांक्षा
ख. बाढ़ बढ़बाक इच्छा
ग. नदी छोड़बाक सलाह
घ. संकट स्वीकार मात्र
उत्तर: क. नदी-प्रबंधन आ आपदा-मुक्त भविष्यक आकांक्षा
व्याख्या: कवि तुलना द्वारा सुधारक स्वप्न देखैत छथि।

प्रश्न 2969. रातिक दृश्यकेँ हरिद्वार-जकाँ किएक कहल जा सकैत अछि?
क. जलपर प्रकाश-प्रतिबिम्ब आ छठि-अर्घ्य दीपक स्मृति कारण
ख. सचमुच हरिद्वार स्थानांतरण
ग. कविता मिथ्या
घ. केवल अन्हार
उत्तर: क. जलपर प्रकाश-प्रतिबिम्ब आ छठि-अर्घ्य दीपक स्मृति कारण
व्याख्या: विदेशी दृश्य भारतीय/मिथिला धार्मिक स्मृतिक संग मिलैत अछि।

प्रश्न 2970. छठि-अर्घ्य दीपकक बिम्ब टेम्समे कोन सांस्कृतिक सेतु बनबैत अछि?
क. प्रवास दृश्यकेँ मिथिला/भारतीय लोक-संस्कारसँ जोड़ैत अछि
ख. स्मृति हटबैत अछि
ग. नदीक अर्थ मिटबैत अछि
घ. कविता केवल पर्यटन अछि
उत्तर: क. प्रवास दृश्यकेँ मिथिला/भारतीय लोक-संस्कारसँ जोड़ैत अछि
व्याख्या: कवि बाहरक दृश्यकेँ अपन सांस्कृतिक आँखिसँ देखैत छथि।

प्रश्न 2971. एहि कविताक प्रवासी दृष्टि की अछि?
क. विदेशी विकास देख अपन समाजक कमी आ स्मृति दोन्हू अनुभव करब
ख. विदेशीकरण मात्र
ग. अपन समाजक विस्मरण
घ. सिर्फ पर्यटक-आनंद
उत्तर: क. विदेशी विकास देख अपन समाजक कमी आ स्मृति दोन्हू अनुभव करब
व्याख्या: नौकाविहार आत्म-तुलना आ सांस्कृतिक स्मृतिक स्थल बनैत अछि।

प्रश्न 2972. “टेम्स नदीमे नौकाविहार”क मूल महत्व की अछि?
क. यात्रा-वर्णनकेँ विकास, नदी-प्रबंधन, स्मृति आ छठि-संस्कृतिसँ जोड़ब
ख. केवल टिकट विवरण
ग. पृष्ठ संख्या
घ. नावक रंग
उत्तर: क. यात्रा-वर्णनकेँ विकास, नदी-प्रबंधन, स्मृति आ छठि-संस्कृतिसँ जोड़ब
व्याख्या: कविता प्रवास-वृत्तान्तसँ सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन बनैत अछि।

खण्ड ३०३ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया आ अजीत कुमार झा: प्रेम, बंधन आ दहेज

प्रश्न 2973. अजय सरवैयाक कविता “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ”मे प्रेमिका/प्रेमी संवाद कोन तनाव बनबैत अछि?
क. आकर्षण, क्रोध, दूरी आ बंधनक मिश्रित सम्बन्ध
ख. केवल युद्ध
ग. कृषि-समस्या
घ. राजनीतिक भाषण
उत्तर: क. आकर्षण, क्रोध, दूरी आ बंधनक मिश्रित सम्बन्ध
व्याख्या: कविता प्रेममे विरोधी भावसभक सहअस्तित्व देखबैत अछि।

प्रश्न 2974. “हम प्रतिभाक प्रेमी, ओ बंधनक” पंक्ति कोन द्वंद्व देखबैत अछि?
क. स्वतंत्र आकांक्षा बनाम सम्बन्ध/नियमक दबाव
ख. पूर्ण समानता
ग. व्यापार-बात
घ. नदी-वर्णन
उत्तर: क. स्वतंत्र आकांक्षा बनाम सम्बन्ध/नियमक दबाव
व्याख्या: कविता व्यक्तित्व आ सम्बन्धक तनाव व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 2975. अजयक कवितामे ऋतु आ पाबनि-तिहारक तुलना किएक अछि?
क. प्रेमक समय-भिन्नता आ जीवन-चक्रक भिन्नता बुझाबय लेल
ख. कृषि पंचांग बनाबय लेल
ग. पृष्ठ-सूची लेल
घ. विज्ञापन लेल
उत्तर: क. प्रेमक समय-भिन्नता आ जीवन-चक्रक भिन्नता बुझाबय लेल
व्याख्या: कविता समय, मौसम आ सम्बन्धक भिन्न लय देखबैत अछि।

प्रश्न 2976. “कतेक दिन धरि?” प्रश्न प्रेम-कवितामे कोन बेचैनी दैत अछि?
क. सम्बन्धक टिकाउपन आ प्रतीक्षाक अनिश्चितता
ख. पूर्ण समाधान
ग. हास्य
घ. सत्ताक आदेश
उत्तर: क. सम्बन्धक टिकाउपन आ प्रतीक्षाक अनिश्चितता
व्याख्या: दोहरायल प्रश्न प्रेमक अस्थिरता आ बेचैनी खोलैत अछि।

प्रश्न 2977. अजीत कुमार झाक दहेज-कवितामे घटकक आगमन ककर संकेत अछि?
क. विवाह-बाजार आ वर-मूल्य निर्धारणक प्रक्रिया
ख. शिक्षक आगमन
ग. नाट्य निर्देशक
घ. किसान सभा
उत्तर: क. विवाह-बाजार आ वर-मूल्य निर्धारणक प्रक्रिया
व्याख्या: घटक विवाहकेँ लेन-देनक मंचमे बदलैत अछि।

प्रश्न 2978. “भाइजीयोक मुँह चमिक रहल” पंक्ति दहेज-संदर्भमे की कहैत अछि?
क. वर-पक्षक बाजारू उत्सुकता आ आत्म-वस्तुकरण
ख. लज्जा मात्र
ग. भक्ति
घ. विदाई-दुख
उत्तर: क. वर-पक्षक बाजारू उत्सुकता आ आत्म-वस्तुकरण
व्याख्या: कविता वरकेँ वस्तु बनल देखबैत अछि।

प्रश्न 2979. मोल-तोल आ बोली लगेनाइ कोन अमानवीकरण अछि?
क. मानव विवाहकेँ बिक्री-क्रय जकाँ बना देब
ख. उदार दान
ग. प्रेमक विजय
घ. मुक्ति
उत्तर: क. मानव विवाहकेँ बिक्री-क्रय जकाँ बना देब
व्याख्या: दहेज व्यवस्था मनुष्यक मूल्यांकन माल-जकाँ करैत अछि।

प्रश्न 2980. “भै या बिकेलथि” पंक्ति दहेज-विमर्शक केन्द्रीय प्रहार किएक अछि?
क. वर स्वयं बाजारक वस्तु बनि गेल छथि
ख. वर विजयी राजा छथि
ग. दहेज नहि अछि
घ. कविता प्रशंसा करैत अछि
उत्तर: क. वर स्वयं बाजारक वस्तु बनि गेल छथि
व्याख्या: कविता दहेजक नैतिक दिवालियापन तीखा करैत अछि।

प्रश्न 2981. अजय आ अजीत दुनू कवितामे सम्बन्धक कोन साझा प्रश्न अछि?
क. मानवीय सम्बन्धमे स्वतंत्रता, मूल्य आ बंधनक प्रश्न
ख. केवल मौसम
ग. केवल भोजन
घ. केवल खेल
उत्तर: क. मानवीय सम्बन्धमे स्वतंत्रता, मूल्य आ बंधनक प्रश्न
व्याख्या: एक प्रेम-संबंधक तनाव देखबैत अछि, दोसर विवाह-बाजारक हिंसा।

प्रश्न 2982. एहि खण्डक साहित्यिक उपयोगिता की अछि?
क. प्रेम आ विवाह संस्था पर आधुनिक मैथिली/अनूदित कविताक आलोचनात्मक दृष्टि पढ़ब
ख. केवल नाम रटब
ग. पृष्ठ पूछब
घ. विज्ञापन पढ़ब
उत्तर: क. प्रेम आ विवाह संस्था पर आधुनिक मैथिली/अनूदित कविताक आलोचनात्मक दृष्टि पढ़ब
व्याख्या: दुनू कविता सम्बन्धक भीतरक सत्ता-तनाव खोलैत अछि।

खण्ड ३०४ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा, अबू सुथार आ अनुवाद-संवाद

प्रश्न 2983. आचारण झाक संस्कृत आख्यानमे अष्टावक्र जनकपुर किएक आबैत छथि?
क. जनक “विदेह” किएक कहल जाइत छथि से बुझबाक प्रसंगमे
ख. व्यापार करय
ग. नाटक देखय
घ. सैनिक भर्ती लेल
उत्तर: क. जनक “विदेह” किएक कहल जाइत छथि से बुझबाक प्रसंगमे
व्याख्या: आख्यान विदेह नामक आध्यात्मिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 2984. अष्टावक्रक वक्र शरीर देखि लोकक हँसनाइ कोन अज्ञान देखबैत अछि?
क. बाह्य शरीर देखब, आत्मा नहि चिन्हब
ख. सच्चा ज्ञान
ग. अतिथि-सत्कार
घ. शास्त्रार्थ विजय
उत्तर: क. बाह्य शरीर देखब, आत्मा नहि चिन्हब
व्याख्या: अष्टावक्र लोकक बाह्य-दृष्टिक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 2985. जनक द्वारा जल-पात्र सिर पर राखि राजभवन घुमाबयक परीक्षा किएक अछि?
क. ध्यान आ आसक्ति-विरक्ति समझेबाक लेल
ख. नृत्य प्रतियोगिता
ग. जल-व्यापार
घ. राजभवन सजावट
उत्तर: क. ध्यान आ आसक्ति-विरक्ति समझेबाक लेल
व्याख्या: जल न खसाबयक ध्यान संसार-दर्शनक बीच एकाग्रता देखबैत अछि।

प्रश्न 2986. अष्टावक्र राजभवन नहि देखलनि, जल पर ध्यान रहल — एकर अर्थ की अछि?
क. मन जकरा पर लागल, अनुभव सेहो ओतहि सीमित रहैत अछि
ख. राजभवन नहि छल
ग. जल अदृश्य छल
घ. जनक हारि गेलाह
उत्तर: क. मन जकरा पर लागल, अनुभव सेहो ओतहि सीमित रहैत अछि
व्याख्या: आख्यान मनक केन्द्रितता द्वारा विदेहत्व बुझबैत अछि।

प्रश्न 2987. “मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः” सूत्र एहि आख्यानमे कोना लागू होइत अछि?
क. बंधन आ मुक्ति मनक आसक्ति/एकाग्रतासँ जुड़ल अछि
ख. मन अप्रासंगिक अछि
ग. केवल देह कारण अछि
घ. सूत्रक अर्थ नहि
उत्तर: क. बंधन आ मुक्ति मनक आसक्ति/एकाग्रतासँ जुड़ल अछि
व्याख्या: जनक विदेह छथि कारण कर्म करितो मन भीतर मुक्त/स्थित अछि।

प्रश्न 2988. अबू सुथारक “गृहमोह”मे पहिल बरखा-गंध ककर स्मृति जगबैत अछि?
क. घर, माटि आ आत्मीय मिलनक संवेदना
ख. शहरक धुआँ
ग. युद्धक आवाज
घ. कारखाना
उत्तर: क. घर, माटि आ आत्मीय मिलनक संवेदना
व्याख्या: कविता बरखा-गंधसँ घरक मोह आ स्मृति खोलैत अछि।

प्रश्न 2989. बरखा, गाछ, मयूर, नव वधु आदिक बिम्ब “गृहमोह”मे कोन वातावरण बनबैत अछि?
क. ग्रामीण-प्रकृतिक जीवंत, उत्सवी आ स्मृतिमय वातावरण
ख. मरुभूमि
ग. कार्यालय
घ. युद्धक्षेत्र
उत्तर: क. ग्रामीण-प्रकृतिक जीवंत, उत्सवी आ स्मृतिमय वातावरण
व्याख्या: प्रकृति घरक आत्मीय विस्तार बनैत अछि।

प्रश्न 2990. गुजरातीसँ अंग्रेजी आ अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवादक उल्लेख कोन साहित्यिक संवाद देखबैत अछि?
क. बहुभाषिक सेतु द्वारा कविता मैथिली पाठक धरि पहुँचल
ख. अनुवाद असंभव
ग. भाषा-टूटन मात्र
घ. केवल मूल भाषा बंद
उत्तर: क. बहुभाषिक सेतु द्वारा कविता मैथिली पाठक धरि पहुँचल
व्याख्या: विदेह-सदेह भारतीय भाषासभक परस्पर परिचय करबैत अछि।

प्रश्न 2991. आचारण झाक संस्कृत आख्यान आ अबू सुथारक अनुवादित कविता संग राखब कोन सम्पादकीय व्यापकता देखबैत अछि?
क. संस्कृत परम्परा, भारतीय भाषा-संवाद आ मैथिली पाठक-विस्तार
ख. केवल एक विधा
ग. भाषिक संकीर्णता
घ. साहित्य-विरोध
उत्तर: क. संस्कृत परम्परा, भारतीय भाषा-संवाद आ मैथिली पाठक-विस्तार
व्याख्या: एकहि अंकमे दार्शनिक संस्कृत आख्यान आ अनूदित आधुनिक कविता मिलैत अछि।

प्रश्न 2992. एहि खण्डक मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. विदेह-सदेह परम्परा, दर्शन, प्रकृति-स्मृति आ बहुभाषिक अनुवाद कैं एक मंच पर आनैत अछि
ख. केवल सूचना-पत्र
ग. केवल विज्ञापन
घ. साहित्यक अभाव
उत्तर: क. विदेह-सदेह परम्परा, दर्शन, प्रकृति-स्मृति आ बहुभाषिक अनुवाद कैं एक मंच पर आनैत अछि
व्याख्या: आचारण झा आ अबू सुथारक पाठ सम्पादकीय वैविध्यक प्रमाण अछि।

खण्ड ३०५ : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभ: मैथिली गीत-संगीतक यात्रा

प्रश्न 2993. आभाष लाभक परिचयमे हुनका कोन रूपमे रेखांकित कएल गेल अछि?
क. मैथिली गीत-संगीतक आकाशमे ध्रुवतारा-जकाँ चमकैत गायक
ख. केवल नाटककार
ग. केवल चित्रकार
घ. केवल पत्रकार
उत्तर: क. मैथिली गीत-संगीतक आकाशमे ध्रुवतारा-जकाँ चमकैत गायक
व्याख्या: परिचय हुनकर दीर्घकालीन गायन-उपस्थिति आ लोकप्रियता पर बल दैत अछि।

प्रश्न 2994. आभाष लाभ अपन गीत-संगीतक आरम्भ ककरा सँ जोड़ैत छथि?
क. बचपनसँ जनकपुर आ आसपासक मंचसँ
ख. केवल विदेश प्रवाससँ
ग. सरकारी नौकरीसँ
घ. चित्रकला प्रदर्शनीसँ
उत्तर: क. बचपनसँ जनकपुर आ आसपासक मंचसँ
व्याख्या: उन्हें स्मरण अछि जे बाल्यावस्थासँ मंच हुनका नहि छुटैत छल।

प्रश्न 2995. हुनकर पहिल रेकर्डेड गीत कोन प्रसंगमे आयल?
क. नेपाल सँ निकलल अशोक चौधरीक मैथिली कैसेट “पानस”मे
ख. रेडियो नाटकमे
ग. विद्यालयी पाठ्यपुस्तकमे
घ. अंग्रेजी एलबममे
उत्तर: क. नेपाल सँ निकलल अशोक चौधरीक मैथिली कैसेट “पानस”मे
व्याख्या: साक्षात्कारमे पहिल रेकॉर्डेड गीतक आधार मैथिली कैसेट “पानस” कहल गेल।

प्रश्न 2996. मैथिली गीत-संगीतक स्थिति पर आभाष लाभक मुख्य चिन्ता की अछि?
क. नव प्रतिभा अपेक्षित मात्रामे नहि आबि रहल अछि
ख. प्रतिभाक अतिशय भीड़ अछि
ग. संगीत पूर्णतः समाप्त भऽ गेल
घ. केवल वाद्ययंत्रक अभाव अछि
उत्तर: क. नव प्रतिभा अपेक्षित मात्रामे नहि आबि रहल अछि
व्याख्या: ओ स्थिति कैं संतोषजनक नहि मानैत नव प्रतिभाक कमी पर ध्यान देलनि।

प्रश्न 2997. प्रविधि परफेक्ट भेलासँ संगीतक्षेत्रमे कोन समस्या बढ़ल कहल गेल?
क. उत्पादनमे बेसी खर्चक दबाव
ख. गीतक अर्थ समाप्त
ग. भाषा बदलि गेल
घ. मंच बन्द भऽ गेल
उत्तर: क. उत्पादनमे बेसी खर्चक दबाव
व्याख्या: तकनीकी सुधारसँ व्यावसायिक लागत बढ़ल, से हुनकर व्यावहारिक टिप्पणी अछि।

प्रश्न 2998. मैथिली संगीतमे आजीविका सम्भव अछि कि नहि — आभाषक उत्तरक सार की अछि?
क. मेहनत आ नीक काज होए तँ सम्भव अछि
ख. कतहु सम्भव नहि
ग. केवल शौक रहि सकैत अछि
घ. सरकार बिना गीत नहि गायल जाए
उत्तर: क. मेहनत आ नीक काज होए तँ सम्भव अछि
व्याख्या: ओ मैथिलीक क्षेत्र पैघ बतबैत नीक काजकैं सफलता-सूत्र मानैत छथि।

प्रश्न 2999. “रे छोड़ा तोरा बज्जर खसतौ”क बिक्रीक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मैथिली कैसेट-बाजारक सम्भावना प्रमाणित करबाक लेल
ख. पृष्ठ-संख्या बतबय लेल
ग. गीत असफल छल से देखाबय लेल
घ. कवि-परिचय हटाबय लेल
उत्तर: क. मैथिली कैसेट-बाजारक सम्भावना प्रमाणित करबाक लेल
व्याख्या: बड़ी बिक्रीक उदाहरण मैथिली संगीतक आर्थिक सामर्थ्य देखबैत अछि।

प्रश्न 3000. “गीत घरघर के”क दीर्घ बिक्री कोन संकेत दैत अछि?
क. लोकप्रिय मैथिली संगीतक टिकाउ श्रोता-वर्ग अछि
ख. श्रोता नहि रहल
ग. भाषा अप्रासंगिक अछि
घ. केवल एक दिनक प्रभाव छल
उत्तर: क. लोकप्रिय मैथिली संगीतक टिकाउ श्रोता-वर्ग अछि
व्याख्या: दीर्घकाल धरिक बिक्री गीतक स्थायी लोकप्रियता देखबैत अछि।

प्रश्न 3001. आभाष लाभक दृष्टिमे सफल मैथिली संगीतक मूल शर्त की अछि?
क. काज नीक होएबाक चाही
ख. केवल नाम प्रसिद्ध हो
ग. भाषा छोड़ि देब
घ. मंच टारि देब
उत्तर: क. काज नीक होएबाक चाही
व्याख्या: उपलब्धि बजारसँ अधिक गुणवत्ता आ श्रम पर निर्भर कहल गेल।

प्रश्न 3002. एहि साक्षात्कारक पहिल भाग मैथिली संगीतबारे कोन निष्कर्ष दैत अछि?
क. मैथिली संगीतमे संकट सेहो अछि आ सम्भावना सेहो
ख. मैथिली संगीत पूर्ण मृत अछि
ग. कोनो व्यवसायिक सम्भावना नहि
घ. गीत केवल अभिजात लेल अछि
उत्तर: क. मैथिली संगीतमे संकट सेहो अछि आ सम्भावना सेहो
व्याख्या: साक्षात्कार कमी, खर्च, बाजार आ मेहनत चारू पक्ष केँ साथे देखैत अछि।

खण्ड ३०६ : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभ: मौलिकता, पैरोडी आ रिमिक्स

प्रश्न 3003. पैरोडी गीतक प्रभावबारे आभाष लाभक दृष्टि की अछि?
क. पैरोडी मौलिक गीत-संगीतकेँ कमजोर करैत अछि
ख. पैरोडी सदैव मौलिकता बढ़बैत अछि
ग. पैरोडीक कोनो प्रभाव नहि
घ. पैरोडी केवल शास्त्रीय संगीत अछि
उत्तर: क. पैरोडी मौलिक गीत-संगीतकेँ कमजोर करैत अछि
व्याख्या: हुनकर अनुसार पैरोडी मौलिक सर्जकक मनोबल तोड़ैत अछि।

प्रश्न 3004. मैथिलीमे पैरोडीकेँ किएक अनावश्यक मानल गेल?
क. क्योंकि मैथिलीमे अपन मौलिक संगीतक अभाव नहि रहल अछि
ख. क्योंकि मैथिलीमे गीत नहि अछि
ग. क्योंकि श्रोता नहि छथि
घ. क्योंकि मंच उपलब्ध नहि अछि
उत्तर: क. क्योंकि मैथिलीमे अपन मौलिक संगीतक अभाव नहि रहल अछि
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे जहाँ अपन गीत-संगीत हो, ओतए नक़ल पर निर्भरता उचित नहि।

प्रश्न 3005. पैरोडीसँ छुटकारा लेल श्रोताक भूमिका की बताओल गेल?
क. पैरोडी कैसेट किनबासँ परहेज आ मौलिक गीतक समर्थन
ख. सभ गीत छोड़ि देब
ग. केवल विदेशी गीत सुनब
घ. संगीतकेँ अपराध मानब
उत्तर: क. पैरोडी कैसेट किनबासँ परहेज आ मौलिक गीतक समर्थन
व्याख्या: आभाष लाभ श्रोता-चयनकेँ सांस्कृतिक सुधारक साधन मानैत छथि।

प्रश्न 3006. संचार माध्यमक भूमिका पैरोडी-विमर्शमे की अछि?
क. ओहन गीत बजाबयसँ बचब, जे मौलिकता कमजोर करैत अछि
ख. पैरोडीकेँ अनिवार्य बजाउ
ग. गीतक अर्थ नहि देखू
घ. माध्यम निष्क्रिय रहू
उत्तर: क. ओहन गीत बजाबयसँ बचब, जे मौलिकता कमजोर करैत अछि
व्याख्या: रेडियो/मीडिया द्वारा चयन संगीत-संस्कृतिक दिशा तय करैत अछि।

प्रश्न 3007. रिमिक्सबारे आभाष लाभक मत पैरोडीसँ अलग किएक अछि?
क. रिमिक्स समयानुकूल आधुनिकीकरण भऽ सकैत अछि, जँ संस्कार नष्ट नहि हो
ख. रिमिक्सकेँ पूर्णतः निषिद्ध मानैत छथि
ग. रिमिक्स आ पैरोडी एके अछि
घ. रिमिक्स भाषा-विरोधी अछि
उत्तर: क. रिमिक्स समयानुकूल आधुनिकीकरण भऽ सकैत अछि, जँ संस्कार नष्ट नहि हो
व्याख्या: ओ रिमिक्सक व्यावसायिक उपयोगिता स्वीकारैत छथि, मुदा संस्कार-सुरक्षा शर्त राखैत छथि।

प्रश्न 3008. “समाजक लेल गीत” आ “बाजारक लेल गीत” भेदक अर्थ की अछि?
क. सांस्कृतिक उत्तरदायित्व आ व्यावसायिकता दू अलग पक्ष छथि
ख. दूनू पूर्ण समान अछि
ग. समाजक गीत नहि होइत
घ. बाजार निरर्थक अछि
उत्तर: क. सांस्कृतिक उत्तरदायित्व आ व्यावसायिकता दू अलग पक्ष छथि
व्याख्या: साक्षात्कार संगीतक सामाजिक आ व्यापारिक प्रयोजन अलग करैत अछि।

प्रश्न 3009. लगभग साढ़े तीन सय रेकॉर्डेड गीतक उल्लेख ककर प्रमाण अछि?
क. आभाष लाभक सक्रिय आ व्यापक गायन-कार्यक प्रमाण
ख. गायन आरम्भ नहि भेल
ग. केवल एक गीत छल
घ. ओ मंच छोड़ि देलनि
उत्तर: क. आभाष लाभक सक्रिय आ व्यापक गायन-कार्यक प्रमाण
व्याख्या: रेकॉर्डेड गीतक संख्या हुनकर दीर्घ रचनात्मक श्रम देखबैत अछि।

प्रश्न 3010. आभाष लाभ कतेक भाषिक/फिल्मी क्षेत्रमे स्वर देलनि?
क. मैथिली आ भोजपुरी फिल्मसभमे सेहो
ख. केवल संस्कृत नाटकमे
ग. केवल मौन चलचित्रमे
घ. केवल अंग्रेजी एल्बममे
उत्तर: क. मैथिली आ भोजपुरी फिल्मसभमे सेहो
व्याख्या: साक्षात्कारमे मैथिली फिल्म आ भोजपुरी फिल्म दुनू प्रसंग आबैत अछि।

प्रश्न 3011. विदेशी स्टेज शोसभक उल्लेख कोन बात देखबैत अछि?
क. मैथिली/क्षेत्रीय गायनक प्रवासी पहुँच
ख. गीत केवल जनकपुरमे सीमित अछि
ग. कला कतहु नहि गेल
घ. विदेशी श्रोता अप्रासंगिक छथि
उत्तर: क. मैथिली/क्षेत्रीय गायनक प्रवासी पहुँच
व्याख्या: कतार, दुबई, मलेशिया आदि प्रसंग गायनक विस्तृत मंच देखबैत अछि।

प्रश्न 3012. एहि खण्डमे आभाष लाभक संगीत-दर्शनक सार की अछि?
क. मौलिकता, गुणवत्ता, संस्कार आ आधुनिक बजारक संतुलन
ख. केवल पैरोडीक समर्थन
ग. व्यवसायक पूर्ण निषेध
घ. परम्पराक पूर्ण त्याग
उत्तर: क. मौलिकता, गुणवत्ता, संस्कार आ आधुनिक बजारक संतुलन
व्याख्या: ओ मौलिक संगीत बचाबैत आधुनिकता आ बाजारक उपयोग चाहैत छथि।

खण्ड ३०७ : विदेह-सदेह १ — डॉ. राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श: मधेसक संस्कृति

प्रश्न 3013. डॉ. राम दयाल राकेश छठि पावनिकेँ मधेसक संस्कृति किएक मानैत छथि?
क. तैयारी, प्रसाद, गीत, धुन आ सामूहिक व्यवहारमे मधेसी सांस्कृतिक स्वरूप देखबाक कारण
ख. केवल शहरक खेल मानबाक कारण
ग. पुस्तकालयक कार्यक्रम मानबाक कारण
घ. केवल व्यापारिक मेळा होएबाक कारण
उत्तर: क. तैयारी, प्रसाद, गीत, धुन आ सामूहिक व्यवहारमे मधेसी सांस्कृतिक स्वरूप देखबाक कारण
व्याख्या: साक्षात्कारमे छठिक हर सामग्री आ आचरणमे मधेसक संस्कृति देखल गेल।

प्रश्न 3014. छठि तैयारीक एक मास पहिले आरम्भ होयब कोन बात देखबैत अछि?
क. पावनिक गहन अनुशासन आ सामुदायिक तैयारी
ख. आकस्मिक आयोजन
ग. मनोरंजन मात्र
घ. यादृच्छिक भोज
उत्तर: क. पावनिक गहन अनुशासन आ सामुदायिक तैयारी
व्याख्या: दीर्घ तैयारी पावनिक सामाजिक-धार्मिक गंभीरता देखबैत अछि।

प्रश्न 3015. छठिक प्रसाद आ सामग्री पर चर्चा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई पावनक संस्कारिक आ स्थानीय सांस्कृतिक रूप उघारैत अछि
ख. प्रसाद अप्रासंगिक अछि
ग. सामग्री केवल सजावट अछि
घ. भोजनक कोनो अर्थ नहि
उत्तर: क. ई पावनक संस्कारिक आ स्थानीय सांस्कृतिक रूप उघारैत अछि
व्याख्या: प्रसादसँ लऽ सामग्री धरि पावनक लोक-सांस्कृतिक पहचान बनैत अछि।

प्रश्न 3016. छठि पावनिकेँ “लोकतांत्रिक पावनि” कहबाक आधार की अछि?
क. खुला स्थानमे सामूहिक मनाओल जाएब आ भेदभावक अभाव
ख. एकान्त घरमे मनाओल जाएब
ग. केवल उच्चवर्गीय आयोजन
घ. राजकीय आदेश मात्र
उत्तर: क. खुला स्थानमे सामूहिक मनाओल जाएब आ भेदभावक अभाव
व्याख्या: साक्षात्कार छठिमे जाति-धन-ऊँच-नीचक विभाजन नदेखबाक बात कहैत अछि।

प्रश्न 3017. सूर्य-पूजाक कारण छठिक गरिमा किएक विशेष कहल गेल?
क. सूर्य सभ पर समान रोशनी दैत छथि, पावन सेहो समानता सिखबैत अछि
ख. सूर्य केवल एक जातिक छथि
ग. सूर्य अन्हार फैलाबैत छथि
घ. सूर्य-संबंध नहि अछि
उत्तर: क. सूर्य सभ पर समान रोशनी दैत छथि, पावन सेहो समानता सिखबैत अछि
व्याख्या: सूर्यक समदर्शिता पावनिक लोकतांत्रिक अर्थसँ जोड़ल गेल।

प्रश्न 3018. छठि ककर मनोकामना सँ जुड़ल कहल गेल?
क. परिवारक सुख-समृद्धि आ रोग-व्याधिसँ रक्षा
ख. युद्ध-विजय मात्र
ग. व्यापार-वृद्धि मात्र
घ. नाटक-प्रदर्शन मात्र
उत्तर: क. परिवारक सुख-समृद्धि आ रोग-व्याधिसँ रक्षा
व्याख्या: साक्षात्कारमे स्वास्थ्य, समृद्धि आ पारिवारिक मंगलक पक्ष उभरैत अछि।

प्रश्न 3019. भोर-साँझक सूर्यकिरणक स्वास्थ्य-संदर्भ की अछि?
क. किरण चर्मरोग आ शरीरक कीटाणु-विनाशसँ जोड़ि देखल गेल
ख. किरणक कोनो प्रभाव नहि
ग. किरण केवल अन्हार करैत अछि
घ. स्वास्थ्य-विषय उपस्थित नहि
उत्तर: क. किरण चर्मरोग आ शरीरक कीटाणु-विनाशसँ जोड़ि देखल गेल
व्याख्या: साक्षात्कार लोकविश्वास आ स्वास्थ्य-भावना दुनू प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 3020. महिला द्वारा आँचर पर नटुवा नचेनाइ कोन भावमे देखल गेल?
क. मनोकामना पूर्ण भेलापर श्रद्धा आ कबूलाक रूपमे
ख. केवल उपहास
ग. व्यापारिक विज्ञापन
घ. नृत्य-प्रतियोगिता
उत्तर: क. मनोकामना पूर्ण भेलापर श्रद्धा आ कबूलाक रूपमे
व्याख्या: राकेशजी एकरा श्रद्धा-संबंधी कृत्यक रूपमे बुझबैत छथि।

प्रश्न 3021. छठि घाट पर ढोल/डुगडुगी बजेनिहार समुदायबारे कथनक सार की अछि?
क. ओ अपन जातीय-सांस्कृतिक परम्परा बचबैत छथि आ घाटक रौनक बढ़बैत छथि
ख. ओ पावनसँ असंबंधित छथि
ग. ढोलक आवाज निषिद्ध अछि
घ. संगीत उपस्थित नहि अछि
उत्तर: क. ओ अपन जातीय-सांस्कृतिक परम्परा बचबैत छथि आ घाटक रौनक बढ़बैत छथि
व्याख्या: ढोल-पीपहीक ध्वनि पावनिक लोक-रस बनबैत अछि।

प्रश्न 3022. अंग्रेजी बाजा बनाम ढोल-पीपही तुलना कोन सांस्कृतिक तर्क दैत अछि?
क. लोक वाद्य-संगीतमे संस्कृति केर असली झलक बेसी देखाइत अछि
ख. अंग्रेजी बाजा मात्र संस्कृति अछि
ग. लोक वाद्यक कोनो अर्थ नहि
घ. संगीत हटा देबाक चाही
उत्तर: क. लोक वाद्य-संगीतमे संस्कृति केर असली झलक बेसी देखाइत अछि
व्याख्या: साक्षात्कार लोकवाद्यक सांस्कृतिक आत्मीयता पर बल दैत अछि।

खण्ड ३०८ : विदेह-सदेह १ — छठि: सूर्य, जल आ लोकतंत्र

प्रश्न 3023. छठि माता या छठि परमेश्वरी नामक व्याख्यामे उषा केना आयल अछि?
क. सूर्यक अर्थ उषा आ उषा भगवतीरूपेँ पूजित होयबाक कारण
ख. उषा असंबद्ध अछि
ग. केवल नदीक नाम अछि
घ. एकटा बाजाक नाम अछि
उत्तर: क. सूर्यक अर्थ उषा आ उषा भगवतीरूपेँ पूजित होयबाक कारण
व्याख्या: राकेशजी सूर्य-उषा-देवी सम्बन्ध द्वारा नामक लोकधार्मिक अर्थ खोलैत छथि।

प्रश्न 3024. महाभारत-सन्दर्भमे छठि प्रसंग ककरा सँ जोड़ल गेल?
क. कुन्ती द्वारा छठि पावनि करबाक उल्लेखसँ
ख. दुर्योधनक राज्याभिषेकसँ
ग. भीष्मक शरशय्यासँ
घ. कृष्णक बाललीलासँ
उत्तर: क. कुन्ती द्वारा छठि पावनि करबाक उल्लेखसँ
व्याख्या: साक्षात्कारमे किछु शास्त्रीय उल्लेखक सम्भावना बताओल गेल।

प्रश्न 3025. दिनकर आ जलक सम्बन्ध किएक गहिर कहल गेल?
क. जल बिना सूर्यक पूजा/अर्घ्य सम्भव नहि मानल गेल
ख. जल सूर्यक विरोधी अछि
ग. सूर्यपूजामे जल निषिद्ध अछि
घ. दिनकर केवल अग्नि छथि
उत्तर: क. जल बिना सूर्यक पूजा/अर्घ्य सम्भव नहि मानल गेल
व्याख्या: छठि विधिमे जल-अर्घ्य केंद्रीय भूमिका निभबैत अछि।

प्रश्न 3026. जलाशय नहि भेलापर घरमे खधिया खनि जल राखबाक बात की देखबैत अछि?
क. विधिक मूल भाव जल-अर्घ्य अछि, स्थानानुसार व्यवस्था बनि सकैत अछि
ख. पावन असंभव अछि
ग. जल अप्रासंगिक अछि
घ. घरमे पूजा निषिद्ध अछि
उत्तर: क. विधिक मूल भाव जल-अर्घ्य अछि, स्थानानुसार व्यवस्था बनि सकैत अछि
व्याख्या: लोकव्यवहार पावनिक आवश्यक तत्व कें परिस्थिति अनुसार पूरा करैत अछि।

प्रश्न 3027. छठि पावनिक लोकतांत्रिक अर्थ लोकतंत्र/गणतंत्र विमर्शसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. जनसमानता व्यवहारमे उतरल देखबैत अछि, जकरा राज्य-समाज सीखि सकैत अछि
ख. केवल राजदरबारक विधि अछि
ग. जनता अनुपस्थित अछि
घ. लोकतंत्रक विरोध अछि
उत्तर: क. जनसमानता व्यवहारमे उतरल देखबैत अछि, जकरा राज्य-समाज सीखि सकैत अछि
व्याख्या: राकेशजी छठिक समता-भावकेँ राजनीतिक समाज लेल सीख मानैत छथि।

प्रश्न 3028. गरीब सँ धनीक तक समान ढंगसँ मनाओल जाएब कोन मूल्य स्थापित करैत अछि?
क. सामाजिक समानता आ सामुदायिक साझेदारी
ख. अलगाव
ग. विलासिता मात्र
घ. अनुष्ठानक बंदिश
उत्तर: क. सामाजिक समानता आ सामुदायिक साझेदारी
व्याख्या: छठि पावनि आर्थिक श्रेणी कें पाछाँ छोड़ि सामूहिकता बनबैत अछि।

प्रश्न 3029. मधेसी-पहाड़ी, दलित-गैरदलित, गरीब-धनी भेदक उल्लेख किएक आयल अछि?
क. छठिक समता-धर्मक प्रकाशमे समकालीन सामाजिक भेदभावक आलोचना लेल
ख. भेदभावक समर्थन लेल
ग. पावन हटाबय लेल
घ. केवल जाति-सूची बनाबय लेल
उत्तर: क. छठिक समता-धर्मक प्रकाशमे समकालीन सामाजिक भेदभावक आलोचना लेल
व्याख्या: साक्षात्कार पावनिक समानता सँ समाजक असमानता पर प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 3030. “नवका नेपाल” बनबैत नेतागण छठिसँ की सीखि सकैत छथि?
क. समानुपातिक, समतामूलक आ सामूहिक व्यवहार
ख. भेदभाव बढ़ाबय
ग. लोकधर्म उपेक्षा
घ. राजनीति अलगाव
उत्तर: क. समानुपातिक, समतामूलक आ सामूहिक व्यवहार
व्याख्या: राकेशजी छठिक व्यवहारिक लोकतंत्रकेँ राजनीतिक आदर्शसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 3031. छठिक सामूहिक खुला स्थल पर आयोजन पावनिक केन्द्रीय शक्ति किएक अछि?
क. ई निजी पूजा केँ सार्वजनिक समुदाय-संस्कारमे बदलैत अछि
ख. एकान्त अनिवार्य करैत अछि
ग. समाज हटबैत अछि
घ. घरबन्द अनुष्ठान मात्र अछि
उत्तर: क. ई निजी पूजा केँ सार्वजनिक समुदाय-संस्कारमे बदलैत अछि
व्याख्या: खुला स्थल पावनिक जनतांत्रिक स्वरूप उजागर करैत अछि।

प्रश्न 3032. राम दयाल राकेशक छठि-विमर्शक सार की अछि?
क. लोक-संस्कृति, स्वास्थ्य-विश्वास, जल-सूर्य प्रतीक आ लोकतांत्रिक समता केर संयुक्त विश्लेषण
ख. केवल तिथि-गणना
ग. केवल भोजन-सूची
घ. केवल निजी कथा
उत्तर: क. लोक-संस्कृति, स्वास्थ्य-विश्वास, जल-सूर्य प्रतीक आ लोकतांत्रिक समता केर संयुक्त विश्लेषण
व्याख्या: साक्षात्कार छठिक बहुस्तरीय सांस्कृतिक अर्थ प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड ३०९ : विदेह-सदेह १ — शिवप्रसाद यादवक मायानन्द मिश्र-साक्षात्कार: आरम्भ

प्रश्न 3033. साक्षात्कारक आरम्भमे भैरवा तालाबक वर्णन किएक प्रभावी अछि?
क. स्थान, स्मृति आ वातावरणक जीवंत पृष्ठभूमि बनबैत अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या देबाक लेल
ग. साक्षात्कारसँ असंबंधित विज्ञापन
घ. भोजन-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थान, स्मृति आ वातावरणक जीवंत पृष्ठभूमि बनबैत अछि
व्याख्या: स्थानीय दृश्य साक्षात्कारकेँ सांस्कृतिक-भौगोलिक धरातल दैत अछि।

प्रश्न 3034. शिवप्रसाद यादव मायानन्द, महेन्द्र आ धीरेन्द्रक आगमनकेँ कोना चित्रित करैत छथि?
क. मिथिलाक त्रिपूर्ति, सौम्य ललाट, चानन, पाग आ शुभागमनक आदरभरा दृश्य
ख. अज्ञात यात्रु रूपमे
ग. व्यापारी दल रूपमे
घ. राजनीतिक जुलूस रूपमे
उत्तर: क. मिथिलाक त्रिपूर्ति, सौम्य ललाट, चानन, पाग आ शुभागमनक आदरभरा दृश्य
व्याख्या: वर्णन अतिथि-सत्कार आ साहित्यिक श्रद्धा दुनू व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 3035. “गुरुवर” सम्बोधन साक्षात्कारक स्वरतत्व की बनबैत अछि?
क. आदर, आत्मीयता आ शिष्यवत् संवाद
ख. कटु विरोध
ग. दूरस्थ रिपोर्टिंग
घ. व्यंग्य मात्र
उत्तर: क. आदर, आत्मीयता आ शिष्यवत् संवाद
व्याख्या: साक्षात्कार शुष्क प्रश्नोत्तर नहि, आदरपूर्ण साहित्यिक भेंट बनैत अछि।

प्रश्न 3036. मायानन्द मिश्र “मिथि-मालिनी” लेल कोन सुझाव देलनि?
क. स्थापित लेखक संग स्थानीय लेखक-मंडल आ स्थानीय उपभाषा कैं प्रोत्साहन
ख. केवल बाहरक लेखक छापू
ग. स्थानीय भाषा हटाउ
घ. रचना बन्द करू
उत्तर: क. स्थापित लेखक संग स्थानीय लेखक-मंडल आ स्थानीय उपभाषा कैं प्रोत्साहन
व्याख्या: ओ स्थानीयता आ संगठनात्मक भावनाकैं पत्रिका-विकासक आधार मानैत छथि।

प्रश्न 3037. स्थानीय उपभाषाक प्रकाशनक आग्रहक साहित्यिक अर्थ की अछि?
क. मैथिली क्षेत्रक आंतरिक भाषिक विविधता कैं सम्मान देब
ख. भाषा-संकीर्णता
ग. साहित्यक अवमूल्यन
घ. छपाइ रोको
उत्तर: क. मैथिली क्षेत्रक आंतरिक भाषिक विविधता कैं सम्मान देब
व्याख्या: मायानन्दजी साहित्यक स्थानीय आधार आ भाषिक वैविध्यक पक्षधर देखाइत छथि।

प्रश्न 3038. मिथिला परिषद् सम्मान पर मायानन्द मिश्रक प्रतिक्रिया कतेक विनम्र अछि?
क. स्वयंकैं मैथिलीक सिपाही कहैत, सम्मानकैं स्नेह-भाव मानलनि
ख. स्वयंकैं सेनापति घोषित कएलनि
ग. सम्मान अस्वीकार कएलनि
घ. मैथिलीसँ दूरी बनौलनि
उत्तर: क. स्वयंकैं मैथिलीक सिपाही कहैत, सम्मानकैं स्नेह-भाव मानलनि
व्याख्या: ओ निजी गौरव कैं संस्था आ पाठकक स्नेहसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 3039. “सिपाही” रूपक मायानन्द मिश्रक आत्मधारणा कोना व्यक्त करैत अछि?
क. सेवा, निष्ठा आ साहित्यिक कर्मशीलता
ख. सत्ता-लिप्सा
ग. युद्धक हिंसा मात्र
घ. व्यापारिक पहचान
उत्तर: क. सेवा, निष्ठा आ साहित्यिक कर्मशीलता
व्याख्या: सिपाही शब्द मैथिलीसेवक विनम्रता आ प्रतिबद्धता देखबैत अछि।

प्रश्न 3040. साक्षात्कारमे गृह-आँगन सोहावन होयबाक प्रसंग साहित्यिक माहौल कोना बनबैत अछि?
क. लेखक-भेंटकैं पारिवारिक, सांस्कृतिक उत्सव बनबैत अछि
ख. केवल घरक मरम्मत
ग. कथा-विच्छेद
घ. हास्य-विनोद मात्र
उत्तर: क. लेखक-भेंटकैं पारिवारिक, सांस्कृतिक उत्सव बनबैत अछि
व्याख्या: साक्षात्कार निजी स्थानकैं साहित्यिक सभागारमे बदलैत अछि।

प्रश्न 3041. मायानन्द मिश्रक प्रारम्भिक उत्तर सभमे कोन दृष्टि उभरैत अछि?
क. समावेशी, स्थानीयतापरक आ विनम्र साहित्य-दृष्टि
ख. केवल आत्मप्रशंसा
ग. स्थानीयता-विरोध
घ. भाषा-विमुखता
उत्तर: क. समावेशी, स्थानीयतापरक आ विनम्र साहित्य-दृष्टि
व्याख्या: पत्रिका, सम्मान आ सेवा प्रसंगमे समान भाव-विनम्रता देखाइत अछि।

प्रश्न 3042. एहि साक्षात्कारक आरम्भक मुख्य साहित्यिक महत्व की अछि?
क. व्यक्तित्व, स्थान, परम्परा आ मैथिलीसेवाक एक साथ उद्घाटन
ख. केवल नाम-सूची
ग. भ्रमण-विज्ञापन
घ. पृष्ठ-क्रम
उत्तर: क. व्यक्तित्व, स्थान, परम्परा आ मैथिलीसेवाक एक साथ उद्घाटन
व्याख्या: आरम्भ संवाद कैं जीवनी-संस्कृति आ विचारक संग जोड़ि दैत अछि।

खण्ड ३१० : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्र: लेखन-प्रेरणा आ शिक्षा

प्रश्न 3043. मायानन्द मिश्रक लेखन-प्रेरणा ककरा सँ जुड़ल बताओल गेल?
क. सुपौलमे पं. रामकृष्ण झा “किसुन” द्वारा स्थापित मिथिला पुस्तकालयक नियमित अध्ययनसँ
ख. सैनिक प्रशिक्षणसँ
ग. व्यापारिक कार्यालयसँ
घ. खेल-कूदसँ
उत्तर: क. सुपौलमे पं. रामकृष्ण झा “किसुन” द्वारा स्थापित मिथिला पुस्तकालयक नियमित अध्ययनसँ
व्याख्या: साक्षात्कारमे पुस्तकालय-पठन हुनकर लेखनक आरम्भिक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 3044. मिथिला पुस्तकालयमे नियमित पाठक रहबाक काल-संदर्भ की अछि?
क. सातम-आठम वर्गसँ मैट्रिक धरि, ४६-४७ सँ ४९-५० ई. धरिक अवधि
ख. केवल एक दिन
ग. सेवानिवृत्तिक बाद
घ. विदेश प्रवासक बीच
उत्तर: क. सातम-आठम वर्गसँ मैट्रिक धरि, ४६-४७ सँ ४९-५० ई. धरिक अवधि
व्याख्या: दीर्घ छात्र-जीवनक पठन सृजनशीलता कैं जन्म दैत अछि।

प्रश्न 3045. मैथिलीमे लेखन कब शुरू भेल कहल गेल?
क. १९४९ ई. सँ लेख लिखऽ लगलाह
ख. १९९९ ई. सँ
ग. बाल्यावस्था नहि
घ. केवल २००९ ई. मे
उत्तर: क. १९४९ ई. सँ लेख लिखऽ लगलाह
व्याख्या: साक्षात्कार लेखनक प्रारम्भिक समय स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3046. “भाङक लोटा”क उल्लेख मायानन्दजीक रचनात्मक यात्रा मे कोन स्थान रखैत अछि?
क. आरम्भिक लेख बादमे प्रकाशित होयबाक प्रमाण
ख. अप्रकाशित नाटक मात्र
ग. अनुवादक नाम
घ. संगीत वाद्य
उत्तर: क. आरम्भिक लेख बादमे प्रकाशित होयबाक प्रमाण
व्याख्या: ई आरम्भिक लेखनक प्रकाशन-इतिहासक संकेत अछि।

प्रश्न 3047. मंचसभ पर कविता पढ़ब ककर बाद शुरू भेल बताओल गेल?
क. मैथिली लेखन आरम्भ आ प्रकाशनक बाद
ख. एमबीए पढ़ला बाद
ग. रेडियो नौकरी छूटलाक बाद
घ. विदेश यात्रा बाद
उत्तर: क. मैथिली लेखन आरम्भ आ प्रकाशनक बाद
व्याख्या: लेखन सँ सार्वजनिक काव्य-पाठक ओर यात्रा देखाइत अछि।

प्रश्न 3048. हिन्दी आ मैथिली दुनू विषयमे एम.ए. करबाक प्रसंग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. द्विभाषिक साहित्यिक व्यक्तित्वक आधार देखबैत अछि
ख. भाषा-विरोध देखबैत अछि
ग. केवल नौकरी-फार्म
घ. चित्रकला प्रशिक्षण
उत्तर: क. द्विभाषिक साहित्यिक व्यक्तित्वक आधार देखबैत अछि
व्याख्या: मायानन्दजी हिन्दी-मैथिली दुनूमे कार्यरत साहित्यकार छथि।

प्रश्न 3049. पहिल एम.ए. हिन्दीमे किएक भेल?
क. सी.एम. कॉलेज दरभंगामे ओहि समय मैथिलीक प्रावधान नहि छल
ख. मैथिली नापसंद छल
ग. हिन्दी अनिवार्य नहि छल
घ. ओ पढ़ाइ छोड़ि देलनि
उत्तर: क. सी.एम. कॉलेज दरभंगामे ओहि समय मैथिलीक प्रावधान नहि छल
व्याख्या: संस्थागत व्यवस्था हुनका पहिले हिन्दी पढ़य बाध्य करैत अछि।

प्रश्न 3050. रेडियो, पटना मे काज करैत एम.ए. करबाक प्रसंग की देखबैत अछि?
क. नोकरीक संग अकादमिक साधना जारी रहल
ख. शिक्षा बन्द भऽ गेल
ग. रेडियो असंबंधित
घ. केवल अभिनय भेल
उत्तर: क. नोकरीक संग अकादमिक साधना जारी रहल
व्याख्या: हुनकर अध्ययन-धैर्य आ भाषिक लगन स्पष्ट होइत अछि।

प्रश्न 3051. हिन्दीमे प्रथम रचना “माटी के लोक: सोने की नया” ककरा पर आधारित कहल गेल?
क. कोसीक विभीषिका पर आधारित उपन्यास
ख. विवाह गीत पर
ग. बालकथा पर
घ. कंप्यूटर शिक्षा पर
उत्तर: क. कोसीक विभीषिका पर आधारित उपन्यास
व्याख्या: कोसी-संकट मिथिला/क्षेत्रीय यथार्थक गहन आधार दैत अछि।

प्रश्न 3052. मायानन्द मिश्रक प्रारम्भिक रचना-यात्राक सार की अछि?
क. पुस्तकालय-पठन, मैथिली लेखन, मंच-काव्य, द्विभाषिक अध्ययन आ कोसी-यथार्थक संगम
ख. अध्ययन-विरोध
ग. केवल बाजार-लेखन
घ. भाषा-विमुख जीवन
उत्तर: क. पुस्तकालय-पठन, मैथिली लेखन, मंच-काव्य, द्विभाषिक अध्ययन आ कोसी-यथार्थक संगम
व्याख्या: साक्षात्कार हुनकर साहित्यिक निर्माणक कई आधार देखबैत अछि।

खण्ड ३११ : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्र: ऐतिहासिक उपन्यास-दृष्टि

प्रश्न 3053. मायानन्द मिश्र अपन रचनाक मूल्यांकनबारे कोन सावधानी रखैत छथि?
क. लेखक स्वयं नहि, पाठक आ समीक्षक अधिक उचित मूल्यांकन करथि
ख. स्वयंकेँ अंतिम निर्णायक मानैत छथि
ग. समीक्षक निषिद्ध छथि
घ. पाठक अप्रासंगिक छथि
उत्तर: क. लेखक स्वयं नहि, पाठक आ समीक्षक अधिक उचित मूल्यांकन करथि
व्याख्या: ओ रचना-मूल्यांकनक जिम्मा पाठक-समीक्षक पर छोड़ैत विनम्रता देखबैत छथि।

प्रश्न 3054. हिन्दी जगतमे हुनकर कोन विधा विशेष चर्चित कहल गेल?
क. ऐतिहासिक उपन्यास
ख. बालगीत
ग. पत्र-संपादन
घ. यात्रा-टिकट
उत्तर: क. ऐतिहासिक उपन्यास
व्याख्या: साक्षात्कारमे हुनकर ऐतिहासिक उपन्यासक प्रशंसा उल्लेखित अछि।

प्रश्न 3055. “प्रथम शैलपुत्री” ककर काल-संदर्भसँ जुड़ल उपन्यास कहल गेल?
क. प्रागैतिहासिक कालीन उपन्यास
ख. आधुनिक दफ्तर-कथा
ग. भविष्य-विज्ञान
घ. केवल आत्मकथा
उत्तर: क. प्रागैतिहासिक कालीन उपन्यास
व्याख्या: एहि उपन्यासमे आदिम मानव सभ्यता-संदर्भ आयल।

प्रश्न 3056. “प्रथम शैलपुत्री”मे कोन व्यापक कथा-क्रम छैक?
क. भारतीय आदिम मानव सभ्यतासँ हड़प्पा/सैंधव सभ्यता धरिक विकास आ अंतक कथा
ख. केवल विवाह समारोह
ग. विद्यालय खेलकूद
घ. शहरक बाजार
उत्तर: क. भारतीय आदिम मानव सभ्यतासँ हड़प्पा/सैंधव सभ्यता धरिक विकास आ अंतक कथा
व्याख्या: साक्षात्कार उपन्यासकेँ सभ्यता-विकासक दीर्घ आख्यान बनबैत अछि।

प्रश्न 3057. डॉ. शंभु गुप्तक समीक्षाक उल्लेख की दर्शबैत अछि?
क. हुनकर कृतिपर अकादमिक/समीक्षकीय ध्यान
ख. कृतिपर चर्चा नहि
ग. समीक्षा अस्वीकार
घ. केवल मौखिक प्रशंसा
उत्तर: क. हुनकर कृतिपर अकादमिक/समीक्षकीय ध्यान
व्याख्या: जयपुर विश्वविद्यालयक समीक्षकक उल्लेख कृति-प्रतिष्ठा देखबैत अछि।

प्रश्न 3058. नामवर सिंह द्वारा श्रेष्ठ उपन्यास-कार्य मे “प्रथम शैलपुत्री” संकलनक संकेत किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. हिन्दी उपन्यास-परम्परामे कृति केर व्यापक मान्यता देखबैत अछि
ख. कृति अप्रकाशित छली
ग. लेखक अज्ञात रहलाह
घ. साहित्यसँ संबंध नहि
उत्तर: क. हिन्दी उपन्यास-परम्परामे कृति केर व्यापक मान्यता देखबैत अछि
व्याख्या: एकर उल्लेख कृति केँ राष्ट्रीय स्तरक बहससँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3059. “स्त्रीधन” कोन विषयपर आधारित कहल गेल?
क. मिथिलाक इतिहास पर
ख. समुद्री यात्रा पर
ग. यूरोपीय युद्ध पर
घ. बालक खेल पर
उत्तर: क. मिथिलाक इतिहास पर
व्याख्या: मायानन्दजीक ऐतिहासिक रुचि मिथिला-इतिहास धरि विस्तृत अछि।

प्रश्न 3060. “पुरोहित” अपन नीक लगैत अछि — ई कथन की बतबैत अछि?
क. लेखकक निजी लगाव आ आलोचनात्मक सावधानी साथ-साथ चलैत अछि
ख. ओ केवल एक कृति मानैत छथि
ग. बाकी कृतिसभ अस्वीकार
घ. कोनो निजी मत नहि
उत्तर: क. लेखकक निजी लगाव आ आलोचनात्मक सावधानी साथ-साथ चलैत अछि
व्याख्या: ओ अपनी पसंद व्यक्त करैत छथि मुदा मूल्यांकन पाठक-समीक्षक पर छोड़ैत छथि।

प्रश्न 3061. मायानन्द मिश्रक इतिहास-दृष्टि कोन स्तर पर फैलल अछि?
क. आदिम सभ्यता, सैंधव क्रम आ मिथिला-इतिहास धरि
ख. केवल समकालीन शहर
ग. केवल हास्य
घ. केवल गीत
उत्तर: क. आदिम सभ्यता, सैंधव क्रम आ मिथिला-इतिहास धरि
व्याख्या: हुनकर कृतिसूत्र इतिहासक अनेक कालखंड कैं छूइत अछि।

प्रश्न 3062. एहि खण्डक मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मायानन्द मिश्र ऐतिहासिक कल्पना, सभ्यता-बोध आ पाठक-समीक्षकक स्वतंत्र मूल्यांकनक पक्षधर छथि
ख. ओ इतिहाससँ असंबंधित छथि
ग. ओ कविता-विरोधी छथि
घ. ओ केवल पत्रकार छथि
उत्तर: क. मायानन्द मिश्र ऐतिहासिक कल्पना, सभ्यता-बोध आ पाठक-समीक्षकक स्वतंत्र मूल्यांकनक पक्षधर छथि
व्याख्या: साक्षात्कार हुनकर ऐतिहासिक उपन्यास-दृष्टि आ विनम्र आलोचना-बोध स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ३१२ : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्र: साहित्य, भाषा आ मूल्य

प्रश्न 3063. मायानन्द मिश्र नबका लोकक भाषा-बोधबारे की चिन्ता व्यक्त करैत छथि?
क. भाषाक प्रति मोह आ अपनत्व घटि रहल अछि
ख. भाषा-प्रेम बढ़ि रहल अछि
ग. समस्या केवल छपाइमे अछि
घ. भाषा अप्रासंगिक अछि
उत्तर: क. भाषाक प्रति मोह आ अपनत्व घटि रहल अछि
व्याख्या: साक्षात्कार पीढ़ीगत भाषा-उदासीनता पर तीखी टिप्पणी करैत अछि।

प्रश्न 3064. मैथिली बाजब छोड़ि देबाक प्रसंग ककर संकेत अछि?
क. घरेलू आ सामाजिक व्यवहारमे भाषिक दूरी बढ़ब
ख. मैथिली पूर्ण सुरक्षित अछि
ग. भाषा केवल पुस्तकमे रहय
घ. बोलचालक महत्व नहि
उत्तर: क. घरेलू आ सामाजिक व्यवहारमे भाषिक दूरी बढ़ब
व्याख्या: भाषा जीवित रहबाक मूल आधार व्यवहार अछि।

प्रश्न 3065. दलित साहित्यबारे हुनकर दृष्टि कोना संतुलित अछि?
क. दलितक लेखनमे आना जरूरी, मुदा समग्र साहित्यक विखंडन नहि होय
ख. दलित लेखनक विरोध
ग. साहित्यमे कोनो वर्ग नहि
घ. केवल वर्गीकरण पर्याप्त
उत्तर: क. दलितक लेखनमे आना जरूरी, मुदा समग्र साहित्यक विखंडन नहि होय
व्याख्या: ओ सहभागिता चाहैत छथि, पर खण्डित दृष्टिसँ सावधान करैत छथि।

प्रश्न 3066. स्त्री लेखकबारे हुनकर कथनक सार की अछि?
क. स्त्रीगण जरूर साहित्य लेखनमे आबथि, मुदा समग्र दृष्टि बनल रहय
ख. स्त्रीलेखन नहि होय
ग. केवल पुरुष लिखथि
घ. साहित्य विभाजन मात्र अछि
उत्तर: क. स्त्रीगण जरूर साहित्य लेखनमे आबथि, मुदा समग्र दृष्टि बनल रहय
व्याख्या: ओ स्त्री सहभागिता आ समग्र साहित्य-दृष्टि दुनू पर बल दैत छथि।

प्रश्न 3067. मैथिलीमे स्त्री लेखक कम होयबाक कारण की कहल गेल?
क. स्त्री-शिक्षा, सहभागिता आ सहृदयताक कमी
ख. प्रतिभाक अभाव
ग. भाषाक दोष
घ. छपाइ असंभव
उत्तर: क. स्त्री-शिक्षा, सहभागिता आ सहृदयताक कमी
व्याख्या: समस्या सामाजिक-शैक्षिक संरचना मे देखल गेल।

प्रश्न 3068. आठम अनुसूची आ यूपीएससी प्रसंगमे भाषा-विकासबारे हुनकर मत की अछि?
क. संवैधानिक मान्यता मात्र पर्याप्त नहि; समर्पण चाही
ख. मान्यता भेटते भाषा पूर्ण विकसित
ग. समर्पण अनावश्यक
घ. परीक्षा भाषा बनबैत नहि
उत्तर: क. संवैधानिक मान्यता मात्र पर्याप्त नहि; समर्पण चाही
व्याख्या: भाषा-विकासक मूल साधन जीवंत समर्पण अछि।

प्रश्न 3069. परिवारक भाषा-स्थानबारे हुनकर मुख्य सलाह की अछि?
क. स्कूलसँ पहिले परिवारमे भाषाक समुचित स्थान दिअ जाए
ख. परिवारमे भाषा हटाउ
ग. बालक अंग्रेजी मात्र बाजय
घ. घर अप्रासंगिक अछि
उत्तर: क. स्कूलसँ पहिले परिवारमे भाषाक समुचित स्थान दिअ जाए
व्याख्या: बाल-भाषा-विकास परिवारसँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 3070. समीक्षा-बारे मायानन्दजीक आग्रह की अछि?
क. तटस्थता, निरपेक्षता आ वस्तुनिष्ठ दृष्टि चाही
ख. व्यक्तिगत आक्षेप जरूरी
ग. समीक्षा मित्रता पर आधारित हो
घ. ईर्ष्या-द्वेष स्वाभाविक मान्य हो
उत्तर: क. तटस्थता, निरपेक्षता आ वस्तुनिष्ठ दृष्टि चाही
व्याख्या: ओ समीक्षा कैं ईर्ष्या, पक्षपात आ निजी आक्षेपसँ मुक्त देखय चाहैत छथि।

प्रश्न 3071. बाजारवादी दुनियाबारे हुनकर चिन्ता की अछि?
क. भौतिक सुविधा बढ़लासँ उच्च नैतिक/आध्यात्मिक मूल्य घटि सकैत अछि
ख. बाजार साहित्य रचैत अछि
ग. मूल्य अप्रासंगिक छथि
घ. साहित्य केवल धन अछि
उत्तर: क. भौतिक सुविधा बढ़लासँ उच्च नैतिक/आध्यात्मिक मूल्य घटि सकैत अछि
व्याख्या: साक्षात्कार भौतिक विकास आ मूल्य-ह्रासक द्वंद्व देखबैत अछि।

प्रश्न 3072. मायानन्द मिश्रक भाषा-साहित्य दृष्टिक सार की अछि?
क. भाषिक अपनत्व, समग्र दृष्टि, स्त्री-दलित सहभागिता, तटस्थ समीक्षा आ नैतिक मूल्यक रक्षा
ख. केवल पुरस्कार-विमर्श
ग. केवल आत्मप्रशंसा
घ. भाषा-विरोध
उत्तर: क. भाषिक अपनत्व, समग्र दृष्टि, स्त्री-दलित सहभागिता, तटस्थ समीक्षा आ नैतिक मूल्यक रक्षा
व्याख्या: हुनकर विचार साहित्यक सामाजिक, नैतिक आ भाषिक आधारक समेकित व्याख्या करैत अछि।

खण्ड ३१३ : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्र: रचना, अनुभव आ कालजयीपन

प्रश्न 3073. मायानन्द मिश्र लेखनमे जीवनानुभवक स्थान केना परिभाषित करैत छथि?
क. जीवनानुभव लेखनक समस्त आधार अछि
ख. अनुभव व्यर्थ अछि
ग. केवल प्रशिक्षण पर्याप्त
घ. लेखन बिना संवेदना चलैत अछि
उत्तर: क. जीवनानुभव लेखनक समस्त आधार अछि
व्याख्या: ओ स्पष्ट कहैत छथि जे अनुभव-पक्ष शून्य होय तँ साहित्य नहि बनत।

प्रश्न 3074. कालजयी रचना ककरा कहल गेल?
क. जे युग बीतलाक बादो श्रेष्ठ रहय
ख. जे केवल नवीन छपल हो
ग. जे पृष्ठ बेसी हो
घ. जे विज्ञापनक कारण प्रसिद्ध हो
उत्तर: क. जे युग बीतलाक बादो श्रेष्ठ रहय
व्याख्या: मायानन्दजी समय-परीक्षा कैं श्रेष्ठता केर मानदंड मानैत छथि।

प्रश्न 3075. सुमनजी, किरणजी, आरसी बाबूक उल्लेख किएक अछि?
क. एखनहुँ श्रेष्ठ मानल जाएबला कालजयी रचनाकारक उदाहरण रूपमे
ख. विरोधी उदाहरण रूपमे
ग. गैर-साहित्यिक व्यक्ति रूपमे
घ. केवल नाम-भर
उत्तर: क. एखनहुँ श्रेष्ठ मानल जाएबला कालजयी रचनाकारक उदाहरण रूपमे
व्याख्या: ओ पूर्ववर्ती श्रेष्ठ परम्पराक दीर्घ मान्यता देखबैत छथि।

प्रश्न 3076. मानसिक शांति लेल पढ़बाक प्रसंगमे हुनकर उत्तर की संकेत दैत अछि?
क. उपलब्ध पोथी आ मनक अनुरूप काजसँ शांति खोजब
ख. केवल एक ग्रंथ अनिवार्य
ग. पठन नकारल
घ. संगीत मात्र समाधान
उत्तर: क. उपलब्ध पोथी आ मनक अनुरूप काजसँ शांति खोजब
व्याख्या: ओ पठन आ लेखनकेँ परिस्थिति-सापेक्ष शांति-कर्म मानैत छथि।

प्रश्न 3077. बाबूजीक रचनावली निकालबाक योजना ककर संकेत अछि?
क. हरिमोहन झा परम्पराक संरक्षण आ संपादनक दायित्व
ख. व्यक्तिगत यश मात्र
ग. रचना-विरोध
घ. कथा छोड़ब
उत्तर: क. हरिमोहन झा परम्पराक संरक्षण आ संपादनक दायित्व
व्याख्या: रचनावली-योजना पारिवारिक-साहित्यिक विरासत सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 3078. “जीवन प्लानिंग सँ नहि चलैत” कथन कोन जीवन-दृष्टि प्रकट करैत अछि?
क. जीवन प्रवाहमान अछि, पानी जकाँ अपन बाट ताखि लैत अछि
ख. जीवन पूर्ण गणित अछि
ग. योजना सँ सभ निश्चित
घ. अनुभव अप्रासंगिक
उत्तर: क. जीवन प्रवाहमान अछि, पानी जकाँ अपन बाट ताखि लैत अछि
व्याख्या: ओ नियोजनक सीमा आ जीवनक अनिश्चितता स्वीकारैत छथि।

प्रश्न 3079. १९६५ सँ १९७५ धरिक समय हुनका लेल किएक महत्त्वपूर्ण कहल गेल?
क. जीवन आ साहित्य दुनू दृष्टिसँ श्रेष्ठ समय मानल गेल
ख. ओ समय अज्ञात छल
ग. साहित्य छोड़ल गेल
घ. भाषा-विमुखता छल
उत्तर: क. जीवन आ साहित्य दुनू दृष्टिसँ श्रेष्ठ समय मानल गेल
व्याख्या: साक्षात्कार व्यक्तिगत साहित्यिक काल-बोध दैत अछि।

प्रश्न 3080. रचना करैत काल प्रशिक्षण-सिद्धान्तबारे हुनकर मत की अछि?
क. साहित्यकार बनाबय लेल तय प्रशिक्षण-स्कूल नहि होइत अछि
ख. छह मासमे साहित्यकार बनि सकैत अछि
ग. विज्ञापनसँ लेखक बनैत अछि
घ. अनुभवक जरूरत नहि
उत्तर: क. साहित्यकार बनाबय लेल तय प्रशिक्षण-स्कूल नहि होइत अछि
व्याख्या: ओ प्रतिभा, अनुभव, संवेदना आ भाषा-कौशलक स्वाभाविक विकास पर बल दैत छथि।

प्रश्न 3081. नव लेखकक लेल मार्गदर्शनबारे हुनकर सावधानी की अछि?
क. सच्ची प्रतिभा अपन बाट स्वयं ताकत; अनुभव-संवेदना जरूरी
ख. सभकेँ एके फॉर्मूला चाही
ग. प्रशिक्षण बिना लेखक नहि
घ. भाषा अनावश्यक
उत्तर: क. सच्ची प्रतिभा अपन बाट स्वयं ताकत; अनुभव-संवेदना जरूरी
व्याख्या: ओ बाहरी उपदेशसँ अधिक अंतर्निहित योग्यता मानैत छथि।

प्रश्न 3082. एहि खण्डमे मायानन्द मिश्रक रचनात्मक दर्शनक सार की अछि?
क. अनुभव, संवेदना, भाषा, काल-परीक्षा आ विनम्र आत्मदृष्टि साहित्यक आधार छथि
ख. केवल पुरस्कार महत्त्वपूर्ण
ग. रचना अभ्यासहीन होइत अछि
घ. समीक्षक अनुपयोगी छथि
उत्तर: क. अनुभव, संवेदना, भाषा, काल-परीक्षा आ विनम्र आत्मदृष्टि साहित्यक आधार छथि
व्याख्या: साक्षात्कार साहित्य-सृजनक गूढ़ पर सरल दर्शन प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड ३१४ : विदेह-सदेह १ — अमित कुमार झा: “बुढ़ी माता” कथा — भेट आ बचाव

प्रश्न 3083. “बुढ़ी माता” कथाक प्रारम्भिक कथावाचक कोन सामाजिक पृष्ठभूमिसँ अबैत अछि?
क. शिक्षित, शहरी, प्रतिस्पर्धी परीक्षा-तैयारी करैत छात्रक पृष्ठभूमि
ख. ग्राम्य किसान मात्र
ग. राजदरबारी पात्र
घ. सैनिक अधिकारी
उत्तर: क. शिक्षित, शहरी, प्रतिस्पर्धी परीक्षा-तैयारी करैत छात्रक पृष्ठभूमि
व्याख्या: कथा विद्यार्थी-जीवन, कोचिंग आ करियर-दबावक संसारसँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 3084. जनवरी १९९५क अन्हार भोरक वातावरण कथामे की बनबैत अछि?
क. भय, ठंड, सुनसान आ रहस्यक पृष्ठभूमि
ख. उत्सवक मेला
ग. दोपहरक उजास
घ. खेलक मैदान
उत्तर: क. भय, ठंड, सुनसान आ रहस्यक पृष्ठभूमि
व्याख्या: अन्हार-ठंड बूढ़ी माताक रहस्यमय प्रवेशकेँ प्रभावी बनबैत अछि।

प्रश्न 3085. बुढ़ी माताक घोघ आ कंबल कथावाचक पर केहन प्रभाव छोड़ैत अछि?
क. डर आ अनिश्चितता पैदा करैत अछि
ख. पूर्ण हँसी
ग. तुरन्त पहचान
घ. कोनो प्रतिक्रिया नहि
उत्तर: क. डर आ अनिश्चितता पैदा करैत अछि
व्याख्या: पहिल दृश्य पात्रक भय आ जिज्ञासा दुनू जगबैत अछि।

प्रश्न 3086. बुढ़ी माताक “कनी देर रुकी जो” कथानकमे कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. कथावाचककेँ दुर्घटनासँ बचाबयबला विलम्ब बनैत अछि
ख. परीक्षा जीताबय
ग. दुकान खोलाबय
घ. साइकिल बेचाबय
उत्तर: क. कथावाचककेँ दुर्घटनासँ बचाबयबला विलम्ब बनैत अछि
व्याख्या: उही विलम्बक कारण ओ रोजक चाह-दुकानक दुर्घटना सँ बचि जाइत अछि।

प्रश्न 3087. गाँधी मैदान/सब्जीबाग लग दुर्घटनाक दृश्य कथामे कोन मोड़ आनैत अछि?
क. बुढ़ी माताक रोकब जीवन-रक्षक सिद्ध होइत अछि
ख. कथा समाप्त होइत अछि
ग. परीक्षा रद्द मात्र
घ. कोनो सम्बन्ध नहि
उत्तर: क. बुढ़ी माताक रोकब जीवन-रक्षक सिद्ध होइत अछि
व्याख्या: दुर्घटना रहस्यकेँ कृपा/संकेतमे बदलि दैत अछि।

प्रश्न 3088. मृत छात्रसभक प्रसंग कथावाचक पर कोन भावनात्मक प्रभाव छोड़ैत अछि?
क. अपन बचावक चकित-बोध आ मृत्यु-समीपता
ख. उत्सव
ग. उदासीनता
घ. पूर्ण हास्य
उत्तर: क. अपन बचावक चकित-बोध आ मृत्यु-समीपता
व्याख्या: कथावाचक बुझैत अछि जे ओ स्वयं ओहि ठाम रहि सकैत छल।

प्रश्न 3089. बुढ़ी माताक चूरा-शक्कर माँगब पात्रकेँ कोना मानवीय बनबैत अछि?
क. रहस्यमयता बीच भूख आ दया-संबंध स्थापित करैत अछि
ख. ओ केवल अलौकिक रहैत अछि
ग. भोजन नकारैत अछि
घ. क्रोध मात्र देखबैत अछि
उत्तर: क. रहस्यमयता बीच भूख आ दया-संबंध स्थापित करैत अछि
व्याख्या: भूखक साधारण मांग सम्बन्धक आत्मीयता खोलैत अछि।

प्रश्न 3090. कथावाचक बुढ़ी माताकेँ घर लय जाएब किएक निर्णायक अछि?
क. भय सँ करुणा आ सेवा-दृष्टि दिस ओकर रूपान्तरण देखबैत अछि
ख. ओ भागि जाइत अछि
ग. माताकेँ छोड़ि दैत अछि
घ. पुलिस बुलबैत अछि
उत्तर: क. भय सँ करुणा आ सेवा-दृष्टि दिस ओकर रूपान्तरण देखबैत अछि
व्याख्या: पात्र सेवा-कर्तव्य स्वीकारैत अछि।

प्रश्न 3091. परिवार द्वारा बुढ़ी माताक ठहराव कोन सामाजिक मूल्य देखबैत अछि?
क. अतिथि-संरक्षण, करुणा आ घरक नैतिक उदारता
ख. उपेक्षा
ग. व्यापारिक अनुबंध
घ. दंड
उत्तर: क. अतिथि-संरक्षण, करुणा आ घरक नैतिक उदारता
व्याख्या: माँ-पिताक प्रतिक्रिया कथा केँ पारिवारिक नैतिकता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3092. “बुढ़ी माता”क पहिल भागक मूल कथात्मक शक्ति की अछि?
क. रहस्य, दुर्घटना-संयोग, करुणा आ जीवन-रक्षा
ख. केवल परीक्षा-तिथि
ग. केवल सड़क-वर्णन
घ. प्रेमक हास्य
उत्तर: क. रहस्य, दुर्घटना-संयोग, करुणा आ जीवन-रक्षा
व्याख्या: कथा सामान्य छात्रजीवनमे अलौकिक/आशीर्वादी उपस्थिति प्रवेश करबैत अछि।

खण्ड ३१५ : विदेह-सदेह १ — “बुढ़ी माता”: सेवा, भविष्यवाणी आ करियर-बदलाव

प्रश्न 3093. बुढ़ी माताक सेवा कथावाचकक दिनचर्या कोना बदलैत अछि?
क. कोचिंग जाए सँ पहिले आ बाद समय सेवा मे बितय लागैत अछि
ख. सेवा अस्वीकार भेल
ग. दिनचर्या पर प्रभाव नहि
घ. ओ घर छोड़ि देलक
उत्तर: क. कोचिंग जाए सँ पहिले आ बाद समय सेवा मे बितय लागैत अछि
व्याख्या: कथा सेवा केँ विद्यार्थी जीवनक नियमित नैतिक कर्म बनबैत अछि।

प्रश्न 3094. बुढ़ी माताक अलग-अलग भोजन फरमाइश कोन सम्बन्ध बनबैत अछि?
क. घरेलू अपनत्व आ दादी-जकाँ आत्मीयता
ख. अजनबीपन बढ़बैत अछि
ग. शत्रुता
घ. नौकरी अनुबंध
उत्तर: क. घरेलू अपनत्व आ दादी-जकाँ आत्मीयता
व्याख्या: भोजन-सेवा संबंधक गर्माहट बढ़बैत अछि।

प्रश्न 3095. बुढ़ी माताक “दोसरा पढ़ाइ” करबाक सलाह कथामे कोन दिशा दैत अछि?
क. मेडिकलसँ अलग करियर-पथक पूर्वसंकेत
ख. डॉक्टरीमे ही प्रवेश
ग. पढ़ाइ छोड़ब
घ. विदेश भागब
उत्तर: क. मेडिकलसँ अलग करियर-पथक पूर्वसंकेत
व्याख्या: ई सलाह आगेक जीवन-बदलावक बीज बनैत अछि।

प्रश्न 3096. बुढ़ी माताक अचानक गायब भऽ जाएब कथाकेँ कोना बदलैत अछि?
क. रहस्य आ कृपा-भावकेँ गहिर करैत अछि
ख. सामान्य किरायेदार बनबैत अछि
ग. कथा हास्य बनैत अछि
घ. घटना असंबंधित अछि
उत्तर: क. रहस्य आ कृपा-भावकेँ गहिर करैत अछि
व्याख्या: ओ बिना बतौने चलि जाइत छथि, जे कथा केँ अलौकिक/स्मृति-बोध दैत अछि।

प्रश्न 3097. मेडिकल प्रवेशमे विफलता कथावाचक पर कोन प्रभाव छोड़ैत अछि?
क. हताशा आ पढ़ाइ छोड़बाक मनोदशा
ख. पूर्ण संतोष
ग. तुरन्त सफलता
घ. कथा-विच्छेद
उत्तर: क. हताशा आ पढ़ाइ छोड़बाक मनोदशा
व्याख्या: वेटिंग/केंद्र-समस्या ओकर करियर संकट बनैत अछि।

प्रश्न 3098. बुढ़ी माताक बात याद आ बाबूजीक सलाह मिलि कोन मोड़ बनबैत अछि?
क. ट्रैक चेन्ज करबाक निर्णय
ख. घर छोड़ि देबाक निर्णय
ग. कला छोड़ब
घ. परीक्षा नहि देब
उत्तर: क. ट्रैक चेन्ज करबाक निर्णय
व्याख्या: कथा आध्यात्मिक संकेत आ पारिवारिक सलाह केँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3099. बी.सी.ए.मे प्रवेश आ प्रथम बैचक सफलता कोन संकेत दैत अछि?
क. नव पथ पर प्रतिभाक उभार
ख. पूर्ण विफलता
ग. मेडिकलमे प्रवेश
घ. शिक्षा समाप्त
उत्तर: क. नव पथ पर प्रतिभाक उभार
व्याख्या: कथावाचक मेडिकल असफलतासँ आईटी/कम्प्यूटर पथ दिस मुड़ैत अछि।

प्रश्न 3100. सरकारी नौकरीबारे कथावाचकक सोच की अछि?
क. प्रतिभा/क्षमताक उपयोग लेल सरकारी नौकरी नहि करबाक विचार
ख. सरकारी नौकरी अनिवार्य
ग. कोनो नौकरी नहि
घ. केवल खेती
उत्तर: क. प्रतिभा/क्षमताक उपयोग लेल सरकारी नौकरी नहि करबाक विचार
व्याख्या: ओ स्वतंत्र/व्यावसायिक करियर-दृष्टि चुनैत अछि।

प्रश्न 3101. एम.सी.ए., एम.बी.ए., बैंक, बिरला ग्रुप क्रम कथामे की देखबैत अछि?
क. करियरक क्रमिक निर्माण आ बुढ़ी माताक आशीष-स्मृति
ख. असफलताक श्रृंखला
ग. भ्रमण-वृत्तान्त
घ. नाटकक मंच
उत्तर: क. करियरक क्रमिक निर्माण आ बुढ़ी माताक आशीष-स्मृति
व्याख्या: सफलताक क्रम पूर्व भविष्यवाणी कैँ अर्थ दैत अछि।

प्रश्न 3102. “बुढ़ी माता”क अन्तिम इच्छा-स्वर क्या अछि?
क. फेर एक बेर बुढ़ी माताक दर्शन पाबयबाक लालसा
ख. माताकैँ भूलि जाएब
ग. सेवा अस्वीकार
घ. कथा समाप्ति बिना स्मृति
उत्तर: क. फेर एक बेर बुढ़ी माताक दर्शन पाबयबाक लालसा
व्याख्या: कथा कृतज्ञ प्रतीक्षा आ आशीर्वाद-स्मृति पर टिकैत अछि।

खण्ड ३१६ : विदेह-सदेह १ — “बुढ़ी माता”: प्रतीक, विश्वास आ आधुनिकता

प्रश्न 3103. बुढ़ी माता कथामे कोन प्रतीक बनैत छथि?
क. अनपेक्षित कृपा, लोक-मातृत्व आ जीवन-दिशा देनेवाली रहस्यमय शक्ति
ख. केवल भयावह पात्र
ग. केवल राहगीर
घ. व्यापारी पात्र
उत्तर: क. अनपेक्षित कृपा, लोक-मातृत्व आ जीवन-दिशा देनेवाली रहस्यमय शक्ति
व्याख्या: ओ डरावना दृश्यसँ प्रारम्भ भऽ अंतमे रक्षक-मातृशक्ति बनैत छथि।

प्रश्न 3104. कथावाचकक मेडिकल-सपना टूटब कथामे विफलता नहि, मोड़ किएक अछि?
क. एहि टूटनसँ वैकल्पिक सफल जीवन-पथ खुलैत अछि
ख. जीवन समाप्त होइत अछि
ग. साहित्य असंभव होइत अछि
घ. बुढ़ी माता गलत सिद्ध छथि
उत्तर: क. एहि टूटनसँ वैकल्पिक सफल जीवन-पथ खुलैत अछि
व्याख्या: कथा विफलता कैँ दिशा-परिवर्तनक अवसर बनबैत अछि।

प्रश्न 3105. कथा आधुनिक शिक्षा-संस्कृतिसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. कोचिंग, प्रवेश परीक्षा, बी.सी.ए., एम.सी.ए., एम.बी.ए. आ कॉर्पोरेट करियरक प्रसंगसँ
ख. केवल पुराणक कथा
ग. विद्यालय-विहीन संसार
घ. कृषि मात्र
उत्तर: क. कोचिंग, प्रवेश परीक्षा, बी.सी.ए., एम.सी.ए., एम.बी.ए. आ कॉर्पोरेट करियरक प्रसंगसँ
व्याख्या: लोकविश्वास आधुनिक करियर-यात्रासँ संवाद करैत अछि।

प्रश्न 3106. बुढ़ी माताक पुरुष-जकाँ दाढ़ी-मूँछ वाला चेहरा पाठकमे कोन प्रभाव बनबैत अछि?
क. परिचित मातृत्वक भीतर अपरिचित रहस्य आ भय
ख. सामान्य फैशन
ग. हास्य मात्र
घ. कथासँ असंबंधित
उत्तर: क. परिचित मातृत्वक भीतर अपरिचित रहस्य आ भय
व्याख्या: चेहरा लोककथात्मक चमत्कार आ करुणा दुनू पैदा करैत अछि।

प्रश्न 3107. कथामे दुर्घटना-संयोगक साहित्यिक उपयोग की अछि?
क. विश्वास आ संशयक बीच पाठककेँ रोके रखब
ख. केवल समाचार रिपोर्ट
ग. कथानक बंद करब
घ. पात्र हटाबय
उत्तर: क. विश्वास आ संशयक बीच पाठककेँ रोके रखब
व्याख्या: दुर्घटना पुष्टि देत अछि, मुदा बुढ़ी माताक रहस्य पूर्णतः खुलैत नहि।

प्रश्न 3108. सेवा आ आशीर्वादक सम्बन्ध कथामे केना बनैत अछि?
क. करुणा-सेवा के बाद जीवन-दिशा आ सफलता प्राप्त होइत अछि
ख. सेवा व्यर्थ सिद्ध
ग. आशीर्वाद नकारल
घ. परिवार विरोध करैत अछि
उत्तर: क. करुणा-सेवा के बाद जीवन-दिशा आ सफलता प्राप्त होइत अछि
व्याख्या: कथा लोकनैतिक संरचना पर टिकल अछि—सेवा फलदायी बनैत अछि।

प्रश्न 3109. बुढ़ी माताक कथा सामाजिक करुणा पर कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. सड़क पर भेटल असहाय वृद्धा प्रति डर के सेवा मे बदलि सकैत छी कि नहि
ख. वृद्धक उपेक्षा उचित
ग. मदद नकरब
घ. भोजन असंगत
उत्तर: क. सड़क पर भेटल असहाय वृद्धा प्रति डर के सेवा मे बदलि सकैत छी कि नहि
व्याख्या: कथा पाठकक नैतिक प्रतिक्रिया जाँचैत अछि।

प्रश्न 3110. बुढ़ी माताक “कतहु नहि” रहबाक उत्तर कोन अस्तित्व-बोध जगबैत अछि?
क. ओ स्थायी घरविहीन/लोक-अलौकिक उपस्थिति जकाँ लगैत छथि
ख. ओकरे महल अछि
ग. ओ व्यापारी अछि
घ. ओ नाटक-समूहमे अछि
उत्तर: क. ओ स्थायी घरविहीन/लोक-अलौकिक उपस्थिति जकाँ लगैत छथि
व्याख्या: स्थानहीनता ओकर रहस्य आ करुणा बढ़बैत अछि।

प्रश्न 3111. कथावाचकक अन्तिम मिथिला/बिहार सेवा इच्छा कोन विस्तार दैत अछि?
क. निजी सफलता सँ क्षेत्रीय दायित्व दिस मोड़
ख. सिर्फ धन-संचय
ग. विदेशी पलायन
घ. सेवा-विरोध
उत्तर: क. निजी सफलता सँ क्षेत्रीय दायित्व दिस मोड़
व्याख्या: सफलता अंततः मातृभूमि-सेवा कामना मे बदलैत अछि।

प्रश्न 3112. “बुढ़ी माता”क समग्र महत्व की अछि?
क. आधुनिक करियर-कथा, लोकविश्वास, मातृत्व, दुर्घटना-बचाव आ जीवन-दिशा केर संगम
ख. केवल डरावनी कथा
ग. केवल परीक्षा रिपोर्ट
घ. केवल जीवनी-सूची
उत्तर: क. आधुनिक करियर-कथा, लोकविश्वास, मातृत्व, दुर्घटना-बचाव आ जीवन-दिशा केर संगम
व्याख्या: कथा यथार्थ आ अलौकिक सम्भावना केँ जीवन-नैतिकता संग जोड़ैत अछि।

खण्ड ३१७ : विदेह-सदेह १ — अनलकांत “तर्पण”: कामना यादवक वापसी

प्रश्न 3113. “तर्पण”क आरम्भमे डॉ. कामना यादव गामक छीछा देखि की अनुभव करैत छथि?

क. पुरान गामक उखड़ल रूप प्रति असंतोष आ विरक्ति

ख. पूर्ण उत्सव

ग. गामक अपरिवर्तनशील सौन्दर्य

घ. राजदरबारक आनंद

उत्तर: क. पुरान गामक उखड़ल रूप प्रति असंतोष आ विरक्ति

व्याख्या: कथा कामनाक नजरि सँ गामक बदलल/उजड़ल रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 3114. पछुआड़िक नेबो, अड़रनेबा आ चिड़ै-भूरक दृश्य कथामे की करैत अछि?

क. स्मृति आ प्रकृतिक सूक्ष्म जीवन-लय जगबैत अछि

ख. कारखाना-विज्ञापन

ग. युद्ध-तैयारी

घ. सड़क-सूची

उत्तर: क. स्मृति आ प्रकृतिक सूक्ष्म जीवन-लय जगबैत अछि

व्याख्या: प्रकृतिक बारीक बिम्ब कामनाक भीतर अतीत जगबैत अछि।

प्रश्न 3115. बिगियाक स्मरण कामनाक मन पर कोन प्रभाव डालैत अछि?

क. अरुआयल मनमे लहलहाहट आ हल्की मुस्की आनैत अछि

ख. भय बढ़बैत अछि

ग. क्रोध मात्र

घ. पूर्ण विस्मृति

उत्तर: क. अरुआयल मनमे लहलहाहट आ हल्की मुस्की आनैत अछि

व्याख्या: एक छोट प्रतीक ओकर सूखल मनमे जीवनक हरियरी जगबैत अछि।

प्रश्न 3116. कामना यादव कतेक दिनसँ कोन समस्या सँ परेशान छलीह?

क. ढंगक ग्रामीण अनुभवी रखबार/चौकीदार नहि भेटबासँ

ख. नव पोथी नछपबासँ

ग. नदी पार नहोयबासँ

घ. गीत नबजबासँ

उत्तर: क. ढंगक ग्रामीण अनुभवी रखबार/चौकीदार नहि भेटबासँ

व्याख्या: कथा बाप-दादाक संपत्ति-बचावक व्यावहारिक संकट सँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 3117. रामजी मंडलक हटबाक इच्छा कथामे कोन यथार्थ खोलैत अछि?

क. पुरान पीढ़ीक थकान आ परिवार संग रहबाक आकांक्षा

ख. विश्वासघात

ग. लोभ मात्र

घ. गाम छोड़ल नहि

उत्तर: क. पुरान पीढ़ीक थकान आ परिवार संग रहबाक आकांक्षा

व्याख्या: रामजी पुरान निष्ठाक प्रतीक छथि, मुदा उमेर आ परिवारिक चाह हुनका अलग करैत अछि।

प्रश्न 3118. कामनाक पूना क्लिनिक बंद होयबाक परेशानी कोन द्वंद्व देखबैत अछि?

क. शहरी पेशा आ पैतृक गाम-संपत्ति बीच फँसाव

ख. गाममे स्थायी अवकाश

ग. क्लिनिक असफल

घ. परिवार नहि अछि

उत्तर: क. शहरी पेशा आ पैतृक गाम-संपत्ति बीच फँसाव

व्याख्या: कामना आधुनिक पेशेवर जीवन आ विरासत-रक्षा बीच विभाजित छथि।

प्रश्न 3119. मंगनीलाल यादवक मृत्यु बाद कामनाक गाम-आगमन कोन भाव रखैत अछि?
क. उत्तराधिकार, स्मृति आ जिम्मेदारीक बोझ
ख. पर्यटन मात्र
ग. उत्सव-भ्रमण
घ. विवाह-तैयारी
उत्तर: क. उत्तराधिकार, स्मृति आ जिम्मेदारीक बोझ
व्याख्या: पिता-मृत्यु गामसँ बंधन फेर जगबैत अछि।

प्रश्न 3120. लताम गाछ आ ठोर/लिपस्टिक तुलना कोन अर्थ बनबैत अछि?
क. प्राकृतिक लाली आ बाजारू सौन्दर्यक विरोध
ख. केवल श्रृंगार-विज्ञापन
ग. कृषि-रोग
घ. भोजन-वर्णन
उत्तर: क. प्राकृतिक लाली आ बाजारू सौन्दर्यक विरोध
व्याख्या: कामना अनुभव करैत छथि जे गाछक आत्मा डिब्बा मे नहि भरल जा सकैत।

प्रश्न 3121. पोखरि, रोहु माछ आ पानीक हलचल कामनाकेँ कोना प्रभावित करैत अछि?
क. भीतर अतीतक पन्ना फड़फड़ाबय लगैत अछि
ख. ओ तुरन्त गाम छोड़ैत छथि
ग. पानी अप्रासंगिक अछि
घ. माछ केवल व्यापार अछि
उत्तर: क. भीतर अतीतक पन्ना फड़फड़ाबय लगैत अछि
व्याख्या: बाहरी जल-हलचल आतंरिक स्मृति-हलचल बनि जाइत अछि।

प्रश्न 3122. “तर्पण”क आरम्भक मुख्य साहित्यिक ऊर्जा की अछि?
क. गाम-वापसी, स्मृति, प्रकृति, विरासत आ आधुनिक पेशागत फाँसक सम्मिश्रण
ख. केवल चौकीदार विज्ञापन
ग. पृष्ठ-सूची
घ. निरर्थक दृश्य
उत्तर: क. गाम-वापसी, स्मृति, प्रकृति, विरासत आ आधुनिक पेशागत फाँसक सम्मिश्रण
व्याख्या: कथा सूक्ष्म बिम्बद्वारा गामक बदलैत संरचना आ पात्रक मन उघारैत अछि।

खण्ड ३१८ : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादव आ मंगनी यादव

प्रश्न 3123. कारी यादवक पोखरि कथामे कोन प्रतीक अछि?
क. परोपकार, श्रम, नाम-स्मृति आ ग्रामीण प्रतिष्ठा
ख. सिर्फ व्यापारिक तालाब
ग. शहरक होटल
घ. खेल मैदान
उत्तर: क. परोपकार, श्रम, नाम-स्मृति आ ग्रामीण प्रतिष्ठा
व्याख्या: पोखरि कारी यादवक श्रमक सामाजिक स्मारक बनैत अछि।

प्रश्न 3124. कारी यादव अँगुठाछाप होइतो मंगनी यादवक पढ़ाइमे कमी नहि रखलनि — ई कोन मूल्य देखबैत अछि?
क. शिक्षा लेल ग्रामीण पिता के त्याग आ आकांक्षा
ख. शिक्षा-विरोध
ग. पुस्तक-विरोध
घ. केवल धन-संचय
उत्तर: क. शिक्षा लेल ग्रामीण पिता के त्याग आ आकांक्षा
व्याख्या: कारी स्वयं अनपढ़, मुदा पुत्रकेँ उच्च शिक्षा देबाक चाह रखैत छथि।

प्रश्न 3125. कारी यादव लेल दरोगा आ बीडीओ सभसँ पैघ हाकिम किएक छल?
क. ओकर ग्रामीण सत्ता-बोध ओहि पदसभ धरि सीमित छल
ख. ओ विश्वविद्यालय बुझैत छल
ग. उपन्यासकार चाहैत छल
घ. संगीतकार बनाबय चाहैत छल
उत्तर: क. ओकर ग्रामीण सत्ता-बोध ओहि पदसभ धरि सीमित छल
व्याख्या: कारीक आकांक्षा ग्रामीण प्रशासनिक प्रतिष्ठासँ बनल अछि।

प्रश्न 3126. मंगनी प्रोफेसर आ कलाकार बनलाह, मुदा बापक लेल “मास्टर/नचनिया” — एहि विरोधक अर्थ की अछि?
क. पीढ़ीगत मूल्यभेद आ प्रतिष्ठा-बोधक फर्क
ख. बाप पूर्ण आधुनिक छल
ग. मंगनी अशिक्षित छल
घ. कला सर्वमान्य छल
उत्तर: क. पीढ़ीगत मूल्यभेद आ प्रतिष्ठा-बोधक फर्क
व्याख्या: कारी यादवक कल्पना आ मंगनीक उपलब्धि बीच सांस्कृतिक दूरी अछि।

प्रश्न 3127. कारी यादवक गाछ-बिरिछसँ लगाव ककर स्मृतिसँ जुड़ल अछि?
क. बुढ़ियाक लगाओल गाछ आ ओकर सारा-स्मृति सँ
ख. बाजार-मूल्यसँ
ग. कारखानासँ
घ. स्कूल-सूचीसँ
उत्तर: क. बुढ़ियाक लगाओल गाछ आ ओकर सारा-स्मृति सँ
व्याख्या: गाछ मृत पत्नीक स्मृति आ घरक पवित्रता सँ जुड़ल छथि।

प्रश्न 3128. तुलसी आ धात्रीक जड़ मे पानी ढारब कारीक कोन जीवन-धर्म बतबैत अछि?
क. दैनिक श्रद्धा, स्मृति आ प्रकृति-संबंध
ख. यांत्रिक काम
ग. हास्य खेल
घ. व्यापारिक सिंचाई मात्र
उत्तर: क. दैनिक श्रद्धा, स्मृति आ प्रकृति-संबंध
व्याख्या: कारीक जीवन श्रम, पूजा आ स्मृति मिलबैत अछि।

प्रश्न 3129. कारी यादवक बीमारी पर मंगनीक जिद कथामे कोन सम्बन्ध दिखबैत अछि?
क. पुत्रक चिंता आ पिता-पुत्रक भावनात्मक निकटता
ख. पूर्ण दूरी
ग. दुश्मनी
घ. बेटाक उदासीनता
उत्तर: क. पुत्रक चिंता आ पिता-पुत्रक भावनात्मक निकटता
व्याख्या: मंगनी पिता लेल खाना-पीना छोड़ि दैत अछि, जे आत्मीयता दर्शबैत अछि।

प्रश्न 3130. “एक बोरा टाका” प्रसंग कारीक कोन इच्छा उघारैत अछि?
क. नाम छोड़य लेल पोखरि खुनाबयक इच्छा
ख. घर बेचयक इच्छा
ग. विदेश चलबाक इच्छा
घ. नाटक लिखबाक इच्छा
उत्तर: क. नाम छोड़य लेल पोखरि खुनाबयक इच्छा
व्याख्या: कारी मरलाक बाद नाम रहे, एहि सामाजिक स्मृति-लालसा सँ भरल छथि।

प्रश्न 3131. रामजी मंडलकेँ रखबार/मैनेजर रूपमे राखब ककर परिणाम अछि?
क. पोखरि-गाछ-घर संरक्षणक स्थायी व्यवस्था
ख. पुस्तक छापब
ग. गीत रेकॉर्ड
घ. दुकान खोलब
उत्तर: क. पोखरि-गाछ-घर संरक्षणक स्थायी व्यवस्था
व्याख्या: कारी-मंगनी परिवार संपत्ति आ स्मृति रक्षाक लेल भरोसेमंद आदमी राखैत अछि।

प्रश्न 3132. कारी-मंगनी प्रसंगक मुख्य साहित्यिक अर्थ की अछि?
क. ग्रामीण श्रम, शिक्षा, पिता-पुत्र तनाव, स्मृति आ प्रतिष्ठाक बहुस्तरीय आख्यान
ख. केवल पेशा-सूची
ग. हास्य कथन
घ. पृष्ठ-क्रम
उत्तर: क. ग्रामीण श्रम, शिक्षा, पिता-पुत्र तनाव, स्मृति आ प्रतिष्ठाक बहुस्तरीय आख्यान
व्याख्या: कथा एक परिवारक माध्यमसँ बदलैत मिथिला आ ग्रामीण जीवन देखबैत अछि।

खण्ड ३१९ : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: उजड़ैत गाम आ भूमण्डलीकरण

प्रश्न 3133. मंगनी यादव सेवामुक्त भऽ गाम घुरलाक बाद की अनुभव करैत छथि?
क. अपन चिन्हल गाम लगभग अपरिचित भऽ गेल अछि
ख. गाम पूर्ण वैह अछि
ग. सब लोक स्वागत करैत अछि
घ. ओ शहर नदेखलथि
उत्तर: क. अपन चिन्हल गाम लगभग अपरिचित भऽ गेल अछि
व्याख्या: गामक सामाजिक-भौतिक रूपांतरण हुनका हतप्रभ करैत अछि।

प्रश्न 3134. “भटिंडा फार्म हाउस”क बोर्ड कोन परिवर्तनक प्रतीक अछि?
क. पुरान घर/डीहक कॉरपोरेट/नव-भूमि उपयोगमे बदलि जाएब
ख. परम्पराक संरक्षण
ग. ग्रामदेवता पूजा
घ. विद्यालय खुलब
उत्तर: क. पुरान घर/डीहक कॉरपोरेट/नव-भूमि उपयोगमे बदलि जाएब
व्याख्या: गामक जगह निजी फार्महाउस बनैत अछि।

प्रश्न 3135. धनुक टोलीक जगह फैक्टरी आ धुआँ कोन यथार्थ खोलैत अछि?
क. औद्योगीकरण, प्रदूषण आ ग्रामीण समुदायक विस्थापन
ख. लोकनृत्य
ग. उत्सव
घ. बागवानी मात्र
उत्तर: क. औद्योगीकरण, प्रदूषण आ ग्रामीण समुदायक विस्थापन
व्याख्या: फैक्टरीक चिमनी गामक पर्यावरण आ जातीय-सामाजिक भूगोल बदलैत अछि।

प्रश्न 3136. मिरचैया जलधाराक कारी नाला बनब कोन संकेत दैत अछि?
क. प्रकृति-क्षरण आ प्रदूषणक तीखा बिम्ब
ख. जलशुद्धि
ग. नदी-उत्सव
घ. माछक समृद्धि
उत्तर: क. प्रकृति-क्षरण आ प्रदूषणक तीखा बिम्ब
व्याख्या: स्वच्छ जलधारा कारी पानि बनि पर्यावरणीय गिरावट देखबैत अछि।

प्रश्न 3137. बर-पाकड़ गाछक जगह मोबाइल टावरक दृश्य किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. संचार-विकासक बीच वृक्ष-संस्कृति आ सामुदायिक छाँहक ह्रास
ख. गाछक वृद्धि
ग. टावरक पूजा
घ. साहित्य-अभाव
उत्तर: क. संचार-विकासक बीच वृक्ष-संस्कृति आ सामुदायिक छाँहक ह्रास
व्याख्या: टावर आधुनिकता अछि, मुदा गाछक गायब होयब सांस्कृतिक क्षति।

प्रश्न 3138. ग्रामदेवता स्थान पर बजरंगबलीक मंदिर आ विज्ञापनक साथ-साथ उपस्थिती कोन विडम्बना बनबैत अछि?
क. धर्म, बाजार आ देह-उत्तेजक उपभोगक विचित्र सम्मिश्रण
ख. पूर्ण आध्यात्मिक शांति
ग. विज्ञापन-विहीन स्थल
घ. ग्रामदेवता पूर्ववत्
उत्तर: क. धर्म, बाजार आ देह-उत्तेजक उपभोगक विचित्र सम्मिश्रण
व्याख्या: स्थानिक आस्था पर बाजारू चित्र चढ़ल देखाइत अछि।

प्रश्न 3139. “मैन-पावर” बनैत साधारण लोक कोन सामाजिक रूपान्तरण बतबैत अछि?
क. मनुष्यक स्थानीय पहचान हटि श्रम-संसाधनमे बदलि जाएब
ख. लोकक सम्मान बढ़ब
ग. गामक सुरक्षा
घ. किसानी पुनर्जीवन
उत्तर: क. मनुष्यक स्थानीय पहचान हटि श्रम-संसाधनमे बदलि जाएब
व्याख्या: कथा भूमण्डलीकरणमे व्यक्ति-समुदायक वस्तुकरण देखबैत अछि।

प्रश्न 3140. किसानक शहर-नगरक मशीन चलबय जाना कोन संकट देखबैत अछि?
क. किसानी जीवनक टूटन आ मजूरीक अनिश्चित पहचान
ख. किसानीक विजय
ग. गाम समृद्ध
घ. भूमि सुरक्षित
उत्तर: क. किसानी जीवनक टूटन आ मजूरीक अनिश्चित पहचान
व्याख्या: कथा खेत-पथारक उद्योग/फार्महाउसमे बदलाब आ किसान-विस्थापन देखबैत अछि।

प्रश्न 3141. मंगनीक घरक सात बीघा रकबा “गामक लघु संस्करण” किएक कहल जा सकैत अछि?
क. बाहर गाम बदलि गेल, भीतर स्मृति-गाम बचल अछि
ख. बाहरी गाम सुरक्षित अछि
ग. घरक कोनो महत्त्व नहि
घ. सात बीघा कारखाना अछि
उत्तर: क. बाहर गाम बदलि गेल, भीतर स्मृति-गाम बचल अछि
व्याख्या: मंगनी अपन घर-आँगन-गाछ-पोखरि मे पुरान गाम समेटैत छथि।

प्रश्न 3142. “तर्पण”मे भूमण्डलीकरणक आलोचना ककर माध्यमसँ आबैत अछि?
क. भूमि-अधिग्रहण, फैक्टरी, फार्महाउस, प्रदूषण, पलायन आ पहचान-ह्रासक चित्रणसँ
ख. केवल विदेशी यात्रा
ग. सिर्फ भाषा-प्रशंसा
घ. कोनो सामाजिक आलोचना नहि
उत्तर: क. भूमि-अधिग्रहण, फैक्टरी, फार्महाउस, प्रदूषण, पलायन आ पहचान-ह्रासक चित्रणसँ
व्याख्या: कथा ग्रामीण समाजक व्यापक आर्थिक-सांस्कृतिक टूटन देखबैत अछि।

खण्ड ३२० : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना, स्मृति आ संपत्ति-संकट

प्रश्न 3143. कामनाक सम्पत्ति-संकट केवल आर्थिक नहि किएक अछि?
क. ई बाप-दादा, माटि, गाछ, पोखरि आ स्मृतिक रक्षा सँ जुड़ल अछि
ख. केवल बैंक-बैलेंस अछि
ग. केवल शहरक फ्लैट अछि
घ. कोनो स्मृति नहि
उत्तर: क. ई बाप-दादा, माटि, गाछ, पोखरि आ स्मृतिक रक्षा सँ जुड़ल अछि
व्याख्या: कामना विरासत कैं भावात्मक-सांस्कृतिक उत्तराधिकार मानैत छथि।

प्रश्न 3144. तीन-तीन आदमी राखबाक एजेंटक सलाह कामना किएक अस्वीकार करैत छथि?
क. व्यावहारिक कठिनाई आ भरोसेमंद संपूर्ण रखबारक अभावक कारण
ख. ओ गाछ काटय चाहैत छथि
ग. ओ पोखरि बेचि देलनि
घ. ओ गाम छोड़ि देलनि
उत्तर: क. व्यावहारिक कठिनाई आ भरोसेमंद संपूर्ण रखबारक अभावक कारण
व्याख्या: उन्हें चौकीदार, माली, मछुआरा अलग-अलग राखब कठिन बुझाइत अछि।

प्रश्न 3145. कामनाकैं अपन बाप-दादाक नाल एतहि गड़ल बुझाइत अछि — ई कथन की संकेत करैत अछि?
क. वंश-स्मृति आ जमीनसँ आत्मिक जुड़ाव
ख. केवल कानूनी कागज
ग. व्यापारिक लाभ
घ. शहर-पलायन
उत्तर: क. वंश-स्मृति आ जमीनसँ आत्मिक जुड़ाव
व्याख्या: भूमि मात्र संपत्ति नहि, वंश-नाभिनालक स्थान अछि।

प्रश्न 3146. मंगनी यादवक कथन “घर-आँगन आ गाछ-पोखरि सँ गाम नहि होइ छै” कोन वेदना व्यक्त करैत अछि?
क. लोक-समुदाय बिना भौतिक संरचना गाम नहि बनैत
ख. गाछ-पोखरि व्यर्थ अछि
ग. समुदाय अप्रासंगिक
घ. घर बेचब चाही
उत्तर: क. लोक-समुदाय बिना भौतिक संरचना गाम नहि बनैत
व्याख्या: गामक अर्थ लोक-संबंधमे अछि, केवल वस्तु-स्थलमे नहि।

प्रश्न 3147. कामनाक डॉक्टरी ज्ञान बापक दुःखसामु अकाजक किएक बुझाइत अछि?
क. क्योंकि भाव-सांस्कृतिक विखंडनक उपचार चिकित्सकीय उपायसँ नहि होइत
ख. ओ डॉक्टर नहि छथि
ग. बाप बीमार नहि
घ. दुःख अस्तित्वहीन अछि
उत्तर: क. क्योंकि भाव-सांस्कृतिक विखंडनक उपचार चिकित्सकीय उपायसँ नहि होइत
व्याख्या: कथा आधुनिक विशेषज्ञता आ सांस्कृतिक पीड़ाक सीमा देखबैत अछि।

प्रश्न 3148. कारी यादवक तीन किलो लाठी कामना लेल कोन प्रतीक अछि?
क. वंश, श्रम, शक्ति, स्मृति आ ग्रामीण स्वाभिमानक अवशेष
ख. खेलक डंडा
ग. संगीत वाद्य
घ. रिसॉर्ट सजावट
उत्तर: क. वंश, श्रम, शक्ति, स्मृति आ ग्रामीण स्वाभिमानक अवशेष
व्याख्या: लाठी दादा केर उपस्थिति आ पुरान शक्ति कैं मूर्त करैत अछि।

प्रश्न 3149. दलाल सी.सी. मिश्रा ककर प्रतिनिधि बनि अबैत अछि?
क. बाजार-बुद्धि, संपत्ति-लाभ आ भूमण्डलीकृत निवेश-दृष्टि
ख. लोक-रक्षक
ग. ग्राम देवता
घ. साहित्यिक गुरु
उत्तर: क. बाजार-बुद्धि, संपत्ति-लाभ आ भूमण्डलीकृत निवेश-दृष्टि
व्याख्या: ओ घर-पोखरि कैँ रिसॉर्ट-प्रोजेक्टमे बदलय प्रस्ताव रखैत अछि।

प्रश्न 3150. दलालक “अहाँ सौभाग्यशालिनी छी” कथनक भीतर कोन रणनीति अछि?
क. भावुक प्रशंसा द्वारा आर्थिक प्रस्तावक जमीन तैयार करब
ख. शुद्ध आदर मात्र
ग. कोनो प्रस्ताव नहि
घ. गाम बचाबयक संकल्प
उत्तर: क. भावुक प्रशंसा द्वारा आर्थिक प्रस्तावक जमीन तैयार करब
व्याख्या: ओ पहले वंश-स्मृति मानैत अछि, फेर ओकर वाणिज्यिक उपयोग सुझबैत अछि।

प्रश्न 3151. रिसॉर्ट प्रस्ताव गाछ-पोखरि कैँ कोना बदलय चाहैत अछि?
क. आत्मीय विरासत कैँ सजावट, नौकाविहार आ मेहमान-उपभोगक वस्तु बनाबय चाहैत अछि
ख. गाछक प्राकृतिक रक्षा मात्र
ग. पोखरि सार्वजनिक जलाशय
घ. गामक सामुदायिक पुनर्निर्माण
उत्तर: क. आत्मीय विरासत कैँ सजावट, नौकाविहार आ मेहमान-उपभोगक वस्तु बनाबय चाहैत अछि
व्याख्या: प्रस्ताव स्मृति-केंद्र कैँ पर्यटक-सामग्रीमे रूपान्तरित करैत अछि।

प्रश्न 3152. कामनाक संयत रोष कथामे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ओ बाजारू लालचकैँ बुझि अस्वीकार करैत अछि, मुदा भीतर असुरक्षा बचल रहैत अछि
ख. ओ तुरन्त राजी भऽ जाइत अछि
ग. ओ हँसि माफ करैत अछि
घ. ओ गाम छोड़ि दैत अछि
उत्तर: क. ओ बाजारू लालचकैँ बुझि अस्वीकार करैत अछि, मुदा भीतर असुरक्षा बचल रहैत अछि
व्याख्या: कामना प्रतिरोध करती, पर संरक्षण-संकट तीव्र रहैत अछि।

खण्ड ३२१ : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: लाठी, गन्ध आ अन्तर्भय

प्रश्न 3153. दलाल विदा भेलाक बाद कामना कारी यादवक लाठी किएक उठबैत छथि?
क. पूर्वज-स्मृति, शक्ति आ निर्णयक आधार छूअबाक भावसँ
ख. रिसॉर्ट सजावट लेल
ग. लाठी बेचबाक लेल
घ. खेल करबाक लेल
उत्तर: क. पूर्वज-स्मृति, शक्ति आ निर्णयक आधार छूअबाक भावसँ
व्याख्या: लाठी संकट क्षणमे पूर्वजक उपस्थिति जकाँ उभरैत अछि।

प्रश्न 3154. लाठी पर पिहनेक लाली-चमक नहि रहब कोन संकेत दैत अछि?
क. पुरान शक्ति आ विरासतक क्षय
ख. नव जीवन
ग. पूर्ण संरक्षण
घ. धातुक चमक
उत्तर: क. पुरान शक्ति आ विरासतक क्षय
व्याख्या: वस्तुकैँ जोगा राखल गेल, मुदा ओ भीतरसँ कमजोर भऽ चुकल।

प्रश्न 3155. लाठी छूए सँ कामनाक हाथ कारी भऽ जाएब कोन प्रतीक बनैत अछि?
क. अतीतक गाढ़ गन्ध/धूलि वर्तमान पर चिपकि जाएब
ख. सौन्दर्य प्रसाधन
ग. अमंगल मात्र
घ. हास्य
उत्तर: क. अतीतक गाढ़ गन्ध/धूलि वर्तमान पर चिपकि जाएब
व्याख्या: स्मृति स्पर्श करिते ओकर दाग वर्तमान देह पर उतरैत अछि।

प्रश्न 3156. लाठी फॅक/टुकड़ी-टुकड़ी भऽ जाएबाक आशंका किएक भयावह अछि?
क. वंश-स्मृति आ प्रतीकात्मक सहाराक टूटि जाएबाक डर
ख. लाठी भारी अछि
ग. खेल खराब
घ. कमरा छोट
उत्तर: क. वंश-स्मृति आ प्रतीकात्मक सहाराक टूटि जाएबाक डर
व्याख्या: कामना अनुभव करैत छथि जे पूर्वजक प्रतीक सेहो खोखला भऽ सकैत अछि।

प्रश्न 3157. हाथ धोएलाक बादो गन्ध नहि हटब कोन अर्थ दैत अछि?
क. स्मृति, अपराध-बोध आ पूर्वज-सम्बन्धक चिपकल असर
ख. साबुनक कमी मात्र
ग. लाठी सुगन्धित अछि
घ. घटना असंगत
उत्तर: क. स्मृति, अपराध-बोध आ पूर्वज-सम्बन्धक चिपकल असर
व्याख्या: अतीतक गन्ध केवल मैल नहि, मनोवैज्ञानिक उपस्थिति बनैत अछि।

प्रश्न 3158. पछुआड़ि दिस गाछ पर कुड़हरि चलैत बुझायब कोन आंतरिक भय अछि?
क. विरासत-उजाड़ आ प्रकृति-विनाशक कल्पना/आशंका
ख. गाछक उत्सव
ग. किसानी सफलता
घ. बगीचाक सिंचाई
उत्तर: क. विरासत-उजाड़ आ प्रकृति-विनाशक कल्पना/आशंका
व्याख्या: दलालक प्रस्ताव बाद कामना भीतर गाछ कटबाक दृश्य सुनैत छथि।

प्रश्न 3159. पोखरि दिस तकबाक साहस नहि होयब किएक अर्थपूर्ण अछि?
क. पोखरि पूर्वज-स्मृति आ सम्भावित विनाशक केन्द्र बनि गेल अछि
ख. पोखरि नहि अछि
ग. माछ नहि अछि
घ. दृष्टि असंबंधित
उत्तर: क. पोखरि पूर्वज-स्मृति आ सम्भावित विनाशक केन्द्र बनि गेल अछि
व्याख्या: पोखरि कैँ देखब म्हणजे विरासत-भयक सामना करब।

प्रश्न 3160. क्लिनिकक फोन पर तुरन्त लौटबाक निर्णय कोन द्वंद्व देखबैत अछि?
क. शहरी पेशागत जीवन विरासत-संकट पर भारी पड़ैत अछि, मुदा मन गाममे अटकल अछि
ख. ओ गाममे स्थायी बसि जाइत अछि
ग. क्लिनिक बन्द करैत अछि
घ. संकट समाप्त होइत अछि
उत्तर: क. शहरी पेशागत जीवन विरासत-संकट पर भारी पड़ैत अछि, मुदा मन गाममे अटकल अछि
व्याख्या: कामनाक आधुनिक जीवन ओकरा फेर शहर बुलबैत अछि।

प्रश्न 3161. “तर्पण” शीर्षक एहि प्रसंगमे ककर तर्पण-जकाँ अनुभव बनबैत अछि?
क. पूर्वज, गाम, पोखरि-गाछ आ उजड़ैत स्मृति प्रति आंतरिक अर्पण/दुःख
ख. विवाह भोज
ग. विज्ञापन योजना
घ. प्रेमगीत
उत्तर: क. पूर्वज, गाम, पोखरि-गाछ आ उजड़ैत स्मृति प्रति आंतरिक अर्पण/दुःख
व्याख्या: कथा मृत/मिटैत ग्रामीण संसार लेल भावात्मक तर्पण बनैत अछि।

प्रश्न 3162. एहि खण्डक मूल साहित्यिक प्रभाव की अछि?
क. बाजार-संकट बाद स्मृति-वस्तु, गन्ध आ भयक गहन मनोवैज्ञानिक चित्रण
ख. केवल सुरक्षा-एजेंसी सूचना
ग. केवल हास्य
घ. केवल यात्रा-वर्णन
उत्तर: क. बाजार-संकट बाद स्मृति-वस्तु, गन्ध आ भयक गहन मनोवैज्ञानिक चित्रण
व्याख्या: लाठी आ गन्ध कहानीक प्रतीकात्मक चरम बनबैत अछि।

खण्ड ३२२ : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: पर्यावरण, विरासत आ प्रतिरोध

प्रश्न 3163. “तर्पण”मे गाछ-बिरिछ केवल दृश्य-सज्जा नहि किएक अछि?
क. ओ परिवार, स्मृति, पर्यावरण आ पुरान गामक जीवित अवशेष छथि
ख. केवल लकड़ीक स्रोत
ग. सजावट मात्र
घ. कहानीसँ बाहर
उत्तर: क. ओ परिवार, स्मृति, पर्यावरण आ पुरान गामक जीवित अवशेष छथि
व्याख्या: गाछसभ पीढ़ीगत जीवन आ सांस्कृतिक निरंतरताक प्रतीक छथि।

प्रश्न 3164. पोखरि कथामे सामुदायिक स्मारक कोना बनैत अछि?
क. कारी यादवक परोपकार आ गामक जल-संसारक चिह्न रूपमे
ख. निजी स्विमिंग पूल
ग. होटल परियोजना मात्र
घ. माछ-बाजार मात्र
उत्तर: क. कारी यादवक परोपकार आ गामक जल-संसारक चिह्न रूपमे
व्याख्या: पोखरि नाम, श्रम आ समाजक संग जुड़ल अछि।

प्रश्न 3165. रिसॉर्ट प्रस्ताव विरासतकेँ बचाबयक दावा करितो किएक विनाशकारी अछि?
क. सुरक्षा नामे घर-आँगन तोड़ि स्मृति केँ उपभोग-सामग्री बनाबय चाहैत अछि
ख. विरासत पूर्ण जोगबैत अछि
ग. कोनो बदलाव नहि
घ. गामक लोकतंत्र पुनर्जीवित करैत अछि
उत्तर: क. सुरक्षा नामे घर-आँगन तोड़ि स्मृति केँ उपभोग-सामग्री बनाबय चाहैत अछि
व्याख्या: बाजार संरक्षणक भाषा मे कब्जा करैत अछि।

प्रश्न 3166. कामना यादवक असमंजस कोन आधुनिक वर्गक संकट देखबैत अछि?
क. शहरमे स्थापित संतति जे पैतृक गाम बचाबय चाहैत अछि मुदा उपस्थित नहि रहि सकैत
ख. स्थायी ग्रामीण किसान
ग. बिना शिक्षा पात्र
घ. सैनिक जीवन
उत्तर: क. शहरमे स्थापित संतति जे पैतृक गाम बचाबय चाहैत अछि मुदा उपस्थित नहि रहि सकैत
व्याख्या: कामना विरासत चाहैत छथि, पर जीवन/पेशा शहरमे अछि।

प्रश्न 3167. रामजी मंडल पात्र ककर प्रतीक छथि?
क. पुरान निष्ठा, श्रम आ घर-गामक आखिरी जीवित रखवारी
ख. बाजार दलाल
ग. रिसॉर्ट मालिक
घ. विदेशी मेहमान
उत्तर: क. पुरान निष्ठा, श्रम आ घर-गामक आखिरी जीवित रखवारी
व्याख्या: रामजी पुरान व्यवस्था कैं यथासंभव बचौने छथि।

प्रश्न 3168. कार कौआक टाँहिमारब कोन पूर्वाभास जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि?
क. मंगनीक घर पर अशुभ/अशांत समयक संकेत
ख. पूर्ण उत्सव
ग. संगीताभ्यास
घ. हास्य दृश्य
उत्तर: क. मंगनीक घर पर अशुभ/अशांत समयक संकेत
व्याख्या: माताक मृत्यु आ घरक अकेलापनक पूर्व-संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 3169. मंगनीक पत्नीक मृत्यु बाद घरक स्थिति की बनैत अछि?
क. मंगनी औरो अकेला भऽ बाड़ी-झाड़ीमे लागल रहैत छथि
ख. घर नव मेला बनि जाइत अछि
ग. सब समस्या समाप्त
घ. गाम पुनर्जीवित
उत्तर: क. मंगनी औरो अकेला भऽ बाड़ी-झाड़ीमे लागल रहैत छथि
व्याख्या: मृत्यु परिवारक भावनात्मक केन्द्र तोड़ैत अछि।

प्रश्न 3170. गामक बाहरी विकासक भीतर पहिचान-ह्रास किएक बारम्बार देखाइत अछि?
क. फार्महाउस, फैक्टरी, टावर, विज्ञापन आ पलायन पुरान सामाजिक-संरचना हटबैत अछि
ख. पुरान गाम बिल्कुल जोगायल अछि
ग. कोनो बदलाव नहि
घ. केवल प्राकृतिक वृद्धि
उत्तर: क. फार्महाउस, फैक्टरी, टावर, विज्ञापन आ पलायन पुरान सामाजिक-संरचना हटबैत अछि
व्याख्या: कथा विकासक उपनिवेशकारी रूप पर प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 3171. कामनाक प्रतिरोध पूर्ण समाधान नहि किएक?
क. दलालकैं भगेलाक बादो रखबार, खर्च, दूरी आ क्षयक समस्या बचल अछि
ख. ओ सब बेचि देलनि
ग. गाम बचि गेल पूर्णतः
घ. समस्या कल्पना मात्र
उत्तर: क. दलालकैं भगेलाक बादो रखबार, खर्च, दूरी आ क्षयक समस्या बचल अछि
व्याख्या: कथा आसान समाधान नहि दैत; प्रतिरोध असुरक्षित अछि।

प्रश्न 3172. “तर्पण”क समग्र पाठक-अर्थ की अछि?
क. गाम, पर्यावरण, पूर्वज, भाषा-समुदाय आ बाजारक संघर्षक मार्मिक कथा
ख. केवल संपत्ति विवाद
ग. केवल भूतकथा
घ. केवल सुरक्षा नौकरी
उत्तर: क. गाम, पर्यावरण, पूर्वज, भाषा-समुदाय आ बाजारक संघर्षक मार्मिक कथा
व्याख्या: ई कहानी भूमण्डलीकरणक बीच मिथिला-गामक स्मृति आ क्षरणक गहन आख्यान अछि।

खण्ड ३२३ : विदेह-सदेह १ — आभाष, छठि आ मायानन्द: संस्कृति-रक्षा के तीन रूप

प्रश्न 3173. आभाष लाभ, राम दयाल राकेश आ मायानन्द मिश्रक पाठ एकसाथ पढ़लासँ कोन साझा धुरी देखाइत अछि?
क. भाषा-संस्कृति कैँ अलग-अलग माध्यमसँ बचाबयक चिन्ता
ख. केवल हास्य
ग. किसी एक लेखकक जीवनी
घ. पृष्ठ-सूची
उत्तर: क. भाषा-संस्कृति कैँ अलग-अलग माध्यमसँ बचाबयक चिन्ता
व्याख्या: गीत, पावनि आ साहित्य तीनू सांस्कृतिक रक्षा केर क्षेत्र बनैत अछि।

प्रश्न 3174. आभाष लाभक मौलिक संगीत आग्रह आ मायानन्दक भाषा-समर्पण आग्रहमे समानता की अछि?
क. दूनू सतही लोकप्रियता छोड़ि गहन सांस्कृतिक निष्ठा चाहैत छथि
ख. दूनू पैरोडी चाहैत छथि
ग. दूनू भाषा छोड़ैत छथि
घ. दूनू संस्कृति-विरोधी छथि
उत्तर: क. दूनू सतही लोकप्रियता छोड़ि गहन सांस्कृतिक निष्ठा चाहैत छथि
व्याख्या: मौलिकता आ समर्पण भाषा-संस्कृतिक जीवंत आधार छथि।

प्रश्न 3175. छठि पावनिक लोकतांत्रिकता मायानन्दक समग्र साहित्य-दृष्टिसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. दूनू खण्डित दृष्टि छोड़ि समावेश आ समग्रता पर बल दैत अछि
ख. दूनू विभाजनक समर्थन
ग. दूनू केवल निजी पूजा
घ. दूनू समाज-विरोधी
उत्तर: क. दूनू खण्डित दृष्टि छोड़ि समावेश आ समग्रता पर बल दैत अछि
व्याख्या: छठि समाजक समता देखबैत अछि, मायानन्द साहित्यक समग्र दृष्टि चाहैत छथि।

प्रश्न 3176. संचार माध्यमबारे आभाषक सावधानी आ विदेह-संदर्भक अर्थ की अछि?
क. मीडिया चयन मौलिक संस्कृति कैँ बचा वा बिगाड़ि सकैत अछि
ख. मीडिया निरर्थक
ग. गीत बिना माध्यम
घ. केवल छपाइ महत्त्वपूर्ण
उत्तर: क. मीडिया चयन मौलिक संस्कृति कैँ बचा वा बिगाड़ि सकैत अछि
व्याख्या: कौन गीत बजैत अछि, से सांस्कृतिक दिशा तय करैत अछि।

प्रश्न 3177. राम दयाल राकेशक लोकवाद्य-समर्थन आ आभाषक मौलिक संगीत-विमर्शमे कोन सम्बन्ध अछि?
क. दूनू स्थानीय ध्वनि-संस्कृतिक असली पहचान पर बल दैत अछि
ख. दूनू विदेशी वाद्य मात्र चाहैत छथि
ग. लोकध्वनि हटाबय चाहैत छथि
घ. संगीत अप्रासंगिक मानैत छथि
उत्तर: क. दूनू स्थानीय ध्वनि-संस्कृतिक असली पहचान पर बल दैत अछि
व्याख्या: ढोल-पीपही आ मौलिक गीत, दुनू संस्कृति के ध्वनि-चिह्न छथि।

प्रश्न 3178. मायानन्दक परिवारमे भाषा-स्थानक आग्रह छठिक पारिवारिक/सामुदायिक स्वरूपसँ कोना मेल खाइत अछि?
क. संस्कृति घर आ समुदाय दुनू ठाम जीबैत अछि
ख. केवल स्कूल महत्त्वपूर्ण
ग. परिवार निष्क्रिय
घ. समुदाय अप्रासंगिक
उत्तर: क. संस्कृति घर आ समुदाय दुनू ठाम जीबैत अछि
व्याख्या: भाषा आ पावनि दुनू परिवारक अभ्याससँ टिकैत अछि।

प्रश्न 3179. तीनू पाठमे आधुनिकता प्रति दृष्टि एकरेखीय नहि किएक अछि?
क. रिमिक्स/मीडिया/संवैधानिकता/शिक्षा स्वीकारल जाएत अछि, मुदा मूल्य-संरक्षणक शर्तसँ
ख. आधुनिकता पूर्ण निषिद्ध
ग. परम्परा पूर्ण त्यक्त
घ. कोनो विचार नहि
उत्तर: क. रिमिक्स/मीडिया/संवैधानिकता/शिक्षा स्वीकारल जाएत अछि, मुदा मूल्य-संरक्षणक शर्तसँ
व्याख्या: एहि पाठसभमे सुधार, तकनीक आ आधुनिकता सांस्कृतिक अनुशासनक संग चाहल गेल।

प्रश्न 3180. छठि पावनि आ मैथिली संगीत दुनूक सार्वजनिकता कोन कार्य करैत अछि?
क. भाषा-संस्कृतिक सामूहिक दृश्य/श्रव्य उपस्थिति बनबैत अछि
ख. संस्कृति घरमे बंद करैत अछि
ग. लोककेँ अलग करैत अछि
घ. साहित्य हटबैत अछि
उत्तर: क. भाषा-संस्कृतिक सामूहिक दृश्य/श्रव्य उपस्थिति बनबैत अछि
व्याख्या: पावनि घाट पर, गीत मंच/माध्यम पर समुदाय बनबैत अछि।

प्रश्न 3181. मायानन्दक तटस्थ समीक्षा आग्रह सांस्कृतिक संवाद लेल किएक जरूरी अछि?
क. पूर्वग्रह हटला पर साहित्यिक समाज स्वस्थ बनैत अछि
ख. व्यक्तिगत आक्षेप बढ़ाबय
ग. समालोचना बंद करब
घ. रचना नहि पढ़ब
उत्तर: क. पूर्वग्रह हटला पर साहित्यिक समाज स्वस्थ बनैत अछि
व्याख्या: सांस्कृतिक रक्षा मे आलोचना-संस्कार सेहो जरूरी अछि।

प्रश्न 3182. एहि आभाष-छठि-मायानन्द तुलनात्मक खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. संगीत, पावनि, साहित्य, भाषा आ समीक्षा — सभ मिलि मैथिली-संस्कृतिक रक्षा करैत अछि
ख. केवल गीत पर्याप्त
ग. केवल तिथि महत्त्वपूर्ण
घ. कोनो सांस्कृतिक सम्बन्ध नहि
उत्तर: क. संगीत, पावनि, साहित्य, भाषा आ समीक्षा — सभ मिलि मैथिली-संस्कृतिक रक्षा करैत अछि
व्याख्या: तीनू पाठ मिलि संस्कृति-रक्षाक बहु-माध्यमिक मॉडल देत अछि।

खण्ड ३२४ : विदेह-सदेह १ — “बुढ़ी माता” आ “तर्पण”: आधुनिक मिथिला कथा-दृष्टि

प्रश्न 3183. “बुढ़ी माता” आ “तर्पण” दुनू कथामे स्मृति कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. जीवन-दिशा आ विरासत-संकट दुनू केँ अर्थ देबैत अछि
ख. स्मृति अनुपस्थित
ग. केवल हास्य
घ. विज्ञापन-सूची
उत्तर: क. जीवन-दिशा आ विरासत-संकट दुनू केँ अर्थ देबैत अछि
व्याख्या: पहिल कथा व्यक्तिगत स्मृति-कृपा, दोसर पूर्वज-गाम स्मृति पर टिकल अछि।

प्रश्न 3184. दूनू कथामे आधुनिकता केना उपस्थित अछि?
क. कोचिंग/करियर/कॉर्पोरेट आ क्लिनिक/रिसॉर्ट/भूमि-बाजारक रूपमे
ख. आधुनिकता अनुपस्थित
ग. केवल प्राचीन आख्यान
घ. सिर्फ लोकगीत
उत्तर: क. कोचिंग/करियर/कॉर्पोरेट आ क्लिनिक/रिसॉर्ट/भूमि-बाजारक रूपमे
व्याख्या: दूनू कथा आधुनिक जीवनक दबावक भीतर मिथिला-चेतना देखबैत अछि।

प्रश्न 3185. “बुढ़ी माता”मे अलौकिक सम्भावना आ “तर्पण”मे प्रतीकात्मक यथार्थ — मुख्य फर्क की अछि?
क. पहिलमे रहस्यमय रक्षक; दोसरमे सामाजिक-पर्यावरणीय क्षरणक यथार्थवादी प्रतीक
ख. दूनू पूर्ण समान
ग. दूनू केवल हास्य
घ. दूनू विज्ञान-लेख
उत्तर: क. पहिलमे रहस्यमय रक्षक; दोसरमे सामाजिक-पर्यावरणीय क्षरणक यथार्थवादी प्रतीक
व्याख्या: दूनू अलग शिल्पसँ मानवीय संकट पकड़ैत अछि।

प्रश्न 3186. बुढ़ी माता आ कारी यादवक लाठी दूनू प्रतीक कोन सम्बन्ध रखैत अछि?
क. पूर्वज/मातृ/लोक-शक्तिक स्मृतिमय संरक्षण
ख. हथियार-हिंसा मात्र
ग. सजावट
घ. व्यापारिक वस्तु
उत्तर: क. पूर्वज/मातृ/लोक-शक्तिक स्मृतिमय संरक्षण
व्याख्या: दूनू पात्र/वस्तु संकट क्षणमे आंतरिक सहारा बनैत अछि।

प्रश्न 3187. दूनू कथामे घरक अर्थ किएक भिन्न होइतो गहिर अछि?
क. बुढ़ी माताक लेल आश्रय; तर्पणमे पूर्वज-स्मृति आ विरासत-संघर्ष
ख. घर अप्रासंगिक
ग. घर केवल होटल
घ. घर नहि अछि
उत्तर: क. बुढ़ी माताक लेल आश्रय; तर्पणमे पूर्वज-स्मृति आ विरासत-संघर्ष
व्याख्या: घर सामाजिक नैतिकता आ सांस्कृतिक उत्तराधिकारक केन्द्र बनैत अछि।

प्रश्न 3188. दूनू कथाक नायक/नायिका शिक्षित आधुनिक वर्ग सँ किएक छथि?
क. कथासभ परम्परा आ आधुनिक पेशागत जीवनक टकराव देखबैत अछि
ख. अशिक्षित पात्र निषिद्ध
ग. गामक लोग नहि
घ. शहरक महिमा मात्र
उत्तर: क. कथासभ परम्परा आ आधुनिक पेशागत जीवनक टकराव देखबैत अछि
व्याख्या: शिक्षा/पेशा पात्रकेँ आधुनिक बनबैत अछि, मुदा लोक-स्मृति छोड़ब नहि देत।

प्रश्न 3189. दुर्घटना-बचाव आ रिसॉर्ट-प्रस्ताव दूनू कथामे संकट-क्षण किएक अछि?
क. एकमे जीवन बाँचैत अछि, दोसरमे विरासत बेचबाक दबाव आबैत अछि
ख. दूनू हास्य दृश्य
ग. दूनू अप्रासंगिक
घ. दूनू उत्सव मात्र
उत्तर: क. एकमे जीवन बाँचैत अछि, दोसरमे विरासत बेचबाक दबाव आबैत अछि
व्याख्या: संकट क्षण पात्रक नैतिक दिशा उजागर करैत अछि।

प्रश्न 3190. “बुढ़ी माता”क सेवा आ “तर्पण”क संरक्षण-चिन्ता कोन साझा मूल्य देखबैत अछि?
क. करुणा, उत्तरदायित्व आ स्मृति-निष्ठा
ख. लोभ
ग. उपेक्षा
घ. स्मृति-विरोध
उत्तर: क. करुणा, उत्तरदायित्व आ स्मृति-निष्ठा
व्याख्या: दूनू पाठ पाठकसँ नैतिक कर्म माँगैत अछि।

प्रश्न 3191. दूनू कथामे मिथिला कतेक रूपमे उपस्थित अछि?
क. भाषा, परिवार, लोकविश्वास, गाम, पोखरि, गाछ, करियर-पलायन आ सेवा-कामना रूपमे
ख. केवल नक्शा
ग. केवल राजधानी
घ. कोनो उपस्थिति नहि
उत्तर: क. भाषा, परिवार, लोकविश्वास, गाम, पोखरि, गाछ, करियर-पलायन आ सेवा-कामना रूपमे
व्याख्या: मिथिला स्थिर भूगोल नहि, अनुभव-समुदाय बनैत अछि।

प्रश्न 3192. एहि तुलनात्मक खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. सदेह १क कथा-संसार आधुनिक बदलावक बीच लोक-स्मृति, करुणा आ विरासत-रक्षा कें केन्द्र मे रखैत अछि
ख. कथा-संसार सतही अछि
ग. केवल पृष्ठीय जानकारी
घ. कोनो सामाजिक गहराई नहि
उत्तर: क. सदेह १क कथा-संसार आधुनिक बदलावक बीच लोक-स्मृति, करुणा आ विरासत-रक्षा कें केन्द्र मे रखैत अछि
व्याख्या: दूनू कथासँ आधुनिक मैथिली कथा-दृष्टिक गहन सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली”

प्रश्न 3193. खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली” — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
व्याख्या: कविता मैथिली कें गर्भ, सोइरी, श्वास, खाँडो-खुड़ी-बलान आ दिनाभदरी-सलहेशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3194. खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली” — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
व्याख्या: कविता मैथिली कें गर्भ, सोइरी, श्वास, खाँडो-खुड़ी-बलान आ दिनाभदरी-सलहेशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3195. खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली” — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
व्याख्या: कविता मैथिली कें गर्भ, सोइरी, श्वास, खाँडो-खुड़ी-बलान आ दिनाभदरी-सलहेशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3196. खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली” — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
व्याख्या: कविता मैथिली कें गर्भ, सोइरी, श्वास, खाँडो-खुड़ी-बलान आ दिनाभदरी-सलहेशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3197. खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली” — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
व्याख्या: कविता मैथिली कैँ गर्भ, सोइरी, श्वास, खाँडो-खुड़ी-बलान आ दिनाभदरी-सलहेशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3198. खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली” — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
व्याख्या: कविता मैथिली कैँ गर्भ, सोइरी, श्वास, खाँडो-खुड़ी-बलान आ दिनाभदरी-सलहेशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3199. खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली” — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
व्याख्या: कविता मैथिली कैँ गर्भ, सोइरी, श्वास, खाँडो-खुड़ी-बलान आ दिनाभदरी-सलहेशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3200. खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली” — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
व्याख्या: कविता मैथिली कैँ गर्भ, सोइरी, श्वास, खाँडो-खुड़ी-बलान आ दिनाभदरी-सलहेशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3201. खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली” — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
व्याख्या: कविता मैथिली कैँ गर्भ, सोइरी, श्वास, खाँडो-खुड़ी-बलान आ दिनाभदरी-सलहेशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3202. खण्ड ३२५ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “हमर मैथिली” — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मैथिली मातृदेह, श्वास, स्थानीय भूगोल आ लोक-संस्कृतिक जीवन-आधार अछि
व्याख्या: कविता मैथिली कैँ गर्भ, सोइरी, श्वास, खाँडो-खुड़ी-बलान आ दिनाभदरी-सलहेशसँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ”

प्रश्न 3203. खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ” — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
व्याख्या: प्रेमक कल्पना जरल तरकारी, गामसँ आयल चिट्ठी, खेत, बहिन, भाई आ मायक बीमारीक यथार्थसँ टूटैत अछि।

प्रश्न 3204. खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ” — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
व्याख्या: प्रेमक कल्पना जरल तरकारी, गामसँ आयल चिट्ठी, खेत, बहिन, भाई आ मायक बीमारीक यथार्थसँ टूटैत अछि।

प्रश्न 3205. खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ” — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
व्याख्या: प्रेमक कल्पना जरल तरकारी, गामसँ आयल चिट्ठी, खेत, बहिन, भाई आ मायक बीमारीक यथार्थसँ टूटैत अछि।

प्रश्न 3206. खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ” — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
व्याख्या: प्रेमक कल्पना जरल तरकारी, गामसँ आयल चिट्ठी, खेत, बहिन, भाई आ मायक बीमारीक यथार्थसँ टूटैत अछि।

प्रश्न 3207. खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ” — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
व्याख्या: प्रेमक कल्पना जरल तरकारी, गामसँ आयल चिट्ठी, खेत, बहिन, भाई आ मायक बीमारीक यथार्थसँ टूटैत अछि।

प्रश्न 3208. खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ” — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
व्याख्या: प्रेमक कल्पना जरल तरकारी, गामसँ आयल चिट्ठी, खेत, बहिन, भाई आ मायक बीमारीक यथार्थसँ टूटैत अछि।

प्रश्न 3209. खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ” — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
व्याख्या: प्रेमक कल्पना जरल तरकारी, गामसँ आयल चिट्ठी, खेत, बहिन, भाई आ मायक बीमारीक यथार्थसँ टूटैत अछि।

प्रश्न 3210. खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ” — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
व्याख्या: प्रेमक कल्पना जरल तरकारी, गामसँ आयल चिट्ठी, खेत, बहिन, भाई आ मायक बीमारीक यथार्थसँ टूटैत अछि।

प्रश्न 3211. खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ” — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
व्याख्या: प्रेमक कल्पना जरल तरकारी, गामसँ आयल चिट्ठी, खेत, बहिन, भाई आ मायक बीमारीक यथार्थसँ टूटैत अछि।

प्रश्न 3212. खण्ड ३२६ : विदेह-सदेह १ — अमरेन्द्र यादव: “कल्पना आ यथार्थ” — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. प्रिय-स्मृति आ गाम-परिवारक कठोर आर्थिक यथार्थक टकराव
व्याख्या: प्रेमक कल्पना जरल तरकारी, गामसँ आयल चिट्ठी, खेत, बहिन, भाई आ मायक बीमारीक यथार्थसँ टूटैत अछि।

खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग

प्रश्न 3213. खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
व्याख्या: अष्टावक्र, जल-पात्र आ जनकक उत्तर विदेहत्वक आध्यात्मिक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 3214. खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
व्याख्या: अष्टावक्र, जल-पात्र आ जनकक उत्तर विदेहत्वक आध्यात्मिक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 3215. खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
व्याख्या: अष्टावक्र, जल-पात्र आ जनकक उत्तर विदेहत्वक आध्यात्मिक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 3216. खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
व्याख्या: अष्टावक्र, जल-पात्र आ जनकक उत्तर विदेहत्वक आध्यात्मिक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 3217. खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
व्याख्या: अष्टावक्र, जल-पात्र आ जनकक उत्तर विदेहत्वक आध्यात्मिक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 3218. खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
व्याख्या: अष्टावक्र, जल-पात्र आ जनकक उत्तर विदेहत्वक आध्यात्मिक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 3219. खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
व्याख्या: अष्टावक्र, जल-पात्र आ जनकक उत्तर विदेहत्वक आध्यात्मिक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 3220. खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
व्याख्या: अष्टावक्र, जल-पात्र आ जनकक उत्तर विदेहत्वक आध्यात्मिक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 3221. खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
व्याख्या: अष्टावक्र, जल-पात्र आ जनकक उत्तर विदेहत्वक आध्यात्मिक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 3222. खण्ड ३२७ : विदेह-सदेह १ — आचारण झा: जनक-अष्टावक्र प्रसंग — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. कर्म करितो मन-आत्मासँ आसक्त नहि रहबाक जनकक स्थिति
व्याख्या: अष्टावक्र, जल-पात्र आ जनकक उत्तर विदेहत्वक आध्यात्मिक अर्थ खोलैत अछि।

खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता

प्रश्न 3223. खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
व्याख्या: कवितामे वक्ता अपन शब्द, इच्छा, मेघ आ प्रश्न राखैत छथि; दूसरा पक्ष नियम, क्रम, चक्र आ पलायनक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 3224. खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
व्याख्या: कवितामे वक्ता अपन शब्द, इच्छा, मेघ आ प्रश्न राखैत छथि; दूसरा पक्ष नियम, क्रम, चक्र आ पलायनक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 3225. खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
व्याख्या: कवितामे वक्ता अपन शब्द, इच्छा, मेघ आ प्रश्न राखैत छथि; दूसरा पक्ष नियम, क्रम, चक्र आ पलायनक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 3226. खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
व्याख्या: कवितामे वक्ता अपन शब्द, इच्छा, मेघ आ प्रश्न राखैत छथि; दूसरा पक्ष नियम, क्रम, चक्र आ पलायनक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 3227. खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
व्याख्या: कवितामे वक्ता अपन शब्द, इच्छा, मेघ आ प्रश्न राखैत छथि; दूसरा पक्ष नियम, क्रम, चक्र आ पलायनक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 3228. खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
व्याख्या: कवितामे वक्ता अपन शब्द, इच्छा, मेघ आ प्रश्न राखैत छथि; दूसरा पक्ष नियम, क्रम, चक्र आ पलायनक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 3229. खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
व्याख्या: कवितामे वक्ता अपन शब्द, इच्छा, मेघ आ प्रश्न राखैत छथि; दूसरा पक्ष नियम, क्रम, चक्र आ पलायनक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 3230. खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
व्याख्या: कवितामे वक्ता अपन शब्द, इच्छा, मेघ आ प्रश्न राखैत छथि; दूसरा पक्ष नियम, क्रम, चक्र आ पलायनक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 3231. खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
व्याख्या: कवितामे वक्ता अपन शब्द, इच्छा, मेघ आ प्रश्न राखैत छथि; दूसरा पक्ष नियम, क्रम, चक्र आ पलायनक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 3232. खण्ड ३२८ : विदेह-सदेह १ — अजय सरवैया: आधुनिक प्रेम-कविता — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. शब्द/इच्छा/प्रतिभा बनाम नियम/क्रम/बन्धन
व्याख्या: कवितामे वक्ता अपन शब्द, इच्छा, मेघ आ प्रश्न राखैत छथि; दूसरा पक्ष नियम, क्रम, चक्र आ पलायनक प्रतीक बनैत अछि।

खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य

प्रश्न 3233. खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
व्याख्या: घटक, सजावट, परख, बोली, रकम आ “भैया बिकेलथि” जकाँ बिम्ब दहेज-प्रथा पर तीख व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3234. खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
व्याख्या: घटक, सजावट, परख, बोली, रकम आ “भैया बिकेलथि” जकाँ बिम्ब दहेज-प्रथा पर तीख व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3235. खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
व्याख्या: घटक, सजावट, परख, बोली, रकम आ “भैया बिकेलथि” जकाँ बिम्ब दहेज-प्रथा पर तीख व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3236. खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
व्याख्या: घटक, सजावट, परख, बोली, रकम आ “भैया बिकेलथि” जकाँ बिम्ब दहेज-प्रथा पर तीख व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3237. खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
व्याख्या: घटक, सजावट, परख, बोली, रकम आ “भैया बिकेलथि” जकाँ बिम्ब दहेज-प्रथा पर तीख व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3238. खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
व्याख्या: घटक, सजावट, परख, बोली, रकम आ “भैया बिकेलथि” जकाँ बिम्ब दहेज-प्रथा पर तीख व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3239. खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
व्याख्या: घटक, सजावट, परख, बोली, रकम आ “भैया बिकेलथि” जकाँ बिम्ब दहेज-प्रथा पर तीख व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3240. खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
व्याख्या: घटक, सजावट, परख, बोली, रकम आ “भैया बिकेलथि” जकाँ बिम्ब दहेज-प्रथा पर तीख व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3241. खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
व्याख्या: घटक, सजावट, परख, बोली, रकम आ “भैया बिकेलथि” जकाँ बिम्ब दहेज-प्रथा पर तीख व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3242. खण्ड ३२९ : विदेह-सदेह १ — अजीत कुमार झा: दहेज-विरोधी व्यंग्य — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. वरक वस्तुकरण आ विवाहक बाजारू मोलभाव
व्याख्या: घटक, सजावट, परख, बोली, रकम आ “भैया बिकेलथि” जकाँ बिम्ब दहेज-प्रथा पर तीख व्यंग्य करैत अछि।

खण्ड ३३० : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि

प्रश्न 3243. खण्ड 330 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3244. खण्ड 330 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3245. खण्ड 330 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3246. खण्ड 330 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3247. खण्ड 330 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3248. खण्ड 330 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3249. खण्ड 330 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3250. खण्ड 330 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3251. खण्ड 330 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3252. खण्ड 330 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कामना यादवक गाम-फेरत दृष्टि — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

खण्ड ३३१ : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति

प्रश्न 3253. खण्ड 331 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3254. खण्ड 331 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3255. खण्ड 331 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3256. खण्ड 331 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3257. खण्ड 331 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3258. खण्ड 331 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3259. खण्ड 331 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3260. खण्ड 331 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3261. खण्ड 331 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3262. खण्ड 331 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: कारी यादवक पोखरि आ स्मृति — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

खण्ड ३३२ : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी

प्रश्न 3263. खण्ड 332 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3264. खण्ड 332 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3265. खण्ड 332 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3266. खण्ड 332 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3267. खण्ड 332 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3268. खण्ड 332 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3269. खण्ड 332 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3270. खण्ड 332 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3271. खण्ड 332 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3272. खण्ड 332 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: मंगनी यादवक शिक्षित जीवन आ गाम-दूरी — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

खण्ड ३३३ : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर

प्रश्न 3273. खण्ड 333 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3274. खण्ड 333 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3275. खण्ड 333 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3276. खण्ड 333 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3277. खण्ड 333 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3278. खण्ड 333 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3279. खण्ड 333 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3280. खण्ड 333 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3281. खण्ड 333 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3282. खण्ड 333 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: गामक रूपान्तरण, फैक्टरी आ टावर — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

खण्ड ३३४ : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण

प्रश्न 3283. खण्ड 334 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3284. खण्ड 334 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3285. खण्ड 334 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3286. खण्ड 334 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3287. खण्ड 334 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3288. खण्ड 334 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3289. खण्ड 334 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3290. खण्ड 334 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3291. खण्ड 334 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3292. खण्ड 334 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: रखबार-संकट आ संपत्ति-संरक्षण — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

खण्ड ३३५ : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव

प्रश्न 3293. खण्ड 335 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3294. खण्ड 335 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3295. खण्ड 335 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3296. खण्ड 335 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3297. खण्ड 335 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3298. खण्ड 335 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव

व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3299. खण्ड 335 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3300. खण्ड 335 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3301. खण्ड 335 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

प्रश्न 3302. खण्ड 335 : विदेह-सदेह १ — “तर्पण”: सी सी मिश्रा आ रिसॉर्ट प्रस्ताव — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. गाम, पूर्वज-स्मृति, पर्यावरण, जमीन आ बाजारवादी बदलावक टकराव
व्याख्या: “तर्पण”मे कामना, कारी यादव, मंगनी, रामजी मंडल, पोखरि-गाछ आ दलालक प्रस्ताव मार्फत आधुनिक मिथिला-गामक संकट खुलैत अछि।

खण्ड ३३६ : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि

प्रश्न 3303. खण्ड 336 : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
व्याख्या: आभाष लाभक बातचीत मे मौलिक संगीत, रिमिक्सक शर्त, संचार-माध्यमक जिम्मेदारी आ श्रमसँ सम्भावना पर बल अछि।

प्रश्न 3304. खण्ड 336 : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
व्याख्या: आभाष लाभक बातचीत मे मौलिक संगीत, रिमिक्सक शर्त, संचार-माध्यमक जिम्मेदारी आ श्रमसँ सम्भावना पर बल अछि।

प्रश्न 3305. खण्ड 336 : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
व्याख्या: आभाष लाभक बातचीत मे मौलिक संगीत, रिमिक्सक शर्त, संचार-माध्यमक जिम्मेदारी आ श्रमसँ सम्भावना पर बल अछि।

प्रश्न 3306. खण्ड 336 : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
व्याख्या: आभाष लाभक बातचीत मे मौलिक संगीत, रिमिक्सक शर्त, संचार-माध्यमक जिम्मेदारी आ श्रमसँ सम्भावना पर बल अछि।

प्रश्न 3307. खण्ड 336 : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
व्याख्या: आभाष लाभक बातचीत मे मौलिक संगीत, रिमिक्सक शर्त, संचार-माध्यमक जिम्मेदारी आ श्रमसँ सम्भावना पर बल अछि।

प्रश्न 3308. खण्ड 336 : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
व्याख्या: आभाष लाभक बातचीत मे मौलिक संगीत, रिमिक्सक शर्त, संचार-माध्यमक जिम्मेदारी आ श्रमसँ सम्भावना पर बल अछि।

प्रश्न 3309. खण्ड 336 : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
व्याख्या: आभाष लाभक बातचीत मे मौलिक संगीत, रिमिक्सक शर्त, संचार-माध्यमक जिम्मेदारी आ श्रमसँ सम्भावना पर बल अछि।

प्रश्न 3310. खण्ड 336 : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैँ पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
व्याख्या: आभाष लाभक बातचीत मे मौलिक संगीत, रिमिक्सक शर्त, संचार-माध्यमक जिम्मेदारी आ श्रमसँ सम्भावना पर बल अछि।

प्रश्न 3311. खण्ड 336 : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैं पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैं पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
व्याख्या: आभाष लाभक बातचीत मे मौलिक संगीत, रिमिक्सक शर्त, संचार-माध्यमक जिम्मेदारी आ श्रमसँ सम्भावना पर बल अछि।

प्रश्न 3312. खण्ड 336 : विदेह-सदेह १ — आभाष लाभक मौलिक संगीत-दृष्टि — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैं पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. मौलिक मैथिली गीत-संगीत कैं पैरोडी आ बाजार-दबावसँ बचाबयक आग्रह
व्याख्या: आभाष लाभक बातचीत मे मौलिक संगीत, रिमिक्सक शर्त, संचार-माध्यमक जिम्मेदारी आ श्रमसँ सम्भावना पर बल अछि।

खण्ड ३३७ : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श

प्रश्न 3313. खण्ड 337 : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
व्याख्या: राकेशक अन्तर्वार्ता छठिक खुला सामूहिकता, भेदभाव-विरोध, सूर्य-जल सम्बन्ध आ लोकवाद्यक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3314. खण्ड 337 : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
व्याख्या: राकेशक अन्तर्वार्ता छठिक खुला सामूहिकता, भेदभाव-विरोध, सूर्य-जल सम्बन्ध आ लोकवाद्यक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3315. खण्ड 337 : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
व्याख्या: राकेशक अन्तर्वार्ता छठिक खुला सामूहिकता, भेदभाव-विरोध, सूर्य-जल सम्बन्ध आ लोकवाद्यक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3316. खण्ड 337 : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
व्याख्या: राकेशक अन्तर्वार्ता छठिक खुला सामूहिकता, भेदभाव-विरोध, सूर्य-जल सम्बन्ध आ लोकवाद्यक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3317. खण्ड 337 : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
व्याख्या: राकेशक अन्तर्वार्ता छठिक खुला सामूहिकता, भेदभाव-विरोध, सूर्य्य-जल सम्बन्ध आ लोकवाद्यक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3318. खण्ड 337 : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
व्याख्या: राकेशक अन्तर्वार्ता छठिक खुला सामूहिकता, भेदभाव-विरोध, सूर्य्य-जल सम्बन्ध आ लोकवाद्यक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3319. खण्ड 337 : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
व्याख्या: राकेशक अन्तर्वार्ता छठिक खुला सामूहिकता, भेदभाव-विरोध, सूर्य्य-जल सम्बन्ध आ लोकवाद्यक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3320. खण्ड 337 : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
व्याख्या: राकेशक अन्तर्वार्ता छठिक खुला सामूहिकता, भेदभाव-विरोध, सूर्य्य-जल सम्बन्ध आ लोकवाद्यक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3321. खण्ड 337 : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
व्याख्या: राकेशक अन्तर्वार्ता छठिक खुला सामूहिकता, भेदभाव-विरोध, सूर्य्य-जल सम्बन्ध आ लोकवाद्यक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3322. खण्ड 337 : विदेह-सदेह १ — राम दयाल राकेशक छठि-विमर्श — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. छठि कैं सामूहिक, लोकतांत्रिक, मधेसी-सांस्कृतिक पावनि रूपमे देखब
व्याख्या: राकेशक अन्तर्वार्ता छठिक खुला सामूहिकता, भेदभाव-विरोध, सूर्य्य-जल सम्बन्ध आ लोकवाद्यक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ३३८ : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि

प्रश्न 3323. खण्ड 338 : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
व्याख्या: मायानन्द मिश्रक साक्षात्कारमे स्थानीय लेखन, सृजन-प्रेरणा, आलोचना, नवलेखन, स्त्री-दलित विमर्श आ परिवारमे भाषाक स्थान पर विचार अछि।

प्रश्न 3324. खण्ड 338 : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
व्याख्या: मायानन्द मिश्रक साक्षात्कारमे स्थानीय लेखन, सृजन-प्रेरणा, आलोचना, नवलेखन, स्त्री-दलित विमर्श आ परिवारमे भाषाक स्थान पर विचार अछि।

प्रश्न 3325. खण्ड 338 : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
व्याख्या: मायानन्द मिश्रक साक्षात्कारमे स्थानीय लेखन, सृजन-प्रेरणा, आलोचना, नवलेखन, स्त्री-दलित विमर्श आ परिवारमे भाषाक स्थान पर विचार अछि।

प्रश्न 3326. खण्ड 338 : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
व्याख्या: मायानन्द मिश्रक साक्षात्कारमे स्थानीय लेखन, सृजन-प्रेरणा, आलोचना, नवलेखन, स्त्री-दलित विमर्श आ परिवारमे भाषाक स्थान पर विचार अछि।

प्रश्न 3327. खण्ड 338 : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
व्याख्या: मायानन्द मिश्रक साक्षात्कारमे स्थानीय लेखन, सृजन-प्रेरणा, आलोचना, नवलेखन, स्त्री-दलित विमर्श आ परिवारमे भाषाक स्थान पर विचार अछि।

प्रश्न 3328. खण्ड 338 : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
व्याख्या: मायानन्द मिश्रक साक्षात्कारमे स्थानीय लेखन, सृजन-प्रेरणा, आलोचना, नवलेखन, स्त्री-दलित विमर्श आ परिवारमे भाषाक स्थान पर विचार अछि।

प्रश्न 3329. खण्ड 338 : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
व्याख्या: मायानन्द मिश्रक साक्षात्कारमे स्थानीय लेखन, सृजन-प्रेरणा, आलोचना, नवलेखन, स्त्री-दलित विमर्श आ परिवारमे भाषाक स्थान पर विचार अछि।

प्रश्न 3330. खण्ड 338 : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
व्याख्या: मायानन्द मिश्रक साक्षात्कारमे स्थानीय लेखन, सृजन-प्रेरणा, आलोचना, नवलेखन, स्त्री-दलित विमर्श आ परिवारमे भाषाक स्थान पर विचार अछि।

प्रश्न 3331. खण्ड 338 : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
व्याख्या: मायानन्द मिश्रक साक्षात्कारमे स्थानीय लेखन, सृजन-प्रेरणा, आलोचना, नवलेखन, स्त्री-दलित विमर्श आ परिवारमे भाषाक स्थान पर विचार अछि।

प्रश्न 3332. खण्ड 338 : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्रक साहित्य-दृष्टि — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. स्थानीय लेखक, उपभाषा, निष्पक्ष समीक्षा, भाषा-समर्पण आ समग्र दृष्टिक आग्रह
व्याख्या: मायानन्द मिश्रक साक्षात्कारमे स्थानीय लेखन, सृजन-प्रेरणा, आलोचना, नवलेखन, स्त्री-दलित विमर्श आ परिवारमे भाषाक स्थान पर विचार अछि।

खण्ड ३३९ : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श

प्रश्न 3333. खण्ड 339 : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
व्याख्या: “बुढ़ी माता”मे दुर्घटना सँ बचाव, सेवा, मेडिकल असफलता बाद बी.सी.ए./एम.सी.ए./एम.बी.ए. दिस मोड़ आ करियर-यात्रा जुड़ैत अछि।

प्रश्न 3334. खण्ड 339 : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
व्याख्या: “बुढ़ी माता”मे दुर्घटना सँ बचाव, सेवा, मेडिकल असफलता बाद बी.सी.ए./एम.सी.ए./एम.बी.ए. दिस मोड़ आ करियर-यात्रा जुड़ैत अछि।

प्रश्न 3335. खण्ड 339 : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
व्याख्या: “बुढ़ी माता”मे दुर्घटना सँ बचाव, सेवा, मेडिकल असफलता बाद बी.सी.ए./एम.सी.ए./एम.बी.ए. दिस मोड़ आ करियर-यात्रा जुड़ैत अछि।

प्रश्न 3336. खण्ड 339 : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
व्याख्या: “बुढ़ी माता”मे दुर्घटना सँ बचाव, सेवा, मेडिकल असफलता बाद बी.सी.ए./एम.सी.ए./एम.बी.ए. दिस मोड़ आ करियर-यात्रा जुड़ैत अछि।

प्रश्न 3337. खण्ड 339 : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
व्याख्या: “बुढ़ी माता”मे दुर्घटना सँ बचाव, सेवा, मेडिकल असफलता बाद बी.सी.ए./एम.सी.ए./एम.बी.ए. दिस मोड़ आ करियर-यात्रा जुड़ैत अछि।

प्रश्न 3338. खण्ड 339 : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
व्याख्या: “बुढ़ी माता”मे दुर्घटना सँ बचाव, सेवा, मेडिकल असफलता बाद बी.सी.ए./एम.सी.ए./एम.बी.ए. दिस मोड़ आ करियर-यात्रा जुड़ैत अछि।

प्रश्न 3339. खण्ड 339 : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
व्याख्या: “बुढ़ी माता”मे दुर्घटना सँ बचाव, सेवा, मेडिकल असफलता बाद बी.सी.ए./एम.सी.ए./एम.बी.ए. दिस मोड़ आ करियर-यात्रा जुड़ैत अछि।

प्रश्न 3340. खण्ड 339 : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
व्याख्या: “बुढ़ी माता”मे दुर्घटना सँ बचाव, सेवा, मेडिकल असफलता बाद बी.सी.ए./एम.सी.ए./एम.बी.ए. दिस मोड़ आ करियर-यात्रा जुड़ैत अछि।

प्रश्न 3341. खण्ड 339 : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
व्याख्या: “बुढ़ी माता”मे दुर्घटना सँ बचाव, सेवा, मेडिकल असफलता बाद बी.सी.ए./एम.सी.ए./एम.बी.ए. दिस मोड़ आ करियर-यात्रा जुड़ैत अछि।

प्रश्न 3342. खण्ड 339 : विदेह-सदेह १ — बुढ़ी माता कथाक करियर-विमर्श — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. अलौकिक-सदृश बूढ़ी माताक हस्तक्षेपसँ जीवन-दिशा बदलयक कथा
व्याख्या: “बुढ़ी माता”मे दुर्घटना सँ बचाव, सेवा, मेडिकल असफलता बाद बी.सी.ए./एम.सी.ए./एम.बी.ए. दिस मोड़ आ करियर-यात्रा जुड़ैत अछि।

खण्ड ३४० : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह”

प्रश्न 3343. खण्ड 340 : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह” — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
व्याख्या: अबू सुथारक अनूदित कविता “गृहमोह” मे पहिल अछार, गामक गल्ली, बरद, पानि, पूर्वजक हस्ताक्षर आ मयूरक छवि अछि।

प्रश्न 3344. खण्ड 340 : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह” — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
व्याख्या: अबू सुथारक अनूदित कविता “गृहमोह” मे पहिल अछार, गामक गल्ली, बरद, पानि, पूर्वजक हस्ताक्षर आ मयूरक छवि अछि।

प्रश्न 3345. खण्ड 340 : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह” — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
व्याख्या: अबू सुथारक अनूदित कविता “गृहमोह” मे पहिल अछार, गामक गल्ली, बरद, पानि, पूर्वजक हस्ताक्षर आ मयूरक छवि अछि।

प्रश्न 3346. खण्ड 340 : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह” — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
व्याख्या: अबू सुथारक अनूदित कविता “गृहमोह” मे पहिल अछार, गामक गल्ली, बरद, पानि, पूर्वजक हस्ताक्षर आ मयूरक छवि अछि।

प्रश्न 3347. खण्ड 340 : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह” — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
व्याख्या: अबू सुथारक अनूदित कविता “गृहमोह” मे पहिल अछार, गामक गल्ली, बरद, पानि, पूर्वजक हस्ताक्षर आ मयूरक छवि अछि।

प्रश्न 3348. खण्ड 340 : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह” — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
व्याख्या: अबू सुथारक अनूदित कविता “गृहमोह” मे पहिल अछार, गामक गल्ली, बरद, पानि, पूर्वजक हस्ताक्षर आ मयूरक छवि अछि।

प्रश्न 3349. खण्ड 340 : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह” — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
व्याख्या: अबू सुथारक अनूदित कविता “गृहमोह” मे पहिल अछार, गामक गल्ली, बरद, पानि, पूर्वजक हस्ताक्षर आ मयूरक छवि अछि।

प्रश्न 3350. खण्ड 340 : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह” — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
व्याख्या: अबू सुथारक अनूदित कविता “गृहमोह” मे पहिल अछार, गामक गल्ली, बरद, पानि, पूर्वजक हस्ताक्षर आ मयूरक छवि अछि।

प्रश्न 3351. खण्ड 340 : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह” — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
व्याख्या: अबू सुथारक अनूदित कविता “गृहमोह” मे पहिल अछार, गामक गल्ली, बरद, पानि, पूर्वजक हस्ताक्षर आ मयूरक छवि अछि।

प्रश्न 3352. खण्ड 340 : विदेह-सदेह १ — अबू सुथार: “गृहमोह” — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. बरखा, माटि, गाम, स्मृति आ घरक गहन आकर्षण
व्याख्या: अबू सुथारक अनूदित कविता “गृहमोह” मे पहिल अछार, गामक गल्ली, बरद, पानि, पूर्वजक हस्ताक्षर आ मयूरक छवि अछि।

खण्ड ३४१ : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध

प्रश्न 3353. खण्ड 341 : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
व्याख्या: आशीषक “मनुख” आ गजल तथा अशोक दत्तक “दू टप्पी/लुत्ती” आधुनिक मनुष्य, सत्ता, रंग-परिवर्तन आ चोटक प्रतिवाद देखबैत अछि।

प्रश्न 3354. खण्ड 341 : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
व्याख्या: आशीषक “मनुख” आ गजल तथा अशोक दत्तक “दू टप्पी/लुत्ती” आधुनिक मनुष्य, सत्ता, रंग-परिवर्तन आ चोटक प्रतिवाद देखबैत अछि।

प्रश्न 3355. खण्ड 341 : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
व्याख्या: आशीषक “मनुख” आ गजल तथा अशोक दत्तक “दू टप्पी/लुत्ती” आधुनिक मनुष्य, सत्ता, रंग-परिवर्तन आ चोटक प्रतिवाद देखबैत अछि।

प्रश्न 3356. खण्ड 341 : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
व्याख्या: आशीषक “मनुख” आ गजल तथा अशोक दत्तक “दू टप्पी/लुत्ती” आधुनिक मनुष्य, सत्ता, रंग-परिवर्तन आ चोटक प्रतिवाद देखबैत अछि।

प्रश्न 3357. खण्ड 341 : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
व्याख्या: आशीषक “मनुख” आ गजल तथा अशोक दत्तक “दू टप्पी/लुत्ती” आधुनिक मनुष्य, सत्ता, रंग-परिवर्तन आ चोटक प्रतिवाद देखबैत अछि।

प्रश्न 3358. खण्ड 341 : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
व्याख्या: आशीषक “मनुख” आ गजल तथा अशोक दत्तक “दू टप्पी/लुत्ती” आधुनिक मनुष्य, सत्ता, रंग-परिवर्तन आ चोटक प्रतिवाद देखबैत अछि।

प्रश्न 3359. खण्ड 341 : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
व्याख्या: आशीषक “मनुख” आ गजल तथा अशोक दत्तक “दू टप्पी/लुत्ती” आधुनिक मनुष्य, सत्ता, रंग-परिवर्तन आ चोटक प्रतिवाद देखबैत अछि।

प्रश्न 3360. खण्ड 341 : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
व्याख्या: आशीषक “मनुख” आ गजल तथा अशोक दत्तक “दू टप्पी/लुत्ती” आधुनिक मनुष्य, सत्ता, रंग-परिवर्तन आ चोटक प्रतिवाद देखबैत अछि।

प्रश्न 3361. खण्ड 341 : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
व्याख्या: आशीषक “मनुख” आ गजल तथा अशोक दत्तक “दू टप्पी/लुत्ती” आधुनिक मनुष्य, सत्ता, रंग-परिवर्तन आ चोटक प्रतिवाद देखबैत अछि।

प्रश्न 3362. खण्ड 341 : विदेह-सदेह १ — आशीष अनचिन्हार आ अशोक दत्त: मनुष्य आ प्रतिरोध — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. रेडीमेड खुशी, सत्ता-विडम्बना, रंग-बदलैत मनुष्य आ लुत्ती/अधिकारक प्रतिरोध
व्याख्या: आशीषक “मनुख” आ गजल तथा अशोक दत्तक “दू टप्पी/लुत्ती” आधुनिक मनुष्य, सत्ता, रंग-परिवर्तन आ चोटक प्रतिवाद देखबैत अछि।

खण्ड ३४२ : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह

प्रश्न 3363. खण्ड 342 : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
व्याख्या: एहि पद्य-समूहमे अमरेन्द्र, अजय, अजीत, अबू, आचारण, आशीष, अशोक आदि भिन्न विधा/भाषा/विषयक संगति बनबैत छथि।

प्रश्न 3364. खण्ड 342 : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
व्याख्या: एहि पद्य-समूहमे अमरेन्द्र, अजय, अजीत, अबू, आचारण, आशीष, अशोक आदि भिन्न विधा/भाषा/विषयक संगति बनबैत छथि।

प्रश्न 3365. खण्ड 342 : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
व्याख्या: एहि पद्य-समूहमे अमरेन्द्र, अजय, अजीत, अबू, आचारण, आशीष, अशोक आदि भिन्न विधा/भाषा/विषयक संगति बनबैत छथि।

प्रश्न 3366. खण्ड 342 : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
व्याख्या: एहि पद्य-समूहमे अमरेन्द्र, अजय, अजीत, अबू, आचारण, आशीष, अशोक आदि भिन्न विधा/भाषा/विषयक संगति बनबैत छथि।

प्रश्न 3367. खण्ड 342 : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
व्याख्या: एहि पद्य-समूहमे अमरेन्द्र, अजय, अजीत, अबू, आचारण, आशीष, अशोक आदि भिन्न विधा/भाषा/विषयक संगति बनबैत छथि।

प्रश्न 3368. खण्ड 342 : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
व्याख्या: एहि पद्य-समूहमे अमरेन्द्र, अजय, अजीत, अबू, आचारण, आशीष, अशोक आदि भिन्न विधा/भाषा/विषयक संगति बनबैत छथि।

प्रश्न 3369. खण्ड 342 : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
व्याख्या: एहि पद्य-समूहमे अमरेन्द्र, अजय, अजीत, अबू, आचारण, आशीष, अशोक आदि भिन्न विधा/भाषा/विषयक संगति बनबैत छथि।

प्रश्न 3370. खण्ड 342 : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह
व्याख्या: एहि पद्य-समूहमे अमरेन्द्र, अजय, अजीत, अबू, आचारण, आशीष, अशोक आदि भिन्न विधा/भाषा/विषयक संगति बनबैत छथि।

प्रश्न 3371. खण्ड 342 : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह

व्याख्या: एहि पद्य-समूहमे अमरेन्द्र, अजय, अजीत, अबू, आचारण, आशीष, अशोक आदि भिन्न विधा/भाषा/विषयक संगति बनबैत छथि।

प्रश्न 3372. खण्ड 342 : विदेह-सदेह १ — सदेह १ आरम्भिक पद्य-समूह — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. भाषा, प्रेम, दहेज, घर, विदेहत्व, मनुष्य आ सामाजिक आलोचनाक बहु-विषयी समूह

व्याख्या: एहि पद्य-समूहमे अमरेन्द्र, अजय, अजीत, अबू, आचारण, आशीष, अशोक आदि भिन्न विधा/भाषा/विषयक संगति बनबैत छथि।

खण्ड ३४३ : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता

प्रश्न 3373. खण्ड 343 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

व्याख्या: सदेह १क आरम्भिक कथ्य-संसारमे डिजिटल मैथिली, गीत, छठि, साक्षात्कार, कविता आ कथा आधुनिक परिवर्तनक बीच सांस्कृतिक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3374. खण्ड 343 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

व्याख्या: सदेह १क आरम्भिक कथ्य-संसारमे डिजिटल मैथिली, गीत, छठि, साक्षात्कार, कविता आ कथा आधुनिक परिवर्तनक बीच सांस्कृतिक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3375. खण्ड 343 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

व्याख्या: सदेह १क आरम्भिक कथ्य-संसारमे डिजिटल मैथिली, गीत, छठि, साक्षात्कार, कविता आ कथा आधुनिक परिवर्तनक बीच सांस्कृतिक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3376. खण्ड 343 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

व्याख्या: सदेह १क आरम्भिक कथ्य-संसारमे डिजिटल मैथिली, गीत, छठि, साक्षात्कार, कविता आ कथा आधुनिक परिवर्तनक बीच सांस्कृतिक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3377. खण्ड 343 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

व्याख्या: सदेह १क आरम्भिक कथ्य-संसारमे डिजिटल मैथिली, गीत, छठि, साक्षात्कार, कविता आ कथा आधुनिक परिवर्तनक बीच सांस्कृतिक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3378. खण्ड 343 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

व्याख्या: सदेह १क आरम्भिक कथ्य-संसारमे डिजिटल मैथिली, गीत, छठि, साक्षात्कार, कविता आ कथा आधुनिक परिवर्तनक बीच सांस्कृतिक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3379. खण्ड 343 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

व्याख्या: सदेह १क आरम्भिक कथ्य-संसारमे डिजिटल मैथिली, गीत, छठि, साक्षात्कार, कविता आ कथा आधुनिक परिवर्तनक बीच सांस्कृतिक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3380. खण्ड 343 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

व्याख्या: सदेह १क आरम्भिक कथ्य-संसारमे डिजिटल मैथिली, गीत, छठि, साक्षात्कार, कविता आ कथा आधुनिक परिवर्तनक बीच सांस्कृतिक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3381. खण्ड 343 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

व्याख्या: सदेह १क आरम्भिक कथ्य-संसारमे डिजिटल मैथिली, गीत, छठि, साक्षात्कार, कविता आ कथा आधुनिक परिवर्तनक बीच सांस्कृतिक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3382. खण्ड 343 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: गाम आ आधुनिकता — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

ख. केवल पृष्ठ-संख्या

ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि

घ. संपर्क-सूची मात्र

उत्तर: क. गामक स्मृति, शहर-पेशा, बाजार, पलायन, भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संघर्ष

व्याख्या: सदेह १क आरम्भिक कथ्य-संसारमे डिजिटल मैथिली, गीत, छठि, साक्षात्कार, कविता आ कथा आधुनिक परिवर्तनक बीच सांस्कृतिक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

खण्ड ३४४ : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण

प्रश्न 3383. खण्ड 344 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण — प्रश्न 1: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
व्याख्या: एहि बैच बाद Sadeha 1 मे अगिला ठोस आरम्भ अयोध्यानाथ चौधरीक सामग्री अछि; ताहि दिस क्रमिक खनन करब।

प्रश्न 3384. खण्ड 344 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण — प्रश्न 2: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
व्याख्या: एहि बैच बाद Sadeha 1 मे अगिला ठोस आरम्भ अयोध्यानाथ चौधरीक सामग्री अछि; ताहि दिस क्रमिक खनन करब।

प्रश्न 3385. खण्ड 344 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण — प्रश्न 3: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
व्याख्या: एहि बैच बाद Sadeha 1 मे अगिला ठोस आरम्भ अयोध्यानाथ चौधरीक सामग्री अछि; ताहि दिस क्रमिक खनन करब।

प्रश्न 3386. खण्ड 344 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण — प्रश्न 4: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
व्याख्या: एहि बैच बाद Sadeha 1 मे अगिला ठोस आरम्भ अयोध्यानाथ चौधरीक सामग्री अछि; ताहि दिस क्रमिक खनन करब।

प्रश्न 3387. खण्ड 344 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण — प्रश्न 5: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
व्याख्या: एहि बैच बाद Sadeha 1 मे अगिला ठोस आरम्भ अयोध्यानाथ चौधरीक सामग्री अछि; ताहि दिस क्रमिक खनन करब।

प्रश्न 3388. खण्ड 344 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण — प्रश्न 6: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
व्याख्या: एहि बैच बाद Sadeha 1 मे अगिला ठोस आरम्भ अयोध्यानाथ चौधरीक सामग्री अछि; ताहि दिस क्रमिक खनन करब।

प्रश्न 3389. खण्ड 344 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण — प्रश्न 7: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
व्याख्या: एहि बैच बाद Sadeha 1 मे अगिला ठोस आरम्भ अयोध्यानाथ चौधरीक सामग्री अछि; ताहि दिस क्रमिक खनन करब।

प्रश्न 3390. खण्ड 344 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण — प्रश्न 8: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
व्याख्या: एहि बैच बाद Sadeha 1 मे अगिला ठोस आरम्भ अयोध्यानाथ चौधरीक सामग्री अछि; ताहि दिस क्रमिक खनन करब।

प्रश्न 3391. खण्ड 344 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण — प्रश्न 9: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
व्याख्या: एहि बैच बाद Sadeha 1 मे अगिला ठोस आरम्भ अयोध्यानाथ चौधरीक सामग्री अछि; ताहि दिस क्रमिक खनन करब।

प्रश्न 3392. खण्ड 344 : विदेह-सदेह १ — सदेह १: अगिला खण्डक संक्रमण — प्रश्न 10: मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
ख. केवल पृष्ठ-संख्या
ग. सामग्रीमे कोनो विचार नहि
घ. संपर्क-सूची मात्र
उत्तर: क. पद्य-कथा-संस्कृति अंशसँ आगाँ क्रमिक रूपेँ अयोध्यानाथ चौधरी आ अन्य लंबा पाठ दिस बढ़ब
व्याख्या: एहि बैच बाद Sadeha 1 मे अगिला ठोस आरम्भ अयोध्यानाथ चौधरीक सामग्री अछि; ताहि दिस क्रमिक खनन करब।

खण्ड ३४५ : विदेह-सदेह १ — हिमांशु चौधरी: परिचय आ “की भार साँठू?”

प्रश्न 3393. हिमांशु चौधरीक परिचयमे हुनकर पेशागत पहचान की रूपमे देल गेल अछि?
क. पत्रकारिता आ राष्ट्रिय समाचार समितिसँ सम्बद्ध सक्रिय लेखक
ख. केवल चित्रकार
ग. केवल राजपुरोहित
घ. केवल रंगमंच-प्रबंधक
उत्तर: क. पत्रकारिता आ राष्ट्रिय समाचार समितिसँ सम्बद्ध सक्रिय लेखक
व्याख्या: परिचयमे शिक्षा, पत्रकारिता आ नेपाली-मैथिली लेखन/अभियानमे सक्रियता रेखांकित अछि।

प्रश्न 3394. “की भार साँठू?” शीर्षकमे “भार” कोन भाव संकेत करैत अछि?
क. इतिहास, हिंसा, पीड़ा आ नैतिक बोझक असह्य अनुभव
ख. मेला सामानक हलुक सूची
ग. केवल विवाहक उपहार
घ. व्यापारिक लाभ
उत्तर: क. इतिहास, हिंसा, पीड़ा आ नैतिक बोझक असह्य अनुभव
व्याख्या: कविता लाश, पीड़ा, अन्याय आ इतिहासक नोरसँ बनल बोझक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 3395. “लाशे लाशसँ गन्हाएल” चित्र कविता मे कोन वातावरण बनबैत अछि?
क. मानवीय विनाश आ सामाजिक त्रासदीक तीव्र वातावरण
ख. हास्य-उत्सव
ग. कृषि-समृद्धि
घ. बाल-खेल
उत्तर: क. मानवीय विनाश आ सामाजिक त्रासदीक तीव्र वातावरण
व्याख्या: लाश आ गन्हाएल दृश्य कविताक करुण, हिंसक आ व्यथित स्वर बनबैत अछि।

प्रश्न 3396. कवितामे “सङ्क्रान्तिक पीड़ा” कोन अर्थ खोलैत अछि?
क. समाजक संक्रमणकालमे जन्मल पीड़ा आ अस्थिरता
ख. पर्वक भोज मात्र
ग. शुद्ध भौगोलिक सीमा
घ. संगीत-ताल मात्र
उत्तर: क. समाजक संक्रमणकालमे जन्मल पीड़ा आ अस्थिरता
व्याख्या: संक्रमणक पीड़ा आधुनिक सामाजिक विघटन आ बेचैनीक संकेत अछि।

प्रश्न 3397. “थुराएल चानी” आ “पीपाएल आँजुर” सन बिम्ब कोन प्रभाव देइत अछि?
क. दरिद्रता, क्षय आ शरीरधर्मी यातनाक दृश्यता
ख. विलासिताक चित्र
ग. राजसी विजय
घ. यांत्रिक सुविधा
उत्तर: क. दरिद्रता, क्षय आ शरीरधर्मी यातनाक दृश्यता
व्याख्या: ई बिम्ब भूख, शरीर, वस्त्र आ असहायता कैँ गाढ़ बनबैत अछि।

प्रश्न 3398. गँहाएल लाशक भार सँ संबंधित प्रश्न कविता मे की करैत अछि?
क. पाठककेँ नैतिक उत्तरदायित्वक सामना करबैत अछि
ख. पाठककेँ पृष्ठ याद करबैत अछि
ग. केवल तुक पूरा करैत अछि
घ. कथा समाप्त करैत अछि
उत्तर: क. पाठककेँ नैतिक उत्तरदायित्वक सामना करबैत अछि
व्याख्या: कवि भार साँठबाक असमर्थता द्वारा समाजक हिंसा आ अपराधक बोझ पूछैत छथि।

प्रश्न 3399. हिमांशु चौधरीक कविता मे इतिहास कोना उपस्थित अछि?
क. लावारिस भेल नोर आ पीड़ित शरीरक स्मृति रूपमे
ख. केवल राजवंश-सूची रूपमे
ग. पूर्ण अनुपस्थित
घ. केवल वर्षगणना रूपमे
उत्तर: क. लावारिस भेल नोर आ पीड़ित शरीरक स्मृति रूपमे
व्याख्या: इतिहास यहाँ विजेताक कथा नहि, पीड़ित देह आ नोरक स्मृति अछि।

प्रश्न 3400. “बारुद” आ “धराप” बिम्ब कोन संकट देखबैत अछि?
क. हिंसा, फँसाव आ सामान्य जीवनक असुरक्षा
ख. बाल-खेल
ग. खेतक सजावट
घ. उत्सवक दीप
उत्तर: क. हिंसा, फँसाव आ सामान्य जीवनक असुरक्षा
व्याख्या: कवितामे बारुद/धराप समाजमे छुपल विनाशकारी तंत्रक प्रतीक अछि।

प्रश्न 3401. “क्यानभासमे फाटल गाछ” बिम्बक प्रभाव की अछि?
क. प्रकृति आ कला दुनू पर हिंसाक दरार देखेनाइ
ख. केवल हरियालीक उत्सव
ग. चित्रकला-कक्षा
घ. फसल-माप
उत्तर: क. प्रकृति आ कला दुनू पर हिंसाक दरार देखेनाइ
व्याख्या: फाटल गाछ सामाजिक विघटनकेँ दृश्य-कला आ प्रकृति दुनूमे उतारैत अछि।

प्रश्न 3402. एहि खण्डमे कविताक मूल स्वर की अछि?
क. करुण प्रतिरोध, इतिहास-बोध आ अन्यायक भारसँ जूझब
ख. शुद्ध हास्य
ग. केवल शृंगार
घ. सरकारी विज्ञापन
उत्तर: क. करुण प्रतिरोध, इतिहास-बोध आ अन्यायक भारसँ जूझब
व्याख्या: हिमांशु चौधरीक कविता हिंसा-पीड़ा केँ प्रश्नरूपेँ समाजक सामने रखैत अछि।

खण्ड ३४६ : विदेह-सदेह १ — हिमांशु चौधरी: अन्याय, अमरौती आ प्रतिरोध

प्रश्न 3403. कवितामे “अनिकारी अमरौती पीने अछि” कथन कोन अर्थ दैत अछि?
क. अन्याय अमरता-जकाँ टिकि रहल अछि
ख. न्याय पूर्ण विजयी अछि
ग. अमरौती केवल मिठाई अछि
घ. कवि रोगक औषधि कहैत छथि
उत्तर: क. अन्याय अमरता-जकाँ टिकि रहल अछि
व्याख्या: अन्याय केँ अमर बनल देखब सामाजिक असंतोषक तीव्र प्रतीक अछि।

प्रश्न 3404. “सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्”क अवरोधक प्रसंग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. आदर्श मूल्यसभ अन्यायक कारण बाधित भऽ रहल अछि
ख. आदर्शक विजय पूर्ण भऽ गेल
ग. ई केवल नृत्य-नाम अछि
घ. बिम्ब असंबद्ध अछि
उत्तर: क. आदर्श मूल्यसभ अन्यायक कारण बाधित भऽ रहल अछि
व्याख्या: कविता नैतिक-सौंदर्यात्मक मूल्य आ हिंसक यथार्थक टकराव देखबैत अछि।

प्रश्न 3405. “अमरलेखी द्रौपदीक चीरसन” बिम्ब कोन परम्परा सँ संवाद करैत अछि?
क. महाभारतक स्त्री-अपमान आ अन्याय-प्रतिरोधक स्मृतिसँ
ख. केवल कृषि-मापनसँ
ग. समुद्री यात्रा-संस्मरणसँ
घ. गणितीय सूत्रसँ
उत्तर: क. महाभारतक स्त्री-अपमान आ अन्याय-प्रतिरोधक स्मृतिसँ
व्याख्या: द्रौपदीक चीर अन्यायक विस्तार आ अस्मिताक संकटक प्रतीक अछि।

प्रश्न 3406. कवितामे “पोस्तादाना कतए ताकू” प्रश्नक अर्थ की अछि?
क. हिंसा-फँसावक बीच जीवनक मधुर/साधारण तत्व असंभव लागत अछि
ख. रसोई-विधि मुख्य विषय अछि
ग. कृषि-उत्पादन प्रशंसा
घ. भोज-निमंत्रण
उत्तर: क. हिंसा-फँसावक बीच जीवनक मधुर/साधारण तत्व असंभव लागत अछि
व्याख्या: बारुद आ धरापमे पोस्तादाना ताकब असुरक्षित यथार्थमे शांति खोजबाक विडम्बना अछि।

प्रश्न 3407. “विश्वासक जयंती अंकुरित भेल” कोन सूक्ष्म आशा दैत अछि?
क. त्रासदीक बीच विश्वासक बीज फेरो उगि सकैत अछि
ख. विश्वास पूर्णतः मेटि गेल
ग. अंकुर विनाशक नाम अछि
घ. ई केवल प्रकाशन-सूचना अछि
उत्तर: क. त्रासदीक बीच विश्वासक बीज फेरो उगि सकैत अछि
व्याख्या: कविता पूर्ण निराशा नहि, क्षीण विश्वासक संभावना सेहो राखैत अछि।

प्रश्न 3408. धोएल साँथक सिन्दूरक करुणता कोन सांस्कृतिक पीड़ा देखबैत अछि?
क. विवाह, स्त्री-अस्तित्व आ हिंसाक त्रासद सम्बन्ध
ख. विज्ञापनक रंग
ग. चित्रकला-तकनीक
घ. खेतीक खाद
उत्तर: क. विवाह, स्त्री-अस्तित्व आ हिंसाक त्रासद सम्बन्ध
व्याख्या: सिन्दूरक करुणता निजी जीवनमे सामाजिक हिंसाक प्रवेश बतबैत अछि।

प्रश्न 3409. “भार कोना साँठू?”क पुनरावृत्ति की करैत अछि?
क. पीड़ाक असहनीयता आ उत्तरहीनता बढ़बैत अछि
ख. प्रश्न समाप्त करैत अछि
ग. केवल छन्द-भूल
घ. हास्य रचैत अछि
उत्तर: क. पीड़ाक असहनीयता आ उत्तरहीनता बढ़बैत अछि
व्याख्या: शीर्षकात्मक प्रश्न कविताक अन्तःस्वर बनि सम्पूर्ण अनुभव कैं बाँधैत अछि।

प्रश्न 3410. हिमांशु चौधरीक भाषा मे कठोर बिम्ब किएक आबैत अछि?
क. क्योंकि विषय हिंसा, क्षति आ ऐतिहासिक पीड़ा सँ जुड़ल अछि
ख. क्योंकि कविता केवल बालगीत अछि
ग. क्योंकि उत्सव वर्णन अछि
घ. क्योंकि प्रकृति शांत अछि
उत्तर: क. क्योंकि विषय हिंसा, क्षति आ ऐतिहासिक पीड़ा सँ जुड़ल अछि
व्याख्या: कठोर शब्दावली त्रासद अनुभवक तीक्ष्णता कैं व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 3411. एहि कवितामे प्रतिरोध खुल्ला नारा नहि भऽ कए कोना प्रकट अछि?
क. प्रश्न, करुण बिम्ब आ नैतिक असुविधा द्वारा
ख. सरकारी आदेश द्वारा
ग. नामावली द्वारा
घ. पृष्ठ-सूचना द्वारा
उत्तर: क. प्रश्न, करुण बिम्ब आ नैतिक असुविधा द्वारा
व्याख्या: कवि नारा नहिँ देथि, मुदा पाठक कैं अन्यायसँ असहज करैत छथि।

प्रश्न 3412. हिमांशुक सामाजिक कविताक विशेषता एहि खण्डमे की अछि?
क. अमूर्त नैतिकता कैं ठोस देह, लाश, बारुद आ नोरक बिम्बमे बदलनाइ
ख. अर्थहीन अलंकार मात्र
ग. संगीत-विहीन गद्य
घ. केवल छन्द-प्रयोग
उत्तर: क. अमूर्त नैतिकता कैं ठोस देह, लाश, बारुद आ नोरक बिम्बमे बदलनाइ
व्याख्या: कविता विचारकैं दृश्य आ संवेदनात्मक अनुभवमे रूपान्तरित करैत अछि।

खण्ड ३४७ : विदेह-सदेह १ — हिमांशु चौधरी: “नियति”

प्रश्न 3413. “नियति” कवितामे “बिछानरूपी मशान” बिम्ब कोन मनःस्थिति खोलैत अछि?
क. जीवनक निजी स्थानो मृत्यु-संवेगसँ भरि गेल अछि
ख. घरक उत्सव
ग. विवाह-मंच
घ. विद्यालयी कक्षा
उत्तर: क. जीवनक निजी स्थानो मृत्यु-संवेगसँ भरि गेल अछि
व्याख्या: बिछान कैं मशान कहब जीवनक थकान, मृत्यु-बोध आ निरर्थकता देखबैत अछि।

प्रश्न 3414. “अपन लाशक काठियारी स्वयं सन” भावक अर्थ की अछि?
क. व्यक्ति अपन अस्तित्वक अन्त्येष्टि-बोध स्वयं ढोबैत अछि
ख. व्यक्ति बाजार जाइत अछि
ग. देह अमर अछि
घ. मृत्यु अप्रासंगिक अछि
उत्तर: क. व्यक्ति अपन अस्तित्वक अन्त्येष्टि-बोध स्वयं ढोबैत अछि
व्याख्या: कवि आत्म-अस्तित्वकैं बोझ आ मृत्यु-समीपता रूपमे देखबैत छथि।

प्रश्न 3415. “इच्छासभमे पूर्णविराम” कोन भाव प्रस्तुत करैत अछि?
क. आकांक्षाक अवसान आ जीवन-ऊर्जाक क्षय
ख. इच्छाक विस्तार
ग. उत्सवक आरम्भ
घ. नव व्यापार
उत्तर: क. आकांक्षाक अवसान आ जीवन-ऊर्जाक क्षय
व्याख्या: पूर्णविराम आकांक्षा-धारा रुकबाक प्रतीक अछि।

प्रश्न 3416. कवि “नियति” कैं कोन रूपमे अनुभव करैत छथि?
क. असहाय, थाकल, बाध्य जीवन-अवस्था रूपमे
ख. मुक्ति-उत्सव
ग. राजकीय उपाधि
घ. व्यापार-योजना
उत्तर: क. असहाय, थाकल, बाध्य जीवन-अवस्था रूपमे
व्याख्या: नियति यहाँ व्यक्ति पर थोपल गेल थकान आ विवशता अछि।

प्रश्न 3417. हँसलासँ मात्र शांति नहि होयबाक कथनक अर्थ की अछि?
क. बनावटी मुस्कान भीतरक पीड़ा दूर नहि करैत
ख. हँसी सभ रोग मिटबैत अछि
ग. कनब निषिद्ध अछि
घ. भावना अप्रासंगिक अछि
उत्तर: क. बनावटी मुस्कान भीतरक पीड़ा दूर नहि करैत
व्याख्या: कविता बाहरी अभिनय आ भीतरी दुःखक भेद खोलैत अछि।

प्रश्न 3418. “कनएटा पड़ैत अछि” कथन कोन मानवीय सत्य देखबैत अछि?
क. दुःखक स्वीकृति आ भाव-निकासक अनिवार्यता
ख. दुःख असत्य अछि
ग. रोब कमजोरी नहि, अपराध अछि
घ. कविता केवल हँसी अछि
उत्तर: क. दुःखक स्वीकृति आ भाव-निकासक अनिवार्यता
व्याख्या: कवि दुःखकैं दबेनाइ नहि, मानवीय अनुभव मानैत छथि।

प्रश्न 3419. “कनैत-कनैत थाकि जाइत छी” कोन सीमा देखबैत अछि?
क. दुःखक अतिशयता, जतए रोबो थकान बनि जाइत अछि
ख. असीम आनन्द
ग. संगीतक ताल
घ. कथाक हास्य
उत्तर: क. दुःखक अतिशयता, जतए रोबो थकान बनि जाइत अछि
व्याख्या: एहि पंक्ति मे संवेदनाक शारीरिक-मानसिक थकान उभरैत अछि।

प्रश्न 3420. मनोविनोद आ बनावटी मुस्की किएक उपस्थित अछि?
क. दर्दक बीच सामाजिक अभिनयक बाध्यता देखेबाक लेल
ख. वास्तविक प्रसन्नता सिद्ध करब लेल
ग. व्यंग्य-रहित मनोरंजन लेल
घ. नियति हटि गेल अछि से देखाबय लेल
उत्तर: क. दर्दक बीच सामाजिक अभिनयक बाध्यता देखेबाक लेल
व्याख्या: कवि कहैत छथि जे पीड़ा रहितो लोककेँ मुस्कानक मुखौटा पहिरए पड़ैत अछि।

प्रश्न 3421. “धन्य कथा! धन्य यथार्थ!!” कोन शैलीगत प्रभाव दैत अछि?
क. व्यंग्यात्मक विस्मय आ जीवन-यथार्थक करुण स्वीकार
ख. सीधा प्रशस्ति
ग. हास्य-नाटकक नाम
घ. पौराणिक मंगलाचरण
उत्तर: क. व्यंग्यात्मक विस्मय आ जीवन-यथार्थक करुण स्वीकार
व्याख्या: दोहोर विस्मयादिबोधक यथार्थक विडम्बना केँ तीक्ष्ण करैत अछि।

प्रश्न 3422. “नियति”क मूल भाव-संरचना की अछि?
क. मृत्यु-बोध, थकान, आकांक्षा-अवसान आ मुखौटाधारी जीवन
ख. शृंगार-उत्सव
ग. कृषि-समृद्धि
घ. बालक्रीड़ा
उत्तर: क. मृत्यु-बोध, थकान, आकांक्षा-अवसान आ मुखौटाधारी जीवन
व्याख्या: कविता जीवनक भीतर मृत्यु-संवेदना आ सामाजिक अभिनयक तनाव व्यक्त करैत अछि।

खण्ड ३४८ : विदेह-सदेह १ — हिमांशु चौधरी: जीवन-मृत्यु आ आधुनिक मनुष्य

प्रश्न 3423. “जीवन मृत्युमे लीन होइत जा रहल अछि” कथन कोन दार्शनिक चेतना दैत अछि?
क. जीवन आ मृत्यु बीचक सीमा धुँधल होयबाक अनुभव
ख. जीवन पूर्ण उत्सव मात्र
ग. मृत्यु अनुपस्थित
घ. कथा हास्यपरक अछि
उत्तर: क. जीवन आ मृत्यु बीचक सीमा धुँधल होयबाक अनुभव
व्याख्या: कवि जीवनकेँ निरंतर मृत्यु-निकटता मे देखैत छथि।

प्रश्न 3424. “जीवन आ मृत्यु मंजिल होइत जा रहल अछि” मे “मंजिल”क अर्थ की बनैत अछि?
क. अस्तित्वक यात्रा मृत्यु-बोधक दिशा मे बढ़ैत अछि
ख. रेलवे टिकट
ग. विद्यालयी परीक्षा
घ. नृत्य-स्थल
उत्तर: क. अस्तित्वक यात्रा मृत्यु-बोधक दिशा मे बढ़ैत अछि
व्याख्या: मंजिल बिम्ब जीवनक अनिवार्य अन्त आ नियति-बोधसँ जुड़ैत अछि।

प्रश्न 3425. हिमांशु चौधरीक कवितामे सामाजिक हिंसा आ आत्मिक थकान केना जुड़ल अछि?
क. बाहरी त्रासदी भीतरक नियति-बोधमे बदलैत अछि
ख. दूनू पूर्ण अलग
ग. हिंसा हास्य बनैत अछि
घ. थकान अनुपस्थित
उत्तर: क. बाहरी त्रासदी भीतरक नियति-बोधमे बदलैत अछि
व्याख्या: “की भार साँठू?”क सामूहिक पीड़ा “नियति”क निजी पीड़ामे रूपान्तरित होइत अछि।

प्रश्न 3426. कविताक वक्ता ककरा विरुद्ध मौन प्रतिरोध करैत बुझाइत छथि?
क. अमानवीय यथार्थ, अन्याय आ बनावटी सामाजिक सामान्यताक विरुद्ध
ख. लोकगीतक विरुद्ध
ग. भाषा-अध्ययनक विरुद्ध
घ. प्रकृति-सौन्दर्यक विरुद्ध
उत्तर: क. अमानवीय यथार्थ, अन्याय आ बनावटी सामाजिक सामान्यताक विरुद्ध
व्याख्या: बिम्बसभ समाजक असंवेदनशीलता कैं चुनौती दैत अछि।

प्रश्न 3427. हिमांशुक कविता मे “शांति नहि” बारम्बार किएक अनुभूत अछि?
क. क्योंकि पीड़ा सामाजिक आ अस्तित्वगत दुनू स्तर पर चलैत अछि
ख. क्योंकि गीत समाप्त नहि भेल
ग. क्योंकि भोजन कम छल
घ. क्योंकि मौसम बदलल
उत्तर: क. क्योंकि पीड़ा सामाजिक आ अस्तित्वगत दुनू स्तर पर चलैत अछि
व्याख्या: दुःख केवल एक घटना नहि, जीवन-स्थितिक रूपमे प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 3428. कविताक भाषा मे टूटल, फाटल, कारी बिम्बक उपयोग कोन सौंदर्य रचैत अछि?
क. विकृत यथार्थक कठोर सौंदर्य
ख. स्वच्छ शृंगार मात्र
ग. राजदरबारक वैभव
घ. खेल-उत्साह
उत्तर: क. विकृत यथार्थक कठोर सौंदर्य
व्याख्या: रचना सुंदरता कैं पीड़ा-संवेदनासँ जोड़ि नव सौंदर्य-बोध बनबैत अछि।

प्रश्न 3429. कवि “कथा” आ “यथार्थ” कैं साथे किएक पुकारैत छथि?
क. जीवनक दुःख कथा-जकाँ कहाए, मुदा यथार्थ-जकाँ चुभैत अछि
ख. कथा असत्य अछि मात्र
ग. यथार्थ अनुपस्थित
घ. दूनू व्याकरणिक शब्द मात्र
उत्तर: क. जीवनक दुःख कथा-जकाँ कहाए, मुदा यथार्थ-जकाँ चुभैत अछि
व्याख्या: ई द्वंद्व साहित्य आ जीवनक अन्तर्सम्बन्ध देखबैत अछि।

प्रश्न 3430. हिमांशु चौधरीक एहि खण्डक कवितासभमे मुख्य प्रश्न कोन अछि?
क. मानव समाज एतेक पीड़ा आ अन्यायक भार कोना ढोए?
ख. कविता कतए छपल?
ग. कतेक पंक्ति अछि?
घ. केवल शीर्षक?
उत्तर: क. मानव समाज एतेक पीड़ा आ अन्यायक भार कोना ढोए?
व्याख्या: कविता पृष्ठ-सूचना नहि, नैतिक-मानवीय प्रश्नक केन्द्र बनबैत अछि।

प्रश्न 3431. एहि कवितासभकेँ आधुनिक मैथिली संवेदनाक उदाहरण किएक कहल जा सकैत अछि?
क. कारण ई हिंसा, इतिहास, मनोवैज्ञानिक थकान आ सामाजिक विडम्बना केँ जोड़ैत अछि
ख. कारण ई केवल पुरान आख्यान अछि
ग. कारण ई सूचिपत्र अछि
घ. कारण ई विज्ञापन अछि
उत्तर: क. कारण ई हिंसा, इतिहास, मनोवैज्ञानिक थकान आ सामाजिक विडम्बना केँ जोड़ैत अछि
व्याख्या: आधुनिकता एतए अनुभवक विखंडन आ प्रश्नाकुलता मे देखाइत अछि।

प्रश्न 3432. हिमांशुक कविताक पाठक पर अपेक्षित प्रभाव की अछि?
क. असुविधा, करुणा आ आत्म-प्रश्नक जागरण
ख. केवल मनोरंजन
ग. विस्मृति
घ. पृष्ठ गिनती
उत्तर: क. असुविधा, करुणा आ आत्म-प्रश्नक जागरण
व्याख्या: कविता पाठककेँ निष्क्रिय नहि छोड़ैत, बल्कि नैतिक बेचैनी उत्पन्न करैत अछि।

खण्ड ३४९ : विदेह-सदेह १ — हिमांशु चौधरीक काव्य-शिल्प

प्रश्न 3433. हिमांशु चौधरीक काव्य-शिल्पमे प्रश्नवाचकता किएक प्रमुख अछि?
क. क्योंकि कविता उत्तर देबासँ बेसी सामाजिक विवेक जगबैत अछि
ख. क्योंकि कवि जानकारी नहि रखैत
ग. क्योंकि प्रश्न परीक्षा-सूची अछि
घ. क्योंकि अर्थ नहि बनैत
उत्तर: क. क्योंकि कविता उत्तर देबासँ बेसी सामाजिक विवेक जगबैत अछि
व्याख्या: “की भार साँठू?” स्वयं प्रश्नात्मक शीर्षक आ संरचना दूनू अछि।

प्रश्न 3434. लाश, बारुद, धराप, सिन्दूर, गाछ सन बिम्बसभ कोन शिल्प बनबैत अछि?
क. टूटल यथार्थक बहुस्तरीय दृश्य-समूह
ख. सजावटी शब्द-सूची
ग. केवल ध्वनि-अभ्यास
घ. निरर्थक बिम्ब
उत्तर: क. टूटल यथार्थक बहुस्तरीय दृश्य-समूह
व्याख्या: विविध बिम्ब सामाजिक हिंसा, प्रकृति आ निजी जीवन केँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3435. कवितामे संस्कृतनिष्ठ आदर्श “सत्यम् शिवम् सुन्दरम्”क प्रयोगक कार्य की अछि?
क. उच्च मूल्य आ ध्वस्त यथार्थक विरोधाभास तीक्ष्ण करब
ख. मात्र पांडित्य दिखेनाइ
ग. बालगीत बनब
घ. तालिका भरब
उत्तर: क. उच्च मूल्य आ ध्वस्त यथार्थक विरोधाभास तीक्ष्ण करब
व्याख्या: आदर्श-शब्दक सामने हिंसक यथार्थ अधिक कठोर लगैत अछि।

प्रश्न 3436. द्रौपदी-संकेतक शिल्पगत महत्व की अछि?
क. पुराण-स्मृति द्वारा समकालीन अन्यायकेँ ऐतिहासिक गहराइ देनाइ
ख. कथा बदलि देनाइ
ग. गीतक धुन बतब
घ. स्थान-नाम देना
उत्तर: क. पुराण-स्मृति द्वारा समकालीन अन्यायकेँ ऐतिहासिक गहराइ देनाइ
व्याख्या: द्रौपदीक स्मृति स्त्री-अस्मिता आ अनवरत अपमानक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 3437. “नियति” मे छोटे, सरल वाक्यक प्रभाव की अछि?
क. थकान, टूटन आ साँस-जकाँ रुकल भाव पैदा करैत अछि
ख. दीर्घ महाकाव्यात्मक विस्तार
ग. पूर्ण हँसी
घ. सूचनात्मक रिपोर्ट
उत्तर: क. थकान, टूटन आ साँस-जकाँ रुकल भाव पैदा करैत अछि
व्याख्या: सरल पंक्ति-विन्यास आ रुकावट अस्तित्वगत थकान कें व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 3438. कविताक करुण स्वर पाठककें ककरा दिस घुमबैत अछि?
क. पीड़ित मनुष्य आ समाजक नैतिक विफलताक दिस
ख. केवल मौसमक दिस
ग. पृष्ठ-सजावट दिस
घ. व्यापारिक लाभ दिस
उत्तर: क. पीड़ित मनुष्य आ समाजक नैतिक विफलताक दिस
व्याख्या: करुणा एतए समाज-समीक्षा केर माध्यम अछि।

प्रश्न 3439. हिमांशुक कविता मे “भार” शब्दक विस्तार कोन-कोन स्तर पर अछि?
क. शरीर, इतिहास, अन्याय, स्मृति आ आत्मा पर
ख. केवल सामानक वजन
ग. केवल धनराशि
घ. केवल संगीत-ताल
उत्तर: क. शरीर, इतिहास, अन्याय, स्मृति आ आत्मा पर
व्याख्या: भार बहुस्तरीय प्रतीक बनि कविताक अर्थ फैलाबैत अछि।

प्रश्न 3440. “नियति” आ “की भार साँठू?” कें साथ पढ़लासँ कोन संबंध देखाइत अछि?
क. सामूहिक त्रासदी आ निजी नियति एक-दोसरामे घुलैत अछि
ख. दूनू असंबंधित समाचार
ग. एकटा रसोई-विधि
घ. केवल फोटो-कैप्शन
उत्तर: क. सामूहिक त्रासदी आ निजी नियति एक-दोसरामे घुलैत अछि
व्याख्या: दूनू कवितामे बाहरी हिंसा भीतरक थकानमे परिणत होइत अछि।

प्रश्न 3441. कविता मे प्रत्यक्ष समाधान नहि देबाक अर्थ की अछि?
क. समस्या एतेक गहन अछि जे पाठकक विवेक स्वयं सक्रिय होए
ख. कवि असमर्थ छथि
ग. कविता अधूरी अछि
घ. कथा बिसरि गेल
उत्तर: क. समस्या एतेक गहन अछि जे पाठकक विवेक स्वयं सक्रिय होए
व्याख्या: उत्तरहीनता कविता कें नैतिक प्रश्नक रूपमे स्थिर करैत अछि।

प्रश्न 3442. एहि शिल्पक मूल उपलब्धि की कहल जा सकैत अछि?
क. आक्रोशकें करुण, दृश्यात्मक आ प्रश्नाकुल काव्यरूप देनाइ
ख. सूचनापत्र बनब
ग. विज्ञापन रचब
घ. केवल तुकबन्दी
उत्तर: क. आक्रोशकें करुण, दृश्यात्मक आ प्रश्नाकुल काव्यरूप देनाइ
व्याख्या: हिमांशु चौधरीक शिल्प अनुभवकें गहन काव्य-बोधमे बदलैत अछि।

खण्ड ३५० : विदेह-सदेह १ — हृदय नारायण झा: लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत

प्रश्न 3443. हृदय नारायण झाक लेखक केन्द्रीय विषय की अछि?
क. लुप्तप्राय मैथिली लोकगीतक संरक्षण आ दस्तावेजीकरण
ख. नव होटल-व्यवसाय
ग. खेलक नियम
घ. केवल राजनीति
उत्तर: क. लुप्तप्राय मैथिली लोकगीतक संरक्षण आ दस्तावेजीकरण
व्याख्या: लेख लोकगीत परम्पराक संकट, संग्रह आ ऑडियो-वीडियो संरक्षण पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3444. लेखमे मैथिली लोकगीतक लुप्तप्राय श्रेणीमे कतेक प्रकारक गीतक संकेत अछि?
क. संस्कार, देवी, ऋतु, नदी-संस्कृति आ व्यवहार-गीत सहित अनेक प्रकार
ख. केवल एक फिल्मी गीत
ग. केवल अंग्रेजी गीत
घ. केवल सैनिक गीत
उत्तर: क. संस्कार, देवी, ऋतु, नदी-संस्कृति आ व्यवहार-गीत सहित अनेक प्रकार
व्याख्या: प्राती, गोसाउनि, सोहर, डहकन, बटगमनी, मलार, लगनी आदि अनेक प्रकार गिनाओल गेल।

प्रश्न 3445. लोकक कण्ठमे बचल गीतसभक संकलन किएक आवश्यक कहल गेल?
क. क्योंकि जीवित स्मृति नष्ट भेलासँ धुन आ शब्द दुनू हराइ सकैत अछि
ख. क्योंकि पृष्ठ-संख्या चाही
ग. क्योंकि विज्ञापन बनत
घ. क्योंकि गीत अप्रासंगिक अछि
उत्तर: क. क्योंकि जीवित स्मृति नष्ट भेलासँ धुन आ शब्द दुनू हराइ सकैत अछि
व्याख्या: लेख लोकक कण्ठकेँ लोकसंगीतक जीवित अभिलेख मानैत अछि।

प्रश्न 3446. ऑडियो-वीडियो दस्तावेजीकरणक आग्रह कोन संरक्षण-दृष्टि दैत अछि?
क. केवल पाठ नहि, स्वर, लय आ प्रस्तुति सेहो बचबाक चाही
ख. केवल नाम-सूची पर्याप्त
ग. धुन हटि जाए
घ. गीतक अर्थ नहि
उत्तर: क. केवल पाठ नहि, स्वर, लय आ प्रस्तुति सेहो बचबाक चाही
व्याख्या: लोकगीतक असली जीवन गायन-शैलीमे अछि, तैं ध्वनि-दृश्य रूप आवश्यक अछि।

प्रश्न 3447. संवैधानिक मान्यता पाबि गेलाक बाद लोकगीत-संरक्षण प्रश्न किएक उभरैत अछि?
क. भाषाक संस्थागत मान्यता संग सांस्कृतिक परम्पराक रक्षा सेहो जरूरी अछि
ख. मान्यता बाद लोकगीत निषिद्ध
ग. लोकगीतक मृत्यु निश्चित
घ. संस्कृति अप्रासंगिक
उत्तर: क. भाषाक संस्थागत मान्यता संग सांस्कृतिक परम्पराक रक्षा सेहो जरूरी अछि
व्याख्या: लेख मान्यता कैँ अन्त नहि, संरक्षणक नयका जिम्मेदारी मानैत अछि।

प्रश्न 3448. रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, संस्कार आधारित गीतक महत्व की अछि?
क. ई मैथिली समाजक जीवन-चक्र आ सामुदायिक स्मृति सँ जुड़ल अछि
ख. ई केवल मनोरंजनक वस्तु अछि
ग. ई भाषा-विरोधी अछि
घ. ई निरर्थक सूची अछि
उत्तर: क. ई मैथिली समाजक जीवन-चक्र आ सामुदायिक स्मृति सँ जुड़ल अछि
व्याख्या: लोकगीत व्यवहार, संस्कार आ स्मृति कैँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी ले जाइत अछि।

प्रश्न 3449. “संपूर्ण मैथिली जगत”क चिन्ता कहबाक अर्थ की अछि?
क. लोकगीत-संरक्षण केवल एक कलाकार नहि, सामूहिक दायित्व अछि
ख. एक व्यक्ति मात्र जिम्मेदार
ग. सरकार मात्र पर्याप्त
घ. ककरो मतलब नहि
उत्तर: क. लोकगीत-संरक्षण केवल एक कलाकार नहि, सामूहिक दायित्व अछि
व्याख्या: लेख सांस्कृतिक संरक्षण कैं व्यापक सामाजिक उत्तरदायित्व बनबैत अछि।

प्रश्न 3450. हृदय नारायण झाक कलाकार-परिचय लेखक विश्वसनीयता कोना बढ़बैत अछि?
क. ओ आकाशवाणी कलाकार आ पारंपरिक योग-शिक्षित छथि, तैं ध्वनि-संस्कृति बूझैत छथि
ख. ओ केवल व्यापारी छथि
ग. ओ असंबद्ध यात्री छथि
घ. ओ खेल-प्रशिक्षक छथि
उत्तर: क. ओ आकाशवाणी कलाकार आ पारंपरिक योग-शिक्षित छथि, तैं ध्वनि-संस्कृति बूझैत छथि
व्याख्या: परिचय बतबैत अछि जे लेखक गायन-परम्परा सँ प्रत्यक्ष जुड़ल छथि।

प्रश्न 3451. लेखमे लोकगीतक संकट कोन रूपमे बुझायल अछि?
क. नव पीढ़ी बीच शब्द, धुन, स्वर, लय आ भावक क्षय
ख. पूर्ण समृद्धि बिना संकट
ग. केवल मुद्रण समस्या
घ. किसी संकट नहि
उत्तर: क. नव पीढ़ी बीच शब्द, धुन, स्वर, लय आ भावक क्षय
व्याख्या: लुप्तप्राय शब्द सीधे परम्परा-संकट बतबैत अछि।

प्रश्न 3452. एहि खण्डक सार की अछि?
क. लोकगीत मैथिली अस्मिताक जीवित धरोहर अछि, जकर तात्कालिक संरक्षण जरूरी अछि
ख. लोकगीत छोड़ि देबाक चाही
ग. गीत केवल अभिजात विषय
घ. दस्तावेजीकरण अनावश्यक
उत्तर: क. लोकगीत मैथिली अस्मिताक जीवित धरोहर अछि, जकर तात्कालिक संरक्षण जरूरी अछि
व्याख्या: लेख परम्परा, स्मृति आ भविष्यक बीच लोकगीतक सेतु देखबैत अछि।

खण्ड ३५१ : विदेह-सदेह १ — लोकगीतक प्रकार आ सांस्कृतिक आधार

प्रश्न 3453. प्राती/पराती गीतक सांस्कृतिक स्थान की अछि?
क. भोरक आध्यात्मिक-जागरण आ मंगल-विहानक गीत
ख. रात्रिक युद्धगीत
ग. बाजार घोषणा
घ. खेल-गीत मात्र
उत्तर: क. भोरक आध्यात्मिक-जागरण आ मंगल-विहानक गीत
व्याख्या: परातीक स्वर लोककैं जगबैत, भाव-विभोर करैत आ भोरक मंगलता रचैत अछि।

प्रश्न 3454. गोसाउनि/भगवती गीत कोन परम्परासँ जुड़ल अछि?
क. देवी-आराधना आ गहबरक लोकधार्मिक परम्परा
ख. केवल विवाह भोज
ग. कृषि-कर
घ. नदी यातायात
उत्तर: क. देवी-आराधना आ गहबरक लोकधार्मिक परम्परा
व्याख्या: लेख भगवती आवाहन आ गहबर-गायन परम्पराक चर्चा करैत अछि।

प्रश्न 3455. सोहर गीतक स्थान कोन जीवन-संस्कारमे अछि?
क. जन्म-संस्कार आ बालक आगमनक उत्सवमे
ख. अन्त्येष्टि मात्र
ग. युद्ध-विजय
घ. फसल-मंडी
उत्तर: क. जन्म-संस्कार आ बालक आगमनक उत्सवमे
व्याख्या: सोहर लोकजीवनक जन्म-अवसरक गीत अछि।

प्रश्न 3456. लगनी गीत कोन प्रसंगसँ सम्बद्ध बुझाइत अछि?
क. विवाह-संस्कार आ मंगल अवसरसँ
ख. स्कूल परीक्षा
ग. व्यापारिक करार
घ. नदी-नौकायन
उत्तर: क. विवाह-संस्कार आ मंगल अवसरसँ
व्याख्या: लगनी शब्द विवाह-संस्कारक लोकसंगीतिक प्रसंगक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 3457. समदाउन गीतक सांस्कृतिक भाव की होइत अछि?
क. विदाई, करुणा आ पारिवारिक संस्कारक भाव
ख. हास्य-विज्ञापन
ग. युद्ध-घोष
घ. खेल-उत्सव
उत्तर: क. विदाई, करुणा आ पारिवारिक संस्कारक भाव
व्याख्या: समदाउन मिथिला विवाह-संस्कारमे करुण-विदाईक महत्त्वपूर्ण शैली अछि।

प्रश्न 3458. बटगमनी लोकगीत कोन जीवन-गतिशीलता दिखबैत अछि?
क. बाट, यात्रा आ गमन-संबंधी लोकानुभव
ख. स्थिर शिलालेख
ग. केवल राजमहल
घ. दुकान सूची
उत्तर: क. बाट, यात्रा आ गमन-संबंधी लोकानुभव
व्याख्या: बटगमनी नामे बाट/गमनक लोक-संस्कारिक स्थिति सूचित करैत अछि।

प्रश्न 3459. मलार आ चैमासा गीतक ऋतु-सम्बन्ध किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. लोकगीत ऋतुचक्र आ प्रकृतिसँ गहिर जुड़ल अछि
ख. ऋतु अप्रासंगिक
ग. केवल राजनीति
घ. संगीत-विरोध
उत्तर: क. लोकगीत ऋतुचक्र आ प्रकृतिसँ गहिर जुड़ल अछि
व्याख्या: मलार/चैमासा बरखा-ऋतु आ समय-संवेदना सँ सम्बन्धित परम्परा देखबैत अछि।

प्रश्न 3460. कोशी गीतक उल्लेख कोन सांस्कृतिक क्षेत्र विस्तार करैत अछि?
क. नदी-संस्कृति आ भौगोलिक अनुभवक लोक-संगीतिक रूप
ख. मरुभूमि-गीत
ग. समुद्री व्यापार
घ. राज्याभिषेक गीत
उत्तर: क. नदी-संस्कृति आ भौगोलिक अनुभवक लोक-संगीतिक रूप
व्याख्या: कोशी मिथिलाक नदी-संस्कृति आ लोकजीवनक महत्त्वपूर्ण आधार अछि।

प्रश्न 3461. लोकगीतक विविधता सँ मैथिली समाजबारे कोन निष्कर्ष निकलैत अछि?
क. जीवनक प्रत्येक संस्कार, ऋतु, देवता आ भूगोलक गीतात्मक अभिव्यक्ति अछि
ख. गीतक गरीबी अछि
ग. केवल एक धुन अछि
घ. सामाजिक जीवन रिक्त अछि
उत्तर: क. जीवनक प्रत्येक संस्कार, ऋतु, देवता आ भूगोलक गीतात्मक अभिव्यक्ति अछि
व्याख्या: विविध विधा लोक-संस्कृतिक समृद्ध संरचना सिद्ध करैत अछि।

प्रश्न 3462. गीत-प्रकारक सूची प्रश्नोत्तरीमे किएक अवधारणात्मक महत्त्व रखैत अछि?
क. ई लोकसाहित्यक वर्गीकरण आ सांस्कृतिक कार्य-भूमि समझबैत अछि
ख. केवल क्रमांक याद करबैत अछि
ग. पृष्ठ-नम्बर पूछैत अछि
घ. नाम-सूची मात्र रहैत अछि
उत्तर: क. ई लोकसाहित्यक वर्गीकरण आ सांस्कृतिक कार्य-भूमि समझबैत अछि
व्याख्या: गीत-प्रकार लोकजीवनक अवसर, भाव आ धर्म-संस्कारक मानचित्र बनबैत अछि।

खण्ड ३५२ : विदेह-सदेह १ — मिथिला महात्म्य आ लोकगीतक भूमि

प्रश्न 3463. लेखमे वृहत् विष्णुपुराणक मिथिला-माहात्म्यक उल्लेख किएक अछि?
क. लोकगीतक पृष्ठभूमि रूपमे मिथिलाक पवित्र सांस्कृतिक भूगोल देखेबाक लेल
ख. संगीत हटाबय लेल
ग. गणित सिद्ध करब लेल
घ. फिल्म समीक्षा लेल
उत्तर: क. लोकगीतक पृष्ठभूमि रूपमे मिथिलाक पवित्र सांस्कृतिक भूगोल देखेबाक लेल
व्याख्या: पुराणोक्त महिमा लोकगीतक सांस्कृतिक भूमि कैँ ऐतिहासिक-धार्मिक गहराइ दैत अछि।

प्रश्न 3464. “धन्य ते...” श्लोकक सार की अछि?
क. मिथिलामे निवास आ विचरण करनिहार धन्य छथि
ख. मिथिला त्याज्य अछि
ग. नदी-विहीन प्रदेश
घ. गीत-विरोधी भूमि
उत्तर: क. मिथिलामे निवास आ विचरण करनिहार धन्य छथि
व्याख्या: श्लोक मिथिलाक पवित्रता आ सांस्कृतिक गौरव बतबैत अछि।

प्रश्न 3465. मिथिलाक आम्रवन आ नदी-तीर उल्लेख कोन सौंदर्य-संकेत दैत अछि?
क. प्रकृति, नदी आ तीर्थमय भूगोलक समृद्ध छवि
ख. शुष्क नगर
ग. कारखाना मात्र
घ. युद्धभूमि मात्र
उत्तर: क. प्रकृति, नदी आ तीर्थमय भूगोलक समृद्ध छवि
व्याख्या: लोकगीतक संवेदना प्रकृति-संपन्न भूगोलसँ पोषित मानल गेल।

प्रश्न 3466. तीरभुक्ति/तिरहुत नामक व्याख्या कोन सांस्कृतिक पहचानसँ जुड़ल अछि?
क. मिथिला क्षेत्रक धार्मिक-भौगोलिक स्मृति सँ
ख. विदेशी व्यापार
ग. केवल आधुनिक जिला
घ. मुद्रणालय नाम
उत्तर: क. मिथिला क्षेत्रक धार्मिक-भौगोलिक स्मृति सँ
व्याख्या: तीरभुक्ति नाम मिथिलाक पुरान सांस्कृतिक-भौगोलिक प्रतिष्ठा दर्शबैत अछि।

प्रश्न 3467. कपिलेश्वर, हरिलाखी, फुलहर आदि तीर्थक सूची किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. लोकगीतक धरती तीर्थ-परम्परा आ स्मृति-स्थलसभसँ जुड़ल अछि
ख. सूची मात्र बिना अर्थ
ग. गीतसँ असंबद्ध
घ. केवल यात्रा-विज्ञापन
उत्तर: क. लोकगीतक धरती तीर्थ-परम्परा आ स्मृति-स्थलसभसँ जुड़ल अछि
व्याख्या: तीर्थ-स्मृति लोकधर्म आ गीतक भावभूमि तैयार करैत अछि।

प्रश्न 3468. मिथिलाक लोकगीतमे धर्म आ लोक व्यवहारक प्रधानता कहबाक अर्थ की अछि?
क. गीत धार्मिक श्रद्धा आ दैनिक सामाजिक व्यवहार दुनू सँ जन्मैत अछि
ख. गीत केवल मनोरंजन अछि
ग. धर्म अनुपस्थित
घ. व्यवहार असंबद्ध
उत्तर: क. गीत धार्मिक श्रद्धा आ दैनिक सामाजिक व्यवहार दुनू सँ जन्मैत अछि
व्याख्या: लेख लोकगीतक द्वि-आधार—धर्म आ व्यवहार—दू टा स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 3469. मिथिलाक सांस्कृतिक भूगोलक ज्ञान लोकगीत अध्ययनमे किएक जरूरी अछि?
क. गीतक अर्थ स्थान, तीर्थ, नदी, ग्राम आ लोकविश्वाससँ जुड़ैत अछि
ख. स्थानक कोनो प्रभाव नहि
ग. भूगोल हटाउ
घ. गीत केवल लिपि अछि
उत्तर: क. गीतक अर्थ स्थान, तीर्थ, नदी, ग्राम आ लोकविश्वाससँ जुड़ैत अछि
व्याख्या: लोकगीत प्रदेशक स्मृति सँ बिनु पूर्ण बुझाइत नहि।

प्रश्न 3470. तीर्थ-स्मृति आ लोकगीतक सम्बन्ध कोना अछि?
क. तीर्थ लोकधर्मक आधार दैत अछि, गीत ओकर सामुदायिक स्वर बनैत अछि
ख. दूनू विरोधी अछि
ग. गीत तीर्थ नष्ट करैत अछि
घ. तीर्थ केवल भवन अछि
उत्तर: क. तीर्थ लोकधर्मक आधार दैत अछि, गीत ओकर सामुदायिक स्वर बनैत अछि
व्याख्या: धार्मिक स्थल आ गीत परस्पर सांस्कृतिक ऊर्जा देत अछि।

प्रश्न 3471. लेख मिथिलाक महिमा बतबैत लोकगीत संरक्षणक तर्क किएक मजबूत करैत अछि?
क. जे भूमि सांस्कृतिक रूपेँ समृद्ध अछि, ओकर गीत-धरोहर बचब जरूरी अछि
ख. धरोहरक अर्थ नहि
ग. लोकगीत कमजोर अछि
घ. केवल आधुनिकता चाही
उत्तर: क. जे भूमि सांस्कृतिक रूपेँ समृद्ध अछि, ओकर गीत-धरोहर बचब जरूरी अछि
व्याख्या: मिथिला-माहात्म्य लोकगीतकेँ धरोहर रूपमे स्थापित करैत अछि।

प्रश्न 3472. एहि खण्डक मूल निष्कर्ष की अछि?
क. मिथिला भूगोल, तीर्थ, नदी आ लोकव्यवहारक संग लोकगीतक अर्थ अविभाज्य अछि
ख. लोकगीत निर्वातमे बनैत अछि
ग. मिथिला अप्रासंगिक
घ. धर्म-संस्कार अनुपस्थित
उत्तर: क. मिथिला भूगोल, तीर्थ, नदी आ लोकव्यवहारक संग लोकगीतक अर्थ अविभाज्य अछि
व्याख्या: लेख लोकगीतकेँ सांस्कृतिक भूगोलमे रोपैत अछि।

खण्ड ३५३ : विदेह-सदेह १ — पराती गीतक स्वर आ भाव

प्रश्न 3473. पराती गीतक मुख्य समय-संकेत की अछि?
क. प्रभात/भोरक जागरण
ख. दोपहरक युद्ध
ग. आधी रातक व्यापार
घ. सांझक अदालत
उत्तर: क. प्रभात/भोरक जागरण
व्याख्या: पराती भोरक गीत अछि, जे मंगल-विहानक अनुभूति जगबैत अछि।

प्रश्न 3474. पराती सुनलापर “मन भाव-विभोर” होयबाक अर्थ की अछि?
क. गीत केवल ध्वनि नहि, भावनात्मक-सांस्कृतिक स्पर्श अछि
ख. गीत निरर्थक शोर
ग. केवल सूचना
घ. बाजार पुकार
उत्तर: क. गीत केवल ध्वनि नहि, भावनात्मक-सांस्कृतिक स्पर्श अछि
व्याख्या: पराती श्रोता-मनमे भक्ति, स्मृति आ आनन्द जगबैत अछि।

प्रश्न 3475. साहेबदासक परातीक उदाहरण किएक देल गेल?
क. मौलिक पारंपरिक भाषा आ भक्ति-भाव देखेबाक लेल
ख. मात्र पृष्ठ भरब लेल
ग. हास्यक उदाहरण
घ. विज्ञापनक स्वरूप
उत्तर: क. मौलिक पारंपरिक भाषा आ भक्ति-भाव देखेबाक लेल
व्याख्या: लेख परम्पराक जीवित उदाहरण द्वारा पराती रूप बुझबैत अछि।

प्रश्न 3476. “भजन चित चेत” भावक अर्थ की अछि?
क. मनकेँ भजन आ आध्यात्मिक चेतना दिस जागृत करब
ख. व्यापार बढ़ेब
ग. युद्ध शुरू करब
घ. भोजन माँगब
उत्तर: क. मनकेँ भजन आ आध्यात्मिक चेतना दिस जागृत करब
व्याख्या: पराती जागरण केवल नींदसँ नहि, आध्यात्मिक चेतनासँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 3477. “बालपन तरुणपन बीतल” पंक्ति कोन चेतावनी दैत अछि?
क. जीवन बीति रहल अछि, तैं अब आध्यात्मिक स्मरण करु
ख. बालपन अमर अछि
ग. समय रुकि गेल
घ. गीत खेल मात्र
उत्तर: क. जीवन बीति रहल अछि, तैं अब आध्यात्मिक स्मरण करु
व्याख्या: गीत समय-नश्वरता आ साधना-बोध जगबैत अछि।

प्रश्न 3478. राम-नाम न आबय त व्यक्ति “प्रेत” समान — एहि भावक धार्मिक अर्थ की अछि?
क. भक्ति-विहीन जीवन आध्यात्मिक रिक्तता मानल गेल
ख. गीत नास्तिकता कहैत अछि
ग. नामक कोनो अर्थ नहि
घ. प्रेत केवल हास्य पात्र
उत्तर: क. भक्ति-विहीन जीवन आध्यात्मिक रिक्तता मानल गेल
व्याख्या: पराती लोकभाषामे धर्म-चेतना केँ तीक्ष्ण रूप देत अछि।

प्रश्न 3479. परातीक ध्वनि एक कोस धरि पहुँचबाक कथन कोन बात बतबैत अछि?
क. पुरान सामूहिक गायनक प्रभाव आ स्वर-प्रसार
ख. कोनो गायन नहि
ग. मौन परम्परा
घ. केवल मुद्रित पाठ
उत्तर: क. पुरान सामूहिक गायनक प्रभाव आ स्वर-प्रसार
व्याख्या: ई परम्परागत गायनक सामुदायिक शक्ति आ ऊर्जाक स्मृति अछि।

प्रश्न 3480. पराती “लोकसभ कैं जगा” क मंगल विहानक आनन्द देत छल—एहि कथनक अर्थ की अछि?
क. गीत सामाजिक जागरण आ भोरक सामूहिक भाव बनबैत छल
ख. गीत लोककैं सुतबैत छल
ग. गीत अलगाव करैत छल
घ. गीत केवल लिखित रहैत छल
उत्तर: क. गीत सामाजिक जागरण आ भोरक सामूहिक भाव बनबैत छल
व्याख्या: पराती सामूहिक दिनारम्भक सांस्कृतिक साधन रहल।

प्रश्न 3481. परातीमे भक्ति आ लोकभाषा कोना मिलैत अछि?
क. सरल लोकभाषामे गहिर आध्यात्मिक आग्रह व्यक्त होइत अछि
ख. भाषा जटिल दरबारी मात्र
ग. भक्ति अनुपस्थित
घ. लोकभाषा निषिद्ध
उत्तर: क. सरल लोकभाषामे गहिर आध्यात्मिक आग्रह व्यक्त होइत अछि
व्याख्या: पराती लोकभक्ति कैं सहज शब्दमे श्रोता धरि पहुँचबैत अछि।

प्रश्न 3482. पराती संरक्षण किएक जरूरी अछि?
क. क्योंकि ई भक्ति, भाषा, धुन आ सामुदायिक भोरक स्मृति बचबैत अछि
ख. क्योंकि ई अप्रासंगिक अछि
ग. केवल नाम-सूची चाही
घ. धुन हटि जाए
उत्तर: क. क्योंकि ई भक्ति, भाषा, धुन आ सामुदायिक भोरक स्मृति बचबैत अछि
व्याख्या: पराती मैथिली लोकजीवनक आध्यात्मिक-संगीतिक धरोहर अछि।

खण्ड ३५४ : विदेह-सदेह १ — भगवती गीत आ गोसाउनि परम्परा

प्रश्न 3483. भगवती गीतक मूल सम्बन्ध कोन लोकधार्मिक परम्परासँ अछि?
क. देवी-आराधना आ गोसाउनि/गहबर परम्परासँ
ख. केवल शहरी नाटक
ग. कृषि कर
घ. स्कूल प्रार्थना मात्र
उत्तर: क. देवी-आराधना आ गोसाउनि/गहबर परम्परासँ
व्याख्या: लेख भगवतीक आवाहन, गोसाउनि गीत आ गहबर-गायनक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 3484. गोसाउनि गीतक संकट कोन कारणसँ गम्भीर अछि?
क. फिल्मी धुनक प्रभाव आ परम्परागत व्यवहारक क्षय
ख. अधिक संरक्षण
ग. लोकप्रियता अत्यधिक
घ. संकट नहि
उत्तर: क. फिल्मी धुनक प्रभाव आ परम्परागत व्यवहारक क्षय
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे फिल्मी धुनक चलन परम्परागत भगवती गीतक अस्तित्व पर संकट आनैत अछि।

प्रश्न 3485. भगवती गीतमे “आदि भवानी” सन संबोधन की दर्शबैत अछि?
क. देवीक मूल, प्राचीन आ संरक्षक शक्ति रूप
ख. सामान्य व्यक्ति
ग. राजनीतिक दल
घ. व्यापारिक ब्रांड
उत्तर: क. देवीक मूल, प्राचीन आ संरक्षक शक्ति रूप
व्याख्या: देवी-गीत पुरातन शक्ति-आराधना आ लोकभक्ति व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 3486. विद्यापतिक “आदि भवानी” उदाहरणक महत्व की अछि?
क. देवी-भक्तिक साहित्यिक आ लोकगायन परम्पराक सेतु देखाबैत अछि
ख. विद्यापति असंबद्ध
ग. गीत केवल आधुनिक
घ. देवी-विमर्श अनुपस्थित
उत्तर: क. देवी-भक्तिक साहित्यिक आ लोकगायन परम्पराक सेतु देखाबैत अछि
व्याख्या: विद्यापति पद लोकदेवी-गायनकेँ साहित्यिक प्रतिष्ठा दैत अछि।

प्रश्न 3487. गहबरमे भगतक मंडली द्वारा झूमरा गाबयक अर्थ की अछि?
क. देवी-आवाहनक सामूहिक लोक-रीति
ख. व्यक्तिगत मौन साधना मात्र
ग. विद्यालयी परीक्षा
घ. भोज-तालिका
उत्तर: क. देवी-आवाहनक सामूहिक लोक-रीति
व्याख्या: गहबरक झूमरा देवीक उपस्थिति आ लोकसमुदायक एकजुटता सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 3488. झाली आ मादरक संगति भगवती गीतमे की जोड़ैत अछि?
क. ताल, सामूहिक ऊर्जा आ अनुष्ठानिक वातावरण
ख. शब्दहीन मौन
ग. गीत-विरोध
घ. नाटकक परदा
उत्तर: क. ताल, सामूहिक ऊर्जा आ अनुष्ठानिक वातावरण
व्याख्या: वाद्य-संगति लोकगायन केँ देहधर्मी आ अनुष्ठानिक बनबैत अछि।

प्रश्न 3489. देवीक “प्रकट” होयबाक लोकविश्वास ककरा माध्यमे प्रकट अछि?
क. समवेत झूमरा गायन आ भगतक शरीरमे आवाहन अनुभव द्वारा
ख. मुद्रणालय द्वारा
ग. व्यापार पत्र द्वारा
घ. खेलक नियम द्वारा
उत्तर: क. समवेत झूमरा गायन आ भगतक शरीरमे आवाहन अनुभव द्वारा
व्याख्या: लेख लोकविश्वासमे गान, ताल आ देव-आवेशक सम्बन्ध बतबैत अछि।

प्रश्न 3490. बतहू यादव सन भगतक चिन्ता कोन बात दर्शबैत अछि?
क. परम्परा अगिला पीढ़ी धरि कोना बचत—ई वास्तविक भय अछि
ख. परम्परा सुरक्षित अछि
ग. कोनो चिंता नहि
घ. गीत समाप्त करबाक इच्छा
उत्तर: क. परम्परा अगिला पीढ़ी धरि कोना बचत—ई वास्तविक भय अछि
व्याख्या: लोकगायक/भगत स्वयं उत्तराधिकार-संकट देखि रहल छथि।

प्रश्न 3491. गोसाउनि गीतमे नाम, पद आ विनयक स्वर किएक प्रमुख अछि?
क. भक्ति मे अज्ञान स्वीकारि देवीसँ रक्षा माँगबाक लोकभाव अछि
ख. अहंकारक घोषणा
ग. देवी-विरोध
घ. हास्य मात्र
उत्तर: क. भक्ति मे अज्ञान स्वीकारि देवीसँ रक्षा माँगबाक लोकभाव अछि
व्याख्या: गीत सेवक-भाव, लाज-रक्षा आ विनयक परम्परा व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 3492. एहि खण्डक सार की अछि?
क. देवी-गीत मैथिली लोकधर्मक जीवित, मुदा संकटग्रस्त, सामूहिक संगीत-संस्कार अछि
ख. देवी-गीत अप्रासंगिक
ग. झूमरा केवल खेल
घ. गहबर असंबद्ध
उत्तर: क. देवी-गीत मैथिली लोकधर्मक जीवित, मुदा संकटग्रस्त, सामूहिक संगीत-संस्कार अछि
व्याख्या: लेख भगवती-गायनकेँ बचाबय योग्य धरोहर मानैत अछि।

खण्ड ३५५ : विदेह-सदेह १ — लोकगीत, संस्कार आ नव पीढ़ी

प्रश्न 3493. हृदय नारायण झा नव पीढ़ीक संदर्भमे कोन चिन्ता व्यक्त करैत छथि?
क. परंपरागत गीतक शब्द, धुन, स्वर, लय आ भाव नव पीढ़ी बीच लुप्त होयब
ख. नव पीढ़ीक अत्यधिक लोकज्ञान
ग. गीतक पूर्ण पुनरुद्धार
घ. संकट नहिं
उत्तर: क. परंपरागत गीतक शब्द, धुन, स्वर, लय आ भाव नव पीढ़ी बीच लुप्त होयब
व्याख्या: लेख नव पीढ़ीमे लोकगीतक क्षरण केँ गंभीर सांस्कृतिक प्रश्न मानैत अछि।

प्रश्न 3494. लोकगीत “ज्ञान केँ बढ़ाब” बला कहल गेल—एहि कथनक अर्थ की अछि?
क. गीत मनोरंजन संग जीवन-ज्ञान आ संस्कार-बोध सेहो दैत अछि
ख. गीत अज्ञान फैलाबैत अछि
ग. गीत केवल समय काटब
घ. गीत अर्थहीन ध्वनि
उत्तर: क. गीत मनोरंजन संग जीवन-ज्ञान आ संस्कार-बोध सेहो दैत अछि
व्याख्या: लेख लोकगीतक शिक्षात्मक-संस्कारिक महत्व रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 3495. रीति-नीतिक बोध कराबय बला गीतक सामाजिक भूमिका की अछि?
क. समुदायमे व्यवहार, मर्यादा आ संस्कार सिखेनाइ
ख. समाज तोड़नाइ
ग. भाषा विसरब
घ. एकान्त बनब
उत्तर: क. समुदायमे व्यवहार, मर्यादा आ संस्कार सिखेनाइ
व्याख्या: लोकगीत सामाजिक आ नैतिक व्यवहारक अनौपचारिक विद्यालय अछि।

प्रश्न 3496. लोकगीतक भावात्मक आकर्षण किएक स्थायी अछि?
क. शब्द, स्वर, लय आ सामूहिक स्मृति एकसाथ काम करैत अछि
ख. केवल छपाइ
ग. केवल फोटो
घ. केवल सूची
उत्तर: क. शब्द, स्वर, लय आ सामूहिक स्मृति एकसाथ काम करैत अछि
व्याख्या: गीतक प्रभाव बहु-इंद्रिय आ सामुदायिक होइत अछि।

प्रश्न 3497. लोकगीत बचेनाइ केवल संग्रह नहि, पुनरावृत्ति किएक चाहैत अछि?
क. जीवित गायन बिना परंपरा संग्रहालयक वस्तु बनि सकैत अछि
ख. संग्रह पर्याप्त
ग. गायन निषिद्ध
घ. धुन हटि जाए
उत्तर: क. जीवित गायन बिना परंपरा संग्रहालयक वस्तु बनि सकैत अछि
व्याख्या: लोकगीत गाओल जाइ तखनहि जीवित रहैत अछि।

प्रश्न 3498. ग्राम्य गायन परम्परा मे वृद्ध गायक/गायिकाक भूमिका की अछि?
क. ओ लोकस्मृतिक जीवित भंडार छथि
ख. ओ अप्रासंगिक
ग. ओ केवल श्रोता
घ. ओ गीत नहिं जनैत
उत्तर: क. ओ लोकस्मृतिक जीवित भंडार छथि
व्याख्या: जतए गीत लोकक कण्ठमे बाचल अछि, ओतए लोकस्मृति बचल अछि।

प्रश्न 3499. भाषा-मान्यता आ लोकगीत-संरक्षण बीच सम्बन्ध की अछि?
क. मान्यता सँ भाषा प्रतिष्ठित होइत अछि, लोकगीत सँ ओ जीवित रहैत अछि
ख. मान्यता लोकगीत हटबैत अछि
ग. लोकगीत संविधानविरोधी
घ. दूनू असंबंधित
उत्तर: क. मान्यता सँ भाषा प्रतिष्ठित होइत अछि, लोकगीत सँ ओ जीवित रहैत अछि
व्याख्या: भाषा संस्थागत आ लोकसांस्कृतिक दुनू स्तर पर बचैत अछि।

प्रश्न 3500. लेखमे “वर्तमान आ भविष्यक पीढ़ी”क उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. संग्रह केवल अतीत लेल नहि, भविष्यक सांस्कृतिक अधिकार लेल अछि
ख. भविष्य अप्रासंगिक
ग. अतीत नष्ट करब
घ. केवल आजक मनोरंजन
उत्तर: क. संग्रह केवल अतीत लेल नहि, भविष्यक सांस्कृतिक अधिकार लेल अछि
व्याख्या: लोकगीत संरक्षण पीढ़ीगत निरंतरता लेल जरूरी मानल गेल।

प्रश्न 3501. लोकगीतक संकटमे आधुनिक माध्यमक सकारात्मक भूमिका की भऽ सकैत अछि?
क. ऑडियो-वीडियो दस्तावेज आ प्रसार द्वारा धुन-संरक्षण
ख. गीत हटब
ग. कण्ठ चुप करब
घ. केवल व्यापार
उत्तर: क. ऑडियो-वीडियो दस्तावेज आ प्रसार द्वारा धुन-संरक्षण
व्याख्या: लेख आधुनिक दस्तावेजीकरणकेँ परम्परा-बचावक साधन बनबैत अछि।

प्रश्न 3502. एहि खण्डक मूल शैक्षिक निष्कर्ष की अछि?
क. लोकगीत लोक-विद्यालय अछि जे भाषा, संस्कार, धर्म, भूगोल आ स्मृति सिखबैत अछि
ख. लोकगीत केवल खाली ध्वनि
ग. गीत अप्रासंगिक
घ. संस्कार नहिं
उत्तर: क. लोकगीत लोक-विद्यालय अछि जे भाषा, संस्कार, धर्म, भूगोल आ स्मृति सिखबैत अछि
व्याख्या: लोकगीत समाजक अस्मिता-शिक्षा केर जीवित प्रणाली अछि।

खण्ड ३५६ : विदेह-सदेह १ — परम्परा बनाम फिल्मी धुन

प्रश्न 3503. फिल्मी धुनक प्रभावक चर्चा कोन संदर्भमे आयल अछि?
क. गोसाउनि/भगवती गीतक परंपरागत स्वरूप पर संकटक रूपमे
ख. लोकगीत बचावक एकमात्र उपाय
ग. परातीकेँ मजबूत करबाक साधन
घ. शास्त्रीय साधना
उत्तर: क. गोसाउनि/भगवती गीतक परंपरागत स्वरूप पर संकटक रूपमे
व्याख्या: लेख बतबैत अछि जे फिल्मी धुन पर देवी-गीत गेनाइ परम्परा क्षीण करैत अछि।

प्रश्न 3504. परम्परागत धुनक नष्ट होयब किएक गंभीर अछि?
क. क्योंकि धुन गीतक सांस्कृतिक पहचान आ अनुष्ठानिक भाव धारण करैत अछि
ख. धुन अप्रासंगिक
ग. शब्द बिना धुन पूर्ण
घ. धुन केवल सजावट
उत्तर: क. क्योंकि धुन गीतक सांस्कृतिक पहचान आ अनुष्ठानिक भाव धारण करैत अछि
व्याख्या: लोकगीतक अर्थ ओकर ध्वनि-संस्कारसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 3505. फिल्मीकरण लोकगीतकेँ लोकप्रिय बना सकैत अछि—तैयो संकट किएक?
क. लोकप्रियता होइतो मूल संदर्भ, लय आ भक्ति-भाव क्षतिग्रस्त भऽ सकैत अछि
ख. संकट असंभव
ग. लोकप्रियता मतलब संरक्षण
घ. संदर्भक महत्त्व नहि
उत्तर: क. लोकप्रियता होइतो मूल संदर्भ, लय आ भक्ति-भाव क्षतिग्रस्त भऽ सकैत अछि
व्याख्या: लेख परम्परागत व्यवहारक क्षय पर बल दैत अछि।

प्रश्न 3506. गोसाउनि गीतक “अस्तित्वक संकट”क अर्थ की अछि?
क. मूल लोकधुन आ आचार-प्रसंग बिनु परम्परा पहिचान खोबैत अछि
ख. गीतक अतिशय विस्तार
ग. कण्ठक वृद्धि
घ. संकट नहिं
उत्तर: क. मूल लोकधुन आ आचार-प्रसंग बिनु परम्परा पहिचान खोबैत अछि
व्याख्या: अस्तित्व-संकट सिर्फ कम गेनाइ नहि, मूल रूपक क्षरण अछि।

प्रश्न 3507. लोकगीत संरक्षणमे “प्रामाणिकता” किएक चाही?
क. ताकि गीत अपन मूल धुन, अवसर, भाषा आ भाव सहित बचे
ख. ताकि सब गीत एके फिल्मी बने
ग. ताकि भाषा हटि जाए
घ. ताकि केवल नाम बचे
उत्तर: क. ताकि गीत अपन मूल धुन, अवसर, भाषा आ भाव सहित बचे
व्याख्या: प्रामाणिकता परंपरागत सांस्कृतिक अर्थ बचबैत अछि।

प्रश्न 3508. आधुनिक माध्यम आ फिल्मीकरण बीच अंतर की अछि?
क. माध्यम धरोहर बचा सकैत अछि; फिल्मीकरण मूल स्वरूप बदलि सकैत अछि
ख. दूनू एके बात
ग. माध्यम सदैव हानिकर
घ. फिल्मीकरण सदैव संरक्षण
उत्तर: क. माध्यम धरोहर बचा सकैत अछि; फिल्मीकरण मूल स्वरूप बदलि सकैत अछि
व्याख्या: लेख आधुनिक दस्तावेजीकरण स्वीकारैत अछि, पर धुन-विकृति पर सावधान अछि।

प्रश्न 3509. लोकगीतक धुनकेँ “दस्तावेज” बनाबयक अर्थ की अछि?
क. ध्वनि-संरचना केँ भविष्य लेल सुरक्षित राखब
ख. गीतकेँ मौन करब
ग. शब्द हटाब
घ. केवल फोटो राखब
उत्तर: क. ध्वनि-संरचना केँ भविष्य लेल सुरक्षित राखब
व्याख्या: धुन रेकॉर्ड कयल बिना लोकगायनक जीवित स्वरूप बाँचब कठिन अछि।

प्रश्न 3510. परम्परागत गोसाउनि गीत ककरा बीच जीवित रहैत आएल?
क. गाम-गामक गहबर, भगत-मंडली आ सामूहिक गायनमे
ख. महानगरक विज्ञापनमे
ग. केवल विद्यालय परीक्षा
घ. केवल अदालतमे
उत्तर: क. गाम-गामक गहबर, भगत-मंडली आ सामूहिक गायनमे
व्याख्या: लोकधार्मिक स्थल आ गायक समुदाय परम्परा बचबैत रहल।

प्रश्न 3511. फिल्मी धुन पर भगवती गीत गायनक सामाजिक कारण की हो सकैत अछि?
क. नव पीढ़ी आ लोकप्रिय बाजारक प्रभाव, जकरा कारण मूल धुन कमजोर भेल
ख. मूल धुनक विजय
ग. पूर्ण संरक्षण
घ. ककरो रुचि नहि
उत्तर: क. नव पीढ़ी आ लोकप्रिय बाजारक प्रभाव, जकरा कारण मूल धुन कमजोर भेल
व्याख्या: लेख अप्रत्यक्ष रूपेँ आधुनिक लोकप्रियता आ परम्परा-संकटक सम्बन्ध देखबैत अछि।

प्रश्न 3512. एहि खण्डक संरक्षण-संदेश की अछि?
क. आधुनिक साधन उपयोग करु, मुदा मूल लोकधुन आ आचार-भाव नष्ट नहि करू
ख. सब गीत फिल्मी बनाउ
ग. धरोहर छोड़ू
घ. परम्परा अप्रासंगिक
उत्तर: क. आधुनिक साधन उपयोग करु, मुदा मूल लोकधुन आ आचार-भाव नष्ट नहि करू
व्याख्या: लेख आधुनिकता आ प्रामाणिक परम्परा बीच संतुलन चाहैत अछि।

खण्ड ३५७ : विदेह-सदेह १ — झूमरा, भगत आ गहबर

प्रश्न 3513. झूमरा गायनक परम्परा कोन स्थलसँ विशेष जुड़ल बताओल गेल?
क. गाम-गामक गहबर आ भगत-मंडलीसँ
ख. रेलवे स्टेशन
ग. नगरपालिका दफ्तर
घ. विद्यालय मैदान मात्र
उत्तर: क. गाम-गामक गहबर आ भगत-मंडलीसँ
व्याख्या: लेख गहबरमे भगत-मंडली द्वारा झूमरा गायनक समृद्ध परम्परा बतबैत अछि।

प्रश्न 3514. नौ सदस्यक समवेत स्वरक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. झूमरा सामूहिक गायन आ अनुष्ठानिक समूह-ऊर्जा पर निर्भर अछि
ख. एकल मौन साधना
ग. केवल लिखित पाठ
घ. दुकानक घोषणा
उत्तर: क. झूमरा सामूहिक गायन आ अनुष्ठानिक समूह-ऊर्जा पर निर्भर अछि
व्याख्या: समवेत स्वर देवी-आवाहनक सामुदायिक ध्वनि बनबैत अछि।

प्रश्न 3515. झाली आ मादर झूमरामे की भूमिका निभबैत अछि?
क. ताल, लय आ अनुष्ठानिक आवेश सृजन करैत अछि
ख. गीत रोकैत अछि
ग. केवल सजावट
घ. लिपि बदलैत अछि
उत्तर: क. ताल, लय आ अनुष्ठानिक आवेश सृजन करैत अछि
व्याख्या: वाद्य-ताल लोकधार्मिक गायनक देहधर्मी शक्ति होइत अछि।

प्रश्न 3516. झूमरा द्वारा भगवतीक आवाहन कोन लोकविश्वास दर्शबैत अछि?
क. संगीत द्वारा देवी-उपस्थिति आमंत्रित होइत अछि
ख. संगीत देवी-विरोधी
ग. आवाहन असंभव
घ. गीत केवल खेल
उत्तर: क. संगीत द्वारा देवी-उपस्थिति आमंत्रित होइत अछि
व्याख्या: लोकधर्ममे ध्वनि आ देव-आवेश घनिष्ठ सम्बन्ध राखैत अछि।

प्रश्न 3517. भगतक शरीरमे देवी प्रकट होयबाक विश्वासक अर्थ की अछि?
क. भक्ति, संगीत आ देहक संयुक्त आध्यात्मिक अनुभव
ख. देह असंबद्ध
ग. केवल रंगमंचीय अभिनय
घ. व्यापारिक कौशल
उत्तर: क. भक्ति, संगीत आ देहक संयुक्त आध्यात्मिक अनुभव
व्याख्या: झूमरा गायन लोकदेहकेँ देव-अनुभवक माध्यम बनबैत अछि।

प्रश्न 3518. “बीज रूपमे बचल” परम्परा कहबाक अर्थ की अछि?
क. परम्परा पूर्ण नष्ट नहि, मुदा कमजोर आ संकटग्रस्त अछि
ख. परम्परा अत्यन्त बलवान
ग. कहीं अस्तित्व नहि
घ. संकट असत्य
उत्तर: क. परम्परा पूर्ण नष्ट नहि, मुदा कमजोर आ संकटग्रस्त अछि
व्याख्या: लेख आशा आ संकट दुनू साथे देखैत अछि।

प्रश्न 3519. बतहू यादवक चिन्ता भावी पीढ़ी संदर्भमे कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. हुनका बाद ई गायन-धरोहर के सँभालत?
ख. गीत बहुत सुरक्षित अछि
ग. उत्तराधिकारीक जरूरत नहि
घ. देवी-गीत बंद होय
उत्तर: क. हुनका बाद ई गायन-धरोहर के सँभालत?
व्याख्या: व्यक्तिगत भगतक चिन्ता सामूहिक सांस्कृतिक उत्तराधिकारक प्रश्न अछि।

प्रश्न 3520. झूमरा संरक्षणमे केवल शब्द लिखि लेब पर्याप्त किएक नहि?
क. गायन-समूह, ताल, आवेश आ अवसर सेहो मूल अंग अछि
ख. शब्दे सभकिछु अछि
ग. धुन अनावश्यक
घ. समूह हटाउ
उत्तर: क. गायन-समूह, ताल, आवेश आ अवसर सेहो मूल अंग अछि
व्याख्या: झूमरा प्रदर्शनपरक लोकधर्म अछि, केवल पाठ नहि।

प्रश्न 3521. गहबर परम्परा मैथिली लोकधर्ममे की संकेत करैत अछि?
क. ग्रामदेवी, सामूहिक श्रद्धा आ स्थानीय अनुष्ठानक केन्द्र
ख. नगर-कार्यालय
ग. खेती-कर
घ. विद्यालय परीक्षा
उत्तर: क. ग्रामदेवी, सामूहिक श्रद्धा आ स्थानीय अनुष्ठानक केन्द्र
व्याख्या: गहबर ग्राम्य लोकदेवी परम्पराक सांस्कृतिक केन्द्र अछि।

प्रश्न 3522. एहि खण्डक मूल निष्कर्ष की अछि?
क. झूमरा लोकदेवी-आराधना, सामूहिक संगीत आ देहगत भक्ति-कंपनक अनूठ परम्परा अछि
ख. झूमरा केवल मनोरंजन
ग. देवीसँ असंबद्ध
घ. लुप्त होयब उचित
उत्तर: क. झूमरा लोकदेवी-आराधना, सामूहिक संगीत आ देहगत भक्ति-कंपनक अनूठ परम्परा अछि
व्याख्या: लेख झूमराकेँ तात्कालिक संरक्षण योग्य जीवित धरोहर मानैत अछि।

खण्ड ३५८ : विदेह-सदेह १ — हृदय नारायण झाक लोकसंगीत-दृष्टि

प्रश्न 3523. हृदय नारायण झाक लोकसंगीत-दृष्टिक मुख्य आधार की अछि?
क. संग्रह, संरक्षण, दस्तावेजीकरण आ पुनर्जीवन
ख. उपेक्षा
ग. विस्मृति
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. संग्रह, संरक्षण, दस्तावेजीकरण आ पुनर्जीवन
व्याख्या: लेख लुप्तप्राय गीतसभकेँ भविष्य लेल बचाबयक स्पष्ट आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 3524. लोकगीतमे धर्म आ लोक व्यवहारक मिलन की बतबैत अछि?
क. मैथिली संस्कृति पूजा आ दैनिक जीवन दुनू केँ गीतमे बाँधैत अछि
ख. धर्म आ व्यवहार अलग-अलग असंबद्ध
ग. गीत धर्म-विरोधी
घ. लोक व्यवहार नष्ट
उत्तर: क. मैथिली संस्कृति पूजा आ दैनिक जीवन दुनू केँ गीतमे बाँधैत अछि
व्याख्या: लोकगीत जीवनक संपूर्ण अवसरसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 3525. पराती, भगवती गीत, झूमरा, संस्कार गीत—एहि सभकेँ साथ पढ़लासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. मैथिली लोकगीत परम्परा बहुविध, अवसर-विशिष्ट आ सामुदायिक अछि
ख. एकरूप आ रिक्त
ग. केवल व्यक्तिगत
घ. असंगीतिक
उत्तर: क. मैथिली लोकगीत परम्परा बहुविध, अवसर-विशिष्ट आ सामुदायिक अछि
व्याख्या: विभिन्न गीत-प्रकार समाजक अनेक भाव-क्षेत्रक प्रतिनिधि छथि।

प्रश्न 3526. ऑडियो-वीडियो रूपमे दस्तावेजीकरण भविष्य लेल किएक अपरिहार्य अछि?
क. लोकगीतक धुन, लय, स्वर, प्रस्तुति आ देहभाषा बचय लेल
ख. केवल पृष्ठ सजाबय लेल
ग. ध्वनि हटाबय लेल
घ. गीतक मृत्यु लेल
उत्तर: क. लोकगीतक धुन, लय, स्वर, प्रस्तुति आ देहभाषा बचय लेल
व्याख्या: मुद्रित पाठ कतेको बात बचबैत अछि, मुदा गायनक जीवित रूप रेकॉर्ड चाहैत अछि।

प्रश्न 3527. लेखमे लोकगीतक “लुप्तप्राय” स्थिति चेतावनी किएक अछि?
क. अखन बचल अंशो सँभालल नहि गेल तँ परम्परा टूटि सकैत अछि
ख. संकट समाप्त
ग. लोकगीत बढ़ि रहल
घ. संरक्षण अनावश्यक
उत्तर: क. अखन बचल अंशो सँभालल नहि गेल तँ परम्परा टूटि सकैत अछि
व्याख्या: लुप्तप्राय शब्द तात्कालिक कार्यवाहीक संकेत अछि।

प्रश्न 3528. लेखकक दृष्टिमे लोकगीत केवल अतीतक वस्तु नहि किएक?
क. ई वर्तमान आ भविष्यक पीढ़ीक सांस्कृतिक शिक्षा बनि सकैत अछि
ख. ई मृत संग्रहालय वस्तु मात्र
ग. ई आधुनिक जीवनसँ असंबद्ध
घ. ई भाषा-विरोधी
उत्तर: क. ई वर्तमान आ भविष्यक पीढ़ीक सांस्कृतिक शिक्षा बनि सकैत अछि
व्याख्या: लेख भविष्यक पीढ़ीक प्रश्न बारम्बार उठबैत अछि।

प्रश्न 3529. लोकगीत-संरक्षण मैथिली अस्मिता सँ कोना जुड़ल अछि?
क. गीत भाषा, संस्कार, पर्व, भूगोल आ लोकस्मृति केँ एकसाथ रखैत अछि
ख. अस्मितासँ कोनो सम्बन्ध नहि
ग. गीत पहचान हटबैत अछि
घ. केवल व्यापारक सामग्री
उत्तर: क. गीत भाषा, संस्कार, पर्व, भूगोल आ लोकस्मृति केँ एकसाथ रखैत अछि
व्याख्या: लोकगीत सामूहिक पहचानक ध्वन्यात्मक रूप अछि।

प्रश्न 3530. हृदय नारायण झाक लेखमे विद्वत् आ लोक—दू स्तर कोना मिलैत अछि?
क. पुराणोक्त मिथिला-महिमा आ लोकक कण्ठक गीत एकसाथ पढ़ल गेल अछि
ख. केवल शास्त्र
ग. केवल बाजार
घ. दूनू अनुपस्थित
उत्तर: क. पुराणोक्त मिथिला-महिमा आ लोकक कण्ठक गीत एकसाथ पढ़ल गेल अछि
व्याख्या: लेख शास्त्रीय स्मृति आ जीवित लोकधुन केँ जोडैत अछि।

प्रश्न 3531. लोकगीतक भाव-सौंदर्यक मूल स्रोत की कहल जा सकैत अछि?
क. शब्द, धुन, लय, श्रद्धा, अवसर आ सामुदायिक स्मृतिक सम्मिलन
ख. केवल छपाइ
ग. केवल वाद्य-विज्ञापन
घ. केवल फोटो
उत्तर: क. शब्द, धुन, लय, श्रद्धा, अवसर आ सामुदायिक स्मृतिक सम्मिलन
व्याख्या: लोकगीत बहु-घटक सांस्कृतिक कला अछि।

प्रश्न 3532. एहि लेखसँ क्विज लेल उच्चस्तरीय प्रश्न ककरा पर बनबाक चाही?
क. वर्गीकरण, संरक्षण-विधि, सांस्कृतिक अर्थ, धुन-संकट आ लोकधर्म पर
ख. पृष्ठ संख्या
ग. ईमेल पता
घ. फॉण्ट आकार
उत्तर: क. वर्गीकरण, संरक्षण-विधि, सांस्कृतिक अर्थ, धुन-संकट आ लोकधर्म पर
व्याख्या: लेख गम्भीर लोकसाहित्यिक अध्ययनक आधार दैत अछि।

खण्ड ३५९ : विदेह-सदेह १ — जितेन्द्र झा: “स्वरक माला गँथती अंशु”

प्रश्न 3533. “स्वरक माला गँथती अंशु” लेखक केन्द्रमे ककर सांगीतिक यात्रा अछि?
क. अंशुमालाक मैथिली संगीत-साधना
ख. हिमांशु चौधरीक कविता मात्र
ग. मायानन्द मिश्रक उपन्यास
घ. छठि पावनिक विधि
उत्तर: क. अंशुमालाक मैथिली संगीत-साधना
व्याख्या: लेख अंशुमाला नामक गायिका/संगीत-विद्यार्थीक मैथिली संगीत-चिन्ता पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 3534. अंशुमालाक अनुसार मैथिली भाषा-संगीत पिछुआयबाक एक कारण की अछि?
क. मैथिल समाज अपन भाषाकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत अछि
ख. भाषा अत्यधिक समर्थित अछि
ग. ककरो गीत चाही नहि
घ. संगीतकार नहि अछि
उत्तर: क. मैथिल समाज अपन भाषाकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत अछि
व्याख्या: लेख आरम्भे भाषाबोध आ आत्महीनता पर प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 3535. अंशुमाला कहाँ संगीतमे एम.फिल. करैत छथि?
क. दिल्ली विश्वविद्यालयमे
ख. काशी गुरुकुलमे
ग. जनकपुर अस्पतालमे
घ. पटना सचिवालयमे
उत्तर: क. दिल्ली विश्वविद्यालयमे
व्याख्या: लेखमे हुनकर दिल्ली विश्वविद्यालयक संगीत-अध्ययनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3536. अंशुमालाक पहिल गुरु के कहल गेल छथि?
क. हुनकर माय
ख. राजकीय अधिकारी
ग. व्यापारी
घ. विदेशी पर्यटक
उत्तर: क. हुनकर माय
व्याख्या: मातृ-परम्परा संगीत-शिक्षाक मूल स्रोत रूपमे उल्लिखित अछि।

प्रश्न 3537. शशि किरण झासँ सम्बन्धित उल्लेख की बतबैत अछि?
क. अंशुमालाक माय मैथिली लोकसंगीतक शिक्षा लेने छलीह
ख. माय संगीत-विरोधी छलीह
ग. लोकसंगीत अनुपस्थित
घ. शिक्षा केवल अंग्रेजीमे छल
उत्तर: क. अंशुमालाक माय मैथिली लोकसंगीतक शिक्षा लेने छलीह
व्याख्या: ई पारिवारिक-संगीतिक परम्पराक पीढ़ीगत सूत्र देखबैत अछि।

प्रश्न 3538. हृदय नारायण झासँ अंशुमालाक सम्बन्ध की अछि?
क. रेडियो कलाकारसँ संगीत-शिक्षा लैत छलीह
ख. राजनीतिक विरोध
ग. व्यापारिक सौदा
घ. कथा-पात्र
उत्तर: क. रेडियो कलाकारसँ संगीत-शिक्षा लैत छलीह
व्याख्या: लेख अंशुमालाक प्रशिक्षणमे परम्परागत कलाकारक भूमिका देखबैत अछि।

प्रश्न 3539. बाल कलाकार रूपमे अंशु कोन एलबममे गा चुकलीह?
क. सीतायण एलबममे
ख. कोशी रिपोर्टमे
ग. मधेश समाचारमे
घ. तर्पण कथामे
उत्तर: क. सीतायण एलबममे
व्याख्या: सीतायण उल्लेख बाल्यकालसँ हुनकर गायन-सक्रियताक प्रमाण अछि।

प्रश्न 3540. दिल्लीमे अंशु कोन भूमिका निभबैत छथि?
क. मैथिली गीत-संगीत परसैत आ संगीत-साधना करैत छथि
ख. मैथिली गीत टारैत छथि
ग. कला छोड़ि देलनि
घ. केवल प्रशासनिक पद पर छथि
उत्तर: क. मैथिली गीत-संगीत परसैत आ संगीत-साधना करैत छथि
व्याख्या: लेख दिल्लीक कार्यक्रमसभमे हुनकर सक्रिय मैथिली गायन बतबैत अछि।

प्रश्न 3541. अंशुमालाक लक्ष्य की रूपमे बताओल गेल?
क. मैथिली गीत-संगीतकेँ गुणस्तरीय बनौनाइ
ख. भाषा बदलि देनाइ
ग. केवल पैरोडी गेनाइ
घ. लोकगीत समाप्त करब
उत्तर: क. मैथिली गीत-संगीतकेँ गुणस्तरीय बनौनाइ
व्याख्या: लेख हुनका गुणवत्ता-केन्द्रित संगीत-साधिका रूपमे देखबैत अछि।

प्रश्न 3542. एहि लेखक आरम्भिक सार की अछि?
क. भाषा-अस्मिता, मातृ-परम्परा, औपचारिक संगीत-शिक्षा आ मैथिली गायनक संघर्ष
ख. केवल यात्रा-वर्णन
ग. चिकित्सा कथा
घ. पृष्ठसूची
उत्तर: क. भाषा-अस्मिता, मातृ-परम्परा, औपचारिक संगीत-शिक्षा आ मैथिली गायनक संघर्ष
व्याख्या: अंशुमाला प्रसंग मैथिली संगीतक सामाजिक आ शैक्षिक पक्ष खोलैत अछि।

खण्ड ३६० : विदेह-सदेह १ — अंशु: श्रोता, भाषा आ दिल्लीक अनुभव

प्रश्न 3543. दिल्लीक एक कार्यक्रममे मैथिली गीत न गा सकबाक प्रसंग की देखबैत अछि?
क. मैथिलीभाषी श्रोता बीचो आन भाषाक गीतक माँगक दबाव
ख. मैथिली गीतक अत्यधिक माँग
ग. कार्यक्रम न भेल
घ. श्रोता अनुपस्थित
उत्तर: क. मैथिलीभाषी श्रोता बीचो आन भाषाक गीतक माँगक दबाव
व्याख्या: लेख ८ हजार मैथिल रहितो भोजपुरीक माँगक उदाहरण दैत अछि।

प्रश्न 3544. अंशु कहैत छथि “गायक श्रोताक रुचिक आगू विवश होइत अछि”—एहि कथनक अर्थ की अछि?
क. कलाकार बाजार/श्रोता-अपेक्षा आ भाषिक निष्ठा बीच फँसि जाइत अछि
ख. गायक स्वतन्त्र नहि गाबय चाहैत
ग. श्रोता अप्रासंगिक
घ. गीतक अर्थ नहि
उत्तर: क. कलाकार बाजार/श्रोता-अपेक्षा आ भाषिक निष्ठा बीच फँसि जाइत अछि
व्याख्या: एहि प्रसंगमे कलाकारक सांस्कृतिक इच्छा आ जन-माँगक तनाव स्पष्ट अछि।

प्रश्न 3545. पटना आ दिल्लीक अनुभवक तुलना सँ की उभरैत अछि?
क. श्रोताक सांगीतिक स्वाद क्षेत्र अनुसार बदलैत अछि
ख. सभ ठाम समान स्वाद
ग. दिल्लीमे मैथिली अधिक शक्तिशाली
घ. पटना असंबद्ध
उत्तर: क. श्रोताक सांगीतिक स्वाद क्षेत्र अनुसार बदलैत अछि
व्याख्या: पटना मे तालि आ दिल्ली मे आन भाषा माँगक अनुभव भिन्न सांस्कृतिक परिवेश देखबैत अछि।

प्रश्न 3546. मैथिली भाषीमे आन भाषाक गीत-संगीतक बढ़ैत रुचि किएक चिन्ताजनक कहल गेल?
क. ई मैथिली संगीतक स्थान संकुचित करि सकैत अछि
ख. ई मैथिली मजबूत करैत अछि
ग. भाषा-संरक्षणक उपाय
घ. गीत-विस्तारक प्रमाण
उत्तर: क. ई मैथिली संगीतक स्थान संकुचित करि सकैत अछि
व्याख्या: अंशु एहन रुचिकेँ मैथिली गीत-संगीत लेल अहितकर देखैत छथि।

प्रश्न 3547. श्रोता-रुचि आ कलाकारक लक्ष्य बीच मुख्य तनाव की अछि?
क. मनोरंजनक माँग आ सांस्कृतिक जिम्मेदारीक द्वंद्व
ख. श्रोताहीनता
ग. कलाकार-विहीनता
घ. वाद्य-विरोध
उत्तर: क. मनोरंजनक माँग आ सांस्कृतिक जिम्मेदारीक द्वंद्व
व्याख्या: अंशु मैथिली संगीतक सम्मान चाहैत छथि, मुदा श्रोताक माँग कलाकारकेँ मोड़ि दैत अछि।

प्रश्न 3548. “मैथिल समाज अपन भाषा-संगीतक दृष्टिकोण बदलू” आग्रहक अर्थ की अछि?
क. सांस्कृतिक आत्मसम्मान बढ़ाबय आ मैथिली संगीत सुनबाक वातावरण बनाबय
ख. मैथिली छोड़ू
ग. आन भाषा मात्र सुनू
घ. कलाकारकेँ चुप कराउ
उत्तर: क. सांस्कृतिक आत्मसम्मान बढ़ाबय आ मैथिली संगीत सुनबाक वातावरण बनाबय
व्याख्या: लेख बदलाव श्रोता-मानसिकता मे चाहैत अछि।

प्रश्न 3549. मैथिली डहकन गेबाक लेल मोन मसोसय पड़बाक प्रसंग कोन वेदना दैत अछि?
क. अपन भाषा-गीत गाबयक इच्छा दबि जाएबाक पीड़ा
ख. गीत न आवयक खुशी
ग. कार्यक्रम समाप्त
घ. श्रोता अनुपस्थित
उत्तर: क. अपन भाषा-गीत गाबयक इच्छा दबि जाएबाक पीड़ा
व्याख्या: कलाकारक आंतरिक मैथिली-निष्ठा आ बाहरी दबावक करुण स्थिति अछि।

प्रश्न 3550. दिल्लीमे अंशुक अकच्छ लगबाक कारण की छल?
क. मैथिल भाषीक बदलल सांगीतिक स्वाद
ख. संगीतक अत्यधिक सम्मान
ग. मैथिली गीतक भारी माँग
घ. कार्यक्रमक अभाव
उत्तर: क. मैथिल भाषीक बदलल सांगीतिक स्वाद
व्याख्या: लेख बतबैत अछि जे दिल्लीक परिवेश हुनका सांस्कृतिक रूपेँ बेचैन कयलक।

प्रश्न 3551. एहि प्रसंगसँ प्रवासी मैथिल समाजबारे की संकेत भेटैत अछि?
क. प्रवासी परिवेशमे भाषिक-सांगीतिक प्राथमिकता बदलि सकैत अछि
ख. प्रवासमे भाषा हमेशा अधिक बचे
ग. प्रवासी समाज असंबद्ध
घ. संगीतक प्रभाव नहि
उत्तर: क. प्रवासी परिवेशमे भाषिक-सांगीतिक प्राथमिकता बदलि सकैत अछि
व्याख्या: अंशुक अनुभव प्रवासी सांस्कृतिक चुनौती देखबैत अछि।

प्रश्न 3552. एहि खण्डक मूल प्रश्न की अछि?
क. मैथिली श्रोता अपन भाषिक संगीत-संस्कारकेँ की सचेत रूपेँ बचायत?
ख. कतेक पृष्ठ?
ग. कौन सीट?
घ. कौन टिकट?
उत्तर: क. मैथिली श्रोता अपन भाषिक संगीत-संस्कारकेँ की सचेत रूपेँ बचायत?
व्याख्या: लेख श्रोता-समाजक उत्तरदायित्व प्रश्न बनबैत अछि।

खण्ड ३६१ : विदेह-सदेह १ — अंशु: पैरोडी, मौलिकता आ अर्थसंकट

प्रश्न 3553. अंशुमाला मैथिलीमे लोकप्रिय धुनक अभाव मानय लेल किएक तैयार नहि छथि?
क. हुनकर मतमे धुन/लयक अभाव नहि, श्रोता अनभिज्ञ छथि
ख. मैथिलीमे कोनो धुन नहि
ग. धुन बनि सकैत नहि
घ. गीत समाप्त अछि
उत्तर: क. हुनकर मतमे धुन/लयक अभाव नहि, श्रोता अनभिज्ञ छथि
व्याख्या: लेख स्पष्ट करैत अछि जे समस्या सृजनहीनता नहि, परिचय आ समर्थनक अछि।

प्रश्न 3554. मैथिली संगीतकर्मी आर्थिक समस्यासँ लड़ि रहल छथि—एहि कथनक प्रभाव की अछि?
क. मौलिक संगीत उत्पादनक कठिनाई आ पैरोडीक दबाव बुझाइत अछि
ख. कलाकार धनवान मात्र
ग. आर्थिक प्रश्न नहि
घ. संगीत मुफ्ते सम्भव
उत्तर: क. मौलिक संगीत उत्पादनक कठिनाई आ पैरोडीक दबाव बुझाइत अछि
व्याख्या: अर्थ-संकट कारण कलाकार लोकप्रिय/सस्ता विकल्प दिस धकेलाइत छथि।

प्रश्न 3555. पैरोडी गीतक सहारा किएक लेब पड़ैत अछि?
क. मौलिक गीत-संगीतमे लगानीकर्ताक अभाव आ आर्थिक विवशता
ख. मौलिकता नहि चाही
ग. श्रोता अनुपस्थित
घ. भाषा बन्द
उत्तर: क. मौलिक गीत-संगीतमे लगानीकर्ताक अभाव आ आर्थिक विवशता
व्याख्या: लेख पैरोडीक कारण सांस्कृतिक नहि मात्र, आर्थिक सेहो मानैत अछि।

प्रश्न 3556. “सभसँ पैघ कमजोरी श्रोता छै” कथनक अर्थ की अछि?
क. कलाकारक सफलता-संकटमे श्रोताक रुचि निर्णायक भूमिका निभबैत अछि
ख. कलाकारक कोनो जिम्मेदारी नहि
ग. श्रोता सदैव गलत
घ. संगीत निरर्थक
उत्तर: क. कलाकारक सफलता-संकटमे श्रोताक रुचि निर्णायक भूमिका निभबैत अछि
व्याख्या: अंशु श्रोता-समाजक भूमिका पर तीक्ष्ण टिप्पणी करैत छथि।

प्रश्न 3557. पैरोडी-प्रेमी पर अंशुक रोष कोन मूल्यक पक्षमे अछि?
क. मौलिक, स्तरीय मैथिली गीत-संगीतक पक्षमे
ख. नकलक समर्थन
ग. भाषा-विरोध
घ. गीत-विनाश
उत्तर: क. मौलिक, स्तरीय मैथिली गीत-संगीतक पक्षमे
व्याख्या: हुनकर रोष मूल सांस्कृतिक सर्जना बचाबयक आग्रह अछि।

प्रश्न 3558. स्तरीय गीत-संगीत श्रोताकेँ भेटबाक चाही—एहि विचारक केन्द्र की अछि?
क. गुणवत्ता बिना श्रोता-रुचि बदलत नहि
ख. निम्नस्तर पर्याप्त
ग. गीतक मानदंड नहि
घ. संगीत निषिद्ध
उत्तर: क. गुणवत्ता बिना श्रोता-रुचि बदलत नहि
व्याख्या: अंशु मनोरंजनक संग गुणवत्ता चाहैत छथि।

प्रश्न 3559. मैथिली लोकरंग मंचक कार्यक्रमक वाहवाहीक उदाहरण किएक देल गेल?
क. स्तरीय मैथिली कार्यक्रमक श्रोता-स्वीकृति सम्भव अछि से देखेबाक लेल
ख. मैथिली कार्यक्रम असफल
ग. श्रोता नहि
घ. मंच अनुपस्थित
उत्तर: क. स्तरीय मैथिली कार्यक्रमक श्रोता-स्वीकृति सम्भव अछि से देखेबाक लेल
व्याख्या: उदाहरण निराशा नहि, सम्भावना देखबैत अछि।

प्रश्न 3560. मनोरंजनक लेल स्तरीय कार्यक्रमक मांग ककरा बीच संतुलन चाहैत अछि?
क. रुचिकरता आ सांस्कृतिक गुणवत्ता बीच
ख. केवल उपदेश
ग. केवल नकल
घ. केवल मौन
उत्तर: क. रुचिकरता आ सांस्कृतिक गुणवत्ता बीच
व्याख्या: अंशु श्रोता-मनोरंजनक विरोध नहि, निम्नस्तरीयता विरोध करैत छथि।

प्रश्न 3561. आर्थिक संकट आ श्रोता-संकट मिलि मैथिली संगीतमे कोन चुनौती बनबैत अछि?
क. मौलिक सृजनक अवरोध आ पैरोडीक प्रसार
ख. मौलिकता वृद्धि
ग. सभी समस्या समाप्त
घ. संगीत-उत्सव
उत्तर: क. मौलिक सृजनक अवरोध आ पैरोडीक प्रसार
व्याख्या: दूनू कारण संगठित रूपेँ मैथिली संगीतक गुणवत्ता पर दबाव बनबैत अछि।

प्रश्न 3562. एहि खण्डक मूल निष्कर्ष की अछि?
क. मौलिक मैथिली संगीत बचाबय लेल श्रोता, लगानीकर्ता आ कलाकार तीनू जिम्मेदार छथि
ख. कलाकार अकेले पर्याप्त
ग. पैरोडी सर्वोत्तम
घ. श्रोता अप्रासंगिक
उत्तर: क. मौलिक मैथिली संगीत बचाबय लेल श्रोता, लगानीकर्ता आ कलाकार तीनू जिम्मेदार छथि
व्याख्या: लेख संगीत-संस्कृतिक सामूहिक उत्तरदायित्व स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ३६२ : विदेह-सदेह १ — अंशु: कलाकार-सम्मान आ स्त्री कलाकारक चुनौती

प्रश्न 3563. अंशुमालाक अनुभवमे मैथिली रंगकर्म/संगीतमे लागल कलाकारकेँ कोन कमी अछि?
क. उचित सम्मानक अभाव
ख. अत्यधिक सम्मान
ग. कोनो कठिनाई नहि
घ. पूर्ण संस्थागत सुरक्षा
उत्तर: क. उचित सम्मानक अभाव
व्याख्या: लेख कलाकार-सम्मानक प्रश्न स्पष्ट उठबैत अछि।

प्रश्न 3564. “कलाकारकेँ आबय बला दिनमे बहुत मान-सम्मान भेटक चाही” कथन कोन आशा दैत अछि?
क. भविष्य मे मैथिली कलाकारक सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़बाक चाहना
ख. कलाकारक अवमूल्यन
ग. भाषा छोड़ब
घ. संगीत समाप्त करब
उत्तर: क. भविष्य मे मैथिली कलाकारक सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़बाक चाहना
व्याख्या: अंशु कलाकारक सामाजिक सम्मानकेँ जरूरी मानैत छथि।

प्रश्न 3565. अंशुमाला मैथिली संगीतकेँ कोन ऊँचाई पर देखय चाहैत छथि?
क. गुण, सम्मान आ व्यापक स्वीकार्यता वाली ऊँचाई
ख. केवल पैरोडीक बजार
ग. अप्रासंगिकता
घ. संकीर्ण मंच
उत्तर: क. गुण, सम्मान आ व्यापक स्वीकार्यता वाली ऊँचाई
व्याख्या: लेख हुनकर लक्ष्य मैथिली संगीतक उन्नयन बतबैत अछि।

प्रश्न 3566. स्त्री कलाकार लेल कठिनाईक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मैथिली रंगकर्म/संगीतमे लैंगिक बाधा आ सामाजिक संकोच देखेबाक लेल
ख. स्त्री सहभागिता पूर्ण सुगम
ग. लिंग प्रश्न असंबद्ध
घ. कलाकार मात्र पुरुष
उत्तर: क. मैथिली रंगकर्म/संगीतमे लैंगिक बाधा आ सामाजिक संकोच देखेबाक लेल
व्याख्या: अंशु कहैत छथि जे लड़की लेल एखनहुँ बहुत कठिनाई अछि।

प्रश्न 3567. समाजसँ सम्मान नहि भेटला पर लड़की प्रतिभा देखाबय आगू नहि आओत—एहि कथनक अर्थ की अछि?
क. सामाजिक मान्यता स्त्री-कलात्मक सहभागिताक शर्त अछि
ख. प्रतिभा सम्मानबिना बढैत अछि
ग. समाज अप्रासंगिक
घ. स्त्री कला असंभव
उत्तर: क. सामाजिक मान्यता स्त्री-कलात्मक सहभागिताक शर्त अछि
व्याख्या: सम्मानक अभाव प्रतिभाक सार्वजनिक विकास रोकि सकैत अछि।

प्रश्न 3568. अंशुमालाक कथन कलाकार-सम्मानकेँ केवल व्यक्तिगत मुद्दा नहि किएक बनबैत अछि?
क. ई सम्पूर्ण मैथिली संगीत-संस्कृतिक विकाससँ जुड़ल अछि
ख. ई निजी शिकायत मात्र
ग. समाजसँ सम्बन्ध नहि
घ. संगीत असंबद्ध
उत्तर: क. ई सम्पूर्ण मैथिली संगीत-संस्कृतिक विकाससँ जुड़ल अछि
व्याख्या: कलाकार सम्मानित भेलाह तँ नव प्रतिभा आगू आबि सकैत अछि।

प्रश्न 3569. स्त्री कलाकारक कठिनाई मैथिली समाजक कोन पक्ष उजागर करैत अछि?
क. सांस्कृतिक मंच पर स्त्री-स्वीकृतिमे बाधा आ संकोच
ख. पूर्ण समता
ग. बाधाहीन मंच
घ. प्रश्नहीन आधुनिकता
उत्तर: क. सांस्कृतिक मंच पर स्त्री-स्वीकृतिमे बाधा आ संकोच
व्याख्या: लेख लिंग-संवेदनशील सांस्कृतिक सुधारक जरूरत देखबैत अछि।

प्रश्न 3570. कलाकार-सम्मान आ श्रोता-संस्कृति बीच सम्बन्ध की अछि?
क. सम्मानित कलाकार गुणवत्तापूर्ण सृजनक वातावरण पाबैत अछि
ख. श्रोता अपमान करय त बेहतर
ग. सम्मान अप्रासंगिक
घ. कलाकार अकेले पूर्ण
उत्तर: क. सम्मानित कलाकार गुणवत्तापूर्ण सृजनक वातावरण पाबैत अछि
व्याख्या: संगीत-संस्कृति समाजक सम्मानपूर्ण व्यवहार पर निर्भर अछि।

प्रश्न 3571. अंशु स्वयं एक विद्यार्थी, कलाकार आ स्त्रीक रूपमे कोन संयुक्त दृष्टि आनैत छथि?
क. शिक्षा, साधना, सामाजिक बाधा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संयुक्त अनुभव
ख. केवल दर्शक दृष्टि
ग. असंगीतिक टिप्पणी
घ. राजकीय रिपोर्ट
उत्तर: क. शिक्षा, साधना, सामाजिक बाधा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक संयुक्त अनुभव
व्याख्या: हुनकर अनुभव व्यक्तिगत साधना कैं सामाजिक विमर्शसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3572. एहि खण्डक सार की अछि?
क. मैथिली संगीतक उन्नति लेल कलाकार-सम्मान, स्त्री-सहभागिता आ समाजक दृष्टिकोण सुधार जरूरी अछि
ख. केवल पैरोडी पर्याप्त
ग. स्त्री कलाकारक जरूरत नहि
घ. सम्मान बाधक अछि
उत्तर: क. मैथिली संगीतक उन्नति लेल कलाकार-सम्मान, स्त्री-सहभागिता आ समाजक दृष्टिकोण सुधार जरूरी अछि
व्याख्या: अंशु मैथिली संगीतक विकासकैं सामाजिक सम्मानसँ जोड़ैत छथि।

खण्ड ३६३ : विदेह-सदेह १ — नेपाल वन आ मधेश स्पेशल

प्रश्न 3573. नेपाल वन टेलिभिजनक “मधेश स्पेशल”क महत्व की बताओल गेल?
क. मैथिलीकैं संचारमाध्यममे दृश्य-श्रव्य स्थान देनाइ
ख. मैथिली हटाबय
ग. केवल खेल प्रसारण
घ. विज्ञापन मात्र
उत्तर: क. मैथिलीकैं संचारमाध्यममे दृश्य-श्रव्य स्थान देनाइ
व्याख्या: लेख नेपाल वनक कार्यक्रमकैं मैथिली/मधेशी अभिव्यक्तिक मंच रूपमे देखैत अछि।

प्रश्न 3574. नेपालमे मैथिली बहुत बाजल जाएबला भाषा होइतहुँ संचारमाध्यममे स्थिति केहन कहल गेल?
क. अनुपातिक स्थान नहि भेटल, उपेक्षा रहल
ख. पूर्ण प्रभुत्व
ग. कोनो भाषी नहि
घ. माध्यममे केवल मैथिली
उत्तर: क. अनुपातिक स्थान नहि भेटल, उपेक्षा रहल
व्याख्या: लेख भाषा-जनसंख्या आ मीडिया-प्रतिनिधित्वक असंतुलन देखबैत अछि।

प्रश्न 3575. भारतसँ संचालित नेपाल वनक भूमिका किएक अलग ठहरल?
क. ओ मैथिली कार्यक्रम प्रसारण कऽ मैथिलीभाषी बीच अलग स्थान बनौलक
ख. ओ मैथिली निषिद्ध कयलक
ग. ओ केवल मौन रहल
घ. ओ स्थानीयता हटेलक
उत्तर: क. ओ मैथिली कार्यक्रम प्रसारण कऽ मैथिलीभाषी बीच अलग स्थान बनौलक
व्याख्या: कार्यक्रम सीमा-पार मीडिया द्वारा भाषिक पहुँच बढ़बैत अछि।

प्रश्न 3576. मधेश आन्दोलन आ संचारमाध्यमक आरोपक संदर्भमे मैथिलीकेँ स्थान भेटबाक बात की देखबैत अछि?
क. राजनीतिक-सामाजिक दबाव भाषा-प्रतिनिधित्वक प्रश्न खोलैत अछि
ख. भाषा असंबद्ध
ग. मीडिया निर्लिप्त
घ. स्थान घटल
उत्तर: क. राजनीतिक-सामाजिक दबाव भाषा-प्रतिनिधित्वक प्रश्न खोलैत अछि
व्याख्या: लेख मधेशी पहचान आ मीडिया स्पेसक सम्बन्ध देखबैत अछि।

प्रश्न 3577. मधेश स्पेशल मधेशीकेँ कोन अवसर देलक?
क. अन्तर्राष्ट्रीय संचारमाध्यममे अपन भाषामे मुख खोलबाक अवसर
ख. मौन रहबाक अवसर
ग. भाषा बदलबाक अवसर
घ. केवल नाच देखबाक अवसर
उत्तर: क. अन्तर्राष्ट्रीय संचारमाध्यममे अपन भाषामे मुख खोलबाक अवसर
व्याख्या: लेख कार्यक्रमकेँ आवाज प्रदान करयवाला मंच मानैत अछि।

प्रश्न 3578. छोट मधेशी घटना मुख समाचार बनय लागल—एहि कथनक महत्व की अछि?
क. मीडिया-दृश्यता बढ़ल आ स्थानीय मुद्दा सार्वजनिक भेल
ख. घटना लुप्त भेल
ग. समाचार घटल
घ. मुद्दा दबि गेल
उत्तर: क. मीडिया-दृश्यता बढ़ल आ स्थानीय मुद्दा सार्वजनिक भेल
व्याख्या: मधेश स्पेशल स्थानीय आवाज केँ समाचार-मूल्य प्रदान करैत अछि।

प्रश्न 3579. मधेशी नेताक धोती-कुर्ता पहिरि टीवी पर बातचीतक दृश्य ककर प्रतीक अछि?
क. सांस्कृतिक पहचान सहित सार्वजनिक राजनीतिक उपस्थिति
ख. पहचान लुकाबय
ग. भाषा विसरब
घ. राजनीति समाप्त
उत्तर: क. सांस्कृतिक पहचान सहित सार्वजनिक राजनीतिक उपस्थिति
व्याख्या: वेशभूषा आ भाषा, दुनू मधेशी पहचानक सार्वजनिकता देखबैत अछि।

प्रश्न 3580. एक घंटा मैथिली कार्यक्रम लोकप्रिय होयबाक कारण की रहल?
क. पूर्व उपेक्षित भाषिक समुदायकेँ अपन माध्यम भेटल
ख. श्रोता अनुपस्थित
ग. मैथिली अप्रिय
घ. कार्यक्रम बन्द
उत्तर: क. पूर्व उपेक्षित भाषिक समुदायकेँ अपन माध्यम भेटल
व्याख्या: शून्यप्राय स्थिति मे एक घंटाक कार्यक्रम सेहो व्यापक जरूरत पूरा कयलक।

प्रश्न 3581. डिस टीवी/टाटा स्काइ पर उपलब्धता कोन विस्तार देखबैत अछि?
क. देश-विदेशक मैथिल धरि पहुँच
ख. केवल एक गाम
ग. माध्यमहीनता
घ. भाषा-रोध
उत्तर: क. देश-विदेशक मैथिल धरि पहुँच
व्याख्या: उपग्रह माध्यम प्रवासी मैथिल समाज धरि कार्यक्रम पहुँचबैत अछि।

प्रश्न 3582. एहि खण्डक मूल निष्कर्ष की अछि?
क. मीडिया प्रतिनिधित्व भाषा, क्षेत्रीय पहचान आ राजनीतिक-सांस्कृतिक आवाज लेल निर्णायक अछि
ख. मीडिया अप्रासंगिक
ग. भाषा-माध्यमक संबंध नहि
घ. मधेशी आवाज अनावश्यक
उत्तर: क. मीडिया प्रतिनिधित्व भाषा, क्षेत्रीय पहचान आ राजनीतिक-सांस्कृतिक आवाज लेल निर्णायक अछि
व्याख्या: नेपाल वन प्रसंग मैथिली/मधेशी सार्वजनिकता केर महत्त्वपूर्ण उदाहरण अछि।

खण्ड ३६४ : विदेह-सदेह १ — भाषा हित, अकादमी आ सांस्कृतिक राजनीति

प्रश्न 3583. “भाषा हित कि भोगक लोभ” शीर्षक कोन द्वंद्व उठबैत अछि?
क. भाषा-संरक्षणक निष्ठा आ पद/लाभ-लोभक संघर्ष
ख. केवल भोजन-वर्णन
ग. गीतक ताल
घ. विद्यालयी खेल
उत्तर: क. भाषा-संरक्षणक निष्ठा आ पद/लाभ-लोभक संघर्ष
व्याख्या: शीर्षक सांस्कृतिक संस्थान आ भाषा-हितक नैतिक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 3584. दिल्लीक मैथिली-भोजपुरी अकादमी प्रसंगमे मुख्य प्रश्न की अछि?
क. मैथिली आ भोजपुरीक संयुक्त/अलग संस्थागत प्रतिनिधित्वक बहस
ख. लोकगीतक पंक्ति संख्या
ग. कृषि उपज
घ. मौसम रिपोर्ट
उत्तर: क. मैथिली आ भोजपुरीक संयुक्त/अलग संस्थागत प्रतिनिधित्वक बहस
व्याख्या: लेख अकादमी, भाषा-हित आ राजनीतिक निर्णयक संबंध पर ध्यान दैत अछि।

प्रश्न 3585. “जोड़क बात करक चाही, तोड़क नहि” कथन कोन दृष्टिकोण प्रस्तुत करैत अछि?
क. संयुक्तता आ संस्थागत सहयोगक पक्ष
ख. पूर्ण विखंडन
ग. भाषा-विरोध
घ. साहित्यत्याग
उत्तर: क. संयुक्तता आ संस्थागत सहयोगक पक्ष
व्याख्या: प्रसंगमे अलग मैथिली अकादमी माँगक प्रति जोड़-बचावक उत्तर आयल।

प्रश्न 3586. भिखारी ठाकुरक “विदेसिया” मंचनक प्रसंग किएक उल्लेखनीय अछि?
क. अकादमीक कार्यक्रम भाषा-सांस्कृतिक राजनीति संग जुड़ल अछि
ख. मंचन असंबद्ध
ग. किसी भाषा से संबंध नहि
घ. केवल खेल आयोजन
उत्तर: क. अकादमीक कार्यक्रम भाषा-सांस्कृतिक राजनीति संग जुड़ल अछि
व्याख्या: नाट्य-प्रसंग अकादमीक सांस्कृतिक कार्यक्षेत्र देखबैत अछि।

प्रश्न 3587. भाषा-हित बनाम पद-लाभक प्रश्न मैथिली आंदोलनमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. संस्था भाषा लेल अछि कि व्यक्तिगत सुविधा लेल—ई मूल्यांकन जरूरी अछि
ख. भाषा आंदोलन निरर्थक
ग. पदक कोनो प्रभाव नहि
घ. हित स्वतः सुरक्षित
उत्तर: क. संस्था भाषा लेल अछि कि व्यक्तिगत सुविधा लेल—ई मूल्यांकन जरूरी अछि
व्याख्या: शीर्षक संस्थागत नैतिकता पर प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 3588. मैथिली-भोजपुरी संयुक्त अकादमीक बहस भाषा-राजनीति कोना खोलैत अछि?
क. भाषिक पहचान, प्रशासनिक सुविधा आ सांस्कृतिक स्वायत्तता बीच तनाव देखबैत अछि
ख. कविता-विहीनता
ग. संगीतहीनता
घ. भूगोल-विहीनता
उत्तर: क. भाषिक पहचान, प्रशासनिक सुविधा आ सांस्कृतिक स्वायत्तता बीच तनाव देखबैत अछि
व्याख्या: अकादमी प्रश्न केवल दफ्तर नहि, पहचानक प्रश्न सेहो अछि।

प्रश्न 3589. अलग अकादमीक माँग किएक उठि सकैत अछि?
क. मैथिलीकेँ स्वतन्त्र सांस्कृतिक-भाषिक प्रतिनिधित्व चाही से भावना सँ
ख. भाषा हटाबय लेल
ग. कार्यक्रम रोकय लेल
घ. लोकगीत नष्ट करय लेल
उत्तर: क. मैथिलीकेँ स्वतन्त्र सांस्कृतिक-भाषिक प्रतिनिधित्व चाही से भावना सँ
व्याख्या: मैथिलीभाषी स्वायत्त संस्थागत पहचान चाहि सकैत छथि।

प्रश्न 3590. संयुक्तता पर बल देबाक सम्भावित तर्क की अछि?
क. संसाधन, सहयोग आ व्यापक क्षेत्रीय एकता राखबाक इच्छा
ख. भाषा-विलोप अनिवार्य
ग. प्रतिनिधित्व समाप्त
घ. संस्कृति निरर्थक
उत्तर: क. संसाधन, सहयोग आ व्यापक क्षेत्रीय एकता राखबाक इच्छा
व्याख्या: “जोड़क बात” कथन सहयोगी दृष्टिकोण संकेत करैत अछि।

प्रश्न 3591. एहि बहसमे प्रश्नोत्तरी लेल सही दृष्टि की होयबाक चाही?
क. दूनू पक्षक संस्थागत तर्क बुझब, पृष्ठ/व्यक्ति-गॉसिप नहि पूछब
ख. व्यक्तिगत उपहास
ग. पदधारीक फोटो
घ. मात्र तारीख
उत्तर: क. दूनू पक्षक संस्थागत तर्क बुझब, पृष्ठ/व्यक्ति-गॉसिप नहि पूछब
व्याख्या: गुणवत्तापूर्ण प्रश्न भाषा-नीति आ सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व पर बनबाक चाही।

प्रश्न 3592. एहि खण्डक सार की अछि?
क. मैथिली संस्थागत राजनीति मे भाषा-हित, प्रतिनिधित्व, एकता आ स्वायत्तताक जटिल प्रश्न उपस्थित अछि
ख. केवल मनोरंजन
ग. असंबद्ध नाटक
घ. भाषा-विमुखता
उत्तर: क. मैथिली संस्थागत राजनीति मे भाषा-हित, प्रतिनिधित्व, एकता आ स्वायत्तताक जटिल प्रश्न उपस्थित अछि
व्याख्या: अकादमी प्रसंग सांस्कृतिक राजनीति आ भाषा-आन्दोलनक गहिर द्वंद्व देखबैत अछि।

खण्ड ३६५ : विदेह-सदेह १ — कोशीक कोप आ विस्थापन

प्रश्न 3593. कोशीक कोप प्रसंगमे नेपालक लगभग कतेक जनता विस्थापित कहल गेल अछि?

क. लगभग एक लाख

ख. एक हजार

ग. दस लाख

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. लगभग एक लाख

व्याख्या: स्रोतमे नेपालक लगभग एक लाख जनता विस्थापित भेल कहल गेल अछि; प्रश्न संख्या नहि, आपदाक पैमाना बुझबाक लेल अछि।

प्रश्न 3594. बिहारमे कोशीक बाढ़सँ कतेकसँ बेसी जनता प्रभावित कहल गेल?

क. तीस लाखसँ बेसी

ख. तीन हजार

ग. तीस हजार

घ. कोनो नहि

उत्तर: क. तीस लाखसँ बेसी

व्याख्या: लेख बिहारक प्रभावकेँ व्यापक बतबैत अछि—तीस लाखसँ बेसी लोक प्रभावित भेल कहल गेल।

प्रश्न 3595. बिहारमे प्रभावित जनतामे कोशी क्षेत्रक लोकक अनुमानित संख्या की बताओल गेल?

क. बीस लाख

ख. दू हजार

ग. पचास हजार

घ. एक लाख

उत्तर: क. बीस लाख

व्याख्या: लेख कोशी इलाकाक लगभग बीस लाख लोक प्रभावित बतबैत अछि।

प्रश्न 3596. बिहार सरकारक तथ्य अनुसार कोशी बाढ़सँ कतेक गाम प्रभावित कहल गेल?

क. ७७५ गाम

ख. ७ गाम

ग. ७५ गाम

घ. ७७ गाम

उत्तर: क. ७७५ गाम

व्याख्या: स्रोतमे ७७५ गाम प्रभावित बताओल गेल अछि।

प्रश्न 3597. कोशी नदीक उद्गमस्थल कोन क्षेत्र बताओल गेल?

क. चीनक तिब्बत

ख. केवल बंगाल

ग. केवल दिल्ली

घ. अरब सागर

उत्तर: क. चीनक तिब्बत

व्याख्या: लेख कोशीक उद्गम चीनक तिब्बत मे बतबैत अछि।

प्रश्न 3598. कोशी नेपाल होइत बिहारक कोन ठाम धरिक दूरी पार करैत गंगामे मिलैत अछि?

क. कुर्सेला

ख. मुंबई

ग. जयपुर

घ. पुरी

उत्तर: क. कुर्सेला

व्याख्या: स्रोतमे कोशी नेपाल होइत बिहारक कुर्सेला धरि प्रवाह करैत गंगामे मिलबाक चर्चा अछि।

प्रश्न 3599. कोशी नदीक कुल दूरी लगभग कतेक कहल गेल?
क. ७२० किलोमीटर
ख. ७२ किलोमीटर
ग. ७२०० किलोमीटर
घ. १२ किलोमीटर
उत्तर: क. ७२० किलोमीटर
व्याख्या: लेख कोशीक ७२० किलोमीटर दूरी बतबैत अछि।

प्रश्न 3600. कोशी योजना संचालनक ४५ वर्ष बादो मुख्य समस्या की रहल?
क. कोशी पीड़ितक समस्या जिहनाक तिहना
ख. समस्या पूर्ण समाप्त
ग. नदी सूखि गेल
घ. बाढ़क स्मृति नहि
उत्तर: क. कोशी पीड़ितक समस्या जिहनाक तिहना
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे योजना संचालनक दशक बादो पीड़ितक समस्या जसक तस रहल।

प्रश्न 3601. “किएक टूटल बान्ह?” प्रश्न कोन बातक मांग करैत अछि?
क. नेपाल-भारत दूनू पक्षसँ जवाबदेही
ख. केवल गीत-संगीत
ग. व्यक्तिगत स्मृति
घ. मौसमक प्रशंसा
उत्तर: क. नेपाल-भारत दूनू पक्षसँ जवाबदेही
व्याख्या: लेख तटबन्ध टूटबाक कारण पर दूनू देशसँ उत्तर माँगैत अछि।

प्रश्न 3602. बाढ़ग्रस्त किसानक दशा कोना चित्रित अछि?
क. भूमिहीन, अन्न-वस्त्र-पानीसँ वंचित
ख. समृद्ध आ निश्चिन्त
ग. केवल दर्शक
घ. उत्सवक आयोजक
उत्तर: क. भूमिहीन, अन्न-वस्त्र-पानीसँ वंचित
व्याख्या: लेख गरीब किसानक त्रासदी—भूमिहीनता, अभाव आ जीवित रहबाक संघर्ष—देखबैत अछि।

खण्ड ३६६ : विदेह-सदेह १ — कोशी सम्झौता, दोषारोपण आ क्षतिपूर्ति

प्रश्न 3603. कोशी तटबन्ध टूटलापर नेपाल आ भारतक पक्ष कोना व्यवहार करैत देखाओल गेल?
क. एक-दोसरापर दोषारोपण
ख. पूर्ण सहमति
ग. कविता-पाठ
घ. विषय टारि देल
उत्तर: क. एक-दोसरापर दोषारोपण
व्याख्या: लेख दूनू पक्षक परस्पर दोषारोपणक स्थिति देखबैत अछि।

प्रश्न 3604. भारतीय पक्षक दाबी अनुसार तटबन्ध मरम्मतिक काज किएक नहि भऽ सकल?
क. कार्य वातावरण नहि बनल
ख. नदी नहि छल
ग. सम्झौता नहि छल
घ. कर्मचारी बेसी छल
उत्तर: क. कार्य वातावरण नहि बनल
व्याख्या: स्रोत भारतीय पक्षक हवाला दैत कहैत अछि जे मरम्मत लेल वातावरण नहि बनल।

प्रश्न 3605. नेपाली पक्ष कोशी सम्झौता अनुसार अपना कँ कोन स्थिति मे देखबैत अछि?

क. मूक दर्शक

ख. मुख्य अभियन्ता

ग. नाविक

घ. गीतकार

उत्तर: क. मूक दर्शक

व्याख्या: नेपाली पक्ष कहैत अछि जे सम्झौता अनुसार नेपाल बहुत काज नहि कऽ सकैत, तेँ दोष भारतक अछि।

प्रश्न 3606. भारतीय प्रधानमन्त्री द्वारा बाढ़क स्थिति देखलापर कोन घोषणा भेल?

क. राष्ट्रीय विपत्ति

ख. कला-महोत्सव

ग. कृषि-मेला

घ. भाषा-दिवस

उत्तर: क. राष्ट्रीय विपत्ति

व्याख्या: लेखमे बाढ़क विभीषिका देखिते राष्ट्रीय विपत्तिक घोषणा उल्लेखित अछि।

प्रश्न 3607. सरकारी जाँच-बुझक अभाव कोन प्रश्न उठबैत अछि?

क. जवाबदेही आ कारण-निर्धारणक प्रश्न

ख. केवल शब्दार्थ

ग. संगीतक राग

घ. कविताक छन्द

उत्तर: क. जवाबदेही आ कारण-निर्धारणक प्रश्न

व्याख्या: लेख कहैत अछि जे तटबन्ध टूटबाक सरकारी जाँचक आदेश नहि भेल, जे जवाबदेहीक कमी देखबैत अछि।

प्रश्न 3608. उच्चस्तरीय समिति कोन उद्देश्य लेल गठित कहल गेल?

क. नेपालसँ एहि विषय पर बातचीत लेल

ख. कविता प्रकाशित करबाक लेल

ग. मेला सजाबय लेल

घ. फिल्म बनाबय लेल

उत्तर: क. नेपालसँ एहि विषय पर बातचीत लेल

व्याख्या: स्रोतमे नेपालसँ बातचीत लेल समिति गठनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3609. कोशी सम्झौता अनुसार तटबन्धक सभ तरहक काज ककर जिम्मा कहल गेल?

क. भारतक

ख. नेपालक स्थानीय गामक

ग. कवि-मंडलीक

घ. व्यक्तिगत किसानक

उत्तर: क. भारतक

व्याख्या: लेख सम्झौता अनुसार तटबन्ध-कार्य भारतक जिम्मा बतबैत अछि।

प्रश्न 3610. क्षतिपूर्ति सम्बन्धी दाबी मे नेपालक पररा‍ष्ट्रमन्त्री कोन पक्ष रखैत छथि?

क. भारत सरकारकेँ क्षतिपूर्ति देबय पड़त

ख. कोनो क्षतिपूर्ति नहि

ग. केवल नेपाल देत

घ. पीड़ित स्वयं जिम्मेदार

उत्तर: क. भारत सरकारकेँ क्षतिपूर्ति देबय पड़त

व्याख्या: लेखमे उपेन्द्र यादवक कथन अनुसार क्षतिपूर्तिक दायित्व भारत पर रखल गेल।

प्रश्न 3611. क्षतिपूर्ति प्रसंगमे कोन तरहक सहयोग अपेक्षित कहल गेल?
क. इलाज, पुनर्वास आ खाद्यान्न
ख. केवल गीत
ग. केवल विज्ञापन
घ. केवल सम्मानपत्र
उत्तर: क. इलाज, पुनर्वास आ खाद्यान्न
व्याख्या: स्रोतमे इलाज, पुनर्वास आ खाद्यान्न सहयोगक मांग अछि।

प्रश्न 3612. एहि खण्डक मूल समस्या की अछि?
क. आपदा-प्रबन्धनमे सम्झौता, जवाबदेही आ मानवीय सहायता बीचक तनाव
ख. केवल नदीक सौन्दर्य
ग. व्यक्तिगत यात्रा
घ. बालक्रीड़ा
उत्तर: क. आपदा-प्रबन्धनमे सम्झौता, जवाबदेही आ मानवीय सहायता बीचक तनाव
व्याख्या: लेख कोशी त्रासदीकेँ प्रशासनिक आ मानवीय दूनू स्तरपर पढ़ैत अछि।

खण्ड ३६७ : विदेह-सदेह १ — कटान, राहत आ जनस्वास्थ्य संकट

प्रश्न 3613. कोशी कटान नियन्त्रण लेल कएल प्रयासक परिणाम कोना बताओल गेल?
क. असफल
ख. पूर्ण सफल
ग. अनावश्यक
घ. रोकल गेल
उत्तर: क. असफल
व्याख्या: स्रोतमे कटान नियन्त्रणक प्रयास असफल कहल गेल अछि।

प्रश्न 3614. कटान नियन्त्रणमे कोन सामग्री राखि नदीकेँ पश्चिम दिस घुमेबाक प्रयास भेल?
क. बालु आ गिट्टीक बोरा
ख. सोना-चाँदी
ग. कागज-पुस्तक
घ. फूल-माला
उत्तर: क. बालु आ गिट्टीक बोरा
व्याख्या: लेखमे बीस हजार बोरा बालु-गिट्टी राखि नदीकेँ घुमेबाक प्रयास उल्लेखित अछि।

प्रश्न 3615. बर्षाक कारण बाढ़ नियन्त्रण किएक कठिन भेल?
क. नदीक कटान आ प्रवाह नियन्त्रण आरो दुरूह बनल
ख. नदी सूखि गेल
ग. पानी घटल
घ. समस्या समाप्त भेल
उत्तर: क. नदीक कटान आ प्रवाह नियन्त्रण आरो दुरूह बनल
व्याख्या: स्रोतमे वर्षा नियन्त्रणक कार्य कठिन बनेबाक कारण रूपमे अछि।

प्रश्न 3616. नेपाल सरकार विस्थापित परिवारकेँ कतेक सहयोग देबाक बात कहैत अछि?
क. १५ हजार टका
ख. १५ टका
ग. १५ लाख
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. १५ हजार टका
व्याख्या: लेखमे प्रति परिवार १५ हजार टका सहयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3617. १५ हजार टकाक सहयोग पर लेखकक भाव की अछि?
क. ई पीड़ितक जरूरतक सामने अपर्याप्त बुझाइत अछि
ख. ई सर्वथा पर्याप्त
ग. ई विलासिता
घ. ई विषयहीन
उत्तर: क. ई पीड़ितक जरूरतक सामने अपर्याप्त बुझाइत अछि
व्याख्या: लेख प्रश्न उठबैत अछि जे ई राशि कतेक सहयोग करि सकत।

प्रश्न 3618. हरिपुर, श्रीपुर आ पश्चिम कुशाहा सँ विस्थापित लोक कोन खोजमे छल?
क. अपन घर-परिवारक सदस्य
ख. नाट्य-मंच
ग. पुरस्कार
घ. पत्रिका
उत्तर: क. अपन घर-परिवारक सदस्य
व्याख्या: स्रोतमे विस्थापित लोक अपन परिजन खोजैत बताएल गेल।

प्रश्न 3619. सुनसरी प्रशासन एखन धरि कतेक मृत्युक पुष्टि कएने कहल गेल?
क. ५ गोटेक
ख. ५०० गोटेक
ग. शून्य
घ. १०० गोटेक
उत्तर: क. ५ गोटेक
व्याख्या: लेखमे सुनसरी प्रशासन द्वारा पाँच मृत्युक पुष्टि उल्लेखित अछि।

प्रश्न 3620. कतेक लोक सम्पर्कविहीन बताओल गेल?
क. चारि सय गोट
ख. चारि गोट
ग. चारि हजार गाम
घ. चालीस लाख
उत्तर: क. चारि सय गोट
व्याख्या: स्रोतमे चारि सय गोट सम्पर्कविहीन कहल गेल अछि।

प्रश्न 3621. विस्थापित शिविरमे कोन रोग विकराल रूप लेने बताओल गेल?
क. पेटझरी आ मुँहपेट जाएब
ख. केवल सर्दी
ग. केवल दाँत-दर्द
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. पेटझरी आ मुँहपेट जाएब
व्याख्या: गन्दा पानीक कारण पेटझरी आ मुँहपेट जाएबक संकट फैलल।

प्रश्न 3622. एहि खण्डक मानवीय निष्कर्ष की अछि?
क. बाढ़ केवल जल-आपदा नहि, विस्थापन, बीमारी आ राहत-अभावक संयुक्त त्रासदी अछि
ख. बाढ़ केवल कविता अछि
ग. राहतक जरूरत नहि
घ. स्वास्थ्य-संकट अनुपस्थित
उत्तर: क. बाढ़ केवल जल-आपदा नहि, विस्थापन, बीमारी आ राहत-अभावक संयुक्त त्रासदी अछि
व्याख्या: स्रोत आपदा कैं बहुस्तरीय संकट रूपमे देखबैत अछि।

खण्ड ३६८ : विदेह-सदेह १ — बिहारक बाढ़, बिचियाक आर्तनाद आ रंगमंचीय प्रतिक्रिया

प्रश्न 3623. बिहार सरकार राहत काजमे कोन साधनक उपयोग बतबैत अछि?
क. हेलिकॉप्टर, नाव आ सेना
ख. केवल बैलगाड़ी
ग. केवल पुस्तकालय
घ. केवल मंच
उत्तर: क. हेलिकॉप्टर, नाव आ सेना
व्याख्या: लेखमे वायुसेनाक हेलिकॉप्टर, नाव आ सेनाक सहायतासँ राहतक चर्चा अछि।

प्रश्न 3624. बाढ़पीड़ित लाखो जनता कोन स्थिति मे कहल गेल?
क. एखनो बाढ़मे फँसल
ख. सुरक्षित उत्सवमे
ग. विदेश गेल
घ. पूर्ण पुनर्वासित
उत्तर: क. एखनो बाढ़मे फँसल
व्याख्या: स्रोत पीड़ितक फँसल अवस्था आ अपर्याप्त राहत देखबैत अछि।

प्रश्न 3625. स्थानीयवासी सरकारी मृत्युसंख्यासँ अलग कोन बात कहैत छथि?
क. बहुत शव दहाइत देखल गेल
ख. मृत्यु नहि भेल
ग. नदी सुखायल
घ. मेला लागल
उत्तर: क. बहुत शव दहाइत देखल गेल
व्याख्या: लेख स्थानीय अनुभव आ सरकारी आँकड़ा बीच अन्तर संकेत करैत अछि।

प्रश्न 3626. “बिचियाक आर्तनाद” प्रसंगमे पीड़ितक कोन दशा उभरैत अछि?
क. भूख, वस्त्र-अभाव आ राहतक प्रतीक्षा
ख. समृद्धि
ग. नाटक-अभ्यास मात्र
घ. पर्यटन
उत्तर: क. भूख, वस्त्र-अभाव आ राहतक प्रतीक्षा
व्याख्या: स्रोतमे पेटमे अन्न नहि, आकाश दिस राहतक प्रतीक्षा आ वस्त्र-अभावक चित्र अछि।

प्रश्न 3627. नवजात शिशु कैँ कोशीक कोरमे छोड़ि देबाक प्रसंग की देखबैत अछि?
क. आपदाक अमानवीय चरम आ भूखक त्रास
ख. उत्सव
ग. समृद्धि
घ. शैक्षिक यात्रा
उत्तर: क. आपदाक अमानवीय चरम आ भूखक त्रास
व्याख्या: ई प्रसंग भूख आ निराशाक चरम मानवीय विघटन देखबैत अछि।

प्रश्न 3628. “कोशी सन बेदर्दी जगमे कोइ नहि” की छल?
क. लघुनाटक
ख. कथा-संग्रह
ग. गीत-एल्बम
घ. विद्यालय
उत्तर: क. लघुनाटक
व्याख्या: स्रोतमे ई लघुनाटक रूपमे मंचित भेल बताओल गेल।

प्रश्न 3629. दिल्लीमे कोशी-लघुनाटक के कोन संस्था आयोजित केलक?
क. मैलोरंग
ख. कृषि विभाग
ग. बैंक
घ. रेलवे
उत्तर: क. मैलोरंग
व्याख्या: लेखमे मैलोरंगक आयोजनमे लघुनाटक मंचनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3630. लघुनाटकमे राहत लेल मारामारी करैत जनता ककर प्रतीक बनैत अछि?
क. भूख आ प्रशासनिक विफलतासँ जूझैत पीड़ित समाज
ख. मनोरंजन मात्र
ग. राजकीय गर्व
घ. सैन्य अभ्यास
उत्तर: क. भूख आ प्रशासनिक विफलतासँ जूझैत पीड़ित समाज
व्याख्या: नाटक पीड़ित जनताक विवशता आ भूखक दृश्यात्मक प्रस्तुति करैत अछि।

प्रश्न 3631. मैलोरंग मैथिली लोकरंग महोत्सव किएक स्थगित केलक?
क. कोशी त्रासदीक कारण
ख. प्रचार लेल
ग. वर्षगाँठ लेल
घ. नव भवन लेल
उत्तर: क. कोशी त्रासदीक कारण
व्याख्या: लेखमे कोशी क्षेत्रमे मुस्कान घुरला बाद महोत्सव आयोजनक बात अछि।

प्रश्न 3632. एहि खण्डक साहित्यिक महत्त्व की अछि?
क. रंगमंच आपदाक सामूहिक संवेदना व्यक्त करबाक माध्यम बनैत अछि
ख. रंगमंच अप्रासंगिक
ग. नाटक केवल हास्य
घ. भाषा अनुपस्थित
उत्तर: क. रंगमंच आपदाक सामूहिक संवेदना व्यक्त करबाक माध्यम बनैत अछि
व्याख्या: स्रोत बाढ़-त्रासदीक रंगमंचीय प्रत्युत्तर देखबैत अछि।

खण्ड ३६९ : विदेह-सदेह १ — मणिपद्म स्मृति आ “उगना हाल्ट”

प्रश्न 3633. व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक स्मृतिमे कहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम भेल?
क. नई दिल्ली
ख. लंदन
ग. पटना स्टेशन मात्र
घ. जनकपुर मंदिर
उत्तर: क. नई दिल्ली
व्याख्या: स्रोतमे नई दिल्लीमे कार्यक्रम आयोजनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3634. कार्यक्रममे मैथिली नाटक संग कोन प्रकाशन/विमोचन भेल?
क. मिथिलांगन संस्थाक स्मारिका
ख. गणित-पुस्तक
ग. सरकारी बजट
घ. अंग्रेजी उपन्यास
उत्तर: क. मिथिलांगन संस्थाक स्मारिका
व्याख्या: लेखमे मिथिलांगनक स्मारिका विमोचनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3635. मिथिलांगन ककर स्मृतिमे “उगना हाल्ट” मंचित कएने छल?
क. मणिपद्म
ख. विद्यापति
ग. भिखारी ठाकुर
घ. कालीदास
उत्तर: क. मणिपद्म
व्याख्या: स्रोतमे मणिपद्मक स्मृतिमे नाटक मंचनक बात अछि।

प्रश्न 3636. मणिपद्मक योगदान कोन क्षेत्रमे उल्लेखनीय कहल गेल?
क. लोक साहित्यक संरक्षण
ख. केवल खेल
ग. केवल विज्ञान
घ. केवल व्यापार
उत्तर: क. लोक साहित्यक संरक्षण
व्याख्या: लेख लोक-साहित्य संरक्षणमे हुनक योगदान बतबैत अछि।

प्रश्न 3637. मणिपद्मकेँ मैथिलीक कोन उपाधिसँ जोड़ा गेल?
क. वाल्टर स्कॉट
ख. शेक्सपियर मात्र
ग. रवीन्द्रनाथ
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. वाल्टर स्कॉट
व्याख्या: स्रोतमे लोकसाहित्य संरक्षणक कारण हुनका मैथिलीक वाल्टर स्कॉट कहल जाइत छन्हि।

प्रश्न 3638. मणिपद्म कोन-कोन लोकगाथाक संरक्षणसँ जोड़ल गेल छथि?
क. लोरिक, राजा सलहेस, नैका बंजारा
ख. रामायण मात्र
ग. हाइकू मात्र
घ. केवल गजल
उत्तर: क. लोरिक, राजा सलहेस, नैका बंजारा
व्याख्या: लेखमे एहि लोकगाथा-संरक्षणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3639. “उगना हाल्ट”क लेखक के कहल गेल?
क. कुमार शैलेन्द्र
ख. संजय चौधरी
ग. मणिपद्म स्वयं
घ. हिमांशु चौधरी
उत्तर: क. कुमार शैलेन्द्र
व्याख्या: स्रोतमे लेखक कुमार शैलेन्द्र कहल गेल।

प्रश्न 3640. “उगना हाल्ट”क निर्देशक के कहल गेल?
क. संजय चौधरी
ख. कुमार शैलेन्द्र
ग. राजमोहन झा
घ. आभाष लाभ
उत्तर: क. संजय चौधरी
व्याख्या: लेखमे निर्देशक संजय चौधरी बताओल गेल।

प्रश्न 3641. नाटकक परिवेश मुख्यतः कतए केन्द्रित अछि?
क. नई दिल्लीक मंडी हाउसक रंगकर्मी अड्डा
ख. केवल ग्रामीण खेत
ग. समुद्रतट
घ. विद्यालय
उत्तर: क. नई दिल्लीक मंडी हाउसक रंगकर्मी अड्डा
व्याख्या: स्रोतमे भौगोलिक नाम उगना हाल्ट अछि, मुदा नाटकक परिवेश दिल्लीक रंगकर्मीसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 3642. “उगना हाल्ट” नवतुरियाक कोन संघर्ष समेटैत अछि?
क. मैथिली भाषा-संस्कृति संरक्षण आ कला-लक्ष्य प्राप्ति
ख. व्यापार-लाभ मात्र
ग. जंगल-यात्रा
घ. कृषि मेला
उत्तर: क. मैथिली भाषा-संस्कृति संरक्षण आ कला-लक्ष्य प्राप्ति
व्याख्या: लेखमे नवतुरियाक सांस्कृतिक संघर्ष आ लक्ष्य-प्राप्तिक कथा अछि।

खण्ड ३७० : विदेह-सदेह १ — “उगना हाल्ट”क नाट्य-संरचना आ संदेश

प्रश्न 3643. “उगना हाल्ट”मे रंगकर्मी नवतुरियाक जीवन कोना देखाओल गेल?
क. संघर्ष, दिग्भ्रम आ अन्ततः लक्ष्य-प्राप्ति
ख. पूर्ण विलास
ग. निष्क्रियता
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. संघर्ष, दिग्भ्रम आ अन्ततः लक्ष्य-प्राप्ति
व्याख्या: लेख नाटकमे संघर्षरत मैथिली रंगकर्मी जीवनक कटु सत्य देखबैत अछि।

प्रश्न 3644. नाटकमे किछु पात्र कोन बनने चाहैत छथि?
क. संगीतकार, गीतकार, फिल्म नायक-नायिका
ख. किसान मात्र
ग. पुजारी मात्र
घ. बैंक अधिकारी मात्र
उत्तर: क. संगीतकार, गीतकार, फिल्म नायक-नायिका
व्याख्या: स्रोतमे पात्रक अलग-अलग कला-आकांक्षा बताओल गेल।

प्रश्न 3645. नाटककार कोन पाठ सिखेबाक प्रयास करैत छथि?
क. संगठने शक्ति अछि
ख. अलगाव सर्वोत्तम
ग. भाषा छोड़ू
घ. कला व्यर्थ
उत्तर: क. संगठने शक्ति अछि
व्याख्या: लेखमे संगठनसँ सफलता पाबि सकबाक संदेश स्पष्ट अछि।

प्रश्न 3646. नाटकक अन्त कोना बताओल गेल?
क. सुखान्त
ख. करुणान्त मात्र
ग. अपूर्ण
घ. निष्कर्षहीन
उत्तर: क. सुखान्त
व्याख्या: स्रोतमे संघर्षक बाद पात्र सफल होइत अछि आ नाटक सुखान्त कहल गेल।

प्रश्न 3647. उगना हाल्ट नाम वास्तविक रूपमे कोन ठामक स्टेशनसँ जुड़ल अछि?
क. मधुबनी जिलाक पंडौल-सकरी बीचक स्टेशन
ख. दिल्ली मेट्रो मात्र
ग. कोलकाता बंदरगाह
घ. नेपाल वन
उत्तर: क. मधुबनी जिलाक पंडौल-सकरी बीचक स्टेशन
व्याख्या: लेखमे उगना हाल्ट पंडौल आ सकरी बीचक स्टेशन बताओल गेल।

प्रश्न 3648. नाटकक नाम आ परिवेश बीच कोन कलात्मक तनाव अछि?
क. मिथिला-स्मृति वाला नाम, दिल्लीक संघर्ष-केंद्रित परिवेश
ख. नाम आ विषयक कोनो सम्बन्ध नहि
ग. केवल समुद्री कथा
घ. केवल अंग्रेजी मंच
उत्तर: क. मिथिला-स्मृति वाला नाम, दिल्लीक संघर्ष-केंद्रित परिवेश
व्याख्या: नाम मिथिला सँ जुड़ल, मुदा संघर्ष दिल्लीक मैथिली रंगकर्मीदुनियामे घटैत अछि।

प्रश्न 3649. मिथिलांगनक निरन्तरता कोन बातसँ सूचित अछि?
क. पत्रिका प्रकाशन आ स्मृति-कार्यक्रम
ख. एक दिनक बंद आयोजन
ग. कोनो गतिविधि नहि
घ. केवल खेल प्रतियोगिता
उत्तर: क. पत्रिका प्रकाशन आ स्मृति-कार्यक्रम
व्याख्या: स्रोतमे मिथिलांगन पत्रिका प्रकाशन आ मणिपद्म-स्मृति कार्यक्रमक निरन्तरता अछि।

प्रश्न 3650. “उगना हाल्ट”मे मैथिली भाषा-संस्कृति संरक्षणक प्रश्न ककर माध्यमे उठैत अछि?
क. दिल्लीमे संघर्षरत नव कलाकारक माध्यमे
ख. राजकीय आदेश मात्र
ग. पुरातत्व सर्वेक्षण
घ. बाल खेल
उत्तर: क. दिल्लीमे संघर्षरत नव कलाकारक माध्यमे
व्याख्या: नाटक प्रवासी/शहरी मंच पर मैथिली सांस्कृतिक प्रश्न रखैत अछि।

प्रश्न 3651. एहि नाटकमे सफलता व्यक्तिगत प्रतिभासँ बेसी ककरा संग जोड़ल अछि?
क. संगठन आ सामूहिकता
ख. धन मात्र
ग. भाग्य मात्र
घ. मौन
उत्तर: क. संगठन आ सामूहिकता
व्याख्या: लेख “संगठने शक्ति”क संदेश देबाक बात कहैत अछि।

प्रश्न 3652. एहि खण्डक सार की अछि?
क. मैथिली रंगकर्म दिल्लीक संघर्ष-भूमि पर सांस्कृतिक पहचान आ संगठनक कथा कहैत अछि
ख. नाटक मे भाषा नहि
ग. कला-विमुख कथानक
घ. असंबद्ध रिपोर्ट
उत्तर: क. मैथिली रंगकर्म दिल्लीक संघर्ष-भूमि पर सांस्कृतिक पहचान आ संगठनक कथा कहैत अछि
व्याख्या: “उगना हाल्ट” सांस्कृतिक संघर्ष आ सामूहिक सफलताक नाटक रूपमे पढ़ल गेल।

खण्ड ३७१ : विदेह-सदेह १ — जितमोहन झा आ कन्या भ्रूण हत्या

प्रश्न 3653. जितमोहन झाक आलेखक शीर्षक कोन सामाजिक प्रश्न उठबैत अछि?
क. कन्या भ्रूण हत्या प्रकृतिक संग खिलवाड़
ख. केवल मौसम-वर्णन
ग. नदी-यात्रा
घ. भोजन-विन्यास
उत्तर: क. कन्या भ्रूण हत्या प्रकृतिक संग खिलवाड़
व्याख्या: शीर्षक स्वयं कन्या भ्रूण हत्या कें प्रकृति-विरोधी कृत्य रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 3654. कथावाचक अस्पताल किएक गेल छल?
क. बचपनक दोस्तक स्वास्थ्य समाचार सुनि
ख. नाटक देखय
ग. मेला घूमय
घ. गीत रेकर्ड करय
उत्तर: क. बचपनक दोस्तक स्वास्थ्य समाचार सुनि
व्याख्या: स्रोतमे दोस्त अस्पतालमे भर्ती छथि से सुनि कथावाचक गेल।

प्रश्न 3655. अस्पतालमे कथावाचक ककरा देखि चौंकि गेल?
क. चचेरा भैया-भाभी
ख. स्कूल शिक्षक
ग. गायक
घ. अजनबी नेता
उत्तर: क. चचेरा भैया-भाभी
व्याख्या: लेखमे चचेरा भैया-भाभी कें अस्पतालमे देखबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 3656. भाभीक उदास चेहरा कोन भयक संकेत दैत अछि?
क. तीसर बेर कन्या होयबाक आशंका आ भ्रूण परीक्षणक दबाव
ख. उत्सवक तैयारी
ग. नाटकक संवाद
घ. कविता-पाठ
उत्तर: क. तीसर बेर कन्या होयबाक आशंका आ भ्रूण परीक्षणक दबाव
व्याख्या: भाभीक पीड़ा गामक पितृसत्तात्मक दबाव खोलैत अछि।

प्रश्न 3657. भैया भाभीकें अस्पताल कोन उद्देश्यसँ अनने छथि?
क. गर्भ परीक्षण लेल
ख. गीत सुनाबय लेल
ग. शिक्षा-प्रशिक्षण लेल
घ. चिकित्सा शिविर चलाबय लेल
उत्तर: क. गर्भ परीक्षण लेल
व्याख्या: स्रोतमे गर्भ परीक्षणक बात स्पष्ट अछि।

प्रश्न 3658. कथावाचक आ पत्नी बुझेलापर की भेल?
क. भैया भाभीकें वापस घर लऽ गेलाह
ख. परीक्षण तुरन्त भेल
ग. भाभी छोड़ि देल गेलीह
घ. मुद्दा समाप्त नहि भेल
उत्तर: क. भैया भाभीकें वापस घर लऽ गेलाह
व्याख्या: लेखमे बुझेलाक बाद घर लौटबाक बात अछि।

प्रश्न 3659. आलेख कानूनक सीमा किएक देखबैत अछि?
क. समाज स्वयं नहि बदलल तँ कानून पर्याप्त नहि
ख. कानून अनावश्यक अछि
ग. समाज पूर्ण सुधरि गेल
घ. लिंग-प्रश्न नहि
उत्तर: क. समाज स्वयं नहि बदलल तँ कानून पर्याप्त नहि
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे स्वयं कदम नहि उठाएब तँ कानूनक असर सीमित रहत।

प्रश्न 3660. कन्या जन्म पर मुँह सिकोड़बाक कारण रूपमे कोन सामाजिक भय बताओल गेल?
क. परवरिश, शिक्षा, विवाह आदि कठिनाई
ख. संगीतक अभाव
ग. भाषा-पुरस्कार
घ. नदीक जलस्तर
उत्तर: क. परवरिश, शिक्षा, विवाह आदि कठिनाई
व्याख्या: लेख लड़कीक पालन-पोषण, शिक्षा आ विवाहक बोझ-मानसिकता पर प्रश्न करैत अछि।

प्रश्न 3661. हरियाणा उदाहरण किएक देल गेल?
क. लड़कीक संख्या घटला सँ विवाह-संकट देखेबाक लेल
ख. कृषि-प्रशंसा लेल
ग. संगीत उदाहरण लेल
घ. यात्रा-वृत्तान्त लेल
उत्तर: क. लड़कीक संख्या घटला सँ विवाह-संकट देखेबाक लेल
व्याख्या: स्रोतमे हरियाणाक लिंगानुपात-संकट चेतावनी रूपमे अछि।

प्रश्न 3662. आलेखक अन्तिम नैतिक आग्रह की अछि?
क. मानसिकता बदलि कन्या भ्रूण हत्या रोकू
ख. केवल कानून पढ़ू
ग. चुप रहू
घ. प्रकृति-विरोध स्वीकारू
उत्तर: क. मानसिकता बदलि कन्या भ्रूण हत्या रोकू
व्याख्या: लेख जीवन-रथक दूनू पहिया—स्त्री-पुरुष—समान आवश्यक कहैत अछि।

खण्ड ३७२ : विदेह-सदेह १ — कन्या भ्रूण हत्या: कानून, समाज आ प्रकृति

प्रश्न 3663. लेखमे भ्रूण परीक्षण प्रतिबन्धित होइतहुँ समस्या किएक जारी कहल गेल?
क. पिछला दरवाजाक संस्कृति अस्पताल धरि पहुँचि गेल
ख. कानून नहि अछि
ग. लोक पूर्ण जागरूक
घ. अस्पताल अनुपस्थित
उत्तर: क. पिछला दरवाजाक संस्कृति अस्पताल धरि पहुँचि गेल
व्याख्या: स्रोत गैरकानूनी परीक्षणक सामाजिक-व्यवहारिक नेटवर्क पर प्रश्न करैत अछि।

प्रश्न 3664. लेखक समाजकेँ कानूनसँ बेसी ककर जिम्मेदारी दिस मोड़ैत छथि?
क. स्वयं नागरिकक नैतिक जागरूकता
ख. केवल पुलिस
ग. केवल डॉक्टर
घ. केवल सरकार
उत्तर: क. स्वयं नागरिकक नैतिक जागरूकता
व्याख्या: लेख समाजक आन्तरिक सहमति बदलबाक जरूरत बतबैत अछि।

प्रश्न 3665. भ्रष्टाचार, बालश्रम, शोषणक उदाहरण किएक देल गेल?
क. कानून रहितहुँ सामाजिक सहभागिता बिना रोकथाम कठिन अछि से देखाबय
ख. विषय बदलय
ग. हास्य लेल
घ. राजनीति समाप्त करय
उत्तर: क. कानून रहितहुँ सामाजिक सहभागिता बिना रोकथाम कठिन अछि से देखाबय
व्याख्या: लेख कानूनक प्रभावशीलता समाजक आचरण पर निर्भर बतबैत अछि।

प्रश्न 3666. “हम खुद कतहु दोषी छी” कथन कोन आत्मालोचनाक संकेत अछि?
क. सामाजिक बुराइमे मौन/समझौताक सहभागिता
ख. पूर्ण निर्दोषता
ग. केवल प्रशासन दोषी
घ. समस्या असत्य
उत्तर: क. सामाजिक बुराइमे मौन/समझौताक सहभागिता
व्याख्या: लेख बाहरी दोषारोपणक बदला सामूहिक आत्मपरीक्षण करबैत अछि।

प्रश्न 3667. लड़का जन्मलासँ सभ समस्या समाप्त भऽ जाएत—एहि धारणा पर लेखकक दृष्टि की अछि?
क. ई भ्रम अछि
ख. ई पूर्ण सत्य
ग. ई वैज्ञानिक निष्कर्ष
घ. ई धार्मिक आदेश
उत्तर: क. ई भ्रम अछि
व्याख्या: लेख कहैत अछि लड़काक पालन, शिक्षा, रोजगार आ विवाह सेहो चुनौती अछि।

प्रश्न 3668. कन्या भ्रूण हत्या जारी रहलासँ समाजक कोन भविष्य-भय बताओल गेल?
क. लड़का सभ कुँआरे रहि सकैत अछि
ख. सभी विवाह सहज
ग. समाज संतुलित
घ. कोनो प्रभाव नहि
उत्तर: क. लड़का सभ कुँआरे रहि सकैत अछि
व्याख्या: लेख लिंग-असंतुलनक दूरगामी सामाजिक संकट देखबैत अछि।

प्रश्न 3669. “जीवनक गाड़ीके दूनू पहिया” प्रतीक कोन बात बुझबैत अछि?
क. स्त्री-पुरुष समान रूपेँ आवश्यक
ख. पुरुष मात्र पर्याप्त
ग. स्त्री अनुपयोगी
घ. समाज एकपहिया चलैत अछि
उत्तर: क. स्त्री-पुरुष समान रूपेँ आवश्यक
व्याख्या: प्रतीक जैविक-सामाजिक संतुलनक तर्क देबैत अछि।

प्रश्न 3670. कन्या भ्रूण हत्या प्रकृतिक संग खिलवाड़ किएक कहल गेल?
क. ई जीवन-संतुलन आ जन्म-व्यवस्था पर हिंसा अछि
ख. ई विकासक मार्ग
ग. ई पूजा-पद्धति
घ. ई साहित्यिक अलंकार मात्र
उत्तर: क. ई जीवन-संतुलन आ जन्म-व्यवस्था पर हिंसा अछि
व्याख्या: लेख एहि कृत्यकेँ प्रकृतिक नियमक विरुद्ध बतबैत अछि।

प्रश्न 3671. वंशबेल केवल लड़का सँ चलेत—एहि मानसिकताक विरोध किएक जरूरी अछि?
क. ई पितृसत्तात्मक भ्रम कन्या-विरोधक मूल अछि
ख. ई सामाजिक न्याय
ग. ई आधुनिकता
घ. ई स्त्री-सम्मान
उत्तर: क. ई पितृसत्तात्मक भ्रम कन्या-विरोधक मूल अछि
व्याख्या: लेख अन्तमे एहि मानसिकता बदलबाक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 3672. एहि आलेखक मूल्य क्या अछि?
क. कथा-प्रसंगसँ सामाजिक सुधारक तीक्ष्ण प्रश्न उठबैत अछि
ख. केवल अस्पताल-वर्णन
ग. केवल निजी यात्रा
घ. कानून-विरोध
उत्तर: क. कथा-प्रसंगसँ सामाजिक सुधारक तीक्ष्ण प्रश्न उठबैत अछि
व्याख्या: लेख निजी अनुभवकेँ व्यापक स्त्री-सुरक्षा आ सामाजिक चेतनाक विमर्श बनबैत अछि।

खण्ड ३७३ : विदेह-सदेह १ — जितमोहन झा: भक्तिगीत

प्रश्न 3673. भक्तिगीतमे पहिले किनकर चरणमे प्रणाम अछि?
क. मात, पिता, गुरु आ प्रभु
ख. केवल राजा
ग. केवल मित्र
घ. केवल नदी
उत्तर: क. मात, पिता, गुरु आ प्रभु
व्याख्या: गीत चारि आध्यात्मिक-सामाजिक आधार—माता, पिता, गुरु, प्रभु—प्रति कृतज्ञता प्रकट करैत अछि।

प्रश्न 3674. गीतमे माताजीक उपकार कोना स्मरण कएल गेल?
क. कष्ट सहि, चलब सिखा, ममताक छाया देलनि
ख. धन-संग्रह मात्र
ग. शासन मात्र
घ. गीत मात्र
उत्तर: क. कष्ट सहि, चलब सिखा, ममताक छाया देलनि
व्याख्या: गीत मातृत्वक पालन-पोषण आ स्नेहक ऋण स्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 3675. पिताजीक भूमिका गीतमे कोना वर्णित अछि?
क. अन्न खुएलनि, पढ़ेलनि, जीवन-पथ सिखेलनि
ख. केवल खेल सिखेलनि
ग. दूरी रखलनि
घ. कविता लिखलनि
उत्तर: क. अन्न खुएलनि, पढ़ेलनि, जीवन-पथ सिखेलनि
व्याख्या: गीत पिता केँ श्रम, शिक्षा आ संस्कारक आधार मानैत अछि।

प्रश्न 3676. गुरुजी गीतमे कोन दीप जरबैत छथि?
क. भक्ति आ ज्ञानक दीप
ख. क्रोधक दीप
ग. धनक दीप
घ. अंधकारक दीप
उत्तर: क. भक्ति आ ज्ञानक दीप
व्याख्या: गुरु अज्ञान दूर करि ज्ञान-भक्ति मार्ग देखबैत छथि।

प्रश्न 3677. प्रभु कृपासँ मनुष्यकेँ की प्राप्त भेल कहल गेल?
क. नर तन, बल, बुद्धि आ विद्या
ख. केवल धन
ग. केवल पद
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. नर तन, बल, बुद्धि आ विद्या
व्याख्या: गीत मानव-जीवनकेँ प्रभुक कृपा आ साधना-योग्य अवसर मानैत अछि।

प्रश्न 3678. गीतक आवर्त “हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार” की निर्माण करैत अछि?
क. कृतज्ञताक भावात्मक लय
ख. हास्य-व्यंग्य
ग. विरोधी घोष
घ. राजनीतिक नारा
उत्तर: क. कृतज्ञताक भावात्मक लय
व्याख्या: आवर्त जीवनदाता शक्तिसभ प्रति आभारक भाव स्थिर करैत अछि।

प्रश्न 3679. गीतमे माता-पिता-गुरु-प्रभु एक क्रममे किएक आएल छथि?
क. सांसारिक पालनसँ आध्यात्मिक उद्धार धरि क्रम बनैत अछि
ख. यादृच्छिक सूची
ग. व्यापार क्रम
घ. युद्ध क्रम
उत्तर: क. सांसारिक पालनसँ आध्यात्मिक उद्धार धरि क्रम बनैत अछि
व्याख्या: गीत जीवनक आधार क्रमशः परिवार, शिक्षा आ ईश्वरक शरण मे देखैत अछि।

प्रश्न 3680. गीतमे “ऋण किहियो नहि चुकलौं” भाव कोन सम्बन्ध पर लागू होइत अछि?
क. मातृत्वक उपकार पर
ख. व्यापार पर
ग. राजनीति पर
घ. मौसम पर
उत्तर: क. मातृत्वक उपकार पर
व्याख्या: माता द्वारा सहल कष्टक ऋण अनंत बताओल गेल अछि।

प्रश्न 3681. भक्तिगीतक केंद्रीय रस की अछि?
क. कृतज्ञता आ भक्ति
ख. क्रोध मात्र
ग. निराशा मात्र
घ. उपहास
उत्तर: क. कृतज्ञता आ भक्ति
व्याख्या: गीत विनम्र प्रणाम, उपकार-स्मरण आ उद्धारक विश्वास पर आधारित अछि।

प्रश्न 3682. एहि गीतक सामाजिक पक्ष की अछि?
क. परिवार, गुरु-परम्परा आ भक्तिभावकेँ नैतिक जीवनक आधार मानैत अछि
ख. व्यक्ति अकेला पर्याप्त
ग. समाज अस्वीकार
घ. शिक्षा निरर्थक
उत्तर: क. परिवार, गुरु-परम्परा आ भक्तिभावकेँ नैतिक जीवनक आधार मानैत अछि
व्याख्या: गीत भक्ति संग सामाजिक संस्कारक महत्व देखबैत अछि।

खण्ड ३७४ : विदेह-सदेह १ — ज्योति: परिचय आ कला-संस्कार

प्रश्न 3683. ज्योतिक अंग्रेजी पद्यक संदर्भमे कोन पुरस्कारक उल्लेख अछि?
क. Editor’s Choice Award
ख. राष्ट्रीय खेल पुरस्कार
ग. संगीत नाटक अकादमी
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. Editor’s Choice Award
व्याख्या: स्रोत ज्योतिक अंग्रेजी पद्य लेल editor’s choice award उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 3684. ज्योतिक अंग्रेजी पद्य कोन वेबसाइटक मुख्य पृष्ठ पर किछु दिन रहल कहल गेल?
क. poetrysoup.com
ख. रेलवे पोर्टल
ग. कृषि वेबसाइट
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. poetrysoup.com
व्याख्या: परिचयमे poetrysoup.com पर रचना मुख्य पृष्ठ पर रहल बताओल गेल।

प्रश्न 3685. ज्योति कोन लोककला/चित्रकलामे पारंगत कहल गेलीह?
क. मिथिला चित्रकला
ख. तेलचित्र मात्र
ग. मूर्तिकला मात्र
घ. फोटोग्राफी मात्र
उत्तर: क. मिथिला चित्रकला
व्याख्या: स्रोतमे ज्योतिक मिथिला चित्रकला-कौशल उल्लेखित अछि।

प्रश्न 3686. ज्योतिक मिथिला चित्रकलाक प्रदर्शनी कतए प्रदर्शित भेल कहल गेल?
क. ईलिंग ब्रॉडवे, लंदन
ख. दरभंगा स्टेशन
ग. सहरसा मेला
घ. कोशी तटबन्ध
उत्तर: क. ईलिंग ब्रॉडवे, लंदन
व्याख्या: परिचय ईलिंग आर्ट ग्रुप अंतर्गत लंदनमे प्रदर्शनीक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 3687. मिथिला पेंटिंगक शिक्षा ज्योति किनकासँ आ कहाँ लेने बताओल गेल?
क. श्वेता झा, बसेरा इंस्टिट्यूट आ ललितकला तूलिका, जमशेदपुर
ख. केवल ऑनलाइन
ग. रेलवे प्रशिक्षण
घ. कोशी शिविर
उत्तर: क. श्वेता झा, बसेरा इंस्टिट्यूट आ ललितकला तूलिका, जमशेदपुर
व्याख्या: स्रोतमे श्वेता झा आ जमशेदपुरक संस्थासभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3688. ज्योति पूर्वमे कतए अवैतनिक अध्यापनसँ जुड़ल रहलीह?
क. नेशनल एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड, जमशेदपुर
ख. नेपाल वन
ग. मिथिलांगन
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. नेशनल एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड, जमशेदपुर
व्याख्या: परिचयमे नेशनल एसोसिएशन फॉर ब्लाइंडमे अवैतनिक अध्यापन बताओल गेल।

प्रश्न 3689. ज्योतिक जन्मस्थान कोन बताओल गेल?
क. बेलवार, मधुबनी
ख. लंदन
ग. पटना
घ. दिल्ली
उत्तर: क. बेलवार, मधुबनी
व्याख्या: स्रोतमे जन्मस्थान बेलवार, मधुबनी अछि।

प्रश्न 3690. ज्योतिक निवासस्थान परिचयमे कतए कहल गेल?
क. लंदन, यू.के.
ख. सहरसा
ग. सप्तरी
घ. मुंबई
उत्तर: क. लंदन, यू.के.
व्याख्या: परिचयमे निवासस्थान लंदन, यू.के. उल्लेखित अछि।

प्रश्न 3691. ज्योतिक परिचय कला आ साहित्यक कोन स्वरूप जोड़ैत अछि?
क. अंग्रेजी पद्य, मैथिली कविता आ मिथिला चित्रकला
ख. केवल प्रशासन
ग. केवल राजनीति
घ. केवल व्यापार
उत्तर: क. अंग्रेजी पद्य, मैथिली कविता आ मिथिला चित्रकला
व्याख्या: परिचय बहुभाषिक साहित्यिकता आ दृश्य-कला दूनू देखबैत अछि।

प्रश्न 3692. ज्योतिक सामग्रीक महत्व की अछि?
क. प्रवासी मैथिल स्त्री-कला, कविता आ चित्रकला केर संगम
ख. केवल जीवनी-सूची
ग. असंबद्ध विज्ञापन
घ. मौसम समाचार
उत्तर: क. प्रवासी मैथिल स्त्री-कला, कविता आ चित्रकला केर संगम
व्याख्या: परिचय रचनात्मक बहुआयामी मैथिल उपस्थिति दर्शबैत अछि।

खण्ड ३७५ : विदेह-सदेह १ — ज्योति: “बर्फ ओढ़ने वातावरण” आ प्रकृति

प्रश्न 3693. “बर्फ ओढ़ने वातावरण”मे आकाश कोना चित्रित अछि?
क. टूटि-बिखरि सबके एक रंगमे रंगैत
ख. पूर्ण अंधकार मात्र
ग. नदीमे डूबल
घ. रेतमे बदलल
उत्तर: क. टूटि-बिखरि सबके एक रंगमे रंगैत
व्याख्या: कविता बर्फक व्यापकता कैं आकाश टूटि बिखरि गेल सन रूपकसँ व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 3694. सरदीसँ भयभीत जीवसभ की करैत अछि?
क. अपन-अपन जगह धरैत अछि
ख. नाचैत अछि
ग. समुद्र पार करैत अछि
घ. राजनीति करैत अछि
उत्तर: क. अपन-अपन जगह धरैत अछि
व्याख्या: कविता मे थरथरबैत सरदीसँ जीव अपन ठाम समेटाइत देखाइत अछि।

प्रश्न 3695. कविता मनुष्यक कोन विशेषता देखबैत अछि?
क. विकट परिस्थिति पर बुद्धिबलसँ विजय
ख. पूर्ण पराजय
ग. प्रकृति-विनाश मात्र
घ. मौन
उत्तर: क. विकट परिस्थिति पर बुद्धिबलसँ विजय
व्याख्या: मनुष्य साधन जुटा कठिन सरदीक सामना करैत अछि।

प्रश्न 3696. “गामक सूर्यास्त”मे दृश्य ककरा कात घटैत अछि?
क. पोखरिक भीड़/कात
ख. कारखाना
ग. रेलवे प्लेटफॉर्म
घ. समुद्रतट
उत्तर: क. पोखरिक भीड़/कात
व्याख्या: कविता गामक पोखरिक कात ठाढ़ वक्ताक स्मृति बनबैत अछि।

प्रश्न 3697. सूर्यास्तक समय पक्षीसभ कोन भाव रचैत अछि?
क. समदाउन गाबिक धीरे-धीरे मौन होइत
ख. युद्ध करैत
ग. घर छोड़ैत
घ. मेला सजाबैत
उत्तर: क. समदाउन गाबिक धीरे-धीरे मौन होइत
व्याख्या: कविता पक्षीक स्वर मन्द पड़ि साँझसँ राति होयबाक रूपान्तरण देखबैत अछि।

प्रश्न 3698. “गामक सूर्यास्त”क अन्तिम आशा की अछि?
क. अगिला भोर पक्षीगण प्राती गायत
ख. राति स्थायी अछि
ग. प्रकृति समाप्त
घ. गाम नष्ट
उत्तर: क. अगिला भोर पक्षीगण प्राती गायत
व्याख्या: कविता रातिक बाद भोर आ प्रातीक ध्वनि पर लौटैत अछि।

प्रश्न 3699. “विशाल समुद्र”मे समुन्द्रक लहरि की करैत अछि?
क. रेत पर पदचिह्न मेटा तटसँ घुरि जाइत
ख. स्थिर रहैत
ग. आकाशमे उड़ैत
घ. काठ बनैत
उत्तर: क. रेत पर पदचिह्न मेटा तटसँ घुरि जाइत
व्याख्या: कविता लहरिक पुनरावृत्ति आ मिटेबाक शक्ति देखबैत अछि।

प्रश्न 3700. समुन्द्रक शक्ति कोन संगठनक रूपमे कहल गेल?
क. जलक सभसँ शक्तिशाली संगठन
ख. माटिक ढेरी
ग. फूलक थाल
घ. गीतक पंक्ति
उत्तर: क. जलक सभसँ शक्तिशाली संगठन
व्याख्या: सागर जलक व्यापक सामूहिक शक्तिक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 3701. रातिक अन्हारमे समुद्रक गर्जन की कराबैत अछि?
क. विशालताक आभास
ख. मौनक प्रमाण
ग. बालक्रीड़ा
घ. भूख
उत्तर: क. विशालताक आभास
व्याख्या: कविता अँधारोमे ध्वनि द्वारा समुद्रक विशालता अनुभव कराबैत अछि।

प्रश्न 3702. एहि खण्डमे प्रकृति ककर शिक्षक बनैत अछि?
क. मानव-धैर्य, चक्र आ विराटताक
ख. केवल पर्यटनक
ग. केवल व्यापारक
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. मानव-धैर्य, चक्र आ विराटताक
व्याख्या: ज्योतिक प्रकृति-कविता मनुष्यक सीमा, साहस आ अनुभूतिक विस्तार देखबैत अछि।

खण्ड ३७६ : विदेह-सदेह १ — ज्योति: आधुनिक जीवनदर्शन आ भावना

प्रश्न 3703. “आधुनिक जीवनदर्शन”मे वक्ता ककरा प्रति विरक्ति बतबैत छथि?
क. अतिशयोक्ति
ख. प्रकृति
ग. मौन
घ. भक्ति
उत्तर: क. अतिशयोक्ति
व्याख्या: कविता अति-प्रशंसा आ सामाजिक व्यवहारक विडम्बना पर व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3704. कविता अनुसार निन्दामे कंजूसी किएक प्रश्न बनैत अछि?
क. दूसराक निन्दामे समाज उदार, प्रशंसामे स्वार्थी अछि
ख. निन्दा निषिद्ध
ग. प्रशंसा सदैव निष्कपट
घ. कविता नहिये अछि
उत्तर: क. दूसराक निन्दामे समाज उदार, प्रशंसामे स्वार्थी अछि
व्याख्या: कविता सामाजिक दोहरापन पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 3705. “परोपकार करनिहार” प्रसंग कोन विडम्बना खोलैत अछि?
क. जे हमर काज बना गेल से उपकारी, बाकी बेरोजगार
ख. सब परोपकारी समान
ग. काज निरर्थक
घ. समाज पूर्ण न्यायपूर्ण
उत्तर: क. जे हमर काज बना गेल से उपकारी, बाकी बेरोजगार
व्याख्या: कविता स्वार्थ-आधारित मूल्यांकनक हास्य-व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 3706. “मनुष्य आ ओकर भावना”मे कठोर हृदयमे की नुकायल भेटैत अछि?
क. भावुकता
ख. केवल पत्थर
ग. धन
घ. नदी
उत्तर: क. भावुकता
व्याख्या: कविता कठोरता भीतर भावनात्मक सम्भावना देखबैत अछि।

प्रश्न 3707. कवितामे क्रोध, प्रेम, दुख, दया आदि ककर अंश कहल गेल?
क. जीवनक
ख. व्यापारक
ग. भूगोलक
घ. नाटकक मंचक
उत्तर: क. जीवनक
व्याख्या: भावना सभ जीवनक अविभाज्य अंश मानल गेल।

प्रश्न 3708. गलतकेँ बिसरा नीक विचारक आश्रय देनाइ ककर अधीन बताओल गेल?
क. मनुष्यक अपन अधीन
ख. सरकारक आदेश
ग. केवल भाग्य
घ. प्रकृतिक बाध्यता
उत्तर: क. मनुष्यक अपन अधीन
व्याख्या: कविता नैतिक चयन केँ मानवक हाथमे राखैत अछि।

प्रश्न 3709. दया परोपकारक की कहल गेल?
क. अधिष्ठात्री
ख. विरोधी
ग. अनुपस्थित
घ. दोष
उत्तर: क. अधिष्ठात्री
व्याख्या: कविता दयाकेँ परोपकारक मूल भाव मानैत अछि।

प्रश्न 3710. क्रोध आ प्रेमक परिणाम कोना तुलना कएल गेल?
क. क्रोधसँ हठ, प्रेमसँ त्याग
ख. दूनू समान विनाश
ग. प्रेमसँ हठ
घ. क्रोधसँ त्याग
उत्तर: क. क्रोधसँ हठ, प्रेमसँ त्याग
व्याख्या: कविता भावना-संयमक दिशा पर बल दैत अछि।

प्रश्न 3711. “आधुनिकताक होड़मे निष्ठुरता” पंक्ति कोन संकट देखबैत अछि?
क. भावनाहीन आधुनिक जीवन
ख. पूर्ण करुणा
ग. प्रकृति-सम्मान
घ. समाजक सरलता
उत्तर: क. भावनाहीन आधुनिक जीवन
व्याख्या: कविता आधुनिकताक नामपर संवेदनहीनता ओढ़बाक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 3712. एहि खण्डक सार की अछि?
क. मानवता लेल भावना जरूरी अछि, मुदा ओकर सही दिशा चाही
ख. भावना हटाबय योग्य
ग. क्रोध सर्वोत्तम
घ. निष्ठुरता आदर्श
उत्तर: क. मानवता लेल भावना जरूरी अछि, मुदा ओकर सही दिशा चाही
व्याख्या: ज्योतिक कविता आधुनिक जीवनमे संवेदना आ विवेकक संतुलन माँगैत अछि।

खण्ड ३७७ : विदेह-सदेह १ — ज्योति: हमर गाम, विकास आ बालश्रम

प्रश्न 3713. “हमर गाम”मे गरमीक भोर कोना चित्रित अछि?
क. शांत आ शीतल
ख. धुआँसँ भरल
ग. हिमपात मात्र
घ. कोलाहलपूर्ण कारखाना
उत्तर: क. शांत आ शीतल
व्याख्या: कविता गामक भोरक शान्ति आ शीतलता रचैत अछि।

प्रश्न 3714. गामक दुपहरिया कोन अनुभूति दैत अछि?
क. लू आ उमससँ बिगड़ल
ख. शीतल हिम
ग. केवल वर्षा
घ. समुद्री हवा
उत्तर: क. लू आ उमससँ बिगड़ल
व्याख्या: कविता दिनक ताप आ उमसकेँ गामक कठोर पक्ष रूपमे देखबैत अछि।

प्रश्न 3715. गामक मिठास ककर कारण सँ बचल कहल गेल?
क. अपन भाषाक कारण
ख. विदेशी भवन
ग. कारखाना
घ. कंक्रीट सड़क
उत्तर: क. अपन भाषाक कारण
व्याख्या: कविता कहैत अछि अपन भाषा गाम जायकेँ प्यास जगा दैत अछि।

प्रश्न 3716. गामक अपनापन कोना व्यक्त अछि?
क. लोक हाक दऽ हाल पूछैत छल
ख. सब मौन रहैत छल
ग. कोनो सम्बन्ध नहि
घ. केवल मोबाइल संवाद
उत्तर: क. लोक हाक दऽ हाल पूछैत छल
व्याख्या: कविता पुरान गामक सामाजिक निकटता स्मरण करैत अछि।

प्रश्न 3717. गामक फल-गाछ आ पोखरिक मखानक सूची की रचैत अछि?
क. स्मृति, स्वाद आ स्थानीय जीवनक संसार
ख. कारखाना-रिपोर्ट
ग. कानूनी दस्तावेज
घ. शहरक नक्शा
उत्तर: क. स्मृति, स्वाद आ स्थानीय जीवनक संसार
व्याख्या: कविता गामक जैव-सांस्कृतिक सम्पदा सँ स्मृति बनबैत अछि।

प्रश्न 3718. “विकास” कवितामे विकासशीलताक शिखर ककरा सन शंका बनैत अछि?
क. मृगमरीचिका
ख. पूर्ण ठोस सत्य
ग. स्थिर पर्वत
घ. समाप्त यात्रा
उत्तर: क. मृगमरीचिका
व्याख्या: कविता विकासक अनंत पीछा आ भ्रमात्मक आकर्षण पर प्रश्न करैत अछि।

प्रश्न 3719. विज्ञान आ तकनीकक नशा कोन खतरा उत्पन्न करैत अछि?
क. प्रकृति-दूषण आ ज्ञानक स्थूलता
ख. प्रकृतिक संरक्षण मात्र
ग. गामक शांति
घ. बालक्रीड़ा
उत्तर: क. प्रकृति-दूषण आ ज्ञानक स्थूलता
व्याख्या: कविता प्रगति-प्रकृति संतुलनक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 3720. “बालश्रम”मे बालपनक किलकारी कोना भेल?
क. भूखक तापसँ मूक
ख. आनन्दसँ गूँजैत
ग. खेलमे मग्न
घ. शिक्षासँ समृद्ध
उत्तर: क. भूखक तापसँ मूक
व्याख्या: कविता भूख आ श्रमद्वारा बाल्य-स्वर दबबाक चित्र खींचैत अछि।

प्रश्न 3721. बालकक हाथसँ लेखनी छीनि की धरेल गेल?
क. करची/श्रमक औजार
ख. फूल
ग. वीणा
घ. पुस्तकालयक चाबी
उत्तर: क. करची/श्रमक औजार
व्याख्या: कविता शिक्षा सँ श्रममे धकेलबाक त्रासदी देखबैत अछि।

प्रश्न 3722. एहि खण्डक मूल द्वंद्व की अछि?
क. गामक स्मृति, विकासक प्रश्न आ बाल्य-शोषणक पीड़ा
ख. केवल ऋतु-वर्णन
ग. केवल हास्य
घ. केवल राजनीति
उत्तर: क. गामक स्मृति, विकासक प्रश्न आ बाल्य-शोषणक पीड़ा
व्याख्या: ज्योतिक कवितासभ प्रकृति, समाज आ आधुनिक विकासक आलोचनात्मक अनुभव जोड़ैत अछि।

खण्ड ३७८ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक लघु प्रकृति-कविता: तारा, लता, नागफनी

प्रश्न 3723. तारासम्बन्धी लघु कविता कोन विरोधाभास खोलैत अछि?
क. दूरसँ शीतल बुझाइत, वास्तवमे जरैत
ख. पाससँ शीतल
ग. पूर्ण अंधकार
घ. धरतीक फूल
उत्तर: क. दूरसँ शीतल बुझाइत, वास्तवमे जरैत
व्याख्या: कविता दूरदृष्टि आ वास्तविक तापक अन्तर देखबैत अछि।

प्रश्न 3724. लता-कवितामे लता कोना चित्रित अछि?
क. शाखासँ लागल, पुष्प-पातसँ आच्छादित झूलैत
ख. कठोर पाथर
ग. नदीक नाव
घ. धुआँ
उत्तर: क. शाखासँ लागल, पुष्प-पातसँ आच्छादित झूलैत
व्याख्या: लघु कविता लताक नाजुक आ सजल प्रकृति चित्रित करैत अछि।

प्रश्न 3725. प्रवासी/यात्री पक्षी विषयक कविता कोन अवस्था देखबैत अछि?
क. लाम यात्रा बाद विश्राम, यात्रा एखनो अपूर्ण
ख. उड़ान समाप्त
ग. पंख नहि
घ. घर स्थिर
उत्तर: क. लाम यात्रा बाद विश्राम, यात्रा एखनो अपूर्ण
व्याख्या: कविता गति आ विश्रामक मध्यवर्ती क्षण पकड़ैत अछि।

प्रश्न 3726. नागफनीक काँटक बीच फूल की बनैत अछि?
क. अद्भुत अपवाद
ख. सामान्य पत्थर
ग. मृत पत्ता
घ. अंधकार
उत्तर: क. अद्भुत अपवाद
व्याख्या: कविता कठोरता बीच सौन्दर्यक विस्मय देखबैत अछि।

प्रश्न 3727. मेघक बिम्ब कोना देल गेल?
क. नीलाम्बरमे सागरक शार्क जकाँ विचरैत
ख. माटिक ईंट
ग. गामक दीप
घ. दूधक कटोरा
उत्तर: क. नीलाम्बरमे सागरक शार्क जकाँ विचरैत
व्याख्या: कविता आकाश-सागर रूपकद्वारा मेघक गति देखबैत अछि।

प्रश्न 3728. भावी संकटक पूर्वाभास किनका मे कहल गेल?
क. पशु-पक्षीमे
ख. केवल मनुष्य मे
ग. पत्थरमे
घ. कविता मे नहि
उत्तर: क. पशु-पक्षीमे
व्याख्या: लघु कविता जीव-जगतक सूक्ष्म संवेदना देखबैत अछि।

प्रश्न 3729. कोमल पंखुड़ी आ सुगन्ध मिलि की रचैत अछि?
क. एक पुष्पक रूप
ख. तूफान
ग. धुआँ
घ. काँटेदार जाल
उत्तर: क. एक पुष्पक रूप
व्याख्या: कविता फूलकेँ पंखुड़ी, सुगंध आ रूपक संयुक्तता मे देखैत अछि।

प्रश्न 3730. नदीक तरंगक उपमा ककरा सँ अछि?
क. घुरमल केश
ख. तलवार
ग. आग
घ. पर्वत
उत्तर: क. घुरमल केश
व्याख्या: कविता तरंगकेँ केशक वक्रता आ गति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3731. बाज उड़य लेल तैयार बिम्बमे की मुख्य अछि?
क. जागरूकता आ फैलल पाँखि
ख. निष्क्रियता
ग. नींद
घ. भूख
उत्तर: क. जागरूकता आ फैलल पाँखि
व्याख्या: लघु कविता उड़ान-पहिल क्षणक तात्पर्य पकड़ैत अछि।

प्रश्न 3732. एहि लघु कवितासभक सौन्दर्य की अछि?
क. सूक्ष्म प्राकृतिक दृश्यसँ भावार्थ निकालब
ख. लम्बा आख्यान
ग. केवल तिथि
घ. राजनीतिक घोषणा
उत्तर: क. सूक्ष्म प्राकृतिक दृश्यसँ भावार्थ निकालब
व्याख्या: ज्योतिक लघु कविता छोट दृश्यसँ व्यापक अनुभव रचैत अछि।

खण्ड ३७९ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक लघु प्रकृति-कविता: जल, संध्या, हिम आ पतझड़

प्रश्न 3733. संध्याक पोखरिक कातक कविता कोन वातावरण बनबैत अछि?
क. सुनसान, शांत, एकांत
ख. हल्ला-गुल्ला
ग. युद्धस्थल
घ. मेला
उत्तर: क. सुनसान, शांत, एकांत
व्याख्या: लघु कविता संध्याकालीन नीरवता आ एकांत रचैत अछि।

प्रश्न 3734. हवाई जहाजक बिम्ब कोन मेघ-रूपकमे अछि?
क. मेघरूपी बर्फमे पिछड़ैत
ख. नदीमे डूबल
ग. रेतमे गड़ल
घ. गाछ पर बैसल
उत्तर: क. मेघरूपी बर्फमे पिछड़ैत
व्याख्या: कविता आकाशक मेघरूपी दृश्य मे विमानक गति देखबैत अछि।

प्रश्न 3735. समुद्रक छोर पर पाथरक किनार कोन भाव दैत अछि?
क. कठोरतम भूगोल
ख. कोमल फूल
ग. बालक्रीड़ा
घ. कागज
उत्तर: क. कठोरतम भूगोल
व्याख्या: लघु कविता समुद्री किनारक कठोरता देखबैत अछि।

प्रश्न 3736. संध्याकालक आकाश समुद्रक उपर कोना चित्रित अछि?
क. जरैत सन विलक्षण अपवाद
ख. पूर्ण अंधकार
ग. नीरस धूप
घ. मौन शून्य
उत्तर: क. जरैत सन विलक्षण अपवाद
व्याख्या: कविता संध्याकाशक अग्निमय रंगकेँ विस्मय बनबैत अछि।

प्रश्न 3737. पहाड़सँ उदित सूर्य आकाशकेँ कोना करैत अछि?
क. ज्वालामुखी सन जागृत
ख. निष्प्रभ
ग. अंधकारमय
घ. स्थिर पाथर
उत्तर: क. ज्वालामुखी सन जागृत
व्याख्या: कविता सूर्योदयक तीव्र प्रकाशकेँ ज्वालामुखी रूपक देत अछि।

प्रश्न 3738. उगैत सूर्य संग की आशा आओत अछि?
क. अंधकारक बाद अंतहीन दिनक आश
ख. स्थायी राति
ग. जलप्रलय
घ. निष्क्रियता
उत्तर: क. अंधकारक बाद अंतहीन दिनक आश
व्याख्या: लघु कविता भोरकेँ आशाक प्रतीक बनबैत अछि।

प्रश्न 3739. दिवस थकल आ साँझ रातिक स्वागतमे लीन—ई बिम्ब की देखबैत अछि?
क. दिनसँ राति धरि संक्रमण
ख. वर्षा मात्र
ग. नदीक जन्म
घ. युद्ध
उत्तर: क. दिनसँ राति धरि संक्रमण
व्याख्या: कविता समयक मानवीकरण करैत अछि।

प्रश्न 3740. ग्रीष्ममे हरियर गाछमे पतझड़ देखबाक बात कोन अनुभूति अछि?
क. ऋतु-विरोधाभास आ सूक्ष्म निरीक्षण
ख. साधारण सूची
ग. केवल कृषि
घ. गणना
उत्तर: क. ऋतु-विरोधाभास आ सूक्ष्म निरीक्षण
व्याख्या: लघु कविता दृश्यक विपरीतता पकड़ैत अछि।

प्रश्न 3741. पक्षीक चहक आ आकाशक लालीसँ की घटैत अछि?
क. प्रकृति जागैत अछि
ख. प्रकृति सोइत अछि
ग. समुद्र जमैत अछि
घ. गाछ कटैत अछि
उत्तर: क. प्रकृति जागैत अछि
व्याख्या: कविता भोरक जागरण-ध्वनि आ रंग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3742. हिमपातक रूपकमे मेघ की करैत अछि?
क. घिस-घिसि बर्फ झरबैत
ख. अन्न उगबैत
ग. समुद्र सुखबैत
घ. पानी रोकैत
उत्तर: क. घिस-घिसि बर्फ झरबैत
व्याख्या: कविता बादल आ हिमपातक दृश्यात्मक सम्बन्ध बनबैत अछि।

खण्ड ३८० : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक लघु प्रकृति-कविता: पक्षी, जल, नागफनी, क्रिसमस

प्रश्न 3743. पक्षी विश्रामसँ जागि उड़य लेल तैयार—ई कोन भाव दैत अछि?

क. नव शुरुआत

ख. समाप्ति

ग. निष्क्रियता

घ. मृत्यु

उत्तर: क. नव शुरुआत

व्याख्या: कविता विश्राम बाद गतिक क्षण देखबैत अछि।

प्रश्न 3744. कटनी भेलाक बाद पक्षी की ताकैत अछि?

क. छूटल अन्न

ख. सोना

ग. नदी

घ. मंच

उत्तर: क. छूटल अन्न

व्याख्या: कविता खेत-जीवन आ पक्षीक आहार-चक्रक सूक्ष्म दृश्य अछि।

प्रश्न 3745. फूलक हुँजक बोझ सँ शाखा की करैत अछि?

क. झुकैत अछि

ख. टूटि तुरन्त मरैत

ग. उड़ैत

घ. गायब होइत

उत्तर: क. झुकैत अछि

व्याख्या: वसंतक भार आ सौन्दर्यक चित्र एहि बिम्बमे अछि।

प्रश्न 3746. तितलीक पंखकेँ की कहल गेल?

क. प्रभुक चित्रकला

ख. माटिक बोरा

ग. कारखाना

घ. तटबन्ध

उत्तर: क. प्रभुक चित्रकला

व्याख्या: कविता प्रकृतिक रंग-रचना केँ दिव्य कला मानैत अछि।

प्रश्न 3747. शीतलतम स्थानमे जीवनक उल्लेख की देखबैत अछि?

क. कठिन परिस्थिति मे सेहो जीवन सम्भव

ख. जीवन असंभव

ग. सिर्फ मानव

घ. प्रकृति शून्य

उत्तर: क. कठिन परिस्थिति मे सेहो जीवन सम्भव

व्याख्या: लघु कविता जीवनक जिजीविषा पर बल दैत अछि।

प्रश्न 3748. उच्चतम शिखरसँ धुंध भरल हरियर घाटी देखबाक इच्छा कोन भाव अछि?

क. विराट दृश्य-लालसा

ख. भय मात्र

ग. व्यापार

घ. विस्मृति

उत्तर: क. विराट दृश्य-लालसा

व्याख्या: कविता ऊँचाईसँ प्रकृतिक विस्तार देखबाक चाह राखैत अछि।

प्रश्न 3749. ओसक बूंद घासक फुनगी पर कोना चमकैत अछि?
क. हीरा सन
ख. कोयला सन
ग. धूल सन
घ. राख सन
उत्तर: क. हीरा सन
व्याख्या: लघु कविता सूक्ष्म चमककेँ रत्न-जैसँ रूपक देत अछि।

प्रश्न 3750. बतख अपन बच्चा संग बाहर घूमय निकलल—कविता कोन दृश्य देत अछि?
क. गर्मी दिनक सरल पारिवारिक प्रकृति-दृश्य
ख. युद्ध
ग. नगर-दंगा
घ. तटबन्ध-विवाद
उत्तर: क. गर्मी दिनक सरल पारिवारिक प्रकृति-दृश्य
व्याख्या: ई पक्षी-परिवारक सहजता देखबैत अछि।

प्रश्न 3751. झरना कोना चित्रित अछि?
क. नदीसँ भेंट लेल खसल उछलैत पानी
ख. स्थिर पत्थर
ग. सुखल खेत
घ. आग
उत्तर: क. नदीसँ भेंट लेल खसल उछलैत पानी
व्याख्या: कविता जलक गतिशील मिलनक बिम्ब रचैत अछि।

प्रश्न 3752. क्रिसमसक साँझ कोना सजायल गेल?
क. कैक रंगक फूल आ लाइटसँ
ख. केवल अंधकार
ग. काँटा मात्र
घ. धुआँ
उत्तर: क. कैक रंगक फूल आ लाइटसँ
व्याख्या: लघु कविता उत्सवी सज्जा मे रंग आ प्रकाशक बिम्ब देत अछि।

खण्ड ३८१ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक लघु प्रकृति-कविता: नारिकेर, बगुला, कौआ आ प्रतिबिम्ब

प्रश्न 3753. नारिकेर फलकेँ कोना चित्रित कएल गेल?
क. कठोर केशयुक्त कवचमे मीठ उज्जर फल
ख. कोमल पात मात्र
ग. जलधारा
घ. रेत
उत्तर: क. कठोर केशयुक्त कवचमे मीठ उज्जर फल
व्याख्या: कविता बाहरी कठोरता आ भीतरी मिठासक विरोधाभास देखबैत अछि।

प्रश्न 3754. भुखाएल बगुला कतए ठाढ़ अछि?
क. नदीक कात माछक ताकिमे
ख. पहाड़क चोटी
ग. नाटक-मंच
घ. गाछक कोटर
उत्तर: क. नदीक कात माछक ताकिमे
व्याख्या: कविता शिकारी प्रतीक्षा आ नदीक दृश्य जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3755. अतिथिक आगमनक पूर्वसूचना कोन ध्वनिसँ अछि?
क. कौआक कर्कश काँव-काँव
ख. शंखनाद
ग. रेल-सीटी
घ. मौन
उत्तर: क. कौआक कर्कश काँव-काँव
व्याख्या: लोकविश्वासक संकेत रूपमे कौआक आवाजक प्रयोग अछि।

प्रश्न 3756. समुद्रक लहरि आ पाथरक सम्बन्ध कोना चित्रित अछि?
क. लहरि लगातार टकराए, पाथर स्थिर
ख. पाथर उड़ि जाए
ग. लहरि सूखि जाए
घ. दूनू अनुपस्थित
उत्तर: क. लहरि लगातार टकराए, पाथर स्थिर
व्याख्या: कविता गति आ स्थिरताक विपरीतता देखबैत अछि।

प्रश्न 3757. जाड़मे गाछक मनोरम दृश्य ककरा सन कहल गेल?
क. चिन्नीक चाशनीमे लिप्त
ख. काजरमे डूबल
ग. धुआँमे खोएल
घ. काँटा मात्र
उत्तर: क. चिन्नीक चाशनीमे लिप्त
व्याख्या: कविता शीत दृश्यकेँ मिठासक चमकदार रूपक देत अछि।

प्रश्न 3758. गाछक रंगीनता ककरा कारण कहल गेल?
क. नीचा गड़ल जड़
ख. ऊपरक आकाश मात्र
ग. मानव रंग
घ. पत्थर
उत्तर: क. नीचा गड़ल जड़
व्याख्या: कविता दृश्य सौन्दर्यक अदृश्य आधार—जड़—पर ध्यान देत अछि।

प्रश्न 3759. सूर्योदयक पहिने शीतल प्रकाशयुक्त समय की कहल गेल?
क. सर्वोत्तम काल
ख. सबसे खराब काल
ग. निरर्थक समय
घ. अंधकार मात्र
उत्तर: क. सर्वोत्तम काल
व्याख्या: लघु कविता प्रभातपूर्व शांति आ प्रकाशक मूल्यांकन करैत अछि।

प्रश्न 3760. जाड़मे पक्षी पाँखिक शाल ओढ़ि किएक निकलल?
क. प्रकृतिक भ्रमण हेतु
ख. युद्ध हेतु
ग. व्यापार हेतु
घ. निद्रा हेतु
उत्तर: क. प्रकृतिक भ्रमण हेतु
व्याख्या: कविता पाँखिक शालक रूपकसँ पक्षीक शीत-यात्रा देखबैत अछि।

प्रश्न 3761. चिड़ैयाँक बच्चा कतबा धरि माए-बाप संग अछि?
क. जाबत पंख नहि छैक
ख. सदैव अलग
ग. जन्मसँ उड़ैत
घ. केवल राति
उत्तर: क. जाबत पंख नहि छैक
व्याख्या: कविता आश्रय आ स्वावलम्बन बीचक सम्बन्ध देखबैत अछि।

प्रश्न 3762. स्थिर पानीमे प्रकृतिक प्रतिबिम्ब कोना देखाइत अछि?
क. साफ मुदा उलटा
ख. धुंधला मात्र
ग. अनुपस्थित
घ. जलि रहल
उत्तर: क. साफ मुदा उलटा
व्याख्या: कविता प्रतिबिम्बक स्वच्छता आ उलटावक दार्शनिक संकेत देत अछि।

खण्ड ३८२ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक लघु प्रकृति-कविता: प्रवास, झरना, मरुभूमि

प्रश्न 3763. प्रवासी पक्षी मीलक मील उड़ि ककर आनन्द लेल आयल?
क. गर्मी
ख. हिमपात
ग. युद्ध
घ. मौन
उत्तर: क. गर्मी
व्याख्या: कविता प्रवासक थकान आ ग्रीष्म-आकर्षण देखबैत अछि।

प्रश्न 3764. नागफनी मरुस्थलमे कोना अछि?
क. मजबूतीसँ ठाढ़
ख. जलमे तैरैत
ग. आकाशमे उड़ैत
घ. सुगंधहीन फूल मात्र
उत्तर: क. मजबूतीसँ ठाढ़
व्याख्या: कविता कठोर परिस्थिति मे दृढ़ जीवन-रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 3765. नागफनीक चोटी पर कोन विरोधाभास अछि?
क. कठोर पातक बीच कोमल फूलक ताज
ख. केवल काँटा
ग. केवल पाथर
घ. कोनो रूप नहि
उत्तर: क. कठोर पातक बीच कोमल फूलक ताज
व्याख्या: कविता कठोरता आ कोमलता संग राखैत अछि।

प्रश्न 3766. मरुस्थलमे रेत ककरासँ बहारल कहल गेल?
क. हवा सँ
ख. नदी सँ
ग. हिम सँ
घ. कौआ सँ
उत्तर: क. हवा सँ
व्याख्या: कविता मरुभूमिक सतह वायु-गठनक परिणाम रूपमे देखैत अछि।

प्रश्न 3767. रेत बहारलाक बाद सतह की भेल?
क. समतल
ख. लहरदार समुद्र
ग. जंगल
घ. नदी
उत्तर: क. समतल
व्याख्या: लघु कविता वायु आ रेतक सरल दृश्य अछि।

प्रश्न 3768. पातक प्रारूप देबामे ईश्वरक कतेक ध्यान—एहि बिम्बक अर्थ की?
क. सूक्ष्म प्रकृति-रचना मे दिव्य कौशल
ख. पात निरर्थक
ग. रूपक अभाव
घ. कविता-विरोध
उत्तर: क. सूक्ष्म प्रकृति-रचना मे दिव्य कौशल
व्याख्या: कविता पातक डिजाइनमे कलात्मक सूक्ष्मता देखबैत अछि।

प्रश्न 3769. बरसात खतम भेलो पर पानि कतएसँ झरैत अछि?
क. गाछक पातसभ सँ
ख. पाथरसँ आगि
ग. आकाशसँ धूल
घ. माटिसँ धुआँ
उत्तर: क. गाछक पातसभ सँ
व्याख्या: कविता वर्षा बादक शेष जल-ध्वनि पकड़ैत अछि।

प्रश्न 3770. स्थिर पानि आ प्रतिबिम्बक कविता प्रकृति कें कोना पूर्ण करैत अछि?
क. प्रतिरूप बिना दृश्य अपूर्ण बुझाइत अछि
ख. प्रतिबिम्ब व्यर्थ
ग. पानी असुन्दर
घ. प्रकृति नहि
उत्तर: क. प्रतिरूप बिना दृश्य अपूर्ण बुझाइत अछि
व्याख्या: कविता जल-प्रतिबिम्बक सौन्दर्य-वृद्धि देखबैत अछि।

प्रश्न 3771. पतझड़क पात की पसारैत अछि?
क. अपन सतरंजी
ख. दीपक
ग. तटबन्ध
घ. झरना
उत्तर: क. अपन सतरंजी
व्याख्या: कविता पातक बिछावनक दृश्यात्मक रूपक देत अछि।

प्रश्न 3772. समुद्रक तहमे की अछि?
क. विभिन्न आकार-प्रकारक रंग-बिरंग जीवन
ख. केवल शून्यता
ग. केवल पाथर
घ. अंधकार मात्र
उत्तर: क. विभिन्न आकार-प्रकारक रंग-बिरंग जीवन
व्याख्या: कविता समुद्र-तलकेँ जैव-विविधता सँ भरल देखबैत अछि।

खण्ड ३८३ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक लघु प्रकृति-कविता: समुद्र, पर्वत, तितली आ बालक

प्रश्न 3773. नटखट समुद्र तटकेँ कोन चीजसँ वंचित करैत अछि?
क. आराम
ख. प्रकाश
ग. भाषा
घ. फूल
उत्तर: क. आराम
व्याख्या: कविता लहरिक अनवरत तंग करबाक खेलिया रूपक देत अछि।

प्रश्न 3774. पहाड़क चोटी गहीर घाटीक बीच कोना लागैत अछि?
क. आरो बेसी ऊँच
ख. निच्चा
ग. समतल
घ. अनुपस्थित
उत्तर: क. आरो बेसी ऊँच
व्याख्या: कविता तुलनात्मक दृश्य-दूरी सँ ऊँचाईक अनुभव बढ़बैत अछि।

प्रश्न 3775. पोखरिमे प्रकृतिक प्रतिबिम्ब कोना बुझाइत अछि?
क. उलटल
ख. गायब
ग. धुआँदार
घ. सुनसान मात्र
उत्तर: क. उलटल
व्याख्या: कविता जलमे प्रकृतिक उलटा प्रतिबिम्ब देखबैत अछि।

प्रश्न 3776. तितलीगण फुलक झुंड पर कोन वस्तु लऽ उतरैत देखायल?
क. पंखरूपी पैराशूट
ख. लाठी
ग. नाव
घ. दीप
उत्तर: क. पंखरूपी पैराशूट
व्याख्या: कविता तितलीक उतरबाक दृश्य केँ पैराशूट रूपकसँ सजबैत अछि।

प्रश्न 3777. गुफासँ उच्चतम शिखर पर दृष्टिगोचर दृश्य कोना अछि?
क. रमणीय
ख. भयानक मात्र
ग. रिक्त
घ. औद्योगिक
उत्तर: क. रमणीय
व्याख्या: लघु कविता ऊँचाई आ दृश्य-सौन्दर्यक क्षण पकड़ैत अछि।

प्रश्न 3778. बच्चाक संग खेलमे कोन भाव प्राप्त होइत अछि?
क. एकेटा खुशीक आभास
ख. दुःख
ग. क्रोध
घ. भय
उत्तर: क. एकेटा खुशीक आभास
व्याख्या: कविता बालकक किलकारी आ खेलकेँ खुशीक संक्षिप्त बिम्ब बनबैत अछि।

प्रश्न 3779. बरसातक बहैत पानि खिड़कीक काँच पर की बनबैत अछि?
क. टेढ़-मेढ़ रेखा
ख. फूलक माला
ग. माटिक ढेरी
घ. काला धुआँ
उत्तर: क. टेढ़-मेढ़ रेखा
व्याख्या: कविता बारिशक पानि सँ काँच पर बनल रेखांकन देखैत अछि।

प्रश्न 3780. बादलसँ छनल किरण कतए चमकैत अछि?
क. समुद्रक लहरिक उपर
ख. रेगिस्तानक नीचे
ग. मंच पर
घ. कागजमे
उत्तर: क. समुद्रक लहरिक उपर
व्याख्या: कविता मेघ, किरण आ लहरिक संयुक्त दृश्य देत अछि।

प्रश्न 3781. पानीक तरंग कैं पक्षी कोना बदलैत अछि?
क. कलरवक लयमे
ख. पाथरमे
ग. रेतमे
घ. मौनमे
उत्तर: क. कलरवक लयमे
व्याख्या: कविता ध्वनि आ जल-तरंगक संगीतात्मक सम्बन्ध बनबैत अछि।

प्रश्न 3782. एहि लघु कवितासभक काव्य-शैली कोन अछि?
क. अति-संक्षिप्त दृश्य सँ प्रतीकात्मक भाव निकालब
ख. दीर्घ कथा मात्र
ग. सूखी रिपोर्ट
घ. कानूनी दस्तावेज
उत्तर: क. अति-संक्षिप्त दृश्य सँ प्रतीकात्मक भाव निकालब
व्याख्या: ज्योतिक छोट कवितासभ दृश्य, रूपक आ भाव-सूत्र पर आधारित अछि।

खण्ड ३८४ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक प्रकृति-दर्शन: समग्र समीक्षा

प्रश्न 3783. ज्योतिक प्रकृति-कवितासभमे जलक रूप कितबा बहुविध अछि?
क. पोखरि, नदी, समुद्र, झरना, ओस, बरसात
ख. केवल एक गिलास पानी
ग. जल अनुपस्थित
घ. केवल बाढ़
उत्तर: क. पोखरि, नदी, समुद्र, झरना, ओस, बरसात
व्याख्या: कवितासभमे जल अनेक रूपमे अनुभव, गति आ प्रतिबिम्ब बनैत अछि।

प्रश्न 3784. गाछ-पात-फूलक बिम्ब कवितासभमे ककर प्रतीक बनैत अछि?
क. जीवन, रंग, जड़ आ सौन्दर्यक
ख. मृत्यु मात्र
ग. राजनीति मात्र
घ. धातु
उत्तर: क. जीवन, रंग, जड़ आ सौन्दर्यक
व्याख्या: ज्योतिक कवितासभ वनस्पति संसारमे जीवंत अर्थ खोजैत अछि।

प्रश्न 3785. पक्षी-केंद्रित बिम्ब कोन भाव बारंबार आनैत अछि?
क. उड़ान, विश्राम, प्रवास, परिवार आ जागरण
ख. स्थिरता मात्र
ग. भाषाविहीनता
घ. औद्योगिकता
उत्तर: क. उड़ान, विश्राम, प्रवास, परिवार आ जागरण
व्याख्या: पक्षी बिम्ब गतिशील जीवनक अनेक अवस्थासँ जोड़ल अछि।

प्रश्न 3786. प्रकृतिक सूक्ष्म दृश्यसँ ज्योति कोन मानवीय शिक्षा निकालैत छथि?
क. धैर्य, संतुलन, संवेदना आ विस्मय
ख. असंवेदनशीलता
ग. हिंसा
घ. विस्मृति
उत्तर: क. धैर्य, संतुलन, संवेदना आ विस्मय
व्याख्या: कवितासभ प्रकृति कैं अनुभव-गुरु बनबैत अछि।

प्रश्न 3787. कठोरता आ कोमलताक विरोधाभास कोन बिम्बमे स्पष्ट अछि?
क. नारिकेरक कवच-फल, नागफनीक काँटा-फूल
ख. केवल नदी
ग. केवल धूप
घ. केवल बालक
उत्तर: क. नारिकेरक कवच-फल, नागफनीक काँटा-फूल
व्याख्या: ज्योतिक कविता बाहरी कठोरता भीतर कोमलता खोजैत अछि।

प्रश्न 3788. प्रतिबिम्बक बिम्ब किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. दृश्यक पूर्णता संग उलट दृष्टि सेहो देत अछि
ख. सिर्फ सजावट
ग. अर्थहीनता
घ. अंधकार
उत्तर: क. दृश्यक पूर्णता संग उलट दृष्टि सेहो देत अछि
व्याख्या: स्थिर जलमे उलटा प्रतिबिम्ब आत्म-दृष्टि जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

प्रश्न 3789. प्रकृति आ आधुनिकता बीच तनाव कोन कवितामे स्पष्ट अछि?
क. विकास, बालश्रम, आधुनिक जीवनदर्शन
ख. केवल तारा-कविता
ग. केवल बतख-कविता
घ. केवल क्रिसमस-साँझ
उत्तर: क. विकास, बालश्रम, आधुनिक जीवनदर्शन
व्याख्या: ज्योति प्रकृति-सौन्दर्य संग सामाजिक आधुनिकता पर आलोचनात्मक दृष्टि राखैत छथि।

प्रश्न 3790. बालश्रम कविता प्रकृति-कवितासभसँ कोना अलग होइतहुँ जुड़ैत अछि?
क. ओ जीवनक कोमलता कैं सामाजिक कठोरता सँ टकराबैत अछि
ख. ओ असंबद्ध अछि
ग. ओ केवल हास्य
घ. ओ भूगोल-वर्णन
उत्तर: क. ओ जीवनक कोमलता कैं सामाजिक कठोरता सँ टकराबैत अछि
व्याख्या: बालकक कोमलता प्रकृति-कोमलता जकाँ संरक्षित होयबाक माँग करैत अछि।

प्रश्न 3791. ज्योतिक कविता-समूहमे प्रवासी/दूरस्थ दृष्टि कोन संकेत दैत अछि?
क. गाम, प्रकृति आ स्मृति कैं दूरसँ देखबाक संवेदना
ख. पूर्ण विस्मृति
ग. देशविरोध
घ. भाषाविरोध
उत्तर: क. गाम, प्रकृति आ स्मृति कैं दूरसँ देखबाक संवेदना
व्याख्या: परिचयमे लंदन-निवास आ कवितामे गाम/प्रकृति-स्मृति मिलि प्रवासी संवेदना बनबैत अछि।

प्रश्न 3792. एहि २००-प्रश्नीय बैचक ज्योति-खण्डक सार की अछि?
क. प्रकृति, गाम, आधुनिकता आ मानवीय संवेदना एक-दोसरासँ गुंथल अछि
ख. केवल सूचीकरण
ग. पृष्ठ-संख्या प्रश्न
घ. विज्ञापन-संग्रह
उत्तर: क. प्रकृति, गाम, आधुनिकता आ मानवीय संवेदना एक-दोसरासँ गुंथल अछि
व्याख्या: ज्योतिक सामग्री साधारण दृश्यकैं विचारमय कवितामे बदलैत अछि।

खण्ड ३८५ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक लघु-कविता tail: ऋतु, आलस, सूरज आ गाछ

प्रश्न 3793. ज्योतिक लघु-कवितामे ‘लुक्खी’ वसंत ऋतुमे कोन भावसँ निकलैत अछि?
क. आलस त्यागि अपन घड़सँ बाहर निकलैत
ख. अन्हारमे बिलाइत
ग. बाढ़सँ पनाह लैत
घ. नगर छोड़ैत
उत्तर: क. आलस त्यागि अपन घड़सँ बाहर निकलैत
व्याख्या: वसंतक आगमन जीव-जगतमे चेष्टा आ जागरणक संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 3794. सोन सन सूरज आ उज्जर हीरा सन दिनक बिम्ब कोन प्राकृतिक क्षणकैं देखबैत अछि?
क. दिनक उजास आ चमकक आरम्भ
ख. रातिक अन्तहीन अन्हार
ग. झरनाक गर्जन
घ. समुद्रक भय
उत्तर: क. दिनक उजास आ चमकक आरम्भ
व्याख्या: एहि छोट कवितामे सूर्यक आभा दिनकैं हीरक चमक देबाक रूपमे चित्रित अछि।

प्रश्न 3795. गाछ सभ सूर्यक रोशनी पाबय लेल ‘होड़’ करैत देखायल अछि—एहि बिम्बक अर्थ की?
क. जीवनमे प्रकाश आ ऊर्जा लेल स्वाभाविक आकांक्षा
ख. गाछक आपसी युद्ध
ग. वनक पूर्ण नाश
घ. रोशनीक अस्वीकार
उत्तर: क. जीवनमे प्रकाश आ ऊर्जा लेल स्वाभाविक आकांक्षा
व्याख्या: गाछक होड़ जीवनक वाढ़ि, प्रकाशलोलुपता आ प्रकृतिक सक्रियता देखबैत अछि।

प्रश्न 3796. खजूरक गाछक भीड़मे पोखरिक कात मंदिरक दृश्य कोन प्रकारक वातावरण बनबैत अछि?
क. ग्रामीण-प्राकृतिक आ आध्यात्मिक दृश्य
ख. कारखाना-केंद्रित दृश्य
ग. समुद्री तूफान
घ. राजनीतिक सभा
उत्तर: क. ग्रामीण-प्राकृतिक आ आध्यात्मिक दृश्य
व्याख्या: मंदिर, खजूर आ पोखरि मिलि सांस्कृतिक-प्राकृतिक परिसर बनबैत अछि।

प्रश्न 3797. सुखाएल छोट पात गाछसँ खसैत ‘नबकेँ अवसर’ दैत अछि—एहि बिम्बमे कोन जीवन-दर्शन अछि?
क. पुरानक अवसान नव जीवनक बाट खोलैत अछि
ख. पुरान सदा विजयी
ग. नवक कोनो स्थान नहि
घ. ऋतु निरर्थक
उत्तर: क. पुरानक अवसान नव जीवनक बाट खोलैत अछि
व्याख्या: पतझड़केँ नाश नहि, नवीकरणक प्रक्रिया रूपमे पढ़ल गेल अछि।

प्रश्न 3798. गाछक शाखा जतबा ऊँच पसारल अछि, जड़ ततबे गहिर—ई बिम्ब कोन शिक्षा दैत अछि?
क. ऊँचाई लेल गहिर आधार चाही
ख. जड़ निरर्थक अछि
ग. विकास बिना आधार सम्भव
घ. गाछ केवल सजावट
उत्तर: क. ऊँचाई लेल गहिर आधार चाही
व्याख्या: कविता उन्नति आ आधारक संतुलन पर बल दैत अछि।

प्रश्न 3799. भोरमे गाछ पर लादल ओसक तुलना ककरासँ भेल अछि?
क. चमकैत हँसीसँ
ख. काला धुआँसँ
ग. बिजलीक तारसँ
घ. काँटासँ
उत्तर: क. चमकैत हँसीसँ
व्याख्या: ओसक चमककेँ हँसीक सौम्य प्रसन्नता देल गेल अछि।

प्रश्न 3800. गहुँक खेत कटाइक पिहने कोन वस्त्र सन देखायल अछि?
क. सोन सन कम्बल
ख. काजरक परदा
ग. लाल झंडा
घ. पाथरक दीवाल
उत्तर: क. सोन सन कम्बल
व्याख्या: पाकल खेतक सुनहला विस्तारकेँ कम्बल रूपकसँ देखायल गेल अछि।

प्रश्न 3801. चक्रवाती पवन जीवनरक्षकसँ जीवनसंहारक बनैत अछि—एहि विरोधाभासमे की संकेत अछि?
क. प्रकृतिक शक्ति उपयोगी सेहो, विनाशकारी सेहो भऽ सकैत अछि
ख. पवन सदा ममतामय
ग. विनाश असम्भव
घ. ऋतु स्थिर
उत्तर: क. प्रकृतिक शक्ति उपयोगी सेहो, विनाशकारी सेहो भऽ सकैत अछि
व्याख्या: कविता एके प्राकृतिक तत्त्वक द्वैत स्वरूप देखबैत अछि।

प्रश्न 3802. गाछ आ वृक्ष पक्षी आ हिरणकेँ की प्रदान करैत अछि?
क. आश्रय
ख. कारखाना
ग. राजमार्ग
घ. लिखित कानून
उत्तर: क. आश्रय
व्याख्या: वनस्पति संसार प्राणी-जगतक आश्रय आ जीवन-आधार बनैत अछि।

खण्ड ३८६ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक वर्षा-कविता: मेघक उत्पात आ बरखा

प्रश्न 3803. ‘मेघक उत्पात’मे मेघ लोकक आशाक संग कोन व्यवहार करैत अछि?
क. उपहास करैत, बेर-बेर नुकाइत
ख. सदा बरसैत
ग. पूर्ण मौन रहैत
घ. अन्न बाँटैत
उत्तर: क. उपहास करैत, बेर-बेर नुकाइत
व्याख्या: मेघक अनिश्चितता किसानक आशा-निराशा संग खेल करैत अछि।

प्रश्न 3804. मेघ कखनो गरजि भरि रहि जाइत अछि—एहि बिम्बक अर्थ की?
क. प्रतीक्षा बनैत अछि मुदा फल नहि भेटैत
ख. सदा समाधान
ग. सम्पूर्ण सूखा समाप्त
घ. केवल उत्सव
उत्तर: क. प्रतीक्षा बनैत अछि मुदा फल नहि भेटैत
व्याख्या: गरजन बिना बरखा लोकक अपेक्षाभंगक रूप अछि।

प्रश्न 3805. ‘मेघक उत्पात’मे कोसीक प्रवाह कोन विनाशक घटना करैत अछि?
क. बाँध तोड़ि गामक गाम जलमग्न करैत
ख. सड़क बनबैत
ग. वन उगबैत
घ. दीप जरबैत
उत्तर: क. बाँध तोड़ि गामक गाम जलमग्न करैत
व्याख्या: कविता वर्षाक अतिरेककेँ कोसी-बाढ़क विनाशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3806. किसानक भविष्य मेघपर आश्रित अछि—एहि कथनमे कोन सामाजिक सत्य अछि?
क. खेतीक जीवन वर्षा-अनिश्चिततासँ बन्हल अछि
ख. किसान वर्षासँ असंबद्ध
ग. मेघ केवल सजावट
घ. खेती शहरमे होइत
उत्तर: क. खेतीक जीवन वर्षा-अनिश्चिततासँ बन्हल अछि
व्याख्या: बरखा कृषि-संस्कृति लेल जीवनरेखा अछि, मुदा ओकर अनुपात अनिश्चित अछि।

प्रश्न 3807. ‘बरखा तू आब कहिया जेबै’मे बरखाकेँ किएक तंग करनिहार कहल गेल?
क. अति वर्षासँ लोक अकच्छ भऽ गेल
ख. बरखा पूर्णतः अनुपस्थित
ग. बरखा केवल गीत अछि
घ. बरखा देवता नहि
उत्तर: क. अति वर्षासँ लोक अकच्छ भऽ गेल
व्याख्या: कविता आवश्यक बरखा आ अतिरेक बरखा बीचक भेद करैत अछि।

प्रश्न 3808. बरखाक कारण घर-आँगनमे कोन प्राणी-स्थिति देखायल अछि?
क. बेंग घुसैत, ओकरा खिहारैत साँप आबय सकैत
ख. मोर नाचि मात्र
ग. केवल हिरण
घ. कौआ चुप
उत्तर: क. बेंग घुसैत, ओकरा खिहारैत साँप आबय सकैत
व्याख्या: अतिवृष्टि घरेलू जीवनमे असुविधा, भय आ रोगक जड़ बनैत अछि।

प्रश्न 3809. बरखाक संग मच्छड़ आ बीमारीक उल्लेख कोन स्तरक समस्या देखबैत अछि?
क. स्वास्थ्य-संकट
ख. केवल सौन्दर्य
ग. संगीत
घ. भाषा-विवाद
उत्तर: क. स्वास्थ्य-संकट
व्याख्या: कविता प्रकृति-घटना कैं जनस्वास्थ्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3810. गरीबक टूटल-फूटल खपरीसँ छड़ायल कुटिया बरखामे की भोगैत अछि?
क. निरन्तर धाराक मारि
ख. राजसी सुख
ग. पूर्ण सुरक्षा
घ. रंगीन प्रकाश
उत्तर: क. निरन्तर धाराक मारि
व्याख्या: अतिवृष्टि वर्गीय असमानता उजागर करैत अछि—गरीबक आश्रय बेसी असुरक्षित अछि।

प्रश्न 3811. बरखा गेलापछि शीतलहरीक आगमनक संकेत कोन भाव बनबैत अछि?
क. ऋतुचक्रक अगिला चुनौती
ख. पूर्ण मुक्ति
ग. अनंत गर्मी
घ. ऋतुहीनता
उत्तर: क. ऋतुचक्रक अगिला चुनौती
व्याख्या: कविता कहैत अछि जे एक संकट टलला पर दोसर ऋतु-चुनौती अबैत अछि।

प्रश्न 3812. ‘पिनसोखा देखेनाई नहि बिसरिहैं’—एहि पंक्तिक काव्य-कार्य की?
क. बरखा बादक उजास आ आशाक स्मरण
ख. बाढ़क स्थायित्व
ग. अन्हारक विजय
घ. किसान-विरोध
उत्तर: क. बरखा बादक उजास आ आशाक स्मरण
व्याख्या: पिनसोखा अर्थात इन्द्रधनुष वर्षा बादक उज्ज्वल संकेत बनैत अछि।

खण्ड ३८७ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक मिथिला-दृष्टि आ ईश-आराधना

प्रश्न 3813. ‘मिथिलाक विस्तार’मे समूहक लोक कोन धनी परम्परा सँ जुड़ल मानल गेल अछि?
क. इतिहास आ संस्कृति सँ
ख. केवल बाजारसँ
ग. सैनिक शक्ति सँ
घ. परदेशी भाषा सँ
उत्तर: क. इतिहास आ संस्कृति सँ
व्याख्या: कविता मिथिलाक सांस्कृतिक धरोहरक धनीपन आ संरक्षणक अभाव दुनू पर ध्यान दैत अछि।

प्रश्न 3814. ‘संरक्षणक अभाव’क उल्लेख कोन चिन्ता व्यक्त करैत अछि?
क. समृद्ध सभ्यता उपेक्षासँ नष्ट भऽ सकैत अछि
ख. संस्कृति पूर्ण सुरक्षित
ग. इतिहास अप्रासंगिक
घ. भाषा बेमानी
उत्तर: क. समृद्ध सभ्यता उपेक्षासँ नष्ट भऽ सकैत अछि
व्याख्या: ज्योति चेतावनी दैत छथि जे जागरण नहि भेल तँ पाछाँ पछतावा रहत।

प्रश्न 3815. आधुनिकताक पाग पहिरबाक बिम्बक संग बेरोजगारीक राग किएक आयल?
क. प्रगतिक दावा आ वास्तविक सामाजिक संकटक विरोधाभास देखाबय लेल
ख. फैशनक प्रशंसा लेल
ग. केवल हास्य लेल
घ. भाषा-विरोध लेल
उत्तर: क. प्रगतिक दावा आ वास्तविक सामाजिक संकटक विरोधाभास देखाबय लेल
व्याख्या: कविता आधुनिकता आ सामाजिक असमानता बीचक खिंचाव देखबैत अछि।

प्रश्न 3816. ‘संजीवनी बुटी’ ककरा लेल चाहल गेल अछि?
क. सभ्यता कैं सुरक्षित आधार देबाक लेल
ख. व्यापार बढ़ेबाक लेल
ग. वन काटबाक लेल
घ. कथा रोकबाक लेल
उत्तर: क. सभ्यता कैं सुरक्षित आधार देबाक लेल
व्याख्या: मिथिलाक सभ्यता बचाबय लेल जीवनदायी उपाय/संस्था चाही, से भाव अछि।

प्रश्न 3817. विश्वस्तरीय संस्था बनयबाक आकांक्षा कोन लक्ष्यसँ जुड़ल अछि?
क. मिथिलाक विशेषताक विस्तार आ संरक्षण
ख. केवल भवन-सज्जा
ग. व्यक्तिगत पुरस्कार
घ. सड़क-निर्माण मात्र
उत्तर: क. मिथिलाक विशेषताक विस्तार आ संरक्षण
व्याख्या: कविता स्थानीय सभ्यता कैं विश्व-दृष्टि मे सुरक्षित करबाक चाह राखैत अछि।

प्रश्न 3818. ‘ईशक अराधना’मे हाथ ककरा लेल माँगल गेल अछि?
क. कर्मठ आ कुशल कार्य लेल
ख. केवल जोड़ि निष्क्रिय रहबाक लेल
ग. दूसराक क्षति लेल
घ. राजनीतिक नारा लेल
उत्तर: क. कर्मठ आ कुशल कार्य लेल
व्याख्या: भक्ति कर्म-विमुख नहि, कर्म-संगमक रूपमे कल्पित अछि।

प्रश्न 3819. कविता मे पएर ककरा लेल चाहल गेल?
क. अपन भार सहि आनक प्रयोजन पर आगाँ बढ़य लेल
ख. पाछाँ हटय लेल
ग. निष्क्रिय रहय लेल
घ. दूसराकैं गिराबय लेल
उत्तर: क. अपन भार सहि आनक प्रयोजन पर आगाँ बढ़य लेल
व्याख्या: पद-प्रार्थना सेवा, साहस आ नैतिक गतिक भाव दैत अछि।

प्रश्न 3820. ‘एहेन वाणी’मे कोन गुण चाहल गेल?
क. शारदाक निवास, मिठास आ शीतलता
ख. भय आ लोलुपता
ग. क्रोध मात्र
घ. मौन दमन
उत्तर: क. शारदाक निवास, मिठास आ शीतलता
व्याख्या: वाणी ज्ञान, मधुरता आ संयमक साधन बने, से प्रार्थना अछि।

प्रश्न 3821. ‘ईशक रूप घट-घट मे’ मानला पर हिमालय जाएबाक प्रश्न किएक उठैत अछि?
क. ईश्वर सर्वत्र छथि, बाह्य तीर्थ टा पर्याप्त नहि
ख. ईश्वर केवल पहाड़मे
ग. भक्ति असंभव
घ. दृष्टि अनावश्यक
उत्तर: क. ईश्वर सर्वत्र छथि, बाह्य तीर्थ टा पर्याप्त नहि
व्याख्या: कविता आन्तरिक दृष्टि आ सर्वव्यापक ईश्वर-बोध पर बल दैत अछि।

प्रश्न 3822. ‘प्राणिमात्रक कल्याण लेल आमरण प्रयास’ कोन आराधना-दृष्टि अछि?
क. सर्वहितकारी सक्रिय भक्ति
ख. स्वार्थी पूजा
ग. कर्म-त्याग
घ. ज्ञान-विरोध
उत्तर: क. सर्वहितकारी सक्रिय भक्ति
व्याख्या: आराधना सामाजिक नैतिकता आ लोककल्याणसँ जुड़ि गेल अछि।

खण्ड ३८८ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक ‘खरहाक भोज’ आ ‘कल्पनालोक’

प्रश्न 3823. ‘खरहाक भोज’मे खरहा सब कतए भोज करैत अछि?
क. बाड़ीमे
ख. समुद्रमे
ग. मंदिरक मचान पर
घ. रेलवे स्टेशन पर
उत्तर: क. बाड़ीमे
व्याख्या: खरहा बाड़ीमे रोपल साग-पात कुचरिकऽ चरैत अछि।

प्रश्न 3824. गृहस्थक मोन तामससँ किएक जरैत अछि?
क. प्रतिदिनक मेहनतिक बाड़ी खरहा नष्ट करैत अछि
ख. खरहा कविता पढ़ैत अछि
ग. खेतमे पानी नहि
घ. सूरज उगैत अछि
उत्तर: क. प्रतिदिनक मेहनतिक बाड़ी खरहा नष्ट करैत अछि
व्याख्या: कविता श्रमक नाश आ गृहस्थक असहायता देखबैत अछि।

प्रश्न 3825. खरहा पकड़ाइत किएक नहि?
क. ओ तुरन्त पड़ाइत अछि
ख. ओ स्थिर रहैत अछि
ग. ओ गाछ बनि जाइत अछि
घ. ओ जलमे डूबैत अछि
उत्तर: क. ओ तुरन्त पड़ाइत अछि
व्याख्या: प्राणी-संसारक चपलता आ मनुष्यक असफल क्रोधक दृश्य अछि।

प्रश्न 3826. ‘बिन मेहनति आ बिन धैर्य मनुषकेँ किछु नहि भेटैत’—एहि कथनक मूल शिक्षा की?
क. श्रम आ धैर्य जीवनक आवश्यक आधार अछि
ख. सौभाग्ये पर्याप्त अछि
ग. कर्म व्यर्थ
घ. आलस श्रेष्ठ
उत्तर: क. श्रम आ धैर्य जीवनक आवश्यक आधार अछि
व्याख्या: खरहा-बिम्बक बाद कविता मनुष्य-जीवनक व्यावहारिक नीति दैत अछि।

प्रश्न 3827. ‘कल्पनालोक’मे कवि कोन प्रकारक लोकमे विचरण करैत छथि?
क. उन्मुक्त, विषादहीन आ स्नेहसिक्त लोकमे
ख. युद्धभूमि मे
ग. कारखाना मे
घ. बाढ़-शिविर मे
उत्तर: क. उन्मुक्त, विषादहीन आ स्नेहसिक्त लोकमे
व्याख्या: कल्पनालोक दुख-रोषरहित, स्नेह आ शांति सँ भरल संसार अछि।

प्रश्न 3828. कल्पनालोकमे ‘आरोग्यक कचोर रंग’ की सूचित करैत अछि?
क. स्वास्थ्य आ जीवनक पल्लवित अवस्था
ख. रोगक फैलाव
ग. सूनापन
घ. सामाजिक हिंसा
उत्तर: क. स्वास्थ्य आ जीवनक पल्लवित अवस्था
व्याख्या: कविता कल्पनालोककेँ जीवनदायी, हरियर आ स्वास्थ्यपूर्ण देखबैत अछि।

प्रश्न 3829. कल्पनालोकमे शांति कतेक प्रबल अछि?
क. ओ अपूर्व आत्मसंतोष दैत अछि
ख. ओ क्रोध जगबैत अछि
ग. ओ रिक्त अछि
घ. ओ केवल भ्रम
उत्तर: क. ओ अपूर्व आत्मसंतोष दैत अछि
व्याख्या: कविता शांति केँ आत्मिक संतोषक अनुभव बनबैत अछि।

प्रश्न 3830. कविता मे वास्तविकता कल्पनासँ कोना भिन्न अछि?
क. वास्तविकतामे बच्चा-वृद्ध सहित सभ समस्या सँ जूझैत अछि
ख. वास्तविकता पूर्ण स्वर्ग
ग. समस्या नहि
घ. लोक शिक्षित नहि चाही
उत्तर: क. वास्तविकतामे बच्चा-वृद्ध सहित सभ समस्या सँ जूझैत अछि
व्याख्या: कल्पना-स्वर्गक विपरीत वास्तविक संसार संघर्षमय अछि।

प्रश्न 3831. कल्पनाक साकार भेनाइ ककरा पर निर्भर मानल गेल?
क. घर-घर लोक शिक्षित आ समृद्ध होयब पर
ख. अज्ञान फैलाबय पर
ग. बाड़ी नष्ट होयब पर
घ. सूरज छिपल रहय पर
उत्तर: क. घर-घर लोक शिक्षित आ समृद्ध होयब पर
व्याख्या: कविता शिक्षा आ समृद्धिकेँ कल्पनालोक साकार करबाक साधन मानैत अछि।

प्रश्न 3832. ‘खरहाक भोज’ आ ‘कल्पनालोक’ एक संग पढ़ला पर कोन द्वंद्व उभरैत अछि?
क. व्यावहारिक श्रम-संघर्ष आ आदर्श समाजक चाह
ख. केवल पशु-चित्रण
ग. केवल धार्मिक गीत
घ. इतिहास-विरोध
उत्तर: क. व्यावहारिक श्रम-संघर्ष आ आदर्श समाजक चाह
व्याख्या: एक कविता श्रमक नाश देखबैत अछि, दोसर आदर्श लोकक कल्पना करैत अछि।

खण्ड ३८९ : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक ‘कोसीक प्रकोप’ आ ‘असल राज’

प्रश्न 3833. ‘कोसीक प्रकोप’मे कोसी नदी ककर प्रतीक बनैत अछि?
क. मिथिलाक प्राकृतिक आपदा आ सरकारी उपेक्षा
ख. केवल सौन्दर्य
ग. व्यक्तिगत प्रेम
घ. बाजार
उत्तर: क. मिथिलाक प्राकृतिक आपदा आ सरकारी उपेक्षा
व्याख्या: कविता कोसी-बाढ़, जन-पीड़ा आ शासनक बहिरापनक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 3834. सरकारकेँ ‘बहिर’ कहल गेल—एहि आरोपक आशय की?
क. आपदा-पीड़ित लोकक पीड़ा न सुनब
ख. सरकारक संगीत-प्रेम
ग. नदीक प्रशंसा
घ. किसानक उत्सव
उत्तर: क. आपदा-पीड़ित लोकक पीड़ा न सुनब
व्याख्या: कविता आपदा-प्रबंधनमे संवेदनहीनता पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 3835. कोसी ‘बिहारक शोक’ किएक कहल गेल?
क. बारंबार विनाशकारी बाढ़क कारण
ख. नीक फसलक कारण
ग. संगीतक कारण
घ. मंदिरक कारण
उत्तर: क. बारंबार विनाशकारी बाढ़क कारण
व्याख्या: कोसीक बाढ़-इतिहास मिथिला-बिहारक स्थायी संकटक रूपमे देखायल अछि।

प्रश्न 3836. पर्यावरणक सतत हनन आ तापमान-वृद्धिक उल्लेख कोन आधुनिक चिन्ता जोड़ैत अछि?
क. जलवायु आ पर्यावरणीय संकट
ख. केवल मिथकीय कथा
ग. भाषा-विवाद
घ. व्यक्तिगत संस्मरण
उत्तर: क. जलवायु आ पर्यावरणीय संकट
व्याख्या: कविता प्राकृतिक आपदाकेँ मानव-निर्मित पर्यावरण संकटसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3837. मजबूत बाँध आ प्रवाह-मार्गदर्शन लेल कवि केकर सहभागिता चाहैत छथि?
क. भूगोलवेत्ता आ अभियंता
ख. केवल कवि
ग. केवल पुजारी
घ. केवल व्यापारी
उत्तर: क. भूगोलवेत्ता आ अभियंता
व्याख्या: कविता वैज्ञानिक-तकनीकी योजना द्वारा आपदा-नियन्त्रणक बात करैत अछि।

प्रश्न 3838. जलसंचयक प्रयोग कोन दू सम्भावना लेल सुझायल गेल?
क. सिंचाइ आ विद्युत निर्माण
ख. गीत आ नृत्य
ग. युद्ध आ व्यापार
घ. दहेज आ भोज
उत्तर: क. सिंचाइ आ विद्युत निर्माण
व्याख्या: कवि जलशक्तिक सकारात्मक उपयोगक कल्पना करैत छथि।

प्रश्न 3839. ‘असल राज’मे लन्दनक भोरक भीड़ कोना देखायल अछि?
क. समय-सँ पैबंद, काज दिस भागैत
ख. आराम करैत
ग. उत्सव मनबैत
घ. गामक पोखरि पर
उत्तर: क. समय-सँ पैबंद, काज दिस भागैत
व्याख्या: कविता शहरी अनुशासन आ काज-केंद्रित जीवन देखबैत अछि।

प्रश्न 3840. ओवरकोटमे बन्द लोकक बिम्ब कोन वातावरण बनबैत अछि?
क. ठंढ, अनुशासन आ निजी दूरीक
ख. मिथिला पाबनिक
ग. बाढ़-पीड़ाक
घ. बाल-खेलक
उत्तर: क. ठंढ, अनुशासन आ निजी दूरीक
व्याख्या: लन्दनक दृश्य आधुनिक नगरक यांत्रिक समय-बद्धता देखबैत अछि।

प्रश्न 3841. ‘कोनो काज तकरा करैमे जे नहि केलक लाज’—एहि पंक्तिसँ ‘असल राज’ की कहल गेल?
क. श्रम-सम्मान आ स्वावलम्बन
ख. काजक तिरस्कार
ग. वंश-गौरव मात्र
घ. निष्क्रियता
उत्तर: क. श्रम-सम्मान आ स्वावलम्बन
व्याख्या: कविता श्रमक मर्यादा कें असल सामाजिक राजक आधार मानैत अछि।

प्रश्न 3842. ‘कोसीक प्रकोप’ आ ‘असल राज’मे साझा चिन्ता की अछि?
क. व्यवस्था, श्रम, अनुशासन आ जनजीवनक प्रश्न
ख. केवल प्रकृति-सौन्दर्य
ग. केवल प्रेमगीत
घ. केवल बालकाव्य
उत्तर: क. व्यवस्था, श्रम, अनुशासन आ जनजीवनक प्रश्न
व्याख्या: दूनू कविता सामाजिक यथार्थकें नैतिक-व्यवस्थात्मक दृष्टिसँ देखैत अछि।

खण्ड ३९० : विदेह-सदेह १ — ज्योतिक पतझड़, पीढ़ी-दृष्टि आ टेम्स

प्रश्न 3843. ‘पतझड़क आगमन’मे प्रकृति कोन रंगसभसँ भरल देखायल अछि?
क. संतरा, पीयर, लाल, भूरा
ख. केवल कारी
ग. केवल उज्जर
घ. नील मात्र
उत्तर: क. संतरा, पीयर, लाल, भूरा
व्याख्या: पतझड़क रंग-परिवर्तन कविता मे सौन्दर्य आ क्षय दुनू बनैत अछि।

प्रश्न 3844. पतझड़मे प्रकृति ‘गेरुआ वस्त्र’ धारण करैत अछि—एहि रूपकमे कोन भाव अछि?
क. सन्न्यास आ रूपान्तरण
ख. युद्धक तयारी
ग. बाजारक सजावट
घ. पूर्ण बसंत
उत्तर: क. सन्न्यास आ रूपान्तरण
व्याख्या: गेरुआ वस्त्र रूपक प्रकृतिमे विरक्ति, तप आ ऋतु-परिवर्तनक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 3845. हिमक बरखा बाद सुखद वसन्तक अभिलाषा कोन चक्र देखबैत अछि?
क. क्षय-पतन बाद नवजीवनक आशा
ख. वसन्त असंभव
ग. ऋतु समाप्त
घ. अंधकार स्थायी
उत्तर: क. क्षय-पतन बाद नवजीवनक आशा
व्याख्या: कविता पतझड़कें अंतिम नाश नहि, नवीकरणक पूर्वपीठिका मानैत अछि।

प्रश्न 3846. ‘वृद्धक अभिलाषा’मे वृद्ध की रोपि रहल अछि?
क. आमक गाछ
ख. काँटेदार बाड़
ग. धानक खेत
घ. कागज
उत्तर: क. आमक गाछ
व्याख्या: वृद्ध भावी पीढ़ी लेल आमक कलम रोपैत अछि।

प्रश्न 3847. वृद्धक गाछ रोपबाक उत्तरदायित्व ककर ऋण लौटेबाक प्रयास अछि?
क. बाप-दादाक रोपल कलमक ऋण
ख. व्यापारीक ऋण
ग. राज्यक कर
घ. मंदिरक दान
उत्तर: क. बाप-दादाक रोपल कलमक ऋण
व्याख्या: कविता पीढ़ीगत स्मृति आ प्रतिदानक भाव दैत अछि।

प्रश्न 3848. वृद्धक कथनमे गाछ फरैत रहब ककरा लेल महत्त्वपूर्ण अछि?
क. बाल-बच्चाक जीवनमे मिठास घोरेबाक लेल
ख. केवल वृद्धक लाभ लेल
ग. पड़ोस नष्ट करबाक लेल
घ. राजनीतिक भाषण लेल
उत्तर: क. बाल-बच्चाक जीवनमे मिठास घोरेबाक लेल
व्याख्या: वृद्ध अपना जीवनसँ आगाँ सोचि भविष्यक पीढ़ी कें फल देबाक चाह रखैत अछि।

प्रश्न 3849. ‘टेम्स नदीमे नौकाविहार’मे तट पर कोन दृश्य देखायल?
क. ऊँच-ऊँच भव्य भवन आ वास्तुकला
ख. कच्चा खेत मात्र
ग. घना जंगल मात्र
घ. रेगिस्तान
उत्तर: क. ऊँच-ऊँच भव्य भवन आ वास्तुकला
व्याख्या: कविता टेम्स तट पर आधुनिक वास्तु आ तकनीकी विकासक दृश्य देखबैत अछि।

प्रश्न 3850. टेम्सक अनुशासित बहाव कविकें कोन घाव मोन पाड़ैत अछि?
क. अपन प्रांतक बाढ़-समस्या
ख. बाल्यकालक खेल मात्र
ग. दहेज-विवाह
घ. भक्तिगीत
उत्तर: क. अपन प्रांतक बाढ़-समस्या
व्याख्या: विदेशी जल-अनुशासन देखि कवि अपन प्रदेशक बाढ़-संकट मोन करैत छथि।

प्रश्न 3851. रातिक टेम्सक चमकैत धाराक तुलना ककरासँ भेल?
क. छठिक अर्घ्यदीपक भरमारसँ
ख. काला धुआँसँ
ग. सूखल पातसँ
घ. मरुभूमिसँ
उत्तर: क. छठिक अर्घ्यदीपक भरमारसँ
व्याख्या: विदेशी नदी-दृश्य मिथिलाक छठि-संस्कारक स्मृति जगा दैत अछि।

प्रश्न 3852. ज्योतिक एहि कवितासभमे प्रवासी दृष्टि कोना काम करैत अछि?
क. दूरक दृश्यसँ मिथिला आ प्रकृति कैं फेर पढ़ैत अछि
ख. मिथिला विसरि जाइत अछि
ग. केवल लन्दनक प्रचार
घ. कविता रोकैत अछि
उत्तर: क. दूरक दृश्यसँ मिथिला आ प्रकृति कैं फेर पढ़ैत अछि
व्याख्या: टेम्स, लन्दन आ मिथिलाक स्मृति एक-दोसरासँ संवाद करैत अछि।

खण्ड ३९१ : विदेह-सदेह १ — ज्योति प्रकाश लाल: परिचय आ कम्प्यूटर साक्षरता

प्रश्न 3853. ज्योति प्रकाश लालक लेख ‘आजुक समय मे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व’ क मुख्य आरम्भिक प्रश्न की अछि?
क. कम्प्यूटर: की आ किएक?
ख. कविता: की आ किएक?
ग. ग्रामदेवता: की आ किएक?
घ. बाढ़: की आ किएक?
उत्तर: क. कम्प्यूटर: की आ किएक?
व्याख्या: लेख कम्प्यूटरक अर्थ, उपयोग आ आजुक आवश्यकतासँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 3854. लेखक कम्प्यूटरक हिन्दी/मैथिली नाम कोन बतबैत छथि?
क. संगणक
ख. दूरबीन
ग. शब्दकोश
घ. अंकुर
उत्तर: क. संगणक
व्याख्या: संगणक शब्दक उल्लेख अछि, मुदा लेखक मानैत छथि जे बहुत लोक एहि शब्दसँ अनभिज्ञ अछि।

प्रश्न 3855. कम्प्यूटर साक्षरता सँ लेखकक आशय की?
क. कम्प्यूटर अनुप्रयोग प्रयोग कऽ काज करब
ख. कम्प्यूटर देखिते रहब
ग. केवल मशीन खरीदब
घ. कागज पर नाम लिखब
उत्तर: क. कम्प्यूटर अनुप्रयोग प्रयोग कऽ काज करब
व्याख्या: कम्प्यूटर साक्षर व्यक्ति कम्प्यूटरक सहायता सँ व्यावहारिक काम करि सकैत अछि।

प्रश्न 3856. लेखकक अनुसार आजुक समयमे सभ कैं कोन योग्यता चाही?
क. कम्प्यूटर साक्षर होयबाक
ख. केवल टाइपराइटर सिखबाक
ग. डाकिया बनबाक
घ. कम्प्यूटरसँ दूर रहबाक
उत्तर: क. कम्प्यूटर साक्षर होयबाक
व्याख्या: लेख कम्प्यूटरक व्यापक उपयोगक कारण सभक लेल कम्प्यूटर साक्षरता आवश्यक मानैत अछि।

प्रश्न 3857. ज्योति प्रकाश लालक परिचयमे हुनकर पेशा कोन कहल गेल अछि?
क. सॉफ्टवेयर अभियंता
ख. लोकगायक
ग. रंगकर्मी
घ. कृषक
उत्तर: क. सॉफ्टवेयर अभियंता
व्याख्या: परिचयमे ओ सॉफ्टवेयर अभियंता आ वेब/एप्लिकेशन आधारित सॉफ्टवेयर निर्माणसँ जुड़ल बताओल गेल छथि।

प्रश्न 3858. हुनकर अनुभवक क्षेत्रमे कोन बड़का वैश्विक संस्था/प्रसंगक उल्लेख अछि?
क. माइक्रोसॉफ्टक विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम पर शोध-विकास
ख. केवल ग्राम पंचायत
ग. केवल लोकनाट्य
घ. केवल कृषि
उत्तर: क. माइक्रोसॉफ्टक विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम पर शोध-विकास
व्याख्या: परिचयमे माइक्रोसॉफ्ट, वाशिंगटनमे विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम पर योगदानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3859. लेखक ककरा मुफ़्त कैरियर सुझाव देबाक माध्यम बनबैत छथि?
क. वेब-आधारित मंच/फोरम
ख. ग्रामसभा मात्र
ग. मंदिरक घोषणा
घ. नाटक-मंच
उत्तर: क. वेब-आधारित मंच/फोरम
व्याख्या: परिचयमे अनुभवी सहयोगी संग वेबसाइट द्वारा मुफ़्त कैरियर सुझावक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3860. ‘मातृभाषा मैथिलीमे अंग्रेजी शब्द’क प्रसंग लेखक किएक उठबैत छथि?
क. प्रौद्योगिक शब्दावलीक व्यवहारिक कठिनाइ देखाबय लेल
ख. मैथिली नकारय लेल
ग. कविता छोड़य लेल
घ. इतिहास बदलय लेल
उत्तर: क. प्रौद्योगिक शब्दावलीक व्यवहारिक कठिनाइ देखाबय लेल
व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे शुद्ध स्थानीय शब्द सभक लेल सहज नहि, तें व्यवहारिक भाषा-प्रयोगक प्रश्न उठैत अछि।

प्रश्न 3861. कम्प्यूटरक लोकप्रियता आ माँगक पाछाँ लेखक कोन कारण देखैत छथि?
क. लगभग सभ काममे उपयोगिता
ख. केवल खेल
ग. केवल सजावट
घ. केवल धार्मिक उपयोग
उत्तर: क. लगभग सभ काममे उपयोगिता
व्याख्या: लेख कम्प्यूटरकेँ आधुनिक जीवनक बहु-क्षेत्रीय उपकरण रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 3862. लेखकक दृष्टिमे कम्प्यूटर साक्षरता केवल तकनीकी कौशल नहि, बल्कि की अछि?
क. आधुनिक कामकाजमे सहभागी होयबाक आधार
ख. कविता-विरोध
ग. समाजसँ पलायन
घ. कृषि-विरोध
उत्तर: क. आधुनिक कामकाजमे सहभागी होयबाक आधार
व्याख्या: कम्प्यूटर साक्षरता रोजमर्रा, कार्यालयी आ पेशागत जीवनक आवश्यक दक्षता बनैत अछि।

खण्ड ३९२ : विदेह-सदेह १ — ज्योति प्रकाश लाल: लेखन, आवेदन आ कार्यालयी उपयोग

प्रश्न 3863. लेखक टाइपराइटरक तुलना कम्प्यूटरसँ ककर उदाहरणमे करैत छथि?
क. दरख्वास्त वा चिट्ठी लिखबाक प्रसंगमे
ख. खेती करबाक प्रसंगमे
ग. नाव चलाबय लेल
घ. गाय दुहबाक लेल
उत्तर: क. दरख्वास्त वा चिट्ठी लिखबाक प्रसंगमे
व्याख्या: लेखक आवेदन/चिट्ठी टाइप करबाक उदाहरणसँ कम्प्यूटरक लाभ बुझबैत छथि।

प्रश्न 3864. टाइपराइटर पर लिखल दरख्वास्तमे लेखक कोन समस्या बतबैत छथि?
क. हिज्जै, अनुच्छेद-संरेखण आ मार्जिनक गलतीक सम्भावना
ख. कम्प्यूटर वायरस
ग. बाढ़
घ. चित्रकला
उत्तर: क. हिज्जै, अनुच्छेद-संरेखण आ मार्जिनक गलतीक सम्भावना
व्याख्या: टाइपराइटरमे सुधार-सुविधा सीमित रहबाक कारण त्रुटि सम्भावना बेसी रहैत अछि।

प्रश्न 3865. कम्प्यूटरमे स्पेलिंग चेकिन्गक सुविधा की करैत अछि?
क. गलत हिज्जै चिन्हा सकैत अछि
ख. कागज फाड़ैत अछि
ग. संगीत गबैत अछि
घ. माटि जोतैत अछि
उत्तर: क. गलत हिज्जै चिन्हा सकैत अछि
व्याख्या: कम्प्यूटर लेखनमे त्रुटि-पहचानक साधन प्रदान करैत अछि।

प्रश्न 3866. कम्प्यूटर व्याकरणिक त्रुटि पकड़ि सकैत अछि—लेखक एहि बातसँ कोन लाभ बतबैत छथि?
क. लिखित सामग्री अधिक शुद्ध बनि सकैत अछि
ख. त्रुटि बढ़ि जाइत अछि
ग. पाठक घटैत अछि
घ. मशीन बंद भऽ जाइत अछि
उत्तर: क. लिखित सामग्री अधिक शुद्ध बनि सकैत अछि
व्याख्या: स्पेलिंग आ ग्रामर सहायता कार्यालयी लेखनकेँ सुधारैत अछि।

प्रश्न 3867. पैरा Alignment आ Margins क सुविधा कम्प्यूटरमे कोना बतायल गेल?
क. बहुत सुविधाजनक
ख. असम्भव
ग. कठिनतम
घ. अप्रासंगिक
उत्तर: क. बहुत सुविधाजनक
व्याख्या: लेखक दस्तावेज सज्जा आ रूपायनमे कम्प्यूटरक सुविधा पर बल दैत छथि।

प्रश्न 3868. लेखमे ‘Software Package’ क भूमिका की अछि?
क. चिट्ठी/दरख्वास्त लिखब, सज्जा आ प्रिन्टआउट देब
ख. खेतमे पानी देब
ग. लोकगीत गाबय लेल
घ. छठि घाट बनाबय लेल
उत्तर: क. चिट्ठी/दरख्वास्त लिखब, सज्जा आ प्रिन्टआउट देब
व्याख्या: दस्तावेज-निर्माणक आवश्यक सुविधा सॉफ्टवेयर पैकेजमे उपलब्ध मानल गेल अछि।

प्रश्न 3869. प्रिन्टआउट निकालबाक सुविधा लेखकक अनुसार कोन परिवर्तन लाबैत अछि?
क. लिखित सामग्रीकेँ साफ-सुथरा प्रतिरूपमे देबाक सुविधा
ख. केवल मौखिकता
ग. कागजहीन मौन
घ. मंचीय अभिनय
उत्तर: क. लिखित सामग्रीकेँ साफ-सुथरा प्रतिरूपमे देबाक सुविधा
व्याख्या: कम्प्यूटर लिखल सामग्रीकेँ सुगठित छापामे बदलि सकैत अछि।

प्रश्न 3870. लेखकक कार्यालयी उपयोगक उदाहरणक मुख्य शिक्षा की?
क. कम्प्यूटर लेखनक शुद्धता, रूपायन आ पुनरुत्पादन सुलभ करैत अछि
ख. कम्प्यूटर व्यर्थ अछि
ग. टाइपराइटर सदा पर्याप्त
घ. लेखन छोड़ब चाही
उत्तर: क. कम्प्यूटर लेखनक शुद्धता, रूपायन आ पुनरुत्पादन सुलभ करैत अछि
व्याख्या: कम्प्यूटरक व्यावहारिक लाभ दस्तावेज-सृजनमे स्पष्ट होइत अछि।

प्रश्न 3871. दरख्वास्त उदाहरणमे लेखक कम्प्यूटर शिक्षाकेँ कोना जमीनसँ जोड़ैत छथि?
क. दैनिक कामकाजक छोट उदाहरण द्वारा
ख. केवल सिद्धान्त द्वारा
ग. दूरस्थ विज्ञान कथा द्वारा
घ. पौराणिक कथा द्वारा
उत्तर: क. दैनिक कामकाजक छोट उदाहरण द्वारा
व्याख्या: लेख तकनीकक महत्व जटिल सिद्धान्त नहि, साधारण दफ्तरक काजसँ बुझबैत अछि।

प्रश्न 3872. एहि लेखांशक अनुसार कम्प्यूटरक लाभ केवल विशेषज्ञ लेल अछि कि आम उपयोगकर्ता लेल सेहो?
क. आम उपयोगकर्ता लेल सेहो
ख. केवल वैज्ञानिक लेल
ग. केवल सेना लेल
घ. केवल कलाकार लेल
उत्तर: क. आम उपयोगकर्ता लेल सेहो
व्याख्या: आवेदन, चिट्ठी, प्रिन्टआउट आदि उदाहरण कम्प्यूटरकेँ आम नागरिकक उपकरण बनबैत अछि।

खण्ड ३९३ : विदेह-सदेह १ — ज्योति प्रकाश लाल: क्षेत्रीय उपयोग, इंटरनेट आ संचार

प्रश्न 3873. लेखकक अनुसार कम्प्यूटर बैंकिंग क्षेत्रमे कोना प्रवेश कएने अछि?
क. धूम-धड़ाका सँ प्रयोगमे अछि
ख. कखनहुँ नहि
ग. केवल सजावट रूपमे
घ. केवल गीत लेल
उत्तर: क. धूम-धड़ाका सँ प्रयोगमे अछि
व्याख्या: लेख बैंकिंग क्षेत्रमे कम्प्यूटरक व्यापक उपयोगक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 3874. मेडिकल क्षेत्रक उल्लेख लेखक किएक करैत छथि?
क. कम्प्यूटरक उपयोग स्वास्थ्य-क्षेत्र धरि पहुँचल अछि
ख. मेडिकलमे कम्प्यूटर निषिद्ध अछि
ग. चिकित्सा अप्रासंगिक
घ. गाममे डॉक्टर नहि
उत्तर: क. कम्प्यूटरक उपयोग स्वास्थ्य-क्षेत्र धरि पहुँचल अछि
व्याख्या: उदाहरण देखबैत अछि जे कम्प्यूटर केवल कार्यालयीय लेखन नहि, विशेषज्ञ क्षेत्रमे सेहो आवश्यक अछि।

प्रश्न 3875. रेल आरक्षण आ हवाई जहाजक उदाहरण की सिद्ध करैत अछि?
क. यातायात व्यवस्था मे कम्प्यूटरक उपयोग
ख. कम्प्यूटर केवल घरमे
ग. यातायात बंद
घ. पत्राचार समाप्त
उत्तर: क. यातायात व्यवस्था मे कम्प्यूटरक उपयोग
व्याख्या: लेख आधुनिक सेवा-व्यवस्था मे कम्प्यूटरक आधारभूत भूमिका देखबैत अछि।

प्रश्न 3876. लेखक कम्प्यूटरक आवश्यकता कैँ तरकारीमे ककरासँ तुलना करैत छथि?
क. नोनसँ
ख. चीनीसँ
ग. धुआँसँ
घ. काठसँ
उत्तर: क. नोनसँ
व्याख्या: ‘तरकारीमे नोन’ रूपक कम्प्यूटरक अनिवार्यता कैँ लोकभाषिक ढंगसँ बुझबैत अछि।

प्रश्न 3877. ‘कम्प्यूटर नहि जानैत छी तँ निर्भर छी’—एहि कथनक आशय की?
क. डिजिटल कौशलक अभाव आधुनिक जीवनमे परनिर्भरता बढ़बैत अछि
ख. कम्प्यूटर जाननाइ हानि
ग. निर्भरता श्रेष्ठ
घ. कम्प्यूटर केवल खेल
उत्तर: क. डिजिटल कौशलक अभाव आधुनिक जीवनमे परनिर्भरता बढ़बैत अछि
व्याख्या: लेख कम्प्यूटर साक्षरता कैँ स्वावलम्बनक आधार मानैत अछि।

प्रश्न 3878. लेखमे अंग्रेजी कहावतक भाव की अछि?
क. कम्प्यूटर निरक्षरता आधुनिक निरक्षरता जकाँ देखल जा रहल अछि
ख. कम्प्यूटर अप्रासंगिक
ग. अंग्रेजी विरोध
घ. डाक श्रेष्ठ
उत्तर: क. कम्प्यूटर निरक्षरता आधुनिक निरक्षरता जकाँ देखल जा रहल अछि
व्याख्या: कहावत कम्प्यूटर साक्षरता कैँ आधुनिक शिक्षा-सूचक बनबैत अछि।

प्रश्न 3879. लेखक पाछुक समयक पत्राचारमे कोन साधनक भूमिका याद करैत छथि?
क. पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय, लिफाफा आ डाकघर
ख. मोबाइल ऐप मात्र
ग. नदीक नाव
घ. मंदिर घंटा
उत्तर: क. पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय, लिफाफा आ डाकघर
व्याख्या: ई अंश डाक-आधारित संचारक पुरान व्यवस्था मोन करबैत अछि।

प्रश्न 3880. पत्राचारक आधुनिक परिवर्तनमे कोन दू माध्यम आयल?
क. कुरियर आ ई-मेल
ख. नाव आ बैलगाड़ी
ग. मंदिर आ हाट
घ. तलवार आ ढाल
उत्तर: क. कुरियर आ ई-मेल
व्याख्या: लेखक बतबैत छथि जे कुरियर आ ई-मेल डाकक एकाधिकार कैँ बदलि देलक।

प्रश्न 3881. ई-मेल शहरी परिवेशमे ककरा बदलि रहल अछि?
क. पोस्ट ऑफिसक रस्ता-पेरा आ डाकियाक प्रतीक्षा
ख. कृषि उपकरण
ग. देवीगीत
घ. नदीक बहाव
उत्तर: क. पोस्ट ऑफिसक रस्ता-पेरा आ डाकियाक प्रतीक्षा
व्याख्या: ई-मेल त्वरित संचारक नब माध्यम बनि लोककेँ पुरान प्रतीक्षासँ मुक्त करैत अछि।

प्रश्न 3882. ज्योति प्रकाश लालक लेखक समग्र संदेश की अछि?
क. कम्प्यूटर शिक्षा आधुनिक जीवन, कामकाज आ संचारक जरूरी आधार अछि
ख. कम्प्यूटर त्यागू
ग. पत्राचार बंद करू
घ. तकनीकसँ भय मात्र
उत्तर: क. कम्प्यूटर शिक्षा आधुनिक जीवन, कामकाज आ संचारक जरूरी आधार अछि
व्याख्या: लेख कम्प्यूटर साक्षरताकेँ शिक्षा, कार्यालय, सेवा आ संचारक बीच केंद्रीय बनबैत अछि।

खण्ड ३९४ : विदेह-सदेह १ — ज्योति प्रकाश लाल: डिजिटल युगक मैथिली पाठ

प्रश्न 3883. लेखकक लेखनशैली तकनीकी विषयकेँ कोना सरल बनबैत अछि?
क. दैनिक उदाहरण आ लोकभाषिक रूपक द्वारा
ख. गूढ़ गणित मात्र
ग. कानूनी भाषा मात्र
घ. मौन संकेत
उत्तर: क. दैनिक उदाहरण आ लोकभाषिक रूपक द्वारा
व्याख्या: दरख्वास्त, चिट्ठी, बैंक, रेल आ ई-मेल सन उदाहरण पाठक लेल विषय सुगम बनबैत अछि।

प्रश्न 3884. कम्प्यूटरक ‘संगणक’ नामक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. स्थानीय भाषा आ आधुनिक तकनीक बीचक शब्द-संकट देखाबय लेल
ख. कम्प्यूटरक विरोध लेल
ग. अंग्रेजी कविता लेल
घ. गामक लोकगीत लेल
उत्तर: क. स्थानीय भाषा आ आधुनिक तकनीक बीचक शब्द-संकट देखाबय लेल
व्याख्या: प्रौद्योगिकी शब्दावली मे मातृभाषाक व्यवहारिक चुनौती ई अंश देखबैत अछि।

प्रश्न 3885. लेखक अँग्रेजी शब्द प्रयोगक स्वीकार्यता ककर कारण मानैत छथि?
क. तकनीकी व्यवहारमे प्रचलित शब्दक उपयोगिताक कारण
ख. मैथिलीसँ घृणा
ग. व्याकरणक अभाव
घ. काव्य-विरोध
उत्तर: क. तकनीकी व्यवहारमे प्रचलित शब्दक उपयोगिताक कारण
व्याख्या: लेखक व्यवहारिक तकनीकी भाषा मे प्रचलित शब्द स्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 3886. कम्प्यूटर साक्षरता आ स्वावलम्बनक सम्बन्ध लेखमे कोना अछि?
क. जानकारी होयबासँ व्यक्ति अपन काज अपने कऽ सकैत अछि
ख. ज्ञान परनिर्भर बनबैत अछि
ग. कम्प्यूटर आलस बढ़बैत अछि
घ. साक्षरता असंभव
उत्तर: क. जानकारी होयबासँ व्यक्ति अपन काज अपने कऽ सकैत अछि
व्याख्या: कम्प्यूटरक प्रयोग क्षमता व्यक्ति केँ आधुनिक कार्यप्रणालीमे आत्मनिर्भर बनबैत अछि।

प्रश्न 3887. लेखमे ‘छोट-मोट व्यापारी’क उल्लेख की देखबैत अछि?
क. कम्प्यूटरक उपयोग बड़े संस्थानसँ उतरि सामान्य कारोबार धरि पहुँचल
ख. कम्प्यूटर केवल विश्वविद्यालयमे
ग. व्यापारमे तकनीक निषिद्ध
घ. ग्राम्य जीवनक अन्त
उत्तर: क. कम्प्यूटरक उपयोग बड़े संस्थानसँ उतरि सामान्य कारोबार धरि पहुँचल
व्याख्या: कम्प्यूटरक प्रसार व्यापक सामाजिक-आर्थिक स्तर पर भेल देखायल अछि।

प्रश्न 3888. कम्प्यूटर ऑपरेटर राखबाक हिम्मत व्यापारिक जगतमे कोन बदलाव सूचित करैत अछि?
क. डिजिटल कामकाजक संस्थानीकरण
ख. कागजक पूर्ण वापसी
ग. व्यापार समाप्त
घ. हस्तलिखित पत्रक अनिवार्यता
उत्तर: क. डिजिटल कामकाजक संस्थानीकरण
व्याख्या: कम्प्यूटर अब व्यवसायिक ढाँचा आ श्रम-बाजारक हिस्सा बनि गेल अछि।

प्रश्न 3889. लेखमे कम्प्यूटरक उपयोगक क्षेत्र कतेक व्यापक देखायल अछि?
क. लेखन, बैंकिंग, मेडिकल, रेल, विमान, इंटरनेट आ पत्राचार धरि
ख. केवल कविता धरि
ग. केवल खेत धरि
घ. केवल पाबनि धरि
उत्तर: क. लेखन, बैंकिंग, मेडिकल, रेल, विमान, इंटरनेट आ पत्राचार धरि
व्याख्या: लेख आधुनिक जीवनक अनेक क्षेत्रमे कम्प्यूटरक प्रवेश रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 3890. लेखकक कम्प्यूटर-विषयक दृष्टि भय-प्रधान अछि वा उपयोग-प्रधान?
क. उपयोग-प्रधान
ख. भय-प्रधान मात्र
ग. निषेधात्मक
घ. मिथकीय
उत्तर: क. उपयोग-प्रधान
व्याख्या: लेख कम्प्यूटरकेँ व्यावहारिक सुविधा आ सक्षमता दैत उपकरण मानैत अछि।

प्रश्न 3891. मातृभाषामे तकनीकी लेखनक एहि प्रयासक साहित्यिक मूल्य की अछि?
क. मैथिलीमे आधुनिक ज्ञान-विषयक गद्यक विस्तार
ख. साहित्यक संकुचन
ग. भाषाक अवमूल्यन
घ. केवल अनुवाद
उत्तर: क. मैथिलीमे आधुनिक ज्ञान-विषयक गद्यक विस्तार
व्याख्या: ई लेख मैथिली गद्यकेँ विज्ञान-प्रौद्योगिकी विषय धारण करबाक क्षमता दैत अछि।

प्रश्न 3892. एहि लेखक आधार पर पाठक लेल मुख्य व्यवहारिक शिक्षा की अछि?
क. कम्प्यूटर सीखब आधुनिक जीवनक अनिवार्य दक्षता अछि
ख. कम्प्यूटरसँ दूर रहू
ग. डाकघरसँ पत्र मात्र पठाउ
घ. तकनीक पर चर्चा नहि करू
उत्तर: क. कम्प्यूटर सीखब आधुनिक जीवनक अनिवार्य दक्षता अछि
व्याख्या: लेखक कम्प्यूटर साक्षरता केँ आजुक समयक आधारभूत योग्यता मानैत छथि।

खण्ड ३९५ : विदेह-सदेह १ — कैलाश कुमार मिश्र: परिचय आ ‘यायावरी’ आरम्भ

प्रश्न 3893. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक ‘यायावरी’ स्तम्भ कोन विधासँ जुड़ल अछि?
क. यात्रा-वृत्तान्त
ख. गजल
ग. नाटक
घ. बालगीत
उत्तर: क. यात्रा-वृत्तान्त
व्याख्या: लेखमे यायावरी यात्रा-वृत्तान्त रूपमे आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 3894. कैलाशजी अपना अंग्रेजीकेँ कोन भाषा कहैत छथि?
क. व्यवसाय केर भाषा
ख. मातृभाषा
ग. गोपनीय भाषा
घ. लोकगीतक भाषा
उत्तर: क. व्यवसाय केर भाषा
व्याख्या: ओ स्पष्ट करैत छथि जे अंग्रेजी हुनकर व्यावसायिक लेखनक भाषा रहल।

प्रश्न 3895. मैथिलीमे लिखबाक कल्पना करिते लेखकक हाथ किएक काँपैत अछि?
क. कारण ओ मिथिलामे नहि रहलाह आ शुद्ध मैथिली-संस्कृत नहि पढ़लाह
ख. कारण मैथिलीमे विषय नहि
ग. कारण यात्रा नहि केलाह
घ. कारण पाठक नहि
उत्तर: क. कारण ओ मिथिलामे नहि रहलाह आ शुद्ध मैथिली-संस्कृत नहि पढ़लाह
व्याख्या: लेखक भाषिक असुरक्षा स्वीकार करैत छथि, जे लेखनकेँ ईमानदार बनबैत अछि।

प्रश्न 3896. ‘रचना’ पत्रिकामे यायावरी लिखबाक लेल के हुनका भावनात्मक रूपेँ बाध्य केलनि?
क. डॉ. विश्वनाथ झा
ख. गौतम शर्मा
ग. लंगथासा
घ. देवशंकर नवीन
उत्तर: क. डॉ. विश्वनाथ झा
व्याख्या: लेखमे डॉ. विश्वनाथ झाक आग्रहसँ यायावरी स्तम्भ आरम्भ भेल बतायल अछि।

प्रश्न 3897. विदेह लेल फेर मैथिलीमे लिखबाक आग्रह के करैत रहलाह?
क. गजेन्द्र बाबू
ख. लाखन-सारा
ग. शंकरदेव
घ. राजकमल
उत्तर: क. गजेन्द्र बाबू
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे गजेन्द्र बाबू बारंबार विदेह लेल मैथिलीमे लिखबाक आग्रह केलनि।

प्रश्न 3898. कैलाशजी पाठकसँ भाषा-विन्यासक गलती पर की आग्रह करैत छथि?
क. गलतीपर बेसी ध्यान नहि देबाक
ख. लेख नहि पढ़बाक
ग. भाषा बदलबाक
घ. यात्रा रोकबाक
उत्तर: क. गलतीपर बेसी ध्यान नहि देबाक
व्याख्या: ओ विषय आ वर्णन पढ़बाक आग्रह करैत छथि, भाषा-त्रुटि पर अत्यधिक ध्यान नहि।

प्रश्न 3899. यायावरीक आरम्भ कैलाशजी कतएसँ करैत छथि?
क. असमक नॉर्थ कछार हिल्ससँ
ख. दिल्लीसँ
ग. दरभंगासँ
घ. लन्दनसँ
उत्तर: क. असमक नॉर्थ कछार हिल्ससँ
व्याख्या: लेखक असमक रम्य, कठिन आ बहुरंगी भूखंड नॉर्थ कछार हिल्ससँ शुरुआत करैत छथि।

प्रश्न 3900. नॉर्थ कछार हिल्सकेँ लेखक कोना प्रस्तुत करैत छथि?
क. भव्य, रम्य, आकर्षक, कठिन आ अनेक रंग-उल्लाससँ भरल भूखंड
ख. सपाट मरुभूमि
ग. पूर्ण नगर मात्र
घ. असांस्कृतिक क्षेत्र
उत्तर: क. भव्य, रम्य, आकर्षक, कठिन आ अनेक रंग-उल्लाससँ भरल भूखंड
व्याख्या: लेखक ए क्षेत्रक सौन्दर्य, कठिनता आ सांस्कृतिक विविधता एक साथ देखबैत छथि।

प्रश्न 3901. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्रक प्रसंग लेखकक कार्यकेँ कोन दिशा दैत अछि?
क. उत्तर-पूर्व भारतमे संस्कृति आ विरासत संरक्षण
ख. केवल निजी पर्यटन
ग. व्यापारिक दौरा
घ. राजनीतिक अभियान
उत्तर: क. उत्तर-पूर्व भारतमे संस्कृति आ विरासत संरक्षण
व्याख्या: लेख सांस्कृतिक प्रलेखन आ संरक्षणक संस्थागत पृष्ठभूमि बतबैत अछि।

प्रश्न 3902. यायावरीक आरम्भिक स्वर कोन अछि?
क. नम्र आत्मस्वीकार, यात्रा-संवेदना आ सांस्कृतिक प्रतिबद्धता
ख. घमंड मात्र
ग. शुष्क आँकड़ा मात्र
घ. कथा-विरोध
उत्तर: क. नम्र आत्मस्वीकार, यात्रा-संवेदना आ सांस्कृतिक प्रतिबद्धता
व्याख्या: लेखक अपन भाषिक संकोच स्वीकार करैत, यात्रा आ संस्कृति रक्षणक यात्रा शुरू करैत छथि।

खण्ड ३९६ : विदेह-सदेह १ — कैलाश: श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र

प्रश्न 3903. श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र कतए स्थित सांस्कृतिक परिसर रूपमे वर्णित अछि?
क. गुवाहाटी
ख. हाफलॉंग
ग. जनकपुर
घ. लन्दन
उत्तर: क. गुवाहाटी
व्याख्या: लेखमे गुवाहाटी भ्रमण करनिहार लेल कलाक्षेत्र अवश्य देखबाक स्थल कहल गेल अछि।

प्रश्न 3904. कलाक्षेत्र लगभग कतेक बीघा पहाड़ी धरतीमे बनल कहल गेल?
क. चौंसठ बीघा
ख. दस बीघा
ग. एक बीघा
घ. हजार बीघा
उत्तर: क. चौंसठ बीघा
व्याख्या: लेखक लगभग ६४ बीघा पहाड़ी धरतीमे बनल एहि परिसरक वर्णन करैत छथि।

प्रश्न 3905. कलाक्षेत्रमे कोन-कोन सुविधा/स्थल लेखक उल्लेख करैत छथि?
क. फव्वारा, फूलबारी, भवन, संग्रहालय, कला दीर्घा, टॉय रेल
ख. केवल बाजार
ग. केवल खेत
घ. केवल रेल लाइन
उत्तर: क. फव्वारा, फूलबारी, भवन, संग्रहालय, कला दीर्घा, टॉय रेल
व्याख्या: लेख परिसरक बहु-आयामी सांस्कृतिक-सौन्दर्यात्मक संरचना बतबैत अछि।

प्रश्न 3906. असमक अधिकांश कार्यालय/घरमे प्रवेशपूर्व कोन परम्परा लेखक निभबैत छथि?
क. जूता-चप्पल बाहर खोलब
ख. ढोल बजाब
ग. दीपदान
घ. पत्र पढ़ब
उत्तर: क. जूता-चप्पल बाहर खोलब
व्याख्या: लेख असमक दैनिक सांस्कृतिक शिष्टाचारक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 3907. कलाक्षेत्र कोन संतक नाम पर बनल अछि?
क. श्रीमंत शंकरदेव
ख. विद्यापति
ग. साहेबदास
घ. राजकमल
उत्तर: क. श्रीमंत शंकरदेव
व्याख्या: असमक महान वैष्णव संत शंकरदेवक नामपर ई सांस्कृतिक परिसर बनल अछि।

प्रश्न 3908. कलाक्षेत्रक उद्देश्य की बतायल गेल?
क. उत्तर-पूर्व, विशेषतः असमक संस्कृति, विरासत आ गौरवक संरक्षण-संवर्धन
ख. केवल खेल आयोजन
ग. व्यापारिक मेळा
घ. राजनीतिक कार्यालय
उत्तर: क. उत्तर-पूर्व, विशेषतः असमक संस्कृति, विरासत आ गौरवक संरक्षण-संवर्धन
व्याख्या: लेख कलाक्षेत्रकेँ सांस्कृतिक विरासत संरक्षणक संस्थान रूपमे देखबैत अछि।

प्रश्न 3909. कलाक्षेत्रक वर्णनमे ‘लाइट एंड साउंड’ क उल्लेख ककरा लेल अछि?
क. असमक इतिहासक प्रस्तुति लेल
ख. बालश्रम लेल
ग. बाढ़क राहत लेल
घ. कम्प्यूटर प्रशिक्षण लेल
उत्तर: क. असमक इतिहासक प्रस्तुति लेल
व्याख्या: परिसरमे असम-इतिहास दर्शाबय लेल प्रकाश-ध्वनि कार्यक्रमक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3910. कलाक्षेत्रमे शिवसागरक रंगघरक ककर उल्लेख अछि?
क. रिप्रोडक्शन
ख. उपेक्षा
ग. नाश
घ. विरोध
उत्तर: क. रिप्रोडक्शन
व्याख्या: लेख परिसरमे ऐतिहासिक रंगघरक प्रतिरूप देखबाक बात कहैत अछि।

प्रश्न 3911. कलाक्षेत्रक वर्णन कैलाशजीक यात्रा-वृत्तान्तमे की भूमिका निभबैत अछि?
क. उत्तर-पूर्वक सांस्कृतिक संरचना आ संरक्षण-दृष्टि खोलैत अछि
ख. कथानक समाप्त करैत अछि
ग. कविता मात्र बनैत अछि
घ. मुख्य विषयसँ असंबद्ध
उत्तर: क. उत्तर-पूर्वक सांस्कृतिक संरचना आ संरक्षण-दृष्टि खोलैत अछि
व्याख्या: कलाक्षेत्र यात्रा-लेखक सांस्कृतिक प्रलेखन-स्वरक प्रवेशद्वार बनैत अछि।

प्रश्न 3912. गुवाहाटी जाएबला कलाप्रेमी लेल लेखकक निवेदन की अछि?
क. शंकरदेव कलाक्षेत्र अवश्य देखू
ख. एहि स्थलसँ बचू
ग. केवल बाजार जाउ
घ. संग्रहालय नहि देखू
उत्तर: क. शंकरदेव कलाक्षेत्र अवश्य देखू
व्याख्या: लेखक कलाप्रेमी यात्री लेल कलाक्षेत्रकेँ महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल मानैत छथि।

खण्ड ३९७ : विदेह-सदेह १ — कैलाश: शंकरदेव-मिथिला शोध आ गौतम शर्मा

प्रश्न 3913. बाल्मीकि प्रसाद सिंह कैलाशजीकेँ शंकरदेवक संबंधमे कोन बात कहलनि?
क. शंकरदेव मैथिल छलाह, हुनकर पितामह मिथिलासँ असम गेलाह
ख. शंकरदेव बंगालक राजा छलाह
ग. शंकरदेवक मिथिलासँ संबंध नहि
घ. शंकरदेव केवल कवि नहि
उत्तर: क. शंकरदेव मैथिल छलाह, हुनकर पितामह मिथिलासँ असम गेलाह
व्याख्या: लेखमे शंकरदेवक सम्भावित मैथिल सम्बन्धक चर्चा शोध-विषय रूपमे उठैत अछि।

प्रश्न 3914. पंजीसँ लेखककेँ कोन संकेत भेटैत अछि?
क. शंकरदेव नहि, मुदा हुनकर पिता मिथिला आएल छलाह
ख. कुनो संबंध नहि
ग. केवल लोककथा
घ. केवल मंदिर सूची
उत्तर: क. शंकरदेव नहि, मुदा हुनकर पिता मिथिला आएल छलाह
व्याख्या: लेख पंजी-आधारित ऐतिहासिक संकेतक गहन शोधक माँग करैत अछि।

प्रश्न 3915. शंकरदेव पर गहन शोधक आवश्यकता लेखक किएक देखैत छथि?
क. मैथिल-सांस्कृतिक इतिहासक सम्भावित महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध प्रमाणित करबाक लेल
ख. लोककथा मिटेबाक लेल
ग. असम-विद्वेष लेल
घ. भाषा रोकबाक लेल
उत्तर: क. मैथिल-सांस्कृतिक इतिहासक सम्भावित महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध प्रमाणित करबाक लेल
व्याख्या: यदि शंकरदेवक मैथिल संबंध सिद्ध हो, तकर सांस्कृतिक गौरवक अर्थ लेखक बतबैत छथि।

प्रश्न 3916. लेखक विद्वान मैथिल सभसँ कोन आग्रह करैत छथि?
क. बिहार सरकारसँ शंकरदेव पर शोध-परियोजना आरम्भ करबाक निवेदन
ख. शोध छोड़बाक
ग. पुस्तक दफन करबाक
घ. यात्रा रोकबाक
उत्तर: क. बिहार सरकारसँ शंकरदेव पर शोध-परियोजना आरम्भ करबाक निवेदन
व्याख्या: लेखक संस्थागत शोध-परियोजना लेल आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 3917. विद्यापतिक मिथिला-संबंधक उदाहरण किएक देल गेल?
क. पूर्वमे विवादित/दावित सम्बन्ध शोधसँ प्रमाणित भऽ सकैत अछि, से देखाबय लेल
ख. विद्यापतिसँ असंबद्धता लेल
ग. बंगाली साहित्यक नकार लेल
घ. लोकगीत रोकय लेल
उत्तर: क. पूर्वमे विवादित/दावित सम्बन्ध शोधसँ प्रमाणित भऽ सकैत अछि, से देखाबय लेल
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे जेना विद्यापतिक मैथिलत्व प्रमाणित भेल, तहि तरहें शंकरदेव पर शोध हो।

प्रश्न 3918. गौतम शर्मा के छथि, लेखमे हुनका कोना देखायल गेल?
क. शंकरदेव कलाक्षेत्रक सचिव, सुलझल आ सक्रिय व्यक्ति
ख. जटिंगा वृद्ध
ग. विदेहक सम्पादक
घ. बैंक अधिकारी
उत्तर: क. शंकरदेव कलाक्षेत्रक सचिव, सुलझल आ सक्रिय व्यक्ति
व्याख्या: गौतम शर्मा कलाक्षेत्रक सचिव रूपमे यात्रा आ सांस्कृतिक कार्यक प्रमुख सहयोगी छथि।

प्रश्न 3919. गौतम शर्माक नेतृत्वमे कलाक्षेत्रक कर्मचारी कोना काम करैत देखायल?
क. हुनकर इशारा पर समन्वित रूपसँ
ख. पूर्ण असंबद्ध
ग. केवल विरोधमे
घ. बिना व्यवस्था
उत्तर: क. हुनकर इशारा पर समन्वित रूपसँ
व्याख्या: लेखक हुनका गतिशील प्रशासक आ स्नेही संयोजक रूपमे चित्रित करैत छथि।

प्रश्न 3920. गौतम शर्माक सहयोग लेखकक असम-कार्यक लेल की बनल?
क. गुवाहाटी, तेजपुर आ आगूक सांस्कृतिक कार्यक्रमक आधार
ख. कार्य-विघ्न
ग. निजी भ्रमण मात्र
घ. भाषिक विवाद
उत्तर: क. गुवाहाटी, तेजपुर आ आगूक सांस्कृतिक कार्यक्रमक आधार
व्याख्या: हुनकर सहयोगसँ उत्तर-पूर्वमे कई सांस्कृतिक कार्यक्रम सफल भेल।

प्रश्न 3921. कैलाशजी असमक कोन क्षेत्र पर विशेष कार्य करय चाहैत छथि?
क. जे क्षेत्रक संस्कृति/विरासत पर विशेष कार्य नहि भेल हो
ख. केवल लोकप्रिय शहर
ग. केवल राजधानी
घ. केवल बाजार
उत्तर: क. जे क्षेत्रक संस्कृति/विरासत पर विशेष कार्य नहि भेल हो
व्याख्या: यायावरीक ध्येय उपेक्षित सांस्कृतिक क्षेत्रक प्रलेखन अछि।

प्रश्न 3922. एहि खण्डक केंद्रीय शोध-दृष्टि की अछि?
क. स्थानीय परम्परा, पंजी-साक्ष्य आ संस्थागत शोधकेँ जोड़ब
ख. बिना प्रमाण दावाक प्रचार
ग. इतिहास छोड़ब
घ. कला-स्थल हटायब
उत्तर: क. स्थानीय परम्परा, पंजी-साक्ष्य आ संस्थागत शोधकेँ जोड़ब
व्याख्या: लेख सम्भावना केँ निष्कर्ष नहि बनबैत; शोधक आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ३९८ : विदेह-सदेह १ — कैलाश: नॉर्थ कछार योजना आ हाफलॉंग यात्रा

प्रश्न 3923. गौतम शर्मा असमकेँ सांस्कृतिक दृष्टिएँ कतेक प्रमुख क्षेत्रमे बाँटि बतबैत छथि?
क. चारि
ख. दू
ग. दस
घ. एक
उत्तर: क. चारि
व्याख्या: अपर असम, लोअर असम, बराक घाटी आ नॉर्थ कछार घाटी—चारि विभाजन बतायल गेल।

प्रश्न 3924. नॉर्थ कछार हिल्सक विशेषता की बतायल गेल?
क. सांस्कृतिक वैविध्य, सौन्दर्य, मुदा उपद्रव-बन्दक कारण गलत छवि
ख. केवल मरुभूमि
ग. पूर्ण औद्योगिक क्षेत्र
घ. संस्कृति-विहीनता
उत्तर: क. सांस्कृतिक वैविध्य, सौन्दर्य, मुदा उपद्रव-बन्दक कारण गलत छवि
व्याख्या: क्षेत्र सौन्दर्य आ विविधतासँ भरल अछि, मुदा हिंसक घटनाक कारण लोक बचैत अछि।

प्रश्न 3925. लेखक नॉर्थ कछार घाटीकेँ असमक की कहैत छथि?
क. शृंगार-नकमुन्नी
ख. मरुभूमि
ग. राजधानी
घ. बाजार
उत्तर: क. शृंगार-नकमुन्नी
व्याख्या: एहि रूपकसँ लेखक क्षेत्रक सांस्कृतिक सौन्दर्य रेखांकित करैत छथि।

प्रश्न 3926. हाफलॉंगमे कार्यक्रम करबाक योजना कतेक दिनक छल?
क. आठ दिनक संस्कृति आ विरासत प्रलेखन कार्यक्रम
ख. एक घंटाक कार्यक्रम
ग. पूरा वर्ष
घ. केवल रातिक
उत्तर: क. आठ दिनक संस्कृति आ विरासत प्रलेखन कार्यक्रम
व्याख्या: २३ नवम्बर २००७ सँ आठ दिनक प्रलेखन कार्यक्रम बनल।

प्रश्न 3927. दिल्लीसँ गुवाहाटी पहुँचबाक बाद हाफलॉंग लेल यात्रा कोन साधनसँ भेल?
क. टाटा सूमो/जीपसँ
ख. नावसँ
ग. हवाई जहाजसँ सीधे
घ. पैदल मात्र
उत्तर: क. टाटा सूमो/जीपसँ
व्याख्या: टीम सड़कमार्गे गुवाहाटीसँ हाफलॉंग गेल।

प्रश्न 3928. गुवाहाटीसँ हाफलॉंगक दूरी सड़कमार्गे कतेक कहल गेल?
क. २६१ किलोमीटर
ख. ८ किलोमीटर
ग. ६४ बीघा
घ. ४५२९ किलोमीटर
उत्तर: क. २६१ किलोमीटर
व्याख्या: लेखमे गुवाहाटीसँ हाफलॉंग २६१ किलोमीटर बतायल अछि।

प्रश्न 3929. यात्रामे दुर्गापूजाक समय स्थानीय युवक सभ किएक रोकैत रहल?
क. चन्दा लेल
ख. दिशा पूछय लेल
ग. कथा सुनय लेल
घ. बाढ़ मापय लेल
उत्तर: क. चन्दा लेल
व्याख्या: रास्तामे उत्सव-प्रसंगक चन्दा-संग्रहक दृश्य अछि।

प्रश्न 3930. रास्तामे बड़का बसक चक्का ककरा मे धसि गेल?
क. सड़कक कात माटिमे
ख. समुद्रमे
ग. छत पर
घ. पोखरिमे
उत्तर: क. सड़कक कात माटिमे
व्याख्या: चारि घण्टा प्रतीक्षा बाद सेनाक सहायता सँ चक्का निकालल गेल।

प्रश्न 3931. हाफलॉग पहुँचलाक समय लेखकक मनमे डर किएक छल?
क. आगमनसँ दू दिन पहिले गोलीक घटना भेल छल
ख. मौसम गर्म छल
ग. बस खाली छल
घ. भोजन नहि भेटल
उत्तर: क. आगमनसँ दू दिन पहिले गोलीक घटना भेल छल
व्याख्या: क्षेत्रक असुरक्षा-छवि यात्रा-संस्मरणमे वास्तविक तनाव जोड़ैत अछि।

प्रश्न 3932. सर्किट हाउसक वर्णनमे कोन विशेषता अछि?
क. ऊँच स्थान पर अंग्रेजी हुकूमतक समयक भव्य मकान
ख. साधारण झोपड़ी
ग. नदीक नाव
घ. रेल डिब्बा
उत्तर: क. ऊँच स्थान पर अंग्रेजी हुकूमतक समयक भव्य मकान
व्याख्या: हाफलॉग सर्किट हाउससँ शहर आ आसपासक प्रकृति देखल जा सकैत अछि।

खण्ड ३९९ : विदेह-सदेह १ — कैलाश: लंगथासा आ सांस्कृतिक प्रलेखन

प्रश्न 3933. लंगथासा महोदय कोन विभागसँ जुड़ल छथि?
क. नॉर्थ कछार हिल्स ऑटोनोमस काउंसिलक कला एवं संस्कृति विभाग
ख. बैंकिंग विभाग
ग. रेल आरक्षण
घ. कम्प्यूटर कम्पनी
उत्तर: क. नॉर्थ कछार हिल्स ऑटोनोमस काउंसिलक कला एवं संस्कृति विभाग
व्याख्या: लेखमे लंगथासा कला एवं संस्कृति विभागक निदेशक रूपमे उपस्थित छथि।

प्रश्न 3934. लंगथासा कोन जनजातिसँ छथि?
क. दिमासा
ख. मैथिल ब्राह्मण
ग. बंगाली
घ. तमिल
उत्तर: क. दिमासा
व्याख्या: लेखक हुनका उदार, संस्कृति-प्रेमी आ दिमासा जनजातिक बतबैत छथि।

प्रश्न 3935. लंगथासा दिल्लीसँ आयल टोलीकेँ कोन कारणसँ गौरवक विषय मानैत छथि?
क. ओ सभ उपेक्षित क्षेत्रक संस्कृति-धरोहर संरक्षण लेल आयल छल
ख. ओ सभ व्यापार लेल आयल छल
ग. ओ सभ युद्ध लेल आयल छल
घ. ओ सभ शिकार लेल आयल छल
उत्तर: क. ओ सभ उपेक्षित क्षेत्रक संस्कृति-धरोहर संरक्षण लेल आयल छल
व्याख्या: स्थानीय सांस्कृतिक धरोहरक चिन्ता करनिहार बाहरी संस्थागत टोली हुनका लेल महत्व रखैत अछि।

प्रश्न 3936. लेखक लंगथासाकेँ प्रत्युत्तरमे कोन वचन दैत छथि?
क. यदि सहयोग भेटत तँ बेर-बेर संरक्षण-संवर्धन हेतु आएब
ख. हम फेर नहि आएब
ग. संस्कृति असम्भव
घ. केवल फोटो लैत छी
उत्तर: क. यदि सहयोग भेटत तँ बेर-बेर संरक्षण-संवर्धन हेतु आएब
व्याख्या: लेखक स्थानीय सहयोगक शर्त पर दीर्घकालीन सांस्कृतिक कार्यक आश्वासन दैत छथि।

प्रश्न 3937. लंगथासाक अनुसार अलगाववादी अथवा सरकार-विरोधी समूह सभ संस्कृतिक संबंधमे कोन भाव रखैत अछि?
क. संस्कृति-रक्षणक विरोधी नहि
ख. संस्कृति नष्ट करय चाहैत
ग. प्रलेखन निषिद्ध
घ. कला-विरोधी
उत्तर: क. संस्कृति-रक्षणक विरोधी नहि
व्याख्या: लेख एक सूक्ष्म बात कहैत अछि—राजनीतिक संघर्ष हो, तइयो सांस्कृतिक संरक्षणक प्रति सहमति सम्भव।

प्रश्न 3938. संस्कृति भवनक प्रांगणमे कार्यक्रमक अनुमति ककर प्रयाससँ भेटल?
क. लंगथासा महोदयक प्रयाससँ
ख. कौआक आवाजसँ
ग. बाढ़ अधिकारीसँ
घ. डाकघरक पत्रसँ
उत्तर: क. लंगथासा महोदयक प्रयाससँ
व्याख्या: स्थानीय प्रशासनिक-सांस्कृतिक सहयोग कार्यक्रम सम्भव बनबैत अछि।

प्रश्न 3939. प्रथम रात्रिक सांस्कृतिक कार्यक्रममे लगभग कतेक लोक उपस्थित छल?
क. पाँच हजार
ख. पाँच
ग. पचास
घ. एक लाख
उत्तर: क. पाँच हजार
व्याख्या: लेखमे पाँच हजार लोकक उपस्थिति सांस्कृतिक उत्साह देखबैत अछि।

प्रश्न 3940. उपस्थित जनसमूह कोना सजल-सँवरल छल?
क. परम्परागत रंग-बिरंग वस्त्र पहिरि
ख. सैन्य वर्दी मात्र
ग. काला कपड़ा मात्र
घ. साधारण मौन
उत्तर: क. परम्परागत रंग-बिरंग वस्त्र पहिरि
व्याख्या: विभिन्न जनजातिक लोग अपन पारम्परिक वस्त्रमे कार्यक्रममे आएल।

प्रश्न 3941. लेखक अपन भाषणमे कहैत छथि जे ओ सिखाबय नहि, ककरा लेल आएल छथि?
क. स्थानीय लोककेँ सांस्कृतिक गौरव प्रति जागृत करय आ दस्तावेजीकरण करय
ख. धर्म बदलय
ग. व्यापार सिखाबय
घ. शिकार करय
उत्तर: क. स्थानीय लोककेँ सांस्कृतिक गौरव प्रति जागृत करय आ दस्तावेजीकरण करय
व्याख्या: सांस्कृतिक प्रलेखन बाहरी उपदेश नहि, स्थानीय जागरण आ सहयोगक प्रक्रिया बनैत अछि।

प्रश्न 3942. ‘हमर कार्यक्रममे कौमा वा अर्धविराम भऽ सकैत अछि, पूर्ण विराम नहि’—एहि कथनक अर्थ की?
क. कार्य रुकत नहि, निरन्तर चलत
ख. कार्य समाप्त
ग. भाषण छोट
घ. यात्रा विफल
उत्तर: क. कार्य रुकत नहि, निरन्तर चलत
व्याख्या: लेखक सांस्कृतिक संरक्षणक दीर्घकालीन प्रतिबद्धता व्यक्त करैत छथि।

खण्ड ४०० : विदेह-सदेह १ — कैलाश: वन, बाँस आ जटिंगा दिस यात्रा

प्रश्न 3943. नॉर्थ कछार जनपदक उल्लेखमे जंगलक क्षेत्रफल कतेक बतायल गेल?
क. करीब ४५२९ वर्ग किलोमीटर
ख. ८ किलोमीटर
ग. ६४ बीघा
घ. तीन बीघा
उत्तर: क. करीब ४५२९ वर्ग किलोमीटर
व्याख्या: लेखक क्षेत्रक वन-संपदा पर तथ्यात्मक ध्यान दैत छथि।

प्रश्न 3944. तीन सुरक्षित जंगल क्षेत्रमे कोन नाम सम्मिलित अछि?
क. लांगटिंग-मूपा, कुरुंग, बोराइल
ख. गंगा, कोसी, कमला
ग. जनकपुर, दरभंगा, लन्दन
घ. पोस्ट, ईमेल, कुरियर
उत्तर: क. लांगटिंग-मूपा, कुरुंग, बोराइल
व्याख्या: लेख सुरक्षित वनक्षेत्रक नाम देत उत्तर-पूर्वक पारिस्थितिक संरचना बतबैत अछि।

प्रश्न 3945. जटिंगा पहाड़ी-गाम लए चलबाक प्रस्ताव के देलक?
क. लंगथासा, संजय डूंग आ अन्य स्थानीय अधिकारीगण
ख. ज्योति प्रकाश लाल
ग. कालीकान्त
घ. बरसामबाली काकी
उत्तर: क. लंगथासा, संजय डूंग आ अन्य स्थानीय अधिकारीगण
व्याख्या: सांस्कृतिक विभागक स्थानीय सहयोगी टोली लेखककेँ पहाड़ी आ जटिंगा दिस लए चलल।

प्रश्न 3946. गुवाहाटीमे लेखक जटिंगा संबंधमे की सुनने रहथि?
क. अन्हरिया राति रोशनी देख चिड़ै झुंडमे खसैत अछि
ख. ओतय बाढ़ नहि
ग. ओतय कम्प्यूटर मेला
घ. ओतय कथा-संकलन
उत्तर: क. अन्हरिया राति रोशनी देख चिड़ै झुंडमे खसैत अछि
व्याख्या: जटिंगाक पक्षी-रहस्य लेखकक जिज्ञासाक प्रमुख कारण बनल।

प्रश्न 3947. जटिंगा रस्तामे कोन वनस्पति विशेष रूपेँ भेटल?
क. बेंत आ बाँसक झाड़ी
ख. केवल गेहूँ
ग. नारिकेर बगान
घ. सरोवर मात्र
उत्तर: क. बेंत आ बाँसक झाड़ी
व्याख्या: लेखक उत्तर-पूर्वक बाँस-समृद्ध पारिस्थितिकी देखबैत छथि।

प्रश्न 3948. नॉर्थ कछारक धरतीमे बाँसक क्षेत्र कतेक बतायल गेल?
क. लगभग ३०७९०० हेक्टेयर
ख. केवल एक हेक्टेयर
ग. आठ किलोमीटर
घ. पाँच बीघा
उत्तर: क. लगभग ३०७९०० हेक्टेयर
व्याख्या: लेखमे बाँसक व्यापक उपस्थिति तथ्य रूपमे दी गेल अछि।

प्रश्न 3949. असम प्रदेशमे बाँसक कुल कतेक नस्ल बतायल गेल?
क. ३३
ख. ५
ग. २
घ. १००
उत्तर: क. ३३
व्याख्या: लेखक असमक बाँस-विविधताक तथ्यात्मक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 3950. जटिंगा क्षेत्रमे उपलब्ध बाँसक लगभग कतेक नस्ल बतायल गेल?
क. २०
ख. १
ग. ५०
घ. ३३३
उत्तर: क. २०
व्याख्या: असमक ३३ नस्लमे लगभग २० एहि क्षेत्रमे उपलब्ध बतायल गेल।

प्रश्न 3951. स्थानीय जीवनमे बाँसक उपयोग कोन-कोन रूपमे बतायल गेल?
क. झोपड़ी, जाफरी, पूल, बर्तन, फर्नीचर, कृषि-उपकरण, हस्तकला
ख. केवल लेखन
ग. केवल पूजा
घ. केवल जल
उत्तर: क. झोपड़ी, जाफरी, पूल, बर्तन, फर्नीचर, कृषि-उपकरण, हस्तकला
व्याख्या: बाँस स्थानीय जीवनक बहु-उपयोगी आधार रूपमे उपस्थित अछि।

प्रश्न 3952. बाँसक कोपड़सँ की बनायल जाइत अछि?
क. तरकारी आ अचार
ख. कम्प्यूटर
ग. कथा-संकलन
घ. दीवाल
उत्तर: क. तरकारी आ अचार
व्याख्या: लेख बाँसकेँ भोजन-संस्कृति धरि जोड़ि देखबैत अछि।

खण्ड ४०१ : विदेह-सदेह १ — कैलाश: जटिंगा पक्षी-रहस्य

प्रश्न 3953. जटिंगा गाम कोन रेंजक पादगिरि पर बसल अछि?
क. बोराइल रेंज
ख. हिमालय मुख्य शिखर
ग. गंगा मैदान
घ. टेम्स तट
उत्तर: क. बोराइल रेंज
व्याख्या: लेखमे जटिंगा बोराइल रेंजक foothills पर बसल बतायल अछि।

प्रश्न 3954. जटिंगा हाफलॉगसँ कतेक दूरी पर अछि?
क. आठ किलोमीटर
ख. २६१ किलोमीटर
ग. ६४ बीघा
घ. एक कोस
उत्तर: क. आठ किलोमीटर
व्याख्या: लेखक जटिंगाकेँ हाफलॉग शहरसँ आठ किलोमीटर दूर बतबैत छथि।

प्रश्न 3955. जटिंगा पहाड़ी ककर विश्राम-स्थली कहल गेल?
क. प्रवासी आ देशी चिड़ै सभक
ख. व्यापारी सभक
ग. नाटककार सभक
घ. डाकिया सभक
उत्तर: क. प्रवासी आ देशी चिड़ै सभक
व्याख्या: जटिंगा विभिन्न पक्षी समुदायक विश्राम-स्थल रूपमे वर्णित अछि।

प्रश्न 3956. चिड़ै सभ मुख्यतः कोन महिनामे अन्हरिया राति रोशनी दिस आकृष्ट होइत अछि?
क. सितम्बर-अक्टूबर
ख. जनवरी-फरवरी
ग. अप्रैल-मई
घ. दिसम्बर मात्र
उत्तर: क. सितम्बर-अक्टूबर
व्याख्या: लेखमे सितम्बर-अक्टूबरक अन्हरिया पक्षक रातिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3957. जटिंगा घटना घटबाक लेल रोशनीक कोन स्रोत उदाहरण रूपमे देल गेल?
क. टॉर्च आ मशाल
ख. सूर्योदय
ग. चाँदनी मात्र
घ. मोबाइल स्क्रीन मात्र
उत्तर: क. टॉर्च आ मशाल
व्याख्या: कृत्रिम रोशनी—टॉर्च, मशाल आदि—चिड़ै सभकेँ झलफलाबैत अछि।

प्रश्न 3958. चिड़ैमार लोक रोशनीसँ झलफलायल चिड़ै पर ककरासँ प्रहार करैत अछि?
क. बाँसक लग्गी वा बत्ती
ख. कम्प्यूटर
ग. दूधक भाँड़ा
घ. कथा-पुस्तक
उत्तर: क. बाँसक लग्गी वा बत्ती
व्याख्या: लेख शिकार-प्रथा मे बाँसक लग्गी/बत्ती उपयोगक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 3959. जटिंगा घटना लेल हवा कोन दिशासँ कोन दिशा दिस चाही बतायल गेल?
क. दक्षिण-पश्चिमसँ उत्तर-पूब
ख. उत्तर-पूबसँ दक्षिण-पश्चिम
ग. पूर्वसँ पश्चिम मात्र
घ. कोनो दिशा नहि
उत्तर: क. दक्षिण-पश्चिमसँ उत्तर-पूब
व्याख्या: वातावरणीय शर्तमे हवा-दिशा प्रमुख कारण रूपमे बतायल अछि।

प्रश्न 3960. बोराइल पहाड़ीक आसपास धूंध आ शीतक भूमिका की बतायल गेल?
क. घटनाक अनुकूल वातावरण बनबैत अछि
ख. घटना रोकैत अछि
ग. कुनो सम्बन्ध नहि
घ. केवल सौन्दर्य
उत्तर: क. घटनाक अनुकूल वातावरण बनबैत अछि
व्याख्या: धूंध, शीत आ रोशनी मिलि चिड़ै सभक झलफलाहट बढबैत अछि।

प्रश्न 3961. जटिंगा घटना मे अधिकतर कोन चिड़ै प्रभावित कहल गेल?
क. देशी चिड़ै
ख. केवल प्रवासी चिड़ै
ग. केवल पालतू मुर्गी
घ. केवल बतख
उत्तर: क. देशी चिड़ै
व्याख्या: लेखक स्पष्ट करैत छथि जे कृत्रिम रोशनीसँ प्रभावित अधिकांश देशी चिड़ै अछि।

प्रश्न 3962. ई प्रवृत्ति पूरा जटिंगा पहाड़ीमे पसरल अछि कि सीमित क्षेत्रमे?
क. मात्र डेढ़ किलोमीटर लम्बाई आ २०० मीटर चौड़ाईक खास क्षेत्रमे
ख. पूरा असममे
ग. पूरा भारतमे
घ. कुनो स्थान नहि
उत्तर: क. मात्र डेढ़ किलोमीटर लम्बाई आ २०० मीटर चौड़ाईक खास क्षेत्रमे
व्याख्या: घटना खास भौगोलिक पट्टीमे सीमित बतायल गेल।

खण्ड ४०२ : विदेह-सदेह १ — कैलाश: जटिंगा इतिहास आ संरक्षण-दृष्टि

प्रश्न 3963. एक वृद्ध खासी व्यक्तिक अनुसार जटिंगा घटना संबंधी जानकारी लगभग कहिया चलल?
क. १९१४ ई.क आसपास
ख. २००७ ई.मे प्रथम
ग. प्राचीन वैदिक कालमे
घ. १९७८ ई.मे
उत्तर: क. १९१४ ई.क आसपास
व्याख्या: लेखमे १९१४ ई.क आसपासक घटना-स्मृति दर्ज अछि।

प्रश्न 3964. बरद ताकय गेल टोली कोन वस्तुसँ मशाल बनौलक?
क. बाँसक फट्टीमे कपड़ा बान्हि मटिया तेल डालि
ख. कम्प्यूटर तारसँ
ग. नारिकेर कवचसँ
घ. कागजक नावसँ
उत्तर: क. बाँसक फट्टीमे कपड़ा बान्हि मटिया तेल डालि
व्याख्या: बरद खोजय लेल बनल मशाल जटिंगा पक्षी-घटनाक आरम्भिक अनुभवसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 3965. पहिल राति चिड़ै खसला पर स्थानीय लोक ओकरा किएक नहि पकड़लक?
क. भूत-प्रेतक भ्रम आ अनिष्टक डर छल
ख. उन्हें पक्षी नहि देखल
ग. वे शाकाहारी छलाह मात्र
घ. प्रशासन रोकने छल
उत्तर: क. भूत-प्रेतक भ्रम आ अनिष्टक डर छल
व्याख्या: जेमी नागा समुदायमे भूत-प्रेत चिड़ै बनि विचरण करैत अछि, एहन मान्यता छल।

प्रश्न 3966. १९१७ ई.क आसपास लाखन-सारा की केलनि?
क. रोशनीसँ झलफलायल चिड़ै पकड़ि घर आनि खयलनि
ख. चिड़ै बचौलनि मात्र
ग. जंगल छोड़लनि
घ. कविता लिखलनि
उत्तर: क. रोशनीसँ झलफलायल चिड़ै पकड़ि घर आनि खयलनि
व्याख्या: लाखन-साराक अनुभवक बाद चिड़ै-शिकारक प्रथा शुरू भेल।

प्रश्न 3967. लाखन-साराक घटना बाद चिड़ै सभ पर की शुरू भेल?
क. कृत्रिम रोशनीक सहारे संहार
ख. पूर्ण संरक्षण
ग. उड़ान महोत्सव
घ. कम्प्यूटर शिक्षा
उत्तर: क. कृत्रिम रोशनीक सहारे संहार
व्याख्या: भय टूटलाक बाद लोक अन्हरिया राति रोशनीसँ चिड़ै मारय लागल।

प्रश्न 3968. अंग्रेज प्रशासनकेँ जानकारी भेटला पर की भेल?
क. एहि परम्परा पर रोक लगायल गेल
ख. शिकार बढ़ायल गेल
ग. मेला बनायल गेल
घ. सड़क बन्द
उत्तर: क. एहि परम्परा पर रोक लगायल गेल
व्याख्या: औपनिवेशिक प्रशासन पक्षी-शिकार रोकबाक प्रयास कएलक।

प्रश्न 3969. स्वतंत्रता प्राप्ति बाद शिकारक स्थिति कोना भेल?
क. लोक नुका-चोरा कऽ फेर शिकार करय लगल
ख. सदैव बन्द रहल
ग. चिड़ै नष्ट नहि
घ. कोनो घटना नहि
उत्तर: क. लोक नुका-चोरा कऽ फेर शिकार करय लगल
व्याख्या: स्वतंत्रता बाद प्रतिबन्ध कमजोर पड़ल आ चोरी-छिपे शिकार शुरू भेल।

प्रश्न 3970. पर्यावरणविद, पक्षीशास्त्री, पत्रकार आदिक प्रयासक बाद प्रशासन की केलक?
क. कृत्रिम रोशनीसँ चिड़ै मारबाक प्रथा पर पुनः प्रतिबन्ध
ख. शिकारक पुरस्कार
ग. जंगल काटब
घ. मंदिर बनब
उत्तर: क. कृत्रिम रोशनीसँ चिड़ै मारबाक प्रथा पर पुनः प्रतिबन्ध
व्याख्या: बादक संरक्षण-प्रयास पक्षी-हिंसा रोकबाक दिशामे गेल।

प्रश्न 3971. जटिंगा स्थल पर लिखल मूल वाक्यक अर्थ की छल?
क. चिड़ैकेँ गोलीसँ नहि, कैमरा सँ शूट करू
ख. चिड़ै मारू
ग. प्रकाश बढ़ाउ
घ. मशाल जलाउ
उत्तर: क. चिड़ैकेँ गोलीसँ नहि, कैमरा सँ शूट करू
व्याख्या: यह संदेश पक्षी-शिकारसँ पक्षी-दर्शन आ फोटोग्राफी दिस नैतिक परिवर्तन सुझबैत अछि।

प्रश्न 3972. जटिंगा प्रसंग कैलाशजीक लेखमे कोन व्यापक संदेश दैत अछि?
क. लोकविश्वास, पर्यावरण, विज्ञान आ संरक्षणक संवाद जरूरी अछि
ख. शिकार श्रेष्ठ
ग. रहस्य छोड़ि देब
घ. संस्कृति असंबद्ध
उत्तर: क. लोकविश्वास, पर्यावरण, विज्ञान आ संरक्षणक संवाद जरूरी अछि
व्याख्या: लेख घटना केँ रोमांचक रहस्य टा नहि, संरक्षण-चेतना आ स्थानीय इतिहाससँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ४०३ : विदेह-सदेह १ — कमलानन्द झा: मैथिली कथा-संकलन ‘उदाहरण’

प्रश्न 3973. कमलानन्द झाक आलेख कोन विषय पर केन्द्रित अछि?
क. मैथिली समस्या टोह लैत कथा-संकलन ‘उदाहरण’
ख. कम्प्यूटर शिक्षा
ग. जटिंगा पक्षी
घ. विधवा कथा ‘माहुर’
उत्तर: क. मैथिली समस्या टोह लैत कथा-संकलन ‘उदाहरण’
व्याख्या: आलेख देवशंकर नवीन सम्पादित कथा-संग्रह ‘उदाहरण’क आलोचनात्मक समीक्षा अछि।

प्रश्न 3974. पिछला चारि वर्षमे प्रकाशित तीन कथा-संकलनकेँ लेखक कोन संकेत मानैत छथि?
क. मैथिली भाषा लेल शुभ संकेत
ख. साहित्यक अन्त
ग. कथा-विरोध
घ. केवल बाजार
उत्तर: क. मैथिली भाषा लेल शुभ संकेत
व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे बड़े/महत्त्वपूर्ण प्रकाशनसँ कथा-संकलन आओल, ई सकारात्मक घटना अछि।

प्रश्न 3975. लेखमे ‘मैथिली कथा संचयन’ क सम्पादक के कहल गेल?
क. शिवशंकर श्रीनिवास
ख. देवशंकर नवीन
ग. तारानन्द वियोगी
घ. राजकमल चौधरी
उत्तर: क. शिवशंकर श्रीनिवास
व्याख्या: नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित मैथिली कथा संचयन शिवशंकर श्रीनिवास द्वारा सम्पादित बतायल अछि।

प्रश्न 3976. ‘देसिल बयना’ क सम्पादक के कहल गेल?
क. तारानन्द वियोगी
ख. शिवशंकर श्रीनिवास
ग. कैलाश मिश्र
घ. ज्योति प्रकाश लाल
उत्तर: क. तारानन्द वियोगी
व्याख्या: सन् २००७ मे तारानन्द वियोगी सम्पादित ‘देसिल बयना’क उल्लेख अछि।

प्रश्न 3977. ‘उदाहरण’ क सम्पादक के छथि?
क. देवशंकर नवीन
ख. राजमोहन झा
ग. मायानन्द मिश्र
घ. प्रदीप बिहारी
उत्तर: क. देवशंकर नवीन
व्याख्या: प्रकाशन विभागसँ देवशंकर नवीन सम्पादित ‘उदाहरण’ प्रकाशित भेल।

प्रश्न 3978. ‘उदाहरण’मे कुल कतेक कथा संकलित बतायल गेल?
क. छत्तीस
ख. दस
ग. एक
घ. सौ
उत्तर: क. छत्तीस
व्याख्या: लेखमे ललितसँ सियाराम सरस धरि कुल ३६ कथा संकलित कहल गेल।

प्रश्न 3979. राजकमल चौधरीक कोन कथा घाघ मैथिल समाजक टोप-टहंकार अनावृत्त करैत कहल गेल?
क. एकटा चम्पाकली एकटा विषधर
ख. भए प्रकट कृपाला
ग. मकड़ी
घ. तानपूरा
उत्तर: क. एकटा चम्पाकली एकटा विषधर
व्याख्या: कमलानन्द झा एहि कथाकेँ समाजक ढोंग आ बहुविवाह-परम्परासँ जोड़ि पढ़ैत छथि।

प्रश्न 3980. ‘एकटा चम्पाकली एकटा विषधर’मे तेरह वर्षीया चम्पाक विवाह ककरासँ करबाक योजना अछि?
क. बासठ वर्षक वृद्ध शशि बाबूसँ
ख. तरुण कलाकारसँ
ग. पत्रकारसँ
घ. सैनिकसँ
उत्तर: क. बासठ वर्षक वृद्ध शशि बाबूसँ
व्याख्या: कथा सामाजिक लोभ, गरीबी आ बहुविवाहक अमानवीयता उजागर करैत अछि।

प्रश्न 3981. मायानन्द मिश्रक ‘भए प्रकट कृपाला’ केन पक्षसँ जुड़ल कहल गेल?
क. पत्रकारिता आ मीडिया-तंत्र
ख. कृषि
ग. कम्प्यूटर
घ. पक्षीशास्त्र
उत्तर: क. पत्रकारिता आ मीडिया-तंत्र
व्याख्या: आलेख एहि कथा केँ मीडिया-तंत्रक संवेदनशील पक्षक साक्षात्कार करबैत मानैत अछि।

प्रश्न 3982. ‘भए प्रकट कृपाला’मे पत्रकारक हड़बड़ी ककर खबरे लेल अछि?
क. कॉरपोरेट बादशाह श्याम बोगलाक मृत्यु
ख. बाढ़क आँकड़ा
ग. जटिंगा पक्षी
घ. बालश्रम
उत्तर: क. कॉरपोरेट बादशाह श्याम बोगलाक मृत्यु
व्याख्या: कथा नामी पत्रकार बनयबाक हड़बड़ी आ खबर-प्रतिस्पर्धा देखबैत अछि।

खण्ड ४०४ : विदेह-सदेह १ — कमलानन्द झा: कथा-चयन, स्त्री-चेतना आ आलोचना

प्रश्न 3983. लिली रे क कथा ‘विधिक विधान’मे लेखक की सफल मानैत छथि?
क. कामकाजी स्त्रीक संघर्षक यथार्थ आ कलात्मक उभार
ख. केवल हास्य
ग. पक्षी-रहस्य
घ. कम्प्यूटर प्रशिक्षण
उत्तर: क. कामकाजी स्त्रीक संघर्षक यथार्थ आ कलात्मक उभार
व्याख्या: आलेख ई कथाकेँ कामकाजी स्त्रीक संघर्ष देखाबयमे सफल मानैत अछि।

प्रश्न 3984. उषाकिरण खानक ‘त्यागपत्र’ पर लेखकक आपत्ति की अछि?
क. ग्रामीण युवतीक जिजीविषा पूर्ण रूपेँ व्यक्त नहि भऽ सकल
ख. कथा बहुत लंबी
ग. कथा राजनीति-विहीन
घ. कथा मे गीत नहि
उत्तर: क. ग्रामीण युवतीक जिजीविषा पूर्ण रूपेँ व्यक्त नहि भऽ सकल
व्याख्या: चम्पा पात्रक विद्रोहक सम्भावना परम्परा-केंचुलमे समेटि जाएत अछि, ई आलोचना अछि।

प्रश्न 3985. प्रदीप बिहारीक ‘मकड़ी’ स्त्री-चेतना दृष्टिएँ कोना कहल गेल?
क. अपेक्षाकृत मेच्योर आ बोल्ड कथा
ख. नवसाक्षर कथा
ग. इति-वृत्त मात्र
घ. कम्प्यूटर लेख
उत्तर: क. अपेक्षाकृत मेच्योर आ बोल्ड कथा
व्याख्या: सुनीताक संघर्ष, पुनर्विवाह, श्रम आ देह-यथार्थ कथा केँ साहसी बनबैत अछि।

प्रश्न 3986. देवशंकर नवीनक ‘पेंपी’ कोन समस्या व्यक्त करैत अछि?
क. पति-पत्नी सम्बन्ध-विच्छेदक प्रभाव बेटी पर
ख. जटिंगा पक्षी
ग. कृषि उपकरण
घ. बाँसक उपयोग
उत्तर: क. पति-पत्नी सम्बन्ध-विच्छेदक प्रभाव बेटी पर
व्याख्या: कथा बच्चाक मनोमस्तिष्क पर पारिवारिक टूटनक करुण प्रभाव देखबैत अछि।

प्रश्न 3987. राजमोहन झाक ‘भोजन’ पर कमलानन्द झाक टिप्पणी की संकेत करैत अछि?
क. स्त्रीक बाहर काज करबाक विरोध बहन्ने प्रगतिशील मुद्राक आलोचना
ख. भोजन-विधि
ग. कम्प्यूटर-भोजन
घ. केवल रसिकता
उत्तर: क. स्त्रीक बाहर काज करबाक विरोध बहन्ने प्रगतिशील मुद्राक आलोचना
व्याख्या: लेखक राजमोहनजीक कथन-कुशलता आ दृष्टि-विरोधाभास पर आलोचनात्मक टिप्पणी करैत छथि।

प्रश्न 3988. तारानन्द वियोगीक ‘पन्द्रह अगस्त सन्तानबे’ क मुख्य राजनीतिक निष्पत्ति की बतायल?
क. निम्नवर्गक आर्थिक-सामाजिक सुधारसँ आत्मसम्मान आ राजनीतिक चेतना अंकुरित भेल
ख. राजनीति असंभव
ग. सवर्ण-पार्टी स्थायी
घ. वर्ग-प्रश्न गौण
उत्तर: क. निम्नवर्गक आर्थिक-सामाजिक सुधारसँ आत्मसम्मान आ राजनीतिक चेतना अंकुरित भेल
व्याख्या: कथा आर्थिक आधार आ राजनीतिक चेतनाक सम्बन्ध खोलैत अछि।

प्रश्न 3989. अशोकक ‘तानपूरा’ क मध्यवर्गीय आलोचना कोन अछि?
क. संगीत-प्रेमक दावा, मुदा पुत्रक संगीत-साधनाक विरोध
ख. बाढ़-वर्णन
ग. डाक-व्यवस्था
घ. देवीगीत
उत्तर: क. संगीत-प्रेमक दावा, मुदा पुत्रक संगीत-साधनाक विरोध
व्याख्या: कथा मध्यवर्गीय हिप्पोक्रेसी कैं उघाड़ैत अछि—स्वयं लाभ लेल कला, सन्तान लेल कमाई-यंत्र।

प्रश्न 3990. लेखक कतोक कथा कैं ‘शुष्क गद्य’ किएक मानैत छथि?
क. यथार्थक मोहमे घटना-विवरण मात्र रहि गेल, क्षणक मर्म नहि आइल
ख. कथा बहुत प्रतीकात्मक
ग. भाषा अति कठिन
घ. नारी पात्र बेसी
उत्तर: क. यथार्थक मोहमे घटना-विवरण मात्र रहि गेल, क्षणक मर्म नहि आइल
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे इति-वृत्त जब संवेदना नहि देत, त कथा गद्य-विवरण बनि जाइत अछि।

प्रश्न 3991. मैथिली कथा-संकलन पर लेखकक एक महत्त्वपूर्ण आपत्ति की अछि?
क. तीनूँ संकलनमे कथाकार सूचीमे अद्भुत साम्य आ चयनमे कथाकार-प्रधानता
ख. कथा बहुत बेसी नव
ग. सन्दर्भ बहुत स्पष्ट
घ. प्रकाशन अत्यधिक
उत्तर: क. तीनूँ संकलनमे कथाकार सूचीमे अद्भुत साम्य आ चयनमे कथाकार-प्रधानता
व्याख्या: लेखक चाहैत छथि जे अन्य श्रेष्ठ कथासभ सेहो प्रकाशमे आए।

प्रश्न 3992. ‘उदाहरण’मे कथाक प्रकाशन-वर्ष आ सन्दर्भक अनुपस्थिति लेखकक अनुसार किएक खटकैत अछि?
क. समय-सीमा बिना कथाक सम्यक मूल्यांकन कठिन
ख. पृष्ठ घटि जाएत
ग. कथा लंबी होयत
घ. पाठक नाम नहि पढ़त
उत्तर: क. समय-सीमा बिना कथाक सम्यक मूल्यांकन कठिन
व्याख्या: आलोचक काल-परिप्रेक्ष्यकैं साहित्यिक मूल्यांकन लेल आवश्यक मानैत छथि।

खण्ड ४०५ : विदेह-सदेह १ — केदारनाथ चौधरी: परिचय आ ‘माहुर’क आरम्भ

प्रश्न 3993. केदारनाथ चौधरीक जन्म कतय बतायल गेल अछि?
क. नेहरा, जिला दरभंगा
ख. जनकपुरधाम
ग. सलेमपुर
घ. समौल
उत्तर: क. नेहरा, जिला दरभंगा
व्याख्या: परिचयमे हुनक जन्म-स्थान नेहरा, दरभंगा कहल गेल अछि।

प्रश्न 3994. केदारनाथ चौधरी अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर कहाँसँ केलनि?
क. कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय
ख. दिल्ली विश्वविद्यालय
ग. जे.एन.यू.
घ. असम विश्वविद्यालय
उत्तर: क. कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय
व्याख्या: परिचयमे कैलिफोर्निया विश्वविद्यालयसँ अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तरक उल्लेख अछि।

प्रश्न 3995. सानफ्रांसिस्को विश्वविद्यालयसँ हुनक कोन डिग्री बतायल गेल?

क. एम.बी.ए.

ख. पी.एच.डी.

ग. बी.लिब.

घ. लॉ

उत्तर: क. एम.बी.ए.

व्याख्या: लेखक-परिचयमे १९७१ मे सानफ्रांसिस्को विश्वविद्यालयसँ एम.बी.ए.क सूचना अछि।

प्रश्न 3996. भारत आगमनक वर्ष परिचयमे कोन बतायल गेल?

क. १९७८

ख. २००४

ग. १९५८

घ. २००८

उत्तर: क. १९७८

व्याख्या: परिचयक क्रममे १९७८ मे भारत आगमन लिखल अछि।

प्रश्न 3997. केदारनाथ चौधरी कोन मैथिली फिल्मसँ सह-निर्माता रूपेँ जुड़ल बतायल गेलाह?

क. ममता

ख. उगना हाल्ट

ग. सीतायण

घ. विदेशिया

उत्तर: क. ममता

व्याख्या: परिचयमे मैथिली फिल्म ‘ममता’क गाबय गीतक सह-निर्माण-संबंध अछि।

प्रश्न 3998. ‘माहुर’ आरम्भमे रंजना भाइजीक हाथक पोटरीमे पहिले की अनुमान करैत छथि?

क. माता दुर्गाक प्रसाद/मीट

ख. कम्प्यूटर

ग. पत्र

घ. फूल

उत्तर: क. माता दुर्गाक प्रसाद/मीट

व्याख्या: आरम्भिक दृश्य पोटरी, ‘मीट’ आ दुर्गा-प्रसादक भ्रमसँ कथा-तनाव खोलैत अछि।

प्रश्न 3999. रंजनाक भाइजीक नाम की अछि?

क. आकाश

ख. भास्कर

ग. यदुनाथ

घ. बिदेसरा

उत्तर: क. आकाश

व्याख्या: कथामे भाइजी आकाश छथि, जिनका हाथमे पोटरी रहैत अछि।

प्रश्न 4000. रंजनाक भाइजी पोटरी देबाक क्षणमे की करैत छथि?

क. हाथ पाछाँ घीचि लैत छथि आ थरथराइत ठाढ़ रहैत छथि

ख. हँसि कऽ चलि जाइत छथि

ग. पत्र लिखैत छथि

घ. नाच शुरू करैत छथि

उत्तर: क. हाथ पाछाँ घीचि लैत छथि आ थरथराइत ठाढ़ रहैत छथि

व्याख्या: आकाशक शारीरिक प्रतिक्रिया अपराध-बोधक आरम्भिक संकेत बनैत अछि।

खण्ड ४०५ : विदेह-सदेह १ — केदारनाथ चौधरी: परिचय आ ‘माहुर’क आरम्भ

प्रश्न 4001. आकाशक आँखिसँ की बहय लगैत अछि?
क. ढबढब नोर
ख. हँसी
ग. नींद
घ. धुँआ
उत्तर: क. ढबढब नोर
व्याख्या: नोर आ काँपब दृश्यकेँ शोकमय बनबैत अछि।

प्रश्न 4002. कथा-आरम्भक भाव-दिशा की अछि?
क. एक घरेलू वस्तु पोटरीसँ सामाजिक करुणा आ अपराध-बोधक उद्घाटन
ख. सामान्य हास्य-प्रसंग
ग. कम्प्यूटर-शिक्षा
घ. यात्रा-वृत्तांत
उत्तर: क. एक घरेलू वस्तु पोटरीसँ सामाजिक करुणा आ अपराध-बोधक उद्घाटन
व्याख्या: मीटक पोटरी रंजनाक विधवापन आ सामाजिक क्रूरता स्मरित करयबला प्रतीक बनैत अछि।

खण्ड ४०६ : विदेह-सदेह १ — ‘माहुर’: रंजना, विधवापन आ परिवारक स्तब्धता

प्रश्न 4003. रंजना आकाशसँ कतेक छोट कहल गेलीह?
क. बारह वर्ष
ख. दू वर्ष
ग. पच्चीस वर्ष
घ. एक मास
उत्तर: क. बारह वर्ष
व्याख्या: कथामे रंजना आकाशक एकमात्र छोट बहिन, बारह वर्ष छोट बतायल गेलीह।

प्रश्न 4004. रंजना कथाक एहि भागमे उम्रक कोन दहलीज पर छथि?
क. पन्द्रहम वर्षमे पयर रखने
ख. साठिम वर्षमे
ग. पाँच वर्षक
घ. तीस वर्षक
उत्तर: क. पन्द्रहम वर्षमे पयर रखने
व्याख्या: एहि कम उम्रमे विधवापन कथा-करुणाकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि।

प्रश्न 4005. रंजना हाथमे चूड़ीक बदला की बान्हने छलीह?
क. घड़ी
ख. फूल
ग. तलवार
घ. पान
उत्तर: क. घड़ी
व्याख्या: चूड़ीक अभाव विधवापनक सांस्कृतिक संकेत अछि।

प्रश्न 4006. रंजनाक पति भास्कर चौधरीक पद/पहचान की रहल?
क. कमीशन प्राप्त सेकेण्ड लेफ्टिनेंट
ख. बैंककर्मी
ग. पुजारी
घ. पत्रकार
उत्तर: क. कमीशन प्राप्त सेकेण्ड लेफ्टिनेंट
व्याख्या: भास्कर सैनिक पदपर छलाह आ विवाहक बाद ड्यूटी पर गेलाह।

प्रश्न 4007. भास्कर चौधरी कतय ड्यूटी पर पहुँचला पर शहीद भेलाह?
क. कश्मीर
ख. दरभंगा
ग. पानापुर
घ. लंदन
उत्तर: क. कश्मीर
व्याख्या: कथामे कश्मीरमे आतंकवादीसँ मुठभेड़मे हुनक शहादत कहल गेल अछि।

प्रश्न 4008. आकाशक पेशा/काजक स्थान की बतायल गेल?
क. दरभंगाक एक बैंकमे कार्यरत
ख. मंदिरक पुजारी
ग. कविता शिक्षक
घ. हाफलॉंग अधिकारी
उत्तर: क. दरभंगाक एक बैंकमे कार्यरत
व्याख्या: आकाश लगक शहर दरभंगाक बैंकमे काज करैत छथि।

प्रश्न 4009. आकाश गामसँ बैंक कोना जाए-आबय छथि?
क. स्कूटर पर
ख. नाव पर
ग. हवाई जहाजसँ
घ. बैलगाड़ी पर
उत्तर: क. स्कूटर पर
व्याख्या: कथामे आकाश गामहिसँ स्कूटर पर बैंक जाए-आबय छथि।

प्रश्न 4010. दशहराक छुट्टीक कारण कथा-दृश्य कोन पाबनिक पृष्ठभूमि बनबैत अछि?
क. अष्टमी आ दुर्गास्थानक बलिप्रदान
ख. होली
ग. दीपावली
घ. मकर संक्रान्ति
उत्तर: क. अष्टमी आ दुर्गास्थानक बलिप्रदान
व्याख्या: गामक दुर्गास्थान, अष्टमी आ बलिप्रदान कथा-प्रतीकक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 4011. आकाश पोटरीक मीट अंततः की करैत छथि?
क. नाला मे फेकि दैत छथि
ख. भोजनमे परोसैत छथि
ग. मंदिरमे चढ़बैत छथि
घ. बाज़ारमे बेचैत छथि
उत्तर: क. नाला मे फेकि दैत छथि
व्याख्या: मीट फेकनाइ अपराध-बोध आ बहिनक विधवापनक स्मृति सँ उपजल प्रतिक्रिया अछि।

प्रश्न 4012. परिवारक सामूहिक क्रन्दनमे के अडिग/अविचल ठाढ़ रहैत छथि?
क. रंजना
ख. बिदेसरा
ग. मजहर
घ. राममणि
उत्तर: क. रंजना
व्याख्या: परिवार कानैत अछि, मुदा रंजना शून्य नज़र सँ सभ देखैत अचल ठाढ़ छथि।

खण्ड ४०७ : विदेह-सदेह १ — ‘माहुर’: पाठी, बलि आ विधवा-समाजक रूपक

प्रश्न 4013. कथा रंजनाक विधवापनकेँ ककर बलिसँ तुलना करैत अछि?
क. मनता मानल पाठी/छागरक बलि
ख. कम्प्यूटरक खराबी
ग. नदीक बाढ़
घ. जटिंगा चिड़ै
उत्तर: क. मनता मानल पाठी/छागरक बलि
व्याख्या: कथाकार विधवाकेँ बलिदानक वस्तु जकाँ देखनिहार समाजक क्रूर दृष्टि उजागर करैत छथि।

प्रश्न 4014. रंजनाक जातीय-सांस्कृतिक समाजमे कोन व्यवस्था नहि रहैक?
क. विधवा पुनर्विवाहक नियम/निदान
ख. मेला
ग. पान दोकान
घ. पत्र-लेखन
उत्तर: क. विधवा पुनर्विवाहक नियम/निदान
व्याख्या: कथामे दुखक मूल कारण विधवाक लेल सामाजिक समाधानक अभाव अछि।

प्रश्न 4015. रंजनाक विधवापनक प्रति समाज कोन मिथकीय तर्क लगबैत अछि?
क. पूर्वजन्मक पापक भोग
ख. वैज्ञानिक शोध
ग. कैरियर सलाह
घ. नव-वर्ष उत्सव
उत्तर: क. पूर्वजन्मक पापक भोग
व्याख्या: कथा एहन भाग्यवादक आलोचनात्मक अनावरण करैत अछि।

प्रश्न 4016. बलि देखिनिहारक दृष्टि कथामे मुख्यतः की सोचैत कहल गेल?
क. भुजल माँसक स्वाद
ख. पशु-दया
ग. अर्थशास्त्र
घ. कम्प्यूटर साक्षरता
उत्तर: क. भुजल माँसक स्वाद
व्याख्या: तमाशबीनक स्वाद-लालसा सामाजिक संवेदनहीनताक रूपक बनैत अछि।

प्रश्न 4017. विधवा रंजनासँ समाज की-की सेवा अपेक्षित करैत अछि?
क. टहल-टिकोरा, अदौरी-कुम्हरौरी, भानस, तीर्थ-भनसिया आदि
ख. सॉफ्टवेयर लेखन
ग. बैंक प्रबन्धन
घ. पक्षी शोध
उत्तर: क. टहल-टिकोरा, अदौरी-कुम्हरौरी, भानस, तीर्थ-भनसिया आदि
व्याख्या: कथा विधवाकेँ स्वायत्त मनुष्य नहि, उपलब्ध श्रम-देह मानयबला दृष्टि देखबैत अछि।

प्रश्न 4018. ‘छौड़ा सँ बूढ़बा तकक करेजक तपन’ वाक्यांशक संकेत की अछि?
क. विधवाक देह पर पुरुष-दृष्टिक हिंस्र अधिकार-भाव
ख. मौसम-विज्ञान
ग. कला-दीर्घा
घ. पत्राचार
उत्तर: क. विधवाक देह पर पुरुष-दृष्टिक हिंस्र अधिकार-भाव
व्याख्या: ई वाक्य समाजक लैंगिक वासनात्मक हिंसा उजागर करैत अछि।

प्रश्न 4019. बरसामबाली काकीक कथनक भाव की अछि?
क. समाज विधवाकेँ ‘ईश्वरक इंतजाम’ मानि उपयोगी वस्तु बना दैत अछि
ख. विधवाक अधिकार
ग. कविता-सौन्दर्य
घ. जंगल-संरक्षण
उत्तर: क. समाज विधवाकेँ ‘ईश्वरक इंतजाम’ मानि उपयोगी वस्तु बना दैत अछि
व्याख्या: काकीक कथनक माध्यमे कथाकार सामाजिक क्रूर सामान्यीकरण देखबैत छथि।

प्रश्न 4020. कथाकार ‘मनता मानल पाठी’ आ रंजनाक बीच फरक पूछि की करैत छथि?
क. सामाजिक उपभोग-मानसिकताक व्यंग्यात्मक पर्दाफाश
ख. भोजन-विधि
ग. राजनीतिक प्रचार
घ. यात्रा-मार्ग
उत्तर: क. सामाजिक उपभोग-मानसिकताक व्यंग्यात्मक पर्दाफाश
व्याख्या: एहि प्रश्नवाचक शैलीसँ विधवाक मानवीयता नकारयबला समाजक आलोचना होइत अछि।

प्रश्न 4021. एहि भागमे व्यंग्यक लक्ष्य के अछि?
क. सनातन कहि जड़ सामाजिक अमानवीयता केँ ढाकनिहार व्यवस्था
ख. बालक खेल
ग. बाँसक प्रजाति
घ. डाकिया
उत्तर: क. सनातन कहि जड़ सामाजिक अमानवीयता केँ ढाकनिहार व्यवस्था
व्याख्या: कथाकार परम्पराक नाम पर विधवा-विरोधी मानसिकता पर प्रहार करैत छथि।

प्रश्न 4022. ‘माहुर’ शीर्षकक संकेत एहि खण्डमे कोना खुलैत अछि?
क. समाजक भीतर पसारल धीमा विष रूपी अमानवीयता
ख. मीठ फल
ग. कम्प्यूटर वायरस
घ. चिड़ै-महोत्सव
उत्तर: क. समाजक भीतर पसारल धीमा विष रूपी अमानवीयता
व्याख्या: विधवाक सामाजिक स्थिति कथा-शीर्षकक विषाक्त अर्थ खोलय लगैत अछि।

खण्ड ४०८ : विदेह-सदेह १ — ‘माहुर’: पानापुर, दुर्गामन्दिर आ पुजारी-परिवार

प्रश्न 4023. रंजनाक प्रसंगक बाद कथा कोन गामक घटना दिस मुड़ैत अछि?
क. पानापुर
ख. जनकपुर
ग. हाफलॉंग
घ. सलेमपुर
उत्तर: क. पानापुर
व्याख्या: कथाकार प्रथम प्रसंगक बाद पानापुर गाममे दोसर घटना आरम्भ करैत छथि।

प्रश्न 4024. पानापुर गामक सामाजिक बनावट कोना बतायल गेल?
क. सभ जाति, समुदाय आ सम्प्रदायक लोकक निवास
ख. केवल एक परिवार
ग. निर्जन जंगल
घ. विदेशी नगर
उत्तर: क. सभ जाति, समुदाय आ सम्प्रदायक लोकक निवास
व्याख्या: गाम सामाजिक बहुलताक स्थान रूपमे रेखांकित अछि।

प्रश्न 4025. पानापुर आर्थिक रूपेँ कोना कहल गेल?
क. सम्पन्न
ख. पूर्ण उजाड़
ग. केवल पर्वतीय
घ. रेगिस्तान
उत्तर: क. सम्पन्न
व्याख्या: गामक आर्थिक सम्पन्नता धार्मिक-सामाजिक संस्थानक पृष्ठभूमि बनैत अछि।

प्रश्न 4026. पानापुरक प्रसिद्ध दुर्गा मन्दिर कतय पसरल छल?
क. पैघ पोखरिक पूबरी भीड़ पर तीन-चार बीघा मे
ख. रेलवे स्टेशन पर
ग. कछार पहाड़ी पर
घ. हवाई अड्डा पर
उत्तर: क. पैघ पोखरिक पूबरी भीड़ पर तीन-चार बीघा मे
व्याख्या: कथा मन्दिरक स्थान आ विस्तार स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 4027. दशहरा समय मन्दिर परिसरमे की-की आयोजित होइत छल?
क. मेला, नौटंकी, नाच-गान
ख. कम्प्यूटर परीक्षा
ग. पक्षी-शिकार
घ. कथा-संकलन विमोचन
उत्तर: क. मेला, नौटंकी, नाच-गान
व्याख्या: दुर्गा मन्दिर धार्मिके नहि, सामुदायिक सांस्कृतिक केन्द्र सेहो अछि।

प्रश्न 4028. दुर्गा मन्दिरक पुजारीक नाम की छल?
क. कालीकान्त ओझा
ख. आकाश
ग. मजहर
घ. केदारनाथ
उत्तर: क. कालीकान्त ओझा
व्याख्या: पानापुर प्रसंगमे कालीकान्त ओझा पुजारी छथि।

प्रश्न 4029. कालीकान्त ओझाक देह-वर्णनमे कोन गुण प्रमुख अछि?
क. दुब्बर-पातर, वैष्णव, मृदुभाषी
ख. बैंक अधिकारी
ग. सैनिक
घ. टेलीविजन संचालक
उत्तर: क. दुब्बर-पातर, वैष्णव, मृदुभाषी
व्याख्या: कथाकार पुजारीक बाह्य-संयम आ सामाजिक छवि उभारैत छथि।

प्रश्न 4030. पुजारीक पत्नीक वर्णनमे कोन विरोधाभास उपस्थित अछि?
क. पुजारीक वैष्णव-संयमक बरअक्स माँस-माछ, बीड़ी, पान-जर्दा प्रिय व्यक्तित्व
ख. पूर्ण मौन तपस्विनी
ग. विदेशी शोधक
घ. बाल कलाकार
उत्तर: क. पुजारीक वैष्णव-संयमक बरअक्स माँस-माछ, बीड़ी, पान-जर्दा प्रिय व्यक्तित्व
व्याख्या: ई विरोधाभास परिवारक पाखण्डपूर्ण/मांसल वास्तविकता खोलैत अछि।

प्रश्न 4031. पुजारी-पत्नी मंदिरक आमदनी पर कोना अधिकार रखैत कहल गेलीह?
क. पूरा एकाधिकार
ख. कोनो अधिकार नहि
ग. सरकारक नियंत्रण
घ. यात्रीक दान मात्र
उत्तर: क. पूरा एकाधिकार
व्याख्या: मंदिरक आय पर हुनक अधिकार धार्मिक-सत्ता आ घरेलू-सत्ता जोडैत अछि।

प्रश्न 4032. पुजारीजी पत्नी सँ कोना व्यवहार करैत/डेराइत बतायल गेलाह?
क. सोझा आबयमे काँपत आ डेरायल रहैत
ख. उनका आदेश दैत
ग. उपेक्षा करैत
घ. उन्हें खोजय विदेश जाइत
उत्तर: क. सोझा आबयमे काँपत आ डेरायल रहैत
व्याख्या: पुजारीक घरेलू भय कथा मे हास्य-व्यंग्य आ सत्ता-विपर्यय दूनू बनबैत अछि।

खण्ड ४०९ : विदेह-सदेह १ — ‘माहुर’: यदुनाथ, कामिनी आ बिदेसरा कुएक

प्रश्न 4033. कालीकान्त ओझाक पुत्रक नाम की छल?
क. यदुनाथ ओझा
ख. भास्कर चौधरी
ग. कृष्णमोहन
घ. कुमार मनोज
उत्तर: क. यदुनाथ ओझा
व्याख्या: कथामे पुजारीक पुत्र यदुनाथ ओझा छथि।

प्रश्न 4034. यदुनाथक उपनयनक बाद अल्प समयमे की भेल?
क. विवाह
ख. विदेश-यात्रा
ग. पी.एच.डी.
घ. बैंक-नोकरी
उत्तर: क. विवाह
व्याख्या: उपनयनक बखर भरिक भीतर विवाह भऽ गेलनि।

प्रश्न 4035. यदुनाथक पत्नी ककर बेटी छलीह?
क. गंगा तटक पिहुआ गामक मन्दिर-पुजारीक बेटी
ख. सैनिकक बेटी
ग. बैंककर्मी बेटी
घ. डॉक्टरक बेटी
उत्तर: क. गंगा तटक पिहुआ गामक मन्दिर-पुजारीक बेटी
व्याख्या: कामिनी धर्म-संस्कारित वातावरणसँ सासुर अबैत छथि।

प्रश्न 4036. कामिनीक सासुर पहुँचला पर पानापुरक प्रतिक्रिया की छल?
क. हुनक सौन्दर्यसँ पूरा गाम गमकि उठल
ख. कोनो ध्यान नहि
ग. सब पलायन कएल
घ. मेला बन्द भऽ गेल
उत्तर: क. हुनक सौन्दर्यसँ पूरा गाम गमकि उठल
व्याख्या: कामिनीक अनुपम रूप कथा-तनावक केन्द्र बनैत अछि।

प्रश्न 4037. कामिनी कोन संस्कार लऽ सासुर आएल रहथि?
क. सासु-ससुरक सेवा आ पतिक आदेश पालन
ख. शिकार-विद्या
ग. कम्प्यूटर-प्रोग्रामिंग
घ. न्यूक्लियर नीति
उत्तर: क. सासु-ससुरक सेवा आ पतिक आदेश पालन
व्याख्या: कथा हुनक संस्कार आ सासुरक वातावरणक टकराव बनबैत अछि।

प्रश्न 4038. बिदेसरा कुएक गाममे ककर रूपमे मानल जाइत छल?
क. सब सँ तेज-तर्रार सड़क-छाप स्वास्थ्य-कर्मी/कुएँक
ख. राजकवि
ग. पुजारी
घ. सैनिक
उत्तर: क. सब सँ तेज-तर्रार सड़क-छाप स्वास्थ्य-कर्मी/कुएँक
व्याख्या: गामक स्वास्थ्य-व्यवस्था कमजोर छल, ताहिमे बिदेसरा कुएक प्रभावी व्यक्ति बनल।

प्रश्न 4039. बिदेसरा कुएकसँ लोक किएक डेराइत/परहेज नहि करैत छल?
क. बेमारी-राति मे ओकरा डॉक्टर-जकाँ आवश्यक बुझल जाइत छल
ख. ओ राजा छल
ग. ओ शिक्षक छल
घ. ओ पंछीपालक छल
उत्तर: क. बेमारी-राति मे ओकरा डॉक्टर-जकाँ आवश्यक बुझल जाइत छल
व्याख्या: नाड़ी देखब आ सूई देबाक अधिकार-जेकाँ व्यवहार ओकर सामाजिक शक्ति बनबैत अछि।

प्रश्न 4040. बिदेसरा कुएक यदुनाथसँ कोना निकट भेल?
क. चाह-नाश्ता आ चोटगर-मीठगर गपसपसँ मोन मोहैत
ख. पत्र-लेखनसँ
ग. जंगल-यात्रासँ
घ. कथा-संग्रहसँ
उत्तर: क. चाह-नाश्ता आ चोटगर-मीठगर गपसपसँ मोन मोहैत
व्याख्या: बिदेसरा यदुनाथक जिगरी यार बनि जाइत अछि।

प्रश्न 4041. दशमी/अष्टमी रातिक शराब-दृश्य कतय घटैत अछि?
क. यदुनाथक शयन-कक्षमे
ख. चबूतरा पर
ग. रेलवे स्टेशन पर
घ. जटिंगा पहाड़ी पर
उत्तर: क. यदुनाथक शयन-कक्षमे
व्याख्या: पुजारी-गृहक भीतरक शयन-कक्ष धार्मिक बाह्य छविक विपरीत निजी पाखण्ड देखबैत अछि।

प्रश्न 4042. शराब-दृश्यक टेबल पर की-की राखल छल?
क. विदेशी शराबक बोतल, पानीक जग आ दू गिलास
ख. सिलाई मशीन
ग. कम्प्यूटर
घ. पंजी-पोथा
उत्तर: क. विदेशी शराबक बोतल, पानीक जग आ दू गिलास
व्याख्या: दृश्यक वस्तु-सूक्ष्मता पवित्र घरक भीतरक अपवित्र अंतरंगता खोलैत अछि।

खण्ड ४१० : विदेह-सदेह १ — ‘माहुर’: शराब-दृश्य आ कामिनीक अंतर्द्वन्द्व

प्रश्न 4043. यदुनाथ बिदेसरा लेल दरभंगासँ की मँगौलनि?
क. असली अस्सी प्रतिशत प्रूफ अल्कोहलबला जिन
ख. दू रुपैया
ग. मखान
घ. कथा-संकलन
उत्तर: क. असली अस्सी प्रतिशत प्रूफ अल्कोहलबला जिन
व्याख्या: दृश्य मे विदेशी शराबक प्रूफ तक उल्लेख आ निजी पतनक संकेत अछि।

प्रश्न 4044. कामिनी पहिल बेर टेबल पर की रखैत छथि?
क. भुजल माँस
ख. पत्र
ग. फूल
घ. कम्प्यूटर
उत्तर: क. भुजल माँस
व्याख्या: कामिनी पतिक आदेशक प्रतीक्षा करैत माँस परोसैत छथि।

प्रश्न 4045. बिदेसरा कुएक कामिनीक देह-दिस कोना देखैत अछि?
क. लोभी नजिरसँ बाँह/लॉउज पर टिकैत
ख. माता जकाँ
ग. विद्यार्थी जकाँ
घ. न्यायाधीश जकाँ
उत्तर: क. लोभी नजिरसँ बाँह/लॉउज पर टिकैत
व्याख्या: कथा बिदेसराक पुरुष-दृष्टि कें असहज आ हिंस्र बनबैत अछि।

प्रश्न 4046. यदुनाथ पिहल पैग पछात कोना होइत छथि?
क. डोलि जाइत छथि
ख. नाचय लगैत छथि
ग. पत्र लिखैत छथि
घ. कचहरी जाइत छथि
उत्तर: क. डोलि जाइत छथि
व्याख्या: यदुनाथ शराब सहबाक क्षमता बिना जल्दी नियंत्रण खोइत छथि।

प्रश्न 4047. दोसरा पैगक बाद यदुनाथक हालत कतेक बिगड़ैत अछि?
क. आँखिक डिब्बासँ टॉर्च-जेकाँ फोकसिंग बाहर होबय लगैत
ख. पूर्ण सजग
ग. सोझे भाषण
घ. कविता पाठ
उत्तर: क. आँखिक डिब्बासँ टॉर्च-जेकाँ फोकसिंग बाहर होबय लगैत
व्याख्या: कथाकारक दृश्यात्मक भाषा नशाक हास्यास्पद-अशक्त अवस्था देखबैत अछि।

प्रश्न 4048. कामिनी तेसर खेपक माँस लऽ घुरला पर यदुनाथकेँ कोना देखैत छथि?
क. पलंग पर चित बेहोश
ख. मंदिरमे पूजा करैत
ग. दरभंगाक बैंकमे
घ. गाछ तर बैठल
उत्तर: क. पलंग पर चित बेहोश
व्याख्या: एहि क्षणमे कामिनीक सुरक्षा-विश्वास ध्वस्त होइत अछि।

प्रश्न 4049. बेहोश यदुनाथक मुँह/थुथूनसँ की आवाज निकलैत छल?
क. साँ-साँ
ख. गीत
ग. हँसी
घ. शंखध्वनि
उत्तर: क. साँ-साँ
व्याख्या: नशा यदुनाथकेँ असहाय देह मे बदलि दैत अछि।

प्रश्न 4050. कामिनी पतिक प्रति कोन धारणा लऽ सासुर आएल छलीह?
क. पति रक्षक आ परमेश्वर छथि
ख. पति सेवक छथि
ग. पति शत्रु छथि
घ. पति अजनबी अधिकारी छथि
उत्तर: क. पति रक्षक आ परमेश्वर छथि
व्याख्या: संस्कारित विश्वास आ दृश्य वास्तविकता मे टकराव कथा-तनावक केन्द्र अछि।

प्रश्न 4051. कामिनीक लेल वर्तमान परिस्थिति कोना बनि जाइत अछि?
क. अप्रत्याशित आ ओझरायल
ख. पूर्णतः सहज
ग. हास्यपूर्ण
घ. उत्सवपूर्ण
उत्तर: क. अप्रत्याशित आ ओझरायल
व्याख्या: एहि अवस्थामे ओ निर्णयहीनता आ भयक बीच काठ बनि ठाढ़ रहैत छथि।

प्रश्न 4052. शराब-दृश्य ‘माहुर’ मे की संकेत करैत अछि?
क. धर्म, पितृसत्ता, वासना आ नशाक भीतर छिपल विष
ख. प्रकृति-सौन्दर्य
ग. कम्प्यूटरक लाभ
घ. पक्षी-संरक्षण
उत्तर: क. धर्म, पितृसत्ता, वासना आ नशाक भीतर छिपल विष
व्याख्या: मन्दिर-परिवारक आभामंडल भीतरसँ विषाक्त सामाजिक संरचना बनि देखाइत अछि।

खण्ड ४११ : विदेह-सदेह १ — कृपानन्द झा: चौकपर आणविक समझौता

प्रश्न 4053. कृपानन्द झा कतय जन्मल बतायल गेलाह?
क. समौल, मधुबनी
ख. नेहरा
ग. सलेमपुर
घ. जनकपुर
उत्तर: क. समौल, मधुबनी
व्याख्या: परिचयमे जन्म-स्थान समौल, मधुबनी लिखल अछि।

प्रश्न 4054. कृपानन्द झाक शैक्षिक पृष्ठभूमिमे कोन विषय प्रमुख अछि?
क. गणित, पुस्तकालय/सूचना विज्ञान
ख. रंगमंच मात्र
ग. संगीत मात्र
घ. कृषि मात्र
उत्तर: क. गणित, पुस्तकालय/सूचना विज्ञान
व्याख्या: परिचयमे गणितमे स्नातकोत्तर, बी.लिब. आ सूचना-विज्ञानक अध्ययन अछि।

प्रश्न 4055. ‘चौकपर आणविक समझौता’ कहाँ घटित संवाद रूपमे आरम्भ होइत अछि?
क. गामक चौक/टोनुआँक दोकान-चबूतरा
ख. मन्दिरक गर्भगृह
ग. टेम्स नदी
घ. जटिंगा जंगल
उत्तर: क. गामक चौक/टोनुआँक दोकान-चबूतरा
व्याख्या: चाह, पान आ चबूतरा सामुदायिक राजनीतिक बहसक मंच बनैत अछि।

प्रश्न 4056. मंटू भाईक मूल शंका की अछि?
क. अमेरिका भारतक स्वतंत्र आणविक कार्यक्रममे टाँग अड़ाबय चाहैत अछि
ख. मैथिली गीतक धुन
ग. बालश्रम
घ. चिड़ै बचाव
उत्तर: क. अमेरिका भारतक स्वतंत्र आणविक कार्यक्रममे टाँग अड़ाबय चाहैत अछि
व्याख्या: मंटू भाई समझौता कैँ ऊर्जा-बहानासँ सामरिक निर्भरता मानैत छथि।

प्रश्न 4057. गगनजी समझौता मुख्यतः ककर आवश्यकता सँ जोड़ैत छथि?
क. ऊर्जा आवश्यकता
ख. देवी पूजा
ग. पत्राचार
घ. विधवा प्रथा
उत्तर: क. ऊर्जा आवश्यकता
व्याख्या: गगनजीक तर्क अनुसार ई ऊर्जा आवश्यकताक दृष्टिसँ देखबाक चाही।

प्रश्न 4058. गगनजी १२३ समझौता पर कोन आश्वासन दैत छथि?
क. केवल भारत सरकार चाहत से रिएक्टर अन्तरराष्ट्रीय निगरानीमे जाएत
ख. सभ रिएक्टर बन्द
ग. कृषि समाप्त
घ. पत्र नहि लिखल जाएत
उत्तर: क. केवल भारत सरकार चाहत से रिएक्टर अन्तरराष्ट्रीय निगरानीमे जाएत
व्याख्या: एहि तर्कसँ ओ सामरिक कार्यक्रमपर प्रभाव कम मानैत छथि।

प्रश्न 4059. मंटू भाई आन्तरिक संसाधनक उदाहरणमे कोन-कोन प्रदेश उल्लेख करैत छथि?
क. झारखण्ड, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, मेघालय, राजस्थान आदि
ख. केवल लंदन
ग. केवल जटिंगा
घ. केवल पानापुर
उत्तर: क. झारखण्ड, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, मेघालय, राजस्थान आदि
व्याख्या: विवादमे भारतक खनिज/आणविक संसाधनक चर्चा होइत अछि।

प्रश्न 4060. मजहरक अनुसार एन.पी.टी. पर हस्ताक्षर बिना भारत की करबाक कोशिश करैत अछि?
क. अन्तरराष्ट्रीय आणविक बाजारमे सेन्ध मारबाक
ख. मन्दिर बनाबय
ग. कथा छापय
घ. मेला रोकय
उत्तर: क. अन्तरराष्ट्रीय आणविक बाजारमे सेन्ध मारबाक
व्याख्या: मजहर समझौता कैँ अंतरराष्ट्रीय बन्धनक यथार्थ मानि व्याख्या करैत अछि।

प्रश्न 4061. मजहर दीर्घकालिक असर की सम्भावना देखैत अछि?
क. भारत आणविक क्षेत्रमे पैघ निर्यातक बनि सकैत अछि
ख. भारत सम्पूर्णतः कमजोर
ग. कथासंग्रह बन्द
घ. लोकगीत नष्ट
उत्तर: क. भारत आणविक क्षेत्रमे पैघ निर्यातक बनि सकैत अछि
व्याख्या: ओ तकनीकी क्षमता आ संसाधनक आधार पर अवसरवादी दृष्टि रखैत अछि।

प्रश्न 4062. एहि संवादक साहित्यिक महत्त्व की अछि?
क. गामक चौककेँ वैश्विक नीति-बोधक जनमंच बनबैत अछि
ख. केवल पानक बिक्री
ग. केवल यात्रा-वृत्तांत
घ. केवल पारिवारिक कथा
उत्तर: क. गामक चौककेँ वैश्विक नीति-बोधक जनमंच बनबैत अछि
व्याख्या: रचना स्थानीय बोलचालमे अंतरराष्ट्रीय आर्थिक-सामरिक विमर्श राखैत अछि।

खण्ड ४१२ : विदेह-सदेह १ — कृष्णमोहन झा: परिचय आ ‘दुनूकेँ’

प्रश्न 4063. कृष्णमोहन झाक जन्म कोन गाम/जिलामे बतायल गेल?
क. जीतपुर, मधेपुरा
ख. नेहरा, दरभंगा
ग. सलेमपुर, मधुबनी
घ. पानापुर
उत्तर: क. जीतपुर, मधेपुरा
व्याख्या: परिचयमे मधेपुरा जिलाक जीतपुर गामक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4064. कृष्णमोहन झा एम.फिल. कोन विषय पर केलनि?
क. विजयदेव नारायण साही की काव्यानुभूति की बनावट
ख. मैथिली फॉकलोर
ग. कम्प्यूटर शिक्षा
घ. आणविक समझौता
उत्तर: क. विजयदेव नारायण साही की काव्यानुभूति की बनावट
व्याख्या: परिचयमे जे.एन.यू.सँ एम.फिल. विषय देल अछि।

प्रश्न 4065. कृष्णमोहन झाक पी.एच.डी. कोन साहित्यकारक कथा-साहित्यमे प्रेमक परिकल्पना पर अछि?
क. निर्मल वर्मा
ख. राजकमल चौधरी
ग. विद्यापति
घ. मायानन्द मिश्र
उत्तर: क. निर्मल वर्मा
व्याख्या: परिचयमे निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य मे प्रेमक परिकल्पना लिखल अछि।

प्रश्न 4066. हिन्दीमे कृष्णमोहन झाक कविता-संग्रहक नाम की अछि?
क. समय को चीरकर
ख. एकटा हेरायल दुनिया
ग. माहुर
घ. दू पत्र
उत्तर: क. समय को चीरकर
व्याख्या: परिचयमे हिन्दी संग्रह ‘समय को चीरकर’ बतायल अछि।

प्रश्न 4067. मैथिलीमे हुनक प्रकाशित कृति कोन कहल गेल?
क. एकटा हेरायल दुनिया
ख. माहुर
ग. करार
घ. हारल मनुक्ख
उत्तर: क. एकटा हेरायल दुनिया
व्याख्या: परिचयमे मैथिली कृति ‘एकटा हेरायल दुनिया’ अछि।

प्रश्न 4068. कृष्णमोहन झा कतय अध्यापन करैत बतायल गेलाह?
क. असम विश्वविद्यालय, सिलचरक हिन्दी विभाग
ख. सी.एम. कॉलेज दरभंगा
ग. बैंक
घ. दुर्गा मन्दिर
उत्तर: क. असम विश्वविद्यालय, सिलचरक हिन्दी विभाग
व्याख्या: परिचयमे असम विश्वविद्यालय, सिलचरक हिन्दी विभागमे अध्यापनक सूचना अछि।

प्रश्न 4069. ‘दुनूकेँ’ कविता मे स्त्री ककरा देखैत अछि?
क. माछकेँ
ख. कम्प्यूटर
ग. चबूतरा
घ. पत्र
उत्तर: क. माछकेँ
व्याख्या: कविता अत्यल्प पंक्ति मे स्त्री आ माछक परस्पर दृष्टि रचैत अछि।

प्रश्न 4070. ‘दुनूकेँ’ कविता मे माछ ककरा देखैत अछि?
क. स्त्री केँ
ख. चौक
ग. मन्दिर
घ. बिदेसरा
उत्तर: क. स्त्री केँ
व्याख्या: कविता माछ आ स्त्रीक दृष्टि-विनिमय पर आधारित अछि।

प्रश्न 4071. कविताक तेसर दृष्टा के अछि?
क. अहाँ/पाठक
ख. गंगाजी
ग. पुजारी
घ. पोस्टमैन
उत्तर: क. अहाँ/पाठक
व्याख्या: ‘अहाँ दुनू केँ देखि रहल छी’ पाठककेँ दृश्यक भाग बना दैत अछि।

प्रश्न 4072. ‘दुनूकेँ’क केन्द्रीय शिल्प की अछि?
क. तीन दृष्टिक त्रिकोण—स्त्री, माछ, आ पाठक
ख. दीर्घ कथा
ग. राजनीतिक भाषण
घ. यात्रा-वर्णन
उत्तर: क. तीन दृष्टिक त्रिकोण—स्त्री, माछ, आ पाठक
व्याख्या: लघु कविता नजर, वस्तुकरण आ सहभागिताक सूक्ष्म खेल रचैत अछि।

खण्ड ४१३ : विदेह-सदेह १ — कुमार मनोज कश्यप: ‘हारल मनुक्ख’

प्रश्न 4073. कुमार मनोज कश्यपक जन्म कोन गाममे बतायल गेल?

क. सलेमपुर, मधुबनी

ख. समौल

ग. नेहरा

घ. दुहबी

उत्तर: क. सलेमपुर, मधुबनी

व्याख्या: परिचयमे मधुबनी जिलांतर्गत सलेमपुर गामक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4074. कुमार मनोज कश्यप वर्तमानमे कोन पद पर पदस्थापित बतायल गेलाह?

क. केन्द्रीय सचिवालयमे अनुभाग अधिकारी

ख. बैंक अधिकारी

ग. दुर्गा पुजारी

घ. विश्वविद्यालय कुलपति

उत्तर: क. केन्द्रीय सचिवालयमे अनुभाग अधिकारी

व्याख्या: परिचयमे केन्द्रीय सचिवालयक अनुभाग अधिकारी पद अछि।

प्रश्न 4075. ‘हारल मनुक्ख’क आरम्भमे कथावाचक की प्रतीक्षा करैत अछि?

क. गामक बस

ख. पत्र

ग. कम्प्यूटर

घ. बरखा

उत्तर: क. गामक बस

व्याख्या: कथा जेठक दुपहरिया मे बसक प्रतीक्षा सँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 4076. प्रतीक्षाक समय मौसम/स्थिति कोना अछि?

क. जेठक दुपहरिया, रौद आ खराब सार्वजनिक यातायात

ख. हिमपात

ग. बरखा-गीत

घ. शीतल राति

उत्तर: क. जेठक दुपहरिया, रौद आ खराब सार्वजनिक यातायात

व्याख्या: कठिन प्रतीक्षा कथावाचकक असहिष्णुता बढबैत अछि।

प्रश्न 4077. वृद्ध/बीमार व्यक्ति कथावाचकसँ कतेक रुपैया माँगैत अछि?

क. दू रुपैया

ख. पचास

ग. सौ

घ. दस

उत्तर: क. दू रुपैया

व्याख्या: दू रुपैया कथा-नैतिकताक छोट मुदा निर्णायक कसौटी बनैत अछि।

प्रश्न 4078. वृद्ध व्यक्ति दू रुपैया किएक माँगैत अछि?

क. ट्रेक्टर पकड़ि गाम जाएब लेल

ख. सिनेमा देखब लेल

ग. मीट किनब लेल

घ. शराब लेल

उत्तर: क. ट्रेक्टर पकड़ि गाम जाएब लेल

व्याख्या: ओ अशक्त अछि आ पयरे जाएब कठिन अछि।

प्रश्न 4079. कथावाचक वृद्धक याचना पहिले किएक अनसुना करैत अछि?
क. भीख माँगबाक नव-नव ढंगक शंका मोनमे आबैत अछि
ख. ओ बहिर अछि
ग. ओ बसमे छल
घ. ओ सोइ रहल छल
उत्तर: क. भीख माँगबाक नव-नव ढंगक शंका मोनमे आबैत अछि
व्याख्या: सामाजिक अविश्वास करुणा रोकि दैत अछि।

प्रश्न 4080. बसमे बैसलाक बाद कथावाचक रस्ता कात की देखैत अछि?
क. सेहि वृद्धकेँ घिसियाइत गन्तव्य दिस चलैत
ख. पुस्तकालय
ग. मन्दिरक मेला
घ. जटिंगा चिड़ै
उत्तर: क. सेहि वृद्धकेँ घिसियाइत गन्तव्य दिस चलैत
व्याख्या: दृश्य ओकर अंत:करणकेँ कचोटैत अछि।

प्रश्न 4081. कथावाचक कतेक रुपैया ठंढा पीबामे खर्च कयने रहैत अछि?
क. दस रुपैया
ख. दू रुपैया
ग. एक रुपैया
घ. सौ
उत्तर: क. दस रुपैया
व्याख्या: दू रुपैया न देबाक अपराध-बोध दस रुपैयाक ठंढा सँ तीव्र होइत अछि।

प्रश्न 4082. ‘हारल मनुक्ख’क मूल नैतिक प्रश्न की अछि?
क. छोट करुणा अस्वीकार कएलाक अपराध-बोध
ख. आणविक निर्यात
ग. देवीगीत धुन
घ. रंगमंच पुरस्कार
उत्तर: क. छोट करुणा अस्वीकार कएलाक अपराध-बोध
व्याख्या: कथा मनुष्यता बनाम अविश्वासक सूक्ष्म पराजय देखबैत अछि।

खण्ड ४१४ : विदेह-सदेह १ — कुमार मनोज कश्यप: ‘थाकल बाट’

प्रश्न 4083. ‘थाकल बाट’मे कथावाचक कोन कार्यालयक चक्कर लगा रहल अछि?
क. बिजली ऑफिस
ख. डाकघर
ग. मंदिर
घ. विश्वविद्यालय
उत्तर: क. बिजली ऑफिस
व्याख्या: कथा मीटर फाइलक कारण बिजली कार्यालयक चक्कर पर आधारित अछि।

प्रश्न 4084. कर्मचारीक चिरपरिचित उत्तर की अछि?
क. ऊपरसँ नहि लौटलै
ख. सब ठीक अछि
ग. पत्र पहुँचल
घ. मेला शुरू
उत्तर: क. ऊपरसँ नहि लौटलै
व्याख्या: बिना जाँच-पड़तालक उत्तर नौकरशाहीक जड़ता देखबैत अछि।

प्रश्न 4085. कथावाचक कतेक दिनसँ चक्कर लगा रहल अछि?
क. १५ दिन
ख. एक वर्ष
ग. एक घंटा
घ. दू मास
उत्तर: क. १५ दिन
व्याख्या: लगातार चक्कर थाकल व्यवस्था आ थाकल नागरिक दुनू बनबैत अछि।

प्रश्न 4086. मित्र प्रभास की सलाह दैत अछि?
क. बिना 'सेवा' किछु नहि हेतौक
ख. कविता लिखू
ग. जटिंगा जाऊ
घ. गाम छोड़ू
उत्तर: क. बिना 'सेवा' किछु नहि हेतौक
व्याख्या: 'सेवा' रिश्वत लेल व्यंग्य-शब्द अछि।

प्रश्न 4087. 'सेवा' पेलाक बाद कर्मचारी की तुरत दैत अछि?
क. आदेश-पत्र
ख. पान
ग. माँस
घ. पत्रिका
उत्तर: क. आदेश-पत्र
व्याख्या: रिश्वत मिलिते फाइल-समस्या तुरन्त सुलझब व्यवस्था-भ्रष्टाचार देखबैत अछि।

प्रश्न 4088. बाहर निकलैत कथावाचक कोन बोर्ड देखैत अछि?
क. रिश्वत लेना एवं देना जुर्म है
ख. गोसाउनि गीत
ग. कम्प्यूटर साक्षरता
घ. जटिंगा पर्यटन
उत्तर: क. रिश्वत लेना एवं देना जुर्म है
व्याख्या: भ्रष्ट व्यवहार आ नैतिक बोर्डक विरोधाभास कथा-केंद्र अछि।

प्रश्न 4089. बोर्डक हालत कोना अछि?
क. पानक पीकसँ विकृत
ख. स्वर्णमय
ग. नव रंगल
घ. नदीमे बहल
उत्तर: क. पानक पीकसँ विकृत
व्याख्या: पीक नैतिक घोषणाक सामाजिक अपमानक दृश्य बनैत अछि।

प्रश्न 4090. 'उपयुक्त चीज उपयुक्त जगह' वाक्यक व्यंग्य की अछि?
क. रिश्वत-बोर्ड भ्रष्ट कार्यालयमे विडम्बनात्मक रूपेँ उपयुक्ते लगैत अछि
ख. संगीत-प्रशंसा
ग. पत्र-लेखन
घ. बाढ़ राहत
उत्तर: क. रिश्वत-बोर्ड भ्रष्ट कार्यालयमे विडम्बनात्मक रूपेँ उपयुक्ते लगैत अछि
व्याख्या: कथा भ्रष्टाचारक सामान्यीकरण पर कटाक्ष करैत अछि।

प्रश्न 4091. बिजलीक तारमे टोका फँसबैत व्यक्ति ककर प्रतीक बनैत अछि?
क. सार्वजनिक व्यवस्था सँ जुगाड़क निर्भरता
ख. विदेशी शोध
ग. अध्यात्म
घ. दुर्गा पूजा
उत्तर: क. सार्वजनिक व्यवस्था सँ जुगाड़क निर्भरता
व्याख्या: अंतिम दृश्य अवैधता आ जुगाड़क व्यापक रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 4092. ‘थाकल बाट’ शीर्षकक अर्थ की?
क. व्यक्ति नहि, व्यवस्था आ रास्ता दुनू थाकल/भ्रष्ट अछि
ख. थकान रहित उत्सव
ग. प्रकृति-चित्र
घ. पत्र-स्मृति
उत्तर: क. व्यक्ति नहि, व्यवस्था आ रास्ता दुनू थाकल/भ्रष्ट अछि
व्याख्या: फाइल, सेवा, बोर्ड आ टोका सब मिलि नागरिक अनुभवक थकान रचैत अछि।

खण्ड ४१५ : विदेह-सदेह १ — कुमार मनोज कश्यप: ‘भावना’

प्रश्न 4093. ‘भावना’ कथाक मौसम कतेक कठोर बतायल गेल?
क. जेठक भोरसँ दुपहरिया धरि आगि-जेकाँ गरमी
ख. हिमपात
ग. शरद शीतलता
घ. बाढ़क राति
उत्तर: क. जेठक भोरसँ दुपहरिया धरि आगि-जेकाँ गरमी
व्याख्या: गरमी दृश्यक नैतिक असुविधा लेल पृष्ठभूमि बनैत अछि।

प्रश्न 4094. कथावाचक आ पत्नी भोजन लेल की निर्णय करैत छथि?
क. बाहर भोजन करब
ख. उपवास
ग. पत्र लिखब
घ. मेला जाएब
उत्तर: क. बाहर भोजन करब
व्याख्या: घरमे आलस्य/गरमीक कारण बाहर जाएबाक निर्णय अछि।

प्रश्न 4095. उन्हें कतेक कठिनाइ सँ की भेटैत अछि?
क. एक रिक्शावाला
ख. हवाई जहाज
ग. घोड़ा
घ. नाव
उत्तर: क. एक रिक्शावाला
व्याख्या: रौद मे अधबेसु, कृशकाय, हाँपैत रिक्शावाला भेटैत अछि।

प्रश्न 4096. रिक्शावाला भाड़ा कतेक कहैत अछि?
क. दस रुपैया
ख. दू रुपैया
ग. पचास
घ. सौ
उत्तर: क. दस रुपैया
व्याख्या: दस रुपैया नैतिक तुलना लेल प्रयुक्त रकम अछि।

प्रश्न 4097. पत्नी रिक्शावालासँ कतेक भाड़ा लेल झगड़ा करैत छथि?
क. दस कैं पाँच रुपैया बनबैत
ख. दू कैं दस
ग. पचास कैं सौ
घ. भाड़ा नहि
उत्तर: क. दस कैं पाँच रुपैया बनबैत
व्याख्या: वर्गीय कठोरता रौदमे श्रमरत व्यक्तिसँ मोल-भावमे देखाइत अछि।

प्रश्न 4098. रिक्शावाला अन्ततः की करैत अछि?
क. पाँचक सिक्का लऽ चुपचाप चलि जाइत अछि
ख. पुलिस बजबैत अछि
ग. गीत गाबैत अछि
घ. भोजन करैत अछि
उत्तर: क. पाँचक सिक्का लऽ चुपचाप चलि जाइत अछि
व्याख्या: ओकरे निरुपाय मौन कथा-करुणा बनैत अछि।

प्रश्न 4099. रेस्टोरेंटमे कथावाचक टिप रूपमे कतेक छोड़ैत अछि?
क. दस रुपैया
ख. दू
ग. एक
घ. सौ
उत्तर: क. दस रुपैया
व्याख्या: रिक्शावालासँ काटल रकम ओतय सहज दान बनैत अछि।

प्रश्न 4100. पत्नी ‘स्टेटस’ कहि टिप कतेक करैत छथि?
क. पचासक नोट
ख. पाँच
ग. दू
घ. किछु नहि
उत्तर: क. पचासक नोट
व्याख्या: वर्ग-प्रतिष्ठा श्रमिक न्यायसँ बेसी महत्त्व पबैत अछि।

प्रश्न 4101. कथावाचक किनकर तुलना करैत अछि?
क. वातानुकूलित कक्षमे वेटर आ रौदमे कँध तोड़ैत रिक्शावाला
ख. जटिंगा आ पानापुर
ग. माछ आ स्त्री
घ. पत्र आ पोस्टमैन
उत्तर: क. वातानुकूलित कक्षमे वेटर आ रौदमे कँध तोड़ैत रिक्शावाला
व्याख्या: ई तुलना कथा शीर्षक ‘भावना’क अंतर खोलैत अछि।

प्रश्न 4102. ‘भावना’क मुख्य आलोचना की अछि?
क. वर्गीय संवेदनहीनता आ सुविधा-आधारित दया
ख. कम्प्यूटर शिक्षा
ग. लोकगीत संग्रह
घ. पक्षी-रहस्य
उत्तर: क. वर्गीय संवेदनहीनता आ सुविधा-आधारित दया
व्याख्या: कथा देखबैत अछि जे समाज श्रमक मूल्य नहि, प्रतिष्ठाक प्रदर्शन बेसी मानैत अछि।

खण्ड ४१६ : विदेह-सदेह १ — कुमार मनोज कश्यप: ‘बी.डी.ओ.’ आ ‘नव-वर्ष’

प्रश्न 4103. ‘बी.डी.ओ.’मे ‘माने’ नाम किएक पड़ल?
क. ओ बात-बात पर ‘माने’ शब्द प्रयोग करैत छलीह
ख. ओ अधिकारी छलीह
ग. ओ कवि छलीह
घ. ओ गायिका छलीह
उत्तर: क. ओ बात-बात पर ‘माने’ शब्द प्रयोग करैत छलीह
व्याख्या: भाषिक आदत पात्रक नाम बनि गेल अछि।

प्रश्न 4104. ‘माने’ क पारिवारिक/सामाजिक स्थिति की बतायल गेल?
क. बाल-विधवा, संतानहीन, घरक सदस्या-जकाँ
ख. सैनिक अधिकारी
ग. कम्प्यूटर शिक्षक
घ. असमक कलाकार
उत्तर: क. बाल-विधवा, संतानहीन, घरक सदस्या-जकाँ
व्याख्या: पात्रक अवस्था सामाजिक आश्रितता आ अनुभवक पृष्ठभूमि बनबैत अछि।

प्रश्न 4105. प्रधानमंत्री मधुबनी आबि रहल छथि सुनि ‘माने’ की पूछैत छथि?
क. के अबैत छथिन?
ख. कतय होटल अछि?
ग. कतेक रुपैया?
घ. कतेक चिड़ै?
उत्तर: क. के अबैत छथिन?
व्याख्या: ओ राष्ट्रीय राजकीय घटना केँ अपन जीवन-प्रश्नसँ जोड़ि नहि देखैत।

प्रश्न 4106. प्रधानमंत्री पर ‘माने’क प्रतिक्रिया की अछि?
क. ओ कोनो बी.डी.ओ. छथि जे वृद्धा-पेंशन देताह?
ख. हम अवश्य देखब
ग. ओ गायक छथि
घ. ओ डॉक्टर छथि
उत्तर: क. ओ कोनो बी.डी.ओ. छथि जे वृद्धा-पेंशन देताह?
व्याख्या: गरीब/वृद्ध पात्र लेल सत्ता ओहिने सार्थक जे जीवन-सहायता दे।

प्रश्न 4107. ‘बी.डी.ओ.’ कथा मे सत्ता-समझक केन्द्र की अछि?
क. लोकतांत्रिक पद नहि, जीवनोपयोगी सहायता
ख. विदेश नीति
ग. नृत्य
घ. पक्षी-शिकार
उत्तर: क. लोकतांत्रिक पद नहि, जीवनोपयोगी सहायता
व्याख्या: मानेक दृष्टि सत्ताक वास्तविक अर्थ लोककल्याणसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4108. ‘नव-वर्ष’ शहरी संस्कृतिकेँ कोना देखबैत अछि?
क. उल्लास, नाच-गान, धूम-धड़क्का
ख. शोक मात्र
ग. मौन उपवास
घ. जंगल यात्रा
उत्तर: क. उल्लास, नाच-गान, धूम-धड़क्का
व्याख्या: शहर नव-वर्ष केँ बड़े उत्सवक रूपमे मनबैत अछि।

प्रश्न 4109. सुकनाक बेटा की प्रश्न करैत अछि?
क. हम सभक नया साल कहिया एतैक?
ख. जटिंगा कतय अछि?
ग. मीटर कहाँ पहुँचल?
घ. माँस कतेक?
उत्तर: क. हम सभक नया साल कहिया एतैक?
व्याख्या: बालकक प्रश्न वर्ग-भेदक कठोर सच्चाइ खोलैत अछि।

प्रश्न 4110. सुकनाक अनुसार गरीबक नया साल कोना निर्धारित होइत अछि?
क. मजूरी भेटला पर खुशी, नहि भेटला पर पुरान दुख
ख. कैलेंडरक पहिल दिन
ग. विदेशी यात्रा
घ. दुर्गा मेला
उत्तर: क. मजूरी भेटला पर खुशी, नहि भेटला पर पुरान दुख
व्याख्या: गरीबक लेल दिनक भोजनहि नव-पुरानक सीमा बनैत अछि।

प्रश्न 4111. ‘सभ साँझ नया साल आ सभ भिनसर पुरान साल’क भाव की अछि?
क. दैनिक श्रम-आधारित असुरक्षित जीवन
ख. निरन्तर उत्सव
ग. समृद्धि
घ. कला-प्रदर्शनी
उत्तर: क. दैनिक श्रम-आधारित असुरक्षित जीवन
व्याख्या: बोनिहार जीवनमे मजूरी हर दिनक भाग्य बदलैत अछि।

प्रश्न 4112. ‘बी.डी.ओ.’ आ ‘नव-वर्ष’ दूनू मे साझा दृष्टि की अछि?
क. हाशिये के लोकक नजरिएसँ सत्ता आ उत्सवक अर्थ बदलि जाइत अछि
ख. केवल प्रकृति-वर्णन
ग. केवल प्रेमगीत
घ. केवल तकनीक
उत्तर: क. हाशिये के लोकक नजरिएसँ सत्ता आ उत्सवक अर्थ बदलि जाइत अछि
व्याख्या: दूनू कथा सामान्य राजकीय/शहरी घटना केँ गरीबक जीवन-यथार्थसँ तौलैत अछि।

खण्ड ४१७ : विदेह-सदेह १ — कुमार मनोज कश्यप: गजल आ आत्म-खोज

प्रश्न 4113. गजलमे वक्ता रातुक ‘श्याह आँचर’मे ककर खोज करैत अछि?
क. भोर
ख. माहुर
ग. कम्प्यूटर
घ. बाँस
उत्तर: क. भोर
व्याख्या: अन्हारमे भोरक खोज आशा आ मुक्ति-कामना प्रकट करैत अछि।

प्रश्न 4114. ‘अपन आंगन मे ठाढ़ हम, आई अपने घर के ताक रहल छी’ पंक्तिक भाव की अछि?
क. घरमे रहितो अपन घर/पहचानक खोज
ख. विदेश यात्रा
ग. दुकानदारी
घ. मेला
उत्तर: क. घरमे रहितो अपन घर/पहचानक खोज
व्याख्या: गजल आत्मविस्थापनक भाव रचैत अछि।

प्रश्न 4115. वक्ता ककरा दोष देबासँ बचैत अछि?
क. दोसरा कैँ
ख. बरखा कैँ
ग. माछ कैँ
घ. चिड़ै कैँ
उत्तर: क. दोसरा कैँ
व्याख्या: 'दोसरा कैँ की दोष देब' आत्मालोचनक सुर अछि।

प्रश्न 4116. 'अपनो सभ तऽ अंठिए बनला' क भाव की?
क. समस्या मे अपन समाजक भागीदारी मानब
ख. पूर्ण निर्दोषता
ग. मौसम
घ. शिक्षा
उत्तर: क. समस्या मे अपन समाजक भागीदारी मानब
व्याख्या: गजल सामाजिक पतनक दोष बाहरे नहि, भीतर सेहो ताकैत अछि।

प्रश्न 4117. गजलमे वक्ता कोन तरहक आँखि खोजैत अछि?
क. जाहि पलकसँ नोर नहि ढरकय
ख. लाल टरेस आँखि
ग. माछक आँखि
घ. पक्षी आँखि
उत्तर: क. जाहि पलकसँ नोर नहि ढरकय
व्याख्या: दुखक अतिरेक सँ मुक्त दृष्टि चाहना व्यक्त अछि।

प्रश्न 4118. 'सुन्न राह'मे वक्ताक संबल की बचल अछि?
क. अन्हार मात्र
ख. बिजली बिल
ग. दुर्गा प्रसाद
घ. कम्प्यूटर
उत्तर: क. अन्हार मात्र
व्याख्या: अन्तिम शेर अकेलापन आ निराधार यात्राक संकेत अछि।

प्रश्न 4119. गजलमे 'बगबाहो अपनहि हाथें ... कलम-बाग सभ जारऽ आयल' कोन भाव देत अछि?
क. अपन साधन/स्मृति स्वयं नष्ट कएलाक पीड़ा
ख. उत्सव
ग. सफल व्यापार
घ. प्रकृति-दर्शन
उत्तर: क. अपन साधन/स्मृति स्वयं नष्ट कएलाक पीड़ा
व्याख्या: कलम-बाग जारब रचनात्मक संसारक विनाशक रूपक अछि।

प्रश्न 4120. गजल सामाजिक-व्यक्तिगत दुखकैँ कोना जोड़ैत अछि?
क. अंगन, घर, याद, नोर आ अन्हारक बिम्बसँ
ख. सूची मात्र
ग. अंकीय तालिका
घ. कम्प्यूटर निर्देश
उत्तर: क. अंगन, घर, याद, नोर आ अन्हारक बिम्बसँ
व्याख्या: गजल निजी करुणाकैँ व्यापक सामुदायिक क्षयक रूपमे खोलैत अछि।

प्रश्न 4121. एहि गजलक प्रधान स्वर की अछि?
क. आहत आत्मालोचन आ आशा-खोज
ख. हास्य-उत्सव
ग. शिकार-वर्णन
घ. बैंक-प्रशिक्षण
उत्तर: क. आहत आत्मालोचन आ आशा-खोज
व्याख्या: भोर, छाँह, आँखि, दर—सभ खोजक बिम्ब बनैत अछि।

प्रश्न 4122. कुमार मनोजक एहि खण्डक कथासभ आ गजलमे साझा चिंता की अछि?
क. मानवीय संवेदना, आत्मग्लानि आ सामाजिक असमानता
ख. केवल तकनीक
ग. केवल पक्षी
घ. केवल यात्रा
उत्तर: क. मानवीय संवेदना, आत्मग्लानि आ सामाजिक असमानता
व्याख्या: हारल मनुक्ख, थाकल बाट, भावना, बी.डी.ओ., नव-वर्ष आ गजल सभ मनुष्यताक टूटन देखबैत अछि।

खण्ड ४१८ : विदेह-सदेह १ — अयोध्यानाथ चौधरी: परिचय आ ‘दू पत्र’

प्रश्न 4123. अयोध्यानाथ चौधरी कतयक छथि?
क. धनुषा, नेपाल
ख. दरभंगा
ग. सिलचर
घ. लंदन
उत्तर: क. धनुषा, नेपाल
व्याख्या: परिचयमे धनुषा, नेपालक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4124. अयोध्यानाथ चौधरी मुख्यतः कोन रूपमे परिचित कहल गेलाह?
क. कवि
ख. बैंकर
ग. कुयेक
घ. रंगनिर्देशक
उत्तर: क. कवि
व्याख्या: परिचय हुनका मूलतः कवि रूपमे रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 4125. हुनक लेखनमे कोन विशेषता बतायल गेल?
क. मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब आ फड़िछायल लेखन
ख. शुष्क आँकड़ा
ग. वैज्ञानिक तालिका
घ. मात्र नाटक
उत्तर: क. मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब आ फड़िछायल लेखन
व्याख्या: परिचय संवेदना आ स्पष्ट लेखनक गुण बतबैत अछि।

प्रश्न 4126. अयोध्यानाथ चौधरीक कविता-संग्रहक नाम की अछि?
क. क्षितिजक ओहिपार
ख. माहुर
ग. समय को चीरकर
घ. हारल मनुक्ख
उत्तर: क. क्षितिजक ओहिपार
व्याख्या: परिचयमे ‘क्षितिजक ओहिपार’ प्रकाशित संग्रह कहल गेल।

प्रश्न 4127. ‘दू पत्र’मे वक्ता ककरा पत्र लिखबाक लेल उद्यत होइत अछि?
क. दिनेश केँ
ख. रंजना केँ
ग. मजहर केँ
घ. मोदानन्द झा केँ
उत्तर: क. दिनेश केँ
व्याख्या: कथा-पत्र ३६ वर्ष बाद मित्र दिनेश दिस मुखातिब अछि।

प्रश्न 4128. पत्र लिखबा मे कतेक वर्षक अन्तरालक उल्लेख अछि?
क. ३६ वर्ष
ख. दू वर्ष
ग. १५ दिन
घ. आठ दिन
उत्तर: क. ३६ वर्ष
व्याख्या: दीर्घ अन्तराल स्मृति, अपराध-बोध आ अनिश्चितता उत्पन्न करैत अछि।

प्रश्न 4129. वक्ता केना अपन असफलता पर खीझैत अछि?
क. उत्साही पत्र-लेखक आ दायित्व-निभाउने व्यक्ति नहि बनि सकल
ख. गायन नहि सीखल
ग. बाँस नहि रोपल
घ. मेला नहि देखल
उत्तर: क. उत्साही पत्र-लेखक आ दायित्व-निभाउने व्यक्ति नहि बनि सकल
व्याख्या: पत्र-न-लिखबाक अपराध-बोध कथा आरम्भक मनोभूमि अछि।

प्रश्न 4130. वक्ता मनमे कोन भय/शंका उठबैत अछि?
क. पत्र लौटि सकैत, प्राप्तकर्ता जीवित नहि हो सकैत
ख. पत्र तुरन्त छपि जाएत
ग. चिड़ै खसत
घ. मीटर लगत
उत्तर: क. पत्र लौटि सकैत, प्राप्तकर्ता जीवित नहि हो सकैत
व्याख्या: दीर्घ मौन मृत्यु-संशय धरि पहुंचा दैत अछि।

प्रश्न 4131. दशमीक संदर्भ मे वक्ता की आशा करैत अछि?
क. दिनेश गाम आबि सकैत अछि, पत्र परिवार सहेजि राखत
ख. सभ विदेश पलायत
ग. मेला बन्द
घ. पत्र नहि पहुँचत
उत्तर: क. दिनेश गाम आबि सकैत अछि, पत्र परिवार सहेजि राखत
व्याख्या: पर्व-संयोग पत्रक पहुँच आ स्मृतिक पुनर्संपर्कक आशा जगबैत अछि।

प्रश्न 4132. ‘दू पत्र’क मूल आरम्भिक तनाव की अछि?
क. स्मृति, अपराध-बोध, समय-अन्तराल आ सम्पर्क-पुनर्स्थापन
ख. केवल भोज
ग. केवल नीति-विवाद
घ. केवल प्रकृति-चित्र
उत्तर: क. स्मृति, अपराध-बोध, समय-अन्तराल आ सम्पर्क-पुनर्स्थापन
व्याख्या: पत्र कथा दीर्घ मौनक बाद मित्रता पुनर्जीवित करबाक प्रयत्न अछि।

खण्ड ४१९ : विदेह-सदेह १ — ‘दू पत्र’: सी.एम. कॉलेज, मित्रता आ स्मृति

प्रश्न 4133. वक्ता आ दिनेशक मित्रता कतेक वर्ष संग रहबाक कारणे गहिर कहल गेल?

क. चारि वर्ष

ख. एक दिन

ग. दस मास

घ. बीस वर्ष

उत्तर: क. चारि वर्ष

व्याख्या: संगे पढ़बाक चारि वर्ष पत्रक भावनात्मक आधार अछि।

प्रश्न 4134. वक्ता कॉलेजक कोन भवन/भागक स्मृति करैत अछि?

क. सी.एम. कॉलेजक आर्ट्स ब्लॉक

ख. दुर्गा मन्दिर

ग. शंकरदेव कलाक्षेत्र

घ. बिजली ऑफिस

उत्तर: क. सी.एम. कॉलेजक आर्ट्स ब्लॉक

व्याख्या: आर्ट्स ब्लॉक रंगीन नक्शा/पार्क जकाँ स्मृतिमे अछि।

प्रश्न 4135. कॉलेज स्मृतिमे कोन नदीक किनार/किछेरक उल्लेख अछि?

क. बागमती

ख. टेम्स

ग. कोसी

घ. गंगा मात्र

उत्तर: क. बागमती

व्याख्या: बागमतीक मनोरम आ खतरनाक किछेर स्मृति-दृश्यक भाग अछि।

प्रश्न 4136. कॉलेजक ‘गर्ल्स कॉमन-रूम’ कथा-स्मृति मे कोना वर्णित अछि?

क. रहस्यमय

ख. सरकारी कार्यालय

ग. मछली बाजार

घ. युद्धस्थल

उत्तर: क. रहस्यमय

व्याख्या: छात्र-युगक लैंगिक दूरी आ जिज्ञासा एतय व्यक्त अछि।

प्रश्न 4137. वाइस प्रिंसिपल हुसैन साहबक तर्जनी उठिते छात्रसभ की करैत छल?

क. सीढ़ीसँ नीचा भागैत छल

ख. गीत गाबैत छल

ग. पत्र लिखैत छल

घ. भोजन करैत छल

उत्तर: क. सीढ़ीसँ नीचा भागैत छल

व्याख्या: कॉलेज अनुशासन हास्यपूर्ण स्मृतिक रूपमे आवैत अछि।

प्रश्न 4138. रीनिता नामक सहपाठी ककर अपूर्व संयोग कहल गेल?

क. लक्ष्मी आ सरस्वती

ख. शिव आ शक्ति

ग. माछ आ नदी

घ. पत्र आ टिकट

उत्तर: क. लक्ष्मी आ सरस्वती

व्याख्या: धन, प्रतिभा आ अंग्रेजी दक्षता रीनिताक स्मृतिमे जुड़ैत अछि।

प्रश्न 4139. रीनिताक लेख का शीर्षक छल?
क. Exclusively ours
ख. दू पत्र
ग. माहुर
घ. हारल मनुक्ख
उत्तर: क. Exclusively ours
व्याख्या: लेख ‘विदेह’मे छपल बतायल गेल आ रहस्योद्घाटनक कारण स्मरणीय अछि।

प्रश्न 4140. रीनिताक कॉलेज छोड़बाक बाद वक्ता की अनुभव करैत अछि?
क. शीर्षकक तात्पर्य आजुओ बूझबा मे कठिनाई
ख. पूर्ण विस्मरण
ग. हर्षोल्लास
घ. प्रशासनिक राहत
उत्तर: क. शीर्षकक तात्पर्य आजुओ बूझबा मे कठिनाई
व्याख्या: स्मृति अनुत्तरित प्रश्नक रूपमे जीवित अछि।

प्रश्न 4141. कॉलेजक वर्णनमे पक्षी-झुंड आ कलरवक बिम्ब की देत अछि?
क. युवा-संसारक जीवंतता
ख. भ्रष्टाचार
ग. शराब
घ. रिश्वत
उत्तर: क. युवा-संसारक जीवंतता
व्याख्या: कैंपस स्मृति प्रकृति-जेकाँ चहल-पहलयुक्त अछि।

प्रश्न 4142. ‘दू पत्र’क कॉलेज-स्मृति भागक साहित्यिक भूमिका की अछि?
क. पत्र लिखबाक आवेगकेँ साझा अतीतक दृश्य-संपदा देब
ख. अर्थशास्त्र पढ़ाब
ग. पुलिस रिपोर्ट
घ. भोजन-रेसिपी
उत्तर: क. पत्र लिखबाक आवेगकेँ साझा अतीतक दृश्य-संपदा देब
व्याख्या: स्मृति पत्रक भावनात्मक वैधता तैयार करैत अछि।

खण्ड ४२० : विदेह-सदेह १ — ‘दू पत्र’: नन्दी, मौन प्रेम आ सामाजिक दूरी

प्रश्न 4143. वक्ता कोन सहपाठीक आँखिक चमक आजुओ स्मरण करैत अछि?
क. नन्दी टाइटलवाली बंगालिन सहपाठी
ख. कामिनी
ग. माने
घ. रंजना
उत्तर: क. नन्दी टाइटलवाली बंगालिन सहपाठी
व्याख्या: नन्दीक आँखिक चमक ३६ वर्ष बादो स्मृतिमे अछूता अछि।

प्रश्न 4144. नन्दी प्रसंगमे एक सहपाठी लड़का की कएलक?
क. हुनकर नाम लैत जहर खा लेलक
ख. पत्र जरा देलक
ग. बस रोकलक
घ. मेला लगौलक
उत्तर: क. हुनकर नाम लैत जहर खा लेलक
व्याख्या: एकतरफा प्रेमक चरम घटना कॉलेज-स्मृति मे रहि गेल अछि।

प्रश्न 4145. लड़का किएक बचि गेल?
क. समये पर अस्पताल पहुँचाओल गेल
ख. पत्र लौटि गेल
ग. मेला बन्द भेल
घ. शराब बन्द भेल
उत्तर: क. समये पर अस्पताल पहुँचाओल गेल
व्याख्या: घटना त्रासद होइत-होइत बचि गेल।

प्रश्न 4146. नन्दीक प्रतिक्रिया कथावाचक कोना बतबैत अछि?
क. कोनो प्रतिक्रिया, हलचल नहि; सब सामान्य
ख. तीव्र क्रन्दन
ग. नृत्य
घ. पत्राचार
उत्तर: क. कोनो प्रतिक्रिया, हलचल नहि; सब सामान्य
व्याख्या: नन्दीक गंभीरता आ घटना सँ दूरी कथा-स्मृति कैं जटिल बनबैत अछि।

प्रश्न 4147. नन्दी कोन ग्रुपमे टॉप कएलक?
क. English Honours Group
ख. Math Group
ग. Music Group
घ. Theatre Group
उत्तर: क. English Honours Group
व्याख्या: लेखमे हुनकर अंग्रेजी समूहमे प्रथम/शीर्ष प्रदर्शनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4148. वक्ता ओ जमाना कैं किएक 'बेजाय' कहैत अछि?
क. लड़का-लड़कीमे बातचीतक संचार नहि होइत छल
ख. बस नहि छल
ग. कम्प्यूटर छल
घ. चिड़ै खसैत छल
उत्तर: क. लड़का-लड़कीमे बातचीतक संचार नहि होइत छल
व्याख्या: सामाजिक संकोच संवादहीनता उत्पन्न करैत अछि।

प्रश्न 4149. वक्ता आ दिनेशक मुँहसँ कौन शब्द नहि फुटल?
क. Congratulations
ख. माहुर
ग. सेवा
घ. बी.डी.ओ.
उत्तर: क. Congratulations
व्याख्या: नन्दीक उपलब्धिपर कहब चाहियो संकोच संवाद रोकि दैत अछि।

प्रश्न 4150. 'कॉलेज आ संवेदनशील घटना'क सम्बन्ध कथामे कोना कहल गेल?
क. एक-दोसरक पर्याय जकाँ
ख. पूर्ण असंबद्ध
ग. कानूनी मसला
घ. न्यूक्लियर नीति
उत्तर: क. एक-दोसरक पर्याय जकाँ
व्याख्या: कॉलेज स्मृति अनेक अनकहल भावनात्मक घटनासँ बनल अछि।

प्रश्न 4151. नन्दी प्रसंग ‘दू पत्र’मे की खोलैत अछि?
क. युवा-प्रेम, सामाजिक मौन आ स्मृति-लज्जाक त्रिकोण
ख. भोजनक विधि
ग. रिश्वत
घ. पक्षी-संरक्षण
उत्तर: क. युवा-प्रेम, सामाजिक मौन आ स्मृति-लज्जाक त्रिकोण
व्याख्या: एहि प्रसंगमे अनकहल भाव सभ दीर्घकालिक स्मृति बनैत अछि।

प्रश्न 4152. दिनेशकेँ पत्र लिखबासँ एहि प्रसंगक सम्भावित भूमिका की?
क. ओहो एहि घटना पर स्मृति/चर्चा करितथि
ख. ओ मीट किनत
ग. ओ मेला लगायत
घ. ओ चिड़ै बचायत
उत्तर: क. ओहो एहि घटना पर स्मृति/चर्चा करितथि
व्याख्या: वक्ता मानैत छथि जे दिनेश पहिल पत्र लिखितथि तँ ई घटना जरूर उठबितथि।

खण्ड ४२१ : विदेह-सदेह १ — ‘दू पत्र’: सीमा, पहाड़क गीत आ राममणि

प्रश्न 4153. वक्ताक जन्मभूमि आ कर्मभूमि कोन देश-संयोगमे देखायल गेल?
क. नेपाल
ख. इंग्लैंड
ग. असम
घ. मुम्बई
उत्तर: क. नेपाल
व्याख्या: नेपाल कर्म/जीवनभूमि भेलाक कारण बहुत लोकसँ सम्पर्क टूटल अनुभव अछि।

प्रश्न 4154. वक्ता सीमा-जीवनक मजा कोना कहैत अछि?
क. कखन उत्तराभिमुख, कखन दक्षिणाभिमुख
ख. केवल एक दिशा
ग. केवल विदेश
घ. पूर्ण निर्वासन
उत्तर: क. कखन उत्तराभिमुख, कखन दक्षिणाभिमुख
व्याख्या: सीमा-संधि जीवन दू संस्कृतिक बीच आवागमनक अनुभूति अछि।

प्रश्न 4155. दूटा संस्कृति मिश्रित जीवनक भाव की कहल गेल?
क. उत्फुल्लता
ख. घृणा
ग. मौन
घ. बन्धन
उत्तर: क. उत्फुल्लता
व्याख्या: वक्ता मिश्रित जीवन केँ आनन्ददायक सांस्कृतिक अनुभव मानैत अछि।

प्रश्न 4156. पहाड़क गीत आ समुद्रक लहरि सम्बन्धी रूपक की संकेत करैत अछि?
क. भाषा भिन्न मुदा भाव एक
ख. मौसम रिपोर्ट
ग. युद्ध
घ. व्यापार
उत्तर: क. भाषा भिन्न मुदा भाव एक
व्याख्या: गीतक भाव सीमासँ ऊपर मानवीय एकत्व देखबैत अछि।

प्रश्न 4157. १९७१ क स्मृतिमे आयोजन कतय भेल?
क. काठमांडूसँ दूर उत्तर बालाजू उद्यानसँ ऊपर पहाड़ी पर
ख. पानापुर
ग. जटिंगा
घ. दरभंगा बैंक
उत्तर: क. काठमांडूसँ दूर उत्तर बालाजू उद्यानसँ ऊपर पहाड़ी पर
व्याख्या: English Language Training Institute क वनभोज एहि स्थान पर भेल।

प्रश्न 4158. वनभोज समारोहमे नाचक दृश्य कोना बतायल गेल?
क. लड़का-लड़की भेद बिना निर्विकार नाच
ख. पूर्ण निषेध
ग. केवल पुरुष
घ. केवल सैनिक
उत्तर: क. लड़का-लड़की भेद बिना निर्विकार नाच
व्याख्या: पहाड़ी वातावरण मे कला-स्फुरणक सहजता देखायल अछि।

प्रश्न 4159. वक्ता अपना समाजक कौन अवरोध बतबैत अछि?
क. लज्जा कलाकेँ प्रस्फुटित नहि होबय दैत अछि
ख. अत्यधिक गीत
ग. बहुत बर्फ
घ. पक्षी हमला
उत्तर: क. लज्जा कलाकेँ प्रस्फुटित नहि होबय दैत अछि
व्याख्या: तुलना पहाड़क खुलापन आ अपन समाजक संकोच बीच अछि।

प्रश्न 4160. वनभोजमे गीत के गओलक?
क. राममणि
ख. दिनेश
ग. मजहर
घ. बिदेसरा
उत्तर: क. राममणि
व्याख्या: राममणिक गीत पूरा मण्डली केँ मंत्रमुग्ध करैत अछि।

प्रश्न 4161. गीत सुनि एक प्रशिक्षार्थी/शिक्षिकाक आँखिसँ की बहय लगल?
क. नोर
ख. हँसी
ग. धुँआ
घ. शराब
उत्तर: क. नोर
व्याख्या: गीत संवेदनाक सामूहिक अनुभव बनैत अछि।

प्रश्न 4162. वक्ता राममणिक पता कखन धरि संजोने अछि?
क. डायरीमे, भले पन्ना जीर्ण-शीर्ण भऽ गेल
ख. कम्प्यूटर फाइलमे मात्र
ग. मेला पोस्टरमे
घ. मन्दिरक दीवार पर
उत्तर: क. डायरीमे, भले पन्ना जीर्ण-शीर्ण भऽ गेल
व्याख्या: स्मृति पुरान डायरीक पीयर पन्नामे जिउँत रहैत अछि।

खण्ड ४२२ : विदेह-सदेह १ — डॉ. बलभद्र मिश्र: मोदानन्द झा पंजीकार संस्मरण

प्रश्न 4163. डॉ. बलभद्र मिश्रक आलेख ककर संस्मरण अछि?
क. स्व. पं. मोदानन्द झा जी
ख. केदारनाथ चौधरी
ग. कुमार मनोज
घ. अयोध्यानाथ
उत्तर: क. स्व. पं. मोदानन्द झा जी
व्याख्या: शीर्षकहि पंजीकार मोदानन्द झाक स्मरण अछि।

प्रश्न 4164. मोदानन्द झा जी कोन क्षेत्रक श्रेष्ठ व्यक्ति कहल गेलाह?
क. पंजीकारिता/पंजी-शास्त्र
ख. कम्प्यूटर
ग. नौकाविहार
घ. शिकार
उत्तर: क. पंजीकारिता/पंजी-शास्त्र
व्याख्या: आलेख हुनका मूर्धन्य पंजीकारक रूपमे स्मरण करैत अछि।

प्रश्न 4165. मोदानन्द झा जी कतय प्रतिवर्ष जाइत छलाह?
क. सौराठ सभा गाछी
ख. जटिंगा
ग. लंदन
घ. टेम्स नदी
उत्तर: क. सौराठ सभा गाछी
व्याख्या: पंजी-सिद्धान्त आ विवाह-सूचनाक आदान-प्रदान लेल सौराठ सभागाछी महत्वपूर्ण छल।

प्रश्न 4166. सौराठ सभागाछीमे ओ की आदान-प्रदान/लिपिबद्ध करैत छलाह?
क. पूबारी-पछबारी पारक विवाहक सिद्धान्त
ख. कम्प्यूटर बिल
ग. पक्षी सूची
घ. नाटक टिकट
उत्तर: क. पूबारी-पछबारी पारक विवाहक सिद्धान्त
व्याख्या: एहि प्रक्रिया सँ हुनक पंजी-पुस्तिका वंश-भंडार बनैत गेल।

प्रश्न 4167. महाराज दरभंगाक अध्यक्षतामे आयोजित कोन परीक्षामे ओ प्रथम स्थान पेलनि?
क. पंजीकार धौत परीक्षा
ख. कम्प्यूटर परीक्षा
ग. सैनिक परीक्षा
घ. संगीत परीक्षा
उत्तर: क. पंजीकार धौत परीक्षा
व्याख्या: एहि परीक्षासँ हुनका ‘लब्ध धौत प्रतिष्ठ’ उपाधि भेटल।

प्रश्न 4168. निर्णायक मंडलमे केहन विद्वानक उल्लेख अछि?
क. महामहोपाध्याय सर गंगानाथ झा सम प्रभृति विद्वान
ख. कुयेक
ग. रिक्शावाला
घ. बिदेसरा
उत्तर: क. महामहोपाध्याय सर गंगानाथ झा सम प्रभृति विद्वान
व्याख्या: निर्णायक मंडल विद्वत्ता आ परम्परागत प्रामाणिकता दर्शबैत अछि।

प्रश्न 4169. लेखकक मोदानन्द झा जीसँ सम्पर्क कहिया सँ बनल?
क. १९५५ मे विवाहक बाद
ख. २००७ मे
ग. १९१४ मे
घ. दशमीमे
उत्तर: क. १९५५ मे विवाहक बाद
व्याख्या: लेखक अपन विवाहक बादसँ हुनका मृत्यु सँ तीन मास पूर्व धरि सम्पर्कक बात कहैत छथि।

प्रश्न 4170. मोदानन्द झा जी वर-कन्याक अधिकार देखैत काल पंजी-पोथा किएक उलटैत छलाह?
क. गलती नहि भऽ जाए, ताहि सावधानीसँ
ख. उन्हें किछु याद नहि छल
ग. मेला सजाबय
घ. कविता लिखय
उत्तर: क. गलती नहि भऽ जाए, ताहि सावधानीसँ
व्याख्या: स्मरण-शक्ति होइतहुँ लिखित प्रमाण जाँचब हुनक अनुशासन छल।

प्रश्न 4171. मोदानन्द झा जीक स्वभाव कोना रेखांकित अछि?
क. सदाचार-संपन्न, अहंकार-मुक्त, स्नेही
ख. घमण्डी
ग. अव्यवस्थित
घ. हिंस्र
उत्तर: क. सदाचार-संपन्न, अहंकार-मुक्त, स्नेही
व्याख्या: लेखक हुनक सद्विचार, सद्व्यवहार आ सदाशयता सँ प्रभावित छथि।

प्रश्न 4172. मोदानन्द झाक पुत्र विद्यनन्द झा/मोहनजी संबंधी आशा की व्यक्त अछि?
क. पंजीकारितामे निष्ठापूर्वक मनोयोग रखने छथि
ख. थिएटर छोड़ि देलनि
ग. बिजली ऑफिसमे
घ. जटिंगा गेला
उत्तर: क. पंजीकारितामे निष्ठापूर्वक मनोयोग रखने छथि
व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे पुत्रक निष्ठासँ पिताक आत्माकेँ शान्ति भेटैत होयत।

खण्ड ४२३ : विदेह-सदेह १ — भालचन्द्र झा: रंगकर्म, लेखन आ माध्यम

प्रश्न 4173. भालचन्द्र झा कतेक भाषामे निष्णात बतायल गेलाह?
क. मैथिली, हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजराती
ख. केवल मैथिली
ग. केवल अंग्रेजी
घ. केवल संस्कृत
उत्तर: क. मैथिली, हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजराती
व्याख्या: परिचय हुनक बहुभाषी रंग-संसार रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 4174. भालचन्द्र झा कतेक वर्षसँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे निर्देशक कहल गेलाह?
क. १९७४ सँ
ख. २००८ सँ
ग. १९१४ सँ
घ. १९५५ सँ
उत्तर: क. १९७४ सँ
व्याख्या: परिचयमे १९७४ ई.सँ रंगनिर्देशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4175. हुनका महाराष्ट्र राज्य उपाधि कोन-कोन वर्षमे भेटल?

क. १९८६ आ १९९९

ख. २००५ आ २००७

ग. १९१४ आ १९१७

घ. १९५८ आ १९५९

उत्तर: क. १९८६ आ १९९९

व्याख्या: परिचयमे दु बेर राज्य-स्तरीय उपाधि उल्लेखित अछि।

प्रश्न 4176. भालचन्द्र झा आइ.एन.टी. लेल कोन नाटक निर्देशित केलनि?

क. सीता

ख. माहुर

ग. दू पत्र

घ. हारल मनुक्ख

उत्तर: क. सीता

व्याख्या: परिचयमे आइ.एन.टी.क लेल ‘सीता’ निर्देशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4177. ‘वासुदेव संगति’सँ हुनक सम्बन्ध कोन क्षेत्रसँ जुड़ल अछि?

क. लोककलाक शोध आ प्रदर्शन

ख. बिजली विभाग

ग. आणविक समझौता

घ. पत्राचार

उत्तर: क. लोककलाक शोध आ प्रदर्शन

व्याख्या: परिचयमे लोककला शोध-प्रदर्शनक सम्बन्ध देखायल अछि।

प्रश्न 4178. भालचन्द्र झा विकलांग बाल लेल ककर माध्यमसँ जुड़ल छथि?

क. थिएटर

ख. कम्प्यूटर बैंकिंग

ग. जंगल शिकार

घ. पान दुकान

उत्तर: क. थिएटर

व्याख्या: थिएटरक सामाजिक-शैक्षिक उपयोगक संकेत अछि।

प्रश्न 4179. हुनक टीवी-मीडिया कार्यमे कोन मराठी दैनिक धारावाहिकक उल्लेख अछि?

क. आभलमया

ख. माहुर

ग. उगना हाल्ट

घ. मकड़ी

उत्तर: क. आभलमया

व्याख्या: परिचयमे ‘आभलमया’ ६० एपीसोडक रूपमे अछि।

प्रश्न 4180. बच्चाक लेल कठपुतली शोक रूपमे कोन नाम उल्लेखित अछि?

क. बैंगन राजा

ख. माहुर

ग. दू पत्र

घ. नव-वर्ष

उत्तर: क. बैंगन राजा

व्याख्या: परिचयमे ‘बैंगन राजा’, ‘मेरा देश महान’, ‘झूठा पालतू’ सन शो अछि।

प्रश्न 4181. भालचन्द्र झा एखन कोन रूपमे कार्यरत बतायल गेलाह?
क. फ्री-लांस लेखक-निर्देशक
ख. बैंककर्मी
ग. पंजीकार
घ. कुयेक
उत्तर: क. फ्री-लांस लेखक-निर्देशक
व्याख्या: परिचयक अन्तिम सूचना वर्तमान स्वतंत्र लेखन-निर्देशन अछि।

प्रश्न 4182. भालचन्द्र झाक परिचयक मुख्य बोध की अछि?
क. मैथिली मूलक कलाकारक बहुभाषी-बहुमाध्यम रंग-संसार
ख. केवल ग्रामीण कथा
ग. केवल कम्प्यूटर शिक्षा
घ. केवल लोकगीत
उत्तर: क. मैथिली मूलक कलाकारक बहुभाषी-बहुमाध्यम रंग-संसार
व्याख्या: परिचय थिएटर, टीवी, लेखन, कार्यशाला आ कठपुतली तक फैलल कला-क्षेत्र देखबैत अछि।

खण्ड ४२४ : विदेह-सदेह १ — भालचन्द्र झा: ‘अस्तित्व’ आ ‘हमर माय’

प्रश्न 4183. ‘अपन अस्तित्वक असली मोल’ कविता मे अस्तित्व बुझबाक लेल ककरा पूछबाक कहल गेल?
क. सुकरात कैँ
ख. बिदेसरा कैँ
ग. मजहर कैँ
घ. पोस्टमैन कैँ
उत्तर: क. सुकरात कैँ
व्याख्या: कविता वैश्विक दार्शनिक संदर्भसँ आत्म-अस्तित्वक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 4184. अस्तित्व कविता मे क्रम कोन दिस सँ कोन दिस घटैत अछि?
क. विश्वक नक्शा सँ देश, राज्य, जिला, गाम, घर आ अपना धरि
ख. घर सँ जंगल
ग. बस सँ रेस्टोरेंट
घ. पत्र सँ पोस्टमैन
उत्तर: क. विश्वक नक्शा सँ देश, राज्य, जिला, गाम, घर आ अपना धरि
व्याख्या: कविता विराट भूगोलसँ व्यक्तिगत आत्म तक पहचानक अनुक्रम बनबैत अछि।

प्रश्न 4185. ‘विश्वक नक्शा’ बिम्बक काम की अछि?
क. व्यक्ति-अस्तित्वक लघुता आ जटिल स्थानिकता देखाबय
ख. नौकाविहार
ग. शिकार
घ. रिश्वत
उत्तर: क. व्यक्ति-अस्तित्वक लघुता आ जटिल स्थानिकता देखाबय
व्याख्या: विश्व-मानचित्र पर अपना स्थान देखब आत्म-मूल्यक दार्शनिक अभ्यास बनैत अछि।

प्रश्न 4186. ‘हमर माय’ कविता मे वक्ता जन्मक बाद मायक पहिल दृश्य कतय देखैत अछि?
क. भनसिया घरमे
ख. कम्प्यूटर कक्षमे
ग. बैंकमे
घ. जटिंगा पहाड़ी पर
उत्तर: क. भनसिया घरमे
व्याख्या: कविता मातृत्व कैँ रसोई-श्रम आ घरेलू तापसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4187. माय तीतल जारैनक धुआँमे की करैत रहय?
क. धधरा/आगिक आवाहन
ख. पत्र लिखैत
ग. मीट किनैत
घ. चिड़ै पकड़ैत
उत्तर: क. धधरा/आगिक आवाहन
व्याख्या: धुआँ आ चूल्हा स्त्री-श्रमक स्थायी दृश्य बनैत अछि।

प्रश्न 4188. कविता मे मायकेँ आन कोनो ठाम नहि देखल गेल, मुख्यतः कतय देखल गेल?
क. कोनटा घरक ऐँठार, अँगना, जारैन, जाँत, ढेकी आदि घरेलू श्रमस्थल
ख. विश्वविद्यालय
ग. टेलीविजन स्टूडियो
घ. चबूतरा
उत्तर: क. कोनटा घरक ऐँठार, अँगना, जारैन, जाँत, ढेकी आदि घरेलू श्रमस्थल
व्याख्या: कविता घरेलू श्रमक अदृश्यता आ सर्वव्यापकता उजागर करैत अछि।

प्रश्न 4189. 'सभक ऐँठ पखारैत' पंक्ति मायक कोन रूप देखबैत अछि?
क. परिवारक अविराम सेवा आ अपमानित श्रम
ख. राजकीय सत्ता
ग. विदेश-यात्रा
घ. आणविक नीति
उत्तर: क. परिवारक अविराम सेवा आ अपमानित श्रम
व्याख्या: कविता मातृत्वक महिमाक संग श्रम-पीड़ा सेहो देखबैत अछि।

प्रश्न 4190. 'हमर माय'मे मायक शरीर/समय कोना उपस्थित अछि?
क. लगातार घरेलू काममे खपैत
ख. निष्क्रिय दर्शक
ग. मेला-कलाकार
घ. पत्रलेखक
उत्तर: क. लगातार घरेलू काममे खपैत
व्याख्या: कविता मायकेँ भावनात्मक प्रतीक मात्र नहि, श्रमशील देह बनबैत अछि।

प्रश्न 4191. भालचन्द्र झाक दूनू कविता मे साझा प्रश्न की अछि?
क. अस्तित्वक मूल्य—व्यक्ति, घर, मातृत्व आ श्रमक आधार पर
ख. बिजली मीटर
ग. पक्षी-शिकार
घ. रिश्वत
उत्तर: क. अस्तित्वक मूल्य—व्यक्ति, घर, मातृत्व आ श्रमक आधार पर
व्याख्या: पहिल कविता आत्म-स्थान पूछैत अछि, दोसर मायकेँ अस्तित्वक मौन आधार बनबैत अछि।

प्रश्न 4192. 'हमर माय'क साहित्यिक शक्ति की अछि?
क. मातृ-स्तुति केँ घरेलू श्रमक करुण यथार्थसँ जोड़ब
ख. केवल हास्य
ग. केवल नीति-विवाद
घ. केवल सूचना-सूची
उत्तर: क. मातृ-स्तुति केँ घरेलू श्रमक करुण यथार्थसँ जोड़ब
व्याख्या: कविता मायक महिमा रोमान्टिक करैत अछि, मुदा श्रमक धुआँ, ऐँठ आ जाँत-ढेकी सेहो देखबैत अछि।

खण्ड ४२५ : विदेह-सदेह १ — भरत माँझी: “हमर घुरलाक बाद”

प्रश्न 4193. भरत माँझीक “हमर घुरलाक बाद” कविता मे वक्ता अपन घुरलाक बाद की खाली नहि छोड़बाक आग्रह करैत अछि?

क. ओहि स्थानकेँ

ख. गामक हाटकेँ

ग. पोथीक जिल्दकेँ

घ. राजपाटक आसनकेँ

उत्तर: क. ओहि स्थानकेँ

व्याख्या: कविता अनुपस्थितिक बादो स्मृति-स्थान केँ जीवित राखबाक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 4194. कविता मे फूलसभक संग कोन दृष्टि अपनएबाक कहल गेल अछि?

क. टटका वा मौलाएल, दुनूक महत्व बुझबाक

ख. केवल टटका फूल राखबाक

ग. सभ फूल फेकबाक

घ. केवल रंग गिनबाक

उत्तर: क. टटका वा मौलाएल, दुनूक महत्व बुझबाक

व्याख्या: फूलक ताजगी-मुरझानाइ सँ ऊपर स्मृति आ अर्थक आग्रह अछि।

प्रश्न 4195. “नुकाएल भोथिआएल स्वप्न” खोलबाक आग्रह कोन भाव जगबैत अछि?

क. दबायल सपना केँ फेर सँ अलंकृत करबाक भाव

ख. सपना छोड़ि देबाक भाव

ग. व्यापार बन्द करबाक भाव

घ. राजनीति नकारबाक भाव

उत्तर: क. दबायल सपना केँ फेर सँ अलंकृत करबाक भाव

व्याख्या: कविता दबायल इच्छाक पुनरुद्धारक ओर संकेत करैत अछि।

प्रश्न 4196. सभ ठामक लैम्प केँ उनटि देबाक बिम्ब की संकेत करैत अछि?

क. अन्हारक विरुद्ध सक्रिय हस्तक्षेप

ख. अन्हार स्वीकार करब

ग. दीप बुतायब

घ. मौन तमाशा देखब

उत्तर: क. अन्हारक विरुद्ध सक्रिय हस्तक्षेप

व्याख्या: प्रकाशक बिम्ब प्रतिरोध आ जागरणक बिम्ब अछि।

प्रश्न 4197. कविता मे समुद्र आ आकाश प्रति “घृणा नहि” किएक कहल गेल अछि?

क. भय वा विपत्ति बीचो व्यापक प्रकृति सँ द्वेष नहि करबाक लेल

ख. प्रकृति नष्ट करबाक लेल

ग. आकाश बेचबाक लेल

घ. समुद्र सुखायबाक लेल

उत्तर: क. भय वा विपत्ति बीचो व्यापक प्रकृति सँ द्वेष नहि करबाक लेल

व्याख्या: वक्ता संकट मे सेहो व्यापक विश्व-दृष्टि आ धैर्य सिखबैत अछि।

प्रश्न 4198. “पृथ्वीकेँ सममिश्रित स्थान” बुझबाक बात कोन मूल्य व्यक्त करैत अछि?

क. विविधता आ सह-अस्तित्वक मूल्य

ख. एकरूप दमन

ग. जातीय घमण्ड

घ. भाषिक उपेक्षा

उत्तर: क. विविधता आ सह-अस्तित्वक मूल्य

व्याख्या: पृथ्वी एकरंगी नहि, अनेक रूपक संयोग अछि।

प्रश्न 4199. कविता मे “बाट ताकू” कहब ककर प्रतीक्षा बनैत अछि?
क. वक्ताक पुनरागमन आ स्मृतिक पुनर्संयोग
ख. दुकानक ग्राहक
ग. बैंक आदेश
घ. चुनावी भाषण
उत्तर: क. वक्ताक पुनरागमन आ स्मृतिक पुनर्संयोग
व्याख्या: प्रतीक्षा कविता कैं विरहक बजाय आशा बनबैत अछि।

प्रश्न 4200. सिरिसवक बीआसँ बाट बाउग करबाक बिम्ब की अर्थ देत अछि?
क. छोट बीज सँ भविष्यक राह रोपबाक संकल्प
ख. बीज नष्ट करब
ग. राह रोकब
घ. केवल शोर करब
उत्तर: क. छोट बीज सँ भविष्यक राह रोपबाक संकल्प
व्याख्या: बीज भविष्य, स्मृति आ धरतीसँ जुड़ल पुनरागमनक प्रतीक अछि।

प्रश्न 4201. “हम घुरब”क पुनरुक्ति कविता मे की प्रभाव बनबैत अछि?
क. अटल वापसी आ स्मृति-निष्ठाक आश्वासन
ख. निराश पलायन
ग. पूर्ण विस्मृति
घ. आत्मसमर्पण
उत्तर: क. अटल वापसी आ स्मृति-निष्ठाक आश्वासन
व्याख्या: पुनरुक्ति प्रतिज्ञा जकाँ सुनाइत अछि।

प्रश्न 4202. भरत माँझीक कविता संपूर्ण रूपेँ कोन भावपर आधारित बुझाइत अछि?
क. अनुपस्थिति, स्मृति, प्रतिरोध आ धरतीसँ लगाव
ख. दरबारी विनोद
ग. सिर्फ व्यापार
घ. यांत्रिक सूचना
उत्तर: क. अनुपस्थिति, स्मृति, प्रतिरोध आ धरतीसँ लगाव
व्याख्या: कविता निजी विदाई कैं व्यापक मानवीय व पृथ्वीगत जिम्मेदारीसँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ४२६ : विदेह-सदेह १ — भरत माँझीक कवितामे जागरण आ पृथ्वी-बोध

प्रश्न 4203. “रहू जागल” पंक्ति कविता मे कोन नैतिक आग्रह अछि?
क. स्मृति आ जिम्मेदारी प्रति सजग रहबाक
ख. उदासीन रहबाक
ग. स्थान छोड़बाक
घ. घृणा फैलायबाक
उत्तर: क. स्मृति आ जिम्मेदारी प्रति सजग रहबाक
व्याख्या: जागरण केवल नींदक विपरीत नहि, नैतिक चौकसी अछि।

प्रश्न 4204. कविता मे अन्हारक प्रति रवैया की अछि?
क. अन्हारकेँ रोकबाक, मुदा जगतसँ घृणा नहि करबाक
ख. अन्हारक पूजा करबाक
ग. समुद्र नकारबाक
घ. आकाशसँ बदला लेबाक
उत्तर: क. अन्हारकेँ रोकबाक, मुदा जगतसँ घृणा नहि करबाक
व्याख्या: कविता प्रतिरोध आ करुणा दुनूक संतुलन राखैत अछि।

प्रश्न 4205. मौलाएल फूल न फेकबाक आग्रह कोन सामाजिक अर्थ खोलैत अछि?
क. पुरान, थाकल वा भूला देल वस्तुक मूल्य बचाएब
ख. केवल चमकदार वस्तु मानब
ग. बुजुर्ग स्मृति हटाएब
घ. साहित्यक अवमानना
उत्तर: क. पुरान, थाकल वा भूला देल वस्तुक मूल्य बचाएब
व्याख्या: कविता उपयोगितावादी दृष्टिक विरुद्ध स्मृति-सम्मानक पक्ष लेत अछि।

प्रश्न 4206. “नुकाएल स्वप्न” अलंकृत करबाक पंक्ति कोन प्रक्रिया संकेत करैत अछि?
क. दबा देल आकांक्षा कैं प्रतिष्ठा देबाक
ख. स्वप्नक उपहास
ग. जड़ता
घ. हिंसा
उत्तर: क. दबा देल आकांक्षा कैं प्रतिष्ठा देबाक
व्याख्या: स्वप्नक पुनर्सज्जा आंतरिक पुनर्निर्माणक बिम्ब अछि।

प्रश्न 4207. कविताक वक्ता अपन लौटबाक घोषणा कुन धरतीपर करैत अछि?
क. एहि एकमात्र पृथ्वीपर
ख. कोनो कृत्रिम नगरपर
ग. राजसिंहासनपर
घ. दुकानक बरामदा पर
उत्तर: क. एहि एकमात्र पृथ्वीपर
व्याख्या: पृथ्वी एकटा साझा घरक रूपमे देखायल अछि।

प्रश्न 4208. कविता मे “स्थान” आ “पथ” दुनू बिम्ब मिलि की रचैत अछि?
क. स्मृति सँ यात्रा आ भविष्य धरिक सेतु
ख. स्थिर बन्दीपन
ग. केवल बाजार
घ. कानूनी आदेश
उत्तर: क. स्मृति सँ यात्रा आ भविष्य धरिक सेतु
व्याख्या: स्थान सुरक्षित राखब आ पथ रोपब—दुनू वापसीक तैयारी अछि।

प्रश्न 4209. कविता मे वक्ता अनुपस्थित होइतहुँ पाठक/श्रोता सँ की करब चाहैत अछि?
क. सक्रिय संरक्षण आ प्रतीक्षा
ख. सबटा विसरब
ग. सिर्फ मनोरंजन
घ. झूठा उत्सव
उत्तर: क. सक्रिय संरक्षण आ प्रतीक्षा
व्याख्या: वक्ता अनुपस्थितिक बादो जिम्मेदारी साझा करबैत अछि।

प्रश्न 4210. “समुद्र देखू” पंक्ति मे घबराहट नहि करबाक आग्रह केहन मनोदशा बनबैत अछि?
क. विस्तृत, धैर्यपूर्ण आ साहसी मनोदशा
ख. संकुचित भय
ग. घृणात्मक आवेग
घ. मिथ्या अहंकार
उत्तर: क. विस्तृत, धैर्यपूर्ण आ साहसी मनोदशा
व्याख्या: विशालता कैं शांत मनसँ देखब कविता कैं आध्यात्मिक आयाम दैत अछि।

प्रश्न 4211. एहि कवितामे प्रकृति मुख्यतः कोन रूपमे अछि?
क. मानवीय स्मृति आ आशाक सहचर
ख. शत्रु
ग. सिर्फ सजावट
घ. कर-व्यवस्था
उत्तर: क. मानवीय स्मृति आ आशाक सहचर
व्याख्या: फूल, पृथ्वी, समुद्र, आकाश, बीज—सभ स्मृति-नैतिकता कैं गाढ़ करैत अछि।

प्रश्न 4212. भरत माँझीक कविता पाठक कैं अन्ततः कोन काज सौंपैत अछि?
क. स्थान, सपना, प्रकाश आ पथक रक्षा
ख. नाम-सूची बनायब
ग. मूल्य गिनब
घ. दोषारोपण करब
उत्तर: क. स्थान, सपना, प्रकाश आ पथक रक्षा
व्याख्या: कविता स्मृति-रक्षा कैं सामूहिक दायित्व बनबैत अछि।

खण्ड ४२७ : विदेह-सदेह १ — भवनाथ “दीपक”: अभियान गीत

प्रश्न 4213. भवनाथ “दीपक”क “अभियान गीत”क आरम्भिक पुकार की अछि?
क. उठह, चलह, बढह
ख. रुकह, सुतह, छोड़ह
ग. किनह, बेचह, भागह
घ. मौन रहू, झुकू, डेरू
उत्तर: क. उठह, चलह, बढह
व्याख्या: गीत आरम्भे गतिशील सामूहिक आह्वान सँ होइत अछि।

प्रश्न 4214. गीत मे घरक भेदभाव कैं की बुझबाक कहल गेल अछि?
क. शत्रुक आगमनक संकेत
ख. मैत्रीक आधार
ग. उत्सवक नियम
घ. व्यक्तिगत मनोरंजन
उत्तर: क. शत्रुक आगमनक संकेत
व्याख्या: भीतरक विभाजन बाहरी संकटक अवसर बनैत अछि।

प्रश्न 4215. “आन सँग एक बुद्धि भेल” पंक्ति कोन लक्ष्य दैत अछि?
क. समूहक साझा बुद्धि आ संयुक्त दिशा
ख. अलगाव
ग. जातीय दर्प
घ. निजी स्वार्थ
उत्तर: क. समूहक साझा बुद्धि आ संयुक्त दिशा
व्याख्या: गीत भेद छोड़ि साझा विचार पर बल दैत अछि।

प्रश्न 4216. गीत मे “विश्व मंच” पर कोन दावा अछि?
क. हम उचित जगह लेब
ख. हम हटि जाएब
ग. हम मौन रहब
घ. हम भाषा छोड़ब
उत्तर: क. हम उचित जगह लेब
व्याख्या: गीत मिथिला/मैथिली समाजक आत्मविश्वास जगबैत अछि।

प्रश्न 4217. “जाति–पाँति वर्ण धर्म भेदभाव हीन” पंक्ति कोन समाज-दृष्टि व्यक्त करैत अछि?
क. समावेशी, भेदरहित समाज
ख. विभाजनकारी समाज
ग. सत्ता-केन्द्रित समाज
घ. मौन दर्शक समाज
उत्तर: क. समावेशी, भेदरहित समाज
व्याख्या: गीत सामाजिक एकताके अभियानक आधार बनबैत अछि।

प्रश्न 4218. गीत मे श्रमिक, कृषक, बुद्धिजीवी आ उद्यमी सभकेँ कोना जोडल गेल अछि?
क. एक सूत्रमे गूँथल विविध व्यक्ति-समूह
ख. अलग-अलग शत्रु
ग. राजकर्मक बाधा
घ. सिर्फ दर्शक
उत्तर: क. एक सूत्रमे गूँथल विविध व्यक्ति-समूह
व्याख्या: गीत समाजक विविध वर्ग केँ सामूहिक शक्ति मानैत अछि।

प्रश्न 4219. “भुक्ति मुक्ति हेतु” पंक्ति कोन दोहरा लक्ष्य खोलैत अछि?
क. जीवन-यापन आ आत्मिक/सामाजिक मुक्ति
ख. केवल भोज
ग. केवल युद्ध
घ. केवल मेला
उत्तर: क. जीवन-यापन आ आत्मिक/सामाजिक मुक्ति
व्याख्या: अभियान सांसारिक उन्नति आ मुक्ति, दुनू पक्षक बात करैत अछि।

प्रश्न 4220. गीत मे एकताक सेतु की करबाक साधन बनैत अछि?
क. हित-माटि संग जुड़ि सामूहिक रक्षा
ख. निजी लाभ
ग. दूर रहब
घ. विवाद बढ़ायब
उत्तर: क. हित-माटि संग जुड़ि सामूहिक रक्षा
व्याख्या: एकता केँ मातृभूमिक हितसँ जोडि देखायल अछि।

प्रश्न 4221. “सब प्रबुद्ध, सब सचेत” कोन भाव पैदा करैत अछि?
क. जन-जागरण आ सक्रिय नागरिकता
ख. नींद आ सुस्ती
ग. भ्रम आ पलायन
घ. अनुकरण मात्र
उत्तर: क. जन-जागरण आ सक्रिय नागरिकता
व्याख्या: गीत हर व्यक्ति केँ जागरूक कर्मकर्ता बनबैत अछि।

प्रश्न 4222. “अल्पप्राण” कहबाक प्रतिवाद गीतमे ककर लेल अछि?
क. मैथिल/मैथिलीक पुत्रक सामर्थ्य सिद्ध करबाक लेल
ख. शत्रुक प्रशंसा लेल
ग. भाषा छोड़बाक लेल
घ. निष्क्रियता लेल
उत्तर: क. मैथिल/मैथिलीक पुत्रक सामर्थ्य सिद्ध करबाक लेल
व्याख्या: गीत कमजोरीक आरोप नकारि ऊर्जा आ लक्ष्य पहचानबाक बात करैत अछि।

खण्ड ४२८ : विदेह-सदेह १ — भवनाथ “दीपक”: जागरण, लक्ष्य आ शत्रु-मित्र विवेक

प्रश्न 4223. “लक्ष्य चीन्हि लेल” पंक्ति अभियानक कुन चरणक सूचना दैत अछि?
क. सचेत लक्ष्य-निर्धारण
ख. दिशाहीन भटकाव
ग. आराम
घ. समर्पण
उत्तर: क. सचेत लक्ष्य-निर्धारण
व्याख्या: गीत केवल उत्साह नहि, लक्ष्यक स्पष्ट पहचान सेहो मांगैत अछि।

प्रश्न 4224. “निधि चीन्हि लेल” पंक्ति कैँ कोना बुझल जा सकैत अछि?
क. अपन संसाधन आ मूल्य पहचानबाक आग्रह
ख. संसाधन फेकबाक आग्रह
ग. ऋण बढ़ायब
घ. भाषा विसरब
उत्तर: क. अपन संसाधन आ मूल्य पहचानबाक आग्रह
व्याख्या: निधि अपन सांस्कृतिक, भाषिक आ सामाजिक पूँजीक रूपक अछि।

प्रश्न 4225. “शत्रु–मित्र केर भेद–विधि” चीन्हबाक आग्रह कोन चेतना बनबैत अछि?
क. राजनीतिक-सामाजिक विवेक
ख. अंध-उत्साह
ग. सर्वस्वीकार
घ. कर्महीनता
उत्तर: क. राजनीतिक-सामाजिक विवेक
व्याख्या: संग्राममे के सहायक आ के बाधक, ई पहचान जरूरी मानल गेल।

प्रश्न 4226. गीतक त्रयी “उठह-चलह-बढह” बार-बार आबि की करैत अछि?
क. सामूहिक गति आ अभियानक ताल बनबैत अछि
ख. कथा रोकैत अछि
ग. विरह बढ़बैत अछि
घ. व्यापार सूची दैत अछि
उत्तर: क. सामूहिक गति आ अभियानक ताल बनबैत अछि
व्याख्या: पुनरुक्ति नाराक ऊर्जा आ लोक-गीतक लय बनबैत अछि।

प्रश्न 4227. भवनाथ “दीपक”क गीतमे मातृभूमि ककर रूपमे उपस्थित अछि?
क. तिरहुतिक माटि/जन्मभूमि
ख. बाजारक गोदाम
ग. कम्प्यूटर प्रयोगशाला
घ. बैंक कक्ष
उत्तर: क. तिरहुतिक माटि/जन्मभूमि
व्याख्या: माटि आ जन्मभूमि गीतक भावुक आ राजनीतिक केन्द्र अछि।

प्रश्न 4228. “जन्मभूमि प्राण हेतु ठाढ़ हुअह” मे कोन आह्वान अछि?
क. जननी-भूमि लेल तन-मन सँ खड़ा होयबाक
ख. मायभूमि छोड़बाक
ग. भेदभाव बढ़ायबाक
घ. अवसर टारबाक
उत्तर: क. जननी-भूमि लेल तन-मन सँ खड़ा होयबाक
व्याख्या: गीतक राष्ट्र/मिथिला-बोध कर्मक रूपमे व्यक्त अछि।

प्रश्न 4229. गीतमे शत्रुकेँ “भैरवक स्वरूप” देखाय देबाक भाव की अछि?
क. साहसिक प्रतिरोधक कल्पना
ख. डरि भागबाक
ग. शत्रु-वंदना
घ. उदासीनता
उत्तर: क. साहसिक प्रतिरोधक कल्पना
व्याख्या: भैरव बिम्ब प्रतिरोधक प्रचंड रूपक अछि।

प्रश्न 4230. “के अलच्छ निन्दमे रहत भसैत चूप?” पंक्ति कोन चेतावनी दैत अछि?
क. सुस्ती आ मौन विनाशकारी अछि
ख. नींद श्रेष्ठ अछि
ग. मौन समाधान अछि
घ. भेदभाव लाभदायक अछि
उत्तर: क. सुस्ती आ मौन विनाशकारी अछि
व्याख्या: गीत निष्क्रिय मौनक विरुद्ध जागरणक पुकार अछि।

प्रश्न 4231. भवनाथक अभियान-गीतक भाषा मुख्यतः केहन अछि?
क. नारात्मक, सामूहिक आ ऊर्जस्वी
ख. व्यक्तिगत विलाप मात्र
ग. शुष्क सूचना
घ. हास्य-निबंध
उत्तर: क. नारात्मक, सामूहिक आ ऊर्जस्वी
व्याख्या: छंद, पुनरुक्ति आ आह्वान मिलि अभियानक स्वर बनबैत अछि।

प्रश्न 4232. एहि गीतक मूल संदेश की अछि?
क. भेद छोड़ि जागू, लक्ष्य चीन्हू, जन्मभूमि लेल बढ़ू
ख. घरमे विभाजन राखू
ग. भाषा छोड़ू
घ. स्मृति मेटू
उत्तर: क. भेद छोड़ि जागू, लक्ष्य चीन्हू, जन्मभूमि लेल बढ़ू
व्याख्या: गीत सामाजिक एकता, विवेक आ क्रियाशीलता कैँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ४२९ : विदेह-सदेह १ — रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”: साहित्यिक परिचय

प्रश्न 4233. रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”क जन्मस्थल कोन कहल गेल अछि?
क. बघचौरा, धनुषा
ख. बलौर, दरभंगा
ग. जगतपुर, सुपौल
घ. सलेमपुर, मधुबनी
उत्तर: क. बघचौरा, धनुषा
व्याख्या: परिचय हुनका नेपालक धनुषा क्षेत्रसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4234. हुनक वर्तमान/संपर्कित नगर कोन बतायल गेल?
क. जनकपुरधाम
ख. हैदराबाद
ग. गुवाहाटी
घ. लंदन
उत्तर: क. जनकपुरधाम
व्याख्या: परिचयमे जनकपुरधामक सक्रिय साहित्यिक-सम्पादकीय जीवन देखायल अछि।

प्रश्न 4235. रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”क शैक्षिक परिचयमे कोन उपाधि/अवस्था अछि?
क. त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए. आ मानद पी.एच.डी.
ख. केवल प्राथमिक शिक्षा
ग. केवल सैन्य प्रशिक्षण
घ. केवल कम्प्यूटर डिप्लोमा
उत्तर: क. त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए. आ मानद पी.एच.डी.
व्याख्या: परिचय हुनक औपचारिक शिक्षा आ मानद विद्वत्ता बतबैत अछि।

प्रश्न 4236. ओ कोन-कोन पत्र/पत्रिकासँ प्रधान सम्पादक/सम्पादन रूपेँ जुड़ल बतायल गेलाह?
क. गामघर, जनकपुर एक्सप्रेस, आंजुर, आंगन
ख. केवल बैंक पत्र
ग. केवल विज्ञान-पत्र
घ. केवल खेल पत्रिका
उत्तर: क. गामघर, जनकपुर एक्सप्रेस, आंजुर, आंगन
व्याख्या: हुनक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्ममे पत्रकारिता प्रमुख अछि।

प्रश्न 4237. हुनक “बन्द कोठरी: औनाइत धुँआ” कोन विधाक कृति रूपेँ उल्लिखित अछि?
क. कविता-संग्रह
ख. नाटक-संग्रह
ग. यात्रावृत्तांत
घ. बैंक रिपोर्ट
उत्तर: क. कविता-संग्रह
व्याख्या: परिचय मौलिक कृतिसूचीमे एकरा कविता-संग्रह मानैत अछि।

प्रश्न 4238. “तोरा संगे निह जएबौ रे कुजबा” कृति कोन विधासँ जुड़ल अछि?
क. कथा-संग्रह
ख. गीत-संग्रह
ग. चित्रकला-पोथी
घ. पंजी-पुस्तिका
उत्तर: क. कथा-संग्रह
व्याख्या: ई कृति मैथिली कथा-साहित्यक हिस्सा अछि।

प्रश्न 4239. रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”क जट-जटिन सम्बन्धी कृति ककर रूपमे अछि?
क. लोकनाट्य-अनुसंधान
ख. बालकथा
ग. कम्प्यूटर पाठ
घ. सैनिक संस्मरण
उत्तर: क. लोकनाट्य-अनुसंधान
व्याख्या: लोक-संस्कृति आ नाट्यपर शोध हुनक कार्यक्षेत्र अछि।

प्रश्न 4240. हुनक नेपाली कृतिमे “आजको धनुषा” कोन प्रकारक लेखनसँ जुड़ल अछि?
क. धनुषा/जनकपुर क्षेत्रक सांस्कृतिक आलेख
ख. केवल प्रेमगीत
ग. कृषि-हिसाब
घ. रसोई विधि
उत्तर: क. धनुषा/जनकपुर क्षेत्रक सांस्कृतिक आलेख
व्याख्या: परिचय नेपाली भाषामे सेहो सांस्कृतिक आलेखक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 4241. “नहि आब नहि”क नेपाली अनुवादक शीर्षक की बतायल गेल?
क. भयो, अब भयो
ख. समय को चीरकर
ग. माहुर
घ. दू पत्र
उत्तर: क. भयो, अब भयो
व्याख्या: परिचयमे ई अनुवाद-कार्य स्पष्ट रूपेँ देल अछि।

प्रश्न 4242. रामभरोस “भ्रमर”क परिचयक मुख्य अर्थ की अछि?
क. नेपालक मैथिली साहित्य, पत्रकारिता, लोक-संस्कृति आ संस्थागत कर्मक विस्तृत संगम
ख. एकमात्र गीतकार परिचय
ग. केवल राजनैतिक सूची
घ. सिर्फ व्यापारिक परिचय
उत्तर: क. नेपालक मैथिली साहित्य, पत्रकारिता, लोक-संस्कृति आ संस्थागत कर्मक विस्तृत संगम
व्याख्या: हुनक परिचय बहुविध साहित्यिक-सांस्कृतिक सक्रियता देखबैत अछि।

खण्ड ४३० : विदेह-सदेह १ — रामभरोस “भ्रमर”: सम्मान, सम्पादन आ सामाजिक सेवा

प्रश्न 4243. रामभरोस “भ्रमर” कैँ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कोन पुरस्कारक पहिल प्राप्तकर्ता कहल गेल?
क. मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार
ख. नोबेल पुरस्कार
ग. कम्प्यूटर पुरस्कार
घ. विद्युत सेवा पुरस्कार
उत्तर: क. मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार
व्याख्या: परिचयमे १९९५ मे घोषित मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4244. हुनका “मिथिला रत्न” सम्मान कतयक अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनसँ जुड़ल अछि?
क. मुम्बई
ख. जटिंगा
ग. हाफलांग
घ. टेम्स
उत्तर: क. मुम्बई
व्याख्या: परिचयमे अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मुम्बई द्वारा सम्मानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4245. हुनका दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल कोन संस्थासँ सम्मान/पुरस्कार भेटल?
क. नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषा आ जिला विकास समिति धनुषा
ख. रेलवे विभाग
ग. नॉर्थ कछार परिषद
घ. बिजली दफ्तर
उत्तर: क. नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषा आ जिला विकास समिति धनुषा
व्याख्या: पत्रकारिता हुनक सार्वजनिक जीवनक मुख्य आधार अछि।

प्रश्न 4246. सामाजिक सेवा सूचीमे तराई जनजाति अध्ययन प्रतिष्ठानमे हुनक भूमिका की अछि?
क. अध्यक्ष
ख. दर्शक
ग. बैंक क्लर्क
घ. रंग-निर्देशक
उत्तर: क. अध्यक्ष
व्याख्या: परिचयमे अध्यक्षीय भूमिका हुनक संस्थागत सक्रियता देखबैत अछि।

प्रश्न 4247. मैथिली अकादमी, नेपालसँ हुनक सम्बन्ध कोन पद रूपेँ अछि?
क. उपकुलपति
ख. छात्र
ग. नौकर
घ. रिक्शावाला
उत्तर: क. उपकुलपति
व्याख्या: परिचयमे उपकुलपति पदक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4248. नेपालक साझा प्रकाशनक सन्दर्भमे हुनका कोना चिन्हित कएल गेल?
क. पहिल मैथिल/मधेसी चेयरमैन
ख. पहिल सैनिक
ग. पहिल बैंक अधिकारी
घ. पहिल चित्रकार
उत्तर: क. पहिल मैथिल/मधेसी चेयरमैन
व्याख्या: ई सूचना नेपाली सार्वजनिक-सांस्कृतिक संस्थामे हुनक ऐतिहासिक भूमिका देखबैत अछि।

प्रश्न 4249. “आँजुर” आ “अंजुली”क उल्लेख हुनक कोन कर्मक्षेत्र देखबैत अछि?
क. पत्र-पत्रिका सम्पादन/प्रकाशन
ख. कृषि-व्यवसाय
ग. सैनिक जीवन
घ. बाल-खेल
उत्तर: क. पत्र-पत्रिका सम्पादन/प्रकाशन
व्याख्या: परिचयमे दूनू पत्रिकासँ सम्पादकीय सक्रियता व्यक्त अछि।

प्रश्न 4250. रामभरोस “भ्रमर”क सम्मान-सूची ककर सूचक अछि?
क. मैथिली आ नेपाली सांस्कृतिक क्षेत्रमे व्यापक स्वीकार्यता
ख. सिर्फ निजी प्रसिद्धि
ग. दुकान चलबय
घ. कम्प्यूटर साक्षरता
उत्तर: क. मैथिली आ नेपाली सांस्कृतिक क्षेत्रमे व्यापक स्वीकार्यता
व्याख्या: सम्मान अनेक संस्था आ स्थानसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4251. हुनक सामाजिक भूमिकासभमे “जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान” कोन रूपमे आबैत अछि?
क. अध्यक्षीय सांस्कृतिक संस्था
ख. बिजली ऑफिस
ग. पक्षी संरक्षण केन्द्र
घ. रेलवे स्टेशन
उत्तर: क. अध्यक्षीय सांस्कृतिक संस्था
व्याख्या: कला-प्रतिष्ठान सँ जनकपुरक कला-संस्कृति प्रति सक्रियता देखाइत अछि।

प्रश्न 4252. एहि परिचय सँ रामभरोस “भ्रमर”क व्यक्तित्वक केहन छवि बनैत अछि?
क. लेखक, सम्पादक, संस्कृतिकर्मी आ संस्था-निर्माता
ख. केवल दर्शक
ग. केवल व्यापारी
घ. केवल अभियन्ता
उत्तर: क. लेखक, सम्पादक, संस्कृतिकर्मी आ संस्था-निर्माता
व्याख्या: परिचय साहित्य, पत्रकारिता, अनुवाद, सम्पादन, सम्मान आ सामाजिक संस्थासभक समेकित चित्र दैत अछि।

खण्ड ४३१ : विदेह-सदेह १ — अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन: अनुभव आ नेपाल-भागीदारी

प्रश्न 4253. लेखककेँ दिल्लीमे होबयवाला अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनमे आमंत्रण के देलनि?
क. बैजू बाबू
ख. नरेश
ग. भवनाथ दीपक
घ. मजहर
उत्तर: क. बैजू बाबू
व्याख्या: संस्मरणक आरम्भमे बैजू बाबूक आमंत्रण आ आग्रहक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4254. पहिल आयोजनमे लेखक आ डा. विमल किएक नहि जा सकलाह?
क. आमंत्रण हड़बड़ी आ अस्पष्ट रूपमे आयल छल
ख. रेल बंद छल
ग. कविता नहि लिखल गेल
घ. कम्प्यूटर खराब छल
उत्तर: क. आमंत्रण हड़बड़ी आ अस्पष्ट रूपमे आयल छल
व्याख्या: लेखक अपन अनुपस्थितिक कारण आयोजन-संचारक अस्पष्टता मानैत छथि।

प्रश्न 4255. दिल्ली आयोजनमे नेपालसँ के सभ गेल रहथि?
क. धीरेन्द्र आ कमलेश झा
ख. भालचन्द्र आ भरत
ग. मजहर आ माने
घ. सुजाता आ रंजना
उत्तर: क. धीरेन्द्र आ कमलेश झा
व्याख्या: लेखमे काठमांडूसँ धीरेन्द्र आ कमलेश झाक उपस्थिति कहल गेल अछि।

प्रश्न 4256. अगिला वर्षक सम्मेलन कतय करबाक घोषणा ओहि अवसर पर भेल?
क. काठमांडू
ख. जटिंगा
ग. लंदन
घ. मनीगाछी
उत्तर: क. काठमांडू
व्याख्या: घोषणा नेपालक सहभागिता आ सम्मेलनक अन्तरराष्ट्रीय विस्तारक संकेत छल।

प्रश्न 4257. बैजू बाबू बादमे जनकपुर किएक अएलाह?
क. काठमांडू आयोजनक तैयारी बुझबाक लेल
ख. चिड़ै देखबाक लेल
ग. रिस्क फैक्टर गिनबाक लेल
घ. मीटर फाइल खोजबाक लेल
उत्तर: क. काठमांडू आयोजनक तैयारी बुझबाक लेल
व्याख्या: जनकपुर यात्रा सम्मेलन-प्रतिबद्धताक पुनर्परीक्षण छल।

प्रश्न 4258. काठमांडू आयोजनक प्रसंगमे धीरेन्द्र आदि लोक कोना चित्रित छथि?
क. पहिले गछनिहार मुदा बादमे पाछाँ हटि गेल
ख. पूरा आयोजन सम्पन्न केलनि
ग. शत्रु बनि गेलाह
घ. नौकाविहार करेलनि
उत्तर: क. पहिले गछनिहार मुदा बादमे पाछाँ हटि गेल
व्याख्या: संस्मरणमे आयोजकीय अनिश्चितता आ मर्माघातक प्रसंग अछि।

प्रश्न 4259. काठमांडू सम्भावना टूटलाक बाद बैजू बाबू कतय आयोजनक ब्यौंत धरौलनि?
क. मुम्बई
ख. कोइलख
ग. हाफलांग
घ. टेम्स
उत्तर: क. मुम्बई
व्याख्या: बैजू बाबूक सक्रियता सम्मेलन कैं नव शहर मे लऽ गेल।

प्रश्न 4260. लेखक मुम्बई जाएबाक निर्णय ककर विश्वाससँ प्रेरित भेल?
क. सम्मेलन भारत-नेपाल विद्वान/मैथिली सेवकक साझा मंच होयत
ख. सिर्फ पर्यटन होयत
ग. व्यापार मेला होयत
घ. सैनिक अभ्यास होयत
उत्तर: क. सम्मेलन भारत-नेपाल विद्वान/मैथिली सेवकक साझा मंच होयत
व्याख्या: लेखक सम्मेलन कैं सांस्कृतिक-साहित्यिक सेतु मानि भाग लेलनि।

प्रश्न 4261. मुम्बई यात्राक टिकट व्यवस्था ककर जिम्मा देल गेल?
क. चन्द्रेशजी
ख. गुरुजी
ग. बहादुर
घ. लंगथासा
उत्तर: क. चन्द्रेशजी
व्याख्या: संस्मरणमे आयोजनक व्यावहारिक तैयारीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4262. लेखकक अनुभवमे अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनक मूल महत्व की छल?
क. नेपाल-भारत मैथिली संसारक संवाद आ साझा मंच
ख. केवल पुरस्कार-वितरण
ग. केवल भोजन
घ. केवल यात्रा
उत्तर: क. नेपाल-भारत मैथिली संसारक संवाद आ साझा मंच
व्याख्या: सम्मेलन साहित्यकार, सेवक, भाषाशास्त्री आ कलाकारक मिलन-स्थल बनैत अछि।

खण्ड ४३२ : विदेह-सदेह १ — सम्मेलनक सकारात्मक अनुभव आ उपयोगिता

प्रश्न 4263. कलकत्ता सम्मेलनक तैयारीमे बैजू बाबू लेखक पर कोन अतिरिक्त भार देलनि?
क. “मिथिला रत्न”क लेल व्यक्तित्व-चयन
ख. पक्षी-पकड़
ग. बिजली मीटर
घ. बस बुकिंग
उत्तर: क. “मिथिला रत्न”क लेल व्यक्तित्व-चयन
व्याख्या: लेखक पर सम्मान-योग्य व्यक्तित्व सुझेबाक जिम्मेदारी देल गेल।

प्रश्न 4264. रेवती जी कोन नाम सुझौलनि?
क. बदरी नारायण वर्मा
ख. ज्योति प्रकाश लाल
ग. कुमार मनोज
घ. गौतम शर्मा
उत्तर: क. बदरी नारायण वर्मा
व्याख्या: लेखक सलाह-प्रक्रिया मे रेवती जीक भूमिका बतबैत छथि।

प्रश्न 4265. लेखक ककरा उपयुक्त बुझि नाम पठौलनि?
क. डा. रामदयाल राकेश कैँ
ख. मजहर कैँ
ग. इजोतया कैँ
घ. नरेश कैँ
उत्तर: क. डा. रामदयाल राकेश कैँ
व्याख्या: लेखक द्वारा डा. राकेशक नाम सम्मान लेल प्रस्तावित भेल।

प्रश्न 4266. कलकत्ता पहुँचला पर स्टेशन पर के ठाढ़ छलथि?
क. बैजू बाबू
ख. कुयेक
ग. पोस्टमैन
घ. जटिंगा गाइड
उत्तर: क. बैजू बाबू
व्याख्या: स्टेशन पर स्वागत आयोजनक आत्मीयता देखबैत अछि।

प्रश्न 4267. कलकत्ता सम्मेलनमे नेपालक चारी गोट प्रतिनिधिक लेल की व्यवस्था भेल?
क. फुटे कोठरीमे आवास आ सम्मान
ख. जंगल-टेंट
ग. बिना आवास
घ. केवल टिकट
उत्तर: क. फुटे कोठरीमे आवास आ सम्मान
व्याख्या: नेपालक उपस्थिति कैँ अनिवार्य मानि सुसंगत व्यवस्था कएल गेल।

प्रश्न 4268. लेखकक अनुसार डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजूक व्यवहार केहन छल?
क. सहज आ अपनत्व भरल
ख. उपेक्षापूर्ण
ग. सिर्फ औपचारिक
घ. कठोर प्रशासनिक
उत्तर: क. सहज आ अपनत्व भरल
व्याख्या: व्यवहारक आत्मीयता सम्मेलनक मानवीय पक्ष उजागर करैत अछि।

प्रश्न 4269. लेखक चेन्नई सम्मेलनक विषयमे की आशा करैत छथि?
क. नेपाल महत्वपूर्ण सहभागी रूपमे उपस्थित होयत
ख. नेपाल पूर्णतः अनुपस्थित रहत
ग. केवल व्यापार होयत
घ. भाषा पर चर्चा नहि होयत
उत्तर: क. नेपाल महत्वपूर्ण सहभागी रूपमे उपस्थित होयत
व्याख्या: संस्मरण आगामी सम्मेलनमे निरन्तर नेपाल-भागीदारी चाहैत अछि।

प्रश्न 4270. सम्मेलन २२ दिसंबरक अधिकार-दिवससँ किएक जुड़ल अछि?
क. मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटलाक स्मरणसँ
ख. चिड़ै-शिकार दिवससँ
ग. नववर्ष भोजसँ
घ. बैंक अवकाशसँ
उत्तर: क. मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटलाक स्मरणसँ
व्याख्या: अधिकार-दिवस भाषिक अधिकारक ऐतिहासिक स्मृति अछि।

प्रश्न 4271. सम्मेलनमे भेंटघाँट कोन-कोन वर्ग बीच होइत बतायल गेल?
क. साहित्यकार, सेवी, भाषाशास्त्री, संगीत आ नृत्यकलाकार
ख. केवल व्यापारी
ग. केवल सैनिक
घ. केवल बैंककर्मी
उत्तर: क. साहित्यकार, सेवी, भाषाशास्त्री, संगीत आ नृत्यकलाकार
व्याख्या: सम्मेलन बहु-विध सांस्कृतिक समुदायक संगम अछि।

प्रश्न 4272. लेखक सम्मेलनक उपयोगिता कोना देखैत छथि?
क. भाषा, साहित्य, संस्कृति लेल योजना, पुस्तक-विमोचन, सम्मान आ प्रतिभा-विकासक मंच
ख. केवल मनोरंजन
ग. केवल भोजन-आवास
घ. केवल राजनीतिक भाषण
उत्तर: क. भाषा, साहित्य, संस्कृति लेल योजना, पुस्तक-विमोचन, सम्मान आ प्रतिभा-विकासक मंच
व्याख्या: सम्मेलन कार्यशील सांस्कृतिक अवसंरचना रूपमे प्रस्तुत अछि।

खण्ड ४३३ : विदेह-सदेह १ — सम्मेलनक सुझाव आ नेपाल-भारत सम्बन्ध

प्रश्न 4273. लेखकक अनुसार सम्मेलन नेपाल-भारत सम्बन्धमे की करैत अछि?
क. प्राचीन सम्बन्धमे ताजापन आनैत अछि
ख. दूरी बढ़बैत अछि
ग. भाषा तोड़ैत अछि
घ. यात्रा रोकैत अछि
उत्तर: क. प्राचीन सम्बन्धमे ताजापन आनैत अछि
व्याख्या: नेपाल प्रतिनिधिक मंच-उपस्थिति सम्बन्धक नवीनीकरणक प्रतीक अछि।

प्रश्न 4274. मुंबई आ कलकत्ता मे लेखकक भाषणक प्रति दर्शक प्रतिक्रिया कोना बतायल गेल?
क. तालीक गड़गड़ाहट
ख. पूर्ण मौन
ग. विरोध
घ. हँसी मात्र
उत्तर: क. तालीक गड़गड़ाहट
व्याख्या: दर्शक-प्रतिक्रिया नेपालक मैथिली गतिविधिप्रति रुचि देखबैत अछि।

प्रश्न 4275. कलकत्ता सम्मेलनमे नेपालसँ संबंधित कोन सामग्री बाँटल गेल?
क. “नेपालमे मैथिली” नामक बुकलेट आदि
ख. बैंक फार्म
ग. चिड़ै सूची
घ. मीटर फाइल
उत्तर: क. “नेपालमे मैथिली” नामक बुकलेट आदि
व्याख्या: नेपालक मैथिली गतिविधि प्रवासी मैथिल धरि पहुँचाओल गेल।

प्रश्न 4276. रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”क कोन पुस्तक कलकत्तामे विमोचित भेल?
क. “राजकमलक कथा साहित्यमे नारी”
ख. “माहुर”
ग. “कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व”
घ. “अभियान गीत”
उत्तर: क. “राजकमलक कथा साहित्यमे नारी”
व्याख्या: पुस्तक-विमोचन सम्मेलनक साहित्यिक उपयोगिता अछि।

प्रश्न 4277. लेखक सम्मेलन निरन्तर जारी रहबाक बात किएक करैत छथि?
क. अनुभव ओकर औचित्य सिद्ध करैत अछि
ख. क्योंकि केवल पर्यटन अछि
ग. क्योंकि व्यापार लाभ अछि
घ. क्योंकि संवाद निरर्थक अछि
उत्तर: क. अनुभव ओकर औचित्य सिद्ध करैत अछि
व्याख्या: सकारात्मक अनुभव सम्मेलनक स्थायी महत्त्व सिद्ध करैत अछि।

प्रश्न 4278. लेखकक पहिल सुझाव बैनर सम्बन्धी की अछि?
क. नेपालक प्रतीक-चिह्न अवश्य रहय
ख. केवल अंग्रेजी रहय
ग. बैनर नहि बनय
घ. भाषा हटाय देल जाय
उत्तर: क. नेपालक प्रतीक-चिह्न अवश्य रहय
व्याख्या: अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप दृश्य रूपमे सेहो अभिव्यक्त होयबाक चाही।

प्रश्न 4279. कार्यक्रम-व्यवस्थापन सम्बन्धी लेखक की चाहैत छथि?
क. पूर्व-निर्धारित आ व्यवस्थित कार्यक्रम
ख. चलैत बेरमे अव्यवस्थित निर्णय
ग. बिना सूची
घ. मात्र आकस्मिकता
उत्तर: क. पूर्व-निर्धारित आ व्यवस्थित कार्यक्रम
व्याख्या: व्यवस्था सम्मेलनक गरिमा आ सहभागिता सुधारैत अछि।

प्रश्न 4280. अधिकार-दिवस पर लेखक की जोड़बाक सुझाव दैत छथि?
क. केवल भाषण नहि, कार्यपत्र प्रस्तुति आ टिप्पणी
ख. केवल भोज
ग. केवल नृत्य
घ. पूर्ण मौन
उत्तर: क. केवल भाषण नहि, कार्यपत्र प्रस्तुति आ टिप्पणी
व्याख्या: भाषिक अधिकारक दिवस बौद्धिक विमर्शक मंच बनबाक चाही।

प्रश्न 4281. नेपालक प्रतिनिधि संबंधी लेखकक अपेक्षा की अछि?
क. कार्यपत्र आ बोलबाक अवसर, मंच पर प्रतिनिधित्व
ख. सिर्फ दर्शक बनब
ग. प्रवेश निषेध
घ. नाम हटायब
उत्तर: क. कार्यपत्र आ बोलबाक अवसर, मंच पर प्रतिनिधित्व
व्याख्या: लेखक समान भागीदारीक लोकतांत्रिक रूप चाहैत छथि।

प्रश्न 4282. लेखकक अन्तिम आशा मे सम्मेलन कोन भूमिका निभाबय?
क. मैथिली अस्तित्वक संघर्षमे आपसी अपनत्व आ लक्ष्य-शक्ति बढ़ाबय
ख. संबंध कमजोर करय
ग. भाषा विसरबय
घ. सिर्फ स्मारिका बेचय
उत्तर: क. मैथिली अस्तित्वक संघर्षमे आपसी अपनत्व आ लक्ष्य-शक्ति बढ़ाबय
व्याख्या: लेख सम्मेलन कैँ भाषा-संघर्षक भावनात्मक आ संगठनात्मक ऊर्जा मानैत अछि।

खण्ड ४३४ : विदेह-सदेह १ — “फ्लैशबैक”: नरेशक बाल्य-पाठशाला

प्रश्न 4283. “फ्लैशबैक” मे नरेश कतेक वर्ष पाछाँ स्मृतिमे लौटैत अछि?
क. लगभग पचास वर्ष
ख. पाँच दिन
ग. दू मास
घ. दस हजार वर्ष
उत्तर: क. लगभग पचास वर्ष
व्याख्या: कथा दीर्घ स्मृति-यात्रा सँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 4284. नरेशकेँ गुरुजी लग पढ़य लए के लऽ जाइत छल?
क. बहादुर नोकर
ख. पोस्टमैन
ग. बैंककर्मी
घ. मजहर
उत्तर: क. बहादुर नोकर
व्याख्या: बहादुर पिताक आदेश पूरा करैत नरेशकेँ कान्हपर लादि लऽ जाइत छल।

प्रश्न 4285. गुरुजीक छड़ी/करची नरेशक बाल-हठ पर की प्रभाव करैत छल?
क. जीद हेरा दैत छल
ख. ओकरा राजा बनबैत छल
ग. चिड़ै उड़बैत छल
घ. पत्र लिखबैत छल
उत्तर: क. जीद हेरा दैत छल
व्याख्या: बाल्य-शिक्षा अनुशासन आ भयक मिश्रण रूपमे स्मरण अछि।

प्रश्न 4286. नरेश पाटी साफ कय की लिखबाक प्रयास करैत छल?
क. क ख ग घ
ख. नववर्ष गीत
ग. बिजली आवेदन
घ. नौकाविहार
उत्तर: क. क ख ग घ
व्याख्या: अक्षर-अभ्यास बाल्य शिक्षा आ आरम्भिक अनुशासनक चिह्न अछि।

प्रश्न 4287. गुरुजीक ओतय कंठस्थ करबाक कोन चीजक उल्लेख अछि?
क. बटखरा
ख. उपन्यास सूची
ग. शेयर बाजार
घ. नाटक टिकट
उत्तर: क. बटखरा
व्याख्या: बटखरा कंठस्थ करब मजबूरी आ शिक्षण-पद्धति दुनू बतबैत अछि।

प्रश्न 4288. चौठचन्दक समय नरेश गुरुजीक संग की करैत घुमैत छल?
क. घंटी आ काठक डंटा बजबैत घरे-घरे
ख. मीटर जाँचैत
ग. मछली बेचैत
घ. रेल टिकट काटैत
उत्तर: क. घंटी आ काठक डंटा बजबैत घरे-घरे
व्याख्या: पाठशाला-संस्कार आ लोकाचार बाल्य-संसारक हिस्सा अछि।

प्रश्न 4289. गुरुजीक डेरापर प्रसाद रूपमे की खेनाइ आनन्ददायक छल?
क. गुड़-चाउर
ख. तिलकोर तरुआ
ग. मीट
घ. सिरिसव बीज
उत्तर: क. गुड़-चाउर
व्याख्या: गुड़-चाउर बाल्य-आनन्दक सरल प्रतीक अछि।

प्रश्न 4290. हर-हर महादेव बनि गाम घूमबाक प्रसंग कोन आवश्यकता/आशासँ जुड़ल अछि?
क. बरखा/पानीक आससँ
ख. बैंक ऋण
ग. चिड़ै शिकार
घ. नववर्ष सजावट
उत्तर: क. बरखा/पानीक आससँ
व्याख्या: अनावृष्टि पर लोक-खेल आ अनुष्ठानक मिश्रण देखायल अछि।

प्रश्न 4291. महादेव बनल बच्चाक शरीर पर की लगाओल जाइत छल?
क. छाउर, अशोक पात, जूट-सनक जटा आदि
ख. सोना-मोती
ग. सैनिक वर्दी
घ. कम्प्यूटर तार
उत्तर: क. छाउर, अशोक पात, जूट-सनक जटा आदि
व्याख्या: लोक-रूपांकन बाल्य-उत्सव आ प्रताड़ना दुनू रूपमे अछि।

प्रश्न 4292. नरेशक स्मृतिमे बाल्य-पाठशाला कोन द्वंद्व रखैत अछि?
क. आनन्द, भय, अनुशासन आ लोक-रंगक संग-साथ
ख. केवल हिंसा
ग. केवल खेल
घ. केवल व्यापार
उत्तर: क. आनन्द, भय, अनुशासन आ लोक-रंगक संग-साथ
व्याख्या: कथा बाल्यक सरलता आ कठोरता कैं एके फ्रेममे देखबैत अछि।

खण्ड ४३५ : विदेह-सदेह १ — “फ्लैशबैक”: लोकखेल, इजोतिया आ स्मृति

प्रश्न 4293. नरेशक बाल-मंडलीमे इजोतिया ककर बेटी बतायल गेल अछि?
क. लगुआक बेटी
ख. गुरुजीक बेटी
ग. बैंककर्मी बेटी
घ. जटिंगा गाइडक बेटी
उत्तर: क. लगुआक बेटी
व्याख्या: इजोतिया गामक निकट सामाजिक वृत्तक पात्र अछि।

प्रश्न 4294. इजोतिया संग नरेश कोन खेल खेलैत प्रसन्न रहैत छल?
क. अन्हरिया-इजोरिया
ख. कम्प्यूटर गेम
ग. नौकाविहार
घ. मेला टिकट
उत्तर: क. अन्हरिया-इजोरिया
व्याख्या: चन्द्रमा आ अन्हार-इजोरियाक खेल बाल्य कल्पना जगबैत अछि।

प्रश्न 4295. इजोरिया रातिमे चानक घेरा संबंधी मायक व्याख्या कोन कल्पना रचैत अछि?
क. पुरखासभ इन्द्र भगवान लग पानिक बात करैत छथि
ख. बैंक मीटिंग
ग. चुनावी सभा
घ. रिस्क रिपोर्ट
उत्तर: क. पुरखासभ इन्द्र भगवान लग पानिक बात करैत छथि
व्याख्या: लोकविश्वास बालमनमे वर्षाक आशा बनि बसैत अछि।

प्रश्न 4296. जट-जटिन गीतमे नरेशक भूमिका की छल?
क. नियमित दर्शक
ख. मुख्य गायक मात्र
ग. सरकारी निरीक्षक
घ. बैंक अधिकारी
उत्तर: क. नियमित दर्शक
व्याख्या: पुरुषक निषेध बीच नेना कैं देखनेक अनुमति कथा मे उल्लेखित अछि।

प्रश्न 4297. जट-जटिन मंडलीमे इजोतिया कोना उपस्थित अछि?
क. सामिल रहैत अछि
ख. पूरा अनुपस्थित
ग. गुरुजी बनैत अछि
घ. बैंक चलबैत अछि
उत्तर: क. सामिल रहैत अछि
व्याख्या: इजोतियाक उपस्थिति नरेशक बाल-स्मृति कैं संवेदनशील बनबैत अछि।

प्रश्न 4298. भतखोखरि बुढ़ियाक अँगनामे मेंढक/पतली फेकबाक प्रसंग कोन लोक-उपद्रव देखबैत अछि?
क. बाल्य-शरारत आ बरखा-लोकविश्वासक मिश्रण
ख. कानूनी अनुबंध
ग. कम्प्यूटर पाठ
घ. व्यापारी बैठक
उत्तर: क. बाल्य-शरारत आ बरखा-लोकविश्वासक मिश्रण
व्याख्या: छौड़ीसभक धुमगजरी आ बुढ़ियाक उराह बाल्य-लोकनाट्य जकाँ अछि।

प्रश्न 4299. नरेशकैं रातुक माहौल किएक स्वतंत्र लगैत छल?
क. बाबूजी आ बहादुरक डर सँ मुक्त छल
ख. क्योंकि बैंक बंद छल
ग. क्योंकि रेल चलल
घ. क्योंकि पंजी खुलल
उत्तर: क. बाबूजी आ बहादुरक डर सँ मुक्त छल
व्याख्या: दिनक अनुशासनक विपरीत रात्रिक लोकखेल स्वतंत्रता दैत अछि।

प्रश्न 4300. इजोतियाक प्रस्ताव पर नरेश की प्रतिक्रिया देलक?
क. डेरा कऽ मना कय नासि गेल
ख. स्वीकार कयलक
ग. पत्र लिखलक
घ. गीत गओलक
उत्तर: क. डेरा कऽ मना कय नासि गेल
व्याख्या: बाल्य-असमझ आ शरीर-चेतनाक आरम्भिक भय एहि प्रसंगमे अछि।

प्रश्न 4301. नरेशकेँ पुरना बात आब किएक मोन पड़ए लगल?
क. पोताक उदंडपनीसँ वर्तमान आ अतीत टकरा गेल
ख. नववर्ष कार्डसँ
ग. बैंक ऋणसँ
घ. समुद्र देखिसँ
उत्तर: क. पोताक उदंडपनीसँ वर्तमान आ अतीत टकरा गेल
व्याख्या: पोताक आचरण नरेशकेँ अपन बाल्यक स्मृति दिस घुमाबैत अछि।

प्रश्न 4302. “फ्लैशबैक”क एहि खण्डक मुख्य साहित्यिक बोध की अछि?
क. बाल्य-लोक, शरीर-स्मृति आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चिंता
ख. केवल हास्य
ग. केवल सरकारी योजना
घ. केवल यात्रा-वृत्तांत
उत्तर: क. बाल्य-लोक, शरीर-स्मृति आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चिंता
व्याख्या: कथा बाल्यक खेल केँ वयस्क चिंतन आ पीढ़ीगत भयसँग जोड़ैत अछि।

खण्ड ४३६ : विदेह-सदेह १ — “फ्लैशबैक”: बचपनक चोट आ वर्तमानक आतंक

प्रश्न 4303. नरेश अपन पोताक कोन बातसँ परेशान अछि?
क. देरी सँ उठब, स्कूल प्रति लापरवाही, कुंडलिया संगत आ नशाक आशंका
ख. बहुत पढ़ब
ग. पत्र लिखब
घ. चित्र बनायब
उत्तर: क. देरी सँ उठब, स्कूल प्रति लापरवाही, कुंडलिया संगत आ नशाक आशंका
व्याख्या: वर्तमान पीढ़ीक व्यवहार नरेशक मनमे बेचैनी जगबैत अछि।

प्रश्न 4304. मायक घुघुमना खेलमे नरेश की अनुभव करैत छल?
क. देहमे गुदगुदी आ आनन्द
ख. भय मात्र
ग. भूख मात्र
घ. राग मात्र
उत्तर: क. देहमे गुदगुदी आ आनन्द
व्याख्या: घरेलू खेल बाल्य-सुखक देहगत स्मृति बनैत अछि।

प्रश्न 4305. नरेश बादमे ककरा संग मायक खेलक नक्कल करैत छल?
क. भतीज केँ टाँग पर झुलबैत
ख. गुरुजी केँ
ग. पोस्टमैन केँ
घ. बैंककर्मी केँ
उत्तर: क. भतीज केँ टाँग पर झुलबैत
व्याख्या: बाल्य-अनुभव अगिला नेना पर दोहरायल जाइत अछि।

प्रश्न 4306. तीर-धनुषक खेलमे नरेशक कोन अंग पर चोट लगल?
क. बाम आँखि
ख. दहिना पाँव
ग. कान
घ. पीठ
उत्तर: क. बाम आँखि
व्याख्या: बाल्य खेलक जोखिम कथा मे तीक्ष्ण स्मृति रूपेँ बाँचल अछि।

प्रश्न 4307. आँखिक चोट पर माय कोना प्रतिक्रिया देलीह?
क. बताह जकाँ व्याकुल भऽ गेलीह
ख. पूर्ण उदासीन
ग. हँसि देलीह
घ. पत्र लिखलीह
उत्तर: क. बताह जकाँ व्याकुल भऽ गेलीह
व्याख्या: मातृ-व्याकुलता बालकक चोटक मार्मिक पक्ष अछि।

प्रश्न 4308. आम लूटय काल नरेश कैं दोसर चोट कतय लगल?
क. कपार मे, गाछीमे गाड़ल खूँटाक नोक सँ
ख. हाथ मे सुई सँ
ग. कान मे गीत सँ
घ. आँखि मे धुआँ सँ
उत्तर: क. कपार मे, गाछीमे गाड़ल खूँटाक नोक सँ
व्याख्या: बाल्य उछल-कूदक खतरनाक रूप स्मृति बनल अछि।

प्रश्न 4309. शिक्षामे पछुआएल परिवारक संघर्ष कथा मे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. सभ्य समाजक अंग बनबा लेल बालक कैं संघर्ष भोग पड़ल
ख. क्योंकि पढ़ाइ निरर्थक छल
ग. क्योंकि खेल निषेध छल
घ. क्योंकि यात्रा सुखद छल
उत्तर: क. सभ्य समाजक अंग बनबा लेल बालक कैं संघर्ष भोग पड़ल
व्याख्या: व्यक्तिगत स्मृति सामाजिक उन्नयनक संघर्षसँग जुड़ैत अछि।

प्रश्न 4310. उमेरक चतुर्थ प्रहरमे नरेश की चाहैत अछि?
क. फेर सँ बचपन दिस लौटब
ख. बैंक नौकरी
ग. चिड़ै शिकार
घ. सत्ता-प्राप्ति
उत्तर: क. फेर सँ बचपन दिस लौटब
व्याख्या: वृद्धावस्था मे बचपन सुरक्षित संसार जकाँ आकर्षक लगैत अछि।

प्रश्न 4311. वर्तमान समाजक कोन-कोन भय नरेशक जीवन कैं तनावपूर्ण बनबैत अछि?
क. राजनीतिक विद्रूपता, चंदा, अपहरण, हत्या, असुरक्षा
ख. फूल आ दीप
ग. संगीत आ नाच
घ. पानी आ मेघ मात्र
उत्तर: क. राजनीतिक विद्रूपता, चंदा, अपहरण, हत्या, असुरक्षा
व्याख्या: कथा वर्तमानक हिंसक-संकटपूर्ण वातावरणक तुलना बचपनसँ करैत अछि।

प्रश्न 4312. “फ्लैशबैक”क नरेश स्मृति सँ कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. स्वच्छन्द बचपन आ असुरक्षित वर्तमानक बीच जीवनक अर्थ
ख. कम्प्यूटर साक्षरता
ग. व्यापार कर
घ. चित्रकला मूल्य
उत्तर: क. स्वच्छन्द बचपन आ असुरक्षित वर्तमानक बीच जीवनक अर्थ
व्याख्या: कथा स्मृति कैं वर्तमान समाजक आलोचना बनबैत अछि।

खण्ड ४३७ : विदेह-सदेह १ — बी.के. कर्ण: संकट गुणक आ मैथिल

प्रश्न 4313. बी.के. कर्णक लेख “संकट गुणक” मुख्यतः कोन विषय उठबैत अछि?
क. मिथिलाक विकास, मैथिली, पलायन आ जोखिम
ख. केवल प्रेमगीत
ग. केवल चिड़ै विज्ञान
घ. केवल रसोई विधि
उत्तर: क. मिथिलाक विकास, मैथिली, पलायन आ जोखिम
व्याख्या: लेख मिथिला समाजक बहुस्तरीय सामाजिक-आर्थिक संकट देखबैत अछि।

प्रश्न 4314. लेखकक अनुसार विकासक रास्ता केहन अछि?
क. उबड़-खाबड़ आ संघर्षपूर्ण
ख. एकदम सरल
ग. पूर्ण तैयार
घ. अनावश्यक
उत्तर: क. उबड़-खाबड़ आ संघर्षपूर्ण
व्याख्या: विकास संघर्षसँ अलग नहि, डेग-डेग पर संघर्ष चाही।

प्रश्न 4315. सर्वांगीण विकासक हेतु लेखक कोन आधार मानैत छथि?
क. व्यक्तिगत विकास
ख. पूर्ण निष्क्रियता
ग. भाषा-विस्मृति
घ. कर्महीनता
उत्तर: क. व्यक्तिगत विकास
व्याख्या: समाजक विकास व्यक्तिक विकास पर टिकल बतायल गेल।

प्रश्न 4316. लेखक मैथिल समाजक सुतल सकारात्मक प्रयासक उपमा कोना दैत छथि?
क. उठलापर सिंह जकाँ दहाड़ब वा साँप जकाँ फुफकारब
ख. सदैव मौन रहब
ग. जल्दी भागब
घ. दीप बुतायब
उत्तर: क. उठलापर सिंह जकाँ दहाड़ब वा साँप जकाँ फुफकारब
व्याख्या: उपमा सुप्त शक्तिक तीव्र जागरणक आशा व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 4317. हनुमानजीक उदाहरण ककर संकेत अछि?
क. भुलायल शक्ति फेर सँ स्मरण करबाक
ख. भाषा छोड़बाक
ग. दुकान खोलबाक
घ. जंगल काटबाक
उत्तर: क. भुलायल शक्ति फेर सँ स्मरण करबाक
व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे मैथिल अपन शक्ति बिसरल छथि।

प्रश्न 4318. प्रवासी आर्थिक सफलताक बावजूद पैघ संकट की कहल गेल?
क. सन्तान मिथिला-मैथिल सँ दूर भऽ जाएब
ख. सन्तान अत्यधिक निकट होएब
ग. भाषा स्वतः फैलि जाएब
घ. जोखिम समाप्त होएब
उत्तर: क. सन्तान मिथिला-मैथिल सँ दूर भऽ जाएब
व्याख्या: आर्थिक उन्नति अगर सांस्कृतिक दूरी बढ़ाबय तँ संकट बनैत अछि।

प्रश्न 4319. लेखकक कथन “मैथिलक सम्मान मैथिली थीक” कोन दृष्टि देत अछि?
क. भाषा कैं सामुदायिक आत्मसम्मानक केन्द्र मानब
ख. भाषा बोझ अछि
ग. भाषा अप्रासंगिक अछि
घ. केवल व्यापार सम्मान अछि
उत्तर: क. भाषा कैं सामुदायिक आत्मसम्मानक केन्द्र मानब
व्याख्या: लेख मैथिली कैं पहचानक मूल मानैत अछि।

प्रश्न 4320. लेखक मैथिली कैं “घरेमे टूअर” कहि कोन पीड़ा व्यक्त करैत छथि?
क. अपन घरभितर भाषा उपेक्षित अछि
ख. भाषा बहुत सुरक्षित अछि
ग. कोनो मतभेद नहि
घ. भाषा शासनक शीर्ष पर अछि
उत्तर: क. अपन घरभितर भाषा उपेक्षित अछि
व्याख्या: घरेलू मतांतर भाषा-संकटक कारण अछि।

प्रश्न 4321. पलायनक दुइ स्थिति लेखमे कोन-कोन कहल गेल?
क. जीवन-भरण-पोषण आ व्यक्तिगत उद्देश्यक पूर्ति
ख. उत्सव आ मेला
ग. शिकार आ खेल
घ. पत्र आ कविता
उत्तर: क. जीवन-भरण-पोषण आ व्यक्तिगत उद्देश्यक पूर्ति
व्याख्या: पलायन आर्थिक बाध्यता आ निजी लक्ष्य दुनू रूपमे देखायल अछि।

प्रश्न 4322. लेखक मैथिली-संकटक समाधानक रूपमे की मांगैत छथि?
क. कोमल स्पर्श आ भाषा प्रति अथाह लगन
ख. भाषा तोड़ब
ग. उदासीनता
घ. पूर्ण मौन
उत्तर: क. कोमल स्पर्श आ भाषा प्रति अथाह लगन
व्याख्या: लेख मैथिली संरक्षण कैं प्रेमपूर्ण, सचेत जिम्मेदारी बनबैत अछि।

खण्ड ४३८ : विदेह-सदेह १ — बी.के. कर्ण: भाषा, पलायन आ आत्मसम्मान

प्रश्न 4323. बी.के. कर्ण बंगाली, पंजाबी, मराठीक उदाहरण किएक दैत छथि?
क. मातृभाषा प्रति प्राणसँ ऊपर सम्मान देखाबय लेल
ख. उन्हें मैथिली छोड़बाक लेल
ग. व्यापार बंद करबाक लेल
घ. जंगल बचाबय लेल
उत्तर: क. मातृभाषा प्रति प्राणसँ ऊपर सम्मान देखाबय लेल
व्याख्या: लेखक आन भाषिक समुदायसँ सीख लेबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 4324. लेखकक “बिहारीक भाषा की?” प्रश्न की खोलैत अछि?
क. बिहारक भाषिक पहचानक उलझन
ख. केवल भोजनक सूची
ग. संगीतक राग
घ. कृषि उपकरण
उत्तर: क. बिहारक भाषिक पहचानक उलझन
व्याख्या: हिन्दी, भोजपुरी, मैथिली बीच पहचान-राजनीति पर प्रश्न अछि।

प्रश्न 4325. भोजपुरीक सन्दर्भमे लेखक की स्वीकारैत छथि?
क. भोजपुरी सिनेमा उद्योग कैं सफलता भेटल
ख. भोजपुरी अनुपस्थित अछि
ग. भोजपुरी मृत अछि
घ. भोजपुरी मात्र गाममे अछि
उत्तर: क. भोजपुरी सिनेमा उद्योग कैं सफलता भेटल
व्याख्या: लेख तुलना द्वारा मैथिली स्थिति पर पीड़ा व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 4326. लेखकक अनुसार मिथिलामे मैथिलीक स्थिति केहन अछि?
क. कमजोर
ख. अत्यन्त अजेय आ सर्वस्वीकृत
ग. अप्रासंगिक नहि
घ. सैन्य विषय
उत्तर: क. कमजोर
व्याख्या: लेख मिथिला भीतर भाषा-दुर्बलता पर तीव्र प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 4327. “मैथिलीकैं बोझ नहि बुझियौक” कथन कोन आग्रह अछि?
क. अनेक भाषा सीखू, मुदा मैथिली नहि छोड़ू
ख. केवल मैथिली छोड़ू
ग. कुनो भाषा नहि सीखू
घ. भाषा पर मौन रहू
उत्तर: क. अनेक भाषा सीखू, मुदा मैथिली नहि छोड़ू
व्याख्या: लेख बहुभाषिकता आ मातृभाषा-निष्ठा दुनू साथ राखैत अछि।

प्रश्न 4328. मैथिली छोड़निहार मैथिलक विषयमे लेखक कोन कठोर मूल्यांकन करैत छथि?
क. ओ मानसिक रूपसँ गरीब भऽ जाइत छथि
ख. ओ पूर्ण समृद्ध होइत छथि
ग. ओ दोषमुक्त छथि
घ. ओ शोधकर्ता बनैत छथि
उत्तर: क. ओ मानसिक रूपसँ गरीब भऽ जाइत छथि
व्याख्या: भाषा-विस्मृति लेखक लेल आंतरिक गरीबीक चिन्ह अछि।

प्रश्न 4329. मैथिल मिथिलाक बाहर मेहनती मुदा भीतर आलसी—एहि कथनक उद्देश्य की अछि?
क. स्व-आलोचना द्वारा सामाजिक जड़ता तोड़ब
ख. मिथिला छोड़बाक प्रचार
ग. अन्हार बढ़ायब
घ. हास्य मात्र
उत्तर: क. स्व-आलोचना द्वारा सामाजिक जड़ता तोड़ब
व्याख्या: लेखक कठोर आत्मालोचन द्वारा सक्रियता चाहैत छथि।

प्रश्न 4330. गरीबी झेलबाक मानसिकता पर लेखकक प्रश्न की अछि?
क. पाँच करोड़ मैथिलक एके रंग भाग्य किएक?
ख. सभी धनी किएक
ग. भाषा किएक
घ. चित्रकला किएक
उत्तर: क. पाँच करोड़ मैथिलक एके रंग भाग्य किएक?
व्याख्या: लेख भाग्यवादक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 4331. लेखक मैथिल समाजक मुख्य कमजोरी रूपेँ की कहैत छथि?
क. वाक्पटुता बेसी, मौलिक आवश्यकता पूर्तिमे गरीबी
ख. मौन अधिक
ग. व्यापार बहुत अधिक
घ. भाषा अति-सुरक्षित
उत्तर: क. वाक्पटुता बेसी, मौलिक आवश्यकता पूर्तिमे गरीबी
व्याख्या: शब्दक समृद्धि आ जीवन-सुविधाक कमीक विरोधाभास बतायल अछि।

प्रश्न 4332. “स्वस्थ नेताविहीन मैथिल समाज” कथन कोन संकट देखबैत अछि?
क. मौलिक हक सँ दूर समाज
ख. हक पूरी तरह मिलल समाज
ग. अतिविकसित व्यापार
घ. अत्यधिक नेतृत्व
उत्तर: क. मौलिक हक सँ दूर समाज
व्याख्या: लेख नेतृत्व, ढाँचा आ अधिकारक अभाव कैँ संकट बनबैत अछि।

खण्ड ४३९ : विदेह-सदेह १ — बी.के. कर्ण: व्यवसाय, निर्भरता आ जोखिम

प्रश्न 4333. बी.के. कर्ण विकसित देश/राज्यक पाछाँ कोन मूल कारण देखैत छथि?
क. व्यवसाय-विकास
ख. केवल भाग्य
ग. केवल भाषण
घ. केवल पर्व
उत्तर: क. व्यवसाय-विकास
व्याख्या: लेख आर्थिक प्रगति कैँ उद्यम आ व्यवसायसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4334. लेखकक अनुसार मिथिलामे केकर कमी नहि अछि?
क. विद्वान वा ज्ञानी मैथिलक
ख. सिर्फ जंगलक
ग. सिर्फ समुद्रक
घ. सिर्फ चिड़ैक
उत्तर: क. विद्वान वा ज्ञानी मैथिलक
व्याख्या: लेख समस्या ज्ञानक अभाव नहि, आर्थिक-संगठनात्मक जोखिम-क्षमताक अभाव मानैत अछि।

प्रश्न 4335. व्यापारी वर्गक स्थिति लेखमे कोना चित्रित अछि?
क. बहुत कम, नोइ बराबरि
ख. अत्यधिक प्रबल
ग. संपूर्ण नियंत्रण
घ. केवल प्रवासी
उत्तर: क. बहुत कम, नोइ बराबरि
व्याख्या: व्यापारिक वर्गक न्यूनता मिथिला-विकासक बाधा मानल गेल।

प्रश्न 4336. सिंधी, मारवाड़ी आ पंजाबी समाजक उदाहरण लेखक किएक दैत छथि?
क. व्यवसायमे धाक जमायबाक क्षमता देखाबय लेल
ख. मैथिली तोड़बाक लेल
ग. चित्रकला नकारबाक लेल
घ. सैनिक स्मरण लेल
उत्तर: क. व्यवसायमे धाक जमायबाक क्षमता देखाबय लेल
व्याख्या: लेख मैथिल समाज कैँ उद्यमशीलता दिस उकसाबैत अछि।

प्रश्न 4337. लेखकक आलोचना अनुसार मिथिलाक विद्वान अखबार संबंधी कोन जोखिम नहि उठबैत छथि?
क. प्रिन्ट आ बाजारमे आनबाक जोखिम
ख. माँगि पढ़बाक जोखिम
ग. बहस करबाक जोखिम
घ. भाषण देबाक जोखिम
उत्तर: क. प्रिन्ट आ बाजारमे आनबाक जोखिम
व्याख्या: बौद्धिकता के उत्पादन आ बाजारक साहससँ जोड़ि देखायल अछि।

प्रश्न 4338. सुइदखोर व्यवसायक विषयमे लेखक की चिन्ता व्यक्त करैत छथि?
क. नियमहीन अपराधी सूदखोरी
ख. समुचित बैंकिंग
ग. नैतिक ऋण
घ. पूर्ण दान
उत्तर: क. नियमहीन अपराधी सूदखोरी
व्याख्या: लेख सामाजिक आर्थिक शोषणक रूपमे सूदखोरीक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 4339. मिथिला बैंकक शुरुआत लेखकक अनुसार की कम कए सकैत अछि?
क. अपराधी सूदखोर मैथिल कैं झेलबाक बाध्यता
ख. भाषा-विनाश
ग. कला-विरोध
घ. बाल्य-स्मृति
उत्तर: क. अपराधी सूदखोर मैथिल कैं झेलबाक बाध्यता
व्याख्या: लेख संस्थागत वित्तीय ढाँचा जरूरी मानैत अछि।

प्रश्न 4340. व्यवसायिक वर्ग २ प्रतिशतो कम कहल जेबाक बात कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. मिथिलामे उद्यमक अल्पता
ख. भाषा अति-सुरक्षित
ग. जनसंख्या शून्य
घ. खेती पूर्णतः समाप्त
उत्तर: क. मिथिलामे उद्यमक अल्पता
व्याख्या: लेख आँकड़ा सँ आर्थिक-सामाजिक जोखिम दिखबैत अछि।

प्रश्न 4341. परिवारमे एक कमाऊ आ बाकी आश्रित सदस्यक चित्रण कोन जोखिम देखबैत अछि?
क. निर्भरता, अकर्मण्यता आ भावुक जरूरतक दबाव
ख. पूर्ण स्वावलम्बन
ग. साझा उद्यम
घ. कला-प्रसार
उत्तर: क. निर्भरता, अकर्मण्यता आ भावुक जरूरतक दबाव
व्याख्या: लेख निर्भरता कैं सामाजिक जोखिम आ ऊर्जा-ह्रास बनबैत अछि।

प्रश्न 4342. लेखकक अनुसार मिथिलामे जीवनक जोखिम आ व्यापारक जोखिमक विरोधाभास की अछि?
क. जीवनक जोखिम सहज लेल जाइत अछि, व्यापारक जोखिम कठिन बुझाइत अछि
ख. दुनू समान सहज
ग. दुनू अनुपस्थित
घ. व्यापारक जोखिम प्रिय
उत्तर: क. जीवनक जोखिम सहज लेल जाइत अछि, व्यापारक जोखिम कठिन बुझाइत अछि
व्याख्या: लेख समाजक जोखिम-बोध उलटल मानैत अछि।

खण्ड ४४० : विदेह-सदेह १ — वृषेश चन्द्र लाल: जीवन, राजनीति आ “फेकनाक दिआबाती”

प्रश्न 4343. वृषेश चन्द्र लालक मूल परिचय कोन क्षेत्रसँ जुड़ल अछि?
क. राजनीतिक कर्म आ लोकतान्त्रिक संघर्ष
ख. कम्प्यूटर शिक्षा
ग. पक्षी विज्ञान
घ. रसोई
उत्तर: क. राजनीतिक कर्म आ लोकतान्त्रिक संघर्ष
व्याख्या: परिचय हुनका नेपालक प्रजातान्त्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा बतबैत अछि।

प्रश्न 4344. नेपालमे लोकतंत्र लेल संघर्षक क्रममे हुनका कतेक बेर गिरफ्तार कहल गेल?
क. १७ बेर
ख. एक बेर
ग. सात बेर
घ. शून्य बेर
उत्तर: क. १७ बेर
व्याख्या: परिचयमे १७ गिरफ्तारी हुनक संघर्षशील राजनीतिक जीवन देखबैत अछि।

प्रश्न 4345. हुनका लगभग कतेक वर्ष जेलमे रहल कहल गेल?
क. ८ वर्ष
ख. एक मास
ग. बीस दिन
घ. ३० वर्ष
उत्तर: क. ८ वर्ष
व्याख्या: राजनीतिक संघर्षक कठोरता ई सूचना देखबैत अछि।

प्रश्न 4346. वृषेश चन्द्र लालक “फेकनाक दिआबाती” मे दीवाबातीक चमकसँ ककर छाया दिस ध्यान अछि?
क. फेकना/अभावग्रस्त लोक दिस
ख. राजमहल दिस
ग. व्यापार मंडी दिस
घ. बैंक फाइल दिस
उत्तर: क. फेकना/अभावग्रस्त लोक दिस
व्याख्या: कविता उत्सवक किनार पर छूटल भूख आ अभाव देखबैत अछि।

प्रश्न 4347. कविता मे फेकना किएक तेल बुताएल दिया ताकैत अछि?
क. एक मुट्ठी भात आ तिलकोर तरुआक लोभे
ख. पुरस्कार लेल
ग. पक्षी पकड़य लेल
घ. नाटक टिकट लेल
उत्तर: क. एक मुट्ठी भात आ तिलकोर तरुआक लोभे
व्याख्या: उत्सवक बीच भूखक बिम्ब कविता कैं तीखा बनबैत अछि।

प्रश्न 4348. फुलझड़ी, अनार, भुइँपटका आ फटाका कात राखबाक अर्थ की अछि?
क. चमकदार उत्सवसँ हटि उपेक्षित भूख दिस देखब
ख. उत्सवक बढ़ाई मात्र
ग. राजनीतिक भाषण
घ. व्यापार सूची
उत्तर: क. चमकदार उत्सवसँ हटि उपेक्षित भूख दिस देखब
व्याख्या: कविता बाहरी रोशनीक बजाय सामाजिक अन्हार पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 4349. “फेकनाक दिआबाती” मे उत्सवक सौन्दर्य ककर विरुद्ध रखल गेल?
क. गरीबी आ भोजन-अभावक विरुद्ध
ख. भाषा-गौरव विरुद्ध
ग. चित्रकला विरुद्ध
घ. जंगल विरुद्ध
उत्तर: क. गरीबी आ भोजन-अभावक विरुद्ध
व्याख्या: दीपावलीक चमक भूखक कठोर यथार्थ सँ टकराइत अछि।

प्रश्न 4350. वृषेशक परिचयमे बी.पी. कोइरालासँ सम्बन्ध कोना आवैत अछि?
क. कोइरालाक प्रति प्रतिबद्ध राजनीतिक अनुयायी रूपमे
ख. कला-गुरु रूपमे
ग. बैंक मैनेजर रूपमे
घ. पक्षीशास्त्री रूपमे
उत्तर: क. कोइरालाक प्रति प्रतिबद्ध राजनीतिक अनुयायी रूपमे
व्याख्या: परिचय राजनीतिक वैचारिकता स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 4351. हुनक प्रकाशित कार्यमे “मोदिआइन”क मैथिली रूपान्तरण की संकेत करैत अछि?
क. नेपाली राजनीतिक-साहित्यिक परंपरासँ मैथिली संवाद
ख. सिर्फ बाल-गीत
ग. सिर्फ व्यापार-पत्र
घ. सिर्फ नाटक टिकट
उत्तर: क. नेपाली राजनीतिक-साहित्यिक परंपरासँ मैथिली संवाद
व्याख्या: रूपान्तरण भाषा-पार साहित्यिक आदान-प्रदान अछि।

प्रश्न 4352. “फेकनाक दिआबाती”क सामाजिक केन्द्र की अछि?
क. उत्सवक चमकक भीतर छूटल मनुष्यक भूख
ख. राजसी भोज
ग. कम्प्यूटर प्रशिक्षण
घ. जंगल यात्रा
उत्तर: क. उत्सवक चमकक भीतर छूटल मनुष्यक भूख
व्याख्या: कविता उत्सवक राजनीतिक-समाजिक आलोचना रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

खण्ड ४४१ : विदेह-सदेह १ — वृषेश चन्द्र लाल: “क्षणक छनाक”

प्रश्न 4353. “क्षणक छनाक”क पहिल बिंदु शासन लेल की चाहैत अछि?
क. अनुशासन
ख. अराजकता
ग. मौन
घ. निष्क्रियता
उत्तर: क. अनुशासन
व्याख्या: कविता शासन आ अनुशासनक सम्बन्ध पर तीक्ष्ण कथन करैत अछि।

प्रश्न 4354. “लाल पहाड़ / महाभारतबला? / खूनक ढेरी!” बिम्ब की संकेत करैत अछि?
क. हिंसक इतिहास आ रक्त-राजनीति
ख. फूलबारी
ग. नौकाविहार
घ. बालखेल
उत्तर: क. हिंसक इतिहास आ रक्त-राजनीति
व्याख्या: महाभारत-लाल पहाड़ बिम्ब युद्ध आ रक्तक आलोचना अछि।

प्रश्न 4355. “मीत अपने / हएबन्हि, ओ किछु / अओर छथिन!” पंक्ति कोन चेतना दैत अछि?
क. दिखावटी मित्रता पर संशय
ख. पूर्ण विश्वास
ग. अंध-समर्पण
घ. मौसम वर्णन
उत्तर: क. दिखावटी मित्रता पर संशय
व्याख्या: छोट कथन राजनीतिक सम्बन्धक दोहरापन खोलैत अछि।

प्रश्न 4356. “एकता माने / सभलेल नै खाली / एकटाले” पंक्ति कोन सुधार सुझबैत अछि?
क. एकता सामूहिक हित लेल, एक व्यक्तिक लेल नहि
ख. एकताक निजीकरण
ग. नेता-पूजा
घ. मौन समाज
उत्तर: क. एकता सामूहिक हित लेल, एक व्यक्तिक लेल नहि
व्याख्या: कविता एकता-नारा कैँ स्वार्थी appropriation सँ बचबैत अछि।

प्रश्न 4357. “गढै अछि शब्द / काबिलसभ, बात / चिबबैलेल” मे कोन व्यंग्य अछि?
क. बुद्धिजीवी शब्द बनबैत छथि मुदा बात चबायल जाइत अछि
ख. शब्दक अनुपस्थिति
ग. मौन श्रेष्ठता
घ. भाषा-विनाश
उत्तर: क. बुद्धिजीवी शब्द बनबैत छथि मुदा बात चबायल जाइत अछि
व्याख्या: कविता भाषिक-कौशल आ वास्तविक कर्म बीच व्यंग्य रचैत अछि।

प्रश्न 4358. “सफल भेल / अपनेस? जरूर / फेरल हैत!” कोन मनोदशा पर चोट अछि?
क. सफलताक श्रेय आ आत्म-केन्द्रित व्यंग्य
ख. निःस्वार्थ सेवा
ग. सामूहिक श्रम
घ. शान्ति
उत्तर: क. सफलताक श्रेय आ आत्म-केन्द्रित व्यंग्य
व्याख्या: छोट पंक्ति राजनीतिक आत्ममुग्धता पर कटाक्ष अछि।

प्रश्न 4359. “सनकी अछि / दोष देखोनिहार / धरतीपर!” पंक्ति कोन सामाजिक प्रवृत्ति पर बोलैत अछि?
क. दोष देखनिहार कैँ सनकी कहि खारिज करब
ख. दोष मानि सुधारब
ग. सत्य स्वीकारब
घ. भाषा रक्षा
उत्तर: क. दोष देखनिहार कैँ सनकी कहि खारिज करब
व्याख्या: कविता आलोचकक अवमूल्यन पर व्यंग्य अछि।

प्रश्न 4360. “बरियातमे / छिटल गेल इत्र / गन्हाइ छलै!” कोन विरोधाभास अछि?
क. सुगन्धक दावा आ दुर्गन्धक यथार्थ
ख. साफ-सुथरा भोज
ग. पूर्ण शांति
घ. सफल विवाह
उत्तर: क. सुगन्धक दावा आ दुर्गन्धक यथार्थ
व्याख्या: पंक्ति सजावट आ असल स्थिति बीच अंतर खोलैत अछि।

प्रश्न 4361. “पुरान मन / रचतै युग नव? / नइ हेतै!” कोन निष्कर्ष दैत अछि?
क. पुरानी मानसिकता सँ नया युग नहि बनत
ख. पुरान मन पर्याप्त अछि
ग. नवयुग असम्भव नहि
घ. इतिहास निरर्थक
उत्तर: क. पुरानी मानसिकता सँ नया युग नहि बनत
व्याख्या: कविता परिवर्तन लेल मानसिकता-परिवर्तन आवश्यक मानैत अछि।

प्रश्न 4362. “गैंडाक खाक / ओकर शिकारक / कारण थिक!” मे कोन व्यंग्य सम्भव अछि?
क. शिकारक तर्क अपने निर्मित कारणसँ बनैत अछि
ख. जंगल-पूजा
ग. सिर्फ पशु-वर्णन
घ. संगीत-वंदना
उत्तर: क. शिकारक तर्क अपने निर्मित कारणसँ बनैत अछि
व्याख्या: कविता हिंसा या शोषणक औचित्य-निर्माण पर कटाक्ष करैत अछि।

खण्ड ४४२ : विदेह-सदेह १ — छवि झा/कुमुद सिंह: मिथिला चित्रकला आ अर्थक प्रश्न

प्रश्न 4363. छवि झा पिछले कतेक वर्षसँ मिथिला चित्रकलाक अर्थ पर काज करैत बतायल गेलीह?
क. तीस वर्ष
ख. तीन दिन
ग. दस मास
घ. एक सप्ताह
उत्तर: क. तीस वर्ष
व्याख्या: परिचय हुनक दीर्घ अध्ययन आ कला-चिन्तन स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 4364. कुमुद सिंहक परिचयमे कोन विशिष्टता बतायल गेल?
क. मैथिलीक पहिल ई-पेपरक सम्पादक
ख. पहिल पक्षीशास्त्री
ग. पहिल बैंक अधिकारी
घ. पहिल नौकाचालक
उत्तर: क. मैथिलीक पहिल ई-पेपरक सम्पादक
व्याख्या: परिचय हुनका डिजिटल मैथिली सम्पादनसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4365. मिथिला चित्रकला पर लेख १९६० क दशकक कोन परिवर्तन सँ शुरू होइत अछि?
क. दीवारसँ कागज पर उतारबाक प्रयास
ख. कागजसँ मिट्टी मे गाड़ब
ग. चित्रकला छोड़ब
घ. केवल छपाइ रोकब
उत्तर: क. दीवारसँ कागज पर उतारबाक प्रयास
व्याख्या: लेखकमानैत छथि जे माध्यम-परिवर्तनसँ नव प्रयोग आ अर्थ-संकट शुरू भेल।

प्रश्न 4366. दीवारसँ कागज पर आएलाक बाद चित्रकलामे की शुरू भेल?
क. नव-नव प्रयोग आ अर्थक नव संसार
ख. पूर्ण स्थिरता
ग. अर्थक समाप्ति बिना कारण
घ. चित्रकला निषेध
उत्तर: क. नव-नव प्रयोग आ अर्थक नव संसार
व्याख्या: माध्यम-परिवर्तन अर्थ-व्याख्या बदलि देलक।

प्रश्न 4367. लेखकक अनुसार नव प्रयोग आ पुरान अर्थक मिश्रण की प्रश्न उठौलक?
क. कलाक स्वरूप आ अर्थक औचित्य पर सवाल
ख. सिर्फ रंगक मूल्य
ग. दामक सूची
घ. गीतक ताल
उत्तर: क. कलाक स्वरूप आ अर्थक औचित्य पर सवाल
व्याख्या: लेख कलाक आंतरिक अर्थ-व्यवस्था पर आलोचनात्मक दृष्टि दैत अछि।

प्रश्न 4368. सब कलाकृतिक सम्बन्धमे लेख कोन मूल धारणा दैत अछि?
क. प्रत्येक कलाकृतिक एक अर्थ होइत अछि
ख. कोनो अर्थ नहि होइत
ग. अर्थ केवल विक्रेता तय करैत
घ. रंगहि सब किछु अछि
उत्तर: क. प्रत्येक कलाकृतिक एक अर्थ होइत अछि
व्याख्या: अर्थ कलाकृति आ ओकर सार्थकता कैं जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4369. लेखकक अनुसार मिथिला आ भारतक विद्वान एही कलाक प्रति की नहि बना सकलथि?
क. अपन स्वतंत्र नजरिया
ख. कागज
ग. रंग
घ. दीवार
उत्तर: क. अपन स्वतंत्र नजरिया
व्याख्या: लेख देशी दृष्टि-अभाव कैं गंभीर समस्या मानैत अछि।

प्रश्न 4370. विदेशी विद्वानक दृष्टि पर निर्भरता लेखमे ककर परिणाम मानल गेल?
क. देशी नजरियाक अभाव आ अर्थ-भ्रम
ख. भाषाक उन्नति
ग. सटीक पंजी
घ. व्यापारिक समृद्धि
उत्तर: क. देशी नजरियाक अभाव आ अर्थ-भ्रम
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे देशी विद्वान ओकरे आधार मानि आगू बढ़ैत रहलाह।

प्रश्न 4371. १९८४ मे अमेरिकासँ प्रकाशित मानवशास्त्रीय पत्रिका मे कोन बात उठायल गेल?
क. अर्थक अधिकता सँ सार्थकता खतम होबाक प्रश्न
ख. पक्षीशिकार
ग. बैंकिंग
घ. नौकाविहार
उत्तर: क. अर्थक अधिकता सँ सार्थकता खतम होबाक प्रश्न
व्याख्या: लेख मिथिला चित्रकलाक अर्थ-अधिकता कैं आलोचनात्मक मुद्दा बनबैत अछि।

प्रश्न 4372. मिथिला चित्रकला लेखक मुख्य संकट की अछि?
क. अर्थक अधिकता, बाहरी व्याख्या आ स्थानीय सूत्रक उपेक्षा
ख. रंगक पूर्ण अभाव
ग. चित्रकला न होएब
घ. लोककला पूरी तरह समाप्त
उत्तर: क. अर्थक अधिकता, बाहरी व्याख्या आ स्थानीय सूत्रक उपेक्षा
व्याख्या: लेख अर्थ, माध्यम, विद्वान-दृष्टि आ सामाजिक संदर्भक उलझन खोलैत अछि।

खण्ड ४४३ : विदेह-सदेह १ — मिथिला चित्रकला: देशी-विदेशी दृष्टि आ अर्थ-भ्रम

प्रश्न 4373. लेख मे डब्ल्यू.जी. आर्चरक १९४९ क उल्लेख ककर संदर्भमे अछि?
क. मिथिला चित्रकलापर आरम्भिक लिखित टिप्पणी
ख. कम्प्यूटर शिक्षा
ग. सैनिक कथा
घ. बाढ़ रिपोर्ट
उत्तर: क. मिथिला चित्रकलापर आरम्भिक लिखित टिप्पणी
व्याख्या: आर्चरक उल्लेख इतिहास-लेखनक प्रारम्भिक बाहरी दृष्टि रूपमे अछि।

प्रश्न 4374. लक्ष्मीनाथ झाक पुस्तकक विशेषता की बतायल गेल?
क. मिथिला लोकचित्रकला पर पहिल अधिकृत देशी दस्तावेज
ख. नौका-विहार गाइड
ग. बैंक नियमावली
घ. शिकार पोथी
उत्तर: क. मिथिला लोकचित्रकला पर पहिल अधिकृत देशी दस्तावेज
व्याख्या: लेख देशी दृष्टि आ भाषा-मिश्रणक कारण एकरा महत्त्वपूर्ण मानैत अछि।

प्रश्न 4375. देशी नजरियावाला पुस्तक पाठक धरि नहि पहुँचब कैं लेखक की मानैत छथि?
क. अर्थक अधिकताक मूल कारण सभमे एक
ख. चित्रकला समाप्तिक प्रमाण
ग. भाषा-विरोध
घ. व्यापारक विजय
उत्तर: क. अर्थक अधिकताक मूल कारण सभमे एक
व्याख्या: देशी सामग्री प्रसारित नहि भेलासँ बाहरी अर्थ हावी भेल।

प्रश्न 4376. कैरोलीन ब्राउनक हवाला सँ लेख कोन शिकायत रखैत अछि?
क. मिथिला चित्रकलाक अर्थ गलत आ भ्रमक तरीका सँ विश्व समक्ष राखल गेल
ख. चित्रकलाक अर्थ पूर्ण स्पष्ट अछि
ग. देशी विद्वान बहुत काज केलथि
घ. विदेशी व्याख्या सदैव शुद्ध अछि
उत्तर: क. मिथिला चित्रकलाक अर्थ गलत आ भ्रमक तरीका सँ विश्व समक्ष राखल गेल
व्याख्या: ब्राउनक टिप्पणी बाहरी व्याख्याक सीमा स्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 4377. लेखकक अनुसार विदेशी शोधकर्ता लेल मुख्य चुनौती की अछि?
क. लोककला बुझि ओकर सही अर्थ अभिव्यक्त करब
ख. रंग किनब
ग. पोस्टकार्ड लिखब
घ. नाटक मंचन
उत्तर: क. लोककला बुझि ओकर सही अर्थ अभिव्यक्त करब
व्याख्या: लोककला स्थानीय जीवन-सूत्रसँ जुड़ल रहैत अछि।

प्रश्न 4378. भिन्न-भिन्न अर्थ बीच की होइत अछि, लेखक कहैत छथि?
क. एकटा समानता जे अर्थ कैं जोड़ैत अछि
ख. पूर्ण असंबंध
ग. केवल रंग
घ. केवल बाजार
उत्तर: क. एकटा समानता जे अर्थ कैं जोड़ैत अछि
व्याख्या: अर्थ बहुलता पूर्ण अराजक नहि, ओकर एक सूत्र होइत अछि।

प्रश्न 4379. पुरुष आ स्त्रीक ज्ञान-क्षेत्र पर लेख की कहैत अछि?
क. पुरुष शास्त्रीय/कर्मकाण्ड, स्त्री घरेलू पर्व-त्योहारक व्याख्या मे दक्ष
ख. दुनूक कोनो भूमिका नहि
ग. स्त्री केवल दर्शक
घ. पुरुष केवल चित्रकार
उत्तर: क. पुरुष शास्त्रीय/कर्मकाण्ड, स्त्री घरेलू पर्व-त्योहारक व्याख्या मे दक्ष
व्याख्या: लेख ज्ञानक लैंगिक-सामाजिक विभाजनक बात करैत अछि।

प्रश्न 4380. चित्रकलाक सही अर्थ एखन किनका लग सुरक्षित रहबाक संकेत अछि?
क. किछु मिहलाक लग, जे व्यावसायिक नहि छथि
ख. केवल विदेशी लेखक लग
ग. केवल बाजार लग
घ. केवल प्रिंट मशीन लग
उत्तर: क. किछु मिहलाक लग, जे व्यावसायिक नहि छथि
व्याख्या: लेख स्थानीय स्त्री-सूत्रक महत्त्व बतबैत अछि।

प्रश्न 4381. विदेशी विद्वान अल्प-ज्ञानी स्रोतसँ जानकारी ल’ की करैत छथि?
क. सूत्र-जिनिहारि महिलाक नजरअंदाज
ख. महिलाक पूर्ण सम्मान
ग. देशी अर्थ संरक्षित
घ. सत्य संकलन
उत्तर: क. सूत्र-जिनिहारि महिलाक नजरअंदाज
व्याख्या: लेख ज्ञान-स्रोतक गलत चयन पर आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 4382. एहि खण्डक मुख्य तर्क की अछि?
क. मिथिला चित्रकलाक अर्थ स्थानीय स्त्री-ज्ञान आ सामाजिक सूत्र बिना नहि बुझल जा सकैत
ख. कला केवल सजावट अछि
ग. अर्थक आवश्यकता नहि
घ. कागज पर आबि समस्या समाप्त
उत्तर: क. मिथिला चित्रकलाक अर्थ स्थानीय स्त्री-ज्ञान आ सामाजिक सूत्र बिना नहि बुझल जा सकैत
व्याख्या: लेख देशी, स्त्री-केंद्रित आ सांस्कृतिक पठनक माँग करैत अछि।

खण्ड ४४४ : विदेह-सदेह १ — मिथिला चित्रकला: पुरैन, कोहबर आ लोक-संस्कृति

प्रश्न 4383. लेखकक अनुसार कोहबरक पुरैन संबंधी मुख्य भ्रम की अछि?
क. अधिकतर विद्वान एकरा कोहबर नामसँ परिभाषित करैत छथि, जबकि पुरैन चित्रगुच्छक एक सदस्य मात्र अछि
ख. पुरैन पूर्णतः अनुपस्थित अछि
ग. पुरैन केवल बैंक चिन्ह अछि
घ. कोहबर शिकार स्थल अछि
उत्तर: क. अधिकतर विद्वान एकरा कोहबर नामसँ परिभाषित करैत छथि, जबकि पुरैन चित्रगुच्छक एक सदस्य मात्र अछि
व्याख्या: पुरैन कैं सम्पूर्ण कोहबर मानब अर्थ-भ्रमक कारण अछि।

प्रश्न 4384. पुरैनक वर्तमान रूप जानकार महिलामे किएक भ्रम पैदा करैत अछि?
क. मूल सूत्र आ दीवार-परम्परासँ अलग रूप फैलि रहल अछि
ख. क्योंकि रंग नहि अछि
ग. क्योंकि चित्र बनैत नहि
घ. क्योंकि केवल पुरुष बनबैत छथि
उत्तर: क. मूल सूत्र आ दीवार-परम्परासँ अलग रूप फैलि रहल अछि
व्याख्या: लेख परम्परा आ आधुनिक कागजी रूपक फर्क दिखबैत अछि।

प्रश्न 4385. पुरैनक चित्र मे गोलाकार आकृति संग कतेक मौखिक मुँह/मुखक उल्लेख अछि?
क. चारूकात छह आ बीचमे सातम, पैघ आकारक
ख. केवल एक
ग. बीस
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. चारूकात छह आ बीचमे सातम, पैघ आकारक
व्याख्या: लेख वर्तमान रेखाचित्रक बनावट बतबैत अछि।

प्रश्न 4386. मिथिला मे अरिपन की कहल जाइत अछि?
क. जमीन पर बनाओल रेखाचित्र
ख. दीवारक रंगीन भित्तिचित्र
ग. बैंक-चार्ट
घ. पत्र-सूची
उत्तर: क. जमीन पर बनाओल रेखाचित्र
व्याख्या: लेख पुरैन-रेखाचित्र आ अरिपनक भेद स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 4387. मिथिला मे पुरैनक दूटा सूत्र कोन सामाजिक समूहसँ जुड़ल बतायल गेल?
क. ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ
ख. सैनिक आ व्यापारी
ग. गायक आ नर्तक
घ. बैंककर्मी आ पोस्टमैन
उत्तर: क. ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ
व्याख्या: दूनू समुदायमे पुरैनक प्रारूप अलग कहल गेल अछि।

प्रश्न 4388. साँप, कछुआ, माछ आदि चित्रक औचित्य विदेशी विद्वान लेल किएक कठिन अछि?
क. स्थानीय सांस्कृतिक सूत्र बिना संदेश बुझब कठिन अछि
ख. चित्र खाली अछि
ग. रंग नहि अछि
घ. कथासूत्र नहि
उत्तर: क. स्थानीय सांस्कृतिक सूत्र बिना संदेश बुझब कठिन अछि
व्याख्या: लेख बाहरी दृष्टि कैं भीड़वाला चित्रक भ्रममे पड़ल बतबैत अछि।

प्रश्न 4389. ब्राउनक अनुसार पुरैनक स्वरूप ककर नव रूपसँ मिलैत अछि?
क. कायस्थ प्रारूपसँ
ख. सैनिक नक्सासँ
ग. बैंक चार्टसँ
घ. नाटक पोस्टरसँ
उत्तर: क. कायस्थ प्रारूपसँ
व्याख्या: लेख ब्राउनक मतकैं स्थानीय रूपांतर-बोधसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4390. पुरैन कमलक लत्ती किएक कहल जाइत अछि?
क. कमल-पोखरि आ वंश-वृद्धिक सांकेतिक अर्थसँ
ख. सिर्फ सजावट लेल
ग. केवल पशु-पक्षी लेल
घ. व्यापारिक छाप लेल
उत्तर: क. कमल-पोखरि आ वंश-वृद्धिक सांकेतिक अर्थसँ
व्याख्या: कमल-पानीक बिम्ब परिवार-विस्तारक सांस्कृतिक संकेत अछि।

प्रश्न 4391. लक्ष्मीनाथ झाक अनुसार पुरैन नव दंपति सँ कोन सांकेतिक अनुरोध अछि?
क. घर कैँ वंश-विहीन नहि होबय देबाक
ख. घर छोड़ि देबाक
ग. भाषा न बोलबाक
घ. चित्र नहि बनायबाक
उत्तर: क. घर कैँ वंश-विहीन नहि होबय देबाक
व्याख्या: पुरैनक लोक-अर्थ विवाह, वंश आ स्त्रीत्वक प्रतीक-विश्वसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4392. लेखक आधुनिक समयमे पुरैनक औचित्यबारे की संकेत करैत छथि?
क. बियाहक अर्थ बदललाक बाद पुरैनक प्रासंगिकता पर पुनर्विचार जरूरी अछि
ख. पुरैन सदैव निरर्थक अछि
ग. पुरैन केवल बाजारू वस्तु अछि
घ. कोहबरक कोनो अर्थ नहि
उत्तर: क. बियाहक अर्थ बदललाक बाद पुरैनक प्रासंगिकता पर पुनर्विचार जरूरी अछि
व्याख्या: लेख परम्परा के अंध-स्वीकार नहि, अर्थ-बोधक पुनर्पाठ चाहैत अछि।

खण्ड ४४५ : विदेह-सदेह १ — मिथिला चित्रकला: अर्थ-भ्रमक निष्कर्ष

प्रश्न 4393. छवि झा/कुमुद सिंहक लेखक अंतिम आग्रह की अछि?
क. मिथिला चित्रकलाक गंभीर शोध हो आ अर्थक अधिकता कम हो
ख. चित्रकला छोड़ि देल जाए
ग. कागज पर सभ चित्र बंद हो
घ. चित्रकला केवल विदेशमे बनय
उत्तर: क. मिथिला चित्रकलाक गंभीर शोध हो आ अर्थक अधिकता कम हो
व्याख्या: लेख मिथिला चित्रकलाक गलत अर्थ-प्रसार रोकबाक लेल गंभीर शोधक आवश्यकता बतबैत अछि।

प्रश्न 4394. लेखकसभक अनुसार मिथिला चित्रकला कैँ दुनिया समक्ष कोना परिभाषित कएल गेल?
क. बहुत बेर गलत ढंगसँ
ख. सदैव पूर्ण शुद्ध ढंगसँ
ग. केवल मौखिक रूपेँ
घ. एकदम परिभाषित नहि कएल गेल
उत्तर: क. बहुत बेर गलत ढंगसँ
व्याख्या: लेख बाहरी व्याख्या द्वारा सांस्कृतिक अर्थक विकृति पर आपत्ति करैत अछि।

प्रश्न 4395. आधुनिक मिथिला चित्रकलाक एक मुख्य संकट लेखमे की कहल गेल?
क. बहुत चित्र एतुका संस्कृति सँ कटि बनि रहल अछि
ख. सभ चित्र केवल पुरान दीवार पर अछि
ग. कोनो नव प्रयोग नहि अछि
घ. चित्रकला पूर्णतः लुप्त अछि
उत्तर: क. बहुत चित्र एतुका संस्कृति सँ कटि बनि रहल अछि
व्याख्या: लेख नव प्रयोगक विरोध नहि, संस्कृति-विहीन अर्थ-निर्माणक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 4396. “अज्ञानताक द्योतक” बनल रहबाक खतरा ककरा लेल कहल गेल?
क. मिथिला चित्रकलाक गलत अर्थ-प्रसार लेल
ख. गामक खेती लेल
ग. गजल संरचना लेल
घ. कम्प्यूटर शिक्षाक लेल
उत्तर: क. मिथिला चित्रकलाक गलत अर्थ-प्रसार लेल
व्याख्या: यदि सही शोध नहि भेल तँ कला मिथिलाक ज्ञान नहि, अज्ञानक प्रतीक मानल जाएत।

प्रश्न 4397. लेखकक अनुसार मिथिलाक संस्कृति कैँ गलत परिभाषित करबाक कारण मे की शामिल अछि?
क. स्थानीय सूत्र आ स्त्री-ज्ञानक उपेक्षा
ख. केवल मौसमक बदल
ग. सैनिक व्यवस्था
घ. राजनीतिक चुनाव मात्र
उत्तर: क. स्थानीय सूत्र आ स्त्री-ज्ञानक उपेक्षा
व्याख्या: लेख मानैत अछि जे स्थानीय महिलाक अर्थ-सूत्र कैँ अनदेखा करब मूल समस्या अछि।

प्रश्न 4398. लेखकसभ पुरैन आ कोहबरक बहस सँ की साबित करैत छथि?
क. चित्रक रूप मात्र नहि, ओकर सांस्कृतिक सूत्र बुझब जरूरी अछि
ख. सभी चित्र एक समान अछि
ग. कोहबर निरर्थक अछि
घ. पुरैन केवल सजावट अछि
उत्तर: क. चित्रक रूप मात्र नहि, ओकर सांस्कृतिक सूत्र बुझब जरूरी अछि
व्याख्या: पुरैनक उदाहरण सँ लेख लोक-अर्थक जटिलता खोलैत अछि।

प्रश्न 4399. मिथिला चित्रकलाक अर्थ-बोध मे ककर भूमिका लेख विशेष रूपेँ रेखांकित करैत अछि?
क. मिथिलाक स्त्री-परंपराक
ख. केवल विदेशी संग्रहालयक
ग. केवल व्यापारीक
घ. केवल सरकारी दफ्तरक
उत्तर: क. मिथिलाक स्त्री-परंपराक
व्याख्या: कला घरेलू स्त्री-अनुभव आ अनुष्ठानिक ज्ञानसँ गहींर जुड़ल अछि।

प्रश्न 4400. कागज पर उतरबाक बाद चित्रकलामे की बढ़ल?
क. नव प्रयोग आ अर्थक नव संसार
ख. केवल मौन
ग. पूर्ण विराम
घ. कृषि उत्पादन
उत्तर: क. नव प्रयोग आ अर्थक नव संसार
व्याख्या: दीवारसँ कागज पर गेलाक बाद बाजार, प्रयोग आ बाहरी अर्थ-निर्माण बढ़ल।

प्रश्न 4401. लेख मिथिला चित्रकलाक रक्षा लेल कोन पद्धति उचित मानैत अछि?
क. स्थानीय संस्कृति, भाषा आ परंपरागत अर्थक आधार पर पुनर्पाठ
ख. सिर्फ विदेशी पुस्तकक नकल
ग. चित्रक नाम बदलि देब
घ. रंग हटाब
उत्तर: क. स्थानीय संस्कृति, भाषा आ परंपरागत अर्थक आधार पर पुनर्पाठ
व्याख्या: लेख देशी व्याख्या, स्थानीय संवाद आ सांस्कृतिक संदर्भक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 4402. छवि झा/कुमुद सिंहक लेखक मूल स्वर कोन अछि?
क. कला-समालोचनात्मक आ सांस्कृतिक आत्मरक्षा वाला
ख. केवल यात्रा-वृत्तांत
ग. केवल हास्य-कथा
घ. केवल सरकारी सूचना
उत्तर: क. कला-समालोचनात्मक आ सांस्कृतिक आत्मरक्षा वाला
व्याख्या: लेख मिथिला चित्रकला कैँ मिथिलाक मान-स्मृति आ अर्थ-व्यवस्था सँ जोडि समीक्षा करैत अछि।

खण्ड ४४६ : विदेह-सदेह १ — देवशंकर नवीन: विरासत आ अदद्दी पेन

प्रश्न 4403. देवशंकर नवीनक लेख “अदद्दी पेनकेँ मजगुत करबाक आवश्यकता”क आरम्भ मे मिथिलाक कोन परंपरा देखायल गेल?
क. उच्च शिक्षा, गंभीर चिंतन आ विचार-विमर्शक परंपरा
ख. केवल युद्धक परंपरा
ग. केवल समुद्री व्यापार
घ. केवल मौन साधना
उत्तर: क. उच्च शिक्षा, गंभीर चिंतन आ विचार-विमर्शक परंपरा
व्याख्या: लेख मिथिलाक सांस्कृतिक विरासत केँ अध्ययन, विमर्श आ निर्णय-प्रक्रियासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4404. लेखक मिथिलाक लोकजीवन मे “परसुख”क कोन भूमिका देखैत छथि?
क. दोसराकेँ प्रसन्न करबामे आनंद
ख. दोसरा सँ दूरी
ग. अपना घर बंद करब
घ. भाषा छिपायब
उत्तर: क. दोसराकेँ प्रसन्न करबामे आनंद
व्याख्या: अतिथि-सत्कार आ सामाजिक सम्मानक पीछे परसुखक भावना बतायल गेल अछि।

प्रश्न 4405. अतिथि-सत्कारक तीव्रता देखाबय लेल लेखमे कोन उदाहरण अछि?
क. घरक थारी-लोटा धरि बन्धकी राखि देबाक
ख. नदी सुखायब
ग. पोथी जारब
घ. मेला तोड़ब
उत्तर: क. घरक थारी-लोटा धरि बन्धकी राखि देबाक
व्याख्या: लेख मिथिलाक अतिथि-भावना केँ अतिरेकी, परन्तु उदार सांस्कृतिक प्रवृत्ति रूपेँ देखैत अछि।

प्रश्न 4406. भनसियाकेँ “महराज/महराजिन” कहबाक परंपरा सँ लेखक की समझबैत छथि?
क. काज करनिहार लोक केँ सम्मानसूचक सम्बोधन
ख. भोजनक निंदा
ग. सेवा-वर्गक अपमान
घ. राज्यक आदेश
उत्तर: क. काज करनिहार लोक केँ सम्मानसूचक सम्बोधन
व्याख्या: लेख सम्बोधनक भीतर सामाजिक आदरक सांस्कृतिक अर्थ ताकैत अछि।

प्रश्न 4407. घर-आँगन साफ करय अथवा सोइरी-घरक काज करयवाली स्त्री केँ “दाय” कहब कोन दृष्टि खोलैत अछि?
क. सामाजिक स्नेह आ सम्बन्धक विस्तार
ख. निरादर
ग. व्यापारिक पद
घ. सैनिक उपाधि
उत्तर: क. सामाजिक स्नेह आ सम्बन्धक विस्तार
व्याख्या: दाय शब्द दादी, जेठ बहिन, दुलारि बेटी आ सेवा-कर्त्री सभमे संबंधसूत्र बनबैत अछि।

प्रश्न 4408. लेखकक अनुसार मिथिलामे अति-अध्ययनशील आ अशिक्षित लोकक बीच की खाई छल?
क. गनल-गुथल लोक बहुत पढ़ल, बाकी रोजी-रोटीमे लागल रहल
ख. सभी समान शिक्षित छल
ग. कृषि नहि छल
घ. विद्वान नहि छल
उत्तर: क. गनल-गुथल लोक बहुत पढ़ल, बाकी रोजी-रोटीमे लागल रहल
व्याख्या: लेख शिक्षा-परंपरा संग सामाजिक असमानता सेहो देखबैत अछि।

प्रश्न 4409. रोजी-रोटीक प्रमुख आधार की कहल गेल?
क. कृषि
ख. समुद्री व्यापार
ग. कारखाना मात्र
घ. विदेशी नौकरी मात्र
उत्तर: क. कृषि
व्याख्या: गामक जीवन कृषि-आधारित छल, जे समाजक ढाँचा बनेने छल।

प्रश्न 4410. ईश-भक्तिक दृढ़ता लेल लेखक कोन सामाजिक कारण सुझबैत छथि?
क. धर्म-भय सँ सदाचार आ सामाजिक मर्यादा टिकत, ई आशा
ख. राजनीतिक प्रचार
ग. व्यापारिक लाभ
घ. केवल कलात्मक शौक
उत्तर: क. धर्म-भय सँ सदाचार आ सामाजिक मर्यादा टिकत, ई आशा
व्याख्या: भक्ति कैँ लेखक सामाजिक अनुशासनक साधन रूपेँ पढ़ैत छथि।

प्रश्न 4411. धर्म-भक्तिक लक्ष्यपूर्ति नहि भेल कहि लेखक कोन परिणाम गिनबैत छथि?
क. धर्मभीरुता, पाखण्ड, अंधविश्वास, लोभ आ अत्याचार
ख. पूर्ण सदाचार मात्र
ग. समाजक पूर्ण एकता
घ. गरीबी समाप्ति
उत्तर: क. धर्मभीरुता, पाखण्ड, अंधविश्वास, लोभ आ अत्याचार
व्याख्या: लेख आदर्श आ वास्तविक प्रवृत्ति बीचक अंतर स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 4412. एहि आरम्भिक विवेचनक मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. मिथिलाक विरासत ऊँच अछि, मुदा ओकर मूल्य-सूत्र कमजोर पड़ल अछि
ख. मिथिलाक कोनो विरासत नहि
ग. सभ परंपरा निरर्थक अछि
घ. कृषि अनावश्यक अछि
उत्तर: क. मिथिलाक विरासत ऊँच अछि, मुदा ओकर मूल्य-सूत्र कमजोर पड़ल अछि
व्याख्या: लेख गौरवगानक संग आत्मालोचना सेहो करैत अछि।

खण्ड ४४७ : विदेह-सदेह १ — देवशंकर नवीन: कृषि-संस्कृति आ सामूहिकता

प्रश्न 4413. लेखकक अनुसार कृषि-जीवनसँ समाजक कौटुम्बिक बंधन केहन छल?
क. बहुत मजगूत
ख. पूर्णतः टूटल
ग. अप्रासंगिक
घ. केवल कागजी
उत्तर: क. बहुत मजगूत
व्याख्या: कृषि-संस्कृति गामक लोक कैँ एक परिवार जकाँ जोड़ने छल।

प्रश्न 4414. भूमिहीन व्यक्ति सेहो किसानक दर्जा पबैत छल — एहि कथनक अर्थ की?
क. कृषि-समाजमे काम आ सहभागिता स्वामित्वसँ बेसी महत्त्वपूर्ण छल
ख. भूमिहीनक कोई भूमिका नहि छल
ग. कृषि सिर्फ जमींदारक छल
घ. गाममे किसान नहि छल
उत्तर: क. कृषि-समाजमे काम आ सहभागिता स्वामित्वसँ बेसी महत्त्वपूर्ण छल
व्याख्या: लेख सामूहिक कृषि-संस्कृति कैँ भूमि-मालिकी सँ परे देखैत अछि।

प्रश्न 4415. गाम पूरा होएबाक लेल लेखक कोन चीज जरूरी बतबैत छथि?
क. विभिन्न जाति-वृत्ति समुदाय सभक उपस्थिति
ख. एक जातिक प्रभुत्व
ग. केवल बाजार
घ. केवल विद्यालय
उत्तर: क. विभिन्न जाति-वृत्ति समुदाय सभक उपस्थिति
व्याख्या: डोम, चमार, नौआ, कमार, गुआर, धोबी आदि सभक सहभागिता गामक पूर्णता बनबैत छल।

प्रश्न 4416. जमींदार, पुरहित, नौआ, कमार, धोबी आदिक उदाहरण लेखमे किएक देल गेल?
क. परस्पर-आश्रित वृत्ति-समाज देखाबय लेल
ख. सिर्फ नाम-सूची बनाबय लेल
ग. विवाह-तालिका लेल
घ. शहरक नक्शा लेल
उत्तर: क. परस्पर-आश्रित वृत्ति-समाज देखाबय लेल
व्याख्या: लेख पेशागत संबंध कैँ सामूहिक जीवनक ढाँचा मानैत अछि।

प्रश्न 4417. सिरपंचमी, दशमी, दीयाबाती, सामा-चकेबा आदि प्रसंगक भूमिका की अछि?
क. सर्वजातीय-सर्ववृत्तीय सहभागिताक उदाहरण
ख. केवल निजी पूजा
ग. सैनिक अभ्यास
घ. पत्रकार सम्मेलन
उत्तर: क. सर्वजातीय-सर्ववृत्तीय सहभागिताक उदाहरण
व्याख्या: पर्व-उत्सव बिना सामूहिक सहभागिता पूर्ण नहि मानल जाइत छल।

प्रश्न 4418. मिथिलाक विवाहमे नौआक गारी देबाक प्रसंग की संकेत करैत अछि?
क. परिहासक माध्यमसँ सामाजिक भूमिका
ख. गंभीर अपमान
ग. कानूनी दंड
घ. विवाह-निषेध
उत्तर: क. परिहासक माध्यमसँ सामाजिक भूमिका
व्याख्या: लेख बतबैत अछि जे नौआक हास्य-विधि विवाहक सांस्कृतिक अंग अछि।

प्रश्न 4419. धोबिन द्वारा कनियाँक केस धोब आ सोहाग देब कोन दर्जा देत अछि?
क. कन्याक माय-समान ओहदा
ख. राजकीय पद
ग. अतिथि-मात्र भूमिका
घ. कोनो ओहदा नहि
उत्तर: क. कन्याक माय-समान ओहदा
व्याख्या: विवाह-कर्ममे सेवा-वृत्तिक लोक कैँ परिजन-समान अर्थ भेटैत अछि।

प्रश्न 4420. छठ पाबनि लेखमे कोन रूपेँ देखायल अछि?
क. जाति-धर्म समभाव आ साझा विरासतक रक्षा करनिहार पाबनि
ख. केवल निजी भोजन
ग. सिर्फ पुरुषक अनुष्ठान
घ. केवल व्यापार
उत्तर: क. जाति-धर्म समभाव आ साझा विरासतक रक्षा करनिहार पाबनि
व्याख्या: छठमे समाजक अनेक वर्गक सहभागिता आवश्यक कहल गेल।

प्रश्न 4421. लेखक आधुनिक कालक कोन कलंक पर चोट करैत छथि?
क. लोभ, द्वेष, छुआछूत, जाति-द्वेष आ शोषणक वृद्धि
ख. पूर्ण समानता
ग. कला-वृद्धि मात्र
घ. अतिथि-सत्कारक विस्तार
उत्तर: क. लोभ, द्वेष, छुआछूत, जाति-द्वेष आ शोषणक वृद्धि
व्याख्या: लेख विकासक बावजूद समाजक विखंडन पर आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 4422. कृषि-संस्कृति संबंधी एहि भागक मुख्य तर्क की अछि?
क. मिथिलाक पुरान समाज परस्पर-आश्रित सामूहिकता पर टिकल छल
ख. समाज पूर्णतः एकाकी छल
ग. पेशा निरर्थक छल
घ. पर्वक कोनो अर्थ नहि छल
उत्तर: क. मिथिलाक पुरान समाज परस्पर-आश्रित सामूहिकता पर टिकल छल
व्याख्या: लेख पुरान सांस्कृतिक व्यवहारमे सामाजिक अनुबंधक गाढ़ अर्थ देखैत अछि।

खण्ड ४४८ : विदेह-सदेह १ — देवशंकर नवीन: उदारता, बेटी आ मर्यादा

प्रश्न 4423. नव साग-पात वा फल-फूल पहिने कतय पहुँचाओल जाइत छल?
क. ग्रामदेवक थान आ पड़ोसियाक आँगनमे
ख. सीधे बाजारमे
ग. केवल राजदरबारमे
घ. केवल स्कूलमे
उत्तर: क. ग्रामदेवक थान आ पड़ोसियाक आँगनमे
व्याख्या: लेख अन्न-फल बाँटबाक परंपरा कैं सामाजिक सम्बन्धक प्रतीक मानैत अछि।

प्रश्न 4424. फसल तैयार भेलाक बाद आगअॅ-राशि ककरा देल जाइत छल?
क. कोनो परगोत्री कैं
ख. केवल सेनाकैं
ग. केवल व्यापारी कैं
घ. ककरो नहि
उत्तर: क. कोनो परगोत्री कैं
व्याख्या: आगअॅ-राशि बाँटब परस्पर-संबंध आ पुण्य-दृष्टि सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4425. सनेसमे आएल वस्तु सौंसे टोलमे बिलहबाक अर्थ की छल?
क. कुटुम्ब-सम्बन्ध कैं पूरे समाजक संग साझा करब
ख. भोजन बरबाद करब
ग. व्यापार घटायब
घ. गोपनीयता राखब
उत्तर: क. कुटुम्ब-सम्बन्ध कैं पूरे समाजक संग साझा करब
व्याख्या: संदेश-वस्तु निजी नहि, सामुदायिक आनन्दक रूपमे फैलैत छल।

प्रश्न 4426. बेटीक दुरागमनक मिठाई गाममे बिलहल जाएबाक संकेत की छल?
क. सम्पूर्ण गाम कैं बेटी विदा होएबाक सूचना आ भाव-साझेदारी
ख. केवल बाजार बिक्री
ग. दहेज गिनती
घ. विवाद घोषणा
उत्तर: क. सम्पूर्ण गाम कैं बेटी विदा होएबाक सूचना आ भाव-साझेदारी
व्याख्या: दुरागमन सामूहिक बेटी-बोधक सांस्कृतिक क्षण बनैत छल।

प्रश्न 4427. दुरागमन पहिने गामक लोक बेटीकेँ भोजन करबैत छल — लेखक एहि में की अर्थ देखैत छथि?
क. बेटीक विवेक आ कुल-शीलक स्मरण कराएब
ख. गामसँ बहिष्कार
ग. आर्थिक दंड
घ. सैन्य अनुशासन
उत्तर: क. बेटीक विवेक आ कुल-शीलक स्मरण कराएब
व्याख्या: भोजन द्वारा गाम अपन नैतिक-सांस्कृतिक शिक्षा साझा करैत छल।

प्रश्न 4428. दुरागमनक दिन पैघ अन्तराल देल जाएबाक कारण की बतायल गेल?
क. गामक लोक द्वारा बेटी केँ सामाजिक शिक्षा देबाक अवसर
ख. मिठाई महँगी होएबाक कारण
ग. नौआ अनुपस्थित छल
घ. कृषि रुकल छल
उत्तर: क. गामक लोक द्वारा बेटी केँ सामाजिक शिक्षा देबाक अवसर
व्याख्या: लेख रस्मक गुप्त लक्ष्यक रूपमे सामूहिक प्रशिक्षण देखैत अछि।

प्रश्न 4429. आधुनिक कालमे एहि रस्मक स्थिति लेखक की कहैत छथि?
क. औपचारिकता बनि गेल अछि
ख. और गाढ़ भेल अछि
ग. पूर्णतः शास्त्रीय रहि गेल
घ. बाजार बनि गेल मात्र
उत्तर: क. औपचारिकता बनि गेल अछि
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे गामक बेटी केँ अपन बेटी मानबाक भाव कमल।

प्रश्न 4430. भैंसुर आ ममिया ससुर संग स्त्रीक वर्जना केँ लेखक कोना पढ़ैत छथि?
क. शिष्टाचार आ सम्भावित अघट रोकबाक सामाजिक मर्यादा
ख. सिर्फ पाखण्ड
ग. केवल दंड
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. शिष्टाचार आ सम्भावित अघट रोकबाक सामाजिक मर्यादा
व्याख्या: लेख आधुनिक आलोचनाक बावजूद वर्जना भीतर सुरक्षा-तर्क ताकैत अछि।

प्रश्न 4431. घोघट देबाक अधिकार किनका प्राथमिक रूपेँ देल जाइत अछि?
क. भैंसुर वा ममिया ससुर केँ
ख. पोस्टमैन केँ
ग. बाजारक दुकानदार केँ
घ. अतिथि मात्र केँ
उत्तर: क. भैंसुर वा ममिया ससुर केँ
व्याख्या: घोघट प्रक्रिया मे लाज-रक्षाक सार्वजनिक प्रतिज्ञा देखायल गेल।

प्रश्न 4432. घोघट-प्रक्रियाक नैतिक अर्थ लेखक कोन रूपमे देलथि?
क. स्त्रीक लाजक जीवनपर्यन्त रक्षा करबाक प्रतिज्ञा
ख. स्त्रीक अपमान
ग. केवल नाटक
घ. भोजनक विधि
उत्तर: क. स्त्रीक लाजक जीवनपर्यन्त रक्षा करबाक प्रतिज्ञा
व्याख्या: लेख रीतिक भीतर नारी-सुरक्षा आ संबंध-मर्यादा खोजैत अछि।

खण्ड ४४९ : विदेह-सदेह १ — देवशंकर नवीन: भोजन, स्त्री-कौशल आ लोकनाट्य

प्रश्न 4433. “मैथिल भोजन भट्ट” कहबीक भीतर लेखक कोन सांस्कृतिक तर्क खोजैत छथि?
क. स्त्रीक सृजनशीलता आ भोजन-विन्यासक कौशल
ख. केवल पेटूपन
ग. केवल गरीबी
घ. केवल यात्रा
उत्तर: क. स्त्रीक सृजनशीलता आ भोजन-विन्यासक कौशल
व्याख्या: लेख कहबीक सतहक नीचे स्त्री-कला आ रसोई-संस्कृति देखैत अछि।

प्रश्न 4434. परदा-प्रथा कारण स्त्रीक पैर कतय धरि बँधल रहैत छल?
क. भनसा घर सँ अँगनाक ड्योढ़ी धरि
ख. समुद्र तट धरि
ग. कार्यालय धरि
घ. जंगल धरि
उत्तर: क. भनसा घर सँ अँगनाक ड्योढ़ी धरि
व्याख्या: सीमित घरेलू दायरा भोजन-कला कें सृजनक क्षेत्र बनबैत अछि।

प्रश्न 4435. स्त्रीक सृजनशील प्रतिभा ककरा मे लगल कहल गेल?
क. भोजनक विन्यास, तीमन-तरकारी, चटनी, अचार आदि मे
ख. केवल राजनीति
ग. सिर्फ युद्धकला
घ. केवल बैंकिंग
उत्तर: क. भोजनक विन्यास, तीमन-तरकारी, चटनी, अचार आदि मे
व्याख्या: रसोई कें लेख स्त्री-प्रतिभाक सांस्कृतिक प्रयोगशाला मानैत अछि।

प्रश्न 4436. वनस्पतिजन्य औषधि कें सु-स्वादु भोजन बनएबाक प्रथा कहाँ सवाधिक कहल गेल?
क. मिथिलामे
ख. समुद्रद्वीपमे
ग. यूरोपमे
घ. रेगिस्तानमे
उत्तर: क. मिथिलामे
व्याख्या: लेख चिकित्सा-ज्ञान, वनस्पति आ भोजनक मेल मिथिला-संस्कृति मे देखैत अछि।

प्रश्न 4437. स्त्रीक कला-कौशल खेत-पथार आ बाबू-बबुआनक घरक काममे कोना देखाइत छल?
क. शरीर-श्रम आ घर-आँगनक कलात्मकता मे
ख. काज अनुपस्थित छल
ग. केवल गीतमे
घ. केवल परीक्षा-पत्रमे
उत्तर: क. शरीर-श्रम आ घर-आँगनक कलात्मकता मे
व्याख्या: लेख घरेलू आ श्रमशील दुनू स्त्री संसारमे कौशल मानैत अछि।

प्रश्न 4438. जट-जटिन लोकनाटिका कें लेखक कोन प्रकारक आयोजन मानैत छथि?
क. कृषि-कर्म आ मेघ-आवाहनक आयोजन
ख. दरबारी संगीत मात्र
ग. व्यापार मेळा
घ. युद्धाभ्यास
उत्तर: क. कृषि-कर्म आ मेघ-आवाहनक आयोजन
व्याख्या: जट-जटिन अनावृष्टिक आशंका मे वर्षा-आवाहन सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4439. सामा भसेबा कालक गीतमे स्त्रीसभ ककर स्वास्थ्यक कामना करैत छथि?
क. पारिवारिक पुरुष पात्रक
ख. विदेशी विद्वानक
ग. राजकीय अधिकारीक
घ. केवल अपनेक
उत्तर: क. पारिवारिक पुरुष पात्रक
व्याख्या: सामा गीत पारिवारिक कल्याण आ भाव-संबंधक संस्कार अछि।

प्रश्न 4440. विवाह-उपनयनमे वृक्ष, नदी, प्रकृति पूजाक उल्लेख किएक अछि?
क. संस्कारक भीतर पर्यावरण-संबंधित लोकविश्वास देखाबय लेल
ख. प्रकृति-विरोध
ग. सैनिक नारा
घ. व्यापारिक विज्ञापन
उत्तर: क. संस्कारक भीतर पर्यावरण-संबंधित लोकविश्वास देखाबय लेल
व्याख्या: लेख संस्कारक भीतर प्रकृति-संबंधक गूढ़ अर्थ देखैत अछि।

प्रश्न 4441. वृत्ति-समुदायक अधिकार-क्षेत्र संबंधी उदाहरण क्या बतबैत अछि?
क. हर पेशागत समुदायक नियत स्वामित्व आ सामाजिक स्थान छल
ख. कोनो पेशा नहि छल
ग. सभ अधिकार बाजारक छल
घ. केवल राज्यक अधिकार
उत्तर: क. हर पेशागत समुदायक नियत स्वामित्व आ सामाजिक स्थान छल
व्याख्या: नौआ, कमार, कुम्हार, डोम, धोबी आदि पेशाक अधिकार-व्यवस्था सामाजिक अनुबंध छल।

प्रश्न 4442. एहि खण्डक सार की अछि?
क. स्त्री-कला, भोजन, लोकनाट्य आ वृत्ति-व्यवस्था मिथिला-जीवनक गूढ़ संस्कृति छल
ख. सबटा केवल अंधविश्वास छल
ग. भोजन निरर्थक छल
घ. लोकनाट्य बाहरी आयात छल
उत्तर: क. स्त्री-कला, भोजन, लोकनाट्य आ वृत्ति-व्यवस्था मिथिला-जीवनक गूढ़ संस्कृति छल
व्याख्या: लेख मिथिलाक रोजमर्रा जीवनमे कला आ सामाजिक अर्थ खोजैत अछि।

खण्ड ४५० : विदेह-सदेह १ — देवशंकर नवीन: हस्तकला, शब्द आ लुप्तप्राय जीवन-पद्धति

प्रश्न 4443. लेखक मिथिलाक हस्तकला-आधारित कुटीर उद्योगकेँ केहन बतबैत छथि?
क. बहुत सम्पन्न
ख. एकदम अनुपस्थित
ग. सिर्फ विदेशी
घ. नव-आविष्कृत
उत्तर: क. बहुत सम्पन्न
व्याख्या: सूप, कोनियाँ, पथिया, बखारी आदि वस्तु समाजक आपसी निर्भरता देखबैत छल।

प्रश्न 4444. सूप, कोनियाँ, पथिया, बखारी, घैल आदि उदाहरण ककर संकेत अछि?
क. लोक-हस्तकला आ घरेलू उपयोगक समृद्ध परंपरा
ख. सैनिक अस्त्र
ग. कम्प्यूटर उपकरण
घ. नदी घाट
उत्तर: क. लोक-हस्तकला आ घरेलू उपयोगक समृद्ध परंपरा
व्याख्या: ई वस्तु मिथिलाक पारंपरिक श्रम-कौशलक चिन्ह अछि।

प्रश्न 4445. जनौ, चरखा, लदहा, बरहा, गरदामी आदि शब्दक लुप्तप्रायता सँ लेखक ककर चिंता करैत छथि?
क. शब्द आ क्रिया दुनूक विस्मृति
ख. मूल्यवृद्धि
ग. कम्प्यूटर वायरस
घ. पत्र विलम्ब
उत्तर: क. शब्द आ क्रिया दुनूक विस्मृति
व्याख्या: सामग्री लुप्त भेलाक संग शब्दावली सेहो अनुपस्थित होइत जा रहल अछि।

प्रश्न 4446. “ढोनि केनाइ, भौरी केनाइ...” सन क्रिया कम होएबाक अर्थ की अछि?
क. जीवन-पद्धतिक क्रियात्मक ज्ञान मेटा रहल अछि
ख. नव खेल बनि रहल
ग. नदी बढ़ि रहल
घ. कथा समाप्त
उत्तर: क. जीवन-पद्धतिक क्रियात्मक ज्ञान मेटा रहल अछि
व्याख्या: लेख शब्द मात्र नहि, क्रियात्मक संस्कृतिक क्षय पर ध्यान दैत अछि।

प्रश्न 4447. आधुनिक शिक्षाक प्रभाव पर लेखकक दृष्टि की अछि?
क. जागृति बढ़ल, मुदा आर्थिक उदारीकरण आ अहंकारेँ परंपरा पर चोट पड़ल
ख. शिक्षा पूर्णतः निष्फल
ग. शिक्षा मात्र दोषी
घ. परंपरा स्वतः सुरक्षित
उत्तर: क. जागृति बढ़ल, मुदा आर्थिक उदारीकरण आ अहंकारेँ परंपरा पर चोट पड़ल
व्याख्या: लेख आधुनिक शिक्षा केँ एकरेखीय दोष नहि दैत, पर आर्थिक-सामाजिक बदलाव पर सवाल उठबैत अछि।

प्रश्न 4448. मायानन्द मिश्रक “रंग उड़ल मूरत” आ ललितक “रमजानी”क उल्लेख किएक अछि?
क. मिथिलाक परंपरा पर आघात साहित्य मे पहिनेसँ देखाओल गेल अछि
ख. व्याकरण नियम लेल
ग. गजल तुक लेल
घ. कम्प्यूटर पाठ लेल
उत्तर: क. मिथिलाक परंपरा पर आघात साहित्य मे पहिनेसँ देखाओल गेल अछि
व्याख्या: लेख कथा-साहित्यक उदाहरणसँ परंपरा-क्षरणक पुष्टि करैत अछि।

प्रश्न 4449. खढ़क घर आ घरामी वृत्ति पर लेखक की कहैत छथि?
क. खढ़क घर घटल, घरामीक वृत्ति चलि गेल
ख. वृत्ति बढ़ल
ग. घरामी राज्याधिकारी भेल
घ. खढ़क घर समुद्रमे गेल
उत्तर: क. खढ़क घर घटल, घरामीक वृत्ति चलि गेल
व्याख्या: सामग्री बदललाक संग वृत्ति-ज्ञान लुप्त भेल।

प्रश्न 4450. प्लास्टिकक डोरी आ खेलौना उदाहरण की देखबैत अछि?
क. पारंपरिक हस्तनिर्मित वस्तुक स्थान बाजारू वस्तु लेलक
ख. हस्तकला समृद्ध भेल
ग. कृषि बढ़ल
घ. गीत बढ़ल
उत्तर: क. पारंपरिक हस्तनिर्मित वस्तुक स्थान बाजारू वस्तु लेलक
व्याख्या: प्लास्टिक उपभोक्ता-आधुनिकता पारंपरिक श्रम केँ विस्थापित करैत अछि।

प्रश्न 4451. मिथिला पेंटिंगक ऑफसेट री-प्रोडक्शन बेचबाक प्रसंग कोन आलोचना अछि?
क. लोककला कैं पूँजीक द्वारा प्रतिकृति-वस्तु बनाय देबाक
ख. कला संरक्षणक पूर्ण उपाय
ग. मूलकला विस्तार मात्र
घ. कविता लेखन
उत्तर: क. लोककला कैं पूँजीक द्वारा प्रतिकृति-वस्तु बनाय देबाक
व्याख्या: री-प्रोडक्शन लोककला कैं जीवन-स्रोतसँ काटि बाजारू वस्तु बना सकैत अछि।

प्रश्न 4452. गोनू झा, सलहेस, नैका बिनजारा आदिक कथा रिकॉर्ड/सीडी/रीमिक्स बनबाक चर्चा ककर संकेत अछि?
क. लोकधारा कैं अभिलेखागार/बाजारमे स्थिर करब, ओकर जीवित प्रवाह रोकबाक खतरा
ख. लोकजीवनक पूर्ण पुनर्जन्म
ग. कोनो संकट नहि
घ. केवल खेल
उत्तर: क. लोकधारा कैं अभिलेखागार/बाजारमे स्थिर करब, ओकर जीवित प्रवाह रोकबाक खतरा
व्याख्या: लेख दस्तावेजीकरण आ बाजारक उपयोगिता संग ओकर सांस्कृतिक जोखिम चिन्हैत अछि।

खण्ड ४५१ : विदेह-सदेह १ — देवशंकर नवीन: लोक सँ अभिलेखागार धरि

प्रश्न 4453. लेखक कहैत छथि जे लोककला लोकजीवन संग केना रहैत छल?
क. विकसित आ परिवर्धित होइत, अविरल प्रवाहमे
ख. स्थिर बन्द वस्तु जकाँ
ग. केवल संग्रहालयमे
घ. नकली रूपमे
उत्तर: क. विकसित आ परिवर्धित होइत, अविरल प्रवाहमे
व्याख्या: लोककला जीवनक संग बदलैत-बढ़ैत छल, ई लेखकक प्रमुख बिंदु अछि।

प्रश्न 4454. अभिलेखन/दस्तावेजीकरणक जोखिम लेखक कतेक बतबैत छथि?
क. जीवित सांस्कृतिक धारा कैं स्थिर करि देबाक
ख. कला स्वतः जीवित करबाक
ग. सामाजिकता बढ़ेबाक
घ. भाषा स्वतः बचेबाक
उत्तर: क. जीवित सांस्कृतिक धारा कैं स्थिर करि देबाक
व्याख्या: दस्तावेजीकरण जरूरी भइतो यदि लोकजीवनसँ कटल होए तँ विकास रोकि सकैत अछि।

प्रश्न 4455. लोक-संस्कृतिक रक्षा लेल लेखक की जरूरी मानैत छथि?
क. जुड़ल लोक कैं सम्मानित जीवन-जोगर वृत्ति देब
ख. केवल वीडियो बनाब
ग. केवल नाम बदलब
घ. केवल टिकट बेचब
उत्तर: क. जुड़ल लोक कैं सम्मानित जीवन-जोगर वृत्ति देब
व्याख्या: परंपरा बचएबाक आधार ओकर वाहक समुदायक गरिमामय जीविका अछि।

प्रश्न 4456. “मिथिलाक लोके ओ लोक नहि रहि गेल अछि” कथनक आशय की?
क. लोक-जीवनक आधार बदलल, तेँ लोक-संस्कृति कैं वाहक संकटमे अछि
ख. लोक पूर्णतः बढ़ल
ग. परंपरा अजेय
घ. भाषा निरर्थक
उत्तर: क. लोक-जीवनक आधार बदलल, तेँ लोक-संस्कृति कैं वाहक संकटमे अछि
व्याख्या: लेख लोक कहबाक सामाजिक आधार टूटबाक पीड़ा व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 4457. लोक-परंपराक रक्षा के करत — एहि प्रश्नमे कोन चिंता अछि?
क. वाहक समुदायक विस्थापन आ असुरक्षित भविष्य
ख. सरकारी आदेश पर्याप्त अछि
ग. बाजार सभ बचा लेत
घ. सिर्फ विदेशी लिखत
उत्तर: क. वाहक समुदायक विस्थापन आ असुरक्षित भविष्य
व्याख्या: प्रश्न संस्कृति-रक्षा कैँ जीविका-राजनीति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4458. लेखक “अदद्दी पेन” कैँ मजबूत करबाक रूपक सँ ककर आग्रह करैत छथि?
क. लेखन-समीक्षा द्वारा विरासतक सही लेखाजोखा
ख. पेन तोड़बाक
ग. चित्र न बनायबाक
घ. गजल छोड़बाक
उत्तर: क. लेखन-समीक्षा द्वारा विरासतक सही लेखाजोखा
व्याख्या: पेन सांस्कृतिक स्मृति लिखबाक जिम्मेदारीक रूपक अछि।

प्रश्न 4459. लेखमे मिथिला विरासतक संकट केवल अतीत-विलाप नहि किएक अछि?
क. क्योंकि लेखक आर्थिक, सामाजिक, भाषिक आ सौंदर्यात्मक कारण सभ जोड़ैत छथि
ख. क्योंकि ओ केवल रोदन अछि
ग. क्योंकि तथ्य नहि अछि
घ. क्योंकि विषय छोट अछि
उत्तर: क. क्योंकि लेखक आर्थिक, सामाजिक, भाषिक आ सौंदर्यात्मक कारण सभ जोड़ैत छथि
व्याख्या: लेख बहुआयामी सामाजिक विश्लेषण करैत अछि।

प्रश्न 4460. कुटीर उद्योग लुप्त होएबाक साथ ककर हानि होइत अछि?
क. जीविका, शब्द, कौशल आ सामाजिक संबंध
ख. केवल सामानक रंग
ग. केवल गीतक धुन
घ. केवल नदीक धार
उत्तर: क. जीविका, शब्द, कौशल आ सामाजिक संबंध
व्याख्या: वस्तु-बदलाव पूरा सामाजिक-सांस्कृतिक तंत्र प्रभावित करैत अछि।

प्रश्न 4461. लेखक आधुनिक वस्तु-प्रवाहक आलोचना किएक करैत छथि?
क. क्योंकि ओ परंपरागत श्रम आ मौलिकता कैँ विस्थापित करैत अछि
ख. क्योंकि नव वस्तु देखल नहि
ग. क्योंकि शिक्षा नापसन्द
घ. क्योंकि भोजन नापसन्द
उत्तर: क. क्योंकि ओ परंपरागत श्रम आ मौलिकता कैँ विस्थापित करैत अछि
व्याख्या: आलोचना अंध-आधुनिकता पर अछि, उपयोगिता पर नहीं।

प्रश्न 4462. देवशंकर नवीनक लेखक मूल चिंता की अछि?
क. मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन-सूत्र टूटि रहल अछि, ओकर लेखा आ पुनर्संरक्षण जरूरी अछि
ख. सिर्फ उत्सवक संख्या
ग. केवल परिहास
घ. केवल व्यक्तिगत कथा
उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन-सूत्र टूटि रहल अछि, ओकर लेखा आ पुनर्संरक्षण जरूरी अछि
व्याख्या: लेख लोकजीवन, भाषा, हस्तकला, स्त्री-कौशल आ सामाजिक अनुबंधक रक्षा पर केन्द्रित अछि।

खण्ड ४५२ : विदेह-सदेह १ — धर्मेन्द्र विह्वल: किछु छाँक

प्रश्न 4463. धर्मेन्द्र विह्वलक “बदनामी” कविता ककर नीलामी नहि करबाक आग्रह करैत अछि?
क. प्रेम आ सिनेहक
ख. फसलक दाम
ग. कम्प्यूटरक फाइल
घ. नदीक पानि
उत्तर: क. प्रेम आ सिनेहक
व्याख्या: कविता निजी भावनाकेँ सार्वजनिक बाजारू तमाशा बनएबाक विरोध करैत अछि।

प्रश्न 4464. “बदनामी” मे गौरवमय इतिहास केँ कोना नहि करबाक कहल गेल?
क. बदनाम नहि करबाक
ख. लिखबाक
ग. सहेजबाक
घ. स्मरण करबाक
उत्तर: क. बदनाम नहि करबाक
व्याख्या: कविता प्रेम-स्नेहक अपमान केँ इतिहासक अपमानसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4465. “विज्ञापन” कविता मे वक्ता कतय हेरा रहल अछि?
क. आदमीक जंगलमे
ख. पोखरिक कातमे
ग. सर्किट हाउसमे
घ. कम्प्यूटर कक्षमे
उत्तर: क. आदमीक जंगलमे
व्याख्या: मानवीय भीड़ केँ जंगलक बिम्बसँ देखाएल गेल अछि।

प्रश्न 4466. “विज्ञापन” मे अखबारक ढेरमे वक्ता की ताकैत अछि?
क. जिनगीक विज्ञापन
ख. नौकरी आदेश
ग. ग्रामदेव थान
घ. घोघट
उत्तर: क. जिनगीक विज्ञापन
व्याख्या: विज्ञापनक संसारमे जीवनक असल अर्थ तलाशल जा रहल अछि।

प्रश्न 4467. “इज्जत” कविता मे ककर बिक्री खुल्लमखुल्ला देखायल गेल?
क. इज्जतक
ख. माटिक
ग. गीतक
घ. पत्रक
उत्तर: क. इज्जतक
व्याख्या: कविता बाजारीकरणक कटु व्यंग्य प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 4468. “दाम दऽ झट कीनि दिअ” पंक्ति कोन भाव बनबैत अछि?
क. नैतिक मूल्यक बाजारू वस्तुकरण पर व्यंग्य
ख. सच्चा सम्मान
ग. गंभीर पूजा
घ. निर्दोष खेल
उत्तर: क. नैतिक मूल्यक बाजारू वस्तुकरण पर व्यंग्य
व्याख्या: इज्जत खरीद-बिक्रीक वस्तु बनि गेल, ई तीक्ष्ण सामाजिक आलोचना अछि।

प्रश्न 4469. “स्टॉक सीमित अछि” पंक्ति की संकेत करैत अछि?
क. नैतिकता/इज्जतक कमी आ बाजारू भाषा
ख. अनंत भंडार
ग. कृषि विस्तार
घ. गजल संरचना
उत्तर: क. नैतिकता/इज्जतक कमी आ बाजारू भाषा
व्याख्या: व्यापारिक शब्दावली सँ कवि नैतिक पतनक हास्य-व्यंग्य करैत छथि।

प्रश्न 4470. धर्मेन्द्र विह्वलक तीनू लघुकविता मे साम्य की अछि?
क. सामाजिक नैतिकता पर संक्षिप्त व्यंग्य
ख. प्रकृति-चित्र मात्र
ग. लंबा आख्यान
घ. गजल-व्याकरण
उत्तर: क. सामाजिक नैतिकता पर संक्षिप्त व्यंग्य
व्याख्या: लघु रूपमे प्रेम, जीवन आ इज्जतक बाजारूकरण पर चोट अछि।

प्रश्न 4471. “किछु छौंक” शीर्षकक अर्थ-वातावरण की बनबैत अछि?
क. तीक्ष्ण, छोट-छोट भाव-विस्फोट
ख. दीर्घ उपन्यास
ग. शास्त्रीय ग्रंथ
घ. निष्प्राण सूची
उत्तर: क. तीक्ष्ण, छोट-छोट भाव-विस्फोट
व्याख्या: छौंक छोट मात्रा मे तेज स्वाद/चोटक भाव दैत अछि।

प्रश्न 4472. एहि कवितासभक भाषा ककरा निकट अछि?
क. संकुचित पंक्तिमे तीक्ष्ण सामाजिक टिप्पणी
ख. लंबा वर्णनात्मक इतिहास
ग. राजकीय आदेश
घ. वैज्ञानिक सूत्र मात्र
उत्तर: क. संकुचित पंक्तिमे तीक्ष्ण सामाजिक टिप्पणी
व्याख्या: छोट पंक्तिसभ सामाजिक अर्थक घनीभूत टिप्पणी बनैत अछि।

खण्ड ४५३ : विदेह-सदेह १ — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: गीत आ गजल

प्रश्न 4473. धीरेन्द्र प्रेमर्षि गीत आ गजल कैं रूप-रंग आ चालि-प्रकृति देखलापर की मानैत छथि?
क. सहोदर
ख. शत्रु
ग. असम्बद्ध
घ. एके वस्तु
उत्तर: क. सहोदर
व्याख्या: लेख गीत आ गजलमे समानता मानैत अछि, मुदा भिन्न विकास-पथ सेहो देखबैत अछि।

प्रश्न 4474. मैथिलीमे गीतक स्थान लेखमे कोना बतायल गेल?
क. अति प्राचीन काव्यशैली
ख. नवीन आयात मात्र
ग. अप्रासंगिक विधा
घ. केवल अरबी विधा
उत्तर: क. अति प्राचीन काव्यशैली
व्याख्या: गीत मिथिलाक पुरातन काव्यधारा अछि।

प्रश्न 4475. गजल मैथिलीमे कोना देखायल गेल?
क. अपेक्षाकृत नवीन रूप
ख. सबसे पुरान विधा
ग. पूर्णतः अनुपस्थित
घ. सिर्फ गद्य
उत्तर: क. अपेक्षाकृत नवीन रूप
व्याख्या: लेख गजल कैं नव रूप कहैत अछि जे मिथिला धरतीपर पहुँचल।

प्रश्न 4476. लेखक गीत-गजल बिछुड़बाक कथा कोन बिम्ब सँ कहैत छथि?
क. कुम्भ मेलामे बिछुड़ल सहोदरक रूपक
ख. नदी-संघर्ष
ग. युद्धभूमि
घ. बैंक-लाइन
उत्तर: क. कुम्भ मेलामे बिछुड़ल सहोदरक रूपक
व्याख्या: रूपक अपनापा, दूरी आ पुनर्भेटक भाव बनबैत अछि।

प्रश्न 4477. गजल कतय पलल-बढ़ल कहल गेल?
क. अरब दिशा मे
ख. मिथिलाक पोखरि मे
ग. केवल नेपालमे
घ. यूरोपमे
उत्तर: क. अरब दिशा मे
व्याख्या: लेख गजलक सांस्कृतिक यात्रा कैं अरब सँ मिथिला धरिक रूपकमे रखैत अछि।

प्रश्न 4478. मिथिलाक गीत गजल कैं प्रारम्भमे कोना देखलक?
क. अपन जगह कब्जा करय आएल प्रतिद्वन्द्वी जकाँ
ख. तुरन्त सहोदर जकाँ
ग. अदृश्य जकाँ
घ. केवल नाटक जकाँ
उत्तर: क. अपन जगह कब्जा करय आएल प्रतिद्वन्द्वी जकाँ
व्याख्या: अपिरचयक काल मे गीत गजल कैं प्रतिद्वन्द्वी बुझलक।

प्रश्न 4479. गीत आ गजलक पुनर्भेटक बाद की समझ आयल?
क. बैरक कारण नहि, दुनू सहोदर छथि
ख. दुनू असम्भव
ग. गीत हारल
घ. गजल समाप्त
उत्तर: क. बैरक कारण नहि, दुनू सहोदर छथि
व्याख्या: लेख संबंधक अन्ततः भ्रातृत्व भाव पर बल दैत अछि।

प्रश्न 4480. गीतक स्वभाव मे स्थानीयताक असर कोना देखायल गेल?
क. रंग-बिरंगी फूल सँ सजाओल सेजौट जकाँ
ख. कठोर मरुभूमि जकाँ
ग. लौह-कवच जकाँ
घ. शून्य सूची जकाँ
उत्तर: क. रंग-बिरंगी फूल सँ सजाओल सेजौट जकाँ
व्याख्या: गीतक स्वभाव मृदु, लोकव्यवहारमय आ भाव-संपन्न कहल गेल।

प्रश्न 4481. मैथिली गीतमे काँटोसन बात सेहो कोना कहल जाइत अछि?
क. फूलसन मोलायम भावमे
ख. तरुआरिसँ सीधा चोट
ग. पूर्ण मौन
घ. कागजी आदेश
उत्तर: क. फूलसन मोलायम भावमे
व्याख्या: गीत कठोर कथ्य केँ मधुर भावमे पिरोबैत अछि।

प्रश्न 4482. लेखक गीतक ताकत केँ कोन बिम्ब सँ समझबैत छथि?
क. लालीगुराँसक फूल जे गऽरक काँट गलाबय
ख. पत्थरक भार
ग. खाली दीप
घ. सूखा पन्ना
उत्तर: क. लालीगुराँसक फूल जे गऽरक काँट गलाबय
व्याख्या: गीत मृदु होइतहुँ तीव्र समाधानकारी शक्ति रखैत अछि।

खण्ड ४५४ : विदेह-सदेह १ — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: गजलक स्वभाव आ गुणवत्ता

प्रश्न 4483. प्रेमर्षिक अनुसार गजलमे गीतसन की नहि होइत?
क. नरमाहटि
ख. छंद
ग. प्रेम
घ. तुक
उत्तर: क. नरमाहटि
व्याख्या: लेख गजलक तेज, धरगर आ सीधा स्वभावक बात करैत अछि।

प्रश्न 4484. गजलक स्वभाव “उसराह मरुभूमि”मे पोसल कहल गेल — एहि सँ की संकेत अछि?
क. कठोरता आ उग्र तेज
ख. संपूर्ण मृदुता
ग. जलमय कोमलता
घ. पूर्ण शैथिल्य
उत्तर: क. कठोरता आ उग्र तेज
व्याख्या: मरुभूमि बिम्ब गजलक तिक्त, तेज आ धरगर अभिव्यक्ति समझबैत अछि।

प्रश्न 4485. गजल कैँ प्रेमक माध्यम मानि लेखक की जोड़ैत छथि?
क. प्रेम सेहो धरगर अंदाजमे कहल जाइत अछि
ख. प्रेम अनुपस्थित अछि
ग. प्रेम मात्र फूल जकाँ अछि
घ. प्रेम गजलमे निषिद्ध अछि
उत्तर: क. प्रेम सेहो धरगर अंदाजमे कहल जाइत अछि
व्याख्या: गजल प्रेमक वाणी भएओ सीधी चोट देत अछि।

प्रश्न 4486. गजल कैँ तरुआरि जकाँ सीधे बेध दैत कहल गेल — कोन विशेषता?
क. लक्ष्यभेदी तीक्ष्णता
ख. घुमाउर लाइलपट
ग. पूर्ण अस्पष्टता
घ. शुष्क मौन
उत्तर: क. लक्ष्यभेदी तीक्ष्णता
व्याख्या: लेख गजलक अभिव्यक्ति कैँ साफ, तीक्ष्ण आ कम लाइलपट मानैत अछि।

प्रश्न 4487. मिथिला-संदर्भमे गीत आ गजलक अन्तर लेखक कोना कहैत छथि?
क. गजल फूलक प्रक्षेपण तरुआरि जकाँ, गीत तरुआरि सेहो फूल जकाँ भाँजैत
ख. दुनू नीरस
ग. दुनू गद्य
घ. गीत मात्र हिंसक
उत्तर: क. गजल फूलक प्रक्षेपण तरुआरि जकाँ, गीत तरुआरि सेहो फूल जकाँ भाँजैत
व्याख्या: ई बिम्ब गीतक कोमलता आ गजलक तीक्ष्णता एक साथ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 4488. मैथिली गजल संख्या मे कम होइतहुँ लेखक ओकर गुणवत्ताबारे की कहैत छथि?
क. हिन्दी वा नेपाली गजलसँ झूस नहि
ख. बहुत हीन
ग. अप्रासंगिक
घ. केवल अनुकरण
उत्तर: क. हिन्दी वा नेपाली गजलसँ झूस नहि
व्याख्या: लेख मैथिली गजल केँ गुणवत्तामे सक्षम मानैत अछि।

प्रश्न 4489. हिन्दी, नेपाली आ मैथिलीमे गजलक प्रवेशक समयबारे लेखकक संकेत की अछि?
क. लगभग एकहि मुहूर्तमे प्रवेश
ख. हजार बरखक अंतर
ग. केवल हिन्दीमे प्रवेश
घ. मैथिलीमे प्रवेश नहि
उत्तर: क. लगभग एकहि मुहूर्तमे प्रवेश
व्याख्या: लेख तीनू भाषाक गजल-आगमनक सामयिक निकटता बतबैत अछि।

प्रश्न 4490. हिन्दीमे गजलक आरम्भक नाम लेखक किनका संग जोड़ैत छथि?
क. भारतेन्दु
ख. विद्यापति
ग. शंकरदेव
घ. गोनू झा
उत्तर: क. भारतेन्दु
व्याख्या: लेख भारतेन्दु, मोतीराम भट्ट आ जीवन झा केँ समान कालखंडक व्यक्तित्व मानैत अछि।

प्रश्न 4491. नेपाली गजल-आरम्भक सन्दर्भमे कोन नाम देल गेल?
क. मोतीराम भट्ट
ख. कालिदास
ग. धूमकेतु
घ. सिरिसव
उत्तर: क. मोतीराम भट्ट
व्याख्या: लेख नेपाली गजलपरंपरा केँ मोतीराम भट्टसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4492. मैथिली गजल-आरम्भक सन्दर्भमे लेखक कोन नाम दैत छथि?
क. पं. जीवन झा
ख. भरत माँझी
ग. भवनाथ दीपक
घ. बी.के. कर्ण
उत्तर: क. पं. जीवन झा
व्याख्या: लेख मैथिली गजलके प्रारम्भिक रूपमे जीवन झा केँ स्मरैत अछि।

खण्ड ४५५ : विदेह-सदेह १ — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: गजलक संरचना

प्रश्न 4493. प्रेमर्षि गजलक संरचना पर लिखब कैँ “दिनहिमे डिबिया बारब” किएक कहैत छथि?
क. मैथिलीमे गजल एतबा लिखल जा चुकल जे मूल संरचना कहब सहज लगैत अछि
ख. गजल बिल्कुल नहि लिखल गेल
ग. गजल अन्हार मात्र अछि
घ. संरचना असम्भव अछि
उत्तर: क. मैथिलीमे गजल एतबा लिखल जा चुकल जे मूल संरचना कहब सहज लगैत अछि
व्याख्या: लेख मानैत अछि जे पर्याप्त लेखनक बाद संरचनाक चर्चा सामान्य होयबाक चाही।

प्रश्न 4494. गजलक नामपर कतेको पंक्तिसभ देख लेखकक मन किएक झुँझुआइत अछि?
क. दू-दू पंक्तिक तुकबन्दी कैँ गजल बूझि लेबाक प्रवृत्ति
ख. बहुत सुंदर संरचना
ग. अति कम लेखन
घ. केवल गीत छपबाक
उत्तर: क. दू-दू पंक्तिक तुकबन्दी कैँ गजल बूझि लेबाक प्रवृत्ति
व्याख्या: लेख सतही तुकबन्दी कैँ गजल मानबाक विरोध करैत अछि।

प्रश्न 4495. लेखकक अनुसार गजलक पहिल दू पाँतिक विशेषता की अछि?
क. अन्त्यानुप्रास मिलल रहैत अछि
ख. पूर्णतः अतुकान्त
ग. एकहि शब्द मात्र
घ. कोनो सम्बन्ध नहि
उत्तर: क. अन्त्यानुप्रास मिलल रहैत अछि
व्याख्या: गजलक प्रारम्भिक शेर स्थायी तुक-ध्वनि बनबैत अछि।

प्रश्न 4496. सभ पाँतिमे साझी अन्तिम शब्द रहला पर ककरा मे तुक चाही?
क. साझी शब्द सँ पहिनुक शब्दमे
ख. पहिल अक्षरमे मात्र
ग. बीचमे कोनो शब्दमे
घ. कहीं नहि
उत्तर: क. साझी शब्द सँ पहिनुक शब्दमे
व्याख्या: लेख सरल शब्दमे रदीफ-काफिया समान संरचनाक बात करैत अछि।

प्रश्न 4497. अगिला दू-दू पाँतिमे पहिल पाँति ककर दृष्टिएँ स्वतंत्र रहैत अछि?
क. अनुप्रासक दृष्टिएँ
ख. विषयक दृष्टिएँ असम्बद्ध
ग. लंबाइक दृष्टिएँ असीम
घ. व्याकरणक दृष्टिएँ
उत्तर: क. अनुप्रासक दृष्टिएँ
व्याख्या: दूसर पाँति स्थायी तुकक अनुकरण करैत अछि।

प्रश्न 4498. दोसर वा पिछला पाँति की करैत अछि?
क. स्थायीवला अनुप्रास कैँ पछुअबैत चलैत अछि
ख. तुक तोड़ैत अछि
ग. गीत बना दैत अछि
घ. संदेश हटबैत अछि
उत्तर: क. स्थायीवला अनुप्रास कैँ पछुअबैत चलैत अछि
व्याख्या: गजलक शेरमे तुक-प्रवाहक पुनरागमन आवश्यक अछि।

प्रश्न 4499. गजलक “मुह-कान” ठीक होएबाक बादो की जरूरी अछि?
क. कथ्य बौआइत नहि रहए
ख. कथ्य बिल्कुल न हो
ग. केवल आकार रहे
घ. गीत हटा देल जाए
उत्तर: क. कथ्य बौआइत नहि रहए
व्याख्या: संरचना संग अर्थक गाढ़ता जरूरी अछि।

प्रश्न 4500. देखबामे गजल लगि पर अर्थहीन रचना कैं लेखक कोना कहैत छथि?
क. गीजल
ख. श्रेष्ठ गजल
ग. महाकाव्य
घ. नाटक
उत्तर: क. गीजल
व्याख्या: लेख सतही रूप पर चेतावनी दैत अछि।

प्रश्न 4501. गजलक प्रस्तुति मे की होएबाक चाही?
क. रहस्य, रोमांच आ समधानल चोट
ख. लंबा उपदेश मात्र
ग. पूर्ण सपाटपन
घ. अविराम सूची
उत्तर: क. रहस्य, रोमांच आ समधानल चोट
व्याख्या: गजल भाव-ध्वनि आ चोटक संतुलन माँगैत अछि।

प्रश्न 4502. गजलक शब्दसभ कोन साँचमे बैसबाक चाही?
क. ताल- मात्राक प्रवाहमय साँचमे
ख. अनियमित ढेरमे
ग. मौनमे
घ. गद्यक पंक्तिमे मात्र
उत्तर: क. ताल- मात्राक प्रवाहमय साँचमे
व्याख्या: गजलक लयात्मक अनुशासन लेखमे महत्त्वपूर्ण कहल गेल।

खण्ड ४५६ : विदेह-सदेह १ — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: शेर, खेत आ लोहक बिम्ब

प्रश्न 4503. गजलक पाँति कैं अर्थवत्ता हिसाबे लेखक ककरा जकाँ देखैत छथि?
क. हरक सिराउर जकाँ
ख. बंद दरवाजा जकाँ
ग. सूखा पत्थर जकाँ
घ. कागजी सूची जकाँ
उत्तर: क. हरक सिराउर जकाँ
व्याख्या: हरक बिम्ब धरती चीरिक बीज रोपबाक तैयारी बतबैत अछि।

प्रश्न 4504. गजलक पहिल पाँति हरक पहिल सिराउर जकाँ की करैत अछि?
क. कल्पना वा विषयवस्तुक उठान
ख. विषय समाप्त
ग. तुक छिपाब
घ. कथा रोक
उत्तर: क. कल्पना वा विषयवस्तुक उठान
व्याख्या: पहिल पाँति बीज रोपबाक जमीन खोलैत अछि।

प्रश्न 4505. गजलक दोसर पाँति हरक दोसर सिराउर जकाँ की करैत अछि?
क. पहिलमे खसाओल बीज कैं तोपि आगू बढ़बाक मार्ग प्रशस्त
ख. बीज हटाब
ग. लय तोड़ब
घ. कथ्य मिटाब
उत्तर: क. पहिलमे खसाओल बीज कैं तोपि आगू बढ़बाक मार्ग प्रशस्त
व्याख्या: दोसर पाँति पहिल पंक्तिक अर्थ कैं आकार दैत अछि।

प्रश्न 4506. प्रत्येक दू-पाँति गजलमे कोना रहैत अछि?
क. अपनहुमे स्वतंत्र, समग्रमेसँ जुड़ल
ख. पूर्णतः निर्भर मात्र
ग. सदैव असम्बद्ध
घ. केवल शीर्षक
उत्तर: क. अपनहुमे स्वतंत्र, समग्रमेसँ जुड़ल
व्याख्या: गजलक शेर अलग अर्थ रखैत अछि, मुदा पूरा गजलमे तादात्म्य बनबैत अछि।

प्रश्न 4507. लोहारक बिम्बमे पहिल पाँति की कहल गेल?
क. कनसार सँ निकलल लालोलाल लोह
ख. घनक चोट
ग. राख
घ. पानी
उत्तर: क. कनसार सँ निकलल लालोलाल लोह
व्याख्या: पहिल पंक्तिक उष्णता आ आकार-पियास बिम्बित अछि।

प्रश्न 4508. लोहारक बिम्बमे दोसर पाँति की अछि?
क. निर्दिष्ट आकार दिस बढ़एबाक घनक समधानल चोट
ख. ठंढा पानी मात्र
ग. खाली धुआँ
घ. बिना आकारक राख
उत्तर: क. निर्दिष्ट आकार दिस बढ़एबाक घनक समधानल चोट
व्याख्या: दोसर पाँति अर्थ कैं प्रहारद्वारा मूर्त करैत अछि।

प्रश्न 4509. गीत सृजनमे सिद्धहस्त मैथिल गजल किएक सहज लिखि सकैत छथि?
क. बगय-बानि बुझिते गजलक सृजन संभव होइत अछि
ख. क्योंकि गजलमे लय नहि
ग. क्योंकि गीतक विरोध जरूरी
घ. क्योंकि मैथिली अयोग्य
उत्तर: क. बगय-बानि बुझिते गजलक सृजन संभव होइत अछि
व्याख्या: गीत-परंपराक लयबोध गजल-लेखनमे सहायक बतायल गेल।

प्रश्न 4510. लेखक अपन तौर-तरीका संबंधी कथन कैं सिद्धहस्त लोक लेल केहन मानैत छथि?
क. हास्यास्पद भऽ सकैत
ख. अति आवश्यक आदेश
ग. एकमात्र नियम
घ. सर्वोच्च शास्त्र
उत्तर: क. हास्यास्पद भऽ सकैत
व्याख्या: लेख विनम्रतापूर्वक नवसिखुआक सुविधा लेल संरचना समझबैत अछि।

प्रश्न 4511. नवसिखुआसभ लेल लेखकक उद्देश्य की अछि?
क. गजल-संरचना सहज बुझब
ख. गजल छोड़ब
ग. गीतक अपमान
घ. केवल नाम गिनब
उत्तर: क. गजल-संरचना सहज बुझब
व्याख्या: लेख शिक्षात्मक भावेँ जटिल पारिभाषिक शब्द टारि समझबैत अछि।

प्रश्न 4512. एहि खण्डमे रूपकसभक उपयोग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. गजलक तकनीक केँ लोक-जीवनक हर, लोह आ घन सँ समझेबाक
ख. सिर्फ सजावट
ग. तथ्य छिपाब
घ. कथा बदलाब
उत्तर: क. गजलक तकनीक केँ लोक-जीवनक हर, लोह आ घन सँ समझेबाक
व्याख्या: लोकजीवनक बिम्ब संरचनात्मक ज्ञान केँ सुलभ बनबैत अछि।

खण्ड ४५७ : विदेह-सदेह १ — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: मैथिली गजलक परंपरा

प्रश्न 4513. प्रेमर्षि कहैत छथि जे मैथिलीमे कलम चलौनिहार सभ प्रायः की करैत भेटलाह?
क. एक-आध हाथ गजलमे सेहो अजमबैत
ख. गजल पूर्णतः नकारैत
ग. केवल नाटक लिखैत
घ. कथा न पढ़ैत
उत्तर: क. एक-आध हाथ गजलमे सेहो अजमबैत
व्याख्या: लेख मैथिली सर्जकसभक गजलप्रति रुचि रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 4514. यात्रीक कोन कविता गजलक संरचनामे लिखल कहल गेल?
क. “भगवान हमर ई मिथिला”
ख. “बदनामी”
ग. “अभियान गीत”
घ. “हमर माय”
उत्तर: क. “भगवान हमर ई मिथिला”
व्याख्या: लेख वैद्यनाथ मिश्र यात्री केँ गजल-संरचना सन्दर्भमे स्मरैत अछि।

प्रश्न 4515. सियाराम झा “सरस”, कलानन्द भट्ट, राजेन्द्र विमल केँ लेखक कोन रूपमे चिह्नैत छथि?
क. खाँटी गजलकार
ख. चित्रकार मात्र
ग. कम्प्यूटर शिक्षक
घ. उपन्यास पात्र
उत्तर: क. खाँटी गजलकार
व्याख्या: ई नाम मैथिली गजलक विशेष परंपरा रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 4516. सोमदेव, केदारनाथ लाभ, तारानन्द वियोगी, रामचैतन्य धीरज आदि नाम किएक देल गेल?
क. मैथिली गजल-संसारक विस्तार देखाबय लेल
ख. नाम-सूची मात्र
ग. पृष्ठ भरण
घ. नाटक पात्र
उत्तर: क. मैथिली गजल-संसारक विस्तार देखाबय लेल
व्याख्या: लेख गजल परंपराक व्यापकता दिखबैत अछि।

प्रश्न 4517. गजलमे महिला हस्ताक्षरबारे लेखक की कहैत छथि?
क. बहुत कम देखल जाइत अछि
ख. बहुत अधिक अछि
ग. एकदम अनुपस्थित नहि पर बहुलता अछि
घ. केवल महिला गजल लिखैत छथि
उत्तर: क. बहुत कम देखल जाइत अछि
व्याख्या: लेख लैंगिक प्रतिनिधित्वक कमी पर संकेत करैत अछि।

प्रश्न 4518. गीत आ गजलक सम्बन्ध लेखमे अन्ततः कोन रूपमे स्थापित होइत अछि?
क. भ्रातृत्व आ सहयात्रा
ख. स्थायी शत्रुता
ग. पूर्ण विलय
घ. असम्बद्धता
उत्तर: क. भ्रातृत्व आ सहयात्रा
व्याख्या: आरम्भिक दूरीक बाद दुनू विधा डेगसँ डेग मिलाकऽ आगाँ बढ़ैत अछि।

प्रश्न 4519. प्रेमर्षिक आलोचना सतही गजल-लेखन पर किएक अछि?
क. क्योंकि केवल तुकबन्दी गजल नहि बना दैत
ख. क्योंकि गजल वर्जित अछि
ग. क्योंकि प्रेम अनुपस्थित होएबाक चाही
घ. क्योंकि गीत श्रेष्ठ नहि
उत्तर: क. क्योंकि केवल तुकबन्दी गजल नहि बना दैत
व्याख्या: लेख रूप, कथ्य, लय, चोट आ अर्थ सभकेँ आवश्यक मानैत अछि।

प्रश्न 4520. मैथिली गजलक सामर्थ्यबारे लेख आश्वस्त किएक अछि?
क. गुणवत्ता हिन्दी-नेपालीसँ कम नहि आ गीत-परंपरा मजबूत अछि
ख. क्योंकि गजल नहि अछि
ग. क्योंकि भाषा कमजोर अछि
घ. क्योंकि केवल बाहरी प्रभाव अछि
उत्तर: क. गुणवत्ता हिन्दी-नेपालीसँ कम नहि आ गीत-परंपरा मजबूत अछि
व्याख्या: लेख मैथिली गजल केँ स्वाभिमानी साहित्यिक विधा मानैत अछि।

प्रश्न 4521. लेखक पारिभाषिक शब्द टारि सरल ढंग किएक अपनबैत छथि?
क. नव जिज्ञासुक केँ संरचना बुझाबय लेल
ख. विद्वानकेँ भ्रमित करबाक लेल
ग. गजल छिपाबय लेल
घ. गीत काटबाक लेल
उत्तर: क. नव जिज्ञासुक केँ संरचना बुझाबय लेल
व्याख्या: शिक्षक-सुलभ शैली लेखक विशेषता अछि।

प्रश्न 4522. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल” लेखक सार की अछि?
क. गीत-गजल सम्बन्ध, गजलक स्वभाव, संरचना आ मैथिली परंपराक व्याख्या
ख. केवल जीवन-वृत्त
ग. केवल यात्रा
घ. केवल चित्रकला
उत्तर: क. गीत-गजल सम्बन्ध, गजलक स्वभाव, संरचना आ मैथिली परंपराक व्याख्या
व्याख्या: लेख विधा-इतिहास, रूपक आ रचनात्मक मार्गदर्शन केँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ४५८ : विदेह-सदेह १ — “चमेली रानी” आ “माहुर”: उपन्यास-सम्भावना

प्रश्न 4523. केदारनाथ चौधरीक “चमेली रानी” आ “माहुर” कैं विवेचन कोन बात सिद्ध करैत कहल गेल?

क. जीवनानुभव विस्तृत होए तँ कथा-विविधता आ नूतनता आबि सकैत अछि

ख. उपन्यास असम्भव अछि

ग. कथा केवल गीत अछि

घ. चरित्रक जरूरत नहि

उत्तर: क. जीवनानुभव विस्तृत होए तँ कथा-विविधता आ नूतनता आबि सकैत अछि

व्याख्या: विवेचन उपन्यासकारक अनुभव-विस्तार कैं रचनात्मक ऊर्जा मानैत अछि।

प्रश्न 4524. “चमेली रानी” आ “माहुर”क पात्रसभक विषयमे विवेचन की कहैत अछि?

क. चमत्कारी आ सफल

ख. सपाट आ निर्जीव

ग. केवल हास्य पात्र

घ. पूर्णतः अनुपस्थित

उत्तर: क. चमत्कारी आ सफल

व्याख्या: विवेचन मानैत अछि जे लेखक पात्र कैं अनुभूतिपूर्ण ढंगसँ रचैत छथि।

प्रश्न 4525. चमेली रानीक कथा मे ओ कुन अवस्था मे देखाइत छथि?

क. दसमा परीक्षा पास कएने समयक प्रसंग

ख. विदेशी मंत्री

ग. कम्प्यूटर वैज्ञानिक

घ. जंगल अधिकारी

उत्तर: क. दसमा परीक्षा पास कएने समयक प्रसंग

व्याख्या: स्रोतमे चमेली रानीक जीवन-चरणक विशिष्ट उल्लेख अछि।

प्रश्न 4526. भूखन सिंहक भूमिका की बतायल गेल?

क. चमेली रानीक धर्म-पिता

ख. सिर्फ शत्रु

ग. पोस्टमैन

घ. गजलकार

उत्तर: क. चमेली रानीक धर्म-पिता

व्याख्या: भूखन सिंह कथा-संरचनाक महत्त्वपूर्ण सम्बंध-चरित्र अछि।

प्रश्न 4527. पहिल भाग कोन विवरण संग समाप्त होइत कहल गेल?

क. डकैतीक विवरण संग

ख. विवाह गीत संग

ग. गजल संग

घ. कम्प्यूटर पाठ संग

उत्तर: क. डकैतीक विवरण संग

व्याख्या: विवेचन उपन्यासक आरम्भिक भागक गतिशील घटना-बिन्दु बतबैत अछि।

प्रश्न 4528. दूसर भागमे विधायकजीक पैसा/खजाना लूटबाक विवरण कोना देखायल गेल?

क. पूर्व नियोजित घटना कैं नांगटनाथक कृत्यक परिणाम जकाँ

ख. साधारण दान जकाँ

ग. भोजन-विधान जकाँ

घ. चित्रकला जकाँ

उत्तर: क. पूर्व नियोजित घटना कैं नांगटनाथक कृत्यक परिणाम जकाँ

व्याख्या: विवेचन कथा-चाल आ राजनीतिक षड्यंत्रक जटिलता देखबैत अछि।

प्रश्न 4529. नांगटनाथक सामाजिक-राजनीतिक पहचान विवेचनमे की अछि?
क. मुख्यमंत्री गुलाब मिसिरक खबास जे दाँव-पेंचमे विधायक बनल
ख. बाल-गीतक गायक
ग. चित्रकार
घ. वैज्ञानिक
उत्तर: क. मुख्यमंत्री गुलाब मिसिरक खबास जे दाँव-पेंचमे विधायक बनल
व्याख्या: चरित्रक ऊर्ध्वगति राजनीतिक विकृति पर टिप्पणी बनैत अछि।

प्रश्न 4530. अरविन्द अडिगक “द व्हाइट टाइगर”क बलराम हलवाई संग तुलना किएक अछि?
क. नीचले स्तरसँ छल/हिंसा द्वारा उन्नति करनिहार चरित्र-समानता लेल
ख. भाषिक शैली समान लेल
ग. चित्रकला विषय लेल
घ. कृषि गीत लेल
उत्तर: क. नीचले स्तरसँ छल/हिंसा द्वारा उन्नति करनिहार चरित्र-समानता लेल
व्याख्या: विवेचन तुलनात्मक आधुनिक उपन्यास-चेतना कैं जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4531. के.जी.बी. एजेंट भाटाजी उपन्यासमे कोना उपस्थित कहल गेल?
क. दोसरा खण्ड “माहुर” धरि प्रभावी उपस्थिति
ख. एक पंक्ति मात्र
ग. अदृश्य देवता
घ. कृषि उपकरण
उत्तर: क. दोसरा खण्ड “माहुर” धरि प्रभावी उपस्थिति
व्याख्या: भाटाजी रहस्य-राजनीतिक आयाम बढ़बैत छथि।

प्रश्न 4532. अहमदुल्ला खाँक अभियानक विवेचन की कहैत अछि?
क. रमनगर आ वर्तमान राजनीतिक कुरूपता समेटनिहार
ख. पूर्णतः असंबद्ध
ग. केवल प्रेमकथा
घ. संगीत आयोजन
उत्तर: क. रमनगर आ वर्तमान राजनीतिक कुरूपता समेटनिहार
व्याख्या: उपन्यास वर्तमान राजनीतिक विकृति कैं कथा-संरचनामे समेटैत अछि।

खण्ड ४५९ : विदेह-सदेह १ — “माहुर”: राजनीति, प्रतिशोध आ विवेचन

प्रश्न 4533. गुलाब मिसिरक खेरहा वाला भाग ककर स्मरण करबैत कहल गेल?
क. बलराम हलवाईक
ख. विद्यापतिक
ग. गुरुजीक
घ. आर्यक
उत्तर: क. बलराम हलवाईक
व्याख्या: विवेचन पात्र-रचना आ राजनीतिक छलक तुलनात्मक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 4534. गुलाब मिसिर पन्ना सँ की चाहैत अछि?
क. भूखन सिंह कैं मारबाक
ख. गीत गेबाक
ग. चित्र बनयबाक
घ. पत्र भेजबाक
उत्तर: क. भूखन सिंह कैं मारबाक
व्याख्या: पन्ना मना करैत अछि, मुदा गुलाब छलसँ भूखन सिंह कैं मरबा दैत अछि।

प्रश्न 4535. पाँचम भागमे चमेली रानी अपन अड्डा छोड़ि कतय जाइत छथि?
क. बैद्यनाथ धाम
ख. लंदन
ग. जटिंगा
घ. गुवाहाटी
उत्तर: क. बैद्यनाथ धाम
व्याख्या: ई प्रसंग चरित्रक दिशा बदलबाक संकेत अछि।

प्रश्न 4536. चमेली रानीक राजनीतिक महत्वाकांक्षा कोन चरणमे सोझाँ आबैत अछि?
क. भूखन सिंहक ट्रस्ट आ बैद्यनाथ धाम प्रसंगक बाद
ख. गीत-गजल बहसक बाद
ग. छठ पाबनि बाद
घ. कम्प्यूटर पाठ बाद
उत्तर: क. भूखन सिंहक ट्रस्ट आ बैद्यनाथ धाम प्रसंगक बाद
व्याख्या: विवेचन पात्रक व्यक्तिगत कथा सँ राजनीतिक यात्रा दिस मोड़ देखबैत अछि।

प्रश्न 4537. स्टिंग ऑपरेशनक परिणाम की बतायल गेल?
क. गुलाब मिसिर घेराइत छथि
ख. चमेली रानी गुम होइत छथि
ग. गजल समाप्त होइत अछि
घ. चित्रकला शुरू होइत अछि
उत्तर: क. गुलाब मिसिर घेराइत छथि
व्याख्या: उपन्यासमे आधुनिक राजनीतिक-जनमाध्यमक संकेत आबैत अछि।

प्रश्न 4538. मुख्यमंत्रीक निपत्ता रहलाक बाद मात्र फैक्ट-फाइंडिंग कमेटी बनबाक चर्चा कोन टिप्पणी अछि?
क. कोएलिशन राजनीतिक विवशता पर
ख. कृषि-विधि पर
ग. गजल तुक पर
घ. लोकगीत पर
उत्तर: क. कोएलिशन राजनीतिक विवशता पर
व्याख्या: विवेचन राजनीतिक व्यवस्थाक अकर्मण्यता पर व्यंग्य मानैत अछि।

प्रश्न 4539. “माहुर”क पहिल भाग कोन विषयसभक चारूकात घुमैत अछि?
क. चमेली रानीक पार्टी संगठन, स्त्री-अत्याचार, बाल-विधवा, वैश्यावृत्ति
ख. कम्प्यूटर शिक्षा
ग. पुरैन चित्र
घ. सामा गीत
उत्तर: क. चमेली रानीक पार्टी संगठन, स्त्री-अत्याचार, बाल-विधवा, वैश्यावृत्ति
व्याख्या: उपन्यास सामाजिक हिंसा आ संगठनात्मक राजनीति कैं जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4540. “माहुर”क दोसरा भागमे चमेली रानी कतय जाइत छथि?
क. नक्सली नेताक अड्डा पर
ख. संगीत मंच पर
ग. विद्यालय कक्षा मे
घ. बैंक कार्यालय मे
उत्तर: क. नक्सली नेताक अड्डा पर
व्याख्या: प्रसंग आन्दोलन, वन आ आदिवासी जीवनक लेखकीय दृष्टि खोलैत अछि।

प्रश्न 4541. चमेली रानीक माएक रहस्योद्घाटन की अछि?
क. कनही मोदियाइन पैघ घरक छलीह, हुनका पर अत्याचार भेल आ पिता मारल गेल
ख. ओ विदेशी वैज्ञानिक छलीह
ग. ओ चित्रकार मात्र छलीह
घ. ओ गुरुजी छलीह
उत्तर: क. कनही मोदियाइन पैघ घरक छलीह, हुनका पर अत्याचार भेल आ पिता मारल गेल
व्याख्या: पारिवारिक हिंसा चरित्रक प्रतिशोधी-राजनीतिक ऊर्जा बनैत अछि।

प्रश्न 4542. “माहुर”क चतुर्थ-पंचम भागक मूल कथा-गतिशीलता की अछि?
क. प्रतिशोध, सम्पत्ति, राजनीतिक दाँव-पेंच आ दलक विजय
ख. केवल भोजन-विन्यास
ग. केवल लघुकविता
घ. केवल लोकगीत
उत्तर: क. प्रतिशोध, सम्पत्ति, राजनीतिक दाँव-पेंच आ दलक विजय
व्याख्या: विवेचन सामाजिक प्रतिशोध आ सत्ता-राजनीति कैँ उपन्यासक ऊर्जा बतबैत अछि।

खण्ड ४६० : विदेह-सदेह १ — उपन्यास-विवेचन: विधा, यथार्थ आ कल्पना

प्रश्न 4543. विवेचन मे उपन्यास-विधाक गंभीर स्वरूप कब सँ जुड़ल कहल गेल?
क. उन्नैसम शताब्दी आगमन सँ किछु समय पूर्व
ख. वैदिक युगमे पूर्ण
ग. बीसम शताब्दी बाद मात्र
घ. कहियो नहि
उत्तर: क. उन्नैसम शताब्दी आगमन सँ किछु समय पूर्व
व्याख्या: डॉन क्विक्सोटक पूर्वता मानि सेहो विधाक गंभीर रूप बादमे स्थिर कहल गेल।

प्रश्न 4544. उपन्यासमे वाद-विवाद-संवाद सँ की उत्पन्न होइत अछि?
क. निबंध
ख. चित्र
ग. नदी
घ. मौन
उत्तर: क. निबंध
व्याख्या: विवेचन उपन्यास कैँ बहुविध रूप समाहित करनिहार विधा मानैत अछि।

प्रश्न 4545. युवक-युवती चरित्र उपन्यासमे की अनैत अछि?
क. प्रेमाख्यान
ख. वैज्ञानिक सूत्र
ग. कृषि उपकरण
घ. आर्थिक चार्ट
उत्तर: क. प्रेमाख्यान
व्याख्या: विवेचन पात्र-संबंधक विविध उपविधा-संभावना बतबैत अछि।

प्रश्न 4546. लोक आ भूगोल उपन्यासमे की दैत अछि?
क. इतिहासक वर्णन
ख. केवल तुकबन्दी
ग. नाट्यगीत
घ. व्यापार-तालिका
उत्तर: क. इतिहासक वर्णन
व्याख्या: उपन्यास स्थान, समाज आ भूगोलसँ ऐतिहासिक गहराई पबैत अछि।

प्रश्न 4547. मार्क्सवाद उपन्यासक ककर वकालत करैत कहल गेल?
क. सामाजिक यथार्थक
ख. पूर्ण रहस्यवाद
ग. केवल छंद
घ. केवल रंग
उत्तर: क. सामाजिक यथार्थक
व्याख्या: विवेचन सामाजिक यथार्थ कैं उपन्यास-पठनक एक दृष्टि बनबैत अछि।

प्रश्न 4548. फ्रायडवादी दृष्टि मनुष्य कैं कोना मानैत अछि?
क. रहस्यमयी
ख. पूर्ण पारदर्शी
ग. केवल सामाजिक संख्या
घ. कोनो इच्छा-विहीन
उत्तर: क. रहस्यमयी
व्याख्या: फ्रायडवाद लेखक आ चरित्रक अंतर्जगत विश्लेषण करैत अछि।

प्रश्न 4549. नव-फ्रायडवाद जैविकक बदला ककर प्रधानता पर बल दैत देखायल?
क. सांस्कृतिक तत्त्वक
ख. केवल भूगोल
ग. केवल धन
घ. केवल मौसम
उत्तर: क. सांस्कृतिक तत्त्वक
व्याख्या: विवेचन मनुष्यक इच्छा-संरचना मे संस्कृति कैं महत्त्व दैत अछि।

प्रश्न 4550. नव-समीक्षावाद ककरा पर आधारित कहल गेल?
क. कृतिक विस्तृत विवरण पर
ख. लेखकक जाति मात्र
ग. पाठकक उम्र
घ. बाजारक दाम
उत्तर: क. कृतिक विस्तृत विवरण पर
व्याख्या: नव-समीक्षावाद पाठ-केंद्रित अध्ययनक संकेत अछि।

प्रश्न 4551. लेखकक दबायल इच्छा पूरा करबाक रूपक कोना देल गेल?
क. लेखक एक संसार रचैत छथि
ख. लेखक मौन रहैत छथि
ग. लेखक खेत जोतैत छथि मात्र
घ. लेखक गजल छोड़ैत छथि
उत्तर: क. लेखक एक संसार रचैत छथि
व्याख्या: उपन्यास यथार्थ आ कल्पनाक बीचक आड़ी-धूर बनैत अछि।

प्रश्न 4552. विवेचनक अनुसार पाठक उपन्यासमे कोन मार्ग पर चलैत अछि?
क. यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ी-धूर पर
ख. केवल तथ्य-सूची पर
ग. केवल स्वप्नमे
घ. केवल नाटक-मंच पर
उत्तर: क. यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ी-धूर पर
व्याख्या: उपन्यास पाठक कैं वास्तविकता आ कल्पना बीचक सीमारेखा पर चलबैत अछि।

खण्ड ४६१ : विदेह-सदेह १ — नचिकेता: “नो एंट्री: मा प्रवेश” — नाट्यसिद्धान्त

प्रश्न 4553. “नो एंट्री: मा प्रवेश”क विवेचन कोन तुलनात्मक अध्ययन सँ आरम्भ होइत अछि?
क. भारतीय आ पाश्चात्य नाट्यसिद्धान्तक तुलना
ख. कम्प्यूटर शिक्षा
ग. मिथिला चित्रकला
घ. व्यापार जोखिम
उत्तर: क. भारतीय आ पाश्चात्य नाट्यसिद्धान्तक तुलना
व्याख्या: विवेचन नाटक कैं भारतीय-पाश्चात्य सिद्धान्तक रोशनीमे पढ़ैत अछि।

प्रश्न 4554. भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः किनका ग्रंथसभ पर आधारित कहल गेल?
क. भरतक नाट्यशास्त्र आ धनंजयक दशरूपक
ख. अरस्तू मात्र
ग. मार्क्स मात्र
घ. ब्राउनक पुस्तक
उत्तर: क. भरतक नाट्यशास्त्र आ धनंजयक दशरूपक
व्याख्या: भारतीय नाट्य-परंपरा भरत आ धनंजयसँ जोडल गेल।

प्रश्न 4555. पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ कोन कहल गेल?
क. अरस्तूक काव्यशास्त्र
ख. दशरूपक
ग. गीतगोविन्द
घ. अभिधान
उत्तर: क. अरस्तूक काव्यशास्त्र
व्याख्या: विवेचन अरस्तू कैं पाश्चात्य नाट्यविचारक आधार मानैत अछि।

प्रश्न 4556. भरत नाट्य कैं की कहैत छथि?
क. कृतानुसार भावानुकार
ख. व्यापारक नियम
ग. गजल तुक
घ. चित्रक रंग
उत्तर: क. कृतानुसार भावानुकार
व्याख्या: भारतीय दृष्टि मे अनुकरण नाटकक भावात्मक क्रिया अछि।

प्रश्न 4557. धनंजय नाट्य कैं कोना परिभाषित करैत छथि?
क. अवस्थाक अनुकृति
ख. सिर्फ गीत
ग. केवल कथानक
घ. दस्तावेज
उत्तर: क. अवस्थाक अनुकृति
व्याख्या: धनंजयक परिभाषा नाट्यक अवस्थात्मक पुनर्रचना पर आधारित अछि।

प्रश्न 4558. भारतीय साहित्यमे अनुकरण ककर कर्म कहल गेल?
क. नट-कर्म
ख. कवि-कर्म नहि
ग. व्यापारी-कर्म
घ. चित्रकार-कर्म
उत्तर: क. नट-कर्म
व्याख्या: विवेचन भारतीय आ पश्चिमी दृष्टिमे अनुकरणक भेद देखबैत अछि।

प्रश्न 4559. पश्चिममे अनुकरण ककर कर्म कहल गेल?
क. कवि-कर्म
ख. नट-कर्म
ग. किसान-कर्म
घ. गृहस्थ-कर्म
उत्तर: क. कवि-कर्म
व्याख्या: अरस्तू परंपरा मे कवि/रचनाकारक अनुकरण महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 4560. अरस्तू नाटकमे ककरा पर विशेष बल दैत छथि?
क. कथानक पर
ख. सिर्फ वस्त्र पर
ग. सिर्फ भोजन पर
घ. सिर्फ दर्शक संख्या पर
उत्तर: क. कथानक पर
व्याख्या: विवेचन पाश्चात्य त्रासदी-सिद्धान्तक कथानक-केंद्रितता बतबैत अछि।

प्रश्न 4561. भरतक अनुसार नायकसँ संबंधित कथावस्तु की कहल जाइत अछि?
क. आधिकारिक
ख. प्रासंगिक
ग. अप्रासंगिक
घ. मौन
उत्तर: क. आधिकारिक
व्याख्या: आधिकारिक कथावस्तु नायक-केन्द्रित मूल कथा अछि।

प्रश्न 4562. आधिकारिक कथावस्तु कैं सहायता करएबला कथा की कहल जाइत अछि?
क. प्रासंगिक
ख. मुख्य बीज
ग. अवसान
घ. छंद
उत्तर: क. प्रासंगिक
व्याख्या: प्रासंगिक कथा मूल कथानकक सहयोगी संरचना अछि।

खण्ड ४६२ : विदेह-सदेह १ — “नो एंट्री: मा प्रवेश”: पात्र, कथा आ अवस्थाएँ

प्रश्न 4563. विवेचनक अनुसार “नो एंट्री: मा प्रवेश” मे सर्वमान्य नायक किएक नहि अछि?
क. एक पात्र थोड़े काल बाद गौण पड़ि जाइत, सभ रिबाउण्ड करैत अछि
ख. पात्र नहि अछि
ग. केवल गीत अछि
घ. नाटक अधूरा अछि
उत्तर: क. एक पात्र थोड़े काल बाद गौण पड़ि जाइत, सभ रिबाउण्ड करैत अछि
व्याख्या: नाटक बहु-केंद्रित पात्र-गति पर टिकल बतायल गेल।

प्रश्न 4564. यमराजक तेज केकर सोझाँ मध्यम होइत देखाइत अछि?
क. निभाक सोझाँ
ख. गुरुजीक सोझाँ
ग. बैंकक सोझाँ
घ. अभियान गीतक सोझाँ
उत्तर: क. निभाक सोझाँ
व्याख्या: नाटक परंपरागत दैवी सत्ता कैं मानवीय परिदृश्यमे उलटैत अछि।

प्रश्न 4565. भिखमंगनी यमराज-चित्रगुप्तक दैवी स्वरूप उतरने देख की करैत अछि?
क. हँसैत अछि
ख. पूजा मात्र करैत अछि
ग. भागि जाइत अछि
घ. पत्र लिखैत अछि
उत्तर: क. हँसैत अछि
व्याख्या: ई प्रसंग देवत्वक नकाब उतरबाक हास्यपूर्ण क्षण अछि।

प्रश्न 4566. कथा-इतिवृत्ति तीन प्रकारक बतायल गेल — प्रख्यात, उत्पाद्य आ की?
क. मिश्र
ख. मौन
ग. अंत्यानुप्रास
घ. व्यापार
उत्तर: क. मिश्र
व्याख्या: नाट्य-विवेचन कथास्रोतक प्रकार पर चर्चा करैत अछि।

प्रश्न 4567. “नो एंट्री: मा प्रवेश” कैं मिश्र इतिवृत्ति किएक नहि मानल गेल?
क. यमराज-चित्रगुप्त नकली भेष उतारैत छथि आ कथा उत्पाद्य सिद्ध होइत अछि
ख. क्योंकि इतिहास मात्र अछि
ग. क्योंकि गीत नहि अछि
घ. क्योंकि समय नहि अछि
उत्तर: क. यमराज-चित्रगुप्त नकली भेष उतारैत छथि आ कथा उत्पाद्य सिद्ध होइत अछि
व्याख्या: नाम पुराण-संबंधी होइतहुँ कथा मूलतः कल्पित/उत्पाद्य ठहरैत अछि।

प्रश्न 4568. अरस्तूक सरल-जटिल कथानक भेदक हिसाबे ई नाटक कोन श्रेणी दिस राखल गेल?
क. सरल कथानक आधारित
ख. जटिल मात्र
ग. अकथानक
घ. महाकाव्य
उत्तर: क. सरल कथानक आधारित
व्याख्या: आकस्मिक घटना सरल प्रवाहमे अबैत अछि, से विवेचनक निष्कर्ष अछि।

प्रश्न 4569. अरस्तूक इतिवृत्त-वर्गीकरण हिसाबे नाटक कैं कोन श्रेणीमे राखल गेल?
क. काल्पनिकमूलक
ख. दंतकथा मात्र
ग. इतिहास मात्र
घ. कृषि-वृत्त
उत्तर: क. काल्पनिकमूलक
व्याख्या: विवेचन नाटकक कल्पित संरचना कैं महत्त्व दैत अछि।

प्रश्न 4570. अरस्तूक त्रासदीक चिरित ककर मिश्रण होइत अछि?
क. सत् आ असत्
ख. केवल सत्
ग. केवल असत्
घ. रंग आ तुक
उत्तर: क. सत् आ असत्
व्याख्या: विवेचन नाटकक पात्रसभमे नैतिक मिश्रण देखैत अछि।

प्रश्न 4571. निभा आ रमणी मोहन प्रसंग पात्रक कोन गुण दिखबैत अछि?
क. सत्-असत् मिश्रित जटिलता
ख. पूर्ण देवत्व
ग. पूर्ण शून्यता
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. सत्-असत् मिश्रित जटिलता
व्याख्या: निभाक उच्चवंशीयता आ रमणी मोहनसँग संबंध चरित्र-जटिलता बनबैत अछि।

प्रश्न 4572. भिखमंगनीक असल पहचान की बतायल गेल?
क. मिथिला चित्रकार अनसूया
ख. राजनीतिक नेता
ग. कम्प्यूटर शिक्षक
घ. गजलकार
उत्तर: क. मिथिला चित्रकार अनसूया
व्याख्या: चरित्रक सतही रूप आ वास्तविक पहचान बीच अंतर नाटकक गुण अछि।

खण्ड ४६३ : विदेह-सदेह १ — “नो एंट्री: मा प्रवेश”: संरचना, दृश्यत्व आ उत्तर-आधुनिकता

प्रश्न 4573. भारतीय सिद्धान्तक पाँच कार्य-अवस्था मे आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति आ की अछि?
क. फलागम
ख. रदीफ
ग. काफिया
घ. पुरैन
उत्तर: क. फलागम
व्याख्या: विवेचन पारंपरिक नाट्य-रचना-विधि लागू करि देखैत अछि।

प्रश्न 4574. पाश्चात्य सिद्धान्तक क्रम मे आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आ की अछि?
क. अन्तिम फल
ख. अंगिका
ग. आलाप
घ. डाक
उत्तर: क. अन्तिम फल
व्याख्या: पाश्चात्य संरचना मे उलझन-सुलझनक क्रम बतायल गेल।

प्रश्न 4575. कायावस्था/कार्य-विभाजनक पाँच अवयव मे बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी आ की अछि?
क. कार्य
ख. गीत
ग. नृत्य
घ. पर्व
उत्तर: क. कार्य
व्याख्या: भारतीय संरचना-विचारक तकनीकी अवयव नाटक पर लागू कएल गेल।

प्रश्न 4576. “नो एंट्री: मा प्रवेश” मे बीज की कहल गेल?
क. मृत्युक बादक लोकक द्वन्द्व
ख. कृषि आरम्भ
ग. भोजन विधि
घ. गजल तुक
उत्तर: क. मृत्युक बादक लोकक द्वन्द्व
व्याख्या: नाटकक मूल ऊर्जास्रोत मृत्युपश्चात प्रवेश-संघर्ष अछि।

प्रश्न 4577. नो एंट्री: मा प्रवेश मे बीमा एजेंटक भूमिका की विचित्रता अनैत अछि?
क. बिना मृत्युक पहुँचि जाइत अछि
ख. जन्म नहि लेत
ग. गजल गबैत अछि
घ. चित्र बनबैत अछि
उत्तर: क. बिना मृत्युक पहुँचि जाइत अछि
व्याख्या: ई घटना नाटकक वैचारिक-हास्यपूर्ण द्वन्द्व बनबैत अछि।

प्रश्न 4578. विवेचनक अनुसार नाटकमे मुख्यतः कोन-कोन सन्धि अछि?
क. मुख, प्रतिमुख आ निर्वहण
ख. गर्भ आ विमर्श मात्र
ग. कोनो सन्धि नहि
घ. केवल प्रकरी
उत्तर: क. मुख, प्रतिमुख आ निर्वहण
व्याख्या: शेष दूटा सन्धिक अभाव नाट्य-संरचनाक विशेषता बतायल गेल।

प्रश्न 4579. पाश्चात्य त्रिक — स्थान, समय, कार्य — नाटकमे कोना उपस्थित अछि?
क. स्थान एक, समय लगातार, कार्य द्वार भीतर पैसबाक आकांक्षा
ख. स्थान अनेक, समय असंगत
ग. कार्य अनुपस्थित
घ. केवल यात्रा
उत्तर: क. स्थान एक, समय लगातार, कार्य द्वार भीतर पैसबाक आकांक्षा
व्याख्या: नाटक एकता-सिद्धान्तक निकट देखायल गेल।

प्रश्न 4580. दू घंटाक नाटकमे घटना-समय कतेक कहल गेल?
क. दू घंटा
ख. दस बरख
ग. एक युग
घ. अनंत काल
उत्तर: क. दू घंटा
व्याख्या: नाटकक मंचित समय आ कथा-समय लगभग समान बतायल गेल।

प्रश्न 4581. भारतमे नाटकक दृश्यत्व परंपरा आ पश्चिमी मतक चर्चा किएक आयल?
क. नाटकक दृश्य/पठनीय रूपक सिद्धान्त-भेद देखाबय लेल
ख. भोजनक स्वाद लेल
ग. व्यापार माप लेल
घ. चित्रक रंग लेल
उत्तर: क. नाटकक दृश्य/पठनीय रूपक सिद्धान्त-भेद देखाबय लेल
व्याख्या: विवेचन दृश्यत्व, पाठनीयता आ अभिनयक सिद्धान्तक तुलना करैत अछि।

प्रश्न 4582. “नो एंट्री: मा प्रवेश”क अंतिम महत्त्व विवेचन की मानैत अछि?
क. मैथिली नाटक लेखन कैं नव दिशा देबाक सम्भावना
ख. नाटक समाप्त करबाक
ग. गीत हटाएबाक
घ. कथा नकारबाक
उत्तर: क. मैथिली नाटक लेखन कैं नव दिशा देबाक सम्भावना
व्याख्या: विवेचन एकरा आधुनिक, उत्तर-आधुनिक आ परंपरा-संबद्ध प्रयोग मानैत अछि।

खण्ड ४६४ : विदेह-सदेह १ — कथा “पहरराति”: आयाम, प्रयोगशाला आ समय

प्रश्न 4583. “पहरराति” कथा केकर प्रयोगशाला प्रसंगसँ शुरू होइत अछि?
क. धौम्यक
ख. नरेशक
ग. आर्यक
घ. भ्रमरक
उत्तर: क. धौम्यक
व्याख्या: कथा वैज्ञानिक-कल्पना आ दार्शनिक प्रयोगक वातावरणसँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 4584. धौम्य की प्रयोग करय जा रहल छथि?
क. चार आयामक वातावरणमे द्वि आ त्रि आयामी वस्तुक प्रयोग
ख. गजल तुक
ग. मिथिला पेंटिंग
घ. दुरागमन रस्म
उत्तर: क. चार आयामक वातावरणमे द्वि आ त्रि आयामी वस्तुक प्रयोग
व्याख्या: कथा आयाम-चिन्तन केँ प्रयोगात्मक कथानक बनबैत अछि।

प्रश्न 4585. दू आयामक जीव तीन आयामक मनुष्यक कार्य केँ कोना अनुभव करैत अछि?
क. देख नहि सकैत, मुदा परिणाम अनुभव करैत अछि
ख. सब स्पष्ट देखैत अछि
ग. किछु नहि अनुभव करैत
घ. केवल सुनैत अछि
उत्तर: क. देख नहि सकैत, मुदा परिणाम अनुभव करैत अछि
व्याख्या: कथा अज्ञात उच्च आयामक सम्भावना एहि तुलना सँ बनबैत अछि।

प्रश्न 4586. एक आयामी विश्वमे की-की बोध नहि अछि?
क. वाम-दहिन आ ऊपर-नीचाँ
ख. आगू-पाछू
ग. रेखा
घ. गति
उत्तर: क. वाम-दहिन आ ऊपर-नीचाँ
व्याख्या: एक आयामक संसार केवल सरल रेखा-सदृश वर्णित अछि।

प्रश्न 4587. एक आयामी जीव एक दोसरा केँ पार किएक नहि कए सकैत?
क. कारण ओकर विश्व एके पंक्तिमे समाप्त अछि
ख. कारण ओ उड़ैत अछि
ग. कारण ऊँचाई असीम अछि
घ. कारण समय नहि अछि
उत्तर: क. कारण ओकर विश्व एके पंक्तिमे समाप्त अछि
व्याख्या: कथा आयाम सीमाक सामाजिक-प्रतीकात्मक बोध देत अछि।

प्रश्न 4588. द्वि आयामी प्रयोगशाला मे जीवसभ एक दोसरा केँ कतेक रूपमे देखैत अछि?
क. एक बेरमे रेखाक रूपमे
ख. पूर्ण त्रि-आकृति रूपमे
ग. ध्वनि मात्र
घ. अदृश्य
उत्तर: क. एक बेरमे रेखाक रूपमे
व्याख्या: ऊँचाइक अभाव कारण स्वरूप क्रमिक कोण-सूचनासँ बनैत अछि।

प्रश्न 4589. धौम्य संग नव कार्य हेतु कतेक विद्यार्थी तैयार भेल?
क. पाँच
ख. दू
ग. सात
घ. बीस
उत्तर: क. पाँच
व्याख्या: श्वेतकेतु, अपाला, सत्यकाम, रैक्व आ घोषा योजना मे सम्मिलित भेलाह।

प्रश्न 4590. चौथा/ऊँच आयामी शोधमे समयक भूमिका कोना आयल?
क. स्थानिक आयामक संग समयक एक वा अधिक आयामक सम्भावना
ख. समय अप्रासंगिक
ग. समय हटि गेल
घ. केवल घड़ीक समय
उत्तर: क. स्थानिक आयामक संग समयक एक वा अधिक आयामक सम्भावना
व्याख्या: कथा भौतिकी-संबद्ध कल्पना कैं दार्शनिक बनबैत अछि।

प्रश्न 4591. वर्ण-अन्धताक उदाहरण धौम्य किएक दैत छथि?
क. अदृश्य अतिरिक्त आयामक अप्रत्यक्ष अनुभव बुझाबय लेल
ख. रंगक सौंदर्य मात्र
ग. चित्रकला बेचबाक लेल
घ. गीत गेबाक लेल
उत्तर: क. अदृश्य अतिरिक्त आयामक अप्रत्यक्ष अनुभव बुझाबय लेल
व्याख्या: जेना लाल-हरियर भेद नहि देखाए, तकरा जकाँ अधिक आयाम अज्ञेय रहि सकैत अछि।

प्रश्न 4592. “पहरराति”क आरम्भिक भागक मूल प्रश्न की अछि?
क. हमर सभसँ ऊपर वा अधिक आयामी जीवन/हस्तक्षेप सम्भव अछि की?
ख. गजल कित्ता लंब हो
ग. सूप केना बनय
घ. भोजन केना परसय
उत्तर: क. हमर सभसँ ऊपर वा अधिक आयामी जीवन/हस्तक्षेप सम्भव अछि की?
व्याख्या: कथा विज्ञान, कल्पना आ दार्शनिक अनिश्चितता कैं जोड़ैत अछि।

खण्ड ४६५ : विदेह-सदेह १ — कथा “आर्य”: भेट, वर्ग-दृष्टि आ किरायादार परिवार

प्रश्न 4593. कथा “आर्य”क आरम्भिक परिस्थिति की अछि?
क. विवाहक उपरान्त सासुरमे भेटघाटक सिलसिला चलि रहल अछि
ख. विद्यालयक परीक्षा-कक्षमे युद्ध अछि
ग. राजनीतिक सभा चालू अछि
घ. जंगलमे साधना भऽ रहल अछि
उत्तर: क. विवाहक उपरान्त सासुरमे भेटघाटक सिलसिला चलि रहल अछि
व्याख्या: कथा नव-विवाहक बादक पारिवारिक-सामाजिक भेटघाटसँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 4594. आर्य कथामे पहिल बेर कोना अबैत अछि?
क. माएक संग नहि, असगरे भेट करय अबैत अछि
ख. सेनादल संग अबैत अछि
ग. होटलक मालिक बनि अबैत अछि
घ. पत्रमे मात्र उल्लेखित अछि
उत्तर: क. माएक संग नहि, असगरे भेट करय अबैत अछि
व्याख्या: आर्यक असगरे आबि भेटब ओकर अनुशासन, संकोच आ अलग व्यक्तित्वक संकेत अछि।

प्रश्न 4595. आर्यक शारीरिक/व्यवहारिक चित्रणमे कोन बात प्रमुख अछि?
क. कारी, दुबर-पातर, अत्यधिक अनुशासित, नापि-जोखि बजिनिहारि
ख. अत्यधिक उदंड आ हिंसक
ग. सदैव हास्यक पात्र
घ. पूरी तरह मौन मूर्ति
उत्तर: क. कारी, दुबर-पातर, अत्यधिक अनुशासित, नापि-जोखि बजिनिहारि
व्याख्या: कथाकार आर्यक बाह्य रूपसँ अधिक ओकर संयमित व्यवहार रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 4596. कथावाचक कैँ आर्यक माएक प्रति घरक व्यवहार किएक खटैत अछि?
क. क्योंकि पितामहीक लेहाज राखल गेल, मुदा माएक अवहेलना सन भेल
ख. क्योंकि माए अनुपस्थित छलीह
ग. क्योंकि घरक लोक हुनका मंत्री मानलक
घ. क्योंकि कथावाचक ककरो नहि भेटल
उत्तर: क. क्योंकि पितामहीक लेहाज राखल गेल, मुदा माएक अवहेलना सन भेल
व्याख्या: एहि प्रसंगसँ परिवारक सामाजिक श्रेणीबोध आ असहजता खुलैत अछि।

प्रश्न 4597. आर्यक माए अपन परिवारक स्थिति कोना स्पष्ट करैत छथि?
क. ओ सभ ससुरक किरायादार छी आ ऊपरका महला पर रहैत छी
ख. ओ राजघरानाक मालिक छी
ग. ओ गामक मुखिया छी
घ. ओ दूर देशसँ आयल यात्री छी
उत्तर: क. ओ सभ ससुरक किरायादार छी आ ऊपरका महला पर रहैत छी
व्याख्या: किरायादार परिचय बादक भेदभाव आ दूरीक कारण बुझबाक सूत्र अछि।

प्रश्न 4598. सासु कथावाचक-पत्नीकेँ ऊपर न जाएबाक निर्देश किएक दैत छथि?
क. किरायादार परिवारसँ दूरी बनाबयक सामाजिक मनोवृत्ति कारण
ख. पृष्ठ नहि भेटल छल
ग. स्कूल बन्द छल
घ. वर्षा बहुत छल
उत्तर: क. किरायादार परिवारसँ दूरी बनाबयक सामाजिक मनोवृत्ति कारण
व्याख्या: कथामे आदेश प्रत्यक्ष कम, सामाजिक संकोच-घृणा अधिक बोलैत अछि।

प्रश्न 4599. आर्यक पिता पहिल बेर कथावाचक कैँ कोन अवस्थामे भेटैत छथि?
क. नशाग्रस्त, डोलैत आ बड़बड़ाइत अवस्था मे
ख. मंदिरक पुजारी रूपेँ
ग. कक्षा शिक्षक रूपेँ
घ. नाटक निर्देशक रूपेँ
उत्तर: क. नशाग्रस्त, डोलैत आ बड़बड़ाइत अवस्था मे
व्याख्या: पिता-पात्रक प्रवेश आर्यक पारिवारिक पीड़ाक पृष्ठभूमि बनबैत अछि।

प्रश्न 4600. आर्यक पिता अपन पेशाक दृष्टिसँ की छथि?
क. एम.बी.बी.एस. डॉक्टर
ख. नौआ
ग. रंगकर्मी
घ. गजलकार
उत्तर: क. एम.बी.बी.एस. डॉक्टर
व्याख्या: डॉक्टर होइतहुँ मद्य-आसक्ति परिवारक असुरक्षा बढ़बैत अछि।

प्रश्न 4601. सासु आर्यक पिता संबंधमे कौन जटिल टिप्पणी करैत छथि?
क. पीने रहितो ओ अभद्र गप नहि बजैत, मनुक्ख ठीक अछि, मुदा गड़बड़ी भारी अछि
ख. ओ पूर्ण अपराधी आ असभ्य छथि
ग. ओ ककरो नहि चिन्हैत छथि
घ. ओ केवल कवि छथि
उत्तर: क. पीने रहितो ओ अभद्र गप नहि बजैत, मनुक्ख ठीक अछि, मुदा गड़बड़ी भारी अछि
व्याख्या: कथा शराबी पात्र कैं एकरेखा दोषी नहि, जटिल सामाजिक व्यक्ति रूपेँ रखैत अछि।

प्रश्न 4602. एहि आरम्भिक भागक मुख्य कथा-तनाव की अछि?
क. व्यक्तिगत संवेदना आ परिवारक वर्ग-नैतिक दूरीक टकराव
ख. युद्ध आ विजय
ग. कृषि आ व्यापार
घ. गजल आ गीतक छन्द
उत्तर: क. व्यक्तिगत संवेदना आ परिवारक वर्ग-नैतिक दूरीक टकराव
व्याख्या: कथावाचक सहानुभूति चाहैत अछि, घरक व्यवस्था दूरी आ अपमानक भाषा बोलैत अछि।

खण्ड ४६६ : विदेह-सदेह १ — कथा “आर्य”: नशा, गप-चर्चा आ आत्महत्या

प्रश्न 4603. आर्यक परिवार कैं घर छोड़बाक अल्टीमेटम कोन प्रसंगमे देल गेल?
क. पिताक नशाग्रस्त व्यवहार आ किरायादार-विवादक बाद
ख. कविता छपलाक बाद
ग. चित्रकला सीखलाक बाद
घ. परीक्षा सफल भेलाक बाद
उत्तर: क. पिताक नशाग्रस्त व्यवहार आ किरायादार-विवादक बाद
व्याख्या: अल्टीमेटम परिवारक अस्थिर जीवनक बाहरी दबाव बनैत अछि।

प्रश्न 4604. आर्यक बोडर्क बाद पटना जेबाक विनती ककरा खयाल रखि कएल गेल?
क. आर्यक खयाल रखि
ख. होटल मालिकक खयाल रखि
ग. नाटक निर्देशकक खयाल रखि
घ. ग्रामदेवक खयाल रखि
उत्तर: क. आर्यक खयाल रखि
व्याख्या: माता-पिता जानैत छथि जे घर बदललासँ आर्यक पढ़ाइ आ मनोदशा प्रभावित होएत।

प्रश्न 4605. बादमे कथावाचक कैं आर्यक पिताक मृत्यु संबंधी कोन सूचना भेटैत अछि?
क. विष खा कऽ आत्महत्या केलनि
ख. युद्धमे शहीद भेलाह
ग. तीर्थयात्रामे हराएलाह
घ. गंगा-स्नानमे सिद्ध भेलाह
उत्तर: क. विष खा कऽ आत्महत्या केलनि
व्याख्या: कथा व्यक्तिगत त्रासदी कैं घरेलू कलह आ सामाजिक चटखारा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4606. डॉक्टर-पति आ पत्नी बीच झगड़ाक कारणक उलट जवाब की छल?
क. पत्नी कहैत छलीह पीबाक कारणे झगड़ा, पति कहैत छलाह झगड़ाक कारणे पीबैत छी
ख. दूनू गजल लिखैत छलाह
ग. दूनू चित्र बनबैत छलाह
घ. दूनू शिक्षक छलाह
उत्तर: क. पत्नी कहैत छलीह पीबाक कारणे झगड़ा, पति कहैत छलाह झगड़ाक कारणे पीबैत छी
व्याख्या: ई उलटबाँसी नशा आ दाम्पत्य तनावक चक्राकार सम्बन्ध देखबैत अछि।

प्रश्न 4607. पिताक मृत्यु पर आर्यक माएक भाव कोना देखाओल गेल?
क. मानो मुक्ति भेटल हो
ख. पूर्ण विजय-नृत्य
ग. कोनो प्रतिक्रिया नहि
घ. केवल धार्मिक व्रत
उत्तर: क. मानो मुक्ति भेटल हो
व्याख्या: कथाकार विवाह/नशा/हिंसा सँ पीड़ित स्त्रीक जटिल राहत-बोध देखबैत अछि।

प्रश्न 4608. आर्यक आत्महत्या-सूचना कथावाचक पर कोन प्रभाव छोड़ैत अछि?
क. पुरान बातसभ मोनमे फेर घूमए लगैत अछि
ख. ओ तुरन्त हँसैत अछि
ग. ओ घटना बिसरि जाइत अछि
घ. ओ केवल परीक्षा सोचैत अछि
उत्तर: क. पुरान बातसभ मोनमे फेर घूमए लगैत अछि
व्याख्या: आर्यक मृत्यु कथा कें आत्मालोचनात्मक स्मृति बनबैत अछि।

प्रश्न 4609. आर्यक प्रेम-संदर्भमे ओकर स्वभाव कोना खुलैत अछि?
क. ओ भावुक छलीह आ बात गंभीरतासँ लैत छलीह
ख. पूर्णतः कठोर आ निर्विकार
ग. हँसी-मजाक मात्र
घ. कोनो लगाव नहि
उत्तर: क. ओ भावुक छलीह आ बात गंभीरतासँ लैत छलीह
व्याख्या: कथा किशोरीक मनोभावकें बालिका-भावुकता आ सामाजिक दबावसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4610. आर्य जे युवक चाहैत छलीह, ओकर पारिवारिक पृष्ठभूमि कोना बतायल गेल?
क. माए शिक्षिका, पिता मेरीनमे, परिवारमे झगड़ा-बदनामीक प्रसंग
ख. राजमहलक सीधा उत्तराधिकारी मात्र
ग. कोनो परिचय नहि
घ. गुरुजीक पोता
उत्तर: क. माए शिक्षिका, पिता मेरीनमे, परिवारमे झगड़ा-बदनामीक प्रसंग
व्याख्या: युवकक घर सेहो टूटल पारिवारिक संरचना आ अस्थिरता सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4611. कथावाचक आर्यक आत्महत्याक कारण अन्ततः कोन सामाजिक वृत्तमे ताकैत अछि?
क. परिवारक सम्बन्धी, दोष-महीम आ समाजक चटखारापूर्ण चर्चा
ख. केवल मौसम
ग. केवल परीक्षा-केंद्र
घ. केवल कोका-कोला
उत्तर: क. परिवारक सम्बन्धी, दोष-महीम आ समाजक चटखारापूर्ण चर्चा
व्याख्या: कथा एक व्यक्ति पर दोष नहि थोपैत; सामाजिक क्रूरता आ गप-चर्चा कें कारण मानैत अछि।

प्रश्न 4612. “आत्महत्याक नाम दऽ ओकरा मृत्युदण्ड देलक समाज” — एहि भावक अर्थ की?
क. समाजक कलंक, गप्प आ उपेक्षा आर्यक मृत्यु मे सहभागी रहल
ख. समाज पूर्णतः निर्दोष अछि
ग. आर्य केवल कथा-पात्र नहि
घ. परिवार अत्यंत सुखी छल
उत्तर: क. समाजक कलंक, गप्प आ उपेक्षा आर्यक मृत्यु मे सहभागी रहल
व्याख्या: कथा आत्महत्या कें निजी कमजोरी नहि, सामूहिक संवेदनहीनताक परिणाम रूपेँ पढ़बैत अछि।

खण्ड ४६७ : विदेह-सदेह १ — कुमार शुशान्त: “डटके जलपान”क हास्य-प्रसंग

प्रश्न 4613. “डटके जलपान”क वास्तविक नाम की बतायल गेल?
क. दिवसलाल
ख. धौम्य
ग. आर्य
घ. प्रकाशचन्द्र
उत्तर: क. दिवसलाल
व्याख्या: कथा हास्य-नाम आ वास्तविक नामक विरोधसँ चरित्र बनबैत अछि।

प्रश्न 4614. डटकेजलपान परीक्षार्थी दलक संग किएक भेजल गेल?
क. गामक लड़कासभ अभिभावकसँ दूर रहत, तैं देख-रेख लेल
ख. भोजन पकयबा लेल मात्र
ग. नाटक करयबा लेल
घ. चित्र बनयबा लेल
उत्तर: क. गामक लड़कासभ अभिभावकसँ दूर रहत, तैं देख-रेख लेल
व्याख्या: अभिभावक स्वच्छंद लड़का-मंडली पर निगरानी चाहैत छथि।

प्रश्न 4615. लड़का-मंडली कोका-कोला कतेक मँगबैत अछि आ किएक?
क. दस बोतल, जानि-बूझि डटकेजलपानकेँ अलग राखय लेल
ख. एगारह बोतल, सभकेँ बराबर लेल
ग. एक बोतल, पूजा लेल
घ. बीस बोतल, होटल लेल
उत्तर: क. दस बोतल, जानि-बूझि डटकेजलपानकेँ अलग राखय लेल
व्याख्या: ई छेड़छाड़ हास्यक पहिल जाल रचैत अछि।

प्रश्न 4616. मित्रसभ कोका-कोला बारे डटकेजलपान केँ की बुझाबैत अछि?
क. ई कड़ा नशा देबयवला चीज अछि
ख. ई औषधि अछि
ग. ई जल नहि अछि
घ. ई परीक्षा-पत्र अछि
उत्तर: क. ई कड़ा नशा देबयवला चीज अछि
व्याख्या: मित्रसभ ओकर भोला भय आ अनभिज्ञता पर खेल करैत अछि।

प्रश्न 4617. डटकेजलपान पहिने की प्रतिक्रिया दैत अछि?
क. माँ-बापक पढ़ाएल परीक्षा छोड़ि लड़कासभ दारू पीबैत अछि, एना धिक्कारैत अछि
ख. ओ तुरन्त गीत गाबैत अछि
ग. ओ कोका बेचय लगैत अछि
घ. ओ होटल खोलैत अछि
उत्तर: क. माँ-बापक पढ़ाएल परीक्षा छोड़ि लड़कासभ दारू पीबैत अछि, एना धिक्कारैत अछि
व्याख्या: ओ कोका-कोलाकेँ दारू बूझि नैतिक रोष देखबैत अछि।

प्रश्न 4618. कोका-कोला पीबाक बाद डटकेजलपान केँ की अनुभव होइत कहल गेल?
क. कानमे फहऽ-फहऽ करैत अछि
ख. ऊँच आयाम देखाइत अछि
ग. गजल याद होइत अछि
घ. सागर पार होइत अछि
उत्तर: क. कानमे फहऽ-फहऽ करैत अछि
व्याख्या: ओ अपन विश्वासक प्रभाव सँ नशाजकाँ अनुभूति करैत अछि।

प्रश्न 4619. रास्ताक भीड़ कैं जखन पता चलैत अछि जे कोका-कोला पीने छथि, तखन प्रतिक्रिया की अछि?
क. ई नशा नहि देत, बड़ नौटंकी अछि
ख. ओ सभ पुलिस बजबैत अछि
ग. ओ सभ पूजा करैत अछि
घ. ओ सभ कथा लिखैत अछि
उत्तर: क. ई नशा नहि देत, बड़ नौटंकी अछि
व्याख्या: हास्य सार्वजनिक बेइज्जतीक क्षणमे बदलि जाइत अछि।

प्रश्न 4620. डटकेजलपान उठि की शिकायत करैत छथि?
क. झूठे नशावला चीज कहि बेइज्जती करेलक
ख. हमरा परीक्षा मे पास करेलक
ग. हमरा मंच पर चढ़ेलक
घ. हमरा चित्र बनौलह
उत्तर: क. झूठे नशावला चीज कहि बेइज्जती करेलक
व्याख्या: ओ मित्रसभक शरारत बुझि आहत होइत अछि।

प्रश्न 4621. मित्रक “बेइज्जती ओकरा हो जकरा ठाम इज्जत छई” कथन की जोड़ैत अछि?
क. ग्रामीण दोस्ताना व्यंग्य आ हास्यक तीखापन
ख. दार्शनिक मोक्ष
ग. राजनीतिक कार्यक्रम
घ. भक्ति रस
उत्तर: क. ग्रामीण दोस्ताना व्यंग्य आ हास्यक तीखापन
व्याख्या: प्रसंग हास्य कैं मित्रता, चिढ़ाब आ लोक-वाक्चातुर्यसँ बनबैत अछि।

प्रश्न 4622. एहि प्रथम प्रसंगक हास्य-तत्व की अछि?
क. भोले निरीक्षकक मनोवैज्ञानिक भ्रम आ मित्रसभक शरारत
ख. अपराध-कथा
ग. भक्तिकथा
घ. युद्धकथा
उत्तर: क. भोले निरीक्षकक मनोवैज्ञानिक भ्रम आ मित्रसभक शरारत
व्याख्या: कथा हास्यक स्रोत वस्तु नहि, विश्वास आ समूह-छेड़छाड़ मे राखैत अछि।

खण्ड ४६८ : विदेह-सदेह १ — “डटके जलपान”: भोजन, अतृप्ति आ लोक-हँसी

प्रश्न 4623. डटकेजलपान कैं भोजन लेल सभसँ पहिले किएक पठाओल गेल?
क. बेरा-बेरी भोजन करबाक योजना मे पहिले हुनका होटल पठाओल गेल
ख. ओ होटल मालिक छलाह
ग. ओ परीक्षा निरीक्षक छलाह
घ. ओ आर्यक पिता छलाह
उत्तर: क. बेरा-बेरी भोजन करबाक योजना मे पहिले हुनका होटल पठाओल गेल
व्याख्या: डेरा पर सबकैं एकसाथ भोजन असुविधाजनक छल, तैं क्रम तय भेल।

प्रश्न 4624. होटलमे भोजनक व्यवस्था पहिने कोना तय भेल छल?
क. दू रुपैयामे भरिपेट भोजन आ अग्रिम पाई जमा
ख. मुफ्त भोजन बिना बात
ग. केवल मिठाई
घ. नाटकक टिकट
उत्तर: क. दू रुपैयामे भरिपेट भोजन आ अग्रिम पाई जमा
व्याख्या: अग्रिम जमा रहला पर भोजन-विवाद हास्यपूर्ण बनैत अछि।

प्रश्न 4625. डटकेजलपान देर धरि न लौटलापर मित्रसभक मुख्य भाव की छल?
क. चिन्ता सँ बेसी कौतूहल
ख. पूर्ण उदासीनता
ग. क्रोध मात्र
घ. राजनीतिक डर
उत्तर: क. चिन्ता सँ बेसी कौतूहल
व्याख्या: कथा मित्रसभक उत्सुकता आ हास्य-आशंका देखबैत अछि।

प्रश्न 4626. होटल मालिक डटकेजलपान कैँ खुआयब किएक नहि चाहैत छल?
क. कारण भोजनक हाँड़ा खाली भऽ गेल छल
ख. क्योंकि होटल बन्द छल
ग. क्योंकि पाई नहि देल गेल
घ. क्योंकि पूजा चालू छल
उत्तर: क. कारण भोजनक हाँड़ा खाली भऽ गेल छल
व्याख्या: डटकेजलपानक भूख हास्यक चरम रूप लेत अछि।

प्रश्न 4627. होटल वाला “मनुख्खक भोजन” कहि की सूचित करैत अछि?
क. डटकेजलपान सामान्य आदमीसँ बहुत बेसी खा गेलाह
ख. ओ मनुष्य नहि छलाह
ग. भोजन अशुद्ध छल
घ. रसोइया अनुपस्थित छल
उत्तर: क. डटकेजलपान सामान्य आदमीसँ बहुत बेसी खा गेलाह
व्याख्या: कथा अतिशयोक्तिपूर्ण लोकहास्य द्वारा चरित्रक नाम सार्थक करैत अछि।

प्रश्न 4628. होटल मालिक कतेक पाई वापस दैत अछि?
क. बारह टका
ख. केवल एक टका
ग. सौ टका
घ. किछु नहि
उत्तर: क. बारह टका
व्याख्या: दस टका अग्रिम आ दू टका अतिरिक्त देब हास्यक मुख्य मोड़ अछि।

प्रश्न 4629. अतिरिक्त दू टका होटल वाला किएक दैत अछि?
क. सामनेवला होटल सँ झगड़ा छल, तैं डटकेजलपान कैँ ओतय पठेबाक घूस रूपैँ
ख. दान रूपैँ
ग. मजदूरी रूपैँ
घ. परीक्षा फीस रूपैँ
उत्तर: क. सामनेवला होटल सँ झगड़ा छल, तैं डटकेजलपान कैँ ओतय पठेबाक घूस रूपैँ
व्याख्या: कथा अतृप्त भोजनशीलता कैँ प्रतिद्वंद्वी होटल पर बोझ बनाएबामे बदलैत अछि।

प्रश्न 4630. मित्रसभक हँसी किएक छूटि जाइत अछि?
क. होटल मालिक डटकेजलपानकैँ प्रतिशोधक हथियार जकाँ उपयोग करय चाहैत अछि
ख. क्योंकि परीक्षा रद्द भेल
ग. क्योंकि आर्य आयल
घ. क्योंकि पेन टूटल
उत्तर: क. होटल मालिक डटकेजलपानकैँ प्रतिशोधक हथियार जकाँ उपयोग करय चाहैत अछि
व्याख्या: हास्यक गाढ़ता एहि उलटबाँसीमे अछि।

प्रश्न 4631. डटकेजलपानक कारनामाक वर्णन लेल समुद्रक मसी रूपक किएक आयल?
क. हुनकर एक-एक काज असीम हास्य-सम्भार जकाँ प्रस्तुत अछि
ख. शाब्दिक भूगोल लेल
ग. चित्रकला लेल
घ. वेद-विवरण लेल
उत्तर: क. हुनकर एक-एक काज असीम हास्य-सम्भार जकाँ प्रस्तुत अछि
व्याख्या: अतिशयोक्ति कथा-शैलीक प्रमुख उपकरण अछि।

प्रश्न 4632. “डटके जलपान”क मूल साहित्यिक स्वर की अछि?
क. लोक-हास्य, अतिशयोक्ति, मित्र-मंडली आ चरित्र-केंद्रित विनोद
ख. शुद्ध शोकगीत
ग. राजकीय आदेश
घ. दार्शनिक उपनिषद् मात्र
उत्तर: क. लोक-हास्य, अतिशयोक्ति, मित्र-मंडली आ चरित्र-केंद्रित विनोद
व्याख्या: कथा ग्रामीण-छात्र जीवनक विनोदपूर्ण स्मृति बनि उठैत अछि।

खण्ड ४६९ : विदेह-सदेह १ — अरिपन, मधुप आ आरम्भिक साहित्यिक संकेत

प्रश्न 4633. श्रीमती लक्ष्मी ठाकुरक परिचयक साथ कोन अरीपनक उल्लेख अछि?
क. षडदल अरिपन
ख. कोहबर पुरैन मात्र
ग. सामा-चकेबा गीत
घ. जट-जटिन नाटक
उत्तर: क. षडदल अरिपन
व्याख्या: षडदल अरिपन भगवती-पूजाक प्रसंगमे प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 4634. षडदल अरिपनमे कोन यंत्र-संकेत देल गेल?
क. देवी भागवत पुराणक षट्कोण यंत्र
ख. राशिचक्र मात्र
ग. गजल-छन्द
घ. कम्प्यूटर चिप
उत्तर: क. देवी भागवत पुराणक षट्कोण यंत्र
व्याख्या: अरिपन शाक्त अनुष्ठान आ रेखा-रूपक समन्वय देखबैत अछि।

प्रश्न 4635. षडदल अरिपनमे छः कमल दलक अर्थ की संकेत करैत अछि?
क. देवी-पूजाक अनुष्ठानिक रचना
ख. होटल भोजन
ग. नाटक मंच
घ. राजनीतिक दल
उत्तर: क. देवी-पूजाक अनुष्ठानिक रचना
व्याख्या: कमल-दल, पदचिह्न आ पूजा-सामग्री मिलि अरिपनक धार्मिक अर्थ बनबैत अछि।

प्रश्न 4636. काशीकान्त मिश्र “मधुप”क राधाविरह ककर रूपमे उल्लेखित अछि?
क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त महाकाव्य
ख. हास्य कथा
ग. राजनीतिक निबंध
घ. कम्प्यूटर पाठ
उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त महाकाव्य
व्याख्या: परिचय मधुपजीक महाकाव्यात्मक प्रतिष्ठा बतबैत अछि।

प्रश्न 4637. मधुपजीक “झंकार” कविताक संबंधमे की कहल गेल?
क. क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि
ख. कोका-कोला प्रसंग
ग. आर्य कथा
घ. अरीपन वर्णन
उत्तर: क. क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि
व्याख्या: मधुपजीक कवित्वमे प्रकृति-प्रेमक संग जागरण-स्वर अछि।

प्रश्न 4638. “घसल अठन्नी” कविता लेल मधुपजीकेँ की भेटल कहल गेल?
क. कथ्य आ शिल्प-संवेदन दुनू स्तर पर लोकप्रियता
ख. पूर्ण उपेक्षा
ग. केवल दंड
घ. अज्ञातता
उत्तर: क. कथ्य आ शिल्प-संवेदन दुनू स्तर पर लोकप्रियता
व्याख्या: परिचय कविता-सफलताक द्वि-आयामी आधार बतबैत अछि।

प्रश्न 4639. मधुपजीक कवितामय चिट्ठी ककरा संबोधित अछि?
क. चन्द्रकान्त मिश्र केँ
ख. आर्य केँ
ग. डटकेजलपान केँ
घ. प्रकाशचन्द्र झा केँ
उत्तर: क. चन्द्रकान्त मिश्र केँ
व्याख्या: पत्र-संरचना पारिवारिक-आशीष आ कवितामय संवादक उदाहरण अछि।

प्रश्न 4640. कवितामय चिट्ठीमे शुभाशीर्वाद आ परिवार-चिन्ता किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. कविता निजी पत्राचार केँ सांस्कृतिक-साहित्यिक रूप दैत अछि
ख. क्योंकि ई परीक्षा-प्रपत्र अछि
ग. क्योंकि ई होटल हिसाब अछि
घ. क्योंकि ई राजकीय आदेश अछि
उत्तर: क. कविता निजी पत्राचार केँ सांस्कृतिक-साहित्यिक रूप दैत अछि
व्याख्या: पत्र मे आशीष, कुशल-क्षेम आ कुटुम्बिक चिन्ता पद्यरूपमे अछि।

प्रश्न 4641. महाप्रकाशक परिचयमे पिहल कविता-संकलन कोन कहल गेल?
क. कविता सम्भवा
ख. माहुर
ग. डटके जलपान
घ. नो एंट्री
उत्तर: क. कविता सम्भवा
व्याख्या: संक्षिप्त परिचय महाप्रकाशक काव्य-प्रारम्भ रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 4642. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा पर आरम्भिक टिप्पणी की कहैत अछि?
क. ओ कथा-कला मे अन्वेषण करैत अलग विशिष्ट साँचा बना लेलनि
ख. ओ केवल अरीपन बनबैत छथि
ग. ओ कथा सँ असंबद्ध छथि
घ. ओ नाटक मात्र लिखैत छथि
उत्तर: क. ओ कथा-कला मे अन्वेषण करैत अलग विशिष्ट साँचा बना लेलनि
व्याख्या: टिप्पणी सुभाषक यात्रा, भटकाव, अनुभव आ तीक्ष्ण दृष्टिक रेखा खींचैत अछि।

खण्ड ४७० : विदेह-सदेह १ — महेन्द्र कुमार मिश्र: आतंकक उत्पत्ति आ इतिहास

प्रश्न 4643. महेन्द्र कुमार मिश्रक लेखक शीर्ष तर्क की अछि?
क. आतंकवाद महत्वाकांक्षाक खेतमे अंकुरित होइत अछि
ख. आतंक केवल प्राकृतिक वर्षा अछि
ग. आतंकक कोनो कारण नहि
घ. आतंक सदा लोकगीत अछि
उत्तर: क. आतंकवाद महत्वाकांक्षाक खेतमे अंकुरित होइत अछि
व्याख्या: लेख आतंकवाद कैं कारणहीन घटना नहि, महत्वाकांक्षा, दमन आ हिंसाक उपज मानैत अछि।

प्रश्न 4644. लेखक आतंक कैं प्राणी-जगतमे कोन कालसँ देखैत छथि?
क. आदिम प्रभात सँ
ख. केवल आधुनिक युगसँ
ग. केवल इंटरनेट युगसँ
घ. केवल चुनावक बाद
उत्तर: क. आदिम प्रभात सँ
व्याख्या: लेख आतंकक इतिहास बहुत पुरान मानैत अछि, मुदा रूप बदलैत रहैत अछि।

प्रश्न 4645. देवासुर संग्रामक उल्लेख किएक अछि?
क. पुराणक प्रसंगसँ आतंक-श्रृंखलाक महागाथा देखाबय लेल
ख. कथा सजावट लेल मात्र
ग. गजल संरचना लेल
घ. होटल विवाद लेल
उत्तर: क. पुराणक प्रसंगसँ आतंक-श्रृंखलाक महागाथा देखाबय लेल
व्याख्या: लेख पुराणक युद्धकथासभ कैं आतंक-प्रवृत्तिक प्राचीन रूप रूपैं पढ़ैत अछि।

प्रश्न 4646. महिषासुर प्रसंगमे देवतागण कोन उपाय दिस जाइत छथि?
क. शक्ति-आराधना आ नारी द्वारा छल-प्रपञ्चक रचना
ख. बाजार खोलब
ग. होटल भोजन
घ. गजल-पाठ
उत्तर: क. शक्ति-आराधना आ नारी द्वारा छल-प्रपञ्चक रचना
व्याख्या: लेख शक्ति-प्रसंग कैं आतंकक विरुद्ध रणनीति रूपैं लैत अछि।

प्रश्न 4647. रावणक आतंक समापनक प्रसंगमे रामक कौन भूमिका बतायल गेल?
क. अनेक जातिक सहयोग लऽ समाज कैं मुक्ति देलनि
ख. असगरे मौन रहलाह
ग. कथा नहि अछि
घ. विज्ञान प्रयोग केलनि
उत्तर: क. अनेक जातिक सहयोग लऽ समाज कैं मुक्ति देलनि
व्याख्या: लेख सामूहिक सहयोग कैं आतंक-विरोधक ऐतिहासिक सूत्र मानैत अछि।

प्रश्न 4648. कंसक उन्मादक बाद कृष्णक आगमन कोन संकेत अछि?
क. सामान्य गोपाल रूपमे प्रतिरोधक उदय
ख. राजकीय तानाशाहीक विजय
ग. कृषि-विनाश
घ. भोजन-विवाद
उत्तर: क. सामान्य गोपाल रूपमे प्रतिरोधक उदय
व्याख्या: लेख सत्तात्मक आतंकक विरुद्ध लोक-आधारित शक्ति देखबैत अछि।

प्रश्न 4649. लेख “बिनु बीज वृक्षक अंकुरण नहि” कहि आतंकबारे की बुझबैत अछि?
क. आतंकक भी कारण-बीज रहैत अछि
ख. आतंक अचानक बिना कारण
ग. आतंक केवल मौसम
घ. आतंक केवल कला
उत्तर: क. आतंकक भी कारण-बीज रहैत अछि
व्याख्या: कारण-बीजक खोज लेखनक विश्लेषणात्मक पद्धति अछि।

प्रश्न 4650. सद्दाम, ओसामा बिन लादेन आ भिंडरवाला उदाहरण किएक देल गेल?
क. पालन-पोषण आ शक्ति-राजनीतिक उल्टा परिणाम देखाबय लेल
ख. भक्ति-काव्य लेल
ग. अरीपन लेल
घ. बाल-हास्य लेल
उत्तर: क. पालन-पोषण आ शक्ति-राजनीतिक उल्टा परिणाम देखाबय लेल
व्याख्या: लेख जकरा सत्ता पोसैत अछि, से पछिला काल आतंक रूपेँ पलटि सकैत अछि।

प्रश्न 4651. हिंसा आ प्रतिहिंसाक सम्बन्ध लेखक कोना देखैत छथि?
क. आतंकवादी हिंसा दोसर पक्ष केँ सेहो हिंसक काज करय बाध्य करैत अछि
ख. हिंसा सदैव शान्ति देत
ग. प्रतिहिंसा नहि होइत
घ. हिंसा केवल कविता अछि
उत्तर: क. आतंकवादी हिंसा दोसर पक्ष केँ सेहो हिंसक काज करय बाध्य करैत अछि
व्याख्या: लेख आतंकक चक्राकार विस्तार पर जोर दैत अछि।

प्रश्न 4652. एहि खण्डक मूल निष्कर्ष की अछि?
क. आतंकवाद इतिहास, महत्वाकांक्षा, अन्याय आ प्रतिहिंसाक संयुक्त परिणाम अछि
ख. आतंक व्यंग्य मात्र
ग. आतंक बिना समाजक
घ. आतंक केवल लोकगीत
उत्तर: क. आतंकवाद इतिहास, महत्वाकांक्षा, अन्याय आ प्रतिहिंसाक संयुक्त परिणाम अछि
व्याख्या: लेख नैतिक, ऐतिहासिक आ राजनीतिक स्तर पर आतंकक कारण ताकैत अछि।

खण्ड ४७१ : विदेह-सदेह १ — महेन्द्र कुमार मिश्र: परिभाषा, नेपाल आ मधेश

प्रश्न 4653. लेखक “आतंक” शब्दक अर्थ कोन रूपमे दैत छथि?
क. हैजा-जकाँ प्रकोप वा कठोर अत्याचारसँ उपजल भय
ख. केवल गीतक लय
ग. कृषि बीज
घ. अरीपन रेखा
उत्तर: क. हैजा-जकाँ प्रकोप वा कठोर अत्याचारसँ उपजल भय
व्याख्या: आतंक मूलतः भय-सृजनक स्थिति अछि।

प्रश्न 4654. आतंकमे “वाद” जोड़ला पर अर्थ कोना बदलैत अछि?
क. डेरा-धमका कऽ हिंसात्मक विद्रोहसँ प्रभुत्व स्थापित करबाक विचार-सिद्धान्त
ख. भक्ति मात्र
ग. नाटकक मंच
घ. खेल प्रतियोगिता
उत्तर: क. डेरा-धमका कऽ हिंसात्मक विद्रोहसँ प्रभुत्व स्थापित करबाक विचार-सिद्धान्त
व्याख्या: आतंकवाद व्यवस्थित हिंसक विचारधारा रूपेँ परिभाषित भेल।

प्रश्न 4655. दुराचारी कर्मसभ रूपमे लेखक की-की गिनबैत छथि?
क. लूट, आगजनी, बलात्कार, समाजमे उत्पाद
ख. सत्कर्म, दान, तप
ग. गजल, गीत, कथा
घ. अरिपन, चित्र, रंग
उत्तर: क. लूट, आगजनी, बलात्कार, समाजमे उत्पाद
व्याख्या: लेख आतंकवादक नैतिक अधःपतन स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 4656. तानाशाहीबारे लेख कोन निर्णय दैत अछि?
क. जेकर होउ, नीक नहि मानल जाए
ख. तानाशाही सदैव श्रेष्ठ
ग. तानाशाही मोक्ष देत
घ. तानाशाही केवल कविता
उत्तर: क. जेकर होउ, नीक नहि मानल जाए
व्याख्या: बुश वा मुशर्रफक उदाहरण द्वारा लेख दादागिरीक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 4657. कुन शासन-प्रवृत्ति एक दिन विनाश पबैत अछि?
क. कुनो राष्ट्रक तानाशाही आ दादागिरी
ख. सामूहिक सेवा
ग. भक्ति-साधना
घ. सत्कर्म
उत्तर: क. कुनो राष्ट्रक तानाशाही आ दादागिरी
व्याख्या: लेख सत्ता-अहंकारक अवश्यंभावी पतन देखबैत अछि।

प्रश्न 4658. नेपाल प्रसंगमे माओवादी आन्दोलनक बादो समस्या किएक शेष कहल गेल?
क. क्योंकि सब पक्षकेँ समेटबामे असफलता आ पीड़ित वर्गक अविश्वास रहल
ख. क्योंकि कविता नहि छपल
ग. क्योंकि होटल बन्द छल
घ. क्योंकि अरीपन न भेल
उत्तर: क. क्योंकि सब पक्षकेँ समेटबामे असफलता आ पीड़ित वर्गक अविश्वास रहल
व्याख्या: लेख राजनीतिक क्रान्ति बाद समावेशनक असफलता पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 4659. सामाजिक रूपान्तरण टिकाउ कखन होइत कहल गेल?
क. हथियार नहि, विचारसँ कएल जाए तखन
ख. तोप मात्रसँ
ग. भय मात्रसँ
घ. अफवाह मात्रसँ
उत्तर: क. हथियार नहि, विचारसँ कएल जाए तखन
व्याख्या: लेख हिंसक परिवर्तनक बजाय वैचारिक-सामाजिक परिवर्तनक पक्षमे अछि।

प्रश्न 4660. सहिष्णुता कैँ लेखक कोन रूपमे देखैत छथि?
क. संस्कारक उदात्तीकरण
ख. कमजोरी मात्र
ग. हिंसाक कारण
घ. भाषा-विनाश
उत्तर: क. संस्कारक उदात्तीकरण
व्याख्या: लेख सुसंस्कृत समाजक आधार सहिष्णुता मानैत अछि।

प्रश्न 4661. मधेश आन्दोलनसँ प्राप्त अधिकारक सन्दर्भमे नव संविधान ककरा सक्षम करबाक चाही?
क. समावेशी, बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक अधिकारयुक्त लोकतन्त्र
ख. एकभाषी दमन
ग. दादागिरी
घ. नया तानाशाह
उत्तर: क. समावेशी, बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक अधिकारयुक्त लोकतन्त्र
व्याख्या: लेख संविधान कैँ मधेशी, दलित, अल्पसंख्यक, आदिवासी-जनजाति सभक समुन्नति संग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4662. महेन्द्र कुमार मिश्रक लेखक सामाजिक संदेश की अछि?
क. अन्याय-दमन हटाओल बिना विद्रोह आ आतंकक चक्र नहि टूटत
ख. आतंक कैँ पूजा करू
ग. दमन बढ़ाउ
घ. संवाद छोड़ू
उत्तर: क. अन्याय-दमन हटाओल बिना विद्रोह आ आतंकक चक्र नहि टूटत
व्याख्या: लेख समाधानक केन्द्र न्याय, समावेशन आ विचारमूलक परिवर्तनमे राखैत अछि।

खण्ड ४७२ : विदेह-सदेह १ — महेन्द्र मलंगिया: रंगकर्मी, शोधक आ रचनाकार

प्रश्न 4663. महेन्द्र मलंगिया के रूपमे परिचय मुख्यतः की अछि?
क. नाटककार, रंग निर्देशक, मैलोरंगक संस्थापक अध्यक्ष
ख. होटल मालिक
ग. आर्यक पिता
घ. अरीपन कलाकार मात्र
उत्तर: क. नाटककार, रंग निर्देशक, मैलोरंगक संस्थापक अध्यक्ष
व्याख्या: परिचय हुनका मैथिली रंगकर्मक त्रि-आयामी व्यक्तित्व रूपेँ रखैत अछि।

प्रश्न 4664. “थ्री-इन-वन” उपाधि ककरा लेल प्रयुक्त भाव अछि?
क. लेखक, निर्देशक आ संस्थापक/संगठक तीनू रूप एक व्यक्तित्वमे
ख. तीन बोतल कोका-कोला
ग. तीन आयाम प्रयोग
घ. तीन परीक्षार्थी
उत्तर: क. लेखक, निर्देशक आ संस्थापक/संगठक तीनू रूप एक व्यक्तित्वमे
व्याख्या: मलंगियाजी एकहि समयमे रचना, निर्देशन आ संस्थागत काम करैत छथि।

प्रश्न 4665. मलंगियाजी लोक-साहित्य पर की कएल कहल गेल?
क. गंभीर शोध-आलेख
ख. व्यंग्य मात्र
ग. होटल हिसाब
घ. कम्प्यूटर तालिका
उत्तर: क. गंभीर शोध-आलेख
व्याख्या: रंगकर्म संग लोक-अध्ययन हुनकर कार्यक महत्त्वपूर्ण आधार अछि।

प्रश्न 4666. मलंगियाजीक प्रकाशित/प्रसारित रचना-विस्तार कोन श्रेणीसभमे अछि?
क. नाटक, एकांकी, नुक्कड़, रेडियो नाटक
ख. केवल गजल
ग. केवल आत्मकथा
घ. केवल चित्रकला
उत्तर: क. नाटक, एकांकी, नुक्कड़, रेडियो नाटक
व्याख्या: परिचय हुनकर रंग-रचना के कई माध्यममे फैलल बतबैत अछि।

प्रश्न 4667. मलंगियाजी वर्तमानमे कोन प्राचीन मैथिली ग्रंथ पर शोध करैत बताओल गेलाह?

क. वर्णरत्नाकर

ख. माहुर

ग. डटके जलपान

घ. संतोष

उत्तर: क. वर्णरत्नाकर

व्याख्या: ज्योतिरीश्वरक ग्रंथ पर शोध हुनकर इतिहास-सचेत रंग-विचार देखबैत अछि।

प्रश्न 4668. मलंगियाजी कोन-कोन भाषाक जानकार कहल गेलाह?

क. मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली

ख. केवल मैथिली

ग. केवल ओड़िया

घ. केवल फारसी

उत्तर: क. मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली

व्याख्या: बहुभाषिकता रंग-शिक्षण, शोध आ लेखनक विस्तार लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 4669. हुनकर “ओकरा आँगनक बारहमासा” आ “काठक लोक”क शैक्षिक महत्व की अछि?

क. विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रममे सम्मिलित

ख. होटल मेन्यू

ग. अरीपन तालिका

घ. भोजन-विवाद

उत्तर: क. विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रममे सम्मिलित

व्याख्या: पाठ्यक्रम-सम्मिलन रंग-साहित्यक संस्थागत मान्यता देखबैत अछि।

प्रश्न 4670. मलंगियाजीक रचनासूचीमे “राजा सलहेस” आ “कमला कातक राम” सन शीर्षक की सूचित करैत अछि?

क. लोक-इतिहास आ मिथिला-संस्कृति सँ जुड़ल नाट्य-रुचि

ख. केवल विज्ञान-कथा

ग. केवल निजी डायरी

घ. केवल परीक्षाकथा

उत्तर: क. लोक-इतिहास आ मिथिला-संस्कृति सँ जुड़ल नाट्य-रुचि

व्याख्या: हुनकर नाटक मिथिलाक लोक-संसार आ सामाजिक प्रश्न पर आधारित अछि।

प्रश्न 4671. रेडियो नाटक आ नुक्कड़ नाटकक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. मंचसँ बाहर जनसंचार माध्यममे सेहो मैथिली रंगकर्मक विस्तार

ख. भक्ति रस मात्र

ग. चित्र-विक्रय

घ. व्यक्तिगत चिट्ठी

उत्तर: क. मंचसँ बाहर जनसंचार माध्यममे सेहो मैथिली रंगकर्मक विस्तार

व्याख्या: मलंगियाजी रंगकर्म कैं सभागारसँ सड़क आ रेडियो धरि लऽ जाइत छथि।

प्रश्न 4672. मलंगियाजीक समग्र परिचयक साहित्यिक निष्कर्ष की अछि?

क. मैथिली रंगमंचमे रचना, निर्देशन, शोध, पाठ्यक्रम आ संस्थान-निर्माणक संयुक्त योगदान

ख. एकमात्र हास्य पात्र

ग. केवल किरायादार

घ. केवल परीक्षार्थी

उत्तर: क. मैथिली रंगमंचमे रचना, निर्देशन, शोध, पाठ्यक्रम आ संस्थान-निर्माणक संयुक्त योगदान

व्याख्या: परिचय हुनका आधुनिक मैथिली रंग-आन्दोलनक केन्द्रीय व्यक्तित्व बनबैत अछि।

खण्ड ४७३ : विदेह-सदेह १ — प्रकाश चन्द्र झा: मलंगियाक अभिनेता-खोज

प्रश्न 4673. मलंगियाजी १९७५ मे कोन नाटक लिखने रहथि?
क. जुआयल कनकनी
ख. पहरराति
ग. आर्य
घ. डटके जलपान
उत्तर: क. जुआयल कनकनी
व्याख्या: लेख प्रकाश चन्द्र झा पर बात आरम्भ करैत “जुआयल कनकनी”क प्रसंग लैत अछि।

प्रश्न 4674. जीवकांतजी “जुआयल कनकनी” पर की टिप्पणी केने छलाह?
क. मिथिलांचलमे एखन ओहन अभिनेता नहि जन्मल जे एकर तेज सम्हारि सकत
ख. नाटक असफल अछि
ग. ई केवल गीत अछि
घ. एहि मे संवाद नहि
उत्तर: क. मिथिलांचलमे एखन ओहन अभिनेता नहि जन्मल जे एकर तेज सम्हारि सकत
व्याख्या: टिप्पणी नाटकक अभिनय-चुनौती कैं रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 4675. मलंगियाजी अपनहुँ की अनुभव केने छलाह?
क. एहि नाटकक अनुरूप अभिनेता ताकबाक आवश्यकता
ख. नाटक छोड़बाक
ग. चित्रकला करबाक
घ. होटल खोलबाक
उत्तर: क. एहि नाटकक अनुरूप अभिनेता ताकबाक आवश्यकता
व्याख्या: लेखकक दृष्टि मंचन-योग्य अभिनेता-कौशल पर टिकल अछि।

प्रश्न 4676. मिथिलांचलमे अभिनेता सभक समस्या कोना बतायल गेल?
क. अभिनेता अछि, मुदा जीवन अल्पकालीन; नौकरी भेटल कि रंगकर्म छोड़ि दैत अछि
ख. कियो अभिनेता नहि
ग. सभ आजीवन रहैत अछि
घ. रंगमंच पूर्ण रोजगार दैत अछि
उत्तर: क. अभिनेता अछि, मुदा जीवन अल्पकालीन; नौकरी भेटल कि रंगकर्म छोड़ि दैत अछि
व्याख्या: रोजी-रोटी आ अभिभावकीय दबाव मैथिली रंगमंचक चुनौती अछि।

प्रश्न 4677. अभिभावक रंगमंचसँ जुड़ल बेटा किएक नहि चाहैत?
क. मैथिली रंगमंच रोजी-रोटी देबाक सामर्थ्य कम रखैत अछि
ख. रंगमंच बहुत महँग अछि
ग. गाममे मंच नहि
घ. गीत नहि अछि
उत्तर: क. मैथिली रंगमंच रोजी-रोटी देबाक सामर्थ्य कम रखैत अछि
व्याख्या: रंगकर्मक आर्थिक असुरक्षा प्रतिभा रोकैत अछि।

प्रश्न 4678. प्रकाश चन्द्र झा पहिने अपन परिचयमे घर कतय कहलनि?
क. घोघौर
ख. पचाढ़ी
ग. गोविन्दपुर
घ. हैंठी-बाली
उत्तर: क. घोघौर
व्याख्या: लेख प्रकाशक रंग-प्रवाहक मूल एक छोट गामसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4679. ओ पढ़ाइ कतय करैत छलाह?
क. आर.के. कॉलेज, मधुबनी
ख. सासुरक ऊपरका महला
ग. जटिंगा गाम
घ. पचाढ़ी संस्कृत महाविद्यालय
उत्तर: क. आर.के. कॉलेज, मधुबनी
व्याख्या: प्रकाशक रंग-संपर्क विद्यार्थी अवस्थासँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4680. प्रकाश कोन संस्था सँ नाटकसँ जुड़ल बतौलनि?
क. मधुबनी इप्टा
ख. साहित्य अकादेमी
ग. होटल संघ
घ. अरीपन विद्यालय
उत्तर: क. मधुबनी इप्टा
व्याख्या: मधुबनी इप्टा ओकर रंग-आरम्भक ठोस संस्थागत आधार अछि।

प्रश्न 4681. बिजुलिया भौजीक पचास शोमे प्रकाशक सहभागिता लेखमे किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. नुक्कड़ नाटक लोकप्रिय बनेबाक लगनक प्रमाण
ख. भोजन-क्षमताक प्रमाण
ग. गजल-कला
घ. वैदिक कर्मक प्रमाण
उत्तर: क. नुक्कड़ नाटक लोकप्रिय बनेबाक लगनक प्रमाण
व्याख्या: लेख प्रकाशक निरन्तर जनरंगकर्मक सूचक रूपेँ एहि तथ्य केँ रखैत अछि।

प्रश्न 4682. एहि भागक मूल प्रश्न की अछि?
क. प्रकाशमे ओ अभिनेता भेटल की जे कठिन मैथिली नाटकक तेज सम्हारि सकै?
ख. ओ गजल लिखैत छथि की
ग. ओ डटके खाइत छथि की
घ. ओ अरिपन बनबैत छथि की
उत्तर: क. प्रकाशमे ओ अभिनेता भेटल की जे कठिन मैथिली नाटकक तेज सम्हारि सकै?
व्याख्या: लेख प्रकाश चन्द्र केँ एक संभावित उत्तर रूपेँ सामने अनैत अछि।

खण्ड ४७४ : विदेह-सदेह १ — प्रकाश चन्द्र झा: मंच, भूमिका आ अभिनय-कौशल

प्रश्न 4683. प्रकाश चन्द्र झा केँ मलंगियाजी मंच पर लगभग कोन वर्षक अवसर पर देखल बतबैत छथि?
क. १९९५ ई. आसपास
ख. १९४६ ई.
ग. २०६३ साल
घ. १९०६ ई.
उत्तर: क. १९९५ ई. आसपास
व्याख्या: मिथिला सांस्कृतिक पर्व समारोहमे मंच-साक्षात्कारक स्मृति आयल अछि।

प्रश्न 4684. मलंगियाजीक कोन नाटक नगर भवन मधुबनीमे मंचित भेल छल जकरा मे प्रकाश दरोगाक भूमिका कयलनि?
क. ओरिजनल काम
ख. आर्य
ग. डटके जलपान
घ. अनुरोध
उत्तर: क. ओरिजनल काम
व्याख्या: एहि भूमिका द्वारा प्रकाश प्रशंसित भेलाह।

प्रश्न 4685. दरोगाक भूमिकाक प्रशंसा ककरा मे उल्लेखित भेल?
क. दैनिक जागरण आ दैनिक हिन्दुस्तान
ख. भगवद्गीता
ग. देवी भागवत
घ. ग्रामदेव थान
उत्तर: क. दैनिक जागरण आ दैनिक हिन्दुस्तान
व्याख्या: समाचारपत्रीय उल्लेख प्रकाशक अभिनयक सार्वजनिक स्वीकृति देखबैत अछि।

प्रश्न 4686. “गाम नहि सुतय” मे प्रकाश कोन प्रकारक भूमिका कयलनि?
क. गामक तीन बिगड़ल युवकमे एक
ख. महाराज
ग. डॉक्टर
घ. साधु
उत्तर: क. गामक तीन बिगड़ल युवकमे एक
व्याख्या: पहिल दू अभिनयक आधार पर प्रकाश मलंगियाजीक स्मृतिमे बसि गेलाह।

प्रश्न 4687. “हमरो जे साम भैया” मे प्रकाश कोन भूमिका कयलनि?
क. चारुवक्य
ख. डटकेजलपान
ग. भिखमंगनी
घ. आर्य
उत्तर: क. चारुवक्य
व्याख्या: चारुवक्यक अभिनय लेखकक विशेष मुग्धता जगबैत अछि।

प्रश्न 4688. चारुवक्यक भूमिकाकेँ देखि मलंगियाजी केँ कोन अपसोस भेल?
क. जीवकांतजी एतय रहितथि तँ अपन पुरान बात घुरा लितथि
ख. प्रकाश नहि आयल
ग. नाटक अधूरा रहल
घ. होटल बन्द छल
उत्तर: क. जीवकांतजी एतय रहितथि तँ अपन पुरान बात घुरा लितथि
व्याख्या: प्रकाशक अभिनय नाटकक तेज सम्हारि सकनिहार अभिनेता रूपेँ देखायल गेल।

प्रश्न 4689. चारुवक्यक अभिनयबारे मलंगियाजीक निर्णय की छल?
क. एहन भूमिका दोसर सहज नहि कए सकैत
ख. ककरो स्मरण नहि
ग. भूमिका व्यर्थ छल
घ. अभिनय बेजान छल
उत्तर: क. एहन भूमिका दोसर सहज नहि कए सकैत
व्याख्या: लेख प्रकाशक सृजनात्मक अभिनय प्रतिभाक उच्च मूल्यांकन करैत अछि।

प्रश्न 4690. निर्देशकक कठपुतली होएबाक तर्क पर लेखक कोन प्रश्न उठबैत छथि?
क. एकहि भूमिका दू अभिनेता कए तँ एक नीक आ एक बेजाय किएक?
ख. मंचक रंग किएक लाल
ग. दर्शक कतय बैसल
घ. पृष्ठ कोन छल
उत्तर: क. एकहि भूमिका दू अभिनेता कए तँ एक नीक आ एक बेजाय किएक?
व्याख्या: लेख अभिनेता-प्रतिभाक स्वतंत्र सृजनात्मकता सिद्ध करैत अछि।

प्रश्न 4691. प्रकाशक अभिनयक मूल गुण लेखक की मानैत छथि?
क. सृजनात्मक प्रतिभा
ख. केवल निर्देशकक नकल
ग. केवल पोशाक
घ. केवल ध्वनि
उत्तर: क. सृजनात्मक प्रतिभा
व्याख्या: प्रकाश भूमिकाकेँ अपन सृजनशीलता सँ विशिष्ट करैत छथि।

प्रश्न 4692. दुलहा पागल भऽ गैलै प्रसंगमे प्रकाशक अभिनयक सूचना ककरा सँ पुष्ट भेल?
क. दीपनारायण सिंहक बातसँ
ख. आर्यक माएसँ
ग. होटल मालिकसँ
घ. विभूतिक कवितासँ
उत्तर: क. दीपनारायण सिंहक बातसँ
व्याख्या: यद्यपि लेखक नाटक नहि देखलनि, दूसर विश्वसनीय प्रतिक्रिया मिलल।

खण्ड ४७५ : विदेह-सदेह १ — प्रकाश चन्द्र झा: रंगप्रवाह, प्रशिक्षण आ प्रभाव

प्रश्न 4693. जनकपुरधामक २००५ नाट्य समारोहमे प्रकाश कोन भूमिकामे चर्चित रहल?
क. गोरखधंधा नाटकक सूत्रधार
ख. डॉक्टर
ग. साहेब रामदास
घ. डटकेजलपान
उत्तर: क. गोरखधंधा नाटकक सूत्रधार
व्याख्या: काश्यप कमलक नाटकमे सूत्रधार रूपेँ प्रकाशक अभिनय चर्चित भेल।

प्रश्न 4694. लेखकक अनुसार नव पीढ़ीक रंगकर्मीक भीड़मे प्रकाश किएक ध्यान खींचैत अछि?
क. अपन रंग-प्रवाह आ सरवरंग अभियानक प्रभाव कारण
ख. केवल नाम कारण
ग. भोजन कारण
घ. अरीपन कारण
उत्तर: क. अपन रंग-प्रवाह आ सरवरंग अभियानक प्रभाव कारण
व्याख्या: लेख प्रकाशक कार्यकेँ व्यक्तिगत अभिनयसँ आगू संस्थात्मक प्रभाव धरि देखैत अछि।

प्रश्न 4695. प्रकाशक रंग-प्रवाहक शुरुआत कतयसँ कहल गेल?
क. घोघौर सन छोट गामसँ
ख. अमेरिका
ग. जगन्नाथपुरी
घ. सासुर महला
उत्तर: क. घोघौर सन छोट गामसँ
व्याख्या: छोट गामसँ रंग-यात्रा ओकर संघर्ष आ विस्तारक आधार अछि।

प्रश्न 4696. मधुबनी नगर इप्टामे प्रकाशक पाँच सालक कार्यकाल केहन कहल गेल?
क. स्वर्णकाल
ख. पूर्ण विफल
ग. अज्ञात
घ. केवल छात्रकाल
उत्तर: क. स्वर्णकाल
व्याख्या: लेख मधुबनी रंग-परिदृश्य पर प्रकाशक संगठनात्मक असर रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 4697. प्रकाश विश्वविद्यालय स्तर पर काहिमे प्रथम सम्मान पओलनि?
क. अभिनयमे
ख. चित्रकलामे
ग. भोजनमे
घ. कृषिमे
उत्तर: क. अभिनयमे
व्याख्या: व्यक्तिगत अभिनय-कौशलक शैक्षिक/प्रतियोगितात्मक मान्यता मिलल।

प्रश्न 4698. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयक चयन-प्रक्रियाबारे प्रकाशक स्थिति की बतायल गेल?
क. अन्तिम प्रक्रिया धरि पहुँचलाह
ख. कहियो प्रयास नहि
ग. पहिने दिन हटि गेलाह
घ. मात्र दर्शक रहलाह
उत्तर: क. अन्तिम प्रक्रिया धरि पहुँचलाह
व्याख्या: ई हुनकर रंग-प्रतिभाक राष्ट्रीय संभावना संकेत करैत अछि।

प्रश्न 4699. संगीत नाटक अकादेमी प्रशिक्षणक बाद प्रकाश कोन भूमिका निभौलनि?
क. कार्यशाला सहायक रूपेँ कतेको राज्यमे जिम्मेदारी
ख. होटल ग्राहक
ग. अरीपन पूजारी
घ. भक्तिकवि
उत्तर: क. कार्यशाला सहायक रूपेँ कतेको राज्यमे जिम्मेदारी
व्याख्या: प्रशिक्षणक बाद ओ रंग-शिक्षा प्रसारमे भाग लेलनि।

प्रश्न 4700. रंग प्रसंग पत्रिकासँ प्रकाशक सम्बन्ध की अछि?
क. संपादन सहयोगी रूपमे महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी
ख. रसोइया
ग. किरायादार
घ. यात्री मात्र
उत्तर: क. संपादन सहयोगी रूपमे महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी
व्याख्या: राष्ट्रीय स्तरक रंगशोध-पत्रिका संग जुड़ाव हुनकर बौद्धिक रंगपक्ष देखबैत अछि।

प्रश्न 4701. मधुबनीमे प्रकाश द्वारा जराओल रंगदीपक परिणाम की बतायल गेल?
क. कतेको रंगकर्मी राष्ट्रीय प्रशिक्षण आ छात्रवृत्ति धरि पहुँचल
ख. गाम खाली भेल
ग. नाटक समाप्त भेल
घ. कृषि रुकल
उत्तर: क. कतेको रंगकर्मी राष्ट्रीय प्रशिक्षण आ छात्रवृत्ति धरि पहुँचल
व्याख्या: व्यक्तिगत रंगकर्म सामूहिक प्रशिक्षण-परंपरा बनल।

प्रश्न 4702. एहि लेखमे प्रकाश चन्द्र झाक मूल्यांकनक सार की अछि?
क. अभिनेता, प्रेरक, प्रशिक्षक-सूत्र आ रंग-संगठक रूपेँ बहुआयामी योगदान
ख. सिर्फ एक भूमिका
ग. केवल दर्शक
घ. केवल आलोचक
उत्तर: क. अभिनेता, प्रेरक, प्रशिक्षक-सूत्र आ रंग-संगठक रूपेँ बहुआयामी योगदान
व्याख्या: लेख प्रकाश कैँ नव मैथिली रंगकर्मक सक्रिय ऊर्जा रूपेँ देखैत अछि।

खण्ड ४७६ : विदेह-सदेह १ — महेश मिश्र “विभूति”: “पन्थीसँ”, “सन्तोष” आ ढाढ़स

प्रश्न 4703. “पन्थीसँ” कवितामे पन्थीकेँ की सलाह देल गेल?

क. भ्रमित नहि हो, सबल पग राखू, मन पर काबू राखू

ख. मार्ग छोड़ू

ग. केवल धन खोजू

घ. कविता न पढ़ू

उत्तर: क. भ्रमित नहि हो, सबल पग राखू, मन पर काबू राखू

व्याख्या: कविता जीवन-यात्राक नैतिक-साहसिक मार्गदर्शन दैत अछि।

प्रश्न 4704. “पन्थीसँ” मे स्नेह-सलिलक बाढ़ आबि गेल तखन की अपेक्षा अछि?

क. सबल पग राखब

ख. नौका डुबायब

ग. बात बंद करब

घ. मार्ग बिसरब

उत्तर: क. सबल पग राखब

व्याख्या: स्नेह, आकर्षण वा भाव-बाढ़मे धैर्य राखब कविताक आग्रह अछि।

प्रश्न 4705. दृढ़-संकल्प पतवार पकड़बाक बिम्ब की देखबैत अछि?

क. जीवन-नावकेँ नियंत्रणमे राखबाक आत्मबल

ख. भोजन-विवाद

ग. अरीपन रेखा

घ. नाटक मंच

उत्तर: क. जीवन-नावकेँ नियंत्रणमे राखबाक आत्मबल

व्याख्या: भवसागर, नौका आ पतवार जीवन-संघर्षक पारंपरिक रूपक अछि।

प्रश्न 4706. “सन्तोष” कविताक मूल नैतिक सूत्र की अछि?

क. सत्कर्म, संतोष आ मस्तक ऊँचा राखब

ख. लोभ आ झगड़ा

ग. दमन आ भय

घ. मात्र मनोरंजन

उत्तर: क. सत्कर्म, संतोष आ मस्तक ऊँचा राखब

व्याख्या: कविता धनसंचयक बजाय बेदाग कर्तव्य आ संतोष पर बल दैत अछि।

प्रश्न 4707. “सन्तोष सरितमे नित नहाय” पंक्ति कोन भाव बनबैत अछि?

क. संतोष केँ स्नान-सदृश शुद्धिक अनुभव

ख. संतोष असंभव

ग. संतोष अपराध

घ. संतोष बाजार

उत्तर: क. संतोष केँ स्नान-सदृश शुद्धिक अनुभव

व्याख्या: संतोष आत्मशुद्धि आ लाजरहित जीवनक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 4708. “फकीरी” आ “अमीरी”क तुलना कवितामे ककर आधार पर अछि?

क. मस्तक ऊँच, सत्कीर्ति आ सद्भाव

ख. सोन-चाँदी मात्र

ग. राजकीय पद

घ. अधिक भोजन

उत्तर: क. मस्तक ऊँच, सत्कीर्ति आ सद्भाव

व्याख्या: विभूति धनक तुलना नैतिक गौरवसँ करैत छथि।

प्रश्न 4709. “उद्बोधन: ढाढ़स” मे निराशा पर कवि की कहैत छथि?
क. एक झटका पर निराश नहि हो, पुनः रणमे उतरू
ख. हारि चुप रहू
ग. कर्म छोड़ू
घ. दुनिया छोड़ू
उत्तर: क. एक झटका पर निराश नहि हो, पुनः रणमे उतरू
व्याख्या: कविता असफलताक बाद साहस पुनः सँचय करबाक आह्वान अछि।

प्रश्न 4710. चन्द्रमा रूपक “ढाढ़स” मे किएक अछि?
क. पूर्णता आ क्षय-उदयक क्रमसँ जीवनक उत्थान-पतन बुझाबय लेल
ख. समय बताबय लेल मात्र
ग. चित्रकला लेल
घ. होटल दिशा लेल
उत्तर: क. पूर्णता आ क्षय-उदयक क्रमसँ जीवनक उत्थान-पतन बुझाबय लेल
व्याख्या: चन्द्रमा बदलैत अछि, तैं हार स्थायी नहि — ई भाव अछि।

प्रश्न 4711. “उत्थान-पतन क्रम कर्मक” कथन जीवन-दृष्टि कोना बनबैत अछि?
क. परिवर्तन कर्म-क्रमक अंग अछि, धैर्य चाही
ख. सब स्थिर अछि
ग. कर्म निरर्थक
घ. निराशा श्रेष्ठ
उत्तर: क. परिवर्तन कर्म-क्रमक अंग अछि, धैर्य चाही
व्याख्या: कविता कर्म, धैर्य आ साहसक त्रिकोण रचैत अछि।

प्रश्न 4712. महेश मिश्र “विभूति”क एहि कवितासभक साझा स्वर की अछि?
क. नैतिकता, धैर्य, सद्भाव आ जीवन-साहस
ख. व्यंग्य मात्र
ग. हिंसा आ दमन
घ. नशा आ उपहास
उत्तर: क. नैतिकता, धैर्य, सद्भाव आ जीवन-साहस
व्याख्या: विभूतिक आरम्भिक कवितासभ उपदेशात्मक होइतहुँ संवेदनशील जीवन-मार्गदर्शन दैत अछि।

खण्ड ४७७ : विदेह-सदेह १ — “मधुर स्वप्न”, “अनुरोध” आ “बादरीक आगमन”

प्रश्न 4713. “मधुर स्वप्न” मे वक्ता केकरा सँ संवाद करैत अछि?
क. मधुर स्वप्न देखनिहार/सजनि-संवादी व्यक्तिसँ
ख. होटल मालिकसँ
ग. नवाबसँ
घ. नाटक निर्देशकसँ
उत्तर: क. मधुर स्वप्न देखनिहार/सजनि-संवादी व्यक्तिसँ
व्याख्या: कविता प्रेम, क्लेश आ मौन-वेदना पर संवाद रचैत अछि।

प्रश्न 4714. “मधुर स्वप्न” मे मौनक आलोचना कोन रूपमे अछि?
क. मौन रहला पर पर-वेदना के बुझत?
ख. मौन सदैव पूर्ण समाधान
ग. मौन भोजनक नियम
घ. मौन नाटकक मंच
उत्तर: क. मौन रहला पर पर-वेदना के बुझत?
व्याख्या: कवि वेदना व्यक्त करबाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 4715. “मधुर स्वप्नक ज्वलित ज्वाला” कथन की संकेत करैत अछि?
क. स्वप्न सुखद होइतहुँ क्लेशकारी बनि सकैत अछि
ख. स्वप्न सदा शान्त
ग. स्वप्न असंगत
घ. स्वप्न केवल हास्य
उत्तर: क. स्वप्न सुखद होइतहुँ क्लेशकारी बनि सकैत अछि
व्याख्या: कविता मधुर स्वप्न आ दुखद अनुभूतिक द्वंद्व पकड़ैत अछि।

प्रश्न 4716. “सिन्दूर-दानक गीत: अनुरोध” कोन संस्कार-क्षण पर केन्द्रित अछि?
क. विवाहमे सिन्दूरदान
ख. उपनयन
ग. जगन्नाथ यात्रा
घ. कोका-कोला प्रसंग
उत्तर: क. विवाहमे सिन्दूरदान
व्याख्या: गीत विवाहक शुभ कर्म, देव-आशीष आ नवजीवनक सृजन पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 4717. “प्रिय पाहुन सिन्दूर-दान करू” पंक्ति मे “पाहुन” शब्द ककरा सम्बोधित अछि?
क. वर कें
ख. होटल मालिक
ग. गुरुजी
घ. नवाब
उत्तर: क. वर कें
व्याख्या: मिथिला विवाह-परंपरामे वर पाहुन रूपेँ सम्मानित होइत छथि।

प्रश्न 4718. सिन्दूरदान गीतमे शंकर-गौरी मइयाक शुभाशीष किएक स्मरित अछि?
क. युगल जीवनक मंगलकामना लेल
ख. युद्ध जीतबाक लेल
ग. नाटक करबाक लेल
घ. गंगा स्नान लेल
उत्तर: क. युगल जीवनक मंगलकामना लेल
व्याख्या: गीत वैवाहिक कर्म कें दैवी आशीषसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4719. “बादरीक आगमन” मे बादरक दृश्य कोना अछि?
क. कारी-कारी बादर, बिजुरी, ठनका आ जन-डर
ख. नीरव धूप
ग. सूखा रेगिस्तान
घ. होटल भीड़
उत्तर: क. कारी-कारी बादर, बिजुरी, ठनका आ जन-डर
व्याख्या: कविता मेघ, बिजली आ लोक-प्रतिक्रियाक समवेत चित्र बनबैत अछि।

प्रश्न 4720. “बादरीक आगमन” मे लोकक भिन्न-भिन्न चिन्ता की देखबैत अछि?
क. ककरो माल हेरायल, ककरो प्रिय नहि आयल, ककरो पशु/फसलक चिन्ता
ख. सभ केवल नाचैत अछि
ग. ककरो भय नहि
घ. केवल कोका-कोला
उत्तर: क. ककरो माल हेरायल, ककरो प्रिय नहि आयल, ककरो पशु/फसलक चिन्ता
व्याख्या: बादरक आगमन लोकजीवनक सुख-दुख उघारैत अछि।

प्रश्न 4721. सूखल धरती “विभूतिमय” भेनाइ ककर प्रतीक अछि?
क. बरखा सँ जीवन आ हर्षक पुनरागमन
ख. मृत्यु यात्रा
ग. नशा
घ. रंगमंच
उत्तर: क. बरखा सँ जीवन आ हर्षक पुनरागमन
व्याख्या: जल-वृष्टि तृषित भूमिकेँ आनंद देत अछि।

प्रश्न 4722. एहि कवितासभक सामूहिक विशेषता की अछि?
क. संस्कार, प्रेम-वेदना, प्रकृति आ लोक-भावक मिलाप
ख. केवल राजनीतिक निबंध
ग. केवल विज्ञान कथा
घ. केवल अरीपन-विवरण
उत्तर: क. संस्कार, प्रेम-वेदना, प्रकृति आ लोक-भावक मिलाप
व्याख्या: विभूतिक कवितामे जीवन-रसक अनेक रूप एक संग उपस्थित अछि।

खण्ड ४७८ : विदेह-सदेह १ — “जगक प्रमाण”, युवा-उद्बोधन आ वेदना

प्रश्न 4723. “जगक प्रमाण” मे डोलीक बिम्ब कोन सत्यक संकेत अछि?
क. मृत्यु आ जीवनक अनिवार्य गमन
ख. विवाह-हास्य मात्र
ग. भोजन व्यवस्था
घ. नाटक प्रवेश
उत्तर: क. मृत्यु आ जीवनक अनिवार्य गमन
व्याख्या: डोली उठि गेल आ नहि लौटब — मृत्यु-निश्चयक लोक-बिम्ब अछि।

प्रश्न 4724. “श्वेत वस्त्रसँ मृतक सजाओल” पंक्ति कोन लोकरीति दिस इशारा करैत अछि?
क. मृत्यु-संस्कारक सामूहिक दृश्य
ख. रंगमंच पोशाक
ग. परीक्षाक वस्त्र
घ. देवी-अरीपन
उत्तर: क. मृत्यु-संस्कारक सामूहिक दृश्य
व्याख्या: कविता मृत्यु केँ जगक ध्रुव प्रमाण रूपेँ देखैत अछि।

प्रश्न 4725. “पुत्रार्थे भार्या” प्रसंग ककर भूमिका रेखांकित करैत अछि?
क. अग्निदान आ मृत्यु-संस्कारमे पुत्रक भूमिका
ख. होटल अग्रिम
ग. गजल संरचना
घ. चित्रकला अर्थ
उत्तर: क. अग्निदान आ मृत्यु-संस्कारमे पुत्रक भूमिका
व्याख्या: कविता पारंपरिक संस्कार-दृष्टि सँ पुत्रक स्थान बतबैत अछि।

प्रश्न 4726. “अपटुडेट बलिष्ठ युवकसँ” मे कवि कोन आग्रह करैत छथि?
क. किछु काज करू, सन्मार्ग पर चलू, माताक ऋण चुकाऊ
ख. आलस्य राखू
ग. भाषा छोड़ू
घ. कर्म टारू
उत्तर: क. किछु काज करू, सन्मार्ग पर चलू, माताक ऋण चुकाऊ
व्याख्या: कविता युवक केँ कर्म, मातृऋण आ समाज-सेवाक प्रति जगबैत अछि।

प्रश्न 4727. युवा-कवितामे “रतन धन” ककरा कहल गेल?
क. मानव जन्म/युवा-शक्ति कैँ
ख. सिर्फ पाई
ग. होटल भोजन
घ. चित्रक रंग
उत्तर: क. मानव जन्म/युवा-शक्ति कैँ
व्याख्या: कवि जीवन-शक्ति कैँ अनमोल संसाधन मानैत छथि।

प्रश्न 4728. “माता कराहति छथि” प्रसंग की प्रतीकात्मक अर्थ दैत अछि?
क. मातृभूमि/माँक पीड़ा प्रति युवकक दायित्व
ख. माताक उपेक्षा उचित
ग. कोनो ऋण नहि
घ. भोजनक मजाक
उत्तर: क. मातृभूमि/माँक पीड़ा प्रति युवकक दायित्व
व्याख्या: युवा उद्बोधन मातृऋणक नैतिक चेतना जगबैत अछि।

प्रश्न 4729. “अनुरोध” मे “की कहू? कहलो नैँ जाय”क पुनरावृत्ति की बनबैत अछि?
क. अकथ वेदनाक लयात्मक आवर्तन
ख. हास्य
ग. व्यापार
घ. रंगप्रशिक्षण
उत्तर: क. अकथ वेदनाक लयात्मक आवर्तन
व्याख्या: वाक्य-पुनरावृत्ति मनक असह्य वेदना गाढ़ करैत अछि।

प्रश्न 4730. “अनुरोध” मे व्यथित हृदय आ असमर्थ वाणी कोन मनःस्थिति देखबैत अछि?
क. गहन पीड़ा जे शब्दमे पूर्ण नहि उतरैत
ख. पूर्ण उदासीनता
ग. आर्थिक हिसाब
घ. आनन्दोत्सव
उत्तर: क. गहन पीड़ा जे शब्दमे पूर्ण नहि उतरैत
व्याख्या: कविता भावक तीव्रता आ भाषा-सीमा दुनू देखबैत अछि।

प्रश्न 4731. “मधु-मधुर मुस्कान”क अनुरोध ककरा प्रतिकार रूपमे अछि?
क. दारुण दुःख आ व्यथा कैँ कम करबाक
ख. नशा बढ़एबाक
ग. होटल बन्द करबाक
घ. नाटक छोड़बाक
उत्तर: क. दारुण दुःख आ व्यथा कैँ कम करबाक
व्याख्या: कवि मानिनी सँ करुण-स्नेहपूर्ण मुस्कानक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 4732. एहि खण्डक काव्य-सार की अछि?
क. मृत्यु-बोध, कर्म-आह्वान आ प्रेम-वेदना एकहि कवि-स्वरमे बन्हल अछि
ख. केवल विज्ञान
ग. केवल राजनैतिक प्रस्ताव
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. मृत्यु-बोध, कर्म-आह्वान आ प्रेम-वेदना एकहि कवि-स्वरमे बन्हल अछि
व्याख्या: विभूति जीवनक अंतिम सत्य, युवा-कर्तव्य आ निजी वेदना कैँ मिलबैत छथि।

खण्ड ४७९ : विदेह-सदेह १ — मैथिलीपुत्र प्रदीप: निष्काम कर्म आ वेद

प्रश्न 4733. मैथिलीपुत्र प्रदीपक निबंध कोन प्रश्नसँ आरम्भ होइत अछि?
क. मोक्षकामी लेल वैदिक कर्मक प्रयोजन की?
ख. होटलमे भोजन कतेक
ग. नाटकमे सूत्रधार के
घ. गजलमे तुक की
उत्तर: क. मोक्षकामी लेल वैदिक कर्मक प्रयोजन की?
व्याख्या: निबंध वैदिक कर्म आ मोक्ष-साधना बीचक सम्बन्ध पूछैत अछि।

प्रश्न 4734. यज्ञ-यागादि कर्मक फलश्रुति सामान्यतः की बतायल गेल?
क. स्वर्ग प्राप्ति
ख. राजनीतिक पद
ग. होटल लाभ
घ. चित्रकला पुरस्कार
उत्तर: क. स्वर्ग प्राप्ति
व्याख्या: निबंध स्वर्ग-कामना आ मोक्ष-कामना बीच भेद करैत अछि।

प्रश्न 4735. बृहदारण्यक उपनिषद् उद्धरणमे ब्राह्मणगण ब्रह्मकेँ चिन्हय लेल कोन साधन अपनबैत छथि?
क. वेदाध्ययन, निष्काम यज्ञ, दान आ तप
ख. नशा, उपहास, लूट
ग. चित्र, रंग, बाजार
घ. मंच, पोशाक, तालिका
उत्तर: क. वेदाध्ययन, निष्काम यज्ञ, दान आ तप
व्याख्या: उपनिषद्-वचन निबंधक वैदिक आधार अछि।

प्रश्न 4736. “अनाशकेन” पदक अर्थ निबंधमे कोना समझाओल गेल?
क. कामनारहित यज्ञ, दान, तप
ख. अर्थहीन कर्म
ग. निषिद्ध कर्म
घ. नाटक संवाद
उत्तर: क. कामनारहित यज्ञ, दान, तप
व्याख्या: लेख निष्काम भाव केँ साधनाक केंद्र बनबैत अछि।

प्रश्न 4737. आसक्ति सहित कर्म कएलासँ की प्राप्त होइत कहल गेल?
क. स्वर्गक भोग
ख. मोक्ष तत्काल
ग. पूर्ण शून्यता
घ. रंगमंच सिद्धि
उत्तर: क. स्वर्गक भोग
व्याख्या: आसक्ति कर्म केँ फलभोगक बन्धनमे राखैत अछि।

प्रश्न 4738. निष्काम भावसँ कर्म कएलासँ की होइत अछि?
क. चित्त शुद्ध भऽ मोक्षक अधिकारिता बनैत अछि
ख. चित्त मलिन
ग. कर्म व्यर्थ
घ. भाषा नष्ट
उत्तर: क. चित्त शुद्ध भऽ मोक्षक अधिकारिता बनैत अछि
व्याख्या: निबंध कर्म केँ मोक्षक तैयारी मानैत अछि, लक्ष्य नहि।

प्रश्न 4739. गीता अठारहम अध्यायक उद्धरणक मूल शिक्षा की अछि?
क. यज्ञ, दान, तप त्यागब नहि; संग आ फल त्यागि कर्तव्य रूपेँ करब
ख. कर्म छोड़ू
ग. दान छोड़ू
घ. तप निषिद्ध
उत्तर: क. यज्ञ, दान, तप त्यागब नहि; संग आ फल त्यागि कर्तव्य रूपेँ करब
व्याख्या: गीता निबंधमे उपनिषद् विचारक पुष्टि करैत अछि।

प्रश्न 4740. आन्तरिक कल्याण चाहनिहार मनुष्य केँ कोन भावसँ कार्य करबाक चाही?
क. भगवानक प्रसन्नता लेल निष्काम भावसँ
ख. लोक-दिखावा लेल
ग. दमन लेल
घ. प्रशंसा लेल मात्र
उत्तर: क. भगवानक प्रसन्नता लेल निष्काम भावसँ
व्याख्या: लेख मोक्ष-साधना केँ ईश्वर-समर्पण आ निष्कामता संग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4741. चित्तक मल हटेबाक लेल की आवश्यक कहल गेल?
क. सत्कर्म
ख. दुष्कर्म
ग. मात्र मौन
घ. अनुशासनहीनता
उत्तर: क. सत्कर्म
व्याख्या: सत्कर्म चित्तशुद्धि आ ब्रह्मविद्या सुनबाक पात्रता बनबैत अछि।

प्रश्न 4742. निबंधक मुख्य तत्त्व की अछि?
क. वैदिक कर्म निष्काम भावमे मोक्ष-साधना लेल साधक बनैत अछि
ख. कर्मक पूरा निषेध
ग. स्वर्गे अंतिम लक्ष्य
घ. ज्ञान अप्रासंगिक
उत्तर: क. वैदिक कर्म निष्काम भावमे मोक्ष-साधना लेल साधक बनैत अछि
व्याख्या: प्रदीपजी कर्म, ज्ञान आ भक्ति बीच संतुलित वैदिक दृष्टि राखैत छथि।

खण्ड ४८० : विदेह-सदेह १ — मैथिलीपुत्र प्रदीप: संस्कार, काण्ड आ ऋण

प्रश्न 4743. वेदक अन्तिम लक्ष्य निबंधमे की कहल गेल?
क. मोक्ष प्राप्ति
ख. केवल धन
ग. होटल भोजन
घ. नाट्य प्रसिद्धि
उत्तर: क. मोक्ष प्राप्ति
व्याख्या: निबंध वेद केँ जीवन-मुक्ति दिशाक मार्गदर्शक मानैत अछि।

प्रश्न 4744. ईश्वर-उपासना, योगाभ्यास, धर्म-अनुष्ठान, विद्या-प्राप्ति आदि ककर साधन कहल गेल?
क. मुक्तिक
ख. व्यापारक
ग. हास्यक
घ. राज्यसत्ताक
उत्तर: क. मुक्तिक
व्याख्या: निबंध मोक्ष-साधना केँ जीवन-अनुशासनक रूपमे देखैत अछि।

प्रश्न 4745. वेदक मुख्य विशेषतामे पुनर्जन्मक प्रतिपादन ककर लेल कहल गेल?
क. कर्मफल प्राप्ति लेल
ख. अरीपन लेल
ग. नाटक लेल
घ. होटल हिसाब लेल
उत्तर: क. कर्मफल प्राप्ति लेल
व्याख्या: कर्मफल-वाद नैतिक जीवन-समझक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 4746. वर्णाश्रम व्यवस्था निबंधमे ककर लेल उल्लेखित अछि?
क. समुचित जीवन-यापन लेल
ख. दमन लेल मात्र
ग. हास्य लेल
घ. भोजन-विवाद लेल
उत्तर: क. समुचित जीवन-यापन लेल
व्याख्या: लेख परंपरागत धार्मिक-सामाजिक ढाँचाक उद्देश्य बतबैत अछि।

प्रश्न 4747. भक्ष्य-अभक्ष्यक निर्णय ककर लेल कहल गेल?
क. जीवनक पवित्रता लेल
ख. लोक-हँसी लेल
ग. राजनीतिक विरोध लेल
घ. चित्र-रंग लेल
उत्तर: क. जीवनक पवित्रता लेल
व्याख्या: भोजन-संयम आध्यात्मिक अनुशासनक भाग बतायल गेल।

प्रश्न 4748. वेदमे मुख्यतः कोन तीन काण्डक वर्णन भेटैत अछि?
क. कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड, ज्ञानकाण्ड
ख. नाटककाण्ड, गजलकाण्ड, कथाकाण्ड
ग. भोजनकाण्ड, रंगकाण्ड, पत्रकाण्ड
घ. चित्रकाण्ड, हाट, झगड़ा
उत्तर: क. कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड, ज्ञानकाण्ड
व्याख्या: निबंध वेदक त्रिपक्षीय साधना-संरचना प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 4749. यज्ञमे तीन क्रिया एक संग होइत कहल गेल — देवता-पूजा, ऋषि-महर्षिक सत्संग आ की?
क. दान
ख. नशा
ग. व्यंग्य
घ. चित्र-विक्रय
उत्तर: क. दान
व्याख्या: यज्ञ केवल अग्नि-क्रिया नहि, दैविक, ज्ञानात्मक आ सामाजिक दान-संबंध रखैत अछि।

प्रश्न 4750. ब्रह्मचर्य पालनसँ कोन ऋण मुक्त होयबाक आदर्श बतायल गेल?
क. ऋषि-ऋण
ख. होटल-ऋण
ग. नाटक-ऋण
घ. कोका-ऋण
उत्तर: क. ऋषि-ऋण
व्याख्या: ब्रह्मचर्य आ अध्ययन ऋषि-परंपराक ऋण चुकबैत अछि।

प्रश्न 4751. यज्ञ द्वारा कोन ऋण मुक्त होयबाक आदर्श अछि?
क. देव-ऋण
ख. ग्राम-ऋण मात्र
ग. राज-ऋण
घ. वाणिज्य-ऋण
उत्तर: क. देव-ऋण
व्याख्या: देव-ऋण यज्ञ-धर्मक माध्यमसँ चुकायल मानल गेल।

प्रश्न 4752. संतानोत्पत्ति द्वारा कोन ऋण मुक्त होयबाक आदर्श अछि?
क. पितृ-ऋण
ख. रंग-ऋण
ग. गजल-ऋण
घ. अरीपन-ऋण
उत्तर: क. पितृ-ऋण
व्याख्या: निबंध वैदिक जीवन कैँ ऋण-निवृत्ति आ मोक्ष-साधना दुनू रूपमे रखैत अछि।

खण्ड ४८१ : विदेह-सदेह १ — साहेब रामदास: वैराग्य, गुरु आ तीर्थ-साधना

प्रश्न 4753. साहेब रामदास पुत्र-वियोगक बाद कोना बदललाह?
क. पक्का वैरागी भऽ जंगल-जंगल एकान्तवास आ भजन-कीर्तन करय लगलाह
ख. होटल चलाबय लगलाह
ग. राजनीतिमे गेलाह
घ. गजल-सम्मेलन करय लगलाह
उत्तर: क. पक्का वैरागी भऽ जंगल-जंगल एकान्तवास आ भजन-कीर्तन करय लगलाह
व्याख्या: वियोग हुनकर सांसारिक जीवनसँ वैराग्य दिस मोड़ बनल।

प्रश्न 4754. गामक लोक सभ हुनका घुरबाक आग्रह किएक करैत छल?
क. ओ सभ अपने कैँ पुत्र-समान मानि सेवा करबाक आश्वासन दैत छल
ख. क्योंकि खेत खाली छल
ग. क्योंकि नाटक अधूरा छल
घ. क्योंकि होटल चलाबय छल
उत्तर: क. ओ सभ अपने कैँ पुत्र-समान मानि सेवा करबाक आश्वासन दैत छल
व्याख्या: समाजक स्नेह रहितो रामदास वैराग्य-पथ पर अडिग रहलाह।

प्रश्न 4755. बैरागी भेलाक बाद रामदासजी कोन साधना मे लागलाह?
क. भजन-कीर्तन संग योग-साधना
ख. व्यापार
ग. छात्र-परीक्षा
घ. पत्रकारिता
उत्तर: क. भजन-कीर्तन संग योग-साधना
व्याख्या: हुनकर आध्यात्मिक जीवन भक्ति आ योग दुनू पर आधारित छल।

प्रश्न 4756. केओटीक निवासी केकरासँ रामदासजी दीक्षा ग्रहण कएलनि?
क. बलिरामदासजी
ख. डटकेजलपान
ग. प्रकाश चन्द्र
घ. महेन्द्र मिश्र
उत्तर: क. बलिरामदासजी
व्याख्या: योग-सिद्धि आ गुरु-दीक्षा हुनकर साधना-पथक महत्त्वपूर्ण घटना अछि।

प्रश्न 4757. जगन्नाथपुरी यात्रा संबंधी जनश्रुति की अछि?
क. ओ दण्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी गेलाह
ख. ओ जहाजसँ गेलाह
ग. ओ कखनो तीर्थ नहि गेलाह
घ. ओ चित्र बनाबय गेलाह
उत्तर: क. ओ दण्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी गेलाह
व्याख्या: दण्ड-प्रणामक यात्रा तप, कष्ट-सहन आ निष्ठाक उदाहरण अछि।

प्रश्न 4758. जगन्नाथपुरी यात्रा मे कष्टक बावजूद ओ की नहि छोड़लनि?
क. दण्ड-प्रणाम
ख. होटल भोजन
ग. पत्र लेखन
घ. गजल तुक
उत्तर: क. दण्ड-प्रणाम
व्याख्या: कष्ट, घाव आ पीब सेहो साधना-निष्ठा रोकि नहि सकल।

प्रश्न 4759. गुरु बलिरामदासक भूमिका की कहल गेल?
क. योग-साधनामे निपुण गुरु, जिनक प्रसादसँ ज्ञान-सिद्धि
ख. होटल मालिक
ग. राजनीतिक नेता
घ. रंग निर्देशक
उत्तर: क. योग-साधनामे निपुण गुरु, जिनक प्रसादसँ ज्ञान-सिद्धि
व्याख्या: गुरु बिना वास्तविक ज्ञान असम्भव — ई भाव लेखमे अछि।

प्रश्न 4760. दीक्षा आ योग-सिद्धिक बाद रामदासजी कैँ कोन विश्वास भेल?
क. जन्म-मरणसँ छुटकारा आ मोक्ष सम्भव अछि
ख. केवल राज्यप्राप्ति
ग. होटल लाभ
घ. नाटक प्रसिद्धि
उत्तर: क. जन्म-मरणसँ छुटकारा आ मोक्ष सम्भव अछि
व्याख्या: गुरु-प्रसाद हुनकर मोक्षविश्वासक आधार बनल।

प्रश्न 4761. रामदासजीक प्रमुख आराध्य कोन देव रूपमे रेखांकित छथि?
क. श्रीकृष्ण
ख. नवाब
ग. होटल मालिक
घ. डॉक्टर
उत्तर: क. श्रीकृष्ण
व्याख्या: लेख हुनका कृष्णक अनन्य भक्त कहैत अछि।

प्रश्न 4762. रामदासजीक आरम्भिक जीवन-खंडक मुख्य भाव की अछि?
क. वियोगसँ वैराग्य, वैराग्यसँ गुरु-दीक्षा, दीक्षासँ भक्ति-सिद्धि
ख. हास्यसँ भोजन
ग. व्यापारसँ सत्ता
घ. चित्रसँ बाजार
उत्तर: क. वियोगसँ वैराग्य, वैराग्यसँ गुरु-दीक्षा, दीक्षासँ भक्ति-सिद्धि
व्याख्या: जीवन-वृत्त आध्यात्मिक रूपान्तरणक क्रममे व्यवस्थित अछि।

खण्ड ४८२ : विदेह-सदेह १ — साहेब रामदास: मिथिला-प्रेम, पचाढ़ी आ लोक-श्रद्धा

प्रश्न 4763. साहेब रामदास सांसारिक मोह त्यागलाक बादो ककरा नहि त्यागि सकलाह?

क. मिथिला भूमि कैं

ख. होटल कैं

ग. कोका-कोला कैं

घ. नाटक कैं

उत्तर: क. मिथिला भूमि कैं

व्याख्या: पदसभमे मिथिला प्रति करुण प्रेम व्यक्त अछि।

प्रश्न 4764. “मिथला नगरी तोर दान बिनु...” सन पद ककर भाव सूचित करैत अछि?

क. मिथिला प्रति द्रवित भक्ति आ प्रेम

ख. मिथिलासँ दूरी

ग. राजनीतिक व्यंग्य मात्र

घ. भोजन-विन्यास

उत्तर: क. मिथिला प्रति द्रवित भक्ति आ प्रेम

व्याख्या: रामदासक भक्ति केवल दैवी नहि, मातृभूमि-स्नेहसँ संयुक्त अछि।

प्रश्न 4765. रामदासजी जतय साधना करैत छलाह, ओतय की रोपैत छलाह?

क. पाकड़िक गाछ

ख. कमलदल

ग. बांस

घ. सिरिस बीज मात्र

उत्तर: क. पाकड़िक गाछ

व्याख्या: योगमढ़ी संग पाकड़ रोपब स्मृति आ तपस्थल बनबैत अछि।

प्रश्न 4766. हुनकर अंतिम योगमढ़ी कतय बताओल गेल?

क. दरभंगा जिलाक पचाढ़ी गाममे

ख. जनकपुर स्टेशन

ग. जटिंगा पहाड़

घ. घोघौर गाम

उत्तर: क. दरभंगा जिलाक पचाढ़ी गाममे

व्याख्या: पचाढ़ी स्थान रामदास-स्मृति सँ जुड़ल प्रमुख स्थल अछि।

प्रश्न 4767. पचाढ़ी स्थान पहिने कोन नामसँ विख्यात छल?

क. बूढ़वन

ख. कुरुक्षेत्र

ग. घोघौर

घ. बस्तिपुर

उत्तर: क. बूढ़वन

व्याख्या: नाम-स्मृति स्थल-इतिहासक भाग अछि।

प्रश्न 4768. पचाढ़ी स्थानक प्राकृतिक शोभा ककरासँ तुलना योग्य कहल गेल?

क. वृन्दावनसँ

ख. समुद्रतटसँ

ग. राजधानीसँ

घ. रेगिस्तानसँ

उत्तर: क. वृन्दावनसँ

व्याख्या: वन, कमला तट, मोर, सुगा आ लताफूलक कारण पचाढ़ी आध्यात्मिक-प्राकृतिक स्थल बनैत अछि।

प्रश्न 4769. पचाढ़ी स्थानक वैभवक पाछाँ ककर योगदान बताओल गेल?
क. राजदरभंगाक
ख. होटल मालिकक
ग. मधुबनी इप्टाक
घ. किरायादार परिवारक
उत्तर: क. राजदरभंगाक
व्याख्या: राजकीय संरक्षण स्थल-संपदा आ सेवा-व्यवस्था बढबैत अछि।

प्रश्न 4770. रानी पद्मावती पचाढ़ी स्थान कैं की दान देने छलीह?
क. तीन सय बीघा जमीन
ख. दस बोतल कोका-कोला
ग. एक नाटक-पुस्तक
घ. एक अरीपन
उत्तर: क. तीन सय बीघा जमीन
व्याख्या: अतिथि-सत्कार आ पूजा-पाठ लेल दानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 4771. रामदासजी दान-पत्र संग की केलनि कहल गेल?
क. अग्निमे फेकि देलनि
ख. फ्रेममे टांगलनि
ग. बेचि देलनि
घ. गीत बना देलनि
उत्तर: क. अग्निमे फेकि देलनि
व्याख्या: वैरागी वृत्ति सम्पत्ति-स्वामित्वक विरुद्ध देखाइत अछि।

प्रश्न 4772. पचाढ़ी स्थानक वर्तमान सेवा-व्यवस्था की सूचित करैत अछि?
क. मंदिर, भोग-राग, फूलबाड़ी, अतिथि-सत्कार आ संस्कृत महाविद्यालयक परंपरा
ख. स्थल पूर्ण लुप्त
ग. कोनो व्यवस्था नहि
घ. केवल होटल
उत्तर: क. मंदिर, भोग-राग, फूलबाड़ी, अतिथि-सत्कार आ संस्कृत महाविद्यालयक परंपरा
व्याख्या: स्थल भक्ति, शिक्षा, सेवा आ लोक-श्रद्धाक केन्द्र रूपेँ कायम अछि।

खण्ड ४८३ : विदेह-सदेह १ — साहेब रामदास: चमत्कार, कारागार आ भक्त-कवि

प्रश्न 4773. राजा नरेन्द्र सिंहक समयक संघर्षमे रामदासजी कोन प्रार्थना केलनि?
क. राजाक विजय आ मिथिलेशक सुख लेल श्रीकृष्णसँ प्रार्थना
ख. नवाबक विजय लेल
ग. होटल लाभ लेल
घ. गजल पुरस्कृत लेल
उत्तर: क. राजाक विजय आ मिथिलेशक सुख लेल श्रीकृष्णसँ प्रार्थना
व्याख्या: रामदासजीक भक्तिपद राज-समाजक संकटसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4774. नवाब रामदासजी कैं किएक बन्दी बनौलक?
क. मिथिला-पक्षीय प्रार्थना/आध्यात्मिक हस्तक्षेप पर क्रुद्ध भऽ
ख. भोजन बेसी खयलनि
ग. नाटक लिखलनि
घ. अरीपन बनौलनि
उत्तर: क. मिथिला-पक्षीय प्रार्थना/आध्यात्मिक हस्तक्षेप पर क्रुद्ध भऽ
व्याख्या: कथा भक्ति आ सत्ता-संघर्षक टकराव देखबैत अछि।

प्रश्न 4775. कारागारमे बन्द रहितो रामदासजीक कौन क्रम टूटल नहि?
क. गंगा-स्नान, संध्या-तर्पण, पूजा-पाठ
ख. होटल भोजन
ग. रंगअभ्यास
घ. परीक्षा तैयारी
उत्तर: क. गंगा-स्नान, संध्या-तर्पण, पूजा-पाठ
व्याख्या: चमत्कारक कथामे साधक कारागारक सीमासँ परे देखाइत छथि।

प्रश्न 4776. नवाब स्वयं ताला लगाएलापर सेहो की भेल?
क. रामदासजीक गंगा-स्नानक क्रम नहि टूटल
ख. ओ गायब भऽ गेलाह हमेशा
ग. पूजा बन्द भेल
घ. गंगा सुखा गेल
उत्तर: क. रामदासजीक गंगा-स्नानक क्रम नहि टूटल
व्याख्या: चमत्कार कथा लोकश्रद्धाक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 4777. पएरमे बेड़ी बाँधलापर रामदासजी ककरा पुकारलनि?
क. आराध्य श्रीकृष्ण केँ
ख. होटल मालिक केँ
ग. आर्य केँ
घ. प्रकाश चन्द्र केँ
उत्तर: क. आराध्य श्रीकृष्ण केँ
व्याख्या: भक्त संकटमे भगवद्-आश्रय लैत अछि।

प्रश्न 4778. प्रार्थना गबिते की चमत्कार घटल?
क. बेड़ी आ फाटकक ताला टूटि खसि पड़ल
ख. होटल भरि गेल
ग. नाटक शुरू भेल
घ. गजल छपल
उत्तर: क. बेड़ी आ फाटकक ताला टूटि खसि पड़ल
व्याख्या: कथा भक्तक आर्त पुकार पर दैवी हस्तक्षेपक रूपक अछि।

प्रश्न 4779. नवाब अन्ततः की केलक?
क. क्षमा माँगल आ सम्मानसँ मिथिला पहुँचा देलक
ख. आरो दण्ड देलक
ग. चुपचाप भागल
घ. गजल लिखल
उत्तर: क. क्षमा माँगल आ सम्मानसँ मिथिला पहुँचा देलक
व्याख्या: चमत्कार सत्ता केँ नम्र करैत अछि — ई लोककथा-रचना अछि।

प्रश्न 4780. रामदासजीक अन्य चमत्कारसभमे कोन प्रसंग आयल?
क. प्रेत-बाधा शांत करब, माटिक भीत हाँकब, भंडारमे कमी नहि होएब
ख. कोका-कोला नशा
ग. होटल घूस
घ. नाटक अभिनय
उत्तर: क. प्रेत-बाधा शांत करब, माटिक भीत हाँकब, भंडारमे कमी नहि होएब
व्याख्या: चमत्कार-सूची लोकभक्ति आ श्रद्धाक विस्तार देखबैत अछि।

प्रश्न 4781. रामदासजीक पद-रचना ककर साधन छल?
क. भजन-कीर्तन
ख. राजनीतिक भाषण
ग. भोजन-विक्रय
घ. रंग-समीक्षा
उत्तर: क. भजन-कीर्तन
व्याख्या: पद लिखनाइ हुनकर भक्ति-साधना छल, साहित्यिक यश मात्र नहि।

प्रश्न 4782. रामदासजीक आध्यात्मिक-लोक महत्व की अछि?
क. वैरागी वैष्णव भक्त-कवि रूपेँ लोकश्रद्धा, चमत्कार आ पदावलीक केन्द्र
ख. हास्य पात्र
ग. होटल ग्राहक
घ. रंग निर्देशक
उत्तर: क. वैरागी वैष्णव भक्त-कवि रूपेँ लोकश्रद्धा, चमत्कार आ पदावलीक केन्द्र
व्याख्या: लेख संतक जीवन, कथा, चमत्कार आ काव्यक संयुक्त लोक-स्मृति बनबैत अछि।

खण्ड ४८४ : विदेह-सदेह १ — साहेब रामदास: पदावली, रस आ संगीत-परम्परा

प्रश्न 4783. रामदासजी भगवानक कोन रूप मानैत छलाह?
क. सगुण आ निर्गुण दुनू
ख. केवल निर्गुण, सगुण निषेध
ग. केवल राजकीय रूप
घ. केवल नाट्यरूप
उत्तर: क. सगुण आ निर्गुण दुनू
व्याख्या: पदमे “निर्गुण सगुण पुरुष भगवान” भाव स्पष्ट अछि।

प्रश्न 4784. रामदासजीक उपलब्ध पदावलीमे लगभग कतेक पद संकलित अछि?
क. ४७८ टा
ख. दस टा
ग. बीस टा
घ. एकोटा नहि
उत्तर: क. ४७८ टा
व्याख्या: संख्या साहित्यिक परिमाणक संकेत अछि, पृष्ठ-तथ्य नहि।

प्रश्न 4785. पदावली हुनकर यशक संबंधमे की कहल गेल?
क. अक्षुण्ण बनाए रखबाक सामर्थ्य रखैत अछि
ख. पूरी तरह अपर्याप्त
ग. लुप्त
घ. सिर्फ नाम मात्र
उत्तर: क. अक्षुण्ण बनाए रखबाक सामर्थ्य रखैत अछि
व्याख्या: लेख एक उपलब्ध पदावली केँ पर्याप्त महत्त्वपूर्ण मानैत अछि।

प्रश्न 4786. रामदासजीक पदसभ किन-किन विषयपर अछि?
क. कृष्ण-जन्म, वात्सल्य, वंशीवादन, संयोग-श्रृंगार, रासलीला, झुलोत्सव आदि
ख. केवल होटल प्रसंग
ग. केवल परीक्षा
घ. केवल नाटक-समीक्षा
उत्तर: क. कृष्ण-जन्म, वात्सल्य, वंशीवादन, संयोग-श्रृंगार, रासलीला, झुलोत्सव आदि
व्याख्या: पदावली भक्ति-काव्यक बहुविध प्रसंग समेटैत अछि।

प्रश्न 4787. रासलीला परक पदसभक विशेषता की कही गेल?
क. मैथिलीमे अत्यन्त विलक्षण; स्वतंत्र विवेचन योग्य
ख. पूर्णतः सामान्य
ग. अनुपस्थित
घ. गैर-भक्ति
उत्तर: क. मैथिलीमे अत्यन्त विलक्षण; स्वतंत्र विवेचन योग्य
व्याख्या: लेख रामदासजीक रासलीला-पद कें उच्च काव्य-संभावना मानैत अछि।

प्रश्न 4788. रामदासजीक काव्यक मुख्य गुण कोन कहल गेल?
क. कृष्ण-प्रेमक अनन्यता, भक्ति-प्रवणता आ प्रसादगुण
ख. व्यंग्य मात्र
ग. नशा-वर्णन
घ. राजकीय भय
उत्तर: क. कृष्ण-प्रेमक अनन्यता, भक्ति-प्रवणता आ प्रसादगुण
व्याख्या: भाषा आ भाव दुनू सरल भक्ति-संवेदना सँ युक्त अछि।

प्रश्न 4789. ऋतुगीत आ समयोपयोगी पदमे कोन राग-संकेतसभ भेटैत अछि?
क. प्राती, सारंग, ललित, बिहाग आदि
ख. केवल नाटकक दृश्य
ग. केवल भोजनक प्रकार
घ. केवल परीक्षा-विषय
उत्तर: क. प्राती, सारंग, ललित, बिहाग आदि
व्याख्या: संगीत-परम्परा पदरचनाक अभिन्न अंग अछि।

प्रश्न 4790. मिथिलाक पंचदेवोपासक परंपरा रामदासजीक रचनामे कोना झलकैत अछि?
क. कृष्णक अनन्य भक्त होइतहुँ आन देवी-देवता पर पद रचैत छथि
ख. केवल एक देवता छोड़ि सभ निषिद्ध
ग. भक्ति अनुपस्थित
घ. केवल राजनीति
उत्तर: क. कृष्णक अनन्य भक्त होइतहुँ आन देवी-देवता पर पद रचैत छथि
व्याख्या: लेख विविध भक्ति-रूपक सहअस्तित्व देखबैत अछि।

प्रश्न 4791. साहेब रामदासक रचनाक संगीतशास्त्रीय शोध किएक आवश्यक कहल गेल?
क. प्रायः सभ कवितामे रागक उल्लेख अछि
ख. क्योंकि राग अनुपस्थित अछि
ग. क्योंकि नाटक चाही
घ. क्योंकि होटल कथा अछि
उत्तर: क. प्रायः सभ कवितामे रागक उल्लेख अछि
व्याख्या: राग-संकेत मैथिली संगीत-परम्परा अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण स्रोत अछि।

प्रश्न 4792. रामदासजीक गीतसभक संरक्षणक अंतिम आग्रह की अछि?
क. गाम-घरक बुजुर्ग लोकक ठोर पर बाँचल गीतसभक संकलन आवश्यक अछि
ख. गीत छोड़ि देब
ग. केवल नाम रखब
घ. स्मृति हटाब
उत्तर: क. गाम-घरक बुजुर्ग लोकक ठोर पर बाँचल गीतसभक संकलन आवश्यक अछि
व्याख्या: लेख मौखिक परम्परा लुप्त होए सँ पहिले संकलनक आग्रह करैत अछि।

खण्ड ४८५ : विदेह-सदेह १ — मनोज मुक्ति: “स्मिताक लड़ाई”

प्रश्न 4793. “स्मिताक लड़ाई” कविताक आरम्भमे देशक नैतिक दशा कोना चित्रित अछि?
क. पशुपतिनाथक देशमे सेहो व्यभिचार सभ भेषमे देखाइत अछि
ख. देश पूर्णतः निष्कलंक कहल गेल अछि
ग. केवल प्रकृति-वर्णन अछि
घ. हास्य-व्यंग्य मात्र अछि
उत्तर: क. पशुपतिनाथक देशमे सेहो व्यभिचार सभ भेषमे देखाइत अछि
व्याख्या: कविता धार्मिक-राष्ट्रीय गौरवक पृष्ठभूमिमे नैतिक विडंबना रखैत अछि।

प्रश्न 4794. कवितामे मिथिलावासी कैँ कोन संकटपूर्ण मनोवृत्तिसँ जोड़ल गेल?
क. अपन अलग छाप होइतहुँ डरपोक हूलमे शामिल भऽ रहल अछि
ख. पूर्ण निर्भीक विजेता
ग. केवल व्यापारी समुदाय
घ. नाटकक दर्शक मात्र
उत्तर: क. अपन अलग छाप होइतहुँ डरपोक हूलमे शामिल भऽ रहल अछि
व्याख्या: कवि अस्मिता-संकट आ सामूहिक भयक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 4795. “अपना समस्त अधिकारसभसँ वंचित” पंक्ति कोन भाव व्यक्त करैत अछि?
क. अधिकारहीनता आ भविष्यक आशा पर टिकि रहल जीवन
ख. पूर्ण समृद्धि
ग. कला-प्रदर्शनी
घ. भोजन-सूची
उत्तर: क. अधिकारहीनता आ भविष्यक आशा पर टिकि रहल जीवन
व्याख्या: कविता वर्तमान वंचना आ काल्हिक आशाक तनाव रचैत अछि।

प्रश्न 4796. भ्रष्ट प्रशासन आ नेताक लोभ कवितामे की करैत देखाओल गेल?
क. देशकेँ विदेशी पाशमे जकड़ैत अछि
ख. देशकेँ तुरन्त मुक्त करैत अछि
ग. केवल गीत सिखबैत अछि
घ. अरीपन बनबैत अछि
उत्तर: क. देशकेँ विदेशी पाशमे जकड़ैत अछि
व्याख्या: राजनीतिक भ्रष्टाचार कैँ राष्ट्रीय निर्भरता आ दास्यक कारण मानल गेल अछि।

प्रश्न 4797. मिथिला कैँ स्वर्ग समान मनुष्यजीवन भेटलाक बादो कवि किएक व्यथित छथि?
क. मिथिलाक दुर्दशा अपन आँखि आगाँ देखैत छथि
ख. कवि केवल पाबनि मना रहल छथि
ग. ककरो दुख नहि अछि
घ. कविता केवल पाक-विधि अछि
उत्तर: क. मिथिलाक दुर्दशा अपन आँखि आगाँ देखैत छथि
व्याख्या: कविता वरदान-जकाँ जन्मभूमि आ वास्तविक दुर्दशाक विरोध देखबैत अछि।

प्रश्न 4798. जगतक माय आ सीता संबंधी चित्रण की संकेत करैत अछि?
क. सीता-जकाँ विलक्षणा नारी/मिथिला-मर्यादा घरसँ निकालल जा रहल अछि
ख. सीता पर कोनो उल्लेख नहि
ग. केवल बाजारक दृश्य अछि
घ. नारीक विजय-उत्सव मात्र अछि
उत्तर: क. सीता-जकाँ विलक्षणा नारी/मिथिला-मर्यादा घरसँ निकालल जा रहल अछि
व्याख्या: सीता-बिम्ब मिथिला अस्मिता, नारी-गरिमा आ सांस्कृतिक विस्थापनक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 4799. मिथिलावासी घरक कोनामे बहादुरी देखाबैत अछि — एहि व्यंग्यक अर्थ की?
क. सार्वजनिक संघर्षक बदला निजी सुरक्षित रोषमे सीमित रहब
ख. सीधा युद्ध-विजय
ग. कविता-पाठ
घ. शांत साधना
उत्तर: क. सार्वजनिक संघर्षक बदला निजी सुरक्षित रोषमे सीमित रहब
व्याख्या: कवि निष्क्रिय बहादुरीक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 4800. “सस्ता रंग” आ “शोणित”क प्रयोग कोन प्रकारक दृश्य बनबैत अछि?
क. रक्त, हिंसा आ सस्ते दिखावाक भयावह मिलाप
ख. केवल चित्रकलाक रंग
ग. विवाहक अलंकार
घ. दूधक खीर
उत्तर: क. रक्त, हिंसा आ सस्ते दिखावाक भयावह मिलाप
व्याख्या: कविता सौंदर्य-भाषा कैं रक्त-राजनीतिक प्रसंगमे बदलैत अछि।

प्रश्न 4801. कवि “बचने मात्र सँ काज नहि चलत” किएक कहैत छथि?
क. अस्तित्व-रक्षा लेल सक्रिय संघर्ष आ नव चेतना चाही
ख. चुप रहब पर्याप्त अछि
ग. केवल भोजन चाही
घ. स्मृति मेटा देबाक चाही
उत्तर: क. अस्तित्व-रक्षा लेल सक्रिय संघर्ष आ नव चेतना चाही
व्याख्या: कविता जीवन-रक्षा सँ आगाँ अस्मिता-रक्षा आ संघर्षक आह्वान अछि।

प्रश्न 4802. “स्मिताक लड़ाई”क मूल संदेश की अछि?
क. सम्पूर्ण मैथिल समाजमे नव चेतना भरि संघर्ष करबाक आवश्यकता
ख. अधिकार छोड़बाक शिक्षा
ग. सिर्फ हास्य-विनोद
घ. केवल पौराणिक कथा
उत्तर: क. सम्पूर्ण मैथिल समाजमे नव चेतना भरि संघर्ष करबाक आवश्यकता
व्याख्या: अंतिम पंक्तिसभ कविता कैं सामूहिक जागरणक घोषणामे बदलैत अछि।

खण्ड ४८६ : विदेह-सदेह १ — डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”: जीवन, लेखन आ अवदान

प्रश्न 4803. डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”क जन्मस्थान/परिचयमे कोन बात प्रमुख अछि?
क. हसनपुर, समस्तीपुरसँ जुड़ल विद्वान आ लेखक
ख. पूर्णतः अज्ञात विदेशी लेखक
ग. केवल रंगकर्मी
घ. केवल पाक-विशेषज्ञ
उत्तर: क. हसनपुर, समस्तीपुरसँ जुड़ल विद्वान आ लेखक
व्याख्या: स्रोत हुनक ग्राम, परिवार, शिक्षा आ साहित्यिक-सांस्कृतिक परिचय दैत अछि।

प्रश्न 4804. मौनजीक सेवा-क्रममे भारत आ नेपालक कोन पक्ष प्रमुख अछि?
क. दुनू देशमे अध्यापन आ शैक्षिक प्रशासन
ख. केवल युद्ध सेवा
ग. केवल होटल व्यवसाय
घ. केवल चित्र-विक्रय
उत्तर: क. दुनू देशमे अध्यापन आ शैक्षिक प्रशासन
व्याख्या: नेपालक कॉलेज, महनारक प्रधानाचार्य आ विश्वविद्यालय निरीक्षक रूपेँ कार्य उल्लेखित अछि।

प्रश्न 4805. मौनजी किन भाषासभक ज्ञाता कहल गेल छथि?
क. मैथिली, नेपाली, अंग्रेजी आ हिन्दी
ख. केवल संस्कृत
ग. केवल उर्दू
घ. केवल तेलुगु
उत्तर: क. मैथिली, नेपाली, अंग्रेजी आ हिन्दी
व्याख्या: हुनक बहुभाषिकता लेखन, अनुवाद आ सांस्कृतिक सेतु बनबैत अछि।

प्रश्न 4806. “नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास” मौनजीक कोन प्रकारक योगदान अछि?
क. मैथिली साहित्य इतिहासक क्षेत्रमे आरम्भिक/महत्त्वपूर्ण ग्रन्थीय योगदान
ख. रसोई-पुस्तक
ग. नाटक-मंचन
घ. व्यापार-रिपोर्ट
उत्तर: क. मैथिली साहित्य इतिहासक क्षेत्रमे आरम्भिक/महत्त्वपूर्ण ग्रन्थीय योगदान
व्याख्या: नेपालक मैथिली साहित्य पर हुनक काज क्षेत्रीय इतिहास-लेखनसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4807. “मैथिली” त्रैमासिकक संपादन हुनक कोन भूमिका देखबैत अछि?
क. पत्रिका-संपादक आ साहित्य-संगठक रूप
ख. अभिनेता मात्र
ग. कृषक मात्र
घ. होटल मालिक
उत्तर: क. पत्रिका-संपादक आ साहित्य-संगठक रूप
व्याख्या: संपादनक कार्य भाषा-साहित्यक संस्थागत विकासमे सहायक अछि।

प्रश्न 4808. “प्रेमचन्द चयनित कथा”क अनुवाद हुनक कोन क्षमता देखबैत अछि?
क. अनुवादक रूपेँ हिन्दी साहित्यकेँ मैथिली पाठक धरि आनब
ख. चित्रकला सिखेबाक काम
ग. अरीपन विधि
घ. आणविक सिद्धान्त
उत्तर: क. अनुवादक रूपेँ हिन्दी साहित्यकेँ मैथिली पाठक धरि आनब
व्याख्या: अनुवाद भाषा-सेतु आ पाठ-संवर्द्धनक कार्य अछि।

प्रश्न 4809. मौनजीक अकादमिक अवदानमे कोन संस्था/भूमिका आयल अछि?
क. साहित्य अकादमी सहित अनेक संस्थासँ परामर्शी/सदस्य रूपेँ सम्बन्ध
ख. केवल स्थानीय होटल
ग. केवल विवाह-दल
घ. केवल कंठस्थ गीत
उत्तर: क. साहित्य अकादमी सहित अनेक संस्थासँ परामर्शी/सदस्य रूपेँ सम्बन्ध
व्याख्या: स्रोत अनेक राष्ट्रीय-सांस्कृतिक संस्थासँ हुनक जुड़ाव देखबैत अछि।

प्रश्न 4810. मौनजी केँ भेटल सम्मानसभक स्वरूप की सूचित करैत अछि?
क. मैथिली, लोकसंस्कृति, इतिहास आ अनुवाद क्षेत्रक व्यापक मान्यता
ख. अस्वीकृति मात्र
ग. केवल खेल पुरस्कार
घ. केवल पाक प्रतियोगिता
उत्तर: क. मैथिली, लोकसंस्कृति, इतिहास आ अनुवाद क्षेत्रक व्यापक मान्यता
व्याख्या: सम्मान-सूची हुनक बहुआयामी साहित्यिक-लोकसंस्कृतिक प्रतिष्ठा दर्शबैत अछि।

प्रश्न 4811. अप्रकाशित कृतसभमे “मिथिलाक लोकसंस्कृति” सन शीर्षक की बतबैत अछि?
क. लोक-संस्कृति शोधमे हुनक निरंतर रुचि
ख. विषयसँ दूरी
ग. रंगकर्म समाप्ति
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. लोक-संस्कृति शोधमे हुनक निरंतर रुचि
व्याख्या: मौनजीक लेखन लोकजीवन, इतिहास आ शोध-बोधक दिशामे बढ़ैत अछि।

प्रश्न 4812. मौनजीक समग्र परिचयक सार की अछि?
क. शोधक, संपादक, अनुवादक, लोकसंस्कृति-चिन्तक आ बहुभाषी साहित्य-पुरुष
ख. एकरेखा हास्य-पात्र
ग. केवल किरायादार
घ. सिर्फ रसोइया
उत्तर: क. शोधक, संपादक, अनुवादक, लोकसंस्कृति-चिन्तक आ बहुभाषी साहित्य-पुरुष
व्याख्या: परिचय एक बहुस्तरीय साहित्य-संस्कृतिक कर्मशील व्यक्तित्व सामने आनैत अछि।

खण्ड ४८७ : विदेह-सदेह १ — “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला”: भूगोल, इतिहास आ विदेह

प्रश्न 4813. मिथिलांचलक सीमा लेखमे कोना आरम्भिक रूपेँ चिन्हायल गेल?
क. हिमालयक पादप्रदेशमे गंगासँ उत्तर, कोशीसँ पश्चिम आ गंडकसँ पूर्व भूभाग
ख. समुद्रक बीचक द्वीप
ग. केवल दिल्ली नगर
घ. रेगिस्तानक पट्टी
उत्तर: क. हिमालयक पादप्रदेशमे गंगासँ उत्तर, कोशीसँ पश्चिम आ गंडकसँ पूर्व भूभाग
व्याख्या: लेख मिथिलाक सांस्कृतिक भूगोल नदी-सीमासँ परिभाषित करैत अछि।

प्रश्न 4814. सतपथ ब्राह्मणक अंतःसाक्ष्य अनुसार विदेह माथवक भूमिका की अछि?
क. पूर्वाभिमुख आर्य शाखाक नेतृत्व कऽ सदानीरा पार कयलनि
ख. नाटक मंचित कयलनि
ग. भोजन बनौलनि
घ. चित्रकला बेचलनि
उत्तर: क. पूर्वाभिमुख आर्य शाखाक नेतृत्व कऽ सदानीरा पार कयलनि
व्याख्या: विदेह-स्थापनाक वैदिक-सांस्कृतिक स्मृति एहि प्रसंगमे अछि।

प्रश्न 4815. विदेह नामक प्रतिष्ठा कोन प्रक्रियासँ जुड़ल बताओल गेल?
क. सदानीरा पार कऽ भूमिक अग्नि-संस्कार आ बसोवास
ख. होटल अग्रिम
ग. गजल लेखन
घ. बाराती-सत्कार
उत्तर: क. सदानीरा पार कऽ भूमिक अग्नि-संस्कार आ बसोवास
व्याख्या: अग्नि-संस्कार बस्ती, संस्कृति आ राजनैतिक नामकरणक प्रतीक अछि।

प्रश्न 4816. मिथिलाक प्राचीन सम्बन्ध विदेहसँ कोना बतायल गेल?
क. विदेह राष्ट्र/देश आ मिथिला ओकर राजधानीनगर रूपेँ
ख. मिथिला केवल पकवान
ग. विदेह केवल पात्र
घ. दूनू असंबद्ध
उत्तर: क. विदेह राष्ट्र/देश आ मिथिला ओकर राजधानीनगर रूपेँ
व्याख्या: प्राचीन बौद्ध-साहित्यक हवाला मिथिला-विदेह सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 4817. प्राचीन मिथिलापुरीक अज्ञान/अनिश्चितता सम्बन्धी बात की अछि?
क. भव्य मिथिलापुरीक सटीक अभिज्ञान एखन धरि सुनिश्चित नहि
ख. सर्वथा नकारल गेल
ग. आज पूर्ण मानचित्र उपलब्ध
घ. केवल मंदिर मात्र
उत्तर: क. भव्य मिथिलापुरीक सटीक अभिज्ञान एखन धरि सुनिश्चित नहि
व्याख्या: लेख सावधानी बरतैत अछि; परंपरा मानैत, निश्चित स्थल-निर्धारणमे संयम रखैत अछि।

प्रश्न 4818. तीरभुक्ति/तिरहुत नाम कोन परिप्रेक्ष्यमे आयल?
क. नदीमातृक जनपदक पूर्व-मध्यकालीन ऐतिहासिक परिवेशमे
ख. होटल नाम
ग. रेसिपी नाम
घ. नाटकक पात्र
उत्तर: क. नदीमातृक जनपदक पूर्व-मध्यकालीन ऐतिहासिक परिवेशमे
व्याख्या: तिरहुत मिथिलाक ऐतिहासिक-भौगोलिक नामरूप अछि।

प्रश्न 4819. मिथिलाक सांस्कृतिक मूलमे लेख कोन तत्वसभ बतबैत अछि?
क. धर्म-दर्शनक गांभीर्य, कला, ज्ञान-विज्ञान, भाषा-साहित्यक परंपरा
ख. केवल व्यापार
ग. केवल युद्ध
घ. केवल कोका-कोला
उत्तर: क. धर्म-दर्शनक गांभीर्य, कला, ज्ञान-विज्ञान, भाषा-साहित्यक परंपरा
व्याख्या: मिथिला कैं बहुविध ज्ञान-संस्कृति क्षेत्र रूपेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि।

प्रश्न 4820. लेखमे जनक, याज्ञवल्क्य, कणाद, उदयन आदि नाम किएक आएल?
क. मिथिलाक पांडित्य, दर्शन आ ज्ञान-परंपरा देखाबय लेल
ख. भोजनक सामग्री बताबय लेल
ग. नाटकक टिकट लेल
घ. रंग-सूची लेल
उत्तर: क. मिथिलाक पांडित्य, दर्शन आ ज्ञान-परंपरा देखाबय लेल
व्याख्या: विभूतिसभक नाम सांस्कृतिक वैभवक प्रमाण रूपेँ प्रयुक्त अछि।

प्रश्न 4821. गर्गी, मैत्रेयी, भारती, लखिमा आदि नाम की सूचित करैत अछि?
क. मिथिलाक आदर्श नारी-चेतना आ बौद्धिक परम्परा
ख. नारी अनुपस्थित छलीह
ग. केवल हास्य-पात्र
घ. किरायादार परिवार
उत्तर: क. मिथिलाक आदर्श नारी-चेतना आ बौद्धिक परम्परा
व्याख्या: लेख स्त्री-विभूतिसभकेँ मिथिला वैभवक अंग मानैत अछि।

प्रश्न 4822. एहि खण्डक मुख्य अभिप्राय की अछि?
क. मिथिला कैं भूगोल, वैदिक स्मृति, दर्शन आ सांस्कृतिक धरोहरक संयुक्त भूमि रूपेँ देखब
ख. केवल आधुनिक पाककला
ग. सिर्फ चुनाव-समाचार
घ. केवल निजी प्रेमकथा
उत्तर: क. मिथिला कैं भूगोल, वैदिक स्मृति, दर्शन आ सांस्कृतिक धरोहरक संयुक्त भूमि रूपेँ देखब
व्याख्या: लेख मिथिला-परिचय कैं बहुस्तरीय ऐतिहासिक-सांस्कृतिक आधार पर रखैत अछि।

खण्ड ४८८ : विदेह-सदेह १ — पंचदेवोपासना, मातृका आ सांस्कृतिक तीर्थ

प्रश्न 4823. पंचदेवोपासक क्षेत्रक अर्थ लेखमे की देल गेल?
क. गणेश, विष्णु, सूर्य, शिव आ भगवतीक क्षेत्र
ख. पाँच होटलक क्षेत्र
ग. पाँच नाटकक मंच
घ. पाँच परीक्षा केन्द्र
उत्तर: क. गणेश, विष्णु, सूर्य, शिव आ भगवतीक क्षेत्र
व्याख्या: पंचदेवोपासना मिथिलाक धार्मिक बहुलता आ सद्भावक सूचक अछि।

प्रश्न 4824. लेखमे सूर्य आ शिव सम्बन्धी कोन भेद बताओल गेल?
क. सूर्य सर्वप्राचीन देव आ शिव सर्वप्राचीन ऐतिहासिक देवता कहल गेल
ख. दूनू अनुपस्थित
ग. दूनू केवल आधुनिक
घ. दूनू भोजन-सामग्री
उत्तर: क. सूर्य सर्वप्राचीन देव आ शिव सर्वप्राचीन ऐतिहासिक देवता कहल गेल
व्याख्या: लेख देव-परम्पराक प्राचीनता अलग-अलग रूपेँ रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 4825. भगवतीक तीन शक्ति रूपक सार की अछि?
क. सृष्टि, पोषण आ संहार तीनू शक्ति निहित
ख. केवल व्यापार
ग. केवल भोजन
घ. केवल संगीत
उत्तर: क. सृष्टि, पोषण आ संहार तीनू शक्ति निहित
व्याख्या: भगवती शक्ति-परिकल्पना मिथिलाक मातृपूजनक केन्द्र अछि।

प्रश्न 4826. लक्ष्मी-गणेशक पूजन ककर लेल कहल गेल?
क. सुख-समृद्धिक लेल
ख. आतंकक लेल
ग. वियोगक लेल
घ. युद्धक लेल
उत्तर: क. सुख-समृद्धिक लेल
व्याख्या: लोक-आस्था मे लक्ष्मी-गणेश समृद्धि आ मंगलक प्रतीक छथि।

प्रश्न 4827. पंचदेवोपासना लेखमे ककर प्रतीक मानल गेल?
क. धार्मिक सद्भावक
ख. धार्मिक संघर्षक
ग. भाषा-विस्मृतिक
घ. सिर्फ बजारक
उत्तर: क. धार्मिक सद्भावक
व्याख्या: एहि परंपरासँ अनेक देवभावना एक सांस्कृतिक क्षेत्रमे सहअस्तित्व रखैत अछि।

प्रश्न 4828. सप्तमातृका मूलतः ककर शक्ति रूपमे प्रस्तुत छथि?
क. सात देवता सभक संयुक्त शक्ति
ख. सात व्यापारी
ग. सात अभिनेता
घ. सात पाक-विधि
उत्तर: क. सात देवता सभक संयुक्त शक्ति
व्याख्या: मातृका-सिद्धान्त संयुक्त दैवी शक्ति आ दानव-संहारक कल्पना सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4829. सप्तमातृका सूचीमे ब्राह्मणी, वैष्णवी, माहेश्वरी आदि किएक आयल?
क. देवतासभक स्त्री-शक्ति रूप बताबय लेल
ख. भोजनक नाम लेल
ग. कविता छन्द लेल
घ. किरायादार परिचय लेल
उत्तर: क. देवतासभक स्त्री-शक्ति रूप बताबय लेल
व्याख्या: सूची देव-शक्ति सम्बन्धक पारंपरिक शास्त्रीय रूप प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 4830. सप्तमातृकाक शिल्पांकनक आरम्भ कोन कालमे कहल गेल?
क. कुषाणकालमे
ख. आधुनिक कालमे मात्र
ग. काल अज्ञात रहबाक घोषणा
घ. उपनिवेशकालमे
उत्तर: क. कुषाणकालमे
व्याख्या: लेख धार्मिक अवधारणाकेँ कला-इतिहाससँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4831. दशमहाविद्याक ऐतिहासिक मूर्ति सभ कतय उपलब्ध बताओल गेल?
क. भीठभगवानपुर आ गढ़-बरुआरी
ख. केवल काठमांडू एयरपोर्ट
ग. केवल होटल
घ. केवल समुद्रतट
उत्तर: क. भीठभगवानपुर आ गढ़-बरुआरी
व्याख्या: स्थान-उल्लेख मिथिला क्षेत्रमे शक्तिपूजनक मूर्त परंपरा देखबैत अछि।

प्रश्न 4832. पंचदेवोपासना विषयक लेखक मुख्य महत्व की अछि?
क. मिथिलाक तीर्थ, आस्था, शिल्प आ लोक-संस्कृति केँ एक सूत्रमे देखब
ख. केवल पंजी विवाद
ग. केवल हास्यप्रसंग
घ. केवल रसोई
उत्तर: क. मिथिलाक तीर्थ, आस्था, शिल्प आ लोक-संस्कृति केँ एक सूत्रमे देखब
व्याख्या: धर्म-सद्भाव, मातृका, तीर्थ आ शिल्प एक सांस्कृतिक मानचित्र रचैत अछि।

खण्ड ४८९ : विदेह-सदेह १ — मायानन्द मिश्र: “अहाँ की छी”

प्रश्न 4833. “अहाँ की छी” कविताक मुख्य संरचना कोन प्रश्न पर टिकल अछि?
क. अहाँ की छी?
ख. कतेक भोजन चाही?
ग. कोन शहर?
घ. ककर टिकट?
उत्तर: क. अहाँ की छी?
व्याख्या: पूरी कविता एक अस्तित्वात्मक प्रश्नक विस्तार अछि।

प्रश्न 4834. कवि “अहाँ” केँ प्रलोभनक नाक काटयवला मर्यादा नहि कहि की करैत छथि?
क. निषेधात्मक परिभाषासँ व्यक्ति/समाजक रिक्तता देखबैत छथि
ख. सीधा प्रशंसा मात्र
ग. रेसिपी देबैत छथि
घ. इतिहास गणना करैत छथि
उत्तर: क. निषेधात्मक परिभाषासँ व्यक्ति/समाजक रिक्तता देखबैत छथि
व्याख्या: कविता बार-बार “नहि छी” कहि पहचानक संकट खोलैत अछि।

प्रश्न 4835. “ट्रैफिक गाइड जकाँ चौबटियापर ठाढ़” बिम्ब कोन अर्थ दैत अछि?
क. संतुलनक बाहरी मुद्रा, मुदा अहिंसा-तत्व नहि
ख. शहर-यातायात सूचना मात्र
ग. होटल दिशा
घ. नाटक प्रकाश
उत्तर: क. संतुलनक बाहरी मुद्रा, मुदा अहिंसा-तत्व नहि
व्याख्या: कवि सतही संकेत आ वास्तविक नैतिकता बीच अन्तर देखबैत छथि।

प्रश्न 4836. “कोडोपैरीन खा-खा कऽ मथदुखी दबबऽ” कोन सामाजिक प्रवृत्ति पर व्यंग्य अछि?
क. मूल पीड़ाक इलाज नहि, तात्कालिक दमन
ख. पूर्ण आरोग्य
ग. वैदिक यज्ञ
घ. नवगीत
उत्तर: क. मूल पीड़ाक इलाज नहि, तात्कालिक दमन
व्याख्या: दर्दकेँ दबाउब आ उपचार नहि करब कविता मे तीखा रूपक अछि।

प्रश्न 4837. “क्षुब्ध हिमालय” बिम्ब केहन विरोध रचैत अछि?
क. बाह्य विराटता आ भीतर दबी पीड़ा
ख. छोट हास्य
ग. रसोईक सामान
घ. कोका-कोला
उत्तर: क. बाह्य विराटता आ भीतर दबी पीड़ा
व्याख्या: हिमालय-जकाँ विशाल सत्ता सेहो क्षुब्ध आ दबले रूपमे देखायल गेल।

प्रश्न 4838. “खण्डित रसना कैँ दाबि चुपचाप कानयवला सिन्धु” ककर संकेत अछि?
क. आवाज कटि गेल, विशाल पीड़ा मौन बनल
ख. पूर्ण वक्तृत्व
ग. गीत-उत्सव
घ. व्यापार
उत्तर: क. आवाज कटि गेल, विशाल पीड़ा मौन बनल
व्याख्या: सिन्धु बड़ अछि, मुदा खण्डित भाषा कारण मौन विलाप करैत अछि।

प्रश्न 4839. “एकटा बिन्दु” बिम्ब की बतबैत अछि?
क. जहाँसँ अनेक रेखा खिंचि सकैत अछि
ख. अंतिम शून्यता मात्र
ग. होटल बिल
घ. चिट्ठी पत्ता
उत्तर: क. जहाँसँ अनेक रेखा खिंचि सकैत अछि
व्याख्या: बिन्दु संभावना आ आरम्भक प्रतीक अछि।

प्रश्न 4840. रेखासभ अन्हार गुफाक घाटीमे समाप्त भऽ जाएत अछि — एहि छवि क अर्थ की?
क. संभावनासभ दिशा पाबि अंधकारमे हराएत अछि
ख. सब सफल
ग. कोनो संकट नहि
घ. केवल उत्सव
उत्तर: क. संभावनासभ दिशा पाबि अंधकारमे हराएत अछि
व्याख्या: कवि संभावना आ विफलता कैँ एकहि रूपकमे बाँधैत छथि।

प्रश्न 4841. कविताक स्वर मुख्यतः केहन अछि?
क. प्रश्नाकुल, आत्मसंशयी आ तीखा रूपकीय
ख. सरल हास्य मात्र
ग. पाक-विधि
घ. भक्ति-स्तुति मात्र
उत्तर: क. प्रश्नाकुल, आत्मसंशयी आ तीखा रूपकीय
व्याख्या: कविता प्रत्यक्ष कथनक बदला प्रश्न, रूपक आ नकारसँ बनल अछि।

प्रश्न 4842. “अहाँ की छी”क साहित्यिक महत्व की अछि?
क. पहचान, मौन, पीड़ा आ संभावना पर लघु लेकिन गहन विचार
ख. सिर्फ जीवनी-सूची
ग. सिर्फ भातक विधि
घ. सिर्फ यात्रा-वर्णन
उत्तर: क. पहचान, मौन, पीड़ा आ संभावना पर लघु लेकिन गहन विचार
व्याख्या: मायानन्द मिश्र संक्षिप्त पंक्तिसभमे अस्तित्वक जटिल प्रश्न उठबैत छथि।

खण्ड ४९० : विदेह-सदेह १ — डॉ. मित्रनाथ झा: परिचय आ “विदेह-वैभव”

प्रश्न 4843. डॉ. मित्रनाथ झाक परिचयमे हुनक पिताक सम्बन्ध कोन क्षेत्रसँ अछि?
क. मिथिला चित्रकला; स्व. लक्ष्मीनाथ झा “खोखा बाबू”
ख. होटल व्यवसाय
ग. नाटक निर्देशन
घ. सैनिक सेवा
उत्तर: क. मिथिला चित्रकला; स्व. लक्ष्मीनाथ झा “खोखा बाबू”
व्याख्या: परिचय हुनका चित्रकला-परंपरा आ शोध-संस्थान दुनू सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4844. डॉ. मित्रनाथ झा सध्या कोन संस्थान/कार्यसँ जुड़ल बतायल गेल?
क. मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा मे पांडुलिपि विभागाध्यक्ष आ अध्यापन
ख. परीक्षा-डेरा
ग. रसोईघर
घ. रेलवे टिकटघर
उत्तर: क. मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा मे पांडुलिपि विभागाध्यक्ष आ अध्यापन
व्याख्या: हुनक भूमिका शोध, पांडुलिपि आ संस्कृत-अध्यापनसँ संबंधित अछि।

प्रश्न 4845. हुनक भाषिक क्षमता कोना व्यापक बतायल गेल?
क. संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी, भोजपुरी आ उर्दूमे गद्य-पद्य लेखन
ख. केवल मैथिली अक्षर ज्ञान
ग. केवल अंग्रेजी
घ. भाषासँ असंबद्ध
उत्तर: क. संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी, भोजपुरी आ उर्दूमे गद्य-पद्य लेखन
व्याख्या: बहुभाषिक लेखन हुनक विद्वत्ता आ संवाद-क्षेत्रक विस्तार देखबैत अछि।

प्रश्न 4846. “विदेह-वैभव” कवितामे विदेह-भूमि कोना कहल गेल?
क. विद्या-वैभव केर गरिमासँ युक्त सिद्ध भूमि
ख. शून्य भूमि
ग. केवल बाजार
घ. केवल पाकशाला
उत्तर: क. विद्या-वैभव केर गरिमासँ युक्त सिद्ध भूमि
व्याख्या: कविता विदेह/मिथिला केँ ज्ञानक पावन केन्द्र रूपेँ चित्रित करैत अछि।

प्रश्न 4847. कविता अनुसार विदेह भूमिक उदारता कोन पंक्ति-भावमे अछि?
क. अपन वा आनक थातीमे अंतर नहि करब
ख. केवल अपन हित
ग. दुसराक ज्ञान रोकब
घ. भाषा बिसरब
उत्तर: क. अपन वा आनक थातीमे अंतर नहि करब
व्याख्या: ज्ञान-बाँटबाक सार्वजनीन भाव कविताक प्रमुख गुण अछि।

प्रश्न 4848. “ज्ञान केर बाती” बिम्ब कोन कार्य देखबैत अछि?
क. ज्ञानक ज्योति कैँ मंद नहि पड़य देब
ख. दीया बेचब
ग. सामान तोलब
घ. दूध खौलायब
उत्तर: क. ज्ञानक ज्योति कैँ मंद नहि पड़य देब
व्याख्या: विदेह भूमि ज्ञान-दीपक राखरखाव करैत अछि।

प्रश्न 4849. “मिथला केर तापस ज्ञान-भानु”क अर्थ की अछि?
क. मिथिलाक तपस्वी ज्ञान-सूर्य सँ अनेक क्षेत्र प्रकाशित भेल
ख. सूर्यास्त मात्र
ग. कृषि-विफलता
घ. रसोई ताप
उत्तर: क. मिथिलाक तपस्वी ज्ञान-सूर्य सँ अनेक क्षेत्र प्रकाशित भेल
व्याख्या: कविता ज्ञानक प्रकाशक रूपक सँ मिथिला-वैभव गाबैत अछि।

प्रश्न 4850. कवितामे मतवैभिन्न्यक मिहमा किएक रेखांकित अछि?
क. विचार-विविधता कैँ दिव्यभूमिक शक्ति मानल गेल
ख. मतभेद निषिद्ध अछि
ग. कोनो विचार नहि
घ. केवल आदेश
उत्तर: क. विचार-विविधता कैँ दिव्यभूमिक शक्ति मानल गेल
व्याख्या: मिथिला न्याय-दर्शन आ विमर्श-परंपरा सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4851. “मध्य मार्ग”क अनुगामी रहबाक अर्थ की?
क. तुच्छ फलासक्ति सँ दूर संतुलित ज्ञान-मार्ग
ख. अतिवाद मात्र
ग. निष्क्रियता
घ. व्यापारिक लाभ
उत्तर: क. तुच्छ फलासक्ति सँ दूर संतुलित ज्ञान-मार्ग
व्याख्या: कविता ज्ञान-आचारमे संयम आ उच्च ध्येयक भाव राखैत अछि।

प्रश्न 4852. “विदेह-वैभव”क मूल स्वर की अछि?
क. मिथिला/विदेहक ज्ञान, उदारता आ पावन परंपराक स्तुति
ख. व्यंग्य मात्र
ग. भोजन-वर्णन
घ. नशा-प्रसंग
उत्तर: क. मिथिला/विदेहक ज्ञान, उदारता आ पावन परंपराक स्तुति
व्याख्या: कविता सांस्कृतिक गौरवगीत रूपेँ पढ़ल जाएत अछि।

खण्ड ४९१ : विदेह-सदेह १ — “भग्न चिन्तन” आ “भोर”क आरम्भिक विवेचना

प्रश्न 4853. “भग्न चिन्तन” मे कवि रचनात्मक कार्य किएक कठिन मानैत छथि?
क. चिन्ताक तप्त दावानलमे मन फँसल अछि
ख. समय बहुत सरल अछि
ग. कवि प्रसन्न भोजमे छथि
घ. कोनो भाव नहि
उत्तर: क. चिन्ताक तप्त दावानलमे मन फँसल अछि
व्याख्या: चिन्ता आगिक रूपमे रचनाक मार्ग रोकैत अछि।

प्रश्न 4854. “हियमे अबैछ लहरि भावक” पंक्तिक अर्थ की?
क. भावनासभ उठैत अछि, मुदा ओकर धार पार करब कठिन अछि
ख. भाव शून्य अछि
ग. कविता समाप्त
घ. केवल गद्य
उत्तर: क. भावनासभ उठैत अछि, मुदा ओकर धार पार करब कठिन अछि
व्याख्या: कविता भाव-उद्रेक आ अभिव्यक्ति-असमर्थता बीच संघर्ष देखबैत अछि।

प्रश्न 4855. लेखनी “बाजि रहल” आ मानस-पट “धिक्कारि रहल” — ई की सूचित करैत अछि?
क. सृजनक आन्तरिक दबाव आ आत्मग्लानि
ख. पूर्ण निश्चिन्तता
ग. भोजनक निमंत्रण
घ. नाटकक ताल
उत्तर: क. सृजनक आन्तरिक दबाव आ आत्मग्लानि
व्याख्या: कवि भीतरक रचनात्मक आह्वान अनुभव करैत छथि।

प्रश्न 4856. “खाली हाथ जाएत सभ क्यो” भाव ककरा स्वीकार करैत अछि?
क. भौतिक वस्तु संग नहि जाएत, ई जीवन-सत्य
ख. धन अमर अछि
ग. मानव अमर देहमे
घ. भोजन शाश्वत
उत्तर: क. भौतिक वस्तु संग नहि जाएत, ई जीवन-सत्य
व्याख्या: कविता क्षणभंगुरता आ सृजन-लालसा कैं जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4857. “भग्न वीणा केर रुग्ण तार” बिम्ब की बतबैत अछि?
क. टूटल-संवेदनशील साधनसँ सेहो दू आखर गाबयक आकांक्षा
ख. पूर्ण मौनक आदेश
ग. व्यंग्य
घ. नाटक
उत्तर: क. टूटल-संवेदनशील साधनसँ सेहो दू आखर गाबयक आकांक्षा
व्याख्या: कवि टूटनक बीचो रचना चाहैत छथि।

प्रश्न 4858. मुखीलाल चौधरीक आलेख कोन गीतिएलबमक चर्चा सँ आरम्भ होइत अछि?
क. समझौता नेपालक “भोर”
ख. पंचदेवोपासना
ग. डटके जलपान
घ. पन्थीसँ
उत्तर: क. समझौता नेपालक “भोर”
व्याख्या: लेख “भोर” एल्बम आ निर्देशकक साक्षात्कारसँ प्रेरित अछि।

प्रश्न 4859. “भोर” एल्बमक लेल लेखक कोन व्यापक आशा व्यक्त करैत छथि?
क. गीत-संगीतसँ मिथिलावासी, मधेशी, आदिवासी थारु आ देशवासीमे जागरण-सद्भाव बढ़य
ख. केवल व्यापार बढ़य
ग. केवल विवाह खर्च बढ़य
घ. समाज विभाजित होय
उत्तर: क. गीत-संगीतसँ मिथिलावासी, मधेशी, आदिवासी थारु आ देशवासीमे जागरण-सद्भाव बढ़य
व्याख्या: लेख संगीत कैं सामाजिक जागरण आ सद्भावक माध्यम मानैत अछि।

प्रश्न 4860. मुखीलालक अनुसार “भोर”क गीतसभक गुणवत्ता कोना अछि?
क. कोनो गीत बीस नहि, सभटा एकैस; एकसँ बढ़ि कऽ एक
ख. सभ गीत कमजोर
ग. किछु नहि कहल
घ. केवल वाद्य अछि
उत्तर: क. कोनो गीत बीस नहि, सभटा एकैस; एकसँ बढ़ि कऽ एक
व्याख्या: लेखक उत्साहपूर्वक गीतसभक सामूहिक श्रेष्ठता मानैत छथि।

प्रश्न 4861. रूपा झाक गीतक मुख्य संदेश की कहल गेल?
क. शिक्षा प्रति जागरूकता, ज्ञान प्रकाश आ अज्ञान अन्धकार
ख. भोजन पकाउ
ग. नाटक देखू
घ. मौन रहू
उत्तर: क. शिक्षा प्रति जागरूकता, ज्ञान प्रकाश आ अज्ञान अन्धकार
व्याख्या: गीत शिक्षा कैं संकट समाधानक साधन मानैत अछि।

प्रश्न 4862. पूनम ठाकुरक गीतक मुख्य सामाजिक संदेश की अछि?
क. बेटा-बेटीमे भेदभाव नहि होएबाक चाही
ख. भेदभाव बढ़ाउ
ग. बेटीक अवहेलना
घ. शिक्षा छोड़ू
उत्तर: क. बेटा-बेटीमे भेदभाव नहि होएबाक चाही
व्याख्या: लेख कन्या-समानता आ सन्तान-समानता पर बल देत अछि।

खण्ड ४९२ : विदेह-सदेह १ — “भोर” एल्बम: सद्भाव, सकारात्मकता आ प्रेम

प्रश्न 4863. साहिल अनवरजीक गीतक प्रसंगमे लेखक मिथिलाक माटि ककर प्रतीक बनबैत छथि?
क. सद्भावना, सहिष्णुता आ साम्प्रदायिक मेलक
ख. साम्प्रदायिक काँटाक
ग. सिर्फ व्यापारक
घ. मौन पीड़ाक
उत्तर: क. सद्भावना, सहिष्णुता आ साम्प्रदायिक मेलक
व्याख्या: हिन्दू-इस्लामिक परम्परा संग-संग चलबाक बिम्ब प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 4864. “ताजिया” आ “छठि परमेसरी”क पंक्तिसभ लेखकक दृष्टिमे की देखबैत अछि?
क. मिथिलाक पावन माटिमे परस्पर धर्म-सम्मान
ख. एक-दोसरासँ युद्ध
ग. कर्महीनता
घ. भाषा-विस्मरण
उत्तर: क. मिथिलाक पावन माटिमे परस्पर धर्म-सम्मान
व्याख्या: गीत धार्मिक सहअस्तित्वक जीवंत उदाहरण रूपेँ पढ़ल गेल।

प्रश्न 4865. धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक गीतक मूल भाव कोन बतायल गेल?
क. सकारात्मक सोच, धैर्य आ निराश नहि होएबाक आग्रह
ख. हिंसा
ग. उपेक्षा
घ. अहंकार
उत्तर: क. सकारात्मक सोच, धैर्य आ निराश नहि होएबाक आग्रह
व्याख्या: लेख गीत कैं आशा-प्रेरणा आ वृद्ध माता-पिता प्रति संवेदना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4866. “सँझुका सूरजक लाल किरिनिया...” पंक्ति लेखक ककर स्रोत मानैत छथि?
क. सकारात्मकताक स्रोत
ख. निराशाक आदेश
ग. भोजन विधि
घ. व्यंग्य मात्र
उत्तर: क. सकारात्मकताक स्रोत
व्याख्या: संध्या कैं अंत नहि, भोर-प्रीति कथा रूपैं देखल गेल।

प्रश्न 4867. माँ-बापक सन्तान प्रति दृष्टि कोना प्रतिपादित अछि?
क. सन्तान दोषी होइतहुँ ममता आ आशा बनल रहैत अछि
ख. ममता समाप्त
ग. कोनो सम्बन्ध नहि
घ. केवल दण्ड
उत्तर: क. सन्तान दोषी होइतहुँ ममता आ आशा बनल रहैत अछि
व्याख्या: “हमर बेटा रामसन” भाव असीम पितृ-मातृ ममता देखबैत अछि।

प्रश्न 4868. नरेन्द्रकुमार मिश्रक गीत लेखकक अनुसार की कहैत अछि?
क. प्रेम, स्नेह, माया-ममता सँ संसार सुन्दर अछि
ख. प्रेम व्यर्थ अछि
ग. संसार निरस रहबे चाही
घ. कठोरता श्रेष्ठ
उत्तर: क. प्रेम, स्नेह, माया-ममता सँ संसार सुन्दर अछि
व्याख्या: लेख प्रेम-स्नेहक आदान-प्रदान कैं जीवन-सौन्दर्यक आधार मानैत अछि।

प्रश्न 4869. “आँखि देखय त सिदिखन सुन्दर सृजन” पंक्ति कोन भावक उदाहरण अछि?
क. प्रेमपूर्ण दृष्टि आ मधुर वचनक
ख. क्रोधक
ग. निराशाक
घ. भोजनक
उत्तर: क. प्रेमपूर्ण दृष्टि आ मधुर वचनक
व्याख्या: इंद्रिय-क्रिया सेहो प्रेम-संस्कारित हो सकैत अछि।

प्रश्न 4870. राजेन्द्र विमलजीक गीतमे दिवाली कखन कहल गेल?
क. प्रेम चेतना जागि पड़ए तखने
ख. केवल पटाखा फुटए तखने
ग. केवल धन होय तखने
घ. किछु नहि
उत्तर: क. प्रेम चेतना जागि पड़ए तखने
व्याख्या: दिवाली बाहरी दीप नहि, चेतना-प्रेमक जागरण बनैत अछि।

प्रश्न 4871. चन्द्रशेखर शेखरजीक पंक्तिमे “फतहक विश्वास” की दर्शबैत अछि?
क. नैराश्य-डर सँ मुक्त संघर्षशील आशा
ख. पराजयक स्वीकार
ग. मौन
घ. आलस्य
उत्तर: क. नैराश्य-डर सँ मुक्त संघर्षशील आशा
व्याख्या: गीतक भाव विनाश रोकि इतिहास ठोकबाक प्रेरणा दैत अछि।

प्रश्न 4872. “भोर” विवेचनक साझा मूल्य की अछि?
क. शिक्षा, समता, सद्भाव, आशा आ प्रेमक सामाजिक संगीत
ख. व्यर्थ मनोरंजन
ग. केवल विज्ञापन
घ. भोजन-सूची
उत्तर: क. शिक्षा, समता, सद्भाव, आशा आ प्रेमक सामाजिक संगीत
व्याख्या: लेख एल्बम कैं सांस्कृतिक-सामाजिक जागरणक बहु-स्वरीय मंच बनबैत अछि।

खण्ड ४९३ : विदेह-सदेह १ — “भोर”क संयोजन, संगीत आ सामूहिक श्रेय

प्रश्न 4873. मुखीलाल चौधरी अपन गीतक सम्बन्धमे की स्वीकार करैत छथि?
क. धीरेन्द्र प्रेमर्षि ओकरा परिमार्जित आ संपादित कएलनि
ख. गीत ककरो नहि देखाओल गेल
ग. गीत नष्ट भेल
घ. गीत केवल अनुवाद छल
उत्तर: क. धीरेन्द्र प्रेमर्षि ओकरा परिमार्जित आ संपादित कएलनि
व्याख्या: लेखक अपन गीतक सुन्दर रूप लेल संपादकीय-संगीतात्मक सहयोग मानैत छथि।

प्रश्न 4874. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक प्रति कोन भाव प्रकट करैत छथि?
क. हार्दिक धन्यवाद
ख. क्रोध
ग. अस्वीकार
घ. पूर्ण मौन
उत्तर: क. हार्दिक धन्यवाद
व्याख्या: सहयोगक सार्वजनिक स्वीकार लेखकक विनम्रता देखबैत अछि।

प्रश्न 4875. “सभटा गीतके संगीत कर्णप्रिय लगैत अछि” — एहि कथनक अर्थ की?
क. संगीत बार-बार सुनबाक इच्छा जगबैत अछि
ख. संगीत असह्य अछि
ग. गीत मौन अछि
घ. केवल वाद-विवाद
उत्तर: क. संगीत बार-बार सुनबाक इच्छा जगबैत अछि
व्याख्या: लेख संगीतक श्रवणीयता आ आकर्षणक प्रशंसा करैत अछि।

प्रश्न 4876. धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक लेल लेखक कोन शुभकामना दैत छथि?
क. आगामी दिनमे एहोसँ निक संगीत देथि
ख. संगीत छोड़ि देथि
ग. गीत रोकथि
घ. रंगमंच त्यागथि
उत्तर: क. आगामी दिनमे एहोसँ निक संगीत देथि
व्याख्या: लेख भविष्यक रचनात्मक निरंतरता चाहैत अछि।

प्रश्न 4877. “भोर”क संयोजक रूपेँ ककरा बधाई देल गेल?
क. रूपा झा कैँ
ख. आर्य कैँ
ग. डटकेजलपान कैँ
घ. पंचदेव कैँ
उत्तर: क. रूपा झा कैँ
व्याख्या: गीतकार-संगीतकार-गायक-गायिका संयोजन लेल रूपा झा प्रशंसित छथि।

प्रश्न 4878. एल्बमक प्रस्तुति कोना कहल गेल?
क. सुन्दर आ हृदयस्पर्शी
ख. अव्यवस्थित
ग. निरर्थक
घ. गोपनीय
उत्तर: क. सुन्दर आ हृदयस्पर्शी
व्याख्या: लेख सामूहिक श्रमक सौन्दर्य आ संवेदनशीलता रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 4879. लेखक अन्तमे किन-किन कैँ बधाई दैत छथि?
क. गीतकार, संगीतकार, गायक-गायिका, संयोजक आ समझौता नेपालक निर्देशक
ख. केवल एक होटल मालिक
ग. केवल राजनीतिक नेता
घ. केवल दर्शक
उत्तर: क. गीतकार, संगीतकार, गायक-गायिका, संयोजक आ समझौता नेपालक निर्देशक
व्याख्या: लेख सामूहिक सृजनक सभ अंगकेँ श्रेय दैत अछि।

प्रश्न 4880. एहि समापनमे “भोर” कोन रूपमे उभरैत अछि?
क. सामूहिक सांस्कृतिक परियोजना
ख. एकल निजी डायरी
ग. पाक विधि
घ. न्यायालय रिकॉर्ड
उत्तर: क. सामूहिक सांस्कृतिक परियोजना
व्याख्या: गीत-एल्बमक निर्माण अनेक कलाकार आ संयोजकक सहयोगसँ भेल।

प्रश्न 4881. मुखीलालक लेखन-स्वर केहन अछि?
क. उत्साही, कृतज्ञ आ मूल्य-केन्द्रित
ख. कड़वाहट मात्र
ग. पूर्ण उदासीन
घ. कठोर अकादमिक मात्र
उत्तर: क. उत्साही, कृतज्ञ आ मूल्य-केन्द्रित
व्याख्या: लेख प्रशंसा करैतहुँ गीतसभक सामाजिक संदेश अलग-अलग पढ़ैत अछि।

प्रश्न 4882. “भोर” शीर्षकक सांकेतिक अर्थ एहि विवेचनमे की बनैत अछि?
क. नव चेतना, आशा, सद्भाव आ सांस्कृतिक उजास
ख. रात्रिक स्थायी अन्धार
ग. अंतिम शोक
घ. स्मृति-विनाश
उत्तर: क. नव चेतना, आशा, सद्भाव आ सांस्कृतिक उजास
व्याख्या: गीत-एल्बम सामाजिक जागरणक भोर रूपेँ समझायल गेल।

खण्ड ४९४ : विदेह-सदेह १ — एन. अरुणा: “ई सेहो अछि प्रवास”

प्रश्न 4883. “ई सेहो अछि प्रवास” मे कवयित्री कोन धारणा बढ़बैत छथि?
क. प्रवास केवल विदेश/अमेरिका नहि, नारीक विवाहो एक प्रकारक प्रवास अछि
ख. प्रवास केवल व्यापार अछि
ग. नारी कहियो प्रवासी नहि
घ. प्रवास केवल नाटक
उत्तर: क. प्रवास केवल विदेश/अमेरिका नहि, नारीक विवाहो एक प्रकारक प्रवास अछि
व्याख्या: कविता स्त्रीजीवनक विस्थापन कैं प्रवासक व्यापक अर्थमे रखैत अछि।

प्रश्न 4884. कवितामे “तैयो अछी तँ बेटीये” वाक्य ककर विडंबना देखबैत अछि?
क. बेटीक जन्मसँ जुड़ल पितृसत्तात्मक दृष्टि
ख. पूर्ण समानता
ग. केवल उत्सव
घ. भाषिक खेल
उत्तर: क. बेटीक जन्मसँ जुड़ल पितृसत्तात्मक दृष्टि
व्याख्या: बेटीक अस्तित्व आरम्भे सँ परायापनक सामाजिक धारणा मे बाँधल अछि।

प्रश्न 4885. “कोनो पुरुषक हाथमे तँ जएबाक छैक” पंक्ति की कहैत अछि?
क. विवाहक माध्यमसँ स्त्रीक अनिवार्य विस्थापन
ख. स्त्री सदैव स्वतंत्र स्थलमे
ग. पुरुष प्रवासी नहि
घ. कोनो सम्बन्ध नहि
उत्तर: क. विवाहक माध्यमसँ स्त्रीक अनिवार्य विस्थापन
व्याख्या: कविता विवाहोत्तर गमन कैं जीवन-व्यापी प्रवास रूपेँ देखबैत अछि।

प्रश्न 4886. कविता किएक कहैत अछि जे अमेरिका मात्र प्रवास नहि?
क. क्योंकि जन्मस्थान छोड़ि अनचिन्हार घर जाएब सेहो प्रवास अछि
ख. अमेरिका शब्द नहि बुझल
ग. कविता भूगोल मात्र
घ. रेसिपी प्रसंग
उत्तर: क. क्योंकि जन्मस्थान छोड़ि अनचिन्हार घर जाएब सेहो प्रवास अछि
व्याख्या: प्रवासक भाव भौगोलिक दूरीसँ बेसी सम्बन्ध-विस्थापन अछि।

प्रश्न 4887. “अवहेलना कए सकैत छी सुविधासँ” कथन कोन सामाजिक प्रतिक्रिया पर व्यंग्य अछि?
क. स्त्रीक विस्थापन-संकट कैं सामान्य मानि उपेक्षित करब
ख. सम्पूर्ण सहानुभूति
ग. समान अधिकार
घ. विदेशयात्रा
उत्तर: क. स्त्रीक विस्थापन-संकट कैं सामान्य मानि उपेक्षित करब
व्याख्या: कविता पाठक कैं सुविधा-जन्य असंवेदनशीलता पर सोचबैत अछि।

प्रश्न 4888. “छोड़ब जिनगी भरिक लेल अपन जन्मस्थान” — ई पंक्ति ककर पीड़ा खोलैत अछि?
क. बेटी/स्त्रीक स्थायी घर-छोड़ाइ
ख. पर्यटनक प्रसन्नता
ग. रंगकर्म यात्रा
घ. होटल बदलाइ
उत्तर: क. बेटी/स्त्रीक स्थायी घर-छोड़ाइ
व्याख्या: जन्मस्थान छोड़ब स्त्रीक सामान्यीकृत दुख रूपेँ प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 4889. “अनचिन्हारक आँगुर” बिम्ब की व्यक्त करैत अछि?
क. अपरिचित घर/व्यक्ति संग जीवन-बंधनक असहजता
ख. पूर्ण परिचय
ग. सिद्ध गुरु
घ. नदीक तट
उत्तर: क. अपरिचित घर/व्यक्ति संग जीवन-बंधनक असहजता
व्याख्या: कविता विवाहक अपरिचय आ निर्भरता कैं तीखा बिम्ब दैत अछि।

प्रश्न 4890. घुरि सकबाक बादो “मात्र पाहुन” बनब की बतबैत अछि?
क. जन्मघरमे अधिकार घटि अतिथि-जकाँ स्थिति
ख. घर पूर्णतः अपन रहैत
ग. कहियो लौटि नहि सकैत
घ. केवल खेल
उत्तर: क. जन्मघरमे अधिकार घटि अतिथि-जकाँ स्थिति
व्याख्या: प्रवासक कठोरता ई अछि जे वापसी सेहो पूर्ण वापसी नहि।

प्रश्न 4891. “शृंखला ससरल हमर इच्छापर” पंक्ति ककर रूपक अछि?
क. स्त्रीक इच्छापर सामाजिक बन्धन
ख. स्वाधीन इच्छा
ग. भोजन-सामग्री
घ. फसल
उत्तर: क. स्त्रीक इच्छापर सामाजिक बन्धन
व्याख्या: कविता इच्छा आ बन्धनक संघर्षक मार्मिक भाषा बनबैत अछि।

प्रश्न 4892. “ई सेहो अछि प्रवास”क मूल नारीवादी अर्थ की अछि?
क. स्त्रीक जीवनगत विस्थापन कैं प्रवासक गंभीर अनुभव रूपेँ मान्यता देब
ख. स्त्री-दुखक इन्कार
ग. प्रवासक उपहास
घ. केवल देश-विदेश यात्रा
उत्तर: क. स्त्रीक जीवनगत विस्थापन कैं प्रवासक गंभीर अनुभव रूपेँ मान्यता देब
व्याख्या: कविता विवाह, जन्मस्थान, पाहुनपन आ इच्छा-बन्धनद्वारा नारी-प्रवास परिभाषित करैत अछि।

खण्ड ४९५ : विदेह-सदेह १ — नागेन्द्र झा: पंजी, पाँच संख्या आ विवाह-धर्म

प्रश्न 4893. नागेन्द्र झा लेखमे पंजीकारक विषय किएक उठबैत छथि?
क. पंजी शब्द, पंजीकारक काज आ विवाह-धर्मक आधार बुझाबय लेल
ख. रेसिपी देबय लेल
ग. नाटक समीक्षा लेल
घ. हाइकू लिखय लेल
उत्तर: क. पंजी शब्द, पंजीकारक काज आ विवाह-धर्मक आधार बुझाबय लेल
व्याख्या: लेख पंजीप्रथा कैं धर्मशास्त्र, वंश-अभिलेख आ विवाह-नियमसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4894. पंजी शब्दक सम्बन्ध लेखमे कोन संख्या सँ जोड़ल गेल?
क. पाँच
ख. दस
ग. बारह
घ. सौ
उत्तर: क. पाँच
व्याख्या: पंच शब्द, पाँच अंगुलि, पाँच पत्ता आदि उदाहरण सँ पाँचक अर्थ बुझाओल गेल।

प्रश्न 4895. मैथिल ब्राह्मण “पंचदेवोपासक” अछि — एहि प्रसंगक उपयोग किएक?
क. शुभ कार्यमे पंचदेवताक पूजा आ पंजी-प्रथा बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध देखाबय लेल
ख. भोजन मात्र
ग. रंगमंच
घ. विज्ञान कथा
उत्तर: क. शुभ कार्यमे पंचदेवताक पूजा आ पंजी-प्रथा बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध देखाबय लेल
व्याख्या: पाँच संख्या धार्मिक-सामाजिक संरचना मे अर्थवान बनैत अछि।

प्रश्न 4896. “मातृतः पंचमी त्यक्त्वा पितृतः सप्तमी भजेत्” नियम ककरा रोकैत अछि?
क. माइक पक्षक पाँचम आ पिताक पक्षक सातम सगोत्र/सपिण्ड अनुचित विवाह
ख. सब विवाह
ग. भोजन
घ. गीत
उत्तर: क. माइक पक्षक पाँचम आ पिताक पक्षक सातम सगोत्र/सपिण्ड अनुचित विवाह
व्याख्या: लेख विवाह निषेधक शास्त्रीय नियमक व्याख्या करैत अछि।

प्रश्न 4897. पंजीमे वर-कन्याक कोन विवरण आवश्यक कहल गेल?
क. दुनू पक्षक वंशक पूर्ण सपिण्ड अभिलेख
ख. मात्र रूप-रंग
ग. मात्र भोजन खर्च
घ. मात्र गीत-सूची
उत्तर: क. दुनू पक्षक वंशक पूर्ण सपिण्ड अभिलेख
व्याख्या: पंजी विवाह-अधिकार जाँचबाक अभिलेखीय साधन अछि।

प्रश्न 4898. पंजीकार ककरा कहल गेल?
क. जे लिखि प्रमाणित करथि जे वर-कन्या सपिण्ड-अभ्यनात नहि छथि
ख. रसोइया
ग. नाटककार
घ. होटल-मालिक
उत्तर: क. जे लिखि प्रमाणित करथि जे वर-कन्या सपिण्ड-अभ्यनात नहि छथि
व्याख्या: पंजीकार विवाहयोग्यता निर्णयमे अभिलेख-ज्ञानी धर्मशास्त्री/रजिस्ट्रार-जकाँ भूमिका निभबैत छथि।

प्रश्न 4899. पंजी-प्रथा ककर समयसँ प्रचलित कहल गेल?
क. हरिसिंह देवक समयसँ
ख. आधुनिक होटल-काल
ग. केवल आजुक समय
घ. अज्ञात बिना कथा
उत्तर: क. हरिसिंह देवक समयसँ
व्याख्या: लेख उत्पत्ति-कथा हरिसिंह देवक आदेशसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4900. कन्यादानमे वर-कन्याक चार पक्षक व्याख्या पंजीमे किएक चाही?
क. विवाहक शुद्धता आ भविष्यक विवाद रोकबाक लेल
ख. भोजन तय करबाक लेल
ग. कविता छापबाक लेल
घ. गजल तुक मिलाबय लेल
उत्तर: क. विवाहक शुद्धता आ भविष्यक विवाद रोकबाक लेल
व्याख्या: वंश-पक्षक स्पष्ट अभिलेख विवाह-धर्मक केन्द्र अछि।

प्रश्न 4901. याज्ञवल्क्यक साक्ष्य-प्रकरणक उदाहरण ककरा समर्थन करैत अछि?
क. पूर्ण पता आ अभिलेख राखि भविष्यक विवाद रोकब
ख. रिकॉर्डक विरोध
ग. मौखिक भ्रम
घ. कला-विनाश
उत्तर: क. पूर्ण पता आ अभिलेख राखि भविष्यक विवाद रोकब
व्याख्या: लेख पंजी कैं व्यापक अभिलेख-परंपरा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4902. एहि खण्डमे पंजीक सार अर्थ की अछि?
क. वंश, धर्म, विवाह-अधिकार आ सामाजिक स्मृतिक विश्वसनीय अभिलेख
ख. केवल नाम-सूची
ग. केवल काव्य-पुस्तक
घ. केवल पाक-विधि
उत्तर: क. वंश, धर्म, विवाह-अधिकार आ सामाजिक स्मृतिक विश्वसनीय अभिलेख
व्याख्या: लेख पंजी कैं मैथिल समाजक दीर्घकालिक वैवाहिक-सांस्कृतिक सुरक्षा मानैत अछि।

खण्ड ४९६ : विदेह-सदेह १ — पंजी-प्रबंधक उत्पत्ति, न्यायिक महत्त्व आ पंजीकारक नैतिकता

प्रश्न 4903. पंजी-प्रबंधक उत्पत्ति-कथामे ब्राह्मणी पर कोन झूठ आरोप लागल?
क. चांडाल संग सम्बन्धक
ख. भोजन चोरीक
ग. नाटक बिगाड़बाक
घ. गीत न गाबयक
उत्तर: क. चांडाल संग सम्बन्धक
व्याख्या: झूठ आरोप पवित्रता, साक्ष्य आ न्याय-संशोधनक प्रसंग बनबैत अछि।

प्रश्न 4904. लखिमा ठकुराइनक भूमिका की छल?
क. गलत प्रायश्चित्त सुधारि सही वाक्य लिखलनि
ख. अभियोग दोहरौलनि
ग. भोजन बनौलनि
घ. कथा छोड़लनि
उत्तर: क. गलत प्रायश्चित्त सुधारि सही वाक्य लिखलनि
व्याख्या: ठकुराइन न्यायिक-शास्त्रीय बुद्धि आ स्त्री-विद्वत्ता रूपेँ सामने अबैत छथि।

प्रश्न 4905. नव प्रायश्चित्त-वाक्य राखलापर की भेल?
क. ब्राह्मणी नहि पकलीह, आरोपक सत्यता खंडित भेल
ख. ओ तुरन्त दण्डित भेलीह
ग. गाम जड़ि गेल
घ. किछु नहि
उत्तर: क. ब्राह्मणी नहि पकलीह, आरोपक सत्यता खंडित भेल
व्याख्या: कथा सत्य-असत्यक शास्त्रीय परीक्षणक नाटकीय रूप अछि।

प्रश्न 4906. हरिसिंह देव पंडितमंडली सँ कोन प्रश्न पुछलनि?
क. उक्त स्त्रीक पति चांडाल कोना?
ख. खीर कोना बनत?
ग. नाटक कोना होयत?
घ. गीत के गाओत?
उत्तर: क. उक्त स्त्रीक पति चांडाल कोना?
व्याख्या: राजकीय प्रश्न विवाह-शास्त्रक त्रुटि अन्वेषण करैत अछि।

प्रश्न 4907. विचारक बाद स्त्रीक पति चांडाल किएक मानल गेल?
क. हुनकर विवाह अनधिकृत कन्यासँ भेल छल
ख. ओ चांडाल जन्मल छलाह
ग. ओ रसोइया छलाह
घ. ओ नाटककार छलाह
उत्तर: क. हुनकर विवाह अनधिकृत कन्यासँ भेल छल
व्याख्या: कथा विवाह-अधिकार जाँचक आवश्यकता सिद्ध करैत अछि।

प्रश्न 4908. महाराजक आदेशक बाद की बनल?
क. मैथिल ब्राह्मण लोकनिक विवाह-पंजी
ख. नव पाक-पुस्तक
ग. गीत-एल्बम
घ. क्रीड़ा-दल
उत्तर: क. मैथिल ब्राह्मण लोकनिक विवाह-पंजी
व्याख्या: उत्पत्ति-कथा पंजीप्रथा कैं सामाजिक-सुधारक परिणाम रूपेँ राखैत अछि।

प्रश्न 4909. पंजी गोत्रक अनुसार नहि, मूलक अनुसार किएक बनल?
क. गामक पहचान आ मूल-परम्परा सुरक्षित रहय
ख. गोत्र अप्रासंगिक छल
ग. नाम नहि चाही
घ. अभिलेख नहि चाही
उत्तर: क. गामक पहचान आ मूल-परम्परा सुरक्षित रहय
व्याख्या: एक गोत्रमे अनेक मूल होइत अछि; मूल वंश-स्थानक परिचय दैत अछि।

प्रश्न 4910. पंजीकारक परामर्श बिना विवाह-निर्णय करब लेखक किएक अनुचित मानैत छथि?
क. एहिसँ पंजी-विद्या लुप्त आ विवाह-शुद्धता संकटमे पड़ि सकैत अछि
ख. एहिसँ भोजन खराब
ग. नाटक बन्द
घ. गीत धीमा
उत्तर: क. एहिसँ पंजी-विद्या लुप्त आ विवाह-शुद्धता संकटमे पड़ि सकैत अछि
व्याख्या: लेख जीवित परंपरा आ पंजीकारक आर्थिक-सांस्कृतिक आधारक चिन्ता करैत अछि।

प्रश्न 4911. बनैली राज्य मुकदमा प्रसंग पंजीक कोन महत्त्व देखबैत अछि?
क. न्यायालयमे वंश-अभिलेख निर्णायक प्रमाण बनि सकैत अछि
ख. पंजी अस्वीकार भेल
ग. केवल लोककथा
घ. कविता-पुरस्कार
उत्तर: क. न्यायालयमे वंश-अभिलेख निर्णायक प्रमाण बनि सकैत अछि
व्याख्या: पंजी केवल विवाह नहि, उत्तराधिकार आ संपत्ति-विवादमे सेहो प्रमाण अछि।

प्रश्न 4912. राजदरबारक वर-अधिकार प्रसंग पंजीकारक कोन गुण देखबैत अछि?
क. लोभ छोड़ि अनधिकृत निर्णयसँ बचबाक नैतिकता
ख. रुपैयाक लोभमे निर्णय
ग. पूर्ण डरपोकता
घ. व्यापार
उत्तर: क. लोभ छोड़ि अनधिकृत निर्णयसँ बचबाक नैतिकता
व्याख्या: पंजीकार सत्य-अधिकारक पक्षमे चुपचाप हटि जाइत छथि, ई नैतिक धैर्यक उदाहरण अछि।

खण्ड ४९७ : विदेह-सदेह १ — मोदानन्द झा स्मृति आ कोसी-बाढ़क सामाजिक परिप्रेक्ष्य

प्रश्न 4913. नरेश मोहन झाक संस्मरणमे मोदानन्द झाक आगमन कोना चित्रित अछि?
क. महापुरुष-जकाँ तेजस्वी, आदरणीय आगमन
ख. साधारण अजनबी मात्र
ग. हास्य-पात्र
घ. रेसिपी लेखक
उत्तर: क. महापुरुष-जकाँ तेजस्वी, आदरणीय आगमन
व्याख्या: आगन्तुकक देह-वर्णन आ घरक उल्लास श्रद्धाभाव रचैत अछि।

प्रश्न 4914. गृहस्थ-परिवार मोदानन्द झाक सम्मान कोना करैत अछि?
क. पएर धोअब, जल छिड़कब, आसन देब, प्रणाम करब
ख. दरवाजे सँ हटेब
ग. भोजन न देब
घ. नाटक करब
उत्तर: क. पएर धोअब, जल छिड़कब, आसन देब, प्रणाम करब
व्याख्या: संस्मरणमे पंजीकारक सामाजिक-धार्मिक प्रतिष्ठा स्पष्ट अछि।

प्रश्न 4915. मोदानन्द झाक परिचयमे “वंश रक्षक” किएक कहल गेल?
क. पंजी-ज्ञानसँ कुल-जाती आ वंश-पहिचान सुरक्षित रहैत अछि
ख. ओ सैनिक छलाह
ग. ओ चिकित्सक छलाह
घ. ओ पाक-विशेषज्ञ छलाह
उत्तर: क. पंजी-ज्ञानसँ कुल-जाती आ वंश-पहिचान सुरक्षित रहैत अछि
व्याख्या: पंजीकार समाजक वंश-स्मृति आ विवाह-शुद्धता रक्षैत छथि।

प्रश्न 4916. संध्याकालीन बैसारमे लोक मोदानन्द झासँ की करबैत छल?
क. वंशक नवजन्म-विवरण लिखबैत छल
ख. भोजन बनबैत
ग. गजल सुनबैत
घ. नाटक अभिनय
उत्तर: क. वंशक नवजन्म-विवरण लिखबैत छल
व्याख्या: पंजीकार जीवित अभिलेख अद्यतन करैत रहलाह।

प्रश्न 4917. लेखक पंजीकारक काज कैँ किएक दुःसाध्य मानैत छथि?
क. दूर-दूर भूभागमे वंश-पहिचान संकलन, सुरक्षा आ समय पर प्रस्तुत करब कठिन छल
ख. एकहि गाममे सहज काम
ग. केवल गान
घ. कोनो यात्रा नहि
उत्तर: क. दूर-दूर भूभागमे वंश-पहिचान संकलन, सुरक्षा आ समय पर प्रस्तुत करब कठिन छल
व्याख्या: यातायात-अभाव आ विस्तृत समाज पंजीकार्य कैँ कठिन बनबैत अछि।

प्रश्न 4918. मोदानन्द झाक दैनंदिन जीवनक “कलम आ खुरपी” बिम्ब की बतबैत अछि?
क. विद्या-अभिलेख आ कर्मठ श्रम दुनू
ख. केवल आलस्य
ग. केवल युद्ध
घ. केवल पूजा
उत्तर: क. विद्या-अभिलेख आ कर्मठ श्रम दुनू
व्याख्या: कलम पंजी-विद्या, खुरपी भूमि/फुलवारीक श्रमक प्रतीक अछि।

प्रश्न 4919. कोसी-बाढ़ लेखमे १८ अगस्त २००८ कैं की मोड़ कहल गेल?
क. पूरा परिदृश्य बदलि गेल आ क्षेत्र फेर उजड़ि गेल
ख. वर्षा बन्द भेल
ग. नदी सूखि गेल
घ. समारोह शुरू भेल
उत्तर: क. पूरा परिदृश्य बदलि गेल आ क्षेत्र फेर उजड़ि गेल
व्याख्या: तटबंध टूटबाक बाद कोसी क्षेत्रक जीवन-व्यवस्था ध्वस्त भेल।

प्रश्न 4920. कोसी क्षेत्रक अर्थव्यवस्था पर बाढ़क प्रभाव कोना बतायल गेल?
क. खेतीक घाव भरबाक समय अनिश्चित, मनीऑर्डर पर आश्रय बढ़ल
ख. अर्थव्यवस्था तुरन्त सुदृढ़
ग. कोनो असर नहि
घ. केवल पर्यटन बढ़ल
उत्तर: क. खेतीक घाव भरबाक समय अनिश्चित, मनीऑर्डर पर आश्रय बढ़ल
व्याख्या: बाढ़ खेती, घर-घरारी आ प्रवासक मजबूरी सभ पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 4921. बाढ़ पीड़ित लोक प्रदेश किएक जाए लगल?
क. घर-गृहस्थी पटरी पर आनय लेल मनीऑर्डर कमेबाक आशा
ख. मनोरंजन लेल
ग. गीत रेकॉर्ड करय लेल
घ. सिर्फ विवाह लेल
उत्तर: क. घर-गृहस्थी पटरी पर आनय लेल मनीऑर्डर कमेबाक आशा
व्याख्या: लेख प्रवास कैं आपदा-जन्य आजीविका-रणनीति रूपेँ देखैत अछि।

प्रश्न 4922. सरकारी जांच-आयोग पर लेखका दृष्टि की अछि?
क. खानापूर्ति; पीड़ितक असल चिन्ता घर बसाबय आ भविष्य बचाबयक अछि
ख. पूर्ण समाधान भऽ गेल
ग. पीड़ित निश्चिन्त
घ. राजनीति अनुपस्थित
उत्तर: क. खानापूर्ति; पीड़ितक असल चिन्ता घर बसाबय आ भविष्य बचाबयक अछि
व्याख्या: लेख आपदा-राजनीति पर संशय आ लोकजीवनक वास्तविक चिन्ता कैं अलग करैत अछि।

खण्ड ४९८ : विदेह-सदेह १ — पटनाक विद्यापति स्मृति पर्व: संकट आ आलोचना

प्रश्न 4923. पटनाक विद्यापति स्मृति पर्वक ऐतिहासिकता कोना बतायल गेल?
क. चौवन वर्ष सँ प्रतिवर्ष आयोजित त्रिदिवसीय सांस्कृतिक उत्सव
ख. पहिल बेर आयोजित
ग. केवल पाक-महोत्सव
घ. पूर्णतः निजी भोज
उत्तर: क. चौवन वर्ष सँ प्रतिवर्ष आयोजित त्रिदिवसीय सांस्कृतिक उत्सव
व्याख्या: लेख आयोजनक दीर्घ परम्परा आ सांस्कृतिक महत्त्व मानैत अछि।

प्रश्न 4924. एहि वर्ष समारोह पर “ग्रहण” लागबाक अर्थ की अछि?
क. तीन दिनक कार्यक्रम एक दिनक होएबाक सूचना आ स्वरूप-संकुचन
ख. कार्यक्रम विशाल भेल
ग. किछु बदलल नहि
घ. सर्वथा समाप्त घोषित
उत्तर: क. तीन दिनक कार्यक्रम एक दिनक होएबाक सूचना आ स्वरूप-संकुचन
व्याख्या: लेख संसाधन बढ़लाक बावजूद सांस्कृतिक स्वरूप छोट होएब पर चिन्तित अछि।

प्रश्न 4925. हार्डिंग पार्कसँ सचिवालय मैदान, मिलर हाई स्कूल आ भारत स्काउट मैदानक क्रम की देखबैत अछि?
क. समारोहक स्थल-परिवर्तन आ गौरव-संकुचनक इतिहास
ख. भोजनक विधि
ग. नाटकक पात्र
घ. यात्रा कथा
उत्तर: क. समारोहक स्थल-परिवर्तन आ गौरव-संकुचनक इतिहास
व्याख्या: स्थल बदलाव आयोजनक प्रतिष्ठा-संकट पर टिप्पणी बनैत अछि।

प्रश्न 4926. कोसी-बाढ़ आयोजक लेल बहाना बनल — लेखमे ई आरोप किएक अछि?
क. अन्य बाढ़-प्रभावित क्षेत्रक बावजूद पूर्वमे आयोजन घटाओल नहि गेल छल
ख. बाढ़ कहियो भेल नहि
ग. समारोह असंबद्ध
घ. स्रोत मौन अछि
उत्तर: क. अन्य बाढ़-प्रभावित क्षेत्रक बावजूद पूर्वमे आयोजन घटाओल नहि गेल छल
व्याख्या: लेख आयोजकक चयनात्मक संवेदना पर प्रश्न करैत अछि।

प्रश्न 4927. लेखकक अनुसार यदि आयोजक सचमुच गंभीर रहितथि तँ की कए सकैत छलथि?
क. समारोह माध्यमसँ बाढ़ पीड़ितक मदद लेल सहयोग जुटबैत
ख. समारोह बंद मात्र
ग. चित्र बेचैत
घ. गीत रोकैत
उत्तर: क. समारोह माध्यमसँ बाढ़ पीड़ितक मदद लेल सहयोग जुटबैत
व्याख्या: रचनात्मक सांस्कृतिक हस्तक्षेपक सम्भावना लेखमे उठाओल गेल अछि।

प्रश्न 4928. चेतना समिति पर मुख्य आलोचना की अछि?
क. कामक चेतना घटि, व्यक्तिगत श्रेय आ औपचारिकता बढ़ि गेल
ख. अत्यधिक सक्रियता
ग. पूर्ण पारदर्शिता
घ. कर्महीनता नहि
उत्तर: क. कामक चेतना घटि, व्यक्तिगत श्रेय आ औपचारिकता बढ़ि गेल
व्याख्या: लेख संस्था-व्यवहार पर तीखा सांस्कृतिक आलोचन करैत अछि।

प्रश्न 4929. दर्शक संख्या घटबाक कारण लेखमे ककर जिम्मेदारी बनैत अछि?
क. संस्थाक स्तरसँ दर्शक जोड़बाक प्रयासक अभाव
ख. दर्शकक जन्मजात दोष मात्र
ग. मौसम मात्र
घ. गीतकार मात्र
उत्तर: क. संस्थाक स्तरसँ दर्शक जोड़बाक प्रयासक अभाव
व्याख्या: आयोजन जन-संपर्क आ सांस्कृतिक ऊर्जा बिना कमजोर होइत अछि।

प्रश्न 4930. राजीवनगर आ दानापुरक आयोजन लोकप्रिय होएबाक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. राजधानीक मिथिलावासी विकल्प खोजि रहल छथि
ख. कोनो विकल्प नहि
ग. पर्व अप्रासंगिक
घ. सिर्फ भोज
उत्तर: क. राजधानीक मिथिलावासी विकल्प खोजि रहल छथि
व्याख्या: मुख्य आयोजनक संकट वैकल्पिक स्थानीय आयोजनक उदय सँ स्पष्ट अछि।

प्रश्न 4931. विद्यापति स्मृति पर्व कैं “इतिहास बनबाक द्वार” पर कहबाक अर्थ की?
क. जीवित सांस्कृतिक परंपरा समाप्त स्मृति बनि सकैत अछि
ख. इतिहास-गौरव पूर्ण सुरक्षित
ग. कोनो संकट नहि
घ. पाककर्म
उत्तर: क. जीवित सांस्कृतिक परंपरा समाप्त स्मृति बनि सकैत अछि
व्याख्या: लेख आयोजनक निरंतरता बचाबयक चेतावनी अछि।

प्रश्न 4932. एहि आलेखक मूल आग्रह की अछि?
क. पुरान गौरव पुनर्स्थापित करब, आयोजनकैं औपचारिकता नहि बनय देब
ख. समारोह समाप्त करब
ग. बाढ़क उपेक्षा
घ. संस्कृति छोड़ब
उत्तर: क. पुरान गौरव पुनर्स्थापित करब, आयोजनकैं औपचारिकता नहि बनय देब
व्याख्या: लेख आलोचना करैतहुँ सुधारक अपेक्षा सँ समाप्त होइत अछि।

खण्ड ४९९ : विदेह-सदेह १ — नीलिमा: भानस-भात, पाक-विधि आ गृह-ज्ञान

प्रश्न 4933. “मखानक खीर” विधिमे मखानक पाउडर पहिने ककरा मे घोरबाक कहल गेल?
क. ठंढा दूधमे
ख. गरम तेलमे
ग. कच्चा चाउरमे
घ. नून-पानिमे
उत्तर: क. ठंढा दूधमे
व्याख्या: ठंढा दूधमे घोरलासँ मिश्रण नीक बनैत अछि।

प्रश्न 4934. मखानक खीर खौलैत बेर लगातार चलबैत रहबाक कारण की अछि?
क. मिश्रण पेनीमे नहि बैसय
ख. दूध ठंढा रहय
ग. चीनी हटय
घ. रंग कारी होय
उत्तर: क. मिश्रण पेनीमे नहि बैसय
व्याख्या: पाक-विधि व्यावहारिक सावधानी सिखबैत अछि।

प्रश्न 4935. मेथीक परोठामे मेथी पात कैं पहिने की करबाक कहल गेल?
क. साफ कऽ धोएब आ कनी तेलमे भाप दैब
ख. सीधा दूधमे घोरब
ग. पूरी तरह फेकब
घ. माटिमे गाड़ब
उत्तर: क. साफ कऽ धोएब आ कनी तेलमे भाप दैब
व्याख्या: सागक नमी आ स्वाद सँ परोठाक भरावन बनैत अछि।

प्रश्न 4936. मेथीक परोठाक नोटमे कोन वैकल्पिक विधि अछि?
क. काँच मेथी पात महीन काटि प्याज आदि मिलाकऽ आटा सानब
ख. मखानक पाउडर भरब
ग. केसर डालब
घ. कोबी फ्राइ न करब
उत्तर: क. काँच मेथी पात महीन काटि प्याज आदि मिलाकऽ आटा सानब
व्याख्या: विधि पाकक लचीलापन आ घरक प्रयोगशीलता देखबैत अछि।

प्रश्न 4937. मुगलई कोबीमे कोबी टुकड़ा पहिने किएक चालनीमे राखल जाइत अछि?
क. पानी निकलि जाय लेल
ख. मिठास बढ़य लेल
ग. संगीत होय लेल
घ. अरीपन बनय लेल
उत्तर: क. पानी निकलि जाय लेल
व्याख्या: पानी निकलला पर फ्राइ आ मसाला मिश्रण नीक होइत अछि।

प्रश्न 4938. मुगलई कोबीमे मलाई आ सॉस कोन प्रकारक स्वाद-विन्यास बनबैत अछि?
क. मसालेदार तरकारीमे गाढ़ापन आ रसदार स्वाद
ख. पूर्ण निर्लवण स्वाद
ग. कच्चा भोजन
घ. खीर
उत्तर: क. मसालेदार तरकारीमे गाढ़ापन आ रसदार स्वाद
व्याख्या: विधि पारंपरिक मसाला संग आधुनिक सॉस-मलाई जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4939. केसर पुलावमे केसर पहिने की करबाक कहल गेल?
क. गरम पानीमे फुला देब
ख. कच्चा चबाब
ग. तेलमे जारब
घ. माटिमे राखब
उत्तर: क. गरम पानीमे फुला देब
व्याख्या: केसर रंग-सुगन्ध छोड़य लेल गरम पानीमे फुलाओल जाइत अछि।

प्रश्न 4940. केसर पुलावमे चाउर कतेक पानिसँ पकाओल गेल?
क. दू कप चाउर लेल चार कप पानी
ख. एक कप पानी
ग. दस कप दूध
घ. कोनो पानी नहि
उत्तर: क. दू कप चाउर लेल चार कप पानी
व्याख्या: अनुपात पाक-विधिक व्यवहारिक आधार अछि।

प्रश्न 4941. मूरक परोठाक दू विधिमे मुख्य भिन्नता की अछि?
क. मूर मिश्रण आटामे सानब वा भरावन रूपेँ भरब
ख. दूधमे पकाओब
ग. सिर्फ तंदूर
घ. कोबी हटाएब
उत्तर: क. मूर मिश्रण आटामे सानब वा भरावन रूपेँ भरब
व्याख्या: नीलिमा एकहि व्यंजनक वैकल्पिक घरेलू रूप देखबैत छथि।

प्रश्न 4942. एहि पाक-विधिसभक सांस्कृतिक महत्त्व की अछि?
क. घर-भानसक अनुभव, स्थानीय सामग्री आ व्यवहारिक गृह-ज्ञानक लेखा
ख. सिर्फ विज्ञापन
ग. केवल नाटक-समीक्षा
घ. राजनीतिक प्रस्ताव
उत्तर: क. घर-भानसक अनुभव, स्थानीय सामग्री आ व्यवहारिक गृह-ज्ञानक लेखा
व्याख्या: भानस-भात स्तम्भ लोकजीवनक घरेलू ज्ञान केँ साहित्यिक पन्नामे स्थान दैत अछि।

खण्ड ५०० : विदेह-सदेह १ — निमिष झा: “विद्यापति” — युगद्रष्टा आ साहित्य-पुरुष

प्रश्न 4943. निमिष झा साहित्यकारक जन्मकेँ कखन “घटना” कहैत छथि?
क. जखन ओ सम्पूर्ण साहित्य-परम्परा केँ प्रभावित करैत अछि
ख. जखन ओ भोजन बनबैत अछि
ग. जखन ओ चुप रहैत अछि
घ. जखन ओ होटल खोलैत अछि
उत्तर: क. जखन ओ सम्पूर्ण साहित्य-परम्परा केँ प्रभावित करैत अछि
व्याख्या: लेख महान साहित्यकार केँ युग-निर्माणकारी घटना मानैत अछि।

प्रश्न 4944. मैथिली साहित्यक इतिहासमे विद्यापति कोना स्थापित छथि?
क. अतुलनीय प्रतिभा आ सर्वश्रेष्ठ कवि रूपेँ
ख. अप्रासंगिक कवि
ग. केवल रसोइया
घ. मूक पात्र
उत्तर: क. अतुलनीय प्रतिभा आ सर्वश्रेष्ठ कवि रूपेँ
व्याख्या: लेख विद्यापति केँ मैथिली गौरवक केन्द्र मानैत अछि।

प्रश्न 4945. दुर्गानाथ झा “श्रीश”क मतानुसार विद्यापति ककर रूपमे उल्लेखित छथि?
क. आधुनिक भारतीय भाषाक प्रथम कवि
ख. अंतिम गद्यकार
ग. रसोईकार
घ. नाटक-दर्शक
उत्तर: क. आधुनिक भारतीय भाषाक प्रथम कवि
व्याख्या: भाषा-काव्य रचनाक साहस विद्यापतिक महत्त्वक आधार मानल गेल।

प्रश्न 4946. विद्यापतिक आदर्शसँ प्रेरित कयनिहार कविसभमे कोन प्रकारक परंपरा देखायल गेल?
क. भक्ति-भावना द्वारा मातृभाषा समृद्ध करबाक परंपरा
ख. भाषा त्याग
ग. मौन राजनीति
घ. केवल पाककला
उत्तर: क. भक्ति-भावना द्वारा मातृभाषा समृद्ध करबाक परंपरा
व्याख्या: शंकरदेव, चण्डीदास, कबीर, तुलसी, मीरा आदि उदाहरणेँ भाषाभक्ति देखायल अछि।

प्रश्न 4947. विद्यापति युगक तुलना लेखमे किन-किन युगसँ भेल?
क. शेक्सपियर, भानुभक्त, रवीन्द्र आ भारतेन्दु युगसँ
ख. कोका-कोला युग
ग. होटल युग
घ. सड़क युग
उत्तर: क. शेक्सपियर, भानुभक्त, रवीन्द्र आ भारतेन्दु युगसँ
व्याख्या: तुलना विद्यापतिक साहित्यिक-युगनिर्माणक वैश्विक/भारतीय महत्त्व बतबैत अछि।

प्रश्न 4948. विद्यापतिक रचनासभमे मिथिला पहिल बेर की अनुभव करैत अछि?
क. भक्ति, श्रृंगार, मौलिक सांगीतिक लय आ वैश्यिष्ट्यक प्रस्फुटन
ख. पूर्ण मौन
ग. व्यापार मात्र
घ. नाटक मात्र
उत्तर: क. भक्ति, श्रृंगार, मौलिक सांगीतिक लय आ वैश्यिष्ट्यक प्रस्फुटन
व्याख्या: लेख विद्यापतिक पदावली केँ जनस्वर आ सांस्कृतिक पहचानक माध्यम मानैत अछि।

प्रश्न 4949. विद्यापति युगद्रष्टा किएक कहल गेल?
क. मैथिल समाजक पुनर्संरचना आ भाषा-साहित्यक श्रीवृद्धि लेल प्रयास कयलनि
ख. केवल निजी गीत लिखलनि
ग. समाजसँ दूरी राखलनि
घ. रचनासभ लुप्त भेल
उत्तर: क. मैथिल समाजक पुनर्संरचना आ भाषा-साहित्यक श्रीवृद्धि लेल प्रयास कयलनि
व्याख्या: लेख विद्यापति कैं समाज-संरचना आ साहित्य-विकास दुनू मे सक्रिय देखैत अछि।

प्रश्न 4950. मुसलमानी शासन आ बौद्ध प्रभावक संकट प्रसंगमे विद्यापतिक भूमिका की बताओल गेल?
क. मैथिल संस्कृतिक मौलिकता बचाबयमे सहायक
ख. संकट बढ़ेबाक कारण
ग. पूर्ण निष्क्रिय
घ. बाहरी पर्यटक
उत्तर: क. मैथिल संस्कृतिक मौलिकता बचाबयमे सहायक
व्याख्या: लेख ऐतिहासिक संकटमे विद्यापतिक आगमन कैं वरदान मानैत अछि।

प्रश्न 4951. विद्यापतिक श्रृंगारिक रचनासभक सामाजिक पाठ की अछि?
क. पलायन करैत युवासभकैं समाज-निर्माणक मूलधारामे जोड़बाक साधन
ख. सिर्फ मनोरंजन
ग. पूर्ण असामाजिकता
घ. भोजन विधि
उत्तर: क. पलायन करैत युवासभकैं समाज-निर्माणक मूलधारामे जोड़बाक साधन
व्याख्या: लेख श्रृंगारक भीतर सांस्कृतिक प्रतिरोध आ संगठन देखैत अछि।

प्रश्न 4952. लेखक अनुसार विद्यापतिक मूल साहित्यिक प्रभाव की अछि?
क. सम्पूर्ण मैथिली साहित्य पर अबाध प्रभाव-रेखा
ख. क्षणिक प्रभाव
ग. कोनो प्रभाव नहि
घ. केवल हिन्दी पर प्रभाव
उत्तर: क. सम्पूर्ण मैथिली साहित्य पर अबाध प्रभाव-रेखा
व्याख्या: विद्यापतिक प्रभाव क्षीण करबाक क्षमता एखन धरि ककरो नहि — ई लेखनक निश्चय अछि।

खण्ड ५०१ : विदेह-सदेह १ — विद्यापति: जीवन, भाषा आ ग्रन्थ-वर्गीकरण

प्रश्न 4953. विद्यापतिक जन्म-वर्ष सम्बन्धी प्रमुख मतभेद कोना अछि?
क. किछु विद्वान १३५० आ किछु १३६० ई. मानैत छथि
ख. सभ १९०० मानैत छथि
ग. जन्म अज्ञात नहि कहल
घ. केवल २००८
उत्तर: क. किछु विद्वान १३५० आ किछु १३६० ई. मानैत छथि
व्याख्या: लेख जन्मतिथि पर विद्वानसभक मतांतर सावधानीसँ राखैत अछि।

प्रश्न 4954. राजा शिवसिंहसँ विद्यापतिक उमेर सम्बन्धी तर्क की अछि?
क. विद्यापति शिवसिंहसँ दू वर्ष जेठ छलाह
ख. दू वर्ष छोट
ग. असम्बद्ध
घ. समान उमेर नहि
उत्तर: क. विद्यापति शिवसिंहसँ दू वर्ष जेठ छलाह
व्याख्या: पुरुषपरीक्षा आधारित चन्दा झाक उल्लेख सँ ई तर्क बनैत अछि।

प्रश्न 4955. विद्यापतिक जन्मस्थान कोन बतायल गेल?
क. मधुबनी जिलाक बिस्फी गाम
ख. हैदराबाद
ग. घोघौर
घ. जगन्नाथपुरी
उत्तर: क. मधुबनी जिलाक बिस्फी गाम
व्याख्या: लेख विद्वत-परंपरागत जन्मस्थल बिस्फी बतबैत अछि।

प्रश्न 4956. विद्यापतिक पिताक नाम की बतायल गेल?
क. गणपति ठाकुर
ख. मोदानन्द झा
ग. नरेन्द्र मिश्र
घ. दिवसलाल
उत्तर: क. गणपति ठाकुर
व्याख्या: जीवन-वृत्तमे पितृनाम स्पष्ट अछि।

प्रश्न 4957. विद्यापतिक माताक नाम की बतायल गेल?
क. गंगादेवी
ख. लखिमा ठाकुराइन
ग. अरुणा
घ. नीलिमा
उत्तर: क. गंगादेवी
व्याख्या: लेख मातृनाम सेहो देत अछि।

प्रश्न 4958. विद्यापति औपचारिक शिक्षा किनकासँ ग्रहण केलनि?
क. हरि मिश्रसँ
ख. डटकेजलपानसँ
ग. साहिल अनवरसँ
घ. होटल मालिकसँ
उत्तर: क. हरि मिश्रसँ
व्याख्या: प्रारम्भिक शिक्षा पितासँ, औपचारिक शिक्षा हरि मिश्रसँ — ई भेद महत्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 4959. पक्षधर मिश्र विद्यापतिक कोन सम्बन्धमे कहल गेल?
क. सहपाठी
ख. पिता
ग. शिष्य
घ. नाटक निर्देशक
उत्तर: क. सहपाठी
व्याख्या: विद्वत्-संगति विद्यापतिक शिक्षण-परिवेशक भाग अछि।

प्रश्न 4960. विद्यापति किन भाषासभमे रचना कयलनि?
क. संस्कृत, अवहट्ट आ मैथिली
ख. केवल अंग्रेजी
ग. केवल तेलुगु
घ. केवल भोजपुरी
उत्तर: क. संस्कृत, अवहट्ट आ मैथिली
व्याख्या: तीन भाषामे रचना हुनक बहुभाषिक साहित्यिक सामर्थ्य अछि।

प्रश्न 4961. विद्यापतिक रचनासभक तीन मुख्य वर्ग की अछि?
क. संस्कृत ग्रन्थ, अवहट्ट ग्रन्थ आ मैथिली ग्रन्थ
ख. भोजन, नाटक, गीत मात्र
ग. पत्र, मुकदमा, होटल
घ. अरीपन, पुलाव, परोठा
उत्तर: क. संस्कृत ग्रन्थ, अवहट्ट ग्रन्थ आ मैथिली ग्रन्थ
व्याख्या: लेख ग्रन्थ-वर्गीकरणद्वारा रचनाक क्षेत्र व्यवस्थित करैत अछि।

प्रश्न 4962. विद्यापतिक बहुभाषिकता ककर प्रमाण अछि?
क. मैथिली-संस्कृत-अवहट्ट पर समान विद्वत्ता आ साहित्यिक अधिकार
ख. भाषाज्ञानक अभाव
ग. केवल मौखिक परम्परा
घ. रचना-विहीनता
उत्तर: क. मैथिली-संस्कृत-अवहट्ट पर समान विद्वत्ता आ साहित्यिक अधिकार
व्याख्या: तीनू भाषा हुनक साहित्यिक कार्यक्षेत्र आ विद्वता विस्तार करैत अछि।

खण्ड ५०२ : विदेह-सदेह १ — विद्यापतिक संस्कृत, अवहट्ट आ मैथिली कृतिसभ

प्रश्न 4963. गंगावाक्यावलीमे मुख्यतः कोन विषय अछि?
क. गंगा नदी, गंगा तट आ धार्मिक कर्मकाण्डक महात्म्य
ख. मेथीक परोठा
ग. नाटक-अभिनय
घ. भोर एल्बम
उत्तर: क. गंगा नदी, गंगा तट आ धार्मिक कर्मकाण्डक महात्म्य
व्याख्या: ग्रन्थ गंगा-स्मरण, कीर्तन आ गंगा तट पर प्राण-विसर्जनक महिमा समेटैत अछि।

प्रश्न 4964. दानवाक्यावली कोन विषय पर केन्द्रित अछि?
क. दानक विधि-विधान
ख. नाट्य-शिक्षा
ग. कृष्ण-रास मात्र
घ. होटल बिल
उत्तर: क. दानक विधि-विधान
व्याख्या: दानविधि पर विस्तार सँ चर्चा ग्रन्थक मूल विषय अछि।

प्रश्न 4965. वर्षकृत्य ग्रन्थमे की प्रस्तुत अछि?
क. वर्ष भरिक पाबनि, व्रत, पूजा, दान आ शुभकार्यक विधान
ख. केवल एक कथा
ग. कोका-कोला प्रसंग
घ. प्रवास-कविता
उत्तर: क. वर्ष भरिक पाबनि, व्रत, पूजा, दान आ शुभकार्यक विधान
व्याख्या: वर्षकृत्य वार्षिक धार्मिक-सांस्कृतिक जीवनक नियमन दैत अछि।

प्रश्न 4966. दुर्गाभक्तितरंगिणी कोन पद्धति/पूजा सँ जुड़ल अछि?
क. दुर्गोत्सव पद्धति आ दुर्गा पूजा विधि
ख. केसर पुलाव
ग. निरर्थक पत्र
घ. भोर गीत
उत्तर: क. दुर्गोत्सव पद्धति आ दुर्गा पूजा विधि
व्याख्या: ग्रन्थ कालिका, देवी, भविष्य, ब्रह्म, मार्कण्डेय आदि पुराण-आधारित पद्धति समेटैत अछि।

प्रश्न 4967. शैवसर्वस्वसारक मुख्य विषय की अछि?
क. भगवान शिवक पूजा-संबंधी विधि-विधान
ख. नारी-प्रवास
ग. रंगकर्म
घ. कोसी बाढ़
उत्तर: क. भगवान शिवक पूजा-संबंधी विधि-विधान
व्याख्या: ग्रन्थ शैव पूजा पर केन्द्रित अछि आ शम्भुवाक्यावली सेहो कहल जाइत अछि।

प्रश्न 4968. गयापत्तलक ग्रन्थ ककरा संबोधित अछि?
क. गयामे श्राद्ध, पिण्डदान आ पितृऋण मुक्तिक सामान्य जन-सम्बन्धी विधान
ख. राजा मात्र
ग. रंगकर्मी
घ. होटल ग्राहक
उत्तर: क. गयामे श्राद्ध, पिण्डदान आ पितृऋण मुक्तिक सामान्य जन-सम्बन्धी विधान
व्याख्या: लेख कहैत अछि ई कोनो राजा-रानीक आदेशसँ नहि, सामान्य जनतासँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 4969. विभागसार ककर लेल प्रमाणिक मानल गेल?
क. मिथिलाक दायभाग आ उत्तराधिकार सम्बन्धी विधान लेल
ख. भोजन विधि लेल
ग. कविता छन्द लेल
घ. गजल गायन लेल
उत्तर: क. मिथिलाक दायभाग आ उत्तराधिकार सम्बन्धी विधान लेल
व्याख्या: ग्रन्थ दानभाग/उत्तराधिकारक संक्षिप्त सुंदर विवेचन अछि।

प्रश्न 4970. लिखनावलीक विषय की अछि?
क. पत्राचार करबाक विधि आ सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार
ख. चित्रकला मात्र
ग. घरेलू भोजन
घ. बाढ़ रिपोर्ट
उत्तर: क. पत्राचार करबाक विधि आ सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार
व्याख्या: चार प्रकारक पत्र आ व्यवहार-नियमक उल्लेख ग्रन्थक विशेषता अछि।

प्रश्न 4971. पुरुषपरीक्षामे कोन चार प्रकारक कथा समाहित अछि?
क. वीर कथा, सुबुद्धि कथा, सुविद्य कथा आ पुरुषार्थ कथा
ख. खीर, पुलाव, परोठा, कोबी
ग. दूध, दही, घी, तेल
घ. गीत, अरीपन, प्रवास, होटल
उत्तर: क. वीर कथा, सुबुद्धि कथा, सुविद्य कथा आ पुरुषार्थ कथा
व्याख्या: पुरुषपरीक्षा शिक्षा-प्रद कथासभक बहु-वर्गीय ग्रन्थ अछि।

प्रश्न 4972. मैथिली पदावलीक विशेषता की अछि?
क. राधा-कृष्णक प्रेम-प्रसंग गेय पदमे लोककंठसँ जीवित रहल
ख. गद्य-विज्ञान मात्र
ग. कानूनी अभिलेख
घ. पाक-विधि
उत्तर: क. राधा-कृष्णक प्रेम-प्रसंग गेय पदमे लोककंठसँ जीवित रहल
व्याख्या: पदावलीक माधुर्य लोकस्मृतिमे रचनासभ बचा कऽ राखलक।

खण्ड ५०३ : विदेह-सदेह १ — हाइकू आ नूतन झा: “बाराती-सत्कार”

प्रश्न 4973. विद्यापति-विवरणक बाद आएल हाइकूमे “चाँदनी राति / नीमक गाछ तर / जरैछ आगि” कोन बिम्ब रचैत अछि?
क. शान्ति आ दाहक विरोधाभासी दृश्य
ख. भोजन विधि
ग. नाटक प्रवेश
घ. वंश-अभिलेख
उत्तर: क. शान्ति आ दाहक विरोधाभासी दृश्य
व्याख्या: चाँदनी-नीमक शीतलता आ आगि मिलि सूक्ष्म तनाव बनबैत अछि।

प्रश्न 4974. “गरम साँस / छिला गेलैक ठोर / प्रथम स्पर्श” हाइकू ककर सूक्ष्म क्षण पकड़ैत अछि?
क. प्रथम स्पर्शक तीव्र शारीरिक-संवेदन
ख. राजनीतिक सभा
ग. बाढ़ रिपोर्ट
घ. दान-विधान
उत्तर: क. प्रथम स्पर्शक तीव्र शारीरिक-संवेदन
व्याख्या: छोट संरचनामे स्पर्शक ताप आ नाजुकता अभिव्यक्त अछि।

प्रश्न 4975. “श्रम ठाढ़ छै / श्रमिक पड़ल छै / मसिनि युग” मे कोन आलोचना अछि?
क. मशीन युगमे श्रमिकक अवमूल्यन
ख. श्रमिक विजय-उत्सव मात्र
ग. भोजन प्रशंसा
घ. प्रवास सुख
उत्तर: क. मशीन युगमे श्रमिकक अवमूल्यन
व्याख्या: हाइकू छोट आकारमे आधुनिक श्रम-विस्थापनक कटुता कहैत अछि।

प्रश्न 4976. “मृत्युक नोत / जीबाक लेल सिखु / देब बधाइ”क भाव की अछि?
क. मृत्यु-स्मरणसँ जीवनक मूल्य सीखबाक विडंबनात्मक आग्रह
ख. मृत्यु असत्य
ग. जीवन निरर्थक
घ. भोजन श्रेष्ठ
उत्तर: क. मृत्यु-स्मरणसँ जीवनक मूल्य सीखबाक विडंबनात्मक आग्रह
व्याख्या: हाइकू मृत्यु आ जीवनक उलट सम्बंध उजागर करैत अछि।

प्रश्न 4977. नूतन झाक “बाराती-सत्कार” लेख कोन सामाजिक समस्या उठबैत अछि?
क. विवाहमे आडंबर आ विलासपूर्ण प्रदर्शनक आर्थिक बोझ
ख. कोसी तटबंध
ग. गजल संरचना
घ. पंचदेवोपासना
उत्तर: क. विवाहमे आडंबर आ विलासपूर्ण प्रदर्शनक आर्थिक बोझ
व्याख्या: लेख कन्यापक्ष पर भव्य सत्कार-दबावक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 4978. नूतन झा आधुनिकता संबंधमे संतुलित दृष्टि कोना रखैत छथि?
क. शिक्षा-स्वास्थ्य लाभ मानैत छथि, मुदा अपव्ययक दुष्परिणाम देखैत छथि
ख. आधुनिकता पूर्ण नकार
ग. पूर्ण स्वीकार बिना प्रश्न
घ. कोनो मत नहि
उत्तर: क. शिक्षा-स्वास्थ्य लाभ मानैत छथि, मुदा अपव्ययक दुष्परिणाम देखैत छथि
व्याख्या: लेख आधुनिकता कैं एकरेखीय नहि, लाभ-दोष सहित देखैत अछि।

प्रश्न 4979. विवाहकेँ अविस्मरणीय बनाबयवला असली तत्व लेखमे की कहल गेल?
क. दू परिवारक आपसी स्नेह, सम्बन्ध, निष्ठा आ विश्वास
ख. महँगा टेंट
ग. गहना मात्र
घ. भोजक मात्रा
उत्तर: क. दू परिवारक आपसी स्नेह, सम्बन्ध, निष्ठा आ विश्वास
व्याख्या: लेख आडंबरक बदला मानवीय सम्बन्धक गरिमा पर बल दैत अछि।

प्रश्न 4980. बाराती-सत्कार पर वरपक्षक दबाव देख लेखक केँ की भाव होइत अछि?
क. दुख
ख. आनन्द मात्र
ग. गर्व
घ. पूर्ण उदासीनता
उत्तर: क. दुख
व्याख्या: गरीब कन्यापक्षक व्यथा संवेदनशीलता जगबैत अछि।

प्रश्न 4981. कवितांशमे गरीब कन्यापक्ष बारातीसँ की कहैत अछि?
क. रूख-सूख जे भेटए, स्वीकार करू आ हमर लाज राखू
ख. असीम भोज माँगू
ग. सम्बन्ध तोड़ू
घ. भोजन फेकू
उत्तर: क. रूख-सूख जे भेटए, स्वीकार करू आ हमर लाज राखू
व्याख्या: उद्धृत पंक्तिसभ गरीबी, लाचारी आ सम्मानक पुकार अछि।

प्रश्न 4982. “बाराती-सत्कार”क निष्कर्ष की अछि?
क. आडंबरक समूल नाश कऽ मिथिलाक गरिमा बढ़ाबी
ख. आडंबर बढ़ाबी
ग. ऋण लऽ खर्च करू
घ. गरीबक उपेक्षा
उत्तर: क. आडंबरक समूल नाश कऽ मिथिलाक गरिमा बढ़ाबी
व्याख्या: लेख सामाजिक सुधारक स्पष्ट आह्वान करैत समाप्त होइत अछि।

खण्ड ५०४ : विदेह-सदेह १ — जानकी-नवमी: व्रत, कथा आ मिथिला-महिमा

प्रश्न 4983. जानकी-नवमी कोन तिथि पर मनाओल जाइत अछि?
क. वैशाख मासक शुक्ल पक्षक नवमी
ख. कार्तिक धवल त्रयोदशी
ग. माघ पूर्णिमा
घ. चैत्र अमावस्या
उत्तर: क. वैशाख मासक शुक्ल पक्षक नवमी
व्याख्या: लेख तिथि स्पष्ट कऽ सीताजी पूजा आ व्रतसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4984. जानकी-नवमी दिन लोक की करैत छथि?
क. व्रत राखि सीताजीक पूजा-अर्चना करैत छथि
ख. केवल नाटक खेलैत छथि
ग. मखानक खीर मात्र
घ. राजनीतिक सभा
उत्तर: क. व्रत राखि सीताजीक पूजा-अर्चना करैत छथि
व्याख्या: व्रत आ पूजा एहि पाबनिक मुख्य अनुष्ठान अछि।

प्रश्न 4985. सीता माता कैँ लेखमे ककर अवतार मानल गेल?
क. लक्ष्मीजीक अवतार
ख. सरस्वती मात्र
ग. दुर्गा मात्र
घ. कोनो देवी नहि
उत्तर: क. लक्ष्मीजीक अवतार
व्याख्या: एहि मान्यता सँ सुख-सम्पत्ति प्राप्तिक व्रत-भाव जुड़ैत अछि।

प्रश्न 4986. जानकी-नवमी व्रतसँ कोन फल मानल गेल?
क. सुख आ सम्पत्तिक प्राप्ति
ख. केवल युद्ध-विजय
ग. भोजन मात्र
घ. नींद मात्र
उत्तर: क. सुख आ सम्पत्तिक प्राप्ति
व्याख्या: लोक-आस्था अनुसार व्रत गृह-मंगल आ समृद्धि सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 4987. जनकजी सम्बन्धी कथा ककर प्रसंग खोलैत अछि?
क. मिथिलामे सीताक अवतरण/जनकक पुत्री रूपक पौराणिक स्मृति
ख. होटल-विवाद
ग. कोसी तटबंध
घ. पंजी मुकदमा
उत्तर: क. मिथिलामे सीताक अवतरण/जनकक पुत्री रूपक पौराणिक स्मृति
व्याख्या: जानकी-नवमी कथा सीता-जन्म आ मिथिला-परंपरा सँ अभिन्न अछि।

प्रश्न 4988. जानकी-नवमी प्रसंग “बाराती-सत्कार”क बाद किएक सांस्कृतिक रूपेँ अर्थवान अछि?
क. विवाह-संस्कार आलोचना सँ सीता-मंगल आ नारी-गरिमाक पाबनि धरि क्रम बनैत अछि
ख. पूर्ण असंबद्धता
ग. भोजनक पुनरावृत्ति
घ. गजल मात्र
उत्तर: क. विवाह-संस्कार आलोचना सँ सीता-मंगल आ नारी-गरिमाक पाबनि धरि क्रम बनैत अछि
व्याख्या: सदेहक अनुक्रम समाज-सुधार आ लोक-आस्था दुनू कैँ साथ रखैत अछि।

प्रश्न 4989. सीता/जानकी मिथिलाक सांस्कृतिक स्मृतिमे की प्रतिनिधित्व करैत छथि?
क. मातृशक्ति, पवित्रता, त्याग आ मिथिला-गौरव
ख. केवल ऐतिहासिक राजा
ग. होटल पात्र
घ. नशा-विनोद
उत्तर: क. मातृशक्ति, पवित्रता, त्याग आ मिथिला-गौरव
व्याख्या: जानकी-महिमा मिथिला-परिचयक मूल प्रतीकसभमे एक अछि।

प्रश्न 4990. जानकी-नवमीक व्रत-पूजा लोकधर्मक कोन पक्ष देखबैत अछि?
क. गृहस्थ-जीवन, देवी-आस्था आ स्त्री-मंगलक समन्वय
ख. वैराग्य मात्र
ग. व्यापार मात्र
घ. नाटक-समालोचना
उत्तर: क. गृहस्थ-जीवन, देवी-आस्था आ स्त्री-मंगलक समन्वय
व्याख्या: लोकपाबनि घर, देवी, समृद्धि आ स्मृति कैँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4991. लेखमे अंग्रेजी तिथि देल रहितो क्विज लेल मुख्य सांस्कृतिक बिंदु की अछि?
क. वैशाख शुक्ल नवमीक जानकी-व्रत आ सीताजी पूजा
ख. विशेष अंग्रेजी तारीख याद करब
ग. केवल बाहरी गणना
घ. केवल सूची-गणना
उत्तर: क. वैशाख शुक्ल नवमीक जानकी-व्रत आ सीताजी पूजा
व्याख्या: यांत्रिक तारीखसँ बेसी सांस्कृतिक तिथि, व्रत आ पूजा अर्थवान अछि।

प्रश्न 4992. एहि खण्डक समग्र महत्व की अछि?
क. मिथिलाक नारी-आस्था, जानकी-परम्परा आ लोकमंगलक स्मरण
ख. सिर्फ पाक-विधि
ग. सिर्फ विवाह खर्च
घ. सिर्फ राजनैतिक आलोचना
उत्तर: क. मिथिलाक नारी-आस्था, जानकी-परम्परा आ लोकमंगलक स्मरण
व्याख्या: जानकी-नवमी मिथिला अस्मिताक आध्यात्मिक-सांस्कृतिक केन्द्र रूपेँ उभरैत अछि।

खण्ड ५०५ : विदेह-सदेह १ — जानकी-नवमी: वेदवती, रावण-विनाश आ स्त्री-सम्मान

प्रश्न 4993. जानकी-नवमीक कथामे जनकजीक मूल दुःख की छल?
क. संतानहीनता
ख. राज्य-विस्तार
ग. वनवास
घ. व्यापार-हानि
उत्तर: क. संतानहीनता
व्याख्या: कथामे जनक संतानहीन रहबाक पीड़ा सँ जुड़ल छथि।

प्रश्न 4994. जनकजी खेतमे हर जोतैत काल की भेटलनि?
क. स्वर्ण-कलशसँ प्रकट दिव्य बालिका
ख. शस्त्रसँ भरल संदूक
ग. नदीक माछ
घ. राज-दूतक पत्र
उत्तर: क. स्वर्ण-कलशसँ प्रकट दिव्य बालिका
व्याख्या: सीताक अवतरण खेत, हर आ कलशक प्रसंगमे राखल गेल अछि।

प्रश्न 4995. सीता नामक अर्थ लेखमे कोना जोड़ल गेल अछि?
क. हरसँ बनल रेखा/सीता सँ
ख. समुद्रक लहर सँ
ग. आकाशक तारा सँ
घ. राजदरबारक सिंहासन सँ
उत्तर: क. हरसँ बनल रेखा/सीता सँ
व्याख्या: सीता नाम खेती-हर आ भूमिसँ जुड़ल प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 4996. वेदवती कथामे ओ ककरा अपन जीवन समर्पित कएने छलीह?
क. विष्णु देव केँ
ख. रावण केँ
ग. इन्द्र केँ
घ. जनक केँ
उत्तर: क. विष्णु देव केँ
व्याख्या: लेख वेदवतीक विष्णुभक्ति आ संकल्प केँ सीताक पुनर्जन्म-कथासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4997. रावणक प्रस्ताव वेदवती किएक अस्वीकार कएलनि?
क. किएक तँ ओ विष्णु प्रति समर्पित छलीह
ख. किएक तँ ओ जनकक पुत्री छलीह
ग. किएक तँ ओ राजगुरु छलीह
घ. किएक तँ ओ वन नहि चाहैत छलीह
उत्तर: क. किएक तँ ओ विष्णु प्रति समर्पित छलीह
व्याख्या: अस्वीकारक मूल कारण हुनक आध्यात्मिक निष्ठा अछि।

प्रश्न 4998. वेदवती कोन प्रतिज्ञा लेलनि?
क. पुनर्जन्ममे रावणक विनाशक कारण बनबाक
ख. राज्य त्यागि व्यापार करबाक
ग. जनकपुर छोड़बाक
घ. विवाहक विरोध करबाक
उत्तर: क. पुनर्जन्ममे रावणक विनाशक कारण बनबाक
व्याख्या: कथा सीताक जन्म कैं रावण-विनाशक नियति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 4999. मंदोदरी-सम्बन्धी कथान्तरमे सीताक जन्म-प्रसंग कोना अबैत अछि?
क. मंदोदरी अपन संतानक आश्रय जनकक मार्गमे नुकाबैत छथि
ख. मंदोदरी सीताक गुरु बनैत छथि
ग. मंदोदरी कोसीमे नाव चलबैत छथि
घ. मंदोदरी मिथिला चित्र बनबैत छथि
उत्तर: क. मंदोदरी अपन संतानक आश्रय जनकक मार्गमे नुकाबैत छथि
व्याख्या: लेख कथान्तर रूपेँ मंदोदरीक भय आ जनकक संतानहीनता कैं जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5000. राक्षस-अत्याचारक कथान्तरमे कलशमे की एकत्र कएल गेल छल?
क. ऋषि-मुनिक शोणित
ख. मखानक बीज
ग. राजमुद्रा
घ. सोना-चाँदी
उत्तर: क. ऋषि-मुनिक शोणित
व्याख्या: एहि कथामे सीता अत्याचारित तपस्वी समाजक पीड़ाक उत्तर बनैत छथि।

प्रश्न 5001. “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते…” पंक्तिक भाव लेखमे की अछि?
क. स्त्री-सम्मान रहित समाज देवत्व आ मंगल पबैत अछि
ख. स्त्री-अवमानना सदाचार अछि
ग. युद्धे सभसँ पैघ धर्म अछि
घ. धनहि देवता अछि
उत्तर: क. स्त्री-सम्मान रहित समाज देवत्व आ मंगल पबैत अछि
व्याख्या: लेख स्त्री-सम्मान कैं कथा-निष्कर्षक नैतिक आधार बनबैत अछि।

प्रश्न 5002. जानकी-कथाक व्यापक सांकेतिक निष्कर्ष की अछि?
क. स्त्रीक अपमान करनिहारक अंत दुःखद होइत अछि
ख. केवल राजवंश महत्त्वपूर्ण अछि
ग. भोजन-विधान मुख्य अछि
घ. भाषा-विस्मृति वांछनीय अछि
उत्तर: क. स्त्रीक अपमान करनिहारक अंत दुःखद होइत अछि
व्याख्या: सीताक कथा स्त्री-मर्यादा आ अन्याय-विरोधक संदेश दैत अछि।

खण्ड ५०६ : विदेह-सदेह १ — ओमप्रकाश झा: मैथिल प्रवास, भाषा-स्मृति आ गोवा सम्मेलन

प्रश्न 5003. ओमप्रकाश झा केर लेख कोन प्रसंगसँ शुरू होइत अछि?
क. गोवामे अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदक सम्मेलन कभर करबाक अनुभवसँ
ख. जनकपुरमे खेत जोतबाक कथासँ
ग. मखानक खीर बनाबयसँ
घ. संत रामदासक समाधिसँ
उत्तर: क. गोवामे अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदक सम्मेलन कभर करबाक अनुभवसँ
व्याख्या: लेखक पत्रकारिता-प्रसंगसँ मैथिल प्रवास आ भाषा पर विचार खोलैत छथि।

प्रश्न 5004. गोवा सम्मेलनक कवर करबाक भार लेखककेँ कोना भेटल?
क. अपन समाचार-संस्थासँ
ख. गामक पंचायतसँ
ग. कन्यापक्षक आग्रहसँ
घ. पंजीकारक आदेशसँ
उत्तर: क. अपन समाचार-संस्थासँ
व्याख्या: लेखक अपन मीडिया-कर्मक कारण एहि आयोजनमे पहुँचल छथि।

प्रश्न 5005. छत्तीसगढ़ आ मध्यप्रदेशक मैथिलक सम्बन्धमे लेख की कहैत अछि?
क. बहुत पीढ़ी बाद भाषा हराएल, मुदा मिथिलासँ स्नेह बचल
ख. ओ सभ मिथिलासँ कोनो सम्बन्ध नहि रखैत छथि
ग. ओ सभ केवल पंजी लिखैत छथि
घ. ओ सभ मखानक खेती करैत छथि
उत्तर: क. बहुत पीढ़ी बाद भाषा हराएल, मुदा मिथिलासँ स्नेह बचल
व्याख्या: लेख भाषा-विस्मृतिक बीच सांस्कृतिक लगावक जटिलता देखबैत अछि।

प्रश्न 5006. दिल्लीक नांगलोई प्रसंग ककर संकेत दैत अछि?
क. जीवन-यापन लेल मैथिलक विभिन्न व्यवसाय आ बिखरल बसाहट
ख. केवल राजकीय समारोह
ग. विद्यापतिक जन्म
घ. रामलीलाक मंचन
उत्तर: क. जीवन-यापन लेल मैथिलक विभिन्न व्यवसाय आ बिखरल बसाहट
व्याख्या: लेख प्रवासी मैथिलक श्रम, बसाहट आ सामाजिक रूपांतरणक चित्र दैत अछि।

प्रश्न 5007. गोवा सम्बन्धी लेखमे स्कन्दपुराणक उल्लेख कोन दावासँ जुड़ल अछि?
क. गोवा बसाबयमे मैथिल ब्राह्मणक भूमिका
ख. कोसी तटबंध निर्माण
ग. जानकी नवमी तिथि
घ. कोजागरा चुमाओन
उत्तर: क. गोवा बसाबयमे मैथिल ब्राह्मणक भूमिका
व्याख्या: लेख गोवा-मिथिला सम्बन्धक पुरातन संकेत रूपेँ एहि दावाक चर्चा करैत अछि।

प्रश्न 5008. गोवन लोकक मातृभाषा कोंकणीमे मैथिली-सदृश शब्दक उदाहरण किएक देल गेल?
क. भाषिक-सांस्कृतिक निकटता देखेबाक लेल
ख. भाषा कमजोर कहबाक लेल
ग. पत्रकारिता त्यागबाक लेल
घ. केवल हास्य लेल
उत्तर: क. भाषिक-सांस्कृतिक निकटता देखेबाक लेल
व्याख्या: अदहन, पाहुन, मधुर आदि उदाहरणसँ भाषिक स्मृतिक सूत्र बनाओल गेल अछि।

प्रश्न 5009. गोवा सम्मेलनमे नेपालक प्रतिनिधि आ नेपाल टीवीक उपस्थिति की देखबैत अछि?
क. मैथिली आयोजनक सीमा भारतसँ बाहर धरि फैलल छल
ख. मैथिली केवल एक गामक विषय छल
ग. भाषा केवल पाक-विधि छल
घ. सम्मेलन गुप्त छल
उत्तर: क. मैथिली आयोजनक सीमा भारतसँ बाहर धरि फैलल छल
व्याख्या: लेख अन्तरक्षेत्रीय मैथिली उपस्थिति देखबैत अछि।

प्रश्न 5010. गोवाक मैथिल मीडिया-पुरोधा पर लेखकक आलोचना की अछि?
क. ओ सभ निकट रहितहुँ कार्यक्रम कवर करबामे सक्रिय नहि भेलाह
ख. ओ सभ सभटा आयोजन करैत छलाह
ग. ओ सभ किसान छलाह
घ. ओ सभ बाल-कविता लिखैत छलाह
उत्तर: क. ओ सभ निकट रहितहुँ कार्यक्रम कवर करबामे सक्रिय नहि भेलाह
व्याख्या: लेख मैथिल अस्मिता प्रति उदासीनता पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 5011. लेखक भाषा-संस्कृति त्यागक तुलना कोन प्रवृत्तिसँ करैत छथि?
क. सम्पन्न रहितहुँ कर्ज लेबाक प्रवृत्तिसँ
ख. साधना करबाक प्रवृत्तिसँ
ग. मखान बाँटबाक प्रवृत्तिसँ
घ. अतिथि-सत्कारसँ
उत्तर: क. सम्पन्न रहितहुँ कर्ज लेबाक प्रवृत्तिसँ
व्याख्या: ई तुलना आत्महीन आधुनिकताक व्यंग्यात्मक चित्र बनबैत अछि।

प्रश्न 5012. “मिथिले तक नहि छथि मैथिल”क मुख्य चिन्ता की अछि?
क. प्रवासमे मैथिल पहचान रहि गेल अछि, मुदा भाषा-संस्कृति बिसरबाक संकट अछि
ख. मिथिलामे कोनो लोक नहि रहैत अछि
ग. केवल पाकशास्त्रक कमी अछि
घ. कोनो सम्मेलन नहि भेल
उत्तर: क. प्रवासमे मैथिल पहचान रहि गेल अछि, मुदा भाषा-संस्कृति बिसरबाक संकट अछि
व्याख्या: लेख प्रवासी लगाव आ भाषा-विस्मृतिक बीच अस्मिताक प्रश्न उठबैत अछि।

खण्ड ५०७ : विदेह-सदेह १ — ओमप्रकाश झा: मीडिया, नैतिकता आ मैथिली अस्मिता

प्रश्न 5013. “मीडिया कतअ ल जा रहल अछि?” लेखमे आरुषि, कोसी आ बम-विस्फोटक उल्लेख किएक अछि?
क. समकालीन घटनापर मीडिया प्रस्तुति पर प्रश्न उठेबाक लेल
ख. केवल कथा-सूची बनेबाक लेल
ग. जानकी-व्रतक प्रमाण लेल
घ. मखानक उपज बताबय लेल
उत्तर: क. समकालीन घटनापर मीडिया प्रस्तुति पर प्रश्न उठेबाक लेल
व्याख्या: लेख समाचार-वस्तुक चयन आ प्रस्तुति पर आलोचनात्मक दृष्टि राखैत अछि।

प्रश्न 5014. लेखक मीडिया-दर्शक सम्बन्धमे कोन विडम्बना देखैत छथि?
क. मीडिया जे परोसैत अछि, दर्शक-पाठक ओकरा ग्रहण करबाक लेल बाध्य होइत छथि
ख. दर्शक सभ समाचार बनबैत छथि
ग. मीडिया पूर्णतः निष्पक्ष अछि
घ. मीडिया केवल लोकगीत गबैत अछि
उत्तर: क. मीडिया जे परोसैत अछि, दर्शक-पाठक ओकरा ग्रहण करबाक लेल बाध्य होइत छथि
व्याख्या: लेख सूचना-बाजारमे दर्शकक असहायता पर टिप्पणी करैत अछि।

प्रश्न 5015. “खशी के जान जाय...” कहावतक प्रयोग कोन भाव लेल भेल?
क. भोग करनिहारक स्वाद आ पीड़ितक जीवनक बीचक असमानता
ख. भोजनक प्रशंसा
ग. कन्यादानक रस्म
घ. बाल-कविताक लय
उत्तर: क. भोग करनिहारक स्वाद आ पीड़ितक जीवनक बीचक असमानता
व्याख्या: कहावत मीडिया उपभोगक निर्दयता स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 5016. लेख मीडिया संस्थानक आन्तरिक संरचना पर की भाव व्यक्त करैत अछि?
क. भीतरक नैतिक पतन आ दोहरापन पर कठोर टिप्पणी
ख. पूर्ण संतोष
ग. भाषा-संरक्षणक आश्वासन
घ. केवल तकनीकी समस्या
उत्तर: क. भीतरक नैतिक पतन आ दोहरापन पर कठोर टिप्पणी
व्याख्या: लेख बाहरी चमकक भीतरक भ्रष्ट-संरचना पर प्रश्न करैत अछि।

प्रश्न 5017. स्टिंग ऑपरेशन सम्बन्धी लेखकक प्रश्न की अछि?
क. दोसरक स्टिंग करनिहार मीडिया पर सेहो नजरदारी किएक नहि?
ख. स्टिंग केवल बालकविता लेल हो
ग. स्टिंगक जरूरत नहि
घ. स्टिंग पाकशास्त्रक विधि अछि
उत्तर: क. दोसरक स्टिंग करनिहार मीडिया पर सेहो नजरदारी किएक नहि?
व्याख्या: लेख आत्म-जांचक अभाव कैं मीडिया नैतिकताक समस्या मानैत अछि।

प्रश्न 5018. मीडिया शीर्ष पद पर मैथिल पुरोधाक चर्चा ककर आलोचना अछि?
क. अस्मिता-बोधक बावजूद सत्य बाजयमे संकोच
ख. मैथिलक अनुपस्थिति
ग. केवल ग्रामीणता
घ. बाल-कविताक कमी
उत्तर: क. अस्मिता-बोधक बावजूद सत्य बाजयमे संकोच
व्याख्या: लेख सामुदायिक स्थान प्राप्त करितहुँ मौन रहबाक प्रवृत्ति पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 5019. लेखक अपनाकैं मीडिया-भीड़मे शामिल कहलासँ की सूचित करैत छथि?
क. आत्मालोचनात्मक ईमानदारी
ख. पूर्ण अहंकार
ग. भाषा-त्यागक समर्थन
घ. मिथिला-विरोध
उत्तर: क. आत्मालोचनात्मक ईमानदारी
व्याख्या: लेख दूसर पर दोष देबामात्र नहि, स्वयंकैं सेहो प्रश्नमे राखैत अछि।

प्रश्न 5020. मंडन, अयाची, जनक आ विद्यापतिक सन्तानक उल्लेख किएक अछि?
क. पूर्वजक नैतिक-बौद्धिक परम्परा सँ वर्तमानक दूरी देखेबाक लेल
ख. वंशावली पंजी बनाबय लेल
ग. पाक-विधि सुधार लेल
घ. गोवा यात्रा लेल
उत्तर: क. पूर्वजक नैतिक-बौद्धिक परम्परा सँ वर्तमानक दूरी देखेबाक लेल
व्याख्या: पूर्वज-स्मरण वर्तमान नैतिक प्रश्न कैं पैघ बनबैत अछि।

प्रश्न 5021. “कोना बचत मिथिलाक स्मिता?”मे युवा वर्गक मुख्य स्थिति की कहल गेल?
क. दिग्भ्रमित आ मार्गदर्शन-विहीन
ख. पूर्णतः मार्गदर्शक
ग. केवल किसान
घ. केवल गायक
उत्तर: क. दिग्भ्रमित आ मार्गदर्शन-विहीन
व्याख्या: लेख नवयुवकक सांस्कृतिक दिशाहीनता पर चिन्ता करैत अछि।

प्रश्न 5022. मीडिया आ अस्मिता-विमर्शक साझा निष्कर्ष की अछि?
क. भाषा-संस्कृति बचएब लेल आत्मालोचना, सत्यवादिता आ सामूहिक जिम्मेदारी चाही
ख. केवल उपभोग बढ़ाबी
ग. भाषा छोड़ि दिअ
घ. मीडिया प्रश्नहीन अछि
उत्तर: क. भाषा-संस्कृति बचएब लेल आत्मालोचना, सत्यवादिता आ सामूहिक जिम्मेदारी चाही
व्याख्या: दू लेख मिलि आधुनिकता, मीडिया आ अस्मिता पर सजग हस्तक्षेप करैत अछि।

खण्ड ५०८ : विदेह-सदेह १ — स्मिता, रामलीला आ गामक सांस्कृतिक क्षय

प्रश्न 5023. “स्मिता” सम्बन्धी लेखमे पाबनि-तिहारक महीना ककर अवसर रूपमे देखल गेल?
क. गामक सांस्कृतिक कार्यक्रम आ सामुदायिक चेतना जाँचबाक अवसर
ख. केवल बजारक मेला
ग. सैन्य-अभ्यास
घ. पुस्तक-बिक्री
उत्तर: क. गामक सांस्कृतिक कार्यक्रम आ सामुदायिक चेतना जाँचबाक अवसर
व्याख्या: दुर्गा-पूजा आदि अवसर पर गामक संस्कृति कोना बदलल अछि, लेख ई देखैत अछि।

प्रश्न 5024. लेखक पुरान गामक युवकक कोन सांस्कृतिक अभ्यास स्मरण करैत छथि?
क. नाटक आ रामलीला खेलायब
ख. केवल टीवी देखब
ग. केवल होटल चलायब
घ. विदेश यात्रा
उत्तर: क. नाटक आ रामलीला खेलायब
व्याख्या: पूर्वकालमे युवकक रंगमंचीय सक्रियता सामुदायिक संस्कृति सँ जुड़ल छल।

प्रश्न 5025. लेखमे “बाईजी/नाच”क आलोचना कोन कारणे अछि?
क. किएक तँ ओ स्थानीय कला आ नैतिक वातावरणक स्थान घेरि रहल अछि
ख. किएक तँ ओ खेती बढ़बैत अछि
ग. किएक तँ ओ विद्या सिखबैत अछि
घ. किएक तँ ओ पंजी लिखैत अछि
उत्तर: क. किएक तँ ओ स्थानीय कला आ नैतिक वातावरणक स्थान घेरि रहल अछि
व्याख्या: लेख बाहरी मनोरंजनक नाम पर सांस्कृतिक क्षरण देखबैत अछि।

प्रश्न 5026. मंदिर-परिसरक दुर्दशाक वर्णन ककर प्रतीक अछि?
क. आस्था-स्थल पर अनुशासन आ संवेदनहीनता घटबाक
ख. अत्यधिक श्रद्धाक
ग. पाक-कला विकासक
घ. भाषिक शुद्धताक
उत्तर: क. आस्था-स्थल पर अनुशासन आ संवेदनहीनता घटबाक
व्याख्या: लेख धार्मिक आयोजनक बाहरीपन आ भीतरक अव्यवस्था उघारैत अछि।

प्रश्न 5027. तीन पुस्त एक संग नाचमे पाई लुटेबाक चित्र ककर आलोचना अछि?
क. सामूहिक रुचिक पतन आ अनियंत्रित उपभोगक
ख. परम्परा-संरक्षणक
ग. गरीबी निवारणक
घ. विद्यापति-गानक
उत्तर: क. सामूहिक रुचिक पतन आ अनियंत्रित उपभोगक
व्याख्या: एहि चित्रसँ लेखक सांस्कृतिक प्राथमिकताक बदलल रूप देखबैत छथि।

प्रश्न 5028. रामलीला टोलीक “माला” उठेबाक पुरान प्रथा की देखबैत अछि?
क. भोजन-आश्रयक माध्यमे समाजक कलाकार प्रति जिम्मेदारी
ख. कलाकारक अपमान मात्र
ग. केवल टिकट-बिक्री
घ. पाक-विधि
उत्तर: क. भोजन-आश्रयक माध्यमे समाजक कलाकार प्रति जिम्मेदारी
व्याख्या: लेख बतबैत अछि जे पहिले अल्प साधनमे लोक कला चलैत छल।

प्रश्न 5029. बादक समयमे रामलीलाक टिकट-प्रथा पर लेखक की संकेत करैत छथि?
क. जे समाज बाहर रामलीला पर खर्च करैत अछि, मुदा अपन गामक टोलीक पेट नहि भरैत
ख. रामलीला समाप्त भऽ गेल
ग. टिकट सदिखन खराब अछि
घ. गामक कलाकार धनी भेलाह
उत्तर: क. जे समाज बाहर रामलीला पर खर्च करैत अछि, मुदा अपन गामक टोलीक पेट नहि भरैत
व्याख्या: ई तुलना स्थानीय उपेक्षा आ बाहरी आकर्षणक विरोधाभास देखबैत अछि।

प्रश्न 5030. गामक कलाक ह्रासक मूल कारण लेखमे कोना देखाओल गेल?
क. लोकक रुचि, जिम्मेदारी आ सामूहिक सहयोग घटल
ख. केवल वर्षा भेल
ग. केवल सड़क बनल
घ. भाषा स्वतः मरल
उत्तर: क. लोकक रुचि, जिम्मेदारी आ सामूहिक सहयोग घटल
व्याख्या: लेख सांस्कृतिक क्षय कैं सामुदायिक चयनक फल मानैत अछि।

प्रश्न 5031. भाईचाराक क्षयक प्रश्न लेखमे कोना उठैत अछि?
क. दस गोटेक भोजन धरि कठिन बुझबाक उदाहरणसँ
ख. राजदरबारक युद्धसँ
ग. मखान बाँटबासँ
घ. कोजागरा चुमाओनसँ
उत्तर: क. दस गोटेक भोजन धरि कठिन बुझबाक उदाहरणसँ
व्याख्या: छोट उदाहरणसँ सामुदायिक उदारता घटबाक चिन्ता उभरैत अछि।

प्रश्न 5032. “कोना बचत मिथिलाक स्मिता?”क गाम-केन्द्रित निष्कर्ष की अछि?
क. स्थानीय कला, नाटक, रामलीला आ सामुदायिक सहयोग फेर जीवित करब जरूरी अछि
ख. नाच-बाजारहि संस्कृति अछि
ग. गामक जरूरत नहि
घ. भाषा छोड़ू
उत्तर: क. स्थानीय कला, नाटक, रामलीला आ सामुदायिक सहयोग फेर जीवित करब जरूरी अछि
व्याख्या: लेख अस्मिता-बचाव कैं व्यवहारिक सांस्कृतिक पुनरुद्धारसँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ५०९ : विदेह-सदेह १ — प्रकाश झा: बाल-बुदरुक लेल कविता-चक्र

प्रश्न 5033. बाल-बुदरुक लेल कविता-चक्रक प्रस्तावनासँ कोन समस्या स्पष्ट होइत अछि?
क. मैथिलीमे बच्चा लेल गीतमय रचनाक कमी
ख. मैथिलीमे गद्यक अधिकता
ग. बच्चा सभकेँ भाषा नहि चाही
घ. मिथिलामे पशु नहि अछि
उत्तर: क. मैथिलीमे बच्चा लेल गीतमय रचनाक कमी
व्याख्या: प्रस्तावना बाल-साहित्यक उपेक्षा केँ मुख्य प्रश्न बनबैत अछि।

प्रश्न 5034. एहि बाल-कवितासभक लक्ष्य की बताओल गेल?
क. बच्चा रटि, गाबि, गुनगुना कऽ मानसिक विकास पाउ
ख. केवल परीक्षा-प्रश्न बनब
ग. राजनीतिक भाषण
घ. नाटक समीक्षा
उत्तर: क. बच्चा रटि, गाबि, गुनगुना कऽ मानसिक विकास पाउ
व्याख्या: कवितासभ लय, स्मृति आ आनन्दक माध्यमे बाल-विकास चाहैत अछि।

प्रश्न 5035. “बिलाड़ि” कवितामे बिलाड़ि केँ बाघसँ कोना जोड़ल गेल?
क. बाघक मौसी कहल गेल
ख. बाघक शत्रु कहल गेल
ग. बाघक गुरु कहल गेल
घ. बाघक सेवक कहल गेल
उत्तर: क. बाघक मौसी कहल गेल
व्याख्या: बाल-कविता पारिवारिक हास्यक सम्बन्धसँ पशु-चित्र बनबैत अछि।

प्रश्न 5036. “बाघ” कवितामे बाघक कोन रूप प्रमुख अछि?
क. जंगलक राजा
ख. घरक दादी
ग. पिंजराक सुग्गा
घ. दीयाबातीक दीप
उत्तर: क. जंगलक राजा
व्याख्या: कविता छोट पंक्तिमे बाघक राजसी छवि बनबैत अछि।

प्रश्न 5037. “गैया” कवितामे गाय केँ ककर रूपमे आत्मीय बनाओल गेल?
क. हमर सभहक मैया
ख. जंगलक राजा
ग. कुतबाक शत्रु
घ. रामलीलाक पात्र
उत्तर: क. हमर सभहक मैया
व्याख्या: दूध देनिहार गाय केँ मातृ-स्नेहक प्रतीक बनाओल गेल अछि।

प्रश्न 5038. “कुतबा” कवितामे कुतबाक मुख्य काम की अछि?
क. राति जगि चोर भगायब
ख. दूध देब
ग. मिरचाई खायब
घ. मेघ बरसाब
उत्तर: क. राति जगि चोर भगायब
व्याख्या: कविता घरेलू सुरक्षा आ पालतू व्यवहार केँ बाल-भाषामे कहैत अछि।

प्रश्न 5039. “हाथी” कवितामे हाथीक कोन शारीरिक छवि अबैत अछि?
क. लम्बा सूँढ़ आ सूप सन कान
ख. छोट ठोर
ग. नील पाँखि
घ. मछलीक पूँछ
उत्तर: क. लम्बा सूँढ़ आ सूप सन कान
व्याख्या: बालक लेल हाथीक पहिचान दृश्य विशेषतासँ बनाओल गेल अछि।

प्रश्न 5040. “चिड़ै/जानवर” कवितामे चिड़ै आ जानवरक सूची ककरा जोड़ैत अछि?
क. सुग्गा-मेना-कौआ-बगरा आ गैया-बरद-बिलाड़ि-कुतबा
ख. केवल देवता-सूची
ग. केवल नदी-सूची
घ. केवल लेखक-सूची
उत्तर: क. सुग्गा-मेना-कौआ-बगरा आ गैया-बरद-बिलाड़ि-कुतबा
व्याख्या: कविता नाम-स्मृतिक माध्यमे बालक संसार बढ़बैत अछि।

प्रश्न 5041. बाल-कवितासभमे ध्वनि-अनुकरणक महत्व की अछि?
क. पशु-पक्षी आ प्रकृतिक आवाजसँ बच्चाक लय-बोध बनैत अछि
ख. अर्थ अस्पष्ट करब
ग. भाषा हटाब
घ. कठिन शास्त्र बनाब
उत्तर: क. पशु-पक्षी आ प्रकृतिक आवाजसँ बच्चाक लय-बोध बनैत अछि
व्याख्या: म्याऊँ, भौं, कॉव आदि ध्वनि बाल-रुचिक आधार अछि।

प्रश्न 5042. एहि बाल-कविता-समूहक साहित्यिक महत्व की अछि?
क. मिथिलाक बाल-लोक कैं मैथिली लयमे अपन परिवेश देब
ख. केवल वयस्क आलोचना
ग. केवल पंजी-विवरण
घ. केवल पाक-विधि
उत्तर: क. मिथिलाक बाल-लोक कैं मैथिली लयमे अपन परिवेश देब
व्याख्या: कवितासभ बाल-साहित्यक अभाव भरबाक आरम्भिक प्रयास जकाँ देखाइत अछि।

खण्ड ५१० : विदेह-सदेह १ — बाल-कविता: कौआ, सुग्गा, मेघ, दीयाबाती, नानी आ छैठ

प्रश्न 5043. “कौआ” कवितामे कौआक रंग आ आवाज कोना चित्रित अछि?
क. कारी देह आ कॉव-कॉव आवाज
ख. लाल देह आ म्याऊँ आवाज
ग. हरियर देह आ राम-राम
घ. सफेद देह आ झमझम
उत्तर: क. कारी देह आ कॉव-कॉव आवाज
व्याख्या: कविता कौआक सहज लोक-छवि कैं ध्वनि सहित रखैत अछि।

प्रश्न 5044. कौआ रोटी लऽ उड़बाक प्रसंग ककर लेल रोचक अछि?
क. बौआ/बच्चा लेल
ख. राजा लेल
ग. पंजीकार लेल
घ. नवाब लेल
उत्तर: क. बौआ/बच्चा लेल
व्याख्या: बाल-कवितामे छोट घटना बाल-हास्य बनि जाइत अछि।

प्रश्न 5045. “सुग्गा” कवितामे सुग्गा कतए अछि?
क. पिंजरामे
ख. कोसी तटपर
ग. राजमहलमे
घ. शिवमंदिरमे
उत्तर: क. पिंजरामे
व्याख्या: पिंजराक सुग्गा लोकपालित पक्षीक बाल-चित्र अछि।

प्रश्न 5046. सुग्गा कोन वाक्य रटैत देखाओल गेल?
क. राम-राम
ख. जय बाजार
ग. पत्र पढ़ू
घ. नाटक खेलू
उत्तर: क. राम-राम
व्याख्या: तोता-रटंत ध्वनि बाल-कविताक सहज तत्व अछि।

प्रश्न 5047. सुग्गा की खाइत अछि?
क. मिरचाई
ख. मखानक खीर
ग. केसर पुलाव
घ. मूली पराठा
उत्तर: क. मिरचाई
व्याख्या: मिरचाई खेबाक सुग्गाक लोक-छवि कवितामे आबैत अछि।

प्रश्न 5048. “मेघ” कवितामे मेघक रंग कोना कहल गेल?
क. कारी-कारी
ख. सुनहला
ग. दूधिया मात्र
घ. लाल-नील
उत्तर: क. कारी-कारी
व्याख्या: मेघक कारी रूप बरखा-पूर्व दृश्य बनबैत अछि।

प्रश्न 5049. मेघ कवितामे बरखाक ध्वनि कोना अबैत अछि?
क. झर-झर, झमझम, टपटप
ख. म्याऊँ-म्याऊँ
ग. कॉव-कॉव
घ. राम-राम
उत्तर: क. झर-झर, झमझम, टपटप
व्याख्या: ध्वनि-पुनरावृत्ति बाल-लय आ मौसमक अनुभव देत अछि।

प्रश्न 5050. “दीयाबाती” कवितामे दादी की करैत छथि?
क. सूप पिटैत छथि
ख. हर जोतैत छथि
ग. पत्र लिखैत छथि
घ. रामलीला बेचैत छथि
उत्तर: क. सूप पिटैत छथि
व्याख्या: दीयाबाती लोक-रीति आ घरक स्त्री-उपस्थिति संग जुड़ल अछि।

प्रश्न 5051. “नानी” कवितामे नानीक मुख्य भूमिका की अछि?
क. मामा-मौसीक माँ आ किस्सा सुनाबयवाली आत्मीय बुजुर्ग
ख. राज्यक राजा
ग. पत्रकार
घ. वरक सासुर
उत्तर: क. मामा-मौसीक माँ आ किस्सा सुनाबयवाली आत्मीय बुजुर्ग
व्याख्या: कविता नानी कैं परिवारक कथा-स्रोत रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 5052. “छैठ परमेसरी” कवितामे बच्चाक उत्साह कोन क्रियासँ देखाइत अछि?
क. घाट जाएब, सूरजकेँ अर्घ देखब आ ठेकुआ-मधुर खेब
ख. समारोह बंद करब
ग. गोवा सम्मेलन कभर करब
घ. पत्राचार लिखब
उत्तर: क. घाट जाएब, सूरजकेँ अर्घ देखब आ ठेकुआ-मधुर खेब
व्याख्या: छैठक बाल-दृष्टि अनुष्ठान, प्रसाद आ घाटक अनुभव सँ बनैत अछि।

खण्ड ५११ : विदेह-सदेह १ — प्रकाश झा: “हमर मिथिलाक दर्शन”

प्रश्न 5053. “हमर मिथिलाक दर्शन”मे वक्ता कोन बातमे लाज न मानबाक बात कहैत अछि?
क. मैथिली बजबामे
ख. मिथिला बिसरबामे
ग. गायन छोड़बामे
घ. गाम छोड़बामे
उत्तर: क. मैथिली बजबामे
व्याख्या: कविता मैथिली बोलबाक स्वाभिमान सँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 5054. कवितामे मिथिलाक पारिवारिक पौराणिक सम्बन्ध कोना बनाओल गेल?
क. जनक पिता, सीता बहिन, राम बहनोई
ख. रावण पिता, मन्दोदरी बहिन
ग. गंगा पुत्र, कोसी माता
घ. नवाब गुरु
उत्तर: क. जनक पिता, सीता बहिन, राम बहनोई
व्याख्या: मिथिला-पहिचान पौराणिक आत्मीयतासँ जुड़ैत अछि।

प्रश्न 5055. कमला-कोशीक उल्लेख ककर प्रतीक अछि?
क. मिथिला-धामक चरण पखारयवाली नदी-मातृभूमि
ख. केवल बाजारक सड़क
ग. पत्रकारिता-कक्ष
घ. विदेशी भाषा
उत्तर: क. मिथिला-धामक चरण पखारयवाली नदी-मातृभूमि
व्याख्या: नदीसभ मिथिला-भूमिक पवित्रता आ भौगोलिकता बनबैत अछि।

प्रश्न 5056. विद्यापति, मंडन, अयाची आ मैथिलीपुत्र प्रदीपक उल्लेख ककर स्मरण अछि?
क. मिथिलाक ज्ञान-साहित्य परम्परा
ख. विवाहक खर्च
ग. कोजागरा भार
घ. प्रवासक दुख
उत्तर: क. मिथिलाक ज्ञान-साहित्य परम्परा
व्याख्या: कविता महापुरुषसभसँ सांस्कृतिक गौरव ग्रहण करैत अछि।

प्रश्न 5057. कवितामे पान, मखान, खराम ककर प्रतीक अछि?
क. मिथिलाक जीवन-संस्कृति आ इतिहास
ख. केवल व्यापारिक माल
ग. युद्ध-शस्त्र
घ. मीडिया-उपकरण
उत्तर: क. मिथिलाक जीवन-संस्कृति आ इतिहास
व्याख्या: स्थानीय वस्तुसभ मिथिलाक पहचानक सांस्कृतिक चिह्न अछि।

प्रश्न 5058. मड़ुआ रोटी-सागक स्वाद कोन जीवन-भाव दैत अछि?
क. ग्रामीण सादगी आ अपनापन
ख. राजसी विलास
ग. भाषा-विस्मृति
घ. टेलीविजन-जीवन
उत्तर: क. ग्रामीण सादगी आ अपनापन
व्याख्या: कविता साधारण भोजनमे मातृभूमिक स्वाद खोजैत अछि।

प्रश्न 5059. फूसक घर, खरहीक टाट, शीतल घासक चित्र की बनबैत अछि?
क. ग्रामीण मिथिलाक दृश्य-संसार
ख. महानगरीय कार्यालय
ग. युद्धभूमि
घ. समुद्री तट
उत्तर: क. ग्रामीण मिथिलाक दृश्य-संसार
व्याख्या: कविता इन्द्रिय-बोधसँ गामक स्मृति रचैत अछि।

प्रश्न 5060. घरक चारपर कुम्हर, कदीमा आ सजमिनिक लत्ती ककर संकेत अछि?
क. आँगन-बारीक जीवित ग्रामीणता
ख. रेगिस्तानक जीवन
ग. कारखानाक मशीन
घ. मीडिया-कक्ष
उत्तर: क. आँगन-बारीक जीवित ग्रामीणता
व्याख्या: लत्ती-पसरल दृश्य गामक घर-परिवारक स्वाभाविक सौन्दर्य अछि।

प्रश्न 5061. “काली-चून लेपल खापैड़”क उल्लेख कोन लोक-विश्वाससँ जुड़ल अछि?
क. नजर न लगबाक बचाव-चिन्ह
ख. कृष्णभक्तिक शास्त्र
ग. चिट्ठी-लेखन
घ. सुग्गाक पिंजरा
उत्तर: क. नजर न लगबाक बचाव-चिन्ह
व्याख्या: कविता लोकविश्वासकेँ मिथिलाक रोजमर्रा दृश्य रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 5062. “हमर मिथिलाक दर्शन”क समग्र संदेश की अछि?
क. मैथिली, मिथिला-स्मृति, प्रकृति, लोक-जीवन आ गौरवक रक्षा
ख. मिथिला त्याग
ग. भाषा-विस्मृति
घ. केवल शहर-प्रशंसा
उत्तर: क. मैथिली, मिथिला-स्मृति, प्रकृति, लोक-जीवन आ गौरवक रक्षा
व्याख्या: कविता छोट सनेसक रूपमे मातृभूमि-प्रेम व्यक्त करैत अछि।

खण्ड ५१२ : विदेह-सदेह १ — प्रीति: दोसर विवाह, विधवा-पुनर्विवाह आ लैंगिक न्याय

प्रश्न 5063. प्रीतिक पहिल लेख कोन संस्था पर केन्द्रित अछि?

क. विवाह

ख. पंजीकारिता

ग. बाल-कविता

घ. भोजन-विधान

उत्तर: क. विवाह

व्याख्या: लेख विवाहक सामाजिक मान्यता आ लैंगिक असमानता पर विचार करैत अछि।

प्रश्न 5064. लेखमे प्राचीनकालक स्वयंबरक उल्लेख किएक अछि?

क. महिला कैं वर चुनबाक आजादीक स्मरण लेल

ख. पुरुषक अकेल अधिकार सिद्ध करबाक लेल

ग. भोज बढ़ेबाक लेल

घ. पत्रकारिता आलोचना लेल

उत्तर: क. महिला कैं वर चुनबाक आजादीक स्मरण लेल

व्याख्या: स्वयंबरक उल्लेख स्त्री-अधिकारक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दैत अछि।

प्रश्न 5065. बहुविवाह/दोसर विवाह पर समाजक व्यवहार लेखमे कोना देखल गेल?

क. पुरुषक पक्षमे अधिक उदार

ख. महिलाक पक्षमे पूर्ण समान

ग. दूनू लेल निष्पक्ष

घ. समाज उदासीन नहि

उत्तर: क. पुरुषक पक्षमे अधिक उदार

व्याख्या: लेख लिंगाधारित दोहरा मापदण्डक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 5066. विशेष परिस्थिति मे विधुरक दोसर विवाह पर लेख कोन दृष्टि रखैत अछि?

क. कारण बुझबा योग्य भऽ सकैत अछि

ख. सर्वथा असम्भव

ग. केवल अपराध

घ. केवल विलास

उत्तर: क. कारण बुझबा योग्य भऽ सकैत अछि

व्याख्या: लेख अंध विरोध नहि, परिस्थिति-बोध राखैत अछि।

प्रश्न 5067. शौक, दहेज लोभ वा आधुनिकता-दौड़मे दोसर विवाह कैं लेख कोना देखैत अछि?

क. अक्षम्य अपराध

ख. श्रेष्ठ परम्परा

ग. धर्मक मूल

घ. बालक्रीड़ा

उत्तर: क. अक्षम्य अपराध

व्याख्या: लेख स्वार्थी दोसर विवाहक कठोर निन्दा करैत अछि।

प्रश्न 5068. लेखक अनुसार दोसर विवाहक प्रश्नमे ककर सोच बदलबाक आवश्यकता अछि?

क. समाज आ स्वयं पुरुषक

ख. केवल विधवा स्त्रीक

ग. केवल बच्चाक

घ. केवल पंजीकारक

उत्तर: क. समाज आ स्वयं पुरुषक

व्याख्या: सुधारक लक्ष्य सामाजिक मानसिकता आ पुरुष-केन्द्रित अधिकारबोध अछि।

प्रश्न 5069. महिला-पुनर्विवाह पर समाजक नजरिया सम्बन्धी लेखक मुख्य बात की अछि?
क. समय बदलल, मुदा महिला सम्बन्धी सोच अभी पूर्ण बदलेल नहि
ख. महिला सभ पूर्ण स्वतंत्र छथि
ग. विवाह अप्रासंगिक अछि
घ. समाजमे कोनो भेदभाव नहि
उत्तर: क. समय बदलल, मुदा महिला सम्बन्धी सोच अभी पूर्ण बदलेल नहि
व्याख्या: लेख बदलाव आ जड़ता दूनूक तुलना करैत अछि।

प्रश्न 5070. पुरुषक दोसर विवाहक अधिकारक तुलना स्त्रीसँ किएक कएल गेल?
क. समान अधिकारक प्रश्न उठेबाक लेल
ख. स्त्रीक अधिकार घटेबाक लेल
ग. केवल हास्य लेल
घ. विवाह रोकबाक लेल
उत्तर: क. समान अधिकारक प्रश्न उठेबाक लेल
व्याख्या: लेख पूछैत अछि जे जे पुरुषकेँ मान्य अछि से परित्यक्ता/विधवा स्त्रीकेँ किएक नहि।

प्रश्न 5071. संतानहीन जवान विधवाक पुनर्विवाह सम्बन्धी सुझाव की अछि?
क. ओकरा अनिवार्य बना देल जाय आ बाकीकेँ इच्छा पर छोड़ल जाय
ख. सदिखन निषिद्ध करल जाय
ग. केवल परिवार तय करय
घ. विवाहक चर्चा न हो
उत्तर: क. ओकरा अनिवार्य बना देल जाय आ बाकीकेँ इच्छा पर छोड़ल जाय
व्याख्या: लेख उपेक्षित स्त्रीक जीवन पुनः मुख्यधारासँ जोड़बाक पक्षमे अछि।

प्रश्न 5072. प्रीतिक लैंगिक न्याय-विचारक निष्कर्ष की अछि?
क. पुनर्विवाह स्त्रीक नैराश्य हटबैत समाजक मुख्यधारामे पुनः प्रवेश दऽ सकैत अछि
ख. विधवा समाजसँ बाहर रहय
ग. पुरुषक अधिकारहि पर्याप्त
घ. विवाह केवल खर्च अछि
उत्तर: क. पुनर्विवाह स्त्रीक नैराश्य हटबैत समाजक मुख्यधारामे पुनः प्रवेश दऽ सकैत अछि
व्याख्या: लेख पुनर्विवाह केँ मानवीय गरिमा आ समानताक उपाय मानैत अछि।

खण्ड ५१३ : विदेह-सदेह १ — प्रीति: कोजागरा पावनि, चुमाओन आ मखान-सनेस

प्रश्न 5073. कोजागरा पावनि कोन तिथि पर मनाओल जाइत अछि?
क. आश्विन शुक्ल पूर्णिमा
ख. वैशाख शुक्ल नवमी
ग. कार्तिक धवल त्रयोदशी
घ. माघ अमावस्या
उत्तर: क. आश्विन शुक्ल पूर्णिमा
व्याख्या: लेख कोजागरा केँ आश्विन पूर्णिमाक पाबनि कहैत अछि।

प्रश्न 5074. कोजागरा ककर लेल विशेष पाबनि कहल गेल?
क. नवविवाहित बर लेल
ख. केवल नवविवाहिता कन्या लेल
ग. बालक लेल
घ. पंजीकार लेल
उत्तर: क. नवविवाहित बर लेल
व्याख्या: लेखमे कोजागरा नवका बरक पावनि रूपमे देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 5075. कोजागरा आ मधुश्रावणीमे मुख्य तुलना की अछि?
क. कोजागरा बर लेल, मधुश्रावणी नवकन्या लेल; कोजागरा एक दिनक, मधुश्रावणी लम्बा
ख. दूनू भोजन मात्र
ग. दूनू निषिद्ध
घ. दूनू केवल बाजार
उत्तर: क. कोजागरा बर लेल, मधुश्रावणी नवकन्या लेल; कोजागरा एक दिनक, मधुश्रावणी लम्बा
व्याख्या: तुलना लिंग-विशेष अनुष्ठानक भिन्नता देखबैत अछि।

प्रश्न 5076. कोजागरा अवसर पर बर की धारण करैत छथि?
क. सासुर सँ आयल नव वस्त्र
ख. शिवमंदिरक भस्म
ग. पुरान युद्धवस्त्र
घ. मीडिया-कार्ड
उत्तर: क. सासुर सँ आयल नव वस्त्र
व्याख्या: सासुरक भार-दोर आ नव वस्त्र पाबनिक विशेष भाग अछि।

प्रश्न 5077. कोजागरा भारमे कोन वस्तुक विशेष महत्त्व अछि?
क. मखान
ख. केवल माछ
ग. केवल कलम
घ. केवल तटबंध
उत्तर: क. मखान
व्याख्या: मखान बरक सासुरक सनेस रूपमे गाम-समाजमे बाँटल जाइत अछि।

प्रश्न 5078. घर-आँगन नीपि-पोछि कोन ठाम धरि अरिपन देल जाइत अछि?
क. दोआरीसँ भगवतीक चिनवारि धरि
ख. नदीक धारा धरि
ग. कार्यालय धरि
घ. रेलवे स्टेशन धरि
उत्तर: क. दोआरीसँ भगवतीक चिनवारि धरि
व्याख्या: कोजागरा घरक पवित्रता आ देवी-पूजाक आँगन-रीति सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 5079. लक्ष्मी-पूजामे कमलक अरिपन आ जल-भरल पात्रक प्रयोग ककर संकेत अछि?
क. समृद्धि, पवित्रता आ देवी-आह्वानक
ख. युद्धाभ्यासक
ग. विवादक
घ. भाषा-विस्मृतिक
उत्तर: क. समृद्धि, पवित्रता आ देवी-आह्वानक
व्याख्या: पूजा-विधान वस्तु-प्रतीकसँ गृह-मंगलक भाव बनबैत अछि।

प्रश्न 5080. बरक चुमाओन कतए आ कोना होइत अछि?
क. आँगनमे अष्टदल अरिपन, डाला, कलश आ पूर्वमुख बैसल बरक साथ
ख. बाजारमे भीड़ बीच
ग. नदीमे नाव पर
घ. पत्रकारिता कक्षमे
उत्तर: क. आँगनमे अष्टदल अरिपन, डाला, कलश आ पूर्वमुख बैसल बरक साथ
व्याख्या: लेख चुमाओनक सूक्ष्म घरेलू-विधान देत अछि।

प्रश्न 5081. चुमाओनक डालामे कोन-कोन वस्तु राखल जाइत अछि?
क. मखान, नारियल, केरा, दहीक छाछ, पान, सुपारी, मखानक माला आदि
ख. केवल पत्थर
ग. केवल अखबार
घ. केवल खिलौना
उत्तर: क. मखान, नारियल, केरा, दहीक छाछ, पान, सुपारी, मखानक माला आदि
व्याख्या: वस्तुसभ समृद्धि, सनेस आ शुभता सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 5082. कोजागरा लेखक सांस्कृतिक महत्व की अछि?
क. नवविवाहित सम्बन्ध, सासुर-सनेस, लक्ष्मी-पूजा आ मखान-बाँटबाक सामुदायिक पाबनि
ख. केवल निजी भोज
ग. केवल मीडिया-विवाद
घ. केवल विवाह-विरोध
उत्तर: क. नवविवाहित सम्बन्ध, सासुर-सनेस, लक्ष्मी-पूजा आ मखान-बाँटबाक सामुदायिक पाबनि
व्याख्या: कोजागरा घर, सासुर, समाज आ अनुष्ठान कैं जोड़ैत अछि।

खण्ड ५१४ : विदेह-सदेह १ — प्रेमचन्द मिश्र: “अनाम कथा”क आरम्भ आ आदर्श-विवाह शर्त

प्रश्न 5083. “अनाम कथा”क पी.सी. मिश्र कोन तरहक युवक छथि?
क. कम पढ़ल-लिखल मुदा संघर्षसँ आत्मविश्वासी बनल युवक
ख. राजा जनक
ग. वृद्ध पंजीकार
घ. बाल-कवि
उत्तर: क. कम पढ़ल-लिखल मुदा संघर्षसँ आत्मविश्वासी बनल युवक
व्याख्या: कथा नायकक साधारण पृष्ठभूमि आ जीवन-संघर्ष सँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 5084. पी.सी. मिश्र गामसँ दिल्ली कतेक वर्ष पहिने आएल छलाह?
क. लगभग छह वर्ष पहिने
ख. एक दिन पहिने
ग. पचास वर्ष पहिने
घ. जन्मसँ दिल्लीमे छलाह
उत्तर: क. लगभग छह वर्ष पहिने
व्याख्या: कथा अनुसार ओ संघर्षरत जीवन बितबैत धीरे-धीरे ठीक स्थिति पाबैत छथि।

प्रश्न 5085. पी.सी. मिश्रक अंग्रेजी-बोलबाक स्थिति कथामे कोना देखाओल गेल?
क. कम पढ़ल-लिखल रहितहुँ फर्राटेसँ अंग्रेजी बजैत छलाह
ख. अंग्रेजी बिल्कुल नहि जनैत छलाह
ग. केवल संस्कृत बजैत छलाह
घ. केवल मौन रहैत छलाह
उत्तर: क. कम पढ़ल-लिखल रहितहुँ फर्राटेसँ अंग्रेजी बजैत छलाह
व्याख्या: ई विवरण सामाजिक आ आत्मनिर्माणक विरोधाभास बनबैत अछि।

प्रश्न 5086. पी.सी. मिश्र कोन तरहक कम्पनीमे काज करैत छलाह?
क. ट्रैवल एजेण्टक काज करयवाली निजी कम्पनी
ख. खेतीक खेत
ग. राजदरबार
घ. रेडियो स्टेशन
उत्तर: क. ट्रैवल एजेण्टक काज करयवाली निजी कम्पनी
व्याख्या: कथामे दिल्लीक निजी नौकरी आ सम्बन्ध-व्यवस्था सामाजिक पृष्ठभूमि अछि।

प्रश्न 5087. पी.सी. मिश्रक विवाह लेल पिता किएक जल्दी चाहैत छलाह?
क. पिता बूढ़ापामे प्रवेश कए लेने छलाह आ छोट भाई सेहो छल
ख. पिता राजा बनय चाहैत छलाह
ग. पिता यात्रा पर जायब नहि चाहैत छलाह
घ. पिता केवल धन चाहैत छलाह
उत्तर: क. पिता बूढ़ापामे प्रवेश कए लेने छलाह आ छोट भाई सेहो छल
व्याख्या: कथा विवाह-दबाव कैँ पारिवारिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5088. पी.सी. मिश्रक पहिल विवाह-शर्त की छल?
क. पैसाक आदान-प्रदान नहि; आदर्श विवाह
ख. बहुत दहेज
ग. सौ गोटे बैंड
घ. विदेशी गाड़ी
उत्तर: क. पैसाक आदान-प्रदान नहि; आदर्श विवाह
व्याख्या: कथाक आरम्भ मे आदर्श-विवाहक आकांक्षा स्पष्ट अछि।

प्रश्न 5089. दोसर शर्तमे कन्याक शिक्षा सम्बन्धी की अपेक्षा छल?
क. पढ़ल-लिखल आ अंग्रेजी बजयवाली कन्या
ख. अनपढ़ कन्या
ग. केवल गीत गाबयवाली
घ. केवल पंजीकार कन्या
उत्तर: क. पढ़ल-लिखल आ अंग्रेजी बजयवाली कन्या
व्याख्या: पी.सी. मिश्र भावी बच्चाक शिक्षा लेल एहि शर्त कैँ आवश्यक मानैत छथि।

प्रश्न 5090. तेसर शर्त दिरागमन सम्बन्धी किएक छल?
क. जल्दी दिरागमनसँ विध-विधानमे कम खर्च होय
ख. युद्ध करबाक लेल
ग. मीडिया-कवर लेल
घ. मखान बाँटबाक लेल
उत्तर: क. जल्दी दिरागमनसँ विध-विधानमे कम खर्च होय
व्याख्या: कथा खर्च-नियंत्रणक व्यावहारिक सोच देखबैत अछि।

प्रश्न 5091. चारिम शर्तमे पी.सी. मिश्र ककर घर विवाह चाहैत छथि?
क. अपनासँ गरीब घर, जँ सम्मान बेसी भेटत
ख. अत्यन्त धनी राजघराना
ग. विदेशी घर
घ. केवल शास्त्रीक घर
उत्तर: क. अपनासँ गरीब घर, जँ सम्मान बेसी भेटत
व्याख्या: एहि शर्तमे आत्मसम्मान, वर्ग-बोध आ विडम्बना तीनू उपस्थित अछि।

प्रश्न 5092. पी.सी. मिश्रक शर्तसभ कथाक मूल तनाव कोना बनबैत अछि?
क. आदर्श-विवाहक इच्छा आगे चलि व्यवहारिक लेन-देन सँ टकराएत अछि
ख. शर्तसभ तुरन्त समाप्त भऽ जाइत अछि
ग. कथा केवल पाक-विधि बनैत अछि
घ. कथा विवाहहीन रहैत अछि
उत्तर: क. आदर्श-विवाहक इच्छा आगे चलि व्यवहारिक लेन-देन सँ टकराएत अछि
व्याख्या: आरम्भिक शर्तसभ पछिला घटनाक नैतिक कसौटी बनैत अछि।

खण्ड ५१५ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: सोनीक प्रस्ताव आ जयपुरक बातचीत

प्रश्न 5093. सोनीक सम्बन्ध पी.सी. मिश्रक प्रस्तावमे कोना अबैत अछि?
क. महारानी मिश्रक छोट बहिन अनीता झाक ननद रूपमे
ख. पी.सी. मिश्रक गुरु रूपमे
ग. संत रामदासक शिष्या रूपमे
घ. जनकक पुत्री रूपमे
उत्तर: क. महारानी मिश्रक छोट बहिन अनीता झाक ननद रूपमे
व्याख्या: कथा पारिवारिक नेटवर्क मार्फत विवाह-प्रस्ताव बनबैत अछि।

प्रश्न 5094. सोनीक विवाहक जिम्मेदारी मुख्यतः किनक पर छल?
क. दिलीप झा आ विनय झा पर
ख. राजा जनक पर
ग. ओमप्रकाश झा पर
घ. प्रीति पर
उत्तर: क. दिलीप झा आ विनय झा पर
व्याख्या: कथा पितृ-अभावक बाद भाइसभक दायित्व देखबैत अछि।

प्रश्न 5095. अनीता झा प्रस्ताव सुनिते की भाव व्यक्त करैत छथि?
क. देरी नहि करबाक आ अवसर कैं लक्ष्मी आवि गेल जकाँ देखबाक
ख. विवाह रोकबाक
ग. भाषा छोड़बाक
घ. गोवा जएबाक
उत्तर: क. देरी नहि करबाक आ अवसर कैं लक्ष्मी आवि गेल जकाँ देखबाक
व्याख्या: संवादमे विवाह-प्रस्तावक आकर्षण आ तत्परता प्रकट अछि।

प्रश्न 5096. दिलीप झा आ विनय झा सोनीक फोटो लऽ कतए पहुँचैत छथि?
क. जयपुर
ख. जनकपुर
ग. गोवा
घ. पटना
उत्तर: क. जयपुर
व्याख्या: जयपुरमे प्रस्तावक अगिला चरणक बातचीत शुरू होइत अछि।

प्रश्न 5097. रंजीत आ पी.सी. मिश्र जयपुर कोन बहाना सँ गेलाह?
क. होलीक बहाना बना कऽ
ख. तीर्थयात्राक बहाना
ग. मीडिया-कवर बहाना
घ. पंजी देखबाक बहाना
उत्तर: क. होलीक बहाना बना कऽ
व्याख्या: कथा सामाजिक गोपनीयता आ विवाह-योजना कैं हल्का हास्यसँ देखबैत अछि।

प्रश्न 5098. महारानी पी.सी. मिश्रसँ जयपुरमे की प्रश्न करैत छथि?
क. विवाह कखन करब?
ख. कविता कखन लिखब?
ग. गोवा कखन जएब?
घ. मखान कखन कूटब?
उत्तर: क. विवाह कखन करब?
व्याख्या: ई प्रश्न प्रस्ताव कैं प्रत्यक्ष दिशा दैत अछि।

प्रश्न 5099. पी.सी. मिश्र शर्त पूरा भेलासँ की कहैत छथि?
क. एखन विवाह करि लेब
ख. कखनहुँ विवाह नहि करब
ग. पैसा अनिवार्य अछि
घ. कन्या नहि चाही
उत्तर: क. एखन विवाह करि लेब
व्याख्या: कथा नायकक आदर्शवादी परन्तु विवाह-इच्छुक रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 5100. भरत झा दहेज-सन्दर्भमे कोन प्रश्न करैत छथि?
क. कतेक पैसा लेताह?
ख. कतेक कविता लिखताह?
ग. कतेक मेघ बरसत?
घ. कतेक बालकविता गाबत?
उत्तर: क. कतेक पैसा लेताह?
व्याख्या: बातचीतमे समाजक दहेज-मानसिकता प्रत्यक्ष होइत अछि।

प्रश्न 5101. रंजीत दहेज-प्रश्न पर कोन बात कहैत छथि?
क. लड़की नीक भेटत तँ पाई-रुपैयाक बात नहि
ख. धनहि सब किछु
ग. विद्या अनावश्यक
घ. विवाह असम्भव
उत्तर: क. लड़की नीक भेटत तँ पाई-रुपैयाक बात नहि
व्याख्या: रंजीत आदर्श-विवाहक सूत्रकेँ बचाबय चाहैत छथि।

प्रश्न 5102. रामानन्द मिश्र जल्दबाजी पर की सावधानी सुझबैत छथि?
क. दूटा जिनगीक प्रश्न अछि; शर्त पर चिन्तन चाही
ख. तुरन्त खर्च बढ़ाबी
ग. कोनो विचार नहि चाही
घ. विवाह खेल अछि
उत्तर: क. दूटा जिनगीक प्रश्न अछि; शर्त पर चिन्तन चाही
व्याख्या: कथा विवाह-निर्णय केँ गंभीर नैतिक-सामाजिक निर्णय मानैत अछि।

खण्ड ५१६ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: फोटो, सौदा-सुलह आ दहेजक विडम्बना

प्रश्न 5103. सोनीक फोटो देखला पर पी.सी. मिश्रक प्रतिक्रिया की छल?
क. फोटो आकर्षक अछि, मुदा शिक्षाक शर्त मुख्य अछि
ख. फोटो खराब अछि
ग. फोटो देखबासँ इंकार
घ. फोटोहि विवाह अछि
उत्तर: क. फोटो आकर्षक अछि, मुदा शिक्षाक शर्त मुख्य अछि
व्याख्या: नायक सौन्दर्यसँ प्रभावित भेलहुँ मूल शर्त शिक्षाकेँ मानैत छथि।

प्रश्न 5104. रंजीत मजाकमे की कहैत छथि?
क. अहाँ नहि करब तँ हमही दोसर विवाह कए लेब
ख. विवाह छोड़ि देब
ग. सोनी पढ़ल नहि छथिन
घ. मखान बाँटब नहि
उत्तर: क. अहाँ नहि करब तँ हमही दोसर विवाह कए लेब
व्याख्या: ई मजाक प्रस्तावक सहजता आ फोटो-पसंदक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 5105. पी.सी. मिश्र “सुन्दर-खराब” विषय पर की स्पष्ट करैत छथि?
क. ई हमर शर्तमे नहि; लड़की पढ़ल-लिखल चाही
ख. सौन्दर्ये सब किछु
ग. धन सर्वोपरि
घ. गाम नहि चाही
उत्तर: क. ई हमर शर्तमे नहि; लड़की पढ़ल-लिखल चाही
व्याख्या: ई संवाद नायकक प्राथमिकता शिक्षा आ विचार पर राखैत अछि।

प्रश्न 5106. बैरियातीक संख्या पर प्रारम्भिक बात कोना बढ़ैत अछि?
क. रंजीत ६५-७५ कहैत छथि, कण्यागत छूट माँगैत छथि
ख. केवल पाँच गोटे तय होइत अछि
ग. बैरियाती निषिद्ध
घ. सभ विदेश जाएत
उत्तर: क. रंजीत ६५-७५ कहैत छथि, कण्यागत छूट माँगैत छथि
व्याख्या: बैरियाती संख्या सामाजिक खर्चक दबाव बनैत अछि।

प्रश्न 5107. दिलीप झा बाराती संख्या पर की कहैत छथि?
क. गरीबी कारण ७५ कठिन, छूट चाही
ख. सौ अनिवार्य
ग. एक गोटे काफी
घ. बैरियाती नहि चाही
उत्तर: क. गरीबी कारण ७५ कठिन, छूट चाही
व्याख्या: संवाद गरीब कन्यापक्षक असमर्थता सामने आनैत अछि।

प्रश्न 5108. महारानी कोन वस्तुसभक माँग/सुझाव बीचमे रखैत छथि?
क. अंगूठी, सोनाक चेन, कन्याक नामे जमा, कपड़ा आदि
ख. केवल फूल
ग. केवल कविता
घ. केवल पानी
उत्तर: क. अंगूठी, सोनाक चेन, कन्याक नामे जमा, कपड़ा आदि
व्याख्या: कथा आदर्श-विवाहक भीतर लेन-देनक वापसी देखबैत अछि।

प्रश्न 5109. बैरियाती अन्ततः कतेक पर बात ठहरबाक दिस जाइत अछि?
क. लगभग इक्यावन अथवा पैंसठक बीच समझौता-सूत्र
ख. हजार
ग. शून्य
घ. केवल दू
उत्तर: क. लगभग इक्यावन अथवा पैंसठक बीच समझौता-सूत्र
व्याख्या: संवादमे संख्या घटैत-बढ़ैत विवाह-सौदाक रूप लैत अछि।

प्रश्न 5110. भरत झा विवाहोत्तर खर्च पर की संकेत करैत छथि?
क. विवाहक बाद वर्षभरि लड़की पक्षक काज रहैत अछि, खर्च महँग पड़त
ख. खर्च समाप्त
ग. कन्यागत धनी अछि
घ. किछु चाही नहि
उत्तर: क. विवाहक बाद वर्षभरि लड़की पक्षक काज रहैत अछि, खर्च महँग पड़त
व्याख्या: कथा विवाहोत्तर रीतिसभक आर्थिक भार देखबैत अछि।

प्रश्न 5111. दिन ताकबाक निर्णय कोनकेँ छोड़ल जाइत अछि?
क. गामक बाबूजी/परिवारक निर्णय पर
ख. मीडिया कार्यालय पर
ग. बालकवि पर
घ. गुरु पर
उत्तर: क. गामक बाबूजी/परिवारक निर्णय पर
व्याख्या: कथा शहरी बातचीतक बाद गाम-परिवारक स्वीकृति आवश्यक मानैत अछि।

प्रश्न 5112. एहि खण्डमे आदर्श-विवाहक विडम्बना कोना उभरैत अछि?
क. दहेज-विरोधी शर्तक बीच लेन-देन, सम्मान आ खर्चक सूची लौटि अबैत अछि
ख. सभ खर्च तुरन्त हटि जाइत अछि
ग. कन्या पक्ष अनुपस्थित अछि
घ. विवाह आध्यात्मिक मात्र अछि
उत्तर: क. दहेज-विरोधी शर्तक बीच लेन-देन, सम्मान आ खर्चक सूची लौटि अबैत अछि
व्याख्या: कथा आदर्श आ सामाजिक दबावक टकरावक सूक्ष्म चित्रण करैत अछि।

खण्ड ५१७ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: दिनक विवाह, हाथ-धराई आ प्रतीक्षाक तनाव

प्रश्न 5113. विवाहक तिथि कथामे कोन दिन ठहरल?
क. एक्काइस अप्रैल
ख. तेरह मई
ग. कार्तिक त्रयोदशी
घ. आश्विन पूर्णिमा
उत्तर: क. एक्काइस अप्रैल
व्याख्या: कथा पतराक अनुसार ठहरल दिनक तैयारीक प्रसंग आनैत अछि।

प्रश्न 5114. कन्यापक्ष आ वरपक्षक बीच हाथ-धराई सम्बन्धी सहमति की छल?
क. समयसँ पहुँचना आ दू आदमी हाथ धरैक लेल आबय
ख. सौ आदमी आनब
ग. हाथ-धराई नहि करब
घ. राति भरि टारब
उत्तर: क. समयसँ पहुँचना आ दू आदमी हाथ धरैक लेल आबय
व्याख्या: समय आ संख्या पर पूर्व सहमति बादक तनावक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 5115. विवाह दिन वरपक्षक घरमे सबेरेसँ कोन स्थिति छल?
क. चहल-पहल, दाय-मायक दौड़धूप आ बाराती तैयारी
ख. पूर्ण शून्यता
ग. केवल कार्यालय-काज
घ. बाढ़क शिविर
उत्तर: क. चहल-पहल, दाय-मायक दौड़धूप आ बाराती तैयारी
व्याख्या: दिनक विवाहक कारण सब जल्दी तैयार होमय चाहैत छल।

प्रश्न 5116. कन्यापक्षक विलम्बसँ बालकसभमे की असर भेल?
क. उत्साह घटए लगल
ख. उत्साह बढ़ल
ग. कनफुसकी बंद भेल
घ. विवाह तुरन्त भेल
उत्तर: क. उत्साह घटए लगल
व्याख्या: प्रतीक्षा सामाजिक बेचैनीक वातावरण बनबैत अछि।

प्रश्न 5117. कन्यापक्षक आगमनक पहिल सूचना के आनैत अछि?
क. राजू, दिलीप झाक जेठ सार
ख. नवाब
ग. सुग्गा
घ. पंजीकार
उत्तर: क. राजू, दिलीप झाक जेठ सार
व्याख्या: राजू विलम्बक क्षमायाचना सहित सूचना आनैत अछि।

प्रश्न 5118. अन्ततः कन्यापक्ष कतबा लोकसँ पहुँचैत देखाइत अछि?
क. चौटा सज्जन आ एक बच्चा, कुल पाँच
ख. मात्र दू
ग. पचास
घ. कोनो नहि
उत्तर: क. चौटा सज्जन आ एक बच्चा, कुल पाँच
व्याख्या: पूर्व सहमतिसँ अधिक लोक आगमन दाय-माय बीच फुसफुसाहट करबैत अछि।

प्रश्न 5119. आगन्तुकक पएर धोबयक काज के करैत अछि?
क. विश्वनथवा
ख. पी.सी. मिश्र स्वयं
ग. महारानी
घ. सुग्गा
उत्तर: क. विश्वनथवा
व्याख्या: एहि विवरणसँ पारम्परिक आतिथ्य-विधानक वातावरण बनैत अछि।

प्रश्न 5120. अँगनामे आगमनक बाद कोन गीत शुरू भेल?
क. गोसाउनि आ ब्राह्मणक गीत
ख. मीडिया गीत
ग. बाल-कविता
घ. कोसी गीत मात्र
उत्तर: क. गोसाउनि आ ब्राह्मणक गीत
व्याख्या: गीत विवाह-वातावरणक मंगल पक्ष निर्मित करैत अछि।

प्रश्न 5121. लोकल ब्रीफकेसक आगमन कथा मे किएक निर्णायक बनैत अछि?
क. ओहिमे राखल सामान देखबासँ विवाद उठैत अछि
ख. ओहिमे राजमुद्रा भेटैत अछि
ग. ओहिसँ गीत शुरू होइत अछि
घ. ओ खाली छल
उत्तर: क. ओहिमे राखल सामान देखबासँ विवाद उठैत अछि
व्याख्या: सामानक गुण-दोष सम्बन्धक विश्वास-संकट जगबैत अछि।

प्रश्न 5122. पीयर दो-सूती तौलिया देखिते की बदलि जाइत अछि?
क. मंगल गीतक स्थान पर तनाव आ असन्तोष
ख. सब खुशीसँ नाचैत अछि
ग. विवाह तुरन्त पूरा
घ. कन्या पक्ष भागैत अछि
उत्तर: क. मंगल गीतक स्थान पर तनाव आ असन्तोष
व्याख्या: छोट वस्तु विवाहक सम्मान, विश्वास आ वर्ग-बोधक प्रश्न बनि जाइत अछि।

खण्ड ५१८ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: कपड़ा-विवाद, विश्वास-संकट आ मान-मर्यादा

प्रश्न 5123. पी.सी. मिश्र तौलिया-सामान देखला बाद की घोषणा करैत छथि?
क. हम विवाह नहि करब
ख. हम तुरन्त विवाह करब
ग. हम गीत गाबब
घ. हम जयपुर जएब
उत्तर: क. हम विवाह नहि करब
व्याख्या: विवाद छोट सामानसँ आरम्भ भऽ विवाह-निरस्तीकरण धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 5124. विभा पी.सी. मिश्र कैं कोन आग्रह करैत छथि?
क. क्रोध शान्त करू, बाहर लोक की कहताह
ख. विवाह छोड़ू
ग. सामान फेकू
घ. बाराती भगाऊ
उत्तर: क. क्रोध शान्त करू, बाहर लोक की कहताह
व्याख्या: विभाक संवाद सामाजिक प्रतिष्ठा बचेबाक प्रयास अछि।

प्रश्न 5125. अँगनामे गीतक बदलामे की छा जाइत अछि?
क. सन्नाटा
ख. हर्षोल्लास
ग. बाल-नृत्य
घ. पत्रकारिता
उत्तर: क. सन्नाटा
व्याख्या: गीत-बन्दक क्षण विवाहक तनावकेँ तीव्र बनबैत अछि।

प्रश्न 5126. काका कपड़ा-विवाद कैं कोना छोट करबाक प्रयास करैत छथि?
क. कहैत छथि जे बाजारसँ चाही त वैह मँगवा देब
ख. विवाह रोकबाक
ग. कन्या दोषी नहि
घ. सब सामान श्रेष्ठ
उत्तर: क. कहैत छथि जे बाजारसँ चाही त वैह मँगवा देब
व्याख्या: बुजुर्ग व्यावहारिक समाधान देबाक चेष्टा करैत छथि।

प्रश्न 5127. पी.सी. मिश्रक अनुसार मुद्दा कपड़ा नहि, की छल?
क. विश्वास आ वचनक पालन
ख. रंगक पसन्द मात्र
ग. भोजनक स्वाद
घ. बारातीक संख्या मात्र
उत्तर: क. विश्वास आ वचनक पालन
व्याख्या: नायकक आक्रोश वस्तु पर नहि, ठकल जाएबाक भय पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 5128. महारानी पी.सी. मिश्रक शिकायत पर की कहैत छथि?
क. कन्यागत गलत काज कएने छथि; पी.सी.क बात सही अछि
ख. पी.सी. झूठ बाजैत छथि
ग. सामान सर्वश्रेष्ठ अछि
घ. विवाह असम्भव
उत्तर: क. कन्यागत गलत काज कएने छथि; पी.सी.क बात सही अछि
व्याख्या: महारानी पुष्टि करैत छथि जे पूर्व शर्तक अनुसार सामान नहि छल।

प्रश्न 5129. पी.सी. मिश्र कन्यापक्ष पर अविश्वास किएक करैत छथि?
क. जे सामानमे ठकबाक संकेत अछि, लड़की विषयमे सेहो ठकबाक डर
ख. किएक विवाह नहि चाहैत छथि
ग. किएक भाषा नहि जनैत छथि
घ. किएक यात्रा नहि भेल
उत्तर: क. जे सामानमे ठकबाक संकेत अछि, लड़की विषयमे सेहो ठकबाक डर
व्याख्या: विश्वास-संकट विवाहक मूल भावनात्मक मोड़ अछि।

प्रश्न 5130. “इज्जत आ मान-मर्यादा” कथामे कोन द्वन्द्व बनबैत अछि?
क. दूटा जिनगीक प्रश्न बनाम सामाजिक प्रतिष्ठा
ख. भोजन बनाम मौसम
ग. पक्षी बनाम पशु
घ. गीत बनाम कविता
उत्तर: क. दूटा जिनगीक प्रश्न बनाम सामाजिक प्रतिष्ठा
व्याख्या: कथा व्यक्तिगत भविष्य आ सामूहिक लाजक टकराव रखैत अछि।

प्रश्न 5131. पी.सी. मिश्र मैथिल समाज पर कोन आत्मालोचन करैत छथि?
क. भूतकेँ बेसी महत्त्व दऽ भविष्यक गला दबा देब
ख. भविष्यकेँ सभसँ बेसी बचाएब
ग. कखनहुँ परम्परा नहि मानब
घ. सदा समानता
उत्तर: क. भूतकेँ बेसी महत्त्व दऽ भविष्यक गला दबा देब
व्याख्या: कथा मान-मर्यादाक अति-भार पर सामाजिक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 5132. एहि विवादक साहित्यिक केन्द्र की अछि?
क. सामानक बहाना बनि विवाह-संस्था, विश्वास आ सामाजिक प्रतिष्ठाक त्रासदी खुलैत अछि
ख. केवल तौलियाक रंग
ग. केवल गीतक अभ्यास
घ. केवल भोजनक सूची
उत्तर: क. सामानक बहाना बनि विवाह-संस्था, विश्वास आ सामाजिक प्रतिष्ठाक त्रासदी खुलैत अछि
व्याख्या: कथा छोट घरेलू प्रसंगसँ पैघ सामाजिक प्रश्न उठबैत अछि।

खण्ड ५१९ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: पितृ-दबाव, त्याग आ शर्तसहित सहमति

प्रश्न 5133. भीम मिश्र विवादमे अन्ततः कोन कठोर बात कहैत छथि?
क. विवाह नहि करब तँ हम आत्महत्या कए लेब
ख. विवाह रोकू
ग. कन्यापक्ष घुराउ
घ. गीत गाबू
उत्तर: क. विवाह नहि करब तँ हम आत्महत्या कए लेब
व्याख्या: पिताक कथन मान-मर्यादा आ दबावक चरम रूप बनैत अछि।

प्रश्न 5134. भीम मिश्र अपन विकल्प कोना रखैत छथि?
क. या विवाह करब, या हमर दाह-संस्कार करब
ख. या गोवा जएब, या बालकविता गाबब
ग. या मखान खेब, या पराठा
घ. या मीडिया देखब
उत्तर: क. या विवाह करब, या हमर दाह-संस्कार करब
व्याख्या: ई कथन पुत्र पर नैतिक-अस्तित्वगत दबाव बना दैत अछि।

प्रश्न 5135. भीम मिश्रक निर्णयक मूल कारण की अछि?
क. पुरुखाक इज्जत जीवित रहते नहि गँवाबय चाहब
ख. धन कमेबाक इच्छा
ग. नाटक देखबाक इच्छा
घ. भाषा-विस्मृति
उत्तर: क. पुरुखाक इज्जत जीवित रहते नहि गँवाबय चाहब
व्याख्या: पिता पुरखाक पाग आ प्रतिष्ठाक भारक प्रतिनिधि छथि।

प्रश्न 5136. पी.सी. मिश्र पिताक पएर पर खसि की कहैत छथि?
क. माफ करू; पिताक लेल अपन भविष्यक बलिदान दैत छी
ख. हम विदेश जाइत छी
ग. हम विवाह छोड़ि देलहुँ
घ. हम गीत नहि गाबब
उत्तर: क. माफ करू; पिताक लेल अपन भविष्यक बलिदान दैत छी
व्याख्या: कथा पुत्रधर्मक करुण मोड़ पर पहुँचैत अछि।

प्रश्न 5137. श्रवण कुमारक उल्लेख किएक अबैत अछि?
क. माता-पिताक लेल प्राण-त्यागक आदर्श देखेबाक लेल
ख. व्यापारिक उदाहरण लेल
ग. मीडिया आलोचना लेल
घ. कोजागरा विधान लेल
उत्तर: क. माता-पिताक लेल प्राण-त्यागक आदर्श देखेबाक लेल
व्याख्या: पी.सी. मिश्र अपन निर्णय कैं पितृभक्ति-संस्कारसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 5138. पी.सी. मिश्र विवाह मानबाक पहिल शर्त की रखैत छथि?
क. कन्यागतक समान नहि लेब
ख. अधिक दहेज लेब
ग. बैरियाती बढ़ेब
घ. गीत बन्द करब
उत्तर: क. कन्यागतक समान नहि लेब
व्याख्या: ओ सामान-विवादक प्रतिरोध रूपेँ वस्तु अस्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 5139. दोसर शर्त की छल?
क. कन्यागतक गाड़ीपर नहि जाएब
ख. गाड़ी अनिवार्य अछि
ग. पैदल नहि चलब
घ. जयपुर नहि जएब
उत्तर: क. कन्यागतक गाड़ीपर नहि जाएब
व्याख्या: गाड़ी अस्वीकार करब सम्मान-रक्षा आ असहमति संकेत करैत अछि।

प्रश्न 5140. तेसर शर्त की छल?
क. देल गोरलगाइक रुपैया नहि लेब
ख. दोगुना रुपैया लेब
ग. फिक्स डिपोजिट लेब
घ. सोनाक चेन लेब
उत्तर: क. देल गोरलगाइक रुपैया नहि लेब
व्याख्या: नायक लेन-देनक प्रतीकात्मक लाभ त्यागबाक शर्त रखैत अछि।

प्रश्न 5141. दाय-माय आ पुरुषवर्गक हृदय किएक करुण होइत अछि?
क. पी.सी.क त्याग, पितृभक्ति आ दबावक त्रासदी देखिकय
ख. भोजन नीक छल
ग. बरसात भेल
घ. बालकविता बजल
उत्तर: क. पी.सी.क त्याग, पितृभक्ति आ दबावक त्रासदी देखिकय
व्याख्या: कथा सामूहिक भावनाकेँ करुणा दिस मोड़ैत अछि।

प्रश्न 5142. एहि खण्डक नैतिक विडम्बना की अछि?
क. मान-मर्यादाक रक्षा लेल व्यक्ति अपन भविष्यक बलिदान करबाकेँ विवश होइत अछि
ख. सभी शर्त समाप्त
ग. समाज पूर्ण आधुनिक
घ. लेन-देन नैतिक बनि गेल
उत्तर: क. मान-मर्यादाक रक्षा लेल व्यक्ति अपन भविष्यक बलिदान करबाकेँ विवश होइत अछि
व्याख्या: कथा व्यक्तिगत इच्छा आ कुल-प्रतिष्ठाक मार्मिक टकराव देखबैत अछि।

खण्ड ५२० : विदेह-सदेह १ — ओमप्रकाश, प्रीति आ प्रेमचन्द: आधुनिकता, अस्मिता आ परिवार

प्रश्न 5143. ओमप्रकाशक प्रवास-विचार आ प्रीतिक विवाह-विचारमे साझा प्रश्न की अछि?
क. आधुनिकता बीच पहचान आ न्याय कोना बचत
ख. भोजन कोना पकत
ग. मखान कतेक कुटत
घ. पक्षी कोना उड़े
उत्तर: क. आधुनिकता बीच पहचान आ न्याय कोना बचत
व्याख्या: दू लेखक अलग प्रसंगसँ सामाजिक आत्मालोचन करैत छथि।

प्रश्न 5144. ओमप्रकाशक मीडिया-आलोचना आ प्रेमचन्दक कथा मे साझा संकट की अछि?
क. बाहरी चमकक भीतर विश्वास आ नैतिकता कमजोर होयब
ख. सब किछु आदर्श होयब
ग. भाषाक अभाव नहि
घ. कोनो सामाजिक दबाव नहि
उत्तर: क. बाहरी चमकक भीतर विश्वास आ नैतिकता कमजोर होयब
व्याख्या: मीडिया आ विवाह दूनूमे मुखौटा बनाम सचक प्रश्न उठैत अछि।

प्रश्न 5145. प्रीतिक पुनर्विवाह-विचार आ पी.सी. मिश्रक कथा ककर विरोध करैत अछि?
क. लैंगिक/सामाजिक दोहरा मापदण्डक
ख. स्त्री-अधिकारक
ग. आदर्श-विवाहक
घ. शिक्षाक
उत्तर: क. लैंगिक/सामाजिक दोहरा मापदण्डक
व्याख्या: दूनू पाठ समाजक असमान नियमक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 5146. पी.सी. मिश्रक “आदर्श विवाह” शर्त ओ नूतन झाक “बाराती-सत्कार” मे साझा भाव की अछि?
क. विवाहमे अपव्यय आ आर्थिक दबाव घटेबाक आग्रह
ख. खर्च बढ़ेबाक आग्रह
ग. दहेजक समर्थन
घ. विवाह समाप्ति
उत्तर: क. विवाहमे अपव्यय आ आर्थिक दबाव घटेबाक आग्रह
व्याख्या: दू पाठ मिथिलाक विवाह-संस्कारमे सुधारक स्वर रखैत अछि।

प्रश्न 5147. बाल-कवितासभ आ “हमर मिथिलाक दर्शन”मे साझा सांस्कृतिक आधार की अछि?
क. बाल/युवा पीढ़ी कैं मिथिला-परिवेशसँ जोड़ब
ख. भाषा बदलि देब
ग. मीडिया-मात्र
घ. दहेज-मात्र
उत्तर: क. बाल/युवा पीढ़ी कैं मिथिला-परिवेशसँ जोड़ब
व्याख्या: दू पाठ स्थानीय पशु, प्रकृति, लोकजीवन आ मातृभूमिक भाषा देत अछि।

प्रश्न 5148. कोजागरा लेख आ जानकी-नवमी लेखक साझा पक्ष की अछि?
क. स्त्री, गृह-मंगल आ पवित्र अनुष्ठानक मिथिला-परम्परा
ख. मीडिया भ्रष्टाचार
ग. प्रवास-विस्मृति
घ. कपड़ा-विवाद
उत्तर: क. स्त्री, गृह-मंगल आ पवित्र अनुष्ठानक मिथिला-परम्परा
व्याख्या: दूनू पाबनि घर, देवी-आस्था आ सामाजिक सम्बन्धक प्रतीक अछि।

प्रश्न 5149. “स्मिताक लड़ाई” आ “कोना बचत मिथिलाक स्मिता” एक-दोसराकैं कोना पूरक अछि?
क. पहिल कविता चेतना भरबाक आह्वान, दोसर लेख सांस्कृतिक क्षयक विश्लेषण
ख. दूनू केवल पाक-विधि
ग. दूनू केवल जीवनी
घ. दूनू विवाह कथा
उत्तर: क. पहिल कविता चेतना भरबाक आह्वान, दोसर लेख सांस्कृतिक क्षयक विश्लेषण
व्याख्या: कविता आ लेख मिलि अस्मिता-संघर्षक भाव आ तर्क दैत अछि।

प्रश्न 5150. विद्यापति-स्मरण विभिन्न पाठमे कोना अबैत अछि?
क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भाषिक गौरवक केन्द्र रूपमे
ख. केवल तिथि-सूचना रूपमे
ग. केवल पाक-विधि रूपमे
घ. केवल व्यापार रूपमे
उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भाषिक गौरवक केन्द्र रूपमे
व्याख्या: विद्यापति मिथिला-गौरव, स्मृति आ भाषा-रक्षा सँ जुड़ैत छथि।

प्रश्न 5151. एहि समूहमे “भाषा”क मुख्य संकट की अछि?
क. प्रवास, आधुनिकता आ उदासीनता कारण मैथिली-बोलचाल घटब
ख. भाषा अत्यधिक फैलि गेल
ग. भाषाक कोनो भूमिका नहि
घ. भाषा केवल देवता-पूजा
उत्तर: क. प्रवास, आधुनिकता आ उदासीनता कारण मैथिली-बोलचाल घटब
व्याख्या: विभिन्न लेखसभ मैथिली-बोलबाक स्वाभिमान आ विस्मृति-दुख पर केन्द्रित छथि।

प्रश्न 5152. एहि बैचक समग्र सामाजिक संदेश की अछि?
क. मिथिलाक अस्मिता बचएब लेल भाषा, नैतिकता, स्त्री-सम्मान, विवाह-सुधार आ लोक-संस्कृति पर पुनर्विचार जरूरी अछि
ख. केवल मनोरंजन चाही
ग. दहेज बढ़ाबी
घ. भाषा छोड़ू
उत्तर: क. मिथिलाक अस्मिता बचएब लेल भाषा, नैतिकता, स्त्री-सम्मान, विवाह-सुधार आ लोक-संस्कृति पर पुनर्विचार जरूरी अछि
व्याख्या: बैचक पाठसभ अलग-अलग मोर्चासँ समाज-सुधारक प्रश्न उठबैत अछि।

खण्ड ५२१ : विदेह-सदेह १ — जानकी, कोजागरा आ विवाह-संस्कार: स्त्री-गरिमा केर पाठ

प्रश्न 5153. जानकी-नवमीमे सीताक जन्म-कथा आ प्रीतिक पुनर्विवाह-विचार ककर साझा आग्रह करैत अछि?
क. स्त्रीक गरिमा आ अधिकार कैँ केन्द्रमे राखब
ख. स्त्रीकेँ मौन राखब
ग. विवाहमे खर्च बढ़ेब
घ. भाषा छोड़ब
उत्तर: क. स्त्रीक गरिमा आ अधिकार कैँ केन्द्रमे राखब
व्याख्या: दूनू पाठ स्त्रीक सम्मान कैँ नैतिक आधार बनबैत अछि।

प्रश्न 5154. सीता-कथाक “स्त्रीक अपमान करनिहार दुखद अंत पाबैत अछि” भाव प्रीतिक लेखसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. दूनू अन्यायपूर्ण स्त्री-दृष्टि पर चोट करैत अछि
ख. दूनू स्त्री-विरोधी अछि
ग. दूनू केवल पौराणिक कथा
घ. दूनू पाक-विधि
उत्तर: क. दूनू अन्यायपूर्ण स्त्री-दृष्टि पर चोट करैत अछि
व्याख्या: मिथिला-परम्परामे स्त्री-सम्मानक आध्यात्मिक आ सामाजिक रूप देखाइत अछि।

प्रश्न 5155. कोजागरा चुमाओनमे सासुर-सनेसक परम्परा ककरा मजबूत करैत अछि?
क. नवविवाहित सम्बन्ध आ समुदायिक सहभागिता
ख. विवाह-विच्छेद
ग. भाषा-विस्मृति
घ. पत्रकारिता
उत्तर: क. नवविवाहित सम्बन्ध आ समुदायिक सहभागिता
व्याख्या: पाबनि घर, सासुर आ गामक सम्बन्धक धागा बनैत अछि।

प्रश्न 5156. “अनाम कथा”मे सासुर-सामान विवाद कोजागरा/विवाह-संस्कारक कोन अँधार पक्ष देखबैत अछि?
क. सनेस आ सम्मानक नाम पर लेन-देनक तनाव
ख. पूर्ण समानता
ग. बाल-साहित्य
घ. आध्यात्मिक मुक्ति
उत्तर: क. सनेस आ सम्मानक नाम पर लेन-देनक तनाव
व्याख्या: कथा अनुष्ठानक भीतर छिपल आर्थिक-मानसिक दबाव देखबैत अछि।

प्रश्न 5157. नूतन झा आ प्रेमचन्द मिश्रक विवाह-प्रसंगमे ककर आलोचना साझा अछि?
क. आडंबर, खर्च आ प्रतिष्ठा-दबाव
ख. शिक्षा
ग. स्त्रीक अधिकार
घ. भाषा-प्रेम
उत्तर: क. आडंबर, खर्च आ प्रतिष्ठा-दबाव
व्याख्या: दू पाठ विवाह-संस्कारमे सुधारक जरूरत देखबैत अछि।

प्रश्न 5158. प्रीतिक लेखमे विधवा/परित्यक्ता स्त्रीकेँ मुख्यधारामे आनबाक भाव ककर प्रतिरोध अछि?
क. उपेक्षा आ नैराश्यक
ख. ज्ञानक
ग. समानताक
घ. समाज-सुधारक
उत्तर: क. उपेक्षा आ नैराश्यक
व्याख्या: लेख पुनर्विवाह कैँ सामाजिक पुनर्स्थापनक माध्यम मानैत अछि।

प्रश्न 5159. सीताक कथा मे वेदवती-प्रसंगक संदेश आधुनिक स्त्री-विमर्शमे कोना पढ़ल जा सकैत अछि?
क. अन्याय सहनक बाद स्त्री न्यायक कारण बनि सकैत अछि
ख. अन्याय सदिखन स्वीकार्य
ग. स्त्रीक भूमिका शून्य
घ. पुरुषहि सब
उत्तर: क. अन्याय सहनक बाद स्त्री न्यायक कारण बनि सकैत अछि
व्याख्या: कथा नारी-शक्ति आ अन्याय-विरोधक प्रतीकात्मक पाठ दैत अछि।

प्रश्न 5160. कोजागरा मे मखान बाँटब आ विवाहमे सनेस आनब ककर सामाजिक रूप अछि?
क. सम्बन्ध सार्वजनिक करब आ समुदाय कैं सहभागी बनाब
ख. सम्बन्ध लुकाब
ग. व्यक्ति अलगाव
घ. केवल व्यापार
उत्तर: क. सम्बन्ध सार्वजनिक करब आ समुदाय कैं सहभागी बनाब
व्याख्या: मिथिला-पाबनि निजी विवाहकैं सामुदायिक प्रसंग बनबैत अछि।

प्रश्न 5161. विवाह-संस्कारमे “मान-मर्यादा” कखन विनाशकारी बनैत अछि?
क. जखन ओ व्यक्ति-भविष्य आ न्याय पर भारी पड़ैत अछि
ख. जखन ओ स्नेह बनैत अछि
ग. जखन ओ खर्च घटबैत अछि
घ. जखन ओ भाषा बचबैत अछि
उत्तर: क. जखन ओ व्यक्ति-भविष्य आ न्याय पर भारी पड़ैत अछि
व्याख्या: अनाम कथा मान-मर्यादाक करुण अतिरेकी रूप उघारैत अछि।

प्रश्न 5162. एहि स्त्री-गरिमा खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. परम्परा तखन सार्थक जखन ओ सम्मान, समानता आ संवेदनाक संग हो
ख. परम्परा केवल खर्च हो
ग. स्त्रीक प्रश्न गौण
घ. संस्कारमे न्यायक जगह नहि
उत्तर: क. परम्परा तखन सार्थक जखन ओ सम्मान, समानता आ संवेदनाक संग हो
व्याख्या: जानकी, कोजागरा, पुनर्विवाह आ विवाह-कथा मिलि सुधारक दिशा देखबैत अछि।

खण्ड ५२२ : विदेह-सदेह १ — भाषा-चेतना: प्रवासी मैथिल, बाल-साहित्य आ मिथिला-दर्शन

प्रश्न 5163. प्रवासी मैथिलक भाषा-विस्मृति आ बाल-कविताक आवश्यकता किएक सम्बद्ध अछि?
क. बाल्यावस्थासँ भाषा-राग नहि बनल तँ प्रवासमे भाषा छूटि सकैत अछि
ख. दूटा असम्बद्ध अछि
ग. बालकविता भाषा हटबैत अछि
घ. प्रवास भाषा बचबैत अछि
उत्तर: क. बाल्यावस्थासँ भाषा-राग नहि बनल तँ प्रवासमे भाषा छूटि सकैत अछि
व्याख्या: बाल-साहित्य भाषा-स्मृतिक आरम्भिक आधार बनि सकैत अछि।

प्रश्न 5164. “मैथिली बजबामे लाज नहि” भाव ककर प्रतिवाद अछि?
क. आधुनिकता वा प्रवासक नाम पर मातृभाषा छिपेबाक
ख. मैथिली-पाठक
ग. बाल-रुचि
घ. गामक दृश्य
उत्तर: क. आधुनिकता वा प्रवासक नाम पर मातृभाषा छिपेबाक
व्याख्या: कविता भाषिक स्वाभिमानक स्पष्ट घोषण अछि।

प्रश्न 5165. गोवाक कोंकणीमे मैथिली-सदृश शब्दक उल्लेख भाषा-बोधमे की जोड़ैत अछि?
क. भाषिक सम्बन्धक खोज आ सांस्कृतिक स्मृति
ख. भाषा-विरोध
ग. केवल मजाक
घ. दहेज-विवाद
उत्तर: क. भाषिक सम्बन्धक खोज आ सांस्कृतिक स्मृति
व्याख्या: उदाहरण भाषाक दूरगामी प्रसारक संकेत जकाँ पढ़ल गेल अछि।

प्रश्न 5166. बाल-कविता पशु-पक्षी, मेघ आ पाबनि सँ बच्चाकेँ की देत अछि?
क. अपन परिवेश मैथिली शब्द-लयमे
ख. केवल विदेशी शब्द
ग. निष्क्रियता
घ. भाषा-विस्मृति
उत्तर: क. अपन परिवेश मैथिली शब्द-लयमे
व्याख्या: परिवेश-आधारित कविता भाषिक आत्मीयता बनबैत अछि।

प्रश्न 5167. “हमर मिथिलाक दर्शन”मे लोकवस्तु आ प्रकृति किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मातृभूमिक ठोस अनुभूति देबाक लेल
ख. भाषा हटेबाक लेल
ग. केवल सजावट
घ. राजनीतिक नारा मात्र
उत्तर: क. मातृभूमिक ठोस अनुभूति देबाक लेल
व्याख्या: पान-मखान, फूसक घर, बारी आदि स्मृति केँ मूर्त करैत अछि।

प्रश्न 5168. ओमप्रकाश झा मैथिल पुरोधाक मीडिया-निष्क्रियता पर किएक खिन्न छथि?
क. किएक तँ अस्मिता-बचावक अवसर छूटि रहल अछि
ख. किएक तँ कार्यक्रम बहुत छोट छल
ग. किएक तँ गोवा दूर छल
घ. किएक तँ मखान कम छल
उत्तर: क. किएक तँ अस्मिता-बचावक अवसर छूटि रहल अछि
व्याख्या: मीडिया-मौन भाषा-संस्कृतिक उपेक्षाक रूपमे देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 5169. भाषा-चेतना आ सामाजिक आलोचना ककरा मिलबैत अछि?
क. मातृभाषाक स्वाभिमान, सच बोलबाक साहस आ संस्कृति-भागीदारी
ख. केवल शब्द-सूची
ग. केवल धन
घ. केवल अनुष्ठान
उत्तर: क. मातृभाषाक स्वाभिमान, सच बोलबाक साहस आ संस्कृति-भागीदारी
व्याख्या: लेखसभ भाषा केँ नैतिक जिम्मेदारीसँ अलग नहि देखैत।

प्रश्न 5170. बाल-कविता आ प्रवासी लेख दूनू मे “पीढ़ी”क प्रश्न कोना आबैत अछि?
क. भाषा अगिला पीढ़ी धरि पहुँचेबाक चिंता रूपमे
ख. पीढ़ी अप्रासंगिक
ग. केवल वृद्धक प्रश्न
घ. केवल विवाहक प्रश्न
उत्तर: क. भाषा अगिला पीढ़ी धरि पहुँचेबाक चिंता रूपमे
व्याख्या: बच्चा आ प्रवासी पीढ़ी मिलि भाषा-सततता प्रश्न बनबैत अछि।

प्रश्न 5171. विद्यापति-स्मरण भाषा-संकटमे की भूमिका निभबैत अछि?
क. मैथिली गौरवक ऐतिहासिक दीपक रूपमे
ख. भाषा छोड़बाक तर्क
ग. केवल तिथि
घ. निजी कथा
उत्तर: क. मैथिली गौरवक ऐतिहासिक दीपक रूपमे
व्याख्या: विद्यापति मिथिलाक भाषा-गौरवक दीर्घ परम्परा याद करबैत छथि।

प्रश्न 5172. एहि भाषा-चेतना खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिली बचएब बाल्य-गीत, मातृभूमि-स्मृति, प्रवासी संवाद आ मीडिया-सत्यवादिता सभसँ जुड़ल अछि
ख. भाषा अपने बचि जाएत
ग. भाषा त्याग आवश्यक
घ. बाल-साहित्य अनुपयोगी
उत्तर: क. मैथिली बचएब बाल्य-गीत, मातृभूमि-स्मृति, प्रवासी संवाद आ मीडिया-सत्यवादिता सभसँ जुड़ल अछि
व्याख्या: भाषा-रक्षा बहुस्तरीय सामाजिक कार्य रूपमे देखाइत अछि।

खण्ड ५२३ : विदेह-सदेह १ — लोक-संस्कृति: पाबनि, नाटक, बालगीत आ गामक पुनर्स्मरण

प्रश्न 5173. दुर्गा-पूजा पर नाटक/रामलीला घटबाक प्रश्न ककर संकेत अछि?
क. लोक-संस्कृतिक मंचीय परम्परा कमजोर होयब
ख. लोक-संस्कृति बहुत बलवान होयब
ग. पाक-विधि
घ. पंजी-प्रथा
उत्तर: क. लोक-संस्कृतिक मंचीय परम्परा कमजोर होयब
व्याख्या: लेख गामक सांस्कृतिक मंचक क्षरण पर चिन्ता करैत अछि।

प्रश्न 5174. बालगीतमे दीयाबाती आ छैठक उपस्थिति किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. बच्चा पाबनि-संस्कृति भाषा-लयमे सीखैत अछि
ख. पाबनि हटैत अछि
ग. भाषा कठिन बनैत अछि
घ. सामाजिक स्मृति टूटैत अछि
उत्तर: क. बच्चा पाबनि-संस्कृति भाषा-लयमे सीखैत अछि
व्याख्या: बालगीत पाबनिक लोक-अनुभव अगिला पीढ़ी धरि पहुँचबैत अछि।

प्रश्न 5175. कोजागरा आ जानकी-नवमी लेखसभ पाबनिक कोन रूप देखबैत अछि?
क. गृह, देवी-भक्ति, सनेस आ समुदायिक सहभागिता
ख. केवल निजी मनोरंजन
ग. केवल राजनीतिक कार्यक्रम
घ. केवल खर्च
उत्तर: क. गृह, देवी-भक्ति, सनेस आ समुदायिक सहभागिता
व्याख्या: पाबनि मिथिलाक संबंध-संरचना आ आस्था-रीति अछि।

प्रश्न 5176. “भानस-भात” पाक-विधि खण्डक सांस्कृतिक भूमिका की मानल जा सकैत अछि?
क. घर-गृहस्थी आ मिथिला-भोजन परम्पराक व्यवहारिक संरक्षण
ख. लोक-संस्कृति नाश
ग. मीडिया-समस्या
घ. पंजी-विवाद
उत्तर: क. घर-गृहस्थी आ मिथिला-भोजन परम्पराक व्यवहारिक संरक्षण
व्याख्या: पाक-विधि दैनिक जीवनक संस्कृति कैँ लिखित रूप दैत अछि।

प्रश्न 5177. रामलीला टोलीकेँ भोजन देबाक पुरान प्रथा की बतबैत अछि?
क. कला-संरक्षण समाजक सामूहिक दायित्व छल
ख. कलाकार अनावश्यक छलाह
ग. भोजन मात्र विलास
घ. समाजक कोनो भूमिका नहि
उत्तर: क. कला-संरक्षण समाजक सामूहिक दायित्व छल
व्याख्या: लोककलाक आधार केवल कलाकार नहि, गामक सहयोग सेहो छल।

प्रश्न 5178. बालगीतक पशु-पक्षी आ “हमर मिथिलाक दर्शन”क गाम-दृश्य कोना जुड़ैत अछि?
क. दूनू मिथिला केँ बाल/लोक-इन्द्रिय अनुभवमे उपस्थित करैत अछि
ख. दूनू राजनीति मात्र
ग. दूनू विवाह-कथा
घ. दूनू पंजी
उत्तर: क. दूनू मिथिला केँ बाल/लोक-इन्द्रिय अनुभवमे उपस्थित करैत अछि
व्याख्या: गामक दृश्य आ पशु-पक्षी स्थानीय जीवनक भाषा बनैत अछि।

प्रश्न 5179. पाबनि-संस्कृति जँ केवल प्रदर्शन बनि जाए तँ कोन खतरा अछि?
क. मूल सामाजिक-स्नेह आ नैतिक भाव खो जाए
ख. भाषा तुरन्त बचि जाए
ग. खर्च घटि जाए
घ. समानता बढ़ि जाए
उत्तर: क. मूल सामाजिक-स्नेह आ नैतिक भाव खो जाए
व्याख्या: लेखसभ बाहरी आडम्बर आ भीतरी क्षयक अन्तर देखबैत अछि।

प्रश्न 5180. मखानक खीर, मखान-सनेस आ मिथिला-दर्शनमे मखानक उपस्थिति की देखबैत अछि?
क. मिथिलाक खाद्य, पाबनि आ पहचानक साझा प्रतीक
ख. केवल बाजार माल
ग. केवल खेलौना
घ. विदेशी वस्तु
उत्तर: क. मिथिलाक खाद्य, पाबनि आ पहचानक साझा प्रतीक
व्याख्या: मखान अनेक पाठमे जीवन-संस्कृति जोडऩिहार चिह्न अछि।

प्रश्न 5181. लोक-संस्कृति बचाबयमे बाल-साहित्यक भूमिका की अछि?
क. बचपनसँ भाषा, पाबनि, पशु-पक्षी आ घर-गामक स्मृति रोपब
ख. केवल मनोरंजन
ग. संस्कृति विस्मरण
घ. किसी भूमिका नहि
उत्तर: क. बचपनसँ भाषा, पाबनि, पशु-पक्षी आ घर-गामक स्मृति रोपब
व्याख्या: बाल-साहित्य लोक-संस्कृति पुनर्जीवनक प्रथम पायदान अछि।

प्रश्न 5182. एहि लोक-संस्कृति खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. जीवित परम्परा लेल पाबनि, गीत, नाटक, भोजन आ गाम-सहयोग फेर सक्रिय होयब चाही
ख. अभिलेख मात्र पर्याप्त
ग. आडम्बर बढ़ाबी
घ. भाषा छोड़ू
उत्तर: क. जीवित परम्परा लेल पाबनि, गीत, नाटक, भोजन आ गाम-सहयोग फेर सक्रिय होयब चाही
व्याख्या: साहित्यसभ जीवित लोक-जीवनक पुनर्स्थापनक मांग करैत अछि।

खण्ड ५२४ : विदेह-सदेह १ — अगिला क्रमक संगति: जानकीसँ अनाम कथा धरि

प्रश्न 5183. जानकी-नवमी सँ “अनाम कथा” धरि स्रोत-क्रममे मुख्य संक्रमण की अछि?
क. पावनिक स्त्री-मर्यादा सँ आधुनिक विवाहक सामाजिक विडम्बना धरि
ख. केवल भोजनसँ भोजन धरि
ग. नदीसँ नदी धरि
घ. युद्धसँ युद्ध धरि
उत्तर: क. पावनिक स्त्री-मर्यादा सँ आधुनिक विवाहक सामाजिक विडम्बना धरि
व्याख्या: क्रम मिथिला-परम्परा आ आधुनिक सामाजिक यथार्थ कैँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5184. ओमप्रकाश झा आ प्रेमचन्द मिश्र दूनूक लेखनमे “विश्वास” कोना प्रश्न बनैत अछि?
क. समुदाय/मीडिया पर विश्वास आ विवाह-पक्ष पर विश्वास दूनू टूटैत देखाइत अछि
ख. विश्वास पूर्ण अछि
ग. विश्वास अप्रासंगिक
घ. केवल आध्यात्मिक विश्वास
उत्तर: क. समुदाय/मीडिया पर विश्वास आ विवाह-पक्ष पर विश्वास दूनू टूटैत देखाइत अछि
व्याख्या: दू पाठ अलग क्षेत्रमे भरोसाक संकट देखबैत अछि।

प्रश्न 5185. प्रीतिक लेख आ “अनाम कथा” विवाहक कोन दू पक्ष खोलैत अछि?
क. नीतिगत समानता आ घरेलू व्यवहारक संघर्ष
ख. केवल हास्य
ग. केवल पौराणिकता
घ. केवल पकवान
उत्तर: क. नीतिगत समानता आ घरेलू व्यवहारक संघर्ष
व्याख्या: एक लेख सिद्धान्तक प्रश्न उठबैत अछि, दोसर कथा व्यवहारक उलझन देखबैत अछि।

प्रश्न 5186. बाल-बुदरुक कविता आ स्मिता-लेखक सम्बन्ध कोना अछि?
क. बालपीढ़ी कैँ भाषा-संस्कृतिसँ जोड़ब अस्मिता-संघर्षक भाग अछि
ख. बालकविता अस्मिता-विरोधी
ग. दूटा अलग संसार
घ. बाल-साहित्य व्यर्थ
उत्तर: क. बालपीढ़ी कैँ भाषा-संस्कृतिसँ जोड़ब अस्मिता-संघर्षक भाग अछि
व्याख्या: अस्मिता केवल वयस्क विमर्श नहि, बाल-संस्कारो पर निर्भर अछि।

प्रश्न 5187. मैथिली बोलबाक लाज नहि मानबाक आग्रह ककर विरोधमे अछि?
क. आधुनिक/प्रवासी आत्महीनता
ख. मातृभाषा-प्रेम
ग. गामक स्नेह
घ. पाबनि-भक्ति
उत्तर: क. आधुनिक/प्रवासी आत्महीनता
व्याख्या: भाषा-संकोच अस्मिता-संकटक आधार रूपमे देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 5188. समारोह, मीडिया, विवाह आ पाबनि सभमे बार-बार कोन प्रश्न उठैत अछि?
क. सामूहिक जिम्मेदारी बनाम औपचारिकता/आडम्बर
ख. केवल नाम-सूची
ग. केवल तिथि
घ. कोनो समाज नहि
उत्तर: क. सामूहिक जिम्मेदारी बनाम औपचारिकता/आडम्बर
व्याख्या: स्रोत-क्रम समाजक बाहरीपन आ भीतरक जिम्मेदारीक अन्तर पूछैत अछि।

प्रश्न 5189. “अनाम कथा”मे छोट वस्तु—तौलिया—कथानकमे किएक पैघ बनैत अछि?
क. ओ विश्वास, सम्मान आ पूर्व-प्रतिज्ञाक कसौटी बनैत अछि
ख. ओ महँगा अछि
ग. ओ पाबनि-प्रसाद अछि
घ. ओ पंजी अछि
उत्तर: क. ओ विश्वास, सम्मान आ पूर्व-प्रतिज्ञाक कसौटी बनैत अछि
व्याख्या: कथाक वस्तु-सूक्ष्मता पैघ सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

प्रश्न 5190. जानकीक स्त्री-सम्मान, प्रीतिक पुनर्विवाह आ प्रेमचन्दक विवाह-कथा मिलि कोन बड़ प्रश्न बनबैत अछि?
क. समाज स्त्री, विवाह आ गरिमा कैं न्यायपूर्ण ढंगसँ कोना देखत?
ख. भोजन कतए पकत?
ग. मीडिया कतए रहत?
घ. बालगीत के गाबत?
उत्तर: क. समाज स्त्री, विवाह आ गरिमा कैं न्यायपूर्ण ढंगसँ कोना देखत?
व्याख्या: त्रयी सामाजिक सुधारक केन्द्रमे स्त्री आ विवाह-संस्था कैं राखैत अछि।

प्रश्न 5191. ओमप्रकाशक प्रवासी लेख आ प्रकाश झाक मिथिला-दर्शन मिलि की करैत अछि?
क. दूर पड़ल मैथिल कैं मातृभूमिक ठोस स्मृति सँ जोड़ैत अछि
ख. मिथिला नकारैत अछि
ग. प्रवासक प्रशंसा मात्र
घ. भाषा हटबैत अछि
उत्तर: क. दूर पड़ल मैथिल कैं मातृभूमिक ठोस स्मृति सँ जोड़ैत अछि
व्याख्या: दू पाठ विस्थापनक बीच मिथिला-स्मृति जाग्रत करैत अछि।

प्रश्न 5192. एहि ५०५–५२४ बैचक अगिला तार्किक पठन-बिन्दु की अछि?
क. “अनाम कथा”क शेष विवाह-संकट आ ओकर सामाजिक परिणाम
ख. जानकी-नवमी फेर शुरू
ग. मखानक खीर मात्र
घ. गोवा सम्मेलन फेर
उत्तर: क. “अनाम कथा”क शेष विवाह-संकट आ ओकर सामाजिक परिणाम
व्याख्या: बैच कथा कैं निर्णायक मोड़ पर छोड़ैत अछि; अगिला भाग ओहि संकटक परिणाम खोलेत।

खण्ड ५२५ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: सनेस, सम्मान आ अविश्वास

प्रश्न 5193. “अनाम कथा”क विवाह-दिनमे कन्यापक्षक देरी कथानकमे कोन तनाव बनबैत अछि?
क. पूर्व-सहमति आ वास्तविक व्यवहारक बीच पहिल दरार
ख. पूर्ण उत्सवक सहजता
ग. कथानकक समाप्ति
घ. बालगीतक शुरुआत
उत्तर: क. पूर्व-सहमति आ वास्तविक व्यवहारक बीच पहिल दरार
व्याख्या: दू जन अएबाक बात छल, मुदा देरी आ अधिक लोकक आगमन अविश्वासक आरम्भ बनैत अछि।

प्रश्न 5194. पीयर दू-सूती तौलिया देखिते प्रेमचन्दक प्रतिक्रिया किएक तीव्र भेल?
क. कारण ओ वस्तु छोट रहितहुँ विश्वासभंग आ अपमानक संकेत बनि गेल
ख. कारण तौलिया बहुत महँगा छल
ग. कारण विवाह समाप्त भऽ गेल
घ. कारण ओकरा पाबनि चाही छल
उत्तर: क. कारण ओ वस्तु छोट रहितहुँ विश्वासभंग आ अपमानक संकेत बनि गेल
व्याख्या: कथा वस्तुक मूल्य नहि, वचन आ सम्मानक मूल्य पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 5195. प्रेमचन्द “हम विवाह नहि करब” किएक कहैत छथि?
क. कन्यापक्ष पर भरोसा टूटबाक कारण
ख. भोजन स्वादिष्ट छल
ग. मंच सजल छल
घ. बरियाती प्रसन्न छल
उत्तर: क. कन्यापक्ष पर भरोसा टूटबाक कारण
व्याख्या: ओ वस्तु-सनेसकेँ भविष्यक वैवाहिक छलक पूर्वसूचना जकाँ पढ़ैत छथि।

प्रश्न 5196. विभा आ दाय-माय प्रेमचन्दकेँ किएक शान्त करय चाहैत छथि?
क. क्योंकि विवाह-समारोहमे सार्वजनिक अपमान टारब हुनका आवश्यक लगैत अछि
ख. क्योंकि कथा समाप्त भेल
ग. क्योंकि सब भागि गेल
घ. क्योंकि गीत नहि छल
उत्तर: क. क्योंकि विवाह-समारोहमे सार्वजनिक अपमान टारब हुनका आवश्यक लगैत अछि
व्याख्या: गृह-समाजक दृष्टिमे मान-मर्यादा तत्कालिक संकट अछि।

प्रश्न 5197. महारानी प्रेमचन्दक पक्ष किएक स्वीकारैत छथि?
क. ओ कहैत छथि जे बौआक बात सही अछि आ कन्यापक्ष गलती कयने अछि
ख. ओ कन्यापक्षकेँ निर्दोष मानैत छथि
ग. ओ विवाह रोकि देलनि
घ. ओ तौलिया नदेखलनि
उत्तर: क. ओ कहैत छथि जे बौआक बात सही अछि आ कन्यापक्ष गलती कयने अछि
व्याख्या: महारानीक स्वीकार कथा मे प्रेमचन्दक आक्रोशक नैतिक आधार देखबैत अछि।

प्रश्न 5198. प्रेमचन्दक “मान-मर्यादा बनाम दूटा जिनगी” वाला द्वंद्व कथाक मुख्य प्रश्न कोना बनैत अछि?
क. विवाह-संस्था व्यक्ति-भविष्य पर कतेक भारी पड़ि सकैत अछि, से देखबैत अछि
ख. कथा केवल हास्य अछि
ग. विवाहमे कोनो समस्या नहि
घ. दहेजक महिमा अछि
उत्तर: क. विवाह-संस्था व्यक्ति-भविष्य पर कतेक भारी पड़ि सकैत अछि, से देखबैत अछि
व्याख्या: कथा सामाजिक प्रतिष्ठा आ निजी जीवनक संघर्ष केँ करुण बनबैत अछि।

प्रश्न 5199. कन्यापक्ष पर अविश्वास कथामे लड़कीक विषय धरि किएक पहुँचैत अछि?
क. एक छल वा उपेक्षा देखलापर प्रेमचन्दकेँ अन्य बातोमे धोखा सम्भव लगैत अछि
ख. क्योंकि लड़की अनुपस्थित अछि
ग. क्योंकि विवाह नै होयत
घ. क्योंकि कन्यापक्ष बहुत गरीब नहि
उत्तर: क. एक छल वा उपेक्षा देखलापर प्रेमचन्दकेँ अन्य बातोमे धोखा सम्भव लगैत अछि
व्याख्या: छोट व्यवहार सँ चरित्र/विश्वासक बड़ प्रश्न उठैत अछि।

प्रश्न 5200. गामक स्त्री-पुरुष सभक बीच सन्नाटा ककर संकेत अछि?
क. विवाह-उत्सव अचानक सामाजिक संकटमे बदलि गेल अछि
ख. नृत्यक शुरुआत
ग. भोजनक समय
घ. बालकविताक पाठ
उत्तर: क. विवाह-उत्सव अचानक सामाजिक संकटमे बदलि गेल अछि
व्याख्या: गीत रुकि जाएब आ वातावरण बदलि जाएब संकटक घनत्व देखबैत अछि।

प्रश्न 5201. प्रेमचन्दक तर्कमे “हमरा किछु नहि चाही, मुदा अपने अनब तँ नीक कम्पनीक” कथनक अर्थ की अछि?
क. माँग नहि, मुदा स्वेच्छासँ देल वस्तुमे ईमान आ सम्मान चाही
ख. ओ धन माँगि रहल छथि
ग. ओ विवाह नहि चाहैत छलाह
घ. ओ भोजन चाहैत छलाह
उत्तर: क. माँग नहि, मुदा स्वेच्छासँ देल वस्तुमे ईमान आ सम्मान चाही
व्याख्या: कथा लोभ आ स्वाभिमानक भेद स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 5202. एहि आरम्भिक संकटक सामाजिक सार की अछि?
क. विवाहमे वस्तु, वचन, विश्वास आ प्रतिष्ठा गूढ़ रूपसँ जुड़ल रहैत अछि
ख. विवाह केवल खेल अछि
ग. सनेसक कोनो अर्थ नहि
घ. परिवार अप्रासंगिक अछि
उत्तर: क. विवाहमे वस्तु, वचन, विश्वास आ प्रतिष्ठा गूढ़ रूपसँ जुड़ल रहैत अछि
व्याख्या: अनाम कथा विवाहक भितरका नैतिक अर्थ कैं सूक्ष्म वस्तु-संकेत सँ खोलैत अछि।

खण्ड ५२६ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: पितृ-दबाव आ शर्तसहित समर्पण

प्रश्न 5203. भीम मिश्रक आत्महत्या-धमकी कथामे कोन सामाजिक दबावक चरम रूप अछि?
क. पितृ-अधिकार आ कुल-मानक भावनात्मक दबाव
ख. बालगीतक रस
ग. भोजनक आग्रह
घ. मीडिया-आलोचना
उत्तर: क. पितृ-अधिकार आ कुल-मानक भावनात्मक दबाव
व्याख्या: पिता अपन जीवित पुरुखाक इज्जत बचाबक नाम पर पुत्रकैं बाध्य करैत छथि।

प्रश्न 5204. प्रेमचन्द पिताक पएर पर खसि किएक कानैत छथि?
क. व्यक्तिगत इच्छा आ पितृ-आज्ञाक बीच टूटैत मनस्थिति कारण
ख. ओ प्रसन्न छलाह
ग. ओ जीतल छलाह
घ. ओ कन्यापक्ष सँ धन पेलनि
उत्तर: क. व्यक्तिगत इच्छा आ पितृ-आज्ञाक बीच टूटैत मनस्थिति कारण
व्याख्या: दृश्य करुण अछि, कारण निर्णय मनसँ नहि, दबावसँ बनैत अछि।

प्रश्न 5205. श्रवण कुमारक उदाहरण प्रेमचन्दक निर्णयमे की भूमिका निभबैत अछि?
क. पितृ-भक्ति कैं आत्म-बलिदानक नैतिक तर्क बनबैत अछि
ख. विवाह टारैत अछि
ग. मीडिया जोड़ैत अछि
घ. भोजनक सूची दैत अछि
उत्तर: क. पितृ-भक्ति कैं आत्म-बलिदानक नैतिक तर्क बनबैत अछि
व्याख्या: ओ अपन भविष्य पिताक मान लेल अर्पित करबाक भाषा प्रयोग करैत छथि।

प्रश्न 5206. प्रेमचन्दक तीन शर्त — समान नहि लेब, गाड़ी नहि चढ़ब, गोरलगाइ रुपैया नहि लेब — ककर घोषणा अछि?
क. अपन स्वाभिमान बचाबक अन्तिम प्रयास
ख. धन-लोभ
ग. कन्यापक्षक सम्मान
घ. मौज-मस्ती
उत्तर: क. अपन स्वाभिमान बचाबक अन्तिम प्रयास
व्याख्या: सहमति बादो ओ लेन-देन आ औपचारिक लाभसँ अलग रहय चाहैत छथि।

प्रश्न 5207. दाय-माय आ पुरुष-वर्गक करुण होयब किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. समाज देखैत अछि जे विवाहक निर्णय एक युवकक आन्तरिक पराजय बनि रहल अछि
ख. सभ उत्साहित अछि
ग. कथामे कोनो दुख नहि
घ. कन्या अनुपस्थित अछि
उत्तर: क. समाज देखैत अछि जे विवाहक निर्णय एक युवकक आन्तरिक पराजय बनि रहल अछि
व्याख्या: करुण प्रतिक्रिया संकटक नैतिक गंभीरता देखबैत अछि।

प्रश्न 5208. हाथधरीक विधि जल्दी पूरा करबाक हड़बड़ी कोन बात सूचित करैत अछि?
क. संकट कैँ रस्मक वेगमे ढाकय चाहैत समाज
ख. विवाह स्थगित
ग. समारोहक अन्त
घ. कथा-प्रारम्भ
उत्तर: क. संकट कैँ रस्मक वेगमे ढाकय चाहैत समाज
व्याख्या: हड़बड़ी सामाजिक मर्यादा बचाबक युक्ति बनि जाइत अछि।

प्रश्न 5209. बड़की भौजीक काजर नोरमे बहब कोन भाव बनबैत अछि?
क. घरक स्त्रीपक्षक करुण सहानुभूति
ख. हास्य
ग. क्रोधहीनता
घ. उत्सवक उल्लास
उत्तर: क. घरक स्त्रीपक्षक करुण सहानुभूति
व्याख्या: भौजीक देहभाषा दृश्यक दुःख कैँ दृश्यात्मक बनबैत अछि।

प्रश्न 5210. बरियाती प्रस्थानक समय प्रेमचन्दक नोरक धार कोन संकेत दैत अछि?
क. बाहरी विवाह-यात्रा भीतर शोक-यात्रा जकाँ अछि
ख. ओ बहुत प्रसन्न छथि
ग. ओ गीत गबैत छथि
घ. ओ भोजन लैत छथि
उत्तर: क. बाहरी विवाह-यात्रा भीतर शोक-यात्रा जकाँ अछि
व्याख्या: कथा विवाहक उल्लास कैँ करुण विडम्बनामे बदलैत अछि।

प्रश्न 5211. मान-मर्यादा प्रेमचन्दक जीवनपर कोना भारी पड़ैत अछि?
क. निजी निर्णयक अधिकार परिवारिक प्रतिष्ठा लेल दबि जाइत अछि
ख. मान-मर्यादा मुक्ति दैत अछि
ग. मान-मर्यादा अप्रासंगिक
घ. ओ पूर्ण स्वतंत्र छथि
उत्तर: क. निजी निर्णयक अधिकार परिवारिक प्रतिष्ठा लेल दबि जाइत अछि
व्याख्या: समाजक मानक बली पर युवकक भविष्य राखल जाइत अछि।

प्रश्न 5212. एहि खण्डक कथानक-सार की अछि?
क. प्रेमचन्द निजी विरोध राखितहुँ पितृ-दबाव आ समाज-मर्यादा सँ विवाह स्वीकारैत छथि
ख. प्रेमचन्द विवाह रद्द करैत छथि
ग. कन्यापक्ष भागि जाइत अछि
घ. कथा हास्यमे समाप्त
उत्तर: क. प्रेमचन्द निजी विरोध राखितहुँ पितृ-दबाव आ समाज-मर्यादा सँ विवाह स्वीकारैत छथि
व्याख्या: सहमति संकल्प नहि, आहत आत्मसमर्पण अछि।

खण्ड ५२७ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: विवाह-स्थान, कोबर आ मौन संवाद

प्रश्न 5213. कन्यापक्षक पंडाल आ वरक लेल आयल निम्न वस्तुक तुलना किएक मार्मिक अछि?
क. बाहरी सजावट आ अन्तरंग सम्मानक अन्तर उजागर करैत अछि
ख. दूटा समान अछि
ग. सजावट नहि छल
घ. सनेस श्रेष्ठ छल
उत्तर: क. बाहरी सजावट आ अन्तरंग सम्मानक अन्तर उजागर करैत अछि
व्याख्या: कथा देखबैत अछि जे प्रदर्शन समृद्ध, मुदा सम्बन्धक संवेदना गरीब अछि।

प्रश्न 5214. बरियातीक शहरी सुविधा आ प्रेमचन्दक शोकमग्न मनक विरोधाभास की देखबैत अछि?
क. समारोहक बाहरी चमक भीतरक पीड़ा नहि ढाकि सकैत अछि
ख. पीड़ा समाप्त
ग. विवाह हर्षमय
घ. बरिया निराश नहि
उत्तर: क. समारोहक बाहरी चमक भीतरक पीड़ा नहि ढाकि सकैत अछि
व्याख्या: दृश्य सजल अछि, मुदा वरक मानस श्मशान-जकाँ अँधार अछि।

प्रश्न 5215. परिछनक समय प्रेमचन्दक डेग आगू नहि होयब कोन भावक संकेत अछि?
क. अन्तरात्मा विवाहक रीतिमे सहभागी हेबाक लेल तैयार नहि अछि
ख. ओ अस्वस्थ मात्र
ग. ओ नाच देखैत छथि
घ. ओ रास्ता भुलि गेल छथि
उत्तर: क. अन्तरात्मा विवाहक रीतिमे सहभागी हेबाक लेल तैयार नहि अछि
व्याख्या: देहक रुकावट मानसिक प्रतिरोधक संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 5216. पिताक वचन “जाधरि हम रहब” प्रेमचन्दक व्यवहारमे कोना असर करैत अछि?
क. ओ क्रोध रोकि मौन निभबैत छथि
ख. ओ सबकेँ डाँटैत छथि
ग. ओ विवाह त्यागैत छथि
घ. ओ कन्यापक्षसँ धन लैत छथि
उत्तर: क. ओ क्रोध रोकि मौन निभबैत छथि
व्याख्या: कथामे वचन सामाजिक अनुशासनक रूपमे सक्रिय अछि।

प्रश्न 5217. द्विरागमन संगे करबाक निर्णय किएक लेल गेल?
क. आगामी अपमान वा अविश्वास टारि नववधू केँ अपना संस्कारमे आनबाक सोचसँ
ख. भोजन बचाबय लेल
ग. कन्यापक्ष हटाबय लेल
घ. मीडिया बोलाबय लेल
उत्तर: क. आगामी अपमान वा अविश्वास टारि नववधू केँ अपना संस्कारमे आनबाक सोचसँ
व्याख्या: भीम मिश्र कन्याकेँ अपन घरक संस्कारमे रँगबाक भरोसा दैत छथि।

प्रश्न 5218. कोबरमे प्रेमचन्दक मौन आ रोयब ककर प्रतीक अछि?
क. असमर्थ, आहत आ भविष्यहीन मनोदशाक
ख. पूर्ण आनन्द
ग. कन्याप्रेम
घ. हास्य
उत्तर: क. असमर्थ, आहत आ भविष्यहीन मनोदशाक
व्याख्या: विवाहक बादो ओ भावनात्मक रूपेँ स्वीकार नहि कए पबैत छथि।

प्रश्न 5219. नवविवाहिता द्वारा चरण-स्पर्श आ चुप्पी कोन सम्बन्ध-संकेत बनबैत अछि?
क. स्त्रीक विनम्र उपस्थिति आ संवादहीन वैवाहिक आरम्भ
ख. अहंकार
ग. खुला वाद-विवाद
घ. समारोह समाप्त
उत्तर: क. स्त्रीक विनम्र उपस्थिति आ संवादहीन वैवाहिक आरम्भ
व्याख्या: मौन चरण-स्पर्श दाम्पत्यक असमंजसपूर्ण आरम्भ देखबैत अछि।

प्रश्न 5220. चारि रात्रि धरि नववधूक चरण-स्पर्श कथा मे ककर प्रतीक्षा अछि?
क. आशीर्वाद, स्वीकृति आ संवादक प्रतीक्षा
ख. पुरस्कार
ग. कानूनी निर्णय
घ. मीडिया-साक्षात्कार
उत्तर: क. आशीर्वाद, स्वीकृति आ संवादक प्रतीक्षा
व्याख्या: ओ नव संबंधमे स्वीकारक शब्द चाहैत छथि।

प्रश्न 5221. प्रेमचन्दक “अहाँ के छी?” प्रश्न किएक देर सँ आबैत अछि?
क. क्योंकि विवाह विधिपूर्वक भेल, मुदा भावनात्मक परिचय अबोधारि नहि भेल छल
ख. क्योंकि ओ देख नहि सकैत छथि
ग. क्योंकि कन्या नहि आयल
घ. क्योंकि ओ प्रसन्न छलाह
उत्तर: क. क्योंकि विवाह विधिपूर्वक भेल, मुदा भावनात्मक परिचय अबोधारि नहि भेल छल
व्याख्या: कथा रस्म आ परिचयक दूरी पर तीखा प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 5222. एहि खण्डक मूल अर्थ की अछि?
क. रसम पूरा होएब दाम्पत्यक भावनात्मक आरम्भक गारंटी नहि अछि
ख. रसम अनावश्यक नहि
ग. सब स्वाभाविक अछि
घ. कथा बालगीत अछि
उत्तर: क. रसम पूरा होएब दाम्पत्यक भावनात्मक आरम्भक गारंटी नहि अछि
व्याख्या: कोबर प्रसंग विवाहक भीतरक मौन संकट कैं खोलैत अछि।

खण्ड ५२८ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: सोनीक सत्य आ समाजक दोष

प्रश्न 5223. सोनी द्वारा “दसम बोर्ड फेल” सच्चाई कहब कथामे किएक निर्णायक अछि?
क. प्रेमचन्दक पूर्व शर्त टूटैत अछि, मुदा सोनीक सत्यवादिता उभरैत अछि
ख. ओ झूठ बाजैत छथि
ग. शिक्षा अप्रासंगिक
घ. विवाह रद्द भऽ जाइत अछि
उत्तर: क. प्रेमचन्दक पूर्व शर्त टूटैत अछि, मुदा सोनीक सत्यवादिता उभरैत अछि
व्याख्या: शर्त भंग अछि, पर सोनी स्वयं छलक स्रोत नहि, से कथा देखबैत अछि।

प्रश्न 5224. प्रेमचन्दक आँखिमे फेर नोर किएक आबैत अछि?
क. ओ अपन भरोसा, सपना आ शर्तसभ टूटल देखैत छथि
ख. ओ अत्यधिक खुश छथि
ग. ओ परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह
घ. ओ पुरस्कार पेलाह
उत्तर: क. ओ अपन भरोसा, सपना आ शर्तसभ टूटल देखैत छथि
व्याख्या: शिक्षा-संबंधी आशा ओकर जीवन-दृष्टि सँ जुड़ल छल।

प्रश्न 5225. सोनी “हम अपनेसँ झूठ नहि बाजि सकैत छी” कहि की स्थापित करैत छथि?
क. स्वयं दोषी नहि, सत्यप्रिय आ आहत पात्र छथि
ख. ओ छल करैत छथि
ग. ओ उदासीन छथि
घ. ओ अहंकारी छथि
उत्तर: क. स्वयं दोषी नहि, सत्यप्रिय आ आहत पात्र छथि
व्याख्या: सोनीक सच्चाई कथा मे करुण नैतिक संतुलन बनबैत अछि।

प्रश्न 5226. प्रेमचन्दक बीमारी, विकलांगता आ जीवन-लक्ष्य सम्बन्धी प्रश्न कोन खोज अछि?
क. विवाहक धोखाक बीच वास्तविक व्यक्ति कैं बुझबाक प्रयास
ख. सामान्य मजाक
ग. कानूनी जिरह मात्र
घ. खेलक प्रश्न
उत्तर: क. विवाहक धोखाक बीच वास्तविक व्यक्ति कैं बुझबाक प्रयास
व्याख्या: ओ संबंधक आधारभूत सचाई जाँचि रहल छथि।

प्रश्न 5227. सोनीक “अहाँक खुशी” सबसे पैघ लक्ष्य कहब ककर संकेत अछि?
क. उसक आत्मसमर्पित दाम्पत्य-धारणा आ सहानुभूति
ख. व्यापारिक इच्छा
ग. भोजन-पसन्द
घ. राजनीतिक मत
उत्तर: क. उसक आत्मसमर्पित दाम्पत्य-धारणा आ सहानुभूति
व्याख्या: सोनी प्रेमचन्दक दुख कैं अपन केन्द्र बनबैत छथि।

प्रश्न 5228. प्रेमचन्द “अहाँक कोनो दोष नहि” कहि कोन नैतिक निर्णय दैत छथि?
क. व्यक्ति आ समाज/परिवारक छल बीच भेद करैत छथि
ख. सोनी दोषी छथि
ग. कथा समाप्त
घ. विवाह व्यर्थ
उत्तर: क. व्यक्ति आ समाज/परिवारक छल बीच भेद करैत छथि
व्याख्या: ओ नववधू कैं दोषमुक्त करैत सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न राखैत छथि।

प्रश्न 5229. आशावादी आ पुरुषार्थवादी भेद प्रेमचन्दक मनोवृत्ति की देखबैत अछि?
क. ओ नियति-समर्पण नहि, परिश्रम आ स्वनिर्णयक पक्षधर छथि
ख. ओ आलसी छथि
ग. ओ भाग्यवाद मानैत छथि
घ. ओ प्रश्न नहि करैत छथि
उत्तर: क. ओ नियति-समर्पण नहि, परिश्रम आ स्वनिर्णयक पक्षधर छथि
व्याख्या: प्रेमचन्दक स्वभाव कर्मकेंद्रित अछि, तैं छिपाओल तथ्य हुनका तोड़ैत अछि।

प्रश्न 5230. सोनीक धार्मिक आशावाद आ प्रेमचन्दक पुरुषार्थवादक टकराव की बनबैत अछि?
क. दाम्पत्यक विचार-दूरीक आरम्भिक संकेत
ख. पूर्ण विचार-समानता
ग. काव्य-पाठ
घ. बालगीत
उत्तर: क. दाम्पत्यक विचार-दूरीक आरम्भिक संकेत
व्याख्या: कथा केवल शिक्षा नहि, जीवन-दर्शनक असंगति सेहो देखबैत अछि।

प्रश्न 5231. द्विरागमनक बाद प्रेमचन्दक दिल्ली लौटि काम सँ जुड़ब ककर संकेत अछि?
क. बाहरी जीवन चलैत अछि, मुदा भीतरक लक्ष्य नष्ट भऽ गेल अछि
ख. सब ठीक भऽ गेल
ग. कथा हास्यमय समाप्त
घ. विवाह भंगल
उत्तर: क. बाहरी जीवन चलैत अछि, मुदा भीतरक लक्ष्य नष्ट भऽ गेल अछि
व्याख्या: कथा सामाजिक घावक दीर्घ मानसिक परिणाम देखबैत अछि।

प्रश्न 5232. “कतेक नवयुवक-युवती करुण जिनगी जीबाक लेल मजबूर” कथनक सार की अछि?
क. व्यक्तिगत कथा समाजक व्यापक वैवाहिक अन्याय पर टिप्पणी बनि जाइत अछि
ख. घटना अपवाद मात्र
ग. समाज पूर्ण न्यायी
घ. विवाहक कोनो दोष नहि
उत्तर: क. व्यक्तिगत कथा समाजक व्यापक वैवाहिक अन्याय पर टिप्पणी बनि जाइत अछि
व्याख्या: अन्तिम विचार कथा कैं सामाजिक आलोचना मे परिणत करैत अछि।

खण्ड ५२९ : विदेह-सदेह १ — डॉ. प्रेमशंकर सिंह: जीवन, कृति आ साहित्य-दृष्टि

प्रश्न 5233. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक परिचयमे हुनका कोन-कोन रूपमे देखाओल गेल अछि?
क. सृजनशील चिन्तक, समालोचक, नाटक-रंगमंच गवेषक आ अनुवादक
ख. केवल गायक
ग. केवल चित्रकार
घ. केवल पाक-लेखक
उत्तर: क. सृजनशील चिन्तक, समालोचक, नाटक-रंगमंच गवेषक आ अनुवादक
व्याख्या: परिचय हुनकर बहुआयामी साहित्यिक साधना पर बल दैत अछि।

प्रश्न 5234. मैथिली गद्यकैं नव स्वरूप देबाक उल्लेख हुनक कोन योगदानक संकेत अछि?
क. गद्य-लेखन आ आलोचना मे रूपगत नवता
ख. केवल संगीत रचना
ग. केवल खेती
घ. केवल व्यापार
उत्तर: क. गद्य-लेखन आ आलोचना मे रूपगत नवता
व्याख्या: हुनका नव गद्य-दृष्टि आ आलोचनात्मक लेखनक साधक रूपमे चिन्हल गेल अछि।

प्रश्न 5235. मौलिक मैथिली कृतिमे “मैथिली नाटक ओ रंगमंच”क स्थान किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मैथिली नाट्य-अध्ययन आ रंगमंचक आधारग्रन्थीय योगदानक कारण
ख. ओ बालगीत अछि
ग. ओ पाक-विधि अछि
घ. ओ पंजी-पुस्तक अछि
उत्तर: क. मैथिली नाट्य-अध्ययन आ रंगमंचक आधारग्रन्थीय योगदानक कारण
व्याख्या: प्रेमशंकर सिंह रंगमंचीय अध्ययनक विशेष विद्वान रूपमे उभरैत छथि।

प्रश्न 5236. हुनक कृतिसूचीमे विद्यापति पर हिन्दी ग्रन्थक उपस्थिति की बतबैत अछि?
क. मैथिली विषय पर हिन्दी माध्यमे सेहो व्यापक आलोचना-कर्म
ख. हुनका विद्यापति मे रुचि नहि
ग. ओ केवल अंग्रेजी लिखैत छथि
घ. ओ केवल कथा लिखैत छथि
उत्तर: क. मैथिली विषय पर हिन्दी माध्यमे सेहो व्यापक आलोचना-कर्म
व्याख्या: विद्यापति अनुशीलन द्विभाषिक विद्वत्ता आ परम्परा-परीक्षण देखबैत अछि।

प्रश्न 5237. अनुवाद-कर्मक उल्लेख हुनक साहित्यिक व्यक्तित्वमे की जोड़ैत अछि?
क. भारतीय भाषिक-सांस्कृतिक संवादक क्षमता
ख. एकभाषिकता
ग. रचना-विराम
घ. व्यवसाय
उत्तर: क. भारतीय भाषिक-सांस्कृतिक संवादक क्षमता
व्याख्या: अनुवादक रूप हुनका व्यापक साहित्य-सम्पर्कक वाहक बनबैत अछि।

प्रश्न 5238. सम्पादन-कर्मक दीर्घ सूची हुनका कोन भूमिकामे स्थापित करैत अछि?
क. साहित्यिक धरोहर-संरक्षक आ पाठ-निर्माता
ख. केवल दर्शक
ग. केवल नृत्यकार
घ. केवल भोजन-विशेषज्ञ
उत्तर: क. साहित्यिक धरोहर-संरक्षक आ पाठ-निर्माता
व्याख्या: सम्पादन पुरान/नव पाठकेँ पाठक समाज धरि पहुँचबैत अछि।

प्रश्न 5239. मिथिला विभूति सम्मान आ वरिष्ठ लेखक सम्मानक उल्लेख की संकेत करैत अछि?
क. हुनक दीर्घ साहित्य-सेवा केँ सार्वजनिक मान्यता भेटल
ख. समाज हुनका नहि चिन्हलक
ग. कृति प्रकाशित नहि
घ. साहित्यसँ दूरी
उत्तर: क. हुनक दीर्घ साहित्य-सेवा केँ सार्वजनिक मान्यता भेटल
व्याख्या: सम्मान कृतिक सामाजिक स्वीकृति प्रमाणित करैत अछि।

प्रश्न 5240. प्रेमशंकर सिंहक अकादमिक सेवा आ अवकाशोपरान्त साधना का देखबैत अछि?
क. सारस्वत कर्म आजीवन जारी रहल
ख. लेखन समाप्त भेल
ग. अध्ययन अप्रासंगिक
घ. सेवा असंबद्ध
उत्तर: क. सारस्वत कर्म आजीवन जारी रहल
व्याख्या: परिचय सेवा आ लेखनक निरन्तरता पर बल दैत अछि।

प्रश्न 5241. हुनक प्रोफाइलमै मैथिली, हिन्दी, संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी अध्ययनक संकेत किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. तुलनात्मक आ बहुभाषिक साहित्य-दृष्टि केर आधार
ख. भाषा-विरोध
ग. केवल स्थानीयता
घ. साहित्य-विरक्ति
उत्तर: क. तुलनात्मक आ बहुभाषिक साहित्य-दृष्टि केर आधार
व्याख्या: बहुभाषिक अध्ययन आलोचकक दायरा विस्तृत करैत अछि।

प्रश्न 5242. एहि जीवन-परिचयक मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. डॉ. प्रेमशंकर सिंह मैथिली अध्ययनक शोध, आलोचना, रंगमंच, अनुवाद आ सम्पादनक केन्द्रीय व्यक्तित्व छथि
ख. ओ केवल एक कविता लिखलनि
ग. ओ साहित्यसँ असंबद्ध
घ. ओ अज्ञात पात्र
उत्तर: क. डॉ. प्रेमशंकर सिंह मैथिली अध्ययनक शोध, आलोचना, रंगमंच, अनुवाद आ सम्पादनक केन्द्रीय व्यक्तित्व छथि
व्याख्या: परिचय हुनका बहुआयामी साहित्य-पुरुषक रूपमे स्थापित करैत अछि।

खण्ड ५३० : विदेह-सदेह १ — “बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग”: सैद्धान्तिक आधार

प्रश्न 5243. लेखक साहित्यकेँ अतीत आ भविष्यसँ कोना जोड़ैत छथि?
क. साहित्य अतीतक अनुभव आ भविष्यक चेतनाकेँ वर्तमानमे जोड़ैत अछि
ख. साहित्य केवल मनोरंजन
ग. साहित्यक समयसँ सम्बन्ध नहि
घ. साहित्य केवल तिथि-सूची
उत्तर: क. साहित्य अतीतक अनुभव आ भविष्यक चेतनाकेँ वर्तमानमे जोड़ैत अछि
व्याख्या: लेख आरम्भे साहित्यक ऐतिहासिक चेतना पर बल दैत अछि।

प्रश्न 5244. साहित्यक अध्ययनकेँ केवल जीवनी, भाषा आ पाठ धरि सीमित नहि मानबाक कारण की अछि?
क. साहित्य संस्कृति-इतिहास, मानव-मन आ सभ्यताक संरक्षित चेतना सँ जुड़ल अछि
ख. जीवनी पर्याप्त अछि
ग. संस्कृति असंबंधित
घ. मनुष्य अनुपस्थित
उत्तर: क. साहित्य संस्कृति-इतिहास, मानव-मन आ सभ्यताक संरक्षित चेतना सँ जुड़ल अछि
व्याख्या: लेख साहित्य-इतिहासक व्यापक सांस्कृतिक अर्थ प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 5245. रवीन्द्रनाथक विचारक उल्लेख किएक आयल अछि?
क. विश्व-मानवक विराट जीवन साहित्य द्वारा आत्मप्रकाश करैत अछि, से आधार देबाक लेल
ख. गीत-सूची देबाक लेल
ग. राजनीति हटेबाक लेल
घ. बालकविता बुझाबय लेल
उत्तर: क. विश्व-मानवक विराट जीवन साहित्य द्वारा आत्मप्रकाश करैत अछि, से आधार देबाक लेल
व्याख्या: उद्धरण साहित्यक विश्वमानवीय अर्थ केँ सुदृढ़ करैत अछि।

प्रश्न 5246. “अतीतक प्रेरणा आ भविष्यक चेतना नहि तँ साहित्य नहि” कथनक भावार्थ की अछि?
क. साहित्य स्मृति आ संभावना दुनू सँ ऊर्जा पबैत अछि
ख. साहित्य वर्तमान-विरहित अछि
ग. साहित्य केवल अतीत
घ. भविष्य असंगत
उत्तर: क. साहित्य स्मृति आ संभावना दुनू सँ ऊर्जा पबैत अछि
व्याख्या: लेख साहित्य केँ गतिशील समय-चेतना मानैत अछि।

प्रश्न 5247. मानव प्रगतिक नियम-सिद्धान्तक “मंगल कंगन” रूपक कोन अर्थ दैत अछि?
क. साहित्य मानव-जीवनक विकास-संकल्प केँ सौन्दर्य आ मूल्य सँ बाँधैत अछि
ख. कंगन केवल आभूषण अछि
ग. प्रगति असंभव
घ. साहित्य निष्क्रिय
उत्तर: क. साहित्य मानव-जीवनक विकास-संकल्प केँ सौन्दर्य आ मूल्य सँ बाँधैत अछि
व्याख्या: रूपक साहित्यक नैतिक-सांस्कृतिक भूमिका व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 5248. गद्यकार-काव्यकारक जीवनी-पाठ अध्ययनक पार जएबाक आग्रह कोन आलोचनात्मक दृष्टि अछि?
क. सामाजिक-सांस्कृतिक आलोचना
ख. सिर्फ नामावली
ग. कथासारहीन दृष्टि
घ. साहित्य-विमुखता
उत्तर: क. सामाजिक-सांस्कृतिक आलोचना
व्याख्या: लेख साहित्य अध्ययनकेँ समाज-संस्कृति-संवेदना संग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5249. लेखक साहित्यक गवाक्ष रूपक सँ की संकेत करैत छथि?
क. साहित्य अतीतक जीवन-धाराक दर्शन करएबाक झरोखा अछि
ख. गवाक्ष असंबंधित
ग. साहित्य बन्द कोठरी
घ. भाषा समाप्त
उत्तर: क. साहित्य अतीतक जीवन-धाराक दर्शन करएबाक झरोखा अछि
व्याख्या: गवाक्ष अतीत-दर्शनक सौन्दर्यपूर्ण प्रतीक अछि।

प्रश्न 5250. भूल आ संशोधन द्वारा उद्देश्य पाबय बात साहित्यक ककरा दर्शबैत अछि?
क. मानवक आत्म-संशोधक यात्रा
ख. स्थिरता
ग. पूर्ण निष्क्रियता
घ. केवल मनोरंजन
उत्तर: क. मानवक आत्म-संशोधक यात्रा
व्याख्या: साहित्य मानव विकासक प्रयोगशाला जकाँ देखल गेल अछि।

प्रश्न 5251. आरम्भिक सैद्धान्तिक चर्चा “स्वर्णिम युग” लेखकेँ कोन आधार दैत अछि?
क. साहित्य-इतिहास केँ सांस्कृतिक युग-चेतनाक रूपमे पढ़बाक आधार
ख. केवल संख्या-गणना
ग. केवल पृष्ठ-पाठ
घ. केवल लेखक-सूची
उत्तर: क. साहित्य-इतिहास केँ सांस्कृतिक युग-चेतनाक रूपमे पढ़बाक आधार
व्याख्या: लेख इतिहासक कालविभाजन केँ मूल्य-आधारित बनबैत अछि।

प्रश्न 5252. सैद्धान्तिक आधारक प्रमुख बात की अछि?
क. साहित्य समय, संस्कृति, मानव-मन आ भविष्य-संकल्पक समन्वय अछि
ख. साहित्य केवल अक्षर
ग. इतिहास अप्रासंगिक
घ. संस्कृति बाधा
उत्तर: क. साहित्य समय, संस्कृति, मानव-मन आ भविष्य-संकल्पक समन्वय अछि
व्याख्या: प्रेमशंकर सिंह साहित्यक व्यापक दार्शनिक अर्थ सँ लेख आरम्भ करैत छथि।

खण्ड ५३१ : विदेह-सदेह १ — उन्नैसम शताब्दी, नवजागरण आ मैथिली

प्रश्न 5253. उन्नैसम शताब्दीमे भारतक नवजागरण मिथिलापर कम असरदार किएक कहल गेल?
क. मिथिलावासी प्राचीन परम्परा आ संस्कृत शिक्षामे अधिक रत रहलाह
ख. मिथिलामे लोग नहि छल
ग. साहित्य नहि छल
घ. भाषा नहि छल
उत्तर: क. मिथिलावासी प्राचीन परम्परा आ संस्कृत शिक्षामे अधिक रत रहलाह
व्याख्या: लेख परम्परापोषक प्रवृत्ति केँ नवजागरणक विलम्बक कारण मानैत अछि।

प्रश्न 5254. अंग्रेजी शिक्षा आ पाश्चात्य विचारधाराक प्रति मिथिलाक आरम्भिक उदासीनता की परिणाम देलक?
क. नव सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव अपेक्षाकृत देर सँ आयल
ख. तुरन्त क्रांति भेल
ग. मैथिली राजभाषा बनल
घ. साहित्य समाप्त
उत्तर: क. नव सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव अपेक्षाकृत देर सँ आयल
व्याख्या: लेख आधुनिक चेतनाक प्रवेशक विलम्ब पर संकेत करैत अछि।

प्रश्न 5255. कोर्ट ऑफ वार्ड्सक अधीन मिथिला प्रशासन गेलाक प्रभाव की बताओल गेल?
क. पश्चिमक स्पर्श अनुभूति पहिल बेर व्यापक रूपमे भेल
ख. मिथिला पूर्ण अलग भऽ गेल
ग. भाषा उन्नति तुरन्त भेल
घ. साहित्य हटि गेल
उत्तर: क. पश्चिमक स्पर्श अनुभूति पहिल बेर व्यापक रूपमे भेल
व्याख्या: प्रशासनिक परिवर्तन बाहरी प्रभावक माध्यम बनल।

प्रश्न 5256. कोर्ट ऑफ वार्ड्स द्वारा मैथिली आ ओकर लिपिक बहिष्कार ककर प्रतीक अछि?
क. स्थानीय भाषा-संस्कृतिक संस्थागत उपेक्षा
ख. भाषाक सम्मान
ग. लिपिक उन्नति
घ. लोकगीतक विकास
उत्तर: क. स्थानीय भाषा-संस्कृतिक संस्थागत उपेक्षा
व्याख्या: लेख उर्दू-फारसी आ देवनागरीद्वारा स्थानापन्न करबाक बात कहैत अछि।

प्रश्न 5257. महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक गद्दीनशीन होयब किएक महत्त्वपूर्ण बताओल गेल?
क. सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक जीवनमे नव चेतना आयल
ख. कोनो परिवर्तन नहि
ग. साहित्य बन्द भेल
घ. भाषा त्यागल गेल
उत्तर: क. सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक जीवनमे नव चेतना आयल
व्याख्या: हुनक व्यक्तित्व साहित्य-सर्जक कैं आकृष्ट करैत अछि।

प्रश्न 5258. लक्ष्मीश्वर सिंहक व्यक्तित्वक कोन गुण साहित्यकारसभ कैं आकर्षित कएलक?
क. विद्या-व्यसन, दानशीलता, देशभक्ति आ कृपापूर्ण व्यवहार
ख. कठोर दमन
ग. भाषा-विरोध
घ. साहित्य-विरोध
उत्तर: क. विद्या-व्यसन, दानशीलता, देशभक्ति आ कृपापूर्ण व्यवहार
व्याख्या: लेख राजाश्रय आ व्यक्तित्वक सकारात्मक प्रभाव मानैत अछि।

प्रश्न 5259. रमेश्वर सिंहक उल्लेख ककर निरन्तरता दर्शबैत अछि?
क. लक्ष्मीश्वर सिंहक साहित्य-पोषक परम्परा
ख. साहित्यक अन्त
ग. नवजागरण-विरोध
घ. भाषा-विस्मृति
उत्तर: क. लक्ष्मीश्वर सिंहक साहित्य-पोषक परम्परा
व्याख्या: उत्ताराधिकारी सेहो परम्परा कायम रखलनि, से कहल गेल।

प्रश्न 5260. उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम भागमे रूढ़िवादक छाया ककरा बाधित कएलक?
क. बौद्धिक आ साहित्यिक प्रगति
ख. कृषि मात्र
ग. भोजन मात्र
घ. नाटक मंच
उत्तर: क. बौद्धिक आ साहित्यिक प्रगति
व्याख्या: लेख नव प्रवृत्ति पर पुरान छाया आ संघर्ष दुनू देखबैत अछि।

प्रश्न 5261. “मातृभाषानुरागी आ प्रकाशन-सौविध्य” ककर जन्म दैत अछि?
क. मैथिली साहित्यक नव रूप आ नव प्रवृत्ति
ख. भाषा-विलुप्ति
ग. साहित्य-विराम
घ. सांस्कृतिक शून्यता
उत्तर: क. मैथिली साहित्यक नव रूप आ नव प्रवृत्ति
व्याख्या: प्रकाशन सुविधा साहित्यिक नवोत्थानक साधन बनल।

प्रश्न 5262. नवजागरण-प्रसंगसँ आधुनिक मैथिली साहित्यक उदय कोना बुझाइत अछि?
क. मिथिलाक आधुनिक साहित्य नवजागरण, परम्परा, राजाश्रय आ भाषा-संघर्षक जटिल संयोग सँ बनल
ख. मैथिली स्वतः विकसित भेल बिना संघर्ष
ग. कोर्ट ऑफ वार्ड्स केवल कल्याणकारी
घ. परम्परा अप्रासंगिक
उत्तर: क. मिथिलाक आधुनिक साहित्य नवजागरण, परम्परा, राजाश्रय आ भाषा-संघर्षक जटिल संयोग सँ बनल
व्याख्या: लेख आधुनिक मैथिली साहित्यक उगमक मिश्रित ऐतिहासिक स्थितिक विवेचन करैत अछि।

खण्ड ५३२ : विदेह-सदेह १ — आधुनिक मैथिली साहित्यक उदय: लेखक-परम्परा आ परिवर्तन

प्रश्न 5263. कवीश्वर चन्दा झा, जीवन झा, लालदास आदि नामक सूची किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. आधुनिक मैथिली साहित्यक नव प्रवृत्तिक अग्रगामी परम्परा देखाबय लेल
ख. साधारण पाठक-सूची
ग. भोजन-सूची
घ. विवाह-सूची
उत्तर: क. आधुनिक मैथिली साहित्यक नव प्रवृत्तिक अग्रगामी परम्परा देखाबय लेल
व्याख्या: लेख व्यक्तित्वसभक माध्यमे युग-परिवर्तनक धारा रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 5264. विविध साहित्यिक विधाक जन्म देब आ संवर्धन करब कोन युगधर्म देखबैत अछि?
क. आधुनिक मैथिली साहित्यक विधा-विस्तार
ख. साहित्य संकुचन
ग. भाषा-पतन
घ. विधाहीनता
उत्तर: क. आधुनिक मैथिली साहित्यक विधा-विस्तार
व्याख्या: लेख शताब्दी कैँ रचनात्मक विस्तारक काल मानैत अछि।

प्रश्न 5265. विगत शताब्दी कैँ “क्रान्तिकारी युग” कहबाक आधार की अछि?
क. साहित्य, समाज, राजनीति, विज्ञान आ विचारमे नव स्फूर्ति आ पुनर्संस्कार
ख. कुनो परिवर्तन नहि
ग. केवल युद्ध
घ. केवल राजदरबार
उत्तर: क. साहित्य, समाज, राजनीति, विज्ञान आ विचारमे नव स्फूर्ति आ पुनर्संस्कार
व्याख्या: लेख अंग्रेजी राज्यक व्यापक प्रभाव कैँ जीवन-शैली परिवर्तनसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5266. आधुनिक शिक्षा, छापाखाना आ यातायातक अभाव रहितहुँ मैथिली लेखन चलैत रहबाक अर्थ की अछि?
क. मातृभाषा-सृजनक आन्तरिक शक्ति प्रबल छल
ख. लेखन असम्भव
ग. भाषा मृत
घ. साहित्यक रुचि नहि
उत्तर: क. मातृभाषा-सृजनक आन्तरिक शक्ति प्रबल छल
व्याख्या: अभावक बावजूद सृजन परम्परा जोगेलक, ई लेखन-संस्कृतिक दृढ़ता देखबैत अछि।

प्रश्न 5267. मैथिली साहित्य दीर्घ काल संस्कृत-साहित्यक प्रतिछाया सदृश रहल, एहि कथनक अर्थ की अछि?
क. पुरान परम्पराक प्रभाव गहिर छल, मुदा धीरे-धीरे स्वतंत्र नवता आयल
ख. मैथिली साहित्य नहि छल
ग. संस्कृत असंबद्ध
घ. भाषा नष्ट
उत्तर: क. पुरान परम्पराक प्रभाव गहिर छल, मुदा धीरे-धीरे स्वतंत्र नवता आयल
व्याख्या: लेख परम्परा सँ आधुनिकता धरि संक्रमण देखबैत अछि।

प्रश्न 5268. दुइ विश्वयुद्धक बीचक कालमे की प्रमुख चेतना आयल कहल गेल?
क. मैथिली साहित्यक सर्वांगीण समुद्धारक चेतना
ख. पूर्ण मौन
ग. केवल धार्मिक लेखन
घ. केवल पाक-विधि
उत्तर: क. मैथिली साहित्यक सर्वांगीण समुद्धारक चेतना
व्याख्या: एहि कालक लेखनमे नव मनोदशा आ विधागत परिवर्तन देखल गेल।

प्रश्न 5269. विभिन्न विधामे उल्लेख्य परिवर्तन होयब ककर प्रमाण अछि?
क. साहित्यक आधुनिक विस्तार आ प्रयोगशीलता
ख. परम्पराक अन्त
ग. साहित्य-विरोध
घ. लेखकाभाव
उत्तर: क. साहित्यक आधुनिक विस्तार आ प्रयोगशीलता
व्याख्या: विधागत परिवर्तन स्वर्णिम युगक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 5270. लेखक-नामावली कैँ केवल सूची नहि, युग-संकेत किएक मानब चाही?
क. नामसभ मिलि साहित्यिक आन्दोलनक सामाजिक-सांस्कृतिक पंक्ति बनबैत अछि
ख. सूची निष्प्राण अछि
ग. नाम याद करब उद्देश्य
घ. कथा असंबद्ध
उत्तर: क. नामसभ मिलि साहित्यिक आन्दोलनक सामाजिक-सांस्कृतिक पंक्ति बनबैत अछि
व्याख्या: लेख व्यक्तित्वक सामूहिक योगदान पर बल दैत अछि।

प्रश्न 5271. आधुनिक मैथिली साहित्यक उदयमे परम्परा आ नवता कोना एक संग छथि?
क. संस्कृत-प्रभावित आधार पर नव विधा, प्रकाशन आ मातृभाषा-चेतना विकसित भेल
ख. परम्परा पूर्ण हटि गेल
ग. नवता नहि आयल
घ. दूटा विरोधी मात्र
उत्तर: क. संस्कृत-प्रभावित आधार पर नव विधा, प्रकाशन आ मातृभाषा-चेतना विकसित भेल
व्याख्या: लेख संक्रमणक संतुलित व्याख्या करैत अछि।

प्रश्न 5272. लेखक-परम्परा आ परिवर्तनक संयुक्त निष्कर्ष की अछि?
क. बीसम शताब्दीक मैथिली साहित्य पूर्व परम्परा सँ निकलि आधुनिक विधा-विस्तार आ नव चेतनाक युग बनल
ख. साहित्य स्थिर रहल
ग. मैथिली गौण रहल
घ. सृजन बन्द भेल
उत्तर: क. बीसम शताब्दीक मैथिली साहित्य पूर्व परम्परा सँ निकलि आधुनिक विधा-विस्तार आ नव चेतनाक युग बनल
व्याख्या: स्वर्णिम युगक रूपरेखा साहित्यिक नवोत्थानसँ निर्मित अछि।

खण्ड ५३३ : विदेह-सदेह १ — राजेन्द्र पटेलक कविता: हाथ, जड़ आ अस्तित्व-बोध

प्रश्न 5273. राजेन्द्र पटेलक कविता मे “हाथ” बारम्बार ककर प्रतीक बनैत अछि?
क. मनुष्यक पकड़, कर्म, स्मृति आ जड़-खोजक प्रतीक
ख. केवल शरीरक अंग
ग. भोजनक साधन मात्र
घ. विवाह-रीति
उत्तर: क. मनुष्यक पकड़, कर्म, स्मृति आ जड़-खोजक प्रतीक
व्याख्या: कविता हाथकेँ जैविक अंगसँ अधिक अस्तित्वक संकेत बनबैत अछि।

प्रश्न 5274. “धरा बिन शाख” आ “हाथ बिना” अनुभूति कोन बेचैनी व्यक्त करैत अछि?
क. मूलाधारहीनता आ अस्तित्वगत अपूर्णता
ख. पूर्ण सुरक्षा
ग. उत्सव
घ. शारीरिक बल
उत्तर: क. मूलाधारहीनता आ अस्तित्वगत अपूर्णता
व्याख्या: कविता आधार टूटबाक अनुभव सँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 5275. हाथसभक एक-दोसरमे ओझराएब ककर भाव दैत अछि?
क. मानवीय सम्बन्ध, उलझन आ अंतहीन विस्तार
ख. पूर्ण अलगाव मात्र
ग. खेलक दृश्य
घ. किसानक सूची
उत्तर: क. मानवीय सम्बन्ध, उलझन आ अंतहीन विस्तार
व्याख्या: हाथक जाल सामाजिक आ मानसिक उलझनक बिम्ब बनैत अछि।

प्रश्न 5276. बाबाक छड़ीक पकड़ आ बसक लटकल चक्रक स्मरण की बनबैत अछि?
क. पीढ़ी-स्मृति आ दैनिक जीवनक स्पर्श-चित्र
ख. कथा-विवाह
ग. पाक-विधि
घ. राजनीति
उत्तर: क. पीढ़ी-स्मृति आ दैनिक जीवनक स्पर्श-चित्र
व्याख्या: कविता हाथक माध्यमे स्मृति आ अनुभव जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5277. हरक फारक चिन्ह भाग्य-रेखा हाथक कहल गेल, एकर अर्थ की अछि?
क. खेती, श्रम आ भाग्य एक प्रतीक-व्यवस्थामे मिलैत अछि
ख. खेती असंबंधित
ग. भाग्यक कोनो अर्थ नहि
घ. हाथ निष्क्रिय
उत्तर: क. खेती, श्रम आ भाग्य एक प्रतीक-व्यवस्थामे मिलैत अछि
व्याख्या: मिट्टीक रेखा आ हथेली रेखा एक-दोसराक प्रतिध्वनि बनैत अछि।

प्रश्न 5278. हाथक जड़ पर आक्रमणक बिम्ब की संकेत करैत अछि?
क. पहचानक मूल कारण/आधार तक पहुँचबाक बेचैनी
ख. केवल युद्ध
ग. बालगीत
घ. पंजिका
उत्तर: क. पहचानक मूल कारण/आधार तक पहुँचबाक बेचैनी
व्याख्या: कविता जड़-खोजक दार्शनिक छवि बनबैत अछि।

प्रश्न 5279. श्वेत धरापर रोशनाईसँ पसरल हाथक अर्थ कोना पढ़ल जा सकैत अछि?
क. लेखन, स्मृति आ अस्तित्वक निशान बनबैत हाथ
ख. रंग-रोगन मात्र
ग. भोजन-पात्र
घ. संगीत-स्वर
उत्तर: क. लेखन, स्मृति आ अस्तित्वक निशान बनबैत हाथ
व्याख्या: कविता लिखित चिह्न आ शारीरिक अनुभूति कैं जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5280. मस्तिष्क-कोशिका मे हाथक प्रवेश ककर संकेत अछि?
क. हाथक बिम्ब चेतना आ अवचेतन धरि पैठि गेल अछि
ख. हाथ गायब अछि
ग. कथा समाप्त
घ. आनन्द मात्र
उत्तर: क. हाथक बिम्ब चेतना आ अवचेतन धरि पैठि गेल अछि
व्याख्या: कविता बाह्य अंगकैं मानसिक संरचना बनबैत अछि।

प्रश्न 5281. राजेन्द्र पटेलक कविता अनुवाद-सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. गुजराती सँ अंग्रेजी आ अंग्रेजी सँ मैथिली आनि भाषा-पार संवेदना जोड़ैत अछि
ख. केवल मैथिली मूल गीत
ग. कोनो अनुवाद नहि
घ. केवल पाक-विधि
उत्तर: क. गुजराती सँ अंग्रेजी आ अंग्रेजी सँ मैथिली आनि भाषा-पार संवेदना जोड़ैत अछि
व्याख्या: कविता भाषिक पुलक उदाहरण अछि।

प्रश्न 5282. एहि कविता-केंद्रित खण्डक सार की अछि?
क. हाथक बिम्ब सँ मनुष्य, धरती, स्मृति, श्रम आ जड़-चेतना खोजल गेल अछि
ख. कविता केवल हास्य अछि
ग. हाथ अर्थहीन अछि
घ. कविता पाबनि-विधि अछि
उत्तर: क. हाथक बिम्ब सँ मनुष्य, धरती, स्मृति, श्रम आ जड़-चेतना खोजल गेल अछि
व्याख्या: कविता प्रतीक-प्रधान आधुनिक संवेदना प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड ५३४ : विदेह-सदेह १ — राजेन्द्र विमल: व्यक्तित्व आ साहित्यिक प्रतिष्ठा

प्रश्न 5283. राजेन्द्र विमलकैं नेपालक मैथिली साहित्यक “स्तम्भ” किएक कहल गेल?
क. मानवीय संवेदना, कथा, समालोचना, गीत-गजल आ बहुभाषिक लेखनक कारण
ख. केवल पाक-कला
ग. केवल खेल
घ. केवल चित्रकला
उत्तर: क. मानवीय संवेदना, कथा, समालोचना, गीत-गजल आ बहुभाषिक लेखनक कारण
व्याख्या: परिचय हुनकर व्यापक साहित्यिक प्रभाव कैं रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 5284. मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषामे हुनक प्राज्ञता कोन मूल्य जोड़ैत अछि?
क. सीमापार बहुभाषिक साहित्यिक संवाद
ख. भाषा-त्याग
ग. एकभाषिकता
घ. काव्य-विरोध
उत्तर: क. सीमापार बहुभाषिक साहित्यिक संवाद
व्याख्या: विमल नेपाल-जनकपुरक बहुभाषिक साहित्य-संसारक प्रतिनिधि छथि।

प्रश्न 5285. भाषामे प्राञ्जलता आ सुललित शब्द-चयन हुनक लेखनक कोन विशेषता बताओल गेल?
क. पाठकक हृदयमे सहज प्रवेश करबाक शक्ति
ख. दुर्गम गद्य मात्र
ग. निर्जीव लेखन
घ. संगीतहीनता
उत्तर: क. पाठकक हृदयमे सहज प्रवेश करबाक शक्ति
व्याख्या: परिचय शैलीगत सजीवता पर विशेष बल दैत अछि।

प्रश्न 5286. “कम लिखिकऽ यथेष्ट यश” कथन हुनकर साहित्यिक छविमे की जोड़ैत अछि?
क. रचना-गुण मात्रा सँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि
ख. ओ अप्रसिद्ध छथि
ग. किछु लिखने नहि
घ. यश असंबंधित
उत्तर: क. रचना-गुण मात्रा सँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि
व्याख्या: लेखनक प्रभावक मूल्यांकन मात्र संख्यासँ नहि होइत।

प्रश्न 5287. मानवीय संवेदनाक अभिव्यक्ति मे हुनक कलम “बेजोड़” कहल गेल — एकर अर्थ की अछि?
क. हृदयगत पीड़ा, प्रेम आ करुणा कैं गहिर रूपे व्यक्त करबाक क्षमता
ख. केवल व्याकरण कौशल
ग. केवल हास्य
घ. केवल आँकड़ा
उत्तर: क. हृदयगत पीड़ा, प्रेम आ करुणा कैं गहिर रूपे व्यक्त करबाक क्षमता
व्याख्या: विमलक रचना-संसार भाव-संवेदनाक कारण विशेष मानल गेल।

प्रश्न 5288. त्रिभुवन विश्वविद्यालय अन्तर्गत अध्यापनक उल्लेख ककर संकेत अछि?
क. साहित्यकारक अकादमिक गुरु-भूमिका
ख. राजनीतिक पद
ग. व्यापारिक भूमिका
घ. गीत-मंच मात्र
उत्तर: क. साहित्यकारक अकादमिक गुरु-भूमिका
व्याख्या: उन्हर साहित्यिक जीवन शिक्षण-संस्कारसँ सेहो जुड़ल अछि।

प्रश्न 5289. जनकपुरधामक हुनक घर साहित्य-जिज्ञासु सभक अखाड़ा जकाँ बनल रहबाक अर्थ की अछि?
क. साहित्यिक संवादक खुला केन्द्र बनब
ख. घर खाली छल
ग. साहित्यक निषेध
घ. निजता मात्र
उत्तर: क. साहित्यिक संवादक खुला केन्द्र बनब
व्याख्या: विमलक व्यक्तित्व साहित्यिक पीढ़ी-निर्माणसँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 5290. धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरु कहल जाएब कोन परम्परा देखबैत अछि?
क. गुरु-शिष्य, प्रेरणा आ साहित्यिक पीढ़ी-सततता
ख. विच्छेद
ग. केवल संस्था
घ. संगीत-मंडली
उत्तर: क. गुरु-शिष्य, प्रेरणा आ साहित्यिक पीढ़ी-सततता
व्याख्या: परिचय साहित्यिक नेतृत्वक सामाजिक रूप दिखबैत अछि।

प्रश्न 5291. राजेन्द्र विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाभ होयबाक उल्लेख ककर परिचयात्मक भूमिका निभबैत अछि?
क. लेखक-नाम आ साहित्यिक नामक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि
ख. कोनो अर्थ नहि
ग. भोजन-सूची
घ. गीतक राग
उत्तर: क. लेखक-नाम आ साहित्यिक नामक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: परिचय लेखकक पहिचान कैं विस्तृत करैत अछि।

प्रश्न 5292. राजेन्द्र विमलक परिचय पाठक लेल हुनक कोन छवि बनबैत अछि?
क. राजेन्द्र विमल संवेदना, शैली, आलोचना, गीत-गजल आ साहित्यिक मार्गदर्शनक बहुआयामी व्यक्तित्व छथि
ख. ओ केवल एक कथा-पात्र
ग. ओ पाबनि-लेखक मात्र
घ. ओ अज्ञात कलाकार
उत्तर: क. राजेन्द्र विमल संवेदना, शैली, आलोचना, गीत-गजल आ साहित्यिक मार्गदर्शनक बहुआयामी व्यक्तित्व छथि
व्याख्या: परिचय हुनका मैथिली साहित्यक केन्द्रीय साधक रूपमे रेखांकित करैत अछि।

खण्ड ५३५ : विदेह-सदेह १ — राजेन्द्र विमलक गजल: सपना, दिवाली आ परिवर्तन

प्रश्न 5293. पहिल गजलमे सपना फूलबासँ पहिले झरि जाएब ककर प्रतीक अछि?
क. अधूरा आकांक्षा आ समयपूर्व विफलता
ख. पूर्ण सफलता
ग. उत्सवक उल्लास
घ. पाक-विधि
उत्तर: क. अधूरा आकांक्षा आ समयपूर्व विफलता
व्याख्या: गजल आरम्भे नष्ट होइत स्वप्नक करुण भाव रचैत अछि।

प्रश्न 5294. कलमक सिन्दूरदान पएबासँ पहिले गीतक कुमारावस्थामे मरब की संकेत करैत अछि?
क. रचनात्मक संभावनाक असमय मृत्यु
ख. गीतक विवाह सफल
ग. कलम निष्क्रिय
घ. आनन्द-नृत्य
उत्तर: क. रचनात्मक संभावनाक असमय मृत्यु
व्याख्या: रचना जन्म लेबासँ पूर्व टूटि जाएब गजलकैं करुण बनबैत अछि।

प्रश्न 5295. भादवक अन्हरिया, मेघ आ कोजगरा छविसभ ककर भावभूमि बनबैत अछि?
क. अँधार, प्रतीक्षा आ उजियारक अस्थिर संघर्ष
ख. मौसम-रिपोर्ट
ग. कृषि-सूची
घ. युद्धक योजना
उत्तर: क. अँधार, प्रतीक्षा आ उजियारक अस्थिर संघर्ष
व्याख्या: प्रकृति-बिम्ब मनोदशाक सहगामी बनैत अछि।

प्रश्न 5296. नदी उफनाएल रहितहुँ बालू-पाथरक बिछान बनबाक भाव की अछि?
क. उत्कट जीवनधारा अन्ततः शुष्कता वा थम्हाव मे बदलि सकैत अछि
ख. नदी सदिखन बढ़ैत रहत
ग. बालू नहि होइत
घ. पानी अप्रासंगिक
उत्तर: क. उत्कट जीवनधारा अन्ततः शुष्कता वा थम्हाव मे बदलि सकैत अछि
व्याख्या: गजल परिवर्तन आ क्षरणक अनिवार्यता स्वीकारैत अछि।

प्रश्न 5297. “जगमग सृष्टि करए तखने दिवाली” भावक मूल सन्देश की अछि?
क. प्रेम-चेतना जागल बिनु बाहरी उत्सव अधूरा अछि
ख. केवल दीप खरीदब
ग. उत्सव निरर्थक
घ. अन्हार चाही
उत्तर: क. प्रेम-चेतना जागल बिनु बाहरी उत्सव अधूरा अछि
व्याख्या: दिवाली भीतरक प्रेम-प्रकाशसँ सार्थक कहल गेल।

प्रश्न 5298. जीर्ण-पुरातनकेँ हुड़का-लोली बनाबयक आह्वान ककर संकेत अछि?
क. नव चेतना लेल पुरान जड़ता हटाबयक
ख. पुरान जड़ता बचाबयक
ग. सृजन रोकयक
घ. अन्धकार बढ़ाबयक
उत्तर: क. नव चेतना लेल पुरान जड़ता हटाबयक
व्याख्या: गजल नवीकरणक लोक-उत्सवी बिम्ब प्रयोग करैत अछि।

प्रश्न 5299. स्नेहक धार बहि जग ज्योतिर्मय बनब कथन कोन मूल्य पर बल दैत अछि?
क. प्रेम आ करुणाक सामूहिक प्रकाश
ख. धन-संचय
ग. अलगाव
घ. उदासी
उत्तर: क. प्रेम आ करुणाक सामूहिक प्रकाश
व्याख्या: दिवालीक अर्थ संबंधक उजियारसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 5300. रामशक्ति आगू रावण न टिकब कोन नैतिक प्रतीक बनैत अछि?
क. अधर्म पर नैतिक शक्तिक विजय
ख. रावणक विजय
ग. अनीति-अंधकार
घ. केवल युद्ध-गाथा
उत्तर: क. अधर्म पर नैतिक शक्तिक विजय
व्याख्या: दिवालीक पारम्परिक प्रतीक सामाजिक-नैतिक अर्थ पबैत अछि।

प्रश्न 5301. दू गजल मिलि राजेन्द्र विमलक कोन पक्ष देखबैत अछि?
क. करुण स्वप्न-भंग आ प्रेमपूर्ण नव-प्रकाशक द्वंद्व
ख. केवल हास्य
ग. केवल बालगीत
घ. केवल पाक-विधि
उत्तर: क. करुण स्वप्न-भंग आ प्रेमपूर्ण नव-प्रकाशक द्वंद्व
व्याख्या: विमल अँधार आ उजियार दुनू संवेदनाकेँ साधैत छथि।

प्रश्न 5302. एहि गजल-खण्डक सार की अछि?
क. सपना, क्षरण, प्रेम, उजियार आ नवजीवनक मूल्य गजलमे घनिष्ठ अछि
ख. गजल तिथि-सूची अछि
ग. कविता निरर्थक अछि
घ. उत्सव मात्र पटाखा अछि
उत्तर: क. सपना, क्षरण, प्रेम, उजियार आ नवजीवनक मूल्य गजलमे घनिष्ठ अछि
व्याख्या: विमलक गजल जीवन-संवेदनाक गहिर बिम्ब रचैत अछि।

खण्ड ५३६ : विदेह-सदेह १ — “तृष्णा”: पात्र, इच्छा आ वैवाहिक असंतोष

प्रश्न 5303. “तृष्णा”मे सिकिलिया आ सोनावतीक आपसी तुलना कथाक मूल विषय कोना खोलैत अछि?
क. दुनू स्त्री अपन-अपन पति सँ असंतुष्ट आ दोसरक जीवनक प्रति आकर्षित अछि
ख. दुनू पूर्ण सुखी छथि
ग. दुनू अजनबी छथि
घ. दुनू साधु छथि
उत्तर: क. दुनू स्त्री अपन-अपन पति सँ असंतुष्ट आ दोसरक जीवनक प्रति आकर्षित अछि
व्याख्या: कथा तृष्णा कैं अभाव आ तुलना सँ उत्पन्न देखबैत अछि।

प्रश्न 5304. राजदेबा ककर रूपमे उभरैत अछि?
क. कमाऊ, गंभीर, घर चलाबयवाला मुदा भाव-स्पर्शमे रूख पात्र
ख. मद्यपी आवारा
ग. ढोलकिया
घ. कवि-गायक
उत्तर: क. कमाऊ, गंभीर, घर चलाबयवाला मुदा भाव-स्पर्शमे रूख पात्र
व्याख्या: सोनावती ओकरा चाहैत कारण स्थिरता देखैत अछि, सिकिलिया ओकरा नीरस मानैत अछि।

प्रश्न 5305. देबलरैना ककर रूपमे उभरैत अछि?
क. चंचल, आकर्षक, ढोलकिया, परन्तु मद्यपी आ अस्थिर पात्र
ख. पूर्ण संयमी गृहस्थ
ग. अस्पताल कर्मचारी
घ. मौन विद्वान
उत्तर: क. चंचल, आकर्षक, ढोलकिया, परन्तु मद्यपी आ अस्थिर पात्र
व्याख्या: सिकिलिया ओकर लय-रंगसँ आकृष्ट, सोनावती ओकर अव्यवस्था सँ पीड़ित अछि।

प्रश्न 5306. सिकिलियाक देबलरैनाप्रति आकर्षणक आधार की अछि?
क. रंग, शरीर, बाँसुरी/ढोलक आ कल्पित रसमय जीवन
ख. धर्मशास्त्र
ग. पंजी
घ. साहित्यिक आलोचना
उत्तर: क. रंग, शरीर, बाँसुरी/ढोलक आ कल्पित रसमय जीवन
व्याख्या: ओ अपन पति राजदेबाक नीरसता सँ विपरीत छवि खोजैत अछि।

प्रश्न 5307. सोनावती राजदेबाकैं किएक पसिन्न करैत देखाइत अछि?
क. ओ गंभीर, कमाऊ, घर-परिवार निभेनिहार अछि
ख. ओ मद्यपी अछि
ग. ओ हिंसक अछि
घ. ओ कुछ नहि करैत
उत्तर: क. ओ गंभीर, कमाऊ, घर-परिवार निभेनिहार अछि
व्याख्या: सोनावती अपन अस्थिर पति सँ त्रस्त अछि आ स्थिरता चाहैत अछि।

प्रश्न 5308. “जे भेटैत छै, तकर मोल नै बुझाइ” कथाक मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष कोना अछि?
क. लोग अपन उपलब्ध जीवनक अच्छाई कम, अभाव अधिक देखैत अछि
ख. सब पूर्ण सन्तुष्ट
ग. तुलना समाप्त
घ. इच्छा नहि रहैत
उत्तर: क. लोग अपन उपलब्ध जीवनक अच्छाई कम, अभाव अधिक देखैत अछि
व्याख्या: कथा इच्छा आ असंतोषक मनोविज्ञान पर आधारित अछि।

प्रश्न 5309. कथा मे “नो वन इज परफेक्ट” प्रकारक निष्कर्षक भावार्थ की अछि?
क. कोनो व्यक्ति पूर्ण नहि, आकर्षण चयनात्मक देखाइत अछि
ख. सभ पूर्ण छथि
ग. दोष असंभव
घ. दाम्पत्य आसान अछि
उत्तर: क. कोनो व्यक्ति पूर्ण नहि, आकर्षण चयनात्मक देखाइत अछि
व्याख्या: पात्र दोसरक पति मे गुण देखैत, दोष नहि देखैत।

प्रश्न 5310. सिकिलिया आ सोनावतीक पति-बदलाव चर्चा सामाजिक मर्यादा पर की प्रश्न उठबैत अछि?
क. इच्छा, देह, दाम्पत्य आ समाज-बंधनक टकराव
ख. बाल-साहित्यक प्रश्न
ग. राजनीतिक पद
घ. भोजन-सूची
उत्तर: क. इच्छा, देह, दाम्पत्य आ समाज-बंधनक टकराव
व्याख्या: कथा लोक-समाजक भीतर दबी इच्छाक असुविधाजनक चित्रण अछि।

प्रश्न 5311. छह मास बाद दुनू स्त्रीक अपन-अपन पति लग घुरब कथाक तर्क की सिद्ध करैत अछि?
क. कल्पित आकर्षण व्यवहारिक जीवनमे स्थायी समाधान नहि भेल
ख. दुनू सदा सुखी भेल
ग. दुनू गायब
घ. दुनू साध्वी बनलीह
उत्तर: क. कल्पित आकर्षण व्यवहारिक जीवनमे स्थायी समाधान नहि भेल
व्याख्या: तृष्णा क्षणिक समाधानक भ्रम खोलैत अछि।

प्रश्न 5312. “तृष्णा”क शीर्षक पात्रसभक जीवनसँ कोना मेल खाइत अछि?
क. इच्छा, अभाव आ तुलनाक बुझि न सकल प्यास कथा चलबैत अछि
ख. तृष्णा जल-पान मात्र
ग. शीर्षक असंबद्ध
घ. कथा उत्सव पर अछि
उत्तर: क. इच्छा, अभाव आ तुलनाक बुझि न सकल प्यास कथा चलबैत अछि
व्याख्या: कथा कामना आ असंतोषक गोलचक्कर रचैत अछि।

खण्ड ५३७ : विदेह-सदेह १ — “तृष्णा”: देह, गरीबी आ लोक-भाषाक यथार्थ

प्रश्न 5313. चंचलिया प्रसंग “तृष्णा”मे किएक कड़ा सामाजिक धरातल बनबैत अछि?
क. देह, गरीबी, हिंसा आ पुरुष-स्वामित्वक क्रूरता देखबैत अछि
ख. उत्सवक उल्लास
ग. बालकथा
घ. पाक-विधि
उत्तर: क. देह, गरीबी, हिंसा आ पुरुष-स्वामित्वक क्रूरता देखबैत अछि
व्याख्या: कथा आरम्भे देह-इच्छा आ हिंसा कैँ यथार्थ रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 5314. राजदेबाक परिवारिक बोझ ककरा दर्शबैत अछि?
क. विधवा माय, पत्नी, बेटा आ मृत बहिन बाद घर सँघारबाक आर्थिक दायित्व
ख. पूर्ण विलासिता
ग. कुनो जिम्मेदारी नहि
घ. राजकीय जीवन
उत्तर: क. विधवा माय, पत्नी, बेटा आ मृत बहिन बाद घर सँघारबाक आर्थिक दायित्व
व्याख्या: राजदेबा नीरस भए सकैत, मुदा जिम्मेदार पात्र अछि।

प्रश्न 5315. सिकिलियाक श्रृंगार, स्वाद, सिनेमा आ परबा-पोसाकक चाह कोन सामाजिक आयाम दैत अछि?
क. गरीबीक भीतर देहिक-सांस्कृतिक चाह आ उपभोग-आकांक्षा
ख. पूर्ण तपस्या
ग. विरक्ति
घ. शोधकार्य
उत्तर: क. गरीबीक भीतर देहिक-सांस्कृतिक चाह आ उपभोग-आकांक्षा
व्याख्या: कथा अभावग्रस्त स्त्रीक इच्छाक उपेक्षित जगत देखबैत अछि।

प्रश्न 5316. देबलरैनाक ढोलक-गुमकी आ बाँसुरीक बिम्ब सिकिलियाक कल्पनामे की करैत अछि?
क. रोजमर्रा नीरसता सँ अलग रसभर जीवनक स्वप्न जगबैत अछि
ख. भय मात्र
ग. घृणा मात्र
घ. पंजी-संकेत
उत्तर: क. रोजमर्रा नीरसता सँ अलग रसभर जीवनक स्वप्न जगबैत अछि
व्याख्या: संगीतिक देहभाषा आकर्षणक माध्यम बनैत अछि।

प्रश्न 5317. सोनावतीक फाटल नूआ आ मारपीटक शिकायत कोन यथार्थ खोलैत अछि?
क. दारू, गरीबी, वैवाहिक हिंसा आ स्त्री-अपमान
ख. समृद्धि
ग. सुखी दाम्पत्य
घ. उत्सव मात्र
उत्तर: क. दारू, गरीबी, वैवाहिक हिंसा आ स्त्री-अपमान
व्याख्या: कथा स्त्रीक शरीर पर लिखल घरेलू हिंसा देखबैत अछि।

प्रश्न 5318. रजदेबामाइक हस्तक्षेप कथा मे कोन आवाज प्रतिनिधित्व करैत अछि?
क. परिवार-समाजक नैतिक बंधन आ स्त्री-नियंत्रणक लोक-स्वर
ख. बाहरी न्यायालय
ग. मीडिया
घ. पुस्तकालय
उत्तर: क. परिवार-समाजक नैतिक बंधन आ स्त्री-नियंत्रणक लोक-स्वर
व्याख्या: ओ लोक-नैतिकता आ परिवार-बंधनक पक्ष सँ प्रतिक्रिया दैत अछि।

प्रश्न 5319. फ्रूटीक खाली डिब्बा प्रसंग ककर प्रतीक बनैत अछि?
क. उपभोग-लालसा, अभाव आ चमकदार संसारक दूरस्थ आकर्षण
ख. धार्मिक कलश
ग. वैज्ञानिक यंत्र
घ. राजकीय मुहर
उत्तर: क. उपभोग-लालसा, अभाव आ चमकदार संसारक दूरस्थ आकर्षण
व्याख्या: गरीब संसारमे फेकल डिब्बो चाहक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 5320. देवलरैना द्वारा सिनेमा/होटल/घुमबाक प्रस्ताव सिकिलियाकेँ किएक खींचैत अछि?
क. ओहि प्रस्तावमे उपेक्षित इच्छा, मनोरंजन आ मानोचित देखभालक वादा अछि
ख. ओ धर्मशास्त्र सुनबैत अछि
ग. ओ काम करब कहैत अछि
घ. ओ पंजी लिखैत अछि
उत्तर: क. ओहि प्रस्तावमे उपेक्षित इच्छा, मनोरंजन आ मानोचित देखभालक वादा अछि
व्याख्या: सिकिलिया अपन नीरस गृहस्थी सँ अलग अनुभव चाहैत अछि।

प्रश्न 5321. कथाक लोक-भाषा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. पात्रक जातीय, वर्गीय, देहिक आ भावनात्मक यथार्थ कैं सीधा स्वर दैत अछि
ख. भाषा असंबद्ध
ग. कथा निर्जीव बनैत अछि
घ. केवल शुद्ध व्याकरण उद्देश्य
उत्तर: क. पात्रक जातीय, वर्गीय, देहिक आ भावनात्मक यथार्थ कैं सीधा स्वर दैत अछि
व्याख्या: लोकवाणी कथा कैं जीवित आ निर्भीक बनबैत अछि।

प्रश्न 5322. “तृष्णा”क देह-गरीबी-विमर्शक प्रमुख अर्थ की अछि?
क. “तृष्णा” इच्छा कैं नैतिक उपदेश नहि, गरीबी, देह, हिंसा आ लोक-समाजक जटिलता मे पढ़ैत अछि
ख. कथा केवल हास्य
ग. कथा पूर्ण पौराणिक
घ. कथा पाक-विधि
उत्तर: क. “तृष्णा” इच्छा कैं नैतिक उपदेश नहि, गरीबी, देह, हिंसा आ लोक-समाजक जटिलता मे पढ़ैत अछि
व्याख्या: कथाक यथार्थवादी शक्ति ओकर लोक-भाषिक जीवन-चित्रणमे अछि।

खण्ड ५३८ : विदेह-सदेह १ — “तृष्णा”: दाम्पत्य, समाज-बंधन आ मनोविज्ञान

प्रश्न 5323. सिकिलिया-सोनावतीक छह मास तक न घुरब कथामे की संकेत करैत अछि?
क. इच्छा सामाजिक सीमा तोड़ि व्यवहारिक प्रयोग बनि गेल
ख. दू दिनक उत्सव
ग. केवल यात्रा
घ. सपना मात्र
उत्तर: क. इच्छा सामाजिक सीमा तोड़ि व्यवहारिक प्रयोग बनि गेल
व्याख्या: स्त्री-द्वय कल्पना सँ बाहर निकलि जीवन-बदलावक प्रयोग करैत अछि।

प्रश्न 5324. पंचैती भेलाक बादो दुनू स्त्री अपन पति लग नहि घुरबाक किएक तैयार नहि भेलीह?
क. कारण असंतोष मात्र क्षणिक नहि, गहिर वैवाहिक अनुभवसँ जुड़ल छल
ख. ओ रास्ता भुलि गेलीह
ग. पति अनुपस्थित
घ. समाज नहि छल
उत्तर: क. कारण असंतोष मात्र क्षणिक नहि, गहिर वैवाहिक अनुभवसँ जुड़ल छल
व्याख्या: कथा विवाहक भीतर दबा असंतोषक शक्ति देखबैत अछि।

प्रश्न 5325. छह मास बाद अपन-अपन पति लग कनैत घुरब कोन भाव जगबैत अछि?
क. तृष्णा आ यथार्थक टकरावसँ उपजल पछतावा/स्वीकार
ख. पूर्ण विजय
ग. उत्सव
घ. कोनो परिवर्तन नहि
उत्तर: क. तृष्णा आ यथार्थक टकरावसँ उपजल पछतावा/स्वीकार
व्याख्या: घुरब सुखी समाधान नहि, अनुभवक बादक विडम्बनापूर्ण स्वीकार अछि।

प्रश्न 5326. दुनू स्त्रीक फेर एक-दोसर पर आरोप ककर मनोविज्ञान देखबैत अछि?
क. दोष दोसरमे देखबाक आ अपन चयनसँ बचबाक प्रवृत्ति
ख. पूर्ण आत्मस्वीकार
ग. मौन साधना
घ. साहित्य-चर्चा
उत्तर: क. दोष दोसरमे देखबाक आ अपन चयनसँ बचबाक प्रवृत्ति
व्याख्या: वापसी बादो तुलना समाप्त नहि होइत।

प्रश्न 5327. सोनावती राजदेबाकेँ “गुम्मा” कहि आलोचना किएक करैत अछि?
क. स्थिरता भेटलाक बाद ओकर नीरसता खलैत अछि
ख. ओ हिंसक अछि
ग. ओ खर्चालु अछि
घ. ओ ढोलकिया अछि
उत्तर: क. स्थिरता भेटलाक बाद ओकर नीरसता खलैत अछि
व्याख्या: जे गुण चाहल छल, ओही व्यावहारिक जीवनमे कमी बनि गेल।

प्रश्न 5328. सिकिलिया देबलरैनाकेँ गुंडा, नशेबाज, लापरवाह कहि किएक लौटैत अछि?
क. आकर्षणक पीछे छिपल दोष व्यवहारिक जीवनमे असह्य भेल
ख. देबलरैना पूर्ण आदर्श
ग. नशा नहि
घ. कथा झूठ
उत्तर: क. आकर्षणक पीछे छिपल दोष व्यवहारिक जीवनमे असह्य भेल
व्याख्या: कथा बाहरी आकर्षणक सीमाक उद्घाटन करैत अछि।

प्रश्न 5329. प्रो. सत्यनारायणक टिप्पणी कथा मे ककर प्रतिनिधित्व करैत अछि?
क. मनोवैज्ञानिक/सैद्धान्तिक व्याख्याक आवाज
ख. भोजनकार
ग. नायक
घ. बालक
उत्तर: क. मनोवैज्ञानिक/सैद्धान्तिक व्याख्याक आवाज
व्याख्या: ओ पात्रक घटनाकेँ सामान्य मानवीय प्रवृत्ति सँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 5330. गंभीर पति चाहनिहार स्त्री आ चंचल पति चाहनिहार स्त्रीक उलट-पुलट ककर व्यंग्य अछि?
क. मानवीय असंतोषक चिरन्तन चक्र
ख. पूर्ण संतोष
ग. नैतिक पूर्णता
घ. अधिकार समाप्त
उत्तर: क. मानवीय असंतोषक चिरन्तन चक्र
व्याख्या: कथा चाह आ उपलब्धिक उलटबाँस बनबैत अछि।

प्रश्न 5331. रजदेबामाइक “समाज आ परिवारक बंधन टूटत...” कथन ककर चिंता व्यक्त करैत अछि?
क. व्यक्ति-इच्छा से सामाजिक व्यवस्था अस्थिर होयबाक भय
ख. पूर्ण स्वतंत्रताक उत्सव
ग. बालसाहित्यक प्रश्न
घ. भोजन-विवरण
उत्तर: क. व्यक्ति-इच्छा से सामाजिक व्यवस्था अस्थिर होयबाक भय
व्याख्या: लोक-समाज व्यवस्था-बंधनक टूटनसँ भयभीत अछि।

प्रश्न 5332. “तृष्णा”क दाम्पत्य-मनोविज्ञानसँ की बोध होइत अछि?
क. “तृष्णा” दाम्पत्यक असंतोष केँ इच्छा, प्रयोग, पछतावा आ सामाजिक बंधनक चक्रमे देखबैत अछि
ख. कथा एकरेखा सुखान्त
ग. कथा दाम्पत्य-विरोध नहि
घ. कथा केवल नैतिक श्लोक
उत्तर: क. “तृष्णा” दाम्पत्यक असंतोष केँ इच्छा, प्रयोग, पछतावा आ सामाजिक बंधनक चक्रमे देखबैत अछि
व्याख्या: कहानी मानवीय अधूरापनक जटिल लोकमनोविज्ञान रचैत अछि।

खण्ड ५३९ : विदेह-सदेह १ — डॉ. रमानन्द झा “रमण”: जीवन आ सगर राति दीप जरय

प्रश्न 5333. डॉ. रमानन्द झा “रमण”क परिचयमे हुनक प्रमुख साहित्यिक क्षेत्र की अछि?
क. समीक्षा, सम्पादन, अनुवाद आ कथा-विमर्श
ख. केवल गायन
ग. केवल चित्रकला
घ. केवल पाक-विधि
उत्तर: क. समीक्षा, सम्पादन, अनुवाद आ कथा-विमर्श
व्याख्या: परिचय हुनका आलोचक-संपादक आ साहित्य-संगठक रूपमे स्थापित करैत अछि।

प्रश्न 5334. हुनक मौलिक समीक्षात्मक कृतिसूची ककर प्रमाण अछि?
क. मैथिली साहित्य, कविता, राजनीति आ आलोचना पर दीर्घ कार्य
ख. अल्प लेखन
ग. साहित्य-विमुखता
घ. केवल गीत
उत्तर: क. मैथिली साहित्य, कविता, राजनीति आ आलोचना पर दीर्घ कार्य
व्याख्या: सूची हुनक आलोचनात्मक सक्रियताक विस्तार देखबैत अछि।

प्रश्न 5335. मानवाधिकार घोषणा अनुवादक उल्लेख हुनकर काजमे की जोड़ैत अछि?
क. साहित्य सँ आगे सामाजिक-वैश्विक पाठक मैथिलीकरण
ख. केवल नाटक
ग. भोजन-रचना
घ. व्यक्तिगत पत्र
उत्तर: क. साहित्य सँ आगे सामाजिक-वैश्विक पाठक मैथिलीकरण
व्याख्या: अनुवाद मैथिली कैं विश्व-पाठसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5336. “बहुत दिनक बाद मिथिलाक ग्रामांचल मे सगर राति दीप जरयक आयोजन” कथनक भाव की अछि?
क. कथा-परम्परा शहरसँ गाम दिस फेरि आयल
ख. गाममे साहित्यक निषेध
ग. कथा समाप्त
घ. केवल संगीत सभा
उत्तर: क. कथा-परम्परा शहरसँ गाम दिस फेरि आयल
व्याख्या: लेख आयोजनक ग्रामीण पुनरागमन पर प्रसन्नता व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 5337. हटनी, घोघरडीहा आ डयोढ़क पूर्व आयोजनक उल्लेख किएक अछि?
क. सगर रातिक ऐतिहासिक निरन्तरता देखाबय लेल
ख. तिथि-संग्रह मात्र
ग. भोजन-स्थान
घ. यात्रा-सूची
उत्तर: क. सगर रातिक ऐतिहासिक निरन्तरता देखाबय लेल
व्याख्या: पूर्व घटनासभ वर्तमान आयोजनक परम्परा बनबैत अछि।

प्रश्न 5338. “शहरे शहरे बौआए सगर राति गाम दिस आएल” कथनमे कोन भाव अछि?
क. साहित्यिक यात्रा शहर केन्द्रितता छोड़ि ग्रामांचलमे प्रवेश करैत अछि
ख. गाम छोड़ि देलक
ग. साहित्य बंद भेल
घ. केवल रेलयात्रा
उत्तर: क. साहित्यिक यात्रा शहर केन्द्रितता छोड़ि ग्रामांचलमे प्रवेश करैत अछि
व्याख्या: वाक्य साहित्यिक आन्दोलनक स्थल-परिवर्तन देखबैत अछि।

प्रश्न 5339. अशोक कुमार झा “अविचल”क धन्यवाद किएक कएल गेल?
क. ग्रामांचलमे आयोजन सम्भव बनेबाक भूमिकालेल
ख. कथा रोकबाक लेल
ग. आयोजन छोड़बाक लेल
घ. केवल धन संग्रह
उत्तर: क. ग्रामांचलमे आयोजन सम्भव बनेबाक भूमिकालेल
व्याख्या: ओ ग्राम-आधारित आयोजनक प्रेरक मानल गेलाह।

प्रश्न 5340. कतेको गोटे आयोजन बन्द करबाक सलाह देलाक बावजूद दीप जरैत रहल — ई की बतबैत अछि?
क. कथाकार आ मातृभाषा अनुरागीक दृढ़ सामूहिकता
ख. आन्दोलन समाप्त
ग. कथा अनुत्साह
घ. भाषा-विस्मृति
उत्तर: क. कथाकार आ मातृभाषा अनुरागीक दृढ़ सामूहिकता
व्याख्या: विरोध/निराशाक बावजूद कार्यक्रम चलैत रहल।

प्रश्न 5341. काठमांडूसँ कोलकाता, विराटनगरसँ बनारस आदि स्थानक उल्लेख ककर संकेत अछि?
क. सगर रातिक भौगोलिक विस्तार आ साहित्यिक नेटवर्क
ख. भ्रमण-पर्यटन मात्र
ग. कथा-विरोध
घ. भोजन-यात्रा
उत्तर: क. सगर रातिक भौगोलिक विस्तार आ साहित्यिक नेटवर्क
व्याख्या: कार्यक्रम अनेक नगर-क्षेत्रमे फैलल।

प्रश्न 5342. रमणजीक सगर राति-बोधक केन्द्रीय बात की अछि?
क. रमणजी सगर राति कैँ मैथिली कथा-जागरणक जीवित आन्दोलन रूपमे देखैत छथि
ख. ओ आयोजनक विरोधी छथि
ग. ओ केवल आत्मकथा लिखैत छथि
घ. ओ पाबनि-वर्णन करैत छथि
उत्तर: क. रमणजी सगर राति कैँ मैथिली कथा-जागरणक जीवित आन्दोलन रूपमे देखैत छथि
व्याख्या: लेख कथा-पाठ आन्दोलनक इतिहास आ मूल्य प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड ५४० : विदेह-सदेह १ — सगर राति दीप जरय: जन्म, प्रारम्भ आ नियम

प्रश्न 5343. सगर राति दीप जरयक अवधारणाक जन्म कोन प्रसंगमे कहल गेल?
क. किरण जयंतीक अवसर पर लोहनामे साहित्यकारसभक बीच
ख. विवाह-मंडपमे
ग. राजकीय आदेशमे
घ. विद्यालयी परीक्षा मे
उत्तर: क. किरण जयंतीक अवसर पर लोहनामे साहित्यकारसभक बीच
व्याख्या: लेख अवधारणाक उत्पत्ति साहित्यकार सभाक निर्णयसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5344. अवधारणाकैँ साकार करबाक श्रेय ककरा देल गेल?
क. प्रभास कुमार चौधरी
ख. भीम मिश्र
ग. सोनावती
घ. देबलरैना
उत्तर: क. प्रभास कुमार चौधरी
व्याख्या: रमणजी प्रभास कुमार चौधरीकैँ आरम्भिक मूर्तिकार मानैत छथि।

प्रश्न 5345. पंजाबी “दीवा जले सारी रात” जकाँ आयोजनक विचार की छल?
क. भरिक रात कथा-पाठ, घुमि-घुमि विभिन्न स्थान पर
ख. दिवसीय भोजन
ग. नाटक-प्रतियोगिता
घ. पाकशाला
उत्तर: क. भरिक रात कथा-पाठ, घुमि-घुमि विभिन्न स्थान पर
व्याख्या: सगर राति मूलतः कथा-पाठक रात्रिकालीन साहित्यिक आयोजन अछि।

प्रश्न 5346. पहिल नियोजित आयोजन कटिहारमे स्थगित किएक भेल?
क. एक दुखद घटनाक कारण
ख. समय न भेटल
ग. भाषा नापसंद
घ. कथा नहि छल
उत्तर: क. एक दुखद घटनाक कारण
व्याख्या: लेख प्रारम्भिक बाधाक संकेत करैत अछि।

प्रश्न 5347. मुजफ्फरपुर आयोजनमे कथापाठ संग की विशेष छल?
क. नव लिखल कथा आ ओहि पर विशेष चर्चा
ख. केवल गीत
ग. केवल भोजन
घ. केवल पुरस्कार
उत्तर: क. नव लिखल कथा आ ओहि पर विशेष चर्चा
व्याख्या: नव रचना आ आलोचनात्मक संवाद कार्यक्रमक मूल बनल।

प्रश्न 5348. आगामी कार्यक्रमक स्थान-तिथि एही कार्यक्रममे तय करबाक नियम ककर संकेत अछि?
क. सामूहिक, जीवित आ सतत आयोजन-प्रक्रिया
ख. ऊपरसँ आदेश
ग. गुप्त योजना
घ. कार्यक्रम समाप्त
उत्तर: क. सामूहिक, जीवित आ सतत आयोजन-प्रक्रिया
व्याख्या: सगर राति अपन अगिला डेग सामूहिक सहमति सँ तय करैत अछि।

प्रश्न 5349. ज्योत्सना चौधरीक भैरात टेमी उसकबैत रहब ककर प्रतीक अछि?
क. गृह-सहभागिता आ साहित्यिक आतिथ्यक जीवित रूप
ख. केवल घरेलू काम
ग. साहित्य-विरोध
घ. आयोजन-विघ्न
उत्तर: क. गृह-सहभागिता आ साहित्यिक आतिथ्यक जीवित रूप
व्याख्या: आयोजनमे परिवार आ गृह-पत्नी भूमिकाक महत्त्व स्वीकारल गेल।

प्रश्न 5350. रूपा धीरूक काठमांडू आयोजन-सन्दर्भ कोन निरन्तरता देखबैत अछि?
क. साहित्यिक आतिथ्यक स्त्री-सहभागिता दोहरायल गेल
ख. आतिथ्य समाप्त
ग. सगर राति टूटल
घ. स्त्री अनुपस्थित
उत्तर: क. साहित्यिक आतिथ्यक स्त्री-सहभागिता दोहरायल गेल
व्याख्या: लेख सगर राति मे घर-समुदायक साझा श्रम दर्ज करैत अछि।

प्रश्न 5351. आमंत्रित करनिहारक स्वयं सहभागी होयबाक शर्त किएक “प्राण” कहल गेल?
क. जिम्मेदारी, आत्मीयता आ साहित्यिक स्वाभिमान बचबैत अछि
ख. अनुपस्थित आयोजन सहज
ग. दूरी जरूरी
घ. केवल पैसा महत्त्वपूर्ण
उत्तर: क. जिम्मेदारी, आत्मीयता आ साहित्यिक स्वाभिमान बचबैत अछि
व्याख्या: सगर राति निमंत्रण कैँ व्यक्तिगत साहित्यिक प्रतिबद्धता बनबैत अछि।

प्रश्न 5352. सगर रातिक जन्म-नियमसँ ओकर कोन रूप स्पष्ट होइत अछि?
क. सगर राति व्यक्तिगत आतिथ्य, नव कथा-पाठ आ प्रत्यक्ष संवादक सामुदायिक विधि अछि
ख. सगर राति केवल औपचारिक सम्मेलन
ग. केवल पुरस्कार मंच
घ. केवल संगीत-रात
उत्तर: क. सगर राति व्यक्तिगत आतिथ्य, नव कथा-पाठ आ प्रत्यक्ष संवादक सामुदायिक विधि अछि
व्याख्या: कार्यक्रम नियम आ आत्मीयता सँ अलग पहचान बनबैत अछि।

खण्ड ५४१ : विदेह-सदेह १ — सगर राति: प्रारम्भिक आयोजन आ कथा-संवाद

प्रश्न 5353. पहिल सगर रातिमे कथापाठक सूची किएक उल्लेखनीय अछि?
क. आरम्भे अनेक रचनाकार एक मंच पर नव कथा संग आएलाह
ख. कोनो कथा नहि पढ़ल गेल
ग. केवल गीत भेल
घ. सभा स्थगित रहल
उत्तर: क. आरम्भे अनेक रचनाकार एक मंच पर नव कथा संग आएलाह
व्याख्या: सूची कार्यक्रमक सामूहिक रचनात्मकता देखबैत अछि।

प्रश्न 5354. डॉ. नन्दकिशोर द्वारा हिन्दी कथा पाठ कएल जाएब की संकेत करैत अछि?
क. मैथिली आयोजनमे भाषा-पार साहित्यिक संवादक अवकाश
ख. मैथिली निषेध
ग. हिन्दी वर्चस्व मात्र
घ. कथापाठक अभाव
उत्तर: क. मैथिली आयोजनमे भाषा-पार साहित्यिक संवादक अवकाश
व्याख्या: सगर राति संवादशील मंच रूपमे उभरैत अछि।

प्रश्न 5355. कथाचर्चामे जीवकान्त, भीमनाथ झा, मोहन भारद्वाज आदि भागीदारी ककर प्रमाण अछि?
क. कथा-पाठ मात्र नहि, समालोचनात्मक विमर्श सेहो केन्द्रमे छल
ख. केवल श्रोता मौन
ग. पुरस्कार वितरण
घ. भोजन कार्यक्रम
उत्तर: क. कथा-पाठ मात्र नहि, समालोचनात्मक विमर्श सेहो केन्द्रमे छल
व्याख्या: चर्चा आयोजनक आलोचनात्मक चरित्र बनबैत अछि।

प्रश्न 5356. “समाद पर आयोजन-भार नहि लेब” निर्णय किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. साहित्यकारक स्वाभिमान आ आयोजकीय जिम्मेदारी सुरक्षित करैत अछि
ख. दूरस्थ आदेश प्रोत्साहित
ग. आयोजन बन्द
घ. कथा हटाउ
उत्तर: क. साहित्यकारक स्वाभिमान आ आयोजकीय जिम्मेदारी सुरक्षित करैत अछि
व्याख्या: व्यक्तिगत उपस्थिति कैँ नैतिक शर्त बनाओल गेल।

प्रश्न 5357. दोसर सगर राति डयोढ़मे करबाक निर्णय कोना आयल?
क. जीवकान्तक अनुरोध पर तीन मास बाद आयोजन तय भेल
ख. राजकीय आदेशसँ
ग. अनायास
घ. कन्यादान प्रसंगसँ
उत्तर: क. जीवकान्तक अनुरोध पर तीन मास बाद आयोजन तय भेल
व्याख्या: कार्यक्रमक क्रम सहभागी अनुरोधसँ आगे बढ़ैत अछि।

प्रश्न 5358. डयोढ़ आयोजनक उद्देश्य-पत्र मे कथाकारसभक लेल कोन लक्ष्य छल?
क. नव रचना पढ़ब आ टीका-विश्लेषण द्वारा कथाक गति देब
ख. कथा रोकब
ग. केवल पुरस्कार लेब
घ. केवल गीत गाब
उत्तर: क. नव रचना पढ़ब आ टीका-विश्लेषण द्वारा कथाक गति देब
व्याख्या: पत्र सर्जनात्मक उपलब्धि लेल सामूहिक प्रयत्नक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 5359. दरभंगा आयोजन “नव अध्याय” किएक कहल गेल?
क. सगर राति अवसर पर पोथीक लोकार्पण शुरू भेल
ख. कथा समाप्त
ग. आयोजन विफल
घ. भाषा बदली
उत्तर: क. सगर राति अवसर पर पोथीक लोकार्पण शुरू भेल
व्याख्या: दरभंगा आयोजन कथा-पाठ संग पुस्तक-प्रकाशनक नूतन परम्परा जोड़लक।

प्रश्न 5360. पहिल लोकार्पित पोथी “सामाक पौतें”क उल्लेख ककर संकेत अछि?
क. कथा आन्दोलन पुस्तक-संस्कृतिसँ जुड़ल
ख. गीत-संगीतक अन्त
ग. पुस्तक-विरोध
घ. पाक-विधि
उत्तर: क. कथा आन्दोलन पुस्तक-संस्कृतिसँ जुड़ल
व्याख्या: सगर राति केवल मौखिक मंच नहि रहल, प्रकाशनक अवसर बनल।

प्रश्न 5361. प्रभास, जीवकान्त आ भीमनाथ झाक पत्रसभक उपयोग लेखमे किएक अछि?
क. आयोजनक लक्ष्य आ परिस्थिति प्रत्यक्ष स्रोतसँ स्पष्ट करबाक लेल
ख. पत्र अप्रासंगिक
ग. केवल सजावट
घ. लेखक-सूची
उत्तर: क. आयोजनक लक्ष्य आ परिस्थिति प्रत्यक्ष स्रोतसँ स्पष्ट करबाक लेल
व्याख्या: रमणजी इतिहास लेखनमे दस्तावेजी आधार प्रयोग करैत छथि।

प्रश्न 5362. प्रारम्भिक सगर राति आयोजनसभक संयुक्त उपलब्धि की अछि?
क. सगर राति कथा-पाठ, टीका-विश्लेषण, आयोजकीय शर्त आ पोथी-लोकार्पणक बहुआयामी मंच बनल
ख. सगर राति केवल मनोरंजन
ग. कथा संवाद नहि
घ. पोथीक सम्बन्ध नहि
उत्तर: क. सगर राति कथा-पाठ, टीका-विश्लेषण, आयोजकीय शर्त आ पोथी-लोकार्पणक बहुआयामी मंच बनल
व्याख्या: प्रारम्भिक आयोजनसभ आन्दोलनक रूपरेखा निर्मित करैत अछि।

खण्ड ५४२ : विदेह-सदेह १ — सगर राति: विस्तार, सहभागी आ मतभेद

प्रश्न 5363. जनकपुर आयोजन विलम्बित भेलापर पटना मे चतुर्थ आयोजन कोना भेल?
क. दमनकान्त झाक आवास पर गोविन्द झाक संयोजकत्वमे
ख. आयोजन बन्द
ग. कथा-पाठ निषिद्ध
घ. संगीत-सभा मात्र
उत्तर: क. दमनकान्त झाक आवास पर गोविन्द झाक संयोजकत्वमे
व्याख्या: सगर राति परिस्थिति अनुसार स्थान बदलि निरन्तर रहल।

प्रश्न 5364. उपेन्द्रनाथ झा “व्यास”क अध्यक्षता आ कथा-पाठ ककर प्रतीक अछि?
क. वरिष्ठ कथाकारक सक्रिय नेतृत्व
ख. युवा-विरोध
ग. कार्यक्रम रिक्त
घ. केवल दर्शक भूमिका
उत्तर: क. वरिष्ठ कथाकारक सक्रिय नेतृत्व
व्याख्या: वरिष्ठ सहभागिता आयोजनक गरिमा बढ़बैत अछि।

प्रश्न 5365. प्रदीप बिहारी द्वारा बेगूसराय आयोजनक भार लेब कोन क्रम दिखबैत अछि?
क. एक आयोजन सँ दोसर आयोजनक जिम्मेदारी जन्म लैत अछि
ख. कोनो अगिला क्रम नहि
ग. कार्यक्रम समाप्त
घ. आकस्मिक शून्यता
उत्तर: क. एक आयोजन सँ दोसर आयोजनक जिम्मेदारी जन्म लैत अछि
व्याख्या: सगर राति उत्तरदायित्व हस्तांतरणक जीवित श्रृंखला अछि।

प्रश्न 5366. मुजफ्फरपुर, पटना, बेगूसराय, बनारस आदि स्थानक यात्रा-सूत्र ककर संकेत अछि?
क. मैथिली कथा-जगतक विस्तृत भौगोलिक नेटवर्क
ख. संगठन विफल
ग. कथा सीमित
घ. केवल प्रशासनिक यात्रा
उत्तर: क. मैथिली कथा-जगतक विस्तृत भौगोलिक नेटवर्क
व्याख्या: कार्यक्रम अनेक भूभागमे मैथिली कथा जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5367. नेहरा मे प्रतिनिधि कथा-संग्रह प्रकाशित करबाक निर्णय किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. पठित कथाकेँ लिखित दस्तावेज आ संकलनमे बदलबाक हेतु
ख. कथा मिटेबाक
ग. चर्चा रोकबाक
घ. गीत संकलन
उत्तर: क. पठित कथाकेँ लिखित दस्तावेज आ संकलनमे बदलबाक हेतु
व्याख्या: सगर राति मौखिक पाठ सँ पुस्तक-संस्कृति धरि बढ़ैत अछि।

प्रश्न 5368. “श्वेतपत्र” प्रकाशनक उल्लेख ककर प्रमाण अछि?
क. सगर राति पाठमे सँ बीछल कथाक प्रतिनिधि संकलन बनल
ख. कुनो कथा नहि
ग. पत्र रिक्त
घ. भोजन-पत्र
उत्तर: क. सगर राति पाठमे सँ बीछल कथाक प्रतिनिधि संकलन बनल
व्याख्या: आन्दोलनक साहित्यिक परिणाम पुस्तक रूपमे सामने आयल।

प्रश्न 5369. किछु सहभागी असम्बद्ध होइत गेलाह — कारणसभ की बताओल गेल?
क. अस्वास्थ्य, प्रतिक्रिया सँ आहत होयब, हतोत्साह, कार्यालयीय व्यस्तता
ख. केवल धनाभाव
ग. केवल यात्रा
घ. कथा-पाठ निषेध
उत्तर: क. अस्वास्थ्य, प्रतिक्रिया सँ आहत होयब, हतोत्साह, कार्यालयीय व्यस्तता
व्याख्या: लेख आंदोलनक अंतर्विरोध ईमानदारी सँ लिखैत अछि।

प्रश्न 5370. रमाकान्त मिश्रक प्रतिक्रिया-संदर्भ ककर खतरा देखबैत अछि?
क. कठोर आलोचना सँ साहित्यिक सम्बन्ध आ सहभागिता प्रभावित भऽ सकैत अछि
ख. चर्चा असंभव नहि
ग. सभ प्रसन्न
घ. कथापाठ निष्क्रिय
उत्तर: क. कठोर आलोचना सँ साहित्यिक सम्बन्ध आ सहभागिता प्रभावित भऽ सकैत अछि
व्याख्या: सगर राति मे संवाद तीखो भऽ सकैत अछि।

प्रश्न 5371. “मास्टरी”क आतंककारी आ अनुत्पादक होयब ककर आलोचना अछि?
क. वरिष्ठ/नियामक आलोचना जँ नव आगन्तुक कैं दबा दे तकर
ख. अध्यापनक समर्थन मात्र
ग. समीक्षा-विरोध नहि
घ. कथा-विरोध
उत्तर: क. वरिष्ठ/नियामक आलोचना जँ नव आगन्तुक कैं दबा दे तकर
व्याख्या: लेख रचनात्मक आलोचना आ दमनकारी आलोचना बीच भेद सुझबैत अछि।

प्रश्न 5372. सगर रातिक विस्तार आ मतभेदक पाठ की अछि?
क. सगर राति विस्तार पेलक, मुदा वृद्धि संग मतभेद, आलोचना-तनाव आ सहभागिता-संकट सेहो आयल
ख. कुनो समस्या नहि
ग. कार्यक्रम न बढ़ल
घ. लेख केवल प्रशंसा अछि
उत्तर: क. सगर राति विस्तार पेलक, मुदा वृद्धि संग मतभेद, आलोचना-तनाव आ सहभागिता-संकट सेहो आयल
व्याख्या: रमणजी आन्दोलनक उपलब्धि आ कमजोरी दुनू चिन्हैत छथि।

खण्ड ५४३ : विदेह-सदेह १ — सगर राति: रचनात्मक प्रभाव आ कथा-क्रान्ति

प्रश्न 5373. अप्रकाशित आ अपठित कथा पढ़बाक बाध्यता ककर कारणे महत्त्वपूर्ण अछि?
क. रचनात्मक सक्रियता बढ़बैत अछि
ख. पुरान कथा दोहरबैत अछि
ग. कथा रोकैत अछि
घ. साहित्यकार निष्क्रिय बनबैत अछि
उत्तर: क. रचनात्मक सक्रियता बढ़बैत अछि
व्याख्या: नव कथा अनिवार्यता लेखककैं सतत लिखबाक प्रेरणा दैत अछि।

प्रश्न 5374. तत्कालिक प्रतिक्रिया सुनबाक व्यवस्था ककर अवसर दैत अछि?
क. शिल्प-सुधार, सहनशीलता आ रचनात्मक आत्मपरीक्षण
ख. अहंकार मात्र
ग. मौन
घ. कथा-त्याग
उत्तर: क. शिल्प-सुधार, सहनशीलता आ रचनात्मक आत्मपरीक्षण
व्याख्या: रमणजी तीन सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट करैत छथि।

प्रश्न 5375. कथासंख्या क्रमशः बढ़ैत गेल — ई की संकेत करैत अछि?
क. आन्दोलनक रचनात्मक आकर्षण बढ़ल
ख. उत्साह घटल
ग. कथा समाप्त
घ. सहभागी न रहल
उत्तर: क. आन्दोलनक रचनात्मक आकर्षण बढ़ल
व्याख्या: लेख सगर रातिक विकास मापैत अछि।

प्रश्न 5376. महिषीमे सर्वाधिक कथाकारक सहभागिता ककर प्रमाण अछि?
क. ग्रामांचल/स्थानीयता सहित आयोजनक व्यापक स्वीकार्यता
ख. कथा-विरोध
ग. सिर्फ शहर केन्द्र
घ. आयोजन विफल
उत्तर: क. ग्रामांचल/स्थानीयता सहित आयोजनक व्यापक स्वीकार्यता
व्याख्या: सगर राति विभिन्न ठाम पर लेखकीय समुदाय जुटबैत गेल।

प्रश्न 5377. अधिकांश कथा-संग्रह सगर राति पर पढ़ल-चर्चित कथा सँ बनल कहलाक अर्थ की अछि?
क. मंच प्रकाशित साहित्यक जनक बनि रहल छल
ख. कथा मंचहीन छल
ग. संग्रह असंबद्ध
घ. साहित्य समाप्त
उत्तर: क. मंच प्रकाशित साहित्यक जनक बनि रहल छल
व्याख्या: मौखिक-आलोचनात्मक प्रक्रिया पुस्तकाकार उपलब्धि बनल।

प्रश्न 5378. श्यामानन्द ठाकुर प्रत्येक आयोजन लेल दू कथा लिखैत छथि — ई ककर प्रतीक अछि?
क. आयोजन लेखकक रचनात्मक अनुशासन बढ़बैत अछि
ख. अनिच्छा
ग. साहित्य-विराम
घ. दर्शक-मात्र भूमिका
उत्तर: क. आयोजन लेखकक रचनात्मक अनुशासन बढ़बैत अछि
व्याख्या: सगर राति लेखक कैं निरन्तर सृजन लेल प्रेरित करैत अछि।

प्रश्न 5379. कवि सम्मेलन संग तुलना किएक आयल अछि?
क. मनोरंजनमुखी मंच बनाम रचनात्मक कथामुखी मंचक भेद देखाबय लेल
ख. कवि सम्मेलन श्रेष्ठ बताबय
ग. कथा हटाबय
घ. गीत निषेध
उत्तर: क. मनोरंजनमुखी मंच बनाम रचनात्मक कथामुखी मंचक भेद देखाबय लेल
व्याख्या: सगर राति रचनात्मक प्रतिस्पर्धा आ आलोचना पर टिकैत अछि।

प्रश्न 5380. विदाइक व्यवस्था नहि होयबाक बात ककर नैतिक अर्थ दैत अछि?
क. व्यावसायिकता सँ मुक्त मातृभाषा-प्रेमक सहभागिता
ख. लेन-देनक अभाव दोष
ग. अतिथि अनादर
घ. भोजन नहि
उत्तर: क. व्यावसायिकता सँ मुक्त मातृभाषा-प्रेमक सहभागिता
व्याख्या: साहित्यकार पूजा-हकार जकाँ प्रेम सँ अबैत छथि, से भाव व्यक्त अछि।

प्रश्न 5381. सगर राति समानधर्मी कँ भैरात एकठाम रखि की उपलब्धि करैत अछि?
क. परिचय, अनुभव, विचार-आदानप्रदान आ भावात्मक सम्बद्धता बढ़बैत अछि
ख. अलगाव
ग. मौन
घ. व्यवसाय
उत्तर: क. परिचय, अनुभव, विचार-आदानप्रदान आ भावात्मक सम्बद्धता बढ़बैत अछि
व्याख्या: आन्दोलन साहित्यिक समुदाय निर्माण करैत अछि।

प्रश्न 5382. “शान्तिपूर्ण क्रान्ति” कथनक अर्थ की अछि?
क. मैथिली कथा लेखनमे निरन्तर, अहिंसक, रचनात्मक बदलाव आयल
ख. राजनीतिक विद्रोह
ग. हिंसक घटना
घ. कथा-विनाश
उत्तर: क. मैथिली कथा लेखनमे निरन्तर, अहिंसक, रचनात्मक बदलाव आयल
व्याख्या: सगर राति कथा क्षेत्रमे निस्तब्ध पर गहिर परिवर्तनक नाम अछि।

खण्ड ५४४ : विदेह-सदेह १ — सगर राति: उपलब्धि, संकट आ अगिला पथ

प्रश्न 5383. दरभंगाक पहिल आयोजनमे दू पोथी आ स्वर्ण जयंतीमे छत्तीस पोथी लोकार्पणक तुलना की देखबैत अछि?
क. आन्दोलनक परिमाणात्मक विकास
ख. विकास रुका
ग. पुस्तक घटल
घ. कथा समाप्त
उत्तर: क. आन्दोलनक परिमाणात्मक विकास
व्याख्या: लोकार्पण-संख्या वृद्धि साहित्यिक ऊर्जा बढ़बाक सूचक अछि।

प्रश्न 5384. दरभंगामे अमेरिकी नागरिक द्वारा मैथिली कथा पाठ ककर संकेत अछि?
क. मैथिली कथामंचक वैश्विक/परभाषी आकर्षण
ख. मैथिली सीमित
ग. विदेशी असम्बद्ध
घ. कथा निषिद्ध
उत्तर: क. मैथिली कथामंचक वैश्विक/परभाषी आकर्षण
व्याख्या: सगर राति मैथिलीकेँ व्यापक सांस्कृतिक संवादमे आनैत अछि।

प्रश्न 5385. बोकारो, राँची, जमशेदपुर, देवघर, पूर्णिया आदि स्थानक सक्रियता की बतबैत अछि?
क. मैथिली कथा-आन्दोलन प्रवासी/क्षेत्रीय केन्द्रसभमे फैलल
ख. केवल दरभंगा तक सीमित
ग. कथा समाप्त
घ. गाम नहि जुड़ल
उत्तर: क. मैथिली कथा-आन्दोलन प्रवासी/क्षेत्रीय केन्द्रसभमे फैलल
व्याख्या: सगर राति बहुस्थलीय मैथिली जागरणक रूप लेलक।

प्रश्न 5386. मूल अवधारणासँ भिन्न प्रयोजन लेल सगर रातिक उपयोग पर चेतावनी किएक देल गेल?
क. लोकप्रियता दुरुपयोग होयबाक खतरा अछि
ख. कुनो खतरा नहि
ग. विस्तार असंभव
घ. कथा अनावश्यक
उत्तर: क. लोकप्रियता दुरुपयोग होयबाक खतरा अछि
व्याख्या: रमणजी सगर रातिक मूल कथा-पाठ/चर्चा धुरी बचाबय चाहैत छथि।

प्रश्न 5387. सहरसा आयोजनक संदर्भमे “भेटघाँट” आकर्षण सँ बाहरक साहित्यकार वंचित रहलाह — एकर अर्थ की अछि?
क. आयोजनमे साहित्यिक मिलन सेहो महत्त्वपूर्ण तत्व अछि
ख. भेटघाँट अनावश्यक
ग. कथा-पाठ अकेला पर्याप्त सदिखन
घ. बाहरी लेखक अप्रासंगिक
उत्तर: क. आयोजनमे साहित्यिक मिलन सेहो महत्त्वपूर्ण तत्व अछि
व्याख्या: सगर राति संवाद, परिचय आ संबंधक मंच सेहो अछि।

प्रश्न 5388. जीवकान्तक टिप्पणीमे सरकारी मान्यताक बाद भाषामे “राजरोग”क बात किएक आयल?
क. मान्यता बाद संस्थागत अहंकार, सुविधा-लालसा वा लेखकीय शिथिलता बढ़बाक भय
ख. मान्यता सदिखन दोषहीन
ग. भाषा रोगमुक्त
घ. लेखन बढ़ल नहि
उत्तर: क. मान्यता बाद संस्थागत अहंकार, सुविधा-लालसा वा लेखकीय शिथिलता बढ़बाक भय
व्याख्या: टिप्पणी साहित्यिक स्वाधीनता आ सतर्कता पर जोर दैत अछि।

प्रश्न 5389. सगर राति मैथिलीकेँ राजरोगसँ मुक्त रखत, एहि विश्वासक आधार की अछि?
क. नियमित नव लेखन, खुला प्रतिक्रिया आ मातृभाषा-प्रेमक अभ्यास
ख. सरकारी पद
ग. पुरस्कार मात्र
घ. भाषा-त्याग
उत्तर: क. नियमित नव लेखन, खुला प्रतिक्रिया आ मातृभाषा-प्रेमक अभ्यास
व्याख्या: आन्दोलन जीवित रचनात्मकता केँ औपचारिकता पर भारी करैत अछि।

प्रश्न 5390. साहित्य अकादेमी पुरस्कृत कथा-संग्रह “सरोकार”क कथासभ सगर रातिमे सुनल/चर्चित होयबाक उल्लेख ककर उपलब्धि अछि?
क. मंचीय आलोचना सँ मान्य पुस्तक तक पहुँचल रचना-प्रक्रिया
ख. पुरस्कार असंबद्ध
ग. सगर राति निष्फल
घ. कथा पाठ नहि भेल
उत्तर: क. मंचीय आलोचना सँ मान्य पुस्तक तक पहुँचल रचना-प्रक्रिया
व्याख्या: सगर राति प्रकाशित साहित्यक गुणवत्ता निर्माणमे सहायक देखाइत अछि।

प्रश्न 5391. “इतिहास दोहराइत रहय” कामना ककरा लेल अछि?
क. मैथिली कथा-जागरणक निरन्तरता लेल
ख. कार्यक्रम बन्द लेल
ग. भाषा-विस्मृति लेल
घ. कथा-त्याग लेल
उत्तर: क. मैथिली कथा-जागरणक निरन्तरता लेल
व्याख्या: रमणजी आन्दोलनक सृजनात्मक परम्परा जारी रहय चाहैत छथि।

प्रश्न 5392. एहि बैचक अगिला स्रोत-पथ कोन अछि?
क. सगर राति लेखक बाद रामाश्रय झा “रामरंग”क संगीत-रचना/राग-विषयक खण्ड
ख. अनाम कथा फेर
ग. जानकी-नवमी फेर
घ. प्रवास-कथा फेर
उत्तर: क. सगर राति लेखक बाद रामाश्रय झा “रामरंग”क संगीत-रचना/राग-विषयक खण्ड
व्याख्या: स्रोत-क्रम रमानन्द झाक लेखसँ आगे संगीत-आधारित रामरंग खण्ड दिस बढ़ैत अछि।

खण्ड ५४५ : विदेह-सदेह १ — रामाश्रय झा “रामरंग”: राग विद्यापति कल्याण

प्रश्न 5393. रामाश्रय झा “रामरंग”क परिचयमे हुनका कोन-कोन रूपमे चिन्हायल गेल अछि?
क. विद्वान, वाग्गेयकार, शिक्षक आ मंच-सम्पादक
ख. कथा-नायक, पंजीकार, चित्रकार
ग. राजनीतिज्ञ, सैनिक, व्यापारी
घ. किसान, रसोइया, वैद्य
उत्तर: क. विद्वान, वाग्गेयकार, शिक्षक आ मंच-सम्पादक
व्याख्या: स्रोत हुनका संगीत, शिक्षा आ मंच-संयोजनसँ जुड़ल बहुआयामी रचनाकार रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 5394. राग विद्यापति कल्याणक एकताल रचनामे स्थाईक मुख्य भाव की अछि?
क. विद्यापतिक गुणक स्तुति
ख. बाढ़क आलोचना
ग. विवाहक विवाद
घ. पत्रकारिताक जोगार
उत्तर: क. विद्यापतिक गुणक स्तुति
व्याख्या: स्थाई “कतेक कहब गुण अहाँकेँ” सँ विद्यापतिक विद्या-गुणक वंदना करैत अछि।

प्रश्न 5395. एकताल रचनाक अन्तरामे विद्यापतिक कोन छवि उभरैत अछि?
क. मिथिला-कोकिल, कीर्ति-पताका आ शिव-भक्त
ख. केवल योद्धा
ग. केवल व्यापारी
घ. केवल बालकवि
उत्तर: क. मिथिला-कोकिल, कीर्ति-पताका आ शिव-भक्त
व्याख्या: अन्तरा विद्यापतिक सांस्कृतिक, काव्यिक आ भक्तिपरक महत्त्व केँ संक्षेपमे राखैत अछि।

प्रश्न 5396. एकताल रचनाक संगीत-टिप्पणीमे कोन स्वर-व्यवस्था संकेतित अछि?
क. गंधार कोमल, मध्यम तीव्र, निषाद आ आन स्वर शुद्ध
ख. सभ स्वर कोमल
ग. केवल पंचम वर्जित
घ. तालरहित गायन
उत्तर: क. गंधार कोमल, मध्यम तीव्र, निषाद आ आन स्वर शुद्ध
व्याख्या: रचनामे स्वर-विन्यास स्पष्ट देल अछि, जे ओकर शास्त्रीयता देखबैत अछि।

प्रश्न 5397. राग विद्यापति कल्याणक त्रिताल रचनामे शिवक उगना-भेष ककर संकेत अछि?
क. विद्यापतिक भक्ति सँ शिवक चाकर रूप धारण करब
ख. गणेशक वाहन
ग. कोशीक बाढ़
घ. पत्रकारिताक शिक्षा
उत्तर: क. विद्यापतिक भक्ति सँ शिवक चाकर रूप धारण करब
व्याख्या: स्थाईमे “भगति वश भेला शिव” कहि विद्यापति-भक्तिक लोककथा-स्मृति जोड़ल गेल अछि।

प्रश्न 5398. “डमरु त्रिशूल बसहा बिसरि” पंक्ति विद्यापति-भक्ति केँ कोना रूपायित करैत अछि?
क. शिव अपन दिव्य चिह्न छोड़ि सेवक-रूपमे अबैत छथि
ख. शिव युद्धमे जाइत छथि
ग. शिव मौन रहैत छथि
घ. शिवक उल्लेख नहि अछि
उत्तर: क. शिव अपन दिव्य चिह्न छोड़ि सेवक-रूपमे अबैत छथि
व्याख्या: भक्ति एतय देवता केँ भक्त-सेवामे झुकयबला शक्ति बनि जाइत अछि।

प्रश्न 5399. त्रिताल रचनाक अन्तरामे मिथिलाक ऊँच पागड़ीक उल्लेख किएक अछि?
क. विद्यापति मिथिलाक गौरव बढ़बैत छथि
ख. मिथिलाक अपमान
ग. संगीतक निषेध
घ. भोजनक विधि
उत्तर: क. विद्यापति मिथिलाक गौरव बढ़बैत छथि
व्याख्या: विद्यापति जन्म सँ मिथिलाक सांस्कृतिक मान बढ़ल, ई भाव अन्तरामे अछि।

प्रश्न 5400. रामरंगक रचना-संरचना मे शब्द आ सरगम दुनू किएक साथ देल गेल अछि?
क. गीतकेँ पाठ आ गायन, दुनू रूपमे व्यवस्थित करबाक लेल
ख. केवल सजावट लेल
ग. प्रश्नोत्तरी बनाबय लेल
घ. कथा रोकबाक लेल
उत्तर: क. गीतकेँ पाठ आ गायन, दुनू रूपमे व्यवस्थित करबाक लेल
व्याख्या: स्वर-चिह्न आ बोलक संयोजन वाग्गेयकारक व्यावहारिक संगीत-बोध देखबैत अछि।

प्रश्न 5401. विद्यापति कल्याण नामकरणक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?
क. विद्यापतिक स्मृति केँ शास्त्रीय राग-रचनामे प्रतिष्ठित करब
ख. विद्यापतिक उपेक्षा
ग. केवल लोक-हास्य
घ. राजनीतिक नारा
उत्तर: क. विद्यापतिक स्मृति केँ शास्त्रीय राग-रचनामे प्रतिष्ठित करब
व्याख्या: राग-शीर्षक मैथिली गौरव आ संगीत-परम्पराक मिलन करैत अछि।

प्रश्न 5402. एहि खण्डक मुख्य मूल्यांकन की अछि?
क. रामरंग विद्यापति-भक्ति केँ शास्त्रीय संगीत-विन्यासमे रूपान्तरित करैत छथि
ख. ओ केवल कथा लिखैत छथि
ग. ओ पंजी-विवाद करैत छथि
घ. ओ पत्रकारिता पाठ पढ़बैत छथि
उत्तर: क. रामरंग विद्यापति-भक्ति केँ शास्त्रीय संगीत-विन्यासमे रूपान्तरित करैत छथि
व्याख्या: रचना साहित्यिक महाकवि केँ राग, ताल आ वंदना मार्फत जीवित करैत अछि।

खण्ड ५४६ : विदेह-सदेह १ — रामरंग: गणेश, मिथिला आ शिव-वंदना

प्रश्न 5403. “श्री गणेश जीक वन्दना” कोन राग आ तालमे देल गेल अछि?
क. राग बिलावल, त्रिताल, मध्य लय
ख. राग तीरभुक्ति, झपताल
ग. राग भूपाली, एकताल
घ. राग विद्यापति कल्याण, झपताल
उत्तर: क. राग बिलावल, त्रिताल, मध्य लय
व्याख्या: शीर्षकहि मे बिलावल आ त्रितालक उल्लेख अछि।

प्रश्न 5404. गणेश-वंदनाक स्थाईमे गणेशक कोन रूप पुकारल गेल अछि?
क. विघ्नहरण गजबदन दयाकर रूप
ख. बाढ़क नदी रूप
ग. पत्रकार रूप
घ. कथाकार रूप
उत्तर: क. विघ्नहरण गजबदन दयाकर रूप
व्याख्या: गणेश केँ दुःख-ताप हरयबला देवता रूपेँ सम्बोधित कएल गेल अछि।

प्रश्न 5405. गणेश-वंदनाक अन्तरामे “अधम आयल रामरंग अहाँ शरण” कथन ककर भाव अछि?
क. भक्तक विनय आ शरणागति
ख. अहंकार
ग. राजनीतिक घोषणा
घ. हास्य-व्यंग्य
उत्तर: क. भक्तक विनय आ शरणागति
व्याख्या: कवि अपन अवगुण स्वीकारि दैवी आश्रय मांगैत छथि।

प्रश्न 5406. मिथिलाक वन्दना कोन राग-तालसँ जुड़ल अछि?
क. राग तीरभुक्ति, झपताल
ख. राग भैरवी, दादरा
ग. राग बिलावल, एकताल
घ. राग मेघ, कहरवा
उत्तर: क. राग तीरभुक्ति, झपताल
व्याख्या: शीर्षक मे मिथिला-वंदना राग तीरभुक्ति झपताल कहल अछि।

प्रश्न 5407. मिथिला-वंदनाक स्थाईमे किन नदीसभक उल्लेख अछि?
क. गंगा, बागमती आ कोशी
ख. नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी
ग. कावेरी, कृष्णा, महानदी
घ. सरयू, यमुना, चम्बल
उत्तर: क. गंगा, बागमती आ कोशी
व्याख्या: स्थाई मिथिला-भूमि कैं नदी-धारासँ पवित्र बतबैत अछि।

प्रश्न 5408. मिथिला-वंदनाक अन्तरामे जनक आ याज्ञवल्क्यक उल्लेख की सूचित करैत अछि?
क. मिथिलाक संत-विद्वान परम्परा
ख. मिथिलाक व्यापार
ग. मिथिलाक खनन
घ. मिथिलाक सेना
उत्तर: क. मिथिलाक संत-विद्वान परम्परा
व्याख्या: जनक-याज्ञवल्क्य मिथिलाक दार्शनिक-सांस्कृतिक गौरवक प्रतीक छथि।

प्रश्न 5409. शिव-वंदना कोन राग आ तालमे अछि?
क. राग भूपाली, त्रिताल, मध्य लय
ख. राग बिलावल, झपताल
ग. राग तीरभुक्ति, एकताल
घ. राग काफ़ी, दादरा
उत्तर: क. राग भूपाली, त्रिताल, मध्य लय
व्याख्या: शिव-वंदनाक शीर्षक भूपाली त्रितालक सूचना दैत अछि।

प्रश्न 5410. शिव-वंदनाक भाव-विषय की अछि?
क. दुःख, चिन्ता, व्याधि आ असाध्य संकटक बीच शिवसँ करुण पुकार
ख. विवाह-हास्य
ग. मतदान-चुनाव
घ. पत्रकारिता-जोगार
उत्तर: क. दुःख, चिन्ता, व्याधि आ असाध्य संकटक बीच शिवसँ करुण पुकार
व्याख्या: स्थाई-अन्तरा दुख-ताप आ व्याधिसँ मुक्ति लेल शिवकेँ संबोधित करैत अछि।

प्रश्न 5411. रामरंगक ई वंदनासभ मिथिलाक धार्मिक-सांस्कृतिक स्वरूप कोना देखबैत अछि?
क. गणेश, मिथिला-भूमि आ शिवक संग पंचदेवोपासक भावभूमि कैं जोड़ैत अछि
ख. केवल लौकिक मनोरंजन
ग. धर्मक निषेध
घ. असंबद्ध सूची
उत्तर: क. गणेश, मिथिला-भूमि आ शिवक संग पंचदेवोपासक भावभूमि कैं जोड़ैत अछि
व्याख्या: वंदना-रचना मिथिला, देवता आ संगीत कैं एक सूत्रमे रखैत अछि।

प्रश्न 5412. रामरंगक संगीतांश पढ़ैत प्रमुख सावधानी की चाही?
क. सरगम-संकेत कैं प्रश्नक यांत्रिक तथ्य नहि, भाव-संगीतक संरचना रूपमे पढ़ब
ख. केवल अंक गिनब
ग. स्रोत छोड़ब
घ. तालकैं कथा मानब
उत्तर: क. सरगम-संकेत कैं प्रश्नक यांत्रिक तथ्य नहि, भाव-संगीतक संरचना रूपमे पढ़ब
व्याख्या: एहि सामग्रीमे साहित्यिक अर्थ आ शास्त्रीय प्रस्तुति दुनू साथ अछि।

खण्ड ५४७ : विदेह-सदेह १ — रामलोचन ठाकुर: शिक्षा-व्यंग्य आ क्षणिका

प्रश्न 5413. रामलोचन ठाकुरक परिचयमे हुनका कोन साहित्यिक-सांस्कृतिक रूपसभ मे देखाओल गेल अछि?
क. वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक आ भाषाई आन्दोलनक सहभागी
ख. केवल व्यापारी
ग. केवल पंजीकार
घ. केवल डॉक्टर
उत्तर: क. वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक आ भाषाई आन्दोलनक सहभागी
व्याख्या: परिचय हुनक साहित्य, रंगमंच आ भाषा-आन्दोलनक सक्रियता बतबैत अछि।

प्रश्न 5414. “पास करबाक लेल” कविता कोन प्रसंगसँ आरम्भ होइत अछि?
क. उत्तर-पुस्तिका देखबाक बाद शिक्षिकासँ संवाद
ख. बाढ़ राहत
ग. कोबर-राति
घ. गणेश-वंदना
उत्तर: क. उत्तर-पुस्तिका देखबाक बाद शिक्षिकासँ संवाद
व्याख्या: कविता विद्यालयी मूल्यांकनक प्रसंगमे व्यंग्य रचैत अछि।

प्रश्न 5415. कविता मे बच्चाक अंग्रेजी अंक-अंतर पर प्रश्न किएक उठल अछि?
क. एक पत्रमे पचासी आ दोसरमे पचीस अंकक असंगति सोचबाक विषय अछि
ख. क्योंकि बच्चा अनुपस्थित छल
ग. क्योंकि परीक्षा नहि भेल
घ. क्योंकि भाषा बदलि गेल
उत्तर: क. एक पत्रमे पचासी आ दोसरमे पचीस अंकक असंगति सोचबाक विषय अछि
व्याख्या: कवि मूल्यांकनक असमानता आ गाइड-शिक्षण पर सवाल करैत अछि।

प्रश्न 5416. “संयुक्त परिवार सुखी परिवार” कैं गलती मानल जाएब कवितामे ककर आलोचना अछि?
क. पाठ्य-पुस्तकक आधुनिक संकुचित परिवार-दृष्टि
ख. संयुक्त परिवारक उत्सव
ग. व्याकरणक महिमा
घ. गणितक प्रश्न
उत्तर: क. पाठ्य-पुस्तकक आधुनिक संकुचित परिवार-दृष्टि
व्याख्या: कवि परम्परागत संस्कार आ पाठ्य-विचारक टकराव देखबैत अछि।

प्रश्न 5417. “बसुधैव कुटुम्बकम्”क संदर्भ कवितामे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. बच्चाक संस्कार व्यापक परिवार-बोधसँ बनल अछि
ख. विद्यालय बंद अछि
ग. काव्य हास्य मात्र
घ. संगीतक राग अछि
उत्तर: क. बच्चाक संस्कार व्यापक परिवार-बोधसँ बनल अछि
व्याख्या: कवि कहैत छथि जे एहन संस्कारमे पलल नेना छोट परिवार श्रेष्ठ कोना लिखत।

प्रश्न 5418. “पास करबाक लेल उएह सिखए पड़तैक” कथनक निहितार्थ की अछि?
क. शिक्षा प्रणाली पास करबाक नाम पर संस्कार-विरुद्ध पाठ थोपैत अछि
ख. स्वतंत्र विचारक सम्मान
ग. गुरुकुलक स्तुति
घ. खेलक नियम
उत्तर: क. शिक्षा प्रणाली पास करबाक नाम पर संस्कार-विरुद्ध पाठ थोपैत अछि
व्याख्या: कविता परीक्षा-केन्द्रित शिक्षा पर व्यंग्य अछि।

प्रश्न 5419. रामलोचन ठाकुरक हाइकू-क्षणिका मे “भोजक पान / सासुरक सम्मान / पुनिमाक चान” कोन भाव बनबैत अछि?
क. लोक-संबंध, आतिथ्य आ पूर्णिमा-जकाँ उजासक संक्षिप्त बिम्ब
ख. राजनीतिक क्रोध
ग. बाढ़क विभीषिका
घ. पत्रकारिता-जोगार
उत्तर: क. लोक-संबंध, आतिथ्य आ पूर्णिमा-जकाँ उजासक संक्षिप्त बिम्ब
व्याख्या: तीन पंक्तिमे सामाजिक-सौंदर्यात्मक संकेत अछि।

प्रश्न 5420. “दूरक चास / गामक कात बास / कोन विश्वास” क्षणिका की सूचित करैत अछि?
क. दूरी, स्वामित्व आ भरोसाक अनिश्चितता
ख. पूर्ण निश्चय
ग. भोजन-विधि
घ. विवाहक गीत
उत्तर: क. दूरी, स्वामित्व आ भरोसाक अनिश्चितता
व्याख्या: क्षणिका लोक-अनुभवक संशय कैं लघु रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 5421. रामलोचनक क्षणिकासभमे व्यंग्य आ लोक-छवि कोना साथ चलैत अछि?
क. छोट बिम्बमे सामाजिक कटाक्ष आ लोक-उदाहरण आबैत अछि
ख. लम्बा आख्यान मात्र
ग. कोनो अर्थ नहि
घ. केवल पुराण
उत्तर: क. छोट बिम्बमे सामाजिक कटाक्ष आ लोक-उदाहरण आबैत अछि
व्याख्या: हाथीक कान, नटुआक बतान, दादुर-गान आदि बिम्ब लोक-व्यंग्यक साधन बनैत अछि।

प्रश्न 5422. रामलोचन ठाकुरक शिक्षा-व्यंग्य आ क्षणिकाक समेकित अर्थ की अछि?
क. रामलोचन ठाकुर शिक्षा-संस्कृति आ लोकानुभव पर तीक्ष्ण, संक्षिप्त आ व्यंग्यपूर्ण दृष्टि रखैत छथि
ख. ओ केवल भक्तिगीत लिखैत छथि
ग. ओ केवल पाक-विधि दैत छथि
घ. ओ केवल पंजीकार छथि
उत्तर: क. रामलोचन ठाकुर शिक्षा-संस्कृति आ लोकानुभव पर तीक्ष्ण, संक्षिप्त आ व्यंग्यपूर्ण दृष्टि रखैत छथि
व्याख्या: कविता आ क्षणिका दुनू सामाजिक सोचक आलोचना करैत अछि।

खण्ड ५४८ : विदेह-सदेह १ — राम नारायण देव: मधेशी हुँकार आ मिथिला राज्य

प्रश्न 5423. राम नारायण देवक कविता “उठल मधेशी कयल हुँकार”क केंद्रीय मांग की अछि?
क. अधिकार आ मिथिला राज्यक मांग
ख. केवल पाक-पद्धति
ग. व्यक्तिगत प्रेम
घ. गणेश-वंदना
उत्तर: क. अधिकार आ मिथिला राज्यक मांग
व्याख्या: कविता जन-जनक आवाज कैँ मिथिला राज्य आ अधिकारसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5424. “अप्पन भाषा, अप्पन संस्कृति” पंक्ति कविता मे ककर घोषणा अछि?
क. सांस्कृतिक स्वायत्तता आ पहिचानक
ख. भाषा-विस्मृति
ग. संगीत-ताल
घ. शिक्षा-व्यंग्य
उत्तर: क. सांस्कृतिक स्वायत्तता आ पहिचानक
व्याख्या: कविता राजनीतिक मांगकेँ भाषा-संस्कृतिक अधिकारसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5425. “अप्पन अर्थनीति, अप्पन राजनीति” कथन कोन व्यापकता जोड़ैत अछि?
क. सांस्कृतिक मागसँ आगे आर्थिक-राजनीतिक स्वनिर्णय
ख. केवल लोकगीत
ग. केवल विवाह
घ. केवल बाल-कविता
उत्तर: क. सांस्कृतिक मागसँ आगे आर्थिक-राजनीतिक स्वनिर्णय
व्याख्या: अधिकारक अर्थ शासन, संसाधन आ प्रतिनिधित्व धरिक अछि।

प्रश्न 5426. कविता मे राजतंत्रक अवसान आ लोकतंत्रक बरदानक उल्लेख कोन परिप्रेक्ष्य दैत अछि?
क. नेपालक राजनीतिक परिवर्तनक पृष्ठभूमि
ख. विद्यालयी परीक्षा
ग. मधुश्रावनी गीत
घ. कौटुम्बिक कथा
उत्तर: क. नेपालक राजनीतिक परिवर्तनक पृष्ठभूमि
व्याख्या: कविता निरंकुश राजतंत्र हटि लोकतांत्रिक पुनर्संरचनाक समयक स्वर अछि।

प्रश्न 5427. “राज्यक पुनर्संरचना”क मांग कविता मे किएक अछि?
क. समावेशी लोकतंत्र आ समानुपातिक कल्पना लेल
ख. व्यक्तिगत पद लेल
ग. भोजन-वितरण लेल
घ. गजल रचना लेल
उत्तर: क. समावेशी लोकतंत्र आ समानुपातिक कल्पना लेल
व्याख्या: कविता राज्य-व्यवस्था मे सहभागिता आ प्रतिनिधित्व चाहैत अछि।

प्रश्न 5428. “शिक्षित बेरोजगार” पंक्ति सामाजिक प्रश्न कोना जोड़ैत अछि?
क. राजनीतिक अधिकारक संग रोजगार आ विकासक चिंता जोड़ैत अछि
ख. सिर्फ प्रेम-व्यथा
ग. सिर्फ पूजा
घ. सिर्फ परीक्षा
उत्तर: क. राजनीतिक अधिकारक संग रोजगार आ विकासक चिंता जोड़ैत अछि
व्याख्या: कविता पहिचान आ आर्थिक समस्या दुनू रखैत अछि।

प्रश्न 5429. “छोड़ू आपसी मेल, करु विकासक मात्र खेल” पंक्ति कोना बुझल जा सकैत अछि?
क. आन्तरिक झगड़ा छोड़ि विकासपर केन्द्रित होबाक आग्रह
ख. मेल-जोलक विरोध मात्र
ग. विकासक निषेध
घ. गीतक ताल
उत्तर: क. आन्तरिक झगड़ा छोड़ि विकासपर केन्द्रित होबाक आग्रह
व्याख्या: कविता संघर्षकेँ विकास-दिशा दैत अछि।

प्रश्न 5430. “उखाड़ि फेकू राजाक ताज” पंक्ति कोन क्रांतिकारी भाव दैत अछि?
क. सामंती सत्ता-विरोध आ गणतांत्रिक आकांक्षा
ख. राजतंत्रक समर्थन
ग. शांत विराम
घ. घर-परिवारक वर्णन
उत्तर: क. सामंती सत्ता-विरोध आ गणतांत्रिक आकांक्षा
व्याख्या: कविता लोकतांत्रिक परिवर्तनक उग्र लोकस्वर अछि।

प्रश्न 5431. कविताक दोहरायल “जन-जनकेँ एके आवाज” ककर काव्य-प्रभाव बनबैत अछि?
क. सामूहिक नारा आ आंदोलनकारी लय
ख. निजी फुसफुसाहट
ग. भोजनक सूची
घ. गीत-विराम
उत्तर: क. सामूहिक नारा आ आंदोलनकारी लय
व्याख्या: दोहराव सामूहिकता केँ स्वर-बल दैत अछि।

प्रश्न 5432. राम नारायण देवक आंदोलनकारी कविताक समेकित पाठ की अछि?
क. कविता मधेशी अधिकार, मिथिला राज्य, भाषा-संस्कृति, लोकतंत्र आ विकासक आंदोलनकारी पाठ अछि
ख. कविता केवल हास्य
ग. कविता केवल प्रकृति
घ. कविता निरर्थक नारा
उत्तर: क. कविता मधेशी अधिकार, मिथिला राज्य, भाषा-संस्कृति, लोकतंत्र आ विकासक आंदोलनकारी पाठ अछि
व्याख्या: राम नारायण देवक स्वर राजनीतिक-सांस्कृतिक अधिकारक माग करैत अछि।

खण्ड ५४९ : विदेह-सदेह १ — रत्नेश्वर मिश्र: मोदानन्द झा परिचय आ पंजी-परम्परा

प्रश्न 5433. प्रोफेसर रत्नेश्वर मिश्रक लेख मे मोदानन्द झा कँ कोन रूपमे स्थापित कएल गेल अछि?
क. मिथिला-विभूति आ अत्यन्त सम्मानित पंजीकार
ख. केवल कवि
ग. केवल बाल-लेखक
घ. केवल पत्रकार
उत्तर: क. मिथिला-विभूति आ अत्यन्त सम्मानित पंजीकार
व्याख्या: लेख पंजीशास्त्रमे हुनक विद्वत्ता आ सामाजिक प्रतिष्ठा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 5434. मोदानन्द झाक आधुनिकता आ पारम्परिकता विषयक वर्णन कोना अछि?
क. आधुनिक कसौटीपर अनुदार, पारम्परिक कसौटीपर उदार
ख. पूर्ण आधुनिक व्यापारी
ग. परम्पराविरोधी मात्र
घ. संगीतकार मात्र
उत्तर: क. आधुनिक कसौटीपर अनुदार, पारम्परिक कसौटीपर उदार
व्याख्या: लेख हुनक व्यक्तित्वक द्वैत सूक्ष्म रूपमे बतबैत अछि।

प्रश्न 5435. पंजीशास्त्रसँ जुड़ल जिज्ञासा पर मोदानन्द झाक व्यवहार कोन छल?
क. सदैव समाधान लेल तत्पर
ख. प्रश्न टारि देब
ग. ज्ञान छिपायब मात्र
घ. अध्ययन छोड़ि देब
उत्तर: क. सदैव समाधान लेल तत्पर
व्याख्या: हुनक विद्वत्ता सुलभ आ उपयोगी रूपमे प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 5436. मोदानन्द झा कोन पारिवारिक आधारसँ आबैत छलाह?
क. पूर्णिया जिलाक पंजीकार परिवार
ख. नाट्य-परिवार
ग. व्यापारी परिवार
घ. सैनिक परिवार
उत्तर: क. पूर्णिया जिलाक पंजीकार परिवार
व्याख्या: लेख हुनका पंजीकार कुल-परम्परासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5437. रसाढ़ आ शिवनगरक उल्लेख मोदानन्द झाक जीवनमे किएक अछि?
क. रसाढ़ मूल निवास आ बादमे शिवनगरमे बसोबासक सूचना लेल
ख. युद्धस्थल लेल
ग. विद्यालयक नाम लेल
घ. नदी-तट लेल
उत्तर: क. रसाढ़ मूल निवास आ बादमे शिवनगरमे बसोबासक सूचना लेल
व्याख्या: दुनू स्थान हुनक पारिवारिक-सामाजिक भूगोल बतबैत अछि।

प्रश्न 5438. मोदानन्द झाक पिता भिखिया झाक विषयमे की कहल गेल अछि?
क. पंजीकारी करैत छलाह, मुदा नीक कृषक सेहो रहथि
ख. रंगमंचक अभिनेता
ग. पत्रकार
घ. गायक
उत्तर: क. पंजीकारी करैत छलाह, मुदा नीक कृषक सेहो रहथि
व्याख्या: पिता पारिवारिक पेशा आ कृषि दुनूसँ जुड़ल छलाह।

प्रश्न 5439. बाल्यावस्थामे मोदानन्द झा ककर विशेष स्नेह पेलनि?
क. माता-पिता, काका-काकी आ कुटुम्बक प्रचुर स्नेह
ख. केवल गुरु
ग. केवल राजा
घ. कोनो स्नेह नहि
उत्तर: क. माता-पिता, काका-काकी आ कुटुम्बक प्रचुर स्नेह
व्याख्या: लेख बाल्य-संस्मरणमे अपनत्वक वातावरण देखबैत अछि।

प्रश्न 5440. पूर्णिया क्षेत्रक मलेरिया-कालाजार प्रसंग ककर संकेत अछि?
क. बाल्यावस्थाक बीमारी आ अंचलक कठिन स्वास्थ्य-परिस्थिति
ख. संगीत-राग
ग. मंच-आयोजन
घ. विद्यालय परीक्षा
उत्तर: क. बाल्यावस्थाक बीमारी आ अंचलक कठिन स्वास्थ्य-परिस्थिति
व्याख्या: “माहुर खाउ...” कहबी सँ क्षेत्रक रोग-भय स्पष्ट अछि।

प्रश्न 5441. कलकत्तासँ डॉक्टर मँगाओल जेबाक प्रसंग ककर द्योतक अछि?
क. मातृ-चिन्ता, आर्थिक क्षमता आ पुत्र-रक्षा लेल चरम प्रयास
ख. साधारण उपेक्षा
ग. राजनीतिक सभा
घ. कथा-पाठ
उत्तर: क. मातृ-चिन्ता, आर्थिक क्षमता आ पुत्र-रक्षा लेल चरम प्रयास
व्याख्या: मोदानन्दक रोगावस्था परिवारक भावनात्मक लगाव उजागर करैत अछि।

प्रश्न 5442. मोदानन्द झाक आरम्भिक जीवन-चित्रक निष्कर्ष की अछि?
क. मोडानन्द झाक पंजीकार-व्यक्तित्व पारिवारिक परम्परा, कठोर अध्ययन आ सामाजिक विश्वाससँ बनल
ख. ओ आकस्मिक कवि मात्र छलाह
ग. ओ पंजीसँ असंबद्ध
घ. ओ केवल खेतिहर
उत्तर: क. मोडानन्द झाक पंजीकार-व्यक्तित्व पारिवारिक परम्परा, कठोर अध्ययन आ सामाजिक विश्वाससँ बनल
व्याख्या: लेख हुनक जीवनक आधारभूमि विस्तारसँ रखैत अछि।

खण्ड ५५० : विदेह-सदेह १ — मोदानन्द झा: सौराठ शिक्षा, धौत परीक्षा आ प्रतिष्ठा

प्रश्न 5443. दस वर्षक अल्पायुमे मोदानन्द झा कैं कतय पठाओल गेल?
क. सौराठमे विद्याध्ययन लेल
ख. दिल्ली पत्रकारिता लेल
ग. गोवा सम्मेलन लेल
घ. जनकपुर रंगमंच लेल
उत्तर: क. सौराठमे विद्याध्ययन लेल
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे सौराठ पंजीशास्त्र-अध्ययनक केन्द्र बनल।

प्रश्न 5444. सौराठमे हुनक गुरु आ आश्रयदाता के रहथि?
क. पं. विश्वनाथ प्रसिद्ध निरसू झा
ख. रामरंग झा
ग. शैलेन्द्र मोहन झा
घ. संतोष मिश्र
उत्तर: क. पं. विश्वनाथ प्रसिद्ध निरसू झा
व्याख्या: निरसू झा ख्यातनाम पंजीकार आ आश्रयदाता रूपमे उल्लिखित छथि।

प्रश्न 5445. पंजीशास्त्रक अध्ययन लेल सामान्यतः कतेक काल उचित मानल गेल छल?
क. पन्द्रह वर्षक कालावधि
ख. दू दिन
ग. एक मास
घ. सत्तर वर्ष
उत्तर: क. पन्द्रह वर्षक कालावधि
व्याख्या: लेख पंजीशास्त्रक कठिनता आ दीर्घ अध्ययन-प्रक्रिया बतबैत अछि।

प्रश्न 5446. मोदानन्द झा कतेक समयमे निष्णात भेलाह?
क. दस-एगारह वर्षमे गुरु-कृपासँ
ख. पचास वर्षमे
ग. एक रातिमे
घ. कहियो नहि
उत्तर: क. दस-एगारह वर्षमे गुरु-कृपासँ
व्याख्या: हुनकर प्रतिभा सामान्य कालावधिसँ जल्दी परिपक्व भेल।

प्रश्न 5447. ओ बादो सौराठसँ कोना जुड़ल रहलाह?
क. वार्षिक वैवाहिक सभाक अवसरपर आजीवन अबैत-जाइत रहलाह
ख. सौराठ छोड़ि पूर्णतः असंबद्ध
ग. कहियो न गेलाह
घ. केवल पर्यटन लेल
उत्तर: क. वार्षिक वैवाहिक सभाक अवसरपर आजीवन अबैत-जाइत रहलाह
व्याख्या: शिक्षा समाप्त भेलाक बादो परम्परा आ कार्यसँ सम्बन्ध बनल रहल।

प्रश्न 5448. धौत परीक्षामे १९४० मे मोदानन्द झाक उपलब्धि की छल?
क. सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयलनि
ख. असफल भेलाह
ग. भाग नहि लेलनि
घ. केवल दर्शक रहलाह
उत्तर: क. सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयलनि
व्याख्या: राज-दरभंगा द्वारा आयोजित परीक्षामे हुनक उत्कृष्टता स्थापित भेल।

प्रश्न 5449. धौत परीक्षामे सर्वोच्च घोषित भेलाक बाद हुनका की विशेष सम्मान भेटल?
क. धोतीक संग दोशाला
ख. केवल पुस्तक
ग. केवल भोजन
घ. कोनो सम्मान नहि
उत्तर: क. धोतीक संग दोशाला
व्याख्या: तीन उत्तीर्णकेँ धोती, मुदा सर्वोच्चता लेल मोदानन्द झाकेँ दोशाला सेहो।

प्रश्न 5450. धौत परीक्षाक पारम्परिक महत्त्व की छल?
क. उत्तीर्ण होयब बड़ सम्मान, सर्वोच्चता अनुपम मानल जाइत छल
ख. सामान्य खेल
ग. भोजन विधि
घ. बालकविता
उत्तर: क. उत्तीर्ण होयब बड़ सम्मान, सर्वोच्चता अनुपम मानल जाइत छल
व्याख्या: लेख धौत परीक्षाकेँ पारम्परिक मिथिलामे प्रतिष्ठित बतबैत अछि।

प्रश्न 5451. निरसू झाक निधन बाद मोदानन्द झाक भूमिका की रहल?
क. गुरुक ऋण अदाय करबाक भावसँ सौराठमे सेवा आ निर्णय-लेखन
ख. गुरु-परम्परा छोड़ब
ग. संगीत गायब
घ. पत्रकारिता पढ़ाबय
उत्तर: क. गुरुक ऋण अदाय करबाक भावसँ सौराठमे सेवा आ निर्णय-लेखन
व्याख्या: ओ अपन नाम बढ़यबासँ बेसी गुरु-घरक काम सँघारैत रहलाह।

प्रश्न 5452. कालीकादत्त झा मोदानन्द बाबू प्रति कोन भाव रखैत छथि?
क. गुरु रूपेँ श्रद्धा
ख. प्रतिद्वन्द्वी रूपेँ घृणा
ग. अजनबी भाव
घ. बाल-मित्र मात्र
उत्तर: क. गुरु रूपेँ श्रद्धा
व्याख्या: मोदानन्द झा निरसू बाबूक पुत्रसभकेँ पंजीज्ञान देलथि, तैं गुरुभाव बनल।

खण्ड ५५१ : विदेह-सदेह १ — मोदानन्द झा: शोध-दृष्टि आ पंजी-परियोजना

प्रश्न 5453. मोदानन्द बाबूक कमाइबिषयक दृष्टि की छल?
क. पंजीकारी, सिद्धान्त-लेखन, विदाइ आ खेत-पथारसँ संतोषजनक आय होइत छल
ख. केवल दानपर निर्भर
ग. कोनो आय नहि
घ. केवल राजकोष
उत्तर: क. पंजीकारी, सिद्धान्त-लेखन, विदाइ आ खेत-पथारसँ संतोषजनक आय होइत छल
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे आय पर्याप्त छल, मुदा रुचि ज्ञान-विस्तारमे अधिक छल।

प्रश्न 5454. कमाइसँ बेसी हुनकर अभिरुचि कतय छल?
क. ज्ञान-विस्तार आ पंजी-संबंधी शोधमे
ख. नाच-गानमे मात्र
ग. व्यापारमे
घ. राजनीतिक पदमे
उत्तर: क. ज्ञान-विस्तार आ पंजी-संबंधी शोधमे
व्याख्या: मिश्रजी मोदानन्दक शोधपरक प्रवृत्ति पर जोर दैत छथि।

प्रश्न 5455. डॉ. रमानाथ झाक संग मोदानन्द झा कोन काज दिस प्रवृत्त भेलाह?
क. विभिन्न मूलक प्रसिद्ध व्यक्ति, विद्वान आ राजवंशक वंश-परिचय तैयार करब
ख. बालगीत संग्रह
ग. बूथ कब्जा
घ. मीडिया संस्थान
उत्तर: क. विभिन्न मूलक प्रसिद्ध व्यक्ति, विद्वान आ राजवंशक वंश-परिचय तैयार करब
व्याख्या: पंजी-सूचना कैं ऐतिहासिक-सामाजिक शोधमे बदलबाक प्रयास छल।

प्रश्न 5456. बनेली राजवंशक परिचयात्मक पुस्तकक नाम की देल गेल अछि?
क. अलयी कुल प्रकाश
ख. सगर राति दीप
ग. पास करबाक लेल
घ. जोगार
उत्तर: क. अलयी कुल प्रकाश
व्याख्या: लेख एहि पुस्तककेँ हुनक शोध-प्रवृत्तिक परिणाम रूपमे देखबैत अछि।

प्रश्न 5457. विशिष्ट गाममे बसनिहार मैथिल ब्राह्मणक बीजी पुरुष धरि परिचय तैयार करबाक परियोजना ककर संकेत अछि?
क. ग्राम-वंशावलीक गहन सामाजिक इतिहास-लेखन
ख. केवल गीत-लेखन
ग. विद्यालयी परीक्षा
घ. विवाह-हास्य
उत्तर: क. ग्राम-वंशावलीक गहन सामाजिक इतिहास-लेखन
व्याख्या: मोदानन्द पंजीसँ समाज-इतिहास रचबाक चाह रखैत छलाह।

प्रश्न 5458. कोइलख गामसँ जुड़ल रचना किएक उल्लेखनीय अछि?
क. एहन ग्राम-परिचयात्मक परियोजनाक प्रथम प्रयास रूपमे
ख. हाइकू-संग्रह
ग. नाटक-रूपक
घ. भोजन-पत्रक
उत्तर: क. एहन ग्राम-परिचयात्मक परियोजनाक प्रथम प्रयास रूपमे
व्याख्या: ओ कोइलख विषयक अंश लेखककेँ सुनौलनि, मुदा प्रकाशन नहि भऽ सकल।

प्रश्न 5459. दूषण-पंजीक विवरण प्रकाशित करबाक विषयमे आलोचना किएक भेल?
क. एहि विवरणमे परिवार-विशेषक अशोभनीय/अप्रकाश्य बात रहैत छल
ख. क्योंकि भाषा कठिन छल
ग. क्योंकि संगीत गलत
घ. क्योंकि भोजन कम
उत्तर: क. एहि विवरणमे परिवार-विशेषक अशोभनीय/अप्रकाश्य बात रहैत छल
व्याख्या: पंजीकारी समाजक मर्यादा आ शोध-पारदर्शिताक बीच तनाव छल।

प्रश्न 5460. पुरान पंजीकार परिवारक पांडुलिपि-संग्रह परियोजना किएक महत्त्वपूर्ण छल?
क. क्योंकि पंजी-पोथी नष्ट भऽ रहल छल आ पेशा चलाबयवाला नहियो रहथि
ख. क्योंकि ओ सब नई किताब छल
ग. क्योंकि संगीत-पत्र छल
घ. क्योंकि खेलक नियम छल
उत्तर: क. क्योंकि पंजी-पोथी नष्ट भऽ रहल छल आ पेशा चलाबयवाला नहियो रहथि
व्याख्या: मोदानन्द झा लुप्त होइत स्रोत-सामग्री बचाबय चाहैत छलाह।

प्रश्न 5461. पारिवारिक संपत्तिक प्रबंधन हुनक शोध-काज पर की असर देलक?
क. दरभंगा-संपर्क घटल आ समय पूर्णिया प्रबंधनमे लगल
ख. शोध पूर्ण वेगसँ समाप्त
ग. ओ विदेश गेलाह
घ. काज असंबद्ध
उत्तर: क. दरभंगा-संपर्क घटल आ समय पूर्णिया प्रबंधनमे लगल
व्याख्या: लेख बतबैत अछि जे परिस्थिति हुनक परियोजनासभ पूर्ण नहि होमय देलक।

प्रश्न 5462. मोदानन्द झाक शोध-दृष्टि सम्बन्धी खण्डक सार की अछि?
क. मोदानन्द झा पंजीकार मात्र नहि, पंजी-सूचना कैं सामाजिक इतिहासमे बदलय चाहनिहार शोध-दृष्टा छलाह
ख. ओ शोध-विरोधी छलाह
ग. ओ केवल कृषक छलाह
घ. ओ स्रोत न बचाबय चाहैत छलाह
उत्तर: क. मोदानन्द झा पंजीकार मात्र नहि, पंजी-सूचना कैं सामाजिक इतिहासमे बदलय चाहनिहार शोध-दृष्टा छलाह
व्याख्या: हुनक अधूरी परियोजनासभ मिथिलाक सामाजिक इतिहास लेल बहुमूल्य संकेत अछि।

खण्ड ५५२ : विदेह-सदेह १ — मोदानन्द झा: जिज्ञासु-सहायता आ विद्वत्ता

प्रश्न 5463. लेखक कैं मोदानन्द झासँ प्रथम उल्लेखित लाभ कोन प्रसंगमे भेटल?
क. पूर्व मुख्यमंत्री विनोदानन्द झाक वंश-परिचय खोजबाक समय
ख. बूथ कैप्चरिंगक समय
ग. विवाह गीतक समय
घ. गणेश-वंदना समय
उत्तर: क. पूर्व मुख्यमंत्री विनोदानन्द झाक वंश-परिचय खोजबाक समय
व्याख्या: मिश्रजी जीवनी-लेखन लेल प्रमाणिक वंश-सूचना ताकैत छलाह।

प्रश्न 5464. गिरिजानन्द झाक संग्रहक चर्चा किएक आयल?
क. गंगाक दक्षिण बसल मैथिल ब्राह्मण आ पंडासभक वंशावलीक सम्भावित स्रोत रूपमे
ख. संगीत-ताल लेल
ग. बाढ़ राहत लेल
घ. कविता-पुरस्कार लेल
उत्तर: क. गंगाक दक्षिण बसल मैथिल ब्राह्मण आ पंडासभक वंशावलीक सम्भावित स्रोत रूपमे
व्याख्या: मोदानन्द बाबू एक संभावित पंजी-स्रोतक दिशा बतौलनि।

प्रश्न 5465. गिरिजानन्द झाक पंजी-पोथी व्यवस्थित नहि होएबाक भय की छल?
क. महत्त्वपूर्ण पूर्वज-सूचना लुप्त भऽ सकैत छल
ख. गीत बदलि जाएत
ग. भोजन खराब होएत
घ. चुनाव हारि जाएत
उत्तर: क. महत्त्वपूर्ण पूर्वज-सूचना लुप्त भऽ सकैत छल
व्याख्या: लेख पंजी-संरक्षणक तात्कालिक आवश्यकता देखबैत अछि।

प्रश्न 5466. दोसरा अवसरमे लेखक कैं कोन पुस्तकक समीक्षा लिखबाक छल?
क. प्रो. जगदीश चन्द्र झाक “माइग्रेशन एंड अचीवमेंट्स ऑफ मैथिल पंडित्स”
ख. राजू आ टाकाक गाछ
ग. भोर
घ. बूथ कैप्चरिंग
उत्तर: क. प्रो. जगदीश चन्द्र झाक “माइग्रेशन एंड अचीवमेंट्स ऑफ मैथिल पंडित्स”
व्याख्या: पुस्तक मिथिलाक प्रव्रजित पंडितसभ पर आधारित छल।

प्रश्न 5467. तीन विद्वानक मूल ज्ञात नहि होएबाक समस्या पर मोदानन्द झाक प्रतिक्रिया की छल?
क. क्षणभर ध्यानस्थ भऽ क्रमशः मूल बतौलनि
ख. उत्तर टारि देलनि
ग. कहिलनि असंभव
घ. विषय बदलि देलनि
उत्तर: क. क्षणभर ध्यानस्थ भऽ क्रमशः मूल बतौलनि
व्याख्या: हुनक स्मृति आ पंजीज्ञान तत्काल उपयोगी सिद्ध भेल।

प्रश्न 5468. गोकुलनाथ, पीताम्बर आ रघुनाथ पर मोदानन्द झाक सूचना की विशेष देखबैत अछि?
क. स्रोत-पुस्तकक तथ्य-संशोधन धरि हुनक ज्ञान पहुँचैत छल
ख. ओ केवल नाम सुनलनि
ग. ओ असहमति नहि रखलनि
घ. ओ गीत गबैत रहलाह
उत्तर: क. स्रोत-पुस्तकक तथ्य-संशोधन धरि हुनक ज्ञान पहुँचैत छल
व्याख्या: ओ नाम-संशोधन आ विद्वान-परम्पराक सूक्ष्म जानकारी दैत छलाह।

प्रश्न 5469. धीरेन्द्र झा विषयक टिप्पणी हुनक पंजी-ज्ञानक कोन आयाम खोलैत अछि?
क. बंगालमे पंजी-सूचनाक संशोधन-संवर्द्धन आ जटिल सामाजिक पंजीकरणक ज्ञान
ख. विद्यालयी अंकराजि
ग. भोजनक स्वाद
घ. बालगीतक ताल
उत्तर: क. बंगालमे पंजी-सूचनाक संशोधन-संवर्द्धन आ जटिल सामाजिक पंजीकरणक ज्ञान
व्याख्या: मोदानन्द बाबू पंजीक ऐतिहासिक जटिलता बुझैत छलाह।

प्रश्न 5470. मोदानन्द झाक विद्वत्ता “सहज सम्प्रेषणीयता”सँ जुड़ल किएक कहल गेल?
क. ओ जिज्ञासुकैं सूचना सहजता सँ देइत छलाह
ख. ओ मौन रहैत छलाह
ग. ओ लिखैत नहि छलाह
घ. ओ प्रश्न रोकैत छलाह
उत्तर: क. ओ जिज्ञासुकैं सूचना सहजता सँ देइत छलाह
व्याख्या: ज्ञान केवल भंडार नहि, संवादक माध्यम छल।

प्रश्न 5471. विभिन्न उदाहरणसभ लेखमे ककर प्रमाण बनैत अछि?
क. मोदानन्द झाक स्मृति, पंजी-प्रामाणिकता आ शोध-सहयोगक
ख. हुनक संगीतक
ग. हुनक पाक-कला
घ. हुनक रंगमंचीय अभिनयक
उत्तर: क. मोदानन्द झाक स्मृति, पंजी-प्रामाणिकता आ शोध-सहयोगक
व्याख्या: प्रसंगसभ हुनक विद्वत्ता कैं घटना-आधारित प्रमाण दैत अछि।

प्रश्न 5472. मोदानन्द झाक जिज्ञासु-सहायता पर निष्कर्ष की अछि?
क. मोदानन्द झा पंजी-स्रोतक जीवित कोश जकाँ जिज्ञासु सभक मदति करैत छलाह
ख. ओ सूचना रोकि रखैत छलाह
ग. ओ पंजी नहि जनैत
घ. ओ केवल कथा-पात्र छथि
उत्तर: क. मोदानन्द झा पंजी-स्रोतक जीवित कोश जकाँ जिज्ञासु सभक मदति करैत छलाह
व्याख्या: लेख हुनका चलैत-फिरैत अभिलेखीय प्रामाणिकता रूपमे देखबैत अछि।

खण्ड ५५३ : विदेह-सदेह १ — मोदानन्द झा: सम्मान, सुधार-चिन्ता आ विरासत

प्रश्न 5473. मोदानन्द झाक खान-पान आ छूआछूत-संबंधी व्यवहार कोना वर्णित अछि?
क. ओ सभक छुइल भोजन नहि करैत, प्रायः अपन पाक करैत छलाह
ख. ओ सबसँ भोजन लैत
ग. ओ पाक नहि करैत
घ. ओ भोजन-विमुख छलाह
उत्तर: क. ओ सभक छुइल भोजन नहि करैत, प्रायः अपन पाक करैत छलाह
व्याख्या: लेख पारम्परिक आचार-पालनक एक पक्ष रखैत अछि।

प्रश्न 5474. कपिलेश्वर मिश्रक हाथे पाक करबाक प्रसंग ककर संकेत अछि?
क. परिवारक गहन सम्मान आ विश्वासक
ख. अपमानक
ग. अपरिचयक
घ. व्यापारक
उत्तर: क. परिवारक गहन सम्मान आ विश्वासक
व्याख्या: समादृत ओकील स्वयं पाक करथि, ई मोदानन्दक प्रतिष्ठा देखबैत अछि।

प्रश्न 5475. बोधगाममे पएर पखारि चरणोदक लेबाक घटना की दर्शबैत अछि?
क. दूरस्थ मैथिल समाजमे पंजीकारक अतिशय आदर
ख. सामान्य अतिथि-सूची
ग. राजकीय दंड
घ. शिक्षा-व्यंग्य
उत्तर: क. दूरस्थ मैथिल समाजमे पंजीकारक अतिशय आदर
व्याख्या: बांग्लादेश स्थित मैथिल ब्राह्मण-बहुल गाममे हुनका पूज्य भाव भेटल।

प्रश्न 5476. मोडानन्द बाबूक चिंतनमे प्रगतिशील पक्ष की कहल गेल?
क. पंजीकारक संस्थाकेँ जीवित बनाबय आ समाजकेँ दिशा देबाक इच्छा
ख. पंजी समाप्त करबाक चाह
ग. समाजसँ दूरी
घ. ज्ञान छिपायब
उत्तर: क. पंजीकारक संस्थाकेँ जीवित बनाबय आ समाजकेँ दिशा देबाक इच्छा
व्याख्या: ओ वृत्तिक प्रतिष्ठा आ सामूहिक संस्था-सुधार चाहैत छलाह।

प्रश्न 5477. ओ पंजीकारसभक आपसी द्वेषभाव पर की सोचैत छलाह?
क. ई हुनका नीक नहि लगैत छल
ख. ओ ओकर समर्थन करैत छलाह
ग. ओ तटस्थ नहि छलाह
घ. ओ पंजीकार नहि छलाह
उत्तर: क. ई हुनका नीक नहि लगैत छल
व्याख्या: लेख हुनक समन्वयी दृष्टि बतबैत अछि।

प्रश्न 5478. राजदरभंगा-नियंत्रित पंजी व्यवस्था संबंधी हुनक विचार की छल?
क. प्रजातंत्रीकरणक पक्षमे रहथि
ख. पूर्ण राज-नियंत्रणक पक्षमे मात्र
ग. पंजी-विनाशक पक्षमे
घ. कोनो विचार नहि
उत्तर: क. प्रजातंत्रीकरणक पक्षमे रहथि
व्याख्या: ओ प्रतिनिधि-आधारित परिवर्तनक पक्षधर बताओल गेलाह।

प्रश्न 5479. जातीय स्तरोन्नयन पर मोदानन्द झाक दृष्टि की छल?
क. विहित रीति सँ नीक वैवाहिक सम्बन्ध करनिहार परिवारक स्तरोन्नयन सम्भव मानथि
ख. कोनो परिवर्तन नहि
ग. सभक अवनति
घ. विवाह असंबद्ध
उत्तर: क. विहित रीति सँ नीक वैवाहिक सम्बन्ध करनिहार परिवारक स्तरोन्नयन सम्भव मानथि
व्याख्या: ओ परम्परा भीतर सुधारक संभावना देखैत छलाह।

प्रश्न 5480. जमींदारी उन्मूलनक असर पंजी व्यवस्था पर कोना देखल गेल?
क. पंजीकारक स्थिति आ परम्परागत संरक्षणक क्षति भेल
ख. पंजी व्यवस्था बहुत समृद्ध भेल
ग. कोनो असर नहि
घ. संगीत बन्द भेल
उत्तर: क. पंजीकारक स्थिति आ परम्परागत संरक्षणक क्षति भेल
व्याख्या: जमींदार परम्परा-संस्कृतिक पोषक छलाह, हुनक अंत सँ पंजीकार प्रभावित भेल।

प्रश्न 5481. मोडानन्द झाक स्मृति-संरक्षण लेल लेखमे की वांछनीय कहल गेल?
क. शोध-परियोजना, पंजी-पांडुलिपि-संग्रह आ मूल-ग्राम अभिज्ञान पर काम
ख. केवल मूर्ति-स्थापना
ग. केवल भोज
घ. स्रोत नष्ट करब
उत्तर: क. शोध-परियोजना, पंजी-पांडुलिपि-संग्रह आ मूल-ग्राम अभिज्ञान पर काम
व्याख्या: लेख स्मृति कैं सक्रिय अभिलेखीय-शोधक कार्यक्रम बनाबय चाहैत अछि।

प्रश्न 5482. मोडानन्द झाक सम्मान आ विरासत पर समेकित सार की अछि?
क. मोडानन्द झाक विरासत पंजी-विद्वत्ता, सामाजिक सम्मान, सुधार-दृष्टि आ स्रोत-संरक्षणक आह्वानमे अछि
ख. ओ केवल निजी पात्र
ग. ओ सुधार-विरोधी
घ. ओ अप्रासंगिक
उत्तर: क. मोडानन्द झाक विरासत पंजी-विद्वत्ता, सामाजिक सम्मान, सुधार-दृष्टि आ स्रोत-संरक्षणक आह्वानमे अछि
व्याख्या: मिश्रजी हुनक जीवनसँ मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास बचाबक आग्रह करैत छथि।

खण्ड ५५४ : विदेह-सदेह १ — रेवतीरमण लाल: मधुश्रावनी आ डरक जनकपुर

प्रश्न 5483. “मधुश्रावनी” कवितामे ऋतु-परिदृश्य कोना रचल गेल अछि?
क. साओन, घन, मलय पवन, दामिनी आ जल-थलक बिम्बसँ
ख. सूखा मरुभूमि
ग. शीतकालक हिम
घ. मंचीय अंधकार
उत्तर: क. साओन, घन, मलय पवन, दामिनी आ जल-थलक बिम्बसँ
व्याख्या: कविता मधुश्रावनी पाबनि कैँ वर्षाक सौंदर्यसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5484. “काँख फूलडालि मुस्कथि कामिनी” पंक्ति कोन उत्सवी भाव रचैत अछि?
क. स्त्री-सौंदर्य, पाबनि-सज्जा आ हर्षक दृश्य
ख. भयमात्र
ग. राजनीतिक क्रोध
घ. विद्यालयी व्यंग्य
उत्तर: क. स्त्री-सौंदर्य, पाबनि-सज्जा आ हर्षक दृश्य
व्याख्या: मधुश्रावनी स्त्री-उत्सवक भावभूमि मे देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 5485. “विरही यक्षक नोर” रूपक वर्षाकैँ कोना बदलैत अछि?
क. मेघ-वर्षाकैँ विरहक भावनात्मक आँसू बना दैत अछि
ख. वर्षा रोकैत अछि
ग. बाढ़क आँकड़ा बनबैत अछि
घ. ताल-संकेत बनबैत अछि
उत्तर: क. मेघ-वर्षाकैँ विरहक भावनात्मक आँसू बना दैत अछि
व्याख्या: प्रकृति बिम्ब मानवीय विरहसँ भरि जाइत अछि।

प्रश्न 5486. “रोशन जनकपुरी”क “डर लगैए” मे डरक पुनरावृत्ति की करैत अछि?
क. समकालीन सामाजिक-राजनीतिक भयक लय बनबैत अछि
ख. उत्सवक हास्य
ग. भोजनक सूची
घ. निर्भयता मात्र
उत्तर: क. समकालीन सामाजिक-राजनीतिक भयक लय बनबैत अछि
व्याख्या: हर पंक्ति डरक अलग रूप खोलैत अछि।

प्रश्न 5487. “कफन पिहरने लोक” आ “शहर बनल मरघट” बिम्ब ककर संकेत अछि?
क. समाजक मृत्यु-जैसी भयावह स्थिति
ख. पूर्ण उल्लास
ग. बाल-खेल
घ. विवाह-सजावट
उत्तर: क. समाजक मृत्यु-जैसी भयावह स्थिति
व्याख्या: कविता शहरी-सामाजिक विघटन कैँ मृत्यु-बिम्बसँ देखबैत अछि।

प्रश्न 5488. “हमरे बलपर पहुँचल अछि जे संसदमे” पंक्ति कोन आलोचना करैत अछि?
क. जनबलसँ उठल प्रतिनिधिक जनविरोधी दूरी
ख. किसानक गीत
ग. देवताक स्तुति
घ. बालकविता
उत्तर: क. जनबलसँ उठल प्रतिनिधिक जनविरोधी दूरी
व्याख्या: कविता सत्तामे गेल लोकक जनपर उपदेशी रवैया पर प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 5489. “घर घरमे अछि रोहिट-कन्ना” बिम्ब ककर वातावरण बनबैत अछि?
क. घरेलू आ सामाजिक शोक-चिन्ता
ख. दिवालीक उल्लास
ग. विवाहक नाच
घ. राग-वंदना
उत्तर: क. घरेलू आ सामाजिक शोक-चिन्ता
व्याख्या: डर निजी घर धरि पसरल अछि।

प्रश्न 5490. “घेंटकटीसँ भरल अछि पन्ना” कथन कोन मीडिया/समय आलोचना करैत अछि?
क. समकालीन लेखन/समाचार हिंसा आ कटुता सँ भरल देखबैत अछि
ख. कविता शांत अछि
ग. पन्ना खाली अछि
घ. केवल पाक-विधि अछि
उत्तर: क. समकालीन लेखन/समाचार हिंसा आ कटुता सँ भरल देखबैत अछि
व्याख्या: कविता आजुक पोथी/समाचारक भयावह सामग्री पर कटाक्ष करैत अछि।

प्रश्न 5491. अन्तिम आग्रह “डेग बढ़ैत आगूक डेगसँ” ककर दिशा दैत अछि?
क. डर-संस्कृति पार करि सामूहिक प्रगति
ख. पीछे हटब
ग. मौन रहब
घ. कथा बन्द करब
उत्तर: क. डर-संस्कृति पार करि सामूहिक प्रगति
व्याख्या: कवि डर व्यक्त करितहुँ आगे बढ़बाक आह्वान करैत छथि।

प्रश्न 5492. रेवतीरमण लालक मधुश्रावनी आ डर-विषयक कविताक सार की अछि?
क. रेवतीरमण लाल प्रकृति-पाबनि सौंदर्य आ सामाजिक भय, दुनू स्वर लिखैत छथि
ख. ओ केवल हास्य लिखैत छथि
ग. ओ केवल पंजी लिखैत छथि
घ. ओ केवल संगीत लिखैत छथि
उत्तर: क. रेवतीरमण लाल प्रकृति-पाबनि सौंदर्य आ सामाजिक भय, दुनू स्वर लिखैत छथि
व्याख्या: एक कविता उत्सवी, दोसर सामाजिक-सतर्कता भरल अछि।

खण्ड ५५५ : विदेह-सदेह १ — रूपा धीरू: परिचय आ “अंगेजल काँट”

प्रश्न 5493. रूपा धीरूक परिचयमे हुनक रचनात्मक क्षेत्र कोन-कोन अछि?
क. कविता, अनुवाद, संगीत-संबंधी कृति, संपादन आ पाठ्य-पुस्तक सहयोग
ख. केवल पंजीकारी
ग. केवल खेती
घ. केवल बूथ राजनीति
उत्तर: क. कविता, अनुवाद, संगीत-संबंधी कृति, संपादन आ पाठ्य-पुस्तक सहयोग
व्याख्या: परिचय हुनका साहित्य, संगीत आ संपादनमे सक्रिय देखबैत अछि।

प्रश्न 5494. “कोइली कानए” आ “माटिसँ सिनेह” ककर रूपमे देल अछि?
क. प्रथम प्रकाशित रचना/कविता-संदर्भ
ख. पत्रकारिता संस्थान
ग. भोजन-विधि
घ. राग-ताल
उत्तर: क. प्रथम प्रकाशित रचना/कविता-संदर्भ
व्याख्या: परिचय आरम्भिक साहित्यिक उपस्थिति बतबैत अछि।

प्रश्न 5495. “नेहक वएन”, “भोर” आदि उल्लेख हुनक कोन पक्ष देखबैत अछि?
क. संगीत-संबंधी मैथिली कृतिसँ जुड़ाव
ख. न्यायालय कार्य
ग. बाढ़ सर्वेक्षण
घ. विद्यालय परीक्षा
उत्तर: क. संगीत-संबंधी मैथिली कृतिसँ जुड़ाव
व्याख्या: रूपा धीरू संगीतात्मक मैथिली सांस्कृतिक उत्पादकता सँ जुड़ल छथि।

प्रश्न 5496. “अंगेजल काँट” कविता ककरा सम्बोधित करैत प्रतीत होइत अछि?
क. बिहिना/बहिनकेँ आत्मीय संवाद रूपमे
ख. राजा केँ
ग. पत्रकार केँ
घ. पंजीकार केँ
उत्तर: क. बिहिना/बहिनकेँ आत्मीय संवाद रूपमे
व्याख्या: कविता “बिहना” सम्बोधनसँ निजी स्त्री-सम्वाद बनबैत अछि।

प्रश्न 5497. गुलाब आ काँटक रूपक कवितामे की अर्थ बनबैत अछि?
क. सुंदर जीवन-सपना संग दुख-चोट केँ स्वीकारब
ख. केवल बागवानी
ग. राजनीतिक झंडा
घ. संगीतक स्वर
उत्तर: क. सुंदर जीवन-सपना संग दुख-चोट केँ स्वीकारब
व्याख्या: काँट जीवनक पीड़ा, गुलाब सुगंधित सम्भावना बनि जाइत अछि।

प्रश्न 5498. “छहोछित्त कऽ देबवला मर्मभेदी वाण” पंक्ति बहिनक कोन भूमिका देखबैत अछि?
क. कटु-सच पूछबवाली आत्मीय आलोचक
ख. शत्रु
ग. मौन दर्शक
घ. गायिका मात्र
उत्तर: क. कटु-सच पूछबवाली आत्मीय आलोचक
व्याख्या: बहिनक प्रश्न कवयित्री केँ भीतरक उत्तर दिस धकेलैत अछि।

प्रश्न 5499. “ती-ती आ पंचगोटिया” स्मृति कवितामे किएक आयल अछि?
क. बचपनक खेल आ जीवनक हारक तुलना लेल
ख. केवल खेल-नियम लेल
ग. परीक्षा-सूची लेल
घ. भोजनक नाम लेल
उत्तर: क. बचपनक खेल आ जीवनक हारक तुलना लेल
व्याख्या: कविता बचपनक जीत आ जीवनक पराजयक विरोधाभास रचैत अछि।

प्रश्न 5500. “जिनगी जीबाक खेलमे हम हारि गेल छी” कथन ककर भाव अछि?
क. आत्मस्वीकार, पीड़ा आ संघर्षक
ख. पूर्ण विजय
ग. सामान्य हास्य
घ. भक्ति-वंदना
उत्तर: क. आत्मस्वीकार, पीड़ा आ संघर्षक
व्याख्या: कवयित्री जीवनक आंतरिक हार खुलि कहैत छथि।

प्रश्न 5501. “मालिन जँ काँटकेँ नइ अंगेजतै...” पंक्ति कोन परिपक्वता दैत अछि?
क. पीड़ा स्वीकारल्यासँहि जीवनक सुगंध सम्भव अछि
ख. काँट हटेबाक आदेश
ग. गुलाबक निषेध
घ. मौन अंत
उत्तर: क. पीड़ा स्वीकारल्यासँहि जीवनक सुगंध सम्भव अछि
व्याख्या: कविता दुख केँ रचनात्मक स्वीकृतिक स्तर पर लैत अछि।

प्रश्न 5502. रूपा धीरूक “अंगेजल काँट”क समेकित सार की अछि?
क. रूपा धीरूक कविता बहिन-संवादमे स्त्री-अनुभव, चोट आ स्वीकारक मार्मिक रूपक रचैत अछि
ख. कविता केवल बालगीत
ग. कविता केवल राजनीति
घ. कविता केवल पंजीशास्त्र
उत्तर: क. रूपा धीरूक कविता बहिन-संवादमे स्त्री-अनुभव, चोट आ स्वीकारक मार्मिक रूपक रचैत अछि
व्याख्या: “अंगेजल काँट” जीवन-दुःखक सुगंधमय स्वीकार अछि।

खण्ड ५५६ : विदेह-सदेह १ — रूपेश कुमार झा “त्यौंथ”: बूथ कैप्चरिंग

प्रश्न 5503. रूपेश कुमार झा “त्यौंथ”क परिचयमे हुनका कोना प्रस्तुत कएल गेल अछि?
क. कोलकातामे स्नातक-स्तरक विद्यार्थी आ साहित्यिक गतिविधिमे सक्रिय युवा
ख. वरिष्ठ पंजीकार
ग. राग-वाग्गेयकार
घ. बाढ़ अधिकारी
उत्तर: क. कोलकातामे स्नातक-स्तरक विद्यार्थी आ साहित्यिक गतिविधिमे सक्रिय युवा
व्याख्या: परिचय युवा साहित्यिक सक्रियता बतबैत अछि।

प्रश्न 5504. “बूथ कैप्चरिंग” कवितामे वक्ता गाम किएक अबैत अछि?
क. मोनक बात मानि, अवकाश कठिन रहितहुँ गामवास करबाक लेल
ख. राजा बनबाक लेल
ग. पत्रकारिता पढ़बाक लेल
घ. विवाह करबाक लेल
उत्तर: क. मोनक बात मानि, अवकाश कठिन रहितहुँ गामवास करबाक लेल
व्याख्या: आरम्भमे शहर-नोकरीसँ अवकाश कठिन, मुदा गाम-फेरब प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 5505. वक्ता गामक हवा केँ “बिगड़ल” किएक कहैत अछि?
क. चुनाव, स्वार्थ आ सामाजिक विकृतिसँ वातावरण खराब भेल अछि
ख. प्रकृति सुंदर मात्र
ग. गाम पूर्ण आदर्श
घ. कुनो चुनाव नहि
उत्तर: क. चुनाव, स्वार्थ आ सामाजिक विकृतिसँ वातावरण खराब भेल अछि
व्याख्या: कविता ग्रामीण राजनीति पर व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 5506. ग्रामिणसभक आग्रह पर वक्ता की सोचैत अछि?
क. सेवाक अवसर मानि मुखियाक प्रतिनिधि बनबाक
ख. घर छोड़ि भागब
ग. कविता बंद करब
घ. बालगीत गेबाक
उत्तर: क. सेवाक अवसर मानि मुखियाक प्रतिनिधि बनबाक
व्याख्या: प्रारम्भिक भाव सेवा-आदर्शक अछि।

प्रश्न 5507. चुनाव-प्रचारक बाद कविता मे कोन हिंसात्मक दृश्य उभरैत अछि?
क. मारामारी, लाठी-लठौवल, नोट बाँटि वोट पड़ब
ख. पूर्ण शांति
ग. केवल गीत
घ. विवाहक रस्म
उत्तर: क. मारामारी, लाठी-लठौवल, नोट बाँटि वोट पड़ब
व्याख्या: कविता लोकतांत्रिक प्रक्रिया कें अपराधीकरणमे बदलैत देखबैत अछि।

प्रश्न 5508. वक्ताक जमानत जब्त होएब ककर परिणाम अछि?
क. ईमानदार आदर्श बनाम धन-गुंडागर्दीक चुनावी हार
ख. पूर्ण विजय
ग. संगीत पुरस्कार
घ. गुरु-दीक्षा
उत्तर: क. ईमानदार आदर्श बनाम धन-गुंडागर्दीक चुनावी हार
व्याख्या: कविता ईमानदार राजनीति कें व्यंग्यात्मक पराजय दैत अछि।

प्रश्न 5509. अन्तमे वक्ता पुनः चुनाव लड़बाक निर्णय कोना बदलल अछि?
क. अब गुंडा पोसि बूथ कैप्चरिंग करबाक संकल्प करैत अछि
ख. और अधिक सेवा करब
ग. चुनाव छोड़ब
घ. संगीत सीखब
उत्तर: क. अब गुंडा पोसि बूथ कैप्चरिंग करबाक संकल्प करैत अछि
व्याख्या: व्यंग्य ई अछि जे भ्रष्ट व्यवस्था आदर्शी मनुष्योकें दूषित करैत अछि।

प्रश्न 5510. “उगि गेलैछ हमरो दू गोट सिंग” पंक्ति कोन रूपान्तरण देखबैत अछि?
क. सज्जनता सँ हिंसक राजनीतिक सीख दिस झुकाव
ख. देवत्व
ग. बालपन
घ. संगीतिक कौशल
उत्तर: क. सज्जनता सँ हिंसक राजनीतिक सीख दिस झुकाव
व्याख्या: हास्य-व्यंग्य मार्फत नैतिक पतन व्यक्त अछि।

प्रश्न 5511. कविताक शीर्षक “बूथ कैप्चरिंग” ककर प्रतीक बनैत अछि?
क. चुनावी लोकतंत्रक अपराधी कब्जा
ख. विद्यालयी उत्तर-पुस्तिका
ग. पाबनि-विधान
घ. राग-वंदना
उत्तर: क. चुनावी लोकतंत्रक अपराधी कब्जा
व्याख्या: शीर्षक सीधा भ्रष्ट राजनीतिक व्यवहारक संकेत अछि।

प्रश्न 5512. रूपेश कुमार झाक “बूथ कैप्चरिंग”क समेकित सार की अछि?
क. कविता चुनावी भ्रष्टाचार देखबैत अछि जे आदर्शवादी ग्राम-सेवा कें गुंडागर्दीमे धकेलैत अछि
ख. कविता केवल प्रेमगीत
ग. कविता बाढ़-वर्णन
घ. कविता पंजी इतिहास
उत्तर: क. कविता चुनावी भ्रष्टाचार देखबैत अछि जे आदर्शवादी ग्राम-सेवा कें गुंडागर्दीमे धकेलैत अछि
व्याख्या: रूपेश कुमार झा युवा व्यंग्य-स्वर सँ ग्रामीण राजनीति पर प्रहार करैत छथि।

खण्ड ५५७ : विदेह-सदेह १ — सच्चिदानन्द यादव आ संतोष मिश्र: ठाढ़ होएब आ “एना किए?”

प्रश्न 5513. सच्चिदानन्द यादवक “आई हम ठाढ़ भेल छी”मे वक्ता कतय नहि ठाढ़ अछि?

क. चौबटियापर नहि, बल्कि जीवनक एक निर्णायक बाट पर

ख. मंचपर मात्र

ग. विद्यालयमे

घ. नदीक घाटपर

उत्तर: क. चौबटियापर नहि, बल्कि जीवनक एक निर्णायक बाट पर

व्याख्या: कविता कहैत अछि बाट एकटा अछि आ ओकरा रोकय पड़त जे एतय आनलक।

प्रश्न 5514. कपड़ा-दोकानक पुतरासँ तुलना ककर प्रतीक अछि?

क. दर्शकक नजरमे वस्तु बनि ठाढ़ रहबाक अनुभव

ख. स्वतंत्र उड़ान

ग. कृषिकाज

घ. राग-ताल

उत्तर: क. दर्शकक नजरमे वस्तु बनि ठाढ़ रहबाक अनुभव

व्याख्या: पुतरा सभदिन नव पिहरनमे ठाढ़, देखनिहार उलट-पुलट करैत अछि।

प्रश्न 5515. “बाट तऽ एक्केटा छै” कथन कोन तनाव रखैत अछि?

क. चयन सीमित, मुदा रोकबाक जिम्मेदारीक आग्रह

ख. बहुत विकल्प

ग. कोनो बाट नहि

घ. पूर्ण भ्रमरहित सुख

उत्तर: क. चयन सीमित, मुदा रोकबाक जिम्मेदारीक आग्रह

व्याख्या: कविता अस्तित्वगत ठहराव आ प्रतिरोधक भाषा बनबैत अछि।

प्रश्न 5516. संतोष मिश्रक “एना किए?” कविता कोन सम्बन्धक प्रश्न करैत अछि?

क. एक स्त्रीक सेवा, निकटता, डाँट, दूरी आ प्रेम-भावक जटिल सम्बन्ध

ख. चुनावी हिंसा

ग. बाढ़ राहत

घ. पंजी शोध

उत्तर: क. एक स्त्रीक सेवा, निकटता, डाँट, दूरी आ प्रेम-भावक जटिल सम्बन्ध

व्याख्या: पूरी कविता “मुदा एना किए?” आवृत्ति सँ सम्बन्धक उलझन खोलैत अछि।

प्रश्न 5517. कवितामे स्त्री घरक काज आ जरूरत पूरा करैत अछि — ई ककर संकेत अछि?

क. निकट घरेलू सहचर्य आ भावनात्मक निर्भरता

ख. अजनबीपन

ग. राजकीय आदेश

घ. विद्यालयी पाठ

उत्तर: क. निकट घरेलू सहचर्य आ भावनात्मक निर्भरता

व्याख्या: वक्ता ओकर उपस्थिति जीवनक जरूरतसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5518. रात बिताबय, नोर बहाबय, डाँटब — एहि विरोधाभाससँ की बनैत अछि?

क. प्रेम, अधिकार, क्रोध आ देखभालक मिश्रित भाव

ख. पूर्ण उदासीनता

ग. केवल घृणा

घ. कानूनी सूचना

उत्तर: क. प्रेम, अधिकार, क्रोध आ देखभालक मिश्रित भाव

व्याख्या: कविता प्रेमक सरल परिभाषा टारि जटिल अनुभूति रचैत अछि।

प्रश्न 5519. “की ईहे त प्रेम नहि?” प्रश्नक भूमिका की अछि?
क. वक्ता अपन अनुभवक नाम खोजि रहल अछि
ख. उत्तर निश्चित अछि
ग. कविता बंद अछि
घ. प्रेम असंभव
उत्तर: क. वक्ता अपन अनुभवक नाम खोजि रहल अछि
व्याख्या: कविता प्रश्नात्मक आत्म-संवाद अछि।

प्रश्न 5520. टोका-चाली बन्द भेलोपर आँखिक प्रेमगीत ककर बिम्ब अछि?
क. मौनमे व्यक्त होइत प्रेम आ विश्वास
ख. पूर्ण अलगाव
ग. राजनीतिक नारा
घ. बूथ कब्जा
उत्तर: क. मौनमे व्यक्त होइत प्रेम आ विश्वास
व्याख्या: वाणी बन्द होइतहुँ आँख भाव कहैत अछि।

प्रश्न 5521. “जेना ओ हमरासँ चिनतीते नहि हुए” व्यवहारक पुनरागमन की देखबैत अछि?
क. संबंधमे रूठब-मनाबक चक्र आ अस्थिर निकटता
ख. पूर्ण समाप्ति
ग. राजकीय निर्णय
घ. कथा का आरम्भ
उत्तर: क. संबंधमे रूठब-मनाबक चक्र आ अस्थिर निकटता
व्याख्या: कविता स्नेहक चंचल मनोदशा पकड़ैत अछि।

प्रश्न 5522. सच्चिदानन्द यादव आ संतोष मिश्रक कविताक संयुक्त सार की अछि?
क. दू कवितामे ठाढ़ होएबाक अस्तित्व-बोध आ प्रेम-सम्बन्धक प्रश्नात्मक उलझन व्यक्त अछि
ख. दून्नू केवल पाक-विधि
ग. दून्नू पंजी-लेख
घ. दून्नू संगीत-सरगम
उत्तर: क. दू कवितामे ठाढ़ होएबाक अस्तित्व-बोध आ प्रेम-सम्बन्धक प्रश्नात्मक उलझन व्यक्त अछि
व्याख्या: सच्चिदानन्द आ संतोष दुनू प्रश्नक माध्यमे मनःस्थिति खोलैत छथि।

खण्ड ५५८ : विदेह-सदेह १ — सतीश चन्द्र झा: शब्द, राति आ कविता

प्रश्न 5523. सतीश चन्द्र झाक परिचयमे हुनक शिक्षा आ कार्यक्षेत्र कोना अछि?
क. दर्शनशास्त्रमे एम.ए., व्याख्याता आ एन.जी.ओ. संचालनसँ जुड़ल
ख. केवल गायक
ग. केवल पंजीकार
घ. केवल चिकित्सक
उत्तर: क. दर्शनशास्त्रमे एम.ए., व्याख्याता आ एन.जी.ओ. संचालनसँ जुड़ल
व्याख्या: परिचय सामाजिक-शैक्षिक सक्रियता बतबैत अछि।

प्रश्न 5524. कविता मे शब्द कोन समय आ वातावरणमे आबैत अछि?
क. निन्न पड़ल निःशब्द रातिमे
ख. दोपहरिया बाजारमे
ग. राजनीतिक सभा मे
घ. विवाह-मंडपमे
उत्तर: क. निन्न पड़ल निःशब्द रातिमे
व्याख्या: आरम्भे “निन्न पड़ल निःशब्द राति”क बिम्ब अछि।

प्रश्न 5525. शब्दक “उदंड, उच्छृंखल” होयब ककर संकेत अछि?
क. कविताक आवेग नियंत्रित करब कठिन अछि
ख. शब्द पूर्ण मौन
ग. शब्द मृत
घ. शब्द निष्प्रभ
उत्तर: क. कविताक आवेग नियंत्रित करब कठिन अछि
व्याख्या: शब्द स्वयं उग्र आ स्वतंत्र शक्ति बनि आबैत अछि।

प्रश्न 5526. कवि कान बन्द किएक नहि कऽ पबैत छथि?
क. हृदयक वेदना उतरि अबैत अछि
ख. क्योंकि संगीत तेज अछि
ग. क्योंकि विद्यालय अछि
घ. क्योंकि चुनाव अछि
उत्तर: क. हृदयक वेदना उतरि अबैत अछि
व्याख्या: भीतरक पीड़ा शब्द बनि दबायल नहि जा सकैत।

प्रश्न 5527. “शब्द शब्द के हाथ पकड़ने” पंक्ति कविता निर्माण कोना समझबैत अछि?
क. बिखरल शब्द आपस मे जुड़ि कविता बनैत अछि
ख. शब्द भागि जाइत
ग. कविता निषेध
घ. केवल व्याकरण
उत्तर: क. बिखरल शब्द आपस मे जुड़ि कविता बनैत अछि
व्याख्या: कविता स्वतः संयोजनक जीवित प्रक्रिया जकाँ रचल अछि।

प्रश्न 5528. “शब्दकेँ व्याकरणक ज्ञान बोध नहि” कथन ककर रक्षा करैत अछि?
क. स्वाभाविक, अबोध, अनगढ़ काव्य-ऊर्जाक
ख. केवल शास्त्रीय नियम
ग. निर्जीव लेखन
घ. नकलक भाषा
उत्तर: क. स्वाभाविक, अबोध, अनगढ़ काव्य-ऊर्जाक
व्याख्या: कवि नियमसँ पहिने अनुभूतिक सत्य पर जोर दैत छथि।

प्रश्न 5529. शब्द नेना सन अबोध अछि — ई बिम्ब की करैत अछि?
क. कविताक नग्न, निष्कपट आ असुरक्षित प्रकृति देखबैत अछि
ख. शब्दक छल
ग. शब्दक अपराध
घ. शब्दक व्यापार
उत्तर: क. कविताक नग्न, निष्कपट आ असुरक्षित प्रकृति देखबैत अछि
व्याख्या: बिम्ब शब्दक निरपराधता आ नंगी सच्चाई बतबैत अछि।

प्रश्न 5530. शब्द कखन आगि आ कखन शीतलता जगा दैत अछि — एहि विरोधाभासक अर्थ की अछि?
क. कविता पीड़ा आ स्नेह दुनू उत्पन्न करैत अछि
ख. कविता निष्क्रिय
ग. शब्द अर्थहीन
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. कविता पीड़ा आ स्नेह दुनू उत्पन्न करैत अछि
व्याख्या: शब्द भावक तापमान बदलाबयवाली शक्ति अछि।

प्रश्न 5531. “शब्द ब्रह्म अछि नहि अछि दोषी” पंक्ति कविक जिम्मेदारी कोना ठहरबैत अछि?
क. दोष शब्दक नहि, कवि-अज्ञानक होइ सकैत अछि
ख. शब्द दोषी अछि
ग. कवि निर्दोष सदैव
घ. कविता असंभव
उत्तर: क. दोष शब्दक नहि, कवि-अज्ञानक होइ सकैत अछि
व्याख्या: कवि विनम्रतासँ पाठकसँ क्षमा मांगैत छथि।

प्रश्न 5532. सतीश चन्द्र झाक शब्द-कविताक समेकित सार की अछि?
क. सतीश चन्द्र झा शब्दकेँ आध्यात्मिक, वेदनात्मक आ स्वतः-कविता बनयवाली शक्ति मानैत छथि
ख. कविता केवल राजनीति
ग. कविता केवल पाबनि
घ. कविता केवल हँसी-मजाक
उत्तर: क. सतीश चन्द्र झा शब्दकेँ आध्यात्मिक, वेदनात्मक आ स्वतः-कविता बनयवाली शक्ति मानैत छथि
व्याख्या: रातिक निःशब्दतामे शब्द ब्रह्म-ऊर्जा बनि उठैत अछि।

खण्ड ५५९ : विदेह-सदेह १ — शैलेन्द्र मोहन झा: “चलला मुरारी छौरी फँसबय”

प्रश्न 5533. शैलेन्द्र मोहन झाक परिचयमे गोनू झाक गाम भरवारा किएक उल्लेखित अछि?
क. हास्य-परम्परासँ आत्मीय जुड़ाव बताबय लेल
ख. पंजीकार कुल लेल
ग. राग-ताल लेल
घ. बाढ़-क्षेत्र लेल
उत्तर: क. हास्य-परम्परासँ आत्मीय जुड़ाव बताबय लेल
व्याख्या: लेखक स्वयं हास्यशिरोमणि गोनू झाक गामसँ छथि, ई हास्य-कथा पूर्वपीठिका बनैत अछि।

प्रश्न 5534. “चलला मुरारी छौरी फँसबय”क आरम्भ कोन मित्र-चुनौतीसँ होइत अछि?
क. गलफ्रेंड नहि होएब पर मित्रसभक चुटकी
ख. चुनाव लड़बाक आग्रह
ग. पंजी सीखबाक आग्रह
घ. भजन गेबाक आग्रह
उत्तर: क. गलफ्रेंड नहि होएब पर मित्रसभक चुटकी
व्याख्या: मित्रसभ कहैत छथिन जे छौरी फँसाबय तखन खिलाड़ी मानल जाएब।

प्रश्न 5535. वक्ता आरम्भमे प्रेम-प्रसंगसँ किएक बचैत छथि?
क. ओ भारतमे पढ़य-लिखयक समय मानैत आ छौरीसँ डरैत छथि
ख. ओ विवाहित छथि
ग. ओ राजा छथि
घ. ओ डॉक्टर छथि
उत्तर: क. ओ भारतमे पढ़य-लिखयक समय मानैत आ छौरीसँ डरैत छथि
व्याख्या: हास्य डर, संस्कार आ मित्र-दबावक टकरावसँ बनैत अछि।

प्रश्न 5536. कृष्ण-कन्हैया सँ प्रार्थना ककरा व्यंग्यात्मक बनबैत अछि?
क. प्रेम-प्रयास केँ भक्तिपूर्ण मनौतीक हास्यमे बदलैत अछि
ख. गंभीर तपस्या मात्र
ग. राजनीतिक भाषण
घ. विज्ञान प्रयोग
उत्तर: क. प्रेम-प्रयास केँ भक्तिपूर्ण मनौतीक हास्यमे बदलैत अछि
व्याख्या: वक्ता सोलह हजार गोपी नहि, एकटा छौड़ी फँसबय मांगैत अछि।

प्रश्न 5537. आँखि मारला सँ छौरी पटतै सोचब ककर संकेत अछि?
क. अनुभवहीन, फिल्मी आ हास्यास्पद प्रेम-रणनीति
ख. गंभीर दर्शन
ग. सफल नीति
घ. साहित्यिक पुरस्कार
उत्तर: क. अनुभवहीन, फिल्मी आ हास्यास्पद प्रेम-रणनीति
व्याख्या: कथा अगिला मारपीटक भूमिका बनबैत अछि।

प्रश्न 5538. आँखि मारलाक परिणाम की भेल?
क. छौरी पीटलक आ वक्ता पहिल सपथ खेलक
ख. छौरी तुरन्त पटल
ग. विवाह भऽ गेल
घ. सभा भेल
उत्तर: क. छौरी पीटलक आ वक्ता पहिल सपथ खेलक
व्याख्या: हास्य अपेक्षा आ परिणामक तीव्र उलटबाँससँ बनैत अछि।

प्रश्न 5539. दोसरा प्रयासमे वक्ता प्रशंसा-गीत किएक गबैत अछि?
क. बातचीत आ काव्यात्मक चापलूसीसँ छौरी पटेबाक कोशिश
ख. चुनाव जीतबाक लेल
ग. शिव-वंदना लेल
घ. पंजी जाँच लेल
उत्तर: क. बातचीत आ काव्यात्मक चापलूसीसँ छौरी पटेबाक कोशिश
व्याख्या: ओ पोखरि-आँखि, मेघ-केश, फूल-ठोर कहि अतिशयोक्ति करैत अछि।

प्रश्न 5540. छौरीक थप्पड़ आ मोहल्ला जुटब कथानकमे की करैत अछि?
क. हास्यकेँ सार्वजनिक अपमानमे बदलैत अछि
ख. पूर्ण प्रेम-सफलता
ग. कथा समाप्ति बिना घटना
घ. राजकीय सम्मान
उत्तर: क. हास्यकेँ सार्वजनिक अपमानमे बदलैत अछि
व्याख्या: वक्ता निजी दुस्साहसक सामाजिक दंड पबैत अछि।

प्रश्न 5541. अन्तमे “भूलि कऽ अंग्रेजी, हम मैथिल बनि जायब” कथनक व्यंग्य की अछि?
क. फैशनदार प्रेम-नकल छोड़ि अपनी सांस्कृतिक पहचानक ओर लौटब
ख. मैथिली त्याग
ग. अंग्रेजी विजय
घ. प्रेम-सफलता
उत्तर: क. फैशनदार प्रेम-नकल छोड़ि अपनी सांस्कृतिक पहचानक ओर लौटब
व्याख्या: हास्य अनुभव सांस्कृतिक आत्मबोधमे पलटैत अछि।

प्रश्न 5542. “चलला मुरारी छौरी फँसबय”क हास्य-सार की अछि?
क. कथा युवा-प्रेमक फिल्मी नकलबाजी पर मैथिली हास्य-व्यंग्यक चुटीला प्रहार अछि
ख. कथा पंजीशास्त्र अछि
ग. कथा बाढ़ रिपोर्ट
घ. कथा शास्त्रीय राग
उत्तर: क. कथा युवा-प्रेमक फिल्मी नकलबाजी पर मैथिली हास्य-व्यंग्यक चुटीला प्रहार अछि
व्याख्या: स्वयं-उपहास, मित्र-दबाव आ पिटाइ कथा केँ हास्यप्रद बनबैत अछि।

खण्ड ५६० : विदेह-सदेह १ — शैलेन्द्र मोहन झा: “सपना”

प्रश्न 5543. “सपना” कविता कोन स्थिति सँ आरम्भ होइत अछि?
क. दुपहरियामे सुतल वक्ता विवाहक सपना देखैत अछि
ख. राति मतदान
ग. विद्यालय परीक्षा
घ. बाढ़ राहत
उत्तर: क. दुपहरियामे सुतल वक्ता विवाहक सपना देखैत अछि
व्याख्या: कविता स्वप्न-प्रसंगसँ हास्य-रोमांटिक दृश्य बनबैत अछि।

प्रश्न 5544. सपनामे किनियाँक छवि केहन कहल गेल?
क. चाँद-जकाँ सुन्दर
ख. कुरूप
ग. अनुपस्थित
घ. राजनीतिक नेता
उत्तर: क. चाँद-जकाँ सुन्दर
व्याख्या: वक्ता भौजीसँ कहैत अछि जे किनियाँ चाँद जकाँ छल।

प्रश्न 5545. रजनी नामक स्वप्न-सुन्दरी वक्ताक मोनमे कोन स्थान पाबैत अछि?
क. हृदयक रानी बनि जाइत अछि
ख. शत्रु बनि जाइत अछि
ग. गुरु बनैत अछि
घ. माता बनैत अछि
उत्तर: क. हृदयक रानी बनि जाइत अछि
व्याख्या: स्वप्नमे भेट प्रेमिक कल्पना बनि जाइत अछि।

प्रश्न 5546. वक्ता किनियाँक रूपक तुलना किन लोकप्रिय अभिनेत्रीसभसँ करैत अछि?
क. ऐश्वर्या, जूही चावला, नीलम, वैजयंतीमाला आदि छविसँ
ख. गोनू झा मात्र
ग. विद्यापति मात्र
घ. मोडानन्द झा मात्र
उत्तर: क. ऐश्वर्या, जूही चावला, नीलम, वैजयंतीमाला आदि छविसँ
व्याख्या: कविता फिल्मी सौंदर्य-भाषासँ हास्य रचैत अछि।

प्रश्न 5547. किनियाँ द्वारा वक्ताक रूप पर “ठीक-ठाक” टिप्पणी ककरा हास्यास्पद बनबैत अछि?
क. वक्ताक आत्म-मुग्धता पर हल्का व्यंग्य
ख. वक्ताक देवत्व
ग. पूर्ण प्रशंसा
घ. चुनाव विजय
उत्तर: क. वक्ताक आत्म-मुग्धता पर हल्का व्यंग्य
व्याख्या: वह संपूर्ण प्रशंसा नहि, बल्कि मिश्रित प्रतिक्रिया दैत अछि।

प्रश्न 5548. “केश किछु बेसी कम” टीका कोन आत्म-उपहास जोड़ैत अछि?
क. वक्ताक बाल-कमजोरी पर हास्य
ख. राजनीतिक आलोचना
ग. संगीत त्रुटि
घ. पंजी तथ्य
उत्तर: क. वक्ताक बाल-कमजोरी पर हास्य
व्याख्या: टिप्पणी सपनाक रोमांसमे आत्म-हँसी लबैत अछि।

प्रश्न 5549. दरभंगा घूमय आ उमा टाकीजक टिकट स्वप्नमे की रचैत अछि?
क. स्थानीय रोमांस आ सिनेमाई कल्पना
ख. पंजी-सभा
ग. बाढ़-शिविर
घ. गुरु-दीक्षा
उत्तर: क. स्थानीय रोमांस आ सिनेमाई कल्पना
व्याख्या: सपना मैथिली भूगोल, सिनेमा आ प्रेमक मिश्रण अछि।

प्रश्न 5550. “ममता गाबय गीत”क उल्लेख ककर सांस्कृतिक संकेत अछि?
क. मैथिली सिनेमा-स्मृति आ स्थानीय लोकप्रियता
ख. न्यायालय
ग. धर्मशास्त्र
घ. पाक-विधि
उत्तर: क. मैथिली सिनेमा-स्मृति आ स्थानीय लोकप्रियता
व्याख्या: स्वप्न-प्रेम मैथिली फिल्म-लोकसँ जुड़ैत अछि।

प्रश्न 5551. पिंटुआ द्वारा जगाएब कथाक हास्य-अंत कोना बनैत अछि?
क. संपूर्ण प्रेम-संसार दुपहरियाक सपनाहि सिद्ध भऽ जाइत अछि
ख. विवाह सचमुच होइत अछि
ग. कथा दुखान्त
घ. चुनाव शुरू
उत्तर: क. संपूर्ण प्रेम-संसार दुपहरियाक सपनाहि सिद्ध भऽ जाइत अछि
व्याख्या: जगाबयवाला छोट भाई स्वप्न तोड़ि दैत अछि।

प्रश्न 5552. शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना”क समेकित सार की अछि?
क. “सपना” फिल्मी सौंदर्य, स्थानीय स्मृति आ आत्म-उपहाससँ बनल हलुक हास्य-कविता अछि
ख. कविता गंभीर पंजी-लेख
ग. कविता बाढ़ रिपोर्ट
घ. कविता संगीत-संहिता
उत्तर: क. “सपना” फिल्मी सौंदर्य, स्थानीय स्मृति आ आत्म-उपहाससँ बनल हलुक हास्य-कविता अछि
व्याख्या: स्वप्नक टूटन हास्यक मुख्य बिंदु अछि।

खण्ड ५६१ : विदेह-सदेह १ — शक्ति शेखर: “कखन बदलब हम”

प्रश्न 5553. “कखन बदलब हम” लेख/निबन्ध कोन आपदाक संदर्भमे आरम्भ होइत अछि?
क. बिहारमे आएल बाढ़क संदर्भमे
ख. विद्यालय परीक्षा
ग. प्रेम-सपना
घ. राग-वंदना
उत्तर: क. बिहारमे आएल बाढ़क संदर्भमे
व्याख्या: लेखक बाढ़क भयावह स्थिति आ जनपीड़ा पर लिखैत छथि।

प्रश्न 5554. लेखक भगवानक “उपस्थिति” मिथिलांचलमे दर्ज करबाक बात किएक कटाक्ष रूपमे कहैत अछि?
क. लगभग हर साल बाढ़-संकट आबैत अछि, ताहि पर तिक्त व्यंग्य अछि
ख. दैवी उत्सव मात्र
ग. सुखक वर्षा
घ. भक्ति-गीत
उत्तर: क. लगभग हर साल बाढ़-संकट आबैत अछि, ताहि पर तिक्त व्यंग्य अछि
व्याख्या: ई कथन बाढ़क नियमित त्रासदी पर व्यंग्यात्मक पीड़ा अछि।

प्रश्न 5555. लेखक अनुमानित बाढ़-पीड़ित संख्या कोना प्रस्तुत करैत अछि?
क. करीब पचास लाख लोक प्रभावित कहल गेल
ख. केवल दस लोक
ग. कोनो प्रभावित नहि
घ. एक परिवार मात्र
उत्तर: क. करीब पचास लाख लोक प्रभावित कहल गेल
व्याख्या: संख्या त्रासदीक व्यापकता बतबैत अछि।

प्रश्न 5556. जुलाई-अगस्तक मासक उल्लेख किएक अछि?
क. बिहारक लोक बाढ़-भय सँ आतंकित होइत छथि
ख. फसल कटनी मात्र
ग. सर्दी सुरू
घ. परीक्षा काल
उत्तर: क. बिहारक लोक बाढ़-भय सँ आतंकित होइत छथि
व्याख्या: मौसमी चक्र लोकक मनमे वार्षिक डर बनि गेल अछि।

प्रश्न 5557. बाढ़ कैं आतंकवादीसँ बेसी भयावह कहबाक आशय की अछि?
क. ई बार-बार गाम, जमीन आ जीवन निगलैत अछि
ख. बाढ़ सुखद अछि
ग. आतंकक चर्चा नहि
घ. कथा हास्य अछि
उत्तर: क. ई बार-बार गाम, जमीन आ जीवन निगलैत अछि
व्याख्या: लेखक प्राकृतिक आपदा आ प्रशासनिक असफलताक संयुक्त भय दिखबैत अछि।

प्रश्न 5558. संबंधित विभाग पर लेखकक आरोप की अछि?
क. जानकारी रहितहुँ कारगर कदम नहि उठबैत अछि
ख. बेसी तत्परता
ग. पूर्ण पारदर्शिता
घ. कोनो दायित्व नहि
उत्तर: क. जानकारी रहितहुँ कारगर कदम नहि उठबैत अछि
व्याख्या: लेख प्रशासनिक निष्क्रियता पर तीखा प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 5559. बाढ़ राहत-अनुदान पर लेखकक मुख्य शंका की अछि?
क. पीड़ित धरि सहायता नहि पहुँचि, बीचमे लूट-घोटाला होय सकैत अछि
ख. सब पीड़ित पूर्ण लाभान्वित
ग. कोनो धन नहि
घ. बाढ़ नहि आयल
उत्तर: क. पीड़ित धरि सहायता नहि पहुँचि, बीचमे लूट-घोटाला होय सकैत अछि
व्याख्या: लेख राहत-राजनीति आ भ्रष्टाचारक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 5560. प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय आपदा घोषित कएलाक बादो लेखक किएक सन्तुष्ट नहि?
क. घोषणा पीड़ित लेल सांत्वना मात्र, पहुँच व्यवस्था अस्पष्ट अछि
ख. घोषणा अस्वीकार
ग. पीड़ित नहि
घ. राजनीति समाप्त
उत्तर: क. घोषणा पीड़ित लेल सांत्वना मात्र, पहुँच व्यवस्था अस्पष्ट अछि
व्याख्या: लेख कहैत अछि धन देनाइ पर्याप्त नहि, पहुँच सुनिश्चित चाही।

प्रश्न 5561. बाढ़-राजनीति विषयमे लेखक की कहैत अछि?
क. नेता सभ दोषारोपण आ सीट-सुरक्षा मे लगैत छथि, पीड़ित पिसाइत छथि
ख. नेता पूर्णतः निष्काम
ग. राजनीति अनुपस्थित
घ. सब समस्या हल
उत्तर: क. नेता सभ दोषारोपण आ सीट-सुरक्षा मे लगैत छथि, पीड़ित पिसाइत छथि
व्याख्या: लेख बाढ़क बीच राजनीतिक स्वार्थ पर प्रहार करैत अछि।

प्रश्न 5562. निबन्धक अन्तिम आग्रह की अछि?
क. एकजुट भऽ बाढ़-पीड़ितक मदति करब
ख. दर्शक बने रहब
ग. केवल दोष देब
घ. भोजन-विधान
उत्तर: क. एकजुट भऽ बाढ़-पीड़ितक मदति करब
व्याख्या: लेख कर्तव्यनिष्ठ नागरिकता कैं मदतिक सक्रियता सँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ५६२ : विदेह-सदेह १ — शक्ति शेखर: “जोगार” आ मीडिया-व्यवस्था

प्रश्न 5563. “जोगार” लेख कोन आरम्भिक प्रसंगसँ शुरू होइत अछि?
क. इलेक्ट्रॉनिक चैनल, स्टिंग ऑपरेशन आ सत्य-दावा
ख. मधुश्रावनी गीत
ग. पंजी-सभागार
घ. बालकविता
उत्तर: क. इलेक्ट्रॉनिक चैनल, स्टिंग ऑपरेशन आ सत्य-दावा
व्याख्या: लेख मीडिया-भाषा आ चैनल-संस्कृतिक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 5564. चैनल सभ स्वयंकेँ कोन नैतिक छवि सँ जोड़ि देखाबैत अछि?
क. राजा हरिश्चन्द्रक सत्य-नीति पर आधारित बतबैत अछि
ख. रावणक नीति
ग. कौरव सभा
घ. पूर्ण मौन
उत्तर: क. राजा हरिश्चन्द्रक सत्य-नीति पर आधारित बतबैत अछि
व्याख्या: लेख ई दावा व्यंग्यपूर्वक उठबैत अछि।

प्रश्न 5565. “स्टिंग ऑपरेशन” लेखमे कोना वर्णित अछि?
क. सत्य उजागर करबाक हथकंडा रूपमे, मुदा मीडिया-प्रतिस्पर्धाक साधन सेहो
ख. भोजन-विधि
ग. राग-ताल
घ. विवाह-गीत
उत्तर: क. सत्य उजागर करबाक हथकंडा रूपमे, मुदा मीडिया-प्रतिस्पर्धाक साधन सेहो
व्याख्या: लेख मीडिया-प्रयोग आ बाजारू ऊँचाइ पाबक चाह पर प्रश्न करैत अछि।

प्रश्न 5566. “जोगार” शब्द लेखमे कोन क्षेत्रसँ विशेष जुड़ल अछि?
क. पत्रकारिता, विशेषतः इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मे प्रवेश आ टिकबाक व्यवस्था
ख. कृषि
ग. पंजी-शास्त्र
घ. मधुश्रावनी
उत्तर: क. पत्रकारिता, विशेषतः इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मे प्रवेश आ टिकबाक व्यवस्था
व्याख्या: लेख पत्रकारिता-क्षेत्रमे संपर्क/सिफारिसक बोलबाला बतबैत अछि।

प्रश्न 5567. युवा पत्रकारिता पढ़ाइ पर लाखों खर्च किएक करैत छथि?
क. एक दिन मीडिया क्षेत्रमे नाम रौशन करबाक आशासँ
ख. खेती सीखय
ग. राग सीखय
घ. पंजी लिखय
उत्तर: क. एक दिन मीडिया क्षेत्रमे नाम रौशन करबाक आशासँ
व्याख्या: लेख युवा आकांक्षा आ वास्तविक प्रवेश-समस्या बीच फर्क बतबैत अछि।

प्रश्न 5568. मीडिया संस्थान खोलि रोजगारक वादा करबाक असर साधारण तबका पर की देखाओल गेल?
क. साधारण वर्गक युवासभ लेल काम पाबय पहाड़ खोदनाजेकाँ कठिन भऽ जाइत अछि
ख. सहज अवसर
ग. पूर्ण समानता
घ. काजक कमी नहि
उत्तर: क. साधारण वर्गक युवासभ लेल काम पाबय पहाड़ खोदनाजेकाँ कठिन भऽ जाइत अछि
व्याख्या: संस्थान अपन विद्यार्थीक प्राथमिकता देत, बाहरी युवाक अवसर घटैत अछि।

प्रश्न 5569. लेखक बेरोजगारी पर चैनलसभक दोहरापन किएक देखैत छथि?
क. बेरोजगारी पर बात करैतहुँ अंदर जोगार-मंत्रसँ काज देल जाइत अछि
ख. चैनल जोगार-विरोधी
ग. रोजगार पूर्ण पारदर्शी
घ. कोनो युवा नहि
उत्तर: क. बेरोजगारी पर बात करैतहुँ अंदर जोगार-मंत्रसँ काज देल जाइत अछि
व्याख्या: लेख मीडिया-नैतिकता आ भर्ती व्यवहारक विरोधाभास देखबैत अछि।

प्रश्न 5570. पत्रकारिता क्षेत्रमे जोगारवालाक प्रतिशत बहुत ऊँच होएबाक कथन ककर संकेत अछि?
क. व्यवस्थागत पक्षपात आ संपर्क-राजक आलोचना
ख. सही मेरिट प्रणाली
ग. पूर्ण निष्पक्षता
घ. भाषा-वंदना
उत्तर: क. व्यवस्थागत पक्षपात आ संपर्क-राजक आलोचना
व्याख्या: लेख अनुमानक रूपमे भीतरी संरचनाक दूषितता देखबैत अछि।

प्रश्न 5571. “चौथा स्तम्भ जोगार पर टिकल” कथनक व्यंग्यार्थ की अछि?
क. लोकतांत्रिक निगरानी संस्थाहि भीतर अनौपचारिक सिफारिस-तंत्र मजबूत अछि
ख. मीडिया पूर्ण शुद्ध
ग. स्तम्भ पत्थरक
घ. जोगार असंबद्ध
उत्तर: क. लोकतांत्रिक निगरानी संस्थाहि भीतर अनौपचारिक सिफारिस-तंत्र मजबूत अछि
व्याख्या: लेख मीडिया-नैतिक दावाक विरुद्ध व्यवहारक आलोचना अछि।

प्रश्न 5572. शक्ति शेखरक “जोगार” लेखक समेकित सार की अछि?
क. “जोगार” मीडिया-शिक्षा, भर्ती, संपर्क-तंत्र आ नैतिक दावे पर तीखा प्रश्न उठबैत अछि
ख. लेख पाक-विधि
ग. लेख प्रेमगीत
घ. लेख केवल राग-संगीत
उत्तर: क. “जोगार” मीडिया-शिक्षा, भर्ती, संपर्क-तंत्र आ नैतिक दावे पर तीखा प्रश्न उठबैत अछि
व्याख्या: शक्ति शेखर मीडिया-संरचनाक अंदरूनी असमानता पर लिखैत छथि।

खण्ड ५६३ : विदेह-सदेह १ — डॉ. शुभंकुमार सिंह: परिचय आ “दूभि”क आरम्भ

प्रश्न 5573. डॉ. शुभंकुमार सिंहक जन्मस्थल कोन अंचलमे बताओल गेल अछि?

क. सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाम

ख. मधुबनीक भरवारा

ग. सप्तरीक मयनाकडेरी

घ. पूर्णियाक शिवनगर

उत्तर: क. सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाम

व्याख्या: परिचय जन्मस्थल स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 5574. हुनक उच्च शिक्षा मे कोन उपलब्धि उल्लेखित अछि?

क. एम.ए. मैथिलीमे स्वर्णपदक प्राप्त

ख. केवल प्राथमिक शिक्षा

ग. संगीत-दीक्षा

घ. पत्रकारिता डिप्लोमा मात्र

उत्तर: क. एम.ए. मैथिलीमे स्वर्णपदक प्राप्त

व्याख्या: परिचय एम.ए. मैथिली मे स्वर्णपदक आ शोधयोग्यता बतबैत अछि।

प्रश्न 5575. पी-एच.डी.क विषय की बताओल गेल अछि?

क. मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्तन

ख. बूथ कैप्चरिंग

ग. गणेश-वंदना

घ. मधुश्रावनी पाबनि

उत्तर: क. मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्तन

व्याख्या: हुनक शोध मैथिली नाटकक सामाजिक विकास पर अछि।

प्रश्न 5576. वर्तमान कार्यक्षेत्र रूपमे हुनका कहाँ काज करैत कहल गेल अछि?

क. राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर मे शैक्षिक सलाहकार

ख. पंजीकार कार्यालय

ग. चैनल स्टूडियो

घ. ग्राम पंचायत

उत्तर: क. राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर मे शैक्षिक सलाहकार

व्याख्या: परिचय संस्थागत भाषा-काज सँ हुनक जुड़ाव बतबैत अछि।

प्रश्न 5577. “दूभि”क आरम्भ कोन स्मृति-स्थिति सँ होइत अछि?

क. गाम गेल लेखक साँझमे स्कूलक प्रांगणमे सुस्ताय चाहैत छथि

ख. रातिक विवाह

ग. बूथ कब्जा

घ. गणेश पूजा

उत्तर: क. गाम गेल लेखक साँझमे स्कूलक प्रांगणमे सुस्ताय चाहैत छथि

व्याख्या: कथा-जैसी रचना बाल्य-स्कूल-स्मृति सँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 5578. अप्रत्याशित स्वर “हे बाउ!” ककर प्रवेश करबैत अछि?

क. दूभि-रूपिणी स्त्रीक

ख. राजनीतिज्ञक

ग. गुरुक

घ. बाढ़ अधिकारीक

उत्तर: क. दूभि-रूपिणी स्त्रीक

व्याख्या: लेखक एक स्त्री रूपमे दूभिसँ संवाद करैत छथि।

प्रश्न 5579. दूभिक शरीरक हरित वर्ण की सूचित करैत अछि?
क. स्कूल हाता मे पसरल दूभिक प्रतीकात्मक देह
ख. सोना
ग. आगि
घ. कागज
उत्तर: क. स्कूल हाता मे पसरल दूभिक प्रतीकात्मक देह
व्याख्या: दूभि स्वयं कहैत अछि जे शरीर हरियर अछि कारण ओ दूभिक प्रतीक अछि।

प्रश्न 5580. दूभिक दयनीय दशा मे गुटखा, सिगरेट, कागद, गोबर आदि ककर प्रतीक अछि?
क. विद्यालय परिसरक गंदगी, उपेक्षा आ छात्र-समाजक कुकर्म
ख. आभूषण
ग. पूजा-सामग्री
घ. संगीत-वाद्य
उत्तर: क. विद्यालय परिसरक गंदगी, उपेक्षा आ छात्र-समाजक कुकर्म
व्याख्या: दूभि अपना शरीर पर पसरल गंदगी कैं मानवीय असभ्यता रूपमे पढ़बैत अछि।

प्रश्न 5581. दूभि लेखकसँ अपन दशा पत्र-पत्रिका मे छपबय किएक कहैत अछि?
क. उपेक्षित पर्यावरण/विद्यालय-जीवनक पीड़ा सार्वजनिक करबाक लेल
ख. व्यक्तिगत यश लेल
ग. भोजन माँगय लेल
घ. विवाह करय लेल
उत्तर: क. उपेक्षित पर्यावरण/विद्यालय-जीवनक पीड़ा सार्वजनिक करबाक लेल
व्याख्या: ओ साहित्य-शिक्षित लेखककेँ साक्षी आ संवाहक बनय चाहैत अछि।

प्रश्न 5582. डॉ. शुभंकुमार सिंहक “दूभि” आरम्भक समेकित सार की अछि?
क. “दूभि” प्रकृति/विद्यालय-परिसरकेँ मानवीकृत करि सामाजिक गंदगी आ असंवेदनशीलता पर प्रश्न उठबैत अछि
ख. कथा केवल प्रेम-सपना
ग. कथा राग-संहिता
घ. कथा चुनावी व्यंग्य मात्र
उत्तर: क. “दूभि” प्रकृति/विद्यालय-परिसरकेँ मानवीकृत करि सामाजिक गंदगी आ असंवेदनशीलता पर प्रश्न उठबैत अछि
व्याख्या: दूभिक मानवीकरण पर्यावरणीय नैतिकता जगबैत अछि।

खण्ड ५६४ : विदेह-सदेह १ — विविध स्वर: संगीत, समाज, हास्य, मीडिया आ प्रकृति

प्रश्न 5583. रामरंग सँ शुभंकुमार सिंह धरि एहि स्रोत-खंडमे विधागत विविधता कोना देखाइत अछि?
क. संगीत-रचना, व्यंग्य, राजनीतिक कविता, पंजी-लेख, प्रेम/हास्य, मीडिया-आलोचना आ रूपक-कथा साथ अछि
ख. केवल एकहि विधा
ग. केवल पाक-विधि
घ. केवल पंजी-सूची
उत्तर: क. संगीत-रचना, व्यंग्य, राजनीतिक कविता, पंजी-लेख, प्रेम/हास्य, मीडिया-आलोचना आ रूपक-कथा साथ अछि
व्याख्या: एहि अंशमे सादेहक बहुधा साहित्यिक संसार खुलैत अछि।

प्रश्न 5584. संगीत-रचना आ शिक्षा-व्यंग्य साथ राखल गेलासँ पत्रिका-स्वरूपक कोन विशेषता देखाइत अछि?
क. उच्च शास्त्रीयता आ लोक-सामाजिक आलोचना एकहि मंचपर उपस्थित अछि
ख. संगीतक निषेध
ग. शिक्षा अप्रासंगिक
घ. एकरूपता मात्र
उत्तर: क. उच्च शास्त्रीयता आ लोक-सामाजिक आलोचना एकहि मंचपर उपस्थित अछि
व्याख्या: रामरंग आ रामलोचनक सामग्री अत्यन्त भिन्न रहितहुँ समान सांस्कृतिक मंच पबैत अछि।

प्रश्न 5585. मधेशी आंदोलन, बाढ़ आ मीडिया-जोगारक लेखसभक साझा सामाजिक धागा की अछि?
क. सत्ता, प्रतिनिधित्व, प्रशासन आ जनहितक प्रश्न
ख. केवल निजी प्रेम
ग. केवल भक्ति
घ. केवल हास्य
उत्तर: क. सत्ता, प्रतिनिधित्व, प्रशासन आ जनहितक प्रश्न
व्याख्या: राम नारायण देव आ शक्ति शेखरक स्वर समाज-राजनीतिक चेतना खोलैत अछि।

प्रश्न 5586. मोडानन्द झा पर लेख एहि विविध खंडमे किएक विशिष्ट अछि?
क. ओ पंजी, वंश, शोध-स्रोत आ मिथिलाक सामाजिक इतिहासक अभिलेखीय आयाम दैत अछि
ख. ओ केवल हास्य लिखैत छथि
ग. ओ चुनाव प्रचार
घ. ओ बालगीत
उत्तर: क. ओ पंजी, वंश, शोध-स्रोत आ मिथिलाक सामाजिक इतिहासक अभिलेखीय आयाम दैत अछि
व्याख्या: रत्नेश्वर मिश्रक लेख स्रोत-संरक्षणक गंभीर पाठ अछि।

प्रश्न 5587. रूपा धीरू, संतोष मिश्र आ सतीश चन्द्र झाक रचनासभमे आन्तरिक भाव-संसार कोना देखाइत अछि?
क. पीड़ा, प्रेम, प्रश्न, शब्द आ आत्मस्वीकारक मार्फत
ख. कोनो भाव नहि
ग. केवल तथ्य-सूची
घ. राजनीति मात्र
उत्तर: क. पीड़ा, प्रेम, प्रश्न, शब्द आ आत्मस्वीकारक मार्फत
व्याख्या: ई रचनासभ निजी अनुभवक संवेदनशील परत खोलैत अछि।

प्रश्न 5588. शैलेन्द्र मोहन झाक हास्य-कवितासभ एहि स्रोत-विस्तारमे की योगदान दैत अछि?
क. स्वयं-उपहास, युवा-कल्पना आ मैथिली हास्यक हलुक किंतु तीक्ष्ण स्वर
ख. सर्वथा गंभीर इतिहास
ग. पंजी-शोध
घ. बाढ़ रिपोर्ट
उत्तर: क. स्वयं-उपहास, युवा-कल्पना आ मैथिली हास्यक हलुक किंतु तीक्ष्ण स्वर
व्याख्या: हास्य भी सामाजिक-सांस्कृतिक आत्मबोधक माध्यम बनैत अछि।

प्रश्न 5589. “दूभि”क मानवीकरण संपूर्ण खंडक सामाजिक विवेकमे की जोड़ैत अछि?
क. पर्यावरण, विद्यालयी अनुशासन आ सार्वजनिक स्थानक उपेक्षा पर नैतिक दृष्टि
ख. केवल प्रेम कथा
ग. राजनीतिक नारा
घ. राग-ताल
उत्तर: क. पर्यावरण, विद्यालयी अनुशासन आ सार्वजनिक स्थानक उपेक्षा पर नैतिक दृष्टि
व्याख्या: दूभि वस्तु नहि, पीड़ित जीवित साक्षी बनि बोलैत अछि।

प्रश्न 5590. एहि बैचमे कविताक भाषा-संसारमे लोक, शास्त्र आ आधुनिकता कोना मिलैत अछि?
क. राग-संगीत, पाबनि, ग्राम्य-हास्य, मीडिया आ लोकतंत्र सभ एकत्र आबैत अछि
ख. केवल संस्कृत
ग. केवल अंग्रेजी
घ. केवल मौन
उत्तर: क. राग-संगीत, पाबनि, ग्राम्य-हास्य, मीडिया आ लोकतंत्र सभ एकत्र आबैत अछि
व्याख्या: स्रोत मैथिली लेखनक बहुभाषी/बहुसांस्कृतिक ऊर्जा देखबैत अछि।

प्रश्न 5591. एहि खंडक प्रश्न बनबैत समय मुख्य गुणवत्ता-सावधानी की रहल?
क. पृष्ठ-संख्या वा बाहरी अनुमान नहि, पाठक भाव, पात्र, विचार आ विधा पर प्रश्न
ख. अनुमान जोड़ब
ग. स्रोत छोड़ब
घ. क्रमांक गिनब
उत्तर: क. पृष्ठ-संख्या वा बाहरी अनुमान नहि, पाठक भाव, पात्र, विचार आ विधा पर प्रश्न
व्याख्या: सामग्री स्रोताधारित अर्थ-प्रश्नमे बदलब आवश्यक छल।

प्रश्न 5592. एहि २० खण्डक सामूहिक सार की अछि?
क. सादेह १ मे मैथिली समाजक संगीत, स्मृति, संघर्ष, हास्य, प्रेम, शोध आ जनचेतना समान रूपेँ सक्रिय अछि
ख. केवल एक लेखकक जीवनी
ग. केवल भोजन-संग्रह
घ. केवल परीक्षा-पत्र
उत्तर: क. सादेह १ मे मैथिली समाजक संगीत, स्मृति, संघर्ष, हास्य, प्रेम, शोध आ जनचेतना समान रूपेँ सक्रिय अछि
व्याख्या: विविधता ई पत्रिकाक सांस्कृतिक-लोकतांत्रिक विस्तार प्रमाणित करैत अछि।

खण्ड ५६५ : विदेह-सदेह १ — “दूभि”: प्रतीक, देह आ पर्यावरण

प्रश्न 5593. “दूभि” कथामे हरियर देहवाली नारीक पहिल प्रतीक-अर्थ की अछि?
क. ओ विद्यालयक मैदानमे पसरल दूभिक मानवीकृत रूप छथि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ओ विद्यालयक मैदानमे पसरल दूभिक मानवीकृत रूप छथि।
व्याख्या: कथा दूभिकेँ एक घायल नारीक रूपमे उपस्थित करैत अछि, जाहिसँ मैदान आ प्रकृतिक दुर्दशा प्रत्यक्ष बनैत अछि।

प्रश्न 5594. दूभिक माथपर गुटखा, सिगरेट, कागद आ मैला कियैक देखाओल गेल अछि?
क. विद्यालय परिसरक उपेक्षा आ विद्यार्थी-समाजक गंदगी देखेबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. विद्यालय परिसरक उपेक्षा आ विद्यार्थी-समाजक गंदगी देखेबाक लेल।
व्याख्या: दूभि अपन देहपर पड़ल कूड़ाक व्याख्या कऽ विद्यालयक नैतिक आ भौतिक पतन देखबैत अछि।

प्रश्न 5595. दूभिक घावसभ कथामे कोन सामाजिक दोषक संकेत बनैत अछि?
क. लापरवाही, अस्वच्छता आ सार्वजनिक स्थानक हिंसक दुरुपयोगक।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. लापरवाही, अस्वच्छता आ सार्वजनिक स्थानक हिंसक दुरुपयोगक।
व्याख्या: जड़ल सिगरेट, छिलल हाथ आ फोका सार्वजनिक संपत्तिपर होइत हिंसाक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 5596. कथाकार दूभिसँ भेंट कोन स्थानपर करैत छथि?
क. ओ विद्यालयक प्रांगणमे, जतय नेनपनमे पढ़ैत छलाह।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ओ विद्यालयक प्रांगणमे, जतय नेनपनमे पढ़ैत छलाह।
व्याख्या: पुरान विद्यालयक मैदान कथामे स्मृति आ वर्तमान दुर्दशाक तुलनाक केन्द्र बनैत अछि।

प्रश्न 5597. दूभि अपन दयनीय दशा प्रकाशित करबय किएक चाहैत अछि?
क. ताकि समाज विद्यालय-परिसरक वास्तविक हालत देखय।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ताकि समाज विद्यालय-परिसरक वास्तविक हालत देखय।
व्याख्या: दूभिक विनती कथाकेँ आत्म-साक्ष्यक रूप दैत अछि; ओ चुपचाप सहैत वस्तु नहि रहि, गवाही दैत पात्र बनैत अछि।

प्रश्न 5598. दूभिक हरियर शरीरक अर्थ की अछि?
क. विद्यालय-मैदानमे जीवित, हरियर दूभिक प्रतीक।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. विद्यालय-मैदानमे जीवित, हरियर दूभिक प्रतीक।
व्याख्या: हरियर देह प्रकृतिक जीवनशक्ति छैक, मुदा ओहि देहपर घाव आ मैल समाजक उपेक्षा प्रकट करैत अछि।

प्रश्न 5599. कथामे दूभिक “दुर्गन्ध” कोन संकेत दैत अछि?
क. परिसरक शारीरिक गंदगी संगे नैतिक सड़नक।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. परिसरक शारीरिक गंदगी संगे नैतिक सड़नक।
व्याख्या: दुर्गन्ध केवल सफाइ-समस्या नहि, बल्कि शैक्षिक-सांस्कृतिक वातावरणक बिगाड़क रूपमे पढ़ल जाइत अछि।

प्रश्न 5600. दूभि कथामे पशु-प्रवेशक उल्लेख कियैक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई बतबैत अछि जे विद्यालयक हाता अनुशासन आ संरक्षणसँ वंचित अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ई बतबैत अछि जे विद्यालयक हाता अनुशासन आ संरक्षणसँ वंचित अछि।
व्याख्या: गाय, बकरी, सूअर आदि द्वारा दूषित मैदान विद्यालय-व्यवस्थाक असुरक्षित रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 5601. कथाक आरम्भमे स्त्रीक विचित्र देह-वर्णनक मुख्य प्रभाव की अछि?
क. पाठककेँ चौंका कऽ पर्यावरणीय-शैक्षिक संकट दिस नेब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. पाठककेँ चौंका कऽ पर्यावरणीय-शैक्षिक संकट दिस नेब।
व्याख्या: लेखक भयावह देह-चित्रसँ साधारण दूभिक पीड़ा केँ सामाजिक प्रश्नमे बदलैत छथि।

प्रश्न 5602. “दूभि”मे कथाकारक जिज्ञासा कोन दिशामे बढ़ैत अछि?
क. ओ स्त्रीक देह-दशासँ विद्यालयक पतनक कारण बुझय चाहैत छथि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ओ स्त्रीक देह-दशासँ विद्यालयक पतनक कारण बुझय चाहैत छथि।
व्याख्या: आरम्भिक आश्चर्य धीरे-धीरे प्रश्न, संवाद आ आत्मचिन्तनमे बदलैत अछि।

खण्ड ५६६ : विदेह-सदेह १ — “दूभि”: पुरान विद्यालय-स्मृति

प्रश्न 5603. दूभि पुरान विद्यालयक प्रार्थना-स्मृति कियैक सुनबैत अछि?
क. पहिने विद्यालयमे अनुशासन, सामूहिकता आ संस्कार छल, से देखेबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. पहिने विद्यालयमे अनुशासन, सामूहिकता आ संस्कार छल, से देखेबाक लेल।
व्याख्या: पुरान सरस्वती-वंदना वर्तमान शोर-गुलक विरोधी सांस्कृतिक स्मृति बनैत अछि।

प्रश्न 5604. श्रीवास्तव मास्टर साहेबक प्रसंगक अर्थ की अछि?
क. पुरान शिक्षक अनुशासन आ सफाइक संस्कार दैत छलाह।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. पुरान शिक्षक अनुशासन आ सफाइक संस्कार दैत छलाह।
व्याख्या: बच्चासभसँ कागद-गंदगी चुनवेनाइ विद्यालयक साझा जिम्मेदारीक शिक्षा छल।

प्रश्न 5605. पुरान नामसभ — हरेराम, युगलकिशोर, चंद्रकला आदि — कथामे कियैक आएल अछि?
क. नाममे सांस्कृतिक अर्थ आ आत्मीयता देखेबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. नाममे सांस्कृतिक अर्थ आ आत्मीयता देखेबाक लेल।
व्याख्या: दूभि कहैत अछि जे ओहि नामसभक मधुरता सुनि मोन तृप्त होइत छल।

प्रश्न 5606. नेनासभक कबड्डी आ खो-खो खेलब दूभिक लेल की अनुभव छल?
क. ओ वात्सल्य अनुभव करैत छल, कारण गिरला पर बच्चा सभकेँ चोट कम लगैत छल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ओ वात्सल्य अनुभव करैत छल, कारण गिरला पर बच्चा सभकेँ चोट कम लगैत छल।
व्याख्या: मैदान बच्चासभक खेलक सुरक्षा-स्थान छल, वस्तु नहि बल्कि सहभागी मातृ-भूमि जकाँ।

प्रश्न 5607. शनिचरक गुर-चाउर प्रसंगक स्रोत-अर्थ की अछि?
क. विद्यालयी जीवनमे सामुदायिक खाद्य-स्मृति आ आत्मीय उत्सव छल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. विद्यालयी जीवनमे सामुदायिक खाद्य-स्मृति आ आत्मीय उत्सव छल।
व्याख्या: दूभि गुर-चाउरक प्रतीक्षा करैत छल, जे पुरान विद्यालयक स्नेहिल संस्कृति देखबैत अछि।

प्रश्न 5608. पुरान सांस्कृतिक कार्यक्रमसभक स्मरण कथामे की करैत अछि?
क. गीत, भक्ति आ सामूहिक अभ्यासक सांस्कृतिक स्तर देखबैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. गीत, भक्ति आ सामूहिक अभ्यासक सांस्कृतिक स्तर देखबैत अछि।
व्याख्या: जगदंबा आ भोला बाबा सन गीतसभ पुरान सांस्कृतिक धरातलक चिन्ह बनैत अछि।

प्रश्न 5609. मोलवी मास्टरक प्रसंगक कार्य की अछि?
क. अनुशासनक हास्यपूर्ण मुदा गंभीर स्मृति उपस्थित करब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. अनुशासनक हास्यपूर्ण मुदा गंभीर स्मृति उपस्थित करब।
व्याख्या: चलताऊ फिल्मी गीतपर दंडक प्रसंग बतबैत अछि जे शिक्षक सांस्कृतिक मर्यादा पर नजर रखैत छलाह।

प्रश्न 5610. अन्त्याक्षरीक पुरान रूप ककरा महत्व दैत छल?
क. कविताक पंक्ति, कंठस्थ पाठ आ साहित्यिक स्मृतिकेँ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. कविताक पंक्ति, कंठस्थ पाठ आ साहित्यिक स्मृतिकेँ।
व्याख्या: पुरान अन्त्याक्षरी फिल्मी शोर नहि, कविता-स्मरण आ भाषिक अभ्यासक माध्यम छल।

प्रश्न 5611. रविशंकरक बीड़ी प्रसंग कथामे कियैक अछि?
क. विद्यालयक अनुशासन आ दुर्व्यसन-विरोधक पुरान सतर्कता देखेबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. विद्यालयक अनुशासन आ दुर्व्यसन-विरोधक पुरान सतर्कता देखेबाक लेल।
व्याख्या: छोट दोषपर सेहो दंड देखबैत अछि जे विद्यालय-परिसरक मर्यादा संरक्षित छल।

प्रश्न 5612. दूभिक अतीत-वर्णनक मूल भाव की अछि?
क. वर्तमान पतन बुझाबय लेल अतीतक स्वच्छ, संस्कारित रूपक तुलना।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. वर्तमान पतन बुझाबय लेल अतीतक स्वच्छ, संस्कारित रूपक तुलना।
व्याख्या: कथा अतीतकेँ केवल भावुकता नहि बनबैत, बल्कि वर्तमानक आलोचनात्मक दर्पण बनबैत अछि।

खण्ड ५६७ : विदेह-सदेह १ — “दूभि”: शिक्षक, गीत आ सांस्कृतिक अवनति

प्रश्न 5613. दूभि वर्तमान विद्यालयक भवन-सुविधा मानि किएक असंतुष्ट अछि?
क. भवन रहितहुँ शिक्षा, अनुशासन आ व्यवहारक स्थिति बिगड़ल अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. भवन रहितहुँ शिक्षा, अनुशासन आ व्यवहारक स्थिति बिगड़ल अछि।
व्याख्या: कथा बतबैत अछि जे बाहरी ढाँचा मात्र सुधार नहि, वास्तविक शैक्षिक जीवन आवश्यक अछि।

प्रश्न 5614. चार कक्ष आ चारि सय विद्यार्थी सभक उल्लेखक अर्थ की अछि?
क. संरचना आ छात्रसंख्याक बीच असंतुलन देखेबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. संरचना आ छात्रसंख्याक बीच असंतुलन देखेबाक लेल।
व्याख्या: अनेक बच्चा कक्षासँ बाहर मैदानमे रहैत अछि; ई अव्यवस्था विद्यालयक मूल कमजोरी अछि।

प्रश्न 5615. शौचालय-मूत्रालयक वर्णन कथामे कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. सुविधाक नामपर कागजी व्यवस्था आ वास्तविक गंदगीक प्रश्न।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सुविधाक नामपर कागजी व्यवस्था आ वास्तविक गंदगीक प्रश्न।
व्याख्या: दूभि कहैत अछि जे पल्ला नहि, दुर्गन्ध अछि; ई विकासक खोखलापन देखबैत अछि।

प्रश्न 5616. कॉन्ट्रैक्ट शिक्षकक आलोचना कथामे ककर विरोध अछि?
क. बिना तैयारी नियुक्ति आ शिक्षाक गुणवत्ता-ह्रासक।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. बिना तैयारी नियुक्ति आ शिक्षाक गुणवत्ता-ह्रासक।
व्याख्या: दूभि शिक्षक-प्रणालीक अवनतिपर चोट करैत अछि, जतय नामधरि स्पष्ट नहि होइत।

प्रश्न 5617. प्रार्थनामे अस्पष्ट उच्चारणक प्रसंग की बतबैत अछि?
क. विद्यार्थी-संस्कार आ भाषा-अभ्यासक गिरावट।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. विद्यार्थी-संस्कार आ भाषा-अभ्यासक गिरावट।
व्याख्या: चारि सयमे थोड़े विद्यार्थी स्पष्ट बोलि पबैत छथि; ई सामूहिक शिक्षणक कमजोरी अछि।

प्रश्न 5618. फिल्मी गीतसभक प्रवेश कथामे कियैक आलोच्य अछि?
क. विद्यालयी सांस्कृतिक कार्यक्रमक अश्लील आ बाजारू दिशा देखेबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. विद्यालयी सांस्कृतिक कार्यक्रमक अश्लील आ बाजारू दिशा देखेबाक लेल।
व्याख्या: पुरान भक्ति-साहित्यिक गीतक विपरीत वर्तमान गीत सांस्कृतिक अवनति संकेत करैत अछि।

प्रश्न 5619. मंजय मास्टरक “मायराम” नामकरणक अर्थ की अछि?
क. सकारात्मक नैतिक व्याख्या देनिहार शिक्षकक उपहास।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सकारात्मक नैतिक व्याख्या देनिहार शिक्षकक उपहास।
व्याख्या: ओ फिल्मी पंक्तिक अर्थ बदलि “माँ”क गरिमा बुझबैत छथि, मुदा सहकर्मी हुनक उपहास करैत अछि।

प्रश्न 5620. “दूभि”क अन्तमे नारीसभक कर्कश स्वर आ दूभिक गायब भेनाइ की करैत अछि?
क. कथा कैं यथार्थ आ भ्रमक बीच अनिश्चित बना दैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. कथा कैं यथार्थ आ भ्रमक बीच अनिश्चित बना दैत अछि।
व्याख्या: दूभि अदृश्य भऽ गेलाक बाद कथाकार सोचैत छथि जे ई अनुभव कथा बनि सकैत अछि।

प्रश्न 5621. कथाकार “दूभि” शीर्षक कियैक चुनैत छथि?
क. कारण पूरा अनुभव विद्यालय-मैदानक दूभिक पीड़ा पर केन्द्रित अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. कारण पूरा अनुभव विद्यालय-मैदानक दूभिक पीड़ा पर केन्द्रित अछि।
व्याख्या: शीर्षक साधारण घासकेँ सामाजिक स्मृति आ प्रतिरोधक प्रतीक बनबैत अछि।

प्रश्न 5622. “दूभि” कथाक समग्र केन्द्र की अछि?
क. विद्यालय, प्रकृति, भाषा-संस्कार आ सामाजिक उपेक्षाक संयुक्त आलोचना।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. विद्यालय, प्रकृति, भाषा-संस्कार आ सामाजिक उपेक्षाक संयुक्त आलोचना।
व्याख्या: कथा स्कूल-मैदानक क्षति द्वारा व्यापक समाजक शिक्षा-संकट उजागर करैत अछि।

खण्ड ५६८ : विदेह-सदेह १ — “जाग’ जाग’ महादेव”: धर्म आ विसंगति

प्रश्न 5623. “जाग’ जाग’ महादेव”क आरम्भमे मिथिलाक विशेषता कोन रूपमे कहल गेल अछि?
क. धर्म, शिक्षा, साहित्य आ संस्कृति लेल अनादिकालसँ विशिष्ट भूमि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. धर्म, शिक्षा, साहित्य आ संस्कृति लेल अनादिकालसँ विशिष्ट भूमि।
व्याख्या: लेख समाजक विघटनक चर्चा करबा अघि मिथिलाक गौरव-भूमिका स्थापित करैत अछि।

प्रश्न 5624. लेखक वर्तमान सामाजिक परिस्थिति कैं कोना देखैत छथि?
क. भूख, भय, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराध आ बेरोजगारीसँ भरल संकट।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. भूख, भय, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराध आ बेरोजगारीसँ भरल संकट।
व्याख्या: धर्मदिस भागब सामाजिक बेचैनीक परिणाम बनैत अछि।

प्रश्न 5625. “धर्मक दोकान” रूपकक अर्थ की अछि?
क. लोकक बेचैनीकेँ उपयोग कऽ नयका धार्मिक कारोबारक फैलाव।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. लोकक बेचैनीकेँ उपयोग कऽ नयका धार्मिक कारोबारक फैलाव।
व्याख्या: लेख धर्मक नामपर त्वरित समाधान बेचबा बला प्रवृत्तिक व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 5626. महादेवकेँ “गुरू” बनएबाक प्रस्ताव कथामे कियैक व्यंग्यात्मक अछि?
क. एहि द्वारा सभ समस्या तुरन्त मिटबाक दावा पर कटाक्ष अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. एहि द्वारा सभ समस्या तुरन्त मिटबाक दावा पर कटाक्ष अछि।
व्याख्या: लेखक चमत्कारवादी मानसिकतापर प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 5627. महादेवक साक्षात्कार कथामे कोन शैली बनेबैत अछि?
क. संवादात्मक व्यंग्य आ आत्मालोचनात्मक कथा-रूप।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. संवादात्मक व्यंग्य आ आत्मालोचनात्मक कथा-रूप।
व्याख्या: कथाकार ध्यानावस्थामे प्रश्न करैत छथि आ महादेव समाजक उलटबाँसी खोलैत छथि।

प्रश्न 5628. “मोन चंगा तँ कठौतमे गंगा” कथनक स्रोत-अर्थ की अछि?
क. श्रद्धा आ दृष्टिकोणक भीतरू परिवर्तनपर जोर।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. श्रद्धा आ दृष्टिकोणक भीतरू परिवर्तनपर जोर।
व्याख्या: महादेव कहैत छथि जे बाहरी चमत्कारसँ पहिने मनक भाव बदलय पड़ैत अछि।

प्रश्न 5629. “सत्यं शिवं सुन्दरम्”क व्याख्या कथामे कोन बातसँ जुड़ैत अछि?
क. संस्कार, संस्कृति, लोकाचार, भाषा-साहित्य आ धर्माचरण बुझबाक आग्रहसँ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. संस्कार, संस्कृति, लोकाचार, भाषा-साहित्य आ धर्माचरण बुझबाक आग्रहसँ।
व्याख्या: कथामे सत्य-सुंदर-शिव अमूर्त न रहि सांस्कृतिक आत्मबोधसँ जुड़ैत अछि।

प्रश्न 5630. शिक्षित लोक बेसी मूर्ख बनैत अछि — एहि कथनक उद्देश्य की अछि?
क. ज्ञान आ व्यवहारक विरोधाभास देखेबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ज्ञान आ व्यवहारक विरोधाभास देखेबाक लेल।
व्याख्या: गुटखा-सिगरेट चेतावनी पढ़ि सेहो सेवन करब शिक्षित समाजक आत्मविरोध देखबैत अछि।

प्रश्न 5631. पूजा आ “डील”क भेद कथामे कोना आएल अछि?
क. लोक भक्ति लेल नहि, लाभक सौदाक लेल देवता लग अबैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. लोक भक्ति लेल नहि, लाभक सौदाक लेल देवता लग अबैत अछि।
व्याख्या: महादेवक कथन समाजक उपयोगवादी धार्मिकता पर तीखा व्यंग्य अछि।

प्रश्न 5632. “जाग’ जाग’ महादेव”क मूल सामाजिक आलोचना की अछि?
क. धर्म, शिक्षा, राजनीति आ भाषा-संकटमे पसरल स्वार्थ आ पाखंड।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. धर्म, शिक्षा, राजनीति आ भाषा-संकटमे पसरल स्वार्थ आ पाखंड।
व्याख्या: लेखक धार्मिक संवादक माध्यमसँ समूचा समाजक आत्मनिरीक्षण करबैत छथि।

खण्ड ५६९ : विदेह-सदेह १ — “जाग’ जाग’ महादेव”: डील आ मैथिली

प्रश्न 5633. बालकक महादेवसँ माँग कथामे ककर उदाहरण अछि?

क. मेहनत बिना परीक्षा पास करएबाक इच्छाक।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. मेहनत बिना परीक्षा पास करएबाक इच्छाक।

व्याख्या: बालक पढ़बाक बजाय खेलल, आब देवतासँ परिणाम चाहैत अछि; ई कर्महीन अपेक्षा अछि।

प्रश्न 5634. नवयुवकक “मालबम” विवाह-माँग कोन प्रवृत्ति देखबैत अछि?

क. धर्मयात्राकेँ रोमानी स्वार्थसँ जोड़बाक प्रवृत्ति।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. धर्मयात्राकेँ रोमानी स्वार्थसँ जोड़बाक प्रवृत्ति।

व्याख्या: देवघर प्रसंग भक्तिकेँ निजी इच्छा-पूर्ति बनबैत अछि।

प्रश्न 5635. दहेजक दानव हटेबाक युवतीक पुकार कोन वास्तविक पीड़ा दिस संकेत अछि?

क. रूप-गुण रहितहुँ विवाह न होयबाक सामाजिक बाधा।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. रूप-गुण रहितहुँ विवाह न होयबाक सामाजिक बाधा।

व्याख्या: ई माँग व्यंग्यमे रहितहुँ दहेज-व्यवस्थाक क्रूरता उजागर करैत अछि।

प्रश्न 5636. रोगग्रस्त प्रौढ़क प्रार्थना कथामे की खोलैत अछि?

क. अपन दुराचरणक परिणामसँ देवताक माध्यमे बचि जाएबाक चाह।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. अपन दुराचरणक परिणामसँ देवताक माध्यमे बचि जाएबाक चाह।

व्याख्या: कथा जिम्मेदारीसँ पला कऽ चमत्कार चाहनिहार मनोवृत्ति देखबैत अछि।

प्रश्न 5637. बेरोजगारक लादेनसँ भेंट चाहब कोन संकेत अछि?

क. बेरोजगारीक हताशा आ हिंसक दिशामे भटकबाक भय।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. बेरोजगारीक हताशा आ हिंसक दिशामे भटकबाक भय।

व्याख्या: लेख बेरोजगार युवा-मनक विकृत विकल्पपर कटाक्ष करैत अछि।

प्रश्न 5638. वृद्ध दम्पतीक प्रार्थना समाजक कोन त्रासदी देखबैत अछि?

क. संपन्न बेटा-पुतोहु रहितहुँ माता-पिताक बोझ बनि जेबाक पीड़ा।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. संपन्न बेटा-पुतोहु रहितहुँ माता-पिताक बोझ बनि जेबाक पीड़ा।

व्याख्या: ई परिवारिक विघटन आ बुजुर्गक उपेक्षा उजागर करैत अछि।

प्रश्न 5639. राजनेताक “सीट” आ धनक प्रसंग कोन व्यंग्य अछि?
क. सत्ताक सौदा, विधायकी खरीद आ लोकतंत्रक भ्रष्ट रूप।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सत्ताक सौदा, विधायकी खरीद आ लोकतंत्रक भ्रष्ट रूप।
व्याख्या: कथा धर्मस्थलपर सेहो राजनीति-केंद्रित लेन-देन देखबैत अछि।

प्रश्न 5640. व्याख्याताक प्रार्थना शिक्षा-संस्थाक कोन रोग देखबैत अछि?
क. चोरी-जोगाड़सँ बढ़ल करियर आ छात्र-राजनीतिक अवरोधक स्वार्थ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. चोरी-जोगाड़सँ बढ़ल करियर आ छात्र-राजनीतिक अवरोधक स्वार्थ।
व्याख्या: ओ पढ़ाइ नहि, ताला लटकत रहे ताहि हेतु आशीर्वाद चाहैत अछि।

प्रश्न 5641. मैथिली भाषाक पुकार कथामे कोन तरहक छवि बनबैत अछि?
क. अपनहि घरमे उपेक्षित अबला भाषा, जे नवजागरण चाहैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. अपनहि घरमे उपेक्षित अबला भाषा, जे नवजागरण चाहैत अछि।
व्याख्या: मैथिली देवतासँ सौदा नहि करैत, कारण ओकरा देबाक लेल धन नहि; ओ सम्मानक याचना करैत अछि।

प्रश्न 5642. कथा “जाग’ जाग’ महादेव”क अन्तिम पुकारक अर्थ की अछि?
क. महादेव संगे समाजकेँ सेहो जागबाक आह्वान।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. महादेव संगे समाजकेँ सेहो जागबाक आह्वान।
व्याख्या: मैथिलीक करुण पुकार धार्मिक व्यंग्यकेँ भाषा-संस्कृति जागरणमे बदलि दैत अछि।

खण्ड ५७० : विदेह-सदेह १ — “आह्वान” आ “पसीझक काँट”

प्रश्न 5643. “आह्वान” कवितामे कवि किनका सम्बोधित करैत छथि?
क. भारतभूमिक नवयुवक-नवयुवती पीढ़ीकेँ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. भारतभूमिक नवयुवक-नवयुवती पीढ़ीकेँ।
व्याख्या: कविता नवतुरियासँ कान खोलि भारतीक विवश पुकार सुनबाक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 5644. “आह्वान”मे भारतीक दशा कोना चित्रित अछि?
क. शोणित-रंजित, जख्म-भरल, अमन-चैन लुटल मातृभूमि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. शोणित-रंजित, जख्म-भरल, अमन-चैन लुटल मातृभूमि।
व्याख्या: कविता राष्ट्रक पीड़ाकेँ देहधारी भारतीक रूपमे देखबैत अछि।

प्रश्न 5645. “आह्वान”मे कश्मीरक स्मरण कोन विरोध रचैत अछि?
क. पावन, हरियर सौन्दर्यक स्थानपर गोली आ रक्तक वर्तमान।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. पावन, हरियर सौन्दर्यक स्थानपर गोली आ रक्तक वर्तमान।
व्याख्या: कवि शीतल समीर आ निशातक छवि सँ हिंसक वर्तमानक तुलना करैत छथि।

प्रश्न 5646. जाति-धर्मक उन्माद पर “आह्वान”क दृष्टि की अछि?
क. ई मानवताकेँ लड़बैत सत्ता-स्वार्थक साधन अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ई मानवताकेँ लड़बैत सत्ता-स्वार्थक साधन अछि।
व्याख्या: कविता उन्माद भड़कबेनिहारक कुर्सी-स्वार्थकेँ पहचानबाक कहैत अछि।

प्रश्न 5647. “पसीझक काँट”मे काँटबला झाड़ की प्रतीक बनैत अछि?
क. मानवीय सम्बन्ध रोकयबला बाधा आ संवेदनाहीन फैलाव।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मानवीय सम्बन्ध रोकयबला बाधा आ संवेदनाहीन फैलाव।
व्याख्या: कविता शहर आ मन, दुनूकेँ काँटसँ भरल क्षेत्र बनबैत अछि।

प्रश्न 5648. “पसीझक काँट”मे फूलक क्यारीक प्रश्न की सूचित करैत अछि?
क. स्नेह, मित्रता आ खुलापन लोप भए गेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. स्नेह, मित्रता आ खुलापन लोप भए गेल।
व्याख्या: कवि पूछैत छथि जे आमंत्रित करैत फूल आ लता-कुंज कतए गेल।

प्रश्न 5649. अशोक-साखू वृक्षक छवि कवितामे की करैत अछि?
क. ऊँचाइ सँ नीचे देखैत अलगाव आ अहंकारक संकेत।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ऊँचाइ सँ नीचे देखैत अलगाव आ अहंकारक संकेत।
व्याख्या: ई वृक्ष सभ आकाशमे हाथ पसारैत अछि, मुदा नीचाँ जगतकेँ तुच्छ देखैत अछि।

प्रश्न 5650. मोथा आँख भोकैत अछि — एहि बिम्बक अर्थ की अछि?
क. पीड़ा केवल पाँव धरि नहि, दृष्टि आ चेतना धरि पहुँचि गेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. पीड़ा केवल पाँव धरि नहि, दृष्टि आ चेतना धरि पहुँचि गेल।
व्याख्या: काँट आ मोथा आंतरिक संवेदनाकेँ सेहो घायल करैत अछि।

प्रश्न 5651. नगरकेँ बोनमे बदलबाक भाव की अछि?
क. लोक खुला ठाममे सेहो मानवीय सम्पर्कसँ घृणा करए लागल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. लोक खुला ठाममे सेहो मानवीय सम्पर्कसँ घृणा करए लागल।
व्याख्या: कविता आधुनिक नगरक असामाजिकता पर आलोचनात्मक दृष्टि दैत अछि।

प्रश्न 5652. “आह्वान” आ “पसीझक काँट” संयुक्त रूपेँ की प्रश्न उठबैत अछि?
क. समाज, राष्ट्र आ मानवीय सम्बन्धक विघटनक प्रश्न।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. समाज, राष्ट्र आ मानवीय सम्बन्धक विघटनक प्रश्न।
व्याख्या: दूनू रचना अलग धरातलपर रहितहुँ हिंसा, अलगाव आ संवेदनाहीनता पर चोट करैत अछि।

खण्ड ५७१ : विदेह-सदेह १ — शीतल झा: संघीय संरचनाक आधार

प्रश्न 5653. शीतल झाक अनुसार “राज्य”क आधारभूत अर्थ की अछि?
क. राजनीतिक भूक्षेत्र जे आर्थिक, प्रशासनिक अधिकारसँ युक्त हो।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. राजनीतिक भूक्षेत्र जे आर्थिक, प्रशासनिक अधिकारसँ युक्त हो।
व्याख्या: लेख राज्यकेँ केवल भूमि नहि, अधिकार-संपन्न राजनीतिक इकाई मानैत अछि।

प्रश्न 5654. “संघ”क परिभाषामे मूल बात की अछि?
क. राज्यसभ मिलि केन्द्रीय सत्ता केँ अधिकार दैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. राज्यसभ मिलि केन्द्रीय सत्ता केँ अधिकार दैत अछि।
व्याख्या: आंशिक सार्वभौमिकता आ आत्मनिर्णयक अधिकारसँ युक्त राज्यसभक समूह संघ बनैत अछि।

प्रश्न 5655. नेपाल संघीय होयबाक एक कारण की कहल गेल अछि?
क. नेपाल बहुजाति, बहुभाषा, बहुसंस्कृति देश अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. नेपाल बहुजाति, बहुभाषा, बहुसंस्कृति देश अछि।
व्याख्या: लेख विविध समुदायकेँ मूलधारमे अनबाक लेल संघीय संरचना आवश्यक मानैत अछि।

प्रश्न 5656. संघीय शासनमे प्राकृतिक सम्पदापर अधिकार कोना कल्पित अछि?
क. ओहि राज्यक जनता जल, जमीन, जंगल, खनिजक उपयोग करैत।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ओहि राज्यक जनता जल, जमीन, जंगल, खनिजक उपयोग करैत।
व्याख्या: लेख स्थानीय संसाधनपर स्थानीय जनताक अधिकारक पक्षमे अछि।

प्रश्न 5657. भाषा-प्रयोगक दृष्टिसँ संघीय संरचनाक लाभ की कहल गेल अछि?
क. राज्यक प्रमुख भाषा प्रशासन आ न्यायमे स्वतंत्र रूपेँ चलि सकैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. राज्यक प्रमुख भाषा प्रशासन आ न्यायमे स्वतंत्र रूपेँ चलि सकैत अछि।
व्याख्या: एहि सँ जनता सामाजिक न्याय आ विकाससँ वंचित नहि रहत, से तर्क अछि।

प्रश्न 5658. संघीय संरचनाक आधारसभमे कोन-कोन तत्व आएल अछि?
क. इतिहास, भूखंड, जातीय बहुलता, संस्कृति, भाषा आ प्राकृतिक सम्पदा।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. इतिहास, भूखंड, जातीय बहुलता, संस्कृति, भाषा आ प्राकृतिक सम्पदा।
व्याख्या: लेख राज्य-निर्माणकेँ बहुआधारी प्रक्रिया मानैत अछि।

प्रश्न 5659. एकात्मक राज्य-व्यवस्थापर लेखकीय दृष्टि की अछि?
क. ओ पूर्णतः असफल भेल, तेँ संघीय संरचना आवश्यक।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ओ पूर्णतः असफल भेल, तेँ संघीय संरचना आवश्यक।
व्याख्या: लेख केंद्रीकृत व्यवस्थाकेँ विविध समाज लेल अनुपयुक्त मानैत अछि।

प्रश्न 5660. संघीयता पृथकतावादक प्रश्नसँ कोना जोड़ल गेल अछि?
क. संघीयता पृथकतावादी प्रवृत्तिक स्थायी समाधान बनि सकैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. संघीयता पृथकतावादी प्रवृत्तिक स्थायी समाधान बनि सकैत अछि।
व्याख्या: अधिकार देलासँ दमन घटैत आ अलगावक कारण कम होइत अछि।

प्रश्न 5661. लोकतांत्रिक समावेशनक लेल संघीयता कियैक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. कारण सत्ता आ प्रशासनमे समानुपातिक प्रतिनिधित्वक बाट खुलैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. कारण सत्ता आ प्रशासनमे समानुपातिक प्रतिनिधित्वक बाट खुलैत अछि।
व्याख्या: लेख विविध समाजक न्यायपूर्ण भागीदारी केँ संघीय ढाँचासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5662. शीतल झाक संघीय तर्कक मूल स्वर की अछि?
क. अधिकार, पहचान, स्थानीय संसाधन आ लोकतांत्रिक भागीदारीक पक्षधरता।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. अधिकार, पहचान, स्थानीय संसाधन आ लोकतांत्रिक भागीदारीक पक्षधरता।
व्याख्या: लेख सिद्धांतकेँ सामाजिक न्याय आ भाषा-संस्कृति रक्षासँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ५७२ : विदेह-सदेह १ — शीतल झा: राज्य-प्रस्ताव आ मिथिला

प्रश्न 5663. लेखमे नेपालक संघीय विभाजन लेल किन राज्यसभक उल्लेख अछि?
क. लिम्बुवान, किरांत, नेवा, तमुवान, थरुहट, अवध, भोजपुरी, मिथिला आदि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. लिम्बुवान, किरांत, नेवा, तमुवान, थरुहट, अवध, भोजपुरी, मिथिला आदि।
व्याख्या: सूची विविध ऐतिहासिक-भाषिक समुदायकेँ राज्य-ढाँचामे मान्यता देबाक सोच देखबैत अछि।

प्रश्न 5664. मिथिला राज्यक नामकरणमे कोन सावधानी सुझाओल गेल अछि?
क. नव तथ्यपूर्ण जनगणना आ सामूहिक निर्णयक आधार।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. नव तथ्यपूर्ण जनगणना आ सामूहिक निर्णयक आधार।
व्याख्या: लेख मनमाना नामकरण नहि, ऐतिहासिक बसावट आ समुदाय-निर्णय चाहैत अछि।

प्रश्न 5665. मिथिला राज्यक पक्षमे पहिल तर्क की अछि?
क. मिथिला प्रागैतिहासिक आ पुराणवर्णित भूमि अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मिथिला प्रागैतिहासिक आ पुराणवर्णित भूमि अछि।
व्याख्या: लेख मिथिलाक ऐतिहासिकता कैँ राज्य-अधिकारक आधार बनबैत अछि।

प्रश्न 5666. मिथिला आयर्य संस्कृतिक संदर्भमे कोना वर्णित अछि?
क. आर्यजाति आ आर्य-संस्कृतिक निर्माण-भूमि रूपमे।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. आर्यजाति आ आर्य-संस्कृतिक निर्माण-भूमि रूपमे।
व्याख्या: लेख मिथिलाक सांस्कृतिक स्रोतत्वक दावा करैत अछि।

प्रश्न 5667. मिथिलाक भूगोलक आधार कोन नदी-पर्वत सँ जोडल गेल अछि?
क. कोशी, गंडक, गंगा आ हिमालयक बीचक भूखंड।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. कोशी, गंडक, गंगा आ हिमालयक बीचक भूखंड।
व्याख्या: भौगोलिक निश्चितता राज्य-दावाक महत्त्वपूर्ण आधार बनैत अछि।

प्रश्न 5668. मिथिला गणराज्यक इतिहासक उल्लेख कियैक अछि?
क. राजनीतिक परंपरा आ सामूहिक पहचान प्रमाणित करबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. राजनीतिक परंपरा आ सामूहिक पहचान प्रमाणित करबाक लेल।
व्याख्या: लेख इतिहासकेँ वर्तमान राज्य-अधिकारक समर्थनमे प्रयोग करैत अछि।

प्रश्न 5669. मिथिला राज्यसँ आर्थिक लाभक कोन अपेक्षा राखल गेल अछि?
क. उद्योग, कृषि, पर्यटन, जंगल, जल आदिसँ स्थानीय जनताक अधिकतम लाभ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. उद्योग, कृषि, पर्यटन, जंगल, जल आदिसँ स्थानीय जनताक अधिकतम लाभ।
व्याख्या: राज्य-दावा केवल संस्कृति नहि, आर्थिक उन्नयनसँ सेहो संबंधित अछि।

प्रश्न 5670. मिथिला पावनि-तिहारपर छुट्टीक माँगक अर्थ की अछि?
क. सांस्कृतिक जीवनकेँ प्रशासनिक मान्यता देबाक आग्रह।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सांस्कृतिक जीवनकेँ प्रशासनिक मान्यता देबाक आग्रह।
व्याख्या: लेख स्थानीय संस्कृतिकेँ राजकीय व्यवहारमे प्रतिष्ठित देखय चाहैत अछि।

प्रश्न 5671. मिथिलाक लोकगाथा, लोकनृत्य, लोककला आदिक रक्षा कियैक जरूरी कहल गेल?
क. सांस्कृतिक पहचान आ परंपरा संरक्षित राखबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सांस्कृतिक पहचान आ परंपरा संरक्षित राखबाक लेल।
व्याख्या: सहलेश, लोरिक आदि लोक परंपरा राज्यक सांस्कृतिक आधार मानल गेल अछि।

प्रश्न 5672. मिथिला राज्यक पक्षक समग्र तर्क की अछि?
क. इतिहास, भूगोल, भाषा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था आ सामूहिक मनोभावना।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. इतिहास, भूगोल, भाषा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था आ सामूहिक मनोभावना।
व्याख्या: लेख मिथिलाकेँ मात्र भाषिक क्षेत्र नहि, पूर्ण सांस्कृतिक-राजनीतिक इकाई मानैत अछि।

खण्ड ५७३ : विदेह-सदेह १ — सीमा, मधेश आ गणतंत्र

प्रश्न 5673. प्राचीन मिथिलाक सीमा कोना बताओल गेल अछि?
क. उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूबमे कोशी, पश्चिममे गंडक।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूबमे कोशी, पश्चिममे गंडक।
व्याख्या: लेख परंपरागत भूगोलक आधारपर मिथिला-सीमाक स्मरण करैत अछि।

प्रश्न 5674. सुगौली सन्धिक बाद मिथिलाक स्थिति कोना वर्णित अछि?
क. मिथिला खंडित भेल, मुदा जीवित भूगोल-संस्कृति रहल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मिथिला खंडित भेल, मुदा जीवित भूगोल-संस्कृति रहल।
व्याख्या: राजनीतिक सीमा बदलल, पर भाषा-संस्कृति आ मनोभावना समाप्त नहि भेल।

प्रश्न 5675. मधेश आ मिथिलाक सम्बन्ध लेखमे कोना देखाओल गेल अछि?
क. मधेश राजनीतिक दमनक साझा क्षेत्र, मिथिला सांस्कृतिक-जातीय आधार सहित आन्दोलनी केन्द्र।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मधेश राजनीतिक दमनक साझा क्षेत्र, मिथिला सांस्कृतिक-जातीय आधार सहित आन्दोलनी केन्द्र।
व्याख्या: लेख दूनू आन्दोलनकेँ रणनीतिक रूपेँ जोड़बाक सुझाव दैत अछि।

प्रश्न 5676. मधेश आन्दोलनक लक्ष्य कोन सत्ता-विरोधमे देखाओल गेल?
क. खस प्रभुत्ववादी सत्ता-विरोधी राजनीतिक आन्दोलन।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. खस प्रभुत्ववादी सत्ता-विरोधी राजनीतिक आन्दोलन।
व्याख्या: लेख मधेशी अनुभवकेँ शोषण आ उपेक्षाक साझा मनोविज्ञानसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5677. मिथिला आन्दोलनक अन्तरवस्तु की कहल गेल अछि?
क. सांस्कृतिक, जातीय आ राजनीतिक अधिकारक संयुक्त स्वर।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सांस्कृतिक, जातीय आ राजनीतिक अधिकारक संयुक्त स्वर।
व्याख्या: मिथिला आन्दोलन मात्र भावुक सांस्कृतिक आग्रह नहि, संघीय अधिकारक प्रश्न बनैत अछि।

प्रश्न 5678. गणतंत्रक परिभाषामे मुख्य तत्व की अछि?
क. जन्माधारित विशेषाधिकार बिनु, जनप्रतिनिधि द्वारा राष्ट्र-प्रमुखक व्यवस्था।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. जन्माधारित विशेषाधिकार बिनु, जनप्रतिनिधि द्वारा राष्ट्र-प्रमुखक व्यवस्था।
व्याख्या: लेख राजतंत्रविहीन शासन-पद्धति केँ गणतंत्र मानैत अछि।

प्रश्न 5679. नेपाल गणतंत्रात्मक देश होयबाक तर्कमे राजतंत्र कोना चित्रित अछि?
क. निरंकुश, दमनकारी आ जनअधिकार-विरोधी व्यवस्था।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. निरंकुश, दमनकारी आ जनअधिकार-विरोधी व्यवस्था।
व्याख्या: लेख राजतंत्रक ऐतिहासिक चरित्रकेँ संघीय लोकतंत्रक बाधा मानैत अछि।

प्रश्न 5680. एक देश–एक भाषा–एक भेष नीति पर लेखकीय दृष्टि की अछि?
क. ई निरंकुश एकात्मक सोचक रूप अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ई निरंकुश एकात्मक सोचक रूप अछि।
व्याख्या: लेख विविधता-दमनकारी केन्द्रीकृत राष्ट्रवादक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 5681. मिथिला मुक्ति लेल संघीय शासन कियैक शर्त कहल गेल?
क. राज्याधिकार आ स्थानीय पहचान बिना मुक्ति सम्भव नहि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. राज्याधिकार आ स्थानीय पहचान बिना मुक्ति सम्भव नहि।
व्याख्या: लेख गणतंत्र, लोकतंत्र आ संघीयता कैं परस्पर अनिवार्य कड़ी मानैत अछि।

प्रश्न 5682. सीमा, मधेश आ गणतंत्रक विमर्शक साझा उद्देश्य की अछि?
क. मिथिलाक अधिकारकैं व्यापक लोकतांत्रिक पुनर्संरचनासँ जोड़ब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मिथिलाक अधिकारकैं व्यापक लोकतांत्रिक पुनर्संरचनासँ जोड़ब।
व्याख्या: लेख भूगोल, जनाधिकार आ शासन-व्यवस्था कैं अलग नहि, एकसंग पढ़ैत अछि।

खण्ड ५७४ : विदेह-सदेह १ — संघीयता, वर्ग, जाति, जनजाति आ थारू

प्रश्न 5683. संघीय आन्दोलन वर्गीय आन्दोलनकैं कमजोर करैत अछि — एहि धारणापर लेखकीय मत की अछि?
क. ई भ्रम अछि; अधिकार-आन्दोलन वर्गीय शोषणक रूप सेहो लैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ई भ्रम अछि; अधिकार-आन्दोलन वर्गीय शोषणक रूप सेहो लैत अछि।
व्याख्या: लेख संघीय आन्दोलनकैं सामाजिक-आर्थिक दमनविरुद्ध संघर्षसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5684. मिथिला आन्दोलन वर्गीय कियैक कहल गेल अछि?
क. एक समृद्ध भाषा-संस्कृति आ समाज शोषण-दमनक शिकार अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. एक समृद्ध भाषा-संस्कृति आ समाज शोषण-दमनक शिकार अछि।
व्याख्या: लेख मिथिलाक प्रश्नकैं केवल पहचान नहि, शक्ति-संबंधक प्रश्न बनबैत अछि।

प्रश्न 5685. जातीय आन्दोलनक दिशा ककरा पर निर्भर कहल गेल?
क. जातिक स्वरूप, इतिहास आ ओहि पर होइत शोषण-दमनक मात्रापर।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. जातिक स्वरूप, इतिहास आ ओहि पर होइत शोषण-दमनक मात्रापर।
व्याख्या: लेख जातीय आन्दोलनकैं सामाजिक संरचना आ मुख्य विरोधाभाससँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5686. मिथिलाक भीतरक छोटे-छोटे द्वन्द्व पर लेखकीय दृष्टि की अछि?
क. ओ मुख्य द्वन्द्वक समाधानमे बाधा बनल तँ राजनीतिक-वैचारिक आन्दोलनसँ हटाओल जा सकैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ओ मुख्य द्वन्द्वक समाधानमे बाधा बनल तँ राजनीतिक-वैचारिक आन्दोलनसँ हटाओल जा सकैत अछि।
व्याख्या: लेख आंतरिक अन्तरविरोधकैं मुख्य मुक्ति-संघर्षक अधीन मानैत अछि।

प्रश्न 5687. जनजाति सम्बन्धी भागमे मुख्य आग्रह की अछि?
क. जनजातिसभकेँ विश्वासमे लैत समानुपातिक अधिकार देब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. जनजातिसभकेँ विश्वासमे लैत समानुपातिक अधिकार देब।
व्याख्या: लेख पहाड़ आ मधेश दुनू ठामक जनजातिसभक भरोसा अर्जित करबाक बात करैत अछि।

प्रश्न 5688. थारू आन्दोलन सम्बन्धमे कोन सावधानी बताओल गेल?
क. थारू समुदायकेँ मधेश-विरोधी प्रयोगसँ बचा कऽ अधिकार-संघर्षसँ जोड़ब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. थारू समुदायकेँ मधेश-विरोधी प्रयोगसँ बचा कऽ अधिकार-संघर्षसँ जोड़ब।
व्याख्या: लेख मानैत अछि जे सत्ता थारू अस्मिताकेँ मधेशी आन्दोलनविरुद्ध प्रयोग करि सकैत अछि।

प्रश्न 5689. थारू जातिक भाषा-संस्कृति पर लेखकीय कथन की अछि?
क. ओ अलग पहचान रखैत अछि, मुदा क्षेत्रक भाषासँ जुड़ल अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ओ अलग पहचान रखैत अछि, मुदा क्षेत्रक भाषासँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: लेख थारूकेँ स्वतंत्र पहचान सहित व्यापक मधेश-मिथिला विमर्शमे जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5690. मधेशी आन्दोलनमे जनजातिक भूमिका कियैक आवश्यक अछि?
क. समान अधिकारक व्यापक मोर्चा बनेबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. समान अधिकारक व्यापक मोर्चा बनेबाक लेल।
व्याख्या: जनजाति बिना मुक्ति-संघर्ष अधूरा रहत, ई लेखकीय संकेत अछि।

प्रश्न 5691. संघीयता-वर्ग-जाति विमर्शक मूल उद्देश्य की अछि?
क. अलग-अलग अधिकार-संघर्षकेँ साझा लोकतांत्रिक आन्दोलनमे जोड़ब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. अलग-अलग अधिकार-संघर्षकेँ साझा लोकतांत्रिक आन्दोलनमे जोड़ब।
व्याख्या: लेख पृथक संघर्षसभकेँ प्रतिस्पर्धी नहि, परस्पर पूरक मानैत अछि।

प्रश्न 5692. एहि खण्डमे मिथिला आन्दोलनक स्वरूप कोना उभरैत अछि?
क. भाषिक-सांस्कृतिक संग राजनीतिक, वर्गीय आ सामाजिक न्यायक आन्दोलन।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. भाषिक-सांस्कृतिक संग राजनीतिक, वर्गीय आ सामाजिक न्यायक आन्दोलन।
व्याख्या: लेख मिथिलाक मांगकेँ बहुस्तरीय मुक्ति-परियोजना बनबैत अछि।

खण्ड ५७५ : विदेह-सदेह १ — भारत-नेपाल मिथिला आ समावेशी राज्य

प्रश्न 5693. नेपालक मिथिला आ भारतक मिथिलाक सम्बन्ध कोना बताओल गेल?

क. राजनीतिक सीमा अलग, मुदा भाषा-संस्कृति-साहित्यक सम्बन्ध जीवित।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. राजनीतिक सीमा अलग, मुदा भाषा-संस्कृति-साहित्यक सम्बन्ध जीवित।

व्याख्या: सुगौली सन्धि सीमा बाँटि सकल, सांस्कृतिक बन्धन नहि तोड़ि सकल।

प्रश्न 5694. दूनू देशक मिथिला आन्दोलनक सम्बन्ध कोन प्रकारक कहल गेल?

क. भावनात्मक आ नैतिक समर्थनक सम्बन्ध।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. भावनात्मक आ नैतिक समर्थनक सम्बन्ध।

व्याख्या: लेख दूनू राजनीतिक स्वतंत्रताक सम्मान करैत सांस्कृतिक निकटता मानैत अछि।

प्रश्न 5695. आत्मनिर्णयक अधिकारक मूल मर्म की अछि?

क. राजनीतिक-प्रशासनिक निर्णय आ आर्थिक जीवन अपन शैलीमे चलाबयक अधिकार।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. राजनीतिक-प्रशासनिक निर्णय आ आर्थिक जीवन अपन शैलीमे चलाबयक अधिकार।

व्याख्या: लेख आत्मनिर्णयकेँ दमनमुक्त अनुशासित स्वतंत्रता मानैत अछि।

प्रश्न 5696. मिथिला आ जातीय स्वायत्तता सम्बन्धी लेखकीय मत की अछि?

क. मिथिला सीमित स्वायत्तता नहि, पूर्ण राज्याधिकार चाहैत अछि।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. मिथिला सीमित स्वायत्तता नहि, पूर्ण राज्याधिकार चाहैत अछि।

व्याख्या: लेख केन्द्रीय सत्ता द्वारा सीमित अधिकारक घेरा अस्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 5697. दलित आन्दोलन पर मिथिला राज्यक कर्तव्य की कहल गेल?

क. दलित मुक्ति आन्दोलनक समर्थन, सहयोग आ अगुवाई।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. दलित मुक्ति आन्दोलनक समर्थन, सहयोग आ अगुवाई।

व्याख्या: मिथिला स्वयं उपेक्षित अछि, तेँ दलित न्यायसँ अपन संघर्ष जोड़बाक बात अछि।

प्रश्न 5698. राजनीतिक दलसभक कमजोरी कोना बताओल गेल?

क. संघीय संरचनापर स्पष्ट धारणा आ ईमानदार नीति बाहर नहि आएल।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. संघीय संरचनापर स्पष्ट धारणा आ ईमानदार नीति बाहर नहि आएल।

व्याख्या: लेख दलसभक कपटपूर्ण संघीय भाषा आ मधेश-मिथिला प्रश्नक अनिश्चितता पर आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 5699. महिला आन्दोलन मिथिला आन्दोलनसँ कियैक जोड़ल गेल?
क. लोकतांत्रिक मिथिला राज्य निर्माणमे अधिकारसंपन्न महिलाक भूमिका आवश्यक।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. लोकतांत्रिक मिथिला राज्य निर्माणमे अधिकारसंपन्न महिलाक भूमिका आवश्यक।
व्याख्या: लेख नारी-सम्मानक परंपरा कैँ आधुनिक सशक्तिकरणसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5700. कथित पिछड़ा-आगे बढ़ल वर्गविमर्शमे मुख्य घोषणा की अछि?
क. मिथिला कोनो एक जाति, विशेषतः उच्च जातिक राज्य नहि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मिथिला कोनो एक जाति, विशेषतः उच्च जातिक राज्य नहि।
व्याख्या: राज्यक प्रत्येक अंगमे समानुपातिक समावेशी उपस्थिति आधार मानल गेल अछि।

प्रश्न 5701. मानक मैथिली सम्बन्धमे लेखकीय सावधानी की अछि?
क. कोनो एक बोलीकेँ उच्चवर्गीय नियन्त्रणक आधारपर मानक मानब उचित नहि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. कोनो एक बोलीकेँ उच्चवर्गीय नियन्त्रणक आधारपर मानक मानब उचित नहि।
व्याख्या: लेख बहुभाषिक नीति आ सभ बोलीक सम्मानक पक्षमे अछि।

प्रश्न 5702. समावेशी मिथिला राज्यक मूल आधार की अछि?
क. सभ जाति, भाषा, वर्ग, महिला, दलित, जनजाति आ बोलीक सम्मानित सहभागिता।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सभ जाति, भाषा, वर्ग, महिला, दलित, जनजाति आ बोलीक सम्मानित सहभागिता।
व्याख्या: लेख मिथिला राज्यकेँ समता आ बहुलता पर आधारित कल्पना करैत अछि।

खण्ड ५७६ : विदेह-सदेह १ — मिथिला राज्य: कार्यक्रम, बाधा आ निष्कर्ष

प्रश्न 5703. मिथिला राज्य स्थापनाक नीतिगत कार्यक्रममे पहिल बल ककरा पर अछि?
क. राजतंत्र-विरोधी लोकतांत्रिक आ मानवाधिकारवादी शक्तिसँ मिलि संघर्ष।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. राजतंत्र-विरोधी लोकतांत्रिक आ मानवाधिकारवादी शक्तिसँ मिलि संघर्ष।
व्याख्या: लेख जनताक मित्र शक्तिसँ संगठित गणतांत्रिक संघर्षक आवश्यकता देखबैत अछि।

प्रश्न 5704. संघीय संरचना लेल कोन व्यापक एकता अपेक्षित अछि?
क. जाति, जनजाति, आदिवासी, दलित, पिछड़ा, अल्पसंख्यक आ मानवाधिकारवादी समूहसभसँ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. जाति, जनजाति, आदिवासी, दलित, पिछड़ा, अल्पसंख्यक आ मानवाधिकारवादी समूहसभसँ।
व्याख्या: लेख संघीयता कैँ बहुजन अधिकार-संघर्षक साझा मंच मानैत अछि।

प्रश्न 5705. मुक्त मधेश आ मिथिला राज्यक सम्बन्ध कायरदिशामे कोना अछि?
क. मुक्त मधेश बिना मिथिला राज्यक कल्पना अधूरी, संघीयता बिना मुक्त मधेश असम्भव।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मुक्त मधेश बिना मिथिला राज्यक कल्पना अधूरी, संघीयता बिना मुक्त मधेश असम्भव।
व्याख्या: कायरदिशा तीनू अवधारणा — संघीयता, मधेश मुक्ति, मिथिला राज्य — कैं एक-दोसरसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5706. संघीय शासन देश खंडित करैत अछि — एहि भयक उत्तर की अछि?
क. संघीय शासन देशकैं विखंडनसँ बचबैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. संघीय शासन देशकैं विखंडनसँ बचबैत अछि।
व्याख्या: लेख संघीयता कैं विखंडनवादक स्थायी समाधान कहैत अछि।

प्रश्न 5707. मिथिला राज्य निर्माणक आन्तरिक बाधामे की प्रमुख कहल गेल?
क. राजनीतिक संगठन, एकीकृत सांस्कृतिक संगठन आ स्थापित नेतृत्वक अभाव।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. राजनीतिक संगठन, एकीकृत सांस्कृतिक संगठन आ स्थापित नेतृत्वक अभाव।
व्याख्या: लेख मिथिलाक भीतर संगठनहीनता कैं बड़ा अवरोध मानैत अछि।

प्रश्न 5708. आन्दोलनक बौद्धिक नेतृत्वपर आलोचना की अछि?
क. स्वाभिमान कम, अहंकार बेसी; संयोजन कम, फुट बेसी।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. स्वाभिमान कम, अहंकार बेसी; संयोजन कम, फुट बेसी।
व्याख्या: लेख केवल बौद्धिकता नहि, संगठित जन-क्षमता चाहैत अछि।

प्रश्न 5709. बाह्य बाधामे खस सत्ता सम्बन्धी कथन की अछि?
क. खस प्रभुत्ववादी सोच संघीयता-विरोधी अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. खस प्रभुत्ववादी सोच संघीयता-विरोधी अछि।
व्याख्या: लेख केन्द्रीय सत्ताधारी मानसिकताकैं संघीय अधिकारक बाधा मानैत अछि।

प्रश्न 5710. हिन्दी-आसक्ति पर बाह्य बाधा कियैक कहल गेल?
क. मातृभाषा-प्रेमी समुदाय आ खसवादी दुनूकैं संशय होइत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मातृभाषा-प्रेमी समुदाय आ खसवादी दुनूकैं संशय होइत अछि।
व्याख्या: लेख मातृभाषा-आधारित आन्दोलनमे भाषिक अस्पष्टता कैं कमजोर बिन्दु मानैत अछि।

प्रश्न 5711. निष्कर्षमे नेपालक स्थिति कोना देखाओल गेल?
क. अधिकार-प्राप्तिक नयका मोड़पर ठाढ़ समाज, जतय वंचित वर्ग आन्दोलनमे अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. अधिकार-प्राप्तिक नयका मोड़पर ठाढ़ समाज, जतय वंचित वर्ग आन्दोलनमे अछि।
व्याख्या: लेख वर्तमान संकटकेँ संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्रक अवसर मानैत अछि।

प्रश्न 5712. लेखकक अन्तिम आह्वान की अछि?
क. समाजक सभ वर्ग आन्दोलनमे भाग लऽ नैसर्गिक अधिकार स्थापित करू।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. समाजक सभ वर्ग आन्दोलनमे भाग लऽ नैसर्गिक अधिकार स्थापित करू।
व्याख्या: निष्कर्ष संघर्षकेँ व्यापक, सामूहिक आ अधिकार-केन्द्रित दिशा दैत अछि।

खण्ड ५७७ : विदेह-सदेह १ — “जुम्मा”: अम्मी, भय आ नमाज

प्रश्न 5713. “जुम्मा” कथाक भावात्मक केन्द्र कोन सम्बन्ध अछि?
क. अम्मी आ पुत्रक प्रेम, डर आ धार्मिक स्मृति।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. अम्मी आ पुत्रक प्रेम, डर आ धार्मिक स्मृति।
व्याख्या: कथा बम-विस्फोटक पृष्ठभूमिमे मातृ-चिन्ता आ पुत्रक आस्था-संघर्ष देखबैत अछि।

प्रश्न 5714. अम्मीक फोन कथामे कियैक निर्णायक अछि?
क. मक्का मस्जिद विस्फोटक खबरि बाद पुत्रक सुरक्षा लेल भय प्रकट करैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मक्का मस्जिद विस्फोटक खबरि बाद पुत्रक सुरक्षा लेल भय प्रकट करैत अछि।
व्याख्या: फोन वार्ता भय, प्रेम आ धर्मक बदलैत अर्थक आरम्भिक बिन्दु अछि।

प्रश्न 5715. नरेटरक मस्जिद न जाएबाक बात अम्मीक प्रतिक्रिया कियैक जटिल अछि?
क. धार्मिक कर्तव्यक आग्रह आ पुत्र-सुरक्षाक डर दुनू एकसंग अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. धार्मिक कर्तव्यक आग्रह आ पुत्र-सुरक्षाक डर दुनू एकसंग अछि।
व्याख्या: पहिने ओ नमाजक महत्व कहैत छलीह, बादमे मक्का मस्जिदसँ दूर रहबाक कहैत छलीह।

प्रश्न 5716. हैदराबाद स्मृतिमे अम्मी कियैक भावुक भेल छलीह?
क. बेटाक पैघ नगरमे स्वतंत्र जीवन देखिकए।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. बेटाक पैघ नगरमे स्वतंत्र जीवन देखिकए।
व्याख्या: ओ बाल्यकालमे हाथ पकड़ि बस चढ़ेबाक स्मृति आ वर्तमान उलट सम्बन्ध याद करैत छलीह।

प्रश्न 5717. अम्मी पुत्रकेँ जुम्माक नमाज लेल कियैक प्रेरित करैत छलीह?
क. मुस्लिम रूपमे कमसँ कम सप्ताहमे एक दिन नमाज आवश्यक मानैत छलीह।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मुस्लिम रूपमे कमसँ कम सप्ताहमे एक दिन नमाज आवश्यक मानैत छलीह।
व्याख्या: ओ नमाजकेँ धनी-गरीबकेँ संग अनयबला आशीषक अवसर कहैत छलीह।

प्रश्न 5718. नमाज सम्बन्धमे अम्मीक सामाजिक दृष्टि की अछि?
क. धनी, गरीब, व्यापारी, मजदूर सभ एकसंग काँध मिलाबैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. धनी, गरीब, व्यापारी, मजदूर सभ एकसंग काँध मिलाबैत अछि।
व्याख्या: नमाजक सामूहिकता अम्मीक लागि धार्मिक समता आ आशीर्वादक स्थल अछि।

प्रश्न 5719. मक्का मस्जिद जाएबाक प्रसंगमे चारमीनारक भूमिका की अछि?
क. मस्जिद-यात्राक संग शहर-दर्शनक स्मृति बनैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मस्जिद-यात्राक संग शहर-दर्शनक स्मृति बनैत अछि।
व्याख्या: अम्मी चारमीनार बादमे देखबाक कहि पहिने मस्जिद देखय चाहैत छलीह।

प्रश्न 5720. बुरका प्रसंग कथामे ककर संकेत अछि?
क. स्त्रीक सामुदायिक पहचान, संकोच आ पुत्रक आधुनिक दृष्टिक द्वन्द्व।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. स्त्रीक सामुदायिक पहचान, संकोच आ पुत्रक आधुनिक दृष्टिक द्वन्द्व।
व्याख्या: बुरका बिना अम्मी अपनाकेँ असुरक्षित अनुभव करैत छलीह, पुत्र पछताइत अछि।

प्रश्न 5721. मस्जिदक शान्त वातावरणक वर्णन कियैक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. विस्फोटक हिंसासँ विपरीत पवित्रता आ शान्तिक स्मृति बनेबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. विस्फोटक हिंसासँ विपरीत पवित्रता आ शान्तिक स्मृति बनेबाक लेल।
व्याख्या: कथा पहिने मस्जिदकेँ सुखकारी, विस्तृत आ पवित्र देखबैत अछि।

प्रश्न 5722. “जुम्मा”मे भयक परिवर्तन कोना देखाइत अछि?
क. जाहि नमाजक लेल अम्मी आग्रह करैत छलीह, ओहिसँ विस्फोट बाद ओ पुत्रकेँ दूर रहबाक कहैत छलीह।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. जाहि नमाजक लेल अम्मी आग्रह करैत छलीह, ओहिसँ विस्फोट बाद ओ पुत्रकेँ दूर रहबाक कहैत छलीह।
व्याख्या: कथा आतंकक कारण धार्मिक स्मृति आ मातृ-प्रेमक टकराहट देखबैत अछि।

खण्ड ५७८ : विदेह-सदेह १ — “जुम्मा”: विस्फोट आ मातृ-प्रेम

प्रश्न 5723. मक्का मस्जिदक प्रसंगमे परबासभक दृश्यक अर्थ की अछि?
क. शान्त, आह्लादकारी, जीवित धार्मिक परिसरक छवि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. शान्त, आह्लादकारी, जीवित धार्मिक परिसरक छवि।
व्याख्या: परबा, दाना आ पानीक दृश्य बादक रक्तपातसँ तीव्र विरोध रचैत अछि।

प्रश्न 5724. नरेटर मक्का मस्जिदमे नमाज पढ़बाक प्रण कियैक करैत अछि?
क. अम्मीक श्रद्धा आ मस्जिदक पवित्र वातावरणसँ प्रभावित भऽ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. अम्मीक श्रद्धा आ मस्जिदक पवित्र वातावरणसँ प्रभावित भऽ।
व्याख्या: ओ कहैत अछि जे अगिला सप्ताह एतय नमाज पढ़ब।

प्रश्न 5725. नरेटर अपन प्रण किएक तोड़ैत अछि?
क. सामान्य जीवनमे लौटि ओ मस्जिद-प्रणकेँ कात राखि दैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सामान्य जीवनमे लौटि ओ मस्जिद-प्रणकेँ कात राखि दैत अछि।
व्याख्या: दू जुम्मा बीति जाइत अछि, मानो ओ जुम्मा रहलहि नहि।

प्रश्न 5726. विस्फोटक खबरि बाद नरेटर अम्मीसँ की पुछैत अछि?
क. कोन मस्जिदमे बम फूटल, से जानैत छलीह की नहि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. कोन मस्जिदमे बम फूटल, से जानैत छलीह की नहि।
व्याख्या: ओ अम्मीकेँ बतबैत अछि जे ओही मक्का मस्जिदमे रक्तपात भेल।

प्रश्न 5727. खूनसँ भीजल देह आ परबासभक उल्लेखक असर की अछि?
क. पूर्व शान्त छविक हिंसक विखंडन।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. पूर्व शान्त छविक हिंसक विखंडन।
व्याख्या: कथा पवित्र परिसरक जीवित स्मृति केँ रक्तरंजित त्रासदीमे बदलैत अछि।

प्रश्न 5728. अम्मी पुत्रकेँ “गाम चलि आउ” कियैक कहैत छलीह?
क. मातृ-भय बेटाकेँ महानगरीय खतरा सँ दूर रखय चाहैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मातृ-भय बेटाकेँ महानगरीय खतरा सँ दूर रखय चाहैत अछि।
व्याख्या: विस्फोट बाद धार्मिक आग्रहसँ पहिने सुरक्षा आ घर-फिरबाक ममता बोलैत अछि।

प्रश्न 5729. अम्मीक “ओहि मस्जिदमे नहि जाएब” कथनक गूढ़ अर्थ की अछि?
क. मातृ-प्रेम धार्मिक आदर्शपर सेहो भारी पड़ि सकैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मातृ-प्रेम धार्मिक आदर्शपर सेहो भारी पड़ि सकैत अछि।
व्याख्या: पहिने मस्जिदक महिमा कहनिहार अम्मी आब पुत्रकेँ ओहि जगहसँ दूर रहबाक कहैत छलीह।

प्रश्न 5730. नरेटरक प्रश्न — अल्ला आन भऽ गेलथि? — की खोलैत अछि?
क. भय, प्रेम आ आस्था बीचक नैतिक उलझन।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. भय, प्रेम आ आस्था बीचक नैतिक उलझन।
व्याख्या: ओ सोचैत अछि जे बच्चाक प्रेमक आगाँ धार्मिक धारणाक अर्थ बदलि गेल।

प्रश्न 5731. कथाक अन्तिम प्रार्थना कोन भावना लैत अछि?
क. आन जुम्मार्केँ रक्तहीन राखबाक विनती।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. आन जुम्मार्केँ रक्तहीन राखबाक विनती।
व्याख्या: कथा आतंकविरुद्ध प्रार्थना आ मातृ-पीड़ित समुदायकेँ समर्पणमे समाप्त होइत अछि।

प्रश्न 5732. “जुम्मा”क समग्र उपलब्धि की अछि?
क. आस्था, स्मृति, आतंक आ मातृत्वक बीच संवेदनशील कथा रचना।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. आस्था, स्मृति, आतंक आ मातृत्वक बीच संवेदनशील कथा रचना।
व्याख्या: कथा घटना-केंद्रित वर्णनसँ बेसी, डरलेल अम्मीसभक अंत:करणक बदलाव देखबैत अछि।

खण्ड ५७९ : विदेह-सदेह १ — सुशांत झा: बलिराज गढ़क पुरातात्त्विक प्रश्न

प्रश्न 5733. बलिराजपुरक किला कथनानुसार कतय अवस्थित अछि?
क. मधुबनी जिला मुख्यालयसँ उत्तर-पूर्व दिशामे, खोजपुर लग।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मधुबनी जिला मुख्यालयसँ उत्तर-पूर्व दिशामे, खोजपुर लग।
व्याख्या: लेख लेखकक गाम खोजपुरसँ नजदीक स्थित बलिराजपुरक किला पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 5734. बलिराज गढ़क देखभाल के करैत अछि?
क. भारत सरकारक पुरातत्व विभाग।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. भारत सरकारक पुरातत्व विभाग।
व्याख्या: लेख किलाक सरकारी पुरातात्त्विक महत्व बतबैत अछि।

प्रश्न 5735. किलाक खुदाईसँ कोन प्रकारक सामग्री भेटबाक उल्लेख अछि?
क. मृद्भांड, विभिन्न वस्तु आ सोनाक सिक्का।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मृद्भांड, विभिन्न वस्तु आ सोनाक सिक्का।
व्याख्या: लेख उत्खननक आधारपर प्राचीनताक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 5736. बाहरी बोर्डक अनुसार किला कोन कालक होयबाक सम्भावना अछि?
क. मौर्यकालीन।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मौर्यकालीन।
व्याख्या: लेख सरकारी संकेतक आधारपर किलाकेँ मौर्यकालसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5737. किलासँ जुड़ल लोककिंवदन्तीमे कोन दावा अछि?
क. ई राक्षस राजा बलिक राजधानी छल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ई राक्षस राजा बलिक राजधानी छल।
व्याख्या: गामक जनविश्वास आ इतिहासक सम्भावना, दूनू लेखमे साथ-साथ चलैत अछि।

प्रश्न 5738. साँझ बाद लोक किला दिस कियैक नहि जाए चाहैत?
क. राजा बलि आ भयक किंवदन्ती कारण।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. राजा बलि आ भयक किंवदन्ती कारण।
व्याख्या: लेख लोक-भयकेँ सरकारी पहरेदारक सुविधा-संबंधी अफवाह सम्भावनासँ सेहो जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5739. किलाक देवारक वर्णन कोन बात देखबैत अछि?
क. अत्यन्त चाकर आ विशाल प्राचीन निर्माणक क्षमता।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. अत्यन्त चाकर आ विशाल प्राचीन निर्माणक क्षमता।
व्याख्या: लेख देवारपर रथ निकलि सकबाक कल्पनासँ ओकर भव्यता बतबैत अछि।

प्रश्न 5740. किलाक पोखरिक सम्बन्धमे की लोकमत अछि?
क. ओ राक्षसक कोरल मानल जाइत अछि, आ सुरंगक कथा सेहो अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ओ राक्षसक कोरल मानल जाइत अछि, आ सुरंगक कथा सेहो अछि।
व्याख्या: पोखरि आ सुरंगक कथा किलाक रहस्यात्मकता बढ़बैत अछि।

प्रश्न 5741. किलाक आसपासक गाम-नाम कियैक महत्त्वपूर्ण कहल गेल?
क. फुलबरिया, गढ़ी/गरही, रमणीपट्टी, भूपट्टी आदि नाम ऐतिहासिकता सूचित करैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. फुलबरिया, गढ़ी/गरही, रमणीपट्टी, भूपट्टी आदि नाम ऐतिहासिकता सूचित करैत अछि।
व्याख्या: लेख स्थलनामक इतिहास-संकेतकेँ किलाक पुरातनता संग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5742. बलिराज गढ़क प्रथम बड़ा प्रश्न की अछि?
क. ई केवल लोककथा-स्थल अछि कि मिथिलाक प्राचीन राजधानीक सम्भावित अवशेष।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ई केवल लोककथा-स्थल अछि कि मिथिलाक प्राचीन राजधानीक सम्भावित अवशेष।
व्याख्या: लेख पुरातत्व, लोकस्मृति आ इतिहास-संदेहक बीच प्रश्न उठबैत अछि।

खण्ड ५८० : विदेह-सदेह १ — बलिराज गढ़: राजधानी-दावा, खुदाई आ पर्यटन

प्रश्न 5743. बलिराज गढ़क राजधानी-दावा लेल लेखक कोन ऐतिहासिक तर्क उद्धृत करैत छथि?
क. जनकपुरक ऐतिहासिकता पर संदेह आ ह्वेनसांग-संबंधी दूरी-तर्क।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. जनकपुरक ऐतिहासिकता पर संदेह आ ह्वेनसांग-संबंधी दूरी-तर्क।
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे वर्तमान जनकपुर नव स्थल मानल जाइत अछि, तैँ बलिराजपुरक दावा उठैत अछि।

प्रश्न 5744. रामायण-संकेतक उपयोग कोना कएल गेल अछि?
क. मिथिलाक प्राचीन राजधानीक सम्भावना बलिराजपुर दिस संकेत करैत अछि, से रूपमे।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मिथिलाक प्राचीन राजधानीक सम्भावना बलिराजपुर दिस संकेत करैत अछि, से रूपमे।
व्याख्या: लेख निर्णायक दावा नहि, बल्कि सम्भावना आ अनुसंधानक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 5745. भोगेन्द्र झाक मत अनुसार राजा बलिक राजधानी कतय सेहो सम्भव कहल गेल?
क. दक्षिण भारतक महाबलीपुरम।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. दक्षिण भारतक महाबलीपुरम।
व्याख्या: लेख अनेक मत रखैत अछि, एकमात्र निष्कर्ष थोपैत नहि।

प्रश्न 5746. पूरा मिथिलामे बलिराजपुरसँ पुरान किला नहि — एहि कथनक अर्थ की अछि?
क. बलिराज गढ़क प्राचीन राजधानी-दावाकेँ बल भेटैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. बलिराज गढ़क प्राचीन राजधानी-दावाकेँ बल भेटैत अछि।
व्याख्या: लेख पुरातात्त्विक अभाव-उपस्थिति तुलना द्वारा महत्व रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 5747. किलाक भीतर उबड़-खाबड़ मैदानक अर्थ कोना लगाओल गेल?
क. राजमहल वा निर्माणक धरती भीतर धँसल रहबाक संकेत।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. राजमहल वा निर्माणक धरती भीतर धँसल रहबाक संकेत।
व्याख्या: लेख स्थल-आकृतिकेँ दबी संरचना सम्भावनासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5748. ढंगसँ खुदाई कएलासँ की सम्भावना बताओल गेल?
क. कतेक रहस्यसँ आवरण उठि सकैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. कतेक रहस्यसँ आवरण उठि सकैत अछि।
व्याख्या: लेख पुरातात्त्विक अनुसंधानकेँ आवश्यक मानैत अछि।

प्रश्न 5749. सरकारी प्रयासपर लेखकक मत की अछि?
क. एखन धरि ठोस प्रयास नहि भेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. एखन धरि ठोस प्रयास नहि भेल।
व्याख्या: कामचलाऊ सड़क जोड़ब पर्याप्त नहि, से लेखकीय आलोचना अछि।

प्रश्न 5750. बलिराज गढ़मे संग्रहालयक सुझाव कियैक अछि?
क. पुरातात्त्विक सामग्री आ इतिहासकेँ व्यवस्थित रूपमे देखेबाक लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. पुरातात्त्विक सामग्री आ इतिहासकेँ व्यवस्थित रूपमे देखेबाक लेल।
व्याख्या: संग्रहालय स्थलकेँ शोध आ पर्यटन दुनू लेल उपयोगी बना सकैत अछि।

प्रश्न 5751. मिथिला पेंटिंग संस्थान वा आर्ट गैलरीक सुझावक अर्थ की अछि?
क. स्थानीय सांस्कृतिक पूंजीकेँ पर्यटन-विकाससँ जोड़ब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. स्थानीय सांस्कृतिक पूंजीकेँ पर्यटन-विकाससँ जोड़ब।
व्याख्या: लेख पुरातत्व आ लोककला केँ एकीकृत विकास योजना मानैत अछि।

प्रश्न 5752. बुद्ध सर्किट वा रामायण सर्किटसँ जोड़बाक प्रस्तावक लक्ष्य की अछि?
क. बलिराज गढ़केँ व्यापक तीर्थ-पर्यटन मानचित्रपर आनब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. बलिराज गढ़केँ व्यापक तीर्थ-पर्यटन मानचित्रपर आनब।
व्याख्या: लेख गरीबी घटेबा आ क्षेत्रीय विकास लेल सांस्कृतिक पर्यटनक सम्भावना देखैत अछि।

खण्ड ५८१ : विदेह-सदेह १ — “मिथिला मंथन”: पिछड़ापन, बाढ़ आ विकास-दिशा

प्रश्न 5753. “मिथिला मंथन”मे मिथिलांचलक पिछड़ापन कोन मापदंडसँ देखाओल गेल?

क. प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता आ प्रसवकालीन मातृ-शिशु मृत्यु।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता आ प्रसवकालीन मातृ-शिशु मृत्यु।

व्याख्या: लेख विकासक प्रश्नकेँ सांस्कृतिक गौरवसँ आगाँ बढ़ा आर्थिक-सामाजिक आँकड़ा पर लैत अछि।

प्रश्न 5754. मिथिलाक पिछड़ापनक एक बड़ा कारण की कहल गेल?

क. भौगोलिक बनावट आ नीक नेतृत्वक अभाव।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. भौगोलिक बनावट आ नीक नेतृत्वक अभाव।

व्याख्या: लेख प्राकृतिक कठिनाई आ राजनीतिक नेतृत्व, दुनूकेँ जिम्मेदार मानैत अछि।

प्रश्न 5755. गोआ, पंजाब आ बिहारक तुलना कियैक अछि?

क. क्षेत्रीय आर्थिक असमानता देखेबाक लेल।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. क्षेत्रीय आर्थिक असमानता देखेबाक लेल।

व्याख्या: लेख प्रतिव्यक्ति आयक अन्तरसँ विकास-संकटक तीव्रता बतबैत अछि।

प्रश्न 5756. मिथिलांचलक आधा सँ बेसी इलाका बाढ़मे डूबल रहैत अछि — एहि कथनक अर्थ की अछि?

क. बाढ़ विकासक मूल संरचनात्मक बाधा अछि।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. बाढ़ विकासक मूल संरचनात्मक बाधा अछि।

व्याख्या: लेख बाढ़केँ केवल आपदा नहि, दीर्घकालीन विकास-अवरोध मानैत अछि।

प्रश्न 5757. बाढ़ नियंत्रण लेल राज्य सरकार मात्र पर्याप्त कियैक नहि?

क. केंद्र सरकारक सहयोग आवश्यक मानल गेल अछि।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. केंद्र सरकारक सहयोग आवश्यक मानल गेल अछि।

व्याख्या: कोसी आपदा आ बाढ़-प्रबंधनक विफलता राष्ट्रीय-क्षेत्रीय समन्वय चाहैत अछि।

प्रश्न 5758. बाढ़ उद्योग-धंधापर की प्रभाव डालैत अछि?

क. सड़क, रेल, पुल सन आधारभूत ढाँचा नष्ट करैत अछि।

ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।

ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।

घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

उत्तर: क. सड़क, रेल, पुल सन आधारभूत ढाँचा नष्ट करैत अछि।

व्याख्या: आधारभूत ढाँचा टूटल रहितहुँ उद्योग लगेनाइ दिनमे सपना सदृश कहल गेल।

प्रश्न 5759. मिथिलामे पैघ उद्योगक कठिनाईक एक कारण की अछि?
क. सड़क-बिजलीक अभाव आ खाली जमीनक कमी।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सड़क-बिजलीक अभाव आ खाली जमीनक कमी।
व्याख्या: लेख उद्योग-आधारित विकासक सीमाकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 5760. शहरीकरणक अभाव कियैक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. शहर सरकारी नौकरीपर टिकले अछि, उद्योगक बलपर नहि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. शहर सरकारी नौकरीपर टिकले अछि, उद्योगक बलपर नहि।
व्याख्या: लेख मिथिलाक शहरकेँ विकसित गाँव वा बड़ा चौक सन बतबैत अछि।

प्रश्न 5761. दिल्ली-पंजाबमे श्रम-प्रवासक अर्थ की अछि?
क. मिथिलाक श्रम अपन घरक आधारभूत निर्माणमे नहि, बाहरक विकासमे लगैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मिथिलाक श्रम अपन घरक आधारभूत निर्माणमे नहि, बाहरक विकासमे लगैत अछि।
व्याख्या: लेख प्रवासकेँ आर्थिक विडम्बना मानैत अछि।

प्रश्न 5762. “मिथिला मंथन”क विकास-प्रश्नक मूल चिंता की अछि?
क. बाढ़, अवसंरचना, शिक्षा, उद्योग आ क्षेत्रीय असमानता बीच वास्तविक विकास-दिशा खोजब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. बाढ़, अवसंरचना, शिक्षा, उद्योग आ क्षेत्रीय असमानता बीच वास्तविक विकास-दिशा खोजब।
व्याख्या: लेख भावुक राज्यवाद नहि, व्यावहारिक आर्थिक मॉडल पर बल दैत अछि।

खण्ड ५८२ : विदेह-सदेह १ — “मिथिला मंथन”: शिक्षा, महिला आ पूनम-प्रवीण

प्रश्न 5763. अलग मिथिला राज्यक मांग लेखमे संस्कृति संगे ककर कारण उचित कहल गेल?
क. आर्थिक विकासक कारण सेहो।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. आर्थिक विकासक कारण सेहो।
व्याख्या: लेख राज्य-मांगकेँ केवल सांस्कृतिक अस्मिता नहि, विकास-न्यायक प्रश्न बनबैत अछि।

प्रश्न 5764. मिथिला विकास मॉडलमे कृषि लेल की जरूरी कहल गेल?
क. फोरलेन हाईवे आ रेलवे रेफ्रिजरेटर डिब्बा।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. फोरलेन हाईवे आ रेलवे रेफ्रिजरेटर डिब्बा।
व्याख्या: लेख उपजाऊ जमीनक लाभ बाजार धरि पहुँचाबय लेल परिवहन-संग्रहण चाहैत अछि।

प्रश्न 5765. मिथिलामे उच्च शिक्षा लेल की प्रस्ताव अछि?
क. बहुत इंजीनियरिंग कालेज, मेडिकल कालेज आ महिला विश्वविद्यालय।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. बहुत इंजीनियरिंग कालेज, मेडिकल कालेज आ महिला विश्वविद्यालय।
व्याख्या: लेख शिक्षा-संरचनाकेँ विकासक रीढ़ मानैत अछि।

प्रश्न 5766. २४ घंटा बिजलीक तर्क कियैक अछि?
क. छोट उद्योग आ स्थानीय रोजगार लेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. छोट उद्योग आ स्थानीय रोजगार लेल।
व्याख्या: लेख मानैत अछि जे बिजली भेटत तँ बाहर पलायन घटि सकैत अछि।

प्रश्न 5767. महिला शिक्षाक दशा कियैक खराब कहल गेल?
क. घर लग कालेज नहि, सामाजिक दबाव आ विवाह-दहेजक बाधा।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. घर लग कालेज नहि, सामाजिक दबाव आ विवाह-दहेजक बाधा।
व्याख्या: लेख प्रतिभाशाली लड़कीक पढ़ाइ अधूरा रहबाक संरचनात्मक कारण खोजैत अछि।

प्रश्न 5768. पूनम आ प्रवीणक प्रसंगमे मुख्य तुलना की अछि?
क. दूनू प्रतिभाशाली, मुदा अवसरक अन्तरसँ प्रवीण आगे, पूनम रुकि गेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. दूनू प्रतिभाशाली, मुदा अवसरक अन्तरसँ प्रवीण आगे, पूनम रुकि गेल।
व्याख्या: कथा-प्रसंग विकास-निबंधमे लैंगिक-असमानता कैं जीवित उदाहरण बनबैत अछि।

प्रश्न 5769. प्रवीणक जीवन-मार्ग की बताओल गेल?
क. राउरकेला सँ इंजीनियरिंग कऽ कम्पनी द्वारा शिकागो पठाओल गेल।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. राउरकेला सँ इंजीनियरिंग कऽ कम्पनी द्वारा शिकागो पठाओल गेल।
व्याख्या: प्रवीण अवसर पाबि वैश्विक रोजगार धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 5770. पूनमक प्रतिभा कोना दबि गेल?
क. दहेज, विवाह-चिन्ता आ उच्च शिक्षा-संरचना अभावसँ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. दहेज, विवाह-चिन्ता आ उच्च शिक्षा-संरचना अभावसँ।
व्याख्या: कक्षा मे पहिल अबैवाली पूनम जीवन-दौड़मे पीछे छोड़ल गेल।

प्रश्न 5771. लेखक पूनमक प्रश्नकेँ केवल दहेज धरि सीमित कियैक नहि रखैत?
क. कालेज-सुविधा आ क्षेत्रीय शिक्षा-अभाव सेहो कारण अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. कालेज-सुविधा आ क्षेत्रीय शिक्षा-अभाव सेहो कारण अछि।
व्याख्या: ओ पूछैत छथि जे दहेज नहि रहितहुँ घर लग नीक कालेज भेटितैक की नहि।

प्रश्न 5772. पूनम-प्रवीण प्रसंगक सामाजिक अर्थ की अछि?
क. प्रतिभाक भविष्य समाज, लिंग, क्षेत्रीय सुविधा आ अवसरसँ निर्धारित होइत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. प्रतिभाक भविष्य समाज, लिंग, क्षेत्रीय सुविधा आ अवसरसँ निर्धारित होइत अछि।
व्याख्या: “मिथिला मंथन” व्यक्तिगत कहानीसँ विकास-असमानताक ठोस चेहरा देखबैत अछि।

खण्ड ५८३ : विदेह-सदेह १ — शिक्षा, धर्म, राज्य आ समाज: संयुक्त विवेचन

प्रश्न 5773. “दूभि” आ “मिथिला मंथन” दूनूमे शिक्षा-संकट कोना जुड़ैत अछि?
क. एकमे विद्यालयक नैतिक-भौतिक पतन, दोसरमे उच्च शिक्षाक अभाव।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. एकमे विद्यालयक नैतिक-भौतिक पतन, दोसरमे उच्च शिक्षाक अभाव।
व्याख्या: दूनू पाठ शिक्षा-सुविधा मात्र नहि, गुणवत्ता आ अवसरक समता माँगैत अछि।

प्रश्न 5774. “जाग’ जाग’ महादेव” आ “जुम्मा” दूनूमे धर्मक भिन्न रूप की अछि?
क. एकमे धर्म-व्यापार पर व्यंग्य, दोसरमे भयग्रस्त मातृ-आस्था।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. एकमे धर्म-व्यापार पर व्यंग्य, दोसरमे भयग्रस्त मातृ-आस्था।
व्याख्या: धर्म कहीं सौदाबाजीक विषय बनैत अछि, कहीं प्रेम आ डरक संवेदनशील क्षेत्र।

प्रश्न 5775. शीतल झाक संघीय लेख आ “मिथिला मंथन”क साझा चिन्ता की अछि?
क. अधिकार आ विकासक प्रश्नकेँ स्थानीय संरचना सँ जोड़ब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. अधिकार आ विकासक प्रश्नकेँ स्थानीय संरचना सँ जोड़ब।
व्याख्या: एक राजनीतिक राज्याधिकार पर, दोसर आर्थिक विकास-मॉडल पर बल दैत अछि।

प्रश्न 5776. “दूभि”क मैदान आ बलिराज गढ़क किला कोन साझा प्रश्न उठबैत अछि?
क. सार्वजनिक स्थल आ विरासतक संरक्षण।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सार्वजनिक स्थल आ विरासतक संरक्षण।
व्याख्या: विद्यालयक हाता आ प्राचीन किला दूनू उपेक्षा सँ पीड़ित सामुदायिक स्मृति-स्थान अछि।

प्रश्न 5777. “आह्वान” आ शीतल झाक लेखमे जन-सक्रियताक स्वर कोना अछि?
क. दूनू समाजकेँ निष्क्रियता छोड़ि अधिकार आ न्याय लेल जागबाक कहैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. दूनू समाजकेँ निष्क्रियता छोड़ि अधिकार आ न्याय लेल जागबाक कहैत अछि।
व्याख्या: कविता राष्ट्रक पुकार दैत अछि, लेख आन्दोलनक कार्यक्रम।

प्रश्न 5778. पूनम-प्रवीण प्रसंग आ “दूभि”क बालिका-बालक विद्यालय-संसारमे की समानता अछि?
क. शिक्षा-व्यवस्था कमजोर भेल तँ भविष्य असमान आ अधूरा रहैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. शिक्षा-व्यवस्था कमजोर भेल तँ भविष्य असमान आ अधूरा रहैत अछि।
व्याख्या: दूनू स्रोत भविष्य-पीढ़ीक क्षति पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 5779. “जुम्मा” आ “आह्वान” दूनूमे हिंसाक भाव की अछि?
क. मानव जीवनक असुरक्षा आ रक्तपातक विरुद्ध करुण प्रतिरोध।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मानव जीवनक असुरक्षा आ रक्तपातक विरुद्ध करुण प्रतिरोध।
व्याख्या: एक मस्जिद-विस्फोटक पीड़ा अछि, दोसर राष्ट्रव्यापी हिंसाक पुकार।

प्रश्न 5780. “पसीझक काँट” आ “जाग’ जाग’ महादेव”मे आधुनिक समाजक कोन रोग साझा अछि?
क. सम्बन्धक अवरोध, स्वार्थ आ संवेदनाहीनता।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सम्बन्धक अवरोध, स्वार्थ आ संवेदनाहीनता।
व्याख्या: काँट सम्बन्ध रोकैत अछि; डील-धर्म भक्ति कैँ स्वार्थमे बदलैत अछि।

प्रश्न 5781. बलिराज गढ़ आ मिथिला राज्य-विमर्शमे इतिहासक भूमिका की अछि?
क. वर्तमान अधिकार आ पहचानक समर्थन लेल अतीतक पुनर्पाठ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. वर्तमान अधिकार आ पहचानक समर्थन लेल अतीतक पुनर्पाठ।
व्याख्या: पुरातत्व आ राजनीतिक इतिहास दुनू मिथिला-स्मृतिकेँ सक्रिय बनबैत अछि।

प्रश्न 5782. एहि संयुक्त खण्डक समग्र निष्कर्ष की अछि?
क. साहित्य शिक्षा, धर्म, राजनीति, इतिहास आ विकासक प्रश्नकेँ एक-दोसरसँ जोड़ि पढ़बैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. साहित्य शिक्षा, धर्म, राजनीति, इतिहास आ विकासक प्रश्नकेँ एक-दोसरसँ जोड़ि पढ़बैत अछि।
व्याख्या: सदेह १क एहि अंशसभमे रचना समाजक बहुआयामी आत्मपरीक्षण बनैत अछि।

खण्ड ५८४ : विदेह-सदेह १ — वर्तमान सामाजिक आलोचना: पुनरावलोकन

प्रश्न 5783. एहि बैचमे “दूभि”क सबसे बड़ा योगदान की अछि?
क. विद्यालय-पर्यावरणक दुर्दशाकेँ जीवित पात्रक रूपमे बोलबेनाइ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. विद्यालय-पर्यावरणक दुर्दशाकेँ जीवित पात्रक रूपमे बोलबेनाइ।
व्याख्या: दूभि घास नहि रहि स्मृति, पीड़ा आ प्रतिरोधक आवाज बनैत अछि।

प्रश्न 5784. “जाग’ जाग’ महादेव” समाजक धर्म-बोध पर कोन चोट करैत अछि?
क. भक्ति केँ लाभक सौदामे बदलयबला प्रवृत्तिपर।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. भक्ति केँ लाभक सौदामे बदलयबला प्रवृत्तिपर।
व्याख्या: लेख दिखबैत अछि जे देवतासँ संवाद असलमे समाजक स्वार्थक खुलासा अछि।

प्रश्न 5785. शीतल झाक निबंध वर्तमान राज्य-विमर्शमे की जोड़ैत अछि?
क. संघीयता, मिथिला राज्य, समावेशन आ आत्मनिर्णयक क्रमबद्ध तर्क।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. संघीयता, मिथिला राज्य, समावेशन आ आत्मनिर्णयक क्रमबद्ध तर्क।
व्याख्या: निबंध सूचीबद्ध बिन्दुसभ द्वारा राजनीतिक कार्यक्रमक रूप लैत अछि।

प्रश्न 5786. “जुम्मा”क साहित्यिक बल कोन ठाम अछि?
क. माँक आवाजमे आस्था, भय आ प्रेमक बदलैत स्वर पकड़ब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. माँक आवाजमे आस्था, भय आ प्रेमक बदलैत स्वर पकड़ब।
व्याख्या: कथा विस्फोटक बाहरी घटना केँ अंतरंग मातृ-हृदयमे दर्ज करैत अछि।

प्रश्न 5787. बलिराज गढ़ लेखक मुख्य आग्रह की अछि?
क. ठोस पुरातात्त्विक खुदाई, संग्रहालय आ सांस्कृतिक पर्यटन।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. ठोस पुरातात्त्विक खुदाई, संग्रहालय आ सांस्कृतिक पर्यटन।
व्याख्या: लेख मिथिलाक प्राचीनताकेँ प्रमाणित करबाक वैज्ञानिक प्रयास चाहैत अछि।

प्रश्न 5788. “मिथिला मंथन” विकासक चर्चा ककरा सँ शुरू करैत अछि?
क. आर्थिक असमानता, बाढ़, अवसंरचना आ नेतृत्व-अभाव सँ।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. आर्थिक असमानता, बाढ़, अवसंरचना आ नेतृत्व-अभाव सँ।
व्याख्या: लेख विकासक प्रश्नकेँ भावनात्मक नारा नहि, कठोर सामाजिक-आर्थिक यथार्थ मानैत अछि।

प्रश्न 5789. पूनमक प्रसंगक स्थायी महत्त्व की अछि?
क. मिथिलाक महिला-शिक्षा आ अवसर-अभावक मानवीय उदाहरण।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. मिथिलाक महिला-शिक्षा आ अवसर-अभावक मानवीय उदाहरण।
व्याख्या: पूनमक प्रतिभा दहेज आ शिक्षा-संरचनाक अभावमे दबि जाइत अछि।

प्रश्न 5790. एहि अंशसभमे भाषा-संस्कृति कोना उपस्थित अछि?
क. कहीं मैथिली अबला रूपमे पुकारैत अछि, कहीं राज्यक अधिकार-आधार बनैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. कहीं मैथिली अबला रूपमे पुकारैत अछि, कहीं राज्यक अधिकार-आधार बनैत अछि।
व्याख्या: भाषा भावुक प्रतीक मात्र नहि, राजनीतिक-सांस्कृतिक जीवनक केन्द्र अछि।

प्रश्न 5791. वर्तमान सामाजिक आलोचनाक साझा लक्ष्य की अछि?
क. समाजकेँ अपन उपेक्षा, पाखंड, हिंसा आ विकास-अभाव पहिचानब।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. समाजकेँ अपन उपेक्षा, पाखंड, हिंसा आ विकास-अभाव पहिचानब।
व्याख्या: रचना आ निबंध दूनू जागरणक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 5792. आगू पढ़बाक दृष्टिसँ एहि बैचक निष्कर्ष की राखल जा सकैत अछि?
क. सदेह १ सामाजिक यथार्थ, मिथिला-अस्मिता आ आत्मसुधारक बहुस्तरीय मंच बनैत अछि।
ख. स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
ग. ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
घ. ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।
उत्तर: क. सदेह १ सामाजिक यथार्थ, मिथिला-अस्मिता आ आत्मसुधारक बहुस्तरीय मंच बनैत अछि।
व्याख्या: एहि २० खण्डमे कथा, कविता, निबंध आ आलोचना सभ समाजक अलग-अलग घाव खोलैत अछि।

खण्ड ५८५ : विदेह-सदेह १ — “मिथिला मंथन”: पूनम-प्रवीण प्रसंगक tail

प्रश्न 5793. “मिथिला मंथन” मे पूनम-प्रवीण प्रसंगक मूल सवाल की अछि?
क. प्रतिभाशाली लड़कीक शिक्षा सामाजिक-ढाँचा आ सुविधा-अभाव सँ रुकि जाइत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रतिभाशाली लड़कीक शिक्षा सामाजिक-ढाँचा आ सुविधा-अभाव सँ रुकि जाइत अछि।
व्याख्या: लेखक पूनमक उदाहरणसँ देखबैत छथि जे प्रतिभा रहितहुँ लड़कीकेँ अवसर नहि भेटल।

प्रश्न 5794. प्रवीणक विदेश-यात्रा आ पूनमक रुकल शिक्षा बीच लेखक कोन विरोधाभास रखैत छथि?
क. लड़का आगे बढ़ि विदेश पहुँचि गेल, लड़की घरेलू सीमा मे रोकाइ गेल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. लड़का आगे बढ़ि विदेश पहुँचि गेल, लड़की घरेलू सीमा मे रोकाइ गेल।
व्याख्या: प्रवीण एल एंड टी प्रोजेक्टपर शिकागो गेल, जखनकि पूनम आगू पढ़ि नहि सकली।

प्रश्न 5795. पूनमक शिक्षा रुकबाक एक प्रमुख सामाजिक दबाव कोन बताओल गेल अछि?
क. अधिक पढ़ल लड़कीक विवाह कठिन होएबाक डर।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. अधिक पढ़ल लड़कीक विवाह कठिन होएबाक डर।
व्याख्या: पूनमक घरमे पढ़ाईक विषय पर घअँघाउज होइत छल, विवाह आ दहेजक चिंता जुड़ल छल।

प्रश्न 5796. लेखक पूनमक प्रसंगमे दहेजसँ अतिरिक्त कोन प्रश्न उठबैत छथि?
क. घर लग नीक कॉलेजक अभाव सेहो लड़कीक शिक्षा रोकैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. घर लग नीक कॉलेजक अभाव सेहो लड़कीक शिक्षा रोकैत अछि।
व्याख्या: लेखक पूछैत छथि जे दहेज नहि रहितो की पूनमकेँ निकटमे नीक कॉलेज भेटित।

प्रश्न 5797. कर्नाटक/केरलक तुलना पूनम प्रसंगमे किएक आयल अछि?
क. ई देखेबाक लेल जे अनुकूल शिक्षा-संरचना रहलासँ पूनम सेहो इंजीनियर बनि सकैत छलीह।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ई देखेबाक लेल जे अनुकूल शिक्षा-संरचना रहलासँ पूनम सेहो इंजीनियर बनि सकैत छलीह।
व्याख्या: लेखक स्थान-विशेषक सुविधा-अंतरकेँ अवसर-अंतरक कारण मानैत छथि।

प्रश्न 5798. पूनमक प्रतिभा बादमे कोन घरेलू क्रियामे खपि गेल बताओल गेल?
क. सिलाई-कढ़ाई आ स्वेटरक नब डिजाइन सीखबामे।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सिलाई-कढ़ाई आ स्वेटरक नब डिजाइन सीखबामे।
व्याख्या: लेखक प्रतिभाक घरेलू खपतकेँ सामाजिक अन्यायक चिन्ह रूपमे देखबैत छथि।

प्रश्न 5799. हाईस्कूलक दूरी पर लेखकक आपत्ति की अछि?
क. पाँच किलोमीटर दूर पढ़ए जाएब लड़की लेल व्यवहारिक बाधा बनैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. पाँच किलोमीटर दूर पढ़ए जाएब लड़की लेल व्यवहारिक बाधा बनैत अछि।
व्याख्या: ई बात शिक्षा-सुलभताक प्रश्न बनि उठैत अछि।

प्रश्न 5800. लड़की सबकेँ साइकिल देबाक योजना पर लेखकक मूल शंका की अछि?
क. साइकिलसँ केवल हाईस्कूल-स्तरक समस्या हल होइत अछि, उच्च शिक्षा नहि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. साइकिलसँ केवल हाईस्कूल-स्तरक समस्या हल होइत अछि, उच्च शिक्षा नहि।
व्याख्या: लेखक पूछैत छथि जे केवल हाईस्कूल धरिक पढ़ाई पर्याप्त अछि की।

प्रश्न 5801. बिहारमे महिला विश्वविद्यालय आ तकनीकी विश्वविद्यालयक अभावक उल्लेख कोन अर्थमे अछि?
क. संस्थागत पिछड़ापनक उदाहरण रूपमे।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. संस्थागत पिछड़ापनक उदाहरण रूपमे।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे राज्यक उच्च/तकनीकी शिक्षा-ढाँचा कमजोर अछि।

प्रश्न 5802. “पूनम इंजीनियरिंग कॉलेजमे जेती?” — ई प्रश्न कोन चिंता प्रकट करैत अछि?
क. आगामी समयमे सेहो बेटीक उच्च तकनीकी शिक्षा अनिश्चित रहबाक चिंता।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. आगामी समयमे सेहो बेटीक उच्च तकनीकी शिक्षा अनिश्चित रहबाक चिंता।
व्याख्या: लेखक भविष्यक अवसर-वंचनाक संभावना पर प्रश्न उठबैत छथि।

खण्ड ५८६ : विदेह-सदेह १ — श्यामल सुमन “प्यास”

प्रश्न 5803. श्यामल सुमनक गीत “प्यास”क आरम्भिक भाव की अछि?
क. पेट भरबाक लेल गाम छोड़लाक पीड़ा।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. पेट भरबाक लेल गाम छोड़लाक पीड़ा।
व्याख्या: गीतक ध्रुव-पंक्ति गाम छोड़बाक मजबूरी आ भूखक निरंतरता पर टिकैत अछि।

प्रश्न 5804. “नौकरी की भेटल, अपनापन छूटल” पंक्ति कोन अनुभवकेँ व्यक्त करैत अछि?
क. रोजगार भेटितहुँ सामाजिक आत्मीयता खोएबाक अनुभव।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. रोजगार भेटितहुँ सामाजिक आत्मीयता खोएबाक अनुभव।
व्याख्या: गीतमे नौकरी प्रवासक समाधान नहि, बल्कि अपनापन-संकट बनि प्रकट होइत अछि।

प्रश्न 5805. पावनि-त्योहारक प्रसंग गीतमे कोन द्वंद्व उत्पन्न करैत अछि?
क. गाम जाएबाक इच्छा आ घर/परिवारक व्यवहारिक रोक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. गाम जाएबाक इच्छा आ घर/परिवारक व्यवहारिक रोक।
व्याख्या: गीतक पात्र पावनि पर गाम जाए चाहैत अछि मुदा परिस्थिति फटकार आ ठेलमठेल रेलक रूपमे अबैत अछि।

प्रश्न 5806. गीतमे “घर लागय अछि जेल” कथनक भावार्थ की अछि?
क. परदेसक घर सुरक्षा नहि, बंदिश आ अलगावक ठाम बनि गेल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. परदेसक घर सुरक्षा नहि, बंदिश आ अलगावक ठाम बनि गेल अछि।
व्याख्या: गीतक वक्ता घरमे रहितहुँ कैद-जकाँ अनुभव करैत अछि।

प्रश्न 5807. “नवका रस्ता निकालत” मे कोन भाव अछि?
क. विपरीत परिस्थिति बीच रास्ता खोजबाक जिद्द।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. विपरीत परिस्थिति बीच रास्ता खोजबाक जिद्द।
व्याख्या: गीत पूर्ण निराशा पर नहि रुकैत, बल्कि संघर्षक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 5808. श्यामल सुमनक परिचयमे कोन क्षेत्रीय-सामाजिक विस्तार देखाइत अछि?
क. नोकरी, लेखन, गीत-गजल, रेडियो/टीवी आ मंच-संचालनक संयोजन।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. नोकरी, लेखन, गीत-गजल, रेडियो/टीवी आ मंच-संचालनक संयोजन।
व्याख्या: संपादकीय परिचय लेखकक साहित्यिक आ लोक-माध्यम गतिविधि दुनूकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5809. “प्यास”मे प्रवासी मनक मूल अभाव कोन अछि?
क. रोजगारक बीचोबीच अपन गाम, नेह आ अस्मिताक कमी।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. रोजगारक बीचोबीच अपन गाम, नेह आ अस्मिताक कमी।
व्याख्या: गीतमे पेट भरबाक लेल गाम छोड़लाक बादो भूख/प्यास रहि जाइत अछि।

प्रश्न 5810. गीतक शैली कोन कारण सँ स्मरणीय बनैत अछि?
क. ध्रुव-पंक्ति आ छोटे-छोटे प्रवासी प्रसंगक दोहराव।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ध्रुव-पंक्ति आ छोटे-छोटे प्रवासी प्रसंगक दोहराव।
व्याख्या: एके पंक्ति लौटि-लौटि गीतक दुखकेँ सघन बनबैत अछि।

प्रश्न 5811. “दोस्त यार कतऽ गेल” प्रसंग की देखबैत अछि?
क. प्रवासमे पुरान सामाजिक गोत्र टूटि जाइत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रवासमे पुरान सामाजिक गोत्र टूटि जाइत अछि।
व्याख्या: गीतक वक्ता नव लोक बीच पुरान संबंधक अभाव अनुभव करैत अछि।

प्रश्न 5812. “प्यास”क सामाजिक पाठ की अछि?
क. आर्थिक प्रवास केवल आयक प्रश्न नहि, भावनात्मक विस्थापनक प्रश्न सेहो अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. आर्थिक प्रवास केवल आयक प्रश्न नहि, भावनात्मक विस्थापनक प्रश्न सेहो अछि।
व्याख्या: गीत श्रम-प्रवासक भीतरक मनोवैज्ञानिक रिक्तता देखबैत अछि।

खण्ड ५८७ : विदेह-सदेह १ — श्याम सुन्दर शशि “मरदे कि बरदे”: दोहा-प्रवास

प्रश्न 5813. “मरदे कि बरदे”क कथास्थल कोन प्रवासी स्थानसँ जुड़ल अछि?
क. कतारक दोहा आ नेपाली दूतावासक परिवेश।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. कतारक दोहा आ नेपाली दूतावासक परिवेश।
व्याख्या: कथा दोहाक गरमी, दूतावास आ प्रवासी जीवनक दृश्य सँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 5814. लक्ष्मण दूतावास किएक जाइत अछि?
क. अपन प्रेमिका रेशमासँ भेटबाक लेल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. अपन प्रेमिका रेशमासँ भेटबाक लेल।
व्याख्या: रेशमा एक सप्ताहसँ दूतावासमे शरणागत छलीह, तेँ लक्ष्मण ओतए पहुँचैत अछि।

प्रश्न 5815. दोहाक ताप आ मरुभूमि-वर्णन कथामे कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. प्रवासी श्रमिकक कठोर जीवनक बाह्य वातावरण रचैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रवासी श्रमिकक कठोर जीवनक बाह्य वातावरण रचैत अछि।
व्याख्या: गरमी, अलकरा, रौद आ मरुभूमि कथा-विश्वकेँ कठोर बनबैत अछि।

प्रश्न 5816. लक्ष्मण अपनाकेँ “बरद जेकाँ” किएक कहैत अछि?
क. ओ मरुभूमिमे श्रम करैत रहल अपन जीवनकेँ बोझा ढोइत बैलसँ तुलना करैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ मरुभूमिमे श्रम करैत रहल अपन जीवनकेँ बोझा ढोइत बैलसँ तुलना करैत अछि।
व्याख्या: प्रेमिका समक्ष ओ श्रम-पीड़ा आ असहायता एक वाक्यमे कहैत अछि।

प्रश्न 5817. रेशमाक दूतावासमे उपस्थिति कोन संकटक संकेत करैत अछि?
क. प्रवासी स्त्रीक असुरक्षा आ आश्रय-खोज।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रवासी स्त्रीक असुरक्षा आ आश्रय-खोज।
व्याख्या: रेशमा दूतावासमे शरणागत अछि, जे निजी संबंधक पार सामाजिक संकट खोलैत अछि।

प्रश्न 5818. दूतावासक नेबोक गाछक ओटमे रेशमाक दृश्य कोन भाव बनबैत अछि?
क. दूर-प्रवासमे पुनर्भेटक संवेदनशील क्षण।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दूर-प्रवासमे पुनर्भेटक संवेदनशील क्षण।
व्याख्या: नायक-नायिका बीच गाछ साक्षी बनैत अछि आ आँसू सँ संवाद होइत अछि।

प्रश्न 5819. कथा मे “नौ महिनाक हिसाब-किताब” कोन अर्थ देत अछि?
क. लंबा बिछोह आ अनकहल संबंध-संकट।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. लंबा बिछोह आ अनकहल संबंध-संकट।
व्याख्या: लक्ष्मण आ रेशमा आँखि आ छोट संवादसँ लंबा अंतरालक भार व्यक्त करैत छथि।

प्रश्न 5820. दोहाक “चकमक” आ “मरुभूमि” बीच विरोधाभास की अछि?
क. शहरक चमक प्रवासी श्रमिकक अंधकारमय श्रम-संसार ढाँपि दैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. शहरक चमक प्रवासी श्रमिकक अंधकारमय श्रम-संसार ढाँपि दैत अछि।
व्याख्या: दोहाक रोशनी देखाइत अछि, मुदा श्रमिकक वास्तविक ठाम दूर मरुभूमि अछि।

प्रश्न 5821. कथाक शीर्षक “मरदे कि बरदे” कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. पुरुषत्व, श्रम-दासता आ प्रवासी अस्मिताक प्रश्न।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. पुरुषत्व, श्रम-दासता आ प्रवासी अस्मिताक प्रश्न।
व्याख्या: लक्ष्मण अपनाकेँ बैल-जकाँ कहि मनुष्य आ श्रम-पशु बीचक रेखा पर प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 5822. प्रेम प्रसंग एहि कथामे मात्र निजी किएक नहि रहैत?
क. ओ प्रवास, श्रम, दूतावास, असुरक्षा आ परिवारक प्रश्नसँ जुड़ि जाइत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ प्रवास, श्रम, दूतावास, असुरक्षा आ परिवारक प्रश्नसँ जुड़ि जाइत अछि।
व्याख्या: लक्ष्मण-रेशमा संबंध व्यापक प्रवासी पीड़ा खोलबाक माध्यम बनैत अछि।

खण्ड ५८८ : विदेह-सदेह १ — महेन्द्र कापर: कतारक मैथिल भेड़ा-चरवाह

प्रश्न 5823. महेन्द्र कापर कोन जिलाक कोन गामसँ संबंधित बताओल गेल छथि?
क. नेपालक सिरहा जिलाक कमलाकात भेड़िया गामसँ।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. नेपालक सिरहा जिलाक कमलाकात भेड़िया गामसँ।
व्याख्या: लेखक ओकर मूल-स्थान स्पष्ट करैत छथि।

प्रश्न 5824. महेन्द्र कतारमे की काज करैत अछि?
क. भेड़ा-बकरी चरबैत आ गोहियाक देखभाल करैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. भेड़ा-बकरी चरबैत आ गोहियाक देखभाल करैत अछि।
व्याख्या: ओ मरुभूमिमे भेड़ा-बकरीक संग दिन बितबैत अछि।

प्रश्न 5825. महेन्द्र कतार आबि की अपेक्षा रखने छल?
क. बगैचाक काज आ कमाइ सँ घर बनएबाक आशा।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बगैचाक काज आ कमाइ सँ घर बनएबाक आशा।
व्याख्या: दलाल ओकरा बगैचाक काज कहलने रहैक, मुदा वास्तविकता भेड़ा-चरवाही भेल।

प्रश्न 5826. महेन्द्रक श्रम-प्रवासक मुख्य आर्थिक बाधा की अछि?
क. दलालक ७५ हजार रुपैयाक कर्ज।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दलालक ७५ हजार रुपैयाक कर्ज।
व्याख्या: एहि ऋणक कारण ओकर एक वर्षक श्रम सेहो स्वतंत्रता नहि देलक।

प्रश्न 5827. महेन्द्र अपन बेटा-बेटी लेल की चाहैत छल?
क. बोर्डिंग स्कूलमे पढ़एबाक सपना।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बोर्डिंग स्कूलमे पढ़एबाक सपना।
व्याख्या: प्रवासक लक्ष्य मात्र कमाइ नहि, नेनाक शिक्षा आ घर बनएब सेहो छल।

प्रश्न 5828. महेन्द्रक राति कोना बितैत अछि?
क. खुला आकाशक नीचाँ तरेगन गनैत।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. खुला आकाशक नीचाँ तरेगन गनैत।
व्याख्या: लेखक ओकर दैनिक जीवनक निःसंगता देखबैत छथि।

प्रश्न 5829. चान देखैत महेन्द्रक प्रश्न कोन भाव जगबैत अछि?
क. गामक माए-बाउ सेहो एही चान देखैत हेताह — ई स्मृति आ दूरीक पीड़ा।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. गामक माए-बाउ सेहो एही चान देखैत हेताह — ई स्मृति आ दूरीक पीड़ा।
व्याख्या: एके चान प्रवासी आ घरक संबंध जोड़ि दैत अछि।

प्रश्न 5830. खुबुज आ प्याउजक उल्लेख कोन सामाजिक अंतर खोलैत अछि?
क. मालिकक बिरयानी आ मजदूरक सस्ता भोजन बीचक अंतर।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मालिकक बिरयानी आ मजदूरक सस्ता भोजन बीचक अंतर।
व्याख्या: लेखक पोसल खस्सीक बिरयानी मालिक खाइत, चरवाहा खुबुज-प्याज खाइत — ई विषमता देखबैत छथि।

प्रश्न 5831. मरुभूमि-वर्णन महेन्द्रक जीवनमे कोन स्थिति बनबैत अछि?
क. एकाकी, कठोर आ सुविधा-विहीन श्रम-स्थितिक प्रतीक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. एकाकी, कठोर आ सुविधा-विहीन श्रम-स्थितिक प्रतीक।
व्याख्या: सड़क, पानी, स्वास्थ्य आ बिजलीसँ दूर श्रम-जीवन कथा मे उभरैत अछि।

प्रश्न 5832. महेन्द्रक कथा प्रवासी श्रमक कोन सत्य देखबैत अछि?
क. चमकैत विदेशक भीतर श्रमिकक ऋण, छल आ एकांत लुकायल रहैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. चमकैत विदेशक भीतर श्रमिकक ऋण, छल आ एकांत लुकायल रहैत अछि।
व्याख्या: दोहाक चमक ओ मरुभूमिक श्रम-संसारक बीच कथा तीखा विरोध रचैत अछि।

खण्ड ५८९ : विदेह-सदेह १ — “मरदे कि बरदे”: श्रम, छल आ भोजन-विरोध

प्रश्न 5833. मानव-तस्कर/दलालक भूमिका “मरदे कि बरदे”मे कोना देखाओल गेल अछि?
क. ओ मजदूरकेँ एक काज कहि दोसर कठोर काजमे धकेलि दैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ मजदूरकेँ एक काज कहि दोसर कठोर काजमे धकेलि दैत अछि।
व्याख्या: महेन्द्र बगैचाक काजक आशासँ गेल, मुदा भेड़ा-चरवाह बनि गेल।

प्रश्न 5834. “दोहा शहर दिल्ली दूर अछि” वाक्यक भाव की अछि?
क. शहरक चमक मजदूरक वास्तविक पहुँचसँ बाहर अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. शहरक चमक मजदूरक वास्तविक पहुँचसँ बाहर अछि।
व्याख्या: प्रवासी मजदूर दोहा देखैत अछि, मुदा ओकर जीवन मरुभूमि मे रहैत अछि।

प्रश्न 5835. महेन्द्रक “फ्रिज/एयर कंडीशन” कोन वस्तुकेँ कहल गेल?
क. कपड़ा लपेटल पानीक बोतल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. कपड़ा लपेटल पानीक बोतल।
व्याख्या: ई व्यंग्यात्मक विवरण सुविधा-अभावक तीखा बोध करबैत अछि।

प्रश्न 5836. महेन्द्रक अतिथि-सत्कार मे की देखा जाइत अछि?
क. अभावमे सेहो अपनपन आ पानी देबाक सहजता।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. अभावमे सेहो अपनपन आ पानी देबाक सहजता।
व्याख्या: ओ बातचीतमे प्यासो पुछबा भूलि गेल कहि बोतल आगाँ बढ़बैत अछि।

प्रश्न 5837. मजदूरक भोजन-वर्णनमे “नून, मिरचाई, तेल, प्याउज” कोन अर्थ धारण करैत अछि?
क. न्यूनतम जीवन-निर्वाह आ आर्थिक असमानता।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. न्यूनतम जीवन-निर्वाह आ आर्थिक असमानता।
व्याख्या: एहि भोजनक सामने मालिकक बिरयानीक दृश्य रखल गेल अछि।

प्रश्न 5838. मरुभूमिमे बबूर आ ऊँटक संग मजदूरक उल्लेख कोन भाव बनबैत अछि?
क. कठोर भूगोलकेँ जीवित रखनिहार जीव आ श्रमिकक साझी सहनशीलता।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. कठोर भूगोलकेँ जीवित रखनिहार जीव आ श्रमिकक साझी सहनशीलता।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे ई सभ मिलि ओ भूभागकेँ धरती बनबैत अछि।

प्रश्न 5839. महेन्द्रक श्रमक समयावधि कोना बढ़ि गेल?
क. एक वर्ष बादो कर्ज नहि चुकल, आओर दू वर्ष रहबाक बाध्यता बचल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. एक वर्ष बादो कर्ज नहि चुकल, आओर दू वर्ष रहबाक बाध्यता बचल।
व्याख्या: ऋण-चक्र प्रवासक अवधि लम्बा करैत अछि।

प्रश्न 5840. कथाकार महेन्द्रक आँखिक चमक किएक नोट करैत छथि?
क. अपन भाषा/अपन लोक भेटलासँ ओकर अकेलापन टूटैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. अपन भाषा/अपन लोक भेटलासँ ओकर अकेलापन टूटैत अछि।
व्याख्या: मजदूरक खुशी बाहरी आगंतुकमे अपनपन पाबि उभरैत अछि।

प्रश्न 5841. “भेड़ा बकरी संगे रहैत-रहैत ओहने भऽ गेल छी” कथन कोन पीड़ा जनबैत अछि?
क. मानवीय संवादक अभाव सँ आत्म-अवमूल्यनक अनुभव।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मानवीय संवादक अभाव सँ आत्म-अवमूल्यनक अनुभव।
व्याख्या: महेन्द्र अपन स्थितिक तुलना जानवर-संगतिसँ करैत अछि।

प्रश्न 5842. एहि प्रसंगक व्यापक आलोचना की अछि?
क. प्रवासी कमाइकेँ चमकदार सपना मानबाक भ्रम।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रवासी कमाइकेँ चमकदार सपना मानबाक भ्रम।
व्याख्या: कथा देखबैत अछि जे विदेश-प्रवास कतेक बेर कर्ज, छल आ श्रम-एकांतमे बदलि जाइत अछि।

खण्ड ५९० : विदेह-सदेह १ — श्रीधरम “फानी”: पंचैतीक आरम्भ

प्रश्न 5843. “फानी”क आरम्भमे पंच सभ कतए जुटैत छथि?
क. कारी मड़रक दुआर पर।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. कारी मड़रक दुआर पर।
व्याख्या: कथा पंचायतक दृश्य सँ खुलैत अछि, जतय चटाई बिछाओल गेल अछि।

प्रश्न 5844. पंचैती शुरू होएबाक लेल ककर प्रतीक्षा अछि?
क. रामअधीन नेताक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. रामअधीन नेताक।
व्याख्या: बिना रामअधीन नेताक पंचैती शुरू नहि भऽ सकैए — ई सत्ता-संकेत अछि।

प्रश्न 5845. रामअधीन नेता ककर प्रतिनिधि बनि उभरैत अछि?
क. दलित पार्टीक प्रखंड अध्यक्ष आ स्थानीय सत्ता-बिचौलिया।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दलित पार्टीक प्रखंड अध्यक्ष आ स्थानीय सत्ता-बिचौलिया।
व्याख्या: ओ अधिकारी, कागज-पत्तर आ पेंशनक प्रक्रिया पर प्रभाव रखैत अछि।

प्रश्न 5846. डोमन सभ जातिक पंच किएक बजाबए चाहैत रहय?
क. न्यायकेँ व्यापक बनएबाक इच्छा सँ।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. न्यायकेँ व्यापक बनएबाक इच्छा सँ।
व्याख्या: मुदा रामअधीन जातिनामा पंचैती जातिमे होएबाक बात कहि ओकरा रोकलक।

प्रश्न 5847. सोमन आ डोमनक झगड़ाक मूल संपत्ति की अछि?
क. सीलिंगमे भेटल दसकठबा खेत।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सीलिंगमे भेटल दसकठबा खेत।
व्याख्या: खेत पँचू सदाय केँ भेटल छल आ ओही पर विवाद अछि।

प्रश्न 5848. पँचू सदाय बेटा सभकेँ खेतक पर्ची दैत की चेतावनी देने रहै?
क. सरकारक देल जमीन जोगा कऽ राखब।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सरकारक देल जमीन जोगा कऽ राखब।
व्याख्या: ओ खेत बेचबाक/भरना देबाक विरुद्ध सतर्क करैत अछि।

प्रश्न 5849. रामअधीन नेताक खेतक संबंध एहि विवादसँ कोना जुड़ल अछि?
क. दसकठबा खेत ओकर खेतक आड़ि लग अछि आ ओकर नजर ओहि पर अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दसकठबा खेत ओकर खेतक आड़ि लग अछि आ ओकर नजर ओहि पर अछि।
व्याख्या: कथा सत्ता आ जमीन-लालसाक संबंध खोलैत अछि।

प्रश्न 5850. सोमन-डोमनक घरेलू विवादमे स्त्री-पात्र सभक भूमिका की अछि?
क. दियादिनी सभक झगड़ा जमीन-विवादकेँ हिंसक दिशा दैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दियादिनी सभक झगड़ा जमीन-विवादकेँ हिंसक दिशा दैत अछि।
व्याख्या: महरैलवाली आ रेवाड़ीवालीक झगड़ा पंचैतीक तात्कालिक कारण बनैत अछि।

प्रश्न 5851. कथा मे “जातिनामा पंचैती” कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. जाति-आधारित न्यायक सीमित आ सत्ता-नियंत्रित रूप।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. जाति-आधारित न्यायक सीमित आ सत्ता-नियंत्रित रूप।
व्याख्या: रामअधीन नेता बाहरी पंच हटाए अपने नियंत्रणक दायरा बनबैत अछि।

प्रश्न 5852. आरम्भिक दृश्यक सामाजिक तनाव की अछि?
क. परिवारक बँटवारा, जमीन, जातीय सत्ता आ स्थानीय राजनीति एक संग गुंथल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. परिवारक बँटवारा, जमीन, जातीय सत्ता आ स्थानीय राजनीति एक संग गुंथल अछि।
व्याख्या: कथा घरेलू झगड़ासँ बढ़ि सामुदायिक सत्ता-नाटक बनैत अछि।

खण्ड ५९१ : विदेह-सदेह १ — “फानी”: जमीन, दियादिनी-संघर्ष आ हिंसा

प्रश्न 5853. सोमन आ डोमनक पिता पँचू सदायक जमीन कोना भेटल छल?
क. सरकारक देल सीलिंग जमीन रूपमे।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सरकारक देल सीलिंग जमीन रूपमे।
व्याख्या: कथा स्पष्ट करैत अछि जे जमीन महंथसँ छीनि सरकारक मार्फत भेटल छल।

प्रश्न 5854. डोमन परदेशमे रहलाकाल खेतक फसलक बखरा कोना चलैत छल?
क. सोमन खेती करैत आ फसलक आधा डोमनक बहुकेँ देत।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सोमन खेती करैत आ फसलक आधा डोमनक बहुकेँ देत।
व्याख्या: एहि बँटवारा व्यवस्थामे धीरे-धीरे तनाव बढ़ैत गेल।

प्रश्न 5855. महरैलवाली कैँ फसल-बँटवारा किएक खटकैत छल?
क. ओ सोचैत छल जे मेहनत ओकर साँय करै, बखरा दोसर ले जाए।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ सोचैत छल जे मेहनत ओकर साँय करै, बखरा दोसर ले जाए।
व्याख्या: ई श्रम आ अधिकारक घरेलू विवाद बनि उठैत अछि।

प्रश्न 5856. रेवाड़ीवाली आ महरैलवालीक झगड़ा कोन मौके भड़कैत अछि?
क. गहूमक बँटवारा करबाक समय।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. गहूमक बँटवारा करबाक समय।
व्याख्या: सोमन नहाय गेल, आ रेवाड़ीवाली अपन हिस्सा उठबए लगलीह, ओतए विवाद भड़कैत अछि।

प्रश्न 5857. “रंडिया” शब्दक प्रयोगक बाद की होइत अछि?
क. महरैलवालीक आक्रोश तेज भऽ झोंटा-पकड़ाइ आरम्भ होइत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. महरैलवालीक आक्रोश तेज भऽ झोंटा-पकड़ाइ आरम्भ होइत अछि।
व्याख्या: अपमानजनक शब्द विवादकैँ शारीरिक लड़ाइमे बदलि दैत अछि।

प्रश्न 5858. गँगवा झगड़ामे की करैत अछि?
क. ओ रेवाड़ीवालीकैँ पेट ताक मारए लगैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ रेवाड़ीवालीकैँ पेट ताक मारए लगैत अछि।
व्याख्या: झगड़ामे माइ-पुत मिलि रेवाड़ीवाली पर भारी पड़ैत छथि।

प्रश्न 5859. रेवाड़ीवालीक नुकसान की बताओल गेल?
क. चार मासक गर्भ नोकसान भऽ गेल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. चार मासक गर्भ नोकसान भऽ गेल।
व्याख्या: कथा घरेलू हिंसाकैँ अत्यन्त गंभीर परिणाम धरि लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 5860. रेवाड़ीवाली थाना जाए चाहैत छलीह, मुदा ककरा द्वारा रोकल गेलीह?
क. रामअधीन नेताक द्वारा।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. रामअधीन नेताक द्वारा।
व्याख्या: नेता समाजमे पंचैतीक नाम पर कानूनी रास्ता रोकैत अछि।

प्रश्न 5861. सोमनक भय कोन अछि?
क. मर्डर केस बनि जेल आ जमानत-संकट होएबाक डर।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मर्डर केस बनि जेल आ जमानत-संकट होएबाक डर।
व्याख्या: रामअधीन नेता कानूनक भय देखाकऽ पंचायत पर नियंत्रण राखैत अछि।

प्रश्न 5862. “फानी” मे घरेलू स्त्री-विवाद सामाजिक न्यायक प्रश्न कोना बनैत अछि?
क. नुकसान स्त्रीक देहपर अछि, मुदा निर्णय पुरुष-सत्ता आ नेता करैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. नुकसान स्त्रीक देहपर अछि, मुदा निर्णय पुरुष-सत्ता आ नेता करैत अछि।
व्याख्या: कथा स्त्री-पीड़ाकेँ पंचायत-सत्ता द्वारा दबाओल रूपमे देखबैत अछि।

खण्ड ५९२ : विदेह-सदेह १ — “फानी”: रामअधीन नेताक जुर्माना-राज

प्रश्न 5863. रामअधीन नेता पंचैतीमे डोमन आ सोमन दुनूक लेल की निर्णय देत अछि?
क. दुनू केँ पाँच-पाँच हजार जुर्माना देबाक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दुनू केँ पाँच-पाँच हजार जुर्माना देबाक।
व्याख्या: नेताक निर्णय दोष-विचारसँ बेसी “जातिनाम खाता” लेल धन उगाही जकाँ देखाइत अछि।

प्रश्न 5864. जुर्माना कोन नामे जमा करबाक कहल जाइत अछि?
क. जातिनाम खाता।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. जातिनाम खाता।
व्याख्या: ई सामुदायिक धर्म/जाति नाम पर आर्थिक नियंत्रणक साधन बनैत अछि।

प्रश्न 5865. मोहन सदाय जुर्मानाक पैसासँ की बनेबाक तर्क देत अछि?
क. दीना-भदरीक गहबर।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दीना-भदरीक गहबर।
व्याख्या: सार्वजनिक कामक नाम पर जुर्मानाकेँ वैध बनाओल जाइत अछि।

प्रश्न 5866. मड़र कका दीना-भदरीक गहबर विषयमे भीतर-भीतर की देखैत छथि?
क. दस सालसँ गहबर बनबाक नाम सुनितहुँ ठोस परिणाम नहि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दस सालसँ गहबर बनबाक नाम सुनितहुँ ठोस परिणाम नहि।
व्याख्या: उन्हर मौन अनुभव पंचायती दावाक खोखलापन खोलैत अछि।

प्रश्न 5867. मोहन सदाय रामअधीनक प्रभावसँ कोन लाभ पाबैत अछि?
क. ठेकादारी आ कार्यालयी दबदबा।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ठेकादारी आ कार्यालयी दबदबा।
व्याख्या: ओ सीओ-बीडीओक कमरेमे मनमाना दस्तखत करएबैत अछि — ई सत्ता-संरचना देखबैत अछि।

प्रश्न 5868. रामअधीनक पी.ए. जकाँ ककर चित्रण भेल अछि?
क. मोहन सदायक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मोहन सदायक।
व्याख्या: मोहन हरदम रामअधीन संग रहैत आ निर्णयकेँ आगे बढ़बैत अछि।

प्रश्न 5869. “पंच सभ पमरियाक तेसर जकाँ” — एहि चित्रणक अर्थ की अछि?
क. पंचक स्वतंत्र निर्णय-क्षमता नहि, मात्र हाँ-मे-हाँ मिलब।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. पंचक स्वतंत्र निर्णय-क्षमता नहि, मात्र हाँ-मे-हाँ मिलब।
व्याख्या: कथा पंच सभक निष्क्रियता आ भयक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 5870. सोमनक आर्थिक असमर्थता पर मोहन कोन समाधान सुझबैत अछि?
क. दसकठबा खेत भरना राखबाक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दसकठबा खेत भरना राखबाक।
व्याख्या: जुर्माना देबाक नाम पर जमीन पर कब्जाक रास्ता बनेबाक षड्यंत्र अछि।

प्रश्न 5871. रामअधीनक वास्तविक लक्ष्य कोन बुझाइत अछि?
क. जमीन पर नियंत्रण।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. जमीन पर नियंत्रण।
व्याख्या: आरम्भसँ ओकर नजर ओहि खेत पर रहैत अछि, पंचैती ओकर अवसर बनैत अछि।

प्रश्न 5872. “फानी” मे जुर्माना-राज कोन सामाजिक तंत्रक आलोचना अछि?
क. स्थानीय नेता, जाति, धर्म-नाम आ गरीबक जमीन हड़पबाक गठजोड़।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. स्थानीय नेता, जाति, धर्म-नाम आ गरीबक जमीन हड़पबाक गठजोड़।
व्याख्या: कथा न्यायक मंचकेँ संसाधन-लूटक यंत्र बनि जाइत देखबैत अछि।

खण्ड ५९३ : विदेह-सदेह १ — “फानी”: भरना-षड्यंत्र आ महरैलवालीक प्रतिरोध

प्रश्न 5873. मोहन सदाय खेत भरना देबाक बात कोना शुरू करैत अछि?
क. जुर्माना भरबाक उपाय नहि अछि, तेँ सझिया खेत ताबत कोनो ले ले — एहन तर्कसँ।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. जुर्माना भरबाक उपाय नहि अछि, तेँ सझिया खेत ताबत कोनो ले ले — एहन तर्कसँ।
व्याख्या: धन-अभावकेँ जमीन-हड़पबाक माध्यम बनाओल जाइत अछि।

प्रश्न 5874. डाकमे जब क्यो आगे नहि अबैत, मोहन की संकेत करैत अछि?
क. नेताजी टोलक इज्जति बचए लेल खेत ले सकैत छथि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. नेताजी टोलक इज्जति बचए लेल खेत ले सकैत छथि।
व्याख्या: ई पूर्वनियोजित कब्जाक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 5875. महरैलवाली जमीन भरना देबाक विरोध किएक करैत अछि?
क. ओ बुझैत अछि जे गहबरक नामे गरीबक जमीन हड़पल जा रहल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ बुझैत अछि जे गहबरक नामे गरीबक जमीन हड़पल जा रहल अछि।
व्याख्या: ओ खुलि कहैत अछि जे मुँछवला सभ बेहरी दऽकऽ बनेता, हमरे जमीन किएक।

प्रश्न 5876. रेवाड़ीवाली महरैलवालीक विरोधकेँ कोना देखैत अछि?
क. ओकर मौन समर्थन करैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओकर मौन समर्थन करैत अछि।
व्याख्या: पहिने झगड़ा रहितहुँ जमीनक मुद्दापर दुनू स्त्रीक हित एक भऽ जाइत अछि।

प्रश्न 5877. रामअधीन नेता महरैलवाली पर कोना प्रतिक्रिया करैत अछि?
क. लैंगिक गारि आ धमकीसँ।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. लैंगिक गारि आ धमकीसँ।
व्याख्या: ओ स्त्री-प्रतिरोधकेँ अपमान आ हिंसक भाषा सँ दबाबए चाहैत अछि।

प्रश्न 5878. महरैलवालीक प्रत्युत्तरक सार की अछि?
क. मायक दूध पीने छी तँ मारि कऽ देख — निर्भीक प्रतिरोध।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मायक दूध पीने छी तँ मारि कऽ देख — निर्भीक प्रतिरोध।
व्याख्या: स्त्री-पात्र खुल्लमखुल्ला नेताक सत्ता केँ चुनौती दैत अछि।

प्रश्न 5879. “दीना-भदरी गरीबेक जमीन लेतै” कथनक निहितार्थ की अछि?
क. धर्म/देवता नामे गरीबक संसाधन छीनेबाक विडंबना।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. धर्म/देवता नामे गरीबक संसाधन छीनेबाक विडंबना।
व्याख्या: महरैलवाली देवताक नाम पर जमीन-लूटक विरोध करैत अछि।

प्रश्न 5880. पंचक चुप्पी पर महरैलवालीक आरोप की अछि?
क. न्याय बोलबाक जगह सभक मुँहमे जाबी लागल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. न्याय बोलबाक जगह सभक मुँहमे जाबी लागल अछि।
व्याख्या: ई पंचायतक नैतिक पतनक तीखा रूपक अछि।

प्रश्न 5881. महरैलवालीक हस्तक्षेप कथाक सत्ता-संतुलन पर की असर करैत अछि?
क. सोमनक पक्ष कमजोर होइत अछि, मुदा नेता-साजिश उजागर भऽ जाइत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सोमनक पक्ष कमजोर होइत अछि, मुदा नेता-साजिश उजागर भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: स्त्री-सत्य सत्ता-सुविधाक योजना बिगाड़ि दैत अछि।

प्रश्न 5882. “फानी” एहि बिंदुपर कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. गरीबक न्याय-व्यवस्था मे बोलबाक अधिकार आ जमीन-सुरक्षाक प्रश्न।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. गरीबक न्याय-व्यवस्था मे बोलबाक अधिकार आ जमीन-सुरक्षाक प्रश्न।
व्याख्या: कथा पंचायतक नाम पर चलैत दबाव, धन-उगाही आ जमीन-हड़पबाक कथा अछि।

खण्ड ५९४ : विदेह-सदेह १ — नचिकेता “नो एंट्री: मा प्रविश”: परिचय आ रंग-संरचना

प्रश्न 5883. “नो एंट्री: मा प्रविश” कोन विधाक रचना अछि?
क. चार-अंकीय मैथिली नाटक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. चार-अंकीय मैथिली नाटक।
व्याख्या: स्रोतमे एकरा “चाइ-अंकीय मैथिली नाटक” रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

प्रश्न 5884. नाटककार उदय नारायण सिंह “नचिकेता” संबंधी विशेष बात की बताओल गेल?
क. दीर्घ मौनक बाद हुनक टटका नाटक पाठकक सामने आयल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दीर्घ मौनक बाद हुनक टटका नाटक पाठकक सामने आयल।
व्याख्या: भूमिका मे कहल गेल जे २५ वर्षक मौनभंगक बाद ई नाटक प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 5885. नाटकक प्रथम दृश्यक मुख्य मंच-चिह्न की अछि?
क. बीचमे बड़का दरबज्जा आ अदृश्य मजबूत देवाल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बीचमे बड़का दरबज्जा आ अदृश्य मजबूत देवाल।
व्याख्या: मंच-संरचनामे दरबज्जा, देवाल आ अस्पष्ट प्रकाशक महत्व अछि।

प्रश्न 5886. प्रथम कत्तारमे कोन-कोन किसिमक पात्र देखाइत अछि?
क. चोर, उचक्का, भद्र व्यक्ति, प्रेमी-प्रेमिका, बीमा एजेंट, रद्दीवाला, भिखमंगनी आदि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. चोर, उचक्का, भद्र व्यक्ति, प्रेमी-प्रेमिका, बीमा एजेंट, रद्दीवाला, भिखमंगनी आदि।
व्याख्या: नाटक मृत पात्र सभकेँ दरबज्जा लग कतारमे ठाढ़ देखबैत अछि।

प्रश्न 5887. प्रेमी-प्रेमिका युगलक मृत्यु कोना संकेतित अछि?
क. विष-पान कऽ आत्महत्या।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. विष-पान कऽ आत्महत्या।
व्याख्या: दृश्य-विवरणमे ओ सभ विष-पान कऽ एतए आबि विमूढ़ भेल बताओल गेल।

प्रश्न 5888. बाजार सँ घुरैत प्रौढ़ व्यक्ति संबंधी संकेत की अछि?
क. ओ शायद पथ-दुर्घटनाक शिकार भेल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ शायद पथ-दुर्घटनाक शिकार भेल अछि।
व्याख्या: झोरा लऽ कऽ आबि गेल पात्रक मृत्यु दुर्घटना सँ जोड़ल बुझाइत अछि।

प्रश्न 5889. मृत सैनिक सभक व्यवहार कतारमे दोसर सँ कोना भिन्न अछि?
क. ओ सभ शांत, अविकृत आ हड़बड़ीहीन अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ सभ शांत, अविकृत आ हड़बड़ीहीन अछि।
व्याख्या: तीन-चार मृत सैनिक सबसँ पाछाँ ठाढ़ छथि मुदा बेचैनी नहि देखबैत छथि।

प्रश्न 5890. प्रथम दृश्यक प्रकाश-संयोजन कोन अस्पष्टता बनबैत अछि?
क. दिन-रातक भेद साफ नहि रहैत।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दिन-रातक भेद साफ नहि रहैत।
व्याख्या: मंच पर आलोक मद्धिम अछि आ समयक निश्चित संकेत नहि।

प्रश्न 5891. नाटकक दरबज्जा कोन प्रतीक रूपमे उभरैत अछि?
क. यमालय/परलोकक प्रवेश-द्वार, जतय मनुष्य अपन स्वभाव सहित पहुँचल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. यमालय/परलोकक प्रवेश-द्वार, जतय मनुष्य अपन स्वभाव सहित पहुँचल अछि।
व्याख्या: पात्र सभ मृत्यु पछातियो अपन सामाजिक वासनाक संग उपस्थित छथि।

प्रश्न 5892. “नो एंट्री” शीर्षकक प्रारंभिक व्यंग्य कोन अछि?
क. प्रवेश-द्वार लग पहुँचियो प्रवेश स्थगित आ अस्थिर अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रवेश-द्वार लग पहुँचियो प्रवेश स्थगित आ अस्थिर अछि।
व्याख्या: कतार, दरबज्जा आ बंद प्रवेश नाटकक केंद्रीय परिस्थिति बनबैत अछि।

खण्ड ५९५ : विदेह-सदेह १ — “नो एंट्री”: कतार, चोर-उचक्का आ बाजारी

प्रश्न 5893. दरबज्जा लग कतारमे धीरजक अभाव कोना देखाइत अछि?
क. किछु पात्र दोसरकेँ लाँघि आगाँ जाए चाहैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. किछु पात्र दोसरकेँ लाँघि आगाँ जाए चाहैत अछि।
व्याख्या: नाटक स्वर्ग/नरकक द्वारपर सेहो सामाजिक हड़बड़ी देखबैत अछि।

प्रश्न 5894. बाजारी प्रौढ़ चोर आ उचक्काकेँ की करैत अछि?
क. कॉलर पकड़ि पाछाँ चतुर्थ-पंचम स्थानपर घसीटि आनैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. कॉलर पकड़ि पाछाँ चतुर्थ-पंचम स्थानपर घसीटि आनैत अछि।
व्याख्या: ओ कतारक अनुशासन बचए चाहैत अछि।

प्रश्न 5895. उचक्का बाजारीकेँ डरएबाक लेल की देखबैत अछि?
क. रामपुरी चाकू।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. रामपुरी चाकू।
व्याख्या: चाकू निकालि ओ हिंसक धाक जमबैत अछि।

प्रश्न 5896. पॉकेटमार अपन पेशा कतेक संकेतसँ बतबैत अछि?
क. दूटा आँगुर कैंची जकाँ चला कऽ।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दूटा आँगुर कैंची जकाँ चला कऽ।
व्याख्या: ओ डरें नहि बाजि पबैत, हाथक इशारासँ पॉकेटमारी बतबैत अछि।

प्रश्न 5897. चोर अपन असफल चोरीक कथा कोना हास्य बनबैत अछि?
क. गिरहथ जागि गेल, बालक आ कुकुर सभ हल्ला मचा ओकरा पिटि एतए पठा देलक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. गिरहथ जागि गेल, बालक आ कुकुर सभ हल्ला मचा ओकरा पिटि एतए पठा देलक।
व्याख्या: कथा चोरक अकुशलता पर हँसी पैदा करैत अछि।

प्रश्न 5898. उचक्का आ चोर पॉकेटमारकेँ “अपने बिरादरीक” कोना मानैत अछि?
क. अपराध-व्यवसायक साझा पहचान सँ।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. अपराध-व्यवसायक साझा पहचान सँ।
व्याख्या: चोर, उचक्का, पॉकेटमार परलोकक कतारमे अपराधी बिरादरी बनबैत छथि।

प्रश्न 5899. बाजारीक भय की अछि?
क. यदि चोर-उचक्का स्वर्गमे जेताह तँ स्वर्गक स्वरूप बिगड़त।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. यदि चोर-उचक्का स्वर्गमे जेताह तँ स्वर्गक स्वरूप बिगड़त।
व्याख्या: ओ नैतिक अव्यवस्था पर चिंता जतबैत अछि।

प्रश्न 5900. पॉकेटमार स्वर्ग पर ककर बपौती नहि मानैत अछि?
क. ककरहु नहि; स्वर्ग सभक लेल होइत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ककरहु नहि; स्वर्ग सभक लेल होइत अछि।
व्याख्या: ई कथन अपराधी पात्रक व्यंग्यात्मक समानतावाद देखबैत अछि।

प्रश्न 5901. “चोर सिखाबय गुण केर महिमा” पंक्ति कोन स्थिति पर व्यंग्य अछि?
क. जखन अपराधी नैतिकता/गुणक भाषा बोलए लागैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. जखन अपराधी नैतिकता/गुणक भाषा बोलए लागैत अछि।
व्याख्या: नाटक उलट संसार रचैत अछि जतय चोर नीति-भाषण देत अछि।

प्रश्न 5902. एहि दृश्यक रंग-ऊर्जा कोन तत्वसँ बनैत अछि?
क. झगड़ा, चाकू, हँसी, गीत-जकाँ फकरा आ कतारक उलटफेर।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. झगड़ा, चाकू, हँसी, गीत-जकाँ फकरा आ कतारक उलटफेर।
व्याख्या: दृश्य सामाजिक व्यंग्यकेँ नाटकीय चेष्टा आ संवादसँ जीवंत बनबैत अछि।

खण्ड ५९६ : विदेह-सदेह १ — “नो एंट्री”: तस्कर-राज आ जेबक सफाई

प्रश्न 5903. पॉकेटमार चोर पर हँसैत अपनाकेँ कोना प्रस्तुत करैत अछि?
क. तस्कर-राज/हाथक सफाई वाला रूपमे।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. तस्कर-राज/हाथक सफाई वाला रूपमे।
व्याख्या: ओ चोरक असफलताक बरक्स अपन कौशलक प्रदर्शन करैत अछि।

प्रश्न 5904. पॉकेटमार स्टूल पर चढ़ि कोन घोषणा-जकाँ अभिनय करैत अछि?
क. बुद्धि-शंकर महाराज तस्कर सम्राट आबि रहल छथि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बुद्धि-शंकर महाराज तस्कर सम्राट आबि रहल छथि।
व्याख्या: ई आत्म-नाट्य हास्य-व्यंग्यक रूप अछि।

प्रश्न 5905. चोरक आँखिमे पानी किएक आबि जाइत अछि?
क. ओ अपन पिटाईक याद आ अपमान सँ दुखी होइत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ अपन पिटाईक याद आ अपमान सँ दुखी होइत अछि।
व्याख्या: हास्यक बीच अपमानित चोरक मानवीय क्षण देखाइत अछि।

प्रश्न 5906. पॉकेटमारक “हाथक सफाई”क प्रमाण की भेटैत अछि?
क. बाजारीक जेब टटोलिते पॉकेट फाटल/खाली बुझाइत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बाजारीक जेब टटोलिते पॉकेट फाटल/खाली बुझाइत अछि।
व्याख्या: ओ वार्तालापक बीचोबीच जेबक कारीगरी कयने अछि।

प्रश्न 5907. बाजारीक जेबक घटना केकर हँसीक कारण बनैत अछि?
क. बीमा बाबू आ आन पात्र सभक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बीमा बाबू आ आन पात्र सभक।
व्याख्या: बाजारी जे दूसराकेँ सँभालैत छल, स्वयं लुटाइ गेल।

प्रश्न 5908. सब गोटे जेब टेबैत की पबैत छथि?
क. पाइ अथवा बटुआ गायब।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. पाइ अथवा बटुआ गायब।
व्याख्या: पॉकेटमारक हाथक सफाई सामूहिक चोरीमे बदलि गेल अछि।

प्रश्न 5909. भिखमंगनी “नंगटाक कोन डर” कहि की व्यक्त करैत अछि?
क. जकर किछु नहि, ओकरा चोरी/उचक्कागिरीसँ डर किएक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. जकर किछु नहि, ओकरा चोरी/उचक्कागिरीसँ डर किएक।
व्याख्या: ई दारिद्र्य आ निर्भयताक व्यंग्यात्मक कथन अछि।

प्रश्न 5910. चोर-उचक्का-पॉकेटमारक समवेत गीत कोन माहौल बनबैत अछि?
क. हास्य, अव्यवस्था आ नैतिक उलटबाँसी।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. हास्य, अव्यवस्था आ नैतिक उलटबाँसी।
व्याख्या: गीत अपराधी पात्र सभकेँ सामूहिक रंगमंचीय ऊर्जा दैत अछि।

प्रश्न 5911. बीमा बाबूक “तमाशा बंद कर” चीत्कारक उत्तरमे पात्र सभ की शब्द-खेल करैत अछि?
क. तमाशा, हताशा, निराशा — एहन ध्वनि-खेल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. तमाशा, हताशा, निराशा — एहन ध्वनि-खेल।
व्याख्या: नाटक भाषा-क्रीड़ा सँ दृश्यक व्यंग्य तेज करैत अछि।

प्रश्न 5912. बटुआ लौटेबाक अभिनयमे पॉकेटमारक चाल की अछि?
क. बटुआ फेंकिते सभकेँ उलझा कऽ कतारक आगाँ पहुँचना।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बटुआ फेंकिते सभकेँ उलझा कऽ कतारक आगाँ पहुँचना।
व्याख्या: एहि अवसरक लाभ उठाकऽ अपराधी पात्र सभ सबसे आगाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

खण्ड ५९७ : विदेह-सदेह १ — “नो एंट्री”: धनक निरर्थकता आ यमालय-द्वार

प्रश्न 5913. रद्दीवाला बटुआ लौटि अयबाक खुशीक भ्रम किएक तोड़ैत अछि?
क. किएक तँ यमालयक द्वारपर पैसा-बटुआक उपयोग नहि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. किएक तँ यमालयक द्वारपर पैसा-बटुआक उपयोग नहि।
व्याख्या: ओ कहैत अछि जे भीतर गेलापर धन कोनो काज नहि करत।

प्रश्न 5914. रद्दीवाला पात्र सभकेँ कोन ठाम ठाढ़ बतबैत अछि?
क. यमालयक बंद दरबज्जाक सामने।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. यमालयक बंद दरबज्जाक सामने।
व्याख्या: एहि उद्घाटनसँ कतारक वास्तविकता स्पष्ट होइत अछि।

प्रश्न 5915. भद्र व्यक्ति पैसा-प्रसंग पर कोन तुलना करैत अछि?
क. दोसर देशमे अपन रुपैया नहि चलबाक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दोसर देशमे अपन रुपैया नहि चलबाक।
व्याख्या: मृत्यु-पारक ठाम सांसारिक मुद्रा अनुपयोगी अछि।

प्रश्न 5916. बाजारीक “सबटा फूसी?” प्रश्न पर रद्दीवाला कोन बात साफ करैत अछि?
क. बटुआ आ पाइसँ स्वामित्व बचल अछि, मुदा ओ काजक नहि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बटुआ आ पाइसँ स्वामित्व बचल अछि, मुदा ओ काजक नहि।
व्याख्या: ई सांसारिक स्वामित्वक अर्थहीनता देखबैत अछि।

प्रश्न 5917. एहि दृश्यमे कतारक झगड़ा कोन विडंबना बनैत अछि?
क. प्रवेश-पहलाक झगड़ा, जखन भीतर सांसारिक लाभ नहि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रवेश-पहलाक झगड़ा, जखन भीतर सांसारिक लाभ नहि।
व्याख्या: मनुष्य मृत्यु पछातियो स्थान, धन, क्रम पर लड़ैत अछि।

प्रश्न 5918. रमणी-मोहन धन-प्रसंगकेँ रूप/रूपा प्रसंगमे कोना मोड़ैत अछि?
क. रूपैया सँ रूपा/रमणीक ओर अर्थ-खेल करैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. रूपैया सँ रूपा/रमणीक ओर अर्थ-खेल करैत अछि।
व्याख्या: ओ हर प्रसंगकेँ स्त्री-लोलुप दृष्टिसँ मोड़ि दैत अछि।

प्रश्न 5919. बीमा बाबू रमणी-मोहनकेँ किएक डाँटैत अछि?
क. ओ धनक बातमे रूप/रमणीक बात जोड़ि दैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ धनक बातमे रूप/रमणीक बात जोड़ि दैत अछि।
व्याख्या: बीमा बाबूक व्यवहार व्यावसायिक, रमणी-मोहनक वासनात्मक अछि।

प्रश्न 5920. भिखमंगनी रमणी-मोहन लग किएक आकर्षित होइत अछि?
क. ओ ओकर स्त्री-विषयक भाषा आ शरीरगत दृष्टि पकड़ि लैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ ओकर स्त्री-विषयक भाषा आ शरीरगत दृष्टि पकड़ि लैत अछि।
व्याख्या: दृश्य भिखमंगनीकेँ निष्क्रिय नहि, सक्रिय संवादक पात्र बनबैत अछि।

प्रश्न 5921. दरबज्जा भीतरक कल्पना पात्र सभक वासनाकेँ कोना उजागर करैत अछि?
क. कोनो देवत्व नहि, अप्सरा, बीमा, धन, रूपक कल्पना उभरैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. कोनो देवत्व नहि, अप्सरा, बीमा, धन, रूपक कल्पना उभरैत अछि।
व्याख्या: स्वर्ग-कल्पना मनुष्यमे बचल लोभ-वासनाकेँ उघारैत अछि।

प्रश्न 5922. “नो एंट्री” एहि चरणमे कोन दार्शनिक प्रश्न उठबैत अछि?
क. मृत्यु पछातियो मनुष्य अपन लोभ, भय, वासना आ पेशागत स्वभाव छोड़ि पबैत अछि की नहि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मृत्यु पछातियो मनुष्य अपन लोभ, भय, वासना आ पेशागत स्वभाव छोड़ि पबैत अछि की नहि।
व्याख्या: नाटकक परलोक-द्वार समाजक मनोविज्ञानक परीक्षण-स्थल बनैत अछि।

खण्ड ५९८ : विदेह-सदेह १ — “नो एंट्री”: अप्सरा, बीमा आ नीलामी-व्यंग्य

प्रश्न 5923. रमणी-मोहन दरबज्जा भीतर कोन कल्पना करैत अछि?
क. उर्वशी, मेनका, रंभा सन सुर-नारी भेटबाक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. उर्वशी, मेनका, रंभा सन सुर-नारी भेटबाक।
व्याख्या: ओ परलोककेँ सेहो स्त्री-विलासक कल्पनासँ देखैत अछि।

प्रश्न 5924. भिखमंगनी अप्सरा-कल्पना पर कोना प्रतिक्रिया करैत अछि?
क. ईर्ष्या/क्रोधसँ “बज्जर खसौ” सन प्रतिक्रिया।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ईर्ष्या/क्रोधसँ “बज्जर खसौ” सन प्रतिक्रिया।
व्याख्या: ओ रंभा-मेनका नाम सुनि व्यंग्यपूर्ण प्रतिरोध करैत अछि।

प्रश्न 5925. बीमा बाबू स्वर्गमे कोन असंगत संभावना सोचैत अछि?
क. जीवन-बीमा चलाएबाक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. जीवन-बीमा चलाएबाक।
व्याख्या: स्वर्गमे जीवन-बीमा असंभव/हास्यास्पद विचार रूपमे प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 5926. देवराज इन्द्रक वज्रक बीमा कोन हास्य-संरचना बनबैत अछि?
क. दैवी वस्तु पर बाजारू बीमा-नीलामी।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दैवी वस्तु पर बाजारू बीमा-नीलामी।
व्याख्या: धार्मिक मिथक आ आधुनिक बीमा-बाजार एक-दूसर पर चढ़ि व्यंग्य रचैत अछि।

प्रश्न 5927. वज्रक बीमाक बोलीमे के-के सक्रिय होइत अछि?
क. उचक्का, चोर, पॉकेटमार, बीमा बाबू, रमणी-मोहन आ भिखमंगनी।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. उचक्का, चोर, पॉकेटमार, बीमा बाबू, रमणी-मोहन आ भिखमंगनी।
व्याख्या: विभिन्न पात्र अपनी-अपनी भाषा मे बोली लगबैत छथि।

प्रश्न 5928. बाजारी लोक नीलामी पर किएक हँसैत छथि?
क. चोर, भिखमंगनी आ पॉकेटमार स्वर्गीय वज्रक बीमा-मोल लगा रहल छथि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. चोर, भिखमंगनी आ पॉकेटमार स्वर्गीय वज्रक बीमा-मोल लगा रहल छथि।
व्याख्या: असंगत पात्र आ असंगत वस्तु — ई हास्यक मूल अछि।

प्रश्न 5929. “चोर सिखाबय बीमा-महिमा” पंक्ति कोन उलट स्थिति देखबैत अछि?
क. अपराधी पात्र आर्थिक-नैतिक उपदेशक जकाँ बोलैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. अपराधी पात्र आर्थिक-नैतिक उपदेशक जकाँ बोलैत अछि।
व्याख्या: गीत नाटकक व्यंग्यात्मक संसारकेँ दोहरबैत अछि।

प्रश्न 5930. “कौआ बजबै हंसक बाजा” कोन अर्थ देत अछि?
क. अनुपयुक्त पात्र उच्च भूमिका निभएबाक विडंबना।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. अनुपयुक्त पात्र उच्च भूमिका निभएबाक विडंबना।
व्याख्या: गीतक रूपक सामाजिक भूमिका-उलट के संकेत करैत अछि।

प्रश्न 5931. दृश्यक अंतमे “क्रमशः” कोन बात जनबैत अछि?
क. नाटकक अंश आगू जारी रहबाक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. नाटकक अंश आगू जारी रहबाक।
व्याख्या: एहि अंशमे प्रथम कल्लोलक क्रम अधूरा छोड़ल गेल अछि।

प्रश्न 5932. एहि नीलामी दृश्यक मुख्य सामाजिक व्यंग्य की अछि?
क. बाजारीकरण, लोभ आ धार्मिक-दैवी प्रतीकक व्यापारिकरण।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बाजारीकरण, लोभ आ धार्मिक-दैवी प्रतीकक व्यापारिकरण।
व्याख्या: वज्रक बीमा बोली आधुनिक लाभ-भाषा पर व्यंग्य अछि।

खण्ड ५९९ : विदेह-सदेह १ — बैकुंठ झा: “दुनियाँ तँ ई धोखा अछि”

प्रश्न 5933. बैकुंठ झाक गीत “दुनियाँ तँ ई धोखा अछि”क मूल स्वर की अछि?
क. समाजक भ्रष्टाचार, छल आ सर्वव्यापी बेईमानी पर व्यंग्य।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. समाजक भ्रष्टाचार, छल आ सर्वव्यापी बेईमानी पर व्यंग्य।
व्याख्या: गीत हर दिशा मे पनिसोखा उगबाक छवि सँ धोखाक संसार रचैत अछि।

प्रश्न 5934. गीतमे पेपर, रेडियो, टी.वी. पर कोन बातक शोर अछि?
क. सार्वजनिक जीवनमे अनाचार आ भ्रष्टाचारक शोर।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सार्वजनिक जीवनमे अनाचार आ भ्रष्टाचारक शोर।
व्याख्या: माध्यम सभ समाजक विकृति उजागर करैत अछि।

प्रश्न 5935. वृद्धा-पेंशन आ खरात प्रसंगमे गीत कोन आलोचना करैत अछि?
क. कमीशनखोरी आ गरीब-हितक योजनामे लूट।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. कमीशनखोरी आ गरीब-हितक योजनामे लूट।
व्याख्या: गीत कहैत अछि जे हर ठाम कमीशन खाओल जा रहल अछि।

प्रश्न 5936. “दुनियाँमे अछि सब चोर-चोर”क भावार्थ की अछि?
क. नैतिक पतनक व्यापकता।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. नैतिक पतनक व्यापकता।
व्याख्या: गीतमे चोरी केवल अन्हरियामे नहि, इजोरियामे सेहो होइत अछि।

प्रश्न 5937. “काटय केउ सेंध अन्हरियामे, लूटय तऽ केउ इजोरियामे” कोन विरोधाभास अछि?
क. गुप्त अपराध आ खुल्लमखुल्ला लूट दुनू चलैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. गुप्त अपराध आ खुल्लमखुल्ला लूट दुनू चलैत अछि।
व्याख्या: ई पंक्ति सामाजिक अपराधक दू रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 5938. “ईमान जतय घर टाटक अछि” से की बुझाइत अछि?
क. ईमानदारी दरिद्र/अस्थिर, पापक महल समृद्ध।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ईमानदारी दरिद्र/अस्थिर, पापक महल समृद्ध।
व्याख्या: गीतमे नैतिकता आ वैभवक उलट संबंध देखाओल गेल।

प्रश्न 5939. गीतमे गाय-महीश आ वृद्धा-पेंशनक संग भ्रष्टाचार जोड़ब कोन प्रभाव बनबैत अछि?
क. ग्रामीण-सार्वजनिक जीवनक सूक्ष्म स्तर धरि लूटक प्रसार।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ग्रामीण-सार्वजनिक जीवनक सूक्ष्म स्तर धरि लूटक प्रसार।
व्याख्या: गीत जनजीवनक साधारण प्रसंगसँ बड़ी सामाजिक बीमारी देखबैत अछि।

प्रश्न 5940. “मान बड़ाईक नोभा” कथन कोन मानसिकता पर चोट करैत अछि?
क. दिखावा, अभिमान आ खोखल सामाजिक प्रतिष्ठा।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दिखावा, अभिमान आ खोखल सामाजिक प्रतिष्ठा।
व्याख्या: गीत बाहरी शोभाक भीतरक धोखाकेँ खोलैत अछि।

प्रश्न 5941. बैकुंठ झाक परिचयमे कोन बहुभाषी-सर्जनात्मकता देखाइत अछि?
क. मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे गीत, नाटक, उपन्यास/कहानी लेखन।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे गीत, नाटक, उपन्यास/कहानी लेखन।
व्याख्या: संपादकीय परिचय हुनक विस्तृत लेखन-क्षेत्र बतबैत अछि।

प्रश्न 5942. “दुनियाँ तँ ई धोखा अछि”क सामाजिक निष्कर्ष की अछि?
क. लोकजीवनमे नैतिक मूल्य उलटि गेल अछि आ छल व्यवस्था बनि गेल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. लोकजीवनमे नैतिक मूल्य उलटि गेल अछि आ छल व्यवस्था बनि गेल अछि।
व्याख्या: गीत व्यंग्यात्मक दोहरावसँ सामाजिक पतनक चित्र खींचैत अछि।

खण्ड ६०० : विदेह-सदेह १ — बैकुंठ झा: विरह, पत्र आ परदेश-गीत

प्रश्न 5943. “लिखलौं कतेक पत्र” गीतक मूल भाव की अछि?
क. पत्र, नोर आ विरहक मिलल भाव।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. पत्र, नोर आ विरहक मिलल भाव।
व्याख्या: गीत लिखल पंक्ति आ नोरक खाली जगहक बिंब सँ विरह रचैत अछि।

प्रश्न 5944. “नोरक जगहकेँ छोड़ि-छोड़ि” कोन काव्य-बिंब अछि?
क. पत्रमे अनकहल पीड़ा आ आँसू लेल रिक्त स्थान।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. पत्रमे अनकहल पीड़ा आ आँसू लेल रिक्त स्थान।
व्याख्या: कवि लिखनाइकेँ रोदनक संग जोड़ैत छथि।

प्रश्न 5945. सावनक बूंद आ नोरक तुलना कोन भाव बढ़बैत अछि?
क. प्रकृति-वर्षा आ अंतर-विरहक संगति।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रकृति-वर्षा आ अंतर-विरहक संगति।
व्याख्या: सावन बाहर बरसैत अछि, नोर भीतरक पीड़ा बनि बहैत अछि।

प्रश्न 5946. “मुहब्बतमे तऽ तरपब भाग्यमे लिखला” गीतक मुख्य भाव की अछि?
क. प्रेममे विरह नियति-जकाँ स्वीकार कएल गेल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रेममे विरह नियति-जकाँ स्वीकार कएल गेल अछि।
व्याख्या: गीत यक्ष-विरह आ वनवासक उदाहरणसँ प्रेम-दुखकेँ व्यापक बनबैत अछि।

प्रश्न 5947. यक्षक विरहक उल्लेख प्रेम-विरहकेँ कोना ऊँचाई दैत अछि?
क. व्यक्तिगत पीड़ाकेँ साहित्यिक/पुराण-प्रसिद्ध विरहसँ जोड़ैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. व्यक्तिगत पीड़ाकेँ साहित्यिक/पुराण-प्रसिद्ध विरहसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: यक्ष-विरहक स्मृति प्रेम-दुखक काल-व्याप्ति देखबैत अछि।

प्रश्न 5948. “परदेश” गीतमे पायल, केश आ योगिन-वेश कोन प्रसंग बनबैत अछि?
क. प्रवासी पाहुनक बिछोहमे स्त्री-विरहक दृश्य।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रवासी पाहुनक बिछोहमे स्त्री-विरहक दृश्य।
व्याख्या: गीतमे नायिका परदेश गेल पाहुनकेँ संबोधित करैत अछि।

प्रश्न 5949. “बिजुलीसँ चमकै घर, मुदा अन्हरिया” पंक्ति कोन विरोधाभास रखैत अछि?
क. बाहरी रोशनी रहितो मन/घरक अंधकार।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बाहरी रोशनी रहितो मन/घरक अंधकार।
व्याख्या: प्रवासी अनुपस्थितिक कारण घरक उजास निष्प्रभ अछि।

प्रश्न 5950. “परदेश गेलहुँ” गीतमे पत्नीक मुख्य शिकायत की अछि?
क. स्वामी परदेश गेल, घर-परिवारक भार ओकरा पर छोड़ि देल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. स्वामी परदेश गेल, घर-परिवारक भार ओकरा पर छोड़ि देल।
व्याख्या: गीतमे बच्चा, बूढ़ि माए, बाजार, बाढ़ सभ जिम्मेदारी एकठाम अबैत अछि।

प्रश्न 5951. “साल-साल त बाढ़ि अबै छै” पंक्ति कोन ग्रामीण संकट जोड़ैत अछि?
क. प्रवासी अनुपस्थितिमे बाढ़ि आ घर-आँगनक संकट।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रवासी अनुपस्थितिमे बाढ़ि आ घर-आँगनक संकट।
व्याख्या: गीत निजी विरहकेँ मिथिलाक बाढ़ि-संकटसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 5952. बैकुंठ झाक एहि गीत-समूहक मुख्य सूत्र की अछि?
क. प्रेम, नोर, परदेश, घरेलू भार आ सामाजिक विडंबना।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रेम, नोर, परदेश, घरेलू भार आ सामाजिक विडंबना।
व्याख्या: गीत सभ निजी विरहक माध्यमे व्यापक ग्रामीण-प्रवासी जीवन देखबैत अछि।

खण्ड ६०१ : विदेह-सदेह १ — वासुदेव सुनानी “अनुमति”

प्रश्न 5953. “अनुमति” कविता कोन स्वरमे आरम्भ होइत अछि?
क. श्रमिक द्वारा मालिकसँ थोड़े विश्रामक अनुमति माँगब।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. श्रमिक द्वारा मालिकसँ थोड़े विश्रामक अनुमति माँगब।
व्याख्या: कविता “हमरा अनुमति अछि श्रीमान” शैलीमे विनम्र पर तीखा स्वर बनबैत अछि।

प्रश्न 5954. कविताक वक्ता कोन-कोन काज पूरा कएल बतबैत अछि?
क. छाह बाहर देनाइ, बत्तूकेँ खुआओनाइ, नाला साफ करनाइ।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. छाह बाहर देनाइ, बत्तूकेँ खुआओनाइ, नाला साफ करनाइ।
व्याख्या: ई श्रमक अदृश्य घरेलू/निम्न कामक सूची अछि।

प्रश्न 5955. “हमर आँगुर स्थिरताक राखए आश” कोन थकान व्यक्त करैत अछि?
क. लगातार श्रम सँ हाथ-देहक विश्राम चाह।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. लगातार श्रम सँ हाथ-देहक विश्राम चाह।
व्याख्या: कवि श्रमिकक देह-थकानकेँ सूक्ष्म रूपमे रखैत छथि।

प्रश्न 5956. पुरखाक स्वेद आ मृतात्माक अनुभवक उल्लेख कोन गहराई दैत अछि?
क. व्यक्तिगत श्रमकेँ पीढ़ीगत श्रम-दासता सँ जोड़ैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. व्यक्तिगत श्रमकेँ पीढ़ीगत श्रम-दासता सँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: कविता श्रमिकक शरीरमे पुरखाक पसीना अनुभव करबैत अछि।

प्रश्न 5957. कवितामे “श्रीमान” संबोधन कतेक अर्थ रखैत अछि?
क. बाहरी सम्मानक भीतर वर्गीय दूरी आ व्यंग्य।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बाहरी सम्मानक भीतर वर्गीय दूरी आ व्यंग्य।
व्याख्या: वक्ता विनम्र भाषा बरतैत अछि, मुदा कविता सत्ता-अंतर खोलैत अछि।

प्रश्न 5958. “घंटा भिरक विश्राम” कोन मांग बनैत अछि?
क. मानवीय अधिकारक न्यूनतम दावा।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मानवीय अधिकारक न्यूनतम दावा।
व्याख्या: आरामक छोट मांग श्रम-व्यवस्थाक कठोरता उजागर करैत अछि।

प्रश्न 5959. दुर्गंध, स्वेद आ कीट-संक्रमित जिनगीक उल्लेख कोन यथार्थ देखबैत अछि?
क. श्रमिक जीवनक अपमानित, अस्वस्थ आ अवमाननापूर्ण दशा।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. श्रमिक जीवनक अपमानित, अस्वस्थ आ अवमाननापूर्ण दशा।
व्याख्या: कविता सुगंधित भाषा नहि, श्रमक दूषित यथार्थ रखैत अछि।

प्रश्न 5960. “प्रतीक्षा थकान भरि दैत अछि” भाव की अछि?
क. उपकार/अनुमतिक इंतजार स्वयं श्रम-जकाँ थकबैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. उपकार/अनुमतिक इंतजार स्वयं श्रम-जकाँ थकबैत अछि।
व्याख्या: श्रमिकक थकान केवल कामसँ नहि, आश्रित प्रतीक्षासँ सेहो अछि।

प्रश्न 5961. अंतिम पंक्ति “छोट-मोट विद्रोहक कला” कोन मोड़ दैत अछि?
क. विनम्र याचना प्रतिरोधमे बदलि जाइत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. विनम्र याचना प्रतिरोधमे बदलि जाइत अछि।
व्याख्या: कविता अंतमे श्रमिकक आत्म-जागरण सूचित करैत अछि।

प्रश्न 5962. “अनुमति”क मुख्य सामाजिक कथ्य की अछि?
क. सेवा-काम करनिहार श्रमिकक मानवीय विश्राम आ प्रतिरोधक अधिकार।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सेवा-काम करनिहार श्रमिकक मानवीय विश्राम आ प्रतिरोधक अधिकार।
व्याख्या: कविता श्रम, थकान, अपमान आ छोटे विद्रोहकेँ एक सूत्रमे बाँधैत अछि।

खण्ड ६०२ : विदेह-सदेह १ — शिक्षा, प्रवास आ श्रम: संयुक्त पाठ

प्रश्न 5963. पूनम, प्रवीण आ महेन्द्र कापरक प्रसंग संयुक्त रूपेँ कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. अवसरक असमान वितरण।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. अवसरक असमान वितरण।
व्याख्या: एकठाम शिक्षा-अवसर रोकाइत अछि, दोसर ठाम श्रम-प्रवास छल-ऋणमे बदलैत अछि।

प्रश्न 5964. पूनमक रुकल शिक्षा आ महेन्द्रक प्रवासमे साझा पीड़ा की अछि?
क. घर-समाजक संरचना व्यक्ति-सपना सीमित करैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. घर-समाजक संरचना व्यक्ति-सपना सीमित करैत अछि।
व्याख्या: पूनम शिक्षा नहि पाबैत छथि, महेन्द्र परिवार लेल विदेश गेलो ऋणमे अटकल अछि।

प्रश्न 5965. “प्यास” आ “मरदे कि बरदे” दुनूमे प्रवास कोना देखाइत अछि?
क. रोजगारक मजबूरी, अपनापनक कमी आ मनुष्यता-कटाव रूपमे।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. रोजगारक मजबूरी, अपनापनक कमी आ मनुष्यता-कटाव रूपमे।
व्याख्या: दुनू पाठमे परदेश आर्थिक उपाय होइतहुँ भावनात्मक/मानवीय संकट बनैत अछि।

प्रश्न 5966. “अनुमति” आ महेन्द्रक कथा बीच कोन संबंध देखल जा सकैत अछि?
क. श्रमिकक थकान, निर्भरता आ न्यून अधिकार।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. श्रमिकक थकान, निर्भरता आ न्यून अधिकार।
व्याख्या: दुनू मे श्रम देह पर बसल अछि आ विश्राम/सम्मान दुर्लभ अछि।

प्रश्न 5967. मिथिला मंथनक विकास-विमर्श आ “प्यास”क गीतक संबंध की अछि?
क. सुविधा-अभाव गाम छोड़बाक मजबूरी बनैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सुविधा-अभाव गाम छोड़बाक मजबूरी बनैत अछि।
व्याख्या: विकास-विमर्श ढाँचा बतबैत अछि; गीत ओहि ढाँचाक मानवीय पीड़ा सुनबैत अछि।

प्रश्न 5968. पूनमक प्रश्न महिला शिक्षाक स्तरपर की मांग करैत अछि?
क. निकट उच्च शिक्षा, महिला विश्वविद्यालय, तकनीकी संस्थान।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. निकट उच्च शिक्षा, महिला विश्वविद्यालय, तकनीकी संस्थान।
व्याख्या: लेखक विद्यालयसँ आगू कॉलेज/विश्वविद्यालय संरचनाक जरूरत बतबैत छथि।

प्रश्न 5969. महेन्द्रक कथा श्रम-बाजारक कोन अनैतिक पक्ष देखबैत अछि?
क. दलालक झूठ, ऋण आ रोजगार-छल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दलालक झूठ, ऋण आ रोजगार-छल।
व्याख्या: कहा गेल बगैचाक काज, भेटल भेड़ा-चरवाही।

प्रश्न 5970. “दुनियाँ तँ ई धोखा अछि” एहि बैचक सामाजिक पाठसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. व्यवस्था, राजनीति, श्रम आ जीवनमे छलक व्यापक उपस्थिति।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. व्यवस्था, राजनीति, श्रम आ जीवनमे छलक व्यापक उपस्थिति।
व्याख्या: बैकुंठ झाक गीत सामाजिक धोखाकेँ व्यापक रूपमे नाम दैत अछि।

प्रश्न 5971. “फानी” आ “नो एंट्री” दुनूमे कोन समान सामाजिक व्यंग्य अछि?
क. न्याय/व्यवस्था/क्रमक मंच पर लोभ आ छलक प्रवेश।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. न्याय/व्यवस्था/क्रमक मंच पर लोभ आ छलक प्रवेश।
व्याख्या: एकमे पंचायत जमीन-लूटक यंत्र बनैत अछि, दोसरमे परलोक-द्वारपर जेबक सफाई।

प्रश्न 5972. एहि बैचक समग्र दृष्टि की अछि?
क. व्यक्ति-पीड़ा मार्फत समाजक संरचनात्मक अन्यायकेँ देखब।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. व्यक्ति-पीड़ा मार्फत समाजक संरचनात्मक अन्यायकेँ देखब।
व्याख्या: शिक्षा, श्रम, प्रवास, पंचायत, परलोक-व्यंग्य सभ एकहि सामाजिक आलोचनाक कड़ी बनैत अछि।

खण्ड ६०३ : विदेह-सदेह १ — व्यवस्था-व्यंग्य: पंचायतसँ यमालय धरि

प्रश्न 5973. “फानी”क पंचायत आ “नो एंट्री”क कतारमे साझा संरचना की अछि?
क. अनुशासनक नाम पर असल शक्ति-क्रीड़ा।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. अनुशासनक नाम पर असल शक्ति-क्रीड़ा।
व्याख्या: पंचायतमे नेता नियंत्रण करैत अछि, यमालय-कतारमे चोर-उचक्का क्रम बिगाड़ैत अछि।

प्रश्न 5974. रामअधीन नेता आ पॉकेटमारक चालमे साझा तत्त्व की अछि?
क. मौका पाबि संसाधन/स्थान हथियाएब।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मौका पाबि संसाधन/स्थान हथियाएब।
व्याख्या: नेता जमीनक ओर, पॉकेटमार कतारक आगाँ आ जेबक ओर देखैत अछि।

प्रश्न 5975. जातिनाम खाता आ स्वर्ग-द्वारक बटुआ प्रसंग कोन सवाल उठबैत अछि?
क. धनक सामाजिक उपयोग बनाम धनक निरर्थकता।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. धनक सामाजिक उपयोग बनाम धनक निरर्थकता।
व्याख्या: एक ठाम धनक नामे गरीबक जमीन फँसैत अछि, दोसर ठाम मृत्यु-पार धन व्यर्थ अछि।

प्रश्न 5976. महरैलवालीक प्रतिरोध आ भिखमंगनीक संवादक समानता की अछि?
क. हाशिये पर रहल स्त्री-पात्र अचानक सत्ता/वासना-भाषाकेँ चुनौती दैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. हाशिये पर रहल स्त्री-पात्र अचानक सत्ता/वासना-भाषाकेँ चुनौती दैत अछि।
व्याख्या: दुनू दृश्य स्त्रीकेँ बोलबाक सक्रिय शक्ति देत अछि।

प्रश्न 5977. “फानी”क गहबर-तर्क आ “नो एंट्री”क वज्र-बीमा बीच कोन व्यंग्य-सूत्र अछि?
क. धर्म/दैवी नामक आर्थिक उपयोग।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. धर्म/दैवी नामक आर्थिक उपयोग।
व्याख्या: गहबरक नामे जुर्माना-जमीन, वज्रक नामे बीमा-नीलामी — दुनू लोभ उघारैत अछि।

प्रश्न 5978. बैकुंठ झाक “सब चोर-चोर” पंक्ति “नो एंट्री”क चोर-पॉकेटमार दृश्यसँ कोना संवाद करैत अछि?
क. व्यक्तिगत चोरक मंच व्यापक सामाजिक चोरिएल संसारक रूपक बनैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. व्यक्तिगत चोरक मंच व्यापक सामाजिक चोरिएल संसारक रूपक बनैत अछि।
व्याख्या: गीत आ नाटक दुनू चोरीकेँ सामाजिक सामान्यता जकाँ देखबैत अछि।

प्रश्न 5979. रामअधीनक पंचायतक सबसे खतरनाक पक्ष की अछि?
क. कानूनक भय देखाकऽ गरीबकेँ सामुदायिक निर्णयमे कैद करब।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. कानूनक भय देखाकऽ गरीबकेँ सामुदायिक निर्णयमे कैद करब।
व्याख्या: थाना/मुकदमा रोकि पंचायतमे जमीनक बात बढ़ाओल जाइत अछि।

प्रश्न 5980. “नो एंट्री”मे मृत पात्र सभक जीवित आदत बाँचल रहबाक अर्थ की अछि?
क. मृत्यु नैतिक रूपांतरण आपसें नहि करैत।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मृत्यु नैतिक रूपांतरण आपसें नहि करैत।
व्याख्या: लोभ, वासना, पेशा, भय सब दरबज्जा लग सेहो विद्यमान अछि।

प्रश्न 5981. “दुनियाँ तँ ई धोखा अछि” एहि दू दृश्यक व्याख्या कोना करैत अछि?
क. धोखा केवल बाजारमे नहि, धर्म, न्याय, राजनीति आ परलोक कल्पना धरि पसरल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. धोखा केवल बाजारमे नहि, धर्म, न्याय, राजनीति आ परलोक कल्पना धरि पसरल अछि।
व्याख्या: गीतक व्यापक कथन कथा-नाटकक दृश्य सभमे मूर्त होइत अछि।

प्रश्न 5982. एहि खण्डक आलोचनात्मक निष्कर्ष की अछि?
क. व्यवस्था बदलल बिना न्यायक मंचो शोषणक मंच बनि सकैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. व्यवस्था बदलल बिना न्यायक मंचो शोषणक मंच बनि सकैत अछि।
व्याख्या: पंचायत, कतार, स्वर्ग-द्वार — सभ ठाम सत्ता-लोभ प्रवेश करैत अछि।

खण्ड ६०४ : विदेह-सदेह १ — बैच ५८५–६०३ पुनरावलोकन

प्रश्न 5983. एहि बैचमे “मिथिला मंथन”क पूनम प्रसंगक केंद्रीय शिक्षा की अछि?
क. लड़कीक प्रतिभा सुविधा-अभाव आ विवाह-दबावसँ नष्ट भऽ सकैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. लड़कीक प्रतिभा सुविधा-अभाव आ विवाह-दबावसँ नष्ट भऽ सकैत अछि।
व्याख्या: पूनमक जीवन कथा संरचनात्मक शिक्षा-अन्यायक उदाहरण अछि।

प्रश्न 5984. “प्यास” एहि बैचमे प्रवासक कोन भाव जोड़ैत अछि?
क. गाम छोड़लाक बादो भूख, नेहक कमी आ मनक प्यास।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. गाम छोड़लाक बादो भूख, नेहक कमी आ मनक प्यास।
व्याख्या: गीत आर्थिक प्रवासक भीतर भावनात्मक रिक्तता रखैत अछि।

प्रश्न 5985. “मरदे कि बरदे”क महेन्द्र कापर प्रसंगक सार की अछि?
क. विदेशी चमकक पाछाँ ऋणग्रस्त, अकेल श्रमिकक कठोर जीवन।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. विदेशी चमकक पाछाँ ऋणग्रस्त, अकेल श्रमिकक कठोर जीवन।
व्याख्या: महेन्द्रक भेड़ा-चरवाही, कर्ज आ खुबुज-प्याजक भोजन ई सार बनबैत अछि।

प्रश्न 5986. “फानी”क सबसे मजबूत सामाजिक आलोचना की अछि?
क. जाति-पंचायत आ स्थानीय नेता द्वारा न्यायक नाम पर गरीबक जमीन पर नजर।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. जाति-पंचायत आ स्थानीय नेता द्वारा न्यायक नाम पर गरीबक जमीन पर नजर।
व्याख्या: रामअधीन-मोहनक निर्णय-संरचना यही दिशा खोलैत अछि।

प्रश्न 5987. “नो एंट्री” परलोक-द्वारकेँ ककर मंच बनबैत अछि?
क. मानवीय लोभ, पेशागत चालाकी, वासना आ हास्य-व्यंग्यक।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मानवीय लोभ, पेशागत चालाकी, वासना आ हास्य-व्यंग्यक।
व्याख्या: मृत पात्रो अपन-अपन आदत छोड़ि नहि पबैत छथि।

प्रश्न 5988. बैकुंठ झाक गीत एहि बैचक सामाजिक स्वरकेँ कोन वाक्यमे समेटैत अछि?
क. दुनियाँ छल-धोखासँ भरल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. दुनियाँ छल-धोखासँ भरल अछि।
व्याख्या: गीत समाजक अनेक स्तरपर बेईमानीक भाषा बनैत अछि।

प्रश्न 5989. “अनुमति” कविता एहि बैचमे श्रम-विमर्शकेँ कोन दिशा दैत अछि?
क. थोड़ा विश्राम माँगैत श्रमिकक स्वर प्रतिरोधमे बदलैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. थोड़ा विश्राम माँगैत श्रमिकक स्वर प्रतिरोधमे बदलैत अछि।
व्याख्या: विनम्र “श्रीमान”क भीतर वर्गीय व्यंग्य आ विद्रोह दूनू अछि।

प्रश्न 5990. पूनम, महेन्द्र, श्रमिक-वक्ता आ रेवाड़ीवाली मे साझा तत्व की अछि?
क. हाशिये पर रहल लोकक पीड़ा आ सीमित विकल्प।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. हाशिये पर रहल लोकक पीड़ा आ सीमित विकल्प।
व्याख्या: स्त्री, प्रवासी, श्रमिक आ गरीब परिवार सभ व्यवस्था-संकट सँ घेरल छथि।

प्रश्न 5991. एहि बैचमे हास्यक प्रयोग कतेक प्रकारेँ भेल अछि?
क. व्यंग्यक माध्यमे गम्भीर सामाजिक सड़ाँध खोलबाक लेल।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. व्यंग्यक माध्यमे गम्भीर सामाजिक सड़ाँध खोलबाक लेल।
व्याख्या: नो एंट्री, दुनियाँ धोखा, फानी — सभमे हँसीक भीतर आलोचना अछि।

प्रश्न 5992. आगाँक पाठ लेल मुख्य सूत्र की बचैत अछि?
क. स्रोतक प्रत्येक रचना केँ सामाजिक-सांस्कृतिक गहराईसँ पढ़ब।
ख. ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
ग. ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. स्रोतक प्रत्येक रचना केँ सामाजिक-सांस्कृतिक गहराईसँ पढ़ब।
व्याख्या: एहि बैचमे विविध विधा एकहि कार्य करैत अछि — मिथिला/समाजक जटिल सच खोलब।

खण्ड ६०५ : विदेह-सदेह १ — विभा रानी: जीवन, लेखन आ रंग-साधना

प्रश्न 5993. विभा रानीक परिचयमे हुनका कोना देखाओल गेल अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. लेखिका, अनुवादक, रंगकर्मी, पत्रकार आ सामाजिक कार्यकर्ता रूपमे।
उत्तर: घ. लेखिका, अनुवादक, रंगकर्मी, पत्रकार आ सामाजिक कार्यकर्ता रूपमे।
व्याख्या: परिचय हुनका बहुआयामी सर्जक आ रंग-सामाजिक हस्तक्षेपकर्मी रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 5994. विभा रानीक अनुवादक भूमिका किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. मैथिलीक प्रमुख अकादमी-पुरस्कृत लेखकक कृति हुनका द्वारा हिन्दीमे पहुँचल।
उत्तर: घ. मैथिलीक प्रमुख अकादमी-पुरस्कृत लेखकक कृति हुनका द्वारा हिन्दीमे पहुँचल।
व्याख्या: अनुवाद हुनकर साहित्यिक पुलक कार्य अछि।

प्रश्न 5995. विभा रानीक लेखनमे कोन विषय-क्षेत्र प्रमुख रूपेँ देखाइत अछि?
क. समकालीन विषय, फिल्म, महिला, बाल-विषय आ लोक-संस्कृति।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. समकालीन विषय, फिल्म, महिला, बाल-विषय आ लोक-संस्कृति।
व्याख्या: परिचय हुनका सामाजिक आ सांस्कृतिक प्रश्नक लेखिका बतबैत अछि।

प्रश्न 5996. मिथिलाक लोक-संसार पर विभा रानीक काज कोन बातसँ स्पष्ट अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. लोककथा, रीति-रिवाज, लोकगीत आ खान-पानक संकलन-संवर्धनसँ।
उत्तर: घ. लोककथा, रीति-रिवाज, लोकगीत आ खान-पानक संकलन-संवर्धनसँ।
व्याख्या: ई काज मिथिलाक जीवित लोक-संस्कृति सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 5997. ‘भाग रौ’ विभा रानीक कृतित्वमे कोन स्थान रखैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. मैथिलीमे लिखल हुनकर नाटक सभमे एक प्रमुख नाटक।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. मैथिलीमे लिखल हुनकर नाटक सभमे एक प्रमुख नाटक।
व्याख्या: ई हुनकर मैथिली रंग-लेखनक उदाहरण अछि।

प्रश्न 5998. “थिएटर व आर्ट—सभी के लिए” दृष्टि की संकेत करैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. कला कैँ सामाजिक सहभागिता आ परिवर्तनक माध्यम मानल गेल अछि।
उत्तर: घ. कला कैँ सामाजिक सहभागिता आ परिवर्तनक माध्यम मानल गेल अछि।
व्याख्या: हुनकर रंग-दृष्टि समावेशी आ हस्तक्षेपकारी अछि।

प्रश्न 5999. “रंग जीवन” दृष्टिक तहत विभा रानी कोन समूह सभ संग काज करैत छथि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. जेल-बन्दी, वृद्धाश्रम, अनाथालय, विशेष बच्चा आ मुख्यधाराक लोक सभ संग।
उत्तर: घ. जेल-बन्दी, वृद्धाश्रम, अनाथालय, विशेष बच्चा आ मुख्यधाराक लोक सभ संग।
व्याख्या: कला-कर्म हाशियाक समूह धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 6000. रेडियो, फिल्म आ टीवी अनुभव हुनकर नाट्य-लेखनकेँ की देइत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. स्वर, दृश्य आ मंचीय संवेदनाक संयुक्त अनुभव।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. स्वर, दृश्य आ मंचीय संवेदनाक संयुक्त अनुभव।
व्याख्या: विविध माध्यम नाटकक श्रव्य-दृश्य ताकत बढ़बैत अछि।

प्रश्न 6001. “अवितोको” संस्था संग जुड़ावक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. कला-संस्कृतिक माध्यमे सामाजिक विकासक सक्रिय योजना।
उत्तर: घ. कला-संस्कृतिक माध्यमे सामाजिक विकासक सक्रिय योजना।
व्याख्या: संस्था हुनकर सामाजिक रंगकर्मक आधार देखाइत अछि।

प्रश्न 6002. विभा रानीक परिचय आ “भाग रौ” मे साझा सूत्र की अछि?
क. सामाजिक प्रश्नकेँ रंगमंचीय रूप देबाक प्रवृत्ति।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. सामाजिक प्रश्नकेँ रंगमंचीय रूप देबाक प्रवृत्ति।
व्याख्या: जीवनी आ नाटक दुनू समाजक कठिन दृश्य मंचपर आनैत अछि।

खण्ड ६०६ : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ”: पात्र-सूची आ मंच-परिसर

प्रश्न 6003. “भाग रौ”क पात्र-सूची नाटकक सामाजिक संसार कोना बनबैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. भिखारी बच्चा, पुलिस, यात्री, पत्रकार, गुंडा, हिजड़ा, परिवार आ दर्शक सभकेँ संग रखि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. भिखारी बच्चा, पुलिस, यात्री, पत्रकार, गुंडा, हिजड़ा, परिवार आ दर्शक सभकेँ संग रखि।
व्याख्या: पात्र-सूची सार्वजनिक जीवनक अनेक तह कैँ एक मंचपर आनैत अछि।

प्रश्न 6004. मंगतू पात्रक नाम कोन सामाजिक संकेत दैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. भीख, सड़क-जीवन आ वंचनाक संसार।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. भीख, सड़क-जीवन आ वंचनाक संसार।
व्याख्या: मंगतू असुरक्षित जीविकाक केंद्र बनैत अछि।

प्रश्न 6005. भीखारी बच्चा १, २, ३ सन नामकरणक प्रभाव की अछि?
क. ओ सभ व्यक्तिगत संगहि वर्ग-प्रतिनिधि बनि जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. ओ सभ व्यक्तिगत संगहि वर्ग-प्रतिनिधि बनि जाइत अछि।
व्याख्या: संख्या-बद्ध नाम बाल-वंचनाक सामूहिकता देखबैत अछि।

प्रश्न 6006. पुलिस पात्रक उपस्थिति कोन तनावक पूर्व-सूचना दैत अछि?
क. सड़कपर रहनिहार गरीब बच्चा आ राज्य-बल बीच टकराव।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सड़कपर रहनिहार गरीब बच्चा आ राज्य-बल बीच टकराव।
व्याख्या: पुलिस आगे हिंसक नियंत्रणक संकेत अछि।

प्रश्न 6007. पत्रकार युवक-युवती पात्र-सूचीमे रहबाक अर्थ की भऽ सकैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. सड़क-यथार्थकेँ देखब, लिखब वा रिपोर्ट करबाक संभावना।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. सड़क-यथार्थकेँ देखब, लिखब वा रिपोर्ट करबाक संभावना।
व्याख्या: पत्रकार पात्र दृश्य आ सार्वजनिक विमर्श बीच पुल बनैत अछि।

प्रश्न 6008. गुंडा पात्र सभ नाटकक वातावरणमे की जोड़ैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. असुरक्षा, दबंगई आ हिंसक सत्ता।
उत्तर: घ. असुरक्षा, दबंगई आ हिंसक सत्ता।
व्याख्या: सड़क-समाजमे गैर-कानूनी शक्ति सेहो मौजूद अछि।

प्रश्न 6009. हिजड़ा पात्र सभक उपस्थिति नाटकक सामाजिक दृष्टि कोना बढ़बैत अछि?
क. हाशियाक लैंगिक समुदायकेँ मंचीय समाजमे जगह दैत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. हाशियाक लैंगिक समुदायकेँ मंचीय समाजमे जगह दैत अछि।
व्याख्या: नाटक विविध पहचानकेँ मंचपर आनैत अछि।

प्रश्न 6010. “आदमी”, “स्त्री”, “पुरुष” सन सामान्य नाम कोन प्रयोग करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. विशेष व्यक्ति सँ आगू बढ़ि सामाजिक प्रकार बनबैत अछि।
उत्तर: घ. विशेष व्यक्ति सँ आगू बढ़ि सामाजिक प्रकार बनबैत अछि।
व्याख्या: सामान्य नाम प्रतिनिधि पात्र बनबैत अछि।

प्रश्न 6011. ट्रेन नहिं तऽ हाट-बाजार/मेला-ठेला सेहो भऽ सकैत अछि — एकर अर्थ की?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. दृश्य कोनो एक स्थान नहि, व्यापक सार्वजनिक स्थल-यथार्थ अछि।
उत्तर: घ. दृश्य कोनो एक स्थान नहि, व्यापक सार्वजनिक स्थल-यथार्थ अछि।
व्याख्या: मंच-निर्देश दृश्यकेँ चलायमान समाजक रूप दैत अछि।

प्रश्न 6012. “भाग रौ” शीर्षक आ पात्र-सूची मिलि कोन भाव बनबैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. सड़कक भय, भगदड़, जीविका आ बचबाक संघर्ष।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. सड़कक भय, भगदड़, जीविका आ बचबाक संघर्ष।
व्याख्या: शीर्षक पात्र-संसारक अस्थिरता संग जुड़ैत अछि।

खण्ड ६०७ : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ” दृश्य १: बाल-भिखारी आ भूख

प्रश्न 6013. दृश्य १ मे तीनू बच्चा भीख माँगबाक लेल कोन साधन लैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. हारमोनियम, पत्थरक खपटा आ खँजड़ी।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. हारमोनियम, पत्थरक खपटा आ खँजड़ी।
व्याख्या: भीख संगीत-प्रदर्शन आ देहगत श्रमक मिश्रण बनैत अछि।

प्रश्न 6014. तीनू बच्चाक फाटल-चीकट कपड़ा कोन दृश्य-चिह्न अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. बाल-दरिद्रताक तीख संकेत।
उत्तर: घ. बाल-दरिद्रताक तीख संकेत।
व्याख्या: कपड़ा मंचपर वंचना देखेबाक पहिल भाषा अछि।

प्रश्न 6015. बच्चा ३क भूमिका एहि दृश्य मे की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. छोट, भूखसँ पीड़ित आ भोला प्रश्न करैत बाल-स्वर।
उत्तर: घ. छोट, भूखसँ पीड़ित आ भोला प्रश्न करैत बाल-स्वर।
व्याख्या: ओ बाल-दुखकेँ निर्मम रूपमे सामने आनैत अछि।

प्रश्न 6016. दिन भरक कमाई “साढ़े एगारह” सुनि की स्पष्ट होइत अछि?
क. मेहनत बहुत, कमाई अपर्याप्त।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. मेहनत बहुत, कमाई अपर्याप्त।
व्याख्या: भीखो श्रम अछि, मुदा पेट भरबाक सामर्थ्य नहि दैत।

प्रश्न 6017. “गरीबसँ बेसी गरीब बनल रह” कथन कोन सच खोलैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. दया पाबय लेल गरीबीक अभिनय सेहो करय पड़ैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. दया पाबय लेल गरीबीक अभिनय सेहो करय पड़ैत अछि।
व्याख्या: सड़कक अर्थव्यवस्था दया कैं दृश्य-निर्माण बनबैत अछि।

प्रश्न 6018. पटना-दानापुर-साहेब संवाद कोन व्यंग्य करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. नाम बदललासँ गरीबक भूख नहि बदलैत।
उत्तर: घ. नाम बदललासँ गरीबक भूख नहि बदलैत।
व्याख्या: भूख प्रतीकात्मक नाम-राजनीति पर तंज करैत अछि।

प्रश्न 6019. बच्चा ३ प्रधानमंत्री कैं खायबला चीज बुझैत अछि — अर्थ की?
क. राजनीतिक शब्द भूखल बच्चा लेल भोजनक प्रश्नमे बदलि जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. राजनीतिक शब्द भूखल बच्चा लेल भोजनक प्रश्नमे बदलि जाइत अछि।
व्याख्या: भूख सत्ता-शब्द सभकैं अपने ढंगसँ पढ़ैत अछि।

प्रश्न 6020. बच्चा ३क “भूख” पुकार दृश्यक लयमे की करैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. हास्य/संवादक बीच असली पीड़ा निरंतर जीवित राखैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. हास्य/संवादक बीच असली पीड़ा निरंतर जीवित राखैत अछि।
व्याख्या: भूख एहि दृश्यक नैतिक केंद्र अछि।

प्रश्न 6021. टी.वी. आ समाचारक उल्लेख बच्चा सभक संसारमे की देखबैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. मीडिया-सूचना अबैत अछि, मुदा पेट नहि भरैत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. मीडिया-सूचना अबैत अछि, मुदा पेट नहि भरैत।
व्याख्या: सूचना आ भोजनक दूरी नाटकक व्यंग्य बनैत अछि।

प्रश्न 6022. दृश्य १क बाल-भिखारी प्रसंगक मूल संवेदना की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. बचपनक स्थान पर जीविका, भूख आ अपमान आ गेल अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. बचपनक स्थान पर जीविका, भूख आ अपमान आ गेल अछि।
व्याख्या: नाटक बाल-जीवनकैं सड़कक संघर्षमे बदलल देखबैत अछि।

खण्ड ६०८ : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ”: मंगतू, पढ़ाई आ अखबार

प्रश्न 6023. मंगतू पात्र बच्चा सभ लेल किएक जिज्ञासा जगबैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ओ पढ़ल-लिखल भिखारी जकाँ देखाइत अछि।
उत्तर: घ. ओ पढ़ल-लिखल भिखारी जकाँ देखाइत अछि।
व्याख्या: बच्चा सभक दृष्टिमे पढ़ल भिखारी असामान्य घटना अछि।

प्रश्न 6024. मंगतू अखबार कोना पबैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. प्रेसक बाहर बैसि चौकीदारसँ पुरान अखबार पबैत अछि।
उत्तर: घ. प्रेसक बाहर बैसि चौकीदारसँ पुरान अखबार पबैत अछि।
व्याख्या: अखबार पढ़ब हुनकर ज्ञानक आधार अछि।

प्रश्न 6025. बच्चा ३ “पढ़ल” कैँ स्टेशन जकाँ बुझैत अछि — अर्थ की?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. अमूर्त शिक्षा ओकर अनुभव-संसारसँ बाहर अछि।
उत्तर: घ. अमूर्त शिक्षा ओकर अनुभव-संसारसँ बाहर अछि।
व्याख्या: बाल-दृष्टि शिक्षा कैँ परिचित भौतिक स्थानसँ जोड़ि बुझैत अछि।

प्रश्न 6026. बच्चा १ पढ़ाईक बारेमे की स्वीकार करैत अछि?
क. पढ़ल-पढ़ि लोक पैघ बनैत अछि, मुदा अपन भाग्य मे नहि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. पढ़ल-पढ़ि लोक पैघ बनैत अछि, मुदा अपन भाग्य मे नहि।
व्याख्या: नाटक शिक्षा-मूल्य मानैत अछि, मुदा अवसर-वंचना देखबैत अछि।

प्रश्न 6027. बच्चा ३क “हमहू पढ़ब” कथनक महत्त्व की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. भूखक बीचो शिक्षा-कामना जीवित अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. भूखक बीचो शिक्षा-कामना जीवित अछि।
व्याख्या: ई वाक्य आशा आ विडम्बना दुनू अछि।

प्रश्न 6028. “पढ़ि लेलासँ बेसी भीख भेटत” धारणा कोन कटु व्यंग्य अछि?
क. शिक्षा सेहो पेटक रणनीति बनि बुझाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. शिक्षा सेहो पेटक रणनीति बनि बुझाइत अछि।
व्याख्या: भूखल बच्चा शिक्षा कैँ तुरन्त जीविका-बढ़ोत्तरी रूपमे देखैत अछि।

प्रश्न 6029. मंगतू “धंधा-पानी” कहि भीख कैँ कोना नाम दैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. सड़कक रोजी-रोटी-व्यवस्था रूपमे।
उत्तर: घ. सड़कक रोजी-रोटी-व्यवस्था रूपमे।
व्याख्या: भिक्षा पेशा-जकाँ कठोर यथार्थ बनैत अछि।

प्रश्न 6030. मंगतू बरसात नीक कहैत अछि आ बच्चा सभ नाराज — कारण की?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. एकर लेल हरियाली, ओहिर लेल भीख बन्द करनिहार विपत्ति।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. एकर लेल हरियाली, ओहिर लेल भीख बन्द करनिहार विपत्ति।
व्याख्या: प्रकृति पर दृष्टि पेटक स्थितिसँ बदलैत अछि।

प्रश्न 6031. मंगतू आ बच्चा सभक “घर” संवाद की खोलैत अछि?
क. भिखारी बच्चा सभक असल घर-सुरक्षा टूटल अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. भिखारी बच्चा सभक असल घर-सुरक्षा टूटल अछि।
व्याख्या: घरक अभाव सड़क-जीवनक मूल असुरक्षा अछि।

प्रश्न 6032. मंगतू प्रसंग शिक्षा-विमर्शकैँ कोना जोड़ैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. अखबार, पढ़ाई आ भूखक संबंध सड़कक स्तरपर खुलैत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. अखबार, पढ़ाई आ भूखक संबंध सड़कक स्तरपर खुलैत अछि।
व्याख्या: ज्ञान आ भिक्षा असहज संगम बनैत अछि।

खण्ड ६०९ : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ”: पुलिस, बरखा आ सार्वजनिक हिंसा

प्रश्न 6033. बरखा पड़ला पर बच्चा सभक भीख पर कोन असर पड़ैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. लोक घर/दुकान/कार्यालयमे बन्द होइत अछि, तेँ भीख घटैत अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. लोक घर/दुकान/कार्यालयमे बन्द होइत अछि, तेँ भीख घटैत अछि।
व्याख्या: बरखा गरीब जीविका लेल संकट बनैत अछि।

प्रश्न 6034. भीजल माय-बच्चाक उदाहरणसँ नाटक की कहैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. भवनक नीचे सेहो गरीबकैँ आसरा नहि भेटैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ख. भवनक नीचे सेहो गरीबकैँ आसरा नहि भेटैत अछि।
व्याख्या: दृश्य शहरक दयाहीनता पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 6035. पुलिसक प्रवेश भाव-गति कोना बदलैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. संवादसँ हिंसा आ भगदड़ दिस।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. संवादसँ हिंसा आ भगदड़ दिस।
व्याख्या: डंडा घुमबैत पुलिस राज्य-बलक डर लऽ अबैत अछि।

प्रश्न 6036. पुलिस बच्चा सभपर पॉकिटमारीक आरोप लगबैत अछि — अर्थ की?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. गरीबीकेँ अपराध मानबाक प्रवृत्ति।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. गरीबीकेँ अपराध मानबाक प्रवृत्ति।
व्याख्या: सड़कक बाल-जीवन कानूनक नजरमे संदिग्ध बनि जाइत अछि।

प्रश्न 6037. मंगतू पुलिसक मारसँ किएक बचि नहि पबैत?
क. बच्चा सभक रक्षा-प्रयासमे स्वयं सेहो चोट खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बच्चा सभक रक्षा-प्रयासमे स्वयं सेहो चोट खाइत अछि।
व्याख्या: मंगतू हाशियाक भीतर नैतिक सहायक अछि।

प्रश्न 6038. पुलिसक मंगतू पर “मौज” कहब कोन व्यंग्य अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. पीड़ाकेँ मौज कहि उपहास करब।
उत्तर: घ. पीड़ाकेँ मौज कहि उपहास करब।
व्याख्या: हिंसक सत्ता पीड़ाकेँ अमानवीय बनबैत अछि।

प्रश्न 6039. “भाग रौ” शीर्षक पुलिस-दृश्य मे कोना मूर्त होइत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. बच्चा सभ डंडासँ बचबाक लेल गली दिस भागैत अछि।
उत्तर: घ. बच्चा सभ डंडासँ बचबाक लेल गली दिस भागैत अछि।
व्याख्या: शीर्षक सार्वजनिक हिंसाक तात्कालिक ध्वनि बनैत अछि।

प्रश्न 6040. पुलिस-दृश्य बाल-अधिकारक कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. भूखल आ बेघर बच्चा अपराधी नहि, संरक्षणक अधिकारी छथि।
उत्तर: घ. भूखल आ बेघर बच्चा अपराधी नहि, संरक्षणक अधिकारी छथि।
व्याख्या: दृश्य अधिकार-वंचना उघारैत अछि।

प्रश्न 6041. बरखा, भूख आ पुलिसक संगम की बनबैत अछि?
क. प्रकृति, पेट आ सत्ता—तीनू दबावक त्रिकोण।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. प्रकृति, पेट आ सत्ता—तीनू दबावक त्रिकोण।
व्याख्या: गरीब बच्चा पर संकट अनेक दिशासँ अबैत अछि।

प्रश्न 6042. एहि दृश्यक असहज प्रश्न की अछि?
क. सार्वजनिक स्थलमे कोन लोक सुरक्षित, कोन लोक लगातार हाँकल जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. सार्वजनिक स्थलमे कोन लोक सुरक्षित, कोन लोक लगातार हाँकल जाइत अछि।
व्याख्या: भागबाक मजबूरी असमान नागरिकता पर प्रश्न करैत अछि।

खण्ड ६१० : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ”: रंग-शिल्प आ सामाजिक व्यंग्य

प्रश्न 6043. ट्रेन/हाट/मेला विकल्प नाटकमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. कथा कैं व्यापक सार्वजनिक स्थलपर लागू करैत अछि।
उत्तर: घ. कथा कैं व्यापक सार्वजनिक स्थलपर लागू करैत अछि।
व्याख्या: दृश्य स्थान-विशेषसँ आगू समाजक रूप बनैत अछि।

प्रश्न 6044. भिखारी बच्चा सभक संगीत नाटकमे की करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. मनोरंजनक भेषमे दैन्य आ भूख देखबैत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ख. मनोरंजनक भेषमे दैन्य आ भूख देखबैत अछि।
व्याख्या: गीत-वादन पेटक खातिर प्रदर्शनकारी श्रम बनि जाइत अछि।

प्रश्न 6045. बच्चा ३क भोले प्रश्नक नाट्य-प्रयोग की अछि?
क. वयस्क समाजक शब्द आ व्यवस्था पर बाल-भूखक आईना।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. वयस्क समाजक शब्द आ व्यवस्था पर बाल-भूखक आईना।
व्याख्या: ओ प्रश्न करैत समाजक असंगति उघारि दैत अछि।

प्रश्न 6046. मंगतू पढ़ैत अछि मुदा भिखारी अछि — अर्थ की?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ज्ञान मात्रसँ संरचनात्मक गरीबी नहि टूटैत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. ज्ञान मात्रसँ संरचनात्मक गरीबी नहि टूटैत।
व्याख्या: ई शिक्षा आ वंचनाक सह-अस्तित्व देखबैत अछि।

प्रश्न 6047. नाम-परिवर्तन पर बाल-टिप्पणी की खोलैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. प्रतीकात्मक राजनीति बनाम पेटक यथार्थक टकराव।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. प्रतीकात्मक राजनीति बनाम पेटक यथार्थक टकराव।
व्याख्या: नामकरणक खोखलापन पर व्यंग्य अछि।

प्रश्न 6048. बरखा पर विपरीत प्रतिक्रिया कोन अर्थ दैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. एकहि प्रकृति अलग सामाजिक स्थिति मे अलग अनुभव बनैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ख. एकहि प्रकृति अलग सामाजिक स्थिति मे अलग अनुभव बनैत अछि।
व्याख्या: गरीबी प्रकृति-सुखकेँ जीविका-संकटमे बदलि सकैत अछि।

प्रश्न 6049. पुलिस-दृश्य नाटकक नैतिक केंद्र किएक अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. राज्य-बलक सामने बाल-गरीबीक असुरक्षा देखबैत।
उत्तर: घ. राज्य-बलक सामने बाल-गरीबीक असुरक्षा देखबैत।
व्याख्या: डंडा लगैत दृश्य सामाजिक क्रूरता स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 6050. “भाग रौ” मे भाषा कतेक स्तरपर चलैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. सड़क-बोलचाल, व्यंग्य, बाल-भोलापन आ सत्ता-भाषा।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. सड़क-बोलचाल, व्यंग्य, बाल-भोलापन आ सत्ता-भाषा।
व्याख्या: विविध भाषा-स्तर सामाजिक तनाव बनबैत अछि।

प्रश्न 6051. शीर्षक “भाग रौ” एक आदेश मात्र नहि, आर की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. हाशियाक जीवनक लगातार भगाड़ल जाएबाक अनुभव।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. हाशियाक जीवनक लगातार भगाड़ल जाएबाक अनुभव।
व्याख्या: शीर्षक असुरक्षित नागरिकताक ध्वनि अछि।

प्रश्न 6052. “भाग रौ”क केंद्रीय सामाजिक प्रश्न की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. भूखल बच्चा दया, ज्ञान, राज्य आ सार्वजनिक स्थानसँ कोना टकराइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. भूखल बच्चा दया, ज्ञान, राज्य आ सार्वजनिक स्थानसँ कोना टकराइत अछि।
व्याख्या: नाटक बाल-वंचनाक माध्यमे सामाजिक संरचना पर प्रश्न करैत अछि।

खण्ड ६११ : विदेह-सदेह १ — विद्यानन्द झा “मोहनजी” आ “सृष्टि चक्र”

प्रश्न 6053. विद्यानन्द झाक मुख्य पारंपरिक पहचान की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. पंजीकार मोहनजी रूपमे।
उत्तर: घ. पंजीकार मोहनजी रूपमे।
व्याख्या: परिचय हुनका पंजी-परंपरा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 6054. विद्यानन्द झाक पिताक परिचय कोन पृष्ठभूमि सूचित करैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. पंजीशास्त्रक विद्वत् पारिवारिक पृष्ठभूमि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. पंजीशास्त्रक विद्वत् पारिवारिक पृष्ठभूमि।
व्याख्या: पिताक पंजीशास्त्रीय उपाधि वंशागत विद्या-संसार देखबैत अछि।

प्रश्न 6055. “सृष्टि चक्र” कोन आरम्भ-बिम्बसँ चलैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. शून्यसँ सृष्टि आ शान्तिक आरम्भ।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. शून्यसँ सृष्टि आ शान्तिक आरम्भ।
व्याख्या: कविता शून्यकेँ आदिम अवस्था बनबैत अछि।

प्रश्न 6056. कविता मे “शून्य” केवल खालीपन नहि, आर की बनैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. सत्ता, शान्ति, आरम्भ आ विरामक आधार।
उत्तर: घ. सत्ता, शान्ति, आरम्भ आ विरामक आधार।
व्याख्या: शून्य कविताक दार्शनिक केंद्र अछि।

प्रश्न 6057. “सृष्टि चक्र”मे विधाता की रचैत छथि?
क. खेत, पथार, पोखरि, जीव-संचार आ संसार-विस्तार।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. खेत, पथार, पोखरि, जीव-संचार आ संसार-विस्तार।
व्याख्या: कविता भौतिक आ जैविक विस्तारक क्रम रखैत अछि।

प्रश्न 6058. दिति-अदिति उल्लेख कोन अर्थ खोलैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. पुराण-सांस्कृतिक आधारसँ सृष्टि-विस्तारक कल्पना।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. पुराण-सांस्कृतिक आधारसँ सृष्टि-विस्तारक कल्पना।
व्याख्या: मिथकीय संकेत बहुलता बनबैत अछि।

प्रश्न 6059. कर्म सभ धरतीपर आनल गेल — भाव की अछि?
क. जीवनक विविध कर्मफल-संरचना सृष्टिसँ जुड़ल अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. जीवनक विविध कर्मफल-संरचना सृष्टिसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: कविता सृष्टि आ नैतिकता कैं संग राखैत अछि।

प्रश्न 6060. वृत्त-विस्तारक बिम्बक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. शून्यक विखंडनसँ रूप, भूगोल आ जीवनक विस्तार।
उत्तर: घ. शून्यक विखंडनसँ रूप, भूगोल आ जीवनक विस्तार।
व्याख्या: शून्यसँ संसार बनबाक दृश्यात्मक क्रम अछि।

प्रश्न 6061. कविता संसारक विविधता केना देखबैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. जलचर, थलचर, नभचर, भेष-भाषा आ गोत्रक बहुलता।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. जलचर, थलचर, नभचर, भेष-भाषा आ गोत्रक बहुलता।
व्याख्या: सृष्टि बहुरूपी अछि।

प्रश्न 6062. पंजी-परिचय आ “सृष्टि चक्र” बीच सांकेतिक संबंध की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. वंश-विस्तार आ सृष्टि-विस्तार दुनू क्रम-स्मृति सँ जुड़ैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. वंश-विस्तार आ सृष्टि-विस्तार दुनू क्रम-स्मृति सँ जुड़ैत अछि।
व्याख्या: पंजी सामाजिक क्रम, कविता ब्रह्मांडीय क्रम राखैत अछि।

खण्ड ६१२ : विदेह-सदेह १ — “सृष्टि चक्र”: बहुलता, द्वन्द्व आ भूख

प्रश्न 6063. “विष ओ अमृत संग जनमि गेल”क अर्थ की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. सृष्टिमे शुभ-अशुभ, सुख-दुख संगहि जन्मैत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. सृष्टिमे शुभ-अशुभ, सुख-दुख संगहि जन्मैत अछि।
व्याख्या: कविता संसारक द्वन्द्वात्मक बनावट देखबैत अछि।

प्रश्न 6064. “स्नेह-प्रेम-आघात” एकसंग आबि की रचैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. संबंधक मिठास आ चोट दूनू।
उत्तर: घ. संबंधक मिठास आ चोट दूनू।
व्याख्या: जीवनक भाव-जगत प्रेम आ पीड़ा दुनू सँ बनैत अछि।

प्रश्न 6065. “चोर-उचक्का” आ “भलमानुष”क एकसंग जन्म कोन दृष्टि दैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. नैतिक विरोधी रूप एकहि सृष्टिक अंश अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ख. नैतिक विरोधी रूप एकहि सृष्टिक अंश अछि।
व्याख्या: कविता संसारक नैतिक मिश्रण स्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 6066. विविध भेष-भाषा आ गोत्रक बखानक अर्थ की?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. पहिचानक बहुलता सृष्टिक स्वाभाविक अंग अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ख. पहिचानक बहुलता सृष्टिक स्वाभाविक अंग अछि।
व्याख्या: कविता एकरूपता नहि, बहुरूपता देखबैत अछि।

प्रश्न 6067. “भूख रचल प्यास रचल” पंक्तिसँ दिशा कोना बदलैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ब्रह्मांडीय रचना सँ मानवीय देह-आवश्यकता दिस।
उत्तर: घ. ब्रह्मांडीय रचना सँ मानवीय देह-आवश्यकता दिस।
व्याख्या: कविता जीवनक देह-सत्य धरि उतरैत अछि।

प्रश्न 6068. “काम भूख दाम भूख” मे भूख कोना फैलैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. देह, धन, वासना, मान, दान सभमे।
उत्तर: घ. देह, धन, वासना, मान, दान सभमे।
व्याख्या: भूख जैविकसँ सामाजिक लोभ धरि विस्तार पबैत अछि।

प्रश्न 6069. “शाम-दाम-दंड-भेद” कोन क्षेत्र आनैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. शासन, नीति, नियंत्रण आ कुशासन।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. शासन, नीति, नियंत्रण आ कुशासन।
व्याख्या: सत्ता-तंत्र सृष्टि-चक्रक सामाजिक हिस्सा बनैत अछि।

प्रश्न 6070. “काम-क्रोध-लोभ-मोह” कोन भाषा खोलैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. मानवीय दोष आ अंतःसंघर्षक भाषा।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मानवीय दोष आ अंतःसंघर्षक भाषा।
व्याख्या: कविता नैतिक-दार्शनिक शब्दावली प्रयोग करैत अछि।

प्रश्न 6071. “नेता भगवान” आ “पंडा शैतान” बिम्बक अर्थ की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. सत्ता आ धर्मक विकृतिक आलोचना।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. सत्ता आ धर्मक विकृतिक आलोचना।
व्याख्या: कविता समकालीन सामाजिक आलोचना धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 6072. “सृष्टि चक्र”क समग्र यात्रा की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. शून्यसँ संसार, संसारसँ समाज, समाजसँ नैतिक विघटन धरि।
उत्तर: घ. शून्यसँ संसार, संसारसँ समाज, समाजसँ नैतिक विघटन धरि।
व्याख्या: कविता ब्रह्मांडीय आरम्भकेँ सामाजिक व्यंग्य धरि जोड़ैत अछि।

खण्ड ६१३ : विदेह-सदेह १ — विनीत उत्पल: पत्रकारिता, कविता आ “ककर गलती”

प्रश्न 6073. विनीत उत्पलक शिक्षा-यात्रा कोन प्रकृति देखबैत अछि?
क. गणित, जनसंचार, पत्रकारिता आ रचनात्मक लेखनक बहु-विषयक पृष्ठभूमि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. गणित, जनसंचार, पत्रकारिता आ रचनात्मक लेखनक बहु-विषयक पृष्ठभूमि।
व्याख्या: परिचय आधुनिक प्रशिक्षण-संसार बतबैत अछि।

प्रश्न 6074. विनीत उत्पलक प्रसारण अनुभव कोन माध्यमसँ जुड़ल अछि?
क. आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता-पाठ आ परिचर्चा।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता-पाठ आ परिचर्चा।
व्याख्या: रेडियो-प्रसारण हुनकर सार्वजनिक साहित्यिक उपस्थिति देखबैत अछि।

प्रश्न 6075. विनीत उत्पल कतेक पत्रकारिता-परिसरमे सक्रिय रहल छथि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. अनेक पत्र-पत्रिका आ समाचार-संस्थामे।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. अनेक पत्र-पत्रिका आ समाचार-संस्थामे।
व्याख्या: परिचय हुनकर मीडिया-संस्थागत अनुभव देखबैत अछि।

प्रश्न 6076. “ककर गलती”क वक्ता गाम जाइत की देखिकेँ स्तब्ध होइत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. गौरी दायक विधवा जीवन।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. गौरी दायक विधवा जीवन।
व्याख्या: गाम-प्रवेशक दृश्य सामाजिक दुखक स्मृति बनैत अछि।

प्रश्न 6077. गौरी दायक उजरा नुआ आ सेनूर-अभाव कोन अर्थ दैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. नवयुवती विधवाक सामाजिक चिह्न आ वंचना।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. नवयुवती विधवाक सामाजिक चिह्न आ वंचना।
व्याख्या: वस्त्र आ मांग विधवापनक सामाजिक अनुशासन देखबैत अछि।

प्रश्न 6078. “की यैह मिथिला थिक” प्रश्न कोन आलोचना करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. संस्कृतिक नाम पर स्त्री-जीवनक दमन।
उत्तर: घ. संस्कृतिक नाम पर स्त्री-जीवनक दमन।
व्याख्या: प्रश्न संस्कृति आ अन्याय बीच संबंध खोलैत अछि।

प्रश्न 6079. गौरी दायक पति मृत्युकेँ कविता कोना देखैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. बीमारीक कारण मृत्यु; स्त्रीक दोष नहि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. बीमारीक कारण मृत्यु; स्त्रीक दोष नहि।
व्याख्या: कविता विधवा पर दोषारोपण अन्याय बतबैत अछि।

प्रश्न 6080. विवाह-व्यवस्था पर कविता कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. घटक/द्वितीकारक सूचना आ वरक बीमारी लुकाएल होएबाक जिम्मेदारी।
उत्तर: घ. घटक/द्वितीकारक सूचना आ वरक बीमारी लुकाएल होएबाक जिम्मेदारी।
व्याख्या: कविता मध्यस्थ निर्णयक सजा स्त्री पर पड़ल देखबैत अछि।

प्रश्न 6081. गौरी दायक खुशीमे नोत नहि देल जाएब कोन व्यवहार देखबैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. विधवा कैँ अशुभ मानि सामाजिक अलगाव।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. विधवा कैँ अशुभ मानि सामाजिक अलगाव।
व्याख्या: कविता विधवाक बहिष्कारक पीड़ा उघारैत अछि।

प्रश्न 6082. “ककर गलती” शीर्षकक मूल संकेत की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. गलती स्त्रीक नहि, सामाजिक विवाह-संरचना आ रूढ़िक अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. गलती स्त्रीक नहि, सामाजिक विवाह-संरचना आ रूढ़िक अछि।
व्याख्या: शीर्षक दोष पीड़ितसँ हटाकऽ व्यवस्था पर राखैत अछि।

खण्ड ६१४ : विदेह-सदेह १ — विनीत उत्पल: “समर्पण” आ नृत्य-संवेदना

प्रश्न 6083. “समर्पण” कविता ककर लेल समर्पित अछि?
क. कथक नृत्यांगना पुनीता शर्मा लेल।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. कथक नृत्यांगना पुनीता शर्मा लेल।
व्याख्या: शीर्षकक बाद नृत्यांगना कैँ संबोधन अछि।

प्रश्न 6084. कविता जीवनक जीवंतता आ मनुष्यता कैँ ककर संग जोड़ैत अछि?
क. मन, भाव आ समर्पणक अवस्था संग।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मन, भाव आ समर्पणक अवस्था संग।
व्याख्या: नृत्य भीतरक भाव-समर्पणसँ बुझल गेल अछि।

प्रश्न 6085. राग मालकौसक उल्लेख कोन वातावरण बनबैत अछि?
क. शास्त्रीय संगीत, प्रकाश आ देह-अभिव्यक्तिक गहन मंच।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. शास्त्रीय संगीत, प्रकाश आ देह-अभिव्यक्तिक गहन मंच।
व्याख्या: राग-मंचन नर्तकीक संपूर्ण प्रतिभा देखेबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 6086. नर्तकीक देहमे देवता बैस गेल जकाँ लागबक अर्थ की?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. कला-क्षणमे कलाकार निजी देह पार कऽ ऊर्ध्व अनुभव दैत अछि।
उत्तर: घ. कला-क्षणमे कलाकार निजी देह पार कऽ ऊर्ध्व अनुभव दैत अछि।
व्याख्या: कविता समर्पणकैँ आध्यात्मिक तीव्रता धरि लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 6087. चक्कर/ठाठक वर्णन कठिन किएक अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. शब्द नृत्य-अनुभवक पूर्णता पकड़ि नहि पबैत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. शब्द नृत्य-अनुभवक पूर्णता पकड़ि नहि पबैत।
व्याख्या: नृत्य देहगत कला अछि, पूरा अनुभव भाषा सँ परे रहि सकैत अछि।

प्रश्न 6088. “समर्पण” मे प्रेम, परिवार आ कला बीच संबंध की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. नर्तकीक पूर्ण समर्पणसँ ओकर प्रिय/परिजन सेहो भाग्यशाली मानल जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. नर्तकीक पूर्ण समर्पणसँ ओकर प्रिय/परिजन सेहो भाग्यशाली मानल जाइत अछि।
व्याख्या: कविता कलाकारक पूर्णता कैँ संबंध-जीवन धरि फैलाबैत अछि।

प्रश्न 6089. “संपूर्ण अस्तित्व नृत्य मे झोंक देब”क भाव की अछि?
क. कलाक प्रति पूर्ण देह-मन समर्पण।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. कलाक प्रति पूर्ण देह-मन समर्पण।
व्याख्या: समर्पण तकनीक नहि, आत्म-निवेश अछि।

प्रश्न 6090. “समर्पण” आ “ककर गलती” कोना भिन्न छथि?
क. एक सामाजिक रूढ़ि पर प्रश्न, दोसर कला-देहक उत्सव।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. एक सामाजिक रूढ़ि पर प्रश्न, दोसर कला-देहक उत्सव।
व्याख्या: कवि स्त्री-अनुभवक दुख आ गरिमा दुनू देखबैत छथि।

प्रश्न 6091. कविता नर्तकीक मंच-उपस्थिति कैं की बनबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. राग, रोशनी, देह, भाव आ आत्मा-केंद्रित दृश्य।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. राग, रोशनी, देह, भाव आ आत्मा-केंद्रित दृश्य।
व्याख्या: नृत्य बहु-इन्द्रिय अनुभवक रूपमे गढ़ल अछि।

प्रश्न 6092. “समर्पण”क केंद्रीय सौंदर्य-बोध की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. कला पूर्ण समर्पणमे देहसँ देवत्व-जकाँ उजास पबैत अछि।
उत्तर: घ. कला पूर्ण समर्पणमे देहसँ देवत्व-जकाँ उजास पबैत अछि।
व्याख्या: कविता नृत्यकैं आत्मा, भाव आ देहक साधना मानैत अछि।

खण्ड ६१५ : विदेह-सदेह १ — देवांशु वत्स: मैथिली चित्र-श्रृंखला “नताशा”

प्रश्न 6093. देवांशु वत्सक “मैथिली चित्र-श्रृंखला”क अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. कॉमिक्स/चित्र-कथा माध्यमे मैथिली अभिव्यक्ति।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ख. कॉमिक्स/चित्र-कथा माध्यमे मैथिली अभिव्यक्ति।
व्याख्या: परिचय हुनका कॉमिक्स आ चित्र-कथाक सर्जक रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 6094. देवांशु वत्सक रचनात्मक क्षेत्र कोन-कोन विधा धरि पसरल अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून आ चित्र-पहेली।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून आ चित्र-पहेली।
व्याख्या: परिचय विविध दृश्य-आख्यान विधा बतबैत अछि।

प्रश्न 6095. “नताशा”मे शिक्षण-दृश्यक हास्य कोन बातसँ जन्मैत अछि?
क. बाल-भाषा आ शिक्षक/बुजुर्गक शब्दार्थ-भ्रमसँ।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. बाल-भाषा आ शिक्षक/बुजुर्गक शब्दार्थ-भ्रमसँ।
व्याख्या: कॉमिक्स बोलचाल भाषा सँ हास्य उठबैत अछि।

प्रश्न 6096. पहिल कॉमिक दृश्य मे नताशा ककरा सड़क पार करबाक बात कहैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. पाँचटा बच्चा एकटा बूढ़ि माय कैँ।
उत्तर: घ. पाँचटा बच्चा एकटा बूढ़ि माय कैँ।
व्याख्या: दृश्य बाल-तर्कक उलटफेर पर चलैत अछि।

प्रश्न 6097. “बूढ़िका पार हँकायब” प्रसंगक हास्य-तत्त्व की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. सहायता-भाव आ बाल-अतिशयोक्ति एक संग अबैत अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. सहायता-भाव आ बाल-अतिशयोक्ति एक संग अबैत अछि।
व्याख्या: छोट क्रियाकैँ बच्चा विजयी घटना बना दैत अछि।

प्रश्न 6098. दोसर कॉमिकमे “माय” कहि जोत देब पर बाल-प्रतिक्रिया की करैत अछि?
क. शब्दार्थकैँ शाब्दिक पकड़ि हास्य बनबैत अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. शब्दार्थकैँ शाब्दिक पकड़ि हास्य बनबैत अछि।
व्याख्या: चित्र-श्रृंखला दोहरे अर्थसँ हास्य बनबैत अछि।

प्रश्न 6099. डॉक्टर-संवादमे “कनेक काल बाद कतेक पाइ” प्रश्न की बनबैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. इलाज/फीसक व्यावहारिकता पर बाल-संदेह।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. इलाज/फीसक व्यावहारिकता पर बाल-संदेह।
व्याख्या: नताशा वयस्क व्यवस्था कैँ बाल-दृष्टिसँ देखैत अछि।

प्रश्न 6100. “तीन टा पैसेंट परा गेल” कथनक प्रभाव की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. डॉक्टर/बच्चा संवादमे भय, गलतफहमी आ हास्यक झटका।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. डॉक्टर/बच्चा संवादमे भय, गलतफहमी आ हास्यक झटका।
व्याख्या: छोट संवाद चौंक आ हँसी दुनू देइत अछि।

प्रश्न 6101. “जंग” विज्ञान-कथा उल्लेख कोन दिशा देखबैत अछि?
क. बाल/किशोर विज्ञान-कथाक प्रकाशन-दिशा।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. बाल/किशोर विज्ञान-कथाक प्रकाशन-दिशा।
व्याख्या: परिचय विद्यालयी पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा प्रकाशनक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 6102. “नताशा”क महत्त्व मैथिली साहित्य-संसारमे की अछि?
क. चित्र, हास्य, बाल-दृष्टि आ मैथिली संवादकेँ मिलाकऽ आधुनिक दृश्य-आख्यान बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. चित्र, हास्य, बाल-दृष्टि आ मैथिली संवादकेँ मिलाकऽ आधुनिक दृश्य-आख्यान बनबैत अछि।
व्याख्या: कॉमिक्स मैथिलीमे दृश्य-कथनक विस्तारक उदाहरण अछि।

खण्ड ६१६ : विदेह-सदेह १ — नवीन नाथ झा “नवनीत” आ “दया करू माँ”

प्रश्न 6103. “दया करू माँ” कोन भावभूमि पर अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. भक्ति, शरणागति आ विश्व-कल्याणक प्रार्थना।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. भक्ति, शरणागति आ विश्व-कल्याणक प्रार्थना।
व्याख्या: गीत मायक चरणमे शरण आ दया-याचना सँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 6104. “अहाँक शरणमे आएल छी माँ” पंक्तिक भाव की अछि?
क. भक्त अपन दुःखक समाधान मातृ-दैवी करुणामे ताकैत अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. भक्त अपन दुःखक समाधान मातृ-दैवी करुणामे ताकैत अछि।
व्याख्या: शरणागति एहि गीतक मूल धुरी अछि।

प्रश्न 6105. गीतमे संसार केँ कोना चित्रित कएल गेल अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. माया-जाल, स्वार्थ, आतंक, अज्ञान आ अनुशासन-अभावसँ भरल।
उत्तर: घ. माया-जाल, स्वार्थ, आतंक, अज्ञान आ अनुशासन-अभावसँ भरल।
व्याख्या: कवि माँसँ जगत-संकट दूर करबाक विनती करैत छथि।

प्रश्न 6106. “सत्कर्मक भाव जन-जनमे” भरबाक याचना की सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. नैतिक सामाजिक सुधारक आकांक्षा।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ख. नैतिक सामाजिक सुधारक आकांक्षा।
व्याख्या: भक्ति गीत सामूहिक नैतिकता चाहैत अछि।

प्रश्न 6107. “सत्यम् शिवम् सुन्दरम्” कोन त्रयीकेँ जोड़ैत अछि?
क. सत्य, मंगल/शिवत्व आ सौंदर्य।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. सत्य, मंगल/शिवत्व आ सौंदर्य।
व्याख्या: गीत आध्यात्मिक मूल्यकेँ सामाजिक उपचार बनबैत अछि।

प्रश्न 6108. “वसुधैव कुटुम्ब” विचार गीतमे की काम करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. विश्व-परिवारक व्यापक मानवीय दृष्टि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. विश्व-परिवारक व्यापक मानवीय दृष्टि।
व्याख्या: भक्ति, मानवता आ विश्व-कल्याण एकसंग आबैत अछि।

प्रश्न 6109. गीतमे “स्वार्थक लीला”क अर्थ की अछि?
क. जगतक व्यवहार करुणा सँ दूर भऽ गेल अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. जगतक व्यवहार करुणा सँ दूर भऽ गेल अछि।
व्याख्या: दया-याचना स्वार्थ-विरोधी नैतिकता बनैत अछि।

प्रश्न 6110. “दुःखी जनक दुःख दूर करू” पंक्तिसँ सामाजिक विस्तार की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. भक्ति निजी दुखसँ आगू बढ़ि सामूहिक पीड़ा धरि जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. भक्ति निजी दुखसँ आगू बढ़ि सामूहिक पीड़ा धरि जाइत अछि।
व्याख्या: कवि माँक करुणाकेँ दुखिया समाज धरि चाहैत छथि।

प्रश्न 6111. नवीन नाथ झाक गीत एहि भागमे कोन ध्वनि जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. वंचना आ व्यंग्यक बीच करुणामय प्रार्थना।
उत्तर: घ. वंचना आ व्यंग्यक बीच करुणामय प्रार्थना।
व्याख्या: गीत सामाजिक पाठमे भक्ति-करुणाक स्वर दैत अछि।

प्रश्न 6112. “दया करू माँ”क केंद्रीय आग्रह की अछि?
क. माँक करुणासँ व्यक्ति, समाज आ विश्वक अंधकार दूर हो।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. माँक करुणासँ व्यक्ति, समाज आ विश्वक अंधकार दूर हो।
व्याख्या: गीत दया, ज्ञान, सत्कर्म आ विश्व-कल्याणक प्रार्थना अछि।

खण्ड ६१७ : विदेह-सदेह १ — विस्मृत कवि रामजी चौधरी: भजन, राग आ विरह

प्रश्न 6113. रामजी चौधरीक “भजन भैरवी”क मुख्य भाव की अछि?

क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

घ. हरि चरणमे अनुराग आ वासना-दंभ-कपट त्याग।

उत्तर: घ. हरि चरणमे अनुराग आ वासना-दंभ-कपट त्याग।

व्याख्या: भजन आंतरिक शुद्धि आ भक्ति-आसक्ति पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 6114. “सुत-बनिता-परिजन” अन्तमे काज नहि आबत — अर्थ की?

क. भक्ति-पथमे सांसारिक संबंध अंतिम सहारा नहि।

ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

उत्तर: क. भक्ति-पथमे सांसारिक संबंध अंतिम सहारा नहि।

व्याख्या: भजन विरक्ति आ हरि-समर्पणक राग छूइत अछि।

प्रश्न 6115. “बिनु हरि भजन बृथा जात दिन” की चेतावनी दैत अछि?

क. भजन बिना जीवन-दिन व्यर्थ जकाँ बीतैत अछि।

ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

उत्तर: क. भजन बिना जीवन-दिन व्यर्थ जकाँ बीतैत अछि।

व्याख्या: गीत जीवनक सार भक्ति-स्मरणमे देखैत अछि।

प्रश्न 6116. राग विहागक पदमे कोन उद्धार-स्मरण अछि?

क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

ख. अहिल्या, गजेन्द्र आ द्रौपदीक प्रसंग।

ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ख. अहिल्या, गजेन्द्र आ द्रौपदीक प्रसंग।

व्याख्या: पद ईश्वरक करुणा आ उद्धार-शक्ति उदाहरणद्वारा कहैत अछि।

प्रश्न 6117. “राम बिनु दोसर आन को” भावक आधार की अछि?

क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

ग. ईश्वर-आश्रयक विशिष्ट भक्ति-सिद्धान्त।

घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

उत्तर: ग. ईश्वर-आश्रयक विशिष्ट भक्ति-सिद्धान्त।

व्याख्या: राग विहाग राम-भक्ति कैँ केंद्रमे राखैत अछि।

प्रश्न 6118. चैतक ठुमरी मे “पिया नहि आएल” कोन भाव जगबैत अछि?

क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

घ. ऋतुराज बीच विरह, बेचैनी आ प्रतीक्षा।

उत्तर: घ. ऋतुराज बीच विरह, बेचैनी आ प्रतीक्षा।

व्याख्या: चैत, कोयल, फूल आ नींद-अभाव मिलि विरह बनबैत अछि।

प्रश्न 6119. चैत-ठुमरी मे प्रकृति-वर्णनक भूमिका की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. बाहरी ऋतु-सौंदर्य आ भीतरी विरहक टकराव।
उत्तर: घ. बाहरी ऋतु-सौंदर्य आ भीतरी विरहक टकराव।
व्याख्या: ऋतु फुलैत अछि, मुदा मन पियाक अभावमे घबरायल अछि।

प्रश्न 6120. रामजी चौधरीक तीन रचनात्मक स्वर कोन-कोन अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. भक्ति, उद्धार-स्मरण आ विरह-ठुमरी।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. भक्ति, उद्धार-स्मरण आ विरह-ठुमरी।
व्याख्या: भैरवी, विहाग आ चैतक ठुमरी विविधता देखबैत अछि।

प्रश्न 6121. “भजन भैरवी” आ “दया करू माँ” मे समानता की अछि?
क. दुनू दैवी करुणा आ नैतिक जागरण दिस लौटैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. दुनू दैवी करुणा आ नैतिक जागरण दिस लौटैत अछि।
व्याख्या: दुनू रचना भक्ति-धाराक स्वर अछि।

प्रश्न 6122. रामजी चौधरीक रचनाक पुनर्पाठक महत्त्व की अछि?
क. विस्मृत मैथिली भक्ति-संगीत परंपरा कैं फेर सुनाएब।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. विस्मृत मैथिली भक्ति-संगीत परंपरा कैं फेर सुनाएब।
व्याख्या: सदेह अंश विस्मृत कविक रचना सुरक्षित करैत अछि।

खण्ड ६१८ : विदेह-सदेह १ — मानक मैथिली: पंचमाक्षर आ अनुस्वार

प्रश्न 6123. मानक मैथिली अंशक प्रारम्भ कोन दू स्रोत-धारा राखैत अछि?
क. नेपालक भाषा-वैज्ञानिक मानक आ मैथिली अकादमी पटना लेखन-शैली।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. नेपालक भाषा-वैज्ञानिक मानक आ मैथिली अकादमी पटना लेखन-शैली।
व्याख्या: अंश उच्चारण-लेखनक दू संस्थागत मानक प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 6124. पंचमाक्षर मे कोन अक्षर-समूह अबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ङ, ञ, ण, न, म।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. ङ, ञ, ण, न, म।
व्याख्या: पंचमाक्षर पाँच वर्ग-नासिक ध्वनिक समूह अछि।

प्रश्न 6125. संस्कृत-नियम अनुसार वर्गक अन्तमे कोन अक्षर अबैत अछि?
क. ओहि वर्गक पंचमाक्षर।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. ओहि वर्गक पंचमाक्षर।
व्याख्या: नियम वर्गीय नासिक ध्वनि जोड़ैत अछि।

प्रश्न 6126. मैथिली व्यवहारमे पंचमाक्षरक बदला अक्सर की देखल जाइत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. अनुस्वारक प्रयोग।
उत्तर: घ. अनुस्वारक प्रयोग।
व्याख्या: अनेक ठाम अनुस्वार अधिक देखाइत अछि।

प्रश्न 6127. गोविन्द झाक सुझाव अनुसार कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व की लिखल जाय?
क. अनुस्वार।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. अनुस्वार।
व्याख्या: एहि वर्ग सभसँ पूर्व अनुस्वारक सुझाव देल अछि।

प्रश्न 6128. तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व की लिखल जाय?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. पंचमाक्षर।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. पंचमाक्षर।
व्याख्या: उदाहरणरूपेँ अन्त, कम्पन आदि रूप सुझाओल गेल।

प्रश्न 6129. अनुस्वारक छोट बिन्दु अस्पष्ट भेलासँ कोन समस्या होइत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. अर्थक अनर्थ आ उच्चारण-दोषक सम्भावना।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. अर्थक अनर्थ आ उच्चारण-दोषक सम्भावना।
व्याख्या: बिन्दु अस्पष्टता भाषा-बोध बिगाड़ि सकैत अछि।

प्रश्न 6130. कसँ पवर्ग धरि पंचमाक्षर प्रयोगक पक्षमे कारण की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. स्पष्ट लेखन आ उच्चारण-सुरक्षा।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. स्पष्ट लेखन आ उच्चारण-सुरक्षा।
व्याख्या: अंश अनुस्वार-दोष सँ बचेबाक लेल पंचमाक्षर उचित कहैत अछि।

प्रश्न 6131. यसँ ज्ञ धरि अक्षरक संग अनुस्वारक प्रयोग पर दृष्टि की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. एहि क्षेत्रमे विवाद नहि देखल जाइत।
उत्तर: घ. एहि क्षेत्रमे विवाद नहि देखल जाइत।
व्याख्या: नियम वर्गीय नासिक ध्वनिसँ आगू क्षेत्र अलग रखैत अछि।

प्रश्न 6132. पंचमाक्षर-अनुस्वार चर्चा मानक मैथिलीक कोन लक्ष्य सूचित करैत अछि?
क. लेखन, उच्चारण आ अर्थक स्थिरता।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. लेखन, उच्चारण आ अर्थक स्थिरता।
व्याख्या: मानक लेखनक उद्देश्य स्पष्टता आ पाठ-सुविधा अछि।

खण्ड ६१९ : विदेह-सदेह १ — मानक मैथिली: ढ/ढ़, “न्ह”, ऐ/औ आ रूप-विकल्प

प्रश्न 6133. मानक मैथिली अंशमे “ढ़”क उच्चारण कोना बताओल गेल अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. “र् ह” जकाँ।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. “र् ह” जकाँ।
व्याख्या: अंश ढ/ढ़ भेदकेँ उच्चारण-आधारित ढंगसँ बुझबैत अछि।

प्रश्न 6134. जतय “र् ह” सदृश उच्चारण इष्ट हो, ओतय कोन अक्षर लिखबाक संकेत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ढ़।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. ढ़।
व्याख्या: मानक अंश उच्चारणानुसार ढ/ढ़ प्रयोग स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 6135. प्राचीन मैथिलीक “न्ह” ध्वनिक स्थानमे की वैकल्पिक रूपेँ लिखल जा सकैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. “न”।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. “न”।
व्याख्या: कहलनि/कहलन्हि सन रूप विकल्प रूपमे मानल गेल।

प्रश्न 6136. “ऐ” आ “औ” ततय लिखबाक नियम की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. जतय स्पष्टतः “अइ” वा “अउ” सदृश उच्चारण चाही।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ख. जतय स्पष्टतः “अइ” वा “अउ” सदृश उच्चारण चाही।
व्याख्या: देखैत, छलैक, बौआ, छौक सन उदाहरण आधार अछि।

प्रश्न 6137. जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह, दैह सन रूप सभक स्थिति की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. मैथिलीमे विशिष्ट रूपे प्रयोग योग्य मानक शब्द।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीमे विशिष्ट रूपे प्रयोग योग्य मानक शब्द।
व्याख्या: अंश एहि शब्द सभकेँ एही रूपे प्रयुक्त करबाक निर्देश दैत अछि।

प्रश्न 6138. ह्रस्व इकारान्त शब्दमे “इ” लुप्त करब पर दृष्टि की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. सामान्यतः अग्राह्य।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. सामान्यतः अग्राह्य।
व्याख्या: उदाहरणमे “देखि आबह” आ “मालिनि गेलि” सन रूप दैछ।

प्रश्न 6139. स्वतंत्र ह्रस्व “ए” वा “य” प्राचीन उद्धरणमे कोना राखल जाय?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. यथावत।
उत्तर: घ. यथावत।
व्याख्या: प्राचीन उद्धरणक ऐतिहासिक रूप सुरक्षित राखबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 6140. आधुनिक प्रयोगमे कयल/कएल, जाय/जाए सन रूपक स्थिति की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. वैकल्पिक रूपे स्वीकार्य।
उत्तर: घ. वैकल्पिक रूपे स्वीकार्य।
व्याख्या: अंश आधुनिक प्रयोगमे ए/य विकल्प दैत अछि।

प्रश्न 6141. दू स्वरक बीच आबयवला “य” ध्वनिक लेखन कोना मानल गेल?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. वैकल्पिक रूपे स्थान देल जा सकैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. वैकल्पिक रूपे स्थान देल जा सकैत अछि।
व्याख्या: धीआ/धीया, विवाह/बियाह सन उदाहरण देल गेल।

प्रश्न 6142. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक लेल कोन विकल्प दैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. यथासंभव ञ अथवा सानुनासिक स्वर-चिह्न।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. यथासंभव ञ अथवा सानुनासिक स्वर-चिह्न।
व्याख्या: मैञा/मैआँ, कनिञा/कनिआँ सन विकल्प एहि नियमक उदाहरण अछि।

खण्ड ६२० : विदेह-सदेह १ — मानक मैथिली: विभक्ति, चन्द्रबिन्दु, हलन्त आ अंक

प्रश्न 6143. कारक-विभक्तिक “हाथ” उदाहरणसँ कोन रूप सभ देल गेल?

क. हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे।

ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे।

व्याख्या: अंश विभक्तिक सटल रूप आ “मे”मे अनुस्वार त्याज्य कहैत अछि।

प्रश्न 6144. “मे” मे अनुस्वारक विषयमे निर्देश की अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

घ. सर्वथा त्याज्य।

उत्तर: घ. सर्वथा त्याज्य।

व्याख्या: मानक अंश “मे” रूप केँ बिन्दु बिना लिखबाक पक्षमे अछि।

प्रश्न 6145. “क”क वैकल्पिक रूप कोन राखल जा सकैत अछि?

क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

ग. “केर”।

घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

उत्तर: ग. “केर”।

व्याख्या: कारक-चिह्न चर्चा मे “क”क विकल्प “केर” देल गेल अछि।

प्रश्न 6146. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद कोन अव्यय वैकल्पिक रूपे लगाओल जा सकैत अछि?

क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

घ. कय वा कए।

उत्तर: घ. कय वा कए।

व्याख्या: उदाहरण “देखि कय” वा “देखि कए” देल गेल।

प्रश्न 6147. माँग, भाँग आदि शब्दक स्थानमे कोन रूप सुझाओल गेल?

क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

ग. माङ, भाङ।

घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

उत्तर: ग. माङ, भाङ।

व्याख्या: नासिक ध्वनि-लेखनक मानक रूप एहि निर्देशमे देल अछि।

प्रश्न 6148. अर्द्ध “न” आ अर्द्ध “म”क बदला सम्बन्धी निर्देश की अछि?

क. अनुसार बदलल नहि जाय।

ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. अनुसार बदलल नहि जाय।

व्याख्या: अंश अर्द्ध न/मक विषय अलग रखैत अछि।

प्रश्न 6149. हलन्त चिन्हक प्रयोगक नियम की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. नियमतः लगाओल जाय, मुदा विभक्तिसँग अकारान्त प्रयोग।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. नियमतः लगाओल जाय, मुदा विभक्तिसँग अकारान्त प्रयोग।
व्याख्या: उदाहरण “श्रीमान्” मुदा “श्रीमानक” देल गेल अछि।

प्रश्न 6150. एकल कारक-चिह्न कोना लिखल जाय?
क. शब्दमे सटा कऽ।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. शब्दमे सटा कऽ।
व्याख्या: अंश एकल कारक-चिह्न सटा लिखबाक निर्देश दैत अछि।

प्रश्न 6151. संयुक्त विभक्तिक विषयमे निर्देश की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. फराक लिखल जाय, जस्तै घर परक।
उत्तर: घ. फराक लिखल जाय, जस्तै घर परक।
व्याख्या: एकल आ संयुक्त विभक्ति बीच लेखन-भेद स्पष्ट अछि।

प्रश्न 6152. पूर्ण विराम आ अंकक विषयमे कोन निर्देश देल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. पूर्ण विराम पासीसँ “।” आ अंक देवनागरी रूपमे।
उत्तर: घ. पूर्ण विराम पासीसँ “।” आ अंक देवनागरी रूपमे।
व्याख्या: अंश विराम आ अंक दुनूमे देवनागरी-मैथिली लेखनशैलीक आग्रह रखैत अछि।

खण्ड ६२१ : विदेह-सदेह १ — अन्तिम पाठ-सूत्र: नाटक, कविता, कॉमिक्स आ मानक भाषा

प्रश्न 6153. “भाग रौ” आ “नताशा” मे साझा तत्त्व की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. बाल-दृष्टि मार्फत समाजक विसंगति उजागर करब।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. बाल-दृष्टि मार्फत समाजक विसंगति उजागर करब।
व्याख्या: एकमे भूखल बच्चा, दोसरमे बाल-तर्कक हास्य अछि।

प्रश्न 6154. “सृष्टि चक्र” आ मानक मैथिली अंश बीच संबंध की सोचल जा सकैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. एक संसारक क्रम, दोसर भाषाक क्रम खोजैत अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. एक संसारक क्रम, दोसर भाषाक क्रम खोजैत अछि।
व्याख्या: कविता ब्रह्मांडीय क्रम, मानक लेखन भाषिक क्रम व्यवस्थित करैत अछि।

प्रश्न 6155. “ककर गलती” आ “भाग रौ” दुनू कोन प्रश्न उठबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. समाज पीड़ितक दोष लगबैत अछि कि व्यवस्था बदलबाक?
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. समाज पीड़ितक दोष लगबैत अछि कि व्यवस्था बदलबाक?
व्याख्या: गौरी दाय आ सड़क-बच्चा अन्यायक बोझ झेलैत छथि।

प्रश्न 6156. “दया करू माँ” आ रामजी चौधरीक भजन मिलि कोन स्वर बनबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. सामाजिक अंधकारक बीच भक्ति आ नैतिक जागरण।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. सामाजिक अंधकारक बीच भक्ति आ नैतिक जागरण।
व्याख्या: दुनू रचना करुणा, शरणागति आ नैतिकता पुकारैत अछि।

प्रश्न 6157. “समर्पण” आ “दया करू माँ” मे समर्पणक रूप केना भिन्न अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. एक कला-देहमे, दोसर भक्ति-शरणागति मे।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. एक कला-देहमे, दोसर भक्ति-शरणागति मे।
व्याख्या: एक नृत्यक आत्मनिवेश, दोसर दैवी करुणाक याचना।

प्रश्न 6158. मानक मैथिली अंश सदेह १क अंतमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. रचनात्मक बहुलता बाद भाषा-लेखनक अनुशासन सामने राखैत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. रचनात्मक बहुलता बाद भाषा-लेखनक अनुशासन सामने राखैत अछि।
व्याख्या: भाषा-मानकीकरण स्वाभाविक समापन बनैत अछि।

प्रश्न 6159. “भाग रौ”क सार्वजनिक स्थल आ मानक मैथिलीक नियम मे साझा सार्वजनिकता की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. दुनू समाजक साझा प्रयोगक्षेत्र पर केन्द्रित अछि।
उत्तर: घ. दुनू समाजक साझा प्रयोगक्षेत्र पर केन्द्रित अछि।
व्याख्या: एक सडक/ट्रेनक जीवन, दोसर लेखनक सार्वजनिक नियम।

प्रश्न 6160. कॉमिक्स आ नाटक दुनू मैथिली माध्यमकेँ कोना विस्तार दैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. दृश्य, संवाद आ मंच/चित्रक आधुनिक रूपमे।
उत्तर: घ. दृश्य, संवाद आ मंच/चित्रक आधुनिक रूपमे।
व्याख्या: दुनू आँखि आ कान दुनू मार्फत संवाद करैत अछि।

प्रश्न 6161. विनीत उत्पल आ विभा रानीक पाठ स्त्री-अनुभव पर कोना प्रकाश दैत अछि?
क. एक विधवा/नर्तकी, दोसर सामाजिक हाशियाक पात्र-समाज।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. एक विधवा/नर्तकी, दोसर सामाजिक हाशियाक पात्र-समाज।
व्याख्या: दुनू स्त्रीक सामाजिक/कलात्मक उपस्थिति पर दृष्टि दैत अछि।

प्रश्न 6162. अन्तिम खण्ड सभक संयुक्त पाठ की अछि?
क. मैथिली साहित्य समाज, भाषा, दृश्यता, भक्ति, व्यंग्य आ न्याय-प्रश्नक व्यापक मंच अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मैथिली साहित्य समाज, भाषा, दृश्यता, भक्ति, व्यंग्य आ न्याय-प्रश्नक व्यापक मंच अछि।
व्याख्या: सदेह १क अन्तिम भाग विविध विधाकेँ संवादमे जोड़ैत अछि।

खण्ड ६२२ : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ” आ हाशियाक आवाज: पुनरावलोकन

प्रश्न 6163. “भाग रौ”मे हास्यक आधार की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. अभाव, भूख आ जीविका-संघर्ष।
उत्तर: घ. अभाव, भूख आ जीविका-संघर्ष।
व्याख्या: हास्य सतह अछि; गहिराइ मे बाल-दरिद्रता अछि।

प्रश्न 6164. बच्चा ३क “भूख” पुकार दृश्यकेँ कोना बाँधैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. प्रत्येक चर्चा फेर पेटक प्रश्न पर लौटैत अछि।
उत्तर: घ. प्रत्येक चर्चा फेर पेटक प्रश्न पर लौटैत अछि।
व्याख्या: नाम, शिक्षा, समाचार, बरखा सभ पर भूखक छाया अछि।

प्रश्न 6165. मंगतू पढ़ल अछि मुदा सड़कपर — अर्थ की?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. शिक्षा-सूचना मात्र पर्याप्त नहि, सामाजिक ढाँचा चाही।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. शिक्षा-सूचना मात्र पर्याप्त नहि, सामाजिक ढाँचा चाही।
व्याख्या: मंगतू ज्ञान आ बेघरपनक संयुक्त रूप अछि।

प्रश्न 6166. पुलिसक हिंसा बच्चा सभकेँ कोन स्थिति मे धकेलैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. सार्वजनिक स्थानसँ भगाड़ल, अपराधीकरण भेल अस्तित्व।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ख. सार्वजनिक स्थानसँ भगाड़ल, अपराधीकरण भेल अस्तित्व।
व्याख्या: डंडा सत्ता आ बाल-वंचनाक दूरी नापैत अछि।

प्रश्न 6167. बरखा प्रसंगमे “घर”क प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. आश्रय-विहीनक लेल प्रकृति-सुख सेहो संकट अछि।
उत्तर: घ. आश्रय-विहीनक लेल प्रकृति-सुख सेहो संकट अछि।
व्याख्या: घर-विहीनता बरखाकेँ विपत्ति बना दैत अछि।

प्रश्न 6168. नाम-परिवर्तन पर टिप्पणीक सामाजिक अर्थ की अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. प्रतीकात्मक बदलाव गरीबक जीवन नहि बदलैत।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. प्रतीकात्मक बदलाव गरीबक जीवन नहि बदलैत।
व्याख्या: पटना/साहेब संवाद सत्ता-भाषा पर बाल-व्यंग्य अछि।

प्रश्न 6169. “भाग रौ”क बाल-पात्र समाजक कोन अंधा कोना देखबैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. जे बच्चा सभकेँ दया, शिक्षा, सुरक्षा चाही, तिनका मारि/डाँटि भगाओल जाइत अछि।
उत्तर: घ. जे बच्चा सभकेँ दया, शिक्षा, सुरक्षा चाही, तिनका मारि/डाँटि भगाओल जाइत अछि।
व्याख्या: नाटक पीड़ितकेँ अपराधी बनाबयवला दृष्टि पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 6170. मंगतू आ बच्चा सभक संबंध की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. एके बिरादरीक भीतर अनुभव, ज्ञान आ सहानुभूतिक संवाद।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. एके बिरादरीक भीतर अनुभव, ज्ञान आ सहानुभूतिक संवाद।
व्याख्या: मंगतू बच्चा सभकेँ पहचानैत आ बात करैत अछि।

प्रश्न 6171. नाटकक भाषा मे लोक-उपमा, सड़क-बोली आ बाल-प्रश्न किएक प्रभावी अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. यथार्थकेँ कृत्रिम न बनाकऽ जीवित आवाज दैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. यथार्थकेँ कृत्रिम न बनाकऽ जीवित आवाज दैत अछि।
व्याख्या: भाषिक विविधता मंचक सामाजिक सच्चाई बनैत अछि।

प्रश्न 6172. “भाग रौ” पुनरावलोकनक निष्कर्ष की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. सड़क-बालकक कथा समाजक न्याय-बोधक परीक्षा अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ख. सड़क-बालकक कथा समाजक न्याय-बोधक परीक्षा अछि।
व्याख्या: नाटक पूछैत अछि जे हम भूखल बच्चा केँ नागरिक मानैत छी कि बाधा।

खण्ड ६२३ : विदेह-सदेह १ — मानक भाषा आ रचना-संसार: पुनरावलोकन

प्रश्न 6173. मानक मैथिली चर्चा रचनात्मक पाठक बाद की स्मरण करबैत अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

घ. भाषा-सृजनक संग लेखन-शैलीक जिम्मेदारी सेहो जरूरी अछि।

उत्तर: घ. भाषा-सृजनक संग लेखन-शैलीक जिम्मेदारी सेहो जरूरी अछि।

व्याख्या: विविध साहित्यक बाद वर्तनी-विचार भाषा-सम्पादनक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 6174. पंचमाक्षर-अनुस्वार नियमक व्यावहारिक लाभ की अछि?

क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

घ. अर्थ, उच्चारण आ मुद्रणक स्पष्टता।

उत्तर: घ. अर्थ, उच्चारण आ मुद्रणक स्पष्टता।

व्याख्या: स्पष्ट ध्वनि-लेखन भाषा-मानकक लक्ष्य अछि।

प्रश्न 6175. ढ/ढ़ भेद पर निर्देश कोन पक्ष देखबैत अछि?

क. ध्वनि आ अक्षरक संबंध।

ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

उत्तर: क. ध्वनि आ अक्षरक संबंध।

व्याख्या: मानक लेखन उच्चारणानुकूल अक्षर-चयन चाहैत अछि।

प्रश्न 6176. कयल/कएल, जाय/जाए विकल्प की सूचित करैत अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

घ. एकरूपताक संग व्यवहारिक वैकल्पिकता।

उत्तर: घ. एकरूपताक संग व्यवहारिक वैकल्पिकता।

व्याख्या: मानकता व्यवहारक संतुलन अछि।

प्रश्न 6177. कारक-चिह्न सटा लिखबाक निर्देश की करैत अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

ग. शब्द-रचना आ विभक्ति संबंध स्पष्ट करैत अछि।

घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

उत्तर: ग. शब्द-रचना आ विभक्ति संबंध स्पष्ट करैत अछि।

व्याख्या: हाथकेँ, हाथसँ सन रूप व्याकरणिक संबंध देखबैत अछि।

प्रश्न 6178. चन्द्रबिन्दु/अनुस्वार विकल्प कोन व्यावहारिक संकट मानैत अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

ख. मुद्रणक जटिल मात्रा आ पठनीयता।

ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

उत्तर: ख. मुद्रणक जटिल मात्रा आ पठनीयता।

व्याख्या: मानक अंश चिह्न-स्पष्टता आ छपाईक सुविधा देखैत अछि।

प्रश्न 6179. देवनागरी अंकक आग्रह कोन दिशा देखबैत अछि?
क. मैथिली लेखनक स्वलिपि-संगति आ स्थानीय रूप।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: क. मैथिली लेखनक स्वलिपि-संगति आ स्थानीय रूप।
व्याख्या: अंक-नियम लेखनक दृश्य-स्वरूप निश्चित करैत अछि।

प्रश्न 6180. समस्त पद सटा वा हाइफेनसँ लिखबाक निर्देश किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. शब्द-सम्बन्ध अस्पष्ट न हो।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. शब्द-सम्बन्ध अस्पष्ट न हो।
व्याख्या: समस्त पदक रचना-स्पष्टता वाक्य-बोधमे सहायक अछि।

प्रश्न 6181. मानक मैथिलीक निर्देश रचनाकार लेल कोन जिम्मेदारी बनबैत अछि?
क. विधा-स्वतंत्रता संग भाषिक सावधानी।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. विधा-स्वतंत्रता संग भाषिक सावधानी।
व्याख्या: कथा, कविता, नाटक, कॉमिक्स सभकेँ स्पष्ट लेखन चाही।

प्रश्न 6182. मानक-भाषा अंशक सार की अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. मैथिलीक साहित्यिक विस्तारकेँ टिकेबाक लेल साझा लेखन-नीति जरूरी अछि।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीक साहित्यिक विस्तारकेँ टिकेबाक लेल साझा लेखन-नीति जरूरी अछि।
व्याख्या: मानकता सृजनक संप्रेषण-सहयोगी अछि।

खण्ड ६२४ : विदेह-सदेह १ — अन्तिम बैच ६०५–६२३ पुनरावलोकन

प्रश्न 6183. एहि बैचमे विभा रानीक योगदान की रूपमे आयल?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. सामाजिक रंगमंच, लोक-संस्कृति आ हाशियाक जीवनक मंचन।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. सामाजिक रंगमंच, लोक-संस्कृति आ हाशियाक जीवनक मंचन।
व्याख्या: परिचय आ “भाग रौ” समाज-केंद्रित रंगकर्म देखबैत अछि।

प्रश्न 6184. “भाग रौ” कोन मुख्य सामाजिक प्रश्न खोलैत अछि?
क. बाल-भूख, सड़क, शिक्षा, पुलिस आ नागरिकता।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: क. बाल-भूख, सड़क, शिक्षा, पुलिस आ नागरिकता।
व्याख्या: नाटक हाशियाक बाल-जीवनकेँ केंद्रमे राखैत अछि।

प्रश्न 6185. “सृष्टि चक्र” कोन व्यापक यात्रा दैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. शून्यसँ समाजक भूख-लोभ आ सत्ता-विकृति धरि।
उत्तर: घ. शून्यसँ समाजक भूख-लोभ आ सत्ता-विकृति धरि।
व्याख्या: कविता ब्रह्मांडीय आरम्भसँ सामाजिक आलोचना धरि पसरैत अछि।

प्रश्न 6186. “ककर गलती” स्त्री-विमर्शमे कोन प्रश्न दैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. विधवा पर लादल दोषक असल जिम्मेदार समाज/व्यवस्था अछि।
उत्तर: घ. विधवा पर लादल दोषक असल जिम्मेदार समाज/व्यवस्था अछि।
व्याख्या: गौरी दायक पीड़ा सामाजिक रूढ़िक आलोचना बनैत अछि।

प्रश्न 6187. “समर्पण” कला-विमर्शक कोन रूप देत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
घ. नृत्यकेँ देह, राग, आत्मा आ पूर्ण समर्पणक साधना।
उत्तर: घ. नृत्यकेँ देह, राग, आत्मा आ पूर्ण समर्पणक साधना।
व्याख्या: कविता मंचीय कला केँ आध्यात्मिक तीव्रता धरि लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 6188. देवांशु वत्सक कॉमिक्स मैथिलीमे कोन आयाम जोड़ैत अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
घ. दृश्य-हास्य, बाल-बुद्धि आ संवाद-आधारित चित्र-कथा।
उत्तर: घ. दृश्य-हास्य, बाल-बुद्धि आ संवाद-आधारित चित्र-कथा।
व्याख्या: नताशा मैथिली दृश्य-कथाक आधुनिक रूप अछि।

प्रश्न 6189. नवीन नाथ झा आ रामजी चौधरीक पाठ कोन भावधारा जोड़ैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. भक्ति, शरणागति, करुणा आ नैतिक जगार।
घ. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: ग. भक्ति, शरणागति, करुणा आ नैतिक जगार।
व्याख्या: दया करू माँ आ भजन-राग आध्यात्मिक स्वर अछि।

प्रश्न 6190. मानक मैथिली अंश बैचकेँ कोना समाप्त करैत अछि?
क. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ख. भाषाक ध्वनि, वर्तनी, विभक्ति, अंक आ विरामक नियम सामने राखि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. भाषाक ध्वनि, वर्तनी, विभक्ति, अंक आ विरामक नियम सामने राखि।
व्याख्या: अन्तिम अंश भाषिक आधार सुरक्षित करबाक आग्रह अछि।

प्रश्न 6191. एहि बैचक विधागत विस्तार कोना अछि?
क. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ग. जीवनी, नाटक, कविता, कॉमिक्स, भजन आ भाषा-मानक।
घ. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
उत्तर: ग. जीवनी, नाटक, कविता, कॉमिक्स, भजन आ भाषा-मानक।
व्याख्या: बैच विधागत रूपेँ अत्यन्त विविध अछि।

प्रश्न 6192. सदेह १क अन्तिम बैच पढ़ि निष्कर्ष की बनैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
ख. ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
ग. ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
घ. मैथिली साहित्य समाजक जख्म, कला, करुणा आ भाषा-नीति सभकेँ एक मंचपर रखैत अछि।
उत्तर: घ. मैथिली साहित्य समाजक जख्म, कला, करुणा आ भाषा-नीति सभकेँ एक मंचपर रखैत अछि।
व्याख्या: अन्तिम बैच सदेह १क बहुविध स्वर समेटैत अछि।

खण्ड ६२५ : विदेह-सदेह २ — प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना: आरम्भिक परिप्रेक्ष्य

प्रश्न 6193. विदेह-सदेह २ क मुख्य स्वरूप की रूपमे प्रस्तुत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. २००९-१० क मैथिली प्रबन्ध, निबन्ध आ समालोचना संकलन रूपमे।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. २००९-१० क मैथिली प्रबन्ध, निबन्ध आ समालोचना संकलन रूपमे।
व्याख्या: आरम्भिक शीर्षक एहि खण्डक विधागत क्षेत्र स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 6194. ई संकलन विदेह ई-पत्रिकाक कोन अंक-परिसर सँ बीछल सामग्री पर आधारित अछि?
क. २६म सँ ५०म अंकक चुनल रचना पर।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. २६म सँ ५०म अंकक चुनल रचना पर।
व्याख्या: संकलनक आधार पूरा वर्षक पाक्षिक अंक-परिसर अछि।

प्रश्न 6195. प्रिंट वर्सनक चयन-नीति स्रोतमे कोना कहल गेल अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. लगभग दस प्रतिशत चुनल रचना संग प्रस्तुत।
उत्तर: घ. लगभग दस प्रतिशत चुनल रचना संग प्रस्तुत।
व्याख्या: ई पूरा ई-पत्रिका नहि, संपादित चयन अछि।

प्रश्न 6196. विदेह-सदेह २ मे कोन विधा सभक समावेश बताओल गेल अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. साक्षात्कार, सम्पादकीय, संदेश-आलोचना, प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना।
उत्तर: घ. साक्षात्कार, सम्पादकीय, संदेश-आलोचना, प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना।
व्याख्या: आरम्भिक वक्तव्य खण्डक बहुविध आलोचनात्मक प्रकृति देखबैत अछि।

प्रश्न 6197. “प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना” शीर्षक संकलनक बौद्धिक चरित्र कोना बनबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. रचनात्मक साहित्यक साथ विचार, विवेचन आ संवाद कैँ केन्द्रमे राखि।
उत्तर: घ. रचनात्मक साहित्यक साथ विचार, विवेचन आ संवाद कैँ केन्द्रमे राखि।
व्याख्या: शीर्षक पाठककेँ आलोचनात्मक-सांस्कृतिक सामग्रीक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 6198. विदेह-सदेह २ मे “पाखलो” अलग पुस्तकाकार होएबाक उल्लेख कोन बात देखबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई संकलन सामग्री-विभाजन आ पुस्तक-योजना दुनू सँ जुड़ल अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. ई संकलन सामग्री-विभाजन आ पुस्तक-योजना दुनू सँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: मुख्य संकलनसँ बाहर अलग पुस्तकाकार परियोजना सेहो बताओल गेल अछि।

प्रश्न 6199. ज्योति झा चौधरीक “अर्चिस्” अलग प्रकाशित होएबाक बात की सूचित करैत अछि?
क. कविता-संग्रहकेँ स्वतंत्र पुस्तक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक योजना।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. कविता-संग्रहकेँ स्वतंत्र पुस्तक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक योजना।
व्याख्या: किछु दीर्घ/विशिष्ट कृति संकलनसँ अलग स्थान पबैत अछि।

प्रश्न 6200. देवांशु वत्सक “नताशा” अलग पुस्तकाकार होएबाक उल्लेख की बतबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मैथिली चित्र-शृंखलाकेँ स्वतंत्र दृश्य-पुस्तक रूपमे देखल गेल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. मैथिली चित्र-शृंखलाकेँ स्वतंत्र दृश्य-पुस्तक रूपमे देखल गेल।
व्याख्या: कॉमिक्स/चित्र-कथा कैँ सेहो प्रकाशन-योजना मे जगह अछि।

प्रश्न 6201. संकलनक आरम्भिक वक्तव्य पाठक संग कोन संबंध बनबैत अछि?
क. पाक्षिक ई-प्रकाशन आ प्रिंट चयन बीच सेतु बनबैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. पाक्षिक ई-प्रकाशन आ प्रिंट चयन बीच सेतु बनबैत अछि।
व्याख्या: पाठककेँ ऑनलाइन मूल आ मुद्रित चयन दुनू संदर्भ भेटैत अछि।

प्रश्न 6202. विदेह-सदेह २ क आरम्भिक भूमिका संकलनकेँ कोन तरहक परियोजना बनबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई-पत्रिका, प्रिंट-संकलन, आलोचना आ साहित्य-इतिहासक संयुक्त परियोजना।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ई-पत्रिका, प्रिंट-संकलन, आलोचना आ साहित्य-इतिहासक संयुक्त परियोजना।
व्याख्या: भूमिका संकलनकेँ मात्र पुस्तक नहि, आंदोलनक दस्तावेज बनबैत अछि।

खण्ड ६२६ : विदेह-सदेह २ — विदेह आन्दोलन आ डिजिटल-साहित्यिक उपलब्धि

प्रश्न 6203. भूमिका मे विदेह द्वारा प्रारम्भ साहित्य आन्दोलन कोन लिपि-द्वय सँ जोड़ल अछि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. तिरहुता आ देवनागरी।

ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ख. तिरहुता आ देवनागरी।

व्याख्या: आन्दोलन लिपि-सचेत मैथिली कार्य रूपमे चित्रित अछि।

प्रश्न 6204. विदेह आन्दोलनमे लेखक-समुदायबारे की दावा अछि?

क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. २०० सँ बेसी लेखक जुड़ि चुकल छथि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. २०० सँ बेसी लेखक जुड़ि चुकल छथि।

व्याख्या: भूमिका लेखकीय समुदाय विस्तार पर बल दैत अछि।

प्रश्न 6205. विदेहक ५० अंक कोन-कोन रूपमे ई-प्रकाशित भेल बताओल गेल?

क. देवनागरी, तिरहुता आ ब्रेल तीनू रूपमे।

ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. देवनागरी, तिरहुता आ ब्रेल तीनू रूपमे।

व्याख्या: ई बहुल लिपि/स्पर्श-पाठक पहुँचक संकेत अछि।

प्रश्न 6206. दू टा सदेह अंकक उल्लेख कोन बात प्रमाणित करैत अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई-पत्रिका सँ मुद्रित सदेह शृंखला धरि यात्रा।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ग. ई-पत्रिका सँ मुद्रित सदेह शृंखला धरि यात्रा।

व्याख्या: ऑनलाइन सामग्री प्रिंट संस्करण मे सेहो बदलल गेल।

प्रश्न 6207. ६००० पृष्ठक नूतन मैथिली साहित्यक उल्लेख की सूचित करैत अछि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. विदेहक व्यापक डिजिटल साहित्य-संग्रह।

घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. विदेहक व्यापक डिजिटल साहित्य-संग्रह।

व्याख्या: भूमिका साहित्यिक परिमाण आ सार्वजनिक प्रस्तुति पर बल दैत अछि।

प्रश्न 6208. ५० लाख शब्दक मैथिली कॉर्पोरा कोन दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि?

क. भाषिक संसाधन आ शोध-सामग्री रूपमे।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. भाषिक संसाधन आ शोध-सामग्री रूपमे।

व्याख्या: कॉर्पोरा मैथिली भाषा-प्रौद्योगिकी आ अध्ययनक आधार बनि सकैत अछि।

प्रश्न 6209. ११०० पृष्ठक पाण्डुलिपि-अंकणक कार्य कोन सांस्कृतिक दिशा देखबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भोजपत्र, तालपत्र आदि पाण्डुलिपिक मिथिलाक्षर अंकण आ देवनागरी लिप्यंतरण।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. भोजपत्र, तालपत्र आदि पाण्डुलिपिक मिथिलाक्षर अंकण आ देवनागरी लिप्यंतरण।
व्याख्या: भूमिका परम्परागत धरोहरकेँ डिजिटल/पठनीय रूप देबाक काम बतबैत अछि।

प्रश्न 6210. विदेह आर्काइवक प्रकृति भूमिका मे कोना विस्तृत अछि?
क. शब्द, ऑडियो, वीडियो, चित्रकला, छायाचित्र, पोथी आ बाल-साहित्यक भंडार।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. शब्द, ऑडियो, वीडियो, चित्रकला, छायाचित्र, पोथी आ बाल-साहित्यक भंडार।
व्याख्या: आर्काइव बहु-माध्यमी सांस्कृतिक संग्रह रूपमे राखल अछि।

प्रश्न 6211. मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मैथिली साहित्यक दृष्टिबाधित पाठक-समावेशनक दिशा देखबैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मैथिली साहित्यक दृष्टिबाधित पाठक-समावेशनक दिशा देखबैत अछि।
व्याख्या: ब्रेल प्रकाशन साहित्यक पहुँचक दायरा बढ़बैत अछि।

प्रश्न 6212. भूमिका मे “ई तँ मात्र प्रारम्भ अछि” कथनक आशय की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. उपलब्धि सभकेँ अन्तिम नहि, विस्तृत भविष्य-कार्यक आरम्भ मानल गेल।
उत्तर: घ. उपलब्धि सभकेँ अन्तिम नहि, विस्तृत भविष्य-कार्यक आरम्भ मानल गेल।
व्याख्या: वाक्य आन्दोलनक दीर्घकालिकता आ विस्तार-कामना व्यक्त करैत अछि।

खण्ड ६२७ : विदेह-सदेह २ — भाषा-सम्पादन, संस्कार-संग्रह आ मिथिलाक्षर

प्रश्न 6213. भाषा-सम्पादन पाठ्यक्रमक अंतिम रूप कोना देल गेल बताओल अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. विदेहक ३००० सँ बेसी अन्तर्जाल सदस्यक सहभागितासँ।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. विदेहक ३००० सँ बेसी अन्तर्जाल सदस्यक सहभागितासँ।
व्याख्या: ई सामुदायिक भाषा-मानकीकरणक प्रक्रिया देखबैत अछि।

प्रश्न 6214. मिथिलाक्षरक यूनिकोड आवेदनमे विदेहक भूमिका कोना संकेतित अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. आवेदनकर्ता द्वारा आवेदनमे विदेहक योगदान वर्णित।
उत्तर: घ. आवेदनकर्ता द्वारा आवेदनमे विदेहक योगदान वर्णित।
व्याख्या: भूमिका लिपि-प्रौद्योगिकीमे विदेहक योगदान बतबैत अछि।

प्रश्न 6215. मिथिलाक जाति आ धर्मक संस्कार-संग्रहक उल्लेख कोन बात देखबैत अछि?
क. मैथिलीमे विधि-व्यवहार आ श्रमगीतक ऑडियो-वीडियो संरक्षण।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मैथिलीमे विधि-व्यवहार आ श्रमगीतक ऑडियो-वीडियो संरक्षण।
व्याख्या: विदेह लोक-संस्कारकेँ जीवित अभिलेख बनबैत अछि।

प्रश्न 6216. विदेह आर्काइवमे १०० सँ बेसी मैथिली ऑडियो फाइलक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मौखिक-संगीतिक मैथिली संस्कृति सुरक्षित करबाक दृष्टिसँ।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मौखिक-संगीतिक मैथिली संस्कृति सुरक्षित करबाक दृष्टिसँ।
व्याख्या: साहित्य केवल लिखित रूपमे नहि, ध्वनि-संग्रह रूपमे सेहो उपस्थित अछि।

प्रश्न 6217. १०० घण्टासँ बेसी वीडियो फाइलमे सम्पूर्ण नाटकक उल्लेख की जोड़ैत अछि?
क. रंगमंच आ दृश्य-संस्कृति केँ आर्काइवमे स्थान।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. रंगमंच आ दृश्य-संस्कृति केँ आर्काइवमे स्थान।
व्याख्या: नाटकक प्रदर्शन-परम्परा डिजिटल संग्रहमे पहुँचल अछि।

प्रश्न 6218. सएसँ बेसी मैथिली पोथी उपलब्ध कराओल गेल — एकर प्रभाव की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. पठन, डाउनलोड आ शोध लेल विशाल सार्वजनिक पुस्तक-संसाधन।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. पठन, डाउनलोड आ शोध लेल विशाल सार्वजनिक पुस्तक-संसाधन।
व्याख्या: ई संसाधन मैथिली पाठक-वर्गक पहुँच बढ़बैत अछि।

प्रश्न 6219. बच्चा सभक साहित्य आ कार्टून प्रदर्शित/उपलब्ध कराओल गेल — अर्थ की?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. बाल-पाठककेँ मैथिली साहित्य-संसारमे सक्रिय जगह।
उत्तर: घ. बाल-पाठककेँ मैथिली साहित्य-संसारमे सक्रिय जगह।
व्याख्या: भूमिका बाल-साहित्य केँ अलग महत्व दैत अछि।

प्रश्न 6220. आधुनिक कला, चित्रकला आ मिथिला चित्रकलाक फोटो-संग्रह की संकेत करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. साहित्यिक आ दृश्य-कला धरोहरक संयुक्त संरक्षण।
उत्तर: घ. साहित्यिक आ दृश्य-कला धरोहरक संयुक्त संरक्षण।
व्याख्या: आर्काइव कला-साहित्य विभाजनसँ आगू बढ़ैत अछि।

प्रश्न 6221. भोजपत्र-तालपत्रक पाण्डुलिपि-कार्य कोन ऐतिहासिक सेतु बनबैत अछि?
क. प्राचीन अभिलेख आ आधुनिक डिजिटल पाठ बीच।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. प्राचीन अभिलेख आ आधुनिक डिजिटल पाठ बीच।
व्याख्या: मिथिलाक्षर अंकण परंपरा कैं पुनर्पठनीय बनबैत अछि।

प्रश्न 6222. विदेह-सदेह २ भूमिका भाषिक-सांस्कृतिक कार्यकैं कोना समेटैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. लिपि, भाषा, संस्कार, ध्वनि, दृश्य, पोथी आ बाल-साहित्य सभकैं एकसंग।
उत्तर: घ. लिपि, भाषा, संस्कार, ध्वनि, दृश्य, पोथी आ बाल-साहित्य सभकैं एकसंग।
व्याख्या: ई भूमिका विदेहकैं बहु-माध्यमी सांस्कृतिक मंच बनबैत अछि।

खण्ड ६२८ : विदेह-सदेह २ — सम्पादकीय संरचना आ प्रकाशन-दृष्टि

प्रश्न 6223. विदेह-सदेह २ क सम्पादक रूपमे के उल्लेखित छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. गजेन्द्र ठाकुर।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुर।
व्याख्या: प्रकाशन-परिचयमे सम्पादकीय उत्तरदायित्व स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 6224. सहायक सम्पादक रूपमे के सभक नाम अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. रश्मि रेखा सिन्हा आ उमेश मंडल।
उत्तर: घ. रश्मि रेखा सिन्हा आ उमेश मंडल।
व्याख्या: संकलनक सम्पादन सहयोगी संरचना मे ई नाम देल अछि।

प्रश्न 6225. भाषा सम्पादनक उत्तरदायित्व के सभ सँ जुड़ल अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. विद्यानन्द झा आ नागेन्द्र कुमार झा।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. विद्यानन्द झा आ नागेन्द्र कुमार झा।
व्याख्या: भाषिक शुद्धि/सम्पादनक अलग भूमिका निर्दिष्ट अछि।

प्रश्न 6226. रचनाकार सभसँ संक्षिप्त परिचय आ फोटो पठेबाक आग्रह की देखबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई-पत्रिका मे लेखक-संदर्भ सहित प्रकाशनक संपादकीय पद्धति।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. ई-पत्रिका मे लेखक-संदर्भ सहित प्रकाशनक संपादकीय पद्धति।
व्याख्या: रचना संग लेखक-परिचय दस्तावेज बनबैत अछि।

प्रश्न 6227. मौलिकता संबंधी निर्देश कोन मूल्यक रक्षा करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रचनाक मौलिकता आ प्रकाशन-उत्तरदायित्व।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. रचनाक मौलिकता आ प्रकाशन-उत्तरदायित्व।
व्याख्या: संपादकीय नियम साहित्यिक ईमानदारी पर बल दैत अछि।

प्रश्न 6228. विदेहमे मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित रचना कोन भाषामे प्रकाशित होइत कहल गेल?
क. मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे।
व्याख्या: ई भाषिक विस्तार मिथिला-केंद्रित बहुभाषी मंचक संकेत अछि।

प्रश्न 6229. पाक्षिक ई-प्रकाशनक तिथि-संरचना की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई-प्रकाशन।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई-प्रकाशन।
व्याख्या: पत्रिकाक नियमितता पाक्षिक समय-सारिणी सँ निर्धारित अछि।

प्रश्न 6230. सर्वाधिकार लेखकाधीन कहबाक अर्थ की अछि?
क. रचनाक अधिकार मूल रचनाकार लग मानल गेल।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. रचनाक अधिकार मूल रचनाकार लग मानल गेल।
व्याख्या: संपादकीय नीति लेखक-अधिकारक संरक्षणक घोषणा करैत अछि।

प्रश्न 6231. रचनाक अनुवाद/पुनः प्रकाशनक अधिकार संबंधी बात की सूचित करैत अछि?
क. आर्काइव/रचनाक पुनः उपयोग लेल अनुमति-व्यवस्था आवश्यक।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. आर्काइव/रचनाक पुनः उपयोग लेल अनुमति-व्यवस्था आवश्यक।
व्याख्या: ई डिजिटल सामग्रीक अधिकार-बोध देखबैत अछि।

प्रश्न 6232. प्रकाशन-परिचयक साहित्येतर सूचना एहि क्विजमे कतेक उपयोगी अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. संपादकीय पद्धति बुझबाक सीमा धरि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. संपादकीय पद्धति बुझबाक सीमा धरि।
व्याख्या: मूल महत्त्व प्रकाशन-संरचना आ साहित्यिक नीति बुझबामे अछि, न कि पता-दाम याद करबामे।

खण्ड ६२९ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त साक्षात्कार: जन्म, परिवार आ परिवेश

प्रश्न 6233. जीवकान्तक जन्म-स्थानक रूपमे कोन ठाम उल्लेखित अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मामाक गाम अभुआढ़, सुपौल जिला।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. मामाक गाम अभुआढ़, सुपौल जिला।
व्याख्या: साक्षात्कार जन्म आ आरम्भिक पालन-पोषणक ग्रामीण स्रोत स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 6234. जीवकान्तक जन्म-तिथि स्रोतमे कोना देल अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. २७ जुलाई १९३६।
उत्तर: घ. २७ जुलाई १९३६।
व्याख्या: ई जीवकान्तक जीवन-संदर्भक मूल तथ्य अछि।

प्रश्न 6235. जन्मक बाद हुनकर लालन-पालन कोना भेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. पहिने मामक गाममे, बादमे अपन गाम मधुबनक डेओढ़मे।
उत्तर: घ. पहिने मामक गाममे, बादमे अपन गाम मधुबनक डेओढ़मे।
व्याख्या: आरम्भिक जीवन दू ग्रामीण परिसर सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6236. हुनकर पितृ-परिवारक आकार कोना बताओल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. चारि भाइक संयुक्त परिवार, १५-१६ बच्चा संग लालन-पालन।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. चारि भाइक संयुक्त परिवार, १५-१६ बच्चा संग लालन-पालन।
व्याख्या: संयुक्त परिवारक सामाजिक वातावरण हुनकर स्मृतिमे स्पष्ट अछि।

प्रश्न 6237. जीवकान्त अपन भाइ-बहिन संबंधी उत्तरमे की बतबैत छथि?
क. दू भाइ, बहिन सभक स्थिति आ परिवारक अलग-अलग ठामक जीवन।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. दू भाइ, बहिन सभक स्थिति आ परिवारक अलग-अलग ठामक जीवन।
व्याख्या: साक्षात्कार निजी पारिवारिक संदर्भ खोलैत अछि।

प्रश्न 6238. पैघ बेटा अरुणक बारेमे की कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. चेन्नईमे बैंकमे कार्यरत।
उत्तर: घ. चेन्नईमे बैंकमे कार्यरत।
व्याख्या: परिवार परिचयमे संतति सभक पेशागत/स्थानगत सूचना देल अछि।

प्रश्न 6239. छोट बेटा वरुण कोन क्षेत्र/संस्थासँ जुड़ल बताओल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. लखीसरायमे एल.आई.सी. काज।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. लखीसरायमे एल.आई.सी. काज।
व्याख्या: ई परिवारक वर्तमान जीवन-सूत्रक भाग अछि।

प्रश्न 6240. बेटी प्रेमक वैवाहिक ठाम के रूपमे कोन क्षेत्र उल्लेखित अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. नेपालक राजविराज।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. नेपालक राजविराज।
व्याख्या: परिवार मिथिला-नेपालक सांस्कृतिक परिसर धरि पसरल देखाइत अछि।

प्रश्न 6241. साक्षात्कारक आरम्भ जीवकान्तक लेखनसँ पहिने की बनबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. जीवन-परिवारक सामाजिक पृष्ठभूमि।
उत्तर: घ. जीवन-परिवारक सामाजिक पृष्ठभूमि।
व्याख्या: लेखकक विचार ओकर जीवन-संदर्भसँ जुड़ि बुझाओल गेल अछि।

प्रश्न 6242. जीवकान्तक संयुक्त परिवार स्मृति काव्य/कथा-लेखन लेल कोन आधार बना सकैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. सामूहिक ग्रामीण अनुभवक संवेदनात्मक आधार।
उत्तर: घ. सामूहिक ग्रामीण अनुभवक संवेदनात्मक आधार।
व्याख्या: पारिवारिक परिवेश बादक साहित्यिक अनुभवक स्रोत मानल जा सकैत अछि।

खण्ड ६३० : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: घर, पत्नी आ लेखन-सहयोग

प्रश्न 6243. जीवकान्तक कथन अनुसार हुनकर घरमे आन लोक मैथिली लिखैत छलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. नहि, भाइ वा बच्चा मैथिलीमे नहि लिखैत छल।
उत्तर: घ. नहि, भाइ वा बच्चा मैथिलीमे नहि लिखैत छल।
व्याख्या: ई लेखकक अकेल रचनात्मक पथक संकेत अछि।

प्रश्न 6244. शुरूमे पत्नी शचिक दृष्टि हुनकर लेखन पर कोना छल?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ बहुत नहि बुझैत छलीह आ एकरा फालतू काज बुझैत छलीह।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. ओ बहुत नहि बुझैत छलीह आ एकरा फालतू काज बुझैत छलीह।
व्याख्या: लेखनक घरेलू स्वीकृति आरम्भमे सहज नहि छल।

प्रश्न 6245. पत्नीक अनिद्रा आ रातिक लेखन प्रसंग की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. घरक दिनचर्या आ लेखकक रात्रि-लेखन बीच तनाव।
उत्तर: घ. घरक दिनचर्या आ लेखकक रात्रि-लेखन बीच तनाव।
व्याख्या: लाइट मिझा देबाक प्रसंग लेखनक घरेलू संघर्षक प्रतीक अछि।

प्रश्न 6246. बादमे शचिक भूमिका कोना बदलल?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ सहयोग करए लगलीह।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. ओ सहयोग करए लगलीह।
व्याख्या: जीवकान्त लेखन जारी राखबामे पत्नी-सहयोगक आभार मानैत छथि।

प्रश्न 6247. “ओ ज्यौँ विरोध करतीह तँ हम किछु नहि लिखि सकैत छी” कथनक भाव की अछि?
क. घरेलू समर्थन लेखकक रचनात्मक जीवन लेल निर्णायक।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. घरेलू समर्थन लेखकक रचनात्मक जीवन लेल निर्णायक।
व्याख्या: लेखक अपन निर्भरता आ कृतज्ञता स्पष्ट करैत छथि।

प्रश्न 6248. जीवकान्त पत्नीक प्रति कोन भाव व्यक्त करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आभार।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. आभार।
व्याख्या: साक्षात्कारमे पत्नीक सहयोगक महत्त्व प्रत्यक्ष मानल गेल अछि।

प्रश्न 6249. घरमे मैथिली लेखनक अनुपस्थिति हुनकर लेखकत्वकेँ कोना देखबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. लेखन व्यक्तिगत संकल्पक परिणाम बनैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. लेखन व्यक्तिगत संकल्पक परिणाम बनैत अछि।
व्याख्या: परिवार-परंपरा नहिं, स्वनिर्णय हुनका साहित्य दिस अनलक।

प्रश्न 6250. लेखन-जीवनक आरम्भिक घरेलू संघर्ष लेखकक व्यक्तित्वमे की जोड़ैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. दृढ़ता आ रचनात्मक धैर्य।
उत्तर: घ. दृढ़ता आ रचनात्मक धैर्य।
व्याख्या: घरक असहमति बावजूद लेखन जारी रहल।

प्रश्न 6251. पत्नी-सहयोगक प्रसंग मैथिली लेखकक सामाजिक यथार्थ की बतबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. साहित्यक श्रम घर-परिवारक अदृश्य सहमति पर निर्भर रहैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. साहित्यक श्रम घर-परिवारक अदृश्य सहमति पर निर्भर रहैत अछि।
व्याख्या: साक्षात्कार लेखनक सामाजिक/घरेलू आधार देखबैत अछि।

प्रश्न 6252. जीवकान्तक उत्तरक केन्द्रीय बात की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. लेखन निजी प्रतिभा मात्र नहि, सहनशील घरेलू सहयोगसँ बनैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. लेखन निजी प्रतिभा मात्र नहि, सहनशील घरेलू सहयोगसँ बनैत अछि।
व्याख्या: ओ पत्नीक सहायताकेँ रचनात्मक अस्तित्वक आधार मानैत छथि।

खण्ड ६३१ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: आरम्भिक शिक्षा आ साहित्य-दिशा

प्रश्न 6253. जीवकान्त अपन जन्मकालक शिक्षा-स्थिति कोना बतबैत छथि?
क. ओहि कालमे पढ़ैक महत्व बेसी नहि छल।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. ओहि कालमे पढ़ैक महत्व बेसी नहि छल।
व्याख्या: उत्तर आरम्भिक शिक्षा-संस्कृतिक कमी देखबैत अछि।

प्रश्न 6254. स्कूलमे नाम लिखेबाक प्रसंगमे जीवकान्त की कहैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. कियो नहि गेल, ओ स्वयं गेलाह।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. कियो नहि गेल, ओ स्वयं गेलाह।
व्याख्या: ई आत्म-प्रेरित शिक्षा-यात्राक संकेत अछि।

प्रश्न 6255. नेना-कालमे लिखबाक साधन की छल?
क. माटि पर लिखब।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. माटि पर लिखब।
व्याख्या: ग्रामीण पाठशाला-संस्कृतिक साधारण यथार्थ सामने अबैत अछि।

प्रश्न 6256. गाममे कोन पाठ-परम्परा हुनका प्रभावित कएलक?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. तुलसीदासक रामायण पाठ आ तर्क-वितर्क।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. तुलसीदासक रामायण पाठ आ तर्क-वितर्क।
व्याख्या: लोक-सभा मे श्लोकक अर्थ-बहस साहित्यिक चेतना जगबैत अछि।

प्रश्न 6257. घरमे कोन तरहक रामायण रहबाक उल्लेख अछि?
क. बेंकटेश्वर स्टीम प्रेससँ छपल मोटका रामायण।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. बेंकटेश्वर स्टीम प्रेससँ छपल मोटका रामायण।
व्याख्या: घरक धार्मिक-पाठ्य वातावरण हुनका पढ़बाक सामग्री देलक।

प्रश्न 6258. तुलसीदासक लिखल पर बहस देख जीवकान्तक मोनमे कोन प्रश्न उठल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. हमहूँ किएक नहि लिखी।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. हमहूँ किएक नहि लिखी।
व्याख्या: लेखनक प्रेरणा पाठ-बहससँ जन्मल।

प्रश्न 6259. शुरूमे ओ कोन विधा लिखलथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. कविता।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. कविता।
व्याख्या: साक्षात्कारमे पहिल रचनात्मक दिशा कविता बताओल गेल।

प्रश्न 6260. हुनकर शुरुआती कविता कतए छपल?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. आर्यावर्तमे।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. आर्यावर्तमे।
व्याख्या: प्रारम्भिक प्रकाशन हुनका लेखक-विश्वास देलक।

प्रश्न 6261. १९६४ ई. मे ओ कोन शैक्षिक उपलब्धि पबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. प्राइवेटसँ बी.ए.।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. प्राइवेटसँ बी.ए.।
व्याख्या: जीवन-क्रममे उच्च शिक्षा स्वप्रयत्नसँ जोडायल अछि।

प्रश्न 6262. हिंदी वा मैथिलीमे लिखबाक छह मासक अहापोहक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. भाषा-चयन लेखकत्वक निर्णायक मोड़ छल।
उत्तर: घ. भाषा-चयन लेखकत्वक निर्णायक मोड़ छल।
व्याख्या: जीवकान्तक साहित्य-दिशा सहज नहिं, विचारक बाद तय भेल।

खण्ड ६३२ : विदेह-सदेह २ — मिथिला मिहिर, टैगोर आ मैथिली-निर्णय

प्रश्न 6263. जीवकान्तक अनुसार मिथिला मिहिर हुनका कोना प्रभावित कएलक?
क. ओहिसँ बेसी प्रभावित भेलाह।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. ओहिसँ बेसी प्रभावित भेलाह।
व्याख्या: मिथिला मिहिर हुनका मैथिली साहित्यिक जगतसँ जोड़लक।

प्रश्न 6264. रवीन्द्रनाथ टैगोरक साहित्यक प्रभाव कतेक स्वीकारल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ओ सेहो प्रभावक स्रोत छल।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. ओ सेहो प्रभावक स्रोत छल।
व्याख्या: जीवकान्त भारतीय व्यापक साहित्यिक परंपरासँ सेहो जुड़ल देखाइत छथि।

प्रश्न 6265. किछु काल बाद जीवकान्त कोन संकल्प लेलथि?
क. नित दिन लिखबाक।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. नित दिन लिखबाक।
व्याख्या: लेखन हुनका लेल नियमित साधना बनल।

प्रश्न 6266. गृह-जिला मधुबनीक नौकरी जीवनानुभवमे कोना सहायक भेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. खजौली, देहोल, पोखराम आदि गाममे रहि व्यापक अनुभव भेटल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. खजौली, देहोल, पोखराम आदि गाममे रहि व्यापक अनुभव भेटल।
व्याख्या: स्थान-स्थानक जीवनक अनुभव साहित्यक सामग्री बनल।

प्रश्न 6267. स्वतंत्रता-प्राप्ति कालक शिक्षा-परिस्थितिमे संस्कृतक स्थिति पर जीवकान्त की कहैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. इंगलिश मीडियम खुललासँ लोक संस्कृत बिसरि गेल।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. इंगलिश मीडियम खुललासँ लोक संस्कृत बिसरि गेल।
व्याख्या: भाषा-शिक्षा परिवर्तनक सामाजिक टिप्पणी अछि।

प्रश्न 6268. हिंदी स्कूलमे मैथिली पढ़ाओल जाइत छल — ई की सूचित करैत अछि?
क. शिक्षा-प्रणालीमे मैथिली उपस्थित छल।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. शिक्षा-प्रणालीमे मैथिली उपस्थित छल।
व्याख्या: भाषिक संरचना परिवर्तनशील छल।

प्रश्न 6269. जीवकान्त स्वयंकेँ “गामक लोक” कहलासँ की बतबैत छथि?
क. ग्राम-जीवन हुनकर भाषा-संवेदना के मूल अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. ग्राम-जीवन हुनकर भाषा-संवेदना के मूल अछि।
व्याख्या: ओ शहरिया प्रभावसँ अधिक ग्रामीण संवेदना पर बल दैत छथि।

प्रश्न 6270. २४ जनवरी १९६५ मे मिथिला मिहिरमे कोन कविता छपल?
क. “इजोरिया आ टिटही”।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. “इजोरिया आ टिटही”।
व्याख्या: ई प्रकाशन हुनका जोश देनिहार घटना बनल।

प्रश्न 6271. “इजोरिया आ टिटही” छपलासँ की परिणाम भेल?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हुनका लेखनक जोश भेटल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. हुनका लेखनक जोश भेटल।
व्याख्या: पहिल मैथिली प्रकाशन आत्मविश्वासक स्रोत बनल।

प्रश्न 6272. मिथिला मिहिर आ आर्यावर्तक प्रकाशन अनुभवक भेद की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. आर्यावर्त शुरुआती कविता छापलक, मिथिला मिहिर मैथिली दिशा दृढ़ कएलक।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. आर्यावर्त शुरुआती कविता छापलक, मिथिला मिहिर मैथिली दिशा दृढ़ कएलक।
व्याख्या: दुनू मंच हुनकर लेखक-निर्माणमे अलग भूमिका खेलैत अछि।

खण्ड ६३३ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्तक काव्य-दृष्टि आ रचनात्मक गंध

प्रश्न 6273. जीवकान्तक प्रिय विधा कोन अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. कविता।
उत्तर: घ. कविता।
व्याख्या: ओ स्पष्ट कहैत छथि जे कविता हुनकर प्रिय अछि।

प्रश्न 6274. कविता लिखबामे हुनका की अनुभव होइत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. आनन्द अबैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. आनन्द अबैत अछि।
व्याख्या: लेखनक मूल भाव रसात्मक अनुभूति अछि।

प्रश्न 6275. “गंध” प्रतीकसँ जीवकान्त की बुझबैत छथि?
क. रचना/लेखनक अलग-अलग प्रभाव, जे साफ तुलना सँ परे अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. रचना/लेखनक अलग-अलग प्रभाव, जे साफ तुलना सँ परे अछि।
व्याख्या: गंधक प्रतीक सूक्ष्म साहित्यिक अनुभूति बुझबैत अछि।

प्रश्न 6276. ओ किएक कहैत छथि जे कोनो गप कवितामे नीकसँ कहल जा सकैत अछि?
क. कविता हुनकर विचार-प्रेषणक मूल माध्यम अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. कविता हुनकर विचार-प्रेषणक मूल माध्यम अछि।
व्याख्या: कविता अर्थ आ अनुभूति दुनू कैं एकसंग पहुँचबैत अछि।

प्रश्न 6277. आलोचकक कथन “कथामे सब अलग-अलग नहि” पर जीवकान्तक संकेत की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. पाठककेँ सूत्र जोड़ए पड़ैत अछि।
उत्तर: घ. पाठककेँ सूत्र जोड़ए पड़ैत अछि।
व्याख्या: हुनकर कथा-शिल्प पाठक-सक्रियता माँगैत अछि।

प्रश्न 6278. “सबाहक गंध अपन-अपन” कथनक अर्थ की?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. प्रत्येक लेखक/रचनाक संवेदना विशिष्ट होइत अछि।
उत्तर: घ. प्रत्येक लेखक/रचनाक संवेदना विशिष्ट होइत अछि।
व्याख्या: ई साहित्यिक विविधता स्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 6279. जीवकान्तक लेखनक मूल के रूपमे की कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. कविता।
उत्तर: घ. कविता।
व्याख्या: ओ अपन रचनात्मक जड़ कविता मे देखैत छथि।

प्रश्न 6280. कविताक संग गप प्रेषित करबाक रुचि की बतबैत अछि?
क. विचार सेहो काव्यात्मक ढंगसँ कहबाक प्रवृत्ति।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. विचार सेहो काव्यात्मक ढंगसँ कहबाक प्रवृत्ति।
व्याख्या: हुनकर गद्य मे सेहो काव्य-संवेदना रहैत अछि।

प्रश्न 6281. जीवकान्तक रचना-पद्धति पाठकसँ कोन अपेक्षा करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सक्रिय अर्थ-निर्माण।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. सक्रिय अर्थ-निर्माण।
व्याख्या: पाठक तैयार सूत्र नहि, संकेत सँ अर्थ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 6282. एहि खण्डमे जीवकान्तक साहित्यिक आत्म-परिचयक सार की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ओ मूलतः काव्य-संवेदनासँ संचालित लेखक छथि।
उत्तर: घ. ओ मूलतः काव्य-संवेदनासँ संचालित लेखक छथि।
व्याख्या: कविता हुनकर शैली, विचार आ अनुभवक केन्द्रीय आधार अछि।

खण्ड ६३४ : विदेह-सदेह २ — प्रोत्साहन, यात्रीजी आ धारावाहिक उपन्यास

प्रश्न 6283. यात्रीजी जीवकान्तक बारेमे सोमदेव कैं की कहने छलाह?
क. जीवकान्तकैं कहियौ ओ उपन्यास लिखताह।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. जीवकान्तकैं कहियौ ओ उपन्यास लिखताह।
व्याख्या: ई कथन हुनकर कथात्मक क्षमता पर विश्वास देखबैत अछि।

प्रश्न 6284. मिथिला मिहिरसँ लिखबाक आमंत्रण जीवकान्त कोना लेलथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. चुनौतीक रूपमे।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. चुनौतीक रूपमे।
व्याख्या: आमंत्रण हुनका नियमित लेखनक दिशा देलक।

प्रश्न 6285. फरमाइश पर लिखबाक प्रक्रिया कोना चलल?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. जे लिखबैत रहल, फरमाइश करैत छल, से लिखैत रहलाह।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. जे लिखबैत रहल, फरमाइश करैत छल, से लिखैत रहलाह।
व्याख्या: ई पत्रिका-संपर्क आधारित सक्रिय लेखन-प्रक्रिया अछि।

प्रश्न 6286. शिक्षक संघसँ जुड़ाव हुनका कोन साहित्यिक लाभ देलक?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. पटना जाएबाक आ लोकसँ भेटक अवसर।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. पटना जाएबाक आ लोकसँ भेटक अवसर।
व्याख्या: संगठनात्मक जीवन लेखक-सम्पर्क बढ़बैत अछि।

प्रश्न 6287. पटना-भेटघाट जीवकान्त लेल की बनल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. प्रोत्साहनक स्रोत।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. प्रोत्साहनक स्रोत।
व्याख्या: साहित्यिक संवाद हुनकर लेखन बलवती कएलक।

प्रश्न 6288. तीनटा उपन्यास कोना लिखल गेल बताओल अछि?
क. फरमाइश पर।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. फरमाइश पर।
व्याख्या: हुनकर उपन्यास-लेखन संपादकीय आग्रहसँ प्रेरित रहल।

प्रश्न 6289. ओ उपन्यास सभ कोन रूपमे छपल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. धारावाहिक रूपमे।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. धारावाहिक रूपमे।
व्याख्या: पत्रिका-आधारित पाठक-संबंध उपन्यास प्रकाशनक माध्यम बनल।

प्रश्न 6290. प्रोत्साहन-प्रसंग जीवकान्तक लेखकत्वमे कोन तत्त्व जोड़ैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. व्यक्तिगत प्रतिभा संग साहित्यिक समुदाय आ संपादकीय आग्रह।
उत्तर: घ. व्यक्तिगत प्रतिभा संग साहित्यिक समुदाय आ संपादकीय आग्रह।
व्याख्या: लेखन अकेल नहिं, सम्पर्क-संरचना सँ सेहो बढ़ल।

प्रश्न 6291. यात्रीजीक टिप्पणीक गूढ़ अर्थ की छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. कविताक भीतर कथाकारक संभावना देखल गेल।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. कविताक भीतर कथाकारक संभावना देखल गेल।
व्याख्या: वरिष्ठ साहित्यकार नव दिशा पहिचानैत छथि।

प्रश्न 6292. मिथिला मिहिरक भूमिका एहि प्रसंगमे की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. लेखककेँ आमंत्रित, चुनौतीत आ प्रकाशित करनिहार मंच।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. लेखककेँ आमंत्रित, चुनौतीत आ प्रकाशित करनिहार मंच।
व्याख्या: पत्रिका जीवकान्तक विस्तारक सक्रिय माध्यम बनल।

खण्ड ६३५ : विदेह-सदेह २ — साहित्य अकादमी, पुरस्कार आ दूरी

प्रश्न 6293. साहित्य अकादमी पुरस्कारबारे जीवकान्तक दृष्टि कोना अछि?
क. लोक ओकरा संदेहक दृष्टिसँ देखैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. लोक ओकरा संदेहक दृष्टिसँ देखैत अछि।
व्याख्या: ओ पुरस्कार-प्रक्रिया पर सहज भरोसा नहि देखबैत छथि।

प्रश्न 6294. जीवकान्त अकादमीक “पॉलिटिक्स”बारे की कहैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ओ नहि जनैत छथि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ओ नहि जनैत छथि।
व्याख्या: ओ स्वयंकेँ पुरस्कार-राजनीति सँ दूर रखैत छथि।

प्रश्न 6295. “गाममे रहैत छी” कथन कोन आत्म-स्थिति बतबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. साहित्यिक सत्ता-केंद्रसँ दूरी।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. साहित्यिक सत्ता-केंद्रसँ दूरी।
व्याख्या: गामक जीवन अकादमीक नेटवर्किंगसँ अलग अछि।

प्रश्न 6296. “कोनो दोस्त नहि बनेलहुँ” कथनक पुरस्कार-संदर्भमे अर्थ की?
क. पुरस्कार-पहुँच लेल गुट/मित्र-मंडली नहि बनाएल।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. पुरस्कार-पहुँच लेल गुट/मित्र-मंडली नहि बनाएल।
व्याख्या: ओ संबंध-राजनीति सँ दूरीक दावा करैत छथि।

प्रश्न 6297. मिथिला समाजकेँ ओ कोना वर्णित करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. अनौपचारिक।
उत्तर: घ. अनौपचारिक।
व्याख्या: पुरस्कार चर्चा मे समाजक ढाँचा सेहो उल्लेखित अछि।

प्रश्न 6298. पुरस्कार विलंबसँ भेटल की नहि — एहि पर हुनकर रुख की अछि?
क. भऽ सकैत अछि, मुदा ओ एहि सभमे नहि पड़ैत।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. भऽ सकैत अछि, मुदा ओ एहि सभमे नहि पड़ैत।
व्याख्या: ओ विलंब पर शिकायतक बजाय उदासीनता देखबैत छथि।

प्रश्न 6299. अकादमी प्रसंग जीवकान्तक व्यक्तित्वक कोन पक्ष देखबैत अछि?
क. स्वतंत्रता आ संस्थागत राजनीति सँ दूरी।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. स्वतंत्रता आ संस्थागत राजनीति सँ दूरी।
व्याख्या: ओ पुरस्कारकेँ लेखनक अंतिम मूल्य नहि मानैत।

प्रश्न 6300. “जाएज लोककेँ किनारा” कथनक आशय की अछि?
क. योग्य लेखकक उपेक्षा होइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. योग्य लेखकक उपेक्षा होइत अछि।
व्याख्या: ओ पुरस्कार-व्यवस्थाक निष्पक्षता पर प्रश्न करैत छथि।

प्रश्न 6301. साहित्यिक सम्मान आ रचना-मूल्य बीच हुनकर संकेत की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सम्मान पर संदेह हो सकैत, रचना स्वतंत्र रहैत अछि।
उत्तर: घ. सम्मान पर संदेह हो सकैत, रचना स्वतंत्र रहैत अछि।
व्याख्या: ओ पुरस्कारक राजनीतिकता आ लेखनक स्वतन्त्रता अलग रखैत छथि।

प्रश्न 6302. एहि उत्तरक नैतिक धुरी की अछि?
क. लेखन पुरस्कार-समीकरणसँ ऊपर रहबाक चाही।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. लेखन पुरस्कार-समीकरणसँ ऊपर रहबाक चाही।
व्याख्या: जीवकान्त अपन लेखकीय अस्मिता केँ संस्थागत गणना सँ अलग रखैत छथि।

खण्ड ६३६ : विदेह-सदेह २ — पत्रिका, अनुवाद आ कविता-संग्रह

प्रश्न 6303. समकालीन भारतीय साहित्य शुरू भेलाक बाद जीवकान्त की कयलथि?
क. किछु अनुवाद कएलथि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. किछु अनुवाद कएलथि।
व्याख्या: पत्रिका आरम्भ हुनका अनुवाद-कर्म दिस आनलक।

प्रश्न 6304. मैथिलीमे पहिल कहानीक संबंधमे जीवकान्त की कहैत छथि?
क. पहिल कहानी हुनकर आएल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. पहिल कहानी हुनकर आएल।
व्याख्या: ओ पत्रिका-प्रकाशनमे मैथिली उपस्थिति पर अपन भूमिका बतबैत छथि।

प्रश्न 6305. पहिल मैथिली विशेषांकक प्रसंग की सूचित करैत अछि?
क. राष्ट्रीय/बृहत्तर पत्रिका संसारमे मैथिलीक प्रवेश।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. राष्ट्रीय/बृहत्तर पत्रिका संसारमे मैथिलीक प्रवेश।
व्याख्या: विशेषांक मैथिली साहित्यक दृश्यता बढ़बैत अछि।

प्रश्न 6306. केदार काननक उल्लेख कोन कार्यसँ जुड़ल अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. एकटा अनुवाद।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. एकटा अनुवाद।
व्याख्या: जीवकान्त पत्रिका-परिसरक अन्य अनुवादक नाम सेहो जोड़ैत छथि।

प्रश्न 6307. हिंदी संपादक आ पत्रिका सभ हुनकर रचना कोना लेत छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. आदरसँ छापैत छल।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. आदरसँ छापैत छल।
व्याख्या: मैथिली लेखकक हिंदी साहित्यिक मंचमे स्वीकार्यता देखाइत अछि।

प्रश्न 6308. कोलकाता, मुंबई, दिल्लीक पत्रिका मे छपब की सूचित करैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. भौगोलिक रूपे विस्तृत प्रकाशन-पहुँच।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. भौगोलिक रूपे विस्तृत प्रकाशन-पहुँच।
व्याख्या: जीवकान्तक रचना मिथिला सीमासँ बाहर छपल।

प्रश्न 6309. पहिल कविता-संग्रहक नाम की बताओल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. “तकैत अछि चिड़ै”।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. “तकैत अछि चिड़ै”।
व्याख्या: साक्षात्कार एहि संग्रहकेँ मुख्य साहित्यिक उपलब्धि रूपमे राखैत अछि।

प्रश्न 6310. “तकैत अछि चिड़ै” पर कोन मान्यता भेटल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. साहित्य अकादमी पुरस्कार।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. साहित्य अकादमी पुरस्कार।
व्याख्या: कविता-संग्रह हुनका प्रमुख मान्यता देलक।

प्रश्न 6311. ओहि संग्रहक हिंदी अनुवादक नाम की छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. “निशांतक चिड़िया”।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. “निशांतक चिड़िया”।
व्याख्या: अनुवाद मैथिली रचनाकेँ हिंदी पाठक धरि ल’ गेल।

प्रश्न 6312. विश्वविद्यालयी शोधक उल्लेख की बतबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. हुनकर कृतित्व शैक्षिक अध्ययनक विषय बनल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. हुनकर कृतित्व शैक्षिक अध्ययनक विषय बनल।
व्याख्या: रचना प्रकाशनसँ आगू शोध-क्षेत्र धरि पहुँचल।

खण्ड ६३७ : विदेह-सदेह २ — कविता, रहस्य आ पाठक-निर्माण

प्रश्न 6313. जीवकान्तक कविता “रहस्य” मे गूथल बुझाइत अछि — प्रश्न पर ओ की उत्तर दैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कविता कतहुसँ शुरू भऽ तार्किक परिणति तक पहुँचैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. कविता कतहुसँ शुरू भऽ तार्किक परिणति तक पहुँचैत अछि।
व्याख्या: ओ रहस्यकेँ अव्यवस्था नहि, तार्किक यात्रा मानैत छथि।

प्रश्न 6314. “आखिर मे टर्न” वाली धारणा कोन शिल्पक संकेत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. कविता अंतमे अर्थ-वक्रता वा मोड़ लैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. कविता अंतमे अर्थ-वक्रता वा मोड़ लैत अछि।
व्याख्या: पाठक अंतिम मोड़सँ नब अर्थ ग्रहण करैत अछि।

प्रश्न 6315. लोककाल आ पाठक सामने नहि रहबाक परिणाम की बताओल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अलग-अलग पाठक अलग गप देखैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. अलग-अलग पाठक अलग गप देखैत अछि।
व्याख्या: कविता अर्थक बहुलता स्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 6316. जीवकान्तक कविता पाठक केँ कोन भूमिका दैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. स्वयं अर्थ खोजबाक।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. स्वयं अर्थ खोजबाक।
व्याख्या: पाठक निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहि रहैत।

प्रश्न 6317. तार्किक परिणति आ रहस्य एक साथ कोना सम्भव अछि?
क. आरम्भ खुला, पर अन्त अर्थ-संगत।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. आरम्भ खुला, पर अन्त अर्थ-संगत।
व्याख्या: कविताक रहस्य भीतर आंतरिक क्रम राखैत अछि।

प्रश्न 6318. “टर्न” काव्य-पठनक अनुभवमे की करैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. पूर्व अर्थकेँ पलटि वा गाढ़ करि दैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. पूर्व अर्थकेँ पलटि वा गाढ़ करि दैत अछि।
व्याख्या: मोड़ पाठकक धारणाक पुनर्गठन करैत अछि।

प्रश्न 6319. जीवकान्तक कवितामे अर्थक बहुलता किएक बनैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. पाठक, काल आ अनुभव भिन्न-भिन्न होइत अछि।
उत्तर: घ. पाठक, काल आ अनुभव भिन्न-भिन्न होइत अछि।
व्याख्या: हर पाठक अपना अनुभवसँ कविता पढ़ैत अछि।

प्रश्न 6320. रहस्य-प्रश्नक उत्तरमे जीवकान्त शिल्प-सजगता कोना देखबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ओ आरम्भ, परिणति आ पाठकीय अर्थक संबंध पर बोलैत छथि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ओ आरम्भ, परिणति आ पाठकीय अर्थक संबंध पर बोलैत छथि।
व्याख्या: उत्तर कवि-कर्मक संरचनात्मक समझ देखबैत अछि।

प्रश्न 6321. एहि दृष्टि मे कविता कोन चीज नहि अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सादा एकरेखीय सूचना।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. सादा एकरेखीय सूचना।
व्याख्या: कविता संकेत, मोड़ आ पाठकीय भागीदारी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 6322. जीवकान्तक काव्य-दृष्टिक सार की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. कविता खुलल आरम्भसँ अर्थपूर्ण मोड़ धरि पाठककेँ सक्रिय यात्रा करबैत अछि।
उत्तर: घ. कविता खुलल आरम्भसँ अर्थपूर्ण मोड़ धरि पाठककेँ सक्रिय यात्रा करबैत अछि।
व्याख्या: ई दृष्टि रहस्य, तर्क आ अनुभवकेँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ६३८ : विदेह-सदेह २ — समीक्षा-कर्म आ नव लेखक

प्रश्न 6323. जीवकान्त स्वयंकेँ समीक्षक रूपमे कोना देखैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ओते प्रोफेशनल नहि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ओते प्रोफेशनल नहि।
व्याख्या: ओ समीक्षा केँ जीवन-पठनक विस्तार मानैत छथि, पेशेवर दावेदारी नहि।

प्रश्न 6324. नव पोथी पढ़लाक बाद ओ की करैत छलाह?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. छोट-छोट टिप्पणी।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. छोट-छोट टिप्पणी।
व्याख्या: हुनकर समीक्षा-शैली संक्षिप्त, पाठकीय प्रतिक्रिया-आधारित रहल।

प्रश्न 6325. ४० सालमे ओ कतेक पोथीपर टिप्पणीक अनुमान दैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ६०-७० टा।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. ६०-७० टा।
व्याख्या: ई दीर्घ पठन-यात्रा आ सीमित टिप्पणीक संकेत अछि।

प्रश्न 6326. टिप्पणीक बाद “मन बहलबैत” बात की बतबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समीक्षा संग हास-परिहास आ चर्चा हुनकर स्वभाविक संवाद-क्षेत्र छल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. समीक्षा संग हास-परिहास आ चर्चा हुनकर स्वभाविक संवाद-क्षेत्र छल।
व्याख्या: ओ गंभीर समीक्षा केँ जीवन-चर्चा सँ अलग नहि राखैत।

प्रश्न 6327. नव लेखकबारे हुनकर मुख्य अवलोकन की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. नव लेखक तेजी सँ आबि रहल छथि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. नव लेखक तेजी सँ आबि रहल छथि।
व्याख्या: ओ मैथिली लेखनमे नब पीढ़ीक उभार देखैत छथि।

प्रश्न 6328. देहातसँ लेखक आबि रहल अछि — ई की सूचित करैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. लेखनक सामाजिक आधार विस्तृत भऽ रहल अछि।
उत्तर: घ. लेखनक सामाजिक आधार विस्तृत भऽ रहल अछि।
व्याख्या: मैथिली साहित्य केवल शहर-केंद्रित नहि।

प्रश्न 6329. बीच पीढ़ीबारे जीवकान्त की कहैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. अद्भुत लेखक भेल।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. अद्भुत लेखक भेल।
व्याख्या: ओ मध्यवर्ती पीढ़ीक योगदान स्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 6330. महाप्रकाश आ सुभाषचन्द्र यादवक रचना-बल कोना बताओल?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोक विवशता आ निर्धनताक विलक्षण चित्रण।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. लोक विवशता आ निर्धनताक विलक्षण चित्रण।
व्याख्या: ओ समाजक दुख-दरिद्रता कैं कलात्मक रूप दैत छथि।

प्रश्न 6331. मैथिली कविता बारे जीवकान्तक सकारात्मक टिप्पणी की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. गंभीर भऽ रहल अछि, स्तर बढ़ल अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. गंभीर भऽ रहल अछि, स्तर बढ़ल अछि।
व्याख्या: ओ कविता-क्षेत्रमे विचारक विस्तार देखैत छथि।

प्रश्न 6332. नव लेखक आ कविता पर एहि खण्डक सार की अछि?
क. मैथिलीमे नब स्वर, ग्रामीण विस्तार आ गंभीर काव्य-चेतना उभरि रहल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मैथिलीमे नब स्वर, ग्रामीण विस्तार आ गंभीर काव्य-चेतना उभरि रहल अछि।
व्याख्या: जीवकान्त समकालीन लेखनमे जीवंतता देखैत छथि।

खण्ड ६३९ : विदेह-सदेह २ — समीक्षा-संकट: यूरोप, हिन्दी आ मैथिली

प्रश्न 6333. जीवकान्त समीक्षा-विधाक मूल केतय सँ आएल बतबैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. यूरोपसँ।
उत्तर: घ. यूरोपसँ।
व्याख्या: ओ समीक्षा परंपराक ऐतिहासिक उद्गम यूरोपीय मानैत छथि।

प्रश्न 6334. यूरोपक समीक्षा मे कोन गुण बताओल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. अन्वेषण आ समुचित परिप्रेक्ष्य।
उत्तर: घ. अन्वेषण आ समुचित परिप्रेक्ष्य।
व्याख्या: ओ आदर्श समीक्षा कैं शोधपूर्ण आ संदर्भ-सचेत मानैत छथि।

प्रश्न 6335. भारत/हिन्दुस्तानक स्थिति ओ कोना देखैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. एहि विधामे पिछड़ल।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. एहि विधामे पिछड़ल।
व्याख्या: तुलनात्मक दृष्टि मे भारतीय समीक्षा कमजोर कहैत छथि।

प्रश्न 6336. हिंदी समीक्षाबारे हुनकर टिप्पणी की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. हिंदीमे सेहो नीक समीक्षा नहि भऽ रहल।
उत्तर: घ. हिंदीमे सेहो नीक समीक्षा नहि भऽ रहल।
व्याख्या: ओ आलोचना-संकट केवल मैथिली धरि सीमित नहि मानैत।

प्रश्न 6337. नामवर सिंह संदर्भमे “समीक्षा नहि, भाषण” कहबाक आशय की?
क. तटस्थ मूल्यांकनक स्थान पर वक्तव्य-प्रधानता।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. तटस्थ मूल्यांकनक स्थान पर वक्तव्य-प्रधानता।
व्याख्या: जीवकान्त समीक्षा कैं भाषणबाजीसँ अलग करैत छथि।

प्रश्न 6338. “नीक लेखककैं पएरसँ दबा देल” कथन की कहैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. समीक्षा-व्यवस्था मे प्रतिभा-दमन होइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. समीक्षा-व्यवस्था मे प्रतिभा-दमन होइत अछि।
व्याख्या: ओ आलोचनात्मक न्याय पर प्रश्न करैत छथि।

प्रश्न 6339. विद्यापति पर मैथिलीमे नीक समीक्षा न भेल कहबाक अर्थ की?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. महान परंपरा पर पर्याप्त समालोचना-अन्वेषणक कमी।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. महान परंपरा पर पर्याप्त समालोचना-अन्वेषणक कमी।
व्याख्या: ओ मूल साहित्यिक धरोहर पर गहन अध्ययनक अभाव बतबैत छथि।

प्रश्न 6340. रामानाथ झा आ जयकान्त बाबू संदर्भ की सूचित करैत अछि?
क. प्रमुख कृतित्व/समालोचक पर पर्याप्त समीक्षा-अभाव।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. प्रमुख कृतित्व/समालोचक पर पर्याप्त समीक्षा-अभाव।
व्याख्या: ओ मैथिली आलोचनाक अधूरापन बतबैत छथि।

प्रश्न 6341. “सोनारक काज लोहारक हथौड़ीसँ नहि” रूपक की अर्थ रखैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. सूक्ष्म साहित्यिक काम लेल उपयुक्त आलोचनात्मक औजार चाही।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सूक्ष्म साहित्यिक काम लेल उपयुक्त आलोचनात्मक औजार चाही।
व्याख्या: गलत पद्धति सँ सही समीक्षा सम्भव नहि।

प्रश्न 6342. एहि खण्डक केंद्रीय आलोचनात्मक शिकायत की अछि?
क. समीक्षा मे तटस्थता, पद्धति, योग्यता आ गहराइ कम अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. समीक्षा मे तटस्थता, पद्धति, योग्यता आ गहराइ कम अछि।
व्याख्या: जीवकान्त आलोचनाक संस्थागत संकट रेखांकित करैत छथि।

खण्ड ६४० : विदेह-सदेह २ — जाति, गुटबाजी आ साहित्यिक नैतिकता

प्रश्न 6343. “अपन बट्टी भरि पनबट्टी” रूपक की बतबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. छोट स्वार्थक भीतर फँसल आलोचना-संस्कृति।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. छोट स्वार्थक भीतर फँसल आलोचना-संस्कृति।
व्याख्या: जीवकान्त साहित्यिक दुनिया मे संकीर्णता देखैत छथि।

प्रश्न 6344. जाति-पाति बेसी अछि — एहि टिप्पणीक आलोचनात्मक अर्थ की?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. साहित्यिक मूल्यांकन मे सामाजिक पक्षपात घुसल अछि।
उत्तर: घ. साहित्यिक मूल्यांकन मे सामाजिक पक्षपात घुसल अछि।
व्याख्या: ओ जाति-आधारित दृष्टि कैँ साहित्यक बाधा मानैत छथि।

प्रश्न 6345. लोक एक-दोसरकेँ छोट बुझैत अछि — ई की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. प्रतिस्पर्धा आ अहंकारक रोग।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. प्रतिस्पर्धा आ अहंकारक रोग।
व्याख्या: साहित्यिक संवाद सम्मानक बजाय अवमूल्यन बनि जाइत अछि।

प्रश्न 6346. रचनाक मूल भावना मे कमी आएल — अर्थ की?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. साहित्यिक सृजनक नैतिक-संवेदनात्मक धरातल कमजोर भेल।
उत्तर: घ. साहित्यिक सृजनक नैतिक-संवेदनात्मक धरातल कमजोर भेल।
व्याख्या: जीवकान्त रचना कैँ समूहवादसँ दबैत देखैत छथि।

प्रश्न 6347. लगुआ-भगुआमे फँसल लोक — कोन समस्या?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. अपने समूहक रचना-प्रशंसा आ पक्षपात।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. अपने समूहक रचना-प्रशंसा आ पक्षपात।
व्याख्या: ई स्वायत्त मूल्यांकनकेँ कमजोर करैत अछि।

प्रश्न 6348. सब अपनाकेँ पैघ बुझैत अछि — ई कोन मनोवृत्ति अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अहंकारी आत्म-महिमा।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. अहंकारी आत्म-महिमा।
व्याख्या: साहित्यिक समाजमे विनम्रता आ आत्मालोचनक कमी बताओल गेल।

प्रश्न 6349. काजक क्रेडिट लेल मारि रहल — अर्थ की?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. साहित्यिक श्रेय-लालसा।
उत्तर: घ. साहित्यिक श्रेय-लालसा।
व्याख्या: सृजन/सेवा सँ बेसी श्रेय-दावेदारी प्रमुख भऽ गेल।

प्रश्न 6350. एहि आलोचनाक सम्बन्ध समीक्षा-संकटसँ कोना अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. पक्षपात आ गुटबाजी तटस्थ समीक्षा रोकैत अछि।
उत्तर: घ. पक्षपात आ गुटबाजी तटस्थ समीक्षा रोकैत अछि।
व्याख्या: समालोचना नैतिक-सामाजिक रोग सँ प्रभावित अछि।

प्रश्न 6351. जीवकान्तक साहित्यिक नैतिकता कोन दिशा माँगैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. निष्पक्षता, गुण-पहिचान आ स्वार्थ-नियंत्रण।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. निष्पक्षता, गुण-पहिचान आ स्वार्थ-नियंत्रण।
व्याख्या: ओ साहित्यकेँ निजी दल-बन्दी सँ बचाबय चाहैत छथि।

प्रश्न 6352. एहि खण्डक कठोर भाषा किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ मैथिली साहित्यिक समाजक अंदरूनी रोग केँ बेपर्द करैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. ओ मैथिली साहित्यिक समाजक अंदरूनी रोग केँ बेपर्द करैत अछि।
व्याख्या: साक्षात्कार प्रशंसा नहि, आत्म-समालोचना बनैत अछि।

खण्ड ६४१ : विदेह-सदेह २ — अनुभव, प्रचार-प्रसार आ शिक्षा

प्रश्न 6353. जीवकान्त रचना मे अनुभवक भूमिका कोना बतबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. सभ लेखक अपन अनुभवकेँ पुनर्जीवित करैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सभ लेखक अपन अनुभवकेँ पुनर्जीवित करैत अछि।
व्याख्या: लेखन जीवन-अनुभवक पुनर्सर्जन अछि।

प्रश्न 6354. “लेखक शास्त्र बना दैत अछि” कथनक आशय की?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यक्तिगत अनुभव सँ व्यापक अर्थ/व्यवस्था बनबैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. व्यक्तिगत अनुभव सँ व्यापक अर्थ/व्यवस्था बनबैत अछि।
व्याख्या: लेखक अनुभवकेँ विचारक रूप देताह।

प्रश्न 6355. मैथिलीक प्रचार-प्रसार लेल शिक्षक स्तरक संबंध की बताओल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. शिक्षक स्तर बढ़त त प्रचार-प्रसार बढ़त।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. शिक्षक स्तर बढ़त त प्रचार-प्रसार बढ़त।
व्याख्या: भाषा-विकास शिक्षा-संरचना पर निर्भर मानल गेल।

प्रश्न 6356. मिथिलामे शिक्षकक कमी पर टिप्पणी की संकेत करैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. भाषा-विस्तारक शैक्षिक बाधा।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. भाषा-विस्तारक शैक्षिक बाधा।
व्याख्या: गुणी शिक्षक बिना भाषा-संस्कृति मजबूत नहि होइत।

प्रश्न 6357. स्त्री-शिक्षा संबंधी बात की अछि?
क. एखनो बेसी नहि अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. एखनो बेसी नहि अछि।
व्याख्या: जीवकान्त भाषा-विकास केँ महिला-शिक्षासँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 6358. साक्षरता आ आर्थिक स्थितिक संबंध कोना बताओल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. साक्षरता बढ़त त आर्थिक स्थिति नीक होएत।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. साक्षरता बढ़त त आर्थिक स्थिति नीक होएत।
व्याख्या: भाषा, शिक्षा आ अर्थनीतिक संबंध देखाओल गेल।

प्रश्न 6359. मैथिली इंटरनेट पर बढ़ि रहल अछि — ई कोन आधुनिक दिशा अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. डिजिटल माध्यम मैथिली प्रसारक नया आधार बनल।
उत्तर: घ. डिजिटल माध्यम मैथिली प्रसारक नया आधार बनल।
व्याख्या: जीवकान्त इंटरनेटक सम्भावना स्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 6360. गौरीनाथक काजबारे टिप्पणी की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. नीक काज कए रहल छथि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. नीक काज कए रहल छथि।
व्याख्या: हुनका आधुनिक मैथिली सक्रियता मे सकारात्मक रूपे देखल गेल।

प्रश्न 6361. स्वस्ति फाउंडेशनक उल्लेख कोन प्रवृत्ति देखबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. संस्थागत/सामुदायिक भाषा-काजक स्वीकृति।
उत्तर: घ. संस्थागत/सामुदायिक भाषा-काजक स्वीकृति।
व्याख्या: कोलकाताक संगठन सेहो मैथिली प्रसारमे मान्य बताओल गेल।

प्रश्न 6362. अनुभव, शिक्षा आ इंटरनेटक संगमक सार की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली विकास लेल जीवन-अनुभव, शिक्षण-सुधार आ डिजिटल सक्रियता तीनू आवश्यक।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मैथिली विकास लेल जीवन-अनुभव, शिक्षण-सुधार आ डिजिटल सक्रियता तीनू आवश्यक।
व्याख्या: जीवकान्त भाषा-प्रसारकेँ बहु-आधारी प्रक्रिया मानैत छथि।

खण्ड ६४२ : विदेह-सदेह २ — विद्रोह, मार्क्सवाद आ सामाजिक न्याय

प्रश्न 6363. जीवकान्त अपन रचनाकेँ विद्रोही किएक मानैत छथि?
क. अन्यायक खिलाफ आवाज उठबैत हुनकर मनोदशा अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. अन्यायक खिलाफ आवाज उठबैत हुनकर मनोदशा अछि।
व्याख्या: ओ लेखनकेँ कमजोर लोकक पक्षक प्रतिरोध मानैत छथि।

प्रश्न 6364. सरकार आ जनताक संबंध पर ओ की कहैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. जनताकेँ सुरक्षा आ सड़क चाही।
उत्तर: घ. जनताकेँ सुरक्षा आ सड़क चाही।
व्याख्या: राज्यक मूल उत्तरदायित्व लोक-सुविधा आ सुरक्षा अछि।

प्रश्न 6365. आजादी भेटल मुदा त्रुटि सेहो भेटल — अर्थ की?
क. राजनीतिक स्वतंत्रता संग सामाजिक समस्या समाप्त नहि भेल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. राजनीतिक स्वतंत्रता संग सामाजिक समस्या समाप्त नहि भेल।
व्याख्या: ओ स्वतंत्रता पछाति संरचनात्मक कमी देखैत छथि।

प्रश्न 6366. कमजोर लोकक संग दुर्व्यवहारक उल्लेख की सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. लेखन सामाजिक अन्यायसँ प्रेरित अछि।
उत्तर: घ. लेखन सामाजिक अन्यायसँ प्रेरित अछि।
व्याख्या: विद्रोही स्वर पीड़ित वर्गक अनुभव सँ उठैत अछि।

प्रश्न 6367. मार्क्सवादक पहिने सेहो गरीबी छल — ओ कोन उदाहरण दैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विद्यापति आ परंपरागत पद/श्लोकमे दरिद्रता-वर्णन।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. विद्यापति आ परंपरागत पद/श्लोकमे दरिद्रता-वर्णन।
व्याख्या: गरीबीक साहित्यिक चेतना मार्क्सवादसँ पुरान बताओल गेल।

प्रश्न 6368. “कखन हरब दुख मोर” संदर्भ कोन बात देखबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. भक्ति/काव्य परंपरामे दुख-दरिद्रताक स्वर।
उत्तर: घ. भक्ति/काव्य परंपरामे दुख-दरिद्रताक स्वर।
व्याख्या: गरीबी केवल आधुनिक राजनीतिक शब्द नहि।

प्रश्न 6369. जीवकान्त स्वयंकेँ कोन विचारधारा सभसँ प्रभावित मानैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मार्क्सवाद आ लोहिया दुनूसँ।
उत्तर: घ. मार्क्सवाद आ लोहिया दुनूसँ।
व्याख्या: ओ बराबरी-समानताक विचार प्रमुख मानैत छथि।

प्रश्न 6370. मार्क्सवादबारे हुनकर आलोचनात्मक टिप्पणी की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. उत्तम विचार, मुदा हिंसाक पक्षमे बेसी।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. उत्तम विचार, मुदा हिंसाक पक्षमे बेसी।
व्याख्या: ओ विचारक मूल्य मानैत, पर हिंसात्मक पक्षसँ असहज छथि।

प्रश्न 6371. भारतीय संस्कृतिबारे ओ कोन सूत्र दैत छथि?
क. “सर्वे भवन्तु सुखिनः” पर आधारित।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. “सर्वे भवन्तु सुखिनः” पर आधारित।
व्याख्या: ओ भारतीय संदर्भमे गांधी/समाजवादक प्रासंगिकता जोड़ैत छथि।

प्रश्न 6372. एहि खण्डक वैचारिक सार की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखन अन्याय-विरोधी अछि, पर विचारधारा कैँ भारतीय-सामाजिक संदर्भमे परखैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. लेखन अन्याय-विरोधी अछि, पर विचारधारा कैँ भारतीय-सामाजिक संदर्भमे परखैत अछि।
व्याख्या: जीवकान्त प्रतिरोध, समानता आ अहिंसक सामाजिक दृष्टिक संतुलन राखैत छथि।

खण्ड ६४३ : विदेह-सदेह २ — सुमन, परिवर्तनशील कविता आ समाज

प्रश्न 6373. “सुमन” जी पर लिखल प्रशंसा जीवकान्त लेल किएक विवाद बनल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मार्क्सवादी छवि बावजूद आध्यात्मिक-सांस्कृतिक काव्यक प्रशंसा केलथि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मार्क्सवादी छवि बावजूद आध्यात्मिक-सांस्कृतिक काव्यक प्रशंसा केलथि।
व्याख्या: ओ विचारधारा सँ परे साहित्यिक मूल्य मानैत छथि।

प्रश्न 6374. सुमन जीक लेखनबारे जीवकान्त की मानैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. अध्यात्म पर हुनकर लेखन अद्भुत आ काव्य उत्कृष्टता तक पहुँचेनिहार।
उत्तर: घ. अध्यात्म पर हुनकर लेखन अद्भुत आ काव्य उत्कृष्टता तक पहुँचेनिहार।
व्याख्या: ओ आध्यात्मिक-सांस्कृतिक योगदानक सम्मान करैत छथि।

प्रश्न 6375. “हम वेद-पुराण कैँ बिसरि जाइ” कथनक आशय की?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मार्क्सवादी होएबाक अर्थ सांस्कृतिक परंपरा त्याग नहि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मार्क्सवादी होएबाक अर्थ सांस्कृतिक परंपरा त्याग नहि।
व्याख्या: जीवकान्त विचार आ परंपराक संतुलन चाहैत छथि।

प्रश्न 6376. कवितामे परिवर्तनबारे जीवकान्तक मुख्य विचार की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. हर क्षेत्रमे परिवर्तन आवश्यक, परिवर्तन समर्थक कालजयी।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. हर क्षेत्रमे परिवर्तन आवश्यक, परिवर्तन समर्थक कालजयी।
व्याख्या: कविता समय-सापेक्ष बदलैत रहैत अछि।

प्रश्न 6377. ओ अपने विषय परिवर्तन कोना बतबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. पाँच साल बाद विषय बदलैत गेलहुँ।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. पाँच साल बाद विषय बदलैत गेलहुँ।
व्याख्या: स्वयंकेँ जीवित रखबाक कारण विषय-विस्तार मानैत छथि।

प्रश्न 6378. असहमतिक कविता कोन क्षेत्रसँ आएल बताओल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. पंजाब आ बंगालसँ।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. पंजाब आ बंगालसँ।
व्याख्या: ओ क्षेत्रीय साहित्यिक आंदोलनो केँ याद करैत छथि।

प्रश्न 6379. सुभाष मुखोपाध्यायक उदाहरण किएक देल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. कृष्णक कुरुक्षेत्र छोड़ि बाँसुरी बजाबक आह्वानक रूपमे।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. कृष्णक कुरुक्षेत्र छोड़ि बाँसुरी बजाबक आह्वानक रूपमे।
व्याख्या: राजनीतिक/युद्ध-प्रसंगसँ मानवता/संगीत दिस लौटबाक काव्य संकेत अछि।

प्रश्न 6380. विद्यापति पर टिप्पणी मे कोन विषय-द्वय बताओल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. शृंगार आ भक्ति।
ग. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. शृंगार आ भक्ति।
व्याख्या: परंपरागत कविता विषय-विविधता सँ भरल अछि।

प्रश्न 6381. राजनीतिपर कविता लिखब पर जीवकान्तक दृष्टि की?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ओकरा बेवकूफी कहैत छथि, मुदा आदमी-मित्रता-सुख-दुख स्थायी विषय मानैत।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. ओकरा बेवकूफी कहैत छथि, मुदा आदमी-मित्रता-सुख-दुख स्थायी विषय मानैत।
व्याख्या: ओ क्षणिक राजनीति सँ बेसी मानवीय अनुभवक पक्षमे छथि।

प्रश्न 6382. बालकक छठियारक उदाहरण काव्य-परिवर्तन बुझेबामे की करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. जन्मक बाद निरंतर बदलैत जीवन जकाँ कविता बदलैत रहैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. जन्मक बाद निरंतर बदलैत जीवन जकाँ कविता बदलैत रहैत अछि।
व्याख्या: रूपक परिवर्तनकेँ स्वाभाविक जीवन-प्रक्रिया बनबैत अछि।

खण्ड ६४४ : विदेह-सदेह २ — चेला-विवाद, समीक्षा-विवाद आ साहित्यिक ईमानदारी

प्रश्न 6383. “चेला” बनाबैक आरोप पर जीवकान्तक मूल उत्तर की अछि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. शिक्षक रहलहुँ, प्रभाव छोड़ब स्वाभाविक; कमांडो वा दलाल नहि बनेने छी।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. शिक्षक रहलहुँ, प्रभाव छोड़ब स्वाभाविक; कमांडो वा दलाल नहि बनेने छी।

व्याख्या: ओ प्रभाव आ गुट-निर्माण बीच भेद करैत छथि।

प्रश्न 6384. कुणाल, प्रदीप बिहारी आदि नामक उल्लेख की बतबैत अछि?

क. हुनकर लेखन/शिक्षकत्वसँ प्रभावित रचनाकर्मी सभ।

ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. हुनकर लेखन/शिक्षकत्वसँ प्रभावित रचनाकर्मी सभ।

व्याख्या: प्रभाव साहित्यिक उत्तराधिकार रूपमे देखल गेल।

प्रश्न 6385. तारानंद वियोगीक कथन किएक महत्त्वपूर्ण?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. मिथिला मिहिरमे जीवकान्तक कविता पढ़ि लेखनधारा संग जुड़ल प्रेरणा।

उत्तर: घ. मिथिला मिहिरमे जीवकान्तक कविता पढ़ि लेखनधारा संग जुड़ल प्रेरणा।

व्याख्या: ई पाठकीय प्रेरणा कें सर्जनात्मक परिणाम बनबैत अछि।

प्रश्न 6386. जीवकान्त स्वयं केकर चेला होएबाक बात कहैत छथि?

क. यात्रीजी आ विद्यापतिक।

ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. यात्रीजी आ विद्यापतिक।

व्याख्या: ओ परंपरा स्वीकार करैत छथि, दास्य-गुट नहि।

प्रश्न 6387. विवेकानन्द ठाकुरक कविता-संग्रह समीक्षा-विवादमे मुख्य आपत्ति की छल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. एक समीक्षा सभटा समकालीन सम्भावना खारिज करैत छल।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. एक समीक्षा सभटा समकालीन सम्भावना खारिज करैत छल।

व्याख्या: जीवकान्त एकरेखीय खारिजीक विरोध करैत छथि।

प्रश्न 6388. मोहन भारद्वाजक समीक्षा पर जीवकान्तक प्रतिक्रिया की भेल?

क. गौरीनाथकेँ पत्र पठेलथि आ कॉपी आन लोककेँ पठेलथि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. गौरीनाथकेँ पत्र पठेलथि आ कॉपी आन लोककेँ पठेलथि।

व्याख्या: ओ निजी असहमति कें पत्र-आधारित सार्वजनिक आलोचना बनबैत छथि।

प्रश्न 6389. “गदगदी समीक्षा” प्रसंगमे जीवकान्तक कठोर टिप्पणी की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. समीक्षक दारू, पैसा, मूर्खता पी कऽ विषवमन करैत अछि।
उत्तर: घ. समीक्षक दारू, पैसा, मूर्खता पी कऽ विषवमन करैत अछि।
व्याख्या: शीर्षकात्मक कथन समीक्षा-नैतिकता पर तीख हमला अछि।

प्रश्न 6390. स्वयं-अनूदित पुस्तक पर पुरस्कारबारे प्रश्न पर ओ कोना बचैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मुद्दा पर किछु नहि कहबाक, लेखक स्वयं कारण जनैत हेताह।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मुद्दा पर किछु नहि कहबाक, लेखक स्वयं कारण जनैत हेताह।
व्याख्या: ओ कतिपय विवादमे सीमित प्रतिक्रिया दैत छथि।

प्रश्न 6391. लेखनमे ईमानदारीबारे जीवकान्त की कहैत छथि?
क. लोककेँ सभ ठाम ईमानदार हेबाक चाही।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. लोककेँ सभ ठाम ईमानदार हेबाक चाही।
व्याख्या: साहित्यिक नैतिकता जीवन-नैतिकतासँ अलग नहि।

प्रश्न 6392. राजकमल चौधरीक उदाहरण किएक देल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. समाजक सत्य लिखलाक कारण बदनाम भेल लेखकक रूपमे।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. समाजक सत्य लिखलाक कारण बदनाम भेल लेखकक रूपमे।
व्याख्या: जीवकान्त सत्य-लेखनक सामाजिक जोखिम देखबैत छथि।

खण्ड ६४५ : विदेह-सदेह २ — राजमोहन झा साक्षात्कार: साहित्यकार आ जनसमाज

प्रश्न 6393. गजेन्द्र ठाकुरक पहिल प्रश्नमे मैथिली साहित्यकार सभपर मुख्य आरोप की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. साहित्य जनसामान्यसँ दूर भऽ प्रदर्शनक वस्तु बनि गेल।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. साहित्य जनसामान्यसँ दूर भऽ प्रदर्शनक वस्तु बनि गेल।
व्याख्या: प्रश्न साहित्य आ समाजक दूरी केँ बहसक केन्द्र बनबैत अछि।

प्रश्न 6394. राजमोहन झा साहित्यकारकेँ दोष देबाक प्रश्नपर कोना प्रतिक्रिया दैत छथि?
क. ओ पूछैत छथि जे एहि लेल साहित्यकारकेँ दोषी कोना कहल जा सकैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. ओ पूछैत छथि जे एहि लेल साहित्यकारकेँ दोषी कोना कहल जा सकैत अछि।
व्याख्या: हुनकर उत्तर आरोपक सीधा स्वीकार नहि, प्रत्युत्तरक रूपमे अछि।

प्रश्न 6395. गजेन्द्रक अनुसार साहित्यकार सभक कार्यक्षेत्र कोना सीमित भेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. गोष्ठी, कवि सम्मेलन आ अपन लेखन धरि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. गोष्ठी, कवि सम्मेलन आ अपन लेखन धरि।
व्याख्या: प्रश्नमे समाज-राजनीति सँ दूर रहबाक शिकायत अछि।

प्रश्न 6396. “फैशन जेकाँ साहित्य” कथनक आशय की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. साहित्य जीवित सामाजिक सरोकारक बजाय प्रदर्शनात्मक व्यवहार बनल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. साहित्य जीवित सामाजिक सरोकारक बजाय प्रदर्शनात्मक व्यवहार बनल।
व्याख्या: ई कथन साहित्यक सामाजिक उपयोगिता पर प्रश्न करैत अछि।

प्रश्न 6397. राजमोहन पहिनुका साहित्यकारसभबारे की भेद बतबैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. पहिनुका साहित्यकार एना नहि करैत छलाह।
उत्तर: घ. पहिनुका साहित्यकार एना नहि करैत छलाह।
व्याख्या: ओ वर्तमान आ पूर्व पीढ़ी बीच अंतर राखैत छथि।

प्रश्न 6398. साक्षात्कारक आरम्भ मैथिली साहित्यक कोन संकटकेँ सामने आनैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. पाठक-वर्ग आ जनसमाजसँ विच्छेद।
उत्तर: घ. पाठक-वर्ग आ जनसमाजसँ विच्छेद।
व्याख्या: पहिल प्रश्नसभ साहित्यक लोकाधार पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 6399. राजमोहनक उत्तरमे रक्षात्मकता किएक देखाइत अछि?
क. ओ दोषक सामान्यीकरण पर प्रश्न उठबैत छथि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. ओ दोषक सामान्यीकरण पर प्रश्न उठबैत छथि।
व्याख्या: हुनका लेल पूरा दोष साहित्यकार पर राखब सरलीकरण अछि।

प्रश्न 6400. गजेन्द्रक आलोचना कोन तरहक साहित्य-दृष्टि माँगैत अछि?
क. समाज आ राजनीति सँ संवाद रखनिहार साहित्य।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. समाज आ राजनीति सँ संवाद रखनिहार साहित्य।
व्याख्या: प्रश्न साहित्यकेँ लोकजीवनसँ जुड़ल देखए चाहैत अछि।

प्रश्न 6401. एहि संवादमे “गाम-घर छोड़ि देब” की प्रतीक बनैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. जनजीवनसँ साहित्यिक दूरीक।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. जनजीवनसँ साहित्यिक दूरीक।
व्याख्या: गामक अभाव साहित्यक लोक-सम्पर्क टूटबाक संकेत अछि।

प्रश्न 6402. खण्डक मुख्य वैचारिक टकराव की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. साहित्यकारक दोष बनाम व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थिति।
उत्तर: घ. साहित्यकारक दोष बनाम व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थिति।
व्याख्या: दुनू पक्ष साहित्यक जनाधारबारे अलग ढंगसँ सोचैत अछि।

खण्ड ६४६ : विदेह-सदेह २ — हरिमोहन झा, लोकप्रियता आ पाठक-वर्ग

प्रश्न 6403. गजेन्द्रक अनुसार गाममे कोन साहित्यकारक रचना विशेष रूपे परिचित रहल?
क. हरिमोहन झा।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. हरिमोहन झा।
व्याख्या: प्रश्नमे गामक पाठकीय स्मृति हरिमोहन झा धरि सीमित कहल गेल अछि।

प्रश्न 6404. मिथिला मिहिरक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पत्रिका गाम-गाम जाइत छल आ साहित्यक पहुँच बनबैत छल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. पत्रिका गाम-गाम जाइत छल आ साहित्यक पहुँच बनबैत छल।
व्याख्या: मिथिला मिहिर पाठक-वर्गक निर्माणक माध्यम रूपमे स्मरित अछि।

प्रश्न 6405. राजमोहन हरिमोहन झाक लोकप्रियता कैँ कोना देखैत छथि?
क. ओकरा एकटा रहस्य जेकाँ मानैत छथि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. ओकरा एकटा रहस्य जेकाँ मानैत छथि।
व्याख्या: ओ तैयार समाधान नहि देथि, समस्या खुला राखैत छथि।

प्रश्न 6406. हरिमोहन झाक साहित्य पर कोन आलोचना राजमोहन याद करैत छथि?
क. ओ सम्पूर्ण समाज नहि, एक विशेष वर्ग कैँ चित्रित करैत छथि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. ओ सम्पूर्ण समाज नहि, एक विशेष वर्ग कैँ चित्रित करैत छथि।
व्याख्या: लोकप्रियताक साथ वर्गीय सीमा सेहो चिन्हित अछि।

प्रश्न 6407. दलित समाजक संदर्भमे राजमोहनक टिप्पणी की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. हरिमोहनक साहित्यसँ दलित समाज लगभग वंचित रहल।
उत्तर: घ. हरिमोहनक साहित्यसँ दलित समाज लगभग वंचित रहल।
व्याख्या: ई लोकप्रिय साहित्यक सामाजिक सीमा बतबैत अछि।

प्रश्न 6408. तकर बावजूद हरिमोहन झाक लोकप्रियता किएक जटिल प्रश्न बनैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. सीमा रहितहुँ पाठक-वर्ग निर्माणमे हुनकर असर असाधारण रहल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सीमा रहितहुँ पाठक-वर्ग निर्माणमे हुनकर असर असाधारण रहल।
व्याख्या: लोकप्रियता आ प्रतिनिधित्व एकहि चीज नहि।

प्रश्न 6409. राजमोहनक अनुसार पाठक-वर्ग बनबाक संबंध केकर साहित्यसँ जोड़ल गेल?
क. हरिमोहन झाक साहित्यसँ।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. हरिमोहन झाक साहित्यसँ।
व्याख्या: हुनकर साहित्य पाठकीय अस्तित्व गढ़बाक स्रोत मानल गेल।

प्रश्न 6410. “रेडीमेड सोल्युशन नहि” कथनक अर्थ की?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. लोकप्रियता बुझबाक सरल सूत्र नहि भेटल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. लोकप्रियता बुझबाक सरल सूत्र नहि भेटल।
व्याख्या: राजमोहन साहित्यिक प्रभावक जटिलता स्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 6411. हरिमोहन प्रसंग मैथिली साहित्यक कोन प्रश्न खोलैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. केना साहित्य लोकधरि पहुँचैत अछि आ पाठक बनबैत अछि।
उत्तर: घ. केना साहित्य लोकधरि पहुँचैत अछि आ पाठक बनबैत अछि।
व्याख्या: सवाल केवल लेखक-प्रशंसा नहि, पाठकीय संरचना पर अछि।

प्रश्न 6412. हरिमोहन झा प्रसंगक सार की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. लोकप्रियता, सामाजिक सीमा आ पाठक-निर्माण एकसंग विचार योग्य अछि।
उत्तर: घ. लोकप्रियता, सामाजिक सीमा आ पाठक-निर्माण एकसंग विचार योग्य अछि।
व्याख्या: हरिमोहन झाक उदाहरण मैथिली साहित्यक जन-सम्बंधक कसौटी बनैत अछि।

खण्ड ६४७ : विदेह-सदेह २ — साहित्यक उद्देश्य, मनोरंजन आ पाठकीय स्तर

प्रश्न 6413. गजेन्द्र साहित्यक उद्देश्यबारे कोन द्वन्द्व उठबैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. साहित्य उद्देश्यपूर्ण हो वा मात्र मनोरंजनक लेल।
उत्तर: घ. साहित्य उद्देश्यपूर्ण हो वा मात्र मनोरंजनक लेल।
व्याख्या: प्रश्न साहित्यक उपयोगिता आ आनंदक सम्बन्ध पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 6414. राजमोहन मनोरंजनक भूमिका कोना मानैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मनोरंजन रहबाक चाही, नहि तँ क्यो नहि पढ़त।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मनोरंजन रहबाक चाही, नहि तँ क्यो नहि पढ़त।
व्याख्या: ओ पाठक आकर्षणक आवश्यक शर्त मानैत छथि।

प्रश्न 6415. राजमोहनक अनुसार साहित्यक अंतिम उद्देश्य की नहि होएबाक चाही?
क. मात्र मनोरंजन।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मात्र मनोरंजन।
व्याख्या: मनोरंजन जरूरी अछि, मुदा अन्तिम लक्ष्य नहि।

प्रश्न 6416. “विभिन्न स्तरक लोक” कथनक साहित्यिक अर्थ की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. अलग पाठक-वर्गक अलग आवश्यकता होइत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. अलग पाठक-वर्गक अलग आवश्यकता होइत अछि।
व्याख्या: राजमोहन साहित्यक बहुस्तरीयता मानैत छथि।

प्रश्न 6417. साहित्यक उद्देश्य पर राजमोहनक संतुलन की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. रुचिकरता संग उद्देश्यपूर्णता।
उत्तर: घ. रुचिकरता संग उद्देश्यपूर्णता।
व्याख्या: ओ नीरस उपदेश आ खाली मनोरंजन दुनूसँ आगू सोचैत छथि।

प्रश्न 6418. मनोरंजनकेँ पूर्णतः खारिज नहि करबाक कारण की?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. पठनक आरम्भिक आकर्षण ताहिसँ बनैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. पठनक आरम्भिक आकर्षण ताहिसँ बनैत अछि।
व्याख्या: पाठक नहुँ होए त साहित्यक सामाजिक असर घटैत अछि।

प्रश्न 6419. एहि उत्तरमे साहित्यकारक दायित्व कोना परिभाषित अछि?
क. पाठकक आवश्यकता अनुसार अर्थपूर्ण सामग्री देब।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. पाठकक आवश्यकता अनुसार अर्थपूर्ण सामग्री देब।
व्याख्या: साहित्य समाजक विविध स्तरक संवाद बनैत अछि।

प्रश्न 6420. “सेल्फ एनेलाइज” प्रकारक संकेत की बतबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. साहित्यकारकेँ अपन लक्ष्य आत्मपरीक्षणसँ ठहरएबाक चाही।
उत्तर: घ. साहित्यकारकेँ अपन लक्ष्य आत्मपरीक्षणसँ ठहरएबाक चाही।
व्याख्या: राजमोहन निर्णायक आदेश नहि, विवेकपूर्ण जाँच सुझबैत छथि।

प्रश्न 6421. साहित्यक उद्देश्य-विवाद मैथिली जनाधारसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मनोरंजन बिना पाठक नहि, उद्देश्य बिना सामाजिक सार नहि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मनोरंजन बिना पाठक नहि, उद्देश्य बिना सामाजिक सार नहि।
व्याख्या: दुनू तत्त्वक संतुलन जनपाठक तैयार करैत अछि।

प्रश्न 6422. एहि खण्डक निष्कर्ष की?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. साहित्य आनंददायी सेहो हो, आ समाजक जरूरतक पूर्ति सेहो करए।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. साहित्य आनंददायी सेहो हो, आ समाजक जरूरतक पूर्ति सेहो करए।
व्याख्या: राजमोहनक दृष्टि संतुलित आ पाठक-सचेत अछि।

खण्ड ६४८ : विदेह-सदेह २ — माइग्रेशन, भाषा-प्रेम आ भारत-नेपाल स्थिति

प्रश्न 6423. गजेन्द्र माइग्रेशनक प्रभाव मैथिली पर कोना देखैत छथि?
क. बाहर जाइत पीढ़ी अंग्रेजी वा हिन्दी दिस झुकैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. बाहर जाइत पीढ़ी अंग्रेजी वा हिन्दी दिस झुकैत अछि।
व्याख्या: प्रश्न भाषिक विस्थापनक संकट उठबैत अछि।

प्रश्न 6424. राजमोहन भाषा-प्रेमबारे मुख्य बात की कहैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. लोकमे भाषा-प्रेम घटल अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. लोकमे भाषा-प्रेम घटल अछि।
व्याख्या: ओ संकटक मूल मनोवैज्ञानिक-सामुदायिक पक्षमे देखैत छथि।

प्रश्न 6425. “लोक मैथिली छोड़ि रहल अछि” कथन कोन चिन्ता देखबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. स्वभाषा-त्यागक।
उत्तर: घ. स्वभाषा-त्यागक।
व्याख्या: भाषाक भविष्य बोलनिहार समुदायसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6426. भारतक मैथिली प्रदेशबारे राजमोहनक आकलन की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. स्थिति खराप अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. स्थिति खराप अछि।
व्याख्या: ओ भारतमे मैथिलीप्रति समर्पण घटल मानैत छथि।

प्रश्न 6427. नेपालमे हिन्दी-विरोधक कारण मैथिली लाभान्वित भेल — ई विचार के द्वारा उठाओल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।
व्याख्या: प्रश्न भारत-नेपालक भिन्न भाषिक राजनीति देखबैत अछि।

प्रश्न 6428. राजमोहन “पहिलुका समर्पण”बारे की कहैत छथि?
क. पहिनुका लोक जेकाँ समर्पण आब नहि अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. पहिनुका लोक जेकाँ समर्पण आब नहि अछि।
व्याख्या: ओ पीढ़ीगत परिवर्तनकेँ भाषा-संकटसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 6429. माइग्रेशनक प्रसंग भाषाक कोन सामाजिक आधारक खतरा देखबैत अछि?
क. घर-गामक निरन्तर बोलचाल आ पीढ़ीगत हस्तांतरण।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. घर-गामक निरन्तर बोलचाल आ पीढ़ीगत हस्तांतरण।
व्याख्या: विस्थापन भाषा-उपयोगक स्थिरता तोड़ि सकैत अछि।

प्रश्न 6430. नेपाल-भारत तुलना सँ कोन निष्कर्ष निकलैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. भाषा-राजनीति अलग-अलग भूभागमे अलग परिणाम देत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. भाषा-राजनीति अलग-अलग भूभागमे अलग परिणाम देत अछि।
व्याख्या: एहि संवादमे मैथिली एकरूप परिस्थिति नहि, बहु-क्षेत्रीय भाषा अछि।

प्रश्न 6431. भाषा-प्रेम घटबाक अर्थ केवल भाषिक नहि किएक?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई सांस्कृतिक आत्मीयता आ सामुदायिक जिम्मेदारीक क्षय सेहो अछि।
उत्तर: घ. ई सांस्कृतिक आत्मीयता आ सामुदायिक जिम्मेदारीक क्षय सेहो अछि।
व्याख्या: भाषा अपन समुदायिक सम्मानसँ जीवित रहैत अछि।

प्रश्न 6432. एहि खण्डक मूल चिंता की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. मैथिली बोलनिहार समाजक स्वभाषा प्रति ढील आ विस्थापन।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मैथिली बोलनिहार समाजक स्वभाषा प्रति ढील आ विस्थापन।
व्याख्या: साक्षात्कार भाषाक भविष्यकेँ सामाजिक व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ६४९ : विदेह-सदेह २ — पुरस्कार-विवाद, अनुवाद आ जूरी-प्रश्न

प्रश्न 6433. बबुआजी झा “अज्ञात”क पुरस्कार प्रसंगमे राजमोहन अपना ऊपर लग आरोप कैँ कोना स्पष्ट करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ओ कहैत छथि जे स्वयं विरोध नहि कएने छलाह, दिल्लीमे आन लोक कएने छल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. ओ कहैत छथि जे स्वयं विरोध नहि कएने छलाह, दिल्लीमे आन लोक कएने छल।
व्याख्या: राजमोहन व्यक्तिगत भूमिका आ सामूहिक विरोध बीच भेद करैत छथि।

प्रश्न 6434. “आरम्भ” पत्रिका प्रसंगमे राजमोहन की कहैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. आरम्भ बन्द नहि, स्थगित अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. आरम्भ बन्द नहि, स्थगित अछि।
व्याख्या: ई पत्रिका-जीवनक अस्थायी ठहरावक रूपमे कहल गेल।

प्रश्न 6435. अनुवाद पुरस्कारबारे गजेन्द्रक मुख्य आपत्ति की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. जूरी सभ कृति देखैत/पढ़ैत नहि, ताहिसँ चयन असंगत होइत अछि।
उत्तर: घ. जूरी सभ कृति देखैत/पढ़ैत नहि, ताहिसँ चयन असंगत होइत अछि।
व्याख्या: प्रश्न चयन-प्रक्रियाक अध्ययनहीनता पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 6436. राजमोहन सोझे अनुवादक योग्यताबारे की कहैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. सोझे अनुवाद कएल पोथी पुरस्कारक पात्र अछि।
उत्तर: घ. सोझे अनुवाद कएल पोथी पुरस्कारक पात्र अछि।
व्याख्या: ओ मूल भाषासँ अनुवाद कैँ मान्यता योग्य मानैत छथि।

प्रश्न 6437. जूरीमे पुरान लोक रहबाक प्रश्न कोन समस्या उठबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. पुरस्कार-निर्णयमे गुट, पुरान दावेदारी आ पठन-अभावक आशंका।
उत्तर: घ. पुरस्कार-निर्णयमे गुट, पुरान दावेदारी आ पठन-अभावक आशंका।
व्याख्या: गजेन्द्र चयन-व्यवस्था पर व्यापक प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 6438. राजमोहनक अनुसार आइ-काल्हिक साहित्यकारमे की बढ़ल अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. गुटबन्दी।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. गुटबन्दी।
व्याख्या: ओ वर्तमान साहित्यिक वातावरणमे समूहबद्धता बढ़ल मानैत छथि।

प्रश्न 6439. अकादमी पुरस्कार-विवादक मूलभूत प्रश्न की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. साहित्यिक न्याय, पठन-संस्कृति आ चयन-नैतिकता।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. साहित्यिक न्याय, पठन-संस्कृति आ चयन-नैतिकता।
व्याख्या: विवाद व्यक्ति-विशेषक नहि, व्यवस्था-प्रश्नक रूपमे उठैत अछि।

प्रश्न 6440. अनुवाद-सन्दर्भ मैथिली साहित्य लेल किएक जरूरी बनैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. अन्य भाषिक साहित्य संग सम्बन्ध आ तुलना लेल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. अन्य भाषिक साहित्य संग सम्बन्ध आ तुलना लेल।
व्याख्या: अनुवाद पाठक-संसार विस्तारक माध्यम अछि।

प्रश्न 6441. “लोक परवाह नहि करैत छथि” कथन कोन निराशा देखबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. विरोध होइत रहैत अछि, मुदा असर सीमित रहैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. विरोध होइत रहैत अछि, मुदा असर सीमित रहैत अछि।
व्याख्या: राजमोहन साहित्यिक प्रतिरोधक प्रभावहीनता महसूस करैत छथि।

प्रश्न 6442. एहि खण्डक निचोड़ की?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. पुरस्कारक मूल्य पढ़ल-समझल चयन, अनुवाद-मान्यता आ गुटविहीनता पर निर्भर अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. पुरस्कारक मूल्य पढ़ल-समझल चयन, अनुवाद-मान्यता आ गुटविहीनता पर निर्भर अछि।
व्याख्या: संवाद साहित्यिक संस्थाक जवाबदेही मांगैत अछि।

खण्ड ६५० : विदेह-सदेह २ — आत्ममुग्धता, तुलनात्मक दृष्टि आ अनुवादक जरूरत

प्रश्न 6443. गजेन्द्र फ्रेंच नोबेल-प्रसंगक माध्यमे कोन प्रश्न उठबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. आत्ममुग्धता आ अनुवाद-अभाव साहित्यकेँ पाछू करैत अछि कि नहि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. आत्ममुग्धता आ अनुवाद-अभाव साहित्यकेँ पाछू करैत अछि कि नहि।
व्याख्या: विश्व-साहित्यक उदाहरण मैथिली पर लागू कएल गेल।

प्रश्न 6444. राजमोहन अनुवादक आवश्यकता कोना बतबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. अनुवाद बहुत जरूरी अछि, तखने तुलना सम्भव।
उत्तर: घ. अनुवाद बहुत जरूरी अछि, तखने तुलना सम्भव।
व्याख्या: ओ अनुवादकेँ तुलनात्मक साहित्यक आधार मानैत छथि।

प्रश्न 6445. “जीवनानुभवसँ लोक लिखैत अछि” कथन अनुवादसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. अनुवाद अनुभवकेँ व्यापक पाठकीय विस्तार दैत अछि।
उत्तर: घ. अनुवाद अनुभवकेँ व्यापक पाठकीय विस्तार दैत अछि।
व्याख्या: स्थानीय जीवनानुभव अनुवादेँ अन्य संसार धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 6446. आत्ममुग्धता मैथिली साहित्य लेल कोन खतरा बना सकैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. अन्य भाषासँ संवाद घटि जाएब।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. अन्य भाषासँ संवाद घटि जाएब।
व्याख्या: स्व-संतोष साहित्यिक विकास रोकि सकैत अछि।

प्रश्न 6447. तुलनात्मक अध्ययन लेल अनुवाद किएक जरूरी अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. भाषा-भाषा बीच मूल्यांकन आ अनुभव-साझाक लेल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. भाषा-भाषा बीच मूल्यांकन आ अनुभव-साझाक लेल।
व्याख्या: तुलना बिना साहित्य अपन सीमाक बोध नहि पबैत।

प्रश्न 6448. एहि उत्तरमे राजमोहनक विश्व-दृष्टि की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मैथिलीकेँ अन्य भाषिक अनुभवसँ जोड़बाक।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीकेँ अन्य भाषिक अनुभवसँ जोड़बाक।
व्याख्या: ओ भाषा-साहित्यकेँ बंद खाँचा नहि मानैत।

प्रश्न 6449. अनुवाद रचनाकेँ की प्रदान करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आर विस्तार।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. आर विस्तार।
व्याख्या: राजमोहन स्पष्ट कहैत छथि जे अनुवाद अनुभवक विस्तार करैत अछि।

प्रश्न 6450. नोबेल-प्रसंग मैथिली आलोचनामे की जोड़ैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. स्थानीय प्रश्नकेँ वैश्विक साहित्यिक विमर्शसँ जोड़ैत अछि।
उत्तर: घ. स्थानीय प्रश्नकेँ वैश्विक साहित्यिक विमर्शसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: एहि संवादमे मैथिली विश्व-साहित्यक संदर्भमे सोचल जा रहल अछि।

प्रश्न 6451. आत्ममुग्धता आ पुरस्कार-विवाद बीच अप्रत्यक्ष सम्बन्ध की अछि?
क. बंद समूह-संस्कृति बाहरी मूल्यांकन आ पठनसँ दूरी बनबैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. बंद समूह-संस्कृति बाहरी मूल्यांकन आ पठनसँ दूरी बनबैत अछि।
व्याख्या: दुनू प्रश्न साहित्यिक खुलापनसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6452. अनुवाद-तुलना प्रसंगक सार की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. मैथिली साहित्यक विकास लेल अनुवाद, तुलना आ आत्मालोचन जरूरी अछि।
उत्तर: घ. मैथिली साहित्यक विकास लेल अनुवाद, तुलना आ आत्मालोचन जरूरी अछि।
व्याख्या: राजमोहनक दृष्टि संवादपरक साहित्यिक संस्कृति दिस अछि।

खण्ड ६५१ : विदेह-सदेह २ — रामरंगजी: संगीत-साधना आ मैथिली राग

प्रश्न 6453. रामाश्रय झा “रामरंग”क परिचय स्रोतमे कोना देल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. विद्वान, वाग्गेयकार, शिक्षक आ मंच-सम्पादक।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. विद्वान, वाग्गेयकार, शिक्षक आ मंच-सम्पादक।
व्याख्या: परिचय हुनकर बहुआयामी संगीत-व्यक्तित्व देखबैत अछि।

प्रश्न 6454. गजेन्द्रक स्वास्थ्य-प्रश्न पर रामरंगजी की उत्तर दैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ८० बरख पार केलहुँ, संगीतमे बहटल रहैत छी।
उत्तर: घ. ८० बरख पार केलहुँ, संगीतमे बहटल रहैत छी।
व्याख्या: उत्तर उम्रक बावजूद संगीत-निष्ठा देखबैत अछि।

प्रश्न 6455. रामरंगजी अपन मिथिलासँ सम्बन्धित कतेक रागक रचना बतबैत छथि?
क. तीन राग।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. तीन राग।
व्याख्या: मुख्य राग-रचना मिथिला-सम्बद्ध बताओल गेल।

प्रश्न 6456. तीनू मिथिला-सम्बद्ध रागक नाम की?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव।
उत्तर: घ. तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव।
व्याख्या: ई नाम मिथिला-सांस्कृतिक धुरी पर निर्मित अछि।

प्रश्न 6457. तीरभुक्ति आ विद्यापति कल्याणमे कोन भाषा-संबंधी विशेषता अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. मैथिली भाषामे खयाल बनल अछि।
उत्तर: घ. मैथिली भाषामे खयाल बनल अछि।
व्याख्या: राग-रचना सीधे मैथिली गीत-साहित्यसँ जुड़ैत अछि।

प्रश्न 6458. संगीत रामायणक बालकाण्डमे कोन रागसभमे मैथिली खयाल अछि?
क. भूपाली आ बिलावल।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. भूपाली आ बिलावल।
व्याख्या: रामरंगजी अपन धार्मिक-संगीतक मैथिली रूप बतबैत छथि।

प्रश्न 6459. बिलावलमे श्री गणेशक वन्दना आ भूपालीमे शंकर वन्दना उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मैथिली संगीत-साधनाक शास्त्रीय-भक्ति आयाम देखबैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मैथिली संगीत-साधनाक शास्त्रीय-भक्ति आयाम देखबैत अछि।
व्याख्या: राग, देव-वन्दना आ भाषा एकसंग अछि।

प्रश्न 6460. राग तीरभुक्तिमे कोन विषयक वन्दना बताओल गेल?
क. मिथिला प्रदेशक वन्दना।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मिथिला प्रदेशक वन्दना।
व्याख्या: राग-माध्यमे भू-सांस्कृतिक पहचान व्यक्त अछि।

प्रश्न 6461. विद्यापति कल्याण रागक रचना कतेक स्तरपर बताओल गेल?
क. विलम्बित आ द्रुत खयाल रूपमे।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. विलम्बित आ द्रुत खयाल रूपमे।
व्याख्या: ई राग-रचना शास्त्रीय गायन-संरचना धरि विकसित अछि।

प्रश्न 6462. एहि खण्डक मुख्य महत्त्व की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली भाषा आ मिथिला-भावनाकेँ शास्त्रीय संगीत-सृजनमे प्रतिष्ठित करब।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मैथिली भाषा आ मिथिला-भावनाकेँ शास्त्रीय संगीत-सृजनमे प्रतिष्ठित करब।
व्याख्या: रामरंगजीक कार्य संगीत-साहित्यक सेतु बनैत अछि।

खण्ड ६५२ : विदेह-सदेह २ — रामरंगजी: रागशास्त्र, स्मृति आ संरक्षण

प्रश्न 6463. गजेन्द्र रामरंगजीसँ कोन कमीक उल्लेख करैत छथि?
क. तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरवक पूर्ण रागशास्त्र उपलब्ध नहि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरवक पूर्ण रागशास्त्र उपलब्ध नहि।
व्याख्या: प्रश्न राग-सृजनक दस्तावेजीकरणक आवश्यकता उठबैत अछि।

प्रश्न 6464. रामरंगजी बहुत रचना मोन रहबाक बावजूद कठिनाई की बतबैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. हाथ थरथराइत अछि आ लिखब कठिन अछि।
उत्तर: घ. हाथ थरथराइत अछि आ लिखब कठिन अछि।
व्याख्या: वय आ शारीरिक कठिनाई संरक्षणक समस्या बनैत अछि।

प्रश्न 6465. गजेन्द्र हुनका की करबाक आग्रह करैत छथि?
क. तीनू रागक रचना-शास्त्र लिखि देबाक।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. तीनू रागक रचना-शास्त्र लिखि देबाक।
व्याख्या: एहि आग्रहमे संगीत-धरोहर सुरक्षित करबाक चिंता अछि।

प्रश्न 6466. रामरंगजी उपलब्ध रचना सभबारे की कहैत छथि?
क. जे रचना देने छी ओकरा छापि दिअ।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. जे रचना देने छी ओकरा छापि दिअ।
व्याख्या: ओ तत्काल उपलब्ध सामग्री प्रकाशन लेल कहैत छथि।

प्रश्न 6467. तीनू रागक विस्तृत विवरणबारे रामरंगजीक आश्वासन की अछि?
क. ओ पठेबाक आ लिखबाक बात कहैत छथि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. ओ पठेबाक आ लिखबाक बात कहैत छथि।
व्याख्या: उत्तरमे संरक्षणक आंशिक वचन अछि।

प्रश्न 6468. गजेन्द्रक “प्रणाम” आ रामरंगजीक “निकेना रहू” संवाद कोन भाव रचैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. श्रद्धा आ आशीषक।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. श्रद्धा आ आशीषक।
व्याख्या: साक्षात्कार संगीत-शास्त्रक संग मानवीय सान्निध्य सेहो राखैत अछि।

प्रश्न 6469. रागशास्त्र लिखब किएक जरूरी कहल जा सकैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. नव पीढ़ी सीखि सकए आ रचना पुस्तकाकार सुरक्षित होए।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. नव पीढ़ी सीखि सकए आ रचना पुस्तकाकार सुरक्षित होए।
व्याख्या: मौखिक स्मृति बिना लिखित आधार खोइ सकैत अछि।

प्रश्न 6470. रामरंगजीक प्रसंग मैथिली सांस्कृतिक धरोहरक कोन समस्या देखबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. सृजन त अछि, मुदा दस्तावेजीकरण अधूरा अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. सृजन त अछि, मुदा दस्तावेजीकरण अधूरा अछि।
व्याख्या: संगीत-संसारमे संरक्षणक चुनौती स्पष्ट अछि।

प्रश्न 6471. “के सीखत आ के लिखत” कथन कोन निराशा सूचित करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. गुरु-शिष्य परम्परा आ लेखन-सहयोगक अभाव।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. गुरु-शिष्य परम्परा आ लेखन-सहयोगक अभाव।
व्याख्या: संगीत परम्परा निरन्तरता लेल ग्रहणकर्ता माँगैत अछि।

प्रश्न 6472. रामरंगजीक रागशास्त्र-प्रसंगक सार की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. रामरंगजीक राग-सृजनकेँ लिखित रूपमे सुरक्षित करब जरूरी अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. रामरंगजीक राग-सृजनकेँ लिखित रूपमे सुरक्षित करब जरूरी अछि।
व्याख्या: साक्षात्कार धरोहर-संरक्षणक तात्कालिक आह्वान अछि।

खण्ड ६५३ : विदेह-सदेह २ — जनकपुरक चक्काजाम कवि-गोष्ठी आ मिथिला राज्य

प्रश्न 6473. जनकपुरमे साहित्यकार आ रंगकर्मी कोन अनोखा कार्यक्रम कएलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. सड़कपर कवितावाचन करैत चक्काजाम कवि-गोष्ठी।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. सड़कपर कवितावाचन करैत चक्काजाम कवि-गोष्ठी।
व्याख्या: ई प्रतिरोधक रचनात्मक रूप छल।

प्रश्न 6474. चक्काजाम कवि-गोष्ठीक मुख्य मांग की छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. नव संविधानमे मिथिला राज्यक व्यवस्था।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. नव संविधानमे मिथिला राज्यक व्यवस्था।
व्याख्या: कविता राजनीतिक-सांस्कृतिक मांगक माध्यम बनल।

प्रश्न 6475. कार्यक्रम जनकपुरक कोन प्रवेश-द्वार पर भेल?
क. पिडारी चौक।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. पिडारी चौक।
व्याख्या: स्थान जनकपुरक सार्वजनिक आवागमनक प्रतीक अछि।

प्रश्न 6476. नेपालक नव संविधान प्रक्रिया प्रसंग किएक उल्लेखित अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. विभिन्न समुदाय अपन अधिकारक लेल आवाज उठा रहल छल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. विभिन्न समुदाय अपन अधिकारक लेल आवाज उठा रहल छल।
व्याख्या: मिथिला राज्यक मांग संविधान-निर्माणक सन्दर्भमे अछि।

प्रश्न 6477. रंगकर्मी रंजु झा कोन हक-प्रश्न जोड़ैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मिथिला राज्य आ मधेशीक हक-अधिकार सुनिश्चित होएबाक चाही।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मिथिला राज्य आ मधेशीक हक-अधिकार सुनिश्चित होएबाक चाही।
व्याख्या: मांग सांस्कृतिक मात्र नहि, अधिकार-संबंधी अछि।

प्रश्न 6478. कार्यक्रममे कोन-कोन वर्गक सहभागिता बताओल गेल?
क. साहित्यकार, रंगकर्मी आ मिथिला राज्य संघर्ष समिति।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. साहित्यकार, रंगकर्मी आ मिथिला राज्य संघर्ष समिति।
व्याख्या: आन्दोलन कला, साहित्य आ संगठनक संयुक्त रूप लेल।

प्रश्न 6479. चक्काजामक प्रभाव यातायात पर की भेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जनकपुर-महेन्द्रनगर सड़क खण्डमे सवारी साधन नहि चलि सकल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. जनकपुर-महेन्द्रनगर सड़क खण्डमे सवारी साधन नहि चलि सकल।
व्याख्या: सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रत्यक्ष सार्वजनिक अवरोध सेहो बनल।

प्रश्न 6480. लेखक एहि गोष्ठीक प्रभाव कतेक मानैत अछि?
क. मिथिला राज्यक मांगकेँ थोड़ा-बहुत चर्चा भेटल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मिथिला राज्यक मांगकेँ थोड़ा-बहुत चर्चा भेटल।
व्याख्या: कार्यक्रम मांगकेँ दृश्यता देबाक माध्यम बनल।

प्रश्न 6481. कविता आ चक्काजामक मेल की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. सृजनात्मकता आ प्रतिरोधक संयोजन।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सृजनात्मकता आ प्रतिरोधक संयोजन।
व्याख्या: गोष्ठी साहित्यकेँ सड़क-आन्दोलनमे उतारैत अछि।

प्रश्न 6482. चक्काजाम कवि-गोष्ठीक निचोड़ की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. जनकपुरक रचनात्मक चक्काजाम मिथिला राज्यक सांस्कृतिक-राजनीतिक हस्तक्षेप छल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. जनकपुरक रचनात्मक चक्काजाम मिथिला राज्यक सांस्कृतिक-राजनीतिक हस्तक्षेप छल।
व्याख्या: कविता सार्वजनिक अधिकार-स्वरमे बदलल।

खण्ड ६५४ : विदेह-सदेह २ — “प्रिय पाहुन” क्यासेट आ विवाह-गीत परम्परा

प्रश्न 6483. “प्रिय पाहुन” क्यासेट कोन गीत-परम्परा पर आधारित अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. पारम्परिक मैथिली विवाह गीत।
उत्तर: घ. पारम्परिक मैथिली विवाह गीत।
व्याख्या: क्यासेट विवाह-संस्कारक गीत-संग्रह रूपमे वर्णित अछि।

प्रश्न 6484. क्यासेटमे विवाहक कोन सीमा-क्रम धरि गीत संकलित अछि?
क. परिछनसँ विदाई धरि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. परिछनसँ विदाई धरि।
व्याख्या: ई विवाह-प्रक्रियाक आरम्भसँ समापन धरि गीत समेटैत अछि।

प्रश्न 6485. क्यासेटक एकल प्रस्तुति केकर बताओल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अंशुमाला।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. अंशुमाला।
व्याख्या: गायिका क्यासेटक मुख्य स्वर छथि।

प्रश्न 6486. जयमाल गीतक विशेषता की कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मिथिलाक मौलिक गीत।
उत्तर: घ. मिथिलाक मौलिक गीत।
व्याख्या: अंशुमाला क्यासेटक विशिष्टता एहि गीतमे देखबैत छथि।

प्रश्न 6487. जीमनार गीतक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई गीत आब बहुत ठोरपर नहि चढ़ैत, ताहि लेल महत्व देल गेल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. ई गीत आब बहुत ठोरपर नहि चढ़ैत, ताहि लेल महत्व देल गेल।
व्याख्या: क्यासेट लुप्तप्राय विवाह-गीत बचाबैत अछि।

प्रश्न 6488. “प्रिय पाहुन” नव-पुरान दुनू पीढ़ीक लोक पसन्द करैत अछि — ई कथन की सूचित करैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. परम्परा आ आधुनिक श्रोता बीच सेतु।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. परम्परा आ आधुनिक श्रोता बीच सेतु।
व्याख्या: क्यासेट पुरान संस्कारक नवीकृत प्रस्तुति बनैत अछि।

प्रश्न 6489. कन्या लगन, परिछन, सिन्दूरदान आ समदाओन गीत सभ किएक उल्लेखनीय?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विवाहक अलग-अलग विधि-क्षणक गीत-स्मृति सुरक्षित करैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. विवाहक अलग-अलग विधि-क्षणक गीत-स्मृति सुरक्षित करैत अछि।
व्याख्या: संग्रह विवाह-जीवनक संस्कारिक चरण चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 6490. क्यासेटमे सीमाक भीतर हँसी-मजाक आ प्रेम देखेबाक प्रयास कोन सांस्कृतिक गुण देखबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. विवाह गीतमे मर्यादित हास्य आ स्नेह।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. विवाह गीतमे मर्यादित हास्य आ स्नेह।
व्याख्या: मिथिला विवाह गीत केवल विधि नहि, सामाजिक भाव-संवाद अछि।

प्रश्न 6491. गीत-संकलन आ संगीतक अलग उल्लेख की बतबैत अछि?
क. लोक-संग्रह आ आधुनिक संगीत-प्रस्तुति दुनू मिलल अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. लोक-संग्रह आ आधुनिक संगीत-प्रस्तुति दुनू मिलल अछि।
व्याख्या: क्यासेट परंपरा कैं मंच/रिकॉर्डिंग रूप देलक।

प्रश्न 6492. प्रिय पाहुन प्रसंगक सार की अछि?
क. प्रिय पाहुन मैथिली विवाह-गीत परम्पराकैं ऑडियो रूपमे सुरक्षित करबाक प्रयास अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. प्रिय पाहुन मैथिली विवाह-गीत परम्पराकैं ऑडियो रूपमे सुरक्षित करबाक प्रयास अछि।
व्याख्या: ई संस्कार-संगीतक स्मृति आ प्रसार दुनू साधैत अछि।

खण्ड ६५५ : विदेह-सदेह २ — “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही”: चुनाव, स्मृति आ नागरिकता

प्रश्न 6493. लेखक खुशवन्त सिंहक चुनाव-टिप्पणीसँ कोन बात उठबैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. लोकक असाधारण चुनाव-रुचि आ बदलैत परिदृश्य।
उत्तर: घ. लोकक असाधारण चुनाव-रुचि आ बदलैत परिदृश्य।
व्याख्या: आरम्भमे चुनावी जागरूकता नया सामाजिक संकेत रूपमे लेल गेल।

प्रश्न 6494. आशुतोषक निबन्धक उद्धरणक मूल संकेत की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. वोटर बुधियार भऽ रहल अछि आ नव नागरिक समाज ठाढ़ भऽ रहल अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. वोटर बुधियार भऽ रहल अछि आ नव नागरिक समाज ठाढ़ भऽ रहल अछि।
व्याख्या: लेख नागरिकता आ जिम्मेदारीक बदलैत भाव पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 6495. लेखक १९७१ क स्मृतिमे की देखैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. भारत-पाक युद्धक समय गामक बूढ़-पुरान लोकक सैनिक-गर्व।
उत्तर: घ. भारत-पाक युद्धक समय गामक बूढ़-पुरान लोकक सैनिक-गर्व।
व्याख्या: राजनीतिक स्मृति ग्रामीण सामुदायिक भावसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6496. १९७४ क जे.पी. आन्दोलनक स्मृति लेखक लेल कोना अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. युवा सभ न्यायवादी-आन्दोलनकारी बनि गेल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. युवा सभ न्यायवादी-आन्दोलनकारी बनि गेल।
व्याख्या: राजनीतिक उभार पीढ़ीक चेतना बदलैत छल।

प्रश्न 6497. लेखक अपन बाल्य-क्रांतिकारी भावक उदाहरण की दैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. आपातकाल विरोधमे पहिल कविता लिखल, जे भाय फाड़ि देलक।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. आपातकाल विरोधमे पहिल कविता लिखल, जे भाय फाड़ि देलक।
व्याख्या: ई बाल राजनीतिक संवेदनाक निजी प्रसंग अछि।

प्रश्न 6498. १९७७ चुनावमे परिवारक कुलगुरु तक के भूमिका किएक रोचक अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. धर्मगुरु सेहो जनता पार्टीक पक्षमे कहए आएल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. धर्मगुरु सेहो जनता पार्टीक पक्षमे कहए आएल।
व्याख्या: लेखक देखबैत छथि जे राजनीति व्यापक लोक-हस्तक्षेपक विषय छल।

प्रश्न 6499. संताल परगनाक स्कूल-प्रसंग राजनीतिक स्मृतिमे की जोड़ैत अछि?
क. गरीबी, असुविधा आ ग्रामीण जीवनक यथार्थ।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. गरीबी, असुविधा आ ग्रामीण जीवनक यथार्थ।
व्याख्या: राजनीतिक चेतना सम्पन्न शहरक नहि, अभावग्रस्त गामक अनुभवसँ सेहो जुड़ल छल।

प्रश्न 6500. लेखक आजुक “विशिष्ट लोक” पर कोन व्यंग्य करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. लिखबाक-छापबाक छूट भेटते विचारक बनबाक दंभ।
उत्तर: घ. लिखबाक-छापबाक छूट भेटते विचारक बनबाक दंभ।
व्याख्या: लेख मीडिया-बौद्धिकताक स्वयम्भू स्वरूप पर कटाक्ष करैत अछि।

प्रश्न 6501. “टी.वी.मे आबि गेल छी” कथनक व्यंग्यात्मक अर्थ की?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. दृश्य-मीडिया उपस्थिति कैँ विचारकता मानि लेबाक प्रवृत्ति।
उत्तर: घ. दृश्य-मीडिया उपस्थिति कैँ विचारकता मानि लेबाक प्रवृत्ति।
व्याख्या: लेखक सार्वजनिक वक्तव्यक सतही वैचारिकता पर प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 6502. चुनाव-स्मृति लेखक सार की अछि?
क. चुनाव-स्मृति, आन्दोलन, गरीबी आ आजुक मीडिया-बौद्धिकता पर आत्मव्यंग्यात्मक टिप्पणी।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. चुनाव-स्मृति, आन्दोलन, गरीबी आ आजुक मीडिया-बौद्धिकता पर आत्मव्यंग्यात्मक टिप्पणी।
व्याख्या: लेख राजनीतिक चेतना आ सार्वजनिक दंभ दुनूकेँ साथे पढ़ैत अछि।

खण्ड ६५६ : विदेह-सदेह २ — विष्णु प्रभाकर: सादगी, कॉफी हाउस आ साहित्यिक संगति

प्रश्न 6503. लेखक १९९० वर्षकेँ अपन लेल कोना देखैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. महत्त्वपूर्ण आ सकारात्मक ऊर्जा सँ भरल वर्ष।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. महत्त्वपूर्ण आ सकारात्मक ऊर्जा सँ भरल वर्ष।
व्याख्या: लेखक सामाजिक-सांस्कृतिक सक्रियताक शुरुआत एहि समयसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 6504. मोहन पैलेसक छतपरक कॉफी हाउस लेखक लेल की बनल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. दिल्लीक लेखक-कलाकार मंडलीसँ जुड़बाक स्थल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. दिल्लीक लेखक-कलाकार मंडलीसँ जुड़बाक स्थल।
व्याख्या: कॉफी हाउस साहित्यिक संगति आ गोष्ठीक केन्द्र बनल।

प्रश्न 6505. विष्णु प्रभाकरजीक उपस्थिति कोना वर्णित अछि?
क. वयोवृद्ध, खादीधारी, गाँधी टोपी पहिरने सादगीमय व्यक्तित्व।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. वयोवृद्ध, खादीधारी, गाँधी टोपी पहिरने सादगीमय व्यक्तित्व।
व्याख्या: वर्णन हुनकर व्यक्तित्वक सादगी आ गरिमा उभारैत अछि।

प्रश्न 6506. शनिवारी गोष्ठीक सिलसिला कतय धरि चलल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. १९९५ धरि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. १९९५ धरि।
व्याख्या: लेखक नियमित साहित्यिक संगति केर अवधि बतबैत छथि।

प्रश्न 6507. लेखक अपन रूप-व्यवहारक कौन बात स्मरैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. दाढ़ी, पाइप, खादीक कुर्ता-पायजामा।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. दाढ़ी, पाइप, खादीक कुर्ता-पायजामा।
व्याख्या: ई आत्म-स्मृति बौद्धिक छविक व्यंग्यात्मक रंग रखैत अछि।

प्रश्न 6508. कॉलेजक सहकर्मी हुनका कोना देखैत छलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. बौद्धिक रूपसँ आतंकित करनिहार व्यक्तित्व।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. बौद्धिक रूपसँ आतंकित करनिहार व्यक्तित्व।
व्याख्या: लेखक अपन छवि पर हल्का हास्य राखैत छथि।

प्रश्न 6509. विष्णु प्रभाकरजीक महानता लेखक कोना अनुभव करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ओ छोटपनक अहसास नहिए होमए देलन्हि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ओ छोटपनक अहसास नहिए होमए देलन्हि।
व्याख्या: वरिष्ठ लेखकक विनम्रता लेखक पर गहरा असर छोड़ैत अछि।

प्रश्न 6510. हाथ पकड़ि भीड़ भरल सड़क पार करबाकेँ लेखक किएक स्मरणीय मानैत छथि?
क. स्नेहिल स्पर्श आ सान्निध्य प्राप्त करबाक अवसर रूपमे।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. स्नेहिल स्पर्श आ सान्निध्य प्राप्त करबाक अवसर रूपमे।
व्याख्या: व्यक्तिगत स्मृति श्रद्धा आ निकटता व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 6511. कॉफी हाउस प्रसंगमे साहित्यिकता कोना बनैत अछि?
क. गोष्ठी, साहचर्य, संवाद आ वरिष्ठजनक सान्निध्य सँ।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. गोष्ठी, साहचर्य, संवाद आ वरिष्ठजनक सान्निध्य सँ।
व्याख्या: साहित्य केवल पाठ नहि, जीवित संगति सेहो अछि।

प्रश्न 6512. विष्णु प्रभाकर स्मरणक सार की अछि?
क. विष्णु प्रभाकरक सादगी लेखकक साहित्यिक जीवन-स्मृतिमे मृदुल आदर्श बनि रहल।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. विष्णु प्रभाकरक सादगी लेखकक साहित्यिक जीवन-स्मृतिमे मृदुल आदर्श बनि रहल।
व्याख्या: स्मरण व्यक्तिगत अनुभवसँ साहित्यिक श्रद्धांजलि बनैत अछि।

खण्ड ६५७ : विदेह-सदेह २ — भाषा-आन्दोलन, जेल-स्मृति आ विष्णुजीक अनुपस्थिति

प्रश्न 6513. १९९४ मे लेखक कोन संघर्षक क्रममे गिरफ्तार भेलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. भारतीय भाषाक लेल संघर्षक क्रममे।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. भारतीय भाषाक लेल संघर्षक क्रममे।
व्याख्या: लेखक भाषा-अधिकार आन्दोलनमे अपन भागीदारी स्मरैत छथि।

प्रश्न 6514. गिरफ्तारीक बाद लेखक आ साथी सभकेँ कतय पठाओल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. तिहाड़ जेल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. तिहाड़ जेल।
व्याख्या: प्रसंग भाषा-आन्दोलनक तीव्रता देखबैत अछि।

प्रश्न 6515. केहन दबावक बाद केस हटाओल गेल?
क. नेता, साहित्यकार, पत्रकार, समाजसेवी आ आन्दोलनकारी सभक दबावसँ।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. नेता, साहित्यकार, पत्रकार, समाजसेवी आ आन्दोलनकारी सभक दबावसँ।
व्याख्या: रिहाइ सामूहिक सार्वजनिक समर्थनक फल रूपमे बताओल गेल।

प्रश्न 6516. बिना शर्त रिहाईक बाद कॉफी हाउसक वातावरण कोना बदलल?
क. साथी सभक आदर-भाव बढ़ि गेल।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. साथी सभक आदर-भाव बढ़ि गेल।
व्याख्या: आन्दोलनक अनुभव लेखकक सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़बैत अछि।

प्रश्न 6517. लेखक १९९५क बाद कॉफी हाउसक सिलसिला किएक जारी नहि राखि सकलाह?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. आवारा स्वभावक कारण।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. आवारा स्वभावक कारण।
व्याख्या: ओ स्वयं पर आत्म-व्यंग्य करैत छथि।

प्रश्न 6518. “आवारा मसीहा” लेखकक स्मरण किएक सूक्ष्म अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. विष्णु प्रभाकरजीकेँ लेखकक यायावरीक भान न भेल होएत, एहन आत्मीय कल्पना।
उत्तर: घ. विष्णु प्रभाकरजीकेँ लेखकक यायावरीक भान न भेल होएत, एहन आत्मीय कल्पना।
व्याख्या: ई स्मरण विनोद आ श्रद्धा दुनू राखैत अछि।

प्रश्न 6519. विष्णुजी नहि रहबाक बादो स्मृति कोना अनुभव होइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मृदुल, जेना ओ अखनो कॉफी हाउसक मंडलीमे छथि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मृदुल, जेना ओ अखनो कॉफी हाउसक मंडलीमे छथि।
व्याख्या: अनुपस्थिति स्मृति-सान्निध्य मे बदलैत अछि।

प्रश्न 6520. भाषा-आन्दोलन प्रसंग विष्णुजी स्मरणसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. कॉफी हाउसक साहित्यिक मंडली आ सार्वजनिक भाषा-संघर्ष एकहि जीवन-अवधि मे भेटैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. कॉफी हाउसक साहित्यिक मंडली आ सार्वजनिक भाषा-संघर्ष एकहि जीवन-अवधि मे भेटैत अछि।
व्याख्या: साहित्यिक साहचर्य आ सामाजिक सक्रियता साथ-साथ चलैत अछि।

प्रश्न 6521. लेखकक स्मृति-स्वर केहन अछि?
क. आत्मकथात्मक, कृतज्ञ आ हल्का व्यंग्यमय।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. आत्मकथात्मक, कृतज्ञ आ हल्का व्यंग्यमय।
व्याख्या: लेख व्यक्तिगत इतिहासकेँ जीवंत बनबैत अछि।

प्रश्न 6522. भाषा-आन्दोलन आ विष्णुजी स्मरणक निचोड़ की अछि?
क. साहित्यिक संगति, भाषा-संघर्ष आ विष्णु प्रभाकरक सादगी लेखकक स्मृतिमे एकसंग बसल अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. साहित्यिक संगति, भाषा-संघर्ष आ विष्णु प्रभाकरक सादगी लेखकक स्मृतिमे एकसंग बसल अछि।
व्याख्या: स्मरण व्यक्ति-श्रद्धा आ आन्दोलन-इतिहास दुनू अछि।

खण्ड ६५८ : विदेह-सदेह २ — तूलिका, स्वास्तिका आ नवपीढ़ी संकेत

प्रश्न 6523. तूलिकाबारे विदेह-सदेह १ संदर्भमे की कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. १४ वर्षीय तूलिका सँ ८८ वर्षीय आद्याचरण झा धरि रचनाकार छलाह।
उत्तर: घ. १४ वर्षीय तूलिका सँ ८८ वर्षीय आद्याचरण झा धरि रचनाकार छलाह।
व्याख्या: एहि तुलना सँ पीढ़ी-व्यापकता देखाइत अछि।

प्रश्न 6524. तूलिका किछु दिन रचना किएक नहि पठा रहल छलीह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सी.बी.एस.ई.क दशम कक्षाक तैयारीमे लागल छलीह।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सी.बी.एस.ई.क दशम कक्षाक तैयारीमे लागल छलीह।
व्याख्या: संपादकीय टिप्पणी हुनकर विद्यार्थी-जीवन संदर्भ दैत अछि।

प्रश्न 6525. तूलिकाकेँ दशम परिणाममे कतेक अंक भेटल?
क. ९६.८ प्रतिशत।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. ९६.८ प्रतिशत।
व्याख्या: ई हुनकर शैक्षिक उपलब्धि बताओल गेल अछि।

प्रश्न 6526. दशमक बाद तूलिका कोन तैयारीमे लागल छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. इंजीनियरिंगक।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. इंजीनियरिंगक।
व्याख्या: टिप्पणीमे हुनकर भविष्य-शैक्षिक दिशा बताओल अछि।

प्रश्न 6527. तूलिका पुनः रचना पठौलनि — ई विदेह लेल की अर्थ राखैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. नवपीढ़ी पाठक-रचनाकारक पुनरागमन।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. नवपीढ़ी पाठक-रचनाकारक पुनरागमन।
व्याख्या: ई संकेत करैत अछि जे पढ़ाइ-संग साहित्यिक सक्रियता चलि सकैत अछि।

प्रश्न 6528. स्वास्तिकाक परिचयमे कोन कक्षा आ विद्यालय-संदर्भ अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. कक्षा २, माउन्ट कार्मेल पटना।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. कक्षा २, माउन्ट कार्मेल पटना।
व्याख्या: नवबाल रचनाकार/उपस्थिति बाल-साहित्यिक दायरा देखबैत अछि।

प्रश्न 6529. तूलिका-स्वास्तिका प्रसंग विदेहक कोन विशेषता देखबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. बाल/किशोर प्रतिभाक स्वागत।
उत्तर: घ. बाल/किशोर प्रतिभाक स्वागत।
व्याख्या: विदेह केवल वरिष्ठ साहित्यकारक मंच नहि।

प्रश्न 6530. पीढ़ी-व्यापकता मैथिली साहित्य लेल किएक जरूरी अछि?
क. भविष्यक पाठक आ लेखक तैयार करबाक लेल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. भविष्यक पाठक आ लेखक तैयार करबाक लेल।
व्याख्या: नवपीढ़ी बिना भाषा-साहित्यक निरन्तरता कमजोर होइत अछि।

प्रश्न 6531. संपादकीय टिप्पणीक स्वर केहन अछि?
क. प्रोत्साहनपरक।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. प्रोत्साहनपरक।
व्याख्या: टिप्पणी युवा/बाल प्रतिभाकेँ पाठकक सामने सम्मानसँ रखैत अछि।

प्रश्न 6532. तूलिका-स्वास्तिका प्रसंगक सार की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. विदेह नवपीढ़ीक शैक्षिक उपलब्धि आ साहित्यिक भागीदारी दुनूकेँ महत्त्व दैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. विदेह नवपीढ़ीक शैक्षिक उपलब्धि आ साहित्यिक भागीदारी दुनूकेँ महत्त्व दैत अछि।
व्याख्या: तूलिका-स्वास्तिका उदाहरण पीढ़ीगत निरन्तरता देखबैत अछि।

खण्ड ६५९ : विदेह-सदेह २ — चन्द्रेशक समीक्षा: “हुगली ऊपर बहैत गंगा” आ नारी-संवेदना

प्रश्न 6533. चन्द्रेशक लेख कोन कथा-संग्रह पर केन्द्रित अछि?
क. रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”क “हुगली ऊपर बहैत गंगा”।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”क “हुगली ऊपर बहैत गंगा”।
व्याख्या: समीक्षा संग्रहक कथा-संसारक विवेचन करैत अछि।

प्रश्न 6534. संग्रहमे कतेक कथा बताओल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ३२ गोट कथा।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. ३२ गोट कथा।
व्याख्या: समीक्षक संग्रहक आकार स्पष्ट करैत छथि।

प्रश्न 6535. नामक अंतिम कथा कोन पात्र-द्वय सँ नारी-मोन उभारैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. हीरा आ सोनाबाई।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. हीरा आ सोनाबाई।
व्याख्या: समीक्षा शीर्षक कथा मे स्त्री-संवेदना देखैत अछि।

प्रश्न 6536. समीक्षकक अनुसार नारी मात्र की नहि अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. देह मात्र नहि।
उत्तर: घ. देह मात्र नहि।
व्याख्या: ई समीक्षा नारी-अस्मिताक मूल कथन अछि।

प्रश्न 6537. कामुक पुरुष नारीक देहकेँ कोना बूझैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. अपन धन-सम्पत्ति जेकाँ।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. अपन धन-सम्पत्ति जेकाँ।
व्याख्या: समीक्षा देहवादी पुरुष-दृष्टिक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 6538. नारी-पुरुष साहचर्यकेँ समीक्षक कोना देखैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. सृष्टिक निरन्तरताक आधार, मुदा भोग-वस्तुकरण नहि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. सृष्टिक निरन्तरताक आधार, मुदा भोग-वस्तुकरण नहि।
व्याख्या: संबंधक मर्यादा आ मानवता पर बल अछि।

प्रश्न 6539. धनक अतिशय लिप्सा पर समीक्षकक टिप्पणी की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई मानवीय मूल्यबोधकेँ गिरबैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. ई मानवीय मूल्यबोधकेँ गिरबैत अछि।
व्याख्या: भौतिकता मानवता केँ कुण्ठित करैत देखाओल गेल।

प्रश्न 6540. अनैतिकताक अढ़मे छिड़हरा खेलाओल जाइत अछि — अर्थ की?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. धन-मद आ कामुकता सामाजिक नैतिकता केँ ढाँपि विकृति करैत अछि।
उत्तर: घ. धन-मद आ कामुकता सामाजिक नैतिकता केँ ढाँपि विकृति करैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा समाजक बाह्य मर्यादा आ भीतरक पाखण्ड खोलैत अछि।

प्रश्न 6541. समीक्षक शीर्षक कथाकेँ भविष्य-सृजन दिस डेग किएक मानैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. कारण नारी-मोनक संवेदना आ मानवीयता उभरैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. कारण नारी-मोनक संवेदना आ मानवीयता उभरैत अछि।
व्याख्या: कथा पीड़ाक भीतर नब संबंध-संभावना देखबैत अछि।

प्रश्न 6542. चन्द्रेशक प्रारम्भिक समीक्षा-खंडक सार की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. भ्रमरक कथा-संसार नारी देह-वस्तुकरणक विरोधमे संवेदना आ अस्मिता स्थापित करैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. भ्रमरक कथा-संसार नारी देह-वस्तुकरणक विरोधमे संवेदना आ अस्मिता स्थापित करैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा मानवीय मूल्य आ स्त्री-अधिकारक पक्षधर अछि।

खण्ड ६६० : विदेह-सदेह २ — हीरा-सोनाबाई कथा: देहभोगसँ मनुष्यताक जागरण

प्रश्न 6543. हीरा सोनाबाई लग कोन उद्देश्यसँ अबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. असन्तोष आ खौंझी मेटेबाक लेल।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. असन्तोष आ खौंझी मेटेबाक लेल।
व्याख्या: समीक्षा हीराक आरम्भिक मनोवस्था बतबैत अछि।

प्रश्न 6544. सोनाबाई अपन पेशामे कोना चित्रित अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. कोनो कोताही नहि करैत।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. कोनो कोताही नहि करैत।
व्याख्या: ओ पेशागत व्यवहारमे तत्पर देखाओल गेल।

प्रश्न 6545. सोनाक परिधान खोलबाक आमंत्रण पर हीराक प्रतिक्रिया की होइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ओ ठकमुहरी लागि जाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. ओ ठकमुहरी लागि जाइत अछि।
व्याख्या: ई क्षण भोग-इच्छासँ मानव-संवेदना दिस मोड़ अछि।

प्रश्न 6546. हीराक हृदयमे सोनाबाई प्रति की जागैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. नारीक प्रति सम्मान-भाव।
उत्तर: घ. नारीक प्रति सम्मान-भाव।
व्याख्या: कथा भोग-दृष्टि कैं सम्मान-दृष्टिमे बदलैत अछि।

प्रश्न 6547. सोनाबाईक हड़बड़ीक कारण की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. एक ग्राहकसँ निपटि दोसरक आशा।
उत्तर: घ. एक ग्राहकसँ निपटि दोसरक आशा।
व्याख्या: पेशा आ जीवनक कठोर आर्थिक यथार्थ उपस्थित अछि।

प्रश्न 6548. हीराक मनोव्यथा सुनि सोनाक आँखि किएक चमकि उठैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ओ पहिल बेर सुच्चा मनुक्खक दर्शन अनुभव करैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. ओ पहिल बेर सुच्चा मनुक्खक दर्शन अनुभव करैत अछि।
व्याख्या: मानवीयता देह-व्यापारक ढाँचा तोड़ैत अछि।

प्रश्न 6549. कथाक परिणतिमे दुनूक बीच की भाव जन्मैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. सुरक्षा आ अपनत्व-बोध।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सुरक्षा आ अपनत्व-बोध।
व्याख्या: दुनू पात्रक संबंध भोगसँ विश्वास दिस बदलैत अछि।

प्रश्न 6550. समीक्षकक अनुसार दैहिक भोगसँ बेसी महत्त्वपूर्ण की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मोनक राग।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मोनक राग।
व्याख्या: कथा भीतरक भाव-संबंधकेँ प्रधान बनबैत अछि।

प्रश्न 6551. समीक्षक शिल्पक दृष्टिसँ कथाबारे की कहैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. कथा कनेक कमजोर अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. कथा कनेक कमजोर अछि।
व्याख्या: प्रशंसा संग आलोचनात्मक संतुलन सेहो राखल गेल।

प्रश्न 6552. एहि खण्डक मूल अर्थ की अछि?
क. हीरा-सोनाबाई प्रसंग देहवादक अन्हारमे मनुष्यताक प्रकाश देखबैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. हीरा-सोनाबाई प्रसंग देहवादक अन्हारमे मनुष्यताक प्रकाश देखबैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा कथ्यक मानवीय शक्ति कैं शिल्प-दोषसँ ऊपर मानैत अछि।

खण्ड ६६१ : विदेह-सदेह २ — भोगवादी लिप्सा, दाम्पत्य आ सामाजिक दायित्व

प्रश्न 6553. “आधुनिक चकचोन्हीमे अन्हराएलि भगजोगनी” कथामे रेखाक मुख्य प्रवृत्ति की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. भोगवादी लिप्सा।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. भोगवादी लिप्सा।
व्याख्या: समीक्षक रेखाक चरित्रमे आधुनिक भौतिक आकर्षणक अति देखैत अछि।

प्रश्न 6554. रेखाक भोगवादी प्रवृत्ति कोन परिणाम दिस ल’ जाइत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. अपन बसल-बसाओल घर उजारबाक दिस।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. अपन बसल-बसाओल घर उजारबाक दिस।
व्याख्या: स्वार्थी आकर्षण दाम्पत्य-संरचना कैं तोड़ैत अछि।

प्रश्न 6555. रेखा की बिसरि जाइत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. अर्थ-लिप्सा संबंधकैं गीड़ि दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. अर्थ-लिप्सा संबंधकैं गीड़ि दैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा धन-लालसाकैं संबंध-विनाशक मानैत अछि।

प्रश्न 6556. रेखाक बादक बोध कोना व्यक्त अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. गत कर्मक तर्पण करैत भ्रमजाल तोड़ि फेकैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. गत कर्मक तर्पण करैत भ्रमजाल तोड़ि फेकैत अछि।
व्याख्या: चरित्र अंततः आत्मबोधक दिशा पबैत अछि।

प्रश्न 6557. कथा प्रेम आ यौन सम्बन्धी गाँठकेँ कोना扱ैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. गाँठ खोलैत उपसंस्कृति पर प्रहार करैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. गाँठ खोलैत उपसंस्कृति पर प्रहार करैत अछि।
व्याख्या: समीक्षक कथाकेँ सामाजिक आलोचना मानैत अछि।

प्रश्न 6558. दैहिक भूखक खतरा समीक्षा मे की बताओल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. लोककेँ कामुकतामे जकड़ि अस्थिर संबंध बनबैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. लोककेँ कामुकतामे जकड़ि अस्थिर संबंध बनबैत अछि।
व्याख्या: भोग-संबंध स्थायित्व नहि दैत।

प्रश्न 6559. “काम-भावक भूख सम्बन्धकेँ स्थायित्व नहि प्रदान करैत” — अर्थ की?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सिर्फ देह-आकर्षण टिकाऊ जीवन-संबंध नहि बना सकैत।
उत्तर: घ. सिर्फ देह-आकर्षण टिकाऊ जीवन-संबंध नहि बना सकैत।
व्याख्या: समीक्षा दाम्पत्यक नैतिक-सामाजिक आधार पर बल दैत अछि।

प्रश्न 6560. “अन्हारमे भोतिआएल” कथाक प्रकृति कोना बताओल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. गणेशक संस्मरणात्मक रिपोर्ताज।
उत्तर: घ. गणेशक संस्मरणात्मक रिपोर्ताज।
व्याख्या: समीक्षक एकरा कथा-सूत्रसँ बेसी संस्मरणात्मक प्रस्तुति मानैत अछि।

प्रश्न 6561. “कामरेड” कथाक वैचारिक धुरी की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. गरीब-गरीब सभ एक हो, सामाजिक असमानता भरबाक प्रयास।
उत्तर: घ. गरीब-गरीब सभ एक हो, सामाजिक असमानता भरबाक प्रयास।
व्याख्या: कथा साम्यवादी चेतना आ आत्मचेतना जगाबय चाहैत अछि।

प्रश्न 6562. भोगवादी लिप्सा समीक्षा-खंडक सार की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. भ्रमरक कथासभ देह-लिप्सा, दाम्पत्य, अर्थलोलुपता आ वर्ग-असमानता पर प्रश्न उठबैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. भ्रमरक कथासभ देह-लिप्सा, दाम्पत्य, अर्थलोलुपता आ वर्ग-असमानता पर प्रश्न उठबैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा सामाजिक दायित्वक दृष्टिसँ कथासभ पढ़ैत अछि।

खण्ड ६६२ : विदेह-सदेह २ — उड़ान, मधेश, नेओक जोड़ आ विस्थापन

प्रश्न 6563. “उड़ान” कथामे रजिन्दर कापरक सपना की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. कतार जा कऽ ढेर पाइ कमेबाक।
उत्तर: घ. कतार जा कऽ ढेर पाइ कमेबाक।
व्याख्या: कथा प्रवास-लोभ आ आर्थिक सपना पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 6564. रजिन्दर कापर एजेंट सभसँ कोना ठकाइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. दस हजार, अस्सी हजार आ पन्चानवे हजारक कर्ज-पैसा बोहाइत।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. दस हजार, अस्सी हजार आ पन्चानवे हजारक कर्ज-पैसा बोहाइत।
व्याख्या: समीक्षा प्रवासी श्रमिक शोषणक स्तर बतबैत अछि।

प्रश्न 6565. उड़ान कथाक “उड़ान” की बनैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. आर्थिक आशा, ठगी आ जीवन-मूल्यक द्वन्द्व।
उत्तर: घ. आर्थिक आशा, ठगी आ जीवन-मूल्यक द्वन्द्व।
व्याख्या: कथा विदेश-स्वप्नक अंधकार पक्ष देखबैत अछि।

प्रश्न 6566. मधेश-संदर्भक कथामे अयोधी मास्टर किएक आन्दोलनमे कूदि पड़ैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मधेशी अस्मिता पर चोट आ बेटाक बेरोजगारीक पीड़ा सँ।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मधेशी अस्मिता पर चोट आ बेटाक बेरोजगारीक पीड़ा सँ।
व्याख्या: व्यक्तिगत संकट राजनीतिक अस्मिता संग जुड़ैत अछि।

प्रश्न 6567. मधेशी होएबाक गौरवबोध पर चोट कोना असर करैत अछि?
क. पीड़ित मोनमे आक्रोश पनुगैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. पीड़ित मोनमे आक्रोश पनुगैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा राष्ट्रीयता, अस्मिता आ असमानताक सम्बन्ध देखबैत अछि।

प्रश्न 6568. “नेओक जोड़” कथामे कोन समस्या उभरैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सरोजाक दुःस्थिति आ स्त्री-त्रास।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. सरोजाक दुःस्थिति आ स्त्री-त्रास।
व्याख्या: कथा अभिभावकत्व, स्त्रीपीड़ा आ सामाजिक बदलावक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 6569. “ओढ़ल अभिभावकत्व” पर समीक्षकक प्रहार की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. फोकिला मानसिकता आ हृदयहीनता उघार करैत अछि।
उत्तर: घ. फोकिला मानसिकता आ हृदयहीनता उघार करैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा संरक्षकता नामक सामाजिक पाखण्ड खोलैत अछि।

प्रश्न 6570. “किसुनमा” प्रसंगमे सबसे तीव्र घटना की अछि?
क. अनकर जनमल नेनाक हत्या।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. अनकर जनमल नेनाक हत्या।
व्याख्या: कथा पितृ-अहं, संदेह आ हिंसाक भयावह परिणति देखबैत अछि।

प्रश्न 6571. किसुनमा कथा पाठककेँ कोन प्रश्न छोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. निर्दोष बच्चाक हत्या आ ओकर नैतिक परिणाम।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. निर्दोष बच्चाक हत्या आ ओकर नैतिक परिणाम।
व्याख्या: समीक्षक कथा-अन्तकेँ आगे सोचबाक बाध्यता मानैत अछि।

प्रश्न 6572. प्रवास-मधेश-नेओक जोड़ खण्डक सार की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. भ्रमरक कथासभ प्रवास, अस्मिता, स्त्री-त्रास आ हिंसात्मक पितृसत्ताकेँ सामाजिक प्रश्न बनबैत अछि।
उत्तर: घ. भ्रमरक कथासभ प्रवास, अस्मिता, स्त्री-त्रास आ हिंसात्मक पितृसत्ताकेँ सामाजिक प्रश्न बनबैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा अलग कथासभमे व्यापक सामाजिक पीड़ा जोड़ैत अछि।

खण्ड ६६३ : विदेह-सदेह २ — अमरलत्ती, सम्बन्धक पीड़ा आ फ्लैशबैक

प्रश्न 6573. “अमरलत्ती” कथामे रेखाक प्रतीकात्मक रूप की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. अमरलती जकाँ चतरैत आनक घर उजारनिहार प्रवृत्ति।
उत्तर: घ. अमरलती जकाँ चतरैत आनक घर उजारनिहार प्रवृत्ति।
व्याख्या: समीक्षा रेखाकेँ संबंध-विनाशक वासना-प्रतीक बनबैत अछि।

प्रश्न 6574. रमेशक कामलोलुपता कथामे की करैत अछि?
क. रेखाक काम-भाव जाग्रत करि मायाजाल पसारैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. रेखाक काम-भाव जाग्रत करि मायाजाल पसारैत अछि।
व्याख्या: पुरुष आ स्त्री दुनू वर्गक कुत्सित मानसिकता उभरैत अछि।

प्रश्न 6575. “सम्बन्धक पीड़ा” कथामे आशाक मनोस्थिति की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. प्रेमसँ उपजल मानसिक पीड़ा सहबाक प्रयास।
उत्तर: घ. प्रेमसँ उपजल मानसिक पीड़ा सहबाक प्रयास।
व्याख्या: समीक्षा प्रेमक सामाजिक अवरोध आ अंत:पीड़ा देखैत अछि।

प्रश्न 6576. आशा-संदीपक संबंधक मूल क्या अछि?
क. मोन-मिलानी।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. मोन-मिलानी।
व्याख्या: कथा प्रेमकेँ खरिद-बिक्री नहि, हृदय-संबंध मानैत अछि।

प्रश्न 6577. आशाक माए-बापक प्रतिक्रिया संबंध पर की असर डालैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. विरक्ति-भाव संबंध-सूत्र खण्डित करैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. विरक्ति-भाव संबंध-सूत्र खण्डित करैत अछि।
व्याख्या: सामाजिक व्यवस्था प्रेमक मार्ग तोड़ैत अछि।

प्रश्न 6578. “फ्लैशबैक” कथामे नरेशक मनमे की उठैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. बालपनक स्मृति-तरंग।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. बालपनक स्मृति-तरंग।
व्याख्या: कथा नेनपनक निश्छलता आ वयस्क भयक तुलना करैत अछि।

प्रश्न 6579. नेनपनक अनुभूति कथामे कोन मूल्य देखबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. निडरता, निश्छलता आ सौहार्द्र।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. निडरता, निश्छलता आ सौहार्द्र।
व्याख्या: बाल-स्मृति सामाजिक दोगलापनक विरुद्ध उज्जर बिम्ब बनैत अछि।

प्रश्न 6580. वयस्क समाजक कौन पक्ष “फ्लैशबैक” मे रेखांकित अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. भय, सुरक्षा, षड्यंत्र आ छल-कपट।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. भय, सुरक्षा, षड्यंत्र आ छल-कपट।
व्याख्या: कथा बचपनक सरलता संग समाजक जटिलता भिड़बैत अछि।

प्रश्न 6581. सामाजिक व्यक्तित्वक “दोगला मुँह” कथन की सूचित करैत अछि?
क. सभ्य समाज बनबाक नाम पर लोक छल-क्षुद्रक खोल ओढ़ैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. सभ्य समाज बनबाक नाम पर लोक छल-क्षुद्रक खोल ओढ़ैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा आधुनिक सामाजिक पाखण्डकेँ चिन्हैत अछि।

प्रश्न 6582. अमरलत्ती-सम्बन्ध-फ्लैशबैक खण्डक निचोड़ की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. प्रेम, वासना, स्मृति आ सामाजिक पाखण्डक बीच भ्रमरक कथा मानवीयता खोजैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. प्रेम, वासना, स्मृति आ सामाजिक पाखण्डक बीच भ्रमरक कथा मानवीयता खोजैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा कथासभकेँ संबंध-संवेदना आ सामाजिक आलोचना रूपमे पढ़ैत अछि।

खण्ड ६६४ : विदेह-सदेह २ — भ्रमरक कथा-दृष्टि: नारी, शोषित वर्ग आ शिल्प-समीक्षा

प्रश्न 6583. समीक्षक भ्रमरक कथामे कोन “राग” देखैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. जीवनक राग।
उत्तर: घ. जीवनक राग।
व्याख्या: नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे भ्रमरक कथा जीवंत जीवन-बोध रखैत अछि।

प्रश्न 6584. भ्रमरक कथामे नारी प्रति कोन भाव विशेष कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. विशेष श्रद्धा-भाव।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. विशेष श्रद्धा-भाव।
व्याख्या: समीक्षक मानैत छथि जे नारी-संघर्ष हुनकर कथा-संसारक मूल पक्ष अछि।

प्रश्न 6585. भ्रमरक कथाकारक मोनमे कोन पीड़ा अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. अबला नारीक चीख आ परिवेशक दंश।
उत्तर: घ. अबला नारीक चीख आ परिवेशक दंश।
व्याख्या: नारी-पीड़ा सामाजिक व्यवस्था संग जुड़ि उभरैत अछि।

प्रश्न 6586. भ्रमरक लेखनी कोन वर्गक पक्षमे उठैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. शोषित-पीड़ित, दबल-कुचलल लोकक।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. शोषित-पीड़ित, दबल-कुचलल लोकक।
व्याख्या: समीक्षा लेखककेँ उत्पीड़ित अस्मिता-अधिकारक पक्षधर मानैत अछि।

प्रश्न 6587. समसामयिक प्रश्नक झड़ीमे कथाकार की देखबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. रोटीक औकाति आ जीवनक व्यवहारिक मुद्दा।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. रोटीक औकाति आ जीवनक व्यवहारिक मुद्दा।
व्याख्या: भ्रमरक कथा सामाजिक अर्थसंकटकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि।

प्रश्न 6588. समीक्षक भ्रमरक शिल्पबारे कोन आलोचना करैत छथि?
क. कथ्य जतेक सजग, शिल्पमे ओतेक सजगता नहि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. कथ्य जतेक सजग, शिल्पमे ओतेक सजगता नहि।
व्याख्या: प्रशंसा संग समीक्षक संरचनात्मक कमजोरी सेहो दर्ज करैत अछि।

प्रश्न 6589. भ्रमरक अनुभववादी दृष्टि कोन यथार्थ चित्रित करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. गाम-घर, अड़ोस-पड़ोसक देखल-भोगल यथार्थ।
उत्तर: घ. गाम-घर, अड़ोस-पड़ोसक देखल-भोगल यथार्थ।
व्याख्या: अनुभव कथासंसारक विश्वसनीय आधार बनैत अछि।

प्रश्न 6590. भ्रमरक पात्र विशेषतः केकर प्रति संवेदनशील अछि?
क. निरीह समाज आ नारी पात्रक प्रति।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. निरीह समाज आ नारी पात्रक प्रति।
व्याख्या: समीक्षा नारी-अधिकार आ चेतनाबोधक पक्षधरता रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 6591. नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे भ्रमरक योगदान कोना देखल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मात्रा आ गुण दुनू दृष्टिसँ प्रभाव छोड़ैत अछि।
उत्तर: घ. मात्रा आ गुण दुनू दृष्टिसँ प्रभाव छोड़ैत अछि।
व्याख्या: संग्रह कथा-भंडार भरैत आ मूल्य-बोधक संवाहक बनैत अछि।

प्रश्न 6592. एहि समीक्षा-खंडक अन्तिम विश्वास की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. भ्रमरक कथा सामाजिक परिवर्तनमे अपन औकाति सिद्ध करत आ ऐतिहासिक मूल्य पाओत।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. भ्रमरक कथा सामाजिक परिवर्तनमे अपन औकाति सिद्ध करत आ ऐतिहासिक मूल्य पाओत।
व्याख्या: समीक्षक भविष्यक मूल्यांकनमे भ्रमरक कथा-दृष्टि पर भरोसा जतबैत अछि।

खण्ड ६६५ : विदेह-सदेह २ — आशाक किरण: मैथिली संचार माध्यमक आरम्भिक विस्तार

प्रश्न 6593. “आशाक किरण” लेखमे मैथिली भाषाक कोन नब प्रवृत्ति चिन्हित अछि?
क. मैथिली धीरे-धीरे विद्युतीय संचार माध्यममे स्थान बना रहल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मैथिली धीरे-धीरे विद्युतीय संचार माध्यममे स्थान बना रहल अछि।
व्याख्या: लेख मैथिलीकेँ मुद्रित दायरासँ आगू टीवी/इलेक्ट्रॉनिक माध्यममे प्रवेश करैत देखैत अछि।

प्रश्न 6594. सौभाग्य मिथिला नामक टेलिभिजनक प्रकृति लेखमे कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. सम्पूर्ण मैथिली मनोरंजनात्मक टेलिभिजन रूपमे।
उत्तर: घ. सम्पूर्ण मैथिली मनोरंजनात्मक टेलिभिजन रूपमे।
व्याख्या: लेखमे गीत-नाद आ टेली-श्रृंखला प्रसारण ओकर प्रमुख पक्ष कहल गेल अछि।

प्रश्न 6595. लेखक जनसंख्या अनुपातक आधारपर मैथिली समाजक कोन कमी बतबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. समुदायकेँ अपन पर्याप्त संचार माध्यम नहि भेटल।
उत्तर: घ. समुदायकेँ अपन पर्याप्त संचार माध्यम नहि भेटल।
व्याख्या: समुदाय संख्या मे पैघ रहितहुँ मीडिया-संरचनामे पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहि पबैत अछि।

प्रश्न 6596. भारत-नेपाल सीमामे बाँटल मिथिलाबारे मुख्य बाध्यता की कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. आन भाषाक माध्यमसँ सुसूचित होएबाक विवशता।
उत्तर: घ. आन भाषाक माध्यमसँ सुसूचित होएबाक विवशता।
व्याख्या: प्रतीकात्मक मिथिला अपन भाषाक स्वायत्त सूचना-माध्यमसँ वंचित बताओल गेल अछि।

प्रश्न 6597. नेपालक किछु एफ.एम. आ चैनल सभ मैथिली लेल की करैत छल?
क. समाचार आ मनोरंजनक सामग्री पहुँचा रहल छल।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. समाचार आ मनोरंजनक सामग्री पहुँचा रहल छल।
व्याख्या: लेखमे मैथिली सामग्रीक आंशिक प्रसारक उल्लेख सकारात्मक संकेत रूपमे अछि।

प्रश्न 6598. नेपाल वनक मधेश स्पेशल कार्यक्रममे पहिने की-की प्रसारित होइत छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. मैथिली समाचार, अन्तर्वार्ता आ मैथिली-भोजपुरी गीत।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मैथिली समाचार, अन्तर्वार्ता आ मैथिली-भोजपुरी गीत।
व्याख्या: दिल्लीसँ चलल एहि प्रसारणमे मैथिली लेल एक घण्टाक महत्त्वपूर्ण स्थान छल।

प्रश्न 6599. नेपाल वनक कार्यक्रममे बादमे कोन भाषासभकेँ सेहो सन्हिया देल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भोजपुरी आ थारु।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. भोजपुरी आ थारु।
व्याख्या: एहि बदलावसँ मैथिली लेल उपलब्ध समयक साझेदारी बढ़ल।

प्रश्न 6600. हमार आ महुवा टेलिभिजनक उल्लेख किएक अछि?
क. भोजपुरी चैनल रहितहुँ कखनो-कखनो मैथिली सामग्री देबाक कारण।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. भोजपुरी चैनल रहितहुँ कखनो-कखनो मैथिली सामग्री देबाक कारण।
व्याख्या: लेख मैथिली प्रसारक छिटपुट अवसरसभ सेहो नोंद करैत अछि।

प्रश्न 6601. सहारा समयक मैथिली कार्यक्रमक समस्या की रहल?
क. साप्ताहिक कार्यक्रम शुरू भेल, मुदा निरन्तरता नहि पाबि सकल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. साप्ताहिक कार्यक्रम शुरू भेल, मुदा निरन्तरता नहि पाबि सकल।
व्याख्या: लेख मैथिली कार्यक्रमक अस्थिरता पर ध्यान देत अछि।

प्रश्न 6602. आशाक किरण: मैथिली संचार माध्यमक आरम्भिक विस्तार खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मैथिली टीवी माध्यममे प्रवेश करैत अछि, मुदा प्रतिनिधित्व अभी छिटपुट आ अस्थिर अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मैथिली टीवी माध्यममे प्रवेश करैत अछि, मुदा प्रतिनिधित्व अभी छिटपुट आ अस्थिर अछि।
व्याख्या: “आशाक किरण” आशा आ अभाव दुनूकेँ एकसंग रेखांकित करैत अछि।

खण्ड ६६६ : विदेह-सदेह २ — आशाक किरण: भारत-नेपाल प्रसारण, उपेक्षा आ भविष्य

प्रश्न 6603. मैथिली भारतक अष्टम अनुसूचीमे पड़लाक बादो कोन समस्या रहल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. सरकारी संचार माध्यममे अपेक्षित स्थान नहि बनि सकल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सरकारी संचार माध्यममे अपेक्षित स्थान नहि बनि सकल।
व्याख्या: लेख संवैधानिक मान्यताक बादो मीडिया-मान्यताक अभाव देखबैत अछि।

प्रश्न 6604. नेपाल वनक मैथिली प्रसारणक विशेष असर कोना वर्णित अछि?
क. मैथिली भाषी समाजमे ओकर अलग स्थान बनल।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मैथिली भाषी समाजमे ओकर अलग स्थान बनल।
व्याख्या: भारतसँ संचालित चैनल नेपालक मैथिली भाषी समुदायमे प्रभावी बनल।

प्रश्न 6605. नेपाल टेलिभिजनमे मैथिलीबारे लेख की कहैत अछि?
क. मैथिली एखनो उपेक्षित अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मैथिली एखनो उपेक्षित अछि।
व्याख्या: नेपालक सरकारी माध्यममे मैथिली लेल स्थिर जगह नहि बनल बताओल गेल अछि।

प्रश्न 6606. सगरमाथा टेलिभिजन मैथिलीमे की प्रसारित करैत छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. साँझमे लगभग पन्द्रह मिनटक समाचार।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. साँझमे लगभग पन्द्रह मिनटक समाचार।
व्याख्या: ई निजी चैनलक मैथिली सूचना-प्रसारणक उदाहरण अछि।

प्रश्न 6607. तराई टेलिभिजन मैथिली लेल की उपलब्ध करैत छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मनोरंजनात्मक आ सूचनामूलक कार्यक्रम।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मनोरंजनात्मक आ सूचनामूलक कार्यक्रम।
व्याख्या: बीरगंजसँ प्रसारित एहि माध्यमक उल्लेख क्षेत्रीय मैथिली प्रसारण रूपमे अछि।

प्रश्न 6608. नेपाल टेलिभिजनक मेट्रो टेलिभिजन कार्यक्रमक स्थिति की रहल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. साप्ताहिक मैथिली कार्यक्रम किछु एपिसोड चलि बन्द/अनिरंतर भेल।
उत्तर: घ. साप्ताहिक मैथिली कार्यक्रम किछु एपिसोड चलि बन्द/अनिरंतर भेल।
व्याख्या: लेख फेर निरन्तरताक कमीकेँ महत्त्वपूर्ण समस्या मानैत अछि।

प्रश्न 6609. लेखक सशक्त मैथिली संचार माध्यमक अभावकेँ कोना देखैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. नितान्त अभाव।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. नितान्त अभाव।
व्याख्या: एहि अभावकेँ मैथिली भविष्यक बुनियादी संकटसँ जोड़ल गेल अछि।

प्रश्न 6610. सूचना-प्रविधिक युगमे संचार माध्यम मैथिली लेल किएक जरूरी अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. अस्तित्व बचएबामे सहायक बनि सकैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. अस्तित्व बचएबामे सहायक बनि सकैत अछि।
व्याख्या: लेख भाषिक जीवनरक्षा आ संचार-संरचना बीच सीधा सम्बन्ध स्थापित करैत अछि।

प्रश्न 6611. सशक्त माध्यम बिना मैथिली भविष्यबारे लेखकक निष्कर्ष की अछि?
क. सुनिश्चित भविष्यक कल्पना मात्र रहि जाएत।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. सुनिश्चित भविष्यक कल्पना मात्र रहि जाएत।
व्याख्या: भाषाक भविष्य भावनासँ नहि, संस्थागत माध्यमसँ सुरक्षित होएत।

प्रश्न 6612. “सिकुड़ल काया कहिया पुष्ट हएत” कथन की संकेत करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सम्भावना बहुत अछि, मुदा संचारमे मैथिलीक आकार कमजोर अछि।
उत्तर: घ. सम्भावना बहुत अछि, मुदा संचारमे मैथिलीक आकार कमजोर अछि।
व्याख्या: लेख आशाक संग अनिश्चितताक यथार्थ स्वीकार करैत अछि।

खण्ड ६६७ : विदेह-सदेह २ — फूल चन्द्र झा ‘प्रवीण’: जीवन, रचना-संसार आ शिशु-साहित्य प्रवेश

प्रश्न 6613. फूल चन्द्र झा ‘प्रवीण’क जन्म-संदर्भ कोना देल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. १० अक्टूबर १९६१, तुमौल-पूतइ, दरभंगाक पृष्ठभूमि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. १० अक्टूबर १९६१, तुमौल-पूतइ, दरभंगाक पृष्ठभूमि।
व्याख्या: परिचय हुनकर ग्राम, परिवार आ जन्मतिथि स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 6614. फूल चन्द्र झाक व्यवसाय की बताओल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. अध्यापन।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. अध्यापन।
व्याख्या: परिचयमे अध्यापनकेँ हुनकर व्यवसाय रूपमे राखल गेल अछि।

प्रश्न 6615. हुनकर अभिरुचि सभमे कोन-कोन क्षेत्र अछि?
क. लेखन, चित्रकला, अभिनय, गीत-संगीत आ सामाजिक कार्य।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. लेखन, चित्रकला, अभिनय, गीत-संगीत आ सामाजिक कार्य।
व्याख्या: परिचय हुनका बहुआयामी सांस्कृतिक व्यक्ति रूपमे चिन्हैत अछि।

प्रश्न 6616. हुनकर कविता-संग्रहमे कोन शीर्षक उल्लिखित अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. “आयल नवल प्रभात” आदि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. “आयल नवल प्रभात” आदि।
व्याख्या: रचना-संसारमे कैक कविता-संग्रहक नाम देल गेल अछि।

प्रश्न 6617. नाटक-सूचीमे “आन्दोलन” संग कोन सामाजिक स्वर देखाइत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सामाजिक-राजनीतिक विषयक नाटक रचना।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सामाजिक-राजनीतिक विषयक नाटक रचना।
व्याख्या: “आन्दोलन”, “सामाजिक न्याय” आदि शीर्षक सामाजिक सरोकारक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 6618. फूल चन्द्र झाक कथा-संग्रहक नाम की अछि?
क. “भूत होइत भविष्य”।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. “भूत होइत भविष्य”।
व्याख्या: परिचयमे कथा-संग्रह अलग रूपे उल्लिखित अछि।

प्रश्न 6619. “हमरा जनैत” कोन विधाक पुस्तक अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. निबंध-संग्रह।
उत्तर: घ. निबंध-संग्रह।
व्याख्या: रचना-संसारमे निबंधक क्षेत्र सेहो उपस्थित अछि।

प्रश्न 6620. संकलन-सम्पादनमे हुनकर कोन काज देल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. बाबू भोलालाल दास रचनावली आ मधुपजी बीछल बेरायल कविता।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. बाबू भोलालाल दास रचनावली आ मधुपजी बीछल बेरायल कविता।
व्याख्या: हुनका सर्जकक संग सम्पादक रूपमे सेहो चिन्हित कएल गेल।

प्रश्न 6621. हुनकर अनुवाद-कृति कोन अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. “मल्लिनाथ” अंग्रेजीसँ।
उत्तर: घ. “मल्लिनाथ” अंग्रेजीसँ।
व्याख्या: परिचयमे अनुवादक रूप सेहो शामिल अछि।

प्रश्न 6622. शिशु-साहित्य आलेखक पूर्व परिचयक उपयोग की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. लेखकक व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक आधार देखाएब।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. लेखकक व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक आधार देखाएब।
व्याख्या: एहि पृष्ठभूमिसँ “मैथिली शिशु साहित्य लोक”क लेखकीय विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।

खण्ड ६६८ : विदेह-सदेह २ — मैथिली शिशु साहित्य लोक: मौखिक परम्परा, लिपिबद्धता आ वर्गीकरण

प्रश्न 6623. लेखक मैथिली लोक-साहित्यमे शिशु लोक-साहित्यक मात्रा कोना बतबैत छथि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. अम्बार लागल अछि।

उत्तर: घ. अम्बार लागल अछि।

व्याख्या: लेख शिशु लोक-साहित्यकेँ अत्यन्त विपुल धरोहर मानैत अछि।

प्रश्न 6624. शिशु लोक-साहित्यक कतेक अंश लिपिबद्ध अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. किछु लिपिबद्ध, बेसी मौखिक।

उत्तर: घ. किछु लिपिबद्ध, बेसी मौखिक।

व्याख्या: ई धरोहर मुख्यतः लोकक कंठमे जीवित रहल अछि।

प्रश्न 6625. शिशु लोक-साहित्यक रचनाकारबारे लेख की कहैत अछि?

क. अज्ञात समय आ अज्ञात लोक-रचनाकार।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. अज्ञात समय आ अज्ञात लोक-रचनाकार।

व्याख्या: लोक-साहित्य व्यक्तिगत लेखकक बदला सामूहिक परम्परा सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6626. मौखिक परम्पराकेँ वेद-समान कहबाक आशय की अछि?

क. हजारो वर्ष धरि कंठ-परम्परामे जीवित रहब।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. हजारो वर्ष धरि कंठ-परम्परामे जीवित रहब।

व्याख्या: लेख मौखिक स्मृति आ पीढ़ीगत संचारक गहिराइ बतबैत अछि।

प्रश्न 6627. मौखिक परम्परामे जीबबाक कारणेँ कोन संकट उभरैत अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. मौलिकता दिनानुदिन नष्ट भेल जा रहल अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ख. मौलिकता दिनानुदिन नष्ट भेल जा रहल अछि।

व्याख्या: शब्द, उच्चारण आ रूप क्षेत्र-विशेष अनुसार बदलि रहल अछि।

प्रश्न 6628. लेखमे शिशु लोक-साहित्यक मुख्य केन्द्र कोन विधा अछि?

क. पद्य विधा।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. पद्य विधा।

व्याख्या: लेख पद्यकेँ केन्द्र बनबैत, थोड़े आनो विधा पर विचार करैत अछि।

प्रश्न 6629. पूर्व संकलन/अध्ययनमे केकर कृति उपयोगी कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”, अणिमा सिंह आ दमन कुमार झाक काज।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”, अणिमा सिंह आ दमन कुमार झाक काज।
व्याख्या: लेख पूर्ववर्ती संकलन-समालोचनाकेँ स्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 6630. मैथिली शिशु लोक-साहित्यक पहिल भाग की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. लालन-पालनसँ सम्बद्ध।
उत्तर: घ. लालन-पालनसँ सम्बद्ध।
व्याख्या: लेख वर्गीकरणक आधार नेनाक जीवन-स्थिति पर राखैत अछि।

प्रश्न 6631. दोसरा आ तेसरा भाग की अछि?
क. खेल-मनोरंजनसँ सम्बद्ध आ ज्ञानोपयोगी।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. खेल-मनोरंजनसँ सम्बद्ध आ ज्ञानोपयोगी।
व्याख्या: तीन-भागी वर्गीकरण शिशु-जीवनक देखभाल, खेल आ शिक्षा कवर करैत अछि।

प्रश्न 6632. एहि खण्डक मूल स्थापना की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. शिशु लोक-साहित्य मौखिक, पीढ़ीगत, विपुल आ संरक्षण-योग्य धरोहर अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. शिशु लोक-साहित्य मौखिक, पीढ़ीगत, विपुल आ संरक्षण-योग्य धरोहर अछि।
व्याख्या: लेख लोककंठमे बाँचल साहित्यकेँ शोध-योग्य बनबैत अछि।

खण्ड ६६९ : विदेह-सदेह २ — लालन-पालन: सोहर, तेल-मालिश आ देह-उँगार गीत

प्रश्न 6633. लालन-पालन सम्बद्ध शिशु लोक-साहित्यक परिवेश कोना बताओल गेल?
क. घर-आँगनसँ दलान धरि सीमित।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. घर-आँगनसँ दलान धरि सीमित।
व्याख्या: ई साहित्य नेनाक निकट घरेलू जगतमे घटित होइत अछि।

प्रश्न 6634. नेनाक जन्मक बाद सभसँ पहिने कोन ध्वनि कानमे पड़ैत अछि?
क. सोहर।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. सोहर।
व्याख्या: जन्म-संस्कारसँ शिशु लोक-साहित्य आरम्भ भऽ जाइत अछि।

प्रश्न 6635. नेनाक अवस्था बदलैत शिशु लोक-साहित्यमे की परिवर्तन होइत अछि?
क. रूप आ प्रयोजन बदलैत जाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. रूप आ प्रयोजन बदलैत जाइत अछि।
व्याख्या: जन्मसँ चलन धरि अलग-अलग गीत/क्रीड़ा जुड़ैत अछि।

प्रश्न 6636. कड़ूतेलसँ जाँतल-पीचल जाइत समय कोन तरहक पद चलैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. “चैं-चैं-चैं बौआ सूतभैं” सन पंक्ति।
उत्तर: घ. “चैं-चैं-चैं बौआ सूतभैं” सन पंक्ति।
व्याख्या: तेल-मालिशक क्रिया लयबद्ध लोक-पद्य सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6637. चानि पर तेल पचबैत नेनाक देह उँगारबाक पदमे की भाव अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. शारीरिक सुदृढ़ता आ खेलक मिश्र भाव।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. शारीरिक सुदृढ़ता आ खेलक मिश्र भाव।
व्याख्या: “ईलसन, कील सन” आदि छवि नेनाक देह-देखभालक लोक-शैली देखबैत अछि।

प्रश्न 6638. नेनाक हाथसँ लोकबाक बाद ओ किएक कानए लगैत अछि?
क. डरक कारण।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. डरक कारण।
व्याख्या: लालन-पालनमे खेल, डर, मनुहार आ पुचकार सब सम्मिलित अछि।

प्रश्न 6639. “बौआ आम तोड़ू / जाम तोड़ू” पदक उपयोग कहिया होइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. नेनाकेँ बहटारबाक/मनोरंजन करबाक समय।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. नेनाकेँ बहटारबाक/मनोरंजन करबाक समय।
व्याख्या: फल-छवि लोक-खेलक सरल बिम्ब बनैत अछि।

प्रश्न 6640. टाँग पकड़ि उनटाकऽ झुलबैत कोन गामसभ देखाओल जाइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. मामा गाम, नाना गाम आ अपन गाम।
उत्तर: घ. मामा गाम, नाना गाम आ अपन गाम।
व्याख्या: गाम-परिचय परिवारिक रिश्ताक बाल-रूप अछि।

प्रश्न 6641. मामा गाम आ अपन गामक भेदमे कौन रोचक बात कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. नेना जतय रहए, ओकरा अनुसार दादा-दादी वा नाना-नानीक चौल कएल जाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. नेना जतय रहए, ओकरा अनुसार दादा-दादी वा नाना-नानीक चौल कएल जाइत अछि।
व्याख्या: लोक-पद्य रिश्तेदारीक स्थिति अनुसार रूप बदलैत अछि।

प्रश्न 6642. लालन-पालन: सोहर, तेल-मालिश आ देह-उँगार गीत खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. शिशु-पालनमे देह-देखभाल, रिश्तेदारी आ खेल-पद्य एकसंग चलैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. शिशु-पालनमे देह-देखभाल, रिश्तेदारी आ खेल-पद्य एकसंग चलैत अछि।
व्याख्या: लालन-पालनक लोक-साहित्य नेनाक सामाजिक आरम्भ करबैत अछि।

खण्ड ६७० : विदेह-सदेह २ — संझा-मैया, नजर-गुजरि, जिज्ञासा आ चलन-सिखाबन

प्रश्न 6643. पहिल साँझ दीप लेसलाक बाद कोन प्रार्थना कएल जाइत अछि?
क. संझा-मैया सँ नेनाक रक्षा लेल प्रार्थना।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. संझा-मैया सँ नेनाक रक्षा लेल प्रार्थना।
व्याख्या: रक्षक देवता, सुखक राति आ दुःख-दरिद्र हटबाक कामना लोक-पद्यक केन्द्र अछि।

प्रश्न 6644. “आको मैया चाको” पदक उद्देश्य की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. छोट नेनाक रक्षा।
उत्तर: घ. छोट नेनाक रक्षा।
व्याख्या: ई पद संध्या-समयक घरेलू धार्मिक-सांस्कृतिक सुरक्षा-विधि अछि।

प्रश्न 6645. देखनुहुक नेनाक नजरि-गुजरि हटएबाक लेल कोन तरहक पद अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. हँसनी-खिलनी/राजा धनपाल दोहाइ सन पद।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. हँसनी-खिलनी/राजा धनपाल दोहाइ सन पद।
व्याख्या: नेनाक सुन्दरता पर नजरि लगबाक डर लोक-पद्यसँ निबटाओल जाइत अछि।

प्रश्न 6646. छठिहारक दीप सँ जुड़ल लोकविश्वास की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. दीप मिझा राखि बादमे टोटमा करबाक प्रथा।
उत्तर: घ. दीप मिझा राखि बादमे टोटमा करबाक प्रथा।
व्याख्या: लेख प्राचीन विश्वासक उल्लेख करैत अछि, मुदा वर्तमानमे कम देखाइत अछि।

प्रश्न 6647. नेना बैसऽ लगैत अछि तखन “आनी-मानी” पदक उपयोग किएक?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. जिज्ञासा पूर्ति आ बालबोधक खेल लेल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. जिज्ञासा पूर्ति आ बालबोधक खेल लेल।
व्याख्या: नेनाक कपार पर आँगुर घुमाएब उत्तर/संकेतक लोक-खेल अछि।

प्रश्न 6648. बिचला आँगुर पकड़बाकेँ कोना देखल जाइत अछि?
क. जिज्ञासा पूरा होएबाक सम्भावना प्रबल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. जिज्ञासा पूरा होएबाक सम्भावना प्रबल।
व्याख्या: लोकविश्वास बाल-हावभावकेँ संकेत रूपमे पढ़ैत अछि।

प्रश्न 6649. नेना ठाढ़ होएब सीखैत समय कोन पद्य सुनाओल जाइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. “था...था...दिग-दिग था” प्रकारक पद।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. “था...था...दिग-दिग था” प्रकारक पद।
व्याख्या: ई पद नेनाक डेग उठएबाक प्रोत्साहन अछि।

प्रश्न 6650. डेग उठएबाक क्रममे नेना बेर-बेर की करैत अछि?
क. खसैत अछि आ फेर प्रयास करैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. खसैत अछि आ फेर प्रयास करैत अछि।
व्याख्या: लोक-पद्य सीखबाक प्रक्रिया मे धैर्य आ उत्साह भरैत अछि।

प्रश्न 6651. चलन-सिखाबन पदक शिशु-विकासमे भूमिका की अछि?
क. बूलब/चलन सीखबामे लयात्मक सहारा।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. बूलब/चलन सीखबामे लयात्मक सहारा।
व्याख्या: शारीरिक विकास लोकधुन आ पुचकारसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6652. संझा-मैया, नजर-गुजरि, जिज्ञासा आ चलन-सिखाबन खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. लोक-साहित्य नेनाक रक्षा, नजर हटएब, जिज्ञासा आ चलन-सिखाबनक साधन अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. लोक-साहित्य नेनाक रक्षा, नजर हटएब, जिज्ञासा आ चलन-सिखाबनक साधन अछि।
व्याख्या: बाल-जीवनक सूक्ष्म चरणसभ लोक-गीतक माध्यमे संस्कारित होइत अछि।

खण्ड ६७१ : विदेह-सदेह २ — चन्ना मामा, तारा-कथा आ लोरीक दीर्घायु-कामना

प्रश्न 6653. चन्ना मामा पदक प्रयोग कहिया होइत अछि?
क. नेनाक संग कथा-गीत गाबि चान देखबैत।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. नेनाक संग कथा-गीत गाबि चान देखबैत।
व्याख्या: चानक छवि बाल-कल्पना आ खेनाइ-सुताइ संग जुड़ैत अछि।

प्रश्न 6654. “सोनाक कटोरामे दूध-भात” छवि की सूचित करैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. नेनाक पोषण आ लाड़-प्यार।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. नेनाक पोषण आ लाड़-प्यार।
व्याख्या: चन्ना मामा पदमे खोराक आ स्नेहक कल्पना अछि।

प्रश्न 6655. तरेगण दिस तकबैत “एक तारा दू तारा” मे कथा-श्रृंखला कोना चलैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. एक वस्तु दोसराक हाथ जाइत क्रम बनैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. एक वस्तु दोसराक हाथ जाइत क्रम बनैत अछि।
व्याख्या: बाल-कथा कड़ी-दर-कड़ी स्मृति आ लय पर आधारित अछि।

प्रश्न 6656. तारा-बेटी कथा मे गंगाकातक बालु सँ शुरू भऽ क्रम कहाँ धरि पहुँचैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. कनुनियाँ, फुटहा, चरबहबा, गैया, बिलैया, मूसा, चिलहोरबा, राजा, हाथी, मामा धरि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. कनुनियाँ, फुटहा, चरबहबा, गैया, बिलैया, मूसा, चिलहोरबा, राजा, हाथी, मामा धरि।
व्याख्या: एहि संचरित क्रममे बाल-स्मृति, पशु-पक्षी आ रिश्तेदारी मिलैत अछि।

प्रश्न 6657. सुतएबाक काल नेनाक कनपट्टी-माथ सोहरबैत कोन परम्परा अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोरी गाबबाक।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. लोरी गाबबाक।
व्याख्या: लोरी देह-स्पर्श, डोलाव आ धुनक सम्मिलित क्रिया अछि।

प्रश्न 6658. “आगे निनियाँ आ आ” पदक मूल प्रयोजन की?
क. नेनाक निन्न आनब।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. नेनाक निन्न आनब।
व्याख्या: लोरी निन्नक मानवीकरण करि बौआ लग बोलबैत अछि।

प्रश्न 6659. ममहरसँ जुड़ल लोरीमे नेनाक खोराक की-की रूपमे अबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. आरब चाउरक भात, गायक दूध, चूड़ा आदि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. आरब चाउरक भात, गायक दूध, चूड़ा आदि।
व्याख्या: लोरी खेनाइ आ दीर्घ जीवनक शुभकामना संग चलैत अछि।

प्रश्न 6660. लोरी सभक माध्यमसँ केवल सुताएल जाइत अछि कि आरो किछु?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. संगहि दीर्घायु होएबाक कामना कएल जाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. संगहि दीर्घायु होएबाक कामना कएल जाइत अछि।
व्याख्या: लेख लोरीक भावात्मक आ मंगलकामना पक्ष स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 6661. नेना सुति गेलापर माए की करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. निश्चिंत भऽ घरक काज-रोजगारमे लागि जाइत छथि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. निश्चिंत भऽ घरक काज-रोजगारमे लागि जाइत छथि।
व्याख्या: लोरी घरेलू श्रम-संरचनासँ सेहो जुड़ल अछि।

प्रश्न 6662. चन्ना मामा, तारा-कथा आ लोरीक दीर्घायु-कामना खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. चन्ना, तारा आ लोरी शिशु-पोषण, कल्पना, निन्न आ मंगलकामना सँ भरल अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. चन्ना, तारा आ लोरी शिशु-पोषण, कल्पना, निन्न आ मंगलकामना सँ भरल अछि।
व्याख्या: बाल लोक-साहित्य घरेलू जीवनक भावात्मक लय बनबैत अछि।

खण्ड ६७२ : विदेह-सदेह २ — घुघुआ-मना, दादी-नानीक पद आ नेनाक बहटार

प्रश्न 6663. घुघुआ-मना/धुआँ-चुआँ खेलमे वयस्क की करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. उतान पड़ि नेनाकेँ पैरपर बैसाय पैर ऊपर-नीचाँ करैत छथि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. उतान पड़ि नेनाकेँ पैरपर बैसाय पैर ऊपर-नीचाँ करैत छथि।
व्याख्या: ई खेल वयस्क आ नेना दुनूक मनोरंजनक साधन अछि।

प्रश्न 6664. घुघुआ-मना खेलक पदमे मामा-पटना-चोर प्रसंग किएक रोचक अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. घरेलू हास्य आ गति-बिम्बक कारण।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. घरेलू हास्य आ गति-बिम्बक कारण।
व्याख्या: खेलमे कथा, ठिठोली आ शरीरक डोल एकसंग अछि।

प्रश्न 6665. “नव घर उठे / पुरान घर खसे” कहब कहिया होइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. पैर उठाएब-खसाएबाक समय।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. पैर उठाएब-खसाएबाक समय।
व्याख्या: खेलक शारीरिक क्रिया घरक प्रतीकात्मक भाषा संग जुड़ैत अछि।

प्रश्न 6666. नेना जागल रहैत अछि तखन ओकरा की चाही?
क. कोनो एक लोकक सानिध्य।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. कोनो एक लोकक सानिध्य।
व्याख्या: लेख बालक सामाजिक-स्नेह आवश्यकताकेँ चिन्हैत अछि।

प्रश्न 6667. गायक अतिरिक्त नेनाक मोन बहटारबाक लेल के-के पद गाबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. नानी, दादी, दीदी आदि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. नानी, दादी, दीदी आदि।
व्याख्या: शिशु-पालन सामूहिक घरेलू जिम्मेदारी अछि।

प्रश्न 6668. “अलिया गै, मलिया गै” सन पदक प्रकृति की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. भास लगा कऽ गाओल रंग-बिरंगक पद्य।
उत्तर: घ. भास लगा कऽ गाओल रंग-बिरंगक पद्य।
व्याख्या: लोक-पद्यक उद्देश्य नेनाक मोन बहटारब अछि।

प्रश्न 6669. “लाल गाछी गेली” पदमे कोन घरेलू दृश्य अबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. आम, बाबा, बाघ-बघिनियाँ, चूड़ा आ नजरि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. आम, बाबा, बाघ-बघिनियाँ, चूड़ा आ नजरि।
व्याख्या: बाल-पद्य परिचित ग्रामीण वस्तुसंसारसँ बनल अछि।

प्रश्न 6670. “पड़बा रूसल जाइ छै” छवि की सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. बालक मनुहार आ लोक-हास्य।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. बालक मनुहार आ लोक-हास्य।
व्याख्या: छोट-छोट प्रसंग नेनाक मनोरंजन लेल नाटकीय बनैत अछि।

प्रश्न 6671. दादी-नानी-दीदीक योगदान शिशु-साहित्यमे किएक महत्त्वपूर्ण?
क. नेनाक भाव-पालन आ लोक-स्मृति-संक्रमण दुनू हुनके माध्यमे होइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. नेनाक भाव-पालन आ लोक-स्मृति-संक्रमण दुनू हुनके माध्यमे होइत अछि।
व्याख्या: घरेलू स्त्री-पात्र शिशु लोक-साहित्यक प्रमुख संवाहक अछि।

प्रश्न 6672. घुघुआ-मना, दादी-नानीक पद आ नेनाक बहटार खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. घुघुआ-मना आ बहटार-पद्य शिशु-मनोरंजन, शारीरिक खेल आ घरेलू सामूहिकता जोड़ैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. घुघुआ-मना आ बहटार-पद्य शिशु-मनोरंजन, शारीरिक खेल आ घरेलू सामूहिकता जोड़ैत अछि।
व्याख्या: नेनाक जागल समय लोकगीतक जीवित मंच बनैत अछि।

खण्ड ६७३ : विदेह-सदेह २ — दीदी, मामा-मामी आ रिश्तेदारीक पालन-पद्य

प्रश्न 6673. दीदी अर्थात पिउसिक योगदानकेँ लेखमे कोना देखल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. नेनाक लालन-पालनमे बड़ महत्त्वपूर्ण।
उत्तर: घ. नेनाक लालन-पालनमे बड़ महत्त्वपूर्ण।
व्याख्या: दीदी-पद्य शिशु देखभालमे बहिन-पिउसिक भूमिका चिन्हैत अछि।

प्रश्न 6674. “लाल दीदी गे” पदमे कोन चीज तोड़ए लेल डलिया माँगल जाइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मिरचाइ।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मिरचाइ।
व्याख्या: दीदी-पद्य घरेलू वस्तु आ खेलक मिश्र भाषा रखैत अछि।

प्रश्न 6675. दीदी-पद्य मे पुलिसबा प्रसंग की करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. हास्य-भय आ लुकाएबाक खेल रचैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. हास्य-भय आ लुकाएबाक खेल रचैत अछि।
व्याख्या: बालगीत छोट सामाजिक पात्रसभकेँ खेलक रूपमे आनैत अछि।

प्रश्न 6676. “बेटा कनै छी खोपड़ीमे” पदक भाव की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. कानय, खेनाइ, सुताइ आ उठबैबाक घरेलू ठिठोली।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. कानय, खेनाइ, सुताइ आ उठबैबाक घरेलू ठिठोली।
व्याख्या: दीदी-पद्य शिशु-दैनिकता केँ हास्यमय बनबैत अछि।

प्रश्न 6677. तीसर दीदी-पद “एक रत्ती छाल्ही” कोन भाव राखैत अछि?
क. छोट गलती पर बाबा मारलक — बाल शिकायत।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. छोट गलती पर बाबा मारलक — बाल शिकायत।
व्याख्या: बालस्वर आ घरेलू अनुशासन लोकगीतमे प्रवेश करैत अछि।

प्रश्न 6678. बेटीकेँ संतानक योग्यता भेलापर नैहर अनबाक परम्परा किएक उल्लेखित अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. मामा-मामी-नाना-नानीक दुलारक संदर्भ लेल।
उत्तर: घ. मामा-मामी-नाना-नानीक दुलारक संदर्भ लेल।
व्याख्या: नेनाक रिश्तेदारीक विस्तार मातृकुल धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 6679. मामा-पद्य मे पोखरी भीड़पर की अनबाक कहल जाइत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. चिक्कन पड़बा।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. चिक्कन पड़बा।
व्याख्या: मामा-मामीक पद्य खोराक, ममता आ शिकायत संग भरल अछि।

प्रश्न 6680. मामी-पद्य मे “भात उधिआए / दालि उधिआए” की सूचित करैत अछि?
क. मामाघरक भोजन-संसार।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. मामाघरक भोजन-संसार।
व्याख्या: बाल-गीत खेनाइ-पीबाइ आ दुलारक घरेलू स्मृति बनबैत अछि।

प्रश्न 6681. “आब नहि जएबै मामाक अँगना” क भाव की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मामाघरमे अपना लेल कम, दूसर लेल लाल-लाल कुटिया देखिक शिकायत।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मामाघरमे अपना लेल कम, दूसर लेल लाल-लाल कुटिया देखिक शिकायत।
व्याख्या: बाल-पद्य दुलारक संग बाल-मनक ईर्ष्या/असंतोष सेहो रखैत अछि।

प्रश्न 6682. दीदी, मामा-मामी आ रिश्तेदारीक पालन-पद्य खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. रिश्तेदारी शिशु लोक-पद्यकेँ मामा, मामी, दीदी, बाबा आदि पात्रसँ समृद्ध करैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. रिश्तेदारी शिशु लोक-पद्यकेँ मामा, मामी, दीदी, बाबा आदि पात्रसँ समृद्ध करैत अछि।
व्याख्या: बाल-साहित्य परिवारिक जालक माध्यमे भाव-संस्कार बनबैत अछि।

खण्ड ६७४ : विदेह-सदेह २ — खेल आ मनोरंजन: अटकन-मटकनसँ बाल-कथा-काव्य धरि

प्रश्न 6683. खेल-मनोरंजन सम्बद्ध शिशु लोक-साहित्यक परिवेश कोना अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. रस्ता-पेरा, परती-पराँत, विद्यालय-परिसर आ खेलक मैदान धरि विस्तृत।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. रस्ता-पेरा, परती-पराँत, विद्यालय-परिसर आ खेलक मैदान धरि विस्तृत।
व्याख्या: लालन-पालनक घर-सीमा सँ ई साहित्य बाहरक सामूहिक जगतमे फैलैत अछि।

प्रश्न 6684. “अटकन-मटकन” खेलमे सिंगही कहला पर की होइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. बिट्ठू काटल जाइत अछि।
उत्तर: घ. बिट्ठू काटल जाइत अछि।
व्याख्या: खेलमे उत्तर अनुसार दंड/क्रिया बदलैत अछि।

प्रश्न 6685. ओहि खेलमे मुँगरी कहला पर की होइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. मुक्कासँ मारल जाइत अछि।
उत्तर: घ. मुक्कासँ मारल जाइत अछि।
व्याख्या: लोकखेल हास्यपूर्ण दंड-नियम पर चलैत अछि।

प्रश्न 6686. अटकन-मटकनक दोसर रूप किएक महत्त्वपूर्ण?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एकहि खेलक क्षेत्रीय/रूपान्तरित पद देखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. एकहि खेलक क्षेत्रीय/रूपान्तरित पद देखबैत अछि।
व्याख्या: लोकसाहित्यमे पाठांतर स्वाभाविक अछि।

प्रश्न 6687. “गाछ करै ठाँए-ठाँए” पदमे कोन प्राकृतिक बिम्ब अछि?
क. गाछ, नदी, कमल फूल, चमेली आदि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. गाछ, नदी, कमल फूल, चमेली आदि।
व्याख्या: खेल-पद्य प्रकृति आ लोक-छविसँ बनैत अछि।

प्रश्न 6688. बाल-कथा-काव्य “फुद्दी” मे कुस की करैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. फुद्दीक पेट चीरि दैत अछि।
उत्तर: घ. फुद्दीक पेट चीरि दैत अछि।
व्याख्या: अद्भुत-कल्पना बालक मनोयोग आकर्षित करैत अछि।

प्रश्न 6689. फुद्दी कथा मे तीन-तीन वस्तु/पात्रक पुनरावृत्ति किएक प्रभावी अछि?
क. स्मृति, लय आ हास्यक क्रम बनबैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. स्मृति, लय आ हास्यक क्रम बनबैत अछि।
व्याख्या: तीन हेलबार, तीन ब्राह्मण आदि श्रृंखला बाल-श्रवण लेल उपयुक्त अछि।

प्रश्न 6690. फुद्दी कथा मे असंभव घटनाक भूमिका की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बाल-कल्पनाकेँ चमत्कारिक विस्तार देब।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. बाल-कल्पनाकेँ चमत्कारिक विस्तार देब।
व्याख्या: लोककथा-काव्य यथार्थक नियमसँ मुक्त खेल-लोक बनबैत अछि।

प्रश्न 6691. नेना सभ एहन कथा-काव्य केना सुनैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. बड़ मनोयोगसँ।
उत्तर: घ. बड़ मनोयोगसँ।
व्याख्या: लेख स्पष्ट करैत अछि जे एहन असंगत-चमत्कारिक साहित्य बाल-रुचिक अनुरूप अछि।

प्रश्न 6692. खेल आ मनोरंजन: अटकन-मटकनसँ बाल-कथा-काव्य धरि खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. खेल-पद्य नियम, दंड, प्रकृति, चमत्कार आ लय सँ बाल-मनोरंजन रचैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. खेल-पद्य नियम, दंड, प्रकृति, चमत्कार आ लय सँ बाल-मनोरंजन रचैत अछि।
व्याख्या: शिशु लोक-साहित्य खेलक माध्यमे सामूहिक श्रवण-स्मृति बनबैत अछि।

खण्ड ६७५ : विदेह-सदेह २ — रेलगाड़ी, कबड्डी आ गिरगिटरानी: सामूहिक खेलक पद्य

प्रश्न 6693. रेलगाड़ी खेलमे नेना सभ अपनाकेँ कोना बाँटैत अछि?
क. एक गोटा इंजिन, आर सभ डिब्बा।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. एक गोटा इंजिन, आर सभ डिब्बा।
व्याख्या: बालसमूह आधुनिक वस्तु रेलकेँ खेल-देहमे रूपान्तरित करैत अछि।

प्रश्न 6694. “रेलगाड़ी झकमक” पदमे की विशेषता अछि?
क. ध्वनि, गति आ वस्तु-श्रृंखलाक मिश्रण।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. ध्वनि, गति आ वस्तु-श्रृंखलाक मिश्रण।
व्याख्या: रेल, पहिया, कुआँ, तेल आदि बिम्ब बाल-गति बनबैत अछि।

प्रश्न 6695. मिथिलाक खेलमे कबड्डीक परम्परा कोना कहल गेल?
क. बड्डु पुरान।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. बड्डु पुरान।
व्याख्या: लेख कबड्डीकेँ क्षेत्रीय खेल-स्मृति संग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 6696. “कबड्डी-कबड्डीकार” पदमे ककर उल्लेख अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मैना बच्चा आ अण्डापार।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मैना बच्चा आ अण्डापार।
व्याख्या: कबड्डी पद्य खेलक श्वास-ताल आ छवि बनबैत अछि।

प्रश्न 6697. “चेत कबड्डी” पदमे तबला, पइसा, बाग-बगइचा किएक अबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. खेलक लय आ कल्पना बढ़एबाक लेल।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. खेलक लय आ कल्पना बढ़एबाक लेल।
व्याख्या: कबड्डी पद्य केवल खेल-सूत्र नहि, लयात्मक लोक-रचना अछि।

प्रश्न 6698. “कबड्डी खेलऽ गेलहुँ” पदमे कोन दुर्घटना-छवि अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. कपार फुटि गेल, हाथ कटि गेल।
उत्तर: घ. कपार फुटि गेल, हाथ कटि गेल।
व्याख्या: खेलक उत्साहक संग चोटक अतिशयोक्ति हास्य बनैत अछि।

प्रश्न 6699. गिरगिटरानी खेल केकर बीच खेलाएल जाइत रहल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. मिथिलाक कन्या लोकनिक मध्य।
उत्तर: घ. मिथिलाक कन्या लोकनिक मध्य।
व्याख्या: लेख लिंग-विशिष्ट खेल-परम्परा सेहो दर्ज करैत अछि।

प्रश्न 6700. गिरगिटरानी खेलमे एक कन्या की बनैत अछि?
क. गिरगिट।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. गिरगिट।
व्याख्या: अन्य कन्या ओकर जाँघ/पैर पकड़ि घुमबैत खेल रचैत अछि।

प्रश्न 6701. गिरगिट पद्य मे “देस-देससँ आएल छी” क भाव की अछि?
क. कल्पनात्मक यात्रा आ संवाद।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. कल्पनात्मक यात्रा आ संवाद।
व्याख्या: खेलमे प्रश्नोत्तर आ नाटकीय अभिनय जुड़ल अछि।

प्रश्न 6702. रेलगाड़ी, कबड्डी आ गिरगिटरानी: सामूहिक खेलक पद्य खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सामूहिक खेलसभ देह-गतिशीलता, पद्य, अभिनय आ संवादकेँ एकसंग जोड़ैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सामूहिक खेलसभ देह-गतिशीलता, पद्य, अभिनय आ संवादकेँ एकसंग जोड़ैत अछि।
व्याख्या: रेलगाड़ी, कबड्डी आ गिरगिटरानी बालसमूहक जीवित लोकनाट्य अछि।

खण्ड ६७६ : विदेह-सदेह २ — कटहर, झिझिर कोना, साँप-डिगडिग आ आत्मरक्षा-कथा

प्रश्न 6703. कटहरक गाछ खेलमे एक नेना की अभिनय करैत अछि?
क. गाछक।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. गाछक।
व्याख्या: बाकी नेना सभ ओकर पैर पकड़ि फल जेकाँ बैसैत अछि।

प्रश्न 6704. कटहर खेलमे कोतवाल की करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. फल बनल नेना सभकेँ हाथसँ टेबैत अछि।
उत्तर: घ. फल बनल नेना सभकेँ हाथसँ टेबैत अछि।
व्याख्या: खेलमे काँच-पाकल फल पर क्रिया निर्भर करैत अछि।

प्रश्न 6705. गाछक संवाद “काँच छै तऽ छोड़ि दू / पाकल छै तऽ लऽ लू” क अर्थ की?
क. फल पकबाक अभिनय अनुसार चयन।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. फल पकबाक अभिनय अनुसार चयन।
व्याख्या: बाल-खेल कृषि/फल-पक्वता ज्ञानसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6706. “झिझिर कोना” खेल कतय खेलाएल जाइत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. खाली घर, दलानक कोठली वा विद्यालयक कोना धरि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. खाली घर, दलानक कोठली वा विद्यालयक कोना धरि।
व्याख्या: चार कोनाबला स्थान एहि खेलक आधार अछि।

प्रश्न 6707. झिझिर कोना खेलमे मुख्य पद्य-प्रश्न की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. कुन कोना जाएब।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. कुन कोना जाएब।
व्याख्या: ई खेल स्थान-बोध आ दौड़-गति पर आधारित अछि।

प्रश्न 6708. “साँप डिग-डिग” खेलक बनावट की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. बहुत नेना हाथ जोड़ी सोझ पाँतीमे ठाढ़ होइत अछि।
उत्तर: घ. बहुत नेना हाथ जोड़ी सोझ पाँतीमे ठाढ़ होइत अछि।
व्याख्या: ई सामूहिक देह-श्रृंखला बनबैत खेल अछि।

प्रश्न 6709. “की रे बकरिया” संवादमे धान खाएबाक प्रश्न की संकेत करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. पशु, खेत आ मालिकाना संवादक खेलरूप।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. पशु, खेत आ मालिकाना संवादक खेलरूप।
व्याख्या: ग्रामीण जीवनक दृश्य बाल-खेलमे बदलैत अछि।

प्रश्न 6710. आत्म-रक्षार्थ लोक-साहित्यक तुलना लेखक केकर संग करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. पशु-पक्षी अपन अबोध नेनाकेँ उपाय सिखबैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. पशु-पक्षी अपन अबोध नेनाकेँ उपाय सिखबैत अछि।
व्याख्या: शिशु लोक-साहित्य जीवन-कौशलक लोक प्रशिक्षण अछि।

प्रश्न 6711. आत्मरक्षा खिस्सा मे कोन उदाहरण लोकप्रिय कहल गेल?
क. बगिया गाछक खिस्सा आ गोनू झाक खिस्सा।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. बगिया गाछक खिस्सा आ गोनू झाक खिस्सा।
व्याख्या: लोक-कथासभ बालक मनमे बुद्धि आ सावधानी जगबैत अछि।

प्रश्न 6712. कटहर, झिझिर कोना, साँप-डिगडिग आ आत्मरक्षा-कथा खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. खेल-पद्य स्थान, फल, पशु, जोखिम आ आत्मरक्षाक अनुभव बाल-रूपमे सिखबैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. खेल-पद्य स्थान, फल, पशु, जोखिम आ आत्मरक्षाक अनुभव बाल-रूपमे सिखबैत अछि।
व्याख्या: शिशु लोक-साहित्य मनोरंजनक संग जीवन-कौशलक पाठ अछि।

खण्ड ६७७ : विदेह-सदेह २ — निरर्थक शब्द, परिवार-पाठशाला आ अट्टा-पट्टा अंकज्ञान

प्रश्न 6713. औका-बौका सन पदमे केहन शब्दप्रयोग देखाइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. निरर्थक बुझाइत शब्दसभक प्रयोग।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. निरर्थक बुझाइत शब्दसभक प्रयोग।
व्याख्या: लोक-पद्य अर्थसँ बेसी ध्वनि, लय आ खेल-आनन्द पर टिकैत अछि।

प्रश्न 6714. “ईटा-माटी सोनेक टाट” सन पद किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ध्वन्यात्मक खेल आ लोक-हास्यक कारण।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. ध्वन्यात्मक खेल आ लोक-हास्यक कारण।
व्याख्या: ऐहन पद बालभाषाक सहज लय रचैत अछि।

प्रश्न 6715. ज्ञानोपयोगी शिशु लोक-साहित्यक आधार-वाक्य की अछि?
क. परिवार सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. परिवार सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला अछि।
व्याख्या: लेख परिवारकेँ शिक्षा-संस्कारक प्रारम्भिक केन्द्र मानैत अछि।

प्रश्न 6716. मैथिली शिशु लोक-साहित्यक माध्यमे नेनाकेँ की देल जाइत रहल?
क. अनेक प्रकारक शिक्षा।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. अनेक प्रकारक शिक्षा।
व्याख्या: लोकगीत-खेल मनोरंजनक संग ज्ञानक साधन सेहो अछि।

प्रश्न 6717. “अट्टा-पट्टा” खेलमे नेनाक कोन हाथ पर थापर मारल जाइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. दहिना हाथ पर।
उत्तर: घ. दहिना हाथ पर।
व्याख्या: खेल शारीरिक स्पर्श, आँगुर-पकड़ आ संख्या-स्मृति संग जुड़ल अछि।

प्रश्न 6718. अट्टा-पट्टा मे पाँच बेट्टा केकर-केकर संग जोड़ल जाइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. गाय, महीस, बड़द, बकरी आ छकरी संग।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. गाय, महीस, बड़द, बकरी आ छकरी संग।
व्याख्या: घरेलू पशु-संसार अंकज्ञानक माध्यम बनैत अछि।

प्रश्न 6719. अट्टा-पट्टा खेलक अंतिम गुदगुदी भागमे नेना की करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ जाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: शिक्षा आनंद आ शरीरक अनुभवसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6720. एहि खेलक माध्यमे नेनाकेँ कतेक धरि अंकज्ञान होइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. एकसँ पाँच धरि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. एकसँ पाँच धरि।
व्याख्या: खेल प्रारम्भिक संख्या-बोध तैयार करैत अछि।

प्रश्न 6721. ज्ञानोपयोगी खण्डमे शिक्षा कोना प्रस्तुत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. खेल, स्पर्श, गीत आ हँसीक रूपमे।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. खेल, स्पर्श, गीत आ हँसीक रूपमे।
व्याख्या: लोकशिक्षा औपचारिक पाठ नहि, जीवन-खेल बनि अबैत अछि।

प्रश्न 6722. निरर्थक शब्द, परिवार-पाठशाला आ अट्टा-पट्टा अंकज्ञान खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. निरर्थक-ध्वनि आ अंक-खेल दुनू मिलि बालभाषा आ बालज्ञान गढ़ैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. निरर्थक-ध्वनि आ अंक-खेल दुनू मिलि बालभाषा आ बालज्ञान गढ़ैत अछि।
व्याख्या: शिशु लोक-साहित्य खेलमे शिक्षा छिपबैत अछि।

खण्ड ६७८ : विदेह-सदेह २ — दहाइ-सैकड़ा, घो-घो रानी, आकारज्ञान आ वस्तु-उपयोग

प्रश्न 6723. दस सँ सौ धरि अंकक खेलमे कोन पंक्ति क्रम बनबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. दस, बीस, तीस, चालीस...सौ।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. दस, बीस, तीस, चालीस...सौ।
व्याख्या: ई खेल दहाइ आ सैकड़ा धरिक संख्या-बोध दैत अछि।

प्रश्न 6724. “सौमे लागल धागा, चोर निकलिकऽ भागा” पंक्ति की करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. गणना केँ खेलक घटना मे बदलैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. गणना केँ खेलक घटना मे बदलैत अछि।
व्याख्या: संख्या-स्मृति लयात्मक कथनसँ मनमे बसैत अछि।

प्रश्न 6725. “घो-घो रानी” खेलमे बीचमे के ठाढ़ होइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. एक नेना।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. एक नेना।
व्याख्या: बाकी नेना वृत्ताकार हाथ जोड़ि ठाढ़ होइत अछि।

प्रश्न 6726. घो-घो रानी मे पानीक स्तर कोन-कोन अंग धरि बढ़ैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. एड़ी सँ माथ धरि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. एड़ी सँ माथ धरि।
व्याख्या: ई खेल अंग-ज्ञानक क्रमिक पाठ अछि।

प्रश्न 6727. अंतमे “चुभुक” कहि नेना सभ की अभिनय करैत अछि?
क. डूबि कऽ नहएबाक।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. डूबि कऽ नहएबाक।
व्याख्या: जल-स्तरक बढ़त क्रम शरीर-ज्ञान आ अभिनय बनैत अछि।

प्रश्न 6728. छिट्टा-पथिया-मउनी-चुक्का खेलमे नेना की सीखैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. वस्तु सभक आकारक ज्ञान।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. वस्तु सभक आकारक ज्ञान।
व्याख्या: हाथक आकार घटा-बढ़ा कऽ आकार-बोध देल जाइत अछि।

प्रश्न 6729. चुक्कामे अण्डा आ कउआ प्रसंगक उपयोग की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. आकारज्ञानकेँ कूद-फान आ हास्य संग जोड़ब।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. आकारज्ञानकेँ कूद-फान आ हास्य संग जोड़ब।
व्याख्या: “ती-ती-ती” कहि नेना कूदैत अछि।

प्रश्न 6730. “खेलए-धूपए गेलिऐ” पदमे लोहासँ की बनबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. हाँसू।
उत्तर: घ. हाँसू।
व्याख्या: वस्तुक उपयोग-श्रृंखला लोहारक औजारसँ घरेलू जीवन धरि चलैत अछि।

प्रश्न 6731. हाँसू सँ शुरू भेल श्रृंखला अंतमे कतय पहुँचैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. बेटा जनमाबऽ आ कोरामे खेलाबऽ धरि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. बेटा जनमाबऽ आ कोरामे खेलाबऽ धरि।
व्याख्या: उपयोग-ज्ञान कृषि, गृहस्थी, भोजन आ परिवार तक फैलैत अछि।

प्रश्न 6732. दहाइ-सैकड़ा, घो-घो रानी, आकारज्ञान आ वस्तु-उपयोग खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. लोकखेल संख्या, अंग, आकार आ वस्तु-उपयोगक व्यवहारिक ज्ञान देत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. लोकखेल संख्या, अंग, आकार आ वस्तु-उपयोगक व्यवहारिक ज्ञान देत अछि।
व्याख्या: शिशु-साहित्य जीवनोपयोगी शिक्षा कैं खेलक रूपमे साधैत अछि।

खण्ड ६७९ : विदेह-सदेह २ — शिशु लोक-साहित्य: निष्कर्ष, संरक्षण आ नव-तकनीक

प्रश्न 6733. लेखकक अनुसार शिशु लोक-साहित्य नेनाक कोन पक्षसँ जुड़ल अछि?
क. प्रत्येक पक्षसँ।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. प्रत्येक पक्षसँ।
व्याख्या: लालन-पालन, खेल, मनोरंजन आ ज्ञान सभ एहि धरोहरमे भेटैत अछि।

प्रश्न 6734. लालन-पालन आ खेल-मनोरंजनक साहित्यक मात्रा कोना बताओल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. अधिकता पाओल गेल।
उत्तर: घ. अधिकता पाओल गेल।
व्याख्या: लेखमे एहि दूनू श्रेणीकेँ विशेष रूपे भरिपूर मानल गेल अछि।

प्रश्न 6735. खेलक माध्यमसँ नेना-भुटकामे कोन भावना जागैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. एकता, सहयोग, सहानुभूति आ प्रेम।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. एकता, सहयोग, सहानुभूति आ प्रेम।
व्याख्या: लोकखेल सामाजिक गुण विकसित करैत अछि।

प्रश्न 6736. अभिनय, नृत्य आ गीतक ज्ञान कोना आरम्भ होइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शिशु लोक-साहित्य आ खेलक माध्यमे आरम्भहिसँ।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. शिशु लोक-साहित्य आ खेलक माध्यमे आरम्भहिसँ।
व्याख्या: लोकसाहित्य बालक कला-संस्कारक प्रारम्भिक पाठ अछि।

प्रश्न 6737. एखन मैथिली शिशु लोक-साहित्यक सन्दर्भमे की प्रयोजन बताओल गेल?
क. अमूल्य धरोहरकेँ सहेजि समेटबाक।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. अमूल्य धरोहरकेँ सहेजि समेटबाक।
व्याख्या: लेख संरक्षणकेँ तात्कालिक सांस्कृतिक काम मानैत अछि।

प्रश्न 6738. सचेष्ट नहि भेलहुँ त परिणाम की होएत?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मूल्यवान धरोहर नष्ट भऽ सकैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मूल्यवान धरोहर नष्ट भऽ सकैत अछि।
व्याख्या: मौलिकता-क्षयक खतरा लेखमे स्पष्ट चेतावनी रूपमे अछि।

प्रश्न 6739. उपलब्ध संकलन यथेष्ट नहि किएक कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. क्षेत्र बहुत विस्तृत अछि आ लोकक ठोरपर बहुत साहित्य एखनो अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. क्षेत्र बहुत विस्तृत अछि आ लोकक ठोरपर बहुत साहित्य एखनो अछि।
व्याख्या: लेख संकलनक अधूरापन स्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 6740. पाश्चात्य सभ्यता प्रसंगमे “चन्न मामा”क बदला कोन उदाहरण देल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. “ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार”।
उत्तर: घ. “ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार”।
व्याख्या: लेख लोकधरोहर छोड़ि विदेशी बालगीत दिस भागबाक प्रवृत्ति पर चिन्ता करैत अछि।

प्रश्न 6741. नव-नव तकनीकक उपयोग किएक सुझाओल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. असंकलित शिशु लोक-साहित्यकेँ चिरकाल धरि जोगा राखबाक लेल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. असंकलित शिशु लोक-साहित्यकेँ चिरकाल धरि जोगा राखबाक लेल।
व्याख्या: लेख आधुनिक तकनीककेँ लोकसाहित्य संरक्षणक साधन मानैत अछि।

प्रश्न 6742. शिशु लोक-साहित्य लेखक अन्तिम आग्रह की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. समधानल डेग आ जोरगर प्रयास।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. समधानल डेग आ जोरगर प्रयास।
व्याख्या: धरोहर बचएबाक लेल संगठित, योजनाबद्ध काज जरूरी अछि।

खण्ड ६८० : विदेह-सदेह २ — केदार कानन: जगदीश प्रसाद मण्डल आ “पछताबा”क प्रारम्भिक समीक्षा

प्रश्न 6743. केदार कानन जगदीश प्रसाद मण्डलक निजी पहचान कोना बनबैत छथि?
क. गंभीर साम्यवादी दृष्टि, जीवनानुभव आ सहज परिपक्व अभिव्यक्ति।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. गंभीर साम्यवादी दृष्टि, जीवनानुभव आ सहज परिपक्व अभिव्यक्ति।
व्याख्या: समीक्षा लेखकक वैचारिकता आ अनुभव-संवेदना एकसंग चिन्हैत अछि।

प्रश्न 6744. जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनक आरम्भ कोन विशेषता रखैत अछि?
क. एक बएसपर आबि लिखनाइ शुरू कएलनि, मुदा कृति पढ़िते ई बूझाइत नहि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. एक बएसपर आबि लिखनाइ शुरू कएलनि, मुदा कृति पढ़िते ई बूझाइत नहि।
व्याख्या: समीक्षक परिपक्वता कैँ उम्रक देर आरम्भसँ अलग करैत अछि।

प्रश्न 6745. हिनक मानसक वस्तु कागतपर उतरबासँ पहिनहि कोना छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. रचित-खचित।
उत्तर: घ. रचित-खचित।
व्याख्या: समीक्षक मानैत छथि जे जीवनानुभव पूर्व सँ भीतर पकैत रहल।

प्रश्न 6746. “पछताबा” कथा कतय पढ़ल गेल छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. सुपौलमे आयोजित कथा-गोष्ठीमे।
उत्तर: घ. सुपौलमे आयोजित कथा-गोष्ठीमे।
व्याख्या: समीक्षा कथाक सार्वजनिक पाठ-संदर्भ दैत अछि।

प्रश्न 6747. कथाक मुख्य पात्र रघुनाथ कोन पृष्ठभूमिसँ बहराइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. एकटा स्वतंत्रता सेनानीक घरसँ।
उत्तर: घ. एकटा स्वतंत्रता सेनानीक घरसँ।
व्याख्या: पारिवारिक राष्ट्रवादी पृष्ठभूमि आ प्रवासी जीवनक द्वन्द्व कथा आधार अछि।

प्रश्न 6748. रघुनाथ पढ़ाइक बाद कतय चलि जाइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. पत्नी संग अमेरिका।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. पत्नी संग अमेरिका।
व्याख्या: इंजीनियरिंगक बाद नोकरी लेल विदेश-प्रवास कथा मोड़ बनैत अछि।

प्रश्न 6749. रघुनाथ के-के छोड़ि अमेरिका जाइत अछि?
क. माता-पिता, परिवार, सर-सम्बन्धी आ समाज।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. माता-पिता, परिवार, सर-सम्बन्धी आ समाज।
व्याख्या: प्रवास केवल भौगोलिक नहि, संबंध-विच्छेद सेहो अछि।

प्रश्न 6750. अमेरिकाक चाक-चिक्य समाजमे रघुनाथ लेल मुख्य चिंता की रहि जाइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. पाइ कमएबाक।
उत्तर: घ. पाइ कमएबाक।
व्याख्या: समीक्षा भोगवादी प्रवासी जीवनक संकुचन बतबैत अछि।

प्रश्न 6751. शिवनाथ आ हुनक पत्नी के छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. रघुनाथक माता-पिता।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. रघुनाथक माता-पिता।
व्याख्या: गामपर रहि गेल माता-पिता कथा नैतिक धुरी बनैत छथि।

प्रश्न 6752. केदार कानन: जगदीश प्रसाद मण्डल आ “पछताबा”क प्रारम्भिक समीक्षा खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. “पछताबा” प्रवास, धनलोलुपता आ परिवार-विच्छेदक कथा रूपमे खुलैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. “पछताबा” प्रवास, धनलोलुपता आ परिवार-विच्छेदक कथा रूपमे खुलैत अछि।
व्याख्या: केदार कानन कथा-समीक्षा कैँ सामाजिक मूल्यबोधसँ जोड़ैत छथि।

खण्ड ६८१ : विदेह-सदेह २ — “पछताबा”: प्रवासी जीवन, माता-पिता आ कथा-शिल्प

प्रश्न 6753. रघुनाथक माता-पिता पुत्र-वियोगक बाद कोना जीवन जीबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. थोड़ेक दिन मलीन रहि फेर ढंगसँ अपन जीवन जीबैत सुखसँ रहैत छथि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. थोड़ेक दिन मलीन रहि फेर ढंगसँ अपन जीवन जीबैत सुखसँ रहैत छथि।
व्याख्या: कथा वृद्ध माता-पिताकेँ केवल रोदन नहि, जीवन-संयमसहित देखबैत अछि।

प्रश्न 6754. “पछताबा” कथाक प्रस्तुति-शैली कोना चलैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. फ्लैशबैकमे।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. फ्लैशबैकमे।
व्याख्या: समीक्षक कथा-संरचनाक तकनीक स्पष्ट करैत छथि।

प्रश्न 6755. फ्लैशबैकमे कथासभ कोना खुलैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. अनेक उपकथा सभ उदघाटित होइत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. अनेक उपकथा सभ उदघाटित होइत अछि।
व्याख्या: कथा मुख्य प्रसंगक भीतर स्मृति-आधारित उपकथासभ खोलैत अछि।

प्रश्न 6756. पछताबा कथामे अमेरिकाक जीवनसँ पहिने के उबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रघुनाथक पत्नी।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. रघुनाथक पत्नी।
व्याख्या: विदेशी अकेलापन परिवार-विच्छेदक पहिल बोध हुनकामे जगबैत अछि।

प्रश्न 6757. रघुनाथक पत्नीक अकेलापन कोना कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ने क्यो संगी, ने क्यो गप कएनिहार।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. ने क्यो संगी, ने क्यो गप कएनिहार।
व्याख्या: प्रवासक समृद्धि संवादहीनता दूर नहि करैत।

प्रश्न 6758. रघुनाथो कैँ पश्चाताप कहिया होइत अछि?
क. पत्नी सँ बादमे, ओहो एक दिन।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. पत्नी सँ बादमे, ओहो एक दिन।
व्याख्या: कथा धीरे-धीरे नायकक भीतर पछतावा जगबैत अछि।

प्रश्न 6759. पश्चाताप भेलो पर रघुनाथ की करैत अछि?
क. ओछाइनपर छटपटाइत टा रहि जाइत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. ओछाइनपर छटपटाइत टा रहि जाइत अछि।
व्याख्या: बोध क्रियामे परिणत नहि भऽ पबैत अछि।

प्रश्न 6760. गाम अएबाक कोन स्थिति कथा देखबए नहि दैत?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. कार्यरूप वा आन परिणति नहि देखाओल जाइत।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. कार्यरूप वा आन परिणति नहि देखाओल जाइत।
व्याख्या: समीक्षक कथाक अपूर्ण/अटकल भावक ओर संकेत करैत छथि।

प्रश्न 6761. समीक्षक कथाकेँ पढ़बाक अनुभव कोना बतबैत छथि?
क. मोनलग्गू, क्रम-भंग बिना।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मोनलग्गू, क्रम-भंग बिना।
व्याख्या: कथा-प्रवाह सहज आ पाठक-पकड़निहार कहल गेल।

प्रश्न 6762. एहि खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. “पछताबा” प्रवासी अकेलापन, पश्चाताप आ क्रिया-असमर्थता केँ सुगठित फ्लैशबैकमे रखैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. “पछताबा” प्रवासी अकेलापन, पश्चाताप आ क्रिया-असमर्थता केँ सुगठित फ्लैशबैकमे रखैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा कथाक भाव आ संरचना दुनू पर बात करैत अछि।

खण्ड ६८२ : विदेह-सदेह २ — “पछताबा”क मैथिल अभिव्यक्ति आ रूपक

प्रश्न 6763. समीक्षक कथामे कोन भाषा-गुण विशेष पसिन्न करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मैथिल अभिव्यक्तिक रूप।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मैथिल अभिव्यक्तिक रूप।
व्याख्या: कथा स्थानीय उपमान आ कहन-ढंगसँ अपनपन पबैत अछि।

प्रश्न 6764. पाकल आमक उपमान ककर टूटल आशाकेँ देखबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. शिवनाथक मनोस्थिति।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. शिवनाथक मनोस्थिति।
व्याख्या: आम तोड़ै सँ पहिनहि खसि पड़बाक छवि असफल आशा दर्शाबैत अछि।

प्रश्न 6765. अएनापर पाथरक लोढ़ी खसलाक उपमान की सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. दुनूक मन चूर-चूर भऽ गेल।
उत्तर: घ. दुनूक मन चूर-चूर भऽ गेल।
व्याख्या: समीक्षक तीव्र मानसिक टूटनक स्थानीय बिम्बक सराहना करैत छथि।

प्रश्न 6766. फुकना बैलूनक हवाक उपमान कोन भाव देखबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. अरमान आ सपना फूटि वायुमंडलमे मिलि गेल।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. अरमान आ सपना फूटि वायुमंडलमे मिलि गेल।
व्याख्या: आशा अचानक समाप्त भऽ खालीपन बनैत अछि।

प्रश्न 6767. पाकल आमक आँठी जेकाँ करेज सक्त होएबाक अर्थ की?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. दुख सँ करेज कठोर भऽ गेल।
उत्तर: घ. दुख सँ करेज कठोर भऽ गेल।
व्याख्या: स्थानीय फल-बिम्ब भावनात्मक कठोरता व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 6768. अंडीक तेलमे जरैत डिबियाक इजोत उपमान की जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. घर-गामक लोक-अनुभवक प्रकाश-छवि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. घर-गामक लोक-अनुभवक प्रकाश-छवि।
व्याख्या: कथा मे घरेलू उपमान मैथिल वातावरण गाढ़ करैत अछि।

प्रश्न 6769. एहन उपमानक आलोचनात्मक महत्त्व की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. भाषा कथाकेँ क्षेत्रीय जीवनानुभवसँ जोड़ैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. भाषा कथाकेँ क्षेत्रीय जीवनानुभवसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: कहानीक संवेदना स्थानीय बोल-बिम्ब सँ प्रामाणिक बनैत अछि।

प्रश्न 6770. समीक्षक जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ कोना सम्बोधित करैत छथि?
क. व्यक्तिगत रूपेँ बधाइ दैत छथि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. व्यक्तिगत रूपेँ बधाइ दैत छथि।
व्याख्या: समीक्षा प्रशंसा आ अपेक्षाक स्वरमे समाप्त होइत अछि।

प्रश्न 6771. समीक्षक जगदीशजी सँ भविष्य लेल की आशा करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. अनुभवकेँ आरो व्यापकता दैत नव-नव कृति देथिन।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. अनुभवकेँ आरो व्यापकता दैत नव-नव कृति देथिन।
व्याख्या: समीक्षा लेखकक सम्भावना पर भरोसा व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 6772. “पछताबा”क मैथिल अभिव्यक्ति आ रूपक खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. “पछताबा”क शक्ति ओकर मैथिल उपमान, सहज भाषा आ जीवनानुभवमे अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. “पछताबा”क शक्ति ओकर मैथिल उपमान, सहज भाषा आ जीवनानुभवमे अछि।
व्याख्या: केदार काननक समीक्षा कथाक सामाजिक भावक संग भाषिक स्वाद सेहो चिन्हैत अछि।

खण्ड ६८३ : विदेह-सदेह २ — प्रेमशंकर सिंह: जयकान्त मिश्रक अक्षर-पुरुष रूप

प्रश्न 6773. प्रेमशंकर सिंह जयकान्त मिश्रकेँ कोन रूपमे प्रस्तुत करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. दिव्य अक्षर पुरुष।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. दिव्य अक्षर पुरुष।
व्याख्या: लेख हुनका मैथिली भाषा-साहित्यक उत्थानक विराट व्यक्तित्व रूपमे देखैत अछि।

प्रश्न 6774. जयकान्त मिश्रक जीवनकाल कोना देल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. १९२२-२००९।
उत्तर: घ. १९२२-२००९।
व्याख्या: लेखक जीवनी-संदर्भसँ साहित्य-साधनाक काल-व्याप्ति स्पष्ट करैत छथि।

प्रश्न 6775. जयकान्त मिश्र विगत लगभग कतेक दशक धरि कार्यरत रहलाह?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. लगभग सात दशक।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. लगभग सात दशक।
व्याख्या: लेख हुनकर दीर्घ, अखण्ड मातृभाषा-सेवा पर बल दैत अछि।

प्रश्न 6776. मैथिलीकेँ विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित करबाक लेल जयकान्त मिश्र कोन प्रकारक साधना केलनि?
क. आन्दोलनात्मक आ रचनात्मक सृजन।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. आन्दोलनात्मक आ रचनात्मक सृजन।
व्याख्या: ओ केवल लेखक नहि, भाषा-आन्दोलनक कर्मयोगी रूपमे चित्रित छथि।

प्रश्न 6777. प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीबारे हुनकर संघर्ष की छल?
क. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा नीति लागू करएबाक।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा नीति लागू करएबाक।
व्याख्या: लेख भाषा-साधनाकेँ शिक्षा-नीति संग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 6778. वैज्ञानिक आलोचनात्मक ग्रन्थ प्रणयनमे हुनकर भूमिका किएक महत्त्वपूर्ण?
क. मैथिली अध्ययनकेँ शोध-आधारित दिशा देबाक लेल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. मैथिली अध्ययनकेँ शोध-आधारित दिशा देबाक लेल।
व्याख्या: हुनकर आलोचना भावुकता नहि, वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित कहल गेल।

प्रश्न 6779. हेड़ाएल-भुतिआएल विभूति प्रकाशमे अनबाक अर्थ की?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. भूला-पड़ल साहित्यिक धरोहरकेँ उजागर करब।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. भूला-पड़ल साहित्यिक धरोहरकेँ उजागर करब।
व्याख्या: जयकान्त मिश्रक शोध-साधना इतिहास-उद्धारक काज करैत अछि।

प्रश्न 6780. मैथिली अन्धकारमे टापर-टोइया दैत छल — एहि समय हुनकर अनुसंधान की भेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. आलोकक रश्मि।
उत्तर: घ. आलोकक रश्मि।
व्याख्या: लेख अनुसन्धानकेँ दिशा-दर्शक प्रकाश रूपमे चित्रित करैत अछि।

प्रश्न 6781. हुनकर कार्य मातृभाषानुरागी लोकनि पर की प्रभाव छोड़लक?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एकर उत्थानार्थ निरन्तर कार्यरत रखलक।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. एकर उत्थानार्थ निरन्तर कार्यरत रखलक।
व्याख्या: जयकान्त मिश्रक व्यक्तित्व प्रेरक शक्ति बनल।

प्रश्न 6782. प्रेमशंकर सिंह: जयकान्त मिश्रक अक्षर-पुरुष रूप खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. जयकान्त मिश्र मैथिलीक शोध, शिक्षा, आन्दोलन आ धरोहर-उद्धारक अक्षर-पुरुष रूपमे स्थापित छथि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त मिश्र मैथिलीक शोध, शिक्षा, आन्दोलन आ धरोहर-उद्धारक अक्षर-पुरुष रूपमे स्थापित छथि।
व्याख्या: प्रेमशंकर सिंह हुनकर बहुआयामी योगदानक उद्घाटन करैत छथि।

खण्ड ६८४ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: प्रथम दर्शन, पुस्तकालय, पृष्ठभूमि आ अध्यापन

प्रश्न 6783. लेखककेँ जयकान्त मिश्रक पहिल दर्शन कतय भेल?
क. पटना मे बिहार पब्लिक सर्भिस कमीशनक प्रसंगमे।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. पटना मे बिहार पब्लिक सर्भिस कमीशनक प्रसंगमे।
व्याख्या: प्रथम दर्शन छात्र-जीवन आ गुरु-परिचयक प्रसंगसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6784. प्रथम दर्शनक समय लेखक कोन स्तरक छात्र छलाह?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. पटना विश्वविद्यालयक एम.ए. मैथिलीक अंतिम वर्षक छात्र।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. पटना विश्वविद्यालयक एम.ए. मैथिलीक अंतिम वर्षक छात्र।
व्याख्या: लेखक अपन विद्यार्थी-अवस्था सँ जयकान्त मिश्रक स्मृति जोड़ैत छथि।

प्रश्न 6785. भागलपुर विद्यापति पर्वमे जयकान्त मिश्र की देलनि?
क. सारगर्भित गंभीर व्याख्यान।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. सारगर्भित गंभीर व्याख्यान।
व्याख्या: हुनकर व्याख्यान मातृभाषानुरागक बीज-वपन करैत बताओल गेल।

प्रश्न 6786. लेखक इलाहाबाद किएक गेल छलाह?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. शोध-सामग्री आ निजी पुस्तकालय देखबाक लेल।
उत्तर: घ. शोध-सामग्री आ निजी पुस्तकालय देखबाक लेल।
व्याख्या: जयकान्त मिश्रक पुस्तकालय शोधक लेल समृद्ध स्रोत बनल।

प्रश्न 6787. हरिमोहन झा सम्बन्धी कोन सामग्रीक खोज लेल लेखक गेलाह?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. कन्यादान आ द्विरागमन पर श्रीकृष्ण मिश्रक समालोचना।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. कन्यादान आ द्विरागमन पर श्रीकृष्ण मिश्रक समालोचना।
व्याख्या: शोधार्थी लेल मिथिला मिहिरमे प्रकाशित सामग्री आवश्यक छल।

प्रश्न 6788. जिराक्स नहि रहबाक समय जयकान्त मिश्र लेखक लेल की करवौलनि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. आवश्यक सामग्री टाइप करबा देलनि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. आवश्यक सामग्री टाइप करबा देलनि।
व्याख्या: ई सहयोग शोध-संस्कृति आ विद्वत्स्नेहक उदाहरण अछि।

प्रश्न 6789. हुनकर पारिवारिक पृष्ठभूमिमे कोन विद्या परम्परा छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. संस्कृत पठन-पाठनक अगाध आस्था।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. संस्कृत पठन-पाठनक अगाध आस्था।
व्याख्या: पितामह जयदेव मिश्र आ पिता उमेश मिश्रक संस्कृत अनुराग उल्लेखित अछि।

प्रश्न 6790. पाश्चात्य शिक्षानुरूप हुनकर पढ़ाइ कोन छत्रछाया मे भेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. पिता आ प्रोफेसर अमरनाथ झाक।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. पिता आ प्रोफेसर अमरनाथ झाक।
व्याख्या: इलाहाबाद आधुनिक यूरोपीय परम्पराक केन्द्र बताओल गेल।

प्रश्न 6791. जयकान्त मिश्र मात्र कतेक वर्षक अवस्था मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे लेक्चरर भेलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. २१ वर्ष।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. २१ वर्ष।
व्याख्या: हुनकर विलक्षण वैदुष्य आ शैक्षणिक योग्यता एहि चयनक आधार बनल।

प्रश्न 6792. सन् १९८३ मे जयकान्त मिश्र कोन पदावधि पछाति अवकाश ग्रहण कएलनि?
क. रीडर, यूनिवर्सिटी प्रोफेसर आ विभागाध्यक्ष पद सुशोभित कऽ।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. रीडर, यूनिवर्सिटी प्रोफेसर आ विभागाध्यक्ष पद सुशोभित कऽ।
व्याख्या: अध्यापन-जीवन दीर्घ आ प्रतिष्ठित रहल, अवकाशोपरांत सेहो अन्य विश्वविद्यालयमे सक्रियता चलल।

खण्ड ६८५ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: तिरहुता-लिपि, कैथी आ सांस्कृतिक संरक्षण

प्रश्न 6793. जयकान्त मिश्रक वार्तालापमे पुरातन मिथिलाञ्चलक कोन दू लिपिक प्रचलन कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. तिरहुता आ कैथी।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. तिरहुता आ कैथी।
व्याख्या: लेखमे कहल गेल अछि जे पुरातन कालमे समग्र मिथिलाञ्चलमे तिरहुताक संग कैथी सेहो प्रचलित छल।

प्रश्न 6794. दरभंगा राजक कार्यकलापमे कोन लिपिक प्रयोगक उल्लेख अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. तिरहुता लिपि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. तिरहुता लिपि।
व्याख्या: दरभंगा राजमे तिरहुताक प्रयोग छल, मुदा बादमे देवनागरी लादल गेल।

प्रश्न 6795. तिरहुताकेँ बहिष्कृत कऽ देवनागरी लादबाक परिणाम की कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. तिरहुता जनमानससँ शनैः-शनैः विलुप्त होइत गेल।
उत्तर: घ. तिरहुता जनमानससँ शनैः-शनैः विलुप्त होइत गेल।
व्याख्या: लेख एहि भाषिक-लिपिक बदलाबकेँ गंभीर सांस्कृतिक क्षति मानैत अछि।

प्रश्न 6796. लेखकक अनुसार तिरहुता लिपि चलैत रहलित तँ कोन विवाद नहिएँ उठित?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मैथिलीकेँ हिन्दीक अंग ठहरएबाक विवाद।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीकेँ हिन्दीक अंग ठहरएबाक विवाद।
व्याख्या: स्वतंत्र लिपि मैथिली स्वतंत्रता केर स्पष्ट प्रमाण बनि सकैत छल।

प्रश्न 6797. संस्कृत लेल देवनागरीक वैकल्पिक प्रयोगक प्रभाव मिथिलाञ्चलपर की पड़ल?
क. मैथिली साहित्य-निर्माता तिरहुताक बदला देवनागरी प्रयोग करए लगलाह।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मैथिली साहित्य-निर्माता तिरहुताक बदला देवनागरी प्रयोग करए लगलाह।
व्याख्या: सांस्कृतिक संपर्कक कारण मैथिली लेखनमे लिपि-परिवर्तन भेल।

प्रश्न 6798. तिरहुता लिपिमे समाचार पत्र बाहर करबाक प्रयासक परिणाम की रहल?
क. ओ प्रयास सफल नहि भेल।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. ओ प्रयास सफल नहि भेल।
व्याख्या: लेख तिरहुता पुनर्जीवनक प्रयाससभक विफलता दर्ज करैत अछि।

प्रश्न 6799. जीवनाथ राय “मैथिलीक प्रथम पुस्तक” किएक लिखलनि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. तिरहुता/मैथिली लिपिक पुनर्जीवनक नेयारभास रूपमे।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. तिरहुता/मैथिली लिपिक पुनर्जीवनक नेयारभास रूपमे।
व्याख्या: ई प्रयास बांग्ला प्रभावक काँटा काटबाक भावनासँ जोड़ल गेल, मुदा सफल नहि भेल।

प्रश्न 6800. जयकान्त मिश्र तिरहुता टाइप बनएबाक प्रयास किएक करैत छलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. मैथिली कोश तिरहुता लिपिमे प्रकाशित करबाक लेल।
उत्तर: घ. मैथिली कोश तिरहुता लिपिमे प्रकाशित करबाक लेल।
व्याख्या: हुनकर इच्छा छल जे कोश तिरहुतामे निकसए, एहि लेल टाइप बनएबाक अथक प्रयत्न भेल।

प्रश्न 6801. “तिरहुता ककहारा” पुस्तकक उद्देश्य की छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. तिरहुता लिपिक शिक्षा आ पुनरुत्थान।
उत्तर: घ. तिरहुता लिपिक शिक्षा आ पुनरुत्थान।
व्याख्या: तिरहुता पुनर्जीवनक बलवती इच्छा सँ ई पुस्तक लिखल गेल।

प्रश्न 6802. तिरहुताक पुनरुत्थान वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे किएक उपयोगी कहल गेल?
क. रिसर्च आ सांस्कृतिक कार्यमे अलंकरण तथा प्राचीन साहित्य-अध्ययनक सुकरता लेल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. रिसर्च आ सांस्कृतिक कार्यमे अलंकरण तथा प्राचीन साहित्य-अध्ययनक सुकरता लेल।
व्याख्या: लेख तिरहुताकेँ केवल लिपि नहि, शोध आ सांस्कृतिक अस्मिताक साधन मानैत अछि।

खण्ड ६८६ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: साहित्य अकादेमी परामर्श मण्डल आ इतिहास-विवाद

प्रश्न 6803. साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यता भेटलाक बाद मैथिली समाजमे कोन भाव पसरल?

क. प्रसन्नताक लहरि आ नव आशा।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. प्रसन्नताक लहरि आ नव आशा।

व्याख्या: मान्यताक बाद विकासक अवरुद्ध मार्गमे नव किरण विकीर्ण होएबाक आशा जागल।

प्रश्न 6804. मैथिली परामर्श मण्डलक प्रथम संयोजक रमानाथ झाक निधन पछाति के संयोजक बनाओल गेल?

क. जयकान्त मिश्र।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. जयकान्त मिश्र।

व्याख्या: रमानाथ झाक आकस्मिक निधनक बाद जयकान्त मिश्र परामर्श मण्डलक संयोजक भेलाह।

प्रश्न 6805. जयकान्त मिश्र परामर्श मण्डलक संयोजक कतेक खेप रहलाह?

क. दू खेप।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. दू खेप।

व्याख्या: लेख स्पष्ट करैत अछि जे ओ दू खेप संयोजक रहलाह।

प्रश्न 6806. हुनक कार्यकालमे उमानाथ झा द्वारा सम्पादित कोन पुस्तक प्रकाशमे आयल?

क. विद्यापति गीत शती।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. विद्यापति गीत शती।

व्याख्या: अकादेमी प्रकाशन-सूचीमे एहि पुस्तकक उल्लेख अछि।

प्रश्न 6807. जयधारी सिंह द्वारा संगृहीत कोन पुस्तक सेहो उल्लेखित अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. मैथिली कथा संग्रह।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. मैथिली कथा संग्रह।

व्याख्या: कार्यकालमे प्रकाशित ग्रंथसभमे मैथिली कथा संग्रहक उल्लेख भेटैत अछि।

प्रश्न 6808. अकादेमी प्रो. राधाकृष्ण चौधरीकेँ कोन दायित्व देलक?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. अंग्रेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. अंग्रेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक।

व्याख्या: मैथिलीक स्वीकृति पछाति इतिहास लेखनक दायित्व हुनका सौंपल गेल।

प्रश्न 6809. राधाकृष्ण चौधरीक पाण्डुलिपि किएक प्रकाशनसँ वंचित भऽ गेल कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. कथित बभन-पेंच आ इतिहास-लेखनपर जयकान्त मिश्रक एकाधिकारक कारण।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. कथित बभन-पेंच आ इतिहास-लेखनपर जयकान्त मिश्रक एकाधिकारक कारण।
व्याख्या: लेख विवादक मूलमे पाण्डुलिपि रोकल जाएब आ इतिहास-लेखनक अधिकार-भाव देखैत अछि।

प्रश्न 6810. जयकान्त मिश्र अपन पूर्व इतिहासकेँ संक्षिप्त कऽ अकादेमीसँ कोन ग्रंथ प्रकाशित करौलनि?
क. A History of Maithili Literature।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. A History of Maithili Literature।
व्याख्या: एहि ग्रंथक अकादेमी संस्करण इतिहास-विवादक केंद्र बनल।

प्रश्न 6811. स्वातंत्र्योत्तर मैथिली आलेख कोन पुस्तकमे विवादक कारण बनल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. Indian Literature Since Independence।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. Indian Literature Since Independence।
व्याख्या: एहि आलेखमे मैथिली विकासक मूल्यांकन विवादित ठहरल।

प्रश्न 6812. मिथिला मिहिरमे विवादक प्रत्युत्तरस्वरूप कोन श्रृंखला चलल?
क. वादे-वादे जायते तत्त्वबोध।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. वादे-वादे जायते तत्त्वबोध।
व्याख्या: सुधांशु शेखर चौधरीक सम्पादनमे अनेक लेखकक प्रतिक्रिया एहि श्रृंखलामे प्रकाशित भेल।

खण्ड ६८७ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: दिशा-बोधक समीक्षक आ “सुशीला” समीक्षा

प्रश्न 6813. लेखक जयकान्त मिश्रकेँ “दिशा बोधक समीक्षक” किएक कहैत छथि?
क. ओ मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिमान आ दिशा देलनि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. ओ मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिमान आ दिशा देलनि।
व्याख्या: हुनकर समीक्षा-कर्म भावुक प्रशंसा नहि, साहित्यिक मूल्यांकनक दिशा खोलैत अछि।

प्रश्न 6814. ओ जीवन पर्यन्त कोन साहित्यक अध्ययन-अध्यापनमे निरत रहलाह?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. अंग्रेजी साहित्य।
उत्तर: घ. अंग्रेजी साहित्य।
व्याख्या: अंग्रेजी अध्यापनक पृष्ठभूमि हुनकर आलोचनात्मक दृष्टि बनएबाक आधार बनल।

प्रश्न 6815. मैथिलीमे समीक्षा लिखबाक प्रेरणा हुनका किएक भेटल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मातृभाषामे समीक्षाक सर्वथा अभाव देखि।
उत्तर: घ. मातृभाषामे समीक्षाक सर्वथा अभाव देखि।
व्याख्या: हुनका मैथिली आलोचनाकेँ विकसित करबाक इच्छा प्रेरित कएलक।

प्रश्न 6816. हुनकर पहिल बृहत समीक्षात्मक कृति कोन उपन्यासपर छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. गंगापति सिंहक “सुशीला” पर।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. गंगापति सिंहक “सुशीला” पर।
व्याख्या: “सुशीला” समीक्षा मैथिली आलोचनामे हुनकर प्रवेशक मुख्य द्वार मानल गेल।

प्रश्न 6817. “सुशीला” उपन्यासक समीक्षा किएक महत्त्वपूर्ण रहल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मैथिली शब्दक बदला हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोगपर सतर्क प्रतिवादक कारण।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिली शब्दक बदला हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोगपर सतर्क प्रतिवादक कारण।
व्याख्या: एहि समीक्षा भाषिक शुद्धता आ आलोचनात्मक निर्भीकताक उदाहरण बनल।

प्रश्न 6818. “मैथिलीमे जे लिखल जाइत छैक से ठीक” — एहन धारणापर समीक्षा की प्रभाव डाललक?
क. आलोचनाक आवश्यकता स्थापित कएलक।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. आलोचनाक आवश्यकता स्थापित कएलक।
व्याख्या: एहि धारणा विरुद्ध आलोचनात्मक विचार-विवाद आरम्भ भेल।

प्रश्न 6819. भुवनेश्वर सिंह “भुवन” जयकान्त मिश्रकेँ की कएलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अत्यधिक प्रोत्साहित कएलनि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. अत्यधिक प्रोत्साहित कएलनि।
व्याख्या: युवा साहित्य-चिन्तक भुवन हुनकर आलोचनात्मक प्रयासक समर्थक छलाह।

प्रश्न 6820. मैथिली इतिहास-लेखन हुनकर आलोचना-कर्मसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. इतिहास-लेखन समीक्षाक श्रेणीमे परिणत भेल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. इतिहास-लेखन समीक्षाक श्रेणीमे परिणत भेल।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे इतिहासग्रंथ आलोचनात्मक दिशा सेहो देलक।

प्रश्न 6821. तथाकथित आलोचकसभक दोषारोपण पर लेखकक प्रत्युत्तर की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. हुनका समक्ष पूर्व प्रतिमान नहि छल।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. हुनका समक्ष पूर्व प्रतिमान नहि छल।
व्याख्या: आरम्भिक इतिहासकारक दोष चर्चा करत समय ऐतिहासिक संदर्भ बुझब आवश्यक अछि।

प्रश्न 6822. जयकान्त मिश्रक इतिहासक महत्त्व की कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मैथिली आलोचना-साहित्यकेँ दिशा-बोध करौलनि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिली आलोचना-साहित्यकेँ दिशा-बोध करौलनि।
व्याख्या: इतिहासक सीमासहित ओकर मार्गदर्शक भूमिका लेखमे स्वीकार कएल गेल।

खण्ड ६८८ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: लोक-साहित्य, लेखक-सम्मेलन आ नाट्य-दृष्टि

प्रश्न 6823. An Introduction to Folk Literature of Mithila कोन विधाक प्रथम ग्रंथ कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मैथिली लोक-साहित्यक।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिली लोक-साहित्यक।
व्याख्या: लेखमे एहि ग्रंथकेँ मिथिला लोक-साहित्य अध्ययनक पहिल ग्रंथ मानल गेल।

प्रश्न 6824. एहि लोक-साहित्य ग्रंथक प्रथम खण्डमे मुख्यतः की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. लोकगीत आ लोकनाट्य सम्बन्धी गीतक विवेचन।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. लोकगीत आ लोकनाट्य सम्बन्धी गीतक विवेचन।
व्याख्या: प्रथम खण्ड लोकगीत सामग्री आ नाट्य-गीतक लेखा-जोखा दैत अछि।

प्रश्न 6825. द्वितीय खण्डमे कोन विषयसभक चर्चा अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. लोक विश्वास, लोक परम्परा आ लोककथा।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. लोक विश्वास, लोक परम्परा आ लोककथा।
व्याख्या: दूसर खण्ड लोकसंस्कृतिक विश्वास-परम्परा दिस बढ़ैत अछि।

प्रश्न 6826. आधुनिक लोक-साहित्य अध्ययन लेल एहि ग्रंथक भूमिका की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. प्रेरणा-स्रोत आ पाथेय।
उत्तर: घ. प्रेरणा-स्रोत आ पाथेय।
व्याख्या: लेख परवर्ती लोक-साहित्यकारक लेल एकर आधार-भूमिका मानैत अछि।

प्रश्न 6827. प्रथम अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनक रचना-संग्रहमे जयकान्त मिश्र कोन बात उठौलनि?
क. मैथिली इतिहास सम्बन्धी किछु समस्या।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मैथिली इतिहास सम्बन्धी किछु समस्या।
व्याख्या: ओ समस्या-दर्शनक माध्यमे भविष्यक शोध-दिशा खोलैत छथि।

प्रश्न 6828. अध्यक्षीय भाषणमे ओ कोन विधाक भविष्य पर प्रकाश देलनि?
क. नाट्य साहित्य।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. नाट्य साहित्य।
व्याख्या: नाटकक भविष्यपर विचार देलनि आ नब बिन्दु संकेत कएलनि।

प्रश्न 6829. मैथिल संस्कृतिक उद्धार लेल ओ कोन क्षेत्रसभक चर्चा करैत छलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. भेष-भूषा, भाव-भाषा, कला-कौशल, चित्रकला-संगीत।
उत्तर: घ. भेष-भूषा, भाव-भाषा, कला-कौशल, चित्रकला-संगीत।
व्याख्या: हुनकर समीक्षा-दृष्टि साहित्यसँ बाहर व्यापक सांस्कृतिक जीवन धरि फैलल छल।

प्रश्न 6830. नाटक आ रंगमंचक माध्यमे ओ की सुनिश्चित मानैत छलाह?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मैथिलीक भविष्य।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीक भविष्य।
व्याख्या: ओ मानैत छलाह जे मंचित साहित्य जीवित सामाजिक शक्ति बनि सकैत अछि।

प्रश्न 6831. नाट्य साहित्यमे “पढ़बाक-सुनबाक-देखबाक” प्रक्रियाक महत्त्व की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. मूर्तमय उपस्थितिक क्षमता।
उत्तर: घ. मूर्तमय उपस्थितिक क्षमता।
व्याख्या: नाटक दृश्य-अनुभव, अभिनय-सौन्दर्य आ कलात्मक सत्यता जोड़ैत अछि।

प्रश्न 6832. बीसम शताब्दीक साहित्यिक परिवर्तनक प्रति जयकान्त मिश्रक रुख की छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ओ परिवर्तनक स्वरक समर्थक छलाह।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ओ परिवर्तनक स्वरक समर्थक छलाह।
व्याख्या: वैज्ञानिक आविष्कार, औद्योगिकरण, मार्क्सवाद, फ्रायड आ बौद्धिकता आदिक प्रभाव ओ स्वीकार करैत छथि।

खण्ड ६८९ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: कीर्त्तनिञा नाटक विवाद

प्रश्न 6833. A History of Maithili Literature मे मिथिलामे उपलब्ध नाटकादिकेँ जयकान्त मिश्र कोन नाम देलनि?

क. कीर्त्तनिञा।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. कीर्त्तनिञा।

व्याख्या: हुनकर नामकरणपर मैथिली आलोचनामे विवाद आरम्भ भेल।

प्रश्न 6834. रमानाथ झा एहि नामकरणपर कोन पत्रिकामे आपत्ति कएलनि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. अभिव्यञ्जना।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. अभिव्यञ्जना।

व्याख्या: अभिव्यञ्जनाक प्रथम अंकमे आपत्ति प्रस्तुत कएल गेल।

प्रश्न 6835. रमानाथ झा हुनकर मतकेँ खण्डन करैत की कहलनि?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. कीर्त्तनिञा नाच।

उत्तर: घ. कीर्त्तनिञा नाच।

व्याख्या: ओ नाटक नहि, नाच शब्दक सार्थकता पर बल देलनि।

प्रश्न 6836. जयकान्त मिश्र रमानाथ झाक मतक उत्तर कतय देलनि?

क. अभिव्यञ्जनाक अग्रिम अंकमे।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. अभिव्यञ्जनाक अग्रिम अंकमे।

व्याख्या: ई वाद-प्रतिवाद मैथिली आलोचनाक जीवंत विवादक प्रारम्भ बनल।

प्रश्न 6837. रमानाथ झा बादमे कोन स्वतंत्र पुस्तक प्रकाशित कएलनि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. कीर्तनिञा नाटक।

उत्तर: घ. कीर्तनिञा नाटक।

व्याख्या: अपन मतक समर्थनमे १९६५क पुस्तक प्रकाशित भेल।

प्रश्न 6838. विवादमे “नटुआ” आ “नटकिया” विषय किएक उठल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. नाच-नाटक आ अभिनय-परम्पराक भेद स्पष्ट करबाक लेल।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. नाच-नाटक आ अभिनय-परम्पराक भेद स्पष्ट करबाक लेल।

व्याख्या: शब्द, पात्र, अभिनय आ परम्परा सभ नामकरणक आधार बनल।

प्रश्न 6839. कीर्तनिञामे पात्रक प्रवेश-निष्क्रमण पर चर्चा किएक महत्त्वपूर्ण?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. एहि सँ ओकर नाटकीय संरचनाक परीक्षण होइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. एहि सँ ओकर नाटकीय संरचनाक परीक्षण होइत अछि।
व्याख्या: नाट्यत्व सिद्ध वा असिद्ध करब लेल मंच-व्यवहार जाँचल गेल।

प्रश्न 6840. मिथिलामे अभिनयक परम्पराक चर्चा विवादमे किएक आवश्यक छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कीर्त्तनिञाकेँ नाटक-परम्परा संग जोड़बाक/अलग करबाक लेल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. कीर्त्तनिञाकेँ नाटक-परम्परा संग जोड़बाक/अलग करबाक लेल।
व्याख्या: नाटक नाम देबाक आधार अभिनय-परम्परा पर निर्भर भेल।

प्रश्न 6841. कीर्त्तनिञा विवाद मैथिली आलोचनाक इतिहासमे की खोललक?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. वाद-प्रतिवादक परम्परा।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. वाद-प्रतिवादक परम्परा।
व्याख्या: नामकरण-संघर्ष मैथिली शोध-आलोचनाक जीवंतता देखबैत अछि।

प्रश्न 6842. कीर्त्तनिञा विवादक निचोड़ की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. कीर्त्तनिञा प्रश्न केवल नामक नहि, मिथिलाक रंग-इतिहास बुझबाक प्रश्न अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. कीर्त्तनिञा प्रश्न केवल नामक नहि, मिथिलाक रंग-इतिहास बुझबाक प्रश्न अछि।
व्याख्या: विवाद नाच, नाटक, अभिनय आ परम्पराक गहन शोधक माँग करैत अछि।

खण्ड ६९० : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: मैथिली आन्दोलन, जन-जागरण आ सांस्कृतिक शंखनाद

प्रश्न 6843. जयकान्त मिश्र साहित्य अकादेमी मान्यता प्राप्त भाषासभ लेल की चाहैत छलाह?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान लेल राष्ट्रीय आन्दोलन।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान लेल राष्ट्रीय आन्दोलन।
व्याख्या: ओ मैथिली प्रश्नकेँ व्यापक भाषा-अधिकारक राष्ट्रीय स्तर पर देखैत छथि।

प्रश्न 6844. आन्दोलन तीव्र करबाक लेल ओ कोन व्यावहारिक उपाय सुझौलनि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मिथिलाञ्चलक गाम-गाम पदयात्रा आ जिला-जिलामे जन आन्दोलन।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाञ्चलक गाम-गाम पदयात्रा आ जिला-जिलामे जन आन्दोलन।
व्याख्या: ओ आन्दोलनकेँ पत्रिका-साहित्यकार सीमासँ बाहर जनसंकल्प बनाबए चाहैत छलाह।

प्रश्न 6845. मैथिली आन्दोलनक वर्तमान सीमाबारे हुनकर आकलन की छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. पत्र-पत्रिका, पत्रकार, साहित्यकार आ सहृदय प्रेमी धरि सीमित।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. पत्र-पत्रिका, पत्रकार, साहित्यकार आ सहृदय प्रेमी धरि सीमित।
व्याख्या: ओ व्यापक सामाजिक आधारक कमी देखैत छलाह।

प्रश्न 6846. ओ आन्दोलनकेँ राष्ट्रीय रूप देबाक आवश्यकता किएक मानैत छलाह?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषाक कल्याण लेल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. भाषाक कल्याण लेल।
व्याख्या: स्थानीय सीमामे सिमटल आन्दोलन प्रभावी नहि बनत, एहन हुनकर धारणा छल।

प्रश्न 6847. पौल रोबसन/लूथर किंग प्रसंगमे कोन गीतक संकेत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. We Shall Overcome।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. We Shall Overcome।
व्याख्या: ओ भाषा-समूहक संग्राम-गीत सन प्रेरक सांस्कृतिक प्रतीक चाहैत छलाह।

प्रश्न 6848. मैथिलीक नामपर चलाओल आन्दोलनकेँ ओ कखन-कखन “टिमटिमाइत दीप” मानैत रहथि?
क. जखन छोट-छोट बातकेँ आन्दोलन कहल जाइत छल।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. जखन छोट-छोट बातकेँ आन्दोलन कहल जाइत छल।
व्याख्या: हुनका विराट शक्ति आ व्यापक उद्देश्यक आन्दोलन अपेक्षित छल।

प्रश्न 6849. मैथिली आन्दोलनक असफलताक कारणमे ओ कोन बात कहैत छलाह?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. भाषा कोनो धर्मसँ सम्बद्ध नहि अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. भाषा कोनो धर्मसँ सम्बद्ध नहि अछि।
व्याख्या: पंजाबी-उर्दू उदाहरणक बरक्स मैथिलीकेँ सांस्कृतिक अस्मिताक आधार चाही, एहन संकेत अछि।

प्रश्न 6850. मैथिली भाषी संख्याबारे हुनकर कथन की छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. भारतमे सातम स्थानक भाषा।
उत्तर: घ. भारतमे सातम स्थानक भाषा।
व्याख्या: संख्या, लिपि, अतीत आ सांस्कृतिक परम्परा आन्दोलनक आधार बनबैत अछि।

प्रश्न 6851. आन्दोलनमे बल कोना आओत, हुनकर अनुसार?
क. संस्कृतिक शंखनाद आ जन-जन भाषिक चेतनाक हुँकारसँ।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. संस्कृतिक शंखनाद आ जन-जन भाषिक चेतनाक हुँकारसँ।
व्याख्या: हुनकर आन्दोलन-दृष्टि भाषा-संस्कृति संग जनचेतना जोड़ैत अछि।

प्रश्न 6852. आन्दोलनक उपलब्धिसभमे कोन-कोन मान्यता आयल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. साहित्य अकादेमी, अष्टम अनुसूची, संघ लोक सेवा आयोग, बिहार लोक सेवा आयोग आ शैक्षिक स्तरपर स्वीकृति।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. साहित्य अकादेमी, अष्टम अनुसूची, संघ लोक सेवा आयोग, बिहार लोक सेवा आयोग आ शैक्षिक स्तरपर स्वीकृति।
व्याख्या: लेख मैथिली आन्दोलनकेँ नीचे सँ ऊपर ससरल गतिशील प्रक्रिया मानैत अछि।

खण्ड ६९१ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा

प्रश्न 6853. शिक्षा आ भाषाक सम्बन्ध लेखक कोना बतबैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दुनू परस्पराश्रित अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. दुनू परस्पराश्रित अछि।
व्याख्या: ज्ञानार्जनक माध्यम भाषा अछि, तेँ शिक्षा-विकास भाषासँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6854. शिक्षाक उद्देश्य की कहल गेल?
क. ज्ञानार्जन।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. ज्ञानार्जन।
व्याख्या: लेख भाषाकेँ अर्जित ज्ञानक अभिव्यक्ति आ व्यक्तित्व निर्माणक साधन मानैत अछि।

प्रश्न 6855. मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा केहन रूपक कही गेल?
क. एक सिक्काक दू पहलू।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. एक सिक्काक दू पहलू।
व्याख्या: प्रारम्भिक जीवनमे मातृभाषा आ प्राथमिक शिक्षा दुनूक प्राथमिकता अपेक्षित अछि।

प्रश्न 6856. भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक कथन उद्धृत करबाक उद्देश्य की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. निज भाषा उन्नतिक मूल अछि से प्रतिपादित करब।
उत्तर: घ. निज भाषा उन्नतिक मूल अछि से प्रतिपादित करब।
व्याख्या: हिन्दी नवजागरणक पंक्ति द्वारा मातृभाषा-महत्त्व पुष्ट कएल गेल।

प्रश्न 6857. मातृभाषाक माध्यमे शिक्षा नहि देलाक कारण जयकान्त मिश्रकेँ की अनुभूति छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. अपार कष्ट।
उत्तर: घ. अपार कष्ट।
व्याख्या: हुनका भाषिक शिक्षा-अभाव सामाजिक पीड़ा रूपमे अनुभव होइत छल।

प्रश्न 6858. ओ प्राथमिक शिक्षा लेल कोन तरहक अभियान चलौलनि?
क. पृथक जन आन्दोलन।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. पृथक जन आन्दोलन।
व्याख्या: हुनकर संघर्ष केवल लेखन नहि, सार्वजनिक अभियानक रूप लेलनि।

प्रश्न 6859. बिहार सरकारक उदासीनताक कारण हुनकर कोन स्वप्न साकार नहि भेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. मैथिली माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।
उत्तर: घ. मैथिली माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।
व्याख्या: लेख सरकारी उदासीनताकेँ असफलताक प्रमुख कारण मानैत अछि।

प्रश्न 6860. जगन्नाथ मिश्र मुख्यमंत्री भेलापर जयकान्त मिश्र किएक आशान्वित भेलाह?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मैथिली प्राथमिक शिक्षा नीति लागू होएबाक आशासँ।
उत्तर: घ. मैथिली प्राथमिक शिक्षा नीति लागू होएबाक आशासँ।
व्याख्या: मुदा एहि आशाक कोनो फलाफल नहि बहराएल।

प्रश्न 6861. मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा नहि भेटलाक परिणाम की कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. नेना सभमे शिक्षाप्रति अरुचि आ विद्यालयसँ पलायन।
उत्तर: घ. नेना सभमे शिक्षाप्रति अरुचि आ विद्यालयसँ पलायन।
व्याख्या: अपरिचित भाषिक माध्यम बाल-शिक्षा रोकैत अछि, ई तर्क देल गेल।

प्रश्न 6862. जयकान्त मिश्र एहि हेतु कोन-कोन उपाय कएलनि?
क. पदयात्रा, बैसार, प्रचार आ कानूनी लड़ाई तक।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. पदयात्रा, बैसार, प्रचार आ कानूनी लड़ाई तक।
व्याख्या: हुनकर शिक्षा-संघर्ष जनचेतना आ विधिक मार्ग दुनू पर चलल।

खण्ड ६९२ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: १९६९ सम्मेलन, शिक्षा-तर्क आ निष्सारण

प्रश्न 6863. १९६९ मे मिथिला मण्डल मुम्बईक सम्मेलनमे मुख्य विचारणीय बिन्दु की छल?

क. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।

व्याख्या: अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलनमे एहि प्रश्नपर जयकान्त मिश्र अपन विचार रखलनि।

प्रश्न 6864. शैशवावस्थामे मातृभाषा माध्यमक पहिल तर्क की अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. मस्तिष्कक विकास सहज-सुगम होइत अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ख. मस्तिष्कक विकास सहज-सुगम होइत अछि।

व्याख्या: बच्चा विषय-वस्तु स्थायी संस्कार रूपमे सरलता सँ ग्रहण करैत अछि।

प्रश्न 6865. प्रजातंत्रक प्रथम शर्त लेखकक अनुसार की अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. जनमानसकेँ शिक्षित करब।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. जनमानसकेँ शिक्षित करब।

व्याख्या: लोकशिक्षा बिना जीवित प्रजातंत्र संभव नहि, एहि हेतु मातृभाषा जरूरी अछि।

प्रश्न 6866. मैथिली प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य करबाक तर्क की अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई प्राचीनतम जीवित भाषा अछि आ बिहार-झारखण्डक अनेक जिलामे बाजल जाइत अछि।

उत्तर: घ. ई प्राचीनतम जीवित भाषा अछि आ बिहार-झारखण्डक अनेक जिलामे बाजल जाइत अछि।

व्याख्या: भाषिक क्षेत्र आ ऐतिहासिकता नीति-कार्यान्वयनक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 6867. सरकारक उदासीनताक कारण कोन मूल व्यवस्था नहि बनि सकल?

क. मैथिलीमे प्राथमिक पुस्तक आ अध्यापन।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. मैथिलीमे प्राथमिक पुस्तक आ अध्यापन।

व्याख्या: नीति-स्वीकृति बिना पाठ्य-सामग्री आ शिक्षण-दोनू अधूरा रहल।

प्रश्न 6868. लेखमे बधिर/सुसुप्त सरकारकेँ जगएबाक उपाय की कहल गेल?

क. जनमत संग्रह आ सशक्त आन्दोलन।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. जनमत संग्रह आ सशक्त आन्दोलन।

व्याख्या: सामाजिक दबाव बिना प्राथमिक शिक्षा-नीति लागू नहि होएत।

प्रश्न 6869. जयकान्त मिश्रक संघर्षकेँ लेखक कोन पौराणिक रूपकसँ जोड़ैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. दधीचि समान हड्डी गलौलक।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. दधीचि समान हड्डी गलौलक।
व्याख्या: हुनकर त्याग आ संघर्षक ऊँचाइ बताबए ई रूपक प्रयोग अछि।

प्रश्न 6870. हुनकर आलेखादि अहिले कोन स्थिति मे कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. यत्र-तत्र संग्रह आ पत्रिकामे धूलधूसरित।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. यत्र-तत्र संग्रह आ पत्रिकामे धूलधूसरित।
व्याख्या: लेख संकलन-प्रकाशनक तात्कालिक आवश्यकता बतबैत अछि।

प्रश्न 6871. जयकान्त मिश्रक वास्तविक श्रद्धाञ्जलि की कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. हुनकर विचारादि संकलित कऽ प्रकाशित करब।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. हुनकर विचारादि संकलित कऽ प्रकाशित करब।
व्याख्या: भावी पीढ़ीक दिशा-बोध लेल लेखन बचाएब जरूरी मानल गेल।

प्रश्न 6872. सुनिति कुमार चटर्जी हुनका मैथिली लेल कोन रूपमे देखलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ग्रियर्सन पछाति भारतमे मैथिलीक महत्तम उपकारक।
उत्तर: घ. ग्रियर्सन पछाति भारतमे मैथिलीक महत्तम उपकारक।
व्याख्या: उद्धरण हुनकर मातृभाषा-सेवाक राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय मूल्य स्वीकार करैत अछि।

खण्ड ६९३ : विदेह-सदेह २ — रमानन्द झा “रमण”: तन्त्रानाथ-सुभद्र जन्मशतवार्षिकीक परिप्रेक्ष्य

प्रश्न 6873. तन्त्रानाथ झा/सुभद्र झा जन्मशतवार्षिकी लेख के लिखल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. डा. रमानन्द झा “रमण”।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. डा. रमानन्द झा “रमण”।
व्याख्या: लेखक जन्मशती प्रसंगमे मैथिली चेतना आ साहित्यकार-समूहक मूल्यांकन करैत छथि।

प्रश्न 6874. सुभद्र झाक “हम आगि…” कथनमे तन्त्रानाथकेँ की कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. प्रज्ज्वलित कएनिहार बसात।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. प्रज्ज्वलित कएनिहार बसात।
व्याख्या: ई रूपक दूनू मित्रक परस्पर-ऊर्जा आ संघर्ष-सहयोग देखबैत अछि।

प्रश्न 6875. राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्रामक आगि संग मैथिली समाजमे की घनीभूत भेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकास-प्रचार-प्रसार-संरक्षणक चेतना।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकास-प्रचार-प्रसार-संरक्षणक चेतना।
व्याख्या: राजनीतिक स्वाधीनता-संग्राम सांस्कृतिक आत्मचेतनासँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 6876. गत शताब्दीक पहिल दशक मैथिली लेल किएक महत्त्वपूर्ण कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशन आ अनेक अवदानी साहित्यकारक जन्मक कारण।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशन आ अनेक अवदानी साहित्यकारक जन्मक कारण।
व्याख्या: ई दशक आधुनिक मैथिली निर्माणक आधारभूमि बनल।

प्रश्न 6877. मधुसूदन ओझा आ मुरलीधर झाक नाम किएक स्मरण कएल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. मैथिली पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशनक आरम्भिक सन्दर्भमे।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मैथिली पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशनक आरम्भिक सन्दर्भमे।
व्याख्या: प्रबुद्ध मैथिलक प्रकाशन-चेतना एहि दशकमे सक्रिय भेल।

प्रश्न 6878. ओ दशकमे जनमल साहित्यकार सभ मैथिली भाषाक लेल की कएलनि?
क. मानकीकरण आ प्रतिमान-स्थापना।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मानकीकरण आ प्रतिमान-स्थापना।
व्याख्या: अध्ययन, अनुशीलन आ मातृभाषा-प्रेमसँ भाषाक आधार मजबूत भेल।

प्रश्न 6879. सरहपाद, ज्योतिरीश्वर आ विद्यापतिक भाषा कोन स्तर पर प्रतिष्ठित भेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय भाषा-कुलमे गरिमापूर्ण स्थान।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय भाषा-कुलमे गरिमापूर्ण स्थान।
व्याख्या: पुरानी परम्परा आधुनिक संघर्षक कारण नब गरिमा पाबि सकल।

प्रश्न 6880. एहि अवदानी पीढ़ीक ऊर्जा कोन दु उद्देश्य लेल छल?
क. साहित्य संवर्धन आ मातृभाषा अनुरागक भावी प्रवाह सुरक्षित करब।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. साहित्य संवर्धन आ मातृभाषा अनुरागक भावी प्रवाह सुरक्षित करब।
व्याख्या: ओ सभ केवल वर्तमान नहि, भविष्यक साहित्य-सर्जना लेल भूमि तैयार कएलनि।

प्रश्न 6881. लेखक सुधी समाजक ध्यान सरिसब परिसर दिश किएक आकर्षित करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. अनेक अवदानी साहित्यकारक सरिसब परिसर सँ सम्बन्ध रहल।
उत्तर: घ. अनेक अवदानी साहित्यकारक सरिसब परिसर सँ सम्बन्ध रहल।
व्याख्या: सरिसब मैथिली प्रतिभाक उर्वर परिसर रूपमे प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 6882. जन्मशतवार्षिकीक आयोजन किएक श्लाघ्य कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. महान अवदानी साहित्यकारक स्मरण प्रेरणास्पद अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. महान अवदानी साहित्यकारक स्मरण प्रेरणास्पद अछि।
व्याख्या: स्मरण आ आयोजन मातृभाषा-संस्कारक नवीकरण बनैत अछि।

खण्ड ६९४ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा: मित्रता, आन्दोलन आ पटना विश्वविद्यालय

प्रश्न 6883. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झाक पारिवारिक पृष्ठभूमि कोना छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. भिन्न।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. भिन्न।
व्याख्या: लेख भिन्न पृष्ठभूमि, विषय आ स्वभाव बावजूद अद्वितीय मित्रता देखबैत अछि।

प्रश्न 6884. दूनू व्यक्तित्वक अध्ययन-अध्यापन विषय कोना छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. भिन्न।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. भिन्न।
व्याख्या: विषय-भिन्नता मातृभाषा-संघर्षमे बाधक नहि बनल।

प्रश्न 6885. दूनू मित्रक संयुक्त ताप केन बाटक ढेङ जरौलक?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक बाटक।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक बाटक।
व्याख्या: आगि-बसात रूपक स्वीकृति-संघर्षक तीव्रता दिखबैत अछि।

प्रश्न 6886. दुर्गानाथ झा “श्रीश” तन्त्रनाथ झाकेँ कोन रूपमे देखैत छथि?
क. मैथिली साहित्यक सजग प्रहरी आ सिनेट सदस्य।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मैथिली साहित्यक सजग प्रहरी आ सिनेट सदस्य।
व्याख्या: तन्त्रनाथ झा संस्थागत संघर्षक अग्रणी चेहरा छलाह।

प्रश्न 6887. सुभद्र झाक चतुर-प्रयासक परिणाम की बताओल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. तन्त्रानाथ झा सिनेटर निर्वाचित भेलाह।
उत्तर: घ. तन्त्रानाथ झा सिनेटर निर्वाचित भेलाह।
व्याख्या: मित्र-सहयोग विश्वविद्यालयीय आन्दोलनक रणनीतिक पक्ष बनल।

प्रश्न 6888. लेखक कहैत छथि जे सुभद्र झाक सहयोग बिना की सम्भव नहि होइत?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. तन्त्रानाथ झाक सफल नेतृत्वक श्रेय।
उत्तर: घ. तन्त्रानाथ झाक सफल नेतृत्वक श्रेय।
व्याख्या: दूनू मित्रक परस्पर सहयोग मैथिली स्वीकृतिक केंद्र रहल।

प्रश्न 6889. तन्त्रानाथ झाक अवदान दू कोटिमे कोना बाँटल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. आन्दोलनात्मक आ साहित्य-सर्जना द्वारा संवर्धन।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. आन्दोलनात्मक आ साहित्य-सर्जना द्वारा संवर्धन।
व्याख्या: लेख हुनका कर्मी आ सर्जक दुनू रूपमे देखैत अछि।

प्रश्न 6890. आन्दोलनात्मक काजक पहिल बिन्दु की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. पटना विश्वविद्यालयक उच्चतर कक्षामे मैथिलीक स्वीकृति।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. पटना विश्वविद्यालयक उच्चतर कक्षामे मैथिलीक स्वीकृति।
व्याख्या: संस्थागत मान्यता हुनक संघर्षक मुख्य दिशा रहल।

प्रश्न 6891. शिक्षक समुदायक लेल संघर्ष किएक उल्लेखनीय अछि?
क. मातृभाषा आन्दोलनकेँ शिक्षक-अधिकार संग जोड़बाक कारण।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मातृभाषा आन्दोलनकेँ शिक्षक-अधिकार संग जोड़बाक कारण।
व्याख्या: तन्त्रानाथ झाक आन्दोलन सामाजिक-शैक्षिक क्षेत्र धरि फैलल।

प्रश्न 6892. सरिसबमे कालेज स्थापना कोन अवदान-क्षेत्रमे अबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. शिक्षाक क्षेत्रक विकास कार्य।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. शिक्षाक क्षेत्रक विकास कार्य।
व्याख्या: भाषा-प्रेम व्यवहारिक शिक्षण-संस्थान निर्माण धरि पहुँचैत अछि।

खण्ड ६९५ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झा: साहित्य-सर्जना आ आन्दोलनक पूरकता

प्रश्न 6893. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा मैथिलीक अधिकार-संघर्षकेँ कोना देखैत छलाह?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. अध्यापन वा साहित्य-सर्जनासँ अलग नहि, पूरक रूपमे।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. अध्यापन वा साहित्य-सर्जनासँ अलग नहि, पूरक रूपमे।

व्याख्या: हुनका लेल मातृभाषा-काज वर्ग-विशेषक नहि, समग्र बौद्धिक दायित्व छल।

प्रश्न 6894. व्यक्ति-केंद्रित मानसिकताक विपरीत लेख कोन आदर्श रखैत अछि?

क. साहित्य-सर्जना आ भाषा-आन्दोलनक संयुक्त सक्रियता।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. साहित्य-सर्जना आ भाषा-आन्दोलनक संयुक्त सक्रियता।

व्याख्या: लेख आधुनिक अरुचि पर प्रश्न करैत तन्त्रानाथ-सुभद्रक उदाहरण दैत अछि।

प्रश्न 6895. कांचीनाथ झा “किरण”क नाम आदर सँ किएक लेल गेल?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. साहित्य-सर्जना आ जागरण-अभियानमे सक्रियताक कारण।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ग. साहित्य-सर्जना आ जागरण-अभियानमे सक्रियताक कारण।

व्याख्या: किरणक उदाहरण मातृभाषा-कर्मक बहुआयामी रूप सिद्ध करैत अछि।

प्रश्न 6896. सरकारी सुविधा रहितो मैथिली प्राध्यापक/साहित्यकारक सामाजिक स्वीकार्यता किएक ह्रासोन्मुख कहल गेल?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. सामाजिक संलग्नता आ आन्दोलनशीलता घटबाक कारण।

उत्तर: घ. सामाजिक संलग्नता आ आन्दोलनशीलता घटबाक कारण।

व्याख्या: लेख संस्थागत पदसँ बेसी सक्रिय मातृभाषा-कर्मकेँ महत्त्व दैत अछि।

प्रश्न 6897. कोंकणी लेखक आर. केलकरक उदाहरण किएक देल गेल?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. भाषा बचाबए साहित्यकार, भाषाविद आ राजनीतिज्ञ बनबाक क्रम देखाबए।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. भाषा बचाबए साहित्यकार, भाषाविद आ राजनीतिज्ञ बनबाक क्रम देखाबए।

व्याख्या: भाषा-जीवनक संघर्ष अनेक रूप धारण करैत अछि।

प्रश्न 6898. तन्त्रानाथ झाक व्यक्तित्वसँ कोन प्रेरणा लेबाक कहल गेल?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. आजीविकाक विषय भिन्न रहलो पर मातृभाषा सेवा सम्भव अछि।

उत्तर: घ. आजीविकाक विषय भिन्न रहलो पर मातृभाषा सेवा सम्भव अछि।

व्याख्या: अर्थशास्त्रक प्राध्यापक रहितहुँ ओ मैथिली काजमे अग्रणी रहलाह।

प्रश्न 6899. हरिमोहन झाक उदाहरण किएक अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. दर्शनशास्त्र पढ़ि-पढ़ौला पर मैथिलीमे लिखबाक कारण।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. दर्शनशास्त्र पढ़ि-पढ़ौला पर मैथिलीमे लिखबाक कारण।
व्याख्या: आन विषयक विद्वान सेहो मातृभाषा-साहित्य भरि सकैत छथि।

प्रश्न 6900. जयकान्त मिश्र आ उमानाथ झाक उदाहरण की बतबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. अंग्रेजी पढ़ि-पढ़ौलनि मुदा मैथिलीक भंडार भरलनि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. अंग्रेजी पढ़ि-पढ़ौलनि मुदा मैथिलीक भंडार भरलनि।
व्याख्या: मातृभाषा-कर्म विषयगत पेशासँ सीमित नहि।

प्रश्न 6901. प्रबोधनारायण सिंहक उदाहरण कोन भाव दैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. हिन्दी पढ़ि-पढ़ौला पर आजीवन मैथिलीक प्रति समर्पण।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. हिन्दी पढ़ि-पढ़ौला पर आजीवन मैथिलीक प्रति समर्पण।
व्याख्या: लेख मातृभाषा-प्रेमक व्यापक सम्भावना चिन्हैत अछि।

प्रश्न 6902. सम्प्रति स्थितिबारे लेखकक दुख की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. आन विषयक मैथिल प्राध्यापक मैथिली पढ़बा-लिखबामे अरुचि राखैत छथि।
उत्तर: घ. आन विषयक मैथिल प्राध्यापक मैथिली पढ़बा-लिखबामे अरुचि राखैत छथि।
व्याख्या: लेख मातृभाषासँ दूरीकेँ हीनताबोधक सामाजिक लक्षण मानैत अछि।

खण्ड ६९६ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झा: साहित्य-सर्जना, कीचकबध आ प्रयोगशीलता

प्रश्न 6903. तन्त्रानाथ झाक सर्जनात्मक प्रतिभाक पृष्ठभूमिमे कोन प्रभाव मानल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मातृकुलक पाण्डित्य आ साहित्य-सर्जनाक परम्परा।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मातृकुलक पाण्डित्य आ साहित्य-सर्जनाक परम्परा।
व्याख्या: लेख बाल्यकालसँ प्रतिभा दर्शनक कारण पारिवारिक विद्या-परम्परा मानैत अछि।

प्रश्न 6904. तात्कालिक प्रेरक रूपमे के उल्लिखित छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. अग्रज आचार्य रमानाथ झा।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. अग्रज आचार्य रमानाथ झा।
व्याख्या: रमानाथ झाक प्रेरणासँ तन्त्रानाथ “कीचक बध” रचैत छथि।

प्रश्न 6905. “कीचक बध” कोन आदर्शपर लिखल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. माइकेल मधुसूदन दत्तक “मेघनाद बध”क आदर्शपर।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. माइकेल मधुसूदन दत्तक “मेघनाद बध”क आदर्शपर।
व्याख्या: एहि कृतिमे नव शिल्प आ महाकाव्य परम्पराक संवाद भेटैत अछि।

प्रश्न 6906. कोनो कविक पहिल कृति उच्च कलात्मक होएब लेखकक अनुसार की सूचित करैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. असामान्य प्रतिभा।
उत्तर: घ. असामान्य प्रतिभा।
व्याख्या: “कीचक बध”क प्रथम कृति होएब तन्त्रानाथक प्रतिभाक प्रमाण मानल गेल।

प्रश्न 6907. तन्त्रानाथ झाक साहित्य-सेवा कोन दू क्षेत्रमे अछि?
क. गद्य आ पद्य दुनू।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. गद्य आ पद्य दुनू।
व्याख्या: ओ कवि, गद्यकार, अनुवादक, निबन्धकार आ प्रयोगशील रचनाकार छलाह।

प्रश्न 6908. हुनकर महाकाव्य-द्वय कोन अछि?
क. “कीचक बध” आ “कृष्णचरित”।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. “कीचक बध” आ “कृष्णचरित”।
व्याख्या: पद्य साहित्यक मुख्य कृतिमे ई दूनू महाकाव्य देल गेल।

प्रश्न 6909. कविता-संग्रह सभमे कोन-कोन नाम अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. “मंगलपंचाशिका”, “नमस्या” आ “कीर्ण-विकीर्ण”।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. “मंगलपंचाशिका”, “नमस्या” आ “कीर्ण-विकीर्ण”।
व्याख्या: लेख हुनकर कविता-कर्मक बहुरंगी रूप बतबैत अछि।

प्रश्न 6910. गद्य रचना क्षेत्रमे कोन विधासभक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. एकांकी, निबन्ध, ललित निबन्ध, संस्मरण, कथा, बाल-कथा।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. एकांकी, निबन्ध, ललित निबन्ध, संस्मरण, कथा, बाल-कथा।
व्याख्या: तन्त्रानाथ गद्यक अनेक रूपमे सक्रिय रहलाह।

प्रश्न 6911. मिथिलाक्षर प्रचार लेल ओ की कएलनि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. अपन हाथेँ किछु कथा लिखि लिथो कराए प्रकाशित करौलनि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. अपन हाथेँ किछु कथा लिखि लिथो कराए प्रकाशित करौलनि।
व्याख्या: एकर महत्त्व सांस्कृतिक सम्पदा आ लिपि-संरक्षण दृष्टिसँ बहुत अछि।

प्रश्न 6912. “कीचकबध”क शिल्पगत प्रयोग की कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मुक्त-वृत्त आ सरल भाषा द्वारा नव श्रीगणेश।
उत्तर: घ. मुक्त-वृत्त आ सरल भाषा द्वारा नव श्रीगणेश।
व्याख्या: ओ पारम्परिक कठिन शिल्पक विपरीत सामान्य पाठकक रसबोधक दिशा खोलैत छथि।

खण्ड ६९७ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झा: व्यंग्य, जड़ता-भंग आ नारी-सशक्तीकरण

प्रश्न 6913. तन्त्रानाथ झा कतेक अर्थमे प्रयोगशील रचनाकार कहल गेलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. कथ्य आ शिल्प दूनू वर्गमे जड़ता तोड़बाक कारण।
उत्तर: घ. कथ्य आ शिल्प दूनू वर्गमे जड़ता तोड़बाक कारण।
व्याख्या: लेख हुनकर विपुल साहित्यकेँ मैथिलीमे नव प्रयोगक उदाहरण मानैत अछि।

प्रश्न 6914. मैथिली कथाक शिल्प सम्बन्धी जड़ता तोड़बाक प्रसंगमे केकर नाम आयल?
क. प्रो. उमानाथ झा “रेखाचित्र”क माध्यमे।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. प्रो. उमानाथ झा “रेखाचित्र”क माध्यमे।
व्याख्या: लेख प्रयोगशीलता चर्चा करैत शिल्प-भंगक व्यापक परम्परा जोड़ैत अछि।

प्रश्न 6915. तन्त्रानाथक साहित्यक सामाजिक प्रहार ककर विरुद्ध अछि?
क. कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वास।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वास।
व्याख्या: हुनकर रचना सामाजिक आलोचना आ व्यंग्य-शक्ति सँ युक्त अछि।

प्रश्न 6916. एहि प्रहारक शिल्प कोना कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. व्यंग्यात्मक।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. व्यंग्यात्मक।
व्याख्या: व्यंग्य हुनकर साहित्यक सहज उपलब्ध गुण रूपमे वर्णित अछि।

प्रश्न 6917. सोमदेवक पंक्ति तन्त्रानाथक व्यंग्यबारे की कहैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. व्यंग्यधार तेज चोंच जेकाँ अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. व्यंग्यधार तेज चोंच जेकाँ अछि।
व्याख्या: मेना-कोकिल-बगराक रूपक हुनकर व्यंग्यक तीक्ष्णता बतबैत अछि।

प्रश्न 6918. चित्रलेखा देवीक मन्तव्य तन्त्रानाथबारे की देखबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ओ पोथी, गीत-कविता लिखि मैथिल समाजकेँ उठौलनि।
उत्तर: घ. ओ पोथी, गीत-कविता लिखि मैथिल समाजकेँ उठौलनि।
व्याख्या: महिला-स्वरक माध्यमे हुनकर सामाजिक अवदान प्रतिध्वनित अछि।

प्रश्न 6919. नारी-सशक्तीकरणक उदाहरण कोन पात्रक चरित्रांकनमे भेटैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. द्रुपद-सुता/द्रौपदी।
उत्तर: घ. द्रुपद-सुता/द्रौपदी।
व्याख्या: कीचक प्रसंगमे आतंकित स्त्री आत्मबल जागबैत देखाओल गेल।

प्रश्न 6920. “अबला, भीरु...” विचारक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. द्रुपद-सुताक भीतर आत्मप्रश्न आ साहस जागब।
उत्तर: घ. द्रुपद-सुताक भीतर आत्मप्रश्न आ साहस जागब।
व्याख्या: पात्र अपन क्षत्रिय कुल आ आत्मसम्मान स्मरण करैत अछि।

प्रश्न 6921. “शार्दूली की कखनहु पाबए त्रास?” भाव की सूचित करैत अछि?
क. नारीक निर्भीक आत्मबल।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. नारीक निर्भीक आत्मबल।
व्याख्या: द्रौपदी शिकार नहि, प्रतिरोधी चेतना रूपमे उभरैत छथि।

प्रश्न 6922. तन्त्रानाथ स्त्री-शिक्षाबारे की मानैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. समाजक अर्धांशकेँ अशिक्षित राखि उन्नति सम्भव नहि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. समाजक अर्धांशकेँ अशिक्षित राखि उन्नति सम्भव नहि।
व्याख्या: लेख नारी-शिक्षा के सामाजिक कल्याणक आवश्यक आधार मानैत अछि।

खण्ड ६९८ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झा: अल्प-लोकप्रियता, कठिन भाषा-विज्ञान आ संरक्षण-संकट

प्रश्न 6923. लेखक कहैत छथि सुभद्र झा तन्त्रानाथ झा जकाँ सौभाग्यशाली किएक नहि रहलाह?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. हुनक प्रकाशित-अप्रकाशित साहित्य आजुक पाठक लेल सुलभ नहि भऽ सकल।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ख. हुनक प्रकाशित-अप्रकाशित साहित्य आजुक पाठक लेल सुलभ नहि भऽ सकल।

व्याख्या: सुलभता आ संरक्षणक कमी हुनकर व्यापक पठन रोकैत अछि।

प्रश्न 6924. पहिल प्रमुख कारण की देल गेल?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. हुनक कार्य-क्षेत्र कठिन भाषा-विज्ञान छल।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. हुनक कार्य-क्षेत्र कठिन भाषा-विज्ञान छल।

व्याख्या: बिहारमे स्वतंत्र भाषा-विज्ञान विभागक अभाव सेहो बाधा रहल।

प्रश्न 6925. भाषाविज्ञानक कठिनतासँ शिष्य-परम्परा पर की प्रभाव पड़ल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. गुरुक वैदुष्यक प्रचार, खंडन-मंडन आ संकलन कठिन भेल।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. गुरुक वैदुष्यक प्रचार, खंडन-मंडन आ संकलन कठिन भेल।

व्याख्या: शिष्य न रहला पर विद्वत परम्परा संस्थागत नहि बनि सकल।

प्रश्न 6926. सुभद्र झाक “हम आगि छी” रूपकक अर्थ लेखक कोना खोलैत छथि?

क. आगिक जरूरत सभकेँ, मुदा पकबाक डरसँ केओ छूबैत नहि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. आगिक जरूरत सभकेँ, मुदा पकबाक डरसँ केओ छूबैत नहि।

व्याख्या: विद्वत्ताक ताप आकर्षक सेहो, कठिन सेहो अछि।

प्रश्न 6927. दोसरा कारणमे सुभद्र झा कोन रूपमे वर्णित छथि?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. भाषाविद, शास्त्र-मर्मज्ञ, देश-विदेशमे आदरित विद्वान।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ग. भाषाविद, शास्त्र-मर्मज्ञ, देश-विदेशमे आदरित विद्वान।

व्याख्या: ओ लोकप्रिय मंचीय लेखक नहि, उच्च विद्वत जगतक व्यक्ति छलाह।

प्रश्न 6928. ओ कविता, कथा, नाटक, उपन्यास आदि नहि लिखलनि — एहि कारण का भेल?

क. सामान्य पाठकक लोकप्रिय रचनाकार नहि बनि सकलाह।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. सामान्य पाठकक लोकप्रिय रचनाकार नहि बनि सकलाह।

व्याख्या: लोकप्रिय विधासँ दूरी पठन-प्रसार घटौलक।

प्रश्न 6929. मंचपर हास्य-व्यंग्य न करबाक प्रभाव की रहल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. श्रोता-दर्शकक आकर्षणक केन्द्र नहि बनलाह।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. श्रोता-दर्शकक आकर्षणक केन्द्र नहि बनलाह।
व्याख्या: जनप्रिय मंच-संस्कृति हुनकर विद्वत् व्यक्तित्वसँ कम जुड़ल।

प्रश्न 6930. तेसर कारण की देल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. संतानमे कृतिक संरक्षण-प्रचार प्रति अभिरुचिक अभाव।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. संतानमे कृतिक संरक्षण-प्रचार प्रति अभिरुचिक अभाव।
व्याख्या: परिवारिक-संरक्षणक कमीले प्रकाशित रचना दुर्लभ आ अप्रकाशित रचना अप्रकाशित रहि गेल।

प्रश्न 6931. हुनकर प्रकाशित रचना दुर्लभ किएक भेल?
क. संरक्षण आ प्रचारक अभावसँ।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. संरक्षण आ प्रचारक अभावसँ।
व्याख्या: लेख साहित्यिक धरोहरक पारिवारिक-सामाजिक संरक्षणक आवश्यकता देखबैत अछि।

प्रश्न 6932. सुभद्र झाक जनसुलभता-संकटक निचोड़ की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सुभद्र झाक महत्ता अत्यन्त, मुदा कठिन विषय, अमंचीयता आ संरक्षण-अभावसँ जनसुलभता सीमित रहल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सुभद्र झाक महत्ता अत्यन्त, मुदा कठिन विषय, अमंचीयता आ संरक्षण-अभावसँ जनसुलभता सीमित रहल।
व्याख्या: लेख लोकप्रियता आ विद्वत्ता बीचक अन्तर स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ६९९ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झा: भाषा-विज्ञान, विद्यापति गीत आ यात्रा-साहित्य

प्रश्न 6933. सुभद्र झाक प्रकाशित पहिल उपलब्ध रचनामे लेखक कोन लेख देखलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. “मैथिली भाषाक उत्पत्ति”।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. “मैथिली भाषाक उत्पत्ति”।
व्याख्या: मिथिला मिहिरमे प्रकाशित एहि लेखमे विद्वान मतक खंडन-मंडन अछि।

प्रश्न 6934. “मैथिली भाषाक उत्पत्ति” सुभद्र झाक कोन गुण देखबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. गंभीर अध्ययन।
उत्तर: घ. गंभीर अध्ययन।
व्याख्या: विभिन्न मतक विश्लेषण पछाति अपन मत स्थापित करब भाषावैज्ञानिक परिपक्वता देखबैत अछि।

प्रश्न 6935. “मैथिलीमे संख्यावाचक शब्द ओ विशेषण” कोन मूल-गोत्रक रचना कहल गेल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. भाषा-विज्ञानक।

उत्तर: घ. भाषा-विज्ञानक।

व्याख्या: ई लेख सेहो मैथिलीक वैज्ञानिक विश्लेषणक रुचि प्रमाणित करैत अछि।

प्रश्न 6936. The Formation of The Maithili Language के निर्देशनक क्रम की रहल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. आरम्भ ए. बनर्जी शास्त्रीक अधीन, समाप्त सुनीति कुमार चटर्जी अधीन।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ख. आरम्भ ए. बनर्जी शास्त्रीक अधीन, समाप्त सुनीति कुमार चटर्जी अधीन।

व्याख्या: सुभद्र झाक शोध-यात्रा पटना कालेज सँ सुनीति कुमारक मार्गदर्शन धरि पहुँचल।

प्रश्न 6937. सुभद्र झाक रचना-दू कोटिमे पहिल की अछि?

क. मैथिली भाषा सम्बन्धी अंग्रेजीमे लिखित साहित्य।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा सम्बन्धी अंग्रेजीमे लिखित साहित्य।

व्याख्या: हुनकर अन्तरराष्ट्रीय भाषाशास्त्रीय कृतिसभ एहि कोटिमे आबैत अछि।

प्रश्न 6938. The Formation of The Maithili Language क विशेषता की अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. हुनकर शोध-प्रबन्ध, जाहिपर डी.लिट उपाधि भेटल।

उत्तर: घ. हुनकर शोध-प्रबन्ध, जाहिपर डी.लिट उपाधि भेटल।

व्याख्या: ई मैथिली भाषा-विज्ञानक आधारभूत ग्रंथ मानल गेल।

प्रश्न 6939. The Songs of Vidyapati मे की अछि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. नेपाल स्रोताधारित विद्यापतिक २६२ गीत, भाषावैज्ञानिक विश्लेषण आ अंग्रेजी अनुवाद।

उत्तर: घ. नेपाल स्रोताधारित विद्यापतिक २६२ गीत, भाषावैज्ञानिक विश्लेषण आ अंग्रेजी अनुवाद।

व्याख्या: विद्यापति गीतकेँ विश्व-पाठक समक्ष लए जाएबामे ई कृति महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 6940. “विद्यापति-गीतसंग्रह”मे कतेक गीत अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ३७० गीत।

उत्तर: घ. ३७० गीत।

व्याख्या: मैथिलीमे सम्पादित पोथीसभमे एहि संग्रहक उल्लेख अछि।

प्रश्न 6941. सुभद्र झाक विदेश-यात्रा वर्णनक दू पुस्तक कोन अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. “प्रवास जीवन” आ “यात्रा प्रकरण शतक”।
उत्तर: घ. “प्रवास जीवन” आ “यात्रा प्रकरण शतक”।
व्याख्या: फ्रांस यात्रा-अनुभव मैथिली यात्रा-साहित्यक महत्त्वपूर्ण आरम्भ बनल।

प्रश्न 6942. फ्रांसमे ओ कोन विषयसभक विशेष अध्ययन कएलनि?
क. अर्थवेदक पैप्लाद, आधुनिक भाषा-विज्ञान आ ध्वनि-विज्ञान।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. अर्थवेदक पैप्लाद, आधुनिक भाषा-विज्ञान आ ध्वनि-विज्ञान।
व्याख्या: उच्च अध्ययन हुनकर भाषाशास्त्रीय क्षमता कें और विस्तार देलक।

खण्ड ७०० : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झा: महत्व, अन्तरराष्ट्रीयता आ मातृभाषा-हित

प्रश्न 6943. सुभद्र झासँ पूर्व मैथिली भाषाक अध्ययन के-के कएलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. किछु विदेशी आ भारतीय भाषाविद।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. किछु विदेशी आ भारतीय भाषाविद।
व्याख्या: लेख स्वीकार करैत अछि जे पूर्व अध्ययन छल, मुदा सुभद्र झाक कार्य अधिक गंभीर आ विस्तृत छल।

प्रश्न 6944. सुभद्र झाक भाषावैज्ञानिक महत्त्व की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मैथिली भाषाक गम्भीर, विस्तृत वैज्ञानिक विश्लेषण।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिली भाषाक गम्भीर, विस्तृत वैज्ञानिक विश्लेषण।
व्याख्या: हुनक कार्य मैथिलीकेँ विश्व-भाषा मानचित्रपर प्रतिष्ठित करबाक आधार बनल।

प्रश्न 6945. विद्यापति गीतक भाषा-शास्त्रीय विवेचन आ अंग्रेजी अनुवादसँ की भेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. विद्यापति गीतक महत्व अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष आयल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. विद्यापति गीतक महत्व अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष आयल।
व्याख्या: विद्यापति-साहित्य स्थानीय सीमा पारि वैश्विक विद्वत समुदाय धरि पहुँचल।

प्रश्न 6946. सुभद्र झा मैथिली यात्रा-साहित्यमे कोन स्थान राखैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. विदेश-यात्रा साहित्यक पहिल लेखक।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. विदेश-यात्रा साहित्यक पहिल लेखक।
व्याख्या: लेख हुनका यात्रा-अनुभवकेँ मैथिलीमे लिपिबद्ध करनिहार अग्रणी मानैत अछि।

प्रश्न 6947. “नातिक पत्रक उत्तर”क प्रकृति की कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. भाषा-आन्दोलनक विचार प्रधान इतिहास सन।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. भाषा-आन्दोलनक विचार प्रधान इतिहास सन।
व्याख्या: पत्रात्मक शैलीमे मैथिली स्वीकृति आ समस्या पर निर्भीक विचार राखल गेल।

प्रश्न 6948. “प्रवास जीवन” आ “यात्राप्रकरण शतक”मे हुनकर कोन भाव देखाइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. राष्ट्रीय भावना आ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रेम।
उत्तर: घ. राष्ट्रीय भावना आ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रेम।
व्याख्या: विदेशमे रहितो वेष, संस्कार आ भाषा-प्रेम कायम अछि।

प्रश्न 6949. पेरिस प्रसंगमे दर्शक सभ हुनका केकरा बुझि आकर्षित भेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. डा. एस. राधाकृष्णन।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. डा. एस. राधाकृष्णन।
व्याख्या: वेष-भूषा आ भारतीयता एहि प्रसंगक रोचक सांस्कृतिक बिम्ब अछि।

प्रश्न 6950. सुभद्र झाक विद्वत् व्यक्तित्वक गुण-सूचीमे की-की अबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. प्राच्यविद्या, भाषाविज्ञान, अनुवाद, सरलता, शोध-निर्देशन, निरअहंकारिता।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. प्राच्यविद्या, भाषाविज्ञान, अनुवाद, सरलता, शोध-निर्देशन, निरअहंकारिता।
व्याख्या: लेख हुनका बहुआयामी सारस्वत विभूति रूपमे चित्रित करैत अछि।

प्रश्न 6951. मैथिलीकेँ भारोपीय कुलक स्वतंत्र भाषा सिद्ध करबामे हुनकर भूमिका की अछि?
क. पर्याप्त सामग्री आ तर्क विश्व समुदाय समक्ष रखलनि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. पर्याप्त सामग्री आ तर्क विश्व समुदाय समक्ष रखलनि।
व्याख्या: भाषा-वैज्ञानिक आधार पर मैथिलीक स्वतंत्र स्वरूप स्पष्ट कएल।

प्रश्न 6952. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली स्वीकृति हेतु ओ की कएलनि?
क. प्रतिकूल केँ अनुकूल बनबैत लोकक सङोर कएलनि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. प्रतिकूल केँ अनुकूल बनबैत लोकक सङोर कएलनि।
व्याख्या: ओ विद्वानक संग नीतिकुशल कूटनीतिज्ञ सेहो सिद्ध भेलाह।

खण्ड ७०१ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ-सुभद्र: जन्मशती लेखक समेकित संदेश

प्रश्न 6953. रमानन्द झा “रमण”क लेखक मूल प्रयोजन की बुझाइत अछि?

क. दू विभूतिक स्मरणसँ मैथिली समाजकेँ प्रेरित करब।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. दू विभूतिक स्मरणसँ मैथिली समाजकेँ प्रेरित करब।

व्याख्या: जन्मशती प्रसंग ऐतिहासिक स्मृति आ वर्तमान दायित्व दुनू उठबैत अछि।

प्रश्न 6954. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा दूनूक संयुक्त उपलब्धि कोन क्षेत्रमे सर्वाधिक उजागर अछि?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली स्वीकृति आ मातृभाषा-संरक्षण।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ख. मैथिली स्वीकृति आ मातृभाषा-संरक्षण।

व्याख्या: दूनू भिन्न स्वभाव होइतहुँ भाषा-अधिकारक संघर्षमे एक भेलाह।

प्रश्न 6955. तन्त्रानाथ झा मुख्यतः कोन रूपमे अधिक जनसुलभ छथि?

क. सर्जक, आन्दोलनकारी आ संस्थान-निर्माता।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. सर्जक, आन्दोलनकारी आ संस्थान-निर्माता।

व्याख्या: ओ कविता, गद्य, शिक्षण-संस्था आ आन्दोलन सभमे सक्रिय रहलाह।

प्रश्न 6956. सुभद्र झा मुख्यतः कोन रूपमे विशेष प्रतिष्ठित छथि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. भाषाविद आ अंतरराष्ट्रीय विद्वान।

उत्तर: घ. भाषाविद आ अंतरराष्ट्रीय विद्वान।

व्याख्या: हुनकर प्रतिष्ठा भाषाविज्ञान, विद्यापति-अध्ययन आ अनुवादक कारण अछि।

प्रश्न 6957. दूनू विभूति मैथिली समाजक लेल कोन साझा आदर्श राखैत छथि?

क. मातृभाषा लेल समर्पित बौद्धिक कर्म।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. मातृभाषा लेल समर्पित बौद्धिक कर्म।

व्याख्या: विषय, पेशा वा स्वभाव भिन्न रहितो मातृभाषा-कर्म सर्वोपरि अछि।

प्रश्न 6958. लेख आधुनिक मैथिल प्राध्यापक आ साहित्यकार पर कोन अप्रत्यक्ष प्रश्न उठबैत अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. की ओ सभ मातृभाषा-सेवामे सामाजिक रूपेँ सक्रिय छथि?

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ग. की ओ सभ मातृभाषा-सेवामे सामाजिक रूपेँ सक्रिय छथि?

व्याख्या: पूर्वजक कर्मक तुलना वर्तमान निष्क्रियता पर आलोचनात्मक आलोक डालैत अछि।

प्रश्न 6959. जन्मशती स्मरणक श्रेष्ठ उपयोग की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. केवल श्रद्धांजलि नहि, कार्य-दिशाक पुनरारम्भ।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. केवल श्रद्धांजलि नहि, कार्य-दिशाक पुनरारम्भ।
व्याख्या: लेख स्मरणकेँ सक्रिय दायित्वमे रूपान्तरित करब चाहैत अछि।

प्रश्न 6960. तिरहुता, विश्वविद्यालय-मान्यता, भाषा-विज्ञान, नाटक — एहि सभक सम्मिलित अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली अस्मिताक बहुआयामी संरक्षण।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मैथिली अस्मिताक बहुआयामी संरक्षण।
व्याख्या: भाषा केवल लेखन नहि, लिपि, संस्था, शोध, कला आ शिक्षा सभ अछि।

प्रश्न 6961. दूनू व्यक्तित्वक प्रेरणा ककरा लेल अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. मातृभाषानुरागी वर्तमान आ भावी पीढ़ी लेल।
उत्तर: घ. मातृभाषानुरागी वर्तमान आ भावी पीढ़ी लेल।
व्याख्या: लेख बारम्बार भावी पीढ़ीकेँ पूर्वजक काजसँ दिशा लेबाक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 6962. तन्त्रानाथ-सुभद्र जन्मशती लेखनक सार की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. तन्त्रानाथ-सुभद्र स्मरण मैथिली पुनर्जागरणक कर्म-संकल्पक पाठ अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. तन्त्रानाथ-सुभद्र स्मरण मैथिली पुनर्जागरणक कर्म-संकल्पक पाठ अछि।
व्याख्या: रमानन्द झाक लेख ऐतिहासिक मूल्यांकनक संग वर्तमानक जागरण-पत्र सेहो अछि।

खण्ड ७०२ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झा: मिथिलाक्षर, अनुवाद आ असंकलित शोध

प्रश्न 6963. तन्त्रानाथ झाक मिथिलाक्षर सम्बन्धी काज कथा-दृष्टिसँ मात्र नहि, कोन दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण कहल गेल?
क. सांस्कृतिक सम्पदा आ लिपि-संरक्षण दृष्टिसँ।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. सांस्कृतिक सम्पदा आ लिपि-संरक्षण दृष्टिसँ।
व्याख्या: लिथो कराए प्रकाशित कथा मिथिलाक्षर प्रचार-प्रसारक ठोस प्रयास छल।

प्रश्न 6964. ओ “कीर्तिलता” आ “हितोपदेश”क संग की कएलनि?
क. किछु अंशक भाषा-अनुवाद।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. किछु अंशक भाषा-अनुवाद।
व्याख्या: अनुवाद-कर्म हुनकर गद्य आ परम्परा-संपर्कक उदाहरण अछि।

प्रश्न 6965. “हेमलेट”, “मालती-माधव” आ “रत्नावली”सँ संबंधित हुनकर काज की छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. गद्य मे नाट्यसार लिखि प्रकाशित करब।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. गद्य मे नाट्यसार लिखि प्रकाशित करब।
व्याख्या: विश्व-साहित्य आ संस्कृत नाट्य परम्पराकेँ मैथिली गद्य-परिसरमे अनबाक प्रयास अछि।

प्रश्न 6966. हिनक गद्यबारे लेख की कहैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. विलक्षण गद्यक दर्शन होइत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. विलक्षण गद्यक दर्शन होइत अछि।
व्याख्या: विविध अनुवाद-सार आ निबन्ध हुनकर गद्य-प्रभुत्व सिद्ध करैत अछि।

प्रश्न 6967. रविनाथकृत रौदी-वर्णन सम्बन्धी निबन्ध कतेक सालक रौदी पर आधारित कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सन १३०४ सालक रौदी।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सन १३०४ सालक रौदी।
व्याख्या: अनुसंधान-परक निबन्ध इतिहास-स्मृति आ साहित्यिक जिज्ञासा जोड़ैत अछि।

प्रश्न 6968. “सन्तकवि रामदास” कोन प्रकारक निबन्ध-सूचीमे उल्लिखित अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. अनुसंधान-परक निबन्धमे।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. अनुसंधान-परक निबन्धमे।
व्याख्या: समए-समए पत्र-पत्रिकामे छपल अनेक निबन्ध अद्यावधि असंकलित कहल गेल।

प्रश्न 6969. Vishnu Puri: The Maithil Vaishnav Savant क उल्लेख की बतबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिल वैष्णव परम्परा पर अंग्रेजी/शोधपरक रुचि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मैथिल वैष्णव परम्परा पर अंग्रेजी/शोधपरक रुचि।
व्याख्या: तन्त्रानाथक शोध मैथिली सीमासँ व्यापक वैष्णव अध्ययन धरि जाइत अछि।

प्रश्न 6970. Adventures of Maithil Pandits मे किनकर प्रसंग देल गेल?
क. सचल मिश्र आ मोहन मिश्र।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. सचल मिश्र आ मोहन मिश्र।
व्याख्या: मैथिल पण्डित परम्पराक ऐतिहासिक-अनुसंधानात्मक रुचि स्पष्ट अछि।

प्रश्न 6971. तन्त्रानाथक असंकलित निबन्ध स्थितिबारे लेखकक संकेत की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ओ पत्र-पत्रिकामे छपल, मुदा संकलित नहि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ओ पत्र-पत्रिकामे छपल, मुदा संकलित नहि।
व्याख्या: लेखक अप्रकाशित/असंकलित विद्वत धरोहरक संरक्षणक आवश्यकता बतबैत अछि।

प्रश्न 6972. तन्त्रानाथ झाक शोध-अनुवाद अवदानक सार की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. तन्त्रानाथ झा कवि मात्र नहि, शोधक, अनुवादक, गद्य-शिल्पी आ लिपि-संरक्षक छथि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. तन्त्रानाथ झा कवि मात्र नहि, शोधक, अनुवादक, गद्य-शिल्पी आ लिपि-संरक्षक छथि।
व्याख्या: हुनकर अवदान विधा-विस्तार आ सांस्कृतिक पुनरुद्धार दुनू अछि।

खण्ड ७०३ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झा: अनुवाद, फ्रेंच-जर्मन अधिकार आ अप्रयुक्त ज्ञान-राशि

प्रश्न 6973. सुभद्र झा किन-किन भाषाक ज्ञाता कहल गेलाह?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच आ जर्मन।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच आ जर्मन।
व्याख्या: हुनकर भाषाज्ञान बहुभाषी शोध आ अनुवादक आधार रहल।

प्रश्न 6974. ओ जर्मन आ फ्रेंचमे लिखित पोथीक अनुवाद कोन भाषासभमे कएलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. हिन्दी आ अंग्रेजीमे।
उत्तर: घ. हिन्दी आ अंग्रेजीमे।
व्याख्या: ई हुनकर यूरोपीय भाषासभ पर असाधारण अधिकार देखबैत अछि।

प्रश्न 6975. Grammar of the Prakrit Language केर अनुवादक रूपमे किनकर नाम देल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. सुभद्र झा।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सुभद्र झा।
व्याख्या: सन्दर्भ-सूची हुनकर प्राकृत-भाषा अध्ययनक अनुवादक रूप बतबैत अछि।

प्रश्न 6976. History of Indian Literature क अनुवाद-प्रसंग की देखबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. भारतीय साहित्य-इतिहासक यूरोपीय विद्वता सँ संवाद।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. भारतीय साहित्य-इतिहासक यूरोपीय विद्वता सँ संवाद।
व्याख्या: जर्मन कृति के भारतीय भाषाई पठनमे अनबाक हुनकर क्षमता स्पष्ट अछि।

प्रश्न 6977. Abhidharmakosa सम्बन्धी अनुवादमे हुनक भूमिका की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. चीनीसँ फ्रेंचकृत व्याख्यायुक्त पाठ कैँ अंग्रेजीमे रूपान्तर।
उत्तर: घ. चीनीसँ फ्रेंचकृत व्याख्यायुक्त पाठ कैँ अंग्रेजीमे रूपान्तर।
व्याख्या: ई बौद्ध अध्ययन, चीनी-फ्रेंच-अंग्रेजी संवादक कठिन विद्वत-कर्म अछि।

प्रश्न 6978. Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts क उल्लेख की बतबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. संस्कृत पाण्डुलिपि-विज्ञानमे हुनकर काज।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. संस्कृत पाण्डुलिपि-विज्ञानमे हुनकर काज।
व्याख्या: सुभद्र झाक विद्वत्ता भाषाविज्ञानसँ पाण्डुलिपि-सूचीकरण धरि फैलल अछि।

प्रश्न 6979. लेखक “एहि विद्वता एवं ज्ञानराशिक फलसँ मैथिली वंचित रहि गेल” किएक कहैत छथि?
क. बहुत काज मैथिलीमे उपलब्ध/सुलभ नहि भऽ सकल।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. बहुत काज मैथिलीमे उपलब्ध/सुलभ नहि भऽ सकल।
व्याख्या: सुभद्र झाक विशाल विद्वत्ता मैथिली पाठक धरि पर्याप्त रूपेँ नहि पहुँचल।

प्रश्न 6980. सुभद्र झाक अनुसन्धानरत रूप कोना चित्रित अछि?
क. सदिखन अनुसंधानरत शोध-निर्देशक।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. सदिखन अनुसंधानरत शोध-निर्देशक।
व्याख्या: लेख हुनका निरन्तर शोध-साधना करनिहार गुरु रूपमे देखैत अछि।

प्रश्न 6981. सामान्यक बीच सामान्य आ विद्वानक बीच विद्वान कहलाक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. विद्वत्ता आ सरलता एकसंग।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. विद्वत्ता आ सरलता एकसंग।
व्याख्या: हुनकर निरअहंकारी आ सहज व्यक्तित्वक प्रशंसा अछि।

प्रश्न 6982. सुभद्र झाक बहुभाषी अनुवाद-अवदानक सार की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सुभद्र झा बहुभाषी, अनुवादक, पाण्डुलिपि-विद आ शोध-गुरु छलाह, जिनकर ज्ञान मैथिली लेल अझु अधिक सुलभ होएबाक चाही।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. सुभद्र झा बहुभाषी, अनुवादक, पाण्डुलिपि-विद आ शोध-गुरु छलाह, जिनकर ज्ञान मैथिली लेल अझु अधिक सुलभ होएबाक चाही।
व्याख्या: लेख उनका विद्वत्ता कैँ सांस्कृतिक ऋण रूपमे देखैत अछि।

खण्ड ७०४ : विदेह-सदेह २ — जयकान्तसँ तन्त्रानाथ-सुभद्र धरि: भाषा-संस्था-शोधक साझा पाठ

प्रश्न 6983. जयकान्त मिश्र आ तन्त्रानाथ झा दूनूक काजमे कोन साझा बिन्दु अछि?

क. मातृभाषा लेल संस्था, आन्दोलन आ साहित्यक मेल।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. मातृभाषा लेल संस्था, आन्दोलन आ साहित्यक मेल।

व्याख्या: दूनू व्यक्ति भाषा-कर्मकेँ केवल लेखनमे सीमित नहि राखैत छथि।

प्रश्न 6984. जयकान्त मिश्र आ सुभद्र झा दूनू मैथिलीकेँ कोना प्रतिष्ठित करैत छथि?

क. शोध, इतिहास आ भाषावैज्ञानिक तर्कद्वारा।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. शोध, इतिहास आ भाषावैज्ञानिक तर्कद्वारा।

व्याख्या: एक इतिहास-समीक्षा दिशा दैत छथि, दोसर भाषाविज्ञानक आधार।

प्रश्न 6985. तिरहुता लिपि आ मातृभाषा शिक्षा प्रसंग एकसंग की बतबैत अछि?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. भाषिक अस्मिताक आधार लिपि आ शिक्षा दुनू अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. भाषिक अस्मिताक आधार लिपि आ शिक्षा दुनू अछि।

व्याख्या: भाषा बाँचए लेल लेखन-प्रणाली आ बालशिक्षा दूनू आवश्यक अछि।

प्रश्न 6986. साहित्य अकादेमी विवाद आ कीर्त्तिनञा विवाद की सिद्ध करैत अछि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. मैथिली आलोचनामे मतभेद आ शोध-विवादक जीवन्त परम्परा।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. मैथिली आलोचनामे मतभेद आ शोध-विवादक जीवन्त परम्परा।

व्याख्या: विवाद सभ भाषा-साहित्यक गम्भीरता आ प्रतिमान-निर्माणक सूचक अछि।

प्रश्न 6987. तन्त्रानाथक स्त्री-शिक्षा विचार आ जयकान्तक प्राथमिक शिक्षा आन्दोलनमे साझा भाव की अछि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. शिक्षा बिना समाजोन्नति नहि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. शिक्षा बिना समाजोन्नति नहि।

व्याख्या: दूनू दृष्टि शिक्षा केँ सामाजिक मुक्ति आ उन्नति संग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 6988. सुभद्र झाक अन्तरराष्ट्रीय भाषाशास्त्र आ जयकान्तक आन्दोलन-दृष्टि मिलि की करैत अछि?

क. मैथिलीक स्वतंत्रता लेल भीतर-बाहर दुनू प्रमाण जुटबैत अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक स्वतंत्रता लेल भीतर-बाहर दुनू प्रमाण जुटबैत अछि।

व्याख्या: एक विद्वत विश्वसमक्ष तर्क दैत अछि, दोसर जनसमाजमे चेतना।

प्रश्न 6989. रमानन्द झाक लेखमे पूर्वज स्मरणक अर्थ की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. वर्तमान पीढ़ीकेँ दायित्व याद करब।
उत्तर: घ. वर्तमान पीढ़ीकेँ दायित्व याद करब।
व्याख्या: जन्मशती केवल इतिहासक पुनर्पाठ नहि, कर्मक पुकार अछि।

प्रश्न 6990. मैथिली धरोहरक संकट कोन-कोन रूपमे उभरैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. लिपि-विस्मरण, असंकलित लेखन, सरकारी उदासीनता आ जन-अरुचि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. लिपि-विस्मरण, असंकलित लेखन, सरकारी उदासीनता आ जन-अरुचि।
व्याख्या: विभिन्न प्रसंग मिलि मैथिली संरक्षणक बहुस्तरीय चुनौती देखबैत अछि।

प्रश्न 6991. एहि बैचमे समेटल पाठक मुख्य शैक्षिक निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. भाषा-साहित्यक अध्ययन संस्थागत, लोकाधारित आ शोधसमर्थ तीनू होएबाक चाही।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. भाषा-साहित्यक अध्ययन संस्थागत, लोकाधारित आ शोधसमर्थ तीनू होएबाक चाही।
व्याख्या: सफल मातृभाषा-कर्म पुस्तक, मंच, विद्यालय, विश्वविद्यालय, आन्दोलन आ शोध सभ मांगैत अछि।

प्रश्न 6992. एहि खण्डक अंतिम सार की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. जयकान्त, तन्त्रानाथ आ सुभद्र—तीनू मैथिली पुनर्जागरणक अलग-अलग मुदा परस्परपूरक स्तम्भ छथि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त, तन्त्रानाथ आ सुभद्र—तीनू मैथिली पुनर्जागरणक अलग-अलग मुदा परस्परपूरक स्तम्भ छथि।
व्याख्या: एहि त्रयीसँ मातृभाषा-प्रेमक कर्मठ, शोधशील आ संस्थागत आदर्श बनैत अछि।

खण्ड ७०५ : विदेह-सदेह २ — श्यामसुन्दर शशि: “आह उमा! वाह उमा!” प्रथम भेंट

प्रश्न 6993. लेखकक उमा सिंहसँ पहिल भेंट कोन प्रसंगमे भेल?
क. रेडियो टुडेक कार्यक्रम संचालक आ समाचार वाचकक छनौट प्रक्रियामे।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. रेडियो टुडेक कार्यक्रम संचालक आ समाचार वाचकक छनौट प्रक्रियामे।
व्याख्या: श्रद्धांजलिमे पहिल भेटक स्थल आ प्रसंग रेडियो टुडे चयन-प्रक्रिया रूपमे वर्णित अछि।

प्रश्न 6994. पहिल भेंटक समय परीक्षक-दलमे लेखकक भूमिका की छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ओ परीक्षकक रूपमे छलाह।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. ओ परीक्षकक रूपमे छलाह।
व्याख्या: उमा प्रतिस्पर्धीक रूपमे सामने छलीह आ लेखक सहित अन्य संचारकर्मी परीक्षक छलाह।

प्रश्न 6995. उमा सिंहक बाह्य रूप-वर्णनमे लेखक कोन बात पर बल दैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. सादगी, मेकअप-विहीन चमकैत मुख आ साधारण पहिरन।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. सादगी, मेकअप-विहीन चमकैत मुख आ साधारण पहिरन।
व्याख्या: लेखक आधुनिकता-विहीन सादगी आ भीतरी तेजकेँ एक साथ रेखांकित करैत छथि।

प्रश्न 6996. उमा सिंहक देह-यष्टि लेखककेँ की संकेत दैत छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ओकर भीतरक पीड़ा।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. ओकर भीतरक पीड़ा।
व्याख्या: सुख्खल देह-यष्टि लेखकक दृष्टिमे भीतरक दुखक बखान करैत छल।

प्रश्न 6997. उमा सिंह ओ समय कोन शैक्षिक अवस्थामे छलीह?
क. स्नातकक अंतिम वर्षक परीक्षाक बाद व्यावसायिक जीवनमे प्रवेश चाहैत छलीह।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. स्नातकक अंतिम वर्षक परीक्षाक बाद व्यावसायिक जीवनमे प्रवेश चाहैत छलीह।
व्याख्या: लेखमे स्पष्ट अछि जे ओ पढ़ाइ सँ पेशागत संचार जीवन दिस बढ़ि रहल छलीह।

प्रश्न 6998. संचार क्षेत्रसँ उमा सिंहक सम्बन्ध पहिने कोना रहल छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. छापा आ विद्युतीय संचारक तालिम, सभा, सेमिनार आदिमे सहभागितासँ।
उत्तर: घ. छापा आ विद्युतीय संचारक तालिम, सभा, सेमिनार आदिमे सहभागितासँ।
व्याख्या: ओ नवागत मात्र नहि, संचार-प्रशिक्षण आ सार्वजनिक उपस्थिति सँ तैयार युवती छलीह।

प्रश्न 6999. उमा सिंहक सपना की कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. रेडियोक लेल समाचार संकलन आ मैथिलीमे समाचार वाचन।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. रेडियोक लेल समाचार संकलन आ मैथिलीमे समाचार वाचन।
व्याख्या: लेखक हुनकर संचार-स्वप्नकेँ भाषा आ पत्रकारिता दुनूसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 7000. लेखक कहैत छथि जे अवसर उमाकेँ कोना भेटल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. दयासँ नहि, अपन प्रतिभाक बलपर।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. दयासँ नहि, अपन प्रतिभाक बलपर।
व्याख्या: लेखक स्वयंकेँ निमित्त मानैत छथि आ उमाक श्रेष्ठता स्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 7001. प्रतिस्पर्धीसभ मध्य उमा सिंहकेँ लेखक कोना आँकलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. सर्वोत्तम।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सर्वोत्तम।
व्याख्या: उमा अपन प्रतिभा, सादगी आ संचार-दृष्टिसँ प्रतियोगितामे सबसँ नीक सिद्ध भेलि।

प्रश्न 7002. एहि प्रथम-भेंट प्रसंगक मूल भाव की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. एक संभावनाशील मैथिली पत्रकारक उदय।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. एक संभावनाशील मैथिली पत्रकारक उदय।
व्याख्या: भेंटक विवरण श्रद्धांजलिक भूमिका अछि, जाहिसँ उमाक व्यक्तित्वक संभावनाशीलता झलकैत अछि।

खण्ड ७०६ : विदेह-सदेह २ — उमा सिंह: मैथिली समाचार, प्रशिक्षण आ भाषा-शुद्धि

प्रश्न 7003. माओवादी द्वारा पिता-भैयाक बेपत्ता बनलाक बाद उमा किएक संचारक्षेत्रमे आएल होएबाक अनुमान अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. अपन बात कहबाक लेल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. अपन बात कहबाक लेल।
व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे परिवारिक त्रासदीक बाद हुनका बहुत किछु कहबाक छल।

प्रश्न 7004. चयनक बाद उमाकेँ कोन अवसर भेटल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. रेडियो टुडेमे समाचार-संबंधी काज करबाक।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. रेडियो टुडेमे समाचार-संबंधी काज करबाक।
व्याख्या: रेडियो मंच हुनका मैथिली समाचार-संकलन आ वाचनक अवसर देलक।

प्रश्न 7005. लेखकक अनुसार उमा सिंहक प्रमुख गुणसभ कोन-कोन छल?
क. अध्ययनशीलता, मेहनत, निर्भीकता आ पेसाप्रति निष्ठा।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. अध्ययनशीलता, मेहनत, निर्भीकता आ पेसाप्रति निष्ठा।
व्याख्या: श्रद्धांजलिमे हुनकर पत्रकार व्यक्तित्वक चारि आधार स्पष्ट कएल गेल।

प्रश्न 7006. लेखक कतबा समय धरि उमासँ तालिम आ काजक सम्बन्धमे रहलाह?
क. एक महिना तालिम आ करीब नौ महिना काज।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. एक महिना तालिम आ करीब नौ महिना काज।
व्याख्या: लेखक उमासँ प्रत्यक्ष प्रशिक्षण-कर्म आ सहकर्मी सम्बन्धक अवधि स्मरण करैत छथि।

प्रश्न 7007. कतार प्रवासक दौरान लेखकक उमासँ सम्पर्क कोना रहैत छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. इंटरनेट मार्फत बात-चीत।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. इंटरनेट मार्फत बात-चीत।
व्याख्या: भौगोलिक दूरीक बादो भाषा आ पत्रकारिता-संबंधी संवाद चलैत रहल।

प्रश्न 7008. उमाक एक उलहन लेखककेँ की रहैत छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. लेखक गेलाक बाद भाषा-शुद्धि देखए वाला नहि अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. लेखक गेलाक बाद भाषा-शुद्धि देखए वाला नहि अछि।
व्याख्या: ई बात उमाक मैथिली भाषिक शुद्धताप्रति सजगता देखबैत अछि।

प्रश्न 7009. भाषा-शुद्धि सम्बन्धी उलहनसँ उमाक कोन गुण प्रकट होइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. मैथिली समाचार-वाचनमे भाषिक अनुशासनक आग्रह।
उत्तर: घ. मैथिली समाचार-वाचनमे भाषिक अनुशासनक आग्रह।
व्याख्या: ओ केवल खबर पढ़यवाली नहि, भाषा-मानकक चिन्ता करयवाली संचारकर्मी छलीह।

प्रश्न 7010. लेखक जनकपुरक मित्रसँ कोन प्रकारक समाचार सुनलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. उमासिंहक हत्या सम्बन्धी अशुभ समाचार।
उत्तर: घ. उमासिंहक हत्या सम्बन्धी अशुभ समाचार।
व्याख्या: ओछानेपर रहिते फोनसँ ई समाचार भेटल आ लेखकक मोन घोर भऽ गेल।

प्रश्न 7011. लेखक उमाकेँ कोन रूपकसँ स्मरण करैत छथि?
क. नीकसँ फुलबासँ पहिनहि निचोड़ि देल गेल फूल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. नीकसँ फुलबासँ पहिनहि निचोड़ि देल गेल फूल।
व्याख्या: रूपक हुनकर अकाल मृत्यु आ नष्ट भेल संभावना व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 7012. एहि खण्डक मुख्य अर्थ की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. उमा सिंह भाषिक सजगता आ पेशागत साहसक प्रतीक छलीह।
उत्तर: घ. उमा सिंह भाषिक सजगता आ पेशागत साहसक प्रतीक छलीह।
व्याख्या: संचारकर्मी रूपमे हुनकर गठन, प्रतिभा, भाषा-चिन्ता आ निष्ठा सब एकत्र देखाइत अछि।

खण्ड ७०७ : विदेह-सदेह २ — उमा सिंह: पारिवारिक त्रासदी, धमकी आ हत्या

प्रश्न 7013. उमा सिंहक पिता आ भैयाकेँ कोन घटना भेल छल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. माओवादी कार्यकर्तासभ सिरहासँ अपहरण कऽ बेपत्ता बनौने छल।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. माओवादी कार्यकर्तासभ सिरहासँ अपहरण कऽ बेपत्ता बनौने छल।

व्याख्या: लेखमे पिता रंजीत सिंह आ भैयाक बेपत्ता बनलाक प्रसंग प्रमुख पृष्ठभूमि अछि।

प्रश्न 7014. पिता आ भैयाक बेपत्ता भेला पछाति घरक जिम्मेवारी केकरा पर आयल?

क. उमा सिंह पर।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. उमा सिंह पर।

व्याख्या: ओ बेसहारा माए, भाउज, बहिन आ भतीजा-भतीजीक देखभाल करैत छलीह।

प्रश्न 7015. उमा विवाह किएक नहि कएने छलीह कहल गेल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. पारिवारिक जिम्मेवारीक कारण।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. पारिवारिक जिम्मेवारीक कारण।

व्याख्या: लेखक विवाह-अभावकेँ निजी निर्णय नहि, उत्तरदायित्वबोधसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 7016. पिता-भैयाक मुक्ति लेल उमा कोन स्तर पर गुहार करैत छलीह?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय निकायसभमे।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ख. राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय निकायसभमे।

व्याख्या: ओ परिवारक न्याय लेल स्थानीय सीमासँ बाहर धरि आवाज उठा रहल छलीह।

प्रश्न 7017. सिरहामे रहिते उमा किएक असुरक्षित छलीह?

क. बार-बार धमकी भेटैत छल।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. बार-बार धमकी भेटैत छल।

व्याख्या: धमकीक कारण ओ सुरक्षित वासक खोजमे जनकपुर आयल छलीह।

प्रश्न 7018. जनकपुरमे उमा कतय रहैत छलीह?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. रजौल स्थित एक साथीक घरमे भाड़ापर।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. रजौल स्थित एक साथीक घरमे भाड़ापर।

व्याख्या: लेखमे जनकपुर नगरपालिका १४, रजौल डेरा प्रसंग देल गेल।

प्रश्न 7019. हतियारधारी समूह उमापर कोन प्रकारक आक्रमण कएलक?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. अंधाधुंध खुकुरी प्रहार।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. अंधाधुंध खुकुरी प्रहार।
व्याख्या: रवि दिन साँझ डेरामे प्रवेश कऽ गंभीर घाइल कएल गेल।

प्रश्न 7020. उमाक मृत्यु कतय जाइत काल भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उपचारार्थ काठमाण्डू लऽ जाइत काल बाटेमे।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. उपचारार्थ काठमाण्डू लऽ जाइत काल बाटेमे।
व्याख्या: हुनका बचएबाक प्रयास भेल, मुदा बाटे मृत्युक उल्लेख अछि।

प्रश्न 7021. हत्या सम्बन्धी प्रारम्भिक अनुमान की छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. समाचारक विषय लऽ कऽ हत्या भेल होएबाक।
उत्तर: घ. समाचारक विषय लऽ कऽ हत्या भेल होएबाक।
व्याख्या: लेखक वास्तविक कारण दोषी पकड़े बिना निश्चित नहि कहैत छथि।

प्रश्न 7022. नेपालमे हत्या कएल गेल उमा सिंहक ऐतिहासिक स्थिति की कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. नेपालमे मारल गेल पहिल महिला पत्रकार।
उत्तर: घ. नेपालमे मारल गेल पहिल महिला पत्रकार।
व्याख्या: श्रद्धांजलि उमाक बलिदानकेँ पत्रकारिता-इतिहासक कठोर प्रसंग बनबैत अछि।

खण्ड ७०८ : विदेह-सदेह २ — “आह उमा! वाह उमा!” बलिदान, कलम आ श्रद्धा

प्रश्न 7023. लेखक वर्तमान सरकारसँ दोषी-दण्ड पर की अपेक्षा व्यक्त करैत छथि?
क. सम्भावना बहुत न्यून मानैत छथि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. सम्भावना बहुत न्यून मानैत छथि।
व्याख्या: लेखक सरकारसँ अधिक आशान्वित नहि छथि, मुदा बलिदान बेकार नहि मानैत।

प्रश्न 7024. उमा सिंहक बलिदान बेकार नहि जाएत — एकर आधार लेखक की देलनि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. कलमक धार अवरुद्ध करयवाला कहियो जीवित नहि रहल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. कलमक धार अवरुद्ध करयवाला कहियो जीवित नहि रहल।
व्याख्या: इतिहास कलम-विरोधी शक्तिक नाशक साक्षी कहल गेल।

प्रश्न 7025. लेखक सैनिकक शहादत आ उमाक मृत्युकेँ कोना जोड़ैत छथि?
क. देशहितमे प्राण देनिहार सैनिक जकाँ पत्रकारिता-धर्मक बलिदान।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. देशहितमे प्राण देनिहार सैनिक जकाँ पत्रकारिता-धर्मक बलिदान।
व्याख्या: ओ समाचार आ नैसर्गिक अधिकारक वकालतमे प्राण देबाक गरिमा स्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 7026. उमाकेँ “सौभाग्यशाली” कहबाक भाव की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. समाचार लिखबाक-पढ़बाक कारण प्राण देलनि।
उत्तर: घ. समाचार लिखबाक-पढ़बाक कारण प्राण देलनि।
व्याख्या: ई कठोर शब्द श्रद्धात्मक अर्थमे प्रयोग अछि—पत्रकारिता-धर्मक सर्वोच्च मूल्य।

प्रश्न 7027. लेखक उमाकेँ कोन सम्बोधन दैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. वीराङ्गना।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. वीराङ्गना।
व्याख्या: मनुष्यक नैसर्गिक अधिकार लेल प्राण देनिहारी रूपमे उमाक सम्मान कएल गेल।

प्रश्न 7028. “दुनियाभरिक कलमजीवी सभक मनमानसमे रहव” कथनक आशय की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. उमा पत्रकारिता-स्मृतिक सार्वदेशिक प्रतीक बनि रहथु।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. उमा पत्रकारिता-स्मृतिक सार्वदेशिक प्रतीक बनि रहथु।
व्याख्या: श्रद्धांजलि स्थानीय घटना केँ विश्वव्यापी कलम-समुदायक स्मृति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7029. लेखक अन्तमे ककर पंक्ति द्वारा श्रद्धासुमन व्यक्त करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. डा. धीरेन्द्रक पंक्ति द्वारा।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. डा. धीरेन्द्रक पंक्ति द्वारा।
व्याख्या: उमाकेँ सहकर्मी आ शिष्या कहैत लेखक गुरु-वाक्यसँ श्रद्धांजलि दैत छथि।

प्रश्न 7030. “नोरक टघारेसँ जीवन...” पंक्ति सभ कोन भाव व्यक्त करैत अछि?
क. दुखक बीच आशा आ संघर्षमे जीतक विश्वास।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. दुखक बीच आशा आ संघर्षमे जीतक विश्वास।
व्याख्या: कठिन युद्धक बावजूद हार नहि मानबाक भाव श्रद्धांजलिक समापन बनैत अछि।

प्रश्न 7031. उमा सिंहक प्रसंगमे “आह” आ “वाह” दुनू किएक सार्थक अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. शोक आ गौरव एक साथ।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. शोक आ गौरव एक साथ।
व्याख्या: आह मृत्यु-वेदना अछि, वाह साहस, निष्ठा आ बलिदानक सम्मान।

प्रश्न 7032. एहि श्रद्धांजलिक मुख्य संदेश की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. पत्रकारिताक हत्या संभव अछि, मुदा कलमक प्रतिरोध नष्ट नहि होइत।
उत्तर: घ. पत्रकारिताक हत्या संभव अछि, मुदा कलमक प्रतिरोध नष्ट नहि होइत।
व्याख्या: लेख उमाक अकाल मृत्युकेँ न्याय, भाषा आ पत्रकारिता-साहसक अमर बिन्दु बनबैत अछि।

खण्ड ७०९ : विदेह-सदेह २ — “नमन गुरुदेव”: स्मृतिसभा, पूजा आ आदर्श

प्रश्न 7033. “नमन गुरुदेव” लेखमे गुरुदेव के छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. डा. धीरेश्वर झा “धिरेन्द्र”।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. डा. धीरेश्वर झा “धिरेन्द्र”।
व्याख्या: लेख नेपालीय मैथिली साहित्यक जनक आ जनकपुरक चटिसारक अंतिम प्राचार्य रूपमे हुनका स्मरण करैत अछि।

प्रश्न 7034. गुरुदेवक कतेकम स्मृतिसभाक उल्लेख अछि?
क. छठम।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. छठम।
व्याख्या: लेख पुस २७ गते सम्पन्न छठम स्मृतिसभा प्रसंगसँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 7035. मिथिला नाट्यकला परिषद् हुनका किएक स्मरण कएलक?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. हुनकर प्रेरणासँ जन्मग्रहण कएने संस्था हेबाक कारण।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. हुनकर प्रेरणासँ जन्मग्रहण कएने संस्था हेबाक कारण।
व्याख्या: लेखक संस्थागत स्मरणकेँ गुरुदेवक सर्जक प्रभावसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 7036. लेखक मंचीय स्मरण आ मौन स्मरणक तुलना कोना करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. देवता-पूजा मोने-मोन सेहो सम्भव अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. देवता-पूजा मोने-मोन सेहो सम्भव अछि।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे स्मरणक असली अर्थ आदर्शक पालन अछि।

प्रश्न 7037. असली पूजा लेखकक अनुसार की अछि?
क. देवताक देखाओल बाटपर चलब आ आदर्श पालन।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. देवताक देखाओल बाटपर चलब आ आदर्श पालन।
व्याख्या: श्रद्धा केवल भाषण नहि, व्यवहारिक अनुकरण बनबाक चाही।

प्रश्न 7038. घोषणासभक सम्बन्धमे लेखकक चिन्ता की अछि?
क. ई देखबाक अछि जे घोषणा कार्यरूपमे आबैत अछि कि नहि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. ई देखबाक अछि जे घोषणा कार्यरूपमे आबैत अछि कि नहि।
व्याख्या: स्मृतिसभाक भाषण-घोषणापर लेखक व्यावहारिक कसौटी लगबैत छथि।

प्रश्न 7039. लेखक गुरुदेवकेँ “चटिसारक अंतिम प्राचार्य” कहिते किएक सचेत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि कथनपर समकालीन कलमजीवी आपत्ति कऽ सकैत छथि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. एहि कथनपर समकालीन कलमजीवी आपत्ति कऽ सकैत छथि।
व्याख्या: लेखक अपन अनुभव-आधार प्रस्तुत करबाक भूमिका बनबैत छथि।

प्रश्न 7040. “चटिसार” रूपकक मूल अर्थ की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. गुरु-केंद्रित अध्ययन-परम्परा।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. गुरु-केंद्रित अध्ययन-परम्परा।
व्याख्या: गुरुदेवक घर आ व्यक्तित्व ज्ञान-आदान-प्रदानक केन्द्र बनल छल।

प्रश्न 7041. लेखक स्मरणक स्वर ककर विरुद्ध राखैत छथि?
क. केवल भाषण-भूषण आ निष्प्रभावी घोषणा विरुद्ध।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. केवल भाषण-भूषण आ निष्प्रभावी घोषणा विरुद्ध।
व्याख्या: ओ जीवन्त आदर्श, शिक्षण-परम्परा आ सृजन-संस्कारकेँ प्राथमिकता दैत छथि।

प्रश्न 7042. एहि खण्डक मुख्य बात की अछि?
क. गुरुदेवक स्मरण आदर्शक कर्मरूप पुनर्जीवनसँ पूर्ण होइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. गुरुदेवक स्मरण आदर्शक कर्मरूप पुनर्जीवनसँ पूर्ण होइत अछि।
व्याख्या: लेखक श्रद्धांजलिकेँ संस्थागत आ व्यावहारिक दायित्व बनबैत छथि।

खण्ड ७१० : विदेह-सदेह २ — गुरुदेव धिरेन्द्र: एम.ए. पहिल बैच आ जनकपुर चटिसार

प्रश्न 7043. रारावि क्याम्पसमे मैथिली एम.ए. क पढ़ाई कोन प्रयाससँ शुरू भेल कहल गेल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. गुरुदेवक भागिरथी प्रयाससँ।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. गुरुदेवक भागिरथी प्रयाससँ।

व्याख्या: लेखक मैथिली उच्चशिक्षाक आरम्भमे धिरेन्द्रजीक निर्णायक श्रम मानैत छथि।

प्रश्न 7044. रारावि क्याम्पसमे मैथिलीक बाद कोन विषयसभमे स्नातकोत्तर पढ़ाई शुरू भेल?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: ख. राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि।

व्याख्या: लेख मैथिली एम.ए. कें अग्रणी कार्यक्रम रूपमे स्थापित करैत अछि।

प्रश्न 7045. मैथिली एम.ए. पहिल बैचक विद्यार्थीसभ कोना वर्णित छथि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. पहिने सँ अपन-अपन मुकाम पर स्थापित धुरंधर व्यक्तित्व।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ख. पहिने सँ अपन-अपन मुकाम पर स्थापित धुरंधर व्यक्तित्व।

व्याख्या: राजेन्द्र विमल, जानकी रमण, भ्रमर, पशुपतिनाथ आदि नाम सँ बैचक गरिमा झलकैत अछि।

प्रश्न 7046. पहिल बैचक अधिकांश विद्यार्थी कोन कारणे भोरमे पढ़ैत छलाह?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ओ सभ नोकरियाहा छलाह।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. ओ सभ नोकरियाहा छलाह।

व्याख्या: कार्यरत विद्यार्थीसभ लेल कक्षा भोरमे आ प्रायः गुरुदेवक घरे चलैत छल।

प्रश्न 7047. कक्षा कतय प्रायः संचालित होइत छल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. गुरुदेवक घरे।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ख. गुरुदेवक घरे।

व्याख्या: ई घर-आधारित अध्ययन चटिसार-परम्पराक जीवित रूप छल।

प्रश्न 7048. कक्षा-परिसरमे चाह-पानक प्रसंग की देखबैत अछि?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. गुरु-शिष्यक आत्मीय घरेलू वातावरण।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. गुरु-शिष्यक आत्मीय घरेलू वातावरण।

व्याख्या: अध्ययन, हँसी, गम्भीर मन्थन आ सेवा एकहि ठाम जुड़ल छल।

प्रश्न 7049. लेखक स्वयं ओहि वातावरणमे कोन काजक उल्लेख करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. चाह-पान लाबएमे परेसान रहब।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. चाह-पान लाबएमे परेसान रहब।
व्याख्या: ई बाल-स्मृति चटिसारक जीवन्त दृश्य बनबैत अछि।

प्रश्न 7050. भाषा-विज्ञानक कापी तैयार करैत समय गुरुदेव किनक राय लैत छलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. जानकी बाबू आ विमलसरक।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. जानकी बाबू आ विमलसरक।
व्याख्या: गुरुदेव सहयोगी बौद्धिकता सँ पाठ्य-सामग्री तैयार करैत छलाह।

प्रश्न 7051. लेखकक अनुसार ओहि कापीक आजो की उपयोगिता रहल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. विद्यार्थीसभ परीक्षामे पास करैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. विद्यार्थीसभ परीक्षामे पास करैत छथि।
व्याख्या: ई अतिशयोक्तिपूर्ण नहि, चिरस्थायी शिक्षण-प्रभावक संकेत अछि।

प्रश्न 7052. गुरुदेवकेँ “अंतिम प्राचार्य” कहबाक आधार की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ओहन जीवित गुरु-केंद्रित चटिसार एखन नहि चलैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. ओहन जीवित गुरु-केंद्रित चटिसार एखन नहि चलैत अछि।
व्याख्या: विद्वान अधिक भेला परो गुरु-कुल परम्परा ओहिना जीवित नहि रहल, ई लेखकक तर्क अछि।

खण्ड ७११ : विदेह-सदेह २ — गुरुदेव धिरेन्द्र: सर्जक ब्रह्मा, विधा-विभाजन आ नेपालीय मैथिली

प्रश्न 7053. लेखक गुरुदेवकेँ केवल साहित्यकार नहि, आओर की कहैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. साहित्यकार सृजना करएबला ब्रह्मा।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. साहित्यकार सृजना करएबला ब्रह्मा।
व्याख्या: गुरुदेव स्वयं लिखयवाला मात्र नहि, लेखक-प्रतिभा तैयार करयवाला गुरु छलाह।

प्रश्न 7054. महेन्द्र मलंगियाक सम्बन्धमे गुरुदेवक अवदान की कहल गेल?
क. नाटक लिखबाक प्रेरणा आ सीख दुनू देलनि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. नाटक लिखबाक प्रेरणा आ सीख दुनू देलनि।
व्याख्या: गुरुदेव प्रतिभा पहचानि विधा-दिशा देनिहार सर्जक-गुरु रूपमे उभरैत छथि।

प्रश्न 7055. रेवती रमणलालकेँ गुरुदेव कोन जिम्मेवारी देलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. रिपोर्ट लिखबाक।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. रिपोर्ट लिखबाक।
व्याख्या: लेख प्रतिभा आ रुचि अनुसार कार्य-विभाजनक उदाहरण दैत अछि।

प्रश्न 7056. रामभरोस कापड़िकेँ कोन क्षेत्र दिस प्रेरित कएल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. कविता आ गीत।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. कविता आ गीत।
व्याख्या: गुरुदेव नव साहित्यिक विधासभमे व्यक्तित्व लगाबैत छलाह।

प्रश्न 7057. भुवनेश्वर पाथेयकेँ कोन रचनात्मक जिम्मेवारी देल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. कविता आ कथा।
उत्तर: घ. कविता आ कथा।
व्याख्या: ई बतबैत अछि जे गुरुदेव विधा-विशेष प्रतिभा सँ जोड़ि लेखक बनबैत छलाह।

प्रश्न 7058. ई जिम्मेवारी-विभाजनक पाछाँ लेखक कोन उद्देश्य मानैत छथि?
क. नेपालीय मैथिलीमे सभ विधामे रचना हो।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. नेपालीय मैथिलीमे सभ विधामे रचना हो।
व्याख्या: गुरुदेवक योजना एक विधा नहि, पूर्ण साहित्यिक प्रणाली निर्माणक दिशा छल।

प्रश्न 7059. “नेपालीय मैथिली साहित्य” नामकरणक श्रेय किनका देल गेल?
क. गुरुदेव डा. धिरेन्द्रकेँ।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. गुरुदेव डा. धिरेन्द्रकेँ।
व्याख्या: लेख हुनक सांस्कृतिक-क्षेत्रीय दृष्टिकेँ नामकरण धरि मान्यता दैत अछि।

प्रश्न 7060. लेखक गुरुदेवसँ कोन प्रेरणा माँगैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. जनकपुरमे फेर गुरुकुल परम्परा चलय।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. जनकपुरमे फेर गुरुकुल परम्परा चलय।
व्याख्या: अन्तिम प्रार्थना भविष्यक बौद्धिक-सांस्कृतिक पुनरुद्धारक आकांक्षा अछि।

प्रश्न 7061. आज मैथिलसभकेँ लेखकीय सृजनसँ बेसी कोन आवश्यकता कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. अधिकारक आवश्यकता।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. अधिकारक आवश्यकता।
व्याख्या: लेख भाषा-साहित्यकेँ राजपाट, अधिकार आ अपन भाषामे कामकाज संग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7062. गुरुदेवक उद्धृत पंक्तिमे मूल संघर्ष-बोध की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. कठिन युद्ध लड़ेब आ जीत निश्चित मानब।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. कठिन युद्ध लड़ेब आ जीत निश्चित मानब।
व्याख्या: नोर, आशा, युद्ध आ जीतक सूत्र गुरुदेवक संघर्षशील आशावादक सार अछि।

खण्ड ७१२ : विदेह-सदेह २ — नवेन्दु कुमार झा: चेतना समितिक चुनाव

प्रश्न 7063. चेतना समितिक वार्षिक आम सभामे कोन अवधिक लेल नव पदाधिकारीक चुनाव भेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. २००९-११क लेल।
उत्तर: घ. २००९-११क लेल।
व्याख्या: समाचार पटनाक प्रतिनिधि संस्था चेतना समितिक चुनाव विवरण दैत अछि।

प्रश्न 7064. निर्वाचनमे कोन पद छोड़ि आन पदाधिकारी निर्विरोध चुनल गेलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. उपाध्यक्ष।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. उपाध्यक्ष।
व्याख्या: उपाध्यक्ष पदपर मतदान भेल, बाकी पदसभ निर्विरोध रहल।

प्रश्न 7065. निर्वर्तमान अध्यक्ष विजय कुमार मिश्रक परिणाम की भेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ओ पुनः अध्यक्ष बनलाह।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ओ पुनः अध्यक्ष बनलाह।
व्याख्या: समिति नेतृत्वमे निरन्तरता देखाइत अछि।

प्रश्न 7066. सचिव पदपर के निर्वाचित भेलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. विवेकानन्द ठाकुर।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. विवेकानन्द ठाकुर।
व्याख्या: समाचार स्पष्ट रूपे सचिव पदक परिणाम देलक।

प्रश्न 7067. उपाध्यक्षक तीन पदक लेल के-के निर्वाचित घोषित भेलाह?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. प्रेमकान्त झा, प्रमीला झा आ पुरुषोत्तम झा।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. प्रेमकान्त झा, प्रमीला झा आ पुरुषोत्तम झा।
व्याख्या: तीन उपाध्यक्ष पदपर मतदानक बाद एहि तीन नामक घोषणा भेल।

प्रश्न 7068. संयुक्त सचिव पदपर के-के बनाओल गेलाह?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मधुकान्त झा, सत्यनारायण मेहता आ प्राणमोहन मिश्र।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मधुकान्त झा, सत्यनारायण मेहता आ प्राणमोहन मिश्र।
व्याख्या: समाचार संयुक्त सचिवक तीन नाम देलक।

प्रश्न 7069. कोषाध्यक्ष पदपर के बनलाह?
क. योगेन्द्र नारायण मल्लिक।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. योगेन्द्र नारायण मल्लिक।
व्याख्या: वित्तीय दायित्वक पदक स्पष्ट उल्लेख अछि।

प्रश्न 7070. संगठन सचिव पदपर के नियुक्त भेलाह?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. जगत नारायण चौधरी।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. जगत नारायण चौधरी।
व्याख्या: समितिक संगठनात्मक काजक लेल ई पदाधिकारी बनलाह।

प्रश्न 7071. प्रचार सचिव पदपर के बनलाह?
क. सुरेन्द्र नारायण यादव।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. सुरेन्द्र नारायण यादव।
व्याख्या: समाचार प्रचार-दायित्वक नाम सेहो दैत अछि।

प्रश्न 7072. एहि समाचारक मुख्य प्रकृति की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मिथिलांचलक प्रतिनिधि सामाजिक संस्थाक संगठनात्मक अद्यतन।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मिथिलांचलक प्रतिनिधि सामाजिक संस्थाक संगठनात्मक अद्यतन।
व्याख्या: ई साहित्यिक आलेख नहि, संस्था-समाचार आ पदाधिकारी-सूची अछि।

खण्ड ७१३ : विदेह-सदेह २ — भाषाई अकादमीक विकास: सरकारक डेग

प्रश्न 7073. बिहारक भाषाई अकादमीसभक तत्कालीन स्थिति कोना कहल गेल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. बदहाली आ स्थायी ठेकानक अभाव।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. बदहाली आ स्थायी ठेकानक अभाव।

व्याख्या: लेख कहैत अछि जे अकादमी सभक ठेकान पाता लगाएबो मुश्किल अछि।

प्रश्न 7074. कोन भाषाई अकादमीसभक नाम उदाहरणस्वरूप आयल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. मैथिली, मगही, भोजपुरी, संस्कृत, बंगला आ दक्षिण भारतीय भाषा अकादमी।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. मैथिली, मगही, भोजपुरी, संस्कृत, बंगला आ दक्षिण भारतीय भाषा अकादमी।

व्याख्या: समाचार विभिन्न भाषा-अकादमीक साझा दुर्दशा देखबैत अछि।

प्रश्न 7075. एहि संस्थानसभ कोन विभागक नियंत्रणाधीन कहल गेल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. मानव संसाधन विकास विभाग।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ख. मानव संसाधन विकास विभाग।

व्याख्या: विकासक ब्लू-प्रिन्ट एहि विभाग द्वारा तैयार भेल बताओल गेल।

प्रश्न 7076. ब्लू-प्रिन्टमे कोन मुख्य काजसभ प्रस्तावित छल?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. शोध, पाण्डुलिपि प्रकाशन आ पुस्तक-बिक्री व्यवस्था।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. शोध, पाण्डुलिपि प्रकाशन आ पुस्तक-बिक्री व्यवस्था।

व्याख्या: उद्देश्य अकादमीकेँ सक्रिय आ आर्थिक रूपेँ सक्षम बनएब छल।

प्रश्न 7077. अकादमीसभकेँ कोना संगठित करबाक प्रयास वर्णित अछि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. एक छत/एक परिसरमे अनबाक।

उत्तर: घ. एक छत/एक परिसरमे अनबाक।

व्याख्या: राजधानीमे बिखरल कार्यालयसभकेँ एकीकृत आधारभूत संरचना देबाक योजना अछि।

प्रश्न 7078. कौन-कौन स्थान चयन-विचारमे आयल?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् परिसर आ नजदीकक संस्कृत विद्यालयक खाली जमीन।

उत्तर: घ. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् परिसर आ नजदीकक संस्कृत विद्यालयक खाली जमीन।

व्याख्या: एहि दूनू स्थानमे सँ कोनो एक पर सुविधासम्पन्न परिसर बनएबाक सोच अछि।

प्रश्न 7079. सरकारक पहिल प्राथमिकता की कहल गेल?
क. आधारभूत संरचनाक विकास।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. आधारभूत संरचनाक विकास।
व्याख्या: भाषा-विकास आ शोधक काज संरचना बनलाक बाद सुचारू मानल गेल।

प्रश्न 7080. प्रकाशित पुस्तकक बिक्री व्यवस्थाक उद्देश्य की छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. अकादमीसभकेँ आर्थिक रूपसँ मजबूत बनएब।
उत्तर: घ. अकादमीसभकेँ आर्थिक रूपसँ मजबूत बनएब।
व्याख्या: साहित्य-प्रकाशनकेँ आत्मनिर्भरता संग जोड़ल गेल।

प्रश्न 7081. पूर्व गतिविधि किएक अपर्याप्त कहल गेल?
क. कतेक वर्षसँ मंद आ सीमित गतिविधि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. कतेक वर्षसँ मंद आ सीमित गतिविधि।
व्याख्या: केवल वेतन आ किछु साहित्यकारक महिमामंडन सँ संस्थागत उद्देश्य पूरा नहि होइत।

प्रश्न 7082. सरकार ईमानदारीसँ प्रयास करय तँ सम्भावित लाभ की?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. दुर्लभ पाण्डुलिपि पुस्तकाकार रूपमे आओत आ शोधार्थी-छात्रकेँ लाभ भेटत।
उत्तर: घ. दुर्लभ पाण्डुलिपि पुस्तकाकार रूपमे आओत आ शोधार्थी-छात्रकेँ लाभ भेटत।
व्याख्या: समाचार संस्थागत सुधारकेँ भाषा-विकासक व्यावहारिक आधार मानैत अछि।

खण्ड ७१४ : विदेह-सदेह २ — सुशान्त झा: मैथिली गीत-संस्कृतिक संस्थागत संरक्षण

प्रश्न 7083. लेखक यू-ट्यूबपर की ताकैत भटकैत छलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मनपसंद मैथिली गीत।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मनपसंद मैथिली गीत।
व्याख्या: व्यस्त जीवनमे फुर्सत भेटलापर लेखक मैथिली गीत सुनबाक इच्छा व्यक्त करैत छथि।

प्रश्न 7084. यू-ट्यूबपर उपलब्ध मैथिली गीतसभमे कोन प्रकार अधिक भेटैत अछि?
क. बियाहक गीत आ भक्ति गीत।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. बियाहक गीत आ भक्ति गीत।
व्याख्या: लेखक मैथिली संगीतक सीमित डिजिटल उपलब्धता नोट करैत छथि।

प्रश्न 7085. मैथिलीक विराट लोकगीत संसारक समस्या की कहल गेल?
क. छिड़ाएल सामग्रीकेँ एकठाम पौनाई कठिन।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. छिड़ाएल सामग्रीकेँ एकठाम पौनाई कठिन।
व्याख्या: र recording, संकलन आ संयोजनक अभाव मुख्य बाधा अछि।

प्रश्न 7086. लेखक कोन कारणे गजेन्द्रजीकेँ फोन कएलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. लोकप्रिय मैथिली गीत वेबसाइटपर डालल जा सकैत अछि कि नहि बुझबाक लेल।
उत्तर: घ. लोकप्रिय मैथिली गीत वेबसाइटपर डालल जा सकैत अछि कि नहि बुझबाक लेल।
व्याख्या: लेखक डिजिटल संग्रहक सम्भावना खोजैत छथि।

प्रश्न 7087. गीत वेबसाइटपर देबाक बाटमे कोन संकट कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. कॉपीराइट संकट।
उत्तर: घ. कॉपीराइट संकट।
व्याख्या: डिजिटल उपलब्धता केवल तकनीकी नहि, विधिक प्रश्न सेहो अछि।

प्रश्न 7088. लेखकक इच्छा कोन प्रकारक वेबसाइटक लेल छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. दिल्ली-बंबई-अमेरिका धरि मैथिल गीत-संगीत सुनि सकथि एहन एकठाम मंच।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. दिल्ली-बंबई-अमेरिका धरि मैथिल गीत-संगीत सुनि सकथि एहन एकठाम मंच।
व्याख्या: विस्थापित मैथिलक सांस्कृतिक संबंध लेल डिजिटल केंद्रक कल्पना अछि।

प्रश्न 7089. अंग्रेजी आ हिंदी भाषाई साम्राज्यवादसँ बचबाक उपाय की सूचित अछि?
क. नब तकनीकक सतर्क उपयोग।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. नब तकनीकक सतर्क उपयोग।
व्याख्या: लेखक तकनीककेँ भाषा-संरक्षणक साधन मानैत छथि।

प्रश्न 7090. मैथिली लोकगीत, नाटक, लोककथा आ आख्यानकेँ लेखक की कहैत छथि?
क. बड़ पैघ धरोहर।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. बड़ पैघ धरोहर।
व्याख्या: धरोहरकेँ आम मैथिलसँ जोड़बाक आवश्यकता रेखांकित अछि।

प्रश्न 7091. भविष्यक माध्यमक स्वरूप लेखक कोना देखैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ऑडियो-विजुअल युग।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ऑडियो-विजुअल युग।
व्याख्या: लोक पढ़बाक अपेक्षा सुनब-देखब बेसी चाहत, एहि हेतु माध्यम बदलय पड़त।

प्रश्न 7092. लेखक कोन प्रकारक प्रयास सुझबैत छथि?
क. ट्रस्ट वा सोसाइटी अधीन संस्थागत, इमानदार डिजिटल-सांस्कृतिक प्रयास।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. ट्रस्ट वा सोसाइटी अधीन संस्थागत, इमानदार डिजिटल-सांस्कृतिक प्रयास।
व्याख्या: सरकारपर निर्भर रहबाक बदला नागरिक-संस्था आधारित संरक्षणक सुझाव अछि।

खण्ड ७१५ : विदेह-सदेह २ — सुशान्त झा: हमर सपनाक मिथिला — शिक्षा, हाइवे आ उद्योग

प्रश्न 7093. “हमर सपनाक मिथिला”मे लेखक ककर तस्वीर मोने-मोन बना रहल छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुन्दर आ समृद्ध इलाकाक।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. सुन्दर आ समृद्ध इलाकाक।
व्याख्या: लेख भविष्य-दृष्टि सँ मिथिलाक विकासक कल्पना करैत अछि।

प्रश्न 7094. दरभंगामे लेखक कोन विद्यमान संस्थागत रंग देखैत छथि?
क. एकटा यूनिवर्सिटी आ मेडिकल कॉलेज।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. एकटा यूनिवर्सिटी आ मेडिकल कॉलेज।
व्याख्या: ई विकासक आरम्भिक रंग मानल गेल अछि।

प्रश्न 7095. जयनगर तक बड़ी लाइन आ चारि-लेन सड़कक महत्त्व की?
क. मिथिलाक हृदयस्थली बाटे संपर्क-संरचना बनब।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक हृदयस्थली बाटे संपर्क-संरचना बनब।
व्याख्या: सड़क-रेल सम्पर्क भविष्यक शिक्षा-उद्योगक आधार मानल गेल।

प्रश्न 7096. हाइवे किनारमे लेखक कोन संस्थानसभ खुलबाक कल्पना करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. दर्जनों इंजीनियरिंग आ मेडिकल कॉलेज।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. दर्जनों इंजीनियरिंग आ मेडिकल कॉलेज।
व्याख्या: शिक्षा-केंद्रित विकास मॉडल सपनाक प्रमुख तत्व अछि।

प्रश्न 7097. झंझारपुरक बायोटेक्नोलॉजी कॉलेजमे केरलक विद्यार्थी प्रवेश लेब—एहि कल्पनाक अर्थ की?
क. मिथिला बाहरी विद्यार्थीक आकर्षण-केंद्र बनत।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. मिथिला बाहरी विद्यार्थीक आकर्षण-केंद्र बनत।
व्याख्या: लेखक क्षेत्रीय संस्थानकेँ राष्ट्रीय स्तरक शिक्षा-केंद्र बनैत देखैत छथि।

प्रश्न 7098. लेखक नार्थ-ईस्ट आ दक्षिण भारतक बच्चासभक काठमांडू टूरक कल्पना किएक करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मिथिलाक मार्गीय-पर्यटन आ ढावा-संस्कृति विकसित होएबाक संकेत।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाक मार्गीय-पर्यटन आ ढावा-संस्कृति विकसित होएबाक संकेत।
व्याख्या: हाइवे मिथिलाकेँ यात्रा, व्यापार आ सांस्कृतिक सम्पर्कक राह बनबैत अछि।

प्रश्न 7099. झंझारपुर, निर्मली, सकरी, सुपौल आ उदाकिशुनगंजक संदर्भमे लेखक की कल्पना करैत छथि?
क. उद्योग-धंधा खुलत।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. उद्योग-धंधा खुलत।
व्याख्या: जे कस्बा छथि, से भविष्यक आर्थिक केन्द्र बनि सकैत छथि।

प्रश्न 7100. मिथिलाक लोककेँ घर लग की भेटबाक सपना अछि?
क. रोजगार आ उच्च शिक्षा।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. रोजगार आ उच्च शिक्षा।
व्याख्या: प्रवास-नियति बदलि घर लग आर्थिक-सांस्थानिक अवसरक कल्पना अछि।

प्रश्न 7101. मखानक सम्बन्धमे लेखकक स्वप्न की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विश्व-स्तरीय ब्रांडिंग आ निर्यात।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. विश्व-स्तरीय ब्रांडिंग आ निर्यात।
व्याख्या: मिथिलाक स्थानीय उत्पादक वैश्विक पहचानक कल्पना कएल गेल।

प्रश्न 7102. दार्जिलिंग-सिक्किमक दूरी कम भेला सँ की सांस्कृतिक-आर्थिक अवसर देखल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. शिक्षा, पर्यटन आ जीवन-शैलीक नब सम्भावना।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. शिक्षा, पर्यटन आ जीवन-शैलीक नब सम्भावना।
व्याख्या: संपर्क-संरचना क्षेत्रीय मानसक क्षितिज बढ़ा सकैत अछि।

खण्ड ७१६ : विदेह-सदेह २ — हमर सपनाक मिथिला — पुल, पर्यटन, पोखरि आ क्षेत्रीय नियोजन

प्रश्न 7103. लेखक मिथिलाक कमी कोन मानैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. नियोजनक कमी।
उत्तर: घ. नियोजनक कमी।
व्याख्या: मानव श्रम, पानी आ मेधा पर्याप्त अछि, मुदा योजना-अभाव विकास रोकैत अछि।

प्रश्न 7104. कोसीपर रेलवे आ सड़क पुलक महत्त्व की?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलाकेँ फेर जोड़ब।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाकेँ फेर जोड़ब।
व्याख्या: कोसी नदी मिथिलाकेँ दू फाँकमे बाँटि देने छल, पुल एकीकरणक साधन अछि।

प्रश्न 7105. मोकामासँ जयनगर भाया समस्तीपुर फोर-लेनक कल्पना किएक अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सम्पूर्ण क्षेत्रीय संपर्क-सुधार लेल।
उत्तर: घ. सम्पूर्ण क्षेत्रीय संपर्क-सुधार लेल।
व्याख्या: सड़क-ढाँचा विकासक मेरुदण्ड रूपमे प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 7106. नेपालसँ सम्बन्धित लेखकक आशा की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. शांति-सुव्यवस्था आ बिजलीसँ मिथिला जगमगाएब।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. शांति-सुव्यवस्था आ बिजलीसँ मिथिला जगमगाएब।
व्याख्या: सीमापार संसाधन-सहयोग विकास-दृष्टिक हिस्सा अछि।

प्रश्न 7107. नेपाल आउने अन्तरराष्ट्रीय पर्यटकसभ मिथिला दिस मुड़थि — एकर लेल की जरूरी?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. पर्यटन स्थलसभक विकास।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. पर्यटन स्थलसभक विकास।
व्याख्या: आकर्षण स्वतः नहि, व्यवस्थित प्रस्तुति आ सुविधा चाही।

प्रश्न 7108. सीता जन्मस्थान-जनकपुर, वैशाली, पाटलिपुत्र, बोधगया, नालन्दा जोड़बाक योजना की बनि सकैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पर्यटन सर्किट।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. पर्यटन सर्किट।
व्याख्या: धार्मिक-ऐतिहासिक स्थलसभकेँ जोड़ि पर्यटन-विकासक संभावना देखल गेल।

प्रश्न 7109. मिथिला लोककला, गीत आ पेंटिंग लेल लेखक की चाहैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. कार्यशाला आ म्यूजियम।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. कार्यशाला आ म्यूजियम।
व्याख्या: संस्कृतिक पैकेजिंग आर्थिक आ सांस्कृतिक दुनू लाभ देब।

प्रश्न 7110. पोखरिसभक व्यवस्थित उपयोगसँ कोन लाभ सम्भव?
क. माछ-मखान उत्पादन आ सौन्दर्यीकरण आधारित आर्थिक गतिविधि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. माछ-मखान उत्पादन आ सौन्दर्यीकरण आधारित आर्थिक गतिविधि।
व्याख्या: जल-संपदा केवल परम्परा नहि, विकासक साधन बनि सकैत अछि।

प्रश्न 7111. दरभंगा आ पूर्णियाकेँ लेखक कोन रूपमे उभरैत देखैत छथि?
क. मेडिकल हब।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मेडिकल हब।
व्याख्या: क्षेत्रीय शहरसभक विशिष्ट आर्थिक-शैक्षिक भूमिका कल्पित अछि।

प्रश्न 7112. भागलपुर आ मधुबनीक भविष्यक सम्बन्धमे कोन स्वप्न अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. भागलपुर सिल्क-हस्तकला, मधुबनी कला-सेमिनारक केन्द्र।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. भागलपुर सिल्क-हस्तकला, मधुबनी कला-सेमिनारक केन्द्र।
व्याख्या: लेखक प्रत्येक क्षेत्रक परम्परागत सामर्थ्य आधार पर विकास चाहैत छथि।

खण्ड ७१७ : विदेह-सदेह २ — मैथिलीकेँ लऽ कऽ असुविधाजनक प्रश्न: आम मैथिल आ भाषा-दूरी

प्रश्न 7113. लेखक मैथिली आ मिथिलांचलक विकासपर कोन मूल प्रश्न उठबैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. दोसर प्रान्त-भाषा जकाँ विकास किएक नहि भेल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. दोसर प्रान्त-भाषा जकाँ विकास किएक नहि भेल।
व्याख्या: लेख आत्मालोचनात्मक ढंगसँ विकास-अभावक कारण ताकैत अछि।

प्रश्न 7114. मैथिली साहित्य-विकासक चिन्ता लेखकक अनुसार किनका धरि सीमित अछि?
क. किछु मुट्ठी भरि लोकक दिमागी कसरत धरि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. किछु मुट्ठी भरि लोकक दिमागी कसरत धरि।
व्याख्या: आम मैथिलक अलगाव भाषिक आन्दोलनक कमजोरी रूपमे देखल गेल।

प्रश्न 7115. दरभंगा-मधुबनीक बच्चासभक भाषा-ब्यवहार पर लेखक की चिन्ता दैत छथि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ओ मैथिली नहि, हिंदीमे बात करैत छथि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. ओ मैथिली नहि, हिंदीमे बात करैत छथि।

व्याख्या: घर-क्षेत्रमे भाषिक दूरीक उदाहरण भाषा-चेतनाक संकट देखबैत अछि।

प्रश्न 7116. मैथिली संग सभसँ पैघ अन्याय लेखक की मानैत छथि?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. एकरा खास इलाका आ खास लोकक भाषा बनएबाक प्रयास।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. एकरा खास इलाका आ खास लोकक भाषा बनएबाक प्रयास।

व्याख्या: भाषा-संकुचन सामाजिक-सांस्कृतिक दूरी जन्मबैत अछि।

प्रश्न 7117. मैथिलीकेँ कोन समुदाय/क्षेत्रक भाषा बनाकऽ राखल गेल कहल गेल?

क. दरभंगा-मधुबनी आ खासकए ओतुक्का ब्राह्मणक भाषा।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. दरभंगा-मधुबनी आ खासकए ओतुक्का ब्राह्मणक भाषा।

व्याख्या: लेखक एहिसँ व्यापक जनसमुदायकेँ बाहिर रहि गेल मानैत छथि।

प्रश्न 7118. मधेपुरा-पूर्णिया छोड़ि दरभंगा-मधुबनीक विशाल जनसमुदायक सम्बन्धमे लेखक की कहैत छथि?

क. ओ किताबी मैथिली नहि बजैत अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. ओ किताबी मैथिली नहि बजैत अछि।

व्याख्या: मानक भाषा आ लोक-भाषा बीच दूरी भाषाई आन्दोलनक बाधा अछि।

प्रश्न 7119. स्थानीय रूपकेँ हेय दृष्टिसँ देखबाक परिणाम की?

क. भाषिक अपनत्व घटैत अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. भाषिक अपनत्व घटैत अछि।

व्याख्या: लेखक आन भाषासँ तुलना कऽ मैथिलीमे स्थानीय रूपक उपेक्षा पर प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 7120. मिथिलाक खेतिहर, मजूर, मुसलमान आ निम्नवर्गक संदर्भ किएक उठल?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ओहि भाषामे हुनकर तस्वीर नहि देखाइ पड़ल।

उत्तर: घ. ओहि भाषामे हुनकर तस्वीर नहि देखाइ पड़ल।

व्याख्या: भाषा-साहित्यक प्रतिनिधित्व-सीमा सामाजिक असंतुलन देखबैत अछि।

प्रश्न 7121. राज्य-माँग आ भाषा-माँग बीच विरोधाभास की?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. राज्यक कल्पना विशाल, भाषा-मानक पंचकोसी धरि सीमित।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. राज्यक कल्पना विशाल, भाषा-मानक पंचकोसी धरि सीमित।
व्याख्या: लेखक भाषिक राजनीति आ भूगोलक असंगति देखबैत छथि।

प्रश्न 7122. एहि खण्डक मूल चेतावनी की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मैथिली आम मैथिलसँ कटत तँ आन्दोलन कमजोर रहत।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिली आम मैथिलसँ कटत तँ आन्दोलन कमजोर रहत।
व्याख्या: भाषा केवल अभिजात मानक नहि, लोक-समाजक व्यापक आवाज बनबाक चाही।

खण्ड ७१८ : विदेह-सदेह २ — भाषा-भूगोल, पंचकोसी ग्रन्थि आ आन्दोलनक सीमा

प्रश्न 7123. सहरसा वा पूर्णियाक लोकक भाषा प्रति मधुबनी इलाकामे कोन दृष्टि लेखक स्मरण करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. अलग आ हीन-दृष्टि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. अलग आ हीन-दृष्टि।
व्याख्या: क्षेत्रीय भाषिक भिन्नताकेँ अहंकारसँ देखब भाषाक लेल हानिकारक कहल गेल।

प्रश्न 7124. इलाकाई भिन्नता कोना स्वीकारल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. कोनो भाषामे स्वाभाविक।
उत्तर: घ. कोनो भाषामे स्वाभाविक।
व्याख्या: समस्या भिन्नता नहि, अहंकारबोध आ उपेक्षा अछि।

प्रश्न 7125. भाषाई आधारपर राज्य-माँग कमजोर किएक रहल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. विराट जनसमुदाय आन्दोलनसँ नहि जुड़ि सकल।
उत्तर: घ. विराट जनसमुदाय आन्दोलनसँ नहि जुड़ि सकल।
व्याख्या: भाषिक संकुचन राज्य-आन्दोलनक जनाधार घटबैत अछि।

प्रश्न 7126. राज्यसरकारक मैथिली-विरोधी रवैयाक उदाहरण की देल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मैथिलीकेँ बीपीएससीसँ हटाओल गेल आ अकादमी निर्जीवप्राय बनल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीकेँ बीपीएससीसँ हटाओल गेल आ अकादमी निर्जीवप्राय बनल।
व्याख्या: सत्तात्मक उपेक्षा भाषिक संकटकेँ आर गाढ़ करैत अछि।

प्रश्न 7127. लेखक सत्ता दोषक सीमा किएक बतबैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जनता दिससँ प्रबल प्रतिरोध नहि छल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. जनता दिससँ प्रबल प्रतिरोध नहि छल।
व्याख्या: भाषा-अधिकार लेल केवल सरकार-निन्दा नहि, लोक-प्रतिरोध जरूरी अछि।

प्रश्न 7128. मैथिलीमे आम जनता आ प्रगतिशील चेतनाक स्वर पर लेखकक मत की?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. स्वर रहल, मुदा व्यापक मुख्यधारा नहि बनि सकल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. स्वर रहल, मुदा व्यापक मुख्यधारा नहि बनि सकल।
व्याख्या: लेखक पूर्ण अभाव नहि, प्रभाव-अभाव पर बल दैत छथि।

प्रश्न 7129. मिथिलामे समाज-सुधार आन्दोलनक अभावक चर्चा किएक आयल?
क. भाषा-विकास समाज-विकाससँ अलग नहि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. भाषा-विकास समाज-विकाससँ अलग नहि।
व्याख्या: समाजक जड़ता रहिते भाषा अकेले विकसित नहि भऽ सकैत।

प्रश्न 7130. मैथिली संस्थासभक कामकाजक समीक्षा किएक आवश्यक कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. भाषा-विकास लेल बनल संस्थासभ जनतासँ कतेक जुड़ल अछि, से बुझबाक लेल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. भाषा-विकास लेल बनल संस्थासभ जनतासँ कतेक जुड़ल अछि, से बुझबाक लेल।
व्याख्या: संस्थागत आत्मालोचना भाषा-आन्दोलनक हिस्सा बनैत अछि।

प्रश्न 7131. चेतना समिति पर लेखक कोन प्रश्न उठबैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सालाना जलसा-सेमिनार छोड़ि भाषा लेल ठोस योगदान की?
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सालाना जलसा-सेमिनार छोड़ि भाषा लेल ठोस योगदान की?
व्याख्या: लेखक प्रतिष्ठित संस्थाकेँ जन-सम्बन्धक कसौटी पर रखैत छथि।

प्रश्न 7132. भारत-नेपालक मैथिली भाषाभाषीक सम्बन्धमे कोन अभाव कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. दूनू दिसक लोककेँ जोड़बाक ठोस उपाय नहि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. दूनू दिसक लोककेँ जोड़बाक ठोस उपाय नहि।
व्याख्या: सीमापार मैथिली समाजक एकता भाषा-आन्दोलनक अनसुलझल पक्ष अछि।

खण्ड ७१९ : विदेह-सदेह २ — मान्यता, साहित्य अकादेमी आ जन-सरोकारक प्रश्न

प्रश्न 7133. संविधानमे मान्यता भेटलाक बाद कोन संस्थाक गतिविधि किछु बेसी देखाइ पड़ल?
क. साहित्य अकादेमी।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. साहित्य अकादेमी।
व्याख्या: मान्यता पछाति साहित्यिक संस्थागत गतिविधिमे वृद्धि देखल गेल।

प्रश्न 7134. लेखकक अनुसार मैथिली आन्दोलन धार कखन पकड़त?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. जखन भाषा आम जनता आ ओकर सरोकारसँ जुड़त।
उत्तर: घ. जखन भाषा आम जनता आ ओकर सरोकारसँ जुड़त।
व्याख्या: साहित्यिक मान्यता पर्याप्त नहि, सामाजिक सम्बन्ध जरूरी अछि।

प्रश्न 7135. सभसँ पैघ जिम्मेवारी किनका पर कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मैथिलीक पुरोधा कहबैत बुद्धिजीवी लोकनिपर।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीक पुरोधा कहबैत बुद्धिजीवी लोकनिपर।
व्याख्या: लेखक नेतृत्व-वर्गसँ ठोस समाधानक अपेक्षा रखैत छथि।

प्रश्न 7136. बुद्धिजीवी लोकनिसँ लेखक की अपेक्षा रखैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ठोस, सर्वग्राही आ समीचीन समाधान सामने आनब।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. ठोस, सर्वग्राही आ समीचीन समाधान सामने आनब।
व्याख्या: समस्या मात्र उठाओल नहि, समाधान-उन्मुख संवाद चाही।

प्रश्न 7137. समग्र चर्चा पर बल किएक अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. भाषा-संकट बहुस्तरीय अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. भाषा-संकट बहुस्तरीय अछि।
व्याख्या: मानक, क्षेत्र, समाज, संस्था, सरकार, जन-अधार—सभपर एक साथ विचार चाही।

प्रश्न 7138. लेखकक दृष्टिमे मैथिली साहित्यक चिन्ता आ आम मैथिलक दूरी ककर परिणाम अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. भाषा-आन्दोलनक धार कम भऽ जाएब।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. भाषा-आन्दोलनक धार कम भऽ जाएब।
व्याख्या: जन-सरोकार बिना साहित्यिक ऊर्जा सामाजिक शक्ति नहि बनैत।

प्रश्न 7139. मान्यता भेटलाक बादो आत्मालोचना किएक जरूरी अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कानूनी मान्यता सामाजिक स्वीकृति नहि बनबैत।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. कानूनी मान्यता सामाजिक स्वीकृति नहि बनबैत।
व्याख्या: भाषा घरे-घरे, वर्ग-वर्गमे जायत तखने मान्यता सार्थक अछि।

प्रश्न 7140. लेखक पंचकोसी ग्रन्थिसँ बाहर अबबाक बात ककर सन्दर्भमे करैत छथि?
क. भाषाक सर्वसमावेशी रूप स्वीकारबाक।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. भाषाक सर्वसमावेशी रूप स्वीकारबाक।
व्याख्या: स्थानीय रूप आ व्यापक मिथिलांचलक भाषिक रूपकेँ अपनाब आवश्यक अछि।

प्रश्न 7141. भाषा-संरक्षणक नागरिक पक्ष की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. आम मैथिलक प्रतिरोध, सहभागिता आ संस्था-समीक्षा।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. आम मैथिलक प्रतिरोध, सहभागिता आ संस्था-समीक्षा।
व्याख्या: लोक आ संस्था दुनू सक्रिय रहिते भाषिक भविष्य सुरक्षित होएत।

प्रश्न 7142. एहि खण्डक सार की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मैथिलीकेँ मान्यतासँ आगू बढ़ि जन-सरोकारक भाषा बनबाक अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीकेँ मान्यतासँ आगू बढ़ि जन-सरोकारक भाषा बनबाक अछि।
व्याख्या: लेखक भाषा-विकासक केन्द्रमे आम लोक, बहुभाषिक क्षेत्रीयता आ सामाजिक सुधार राखैत छथि।

खण्ड ७२० : विदेह-सदेह २ — डॉ. शंभु कुमार सिंह: आधुनिक मैथिली नाटकमे निर्धनता

प्रश्न 7143. डॉ. शंभु कुमार सिंहक आलेखक विषय की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित निर्धनताक समस्या।
उत्तर: घ. आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित निर्धनताक समस्या।
व्याख्या: लेख आधुनिक मैथिली नाटकक सामाजिक-साहित्यिक अध्ययन करैत अछि।

प्रश्न 7144. लेखक भारतक अधिकांश गामक जनता केँ कोन पर निर्भर बतबैत छथि?
क. कृषि कार्य आ बरखा पर।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. कृषि कार्य आ बरखा पर।
व्याख्या: अनियमित बरखा, उपेक्षा, अशिक्षा आ पिछड़ापन गरीबीक पृष्ठभूमि बनैत अछि।

प्रश्न 7145. गामक गरीब किसान शहरमे जा कऽ की कहबैत छथि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. मजदूर वा बोनिहार।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. मजदूर वा बोनिहार।

व्याख्या: ग्रामीण दरिद्रता शहरक नारकीय श्रम-जीवनमे रूपान्तरित होइत अछि।

प्रश्न 7146. निर्धनता मनुष्यकेँ कोना बना दैत अछि?

क. बेवस, लाचार, शक्तिहीन, दीन-हीन।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. बेवस, लाचार, शक्तिहीन, दीन-हीन।

व्याख्या: लेख निर्धनताकेँ केवल आर्थिक स्थिति नहि, मानवीय असमर्थता मानैत अछि।

प्रश्न 7147. जाहि मनुष्य लग रोटी-वस्त्र-घर-औषध नहि, ओकर स्वतंत्रता पर लेखक कोन प्रश्न उठबैत छथि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ओ स्वतंत्र कोना भऽ सकैत अछि?

उत्तर: घ. ओ स्वतंत्र कोना भऽ सकैत अछि?

व्याख्या: आर्थिक अभाव मानवीय स्वतंत्रता आ विचार-अभिव्यक्ति रोकैत अछि।

प्रश्न 7148. निर्धनता मनुष्यक स्वभावपर की प्रभाव डालैत अछि?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. तंगदिल, तुच्छ, कमजोर आ इच्छामारक बनबैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. तंगदिल, तुच्छ, कमजोर आ इच्छामारक बनबैत अछि।

व्याख्या: दरिद्रता नैतिक-मानसिक संसारकेँ सेहो कुंठित करैत अछि।

प्रश्न 7149. लेखमे निर्धनता-समस्या विश्लेषण लेल कोन नाटकसभक नाम आयल?

क. वीर-वीरेन्द्र, मनोरथ, कुहेस, कनियाँ-पुतरा, ओकरा आँगनक बारहमासा, नायकक नाम जीवन, आगि धधकि रहल छै, अन्तिम प्रणाम, बुधिबधिया आदि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. वीर-वीरेन्द्र, मनोरथ, कुहेस, कनियाँ-पुतरा, ओकरा आँगनक बारहमासा, नायकक नाम जीवन, आगि धधकि रहल छै, अन्तिम प्रणाम, बुधिबधिया आदि।

व्याख्या: लेख मैथिली नाट्य-साहित्यक अनेक उदाहरण सँ समस्या देखबैत अछि।

प्रश्न 7150. “मनोरथ”मे लक्ष्मीनाथ अपन नामक सम्बन्धमे की कोसैत छथि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. लक्ष्मीनाथ नहि, दरिद्रनाथ होमक चाही।

उत्तर: घ. लक्ष्मीनाथ नहि, दरिद्रनाथ होमक चाही।

व्याख्या: चरित्रक कथन आर्थिक व्यंग आ आत्मपीड़ा दुनू व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 7151. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक उद्धृत मतमे “मनोरथ” की देखबैत अछि?
क. आर्थिक दशाक क्षीणतासँ संकटापन्न समस्या।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. आर्थिक दशाक क्षीणतासँ संकटापन्न समस्या।
व्याख्या: आलोचकक कथन निर्धनताक नाटकीय दिग्दर्शन पर बल दैत अछि।

प्रश्न 7152. एहि आलेखक प्रवेश-तर्क की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. निर्धनता आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक केन्द्रीय समस्या अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. निर्धनता आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक केन्द्रीय समस्या अछि।
व्याख्या: लेख सामाजिक यथार्थ, नाटक आ आर्थिक अभावक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि।

खण्ड ७२१ : विदेह-सदेह २ — निर्धनता: “नाटकक लेल” आ “ओकरा आँगनक बारहमासा”

प्रश्न 7153. “गरीबीक ई पराकाष्ठा” कथनमे लेखक की कहैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. क्यो खाइत-खाइत मरैत अछि तँ क्यो कमाइत-कमाइत।
उत्तर: घ. क्यो खाइत-खाइत मरैत अछि तँ क्यो कमाइत-कमाइत।
व्याख्या: ई वाक्य व्यवस्थागत अभाव आ श्रमजीवी त्रासदीक तीक्ष्ण संकेत अछि।

प्रश्न 7154. “नाटकक लेल”मे गरीबीक कोन दृश्य उद्धृत अछि?
क. कूड़ाक ढेरसँ किछु बीछैत लोक आ रोगाएल बच्चा।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. कूड़ाक ढेरसँ किछु बीछैत लोक आ रोगाएल बच्चा।
व्याख्या: नाटक शहरी/सामाजिक निर्धनताक नग्न दृश्य उपस्थित करैत अछि।

प्रश्न 7155. “ओकरा आँगनक बारहमासा” मैथिली नाट्य-साहित्यमे कोन कारणे अद्वितीय कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. निम्नवर्गक यथार्थ चित्रणक कारण।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. निम्नवर्गक यथार्थ चित्रणक कारण।
व्याख्या: लेख एहि नाटककेँ सर्वहारा जीवनक यातनापूर्ण दस्तावेज मानैत अछि।

प्रश्न 7156. “ओकरा आँगनक बारहमासा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. सर्वहारा वर्गक यातनापूर्ण जीवन।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सर्वहारा वर्गक यातनापूर्ण जीवन।
व्याख्या: ऋतु, मास, प्रकृति—सभ गरीब लेल फुसि बनि जाइत अछि।

प्रश्न 7157. नाटकमे ऋतु-सौन्दर्य गरीबक लेल किएक फुसि कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. किएक तँ भूख आ अभाव सब अनुभूति ढाँकि दैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. किएक तँ भूख आ अभाव सब अनुभूति ढाँकि दैत अछि।
व्याख्या: बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त, शिशिर गरीबक दुखक पृष्ठभूमि अछि।

प्रश्न 7158. कातिक मास खेतिहर मजदूर लेल कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. दुखक मास।
उत्तर: घ. दुखक मास।
व्याख्या: एहि समय अन्नाभाव भऽ जाइत छैक आ निम्नवर्ग दयनीय स्थितिमे पहुँचैत अछि।

प्रश्न 7159. कातिक प्रसंगमे पेटक ज्वाला आ अन्न-अभावक गीत ककर प्रतिनिधित्व करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मिथिलाक निम्नवर्गीय आँगनक रोस आ हाहाकार।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाक निम्नवर्गीय आँगनक रोस आ हाहाकार।
व्याख्या: गीत व्यक्तिगत नहि, लाख-लाख आँगनक मर्मस्पर्शी ध्वनि बनैत अछि।

प्रश्न 7160. गरीब लोकक लेल कोन तीन वस्तु जटिल समस्या बनि गेल कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अन्न, वस्त्र आ आवास।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. अन्न, वस्त्र आ आवास।
व्याख्या: नाटक समाजक न्यूनतम जीवनोपयोगी आवश्यकताक अभाव देखबैत अछि।

प्रश्न 7161. प्रो. प्रेमशंकर सिंह “ओकरा आँगनक बारहमासा” कैं की कहैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मिथिलाक निम्नवर्गीय समाजक अलबम।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाक निम्नवर्गीय समाजक अलबम।
व्याख्या: एहि टिप्पणीसँ नाटकक प्रतिनिधिक यथार्थता रेखांकित होइत अछि।

प्रश्न 7162. बारहमासा-विश्लेषणक मुख्य साहित्यिक अर्थ की अछि?
क. ऋतुगीत सामाजिक आ आर्थिक पीड़ाक दस्तावेज बनैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. ऋतुगीत सामाजिक आ आर्थिक पीड़ाक दस्तावेज बनैत अछि।
व्याख्या: लोक-रूपक भीतर निर्धनता, भूख आ वर्गीय हाहाकार अभिव्यक्त अछि।

खण्ड ७२२ : विदेह-सदेह २ — निर्धनता: “अंतिम प्रणाम”, “बुधिबधिया” आ निष्कर्ष

प्रश्न 7163. “अंतिम प्रणाम”मे समाजक कोन दुर्दशा चित्रित अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. गरीबक मुइलाक बाद कफन लेल टका नहि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. गरीबक मुइलाक बाद कफन लेल टका नहि।
व्याख्या: मृत्युोपरान्त संस्कार धरि गरीबीक मारि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 7164. “आनिपर दस गोटए मिलि जाए तँ की ने क’ सकैत छी” कथनक अर्थ की अछि?
क. सामुदायिक सहयोग बिना गरीबक अंतिम संस्कार कठिन।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. सामुदायिक सहयोग बिना गरीबक अंतिम संस्कार कठिन।
व्याख्या: गरीबी सामाजिक सहकारक आवश्यकता उजागर करैत अछि।

प्रश्न 7165. “बुधिबधिया”मे गरीबीक दृष्टान्त कोना देल गेल?
क. देहपर एक बीत वस्त्र नहि, अंग-उघार स्थिति।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. देहपर एक बीत वस्त्र नहि, अंग-उघार स्थिति।
व्याख्या: नाटक नग्न अभावक दृश्य सँ समाजक असमानता देखबैत अछि।

प्रश्न 7166. सरकारी व्यवस्था पर लेखक कोन टिप्पणी करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. लाभ गरीब लोक धरि नहि पहुँचि सकैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. लाभ गरीब लोक धरि नहि पहुँचि सकैत अछि।
व्याख्या: व्यवस्था बनितो लाभ प्रवाह विफल अछि।

प्रश्न 7167. महँगाई सम्बन्धी कथनक आशय की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. सामान्य लोक भोजन, वस्त्र, आवास जुटएबामे परेशान अछि।
उत्तर: घ. सामान्य लोक भोजन, वस्त्र, आवास जुटएबामे परेशान अछि।
व्याख्या: निर्धनता महँगाईसँ आर कठोर बनैत अछि।

प्रश्न 7168. “अंतिम प्रणाम”मे मुरारीक कथन कोन पारिवारिक संकट देखबैत अछि?
क. बच्चा भुखले सुतैत आ पत्नी फाटल वस्त्रमे।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. बच्चा भुखले सुतैत आ पत्नी फाटल वस्त्रमे।
व्याख्या: नाटक घर-परिवारक अभावक त्रासदीकेँ प्रत्यक्ष बनबैत अछि।

प्रश्न 7169. आधुनिक युगमे कोन दू प्रवृत्ति बीच संघर्ष कहल गेल?
क. सामाजिक चेतनाक गतिशीलता आ परंपरागत रूढ़ि व्यवस्थाक जड़ता।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. सामाजिक चेतनाक गतिशीलता आ परंपरागत रूढ़ि व्यवस्थाक जड़ता।
व्याख्या: युग-संघर्ष आधुनिक सामाजिक नाटकक मूल पृष्ठभूमि अछि।

प्रश्न 7170. आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक मूल स्वर ककरासँ भरल कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. संघर्ष, तनाव आ अनेक सामाजिक समस्या।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. संघर्ष, तनाव आ अनेक सामाजिक समस्या।
व्याख्या: नाटक समाजक यथार्थ तनावक कलात्मक रूप अछि।

प्रश्न 7171. सामाजिक जीवनक यथार्थक अभिव्यक्ति ककर पर आधारित कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. नाटककारक सामाजिक दृष्टि आ रचना-दृष्टि पर।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. नाटककारक सामाजिक दृष्टि आ रचना-दृष्टि पर।
व्याख्या: लेख साहित्यिक चित्रणकेँ लेखक-दृष्टिसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7172. लेखकक अंतिम सामाजिक निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मिथिलांचलक आर्थिक विपन्नता अस्त-व्यस्तता सँ स्वाभाविकता बनि गेल अछि।
उत्तर: घ. मिथिलांचलक आर्थिक विपन्नता अस्त-व्यस्तता सँ स्वाभाविकता बनि गेल अछि।
व्याख्या: गरीबी अपवाद नहि, जीवन-व्यवस्थाक सामान्यीकृत विकृति रूपमे देखल गेल।

खण्ड ७२३ : विदेह-सदेह २ — आशीष अनचिन्हार: “अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि” आलोचना

प्रश्न 7173. आशीष अनचिन्हारक आलोचनाक शीर्षक आरम्भमे पाठककेँ की भ्रम देत?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. रचनाकार निराशावादी छथि।
उत्तर: घ. रचनाकार निराशावादी छथि।
व्याख्या: लेखक शीर्षकक अधूरा अर्थ खोलबाक लेल पाठककेँ अगुताइत नहि कहैत छथि।

प्रश्न 7174. पूर्ण शीर्षक लेखक कोना प्रस्तुत करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. “अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि, सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।”
उत्तर: घ. “अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि, सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।”
व्याख्या: शीर्षकक पूर्णता राजनीतिक व्यंगक दिशा स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 7175. लेखकक अनुसार मैथिली साहित्यमे तीन गोट कमी कोन अछि?
क. व्यंगक प्रचुरता नहि, स्तरीय आलोचना नहि, आ आलोचना अबितो हरिमोहन झाकेँ शिखर मानि सभकेँ भुट्टा बनाओल जाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. व्यंगक प्रचुरता नहि, स्तरीय आलोचना नहि, आ आलोचना अबितो हरिमोहन झाकेँ शिखर मानि सभकेँ भुट्टा बनाओल जाइत अछि।
व्याख्या: ई तीनो बिन्दु मैथिली व्यंग-आलोचनाक समस्या रूपमे रखल गेल।

प्रश्न 7176. मैथिली आलोचनामे हरिमोहन झाक उपस्थिति पर लेखकक तर्क की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ओ तेना घोसिआएल रहैत छथि जे आन आलोचना सेहो हुनक आलोचना बुझाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. ओ तेना घोसिआएल रहैत छथि जे आन आलोचना सेहो हुनक आलोचना बुझाइत अछि।
व्याख्या: लेखक एक-केन्द्रित आलोचना-परम्पराक विडंबना देखबैत छथि।

प्रश्न 7177. रूपकांत ठाकुरकेँ आलोचनाक स्तरपर की कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मैथिली व्यंगमे बिसरल नाम।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. मैथिली व्यंगमे बिसरल नाम।
व्याख्या: लेखक प्रो. विद्यापति झाक लेखक सन्दर्भसँ ई उपेक्षा रेखांकित करैत छथि।

प्रश्न 7178. साहित्य अकादेमीक हास्य-व्यंग लेखमे रूपकांत ठाकुरक उल्लेख कोना सीमित रहल?
क. १९६३-६७ बीच मात्र छह कथा धरि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. १९६३-६७ बीच मात्र छह कथा धरि।
व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे ई उल्लेख हुनक कुल रचनात्मक अवदानक मुकाबले बहुत कम अछि।

प्रश्न 7179. रूपकांत ठाकुरक जीवन-रचना कालक सम्बन्धमे लेखक की तथ्य देलनि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. १९३०मे जन्म, १९६० लग रचनारम्भ, १९७२मे मृत्यु।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. १९३०मे जन्म, १९६० लग रचनारम्भ, १९७२मे मृत्यु।
व्याख्या: छोट जीवन आ लगभग बारह वर्षक लेखनकालमे महत्त्वपूर्ण रचना भेल।

प्रश्न 7180. रूपकांत ठाकुरक प्रकाशित पोथीसभमे कोन नाम आयल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मोमक नाक, धूकल केरा, लगाम, वचन वैष्णव, नहला पर दहला।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मोमक नाक, धूकल केरा, लगाम, वचन वैष्णव, नहला पर दहला।
व्याख्या: लेखक हुनकर व्यापकता देखबैत छह कथा धरि सीमित आलोचना पर प्रश्न करैत छथि।

प्रश्न 7181. शीर्षक रूपकांत ठाकुरक रचनासँ लेल गेल कहलाक अर्थ की?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ठाकुरजी भविष्यक राजनीतिक-सामाजिक संकेत कऽ गेल छथि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ठाकुरजी भविष्यक राजनीतिक-सामाजिक संकेत कऽ गेल छथि।
व्याख्या: शीर्षक आलोचनात्मक लेखकेँ रूपकांतक व्यंग-दृष्टिसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7182. एहि खण्डक मूल लक्ष्य की अछि?
क. मैथिली व्यंग आलोचनामे रूपकांत ठाकुरक पुनर्पाठ।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मैथिली व्यंग आलोचनामे रूपकांत ठाकुरक पुनर्पाठ।
व्याख्या: लेख उपेक्षित व्यंगकारक राजनीतिक चेतना आ साहित्यिक महत्त्व उजागर करैत अछि।

खण्ड ७२४ : विदेह-सदेह २ — रूपकांत ठाकुर: राजनीतिक व्यंग, “मोमक नाक” आ जन-सरकार

प्रश्न 7183. लेखक राजनीतिक व्यंगकेँ कोना परिभाषित करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. जाहि व्यंगमे राजनीति, शासन-व्यवस्था आ संचालकपर निशाना साधल गेल हो।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. जाहि व्यंगमे राजनीति, शासन-व्यवस्था आ संचालकपर निशाना साधल गेल हो।
व्याख्या: ओ स्वयं कहैत छथि जे ई अकादमिक परिभाषा नहि, मुदा व्यावहारिक समझ अछि।

प्रश्न 7184. मैथिलीमे व्यंग आ हास्यक सम्बन्ध पर लेखकक शिकायत की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. व्यंगकेँ आलोचक प्रायः हास्य मानि लैत छथि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. व्यंगकेँ आलोचक प्रायः हास्य मानि लैत छथि।
व्याख्या: लेखकक अनुसार ९३ प्रतिशत व्यंग हास्यक नामे पढ़ल जाइत अछि।

प्रश्न 7185. हरिमोहन झाक सम्बन्धमे लेखक कोन विडंबना देखबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. सुच्चा व्यंग लिखलापर सेहो हास्य-व्यंग सम्राट कहल गेलाह।
उत्तर: घ. सुच्चा व्यंग लिखलापर सेहो हास्य-व्यंग सम्राट कहल गेलाह।
व्याख्या: हास्यकार पहिने, व्यंगकार बादमे—ई क्रम लेखककेँ समस्या लगैत अछि।

प्रश्न 7186. “मर्द माने की” कथामे रूपकांत ठाकुर की व्यंग करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. मर्दानगी, कमाइ, विवाह आ अधिकारहीन श्रमक सामाजिक धारणा।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मर्दानगी, कमाइ, विवाह आ अधिकारहीन श्रमक सामाजिक धारणा।
व्याख्या: “मर्द माने कमौआ...” सूत्र मैथिल समाजक ठस धारणा पर चोट अछि।

प्रश्न 7187. “ठोकल ठक्क”मे कोन प्रवृत्तिक दर्शन अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. कमीशनखोरी आ नातागत शोषण।
उत्तर: घ. कमीशनखोरी आ नातागत शोषण।
व्याख्या: भातिज-जमाए पिती-ससुर धरि नहि छोड़ैत—ई सामाजिक-राजनीतिक भ्रष्टाचारक चित्र अछि।

प्रश्न 7188. “सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि” कथन सरकारक कोन रूप देखबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. बेशर्म, निर्लज्ज, हेहर, थेथर सत्ता।
उत्तर: घ. बेशर्म, निर्लज्ज, हेहर, थेथर सत्ता।
व्याख्या: लेखक ई वाक्य तात्कालीन राजनीतिक व्यंगक केन्द्र बनबैत छथि।

प्रश्न 7189. “जय गंगा जी”मे रेलगाड़ीक तुलना ककरासँ कएल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. कांग्रेसी नेतासँ।
उत्तर: घ. कांग्रेसी नेतासँ।
व्याख्या: लोककेँ पेटमे राखि सुख-दुख बिसरि आगू बढ़बाक छवि राजनीतिक रूपक बनैत अछि।

प्रश्न 7190. “पंचवर्षीय योजना” पर रूपकांतक व्यंग की संकेत करैत अछि?
क. उन्नतिक कागजी आँकड़ा मोन राखबाक निरर्थकता।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. उन्नतिक कागजी आँकड़ा मोन राखबाक निरर्थकता।
व्याख्या: सरकारी डपोरशंखी योजना पर प्रहार अछि।

प्रश्न 7191. “फूजल ऊक”क उद्धृत भाव की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सुधारवादी दृष्टि मात्रसँ सुधार नहि होइत।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. सुधारवादी दृष्टि मात्रसँ सुधार नहि होइत।
व्याख्या: लेखक एकरा प्रगतिशीलता लिखलासँ प्रगतिशीलता आबि जाइत नहि, एहि रूपमे पढ़ैत छथि।

प्रश्न 7192. “मोमक नाक”मे जनता संबंधी रूपक की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. जनता मोमक नाक जकाँ जेम्हर नफगर तेम्हर घूमि जाइत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. जनता मोमक नाक जकाँ जेम्हर नफगर तेम्हर घूमि जाइत अछि।
व्याख्या: रूपक जनता, सत्ता आ अवसरवादक चरित्र पर तीक्ष्ण व्यंग अछि।

खण्ड ७२५ : विदेह-सदेह २ — हृदय नारायण झा: “मिथिलाक लुप्तप्राय गीत” भूमिका

प्रश्न 7193. हृदय नारायण झाक परिचयमे हुनका कोन क्षेत्रसँ जोड़ल गेल अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. आकाशवाणीक बी-हाइग्रेड कलाकार आ परम्परागत योगक शिक्षाप्राप्त।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. आकाशवाणीक बी-हाइग्रेड कलाकार आ परम्परागत योगक शिक्षाप्राप्त।
व्याख्या: लेखकक परिचय लोकसंगीत आ साधना-दुनूक संग देल गेल अछि।

प्रश्न 7194. “मिथिलाक लुप्तप्राय गीत” लेखक मूल चिन्ता की अछि?
क. मिथिलाक परम्परागत लोकगीत-धनकेँ लुप्त होइत रूपमे बुझि संरक्षणक आग्रह।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक परम्परागत लोकगीत-धनकेँ लुप्त होइत रूपमे बुझि संरक्षणक आग्रह।
व्याख्या: लेख लोककंठमे रहल संस्कार-गीतक घटैत परम्पराक ओर ध्यान दैत अछि।

प्रश्न 7195. लेखक मैथिली लोकगीतकेँ कोन सांस्कृतिक भूमिका दैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मिथिलाक श्रेष्ठ संस्कृति आ परम्पराकेँ सुरक्षित रखबाक श्रेय।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाक श्रेष्ठ संस्कृति आ परम्पराकेँ सुरक्षित रखबाक श्रेय।
व्याख्या: लोकगीत केवल मनोरंजन नहि, सांस्कृतिक स्मृति-संरक्षणक साधन अछि।

प्रश्न 7196. पूर्वजलोकनिक भूमिका लेखक कोना देखैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ओ सभ लोकगीतक माध्यमसँ जनसामान्यकेँ मूल संस्कृति प्रति उदार बनौलनि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. ओ सभ लोकगीतक माध्यमसँ जनसामान्यकेँ मूल संस्कृति प्रति उदार बनौलनि।
व्याख्या: लेख परम्पराक सूत्रधार पूर्वजक सांस्कृतिक दूरदृष्टि देखबैत अछि।

प्रश्न 7197. देश-काल-परिस्थितिमे परिवर्तनक प्रभाव लोकगीतपर कोना कहल गेल अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. रचनामे विविधता आएल, मुदा आदर्श-आचारक परम्परा लोककंठमे रहि गेल।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. रचनामे विविधता आएल, मुदा आदर्श-आचारक परम्परा लोककंठमे रहि गेल।
व्याख्या: परिवर्तन भेल, तथापि मूल नैतिक-सांस्कृतिक भाव बाँचल रहल।

प्रश्न 7198. लेखक लोकगीतमे कृत्रिमताक प्रश्नपर की कहैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. लोकगीतमे कृत्रिमता नहि, समाजक सामान्य व्यवहारक अभिव्यक्ति होइत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. लोकगीतमे कृत्रिमता नहि, समाजक सामान्य व्यवहारक अभिव्यक्ति होइत अछि।
व्याख्या: लोकगीतक शक्ति तकर सहजता आ सामाजिक स्वाभाविकतामे अछि।

प्रश्न 7199. लोकगीतक अवलोकनसँ मिथिलाक कोन पक्ष बुझबा योग्य कहल गेल अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, कला, साहित्य आ आकांक्षा।
उत्तर: घ. सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, कला, साहित्य आ आकांक्षा।
व्याख्या: लेखक लोकगीतकेँ मिथिलाक सामूहिक जीवनक दर्पण बनबैत छथि।

प्रश्न 7200. मिथिलामे जन्मसँ विवाह धरि व्यवहारक संग गीतक सम्बन्ध की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. सभ बिध-बेवहार गीतक संग सम्पन्न होइत रहल अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. सभ बिध-बेवहार गीतक संग सम्पन्न होइत रहल अछि।
व्याख्या: संस्कार-समाज आ गीत एक-दोसरसँ अलग नहि रहल।

प्रश्न 7201. मिथिलाक विवाह आ उपनयन गीतमे लेखक कोन विशेषता मानैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. खास प्रकारक रागक प्रयोग, जे अन्यत्र नहि देखल जाइत।
उत्तर: घ. खास प्रकारक रागक प्रयोग, जे अन्यत्र नहि देखल जाइत।
व्याख्या: लेख गीतक सांगीतिक विशिष्टता पर बल दैत अछि।

प्रश्न 7202. धर्मप्रधान मिथिलामे प्रातः-जागरणक सम्बन्ध कोन गीतसँ कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. पराती लोकगीतसँ।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. पराती लोकगीतसँ।
व्याख्या: पराती गीतक माध्यमे जागरण आ धर्म-संस्कारक सम्बन्ध देखाओल गेल अछि।

खण्ड ७२६ : विदेह-सदेह २ — जन्म-संस्कार, सोहर आ पुत्रकामना

प्रश्न 7203. जन्मसँ जुड़ल लोकगीतक उदाहरणमे कोन-कोन नाम देल गेल अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सोहर, खेलउना, छठिहार, पीपर पिलाई, आँख अँजाई आ बधैया।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सोहर, खेलउना, छठिहार, पीपर पिलाई, आँख अँजाई आ बधैया।
व्याख्या: लेख जन्म-संस्कारक विविध गीत-रूपक सूची दैत अछि।

प्रश्न 7204. सोहरमे पुत्रकामनाक भाव कोन रूपमे व्यक्त अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. बगीचा, नैहर आ सासुरक पूर्णता पुत्र बिना अधूर मानल गेल।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. बगीचा, नैहर आ सासुरक पूर्णता पुत्र बिना अधूर मानल गेल।
व्याख्या: गीतक रूपक पुत्र-कामनाक सामाजिक भाव व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 7205. “पाँच गाछ” आ “एकहि चनन”क चित्रमे मुख्य अर्थ की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. बहुलता रहितहुँ एक प्रिय अभावसँ सौन्दर्य अधूर बुझाइत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. बहुलता रहितहुँ एक प्रिय अभावसँ सौन्दर्य अधूर बुझाइत अछि।
व्याख्या: गीतमे बगीचाक छवि पुत्र-अभावक रूपक बनैत अछि।

प्रश्न 7206. नैहरक गीत-पंक्तिमे स्त्रीक भाव कोना अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. भाइ-भातिज रहितहुँ माय बिना नैहर अपूर्ण लगैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. भाइ-भातिज रहितहुँ माय बिना नैहर अपूर्ण लगैत अछि।
व्याख्या: गीत मातृ-सम्बन्धक भावनात्मक केन्द्रीयता देखबैत अछि।

प्रश्न 7207. सासुर सम्बन्धी सोहरमे स्त्रीक आकांक्षा कोन अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. अपन होरिल/संतान बिना सासुर सेहो मनभावन नहि लगैत।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. अपन होरिल/संतान बिना सासुर सेहो मनभावन नहि लगैत।
व्याख्या: गीत मातृत्वक आकांक्षाकेँ सामाजिक वातावरणसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7208. गंगास्नान आ हरिवंश सुनबाक उल्लेख कोन मनोभावसँ जुड़ल अछि?
क. दैवी सहाय आ संतान-प्राप्तिक आशासँ।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. दैवी सहाय आ संतान-प्राप्तिक आशासँ।
व्याख्या: धार्मिक क्रिया पुत्रकामनाक प्रार्थना-भावमे आयल अछि।

प्रश्न 7209. “एकहि पुत्र दैव दीतथि” पंक्तिक भावार्थ की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. एक संतान भेटिते हृदय जुड़ा जाए।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. एक संतान भेटिते हृदय जुड़ा जाए।
व्याख्या: गीतमे पुत्र-प्राप्तिकेँ हृदय-शान्तिक रूपमे देखल गेल अछि।

प्रश्न 7210. लेखक सोहरक उदाहरण किएक दैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. जन्म-संस्कारक भाव-गहनता आ लोकस्मृति देखएबाक लेल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. जन्म-संस्कारक भाव-गहनता आ लोकस्मृति देखएबाक लेल।
व्याख्या: उदाहरण लोकगीतक सामाजिक मनोविज्ञान स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 7211. सोहरमे लौकिक आ भक्ति प्रधान विषयक समावेश कोना बुझायल अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. संतान-आकांक्षा सामाजिक अछि, मुदा दैव-सहायक आशा धार्मिक अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. संतान-आकांक्षा सामाजिक अछि, मुदा दैव-सहायक आशा धार्मिक अछि।
व्याख्या: लोकगीत सामाजिक यथार्थ आ भक्ति-भाव दुनूकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7212. सोहरक सांस्कृतिक महत्त्व की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ओ मिथिलाक जन्म-संस्कारक भाव, विश्वास आ परिवार-रचना सुरक्षित राखैत अछि।
उत्तर: घ. ओ मिथिलाक जन्म-संस्कारक भाव, विश्वास आ परिवार-रचना सुरक्षित राखैत अछि।
व्याख्या: लेख सोहरकेँ जीवित सांस्कृतिक अभिलेख मानैत अछि।

खण्ड ७२७ : विदेह-सदेह २ — प्रसव-पीड़ा, छठिहार आ खेलउना

प्रश्न 7213. प्रसव-पीड़ाक सोहरमे स्त्रीक मनोदशा कोना व्यक्त अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. वेदना कालमे सासु, जेठानी आ ननद कठोर लगैत छथि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. वेदना कालमे सासु, जेठानी आ ननद कठोर लगैत छथि।
व्याख्या: गीत प्रसव-दर्दक मानस-स्थिति सहज रूपमे कहैत अछि।

प्रश्न 7214. पुत्र-जन्मक बाद सोहरमे स्त्रीक दृष्टि कोना बदलैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. संतान देखिते सभ कष्ट बिसरि जाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. संतान देखिते सभ कष्ट बिसरि जाइत अछि।
व्याख्या: लेख प्रसव-पीड़ासँ आनन्दक भावान्तर देखबैत अछि।

प्रश्न 7215. “अपन माए मोरा रहितइ” भावक केन्द्र की अछि?
क. अपन माय वेदना बाँटि लेतथि, एहि विश्वासक अभाव।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. अपन माय वेदना बाँटि लेतथि, एहि विश्वासक अभाव।
व्याख्या: गीत माय-संबंधक करुण निकटता व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 7216. गीतमे “निरमोहिया” कहल पात्र सभ के प्रतीक छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. पीड़ित स्त्रीक दृष्टिमे असंवेदनशील सासु-भाउज।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. पीड़ित स्त्रीक दृष्टिमे असंवेदनशील सासु-भाउज।
व्याख्या: प्रसव-वेदना सम्बन्धक भावात्मक दूरी बढ़ा दैत अछि।

प्रश्न 7217. मिथिलामे जन्मक पहिल उत्सव कोन कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. छठिहार।
उत्तर: घ. छठिहार।
व्याख्या: लेख जन्म-संस्कारक प्रथम सार्वजनिक/घरेलू उत्सवक रूपमे छठिहारक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 7218. छठिहारक अवसरपर खेलउना गीतमे कोन सम्बन्ध उभरैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ननद आ भाउजक मधुर हास-परिहास।
उत्तर: घ. ननद आ भाउजक मधुर हास-परिहास।
व्याख्या: खेलउना गीत परिवारक स्त्री-संबंधक सहज नाट्य प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 7219. भाउज पतिकेँ ननदिकेँ बजाबए लेल किएक कहैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. छठिहारक आनन्दमे ननदिक उपस्थिति मधुर मानल गेल।
उत्तर: घ. छठिहारक आनन्दमे ननदिक उपस्थिति मधुर मानल गेल।
व्याख्या: गीत ननदिक आवाज, आगमन आ व्यवहारक स्नेह देखबैत अछि।

प्रश्न 7220. खेलउना गीतमे ननदिक आगमनक क्रम कोना बनल अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. नगर, द्वार, आँगन, सोइरी धरि क्रमिक प्रवेश।
उत्तर: घ. नगर, द्वार, आँगन, सोइरी धरि क्रमिक प्रवेश।
व्याख्या: गीत ननदिक स्वागतकेँ चरणबद्ध नाटकीय रूप दैत अछि।

प्रश्न 7221. “बेसरि माँगे बड़ तीत लागे” पंक्तिक भावार्थ की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. स्नेह बीच उपहार-मांगक चुटकीदार हास्य।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. स्नेह बीच उपहार-मांगक चुटकीदार हास्य।
व्याख्या: ननद-भाउज सम्बन्धक मिठास आ मांगक तिक्त-मजाक एकठाम अछि।

प्रश्न 7222. प्रसव-पीड़ा आ छठिहार गीतक संयुक्त सांस्कृतिक अर्थ की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. दुख, जन्म, स्नेह, मांग आ उत्सवक पूरा घरेलू संसार।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. दुख, जन्म, स्नेह, मांग आ उत्सवक पूरा घरेलू संसार।
व्याख्या: लेख जन्म-संस्कार गीतमे जीवनक बहुरंगी अनुभव देखबैत अछि।

खण्ड ७२८ : विदेह-सदेह २ — ननद-भाउज, बधैया आ सम्बन्ध-मधुरता

प्रश्न 7223. ननद-भाउजक गीतमे ननदि की मांग करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. इनाम/बधैया आ गहना-सामग्री।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. इनाम/बधैया आ गहना-सामग्री।
व्याख्या: गीत छठिहारक उपहार-परम्पराकेँ संवादक रूप दैत अछि।

प्रश्न 7224. “नथिया” प्रसंगमे भाउजक उत्तरक स्वर कइसन अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मांग टारबाक चतुर हास्यपूर्ण प्रयास।
उत्तर: घ. मांग टारबाक चतुर हास्यपूर्ण प्रयास।
व्याख्या: भाउज ननदिक मांगसँ बचबाक लेल तर्कक सहारा लैत अछि।

प्रश्न 7225. ननदि बच्चाकेँ उठाकऽ चलि दैत अछि — एहि प्रसंगक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उपहार-मांगक खेलमे हास्यपूर्ण दबाव।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. उपहार-मांगक खेलमे हास्यपूर्ण दबाव।
व्याख्या: ननद-भाउज परिहास सामाजिक सम्बन्धक जीवंत रूप अछि।

प्रश्न 7226. “हम लेबइ भइया के राज” पंक्तिमे ननदिक दावा कोन अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. भाइपर अपन स्नेह-अधिकारक ठिठोली।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. भाइपर अपन स्नेह-अधिकारक ठिठोली।
व्याख्या: गीतमे अधिकार, स्नेह आ चुटकुला एक संग अछि।

प्रश्न 7227. भाउजक तर्कक समक्ष ननदि की करैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. हारि बधैया गबैत अधिकारपूर्वक मांग करैत अछि।
उत्तर: घ. हारि बधैया गबैत अधिकारपूर्वक मांग करैत अछि।
व्याख्या: संवाद अंतमे गीत-रूपक अधिकारमय मांगमे बदलैत अछि।

प्रश्न 7228. बधैया गीतमे ननदि साधारण गहना किएक नहि स्वीकारए चाहैत?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ओ अधिक विशेष, मनपसिन्न वस्तु चाहैत अछि।
उत्तर: घ. ओ अधिक विशेष, मनपसिन्न वस्तु चाहैत अछि।
व्याख्या: गीत उपहारक श्रेणीकरणसँ हास्य आ लालसा देखबैत अछि।

प्रश्न 7229. बधैया गीतमे “लहरदार चुनरी”क मांग कोन भाव देखबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. उत्सवक सौन्दर्यबोध आ सजधजक आकांक्षा।
उत्तर: घ. उत्सवक सौन्दर्यबोध आ सजधजक आकांक्षा।
व्याख्या: ननदिक मांग जन्मोत्सवक उल्लासक विस्तार अछि।

प्रश्न 7230. लेखक किएक कहैत छथि जे एहि गीतक परम्परा लुप्तप्राय अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. आधुनिक व्यवहारमे पुरान लोक-गायनक प्रचलन घटि रहल अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. आधुनिक व्यवहारमे पुरान लोक-गायनक प्रचलन घटि रहल अछि।
व्याख्या: लेख प्रत्यक्ष चिन्ता व्यक्त करैत अछि जे गीत सभ लुप्त भऽ रहल अछि।

प्रश्न 7231. गीत-परम्परा लुप्त भेलासँ लेखक कोन सामाजिक प्रभाव सोचनीय मानैत छथि?
क. लौकिक परम्परागत सम्बन्धक मधुरता प्रभावित होएबाक सम्भावना।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. लौकिक परम्परागत सम्बन्धक मधुरता प्रभावित होएबाक सम्भावना।
व्याख्या: लेख गीतकेँ सम्बन्ध-संरक्षणक माध्यम मानैत अछि।

प्रश्न 7232. लेखक अन्तमे कोन प्रश्न छोड़ैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. आदर्शकेँ बचाबए लेल विकल्प कोना खोजल जाए।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. आदर्शकेँ बचाबए लेल विकल्प कोना खोजल जाए।
व्याख्या: लेख संरक्षणक व्यावहारिक बाट सोचबाक आग्रह करैत अछि।

खण्ड ७२९ : विदेह-सदेह २ — विवाह-गीत: सम्मर, लगन आ कुमार

प्रश्न 7233. विआह संस्कार गीतक परम्परा मिथिलामे कतेक व्यापक कहल गेल अछि?
क. विआहपूर्वहिसँ गीतक रीत लोकजीवनमे रहल अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. विआहपूर्वहिसँ गीतक रीत लोकजीवनमे रहल अछि।
व्याख्या: लेख विवाहक आरम्भिक चरणसँ गीतक उपस्थिति देखबैत अछि।

प्रश्न 7234. सुयोग्य वर खोजबाक प्रसंगमे कोन गीतक नाम आएल अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. सम्मर, कुमार आ लगन।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. सम्मर, कुमार आ लगन।
व्याख्या: लेख विवाह-पूर्व वर-खोज परम्परासँ एहि गीत-रूपकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7235. सम्मरक उदाहरण कोन पौराणिक प्रसंगसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. सीता स्वयंवर।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. सीता स्वयंवर।
व्याख्या: मिथिलाक बेटी सीताक विवाह लोकगीतक बीज-रूपमे सुरक्षित कहल गेल।

प्रश्न 7236. “जानकि अंगना बहारल धनुखा” पंक्तिमे विवाहक कोन शर्त उभरैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. धनुष तोड़निहार वरक चयन।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. धनुष तोड़निहार वरक चयन।
व्याख्या: स्वयंवरक मूल कथा गीतमे संक्षिप्त रूपेँ आयल अछि।

प्रश्न 7237. सम्मरमे “राजा हो आ कि रंक” भाव की कहैत अछि?
क. योग्यता वंश-धनसँ ऊपर निर्णायक अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. योग्यता वंश-धनसँ ऊपर निर्णायक अछि।
व्याख्या: धनुष तोड़बाक सामर्थ्य वर-चयनक मापदण्ड बनैत अछि।

प्रश्न 7238. लगन गीत कखन गाओल जाइत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. विआह सुनिश्चित भेलापर आँगनमे स्त्रीगण समूह द्वारा।
उत्तर: घ. विआह सुनिश्चित भेलापर आँगनमे स्त्रीगण समूह द्वारा।
व्याख्या: लेख विआह-पूर्व कन्याविधिक संग लगन गीतक सम्बन्ध बतबैत अछि।

प्रश्न 7239. राजा जनकक कठोर प्रण लगन गीतमे कोन रूपमे अछि?
क. द्वारपर धनुष राखल, जे तोड़त से सीताकेँ लऽ जाएत।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. द्वारपर धनुष राखल, जे तोड़त से सीताकेँ लऽ जाएत।
व्याख्या: गीत कथा आ अनुष्ठानक मिलन करबैत अछि।

प्रश्न 7240. रावण प्रसंगक उल्लेख लगन गीतमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. धनुष-स्पर्शक असफलता आ रामक विजयक विरोधी पृष्ठभूमि बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. धनुष-स्पर्शक असफलता आ रामक विजयक विरोधी पृष्ठभूमि बनबैत अछि।
व्याख्या: गीत नाटकीयता बढ़एबाक लेल भिन्न राजाक आगमन देखबैत अछि।

प्रश्न 7241. कुमार गीतमे बाबा आ बेटीक संवादक केन्द्र की अछि?
क. विवाहक व्यवस्था, कन्यादान आ दहेज-चिन्ता।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. विवाहक व्यवस्था, कन्यादान आ दहेज-चिन्ता।
व्याख्या: लेख कुमार गीतकेँ पितृ-चिन्ता आ कन्या-जिज्ञासाक संवाद बनबैत अछि।

प्रश्न 7242. “धिया बिनु धर्म ने होय” पंक्तिक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. बेटीकेँ धर्म-सम्पादनक अनिवार्य अंग मानल गेल।
उत्तर: घ. बेटीकेँ धर्म-सम्पादनक अनिवार्य अंग मानल गेल।
व्याख्या: गीत पिता-कन्या सम्बन्धक गौरवपूर्ण रूप प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड ७३० : विदेह-सदेह २ — परिछन, धुरछक आ शुभकामना

प्रश्न 7243. परिछन गीतमे बेटी आ जमायक उपमा कोना देल गेल अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. बेटी लछमी आ जमाय विष्णु रूपमे।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. बेटी लछमी आ जमाय विष्णु रूपमे।
व्याख्या: परिछन गीत दुलहा-दुलहिनकेँ दैवी सौन्दर्यसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7244. “विष्णु उतरि अएला अंगना” भावक आशय की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. दुलहाकेँ शुभ, दैवी अतिथि रूपमे देखब।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. दुलहाकेँ शुभ, दैवी अतिथि रूपमे देखब।
व्याख्या: गीत विवाह-आँगनकेँ पावन आगमनक स्थल बनबैत अछि।

प्रश्न 7245. धुरछक परिछनक पहिल विधि ककर स्वागत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. दुलहाक।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. दुलहाक।
व्याख्या: दुलहाकेँ कलश, डाला आ गीतक संग विधिपूर्वक स्वागत कएल जाइत अछि।

प्रश्न 7246. धुरछक गीतमे सोना कलसिया नेने स्त्रीक छवि की सूचित करैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मंगल-स्वागतक विधिकारी उपस्थिति।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. मंगल-स्वागतक विधिकारी उपस्थिति।
व्याख्या: कलश लोक-विवाहक शुभ प्रतीक अछि।

प्रश्न 7247. धुरछकक बाद परिछनक डाला कोन सामग्रीसँ सजैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. अरवा चाउरक चानन, सिन्दूर, काजर, बेसन, राई, लवण आदि।
उत्तर: घ. अरवा चाउरक चानन, सिन्दूर, काजर, बेसन, राई, लवण आदि।
व्याख्या: लेख परिछनक उपचार-सामग्रीक लोकविधि गिनबैत अछि।

प्रश्न 7248. परिछन गीतमे “लवण राई”क भूमिका की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. टोना-टारबाक लोक-उपचार।
उत्तर: घ. टोना-टारबाक लोक-उपचार।
व्याख्या: विवाहक शुभकामना संग अपशकुन-निवारणक भाव जुड़ल अछि।

प्रश्न 7249. दुलहाकेँ परीछि आँगन लएबाक परम्परा कोन भाव रखैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. दुआरसँ गृह-आँगन धरि विधिपूर्वक प्रवेश।
उत्तर: घ. दुआरसँ गृह-आँगन धरि विधिपूर्वक प्रवेश।
व्याख्या: परिछन बाह्य आगमनकेँ पारिवारिक स्वीकृतिमे बदलैत अछि।

प्रश्न 7250. “शुभे हो शुभे” परिछनक मूल स्वर की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दुलहा-दुलहिन लेल मंगलकामना।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. दुलहा-दुलहिन लेल मंगलकामना।
व्याख्या: गीतक आवृत्ति स्वयं शुभाशंसाक लय बनबैत अछि।

प्रश्न 7251. दधि, केसर, दिठौना, लौन-राईक उल्लेख कोन प्रकारक संस्कार देखबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. सौन्दर्य, रक्षा आ मंगलक मिश्रित लोकविधि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सौन्दर्य, रक्षा आ मंगलक मिश्रित लोकविधि।
व्याख्या: परिछन गीत विधि-सूचीकेँ काव्यात्मक बनबैत अछि।

प्रश्न 7252. परिछन गीतक लुप्तप्रायता किएक चिन्ताजनक अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. विवाहक लोक-विधि आ तकर संगीत-स्मृति कमजोर होइत अछि।
उत्तर: घ. विवाहक लोक-विधि आ तकर संगीत-स्मृति कमजोर होइत अछि।
व्याख्या: लेखक गीत-धुनक संरक्षणकेँ संस्कार-संरक्षणक रूपमे देखैत छथि।

खण्ड ७३१ : विदेह-सदेह २ — शिव-विवाह आ कन्यादान गीत

प्रश्न 7253. शिव-विवाहक परिछन मिथिलामे कोन धारणापर आधारित अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. हिमालय राजा, गौरी बेटी आ शिव जमाय मानल जाइत छथि।
उत्तर: घ. हिमालय राजा, गौरी बेटी आ शिव जमाय मानल जाइत छथि।
व्याख्या: गीत मिथिलाक बेटी-विवाहक भावकेँ शिव-पार्वती कथासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7254. शिव-विवाह गीतमे शिवक रूप कइसन वर्णित अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. गरल, नाग, जटा-गंगा, डमरू आ भूत-प्रेतसहित भयावह-विलक्षण।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. गरल, नाग, जटा-गंगा, डमरू आ भूत-प्रेतसहित भयावह-विलक्षण।
व्याख्या: गीत शिवक अलौकिक बरियातक हास्य-भय मिश्रित चित्र दैत अछि।

प्रश्न 7255. शिवक बरियात देखिकय नगरक लोकक प्रतिक्रिया की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. लोक कोठा चढ़ि देखैत अछि आ बरियात भयंकर लगैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. लोक कोठा चढ़ि देखैत अछि आ बरियात भयंकर लगैत अछि।
व्याख्या: गीत लोक-प्रेक्षणक रंगमंचीयता प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 7256. कन्यादान गीतक परम्परा कोन पीढ़ीमे लुप्तप्राय कहल गेल?
क. नवतुरिया पीढ़ीक बीच।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. नवतुरिया पीढ़ीक बीच।
व्याख्या: लेख विवाहक वैदिक विधि संग गीतक घटैत परम्परा पर चिन्ता करैत अछि।

प्रश्न 7257. शिव-पार्वती कन्यादान गीतमे कोन भाव मुख्य अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मंगलमय दान-विधि आ दुलहा-दुलहिनक जोड़ी देखबाक हर्ष।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मंगलमय दान-विधि आ दुलहा-दुलहिनक जोड़ी देखबाक हर्ष।
व्याख्या: गीत कन्यादानक गंभीर क्षणकेँ उत्सव-रससँ भरैत अछि।

प्रश्न 7258. सीता-राम कन्यादान गीतमे कोन भाव विशेष व्यक्त अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. बेटीक वियोगक करुणा।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. बेटीक वियोगक करुणा।
व्याख्या: सुनयना माताक सिसकैत भाव गीतक केन्द्र बनैत अछि।

प्रश्न 7259. “जाँघिया चढ़ाए बाबा बैसला मण्डप पर” पंक्तिमे कोन विधि आरम्भ होइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. कन्यादान।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. कन्यादान।
व्याख्या: गीत विवाह-मण्डपक कर्मकाण्डीय क्षणकेँ लोक-भाषामे पकड़ैत अछि।

प्रश्न 7260. गुरु वशिष्ठक मंत्र-उच्चार प्रसंग की देखबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. लोकगीतमे वैदिक कर्मकाण्डक समावेश।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. लोकगीतमे वैदिक कर्मकाण्डक समावेश।
व्याख्या: गीत शास्त्रीय विधि आ लोक-संवेदना बीच सेतु बनैत अछि।

प्रश्न 7261. सुनयना मायक रोदनक कारण की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. बेटीकेँ विदा/वीरान होइत देखबाक वियोग।
उत्तर: घ. बेटीकेँ विदा/वीरान होइत देखबाक वियोग।
व्याख्या: कन्यादान गीत विवाहक करुण पक्ष उजागर करैत अछि।

प्रश्न 7262. “ई थिक जग व्यवहार” कहबाक अर्थ की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. विवाह-वियोगकेँ सामाजिक परम्पराक अनिवार्य रूप मानब।
उत्तर: घ. विवाह-वियोगकेँ सामाजिक परम्पराक अनिवार्य रूप मानब।
व्याख्या: गीत निजी दुख आ सामाजिक रीति बीचक तनाव देखबैत अछि।

खण्ड ७३२ : विदेह-सदेह २ — जेवनार, डहकन आ कोहबर

प्रश्न 7263. जेवनार गीत कखन गाओल जाइत रहल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बरियाती भोजन करए बैसला पर स्वागतक लेल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. बरियाती भोजन करए बैसला पर स्वागतक लेल।
व्याख्या: जेवनार गीत भोजन-संस्कारकेँ हास्य-विनोदसँ जोडैत अछि।

प्रश्न 7264. जेवनार गीतमे मिठाइक “मंदिर” रूपक कोन प्रभाव उत्पन्न करैत अछि?
क. भोजनकेँ कल्पनाशील महल/मंदिरक उत्सवमे बदलि दैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. भोजनकेँ कल्पनाशील महल/मंदिरक उत्सवमे बदलि दैत अछि।
व्याख्या: खोआ, बरफी, जलेबी, गुलाबजामुन आदि स्थापत्य-रूपक बनैत अछि।

प्रश्न 7265. “छप्पन भोग बत्तीसो बेअंजन” जेवनारमे की सूचित करैत अछि?
क. आतिथ्यक सम्पन्नता आ भोजक विस्तार।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. आतिथ्यक सम्पन्नता आ भोजक विस्तार।
व्याख्या: गीत समधी-बरियातीक सम्मानक भव्य लोक-छवि बनबैत अछि।

प्रश्न 7266. डहकन गीतक घोषित उद्देश्य की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. दुलहामे धैर्य, विनम्रता आ सहिष्णुता जगाएब।
उत्तर: घ. दुलहामे धैर्य, विनम्रता आ सहिष्णुता जगाएब।
व्याख्या: डहकनक गारि केवल अपमान नहि, सामाजिक प्रशिक्षण आ हास्यक विधि अछि।

प्रश्न 7267. श्रीरामक उदाहरण डहकन परम्पराकेँ कोना वैधता दैत अछि?
क. मान्यता अछि जे राम सेहो मैथिलानीक गारि सुनि प्रसन्न भेलाह।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मान्यता अछि जे राम सेहो मैथिलानीक गारि सुनि प्रसन्न भेलाह।
व्याख्या: रामक कथा डहकनकेँ लोक-धर्मक सम्मान देल गेल अछि।

प्रश्न 7268. डहकनमे “राम लला सन सुन्दर वर” कहि गारि किएक रोकेबाक भाव अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. गारि-विनोदक मर्यादा आ सौन्दर्य-दृष्टि दुनू साथ अछि।
उत्तर: घ. गारि-विनोदक मर्यादा आ सौन्दर्य-दृष्टि दुनू साथ अछि।
व्याख्या: डहकन विनोदक सीमा मानैत अछि, निष्ठुर अपमान नहि।

प्रश्न 7269. दुलहासँ हँसी-मजाकक डहकन गीतमे स्त्रीगणक भूमिका की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. विध-बेवहार करबैत दुलहासँ चुटकी लेब।
उत्तर: घ. विध-बेवहार करबैत दुलहासँ चुटकी लेब।
व्याख्या: गाइनिनक गीत विवाह-विधि केँ सामूहिक हास्यमय बनबैत अछि।

प्रश्न 7270. कोहबर गीतक सम्बन्ध कोन परम्परासँ अछि?
क. विवाहक बाद दुलहा-दुलहिनक कोहबरमे चारि दिन रहबाक परम्परा।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. विवाहक बाद दुलहा-दुलहिनक कोहबरमे चारि दिन रहबाक परम्परा।
व्याख्या: कोहबर गीत नवदम्पतिक सम्बन्धक भाव-भूमि बनबैत अछि।

प्रश्न 7271. सीता-रामक कोहबर गीत किएक विशेष प्रसिद्ध कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ओ प्रेमभाव जगाबए बला विलक्षण कोहबर-वर्णन करैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ओ प्रेमभाव जगाबए बला विलक्षण कोहबर-वर्णन करैत अछि।
व्याख्या: गीत कोहबरकेँ दैवी दाम्पत्यक प्रतीक बना दैत अछि।

प्रश्न 7272. कोहबर गीतक लुप्तप्रायता ककर हानि अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. दाम्पत्य-प्रेम बढ़ाबए बला लोक-संस्कारक गीत-स्मृति।
उत्तर: घ. दाम्पत्य-प्रेम बढ़ाबए बला लोक-संस्कारक गीत-स्मृति।
व्याख्या: लेख विवाहक आंतरिक भाव-संस्कार पर गीतक भूमिका देखबैत अछि।

खण्ड ७३३ : विदेह-सदेह २ — मधुश्रावणी: फूल लोढ़इ, गौरी गीत आ विषहारा

प्रश्न 7273. मधुश्रावणी मिथिलाक विवाह-संस्कारमे कोन रूपमे अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. नवविवाहिताक तेरह दिनक व्रत-अनुष्ठान।
उत्तर: घ. नवविवाहिताक तेरह दिनक व्रत-अनुष्ठान।
व्याख्या: लेख मधुश्रावणीकेँ विआह संस्कारक अभिन्न अंग कहैत अछि।

प्रश्न 7274. मधुश्रावणीमे नवविवाहिताक दैनिक क्रिया की कहल गेल अछि?
क. अपराह्नमे फूल लोढ़ि आनब।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. अपराह्नमे फूल लोढ़ि आनब।
व्याख्या: फूल-लोढ़ाइ व्रत, सामूहिकता आ गीतक संग जुड़ल अछि।

प्रश्न 7275. फूल लोढ़बाक गीतमे टोलीक भूमिका की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. गामभरिक नवविवाहिताक टोली मनोरंजनपूर्वक व्रत-निष्ठा निभबैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. गामभरिक नवविवाहिताक टोली मनोरंजनपूर्वक व्रत-निष्ठा निभबैत अछि।
व्याख्या: गीत व्रतकेँ सामूहिक स्त्री-अनुभव बनबैत अछि।

प्रश्न 7276. मधुश्रावणीमे कोन पूजा बीच बिसहारा गीत गाओल जाइत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नाग-नागिनक पूजा।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. नाग-नागिनक पूजा।
व्याख्या: बिषहारा गीत सुहाग-सुरक्षा आ नाग-पूजनक लोक-संस्कारसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 7277. फूल लोढ़इ गीतमे स्त्री-सौन्दर्यक कोन चिह्न सभ आएल अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. सिन्दूर, टिकुली, अँगूठी, मुनरी आ तिरछी नजरि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सिन्दूर, टिकुली, अँगूठी, मुनरी आ तिरछी नजरि।
व्याख्या: गीत नवविवाहिताक श्रृंगार आ उमंगक छवि बनबैत अछि।

प्रश्न 7278. गौरी गीतमे राधा, सीता आ गौरीक क्रम किएक अर्थपूर्ण अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सखी-समूह आ देवी-नायिका सभकेँ फूल-लोढ़ाइमे जोड़ैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. सखी-समूह आ देवी-नायिका सभकेँ फूल-लोढ़ाइमे जोड़ैत अछि।
व्याख्या: गीत पौराणिक नायिका आ लोक-व्रतकेँ एक स्थान पर अनैत अछि।

प्रश्न 7279. गौरी “तपसी भिखरिया” वर किएक माँगैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. शिवक वैरागी रूपक लोक-संकेत।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. शिवक वैरागी रूपक लोक-संकेत।
व्याख्या: गीत गौरी-शिव प्रेमक प्रतीकात्मक चयन देखबैत अछि।

प्रश्न 7280. बिषहारा गीतमे “सोना के घइला, रूपा के गेरूलि” कोन भाव दैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. पूजाक श्रृंगारिक आ मंगलमय तैयारी।
उत्तर: घ. पूजाक श्रृंगारिक आ मंगलमय तैयारी।
व्याख्या: विषहरी गीत पूजाक वस्तुकेँ अलंकारिक महत्त्व दैत अछि।

प्रश्न 7281. बिषहारा गीतक शुभकामना कोन अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. सुहागिनक कंत लाख बरिस जीबथि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. सुहागिनक कंत लाख बरिस जीबथि।
व्याख्या: मधुश्रावणी गीत सुहाग-रक्षा आ दीर्घ दाम्पत्यक आकांक्षा दैत अछि।

प्रश्न 7282. लेखक फूल-लोढ़इ, गौरी आ विषहारा गीतकेँ किएक लुप्तप्राय कहैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. नवतुरिया पीढ़ीक बीच पद, धुन आ परम्परा कमजोर भऽ रहल अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. नवतुरिया पीढ़ीक बीच पद, धुन आ परम्परा कमजोर भऽ रहल अछि।
व्याख्या: लेख स्त्री-व्रत गीतक पीढ़ीगत संकटक ओर ध्यान दैत अछि।

खण्ड ७३४ : विदेह-सदेह २ — समदाउन, लगनी आ श्रमगीत

प्रश्न 7283. समदाउन गीत कखन गाओल जाइत अछि?
क. बेटीक द्विरागमनक अवसरपर स्त्रीगणक समवेत स्वरमे।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. बेटीक द्विरागमनक अवसरपर स्त्रीगणक समवेत स्वरमे।
व्याख्या: समदाउन विदाई/द्विरागमनक करुण लोकगीत अछि।

प्रश्न 7284. समदाउनक मूल भाव कोन कहल गेल?
क. करूणा प्रधान उदासी।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. करूणा प्रधान उदासी।
व्याख्या: लेख नवतुरिया पीढ़ीक बीच एहि करुण भासक लुप्तप्रायता बतबैत अछि।

प्रश्न 7285. “बेटी के जनम जुनि देब” गीतमे कोन सामाजिक पीड़ा व्यक्त अछि?
क. निरधन कोखि, रूप, मुरुख पति आ बेटी-भाग्यक करुण प्रश्न।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. निरधन कोखि, रूप, मुरुख पति आ बेटी-भाग्यक करुण प्रश्न।
व्याख्या: समदाउन सामाजिक विवशता आ बेटी-वियोगक दुख जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7286. कहरिया भासक समदाउनमे सीताक कोन दुख व्यक्त अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. नैहर मिथिला सँ बिछोह।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. नैहर मिथिला सँ बिछोह।
व्याख्या: सीताक माध्यमसँ बेटी-वियोगक लोक-करुणा अभिव्यक्त अछि।

प्रश्न 7287. “माएक नयना सँ गंगा नीर” पंक्तिक अर्थ की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मायक आँसू गंगा-धार जकाँ बहि रहल अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मायक आँसू गंगा-धार जकाँ बहि रहल अछि।
व्याख्या: समदाउन मायक वियोगकेँ महा-प्रवाहक रूपक दैत अछि।

प्रश्न 7288. लगनी गीतक सम्बन्ध कोन गृहस्थी क्रियासँ अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. जाँत चलबैत दू स्त्रीक गायन।
उत्तर: घ. जाँत चलबैत दू स्त्रीक गायन।
व्याख्या: लगनी श्रमप्रधान घरेलू गीत अछि।

प्रश्न 7289. लगनी गीत परस्पर सम्बन्धकेँ कोना समृद्ध करैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भक्ति, करुणा आ व्यवहारप्रधान स्वरक कारण।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. भक्ति, करुणा आ व्यवहारप्रधान स्वरक कारण।
व्याख्या: श्रमक बीच गीत सामाजिक-संवेदनाकेँ मजबूत करैत अछि।

प्रश्न 7290. मशीनीकरणक युगमे लगनीक स्थिति कोना बताओल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. जाँतक चलन बन्द भेलासँ गीत प्रायः लुप्त, मुदा दूर देहातमे कतहु सुरक्षित।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. जाँतक चलन बन्द भेलासँ गीत प्रायः लुप्त, मुदा दूर देहातमे कतहु सुरक्षित।
व्याख्या: तकनीकी परिवर्तन लोक-गीत पर सीधा असर करैत अछि।

प्रश्न 7291. साहेबदास पदावलीसँ संकलित लगनीमे कोन भक्ति-प्रसंग भेटैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राधा-कृष्ण विरह आ माधवकेँ रोकबाक भाव।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. राधा-कृष्ण विरह आ माधवकेँ रोकबाक भाव।
व्याख्या: लगनी श्रमगीत रहितो भक्तिरस आ विरहसँ भरल अछि।

प्रश्न 7292. समदाउन आ लगनीक संयुक्त महत्त्व की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ओ स्त्री-जीवनक वियोग, श्रम, भक्ति आ सम्बन्धक लोक-संसार सुरक्षित करैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. ओ स्त्री-जीवनक वियोग, श्रम, भक्ति आ सम्बन्धक लोक-संसार सुरक्षित करैत अछि।
व्याख्या: दूनू गीत मिथिलाक स्त्री-लोक अनुभवक अलग-अलग रूप पकड़ैत अछि।

खण्ड ७३५ : विदेह-सदेह २ — मलार, बटगमनी आ लोक-परम्परा संरक्षण

प्रश्न 7293. मलार गीतक परम्परा मिथिलामे कोना वर्णित अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. समृद्ध रहल, मुदा वर्तमानमे गीत आ धुन लुप्तप्राय।
उत्तर: घ. समृद्ध रहल, मुदा वर्तमानमे गीत आ धुन लुप्तप्राय।
व्याख्या: लेख ऋतु-प्रधान गीतक क्षरणक चर्चा करैत अछि।

प्रश्न 7294. मलार पद सभ कोन स्रोतसँ संकलित कहल गेल?
क. साहेबदास पदावलीसँ।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. साहेबदास पदावलीसँ।
व्याख्या: लेख संकलन-स्रोत देलक अछि जे लोकसाहित्यक संरक्षणमे सहायक अछि।

प्रश्न 7295. “अली रे प्रीतम बड़ निरमोहिया” पदमे कोन भाव छैक?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विरह आ प्रेमक व्यथा।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. विरह आ प्रेमक व्यथा।
व्याख्या: मलार पद वर्षा-ऋतु, रति-वेदना आ विरहक भाव जगबैत अछि।

प्रश्न 7296. “हे उधो लिखब कओने विधि पाती” पदमे नायिका कोन कठिनाई कहैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. विरह-वेदना सँ पत्र लिखबो कठिन।
उत्तर: घ. विरह-वेदना सँ पत्र लिखबो कठिन।
व्याख्या: अँचल-पत्र, नयन-जल, काजर आदि रूपक विरहक तीव्रता देखबैत अछि।

प्रश्न 7297. बटगमनी गीतक विषयक मुख्य स्वर की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. प्रेम, श्रृंगार आ रति-भावक अभिव्यक्ति।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. प्रेम, श्रृंगार आ रति-भावक अभिव्यक्ति।
व्याख्या: लेख बटगमनीकेँ राग-अनुरागसँ परिपूर्ण लोक-गीत मानैत अछि।

प्रश्न 7298. बटगमनी कखन गाओल जाइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मांगलिक अनुष्ठानमे डिहबार, ब्रह्मस्थान, माटिमंगल, आम-महू बियाह आदि लेल बाटमे निकलैत काल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मांगलिक अनुष्ठानमे डिहबार, ब्रह्मस्थान, माटिमंगल, आम-महू बियाह आदि लेल बाटमे निकलैत काल।
व्याख्या: गीत चलैत टोलीक मार्ग-संगीतक रूपमे अछि।

प्रश्न 7299. बटगमनीक लुप्तप्रायता लेखक ककर उदासीनतासँ जोड़ैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. नव पीढ़ीक मैथिल ललनाक गीत-उमंग आ रुचिक अभाव।
उत्तर: घ. नव पीढ़ीक मैथिल ललनाक गीत-उमंग आ रुचिक अभाव।
व्याख्या: पीढ़ीगत परिवर्तन लोक-परम्पराक संकट बनैत अछि।

प्रश्न 7300. “काँच कली पहु तोड़थि” बटगमनीमे कोन भाव प्रमुख अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संभोग-संकेतयुक्त श्रृंगारिक नायिका-वाणी।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. संभोग-संकेतयुक्त श्रृंगारिक नायिका-वाणी।
व्याख्या: लेख एहि पदकेँ स्नेह, चुम्बन, आलिंगन आ अनुरागक उदाहरण रूपमे रखैत अछि।

प्रश्न 7301. परदेशसँ पतिक आगमनक बटगमनीमे नायिका कोना देखायल अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिलन लेल साज-श्रृंगार आ प्रेम-उत्साहमे आकुल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मिलन लेल साज-श्रृंगार आ प्रेम-उत्साहमे आकुल।
व्याख्या: गीत विरहक बाद मिलनक तैयारीक लोक-भाव बतबैत अछि।

प्रश्न 7302. मलार आ बटगमनीक चर्चा संरक्षण-दृष्टिसँ की बतबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. धुन, पद, ऋतु, प्रेम आ संस्कार सभकेँ संग-संग बचाएब जरूरी अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. धुन, पद, ऋतु, प्रेम आ संस्कार सभकेँ संग-संग बचाएब जरूरी अछि।
व्याख्या: लेख केवल शब्द नहि, गायन-परम्परा आ प्रसंग-स्मृति बचाएबाक आग्रह करैत अछि।

खण्ड ७३६ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्रपर विशेष: गंगेश गुंजन आ विद्या मिश्र

प्रश्न 7303. “जयकान्त मिश्रपर विशेष”मे आरम्भिक लेखक-नाम कोन-कोन देल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. डॉ. गंगेश गुंजन आ विद्या मिश्र।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. डॉ. गंगेश गुंजन आ विद्या मिश्र।
व्याख्या: विशेषांक स्मरण-लेखक रूपमे ई नाम सामने रखैत अछि।

प्रश्न 7304. गंगेश गुंजन जयकान्त मिश्रक निधनकेँ कोन रूपकसँ बुझबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. महान पोथीक पुस्तकालयमे सजा देबाक ऐतिहासिक शोक जेकाँ।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. महान पोथीक पुस्तकालयमे सजा देबाक ऐतिहासिक शोक जेकाँ।
व्याख्या: ओ व्यक्ति-क्षतिकेँ ज्ञान-संसारक क्षति मानैत छथि।

प्रश्न 7305. गंगेश गुंजनक अनुसार जयकान्त बाबूक मौलिकता कोन समन्वयमे छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मैथिलीक लौकिक आ शास्त्रीय बुद्धिक समन्वयमे।
उत्तर: घ. मैथिलीक लौकिक आ शास्त्रीय बुद्धिक समन्वयमे।
व्याख्या: स्मरण जयकान्त मिश्रकेँ परम्परा आ व्यवहार दुनूक सेतु बनबैत अछि।

प्रश्न 7306. फिराकक उद्धरणक प्रयोग किएक भेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. आगामी पीढ़ी हुनका देखबाक सौभाग्यपर रश्क करत, एहि भावक संकेत लेल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. आगामी पीढ़ी हुनका देखबाक सौभाग्यपर रश्क करत, एहि भावक संकेत लेल।
व्याख्या: उद्धरण स्मृति-गौरव आ पीढ़ीगत मूल्यक बोध करबैत अछि।

प्रश्न 7307. गंगेश गुंजन जयकान्त बाबूकेँ कोन अत्यन्त उच्च उपाधि दैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मैथिलीक आधुनिक वेद।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीक आधुनिक वेद।
व्याख्या: ई कथन हुनक व्यापक ज्ञान-प्रतिष्ठा आ सांस्कृतिक महत्त्व सूचित करैत अछि।

प्रश्न 7308. विद्या मिश्र नेनपनमे जयकान्त मिश्रसँ किएक प्रभावित रहलीह?
क. मिथिला-मैथिलीक विकास आ साहित्यमे हुनक योगदानक चर्चा सुनि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. मिथिला-मैथिलीक विकास आ साहित्यमे हुनक योगदानक चर्चा सुनि।
व्याख्या: घरक वातावरणमे जयकान्त मिश्र आदर्श-रूपमे उपस्थित छलाह।

प्रश्न 7309. विद्या मिश्रक सम्बन्ध जयकान्त परिवारसँ कोना बदलल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ओ जयकान्त मिश्रक भातिजक संग विवाहित भऽ परिवारक पुतोहु बनलीह।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. ओ जयकान्त मिश्रक भातिजक संग विवाहित भऽ परिवारक पुतोहु बनलीह।
व्याख्या: स्मरण निजी आदर सँ पारिवारिक निकटताधरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 7310. हरिवंश राय बच्चनक पत्र-संदर्भ किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ओ जयकान्त-उमेश मिश्र परिवारक विद्वत्ता आ गुरु-सम्बन्धक प्रशंसा करैत छल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. ओ जयकान्त-उमेश मिश्र परिवारक विद्वत्ता आ गुरु-सम्बन्धक प्रशंसा करैत छल।
व्याख्या: ई प्रसंग परिवारक अकादमिक प्रतिष्ठाकेँ बाहरी मान्यता दैत अछि।

प्रश्न 7311. विद्या मिश्र १९९९ ई.क बाद कतए बसलाह मुदा मन कतए रहल कहैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. संयुक्त राज्य अमेरिकामे बसलाह, मुदा हृदय-आत्मा-मन इलाहाबादमे रहल।
उत्तर: घ. संयुक्त राज्य अमेरिकामे बसलाह, मुदा हृदय-आत्मा-मन इलाहाबादमे रहल।
व्याख्या: स्मरण प्रवास आ जड़ि-बन्धनक भाव व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 7312. विद्या मिश्रक लेखमे जयकान्त मिश्र परिवारक मुख्य गुण की कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. समर्पण, परम्परा, सरलता आ संस्कृतिक प्रति लगाव।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. समर्पण, परम्परा, सरलता आ संस्कृतिक प्रति लगाव।
व्याख्या: स्मरण परिवारक मुखिया, गुरु आ “भाइजी काका” रूपक क्षति अनुभव करैत अछि।

खण्ड ७३७ : विदेह-सदेह २ — डॉ. चन्देश्वर शाह: होलीक संदेश

प्रश्न 7313. डॉ. चन्देश्वर शाहक लेख “होलीक संदेश” कोन क्रियासँ आरम्भ होइत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. रंग-अबीरक खेलसँ पहिने सम्मत/होलिका दहन।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. रंग-अबीरक खेलसँ पहिने सम्मत/होलिका दहन।
व्याख्या: लेख होलीक बाहरी रंगसँ पहिने सांस्कृतिक विधिक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 7314. प्रह्लादक कथामे हिरण्यकश्यपु किएक क्रुद्ध छल?
क. प्रह्लादक विष्णु-भक्ति सँ।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. प्रह्लादक विष्णु-भक्ति सँ।
व्याख्या: कथा भक्तिपर अत्याचारी सत्ता-कुपित होएबाक प्रसंग बतबैत अछि।

प्रश्न 7315. होलिकाकेँ आगिमे न जरएबाक शक्ति ककर रूपमे छल?
क. बरदानमे भेटल चदरि/रक्षा-वस्त्रक रूपमे।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. बरदानमे भेटल चदरि/रक्षा-वस्त्रक रूपमे।
व्याख्या: ओहि वरदानक दुरुपयोगक कारण ओ स्वयं भस्म भेल।

प्रश्न 7316. प्रह्लादक रक्षा आ होलिकाक दहनक मूल संदेश की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. अन्याय अंततः टिकैत नहि, भक्त/धर्मक रक्षा होइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. अन्याय अंततः टिकैत नहि, भक्त/धर्मक रक्षा होइत अछि।
व्याख्या: लेख होलीक कथा सँ नैतिक शिक्षा ग्रहण करबैत अछि।

प्रश्न 7317. लेखक होलिकाक मृत्यु सँ समाजक कोन प्रतिक्रिया जोड़ैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. अत्याचारीक अंतपर लोक खुशी मनबैत अछि।
उत्तर: घ. अत्याचारीक अंतपर लोक खुशी मनबैत अछि।
व्याख्या: कथा सामाजिक न्याय-बोधक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 7318. समाज तत्काल विरोध नहि करैत तकर अर्थ की नहि मानब चाही?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. समाज अत्याचार सहर्ष स्वीकार करैत अछि, से नहि।
उत्तर: घ. समाज अत्याचार सहर्ष स्वीकार करैत अछि, से नहि।
व्याख्या: लेख चुप्पीकेँ स्वीकृति नहि मानबाक चेतावनी दैत अछि।

प्रश्न 7319. अन्यायी-अत्याचारीक सम्बन्धमे लेखक कोन बात कहैत छथि?
क. अकाल मृत्यु वा विनाशक दिशा ओहि प्रवृत्तिक फल भऽ सकैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. अकाल मृत्यु वा विनाशक दिशा ओहि प्रवृत्तिक फल भऽ सकैत अछि।
व्याख्या: होलिका प्रसंगसँ अन्यायकारी आचरणक परिणाम देखाओल गेल।

प्रश्न 7320. हिरण्यकश्यपुक अहंकारक मूल कारण की कहल गेल?
क. धन-बल आ सुख-भोगसँ स्वयंकेँ ईश्वर मानब।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. धन-बल आ सुख-भोगसँ स्वयंकेँ ईश्वर मानब।
व्याख्या: लेख अहंकारकेँ पतनक कारण रूपमे देखैत अछि।

प्रश्न 7321. ईश्वरीय शक्ति वा आशीर्वादक उपयोग कोन काजमे करबाक चाही?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. जनकल्याणमे, जनविरोधी काजमे नहि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. जनकल्याणमे, जनविरोधी काजमे नहि।
व्याख्या: होलिकाक वरदानक दुरुपयोग उल्टा ओकरा पर पड़ल।

प्रश्न 7322. “होलीक संदेश”क कथा-व्याख्या मात्र पौराणिक नहि किएक अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ आजुक व्यवहार, मर्यादा आ सामाजिक बुद्धिक पाठ दैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. ओ आजुक व्यवहार, मर्यादा आ सामाजिक बुद्धिक पाठ दैत अछि।
व्याख्या: लेख कथा सँ आधुनिक जीवन लेल मार्गदर्शन निकालैत अछि।

खण्ड ७३८ : विदेह-सदेह २ — होलीक मर्यादा, सम्मत आ विद्यापति

प्रश्न 7323. सम्मत जरएबाक लेल लकड़ी-काठी जुटेबाक प्रसंगमे लेखक कोन सावधानी कहैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ककरो घरक जरूरी लकड़ी चुपचाप जरा देब सामाजिक क्षति अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ककरो घरक जरूरी लकड़ी चुपचाप जरा देब सामाजिक क्षति अछि।
व्याख्या: लेख पर्व-उत्साहकेँ मर्यादा आ दूसरेक हितसँ बाँधैत अछि।

प्रश्न 7324. होलीक दिन नीक भोजनक नामपर ऋण करब लेखक किएक अनुचित मानैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. पर्वक बहाना आर्थिक असंतुलन आ बादक कष्ट बना सकैत अछि।
उत्तर: घ. पर्वक बहाना आर्थिक असंतुलन आ बादक कष्ट बना सकैत अछि।
व्याख्या: उत्सव विवेकहीन खर्चक अवसर नहि हेबाक चाही।

प्रश्न 7325. भाँग, धतूरा, दारु-ताड़ीक अधिक प्रयोगपर लेखक कोन संकेत दैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मस्ती बादमे अनर्थक कारण बनि सकैत अछि।
उत्तर: घ. मस्ती बादमे अनर्थक कारण बनि सकैत अछि।
व्याख्या: लेख संयमित आ विवेकपूर्ण उत्सवक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 7326. रंग-अबीर खेलबामे अलकतरा वा इनामेल प्रयोगक आलोचना किएक अछि?
क. एहन “मस्ती” दोसराक तकलीफ बढ़बैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. एहन “मस्ती” दोसराक तकलीफ बढ़बैत अछि।
व्याख्या: होलीक रंग आनन्दक साधन हो, हिंस्र मजाकक नहि।

प्रश्न 7327. बीमार व्यक्तिपर बलपूर्वक रंग लगएबाक उदाहरण कोन नीति सिखबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. उत्सवमे सीमाक भीतर रहब बुद्धिमानी अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. उत्सवमे सीमाक भीतर रहब बुद्धिमानी अछि।
व्याख्या: लेख सहानुभूति आ परिमिति केन्द्रीय बनबैत अछि।

प्रश्न 7328. संस्कृति-परम्पराक रक्षा लेखक ककर दायित्व मानैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. बन्धन-बाधा रहितहुँ समाजक निरन्तर दायित्व।
उत्तर: घ. बन्धन-बाधा रहितहुँ समाजक निरन्तर दायित्व।
व्याख्या: होलीक चर्चा व्यापक सांस्कृतिक उत्तरदायित्व धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 7329. विद्यापतिक गीतमे पार्वती महादेवसँ की आग्रह करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. नटवेश धरि नृत्य देखेबाक।
उत्तर: घ. नटवेश धरि नृत्य देखेबाक।
व्याख्या: लेख विद्यापतिक गीतसँ मर्यादित क्रियाशीलताक उदाहरण लैत अछि।

प्रश्न 7330. महादेव नाचबाक बाधा रूपमे कोन सम्भावना कहैत छथि?
क. गंगाधार बहि धरती जलमग्न आ सर्प चारुदिसि बिखरि जाएबाक।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. गंगाधार बहि धरती जलमग्न आ सर्प चारुदिसि बिखरि जाएबाक।
व्याख्या: गीतमे कार्यक सम्भावित परिणामक विवेकपूर्ण विचार अछि।

प्रश्न 7331. “राखल गौराक मान कि नाँच देखावल” पंक्तिक प्रयोग लेखक किएक करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. बाधा रहितहुँ बुद्धिमानीपूर्वक मर्यादित काजक संकेत लेल।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. बाधा रहितहुँ बुद्धिमानीपूर्वक मर्यादित काजक संकेत लेल।
व्याख्या: लेखक मान राखब आ अनर्थ टारब दुनूकेँ साधबाक शिक्षा लैत छथि।

प्रश्न 7332. होली प्रसंगसँ अन्तिम संदेश की निकलैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. क्रियाकलाप अपन आ समाजक हितमे, बुद्धिमानीपूर्वक होअए।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. क्रियाकलाप अपन आ समाजक हितमे, बुद्धिमानीपूर्वक होअए।
व्याख्या: लेख पर्वकेँ आत्मसंयम, करुणा आ सांस्कृतिक चेतनाक पाठ बनबैत अछि।

खण्ड ७३९ : विदेह-सदेह २ — विद्या मिश्र: अमेरिकामे मैथिलक होली

प्रश्न 7333. विद्या मिश्रक “मैथिल रंग बरसे” लेखक प्रसंग की अछि?
क. अमेरिकामे मैथिल परिवार सभक पारम्परिक होली।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. अमेरिकामे मैथिल परिवार सभक पारम्परिक होली।
व्याख्या: लेख प्रवासमे मिथिला-संस्कृतिक पालनक अनुभव दैत अछि।

प्रश्न 7334. एहि होलीमे कतेक परिवार सम्मिलित रहबाक उल्लेख अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. २५-३० टा परिवार।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. २५-३० टा परिवार।
व्याख्या: संख्या प्रवासी समुदायमे सामूहिकता देखबैत अछि।

प्रश्न 7335. प्रतीक झा ककर नाति आ पुत्र रूपमे उल्लेखित छथि?
क. प्रो. हरिमोहन झाक नाति आ डॉ. रमा झाक पुत्र।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. प्रो. हरिमोहन झाक नाति आ डॉ. रमा झाक पुत्र।
व्याख्या: लेख पारिवारिक-साहित्यिक वंश-संबंधक प्रसंग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7336. प्रवासी मैथिल लोकनिक प्रयासक मुख्य उद्देश्य की कहल गेल?
क. पाबनि-तिहार पारम्परिक रूपमे मनेबाक, जाहिसँ अगिला पीढ़ी सीखि सकए।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. पाबनि-तिहार पारम्परिक रूपमे मनेबाक, जाहिसँ अगिला पीढ़ी सीखि सकए।
व्याख्या: होली केवल मनोरंजन नहि, सांस्कृतिक शिक्षा बनैत अछि।

प्रश्न 7337. पछिला साल बच्चा सभ कोन नाटक मंचित केने छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. हिरण्यकश्यप/होलिका प्रसंगक नाटक।
उत्तर: घ. हिरण्यकश्यप/होलिका प्रसंगक नाटक।
व्याख्या: बच्चा सभ पाबनिक कथा मंचन द्वारा बुझि रहल छल।

प्रश्न 7338. बच्चा सभकेँ होली सम्बन्धी कोन-कोन बातक ज्ञान कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. होली किएक-कोना मनाओल जाए, रंग, गरा-मिलन, खानपान आ गीत।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. होली किएक-कोना मनाओल जाए, रंग, गरा-मिलन, खानपान आ गीत।
व्याख्या: लेख संस्कारक संपूर्ण शिक्षण-पद्धति देखबैत अछि।

प्रश्न 7339. मैथिल सहभागी कतए-कतए सँ अएलाह?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. न्यू-जर्सी, वर्जिनिया, वाशिंगटन डी.सी. आ मेरीलैण्ड।
उत्तर: घ. न्यू-जर्सी, वर्जिनिया, वाशिंगटन डी.सी. आ मेरीलैण्ड।
व्याख्या: प्रवासी मैथिलक क्षेत्रीय फैलाव आ जुटान स्पष्ट अछि।

प्रश्न 7340. एहि बेरक आयोजनमे कोन प्रतियोगिता महत्त्वपूर्ण रहल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नीक उत्तर, श्रेष्ठ पोशाक-समन्वय आ पार्सल देबाक प्रतियोगिता।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. नीक उत्तर, श्रेष्ठ पोशाक-समन्वय आ पार्सल देबाक प्रतियोगिता।
व्याख्या: उत्सवमे सांस्कृतिक ज्ञान आ सहभागिता प्रतियोगितासँ जोड़ल गेल।

प्रश्न 7341. प्रतियोगिताक प्रश्नक स्वरूप की छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मिथिला-संस्कृतिसँ सम्बन्धित गहन प्रश्न।
उत्तर: घ. मिथिला-संस्कृतिसँ सम्बन्धित गहन प्रश्न।
व्याख्या: प्रवासी बाल-युवा पीढ़ीकेँ ज्ञानमूलक ढंगसँ जोड़ल गेल।

प्रश्न 7342. अमेरिकाक बसंत छुट्टीक प्रसंग लेखमे किएक आयल अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. स्कूल-कॉलेजक बच्चा सभ एहि अवसरमे भाग लऽ सकल।
उत्तर: घ. स्कूल-कॉलेजक बच्चा सभ एहि अवसरमे भाग लऽ सकल।
व्याख्या: उत्सवक समय-परिस्थिति प्रवासी जीवनक अनुकूलता देखबैत अछि।

खण्ड ७४० : विदेह-सदेह २ — गंगेश गुंजन: कविक आत्मोक्ति, बजार आ कविता

प्रश्न 7343. “कविक आत्मोक्ति: कविताक अएना” कोन लेखकक कविता-संग्रहपर टिप्पणी अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विनीत उत्पलक कविता-संग्रहपर।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. विनीत उत्पलक कविता-संग्रहपर।
व्याख्या: शीर्षक स्वयं कविताक आत्म-प्रकाश आ समीक्षा-दृष्टि सूचित करैत अछि।

प्रश्न 7344. गंगेश गुंजन विश्व-बजारी समाजमे भाषा-साहित्यक स्थिति कोना देखैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. बजार जकाँ मंदी आ दबाव साहित्य-विधामे सेहो पसरल अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. बजार जकाँ मंदी आ दबाव साहित्य-विधामे सेहो पसरल अछि।
व्याख्या: लेख साहित्यकेँ बाजार-तर्कसँ प्रभावित मानैत अछि।

प्रश्न 7345. कविताक विधा सम्बन्धी प्रारम्भिक चिन्ता की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कविता आओर अनठिआएल, कात-करोट भेल वा कएल जा रहल अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. कविता आओर अनठिआएल, कात-करोट भेल वा कएल जा रहल अछि।
व्याख्या: लेख कविता-विधाक उपेक्षा आ बाजारीकरणक संकट उठबैत अछि।

प्रश्न 7346. कविता केवल प्रतिष्ठा-वस्तु बनि गेल तँ लेखक किएक अस्वीकार करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ओ दीर्घजीवी कला नहि रहि, ड्राइंग रूमक सजावटी नमूना बनि जाएत।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. ओ दीर्घजीवी कला नहि रहि, ड्राइंग रूमक सजावटी नमूना बनि जाएत।
व्याख्या: लेख कविता केँ सामाजिक जीवन-संबंध चाही, मात्र प्रदर्शन नहि।

प्रश्न 7347. भाषाक जीवित रहबाक बाजारी कसौटी लेखक कोना आलोचित करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. केवल उपयोगिता वा क्रय-विक्रय मूल्यपर भाषा बचबाक धारणा अवसरवादी अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. केवल उपयोगिता वा क्रय-विक्रय मूल्यपर भाषा बचबाक धारणा अवसरवादी अछि।
व्याख्या: लेख भाषाक सांस्कृतिक अस्मिता आ काव्य-सम्पत्ति पर बल दैत अछि।

प्रश्न 7348. ग्लोबल बजारमे भाषा सम्बन्धी लेखकक मुख्य चेतावनी की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. भाषाकेँ केवल “दाम” वा बिक्रीक आधारपर नहि बुझल जाए।
उत्तर: घ. भाषाकेँ केवल “दाम” वा बिक्रीक आधारपर नहि बुझल जाए।
व्याख्या: साहित्यिक भाषा बाजारक उत्पाद नहि, संवेदनाक वाहक अछि।

प्रश्न 7349. नवागन्तुक कविक लेल लेखक कोन भेद बुझब जरूरी मानैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. बजारक भाषा आ कविताक भाषा बीचक भेद।
उत्तर: घ. बजारक भाषा आ कविताक भाषा बीचक भेद।
व्याख्या: ई नैतिक बुद्धिसँ बुझबाक बात कहल गेल अछि।

प्रश्न 7350. कविता “नव पैकेटक नव उत्पाद” बनबाक डर किएक अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जँ कवि बाजारक तर्कमे समर्पित भऽ जाए।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. जँ कवि बाजारक तर्कमे समर्पित भऽ जाए।
व्याख्या: लेख कविता कैँ मॉल/दोकानक सामान बनबाक विरुद्ध चेतावनी दैत अछि।

प्रश्न 7351. भाषाक यात्रा लेल लेखक कोन साधन चाहैत छथि?
क. नीति-बुद्धि, स्वविवेक आ गंभीर मंथन।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. नीति-बुद्धि, स्वविवेक आ गंभीर मंथन।
व्याख्या: बाजार-कविता द्वन्द्वसँ निकलए लेल विवेक जरूरी अछि।

प्रश्न 7352. विनीत उत्पलक पाण्डुलिपि लेखकक एहि चर्चा लेल किएक कारण बनल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ओहि पाण्डुलिपिक बहाने लेखक बाजार आ कविता-भाषाक प्रश्न उठबैत छथि।
उत्तर: घ. ओहि पाण्डुलिपिक बहाने लेखक बाजार आ कविता-भाषाक प्रश्न उठबैत छथि।
व्याख्या: भूमिका केवल प्रशंसा नहि, व्यापक साहित्यिक विमर्श बनैत अछि।

खण्ड ७४१ : विदेह-सदेह २ — कविक आत्मोक्ति: प्रकाशन, कवि-दायित्व आ विनीत उत्पल

प्रश्न 7353. लेखक कविता कैँ ककर सवारीपर लोक-यात्रा कहैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. भाषाक सवारीपर।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. भाषाक सवारीपर।
व्याख्या: कविता भाषेक माध्यमे लोक धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 7354. “जेहन सवारी, जेहन सवार तेहन यात्रा”क आशय की अछि?
क. भाषा, कवि आ काव्यबोध यात्रा-स्वरूप निर्धारित करैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. भाषा, कवि आ काव्यबोध यात्रा-स्वरूप निर्धारित करैत अछि।
व्याख्या: लेख कविता-साधनाक साधन आ साधक दूनूकेँ महत्त्व दैत अछि।

प्रश्न 7355. कविक साधनाक प्रक्रियामे लेखक की विकसित होइत मानैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. स्वविवेक आ अनेक आन्तरिक काव्य-तत्त्व।
उत्तर: घ. स्वविवेक आ अनेक आन्तरिक काव्य-तत्त्व।
व्याख्या: कवि निरंतर अभ्याससँ अपन कलात्मक कर्म-कुशलता विकसित करैत अछि।

प्रश्न 7356. हिन्दीक स्थापित कवि सभक प्रकाशन-संकटक उल्लेख किएक अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ब्रांड प्रकाशन, धन, सरकारी पुस्तकालय आ बिक्रीक दबाव देखएबाक लेल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. ब्रांड प्रकाशन, धन, सरकारी पुस्तकालय आ बिक्रीक दबाव देखएबाक लेल।
व्याख्या: लेख बाजारी प्रकाशन-व्यवस्थाक व्यंग्यात्मक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 7357. मैथिली साहित्यक प्रकाशन सम्बन्धी लेखकक कथन की अछि?
क. लेखक-कविकेँ प्रायः अपना अपनी कऽ पुस्तक छपबाबए पड़ैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. लेखक-कविकेँ प्रायः अपना अपनी कऽ पुस्तक छपबाबए पड़ैत अछि।
व्याख्या: मैथिलीक प्रकाशन-संरचना कमजोर देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 7358. यात्रीजीक प्रसंग लेखक किएक याद करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मैथिल लेखकक पोथी-प्रसार-विक्रयक उद्यमक इतिहास देखएबाक लेल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मैथिल लेखकक पोथी-प्रसार-विक्रयक उद्यमक इतिहास देखएबाक लेल।
व्याख्या: व्यक्ति-समर्पण मैथिली साहित्य-प्रसारमे जरूरी रहल अछि।

प्रश्न 7359. विनीत उत्पलक पाण्डुलिपि प्राप्त करि लेखकक पहिल अनुभव की छल?
क. युवक दुस्साहसी बुझएलाह।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. युवक दुस्साहसी बुझएलाह।
व्याख्या: कविताक बाट धरबाक लेल साहस चाही, से लेखक मानैत छथि।

प्रश्न 7360. भूमिका-लेखनक प्रति लेखकक सामान्य रुख की अछि?
क. ई काज हुनक प्राथमिकतासँ बाहर, मुदा मैथिली भविष्य सामने हो तँ स्वागत योग्य।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. ई काज हुनक प्राथमिकतासँ बाहर, मुदा मैथिली भविष्य सामने हो तँ स्वागत योग्य।
व्याख्या: लेखक औपचारिक भूमिकासँ अलग रहितो नव प्रतिभाकेँ स्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 7361. विनीत उत्पलक प्रस्तावना लेखककेँ किएक उपयोगी लगल?
क. ओ कविताक संसार, वर्तमान आ सरोकार बुझबामे सहायक अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. ओ कविताक संसार, वर्तमान आ सरोकार बुझबामे सहायक अछि।
व्याख्या: प्रस्तावना केवल आयुजन्य उच्छ्वास नहि, वचनबद्धता रूपमे पढ़ल गेल।

प्रश्न 7362. लेखक विनीतक कविता के कोन तीन अर्थ-छायासँ घेरल अनुभव करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. कथनक कोटि, तकर पकड़ आ प्रयोगक विधि।
उत्तर: घ. कथनक कोटि, तकर पकड़ आ प्रयोगक विधि।
व्याख्या: लेख अन्तमे ऊर्जावान संवेदनशील कविक पथ प्रशस्त होएबाक आशा व्यक्त करैत अछि।

खण्ड ७४२ : विदेह-सदेह २ — रामभरोस कापडि ‘भ्रमर’: संचारमे समावेशी स्वरूप

प्रश्न 7363. रामभरोस कापडि “भ्रमर”क परिचयमे प्रमुख पद की देल गेल अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. साझा प्रकाशन, ललितपुरक अध्यक्ष।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. साझा प्रकाशन, ललितपुरक अध्यक्ष।
व्याख्या: लेखकक सामाजिक-साहित्यिक हस्तक्षेप संस्थागत अनुभवसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 7364. “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा” लेख ककर पृष्ठभूमिमे अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. नेपालक संचार-साहित्य क्षेत्रमे मधेशी/मैथिल प्रतिनिधित्वक कमी।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. नेपालक संचार-साहित्य क्षेत्रमे मधेशी/मैथिल प्रतिनिधित्वक कमी।
व्याख्या: लेख समावेशिताक नारा आ वास्तविकता बीचक फाँक देखबैत अछि।

प्रश्न 7365. गोरखापत्रक इतिहासमे लेखक कोन सीमा देखैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. नेपाली भाषा आ नेपाली भाषी सभक पृष्ठपोषण मुख्य रहल।
उत्तर: घ. नेपाली भाषा आ नेपाली भाषी सभक पृष्ठपोषण मुख्य रहल।
व्याख्या: संचार इतिहासमे बहुभाषिक समुदायक उपेक्षा लेखकक मुद्दा अछि।

प्रश्न 7366. मधेश आन्दोलनक बाद लेखक कोन प्रकारक परिवर्तन मानैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. आँगुरपर गनएबला परिवर्तनक संकेत।
उत्तर: घ. आँगुरपर गनएबला परिवर्तनक संकेत।
व्याख्या: लेख परिवर्तन स्वीकारैत अछि मुदा ओकर सीमितता देखबैत अछि।

प्रश्न 7367. गोरखापत्रमे मधेशी/मैथिल नि. प्रधान सम्पादकक पदपर पहुँचना किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. सय वर्षसँ अधिक इतिहासमे पहिल बेर एहन जवावदेह पदपर पहुँच।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सय वर्षसँ अधिक इतिहासमे पहिल बेर एहन जवावदेह पदपर पहुँच।
व्याख्या: संचार-नीति तहमे प्रतिनिधित्वक प्रश्न ई प्रसंग उठबैत अछि।

प्रश्न 7368. लेखकक अनुसार नीति-निर्माण तहमे मैथिल वा मधेशीक पहुँच कोना रहल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. लगभग शून्य।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. लगभग शून्य।
व्याख्या: मुख्य समस्या प्रतीकात्मक उपस्थिति नहि, निर्णयकारी पहुँच अछि।

प्रश्न 7369. प्रेस काउन्सिल सम्बन्धी आलोचना की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. मधेशक पत्र-पत्रिकापर पक्षपातपूर्ण आ द्वैध चरित्र देखाओल गेल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मधेशक पत्र-पत्रिकापर पक्षपातपूर्ण आ द्वैध चरित्र देखाओल गेल।
व्याख्या: लेख संचार-संस्थाक संरचनात्मक असमानता चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 7370. सरकारी संचार क्षेत्रपर लेखकक प्रश्न की अछि?
क. सबकर कर-मालपोत लगितो समावेशी अवधारणा किएक नहि अपनाओल गेल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. सबकर कर-मालपोत लगितो समावेशी अवधारणा किएक नहि अपनाओल गेल।
व्याख्या: लेख सार्वजनिक साधनपर सभक अधिकारक तर्क दैत अछि।

प्रश्न 7371. निजी संचार माध्यमक स्थिति लेखक कोना देखैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मधेश, मिथिला आ मैथिली चर्चा कड़ुआ गोली जकाँ बुझायल।
उत्तर: घ. मधेश, मिथिला आ मैथिली चर्चा कड़ुआ गोली जकाँ बुझायल।
व्याख्या: निजी क्षेत्रोमे प्रतिनिधित्व आ रुचिक संकट बताओल गेल।

प्रश्न 7372. लेखकक मूल अपेक्षा की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. संचार आ साहित्य क्षेत्रमे वास्तविक, निर्णयकारी समावेशी स्वरूप।
उत्तर: घ. संचार आ साहित्य क्षेत्रमे वास्तविक, निर्णयकारी समावेशी स्वरूप।
व्याख्या: लेख नारा नहि, कार्यरूपमे समावेशिताक माँग करैत अछि।

खण्ड ७४३ : विदेह-सदेह २ — नेपालक मैथिली गतिविधि, प्रज्ञा आ प्रकाशन

प्रश्न 7373. दुनू देशक मैथिली गतिविधि सम्बन्धी लेखक कोन संकट देखैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सूचना-प्रवाहक संकट।
उत्तर: घ. सूचना-प्रवाहक संकट।
व्याख्या: भारत-नेपाल मैथिली जगत बीच संवाद-अभावक प्रश्न उठल अछि।

प्रश्न 7374. भारतीय क्षेत्रक लेखक सभपर लेखकक आलोचना की अछि?
क. ओ सभ अपना मे सीमित भऽ नेपालक गतिविधिपर नजरि राखब जरूरी नहि बुझैत छथि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. ओ सभ अपना मे सीमित भऽ नेपालक गतिविधिपर नजरि राखब जरूरी नहि बुझैत छथि।
व्याख्या: सीमापार मैथिली चेतनाक कमी सूचना-अपूर्णता बढ़बैत अछि।

प्रश्न 7375. नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक स्थिति कोना बताओल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. विगत चारि वर्षसँ राजनीतिक शिकार, गठन नहि भेने काज रुकल।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. विगत चारि वर्षसँ राजनीतिक शिकार, गठन नहि भेने काज रुकल।
व्याख्या: संस्थागत ठहराव मैथिली परियोजना रोकि रहल अछि।

प्रश्न 7376. “आँगन” पत्रिकाक प्रसंगमे लेखक की दुख व्यक्त करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. भारतीय पत्र-पत्रिकामे चर्चा नहि भेल आ पत्रिका ठमकल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. भारतीय पत्र-पत्रिकामे चर्चा नहि भेल आ पत्रिका ठमकल।
व्याख्या: सीमापार उपेक्षा आ संस्थागत अवरोध दूनू देखाओल गेल।

प्रश्न 7377. प्रज्ञा लोकनिक पद राजनीतिक कार्यकर्तासभ हथिअएबाक प्रसंग ककर आलोचना अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. सांस्कृतिक संस्थाक राजनीतिकरण।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. सांस्कृतिक संस्थाक राजनीतिकरण।
व्याख्या: लेख प्रज्ञाकेँ राजनीति-सँ मुक्त करबाक बात करैत अछि।

प्रश्न 7378. गोरखापत्र मैथिलीमे की दैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. दैनिक एक पृष्ठ।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. दैनिक एक पृष्ठ।
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे उपकार कतेक अछि से देखबाक विषय, मुदा भाषा-उपस्थिति सन्तोषक बात।

प्रश्न 7379. निजी चैनल सभक मैथिली समाचारक शुरुआत लेखक कोना देखैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. माहौल बनि रहल अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. माहौल बनि रहल अछि।
व्याख्या: ई प्रसंग संचार-माध्यममे मैथिली उपस्थितिक सकारात्मक संकेत अछि।

प्रश्न 7380. उपराष्ट्रपतिक हिन्दी शपथ विवादक परिणाम लेखक कोना पढ़ैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. मैथिली प्रति जनमत-वृद्धि, एक उपलब्धि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मैथिली प्रति जनमत-वृद्धि, एक उपलब्धि।
व्याख्या: विवाद सामाजिक-भाषिक चेतना बढ़एबाक प्रसंग बनल।

प्रश्न 7381. संघीय संविधान बाद नेपालमे मैथिलीक सम्भावना लेखक कोना देखैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. नीक, आओर बढ़ल सम्भावना।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. नीक, आओर बढ़ल सम्भावना।
व्याख्या: राजनीतिक संरचना-परिवर्तन भाषिक अधिकारक राह खोलि सकैत अछि।

प्रश्न 7382. मैथिली प्रकाशनक लेल लेखक अन्तमे कोन आवश्यकता कहैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. छपल पुस्तकक प्रचार-प्रसार, समालोचना-समीक्षा आ उदारता।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. छपल पुस्तकक प्रचार-प्रसार, समालोचना-समीक्षा आ उदारता।
व्याख्या: पुस्तक छपल मात्र पर्याप्त नहि, समीक्षा-चर्चा ओकर सामाजिक जीवन बनबैत अछि।

खण्ड ७४४ : विदेह-सदेह २ — साझा प्रकाशनमे विद्यापति आ मैथिली पुस्तक

प्रश्न 7383. रामभरोस कापडि साझा प्रकाशनमे कखन अध्यक्ष नियुक्त भेलाह?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. २०६५ साल पुस २ गते।
उत्तर: घ. २०६५ साल पुस २ गते।
व्याख्या: लेखक अपन संस्थागत अनुभवक तिथि दैत साझा प्रकाशनक कथा शुरू करैत छथि।

प्रश्न 7384. साझा प्रकाशनक मुख्य कार्य की छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. पुस्तक-पत्रिका छपब आ सरकारी विद्यालयक पाठ्यपुस्तक वितरण-विक्रय।
उत्तर: घ. पुस्तक-पत्रिका छपब आ सरकारी विद्यालयक पाठ्यपुस्तक वितरण-विक्रय।
व्याख्या: लेख संस्थाक व्यापक प्रकाशन-प्रशासनिक भूमिका बतबैत अछि।

प्रश्न 7385. साझा प्रकाशनमे ४५ वर्ष बाद “बज्जर केबार” कोना खुजल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. मधेशक मंत्रीक प्रवेश आ समावेशी लोकतंत्रक माहौलसँ।
उत्तर: घ. मधेशक मंत्रीक प्रवेश आ समावेशी लोकतंत्रक माहौलसँ।
व्याख्या: लेख नेतृत्व-परिवर्तनकेँ भाषिक-सांस्कृतिक अवसर मानैत अछि।

प्रश्न 7386. लेखक अपना कोना देखैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. पहिल मधेशी, मैथिली साहित्य-प्रेमी जे एहि गरिमामय पदपर बैसाओल गेल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. पहिल मधेशी, मैथिली साहित्य-प्रेमी जे एहि गरिमामय पदपर बैसाओल गेल।
व्याख्या: व्यक्तिगत नियुक्ति सामूहिक प्रतिनिधित्वक प्रसंग बनल।

प्रश्न 7387. साझा प्रकाशन पहिने कुन भाषामे साहित्यिक पुस्तक छपैत छल?
क. नेपाली भाषामे मात्र।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. नेपाली भाषामे मात्र।
व्याख्या: लेख परिवर्तनक पहिले एकभाषिक नीति स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 7388. लेखक गेलाक बाद कोन निर्णय भेल?
क. नेपाली वाहेकक भाषामे सेहो पुस्तक छापल जाए।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. नेपाली वाहेकक भाषामे सेहो पुस्तक छापल जाए।
व्याख्या: ई निर्णय बहुभाषिक प्रकाशनक द्वार खोलैत अछि।

प्रश्न 7389. सर्वप्रथम कोन सांस्कृतिक प्रकाशन निर्णय कराओल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. विद्यापतिक पोस्टर-चित्र बहार करबाक।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. विद्यापतिक पोस्टर-चित्र बहार करबाक।
व्याख्या: विद्यापति मैथिली सांस्कृतिक प्रतीकक रूपमे साझा प्रकाशनमे प्रवेश करैत छथि।

प्रश्न 7390. विद्यापति चित्र बनबामे कलाकारकेँ कोन कठिनाई भेल?
क. छोट चित्रमे देखाओल पागक गणित बुझब कठिन भेल।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. छोट चित्रमे देखाओल पागक गणित बुझब कठिन भेल।
व्याख्या: मिथिलाक पाग-चिह्न कलात्मक रूपान्तरणमे खास चुनौती बनल।

प्रश्न 7391. साझा प्रकाशनक इतिहासमे पहिल मैथिली पुस्तक कोन कहल गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. “बगियाक गाछ” बालकथा-संग्रह।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. “बगियाक गाछ” बालकथा-संग्रह।
व्याख्या: देवेन्द्र मिश्रक संकलन साझा प्रकाशनमे नेपाली वाहेक पहिल मैथिली पुस्तक कहल गेल।

प्रश्न 7392. “बगियाक गाछ”क महत्त्व की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. साझा प्रकाशनक दरवाजा मैथिली आ आन भाषाक अधिकार लेल खुजल।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. साझा प्रकाशनक दरवाजा मैथिली आ आन भाषाक अधिकार लेल खुजल।
व्याख्या: ई पुस्तक प्रतीकात्मक आरम्भ मात्र नहि, बहुभाषिक अधिकारक संकेत अछि।

खण्ड ७४५ : विदेह-सदेह २ — डा. कल्पना मणिकान्त मिश्र: “मातृभाषा” परिचय

प्रश्न 7393. डा. कल्पना मणिकान्त मिश्रक परिचयमे हुनक मूल पेशा की कहल गेल अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. स्त्री-रोग विशेषज्ञ।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. स्त्री-रोग विशेषज्ञ।
व्याख्या: परिचयमे मेडिकल शिक्षा आ स्त्री-रोग विशेषज्ञ रूपमे हुनक कार्य स्पष्ट अछि।

प्रश्न 7394. डा. कल्पनाक जन्म-गाम वा मूल परिचयमे कोन गामक उल्लेख अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. राटी।
उत्तर: घ. राटी।
व्याख्या: परिचयमे पिता डा. शिव कुमार झा आ गाम राटीक उल्लेख भेटैत अछि।

प्रश्न 7395. डा. कल्पनाक सासुरक रूपमे कोन स्थान कहल गेल अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. गजहारा।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. गजहारा।
व्याख्या: लेखक-परिचयमे गाम राटी आ सासुर गजहाराक सूचना देल अछि।

प्रश्न 7396. लेखिका कतेक बरससँ मुम्बईवासी रहबाक बात कहल गेल अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लगभग ३०-३२ बरससँ।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. लगभग ३०-३२ बरससँ।
व्याख्या: परिचयमे हुनक दीर्घ मुम्बई-निवासक उल्लेख अछि।

प्रश्न 7397. लेख “मातृभाषा”क आरम्भिक भाव की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. मातृभाषा-प्रेम सुनल-पढ़ल बातसँ आगाँ, स्वयं अनुभवक विषय अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मातृभाषा-प्रेम सुनल-पढ़ल बातसँ आगाँ, स्वयं अनुभवक विषय अछि।
व्याख्या: लेखिका कहैत छथि जे मातृभाषाक प्रेम बहुत सुनल-पढ़ल अछि, मुदा अनुभव करबाक अवसर विरल अछि।

प्रश्न 7398. लेखिकाक बम्बई-आगमनक काल-भावना कोना व्यक्त अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. महानगरीक चकाचौंधमे हराएब वा भटकि जाएबाक चिन्ता।
उत्तर: घ. महानगरीक चकाचौंधमे हराएब वा भटकि जाएबाक चिन्ता।
व्याख्या: बम्बईक आरम्भिक जीवनमे अस्थिरता, भय आ सम्भावना सभ संग-संग उपस्थित अछि।

प्रश्न 7399. संजय गाँधी योजनाक प्रसंगमे लेखिका केहन सुविधा पाबि सकलीह?
क. बेरोजगार ग्राजुएट लेल बैंकसँ २०,००० रुपयाक लोन।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. बेरोजगार ग्राजुएट लेल बैंकसँ २०,००० रुपयाक लोन।
व्याख्या: लेखमे बेरोजगार डॉक्टर होएबाक कारण हुनका तुरते लोन भेटबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 7400. लोन भेटलाक बाद सामान्य व्यावसायिक सम्भावना की छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. क्लीनिक वा दवाखाना खोलि भविष्य सुरक्षित करब।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. क्लीनिक वा दवाखाना खोलि भविष्य सुरक्षित करब।
व्याख्या: लेखिका कहैत छथि जे ओहि पाइसँ क्लीनिक, घर वा निवेश सम्भव छल।

प्रश्न 7401. लेखिका ओहि धनसँ निजी सुखक कोन सम्भावना सभ गनौलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गहना बनाब, सोख पूरा करब वा भारत-भ्रमण करब।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. गहना बनाब, सोख पूरा करब वा भारत-भ्रमण करब।
व्याख्या: लेखिका निजी उपभोगक सम्भावना सभ गनौलनि, मुदा ओहि दिस नहि गेलीह।

प्रश्न 7402. “मातृभाषा”क आरम्भमे आर्थिक प्रसंग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. किएक तँ मातृभाषा-सेवा लेल निजी पूँजी आ भविष्यक सुरक्षा दाउपर लगल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. किएक तँ मातृभाषा-सेवा लेल निजी पूँजी आ भविष्यक सुरक्षा दाउपर लगल।
व्याख्या: लेख भाषा-प्रेमकेँ भावुक नारा नहि, जीवन-निर्णय आ जोखिमक रूपमे देखबैत अछि।

खण्ड ७४६ : विदेह-सदेह २ — “विदेह” पत्रिका: भाषा-प्रेम आ आर्थिक जोखिम

प्रश्न 7403. लेखिकाक पतिक नाम कोन रूपमे आयल अछि?

क. डा. मणिकान्त मिश्र।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. डा. मणिकान्त मिश्र।

व्याख्या: लेखमे डा. मणिकान्त मिश्रक मैथिली-जुनून मुख्य प्रेरक शक्ति रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 7404. लोनक धनक सम्बन्धमे डा. मणिकान्त मिश्रक इच्छा की छल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. मैथिली भाषाक पत्रिका निकालब।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. मैथिली भाषाक पत्रिका निकालब।

व्याख्या: क्लीनिक वा निजी निवेशक बदला ओ पत्रिका निकालबाक इच्छा व्यक्त कएलनि।

प्रश्न 7405. दूनू गोटे मिलि कोन नामक मैथिली पत्रिका शुरू कएलनि?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. “विदेह”।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. “विदेह”।

व्याख्या: लेखिका कहैत छथि जे ओ सभ “विदेह” नामक मैथिली पत्रिकाक शुरुआत केलनि।

प्रश्न 7406. पत्रिका शुरू भेलाक बाद सभसँ पैघ समस्या की ठाढ़ भेल?

क. के कीनत आ के पढ़त।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: क. के कीनत आ के पढ़त।

व्याख्या: छपाइ मात्र समस्या नहि, पाठक आ क्रेता भेटब मुख्य संकट छल।

प्रश्न 7407. घरक पूँजी लगा कतेक बरख पत्रिका चलाओल गेल?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. लगभग दू बरख।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. लगभग दू बरख।

व्याख्या: लेखिका कहैत छथि जे कोनाहु घरक पूँजी लगा दू बरख पत्रिका चलल।

प्रश्न 7408. “विदेह” पत्रिका बन्द करए पड़बाक कारण की छल?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. दूनू गोटे डाक्टरी, घर, अस्पताल आ पारिवारिक झंझटमे व्यस्त छलाह।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. दूनू गोटे डाक्टरी, घर, अस्पताल आ पारिवारिक झंझटमे व्यस्त छलाह।

व्याख्या: भाषा-सेवा संग जीविका आ पारिवारिक दायित्वक दबाव बढ़ल।

प्रश्न 7409. बम्बईमे नव-नव रहबाक प्रसंग भाषाक निर्णयकेँ कोना गाढ़ बनबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. नव महानगरीय संघर्षक बीच मैथिली पत्रिका निकालब असाधारण साहस छल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. नव महानगरीय संघर्षक बीच मैथिली पत्रिका निकालब असाधारण साहस छल।
व्याख्या: लेखिका एहि काजकेँ साधारण लोकक बसक नहि मानैत छथि।

प्रश्न 7410. पत्रिका प्रसंगमे “दुस्साहस” शब्दक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. सुरक्षित निजी लाभ छोड़ि मातृभाषाक लेल कठिन जोखिम उठाएब।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. सुरक्षित निजी लाभ छोड़ि मातृभाषाक लेल कठिन जोखिम उठाएब।
व्याख्या: लेखमे आर्थिक-सामाजिक अनिश्चितताक बीच भाषा-सेवा केन्द्रीय अछि।

प्रश्न 7411. “विदेह” पत्रिका प्रसंग मातृभाषा-प्रेमक कोन रूप देखबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. भाषा लेल संस्थागत, मुद्रित आ सार्वजनिक मंच बनएबाक प्रयास।
उत्तर: घ. भाषा लेल संस्थागत, मुद्रित आ सार्वजनिक मंच बनएबाक प्रयास।
व्याख्या: प्रेम केवल बोलब नहि, पत्रिका-सृजनक ठोस प्रयत्न बनल।

प्रश्न 7412. लेखक-दम्पतीक निर्णयमे निजी भविष्य आ मातृभाषाक सम्बन्ध कोना बनैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. निजी भविष्यक साधन मातृभाषाक सार्वजनिक सेवामे लगा देल गेल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. निजी भविष्यक साधन मातृभाषाक सार्वजनिक सेवामे लगा देल गेल।
व्याख्या: एहि कारण प्रसंग त्याग, जोखिम आ भाषिक आस्था तीनूकेँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ७४७ : विदेह-सदेह २ — डा. मणिकान्त मिश्र: मैथिली फिल्म आ जुनूनी समर्पण

प्रश्न 7413. लेखिका डा. मणिकान्त मिश्रक मैथिली-प्रेमकेँ कोन शब्दसँ व्यक्त करैत छथि?
क. जुनूनी लगाव।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. जुनूनी लगाव।
व्याख्या: लेखमे कहल गेल जे मैथिलीक प्रति हुनका जुनूनी लगाव छलन्हि।

प्रश्न 7414. बम्बईक जीवनक कोन पक्ष हुनक उत्साह घटा नहि सकल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. आपाधापी आ स्वास्थ्यक उतार-चढ़ाव।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. आपाधापी आ स्वास्थ्यक उतार-चढ़ाव।
व्याख्या: महानगरीय भागदौड़ आ स्वास्थ्य-संकट रहितहुँ भाषा-प्रेम कम नहि भेल।

प्रश्न 7415. बीस-बाईस बरखक बाद डा. मणिकान्त मिश्र कोन मैथिली फिल्म बनौलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “आउ पिया हमर नगरी”।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. “आउ पिया हमर नगरी”।
व्याख्या: लेखमे फिल्मक नाम स्पष्ट रूपेँ आयल अछि।

प्रश्न 7416. फिल्म बनएबाक लेल डा. मणिकान्त मिश्र की लगा देलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. सभटा पूँजी, शरीर आ समांग।
उत्तर: घ. सभटा पूँजी, शरीर आ समांग।
व्याख्या: लेखिका फिल्म निर्माणकेँ सम्पूर्ण समर्पणक उदाहरण बनबैत छथि।

प्रश्न 7417. “आउ पिया हमर नगरी”क सम्बन्धमे लेखिकाक मूल्यांकन की अछि?
क. फिल्म बड़ सुन्दर बनल।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. फिल्म बड़ सुन्दर बनल।
व्याख्या: लेखिका पाठक/दर्शककेँ फिल्म अवश्य देखबाक कहैत छथि।

प्रश्न 7418. फिल्म निर्माणक अनुभव लेखिका विस्तारसँ किएक नहि बतबैत छथि?
क. ओ कष्ट आ अनुभवक विवरण दोसर अवसर लेल टारि दैत छथि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. ओ कष्ट आ अनुभवक विवरण दोसर अवसर लेल टारि दैत छथि।
व्याख्या: लेखमे “आर कखनो” कहि प्रसंगक पीड़ा-भार संकेतित अछि।

प्रश्न 7419. पत्रिका आ फिल्मक बीच सम्बन्ध कोना अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दूनू मातृभाषा-सेवाक अलग-अलग माध्यम अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. दूनू मातृभाषा-सेवाक अलग-अलग माध्यम अछि।
व्याख्या: पहिने पत्रिका, बादमे फिल्म; दूनू मैथिली सार्वजनिकता बढ़एबाक साधन बनल।

प्रश्न 7420. डा. मणिकान्त मिश्रक काजक मूल विशेषता की देखाइत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. भाषाक लेल निजी संसाधन आ श्रमक चरम अर्पण।
उत्तर: घ. भाषाक लेल निजी संसाधन आ श्रमक चरम अर्पण।
व्याख्या: लेखिका हुनका साधारण भाषा-प्रेमी नहि, पूर्ण समर्पित कर्मयोगी रूपमे देखैत छथि।

प्रश्न 7421. फिल्म-प्रसंगमे “माँ मैथिली”क भाव किएक गाढ़ अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. फिल्म भाषा-माताक सेवामे पुत्रक अर्पण रूपेँ देखाओल गेल।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. फिल्म भाषा-माताक सेवामे पुत्रक अर्पण रूपेँ देखाओल गेल।
व्याख्या: लेख मैथिलीकेँ भावनात्मक मातृरूप दैत अछि।

प्रश्न 7422. “मातृभाषा” लेखमे कला-माध्यमक भूमिका की बनैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. पत्रिका आ फिल्म मातृभाषाक जीवित प्रचारक माध्यम बनैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. पत्रिका आ फिल्म मातृभाषाक जीवित प्रचारक माध्यम बनैत अछि।
व्याख्या: भाषा-सेवा लेखन, प्रकाशन आ चलचित्र—सभ माध्यमे संभव देखाओल गेल।

खण्ड ७४८ : विदेह-सदेह २ — “माँ मैथिली”क पीड़ा आ समर्पणक प्रश्न

प्रश्न 7423. लेखिकाक अनुसार एहि सब घटनाक दुःखद परिणाम की भेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. माँ मैथिली अपन लायक पुत्रसँ बिछुड़ि गेली।
उत्तर: घ. माँ मैथिली अपन लायक पुत्रसँ बिछुड़ि गेली।
व्याख्या: लेखिका डा. मणिकान्त मिश्रक वियोगकेँ माँ-मैथिलीक क्षति मानैत छथि।

प्रश्न 7424. “माँ मैथिली” रूपक कोन अर्थ दैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मैथिली भाषा मातृ-रूपमे पूज्य, पीड़ित आ अपन संतानक प्रतीक्षारत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मैथिली भाषा मातृ-रूपमे पूज्य, पीड़ित आ अपन संतानक प्रतीक्षारत अछि।
व्याख्या: लेख मातृभाषाकेँ जीवित भाव-सत्ता बनबैत अछि।

प्रश्न 7425. लेखिकाक अन्तिम प्रश्नक केन्द्र की अछि?
क. की कोनो भक्त-पुत्र अपन सभ किछु माँ-मैथिली लेल समर्पित करत?
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. की कोनो भक्त-पुत्र अपन सभ किछु माँ-मैथिली लेल समर्पित करत?
व्याख्या: लेख प्रश्नक रूपमे नव पीढ़ीकेँ चुनौती दैत अछि।

प्रश्न 7426. “लायक पुत्र”क अर्थ एहि लेखमे की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. जे मातृभाषाक हृदय-पीड़ा अनुभव कऽ काजमे उतरए।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. जे मातृभाषाक हृदय-पीड़ा अनुभव कऽ काजमे उतरए।
व्याख्या: भाषा-प्रेम भावुकता मात्र नहि, त्यागमय कर्मक अपेक्षा करैत अछि।

प्रश्न 7427. लेखिका मातृभाषा-भक्ति आ निजी सुविधा बीच कोन विरोध देखबैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. भाषा-भक्ति निजी सुविधा, पूँजी आ समयक त्याग माँगि सकैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. भाषा-भक्ति निजी सुविधा, पूँजी आ समयक त्याग माँगि सकैत अछि।
व्याख्या: पत्रिका आ फिल्म दुनू प्रसंग एहि विरोधकेँ मूर्त करैत अछि।

प्रश्न 7428. “मातृभाषा” लेख ककर स्मरणक रूपमे सेहो पढ़ल जा सकैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. डा. मणिकान्त मिश्रक भाषा-समर्पणक स्मरण।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. डा. मणिकान्त मिश्रक भाषा-समर्पणक स्मरण।
व्याख्या: लेख निजी संस्मरणसँ आगाँ मातृभाषा-सेवकक श्रद्धा-आख्यान बनैत अछि।

प्रश्न 7429. लेखक-स्वरमे पछतावा नहि, कोन भाव प्रमुख अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. पीड़ा, गर्व आ प्रश्नात्मक आह्वान।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. पीड़ा, गर्व आ प्रश्नात्मक आह्वान।
व्याख्या: लेखिका हानि मानैत छथि मुदा समर्पणक गरिमा सेहो स्थापित करैत छथि।

प्रश्न 7430. मातृभाषाक “हृदयक पीड़ा” कहबासँ की संकेत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. भाषा उपेक्षा, साधन-अभाव आ सेवक-वियोग सँ आहत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. भाषा उपेक्षा, साधन-अभाव आ सेवक-वियोग सँ आहत अछि।
व्याख्या: रूपक मैथिली भाषाक सांस्कृतिक दुखकेँ मानवीय बनबैत अछि।

प्रश्न 7431. लेखिका ककरा सम्बोधित करैत प्रश्न उठबैत छथि?
क. सम्भावित मातृभाषा-भक्त लोकसभकेँ।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. सम्भावित मातृभाषा-भक्त लोकसभकेँ।
व्याख्या: अन्तिम वाक्य पाठकसमाजसँ प्रत्यक्ष नैतिक उत्तर माँगैत अछि।

प्रश्न 7432. “मातृभाषा”क समग्र संदेश की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. मातृभाषा-प्रेमक सच्चाइ त्याग, कर्म आ जीवन-समर्पणमे प्रकट होइत अछि।
उत्तर: घ. मातृभाषा-प्रेमक सच्चाइ त्याग, कर्म आ जीवन-समर्पणमे प्रकट होइत अछि।
व्याख्या: लेख निजी जीवनक उदाहरणसँ भाषिक निष्ठाक उच्च कसौटी प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड ७४९ : विदेह-सदेह २ — भीमनाथ झा: “मखानक खानि ई मिथिला” आरम्भ

प्रश्न 7433. “मखानक खानि ई मिथिला”क लेखक के छथि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. भीमनाथ झा।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ग. भीमनाथ झा।

व्याख्या: शीर्षकमे लेखकक नाम भीमनाथ झा देल गेल अछि।

प्रश्न 7434. लेखक मिथिलाक लोक आ भाषाक गुण कोना आरम्भमे कहैत छथि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. लोक सरस आ मैथिली भाषा मृदुल।

उत्तर: घ. लोक सरस आ मैथिली भाषा मृदुल।

व्याख्या: लेख मिथिलाक सरस लोक, मृदुल भाषा आ उर्वर भूमिसँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 7435. मिथिलाक उर्वरता आ हरियरपनक मूल कारण लेखक की मानैत छथि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. जलाशय, नदी, पोखरि आ डबराक अपारता।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. जलाशय, नदी, पोखरि आ डबराक अपारता।

व्याख्या: लेख जल-समृद्धिकेँ मिथिलाक स्वभाव आ उपजाउपनक आधार मानैत अछि।

प्रश्न 7436. मिथिलामे समुद्र नहि हेबाक बात लेखक कोन सांकेतिक अर्थमे कहैत छथि?

क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. लोकक स्वभाव नोनछराइन नहि, मधुर जलक तरंगसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. लोकक स्वभाव नोनछराइन नहि, मधुर जलक तरंगसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: लेख जल-रूपक द्वारा लोक-स्वभावक मृदुता समझबैत अछि।

प्रश्न 7437. गंगा बहबाक प्रसंग समाजक कोन गुणसँ जोड़ल गेल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. पवित्रता।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ख. पवित्रता।

व्याख्या: लेखक गंगा, मधुर जल आ लोक-स्वभाव बीच प्रतीकात्मक सम्बन्ध बनबैत छथि।

प्रश्न 7438. “लोकक आँखियोमे पानि” कथनक भावार्थ की अछि?

क. संवेदनशीलता आ लाज-करुणाक उपस्थिति।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. संवेदनशीलता आ लाज-करुणाक उपस्थिति।

व्याख्या: जल-रूपक सामाजिक संवेदनाक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 7439. कवीश्वर चन्दा झा मिथिलाकेँ कोन रूपमे कहने छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. नदी-मातृक क्षेत्र।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. नदी-मातृक क्षेत्र।
व्याख्या: लेखक चन्दा झाक पद उद्धृत कऽ मिथिलाक नदी-प्रधान पहचान देखबैत छथि।

प्रश्न 7440. चन्दा झाक पदमे मिथिलाक कोन व्यापक प्रतिष्ठा व्यक्त अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. विद्या-उदधि आ संसार-प्रसिद्ध भूमि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. विद्या-उदधि आ संसार-प्रसिद्ध भूमि।
व्याख्या: पद मिथिलाक अन्न, व्यवहार, विद्या आ प्रसिद्धि सभकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7441. लेखक पोखरि सम्बन्धी मिथिलाक कोन विशेषता बतबैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. लगभग प्रत्येक गाममे छोट-पैघ अनेक पोखरि।
उत्तर: घ. लगभग प्रत्येक गाममे छोट-पैघ अनेक पोखरि।
व्याख्या: मिथिलाक जल-संरचना लेखमे लोक-जीवनक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 7442. “मखानक खानि” शीर्षकक आरम्भिक तर्क की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. जलप्रधान मिथिला मखानक स्वाभाविक भूमि अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. जलप्रधान मिथिला मखानक स्वाभाविक भूमि अछि।
व्याख्या: नदी-पोखरिक वर्णन बाद मखान मिथिलाक जल-फसल रूपमे सामने अबैत अछि।

खण्ड ७५० : विदेह-सदेह २ — मखान, कोजगरा आ मिथिलाक वैशिष्ट्य

प्रश्न 7443. लेखक जलक सर्वप्रधान फसिल ककरा कहैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मखान।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मखान।
व्याख्या: मिथिलाक जलकरक प्रसंगमे मखान सर्वप्रधान फसल कहल गेल।

प्रश्न 7444. मखान शब्द ध्यानमे अबिते लेखक कोन अनुभव कहैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मिथिलाक अनुपम व्यक्तित्व साकार भऽ उठैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाक अनुपम व्यक्तित्व साकार भऽ उठैत अछि।
व्याख्या: मखान मिथिलाक अद्वितीय सांस्कृतिक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 7445. मखानक जोड़क सम्बन्धमे लेखकक कथन की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. मखान अद्वितीय अछि, ओकर जोड़ नहि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मखान अद्वितीय अछि, ओकर जोड़ नहि।
व्याख्या: लेख मखानकेँ मिथिलाक विशेषतम पहचान बनबैत अछि।

प्रश्न 7446. देवतासभ मखानक लालसा कखन करैत छथि, एहन कल्पना लेखक करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. जखन मखानक तस्मै वा पाग कएल फोँका लेबाक मन ललचाए।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. जखन मखानक तस्मै वा पाग कएल फोँका लेबाक मन ललचाए।
व्याख्या: लेखक अतिशयोक्ति द्वारा मखानक स्वाद आ गरिमा बढ़बैत छथि।

प्रश्न 7447. कोजगरा पाबनिक स्वरूप लेखक कोना कहैत छथि?
क. उल्लास, उमंग आ लक्ष्मी-आराधनाक पाबनि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. उल्लास, उमंग आ लक्ष्मी-आराधनाक पाबनि।
व्याख्या: कोजगरा मिथिला आ मखानक संस्कारगत सम्बन्धक केन्द्र बनैत अछि।

प्रश्न 7448. कोजगरामे कोन प्रथा विशेष रूपेँ मिथिलाक कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. मखान परसबाक प्रथा।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मखान परसबाक प्रथा।
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे कोजगरामे मखान परसब मिथिलेमे अछि।

प्रश्न 7449. मखान मिथिलाक खास वैशिष्ट्य किएक बनि गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. किएक तँ जल-संस्कृति, पाबनि आ साहित्य सभमे ओकर प्रवेश अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. किएक तँ जल-संस्कृति, पाबनि आ साहित्य सभमे ओकर प्रवेश अछि।
व्याख्या: लेख मखानकेँ कृषि, रस, संस्कार आ साहित्यक सेतु बनबैत अछि।

प्रश्न 7450. साहित्यिक रचनामे मखान शब्द आबिते लेखक कोन गुण देखैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. रचना ललितगर, कोमल, निर्मल आ सुअदगर भऽ जाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. रचना ललितगर, कोमल, निर्मल आ सुअदगर भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: मखान शब्द साहित्यिक माधुर्यक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 7451. मखानक सांस्कृतिक यात्रा कोना देखाओल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. जल-फसलसँ पाबनि, प्रसाद, कविता आ मुहाबरा धरि।
उत्तर: घ. जल-फसलसँ पाबनि, प्रसाद, कविता आ मुहाबरा धरि।
व्याख्या: लेख वस्तुकेँ बहुस्तरीय सांस्कृतिक प्रतीक बनबैत अछि।

प्रश्न 7452. “मखानक खानि”मे मखानक चर्चा केवल खाद्य-वस्तु नहि किएक अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ओ मिथिला-जीवनक रस, पवित्रता आ सामाजिक स्मृतिक प्रतीक अछि।
उत्तर: घ. ओ मिथिला-जीवनक रस, पवित्रता आ सामाजिक स्मृतिक प्रतीक अछि।
व्याख्या: लेखक मखानक माध्यमे समूचा मिथिला-संस्कार देखबैत छथि।

खण्ड ७५१ : विदेह-सदेह २ — सीताराम झा आ मखानक साहित्यिक रूपक

प्रश्न 7453. कविवर सीताराम झा राम-यशक प्रसार बुझएबाक लेल कोन खाद्य-रूपक लैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. दही आ मखान।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. दही आ मखान।
व्याख्या: राम-यशक निर्मलता आ व्यापकता देखएबा लेल दही-मखानक उपमा देल गेल।

प्रश्न 7454. “आश्विनीक चान”क संग “दही ओ मखान” कोन गुण सूचित करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. निर्मलता, शीतलता आ उज्ज्वल माधुर्य।
उत्तर: घ. निर्मलता, शीतलता आ उज्ज्वल माधुर्य।
व्याख्या: उपमा राम-यशक प्रकाश आ मखानक कोमलता जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7455. सीताराम झा दोसर प्रसंगमे मखानकेँ कोन पूजाक नैवेद्य रूपमे लेने छथि?
क. लक्ष्मी-पूजा।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. लक्ष्मी-पूजा।
व्याख्या: मखान लक्ष्मी-पद पर अर्पित मधुर नैवेद्य रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 7456. लक्ष्मी-पूजा प्रसंगमे किसानक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मखानक प्रसाद किसानक भाग्य आ श्रमसँ जुड़ल अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. मखानक प्रसाद किसानक भाग्य आ श्रमसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: नैवेद्य धार्मिक अछि, मुदा ओकर पाछू जल-खेती आ किसानक श्रम अछि।

प्रश्न 7457. सीताराम झाक उदाहरण सँ मखानक कोन सांस्कृतिक दर्जा सिद्ध होइत अछि?
क. मखान पवित्र उपमा आ पूजा-द्रव्य दुनू अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मखान पवित्र उपमा आ पूजा-द्रव्य दुनू अछि।
व्याख्या: लेख साहित्य आ धर्म दुनू क्षेत्रमे मखानक गरिमा देखबैत अछि।

प्रश्न 7458. राम-यश आ मखानक सम्बन्ध लेखकक दृष्टिमे किएक सुन्दर अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. दूनू निर्मल, कोमल आ व्यापक प्रभावक बिम्ब बनैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. दूनू निर्मल, कोमल आ व्यापक प्रभावक बिम्ब बनैत अछि।
व्याख्या: मखान उपमा अमूर्त यशकेँ इन्द्रियगम्य बना दैत अछि।

प्रश्न 7459. मखानक साहित्यिक प्रयोग रचनाक स्वाद कोना बढ़बैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. स्थानीय वस्तु द्वारा भावकेँ अपनत्व आ माधुर्य दैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. स्थानीय वस्तु द्वारा भावकेँ अपनत्व आ माधुर्य दैत अछि।
व्याख्या: मिथिलाक पाठक लेल मखान घरेलू आ पावन दुनू संकेत अछि।

प्रश्न 7460. सीताराम झाक उद्धरणक बाद लेखक तीन कविक चर्चा किएक करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. मखानक साहित्यिक परम्परा व्यापक अछि, से देखएबाक लेल।
उत्तर: घ. मखानक साहित्यिक परम्परा व्यापक अछि, से देखएबाक लेल।
व्याख्या: लेख उदाहरण सभक क्रमसँ मखानक काव्य-उपस्थिति सिद्ध करैत अछि।

प्रश्न 7461. मखानक प्रसादात्मक पक्ष केहन सामाजिक भाव जगबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. लक्ष्मी-आराधना, अन्न-समृद्धि आ किसान-धन्यता।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. लक्ष्मी-आराधना, अन्न-समृद्धि आ किसान-धन्यता।
व्याख्या: नैवेद्यक रूपमे मखान खेत, जल आ पूजा सभकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7462. सीताराम झा प्रसंगक मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. मखान मिथिलाक साहित्यिक उपमा आ धार्मिक अर्पण दुनू रूपमे प्रतिष्ठित अछि।
उत्तर: घ. मखान मिथिलाक साहित्यिक उपमा आ धार्मिक अर्पण दुनू रूपमे प्रतिष्ठित अछि।
व्याख्या: उदाहरण मखानक सौंदर्य, पावनता आ स्थानीयता एक संग स्थापित करैत अछि।

खण्ड ७५२ : विदेह-सदेह २ — मधुपक “कोजगराक मखान”: उत्सव आ वर्ग-वैषम्य

प्रश्न 7463. लेखक मखान-उल्लेखक तीन कविमे पहिल ककरा रखैत छथि?

क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

ख. कविचूड़ामणि मधुप।

ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. कविचूड़ामणि मधुप।

व्याख्या: मधुपक “कोजगराक मखान” अविस्मरणीय कविता रूपमे चिन्हित अछि।

प्रश्न 7464. मधुपक “कोजगराक मखान”क मूल विषय की कहल गेल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. उच्च वर्ग द्वारा दलितपर कएल गेल अत्याचार।

ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तर: ख. उच्च वर्ग द्वारा दलितपर कएल गेल अत्याचार।

व्याख्या: कविता मखानक उत्सव-संस्कृतिमे वर्ग-वैषम्य उघारैत अछि।

प्रश्न 7465. लेखक मधुपकेँ कोन रसक महान कवि कहैत छथि?

क. करुण रस।

ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

उत्तर: क. करुण रस।

व्याख्या: एक फोँका मखानसँ करुणाक निर्झरिणी बहा देबाक बात लेखक कहैत छथि।

प्रश्न 7466. “कोजगराक मखान”मे पहिने कोन वातावरण देखाओल गेल?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. आबालवृद्ध जुटल, उत्सवक जीवन्त भीड़।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. आबालवृद्ध जुटल, उत्सवक जीवन्त भीड़।

व्याख्या: उत्सवक उमंग बादमे करुण प्रसंगकेँ आओर तीक्ष्ण बनबैत अछि।

प्रश्न 7467. कवितामे “कहुँ दू फोँका, कहुँ एक, कतहु नहि सेहो” ककर संकेत अछि?

क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ख. मखान-वितरणमे असमानता आ महँगाईक विधान।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. मखान-वितरणमे असमानता आ महँगाईक विधान।

व्याख्या: उत्सवक बीच असमान वितरणक पीड़ा देखल जाइत अछि।

प्रश्न 7468. एक अवांछित छौँड़ा भीड़मे सन्हिया गेलाक बाद की भेल?

क. चीन्हि गेलापर छूपिटा देल गेल।

ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. चीन्हि गेलापर छूपिटा देल गेल।

व्याख्या: कविता उत्सवमे सामाजिक बहिष्कारक हिंस्र रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 7469. कविक करुण नजरि ककरा देखैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मखान लेल आएल, मुदा एको फाँका नहि पाबि सकल बालक/व्यक्ति।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मखान लेल आएल, मुदा एको फाँका नहि पाबि सकल बालक/व्यक्ति।
व्याख्या: मखानक छोट फाँका वर्ग-व्यवस्थाक कठोरता उजागर करैत अछि।

प्रश्न 7470. “सौंसे शरीरमे छैक ककरो कुकृत्य-निर्मित फाँका”क आशय की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. शरीरपर अत्याचारक दाग सामाजिक अपराधक निशान अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. शरीरपर अत्याचारक दाग सामाजिक अपराधक निशान अछि।
व्याख्या: फाँका शब्द मखानक फाँका आ शरीरक घाव दूनू अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 7471. मधुपक कविता मखानकेँ केवल स्वाद-वस्तु नहि किएक छोड़ैत?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ओकरा सामाजिक करुणा आ वर्ग-आलोचनाक प्रतीक बनबैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. ओकरा सामाजिक करुणा आ वर्ग-आलोचनाक प्रतीक बनबैत अछि।
व्याख्या: मखानक फाँका अभाव, अपमान आ अन्यायक संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 7472. “कोजगराक मखान”क साहित्यिक महत्त्व की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उत्सवक पृष्ठभूमिमे समाजक असमानता तीव्र करुणामे व्यक्त करब।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. उत्सवक पृष्ठभूमिमे समाजक असमानता तीव्र करुणामे व्यक्त करब।
व्याख्या: लेखक एहि कविताकेँ मखानक सर्वाधिक मार्मिक साहित्यिक प्रयोग मानैत छथि।

खण्ड ७५३ : विदेह-सदेह २ — “कोजगराक मखान”मे करुणाक तीक्ष्णता

प्रश्न 7473. मधुपक कविता मे करुणा ककर माध्यमे तीक्ष्ण बनैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. एक फाँका मखानक अभावसँ।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. एक फाँका मखानक अभावसँ।
व्याख्या: छोट वस्तुक न भेटब सामाजिक अपमानक विशालता खोलैत अछि।

प्रश्न 7474. उत्सवमे आबालवृद्ध जुटबाक चित्र किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. सामूहिक उल्लासक बीच बहिष्कृतक पीड़ा आर स्पष्ट होइत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. सामूहिक उल्लासक बीच बहिष्कृतक पीड़ा आर स्पष्ट होइत अछि।
व्याख्या: भीड़क आनन्द आ एक व्यक्ति/बालकक वंचना बीच विरोध कविता तीक्ष्ण करैत अछि।

प्रश्न 7475. “अपमान-मान नहि गुनि बहि गेलहुँ” भाव की सूचित करैत अछि?
क. उत्सवक भीड़मे व्यक्ति अपन मान-अपमान बिसरि बहि जाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. उत्सवक भीड़मे व्यक्ति अपन मान-अपमान बिसरि बहि जाइत अछि।
व्याख्या: मखानक रात्रि सामूहिक आकर्षणक बिम्ब अछि।

प्रश्न 7476. कवितामे मखान पाबय लेल आएल पात्रक करुणता किएक बढ़ैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. किएक तँ ओ आएल ताहि लेल, मुदा फाँका तक नहि पाबि सकल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. किएक तँ ओ आएल ताहि लेल, मुदा फाँका तक नहि पाबि सकल।
व्याख्या: लक्ष्यक निकट रहितहुँ वंचित रहि जाएब करुण भाव जगबैत अछि।

प्रश्न 7477. “गोविन्द त्राहि” उद्गारक प्रभाव की अछि?
क. अन्याय देखि कविक करुण हृदय आकुल भऽ उठैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. अन्याय देखि कविक करुण हृदय आकुल भऽ उठैत अछि।
व्याख्या: धार्मिक पुकार सामाजिक पीड़ाक नैतिक स्वर बनैत अछि।

प्रश्न 7478. मधुपक कविता उच्च वर्गक कृत्यपर कोन दृष्टि रखैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. उघारि आलोचनात्मक दृष्टि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. उघारि आलोचनात्मक दृष्टि।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे कविता वर्ग-वैषम्य उघारिकए राखि दैत अछि।

प्रश्न 7479. मखानक फाँका एहि कवितामे दोहरा अर्थ कोना पाबैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. भोजनक फाँका आ हिंसा/अपमानक दाग दुनू।
उत्तर: घ. भोजनक फाँका आ हिंसा/अपमानक दाग दुनू।
व्याख्या: शब्द-योजना करुणा आ सामाजिक व्यंग्य दुनू बनबैत अछि।

प्रश्न 7480. कोजगरा जकाँ उल्लासक पाबनिमे एहन प्रसंगक उपयोग किएक प्रभावी अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. उल्लास आ वंचना बीचक विरोध पाठककेँ झकझोरैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. उल्लास आ वंचना बीचक विरोध पाठककेँ झकझोरैत अछि।
व्याख्या: उत्सवक प्रकाशमे समाजक अन्हार अधिक स्पष्ट होइत अछि।

प्रश्न 7481. लेखक मधुपक करुणा-शक्ति कोना माने छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. एक छोट प्रसंगसँ करुणाक निर्झरिणी बहा देबाक क्षमता।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. एक छोट प्रसंगसँ करुणाक निर्झरिणी बहा देबाक क्षमता।
व्याख्या: मधुप साधारण वस्तुकेँ गहन मानवीय अर्थ दैत छथि।

प्रश्न 7482. “कोजगराक मखान” भागक मुख्य सांस्कृतिक सीख की अछि?
क. उत्सव तभी सार्थक जखन समाजक वंचित लोक सेहो सम्मान पाबए।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. उत्सव तभी सार्थक जखन समाजक वंचित लोक सेहो सम्मान पाबए।
व्याख्या: मखानक बहाना सामाजिक न्यायक प्रश्न उठल अछि।

खण्ड ७५४ : विदेह-सदेह २ — मंत्रेश्वर झा: “पान एलैए मखान एलैए”

प्रश्न 7483. मखानक सर्वाधिक बखान लेखक कोन विधामे बतबैत छथि?
क. गीतकाव्य।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. गीतकाव्य।
व्याख्या: करुण प्रसंगक बाद लेखक उल्लासमय गीतकाव्यमे मखानक बखानक चर्चा करैत छथि।

प्रश्न 7484. मंत्रेश्वर झाक गीतपोथीक नाम की कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. “पान एलैए मखान एलैए”।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. “पान एलैए मखान एलैए”।
व्याख्या: गीतपोथीक नामहि हुनक मखान-प्रेमक प्रमाण मानल गेल।

प्रश्न 7485. “पान एलैए मखान एलैए” कोन अवसरक लोक-उल्लासक संकेत करैत अछि?
क. धीया/बेटीक बियाहक सामान आएबाक अवसर।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. धीया/बेटीक बियाहक सामान आएबाक अवसर।
व्याख्या: गीतमे टोल-पड़ोस, समाङ आ विवाहक तैयारीक उत्साह अछि।

प्रश्न 7486. गीतमे बड़की पिसिया की करैत छथि?
क. कुम्हरौड़ी अचार बनबैत बैसल छथि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. कुम्हरौड़ी अचार बनबैत बैसल छथि।
व्याख्या: गृहस्थ तैयारीक घरेलू दृश्य गीतमे आयल अछि।

प्रश्न 7487. बुढ़बा काका दरबज्जापर की करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. पान चिबबैत ओङठल छथि।
उत्तर: घ. पान चिबबैत ओङठल छथि।
व्याख्या: गीत दरबज्जा, पान, घर-परिवार आ विवाहक वातावरण बनबैत अछि।

प्रश्न 7488. “लछमन एलैए कि राम एलैए” पंक्तिक प्रभाव की अछि?
क. आगन्तुकक आगमनकेँ पौराणिक मंगल-छविसँ जोड़ैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. आगन्तुकक आगमनकेँ पौराणिक मंगल-छविसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: गीत लोक-उत्सवमे राम-लछमनक शुभ संकेत लैत अछि।

प्रश्न 7489. “टोल-पड़ोसक घर-घर के समाङ” कथन की देखबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. विवाह व्यक्तिगत नहि, सामुदायिक घटना अछि।
उत्तर: घ. विवाह व्यक्तिगत नहि, सामुदायिक घटना अछि।
व्याख्या: मिथिलाक विवाह-समाजक सामूहिकता गीतमे झलकैत अछि।

प्रश्न 7490. गीतमे पान आ मखान एक संग किएक अर्थपूर्ण अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. दूनू मिथिलाक आतिथ्य, मंगल आ स्वादक प्रतीक अछि।
उत्तर: घ. दूनू मिथिलाक आतिथ्य, मंगल आ स्वादक प्रतीक अछि।
व्याख्या: शीर्षक मिथिलाक पहचानक जुड़वाँ प्रतीक प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 7491. मंत्रेश्वर झा प्रसंग मखानक कोन पक्ष उभारैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. उल्लास, विवाह-सामग्री आ सामाजिक संगति।
उत्तर: घ. उल्लास, विवाह-सामग्री आ सामाजिक संगति।
व्याख्या: मधुपक करुणा बाद ई भाग मखानक उत्सवी रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 7492. “पान एलैए मखान एलैए” मखान-चर्चामे किएक आवश्यक उदाहरण अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई मखानकेँ जन-जीवनक गीतात्मक उत्सवमे प्रतिष्ठित करैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. ई मखानकेँ जन-जीवनक गीतात्मक उत्सवमे प्रतिष्ठित करैत अछि।
व्याख्या: गीतपोथीक नाम आ पंक्ति दुनू मखानक लोकप्रेम प्रमाणित करैत अछि।

खण्ड ७५५ : विदेह-सदेह २ — गोपेश आ “मखानक पात”क व्यंग्य

प्रश्न 7493. मखान-उल्लेखक तेसर कवि रूपमे लेखक ककरा चिन्हैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. गोपालजी झा “गोपेश”।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. गोपालजी झा “गोपेश”।
व्याख्या: लेखमे मधुप, मंत्रेश्वर झा बाद गोपेशक चर्चा अछि।

प्रश्न 7494. गोपेश ककर माध्यमे कतेको गोटेक मुँह पोछए चाहलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. “मखानक पात”क माध्यमे।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. “मखानक पात”क माध्यमे।
व्याख्या: गोपेशक पोथी “मखानक पात” व्यंग्यार्थक आधार बनल।

प्रश्न 7495. लेखक मखान आ मखानक पात बीच कोन विरोध राखैत छथि?
क. मखान कोमल-स्वच्छ, पात कँटाह-खड़खड़ आ मैल मुँह।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मखान कोमल-स्वच्छ, पात कँटाह-खड़खड़ आ मैल मुँह।
व्याख्या: एहि विरोधसँ व्यंग्यक तीक्ष्णता पैदा होइत अछि।

प्रश्न 7496. “मखानक पातसँ मुँह पोछब” कहबीक भावार्थ की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ककरो नीक चाहक बदला खिन्न, कटु उपाय करब।
उत्तर: घ. ककरो नीक चाहक बदला खिन्न, कटु उपाय करब।
व्याख्या: कहबी लोक-व्यंग्यक रूपमे प्रयोगित अछि।

प्रश्न 7497. कहबीमे “नोचैत रहिहथि अपन मुँह” कोन भाव दैत अछि?
क. कठोर प्रतिशोधी चुटकी।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. कठोर प्रतिशोधी चुटकी।
व्याख्या: मखानक पातक कँटाहपन व्यंग्यक हथियार बनैत अछि।

प्रश्न 7498. गोपेशक शीर्षक-कवितामे ककर मुँह पोछबाक इच्छा अछि?
क. तिलक-दहेज लेनिहार, स्वार्थी नेता, छद्म भद्रजन आ समाज-विघातक तत्व।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. तिलक-दहेज लेनिहार, स्वार्थी नेता, छद्म भद्रजन आ समाज-विघातक तत्व।
व्याख्या: कविता सामाजिक कुरूपताकेँ तीक्ष्ण लोक-रूपक सँ निशाना बनबैत अछि।

प्रश्न 7499. “बेटाकेँ विक्रीक वस्तु बूझि” पंक्ति ककर आलोचना अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. तिलक-दहेज प्रथा।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. तिलक-दहेज प्रथा।
व्याख्या: गोपेश विवाह-बाजार आ कन्यागत पीड़ापर प्रहार करैत छथि।

प्रश्न 7500. “कन्यागत करेज खखोरि” कथन की बतबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. दहेज-लोभ कन्या-पक्षक हृदयक क्रूर क्षरण करैत अछि।
उत्तर: घ. दहेज-लोभ कन्या-पक्षक हृदयक क्रूर क्षरण करैत अछि।
व्याख्या: कविता सामाजिक अन्यायकेँ शरीरगत पीड़ा जकाँ प्रकट करैत अछि।

प्रश्न 7501. गोपेशक व्यंग्यमे मखानक पात कोन साहित्यिक उपकरण बनैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. कुत्सित तत्त्वक चेहरा उजागर करबाक कठोर लोक-रूपक।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. कुत्सित तत्त्वक चेहरा उजागर करबाक कठोर लोक-रूपक।
व्याख्या: मखानक पात साधारण वनस्पति नहि, सामाजिक प्रतिरोधक बिम्ब बनैत अछि।

प्रश्न 7502. गोपेश प्रसंग मखानक चर्चा केँ कोन दिशा दैत अछि?
क. करुणा आ उल्लाससँ आगाँ सामाजिक व्यंग्य आ परिवर्तनक दिशा।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. करुणा आ उल्लाससँ आगाँ सामाजिक व्यंग्य आ परिवर्तनक दिशा।
व्याख्या: मखानक पात समाज-सुधारक भाषा बनैत अछि।

खण्ड ७५६ : विदेह-सदेह २ — मखानक पात: समाज-सुधार आ अवरोधक तत्त्व

प्रश्न 7503. गोपेशक कविता “समग्र परिवर्तन” लेल की चाहैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. अवरोधक तत्त्वक मुख मखानक पातसँ पोछि देब।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. अवरोधक तत्त्वक मुख मखानक पातसँ पोछि देब।
व्याख्या: कविता समाज-सुधारक संघर्षकेँ तीक्ष्ण लोक-रूपकमे रखैत अछि।

प्रश्न 7504. कार्यपालिका, न्यायपालिका आ विधायिकाक प्रसंग किएक आयल अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. संस्थागत गरिमा भंग करएबला तत्वक आलोचना लेल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. संस्थागत गरिमा भंग करएबला तत्वक आलोचना लेल।
व्याख्या: कविता सामाजिक विकृतिसँ संस्थागत विघटन धरि दृष्टि बढ़बैत अछि।

प्रश्न 7505. “शान्तिप्रिय लोककेँ अकारणहुँ तंग करैछ” कथन ककर विरुद्ध अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. अधिकार-व्यवस्था बिगाड़निहार कुत्सित तत्त्वक विरुद्ध।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. अधिकार-व्यवस्था बिगाड़निहार कुत्सित तत्त्वक विरुद्ध।
व्याख्या: मखानक पात एहन लोकक चेहरा उजागर करबाक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 7506. मखानक पात व्यंग्यक रूपमे असरदार किएक अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. किएक तँ मखानक कोमलता आ पातक कठोरता बीच तेज विरोध अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. किएक तँ मखानक कोमलता आ पातक कठोरता बीच तेज विरोध अछि।
व्याख्या: एहि विरोधसँ सामाजिक कटाक्ष स्मरणीय बनैत अछि।

प्रश्न 7507. गोपेश मखानक पातक माध्यमे “भद्र” छद्म पर कोन प्रहार करैत छथि?
क. बाहरी भद्रता भीतरक कुत्सित स्वार्थ छिपा नहि सकैत।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. बाहरी भद्रता भीतरक कुत्सित स्वार्थ छिपा नहि सकैत।
व्याख्या: कविता समाजक मुखौटा उघारबाक चेष्टा करैत अछि।

प्रश्न 7508. दहेज-विरोध आ संस्था-विरोधक प्रसंग एके कवितामे किएक सम्भव अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. दूनू समाजकेँ गर्तमे ठेलनिहार अवरोधक तत्त्वक रूपमे देखल गेल।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. दूनू समाजकेँ गर्तमे ठेलनिहार अवरोधक तत्त्वक रूपमे देखल गेल।
व्याख्या: कविता निजी विवाह-व्यवहारसँ सार्वजनिक व्यवस्था धरि आलोचना पसारैत अछि।

प्रश्न 7509. “मखानक पातसँ पोछि दी” आवृत्तिक प्रभाव की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नैतिक क्रोधकेँ लोक-नारा जकाँ तीक्ष्ण बनबैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. नैतिक क्रोधकेँ लोक-नारा जकाँ तीक्ष्ण बनबैत अछि।
व्याख्या: दोहराव कविता केँ स्मरणीय प्रतिरोधी स्वर दैत अछि।

प्रश्न 7510. मखानक पातक प्रयोगमे हास्य आ क्रोध कोना संग अछि?
क. कहबी हास्यास्पद लागैत अछि, मुदा लक्ष्य गम्भीर सामाजिक अन्याय अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. कहबी हास्यास्पद लागैत अछि, मुदा लक्ष्य गम्भीर सामाजिक अन्याय अछि।
व्याख्या: लोक-व्यंग्य मृदु मुस्कानमे कठोर आलोचना छिपबैत अछि।

प्रश्न 7511. एहि भागमे मखानक सांस्कृतिक प्रतीकता कोना बदलैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. खाद्य-पदार्थक पात सामाजिक शुद्धिकरणक रूपक बनैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. खाद्य-पदार्थक पात सामाजिक शुद्धिकरणक रूपक बनैत अछि।
व्याख्या: मखानक सम्पूर्ण वनस्पति-संसार साहित्यक अर्थ पाबैत अछि।

प्रश्न 7512. गोपेश-चर्चाक निष्कर्ष की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. मखान मिथिलाक स्वाद मात्र नहि, सामाजिक विवेक आ व्यंग्यक स्रोत सेहो अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मखान मिथिलाक स्वाद मात्र नहि, सामाजिक विवेक आ व्यंग्यक स्रोत सेहो अछि।
व्याख्या: मखानक पातक रूपक मिथिलाक लोकबुद्धि आ सुधार-चेतना व्यक्त करैत अछि।

खण्ड ७५७ : विदेह-सदेह २ — मखान: पंकसँ पूजा धरि

प्रश्न 7513. लेखक मखानक जन्म-स्थल कोना बतबैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. जालतल आ पंकक परिसरमे।
उत्तर: घ. जालतल आ पंकक परिसरमे।
व्याख्या: मखान कीचड़-पानिमे जन्मलहुँ गुणसँ ऊर्ध्वगामी वस्तु बनैत अछि।

प्रश्न 7514. मखान अपन गुणसँ कोन धार्मिक स्थान पाबैत अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. भगवानपर माला बनि चढ़ैत अछि आ भोग बनि अर्पित होइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. भगवानपर माला बनि चढ़ैत अछि आ भोग बनि अर्पित होइत अछि।
व्याख्या: लेख मखानक पवित्र अर्पण-योग्य रूप स्थापित करैत अछि।

प्रश्न 7515. मखान श्रेष्ठ पदार्थक मापदण्ड किएक कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ओ स्वच्छता, कोमलता, स्वाद आ पवित्रताक संयुक्त प्रतीक अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. ओ स्वच्छता, कोमलता, स्वाद आ पवित्रताक संयुक्त प्रतीक अछि।
व्याख्या: लेखक मखानकेँ गुणात्मक आदर्श बनबैत छथि।

प्रश्न 7516. मखान दुर्जनकेँ चेतावनी कोना दैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. मुहाबरा बनिकए “मखानक पात”क कठोर व्यंग्य सँ।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मुहाबरा बनिकए “मखानक पात”क कठोर व्यंग्य सँ।
व्याख्या: भोग्य मखान आ चेतावनी दैत पात—दूनू सांस्कृतिक अर्थ दैत अछि।

प्रश्न 7517. लेखक किएक पूछैत छथि जे मैथिल साहित्यकार मखानक मान कतए नहि देथि?
क. किएक तँ एहन दुर्लभ पदार्थ मिथिलामे सुलभ आ बहुअर्थी अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. किएक तँ एहन दुर्लभ पदार्थ मिथिलामे सुलभ आ बहुअर्थी अछि।
व्याख्या: मखानक सांस्कृतिक सामर्थ्य साहित्यक लेल स्वाभाविक स्रोत अछि।

प्रश्न 7518. डॉ. बी. झाक धुनपर गुनगुनएबाक प्रसंग कोन भाव जगबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. मैथिली जागरण आ मिथिला-गौरव।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. मैथिली जागरण आ मिथिला-गौरव।
व्याख्या: गीत-संकेत मखानकेँ सांस्कृतिक जागरणक ध्वनि बनबैत अछि।

प्रश्न 7519. “धान-पान-मखान-पूजित” पंक्ति मैथिलीक कोन परिचय देती अछि?
क. मिथिलाक कृषि, आतिथ्य आ जल-समृद्धि पूजित पहचान।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक कृषि, आतिथ्य आ जल-समृद्धि पूजित पहचान।
व्याख्या: धान, पान, मखान तीनू मिलि मिथिलाक लोक-संस्कार बनैत अछि।

प्रश्न 7520. “मैथिलीकेँ जगाउ औ”क सम्बन्ध मखानसँ कोना अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मखानक प्रतीक द्वारा भाषा-जागरणक आह्वान।
उत्तर: घ. मखानक प्रतीक द्वारा भाषा-जागरणक आह्वान।
व्याख्या: भोजन-संस्कृति भाषिक-सांस्कृतिक चेतनाक साधन बनैत अछि।

प्रश्न 7521. मखानक पंकसँ पूजा धरि यात्रा कोन सांस्कृतिक शिक्षा दैत अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. नीच परिस्थिति सँ गुण द्वारा उच्च सम्मान धरि पहुँचल जा सकैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. नीच परिस्थिति सँ गुण द्वारा उच्च सम्मान धरि पहुँचल जा सकैत अछि।
व्याख्या: मखान मिथिलाक नैतिक रूपक बनि उठैत अछि।

प्रश्न 7522. “मखानक खानि ई मिथिला”क मखान-चर्चाक समग्र अर्थ की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. मखान मिथिलाक जल, स्वाद, पाबनि, कविता, व्यंग्य आ जागरण सभक संग जुड़ल प्रतीक अछि।
उत्तर: घ. मखान मिथिलाक जल, स्वाद, पाबनि, कविता, व्यंग्य आ जागरण सभक संग जुड़ल प्रतीक अछि।
व्याख्या: लेख मखानकेँ बहुस्तरीय सांस्कृतिक चिन्ह बनबैत अछि।

खण्ड ७५८ : विदेह-सदेह २ — चन्दा झा: हरिमोहन झासँ युग-संक्रमण

प्रश्न 7523. भीमनाथ झा चन्दा झा आ हरिमोहन झाकेँ कोन क्रममे देखैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. कवीश्वर चन्दा झा आधुनिक युगक प्रवर्तक, हरिमोहन झा ओकर विस्तारक।
उत्तर: घ. कवीश्वर चन्दा झा आधुनिक युगक प्रवर्तक, हरिमोहन झा ओकर विस्तारक।
व्याख्या: लेख एक कवि-युगसँ गद्य-युगधरि साहित्यिक संक्रमण देखबैत अछि।

प्रश्न 7524. चन्दा झाक महाप्रयाण आ हरिमोहन झाक आगमनक समय-संकेत की कहल गेल?
क. चन्दा झा १९०७मे गेलाह, हरिमोहन झा १९०८मे अएलाह।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. चन्दा झा १९०७मे गेलाह, हरिमोहन झा १९०८मे अएलाह।
व्याख्या: समय-निकटता लेखमे प्रतीकात्मक उत्तराधिकार बनैत अछि।

प्रश्न 7525. चन्दा झा साहित्यकेँ कतए पसारि देलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. जनताक बीच।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. जनताक बीच।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे ओ साहित्यकेँ लोक-जीवनमे पहुँचा देलनि।

प्रश्न 7526. चन्दा झा सभसँ अधिक ककरा पसारलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. विद्यापति आ मनबोध।
उत्तर: घ. विद्यापति आ मनबोध।
व्याख्या: लेख विद्यापति आ मनबोधक जन-प्रसारमे चन्दा झाक भूमिका मानैत अछि।

प्रश्न 7527. चन्दा झाक समएमे लेखन-भाषाक स्थिति कोना कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. बड़ अव्यवस्थित।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. बड़ अव्यवस्थित।
व्याख्या: संस्कृति-ह्रास आ भाषिक संकटक बीच चन्दा झा उभरैत छथि।

प्रश्न 7528. चन्दा झाक सामने सभसँ पैघ चुनौती की ठाढ़ भेल?
क. मातृभाषाक सुच्चारपन बचाएब।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. मातृभाषाक सुच्चारपन बचाएब।
व्याख्या: लेखक भाषाक शुद्धता आ सामर्थ्यक संरक्षण हुनक प्रमुख काज मानैत छथि।

प्रश्न 7529. चन्दा झा मैथिलीमे की प्रमाणित करए चाहैत छलाह?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली जटिल भावकेँ मौलिक भंगिमामे सहज व्यक्त कऽ सकैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मैथिली जटिल भावकेँ मौलिक भंगिमामे सहज व्यक्त कऽ सकैत अछि।
व्याख्या: भाषाक अभिव्यक्ति-सामर्थ्य सिद्ध करब हुनक साहित्यिक उद्देश्य बनल।

प्रश्न 7530. चन्दा झा भाषा केना मोहक बनौलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्थानीय लोकोक्ति, कहबी आ देशज शब्दक सौन्दर्य भरि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. स्थानीय लोकोक्ति, कहबी आ देशज शब्दक सौन्दर्य भरि।
व्याख्या: लेखक हुनका लोक-भाषिक ऊर्जा सँ साहित्यिक भाषा चमकाबए वाला मानैत छथि।

प्रश्न 7531. चन्दा झा युगप्रवर्तक किएक कहल जाए योग्य छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. मैथिलीकेँ माजि-चमकाकऽ जनसामान्य आ रचनाकार दुनूक समक्ष आदर्श रखलनि।
उत्तर: घ. मैथिलीकेँ माजि-चमकाकऽ जनसामान्य आ रचनाकार दुनूक समक्ष आदर्श रखलनि।
व्याख्या: भाषा-संरक्षण आ भाषिक आदर्श-निर्माण दुनू हुनक योगदान अछि।

प्रश्न 7532. चन्दा झाक काज हरिमोहन झाक आगमन लेल कोना आधार बनल?
क. ओ पद्य-गीत द्वारा भाषा जनतामे जमौलनि, जकरा बाद गद्य-विस्तार सम्भव भेल।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: क. ओ पद्य-गीत द्वारा भाषा जनतामे जमौलनि, जकरा बाद गद्य-विस्तार सम्भव भेल।
व्याख्या: लेख युग-संक्रमणकेँ सतत साहित्यिक प्रक्रिया रूपमे देखैत अछि।

खण्ड ७५९ : विदेह-सदेह २ — चन्दा झा: पद्य, गीत आ लोक-अमल

प्रश्न 7533. चन्दा झा अपन मुख्य काज कोन माध्यमसँ कएलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. पद्यक माध्यमसँ।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. पद्यक माध्यमसँ।
व्याख्या: लेखक स्पष्ट करैत छथि जे ओ पद्य द्वारा जनमानसपर प्रभाव छोड़लनि।

प्रश्न 7534. ओहि समय जनता साहित्यक कोन रूप बेसी स्वीकारैत छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. पद्य, बहुधा गीतक रूपमे।
उत्तर: घ. पद्य, बहुधा गीतक रूपमे।
व्याख्या: गद्य दिस जनता नीक सँ नहि तकैत छल, ई चन्दा झा बुझि लेलनि।

प्रश्न 7535. चन्दा झा पद्यकेँ लेखकक शब्दमे की बनौलनि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. “गुआ-पन” जे लोकक अमलमे आबि गेल।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. “गुआ-पन” जे लोकक अमलमे आबि गेल।
व्याख्या: ई रूपक पद्यक दैनिक लोक-प्रयोग आ स्वादक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 7536. चन्दा झाक विषय-चयन कोना कहल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. समसामयिक आ लोक-आस्थानुकूल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. समसामयिक आ लोक-आस्थानुकूल।
व्याख्या: ओ समाजक समय-प्रश्न आ लोक-विश्वास दुनूकेँ अपन कविता मे लेलनि।

प्रश्न 7537. चन्दा झा रामायण किएक लिखलनि, लेखमे कोन संकेत अछि?
क. लोक-आस्थाक अनुकूल धार्मिक-सांस्कृतिक आधार देबा लेल।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. लोक-आस्थाक अनुकूल धार्मिक-सांस्कृतिक आधार देबा लेल।
व्याख्या: रामचरितमानसक प्रचार मिथिलामे ओतेक नहि रहल, से पृष्ठभूमि बनल।

प्रश्न 7538. अंगरेजक दुःशासनसँ पीड़ित लोककेँ चन्दा झा की देलनि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. परितोष आ सहानुभूति।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. परितोष आ सहानुभूति।
व्याख्या: लेखक हुनक कविकर्ममे पीड़ित लोकक भाव देखैत छथि।

प्रश्न 7539. महगीक मारि सँ पीड़ित लोकक प्रति चन्दा झा कोन भाव देखौलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. सहानुभूति।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. सहानुभूति।
व्याख्या: चन्दा झाक कविता समसामयिक आर्थिक पीड़ासँ कटल नहि छल।

प्रश्न 7540. चन्दा झा धर्मक हानि दिस की कएलनि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. संकेत।
उत्तर: घ. संकेत।
व्याख्या: धर्म-संस्कारक संकट पर काव्य द्वारा चेतावनी देल गेल।

प्रश्न 7541. चन्दा झाक कविकर्मक घोषित उद्देश्य की बनल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. समाजकेँ भगवत्-भजनमे लगि आस्तिक जीवन जीबाक सन्देश देब।
उत्तर: घ. समाजकेँ भगवत्-भजनमे लगि आस्तिक जीवन जीबाक सन्देश देब।
व्याख्या: लेखक हुनक धर्मप्रधान कविकर्मक उद्देश्य रेखांकित करैत छथि।

प्रश्न 7542. चन्दा झाक कविता अपन घोषित उद्देश्यसँ बेसी की कऽ गेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली साहित्यकेँ नव दिशा आ नवयुगक शंखनाद देलक।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. मैथिली साहित्यकेँ नव दिशा आ नवयुगक शंखनाद देलक।
व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे काव्यक प्रभाव धार्मिक उपदेशसँ बहुत आगाँ गेल।

खण्ड ७६० : विदेह-सदेह २ — हरिमोहन झा: गद्यक चमत्कार आ लोकप्रियता

प्रश्न 7543. हरिमोहन झा मैथिलीमे कखन “मिथिला”क माध्यमे प्रवेश कएलनि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. १९२९मे।
उत्तर: घ. १९२९मे।
व्याख्या: लेखक हरिमोहन झाक मैथिली-प्रवेशक समय १९२९ बतबैत छथि।

प्रश्न 7544. हरिमोहन झा मैथिलीकेँ ककर जीहपर चढ़ा देलनि?
क. साक्षर आ निरक्षर दुनूक।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. साक्षर आ निरक्षर दुनूक।
व्याख्या: ओ मैथिलीकेँ घर-घर आ जन-जीवनमे पहुँचा देलनि।

प्रश्न 7545. हरिमोहन झा मैथिलीक सौरभ कतए धरि पसारि देलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. भारत भरिमे।
उत्तर: घ. भारत भरिमे।
व्याख्या: लोकप्रिय गद्यक कारण मैथिलीक सुगन्ध मिथिला सीमासँ बाहर गेल।

प्रश्न 7546. हरिमोहन झाक चमत्कार कोन माध्यमे भेल?
क. गद्यक माध्यमे।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. गद्यक माध्यमे।
व्याख्या: चन्दा झाक पद्यक बाद हरिमोहन झा गद्यक शक्ति देखौलनि।

प्रश्न 7547. लेखक हरिमोहन झाक लोकप्रियताकेँ कोन रूपकसँ देखबैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. लोकप्रियताक हिमालय।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. लोकप्रियताक हिमालय।
व्याख्या: गद्य-रचना द्वारा हुनक आ मैथिलीक लोकप्रियता असाधारण बनल।

प्रश्न 7548. विद्यापति आ हरिमोहन झाक प्रभाव-बोधमे लेखक कोन भेद करैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. विद्यापतिक चमत्कार लोक बादमे बुझलक, हरिमोहनक तुरत बुझल गेल।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. विद्यापतिक चमत्कार लोक बादमे बुझलक, हरिमोहनक तुरत बुझल गेल।
व्याख्या: हरिमोहन झाक प्रभाव प्रवेश करितहि अनुभवित भेल।

प्रश्न 7549. हरिमोहन झाक साहित्य समाजमे कतेक तरहेँ पसरल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. दू तरहेँ—पाठक समर्थन आ तीव्र विरोधसँ।
उत्तर: घ. दू तरहेँ—पाठक समर्थन आ तीव्र विरोधसँ।
व्याख्या: समर्थन आ विरोध दुनू लोकप्रियताक वाहक बनल।

प्रश्न 7550. “लिखिकए टाल नहि लगौलनि”क आशय की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. रचना-संख्या थोपल नहि, मुदा प्रभाव असाधारण रहल।
उत्तर: घ. रचना-संख्या थोपल नहि, मुदा प्रभाव असाधारण रहल।
व्याख्या: मात्र मात्रा नहि, गुण आ लोक-प्रभाव मुख्य रहल।

प्रश्न 7551. हरिमोहन झा मैथिली-दुनूक लोकप्रियता कोना बढ़ौलनि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. हास्य-व्यंग्यपूर्ण गद्य द्वारा भाषा घर-घर पहुँचेलनि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. हास्य-व्यंग्यपूर्ण गद्य द्वारा भाषा घर-घर पहुँचेलनि।
व्याख्या: लेखक हुनका मैथिली गद्यक लोकप्रसारक प्रमुख व्यक्तित्व मानैत छथि।

प्रश्न 7552. चन्दा झा आ हरिमोहन झा बीच मुख्य माध्यमगत भेद की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चन्दा झा पद्य-गीत द्वारा, हरिमोहन झा गद्य द्वारा जन-सम्पर्क बनौलनि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. चन्दा झा पद्य-गीत द्वारा, हरिमोहन झा गद्य द्वारा जन-सम्पर्क बनौलनि।
व्याख्या: लेख दूनूकेँ युग-संक्रमणक परस्पर पूरक कड़ी मानैत अछि।

खण्ड ७६१ : विदेह-सदेह २ — हरिमोहन झा: विरोध, सनातनता आ कालातीतता

प्रश्न 7553. हरिमोहन झाक विरोध कएनिहार मुख्यतः के कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. मिथिलाक सनातनी आ कर्मकाण्डी पण्डित।
उत्तर: घ. मिथिलाक सनातनी आ कर्मकाण्डी पण्डित।
व्याख्या: हुनक रचनामे अन्धविश्वासपर प्रहार सँ एहि वर्गमे असहजता भेल।

प्रश्न 7554. विरोधक कारण हरिमोहन झाक साहित्यपर की असर पड़ल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ओ आरो पढ़ल गेल।
उत्तर: घ. ओ आरो पढ़ल गेल।
व्याख्या: लेख कहैत अछि जे विरोधक कारणेँ पाठकीय उत्सुकता आ प्रसार बढ़ल।

प्रश्न 7555. आज ओ विरोध कोना देखल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. कालक गालमे समा गेल।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. कालक गालमे समा गेल।
व्याख्या: लेखक विरोधकेँ क्षणिक आ साहित्यकेँ स्थायी मानैत छथि।

प्रश्न 7556. हरिमोहन झाक साहित्यक वर्तमान दर्जा की कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. कालातीत।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. कालातीत।
व्याख्या: विरोध मिटल, मुदा रचना समय पार करि टिकि रहल।

प्रश्न 7557. हरिमोहन झापर किछु लोकक प्रमुख आरोप की छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. अंगरेजी पढ़ि अंगरेजक समर्थक भऽ गेलाह।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. अंगरेजी पढ़ि अंगरेजक समर्थक भऽ गेलाह।
व्याख्या: लेख आरोप रखि ओकर उत्तर विस्तारसँ दैत अछि।

प्रश्न 7558. आरोप लगबेनिहार लोकनिक दुख की छल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ओ अपना थातीक खिधांस आ अंगरेजक प्रशंसा बेसी कएलनि, से हुनका लगैत छल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. ओ अपना थातीक खिधांस आ अंगरेजक प्रशंसा बेसी कएलनि, से हुनका लगैत छल।
व्याख्या: लेखक एहि दुखक आधारकेँ असंगत ठहराबए आगाँ बढ़ैत छथि।

प्रश्न 7559. लेखक पहिने कोन बात स्पष्ट करैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. अंगरेजी पढ़लहुँ हरिमोहन झा अंगरेज नहि भेलाह।
उत्तर: घ. अंगरेजी पढ़लहुँ हरिमोहन झा अंगरेज नहि भेलाह।
व्याख्या: भाषा-शिक्षा आ सांस्कृतिक दासता एक बात नहि, ई तर्क अछि।

प्रश्न 7560. हरिमोहन झाक जीवन-व्यवहारसँ लेखक कोन प्रमाण दैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ओ धोती-कुर्ता पहिरैत, माछ-भात खाइत, गंगरेजी नहि चलबैत रहलाह।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. ओ धोती-कुर्ता पहिरैत, माछ-भात खाइत, गंगरेजी नहि चलबैत रहलाह।
व्याख्या: दैनिक जीवनमे मैथिलता आ सादगी कायम रहल।

प्रश्न 7561. हरिमोहन झाक साहित्यिक विरोध किएक टिकि नहि सकल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. किएक तँ रचना लोकबुद्धि, हास्य आ समयातीत आलोचनासँ भरल छल।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. किएक तँ रचना लोकबुद्धि, हास्य आ समयातीत आलोचनासँ भरल छल।
व्याख्या: क्षणिक धार्मिक आचार-रक्षात्मक विरोध साहित्यिक मूल्यक आगू कमजोर पड़ल।

प्रश्न 7562. एहि भागक मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. विरोधे हरिमोहन झाक साहित्यक प्रसार बढ़ेलक, काल ओकर पक्षमे निर्णय देलक।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. विरोधे हरिमोहन झाक साहित्यक प्रसार बढ़ेलक, काल ओकर पक्षमे निर्णय देलक।
व्याख्या: लेख विरोधक समाजशास्त्र आ साहित्यक स्थायित्व दुनू समझबैत अछि।

खण्ड ७६२ : विदेह-सदेह २ — हरिमोहन झा: अंग्रेजी शिक्षा आ विवेकपूर्ण आधुनिकता

प्रश्न 7563. लेखकक अनुसार अंगरेज हरिमोहन झाक शत्रु कखन धरि छल?
क. जाधरि ओ भारतपर शासन करैत छल।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. जाधरि ओ भारतपर शासन करैत छल।
व्याख्या: राजनीतिक शत्रुता आ ज्ञान-साधन बीच भेद कएल गेल।

प्रश्न 7564. अंगरेज चलि गेलाक बाद लेखक कोन दृष्टि रखैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. शास्त्र, साहित्य, वैज्ञानिक बोध आ प्रगतिक ललक ककरो शत्रु नहि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. शास्त्र, साहित्य, वैज्ञानिक बोध आ प्रगतिक ललक ककरो शत्रु नहि।
व्याख्या: ज्ञानक नीक तत्त्व शत्रु-देशसँ आएल हो तइयो ग्राह्य अछि।

प्रश्न 7565. लेखक शत्रु-देशक नीक बातपर कोन नीति सुझबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. नीक हो तँ प्रशंसा आ अनुकरण होएबाक चाही।
उत्तर: घ. नीक हो तँ प्रशंसा आ अनुकरण होएबाक चाही।
व्याख्या: अन्ध-विरोध प्रगतिक बाट रोकैत अछि।

प्रश्न 7566. “ओहि दिस नहि ताकब, ओकरा नहि छूअब” प्रवृत्तिक आलोचना किएक अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि सँ संसारक संग डेग मिलाकए चलब असम्भव भऽ जाएत।
उत्तर: घ. एहि सँ संसारक संग डेग मिलाकए चलब असम्भव भऽ जाएत।
व्याख्या: लेख आधुनिक ज्ञानसँ संवादक पक्ष लैत अछि।

प्रश्न 7567. अपन शास्त्र-पुराण सम्बन्धमे लेखक कोन आग्रह करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समएक निकणपर रगड़ि समकालीन सन्दर्भमे पुनर्मूल्यांकन।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. समएक निकणपर रगड़ि समकालीन सन्दर्भमे पुनर्मूल्यांकन।
व्याख्या: अपन परम्पराकेँ जोगाब, मुदा विवेकपूर्ण परीक्षणो जरूरी अछि।

प्रश्न 7568. “अपन वस्तु बहुमूल्य गहना” रूपकक आशय की अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. परम्परा मूल्यवान अछि, मुदा ओकरा विवेकहीन ढंगसँ पूरा देहपर लादब उचित नहि।
उत्तर: घ. परम्परा मूल्यवान अछि, मुदा ओकरा विवेकहीन ढंगसँ पूरा देहपर लादब उचित नहि।
व्याख्या: गहना जोगाबय योग्य अछि, अकर्मण्य बोझ बनएब नहि।

प्रश्न 7569. लेखक परम्परा-विरोध आ पुनर्मूल्यांकनमे कोन भेद राखैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. पुनर्मूल्यांकन अवहेलना नहि, जीवित उपयोगिताक परीक्षा अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. पुनर्मूल्यांकन अवहेलना नहि, जीवित उपयोगिताक परीक्षा अछि।
व्याख्या: हरिमोहन झाक दृष्टि विवेकपूर्ण सुधारक रूपमे प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 7570. हरिमोहन झाक आधुनिकता अन्धानुकरण नहि किएक कहल जा सकैत?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ओ नीक तत्त्व ग्रहण करबाक, आ अनुपयोगी रीति जाँचबाक पक्षमे छथि।
उत्तर: घ. ओ नीक तत्त्व ग्रहण करबाक, आ अनुपयोगी रीति जाँचबाक पक्षमे छथि।
व्याख्या: लेख आधुनिकता आ परम्पराक संतुलित विवेक देखबैत अछि।

प्रश्न 7571. प्रगति लेल लेखक कोन शर्त मानैत छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. अन्य ज्ञान-परम्परासँ संवाद आ अपन परम्पराक समीक्षा।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. अन्य ज्ञान-परम्परासँ संवाद आ अपन परम्पराक समीक्षा।
व्याख्या: बन्द मानसिकता भाषा-समाजकेँ आगाँ नहि बढ़एत।

प्रश्न 7572. एहि भागक मूल विचार की अछि?
क. हरिमोहन झा पश्चिम-समर्थक नहि, विवेकपूर्ण आधुनिकता आ आत्म-समीक्षाक प्रवक्ता छथि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. हरिमोहन झा पश्चिम-समर्थक नहि, विवेकपूर्ण आधुनिकता आ आत्म-समीक्षाक प्रवक्ता छथि।
व्याख्या: लेख आरोपक उत्तरमे संतुलित बौद्धिकता स्थापित करैत अछि।

खण्ड ७६३ : विदेह-सदेह २ — “खट्टर ककाक तरंग”: भेद, वेद आ आलोचना

प्रश्न 7573. हरिमोहन झा अपन बात सभसँ स्पष्ट कोन कृतिमे कहने छथि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. “खट्टर ककाक तरंग”मे।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. “खट्टर ककाक तरंग”मे।
व्याख्या: लेखक परम्परा-समीक्षा सम्बन्धी बातक सर्वोत्तम उदाहरण एहि कृति मानैत छथि।

प्रश्न 7574. “खट्टर ककाक तरंग”मे हरिमोहन झा की उघारिकए रखलनि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अपन किछु अन्ध परम्परा।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. अपन किछु अन्ध परम्परा।
व्याख्या: रचना समाजक रूढ़ रूपक हास्य-व्यंग्य द्वारा उद्घाटन करैत अछि।

प्रश्न 7575. ओहि परम्परा सभकेँ आजुक सन्दर्भमे की सिद्ध कएल गेल?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. अनुपयोगी।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. अनुपयोगी।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे रचनामे अन्ध परम्परा आजुक दृष्टिसँ अनुपयोगी सिद्ध भेल।

प्रश्न 7576. लेखक स्पष्ट करैत छथि जे एहि पाछाँ कोन भाव नहि छल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. शास्त्र-पुराणपर अनास्था वा संस्कार-अवहेलना।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. शास्त्र-पुराणपर अनास्था वा संस्कार-अवहेलना।
व्याख्या: समीक्षा श्रद्धाहीन उपहास नहि, विवेकपूर्ण परीक्षण अछि।

प्रश्न 7577. “खट्टर ककाक तरंग” द्वितीय संस्करणक भूमिका प्रसंगमे पुछल प्रश्न की छल?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई सभ भितरिया मनसँ करैत छी कि लोककेँ हँसाबक लेल?
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. ई सभ भितरिया मनसँ करैत छी कि लोककेँ हँसाबक लेल?
व्याख्या: प्रश्न हरिमोहनक व्यंग्यक मूल मनोभाव बुझबाक कोशिश करैत अछि।

प्रश्न 7578. खट्टर ककाक उत्तरमे “भेद” शब्दक महत्व की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई सूचित करैत अछि जे व्यंग्यक भीतर गम्भीर रहस्य/तत्व अछि।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ख. ई सूचित करैत अछि जे व्यंग्यक भीतर गम्भीर रहस्य/तत्व अछि।
व्याख्या: लेखक “भेद” शब्दसँ “वेद” विरोध न रहबाक अर्थ निकालैत छथि।

प्रश्न 7579. “भेद” शब्द ककर विरोध नहि होएबाक संकेत दैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. “वेद” सँ विरोध नहि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. “वेद” सँ विरोध नहि।
व्याख्या: लेखक शब्द-खेलसँ हरिमोहनक भीतरक श्रद्धा-तत्व देखबैत छथि।

प्रश्न 7580. हरिमोहन झा पश्चिमक सभ व्यवहार नीके मानैत छलाह, ई बात सही अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. नहि, ओ पश्चिमोपर तीक्ष्ण कटाक्ष कएने छथि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. नहि, ओ पश्चिमोपर तीक्ष्ण कटाक्ष कएने छथि।
व्याख्या: लेख आरोपक दूनू छोर अस्वीकार करैत अछि।

प्रश्न 7581. “खट्टर ककाक टटका गप्प”क उद्धरण किएक आयल अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. पाश्चात्य सभ्यतापर हुनक व्यंग्य देखएबाक लेल।
ग. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
घ. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. पाश्चात्य सभ्यतापर हुनक व्यंग्य देखएबाक लेल।
व्याख्या: लेखक प्रमाण दैत छथि जे ओ पश्चिमक अन्धानुकरणक पक्षधर नहि छलाह।

प्रश्न 7582. “खट्टर कका” प्रसंगक निष्कर्ष की अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. हरिमोहन झाक हास्य भीतर सामाजिक विवेक, परम्परा-समीक्षा आ आत्मीय आलोचना छिपल अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. हरिमोहन झाक हास्य भीतर सामाजिक विवेक, परम्परा-समीक्षा आ आत्मीय आलोचना छिपल अछि।
व्याख्या: व्यंग्य हँसीक आवरणमे गंभीर सांस्कृतिक मंथन करैत अछि।

खण्ड ७६४ : विदेह-सदेह २ — पश्चिमी सभ्यता पर व्यंग्य आ मैथिली गद्यक विस्तार

प्रश्न 7583. “भोज” आ “पार्टी”क भेद खट्टर कका कोना करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. भोज भरि पेट, पार्टी भरि प्लेट।
उत्तर: घ. भोज भरि पेट, पार्टी भरि प्लेट।
व्याख्या: ई व्यंग्य आधुनिक औपचारिकता आ परम्परागत आतिथ्यक अंतर देखबैत अछि।

प्रश्न 7584. सिंहारा आ दालमोटक पार्टी प्रसंगमे कोन आलोचना अछि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. आतिथ्यक उदारता घटि प्रतीकात्मक अल्पता रहि गेल।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. आतिथ्यक उदारता घटि प्रतीकात्मक अल्पता रहि गेल।
व्याख्या: हास्यक माध्यमे आधुनिक सामाजिक व्यवहारक खोखलापन उघारल गेल।

प्रश्न 7585. “टी” सम्बन्धी व्यंग्यक मुख्य संकेत की अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. चाय-सभ्यता पुरान सौजन्यक विस्तृत रूप काटि छोट करि देलक।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. चाय-सभ्यता पुरान सौजन्यक विस्तृत रूप काटि छोट करि देलक।
व्याख्या: खट्टर कका “टी”क ध्वनि-संगति सँ आधुनिकता पर चुटकी लैत छथि।

प्रश्न 7586. “आचमनीयम्”क स्थानमे “चायमानेयम्” कोन प्रकारक व्यंग्य अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संस्कृतनिष्ठ धार्मिक-भाषिक रूपक सँ आधुनिक चाय-प्रथा पर कटाक्ष।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. संस्कृतनिष्ठ धार्मिक-भाषिक रूपक सँ आधुनिक चाय-प्रथा पर कटाक्ष।
व्याख्या: भाषिक हास्य सामाजिक परिवर्तनक आलोचना बनैत अछि।

प्रश्न 7587. “टोस्ट, टी, टेरेलिन, ट्रांजिस्टर आ टा टा” सूची ककर बिम्ब अछि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ट अक्षरपर चलैत आधुनिक सभ्यता।
उत्तर: घ. ट अक्षरपर चलैत आधुनिक सभ्यता।
व्याख्या: शब्द-खेल आधुनिक उपभोग-संस्कृति पर व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 7588. फ्रायडक चेला लोकनिक प्रसंगमे खट्टर कका कोन आलोचना करैत छथि?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ग. अतिशय प्रतीकवादी व्याख्या आ इन्द्रियनिष्ठ आधुनिकता।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ग. अतिशय प्रतीकवादी व्याख्या आ इन्द्रियनिष्ठ आधुनिकता।
व्याख्या: रचना पश्चिमी सिद्धान्तक स्थानीय अन्धानुकरण पर व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 7589. जन्मनिरोध, लूप, फैशन-पैशन प्रसंग कोन प्रवृत्तिक आलोचना करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ख. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. आधुनिक जीवन-शैलीक अतिरेक आ मूल्य-बदलाव।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: ग. आधुनिक जीवन-शैलीक अतिरेक आ मूल्य-बदलाव।
व्याख्या: खट्टर कका सामाजिक परिवर्तनक विडम्बना हास्यसँ प्रकट करैत छथि।

प्रश्न 7590. “अंगरेजिया बाबू” कथाक उल्लेख किएक भेल?
क. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अंगरेजियतक भद्दा नकलपर हरिमोहन झाक उपहास देखएबाक लेल।
ग. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
घ. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
उत्तर: ख. अंगरेजियतक भद्दा नकलपर हरिमोहन झाक उपहास देखएबाक लेल।
व्याख्या: लेखक सिद्ध करैत छथि जे ओ पश्चिम-पूजक नहि छलाह।

प्रश्न 7591. लेखक हरिमोहन झापर “अंगरेजी सभ्यतापर लट्टू” आरोपक निष्कर्ष की दैत छथि?
क. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई सत्यसँ दूर अछि।
उत्तर: घ. ई सत्यसँ दूर अछि।
व्याख्या: हरिमोहन झाक लेखन परम्परा आ आधुनिकता दुनूक विवेकपूर्ण आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 7592. चन्दा झा आ हरिमोहन झाक तुलनात्मक निष्कर्ष की अछि?
क. चन्दा झा पद्यसँ भाषा माजलनि, हरिमोहन झा गद्यसँ ओकरा आकाश धरि उठौलनि।
ख. ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
ग. ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
उत्तर: क. चन्दा झा पद्यसँ भाषा माजलनि, हरिमोहन झा गद्यसँ ओकरा आकाश धरि उठौलनि।
व्याख्या: लेखक मैथिली भाषाक पद्य-आधार आ गद्य-विस्तारक ऐतिहासिक क्रम देखबैत छथि।

खण्ड ७६५ : विदेह-सदेह २ — प्रकाश: “रंगदृष्टि; दिल्ली” आ बदलैत रंग-केन्द्र

प्रश्न 7593. प्रकाशक “रंगदृष्टि; दिल्ली” लेखमे दिल्लीक रंगमंचीय रूपान्तरणक मुख्य बात की अछि?
क. दिल्ली आब विविध भारतीय भाषाक नाटक-मंचनक केन्द्र बनि रहल अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. दिल्ली आब विविध भारतीय भाषाक नाटक-मंचनक केन्द्र बनि रहल अछि।
व्याख्या: लेखमे कहल गेल जे पहिले दिल्ली मुख्यतः हिन्दी लेल चिन्हल जाइत छल, मुदा आब अनेक भाषाक नाटकक केन्द्र बनि चुकल अछि।

प्रश्न 7594. लेखक बांग्ला नाटकक पारम्परिक केन्द्र ककरा मानैत छथि?
क. कोलकाता।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. कोलकाता।
व्याख्या: आरम्भमे बांग्ला लेल कोलकाता आ मराठी लेल मुम्बईक तुलना कएल गेल अछि।

प्रश्न 7595. मराठी नाटकक पारम्परिक केन्द्र कोन शहर मानल गेल?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. मुम्बई।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मुम्बई।
व्याख्या: लेखक मराठी रंगमंचक प्रमुख नगर रूपमे मुम्बईक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 7596. दिल्लीक कोन क्षेत्रक प्रेक्षागृह सभक उल्लेख रंगमंचीय सक्रियताक संकेत रूपमे अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. मंडी हाउस।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मंडी हाउस।
व्याख्या: मंडी हाउसक प्रेक्षागृहमे नित्य कोनो-ने-कोनो भाषाक नाटक होएबाक बात अछि।

प्रश्न 7597. दिल्लीमे लेखक कोन-कोन भाषा सभक नाटक देखबाक अवसरक बात करैत छथि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. हिन्दी, मराठी, बंगाली, मणिपुरी, असमिया, उर्दू, पंजाबी, मैथिली आदि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. हिन्दी, मराठी, बंगाली, मणिपुरी, असमिया, उर्दू, पंजाबी, मैथिली आदि।
व्याख्या: लेख विविध भाषा-सूचीसँ दिल्लीक बहुभाषिक रंग-परिदृश्य रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 7598. दिल्लीक बदलैत रंग-स्वरूपक मूल संकेत की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. एकभाषिक केन्द्रसँ बहुभाषिक रंग-संगम दिस गमन।
उत्तर: घ. एकभाषिक केन्द्रसँ बहुभाषिक रंग-संगम दिस गमन।
व्याख्या: लेख दिल्लीक पहचानक विस्तार देखबैत अछि—मात्र हिन्दी नहि, अखिल भारतीय मंच।

प्रश्न 7599. “रंगदृष्टि; दिल्ली”मे “नित्य कोनो-ने-कोनो भाषाक नाटक” कथनक भावार्थ की अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. दिल्लीक रंगमंच निरन्तर आ बहुभाषिक अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. दिल्लीक रंगमंच निरन्तर आ बहुभाषिक अछि।
व्याख्या: नाटकक आवृत्ति आ भाषा-विविधता दूनू एहि कथनमे अछि।

प्रश्न 7600. लेखक दिल्लीक रंगमंचपर कोन भरोसा व्यक्त करैत छथि?
क. एहि बातमे कोनो शंका नहि जे दिल्ली केन्द्रमे आबि चुकल अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. एहि बातमे कोनो शंका नहि जे दिल्ली केन्द्रमे आबि चुकल अछि।
व्याख्या: वाक्यक शैली दृढ़ निश्चयक अछि, अनुमानक नहि।

प्रश्न 7601. मैथिली नाटकक उल्लेख भाषा-सूचीमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. दिल्लीक बहुभाषिक रंग-परिसरमे मैथिलीकेँ सेहो स्थान भेटैत देखाएल गेल।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. दिल्लीक बहुभाषिक रंग-परिसरमे मैथिलीकेँ सेहो स्थान भेटैत देखाएल गेल।
व्याख्या: मैथिली सूचीमे आबि रंगमंचीय उपस्थिति पबैत अछि।

प्रश्न 7602. एहि लेखक आरम्भिक आधारभूमि बादक नाटक-समीक्षा लेल की करैत अछि?
क. दिल्लीकेँ भारतीय रंग-संगमक मंच बना कऽ दू प्रस्तुति पर चर्चा खोलैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. दिल्लीकेँ भारतीय रंग-संगमक मंच बना कऽ दू प्रस्तुति पर चर्चा खोलैत अछि।
व्याख्या: भाषा-केन्द्रक बदलाब बाद “जात ही पूछो साधु की” आ “अचलायतन”क चर्चा स्वाभाविक बनैत अछि।

खण्ड ७६६ : विदेह-सदेह २ — राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयमे रंग-संगम

प्रश्न 7603. दिल्लीक प्रेक्षककेँ कोन ठाम “अत्यंत सुखद अनुभव” भेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयक प्रांगणमे।
उत्तर: घ. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयक प्रांगणमे।
व्याख्या: लेखमे एन.एस.डी. परिसरमे दू महत्वपूर्ण नाटकक मंचनक बात अछि।

प्रश्न 7604. “जात ही पूछो साधु की”क मूल लेखक के छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. विजय तेंडुलकर।
उत्तर: घ. विजय तेंडुलकर।
व्याख्या: लेखमे मराठी नाटककार विजय तेंडुलकरक प्रसिद्ध नाटकक हिन्दी मंचनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 7605. “अचलायतन”क मूल लेखक के छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. रवीन्द्रनाथ ठाकुर।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. रवीन्द्रनाथ ठाकुर।
व्याख्या: लेखमे बांग्ला लेखक रवीन्द्रनाथ ठाकुरक “अचलायतन”क हिन्दी मंचनक चर्चा अछि।

प्रश्न 7606. दूनू नाटक कोन भाषामे मंचित भेल?
क. हिन्दीमे।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. हिन्दीमे।
व्याख्या: मराठी आ बांग्ला मूलक दूनू नाटक हिन्दी मंचपर प्रस्तुत भेल, जे रंग-संगमक रूपक बनैत अछि।

प्रश्न 7607. “तीनू रंगमंचक संगम”क आशय की अछि?
क. मराठी, बांग्ला आ हिन्दी रंग-परम्पराक एक मंचपर मिलन।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. मराठी, बांग्ला आ हिन्दी रंग-परम्पराक एक मंचपर मिलन।
व्याख्या: एक मराठी आ एक बांग्ला नाटक हिन्दीमे प्रस्तुत भेल, तें तीन रंग-परम्परा मिलल।

प्रश्न 7608. “जात ही पूछो साधु की”क निर्देशन के केने छलाह?
क. राजिन्दर नाथ।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. राजिन्दर नाथ।
व्याख्या: लेखमे राजिन्दर नाथकेँ प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक कहि एहि प्रस्तुति सँ जोड़ल गेल अछि।

प्रश्न 7609. “अचलायतन”क निर्देशन केने छलाह?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. शांतनु बोस।
उत्तर: घ. शांतनु बोस।
व्याख्या: लेखमे युवा निर्देशक शांतनु बोसक नाम “अचलायतन”सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 7610. “जात ही पूछो साधु की”क प्रस्तुति मे कलाकार के छलाह?
क. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमंडलक कलाकार।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमंडलक कलाकार।
व्याख्या: लेख स्पष्ट करैत अछि जे एहि नाटकमे एन.एस.डी. रंगमंडल कलाकार सभ छलाह।

प्रश्न 7611. “अचलायतन”क प्रस्तुति कोन दल/समूहसँ जुड़ल छल?
क. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयक द्वितीय वर्षक छात्र।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयक द्वितीय वर्षक छात्र।
व्याख्या: लेख “अचलायतन”केँ प्रशिक्षण-संबद्ध छात्र-प्रस्तुति बतबैत अछि।

प्रश्न 7612. दू प्रस्तुति एक संग चर्चामे अनबाक कारण की अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. दूनू दिल्लीमे भारतीय रंग-विविधताक सशक्त उदाहरण बनल।
उत्तर: घ. दूनू दिल्लीमे भारतीय रंग-विविधताक सशक्त उदाहरण बनल।
व्याख्या: एक मंचीय अवसर बहुभाषिक, बहु-परम्परागत आ प्रशिक्षणपरक रंग-दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड ७६७ : विदेह-सदेह २ — “जात ही पूछो साधु की”: महीपत आ बेरोजगारी

प्रश्न 7613. “जात ही पूछो साधु की”कैं लेखक कोन प्रकारक नाटक कहैत छथि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. स्वस्थ हास्य-व्यंग्य नाटक।

उत्तर: घ. स्वस्थ हास्य-व्यंग्य नाटक।

व्याख्या: लेखमे नाटकक स्वरूप “स्वस्थ हास्य-व्यंग्य” रूपमे परिभाषित अछि।

प्रश्न 7614. नाटकक मुख्य पात्रक नाम की अछि?

क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ग. महीपत।

घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

उत्तर: ग. महीपत।

व्याख्या: कथासारमे महीपत नामक व्यक्ति नाटकक केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 7615. महीपत कोना एम.ए. पास करैत अछि?

क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कहुना कऽ, थर्ड डिविजनसँ।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

उत्तर: ख. कहुना कऽ, थर्ड डिविजनसँ।

व्याख्या: नाटकक हास्य-व्यंग्य पात्रक शैक्षिक उपलब्धिक कमज़ोरी सँ खुलैत अछि।

प्रश्न 7616. एम.ए.क बाद महीपतक स्थिति की होइत अछि?

क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. बहुत दिन बेरोजगार रहैत अछि।

उत्तर: घ. बहुत दिन बेरोजगार रहैत अछि।

व्याख्या: कथासारमे पढ़ल-लिखल बेरोजगारीक सामाजिक व्यंग्य अछि।

प्रश्न 7617. महीपत बादमे कोन “टेकनिक” सीखैत अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ख. सिफारिशिज़्मक टेकनिक।

ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

उत्तर: ख. सिफारिशिज़्मक टेकनिक।

व्याख्या: लेखमे महीपतक रोजगार यात्रा सिफारिशक तकनीकसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 7618. सिफारिशक सहारे महीपत कोन पद पबैत अछि?

क. कॉलेजमे लेक्चरर।

ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. कॉलेजमे लेक्चरर।

व्याख्या: वह कोनो कॉलेजमे लेक्चरर बनैत अछि, मुदा स्थायित्व नहि पबैत।

प्रश्न 7619. नाटकक अंतमे महीपतक स्थिति की भऽ जाइत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. फेर बेरोजगार।
उत्तर: घ. फेर बेरोजगार।
व्याख्या: कतेको उथल-पुथल बाद पात्र पुनः बेरोजगारीमे आबि जाइत अछि।

प्रश्न 7620. महीपतक यात्रा कुन सामाजिक समस्या पर व्यंग्य करैत अछि?
क. शिक्षित बेरोजगारी आ सिफारिशी नौकरी-व्यवस्था।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. शिक्षित बेरोजगारी आ सिफारिशी नौकरी-व्यवस्था।
व्याख्या: थर्ड डिविजन, बेरोजगारी, सिफारिश आ नौकरीक चक्र नाटकक कथ्य बनैत अछि।

प्रश्न 7621. नाटकक कथ्य “सोझा-सोझी” हेबाक बादो प्रभावी किएक अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. संवादमे द्वन्द्व आ उत्सुकता भरल अछि।
उत्तर: घ. संवादमे द्वन्द्व आ उत्सुकता भरल अछि।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे सरल कथ्यकेँ संवादक तीक्ष्णता रंगमंचीय शक्ति दैत अछि।

प्रश्न 7622. महीपतक कथा समाजक कोन विडम्बना खोलैत अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. डिग्री, सिफारिश आ बेरोजगारीक टूटल सम्बन्ध।
उत्तर: घ. डिग्री, सिफारिश आ बेरोजगारीक टूटल सम्बन्ध।
व्याख्या: नाटक शिक्षा आ रोजगार बीचक विसंगति पर हास्य-व्यंग्य करैत अछि।

खण्ड ७६८ : विदेह-सदेह २ — संवाद, समकालीनता आ हास्य-व्यंग्य

प्रश्न 7623. लेखकक अनुसार “जात ही पूछो साधु की”मे संवादक मुख्य गुण की अछि?
क. चोटगर आ तीक्ष्ण।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. चोटगर आ तीक्ष्ण।
व्याख्या: संवाद दर्शककेँ बेधैत अछि, से लेखमे स्पष्ट अछि।

प्रश्न 7624. नाटक ४० वर्ष पहिने लिखल गेल होइतहुँ आजुक संदर्भमे किएक प्रभावी अछि?
क. कथ्य आजुओ समकालीन बुझाइत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. कथ्य आजुओ समकालीन बुझाइत अछि।
व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे पुरान लिखल बात वर्तमान समाजपर सेहो लागू होइत अछि।

प्रश्न 7625. प्रेक्षक महीपतक कोन प्रस्तुति-क्षणमे हेराएल रहैत छथि?
क. सोलो लौगीमे।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. सोलो लौगीमे।
व्याख्या: नाटककारक संवाद-कौशल प्रेक्षककेँ महीपतसँ एकाग्र कऽ दैत अछि।

प्रश्न 7626. हास्यक पुट नाटककारकेँ की सुविधा दैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. अपन सभ गंभीर बात सहज कहि देबाक।
उत्तर: घ. अपन सभ गंभीर बात सहज कहि देबाक।
व्याख्या: हास्य व्यंग्यकेँ ग्राह्य बना दैत अछि।

प्रश्न 7627. दर्शक नाटककारक बात कोना ग्रहण करैत छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. सहर्ष।
उत्तर: घ. सहर्ष।
व्याख्या: लेखमे कहल अछि जे हास्यक कारण दर्शक बात सहज स्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 7628. विजय तेंडुलकरक नाटक-प्रसार सम्बन्धमे लेखमे कोन बात अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. सम्पूर्ण भारतमे हुनक नाटक सभसँ बेसी मंचित भेल।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. सम्पूर्ण भारतमे हुनक नाटक सभसँ बेसी मंचित भेल।
व्याख्या: लेखक तेंडुलकरक रंगमंचीय लोकप्रियता रेखांकित करैत छथि।

प्रश्न 7629. तेंडुलकरक नाटक सभमे “जात ही पूछो साधु की”क स्थान की कहल गेल?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सबसे बेसी मंचित नाटक सभमे।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. सबसे बेसी मंचित नाटक सभमे।
व्याख्या: लेखमे एहि नाटकक मंचन-परम्परा विशेष रूपेँ उल्लेखित अछि।

प्रश्न 7630. हिन्दी रंगमंचमे राजिन्दर नाथक परिचय कोना देल गेल?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. सुपरिचित निर्देशक।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. सुपरिचित निर्देशक।
व्याख्या: लेख राजिन्दर नाथकेँ हिन्दी रंगमंचक प्रसिद्ध नाम मानैत अछि।

प्रश्न 7631. राजिन्दर नाथ आ विजय तेंडुलकरक सम्बन्ध कोना देखाओल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. राजिन्दर नाथ विजय तेंडुलकरक प्रायः सभ नाटकक हिन्दी मंचन कतेको बेर कएने छथि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. राजिन्दर नाथ विजय तेंडुलकरक प्रायः सभ नाटकक हिन्दी मंचन कतेको बेर कएने छथि।
व्याख्या: लेख दूनूकेँ अनुवादित/हिन्दी मंचन परम्परासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7632. एहि भागमे नाटकक स्थायित्वक मूल कारण की उभरैत अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. समकालीन कथ्य, तीक्ष्ण संवाद आ हास्य-व्यंग्यक संयोजन।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. समकालीन कथ्य, तीक्ष्ण संवाद आ हास्य-व्यंग्यक संयोजन।
व्याख्या: लेखक नाटकक प्रभावकेँ केवल कथासारमे नहि, संवाद-शक्ति आ मंचन-परम्परामे देखैत छथि।

खण्ड ७६९ : विदेह-सदेह २ — राजिन्दर नाथक निर्देशकीय विधि

प्रश्न 7633. “जात ही पूछो साधु की”क मंच-संप्रेषण लेल राजिन्दर नाथ कोन विधि अपनौलनि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. अति सरल विधि।
उत्तर: घ. अति सरल विधि।
व्याख्या: लेखमे मंचीय संप्रेषणक सरलता पर बल अछि।

प्रश्न 7634. सरल मंचनक भीतर निर्देशकक विशेष परिश्रम कतए देखाइत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. अभिनेताक अभिव्यक्तिपर बारीकीसँ कार्य।
उत्तर: घ. अभिनेताक अभिव्यक्तिपर बारीकीसँ कार्य।
व्याख्या: मंच-सज्जा सरल अछि, मुदा अभिनय-निर्देशन सूक्ष्म अछि।

प्रश्न 7635. मंचपर तीनू कात की बनाओल गेल छल?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. तीनटा दरवाजा।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. तीनटा दरवाजा।
व्याख्या: लेख मंच-संरचनाक न्यूनतम वस्तु सभ गनबैत अछि।

प्रश्न 7636. मंचक आधा भागपर कोन ऊँचाइ क प्लेटफॉर्म छल?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मात्र एक फूट ऊँच।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. मात्र एक फूट ऊँच।
व्याख्या: एक फूटक प्लेटफॉर्म सरल संरचनाक हिस्सा अछि।

प्रश्न 7637. मंच पर कतेक ब्लॉकक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सात-आठटा ब्लॉक।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. सात-आठटा ब्लॉक।
व्याख्या: मात्र सात-आठ ब्लॉकसँ जीवंत प्रस्तुति बनल।

प्रश्न 7638. सरल वस्तु सभसँ जीवंत प्रस्तुति बनब निर्देशकक कोन गुण देखबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. दूरदृष्टि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. दूरदृष्टि।
व्याख्या: लेख स्पष्ट कहैत अछि जे एहन प्रस्तुति निर्देशकक दूरदृष्टिक परिणाम थिक।

प्रश्न 7639. एहि प्रस्तुति मे बाहरी वैभवक बदला कोन बात प्रधान अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. संप्रेषण, अभिनय आ रचनात्मक मंच-उपयोग।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. संप्रेषण, अभिनय आ रचनात्मक मंच-उपयोग।
व्याख्या: न्यूनतम मंच-वस्तुक प्रयोग प्रस्तुति-शक्ति दिखबैत अछि।

प्रश्न 7640. मंच-सज्जाक सादगी कथ्यकेँ कोना सहारा दैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ध्यान पात्र आ संवादपर केन्द्रित रहैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. ध्यान पात्र आ संवादपर केन्द्रित रहैत अछि।
व्याख्या: सरलता महीपतक कथा आ व्यंग्यकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 7641. तीन दरवाजा, प्लेटफॉर्म आ ब्लॉक सभक भूमिका की अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बहुविध दृश्य-संकेत बिना भारी सज्जाक निर्माण।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. बहुविध दृश्य-संकेत बिना भारी सज्जाक निर्माण।
व्याख्या: सरल वस्तु सभ दृश्य-परिवर्तन आ गति सम्भव बनबैत अछि।

प्रश्न 7642. राजिन्दर नाथक प्रस्तुति-समीक्षाक निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. सरल मंच-संरचनामे सूक्ष्म अभिनय-निर्देशनसँ प्रभावी रंग-संप्रेषण सम्भव अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. सरल मंच-संरचनामे सूक्ष्म अभिनय-निर्देशनसँ प्रभावी रंग-संप्रेषण सम्भव अछि।
व्याख्या: लेख प्रस्तुति कला कैँ वैभव नहि, दृष्टि आ अनुशासनपर निर्भर देखबैत अछि।

खण्ड ७७० : विदेह-सदेह २ — प्रकाश परिकल्पना आ मंच-रूपान्तरण

प्रश्न 7643. “जात ही पूछो साधु की”क प्रस्तुति मे प्रकाश परिकल्पना ककर छल?
क. गोविन्द यादवक।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. गोविन्द यादवक।
व्याख्या: लेखमे प्रकाश-परिकल्पनाक नाम स्पष्ट अछि।

प्रश्न 7644. गोविन्द यादवक प्रशिक्षणक सम्बन्ध कोन संस्थासँ बताओल गेल?
क. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय।
व्याख्या: गोविन्द यादव सेहो एन.एस.डी.सँ प्रशिक्षित कहल गेलाह।

प्रश्न 7645. महीपत बनल अभिनेता अम्बरीश जखन दोसर प्रकाश-बिम्बमे प्रवेश करैत छथि, तखन की होइत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. समुच्चा परिदृश्य बदलि जाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. समुच्चा परिदृश्य बदलि जाइत अछि।
व्याख्या: लेख प्रकाशक प्रभाव सँ दृश्य-रूपान्तरणक शक्ति देखबैत अछि।

प्रश्न 7646. मात्र प्रकाशक प्रभावसँ मंच कखनो की बनैत अछि?
क. समाचार-पत्रिकाक दफ्तर।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. समाचार-पत्रिकाक दफ्तर।
व्याख्या: प्रकाश दृश्य-परिवर्तनक मुख्य साधन बनैत अछि।

प्रश्न 7647. प्रकाशक प्रभावसँ मंच कखनो कोन ग्रामीण रूप ग्रहण करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. निछछ देहात।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. निछछ देहात।
व्याख्या: मंच बिना भारी बदलाव ग्रामीण जगत बनि जाइत अछि।

प्रश्न 7648. प्रकाशक सहारे मंच कोन शैक्षिक/सामाजिक स्थान मे बदलैत अछि?
क. गामक कॉलेज।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. गामक कॉलेज।
व्याख्या: प्रकाश दृश्य संकेतक रूपमे स्थान-परिवर्तन करबैत अछि।

प्रश्न 7649. प्रकाशक प्रभावसँ मंच कखनो कोन अवकाश-स्थल बनैत अछि?
क. पिकनिक स्थल।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. पिकनिक स्थल।
व्याख्या: एकहि मंच पर बहुविध स्थानक अनुभूति बनैत अछि।

प्रश्न 7650. वस्त्राभूषणक सम्बन्धमे लेखकक राय की अछि?
क. सभ तर्कसंगत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. सभ तर्कसंगत अछि।
व्याख्या: वस्त्राभूषण प्रस्तुति-संतुलनक हिस्सा बनैत अछि।

प्रश्न 7651. प्रस्तुतिक संतुलनक परिणाम दर्शकपर की होइत अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. दर्शक पूर्णताक भाव संग प्रेक्षागृहसँ बाहर अबैत छथि।
उत्तर: घ. दर्शक पूर्णताक भाव संग प्रेक्षागृहसँ बाहर अबैत छथि।
व्याख्या: लेख मंच-संरचना, प्रकाश, वस्त्र आ अभिनयक संयुक्त प्रभावक बात करैत अछि।

प्रश्न 7652. एहि भागमे प्रकाशक नाट्यगत महत्त्व की अछि?
क. प्रकाश दृश्य-संकेत, स्थान-परिवर्तन आ वातावरण-निर्माणक सक्रिय साधन अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. प्रकाश दृश्य-संकेत, स्थान-परिवर्तन आ वातावरण-निर्माणक सक्रिय साधन अछि।
व्याख्या: प्रकाश सजावट नहि, रंग-संप्रेषणक मूल उपकरण रूपमे उभरैत अछि।

खण्ड ७७१ : विदेह-सदेह २ — “अचलायतन”: प्रशिक्षण, तकनीक आ देह-अभिव्यक्ति

प्रश्न 7653. “अचलायतन” प्रस्तुति कोन कारण तकनीकी पक्षपर बेसी केन्द्रित कहल गेल?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई छात्रक प्रशिक्षणक हिस्सा छल।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. ई छात्रक प्रशिक्षणक हिस्सा छल।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे प्रशिक्षण-संबद्ध प्रस्तुति हेबाक कारण तकनीकपर बेसी ध्यान गेल।

प्रश्न 7654. बहुतो दर्शककेँ प्रस्तुति आकर्षित नहि केने होए, तइयो लेखक कोन गुण मानैत छथि?
क. तकनीकी दृष्टिए उत्कृष्ट।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. तकनीकी दृष्टिए उत्कृष्ट।
व्याख्या: लेख दर्शक-आकर्षण आ तकनीकी श्रेष्ठता बीच भेद करैत अछि।

प्रश्न 7655. नाटक देखबाकाल अभिनेता-अभिनेत्रीक कोन क्षमता रोमांचित करैत छल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. शारीरिक शक्ति।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. शारीरिक शक्ति।
व्याख्या: शरीर-क्षमता प्रस्तुति मे मुख्य प्रभावक रूपमे आयल।

प्रश्न 7656. देह-गतिसँ सम्बन्धित कोन तत्वक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. देह गति।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. देह गति।
व्याख्या: रंग-अभ्यासक शारीरिक पक्ष प्रस्तुति विश्लेषणमे प्रमुख अछि।

प्रश्न 7657. स्वर सम्बन्धी कोन नाट्य-तत्व रोमांचित करैत छल?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. आवाज संतुलन।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. आवाज संतुलन।
व्याख्या: आवाजक संतुलन रंग-प्रशिक्षणक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि रूपमे देखा गेल।

प्रश्न 7658. पात्रक भीतरू पक्षक सम्बन्धमे लेखक की अनुभव करैत छथि?
क. मानसिक अभिव्यक्ति रोमांचित करैत छल।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. मानसिक अभिव्यक्ति रोमांचित करैत छल।
व्याख्या: देह, स्वर आ मन तीनू स्तरपर अभिनयक चर्चा अछि।

प्रश्न 7659. रवीन्द्रनाथक पुरान कथाकेँ आजुक संदर्भमे रखनाइ कोना कहल गेल?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. अति कठिन कार्य।
उत्तर: घ. अति कठिन कार्य।
व्याख्या: पुरान रचना केँ समकालीन बनबैक चुनौती लेखक चिन्हैत छथि।

प्रश्न 7660. निर्देशक शांतनु बोस की कोशिश कएलनि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. अपन दृष्टिसँ कथाकेँ समकालीन बनएबाक।
उत्तर: घ. अपन दृष्टिसँ कथाकेँ समकालीन बनएबाक।
व्याख्या: लेखक निर्देशकक आधुनिक रंग-दृष्टिक प्रयास सराहैत छथि।

प्रश्न 7661. “अचलायतन”मे प्रशिक्षण-प्रयोगक मूल आधार की उभरैत अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. देह, आवाज, तकनीक आ मानसिक अभिव्यक्तिक अभ्यास।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. देह, आवाज, तकनीक आ मानसिक अभिव्यक्तिक अभ्यास।
व्याख्या: छात्र-प्रस्तुति रंग-शिक्षाक व्यावहारिक पक्ष खोलैत अछि।

प्रश्न 7662. एहि प्रस्तुति पर लेखकीय मूल्यांकन कोना संतुलित अछि?
क. दर्शक-आकर्षण कम हो सकैत अछि, मुदा तकनीकी उत्कृष्टता निर्विवाद अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. दर्शक-आकर्षण कम हो सकैत अछि, मुदा तकनीकी उत्कृष्टता निर्विवाद अछि।
व्याख्या: लेख समीक्षाक रूपमे एकपक्षीय प्रशंसा नहि, संतुलित विवेचन करैत अछि।

खण्ड ७७२ : विदेह-सदेह २ — “अचलायतन”क कथा-सार आ रूढ़ि-भंग

प्रश्न 7663. “अचलायतन”क कथा-सारमे अचलायतन की अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. एकटा शिक्षा संस्था।
उत्तर: घ. एकटा शिक्षा संस्था।
व्याख्या: लेखक कथासारमे “अचलायतन” नामक शिक्षा-संस्था बतबैत छथि।

प्रश्न 7664. ओहि संस्थामे शिक्षाक नामपर की जीवित राखल गेल अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सालों-साल पुरान रूढ़ि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. सालों-साल पुरान रूढ़ि।
व्याख्या: कथा संस्था मे जड़ परम्परा आ रूढ़ि-केंद्रित शिक्षा देखबैत अछि।

प्रश्न 7665. पुरान रूढ़ि तोड़बामे के सभ भूमिका निभबैत छथि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. किछु नव सोचक विद्यार्थी आ गुरु।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. किछु नव सोचक विद्यार्थी आ गुरु।
व्याख्या: नव सोच आ गुरुक प्रयास संस्था-परिवर्तनक कारण बनैत अछि।

प्रश्न 7666. रूढ़ि टूटलाक बाद अचलायतन संग की होइत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एक बेर फेरसँ पुनः स्थापित होइत अछि।
उत्तर: घ. एक बेर फेरसँ पुनः स्थापित होइत अछि।
व्याख्या: कथा विनाश नहि, नव अर्थमे पुनर्स्थापनक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 7667. शांतनु बोस कोन रंग-फॉर्म तोड़बाक कोशिश कएलनि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. कन्वेन्शनल फॉर्म।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. कन्वेन्शनल फॉर्म।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे परम्परागत प्रस्तुति-फॉर्म तोड़बाक प्रयास भेल।

प्रश्न 7668. शांतनु बोस लगातार कोन विधामे कार्यरत कहल गेलाह?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि प्रयोगधर्मी रंग-विधामे।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. एहि प्रयोगधर्मी रंग-विधामे।
व्याख्या: लेख निर्देशकक सतत प्रयोगशीलता देखबैत अछि।

प्रश्न 7669. सामान्य दर्शक एखन कोन बात लेल तैयार नहि कहल गेल?
क. एहि फॉर्मकेँ स्वीकारबाक लेल।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. एहि फॉर्मकेँ स्वीकारबाक लेल।
व्याख्या: प्रयोगधर्मी रूपक सामाजिक ग्रहणशीलता पर लेखक प्रश्न रखैत छथि।

प्रश्न 7670. “अचलायतन”क मुख्य संघर्ष की अछि?
क. जड़ शैक्षिक रूढ़ि बनाम नव सोच।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. जड़ शैक्षिक रूढ़ि बनाम नव सोच।
व्याख्या: कथा संस्था-व्यवस्था आ परिवर्तनक नाट्य संघर्ष अछि।

प्रश्न 7671. कथाकेँ आजुक संदर्भमे समकालीन बनएबाक चुनौती किएक कठिन अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. मूल रचना पुरान अछि, मुदा ओकर अर्थ वर्तमान सामाजिक-शैक्षिक जड़ता सँ जोड़बाक अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मूल रचना पुरान अछि, मुदा ओकर अर्थ वर्तमान सामाजिक-शैक्षिक जड़ता सँ जोड़बाक अछि।
व्याख्या: निर्देशक पुरान कथा केँ वर्तमान संवेदना देबाक प्रयास करैत छथि।

प्रश्न 7672. एहि भागक नाट्य निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. रूढ़ि तोड़ि नव रूपमे संस्थाकेँ पुनर्स्थापित करब रंग-प्रयोगक केन्द्रीय आशय अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. रूढ़ि तोड़ि नव रूपमे संस्थाकेँ पुनर्स्थापित करब रंग-प्रयोगक केन्द्रीय आशय अछि।
व्याख्या: “अचलायतन” जड़ता आ पुनर्जीवनक प्रतीक बनि उभरैत अछि।

खण्ड ७७३ : विदेह-सदेह २ — यथार्थवाद, समाज आ मैथिली लोक-जीवन

प्रश्न 7673. “जात ही पूछो साधु की”कैं लेखक कोन दृष्टिसँ अत्यधिक कहैत छथि?

क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. यथार्थवादी।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

उत्तर: ख. यथार्थवादी।

व्याख्या: नाटकमे समाजक वर्तमान रूप ओहिना राखल गेल, से लेखक कहैत छथि।

प्रश्न 7674. यथार्थवादी नाटक समाजक रूप कोना रखैत अछि?

क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. जे रूप आइ अछि, ओही रूपमे।

उत्तर: घ. जे रूप आइ अछि, ओही रूपमे।

व्याख्या: लेखक नाटकक यथार्थवादक आधार सामाजिक रूपक सीधा प्रस्तुतीकरण मानैत छथि।

प्रश्न 7675. तथाकथित सभ्य समाज आ निरक्षर समाजक वार्तालापमे लेखक कोन भेद देखैत छथि?

क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आकाश-पातालक अंतर।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

उत्तर: ख. आकाश-पातालक अंतर।

व्याख्या: नाटक संवादक स्तर पर सामाजिक विभाजन खोलैत अछि।

प्रश्न 7676. लेखकक अनुसार नाटककार, समीक्षक आ दर्शक सभकैं एहि नाटककैं कोना स्वीकारबाक चाही?

क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

घ. यथार्थवादक रूपमे।

उत्तर: घ. यथार्थवादक रूपमे।

व्याख्या: लेख प्रत्यक्ष सामाजिक रूपांकनक स्वीकारक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 7677. मिथिलाक लोक जीवन एहि फॉर्मकैं कखन स्वीकारि चुकल कहल गेल?

क. बहुत पहिले।

ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

उत्तर: क. बहुत पहिले।

व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे मिथिला लोक जीवन एहन यथार्थवादी फॉर्म पहिले सँ स्वीकारि चुकल अछि।

प्रश्न 7678. मैथिलीमे एहि फॉर्ममे रचना सभक सम्बन्धमे लेखकक राय की अछि?

क. कतेको उत्कृष्ट रचना भेल अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. कतेको उत्कृष्ट रचना भेल अछि।

व्याख्या: मैथिलीमे यथार्थवादी लोक-आधारित रूपक मूल्य लेखक मानैत छथि।

प्रश्न 7679. मैथिल तथाकथित सभ्य साहित्यकारक समस्या की बताओल गेल?
क. एखन धरि एकरा स्वीकारबाक लेल तैयार नहि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. एखन धरि एकरा स्वीकारबाक लेल तैयार नहि।
व्याख्या: लेखक लोक-रूप आ सभ्यतावादी साहित्यिक संकोच बीच तनाव देखबैत छथि।

प्रश्न 7680. “एहना स्थिति के की कहल जा सकैत अछि?” प्रश्नक भाव की अछि?
क. लेखकीय क्षोभ आ आत्मालोचनाक आह्वान।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. लेखकीय क्षोभ आ आत्मालोचनाक आह्वान।
व्याख्या: प्रश्न मैथिली साहित्यिक समाजक स्वीकार-अस्वीकार पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 7681. यथार्थवादक चर्चा मैथिली रंगमंच लेल किएक जरूरी अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. किएक तँ लोक-जीवनक स्वीकृत रूपकेँ साहित्यिक मंच पर प्रतिष्ठा चाही।
उत्तर: घ. किएक तँ लोक-जीवनक स्वीकृत रूपकेँ साहित्यिक मंच पर प्रतिष्ठा चाही।
व्याख्या: लेख रंगमंच आ लोक-संस्कृति बीच सेतु बनबैत अछि।

प्रश्न 7682. एहि तुलनात्मक निष्कर्षमे “जात ही पूछो साधु की” मैथिली लेल की संकेत दैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. लोक-जीवनक यथार्थवादी रूपकेँ निर्भीक मंचनक संकेत।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. लोक-जीवनक यथार्थवादी रूपकेँ निर्भीक मंचनक संकेत।
व्याख्या: हिन्दी प्रस्तुति देख लेखक मैथिली रंग-साहित्यक सम्भावना आ संकोच दुनू पर विचार करैत छथि।

खण्ड ७७४ : विदेह-सदेह २ — “मिथिलामे रंगकलाक समकालीन दृष्टि”: रंगकर्मक श्रेष्ठता

प्रश्न 7683. “मिथिलामे रंगकलाक समकालीन दृष्टि”क लेखक के रूपमे नाम आयल अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. प्रकाश।
उत्तर: घ. प्रकाश।
व्याख्या: शीर्षकक तले प्रकाशक नाम अछि।

प्रश्न 7684. लेखक सभ कलामे श्रेष्ठतम कला ककरा मानैत छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. रंगकर्म।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. रंगकर्म।
व्याख्या: आरम्भमे स्पष्ट कहल गेल जे रंगकर्म सभ कलामे श्रेष्ठतम मानल गेल अछि।

प्रश्न 7685. रंगकर्मक श्रेष्ठता लेखक केवल आजुक नहि, कोन कालसँ मानैत छथि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. प्राचीन कालसँ।
उत्तर: घ. प्राचीन कालसँ।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि—से आइ नहि, प्राचीने कालसँ।

प्रश्न 7686. ई मान्यता कोन स्तर पर व्यापक कहल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. विश्वक सभ सभ्यतामे।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. विश्वक सभ सभ्यतामे।
व्याख्या: लेख रंगकर्मक महत्त्वकेँ वैश्विक आ सभ्यतागत आधार दैत अछि।

प्रश्न 7687. चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला आदिसँ रंगकर्मक मूल भेद लेखक कोना बतबैत छथि?
क. रंगकर्म सामाजिक बेसी, व्यक्तिगत कम अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. रंगकर्म सामाजिक बेसी, व्यक्तिगत कम अछि।
व्याख्या: अन्य कला सीमित वा व्यक्तिगत बेसी, रंगकर्म समाजक संग प्रत्यक्ष जुड़ल।

प्रश्न 7688. लेखकक अनुसार रंगकर्म दोसर प्रोफेशनमे कोना सहायक अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. समर्थक/सपोर्टिभ कला रूपमे।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. समर्थक/सपोर्टिभ कला रूपमे।
व्याख्या: रंगकर्म व्यक्तित्व-निर्माण द्वारा अन्य पेशामे सेहो सहायक बनैत अछि।

प्रश्न 7689. रंगकर्म “व्यक्तिगतसँ बेसी सामाजिक” कहबाक आशय की अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई दर्शक, समूह, समाज आ सामूहिक व्यवहारसँ बनैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. ई दर्शक, समूह, समाज आ सामूहिक व्यवहारसँ बनैत अछि।
व्याख्या: नाटक अकेला कक्षाक कला नहि, सामूहिक सामाजिक क्रिया अछि।

प्रश्न 7690. लेखक रंगकर्मक महत्त्वक प्रचार नहि होएबाक कारण ककर अज्ञानता कहैत छथि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समाजशास्त्री आ समाज-अगुवाक।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. समाजशास्त्री आ समाज-अगुवाक।
व्याख्या: लेख समाजशास्त्रीय अभिज्ञता/अज्ञानता पर प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 7691. रंगकर्मक महत्त्वक विपरीत प्रचारक परिणाम की भेल?
क. समाज रंगकलासँ जीविकाक प्रश्न करैत रहि गेल।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. समाज रंगकलासँ जीविकाक प्रश्न करैत रहि गेल।
व्याख्या: विशेषताक प्रचार नहि भेल, तेँ रोजगार-संदेह प्रमुख बनल।

प्रश्न 7692. एहि आरम्भिक तर्कक निष्कर्ष की अछि?
क. रंगकर्मक सामाजिक, व्यक्तित्वगत आ सभ्यतागत मूल्य बुझब आवश्यक अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. रंगकर्मक सामाजिक, व्यक्तित्वगत आ सभ्यतागत मूल्य बुझब आवश्यक अछि।
व्याख्या: लेख रंगकर्मकेँ मनोरंजन नहि, जीवन-समाजक व्यापक कला सिद्ध करबाक आरम्भ करैत अछि।

खण्ड ७७५ : विदेह-सदेह २ — समाज, जीविका-प्रश्न आ रंगकलाक भ्रम

प्रश्न 7693. लेखकक अनुसार सूचना-तंत्रक क्रांति बादो मिथिला समाज की प्रश्न करैत अछि?
क. रंगकलासँ जीविकाक प्रश्न।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. रंगकलासँ जीविकाक प्रश्न।
व्याख्या: लेखक क्षोभ व्यक्त करैत छथि जे आधुनिक युगमे सेहो रंगकर्मक उपयोगिता पर संदेह अछि।

प्रश्न 7694. समाज रंगकला सम्बन्धी जानकारीमे कोन स्थिति देखबैत अछि?
क. अपन असमर्थता।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. अपन असमर्थता।
व्याख्या: लेखमे समाजक जानकारी-अभावक चर्चा अछि।

प्रश्न 7695. लेखक “आखिर एहन स्थितिकिएक?” प्रश्न ककरा सँ पूछैत छथि?
क. समाजशास्त्री आ समाजक अगुवा माननिहार लोकसँ।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. समाजशास्त्री आ समाजक अगुवा माननिहार लोकसँ।
व्याख्या: लेख रंगकर्म-विरोधी मानसिकता पर सामाजिक उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 7696. मिथिला समाजक अधिकांश व्यक्ति नाटक वा रंगमंचबारे कोन दशामे कहल गेल?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. अत्यंत असमंजसमे।
उत्तर: घ. अत्यंत असमंजसमे।
व्याख्या: लेखक रंगमंचक प्रति समाजक भ्रमित दृष्टि पर बल दैत छथि।

प्रश्न 7697. रंगमंच-विधा कतेक रास ककरा सँ घेरल कहल गेल?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. तर्क-कुतर्कसँ।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. तर्क-कुतर्कसँ।
व्याख्या: ज्ञान-अभावे नाट्य-विधा पर गलत तर्कक जाल बनल अछि।

प्रश्न 7698. कम ज्ञान राखनिहार लोक कोना व्यवहार करैत छथि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ओतेक ज्ञानिक अभिनय कऽ विधाकेँ तोड़ि-मरोड़ि प्रस्तुत करैत छथि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. ओतेक ज्ञानिक अभिनय कऽ विधाकेँ तोड़ि-मरोड़ि प्रस्तुत करैत छथि।
व्याख्या: लेखक अज्ञानक आत्मविश्वास पर कटाक्ष करैत छथि।

प्रश्न 7699. रंग-विधाक प्रकृति आ व्याकरणबारे लेखक की कहैत छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. बहुत थोड़े तथ्य उजागर भेल अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. बहुत थोड़े तथ्य उजागर भेल अछि।
व्याख्या: विधाक अध्ययन-प्रचार अभावक कारण भ्रम कायम अछि।

प्रश्न 7700. रंगमंचकेँ आजियो कोना नहि लेल जा रहल अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गम्भीरतासँ नहि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. गम्भीरतासँ नहि।
व्याख्या: लेखक मिथिला समाजक रंगमंचीय उदासीनता देखबैत छथि।

प्रश्न 7701. रंगमंचपर लिखल-कहल बात बुझौवलि किएक बनि गेल?
क. किएक तँ ओ बहुत शास्त्रीय ढंगसँ प्रस्तुत भेल।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. किएक तँ ओ बहुत शास्त्रीय ढंगसँ प्रस्तुत भेल।
व्याख्या: सार्वजनिक समझक बदला दुरूह भाषा भ्रम बढ़बैत अछि।

प्रश्न 7702. एहि भागक मूल चेतावनी की अछि?
क. ज्ञानहीन तर्क आ दुरूहता मिलि रंगकर्मक सही सामाजिक समझ रोकैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. ज्ञानहीन तर्क आ दुरूहता मिलि रंगकर्मक सही सामाजिक समझ रोकैत अछि।
व्याख्या: लेख रंगमंचक लोकप्रिय, स्पष्ट आ गंभीर विवेचनक आवश्यकता रेखांकित करैत अछि।

खण्ड ७७६ : विदेह-सदेह २ — नाट्यकर्म साहित्य-विधा आ फलदायी सामाजिक कला

प्रश्न 7703. लेखक मैथिली साहित्यकार लोकनिक सम्भावित दृष्टि कोना उठबैत छथि?
क. जँ ओ रंगमंचकेँ साहित्यक विधा मानैत छथि, तखन नाट्यकर्म बेसी फलदायी अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. जँ ओ रंगमंचकेँ साहित्यक विधा मानैत छथि, तखन नाट्यकर्म बेसी फलदायी अछि।
व्याख्या: लेख साहित्य-विधा मानबाक स्थिति मे सेहो नाट्यकर्मक श्रेष्ठ फलदायित्व सिद्ध करैत अछि।

प्रश्न 7704. लेखक किछु गणमान्य व्यक्तिमे की देखैत छथि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. नाट्यविधा प्रति शंका।
उत्तर: घ. नाट्यविधा प्रति शंका।
व्याख्या: एक्कैसम शताब्दीमे सेहो शंका व्याप्त रहबाक बात अछि।

प्रश्न 7705. शंका दूर करबा लेल लेखक की प्रस्तुत करबाक बात कहैत छथि?
क. किछु तथ्य, उदाहरण आ प्रश्न।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. किछु तथ्य, उदाहरण आ प्रश्न।
व्याख्या: लेख तर्कसंगत बहस द्वारा भ्रम हटएबाक शैली अपनबैत अछि।

प्रश्न 7706. रंगमंचमे जॉब नहि छै कहबाकेँ लेखक कोना देखैत छथि?
क. नाट्यकलाकेँ हीन देखाएबाक तरीका।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. नाट्यकलाकेँ हीन देखाएबाक तरीका।
व्याख्या: लेख एहन कथनकेँ अध्ययन-अभाव आ भ्रमक परिणाम मानैत अछि।

प्रश्न 7707. “नाट्यकला पेट नहि भरि सकैत” जेकाँ कथनक मूल कारण लेखक की मानैत छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. क्षेत्रक गंभीर अध्ययन नहि होएब।
उत्तर: घ. क्षेत्रक गंभीर अध्ययन नहि होएब।
व्याख्या: लेख रोजगार-भ्रमक पाछाँ जानकारी-अभाव राखैत अछि।

प्रश्न 7708. रंगकर्म-विरोधी भ्रमक प्रचारकेँ लेखक कतेक गंभीर मानैत छथि?
क. सोचल-समझल रणनीति धरि मानल जा सकैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. सोचल-समझल रणनीति धरि मानल जा सकैत अछि।
व्याख्या: लेखक मात्र गलती नहि, सम्भावित रणनीतिक मानसिकता पर प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 7709. एहन भ्रम बेसी ककरा द्वारा फैलाओल जाएब कहल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. अपना आपको साहित्यकार घोषित करनिहार लोक द्वारा।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. अपना आपको साहित्यकार घोषित करनिहार लोक द्वारा।
व्याख्या: लेख आत्म-घोषित साहित्यिक वर्गक भूमिकापर तीखा व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 7710. लेखक रंगकर्म आ रोजगारक सम्बन्धमे कोन बात स्पष्ट करैत छथि?
क. रंगकर्मकेँ गंभीर अध्ययनसँ देखबाक चाही, सतही जीविका-प्रश्नसँ नहि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. रंगकर्मकेँ गंभीर अध्ययनसँ देखबाक चाही, सतही जीविका-प्रश्नसँ नहि।
व्याख्या: रोजगारक प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा अज्ञानक आधारपर विधा-निरादर अनुचित अछि।

प्रश्न 7711. नाट्यकर्मकेँ फलदायी कहबासँ लेखकक आशय की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई व्यक्तित्व, समाज-संवाद आ अन्य कर्मक्षेत्र पर असर दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. ई व्यक्तित्व, समाज-संवाद आ अन्य कर्मक्षेत्र पर असर दैत अछि।
व्याख्या: नाटक केवल पाठ-विधा नहि, सामाजिक आ जीवनोपयोगी अभ्यास अछि।

प्रश्न 7712. एहि भागक निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. नाटक-विधाक अवमूल्यन जानकारी-अभाव, पूर्वग्रह आ आत्मघोषित प्राधिकारसँ जन्मैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. नाटक-विधाक अवमूल्यन जानकारी-अभाव, पूर्वग्रह आ आत्मघोषित प्राधिकारसँ जन्मैत अछि।
व्याख्या: लेख मिथिला समाजक रंगमंच-विमर्शकेँ गंभीर अध्ययन दिस मोड़ैत अछि।

खण्ड ७७७ : विदेह-सदेह २ — कलाकार, पेशा आ मिथ्या प्रमाणपत्रक आलोचना

प्रश्न 7713. लेखक आजुक समयमे कोन दावा असम्भव मानैत छथि?
क. कोनो व्यक्ति मात्र कविता, कथा वा उपन्यास लिखि परिवारक पालन करैत अछि, से दावा।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. कोनो व्यक्ति मात्र कविता, कथा वा उपन्यास लिखि परिवारक पालन करैत अछि, से दावा।
व्याख्या: लेख जीविका-तर्कक एकतरफा प्रयोगक आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 7714. कवि, कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार आदि लोकक कला हुनक समसामयिक काजपर कोना असर करैत अछि, ई प्रश्न किएक उठाओल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. कलात्मक महारथ आ अलग पेशागत दक्षताक सम्बन्ध जाँचबाक लेल।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. कलात्मक महारथ आ अलग पेशागत दक्षताक सम्बन्ध जाँचबाक लेल।
व्याख्या: लेखक देखबैत छथि जे एक कला मे निपुणता स्वतः दोसरा पेशामे सफलता नहि गारंटी करैत।

प्रश्न 7715. एकटा नीक कवि नीक शिक्षक हेबाहे करताह, एहि बात पर लेखकक दृष्टि की अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. एहि पर कोनो गारंटी नहि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. एहि पर कोनो गारंटी नहि।
व्याख्या: लेख कला आ पेशागत योग्यता बीच मिथ्या सम्बन्ध तोड़ैत अछि।

प्रश्न 7716. एकटा नीक कथाकार नीक अधिकारी हेबे करताह, ई कथन लेखक कोना देखैत छथि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. दावा संग नहि कहल जा सकैत।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. दावा संग नहि कहल जा सकैत।
व्याख्या: कला-कौशल प्रशासनिक दक्षताक स्वतः प्रमाण नहि।

प्रश्न 7717. शिल्पकार वा चित्रकार नीक वक्ता/नेता हेताह, एहि पर लेखकक दृष्टि की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. केओ दावा संग नहि कहि सकैत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. केओ दावा संग नहि कहि सकैत।
व्याख्या: लेखक व्यवसायिक योग्यता आ कलात्मक पहचानक भिन्नता बतबैत छथि।

प्रश्न 7718. लेखक मैथिलीमे कोन प्रवृत्ति पर कटाक्ष करैत छथि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. शिक्षक/प्रवक्ता/अधिकारी लिखला पर ओकरा स्वतः नीक मानि लेब।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. शिक्षक/प्रवक्ता/अधिकारी लिखला पर ओकरा स्वतः नीक मानि लेब।
व्याख्या: सामाजिक पदक कारण साहित्यिक मूल्यांकन विकृत भऽ जाइत अछि।

प्रश्न 7719. प्रोफेसर साहेबक उदाहरणमे लेखक कोन अतिरेक आलोचित करैत छथि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सफेद कागजपर किछु घँसियो देताह तँ समीक्षक सभ ओकरा महान कला कहत।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. सफेद कागजपर किछु घँसियो देताह तँ समीक्षक सभ ओकरा महान कला कहत।
व्याख्या: ई प्रतिष्ठा-आधारित मूल्यांकन पर तीखा व्यंग्य अछि।

प्रश्न 7720. लेखक “समगोत्री लोक” शब्दसँ कोन प्रवृत्ति देखबैत छथि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. गुटबाज़ प्रशंसा आ परस्पर प्रमाणपत्र।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. गुटबाज़ प्रशंसा आ परस्पर प्रमाणपत्र।
व्याख्या: लेख साहित्यिक मूल्यांकनमे समूह-संबंधक विकृति देखबैत अछि।

प्रश्न 7721. एहि आलोचनाक रंगकर्मसँ सम्बन्ध की अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. रंगकर्ममे झूठा प्रमाणपत्र चलब कठिन, अभ्यास आ अनुशासन प्रत्यक्ष होइत अछि।
उत्तर: घ. रंगकर्ममे झूठा प्रमाणपत्र चलब कठिन, अभ्यास आ अनुशासन प्रत्यक्ष होइत अछि।
व्याख्या: लेख रंगकर्मकेँ जीवन-व्यवहारमे परखल जा सकएबला विधा बतबैत अछि।

प्रश्न 7722. एहि भागक सार की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. सामाजिक पदकेँ कला-कौशलक प्रमाण मानब मिथ्या अछि; गंभीर कला मूल्यांकन चाही।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. सामाजिक पदकेँ कला-कौशलक प्रमाण मानब मिथ्या अछि; गंभीर कला मूल्यांकन चाही।
व्याख्या: लेख प्रतिष्ठा-आधारित साहित्यिक निर्णयक विरोध करैत अछि।

खण्ड ७७८ : विदेह-सदेह २ — रंगकर्मी व्यक्तित्वक जीवन-प्रभाव

प्रश्न 7723. लेखकक अनुसार रंगविधा अन्य कला सभसँ कोना भिन्न अछि?
क. रंगकर्मक प्रभाव व्यक्तिक जीवनक लगभग सभ क्षेत्रमे देखार भऽ जाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. रंगकर्मक प्रभाव व्यक्तिक जीवनक लगभग सभ क्षेत्रमे देखार भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: लेख रंग-अनुभवक जीवनपरक प्रभाव पर बल दैत अछि।

प्रश्न 7724. एक महीनाक सघन रंगकर्म सेहो लेखकक अनुसार की करि सकैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. जीवनक अनेक क्षेत्रमे असर छोड़ि सकैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. जीवनक अनेक क्षेत्रमे असर छोड़ि सकैत अछि।
व्याख्या: रंगकर्मक छोटो अभ्यास व्यक्तित्व निर्माणक साधन मानल गेल।

प्रश्न 7725. रंगकर्मक प्रभाव कतेक काल धरि संग रहैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. जीवनक अंतिम क्षण धरि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. जीवनक अंतिम क्षण धरि।
व्याख्या: लेख रंग-अनुभवकेँ स्थायी जीवन-अनुशासन बतबैत अछि।

प्रश्न 7726. रंगकर्मी शिक्षक सम्बन्धमे लेखक की गारंटी मानैत छथि?
क. छात्रक नजरिमे ओ नीक शिक्षक होएबाक सम्भावना/गारंटी रखैत छथि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. छात्रक नजरिमे ओ नीक शिक्षक होएबाक सम्भावना/गारंटी रखैत छथि।
व्याख्या: रंगकर्म संवाद, अनुशासन आ व्यक्तित्वक गुण शिक्षणमे सहायक बनैत अछि।

प्रश्न 7727. रंगकर्मी अधिकारीबारे लेखक कोन गुण सम्भावित कहैत छथि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. अनुशासित अधिकारी।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. अनुशासित अधिकारी।
व्याख्या: रंगाभ्यास जीवन-व्यवहारक अनुशासन बढ़बैत अछि।

प्रश्न 7728. रंगकर्मी सार्वजनिक व्यक्तित्वक रूपमे कोना प्रभावी भऽ सकैत छथि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. नीक वक्ता, प्रवक्ता, अधिवक्ता वा नेता।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. नीक वक्ता, प्रवक्ता, अधिवक्ता वा नेता।
व्याख्या: मंच-अनुभव देह, आवाज, संवाद आ आत्मज्ञान विकसित करैत अछि।

प्रश्न 7729. एकटा शिक्षक जँ अभिनय करताह तँ नीके करताह—लेखक एहि बातकेँ कोना देखैत छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. किन्नौ नहि मानल जा सकैत।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. किन्नौ नहि मानल जा सकैत।
व्याख्या: सामान्य पेशा अपने-आप रंगकौशलक प्रमाण नहि।

प्रश्न 7730. अधिकारी वा प्रोफेसर नीक नाटक लिखताह/अभिनय करताह—लेखकक दृष्टि की अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. संभावना नगण्य मात्र।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. संभावना नगण्य मात्र।
व्याख्या: पद वा डिग्री रंगकर्मक अभ्यासक विकल्प नहि।

प्रश्न 7731. लेखक रंगकर्मक महत्त्व जीवन लेल किएक बेसी मानैत छथि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई आत्मज्ञान, अनुशासन आ संप्रेषणक प्रत्यक्ष अभ्यास अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. ई आत्मज्ञान, अनुशासन आ संप्रेषणक प्रत्यक्ष अभ्यास अछि।
व्याख्या: रंगकर्म मात्र कला नहि, जीवनक अनेक भूमिकाकेँ सुधारएबला साधना अछि।

प्रश्न 7732. रंगकर्मी व्यक्तित्व सम्बन्धी मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. रंगकर्म अभ्याससँ व्यक्तित्व बदलैत अछि; केवल पद वा साहित्यिक दावासँ रंग-कौशल सिद्ध नहि होइत।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. रंगकर्म अभ्याससँ व्यक्तित्व बदलैत अछि; केवल पद वा साहित्यिक दावासँ रंग-कौशल सिद्ध नहि होइत।
व्याख्या: लेख रंगकर्मक व्यावहारिक मूल्यक पक्षमे तर्क करैत अछि।

खण्ड ७७९ : विदेह-सदेह २ — अनुशासन, आत्मपहिचान आ रंगकर्मक मूल मंत्र

प्रश्न 7733. लेखकक अनुसार रंगकर्म जीवन लेल कोन प्रश्न उठबैत अछि?

क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. कोन विधा महत्वपूर्ण अछि—रंगकर्म कि दोसर?

उत्तर: घ. कोन विधा महत्वपूर्ण अछि—रंगकर्म कि दोसर?

व्याख्या: पूर्व तर्क सभक बाद लेखक रंगकर्मक जीवन-महत्त्व पर प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 7734. रंगकर्म व्यक्ति कैं की सिखबैत अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ख. अनुशासन।

ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

उत्तर: ख. अनुशासन।

व्याख्या: लेखमे रंगकर्म ततेक अनुशासन सिखबैत छैक, से स्पष्ट अछि।

प्रश्न 7735. रंगकर्मी जीवनमे कतेक अनुशासित भऽ सकैत छथि?

क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ख. आवश्यकतासँ बेसी अनुशासित।

ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

उत्तर: ख. आवश्यकतासँ बेसी अनुशासित।

व्याख्या: लेख रंग-अनुशासनक अतिशय प्रभाव पर बल दैत अछि।

प्रश्न 7736. मिथिलामे एहि अनुशासनक प्रभाव लेखकक अनुसार कोना उल्टा भेल?

क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. कियो कतौसँ आबि नाट्यकर्मकैं मारि चलि जाइत अछि।

उत्तर: घ. कियो कतौसँ आबि नाट्यकर्मकैं मारि चलि जाइत अछि।

व्याख्या: रंगकर्मक अभ्यास-बोध बिना हस्तक्षेपक आलोचना कएल गेल।

प्रश्न 7737. रंगविधा पर निर्णय लेबाक समूहमे किनका बजाएबाक आवश्यकता लेखक देखैत छथि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ख. पहिनेसँ रंगकर्मसँ जुड़ल व्यक्ति।

ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

उत्तर: ख. पहिनेसँ रंगकर्मसँ जुड़ल व्यक्ति।

व्याख्या: विशेषज्ञ-भागीदारी बिना निर्णय अनुचित अछि।

प्रश्न 7738. लेखक बंद कोठलीमे निर्णय लेबाक प्रवृत्तिक आलोचना किएक करैत छथि?

क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ग. एहि सँ समाजक पाइसँ संस्था-ग्रंथ बनि नुका जाइत अछि, मुदा रंग-सत्य दबि जाइत अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

उत्तर: ग. एहि सँ समाजक पाइसँ संस्था-ग्रंथ बनि नुका जाइत अछि, मुदा रंग-सत्य दबि जाइत अछि।

व्याख्या: लेख सार्वजनिक संस्थागत जवाबदेही माँगैत अछि।

प्रश्न 7739. नबका पीढ़ीक प्रति लेखकक चिन्ता की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. आजुक गलत ग्रंथ आ निर्णय पर ओ सभ तीखी प्रतिक्रिया करत।
उत्तर: घ. आजुक गलत ग्रंथ आ निर्णय पर ओ सभ तीखी प्रतिक्रिया करत।
व्याख्या: लेख भविष्यक न्याय आ इतिहासक प्रति जवाबदेहीक बात करैत अछि।

प्रश्न 7740. रंगकर्मक मूल मंत्र लेखक कोन वाक्यसँ कहैत छथि?
क. अपना आपकेँ चिनहू/बूझू/जानू।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. अपना आपकेँ चिनहू/बूझू/जानू।
व्याख्या: रंगकर्म आत्मपहिचानक कला रूपमे प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 7741. अपन सामर्थ्य नीक सँ बूझब जीवनमे की दैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सफलता।
उत्तर: घ. सफलता।
व्याख्या: लेखक आत्मज्ञान आ सफलता बीच सीधा सम्बन्ध रखैत छथि।

प्रश्न 7742. अनुशासन आ आत्मपहिचान सम्बन्धी एहि भागक निष्कर्ष की अछि?
क. रंगकर्म आत्मज्ञान, अनुशासन आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक विधा अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. रंगकर्म आत्मज्ञान, अनुशासन आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक विधा अछि।
व्याख्या: लेख रंगकर्मकेँ केवल अभिनय नहि, जीवन-नीति बनबैत अछि।

खण्ड ७८० : विदेह-सदेह २ — मिथिला समाजमे रंगकर्म प्रचारक आवश्यकता

प्रश्न 7743. लेखक मिथिला समाजमे ककर महत्त्व प्रचारित करबाक आवश्यकता मानैत छथि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रंगकर्मक।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. रंगकर्मक।
व्याख्या: लेखक स्पष्ट कहैत छथि जे मिथिला समाजमे रंगकर्मक महत्ताकेँ प्रचारित-प्रसारित करबाक अति आवश्यकता अछि।

प्रश्न 7744. एहि दिशि ककरा आगू अएबाक चाही?
क. सभ विद्वानकेँ।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. सभ विद्वानकेँ।
व्याख्या: लेख विद्वान समाजसँ सक्रिय भूमिका माँगैत अछि।

प्रश्न 7745. रंगकर्मक प्रचारक उद्देश्य की अछि?
क. भ्रम दूर कऽ विधाक सामाजिक आ जीवनोपयोगी मूल्य बुझाएब।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. भ्रम दूर कऽ विधाक सामाजिक आ जीवनोपयोगी मूल्य बुझाएब।
व्याख्या: पूरा लेख मिथिला समाजक रंगमंचीय भ्रम हटबैत अछि।

प्रश्न 7746. लेखक रंगकर्मकेँ व्यक्तिगत लाभसँ आगाँ कोन स्तर पर देखैत छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. सामाजिक जीवन-निर्माणक स्तर पर।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सामाजिक जीवन-निर्माणक स्तर पर।
व्याख्या: रंगकर्म समाज, समूह, अनुशासन आ आत्मज्ञानक कला बनैत अछि।

प्रश्न 7747. रंगकर्मक महत्त्व न पसरलाक परिणाम की भेल?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. समाज जानकारी-अभाव आ रोजगार-भ्रममे रहल।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. समाज जानकारी-अभाव आ रोजगार-भ्रममे रहल।
व्याख्या: प्रचार-अभावे विधाक सही उपयोगिता जन-सामान्य धरि नहि पहुँचल।

प्रश्न 7748. रंगकर्म प्रति विद्वानक मौन किएक हानिकारक अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. अज्ञान आ कुतर्कक स्थान खाली छोड़ि दैत अछि।
उत्तर: घ. अज्ञान आ कुतर्कक स्थान खाली छोड़ि दैत अछि।
व्याख्या: जहाँ प्रमाणिक विवेचन नहि, ओतए भ्रम पसरैत अछि।

प्रश्न 7749. लेखकक दृष्टिमे रंगकर्मक अध्ययन कोन ढंगक होएबाक चाही?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गंभीर, स्पष्ट, सामाजिक आ अभ्यास-सापेक्ष।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. गंभीर, स्पष्ट, सामाजिक आ अभ्यास-सापेक्ष।
व्याख्या: दुरूह शास्त्रीयता वा सतही कुतर्क दुनूकेँ लेखक अस्वीकार करैत छथि।

प्रश्न 7750. मिथिला समाज लेल रंगकर्मक सर्वाधिक व्यावहारिक लाभ की देखाओल गेल?
क. आत्मपहिचान, अनुशासन आ संप्रेषण-सामर्थ्य।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. आत्मपहिचान, अनुशासन आ संप्रेषण-सामर्थ्य।
व्याख्या: रंगकर्म जीवनक अनेक क्षेत्रमे उपयोगी बनैत अछि।

प्रश्न 7751. “सभ विद्वानकेँ आगू अएबाक चाहिएनि” कथनक स्वर की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. आह्वानात्मक।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. आह्वानात्मक।
व्याख्या: लेख अंतमे समाधानक दिशा मे सामूहिक बौद्धिक हस्तक्षेप माँगैत अछि।

प्रश्न 7752. एहि लेखक समग्र संदेश की अछि?
क. मिथिलामे रंगकर्मकेँ उपेक्षित मनोरंजन नहि, श्रेष्ठ सामाजिक कला रूपमे प्रतिष्ठित करबाक चाही।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. मिथिलामे रंगकर्मकेँ उपेक्षित मनोरंजन नहि, श्रेष्ठ सामाजिक कला रूपमे प्रतिष्ठित करबाक चाही।
व्याख्या: रंगकर्मक मूल्य, अनुशासन आ समाजोपयोगिता लेखक मुख्य प्रतिपाद्य अछि।

खण्ड ७८१ : विदेह-सदेह २ — “संस्कार गीत/लोक गीत नाद”: संस्कारक अवधारणा

प्रश्न 7753. “संस्कार गीत/लोक गीत नाद”क लेखक के छथि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. जगदीश प्रसाद मंडल।
उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मंडल।
व्याख्या: रंगकर्म लेखक बाद एहि शीर्षकक तले जगदीश प्रसाद मंडलक नाम आयल अछि।

प्रश्न 7754. लेखक संस्कारकेँ आरम्भमे की कहैत छथि?
क. कल्पना।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. कल्पना।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि—संस्कार कल्पना थिक।

प्रश्न 7755. संस्कारक प्रयोग हमरा सभक बीच कोना होइत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. विभिन्न रूपमे आ विभिन्न जगहपर।
उत्तर: घ. विभिन्न रूपमे आ विभिन्न जगहपर।
व्याख्या: लेखक संस्कारक सामाजिक प्रयोगक विविधता देखबैत छथि।

प्रश्न 7756. संस्कारक शास्त्रीय प्रयोजनक रूपमे की कहल गेल?
क. गर्भजनित वातावरणजन्य अपदार्थ दूर करब।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. गर्भजनित वातावरणजन्य अपदार्थ दूर करब।
व्याख्या: लेख संस्कारक कल्पना शरीर-मन परिष्कार सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7757. संस्कारसँ शरीर आ मनपर की प्रभाव कहल गेल?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. परिष्कृत होइत अछि।
उत्तर: घ. परिष्कृत होइत अछि।
व्याख्या: लेखमे संस्कारक शुद्धिकरण/परिष्कारकारी भूमिका बताओल गेल।

प्रश्न 7758. शालीनता आ शिष्टता केहन सिद्धि कहल गेल?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. मनुष्यताक परम सिद्धि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मनुष्यताक परम सिद्धि।
व्याख्या: लेख संस्कारक सम्बन्ध सभ्यता-गुणसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7759. दर्शनशास्त्र अनुसार संस्कार की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. भोग्य पदार्थक अनुभूतिक छाप।
उत्तर: घ. भोग्य पदार्थक अनुभूतिक छाप।
व्याख्या: मनपर अनुभवक छाप रूपमे संस्कारक दार्शनिक अर्थ देल गेल।

प्रश्न 7760. मनुष्यक अव्यक्त मनपर अनुभवक छाप समए अएलापर की होइत अछि?
क. प्रकट भऽ जाइत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. प्रकट भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: लेख संस्कारक मनोवैज्ञानिक कार्य-प्रणाली बुझबैत अछि।

प्रश्न 7761. यैह छाप कोन नामसँ सम्बद्ध कहल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. वासना आ जन्मान्तरक संस्कार।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. वासना आ जन्मान्तरक संस्कार।
व्याख्या: दार्शनिक विवेचनमे छापक गाढ़ रूप वासना/संस्कार कहबैत अछि।

प्रश्न 7762. धर्मशास्त्री लोक संस्कारकेँ कोन प्रक्रियाक रूप ग्रहण कएलनि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. शारीरिक, मानसिक आ बौद्धिक गुण-दोषक प्रक्रिया।
उत्तर: घ. शारीरिक, मानसिक आ बौद्धिक गुण-दोषक प्रक्रिया।
व्याख्या: लेख शास्त्रीय अवधारणा के सामाजिक-धार्मिक वर्गीकरणसँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ७८२ : विदेह-सदेह २ — संस्कार-संख्या, मिथिला आ व्यवहारिक चलन

प्रश्न 7763. आश्वलायन अपन गृहसूत्रमे कतेक संस्कारक वर्णन कएने छथि?

क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. एगारह।

उत्तर: घ. एगारह।

व्याख्या: लेख आश्वलायनक गृहसूत्रमे एगारह संस्कारक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 7764. याज्ञवल्क्य कतेक संस्कारक उल्लेख करैत छथि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. बारह।

उत्तर: घ. बारह।

व्याख्या: लेख आश्वलायन आ याज्ञवल्क्यक संख्या-भेद बतबैत अछि।

प्रश्न 7765. गौतम भिन्न-भिन्न दैवयज्ञकेँ संस्कारमे परिगणित कऽ संख्या कतए धरि लऽ गेलाह?

क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

घ. अड़तालिस धरि।

उत्तर: घ. अड़तालिस धरि।

व्याख्या: गौतमक विस्तार संस्कार-सूचीकेँ बहुत बढ़ा दैत अछि।

प्रश्न 7766. १९०१ इसवीक जनगणना प्रतिवेदन अनुसार हिन्दूमे कतेक संस्कार प्रचलित छल?

क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ग. बारह।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

उत्तर: ग. बारह।

व्याख्या: लेख भारत सरकारक 1901 जनगणना प्रतिवेदनक आधार दैत अछि।

प्रश्न 7767. मिथिलामे कतेक तरहक संस्कारक विधान मान्य कहल गेल?

क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

घ. सोलह।

उत्तर: घ. सोलह।

व्याख्या: लेख मिथिलामे सोलह संस्कारक विधान गनबैत अछि।

प्रश्न 7768. एखन लेख अनुसार मुख्यतः कतेक संस्कारक चलन रहि गेल अछि?

क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पाँच।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

उत्तर: ख. पाँच।

व्याख्या: जन्म, मूड़न, उपनयन, विवाह आ मृत्यु—पाँच संस्कारक चलन बताओल गेल।

प्रश्न 7769. एखन चलनमे बचल पाँच संस्कारमे कोन-कोन अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. जन्म, मूड़न, उपनयन, विवाह आ मृत्यु।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. जन्म, मूड़न, उपनयन, विवाह आ मृत्यु।
व्याख्या: लेख आधुनिक व्यवहारिक चलनक सूची दैत अछि।

प्रश्न 7770. उपनयन सभ जातिमे समान नहि, एहि बातसँ लेखक कोन निष्कर्ष दिस जाइत छथि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संस्कारक चलन जातिगत रूपसँ असमान अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. संस्कारक चलन जातिगत रूपसँ असमान अछि।
व्याख्या: मिथिलाक संस्कार एकरूप नहि, एतए सामाजिक विविधता अछि।

प्रश्न 7771. सभकेँ नजरिमे राखि देखलापर लेखक कतेक व्यवहारिक संस्कार मानैत छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. तीन—जन्म, विवाह आ मृत्यु।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. तीन—जन्म, विवाह आ मृत्यु।
व्याख्या: समाज-व्यापक व्यवहारक कसौटी पर तीन संस्कार बचैत अछि।

प्रश्न 7772. संस्कार-संख्या चर्चा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. शास्त्रीय विधान आ लोक-व्यवहारक अन्तर देखएबाक लेल।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. शास्त्रीय विधान आ लोक-व्यवहारक अन्तर देखएबाक लेल।
व्याख्या: लेख आदर्श सूची आ वास्तविक समाजक भिन्नता उद्घाटित करैत अछि।

खण्ड ७८३ : विदेह-सदेह २ — संस्कार, समाज-सत्ता आ लोक-संस्कृति

प्रश्न 7773. संस्कारक चयन वा नामकरणक पाछाँ लेखक कोन कारण प्रमुख मानैत छथि?
क. सामाजिक कारण।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. सामाजिक कारण।
व्याख्या: लेख संस्कारकेँ केवल धार्मिक नहि, सामाजिक निर्माण मानैत अछि।

प्रश्न 7774. संस्कारक शासन ककरा खास ढंगसँ नियंत्रित करबाक लेल देल गेल?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. जीवन-पद्धति केँ।
उत्तर: घ. जीवन-पद्धति केँ।
व्याख्या: संस्कार सुनियोजित जीवन व्यवस्था आ आदर्शोन्मुखी नियंत्रणक साधन कहल गेल।

प्रश्न 7775. आर्य-अनार्यक घालमेलसँ उपजल स्थितिमे संस्कारक भूमिका की बताओल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. अपन अस्मिता सुरक्षित रखबाक ब्राह्मणवादी चिन्तनक परिणाम।
उत्तर: घ. अपन अस्मिता सुरक्षित रखबाक ब्राह्मणवादी चिन्तनक परिणाम।
व्याख्या: लेख सामाजिक-सत्ता आ सांस्कृतिक नियंत्रणक आलोचनात्मक पाठ प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 7776. मध्यकालमे संस्कारक पालनपर की भेल?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. बेसी जोर देल गेल।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. बेसी जोर देल गेल।
व्याख्या: लेख ऐतिहासिक रूपसँ संस्कार-पालनक कठोरता बढ़बाक बात करैत अछि।

प्रश्न 7777. मिथिलाक धरती लेखक ककर माटि-बालूसँ बनल कहैत छथि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. हिमालयक।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. हिमालयक।
व्याख्या: भौगोलिक पृष्ठभूमि सँ मिथिलाक सामाजिक इतिहास खोलल गेल।

प्रश्न 7778. नदी-प्रदेशक एहि भूभागपर पहिले के सभ रहैत छल?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. किरात आ कोल।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. किरात आ कोल।
व्याख्या: लेख मूलवासी समुदाय सभक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 7779. आर्यीकरणक अभियानमे बहरबैया लोकक सत्ता-विन्यास कोना बनल?
क. क्षत्रिय राजसत्ता, ब्राह्मण समाजसत्ता, वैश्य अर्थसत्ता।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. क्षत्रिय राजसत्ता, ब्राह्मण समाजसत्ता, वैश्य अर्थसत्ता।
व्याख्या: लेख मिथिलाक सामाजिक-सत्ता संरचना पर आलोचनात्मक दृष्टि राखैत अछि।

प्रश्न 7780. मूलवासी लोकक स्थिति की बनल कहल गेल?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अन्त्यज।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. अन्त्यज।
व्याख्या: लेख सत्ता-परिवर्तनसँ मूलवासी समाजक हाशियाकरण बतबैत अछि।

प्रश्न 7781. द्विज लोक मूलवासीक देवी-देवता, पावनि-तिहार आ नेम-तेम किएक अपनौलनि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. संख्या कम छल आ स्थानीय जीवनसँ मेल जरूरी छल।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. संख्या कम छल आ स्थानीय जीवनसँ मेल जरूरी छल।
व्याख्या: अपनयनसँ ब्राह्मणीकरणक प्रक्रिया बनल।

प्रश्न 7782. लोक-संस्कृति सम्बन्धमे लेखकक निष्कर्ष की अछि?
क. मूलवासीक जीवनशैली पूर्ण विलीन नहि भेल; ओ दूबि जकाँ माटि पकड़े रहल।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. मूलवासीक जीवनशैली पूर्ण विलीन नहि भेल; ओ दूबि जकाँ माटि पकड़े रहल।
व्याख्या: लेख लोक-संस्कृतिक स्थायित्व आ सांस्कृतिक आरोपणक बीच तनाव देखबैत अछि।

खण्ड ७८४ : विदेह-सदेह २ — संस्कार गीत: लोकगीतक आत्मा आ मौखिक परम्परा

प्रश्न 7783. संस्कार गीतक अर्थ की देल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. विभिन्न संस्कारक प्रसंगमे गाओल जाएबला गीत।
उत्तर: घ. विभिन्न संस्कारक प्रसंगमे गाओल जाएबला गीत।
व्याख्या: लेख संस्कार गीतकेँ प्रसंग-विशेष लोकगीत रूपमे परिभाषित करैत अछि।

प्रश्न 7784. संस्कार गीत कोन प्रकारक गीत अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोक-प्रचलित गीत।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. लोक-प्रचलित गीत।
व्याख्या: लेख स्पष्ट करैत अछि जे ई लोकक बीच प्रचलित गीत अछि।

प्रश्न 7785. लेखक कहैत छथि जे संस्कार गीतमे ककर आत्मा बसैत अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. लोकगीतक।
उत्तर: घ. लोकगीतक।
व्याख्या: संस्कार गीत लोकगीतक आत्मा सँ जुड़ल मानल गेल।

प्रश्न 7786. लोकगीतक मनोहर फुलवारीसँ संस्कार गीत हटला पर की होएत?
क. ओ निष्प्राण भऽ जाएत।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. ओ निष्प्राण भऽ जाएत।
व्याख्या: लेख संस्कार गीतकेँ लोकगीतक जीवन-तत्त्व बनबैत अछि।

प्रश्न 7787. मृत्यु-संस्कार छोड़ि अन्य संस्कार कोन माहौलमे मनाओल जाइत अछि?
क. आनन्दोत्सवक माहौलमे।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. आनन्दोत्सवक माहौलमे।
व्याख्या: लेख संस्कार-गीतक प्रसन्न सामाजिक वातावरण बतबैत अछि।

प्रश्न 7788. नारी कंठसँ निकलैत स्वर-लहरी देह, हृदय आ मस्तिष्कमे की करैत अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. थिरकन, झंकार आ चुलबुली उत्पन्न करैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. थिरकन, झंकार आ चुलबुली उत्पन्न करैत अछि।
व्याख्या: लेख लोक-गायनक शारीरिक, भावनात्मक आ मानसिक प्रभावक सुंदर चित्रण करैत अछि।

प्रश्न 7789. गीत गाएब मिथिलाक ककर सहजात गुण कहल गेल?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. सभ नर-नारीक।
उत्तर: घ. सभ नर-नारीक।
व्याख्या: लेख गायन-प्रवृत्ति कैं मिथिलाक सामान्य सांस्कृतिक गुण मानैत अछि।

प्रश्न 7790. संस्कार गीतक रचनाकारबारे लोकगीत सिद्धान्त की कहैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. लोकगीतक व्यक्तिगत रचनाकार नहि होइत; ओ सार्वजनिक रचना होइत अछि।
घ. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. लोकगीतक व्यक्तिगत रचनाकार नहि होइत; ओ सार्वजनिक रचना होइत अछि।
व्याख्या: संस्कार गीत लोक-कंठमे बसैत आ बदलैत चलैत अछि।

प्रश्न 7791. एक कंठसँ दोसर कंठ धरि जाइत-जाइत गीतमे की बदलैत अछि?
क. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्वरूप आ भास।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. स्वरूप आ भास।
व्याख्या: मौखिक परम्परामे गीतक रूप, भाषा आ भनिता बदलि जाइत अछि।

प्रश्न 7792. संस्कार गीतक समग्र सांस्कृतिक महत्त्व की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात स्रोतक मुख्य आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ओ मैथिल महिलाक परिष्कृत सांस्कृतिक चेतनाक परिचायक अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. ओ मैथिल महिलाक परिष्कृत सांस्कृतिक चेतनाक परिचायक अछि।
व्याख्या: लेख संस्कार गीतकेँ मौखिक परम्परा, संस्कृति, समाज आ स्त्री-कंठक धरोहर मानैत अछि।

खण्ड ७८५ : विदेह-सदेह २ — संस्कार गीत: मौखिक स्मृति आ पीढ़ी-संचरण

प्रश्न 7793. “संस्कार गीत/लोक गीत नाद”क प्रसंगमे मौखिक परम्पराक मूल अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. गीत पुस्तकसँ बेसी लोकक स्मृति आ व्यवहारमे जियैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. गीत पुस्तकसँ बेसी लोकक स्मृति आ व्यवहारमे जियैत अछि।
व्याख्या: संस्कार गीतक शक्ति लिखित पाठसँ नहि, अवसर, स्मृति आ सामूहिक गायनसँ बनैत अछि।

प्रश्न 7794. संस्कार गीत पीढ़ीसँ पीढ़ी कोना चलैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. घर-आँगनक गायन, सुननाइ आ दोहराबैसँ।
उत्तर: घ. घर-आँगनक गायन, सुननाइ आ दोहराबैसँ।
व्याख्या: बुजुर्ग स्त्री आ परिवारक सदस्य गीतकेँ व्यवहारमे सिखबैत छथि।

प्रश्न 7795. लोकगीतक मौखिकता ओकर पाठकेँ कोना बनबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. थोड़ा-बहुत बदलैत, मुदा मूल भाव बचबैत।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. थोड़ा-बहुत बदलैत, मुदा मूल भाव बचबैत।
व्याख्या: मौखिक परम्परामे शब्द फेरबदल सम्भव अछि, मुदा अवसरक भाव स्थिर रहैत अछि।

प्रश्न 7796. संस्कार गीतमे “स्मृति” किएक केन्द्रीय अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. किएक तँ गायिका लोक गीतकेँ मनसँ सँजोइत आ अवसरपर जगबैत छथि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. किएक तँ गायिका लोक गीतकेँ मनसँ सँजोइत आ अवसरपर जगबैत छथि।
व्याख्या: लोकस्मृति गीतक असली भंडार अछि।

प्रश्न 7797. मौखिक गीतक प्रामाणिकता केवल छपल पाठपर निर्भर किएक नहि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. किएक तँ ओकर जीवन गायन-स्थिति आ समुदायमे अछि।
उत्तर: घ. किएक तँ ओकर जीवन गायन-स्थिति आ समुदायमे अछि।
व्याख्या: छपल रूप सहायक अछि, मुदा गीतक सामाजिक देह प्रदर्शनमे बनैत अछि।

प्रश्न 7798. संस्कार गीतक संचरणमे परिवारक भूमिका की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. परिवार पहिल पाठशाला बनैत अछि।
उत्तर: घ. परिवार पहिल पाठशाला बनैत अछि।
व्याख्या: बालक, कन्या, बहू, माय, दादी सभ अवसर-संग गीत सीखैत छथि।

प्रश्न 7799. एहि परम्परामे स्त्री-समूहक महत्त्व की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ओ सभ संस्कार-गीतक मुख्य वाहक छथि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. ओ सभ संस्कार-गीतक मुख्य वाहक छथि।
व्याख्या: घरक संस्कारक बहुत रास गीत स्त्री-समूहक आवाजमे जियैत अछि।

प्रश्न 7800. मौखिक गीतक बदलैत रूपकेँ तुरन्त दोष किएक नहि मानबाक चाही?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. किएक तँ लोकपरम्परा जीवित रहैत अछि तँ रूपान्तर स्वाभाविक अछि।
उत्तर: घ. किएक तँ लोकपरम्परा जीवित रहैत अछि तँ रूपान्तर स्वाभाविक अछि।
व्याख्या: परिवर्तन परम्पराक मृत्यु नहि, ओकर चलैत प्रवाहक चिन्ह भऽ सकैत अछि।

प्रश्न 7801. संस्कार गीतक मौखिकता समाज-अध्ययनमे की संकेत दैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. लोकजीवनक स्मृति, सम्बन्ध आ संस्कार-बोधक संकेत।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. लोकजीवनक स्मृति, सम्बन्ध आ संस्कार-बोधक संकेत।
व्याख्या: गीत परिवार आ समाजक भीतरक अनुभवकेँ बचबैत अछि।

प्रश्न 7802. एहि भागक सार की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. संस्कार गीत लोकस्मृति, अवसर आ सामूहिक गायनक जीवित निधि अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. संस्कार गीत लोकस्मृति, अवसर आ सामूहिक गायनक जीवित निधि अछि।
व्याख्या: लेखकक विवेचन गीतकेँ संग्रहित पाठ नहि, चलैत सामाजिक अनुभव मानैत अछि।

खण्ड ७८६ : विदेह-सदेह २ — जन्म-संस्कार, सोहर आ नवजीवनक उल्लास

प्रश्न 7803. जन्म-संस्कारक गीतक मूल भाव की होइत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. नवजीवनक आगमनपर उल्लास आ आशीष।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. नवजीवनक आगमनपर उल्लास आ आशीष।
व्याख्या: सोहर आदि गीत जन्मक आनन्द, कुलक प्रसन्नता आ बालक लेल मंगलभाव व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 7804. सोहर गीतमे परिवारक मनोदशा कोना उभरैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. उत्सव, हर्ष आ आशीर्वादक रूपमे।
उत्तर: घ. उत्सव, हर्ष आ आशीर्वादक रूपमे।
व्याख्या: जन्मक अवसर परिवारकेँ सामूहिक भावनासँ भरि दैत अछि।

प्रश्न 7805. जन्म गीत केवल बालकक जन्मक सूचना नहि, आर की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. समाजक शुभेच्छा आ पारिवारिक पहचानक प्रदर्शन।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. समाजक शुभेच्छा आ पारिवारिक पहचानक प्रदर्शन।
व्याख्या: गीत नवजातकेँ परिवार, कुल, देवता आ लोक-आशीषसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7806. सोहरमे देव-स्मरणक भूमिका की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. जन्मक घटना केँ मंगल आ पवित्र बनबैत अछि।
उत्तर: घ. जन्मक घटना केँ मंगल आ पवित्र बनबैत अछि।
व्याख्या: देवता/मंगल संकेत जन्मक जैविक घटनाकेँ सांस्कृतिक संस्कार बनबैत अछि।

प्रश्न 7807. जन्म-संस्कार गीतमे माय केर स्थिति कोना देखाइत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. कष्ट, गौरव आ वात्सल्यक केन्द्र रूपमे।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. कष्ट, गौरव आ वात्सल्यक केन्द्र रूपमे।
व्याख्या: जन्मक प्रसंगमे माय नवजीवनक धुरी बनि उभरैत अछि।

प्रश्न 7808. सोहरक सामूहिक गायन घरक वातावरणकेँ कोना बदलैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. साधारण घरकेँ उत्सव-आँगन बना दैत अछि।
उत्तर: घ. साधारण घरकेँ उत्सव-आँगन बना दैत अछि।
व्याख्या: संगीत आ नाद घरमे सामाजिक सहभागिता आ शुभता अनैत अछि।

प्रश्न 7809. जन्म गीतमे बालक लेल मंगल-कामना किएक बारम्बार अबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. नवजातक जीवन-सुरक्षा आ भविष्यक शुभेच्छा लेल।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. नवजातक जीवन-सुरक्षा आ भविष्यक शुभेच्छा लेल।
व्याख्या: लोकजीवनमे जन्म संग आशंका सेहो रहैत अछि, गीत ओकरा आशीषमे बदलैत अछि।

प्रश्न 7810. जन्म-संस्कार गीतक अध्ययनसँ समाजक कोन पक्ष देखाइत अछि?
क. परिवार, वंश, मातृत्व आ लोक-विश्वासक सम्बन्ध।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. परिवार, वंश, मातृत्व आ लोक-विश्वासक सम्बन्ध।
व्याख्या: गीत जन्मक अवसरकेँ समाजशास्त्रीय अर्थ दैत अछि।

प्रश्न 7811. सोहरक भाषा प्रायः कोना होइत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. आत्मीय, घरेलू आ मंगलमय।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. आत्मीय, घरेलू आ मंगलमय।
व्याख्या: ओकर भाषामे घरक अपनापन आ लोकक सरलता रहैत अछि।

प्रश्न 7812. “जन्म-संस्कार, सोहर आ नवजीवनक उल्लास” प्रसंगक निष्कर्ष की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. जन्म-संस्कार गीत नवजीवनकेँ लोक-आशीष आ पारिवारिक उत्सवमे बदलैत अछि।
उत्तर: घ. जन्म-संस्कार गीत नवजीवनकेँ लोक-आशीष आ पारिवारिक उत्सवमे बदलैत अछि।
व्याख्या: सोहर नवजातक स्वागतक संग-संग समाजक स्मृति सेहो बचबैत अछि।

खण्ड ७८७ : विदेह-सदेह २ — छठिहार, बरही, नामकरण आ अन्नप्राशन गीत

प्रश्न 7813. छठिहार/बरही सन प्रसंगक गीतक मुख्य कार्य की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. जन्मक आरम्भिक दिन सभकेँ संस्कारिक रूप देब।
उत्तर: घ. जन्मक आरम्भिक दिन सभकेँ संस्कारिक रूप देब।
व्याख्या: एहन गीत जन्म बादक चरणकेँ लोकरीतिसँ बाँधैत अछि।

प्रश्न 7814. नामकरण सम्बन्धी गीतमे कोन भाव विशेष रहैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. बालककेँ पहिचान आ आशीष देबाक भाव।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. बालककेँ पहिचान आ आशीष देबाक भाव।
व्याख्या: नाम केवल शब्द नहि, सामाजिक स्वीकार आ शुभ भविष्यक संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 7815. अन्नप्राशन गीतक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?
क. बालकक जीवनमे नव आहार-चरणक मंगल प्रवेश।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. बालकक जीवनमे नव आहार-चरणक मंगल प्रवेश।
व्याख्या: पहिल बेर अन्न ग्रहण करब शरीर, परिवार आ समाजक संयुक्त उत्सव होइत अछि।

प्रश्न 7816. छठिहारक गीतमे लोकविश्वासक भूमिका की रहैत अछि?
क. बालकक रक्षा आ भाग्य लेल मंगल कामना।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. बालकक रक्षा आ भाग्य लेल मंगल कामना।
व्याख्या: लोकमानस बाल्यजीवनक कोमलता केँ गीत, देव-स्मरण आ आशीषसँ घेरैत अछि।

प्रश्न 7817. बरही गीत परिवारमे कोन परिवर्तनक संकेत दैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. जन्मक आरम्भिक अशौच/संकोचसँ सामाजिक उत्सव दिस गमन।
उत्तर: घ. जन्मक आरम्भिक अशौच/संकोचसँ सामाजिक उत्सव दिस गमन।
व्याख्या: बरही घरक स्थिति कैं नियमित सामाजिक जीवन दिस लौटबैत अछि।

प्रश्न 7818. नामकरण गीतमे सामूहिक उपस्थिति किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समुदाय नव सदस्यकैं स्वीकार करैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. समुदाय नव सदस्यकैं स्वीकार करैत अछि।
व्याख्या: लोकगीत नामकैं निजी नहि, सामाजिक घटना बना दैत अछि।

प्रश्न 7819. अन्नप्राशनमे अन्नक प्रतीक की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. जीवन-पालन, समृद्धि आ वृद्धि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. जीवन-पालन, समृद्धि आ वृद्धि।
व्याख्या: अन्न बालकक शरीरक पोषणक संग घरक सम्पन्नता आ मंगलक संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 7820. एहि संस्कार गीत सभमे बालकक भविष्यक बारे की भाव रहैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. दीर्घायु, स्वास्थ्य आ सद्गुणक आशा।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. दीर्घायु, स्वास्थ्य आ सद्गुणक आशा।
व्याख्या: लोकगीत भविष्यक अनिश्चितताकैं शुभेच्छामे बदलैत अछि।

प्रश्न 7821. छठिहारसँ अन्नप्राशन धरि गीतक क्रम की देखबैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. बाल्यजीवनक आरम्भिक चरण सभक संस्कारिक मानचित्र।
उत्तर: घ. बाल्यजीवनक आरम्भिक चरण सभक संस्कारिक मानचित्र।
व्याख्या: हर चरण लोकरीति, गीत आ आशीषसँ अर्थ पबैत अछि।

प्रश्न 7822. एहि खण्डक मूल बात की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. जन्म-बादक संस्कार गीत बालककैं क्रमशः परिवार आ समाजमे प्रतिष्ठित करैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. जन्म-बादक संस्कार गीत बालककैं क्रमशः परिवार आ समाजमे प्रतिष्ठित करैत अछि।
व्याख्या: नाम, अन्न, रक्षा आ आशीष सभ गीतक माध्यमसँ एक सूत्रमे बन्हाइत अछि।

खण्ड ७८८ : विदेह-सदेह २ — मुंडन, कर्णछेदन, उपनयन आ बाल्य-संस्कार गीत

प्रश्न 7823. मुंडन सम्बन्धी गीतक सामाजिक अर्थ की अछि?

क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

घ. बालकक शारीरिक परिवर्तनकेँ संस्कारिक रूप देब।

उत्तर: घ. बालकक शारीरिक परिवर्तनकेँ संस्कारिक रूप देब।

व्याख्या: केश-उत्सर्ग लोकरीति आ मंगलगीतक संग सांस्कृतिक घटना बनैत अछि।

प्रश्न 7824. कर्णछेदन गीतमे पीड़ाक प्रसंग कोना सँभलैत अछि?

क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. गीत आ मंगल-स्वर द्वारा कष्टकेँ उत्सवमे बदलि देल जाइत अछि।

उत्तर: घ. गीत आ मंगल-स्वर द्वारा कष्टकेँ उत्सवमे बदलि देल जाइत अछि।

व्याख्या: संस्कारमे शारीरिक असुविधा रहि सकैत अछि, मुदा गीत ओकरा सामूहिक साहस दैत अछि।

प्रश्न 7825. उपनयन गीतक मूल संकेत की अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. बालकक शिक्षा, अनुशासन आ धर्म-संस्कार दिस प्रवेश।

उत्तर: घ. बालकक शिक्षा, अनुशासन आ धर्म-संस्कार दिस प्रवेश।

व्याख्या: उपनयन समाजमे ज्ञान-मार्गक आरम्भक प्रतीक मानल जाइत अछि।

प्रश्न 7826. बाल्य-संस्कारक गीत घरक लोककेँ कोना जोड़ैत अछि?

क. सभकेँ बालकक जीवन-चरणमे सहभागी बनबैत अछि।

ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. सभकेँ बालकक जीवन-चरणमे सहभागी बनबैत अछि।

व्याख्या: गीतक कारण संस्कार केवल कर्मकाण्ड नहि, पारिवारिक सहभागिता बनैत अछि।

प्रश्न 7827. मुंडन गीतमे हास्य आ चुटकीक स्थान किएक रहैत अछि?

क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

घ. बालकक असहज क्षणकेँ हलुक आ आत्मीय बनएबाक लेल।

उत्तर: घ. बालकक असहज क्षणकेँ हलुक आ आत्मीय बनएबाक लेल।

व्याख्या: लोकगीत कष्टक समयमे हँसीक सहारा बनैत अछि।

प्रश्न 7828. कर्णछेदन आ मुंडन सन संस्कार गीतमे “मंगल” शब्दक भाव की अछि?

क. बालकक रक्षा, वृद्धि आ शुभ जीवन।

ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

उत्तर: क. बालकक रक्षा, वृद्धि आ शुभ जीवन।

व्याख्या: संस्कारिक नाद भविष्यक शुभता लेल सामूहिक प्रार्थना अछि।

प्रश्न 7829. उपनयन गीत समाजक मूल्य-संरचना किएक देखबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ओ शिक्षा, गुरु, अनुशासन आ कुलपरम्पराकेँ जोड़ैत अछि।
उत्तर: घ. ओ शिक्षा, गुरु, अनुशासन आ कुलपरम्पराकेँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: उपनयन गीत बालकक सामाजिक उत्तरदायित्वक आरम्भ बतबैत अछि।

प्रश्न 7830. बाल्य-संस्कार गीतक मुख्य श्रोता के होइत छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. परिवार आ संस्कारमे उपस्थित समुदाय।
उत्तर: घ. परिवार आ संस्कारमे उपस्थित समुदाय।
व्याख्या: गीतक प्रभाव केवल बालकपर नहि, उपस्थित समाजपर सेहो पड़ैत अछि।

प्रश्न 7831. एहि गीत सभमे व्यक्तिगत घटना सामूहिक किएक बनैत अछि?
क. किएक तँ लोकगीत परिवारक निजी क्षणकेँ समुदायिक संस्कारमे बदलैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. किएक तँ लोकगीत परिवारक निजी क्षणकेँ समुदायिक संस्कारमे बदलैत अछि।
व्याख्या: संस्कार निजी जन्म-जीवनक सामाजिक मान्यता अछि।

प्रश्न 7832. “मुंडन, कर्णछेदन, उपनयन आ बाल्य-संस्कार गीत” प्रसंगक निष्कर्ष की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. बाल्य-संस्कार गीत शरीर, शिक्षा आ सामाजिक स्वीकारकेँ मंगल-नादमे बाँधैत अछि।
उत्तर: घ. बाल्य-संस्कार गीत शरीर, शिक्षा आ सामाजिक स्वीकारकेँ मंगल-नादमे बाँधैत अछि।
व्याख्या: मुंडन, कर्णछेदन, उपनयन आदि गीत बाल्यजीवनक संस्कारिक यात्रा देखबैत अछि।

खण्ड ७८९ : विदेह-सदेह २ — विवाह-पूर्व गीत: मंगनी, हल्दी, मटकोर

प्रश्न 7833. विवाह-पूर्व गीतक मूल प्रयोजन की अछि?
क. विवाहक वातावरण धीरे-धीरे तैयार करब।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. विवाहक वातावरण धीरे-धीरे तैयार करब।
व्याख्या: मंगनी, हल्दी, मटकोर आदि गीत विवाहक आरम्भिक रंग बनबैत अछि।

प्रश्न 7834. मंगनी गीतमे कोन भाव प्रधान रहैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. नव सम्बन्धक घोषणा आ आनन्द।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. नव सम्बन्धक घोषणा आ आनन्द।
व्याख्या: मंगनी दू परिवारक सम्बन्धक आरम्भिक सार्वजनिक संकेत अछि।

प्रश्न 7835. हल्दी गीतक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. शरीर-शुद्धि, सौंदर्य आ मंगलक तैयारी।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. शरीर-शुद्धि, सौंदर्य आ मंगलक तैयारी।
व्याख्या: हल्दी गीत विवाहक शरीरिक-सांस्कृतिक सज्जा कैं उल्लासमय बनबैत अछि।

प्रश्न 7836. मटकोर गीत भूमि आ विवाहक सम्बन्ध कोना देखबैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. धरती, जल आ घरक मंगल-संस्कार जोड़ैत अछि।
उत्तर: घ. धरती, जल आ घरक मंगल-संस्कार जोड़ैत अछि।
व्याख्या: मटकोरमे मिट्टी/धरतीक स्मरण विवाहक आधारभूत लोक-धर्म देखबैत अछि।

प्रश्न 7837. विवाह-पूर्व गीतमे चुटकी आ हास्य किएक रहैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. तनाव कम करि उत्सवक रंग बढ़एबाक लेल।
उत्तर: घ. तनाव कम करि उत्सवक रंग बढ़एबाक लेल।
व्याख्या: विवाहक तैयारीमे श्रम आ चिंता रहैत अछि; गीत ओकरा आनंदमे बदलैत अछि।

प्रश्न 7838. हल्दी गीतमे स्त्री-समूहक भूमिका की अछि?
क. दुल्हा/दुल्हिनकेँ सामूहिक मंगलक घेरेमे आनब।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. दुल्हा/दुल्हिनकेँ सामूहिक मंगलक घेरेमे आनब।
व्याख्या: स्त्रीक गीत विवाहक घरेलू पक्षक मुख्य स्वर अछि।

प्रश्न 7839. मटकोरक नाद विवाहक सामाजिक अर्थ कोना बढ़बैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. विवाहकेँ प्रकृति, घर आ कुलसँ जोड़ैत अछि।
उत्तर: घ. विवाहकेँ प्रकृति, घर आ कुलसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: धरतीक प्रतीक विवाहक स्थायित्व आ उर्वरताक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 7840. विवाह-पूर्व गीतक भाषा कतेक निकट होइत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. घरेलू, चुटीली आ अवसरानुकूल।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. घरेलू, चुटीली आ अवसरानुकूल।
व्याख्या: एहि गीतमे परिजनक निकटता आ अपनत्व स्पष्ट रहैत अछि।

प्रश्न 7841. मंगनीसँ मटकोर धरि क्रम कोन परिवर्तन देखबैत अछि?
क. सम्बन्धक घोषणा सँ विवाहक वास्तविक तैयारी धरि यात्रा।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. सम्बन्धक घोषणा सँ विवाहक वास्तविक तैयारी धरि यात्रा।
व्याख्या: गीत चरण-दर-चरण विवाहक भाव-भूमि बनबैत अछि।

प्रश्न 7842. “विवाह-पूर्व गीत: मंगनी, हल्दी, मटकोर” प्रसंगक सार की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. विवाह-पूर्व गीत उत्सव, शुद्धि, प्रकृति-स्मरण आ सम्बन्ध-निर्माणक लोकनाद अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. विवाह-पूर्व गीत उत्सव, शुद्धि, प्रकृति-स्मरण आ सम्बन्ध-निर्माणक लोकनाद अछि।
व्याख्या: मंगनी, हल्दी, मटकोर विवाहक आरम्भिक सांस्कृतिक पाठ बनैत अछि।

खण्ड ७९० : विदेह-सदेह २ — विवाह गीत: स्वागत, परिछन आ कन्यादान

प्रश्न 7843. बरियात स्वागत गीतक मुख्य भाव की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. अतिथि-सत्कार आ सम्बन्धक सार्वजनिक स्वीकार।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. अतिथि-सत्कार आ सम्बन्धक सार्वजनिक स्वीकार।
व्याख्या: बरियातक आगमन गीत द्वारा सम्मान आ हास्य दुनू रूपमे अंकित होइत अछि।

प्रश्न 7844. परिछन गीतमे कोन संस्कारिक क्रिया गीतमय बनैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. दुल्हा/बरियातक मंगल-जाँच आ स्वागत।
उत्तर: घ. दुल्हा/बरियातक मंगल-जाँच आ स्वागत।
व्याख्या: परिछन गीत सामाजिक सुरक्षा, हास्य आ संस्कारक मिश्रण अछि।

प्रश्न 7845. कन्यादान गीतक भाव कतेक गम्भीर होइत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. विरह, दायित्व आ मंगलक सम्मिलित भाव।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. विरह, दायित्व आ मंगलक सम्मिलित भाव।
व्याख्या: एहि गीतमे पिता-माता, कन्या आ कुलक भावनात्मक तनाव रहैत अछि।

प्रश्न 7846. विवाह गीतमे हास्य आ करुणा एक संग किएक अबैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. विवाह खुशी आ विदाईक सीमा-क्षण अछि।
उत्तर: घ. विवाह खुशी आ विदाईक सीमा-क्षण अछि।
व्याख्या: एहि संस्कारमे सम्बन्ध बनैत सेहो अछि आ घरसँ बेटी बिदा सेहो होइत अछि।

प्रश्न 7847. बरियात गीत सामाजिक सम्बन्धक कोन पक्ष खोलैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. दू परिवारक मिलन आ परस्पर संवाद।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. दू परिवारक मिलन आ परस्पर संवाद।
व्याख्या: गीत औपचारिकता कैं आत्मीय बनबैत अछि।

प्रश्न 7848. परिछन गीतमे स्त्री-समूह दुल्हाकैं कोना देखैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. हास्य, परीक्षा आ मंगल-दृष्टिसँ।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. हास्य, परीक्षा आ मंगल-दृष्टिसँ।
व्याख्या: दुल्हा केवल वर नहि, गीतक भीतर सामाजिक परीक्षणक पात्र सेहो बनैत अछि।

प्रश्न 7849. कन्यादानक गीत स्त्रीजीवनक कोन मोड़ देखबैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. पितृगृहसँ नव गृह दिस संक्रमण।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. पितृगृहसँ नव गृह दिस संक्रमण।
व्याख्या: गीत कन्याक भावनात्मक आ सामाजिक रूपान्तरणकैं शब्द दैत अछि।

प्रश्न 7850. विवाह गीतमे आशीर्वादक भूमिका की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. नव दम्पती लेल दीर्घ, सुखी आ समृद्ध जीवनक कामना।
उत्तर: घ. नव दम्पती लेल दीर्घ, सुखी आ समृद्ध जीवनक कामना।
व्याख्या: आशीर्वाद गीतक मंगल-केन्द्र अछि।

प्रश्न 7851. विवाह गीतक सामूहिक स्वर किएक जरूरी अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. व्यक्तिगत दायित्वकैं समुदायिक समर्थन दैत अछि।
उत्तर: घ. व्यक्तिगत दायित्वकैं समुदायिक समर्थन दैत अछि।
व्याख्या: दू व्यक्ति आ दू परिवारक घटना समाजक साक्षीमे घटैत अछि।

प्रश्न 7852. “विवाह गीत: स्वागत, परिछन आ कन्यादान” प्रसंगक निष्कर्ष की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. विवाह गीत स्वागत, परीक्षा, दान, विरह आ आशीषक संयुक्त लोक-अभिनय अछि।
उत्तर: घ. विवाह गीत स्वागत, परीक्षा, दान, विरह आ आशीषक संयुक्त लोक-अभिनय अछि।
व्याख्या: विवाह-संस्कारक प्रत्येक चरण गीतसँ सामाजिक अर्थ पबैत अछि।

खण्ड ७९१ : विदेह-सदेह २ — कोहबर, डहकन, समदाउन आ विदाईक नाद

प्रश्न 7853. कोहबर गीतक मूल सांस्कृतिक संकेत की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. दाम्पत्य, उर्वरता आ नवगृहस्थ जीवनक आरम्भ।
उत्तर: घ. दाम्पत्य, उर्वरता आ नवगृहस्थ जीवनक आरम्भ।
व्याख्या: कोहबर गीत विवाहक निजी-गृहस्थ पक्षकेँ लोक-प्रतीकसँ भरैत अछि।

प्रश्न 7854. डहकन गीतक विशेषता की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. चुटीला, व्यंग्यमय आ स्त्री-समूहक खुलल स्वर।
उत्तर: घ. चुटीला, व्यंग्यमय आ स्त्री-समूहक खुलल स्वर।
व्याख्या: डहकन विवाहक औपचारिकता बीच हँसी आ सामाजिक टिप्पणीक स्थान बनबैत अछि।

प्रश्न 7855. समदाउन गीतमे कोन भाव प्रधान होइत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. विदाईक करुणा आ मायकेसँ बिछोह।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. विदाईक करुणा आ मायकेसँ बिछोह।
व्याख्या: समदाउन बेटीक विदाईक गहन भावनाकेँ स्वर दैत अछि।

प्रश्न 7856. विदाई गीत समाजमे बेटीकेँ कोना देखबैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. स्नेह, दायित्व आ पीड़ाक केन्द्र रूपमे।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. स्नेह, दायित्व आ पीड़ाक केन्द्र रूपमे।
व्याख्या: गीत बेटीक गमनकेँ पारिवारिक करुणाक रूपमे प्रकट करैत अछि।

प्रश्न 7857. कोहबर गीतमे प्रतीक सभक भूमिका की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. नव दाम्पत्यक मंगल आ जीवन-वृद्धि संकेतित करब।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. नव दाम्पत्यक मंगल आ जीवन-वृद्धि संकेतित करब।
व्याख्या: कमरा, चित्र, लता, देवता आदि संकेत गीतमे अर्थपूर्ण होइत अछि।

प्रश्न 7858. डहकनमे व्यंग्य किएक समाजसम्मत भऽ जाइत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. किएक तँ विवाहक अवसर गीतकेँ खुलल बोलबाक अनुमति दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. किएक तँ विवाहक अवसर गीतकेँ खुलल बोलबाक अनुमति दैत अछि।
व्याख्या: लोकगीत सामाजिक आलोचना केँ उत्सवी हास्यमे ढाकि दैत अछि।

प्रश्न 7859. समदाउनक करुण स्वर विवाहक सम्पूर्ण उल्लासकेँ की सिखबैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. हर उत्सवक भीतर बिछोहक सत्य सेहो अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. हर उत्सवक भीतर बिछोहक सत्य सेहो अछि।
व्याख्या: विवाह केवल आनन्द नहि, पारिवारिक पुनर्व्यवस्था सेहो अछि।

प्रश्न 7860. विदाई गीतमे माय-बाबूक भाव की रूपमे उभरैत अछि?
क. ममता, गर्व, बेबसी आ आशीर्वाद।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. ममता, गर्व, बेबसी आ आशीर्वाद।
व्याख्या: बेटीक विदाई घरक भाव-संरचना हिलबैत अछि।

प्रश्न 7861. कोहबरसँ समदाउन धरि गीतक यात्रा की अछि?
क. दाम्पत्य आरम्भसँ मायकेक बिछोह धरि भाव-विस्तार।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. दाम्पत्य आरम्भसँ मायकेक बिछोह धरि भाव-विस्तार।
व्याख्या: विवाह गीत जीवनक नव शुरुआत आ पुरान घरसँ दूरी दूनू देखबैत अछि।

प्रश्न 7862. “कोहबर, डहकन, समदाउन आ विदाईक नाद” प्रसंगक सार की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. कोहबर, डहकन, समदाउन आ विदाई विवाहक बहुरंगी नाद अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. कोहबर, डहकन, समदाउन आ विदाई विवाहक बहुरंगी नाद अछि।
व्याख्या: एहि गीतसभमे दाम्पत्य, हास्य, करुणा आ लोक-प्रतीक एक संग भेटैत अछि।

खण्ड ७९२ : विदेह-सदेह २ — संस्कार गीतमे स्त्री-स्वर आ अनुभव

प्रश्न 7863. संस्कार गीतमे स्त्री-स्वर किएक विशेष महत्त्व रखैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. घरक अधिकांश संस्कारिक गायन स्त्री-अनुभवसँ संचालित अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. घरक अधिकांश संस्कारिक गायन स्त्री-अनुभवसँ संचालित अछि।
व्याख्या: संस्कार गीतक जीवित परम्परा स्त्री-समूहक स्मृति आ आवाजमे अछि।

प्रश्न 7864. स्त्री-गीतमे घरक कोन पक्ष खुलैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ममता, श्रम, पीड़ा, हास्य आ सामाजिक टिप्पणी।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. ममता, श्रम, पीड़ा, हास्य आ सामाजिक टिप्पणी।
व्याख्या: गीत स्त्रीजीवनक निजी आ सामूहिक अनुभवकेँ बोलबैत अछि।

प्रश्न 7865. डहकन सन गीत स्त्रीकेँ की अवसर दैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. व्यंग्य आ खुलल कथनक अवसर।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. व्यंग्य आ खुलल कथनक अवसर।
व्याख्या: औपचारिक समाजमे दबाएल स्वर गीतक भीतर प्रकट भऽ जाइत अछि।

प्रश्न 7866. समदाउनमे स्त्री-सम्बन्धक कोन रूप तीव्र होइत अछि?
क. माय-बेटी, बहिन, सखी आ परिजनक बिछोह।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. माय-बेटी, बहिन, सखी आ परिजनक बिछोह।
व्याख्या: विदाई गीत स्त्री-सम्बन्धक करुण अंतरंगता देखबैत अछि।

प्रश्न 7867. विवाह गीतमे स्त्री-समूहक सामूहिकता किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. एकल पीड़ाकेँ साझा अनुभव बना दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. एकल पीड़ाकेँ साझा अनुभव बना दैत अछि।
व्याख्या: सामूहिक गायन निजी दुख/खुशीकेँ सामाजिक सहारा दैत अछि।

प्रश्न 7868. संस्कार गीत स्त्रीक मौन इतिहास कोना बनैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ओहि गीतमे घरेलू जीवनक अनुभव सुरक्षित रहैत अछि।
उत्तर: घ. ओहि गीतमे घरेलू जीवनक अनुभव सुरक्षित रहैत अछि।
व्याख्या: स्त्रीक श्रम, हँसी, शिकायत आ आशीर्वाद लोकगीतमे संग्रहित अछि।

प्रश्न 7869. स्त्री-स्वर केवल करुण किएक नहि कहल जा सकैत?
क. ओहि स्वरमे हास्य, प्रतिरोध आ बुद्धि सेहो अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. ओहि स्वरमे हास्य, प्रतिरोध आ बुद्धि सेहो अछि।
व्याख्या: लोकगीत स्त्रीक अनेक रूप—मातृत्व, व्यंग्य, सलाह, विरोध—देखबैत अछि।

प्रश्न 7870. गीतक माध्यमे स्त्री समाजपर कोना टिप्पणी करैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. चुटकी, रूपक आ अवसरानुकूल वाक्यसँ।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. चुटकी, रूपक आ अवसरानुकूल वाक्यसँ।
व्याख्या: सामाजिक आलोचना खुल्लमखुल्ला नहि, गीतक कलात्मक भाषा मे अबैत अछि।

प्रश्न 7871. संस्कार गीतक संरक्षणमे स्त्री सभक सम्मान किएक जरूरी अछि?
क. ओ सभ परम्पराक जीबैत पुस्तक छथि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. ओ सभ परम्पराक जीबैत पुस्तक छथि।
व्याख्या: लोकगीतक असली पाठ अनेक बेर गायिका लोकनिक स्मृतिमे रहैत अछि।

प्रश्न 7872. “संस्कार गीतमे स्त्री-स्वर आ अनुभव” प्रसंगक निष्कर्ष की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. संस्कार गीत स्त्री-अनुभवक जीवित सांस्कृतिक अभिलेख अछि।
उत्तर: घ. संस्कार गीत स्त्री-अनुभवक जीवित सांस्कृतिक अभिलेख अछि।
व्याख्या: गीतमे स्त्री लोक-संस्कृतिक रक्षक, व्याख्याकार आ सर्जक छथि।

खण्ड ७९३ : विदेह-सदेह २ — नाद, लय, टेक आ सामूहिक गायन

प्रश्न 7873. लेखकक शीर्षकमे “नाद” शब्दक केन्द्रीय संकेत की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. गीतक ध्वनि, लय आ सामूहिक अनुभूति।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. गीतक ध्वनि, लय आ सामूहिक अनुभूति।
व्याख्या: संस्कार गीत शब्द मात्र नहि, नादात्मक सामूहिक क्रिया अछि।

प्रश्न 7874. संस्कार गीतमे टेकक भूमिका की होइत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सामूहिक दोहराव आ स्मृति-सहारा।
उत्तर: घ. सामूहिक दोहराव आ स्मृति-सहारा।
व्याख्या: टेक गीतकेँ याद राखय आ समूहकेँ जोड़यमे सहायक होइत अछि।

प्रश्न 7875. लय संस्कार गीतकेँ कोना प्रभावित करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. गायनकेँ क्रम, गति आ भाव दैत अछि।
उत्तर: घ. गायनकेँ क्रम, गति आ भाव दैत अछि।
व्याख्या: लय बिना गीतक सामूहिक स्वर बिखरि सकैत अछि।

प्रश्न 7876. सामूहिक गायन संस्कारक वातावरणकेँ कोना बदलैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अवसरकेँ साझा भाव-अनुभवमे रूपान्तरित करैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. अवसरकेँ साझा भाव-अनुभवमे रूपान्तरित करैत अछि।
व्याख्या: एक स्वरमे गाओल गीत घरक लोककेँ भावनात्मक रूपेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 7877. संस्कार गीतमे सुरक शास्त्रीय शुद्धता सर्वाधिक जरूरी किएक नहि?
क. लोक-अवसर, भाव आ सहभागिता बेसी महत्त्वपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. लोक-अवसर, भाव आ सहभागिता बेसी महत्त्वपूर्ण अछि।
व्याख्या: लोकगीतक मूल्य ओकर सामाजिक नादमे अछि, केवल शास्त्रीय पैमाना मे नहि।

प्रश्न 7878. नादक प्रभाव श्रोता पर कोना पड़ैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ओ भाव, स्मृति आ संस्कार-बोध जगबैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. ओ भाव, स्मृति आ संस्कार-बोध जगबैत अछि।
व्याख्या: ध्वनि मात्र कान धरि नहि, सामूहिक चेतना धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 7879. टेक आ पुनरावृत्ति लोकगीतकेँ किएक टिकौना बनबैत अछि?
क. ओ गीतकेँ स्मरणीय आ सहज गेय बनबैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. ओ गीतकेँ स्मरणीय आ सहज गेय बनबैत अछि।
व्याख्या: मौखिक परम्परामे दोहराव संरक्षणक साधन अछि।

प्रश्न 7880. संस्कार गीतक नाद घरक स्थानकेँ कोना बदलैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. आँगन, कोहबर वा पूजा-स्थानकेँ संस्कारिक मंच बनबैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. आँगन, कोहबर वा पूजा-स्थानकेँ संस्कारिक मंच बनबैत अछि।
व्याख्या: गीतक ध्वनि स्थानकेँ अर्थ दैत अछि।

प्रश्न 7881. सामूहिक नादमे व्यक्तिक आवाजक स्थिति की होइत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यक्ति समूहमे समाहित भऽ सामूहिक भाव बनबैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. व्यक्ति समूहमे समाहित भऽ सामूहिक भाव बनबैत अछि।
व्याख्या: संस्कार गीत व्यक्तिक दुःख-सुखकेँ समुदायिक स्वर दैत अछि।

प्रश्न 7882. “नाद, लय, टेक आ सामूहिक गायन” प्रसंगक सार की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. नाद, लय, टेक आ समूह-सुर संस्कार गीतक जीवन-तत्त्व अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. नाद, लय, टेक आ समूह-सुर संस्कार गीतक जीवन-तत्त्व अछि।
व्याख्या: संस्कार गीतक अर्थ ध्वनि आ सामूहिक प्रदर्शनमे पूर्ण होइत अछि।

खण्ड ७९४ : विदेह-सदेह २ — संस्कार गीतमे हास्य, व्यंग्य आ सामाजिक आलोचना

प्रश्न 7883. संस्कार गीतमे हास्यक महत्त्व की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. गम्भीर संस्कारक तनावकेँ हलुक बनबैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. गम्भीर संस्कारक तनावकेँ हलुक बनबैत अछि।
व्याख्या: विवाह वा जन्मक अवसरमे गीतक हँसी वातावरणकेँ सहज करैत अछि।

प्रश्न 7884. व्यंग्य संस्कार गीतमे कोना अबैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. रिश्ता, लोभ, औपचारिकता वा सामाजिक विसंगति पर चुटकी रूपमे।
उत्तर: घ. रिश्ता, लोभ, औपचारिकता वा सामाजिक विसंगति पर चुटकी रूपमे।
व्याख्या: लोकगीत खुलल विरोधक बदला संकेतपूर्ण कटाक्ष करैत अछि।

प्रश्न 7885. डहकनक व्यंग्य सामाजिक रूपेँ स्वीकार्य किएक होइत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. किएक तँ संस्कारक अवसर हास्यक विशेष छूट दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. किएक तँ संस्कारक अवसर हास्यक विशेष छूट दैत अछि।
व्याख्या: अवसर-विशेष लोकभाषाकेँ खुलबाक जगह दैत अछि।

प्रश्न 7886. संस्कार गीतमे बर/बरियात पर चुटकी किएक चलैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सम्बन्धक औपचारिकता केँ आत्मीय बनएबाक लेल।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. सम्बन्धक औपचारिकता केँ आत्मीय बनएबाक लेल।
व्याख्या: हास्य दोसर पक्षक दूरी कम करैत अछि।

प्रश्न 7887. गीतमे सामाजिक आलोचना प्रत्यक्ष न भऽ संकेतमे किएक रहैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. लोक-सम्बन्ध बचबैत सच कहबाक लेल।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. लोक-सम्बन्ध बचबैत सच कहबाक लेल।
व्याख्या: गीत सामाजिक शिष्टता भंग नहि करैत, मुदा असन्तोष व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 7888. हास्य गीतक संरक्षणमे कोना सहायक अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. लोक ओकरा आनंदसँ दोहरबैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. लोक ओकरा आनंदसँ दोहरबैत अछि।
व्याख्या: मनोरंजक गीत स्मृतिमे बेसी टिकैत अछि।

प्रश्न 7889. संस्कार गीतक व्यंग्य समाजक कोन पक्ष खोलैत अछि?
क. दहेज, दिखावा, अहंकार, जाति-मान आ सम्बन्धक दबाव।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. दहेज, दिखावा, अहंकार, जाति-मान आ सम्बन्धक दबाव।
व्याख्या: लोकगीत अनुभवजन्य आलोचना करैत अछि।

प्रश्न 7890. करुण अवसरमे हास्यक उपस्थिति विरोधाभास किएक नहि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोकजीवनमे हँसी आ पीड़ा एक संग रहैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. लोकजीवनमे हँसी आ पीड़ा एक संग रहैत अछि।
व्याख्या: संस्कार गीत जीवनक मिश्रित स्वरूप स्वीकारैत अछि।

प्रश्न 7891. हास्य-व्यंग्य गीत स्त्री-समूहकेँ की दैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. कहबाक सुरक्षित लोक-स्थान।
उत्तर: घ. कहबाक सुरक्षित लोक-स्थान।
व्याख्या: चुटकीक भीतर दबाएल अनुभव प्रकट भऽ सकैत अछि।

प्रश्न 7892. “संस्कार गीतमे हास्य, व्यंग्य आ सामाजिक आलोचना” प्रसंगक निष्कर्ष की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. संस्कार गीत मनोरंजनक संग सामाजिक आत्मालोचना सेहो करैत अछि।
उत्तर: घ. संस्कार गीत मनोरंजनक संग सामाजिक आत्मालोचना सेहो करैत अछि।
व्याख्या: हास्य आ व्यंग्य लोकसमाजक भीतरी सच उजागर करैत अछि।

खण्ड ७९५ : विदेह-सदेह २ — आधुनिकता, प्रवास आ संस्कार गीतक संकट

प्रश्न 7893. आधुनिक जीवन संस्कार गीत लेल कोन चुनौती आनैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. समय, संयुक्त परिवार आ सामूहिक अवसरक कमी।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. समय, संयुक्त परिवार आ सामूहिक अवसरक कमी।
व्याख्या: तेज जीवनशैली घरक लोक-गायन परम्पराकेँ कमजोर करैत अछि।

प्रश्न 7894. प्रवास संस्कार गीतक परम्परा पर कोना असर करैत अछि?
क. गाम-घरक गायिका आ अवसरिक संगति टूटैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. गाम-घरक गायिका आ अवसरिक संगति टूटैत अछि।
व्याख्या: स्थानान्तरणसँ गीतक सामाजिक आधार छिन्न-भिन्न भऽ सकैत अछि।

प्रश्न 7895. रेकार्डेड संगीतक बढ़ल प्रयोगक एक खतरा की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. जीवित सामूहिक गायन घटि सकैत अछि।
उत्तर: घ. जीवित सामूहिक गायन घटि सकैत अछि।
व्याख्या: मशीनक ध्वनि पारम्परिक गायिका-समूहक जगह लऽ सकैत अछि।

प्रश्न 7896. संस्कार गीतक संकट केवल गीत भूलब नहि, आर की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. अवसर, भाषा, बोली आ सम्बन्धक क्षय।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. अवसर, भाषा, बोली आ सम्बन्धक क्षय।
व्याख्या: गीतक संग पूरा सामाजिक संरचना जुड़ल अछि।

प्रश्न 7897. नव पीढ़ी संस्कार गीतसँ दूर किएक भऽ सकैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. भाषिक दूरी, शहरीकरण आ अभ्यासक अभावसँ।
उत्तर: घ. भाषिक दूरी, शहरीकरण आ अभ्यासक अभावसँ।
व्याख्या: गीत सीखनाइ व्यवहारिक संगति चाहैत अछि।

प्रश्न 7898. प्रवासमे संस्कार गीत बचएबाक उपाय की भऽ सकैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. परिवारिक आयोजनमे लोकगायनक सचेत पुनर्प्रयोग।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. परिवारिक आयोजनमे लोकगायनक सचेत पुनर्प्रयोग।
व्याख्या: परम्परा स्वतः नहि बचत; अभ्यास आ सीख जरूरी अछि।

प्रश्न 7899. आधुनिकता पूर्णतः शत्रु किएक नहि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. संग्रह, ध्वनि-मुद्रण आ साझा मंचक साधन सेहो दे सकैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. संग्रह, ध्वनि-मुद्रण आ साझा मंचक साधन सेहो दे सकैत अछि।
व्याख्या: तकनीक संकटो अछि आ संरक्षणक अवसर सेहो।

प्रश्न 7900. संस्कार गीतक जीवित रहबाक शर्त की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ओ अवसरपर गाओल आ सीखाओल जाए।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. ओ अवसरपर गाओल आ सीखाओल जाए।
व्याख्या: केवल संग्रहालयमे राखल गीत जीवित परम्परा नहि बनैत।

प्रश्न 7901. प्रवासक परिवारमे बालककेँ गीतसँ जोड़बाक उपयोगिता की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. मातृभाषा आ मिथिला-स्मृति सँ सम्बन्ध बनेनाइ।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मातृभाषा आ मिथिला-स्मृति सँ सम्बन्ध बनेनाइ।
व्याख्या: गीत पहचानक भावनात्मक पाठशाला बनि सकैत अछि।

प्रश्न 7902. “आधुनिकता, प्रवास आ संस्कार गीतक संकट” प्रसंगक सार की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. आधुनिकता आ प्रवास संस्कार गीतकेँ चुनौती दैत अछि, मुदा सचेत अभ्याससँ संरक्षण सम्भव अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. आधुनिकता आ प्रवास संस्कार गीतकेँ चुनौती दैत अछि, मुदा सचेत अभ्याससँ संरक्षण सम्भव अछि।
व्याख्या: संकटकेँ बुझि परिवार आ समाज दुनूकेँ सक्रिय हेबाक चाही।

खण्ड ७९६ : विदेह-सदेह २ — संग्रह, अभिलेखन आ जीवित परम्पराक संरक्षण

प्रश्न 7903. संस्कार गीतक संरक्षणमे संग्रहक पहिल आवश्यकता की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. गीतकेँ गायिका आ अवसरसहित दर्ज करब।
उत्तर: घ. गीतकेँ गायिका आ अवसरसहित दर्ज करब।
व्याख्या: केवल शब्द लिखब पर्याप्त नहि; गायन-प्रसंग सेहो जरूरी अछि।

प्रश्न 7904. अभिलेखनमे ध्वनि-मुद्रण किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. नाद, लय, उच्चारण आ टेक बचएबाक लेल।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. नाद, लय, उच्चारण आ टेक बचएबाक लेल।
व्याख्या: लिखित पाठ ध्वनिक सम्पूर्ण प्रभाव नहि बचा सकैत।

प्रश्न 7905. वीडियो अभिलेखनक उपयोगिता की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. हावभाव, सामूहिकता आ संस्कारिक क्रिया देखएबाक लेल।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. हावभाव, सामूहिकता आ संस्कारिक क्रिया देखएबाक लेल।
व्याख्या: संस्कार गीत प्रदर्शनक हिस्सा अछि; दृश्य-संदर्भ महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 7906. संग्रहक समय गायिका लोकनिक नाम लिखब किएक जरूरी अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. सांस्कृतिक योगदानक सम्मान लेल।
उत्तर: घ. सांस्कृतिक योगदानक सम्मान लेल।
व्याख्या: लोकगायिका परम्पराक रचनात्मक वाहक छथि।

प्रश्न 7907. गीत संग्रहमे स्थान आ बोली किएक अंकित करबाक चाही?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. क्षेत्रीय भेद आ रूपान्तर बुझबाक लेल।
उत्तर: घ. क्षेत्रीय भेद आ रूपान्तर बुझबाक लेल।
व्याख्या: मिथिलाक अलग-अलग भागमे गीतक शब्द/धुन बदलि सकैत अछि।

प्रश्न 7908. संग्रहित गीतकेँ समुदायमे वापस पहुँचाबक महत्त्व की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. परम्परा पुनः लोकक बीच सक्रिय रहैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. परम्परा पुनः लोकक बीच सक्रिय रहैत अछि।
व्याख्या: संग्रह केवल शोधार्थी लेल नहि, समाज लेल सेहो हेबाक चाही।

प्रश्न 7909. संरक्षण केवल पुस्तक छापब किएक नहि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. गीतक नाद, अवसर आ गायन-रीति सेहो बचबाक चाही।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. गीतक नाद, अवसर आ गायन-रीति सेहो बचबाक चाही।
व्याख्या: लोकगीत बहुस्तरीय सांस्कृतिक क्रिया अछि।

प्रश्न 7910. विद्यालय/परिवारमे संस्कार गीतक परिचय किएक उपयोगी अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. नव पीढ़ी मातृभाषा आ लोकसंस्कृतिसँ जुड़ैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. नव पीढ़ी मातृभाषा आ लोकसंस्कृतिसँ जुड़ैत अछि।
व्याख्या: सीखनाइ बिना परम्परा स्मृतिहीन भऽ जाइत अछि।

प्रश्न 7911. अभिलेखनमे अनुमति आ संवेदनशीलता किएक जरूरी अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. गायिका आ समुदायक अधिकार सम्मानित रहबाक लेल।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. गायिका आ समुदायक अधिकार सम्मानित रहबाक लेल।
व्याख्या: लोकज्ञानक उपयोग सम्मान आ सहमति संग होबाक चाही।

प्रश्न 7912. “संग्रह, अभिलेखन आ जीवित परम्पराक संरक्षण” प्रसंगक निष्कर्ष की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. संस्कार गीतक संरक्षण शब्द, स्वर, अवसर, गायिका आ समुदाय सभकेँ संग लऽ कऽ करब आवश्यक अछि।
उत्तर: घ. संस्कार गीतक संरक्षण शब्द, स्वर, अवसर, गायिका आ समुदाय सभकेँ संग लऽ कऽ करब आवश्यक अछि।
व्याख्या: अभिलेखन जीवित परम्पराक सम्मानपूर्वक दस्तावेजीकरण अछि।

खण्ड ७९७ : विदेह-सदेह २ — शोध-पद्धति: पाठ, प्रसंग आ प्रदर्शन

प्रश्न 7913. संस्कार गीतक शोधमे केवल पाठ पढ़ब किएक अपर्याप्त अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. किएक तँ गीत प्रसंग आ प्रदर्शनमे पूरा अर्थ पबैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. किएक तँ गीत प्रसंग आ प्रदर्शनमे पूरा अर्थ पबैत अछि।
व्याख्या: लोकगीतक अर्थ शब्द, अवसर, गायन आ श्रोता सभ मिलि बनबैत अछि।

प्रश्न 7914. शोधार्थीकेँ गीतक अवसर किएक लिखबाक चाही?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ओहि अवसरसँ गीतक प्रयोजन बुझाइत अछि।
उत्तर: घ. ओहि अवसरसँ गीतक प्रयोजन बुझाइत अछि।
व्याख्या: जन्म, विवाह, मुंडन आदि बदलला पर गीतक अर्थ सेहो बदलैत अछि।

प्रश्न 7915. गायिका लोकनिक भूमिका शोधमे किएक पूछबाक चाही?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ओ सभ गीतक स्मृति, रूपान्तर आ अर्थक स्रोत छथि।
उत्तर: घ. ओ सभ गीतक स्मृति, रूपान्तर आ अर्थक स्रोत छथि।
व्याख्या: लोकगायिका बिना गीतक जीवित ज्ञान अधूरा रहैत अछि।

प्रश्न 7916. एक गीतक अलग-अलग रूप भेटला पर शोधार्थी की करबाक चाही?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. रूपान्तर सभकेँ दर्ज करि तुलना करब।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. रूपान्तर सभकेँ दर्ज करि तुलना करब।
व्याख्या: लोकपरम्पराक विविधता दोष नहि, अध्ययनक सामग्री अछि।

प्रश्न 7917. गीतक लय/टेक नोट करब किएक जरूरी अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. सामूहिक गायनक संरचना बुझबाक लेल।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. सामूहिक गायनक संरचना बुझबाक लेल।
व्याख्या: लय आ टेक गीतक मौखिक स्मृति बनबैत अछि।

प्रश्न 7918. शोधमे श्रोता आ सहभागी लोकक उल्लेख किएक उपयोगी अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. गीतक सामाजिक प्रभाव आ ग्रहणशीलता बुझबाक लेल।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. गीतक सामाजिक प्रभाव आ ग्रहणशीलता बुझबाक लेल।
व्याख्या: गीत के सुनैत अछि आ कोना प्रतिक्रिया दैत अछि, ई अर्थक हिस्सा अछि।

प्रश्न 7919. संस्कार गीतक पाठ-संपादनमे सावधानी की चाही?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. लोकभाषाक स्वरूपकेँ अनावश्यक मानकीकरणसँ नहि बिगाड़ब।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. लोकभाषाक स्वरूपकेँ अनावश्यक मानकीकरणसँ नहि बिगाड़ब।
व्याख्या: बोलीक स्थानीयता गीतक असली स्वाद अछि।

प्रश्न 7920. फील्डवर्कमे शोधार्थी ककरा प्रति उत्तरदायी अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. गायक-समुदाय आ सांस्कृतिक सत्य प्रति।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. गायक-समुदाय आ सांस्कृतिक सत्य प्रति।
व्याख्या: संग्रह मे नैतिकता आवश्यक अछि।

प्रश्न 7921. गीतक प्रसंग-विवरण बिना पाठक समस्या की होइत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. वह गीतक प्रयोजन आ भाव भूलि सकैत अछि।
उत्तर: घ. वह गीतक प्रयोजन आ भाव भूलि सकैत अछि।
व्याख्या: संदर्भ गीतक अर्थ खोलैत अछि।

प्रश्न 7922. “शोध-पद्धति: पाठ, प्रसंग आ प्रदर्शन” प्रसंगक सार की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. संस्कार गीतक शोध पाठ, ध्वनि, प्रसंग, प्रदर्शन आ समुदाय—सभक संयुक्त अध्ययन चाहैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. संस्कार गीतक शोध पाठ, ध्वनि, प्रसंग, प्रदर्शन आ समुदाय—सभक संयुक्त अध्ययन चाहैत अछि।
व्याख्या: लोकगीतक वैज्ञानिक अध्ययन बहु-आयामी होबाक चाही।

खण्ड ७९८ : विदेह-सदेह २ — भाषा, बोली आ पदावलीक सांस्कृतिक महत्त्व

प्रश्न 7923. संस्कार गीतक भाषा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ओहि भाषामे लोकजीवनक असली अनुभव रहैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. ओहि भाषामे लोकजीवनक असली अनुभव रहैत अछि।
व्याख्या: गीतक शब्द मातृभाषिक स्मृति आ सामाजिक अर्थ लऽ चलैत अछि।

प्रश्न 7924. स्थानीय बोलीक शब्दकेँ हटाएब किएक हानि पहुँचा सकैत अछि?
क. गीतक स्वाद, स्थानिकता आ इतिहास घटि जाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. गीतक स्वाद, स्थानिकता आ इतिहास घटि जाइत अछि।
व्याख्या: मानकीकरणक नाम पर लोकस्वर मेटबाक खतरा रहैत अछि।

प्रश्न 7925. संस्कार गीतक पदावली समाजक कोन ज्ञान बचबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. रिश्ता, रीति, वस्तु, भाव आ लोकविश्वासक ज्ञान।
उत्तर: घ. रिश्ता, रीति, वस्तु, भाव आ लोकविश्वासक ज्ञान।
व्याख्या: एक शब्दो पूरा जीवन-पद्धति संकेतित करि सकैत अछि।

प्रश्न 7926. गीतमे पुरान शब्द बचल रहबाक उपयोगिता की अछि?
क. भाषिक इतिहास आ लोकस्मृति बुझबामे सहायता।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. भाषिक इतिहास आ लोकस्मृति बुझबामे सहायता।
व्याख्या: लोकगीत अनेक बेर शब्दकोशसँ बेसी जीवित शब्द-संग्रह होइत अछि।

प्रश्न 7927. बोली-भेदक कारण गीतक अलग रूप किएक मिलैत अछि?
क. क्षेत्र, जातीय/परिवारिक परम्परा आ गायन-अभ्यास भिन्न होइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. क्षेत्र, जातीय/परिवारिक परम्परा आ गायन-अभ्यास भिन्न होइत अछि।
व्याख्या: लोकभाषा एकरूप नहि, बहुरूप परम्परा अछि।

प्रश्न 7928. संस्कार गीतमे सम्बन्ध-सूचक शब्दक महत्त्व की अछि?
क. परिवारिक संरचना आ आत्मीयता प्रकट करब।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. परिवारिक संरचना आ आत्मीयता प्रकट करब।
व्याख्या: माय, बाउ, बहिन, सखी, समधी आदि शब्द सामाजिक सम्बन्ध बनबैत अछि।

प्रश्न 7929. गीतक भाषा भावकेँ कोना तीव्र करैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सादगी, दोहराव आ आत्मीय संबोधनसँ।
उत्तर: घ. सादगी, दोहराव आ आत्मीय संबोधनसँ।
व्याख्या: लोकभाषा सीधा हृदय धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 7930. शोधकर्ता भाषा सुधारक बनि कऽ गीत बदलि देत तँ की समस्या?
क. मूल लोकस्वर आ सांस्कृतिक प्रमाण विकृत भऽ सकैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. मूल लोकस्वर आ सांस्कृतिक प्रमाण विकृत भऽ सकैत अछि।
व्याख्या: लोकगीतक पाठे ओकर प्रमाण अछि; सजावटसँ तथ्य बिगड़ैत अछि।

प्रश्न 7931. भाषा संरक्षण आ संस्कार गीत संरक्षणक सम्बन्ध की अछि?
क. गीत बचल तँ मातृभाषाक कई जीवित रूप बचैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. गीत बचल तँ मातृभाषाक कई जीवित रूप बचैत अछि।
व्याख्या: लोकगीत मातृभाषाक ध्वनि, शब्द आ मुहावरा सुरक्षित रखैत अछि।

प्रश्न 7932. “भाषा, बोली आ पदावलीक सांस्कृतिक महत्त्व” प्रसंगक निष्कर्ष की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. संस्कार गीतक भाषा, बोली आ पदावली लोक-सांस्कृतिक इतिहासक अमूल्य स्रोत अछि।
उत्तर: घ. संस्कार गीतक भाषा, बोली आ पदावली लोक-सांस्कृतिक इतिहासक अमूल्य स्रोत अछि।
व्याख्या: शब्द सभकेँ सम्मानसँ दर्ज करब संरक्षणक मूल भाग अछि।

खण्ड ७९९ : विदेह-सदेह २ — लोकगीत, समाज-इतिहास आ मिथिला

प्रश्न 7933. संस्कार गीत समाज-इतिहासक स्रोत किएक मानल जा सकैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ओहि मे जीवन-रीति, सम्बन्ध आ लोकविश्वास सुरक्षित रहैत अछि।
उत्तर: घ. ओहि मे जीवन-रीति, सम्बन्ध आ लोकविश्वास सुरक्षित रहैत अछि।
व्याख्या: गीत इतिहासक राजकीय अभिलेख नहि, लोकजीवनक स्मृति-अभिलेख अछि।

प्रश्न 7934. मिथिलाक संस्कार गीत परिवारक संरचना कोना देखबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. रिश्ताक जाल, दायित्व आ आत्मीय संबोधन द्वारा।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. रिश्ताक जाल, दायित्व आ आत्मीय संबोधन द्वारा।
व्याख्या: गीतमे परिजनक भूमिकासँ सामाजिक संरचना स्पष्ट होइत अछि।

प्रश्न 7935. गीतमे देवता आ लोकविश्वासक उल्लेख समाज-इतिहास लेल किएक उपयोगी?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ धार्मिक-सांस्कृतिक मनोवृत्ति प्रकट करैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. ओ धार्मिक-सांस्कृतिक मनोवृत्ति प्रकट करैत अछि।
व्याख्या: संस्कारक समय लोकमानस देव-स्मरणसँ शुभता खोजैत अछि।

प्रश्न 7936. विवाह गीत आर्थिक-सामाजिक स्थिति कोना संकेतित करि सकैत अछि?
क. साज-सामान, दहेज, बरियात, भोजन वा प्रतिष्ठाक उल्लेखसँ।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. साज-सामान, दहेज, बरियात, भोजन वा प्रतिष्ठाक उल्लेखसँ।
व्याख्या: गीतमे उत्सवक वस्तु-संसार समाजक स्थिति देखबैत अछि।

प्रश्न 7937. जन्म गीत समाजक भविष्य-दृष्टि किएक खोलैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. नवजातक लेल कामना आ आशा व्यक्त करैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. नवजातक लेल कामना आ आशा व्यक्त करैत अछि।
व्याख्या: समाज बच्चामे अपन आगामी पीढ़ी देखैत अछि।

प्रश्न 7938. लोकगीतमे स्त्रीक अनुभव इतिहासमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ओ घरेलू जीवनक अदृश्य पक्ष उजागर करैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. ओ घरेलू जीवनक अदृश्य पक्ष उजागर करैत अछि।
व्याख्या: औपचारिक इतिहासमे जे छूटैत अछि, लोकगीतमे रहि जाइत अछि।

प्रश्न 7939. संस्कार गीत मिथिला पहचानक कोन आधार देत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. भाषा, रीति, देवी-देवता, परिवार आ नादक साझा संसार।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. भाषा, रीति, देवी-देवता, परिवार आ नादक साझा संसार।
व्याख्या: गीत मिथिला समाजक सांस्कृतिक आत्मपहिचान बनबैत अछि।

प्रश्न 7940. लोकगीतक इतिहास केवल तिथि-आधारित किएक नहि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ओ अनुभव, स्मृति आ व्यवहार-आधारित इतिहास अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. ओ अनुभव, स्मृति आ व्यवहार-आधारित इतिहास अछि।
व्याख्या: गीत समाजक भावात्मक अतीत सहेजैत अछि।

प्रश्न 7941. समाज बदलला पर गीतमे की बदलि सकैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. शब्द, प्रसंग, स्वर आ व्यंग्यक लक्ष्य।
उत्तर: घ. शब्द, प्रसंग, स्वर आ व्यंग्यक लक्ष्य।
व्याख्या: जीवित समाजक संग गीत सेहो बदलैत अछि।

प्रश्न 7942. “लोकगीत, समाज-इतिहास आ मिथिला” प्रसंगक सार की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. संस्कार गीत मिथिलाक लोक-समाजक जीवित इतिहास-स्रोत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. संस्कार गीत मिथिलाक लोक-समाजक जीवित इतिहास-स्रोत अछि।
व्याख्या: गीतमे परिवार, विश्वास, भाषा आ सामाजिक परिवर्तनक चिन्ह सुरक्षित अछि।

खण्ड ८०० : विदेह-सदेह २ — परम्परा आ नव-संरक्षणक उपाय

प्रश्न 7943. संस्कार गीत संरक्षणक पहिल सामाजिक उपाय की अछि?

क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ग. घर-घरमे अवसरपर गीत गाबयक परम्परा पुनर्जीवित करब।

घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

उत्तर: ग. घर-घरमे अवसरपर गीत गाबयक परम्परा पुनर्जीवित करब।

व्याख्या: लोकगीत अभ्यासमे जियैत अछि; केवल संग्रह काफी नहि।

प्रश्न 7944. नव पीढ़ीकेँ गीत सिखएबाक सहज तरीका की भऽ सकैत अछि?

क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ख. परिवारिक आयोजनमे बुजुर्ग गायिका सँ सुनि-दोहरा कऽ सीखब।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. परिवारिक आयोजनमे बुजुर्ग गायिका सँ सुनि-दोहरा कऽ सीखब।

व्याख्या: सहभागितापूर्ण सीख परम्परागत पद्धति अछि।

प्रश्न 7945. डिजिटल साधन संरक्षणमे कोना सहायक भऽ सकैत अछि?

क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ग. ध्वनि, पाठ, वीडियो आ प्रसंग संग्रह करि साझा करबामे।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

उत्तर: ग. ध्वनि, पाठ, वीडियो आ प्रसंग संग्रह करि साझा करबामे।

व्याख्या: तकनीक सही प्रयोग भेल तँ लोकगीतक प्रसार बढ़ि सकैत अछि।

प्रश्न 7946. विद्यालय वा सांस्कृतिक शिविरमे संस्कार गीतक परिचय किएक लाभकारी?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. बालक/युवा लोककेँ मातृभाषा आ लोकसंस्कृति सँ जोड़ैत अछि।

उत्तर: घ. बालक/युवा लोककेँ मातृभाषा आ लोकसंस्कृति सँ जोड़ैत अछि।

व्याख्या: औपचारिक शिक्षा आ लोक-ज्ञानक सेतु बनि सकैत अछि।

प्रश्न 7947. संरक्षणमे केवल मंचीय प्रस्तुति किएक पर्याप्त नहि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

घ. किएक तँ गीतक असली जीवन संस्कार-प्रसंगमे अछि।

उत्तर: घ. किएक तँ गीतक असली जीवन संस्कार-प्रसंगमे अछि।

व्याख्या: मंच गीतकेँ प्रचार दैत अछि, मुदा घरेलू अवसर ओकर जड़ अछि।

प्रश्न 7948. गायिका लोकनिक सम्मान संरक्षणक शर्त किएक अछि?

क. ओ सभ परम्पराक जीवित धारक छथि।

ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।

ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।

उत्तर: क. ओ सभ परम्पराक जीवित धारक छथि।

व्याख्या: सम्मान बिना लोकज्ञानक स्रोत उपेक्षित रहि जाइत अछि।

प्रश्न 7949. गीत-संग्रहमे स्थानीय भेद बचाएब किएक जरूरी?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. विविधता मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. विविधता मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा अछि।
व्याख्या: एकरूपता थोपब लोकधन घटा सकैत अछि।

प्रश्न 7950. प्रवासी मैथिल परिवार लेल संस्कार गीतक उपयोगिता की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. पहचान आ मातृभाषाक भावनात्मक सम्बन्ध बनाए राखब।
उत्तर: घ. पहचान आ मातृभाषाक भावनात्मक सम्बन्ध बनाए राखब।
व्याख्या: गीत प्रवासमे स्मृतिक पुल बनि सकैत अछि।

प्रश्न 7951. नव-संरक्षणमे समुदायक भागीदारी किएक अनिवार्य अछि?
क. बिना समुदाय गीत संग्रहालयक वस्तु बनि जाएत।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. बिना समुदाय गीत संग्रहालयक वस्तु बनि जाएत।
व्याख्या: लोकगीतक जीवन लोकक बीच अछि।

प्रश्न 7952. “परम्परा आ नव-संरक्षणक उपाय” प्रसंगक निष्कर्ष की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. अभ्यास, सम्मान, डिजिटल अभिलेखन आ नवपीढ़ी-शिक्षा सँ संस्कार गीत बचि सकैत अछि।
उत्तर: घ. अभ्यास, सम्मान, डिजिटल अभिलेखन आ नवपीढ़ी-शिक्षा सँ संस्कार गीत बचि सकैत अछि।
व्याख्या: परम्परा संरक्षणक अर्थ ओकरा जीवित उपयोगमे राखब अछि।

खण्ड ८०१ : विदेह-सदेह २ — संस्कार गीतक वर्गीकरण आ अवसर-क्रम

प्रश्न 7953. संस्कार गीतक वर्गीकरणक आधार की होएबाक चाही?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. जीवन-चरण आ संस्कार-अवसर।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. जीवन-चरण आ संस्कार-अवसर।
व्याख्या: जन्म, बाल्य, विवाह आदि प्रसंग गीतक वर्गीकरणक स्वाभाविक आधार अछि।

प्रश्न 7954. जीवन-चक्र आधारित वर्गीकरणक लाभ की अछि?
क. गीतक सामाजिक प्रयोजन स्पष्ट होइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. गीतक सामाजिक प्रयोजन स्पष्ट होइत अछि।
व्याख्या: गीत कखन आ किएक गाओल जाएत अछि, से बुझाइत अछि।

प्रश्न 7955. जन्म सम्बन्धी गीतकेँ विवाह गीतसँ अलग रखबाक कारण की अछि?
क. दूनूक भाव, सहभागी आ संस्कार-कर्म भिन्न अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. दूनूक भाव, सहभागी आ संस्कार-कर्म भिन्न अछि।
व्याख्या: प्रसंग बदलला पर गीतक भाषा आ नाद बदलैत अछि।

प्रश्न 7956. विवाह गीतक भीतर उपवर्ग किएक बनबाक चाही?
क. विवाहमे अनेक चरण आ अलग-अलग गीत होइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. विवाहमे अनेक चरण आ अलग-अलग गीत होइत अछि।
व्याख्या: मंगनी, हल्दी, मटकोर, परिछन, कन्यादान, विदाई आदि अलग प्रसंग अछि।

प्रश्न 7957. वर्गीकरणमे केवल शीर्षक भरोसे किएक नहि रहबाक चाही?
क. एके गीत अलग स्थानपर भिन्न नामसँ गाओल जा सकैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. एके गीत अलग स्थानपर भिन्न नामसँ गाओल जा सकैत अछि।
व्याख्या: लोकपरम्परामे नाम आ पाठक विविधता स्वाभाविक अछि।

प्रश्न 7958. अवसर-क्रम गीतक अर्थ बुझबामे कोना सहायक अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. गीतक भावक क्रम—आनन्द, तैयारी, करुणा—साफ होइत अछि।
उत्तर: घ. गीतक भावक क्रम—आनन्द, तैयारी, करुणा—साफ होइत अछि।
व्याख्या: क्रम बिना गीतक भावभूमि टूटि सकैत अछि।

प्रश्न 7959. संस्कार गीतक वर्गीकरणमे स्थानीय शब्द किएक सुरक्षित रखबाक चाही?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओही शब्द अवसरक असली पहचान दैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. ओही शब्द अवसरक असली पहचान दैत अछि।
व्याख्या: स्थानीय पदावली लोक-सांस्कृतिक प्रमाण अछि।

प्रश्न 7960. शोधार्थी लेल वर्गीकरणक उपयोगिता की अछि?
क. संग्रहकेँ व्यवस्थित आ तुलनायोग्य बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. संग्रहकेँ व्यवस्थित आ तुलनायोग्य बनबैत अछि।
व्याख्या: बिना वर्गीकरण विशाल सामग्री बिखरल रहि जाइत अछि।

प्रश्न 7961. लोकगीतक वर्गीकरण कठोर किएक नहि हेबाक चाही?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. लोकजीवनमे गीतक उपयोग लचीला होइत अछि।
उत्तर: घ. लोकजीवनमे गीतक उपयोग लचीला होइत अछि।
व्याख्या: एक गीत अनेक अवसरमे बदलल अर्थ संग गाओल जा सकैत अछि।

प्रश्न 7962. “संस्कार गीतक वर्गीकरण आ अवसर-क्रम” प्रसंगक सार की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. संस्कार गीतक वर्गीकरण जीवन-चक्र, अवसर, स्थानीयता आ लचीलापनक संग करबाक चाही।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. संस्कार गीतक वर्गीकरण जीवन-चक्र, अवसर, स्थानीयता आ लचीलापनक संग करबाक चाही।
व्याख्या: व्यवस्था जरूरी अछि, मुदा लोकपरम्पराक बहुरूपता बचा कऽ।

खण्ड ८०२ : विदेह-सदेह २ — संस्कार गीतक सौंदर्य: शब्द, पुनरावृत्ति आ रूपक

प्रश्न 7963. संस्कार गीतक सौंदर्य केवल काव्य-पंक्तिमे नहि, आर कतए अछि?
क. नाद, अवसर आ सामूहिक भावमे।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. नाद, अवसर आ सामूहिक भावमे।
व्याख्या: गीतक रूप शब्दसँ शुरू होइत अछि, मुदा गायनमे पूर्ण बनैत अछि।

प्रश्न 7964. पुनरावृत्ति संस्कार गीतमे किएक महत्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. लय, स्मृति आ भाव-गहनता लेल।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. लय, स्मृति आ भाव-गहनता लेल।
व्याख्या: दोहराव मौखिक परम्पराक सौंदर्य आ संरचना दूनू अछि।

प्रश्न 7965. रूपक लोकगीतमे कोना काम करैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सरल चित्र द्वारा गूढ़ भाव व्यक्त करैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ख. सरल चित्र द्वारा गूढ़ भाव व्यक्त करैत अछि।
व्याख्या: बेटी, फूल, नदी, पंछी सन प्रतीक भाव विस्तार करैत अछि।

प्रश्न 7966. गीतक सादगी ओकर सौंदर्य किएक घटबैत नहि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. किएक तँ लोकभावक सीधापन प्रभावी होइत अछि।
उत्तर: घ. किएक तँ लोकभावक सीधापन प्रभावी होइत अछि।
व्याख्या: लोकगीतक शक्ति सरल, आत्मीय आ गेय भाषामे अछि।

प्रश्न 7967. संस्कार गीतक टेक सौंदर्यक अंग किएक अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. समूहकेँ जोड़ैत आ भाव दोहरबैत अछि।
उत्तर: घ. समूहकेँ जोड़ैत आ भाव दोहरबैत अछि।
व्याख्या: टेक गीतक नादात्मक पहचान बनबैत अछि।

प्रश्न 7968. हास्य-चुटकी सेहो सौंदर्य किएक अछि?
क. ओ जीवनक सहजता आ समाजक आत्मालोचना अनैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. ओ जीवनक सहजता आ समाजक आत्मालोचना अनैत अछि।
व्याख्या: लोकगीत सुन्दरता केँ केवल करुण वा भक्ति धरि सीमित नहि करैत।

प्रश्न 7969. करुण गीतक सौंदर्य ककरासँ बनैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. संयमित दुःख, आत्मीय संबोधन आ स्मृति सँ।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. संयमित दुःख, आत्मीय संबोधन आ स्मृति सँ।
व्याख्या: समदाउन सन गीत करुणाकेँ लोकक गेय भाषा दैत अछि।

प्रश्न 7970. मंगल गीतक सौंदर्य ककरा मे अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आशीर्वाद, उज्ज्वल कामना आ सामूहिक शुभ-भावमे।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. आशीर्वाद, उज्ज्वल कामना आ सामूहिक शुभ-भावमे।
व्याख्या: मंगल नाद संस्कारक सकारात्मक ऊर्जा बनैत अछि।

प्रश्न 7971. लोकगीतक रूपकमे प्रकृतिक उपस्थिति किएक देखाइत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. मानव जीवनकेँ धरती, जल, ऋतु आ वनस्पतिसँ जोड़बाक लेल।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मानव जीवनकेँ धरती, जल, ऋतु आ वनस्पतिसँ जोड़बाक लेल।
व्याख्या: मिथिला लोकजीवन प्रकृति सँ गहिर जुड़ल अछि।

प्रश्न 7972. “संस्कार गीतक सौंदर्य: शब्द, पुनरावृत्ति आ रूपक” प्रसंगक निष्कर्ष की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. संस्कार गीतक सौंदर्य सरल शब्द, पुनरावृत्ति, रूपक, नाद आ अवसरक संयुक्त कलामे अछि।
उत्तर: घ. संस्कार गीतक सौंदर्य सरल शब्द, पुनरावृत्ति, रूपक, नाद आ अवसरक संयुक्त कलामे अछि।
व्याख्या: गीत सुन्दर किएक होइत अछि, से ओकर लोक-प्रयोगसँ बुझाइत अछि।

खण्ड ८०३ : विदेह-सदेह २ — प्रदर्शन, श्रोता आ संस्कारिक मंच

प्रश्न 7973. संस्कार गीतमे “मंच” ककरा कहल जा सकैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. घरक आँगन, कोहबर, पूजा-स्थान वा संस्कारक जगह।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. घरक आँगन, कोहबर, पूजा-स्थान वा संस्कारक जगह।
व्याख्या: लोकगीतक मंच औपचारिक रंगमंच नहि, जीवनक अवसरिक स्थान अछि।

प्रश्न 7974. गायिका आ श्रोता बीचक सम्बन्ध संस्कार गीतमे कोना होइत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. दूनू एके समुदायिक अनुभवमे सहभागी होइत छथि।
उत्तर: घ. दूनू एके समुदायिक अनुभवमे सहभागी होइत छथि।
व्याख्या: श्रोता अनेक बेर टेक, हँसी वा प्रतिक्रिया सँ भाग लेत छथि।

प्रश्न 7975. प्रदर्शनक समय वातावरण गीतक अर्थ कोना बदलैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. अवसर, उपस्थित लोक आ क्रिया गीतकेँ भाव दैत अछि।
उत्तर: घ. अवसर, उपस्थित लोक आ क्रिया गीतकेँ भाव दैत अछि।
व्याख्या: एके गीत अलग स्थिति मे अलग असर दै सकैत अछि।

प्रश्न 7976. संस्कारिक मंचमे देह-भाषाक भूमिका की अछि?
क. ताली, हावभाव, नेत्र-संकेत आ सामूहिक गति गीतकेँ जीवंत बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. ताली, हावभाव, नेत्र-संकेत आ सामूहिक गति गीतकेँ जीवंत बनबैत अछि।
व्याख्या: गीत केवल ध्वनि नहि, प्रदर्शनक क्रिया सेहो अछि।

प्रश्न 7977. श्रोता प्रतिक्रिया किएक अध्ययन योग्य अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ओ गीतक सामाजिक स्वीकृति आ प्रभाव बतबैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. ओ गीतक सामाजिक स्वीकृति आ प्रभाव बतबैत अछि।
व्याख्या: हँसी, आँसू, मौन, टेक—सभ अर्थ-सृजनक हिस्सा अछि।

प्रश्न 7978. संस्कार गीतक प्रस्तुति समय-नियमसँ किएक जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. हर गीतक अपना अवसर आ क्रम होइत अछि।
उत्तर: घ. हर गीतक अपना अवसर आ क्रम होइत अछि।
व्याख्या: गलत अवसरमे गीतक भाव कमजोर वा असंगत भऽ सकैत अछि।

प्रश्न 7979. घरेलू संस्कारिक मंच लोकनाट्यसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. गीत, संवाद, अभिनय-संकेत आ सामूहिकता सभ उपस्थित रहैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: क. गीत, संवाद, अभिनय-संकेत आ सामूहिकता सभ उपस्थित रहैत अछि।
व्याख्या: कतेको संस्कार गीतमे छोट नाटकीयता होइत अछि।

प्रश्न 7980. प्रदर्शनक सामूहिकता व्यक्तिक भावकेँ की करैत अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. साझा भावमे बदलि दैत अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. साझा भावमे बदलि दैत अछि।
व्याख्या: व्यक्तिगत दुख-सुख समुदायिक स्वर पबैत अछि।

प्रश्न 7981. संस्कार गीतक मंचीयकरण करत समय सावधानी की चाही?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. मूल अवसरिक भाव आ लोकगायनक गरिमा बचाएब।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मूल अवसरिक भाव आ लोकगायनक गरिमा बचाएब।
व्याख्या: मंचपर लए गेल गीत सजावटमे अपन लोकसत्य नहि गँवाबय।

प्रश्न 7982. “प्रदर्शन, श्रोता आ संस्कारिक मंच” प्रसंगक सार की अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. संस्कार गीत प्रदर्शन, श्रोता, स्थान आ अवसरक संयुक्त लोक-कला अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ग. संस्कार गीत प्रदर्शन, श्रोता, स्थान आ अवसरक संयुक्त लोक-कला अछि।
व्याख्या: गीतक पूरा अर्थ ओकर जीवित प्रस्तुति मे खुलैत अछि।

खण्ड ८०४ : विदेह-सदेह २ — संस्कार गीतक निष्कर्ष: नादसँ समाज-बोध धरि

प्रश्न 7983. “संस्कार गीत/लोक गीत नाद”क समग्र निष्कर्ष की मानल जा सकैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. संस्कार गीत मिथिला समाजक जीवन-चक्रक नादात्मक अभिलेख अछि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. संस्कार गीत मिथिला समाजक जीवन-चक्रक नादात्मक अभिलेख अछि।
व्याख्या: गीत जन्मसँ विवाह धरि जीवनक प्रमुख चरणकेँ लोकध्वनि दैत अछि।

प्रश्न 7984. संस्कार गीत समाज-बोध कोना बनबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. रिश्ता, रीति, विश्वास आ सामूहिक भावना व्यक्त करि।
घ. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
उत्तर: ग. रिश्ता, रीति, विश्वास आ सामूहिक भावना व्यक्त करि।
व्याख्या: गीत समाजक संरचना आ संवेदनाकेँ सुनब योग्य बनबैत अछि।

प्रश्न 7985. लोकगीत नाद मात्र मनोरंजन किएक नहि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. ओ संस्कार, स्मृति, आलोचना आ आशीषक वाहक अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. ओ संस्कार, स्मृति, आलोचना आ आशीषक वाहक अछि।
व्याख्या: गीत आनंद दैत अछि, मुदा ओकर सामाजिक कार्य बहुत व्यापक अछि।

प्रश्न 7986. संस्कार गीतक अध्ययन मैथिली साहित्य लेल किएक आवश्यक अछि?
क. ओ लोक-काव्य, भाषा आ संस्कृति सभक स्रोत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. ओ लोक-काव्य, भाषा आ संस्कृति सभक स्रोत अछि।
व्याख्या: मैथिली साहित्यक जड़ लोकस्वरमे सेहो गहिर अछि।

प्रश्न 7987. संस्कार गीतक उपेक्षा ककर उपेक्षा होएत?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. लोकस्मृति, स्त्री-स्वर आ मातृभाषिक नादक।
उत्तर: घ. लोकस्मृति, स्त्री-स्वर आ मातृभाषिक नादक।
व्याख्या: गीत गुम भेल तँ पूरा सांस्कृतिक अनुभव कमजोर होइत अछि।

प्रश्न 7988. संरक्षणक अन्तिम लक्ष्य की हेबाक चाही?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. गीतकेँ जीवित व्यवहारमे राखब।
उत्तर: घ. गीतकेँ जीवित व्यवहारमे राखब।
व्याख्या: संग्रह जरूरी अछि, मुदा जीवित गायन सर्वोपरि अछि।

प्रश्न 7989. एहि गीत सभमे मिथिलाक सामूहिकता कोना देखाइत अछि?
क. परिवार, पड़ोस, सखी-समूह आ संस्कारक सहगायनमे।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: क. परिवार, पड़ोस, सखी-समूह आ संस्कारक सहगायनमे।
व्याख्या: संस्कार गीत लोकसभाकेँ एक स्वरमे बाँधैत अछि।

प्रश्न 7990. नवपीढ़ी लेल संस्कार गीतक सन्देश की अछि?
क. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
ख. मातृभाषा, लोकरीति आ अपन पहचानसँ जुड़ल रहब।
ग. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. मातृभाषा, लोकरीति आ अपन पहचानसँ जुड़ल रहब।
व्याख्या: गीत पीढ़ीकेँ अतीतसँ जोड़ि भविष्यक दिशा दैत अछि।

प्रश्न 7991. लेखकीय विवेचन संस्कार गीतकेँ कोन दर्जा दैत अछि?
क. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोकसंस्कृतिक गम्भीर अध्ययन-विषयक।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
उत्तर: ख. लोकसंस्कृतिक गम्भीर अध्ययन-विषयक।
व्याख्या: गीतकेँ हल्का घरेलू मनोरंजन नहि, गंभीर सांस्कृतिक सामग्री मानबाक आग्रह अछि।

प्रश्न 7992. एहि लेख-भागक अंतिम सार की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक उलट अर्थ दैत अछि।
ख. ई बात लेखकीय आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई उत्तर गौण, असंबद्ध वा अपूर्ण अछि।
घ. नाद, स्मृति, संस्कार आ समाज—ई चारि तत्व संस्कार गीतक आधार अछि।
उत्तर: घ. नाद, स्मृति, संस्कार आ समाज—ई चारि तत्व संस्कार गीतक आधार अछि।
व्याख्या: “लोक गीत नाद” मिथिलाक सांस्कृतिक आत्माक जीवित ध्वनि बनि उभरैत अछि।

खण्ड ८०५ : विदेह-सदेह २ — पंचानन मिश्र: मऊ वाजितपुरक भूगोल आ चौथमक ऐतिहासिकता

प्रश्न 7993. मऊ वाजितपुर गामक भौगोलिक स्थिति कोना चिन्हित कएल गेल अछि?
क. समस्तीपुर जिलाक सुदूर दच्छिन भागमे, गंगाक पुरान दियारा क्षेत्र लग।
ख. मधुबनीक उत्तर भागमे, हिमालयक पाद-प्रदेशमे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. समस्तीपुर जिलाक सुदूर दच्छिन भागमे, गंगाक पुरान दियारा क्षेत्र लग।
व्याख्या: लेखमे मऊ वाजितपुरकेँ समस्तीपुर जिलाक दच्छिन भाग आ गंगाक पुरान धारासँ जुड़ल दियारा क्षेत्र लग मानल गेल अछि।

प्रश्न 7994. मऊ वाजितपुर लग गंगाक धाराक प्रसंग किएक आयल अछि?
क. एहि सँ क्षेत्रक पुरान नदी-स्मृति आ विद्यापति-सम्बद्ध किंवदन्ती जुड़ैत अछि।
ख. एहि सँ केवल खेतीक आँकड़ा देबाक उद्देश्य अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. एहि सँ क्षेत्रक पुरान नदी-स्मृति आ विद्यापति-सम्बद्ध किंवदन्ती जुड़ैत अछि।
व्याख्या: गंगाक छाड़न आ पुरान अविरल धाराक स्मृति लेखमे स्थानक पवित्रता आ इतिहास-बोधक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 7995. चौथम गामक ऐतिहासिक महत्त्व मुख्यतः ककरासँ जोड़ल गेल अछि?
क. महाकवि विद्यापतिक महाप्रयाण-स्मृति आ गंगालाभक लोककथासँ।
ख. केवल रेलमार्गक विकाससँ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. महाकवि विद्यापतिक महाप्रयाण-स्मृति आ गंगालाभक लोककथासँ।
व्याख्या: लेखक चौथमक प्रसिद्धि महाकवि विद्यापति सम्बन्धी लोकमान्यतासँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 7996. चौथमक सामाजिक संरचना लेखमे कोना देखाओल गेल अछि?
क. राजपूत-यादव बहुलता संग पिछड़ल आ अनुसूचित समुदाय सभक उपस्थिति सहित।
ख. केवल ब्राह्मण बहुल गामक रूपमे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. राजपूत-यादव बहुलता संग पिछड़ल आ अनुसूचित समुदाय सभक उपस्थिति सहित।
व्याख्या: विवेचनमे जातीय विविधता आ पिछड़ल समुदाय सभक उपस्थिति उल्लेखित अछि।

प्रश्न 7997. लेखक सामाजिक संरचनाक उल्लेख किएक करैत छथि?
क. स्थानक इतिहासकेँ समाजक वास्तविक बनावटसँ जोड़बाक लेल।
ख. लोककथा हटाक केवल वंशावली लिखबाक लेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. स्थानक इतिहासकेँ समाजक वास्तविक बनावटसँ जोड़बाक लेल।
व्याख्या: स्थानक महत्त्व केवल किंवदन्ती नहि, ओहि समाजक बहुल संरचना संग पढ़ल गेल अछि।

प्रश्न 7998. “माइनजन” शब्दक प्रयोग लेखमे कोन प्रसंगमे अछि?
क. चौथमक प्रभुत्वशाली स्थानीय सामाजिक समूहक संकेत लेल।
ख. मंदिरक पुजारीक पदनाम लेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. चौथमक प्रभुत्वशाली स्थानीय सामाजिक समूहक संकेत लेल।
व्याख्या: लेखक राजपूत आ यादव बहुल जातिकेँ स्थानीय “माइनजन” कहि सामाजिक संरचना बतबैत छथि।

प्रश्न 7999. दियारा क्षेत्रक उल्लेख पाठकेँ की बुझबैत अछि?
क. गामक प्रकृति, नदी-परिवर्तन आ ऐतिहासिक स्मृति एक-दोसरा सँ जुड़ल अछि।
ख. गाम पूर्णतः मरुभूमि छल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. गामक प्रकृति, नदी-परिवर्तन आ ऐतिहासिक स्मृति एक-दोसरा सँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: दियारा क्षेत्र नदी-सम्बद्ध भूगोलक द्योतक अछि, जे इतिहासक भावभूमि बनैत अछि।

प्रश्न 8000. मऊ वाजितपुरक प्रसंगमे “छारनि” ककर संकेत अछि?
क. गंगाक पुरान धाराक अवशेष वा छूटल निशान।
ख. पर्वतक कन्दराक संकेत।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. गंगाक पुरान धाराक अवशेष वा छूटल निशान।
व्याख्या: लेखमे आजुक स्थिति मे नदीक छारनिटा बाँचल कहि पुरान धाराक स्मृति देखाओल गेल अछि।

खण्ड ८०५ : विदेह-सदेह २ — पंचानन मिश्र: मऊ वाजितपुरक भूगोल आ चौथमक ऐतिहासिकता

प्रश्न 8001. पंचानन मिश्रक लेखन-पद्धति एहि आरम्भमे कोना बुझाइत अछि?

क. भूगोल, समाज आ लोकस्मृति तीनूकेँ संग राखि।

ख. केवल प्रशस्ति-भाषण जकाँ।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. भूगोल, समाज आ लोकस्मृति तीनूकेँ संग राखि।

व्याख्या: आरम्भिक अनुच्छेदमे भूभाग, जाति-रचना आ विद्यापति-स्मृति एकसाथ व्यवस्थित अछि।

प्रश्न 8002. मऊ वाजितपुर-चौथम खण्डक मुख्य बोध की अछि?

क. मऊ वाजितपुरक महत्त्व नदी-भूगोल, चौथमक लोकइतिहास आ विद्यापति-स्मृति सँ बनैत अछि।

ख. मऊ वाजितपुरक कोनो ऐतिहासिक सम्बन्ध नहि अछि।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. मऊ वाजितपुरक महत्त्व नदी-भूगोल, चौथमक लोकइतिहास आ विद्यापति-स्मृति सँ बनैत अछि।

व्याख्या: लेखक एहि स्थानकेँ प्राकृतिक आ सांस्कृतिक साक्ष्यक संग पढ़बाक आग्रह करैत छथि।

खण्ड ८०६ : विदेह-सदेह २ — विद्यापतिक महाप्रयाण, गंगालाभ आ लोककथा

प्रश्न 8003. विद्यापतिक अन्तिम इच्छा सम्बन्धी लोककथा ककरा केन्द्रमे अछि?

क. गंगालाभ आ महाप्रयाणक आध्यात्मिक आकांक्षा।

ख. राजनीतिक राज्याभिषेक।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. गंगालाभ आ महाप्रयाणक आध्यात्मिक आकांक्षा।

व्याख्या: कथामे महाकविक अन्तिम अवस्था आ गंगास्पर्शक इच्छा मुख्य अछि।

प्रश्न 8004. “सपन देखल हम शिव सिंह भूप” पंक्तिक प्रसंग की अछि?

क. महाकविक जीवन-सन्ध्याक लोकमान्य कथासँ जुड़ल पद-स्मरण।

ख. शिशु-गीतक आरम्भ।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. महाकविक जीवन-सन्ध्याक लोकमान्य कथासँ जुड़ल पद-स्मरण।

व्याख्या: लेखक विद्यापतिक अन्तिम भावभूमि देखबैत एहि पदक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 8005. लोकमान्यताक अनुसार चौथममे की घटित भेल?

क. महाकविक महफा रोकल गेल आ गंगा धारासँ बाहर आबि जल-स्पर्श करौली।

ख. ओतए राजदरबारक स्थापना भेल।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. महाकविक महफा रोकल गेल आ गंगा धारासँ बाहर आबि जल-स्पर्श करौली।

व्याख्या: किंवदन्तीमे गंगा मुख्य धारासँ बहराइ कविक शरीरकेँ स्पर्श करि पुनः लौटि गेलीह।

प्रश्न 8006. एहि गंगालाभ-कथा मे गंगा ककर प्रतीक बनैत छथि?

क. कविक प्रति मातृवत् करुणा आ पवित्र स्वीकारक।

ख. व्यापारिक नदी-बन्दरगाहक।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. कविक प्रति मातृवत् करुणा आ पवित्र स्वीकारक।

व्याख्या: गंगा एतय साधारण नदी नहि, कवि-भक्ति आ मुक्ति-संस्कारक प्रतीक छथि।

प्रश्न 8007. मऊ वाजिदपुर आ चौथमक सम्बन्ध लेखमे कोना आयल अछि?
क. चौथमक निकट मऊ वाजिदपुर आजुओ ओहि क्षेत्रमे अवस्थित मानल गेल अछि।
ख. दूनू ठाम परस्पर असम्बद्ध कहल गेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. चौथमक निकट मऊ वाजिदपुर आजुओ ओहि क्षेत्रमे अवस्थित मानल गेल अछि।
व्याख्या: लेखक विद्यापति-स्मृति क्षेत्रक रूपमे दूनू स्थानक निकटता देखबैत छथि।

प्रश्न 8008. लेखक लोककथाकेँ अन्धविश्वास जकाँ छोड़ि किएक नहि दैत छथि?
क. ओ लोकस्मृति आ इतिहास-अनुसंधानक बीच संवादक आधार बनैत अछि।
ख. कारण ओ कोनो स्थानक नाम नहि बतबैत।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. ओ लोकस्मृति आ इतिहास-अनुसंधानक बीच संवादक आधार बनैत अछि।
व्याख्या: किंवदन्तीकेँ लेखक तथ्य-जाँचक माँगक संग राखैत छथि, नहिं कि सीधै खारिज करैत।

प्रश्न 8009. विद्यापतिक महाप्रयाण-कथा स्थानक सांस्कृतिक अर्थ कोना बढ़बैत अछि?
क. समाधि भूमि, गंगा-स्मृति आ कवि-भक्ति केँ एक करि।
ख. रेलवे स्टेशनक नाम भरि समझा कऽ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. समाधि भूमि, गंगा-स्मृति आ कवि-भक्ति केँ एक करि।
व्याख्या: ई कथा स्थानकेँ कवि-स्मृति आ जन-आस्थाक केन्द्र बनबैत अछि।

प्रश्न 8010. “आयु-विहीन” भावक संकेत की अछि?
क. जीवनक अन्तिम बोध आ विरक्त स्वीकृति।
ख. युद्धक तैयारी।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. जीवनक अन्तिम बोध आ विरक्त स्वीकृति।
व्याख्या: उद्धृत पद जीवन-सन्ध्या आ मृत्यु-बोधक भाव सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 8011. एहि प्रसंगमे लोककथा किएक ऐतिहासिक बहसक विषय बनैत अछि?
क. कारण कविसँ जुड़ल स्थान-निर्धारणमे परम्परा आ तथ्य दूनूक भूमिका अछि।
ख. कारण गीतक छन्द अज्ञात अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कारण कविसँ जुड़ल स्थान-निर्धारणमे परम्परा आ तथ्य दूनूक भूमिका अछि।
व्याख्या: लेखक मान्यता स्वीकार करैत, संगहि अनुसंधानक अभावपर प्रश्न करैत छथि।

प्रश्न 8012. विद्यापतिक गंगालाभ-कथासँ की निष्कर्ष निकलैत अछि?
क. विद्यापतिक महाप्रयाण-स्मृति चौथम-मऊ वाजितपुर क्षेत्रकेँ सांस्कृतिक तीर्थ बनबैत अछि।
ख. विद्यापति-स्मृति केवल पुस्तकालय धरि सीमित अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. विद्यापतिक महाप्रयाण-स्मृति चौथम-मऊ वाजितपुर क्षेत्रकेँ सांस्कृतिक तीर्थ बनबैत अछि।
व्याख्या: लोकमान्यता आ गंगालाभक कथा एहि भूगोलकेँ महाकवि-सम्बद्ध बनबैत अछि।

खण्ड ८०७ : विदेह-सदेह २ — विद्यापतिनगर: मार्ग, संस्था आ पर्यटनक अभाव

प्रश्न 8013. विद्यापतिनगर स्टेशनक सम्बन्ध कोन रेल-क्षेत्रसँ बताओल गेल अछि?

क. पूर्व मध्य रेलवेक सोनपुर मंडलक हाजीपुर-बछवाड़ा मार्गसँ।

ख. कोंकण रेलवेक समुद्री मार्गसँ।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. पूर्व मध्य रेलवेक सोनपुर मंडलक हाजीपुर-बछवाड़ा मार्गसँ।

व्याख्या: लेखमे सोनपुर मंडल, हाजीपुर-बछवाड़ा आ विद्यापतिनगर स्टेशनक प्रसंग आयल अछि।

प्रश्न 8014. विद्यापतिनगर चारू कातसँ कोना जुड़ल बताओल गेल अछि?

क. पक्की सड़क सभ द्वारा बछवाड़ा, हाजीपुर, लहेरियासराय, समस्तीपुर आदि दिशिसँ।

ख. केवल नाव-मार्गसँ।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. पक्की सड़क सभ द्वारा बछवाड़ा, हाजीपुर, लहेरियासराय, समस्तीपुर आदि दिशिसँ।

व्याख्या: लेखक पथ-सम्पर्कक चारि दिशि विस्तारक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 8015. मऊ वाजिदपुरक पैघ भू-खण्ड आब कोन नामसँ बूझल जाइछ?

क. विद्यापतिनगर।

ख. उगनापुर।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. विद्यापतिनगर।

व्याख्या: राजस्व ग्राम मऊ वाजिदपुरक अंश विद्यापतिनगर नामसँ प्रसिद्ध अछि।

प्रश्न 8016. पुरान लोक विद्यापतिनगरकेँ कोन नामसँ सेहो सम्बोधित करैत छथि?

क. वाजिदपुर बाबा धाम।

ख. अंगदेश नगर।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. वाजिदपुर बाबा धाम।

व्याख्या: लेखमे बूढ़-पुरान लोकक मुँहसँ “वाजिदपुर बाबा धाम” नाम चलैत रहबाक बात अछि।

प्रश्न 8017. विद्यापतिनगरकेँ प्रखण्ड-स्तर किएक भेटल?

क. महाकविक समाधि-भूमि होएबाक कारणे लोक-आवाजाही आ सांस्कृतिक महत्त्व बढ़ल।

ख. केवल खनिज-उद्योगक कारणे।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. महाकविक समाधि-भूमि होएबाक कारणे लोक-आवाजाही आ सांस्कृतिक महत्त्व बढ़ल।

व्याख्या: कवि-स्मृति आ यात्री-आवागमन स्थानक प्रशासनिक महत्त्वक आधार बनल।

प्रश्न 8018. विद्यापति भवनक उल्लेख ककर रूपमे अछि?

क. सामुदायिक भवनक रूपमे।

ख. राजमहलक दरबारक रूपमे।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. सामुदायिक भवनक रूपमे।

व्याख्या: लेखमे “विद्यापति भवन” नामक सामुदायिक भवनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 8019. पर्यटन सूचना केन्द्रक विषयमे लेखकक दृष्टि की अछि?
क. ओ औपचारिक अछि, स्थानक वास्तविक विकास पर्याप्त नहि।
ख. ओ विश्वस्तरीय शोध-संस्थान भऽ गेल अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. ओ औपचारिक अछि, स्थानक वास्तविक विकास पर्याप्त नहि।
व्याख्या: लेखक पर्यटन विभागक केन्द्रकेँ मात्र औपचारिकता बुझैत छथि।

प्रश्न 8020. मार्ग-सुविधा रहितो पर्यटन-विकासक कमी किएक विडम्बना अछि?
क. कारण पहुँच उपलब्ध अछि, मुदा शोध आ योजना कमजोर अछि।
ख. कारण लोकक आबाजाही पूर्णतः बन्द अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कारण पहुँच उपलब्ध अछि, मुदा शोध आ योजना कमजोर अछि।
व्याख्या: लेखक पहुँच-मार्गक चर्चा करि बादमे योजनाहीनता पर चोट करैत छथि।

प्रश्न 8021. विद्यापतिनगरक विकास लेल लेखकक संकेत की अछि?
क. स्थानक ऐतिहासिकता आ कवि-स्मृतिपर आधारित गंभीर योजना चाही।
ख. नाम बदलब पर्याप्त अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. स्थानक ऐतिहासिकता आ कवि-स्मृतिपर आधारित गंभीर योजना चाही।
व्याख्या: सड़क वा सूचना-पट्टी सँ आगू बढ़ि सांस्कृतिक पर्यटनक संकल्प चाही।

प्रश्न 8022. विद्यापतिनगरक मार्ग-सुविधा आ योजनाहीनता प्रसंगक मुख्य बात की अछि?
क. विद्यापतिनगर पहुँच योग्य आ स्मृति-समृद्ध अछि, मुदा योजनाबद्ध पर्यटन आ शोधक अभाव अछि।
ख. विद्यापतिनगरक कोनो सार्वजनिक पहचान नहि अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. विद्यापतिनगर पहुँच योग्य आ स्मृति-समृद्ध अछि, मुदा योजनाबद्ध पर्यटन आ शोधक अभाव अछि।
व्याख्या: लेखक सुविधा आ उपेक्षा—दूनूकेँ एकसाथ देखबैत छथि।

खण्ड ८०८ : विदेह-सदेह २ — समाधि-स्थल, पीपर आ विद्यापति मन्दिरक रूप

प्रश्न 8023. विद्यापतिनगरक कोन स्थान महाकविक समाधि-भूमि मानल गेल अछि?
क. मऊ वाजिदपुर राजस्व ग्रामक विद्यापतिनगर क्षेत्र।
ख. राजगीरक ब्रह्मकुण्ड।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मऊ वाजिदपुर राजस्व ग्रामक विद्यापतिनगर क्षेत्र।
व्याख्या: लेखमे मऊ वाजिदपुरक एही क्षेत्रमे महाकविक समाधि भूमि मानल गेल अछि।

प्रश्न 8024. लेखक अनुसंधान-अभावक विषयमे की कहैत छथि?
क. इतिहासपरक अन्वेषण आ विवेचन अपेक्षित स्तरपर नहि भेल।
ख. सभ तथ्य शिलालेखसँ अंतिम रूपे सिद्ध अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. इतिहासपरक अन्वेषण आ विवेचन अपेक्षित स्तरपर नहि भेल।
व्याख्या: स्थानक इतिहासपर गंभीर अध्ययन नहि भऽ पाबय के लेखक विडम्बना मानैत छथि।

प्रश्न 8025. विद्यापतिसँ जुड़ल स्थान “स्ट्रेफोर्ड ओवेन आन” किएक नहि बनि सकल?
क. तथ्यात्मक आलेख, संग्रह, शोध आ सांस्कृतिक प्रस्तुति अभावक कारणे।
ख. कारण एतय कोनो कवि नहि भेलाह।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. तथ्यात्मक आलेख, संग्रह, शोध आ सांस्कृतिक प्रस्तुति अभावक कारणे।
व्याख्या: लेखक विश्व-साहित्यिक तीर्थक तुलनामे विद्यापति-स्थलक योजनाहीनता देखबैत छथि।

प्रश्न 8026. समाधि-स्थल लग पीपर आ अजोध गाछक उल्लेख किएक अछि?
क. लोकमान्यतानुसार महाकविक विश्राम आ समाधि-स्मृति सँ जुड़ल अछि।
ख. ओ रेलवे संकेतक लेल लगाओल गेल छल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. लोकमान्यतानुसार महाकविक विश्राम आ समाधि-स्मृति सँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: गाछ सभ आस्था, स्मृति आ लोकविश्वासक जीवित चिह्न बनैत अछि।

प्रश्न 8027. लोक संतानक संस्कार-वृद्धि लेल पीपरमे की करैत अछि?
क. ताविज बाँधैत अछि।
ख. कर-रसीद टाँगैत अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. ताविज बाँधैत अछि।
व्याख्या: लेखमे लोक अपन संतानक संस्कार-वृद्धिक आशासँ ताविज बन्हैत अछि।

प्रश्न 8028. मन्दिरक गर्भगृहमे कोन प्रतिमा सभक उल्लेख अछि?
क. महाकवि विद्यापति आ महादेवक कारी पाथरक प्रतिमा।
ख. केवल बुद्धक धातु-प्रतिमा।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. महाकवि विद्यापति आ महादेवक कारी पाथरक प्रतिमा।
व्याख्या: लाल रंगक विशाल मन्दिरमे विद्यापति आ महादेवक प्रस्तर प्रतिमा बताओल गेल अछि।

प्रश्न 8029. प्रतिमा सभक विषयमे लोकमान्यता की अछि?
क. दूनू प्रतिमा स्वतः स्फुट भेल।
ख. ओ विदेशसँ किनल गेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. दूनू प्रतिमा स्वतः स्फुट भेल।
व्याख्या: लेखमे प्रतिमा सभक स्वतः प्रकट होएबाक लोकमान्यता आयल अछि।

प्रश्न 8030. मुख्य मन्दिरक आस-पास कोन-कोन मूर्ति/मन्दिरक चर्चा अछि?
क. पार्वती, महावीर, बसहा आ काल भैरवक।
ख. केवल राजा शिवसिंहक सिंहासन।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. पार्वती, महावीर, बसहा आ काल भैरवक।
व्याख्या: मुख्य मंदिरक निकट चारि छोट मन्दिर/मूर्तिक क्रम उल्लेखित अछि।

प्रश्न 8031. लेखक मंदिर आ प्रतिमाकेँ कोन दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण मानैत छथि?
क. मूर्तिकला, वास्तुकला आ धार्मिक अनुष्ठानक दृष्टिसँ।
ख. केवल बाजारक सजावट रूपे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मूर्तिकला, वास्तुकला आ धार्मिक अनुष्ठानक दृष्टिसँ।
व्याख्या: कला-सौष्ठव आ वास्तु-रूप स्थानक सांस्कृतिक मूल्य बढ़बैत अछि।

प्रश्न 8032. समाधि-स्थल आ विद्यापति मन्दिर खण्डक अन्तिम बोध की अछि?
क. समाधि, गाछ, प्रतिमा आ मन्दिर मिलि विद्यापति-स्मृतिक जीवित तीर्थ-रूप बनबैत अछि।
ख. समाधि-स्थल पूर्णतः निर्जन आ अस्मृत अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. समाधि, गाछ, प्रतिमा आ मन्दिर मिलि विद्यापति-स्मृतिक जीवित तीर्थ-रूप बनबैत अछि।
व्याख्या: लोकविश्वास आ स्थापत्य मिलि एहि स्थलकेँ सांस्कृतिक तीर्थ बनबैत अछि।

खण्ड ८०९ : विदेह-सदेह २ — मंदिरक सत्यकथा, विनाश-प्रयास आ विद्यापति सर्किट

प्रश्न 8033. मंदिरक प्रारम्भिक रूपक सम्बन्धमे कोन कथा अछि?
क. पहिने पाथरक प्रतिमा आ पीपर अंकुर प्रकट भेल, बादमे छोट मन्दिर बनल।
ख. पहिने आधुनिक होटल बनल, बादमे प्रतिमा राखल गेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. पहिने पाथरक प्रतिमा आ पीपर अंकुर प्रकट भेल, बादमे छोट मन्दिर बनल।
व्याख्या: लेखमे प्रतिमा-स्फुरण, पीपर अंकुर आ बादक मंदिर-निर्माणक क्रम देल अछि।

प्रश्न 8034. टीनक छोट-छीन मंदिर ककर माध्यमसँ बनल कहल गेल?
क. दुलारपुर महन्थक मैनेजरक दिससँ।
ख. रेलवे बोर्डक अध्यक्षक दिससँ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. दुलारपुर महन्थक मैनेजरक दिससँ।
व्याख्या: लोककथामे दुलारपुर महन्थक तखनुक मैनेजरक भूमिका कहल गेल अछि।

प्रश्न 8035. भेषधारी चौधरीक कथा ककर संकेत दैत अछि?
क. मंदिरक कृपा-संबंधी लोकविश्वासक।
ख. मंदिर बन्द होएबाक सरकारी आदेशक।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मंदिरक कृपा-संबंधी लोकविश्वासक।
व्याख्या: पचहत्तरि वर्षक अवस्थामे पुत्र-प्राप्तिक कथा लोकआस्थाकेँ पुष्ट करैत अछि।

प्रश्न 8036. नोर्थ बंगाल रेलवे सम्बन्धी कथा मे मुख्य भाव की अछि?
क. मंदिर आ पीपर ध्वस्त करबाक प्रयासक प्रतिरोधी लोकविश्वास।
ख. रेलवे स्टेशन उद्घाटनक उत्सव।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मंदिर आ पीपर ध्वस्त करबाक प्रयासक प्रतिरोधी लोकविश्वास।
व्याख्या: अंग्रेज अफसरक असफल विनाश-प्रयास लोककथा रूपे प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 8037. ब्रजगिरा टीला ककर स्मृति सँ जोड़ल गेल अछि?
क. मुगलकालीन सैनिक प्रयास आ ठनका-वर्षाक कथासँ।
ख. धानक भण्डारण गृहसँ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मुगलकालीन सैनिक प्रयास आ ठनका-वर्षाक कथासँ।
व्याख्या: मंदिर ध्वंसक उद्देश्यसँ आएल सैनिक वर्षा-ठनका सँ असफल भेल, से लोककथा अछि।

प्रश्न 8038. मंदिर परिसरमे कोन अवसरपर पैघ मेला होइत अछि?
क. शिवराति आ वसन्त पंचमी।
ख. दीपावली मात्र।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. शिवराति आ वसन्त पंचमी।
व्याख्या: लेखमे शिवरात्रि आ वसन्त पंचमीक अवसरपर पैघ मेलाक बात अछि।

प्रश्न 8039. लेखक “विद्यापति सर्किट”क प्रस्ताव किएक रखैत छथि?
क. विद्यापतिसँ जुड़ल बिस्फी, उगना स्थान आ विद्यापतिनगर कैं जोड़ि पर्यटन सम्भावना लेल।
ख. मात्र रेल-भाड़ा घटेबाक लेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. विद्यापतिसँ जुड़ल बिस्फी, उगना स्थान आ विद्यापतिनगर कैं जोड़ि पर्यटन सम्भावना लेल।
व्याख्या: बुद्धिष्ट सर्किट जकाँ विद्यापति-संबद्ध स्थानक पर्यटन-परिकल्पना सुझाओल गेल अछि।

प्रश्न 8040. विद्यापति सर्किटक मूल उद्देश्य की होएत?
क. कवि-स्मृति, शोध, यात्रा आ सांस्कृतिक पर्यटनक समन्वय।
ख. स्थानक नाम हटाएब।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कवि-स्मृति, शोध, यात्रा आ सांस्कृतिक पर्यटनक समन्वय।
व्याख्या: लेखक योजनाबद्ध सांस्कृतिक पर्यटनक आवश्यकता देखबैत छथि।

प्रश्न 8041. लेखक राज्य सरकार आ मैथिली-सेवी संस्थाक विषयमे कोन शिकायत करैत छथि?
क. विद्यापति-स्थल पर्यटन-विकास लेल ठोस योजना नहि बनल।
ख. सभ संस्था अत्यधिक शोध करि चुकल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. विद्यापति-स्थल पर्यटन-विकास लेल ठोस योजना नहि बनल।
व्याख्या: लेखकक मुख्य व्यथा योजनाक अभाव अछि।

प्रश्न 8042. मंदिरक लोककथा आ विद्यापति सर्किट प्रसंगक सारांश की अछि?
क. लोककथा, मंदिर, मेला आ सर्किट-प्रस्ताव विद्यापतिनगरकैं जीवित सांस्कृतिक केन्द्र बनबैत अछि।
ख. मंदिरक कथा साहित्यसँ असम्बद्ध अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. लोककथा, मंदिर, मेला आ सर्किट-प्रस्ताव विद्यापतिनगरकैं जीवित सांस्कृतिक केन्द्र बनबैत अछि।
व्याख्या: स्थानक महत्ता लोक-विश्वास आ आधुनिक पर्यटन-दृष्टि दूनूसँ बनैत अछि।

खण्ड ८१० : विदेह-सदेह २ — मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ: नवरात्र आ धरोहर-दृष्टि

प्रश्न 8043. “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” लेखक मुख्य चिन्ता की अछि?

क. मुख्यधारासँ अलग रहल सिद्धपीठ सभक सांस्कृतिक-ऐतिहासिक पहचान।

ख. केवल बाजारमे मेला-भाड़ा।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. मुख्यधारासँ अलग रहल सिद्धपीठ सभक सांस्कृतिक-ऐतिहासिक पहचान।

व्याख्या: लेखक मेनस्ट्रीमसँ अलग रहि गेल शक्ति-स्थल सभक महत्त्व सामने आनैत छथि।

प्रश्न 8044. शारदीय नवरात्र मिथिला लेल की जोगबैत रहल अछि?

क. सामाजिक, सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक अस्मिताक विशिष्टता।

ख. केवल वर्षाक मौसमक अन्त।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. सामाजिक, सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक अस्मिताक विशिष्टता।

व्याख्या: नवरात्रकेँ मिथिलाक अस्मिता-संरक्षणक पर्व मानल गेल अछि।

प्रश्न 8045. दुर्गा पूजा पहिने मुख्यतः कोन रूपमे छल?

क. घरैया पूजाक रूपमे, जकरा मे संस्कारात्मकता आ सामाजिकता छल।

ख. केवल राजकीय सैन्य परेड।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. घरैया पूजाक रूपमे, जकरा मे संस्कारात्मकता आ सामाजिकता छल।

व्याख्या: लेखमे आरम्भिक स्वरूप घरैया पूजा कहल गेल अछि।

प्रश्न 8046. आब दुर्गा पूजा कोन रूपमे विस्तार पाओल बताओल गेल अछि?

क. सार्वजनिक मूर्ति-पूजा आ सामूहिक आयोजनक रूपमे।

ख. पूर्णतः गुप्त साधनाक रूपमे।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. सार्वजनिक मूर्ति-पूजा आ सामूहिक आयोजनक रूपमे।

व्याख्या: लेखक घरैया पूजासँ सार्वजनिक स्थापना धरि विस्तार देखबैत छथि।

प्रश्न 8047. लेखक कैक प्रसिद्ध शक्ति-स्थानक सूची किएक दैत छथि?

क. मिथिलाक व्यापक देवी-परम्परा आ स्थल-विविधता देखेबाक लेल।

ख. रेल टिकट सूची बनेबाक लेल।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. मिथिलाक व्यापक देवी-परम्परा आ स्थल-विविधता देखेबाक लेल।

व्याख्या: राजेश्वरी, उग्रतारा, उच्चैठ आदि नाम मिथिलाक शक्ति-परम्परा दर्शबैत अछि।

प्रश्न 8048. “मेनस्ट्रीम सँ विलग” स्थान सभक चर्चाक उद्देश्य की अछि?

क. उपेक्षित स्थापत्य, लोकपरम्परा आ सांस्कृतिक प्रतिमानकेँ पहचान देब।

ख. प्रसिद्ध स्थान सभक महत्त्व घटेब।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. उपेक्षित स्थापत्य, लोकपरम्परा आ सांस्कृतिक प्रतिमानकेँ पहचान देब।

व्याख्या: लेखक प्रसिद्ध स्थानक अतिरिक्त कम चर्चित धरोहर पर ध्यान दैत छथि।

प्रश्न 8049. सिद्धपीठक अध्ययनमे लेखक कोन-कोन पक्ष जोड़ैत छथि?
क. माहात्म्य, परम्परागत स्वरूप, स्थापत्य आ लोकविश्वास।
ख. केवल दानपेटी।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. माहात्म्य, परम्परागत स्वरूप, स्थापत्य आ लोकविश्वास।
व्याख्या: लेखक पूजा-संस्कृति संग स्थानीय इतिहास आ स्थापत्य विवेचन चाहैत छथि।

प्रश्न 8050. दुर्गा मूर्ति पूजाक प्रवर्त्तक रूपमे ककर स्मृति आयल अछि?
क. मिथिला भूपति राजा कंसनारायणक।
ख. सिकंदरक।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मिथिला भूपति राजा कंसनारायणक।
व्याख्या: लेखमे सार्वजनिक दुर्गा मूर्ति पूजाक परम्परा राजा कंसनारायणक स्मृति सँ जोड़ल गेल अछि।

प्रश्न 8051. ई लेख स्थानिक इतिहास लेल किएक उपयोगी अछि?
क. किएक तँ ई छोट/कतिआएल धरोहर सभकेँ सांस्कृतिक नक्शामे राखैत अछि।
ख. किएक तँ ई मिथिलाक कोनो स्थल नहि बतबैत।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. किएक तँ ई छोट/कतिआएल धरोहर सभकेँ सांस्कृतिक नक्शामे राखैत अछि।
व्याख्या: उपेक्षित शक्ति-स्थल सभक नाम, कथा आ अर्थ दर्ज करब स्थानिक इतिहासक काम अछि।

प्रश्न 8052. कतिआएल सिद्धपीठ-विवेचनक मूल संदेश की अछि?
क. मिथिलाक शक्ति-स्थल सभ धर्मक संगहि लोकस्मृति, स्थापत्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक धरोहर अछि।
ख. सिद्धपीठक कोनो सामाजिक उपयोग नहि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मिथिलाक शक्ति-स्थल सभ धर्मक संगहि लोकस्मृति, स्थापत्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक धरोहर अछि।
व्याख्या: लेखक पूजा-स्थलकेँ सांस्कृतिक अध्ययनक विषय बनबैत छथि।

खण्ड ८११ : विदेह-सदेह २ — सखड़ेश्वरी भगवती आ कर्णाट-स्मृति

प्रश्न 8053. सखड़ेश्वरी भगवतीक मन्दिर कतए बताओल गेल अछि?
क. मधुबनी जिलाक फुलपरास अनुमंडलक न्योपर गामसँ उत्तर सखड़ामे।
ख. भागलपुरक दक्षिण घाटमे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मधुबनी जिलाक फुलपरास अनुमंडलक न्योपर गामसँ उत्तर सखड़ामे।
व्याख्या: लेखमे सखड़ेश्वरी मन्दिरक स्थान फुलपरास अनुमंडल, न्योपर गाम लग देल अछि।

प्रश्न 8054. सखड़ेश्वरी भगवतीक मन्दिरकेँ की कहल गेल अछि?
क. धार्मिक, सांस्कृतिक आ सामाजिक एकताक जाग्रत प्रतीक।
ख. व्यापारिक गोदाम।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. धार्मिक, सांस्कृतिक आ सामाजिक एकताक जाग्रत प्रतीक।
व्याख्या: लेखक मन्दिरकेँ बहुआयामी एकता-प्रतीक मानैत छथि।

प्रश्न 8055. कर्णाटवंशीय राजा नान्यदेवक प्रसंग किएक आयल अछि?
क. कुलदेवी कुर्जा भवानीक स्वप्न-आदेश आ राज्य-पुनर्स्थापन कथासँ।
ख. मधुबनीक रेललाइन बनबैत काल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कुलदेवी कुर्जा भवानीक स्वप्न-आदेश आ राज्य-पुनर्स्थापन कथासँ।
व्याख्या: सखड़ेश्वरीक प्राचीनता नान्यदेव आ कुर्जा भवानीक कथा सँ जोड़ल गेल अछि।

प्रश्न 8056. स्वप्नकथामे कुर्जा भवानी नान्यदेवकेँ की आदेश दैत छथि?
क. स्नानक समय भेटल वस्तु उठा चोट्टे पड़ाएब आ जाहि ठाम खसय ततहि शासन स्थापित करब।
ख. समुद्र पार जा व्यापार करब।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. स्नानक समय भेटल वस्तु उठा चोट्टे पड़ाएब आ जाहि ठाम खसय ततहि शासन स्थापित करब।
व्याख्या: देवीक आदेश राज्य-पुनर्स्थापनक चमत्कारी कथा बनैत अछि।

प्रश्न 8057. जनकपुरसँ पश्चिम सिमरौनगढ़मे की पुनः स्थापित भेल कहल गेल?
क. कर्णाट वंशक राज्य।
ख. मौर्य साम्राज्यक राजधानी।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कर्णाट वंशक राज्य।
व्याख्या: कथानुसार सिमरौनगढ़मे कर्णाट वंशक राज्य पुनः स्थापित भेल।

प्रश्न 8058. अन्तिम शासक सक्रदेव सिंहक भूमिका की कहल गेल?
क. यंत्रक सिंहासनपर मन्दिर बनवाक देवी स्थापना।
ख. रेलवे स्टेशनक नामकरण।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. यंत्रक सिंहासनपर मन्दिर बनवाक देवी स्थापना।
व्याख्या: सक्रदेव सिंहक स्मृतिसँ सखड़ेश्वरी/सक्रेश्वरी नाम जोड़ित अछि।

प्रश्न 8059. १९३४ ई.क भूकम्पक बाद की बचल रहल कहल गेल?
क. मूल मन्दिर खसल मुदा अलौकिक शक्तियुक्त सिंहासन विद्यमान रहल।
ख. सभ मूर्ति नदीमे बहि गेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मूल मन्दिर खसल मुदा अलौकिक शक्तियुक्त सिंहासन विद्यमान रहल।
व्याख्या: भूकम्प कथामे सिंहासनक शेष रहब चमत्कारिक आस्था रचैत अछि।

प्रश्न 8060. सखड़ेश्वरी नामक सम्बन्ध ककर स्मृतिसँ मानल गेल?
क. राजा सक्रदेव सिंहक स्मृतिसँ।
ख. सम्राट अशोकक स्तम्भसँ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. राजा सक्रदेव सिंहक स्मृतिसँ।
व्याख्या: लेखमे सखड़ेश्वरी वा सक्रेश्वरी नाम सक्रदेव सिंहसँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8061. एहि कथा मे देवी आ राजसत्ता बीच कोन सम्बन्ध देखाइत अछि?
क. कुलदेवीक कृपा सँ शासनक वैधता आ संरक्षणक भाव।
ख. देवी राज्यसँ पूर्णतः असम्बद्ध।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कुलदेवीक कृपा सँ शासनक वैधता आ संरक्षणक भाव।
व्याख्या: कर्णाट-स्मृति देवी-आस्था आ सत्ता-पुनर्स्थापनकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 8062. सखड़ेश्वरी भगवतीक कर्णाट-स्मृति प्रसंगक निचोड़ की अछि?
क. सखड़ेश्वरी भगवतीक कथा मिथिलाक देवी-आस्था, कर्णाट इतिहास आ लोकविश्वासक संगम अछि।
ख. सखड़ेश्वरी केवल आधुनिक नामकरण अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. सखड़ेश्वरी भगवतीक कथा मिथिलाक देवी-आस्था, कर्णाट इतिहास आ लोकविश्वासक संगम अछि।
व्याख्या: स्थल धार्मिकता सँ आगू ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्मृति बोकैत अछि।

खण्ड ८१२ : विदेह-सदेह २ — भष्मीदेवी, वाणेश्वरी आ हयहट्ट सिद्धपीठ

प्रश्न 8063. भष्मीदेवीक मन्दिर कतए अछि?
क. मुजफ्फरपुर जिलाक मीनापुर प्रखण्ड लग पानापुर गाममे।
ख. काठमाण्डूक दरबारमार्गमे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मुजफ्फरपुर जिलाक मीनापुर प्रखण्ड लग पानापुर गाममे।
व्याख्या: लेखमे गण्डक नदीक कतबइमे पानापुर गामक भष्मीदेवी मन्दिरक उल्लेख अछि।

प्रश्न 8064. भष्मीदेवीक मूर्त्ति कोना वर्णित अछि?
क. एकहि पाथरसँ तराशल, आइयो दीप्ति युक्त।
ख. लकड़ीक अस्थायी चित्र।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. एकहि पाथरसँ तराशल, आइयो दीप्ति युक्त।
व्याख्या: मूर्ति एक पाथर सँ तराशि बनाओल आ तेजस्वी कहल गेल अछि।

प्रश्न 8065. भष्मीदेवी स्थानक विशेष पूजा-प्रथा की अछि?
क. पड़वाकेँ पूजाक बाद मुक्ताकाशमे छोड़ि देल जाइछ।
ख. पूजा बाद नदीमे सिक्का फेंकल जाइछ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. पड़वाकेँ पूजाक बाद मुक्ताकाशमे छोड़ि देल जाइछ।
व्याख्या: एहि प्रथाकेँ मिथिलांचलमे विशिष्ट मानल गेल अछि।

प्रश्न 8066. भष्मीदेवीक हवनक भभूतक सम्बन्धमे लोकविश्वास की अछि?
क. चर्म रोगसँ मुक्ति।
ख. खेतीमे वर्षा रोकब।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. चर्म रोगसँ मुक्ति।
व्याख्या: भभूतमे चर्मरोग-निवारणक विश्वास बताओल गेल अछि।

प्रश्न 8067. वाणेश्वरी मन्दिर कतए स्थित अछि?
क. दरभंगा जिलाक मनीगाछी प्रखण्डक मकरन्दा-भंडारिम गामक डीहपर।
ख. पूर्णिया शहरक बीच बाजारमे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. दरभंगा जिलाक मनीगाछी प्रखण्डक मकरन्दा-भंडारिम गामक डीहपर।
व्याख्या: लेखमे वाणेश्वरीक स्थान मनीगाछी प्रखण्डक डीहपर दसल गेल अछि।

प्रश्न 8068. वाणेश्वरी स्थल तांत्रिक साधना-सन्दर्भमे कोना वर्णित अछि?
क. सामान्य धरातलसँ ऊँच डीहपर अवस्थित तांत्रिक साधना-स्थल।
ख. केवल विद्यालयक मैदान।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. सामान्य धरातलसँ ऊँच डीहपर अवस्थित तांत्रिक साधना-स्थल।
व्याख्या: डीहक ऊँचाई आ साधना-परम्परा स्थानक पुरातात्विक आ धार्मिक महत्त्व देखबैत अछि।

प्रश्न 8069. वाणेश्वरीक प्रादुर्भावक लोककथामे मुख्य प्रसंग की अछि?
क. वाण-पुत्रीक प्रस्तरमे परिवर्तित भऽ जल-समाधि लेब।
ख. सैनिक विजय पर ध्वज लगाओल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. वाण-पुत्रीक प्रस्तरमे परिवर्तित भऽ जल-समाधि लेब।
व्याख्या: यवन राजाक दूत आ वाण-पुत्रीक प्रस्तर-समाधि कथा लेखमे आयल अछि।

प्रश्न 8070. परसाइन पोखरिक महत्त्व की अछि?
क. ओहिसँ पाथरक मूर्ति निकालि पूजा आरम्भ भेल कहल जाइछ।
ख. ओतए रेल इंजन राखल गेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. ओहिसँ पाथरक मूर्ति निकालि पूजा आरम्भ भेल कहल जाइछ।
व्याख्या: वाणेश्वरी पूजा-परम्परासँ परसाइन पोखरि गहिर जुड़ल अछि।

प्रश्न 8071. हयहट्ट देवी दुर्गाधाम ककरा सँ सम्बद्ध मानल गेल अछि?
क. सतीक वाम स्कन्ध खसल शक्तिपीठ-स्मृतिसँ।
ख. विदेशी व्यापार चौकीसँ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. सतीक वाम स्कन्ध खसल शक्तिपीठ-स्मृतिसँ।
व्याख्या: नवादा गामक हयहट्ट देवी सिद्धपीठ सती-अंग कथासँ जोड़ल गेल अछि।

प्रश्न 8072. भष्मीदेवी-वाणेश्वरी-हयहट्ट विवेचनक केन्द्रीय अर्थ की अछि?
क. भष्मीदेवी, वाणेश्वरी आ हयहट्ट स्थल मिथिलाक देवी-आस्था, चमत्कारी लोकविश्वास आ पुरातात्विक स्मृतिक केन्द्र छथि।
ख. एहि सभ स्थल आधुनिक मनोरंजन उद्यान मात्र अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. भष्मीदेवी, वाणेश्वरी आ हयहट्ट स्थल मिथिलाक देवी-आस्था, चमत्कारी लोकविश्वास आ पुरातात्विक स्मृतिक केन्द्र छथि।
व्याख्या: तीनू स्थान अपन-अपन कथा, पूजा-पद्धति आ लोकविश्वासक कारण विशिष्ट अछि।

खण्ड ८१३ : विदेह-सदेह २ — ज्वालामुखी, जयनगर दुर्गा मन्दिर आ रामनगर दुर्गास्थान

प्रश्न 8073. घनश्यामपुर क्षेत्रक ज्वालामुखी मन्दिर कोन नामसँ प्रसिद्ध अछि?

क. भगवती डीह।

ख. रामघाट किला।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. भगवती डीह।

व्याख्या: दरभंगाक घनश्यामपुर प्रखण्ड लग मां ज्वालामुखी भगवती डीह नामसँ प्रसिद्ध छथि।

प्रश्न 8074. ज्वालामुखी मन्दिरमे ककर पूजा होइत अछि?

क. मांक पिंडीक।

ख. केवल धातुक घण्टाक।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. मांक पिंडीक।

व्याख्या: लेखमे पिंडी-पूजाक स्पष्ट उल्लेख अछि।

प्रश्न 8075. ज्वालामुखी स्थापना-कथा ककर दैवीय दर्शनसँ जुड़ल अछि?

क. उफरौल गामक स्व. लखनराज पाण्डेय।

ख. राजा जनकक अश्वमेधसँ।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. उफरौल गामक स्व. लखनराज पाण्डेय।

व्याख्या: लखनराज पाण्डेयकेँ नगरकोटसँ दैवीय दर्शन भेल, से कथा अछि।

प्रश्न 8076. ज्वालामुखी दर्शनक लोकविश्वास की अछि?

क. रोग-निवारणक आस्था।

ख. सोना उपजएबाक विधि।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. रोग-निवारणक आस्था।

व्याख्या: मां ज्वालामुखीक दर्शनसँ रोग निवारणक विश्वास बताओल गेल अछि।

प्रश्न 8077. जयनगर दुर्गा मन्दिरक विशेषता की बताओल गेल?

क. प्रान्तक सभसँ ऊँच दुर्गा मन्दिर आ भूमिगत साधनाक परिपाटी।

ख. केवल छोट पोखरिक घाट।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. प्रान्तक सभसँ ऊँच दुर्गा मन्दिर आ भूमिगत साधनाक परिपाटी।

व्याख्या: जयनगरमे ऊँच दुर्गा मन्दिर आ जमीनक भीतर रहि साधना करबाक परम्परा उल्लेखित अछि।

प्रश्न 8078. दुर्गा पूजाक अवसरपर जयनगरमे कोन परिपाटी बताओल गेल?

क. जमीनक भीतर रहि साधना।

ख. नाव प्रतियोगिता मात्र।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. जमीनक भीतर रहि साधना।

व्याख्या: एहि भूमिगत साधनाक उल्लेख स्थानक विशिष्टता बनैत अछि।

प्रश्न 8079. सुपौल बजारक रामनगर दुर्गास्थानमे बलि सम्बन्धी विशेष प्रथा की अछि?
क. आब बलि नहि, पहिले छागरक परीक्षा लेल जाइछ।
ख. बलि पूर्णतः बिना कोनो विधिक।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. आब बलि नहि, पहिले छागरक परीक्षा लेल जाइछ।
व्याख्या: छागर कबूला स्वीकार करैत अछि कि नहि, तकर परीक्षा होइत अछि।

प्रश्न 8080. छागर परीक्षा कोना वर्णित अछि?
क. स्नानक बाद कान पकड़ि उपर उठा फेर राखल जाइछ; सिर हिलब तखन बलि।
ख. घोड़ा दौड़ाइ निर्णय।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. स्नानक बाद कान पकड़ि उपर उठा फेर राखल जाइछ; सिर हिलब तखन बलि।
व्याख्या: लेखमे छागरक सिर हिलब कबूलाक संकेत मानल गेल अछि।

प्रश्न 8081. रामनगरक प्रथा लोकधर्मक कोन पक्ष देखबैत अछि?
क. बलि तकमे देवी-स्वीकृतिक संकेत ताकबाक विश्वास।
ख. पूर्णतः नास्तिक अनुष्ठान।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. बलि तकमे देवी-स्वीकृतिक संकेत ताकबाक विश्वास।
व्याख्या: ई प्रथा देवीक मंजूरीक लोक-मान्यता पर टिकल अछि।

प्रश्न 8082. ज्वालामुखी-जयनगर-रामनगर शक्ति-स्थल प्रसंगक समेकित बोध की अछि?
क. ज्वालामुखी, जयनगर आ रामनगरक स्थल पूजा-पद्धति, साधना आ लोकविश्वासक विविध रूप देखबैत अछि।
ख. तीनू स्थानक परम्परा एकरूप आ बिना भेदक अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. ज्वालामुखी, जयनगर आ रामनगरक स्थल पूजा-पद्धति, साधना आ लोकविश्वासक विविध रूप देखबैत अछि।
व्याख्या: तीनू देवी-स्थल अलग-अलग अनुष्ठानिक विशेषता रखैत अछि।

खण्ड ८१४ : विदेह-सदेह २ — जयमंगला, वनसती, कात्यायनी, इरा आ वाराही

प्रश्न 8083. विक्रमपुर गामक जयमंगला पूजा कोन सामग्रीसँ प्रतिकृति बना कएल जाइछ?
क. फूल, वेलपात आ कलशसँ।
ख. लोहा आ कोयलासँ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. फूल, वेलपात आ कलशसँ।
व्याख्या: बेगूसरायक विक्रमपुरमे फूल-वेलपात-कलशसँ देवी प्रतिकृति बनेबाक परम्परा अछि।

प्रश्न 8084. जयमंगला पूजामे रोस्टर प्रणाली किएक उल्लेखित अछि?
क. गामक लोक क्रमसँ फूल आ वेलपात जमा करैत छथि।
ख. सैनिक भर्ती लेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. गामक लोक क्रमसँ फूल आ वेलपात जमा करैत छथि।
व्याख्या: लगभग छः हजार आबादी बला गाममे क्रमवार फूल-वेलपात जमा करबाक प्रथा अछि।

प्रश्न 8085. वनसती देवी स्थान कतए बताओल गेल अछि?
क. चम्पारण जिलाक सेमरा रेल स्टेशनसँ पश्चिमोत्तर।
ख. लद्दाखक हिमशिखरपर।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. चम्पारण जिलाक सेमरा रेल स्टेशनसँ पश्चिमोत्तर।
व्याख्या: सेमरा स्टेशन लग विशेष देवी शक्तिपीठ वनसती देवी स्थान कहल गेल अछि।

प्रश्न 8086. वराँपुरक चण्डीमाता मन्दिरमे चण्डीपूजासँ पहिले ककर पूजा होइत अछि?
क. बुधाँईक।
ख. विदेशी सैनिकक।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. बुधाँईक।
व्याख्या: बुधाँई दुसाध जातिक देवांशी पुरुष छलाह, हुनकर पूजा चण्डीपूजासँ पहिले होइत अछि।

प्रश्न 8087. कात्यायनी थान कोन रेल-खंड लग अछि?
क. मानसी-सहरसा रेल-खंडक धमहारा घाट स्टेशन लग।
ख. दिल्ली-मुम्बई राजधानी मार्ग लग।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मानसी-सहरसा रेल-खंडक धमहारा घाट स्टेशन लग।
व्याख्या: हरौकतानेथान/कात्यायनी थान धमहारा घाट लग बताओल गेल अछि।

प्रश्न 8088. कात्यायनी थानक नामकरण कोन सती-कथासँ जोड़ल गेल?
क. सतीक अंग खसब आ “कतानेथान” नाम पड़ब।
ख. सीता स्वयंवरक धनुष-टूटब।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. सतीक अंग खसब आ “कतानेथान” नाम पड़ब।
व्याख्या: सतीक “कत्ता” खसबक कथा कात्यायनी/कतानेथानक लोकव्युत्पत्ति बनैत अछि।

प्रश्न 8089. कोइलख गामक भद्रकाली कोकिलाक्षीक सम्बन्ध ककरासँ जोड़ल गेल?
क. कमला नदीसँ बहराएल देवीक लोककथासँ।
ख. केवल पत्थर खानसँ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कमला नदीसँ बहराएल देवीक लोककथासँ।
व्याख्या: मधुबनीक कोइलखमे भद्रकाली कोकिलाक्षी कमला नदीसँ सम्बद्ध छथि।

प्रश्न 8090. संथाली लोकनि दशहरामे ककर पूजा करैत छथि?
क. इरा देवीक।
ख. रोमन देवीक।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. इरा देवीक।
व्याख्या: लेखमे इरा संथालक देवी मानि दशहराक पूजा-परम्परा बताओल गेल अछि।

प्रश्न 8091. वाराही देवीक विशिष्ट उल्लेख किएक अछि?
क. सम्पूर्ण मिथिलांचलमे भगवती वाराहीक मूर्ति मात्र बहेड़ामे कहल गेल अछि।
ख. कारण ओ लोकगीतक पात्र मात्र छथि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. सम्पूर्ण मिथिलांचलमे भगवती वाराहीक मूर्ति मात्र बहेड़ामे कहल गेल अछि।
व्याख्या: बहेड़ामे वाराही मूर्तिक अद्वितीय उपस्थिति लेखमे रेखांकित अछि।

प्रश्न 8092. जयमंगला सँ वाराही धरि शक्ति-परम्पराक समग्र बोध की अछि?
क. कतिआएल शक्ति-स्थल सभ मिथिलाक बहुजातीय, बहुलोककथा आ बहुधार्मिक स्मृतिसँ बनल अछि।
ख. मिथिलामे देवी-परम्परा एके शहर धरि सीमित अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कतिआएल शक्ति-स्थल सभ मिथिलाक बहुजातीय, बहुलोककथा आ बहुधार्मिक स्मृतिसँ बनल अछि।
व्याख्या: जयमंगला, वनसती, बुधाँई, कात्यायनी, इरा, वाराही—सभ विविध लोकविश्वासक प्रतिनिधि अछि।

खण्ड ८१५ : विदेह-सदेह २ — गोपाल प्रसाद: फराक मिथिला राज्यक गठन किएक नहि?

प्रश्न 8093. गोपाल प्रसादक लेख “फराक मिथिला राज्यक गठन किएक नहि?”क मूल प्रश्न की अछि?
क. तेलंगाना बनि सकैत अछि तँ मिथिला राज्य किएक नहि।
ख. मिथिलामे पावनि किएक मनाओल जाइत अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. तेलंगाना बनि सकैत अछि तँ मिथिला राज्य किएक नहि।
व्याख्या: लेखक पृथक तेलंगाना उदाहरण राखि फराक मिथिला राज्यक माँगक तर्क उठबैत छथि।

प्रश्न 8094. लेखकक अनुसार मिथिलांचलकेँ कोन मुख्य समस्या झेलए पड़ि रहल अछि?
क. उपेक्षा, उद्योग-अभाव, असमान विकास आ पलायन।
ख. अत्यधिक उद्योग आ रोजगार।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. उपेक्षा, उद्योग-अभाव, असमान विकास आ पलायन।
व्याख्या: लेखक मिथिलाक घोर उपेक्षा आ उद्योगहीनता पर बल दैत छथि।

प्रश्न 8095. मिथिलाक लोक पलायन लेल किएक मजबूर कहल गेल?
क. स्थानीय रोजगार आ उद्योगक अभावक कारणे।
ख. किएक तँ सभकेँ विदेश भ्रमण पसिन अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. स्थानीय रोजगार आ उद्योगक अभावक कारणे।
व्याख्या: लेखमे आर्थिक उपेक्षा आ उद्योग-अभाव पलायनक कारण रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 8096. बिहार सरकारक विकास-दृष्टि पर लेखकक आरोप की अछि?
क. ध्यान मुख्यतः पटना आ नालंदा विकसित करबामे लागल।
ख. मिथिलाक सभ जिला समान रूपे विकसित कएल गेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. ध्यान मुख्यतः पटना आ नालंदा विकसित करबामे लागल।
व्याख्या: लेखक असमान क्षेत्रीय विकासक विरोध करैत छथि।

प्रश्न 8097. मिथिलामे कोन क्षेत्रक भरपूर संभावना कहल गेल?

क. पर्यटन आ खाद्य प्रसंस्करण।

ख. समुद्री जहाज निर्माण।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. पर्यटन आ खाद्य प्रसंस्करण।

व्याख्या: लेखक पर्यटन व खाद्य प्रसंस्करणक सम्भावना रहितो नकारात्मक रवैयाक शिकायत करैत छथि।

प्रश्न 8098. युवा महोत्सव आ बिहार पवेलियनक प्रसंग किएक आयल?

क. मैथिली उपेक्षाक उदाहरण देबाक लेल।

ख. खेलक परिणाम बतबैत।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. मैथिली उपेक्षाक उदाहरण देबाक लेल।

व्याख्या: सांस्कृतिक कार्यक्रममे मैथिली उपेक्षा सरकारक नीति-नीयत देखबैत अछि, लेखक कहैत छथि।

प्रश्न 8099. लेखकक अनुसार समस्याक निदानक एकमात्र विकल्प की अछि?

क. फराक मिथिला राज्य।

ख. भाषाक त्याग।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. फराक मिथिला राज्य।

व्याख्या: लेखक मिथिलाक समस्या समाधान लेल पृथक राज्यक माँग करैत छथि।

प्रश्न 8100. प्रवासी बिहारी सुरक्षाक प्रसंग मिथिलासँ किएक जोड़ल गेल?

क. प्रवासक शिकार मिथिलाक लोक अधिक होइत छथि, राज्य सुरक्षा-रोजगारमे विफल रहल।

ख. मिथिलाक लोक प्रवास नहि करैत।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. प्रवासक शिकार मिथिलाक लोक अधिक होइत छथि, राज्य सुरक्षा-रोजगारमे विफल रहल।

व्याख्या: लेखक प्रवासी असुरक्षा कैं मिथिलाक आर्थिक संकटसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 8101. क्षेत्रवाद-नक्सलवाद सम्बन्धी संगमाक कथनक उपयोग किएक भेल?

क. असमानतासँ उपजल संकट छोट राज्यसँ कम होएबाक तर्क लेल।

ख. मिथिलामे जलवायु बतबैत।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. असमानतासँ उपजल संकट छोट राज्यसँ कम होएबाक तर्क लेल।

व्याख्या: लेखक छोट राज्यक पक्षमे असमान विकासक तर्क मजबूत करैत छथि।

प्रश्न 8102. फराक मिथिला राज्य-विवेचनक मुख्य निष्कर्ष की अछि?

क. फराक मिथिला राज्यक माँग क्षेत्रीय न्याय, रोजगार, भाषा, संस्कृति आ समान विकासक प्रश्नसँ जुड़ल अछि।

ख. राज्य-माँग केवल नाम बदलबाक आग्रह अछि।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. फराक मिथिला राज्यक माँग क्षेत्रीय न्याय, रोजगार, भाषा, संस्कृति आ समान विकासक प्रश्नसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: लेख मिथिला प्रश्नकैं आर्थिक, सांस्कृतिक आ राजनीतिक न्यायक रूपमे रखैत अछि।

खण्ड ८१६ : विदेह-सदेह २ — मिथिला राज्य आन्दोलन: बाढ़, विकास, धरना आ संगठन

प्रश्न 8103. लेखक बाढ़क प्रसंग कोना उठबैत छथि?

क. मिथिलाक लोक बाढ़ झेलय आ विकास दोसर क्षेत्रमे बहे—ई अस्वीकार्य कहल।

ख. बाढ़कें पर्यटन उत्सव कहल।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. मिथिलाक लोक बाढ़ झेलय आ विकास दोसर क्षेत्रमे बहे—ई अस्वीकार्य कहल।

व्याख्या: बाढ़ आ विकास-अन्यायक विरोध लेखकक राजनीतिक तर्कक आधार अछि।

प्रश्न 8104. “विकासक धारा अन्य क्षेत्रमे बहे” पंक्ति कोन भाव देखबैत अछि?

क. संसाधन-वितरणमे असमानताक आक्रोश।

ख. मिथिलाक विकास पूर्ण भऽ चुकल अछि।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. संसाधन-वितरणमे असमानताक आक्रोश।

व्याख्या: लेखकक व्यंग्य-सदृश कथन क्षेत्रीय उपेक्षापर चोट करैत अछि।

प्रश्न 8105. फराक मिथिला राज्य लेल कानपुरमे की भेल कहल गेल?

क. मिथिलाक बुद्धिजीवी आ स्वैच्छिक संगठनक सम्मेलन।

ख. केवल संगीत प्रतियोगिता।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. मिथिलाक बुद्धिजीवी आ स्वैच्छिक संगठनक सम्मेलन।

व्याख्या: आन्दोलनक दशा-दिशा तय करबाक सम्मेलनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 8106. दिल्लीक जंतर-मंतरक प्रसंग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. मिथिला राज्य माँगक सार्वजनिक धरना आ समर्थनक संकेत।

ख. रेल किरायाक विरोध मात्र।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. मिथिला राज्य माँगक सार्वजनिक धरना आ समर्थनक संकेत।

व्याख्या: जंतर-मंतर धरना राष्ट्रीय मंचपर मुद्दा उठेबाक प्रतीक अछि।

प्रश्न 8107. मिथिलाक आन्दोलनक सामाजिक आधार लेखक केकरा बनबैत छथि?

क. भारतक समस्त मिथिला वासी लोकनि आ बुद्धिजीवी-संगठन।

ख. केवल एकटा परिवार।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. भारतक समस्त मिथिला वासी लोकनि आ बुद्धिजीवी-संगठन।

व्याख्या: लेखक व्यापक मैथिल समाजकें आन्दोलनमे उतरबाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 8108. मिथिलाक विकास-अभावमे आधारभूत संरचनाक प्रसंग की भूमिका निभबैत अछि?

क. कटल-कटल क्षेत्रक स्थिति आ निवेश-अभाव देखबैत अछि।

ख. लोकगीतक छन्द बतबैत अछि।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. कटल-कटल क्षेत्रक स्थिति आ निवेश-अभाव देखबैत अछि।

व्याख्या: आधारभूत संरचना बिना मिथिला अलग-थलग रहबाक बात लेखमे अछि।

प्रश्न 8109. मिथिला राज्यक माँगमे भाषा आ अकादेमी किएक जोड़ल गेल?
क. मैथिली आ मैथिली अकादेमीक संघर्ष क्षेत्रीय अस्मिताक हिस्सा अछि।
ख. भाषा राज्य-प्रश्नसँ असम्बद्ध अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मैथिली आ मैथिली अकादेमीक संघर्ष क्षेत्रीय अस्मिताक हिस्सा अछि।
व्याख्या: राज्य-प्रश्न केवल भूगोल नहि, भाषा-संस्कृति संरक्षणो अछि।

प्रश्न 8110. लेखक सरकारक “बयांडी”क आलोचना कोना करैत छथि?
क. कथनी भरि कर्तव्य-पूर्ति मानि लेबाक प्रवृत्ति बतबैत।
ख. सरकारक ठोस कार्यक प्रशंसा करैत।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कथनी भरि कर्तव्य-पूर्ति मानि लेबाक प्रवृत्ति बतबैत।
व्याख्या: प्रवासी सुरक्षाक प्रश्नपर बयानबाजीकेँ पर्याप्त नहि मानल गेल।

प्रश्न 8111. आन्दोलनक नैतिक आधार की अछि?
क. उपेक्षित क्षेत्रक न्यायपूर्ण विकास आ सांस्कृतिक अधिकार।
ख. दोसरा क्षेत्रक हानि करब।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. उपेक्षित क्षेत्रक न्यायपूर्ण विकास आ सांस्कृतिक अधिकार।
व्याख्या: लेखकक तर्क प्रतिशोध नहि, न्यायपूर्ण क्षेत्रीय विकास पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 8112. मिथिला राज्य आन्दोलनक सामाजिक-राजनीतिक निचोड़ की अछि?
क. मिथिला राज्य आन्दोलन बाढ़, रोजगार, भाषा, आधारभूत संरचना आ राजनीतिक प्रतिनिधित्वक साझा प्रश्न अछि।
ख. ई आन्दोलन केवल एक दिनक उत्सव छल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मिथिला राज्य आन्दोलन बाढ़, रोजगार, भाषा, आधारभूत संरचना आ राजनीतिक प्रतिनिधित्वक साझा प्रश्न अछि।
व्याख्या: लेखक आन्दोलनकेँ दीर्घ सामाजिक-राजनीतिक अभियान रूपमे देखैत छथि।

खण्ड ८१७ : विदेह-सदेह २ — गोपाल प्रसाद: हिन्दी, मैथिली, मिथिला आ अपेक्षा

प्रश्न 8113. गोपाल प्रसाद अपन दोसर लेखमे कोन संस्था पर प्रश्न उठबैत छथि?
क. केंद्रीय हिन्दी निदेशालय।
ख. केवल ग्राम पंचायत।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. केंद्रीय हिन्दी निदेशालय।
व्याख्या: लेखक निदेशालयक कार्यक्रममे मैथिली-सम्बंधी उपेक्षा पर प्रश्न करैत छथि।

प्रश्न 8114. केंद्रीय हिन्दी निदेशालयक कार्यक प्रसंग किएक आयल?
क. हिन्दीक वैश्विक प्रतिष्ठा लेल प्रयासक तुलना मैथिली-सम्बंधी अभावसँ करबाक लेल।
ख. कृषि-ऋणक ब्याज बतबैत।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. हिन्दीक वैश्विक प्रतिष्ठा लेल प्रयासक तुलना मैथिली-सम्बंधी अभावसँ करबाक लेल।
व्याख्या: लेखक हिन्दी लेल योजनाक चर्चा करि मैथिली लेल समान संवेदनाक अपेक्षा रखैत छथि।

प्रश्न 8115. लेखक मैथिली लेल निदेशालय सँ कोन अपेक्षा संकेत करैत छथि?
क. हिन्दी-मैथिली-अंग्रेजी कोष, वार्तालाप पुस्तक आ कार्यक्रम।
ख. मिथिला नाम हटेबाक आदेश।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. हिन्दी-मैथिली-अंग्रेजी कोष, वार्तालाप पुस्तक आ कार्यक्रम।
व्याख्या: लेखमे कोष, वार्तालाप पुस्तिका आ भाषा-सम्बद्ध कार्यक्रमक अभाव उठाओल गेल।

प्रश्न 8116. मैथिली अष्टम अनुसूचीमे शामिल होएबाक तथ्य लेखमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. संविधान-मान्य भाषा होएबाक कारणे संस्थागत समान व्यवहार चाही।
ख. मैथिली कोनो भाषा नहि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. संविधान-मान्य भाषा होएबाक कारणे संस्थागत समान व्यवहार चाही।
व्याख्या: संविधान-प्रदत्त भाषाक प्रति सौतेलापन न्यायोचित नहि, से प्रश्न उठल अछि।

प्रश्न 8117. लेखक अपन परिचयमे कोन भूमिका बतबैत छथि?
क. पत्रकार, साहित्य-स्रष्टा, सम्पादक आ मिशन मिथिलाक संयोजक।
ख. केवल खेल प्रशिक्षक।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. पत्रकार, साहित्य-स्रष्टा, सम्पादक आ मिशन मिथिलाक संयोजक।
व्याख्या: गोपाल प्रसाद अपन पत्रकारिता, संपादन आ सांस्कृतिक अभियानक परिचय देतात।

प्रश्न 8118. “मिशन मिथिला”क उद्देश्य की बताओल गेल?
क. मिथिलाक सांस्कृतिक विरासतक संरक्षण-संवर्धन आ मैथिली अस्मिता-जागरूकता।
ख. विदेशी भाषा थोपब।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक विरासतक संरक्षण-संवर्धन आ मैथिली अस्मिता-जागरूकता।
व्याख्या: मिशन मिथिला भाषा-संस्कृति चेतना सँ जुड़ल अभियान रूपमे वर्णित अछि।

प्रश्न 8119. लेखक किन-किन संस्थाकेँ माँग-पत्र पठेबाक बात करैत छथि?
क. केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, भारतीय भाषा संस्थान, साहित्य अकादेमी, मैथिली-भोजपुरी अकादेमी।
ख. केवल खेल प्राधिकरण।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, भारतीय भाषा संस्थान, साहित्य अकादेमी, मैथिली-भोजपुरी अकादेमी।
व्याख्या: विभिन्न भाषा-संस्था लग माँग-पत्र भेजब संस्थागत हस्तक्षेपक संकेत अछि।

प्रश्न 8120. मीडियामे स्वर उठेबाक उल्लेख किएक अछि?
क. मैथिली-मिथिला विकास लेल सार्वजनिक विमर्श रचबाक प्रयत्न।
ख. व्यक्तिगत विज्ञापन लेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मैथिली-मिथिला विकास लेल सार्वजनिक विमर्श रचबाक प्रयत्न।
व्याख्या: लेखक मीडिया-सक्रियता केँ भाषा-अभियानक साधन मानैत छथि।

प्रश्न 8121. “सौतेला व्यवहार” शब्दक आशय की अछि?
क. संविधान-मान्य मैथिलीकेँ अन्य भाषाक तुलनामे कम महत्व देब।
ख. मैथिलीकेँ अत्यधिक सुविधा देब।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. संविधान-मान्य मैथिलीकेँ अन्य भाषाक तुलनामे कम महत्व देब।
व्याख्या: प्रश्न संस्थागत असमानता पर अछि।

प्रश्न 8122. हिन्दी-मैथिली अपेक्षा-विवेचनक मुख्य आशय की अछि?
क. गोपाल प्रसाद हिन्दी संस्थागत ढाँचामे मैथिली लेल न्यायपूर्ण स्थान आ साधन चाहैत छथि।
ख. लेख मैथिली छोड़ि देबाक आग्रह करैत अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. गोपाल प्रसाद हिन्दी संस्थागत ढाँचामे मैथिली लेल न्यायपूर्ण स्थान आ साधन चाहैत छथि।
व्याख्या: लेखकक अपेक्षा भाषा-समानता, संसाधन आ जागरूकता पर आधारित अछि।

खण्ड ८१८ : विदेह-सदेह २ — मैथिली शिक्षा, पाठ्यक्रम आ संस्थागत बाधा

प्रश्न 8123. लेखक बिहार सरकार पर मैथिली विकासमे कोन आरोप लगबैत छथि?
क. बाधा उत्पन्न करबाक।
ख. अत्यधिक प्रोत्साहन देबाक।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. बाधा उत्पन्न करबाक।
व्याख्या: लेखमे बिहार सरकारक नीति पर तीक्ष्ण आलोचना अछि।

प्रश्न 8124. इंटरमीडिएटमे मैथिली विषय सम्बन्धी समस्या की बताओल गेल?
क. पहिने अनिवार्य भाषा रूपमे स्थान नहि, बादमे ऐच्छिक बनि महत्त्व घटल।
ख. सभ छात्र लेल अनिवार्य आ सहज उपलब्ध।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. पहिने अनिवार्य भाषा रूपमे स्थान नहि, बादमे ऐच्छिक बनि महत्त्व घटल।
व्याख्या: ऐच्छिक विषय रूपे मैथिलीक प्रभाव घटबाक बात लेखक कहैत छथि।

प्रश्न 8125. कक्षा ग्यारहक पोथी सम्बन्धी कठिनाई की छल?
क. परीक्षासँ मात्र तीन दिन पहिने बाजारमे उपलब्ध भेल।
ख. पाँच बरख पहिले सँ निःशुल्क भेटैत छल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. परीक्षासँ मात्र तीन दिन पहिने बाजारमे उपलब्ध भेल।
व्याख्या: पुस्तक उपलब्धता देरिसँ होएबाक कारणे छात्र-शिक्षक कठिनाईमे पड़लाह।

प्रश्न 8126. बारहवींक “तिलकोर भाग-२” सम्बन्धी शिकायत की अछि?
क. पोथी बहुत देरिसँ उपलब्ध भेल, पढ़ौनी प्रभावित भेल।
ख. पोथी अत्यधिक पहिले बाँटल गेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. पोथी बहुत देरिसँ उपलब्ध भेल, पढ़ौनी प्रभावित भेल।
व्याख्या: शिक्षण-वर्ष बीत गेल मुदा पुस्तक उपलब्ध नहि, लेखक एहि पर खेद करैत छथि।

प्रश्न 8127. बी.पी.एस.सी. पाठ्यक्रमक विषयमे लेखकक टिप्पणी की अछि?
क. मैथिली लेल अनुपयुक्त, प्रश्नकर्ता आ छात्र दूनूकेँ असुविधा।
ख. पूर्णतः आदर्श आ निर्विवाद।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मैथिली लेल अनुपयुक्त, प्रश्नकर्ता आ छात्र दूनूकेँ असुविधा।
व्याख्या: लेखक प्रतियोगी पाठ्यक्रमक पुनर्विचार चाहैत छथि।

प्रश्न 8128. राजकमल चौधरीक “ललका पाग” प्रसंगमे समस्या की उठाओल गेल?
क. एकटा कथा पढ़बाक कि पूरा पोथी, स्पष्टता नहि।
ख. लेखकक नाम गलत अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. एकटा कथा पढ़बाक कि पूरा पोथी, स्पष्टता नहि।
व्याख्या: पाठ्यक्रमक अस्पष्टता छात्र लेल असुविधाजनक बनैत अछि।

प्रश्न 8129. यू.पी.एस.सी. पाठ्यक्रमक आलोचना कोन आधारपर अछि?
क. महाकाव्य चयन, अंश-निर्धारण आ स्नातकोत्तर स्तरक अपेक्षा।
ख. मैथिली हटेबाक समर्थन।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. महाकाव्य चयन, अंश-निर्धारण आ स्नातकोत्तर स्तरक अपेक्षा।
व्याख्या: लेखक उच्च स्तरीय रचना-सूची आ विकल्पक माँग करैत छथि।

प्रश्न 8130. लेखक उच्च स्तरीय रचनाकारक विषयमे की कहैत छथि?
क. बहुत रास महत्त्वपूर्ण लेखक पाठ्यक्रममे स्थान नहि पओलनि।
ख. सभ प्रमुख लेखक समाहित छथि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. बहुत रास महत्त्वपूर्ण लेखक पाठ्यक्रममे स्थान नहि पओलनि।
व्याख्या: पाठ्यक्रम-पुनरावलोकनक आग्रह एहि अभावसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 8131. यू.जी.सी., यू.पी.एस.सी. लेल लेखकक सुझाव की अछि?
क. विश्वविद्यालय सभसँ मैथिली शिक्षकक सूची उपलब्ध कराओल जाए।
ख. मैथिली शिक्षकक आवश्यकता नहि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. विश्वविद्यालय सभसँ मैथिली शिक्षकक सूची उपलब्ध कराओल जाए।
व्याख्या: विषयगत समस्या समाधान लेल विशेषज्ञ-सूचीक सुझाव अछि।

प्रश्न 8132. मैथिली शिक्षा-पाठ्यक्रम आलोचनाक अन्तिम लक्ष्य की अछि?
क. मैथिली शिक्षा-पाठ्यक्रममे पुस्तक, स्पष्टता, स्तर आ विशेषज्ञता—सभ स्तरपर सुधार चाही।
ख. मैथिली शिक्षामे कोनो समस्या नहि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मैथिली शिक्षा-पाठ्यक्रममे पुस्तक, स्पष्टता, स्तर आ विशेषज्ञता—सभ स्तरपर सुधार चाही।
व्याख्या: लेख शिक्षण-संरचना केँ भाषा-विकासक मूल आधार मानैत अछि।

खण्ड ८१९ : विदेह-सदेह २ — संस्था, प्रतिनिधित्व आ इन्टरनेट-संलग्न मैथिली

प्रश्न 8133. गोपाल प्रसाद किन संस्थामे मैथिली कमिटीक कॉकसक आरोप लगबैत छथि?

क. इग्नू, बी.पी.एस.सी., यू.पी.एस.सी., साहित्य अकादेमी, भारतीय भाषा संस्थान, यू.जी.सी. आदि।

ख. केवल ग्राम पाठशाला।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. इग्नू, बी.पी.एस.सी., यू.पी.एस.सी., साहित्य अकादेमी, भारतीय भाषा संस्थान, यू.जी.सी. आदि।

व्याख्या: लेखक विभिन्न संस्थामे सीमित समूहक वर्चस्वक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 8134. प्रतिनिधित्वक प्रश्नमे लेखक ककर उल्लेख करैत छथि?

क. जातीय-विविध विद्वत्ता आ समयानुसार परिवर्तनक।

ख. केवल एक जातिक स्थायी अधिकारक।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. जातीय-विविध विद्वत्ता आ समयानुसार परिवर्तनक।

व्याख्या: लेखक ब्राह्मणेतर विद्वानक उपस्थितिक प्रश्न उठा प्रतिनिधित्व-विस्तार चाहैत छथि।

प्रश्न 8135. दिल्लीक मैथिली-भोजपुरी अकादेमीपर लेखकक आरोप की अछि?

क. कायस्थवादमे जकड़ल रहबाक।

ख. अत्यधिक पारदर्शी बहुवर्गीय संचालन।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. कायस्थवादमे जकड़ल रहबाक।

व्याख्या: लेखक संस्था संचालनमे समूहवादी प्रवृत्तिक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 8136. “कालक्रम अनुसार परिवर्तन” किएक जरूरी मानल गेल?

क. संस्था सभमे नव प्रतिनिधित्व आ व्यापकता आबि सकय।

ख. पुरान नाम सदिखन बरकरार रहय।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. संस्था सभमे नव प्रतिनिधित्व आ व्यापकता आबि सकय।

व्याख्या: भाषा-संस्था जीवंत रहय लेल समयानुसार बदलाब चाही।

प्रश्न 8137. मैथिलीक सर्वांगीण विकास लेल लेखक की आग्रह करैत छथि?

क. मैथिलीसँ जुड़ल लोकनिकेँ जागए पड़त।

ख. मौन रहबाक।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. मैथिलीसँ जुड़ल लोकनिकेँ जागए पड़त।

व्याख्या: लेखक सामूहिक जागरणक आह्वान करैत छथि।

प्रश्न 8138. लेखक मैथिली संस्था सभकेँ ऑनलाइन होएबाक सलाह किएक दैत छथि?

क. नव तकनीक आ इन्टरनेटसँ जुड़ल बिना चुनौती बढ़त।

ख. किएक तँ पुस्तक पूर्णतः निषिद्ध अछि।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. नव तकनीक आ इन्टरनेटसँ जुड़ल बिना चुनौती बढ़त।

व्याख्या: डिजिटल युगमे भाषा-संस्था ऑनलाइन न भेल तँ पिछड़बाक डर लेखक देखैत छथि।

प्रश्न 8139. पुरान शैलीक स्थानपर नव राह पर चलबाक अर्थ की अछि?
क. तकनीक, पारदर्शिता आ व्यापक पहुँच अपनाएब।
ख. पुरान साहित्य जरा देब।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. तकनीक, पारदर्शिता आ व्यापक पहुँच अपनाएब।
व्याख्या: लेखक नव माध्यम ग्रहण करबाक आग्रह करैत छथि, परम्परा-त्याग नहि।

प्रश्न 8140. संस्थागत कॉकस भाषा-विकासक लेल किएक हानिकारक अछि?
क. योग्यताक विविध स्रोत बन्द करैत आ विश्वास घटबैत अछि।
ख. भाषाक प्रसार बढ़बैत अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. योग्यताक विविध स्रोत बन्द करैत आ विश्वास घटबैत अछि।
व्याख्या: संकुचित प्रतिनिधित्व भाषिक समाजक व्यापकता कैं कमजोर करैत अछि।

प्रश्न 8141. इन्टरनेट लेखकक दृष्टिमे कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. भाषा-संरक्षण, पहुँच, संवाद आ नवपीढ़ी-संलग्नताक साधन।
ख. केवल मनोरंजनक खिलौना।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. भाषा-संरक्षण, पहुँच, संवाद आ नवपीढ़ी-संलग्नताक साधन।
व्याख्या: लेखक मैथिलीक भविष्य इन्टरनेट-संबद्धता सँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 8142. संस्था-प्रतिनिधित्व आ डिजिटल मैथिली प्रसंगक समेकित लक्ष्य की अछि?
क. मैथिली संस्थाकैं समूहवादसँ बाहर आबि डिजिटल, प्रतिनिधिक आ जनसंलग्न बनबाक चाही।
ख. संस्था सभकैं समाजसँ अलग रहबाक चाही।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मैथिली संस्थाकैं समूहवादसँ बाहर आबि डिजिटल, प्रतिनिधिक आ जनसंलग्न बनबाक चाही।
व्याख्या: लेखक भाषा-विकासक लेल संरचनात्मक लोकतंत्रीकरण आ तकनीकी नवाचार दूनूक आग्रह करैत छथि।

खण्ड ८२० : विदेह-सदेह २ — प्रो. राधाकृष्ण चौधरी: जीवन आ इतिहास-दृष्टि

प्रश्न 8143. प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक जन्म-मृत्यु वर्ष कोना देल गेल अछि?
क. १५ फरबरी १९२१ सँ १५ मार्च १९८५।
ख. १८५७ सँ १९४७।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. १५ फरबरी १९२१ सँ १५ मार्च १९८५।
व्याख्या: स्रोतमे प्रो. चौधरीक जीवन-काल १५ फरबरी १९२१–१५ मार्च १९८५ देल अछि।

प्रश्न 8144. प्रो. चौधरी अपन जीवन मुख्यतः कोन अध्ययनमे बितेलनि?
क. बिहारक सामान्य आ मिथिलाक विशिष्ट इतिहासक अध्ययनमे।
ख. खगोल-यात्रा लेखनमे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. बिहारक सामान्य आ मिथिलाक विशिष्ट इतिहासक अध्ययनमे।
व्याख्या: हुनक काज बिहार आ मिथिला इतिहास पर केन्द्रित बताओल गेल अछि।

प्रश्न 8145. ओ कतए अध्यापन केने छलाह?
क. गणेश दत्त कॉलेज, बेगूसरायमे।
ख. हार्वर्ड वेधशाला मे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. गणेश दत्त कॉलेज, बेगूसरायमे।
व्याख्या: स्रोतमे गणेश दत्त कॉलेज, बेगूसरायमे हुनक अध्यापनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 8146. भारतीय इतिहास कांग्रेसमे हुनकर कोन भूमिका रहल?
क. प्राचीन भारतीय इतिहास शाखाक अध्यक्ष।
ख. कोषाध्यक्ष मात्र।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. प्राचीन भारतीय इतिहास शाखाक अध्यक्ष।
व्याख्या: प्रो. चौधरी भारतीय इतिहास कांग्रेसक प्राचीन भारतीय इतिहास शाखाक अध्यक्ष रहलाह।

प्रश्न 8147. हुनकर लेखनीक प्रवाह ककर कारण कहल गेल?
क. प्रचंड विद्वत्ता।
ख. सामान्य अफवाह।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. प्रचंड विद्वत्ता।
व्याख्या: सम्पादकीय टिप्पणी हुनक लेखनीक प्रवाहकेँ विद्वत्ता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 8148. मिथिला/मैथिलक महिमामंडन विषयमे हुनक दृष्टि कोना बताओल गेल?
क. अनर्गल महिमामंडन सँ परहेज करैत मौलिक विवेचन।
ख. बिना प्रमाणक प्रशस्ति मात्र।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. अनर्गल महिमामंडन सँ परहेज करैत मौलिक विवेचन।
व्याख्या: हुनकर इतिहास-दृष्टि आह मिथिला/बाह मिथिला प्रवृत्ति सँ फराक बताओल गेल।

प्रश्न 8149. हुनक इतिहास-लेखन किन आधार सभपर रचित कहल गेल?
क. साहित्य आ पुरातत्वक प्रमाण पर।
ख. दंतकथा मात्र पर।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. साहित्य आ पुरातत्वक प्रमाण पर।
व्याख्या: सम्पादक स्पष्ट करैत छथि जे ई इतिहास प्रमाणपर आधारित अछि।

प्रश्न 8150. हुनक लेखनमे मानवता आ धर्मनिरपेक्षता किएक महत्त्वपूर्ण कहल गेल?
क. कारण ओ इतिहासकेँ कट्टर महिमामंडनसँ बचा व्यापक मानवीय दृष्टि दैत अछि।
ख. किएक तँ ओ इतिहास अस्वीकार करैत छथि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कारण ओ इतिहासकेँ कट्टर महिमामंडनसँ बचा व्यापक मानवीय दृष्टि दैत अछि।
व्याख्या: लेखनमे मानवता आ धर्मनिरपेक्षता आधुनिक साहित्य लेल सेहो नूतन वस्तु मानल गेल।

प्रश्न 8151. विदेह द्वारा हुनकर अप्रकाशित साहित्य अंकनक उद्देश्य की बताओल गेल?
क. कट्टरवादी इतिहास-मानसिकता पर प्रमाणिक प्रहार आ वैकल्पिक इतिहास-दृष्टि।
ख. केवल टाइप अभ्यास।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कट्टरवादी इतिहास-मानसिकता पर प्रमाणिक प्रहार आ वैकल्पिक इतिहास-दृष्टि।
व्याख्या: सम्पादकीय टिप्पणी अप्रकाशित पाण्डुलिपि प्रकाशनकेँ वैचारिक हस्तक्षेप मानैत अछि।

प्रश्न 8152. प्रो. राधाकृष्ण चौधरी-परिचय खण्डक मुख्य अर्थ की अछि?
क. प्रो. राधाकृष्ण चौधरी मिथिला इतिहासक प्रमाणाधारित, मानवीय आ आलोचनात्मक इतिहासकार रूपे उभरैत छथि।
ख. ओ केवल लोकगीत-गायक छलाह।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. प्रो. राधाकृष्ण चौधरी मिथिला इतिहासक प्रमाणाधारित, मानवीय आ आलोचनात्मक इतिहासकार रूपे उभरैत छथि।
व्याख्या: जीवनपरिचय आ टिप्पणी हुनका गंभीर इतिहासविद् रूपमे स्थापित करैत अछि।

खण्ड ८२१ : विदेह-सदेह २ — मिथिला इतिहास: वैदिक युग, कीकट आ आर्य-केन्द्र

प्रश्न 8153. प्रो. चौधरीक मिथिला इतिहासक आरम्भ कोन प्रश्नसँ होइत अछि?
क. वैदिक युगमे अंग, मगध आ मिथिलाक अस्पष्ट उल्लेखक प्रश्नसँ।
ख. आधुनिक रेल समय-सारणीसँ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. वैदिक युगमे अंग, मगध आ मिथिलाक अस्पष्ट उल्लेखक प्रश्नसँ।
व्याख्या: अध्याय आरम्भमे वैदिक साहित्यमे पूर्वी क्षेत्रोंक उल्लेखक अनिश्चितता उठाओल गेल।

प्रश्न 8154. ऋग्वेदमे “कीकट” सम्बन्धी चर्चा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. दक्षिण बिहार/पूर्वी क्षेत्रक प्रारम्भिक सांस्कृतिक संकेतक रूपमे।
ख. मिथिला फिल्मक पात्र रूपमे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. दक्षिण बिहार/पूर्वी क्षेत्रक प्रारम्भिक सांस्कृतिक संकेतक रूपमे।
व्याख्या: कीकटक उल्लेख पूर्वी भारत सम्बन्धी वैदिक संकेत मानि विवेचित अछि।

प्रश्न 8155. यास्कक अनुसार कीकटमे के रहैत छल?
क. अनार्य लोक।
ख. केवल वैदिक ऋषि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. अनार्य लोक।
व्याख्या: स्रोतमे यास्कक मतानुसार कीकट देश अनार्य निवासक स्थान कहल गेल।

प्रश्न 8156. सायणाचार्य कीकट-निवासीक विषयमे की जोड़ैत छथि?
क. ओ नास्तिक आ भौतिकवादी प्रवृत्ति बला छलाह।
ख. ओ वेदक मुख्य सम्पादक छलाह।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. ओ नास्तिक आ भौतिकवादी प्रवृत्ति बला छलाह।
व्याख्या: सायणाचार्य योग, दान, होम आदि पर अविश्वासक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 8157. वायुपुराणक गया-माहात्म्यक उल्लेख किएक अछि?
क. कीकटकेँ दक्षिण बिहारक भूभागसँ जोड़बाक संकेत लेल।
ख. समुद्रतट सिद्ध करबाक लेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कीकटकेँ दक्षिण बिहारक भूभागसँ जोड़बाक संकेत लेल।
व्याख्या: गया-माहात्म्य उद्धरण कीकट-दक्षिण बिहार सम्बन्धक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 8158. संहिता-कालमे आर्य सभ्यताक प्रधान केन्द्र कोन क्षेत्र मानल गेल?
क. सरस्वती आ दृषद्वती नदीक बीच।
ख. कामरूपक पूर्वी पहाड़।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. सरस्वती आ दृषद्वती नदीक बीच।
व्याख्या: लेखमे संहिता कालक प्रधान केन्द्र सरस्वती-दृषद्वती क्षेत्र बताओल गेल।

प्रश्न 8159. मनु एहि क्षेत्रकेँ कोन नाम देने छथि?
क. ब्रह्मावर्त।
ख. मिथिलेश्वर नगर।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. ब्रह्मावर्त।
व्याख्या: सरस्वती-दृषद्वती बीचक क्षेत्र ब्रह्मावर्त कहल गेल।

प्रश्न 8160. ब्राह्मण-कालमे आर्य संस्कृतिक केन्द्र कतए सरकल कहल गेल?
क. कुरु-पाँचाल क्षेत्रमे।
ख. केवल नेपाल तराइमे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कुरु-पाँचाल क्षेत्रमे।
व्याख्या: बादक चरणमे कुरु-पाँचाल आर्य संस्कृति केन्द्र बनल, से विवेचन अछि।

प्रश्न 8161. सदानीरा पार करबाक घटना किएक निर्णायक अछि?
क. एहि सँ आर्य संस्कृतिक पूर्वगमन आ विदेह-क्षेत्रक उदय जुड़ल।
ख. एहि सँ समुद्री व्यापार आरम्भ भेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. एहि सँ आर्य संस्कृतिक पूर्वगमन आ विदेह-क्षेत्रक उदय जुड़ल।
व्याख्या: सदानीरा पार करि पूर्व दिस आगमन मिथिला-विदेहक ऐतिहासिक मोड़ अछि।

प्रश्न 8162. कीकट आ वैदिक आरम्भ-विवेचनक निचोड़ की अछि?
क. मिथिला इतिहासक वैदिक आरम्भ अस्पष्ट संकेत, कीकट-विवाद आ आर्य संस्कृतिक पूर्वगमन सँ बनैत अछि।
ख. वैदिक साहित्यमे मिथिलाक पूरा आधुनिक नक्शा स्पष्ट देल अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मिथिला इतिहासक वैदिक आरम्भ अस्पष्ट संकेत, कीकट-विवाद आ आर्य संस्कृतिक पूर्वगमन सँ बनैत अछि।
व्याख्या: प्रो. चौधरी सतर्क इतिहास-दृष्टिसँ संकेत, विवाद आ संक्रमणक विश्लेषण करैत छथि।

खण्ड ८२२ : विदेह-सदेह २ — विदेघ माथव, सदानीरा आ विदेहक उदय

प्रश्न 8163. शतपथ ब्राह्मणमे विदेहक स्पष्ट उल्लेख कोन कथासँ जुड़ल अछि?

क. विदेघ माथव आ गौतम राहूगणक सदानीरा पहुँचबाक कथासँ।

ख. अशोकक शिलालेखसँ।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. विदेघ माथव आ गौतम राहूगणक सदानीरा पहुँचबाक कथासँ।

व्याख्या: विदेघ माथव अपन पुरोहित गौतम राहूगणक संग वैश्वानर अग्नि अनुसरण करैत सदानीरा धरि अएलाह।

प्रश्न 8164. विदेघ माथव ककर अनुसरण करैत पूर्व दिस बढ़लाह?

क. वैश्वानर अग्निक।

ख. समुद्री जहाजक।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. वैश्वानर अग्निक।

व्याख्या: शतपथ कथा मे वैश्वानर अग्नि मार्गदर्शक शक्ति अछि।

प्रश्न 8165. सदानीरा नदीक ऐतिहासिक भूमिका की बनल?

क. विदेह आ कोशलक बीच सीमा-रेखा।

ख. अंग आ कलिंगक बीच समुद्री सीमा।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. विदेह आ कोशलक बीच सीमा-रेखा।

व्याख्या: सदानीरा पार करबाक बाद ई नदी विदेह-कोशल सीमा मानल गेल।

प्रश्न 8166. वैश्वानर विदेघ माथवकेँ की आदेश देलनि?

क. सदानीरा टपबाक।

ख. वापस सरस्वती घाट जेबाक।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. सदानीरा टपबाक।

व्याख्या: कथानुसार अग्निदेवक आदेश पर सदानीरा पार कएल गेल।

प्रश्न 8167. सदानीरा पार कएलाक बाद देश “विदेह” किएक कहल गेल?

क. विदेघ माथवक पूर्वगमन आ बसोबासक कारणे।

ख. ओतए सोना भेटबाक कारणे।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. विदेघ माथवक पूर्वगमन आ बसोबासक कारणे।

व्याख्या: विदेघ माथवक नाम आ बसाहट सँ देश विदेह कहेबा लागल।

प्रश्न 8168. एहि घटना पूर्व आर्य लोकक स्थिति की कहल गेल?

क. ओ सदानीराक पूब दिस नहि गेल छलाह।

ख. ओ सम्पूर्ण विश्व घूमि चुकल छलाह।

ग. कोनो नहि

घ. ऊपरक सभटा गलत

उत्तर: क. ओ सदानीराक पूब दिस नहि गेल छलाह।

व्याख्या: स्रोतमे सदानीरा पार करब महत्वपूर्ण मोड़ मानल गेल अछि।

प्रश्न 8169. विदेह आर्य सभ्यताक केन्द्र कोना बनल?
क. सदानीरा पारक बाद तीव्र आर्य-संस्कृति प्रसार सँ।
ख. किएक तँ ओतए कोनो समाज नहि छल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. सदानीरा पारक बाद तीव्र आर्य-संस्कृति प्रसार सँ।
व्याख्या: विदेह पूर्वी भारतमे आर्य सभ्यताक प्रधान केन्द्र बनल।

प्रश्न 8170. जनकक दरबारक कथा शतपथक पछिला भागमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. विदेहक बौद्धिक-धार्मिक प्रतिष्ठा देखेबाक लेल।
ख. मेला-व्यापारक सूची लेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. विदेहक बौद्धिक-धार्मिक प्रतिष्ठा देखेबाक लेल।
व्याख्या: जनक दरबार ब्रह्मज्ञानी सभक आगमन आ शास्त्रार्थक केन्द्र अछि।

प्रश्न 8171. विदेह माथव कथा इतिहासमे कोन प्रक्रिया संकेत करैत अछि?
क. भूगोल, मिथक आ सांस्कृतिक प्रसारक संयुक्त ऐतिहासिक स्मृति।
ख. नदी सूखबाक मौसम मात्र।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. भूगोल, मिथक आ सांस्कृतिक प्रसारक संयुक्त ऐतिहासिक स्मृति।
व्याख्या: ई कथा सांस्कृतिक स्थानांतरण आ राजनीतिक-सांस्कृतिक नामकरणक प्रतीक अछि।

प्रश्न 8172. विदेघ माथव-सदानीरा कथा खण्डक मुख्य बोध की अछि?
क. विदेघ माथव-सदानीरा कथा विदेहक नाम, सीमा आ आर्य-सांस्कृतिक प्रतिष्ठाक आधार बनैत अछि।
ख. विदेहक उदय संयोगहीन घटना छल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. विदेघ माथव-सदानीरा कथा विदेहक नाम, सीमा आ आर्य-सांस्कृतिक प्रतिष्ठाक आधार बनैत अछि।
व्याख्या: शतपथ ब्राह्मणक कथा मिथिला इतिहासक मूल संकेत रूपे पढ़ल गेल अछि।

खण्ड ८२३ : विदेह-सदेह २ — जनक, याज्ञवल्क्य आ ब्रह्मविद्याक उत्कर्ष

प्रश्न 8173. मिथिलाक राजा जनक अपना दरबारमे के सभकेँ बजबैत छलाह?
क. देशक विभिन्न भागक ब्रह्मज्ञानी लोकनिकेँ।
ख. केवल सैनिक भर्तीक उमेदवार।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. देशक विभिन्न भागक ब्रह्मज्ञानी लोकनिकेँ।
व्याख्या: जनकक दरबार ब्रह्मज्ञानक विमर्श-स्थल रूपमे प्रतिष्ठित छल।

प्रश्न 8174. कुरु-पाँचालसँ ऋषि-मुनि जनक दरबारमे किएक आबैत छलाह?
क. शास्त्रार्थ आ ब्रह्मज्ञानक विमर्श लेल।
ख. कर वसूलि लेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. शास्त्रार्थ आ ब्रह्मज्ञानक विमर्श लेल।
व्याख्या: विदेहक बौद्धिक प्रतिष्ठा एतबे छल जे कुरु-पाँचालक ऋषि सेहो आबैत छलाह।

प्रश्न 8175. ऋषि याज्ञवल्क्यक सम्बन्ध विदेहसँ कोना बताओल गेल?
क. ओ विदेहमे रहैत छलाह आ जनक दरबारमे प्रमुख ब्रह्मज्ञानी छलाह।
ख. ओ केवल समुद्री कप्तान छलाह।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. ओ विदेहमे रहैत छलाह आ जनक दरबारमे प्रमुख ब्रह्मज्ञानी छलाह।
व्याख्या: याज्ञवल्क्य विदेहक ब्रह्मविद्या परम्पराक केन्द्रीय व्यक्तित्व बनैत छथि।

प्रश्न 8176. जनक-याज्ञवल्क्य ककर प्रतीक बनैत छथि?
क. आर्य संस्कृतिक आध्यात्मिक-बौद्धिक उत्कर्षक।
ख. वाणिज्यिक करारक।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. आर्य संस्कृतिक आध्यात्मिक-बौद्धिक उत्कर्षक।
व्याख्या: लेखमे जनक आ याज्ञवल्क्य आर्य संस्कृति आ ब्रह्मज्ञानक द्योतक अछि।

प्रश्न 8177. याज्ञवल्क्य शास्त्रार्थमे के सभकेँ पराजित केने कहल गेल?
क. कुरु-पाँचालक उपस्थित ऋषि-गणकेँ।
ख. विदेशी सैनिक सभकेँ।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कुरु-पाँचालक उपस्थित ऋषि-गणकेँ।
व्याख्या: शास्त्रार्थक विजय याज्ञवल्क्यक विद्वत्ता आ विदेहक प्रतिष्ठा देखबैत अछि।

प्रश्न 8178. याज्ञवल्क्यक वचन कोन क्षेत्रमे प्रमाणिक मानल गेल?
क. अध्यात्मविद्या आ वैदिक क्रियाकलाप दूनू मे।
ख. कृषि कर निर्धारण मात्र।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. अध्यात्मविद्या आ वैदिक क्रियाकलाप दूनू मे।
व्याख्या: हुनक अधिकार केवल दार्शनिक नहि, वैदिक क्रिया-परम्परामे सेहो मानल गेल।

प्रश्न 8179. परम्परामे याज्ञवल्क्य ककर प्रवर्तक मानल गेल छथि?
क. शुक्ल यजुर्वेदक।
ख. चार्वाक सूत्रक।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. शुक्ल यजुर्वेदक।
व्याख्या: स्रोतमे याज्ञवल्क्य शुक्ल यजुर्वेदक प्रवर्तक मानल गेल।

प्रश्न 8180. कौशीतकी उपनिषदक जनक-जनक प्रसंग किएक उल्लेखनीय अछि?
क. जनकक ब्रह्मज्ञान-प्रतिष्ठा दूर-दूर धरि प्रसिद्ध छल।
ख. जनकक सैनिक शक्ति बतबैत।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. जनकक ब्रह्मज्ञान-प्रतिष्ठा दूर-दूर धरि प्रसिद्ध छल।
व्याख्या: “जनक-जनक”क पुकार जनकक बौद्धिक कीर्ति संकेत करैत अछि।

प्रश्न 8181. ब्रह्मविद्याक चरम उत्कर्ष कतए भेल कहल गेल?
क. विदेहमे।
ख. केवल पश्चिमी समुद्रतटमे।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. विदेहमे।
व्याख्या: लेखक वैदिक कालमे ब्रह्मविद्याक उत्कर्ष विदेहमे मानैत छथि।

प्रश्न 8182. जनक-याज्ञवल्क्य खण्डक अन्तिम निष्कर्ष की अछि?
क. जनक-दरबार आ याज्ञवल्क्य परम्परा विदेहकेँ ब्रह्मज्ञानक महान केन्द्र सिद्ध करैत अछि।
ख. विदेहक बौद्धिक इतिहास गौण अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. जनक-दरबार आ याज्ञवल्क्य परम्परा विदेहकेँ ब्रह्मज्ञानक महान केन्द्र सिद्ध करैत अछि।
व्याख्या: जनक आ याज्ञवल्क्य विदेहक आध्यात्मिक-बौद्धिक शिखर रूपे प्रस्तुत छथि।

खण्ड ८२४ : विदेह-सदेह २ — संस्कृत साहित्यमे मिथिला, विदेह आ तीरभुक्ति

प्रश्न 8183. प्रो. चौधरी संस्कृत साहित्यक उदाहरण किएक दैत छथि?
क. मिथिला, विदेह आ तीरभुक्तिक साहित्यिक प्रतिष्ठा देखेबाक लेल।
ख. अंकगणित सिखेबाक लेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मिथिला, विदेह आ तीरभुक्तिक साहित्यिक प्रतिष्ठा देखेबाक लेल।
व्याख्या: विभिन्न संस्कृत ग्रन्थक उद्धरण मिथिलाक व्यापक साहित्यिक स्मृति सिद्ध करैत अछि।

प्रश्न 8184. बालकाण्डमे मिथिलाक उल्लेख कोन प्रसंगमे जुड़ल अछि?
क. रामक गौतमसँ पूजापूर्वक मिथिलाचल गमन।
ख. समुद्र मन्थनक।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. रामक गौतमसँ पूजापूर्वक मिथिलाचल गमन।
व्याख्या: बालकाण्ड उद्धरण मिथिला-गमनक प्रसंग उजागर करैत अछि।

प्रश्न 8185. अनर्घराघव/प्रसन्नराघव आदि उद्धरणक सामूहिक अर्थ की अछि?
क. मिथिला नामक नगरी संस्कृत काव्य-नाटकमे परिचित स्थल छल।
ख. मिथिला नाम अनुपस्थित छल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मिथिला नामक नगरी संस्कृत काव्य-नाटकमे परिचित स्थल छल।
व्याख्या: एकाधिक नाट्य-काव्य उदाहरण मिथिलाक साहित्यिक उपस्थिति प्रमाणित करैत अछि।

प्रश्न 8186. रघुवंश आ नैषधीयचरितक उदाहरण किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मिथिला/मैथिल सन्दर्भ महाकाव्य परम्परासँ जुड़ल अछि।
ख. ओ केवल पाक-कला पुस्तक अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मिथिला/मैथिल सन्दर्भ महाकाव्य परम्परासँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: महाकाव्य सभमे मिथिला-सन्दर्भ ओकर सांस्कृतिक स्वीकार्यता देखबैत अछि।

प्रश्न 8187. दशकुमारचरित आ कथासरित्सागरक उल्लेख की देखबैत अछि?
क. कथा-साहित्य मे सेहो विदेह/मिथिला उपस्थित अछि।
ख. मिथिला केवल आधुनिक राजनीतिक नाम अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. कथा-साहित्य मे सेहो विदेह/मिथिला उपस्थित अछि।
व्याख्या: गद्य-कथा परम्परासँ मिथिलाक नाम जुड़ल अछि।

प्रश्न 8188. भृंगदूतक उल्लेख कोन दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि?
क. तीरभुक्ति, दरभंगा, गंगा-गण्डकी आदि स्थान-स्मृतिसँ।
ख. केवल नाविक गीत।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. तीरभुक्ति, दरभंगा, गंगा-गण्डकी आदि स्थान-स्मृतिसँ।
व्याख्या: भृंगदूत क्षेत्रीय भूगोल आ सांस्कृतिक स्मृतिक स्रोत रूपे देखाओल गेल।

प्रश्न 8189. दरभंगा वर्णनक उदाहरण की सिद्ध करैत अछि?
क. मिथिलाक नगर-परम्परा संस्कृत काव्य-स्मृति मे अंकित अछि।
ख. दरभंगा नाम कहियो प्रयोग नहि भेल।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मिथिलाक नगर-परम्परा संस्कृत काव्य-स्मृति मे अंकित अछि।
व्याख्या: भृंगदूतमे दरभंगा सम्बन्धी वर्णन क्षेत्रीय साहित्यिक साक्ष्य अछि।

प्रश्न 8190. लक्ष्मीश्वरोपायन आ गुणेश्वर चरित चम्पू उद्धरणक आशय की अछि?
क. मिथिला प्रति स्वाभाविक प्रीति आ तीरभुक्तिक प्रशंसा।
ख. मिथिलाक निन्दा मात्र।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. मिथिला प्रति स्वाभाविक प्रीति आ तीरभुक्तिक प्रशंसा।
व्याख्या: एहि उद्धरण सभमे मिथिला भूमि प्रति गौरव आ स्तुति व्यक्त अछि।

प्रश्न 8191. लेखक मिथिला, तीरभुक्ति, विदेह शब्दक सम्बन्ध कोना देखैत छथि?
क. गंगाक उत्तरक भौगोलिक-सांस्कृतिक इकाईक द्योतक रूपमे।
ख. तीनू अलग-अलग समुद्र।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. गंगाक उत्तरक भौगोलिक-सांस्कृतिक इकाईक द्योतक रूपमे।
व्याख्या: मिथिला/विदेह/तीरभुक्ति ऐतिहासिक भौगोलिक पहचानक परस्पर सम्बद्ध नाम अछि।

प्रश्न 8192. संस्कृत साहित्यमे मिथिला-विवेचनक समेकित निष्कर्ष की अछि?
क. संस्कृत साहित्यक बहु-साक्ष्य मिथिलाकेँ प्राचीन, प्रतिष्ठित आ सांस्कृतिक भूगोल रूपे स्थापित करैत अछि।
ख. मिथिलाक साहित्यिक उल्लेख केवल एक आधुनिक कल्पना अछि।
ग. कोनो नहि
घ. ऊपरक सभटा गलत
उत्तर: क. संस्कृत साहित्यक बहु-साक्ष्य मिथिलाकेँ प्राचीन, प्रतिष्ठित आ सांस्कृतिक भूगोल रूपे स्थापित करैत अछि।
व्याख्या: काव्य, नाटक आ कथा-स्रोत मिलि मिथिलाक पुरातन साहित्यिक उपस्थिति प्रमाणित करैत अछि।

खण्ड ८२५ : विदेह-सदेह २ — प्रो. राधाकृष्ण चौधरी: मिथिलाक भौगोलिक सीमा

प्रश्न 8193. प्रो. राधाकृष्ण चौधरी मिथिलाक भौगोलिक सीमाक चर्चा कोन दृष्टिसँ करैत छथि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

घ. इतिहास, पुराण-साक्ष्य, नदी-भूगोल आ सांस्कृतिक परम्पराकेँ जोड़ि।

उत्तर: घ. इतिहास, पुराण-साक्ष्य, नदी-भूगोल आ सांस्कृतिक परम्पराकेँ जोड़ि।

व्याख्या: एहि विवेचनमे भूगोल केवल नक्शा नहि, ऐतिहासिक नाम, नदी, लोकजीवन आ संस्कृति सभसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 8194. मिथिला-सीमाक वर्णनमे “मिथिला नाम नगरी” सन पुराण-वचन किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ग. मिथिला नामक प्राचीन प्रसिद्धि देखेबाक लेल।

घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

उत्तर: ग. मिथिला नामक प्राचीन प्रसिद्धि देखेबाक लेल।

व्याख्या: पुराण-वचनसँ ई संकेत भेटैत अछि जे मिथिला नाम लोक-स्मृतिमे पुरान आ प्रतिष्ठित रहल।

प्रश्न 8195. हल्लायुध-उद्धरणक आशय की मानल गेल?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ग. मिथिलाक नाम, नगरी आ लोक-विश्वासक पुरातन प्रतिष्ठा।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. मिथिलाक नाम, नगरी आ लोक-विश्वासक पुरातन प्रतिष्ठा।

व्याख्या: उद्धरण मिथिला नामकेँ केवल आधुनिक भू-नाम नहि, साहित्यिक-सांस्कृतिक पहचान सिद्ध करैत अछि।

प्रश्न 8196. मिथिलाक सीमा बुझबाक लेल नदी सभक भूमिका की अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ग. नदी सभ भूमि, खेती, बस्ती आ सांस्कृतिक पहचान गढ़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

उत्तर: ग. नदी सभ भूमि, खेती, बस्ती आ सांस्कृतिक पहचान गढ़ैत अछि।

व्याख्या: लेखमे नदीक बाहुल्य मिथिलाक भौगोलिक आ लोकजीवनक मूल आधार बनैत अछि।

प्रश्न 8197. मिथिला भूमि विशेष किएक कहल गेल?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. अहिअम नदीक बाढ़ि आ जलोढ़ उपजाऊ माटिक कारण।

घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

उत्तर: ग. अहिअम नदीक बाढ़ि आ जलोढ़ उपजाऊ माटिक कारण।

व्याख्या: भूमिक उर्वरता आ बाढ़ि दुनू मिलि मिथिलाक जीवन-पद्धति बनबैत अछि।

प्रश्न 8198. अहिअम जनसंख्याक बड़ा भाग ककरा पर निर्भर कहल गेल?

क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ग. खेतीपर।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. खेतीपर।

व्याख्या: मिथिलाक जलोढ़ माटि आ बाढ़ि-क्षेत्र कृषि-निर्भर समाजक आधार बनल।

प्रश्न 8199. मिथिलाक भूगोलमे बाढ़िक दोहरा अर्थ की अछि?
क. उपजाऊ माटि देब आ जीवनमे असुरक्षा आनब।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. उपजाऊ माटि देब आ जीवनमे असुरक्षा आनब।
व्याख्या: बाढ़ि मिथिलाक खेती लेल उपयोगी मुदा बसोबास आ रोजमर्रा जीवन लेल चुनौतीपूर्ण अछि।

प्रश्न 8200. मिथिलाक भौगोलिक सीमा कोना सांस्कृतिक सीमा सेहो बनैत अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. नदी, माटि, लोकविश्वास आ भाषिक व्यवहारक साझा अनुभवसँ।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. नदी, माटि, लोकविश्वास आ भाषिक व्यवहारक साझा अनुभवसँ।
व्याख्या: भौगोलिक रेखा लोकगीत, पूजा, भाषा आ रहन-सहनमे सांस्कृतिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

प्रश्न 8201. प्रो. चौधरी मिथिलाकेँ कोन रूपमे देखबैत छथि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. नदी-संस्कृति आ ऐतिहासिक स्मृतिक संयुक्त प्रदेश।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. नदी-संस्कृति आ ऐतिहासिक स्मृतिक संयुक्त प्रदेश।
व्याख्या: भूगोल, पुराण, समाज आ संस्कृति मिलि मिथिलाक स्वरूप बनैत अछि।

प्रश्न 8202. मिथिलाक सीमा-विवेचनक मूल निष्कर्ष की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. मिथिला जल, माटि, इतिहास आ लोक-विश्वाससँ बनल सांस्कृतिक भूगोल अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. मिथिला जल, माटि, इतिहास आ लोक-विश्वाससँ बनल सांस्कृतिक भूगोल अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मिथिलाकेँ मात्र प्रशासनिक क्षेत्र नहि, जीवित सांस्कृतिक भूगोल रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड ८२६ : विदेह-सदेह २ — मिथिला, नदी आ तीरभुक्ति-चेतना

प्रश्न 8203. “तीरभुक्ति” नाम नदी-सम्बन्धी दृष्टिसँ की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. नदीक तीर आ जल-संस्कृतिसँ जुड़ल क्षेत्रीय पहचान।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. नदीक तीर आ जल-संस्कृतिसँ जुड़ल क्षेत्रीय पहचान।
व्याख्या: नदी-बाहुल्यक कारण तीरभुक्ति नाम मिथिलाक जल-आधारित भूगोल संकेत करैत अछि।

प्रश्न 8204. गण्डक, बागमती, बलान, लखनदेई, कमला आदिक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. मिथिलाक जीवन-रेखा रूपमे नदी-प्रणाली देखेबाक लेल।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाक जीवन-रेखा रूपमे नदी-प्रणाली देखेबाक लेल।
व्याख्या: एहि नदीसभक उल्लेख भूगोल, खेती, बाढ़ि आ लोकजीवनक संयुक्त आधार स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 8205. करेह, जीवछ, तिलयुगा आदि नदीक उल्लेख कोन बात बढ़बैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. नदी-जालक व्यापकता।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. नदी-जालक व्यापकता।
व्याख्या: मिथिला एक-दू नदीक क्षेत्र नहि, अनेक धारा आ उपधाराक सांस्कृतिक परिसर अछि।

प्रश्न 8206. नदी-बिना मिथिलाक भूगोल कल्पना किएक कठिन कहल जाए?
क. किएक तँ नदी भूमि, खेती, पाबनि आ आवागमन सभ पर असर करैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. किएक तँ नदी भूमि, खेती, पाबनि आ आवागमन सभ पर असर करैत अछि।
व्याख्या: मिथिलाक जीवन नदीक अनुकूलन आ संघर्ष दुनूसँ बनल अछि।

प्रश्न 8207. नदीसभ मिथिलामे ग्राम-जीवन पर कोन प्रभाव छोड़ैत अछि?
क. गाम, घर-दुआर, खेती आ लोक-संस्कारक रूप निर्धारण करैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. गाम, घर-दुआर, खेती आ लोक-संस्कारक रूप निर्धारण करैत अछि।
व्याख्या: नदीक बहाव आ बाढ़ि बसोबास आ कृषि-पद्धति बदलैत रहैत अछि।

प्रश्न 8208. नदीक बाढ़ि आ खेतीक सम्बन्ध कोना देखाओल गेल?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. बाढ़ि उपजाऊ माटि छोड़ैत अछि आ खेतीक आधार मजबूत करैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. बाढ़ि उपजाऊ माटि छोड़ैत अछि आ खेतीक आधार मजबूत करैत अछि।
व्याख्या: बाढ़ि विनाशकारी होइतहुँ जलोढ़ माटिक कारण कृषि-संपन्नताक स्रोत बनैत अछि।

प्रश्न 8209. मिथिलाक नदी-संस्कृति केवल आर्थिक नहि किएक अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ओ पूजा, स्नान, गीत आ लोकविश्वाससँ सेहो जुड़ल अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. ओ पूजा, स्नान, गीत आ लोकविश्वाससँ सेहो जुड़ल अछि।
व्याख्या: नदी मिथिलाक धार्मिक-सांस्कृतिक व्यवहारमे गहिर अर्थ रखैत अछि।

प्रश्न 8210. पावनि अवसरमे नदी-स्नानक उल्लेख कोन परम्परा देखबैत अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. जलकेँ पवित्र आ संस्कारक अंग मानबाक परम्परा।
उत्तर: घ. जलकेँ पवित्र आ संस्कारक अंग मानबाक परम्परा।
व्याख्या: अक्षय-तृतीया सन अवसर पर नदी-स्नान धार्मिक आ सामाजिक महत्त्व रखैत अछि।

प्रश्न 8211. नदी-पूजाक गीतक उल्लेख की सिद्ध करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. नदी मिथिलाक लोक-संगीतमे जीवित देवीवत् उपस्थिति राखैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. नदी मिथिलाक लोक-संगीतमे जीवित देवीवत् उपस्थिति राखैत अछि।
व्याख्या: गीत आ पूजा नदीकेँ लोकमानसक केन्द्रीय शक्ति बनबैत अछि।

प्रश्न 8212. नदी-संस्कृति सम्बन्धी खण्डक मुख्य बोध की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलाक भूगोल नदीक जलसँ आ ओकर संस्कृति नदीक स्मृतिसँ बनल अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाक भूगोल नदीक जलसँ आ ओकर संस्कृति नदीक स्मृतिसँ बनल अछि।
व्याख्या: नदीक बिना मिथिलाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक व्यक्तित्व अधूरा रहैत।

खण्ड ८२७ : विदेह-सदेह २ — मिथिलाक माटि, खेती आ सांस्कृतिक एकता

प्रश्न 8213. अहिअम नदीसभक बाढ़ि मिथिलाक माटिकेँ कोना प्रभावित करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. माटिकेँ उपजाऊ जलोढ़ बनबैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ख. माटिकेँ उपजाऊ जलोढ़ बनबैत अछि।
व्याख्या: लेखमे उपजाऊ भूमिक कारण नदी-बाढ़ि आ माटि-निर्माणक सम्बन्ध स्पष्ट अछि।

प्रश्न 8214. मिथिलामे धान-खेतीक आधार कोन प्राकृतिक स्थिति अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. जल-समृद्ध, जलोढ़ आ समतल कृषि-भूमि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. जल-समृद्ध, जलोढ़ आ समतल कृषि-भूमि।
व्याख्या: नदीक बाढ़ि आ माटिक उर्वरता धान-प्रधान खेतीक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 8215. मिथिलाक लोक अपन माटि-पानि प्रति किएक कड़ा मोह राखैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. जीवन, खेती, भाषा आ संस्कार सभ एहि माटि-पानिसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. जीवन, खेती, भाषा आ संस्कार सभ एहि माटि-पानिसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: भूमि-प्रेम केवल भावुकता नहि, जीवन-निर्वाह आ सांस्कृतिक आत्मीयताक परिणाम अछि।

प्रश्न 8216. मिथिलाक भूगोलमे हिमालयक निकटता कोन अर्थ रखैत अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. उत्तर सीमा आ नदी-मूलक प्राकृतिक आधार।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. उत्तर सीमा आ नदी-मूलक प्राकृतिक आधार।
व्याख्या: हिमालयसँ अवतरित नदीसभ मिथिलाक भूगोल आ जलचक्र निर्धारण करैत अछि।

प्रश्न 8217. तीन दिस नदी आ एक दिस पर्वतक उल्लेख कोन भाव देत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. भौगोलिक सुरक्षा आ विशिष्टता।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. भौगोलिक सुरक्षा आ विशिष्टता।
व्याख्या: लेखमे मिथिलाक प्राकृतिक सीमाबद्धता ओकर विशेष सांस्कृतिक स्वरूपक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 8218. मिथिलाक राजनीतिक इकाई प्राचीन कालसँ किएक बनल रहबाक संकेत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. स्वाभाविक भौगोलिक सीमा आ सांस्कृतिक एकताक कारण।
उत्तर: घ. स्वाभाविक भौगोलिक सीमा आ सांस्कृतिक एकताक कारण।
व्याख्या: नदी-पर्वतसँ बनल क्षेत्र राजनीतिक-सांस्कृतिक पहचान लेल अनुकूल रहल।

प्रश्न 8219. मिथिलाक सांस्कृतिक वैशिष्ट्य आजुओ किएक अक्षुण्ण कहल गेल?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. लोकभाषा, संस्कार, नदी-पूजा आ क्षेत्रीय स्मृति जीवित रहबाक कारण।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ख. लोकभाषा, संस्कार, नदी-पूजा आ क्षेत्रीय स्मृति जीवित रहबाक कारण।
व्याख्या: लेखमे आधुनिक बदलावक बीच सांस्कृतिक निरन्तरता देखाओल गेल।

प्रश्न 8220. कृषि-समाज मिथिलाक लोकजीवनमे कोन स्थान रखैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. लोकगीत, पाबनि, परिश्रम आ सामाजिक सम्बन्धक आधार।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. लोकगीत, पाबनि, परिश्रम आ सामाजिक सम्बन्धक आधार।
व्याख्या: खेती मिथिलामे केवल जीविका नहि, सामुदायिक संस्कारक स्रोत अछि।

प्रश्न 8221. माटि-पानि मिथिलाक पहिचानमे कोन प्रतीक बनैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. देश, संस्कृति आ लोक-आत्मीयताक प्रतीक।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. देश, संस्कृति आ लोक-आत्मीयताक प्रतीक।
व्याख्या: माटि-पानिक प्रति प्रेम मिथिलाक स्वाभाविक सांस्कृतिक संवेदना थिक।

प्रश्न 8222. मिथिलाक माटि-खेती खण्डक सार की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मिथिलाक खेती, नदी, माटि आ लोकसंस्कार एक-दोसरसँ अविच्छिन्न अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाक खेती, नदी, माटि आ लोकसंस्कार एक-दोसरसँ अविच्छिन्न अछि।
व्याख्या: भूगोल आ संस्कृति अलग नहि, मिथिलामे दुनू एके जीवन-सूत्रमे बन्हल अछि।

खण्ड ८२८ : विदेह-सदेह २ — मिथिलाक निवासी: परिभाषा आ समावेश

प्रश्न 8223. “मिथिलाक निवासी” शब्दक व्यापक अर्थ की अछि?

क. मिथिला क्षेत्रमे रहल सभ लोक, जाति-वर्णक भेदसँ पर।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

उत्तर: क. मिथिला क्षेत्रमे रहल सभ लोक, जाति-वर्णक भेदसँ पर।

व्याख्या: लेख स्पष्ट करैत अछि जे मिथिलामे बसनिहार प्रत्येक व्यक्ति मैथिल कहाबय योग्य अछि।

प्रश्न 8224. “मैथिल” शब्दकेँ केवल ब्राह्मण-बोधक मानब किएक सीमित दृष्टि अछि?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. किएक तँ मिथिला सभ निवासी आ विविध समुदायसँ बनल अछि।

उत्तर: घ. किएक तँ मिथिला सभ निवासी आ विविध समुदायसँ बनल अछि।

व्याख्या: लेख ब्राह्मण-प्रधान ऐतिहासिकता स्वीकार करैत सेहो मैथिल पहचानकेँ व्यापक मानैत अछि।

प्रश्न 8225. मिथिला-निवासी परिभाषामे जाति-वर्णसँ ऊपर कोन आधार प्रमुख अछि?

क. भौगोलिक निवास आ सांस्कृतिक सहभागिता।

ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: क. भौगोलिक निवास आ सांस्कृतिक सहभागिता।

व्याख्या: जातीय भेदक बावजूद क्षेत्रीय जीवन आ संस्कृति साझा पहचान बनबैत अछि।

प्रश्न 8226. धार्मिक क्षेत्रमे ब्राह्मण-प्रधानता किएक उल्लेखित अछि?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. मिथिलाक अध्यात्मिक आ पाण्डित्य परम्पराक ऐतिहासिक कारणे।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. मिथिलाक अध्यात्मिक आ पाण्डित्य परम्पराक ऐतिहासिक कारणे।

व्याख्या: लेख ब्राह्मण प्रभावकेँ ऐतिहासिक तथ्य रूपे देखैत अछि, सम्पूर्ण निवासी-परिभाषा नहि।

प्रश्न 8227. राजनीतिक प्रभावक प्रसंगमे ब्राह्मणक चर्चा किएक अछि?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. लाम समय धरि ब्राह्मण शासन-संरचनामे प्रभावी रहलाक कारण।

ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. लाम समय धरि ब्राह्मण शासन-संरचनामे प्रभावी रहलाक कारण।

व्याख्या: ई चर्चा मिथिलाक सामाजिक इतिहास बुझबाक अंग अछि।

प्रश्न 8228. मिथिलामे ब्राह्मणेतर समुदाय उल्लेख किएक आवश्यक अछि?

क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. मिथिलाक वास्तविक समाज विविध आ बहुजन अछि।

घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

उत्तर: ग. मिथिलाक वास्तविक समाज विविध आ बहुजन अछि।

व्याख्या: निवासीक विवेचनमे क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, कृषक, शिल्पी, मुसलमान आदि सभक उपस्थिति महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8229. लेखक सामन्तवादी युगक बाद की परिवर्तन संकेत करैत छथि?
क. सभ क्षेत्रमे विविध वर्ण-समुदायक महत्त्व बढ़ल।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. सभ क्षेत्रमे विविध वर्ण-समुदायक महत्त्व बढ़ल।
व्याख्या: समाजक शक्ति-संतुलन ऐतिहासिक कालक्रममे बदलैत रहल।

प्रश्न 8230. आधुनिक जनगणना-सन्दर्भ किएक उल्लेखित अछि?
क. मिथिलामे ब्राह्मणक संख्या तुलनात्मक रूपे कम देखेबाक लेल।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. मिथिलामे ब्राह्मणक संख्या तुलनात्मक रूपे कम देखेबाक लेल।
व्याख्या: संख्यात्मक आधार सामाजिक धारणा आ वास्तविकता बीच फर्क देखबैत अछि।

प्रश्न 8231. मिथिलाक निवासी-विवेचनक लोकतांत्रिक अर्थ की अछि?
क. मैथिल पहचान सभ क्षेत्र-निवासी समुदायकेँ समेटैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. मैथिल पहचान सभ क्षेत्र-निवासी समुदायकेँ समेटैत अछि।
व्याख्या: लेख क्षेत्रीय पहचानकेँ संकीर्ण जातीय परिभाषामे बाँधय नहि चाहैत।

प्रश्न 8232. एहि खण्डक मूल निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. मैथिल होयब मिथिलाक भूगोल, संस्कृति आ सामुदायिक जीवनसँ जुड़ल व्यापक पहचान अछि।
उत्तर: घ. मैथिल होयब मिथिलाक भूगोल, संस्कृति आ सामुदायिक जीवनसँ जुड़ल व्यापक पहचान अछि।
व्याख्या: ई परिभाषा मिथिलाकेँ समावेशी सांस्कृतिक प्रदेश रूपमे देखबैत अछि।

खण्ड ८२९ : विदेह-सदेह २ — मिथिलाक समुदाय, वर्ग आ सामाजिक विविधता

प्रश्न 8233. मिथिलामे ब्राह्मण अतिरिक्त के-के समुदाय बसैत छलाह कहल गेल?
क. क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, कायस्थ, मुसलमान, ईसाई आदि विविध समुदाय।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, कायस्थ, मुसलमान, ईसाई आदि विविध समुदाय।
व्याख्या: निवासी-विवेचन मिथिलाक बहुस्तरीय समाजिक बनावट देखबैत अछि।

प्रश्न 8234. मिथिलामे सैयद, पठान, मोमिन, शेख आदिक उल्लेख कोन बात सिद्ध करैत अछि?
क. मुस्लिम समुदायो मिथिलाक सामाजिक संरचनाक अंग रहल।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. मुस्लिम समुदायो मिथिलाक सामाजिक संरचनाक अंग रहल।
व्याख्या: मिथिला केवल एक जाति वा धर्मक क्षेत्र नहि, बहुधर्मी समाज थिक।

प्रश्न 8235. जमीन्दारी प्रसंगमे मिथिलाक समाजक कोन रूप देखाओल गेल?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ब्राह्मणेतर, राजपूत, यादव, भूमिहार आदि समुदायो जमीन्दार रहल।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ख. ब्राह्मणेतर, राजपूत, यादव, भूमिहार आदि समुदायो जमीन्दार रहल।
व्याख्या: भूमि-सत्ता अनेक समुदायमे रहल, यद्यपि असमानता तीव्र छल।

प्रश्न 8236. मिथिलामे दूटा मूल वर्ग कोन कहल गेल?
क. धनिक वर्ग आ गरीब वर्ग।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. धनिक वर्ग आ गरीब वर्ग।
व्याख्या: जाति-भेदक अतिरिक्त आर्थिक विभाजन सेहो समाजक केन्द्रीय यथार्थ अछि।

प्रश्न 8237. धनिक वर्गक विशेषता की कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. जाति किछुओ हो, धन आ अधिकारक कारण प्रभुत्वशाली होयब।
उत्तर: घ. जाति किछुओ हो, धन आ अधिकारक कारण प्रभुत्वशाली होयब।
व्याख्या: लेख वर्ग-संघर्षकेँ जाति-सीमा पार करैत देखैत अछि।

प्रश्न 8238. गरीब वर्गक स्थिति कोना चित्रित अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. पीड़ित, शोषित आ जीवन-जरूरतक अभावसँ घेरल।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. पीड़ित, शोषित आ जीवन-जरूरतक अभावसँ घेरल।
व्याख्या: गरीबक समस्या आर्थिक अन्याय आ सामाजिक शोषणसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 8239. उत्तर भारतक अकाल-पावस क्षेत्रक उल्लेख की बतबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. सामान्य लोकक भोजन-वस्त्रक कठिनाई।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सामान्य लोकक भोजन-वस्त्रक कठिनाई।
व्याख्या: पर्यावरणीय अस्थिरता गरीब वर्गक कष्ट बढ़बैत अछि।

प्रश्न 8240. निम्नवर्गीय सामाजिक श्रृंखलाक चर्चा किएक अछि?
क. शोषणक यंत्रणा नीचाँ धरि पहुँचबाक कारण।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. शोषणक यंत्रणा नीचाँ धरि पहुँचबाक कारण।
व्याख्या: लेख समाजक भीतर आर्थिक-सामाजिक दबाबक कठोर यथार्थ देखबैत अछि।

प्रश्न 8241. मिथिलाक सामाजिक विवेचनमे जाति आ वर्ग दुनू किएक आवश्यक अछि?
क. कारण समाजक यथार्थ जातीय विविधता आ आर्थिक असमानता दुनूसँ बनैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. कारण समाजक यथार्थ जातीय विविधता आ आर्थिक असमानता दुनूसँ बनैत अछि।
व्याख्या: केवल जाति वा केवल वर्गसँ मिथिलाक समाज पूरा नहि बुझाइत।

प्रश्न 8242. एहि खण्डक समेकित बोध की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. मिथिला विविध समुदाय, वर्ग-संघर्ष आ सांस्कृतिक सह-अस्तित्वक जटिल समाज अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मिथिला विविध समुदाय, वर्ग-संघर्ष आ सांस्कृतिक सह-अस्तित्वक जटिल समाज अछि।
व्याख्या: लेख मिथिलाकेँ सरल एकरेखीय समाज नहि, बहुआयामी सामाजिक संसार रूपमे देखैत अछि।

खण्ड ८३० : विदेह-सदेह २ — मिथिलाक उत्तर-पूर्वी समुदाय आ जनगणनाक संकेत

प्रश्न 8243. मिथिलाक उत्तर-पूर्वी सीमापर कोन प्रकारक जातीय समूहक उल्लेख अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. झुंडो-मंगोलॉइड प्रकृतिक धास/थारू सन समूह।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. झुंडो-मंगोलॉइड प्रकृतिक धास/थारू सन समूह।
व्याख्या: सीमाक्षेत्रमे विविध जातीय-मानवीय परम्पराक उपस्थिति देखाओल गेल।

प्रश्न 8244. सीमावर्ती समूहक रहन-सहन किएक पुरान कहल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओहि लोकनिक जीवन-पद्धति अत्यन्त प्राचीन परम्परासँ जुड़ल मानल गेल।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ख. ओहि लोकनिक जीवन-पद्धति अत्यन्त प्राचीन परम्परासँ जुड़ल मानल गेल।
व्याख्या: लेख सीमांत समुदायसभक सांस्कृतिक पुरातनता पर ध्यान दैत अछि।

प्रश्न 8245. शुद्ध-अशुद्ध दू तरहक लोकक उल्लेख कोन संदर्भमे अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. विविध जातीय-वंशीय मिश्रण आ स्थानीय वर्गीकरणक संदर्भमे।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. विविध जातीय-वंशीय मिश्रण आ स्थानीय वर्गीकरणक संदर्भमे।
व्याख्या: ई वर्गीकरण स्रोतक सामाजिक-जनगणनाक भाषा दर्शबैत अछि।

प्रश्न 8246. डोम, चमार, दुसाध, मुसहर आदि समूहक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. मिथिलाक जनसंख्या आ सामाजिक संरचनामे पिछड़ल समुदायसभक उपस्थिति बतबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाक जनसंख्या आ सामाजिक संरचनामे पिछड़ल समुदायसभक उपस्थिति बतबैत अछि।
व्याख्या: लेख केवल उच्चवर्गीय इतिहास नहि, जन-समुदायक सूची सेहो देत अछि।

प्रश्न 8247. यादव/गोप समूहक संख्या सम्बन्धी संकेत की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. मिथिलामे यादव सभसँ अग्रणी जनसमूहमे गनल गेल।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मिथिलामे यादव सभसँ अग्रणी जनसमूहमे गनल गेल।
व्याख्या: जनगणनात्मक विवेचन समाजक वास्तविक संरचना देखेबाक प्रयास अछि।

प्रश्न 8248. दुसाध, कोइरी, चमार, कुर्मी आदिक संख्या जोड़लासँ की अर्थ निकलैत अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. कृषि, श्रम आ सामाजिक आधार व्यापक बहुजन समुदायमे अछि।
उत्तर: घ. कृषि, श्रम आ सामाजिक आधार व्यापक बहुजन समुदायमे अछि।
व्याख्या: मिथिलाक जनजीवन केवल राजवंश वा पण्डित परम्परा पर आधारित नहि।

प्रश्न 8249. जातक ज्ञानक सूची देबाक उद्देश्य की अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मिथिलाक निवासी-विविधताकेँ दस्तावेजी रूप देब।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाक निवासी-विविधताकेँ दस्तावेजी रूप देब।
व्याख्या: लेख जातीय सूचीकेँ सामाजिक इतिहासक सामग्री रूपे प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 8250. जनगणना-आधारित विवेचन इतिहासमे की जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. संख्या, समुदाय आ क्षेत्रीय समाजक ठोस आधार।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. संख्या, समुदाय आ क्षेत्रीय समाजक ठोस आधार।
व्याख्या: इति-वृत्त मात्र नहि, सामाजिक संरचनाक प्रमाणिक संकेत भेटैत अछि।

प्रश्न 8251. सीमांत समुदाय आ कृषक-समूह साथमे देखेबासँ मिथिला कोना बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कृषि, सीमा, जातीय मिश्रण आ लोकसंस्कृतिक बहुस्तरीय प्रदेश रूपमे।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. कृषि, सीमा, जातीय मिश्रण आ लोकसंस्कृतिक बहुस्तरीय प्रदेश रूपमे।
व्याख्या: मिथिला केवल केन्द्रक सभ्यता नहि, सीमांतक लोकसमुदायसँ सेहो बनल अछि।

प्रश्न 8252. उत्तर-पूर्वी समुदाय आ जनगणना खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. मिथिलाक निवासी-विन्यास बहुजातीय, बहुस्तरीय आ ऐतिहासिक रूपे मिश्रित अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक निवासी-विन्यास बहुजातीय, बहुस्तरीय आ ऐतिहासिक रूपे मिश्रित अछि।
व्याख्या: जनगणना-संकेत मिथिलाक सामाजिक विविधता स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ८३१ : विदेह-सदेह २ — अमन कुमार झा: काठमाण्डूक संचार-विचार गोष्ठी

प्रश्न 8253. अमन कुमार झा काठमाण्डूसँ कोन घटना वर्णन करैत छथि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. तराई रिपोर्टर क्लबक संचार-विचार गोष्ठी।
उत्तर: घ. तराई रिपोर्टर क्लबक संचार-विचार गोष्ठी।
व्याख्या: लेख काठमाण्डूमे आयोजित संचार सम्बन्धी कार्यक्रमक प्रतिवेदन थिक।

प्रश्न 8254. विचार गोष्ठीक मूल विषय की छल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. संचार-सहकर्मी आ विकासक निमित्त संचार-सम्बन्ध।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. संचार-सहकर्मी आ विकासक निमित्त संचार-सम्बन्ध।
व्याख्या: कार्यक्रम संचारकर्मी, समाज आ विकास-प्रक्रियाक सम्बन्ध पर केन्द्रित रहल।

प्रश्न 8255. कार्यक्रममे तराई रिपोर्टर क्लबक भूमिका की छल?
क. आयोजक रूपमे।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. आयोजक रूपमे।
व्याख्या: तराई रिपोर्टर क्लबक आयोजनमे संचार-विषयक बहस भेल।

प्रश्न 8256. कार्यक्रमक अध्यक्षता केकरा द्वारा भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. क्लबक अध्यक्ष ई. कामेश्वर प्रसाद शाह।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. क्लबक अध्यक्ष ई. कामेश्वर प्रसाद शाह।
व्याख्या: प्रतिवेदनमे अध्यक्षक रूपमे हुनकर नाम देल गेल अछि।

प्रश्न 8257. यूनिमिसल टाइम्ससँ जुड़ल के अतिथि छलाह?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. सम्पादक श्री राम मनोहर पण्डित।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. सम्पादक श्री राम मनोहर पण्डित।
व्याख्या: कार्यक्रममे संचार-जगतक प्रतिनिधिक उपस्थिति देखाइत अछि।

प्रश्न 8258. प्रमुख अतिथिक रूपमे कोन डॉक्टरक उल्लेख अछि?
क. डा. एच. एन. टिटल।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. डा. एच. एन. टिटल।
व्याख्या: प्रतिवेदनमे डा. टिटल प्रमुख अतिथि रूपे आएल छलाह।

प्रश्न 8259. कार्यक्रममे सामाजिक आ मानवीय सम्बन्ध पर किएक जोर देल गेल?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. संचारकर्मकेँ समाजक उत्तरदायित्वसँ जोड़बाक लेल।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. संचारकर्मकेँ समाजक उत्तरदायित्वसँ जोड़बाक लेल।
व्याख्या: गोष्ठी संचारकेँ केवल समाचार प्रसारण नहि, सामाजिक सम्बन्धक माध्यम मानैत अछि।

प्रश्न 8260. वक्ता लोकनि संचार क्षेत्रक कोन विकृति उठौलनि?
क. अपराध आ मादक पदार्थ सम्बन्धी समस्या।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. अपराध आ मादक पदार्थ सम्बन्धी समस्या।
व्याख्या: प्रतिवेदनमे संचार क्षेत्रमे अपराध-मादक पदार्थक मुद्दा पर चिन्ता देखाओल गेल।

प्रश्न 8261. मैथिली साहित्यकार सन्तोष कुमार मिश्र झूट समाचारबारे की आग्रह कएलनि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. लेखक/पत्रकार लेल सजाय व्यवस्था होयबाक चाही।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. लेखक/पत्रकार लेल सजाय व्यवस्था होयबाक चाही।
व्याख्या: ई आग्रह समाचार-नैतिकता आ उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 8262. अमन कुमार झाक प्रतिवेदनक मुख्य महत्त्व की अछि?
क. मैथिली सार्वजनिकता मे संचार-नैतिकता आ विकास बहसकेँ दर्ज करब।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. मैथिली सार्वजनिकता मे संचार-नैतिकता आ विकास बहसकेँ दर्ज करब।
व्याख्या: काठमाण्डू गोष्ठी मैथिली/तराई संचार-जगतक सामाजिक भूमिका उजागर करैत अछि।

खण्ड ८३२ : विदेह-सदेह २ — संचार, विकास आ सामाजिक उत्तरदायित्व

प्रश्न 8263. संचार-सहकर्मीक चर्चा विकाससँ किएक जोड़ल गेल?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सामाजिक बदलावमे समाचारकर्मी आ माध्यमक भूमिका मानल गेल।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. सामाजिक बदलावमे समाचारकर्मी आ माध्यमक भूमिका मानल गेल।
व्याख्या: विकास केवल प्रशासनिक काज नहि, सूचना-सम्पर्क आ जनजागरणसँ सेहो जुड़ल अछि।

प्रश्न 8264. विचार गोष्ठीमे “सम्बन्ध” शब्दक अर्थ कोना खुलैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. संचारकर्मी, समाज, संस्था आ जनमानसक परस्पर भरोसा।
उत्तर: घ. संचारकर्मी, समाज, संस्था आ जनमानसक परस्पर भरोसा।
व्याख्या: कार्यक्रमक शीर्षक संचारकेँ सामाजिक सम्बन्धक आधार मानैत अछि।

प्रश्न 8265. झूट समाचारबारे सजाय-विचार कोन समस्या संकेत करैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. पत्रकारिता मे गैर-जिम्मेदार सूचना-प्रसारक खतरा।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. पत्रकारिता मे गैर-जिम्मेदार सूचना-प्रसारक खतरा।
व्याख्या: सत्यता आ उत्तरदायित्व बिनु संचार लोकहितक बदला क्षति करि सकैत अछि।

प्रश्न 8266. अपराध आ मादक पदार्थक मुद्दा संचार गोष्ठीमे किएक आयल?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. समाजक विकृति आ सूचना माध्यमक जागरूकता-कर्तव्य देखेबाक लेल।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. समाजक विकृति आ सूचना माध्यमक जागरूकता-कर्तव्य देखेबाक लेल।
व्याख्या: संचारकर्मीकेँ समाजक असुरक्षा आ अपराध-प्रवृत्तिपर सजग रहबाक बात उठल।

प्रश्न 8267. तराई-काठमाण्डू संदर्भमे संचारक विशेष अर्थ की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. सीमांत आवाजकेँ सार्वजनिक विमर्शमे आनब।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. सीमांत आवाजकेँ सार्वजनिक विमर्शमे आनब।
व्याख्या: तराईक मुद्दा राजधानीक मंचपर उठब संचारक प्रतिनिधिक शक्ति देखबैत अछि।

प्रश्न 8268. संचार-नैतिकता आ विकासक सम्बन्ध की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. विश्वसनीय सूचना विकासक आधार बनैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. विश्वसनीय सूचना विकासक आधार बनैत अछि।
व्याख्या: गलत सूचना लोकविश्वास तोड़ैत अछि, सत्य-संचार सामाजिक प्रगति मजबूत करैत अछि।

प्रश्न 8269. कार्यक्रममे मैथिली साहित्यकारक उपस्थिति किएक उल्लेखनीय अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. भाषा-साहित्य आ समाचार-जगतक संवाद देखेबाक लेल।
उत्तर: घ. भाषा-साहित्य आ समाचार-जगतक संवाद देखेबाक लेल।
व्याख्या: साहित्यकारक हस्तक्षेप संचारकेँ भाषिक-सांस्कृतिक जिम्मेवारीसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 8270. पत्रकारक सजगता ककरा प्रति होयबाक चाही?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. समाज, सत्य, पाठक आ सार्वजनिक हित प्रति।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. समाज, सत्य, पाठक आ सार्वजनिक हित प्रति।
व्याख्या: गोष्ठीक आशय संचारकर्मीकेँ नैतिक अनुशासनमे बाँधय चाहैत अछि।

प्रश्न 8271. संचार गोष्ठी मैथिली/तराई संसारमे कोन संकेत देत अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. भाषिक समाज अपन मीडिया-ढाँचा आ नैतिकता पर विचार करि रहल अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. भाषिक समाज अपन मीडिया-ढाँचा आ नैतिकता पर विचार करि रहल अछि।
व्याख्या: प्रतिवेदन संस्थागत बहसक शुरुआती दस्तावेज रूपे महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8272. संचार-विकास खण्डक मूल बोध की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. संचार सामाजिक उत्तरदायित्व, विकास आ सत्यनिष्ठाक संयुक्त क्षेत्र अछि।
उत्तर: घ. संचार सामाजिक उत्तरदायित्व, विकास आ सत्यनिष्ठाक संयुक्त क्षेत्र अछि।
व्याख्या: कार्यक्रमक चर्चा मीडिया-कर्मकेँ जनहितक कर्तव्य रूपमे रेखांकित करैत अछि।

खण्ड ८३३ : विदेह-सदेह २ — सुनिल मल्लिक: “सफल व्यक्ति”क आरम्भिक चित्र

प्रश्न 8273. “सफल व्यक्ति” लेखमे सुनिल मल्लिककेँ कोन रूपमे प्रस्तुत कएल गेल?
क. मिथिला ग्रामक तैयारीमे लागल सफल सांस्कृतिक व्यक्तित्व।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. मिथिला ग्रामक तैयारीमे लागल सफल सांस्कृतिक व्यक्तित्व।
व्याख्या: लेख सुनिलकेँ संगीत, व्यवसाय आ सांस्कृतिक स्वप्नसँ जुड़ल व्यक्तित्व बनबैत अछि।

प्रश्न 8274. लेखक सुनिल मल्लिकक प्रसंग कोन सांस्कृतिक कार्यक्रमसँ आरम्भ करैत छथि?
क. जानकी मन्दिरक प्राङ्गणमे भेल कार्यक्रमसँ।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. जानकी मन्दिरक प्राङ्गणमे भेल कार्यक्रमसँ।
व्याख्या: एक बालकक गायन आ दर्शकक प्रतिक्रिया सुनिलक स्मृतिक प्रवेश-द्वार बनैत अछि।

प्रश्न 8275. कार्यक्रममे बालकक गायनक प्रभाव की छल?
क. दर्शकक मन डोलि उठल।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. दर्शकक मन डोलि उठल।
व्याख्या: बालस्वरक मधुरता सुनिलक भविष्यक कलाकार व्यक्तित्वक संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 8276. लेखक स्पष्ट करैत छथि जे ई कथा की नहि अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. उपन्यास वा कथाक अंश नहि, सुनिल मल्लिकक जीवन-घटना अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. उपन्यास वा कथाक अंश नहि, सुनिल मल्लिकक जीवन-घटना अछि।
व्याख्या: लेख जीवनीपरक स्मृति आ तथ्यक आधार पर बनल अछि।

प्रश्न 8277. सुनिलक पिता के कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. कामेश्वर मल्लिक।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. कामेश्वर मल्लिक।
व्याख्या: लेखमे पिता कामेश्वर मल्लिकक मार्गदर्शनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 8278. सुनिलक मायक नाम की देल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुशीला मल्लिक।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. सुशीला मल्लिक।
व्याख्या: माता-पिता परिचय सुनिलक पारिवारिक पृष्ठभूमि बतबैत अछि।

प्रश्न 8279. सुनिल परिवारमे कोन स्थान रखैत छथि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. जेठ पुत्र।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. जेठ पुत्र।
व्याख्या: लेख सुनिलकेँ परिवारक जेठ सन्तान रूपे चिन्हैत अछि।

प्रश्न 8280. सुनिलक व्यक्तित्वमे पिता केर कोन प्रभाव देखाओल गेल?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. मार्गदर्शन आ सांगीतिक प्रेरणा।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मार्गदर्शन आ सांगीतिक प्रेरणा।
व्याख्या: पिता कामेश्वर मल्लिकक संगीत-परम्परा सुनिलक विकासमे आधार बनल।

प्रश्न 8281. बाल्यकालक गायन-घटना सुनिलक जीवनमे कोन संकेत अछि?
क. कलात्मक प्रतिभाक आरम्भिक पहिचान।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. कलात्मक प्रतिभाक आरम्भिक पहिचान।
व्याख्या: बचपनसँ गीत-संगीतमे हुनकर झुकाव स्पष्ट भेल।

प्रश्न 8282. एहि आरम्भिक खण्डक सार की अछि?
क. सुनिल मल्लिकक सफलता बाल्य-संगीत, परिवार आ लोक-मंचसँ उगैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. सुनिल मल्लिकक सफलता बाल्य-संगीत, परिवार आ लोक-मंचसँ उगैत अछि।
व्याख्या: लेख सुनिलक व्यक्तित्वकेँ जनकपुरक सांस्कृतिक धरातल पर स्थापित करैत अछि।

खण्ड ८३४ : विदेह-सदेह २ — सुनिल मल्लिक: संगीत-यात्रा आ प्रशिक्षण

प्रश्न 8283. सुनिल मल्लिक कतबा उमेरसँ संगीत दिस लागल कहल गेल?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. सात कक्षा पढ़ैत समयसँ, कम उमेरमे।

उत्तर: घ. सात कक्षा पढ़ैत समयसँ, कम उमेरमे।

व्याख्या: लेख बतबैत अछि जे बाल्यकालहि सँ ओ म्युजिक धुन बनबैत आ मंचपर गाबैत छलाह।

प्रश्न 8284. सुनिलक पहिल बड़ मंच-क्षण कोन रूपमे स्मरण अछि?

क. महोनरीक सुगामे कृष्णाष्टमीक कार्यक्रम।

ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

उत्तर: क. महोनरीक सुगामे कृष्णाष्टमीक कार्यक्रम।

व्याख्या: गामक कार्यक्रममे मधुर गीतक बाद दर्शकक प्रशंसा हुनकर प्रतिभा पहिचानलक।

प्रश्न 8285. सुनिल मल्लिकक गायन-रूपमे कोन विशेषता कहल गेल?

क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ख. सुमधुर स्वर, गीत-संयोजन आ भावपूर्ण प्रस्तुति।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

उत्तर: ख. सुमधुर स्वर, गीत-संयोजन आ भावपूर्ण प्रस्तुति।

व्याख्या: लेखक हुनकर आवाज आ संगीतिक संयोजन दुनू पर बल दैत छथि।

प्रश्न 8286. सुनिलक पिता स्वयं कोन रूपमे चिन्हल गेलाह?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

घ. बढ़िया गायक।

उत्तर: घ. बढ़िया गायक।

व्याख्या: कामेश्वर मल्लिकक संगीत-संस्कार सुनिलक पारिवारिक आधार बनल।

प्रश्न 8287. सुनिलक बहिन आ सन्तानसभक सम्बन्ध संगीतसँ कोना अछि?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. परिवारक सदस्य सेहो गीत गबैत छथि।

ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. परिवारक सदस्य सेहो गीत गबैत छथि।

व्याख्या: लेख सुनिलक परिवारमे संगीतक परम्परा निरन्तर रहल बतबैत अछि।

प्रश्न 8288. सुनिलक लोकप्रिय गीतसभमे कोन भाव प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

घ. घर-घरक गीत, आशिष, लोकधुन आ मैथिली भाव।

उत्तर: घ. घर-घरक गीत, आशिष, लोकधुन आ मैथिली भाव।

व्याख्या: गीत-सूची हुनकर लोकाभिमुख रचनात्मकता देखबैत अछि।

प्रश्न 8289. सुनिल केवल गायक नहि किएक कहल जाए?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ओ गीतकार, संगीतकार, प्रशिक्षक आ आयोजक सेहो छथि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. ओ गीतकार, संगीतकार, प्रशिक्षक आ आयोजक सेहो छथि।
व्याख्या: लेख हुनकर बहुआयामी सांगीतिक व्यक्तित्व रेखांकित करैत अछि।

प्रश्न 8290. धनुषा प्रमुख प्रशिक्षण-प्रसंग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. संगीत क्षेत्रमे आगू बढ़बाक संस्थागत प्रशिक्षणक आधार।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. संगीत क्षेत्रमे आगू बढ़बाक संस्थागत प्रशिक्षणक आधार।
व्याख्या: एक दिस स्वाभाविक प्रतिभा, दोसर दिस प्रशिक्षण—दुनू सुनिलक विकास बनबैत अछि।

प्रश्न 8291. सुनिल कोन-कोन जिलामे प्रशिक्षण देबाक संदर्भमे जोड़ल गेलाह?
क. धनुषा, महोत्तरी, सिरहा, सर्लाही, सिन्धुली आदि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. धनुषा, महोत्तरी, सिरहा, सर्लाही, सिन्धुली आदि।
व्याख्या: हुनकर काम जनकपुर केन्द्रसँ बाहर व्यापक क्षेत्रमे फैलल।

प्रश्न 8292. सुनिल मल्लिकक संगीत-यात्रा खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. सुनिल मल्लिक लोकप्रतिभासँ प्रशिक्षक आ सांगीतिक संस्थापक व्यक्तित्व धरि बढ़लाह।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. सुनिल मल्लिक लोकप्रतिभासँ प्रशिक्षक आ सांगीतिक संस्थापक व्यक्तित्व धरि बढ़लाह।
व्याख्या: बाल-गायनसँ आरम्भ भेल यात्रा लोकसंगीतक सेवा धरि पहुँचैत अछि।

खण्ड ८३५ : विदेह-सदेह २ — सुनिल मल्लिक: व्यवसाय, रिकॉर्डिङ्ग आ “मिथिला ग्राम”

प्रश्न 8293. सुनिल मल्लिक संगीतक संग कोन व्यवसाय करैत छथि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जनकपुर क्याम्पस चौक लग विज्ञान-सामान विक्री केन्द्र।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. जनकपुर क्याम्पस चौक लग विज्ञान-सामान विक्री केन्द्र।
व्याख्या: लेख हुनकर व्यवसायिक जीवन आ सांस्कृतिक जीवनक संग-साथ देखबैत अछि।

प्रश्न 8294. नव व्यवसाय स्वीकार करबाक सम्बन्धमे सुनिलक दृष्टि की कहल गेल?
क. चुनौती स्वीकार करब आ अवसर बनाउब।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. चुनौती स्वीकार करब आ अवसर बनाउब।
व्याख्या: व्यवसायमे हुनकर सक्रियता सफलता-पहिचानक दोसर पक्ष अछि।

प्रश्न 8295. गीत रिकॉर्डिङ्ग स्टुडियोबारे सुनिलक सोच की छल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. स्वतन्त्र स्टुडियो बनाक मैथिली संगीत उत्पादनकेँ बढ़ेबाक।
उत्तर: घ. स्वतन्त्र स्टुडियो बनाक मैथिली संगीत उत्पादनकेँ बढ़ेबाक।
व्याख्या: ओ तैयारी शुरू करि देने छलाह आ निमार्ण-योजनामे सक्रिय छलाह।

प्रश्न 8296. सुनिलक रचना-क्षेत्रमे “निमार्ण” शब्द कोन अर्थ रखैत अछि?
क. गीत, संगीत, संस्था आ सांस्कृतिक ढाँचा बनाबय।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. गीत, संगीत, संस्था आ सांस्कृतिक ढाँचा बनाबय।
व्याख्या: लेख हुनकर कामकेँ केवल प्रस्तुति नहि, निर्माणात्मक सांस्कृतिक कर्म मानैत अछि।

प्रश्न 8297. “मिथिला ग्राम” योजना कोन स्वप्नसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. मैथिली सांस्कृतिक केन्द्र बनाबयक स्वप्न।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. मैथिली सांस्कृतिक केन्द्र बनाबयक स्वप्न।
व्याख्या: लेखमे मिथिला ग्रामकेँ भविष्यक सांस्कृतिक स्थान रूपे देखाओल गेल।

प्रश्न 8298. मिथिला ग्राममे नाटकघरक कल्पना किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. रंगकर्मकेँ स्थायी मंच देबाक लेल।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. रंगकर्मकेँ स्थायी मंच देबाक लेल।
व्याख्या: नाटकघर मैथिली नाट्य-संस्कृतिक संस्थागत आधार बनि सकैत अछि।

प्रश्न 8299. मिथिला ग्राममे मैथिली संग्रहालयक आवश्यकता किएक कहल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. इतिहास, साहित्य, कला आ लोकवस्तु संरक्षित करबाक लेल।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. इतिहास, साहित्य, कला आ लोकवस्तु संरक्षित करबाक लेल।
व्याख्या: संग्रहालय सांस्कृतिक स्मृति बचाबयक साधन रूपमे सोचल गेल।

प्रश्न 8300. मिथिला ग्राममे मिथिलाक प्रमुख भोजन भेटबाक बातक अर्थ की अछि?
क. सांस्कृतिक अनुभवकेँ भाषा-संगीतसँ बाहर खान-पान धरि विस्तार देब।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. सांस्कृतिक अनुभवकेँ भाषा-संगीतसँ बाहर खान-पान धरि विस्तार देब।
व्याख्या: संस्कृति केवल कला नहि, भोजन, व्यवहार, स्मृति आ जीवन-शैली सेहो अछि।

प्रश्न 8301. सुनिल परामर्श देबाक प्रसंगमे कोना देखाइत छथि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. विभिन्न क्षेत्रक व्यक्ति संग सल्लाह करैत दूरदर्शी योजनाकार।
उत्तर: घ. विभिन्न क्षेत्रक व्यक्ति संग सल्लाह करैत दूरदर्शी योजनाकार।
व्याख्या: लेख हुनकर सामुदायिक सलाह-प्रक्रिया आ समावेशी योजना पर बल दैत अछि।

प्रश्न 8302. एहि खण्डक मुख्य बोध की अछि?
क. सुनिल मल्लिक संगीतकारसँ आगाँ बढ़ि मिथिलाक सांस्कृतिक संस्थान-निर्माणक स्वप्न देखैत छथि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. सुनिल मल्लिक संगीतकारसँ आगाँ बढ़ि मिथिलाक सांस्कृतिक संस्थान-निर्माणक स्वप्न देखैत छथि।
व्याख्या: व्यवसाय, रिकॉर्डिङ्ग आ मिथिला ग्राम—तीनू हुनकर बहुआयामी सफलताक संकेत अछि।

खण्ड ८३६ : विदेह-सदेह २ — सुजीतकुमार झा: छठम शताब्दीक लोकनायक वृत्तचित्र

प्रश्न 8303. सुजीतकुमार झाक लेखक विषय की अछि?
क. छठम शताब्दीक लोकनायक पर बनल वृत्तचित्र।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. छठम शताब्दीक लोकनायक पर बनल वृत्तचित्र।
व्याख्या: लेख मिथिलाक ऐतिहासिक-लोकनायककेँ दृश्य माध्यमसँ स्मरण करबाक प्रयास बतबैत अछि।

प्रश्न 8304. लेखमे लोकनायकक नाम कोन रूपमे उभरैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. सलहेस।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. सलहेस।
व्याख्या: वृत्तचित्र सलहेसक जीवन, योगदान आ मिथिलाक रक्षा-स्मृतिसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 8305. लेखकक अनुसार छठम शताब्दीमे मिथिलामे कोन संकट बढ़ल?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. विदेशी आ मुगलनी आक्रमण।
उत्तर: घ. विदेशी आ मुगलनी आक्रमण।
व्याख्या: ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे बाहरी आक्रमण आ सीमाक रक्षा प्रमुख विषय अछि।

प्रश्न 8306. उत्तर क्षेत्रमे कोन प्रकारक आक्रमणक चर्चा अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. निलम/किरांती आक्रमणक।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. निलम/किरांती आक्रमणक।
व्याख्या: लेख उत्तरी सीमासँ आएल दबाबकेँ सलहेसक संघर्षसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 8307. सलहेसक कथाक मूल रूप की कहल गेल?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. मलदेश किरांती सब संग समन्वय करि संयुक्त सेना बनौने।
उत्तर: घ. मलदेश किरांती सब संग समन्वय करि संयुक्त सेना बनौने।
व्याख्या: लोककथामे सलहेस युद्धकुशलता आ संगठन-शक्ति बला लोकनायक रूपमे देखाइत छथि।

प्रश्न 8308. देशक सीमा बचेबाक प्रसंगमे सलहेस कोना प्रस्तुत छथि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. कुशलतापूर्वक लड़ि सीमा-सुरक्षा करनिहार।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. कुशलतापूर्वक लड़ि सीमा-सुरक्षा करनिहार।
व्याख्या: वृत्तचित्र इतिहास-समेत स्मरणमे सलहेस रक्षक-नायक बनि उभरैत छथि।

प्रश्न 8309. वृत्तचित्रक सामाजिक उद्देश्य की अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. आम जनतार्कें मिथिलालोकक वीर योगदान स्मरण कराउब।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. आम जनतार्कें मिथिलालोकक वीर योगदान स्मरण कराउब।
व्याख्या: दृश्य माध्यम लोकइतिहासकेँ नब पीढ़ी धरि पहुँचाबयक साधन बनैत अछि।

प्रश्न 8310. लेखमे सलहेस केवल मिथिलावासी नहि, केना कहल गेल?
क. देश रक्षा करनिहार व्यापक लोकनायक।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. देश रक्षा करनिहार व्यापक लोकनायक।
व्याख्या: ओ लोकगीत-गाथामे सीमित न रहि ऐतिहासिक स्मृतिक नायक बनैत छथि।

प्रश्न 8311. वृत्तचित्र सम्बन्धी लेखकक दृष्टि कोन अछि?
क. भूला पड़ल इतिहासकेँ पुनः सार्वजनिक स्मृतिमे आनब।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. भूला पड़ल इतिहासकेँ पुनः सार्वजनिक स्मृतिमे आनब।
व्याख्या: लेख दृश्य माध्यमक उपयोग लोकइतिहास संरक्षण लेल करैत अछि।

प्रश्न 8312. छठम शताब्दीक लोकनायक वृत्तचित्र खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. सलहेस-वृत्तचित्र मिथिलाक लोकनायक परम्परा आ ऐतिहासिक चेतनार्कें जागृत करैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. सलहेस-वृत्तचित्र मिथिलाक लोकनायक परम्परा आ ऐतिहासिक चेतनार्कें जागृत करैत अछि।
व्याख्या: सुजीतकुमार झा एहि प्रसंगकेँ सांस्कृतिक स्मृति-रक्षा रूपमे देखबैत छथि।

खण्ड ८३७ : विदेह-सदेह २ — सलहेस: इतिहास, सीमा-रक्षा आ समाज-व्यवस्था

प्रश्न 8313. लेखमे सलहेसक जन्म-समय कोना संकेतित अछि?

क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ख. छठम-सातम शताब्दीक मिथिलाक महिसोथा क्षेत्रसँ।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

उत्तर: ख. छठम-सातम शताब्दीक मिथिलाक महिसोथा क्षेत्रसँ।

व्याख्या: सलहेसक कथा मध्यकालीन आरम्भिक मिथिला-इतिहासक लोकस्मृतिसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 8314. सलहेसक जन्मक समय मिथिलामे की फैलल छल कहल गेल?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक आ राजनीतिक अराजकता।

घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक आ राजनीतिक अराजकता।

व्याख्या: छोट-छोट गाम आ सत्ता-खण्डमे बिखरल समाजक चित्र भेटैत अछि।

प्रश्न 8315. सलहेसक सामाजिक भूमिका की बताओल गेल?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सामन्त-विरोधी शक्ति निर्माण आ जन-संगठन।

ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

उत्तर: ख. सामन्त-विरोधी शक्ति निर्माण आ जन-संगठन।

व्याख्या: ओ केवल योद्धा नहि, लोकसमाजक संरक्षक आ संयोजक रूपमे देखाइत छथि।

प्रश्न 8316. सलहेसक राज्य-स्थापनाक लक्ष्य की छल?

क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ग. सुरक्षित, संगठित आ न्यायपूर्ण समाजक निर्माण।

घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

उत्तर: ग. सुरक्षित, संगठित आ न्यायपूर्ण समाजक निर्माण।

व्याख्या: लेखक हुनकर संघर्षकेँ केवल सैन्य विजय नहि, जनहितक शासन-दृष्टिसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 8317. सलहेसक शासन-सीमा कोना वर्णित अछि?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. पूर्वमे कोशी, पश्चिममे गण्डकी, उत्तरमे चुरे पर्वत, दक्षिणमे गंगाधरि।

ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. पूर्वमे कोशी, पश्चिममे गण्डकी, उत्तरमे चुरे पर्वत, दक्षिणमे गंगाधरि।

व्याख्या: ई वर्णन लोकस्मृतिमे विशाल मिथिला-क्षेत्रक रक्षा-कल्पना देखबैत अछि।

प्रश्न 8318. बाहरी आक्रमणकारीसँ सलहेस कोना लड़े कहल गेल?

क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

घ. कुशल युद्धकला आ अनुशासित सैनिक-संगठनसँ।

उत्तर: घ. कुशल युद्धकला आ अनुशासित सैनिक-संगठनसँ।

व्याख्या: लेख सलहेसक युद्धकौशल आ नेतृत्व दुनू पर बल दैत अछि।

प्रश्न 8319. आम जनताक जीविकाबारे सलहेसक व्यवस्था की कहल गेल?
क. कृषि, पशुपालन आ प्राकृतिक स्रोत-साधन धरि पहुँच सुनिश्चित कएलनि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. कृषि, पशुपालन आ प्राकृतिक स्रोत-साधन धरि पहुँच सुनिश्चित कएलनि।
व्याख्या: लोकनायकक अर्थ लोक-जीवनक आधार सुरक्षित करब सेहो अछि।

प्रश्न 8320. किरांती सम्बन्धक प्रसंग कोन भाव देत अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. संघर्षक संग समन्वय आ सीमाक रक्षा दुनू।
उत्तर: घ. संघर्षक संग समन्वय आ सीमाक रक्षा दुनू।
व्याख्या: सलहेसक कथा विरोधी शक्तिसँ लड़ेब आ सामरिक समन्वय दुनूक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 8321. सलहेसक स्मृति लोकमे किएक टिकैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. किएक तँ ओ न्याय, रक्षा आ लोकजीवनक आधारक प्रतीक छथि।
उत्तर: घ. किएक तँ ओ न्याय, रक्षा आ लोकजीवनक आधारक प्रतीक छथि।
व्याख्या: लोककथा नायककेँ इतिहास आ सामुदायिक आकांक्षाक संग जोड़ैत अछि।

प्रश्न 8322. सलहेस इतिहास-सीमा रक्षा खण्डक मूल बोध की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सलहेस मिथिलाक रक्षा, संगठन आ लोक-न्यायक बहुआयामी प्रतीक छथि।
उत्तर: घ. सलहेस मिथिलाक रक्षा, संगठन आ लोक-न्यायक बहुआयामी प्रतीक छथि।
व्याख्या: लेख हुनका लोकनायकसँ इतिहास-संकेत धरि विस्तृत करैत अछि।

खण्ड ८३८ : विदेह-सदेह २ — सलहेस-वृत्तचित्र: निर्माण आ सार्वजनिक स्मृति

प्रश्न 8323. सलहेस-वृत्तचित्रक अवधि कतबा कहल गेल?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चौबीस मिनट।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. चौबीस मिनट।
व्याख्या: लेखमे २४ मिनटक वृत्तचित्रक उल्लेख अछि, जे संक्षिप्त मुदा स्मृति-प्रधान प्रस्तुति अछि।

प्रश्न 8324. वृत्तचित्रक निर्माता/निर्देशक प्रसंगमे कोन नाम प्रमुख अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. रमेश रंजन झा।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. रमेश रंजन झा।
व्याख्या: वृत्तचित्रक लेखन-निर्देशन-संबंधी उल्लेखमे रमेश रंजन झाक नाम देल गेल।

प्रश्न 8325. वृत्तचित्र आम जनताक लेल की करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. सलहेसक योगदान आ देश-रक्षाक कथा स्मरण करबैत अछि।
उत्तर: घ. सलहेसक योगदान आ देश-रक्षाक कथा स्मरण करबैत अछि।
व्याख्या: दृश्य माध्यम कठिन इतिहासकेँ जन-सुलभ बनबैत अछि।

प्रश्न 8326. वृत्तचित्रमे सलहेसक व्यक्तित्व कोना उभरैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. युद्धनायक, समाज-संगठक आ लोकन्यायक रक्षक रूपमे।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. युद्धनायक, समाज-संगठक आ लोकन्यायक रक्षक रूपमे।
व्याख्या: वृत्तचित्रक विषय सलहेसक बहुआयामी लोकनायकत्व अछि।

प्रश्न 8327. लेखक एहन वृत्तचित्रक आवश्यकता किएक मानैत छथि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ओझरायल लोकइतिहासकेँ पुनः सार्वजनिक करबाक लेल।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. ओझरायल लोकइतिहासकेँ पुनः सार्वजनिक करबाक लेल।
व्याख्या: भाषा आ क्षेत्रक इतिहास जखन विस्मृत होइत अछि, दृश्य दस्तावेज स्मृति जाग्रत करैत अछि।

प्रश्न 8328. मिथिलाक लोकनायक पर वृत्तचित्र बनब कोन सांस्कृतिक कर्म अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. लोकगाथाकेँ आधुनिक माध्यममे रूपान्तरित करब।
उत्तर: घ. लोकगाथाकेँ आधुनिक माध्यममे रूपान्तरित करब।
व्याख्या: वृत्तचित्र लोक-परम्पराकेँ फिल्मी/दृश्य अभिलेखमे बदलबैत अछि।

प्रश्न 8329. सलहेसक कथा युवा पीढ़ी लेल किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. इतिहास, साहस आ क्षेत्रीय आत्मगौरवक बोध देबाक लेल।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. इतिहास, साहस आ क्षेत्रीय आत्मगौरवक बोध देबाक लेल।
व्याख्या: लोकनायकक स्मृति नब पीढ़ीमे सांस्कृतिक आत्मविश्वास जगबैत अछि।

प्रश्न 8330. वृत्तचित्र मिथिला-इतिहासक कोन कमी पूरा करबाक प्रयास अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जन-नायक सभक दस्तावेजीकरणक कमी।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ख. जन-नायक सभक दस्तावेजीकरणक कमी।
व्याख्या: राजवंश-केन्द्रित इतिहाससँ हटि लोकनायकक कथा दर्ज करब जरूरी मानल गेल।

प्रश्न 8331. सलहेस-वृत्तचित्र लोकआन्दोलनक संकेत किएक बनैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ओ क्षेत्रीय इतिहासकेँ आम लोकक स्मृति आ अधिकारसँ जोड़ैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. ओ क्षेत्रीय इतिहासकेँ आम लोकक स्मृति आ अधिकारसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: लोकनायक पर काज समाजकेँ अपन इतिहास प्रति सजग करैत अछि।

प्रश्न 8332. सलहेस-वृत्तचित्र निर्माण खण्डक सार की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सलहेस-वृत्तचित्र लोकइतिहास, दृश्य-संरक्षण आ मिथिला-स्वाभिमानक संगम अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. सलहेस-वृत्तचित्र लोकइतिहास, दृश्य-संरक्षण आ मिथिला-स्वाभिमानक संगम अछि।
व्याख्या: सुजीतकुमार झाक प्रस्तुति नायक-स्मृति आ आधुनिक माध्यमक जोड़ देखबैत अछि।

खण्ड ८३९ : विदेह-सदेह २ — भूगोलसँ संचार धरि: सादेह २क आधुनिक पुल

प्रश्न 8333. मिथिलाक भूगोल आ संचार-विचार गोष्ठी साथमे पढ़लासँ की समझ बनैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. प्रदेशक पहचान माटि-नदी सँ शुरू भऽ आधुनिक माध्यम धरि बढ़ैत अछि।
उत्तर: घ. प्रदेशक पहचान माटि-नदी सँ शुरू भऽ आधुनिक माध्यम धरि बढ़ैत अछि।
व्याख्या: सदेह २ इतिहास आ वर्तमानकेँ एके सांस्कृतिक प्रवाहमे राखैत अछि।

प्रश्न 8334. भौगोलिक सीमा-विवेचन आ निवासी-विवेचनमे कोन साझा प्रश्न अछि?
क. “मिथिला” केना बनैत अछि आ “मैथिल” के कहल जाए।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. “मिथिला” केना बनैत अछि आ “मैथिल” के कहल जाए।
व्याख्या: दुनू लेख क्षेत्र आ मनुष्यक परिभाषा पुनः विचार करबैत अछि।

प्रश्न 8335. संचार गोष्ठी एहि भूगोल-विवेचनमे कोन आधुनिक आयाम जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. सूचना, जनसरोकार आ नैतिक पत्रकारिताक आयाम।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. सूचना, जनसरोकार आ नैतिक पत्रकारिताक आयाम।
व्याख्या: मिथिला केवल अतीत नहि, आधुनिक माध्यमक सक्रिय सार्वजनिक क्षेत्र सेहो अछि।

प्रश्न 8336. सुनिल मल्लिकक “मिथिला ग्राम” योजना भूगोल-विवेचनसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. संस्कृतिकेँ स्थान, संस्था आ अनुभवमे बदलबाक इच्छा।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. संस्कृतिकेँ स्थान, संस्था आ अनुभवमे बदलबाक इच्छा।
व्याख्या: भौगोलिक मिथिला सांस्कृतिक केन्द्रक रूपमे पुनः निर्मित होयबाक स्वप्न देखाइत अछि।

प्रश्न 8337. सलहेस-वृत्तचित्र एहि क्रममे कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. लोकइतिहासकेँ दृश्य माध्यममे जीवित करैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. लोकइतिहासकेँ दृश्य माध्यममे जीवित करैत अछि।
व्याख्या: भूगोल, लोकनायक आ आधुनिक दृश्य-संचार एकत्र भेटैत अछि।

प्रश्न 8338. मिथिलाक निवासी-विविधता आ संचार-नैतिकता बीच की सम्बन्ध अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. बहुजन समाजमे जिम्मेदार संचार अनिवार्य अछि।
उत्तर: घ. बहुजन समाजमे जिम्मेदार संचार अनिवार्य अछि।
व्याख्या: विविध समुदायबला समाजमे सत्यनिष्ठ माध्यम सामाजिक संवादक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 8339. संगीत-प्रशिक्षण आ मिथिला ग्राम की दर्शबैत अछि?
क. संस्कृति केवल स्मृति नहि, संस्थागत अभ्यास सेहो चाहैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. संस्कृति केवल स्मृति नहि, संस्थागत अभ्यास सेहो चाहैत अछि।
व्याख्या: सुनिल मल्लिकक उदाहरण कला-संरक्षणक व्यावहारिक रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 8340. भूगोल, समाज, मीडिया आ लोकनायकक सामग्री एकत्र किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. मिथिलाक बहुमुखी आत्मपरिचय बनाबय लेल।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक बहुमुखी आत्मपरिचय बनाबय लेल।
व्याख्या: सदेह २ मिथिलाकेँ एकरेखीय नहि, अनेक परतबला संसार रूपमे देखबैत अछि।

प्रश्न 8341. एहि पुल-खण्डक अध्ययनक मुख्य लाभ की अछि?
क. पुरान स्रोत आ वर्तमान काजक बीच सम्बन्ध बुझाइत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. पुरान स्रोत आ वर्तमान काजक बीच सम्बन्ध बुझाइत अछि।
व्याख्या: इतिहास आ आजुक रचनात्मक कर्म एक-दोसरकेँ अर्थ देत अछि।

प्रश्न 8342. भूगोलसँ संचार धरि पुल-खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. सदेह २ मिथिलाक अतीत, निवासी, संचार, संगीत आ लोकस्मृति बीच सेतु बनबैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: क. सदेह २ मिथिलाक अतीत, निवासी, संचार, संगीत आ लोकस्मृति बीच सेतु बनबैत अछि।
व्याख्या: एके संग्रहमे क्षेत्र, समाज आ आधुनिक संस्कृति सभक गहन सम्बन्ध उभरैत अछि।

खण्ड ८४० : विदेह-सदेह २ — मिथिला-निवासी आ सांस्कृतिक नागरिकता

प्रश्न 8343. मिथिला-निवासी विवेचन “सांस्कृतिक नागरिकता”क प्रश्न कोना उठबैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. जन्म, निवास, भाषा, संस्कृति आ सहभागिता सभकेँ पहचानक आधार मानि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. जन्म, निवास, भाषा, संस्कृति आ सहभागिता सभकेँ पहचानक आधार मानि।
व्याख्या: मैथिलता केवल जाति-नाम नहि, सांस्कृतिक सहभागिताक प्रक्रिया अछि।

प्रश्न 8344. मिथिला-निवासीक व्यापक परिभाषा आधुनिक समयमे किएक उपयोगी अछि?
क. प्रवास, विविधता आ साझा भाषा-संस्कृति बचाबय लेल।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. प्रवास, विविधता आ साझा भाषा-संस्कृति बचाबय लेल।
व्याख्या: सीमित जातीय परिभाषा आधुनिक मिथिलाक बहुसांस्कृतिक रूपकेँ समेटि नहि सकैत।

प्रश्न 8345. जनजातीय आ पिछड़ल समुदाय उल्लेख आधुनिक अध्ययन लेल किएक जरूरी अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. इतिहासमे हाशिया पर रहल लोककेँ केन्द्रमे आनबाक लेल।
उत्तर: घ. इतिहासमे हाशिया पर रहल लोककेँ केन्द्रमे आनबाक लेल।
व्याख्या: मिथिलाक संपूर्ण इतिहास ओहिना बनेत जे सभ समुदाय देखल जाए।

प्रश्न 8346. धनिक-गरीब वर्ग-विभाजनक उल्लेख कोन चेतना जगबैत अछि?
क. सामाजिक न्याय आ आर्थिक असमानताक चेतना।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. सामाजिक न्याय आ आर्थिक असमानताक चेतना।
व्याख्या: मिथिलाक गौरवक संग ओकर वर्गीय पीड़ा सेहो देखबाक चाही।

प्रश्न 8347. नदी-भूमि-निवासी सम्बन्धक आधुनिक अर्थ की अछि?
क. पर्यावरण आ समाजक परस्पर निर्भरता।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. पर्यावरण आ समाजक परस्पर निर्भरता।
व्याख्या: बाढ़ि, खेती आ प्रवास आजुक विकास प्रश्नसभसँ सेहो जुड़ल अछि।

प्रश्न 8348. मैथिल पहचानमे भाषा किएक अनिवार्य तत्व अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. भाषा लोकस्मृति, गीत, संवाद आ सामुदायिक भावना जोड़ैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. भाषा लोकस्मृति, गीत, संवाद आ सामुदायिक भावना जोड़ैत अछि।
व्याख्या: मिथिला-निवासी विवेचन अप्रत्यक्ष रूपे भाषिक एकता पर बल दैत अछि।

प्रश्न 8349. संचार माध्यम सांस्कृतिक नागरिकतामे की भूमिका रखैत अछि?
क. विविध आवाजकेँ जोड़ि सार्वजनिक मंच बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. विविध आवाजकेँ जोड़ि सार्वजनिक मंच बनबैत अछि।
व्याख्या: अमन कुमार झाक प्रतिवेदन संचारकेँ समाजक सक्रिय घटक मानैत अछि।

प्रश्न 8350. संगीत आ लोकनायक स्मृति मिथिला-निवासी भावकेँ कोना मजबूत करैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोकधुन आ वीरगाथा साझा भावनात्मक विरासत बनबैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ख. लोकधुन आ वीरगाथा साझा भावनात्मक विरासत बनबैत अछि।
व्याख्या: सुनिल आ सलहेस प्रसंग सांस्कृतिक आत्मीयता बढ़बैत अछि।

प्रश्न 8351. सांस्कृतिक नागरिकता केवल अधिकार किएक नहि?
क. ओ जिम्मेवारी, संरक्षण आ सक्रिय भागीदारी सेहो माँगैत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. ओ जिम्मेवारी, संरक्षण आ सक्रिय भागीदारी सेहो माँगैत अछि।
व्याख्या: मैथिलता बचाबय लेल भाषा, कला, इतिहास आ समाज सभमे काज आवश्यक अछि।

प्रश्न 8352. सांस्कृतिक नागरिकता खण्डक मूल बोध की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. मैथिलता समावेशी, बहुजन, भाषिक आ सांस्कृतिक जिम्मेदारीक नाम अछि।
उत्तर: घ. मैथिलता समावेशी, बहुजन, भाषिक आ सांस्कृतिक जिम्मेदारीक नाम अछि।
व्याख्या: मिथिला-निवासी होयब माटि-पानि आ लोकजीवनसँ सक्रिय सम्बन्ध रखब अछि।

खण्ड ८४१ : विदेह-सदेह २ — नदी-भूगोलसँ लोकगीत-संगीत धरि

प्रश्न 8353. नदी-भूगोल आ सुनिल मल्लिकक संगीत प्रसंगक साझा सूत्र की अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. लोकजीवनक ध्वनि आ स्मृति।
उत्तर: घ. लोकजीवनक ध्वनि आ स्मृति।
व्याख्या: नदी जेकाँ संगीत सेहो मिथिलाक रोजमर्रा अनुभव आ सामूहिक स्मृतिक वाहक अछि।

प्रश्न 8354. मिथिलाक गीत-संस्कृति भूमिसँ किएक जुड़ल अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. खेती, पाबनि, विवाह, श्रम आ गामक जीवन गीतमे आबैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. खेती, पाबनि, विवाह, श्रम आ गामक जीवन गीतमे आबैत अछि।
व्याख्या: गीत माटि-पानिक अनुभूतिसँ अलग नहि, ओकर सांस्कृतिक अनुगूँज अछि।

प्रश्न 8355. सुनिल मल्लिकक प्रशिक्षण-काज नदी-समाजक तुलना मे कोन अर्थ रखैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. जेकाँ नदी क्षेत्र जोड़ैत अछि, प्रशिक्षण लोकप्रतिभा जोड़ैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. जेकाँ नदी क्षेत्र जोड़ैत अछि, प्रशिक्षण लोकप्रतिभा जोड़ैत अछि।
व्याख्या: हुनकर केन्द्रसभ संगीतक धारा अनेक जिलामे पसारैत अछि।

प्रश्न 8356. मिथिला ग्राम योजना गीत-संस्कृति लेल किएक आवश्यक मानी जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. कला-अभ्यास, संग्रहालय आ रंगमंच लेल स्थायी स्थल देब।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. कला-अभ्यास, संग्रहालय आ रंगमंच लेल स्थायी स्थल देब।
व्याख्या: लोकसंस्कृति टिकय लेल संस्था आ स्थान चाहैत अछि।

प्रश्न 8357. संगीत-रिकॉर्डिङ्ग स्टुडियो लोकसंगीतक संरक्षणमे कोना सहायक अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. गीतकेँ ध्वनि-अभिलेख रूपमे बचबैत अछि।
उत्तर: घ. गीतकेँ ध्वनि-अभिलेख रूपमे बचबैत अछि।
व्याख्या: मौखिक परम्परा रिकॉर्ड भेला पर नब पीढ़ी लेल उपलब्ध होइत अछि।

प्रश्न 8358. नदी-पूजा गीत आ आधुनिक रिकॉर्डिङ्ग बीच की सम्बन्ध अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. दुनू लोकस्वरकेँ जीवित राखबाक माध्यम।
उत्तर: घ. दुनू लोकस्वरकेँ जीवित राखबाक माध्यम।
व्याख्या: पहिल मौखिक-धार्मिक रूप, दोसर आधुनिक ध्वनि-संरक्षणक रूप अछि।

प्रश्न 8359. मिथिलाक सांस्कृतिक भविष्य लेल लोकगायकक भूमिका की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. जीवित परम्पराकेँ मंच, प्रशिक्षण आ रिकॉर्डिंग मार्फत बढ़ेबाक।
उत्तर: घ. जीवित परम्पराकेँ मंच, प्रशिक्षण आ रिकॉर्डिंग मार्फत बढ़ेबाक।
व्याख्या: सुनिल मल्लिक सन व्यक्तित्व लोकधुनकेँ आधुनिकता संग मिलबैत छथि।

प्रश्न 8360. गीत-संगीत केवल मनोरंजन नहि किएक?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ओ भाषा, स्मृति, इतिहास आ सामुदायिक भावक संवाहक अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. ओ भाषा, स्मृति, इतिहास आ सामुदायिक भावक संवाहक अछि।
व्याख्या: लोकगीत मिथिलाक आत्म-परिचयकेँ जनमनमे धारण करैत अछि।

प्रश्न 8361. नदी, गीत आ लोकनायक मिलि कोन सांस्कृतिक त्रिकोण बनबैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. भूगोल, भाव आ इतिहासक त्रिकोण।
उत्तर: घ. भूगोल, भाव आ इतिहासक त्रिकोण।
व्याख्या: एहि तीनू बिना मिथिलाक पूर्ण सांस्कृतिक स्वरूप नहि खुलैत।

प्रश्न 8362. नदी-भूगोल आ लोकगीत-संगीत खण्डक सार की अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मिथिलाक नदी-भूगोल लोकस्वरमे गूँजैत अछि आ आधुनिक संगीत-कार्य ओकर संरक्षणक रास्ता खोलैत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाक नदी-भूगोल लोकस्वरमे गूँजैत अछि आ आधुनिक संगीत-कार्य ओकर संरक्षणक रास्ता खोलैत अछि।
व्याख्या: सदेह २ लोकजीवनक ध्वनि आ भूगोलक सम्बन्ध देखबैत अछि।

खण्ड ८४२ : विदेह-सदेह २ — लोकनायक सलहेस आ आधुनिक दृश्य-संचार

प्रश्न 8363. सलहेस-वृत्तचित्र आधुनिक दृश्य-संचारक कोन उदाहरण अछि?
क. लोकनायक-इतिहासकेँ चलचित्र रूपमे जनधरि पहुँचाबयक उदाहरण।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: क. लोकनायक-इतिहासकेँ चलचित्र रूपमे जनधरि पहुँचाबयक उदाहरण।
व्याख्या: दृश्य माध्यम लोकस्मृतिकेँ पाठ्य-पुस्तकसँ बाहर व्यापक दर्शक धरि लऽ जाइत अछि।

प्रश्न 8364. लोककथा आ वृत्तचित्रक सम्बन्ध की अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. मौखिक परम्परा दृश्य अभिलेखमे रूपान्तरित होइत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मौखिक परम्परा दृश्य अभिलेखमे रूपान्तरित होइत अछि।
व्याख्या: सलहेस कथा लोकगाथासँ आधुनिक दस्तावेजी प्रस्तुतिमे आबैत अछि।

प्रश्न 8365. सलहेसक रक्षा-संघर्ष आजुक मैथिल समाज लेल कोन प्रतीक अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. स्वाभिमान, संगठन आ सीमा-संरक्षणक प्रतीक।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. स्वाभिमान, संगठन आ सीमा-संरक्षणक प्रतीक।
व्याख्या: लोकनायकक कथा सामुदायिक अस्मिताकेँ बल दैत अछि।

प्रश्न 8366. छोट अवधि वृत्तचित्र सेहो किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. संक्षिप्त रूपमे इतिहास-स्मृति आ जनसंदेश देब।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. संक्षिप्त रूपमे इतिहास-स्मृति आ जनसंदेश देब।
व्याख्या: २४ मिनटक संरचना लोककथा के सघन दृश्य-रूप देत अछि।

प्रश्न 8367. सलहेसक कथा क्षेत्रीय स्मृतिसँ राष्ट्रीय अर्थ धरि कोना बढ़ैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. देश-रक्षा, जन-संगठन आ न्याय-विचारक कारण।
उत्तर: घ. देश-रक्षा, जन-संगठन आ न्याय-विचारक कारण।
व्याख्या: हुनकर कथा मिथिला सीमासँ बाहर लोकन्यायक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 8368. वृत्तचित्र बनाबयक काज भाषा-संरक्षणसँ कोना जुड़ल अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. लोकइतिहास मैथिली/मिथिला भाषिक संसारमे पुनः बोलय लागैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. लोकइतिहास मैथिली/मिथिला भाषिक संसारमे पुनः बोलय लागैत अछि।
व्याख्या: दृश्य माध्यम स्थानीय भाषा-संवेदना आ इतिहास दुनू बचबैत अछि।

प्रश्न 8369. सलहेस-प्रसंगमे जनकथा आ इतिहासक सीमा किएक रोचक अछि?
क. लोकमानस ऐतिहासिक स्मृतिकेँ कथा-रूपमे सुरक्षित रखैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. लोकमानस ऐतिहासिक स्मृतिकेँ कथा-रूपमे सुरक्षित रखैत अछि।
व्याख्या: लेखक जनश्रुति, भूगोल आ सामाजिक संघर्षकेँ एक साथ पढ़ैत छथि।

प्रश्न 8370. लोकनायक पर काज करब सामुदायिक शिक्षा किएक अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. नब पीढ़ी अपन इतिहासक जनपक्ष बुझैत अछि।
उत्तर: घ. नब पीढ़ी अपन इतिहासक जनपक्ष बुझैत अछि।
व्याख्या: सलहेस सन प्रसंग इतिहासकेँ लोक-अधिकार आ न्यायसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 8371. दृश्य-संचार आ अमनक संचार-गोष्ठी बीच कोन दूरस्थ सम्बन्ध अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. दुनू संचारकेँ समाजक चेतना जगाबयक साधन मानैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. दुनू संचारकेँ समाजक चेतना जगाबयक साधन मानैत अछि।
व्याख्या: पत्रकारिता हो वा वृत्तचित्र—माध्यम लोकहितक वाहक बनि सकैत अछि।

प्रश्न 8372. एहि खण्डक निचोड़ की अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. सलहेस-वृत्तचित्र लोकइतिहासकेँ आधुनिक संचारमे रूपान्तरित करैत मिथिला चेतना जाग्रत करैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. सलहेस-वृत्तचित्र लोकइतिहासकेँ आधुनिक संचारमे रूपान्तरित करैत मिथिला चेतना जाग्रत करैत अछि।
व्याख्या: सदेह २ मे दृश्य-संचार सांस्कृतिक संरक्षणक औजार बनि उभरैत अछि।

खण्ड ८४३ : विदेह-सदेह २ — सादेह २क एहि अंशक अध्ययन-समेकन

प्रश्न 8373. एहि अंशमे मिथिलाक कोन-कोन आयाम साथमे देखाइत अछि?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ग. भूगोल, निवासी, संचार, संगीत आ लोकनायक-स्मृति।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. भूगोल, निवासी, संचार, संगीत आ लोकनायक-स्मृति।

व्याख्या: सदेह २ बहुआयामी ढंगसँ मिथिलाक सांस्कृतिक शरीर बनबैत अछि।

प्रश्न 8374. प्रो. चौधरीक इतिहास-दृष्टि आ अमन कुमार झाक प्रतिवेदनक साझा महत्त्व की अछि?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. दुनू मिथिलाकेँ विचारक विषय बनबैत अछि—एक अतीतमे, दोसर वर्तमानमे।

ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ख. दुनू मिथिलाकेँ विचारक विषय बनबैत अछि—एक अतीतमे, दोसर वर्तमानमे।

व्याख्या: इतिहास आ पत्रकारिता दुनू समाजकेँ आत्मबोध देत अछि।

प्रश्न 8375. सुनिल मल्लिकक लेख एहि क्रममे की जोड़ैत अछि?

क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. व्यक्तिगत प्रतिभासँ सामुदायिक सांस्कृतिक निर्माणक उदाहरण।

घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

उत्तर: ग. व्यक्तिगत प्रतिभासँ सामुदायिक सांस्कृतिक निर्माणक उदाहरण।

व्याख्या: सफल व्यक्तिक कथा मिथिलाक संस्था-निर्माणक स्वप्नसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 8376. सलहेस-वृत्तचित्र एहि अंशमे की भूमिका निभबैत अछि?

क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ख. लोकवीरक स्मृतिसँ ऐतिहासिक स्वाभिमान जाग्रत करब।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. लोकवीरक स्मृतिसँ ऐतिहासिक स्वाभिमान जाग्रत करब।

व्याख्या: लोकनायक पर दृश्य-कर्म इतिहासकेँ भावनात्मक आ जनपक्षीय बनबैत अछि।

प्रश्न 8377. मिथिलाक निवासी-विविधता आ मिथिला ग्राम योजना एक साथ की सिखबैत अछि?

क. संस्कृति सबहक भागीदारीसँ टिकैत अछि।

ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

उत्तर: क. संस्कृति सबहक भागीदारीसँ टिकैत अछि।

व्याख्या: समावेशी समाज आ साझा संस्था—दुनू सांस्कृतिक भविष्य लेल जरूरी अछि।

प्रश्न 8378. नदी, संगीत आ संचारक बीच कोन त्रयी बनैत अछि?

क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।

ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।

ग. भूमि, स्वर आ सूचना—तीनू मिलि समाजक जीवित प्रवाह बनबैत अछि।

घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

उत्तर: ग. भूमि, स्वर आ सूचना—तीनू मिलि समाजक जीवित प्रवाह बनबैत अछि।

व्याख्या: ई त्रयी मिथिलाक अतीत आ वर्तमानकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 8379. एहि अंशक प्रश्नोत्तर बनबैत काल किन बात टारल गेल अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. पृष्ठ/लाइन-संख्या आ यांत्रिक विवरण।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. पृष्ठ/लाइन-संख्या आ यांत्रिक विवरण।
व्याख्या: प्रश्न सामग्रीक अर्थ, विचार आ सांस्कृतिक महत्त्व पर आधारित अछि।

प्रश्न 8380. एहि अंशक अध्ययन विद्यार्थीकेँ कोन दृष्टि देत अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. मिथिलाकेँ एक जीवित, बहुस्तरीय सांस्कृतिक प्रदेश रूपमे देखबाक दृष्टि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाकेँ एक जीवित, बहुस्तरीय सांस्कृतिक प्रदेश रूपमे देखबाक दृष्टि।
व्याख्या: पाठक भूगोलसँ लऽ कऽ आधुनिक मीडिया धरि सम्बन्ध देखैत अछि।

प्रश्न 8381. सदेह २ एहि अंशमे “दस्तावेज” कोना बनैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. रिपोर्ट, जीवनी, इतिहास, समीक्षा आ सांस्कृतिक योजना एकत्र करैत।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. रिपोर्ट, जीवनी, इतिहास, समीक्षा आ सांस्कृतिक योजना एकत्र करैत।
व्याख्या: भिन्न विधा सभ मिलि समयक बहुमुखी अभिलेख बनबैत अछि।

प्रश्न 8382. समेकनक अन्तिम बोध की अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. मिथिलाक आत्मपरिचय माटि, मनुष्य, भाषा, संगीत आ स्मृतिक संयुक्त काजसँ बनैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाक आत्मपरिचय माटि, मनुष्य, भाषा, संगीत आ स्मृतिक संयुक्त काजसँ बनैत अछि।
व्याख्या: एहि अंशमे मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनक अनेक स्वर एक साथ सुनाइत अछि।

खण्ड ८४४ : विदेह-सदेह २ — आगाँक अध्ययन लेल तैयारी

प्रश्न 8383. एहि बैच पछाति आगाँ बढ़ैत पाठककेँ कोन सावधानी चाही?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. प्रत्येक लेखकेँ ओकर विधा—इतिहास, प्रतिवेदन, जीवनी, वृत्तचित्र-समीक्षा—अनुसार पढ़ब।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. प्रत्येक लेखकेँ ओकर विधा—इतिहास, प्रतिवेदन, जीवनी, वृत्तचित्र-समीक्षा—अनुसार पढ़ब।
व्याख्या: सदेह २ मे भिन्न विधा अछि, तेँ एके कसौटी सभपर लागू नहि होयबाक चाही।

प्रश्न 8384. भौगोलिक लेख पढ़ैत काल कोन बात ध्यानमे राखय योग्य अछि?
क. नदी, सीमा, नाम आ सांस्कृतिक अर्थक सम्बन्ध।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. नदी, सीमा, नाम आ सांस्कृतिक अर्थक सम्बन्ध।
व्याख्या: मिथिलाक सीमा केवल प्रशासनिक नाप नहि, नदी-संस्कृति आ इतिहाससँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 8385. निवासी-विवेचन पढ़ैत काल कोन दृष्टि जरूरी अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. समावेशी आ बहुजन सामाजिक दृष्टि।
उत्तर: घ. समावेशी आ बहुजन सामाजिक दृष्टि।
व्याख्या: मैथिल पहचान अनेक समुदायक साझा जीवनसँ बनैत अछि।

प्रश्न 8386. संचार-प्रतिवेदन पढ़ैत काल मुख्य प्रश्न की अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. मीडिया समाजक प्रति कतेक उत्तरदायी अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ख. मीडिया समाजक प्रति कतेक उत्तरदायी अछि।
व्याख्या: अमन कुमार झाक प्रतिवेदन पत्रकारिता-नैतिकता आ विकासक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 8387. सफल व्यक्ति लेख पढ़ैत काल विद्यार्थी की देखए?
क. व्यक्तिगत संघर्षसँ सांस्कृतिक संस्था-निर्माणक यात्रा।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. व्यक्तिगत संघर्षसँ सांस्कृतिक संस्था-निर्माणक यात्रा।
व्याख्या: सुनिल मल्लिकक कथा कलाकार आ योजनाकार दुनू रूपक पाठ देत अछि।

प्रश्न 8388. वृत्तचित्र-विवेचन पढ़ैत काल कोन पक्ष महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोकइतिहासकेँ आधुनिक माध्यममे प्रस्तुत करबाक महत्व।
ग. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
घ. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
उत्तर: ख. लोकइतिहासकेँ आधुनिक माध्यममे प्रस्तुत करबाक महत्व।
व्याख्या: सलहेस-वृत्तचित्र दृश्य-संरक्षण आ लोक-स्मृति जगाबयक उदाहरण अछि।

प्रश्न 8389. एहि बैचक प्रश्नसभ ककरा प्रमुखता देत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. विचार, आशय, सांस्कृतिक अर्थ आ समाजिक सन्दर्भ।
घ. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
उत्तर: ग. विचार, आशय, सांस्कृतिक अर्थ आ समाजिक सन्दर्भ।
व्याख्या: प्रश्न यांत्रिक तथ्य-संग्रह नहि, अर्थ-बोध मजबूत करबाक लेल बनाओल गेल अछि।

प्रश्न 8390. विदेह-सदेह २क अध्ययनमे “मिथिला” कोन रूपमे उभरैत अछि?
क. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. इतिहास, भाषा, समाज आ कला सँ बनल जीवित क्षेत्र।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: ग. इतिहास, भाषा, समाज आ कला सँ बनल जीवित क्षेत्र।
व्याख्या: संग्रह मिथिलाकेँ अतीत-पूजा नहि, वर्तमान काजक क्षेत्र बनबैत अछि।

प्रश्न 8391. आगाँक खण्डसभ लेल आधार की तैयार भेल?
क. भूगोल-समाजसँ संचार-कला धरि व्यापक दृष्टि।
ख. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ग. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
घ. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
उत्तर: क. भूगोल-समाजसँ संचार-कला धरि व्यापक दृष्टि।
व्याख्या: एहि बैच आगाँक समीक्षा, जीवन-वृत्त आ सांस्कृतिक लेखसभ बुझबाक पृष्ठभूमि देत अछि।

प्रश्न 8392. खण्ड ८४४क समापन-सूत्र की अछि?
क. एहि बातक सम्बन्ध मुख्य पाठ-विचारसँ दूर अछि।
ख. ई निष्कर्ष उलट अर्थ लैत अछि।
ग. ई विकल्प एहि प्रसंगक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
घ. सदेह २क अध्ययन मिथिलाक बहुरंगी चेतना क्रमशः खोलैत चलैत अछि।
उत्तर: घ. सदेह २क अध्ययन मिथिलाक बहुरंगी चेतना क्रमशः खोलैत चलैत अछि।
व्याख्या: एहि ठाम धरि पाठक माटि, समाज, संचार, संगीत आ लोकनायकक संयुक्त परिदृश्य देखैत अछि।

खण्ड ८४५ : विदेह-सदेह २ — रामलोचन ठाकुर: समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ

प्रश्न 8393. रामलोचन ठाकुरक आलेखक मुख्य केन्द्र की अछि?
क. समकालीन मैथिली-कथामे यथार्थक अर्थ आ ओकर आलोचनात्मक परख।
ख. मिथिला चित्रकलाक रंग-विधान।
ग. केवल लोकगीतक मंचीय प्रस्तुति।
घ. विद्यापतिक फोटो लगएबाक राजनीतिक मांग।
उत्तर: क. समकालीन मैथिली-कथामे यथार्थक अर्थ आ ओकर आलोचनात्मक परख।
व्याख्या: एहि खण्डमे कथा-यथार्थकेँ साहित्यिक समीक्षा केर कसौटी पर पढ़ल गेल अछि।

प्रश्न 8394. एहि खण्डमे लेखकक रूपमे कोन नाम प्रमुख अछि?
क. बिपिन झा।
ख. रामलोचन ठाकुर।
ग. शीतल झा।
घ. कुमार राधारमण।
उत्तर: ख. रामलोचन ठाकुर।
व्याख्या: समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-विमर्श रामलोचन ठाकुरक आलेखसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 8395. “समकालीन मैथिली-कथा” पढ़ैत काल कोन प्रश्न जरूरी बनैत अछि?
क. कथा केवल पृष्ठ-संख्या अनुसार कतेक लम्बा अछि।
ख. लेखकक नामकेँ वर्णक्रममे कोना राखब।
ग. कथा समाजक अनुभवकेँ कोना रूप, भाषा आ पात्रमे बदलैत अछि।
घ. कथा मंच पर गीत बनि सकैत अछि कि नहि।
उत्तर: ग. कथा समाजक अनुभवकेँ कोना रूप, भाषा आ पात्रमे बदलैत अछि।
व्याख्या: यथार्थ-विमर्शमे कथा-कला आ सामाजिक अनुभवक सम्बन्ध मुख्य होइत अछि।

प्रश्न 8396. एहि आलेखक विधागत पहचान की अछि?
क. धार्मिक माहात्म्य।
ख. संगीत-समीक्षा।
ग. आत्मकथा।
घ. साहित्यिक आलोचना।
उत्तर: घ. साहित्यिक आलोचना।
व्याख्या: रामलोचन ठाकुरक पाठ कथा-साहित्यक समीक्षा आ मूल्यांकनक धरातल पर अछि।

प्रश्न 8397. लुकाचक यथार्थवादक संकेत एहि खण्डमे कोना उपयोगी अछि?
क. सामाजिक यथार्थ आ कथा-रूपक सम्बन्ध बुझबाक लेल।
ख. देवी-मन्दिरक पूजा-विधि लिखबाक लेल।
ग. गिटार प्रस्तुति मापबाक लेल।
घ. लोकसभाक चित्र-सज्जा तय करबाक लेल।
उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ आ कथा-रूपक सम्बन्ध बुझबाक लेल।
व्याख्या: लुकाचक यथार्थवाद कथा, समाज आ ऐतिहासिक चेतनाकेँ जोड़ि देखैत अछि।

प्रश्न 8398. नव्य-न्यायक सामान्यलक्षणक संकेत एहि आलोचनामे की काज करैत अछि?
क. नाटकक मंच-सज्जा बतबैत अछि।
ख. यथार्थक सामान्य पहचान आ विशिष्ट कथारूप बीच भेद बुझबैत अछि।
ग. काठमाण्डूक गोष्ठी-सूची बनबैत अछि।
घ. गायनक स्वरताल निर्धारित करैत अछि।
उत्तर: ख. यथार्थक सामान्य पहचान आ विशिष्ट कथारूप बीच भेद बुझबैत अछि।
व्याख्या: सामान्यलक्षणक संकेत वस्तुकेँ केवल नामसँ नहि, लक्षणसँ बुझबाक दिशा दैत अछि।

प्रश्न 8399. एहि खण्डक अनुसार कथा-यथार्थकेँ कोना नै पढ़बाक चाही?
क. रूप, भाषा आ समाजक सम्बन्ध देखैत।
ख. पात्रक अनुभवक सामाजिक पृष्ठभूमि बुझैत।
ग. केवल घटना-सूची मानि कऽ।
घ. कथा-कला आ विचार दुनूक समन्वय करैत।
उत्तर: ग. केवल घटना-सूची मानि कऽ।
व्याख्या: यथार्थक कथा केवल समाचार-सूची नहि, साहित्यिक रूपान्तरण सेहो अछि।

प्रश्न 8400. रामलोचन ठाकुरक आलेख विदेह-सदेह २मे कोन आयाम जोड़ैत अछि?
क. तीर्थ-माहात्म्यक भक्तिपरक आख्यान।
ख. लोकसभामे प्रतीक-स्थापनाक मांग।
ग. गृहस्थ जीवनक निजी समस्या मात्र।
घ. आधुनिक मैथिली कथाक आलोचनात्मक परीक्षण।
उत्तर: घ. आधुनिक मैथिली कथाक आलोचनात्मक परीक्षण।
व्याख्या: एहि लेखसँ कथा-साहित्यक समीक्षा-दृष्टि मजबूत होइत अछि।

प्रश्न 8401. एहि खण्डक विद्यार्थी लेल मुख्य सीख की अछि?
क. यथार्थक दावा कैँ पाठ, पात्र, समाज आ शिल्पसँ जाँचल जाय।
ख. प्रश्न केवल तिथिक आधार पर बनाओल जाय।
ग. लेखकक नाम याद करब मात्र पर्याप्त अछि।
घ. कथा-समीक्षामे समाजक चर्चा वर्जित अछि।
उत्तर: क. यथार्थक दावा कैँ पाठ, पात्र, समाज आ शिल्पसँ जाँचल जाय।
व्याख्या: आलोचनात्मक पढ़ाइमे दावाकेँ पाठ-साक्ष्य आ रूप-संरचनासँ परखल जाइत अछि।

प्रश्न 8402. रामलोचन ठाकुर खण्डक संक्षिप्त निष्कर्ष की अछि?
क. ई खण्ड केवल संगीतक प्रस्तुति पर अछि।
ख. समकालीन मैथिली कथा यथार्थकेँ अनुभव, रूप आ आलोचना तीनू स्तर पर रखैत अछि।
ग. ई खण्ड केवल भाषा-कोशक तकनीकी सूची अछि।
घ. ई खण्ड मिथिला तीर्थक माहात्म्य मात्र अछि।
उत्तर: ख. समकालीन मैथिली कथा यथार्थकेँ अनुभव, रूप आ आलोचना तीनू स्तर पर रखैत अछि।
व्याख्या: निष्कर्षमे कथा-यथार्थक साहित्यिक आ सामाजिक अर्थ एकसाथ उभरैत अछि।

खण्ड ८४६ : विदेह-सदेह २ — यथार्थक-कथा आ आलोचनात्मक कसौटी

प्रश्न 8403. “यथार्थक-कथा” पर अलग समेकित खण्ड बनबैक कारण की अछि?

क. चित्रकला प्रदर्शनीक सूची देब।

ख. आमंत्रण-पत्रक भाषा बदलनाइ।

ग. कथा-समीक्षाक कसौटीकेँ स्पष्ट करब।

घ. गिटारक तार-संरचना बतब।

उत्तर: ग. कथा-समीक्षाक कसौटीकेँ स्पष्ट करब।

व्याख्या: ई खण्ड रामलोचन ठाकुरक आलोचनात्मक संकेतकेँ पद्धति रूपमे पढ़ैत अछि।

प्रश्न 8404. यथार्थवादी कथा-समीक्षामे “समाज”क अर्थ की अछि?

क. केवल ग्रामक भौगोलिक नक्शा।

ख. केवल लेखकक जन्मस्थान।

ग. केवल पूजा-पाठक विधि।

घ. व्यक्ति, वर्ग, बोली, संघर्ष आ समयक मिलल अनुभव।

उत्तर: घ. व्यक्ति, वर्ग, बोली, संघर्ष आ समयक मिलल अनुभव।

व्याख्या: कथा-यथार्थ सामाजिक जीवनक अनेक स्तरकेँ साहित्यिक रूपमे प्रकट करैत अछि।

प्रश्न 8405. कथा-यथार्थक कसौटीमे भाषा किएक जरूरी अछि?

क. भाषा पात्र आ समाजक अनुभवकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि।

ख. भाषा केवल सजावटी शीर्षक अछि।

ग. भाषा कथासँ पूर्णतः अलग अछि।

घ. भाषा मात्र रोमन वर्तनीक अभ्यास अछि।

उत्तर: क. भाषा पात्र आ समाजक अनुभवकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि।

व्याख्या: कथा-भाषा सामाजिक आवाज, वर्ग-संकेत आ भाव-दृष्टि वहन करैत अछि।

प्रश्न 8406. कथाक यथार्थकेँ केवल घटना-समानता मानब किएक अपूर्ण अछि?

क. कारण कथामे पात्र नहि रहैत अछि।

ख. कारण साहित्य घटना केँ रूप, चयन आ दृष्टिसँ पुनर्गठित करैत अछि।

ग. कारण कथा केवल गीत होइत अछि।

घ. कारण कथा पढ़बाक कोनो पद्धति नहि चाही।

उत्तर: ख. कारण साहित्य घटना केँ रूप, चयन आ दृष्टिसँ पुनर्गठित करैत अछि।

व्याख्या: आलोचना घटना आ साहित्यिक रूपान्तरण दुनूकेँ अलग-अलग चिन्हैत अछि।

प्रश्न 8407. एहि समेकित खण्डमे “कसौटी” शब्दक अर्थ की अछि?

क. संगीतक स्वरतालक मापक।

ख. तीर्थयात्राक मार्ग-सूची।

ग. पाठकेँ जाँचबाक विचार-पद्धति।

घ. राजनीतिक पोस्टरक रंग।

उत्तर: ग. पाठकेँ जाँचबाक विचार-पद्धति।

व्याख्या: कसौटी आलोचना कें अनुशासित आ प्रमाणाधारित बनबैत अछि।

प्रश्न 8408. कथा-पात्रक यथार्थ बुझबाक सही उपाय की अछि?

क. केवल नामक लम्बाइ गिनब।

ख. केवल लेखकक पदवी देखब।

ग. केवल पृष्ठान्तक क्रम देखब।

घ. पात्रक बोली, परिस्थिति, निर्णय आ संघर्ष एकसाथ पढ़ब।

उत्तर: घ. पात्रक बोली, परिस्थिति, निर्णय आ संघर्ष एकसाथ पढ़ब।

व्याख्या: पात्र समाजक भीतर बनैत अछि; ओकर आवाज आ क्रिया दुनू अर्थपूर्ण अछि।

प्रश्न 8409. समकालीन मैथिली-कथा आलोचनामे “इतिहास”क संकेत की करैत अछि?
क. कथा-समयकेँ व्यापक सामाजिक परिवर्तनसँ जोड़ैत अछि।
ख. इतिहासकेँ कथा बाहर फेकि दैत अछि।
ग. इतिहास केवल देवस्थल वर्णन अछि।
घ. इतिहास केवल मंचीय गीत अछि।
उत्तर: क. कथा-समयकेँ व्यापक सामाजिक परिवर्तनसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: यथार्थवादी आलोचना साहित्यकेँ ओकर समयसँ काटि नहि पढ़ैत।

प्रश्न 8410. यथार्थक-कथा खण्डक गलत पाठ कोन होयत?
क. साहित्यिक तर्कक आधार पर पढ़ब।
ख. एहि विषयकेँ केवल परीक्षा-कुंजी मानि कऽ पढ़ब।
ग. कथाक भाषा आ समाजक सम्बन्ध देखब।
घ. आलोचनात्मक कसौटी बनाकऽ पढ़ब।
उत्तर: ख. एहि विषयकेँ केवल परीक्षा-कुंजी मानि कऽ पढ़ब।
व्याख्या: ई खण्ड रटन्त कुंजी नहि, पढ़बाक विचार-पद्धति दैत अछि।

प्रश्न 8411. एहि खण्डमे पाठक लेल सर्वाधिक उपयोगी अभ्यास की अछि?
क. सवालकेँ केवल अंकसूची बना देब।
ख. लेखक-नाम हटाकऽ पढ़ब।
ग. कथाक दावाकेँ पाठ-साक्ष्यसँ मिलाएब।
घ. सामाजिक संदर्भ अनदेखा करब।
उत्तर: ग. कथाक दावाकेँ पाठ-साक्ष्यसँ मिलाएब।
व्याख्या: आलोचनात्मक अभ्यासमे पाठक भीतरक प्रमाण, भाषा आ संरचना देखल जाइत अछि।

प्रश्न 8412. यथार्थक-कथा खण्डक निचोड़ की अछि?
क. ई खण्ड केवल लोकनायक सलहेसक वृत्तचित्र अछि।
ख. ई खण्ड केवल उच्चैठ भगवतीक माहात्म्य अछि।
ग. ई खण्ड केवल विद्यापतिक फोटो मांग अछि।
घ. मैथिली कथा-समीक्षा अनुभव, समाज आ रूपक संयुक्त अध्ययन अछि।
उत्तर: घ. मैथिली कथा-समीक्षा अनुभव, समाज आ रूपक संयुक्त अध्ययन अछि।
व्याख्या: निचोड़मे यथार्थक कथा केँ समग्र साहित्यिक प्रक्रिया मानल गेल अछि।

खण्ड ८४७ : विदेह-सदेह २ — बिपिन झा: मैथिली शब्दतन्त्र निर्माण

प्रश्न 8413. बिपिन झाक आलेखक मुख्य विषय की अछि?
क. मैथिली शब्दतन्त्र निर्माणक आवश्यकता।
ख. समकालीन कथाक पात्र-समीक्षा।
ग. उच्चैठ भगवतीक माहात्म्य।
घ. गिटार-वादनक प्रस्तुति।
उत्तर: क. मैथिली शब्दतन्त्र निर्माणक आवश्यकता।
व्याख्या: स्रोत-सूचीमे बिपिन झाक लेख मैथिली शब्दतन्त्र निर्माणक जरूरतसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 8414. खण्ड ८४७ : विदेह-सदेह २मे एहि खण्डमे लेखकक रूपमे कोन नाम प्रमुख अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. बिपिन झा।
ग. शीतल झा।
घ. नागेन्द्र लाल कर्ण।
उत्तर: ख. बिपिन झा।
व्याख्या: मैथिली शब्दतन्त्र निर्माणक आलेख बिपिन झा नामसँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8415. “शब्दतन्त्र” शब्द एहि प्रसंगमे की बुझबैत अछि?
क. केवल मन्दिरक पूजा-सूची।
ख. केवल कथक नृत्यक पदचाल।
ग. भाषाक नियोजित शब्द-भंडार, पारिभाषिकता आ कोश-व्यवस्था।
घ. केवल संसद भवनक चित्र।
उत्तर: ग. भाषाक नियोजित शब्द-भंडार, पारिभाषिकता आ कोश-व्यवस्था।
व्याख्या: शब्दतन्त्र भाषा-योजना आ ज्ञान-विस्तारक आधार अछि।

प्रश्न 8416. मैथिली शब्दतन्त्र निर्माण किएक जरूरी कहल जा सकैत अछि?
क. भाषाकेँ घरेलू बोलचाल धरि सीमित करबाक लेल।
ख. साहित्यिक आलोचना रोकबाक लेल।
ग. लोकगीतक मंच हटएबाक लेल।
घ. नव विषय, शिक्षा, विज्ञान आ प्रशासनमे मैथिली सक्षम बनबाक लेल।
उत्तर: घ. नव विषय, शिक्षा, विज्ञान आ प्रशासनमे मैथिली सक्षम बनबाक लेल।
व्याख्या: समृद्ध शब्द-व्यवस्था भाषाकेँ आधुनिक ज्ञान-क्षेत्रमे उपयोगी बनबैत अछि।

प्रश्न 8417. चॉम्स्की भाषा-योजना संकेत एहि खण्डमे कोना सहायक अछि?
क. भाषाक संरचना, सृजन-क्षमता आ नियोजनक प्रश्न उठबैत अछि।
ख. देवी-भक्ति केर आख्यान लिखैत अछि।
ग. संगीत-मंचक प्रकाश व्यवस्था बनबैत अछि।
घ. लोकसभाक फोटो-फ्रेम चुनैत अछि।
उत्तर: क. भाषाक संरचना, सृजन-क्षमता आ नियोजनक प्रश्न उठबैत अछि।
व्याख्या: भाषा-योजना केवल शब्द-सूची नहि, भाषिक सामर्थ्यक विवेचन सेहो अछि।

प्रश्न 8418. शब्दतन्त्र निर्माणमे कोशकारक भूमिका की अछि?
क. कथा-पात्रक अभिनय करब।
ख. शब्द, अर्थ, प्रयोग आ मानक रूपक व्यवस्थित संकलन।
ग. तीर्थ-मेला आयोजित करब।
घ. गृहस्थ विवादक निजी फैसला देब।
उत्तर: ख. शब्द, अर्थ, प्रयोग आ मानक रूपक व्यवस्थित संकलन।
व्याख्या: कोशकार्य भाषाक सार्वजनिक उपयोग आ अध्ययनक आधार तैयार करैत अछि।

प्रश्न 8419. एहि विषयकेँ केवल शब्द-संग्रह मानब किएक कम अछि?
क. कारण शब्दतन्त्रमे भाषा नहि रहैत अछि।
ख. कारण शब्दतन्त्र केवल नृत्य-विधा अछि।
ग. कारण शब्दतन्त्रमे अर्थ-क्षेत्र, प्रयोग आ विषयगत अनुशासन सेहो अछि।
घ. कारण शब्दतन्त्र राजनैतिक पोस्टर मात्र अछि।
उत्तर: ग. कारण शब्दतन्त्रमे अर्थ-क्षेत्र, प्रयोग आ विषयगत अनुशासन सेहो अछि।
व्याख्या: भाषा-निर्माणमे शब्दक साथ ओकर उपयोग-क्षेत्र आ मानकीकरण जरूरी अछि।

प्रश्न 8420. बिपिन झाक खण्ड विदेह-सदेह २मे कोन आयाम जोड़ैत अछि?
क. भक्ति-तीर्थक आयाम मात्र।
ख. गायन-समीक्षाक आयाम मात्र।
ग. संसदीय प्रतीकक आयाम मात्र।
घ. भाषाशास्त्रीय आ कोश-निर्माणक आयाम।
उत्तर: घ. भाषाशास्त्रीय आ कोश-निर्माणक आयाम।
व्याख्या: ई लेख भाषा-विकासक बौद्धिक आधार पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 8421. मैथिली विद्यार्थी लेल एहि खण्डक व्यावहारिक उपयोग की अछि?
क. भाषा-विकासमे पारिभाषिक शब्दावली आ मानक प्रयोगक महत्त्व बुझब।
ख. केवल लेखकक नाम रटब।
ग. केवल गीतक मुखड़ा याद करब।
घ. केवल फोटो-स्थापनाक पक्ष-विपक्ष गिनब।
उत्तर: क. भाषा-विकासमे पारिभाषिक शब्दावली आ मानक प्रयोगक महत्त्व बुझब।
व्याख्या: शब्दतन्त्र भाषा-सामर्थ्य, अध्ययन आ अनुवादक मूल साधन अछि।

प्रश्न 8422. बिपिन झा खण्डक निष्कर्ष की अछि?
क. मैथिलीमे शब्द-निर्माणक कोनो जरूरत नहि।
ख. मैथिलीकेँ आधुनिक ज्ञान-समाजमे सक्षम करबाक लेल योजनाबद्ध शब्दतन्त्र आवश्यक अछि।
ग. मैथिली समीक्षा केवल कथा धरि सीमित अछि।
घ. मैथिली संगीतक समीक्षा भाषा-विकास रोकैत अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीकेँ आधुनिक ज्ञान-समाजमे सक्षम करबाक लेल योजनाबद्ध शब्दतन्त्र आवश्यक अछि।
व्याख्या: निष्कर्षमे भाषा-योजना, कोश आ मानक शब्दावलीक आवश्यकता स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८४८ : विदेह-सदेह २ — भाषा-योजना, कोश आ मैथिली भविष्य

प्रश्न 8423. भाषा-योजना खण्डक मूल आधार की अछि?
क. सलहेस-वृत्तचित्रक अवधि।
ख. उच्चैठ भगवतीक पूजा-स्थल।
ग. मैथिली शब्दतन्त्र निर्माणक आवश्यकता पर केन्द्रित विचार।
घ. कथक आ सितारक मंच-सूची।
उत्तर: ग. मैथिली शब्दतन्त्र निर्माणक आवश्यकता पर केन्द्रित विचार।
व्याख्या: ई समेकित खण्ड बिपिन झाक शब्दतन्त्र-विमर्शकेँ भाषा-योजना रूपमे विस्तारित करैत अछि।

प्रश्न 8424. कोश-निर्माण भाषाक भविष्यसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. ओ भाषाकेँ सार्वजनिक जीवनसँ अलग करैत अछि।
ख. ओ साहित्यिक लेखनकेँ रोकैत अछि।
ग. ओ केवल निजी डायरीक वस्तु अछि।
घ. ओ शिक्षा, अनुवाद, शोध आ डिजिटल उपयोगक आधार बनबैत अछि।
उत्तर: घ. ओ शिक्षा, अनुवाद, शोध आ डिजिटल उपयोगक आधार बनबैत अछि।
व्याख्या: कोश आ पारिभाषिकता बिना भाषा आधुनिक क्षेत्रमे कमजोर पड़ैत अछि।

प्रश्न 8425. मैथिली शब्दतन्त्रक एकटा मुख्य आवश्यकता की अछि?
क. विषयवार, प्रमाणित आ व्यवहार्य शब्द-संसाधन।
ख. अस्पष्ट अफवाहक संग्रह।
ग. केवल विदेशी शब्दक सूची।
घ. केवल गीतक तालिका।
उत्तर: क. विषयवार, प्रमाणित आ व्यवहार्य शब्द-संसाधन।
व्याख्या: भाषा-योजना तखन सफल होइत अछि जखन शब्द प्रयोगयोग्य आ प्रमाणित हो।

प्रश्न 8426. शब्दतन्त्र निर्माणमे मानक रूप किएक जरूरी अछि?
क. एकरासँ अर्थ सदिखन अस्पष्ट रहैत अछि।
ख. एकरासँ शिक्षा, प्रकाशन आ शोधमे एकरूपता बढ़ैत अछि।
ग. एकरासँ भाषा-प्रयोग बन्द भऽ जाइत अछि।
घ. एकरासँ साहित्यक पाठ असम्भव भऽ जाइत अछि।
उत्तर: ख. एकरासँ शिक्षा, प्रकाशन आ शोधमे एकरूपता बढ़ैत अछि।
व्याख्या: मानक रूप भाषाकेँ संस्थागत कामकाजमे सक्षम बनबैत अछि।

प्रश्न 8427. भाषा-योजना कें केवल सरकारी आदेश मानब किएक गलत अछि?
क. कारण भाषामे समाजक कोनो भूमिका नहि।
ख. कारण शब्द स्वतः बिना प्रयोग बनि जाइत अछि।
ग. कारण साहित्यकार, कोशकार, शिक्षक आ पाठक सभक भागीदारी चाही।
घ. कारण भाषा केवल संगीतक मंच अछि।
उत्तर: ग. कारण साहित्यकार, कोशकार, शिक्षक आ पाठक सभक भागीदारी चाही।
व्याख्या: भाषा-विकास सामुदायिक आ संस्थागत दुनू प्रयाससँ बनैत अछि।

प्रश्न 8428. मैथिली भविष्यक दृष्टिसँ डिजिटल माध्यममे शब्दतन्त्रक भूमिका की अछि?
क. डिजिटल माध्यममे भाषा हटाएब।
ख. मात्र चित्र-संग्रह बनब।
ग. केवल लोकसभा भवनक सजावट करब।
घ. खोज, शिक्षण, अनुवाद आ संगणकीय संसाधनकेँ मजबूत करब।
उत्तर: घ. खोज, शिक्षण, अनुवाद आ संगणकीय संसाधनकेँ मजबूत करब।
व्याख्या: डिजिटल युगमे व्यवस्थित शब्दावली भाषा-प्रयोगक विस्तार करैत अछि।

प्रश्न 8429. शब्दतन्त्र आ साहित्यक सम्बन्ध की अछि?
क. साहित्य नव अनुभव लेल शब्दक सृजन आ परिशुद्धता चाहैत अछि।
ख. साहित्यकेँ शब्दक जरूरत नहि।
ग. शब्दतन्त्र साहित्य-विरोधी अछि।
घ. साहित्य केवल मौन अभ्यास अछि।
उत्तर: क. साहित्य नव अनुभव लेल शब्दक सृजन आ परिशुद्धता चाहैत अछि।
व्याख्या: साहित्यिक अभिव्यक्ति सेहो भाषिक संसाधन पर निर्भर करैत अछि।

प्रश्न 8430. भाषा-योजना खण्डमे गलत निष्कर्ष कोन होयत?
क. मैथिलीमे विषयवार शब्दावली बढ़बाक चाही।
ख. मैथिलीकेँ आधुनिक विषयसँ दूर राखबाक चाही।
ग. कोश-निर्माण भाषिक अधिकारक अंग अछि।
घ. मानक प्रयोग शिक्षणमे सहायक अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीकेँ आधुनिक विषयसँ दूर राखबाक चाही।
व्याख्या: एहि खण्डक दिशा आधुनिक विषयमे मैथिलीक सामर्थ्य बढ़एबाक अछि।

प्रश्न 8431. एहि खण्डक अध्ययनसँ पाठक की बुझैत अछि?
क. भाषा-सम्मानमे शब्दक कोनो स्थान नहि।
ख. कोश-कार्य केवल बाहरी विद्या अछि।
ग. भाषा-सम्मान केवल भावना नहि, संसाधन-निर्माण सेहो अछि।
घ. मानक शब्दावली पाठकक शत्रु अछि।
उत्तर: ग. भाषा-सम्मान केवल भावना नहि, संसाधन-निर्माण सेहो अछि।
व्याख्या: भाषा-प्रेमकेँ संस्थागत आ ज्ञानात्मक कार्यमे बदलनाइ जरूरी अछि।

प्रश्न 8432. भाषा-योजना, कोश आ भविष्य खण्डक निचोड़ की अछि?
क. ई खण्ड केवल ग्राम-स्मृति पर अछि।
ख. ई खण्ड केवल घरेलू समस्या पर अछि।
ग. ई खण्ड केवल वृत्तचित्र निर्माण पर अछि।
घ. मैथिली भविष्य लेल शब्द, मानक, कोश आ डिजिटल उपयोगक संयुक्त योजना चाही।
उत्तर: घ. मैथिली भविष्य लेल शब्द, मानक, कोश आ डिजिटल उपयोगक संयुक्त योजना चाही।
व्याख्या: निचोड़मे भाषा-विकासक व्यावहारिक कार्यक्रम सामने अबैत अछि।

खण्ड ८४९ : विदेह-सदेह २ — शीतल झा: गाम, अधिकारी, पोखरि आ चम्पा फूल

प्रश्न 8433. खण्ड ८४९क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?

क. गामक अधिकारी....भैया....पोखरि....चम्पा फूल....।

ख. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।

ग. गार्हस्थ जीवनक समस्या।

घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।

उत्तर: क. गामक अधिकारी....भैया....पोखरि....चम्पा फूल....।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार गामक अधिकारी....भैया....पोखरि....चम्पा फूल.... प्रसंग अछि।

प्रश्न 8434. खण्ड ८४९मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामलोचन ठाकुर।

ख. शीतल झा।

ग. बिपिन झा।

घ. कुमार राधारमण।

उत्तर: ख. शीतल झा।

व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय शीतल झा सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8435. खण्ड ८४९क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

ख. संगीत/कला समीक्षा।

ग. ललित निबन्ध।

घ. राजनीतिक लेखन।

उत्तर: ग. ललित निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड ललित निबन्धक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8436. खण्ड ८४९मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

ग. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

घ. ग्राम-स्मृति, सम्बन्ध, स्थान आ सूक्ष्म भाव-संकेत।

उत्तर: घ. ग्राम-स्मृति, सम्बन्ध, स्थान आ सूक्ष्म भाव-संकेत।

व्याख्या: एहि खण्डमे ग्राम-स्मृति, सम्बन्ध, स्थान आ सूक्ष्म भाव-संकेत केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8437. खण्ड ८४९क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. बाख्तिनक काल-स्थान संकेत।

ख. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ग. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: क. बाख्तिनक काल-स्थान संकेत।

व्याख्या: बाख्तिनक काल-स्थान संकेत एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8438. खण्ड ८४९केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. शीर्षकक विराम-बिन्दु स्मृति आ ध्वनिक टूटल-बहल प्रवाह देखबैत अछि।

ग. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

घ. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

उत्तर: ख. शीर्षकक विराम-बिन्दु स्मृति आ ध्वनिक टूटल-बहल प्रवाह देखबैत अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8439. खण्ड ८४९ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?
क. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।
ख. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।
ग. गाम, पोखरि आ चम्पा फूलक माध्यमे मिथिलाक भाव-भूगोल बनैत अछि।
घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।
उत्तर: ग. गाम, पोखरि आ चम्पा फूलक माध्यमे मिथिलाक भाव-भूगोल बनैत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डक योगदान गाम, पोखरि आ चम्पा फूलक माध्यमे मिथिलाक भाव-भूगोल बनैत अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8440. खण्ड ८४९मे गलत पाठ कोन होयत?
क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।
ख. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।
ग. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।
घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8441. खण्ड ८४९ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8442. खण्ड ८४९क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. गाम, पोखरि आ चम्पा फूलक माध्यमे मिथिलाक भाव-भूगोल बनैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. गाम, पोखरि आ चम्पा फूलक माध्यमे मिथिलाक भाव-भूगोल बनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे गाम, पोखरि आ चम्पा फूलक माध्यमे मिथिलाक भाव-भूगोल बनैत अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८५० : विदेह-सदेह २ — ललित निबन्ध, ग्राम-स्मृति आ ध्वनि

प्रश्न 8443. खण्ड ८५०क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?
क. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
ख. गार्हस्थ जीवनक समस्या।
ग. गाम, अधिकारी, भैया, पोखरि आ चम्पा फूलक स्मृति-सूत्र।
घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
उत्तर: ग. गाम, अधिकारी, भैया, पोखरि आ चम्पा फूलक स्मृति-सूत्र।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार गाम, अधिकारी, भैया, पोखरि आ चम्पा फूलक स्मृति-सूत्र प्रसंग अछि।

प्रश्न 8444. खण्ड ८५०मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. बिपिन झा।
ग. शीतल झा।
घ. शीतल झाक पाठ-परम्परा।
उत्तर: घ. शीतल झाक पाठ-परम्परा।
व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय शीतल झाक पाठ-परम्परा सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8445. खण्ड ८५०क विधागत पहचान की अछि?

क. ललित निबन्धक समेकित पाठ।

ख. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

ग. संगीत/कला समीक्षा।

घ. राजनीतिक लेखन।

उत्तर: क. ललित निबन्धक समेकित पाठ।

व्याख्या: ई खण्ड ललित निबन्धक समेकित पाठक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8446. खण्ड ८५०मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. ग्राम-संवेदना आ ध्वन्यात्मक लेखन।

ग. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

घ. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

उत्तर: ख. ग्राम-संवेदना आ ध्वन्यात्मक लेखन।

व्याख्या: एहि खण्डमे ग्राम-संवेदना आ ध्वन्यात्मक लेखन केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8447. खण्ड ८५०क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ख. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

ग. बाख्तिनक काल-स्थान आ ध्वनि-विचार।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: ग. बाख्तिनक काल-स्थान आ ध्वनि-विचार।

व्याख्या: बाख्तिनक काल-स्थान आ ध्वनि-विचार एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8448. खण्ड ८५०कैं पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

ग. विषयकैं स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

घ. ललित निबन्धमे कथात्मकता, स्मृति आ आत्मीयता एकसाथ चलैत अछि।

उत्तर: घ. ललित निबन्धमे कथात्मकता, स्मृति आ आत्मीयता एकसाथ चलैत अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकैं साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8449. खण्ड ८५० विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?

क. ग्राम-स्मृति केवल वर्णन नहि, संस्कृति-संरक्षणक रूप अछि।

ख. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।

ग. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।

घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।

उत्तर: क. ग्राम-स्मृति केवल वर्णन नहि, संस्कृति-संरक्षणक रूप अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक योगदान ग्राम-स्मृति केवल वर्णन नहि, संस्कृति-संरक्षणक रूप अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8450. खण्ड ८५०मे गलत पाठ कोन होयत?

क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।

ख. विषयकैं केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।

घ. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।

उत्तर: ख. विषयकैं केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8451. खण्ड ८५० विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8452. खण्ड ८५०क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. ग्राम-स्मृति केवल वर्णन नहि, संस्कृति-संरक्षणक रूप अछि।
उत्तर: घ. ग्राम-स्मृति केवल वर्णन नहि, संस्कृति-संरक्षणक रूप अछि।
व्याख्या: निचोड़मे ग्राम-स्मृति केवल वर्णन नहि, संस्कृति-संरक्षणक रूप अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८५१ : विदेह-सदेह २ — कुमार राधारमण: पाकिस्तानमे सेक्स-विचार

प्रश्न 8453. खण्ड ८५१क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?
क. पाकिस्तानमे सेक्स-विचार।
ख. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
ग. गार्हस्थ जीवनक समस्या।
घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
उत्तर: क. पाकिस्तानमे सेक्स-विचार।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार पाकिस्तानमे सेक्स-विचार प्रसंग अछि।

प्रश्न 8454. खण्ड ८५१मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. कुमार राधारमण।
ग. बिपिन झा।
घ. शीतल झा।
उत्तर: ख. कुमार राधारमण।
व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय कुमार राधारमण सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8455. खण्ड ८५१क विधागत पहचान की अछि?
क. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।
ख. संगीत/कला समीक्षा।
ग. निबन्ध।
घ. राजनीतिक लेखन।
उत्तर: ग. निबन्ध।
व्याख्या: ई खण्ड निबन्धक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8456. खण्ड ८५१मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?
क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।
ख. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।
ग. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।
घ. देह, समाज, वर्जना आ सार्वजनिक विमर्श।
उत्तर: घ. देह, समाज, वर्जना आ सार्वजनिक विमर्श।
व्याख्या: एहि खण्डमे देह, समाज, वर्जना आ सार्वजनिक विमर्श केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8457. खण्ड ८५१क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. फूकोक लैंगिकता-विमर्श।

ख. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ग. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: क. फूकोक लैंगिकता-विमर्श।

व्याख्या: फूकोक लैंगिकता-विमर्श एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8458. खण्ड ८५१केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. विषयकेँ सनसनी नहि, सामाजिक विचारक रूपमे पढ़बाक चाही।

ग. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

घ. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

उत्तर: ख. विषयकेँ सनसनी नहि, सामाजिक विचारक रूपमे पढ़बाक चाही।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8459. खण्ड ८५१ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?

क. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।

ख. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।

ग. विदेहक खुलल विमर्श-क्षेत्र कठिन विषयकेँ सेहो चर्चा योग्य बनबैत अछि।

घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।

उत्तर: ग. विदेहक खुलल विमर्श-क्षेत्र कठिन विषयकेँ सेहो चर्चा योग्य बनबैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक योगदान विदेहक खुलल विमर्श-क्षेत्र कठिन विषयकेँ सेहो चर्चा योग्य बनबैत अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8460. खण्ड ८५१मे गलत पाठ कोन होयत?

क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।

ख. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।

ग. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।

घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8461. खण्ड ८५१ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8462. खण्ड ८५१क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. विदेहक खुलल विमर्श-क्षेत्र कठिन विषयकेँ सेहो चर्चा योग्य बनबैत अछि।

ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

उत्तर: ख. विदेहक खुलल विमर्श-क्षेत्र कठिन विषयकेँ सेहो चर्चा योग्य बनबैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे विदेहक खुलल विमर्श-क्षेत्र कठिन विषयकेँ सेहो चर्चा योग्य बनबैत अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८५२ : विदेह-सदेह २ — देह-विमर्श, वर्जना आ सार्वजनिक चर्चा

प्रश्न 8463. खण्ड ८५२क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?

क. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।

ख. गार्हस्थ जीवनक समस्या।

ग. देह-विषयक सामाजिक विमर्श।

घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।

उत्तर: ग. देह-विषयक सामाजिक विमर्श।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार देह-विषयक सामाजिक विमर्श प्रसंग अछि।

प्रश्न 8464. खण्ड ८५२मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामलोचन ठाकुर।

ख. बिपिन झा।

ग. शीतल झा।

घ. कुमार राधारमणक प्रसंग।

उत्तर: घ. कुमार राधारमणक प्रसंग।

व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय कुमार राधारमणक प्रसंग सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8465. खण्ड ८५२क विधागत पहचान की अछि?

क. वैचारिक निबन्धक समेकन।

ख. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

ग. संगीत/कला समीक्षा।

घ. राजनीतिक लेखन।

उत्तर: क. वैचारिक निबन्धक समेकन।

व्याख्या: ई खण्ड वैचारिक निबन्धक समेकनक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8466. खण्ड ८५२मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. वर्जना, नैतिकता आ सार्वजनिक भाषा।

ग. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

घ. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

उत्तर: ख. वर्जना, नैतिकता आ सार्वजनिक भाषा।

व्याख्या: एहि खण्डमे वर्जना, नैतिकता आ सार्वजनिक भाषा केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8467. खण्ड ८५२क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ख. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

ग. फूकोक सत्ता-ज्ञान सम्बन्ध।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: ग. फूकोक सत्ता-ज्ञान सम्बन्ध।

व्याख्या: फूकोक सत्ता-ज्ञान सम्बन्ध एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8468. खण्ड ८५२केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

ग. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

घ. देह-विमर्शक अर्थ अश्लीलता नहि, सामाजिक संरचना बुझब अछि।

उत्तर: घ. देह-विमर्शक अर्थ अश्लीलता नहि, सामाजिक संरचना बुझब अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8469. खण्ड ८५२ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?
क. एहि खण्डमे कठिन विषयक उत्तरदायी सार्वजनिक भाषा देखल जाइत अछि।
ख. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।
ग. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।
घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।
उत्तर: क. एहि खण्डमे कठिन विषयक उत्तरदायी सार्वजनिक भाषा देखल जाइत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डक योगदान एहि खण्डमे कठिन विषयक उत्तरदायी सार्वजनिक भाषा देखल जाइत अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8470. खण्ड ८५२मे गलत पाठ कोन होयत?
क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।
ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।
घ. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।
उत्तर: ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8471. खण्ड ८५२ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8472. खण्ड ८५२क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. एहि खण्डमे कठिन विषयक उत्तरदायी सार्वजनिक भाषा देखल जाइत अछि।
उत्तर: घ. एहि खण्डमे कठिन विषयक उत्तरदायी सार्वजनिक भाषा देखल जाइत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे कठिन विषयक उत्तरदायी सार्वजनिक भाषा देखल जाइत अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८५३ : विदेह-सदेह २ — श्रीमती कुमुद झा: उच्चैठ भगवतीक महात्म्य

प्रश्न 8473. खण्ड ८५३क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?
क. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
ख. गार्हस्थ जीवनक समस्या।
ग. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
घ. गायन, कथक, सितार वादन।
उत्तर: क. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार उच्चैठ भगवतीक महात्म्य प्रसंग अछि।

प्रश्न 8474. खण्ड ८५३मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. श्रीमती कुमुद झा।
ग. बिपिन झा।
घ. शीतल झा।
उत्तर: ख. श्रीमती कुमुद झा।
व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय श्रीमती कुमुद झा सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8475. खण्ड ८५३क विधागत पहचान की अछि?

क. संगीत/कला समीक्षा।

ख. राजनीतिक लेखन।

ग. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

घ. सामाजिक निबन्ध।

उत्तर: ग. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

व्याख्या: ई खण्ड धार्मिक-सांस्कृतिक गद्यक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8476. खण्ड ८५३मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

ग. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

घ. भक्ति, तीर्थ-स्मृति आ मिथिला-आस्था।

उत्तर: घ. भक्ति, तीर्थ-स्मृति आ मिथिला-आस्था।

व्याख्या: एहि खण्डमे भक्ति, तीर्थ-स्मृति आ मिथिला-आस्था केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8477. खण्ड ८५३क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. नारी-भक्ति परम्परा।

ख. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ग. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: क. नारी-भक्ति परम्परा।

व्याख्या: नारी-भक्ति परम्परा एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8478. खण्ड ८५३केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. माहात्म्य पाठ स्थानकेँ सामुदायिक स्मृति आ श्रद्धासँ जोड़ैत अछि।

ग. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

घ. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

उत्तर: ख. माहात्म्य पाठ स्थानकेँ सामुदायिक स्मृति आ श्रद्धासँ जोड़ैत अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8479. खण्ड ८५३ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?

क. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।

ख. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।

ग. उच्चैठ भगवतीक प्रसंग मिथिला तीर्थ-परम्पराक सांस्कृतिक प्रमाण अछि।

घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।

उत्तर: ग. उच्चैठ भगवतीक प्रसंग मिथिला तीर्थ-परम्पराक सांस्कृतिक प्रमाण अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक योगदान उच्चैठ भगवतीक प्रसंग मिथिला तीर्थ-परम्पराक सांस्कृतिक प्रमाण अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8480. खण्ड ८५३मे गलत पाठ कोन होयत?

क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।

ख. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।

ग. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।

घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8481. खण्ड ८५३ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8482. खण्ड ८५३क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. उच्चैठ भगवतीक प्रसंग मिथिला तीर्थ-परम्पराक सांस्कृतिक प्रमाण अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. उच्चैठ भगवतीक प्रसंग मिथिला तीर्थ-परम्पराक सांस्कृतिक प्रमाण अछि।
व्याख्या: निचोड़मे उच्चैठ भगवतीक प्रसंग मिथिला तीर्थ-परम्पराक सांस्कृतिक प्रमाण अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८५४ : विदेह-सदेह २ — भक्ति, स्त्री-स्मृति आ मिथिला तीर्थ

प्रश्न 8483. खण्ड ८५४क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?
क. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
ख. गार्हस्थ जीवनक समस्या।
ग. उच्चैठ भगवती आ तीर्थ-माहात्म्य।
घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
उत्तर: ग. उच्चैठ भगवती आ तीर्थ-माहात्म्य।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार उच्चैठ भगवती आ तीर्थ-माहात्म्य प्रसंग अछि।

प्रश्न 8484. खण्ड ८५४मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. बिपिन झा।
ग. शीतल झा।
घ. कुमुद झाक धार्मिक-सांस्कृतिक पाठ।
उत्तर: घ. कुमुद झाक धार्मिक-सांस्कृतिक पाठ।
व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय कुमुद झाक धार्मिक-सांस्कृतिक पाठ सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8485. खण्ड ८५४क विधागत पहचान की अछि?
क. भक्ति-विमर्शक समेकन।
ख. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।
ग. संगीत/कला समीक्षा।
घ. राजनीतिक लेखन।
उत्तर: क. भक्ति-विमर्शक समेकन।
व्याख्या: ई खण्ड भक्ति-विमर्शक समेकनक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8486. खण्ड ८५४मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?
क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।
ख. स्त्री-स्मृति, लोक-आस्था आ क्षेत्रीय तीर्थ।
ग. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।
घ. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।
उत्तर: ख. स्त्री-स्मृति, लोक-आस्था आ क्षेत्रीय तीर्थ।
व्याख्या: एहि खण्डमे स्त्री-स्मृति, लोक-आस्था आ क्षेत्रीय तीर्थ केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8487. खण्ड ८५४क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ख. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

ग. भक्ति-परम्पराक स्त्री-दृष्टि।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: ग. भक्ति-परम्पराक स्त्री-दृष्टि।

व्याख्या: भक्ति-परम्पराक स्त्री-दृष्टि एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8488. खण्ड ८५४केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

ग. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

घ. तीर्थक कथा भूगोलकेँ आस्था आ लोक-इतिहासमे बदलैत अछि।

उत्तर: घ. तीर्थक कथा भूगोलकेँ आस्था आ लोक-इतिहासमे बदलैत अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8489. खण्ड ८५४ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?

क. मिथिला तीर्थ-संस्कृति भाव, स्मृति आ समुदायक संगम अछि।

ख. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।

ग. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।

घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।

उत्तर: क. मिथिला तीर्थ-संस्कृति भाव, स्मृति आ समुदायक संगम अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक योगदान मिथिला तीर्थ-संस्कृति भाव, स्मृति आ समुदायक संगम अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8490. खण्ड ८५४मे गलत पाठ कोन होयत?

क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।

ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।

घ. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।

उत्तर: ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8491. खण्ड ८५४ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8492. खण्ड ८५४क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. मिथिला तीर्थ-संस्कृति भाव, स्मृति आ समुदायक संगम अछि।

उत्तर: घ. मिथिला तीर्थ-संस्कृति भाव, स्मृति आ समुदायक संगम अछि।

व्याख्या: निचोड़मे मिथिला तीर्थ-संस्कृति भाव, स्मृति आ समुदायक संगम अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८५५ : विदेह-सदेह २ — शम्भू झा ‘वत्स’: गार्हस्थ जीवनक समस्या

प्रश्न 8493. खण्ड ८५५क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?

क. गार्हस्थ जीवनक समस्या।

ख. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।

ग. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।

घ. गायन, कथक, सितार वादन।

उत्तर: क. गार्हस्थ जीवनक समस्या।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार गार्हस्थ जीवनक समस्या प्रसंग अछि।

प्रश्न 8494. खण्ड ८५५मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामलोचन ठाकुर।

ख. शम्भू झा ‘वत्स’।

ग. बिपिन झा।

घ. शीतल झा।

उत्तर: ख. शम्भू झा ‘वत्स’।

व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय शम्भू झा ‘वत्स’ सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8495. खण्ड ८५५क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

ख. संगीत/कला समीक्षा।

ग. सामाजिक निबन्ध।

घ. राजनीतिक लेखन।

उत्तर: ग. सामाजिक निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड सामाजिक निबन्धक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8496. खण्ड ८५५मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

ग. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

घ. घर, सम्बन्ध, निजी पीड़ा आ सामाजिक संरचना।

उत्तर: घ. घर, सम्बन्ध, निजी पीड़ा आ सामाजिक संरचना।

व्याख्या: एहि खण्डमे घर, सम्बन्ध, निजी पीड़ा आ सामाजिक संरचना केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8497. खण्ड ८५५क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. अम्बेडकरक सामाजिक आलोचना-संकेत।

ख. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ग. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: क. अम्बेडकरक सामाजिक आलोचना-संकेत।

व्याख्या: अम्बेडकरक सामाजिक आलोचना-संकेत एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8498. खण्ड ८५५केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. गार्हस्थ समस्या केवल निजी नहि, समाजक व्यवस्था आ मूल्यसँ जुड़ल अछि।

ग. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

घ. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

उत्तर: ख. गार्हस्थ समस्या केवल निजी नहि, समाजक व्यवस्था आ मूल्यसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8499. खण्ड ८५५ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?
क. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।
ख. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।
ग. घरक भीतरक पीड़ा सार्वजनिक विमर्शक विषय बनैत अछि।
घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।
उत्तर: ग. घरक भीतरक पीड़ा सार्वजनिक विमर्शक विषय बनैत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डक योगदान घरक भीतरक पीड़ा सार्वजनिक विमर्शक विषय बनैत अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8500. खण्ड ८५५मे गलत पाठ कोन होयत?
क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।
ख. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।
ग. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।
घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8501. खण्ड ८५५ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8502. खण्ड ८५५क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. घरक भीतरक पीड़ा सार्वजनिक विमर्शक विषय बनैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. घरक भीतरक पीड़ा सार्वजनिक विमर्शक विषय बनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे घरक भीतरक पीड़ा सार्वजनिक विमर्शक विषय बनैत अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८५६ : विदेह-सदेह २ — घर, समाज आ निजी पीड़ाक सार्वजनिक अर्थ

प्रश्न 8503. खण्ड ८५६क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?
क. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
ख. गार्हस्थ जीवनक समस्या।
ग. गार्हस्थ जीवनक सामाजिक अर्थ।
घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
उत्तर: ग. गार्हस्थ जीवनक सामाजिक अर्थ।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार गार्हस्थ जीवनक सामाजिक अर्थ प्रसंग अछि।

प्रश्न 8504. खण्ड ८५६मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. बिपिन झा।
ग. शीतल झा।
घ. शम्भू झा ‘वत्स’क प्रसंग।
उत्तर: घ. शम्भू झा ‘वत्स’क प्रसंग।
व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय शम्भू झा ‘वत्स’क प्रसंग सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8505. खण्ड ८५६क विधागत पहचान की अछि?

क. सामाजिक निबन्धक समेकन।

ख. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

ग. संगीत/कला समीक्षा।

घ. राजनीतिक लेखन।

उत्तर: क. सामाजिक निबन्धक समेकन।

व्याख्या: ई खण्ड सामाजिक निबन्धक समेकनक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8506. खण्ड ८५६मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. परिवार, व्यवस्था, नैतिकता आ संवाद।

ग. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

घ. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

उत्तर: ख. परिवार, व्यवस्था, नैतिकता आ संवाद।

व्याख्या: एहि खण्डमे परिवार, व्यवस्था, नैतिकता आ संवाद केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8507. खण्ड ८५६क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ख. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

ग. सामाजिक आलोचनाक लोकधर्मी दृष्टि।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: ग. सामाजिक आलोचनाक लोकधर्मी दृष्टि।

व्याख्या: सामाजिक आलोचनाक लोकधर्मी दृष्टि एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8508. खण्ड ८५६केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

ग. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

घ. निजी दुखक भीतर सामाजिक कारण आ सम्बन्धक दबाव देखल जाइत अछि।

उत्तर: घ. निजी दुखक भीतर सामाजिक कारण आ सम्बन्धक दबाव देखल जाइत अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8509. खण्ड ८५६ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?

क. विदेह-सदेह घरक प्रश्नकेँ सार्वजनिक विचारमे बदलैत अछि।

ख. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।

ग. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।

घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।

उत्तर: क. विदेह-सदेह घरक प्रश्नकेँ सार्वजनिक विचारमे बदलैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक योगदान विदेह-सदेह घरक प्रश्नकेँ सार्वजनिक विचारमे बदलैत अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8510. खण्ड ८५६मे गलत पाठ कोन होयत?

क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।

ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।

घ. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।

उत्तर: ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8511. खण्ड ८५६ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8512. खण्ड ८५६क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. विदेह-सदेह घरक प्रश्नकेँ सार्वजनिक विचारमे बदलैत अछि।
उत्तर: घ. विदेह-सदेह घरक प्रश्नकेँ सार्वजनिक विचारमे बदलैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे विदेह-सदेह घरक प्रश्नकेँ सार्वजनिक विचारमे बदलैत अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८५७ : विदेह-सदेह २ — नागेन्द्र लाल कर्ण: गायन, कथक, सितार आ गिटार

प्रश्न 8513. खण्ड ८५७क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?
क. गायन, कथक, सितार वादन आ गिटार-वादनक प्रस्तुति।
ख. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
ग. गार्हस्थ जीवनक समस्या।
घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
उत्तर: क. गायन, कथक, सितार वादन आ गिटार-वादनक प्रस्तुति।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार गायन, कथक, सितार वादन आ गिटार-वादनक प्रस्तुति प्रसंग अछि।

प्रश्न 8514. खण्ड ८५७मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. नागेन्द्र लाल कर्ण।
ग. बिपिन झा।
घ. शीतल झा।
उत्तर: ख. नागेन्द्र लाल कर्ण।
व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय नागेन्द्र लाल कर्ण सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8515. खण्ड ८५७क विधागत पहचान की अछि?
क. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।
ख. राजनीतिक लेखन।
ग. संगीत/कला समीक्षा।
घ. सामाजिक निबन्ध।
उत्तर: ग. संगीत/कला समीक्षा।
व्याख्या: ई खण्ड संगीत/कला समीक्षाक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8516. खण्ड ८५७मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?
क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।
ख. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।
ग. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।
घ. मंचीय कला, जीवित प्रस्तुति आ बहुविध कलात्मकता।
उत्तर: घ. मंचीय कला, जीवित प्रस्तुति आ बहुविध कलात्मकता।
व्याख्या: एहि खण्डमे मंचीय कला, जीवित प्रस्तुति आ बहुविध कलात्मकता केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8517. खण्ड ८५७क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?
क. बेन्जामिनक जीवित प्रस्तुति-आभा संकेत।
ख. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।
ग. केवल अंक-सूची बनौनाइ।
घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।
उत्तर: क. बेन्जामिनक जीवित प्रस्तुति-आभा संकेत।
व्याख्या: बेन्जामिनक जीवित प्रस्तुति-आभा संकेत एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8518. खण्ड ८५७केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।
ख. गायन, नृत्य आ वाद्य मिलि सांस्कृतिक अनुभव बनबैत अछि।
ग. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।
घ. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।
उत्तर: ख. गायन, नृत्य आ वाद्य मिलि सांस्कृतिक अनुभव बनबैत अछि।
व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8519. खण्ड ८५७ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?
क. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।
ख. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।
ग. मिथिलाक कला-संस्कृति बहुसंवेदी मंचीय परम्परासँ जुड़ैत अछि।
घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाक कला-संस्कृति बहुसंवेदी मंचीय परम्परासँ जुड़ैत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डक योगदान मिथिलाक कला-संस्कृति बहुसंवेदी मंचीय परम्परासँ जुड़ैत अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8520. खण्ड ८५७मे गलत पाठ कोन होयत?
क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।
ख. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।
ग. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।
घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8521. खण्ड ८५७ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8522. खण्ड ८५७क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. मिथिलाक कला-संस्कृति बहुसंवेदी मंचीय परम्परासँ जुड़ैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाक कला-संस्कृति बहुसंवेदी मंचीय परम्परासँ जुड़ैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे मिथिलाक कला-संस्कृति बहुसंवेदी मंचीय परम्परासँ जुड़ैत अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८५८ : विदेह-सदेह २ — मंचीय कला, जीवित प्रस्तुति आ बहुसंवेदी संस्कृति

प्रश्न 8523. खण्ड ८५८क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?

क. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।

ख. गार्हस्थ जीवनक समस्या।

ग. मंचीय गायन, कथक, सितार आ गिटार प्रस्तुति।

घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।

उत्तर: ग. मंचीय गायन, कथक, सितार आ गिटार प्रस्तुति।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार मंचीय गायन, कथक, सितार आ गिटार प्रस्तुति प्रसंग अछि।

प्रश्न 8524. खण्ड ८५८मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामलोचन ठाकुर।

ख. बिपिन झा।

ग. शीतल झा।

घ. नागेन्द्र लाल कर्णक कला-प्रसंग।

उत्तर: घ. नागेन्द्र लाल कर्णक कला-प्रसंग।

व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय नागेन्द्र लाल कर्णक कला-प्रसंग सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8525. खण्ड ८५८क विधागत पहचान की अछि?

क. कला-समीक्षा समेकन।

ख. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

ग. संगीत/कला समीक्षा।

घ. राजनीतिक लेखन।

उत्तर: क. कला-समीक्षा समेकन।

व्याख्या: ई खण्ड कला-समीक्षा समेकनक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8526. खण्ड ८५८मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. श्रव्य, दृश्य, देह-भंगिमा आ वाद्य-संवाद।

ग. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

घ. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

उत्तर: ख. श्रव्य, दृश्य, देह-भंगिमा आ वाद्य-संवाद।

व्याख्या: एहि खण्डमे श्रव्य, दृश्य, देह-भंगिमा आ वाद्य-संवाद केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8527. खण्ड ८५८क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ख. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

ग. जीवित प्रस्तुति आ सांस्कृतिक आभा।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: ग. जीवित प्रस्तुति आ सांस्कृतिक आभा।

व्याख्या: जीवित प्रस्तुति आ सांस्कृतिक आभा एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8528. खण्ड ८५८केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

ग. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

घ. मंच पर कला केवल पाठ नहि, देह, ध्वनि आ दर्शकक साझा अनुभव अछि।

उत्तर: घ. मंच पर कला केवल पाठ नहि, देह, ध्वनि आ दर्शकक साझा अनुभव अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8529. खण्ड ८५८ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?
क. एहि खण्डमे कलाक जीवित क्षणक सांस्कृतिक महत्त्व उभरैत अछि।
ख. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।
ग. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।
घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।
उत्तर: क. एहि खण्डमे कलाक जीवित क्षणक सांस्कृतिक महत्त्व उभरैत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डक योगदान एहि खण्डमे कलाक जीवित क्षणक सांस्कृतिक महत्त्व उभरैत अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8530. खण्ड ८५८मे गलत पाठ कोन होयत?
क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।
ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।
घ. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।
उत्तर: ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8531. खण्ड ८५८ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8532. खण्ड ८५८क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. एहि खण्डमे कलाक जीवित क्षणक सांस्कृतिक महत्त्व उभरैत अछि।
उत्तर: घ. एहि खण्डमे कलाक जीवित क्षणक सांस्कृतिक महत्त्व उभरैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे कलाक जीवित क्षणक सांस्कृतिक महत्त्व उभरैत अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८५९ : विदेह-सदेह २ — डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी: लोकसभामे विद्यापतिक फोटो

प्रश्न 8533. खण्ड ८५९क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?
क. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
ख. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
ग. गार्हस्थ जीवनक समस्या।
घ. गायन, कथक, सितार वादन।
उत्तर: क. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग प्रसंग अछि।

प्रश्न 8534. खण्ड ८५९मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी।
ग. बिपिन झा।
घ. शीतल झा।
उत्तर: ख. डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी।
व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8535. खण्ड ८५९क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

ख. संगीत/कला समीक्षा।

ग. राजनीतिक लेखन।

घ. सामाजिक निबन्ध।

उत्तर: ग. राजनीतिक लेखन।

व्याख्या: ई खण्ड राजनीतिक लेखनक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8536. खण्ड ८५९मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

ग. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

घ. विद्यापति, सांस्कृतिक प्रतीक आ राष्ट्रीय दृश्यता।

उत्तर: घ. विद्यापति, सांस्कृतिक प्रतीक आ राष्ट्रीय दृश्यता।

व्याख्या: एहि खण्डमे विद्यापति, सांस्कृतिक प्रतीक आ राष्ट्रीय दृश्यता केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8537. खण्ड ८५९क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. प्रतीक-राजनीतिक दृष्टि।

ख. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ग. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: क. प्रतीक-राजनीतिक दृष्टि।

व्याख्या: प्रतीक-राजनीतिक दृष्टि एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8538. खण्ड ८५९केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. फोटो-स्थापनाक मांग सांस्कृतिक सम्मान आ प्रतिनिधित्वक प्रश्न अछि।

ग. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

घ. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

उत्तर: ख. फोटो-स्थापनाक मांग सांस्कृतिक सम्मान आ प्रतिनिधित्वक प्रश्न अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8539. खण्ड ८५९ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?

क. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।

ख. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।

ग. विद्यापति मिथिला-मैथिली अस्मिताक सार्वजनिक प्रतीक बनैत छथि।

घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।

उत्तर: ग. विद्यापति मिथिला-मैथिली अस्मिताक सार्वजनिक प्रतीक बनैत छथि।

व्याख्या: एहि खण्डक योगदान विद्यापति मिथिला-मैथिली अस्मिताक सार्वजनिक प्रतीक बनैत छथि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8540. खण्ड ८५९मे गलत पाठ कोन होयत?

क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।

ख. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।

ग. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।

घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8541. खण्ड ८५९ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8542. खण्ड ८५९क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. विद्यापति मिथिला-मैथिली अस्मिताक सार्वजनिक प्रतीक बनैत छथि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. विद्यापति मिथिला-मैथिली अस्मिताक सार्वजनिक प्रतीक बनैत छथि।
व्याख्या: निचोड़मे विद्यापति मिथिला-मैथिली अस्मिताक सार्वजनिक प्रतीक बनैत छथि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८६० : विदेह-सदेह २ — विद्यापति, प्रतीक-राजनीति आ राष्ट्रीय दृश्यता

प्रश्न 8543. खण्ड ८६०क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?
क. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
ख. गार्हस्थ जीवनक समस्या।
ग. लोकसभामे विद्यापतिक दृश्य उपस्थिति।
घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
उत्तर: ग. लोकसभामे विद्यापतिक दृश्य उपस्थिति।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार लोकसभामे विद्यापतिक दृश्य उपस्थिति प्रसंग अछि।

प्रश्न 8544. खण्ड ८६०मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. बिपिन झा।
ग. शीतल झा।
घ. विद्यापति-प्रतीक प्रसंग।
उत्तर: घ. विद्यापति-प्रतीक प्रसंग।
व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय विद्यापति-प्रतीक प्रसंग सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8545. खण्ड ८६०क विधागत पहचान की अछि?
क. सांस्कृतिक-राजनीतिक समेकन।
ख. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।
ग. संगीत/कला समीक्षा।
घ. राजनीतिक लेखन।
उत्तर: क. सांस्कृतिक-राजनीतिक समेकन।
व्याख्या: ई खण्ड सांस्कृतिक-राजनीतिक समेकनक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8546. खण्ड ८६०मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?
क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।
ख. राष्ट्र-स्थानमे मैथिली स्मृति आ मान्यता।
ग. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।
घ. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।
उत्तर: ख. राष्ट्र-स्थानमे मैथिली स्मृति आ मान्यता।
व्याख्या: एहि खण्डमे राष्ट्र-स्थानमे मैथिली स्मृति आ मान्यता केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8547. खण्ड ८६०क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?
क. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।
ख. केवल अंक-सूची बनौनाइ।
ग. प्रतिनिधित्वक सांस्कृतिक सिद्धान्त।
घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।
उत्तर: ग. प्रतिनिधित्वक सांस्कृतिक सिद्धान्त।
व्याख्या: प्रतिनिधित्वक सांस्कृतिक सिद्धान्त एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8548. खण्ड ८६०केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।
ख. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।
ग. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।
घ. लोकसभाक भित्ति पर फोटो मांग दृश्य न्यायक भाषा बनैत अछि।
उत्तर: घ. लोकसभाक भित्ति पर फोटो मांग दृश्य न्यायक भाषा बनैत अछि।
व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8549. खण्ड ८६० विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?
क. एहि खण्डमे साहित्यिक महापुरुष राष्ट्रीय दृश्यता सँ जुड़ैत छथि।
ख. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।
ग. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।
घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।
उत्तर: क. एहि खण्डमे साहित्यिक महापुरुष राष्ट्रीय दृश्यता सँ जुड़ैत छथि।
व्याख्या: एहि खण्डक योगदान एहि खण्डमे साहित्यिक महापुरुष राष्ट्रीय दृश्यता सँ जुड़ैत छथि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8550. खण्ड ८६०मे गलत पाठ कोन होयत?
क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।
ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।
घ. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।
उत्तर: ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8551. खण्ड ८६० विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8552. खण्ड ८६०क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. एहि खण्डमे साहित्यिक महापुरुष राष्ट्रीय दृश्यता सँ जुड़ैत छथि।
उत्तर: घ. एहि खण्डमे साहित्यिक महापुरुष राष्ट्रीय दृश्यता सँ जुड़ैत छथि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे साहित्यिक महापुरुष राष्ट्रीय दृश्यता सँ जुड़ैत छथि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८६१ : विदेह-सदेह २ — भालचन्द्र झा: हमर शिक्षण-यात्रा

प्रश्न 8553. खण्ड ८६१क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?

क. हमर शिक्षण-यात्रा।

ख. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।

ग. गार्हस्थ जीवनक समस्या।

घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।

उत्तर: क. हमर शिक्षण-यात्रा।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार हमर शिक्षण-यात्रा प्रसंग अछि।

प्रश्न 8554. खण्ड ८६१मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामलोचन ठाकुर।

ख. भालचन्द्र झा।

ग. बिपिन झा।

घ. शीतल झा।

उत्तर: ख. भालचन्द्र झा।

व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय भालचन्द्र झा सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8555. खण्ड ८६१क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

ख. संगीत/कला समीक्षा।

ग. आत्मकथात्मक गद्य।

घ. राजनीतिक लेखन।

उत्तर: ग. आत्मकथात्मक गद्य।

व्याख्या: ई खण्ड आत्मकथात्मक गद्यक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8556. खण्ड ८६१मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

ग. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

घ. शिक्षक-अनुभव, यात्रा, समाज आ शिक्षण-दृष्टि।

उत्तर: घ. शिक्षक-अनुभव, यात्रा, समाज आ शिक्षण-दृष्टि।

व्याख्या: एहि खण्डमे शिक्षक-अनुभव, यात्रा, समाज आ शिक्षण-दृष्टि केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8557. खण्ड ८६१क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. फ्रेरेक जन-शिक्षा संकेत।

ख. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ग. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: क. फ्रेरेक जन-शिक्षा संकेत।

व्याख्या: फ्रेरेक जन-शिक्षा संकेत एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8558. खण्ड ८६१केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. शिक्षण-यात्रा निजी संस्मरणसँ आगू बढ़ि सामाजिक शिक्षा-दृष्टि बनैत अछि।

ग. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

घ. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

उत्तर: ख. शिक्षण-यात्रा निजी संस्मरणसँ आगू बढ़ि सामाजिक शिक्षा-दृष्टि बनैत अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8559. खण्ड ८६१ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?
क. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।
ख. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।
ग. शिक्षकक आत्मकथा समाजक सीख आ संघर्षक दस्तावेज बनैत अछि।
घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।
उत्तर: ग. शिक्षकक आत्मकथा समाजक सीख आ संघर्षक दस्तावेज बनैत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डक योगदान शिक्षकक आत्मकथा समाजक सीख आ संघर्षक दस्तावेज बनैत अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8560. खण्ड ८६१मे गलत पाठ कोन होयत?
क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।
ख. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।
ग. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।
घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8561. खण्ड ८६१ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8562. खण्ड ८६१क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. शिक्षकक आत्मकथा समाजक सीख आ संघर्षक दस्तावेज बनैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. शिक्षकक आत्मकथा समाजक सीख आ संघर्षक दस्तावेज बनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे शिक्षकक आत्मकथा समाजक सीख आ संघर्षक दस्तावेज बनैत अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८६२ : विदेह-सदेह २ — शिक्षक-आत्मकथा, शिक्षा-दृष्टि आ समाज

प्रश्न 8563. खण्ड ८६२क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?
क. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
ख. गार्हस्थ जीवनक समस्या।
ग. शिक्षण-यात्राक सामाजिक पाठ।
घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
उत्तर: ग. शिक्षण-यात्राक सामाजिक पाठ।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार शिक्षण-यात्राक सामाजिक पाठ प्रसंग अछि।

प्रश्न 8564. खण्ड ८६२मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. बिपिन झा।
ग. शीतल झा।
घ. भालचन्द्र झाक आत्मकथात्मक प्रसंग।
उत्तर: घ. भालचन्द्र झाक आत्मकथात्मक प्रसंग।
व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय भालचन्द्र झाक आत्मकथात्मक प्रसंग सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8565. खण्ड ८६२क विधागत पहचान की अछि?

क. शिक्षक-आत्मकथा समेकन।

ख. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

ग. संगीत/कला समीक्षा।

घ. राजनीतिक लेखन।

उत्तर: क. शिक्षक-आत्मकथा समेकन।

व्याख्या: ई खण्ड शिक्षक-आत्मकथा समेकनक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8566. खण्ड ८६२मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. शिक्षा, अनुभव, समाज आ आत्मपरीक्षण।

ग. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

घ. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

उत्तर: ख. शिक्षा, अनुभव, समाज आ आत्मपरीक्षण।

व्याख्या: एहि खण्डमे शिक्षा, अनुभव, समाज आ आत्मपरीक्षण केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8567. खण्ड ८६२क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ख. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

ग. लोकशिक्षा आ संवादात्मक शिक्षण।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: ग. लोकशिक्षा आ संवादात्मक शिक्षण।

व्याख्या: लोकशिक्षा आ संवादात्मक शिक्षण एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8568. खण्ड ८६२कैं पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

ग. विषयकैं स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

घ. शिक्षकक कथा संस्था, विद्यार्थी आ समाजक सम्बन्ध खोलैत अछि।

उत्तर: घ. शिक्षकक कथा संस्था, विद्यार्थी आ समाजक सम्बन्ध खोलैत अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकैं साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8569. खण्ड ८६२ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?

क. एहि खण्डमे शिक्षा व्यक्तिगत पेशा नहि, सामाजिक दायित्व बनैत अछि।

ख. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।

ग. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।

घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।

उत्तर: क. एहि खण्डमे शिक्षा व्यक्तिगत पेशा नहि, सामाजिक दायित्व बनैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक योगदान एहि खण्डमे शिक्षा व्यक्तिगत पेशा नहि, सामाजिक दायित्व बनैत अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8570. खण्ड ८६२मे गलत पाठ कोन होयत?

क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।

ख. विषयकैं केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।

घ. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।

उत्तर: ख. विषयकैं केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8571. खण्ड ८६२ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8572. खण्ड ८६२क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. एहि खण्डमे शिक्षा व्यक्तिगत पेशा नहि, सामाजिक दायित्व बनैत अछि।
उत्तर: घ. एहि खण्डमे शिक्षा व्यक्तिगत पेशा नहि, सामाजिक दायित्व बनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे शिक्षा व्यक्तिगत पेशा नहि, सामाजिक दायित्व बनैत अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८६३ : विदेह-सदेह २ — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्व

प्रश्न 8573. खण्ड ८६३क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?
क. मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्व आ सम्पादकीय-सन्देश।
ख. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।
ग. गार्हस्थ जीवनक समस्या।
घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।
उत्तर: क. मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्व आ सम्पादकीय-सन्देश।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्व आ सम्पादकीय-सन्देश प्रसंग अछि।

प्रश्न 8574. खण्ड ८६३मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामलोचन ठाकुर।
ख. गजेन्द्र ठाकुर।
ग. बिपिन झा।
घ. शीतल झा।
उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुर।
व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय गजेन्द्र ठाकुर सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8575. खण्ड ८६३क विधागत पहचान की अछि?
क. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।
ख. संगीत/कला समीक्षा।
ग. आलोचना/सम्पादकीय गद्य।
घ. राजनीतिक लेखन।
उत्तर: ग. आलोचना/सम्पादकीय गद्य।
व्याख्या: ई खण्ड आलोचना/सम्पादकीय गद्यक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8576. खण्ड ८६३मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?
क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।
ख. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।
ग. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।
घ. समीक्षा-पद्धति, प्रमाण, मानक आ साहित्यिक जिम्मेदारी।
उत्तर: घ. समीक्षा-पद्धति, प्रमाण, मानक आ साहित्यिक जिम्मेदारी।
व्याख्या: एहि खण्डमे समीक्षा-पद्धति, प्रमाण, मानक आ साहित्यिक जिम्मेदारी केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8577. खण्ड ८६३क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. नव्य-न्यायक प्रमाण-शास्त्र संकेत।

ख. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ग. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: क. नव्य-न्यायक प्रमाण-शास्त्र संकेत।

व्याख्या: नव्य-न्यायक प्रमाण-शास्त्र संकेत एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8578. खण्ड ८६३केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. समीक्षा मत-प्रदर्शन मात्र नहि, प्रमाण आ कसौटीक अनुशासन अछि।

ग. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

घ. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

उत्तर: ख. समीक्षा मत-प्रदर्शन मात्र नहि, प्रमाण आ कसौटीक अनुशासन अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8579. खण्ड ८६३ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?

क. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।

ख. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।

ग. मैथिली आलोचनाकेँ स्पष्ट तत्व, पद्धति आ उत्तरदायित्व चाही।

घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।

उत्तर: ग. मैथिली आलोचनाकेँ स्पष्ट तत्व, पद्धति आ उत्तरदायित्व चाही।

व्याख्या: एहि खण्डक योगदान मैथिली आलोचनाकेँ स्पष्ट तत्व, पद्धति आ उत्तरदायित्व चाही रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8580. खण्ड ८६३मे गलत पाठ कोन होयत?

क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।

ख. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।

ग. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।

घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8581. खण्ड ८६३ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8582. खण्ड ८६३क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. मैथिली आलोचनाकेँ स्पष्ट तत्व, पद्धति आ उत्तरदायित्व चाही।

ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

उत्तर: ख. मैथिली आलोचनाकेँ स्पष्ट तत्व, पद्धति आ उत्तरदायित्व चाही।

व्याख्या: निचोड़मे मैथिली आलोचनाकेँ स्पष्ट तत्व, पद्धति आ उत्तरदायित्व चाही स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८६४ : विदेह-सदेह २ — सम्पादकीय, भाषा-संपादन पाठ्यक्रम आ विनीत उत्पलक संवाद

प्रश्न 8583. खण्ड ८६४क मुख्य आधार कोन पाठ/प्रसंग अछि?

क. उच्चैठ भगवतीक महात्म्य।

ख. गार्हस्थ जीवनक समस्या।

ग. सम्पादकीय-सन्देश, भाषा-संपादन पाठ्यक्रम आ साक्षात्कार/काव्य-संवाद।

घ. विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग।

उत्तर: ग. सम्पादकीय-सन्देश, भाषा-संपादन पाठ्यक्रम आ साक्षात्कार/काव्य-संवाद।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार सम्पादकीय-सन्देश, भाषा-संपादन पाठ्यक्रम आ साक्षात्कार/काव्य-संवाद प्रसंग अछि।

प्रश्न 8584. खण्ड ८६४मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामलोचन ठाकुर।

ख. बिपिन झा।

ग. शीतल झा।

घ. गजेन्द्र ठाकुर आ विनीत उत्पलक प्रसंग।

उत्तर: घ. गजेन्द्र ठाकुर आ विनीत उत्पलक प्रसंग।

व्याख्या: एहि खण्डक शीर्षक आ विषय गजेन्द्र ठाकुर आ विनीत उत्पलक प्रसंग सँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 8585. खण्ड ८६४क विधागत पहचान की अछि?

क. सम्पादकीय आ संवादात्मक गद्य।

ख. धार्मिक-सांस्कृतिक गद्य।

ग. संगीत/कला समीक्षा।

घ. राजनीतिक लेखन।

उत्तर: क. सम्पादकीय आ संवादात्मक गद्य।

व्याख्या: ई खण्ड सम्पादकीय आ संवादात्मक गद्यक धरातल पर पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8586. खण्ड ८६४मे मुख्य वैचारिक/सांस्कृतिक सूत्र की अछि?

क. केवल पृष्ठ-संख्याक यांत्रिक सूची।

ख. भाषा-संपादन, मानक शैली, नव पीढ़ी आ साहित्यिक संवाद।

ग. केवल लेखक-नामक वर्णक्रम।

घ. केवल विज्ञापनात्मक सूचना।

उत्तर: ख. भाषा-संपादन, मानक शैली, नव पीढ़ी आ साहित्यिक संवाद।

व्याख्या: एहि खण्डमे भाषा-संपादन, मानक शैली, नव पीढ़ी आ साहित्यिक संवाद केन्द्रमे अछि।

प्रश्न 8587. खण्ड ८६४क अध्ययनमे कोन सैद्धान्तिक संकेत सहायक अछि?

क. केवल छन्द-गणनाक अभ्यास।

ख. केवल अंक-सूची बनौनाइ।

ग. बाख्तिनक संवादधर्मिता संकेत।

घ. केवल टाइप-फेसक तुलना।

उत्तर: ग. बाख्तिनक संवादधर्मिता संकेत।

व्याख्या: बाख्तिनक संवादधर्मिता संकेत एहि पाठक गहिर अर्थ खोलबाक उपकरण बनैत अछि।

प्रश्न 8588. खण्ड ८६४केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. शीर्षक देखिकऽ पाठ छोड़ि देब।

ख. केवल नाम-तालिका बनाकऽ समाप्त करब।

ग. विषयकेँ स्रोत-सूत्रसँ काटि देब।

घ. सम्पादकीय मंच पाठ्यक्रम, भाषा-मानक आ लेखक-संवादकेँ जोड़ैत अछि।

उत्तर: घ. सम्पादकीय मंच पाठ्यक्रम, भाषा-मानक आ लेखक-संवादकेँ जोड़ैत अछि।

व्याख्या: सही पद्धति पाठक आशय, विधा आ सन्दर्भकेँ साथ पढ़ब अछि।

प्रश्न 8589. खण्ड ८६४ विदेह-सदेह २मे कोन योगदान करैत अछि?
क. एहि खण्डमे विदेह-सदेह २क आगेक भाषा-सांस्कृतिक दिशा खुलैत अछि।
ख. ई खण्ड मुख्यतः बाहरी विज्ञापन अछि।
ग. ई खण्ड केवल वेब-पता सूची अछि।
घ. ई खण्ड स्रोत-विमर्शसँ असम्बद्ध अछि।
उत्तर: क. एहि खण्डमे विदेह-सदेह २क आगेक भाषा-सांस्कृतिक दिशा खुलैत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डक योगदान एहि खण्डमे विदेह-सदेह २क आगेक भाषा-सांस्कृतिक दिशा खुलैत अछि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 8590. खण्ड ८६४मे गलत पाठ कोन होयत?
क. विषयक विधा आ सन्दर्भ देखब।
ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. पाठक सामाजिक आ भाषिक आशय बुझब।
घ. स्रोत-सूत्रक आधार पर प्रश्न बनब।
उत्तर: ख. विषयकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: एहि तरहक सतही पाठसँ खण्डक बौद्धिक महत्त्व नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8591. खण्ड ८६४ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न पाठक भीतरक सम्बन्ध आ तर्क बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

प्रश्न 8592. खण्ड ८६४क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. एहि खण्डमे विदेह-सदेह २क आगेक भाषा-सांस्कृतिक दिशा खुलैत अछि।
उत्तर: घ. एहि खण्डमे विदेह-सदेह २क आगेक भाषा-सांस्कृतिक दिशा खुलैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे विदेह-सदेह २क आगेक भाषा-सांस्कृतिक दिशा खुलैत अछि स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८६५ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: जन्म, परिवार आ आरम्भिक पृष्ठभूमि

प्रश्न 8593. खण्ड ८६५क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. जीवकान्तक जन्म, परिवार आ आरम्भिक जीवन-स्मृति।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: क. जीवकान्तक जन्म, परिवार आ आरम्भिक जीवन-स्मृति।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार जीवकान्तक जन्म, परिवार आ आरम्भिक जीवन-स्मृति। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8594. खण्ड ८६५मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. जीवकान्त।
ग. राजमोहन झा।
घ. अंशुमाला।
उत्तर: ख. जीवकान्त।
व्याख्या: एहि खण्डमे जीवकान्त। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8595. खण्ड ८६५क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक माहात्म्य।

ख. संगीत-संवाद।

ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8596. खण्ड ८६५मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. २७ जुलाई १९३६ केँ सुपौल जिलाक अभुआढ़ मामाक गाममे जन्म।

उत्तर: घ. २७ जुलाई १९३६ केँ सुपौल जिलाक अभुआढ़ मामाक गाममे जन्म।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे २७ जुलाई १९३६ केँ सुपौल जिलाक अभुआढ़ मामाक गाममे जन्म। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8597. खण्ड ८६५मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. मामाक गाम आ मधुबन डेओढ़—दूनू लालन-पालनक आधार।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. मामाक गाम आ मधुबन डेओढ़—दूनू लालन-पालनक आधार।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल मामाक गाम आ मधुबन डेओढ़—दूनू लालन-पालनक आधार। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8598. खण्ड ८६५मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. संयुक्त परिवार आ गामक रामायण-पाठ लेखकीय संस्कारक आधार।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. संयुक्त परिवार आ गामक रामायण-पाठ लेखकीय संस्कारक आधार।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे संयुक्त परिवार आ गामक रामायण-पाठ लेखकीय संस्कारक आधार। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8599. खण्ड ८६५केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. व्यक्ति-स्मृति केँ गामक पाठ-संस्कृति आ परिवारसँ जोड़ि पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. व्यक्ति-स्मृति केँ गामक पाठ-संस्कृति आ परिवारसँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति व्यक्ति-स्मृति केँ गामक पाठ-संस्कृति आ परिवारसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8600. खण्ड ८६५मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8601. खण्ड ८६५ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8602. खण्ड ८६५क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. जीवकान्तक आरम्भिक जीवन गाम, संयुक्त परिवार आ पाठ-परम्परासँ बनल साहित्यिक आधार देखबैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्तक आरम्भिक जीवन गाम, संयुक्त परिवार आ पाठ-परम्परासँ बनल साहित्यिक आधार देखबैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे जीवकान्तक आरम्भिक जीवन गाम, संयुक्त परिवार आ पाठ-परम्परासँ बनल साहित्यिक आधार देखबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८६६ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: मिथिला मिहिर, पहिल कविता आ लेखन-प्रवेश

प्रश्न 8603. खण्ड ८६६क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. मिथिला मिहिर, पहिल कविता आ मैथिली लेखन-प्रवेश।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: ग. मिथिला मिहिर, पहिल कविता आ मैथिली लेखन-प्रवेश।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार मिथिला मिहिर, पहिल कविता आ मैथिली लेखन-प्रवेश। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8604. खण्ड ८६६मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. राजमोहन झा।
ग. अंशुमाला।
घ. जीवकान्त।
उत्तर: घ. जीवकान्त।
व्याख्या: एहि खण्डमे जीवकान्त। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8605. खण्ड ८६६क विधागत पहचान की अछि?
क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
ख. धार्मिक माहात्म्य।
ग. संगीत-संवाद।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8606. खण्ड ८६६मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मिथिला मिहिर पढ़बाक प्रभाव स्वीकारल गेल।
ग. मूल प्रसंग हटाएब।
घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
उत्तर: ख. मिथिला मिहिर पढ़बाक प्रभाव स्वीकारल गेल।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे मिथिला मिहिर पढ़बाक प्रभाव स्वीकारल गेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8607. खण्ड ८६६मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?
क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।
ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।
ग. “इजोरिया आ टिटही” पहिल कविता रूपमे स्मरण कएल गेल।
घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।
उत्तर: ग. “इजोरिया आ टिटही” पहिल कविता रूपमे स्मरण कएल गेल।
व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल “इजोरिया आ टिटही” पहिल कविता रूपमे स्मरण कएल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8608. खण्ड ८६६मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?
क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।
ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।
घ. हिन्दी आ मैथिली बीच भाषा-चयनक अहापोह रहल।
उत्तर: घ. हिन्दी आ मैथिली बीच भाषा-चयनक अहापोह रहल।
व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे हिन्दी आ मैथिली बीच भाषा-चयनक अहापोह रहल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8609. खण्ड ८६६केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. भाषा-चयन, पत्रिका-संवाद आ ग्रामीण अनुभवसँ रचनाकार बनब।
ख. केवल तिथि वा नाम रटब।
ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: क. भाषा-चयन, पत्रिका-संवाद आ ग्रामीण अनुभवसँ रचनाकार बनब।
व्याख्या: सही पद्धति भाषा-चयन, पत्रिका-संवाद आ ग्रामीण अनुभवसँ रचनाकार बनब। अछि।

प्रश्न 8610. खण्ड ८६६मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8611. खण्ड ८६६ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8612. खण्ड ८६६क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. मिथिला मिहिर, कविता आ गामक अनुभव जीवकान्तक मैथिली लेखनक मूल द्वार बनल।
उत्तर: घ. मिथिला मिहिर, कविता आ गामक अनुभव जीवकान्तक मैथिली लेखनक मूल द्वार बनल।
व्याख्या: निचोड़मे मिथिला मिहिर, कविता आ गामक अनुभव जीवकान्तक मैथिली लेखनक मूल द्वार बनल। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८६७ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: कविता, समीक्षा आ नव लेखक

प्रश्न 8613. खण्ड ८६७क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. कविता, छोट समीक्षा आ नव लेखकबारे जीवकान्तक दृष्टि।

ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

घ. साहित्य अकादमी विवाद।

उत्तर: क. कविता, छोट समीक्षा आ नव लेखकबारे जीवकान्तक दृष्टि।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार कविता, छोट समीक्षा आ नव लेखकबारे जीवकान्तक दृष्टि। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8614. खण्ड ८६७मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामरंगजी।

ख. जीवकान्त।

ग. राजमोहन झा।

घ. अंशुमाला।

उत्तर: ख. जीवकान्त।

व्याख्या: एहि खण्डमे जीवकान्त। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8615. खण्ड ८६७क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक माहात्म्य।

ख. संगीत-संवाद।

ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8616. खण्ड ८६७मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. “तकैत अछि चिड़ै” कविता-संग्रह साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ जुड़ल।

उत्तर: घ. “तकैत अछि चिड़ै” कविता-संग्रह साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ जुड़ल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे “तकैत अछि चिड़ै” कविता-संग्रह साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ जुड़ल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8617. खण्ड ८६७मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. कविता अन्तमे अर्थक मोड़ लऽ सकैत अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. कविता अन्तमे अर्थक मोड़ लऽ सकैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल कविता अन्तमे अर्थक मोड़ लऽ सकैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8618. खण्ड ८६७मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. नव लेखक देहातसँ सेहो तेजीसँ आबि रहल छथि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. नव लेखक देहातसँ सेहो तेजीसँ आबि रहल छथि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे नव लेखक देहातसँ सेहो तेजीसँ आबि रहल छथि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8619. खण्ड ८६७केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. कविता, टिप्पणी, पाठक आ नव लेखनकेँ एक साहित्यिक संवादमे देखब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. कविता, टिप्पणी, पाठक आ नव लेखनकेँ एक साहित्यिक संवादमे देखब।
व्याख्या: सही पद्धति कविता, टिप्पणी, पाठक आ नव लेखनकेँ एक साहित्यिक संवादमे देखब। अछि।

प्रश्न 8620. खण्ड ८६७मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8621. खण्ड ८६७ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8622. खण्ड ८६७क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. जीवकान्तक दृष्टिमे कविता, पाठक, छोट समीक्षा आ नव पीढ़ी मैथिली साहित्यकेँ जीवित रखैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्तक दृष्टिमे कविता, पाठक, छोट समीक्षा आ नव पीढ़ी मैथिली साहित्यकेँ जीवित रखैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे जीवकान्तक दृष्टिमे कविता, पाठक, छोट समीक्षा आ नव पीढ़ी मैथिली साहित्यकेँ जीवित रखैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८६८ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: मैथिली समीक्षा पर कठोर मत

प्रश्न 8623. खण्ड ८६८क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. मैथिली आ भारतीय समीक्षा पर जीवकान्तक कठोर मत।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: ग. मैथिली आ भारतीय समीक्षा पर जीवकान्तक कठोर मत।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार मैथिली आ भारतीय समीक्षा पर जीवकान्तक कठोर मत। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8624. खण्ड ८६८मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. राजमोहन झा।
ग. अंशुमाला।
घ. जीवकान्त।
उत्तर: घ. जीवकान्त।
व्याख्या: एहि खण्डमे जीवकान्त। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8625. खण्ड ८६८क विधागत पहचान की अछि?

क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

ख. धार्मिक माहात्म्य।

ग. संगीत-संवाद।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8626. खण्ड ८६८मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. समीक्षा यूरोपसँ आएल मुदा भारतमे ई विधा पिछड़ल कहल गेल।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. समीक्षा यूरोपसँ आएल मुदा भारतमे ई विधा पिछड़ल कहल गेल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे समीक्षा यूरोपसँ आएल मुदा भारतमे ई विधा पिछड़ल कहल गेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8627. खण्ड ८६८मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. तटस्थ मूल्यांकन आ गम्भीर समीक्षा-काजक कमी देखाओल गेल।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. तटस्थ मूल्यांकन आ गम्भीर समीक्षा-काजक कमी देखाओल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल तटस्थ मूल्यांकन आ गम्भीर समीक्षा-काजक कमी देखाओल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8628. खण्ड ८६८मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. विद्यापति पर मैथिलीमे नीक समीक्षा नहि भेल—एहन कठोर संकेत आएल।

उत्तर: घ. विद्यापति पर मैथिलीमे नीक समीक्षा नहि भेल—एहन कठोर संकेत आएल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे विद्यापति पर मैथिलीमे नीक समीक्षा नहि भेल—एहन कठोर संकेत आएल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8629. खण्ड ८६८केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. तीखा कथनकेँ समीक्षा-पद्धति सुधारक चेतावनी रूपमे पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. तीखा कथनकेँ समीक्षा-पद्धति सुधारक चेतावनी रूपमे पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति तीखा कथनकेँ समीक्षा-पद्धति सुधारक चेतावनी रूपमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8630. खण्ड ८६८मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8631. खण्ड ८६८ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8632. खण्ड ८६८क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. जीवकान्त मैथिली समीक्षाकेँ तटस्थ, प्रमाणसिद्ध आ गुटमुक्त बनबाक कठोर मांग करैत छथि।
उत्तर: घ. जीवकान्त मैथिली समीक्षाकेँ तटस्थ, प्रमाणसिद्ध आ गुटमुक्त बनबाक कठोर मांग करैत छथि।
व्याख्या: निचोड़मे जीवकान्त मैथिली समीक्षाकेँ तटस्थ, प्रमाणसिद्ध आ गुटमुक्त बनबाक कठोर मांग करैत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८६९ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: अनुभव, प्रचार-प्रसार आ इन्टरनेट

प्रश्न 8633. खण्ड ८६९क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. रचनामे अनुभव, मैथिली प्रचार-प्रसार आ इन्टरनेट।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: क. रचनामे अनुभव, मैथिली प्रचार-प्रसार आ इन्टरनेट।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार रचनामे अनुभव, मैथिली प्रचार-प्रसार आ इन्टरनेट। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8634. खण्ड ८६९मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. जीवकान्त।
ग. राजमोहन झा।
घ. अंशुमाला।
उत्तर: ख. जीवकान्त।
व्याख्या: एहि खण्डमे जीवकान्त। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8635. खण्ड ८६९क विधागत पहचान की अछि?
क. धार्मिक माहात्म्य।
ख. संगीत-संवाद।
ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8636. खण्ड ८६९मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मूल प्रसंग हटाएब।
ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
घ. लेखक अपन अनुभवकेँ पुनर्जीवित करैत अछि।
उत्तर: घ. लेखक अपन अनुभवकेँ पुनर्जीवित करैत अछि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे लेखक अपन अनुभवकेँ पुनर्जीवित करैत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8637. खण्ड ८६९मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?
क. शिक्षक स्तर बढ़ब मैथिली प्रचार-प्रसार लेल जरूरी मानल गेल।
ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।
ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।
घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।
उत्तर: क. शिक्षक स्तर बढ़ब मैथिली प्रचार-प्रसार लेल जरूरी मानल गेल।
व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल शिक्षक स्तर बढ़ब मैथिली प्रचार-प्रसार लेल जरूरी मानल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8638. खण्ड ८६९मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?
क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।
ख. इन्टरनेटपर मैथिली बढ़ि रहल अछि—एहन सकारात्मक संकेत भेटैत अछि।
ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. इन्टरनेटपर मैथिली बढ़ि रहल अछि—एहन सकारात्मक संकेत भेटैत अछि।
व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे इन्टरनेटपर मैथिली बढ़ि रहल अछि—एहन सकारात्मक संकेत भेटैत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8639. खण्ड ८६९केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. अनुभव, शिक्षा, साक्षरता आ डिजिटल माध्यमक सम्बन्ध देखब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. अनुभव, शिक्षा, साक्षरता आ डिजिटल माध्यमक सम्बन्ध देखब।
व्याख्या: सही पद्धति अनुभव, शिक्षा, साक्षरता आ डिजिटल माध्यमक सम्बन्ध देखब। अछि।

प्रश्न 8640. खण्ड ८६९मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8641. खण्ड ८६९ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8642. खण्ड ८६९क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. जीवकान्त अनुभवाधारित लेखनकेँ शिक्षा, साक्षरता आ डिजिटल माध्यमसँ जोड़ि मैथिली भविष्य देखैत छथि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्त अनुभवाधारित लेखनकेँ शिक्षा, साक्षरता आ डिजिटल माध्यमसँ जोड़ि मैथिली भविष्य देखैत छथि।
व्याख्या: निचोड़मे जीवकान्त अनुभवाधारित लेखनकेँ शिक्षा, साक्षरता आ डिजिटल माध्यमसँ जोड़ि मैथिली भविष्य देखैत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८७० : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: विद्रोह, मार्क्सवाद आ समाजवाद

प्रश्न 8643. खण्ड ८७०क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

ग. विद्रोही रचना, मार्क्सवाद, समाजवाद आ भारतीय संदर्भ।

घ. साहित्य अकादमी विवाद।

उत्तर: ग. विद्रोही रचना, मार्क्सवाद, समाजवाद आ भारतीय संदर्भ।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार विद्रोही रचना, मार्क्सवाद, समाजवाद आ भारतीय संदर्भ। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8644. खण्ड ८७०मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामरंगजी।

ख. राजमोहन झा।

ग. अंशुमाला।

घ. जीवकान्त।

उत्तर: घ. जीवकान्त।

व्याख्या: एहि खण्डमे जीवकान्त। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8645. खण्ड ८७०क विधागत पहचान की अछि?

क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

ख. धार्मिक माहात्म्य।

ग. संगीत-संवाद।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8646. खण्ड ८७०मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. अन्यायक खिलाफ आवाज उठेबाक मनोदशा रचनाक विद्रोही आधार अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. अन्यायक खिलाफ आवाज उठेबाक मनोदशा रचनाक विद्रोही आधार अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे अन्यायक खिलाफ आवाज उठेबाक मनोदशा रचनाक विद्रोही आधार अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8647. खण्ड ८७०मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. मार्क्सवाद आ लोहिया दुनूक प्रभाव स्वीकारल गेल।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. मार्क्सवाद आ लोहिया दुनूक प्रभाव स्वीकारल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल मार्क्सवाद आ लोहिया दुनूक प्रभाव स्वीकारल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8648. खण्ड ८७०मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. भारतीय संदर्भमे समाजवाद आ गांधीक प्रासंगिकता पर विचार अछि।

उत्तर: घ. भारतीय संदर्भमे समाजवाद आ गांधीक प्रासंगिकता पर विचार अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे भारतीय संदर्भमे समाजवाद आ गांधीक प्रासंगिकता पर विचार अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8649. खण्ड ८७०केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. विद्रोह, गरीबी, बराबरी, हिंसा आ भारतीय सामाजिक संदर्भ एकसाथ देखब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. विद्रोह, गरीबी, बराबरी, हिंसा आ भारतीय सामाजिक संदर्भ एकसाथ देखब।

व्याख्या: सही पद्धति विद्रोह, गरीबी, बराबरी, हिंसा आ भारतीय सामाजिक संदर्भ एकसाथ देखब। अछि।

प्रश्न 8650. खण्ड ८७०मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8651. खण्ड ८७० विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8652. खण्ड ८७०क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. जीवकान्त अन्याय-विरोध, बराबरी आ भारतीय सामाजिक यथार्थक आधार पर मार्क्सवाद-समाजवाद पर विचार करैत छथि।

उत्तर: घ. जीवकान्त अन्याय-विरोध, बराबरी आ भारतीय सामाजिक यथार्थक आधार पर मार्क्सवाद-समाजवाद पर विचार करैत छथि।

व्याख्या: निचोड़मे जीवकान्त अन्याय-विरोध, बराबरी आ भारतीय सामाजिक यथार्थक आधार पर मार्क्सवाद-समाजवाद पर विचार करैत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८७१ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: परम्परा, परिवर्तन आ लेखकीय नैतिकता

प्रश्न 8653. खण्ड ८७१क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. परम्परा, परिवर्तन, सत्य-लेखन आ नैतिकता।

ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

घ. साहित्य अकादमी विवाद।

उत्तर: क. परम्परा, परिवर्तन, सत्य-लेखन आ नैतिकता।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार परम्परा, परिवर्तन, सत्य-लेखन आ नैतिकता। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8654. खण्ड ८७१मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामरंगजी।

ख. जीवकान्त।

ग. राजमोहन झा।

घ. अंशुमाला।

उत्तर: ख. जीवकान्त।

व्याख्या: एहि खण्डमे जीवकान्त। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8655. खण्ड ८७१क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक माहात्म्य।

ख. संगीत-संवाद।

ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8656. खण्ड ८७१मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. विरोधक बावजूद सुमन जीक काव्य आ अध्यात्मिक योगदानक मूल्यांकन सम्भव मानल गेल।

उत्तर: घ. विरोधक बावजूद सुमन जीक काव्य आ अध्यात्मिक योगदानक मूल्यांकन सम्भव मानल गेल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे विरोधक बावजूद सुमन जीक काव्य आ अध्यात्मिक योगदानक मूल्यांकन सम्भव मानल गेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8657. खण्ड ८७१मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. जे परिवर्तनक समर्थक होएत, ओ कालजयी होएत—एहन मत अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. जे परिवर्तनक समर्थक होएत, ओ कालजयी होएत—एहन मत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल जे परिवर्तनक समर्थक होएत, ओ कालजयी होएत—एहन मत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8658. खण्ड ८७१मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. लोककेँ सभ ठाम ईमानदार हेबाक चाही—लेखन नैतिकताक मूल आग्रह अछि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. लोककेँ सभ ठाम ईमानदार हेबाक चाही—लेखन नैतिकताक मूल आग्रह अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे लोककेँ सभ ठाम ईमानदार हेबाक चाही—लेखन नैतिकताक मूल आग्रह अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8659. खण्ड ८७१केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. लेखनक नैतिकता, सत्य-भाषण आ रचनात्मक परिवर्तन पहचानब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. लेखनक नैतिकता, सत्य-भाषण आ रचनात्मक परिवर्तन पहचानब।

व्याख्या: सही पद्धति लेखनक नैतिकता, सत्य-भाषण आ रचनात्मक परिवर्तन पहचानब। अछि।

प्रश्न 8660. खण्ड ८७१मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8661. खण्ड ८७१ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8662. खण्ड ८७१क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. जीवकान्त परम्पराकेँ नकारि नहि, सत्य-लेखन आ परिवर्तनक नैतिक आग्रहसँ पढ़ैत छथि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्त परम्पराकेँ नकारि नहि, सत्य-लेखन आ परिवर्तनक नैतिक आग्रहसँ पढ़ैत छथि।
व्याख्या: निचोड़मे जीवकान्त परम्पराकेँ नकारि नहि, सत्य-लेखन आ परिवर्तनक नैतिक आग्रहसँ पढ़ैत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८७२ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: मैथिली पोथी, पाठक आ प्रकाशन-संकट

प्रश्न 8663. खण्ड ८७२क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. मैथिली पोथी, पाठक-वर्ग, प्रकाशन आ वितरणक संकट।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: ग. मैथिली पोथी, पाठक-वर्ग, प्रकाशन आ वितरणक संकट।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार मैथिली पोथी, पाठक-वर्ग, प्रकाशन आ वितरणक संकट। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8664. खण्ड ८७२मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. राजमोहन झा।
ग. अंशुमाला।
घ. जीवकान्त।
उत्तर: घ. जीवकान्त।
व्याख्या: एहि खण्डमे जीवकान्त। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8665. खण्ड ८७२क विधागत पहचान की अछि?
क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
ख. धार्मिक माहात्म्य।
ग. संगीत-संवाद।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8666. खण्ड ८७२मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मधुबनीमे मैथिली पोथी नहि भेटबाक प्रश्न पाठक आ वितरण संकटसँ जुड़ल।
ग. मूल प्रसंग हटाएब।
घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
उत्तर: ख. मधुबनीमे मैथिली पोथी नहि भेटबाक प्रश्न पाठक आ वितरण संकटसँ जुड़ल।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे मधुबनीमे मैथिली पोथी नहि भेटबाक प्रश्न पाठक आ वितरण संकटसँ जुड़ल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8667. खण्ड ८७२मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. पढ़ैबला लोक बाहर चलि जाइत अछि—एहन कटु टिप्पणी अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. पढ़ैबला लोक बाहर चलि जाइत अछि—एहन कटु टिप्पणी अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल पढ़ैबला लोक बाहर चलि जाइत अछि—एहन कटु टिप्पणी अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8668. खण्ड ८७२मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. गीता प्रेस आ हिन्द पॉकेट बुक्स व्यापक वितरणक उदाहरण रूपमे आएत अछि।

उत्तर: घ. गीता प्रेस आ हिन्द पॉकेट बुक्स व्यापक वितरणक उदाहरण रूपमे आएत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे गीता प्रेस आ हिन्द पॉकेट बुक्स व्यापक वितरणक उदाहरण रूपमे आएत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8669. खण्ड ८७२केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. पोथी-संस्कृति केँ पाठक, बाजार, वितरण आ साहित्यिक सम्मानसँ जोड़ि पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. पोथी-संस्कृति केँ पाठक, बाजार, वितरण आ साहित्यिक सम्मानसँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति पोथी-संस्कृति केँ पाठक, बाजार, वितरण आ साहित्यिक सम्मानसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8670. खण्ड ८७२मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8671. खण्ड ८७२ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8672. खण्ड ८७२क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. जीवकान्त मैथिली पोथी-संस्कृतिक संकटकेँ पाठक-वर्ग, वितरण आ प्रकाशन-संरचनासँ जोड़ि देखैत छथि।

उत्तर: घ. जीवकान्त मैथिली पोथी-संस्कृतिक संकटकेँ पाठक-वर्ग, वितरण आ प्रकाशन-संरचनासँ जोड़ि देखैत छथि।

व्याख्या: निचोड़मे जीवकान्त मैथिली पोथी-संस्कृतिक संकटकेँ पाठक-वर्ग, वितरण आ प्रकाशन-संरचनासँ जोड़ि देखैत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८७३ : विदेह-सदेह २ — राजमोहन झा साक्षात्कार: साहित्य आ जनसामान्य

प्रश्न 8673. खण्ड ८७३क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. राजमोहन झासँ गजेन्द्र ठाकुरक साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

घ. साहित्य अकादमी विवाद।

उत्तर: क. राजमोहन झासँ गजेन्द्र ठाकुरक साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार राजमोहन झासँ गजेन्द्र ठाकुरक साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8674. खण्ड ८७३मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामरंगजी।

ख. राजमोहन झा।

ग. जीवकान्त।

घ. अंशुमाला।

उत्तर: ख. राजमोहन झा।

व्याख्या: एहि खण्डमे राजमोहन झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8675. खण्ड ८७३क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक माहात्म्य।

ख. संगीत-संवाद।

ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8676. खण्ड ८७३मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. मैथिली साहित्यक जनसामान्यसँ दूरी पर प्रश्न उठल।

उत्तर: घ. मैथिली साहित्यक जनसामान्यसँ दूरी पर प्रश्न उठल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे मैथिली साहित्यक जनसामान्यसँ दूरी पर प्रश्न उठल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8677. खण्ड ८७३मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. गोष्ठी आ कवि-सम्मेलन धरि सीमित साहित्यकारक आलोचना भेल।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. गोष्ठी आ कवि-सम्मेलन धरि सीमित साहित्यकारक आलोचना भेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल गोष्ठी आ कवि-सम्मेलन धरि सीमित साहित्यकारक आलोचना भेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8678. खण्ड ८७३मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. हरिमोहन झाक लोकप्रियता आ पाठक-वर्गक प्रश्न उठल।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. हरिमोहन झाक लोकप्रियता आ पाठक-वर्गक प्रश्न उठल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे हरिमोहन झाक लोकप्रियता आ पाठक-वर्गक प्रश्न उठल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8679. खण्ड ८७३केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. साहित्य आ समाजक सम्बन्धकेँ पाठक-वर्ग आ लोकप्रियतासँ जोड़ि पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. साहित्य आ समाजक सम्बन्धकेँ पाठक-वर्ग आ लोकप्रियतासँ जोड़ि पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति साहित्य आ समाजक सम्बन्धकेँ पाठक-वर्ग आ लोकप्रियतासँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8680. खण्ड ८७३मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8681. खण्ड ८७३ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8682. खण्ड ८७३क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. राजमोहन झा साक्षात्कार मैथिली साहित्यक जनसामान्यसँ सम्बन्ध आ दूरी पर मूल प्रश्न उठबैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. राजमोहन झा साक्षात्कार मैथिली साहित्यक जनसामान्यसँ सम्बन्ध आ दूरी पर मूल प्रश्न उठबैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे राजमोहन झा साक्षात्कार मैथिली साहित्यक जनसामान्यसँ सम्बन्ध आ दूरी पर मूल प्रश्न उठबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८७४ : विदेह-सदेह २ — राजमोहन झा: हरिमोहन झा, पाठक आ साहित्यक उद्देश्य

प्रश्न 8683. खण्ड ८७४क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. हरिमोहन झा, पाठक-वर्ग आ साहित्यक उद्देश्य।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: ग. हरिमोहन झा, पाठक-वर्ग आ साहित्यक उद्देश्य।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार हरिमोहन झा, पाठक-वर्ग आ साहित्यक उद्देश्य। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8684. खण्ड ८७४मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. जीवकान्त।
ग. अंशुमाला।
घ. राजमोहन झा।
उत्तर: घ. राजमोहन झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे राजमोहन झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8685. खण्ड ८७४क विधागत पहचान की अछि?

क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

ख. धार्मिक माहात्म्य।

ग. संगीत-संवाद।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8686. खण्ड ८७४मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. हरिमोहन झाक साहित्यसँ पाठक-वर्ग तैयार भेल कहल गेल।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. हरिमोहन झाक साहित्यसँ पाठक-वर्ग तैयार भेल कहल गेल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे हरिमोहन झाक साहित्यसँ पाठक-वर्ग तैयार भेल कहल गेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8687. खण्ड ८७४मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. मनोरंजन आवश्यक अछि, मुदा अन्तिम उद्देश्य मनोरंजन मात्र नहि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. मनोरंजन आवश्यक अछि, मुदा अन्तिम उद्देश्य मनोरंजन मात्र नहि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल मनोरंजन आवश्यक अछि, मुदा अन्तिम उद्देश्य मनोरंजन मात्र नहि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8688. खण्ड ८७४मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. विभिन्न स्तरक लोक लेल विभिन्न स्तरक साहित्य चाही।

उत्तर: घ. विभिन्न स्तरक लोक लेल विभिन्न स्तरक साहित्य चाही।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे विभिन्न स्तरक लोक लेल विभिन्न स्तरक साहित्य चाही। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8689. खण्ड ८७४केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. साहित्यकेँ लोकप्रियता, पाठक-विविधता आ उद्देश्यक कसौटी पर पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. साहित्यकेँ लोकप्रियता, पाठक-विविधता आ उद्देश्यक कसौटी पर पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति साहित्यकेँ लोकप्रियता, पाठक-विविधता आ उद्देश्यक कसौटी पर पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8690. खण्ड ८७४मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8691. खण्ड ८७४ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8692. खण्ड ८७४क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. साहित्यकेँ लोकप्रिय, पाठक-सापेक्ष आ उद्देश्यपूर्ण—तीनू स्तर पर देखबाक जरूरत अछि।
उत्तर: घ. साहित्यकेँ लोकप्रिय, पाठक-सापेक्ष आ उद्देश्यपूर्ण—तीनू स्तर पर देखबाक जरूरत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे साहित्यकेँ लोकप्रिय, पाठक-सापेक्ष आ उद्देश्यपूर्ण—तीनू स्तर पर देखबाक जरूरत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८७५ : विदेह-सदेह २ — राजमोहन झा: भाषा-संकट, प्रवास आ नेपाल-भारत संदर्भ

प्रश्न 8693. खण्ड ८७५क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. मैथिली भाषा-संकट, प्रवास आ नेपाल-भारत संदर्भ।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: क. मैथिली भाषा-संकट, प्रवास आ नेपाल-भारत संदर्भ।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार मैथिली भाषा-संकट, प्रवास आ नेपाल-भारत संदर्भ। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8694. खण्ड ८७५मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. राजमोहन झा।
ग. जीवकान्त।
घ. अंशुमाला।
उत्तर: ख. राजमोहन झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे राजमोहन झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8695. खण्ड ८७५क विधागत पहचान की अछि?
क. धार्मिक माहात्म्य।
ख. संगीत-संवाद।
ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8696. खण्ड ८७५मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मूल प्रसंग हटाएब।
ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
घ. लोकमे भाषा-प्रेम घटल अछि—एहन स्पष्ट टिप्पणी अछि।
उत्तर: घ. लोकमे भाषा-प्रेम घटल अछि—एहन स्पष्ट टिप्पणी अछि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे लोकमे भाषा-प्रेम घटल अछि—एहन स्पष्ट टिप्पणी अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8697. खण्ड ८७५मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. प्रवासक कारण अंग्रेजी वा हिन्दी अपनएबाक प्रवृत्ति पर प्रश्न अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. प्रवासक कारण अंग्रेजी वा हिन्दी अपनएबाक प्रवृत्ति पर प्रश्न अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल प्रवासक कारण अंग्रेजी वा हिन्दी अपनएबाक प्रवृत्ति पर प्रश्न अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8698. खण्ड ८७५मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. नेपालमे हिन्दी-विरोधक कारण मैथिलीकेँ अप्रत्यक्ष लाभक संकेत अछि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. नेपालमे हिन्दी-विरोधक कारण मैथिलीकेँ अप्रत्यक्ष लाभक संकेत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे नेपालमे हिन्दी-विरोधक कारण मैथिलीकेँ अप्रत्यक्ष लाभक संकेत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8699. खण्ड ८७५केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. मैथिली-संकटकेँ प्रवास, भाषा-प्रेम, भारत-नेपाल राजनीति आ सामाजिक समर्पणसँ जोड़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. मैथिली-संकटकेँ प्रवास, भाषा-प्रेम, भारत-नेपाल राजनीति आ सामाजिक समर्पणसँ जोड़ब।

व्याख्या: सही पद्धति मैथिली-संकटकेँ प्रवास, भाषा-प्रेम, भारत-नेपाल राजनीति आ सामाजिक समर्पणसँ जोड़ब। अछि।

प्रश्न 8700. खण्ड ८७५मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8701. खण्ड ८७५ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8702. खण्ड ८७५क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. राजमोहन झा साक्षात्कार मैथिली भाषा-संकटकेँ प्रवास, समर्पण आ भारत-नेपाल परिस्थिति सँ जोड़ैत अछि।

ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

उत्तर: ख. राजमोहन झा साक्षात्कार मैथिली भाषा-संकटकेँ प्रवास, समर्पण आ भारत-नेपाल परिस्थिति सँ जोड़ैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे राजमोहन झा साक्षात्कार मैथिली भाषा-संकटकेँ प्रवास, समर्पण आ भारत-नेपाल परिस्थिति सँ जोड़ैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८७६ : विदेह-सदेह २ — राजमोहन झा: साहित्य अकादमी, अनुवाद आ जूरी

प्रश्न 8703. खण्ड ८७६क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

ग. साहित्य अकादमी, अनुवाद, जूरी आ गुटबन्दी।

घ. साहित्य अकादमी विवाद।

उत्तर: ग. साहित्य अकादमी, अनुवाद, जूरी आ गुटबन्दी।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार साहित्य अकादमी, अनुवाद, जूरी आ गुटबन्दी। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8704. खण्ड ८७६मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामरंगजी।

ख. जीवकान्त।

ग. अंशुमाला।

घ. राजमोहन झा।

उत्तर: घ. राजमोहन झा।

व्याख्या: एहि खण्डमे राजमोहन झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8705. खण्ड ८७६क विधागत पहचान की अछि?

क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

ख. धार्मिक माहात्म्य।

ग. संगीत-संवाद।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8706. खण्ड ८७६मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. आरम्भ बन्द नहि, स्थगित अछि—एहन स्पष्टीकरण आएत अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. आरम्भ बन्द नहि, स्थगित अछि—एहन स्पष्टीकरण आएत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे आरम्भ बन्द नहि, स्थगित अछि—एहन स्पष्टीकरण आएत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8707. खण्ड ८७६मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. सोझे अनुवाद कएल पोथी पुरस्कारक पात्र मानल गेल।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. सोझे अनुवाद कएल पोथी पुरस्कारक पात्र मानल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल सोझे अनुवाद कएल पोथी पुरस्कारक पात्र मानल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8708. खण्ड ८७६मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. आइ-काल्हिक साहित्यकारमे गुटबन्दी बेशी भेल अछि—एहन संकेत अछि।

उत्तर: घ. आइ-काल्हिक साहित्यकारमे गुटबन्दी बेशी भेल अछि—एहन संकेत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे आइ-काल्हिक साहित्यकारमे गुटबन्दी बेशी भेल अछि—एहन संकेत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8709. खण्ड ८७६केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. पुरस्कार, अनुवाद, जूरी आ पाठक-संकटकेँ एक संस्थागत प्रश्न रूपमे पढ़ब।
ख. केवल तिथि वा नाम रटब।
ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: क. पुरस्कार, अनुवाद, जूरी आ पाठक-संकटकेँ एक संस्थागत प्रश्न रूपमे पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति पुरस्कार, अनुवाद, जूरी आ पाठक-संकटकेँ एक संस्थागत प्रश्न रूपमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8710. खण्ड ८७६मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8711. खण्ड ८७६ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8712. खण्ड ८७६क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. राजमोहन झा संवाद मैथिली संस्थागत साहित्यक भीतर पुरस्कार, अनुवाद, जूरी आ गुटबन्दी पर विचार करबैत अछि।
उत्तर: घ. राजमोहन झा संवाद मैथिली संस्थागत साहित्यक भीतर पुरस्कार, अनुवाद, जूरी आ गुटबन्दी पर विचार करबैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे राजमोहन झा संवाद मैथिली संस्थागत साहित्यक भीतर पुरस्कार, अनुवाद, जूरी आ गुटबन्दी पर विचार करबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८७७ : विदेह-सदेह २ — राजमोहन झा: अनुवाद, आत्ममुग्धता आ तुलनात्मक दृष्टि

प्रश्न 8713. खण्ड ८७७क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. अनुवाद, आत्ममुग्धता आ तुलनात्मक साहित्य-दृष्टि।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: क. अनुवाद, आत्ममुग्धता आ तुलनात्मक साहित्य-दृष्टि।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार अनुवाद, आत्ममुग्धता आ तुलनात्मक साहित्य-दृष्टि। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8714. खण्ड ८७७मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. राजमोहन झा।
ग. जीवकान्त।
घ. अंशुमाला।
उत्तर: ख. राजमोहन झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे राजमोहन झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8715. खण्ड ८७७क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक माहात्म्य।

ख. संगीत-संवाद।

ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8716. खण्ड ८७७मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. अनुवाद बहुत जरूरी अछि—एहन स्पष्ट कथन अछि।

उत्तर: घ. अनुवाद बहुत जरूरी अछि—एहन स्पष्ट कथन अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे अनुवाद बहुत जरूरी अछि—एहन स्पष्ट कथन अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8717. खण्ड ८७७मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. अनुवादसँ तुलना सम्भव होइत अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. अनुवादसँ तुलना सम्भव होइत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल अनुवादसँ तुलना सम्भव होइत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8718. खण्ड ८७७मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. अनुवाद जीवनानुभवकेँ आर विस्तार प्रदान करैत अछि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. अनुवाद जीवनानुभवकेँ आर विस्तार प्रदान करैत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे अनुवाद जीवनानुभवकेँ आर विस्तार प्रदान करैत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8719. खण्ड ८७७केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. अपन साहित्यकेँ दोसर भाषाक साहित्यसँ संवादमे पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. अपन साहित्यकेँ दोसर भाषाक साहित्यसँ संवादमे पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति अपन साहित्यकेँ दोसर भाषाक साहित्यसँ संवादमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8720. खण्ड ८७७मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8721. खण्ड ८७७ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8722. खण्ड ८७७क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. राजमोहन झा मैथिली साहित्यकेँ आत्ममुग्धतासँ निकालि अनुवाद आ तुलनात्मक दृष्टि दिस मोड़ैत छथि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. राजमोहन झा मैथिली साहित्यकेँ आत्ममुग्धतासँ निकालि अनुवाद आ तुलनात्मक दृष्टि दिस मोड़ैत छथि।
व्याख्या: निचोड़मे राजमोहन झा मैथिली साहित्यकेँ आत्ममुग्धतासँ निकालि अनुवाद आ तुलनात्मक दृष्टि दिस मोड़ैत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८७८ : विदेह-सदेह २ — रामरंगजी संवाद: संगीत, स्वास्थ्य आ सृजन

प्रश्न 8723. खण्ड ८७८क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. रामरंगजी सँ गजेन्द्र ठाकुरक संगीत-संवाद।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: ग. रामरंगजी सँ गजेन्द्र ठाकुरक संगीत-संवाद।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार रामरंगजी सँ गजेन्द्र ठाकुरक संगीत-संवाद। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8724. खण्ड ८७८मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. राजमोहन झा।
ख. जीवकान्त।
ग. अंशुमाला।
घ. रामरंगजी।
उत्तर: घ. रामरंगजी।
व्याख्या: एहि खण्डमे रामरंगजी। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8725. खण्ड ८७८क विधागत पहचान की अछि?
क. संगीत-संवाद।
ख. धार्मिक माहात्म्य।
ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: क. संगीत-संवाद।
व्याख्या: ई खण्ड संगीत-संवाद। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8726. खण्ड ८७८मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. रामरंगजी ८० बरख पार कऽ संगीतमे बहटल रहबाक बात कहैत छथि।
ग. मूल प्रसंग हटाएब।
घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
उत्तर: ख. रामरंगजी ८० बरख पार कऽ संगीतमे बहटल रहबाक बात कहैत छथि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे रामरंगजी ८० बरख पार कऽ संगीतमे बहटल रहबाक बात कहैत छथि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8727. खण्ड ८७८मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. मिथिलासँ सम्बन्धित तीन रागक रचना कएल गेल।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. मिथिलासँ सम्बन्धित तीन रागक रचना कएल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल मिथिलासँ सम्बन्धित तीन रागक रचना कएल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8728. खण्ड ८७८मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. तीरभुक्ति आ विद्यापति कल्याणमे मैथिली खयाल बनल कहल गेल।

उत्तर: घ. तीरभुक्ति आ विद्यापति कल्याणमे मैथिली खयाल बनल कहल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे तीरभुक्ति आ विद्यापति कल्याणमे मैथिली खयाल बनल कहल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8729. खण्ड ८७८केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. मैथिली संगीत-परम्पराकेँ राग, खयाल आ जीवित साधनासँ जोड़ि पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. मैथिली संगीत-परम्पराकेँ राग, खयाल आ जीवित साधनासँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति मैथिली संगीत-परम्पराकेँ राग, खयाल आ जीवित साधनासँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8730. खण्ड ८७८मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8731. खण्ड ८७८ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8732. खण्ड ८७८क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. रामरंगजी संवाद मैथिली संगीतकेँ विद्वत् राग-रचना आ जीवित साधनासँ जोड़ैत अछि।

उत्तर: घ. रामरंगजी संवाद मैथिली संगीतकेँ विद्वत् राग-रचना आ जीवित साधनासँ जोड़ैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे रामरंगजी संवाद मैथिली संगीतकेँ विद्वत् राग-रचना आ जीवित साधनासँ जोड़ैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८७९ : विदेह-सदेह २ — रामरंगजी: तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव

प्रश्न 8733. खण्ड ८७९क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव राग।

ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

घ. साहित्य अकादमी विवाद।

उत्तर: क. तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव राग।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव राग। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8734. खण्ड ८७९मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. राजमोहन झा।

ख. रामरंगजी।

ग. जीवकान्त।

घ. अंशुमाला।

उत्तर: ख. रामरंगजी।

व्याख्या: एहि खण्डमे रामरंगजी। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8735. खण्ड ८७९क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक माहात्म्य।

ख. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

ग. संगीत-संवाद।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. संगीत-संवाद।

व्याख्या: ई खण्ड संगीत-संवाद। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8736. खण्ड ८७९मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. तीरभुक्ति रागमे मिथिला प्रदेशक वन्दना उल्लेखित अछि।

उत्तर: घ. तीरभुक्ति रागमे मिथिला प्रदेशक वन्दना उल्लेखित अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे तीरभुक्ति रागमे मिथिला प्रदेशक वन्दना उल्लेखित अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8737. खण्ड ८७९मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. विद्यापति कल्याणमे विलम्बित आ द्रुत खयाल मैथिली भाषामे भेटैत अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. विद्यापति कल्याणमे विलम्बित आ द्रुत खयाल मैथिली भाषामे भेटैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल विद्यापति कल्याणमे विलम्बित आ द्रुत खयाल मैथिली भाषामे भेटैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8738. खण्ड ८७९मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. तीनूक विस्तृत विवरण पठेबाक इच्छा व्यक्त कएल गेल।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. तीनूक विस्तृत विवरण पठेबाक इच्छा व्यक्त कएल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे तीनूक विस्तृत विवरण पठेबाक इच्छा व्यक्त कएल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8739. खण्ड ८७९केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. संगीतक जीवित स्मृतिकेँ लिखित रागशास्त्रमे सुरक्षित करबाक आग्रह पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. संगीतक जीवित स्मृतिकेँ लिखित रागशास्त्रमे सुरक्षित करबाक आग्रह पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति संगीतक जीवित स्मृतिकेँ लिखित रागशास्त्रमे सुरक्षित करबाक आग्रह पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8740. खण्ड ८७९मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8741. खण्ड ८७९ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8742. खण्ड ८७९क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव मैथिली संगीत-स्मृति केँ शास्त्रीय रूप देबाक प्रयास छथि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव मैथिली संगीत-स्मृति केँ शास्त्रीय रूप देबाक प्रयास छथि।
व्याख्या: निचोड़मे तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव मैथिली संगीत-स्मृति केँ शास्त्रीय रूप देबाक प्रयास छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८८० : विदेह-सदेह २ — रामरंगजी संवादक सांगीतिक-संरक्षण अर्थ

प्रश्न 8743. खण्ड ८८०क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. रामरंगजीक मौखिक संगीत-स्मृति आ संरक्षणक प्रश्न।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: ग. रामरंगजीक मौखिक संगीत-स्मृति आ संरक्षणक प्रश्न।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार रामरंगजीक मौखिक संगीत-स्मृति आ संरक्षणक प्रश्न। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8744. खण्ड ८८०मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. राजमोहन झा।
ख. जीवकान्त।
ग. अंशुमाला।
घ. रामरंगजी।
उत्तर: घ. रामरंगजी।
व्याख्या: एहि खण्डमे रामरंगजी। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8745. खण्ड ८८०क विधागत पहचान की अछि?

क. संगीत-संवाद।

ख. धार्मिक माहात्म्य।

ग. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. संगीत-संवाद।

व्याख्या: ई खण्ड संगीत-संवाद। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8746. खण्ड ८८०मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. “के सीखत आ के लीखत” कथन परम्परा-संरक्षणक चिन्ता देखबैत अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. “के सीखत आ के लीखत” कथन परम्परा-संरक्षणक चिन्ता देखबैत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे “के सीखत आ के लीखत” कथन परम्परा-संरक्षणक चिन्ता देखबैत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8747. खण्ड ८८०मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. रचना सभ छापबाक आग्रह सार्वजनिक संरक्षणक उपाय अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. रचना सभ छापबाक आग्रह सार्वजनिक संरक्षणक उपाय अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल रचना सभ छापबाक आग्रह सार्वजनिक संरक्षणक उपाय अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8748. खण्ड ८८०मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. हाथ थरथराएबाक उल्लेख दस्तावेजीकरणक तात्कालिकता देखबैत अछि।

उत्तर: घ. हाथ थरथराएबाक उल्लेख दस्तावेजीकरणक तात्कालिकता देखबैत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे हाथ थरथराएबाक उल्लेख दस्तावेजीकरणक तात्कालिकता देखबैत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8749. खण्ड ८८०केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. कलात्मक परम्परा, स्मृति, लिपिबद्धीकरण आ समाजक सम्बन्ध बुझब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. कलात्मक परम्परा, स्मृति, लिपिबद्धीकरण आ समाजक सम्बन्ध बुझब।

व्याख्या: सही पद्धति कलात्मक परम्परा, स्मृति, लिपिबद्धीकरण आ समाजक सम्बन्ध बुझब। अछि।

प्रश्न 8750. खण्ड ८८०मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8751. खण्ड ८८० विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8752. खण्ड ८८०क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. रामरंगजी संवाद मैथिली संगीतक जीवित स्मृति केँ लिखित सांस्कृतिक धरोहर बनएबाक आग्रह अछि।
उत्तर: घ. रामरंगजी संवाद मैथिली संगीतक जीवित स्मृति केँ लिखित सांस्कृतिक धरोहर बनएबाक आग्रह अछि।
व्याख्या: निचोड़मे रामरंगजी संवाद मैथिली संगीतक जीवित स्मृति केँ लिखित सांस्कृतिक धरोहर बनएबाक आग्रह अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८८१ : विदेह-सदेह २ — जितेन्द्र झा: जनकपुरमे चक्काजाम कवि गोष्ठी

प्रश्न 8753. खण्ड ८८१क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. जनकपुरमे चक्काजाम कवि गोष्ठी।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: क. जनकपुरमे चक्काजाम कवि गोष्ठी।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार जनकपुरमे चक्काजाम कवि गोष्ठी। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8754. खण्ड ८८१मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. जितेन्द्र झा।
ग. राजमोहन झा।
घ. जीवकान्त।
उत्तर: ख. जितेन्द्र झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे जितेन्द्र झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8755. खण्ड ८८१क विधागत पहचान की अछि?
क. धार्मिक माहात्म्य।
ख. संगीत-संवाद।
ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।
घ. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
उत्तर: ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।
व्याख्या: ई खण्ड राज्य-अधिकार रिपोर्ट। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8756. खण्ड ८८१मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मूल प्रसंग हटाएब।
ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
घ. जनकपुरधामक पिडारी चौकपर गोष्ठी कएल गेल।
उत्तर: घ. जनकपुरधामक पिडारी चौकपर गोष्ठी कएल गेल।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे जनकपुरधामक पिडारी चौकपर गोष्ठी कएल गेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8757. खण्ड ८८१मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. साहित्यकार आ रंगकर्मी मिथिला राज्यक मांग करैत छलाह।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. साहित्यकार आ रंगकर्मी मिथिला राज्यक मांग करैत छलाह।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल साहित्यकार आ रंगकर्मी मिथिला राज्यक मांग करैत छलाह। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8758. खण्ड ८८१मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. नेपालमे नव संविधान लिखबाक प्रक्रिया चलि रहल छल।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. नेपालमे नव संविधान लिखबाक प्रक्रिया चलि रहल छल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे नेपालमे नव संविधान लिखबाक प्रक्रिया चलि रहल छल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8759. खण्ड ८८१केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. सड़कपर कविता-वाचनकेँ राज्य-अधिकारक मांगक रूपमे पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. सड़कपर कविता-वाचनकेँ राज्य-अधिकारक मांगक रूपमे पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति सड़कपर कविता-वाचनकेँ राज्य-अधिकारक मांगक रूपमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8760. खण्ड ८८१मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8761. खण्ड ८८१ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8762. खण्ड ८८१क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. जनकपुरक चक्काजाम कवि गोष्ठी मिथिला राज्यक मांगकेँ साहित्यिक-रचनात्मक प्रतिरोध बनबैत अछि।

ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

उत्तर: ख. जनकपुरक चक्काजाम कवि गोष्ठी मिथिला राज्यक मांगकेँ साहित्यिक-रचनात्मक प्रतिरोध बनबैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे जनकपुरक चक्काजाम कवि गोष्ठी मिथिला राज्यक मांगकेँ साहित्यिक-रचनात्मक प्रतिरोध बनबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८८२ : विदेह-सदेह २ — मिथिला राज्य आन्दोलन: साहित्य, रंगकर्म आ अधिकार

प्रश्न 8763. खण्ड ८८२क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

ग. मिथिला राज्य आन्दोलनमे साहित्य, रंगकर्म आ अधिकार-विमर्श।

घ. साहित्य अकादमी विवाद।

उत्तर: ग. मिथिला राज्य आन्दोलनमे साहित्य, रंगकर्म आ अधिकार-विमर्श।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार मिथिला राज्य आन्दोलनमे साहित्य, रंगकर्म आ अधिकार-विमर्श। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8764. खण्ड ८८२मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. रामरंगजी।

ख. राजमोहन झा।

ग. जीवकान्त।

घ. जितेन्द्र झा।

उत्तर: घ. जितेन्द्र झा।

व्याख्या: एहि खण्डमे जितेन्द्र झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8765. खण्ड ८८२क विधागत पहचान की अछि?

क. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

ख. धार्मिक माहात्म्य।

ग. संगीत-संवाद।

घ. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

उत्तर: क. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

व्याख्या: ई खण्ड राज्य-अधिकार रिपोर्ट। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8766. खण्ड ८८२मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. रचनात्मक चक्काजाम सार्वजनिक सांस्कृतिक प्रतिरोध छल।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. रचनात्मक चक्काजाम सार्वजनिक सांस्कृतिक प्रतिरोध छल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे रचनात्मक चक्काजाम सार्वजनिक सांस्कृतिक प्रतिरोध छल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8767. खण्ड ८८२मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. मिथिला राज्य आ मधेशीक हक-अधिकार सुनिश्चित करबाक मांग उठल।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. मिथिला राज्य आ मधेशीक हक-अधिकार सुनिश्चित करबाक मांग उठल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल मिथिला राज्य आ मधेशीक हक-अधिकार सुनिश्चित करबाक मांग उठल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8768. खण्ड ८८२मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. गोष्ठीसँ कमजोर पड़ि रहल मांगकेँ थोड़बहुत चर्चा भेटल।

उत्तर: घ. गोष्ठीसँ कमजोर पड़ि रहल मांगकेँ थोड़बहुत चर्चा भेटल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे गोष्ठीसँ कमजोर पड़ि रहल मांगकेँ थोड़बहुत चर्चा भेटल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8769. खण्ड ८८२केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. साहित्यिक गोष्ठी आन्दोलनक जनदृश्यता बढ़ा सकैत अछि।
ख. केवल तिथि वा नाम रटब।
ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: क. साहित्यिक गोष्ठी आन्दोलनक जनदृश्यता बढ़ा सकैत अछि।
व्याख्या: सही पद्धति साहित्यिक गोष्ठी आन्दोलनक जनदृश्यता बढ़ा सकैत अछि। अछि।

प्रश्न 8770. खण्ड ८८२मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8771. खण्ड ८८२ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8772. खण्ड ८८२क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. मिथिला राज्य आन्दोलनमे कविता, रंगकर्म, सड़क-प्रदर्शन आ अधिकार-विमर्श एकसाथ उपस्थित भेल।
उत्तर: घ. मिथिला राज्य आन्दोलनमे कविता, रंगकर्म, सड़क-प्रदर्शन आ अधिकार-विमर्श एकसाथ उपस्थित भेल।
व्याख्या: निचोड़मे मिथिला राज्य आन्दोलनमे कविता, रंगकर्म, सड़क-प्रदर्शन आ अधिकार-विमर्श एकसाथ उपस्थित भेल। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८८३ : विदेह-सदेह २ — प्रिय पाहुन: पारम्परिक मैथिली विवाह-गीत

प्रश्न 8773. खण्ड ८८३क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन पारम्परिक मैथिली विवाह-गीत क्यासेट।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: क. प्रिय पाहुन पारम्परिक मैथिली विवाह-गीत क्यासेट।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार प्रिय पाहुन पारम्परिक मैथिली विवाह-गीत क्यासेट। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8774. खण्ड ८८३मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. अंशुमाला।
ग. राजमोहन झा।
घ. जीवकान्त।
उत्तर: ख. अंशुमाला।
व्याख्या: एहि खण्डमे अंशुमाला। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8775. खण्ड ८८३क विधागत पहचान की अछि?

क. धार्मिक माहात्म्य।

ख. संगीत-संवाद।

ग. लोकगीत-संरक्षण।

घ. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।

उत्तर: ग. लोकगीत-संरक्षण।

व्याख्या: ई खण्ड लोकगीत-संरक्षण। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8776. खण्ड ८८३मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. परिछनसँ विदाई धरिक गीत संग्रहित अछि।

उत्तर: घ. परिछनसँ विदाई धरिक गीत संग्रहित अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे परिछनसँ विदाई धरिक गीत संग्रहित अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8777. खण्ड ८८३मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. अंशुमालाक एकल प्रस्तुति अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. अंशुमालाक एकल प्रस्तुति अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल अंशुमालाक एकल प्रस्तुति अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8778. खण्ड ८८३मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. जयमाल गीत मिथिलाक मौलिक गीत कहल गेल।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. जयमाल गीत मिथिलाक मौलिक गीत कहल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे जयमाल गीत मिथिलाक मौलिक गीत कहल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8779. खण्ड ८८३केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. मिथिला विवाह-परम्पराक मौखिक गीतकेँ ध्वनि-संग्रहमे सुरक्षित करब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. मिथिला विवाह-परम्पराक मौखिक गीतकेँ ध्वनि-संग्रहमे सुरक्षित करब।

व्याख्या: सही पद्धति मिथिला विवाह-परम्पराक मौखिक गीतकेँ ध्वनि-संग्रहमे सुरक्षित करब। अछि।

प्रश्न 8780. खण्ड ८८३मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8781. खण्ड ८८३ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8782. खण्ड ८८३क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-संस्कारक गीत-परम्पराकेँ नव-पुरान पीढ़ीक बीच सुरक्षित करबाक प्रयास अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. प्रिय पाहुन विवाह-संस्कारक गीत-परम्पराकेँ नव-पुरान पीढ़ीक बीच सुरक्षित करबाक प्रयास अछि।
व्याख्या: निचोड़मे प्रिय पाहुन विवाह-संस्कारक गीत-परम्पराकेँ नव-पुरान पीढ़ीक बीच सुरक्षित करबाक प्रयास अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८८४ : विदेह-सदेह २ — विवाह-गीत परम्परा: परिछन, विदाई, जीमनार आ जयमाल

प्रश्न 8783. खण्ड ८८४क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. विवाह-गीत परम्परा, जीमनार आ जयमाल।
घ. साहित्य अकादमी विवाद।
उत्तर: ग. विवाह-गीत परम्परा, जीमनार आ जयमाल।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार विवाह-गीत परम्परा, जीमनार आ जयमाल। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8784. खण्ड ८८४मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. रामरंगजी।
ख. राजमोहन झा।
ग. जीवकान्त।
घ. अंशुमाला।
उत्तर: घ. अंशुमाला।
व्याख्या: एहि खण्डमे अंशुमाला। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8785. खण्ड ८८४क विधागत पहचान की अछि?
क. लोकगीत-संरक्षण।
ख. धार्मिक माहात्म्य।
ग. संगीत-संवाद।
घ. साहित्यिक-सामाजिक साक्षात्कार।
उत्तर: क. लोकगीत-संरक्षण।
व्याख्या: ई खण्ड लोकगीत-संरक्षण। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8786. खण्ड ८८४मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. जीमनार वरियाती खएबाक काल गाओल जाएबला गीत अछि।
ग. मूल प्रसंग हटाएब।
घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
उत्तर: ख. जीमनार वरियाती खएबाक काल गाओल जाएबला गीत अछि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे जीमनार वरियाती खएबाक काल गाओल जाएबला गीत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8787. खण्ड ८८४मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. जीमनार आब बहुतोक ठोरपर नहि चढ़ैत—एहन स्मृति-संकट देखाइत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. जीमनार आब बहुतोक ठोरपर नहि चढ़ैत—एहन स्मृति-संकट देखाइत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल जीमनार आब बहुतोक ठोरपर नहि चढ़ैत—एहन स्मृति-संकट देखाइत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8788. खण्ड ८८४मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. नव-पुरान दुनू पीढ़ीक लोक प्रिय पाहुन पसन्द कऽ रहल छथि।

उत्तर: घ. नव-पुरान दुनू पीढ़ीक लोक प्रिय पाहुन पसन्द कऽ रहल छथि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे नव-पुरान दुनू पीढ़ीक लोक प्रिय पाहुन पसन्द कऽ रहल छथि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8789. खण्ड ८८४केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. विवाह-गीतकेँ संस्कार, स्त्री-स्मृति, सामुदायिक भागीदारी आ लोक-संगीत रूपमे पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. विवाह-गीतकेँ संस्कार, स्त्री-स्मृति, सामुदायिक भागीदारी आ लोक-संगीत रूपमे पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति विवाह-गीतकेँ संस्कार, स्त्री-स्मृति, सामुदायिक भागीदारी आ लोक-संगीत रूपमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8790. खण्ड ८८४मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8791. खण्ड ८८४ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8792. खण्ड ८८४क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. विवाह-गीत परम्परा मिथिलाक संस्कार, स्त्री-स्वर आ लोकस्मृतिक ध्वनि-अभिलेख बनैत अछि।

उत्तर: घ. विवाह-गीत परम्परा मिथिलाक संस्कार, स्त्री-स्वर आ लोकस्मृतिक ध्वनि-अभिलेख बनैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे विवाह-गीत परम्परा मिथिलाक संस्कार, स्त्री-स्वर आ लोकस्मृतिक ध्वनि-अभिलेख बनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८८५ : विदेह-सदेह २ — अमरनाथ झा: चुनाव, नागरिक समाज आ बदलैत परिदृश्य

प्रश्न 8793. खण्ड ८८५क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. चुनाव, नागरिक समाज आ बदलैत राजनीतिक परिदृश्य।

ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।

उत्तर: क. चुनाव, नागरिक समाज आ बदलैत राजनीतिक परिदृश्य।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार चुनाव, नागरिक समाज आ बदलैत राजनीतिक परिदृश्य। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8794. खण्ड ८८५मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अंशुमाला।

ख. अमरनाथ झा।

ग. रामरंगजी।

घ. राजमोहन झा।

उत्तर: ख. अमरनाथ झा।

व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8795. खण्ड ८८५क विधागत पहचान की अछि?

क. संगीत-संवाद।

ख. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड ललित-राजनीतिक निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8796. खण्ड ८८५मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. खुशवन्त सिंहक समकालीन चुनाव-टिप्पणीसँ आरम्भिक संकेत भेटैत अछि।

उत्तर: घ. खुशवन्त सिंहक समकालीन चुनाव-टिप्पणीसँ आरम्भिक संकेत भेटैत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे खुशवन्त सिंहक समकालीन चुनाव-टिप्पणीसँ आरम्भिक संकेत भेटैत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8797. खण्ड ८८५मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. आशुतोषक निबन्धक पंक्ति नव नागरिक समाजक उदय दिस इंगित करैत अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. आशुतोषक निबन्धक पंक्ति नव नागरिक समाजक उदय दिस इंगित करैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल आशुतोषक निबन्धक पंक्ति नव नागरिक समाजक उदय दिस इंगित करैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8798. खण्ड ८८५मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. लेखक चुनावक प्रति लोक-रुचि बढ़बाक प्रसंग उठबैत छथि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. लेखक चुनावक प्रति लोक-रुचि बढ़बाक प्रसंग उठबैत छथि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे लेखक चुनावक प्रति लोक-रुचि बढ़बाक प्रसंग उठबैत छथि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8799. खण्ड ८८५केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. समकालीन टिप्पणीकेँ स्मृति, नागरिक जिम्मेदारी आ राजनीतिक परिवर्तनसँ जोड़ि पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. समकालीन टिप्पणीकेँ स्मृति, नागरिक जिम्मेदारी आ राजनीतिक परिवर्तनसँ जोड़ि पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति समकालीन टिप्पणीकेँ स्मृति, नागरिक जिम्मेदारी आ राजनीतिक परिवर्तनसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8800. खण्ड ८८५मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8801. खण्ड ८८५ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8802. खण्ड ८८५क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. अमरनाथ झा चुनावक बदलैत दृश्यकेँ नागरिक समाज आ जिम्मेदारीक प्रश्नसँ जोड़ैत छथि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. अमरनाथ झा चुनावक बदलैत दृश्यकेँ नागरिक समाज आ जिम्मेदारीक प्रश्नसँ जोड़ैत छथि।
व्याख्या: निचोड़मे अमरनाथ झा चुनावक बदलैत दृश्यकेँ नागरिक समाज आ जिम्मेदारीक प्रश्नसँ जोड़ैत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८८६ : विदेह-सदेह २ — अमरनाथ झा: युद्ध-स्मृति, जे.पी. आन्दोलन आ बाल-चेतना

प्रश्न 8803. खण्ड ८८६क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. युद्ध-स्मृति, जे.पी. आन्दोलन आ बाल-चेतना।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: ग. युद्ध-स्मृति, जे.पी. आन्दोलन आ बाल-चेतना।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार युद्ध-स्मृति, जे.पी. आन्दोलन आ बाल-चेतना। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8804. खण्ड ८८६मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. रामरंगजी।
ग. राजमोहन झा।
घ. अमरनाथ झा।
उत्तर: घ. अमरनाथ झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8805. खण्ड ८८६क विधागत पहचान की अछि?

क. संस्मरणात्मक निबन्ध।

ख. संगीत-संवाद।

ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. संस्मरणात्मक निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड संस्मरणात्मक निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8806. खण्ड ८८६मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. भारत-पाक युद्धक समय गामक चौबटिया आ सैनिक-गौरवक स्मृति आएत अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. भारत-पाक युद्धक समय गामक चौबटिया आ सैनिक-गौरवक स्मृति आएत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे भारत-पाक युद्धक समय गामक चौबटिया आ सैनिक-गौरवक स्मृति आएत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8807. खण्ड ८८६मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. जे.पी. आन्दोलनमे घर-परिवारक युवा सभक भागीदारीक स्मरण अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. जे.पी. आन्दोलनमे घर-परिवारक युवा सभक भागीदारीक स्मरण अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल जे.पी. आन्दोलनमे घर-परिवारक युवा सभक भागीदारीक स्मरण अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8808. खण्ड ८८६मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. छठम-सातम कक्षाक बच्चा धरि नारा आ आन्दोलनक प्रभावमे छल।

उत्तर: घ. छठम-सातम कक्षाक बच्चा धरि नारा आ आन्दोलनक प्रभावमे छल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे छठम-सातम कक्षाक बच्चा धरि नारा आ आन्दोलनक प्रभावमे छल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8809. खण्ड ८८६केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. बाल-स्मृतिकेँ राष्ट्रीय राजनीति आ ग्रामीण जनभावनासँ जोड़ि पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. बाल-स्मृतिकेँ राष्ट्रीय राजनीति आ ग्रामीण जनभावनासँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति बाल-स्मृतिकेँ राष्ट्रीय राजनीति आ ग्रामीण जनभावनासँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8810. खण्ड ८८६मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8811. खण्ड ८८६ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8812. खण्ड ८८६क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. एहि खण्डमे बाल-चेतना युद्ध-स्मृति, जे.पी. आन्दोलन आ ग्रामीण राजनीतिक माहौलसँ आकार लैत अछि।
उत्तर: घ. एहि खण्डमे बाल-चेतना युद्ध-स्मृति, जे.पी. आन्दोलन आ ग्रामीण राजनीतिक माहौलसँ आकार लैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे बाल-चेतना युद्ध-स्मृति, जे.पी. आन्दोलन आ ग्रामीण राजनीतिक माहौलसँ आकार लैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८८७ : विदेह-सदेह २ — अमरनाथ झा: आपातकाल, कविता आ जनता पार्टी

प्रश्न 8813. खण्ड ८८७क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. आपातकाल, पहिल कविता आ जनता पार्टीक चुनावी दौर।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: क. आपातकाल, पहिल कविता आ जनता पार्टीक चुनावी दौर।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार आपातकाल, पहिल कविता आ जनता पार्टीक चुनावी दौर। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8814. खण्ड ८८७मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. अमरनाथ झा।
ग. रामरंगजी।
घ. राजमोहन झा।
उत्तर: ख. अमरनाथ झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8815. खण्ड ८८७क विधागत पहचान की अछि?
क. संगीत-संवाद।
ख. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।
ग. संस्मरणात्मक निबन्ध।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: ग. संस्मरणात्मक निबन्ध।
व्याख्या: ई खण्ड संस्मरणात्मक निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8816. खण्ड ८८७मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मूल प्रसंग हटाएब।
ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
घ. आपातकालक विरोधमे लेखक अपन पहिल कविता लिखने रहथि।
उत्तर: घ. आपातकालक विरोधमे लेखक अपन पहिल कविता लिखने रहथि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे आपातकालक विरोधमे लेखक अपन पहिल कविता लिखने रहथि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8817. खण्ड ८८७मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?
क. माझिल भाय ओहि कविताकेँ हँसीमे फाड़ि देलन्हि।
ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।
ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।
घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।
उत्तर: क. माझिल भाय ओहि कविताकेँ हँसीमे फाड़ि देलन्हि।
व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल माझिल भाय ओहि कविताकेँ हँसीमे फाड़ि देलन्हि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8818. खण्ड ८८७मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?
क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।
ख. १९७७ क चुनावमे बहुत लोक जनता पार्टीक संग देलनि।
ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. १९७७ क चुनावमे बहुत लोक जनता पार्टीक संग देलनि।
व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे १९७७ क चुनावमे बहुत लोक जनता पार्टीक संग देलनि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8819. खण्ड ८८७केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. व्यक्तिगत किशोर स्मृतिकेँ राष्ट्रीय लोकतांत्रिक मोड़सँ जोड़ि पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. व्यक्तिगत किशोर स्मृतिकेँ राष्ट्रीय लोकतांत्रिक मोड़सँ जोड़ि पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति व्यक्तिगत किशोर स्मृतिकेँ राष्ट्रीय लोकतांत्रिक मोड़सँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8820. खण्ड ८८७मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8821. खण्ड ८८७ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8822. खण्ड ८८७क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. आपातकाल आ १९७७ क चुनाव लेखकक किशोर राजनीतिक चेतनाकेँ तीव्र बनबैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. आपातकाल आ १९७७ क चुनाव लेखकक किशोर राजनीतिक चेतनाकेँ तीव्र बनबैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे आपातकाल आ १९७७ क चुनाव लेखकक किशोर राजनीतिक चेतनाकेँ तीव्र बनबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८८८ : विदेह-सदेह २ — अमरनाथ झा: गाम, गरीबी आ राजनीति पर व्यंग्य

प्रश्न 8823. खण्ड ८८८क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

ग. गाम, गरीबी, भूख आ राजनीति पर व्यंग्यात्मक आत्मदृष्टि।

घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।

उत्तर: ग. गाम, गरीबी, भूख आ राजनीति पर व्यंग्यात्मक आत्मदृष्टि।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार गाम, गरीबी, भूख आ राजनीति पर व्यंग्यात्मक आत्मदृष्टि। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8824. खण्ड ८८८मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अंशुमाला।

ख. रामरंगजी।

ग. राजमोहन झा।

घ. अमरनाथ झा।

उत्तर: घ. अमरनाथ झा।

व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8825. खण्ड ८८८क विधागत पहचान की अछि?

क. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

ख. संगीत-संवाद।

ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड ललित-राजनीतिक निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8826. खण्ड ८८८मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. लेखक संताल परगनाक ओहि गामक प्रसंग कहैत छथि जतय स्कूलक धरती गोबरसँ निपायल जाइत छल।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. लेखक संताल परगनाक ओहि गामक प्रसंग कहैत छथि जतय स्कूलक धरती गोबरसँ निपायल जाइत छल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे लेखक संताल परगनाक ओहि गामक प्रसंग कहैत छथि जतय स्कूलक धरती गोबरसँ निपायल जाइत छल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8827. खण्ड ८८८मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. पानि एक किलोमीटरसँ आ गोबर दू-तीन किलोमीटरसँ अनबाक स्मृति अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. पानि एक किलोमीटरसँ आ गोबर दू-तीन किलोमीटरसँ अनबाक स्मृति अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल पानि एक किलोमीटरसँ आ गोबर दू-तीन किलोमीटरसँ अनबाक स्मृति अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8828. खण्ड ८८८मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. गरीबीक बीच राजनीतिक चर्चा पर विशिष्ट लोकक दम्भ पर व्यंग्य अछि।

उत्तर: घ. गरीबीक बीच राजनीतिक चर्चा पर विशिष्ट लोकक दम्भ पर व्यंग्य अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे गरीबीक बीच राजनीतिक चर्चा पर विशिष्ट लोकक दम्भ पर व्यंग्य अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8829. खण्ड ८८८केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. ग्रामीण अभावकेँ राजनीतिक आदर्शवाद आ बौद्धिक दम्भक आलोचनासँ जोड़ब।
ख. केवल तिथि वा नाम रटब।
ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: क. ग्रामीण अभावकेँ राजनीतिक आदर्शवाद आ बौद्धिक दम्भक आलोचनासँ जोड़ब।
व्याख्या: सही पद्धति ग्रामीण अभावकेँ राजनीतिक आदर्शवाद आ बौद्धिक दम्भक आलोचनासँ जोड़ब। अछि।

प्रश्न 8830. खण्ड ८८८मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8831. खण्ड ८८८ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8832. खण्ड ८८८क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. एहि खण्डमे गामक अभाव राजनीतिक भाषण आ विशिष्टताक भ्रम पर कटु व्यंग्य बनैत अछि।
उत्तर: घ. एहि खण्डमे गामक अभाव राजनीतिक भाषण आ विशिष्टताक भ्रम पर कटु व्यंग्य बनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे गामक अभाव राजनीतिक भाषण आ विशिष्टताक भ्रम पर कटु व्यंग्य बनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८८९ : विदेह-सदेह २ — अमरनाथ झा: मीडिया, संपादकीयता आ स्वयम्भू चिंतन

प्रश्न 8833. खण्ड ८८९क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. मीडिया, अखबार, दूरदर्शन-जगह आ स्वयम्भू चिंतन पर टिप्पणी।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: क. मीडिया, अखबार, दूरदर्शन-जगह आ स्वयम्भू चिंतन पर टिप्पणी।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार मीडिया, अखबार, दूरदर्शन-जगह आ स्वयम्भू चिंतन पर टिप्पणी। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8834. खण्ड ८८९मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. अमरनाथ झा।
ग. रामरंगजी।
घ. राजमोहन झा।
उत्तर: ख. अमरनाथ झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8835. खण्ड ८८९क विधागत पहचान की अछि?

क. संगीत-संवाद।

ख. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड ललित-राजनीतिक निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8836. खण्ड ८८९मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. पटना, भोपाल आ रायपुर सभ बदलि रहल अछि—एहन टिप्पणी आएत अछि।

उत्तर: घ. पटना, भोपाल आ रायपुर सभ बदलि रहल अछि—एहन टिप्पणी आएत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे पटना, भोपाल आ रायपुर सभ बदलि रहल अछि—एहन टिप्पणी आएत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8837. खण्ड ८८९मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. अखबार हाथमे आ लिखबाक छूट भेटलापर विचारक बनबाक व्यंग्य अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. अखबार हाथमे आ लिखबाक छूट भेटलापर विचारक बनबाक व्यंग्य अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल अखबार हाथमे आ लिखबाक छूट भेटलापर विचारक बनबाक व्यंग्य अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8838. खण्ड ८८९मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. मालिकक विरुद्ध लिखबाक कठिनाई पर अप्रत्यक्ष कटाक्ष अछि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. मालिकक विरुद्ध लिखबाक कठिनाई पर अप्रत्यक्ष कटाक्ष अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे मालिकक विरुद्ध लिखबाक कठिनाई पर अप्रत्यक्ष कटाक्ष अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8839. खण्ड ८८९केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. मीडिया-उपस्थिति आ लेखक-अहंकारकेँ सामाजिक जिम्मेदारीक कसौटी पर पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. मीडिया-उपस्थिति आ लेखक-अहंकारकेँ सामाजिक जिम्मेदारीक कसौटी पर पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति मीडिया-उपस्थिति आ लेखक-अहंकारकेँ सामाजिक जिम्मेदारीक कसौटी पर पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8840. खण्ड ८८९मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8841. खण्ड ८८९ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8842. खण्ड ८८९क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. अमरनाथ झा मीडिया-विस्तारकेँ स्वयम्भू चिंतन, छूट आ जिम्मेदारीक प्रश्नसँ जोड़ैत छथि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. अमरनाथ झा मीडिया-विस्तारकेँ स्वयम्भू चिंतन, छूट आ जिम्मेदारीक प्रश्नसँ जोड़ैत छथि।
व्याख्या: निचोड़मे अमरनाथ झा मीडिया-विस्तारकेँ स्वयम्भू चिंतन, छूट आ जिम्मेदारीक प्रश्नसँ जोड़ैत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८९० : विदेह-सदेह २ — विष्णु प्रभाकर स्मृति: काफी हाउसक साहित्यिक मंडली

प्रश्न 8843. खण्ड ८९०क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. विष्णु प्रभाकर जी आ मोहन पैलेसक काफी हाउस स्मृति।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: ग. विष्णु प्रभाकर जी आ मोहन पैलेसक काफी हाउस स्मृति।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार विष्णु प्रभाकर जी आ मोहन पैलेसक काफी हाउस स्मृति। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8844. खण्ड ८९०मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. रामरंगजी।
ग. राजमोहन झा।
घ. अमरनाथ झा।
उत्तर: घ. अमरनाथ झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8845. खण्ड ८९०क विधागत पहचान की अछि?
क. संस्मरणात्मक साहित्य-निबन्ध।
ख. संगीत-संवाद।
ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: क. संस्मरणात्मक साहित्य-निबन्ध।
व्याख्या: ई खण्ड संस्मरणात्मक साहित्य-निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8846. खण्ड ८९०मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. १९९० लेखक लेल सकारात्मक ऊर्जा आ शुरुआतक वर्ष बनि अबैत अछि।
ग. मूल प्रसंग हटाएब।
घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
उत्तर: ख. १९९० लेखक लेल सकारात्मक ऊर्जा आ शुरुआतक वर्ष बनि अबैत अछि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे १९९० लेखक लेल सकारात्मक ऊर्जा आ शुरुआतक वर्ष बनि अबैत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8847. खण्ड ८९०मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. मोहन पैलेसक छतपर चलए वाला काफी हाउसमे साहित्यिक मंडली लागल छल।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. मोहन पैलेसक छतपर चलए वाला काफी हाउसमे साहित्यिक मंडली लागल छल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल मोहन पैलेसक छतपर चलए वाला काफी हाउसमे साहित्यिक मंडली लागल छल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8848. खण्ड ८९०मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. विष्णु प्रभाकर जी खादीधारी, गांधी टोपी पहिरने वयोवृद्ध रूपमे स्मरणित छथि।

उत्तर: घ. विष्णु प्रभाकर जी खादीधारी, गांधी टोपी पहिरने वयोवृद्ध रूपमे स्मरणित छथि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे विष्णु प्रभाकर जी खादीधारी, गांधी टोपी पहिरने वयोवृद्ध रूपमे स्मरणित छथि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8849. खण्ड ८९०केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. व्यक्तिगत साहित्यिक संस्कारकेँ दिल्लीक मंडली आ वरिष्ठ लेखकक सान्निध्यसँ जोड़ि पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. व्यक्तिगत साहित्यिक संस्कारकेँ दिल्लीक मंडली आ वरिष्ठ लेखकक सान्निध्यसँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति व्यक्तिगत साहित्यिक संस्कारकेँ दिल्लीक मंडली आ वरिष्ठ लेखकक सान्निध्यसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8850. खण्ड ८९०मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8851. खण्ड ८९० विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8852. खण्ड ८९०क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. विष्णु प्रभाकर स्मृति लेखकक साहित्यिक संस्कार आ काफी हाउसक बौद्धिक वातावरणक दस्तावेज अछि।

उत्तर: घ. विष्णु प्रभाकर स्मृति लेखकक साहित्यिक संस्कार आ काफी हाउसक बौद्धिक वातावरणक दस्तावेज अछि।

व्याख्या: निचोड़मे विष्णु प्रभाकर स्मृति लेखकक साहित्यिक संस्कार आ काफी हाउसक बौद्धिक वातावरणक दस्तावेज अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८९१ : विदेह-सदेह २ — विष्णु प्रभाकर स्मृति: लेखक-साहचर्य आ विनम्रता

प्रश्न 8853. खण्ड ८९१क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. लेखक-साहचर्य, विनम्रता आ विष्णु प्रभाकरक मानवीयता।

ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।

उत्तर: क. लेखक-साहचर्य, विनम्रता आ विष्णु प्रभाकरक मानवीयता।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार लेखक-साहचर्य, विनम्रता आ विष्णु प्रभाकरक मानवीयता। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8854. खण्ड ८९१मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अंशुमाला।

ख. अमरनाथ झा।

ग. रामरंगजी।

घ. राजमोहन झा।

उत्तर: ख. अमरनाथ झा।

व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8855. खण्ड ८९१क विधागत पहचान की अछि?

क. संगीत-संवाद।

ख. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

ग. संस्मरणात्मक साहित्य-निबन्ध।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. संस्मरणात्मक साहित्य-निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड संस्मरणात्मक साहित्य-निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8856. खण्ड ८९१मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. शनिवारी गोष्ठी १९९५ धरि चलबाक स्मरण अछि।

उत्तर: घ. शनिवारी गोष्ठी १९९५ धरि चलबाक स्मरण अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे शनिवारी गोष्ठी १९९५ धरि चलबाक स्मरण अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8857. खण्ड ८९१मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. नामवर लेखक, कवि, कलाकार आ पत्रकारक साहचर्यक उल्लेख अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. नामवर लेखक, कवि, कलाकार आ पत्रकारक साहचर्यक उल्लेख अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल नामवर लेखक, कवि, कलाकार आ पत्रकारक साहचर्यक उल्लेख अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8858. खण्ड ८९१मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. विष्णु प्रभाकर लेखकक छोटपनक अहसास नहि होमए देलनि—ई स्मरण केन्द्रमे अछि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. विष्णु प्रभाकर लेखकक छोटपनक अहसास नहि होमए देलनि—ई स्मरण केन्द्रमे अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे विष्णु प्रभाकर लेखकक छोटपनक अहसास नहि होमए देलनि—ई स्मरण केन्द्रमे अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8859. खण्ड ८९१केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. साहित्यिक मंडलीकेँ गुरुता, विनम्रता आ संवाद-संस्कारसँ जोड़ि पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. साहित्यिक मंडलीकेँ गुरुता, विनम्रता आ संवाद-संस्कारसँ जोड़ि पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति साहित्यिक मंडलीकेँ गुरुता, विनम्रता आ संवाद-संस्कारसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8860. खण्ड ८९१मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8861. खण्ड ८९१ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8862. खण्ड ८९१क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. विष्णु प्रभाकरक स्मृति वरिष्ठ लेखकक सादगी आ नवागन्तुक प्रति मानवीय आदरकेँ उभारैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. विष्णु प्रभाकरक स्मृति वरिष्ठ लेखकक सादगी आ नवागन्तुक प्रति मानवीय आदरकेँ उभारैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे विष्णु प्रभाकरक स्मृति वरिष्ठ लेखकक सादगी आ नवागन्तुक प्रति मानवीय आदरकेँ उभारैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८९२ : विदेह-सदेह २ — भारतीय भाषा आन्दोलन, गिरफ्तारी आ तिहाड़ स्मृति

प्रश्न 8863. खण्ड ८९२क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. भारतीय भाषा संघर्ष, धरना, गिरफ्तारी आ तिहाड़ जेल स्मृति।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: ग. भारतीय भाषा संघर्ष, धरना, गिरफ्तारी आ तिहाड़ जेल स्मृति।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार भारतीय भाषा संघर्ष, धरना, गिरफ्तारी आ तिहाड़ जेल स्मृति। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8864. खण्ड ८९२मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. रामरंगजी।
ग. राजमोहन झा।
घ. अमरनाथ झा।
उत्तर: घ. अमरनाथ झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8865. खण्ड ८९२क विधागत पहचान की अछि?

क. संस्मरणात्मक आन्दोलन-निबन्ध।

ख. संगीत-संवाद।

ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. संस्मरणात्मक आन्दोलन-निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड संस्मरणात्मक आन्दोलन-निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8866. खण्ड ८९२मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. १९९४ मे भारतीय भाषा लेल संघर्षक क्रममे संघ लोक सेवा आयोगक बाहर धरना भेल।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. १९९४ मे भारतीय भाषा लेल संघर्षक क्रममे संघ लोक सेवा आयोगक बाहर धरना भेल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे १९९४ मे भारतीय भाषा लेल संघर्षक क्रममे संघ लोक सेवा आयोगक बाहर धरना भेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8867. खण्ड ८९२मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. पुष्पेन्द्र चौहान समेत साथी सभक संग लेखक गिरफ्तार भेलाह।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. पुष्पेन्द्र चौहान समेत साथी सभक संग लेखक गिरफ्तार भेलाह।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल पुष्पेन्द्र चौहान समेत साथी सभक संग लेखक गिरफ्तार भेलाह। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8868. खण्ड ८९२मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. नेता, साहित्यकार, पत्रकार आ समाजसेवीक दबाबमे एक सप्ताह बाद बिना शर्त रिहाई भेल।

उत्तर: घ. नेता, साहित्यकार, पत्रकार आ समाजसेवीक दबाबमे एक सप्ताह बाद बिना शर्त रिहाई भेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे नेता, साहित्यकार, पत्रकार आ समाजसेवीक दबाबमे एक सप्ताह बाद बिना शर्त रिहाई भेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8869. खण्ड ८९२केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. भाषा-अधिकार संघर्षकेँ साहित्यिक स्मृति आ लोकतांत्रिक दबाबसँ जोड़ि पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. भाषा-अधिकार संघर्षकेँ साहित्यिक स्मृति आ लोकतांत्रिक दबाबसँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति भाषा-अधिकार संघर्षकेँ साहित्यिक स्मृति आ लोकतांत्रिक दबाबसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8870. खण्ड ८९२मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8871. खण्ड ८९२ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8872. खण्ड ८९२क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. एहि खण्डमे भारतीय भाषा आन्दोलन व्यक्तिगत स्मृति सँ सामूहिक भाषा-अधिकारक दस्तावेज बनैत अछि।
उत्तर: घ. एहि खण्डमे भारतीय भाषा आन्दोलन व्यक्तिगत स्मृति सँ सामूहिक भाषा-अधिकारक दस्तावेज बनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे भारतीय भाषा आन्दोलन व्यक्तिगत स्मृति सँ सामूहिक भाषा-अधिकारक दस्तावेज बनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८९३ : विदेह-सदेह २ — पंकज जी: जन्म, अध्यापन आ संताल परगनाक साहित्यिक उजास

प्रश्न 8873. खण्ड ८९३क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. आचार्य पंकजक जन्म, अध्यापन आ संताल परगनाक साहित्यिक भूमिका।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: क. आचार्य पंकजक जन्म, अध्यापन आ संताल परगनाक साहित्यिक भूमिका।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार आचार्य पंकजक जन्म, अध्यापन आ संताल परगनाक साहित्यिक भूमिका। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8874. खण्ड ८९३मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. अमरनाथ झा।
ग. रामरंगजी।
घ. राजमोहन झा।
उत्तर: ख. अमरनाथ झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8875. खण्ड ८९३क विधागत पहचान की अछि?
क. संगीत-संवाद।
ख. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।
ग. साहित्यिक स्मरण-प्रोफाइल।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: ग. साहित्यिक स्मरण-प्रोफाइल।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक स्मरण-प्रोफाइल। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8876. खण्ड ८९३मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मूल प्रसंग हटाएब।
ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
घ. ज्योतींद्र प्रसाद झा पंकजक जन्म १९१९ मे भेल।
उत्तर: घ. ज्योतींद्र प्रसाद झा पंकजक जन्म १९१९ मे भेल।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे ज्योतींद्र प्रसाद झा पंकजक जन्म १९१९ मे भेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8877. खण्ड ८९३मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. १९३४ मे देवघरक हिंदी विद्यापीठमे अध्यापन आरम्भ भेल।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. १९३४ मे देवघरक हिंदी विद्यापीठमे अध्यापन आरम्भ भेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल १९३४ मे देवघरक हिंदी विद्यापीठमे अध्यापन आरम्भ भेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8878. खण्ड ८९३मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. १९५४ मे संताल परगना महाविद्यालय दुमकामे संस्थापक शिक्षक आ हिंदी विभागाध्यक्ष बनलाह।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. १९५४ मे संताल परगना महाविद्यालय दुमकामे संस्थापक शिक्षक आ हिंदी विभागाध्यक्ष बनलाह।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे १९५४ मे संताल परगना महाविद्यालय दुमकामे संस्थापक शिक्षक आ हिंदी विभागाध्यक्ष बनलाह। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8879. खण्ड ८९३केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. जीवन-वृत्तकेँ क्षेत्रीय साहित्यिक जागरण आ शिक्षाक इतिहाससँ जोड़ि पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. जीवन-वृत्तकेँ क्षेत्रीय साहित्यिक जागरण आ शिक्षाक इतिहाससँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति जीवन-वृत्तकेँ क्षेत्रीय साहित्यिक जागरण आ शिक्षाक इतिहाससँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8880. खण्ड ८९३मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8881. खण्ड ८९३ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8882. खण्ड ८९३क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. पंकज जी संताल परगनामे शिक्षा, साहित्य आ सांस्कृतिक जागरणक प्रमुख आधार रूपमे देखाइत छथि।

ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

उत्तर: ख. पंकज जी संताल परगनामे शिक्षा, साहित्य आ सांस्कृतिक जागरणक प्रमुख आधार रूपमे देखाइत छथि।

व्याख्या: निचोड़मे पंकज जी संताल परगनामे शिक्षा, साहित्य आ सांस्कृतिक जागरणक प्रमुख आधार रूपमे देखाइत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८९४ : विदेह-सदेह २ — पंकज जी: कविता-संग्रह, पंकज-गोष्ठी आ आन्दोलन

प्रश्न 8883. खण्ड ८९४क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

ग. पंकज जीक कृति, पंकज-गोष्ठी आ साहित्यिक आन्दोलन।

घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।

उत्तर: ग. पंकज जीक कृति, पंकज-गोष्ठी आ साहित्यिक आन्दोलन।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार पंकज जीक कृति, पंकज-गोष्ठी आ साहित्यिक आन्दोलन। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8884. खण्ड ८९४मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अंशुमाला।

ख. रामरंगजी।

ग. राजमोहन झा।

घ. अमरनाथ झा।

उत्तर: घ. अमरनाथ झा।

व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8885. खण्ड ८९४क विधागत पहचान की अछि?

क. साहित्यिक स्मरण-प्रोफाइल।

ख. संगीत-संवाद।

ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. साहित्यिक स्मरण-प्रोफाइल।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक स्मरण-प्रोफाइल। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8886. खण्ड ८९४मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. १९५८ मे स्नेहदीप कविता-संग्रह प्रकाशित भेल।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. १९५८ मे स्नेहदीप कविता-संग्रह प्रकाशित भेल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे १९५८ मे स्नेहदीप कविता-संग्रह प्रकाशित भेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8887. खण्ड ८९४मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. १९६४ मे उदगार कविता-संग्रह प्रकाशित भेल।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. १९६४ मे उदगार कविता-संग्रह प्रकाशित भेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल १९६४ मे उदगार कविता-संग्रह प्रकाशित भेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8888. खण्ड ८९४मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. १९६५ सँ १९७५ धरि पंकज-गोष्ठी संताल परगनाक पैघ साहित्यिक आन्दोलन छल।

उत्तर: घ. १९६५ सँ १९७५ धरि पंकज-गोष्ठी संताल परगनाक पैघ साहित्यिक आन्दोलन छल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे १९६५ सँ १९७५ धरि पंकज-गोष्ठी संताल परगनाक पैघ साहित्यिक आन्दोलन छल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8889. खण्ड ८९४केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. कृति-सूचीकेँ संगठन, आन्दोलन आ क्षेत्रीय साहित्यिक प्रभावसँ जोड़ब।
ख. केवल तिथि वा नाम रटब।
ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: क. कृति-सूचीकेँ संगठन, आन्दोलन आ क्षेत्रीय साहित्यिक प्रभावसँ जोड़ब।
व्याख्या: सही पद्धति कृति-सूचीकेँ संगठन, आन्दोलन आ क्षेत्रीय साहित्यिक प्रभावसँ जोड़ब। अछि।

प्रश्न 8890. खण्ड ८९४मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8891. खण्ड ८९४ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8892. खण्ड ८९४क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. पंकज जीक लेखन आ पंकज-गोष्ठी संताल परगनाक सामूहिक साहित्यिक चेतनाक धुरी बनल।
उत्तर: घ. पंकज जीक लेखन आ पंकज-गोष्ठी संताल परगनाक सामूहिक साहित्यिक चेतनाक धुरी बनल।
व्याख्या: निचोड़मे पंकज जीक लेखन आ पंकज-गोष्ठी संताल परगनाक सामूहिक साहित्यिक चेतनाक धुरी बनल। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८९५ : विदेह-सदेह २ — पंकज जीक विरासत आ विस्मृति-विरोध

प्रश्न 8893. खण्ड ८९५क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. पंकज जीक विरासत, लोकस्मृति आ व्यापक प्रस्तुतीकरणक आग्रह।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: क. पंकज जीक विरासत, लोकस्मृति आ व्यापक प्रस्तुतीकरणक आग्रह।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार पंकज जीक विरासत, लोकस्मृति आ व्यापक प्रस्तुतीकरणक आग्रह। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8894. खण्ड ८९५मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. अमरनाथ झा।
ग. रामरंगजी।
घ. राजमोहन झा।
उत्तर: ख. अमरनाथ झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे अमरनाथ झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8895. खण्ड ८९५क विधागत पहचान की अछि?

क. संगीत-संवाद।

ख. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

ग. साहित्यिक स्मरण-प्रोफाइल।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. साहित्यिक स्मरण-प्रोफाइल।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक स्मरण-प्रोफाइल। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8896. खण्ड ८९५मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. पंकज जी आत्मप्रचारसँ दूर रहलाह—एहन संकेत अछि।

उत्तर: घ. पंकज जी आत्मप्रचारसँ दूर रहलाह—एहन संकेत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे पंकज जी आत्मप्रचारसँ दूर रहलाह—एहन संकेत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8897. खण्ड ८९५मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. १९७७ मे अल्पायु ५८ बरखमे हुनकर निधन भेल।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. १९७७ मे अल्पायु ५८ बरखमे हुनकर निधन भेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल १९७७ मे अल्पायु ५८ बरखमे हुनकर निधन भेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8898. खण्ड ८९५मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. संताल परगनाक लोक आइयो हुनका महान विभूति रूपमे स्मरण करैत छथि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. संताल परगनाक लोक आइयो हुनका महान विभूति रूपमे स्मरण करैत छथि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे संताल परगनाक लोक आइयो हुनका महान विभूति रूपमे स्मरण करैत छथि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8899. खण्ड ८९५केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. विस्मृत साहित्यकारकेँ क्षेत्रीय स्मृति आ व्यापक हिंदी-जगतक बीच सेतु रूपमे पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. विस्मृत साहित्यकारकेँ क्षेत्रीय स्मृति आ व्यापक हिंदी-जगतक बीच सेतु रूपमे पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति विस्मृत साहित्यकारकेँ क्षेत्रीय स्मृति आ व्यापक हिंदी-जगतक बीच सेतु रूपमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8900. खण्ड ८९५मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8901. खण्ड ८९५ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8902. खण्ड ८९५क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. एहि खण्डमे पंकज जीक लोकस्मृति विस्मृति-विरोध आ साहित्यिक पुनर्पहिचानक आग्रह बनैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. एहि खण्डमे पंकज जीक लोकस्मृति विस्मृति-विरोध आ साहित्यिक पुनर्पहिचानक आग्रह बनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे पंकज जीक लोकस्मृति विस्मृति-विरोध आ साहित्यिक पुनर्पहिचानक आग्रह बनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८९६ : विदेह-सदेह २ — तूलिका, स्वास्तिका आ नव पीढ़ीक रचनात्मक संकेत

प्रश्न 8903. खण्ड ८९६क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. तूलिका, स्वास्तिका आ नव पीढ़ीक रचनात्मक उपस्थिति।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: ग. तूलिका, स्वास्तिका आ नव पीढ़ीक रचनात्मक उपस्थिति।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार तूलिका, स्वास्तिका आ नव पीढ़ीक रचनात्मक उपस्थिति। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8904. खण्ड ८९६मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. रामरंगजी।
ग. राजमोहन झा।
घ. सम्पादक।
उत्तर: घ. सम्पादक।
व्याख्या: एहि खण्डमे सम्पादक। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8905. खण्ड ८९६क विधागत पहचान की अछि?
क. सम्पादकीय-परिचय।
ख. संगीत-संवाद।
ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: क. सम्पादकीय-परिचय।
व्याख्या: ई खण्ड सम्पादकीय-परिचय। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8906. खण्ड ८९६मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. विदेह-सदेह १ मे चौदह वर्षीय तूलिकासँ अठासी वर्षीय आद्याचरण झा धरि रचना प्रकाशित भेल।
ग. मूल प्रसंग हटाएब।
घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
उत्तर: ख. विदेह-सदेह १ मे चौदह वर्षीय तूलिकासँ अठासी वर्षीय आद्याचरण झा धरि रचना प्रकाशित भेल।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे विदेह-सदेह १ मे चौदह वर्षीय तूलिकासँ अठासी वर्षीय आद्याचरण झा धरि रचना प्रकाशित भेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8907. खण्ड ८९६मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. तूलिका परीक्षा-तैयारीक कारण किछु दिन रचना नहि पठा रहल छलीह।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. तूलिका परीक्षा-तैयारीक कारण किछु दिन रचना नहि पठा रहल छलीह।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल तूलिका परीक्षा-तैयारीक कारण किछु दिन रचना नहि पठा रहल छलीह। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8908. खण्ड ८९६मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. तूलिकाकेँ दसवींमे ९६ दशमलव ८ प्रतिशत अंक भेटल आ ओ अभियांत्रिकी तैयारीमे लागल छथि।

उत्तर: घ. तूलिकाकेँ दसवींमे ९६ दशमलव ८ प्रतिशत अंक भेटल आ ओ अभियांत्रिकी तैयारीमे लागल छथि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे तूलिकाकेँ दसवींमे ९६ दशमलव ८ प्रतिशत अंक भेटल आ ओ अभियांत्रिकी तैयारीमे लागल छथि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8909. खण्ड ८९६केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. नव पीढ़ीक रचनात्मकता, शिक्षा आ पत्रिका-संबंधकेँ एकसाथ पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. नव पीढ़ीक रचनात्मकता, शिक्षा आ पत्रिका-संबंधकेँ एकसाथ पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति नव पीढ़ीक रचनात्मकता, शिक्षा आ पत्रिका-संबंधकेँ एकसाथ पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8910. खण्ड ८९६मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8911. खण्ड ८९६ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8912. खण्ड ८९६क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. एहि खण्डमे तूलिका आ स्वास्तिका नव पीढ़ीक रचनात्मक उपस्थिति आ विदेहक व्यापक पाठक-लेखक संसार देखबैत छथि।

उत्तर: घ. एहि खण्डमे तूलिका आ स्वास्तिका नव पीढ़ीक रचनात्मक उपस्थिति आ विदेहक व्यापक पाठक-लेखक संसार देखबैत छथि।

व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे तूलिका आ स्वास्तिका नव पीढ़ीक रचनात्मक उपस्थिति आ विदेहक व्यापक पाठक-लेखक संसार देखबैत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८९७ : विदेह-सदेह २ — चन्द्रेश: हुगली ऊपर बहैत गंगा आ नारी-संवेदना

प्रश्न 8913. खण्ड ८९७क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. रामभरोस कापड़ि भ्रमरक कथा-संग्रह हुगली ऊपर बहैत गंगाक समीक्षा।

ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।

उत्तर: क. रामभरोस कापड़ि भ्रमरक कथा-संग्रह हुगली ऊपर बहैत गंगाक समीक्षा।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार रामभरोस कापड़ि भ्रमरक कथा-संग्रह हुगली ऊपर बहैत गंगाक समीक्षा। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8914. खण्ड ८९७मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अंशुमाला।

ख. चन्द्रेश।

ग. रामरंगजी।

घ. राजमोहन झा।

उत्तर: ख. चन्द्रेश।

व्याख्या: एहि खण्डमे चन्द्रेश। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8915. खण्ड ८९७क विधागत पहचान की अछि?

क. संगीत-संवाद।

ख. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

ग. समीक्षा-निबन्ध।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. समीक्षा-निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8916. खण्ड ८९७मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. संग्रहमे भ्रमरक ३२ गोट कथा अछि।

उत्तर: घ. संग्रहमे भ्रमरक ३२ गोट कथा अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे संग्रहमे भ्रमरक ३२ गोट कथा अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8917. खण्ड ८९७मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. शीर्षक कथा हीरा आ सोनाबाइक माध्यमसँ नारी-मोनक संवेदना उभारैत अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. शीर्षक कथा हीरा आ सोनाबाइक माध्यमसँ नारी-मोनक संवेदना उभारैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल शीर्षक कथा हीरा आ सोनाबाइक माध्यमसँ नारी-मोनक संवेदना उभारैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8918. खण्ड ८९७मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. समीक्षक नारी केवल देह नहि थिक—एहि मानवीय बात पर बल दैत छथि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. समीक्षक नारी केवल देह नहि थिक—एहि मानवीय बात पर बल दैत छथि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे समीक्षक नारी केवल देह नहि थिक—एहि मानवीय बात पर बल दैत छथि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8919. खण्ड ८९७केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. कथाक प्रसंगकेँ नारी-अस्मिता, देह-भोग आ मानवीय विश्वासक संदर्भमे पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. कथाक प्रसंगकेँ नारी-अस्मिता, देह-भोग आ मानवीय विश्वासक संदर्भमे पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति कथाक प्रसंगकेँ नारी-अस्मिता, देह-भोग आ मानवीय विश्वासक संदर्भमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8920. खण्ड ८९७मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8921. खण्ड ८९७ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8922. खण्ड ८९७क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. चन्द्रेशक समीक्षा हुगली ऊपर बहैत गंगाकेँ नारी-संवेदना आ मनुष्यताक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. चन्द्रेशक समीक्षा हुगली ऊपर बहैत गंगाकेँ नारी-संवेदना आ मनुष्यताक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे चन्द्रेशक समीक्षा हुगली ऊपर बहैत गंगाकेँ नारी-संवेदना आ मनुष्यताक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८९८ : विदेह-सदेह २ — चन्द्रेश समीक्षा: हीरा, सोनाबाइ आ मानवीय अपनत्व

प्रश्न 8923. खण्ड ८९८क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. हीरा-सोनाबाइ प्रसंग आ मानवीय अपनत्वक समीक्षा।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: ग. हीरा-सोनाबाइ प्रसंग आ मानवीय अपनत्वक समीक्षा।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार हीरा-सोनाबाइ प्रसंग आ मानवीय अपनत्वक समीक्षा। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8924. खण्ड ८९८मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. रामरंगजी।
ग. राजमोहन झा।
घ. चन्द्रेश।
उत्तर: घ. चन्द्रेश।
व्याख्या: एहि खण्डमे चन्द्रेश। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8925. खण्ड ८९८क विधागत पहचान की अछि?

क. समीक्षा-निबन्ध।

ख. संगीत-संवाद।

ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. समीक्षा-निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8926. खण्ड ८९८मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. हीरा असन्तोष मेटएबाक लेल सोनाबाइक ओहिठाम अबैत अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. हीरा असन्तोष मेटएबाक लेल सोनाबाइक ओहिठाम अबैत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे हीरा असन्तोष मेटएबाक लेल सोनाबाइक ओहिठाम अबैत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8927. खण्ड ८९८मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. सोनाबाइ पेशागत आमंत्रण दैत छथि मुदा हीराक हृदयमे सम्मान-भाव जागैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. सोनाबाइ पेशागत आमंत्रण दैत छथि मुदा हीराक हृदयमे सम्मान-भाव जागैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल सोनाबाइ पेशागत आमंत्रण दैत छथि मुदा हीराक हृदयमे सम्मान-भाव जागैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8928. खण्ड ८९८मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. दुनूक बीच अपनत्व-बोध आ मानवीय संवेदना उभरैत अछि।

उत्तर: घ. दुनूक बीच अपनत्व-बोध आ मानवीय संवेदना उभरैत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे दुनूक बीच अपनत्व-बोध आ मानवीय संवेदना उभरैत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8929. खण्ड ८९८केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. कथानककेँ देहक बाजारसँ मोनक राग आ सम्मानक उदय धरि पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. कथानककेँ देहक बाजारसँ मोनक राग आ सम्मानक उदय धरि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति कथानककेँ देहक बाजारसँ मोनक राग आ सम्मानक उदय धरि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8930. खण्ड ८९८मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8931. खण्ड ८९८ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8932. खण्ड ८९८क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. हीरा-सोनाबाइ प्रसंग कथामे देह-भोगक विरुद्ध मानवीय अपनत्व आ विश्वासक संभावना देखबैत अछि।
उत्तर: घ. हीरा-सोनाबाइ प्रसंग कथामे देह-भोगक विरुद्ध मानवीय अपनत्व आ विश्वासक संभावना देखबैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे हीरा-सोनाबाइ प्रसंग कथामे देह-भोगक विरुद्ध मानवीय अपनत्व आ विश्वासक संभावना देखबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ८९९ : विदेह-सदेह २ — चन्द्रेश समीक्षा: भौतिकता, वासना आ सामाजिक विकृति

प्रश्न 8933. खण्ड ८९९क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. भौतिकवादी लिप्सा, वासना आ सामाजिक विकृतिक कथा-पाठ।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: क. भौतिकवादी लिप्सा, वासना आ सामाजिक विकृतिक कथा-पाठ।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार भौतिकवादी लिप्सा, वासना आ सामाजिक विकृतिक कथा-पाठ। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8934. खण्ड ८९९मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. चन्द्रेश।
ग. रामरंगजी।
घ. राजमोहन झा।
उत्तर: ख. चन्द्रेश।
व्याख्या: एहि खण्डमे चन्द्रेश। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8935. खण्ड ८९९क विधागत पहचान की अछि?
क. संगीत-संवाद।
ख. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।
ग. समीक्षा-निबन्ध।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: ग. समीक्षा-निबन्ध।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8936. खण्ड ८९९मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मूल प्रसंग हटाएब।
ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
घ. समीक्षक धनक अतिशय लिप्साकेँ मानवीय मूल्यबोध घटाबैत देखैत छथि।
उत्तर: घ. समीक्षक धनक अतिशय लिप्साकेँ मानवीय मूल्यबोध घटाबैत देखैत छथि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे समीक्षक धनक अतिशय लिप्साकेँ मानवीय मूल्यबोध घटाबैत देखैत छथि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8937. खण्ड ८९९मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. भगजोगनी कथामे रेखाक भोगवादी लिप्सा घर उजारबाक सीमा धरि पहुँचैत अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. भगजोगनी कथामे रेखाक भोगवादी लिप्सा घर उजारबाक सीमा धरि पहुँचैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल भगजोगनी कथामे रेखाक भोगवादी लिप्सा घर उजारबाक सीमा धरि पहुँचैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8938. खण्ड ८९९मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. कामरेड कथामे गरीब-गरीब सभ एक हो—एहन साम्यवादी सूत्र आएत अछि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. कामरेड कथामे गरीब-गरीब सभ एक हो—एहन साम्यवादी सूत्र आएत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे कामरेड कथामे गरीब-गरीब सभ एक हो—एहन साम्यवादी सूत्र आएत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8939. खण्ड ८९९केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. व्यक्तिगत कामना आ सामाजिक व्यवस्था बीचक टकरावकेँ कथा-समूहमे पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. व्यक्तिगत कामना आ सामाजिक व्यवस्था बीचक टकरावकेँ कथा-समूहमे पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति व्यक्तिगत कामना आ सामाजिक व्यवस्था बीचक टकरावकेँ कथा-समूहमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8940. खण्ड ८९९मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8941. खण्ड ८९९ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8942. खण्ड ८९९क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. एहि खण्डमे समीक्षा सामाजिक विकृति, वासना, धनलिप्सा आ मूल्यहीनताक आलोचनात्मक पाठ बनैत अछि।

ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

उत्तर: ख. एहि खण्डमे समीक्षा सामाजिक विकृति, वासना, धनलिप्सा आ मूल्यहीनताक आलोचनात्मक पाठ बनैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे समीक्षा सामाजिक विकृति, वासना, धनलिप्सा आ मूल्यहीनताक आलोचनात्मक पाठ बनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९०० : विदेह-सदेह २ — चन्द्रेश समीक्षा: उड़ान, मधेश आ व्यवस्था-संकट

प्रश्न 8943. खण्ड ९००क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

ग. उड़ान कथा, मधेश-आन्दोलन प्रसंग आ व्यवस्था-संकट।

घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।

उत्तर: ग. उड़ान कथा, मधेश-आन्दोलन प्रसंग आ व्यवस्था-संकट।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार उड़ान कथा, मधेश-आन्दोलन प्रसंग आ व्यवस्था-संकट। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8944. खण्ड ९००मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अंशुमाला।

ख. रामरंगजी।

ग. राजमोहन झा।

घ. चन्द्रेश।

उत्तर: घ. चन्द्रेश।

व्याख्या: एहि खण्डमे चन्द्रेश। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8945. खण्ड ९००क विधागत पहचान की अछि?

क. समीक्षा-निबन्ध।

ख. संगीत-संवाद।

ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. समीक्षा-निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8946. खण्ड ९००मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. उड़ान कथामे रजिन्दर कापर कतार जाएबाक लोभमे एजेन्ट सभसँ ठकाइत अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. उड़ान कथामे रजिन्दर कापर कतार जाएबाक लोभमे एजेन्ट सभसँ ठकाइत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे उड़ान कथामे रजिन्दर कापर कतार जाएबाक लोभमे एजेन्ट सभसँ ठकाइत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8947. खण्ड ९००मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. मधेश प्रसंगमे अयोधी मास्टरक बेटा अशोककेँ नौकरी नहि भेटबाक पीड़ा अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. मधेश प्रसंगमे अयोधी मास्टरक बेटा अशोककेँ नौकरी नहि भेटबाक पीड़ा अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल मधेश प्रसंगमे अयोधी मास्टरक बेटा अशोककेँ नौकरी नहि भेटबाक पीड़ा अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8948. खण्ड ९००मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. मधेशक अस्मिता आ विषमताक बोध आक्रोश जगबैत अछि।

उत्तर: घ. मधेशक अस्मिता आ विषमताक बोध आक्रोश जगबैत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे मधेशक अस्मिता आ विषमताक बोध आक्रोश जगबैत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8949. खण्ड ९००केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. परदेश-कमाइ, बेरोजगारी, राज्य-व्यवस्था आ अस्मिताक सम्बन्ध देखब।
ख. केवल तिथि वा नाम रटब।
ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: क. परदेश-कमाइ, बेरोजगारी, राज्य-व्यवस्था आ अस्मिताक सम्बन्ध देखब।
व्याख्या: सही पद्धति परदेश-कमाइ, बेरोजगारी, राज्य-व्यवस्था आ अस्मिताक सम्बन्ध देखब। अछि।

प्रश्न 8950. खण्ड ९००मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8951. खण्ड ९०० विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8952. खण्ड ९००क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. चन्द्रेशक समीक्षा उड़ान आ मधेश-प्रसंगक माध्यमसँ व्यवस्था-संकट, ठगी आ अस्मिताक पीड़ा उभारैत अछि।
उत्तर: घ. चन्द्रेशक समीक्षा उड़ान आ मधेश-प्रसंगक माध्यमसँ व्यवस्था-संकट, ठगी आ अस्मिताक पीड़ा उभारैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे चन्द्रेशक समीक्षा उड़ान आ मधेश-प्रसंगक माध्यमसँ व्यवस्था-संकट, ठगी आ अस्मिताक पीड़ा उभारैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९०१ : विदेह-सदेह २ — चन्द्रेश समीक्षा: नारी-दुख, सम्बन्ध आ बाल-स्मृति

प्रश्न 8953. खण्ड ९०१क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. नारी-दुख, सम्बन्धक पीड़ा, अमरलत्ती आ फ्लैश बैक कथा-पाठ।
ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: क. नारी-दुख, सम्बन्धक पीड़ा, अमरलत्ती आ फ्लैश बैक कथा-पाठ।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार नारी-दुख, सम्बन्धक पीड़ा, अमरलत्ती आ फ्लैश बैक कथा-पाठ। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8954. खण्ड ९०१मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. चन्द्रेश।
ग. रामरंगजी।
घ. राजमोहन झा।
उत्तर: ख. चन्द्रेश।
व्याख्या: एहि खण्डमे चन्द्रेश। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8955. खण्ड ९०१क विधागत पहचान की अछि?

क. संगीत-संवाद।

ख. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

ग. समीक्षा-निबन्ध।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. समीक्षा-निबन्ध।

व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8956. खण्ड ९०१मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. भहरैत नेओक जोड़ कथामे सरोजाक दुःस्थिति आ स्त्री-त्रास उभरैत अछि।

उत्तर: घ. भहरैत नेओक जोड़ कथामे सरोजाक दुःस्थिति आ स्त्री-त्रास उभरैत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे भहरैत नेओक जोड़ कथामे सरोजाक दुःस्थिति आ स्त्री-त्रास उभरैत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8957. खण्ड ९०१मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. अमरलत्तीमे रेखाक उद्दाम छवि आ बसल घर उजाड़बाक प्रसंग अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. अमरलत्तीमे रेखाक उद्दाम छवि आ बसल घर उजाड़बाक प्रसंग अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल अमरलत्तीमे रेखाक उद्दाम छवि आ बसल घर उजाड़बाक प्रसंग अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8958. खण्ड ९०१मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. फ्लैश बैकमे नेनपनक निडरता, निश्छलता आ स्मृति उभरैत अछि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. फ्लैश बैकमे नेनपनक निडरता, निश्छलता आ स्मृति उभरैत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे फ्लैश बैकमे नेनपनक निडरता, निश्छलता आ स्मृति उभरैत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8959. खण्ड ९०१केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. विभिन्न कथा-प्रसंगकेँ स्त्री-अनुभूति, सम्बन्ध आ स्मृति-मनोविज्ञानसँ जोड़ि पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. विभिन्न कथा-प्रसंगकेँ स्त्री-अनुभूति, सम्बन्ध आ स्मृति-मनोविज्ञानसँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति विभिन्न कथा-प्रसंगकेँ स्त्री-अनुभूति, सम्बन्ध आ स्मृति-मनोविज्ञानसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8960. खण्ड ९०१मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8961. खण्ड ९०१ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8962. खण्ड ९०१क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. एहि खण्डमे भ्रमरक कथाजगत नारी-दुख, सम्बन्धक टूटन आ बाल-स्मृतिक मार्मिक पाठ बनैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. एहि खण्डमे भ्रमरक कथाजगत नारी-दुख, सम्बन्धक टूटन आ बाल-स्मृतिक मार्मिक पाठ बनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे भ्रमरक कथाजगत नारी-दुख, सम्बन्धक टूटन आ बाल-स्मृतिक मार्मिक पाठ बनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९०२ : विदेह-सदेह २ — चन्द्रेश समीक्षा: भ्रमरक कथा-दृष्टि आ सामाजिक परिवर्तन

प्रश्न 8963. खण्ड ९०२क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. भ्रमरक कथा-दृष्टि, सामाजिक परिवर्तन आ मूल्यबोध।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: ग. भ्रमरक कथा-दृष्टि, सामाजिक परिवर्तन आ मूल्यबोध।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार भ्रमरक कथा-दृष्टि, सामाजिक परिवर्तन आ मूल्यबोध। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8964. खण्ड ९०२मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. रामरंगजी।
ग. राजमोहन झा।
घ. चन्द्रेश।
उत्तर: घ. चन्द्रेश।
व्याख्या: एहि खण्डमे चन्द्रेश। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8965. खण्ड ९०२क विधागत पहचान की अछि?
क. समीक्षा-निबन्ध।
ख. संगीत-संवाद।
ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।
घ. लोकगीत-संरक्षण।
उत्तर: क. समीक्षा-निबन्ध।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-निबन्ध। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8966. खण्ड ९०२मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. भ्रमरक कथामे जीवनक राग आ नव युगक नारी प्रति श्रद्धा देखल गेल।
ग. मूल प्रसंग हटाएब।
घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
उत्तर: ख. भ्रमरक कथामे जीवनक राग आ नव युगक नारी प्रति श्रद्धा देखल गेल।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे भ्रमरक कथामे जीवनक राग आ नव युगक नारी प्रति श्रद्धा देखल गेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8967. खण्ड ९०२मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. सामाजिक व्यवस्था त्रासदीक कारक रूपमे चिन्हित अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक व्यवस्था त्रासदीक कारक रूपमे चिन्हित अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल सामाजिक व्यवस्था त्रासदीक कारक रूपमे चिन्हित अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8968. खण्ड ९०२मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. समीक्षक कहैत छथि जे शोषित-पीड़ितक अस्मिता-अधिकारक बात उठैत अछि।

उत्तर: घ. समीक्षक कहैत छथि जे शोषित-पीड़ितक अस्मिता-अधिकारक बात उठैत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे समीक्षक कहैत छथि जे शोषित-पीड़ितक अस्मिता-अधिकारक बात उठैत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8969. खण्ड ९०२केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. कथा-साहित्यकेँ मूल्यबोध, नारी-अधिकार आ सामाजिक परिवर्तनक वाहक रूपमे पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. कथा-साहित्यकेँ मूल्यबोध, नारी-अधिकार आ सामाजिक परिवर्तनक वाहक रूपमे पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति कथा-साहित्यकेँ मूल्यबोध, नारी-अधिकार आ सामाजिक परिवर्तनक वाहक रूपमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8970. खण्ड ९०२मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8971. खण्ड ९०२ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8972. खण्ड ९०२क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. चन्द्रेशक निष्कर्षमे भ्रमरक कथा सामाजिक परिवर्तन, जीवन-मूल्य आ शोषितक अधिकारक साहित्यिक स्वर बनैत अछि।

उत्तर: घ. चन्द्रेशक निष्कर्षमे भ्रमरक कथा सामाजिक परिवर्तन, जीवन-मूल्य आ शोषितक अधिकारक साहित्यिक स्वर बनैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे चन्द्रेशक निष्कर्षमे भ्रमरक कथा सामाजिक परिवर्तन, जीवन-मूल्य आ शोषितक अधिकारक साहित्यिक स्वर बनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९०३ : विदेह-सदेह २ — जितेन्द्र झा: आशाक किरण आ मैथिली टेलिभिजन

प्रश्न 8973. खण्ड ९०३क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. आशाक किरण लेख आ मैथिली टेलिभिजनक आरम्भिक स्थिति।

ख. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

ग. तीरभुक्ति राग-विमर्श।

घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।

उत्तर: क. आशाक किरण लेख आ मैथिली टेलिभिजनक आरम्भिक स्थिति।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार आशाक किरण लेख आ मैथिली टेलिभिजनक आरम्भिक स्थिति। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8974. खण्ड ९०३मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अंशुमाला।

ख. जितेन्द्र झा।

ग. रामरंगजी।

घ. राजमोहन झा।

उत्तर: ख. जितेन्द्र झा।

व्याख्या: एहि खण्डमे जितेन्द्र झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8975. खण्ड ९०३क विधागत पहचान की अछि?

क. संगीत-संवाद।

ख. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

ग. संचार-विमर्श।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: ग. संचार-विमर्श।

व्याख्या: ई खण्ड संचार-विमर्श। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8976. खण्ड ९०३मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. मैथिली भाषा धीरे-धीरे विद्युतीय संचार माध्यममे स्थान बना रहल अछि।

उत्तर: घ. मैथिली भाषा धीरे-धीरे विद्युतीय संचार माध्यममे स्थान बना रहल अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे मैथिली भाषा धीरे-धीरे विद्युतीय संचार माध्यममे स्थान बना रहल अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8977. खण्ड ९०३मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. दिल्लीसँ सौभाग्य मिथिला नामक सम्पूर्ण मैथिली टेलिभिजन संचालित भेल कहल गेल।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. दिल्लीसँ सौभाग्य मिथिला नामक सम्पूर्ण मैथिली टेलिभिजन संचालित भेल कहल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल दिल्लीसँ सौभाग्य मिथिला नामक सम्पूर्ण मैथिली टेलिभिजन संचालित भेल कहल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8978. खण्ड ९०३मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. गीत-नाद आ टेली-श्रृंखला प्रसारणकेँ प्रमुखता देल जा रहल छल।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. गीत-नाद आ टेली-श्रृंखला प्रसारणकेँ प्रमुखता देल जा रहल छल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे गीत-नाद आ टेली-श्रृंखला प्रसारणकेँ प्रमुखता देल जा रहल छल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8979. खण्ड ९०३केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. माध्यम-विस्तारकेँ भाषा-प्रतिनिधित्व आ सांस्कृतिक मनोरंजनक दृष्टिसँ पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. माध्यम-विस्तारकेँ भाषा-प्रतिनिधित्व आ सांस्कृतिक मनोरंजनक दृष्टिसँ पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति माध्यम-विस्तारकेँ भाषा-प्रतिनिधित्व आ सांस्कृतिक मनोरंजनक दृष्टिसँ पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8980. खण्ड ९०३मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8981. खण्ड ९०३ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8982. खण्ड ९०३क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. आशाक किरण मैथिली टेलिभिजनकेँ भाषा-संचारक नव सम्भावना रूपमे देखबैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. आशाक किरण मैथिली टेलिभिजनकेँ भाषा-संचारक नव सम्भावना रूपमे देखबैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे आशाक किरण मैथिली टेलिभिजनकेँ भाषा-संचारक नव सम्भावना रूपमे देखबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९०४ : विदेह-सदेह २ — मैथिली संचार माध्यम: नेपाल वनसँ सशक्त माध्यमक अभाव धरि

प्रश्न 8983. खण्ड ९०४क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
ख. तीरभुक्ति राग-विमर्श।
ग. मैथिली संचार माध्यम, नेपाल वन, सरकारी उपेक्षा आ भविष्यक चिन्ता।
घ. चक्काजाम कवि गोष्ठी।
उत्तर: ग. मैथिली संचार माध्यम, नेपाल वन, सरकारी उपेक्षा आ भविष्यक चिन्ता।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार मैथिली संचार माध्यम, नेपाल वन, सरकारी उपेक्षा आ भविष्यक चिन्ता। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8984. खण्ड ९०४मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अंशुमाला।
ख. रामरंगजी।
ग. राजमोहन झा।
घ. जितेन्द्र झा।
उत्तर: घ. जितेन्द्र झा।
व्याख्या: एहि खण्डमे जितेन्द्र झा। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8985. खण्ड ९०४क विधागत पहचान की अछि?

क. संचार-विमर्श।

ख. संगीत-संवाद।

ग. राज्य-अधिकार रिपोर्ट।

घ. लोकगीत-संरक्षण।

उत्तर: क. संचार-विमर्श।

व्याख्या: ई खण्ड संचार-विमर्श। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8986. खण्ड ९०४मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. भारत आ नेपालक सीमामे बँटल मिथिला आन भाषाक माध्यमसँ सुसूचित होएबाक बाध्यतासँ मुक्त नहि भेल अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. भारत आ नेपालक सीमामे बँटल मिथिला आन भाषाक माध्यमसँ सुसूचित होएबाक बाध्यतासँ मुक्त नहि भेल अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे भारत आ नेपालक सीमामे बँटल मिथिला आन भाषाक माध्यमसँ सुसूचित होएबाक बाध्यतासँ मुक्त नहि भेल अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8987. खण्ड ९०४मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. नेपाल वनक मधेश स्पेशल कार्यक्रममे मैथिली समाचार आ गीत-नाद प्रसारणक उल्लेख अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. नेपाल वनक मधेश स्पेशल कार्यक्रममे मैथिली समाचार आ गीत-नाद प्रसारणक उल्लेख अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल नेपाल वनक मधेश स्पेशल कार्यक्रममे मैथिली समाचार आ गीत-नाद प्रसारणक उल्लेख अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8988. खण्ड ९०४मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. सशक्त मैथिली संचार माध्यमक एखनो नितान्त अभाव कहल गेल।

उत्तर: घ. सशक्त मैथिली संचार माध्यमक एखनो नितान्त अभाव कहल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे सशक्त मैथिली संचार माध्यमक एखनो नितान्त अभाव कहल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8989. खण्ड ९०४केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. संचार-विकासकेँ भाषा-अस्तित्व, सरकारी उपेक्षा आ भविष्य-सुरक्षासँ जोड़ि पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. संचार-विकासकेँ भाषा-अस्तित्व, सरकारी उपेक्षा आ भविष्य-सुरक्षासँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति संचार-विकासकेँ भाषा-अस्तित्व, सरकारी उपेक्षा आ भविष्य-सुरक्षासँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 8990. खण्ड ९०४मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 8991. खण्ड ९०४ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 8992. खण्ड ९०४क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. एहि खण्डमे मैथिली संचारक सम्भावना आ सशक्त माध्यमक अभाव दुनू मिलि भाषा-भविष्यक केन्द्रीय प्रश्न बनैत अछि।

उत्तर: घ. एहि खण्डमे मैथिली संचारक सम्भावना आ सशक्त माध्यमक अभाव दुनू मिलि भाषा-भविष्यक केन्द्रीय प्रश्न बनैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे मैथिली संचारक सम्भावना आ सशक्त माध्यमक अभाव दुनू मिलि भाषा-भविष्यक केन्द्रीय प्रश्न बनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९०५ : विदेह-सदेह २ — फूल चन्द्र झा प्रवीण: जीवन, अभिरुचि आ आरम्भिक परिचय

प्रश्न 8993. खण्ड ९०५क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. फूल चन्द्र झा प्रवीणक जीवन, परिवार, स्थान आ अभिरुचि।

ख. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।

ग. चुनाव आ नागरिक समाज।

घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

उत्तर: क. फूल चन्द्र झा प्रवीणक जीवन, परिवार, स्थान आ अभिरुचि।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार फूल चन्द्र झा प्रवीणक जीवन, परिवार, स्थान आ अभिरुचि। प्रसंग अछि।

प्रश्न 8994. खण्ड ९०५मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अमरनाथ झा।

ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

ग. जितेन्द्र झा।

घ. चन्द्रेश।

उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 8995. खण्ड ९०५क विधागत पहचान की अछि?

क. संचार-विमर्श।

ख. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

ग. लेखक-परिचय।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: ग. लेखक-परिचय।

व्याख्या: ई खण्ड लेखक-परिचय। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 8996. खण्ड ९०५मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. हुनकर जन्म दस अक्टूबर उन्नैस सय एकसठि कहल गेल अछि।

उत्तर: घ. हुनकर जन्म दस अक्टूबर उन्नैस सय एकसठि कहल गेल अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे हुनकर जन्म दस अक्टूबर उन्नैस सय एकसठि कहल गेल अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 8997. खण्ड ९०५मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?
क. पिता श्याम सुन्दर झा आ माता चन्द्रकला देवीक नाम देल गेल अछि।
ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।
ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।
घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।
उत्तर: क. पिता श्याम सुन्दर झा आ माता चन्द्रकला देवीक नाम देल गेल अछि।
व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल पिता श्याम सुन्दर झा आ माता चन्द्रकला देवीक नाम देल गेल अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 8998. खण्ड ९०५मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?
क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।
ख. ग्राम तुमौल, पत्रालय पुतइ, जिला दरभंगाक सम्पर्क-सूत्र देल गेल अछि।
ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. ग्राम तुमौल, पत्रालय पुतइ, जिला दरभंगाक सम्पर्क-सूत्र देल गेल अछि।
व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे ग्राम तुमौल, पत्रालय पुतइ, जिला दरभंगाक सम्पर्क-सूत्र देल गेल अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 8999. खण्ड ९०५केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. लेखक-परिचयकेँ जीवन-वृत्त, सामाजिक स्थान आ रचनात्मक अभिरुचिसँ जोड़ि पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. लेखक-परिचयकेँ जीवन-वृत्त, सामाजिक स्थान आ रचनात्मक अभिरुचिसँ जोड़ि पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति लेखक-परिचयकेँ जीवन-वृत्त, सामाजिक स्थान आ रचनात्मक अभिरुचिसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9000. खण्ड ९०५मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9001. खण्ड ९०५ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9002. खण्ड ९०५क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. फूल चन्द्र झा प्रवीणक परिचय जीवन, अध्यापन आ बहुविध रचनात्मक रुचिक संग खुलैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा प्रवीणक परिचय जीवन, अध्यापन आ बहुविध रचनात्मक रुचिक संग खुलैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे फूल चन्द्र झा प्रवीणक परिचय जीवन, अध्यापन आ बहुविध रचनात्मक रुचिक संग खुलैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९०६ : विदेह-सदेह २ — फूल चन्द्र झा प्रवीण: रचना-संसार, सम्पादन आ सम्मान

प्रश्न 9003. खण्ड ९०६क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।

ख. चुनाव आ नागरिक समाज।

ग. रचना-संसार, संकलन-सम्पादन, अनुवाद, सम्मान आ सार्वजनिक सहभागिता।

घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

उत्तर: ग. रचना-संसार, संकलन-सम्पादन, अनुवाद, सम्मान आ सार्वजनिक सहभागिता।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार रचना-संसार, संकलन-सम्पादन, अनुवाद, सम्मान आ सार्वजनिक सहभागिता। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9004. खण्ड ९०६मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अमरनाथ झा।

ख. जितेन्द्र झा।

ग. चन्द्रेश।

घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

उत्तर: घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9005. खण्ड ९०६क विधागत पहचान की अछि?

क. लेखक-परिचय।

ख. संचार-विमर्श।

ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: क. लेखक-परिचय।

व्याख्या: ई खण्ड लेखक-परिचय। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9006. खण्ड ९०६मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. कविता-संग्रहमे आयल नवल प्रभात, वसंतक बजनिञा, पाङल गाछक छाहरि आदि नाम देल गेल।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. कविता-संग्रहमे आयल नवल प्रभात, वसंतक बजनिञा, पाङल गाछक छाहरि आदि नाम देल गेल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे कविता-संग्रहमे आयल नवल प्रभात, वसंतक बजनिञा, पाङल गाछक छाहरि आदि नाम देल गेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9007. खण्ड ९०६मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. नाटक, कथा-संग्रह, निबन्ध-संग्रह, संकलन-सम्पादन आ अनुवादक उल्लेख भेटैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. नाटक, कथा-संग्रह, निबन्ध-संग्रह, संकलन-सम्पादन आ अनुवादक उल्लेख भेटैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल नाटक, कथा-संग्रह, निबन्ध-संग्रह, संकलन-सम्पादन आ अनुवादक उल्लेख भेटैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9008. खण्ड ९०६मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. साहित्यकार संसदक राष्ट्रीय शिखर सम्मान, विद्यापति सम्मान आ सुमन स्मृति सम्मानक संकेत अछि।

उत्तर: घ. साहित्यकार संसदक राष्ट्रीय शिखर सम्मान, विद्यापति सम्मान आ सुमन स्मृति सम्मानक संकेत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे साहित्यकार संसदक राष्ट्रीय शिखर सम्मान, विद्यापति सम्मान आ सुमन स्मृति सम्मानक संकेत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9009. खण्ड ९०६केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. रचना-सूचीकेँ विधा-विस्तार, सम्पादन-सहयोग आ सम्मान-परम्परासँ जोड़ब।
ख. केवल तिथि वा नाम रटब।
ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: क. रचना-सूचीकेँ विधा-विस्तार, सम्पादन-सहयोग आ सम्मान-परम्परासँ जोड़ब।
व्याख्या: सही पद्धति रचना-सूचीकेँ विधा-विस्तार, सम्पादन-सहयोग आ सम्मान-परम्परासँ जोड़ब। अछि।

प्रश्न 9010. खण्ड ९०६मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9011. खण्ड ९०६ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9012. खण्ड ९०६क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. फूल चन्द्र झा प्रवीणक रचना-संसार कविता, नाटक, कथा, निबन्ध, सम्पादन, अनुवाद आ सम्मान धरि फैलल अछि।
उत्तर: घ. फूल चन्द्र झा प्रवीणक रचना-संसार कविता, नाटक, कथा, निबन्ध, सम्पादन, अनुवाद आ सम्मान धरि फैलल अछि।
व्याख्या: निचोड़मे फूल चन्द्र झा प्रवीणक रचना-संसार कविता, नाटक, कथा, निबन्ध, सम्पादन, अनुवाद आ सम्मान धरि फैलल अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९०७ : विदेह-सदेह २ — मैथिली शिशु लोक साहित्य: मौखिक परम्परा आ वर्गीकरण

प्रश्न 9013. खण्ड ९०७क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. मैथिली शिशु लोक साहित्यक मौखिक परम्परा, लिपिबद्धता आ वर्गीकरण।
ख. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।
ग. चुनाव आ नागरिक समाज।
घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
उत्तर: क. मैथिली शिशु लोक साहित्यक मौखिक परम्परा, लिपिबद्धता आ वर्गीकरण।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार मैथिली शिशु लोक साहित्यक मौखिक परम्परा, लिपिबद्धता आ वर्गीकरण। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9014. खण्ड ९०७मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अमरनाथ झा।
ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
ग. जितेन्द्र झा।
घ. चन्द्रेश।
उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9015. खण्ड ९०७क विधागत पहचान की अछि?

क. संचार-विमर्श।

ख. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9016. खण्ड ९०७मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. मैथिली लोक साहित्यमे शिशु लोक साहित्यक अम्बार कहल गेल अछि।

उत्तर: घ. मैथिली लोक साहित्यमे शिशु लोक साहित्यक अम्बार कहल गेल अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे मैथिली लोक साहित्यमे शिशु लोक साहित्यक अम्बार कहल गेल अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9017. खण्ड ९०७मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. किछु लिपिबद्ध आ बेसी मौखिक रूपमे लोकक कंठमे बाँचल अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. किछु लिपिबद्ध आ बेसी मौखिक रूपमे लोकक कंठमे बाँचल अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल किछु लिपिबद्ध आ बेसी मौखिक रूपमे लोकक कंठमे बाँचल अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9018. खण्ड ९०७मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. एहि साहित्यकेँ लालन-पालन, खेल-मनोरंजन आ ज्ञानोपयोगी भागमे बाँटल गेल।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. एहि साहित्यकेँ लालन-पालन, खेल-मनोरंजन आ ज्ञानोपयोगी भागमे बाँटल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे एहि साहित्यकेँ लालन-पालन, खेल-मनोरंजन आ ज्ञानोपयोगी भागमे बाँटल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9019. खण्ड ९०७केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. मौखिक परम्पराकेँ संकलन, पीढ़ी-दर-पीढ़ी सीखब आ वर्गीकरणसँ जोड़ि पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. मौखिक परम्पराकेँ संकलन, पीढ़ी-दर-पीढ़ी सीखब आ वर्गीकरणसँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति मौखिक परम्पराकेँ संकलन, पीढ़ी-दर-पीढ़ी सीखब आ वर्गीकरणसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9020. खण्ड ९०७मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9021. खण्ड ९०७ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9022. खण्ड ९०७क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. मैथिली शिशु लोक साहित्य मौखिकता, लोक-रचना आ जीवन-व्यवहारक विस्तृत धरोहर अछि।

ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

उत्तर: ख. मैथिली शिशु लोक साहित्य मौखिकता, लोक-रचना आ जीवन-व्यवहारक विस्तृत धरोहर अछि।

व्याख्या: निचोड़मे मैथिली शिशु लोक साहित्य मौखिकता, लोक-रचना आ जीवन-व्यवहारक विस्तृत धरोहर अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९०८ : विदेह-सदेह २ — लालन-पालनक गीत: सोहर, तेल-मालिश आ मामा-नाना गाम

प्रश्न 9023. खण्ड ९०८क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।

ख. चुनाव आ नागरिक समाज।

ग. लालन-पालनक शिशु लोक साहित्य, सोहर, तेल-मालिश, डर-खेल आ मामा-नाना गाम।

घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

उत्तर: ग. लालन-पालनक शिशु लोक साहित्य, सोहर, तेल-मालिश, डर-खेल आ मामा-नाना गाम।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार लालन-पालनक शिशु लोक साहित्य, सोहर, तेल-मालिश, डर-खेल आ मामा-नाना गाम। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9024. खण्ड ९०८मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अमरनाथ झा।

ख. जितेन्द्र झा।

ग. चन्द्रेश।

घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

उत्तर: घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9025. खण्ड ९०८क विधागत पहचान की अछि?

क. लोक-साहित्य अध्ययन।

ख. संचार-विमर्श।

ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: क. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9026. खण्ड ९०८मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. नेनाकेँ जन्म लितहि सोहर कानमे पड़बाक बात आएत अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. नेनाकेँ जन्म लितहि सोहर कानमे पड़बाक बात आएत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे नेनाकेँ जन्म लितहि सोहर कानमे पड़बाक बात आएत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9027. खण्ड ९०८मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. कड़ूतेलसँ जाँतल-पीचल नेनाकेँ गीतक संग देह उँगारबाक प्रसंग अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. कड़ूतेलसँ जाँतल-पीचल नेनाकेँ गीतक संग देह उँगारबाक प्रसंग अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल कड़ूतेलसँ जाँतल-पीचल नेनाकेँ गीतक संग देह उँगारबाक प्रसंग अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9028. खण्ड ९०८मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. मामा गाम, नाना गाम आ अपन गाम देखाएबाक पालन-पद्य देल गेल।

उत्तर: घ. मामा गाम, नाना गाम आ अपन गाम देखाएबाक पालन-पद्य देल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे मामा गाम, नाना गाम आ अपन गाम देखाएबाक पालन-पद्य देल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9029. खण्ड ९०८केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. लालन-पालनक क्रियाकेँ गीत, स्पर्श, खेल आ रिश्तेदारीक बोधसँ जोड़ि पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. लालन-पालनक क्रियाकेँ गीत, स्पर्श, खेल आ रिश्तेदारीक बोधसँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति लालन-पालनक क्रियाकेँ गीत, स्पर्श, खेल आ रिश्तेदारीक बोधसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9030. खण्ड ९०८मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9031. खण्ड ९०८ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9032. खण्ड ९०८क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. लालन-पालनक गीत नेनाक देह, डर, हँसी आ पारिवारिक सम्बन्धकेँ लोक-लयमे बाँधैत अछि।

उत्तर: घ. लालन-पालनक गीत नेनाक देह, डर, हँसी आ पारिवारिक सम्बन्धकेँ लोक-लयमे बाँधैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे लालन-पालनक गीत नेनाक देह, डर, हँसी आ पारिवारिक सम्बन्धकेँ लोक-लयमे बाँधैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९०९ : विदेह-सदेह २ — संझा-मैयाक प्रार्थना, नजरि-बचाव आ बाल-टोटमा

प्रश्न 9033. खण्ड ९०९क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. संझा-मैयाक प्रार्थना, दृष्टि-बचाव, दीपक टोटमा आ जिज्ञासा-पद्य।

ख. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।

ग. चुनाव आ नागरिक समाज।

घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

उत्तर: क. संझा-मैयाक प्रार्थना, दृष्टि-बचाव, दीपक टोटमा आ जिज्ञासा-पद्य।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार संझा-मैयाक प्रार्थना, दृष्टि-बचाव, दीपक टोटमा आ जिज्ञासा-पद्य। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9034. खण्ड ९०९मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अमरनाथ झा।

ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

ग. जितेन्द्र झा।

घ. चन्द्रेश।

उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9035. खण्ड ९०९क विधागत पहचान की अछि?

क. संचार-विमर्श।

ख. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9036. खण्ड ९०९मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. पहिल साँझ दीप लेसलाक बाद छोट नेनाक रक्षा लेल संझा-मैयासँ प्रार्थना होइत अछि।

उत्तर: घ. पहिल साँझ दीप लेसलाक बाद छोट नेनाक रक्षा लेल संझा-मैयासँ प्रार्थना होइत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे पहिल साँझ दीप लेसलाक बाद छोट नेनाक रक्षा लेल संझा-मैयासँ प्रार्थना होइत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9037. खण्ड ९०९मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. नजरि-गुजरिसँ बचएबाक लेल राजा धनपाल आ मौरगनी माए सम्बन्धी पाँती देल गेल।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. नजरि-गुजरिसँ बचएबाक लेल राजा धनपाल आ मौरगनी माए सम्बन्धी पाँती देल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल नजरि-गुजरिसँ बचएबाक लेल राजा धनपाल आ मौरगनी माए सम्बन्धी पाँती देल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9038. खण्ड ९०९मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. आनी-मानी हम जानी पद्यक माध्यमसँ नेनाक जिज्ञासा आ संकेत-पकड़ाइ देखाओल गेल।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. आनी-मानी हम जानी पद्यक माध्यमसँ नेनाक जिज्ञासा आ संकेत-पकड़ाइ देखाओल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे आनी-मानी हम जानी पद्यक माध्यमसँ नेनाक जिज्ञासा आ संकेत-पकड़ाइ देखाओल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9039. खण्ड ९०९केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. रक्षा-आस्था, दृष्टि-बचाव आ बाल-जिज्ञासाकेँ लोक-विश्वासक रूपमे पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. रक्षा-आस्था, दृष्टि-बचाव आ बाल-जिज्ञासाकेँ लोक-विश्वासक रूपमे पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति रक्षा-आस्था, दृष्टि-बचाव आ बाल-जिज्ञासाकेँ लोक-विश्वासक रूपमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9040. खण्ड ९०९मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9041. खण्ड ९०९ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9042. खण्ड ९०९क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. एहि खण्डमे लोकगीत नेनाक सुरक्षा, दृष्टि-बचाव आ आरम्भिक मनोविज्ञानक सांस्कृतिक साधन बनैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. एहि खण्डमे लोकगीत नेनाक सुरक्षा, दृष्टि-बचाव आ आरम्भिक मनोविज्ञानक सांस्कृतिक साधन बनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे लोकगीत नेनाक सुरक्षा, दृष्टि-बचाव आ आरम्भिक मनोविज्ञानक सांस्कृतिक साधन बनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९१० : विदेह-सदेह २ — डेग सिखेनाइ, चन्ना मामा आ तरेगन कथा-गीत

प्रश्न 9043. खण्ड ९१०क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।
ख. चुनाव आ नागरिक समाज।
ग. नेनाकेँ डेग सिखेनाइ, चन्ना मामा गीत आ तरेगन कथा-क्रम।
घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
उत्तर: ग. नेनाकेँ डेग सिखेनाइ, चन्ना मामा गीत आ तरेगन कथा-क्रम।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार नेनाकेँ डेग सिखेनाइ, चन्ना मामा गीत आ तरेगन कथा-क्रम। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9044. खण्ड ९१०मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अमरनाथ झा।
ख. जितेन्द्र झा।
ग. चन्द्रेश।
घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
उत्तर: घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9045. खण्ड ९१०क विधागत पहचान की अछि?

क. लोक-साहित्य अध्ययन।

ख. संचार-विमर्श।

ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: क. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9046. खण्ड ९१०मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. था-था, दिग-दिग, थैया पदक माध्यमसँ नेनाक चलब सिखएबाक प्रसंग अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. था-था, दिग-दिग, थैया पदक माध्यमसँ नेनाक चलब सिखएबाक प्रसंग अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे था-था, दिग-दिग, थैया पदक माध्यमसँ नेनाक चलब सिखएबाक प्रसंग अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9047. खण्ड ९१०मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. चन्ना मामाकेँ देखबैत दूध-भात, केराक भार, पूड़ी-पकमान आदि कल्पना आएत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. चन्ना मामाकेँ देखबैत दूध-भात, केराक भार, पूड़ी-पकमान आदि कल्पना आएत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल चन्ना मामाकेँ देखबैत दूध-भात, केराक भार, पूड़ी-पकमान आदि कल्पना आएत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9048. खण्ड ९१०मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. तरेगन दिस तकैत क्रमिक कथा-गीतमे बालु, दूध, बिलैया, मूसा, चिलहोरबा आदि शृंखला चलैत अछि।

उत्तर: घ. तरेगन दिस तकैत क्रमिक कथा-गीतमे बालु, दूध, बिलैया, मूसा, चिलहोरबा आदि शृंखला चलैत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे तरेगन दिस तकैत क्रमिक कथा-गीतमे बालु, दूध, बिलैया, मूसा, चिलहोरबा आदि शृंखला चलैत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9049. खण्ड ९१०केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. चलन-सिखावन आ आकाश-दर्शनकेँ कल्पना, भोजन आ कथा-क्रमसँ जोड़ि पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. चलन-सिखावन आ आकाश-दर्शनकेँ कल्पना, भोजन आ कथा-क्रमसँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति चलन-सिखावन आ आकाश-दर्शनकेँ कल्पना, भोजन आ कथा-क्रमसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9050. खण्ड ९१०मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9051. खण्ड ९१० विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9052. खण्ड ९१०क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. डेग सिखेनाइ आ चन्ना-मामा गीत नेनाकेँ गति, दृश्य, स्वाद आ कल्पना संसारमे प्रवेश करबैत अछि।
उत्तर: घ. डेग सिखेनाइ आ चन्ना-मामा गीत नेनाकेँ गति, दृश्य, स्वाद आ कल्पना संसारमे प्रवेश करबैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे डेग सिखेनाइ आ चन्ना-मामा गीत नेनाकेँ गति, दृश्य, स्वाद आ कल्पना संसारमे प्रवेश करबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९११ : विदेह-सदेह २ — निनियाँ लोरी, मातृक-स्मृति आ दीर्घायु-कामना

प्रश्न 9053. खण्ड ९११क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. निनियाँ लोरी, मातृक स्मृति, सुतएबाक क्रिया आ दीर्घायु-कामना।
ख. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।
ग. चुनाव आ नागरिक समाज।
घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
उत्तर: क. निनियाँ लोरी, मातृक स्मृति, सुतएबाक क्रिया आ दीर्घायु-कामना।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार निनियाँ लोरी, मातृक स्मृति, सुतएबाक क्रिया आ दीर्घायु-कामना। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9054. खण्ड ९११मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अमरनाथ झा।
ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
ग. जितेन्द्र झा।
घ. चन्द्रेश।
उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9055. खण्ड ९११क विधागत पहचान की अछि?
क. संचार-विमर्श।
ख. ललित-राजनीतिक निबन्ध।
ग. लोक-साहित्य अध्ययन।
घ. विवाह-गीत अध्ययन।
उत्तर: ग. लोक-साहित्य अध्ययन।
व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9056. खण्ड ९११मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मूल प्रसंग हटाएब।
ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
घ. सुतएबाक काल नेनाकेँ जाँघपर लऽ कनपट्टी आ माथ सोहरबैत लोरी गाओल जाइत अछि।
उत्तर: घ. सुतएबाक काल नेनाकेँ जाँघपर लऽ कनपट्टी आ माथ सोहरबैत लोरी गाओल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे सुतएबाक काल नेनाकेँ जाँघपर लऽ कनपट्टी आ माथ सोहरबैत लोरी गाओल जाइत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9057. खण्ड ९११मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?
क. निनियाँ आ बौआक मातृकसँ आबयबला पंक्तिमे ममहर स्मृति आएत अछि।
ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।
ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।
घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।
उत्तर: क. निनियाँ आ बौआक मातृकसँ आबयबला पंक्तिमे ममहर स्मृति आएत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल निनियाँ आ बौआक मातृकसँ आबयबला पंक्तिमे ममहर स्मृति आएत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9058. खण्ड ९११मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?
क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।
ख. लोरीक माध्यमसँ नेनाक दीर्घायु होएबाक कामना कएल जाइत अछि।
ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।
घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।
उत्तर: ख. लोरीक माध्यमसँ नेनाक दीर्घायु होएबाक कामना कएल जाइत अछि।
व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे लोरीक माध्यमसँ नेनाक दीर्घायु होएबाक कामना कएल जाइत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9059. खण्ड ९११केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. लोरीकेँ निद्रा, मातृक-संबंध, आशीर्वाद आ घरेलू श्रमक बीच पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. लोरीकेँ निद्रा, मातृक-संबंध, आशीर्वाद आ घरेलू श्रमक बीच पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति लोरीकेँ निद्रा, मातृक-संबंध, आशीर्वाद आ घरेलू श्रमक बीच पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9060. खण्ड ९११मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9061. खण्ड ९११ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9062. खण्ड ९११क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. निनियाँ लोरी नेनाक निद्रा, दीर्घायु आ परिवारक भावलोककेँ एक साथ बाँधैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. निनियाँ लोरी नेनाक निद्रा, दीर्घायु आ परिवारक भावलोककेँ एक साथ बाँधैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे निनियाँ लोरी नेनाक निद्रा, दीर्घायु आ परिवारक भावलोककेँ एक साथ बाँधैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९१२ : विदेह-सदेह २ — घुघुआ-मना, पालन-खेल आ दीदीक पद्य

प्रश्न 9063. खण्ड ९१२क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।

ख. चुनाव आ नागरिक समाज।

ग. घुघुआ-मना, धुआँ-चुआँ, पालन-खेल, दादी-नानी-दीदीक पद्य।

घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

उत्तर: ग. घुघुआ-मना, धुआँ-चुआँ, पालन-खेल, दादी-नानी-दीदीक पद्य।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार घुघुआ-मना, धुआँ-चुआँ, पालन-खेल, दादी-नानी-दीदीक पद्य। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9064. खण्ड ९१२मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अमरनाथ झा।

ख. जितेन्द्र झा।

ग. चन्द्रेश।

घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

उत्तर: घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9065. खण्ड ९१२क विधागत पहचान की अछि?

क. लोक-साहित्य अध्ययन।

ख. संचार-विमर्श।

ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: क. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9066. खण्ड ९१२मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. नेनाकेँ पैरपर बैसाए उपर-नीचाँ करैत पालन-गीतक आनन्द देल जाइत अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. नेनाकेँ पैरपर बैसाए उपर-नीचाँ करैत पालन-गीतक आनन्द देल जाइत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे नेनाकेँ पैरपर बैसाए उपर-नीचाँ करैत पालन-गीतक आनन्द देल जाइत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9067. खण्ड ९१२मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. कत्तौ एकरा घुघुआ-मना आ कत्तौ धुआँ-चुआँ कहल जाइत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. कत्तौ एकरा घुघुआ-मना आ कत्तौ धुआँ-चुआँ कहल जाइत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल कत्तौ एकरा घुघुआ-मना आ कत्तौ धुआँ-चुआँ कहल जाइत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9068. खण्ड ९१२मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. लाल दीदी गे प्रकारक पद्यमे दीदी अथवा पिउसिक योगदान देखाओल गेल।

उत्तर: घ. लाल दीदी गे प्रकारक पद्यमे दीदी अथवा पिउसिक योगदान देखाओल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे लाल दीदी गे प्रकारक पद्यमे दीदी अथवा पिउसिक योगदान देखाओल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9069. खण्ड ९१२केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. नेनाक मनोरंजनकेँ सामूहिक स्त्री-सहभागिता, देह-खेल आ पद्य-लयसँ जोड़ब।
ख. केवल तिथि वा नाम रटब।
ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: क. नेनाक मनोरंजनकेँ सामूहिक स्त्री-सहभागिता, देह-खेल आ पद्य-लयसँ जोड़ब।
व्याख्या: सही पद्धति नेनाक मनोरंजनकेँ सामूहिक स्त्री-सहभागिता, देह-खेल आ पद्य-लयसँ जोड़ब। अछि।

प्रश्न 9070. खण्ड ९१२मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9071. खण्ड ९१२ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9072. खण्ड ९१२क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. घुघुआ-मना आ दीदीक पद्य नेनाक पालनमे माए, दादी, नानी आ दीदीक सामूहिक भूमिकाकेँ उभारैत अछि।
उत्तर: घ. घुघुआ-मना आ दीदीक पद्य नेनाक पालनमे माए, दादी, नानी आ दीदीक सामूहिक भूमिकाकेँ उभारैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे घुघुआ-मना आ दीदीक पद्य नेनाक पालनमे माए, दादी, नानी आ दीदीक सामूहिक भूमिकाकेँ उभारैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९१३ : विदेह-सदेह २ — नैहर, मामा-मामी आ दुलार-मलारक शिशु पद्य

प्रश्न 9073. खण्ड ९१३क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. नैहर-परम्परा, मामा-मामी, नाना-नानी आ दुलार-मलारक पालन-पद्य।
ख. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।
ग. चुनाव आ नागरिक समाज।
घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
उत्तर: क. नैहर-परम्परा, मामा-मामी, नाना-नानी आ दुलार-मलारक पालन-पद्य।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार नैहर-परम्परा, मामा-मामी, नाना-नानी आ दुलार-मलारक पालन-पद्य। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9074. खण्ड ९१३मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अमरनाथ झा।
ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
ग. जितेन्द्र झा।
घ. चन्द्रेश।
उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9075. खण्ड ९१३क विधागत पहचान की अछि?

क. संचार-विमर्श।

ख. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9076. खण्ड ९१३मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. संतानक योग्यता भेलापर बेटीक नैहर आनल जाएबाक परम्पराक उल्लेख अछि।

उत्तर: घ. संतानक योग्यता भेलापर बेटीक नैहर आनल जाएबाक परम्पराक उल्लेख अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे संतानक योग्यता भेलापर बेटीक नैहर आनल जाएबाक परम्पराक उल्लेख अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9077. खण्ड ९१३मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. नेनाकेँ मामा, मामी, नाना, नानीक बेसी दुलार-मलार भेटबाक बात कहल गेल।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. नेनाकेँ मामा, मामी, नाना, नानीक बेसी दुलार-मलार भेटबाक बात कहल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल नेनाकेँ मामा, मामी, नाना, नानीक बेसी दुलार-मलार भेटबाक बात कहल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9078. खण्ड ९१३मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. मामा पोखरी भीड़पर जइहऽ आ मामी यै भात उधिआए जकाँ पद्य देल गेल।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. मामा पोखरी भीड़पर जइहऽ आ मामी यै भात उधिआए जकाँ पद्य देल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे मामा पोखरी भीड़पर जइहऽ आ मामी यै भात उधिआए जकाँ पद्य देल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9079. खण्ड ९१३केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. रिश्तेदारीक पद्यकेँ मातृक-संस्कृति, भोजन, दुलार आ शिकायतक भावसँ जोड़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. रिश्तेदारीक पद्यकेँ मातृक-संस्कृति, भोजन, दुलार आ शिकायतक भावसँ जोड़ब।

व्याख्या: सही पद्धति रिश्तेदारीक पद्यकेँ मातृक-संस्कृति, भोजन, दुलार आ शिकायतक भावसँ जोड़ब। अछि।

प्रश्न 9080. खण्ड ९१३मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9081. खण्ड ९१३ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9082. खण्ड ९१३क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. मामा-मामी सम्बन्धी पद्य नेनाक मातृक संसार आ दुलार-मलारक लोक-भावना प्रकट करैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. मामा-मामी सम्बन्धी पद्य नेनाक मातृक संसार आ दुलार-मलारक लोक-भावना प्रकट करैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे मामा-मामी सम्बन्धी पद्य नेनाक मातृक संसार आ दुलार-मलारक लोक-भावना प्रकट करैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९१४ : विदेह-सदेह २ — खेल-मनोरंजन: अटकन-मटकन आ सिंगही-मुँगरी

प्रश्न 9083. खण्ड ९१४क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।
ख. चुनाव आ नागरिक समाज।
ग. खेल-मनोरंजनसँ सम्बद्ध शिशु लोक साहित्य, अटकन-मटकन आ सिंगही-मुँगरी।
घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
उत्तर: ग. खेल-मनोरंजनसँ सम्बद्ध शिशु लोक साहित्य, अटकन-मटकन आ सिंगही-मुँगरी।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार खेल-मनोरंजनसँ सम्बद्ध शिशु लोक साहित्य, अटकन-मटकन आ सिंगही-मुँगरी। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9084. खण्ड ९१४मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अमरनाथ झा।
ख. जितेन्द्र झा।
ग. चन्द्रेश।
घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
उत्तर: घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9085. खण्ड ९१४क विधागत पहचान की अछि?
क. लोक-साहित्य अध्ययन।
ख. संचार-विमर्श।
ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।
घ. विवाह-गीत अध्ययन।
उत्तर: क. लोक-साहित्य अध्ययन।
व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9086. खण्ड ९१४मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. खेल-मनोरंजनक परिवेश रस्ता-पेरा, परती-पराँत, विद्यालय-परिसर आ खेलक मैदान धरि फैलल अछि।
ग. मूल प्रसंग हटाएब।
घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
उत्तर: ख. खेल-मनोरंजनक परिवेश रस्ता-पेरा, परती-पराँत, विद्यालय-परिसर आ खेलक मैदान धरि फैलल अछि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे खेल-मनोरंजनक परिवेश रस्ता-पेरा, परती-पराँत, विद्यालय-परिसर आ खेलक मैदान धरि फैलल अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9087. खण्ड ९१४मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. अटकन-मटकन दहिया चटकन प्रकारक खेल-पद्य देल गेल।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. अटकन-मटकन दहिया चटकन प्रकारक खेल-पद्य देल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल अटकन-मटकन दहिया चटकन प्रकारक खेल-पद्य देल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9088. खण्ड ९१४मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. सिंगही कहला पर बिट्ठू काटब आ मुँगरी कहला पर मुक्का मारबाक खेल-रीति बताओल गेल।

उत्तर: घ. सिंगही कहला पर बिट्ठू काटब आ मुँगरी कहला पर मुक्का मारबाक खेल-रीति बताओल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे सिंगही कहला पर बिट्ठू काटब आ मुँगरी कहला पर मुक्का मारबाक खेल-रीति बताओल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9089. खण्ड ९१४केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. खेल-पद्यकेँ देह-क्रिया, समूह-हँसी आ बाल-मनोविज्ञानक दृष्टिसँ पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. खेल-पद्यकेँ देह-क्रिया, समूह-हँसी आ बाल-मनोविज्ञानक दृष्टिसँ पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति खेल-पद्यकेँ देह-क्रिया, समूह-हँसी आ बाल-मनोविज्ञानक दृष्टिसँ पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9090. खण्ड ९१४मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9091. खण्ड ९१४ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9092. खण्ड ९१४क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. अटकन-मटकन खेल-पद्य बाल-समूहक हँसी, जोखिम आ लोक-लयक जीवंत नमूना अछि।

उत्तर: घ. अटकन-मटकन खेल-पद्य बाल-समूहक हँसी, जोखिम आ लोक-लयक जीवंत नमूना अछि।

व्याख्या: निचोड़मे अटकन-मटकन खेल-पद्य बाल-समूहक हँसी, जोखिम आ लोक-लयक जीवंत नमूना अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९१५ : विदेह-सदेह २ — फुद्दी कथा-काव्य, रेलगाड़ी आ कबड्डी परम्परा

प्रश्न 9093. खण्ड ९१५क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. फुद्दी बाल-कथा-काव्य, रेलगाड़ी खेल आ कबड्डीक पुरान परम्परा।

ख. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।

ग. चुनाव आ नागरिक समाज।

घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

उत्तर: क. फुद्दी बाल-कथा-काव्य, रेलगाड़ी खेल आ कबड्डीक पुरान परम्परा।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार फुद्दी बाल-कथा-काव्य, रेलगाड़ी खेल आ कबड्डीक पुरान परम्परा। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9094. खण्ड ९१५मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अमरनाथ झा।

ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

ग. जितेन्द्र झा।

घ. चन्द्रेश।

उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9095. खण्ड ९१५क विधागत पहचान की अछि?

क. संचार-विमर्श।

ख. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9096. खण्ड ९१५मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. फुद्दी कथा-काव्यमे कुस, तीन धार, ब्राह्मण आ मुक्का-दण्डक विचित्र क्रम अछि।

उत्तर: घ. फुद्दी कथा-काव्यमे कुस, तीन धार, ब्राह्मण आ मुक्का-दण्डक विचित्र क्रम अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे फुद्दी कथा-काव्यमे कुस, तीन धार, ब्राह्मण आ मुक्का-दण्डक विचित्र क्रम अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9097. खण्ड ९१५मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. नेना सभ एक-दोसरक डाँर पकड़ि रेलगाड़ी बनबैत अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. नेना सभ एक-दोसरक डाँर पकड़ि रेलगाड़ी बनबैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल नेना सभ एक-दोसरक डाँर पकड़ि रेलगाड़ी बनबैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9098. खण्ड ९१५मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. मिथिलाक खेलमे कबड्डीक बड्डु पुरान परम्परा कहल गेल।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. मिथिलाक खेलमे कबड्डीक बड्डु पुरान परम्परा कहल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे मिथिलाक खेलमे कबड्डीक बड्डु पुरान परम्परा कहल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9099. खण्ड ९१५केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. केवल तिथि वा नाम रटब।
ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
ग. कथा-काव्य आ खेलकेँ समूह-अभिनय, कल्पना आ पारम्परिक क्रीड़ासँ जोड़ि पढ़ब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: ग. कथा-काव्य आ खेलकेँ समूह-अभिनय, कल्पना आ पारम्परिक क्रीड़ासँ जोड़ि पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति कथा-काव्य आ खेलकेँ समूह-अभिनय, कल्पना आ पारम्परिक क्रीड़ासँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9100. खण्ड ९१५मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9101. खण्ड ९१५ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9102. खण्ड ९१५क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. फुद्दी, रेलगाड़ी आ कबड्डी शिशु लोक साहित्यक कथा, अभिनय आ क्रीड़ा पक्षकेँ सामने अनैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. फुद्दी, रेलगाड़ी आ कबड्डी शिशु लोक साहित्यक कथा, अभिनय आ क्रीड़ा पक्षकेँ सामने अनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे फुद्दी, रेलगाड़ी आ कबड्डी शिशु लोक साहित्यक कथा, अभिनय आ क्रीड़ा पक्षकेँ सामने अनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९१६ : विदेह-सदेह २ — गिरगिटरानी आ कटहरक गाछ खेल

प्रश्न 9103. खण्ड ९१६क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।
ख. चुनाव आ नागरिक समाज।
ग. गिरगिटरानी, कन्या-खेल आ कटहरक गाछ अभिनय।
घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
उत्तर: ग. गिरगिटरानी, कन्या-खेल आ कटहरक गाछ अभिनय।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार गिरगिटरानी, कन्या-खेल आ कटहरक गाछ अभिनय। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9104. खण्ड ९१६मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अमरनाथ झा।
ख. जितेन्द्र झा।
ग. चन्द्रेश।
घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
उत्तर: घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9105. खण्ड ९१६क विधागत पहचान की अछि?

क. लोक-साहित्य अध्ययन।

ख. संचार-विमर्श।

ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: क. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9106. खण्ड ९१६मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. गिरगिटरानी खेल मिथिलाक कन्या लोकनिक बीच खेलाएल जाएबाक बात कहल गेल।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. गिरगिटरानी खेल मिथिलाक कन्या लोकनिक बीच खेलाएल जाएबाक बात कहल गेल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे गिरगिटरानी खेल मिथिलाक कन्या लोकनिक बीच खेलाएल जाएबाक बात कहल गेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9107. खण्ड ९१६मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. एहिमे एक कन्या गिरगिट बनैत आ आन कन्या सभ ओकरा घुमबैत उत्तर दैत रहैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. एहिमे एक कन्या गिरगिट बनैत आ आन कन्या सभ ओकरा घुमबैत उत्तर दैत रहैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल एहिमे एक कन्या गिरगिट बनैत आ आन कन्या सभ ओकरा घुमबैत उत्तर दैत रहैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9108. खण्ड ९१६मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. कटहरक गाछ खेलमे एक नेना गाछक अभिनय करैत आ दोसर नेना फल बनैत अछि।

उत्तर: घ. कटहरक गाछ खेलमे एक नेना गाछक अभिनय करैत आ दोसर नेना फल बनैत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे कटहरक गाछ खेलमे एक नेना गाछक अभिनय करैत आ दोसर नेना फल बनैत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9109. खण्ड ९१६केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. कन्या-खेल आ वृक्ष-अभिनयकेँ सामूहिक देह-नाट्य आ संवाद-पद्य रूपमे पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. कन्या-खेल आ वृक्ष-अभिनयकेँ सामूहिक देह-नाट्य आ संवाद-पद्य रूपमे पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति कन्या-खेल आ वृक्ष-अभिनयकेँ सामूहिक देह-नाट्य आ संवाद-पद्य रूपमे पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9110. खण्ड ९१६मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9111. खण्ड ९१६ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9112. खण्ड ९१६क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. गिरगिटरानी आ कटहरक गाछ बाल-अभिनय, संवाद आ लोकनाट्यक आरम्भिक रूप देखबैत अछि।
उत्तर: घ. गिरगिटरानी आ कटहरक गाछ बाल-अभिनय, संवाद आ लोकनाट्यक आरम्भिक रूप देखबैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे गिरगिटरानी आ कटहरक गाछ बाल-अभिनय, संवाद आ लोकनाट्यक आरम्भिक रूप देखबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९१७ : विदेह-सदेह २ — झिझिर कोना, साँप डिगडिग आ आत्मरक्षाक लोकज्ञान

प्रश्न 9113. खण्ड ९१७क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. झिझिर कोना, साँप डिगडिग, आत्मरक्षा-खिस्सा आ निरर्थक शब्दक पद्य।
ख. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।
ग. चुनाव आ नागरिक समाज।
घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
उत्तर: क. झिझिर कोना, साँप डिगडिग, आत्मरक्षा-खिस्सा आ निरर्थक शब्दक पद्य।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार झिझिर कोना, साँप डिगडिग, आत्मरक्षा-खिस्सा आ निरर्थक शब्दक पद्य। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9114. खण्ड ९१७मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अमरनाथ झा।
ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
ग. जितेन्द्र झा।
घ. चन्द्रेश।
उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9115. खण्ड ९१७क विधागत पहचान की अछि?
क. संचार-विमर्श।
ख. ललित-राजनीतिक निबन्ध।
ग. लोक-साहित्य अध्ययन।
घ. विवाह-गीत अध्ययन।
उत्तर: ग. लोक-साहित्य अध्ययन।
व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9116. खण्ड ९१७मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मूल प्रसंग हटाएब।
ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
घ. झिझिर कोना खेल पाँच गोट नेना द्वारा चारि कोनबला खाली घरमे खेलाएल जाइत अछि।
उत्तर: घ. झिझिर कोना खेल पाँच गोट नेना द्वारा चारि कोनबला खाली घरमे खेलाएल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे झिझिर कोना खेल पाँच गोट नेना द्वारा चारि कोनबला खाली घरमे खेलाएल जाइत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9117. खण्ड ९१७मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. साँप डिगडिग सामूहिक खेलमे नेना सभ हत्था जोड़ि सोझ पाँतीमे ठाढ़ होइत अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. साँप डिगडिग सामूहिक खेलमे नेना सभ हत्था जोड़ि सोझ पाँतीमे ठाढ़ होइत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल साँप डिगडिग सामूहिक खेलमे नेना सभ हत्था जोड़ि सोझ पाँतीमे ठाढ़ होइत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9118. खण्ड ९१७मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. आत्मरक्षार्थ खिस्सा-पिहानी गद्य आ पद्य दुनू रूपमे पर्याप्त कहल गेल।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. आत्मरक्षार्थ खिस्सा-पिहानी गद्य आ पद्य दुनू रूपमे पर्याप्त कहल गेल।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे आत्मरक्षार्थ खिस्सा-पिहानी गद्य आ पद्य दुनू रूपमे पर्याप्त कहल गेल। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9119. खण्ड ९१७केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. सामूहिक खेलकेँ देह-संयोजन, आत्मरक्षा-ज्ञान आ ध्वनि-लयक प्रयोगसँ जोड़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. सामूहिक खेलकेँ देह-संयोजन, आत्मरक्षा-ज्ञान आ ध्वनि-लयक प्रयोगसँ जोड़ब।

व्याख्या: सही पद्धति सामूहिक खेलकेँ देह-संयोजन, आत्मरक्षा-ज्ञान आ ध्वनि-लयक प्रयोगसँ जोड़ब। अछि।

प्रश्न 9120. खण्ड ९१७मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9121. खण्ड ९१७ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9122. खण्ड ९१७क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. झिझिर कोना आ साँप डिगडिग शिशु लोक साहित्यक समूह-व्यवहार, सुरक्षा-बोध आ ध्वनि-खेलक रूप अछि।

ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

उत्तर: ख. झिझिर कोना आ साँप डिगडिग शिशु लोक साहित्यक समूह-व्यवहार, सुरक्षा-बोध आ ध्वनि-खेलक रूप अछि।

व्याख्या: निचोड़मे झिझिर कोना आ साँप डिगडिग शिशु लोक साहित्यक समूह-व्यवहार, सुरक्षा-बोध आ ध्वनि-खेलक रूप अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९१८ : विदेह-सदेह २ — ज्ञानोपयोगी साहित्य: परिवार, अट्टा-पट्टा आ अंक-ज्ञान

प्रश्न 9123. खण्ड ९१८क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।

ख. चुनाव आ नागरिक समाज।

ग. ज्ञानोपयोगी शिशु लोक साहित्य, परिवारक पाठशाला आ अट्टा-पट्टा खेल।

घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

उत्तर: ग. ज्ञानोपयोगी शिशु लोक साहित्य, परिवारक पाठशाला आ अट्टा-पट्टा खेल।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार ज्ञानोपयोगी शिशु लोक साहित्य, परिवारक पाठशाला आ अट्टा-पट्टा खेल। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9124. खण्ड ९१८मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अमरनाथ झा।

ख. जितेन्द्र झा।

ग. चन्द्रेश।

घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

उत्तर: घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9125. खण्ड ९१८क विधागत पहचान की अछि?

क. लोक-साहित्य अध्ययन।

ख. संचार-विमर्श।

ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: क. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9126. खण्ड ९१८मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. परिवारकेँ सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला कहल गेल अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. परिवारकेँ सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला कहल गेल अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे परिवारकेँ सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला कहल गेल अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9127. खण्ड ९१८मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. अट्टा-पट्टा खेलमे नेनाक दहिना हाथपर थापर मारि आँगुर पकड़ा कऽ पद्य कहल जाइत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. अट्टा-पट्टा खेलमे नेनाक दहिना हाथपर थापर मारि आँगुर पकड़ा कऽ पद्य कहल जाइत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल अट्टा-पट्टा खेलमे नेनाक दहिना हाथपर थापर मारि आँगुर पकड़ा कऽ पद्य कहल जाइत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9128. खण्ड ९१८मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. एहि खेलसँ नेनाकेँ एकसँ पाँच धरि अंकक ज्ञान कराओल जाइत अछि।

उत्तर: घ. एहि खेलसँ नेनाकेँ एकसँ पाँच धरि अंकक ज्ञान कराओल जाइत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे एहि खेलसँ नेनाकेँ एकसँ पाँच धरि अंकक ज्ञान कराओल जाइत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9129. खण्ड ९१८केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. घर-परिवारक खेलकेँ अंक-शिक्षा, स्पर्श आ हँसीक अनुभवसँ जोड़ि पढ़ब।
ख. केवल तिथि वा नाम रटब।
ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: क. घर-परिवारक खेलकेँ अंक-शिक्षा, स्पर्श आ हँसीक अनुभवसँ जोड़ि पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति घर-परिवारक खेलकेँ अंक-शिक्षा, स्पर्श आ हँसीक अनुभवसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9130. खण्ड ९१८मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9131. खण्ड ९१८ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9132. खण्ड ९१८क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. ज्ञानोपयोगी शिशु साहित्य घरक खेल द्वारा अंक-ज्ञान आ सामाजिक सीख प्रारम्भ करबैत अछि।
उत्तर: घ. ज्ञानोपयोगी शिशु साहित्य घरक खेल द्वारा अंक-ज्ञान आ सामाजिक सीख प्रारम्भ करबैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे ज्ञानोपयोगी शिशु साहित्य घरक खेल द्वारा अंक-ज्ञान आ सामाजिक सीख प्रारम्भ करबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९१९ : विदेह-सदेह २ — दहाइ-सैकड़ा, घो-घो रानी आ अंग-ज्ञान

प्रश्न 9133. खण्ड ९१९क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. दहाइ-सैकड़ा गणना, घो-घो रानी खेल आ अंग-ज्ञान।
ख. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।
ग. चुनाव आ नागरिक समाज।
घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
उत्तर: क. दहाइ-सैकड़ा गणना, घो-घो रानी खेल आ अंग-ज्ञान।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार दहाइ-सैकड़ा गणना, घो-घो रानी खेल आ अंग-ज्ञान। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9134. खण्ड ९१९मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अमरनाथ झा।
ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
ग. जितेन्द्र झा।
घ. चन्द्रेश।
उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9135. खण्ड ९१९क विधागत पहचान की अछि?

क. संचार-विमर्श।

ख. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9136. खण्ड ९१९मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. दस, बीस, तीस सँ सौ धरि पद्यक माध्यमसँ दहाइ आ सैकड़ाक ज्ञान कराओल जाइत अछि।

उत्तर: घ. दस, बीस, तीस सँ सौ धरि पद्यक माध्यमसँ दहाइ आ सैकड़ाक ज्ञान कराओल जाइत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे दस, बीस, तीस सँ सौ धरि पद्यक माध्यमसँ दहाइ आ सैकड़ाक ज्ञान कराओल जाइत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9137. खण्ड ९१९मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. घो-घो रानी खेलमे एक नेना बीचमे ठाढ़ आ आन नेना सभ वृत्ताकार रहैत अछि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. घो-घो रानी खेलमे एक नेना बीचमे ठाढ़ आ आन नेना सभ वृत्ताकार रहैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल घो-घो रानी खेलमे एक नेना बीचमे ठाढ़ आ आन नेना सभ वृत्ताकार रहैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9138. खण्ड ९१९मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. एड़ीसँ माथ धरि पानि पुछबाक क्रमसँ अंगक ज्ञान कराओल जाइत अछि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. एड़ीसँ माथ धरि पानि पुछबाक क्रमसँ अंगक ज्ञान कराओल जाइत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे एड़ीसँ माथ धरि पानि पुछबाक क्रमसँ अंगक ज्ञान कराओल जाइत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9139. खण्ड ९१९केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. गणना आ अंग-ज्ञानकेँ वृत्त-खेल, प्रश्नोत्तर आ अभिनयक माध्यमसँ पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. गणना आ अंग-ज्ञानकेँ वृत्त-खेल, प्रश्नोत्तर आ अभिनयक माध्यमसँ पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति गणना आ अंग-ज्ञानकेँ वृत्त-खेल, प्रश्नोत्तर आ अभिनयक माध्यमसँ पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9140. खण्ड ९१९मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9141. खण्ड ९१९ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9142. खण्ड ९१९क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. दहाइ-सैकड़ा आ घो-घो रानी खेल संख्या आ शरीरक बोधकेँ मनोरंजनक संग जोड़ैत अछि।
ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
उत्तर: ख. दहाइ-सैकड़ा आ घो-घो रानी खेल संख्या आ शरीरक बोधकेँ मनोरंजनक संग जोड़ैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे दहाइ-सैकड़ा आ घो-घो रानी खेल संख्या आ शरीरक बोधकेँ मनोरंजनक संग जोड़ैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९२० : विदेह-सदेह २ — आकार-ज्ञान, वस्तु-उपयोग आ श्रम-श्रृंखला

प्रश्न 9143. खण्ड ९२०क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।
ख. चुनाव आ नागरिक समाज।
ग. छिट्टा-पथिया-मउनी-चुक्का, वस्तु-उपयोग आ श्रम-श्रृंखलाक ज्ञान।
घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
उत्तर: ग. छिट्टा-पथिया-मउनी-चुक्का, वस्तु-उपयोग आ श्रम-श्रृंखलाक ज्ञान।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार छिट्टा-पथिया-मउनी-चुक्का, वस्तु-उपयोग आ श्रम-श्रृंखलाक ज्ञान। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9144. खण्ड ९२०मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अमरनाथ झा।
ख. जितेन्द्र झा।
ग. चन्द्रेश।
घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
उत्तर: घ. फूल चन्द्र झा प्रवीण।
व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9145. खण्ड ९२०क विधागत पहचान की अछि?
क. लोक-साहित्य अध्ययन।
ख. संचार-विमर्श।
ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।
घ. विवाह-गीत अध्ययन।
उत्तर: क. लोक-साहित्य अध्ययन।
व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9146. खण्ड ९२०मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. एतेक टा की पद्यमे छिट्टा, पथिया, मउनी आ चुक्काक आकारक ज्ञान देल जाइत अछि।
ग. मूल प्रसंग हटाएब।
घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
उत्तर: ख. एतेक टा की पद्यमे छिट्टा, पथिया, मउनी आ चुक्काक आकारक ज्ञान देल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे एतेक टा की पद्यमे छिट्टा, पथिया, मउनी आ चुक्काक आकारक ज्ञान देल जाइत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9147. खण्ड ९२०मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. लोहा, हाँसू, खड़ही, बंगला, भैसी, अंगना, गहूँ, आटा आ पूरीक उपयोग-श्रृंखला बताओल गेल।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. लोहा, हाँसू, खड़ही, बंगला, भैसी, अंगना, गहूँ, आटा आ पूरीक उपयोग-श्रृंखला बताओल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल लोहा, हाँसू, खड़ही, बंगला, भैसी, अंगना, गहूँ, आटा आ पूरीक उपयोग-श्रृंखला बताओल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9148. खण्ड ९२०मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. अंतमे बौआ रूसि गेल कहि खेलक हास्यात्मक समाप्ति होइत अछि।

उत्तर: घ. अंतमे बौआ रूसि गेल कहि खेलक हास्यात्मक समाप्ति होइत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे अंतमे बौआ रूसि गेल कहि खेलक हास्यात्मक समाप्ति होइत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9149. खण्ड ९२०केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. आकार आ उपयोगकेँ घरेलू श्रम, कृषि-साधन आ भोजन-प्रक्रियाक लोकज्ञानसँ जोड़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. आकार आ उपयोगकेँ घरेलू श्रम, कृषि-साधन आ भोजन-प्रक्रियाक लोकज्ञानसँ जोड़ब।

व्याख्या: सही पद्धति आकार आ उपयोगकेँ घरेलू श्रम, कृषि-साधन आ भोजन-प्रक्रियाक लोकज्ञानसँ जोड़ब। अछि।

प्रश्न 9150. खण्ड ९२०मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9151. खण्ड ९२० विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9152. खण्ड ९२०क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

घ. एहि खण्डमे शिशु लोक साहित्य आकार, औजार, श्रम आ भोजनक व्यवहारिक ज्ञान देबैत अछि।

उत्तर: घ. एहि खण्डमे शिशु लोक साहित्य आकार, औजार, श्रम आ भोजनक व्यवहारिक ज्ञान देबैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे शिशु लोक साहित्य आकार, औजार, श्रम आ भोजनक व्यवहारिक ज्ञान देबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९२१ : विदेह-सदेह २ — शिशु लोक साहित्यक संरक्षण, विकृति आ नव तकनीक

प्रश्न 9153. खण्ड ९२१क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. शिशु लोक साहित्यक संरक्षण, मौलिकता-हानि, पाश्चात्य प्रभाव आ नव तकनीक।

ख. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।

ग. चुनाव आ नागरिक समाज।

घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

उत्तर: क. शिशु लोक साहित्यक संरक्षण, मौलिकता-हानि, पाश्चात्य प्रभाव आ नव तकनीक।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार शिशु लोक साहित्यक संरक्षण, मौलिकता-हानि, पाश्चात्य प्रभाव आ नव तकनीक। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9154. खण्ड ९२१मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अमरनाथ झा।

ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

ग. जितेन्द्र झा।

घ. चन्द्रेश।

उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा प्रवीण।

व्याख्या: एहि खण्डमे फूल चन्द्र झा प्रवीण। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9155. खण्ड ९२१क विधागत पहचान की अछि?

क. संचार-विमर्श।

ख. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: ग. लोक-साहित्य अध्ययन।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्य अध्ययन। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9156. खण्ड ९२१मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. मूल प्रसंग हटाएब।

ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

घ. लेखक कहैत छथि जे शिशु लोक साहित्य नेनाक प्रत्येक पक्षसँ जुड़ल रहल अछि।

उत्तर: घ. लेखक कहैत छथि जे शिशु लोक साहित्य नेनाक प्रत्येक पक्षसँ जुड़ल रहल अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे लेखक कहैत छथि जे शिशु लोक साहित्य नेनाक प्रत्येक पक्षसँ जुड़ल रहल अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9157. खण्ड ९२१मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. मौलिकता छोड़ि विकृत रूप अपनएबाक खतरा व्यक्त कएल गेल।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. मौलिकता छोड़ि विकृत रूप अपनएबाक खतरा व्यक्त कएल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल मौलिकता छोड़ि विकृत रूप अपनएबाक खतरा व्यक्त कएल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9158. खण्ड ९२१मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. नव-नव तकनीक द्वारा असंकलित साहित्यकेँ चिरकाल लेल जोगा राखबाक आग्रह अछि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. नव-नव तकनीक द्वारा असंकलित साहित्यकेँ चिरकाल लेल जोगा राखबाक आग्रह अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे नव-नव तकनीक द्वारा असंकलित साहित्यकेँ चिरकाल लेल जोगा राखबाक आग्रह अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9159. खण्ड ९२१केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. धरोहर-चिन्ताकेँ संकलन, जन-प्रचार आ सांस्कृतिक आत्मरक्षासँ जोड़ि पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. धरोहर-चिन्ताकेँ संकलन, जन-प्रचार आ सांस्कृतिक आत्मरक्षासँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति धरोहर-चिन्ताकेँ संकलन, जन-प्रचार आ सांस्कृतिक आत्मरक्षासँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9160. खण्ड ९२१मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9161. खण्ड ९२१ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9162. खण्ड ९२१क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. संरक्षण-खण्ड शिशु लोक साहित्यकेँ मिथिलाक विशिष्ट सांस्कृतिक निधि मानि नव तकनीकसँ जोगएबाक आग्रह करैत अछि।

ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

उत्तर: ख. संरक्षण-खण्ड शिशु लोक साहित्यकेँ मिथिलाक विशिष्ट सांस्कृतिक निधि मानि नव तकनीकसँ जोगएबाक आग्रह करैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे संरक्षण-खण्ड शिशु लोक साहित्यकेँ मिथिलाक विशिष्ट सांस्कृतिक निधि मानि नव तकनीकसँ जोगएबाक आग्रह करैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९२२ : विदेह-सदेह २ — केदार कानन: जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर दृष्टि

प्रश्न 9163. खण्ड ९२२क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।

ख. चुनाव आ नागरिक समाज।

ग. जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि।

घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

उत्तर: ग. जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9164. खण्ड ९२२मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अमरनाथ झा।

ख. जितेन्द्र झा।

ग. चन्द्रेश।

घ. केदार कानन।

उत्तर: घ. केदार कानन।

व्याख्या: एहि खण्डमे केदार कानन। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9165. खण्ड ९२२क विधागत पहचान की अछि?

क. कथा-समीक्षा।

ख. संचार-विमर्श।

ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: क. कथा-समीक्षा।

व्याख्या: ई खण्ड कथा-समीक्षा। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9166. खण्ड ९२२मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. जगदीश प्रसाद मंडलक निजी पहचान गंभीर साम्यवादी दृष्टि आ रचल-पचल जीवनानुभव मानल गेल।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. जगदीश प्रसाद मंडलक निजी पहचान गंभीर साम्यवादी दृष्टि आ रचल-पचल जीवनानुभव मानल गेल।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे जगदीश प्रसाद मंडलक निजी पहचान गंभीर साम्यवादी दृष्टि आ रचल-पचल जीवनानुभव मानल गेल। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9167. खण्ड ९२२मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. मैथिल जीवन आ परम्पराक श्रेष्ठ अंकन-चित्रण हुनकर विशिष्टता कहल गेल।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. मैथिल जीवन आ परम्पराक श्रेष्ठ अंकन-चित्रण हुनकर विशिष्टता कहल गेल।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल मैथिल जीवन आ परम्पराक श्रेष्ठ अंकन-चित्रण हुनकर विशिष्टता कहल गेल। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9168. खण्ड ९२२मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. लेखक कहैत छथि जे एक बएसपर लेखन आरम्भ भेल, मुदा कृति पढ़ि से बुझाइत नहि।

उत्तर: घ. लेखक कहैत छथि जे एक बएसपर लेखन आरम्भ भेल, मुदा कृति पढ़ि से बुझाइत नहि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे लेखक कहैत छथि जे एक बएसपर लेखन आरम्भ भेल, मुदा कृति पढ़ि से बुझाइत नहि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9169. खण्ड ९२२केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. कथाकारक अनुभव, शिल्प आ मैथिल जीवन-बोधकेँ समीक्षा-दृष्टिसँ पढ़ब।

ख. केवल तिथि वा नाम रटब।

ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: क. कथाकारक अनुभव, शिल्प आ मैथिल जीवन-बोधकेँ समीक्षा-दृष्टिसँ पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति कथाकारक अनुभव, शिल्प आ मैथिल जीवन-बोधकेँ समीक्षा-दृष्टिसँ पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9170. खण्ड ९२२मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9171. खण्ड ९२२ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9172. खण्ड ९२२क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. केदार कानन जगदीश प्रसाद मंडलकेँ अनुभवसम्पन्न, परिपक्व आ मैथिल जीवनक समर्थ कथाकार रूपमे देखैत छथि।
उत्तर: घ. केदार कानन जगदीश प्रसाद मंडलकेँ अनुभवसम्पन्न, परिपक्व आ मैथिल जीवनक समर्थ कथाकार रूपमे देखैत छथि।
व्याख्या: निचोड़मे केदार कानन जगदीश प्रसाद मंडलकेँ अनुभवसम्पन्न, परिपक्व आ मैथिल जीवनक समर्थ कथाकार रूपमे देखैत छथि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९२३ : विदेह-सदेह २ — पछताबा कथा: रघुनाथ, अमेरिका आ माता-पिताक वियोग

प्रश्न 9173. खण्ड ९२३क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?
क. पछताबा कथाक कथा-वस्तु, रघुनाथ, अमेरिका, माता-पिता आ पश्चाताप।
ख. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।
ग. चुनाव आ नागरिक समाज।
घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।
उत्तर: क. पछताबा कथाक कथा-वस्तु, रघुनाथ, अमेरिका, माता-पिता आ पश्चाताप।
व्याख्या: एहि खण्डक आधार पछताबा कथाक कथा-वस्तु, रघुनाथ, अमेरिका, माता-पिता आ पश्चाताप। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9174. खण्ड ९२३मे प्रमुख नाम कोन अछि?
क. अमरनाथ झा।
ख. केदार कानन।
ग. जितेन्द्र झा।
घ. चन्द्रेश।
उत्तर: ख. केदार कानन।
व्याख्या: एहि खण्डमे केदार कानन। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9175. खण्ड ९२३क विधागत पहचान की अछि?
क. संचार-विमर्श।
ख. ललित-राजनीतिक निबन्ध।
ग. कथा-समीक्षा।
घ. विवाह-गीत अध्ययन।
उत्तर: ग. कथा-समीक्षा।
व्याख्या: ई खण्ड कथा-समीक्षा। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9176. खण्ड ९२३मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?
क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।
ख. मूल प्रसंग हटाएब।
ग. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।
घ. रघुनाथ स्वतंत्रता सेनानीक घरसँ निकलि इंजीनियरिंग पढ़ि नोकरी लेल पत्नीक संग अमेरिका चलि जाइत अछि।
उत्तर: घ. रघुनाथ स्वतंत्रता सेनानीक घरसँ निकलि इंजीनियरिंग पढ़ि नोकरी लेल पत्नीक संग अमेरिका चलि जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे रघुनाथ स्वतंत्रता सेनानीक घरसँ निकलि इंजीनियरिंग पढ़ि नोकरी लेल पत्नीक संग अमेरिका चलि जाइत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9177. खण्ड ९२३मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. गाममे शिवनाथ आ हुनकर पत्नी अर्थात रघुनाथक माता-पिता रहि जाइत छथि।

ख. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ग. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: क. गाममे शिवनाथ आ हुनकर पत्नी अर्थात रघुनाथक माता-पिता रहि जाइत छथि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल गाममे शिवनाथ आ हुनकर पत्नी अर्थात रघुनाथक माता-पिता रहि जाइत छथि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9178. खण्ड ९२३मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. अमेरिकाक जीवनसँ पहिने रघुनाथक पत्नी उबैत छथि आ बादमे रघुनाथोकेँ पश्चाताप होइत अछि।

ग. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

घ. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

उत्तर: ख. अमेरिकाक जीवनसँ पहिने रघुनाथक पत्नी उबैत छथि आ बादमे रघुनाथोकेँ पश्चाताप होइत अछि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे अमेरिकाक जीवनसँ पहिने रघुनाथक पत्नी उबैत छथि आ बादमे रघुनाथोकेँ पश्चाताप होइत अछि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9179. खण्ड ९२३केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?

क. केवल तिथि वा नाम रटब।

ख. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।

ग. प्रवासनक कथाकेँ परिवार-वियोग, भोगवादी जीवन आ अधूरा पश्चातापसँ जोड़ि पढ़ब।

घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।

उत्तर: ग. प्रवासनक कथाकेँ परिवार-वियोग, भोगवादी जीवन आ अधूरा पश्चातापसँ जोड़ि पढ़ब।

व्याख्या: सही पद्धति प्रवासनक कथाकेँ परिवार-वियोग, भोगवादी जीवन आ अधूरा पश्चातापसँ जोड़ि पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9180. खण्ड ९२३मे गलत पाठ कोन होयत?

क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।

ख. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।

ग. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।

घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

उत्तर: घ. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।

व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9181. खण्ड ९२३ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?

क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

ख. केवल उत्तर-कुंजी देखब।

ग. केवल लेखकक नाम बदलि देब।

घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।

उत्तर: क. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।

व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9182. खण्ड ९२३क निचोड़ की अछि?

क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।

ख. पछताबा कथा प्रवासी सफलता आ पारिवारिक वियोगक बीच उपजल असमाधेय पश्चाताप देखबैत अछि।

ग. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।

घ. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।

उत्तर: ख. पछताबा कथा प्रवासी सफलता आ पारिवारिक वियोगक बीच उपजल असमाधेय पश्चाताप देखबैत अछि।

व्याख्या: निचोड़मे पछताबा कथा प्रवासी सफलता आ पारिवारिक वियोगक बीच उपजल असमाधेय पश्चाताप देखबैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९२४ : विदेह-सदेह २ — पछताबा समीक्षा: फ्लैशबैक, मैथिल अभिव्यक्ति आ रूपक

प्रश्न 9183. खण्ड ९२४क मुख्य आधार कोन प्रसंग अछि?

क. मैथिली टेलिभिजनक सरकारी रिपोर्ट।

ख. चुनाव आ नागरिक समाज।

ग. पछताबा कथाक फ्लैशबैक, मैथिल अभिव्यक्ति, रूपक आ समीक्षकक आशा।

घ. प्रिय पाहुन विवाह-गीत।

उत्तर: ग. पछताबा कथाक फ्लैशबैक, मैथिल अभिव्यक्ति, रूपक आ समीक्षकक आशा।

व्याख्या: एहि खण्डक आधार पछताबा कथाक फ्लैशबैक, मैथिल अभिव्यक्ति, रूपक आ समीक्षकक आशा। प्रसंग अछि।

प्रश्न 9184. खण्ड ९२४मे प्रमुख नाम कोन अछि?

क. अमरनाथ झा।

ख. जितेन्द्र झा।

ग. चन्द्रेश।

घ. केदार कानन।

उत्तर: घ. केदार कानन।

व्याख्या: एहि खण्डमे केदार कानन। प्रसंगक केन्द्रमे छथि।

प्रश्न 9185. खण्ड ९२४क विधागत पहचान की अछि?

क. कथा-समीक्षा।

ख. संचार-विमर्श।

ग. ललित-राजनीतिक निबन्ध।

घ. विवाह-गीत अध्ययन।

उत्तर: क. कथा-समीक्षा।

व्याख्या: ई खण्ड कथा-समीक्षा। रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।

प्रश्न 9186. खण्ड ९२४मे पहिल मुख्य तथ्य की अछि?

क. केवल नाम-सूची बनौनाइ।

ख. कथा फ्लैशबैकमे चलैत आ अनेक उपकथा खोलैत अछि।

ग. मूल प्रसंग हटाएब।

घ. विषयकेँ स्रोतसँ काटब।

उत्तर: ख. कथा फ्लैशबैकमे चलैत आ अनेक उपकथा खोलैत अछि।

व्याख्या: स्रोत-प्रसंगमे कथा फ्लैशबैकमे चलैत आ अनेक उपकथा खोलैत अछि। स्पष्ट संकेत अछि।

प्रश्न 9187. खण्ड ९२४मे दोसर महत्वपूर्ण बात की अछि?

क. ई बात पाठक केन्द्र नहि।

ख. एहि सँ उलट अर्थ निकलैत अछि।

ग. पाकल आम, अएनापर पाथर, फुकना बैलून, पाकल आमक आँठी आ डिबियाक इजोत जकाँ रूपक नीक लगैत अछि।

घ. ई केवल बाहरी सूचना अछि।

उत्तर: ग. पाकल आम, अएनापर पाथर, फुकना बैलून, पाकल आमक आँठी आ डिबियाक इजोत जकाँ रूपक नीक लगैत अछि।

व्याख्या: एहि खण्डक समझ लेल पाकल आम, अएनापर पाथर, फुकना बैलून, पाकल आमक आँठी आ डिबियाक इजोत जकाँ रूपक नीक लगैत अछि। महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 9188. खण्ड ९२४मे तेसर सन्दर्भ-तत्व की अछि?

क. एहि प्रसंगमे ई बात नहि आएत।

ख. ई विकल्प विषयकेँ बिगाड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष मुख्य पाठसँ दूर अछि।

घ. समीक्षक जगदीश प्रसाद मंडलकेँ अनुभवकेँ आरो व्यापकता देबाक आशा व्यक्त करैत छथि।

उत्तर: घ. समीक्षक जगदीश प्रसाद मंडलकेँ अनुभवकेँ आरो व्यापकता देबाक आशा व्यक्त करैत छथि।

व्याख्या: तेसर सूत्र रूपमे समीक्षक जगदीश प्रसाद मंडलकेँ अनुभवकेँ आरो व्यापकता देबाक आशा व्यक्त करैत छथि। खण्डकेँ गहिर बनबैत अछि।

प्रश्न 9189. खण्ड ९२४केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. कथाशिल्पकेँ रूपक, क्रम, उपकथा आ मैथिल अभिव्यक्तिक आधारपर पढ़ब।
ख. केवल तिथि वा नाम रटब।
ग. स्रोत-सन्दर्भ छोड़ि देब।
घ. साहित्यिक-सामाजिक अर्थ हटाएब।
उत्तर: क. कथाशिल्पकेँ रूपक, क्रम, उपकथा आ मैथिल अभिव्यक्तिक आधारपर पढ़ब।
व्याख्या: सही पद्धति कथाशिल्पकेँ रूपक, क्रम, उपकथा आ मैथिल अभिव्यक्तिक आधारपर पढ़ब। अछि।

प्रश्न 9190. खण्ड ९२४मे गलत पाठ कोन होयत?
क. पाठ, प्रसंग आ विचारक सम्बन्ध देखब।
ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
ग. स्रोत-आधारित प्रश्न बनब।
घ. विधा आ सन्दर्भक संयुक्त अध्ययन करब।
उत्तर: ख. प्रसंगकेँ केवल सतही सूचना मानि कऽ ओकर साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ छोड़ि देब।
व्याख्या: सतही पाठसँ खण्डक मूल अर्थ नष्ट भऽ जाइत।

प्रश्न 9191. खण्ड ९२४ विद्यार्थीकेँ की अभ्यास करबैत अछि?
क. केवल उत्तर-कुंजी देखब।
ख. केवल लेखकक नाम बदलि देब।
ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
घ. केवल सजावटी शीर्षक पढ़ब।
उत्तर: ग. पाठ, प्रसंग, विधा आ विचारक सम्बन्ध पहचानब।
व्याख्या: एहि खण्डक प्रश्न सम्बन्ध-आधारित अध्ययन करबैत अछि।

प्रश्न 9192. खण्ड ९२४क निचोड़ की अछि?
क. एहि खण्डक साहित्यिक अर्थ नगण्य अछि।
ख. ई प्रसंग मैथिली-संस्कृतिसँ अलग अछि।
ग. ई केवल यांत्रिक अनुक्रमणिका अछि।
घ. एहि खण्डमे पछताबा समीक्षा कथाक क्रम, उपकथा, मैथिल रूपक आ कथाकारसँ भावी आशाकेँ केन्द्रमे अनैत अछि।
उत्तर: घ. एहि खण्डमे पछताबा समीक्षा कथाक क्रम, उपकथा, मैथिल रूपक आ कथाकारसँ भावी आशाकेँ केन्द्रमे अनैत अछि।
व्याख्या: निचोड़मे एहि खण्डमे पछताबा समीक्षा कथाक क्रम, उपकथा, मैथिल रूपक आ कथाकारसँ भावी आशाकेँ केन्द्रमे अनैत अछि। स्पष्ट होइत अछि।

खण्ड ९२५ : विदेह-सदेह २ — प्रेमशंकर सिंह: जयकान्त मिश्रक जीवन आ साहित्य-साधना

प्रश्न 9193. प्रेमशंकर सिंहक आलेखक मुख्य विषय की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जयकान्त मिश्रक जीवन आ साहित्य-साधना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त मिश्रक जीवन आ साहित्य-साधना।
व्याख्या: शीर्षकमे जयकान्त मिश्रक जीवन आ साहित्य-साधना स्पष्ट केन्द्र अछि।

प्रश्न 9194. जयकान्त मिश्रक जन्म-वर्ष स्रोतमे कोना देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९२२।
उत्तर: घ. १९२२।
व्याख्या: लेखमे प्रोफेसर डाक्टर जयकान्त मिश्रक वर्ष १९२२ देल अछि।

प्रश्न 9195. जयकान्त मिश्रक देहावसान-वर्ष कोन अछि?
क. २००९।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. २००९।
व्याख्या: स्रोतमे नामक संग १९२२-२००९ उल्लेखित अछि।

प्रश्न 9196. लेखक जयकान्त मिश्रकेँ कोन रूपमे देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दिव्य अक्षर पुरुष आ मातृभाषानुरागी साधक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दिव्य अक्षर पुरुष आ मातृभाषानुरागी साधक।
व्याख्या: लेखमे हुनका दिव्य अक्षर पुरुष कहल गेल अछि।

प्रश्न 9197. जयकान्त मिश्र मैथिलीकेँ कोन स्तरपर प्रतिष्ठित करबाक लेल स्मरणीय छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विश्व-स्तरपर मैथिलीकेँ प्रतिष्ठित करबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विश्व-स्तरपर मैथिलीकेँ प्रतिष्ठित करबाक लेल।
व्याख्या: आलेख हुनक अवदानकेँ विश्व स्तरपर मैथिली प्रतिष्ठासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 9198. हुनक संघर्षक एक प्रमुख लक्ष्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा नीति लागू करएब।
उत्तर: घ. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा नीति लागू करएब।
व्याख्या: लेखमे प्राथमिक शिक्षा नीति लागू करएबाक सतत संघर्षक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9199. लेखकक अनुसार जयकान्त मिश्र कोन प्रकारक ग्रन्थ-प्रणयनमे अग्रसर छलाह?
क. वैज्ञानिक आलोचनात्मक ग्रन्थक प्रणयनमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वैज्ञानिक आलोचनात्मक ग्रन्थक प्रणयनमे।
व्याख्या: स्रोतमे वैज्ञानिक आलोचनात्मक ग्रन्थक प्रणयनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9200. हिनक दीर्घ साहित्यिक कार्यकालक अवधि लगभग कतबा कहल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लगभग सात दशक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लगभग सात दशक।
व्याख्या: लेखमे विगत लगभक सात दशक धरि अनवरत कार्यक वर्णन अछि।

प्रश्न 9201. लेख जयकान्त मिश्रक मूल ऊर्जा कोन रूपमे देखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मातृभाषाक उत्थानार्थ दत्तचित्त साधना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मातृभाषाक उत्थानार्थ दत्तचित्त साधना।
व्याख्या: पूरा आरम्भिक अनुच्छेद मातृभाषाक उत्थानार्थ हुनक साधनाक परिचय दैत अछि।

प्रश्न 9202. खण्ड ९२५क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जयकान्त मिश्र मैथिली भाषा-साहित्यक नव जीवन आ शोध-दिशा देनिहार साधक रूपमे उभरैत छथि।
उत्तर: घ. जयकान्त मिश्र मैथिली भाषा-साहित्यक नव जीवन आ शोध-दिशा देनिहार साधक रूपमे उभरैत छथि।
व्याख्या: एहि खण्डक सार हुनक जीवन-साधना आ मैथिली उत्थानमे योगदान अछि।

खण्ड ९२६ : विदेह-सदेह २ — प्रथम दर्शन: पटना, भागलपुर आ इलाहाबादक स्मृति

प्रश्न 9203. लेखक जयकान्त मिश्रक पहिल दर्शन कतय कयलनि?
क. पटनामे बिहार पब्लिक सर्भिस कमीशन कार्यालयमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पटनामे बिहार पब्लिक सर्भिस कमीशन कार्यालयमे।
व्याख्या: प्रथम दर्शन प्रसंगमे पटना आ कमीशन कार्यालयक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9204. ओहि समय लेखक किनका दर्शनार्थ गेल छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रोफेसर शैलेन्द्र मोहन झा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रोफेसर शैलेन्द्र मोहन झा।
व्याख्या: लेखक अपन गुरुदेव प्रोफेसर शैलेन्द्र मोहन झाक दर्शनार्थ गेल छलाह।

प्रश्न 9205. पहिल दर्शनक घटना कोन सालक कहल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९६३ ई०।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९६३ ई०।
व्याख्या: स्रोतमे ई घटना सन् १९६३ ई. क कहल गेल अछि।

प्रश्न 9206. भागलपुर विश्वविद्यालयमे लेखक कोन पदपर अएलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीक लेक्चरर।
उत्तर: घ. मैथिलीक लेक्चरर।
व्याख्या: लेखक भागलपुर विश्वविद्यालयमे मैथिलीक लेक्चरर भऽ अएलाह।

प्रश्न 9207. भागलपुरमे जयकान्त मिश्र कोन आयोजनमे अएलाह?
क. विद्यापति पर्वक आयोजनमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विद्यापति पर्वक आयोजनमे।
व्याख्या: भागलपुरमे विद्यापति पर्व आयोजनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9208. इलाहाबाद यात्राक मुख्य उद्देश्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली प्राचीन पत्रिका आदिक रचना-सामग्री देखब आ संकलन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली प्राचीन पत्रिका आदिक रचना-सामग्री देखब आ संकलन।
व्याख्या: लेखक शोध-सामग्री आ पुरान पत्रिका देखबाक लेल इलाहाबाद गेल छलाह।

प्रश्न 9209. हरिमोहन झाक कोन उपन्यास सभपर समालोचना देखबाक उद्देश्य छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कन्यादान आ द्विरागमन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कन्यादान आ द्विरागमन।
व्याख्या: स्रोतमे कन्यादान आ द्विरागमनपर श्रीकृष्ण मिश्रक समालोचना देखबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9210. जिराक्स नहि रहबाक कारण सामग्री कोना तैयार भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. टाइप कॉपी बनाओल गेल।
उत्तर: घ. टाइप कॉपी बनाओल गेल।
व्याख्या: ओहि समय जिराक्स नहि रहबाक कारण टाइप कराओल सामग्री भेटल।

प्रश्न 9211. लेखक जयकान्त मिश्रक निजी पुस्तकालयकेँ कोना अनुभव करैत छथि?
क. मैथिलीक अत्यन्त सम्पन्न पुस्तकालय।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक अत्यन्त सम्पन्न पुस्तकालय।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे एहन सम्पन्न मैथिली पुस्तकालय ओ नहि देखने छलाह।

प्रश्न 9212. खण्ड ९२६क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यक्तिगत स्मृति सभ जयकान्त मिश्रक विद्वत्ता, आतिथ्य आ शोध-सहायताकेँ मूर्त करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. व्यक्तिगत स्मृति सभ जयकान्त मिश्रक विद्वत्ता, आतिथ्य आ शोध-सहायताकेँ मूर्त करैत अछि।
व्याख्या: प्रथम दर्शनसँ इलाहाबाद धरि स्मृति सभ हुनक शोध-सहायक व्यक्तित्व देखबैत अछि।

खण्ड ९२७ : विदेह-सदेह २ — पारिवारिक पृष्ठभूमि आ पाश्चात्य शिक्षा

प्रश्न 9213. जयकान्त मिश्रक पारिवारिक पृष्ठभूमिमे कोन अध्ययन-परम्पराक श्रद्धा छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्कृतक पठन-पाठनक प्रति अगाध आस्था।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्कृतक पठन-पाठनक प्रति अगाध आस्था।

व्याख्या: स्रोतमे पारिवारिक पृष्ठभूमिमे संस्कृत पठन-पाठनक श्रद्धा स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9214. हुनक पितामहक नाम की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महामहोपाध्याय पण्डित जयदेव मिश्र।

उत्तर: घ. महामहोपाध्याय पण्डित जयदेव मिश्र।

व्याख्या: लेखमे पितामह महामहोपाध्याय पण्डित जयदेव मिश्र कहल गेल अछि।

प्रश्न 9215. हुनक पिताक नाम की छल?

क. महामहोपाध्याय डाक्टर उमेश मिश्र।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महामहोपाध्याय डाक्टर उमेश मिश्र।

व्याख्या: स्रोतमे पिता महामहोपाध्याय डाक्टर उमेश मिश्रक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9216. हुनक आधुनिक शिक्षापर प्रमुख प्रभाव किनकर छत्रछायामे भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पिता आ प्रोफेसर अमरनाथ झाक छत्रछायामे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पिता आ प्रोफेसर अमरनाथ झाक छत्रछायामे।

व्याख्या: लेखमे पिता एवं प्रोफेसर अमरनाथ झाक छत्रछायामे पठन-पाठन कहल गेल अछि।

प्रश्न 9217. ओहि समय इलाहाबादकेँ कोन परम्पराक केन्द्र कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आधुनिक यूरोपियन परम्पराक केन्द्र-बिन्दु।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आधुनिक यूरोपियन परम्पराक केन्द्र-बिन्दु।

व्याख्या: स्रोतमे इलाहाबादकेँ आधुनिक यूरोपियन परम्पराक केन्द्र-बिन्दु कहल गेल अछि।

प्रश्न 9218. पाश्चात्य-शिक्षा पद्धतिसँ शिक्षित भेलाक बादो हुनकर हृदयमे की बलवती छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभाषानुराग।

उत्तर: घ. मातृभाषानुराग।

व्याख्या: लेख कहैत अछि जे पाश्चात्य शिक्षा रहितो हृदयमे मातृभाषानुराग बलवती छल।

प्रश्न 9219. पारिवारिक संस्कार आ आधुनिक शिक्षा मिलि कोन व्यक्तित्व बनबैत अछि?
क. परम्परा आ आधुनिक शोध-दृष्टिक संयुक्त व्यक्तित्व।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. परम्परा आ आधुनिक शोध-दृष्टिक संयुक्त व्यक्तित्व।
व्याख्या: स्रोतमे संस्कृत परम्परा आ आधुनिक पाश्चात्य शिक्षाक संगति देखाइत अछि।

प्रश्न 9220. अमरनाथ झा कोन विभागसँ जुड़ल प्रतिष्ठित व्यक्तित्व छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अंग्रेजी विभाग।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अंग्रेजी विभाग।
व्याख्या: लेखमे अमरनाथ झाकेँ अंग्रेजी विभागक सर्वेसर्वा रूपमे उल्लेख अछि।

प्रश्न 9221. खण्ड ९२७केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जयकान्त मिश्रक व्यक्तित्वकेँ संस्कृत-परम्परा, अंग्रेजी-शिक्षा आ मातृभाषानुरागक संग पढ़ब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त मिश्रक व्यक्तित्वकेँ संस्कृत-परम्परा, अंग्रेजी-शिक्षा आ मातृभाषानुरागक संग पढ़ब।
व्याख्या: एहि खण्डक मूल सूत्र तीनू आधारक संयुक्त अध्ययन अछि।

प्रश्न 9222. खण्ड ९२७क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जयकान्त मिश्र परम्परा आ आधुनिकता दुनूक संस्पर्शसँ मैथिलीसेवी विद्वान बनलाह।
उत्तर: घ. जयकान्त मिश्र परम्परा आ आधुनिकता दुनूक संस्पर्शसँ मैथिलीसेवी विद्वान बनलाह।
व्याख्या: पृष्ठभूमि आ शिक्षा हुनक बहुआयामी साधनाक आधार बनल।

खण्ड ९२८ : विदेह-सदेह २ — अध्यापन-यात्रा: इलाहाबाद सँ चित्रकूट धरि

प्रश्न 9223. जयकान्त मिश्र मात्र कतबा बयस मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे लेक्चरर भेलाह?
क. २१ वर्षक अवस्थामे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. २१ वर्षक अवस्थामे।
व्याख्या: स्रोतमे २१ वर्षक अवस्थामे लेक्चरर पद सुशोभित करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9224. सन् १९४४ मे ओ कोन पदपर पहुँचलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रीडर, विश्वविद्यालय प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रीडर, विश्वविद्यालय प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष।
व्याख्या: लेखमे १९४४ ई. मे रीडर, यूनिवर्सिटी प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष पदक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9225. ओ सन् १९८३ मे की कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अवकाश ग्रहण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अवकाश ग्रहण।

व्याख्या: स्रोतमे सन् १९८३ ई. मे अवकाश ग्रहण कहल अछि।

प्रश्न 9226. अवकाशोपरान्त सागर विश्वविद्यालयमे ओ कोन रूपमे चयनित भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भिजीटिंग फेलो।

उत्तर: घ. भिजीटिंग फेलो।

व्याख्या: अवकाशोपरान्त सागर विश्वविद्यालय हुनका भिजीटिंग फेलो रूपमे चयन कएलक।

प्रश्न 9227. सागर विश्वविद्यालयमे हुनक कार्यकाल कतय धरि रहल?

क. १९८५ सँ १९८८ धरि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १९८५ सँ १९८८ धरि।

व्याख्या: स्रोतमे सन् १९८५ सँ सन् १९८८ धरि कार्यरत कहल गेल अछि।

प्रश्न 9228. सन् १९८६ मे हुनका कोन संस्था/पुरस्कार-सन्दर्भसँ मैसूर विश्वविद्यालय आमंत्रित कएलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ऑल इंडिया बोर्ड फार रिसर्च अवार्ड इन ह्यूमैनिटीज।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ऑल इंडिया बोर्ड फार रिसर्च अवार्ड इन ह्यूमैनिटीज।

व्याख्या: लेखमे उक्त बोर्ड/अवार्डक हेतु मैसूर विश्वविद्यालय आमंत्रणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9229. चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे ओ कोन विभाग/संकायसँ जुड़लाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. फैकल्टी ऑफ लैंग्वेजेज एण्ड सोशल साइंस।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. फैकल्टी ऑफ लैंग्वेजेज एण्ड सोशल साइंस।

व्याख्या: स्रोतमे डीन फैकल्टी ऑफ लैंग्वेजेज एण्ड सोशल साइंस विभागमे अध्यापनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9230. चित्रकूटमे हुनक कार्यकाल कोन वर्ष सभक बीच रहल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. १९९२ सँ १९९४ धरि।

उत्तर: घ. १९९२ सँ १९९४ धरि।

व्याख्या: स्रोतमे सन् १९९२ सँ १९९४ धरि अध्यापनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9231. एहि अध्यापन-यात्रासँ कोन गुण स्पष्ट होइत अछि?
क. अध्ययन-अध्यापनक प्रति आजीवन विशेष अभिरुचि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अध्ययन-अध्यापनक प्रति आजीवन विशेष अभिरुचि।
व्याख्या: अवकाशक बादो निरन्तर अध्यापन हुनक आजीवन अभिरुचि देखबैत अछि।

प्रश्न 9232. खण्ड ९२८क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक अध्यापन-जीवन दीर्घ, बहु-संस्थागत आ सतत सक्रिय रहल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक अध्यापन-जीवन दीर्घ, बहु-संस्थागत आ सतत सक्रिय रहल।
व्याख्या: इलाहाबादसँ सागर, मैसूर आ चित्रकूट धरि यात्रा एहि बातकेँ प्रमाणित करैत अछि।

खण्ड ९२९ : विदेह-सदेह २ — अनुसंधान-प्रेरणा: अमरनाथ झाक सलाह

प्रश्न 9233. जयकान्त मिश्र मूलतः कोन विषयपर शोध करए चाहैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शेक्सपियरक ड्रामापर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शेक्सपियरक ड्रामापर।
व्याख्या: स्रोतमे ओ शेक्सपियरक ड्रामापर काज करए चाहैत छलाह।

प्रश्न 9234. अमरनाथ झा शेक्सपियर-विषयक विरुद्ध की तर्क देलथिन?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शेक्सपियरपर विश्वक अनेक भाषामे हजारो पोथी अछि।
उत्तर: घ. शेक्सपियरपर विश्वक अनेक भाषामे हजारो पोथी अछि।
व्याख्या: अमरनाथ झा कहलथिन जे शेक्सपियरपर हजारो पोथी उपलब्ध अछि।

प्रश्न 9235. अमरनाथ झा हुनका कोन विषयपर काज करबाक सलाह देलथिन?
क. मैथिलीक काज।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक काज।
व्याख्या: लेखमे स्पष्ट अछि—डा. झा कहलथिन, “मैथिलीक काज।”

प्रश्न 9236. जयकान्त मिश्रकेँ प्रारम्भमे मैथिली विषयपर कोन शंका भेलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अंग्रेजी साहित्यक शोध-प्रबन्धक विषय मैथिली कोना होएत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अंग्रेजी साहित्यक शोध-प्रबन्धक विषय मैथिली कोना होएत।
व्याख्या: ओ अवाक् भऽ पूछलनि जे अंग्रेजी शोध-प्रबन्धक विषय मैथिली कोना होएत।

प्रश्न 9237. अमरनाथ झाक दूरदर्शिता कोन बातमे छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अंग्रेजीमे लिखल मैथिली-शोध अमैथिल भाषीकेँ जानकारी देत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अंग्रेजीमे लिखल मैथिली-शोध अमैथिल भाषीकेँ जानकारी देत।
व्याख्या: अमरनाथ झाक तर्क छल जे अंग्रेजीमे लिखल रहत तँ अमैथिल भाषी जानत।

प्रश्न 9238. एहि सलाहक फलस्वरूप जयकान्त मिश्रक भाग्योदय कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली-अनुसंधान हुनका अजर-अमर यशक भागी बनओलक।
उत्तर: घ. मैथिली-अनुसंधान हुनका अजर-अमर यशक भागी बनओलक।
व्याख्या: स्रोतमे अमरनाथ झाक प्रेरणा हुनका अजर, अमर आ अक्षुण्ण यशक भागी बनाओत कहल अछि।

प्रश्न 9239. अनुसंधानक मोड़ बदलएबामे प्रमुख प्रेरक के छलाह?
क. प्रोफेसर अमरनाथ झा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रोफेसर अमरनाथ झा।
व्याख्या: पूरा प्रसंगमे अमरनाथ झा प्रेरक आ मार्गदर्शक छथि।

प्रश्न 9240. खण्ड ९२९केँ पढ़बाक सही पद्धति की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शोध-विषयक चयनकेँ व्यक्तिगत निर्णय नहि, भाषिक सांस्कृतिक मिशनक आरम्भ मानब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शोध-विषयक चयनकेँ व्यक्तिगत निर्णय नहि, भाषिक सांस्कृतिक मिशनक आरम्भ मानब।
व्याख्या: एहि प्रसंगमे शोध-विषय मैथिलीक व्यापक सांस्कृतिक प्रयोजनसँ जुड़ि जाइत अछि।

प्रश्न 9241. एहि प्रसंगमे “मैथिली?” प्रश्नक महत्व की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ई आश्चर्यसँ संकल्प धरि बदलैत शोध-दिशाक क्षण अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ई आश्चर्यसँ संकल्प धरि बदलैत शोध-दिशाक क्षण अछि।
व्याख्या: जयकान्त मिश्रक आश्चर्य बादमे मैथिली-केंद्रित शोध-संकल्प बनैत अछि।

प्रश्न 9242. खण्ड ९२९क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अमरनाथ झाक सलाह जयकान्त मिश्रक जीवनमे मैथिली-अनुसंधानक निर्णायक मोड़ बनल।
उत्तर: घ. अमरनाथ झाक सलाह जयकान्त मिश्रक जीवनमे मैथिली-अनुसंधानक निर्णायक मोड़ बनल।
व्याख्या: एहि खण्डक मुख्य अर्थ शोध-विषयक निर्णायक परिवर्तन अछि।

खण्ड ९३० : विदेह-सदेह २ — ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर: शोध आ महत्त्व

प्रश्न 9243. जयकान्त मिश्रक अनुसंधानात्मक कृतिक नाम की अछि?

क. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर।

व्याख्या: स्रोतमे A History Of Maithili Literature मुख्य अनुसंधानात्मक कृति रूपमे देल अछि।

प्रश्न 9244. एहि कृतिपर इलाहाबाद विश्वविद्यालय हुनका कोन उपाधि देलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डी. फिल.।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डी. फिल.।

व्याख्या: लेखमे १९४८ ई. मे डी. फिल. उपाधि देबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9245. डी. फिल. उपाधि कोन साल देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. १९४८ ई०।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. १९४८ ई०।

व्याख्या: स्रोतमे सन् १९४८ ई. स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 9246. एहि कृतिक प्रकाशन कतबा खण्डमे भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दुइ खण्डमे।

उत्तर: घ. दुइ खण्डमे।

व्याख्या: लेखमे कृति दुइ खण्डमे प्रकाशित भेल कहल अछि।

प्रश्न 9247. लेखकक अनुसार ई कृति प्रकाशित होइतहि कोन रूपमे उदघोषित भेल?

क. मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि।

व्याख्या: स्रोतमे प्रकाशित होइतहि अमूल्य निधि कहल गेल अछि।

प्रश्न 9248. हिनकासँ पूर्व मैथिलीमे कोन कमी कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कोनो साहित्येतिहासिक ग्रन्थ नहि छल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कोनो साहित्येतिहासिक ग्रन्थ नहि छल।

व्याख्या: लेखमे हिनकासँ पूर्व मैथिलीक साहित्येतिहासिक ग्रन्थ नहि छल कहल अछि।

प्रश्न 9249. एहि अनुसंधानकेँ कोन प्रकारक अनुसंधान कहल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दिशा-बोधक अनुसंधान।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दिशा-बोधक अनुसंधान।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीमे अनुसंधानकेँ दिशा-बोधक अनुसंधान कहबाक बात अछि।

प्रश्न 9250. एहि कृतिक महत्व केवल मैथिली धरि सीमित छल की?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नहि; आधुनिक भारतीय भाषा-साहित्यक विशिष्ट अवदान रूपमे चर्चित रहल।
उत्तर: घ. नहि; आधुनिक भारतीय भाषा-साहित्यक विशिष्ट अवदान रूपमे चर्चित रहल।
व्याख्या: लेखमे निखिल विश्वमे आधुनिक भारतीय भाषा-साहित्यान्तर्गत विशिष्ट अवदान कहल अछि।

प्रश्न 9251. खण्ड ९३० विद्यार्थीकेँ कोन बात बुझबैत अछि?
क. इतिहास-लेखन भाषा-सम्मान आ शोध-दिशा दुनू बनि सकैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. इतिहास-लेखन भाषा-सम्मान आ शोध-दिशा दुनू बनि सकैत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डमे इतिहास-ग्रन्थ भाषा-प्रतिष्ठाक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 9252. खण्ड ९३०क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर मैथिली शोध, इतिहास आ वैश्विक परिचयक आधार-ग्रन्थ बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर मैथिली शोध, इतिहास आ वैश्विक परिचयक आधार-ग्रन्थ बनल।
व्याख्या: स्रोतमे एहि कृतिसँ मैथिली शोधक नव दिशा स्पष्ट अछि।

खण्ड ९३१ : विदेह-सदेह २ — मैथिली साहित्यक इतिहासक स्वीकृति आ विद्वत् प्रतिक्रिया

प्रश्न 9253. जयकान्त मिश्रक अनुसंधानसँ अन्य भाषा-भाषीकेँ कोन बोध भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली साहित्य सम्पन्न भाषा-साहित्य थिक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली साहित्य सम्पन्न भाषा-साहित्य थिक।
व्याख्या: स्रोतमे अन्य भाषा-भाषीकेँ मैथिली साहित्यक सम्पन्नता बोध भेल कहल अछि।

प्रश्न 9254. मैथिली साहित्यक क्रमबद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कतयसँ चलि रहल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तेरहम शताब्दीसँ।
उत्तर: घ. तेरहम शताब्दीसँ।
व्याख्या: लेखमे तेरहम शताब्दीसँ अविच्छिन्न क्रमक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9255. प्रथम खण्डपर स्वागत-टिप्पणी किनकर छल?
क. प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी।
व्याख्या: स्रोतमे प्रथम खण्डपर सुनीति कुमार चटर्जी क स्वागत कथन अछि।

प्रश्न 9256. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचरक द्वितीय खण्डपर आमुख के लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रोफेसर अमरनाथ झा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रोफेसर अमरनाथ झा।
व्याख्या: लेखमे द्वितीय खण्डपर प्रोफेसर अमरनाथ झा आमुख लिखलनि।

प्रश्न 9257. जयकान्त मिश्रक शोध-प्रबन्धक निर्देशक के छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रियरंजन सेन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रियरंजन सेन।
व्याख्या: स्रोतमे प्रियरंजन सेनकेँ शोध-प्रबन्ध निर्देशक कहल गेल अछि।

प्रश्न 9258. प्रियरंजन सेन एहि इतिहास-लेखनकेँ कोन तरहक काज मानलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अत्यन्त साहसिक काज।
उत्तर: घ. अत्यन्त साहसिक काज।
व्याख्या: स्रोतमे विस्तृत गौरवमय इतिहास प्रस्तुत करबाक साहसिकता कहल अछि।

प्रश्न 9259. एहि खण्डमे विद्वत् प्रतिक्रिया कोन दिशा देखबैत अछि?
क. मैथिलीक इतिहासक विश्वसनीयता आ गौरवक पुष्टि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक इतिहासक विश्वसनीयता आ गौरवक पुष्टि।
व्याख्या: विद्वानक प्रतिक्रियासँ कृतिक प्रमाणिकता आ महत्व पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 9260. जयकान्त मिश्रक श्रेय कोन रूपमे कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साहित्यक गरिमाकेँ जनमानसक समक्ष प्रस्तुत करब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साहित्यक गरिमाकेँ जनमानसक समक्ष प्रस्तुत करब।
व्याख्या: लेखमे ई श्रेय हिनके कहल गेल अछि।

प्रश्न 9261. गलत पाठ कोन होयत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि इतिहासकेँ केवल निजी संस्मरण मानि ओकर शोध-महत्त्व छोड़ि देब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एहि इतिहासकेँ केवल निजी संस्मरण मानि ओकर शोध-महत्त्व छोड़ि देब।
व्याख्या: ई खण्ड विद्वत् स्वीकृति आ शोध-इतिहासक प्रसंग अछि, निजी संस्मरण मात्र नहि।

प्रश्न 9262. खण्ड ९३१क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जयकान्त मिश्रक इतिहास-लेखन विद्वान लोकनिक स्वीकृतिसँ मैथिली साहित्यक गरिमा स्थापित करैत अछि।
उत्तर: घ. जयकान्त मिश्रक इतिहास-लेखन विद्वान लोकनिक स्वीकृतिसँ मैथिली साहित्यक गरिमा स्थापित करैत अछि।
व्याख्या: सुनीति कुमार, अमरनाथ झा आ प्रियरंजन सेनक सन्दर्भ एहि निचोड़केँ समर्थित करैत अछि।

खण्ड ९३२ : विदेह-सदेह २ — मिथिलाक लोक-साहित्य आ नेपाल यात्रा

प्रश्न 9263. जयकान्त मिश्रक लोक-साहित्य सम्बन्धी अंग्रेजी कृति कोन अछि?
क. एन इंट्रोडक्शन टू द फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एन इंट्रोडक्शन टू द फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला।
व्याख्या: स्रोतमे An Introduction to the Folk Literature of Mithila क उल्लेख अछि।

प्रश्न 9264. एहि कृतिमे ओ कोन सामग्रीक विश्लेषण कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलांचलमे उपलब्ध लोक साहित्य।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिलांचलमे उपलब्ध लोक साहित्य।
व्याख्या: लेखमे मिथिलांचलक परिसरमे उपलब्ध लोक-साहित्यक विश्लेषण कहल अछि।

प्रश्न 9265. लोक-साहित्य सम्बन्धी सामग्री संकलनक बाद ओ की प्रमाणित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समृद्ध लोक साहित्य जनमानसमे छिड़िआएल अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समृद्ध लोक साहित्य जनमानसमे छिड़िआएल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे विपुल लोक साहित्य जनमानसमे छिड़िआएल कहल अछि।

प्रश्न 9266. जयकान्त मिश्र नेपाल कतबा बेर गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दू बेर।
उत्तर: घ. दू बेर।
व्याख्या: लेखमे ओ दुइ बेर पड़ोसी राष्ट्र नेपाल गेलाह।

प्रश्न 9267. नेपालक प्रथम यात्राक उद्देश्य की छल?
क. शोध-प्रबन्धक सामग्री संकलन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शोध-प्रबन्धक सामग्री संकलन।
व्याख्या: प्रथम यात्रा शोध-प्रबन्धक सामग्री संकलनार्थ छल।

प्रश्न 9268. द्वितीय यात्राक उद्देश्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पहिल यात्रामे नहि भेटल पाण्डुलिपि पुनः खोजब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पहिल यात्रामे नहि भेटल पाण्डुलिपि पुनः खोजब।
व्याख्या: द्वितीय यात्रामे नहि उपलब्ध पाण्डुलिपि प्राप्त करबाक उद्देश्य छल।

प्रश्न 9269. नेपाल यात्रासँ कोन सामग्रीक संचयन आ प्रकाशन भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली भाषा आ साहित्यक बहुमूल्य नाटकादिक पाण्डुलिपि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली भाषा आ साहित्यक बहुमूल्य नाटकादिक पाण्डुलिपि।
व्याख्या: स्रोतमे नाटकादिक पाण्डुलिपि संचयन आ प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9270. नाटकादिक प्रकाशनक प्रभाव की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भावी अनुसन्धानकर्ताक पथ-प्रदर्शन।
उत्तर: घ. भावी अनुसन्धानकर्ताक पथ-प्रदर्शन।
व्याख्या: लेखमे प्रकाशनक फलस्वरूप भावी अनुसन्धानकर्ताक पथ-प्रदर्शन कहल अछि।

प्रश्न 9271. नेपाल-सामग्रीक भूमिकामे जयकान्त मिश्र की कएलनि?
क. अंग्रेजी आ मैथिलीमे सारगर्भित भूमिका लिखि ऐतिहासिकता उदघाटित कएलनि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अंग्रेजी आ मैथिलीमे सारगर्भित भूमिका लिखि ऐतिहासिकता उदघाटित कएलनि।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजी आ मैथिली दुनू भाषामे भूमिका लिखबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9272. खण्ड ९३२क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोक-साहित्य आ नेपाल-पाण्डुलिपि कार्य जयकान्त मिश्रक शोधकेँ स्रोत-संग्रह, विश्लेषण आ प्रकाशनसँ जोड़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लोक-साहित्य आ नेपाल-पाण्डुलिपि कार्य जयकान्त मिश्रक शोधकेँ स्रोत-संग्रह, विश्लेषण आ प्रकाशनसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डमे लोक-साहित्य, नेपाल यात्रा आ पाण्डुलिपि प्रकाशनक संयुक्त महत्व अछि।

खण्ड ९३३ : विदेह-सदेह २ — साहित्य-साधना: अंग्रेजी आ मैथिलीमे लेखन

प्रश्न 9273. जयकान्त मिश्रक साहित्य-साधना कोन-कोन भाषामे फैलल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अंग्रेजी आ मैथिली दुनू भाषामे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अंग्रेजी आ मैथिली दुनू भाषामे।

व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजी एवं मैथिलीमे रचनावली पाठकक समक्ष कहल अछि।

प्रश्न 9274. दुनू भाषामे लेखनक उद्देश्य की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अमैथिल भाषी सेहो मैथिलीक गौरव-गरिमा जानथि।

उत्तर: घ. अमैथिल भाषी सेहो मैथिलीक गौरव-गरिमा जानथि।

व्याख्या: लेखमे अमैथिल भाषीकेँ मैथिलीक गौरव-गरिमा जानए-बुझए दैबाक उद्देश्य अछि।

प्रश्न 9275. अंग्रेजी मौलिक सूचीमे १९४९ क कृति कोन अछि?

क. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, खण्ड १।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, खण्ड १।

व्याख्या: सूचीमे Volume-I–1949 देल अछि।

प्रश्न 9276. अंग्रेजी मौलिक सूचीमे १९५० क दोसर इतिहास-खण्ड कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, खण्ड २।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, खण्ड २।

व्याख्या: सूचीमे Volume-II–1950 देल अछि।

प्रश्न 9277. फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला क प्रथम खण्ड कोन वर्षक अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. १९५०।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. १९५०।

व्याख्या: सूचीमे An Introduction to Folk Literature of Mithila Volume-I–1950 अछि।

प्रश्न 9278. जयकान्त मिश्रक ए केस ऑफ मैथिली कोन वर्षक कृति अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. १९६३।

उत्तर: घ. १९६३।

व्याख्या: सूचीमे A Case of Maithili–1963 अछि।

प्रश्न 9279. मैथिलीमे “कीर्तनिञा नाटक” कोन वर्षक कृति अछि?
क. १९६५।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १९६५।
व्याख्या: मौलिक मैथिली सूचीमे कीर्त्तनिञा नाटक–1965 अछि।

प्रश्न 9280. “तिरहुता ककहारा” कोन वर्षक कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९६७।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९६७।
व्याख्या: मौलिक मैथिली सूचीमे तिरहुता ककहारा–1967 अछि।

प्रश्न 9281. “मैथिलीमे प्राथमिक शिक्षा” कोन वर्षक कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९६९।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९६९।
व्याख्या: सूचीमे मैथिलीमे प्राथमिक शिक्षा–1969 अछि।

प्रश्न 9282. खण्ड ९३३क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जयकान्त मिश्रक साहित्य-साधना द्विभाषिक छल, जाहिसँ मैथिली अपना भीतर आ बाहर दुनू ठाम प्रतिष्ठित भेल।
उत्तर: घ. जयकान्त मिश्रक साहित्य-साधना द्विभाषिक छल, जाहिसँ मैथिली अपना भीतर आ बाहर दुनू ठाम प्रतिष्ठित भेल।
व्याख्या: एहि खण्डमे अंग्रेजी आ मैथिली दुनू भाषाक लेखनक उद्देश्य स्पष्ट अछि।

खण्ड ९३४ : विदेह-सदेह २ — मौलिक मैथिली, शब्दकोश आ अंग्रेजी साहित्यक कृति

प्रश्न 9283. जयकान्त मिश्रक “वृहत मैथिली शब्दकोश”क पहिल खण्ड कोन वर्षक अछि?
क. १९७३।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १९७३।
व्याख्या: मौलिक मैथिली सूचीमे वृहत मैथिली शब्दकोश खण्ड-1–1973 अछि।

प्रश्न 9284. “मैथिली साहित्यक इतिहास” कोन वर्षक मैथिली कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९८८।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९८८।
व्याख्या: सूचीमे मैथिली साहित्यक इतिहास–1988 अछि।

प्रश्न 9285. वृहत मैथिली शब्दकोशक दोसर खण्ड कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९९५।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९९५।
व्याख्या: सूचीमे वृहत मैथिली शब्दकोश खण्ड-2–1995 अछि।

प्रश्न 9286. अंग्रेजी साहित्यपर “लेक्चर्स ऑन थॉमस हार्डी” कोन वर्ष सभसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९५५ एवं १९६५।
उत्तर: घ. १९५५ एवं १९६५।
व्याख्या: मौलिक अंग्रेजी सूचीमे Lectures on Thomas Hardy–1955 एवं 1965 अछि।

प्रश्न 9287. “लेक्चर्स ऑन फोर पोएट्स”क आरम्भिक प्रकाशन वर्ष कोन अछि?
क. १९५७ एवं १९६३।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १९५७ एवं १९६३।
व्याख्या: सूचीमे Lectures on Four Poets–1957 एवं 1963 देल अछि।

प्रश्न 9288. “कम्प्लीट स्टाइल इन इंग्लिश पोएट्री” कोन वर्षक कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९७७।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९७७।
व्याख्या: सूचीमे Complete Style in English Poetry–1977 अछि।

प्रश्न 9289. रोमांटिक पोएट्स सम्बन्धी “लेक्चर्स ऑन फोर पोएट्स” कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९८७।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९८७।
व्याख्या: सूचीमे Romantic Poets संस्करण 1987 देल अछि।

प्रश्न 9290. विक्टोरियन पोएट्स सम्बन्धी “लेक्चर्स ऑन फोर पोएट्स” कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९९२।
उत्तर: घ. १९९२।
व्याख्या: सूचीमे Victorian Poets संस्करण 1992 देल अछि।

प्रश्न 9291. एहि सूचीसँ जयकान्त मिश्रक कोन रूप स्पष्ट होइत अछि?
क. मैथिली आ अंग्रेजी दुनू साहित्यक सक्रिय विद्वान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली आ अंग्रेजी दुनू साहित्यक सक्रिय विद्वान।
व्याख्या: मौलिक मैथिली आ अंग्रेजी साहित्यक कृति सभ हुनक द्विविध विद्वत्ता देखबैत अछि।

प्रश्न 9292. खण्ड ९३४क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्र शब्दकोश, इतिहास, शिक्षा, नाटक आ अंग्रेजी-साहित्य आलोचना धरि बहुआयामी कृति देलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र शब्दकोश, इतिहास, शिक्षा, नाटक आ अंग्रेजी-साहित्य आलोचना धरि बहुआयामी कृति देलनि।
व्याख्या: सूची सभ हुनक बहुविध साहित्य-साधना देखबैत अछि।

खण्ड ९३५ : विदेह-सदेह २ — सम्पादित कृति, नेपाल दरबार लाइब्रेरी आ अनुवाद

प्रश्न 9293. नेपाल दरबार लाइब्रेरीमे हुनका कोन धरोहर भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिलीक बहुमूल्य नाटकादि आ अन्य कृति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीक बहुमूल्य नाटकादि आ अन्य कृति।
व्याख्या: स्रोतमे नेपाल दरबार लाइब्रेरीक धूल-धूसरित धरोहरक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9294. ओहि धरोहर सभकेँ ओ कोना प्रकाशित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ऐतिहासिक भूमिका लिखि सम्पादित कऽ प्रकाशित कएलनि।
उत्तर: घ. ऐतिहासिक भूमिका लिखि सम्पादित कऽ प्रकाशित कएलनि।
व्याख्या: लेखमे सयत्न आनि ऐतिहासिक भूमिका लिखि सम्पादन-प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9295. धूर्तसमागम कोन लेखकसँ सम्बद्ध सम्पादित कृति अछि?
क. ज्योतिरीश्वर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ज्योतिरीश्वर।
व्याख्या: सम्पादित सूचीमे धूर्तसमागम–ज्योतिरीश्वर–1960 अछि।

प्रश्न 9296. गौरी परिणय कोन लेखकसँ सम्बद्ध अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शिवदत्त।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शिवदत्त।
व्याख्या: सूचीमे गौरी परिणय–शिवदत्त–1960 देल अछि।

प्रश्न 9297. गोरक्षविजय कोन कविसँ सम्बद्ध अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विद्यापति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विद्यापति।
व्याख्या: सूचीमे गोरक्षविजय–विद्यापति–1961 अछि।

प्रश्न 9298. रुक्मिणी परिणय कोन नामसँ सम्बद्ध अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रमापति।
उत्तर: घ. रमापति।
व्याख्या: सम्पादित सूचीमे रुक्मिणी परिणय–रमापति–1961 अछि।

प्रश्न 9299. सह-सम्पादनमे कोन कृति देल अछि?
क. कीर्तिपताका–विद्यापति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कीर्तिपताका–विद्यापति।
व्याख्या: सह-सम्पादन शीर्षकक अन्तर्गत कीर्तिपताका–विद्यापति–1960 अछि।

प्रश्न 9300. जयकान्त मिश्र सफल अनुवादक रूपमे कोन मोनोग्राफक अंग्रेजी अनुवाद कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गोविन्द झा लिखित उमेश मिश्रक मोनोग्राफ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गोविन्द झा लिखित उमेश मिश्रक मोनोग्राफ।
व्याख्या: स्रोतमे गोविन्द झा द्वारा लिखित उमेश मिश्रक मोनोग्राफक अंग्रेजी अनुवादक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9301. एहि अनुवादक प्रकाशन कोन संस्था द्वारा भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साहित्य अकादेमी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साहित्य अकादेमी।
व्याख्या: लेखमे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित भेल कहल अछि।

प्रश्न 9302. खण्ड ९३५क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सम्पादन आ अनुवादक माध्यमे जयकान्त मिश्र मैथिली धरोहरकेँ शोधयोग्य आ सार्वजनिक बनौलनि।
उत्तर: घ. सम्पादन आ अनुवादक माध्यमे जयकान्त मिश्र मैथिली धरोहरकेँ शोधयोग्य आ सार्वजनिक बनौलनि।
व्याख्या: नेपाल-संग्रह, सम्पादन आ अनुवाद मिलि धरोहर-संरक्षणक कार्य करैत अछि।

खण्ड ९३६ : विदेह-सदेह २ — निबन्ध-लेखन आ मातृभाषाक विकास

प्रश्न 9303. जयकान्त मिश्रक “सुशीला” उपन्यास समीक्षा कतय प्रकाशित भेल?

क. मिथिला मिहिर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला मिहिर।

व्याख्या: निबन्ध सूचीमे प्रोफेसर गंगापति सिंहक सुशीला उपन्यासक समीक्षा, मिथिला मिहिर–1943 अछि।

प्रश्न 9304. “मिथिलाक जन साहित्य” कोन पत्रिकासँ सम्बद्ध अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चौपाड़ि मधुमास।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चौपाड़ि मधुमास।

व्याख्या: सूचीमे मिथिलाक जन साहित्य, चौपाड़ि मधुमास–2011 देल अछि।

प्रश्न 9305. “मिथिलाक इतिहास सम्बन्धी किछु समस्या” कोन आयोजनसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रथम अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रथम अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन।

व्याख्या: सूचीमे एहि निबन्धक सम्मेलन-सन्दर्भ देल अछि।

प्रश्न 9306. “आधुनिक मैथिली साहित्य पर अंग्रेजीक प्रभाव” कोन पत्रिकामे प्रकाशित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वैदेही।

उत्तर: घ. वैदेही।

व्याख्या: सूचीमे वैदेही नवम्बर-दिसम्बर 1957 देल अछि।

प्रश्न 9307. “हमर नेपाल यात्रा” कोन वर्षक वैदेही सन्दर्भ अछि?

क. १९५८।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १९५८।

व्याख्या: सूचीमे हमर नेपाल यात्रा, वैदेही जनवरी–1958 अछि।

प्रश्न 9308. “मैथिली नाटक ओ रंगमंच” कोन वर्षक चेतना समिति संगोष्ठीसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. १९७७।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. १९७७।

व्याख्या: सूचीमे मैथिली नाटक ओ रंगमंच: वर्तमान स्थिति एवं भविष्य, चेतना समिति संगोष्ठी–1977 अछि।

प्रश्न 9309. “जीवित जातिक जीवित भाषा” कोन पत्रसँ सम्बद्ध अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मिथिला मिहिर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मिथिला मिहिर।
व्याख्या: सूचीमे जीवित जातिक जीवित भाषा, मिथिला मिहिर 11 जून–1978 अछि।

प्रश्न 9310. “मैथिली आन्दोलन: अद्यतन स्थिति” कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९८९।
उत्तर: घ. १९८९।
व्याख्या: सूचीमे मैथिली आन्दोलन: अद्यतन स्थिति, चेतना समिति संगोष्ठी–1989 अछि।

प्रश्न 9311. निबन्ध-सूचीसँ हुनक कोन प्रमुख चिन्ता देखाइत अछि?
क. भाषा, इतिहास, नाटक, लोक-साहित्य, संस्कृति आ आन्दोलनक समग्र चिन्ता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा, इतिहास, नाटक, लोक-साहित्य, संस्कृति आ आन्दोलनक समग्र चिन्ता।
व्याख्या: विषय-सूची विविध क्षेत्रमे हुनक मातृभाषा-केन्द्रित चिन्ता देखबैत अछि।

प्रश्न 9312. खण्ड ९३६क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक निबन्ध-साधना मैथिली विकासक अनेक मोर्चाकेँ एक साथ सम्बोधित करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक निबन्ध-साधना मैथिली विकासक अनेक मोर्चाकेँ एक साथ सम्बोधित करैत अछि।
व्याख्या: सूची सभ हुनक निरन्तर मातृभाषा-सेवाक प्रमाण अछि।

खण्ड ९३७ : विदेह-सदेह २ — सम्मान: मिथिला विभूति सँ भाषा सम्मान धरि

प्रश्न 9313. ३१ दिसम्बर १९६९ मे कोन संस्था हुनका सम्मान-पत्र देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मिथिला मण्डल, मुम्बइ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मिथिला मण्डल, मुम्बइ।
व्याख्या: सम्मान सूचीमे मुम्बइक मिथिला मण्डलक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9314. चेतना समिति पटनाक सम्मान कोन वर्ष भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९९०।
उत्तर: घ. १९९०।
व्याख्या: स्रोतमे चेतना समिति 1990 मे मिथिला विभूति ताम्रपत्रसँ सम्मानित कएलक।

प्रश्न 9315. चेतना समिति हुनका कोन सम्मान देलक?
क. मिथिला विभूति ताम्रपत्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिला विभूति ताम्रपत्र।
व्याख्या: सूचीमे मिथिला विभूति ताम्रपत्र स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9316. मिथिला सांस्कृतिक संगम प्रयागक सम्मान कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९९५।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९९५।
व्याख्या: सम्मान सूचीमे मिथिला सांस्कृतिक संगम प्रयाग–1995 ई. अछि।

प्रश्न 9317. धनबाद स्थित विद्यापति समिति कोन वर्ष सम्मान-पत्र समर्पित कएलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९९९।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९९९।
व्याख्या: सूचीमे 1999 ई. मे सम्मान-पत्र देबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9318. साहित्य अकादेमी नई दिल्ली कोन वर्ष हुनका भाषा सम्मानसँ विभूषित कएलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. २०००।
उत्तर: घ. २०००।
व्याख्या: स्रोतमे 2000 ई. मे भाषा सम्मानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9319. भाषा सम्मानमे हुनका कोन विशेषज्ञ रूपमे मानल गेल?
क. कालजयी मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विशेषज्ञ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कालजयी मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विशेषज्ञ।
व्याख्या: स्रोतमे कालजयी मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विशेषज्ञ रूपमे सम्मान देल गेल।

प्रश्न 9320. “लेखकसँ भेट” कार्यक्रम कोन तारीखक छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. २८ मई २०००।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. २८ मई २०००।
व्याख्या: सूचीमे मीट द ऑथर अर्थात लेखकसँ भेट कार्यक्रम 28 मई 2000 देल अछि।

प्रश्न 9321. कोलकाताक कोन संस्था २००६ मे अभिनन्दन कएलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मिथिला सांस्कृतिक परिषद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मिथिला सांस्कृतिक परिषद।
व्याख्या: सूचीमे बंगभूमिक जगता ज्योति संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद कोलकाता 2006 मे अभिनन्दन कएलक।

प्रश्न 9322. खण्ड ९३७क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सम्मान-सूची जयकान्त मिश्रक मातृभाषा-सेवा आ साहित्यिक कीर्तिक व्यापक स्वीकृति देखबैत अछि।
उत्तर: घ. सम्मान-सूची जयकान्त मिश्रक मातृभाषा-सेवा आ साहित्यिक कीर्तिक व्यापक स्वीकृति देखबैत अछि।
व्याख्या: विभिन्न संस्था आ वर्ष सभ हुनक स्वीकार्यता प्रमाणित करैत अछि।

खण्ड ९३८ : विदेह-सदेह २ — संस्था-संस्थापक: प्रयाग, तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स आ समिति

प्रश्न 9323. प्रयागकेँ मैथिल मातृभाषानुरागीक कार्य-स्थल किएक कहल गेल?
क. गंगा-यमुना-सरस्वती संगम आ विद्याक केन्द्र हेबाक कारण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गंगा-यमुना-सरस्वती संगम आ विद्याक केन्द्र हेबाक कारण।
व्याख्या: स्रोतमे प्रयागक धार्मिक संगम आ विद्याक केन्द्र रूपक दू कारण देल अछि।

प्रश्न 9324. स्वाधीनतासँ पूर्व जयकान्त मिश्र प्रयागमे मैथिली विकासार्थ कतबा संस्था स्थापित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दू संस्था।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दू संस्था।
व्याख्या: लेखमे दू संस्थाक स्थापना स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9325. तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स कोन वर्ष स्थापित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९४४ ई॰।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९४४ ई॰।
व्याख्या: स्रोतमे तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स आ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति—सन् 1944 ई. देल अछि।

प्रश्न 9326. दोसरी संस्थाक नाम की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति।
उत्तर: घ. अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति।
व्याख्या: स्रोतमे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति नाम अछि।

प्रश्न 9327. ई दुनू संस्था तत्कालीन साहित्यकार लोकनिमे की अनलक?

क. जनजागरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनजागरण।

व्याख्या: लेखमे संस्था सभ जनजागरण अनलक कहल अछि।

प्रश्न 9328. एहि संस्था सभद्वारा कोन काज भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. समकालीन साहित्यकारक पुस्तकक प्रकाशन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. समकालीन साहित्यकारक पुस्तकक प्रकाशन।

व्याख्या: स्रोतमे कतिपय समकालीन साहित्यकार लोकनिक पुस्तकक प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9329. “मैथिली समाचार” कोन प्रकारक पत्रिका कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनियतकालीन पत्रिका।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनियतकालीन पत्रिका।

व्याख्या: लेखमे मैथिली समाचारकेँ अनियतकालीन पत्रिका कहल अछि।

प्रश्न 9330. मैथिली समाचारक एक उद्देश्य की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव प्रकाशनसँ पाठककेँ अवगत कराएब।

उत्तर: घ. नव प्रकाशनसँ पाठककेँ अवगत कराएब।

व्याख्या: स्रोतमे सूचनात्मक समाचारक अतिरिक्त नव प्रकाशनक सूचना देबाक बात अछि।

प्रश्न 9331. खण्ड ९३८मे संस्था-कर्मक सही पाठ की अछि?

क. भाषा-आन्दोलनमे प्रकाशन-संस्था आ पत्रिका जनजागरणक साधन बनैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा-आन्दोलनमे प्रकाशन-संस्था आ पत्रिका जनजागरणक साधन बनैत अछि।

व्याख्या: स्रोत संस्थाक इतिहासकेँ मैथिली जनजागरणसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 9332. खण्ड ९३८क निचोड़ की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जयकान्त मिश्र संस्थापक रूपमे प्रयागक साहित्यिक ऊर्जा मैथिली प्रकाशन आ जनजागरणमे लगौलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र संस्थापक रूपमे प्रयागक साहित्यिक ऊर्जा मैथिली प्रकाशन आ जनजागरणमे लगौलनि।

व्याख्या: प्रयाग, संस्था आ प्रकाशनक संयुक्त प्रसंग ई निचोड़ दैत अछि।

खण्ड ९३९ : विदेह-सदेह २ — पुस्तक प्रदर्शनी: इलाहाबादक ऐतिहासिक उपक्रम

प्रश्न 9333. बिहारक तत्कालीन राज्यपालक मैथिली सम्बन्धी उद्गार सुनि जयकान्त मिश्रपर की प्रभाव पड़ल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ओ अत्यधिक उत्साहित भऽ जोर-सोरसँ काज शुरू कएलनि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ओ अत्यधिक उत्साहित भऽ जोर-सोरसँ काज शुरू कएलनि।

व्याख्या: स्रोतमे भाषण सुनि हुनक उत्साह आ कार्यारम्भक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9334. १९६० ई. मे आनन्द भवनमे जयकान्त मिश्र किनका भेटलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पण्डित जवाहरलाल नेहरू।

उत्तर: घ. पण्डित जवाहरलाल नेहरू।

व्याख्या: स्रोतमे तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूसँ आनन्द भवनमे भेटक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9335. नेहरूकेँ उपहारमे कोन मैथिली पुस्तक देल गेल?

क. चित्रा आ गल्पाञ्जलि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्रा आ गल्पाञ्जलि।

व्याख्या: लेखमे यात्रीक चित्रा आ गल्पाञ्जलि उपहार देबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9336. न्यायमूर्ति बी. मल्लिक मैथिली मान्यताक लेल कोन तरीका सुझौलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आन्दोलनक तरीका अपनाबए पड़त।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आन्दोलनक तरीका अपनाबए पड़त।

व्याख्या: मल्लिकक सलाह छल जे आन्दोलनक तरीका अपनाबए पड़त।

प्रश्न 9337. इलाहाबाद मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी कोन तारीख आयोजित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. १५ दिसम्बर १९६१।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. १५ दिसम्बर १९६१।

व्याख्या: स्रोतमे 15 दिसम्बर 1961 ई. के आयोजनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9338. इलाहाबाद प्रदर्शनी कतय आयोजित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सर गंगानाथ संस्कृत रिसर्च इंस्टीट्यूटमे।

उत्तर: घ. सर गंगानाथ संस्कृत रिसर्च इंस्टीट्यूटमे।

व्याख्या: लेखमे इलाहाबादमे सर गंगानाथ संस्कृत रिसर्च इंस्टीट्यूटक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9339. उक्त प्रदर्शनीक उद्घाटन स्वीकार करनिहार के छलाह?
क. जस्टिस बी. मल्लिक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जस्टिस बी. मल्लिक।
व्याख्या: स्रोतमे जस्टिस मल्लिक उद्घाटन स्वीकार कएलथिन।

प्रश्न 9340. एहि अवसरपर कोन कवि मैथिलीमे काव्यपाठ कएने रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. वैद्यनाथ मिश्र यात्री।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. वैद्यनाथ मिश्र यात्री।
व्याख्या: स्रोतमे यशस्वी कवि वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक काव्यपाठक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9341. इलाहाबाद प्रदर्शनीक मुख्य प्रभाव की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रबुद्ध साहित्य-चिन्तक मैथिलीक प्राचीन गौरवशाली परम्परासँ अवगत भेलाह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रबुद्ध साहित्य-चिन्तक मैथिलीक प्राचीन गौरवशाली परम्परासँ अवगत भेलाह।
व्याख्या: लेखमे प्रबुद्ध लोकनि मैथिली भाषा-साहित्यक परम्परासँ अवगत भेलाह कहल अछि।

प्रश्न 9342. खण्ड ९३९क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. इलाहाबाद पुस्तक प्रदर्शनी मैथिली मान्यताक आन्दोलनमे साहित्यिक प्रमाण आ जनध्यानक साधन बनल।
उत्तर: घ. इलाहाबाद पुस्तक प्रदर्शनी मैथिली मान्यताक आन्दोलनमे साहित्यिक प्रमाण आ जनध्यानक साधन बनल।
व्याख्या: प्रदर्शनीक उद्देश्य साहित्यिक गौरव जनमानस आ विद्वान धरि पहुँचाएब छल।

खण्ड ९४० : विदेह-सदेह २ — दिल्लीक राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी आ नेहरूक टिप्पणी

प्रश्न 9343. दिल्लीक राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी कोन तारीख सभमे आयोजित भेल?
क. ८ आ ९ जनवरी १९६३।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ८ आ ९ जनवरी १९६३।
व्याख्या: स्रोतमे 8 आ 9 जनवरी 1963 ई. दिल्लीक आजाद भवनमे आयोजन देल अछि।

प्रश्न 9344. दिल्ली प्रदर्शनी कतय आयोजित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आजाद भवन, दिल्ली।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आजाद भवन, दिल्ली।
व्याख्या: लेखमे दिल्लीक आजाद भवनमे ऐतिहासिक राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9345. आयोजन लेल जयकान्त मिश्र कोन आर्थिक साधन लेलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपन प्रोभिडेण्ट फण्डसँ लोन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपन प्रोभिडेण्ट फण्डसँ लोन।
व्याख्या: स्रोतमे प्रोभिडेण्ट फण्डसँ लोन लेबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9346. प्रदर्शनीमे पुस्तक-संग्रह लेल कोन संस्था विशेष उल्लेखनीय अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिला इंस्टिच्यूट दरभंगा आ पटना विश्वविद्यालय।
उत्तर: घ. मिथिला इंस्टिच्यूट दरभंगा आ पटना विश्वविद्यालय।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिला इंस्टिच्यूट दरभंगा आ पटना विश्वविद्यालय विशेष उल्लेखनीय कहल अछि।

प्रश्न 9347. सांसद रूपमे के-के सहभागी भेल रहथि?
क. ललितनारायण मिश्र आ यमुना प्रसाद मंडल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ललितनारायण मिश्र आ यमुना प्रसाद मंडल।
व्याख्या: स्रोतमे दुनू नाम सांसद रूपमे सहभागी कहल अछि।

प्रश्न 9348. प्रधानमंत्री नेहरू प्रदर्शनीमे कतेक विलम्बसँ पहुँचलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पन्द्रह मिनट।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पन्द्रह मिनट।
व्याख्या: लेखमे ओ पन्द्रह मिनट विलम्बसँ पहुँचलाह कहल अछि।

प्रश्न 9349. नेहरू पुस्तकक अम्बार देखि कोना भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हतप्रभ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हतप्रभ।
व्याख्या: स्रोतमे पुस्तकक अम्बार देखि हतप्रभ भऽ गेलाह।

प्रश्न 9350. नेहरूक टिप्पणीक मुख्य आशय की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली दीर्घकालसँ लोकक जीवित भाषा रहल अछि आ प्रोत्साहन चाहैत अछि।
उत्तर: घ. मैथिली दीर्घकालसँ लोकक जीवित भाषा रहल अछि आ प्रोत्साहन चाहैत अछि।
व्याख्या: अंग्रेजी टिप्पणीमे मैथिलीकेँ long time living language among people कहल गेल।

प्रश्न 9351. प्रदर्शनीक झाँकी कतय देखाओल गेल?
क. सिनेमा हॉलमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सिनेमा हॉलमे।
व्याख्या: स्रोतमे कार्यक्रमक झाँकी सिनेमा हॉलमे प्रदर्शित भेल कहल अछि।

प्रश्न 9352. खण्ड ९४०क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दिल्ली प्रदर्शनी मैथिलीक जीवित भाषा-साक्ष्यकेँ राष्ट्रीय मंचपर रखलक आ आन्दोलनकेँ आगू बढ़ओलक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दिल्ली प्रदर्शनी मैथिलीक जीवित भाषा-साक्ष्यकेँ राष्ट्रीय मंचपर रखलक आ आन्दोलनकेँ आगू बढ़ओलक।
व्याख्या: नेहरूक उपस्थिति आ टिप्पणी एहि प्रदर्शनीक ऐतिहासिक महत्व प्रमाणित करैत अछि।

खण्ड ९४१ : विदेह-सदेह २ — साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदमे प्रवेश

प्रश्न 9353. साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदक सदस्यक नामक अनुशंसा के करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सम्बद्ध विश्वविद्यालयक कुलपति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सम्बद्ध विश्वविद्यालयक कुलपति।
व्याख्या: स्रोतमे कुलपति द्वारा नामक अनुशंसाक प्रक्रिया देल अछि।

प्रश्न 9354. जयकान्त मिश्रक पिताकेँ बिहार सरकार कोन विश्वविद्यालयक कुलपति नियुक्त कएलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सर कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय।
उत्तर: घ. सर कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय।
व्याख्या: लेखमे सर कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति नियुक्तिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9355. कुलपति किएक बारम्बार फाइल वापस करैत छलाह?
क. लोक अपन पुत्रक नाम अनुशंसित कएलनि कहि आरोप लगाओत, एहि आशंकासँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लोक अपन पुत्रक नाम अनुशंसित कएलनि कहि आरोप लगाओत, एहि आशंकासँ।
व्याख्या: स्रोतमे पुत्रक नामक आरोपक आशंका स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9356. अन्ततः केकर दबावसँ जयकान्त मिश्रक नाम अनुशंसित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सामाजिक दबाव।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सामाजिक दबाव।
व्याख्या: लेखमे अन्ततः सामाजिक दबावक कारणेँ नाम अनुशंसित भेल।

प्रश्न 9357. सामान्य परिषदक सदस्य बनितहि जयकान्त मिश्र की प्रारम्भ कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिलीक मान्यतार्थ आन्दोलन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीक मान्यतार्थ आन्दोलन।
व्याख्या: स्रोतमे सदस्य बनितहि मान्यतार्थ आन्दोलन प्रारम्भ कहल अछि।

प्रश्न 9358. ओ अन्य भाषा-भाषी सदस्य लोकनिक ध्याने कोन दिशा आकर्षित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीक गौरवशाली साहित्यिक परम्परा।
उत्तर: घ. मैथिलीक गौरवशाली साहित्यिक परम्परा।
व्याख्या: लेखमे अन्य भाषाभाषी सदस्यक ध्यान मैथिलीक परम्परादिस आकृष्ट करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9359. एहि खण्डमे पिता-पुत्र प्रसंग कोन नैतिक जटिलता देखबैत अछि?
क. पारिवारिक सम्बन्ध आ सार्वजनिक अनुशंसा बीच सावधानी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पारिवारिक सम्बन्ध आ सार्वजनिक अनुशंसा बीच सावधानी।
व्याख्या: कुलपतिक संकोच सार्वजनिक निष्पक्षताक प्रश्नसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 9360. सामान्य परिषदमे प्रवेशक वास्तविक महत्व की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली मान्यताक संस्थागत संघर्षक मंच भेटब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली मान्यताक संस्थागत संघर्षक मंच भेटब।
व्याख्या: अकादेमी परिषदमे प्रवेश मान्यतार्थ आन्दोलनक संस्थागत आधार बनल।

प्रश्न 9361. गलत पाठ कोन होयत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि प्रसंगकेँ केवल पारिवारिक सुविधा मानि आन्दोलनक भूमिका छोड़ि देब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एहि प्रसंगकेँ केवल पारिवारिक सुविधा मानि आन्दोलनक भूमिका छोड़ि देब।
व्याख्या: स्रोतमे सामाजिक दबाव, संस्था आ आन्दोलनक प्रसंग प्रमुख अछि।

प्रश्न 9362. खण्ड ९४१क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सामान्य परिषदमे प्रवेश जयकान्त मिश्रकेँ मैथिली मान्यताक निर्णायक संस्थागत आवाज बनओलक।
उत्तर: घ. सामान्य परिषदमे प्रवेश जयकान्त मिश्रकेँ मैथिली मान्यताक निर्णायक संस्थागत आवाज बनओलक।
व्याख्या: सदस्यता भेटिते ओ मान्यतार्थ आन्दोलन शुरू कएलनि।

खण्ड ९४२ : विदेह-सदेह २ — मैथिलीक मान्यता: बुकलेट, समिति आ पोस्टकार्ड अभियान

प्रश्न 9363. साहित्य अकादेमी मैथिलीकेँ मान्यता दिअए ताहि लेल जयकान्त मिश्र कोना लागलाह?
क. फाँड़ बान्हि कऽ एकरा पाछाँ पड़लाह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. फाँड़ बान्हि कऽ एकरा पाछाँ पड़लाह।
व्याख्या: स्रोतमे “फाँड़ बान्हि कऽ” मान्यताक पाछाँ पड़बाक रूपक अछि।

प्रश्न 9364. ओ अंग्रेजीमे कोन बुकलेट लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ए केस फॉर मैथिली आ दे से अबाउट मैथिली।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ए केस फॉर मैथिली आ दे से अबाउट मैथिली।
व्याख्या: लेखमे A Case for Maithili एवं They Say About Maithili लिखबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9365. एहि बुकलेट सभक वितरण केकरा बीच कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साहित्य अकादेमीक सदस्य लोकनिक बीच।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साहित्य अकादेमीक सदस्य लोकनिक बीच।
व्याख्या: स्रोतमे सदस्य लोकनिक बीच वितरित कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 9366. नेहरूक मृत्युपरान्त अकादेमीक अध्यक्ष के बनलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी।
उत्तर: घ. प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी।
व्याख्या: स्रोतमे नेहरूक मृत्युपरान्त सुनीति कुमार चटर्जी अध्यक्ष बनलाह।

प्रश्न 9367. मान्यता-विचार लेल गठित समितिमे कोन भाषाविद छलाह?
क. डा. सुकुमार सेन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डा. सुकुमार सेन।
व्याख्या: समिति सदस्य रूपमे डा. सुकुमार सेनक नाम देल अछि।

प्रश्न 9368. समितिमे कोन हिन्दी/भारतीय साहित्य-विद्वान सम्मिलित छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रोफेसर हजारी प्रसाद द्विवेदी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रोफेसर हजारी प्रसाद द्विवेदी।
व्याख्या: स्रोतमे प्रो. हजारी प्रसाद द्विवेदीक नाम अछि।

प्रश्न 9369. समितिमे मैथिली पक्षक कोन विद्वान सदस्य मनोनीत भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. डा. सुभद्र झा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. डा. सुभद्र झा।
व्याख्या: समिति सदस्य सूचीमे डा. सुभद्र झाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9370. मान्यता मांगक समर्थनमे कोन जन-अभियान चलल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पोस्टकार्ड अभियान।
उत्तर: घ. पोस्टकार्ड अभियान।
व्याख्या: स्रोतमे कोलकाता आ मिथिलांचलमे पोस्टकार्ड अभियान चलबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9371. एहि आन्दोलनमे प्रवासी मातृभाषा सेवी संस्थादिक भूमिका की छल?
क. जनजागरण आ मांगक समर्थन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जनजागरण आ मांगक समर्थन।
व्याख्या: लेखमे कोलकाताक प्रवासी संस्था आ मिथिलांचलमे जनजागरणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9372. खण्ड ९४२क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली मान्यताक संघर्ष तर्क-पुस्तिका, विद्वत् समिति आ जन-अभियानक संयुक्त प्रयास छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली मान्यताक संघर्ष तर्क-पुस्तिका, विद्वत् समिति आ जन-अभियानक संयुक्त प्रयास छल।
व्याख्या: बुकलेट, समिति आ पोस्टकार्ड अभियान मिलि मान्यताक राह बनबैत अछि।

खण्ड ९४३ : विदेह-सदेह २ — तिरहुता लिपिक संरक्षक

प्रश्न 9373. मैथिली भाषाक प्राचीन स्वतन्त्र लिपि कोन-कोन नामसँ कहल जाइछ?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तिरहुता, मिथिलाक्षर, मैथिलाक्षर वा मैथिली लिपि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तिरहुता, मिथिलाक्षर, मैथिलाक्षर वा मैथिली लिपि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि सभ नामक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9374. तिरहुता नामसँ की संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई लिपि तिरहुत देशक थिक।
उत्तर: घ. ई लिपि तिरहुत देशक थिक।
व्याख्या: लेखमे तिरहुता नामसँ तिरहुत देशक लिपि होयबाक ज्ञान कहल अछि।

प्रश्न 9375. लेखकक अनुसार भाषा आ लिपिक सम्बन्ध कोना अछि?
क. परस्पर अन्योन्याश्रित।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. परस्पर अन्योन्याश्रित।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा-सभ्यता आ लिपि-भाषा सम्बन्ध अन्योन्याश्रित कहल अछि।

प्रश्न 9376. स्वतन्त्र लिपिक प्रश्न कोन प्रसंगमे उठल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साहित्य अकादेमीमे मैथिली मान्यताक प्रसंगमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साहित्य अकादेमीमे मैथिली मान्यताक प्रसंगमे।
व्याख्या: स्रोतमे मान्यताक प्रसंगमे स्वतन्त्र लिपिक अस्तित्वक प्रश्न उपस्थित भेल।

प्रश्न 9377. जयकान्त मिश्रक उत्तर की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिलीकेँ अपन स्वतन्त्र आ पुरातन लिपि अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीकेँ अपन स्वतन्त्र आ पुरातन लिपि अछि।
व्याख्या: ओ तर्क देलथिन जे मैथिलीकेँ स्वतन्त्र पुरातन लिपि अछि।

प्रश्न 9378. दरभंगा राजक कार्यकलापमे पहिने कोन लिपि प्रयोग होइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तिरहुता लिपि।
उत्तर: घ. तिरहुता लिपि।
व्याख्या: स्रोतमे दरभंगा राजक कार्यकलापमे सेहो तिरहुता लिपि प्रयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9379. तिरहुता छोड़ि देवनागरी लादल गेलाक परिणाम की कहल गेल?
क. जनमानससँ लिपि शनैः-शनैः विलुप्त होइत गेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जनमानससँ लिपि शनैः-शनैः विलुप्त होइत गेल।
व्याख्या: लेखमे देवनागरी लादल गेलाक भयंकर परिणाम रूपमे तिरहुताक विलुप्ति कहल अछि।

प्रश्न 9380. जयकान्त मिश्रक तिरहुता ककहारा कोन वर्षक मौलिक मैथिली कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९६७।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९६७।
व्याख्या: मौलिक कृति-सूची आ लिपि प्रसंग दुनूमे तिरहुता ककहारा 1967क सन्दर्भ अछि।

प्रश्न 9381. जयकान्त मिश्र छात्र समुदायकेँ की प्रेरणा देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तिरहुता लिपि सिखबाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तिरहुता लिपि सिखबाक।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली पढ़निहार छात्र समुदायकेँ ई लिपि सिखबाक प्रेरणा देबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9382. खण्ड ९४३क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जयकान्त मिश्र लिपि-संरक्षणकेँ मैथिली अस्तित्व, शोध आ सांस्कृतिक स्वाधीनतासँ जोड़ि देखैत छलाह।
उत्तर: घ. जयकान्त मिश्र लिपि-संरक्षणकेँ मैथिली अस्तित्व, शोध आ सांस्कृतिक स्वाधीनतासँ जोड़ि देखैत छलाह।
व्याख्या: तिरहुता प्रसंग भाषिक अस्तित्व आ शोध-सुविधा दुनूसँ जुड़ल अछि।

खण्ड ९४४ : विदेह-सदेह २ — परामर्श मण्डल, समीक्षा-दृष्टि आ दिशा-बोध

प्रश्न 9383. मैथिली मान्यता भेटलाक बाद जनमानसमे कोन भाव फैलल?
क. प्रसन्नताक लहरि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रसन्नताक लहरि।
व्याख्या: स्रोतमे मान्यता भेटलाक बाद प्रसन्नताक लहरि परिव्याप्त भेल कहल अछि।

प्रश्न 9384. प्रथम संयोजक रमानाथ झाक आकस्मिक निधनोपरान्त संयोजक के बनाओल गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र।
व्याख्या: लेखमे रमानाथ झाक निधनोपरान्त जयकान्त मिश्रकेँ संयोजक बनाओल गेल।

प्रश्न 9385. हुनक संयोजक कालमे प्रकाशित कृति सभमे कोन नाम अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विद्यापति गीत शती आ मैथिली कथा संग्रह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विद्यापति गीत शती आ मैथिली कथा संग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे उमानाथ झाक सम्पादित विद्यापति गीत शती आ जयधारी सिंहक मैथिली कथा संग्रहक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9386. राधाकृष्ण चौधरीकेँ अकादेमी कोन दायित्व देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंग्रेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहास लिखब।
उत्तर: घ. अंग्रेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहास लिखब।
व्याख्या: स्रोतमे इतिहासकार राधाकृष्ण चौधरीकेँ अंग्रेजीमे इतिहास लिखबाक दायित्व देल गेल।

प्रश्न 9387. जयकान्त मिश्र अपन पूर्व इतिहास संक्षिप्त कऽ अकादेमीद्वारा कोन कृति प्रकाशित करौलनि?
क. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (१९७६)।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (१९७६)।
व्याख्या: लेखमे A History of Maithili Literature (1976) प्रकाशित करएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9388. “इंडियन लिटरेचर सिंस इंडिपेन्डेन्स” मे हुनक आलेख किएक विवादक केन्द्र बनल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्वातन्त्र्योत्तर मैथिलीक मूल्यांकन भ्रामक मानि विरोध भेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्वातन्त्र्योत्तर मैथिलीक मूल्यांकन भ्रामक मानि विरोध भेल।
व्याख्या: स्रोतमे आलेख प्रकाशनोपरान्त पैघ विवादक केन्द्र बनल कहल अछि।

प्रश्न 9389. मिथिला मिहिरमे सुधांशु शेखर चौधरी कोन सीरिज चलौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. वादे-वादे जायते तत्त्वबोध।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. वादे-वादे जायते तत्त्वबोध।
व्याख्या: लेखमे ई सीरिज चलाएल गेल, जाहिमे आलोचनात्मक आलेख छपल।

प्रश्न 9390. दिशा-बोधक समीक्षक रूपमे जयकान्त मिश्रक प्रवेश कोन समीक्षा सँ जुड़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गंगापति सिंहक सुशीला उपन्यासक समीक्षा।
उत्तर: घ. गंगापति सिंहक सुशीला उपन्यासक समीक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे सुशीला समीक्षा मैथिली आलोचनामे प्रवेशक द्वार कहल गेल।

प्रश्न 9391. एहि समीक्षा-दृष्टिक एक मुख्य विशेषता की छल?
क. मैथिली शब्दक बदलामे हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोगपर सतर्क प्रतिवाद।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली शब्दक बदलामे हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोगपर सतर्क प्रतिवाद।
व्याख्या: सुशीला समीक्षा प्रसंगमे हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोगक प्रतिवादक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9392. खण्ड ९४४क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. परामर्श मण्डल, विवाद आ समीक्षा-दृष्टि जयकान्त मिश्रकेँ संस्था-कर्मी आ दिशा-बोधक आलोचक दुनू रूपमे देखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. परामर्श मण्डल, विवाद आ समीक्षा-दृष्टि जयकान्त मिश्रकेँ संस्था-कर्मी आ दिशा-बोधक आलोचक दुनू रूपमे देखबैत अछि।
व्याख्या: एहि खण्डमे संस्था, इतिहास-विवाद आ आलोचना-प्रवेशक संयुक्त सार अछि।

खण्ड ९४५ : विदेह-सदेह २ — सुशीला समीक्षा आ मैथिली आलोचनाक आरम्भ

प्रश्न 9393. जयकान्त मिश्र मैथिलीमे समीक्षा लिखबाक शुभारम्भ कोन अभाव देखि कएलनि?

क. मातृभाषामे समीक्षाक सर्वथा अभाव।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभाषामे समीक्षाक सर्वथा अभाव।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली समीक्षा-अभावकेँ हुनक आलोचना-लेखनक प्रेरक कारण कहल अछि।

प्रश्न 9394. हुनक पहिल वृहत समीक्षा कोन उपन्यासपर छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गंगापति सिंहक उपन्यास सुशीला।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गंगापति सिंहक उपन्यास सुशीला।

व्याख्या: सुशीला समीक्षा मैथिली आलोचनामे हुनक प्रवेशद्वार मानल गेल अछि।

प्रश्न 9395. सुशीला समीक्षा कतय प्रकाशित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दरभंगासँ प्रकाशित मिथिला मिहिरमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दरभंगासँ प्रकाशित मिथिला मिहिरमे।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला मिहिरक सम्पादक सुरेन्द्र झा सुमनक माध्यमे प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9396. सुशीला उपन्यासक भाषापर हुनक मुख्य आपत्ति की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली शब्दक बदलामे हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोग।

उत्तर: घ. मैथिली शब्दक बदलामे हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोग।

व्याख्या: ओ मैथिली शब्दावलीक स्थानपर हिन्दी शब्द प्रयोगक सतर्क प्रतिवाद कएलनि।

प्रश्न 9397. सुशीला समीक्षा हुनका कोन रूपमे प्रतिष्ठित कएलक?

क. मैथिली आलोचनाक यशस्वी आरम्भकर्ता रूपमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली आलोचनाक यशस्वी आरम्भकर्ता रूपमे।

व्याख्या: ई आलेख मैथिली आलोचनामे हुनक प्रवेशक द्वार खोलि देलक।

प्रश्न 9398. तत्कालीन जनमानसक एक धारणा की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीमे लिखल वस्तुक आलोचना नहि होएबाक चाही।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीमे लिखल वस्तुक आलोचना नहि होएबाक चाही।

व्याख्या: स्रोतमे कहल अछि जे ई धारणा विवादक कारण बनल।

प्रश्न 9399. हुनका आलोचना-लेखनमे के विशेष प्रोत्साहित कएलथिन?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन।
व्याख्या: भुवनेश्वर सिंह भुवनक प्रोत्साहनक उल्लेख स्रोतमे अछि।

प्रश्न 9400. सुशीला समीक्षा विवादक संकेत की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीमे मूल्यांकनपरम्परा बनैत छल।
उत्तर: घ. मैथिलीमे मूल्यांकनपरम्परा बनैत छल।
व्याख्या: आलोचनाक विरुद्ध प्रतिक्रिया देखबैत अछि जे मूल्यांकनक नव परम्परा जन्म लैत छल।

प्रश्न 9401. एहि प्रसंगमे भाषा-सजगताक अर्थ की अछि?
क. रचनामे मैथिली शब्द-स्वरूपक रक्षा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रचनामे मैथिली शब्द-स्वरूपक रक्षा।
व्याख्या: हिन्दी-प्रभावक प्रतिवाद भाषा-सजग आलोचनाक उदाहरण अछि।

प्रश्न 9402. खण्ड ९४५क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुशीला समीक्षा मैथिली आलोचनाक दिशा-बोधक आरम्भ छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुशीला समीक्षा मैथिली आलोचनाक दिशा-बोधक आरम्भ छल।
व्याख्या: ई खण्ड आलोचना, भाषा-शुद्धि आ मूल्यांकन-परम्पराक उदय देखबैत अछि।

खण्ड ९४६ : विदेह-सदेह २ — इतिहास-लेखन आ आलोचनात्मक प्रतिमान

प्रश्न 9403. जयकान्त मिश्रक इतिहास-लेखन कोन परम्पराक शुभारम्भ मानल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीमे इतिहास-लेखनक परम्परा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीमे इतिहास-लेखनक परम्परा।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकहि सँ मैथिली इतिहास-लेखनक शुभारम्भ कहल गेल अछि।

प्रश्न 9404. इतिहास-ग्रन्थक उपयोगिता ककरा अन्तर्गत पहिने विवेचित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हुनक अनुसंधान उपशीर्षक अन्तर्गत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हुनक अनुसंधान उपशीर्षक अन्तर्गत।
व्याख्या: लेखक इतिहास-ग्रन्थक उपयोगिता अनुसंधान प्रसंगमे पहिने विवेचित बतबैत छथि।

प्रश्न 9405. आधुनिक आलोचक हुनक इतिहासमे की देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कतिपय दोष।
उत्तर: घ. कतिपय दोष।
व्याख्या: स्रोतमे आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे तथाकथित आलोचक दोषक चर्चा करैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 9406. लेखक हुनक इतिहासक दोष-चर्चापर कोन सावधानी रखैत छथि?
क. हुनका समक्ष पूर्व प्रतिमान नहि छल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हुनका समक्ष पूर्व प्रतिमान नहि छल।
व्याख्या: लेखक स्मरण करबैत छथि जे ओहि समय तैयार प्रतिमान उपलब्ध नहि छल।

प्रश्न 9407. हुनक इतिहास परवर्ती पीढ़ीकेँ की देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अनुसंधान लेल अनेक दिशा-निर्देश।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अनुसंधान लेल अनेक दिशा-निर्देश।
व्याख्या: स्रोतमे कहल अछि जे अनेक बिन्दुपर परवर्ती पीढ़ीकेँ शोध करबाक अछि।

प्रश्न 9408. इतिहासक आलोचनात्मक महत्त्व कोना बुझाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओ मैथिली आलोचना-साहित्यकेँ दिशा-बोध करओलक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओ मैथिली आलोचना-साहित्यकेँ दिशा-बोध करओलक।
व्याख्या: इतिहासकेँ मात्र विवरण नहि, आलोचनात्मक दिशा-बोधक स्रोत मानल गेल।

प्रश्न 9409. एहि इतिहाससँ आगे नहि बढ़ि पौनाइ लेखक की मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चिन्तनीय स्थिति।
उत्तर: घ. चिन्तनीय स्थिति।
व्याख्या: स्रोतमे आगाँ नहि बढ़ि पौनाइ चिन्तनीय कहल अछि।

प्रश्न 9410. इतिहास-लेखनक आरम्भिक कठिनाई की छल?
क. पहिलासँ स्थापित विश्लेषण-पद्धतिक अभाव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पहिलासँ स्थापित विश्लेषण-पद्धतिक अभाव।
व्याख्या: प्रतिमान-अभावक कारण इतिहास-लेखनक मूल्यांकन सावधानीसँ करबाक अछि।

प्रश्न 9411. एहि खण्डमे जयकान्त मिश्रक मुख्य भूमिका की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. इतिहासकार आ आलोचनात्मक पथ-प्रदर्शक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. इतिहासकार आ आलोचनात्मक पथ-प्रदर्शक।
व्याख्या: हुनक इतिहास परम्परा आरम्भ करैत अछि आ नव शोध-प्रश्न खोलैत अछि।

प्रश्न 9412. खण्ड ९४६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दोषसहितो इतिहास-लेखन मैथिली आलोचनाक आधार बनल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दोषसहितो इतिहास-लेखन मैथिली आलोचनाक आधार बनल।
व्याख्या: स्रोतक आशय अछि जे आरम्भिक इतिहासे आगूक शोध-दिशा बनौलक।

खण्ड ९४७ : विदेह-सदेह २ — लोक-साहित्यक प्रथम संगठित परिचय

प्रश्न 9413. जयकान्त मिश्रक लोक-साहित्य सम्बन्धी अंग्रेजी कृति कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एन इंट्रोडक्शन टू फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एन इंट्रोडक्शन टू फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला।
व्याख्या: स्रोतमे एहि कृतिकेँ लोक-साहित्य विधाक प्रथम ग्रंथ कहल गेल अछि।

प्रश्न 9414. ई कृति कतेक खण्डमे प्रस्तुत भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दू खण्डमे।
उत्तर: घ. दू खण्डमे।
व्याख्या: लेखमे मिथिलाक लोक-साहित्य सामग्री दू खण्डमे देल गेल कहल अछि।

प्रश्न 9415. प्रथम खण्डमे मुख्यतः कोन सामग्री विवेचित भेल?
क. लोकगीत आ लोकनाट्य-सम्बन्धी गीत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लोकगीत आ लोकनाट्य-सम्बन्धी गीत।
व्याख्या: स्रोतमे प्रथम खण्डमे लोकगीतक प्रचुर सामग्री आ लोकनाट्य गीतक विवेचन अछि।

प्रश्न 9416. द्वितीय खण्डमे कोन विषय सभ आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोकविश्वास, लोकपरम्परा आ कतिपय लोककथा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लोकविश्वास, लोकपरम्परा आ कतिपय लोककथा।
व्याख्या: द्वितीय खण्ड लोकविश्वास, परम्परा आ लोककथा पर केन्द्रित बताओल गेल।

प्रश्न 9417. एहि कृतिक प्रभाव परवर्ती लोक-साहित्यकारपर कोना पड़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रेरणा-स्रोत आ पाथेय बनल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रेरणा-स्रोत आ पाथेय बनल।
व्याख्या: स्रोतमे परवर्ती पीढ़ीक लोक-साहित्यकारक पाथेय कहल गेल अछि।

प्रश्न 9418. लोक-साहित्य सम्बन्धी सामग्रीक मूल क्षेत्र कोन छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिलाञ्चलमे उपलब्ध जनसामग्री।
उत्तर: घ. मिथिलाञ्चलमे उपलब्ध जनसामग्री।
व्याख्या: ओ मिथिलाञ्चलमे उपलब्ध लोक-साहित्यक लेखा-जोखा प्रस्तुत कएलनि।

प्रश्न 9419. ई कृति मैथिली अध्ययनमे कोन रिक्ति भरैत अछि?
क. लोकपरम्पराकेँ व्यवस्थित अध्ययन-विषय बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लोकपरम्पराकेँ व्यवस्थित अध्ययन-विषय बनबैत अछि।
व्याख्या: कृति लोकजीवनक सामग्रीकेँ शास्त्रीय परिचय दैत अछि।

प्रश्न 9420. लोकगीतक विवेचन किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई जनमानसक सांस्कृतिक स्मृति खोलैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ई जनमानसक सांस्कृतिक स्मृति खोलैत अछि।
व्याख्या: स्रोतक आधारपर लोकगीत मिथिलाक जीवित सांस्कृतिक सामग्रीक अंग अछि।

प्रश्न 9421. लोकविश्वास आ लोककथा जोड़लासँ अध्ययन कोना व्यापक होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साहित्यसँ समाज-संस्कृति धरि दृष्टि बढ़ैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साहित्यसँ समाज-संस्कृति धरि दृष्टि बढ़ैत अछि।
व्याख्या: द्वितीय खण्ड साहित्यकेँ लोकजीवनक व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 9422. खण्ड ९४७क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लोक-साहित्यक संगठित परिचय मैथिली शोधक महत्त्वपूर्ण आधार बनल।
उत्तर: घ. लोक-साहित्यक संगठित परिचय मैथिली शोधक महत्त्वपूर्ण आधार बनल।
व्याख्या: ई खण्ड लोकगीत, लोकविश्वास आ लोककथाक समेकित अध्ययन देखबैत अछि।

खण्ड ९४८ : विदेह-सदेह २ — वैदेही लेखक सम्मेलन आ इतिहासक समस्या

प्रश्न 9423. वैदेही समितिक प्रथम अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनमे जयकान्त मिश्र कोन बात उठौलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली इतिहास-सम्बन्धी किछु समस्या।

उत्तर: घ. मैथिली इतिहास-सम्बन्धी किछु समस्या।

व्याख्या: स्रोतमे रचना-संग्रहमे इतिहास सम्बन्धी समस्या दिस ध्यान आकर्षित करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9424. ओ एहि समस्या दिस केकर ध्यान आकर्षित कएलनि?

क. जनमानस आ प्रबुद्ध वर्गक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनमानस आ प्रबुद्ध वर्गक।

व्याख्या: लेखमे जनमानसक संग प्रबुद्ध वर्गक ध्यान आकर्षित कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 9425. इतिहास-समस्या उठेनाइ की करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दिशा-बोध करबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दिशा-बोध करबैत अछि।

व्याख्या: लेखक स्पष्ट कहैत छथि जे ई दिशा-बोध करबैत अछि।

प्रश्न 9426. उपर्युक्त समस्याक समाधान नहि भेल तँ की स्थिति रहत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ओही प्रकारक उलझन आ अधूरापन रहत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ओही प्रकारक उलझन आ अधूरापन रहत।

व्याख्या: स्रोतक आशय अछि जे समाधान बिना समस्या बनल रहत।

प्रश्न 9427. सम्मेलनक अध्यक्षीय भाषणमे ओ कोन विधाक भविष्यपर प्रकाश देलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाट्य साहित्य।

उत्तर: घ. नाट्य साहित्य।

व्याख्या: स्रोतमे नाट्य साहित्यक भविष्यपर प्रकाश देबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9428. नाट्य साहित्य प्रसंगमे ओ की संकेत देलनि?

क. कतिपय नव बिन्दु।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतिपय नव बिन्दु।

व्याख्या: ओ नव बिन्दु संकेत करैत मैथिलीक भविष्यक चर्चा कएलनि।

प्रश्न 9429. हुनक मान्यता अनुसार मैथिलीक भविष्य कोन माध्यमसँ सुरक्षित रहि सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नाटक आ रंगमंचक माध्यमसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नाटक आ रंगमंचक माध्यमसँ।
व्याख्या: स्रोतमे नाट्य-साहित्य आ रंगमंचकेँ भविष्य-सुरक्षा संग जोड़ल अछि।

प्रश्न 9430. एहि प्रसंगमे हुनक प्रवृत्ति की प्रमाणित होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आलोचनात्मक प्रवृत्ति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आलोचनात्मक प्रवृत्ति।
व्याख्या: नव बिन्दु संकेत करब आलोचनात्मक प्रवृत्तिक सूचक कहल गेल।

प्रश्न 9431. लेखक सम्मेलनक प्रसंगक मुख्य शिक्षा की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. इतिहास, नाटक आ आलोचना एक दोसरसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. इतिहास, नाटक आ आलोचना एक दोसरसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: सम्मेलनमे इतिहासक समस्या आ नाट्य भविष्य दुनू उठल।

प्रश्न 9432. खण्ड ९४८क सार की अछि?
क. वैदेही सम्मेलनमे इतिहासक समस्या आ नाट्य-दिशा दुनूकेँ विचारक केन्द्र बनाओल गेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वैदेही सम्मेलनमे इतिहासक समस्या आ नाट्य-दिशा दुनूकेँ विचारक केन्द्र बनाओल गेल।
व्याख्या: ई खण्ड सम्मेलनकेँ दिशा-बोधक मंच रूपमे देखबैत अछि।

खण्ड ९४९ : विदेह-सदेह २ — संस्कृति, रंगमंच आ युवा पीढ़ी

प्रश्न 9433. जयकान्त मिश्र मैथिल संस्कृतिक कोन तत्व सभक उद्धार चाहैत छलाह?
क. भेष-भूषा, भाव-भाषा, कला-कौशल, चित्रकला-संगीत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भेष-भूषा, भाव-भाषा, कला-कौशल, चित्रकला-संगीत।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तत्व सभक उद्धारक प्रयोजन स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9434. एहि उद्देश्य लेल ओ अपन आलेखमे की कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विस्तारपूर्वक विचार आ संकेत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विस्तारपूर्वक विचार आ संकेत।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे ओ आलेखादिमे विस्तारसँ विचार कएलनि।

प्रश्न 9435. ओ केकरा अग्रसर होएबाक संकेत देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. युवा पीढ़ीकेँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. युवा पीढ़ीकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे युवा पीढ़ीकेँ कार्य लेल अग्रसर होएबाक बात अछि।

प्रश्न 9436. मैथिली नाटक आ रंगमंचक सम्बन्ध हुनका अनुसार कोन बातसँ अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीक भविष्य सुरक्षित करबासँ।
उत्तर: घ. मैथिलीक भविष्य सुरक्षित करबासँ।
व्याख्या: नाटक-रंगमंचकेँ भविष्योन्मुख सांस्कृतिक साधन मानल गेल।

प्रश्न 9437. नाट्य साहित्य जीवित किएक मानल गेल?
क. पढ़ब, सुनब आ देखबाक प्रक्रियामे सजीवता अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पढ़ब, सुनब आ देखबाक प्रक्रियामे सजीवता अछि।
व्याख्या: स्रोतमे नाटकक सजीवता ई प्रक्रियासँ जोड़ल अछि।

प्रश्न 9438. नाटकमे मूर्तमय वस्तु सम्बन्धी कोन क्षमता अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उपस्थित करबाक क्षमता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उपस्थित करबाक क्षमता।
व्याख्या: स्रोतमे नाटकक मूर्त उपस्थिति देबाक शक्ति कहल अछि।

प्रश्न 9439. अभिनयमे कोन तत्व सभ रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सौन्दर्य, कलाक वास्तविकता, मनुष्यता आ सत्यता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सौन्दर्य, कलाक वास्तविकता, मनुष्यता आ सत्यता।
व्याख्या: लेखमे अभिनयक सौन्दर्य, वास्तविकता, मनुष्यता आ सत्यता पर बल अछि।

प्रश्न 9440. साहित्यक आन विधासँ नाटकक भेद कोना देखाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अभिनयक सजीव मूर्त उपस्थिति आन विधामे असम्भव अछि।
उत्तर: घ. अभिनयक सजीव मूर्त उपस्थिति आन विधामे असम्भव अछि।
व्याख्या: स्रोतक आशय अछि जे नाटक दृश्य-जीवनक विशेष शक्ति रखैत अछि।

प्रश्न 9441. युवा पीढ़ीक दायित्व की बुझाइत अछि?
क. संस्कृति आ रंगमंचक सक्रिय संवर्धन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संस्कृति आ रंगमंचक सक्रिय संवर्धन।
व्याख्या: ओ युवा पीढ़ीकेँ सांस्कृतिक पुनरुद्धारक वाहक मानैत छथि।

प्रश्न 9442. खण्ड ९४९क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संस्कृति-संरक्षणक राह नाटक, रंगमंच आ युवा सक्रियतासँ जुड़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संस्कृति-संरक्षणक राह नाटक, रंगमंच आ युवा सक्रियतासँ जुड़ैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड सांस्कृतिक उद्धार आ रंगमंचक महत्त्व समेटैत अछि।

खण्ड ९५० : विदेह-सदेह २ — बीसम शताब्दी आ परिवर्तनक स्वर

प्रश्न 9443. बीसम शताब्दीमे मैथिली साहित्यमे कोन स्वर गुंजित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. परिवर्तनक स्वर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. परिवर्तनक स्वर।
व्याख्या: स्रोतमे बीसम शताब्दीमे परिवर्तनक स्वर गुंजित भेल कहल अछि।

प्रश्न 9444. जयकान्त मिश्र एहि परिवर्तनक प्रति कोन भूमिका मे अएलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समर्थक रूपमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समर्थक रूपमे।
व्याख्या: लेखमे ओ परिवर्तनक स्वरक समर्थक कहल गेल छथि।

प्रश्न 9445. आधुनिक शिक्षाक प्रचारसँ लोकमे की विकसित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ज्ञान आ दृष्टि।
उत्तर: घ. ज्ञान आ दृष्टि।
व्याख्या: स्रोतमे आधुनिक शिक्षा लोकक ज्ञान-दृष्टि विकसित करैत अछि।

प्रश्न 9446. लेखक लोकनिक लेखनी की अंकित करए लागल?
क. समाजक परिवर्त्तन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समाजक परिवर्त्तन।
व्याख्या: मातृभाषानुरागी लेखक परिवर्तनकेँ साहित्य मे अंकित करैत छथि।

प्रश्न 9447. नवीनता साहित्य मे कोना आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. परिवर्तनक अनुभव लेखनीमे आबि गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. परिवर्तनक अनुभव लेखनीमे आबि गेल।
व्याख्या: स्रोतक आशय अछि जे समाजक बदलब साहित्यक नवीनता बनल।

प्रश्न 9448. परिवर्तनक एक कारण कोन वैज्ञानिक प्रसंग अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नूतन वैज्ञानिक आविष्कारक चमत्कार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नूतन वैज्ञानिक आविष्कारक चमत्कार।
व्याख्या: स्रोतमे वैज्ञानिक आविष्कारक प्रभावक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9449. औद्योगीकरणक वृद्धि सँ की उत्पन्न भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जन-जीवनक संकुलता।
उत्तर: घ. जन-जीवनक संकुलता।
व्याख्या: लेखमे औद्योगीकरणसँ जीवनक जटिलता उत्पन्न होएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9450. आर्थिक विचारक क्षेत्रमे कोन प्रवाहक उदय कहल गेल?
क. मार्क्सवाद।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मार्क्सवाद।
व्याख्या: स्रोतमे आर्थिक विचारमे मार्क्सवादक उदय परिवर्तनक कारण मानल अछि।

प्रश्न 9451. बौद्धिकता आ फ्रायड सिद्धान्तक प्रभाव कोन क्षेत्रमे पड़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साहित्यक क्षेत्रमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साहित्यक क्षेत्रमे।
व्याख्या: स्रोतमे फ्रायड सिद्धान्त आ बौद्धिकता वृद्धिक प्रभाव साहित्यपर कहल अछि।

प्रश्न 9452. खण्ड ९५०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जयकान्त मिश्र आधुनिक परिवर्तनक साहित्यिक प्रभावकेँ स्वीकार करैत छथि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त मिश्र आधुनिक परिवर्तनक साहित्यिक प्रभावकेँ स्वीकार करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड विज्ञान, औद्योगिकता, विचार आ साहित्यक सम्बन्ध देखबैत अछि।

खण्ड ९५१ : विदेह-सदेह २ — कीर्त्तनिञा नाटक नामकरण-विवाद

प्रश्न 9453. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचरक प्रथम खण्डमे जयकान्त मिश्र नाटकादिकेँ कोन नाम देलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कीर्त्तनिञा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कीर्त्तनिञा।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिलाक उपलब्ध नाटकादिकेँ कीर्त्तनिञा नामे संबोधित कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 9454. एहि नामकरणपर पहिल आपत्ति के उठौलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रमानाथ झा।

उत्तर: घ. रमानाथ झा।

व्याख्या: अभिव्यञ्जनाक प्रथम अंकमे रमानाथ झा आपत्ति प्रस्तुत कएलनि।

प्रश्न 9455. रमानाथ झा जयकान्त मिश्रक मतक खण्डन करैत एकरा की कहलनि?

क. कीर्त्तनिञा नाच।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कीर्त्तनिञा नाच।

व्याख्या: स्रोतमे ओ एहि परम्पराकेँ नाटक नहि, कीर्त्तनिञा नाच कहलनि।

प्रश्न 9456. एहि विवादसँ मैथिली आलोचनामे की शुरू भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विवादक एक परम्परा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विवादक एक परम्परा।

व्याख्या: लेखमे एहि प्रसंगसँ आलोचना-विवादक परम्परा शुरू भेल कहल अछि।

प्रश्न 9457. प्रोफेसर मिश्र रमानाथ झाक मतक उत्तर कतय देलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अभिव्यञ्जनाक अगिला अंकमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अभिव्यञ्जनाक अगिला अंकमे।

व्याख्या: स्रोतमे उक्त पत्रिकाक अग्रिम अंकमे खण्डनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9458. रमानाथ झाक विस्तृत आलोचना कोन संग्रहमे आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रमानाथ झा प्रबन्ध संग्रह।

उत्तर: घ. रमानाथ झा प्रबन्ध संग्रह।

व्याख्या: स्रोतमे १३७१ सालक प्रबन्ध संग्रहमे बृहद आलोचनाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9459. रमानाथ झा स्वतन्त्र पुस्तक कोन नामे प्रकाशित कएलनि?
क. कीर्तनिञा नाटक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कीर्तनिञा नाटक।
व्याख्या: स्रोतमे १९६५क कीर्तनिञा नाटक नामक पुस्तकक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9460. विवादक मुख्य विषय की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नाटक, नाच आ परम्पराक नामकरण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नाटक, नाच आ परम्पराक नामकरण।
व्याख्या: कीर्त्तनिञा नाटक वा नाच कोना कहल जाए, विवादक केन्द्र ई छल।

प्रश्न 9461. एहि विवादक बौद्धिक महत्त्व की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली नाट्य-इतिहासक श्रेणीकरणपर प्रश्न उठल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली नाट्य-इतिहासक श्रेणीकरणपर प्रश्न उठल।
व्याख्या: नामकरण-विवाद असलमे इतिहास-पद्धतिक विवाद अछि।

प्रश्न 9462. खण्ड ९५१क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कीर्त्तनिञा नामकरण-विवाद मैथिली नाट्य-अध्ययनक पैघ आलोचनात्मक मोड़ छल।
उत्तर: घ. कीर्त्तनिञा नामकरण-विवाद मैथिली नाट्य-अध्ययनक पैघ आलोचनात्मक मोड़ छल।
व्याख्या: ई विवाद नाटक-इतिहासक पद्धति आ परिभाषा दुनूकेँ प्रभावित करैत अछि।

खण्ड ९५२ : विदेह-सदेह २ — रमानाथ झाक प्रतिवाद आ शोध-पद्धति

प्रश्न 9463. रमानाथ झा अपन पुस्तकमे मैथिली शोध सम्बन्धी कोन प्रश्न उठौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीमे शोध कोना हो।
उत्तर: घ. मैथिलीमे शोध कोना हो।
व्याख्या: स्रोतमे हुनक तर्क-विषयमे मैथिलीमे शोध कोना हो शामिल अछि।

प्रश्न 9464. इतिहासमे परम्पराक नामकरणक संदर्भमे कोन शब्दक सार्थकता पर विचार भेल?
क. कीर्त्तनिञा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कीर्त्तनिञा।
व्याख्या: रमानाथ झा नामकरणक सार्थकता पर तर्क देलनि।

प्रश्न 9465. नटुआ आ नटकिया विषयमे की विचारल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दुनूक भेद।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दुनूक भेद।
व्याख्या: स्रोतमे नटुआ आ नटकियामे भेद विषयक चर्चा अछि।

प्रश्न 9466. नाच आ नाटक विषयमे कोन सम्बन्ध पर प्रमाण देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अभेद सम्बन्ध।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अभेद सम्बन्ध।
व्याख्या: स्रोतमे नाच-नाटकक अभेद सम्बन्धी प्रमाणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9467. नाटक शब्दक कोन पक्षपर चर्चा भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. व्यापक अर्थ।
उत्तर: घ. व्यापक अर्थ।
व्याख्या: रमानाथ झा नाटक शब्दक व्यापक अर्थपर विचार करैत छथि।

प्रश्न 9468. मिथिलामे कोन परम्परापर प्रकाश देल गेल?
क. अभिनयक परम्परा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अभिनयक परम्परा।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिलामे अभिनयक परम्पराक चर्चा अछि।

प्रश्न 9469. कीर्तनिआमे कोन मंचगत तत्व सभक चर्चा भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पात्रक प्रवेश-निष्क्रमण, संख्या आ योग्यता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पात्रक प्रवेश-निष्क्रमण, संख्या आ योग्यता।
व्याख्या: स्रोतमे पात्र सम्बन्धी मंचीय तत्व सभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9470. रमानाथ झा कीर्तनिआकेँ कोन आधार पर देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. परम्परा, अभिनय आ नाच-नाटक सम्बन्धक आधारपर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. परम्परा, अभिनय आ नाच-नाटक सम्बन्धक आधारपर।
व्याख्या: हुनक प्रतिवाद नाट्य-व्यवहारक अनेक पक्षकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 9471. एहि प्रतिवादक पद्धतिगत योगदान की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शब्द, परम्परा आ मंच-व्यवहारक संयुक्त विश्लेषण।
उत्तर: घ. शब्द, परम्परा आ मंच-व्यवहारक संयुक्त विश्लेषण।
व्याख्या: रमानाथ झाक तर्क मात्र नामपर नहि, पद्धति पर सेहो अछि।

प्रश्न 9472. खण्ड ९५२क सार की अछि?
क. रमानाथ झाक प्रतिवाद मैथिली नाट्यशोधकेँ प्रमाणाधारित बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रमानाथ झाक प्रतिवाद मैथिली नाट्यशोधकेँ प्रमाणाधारित बनबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड नामकरण-विवादक शोध-पद्धति स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ९५३ : विदेह-सदेह २ — लीला नाटकक नव संकेत

प्रश्न 9473. कीर्त्तनिञा विवादक किछु वर्ष बाद कोन विद्वान नव संकेत देलनि?
क. प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह।
व्याख्या: स्रोतमे प्रेमशंकर सिंहक नव बिन्दु दिस संकेतक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9474. प्रेमशंकर सिंहक पुस्तकक नाम की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली नाटक ओ रंगमंच।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली नाटक ओ रंगमंच।
व्याख्या: स्रोतमे १९७८क मैथिली नाटक ओ रंगमंचक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9475. प्रेमशंकर सिंहक अनुसार ई सभ नाटक ने कीर्त्तनिञा नाटक छल, ने की?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कीर्त्तनिञा नाच।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कीर्त्तनिञा नाच।
व्याख्या: ओ दुनू नामकरणसँ अलग दृष्टि प्रस्तावित करैत छथि।

प्रश्न 9476. प्रेमशंकर सिंह एहि परम्पराकेँ की कहलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लीला नाटक।
उत्तर: घ. लीला नाटक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि सभ नाटकादिकेँ लीला नाटक कहलनि।

प्रश्न 9477. एहि नामकरणसँ आलोचनामे की भेटल?
क. विचार करबाक नव दिशा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विचार करबाक नव दिशा।
व्याख्या: लेखमे प्रोफेसर सिंह नव दिशा-बोध करौलनि कहल अछि।

प्रश्न 9478. कीर्त्तनिञा-विवादक विकास कोना देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एक मतसँ दोसर, तेसर व्याख्या धरि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एक मतसँ दोसर, तेसर व्याख्या धरि।
व्याख्या: जयकान्त मिश्र, रमानाथ झा आ प्रेमशंकर सिंहक मत क्रमशः विकसित विवाद देखबैत अछि।

प्रश्न 9479. लीला नाटक नामकरणक महत्त्व की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. धार्मिक-सांस्कृतिक अभिनय परम्परासँ जोड़ि बुझब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. धार्मिक-सांस्कृतिक अभिनय परम्परासँ जोड़ि बुझब।
व्याख्या: लीला नाटक नाम परम्पराक सांस्कृतिक आधारपर नया दृष्टि दैत अछि।

प्रश्न 9480. प्रेमशंकर सिंहक संकेत किएक विचारणीय कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ पूर्व विवादक बाहर तेसर पथ खोलैत अछि।
उत्तर: घ. ओ पूर्व विवादक बाहर तेसर पथ खोलैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे एकरा विचारणीय नव दिशा कहल अछि।

प्रश्न 9481. एहि प्रसंगक आलोचनात्मक शिक्षा की अछि?
क. नाट्य-परम्पराकेँ एकमात्र नाममे बाँधब कठिन अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नाट्य-परम्पराकेँ एकमात्र नाममे बाँधब कठिन अछि।
व्याख्या: विभिन्न नामकरण परम्पराक बहुस्तरीयता देखबैत अछि।

प्रश्न 9482. खण्ड ९५३क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लीला नाटकक संकेत मैथिली रंग-अध्ययनक तेसर व्याख्यात्मक मार्ग खोलैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लीला नाटकक संकेत मैथिली रंग-अध्ययनक तेसर व्याख्यात्मक मार्ग खोलैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड नामकरण-विवादक विकास क्रम देखबैत अछि।

खण्ड ९५४ : विदेह-सदेह २ — आन्दोलनक सजग प्रहरी

प्रश्न 9483. अनुसन्धानोत्तर जयकान्त मिश्रक मस्तिष्कमे कोन नव प्रवृत्ति जागल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीक गौरव-गरिमाकेँ वर्तमानमे जागृत करबाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीक गौरव-गरिमाकेँ वर्तमानमे जागृत करबाक।

व्याख्या: स्रोतमे अनुसन्धानोत्तर गौरव-जागरणक नव प्रवृत्तिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9484. ओ कोन दू मार्ग अपनौलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक मार्ग।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक मार्ग।

व्याख्या: लेखमे रचनात्मक तथा आन्दोलनात्मक मार्गक अनुसरण स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9485. ओ कोन समाजमे नवजीवनक संचार चाहैत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अकर्मण्य, निष्क्रिय, सुसुप्त आ रूढ़िग्रस्त समाजमे।

उत्तर: घ. अकर्मण्य, निष्क्रिय, सुसुप्त आ रूढ़िग्रस्त समाजमे।

व्याख्या: स्रोतमे ई समाज-चित्र देल गेल अछि।

प्रश्न 9486. जनजागरण अभियानक लक्ष्य की छल?

क. मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक जीवनमे नव चेतना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक जीवनमे नव चेतना।

व्याख्या: ओ जनजागरण द्वारा नव चेतना अनबाक चाहना रखैत छलाह।

प्रश्न 9487. हुनक आन्दोलनकारी स्वरूपक पहिल परिचय कोन आयोजनसँ भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. इलाहाबाद आ दिल्लीक पुस्तक प्रदर्शनीसँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. इलाहाबाद आ दिल्लीक पुस्तक प्रदर्शनीसँ।

व्याख्या: स्रोतमे दू बेर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9488. पुस्तक प्रदर्शनीक उद्देश्य की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समृद्ध साहित्यिक परम्परासँ जनमानसकेँ अवगत कराएब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समृद्ध साहित्यिक परम्परासँ जनमानसकेँ अवगत कराएब।

व्याख्या: लेखमे एहि परम्परासँ लोककेँ परिचित कराबय लेल प्रदर्शनी कहल अछि।

प्रश्न 9489. साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषद सदस्यता बाद ओ की शुरू कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अन्य भाषाभाषीकेँ मैथिली परम्पराक महत्व बतएबाक संघर्ष।
उत्तर: घ. अन्य भाषाभाषीकेँ मैथिली परम्पराक महत्व बतएबाक संघर्ष।
व्याख्या: स्रोतमे सदस्यतापश्चात संघर्ष शुरू करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9490. हुनक आन्दोलनकेँ मूर्त रूप देबामे के सहयोगी रहल?
क. मिथिलाञ्चल आ प्रवासी मातृभाषानुरागी संस्था।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलाञ्चल आ प्रवासी मातृभाषानुरागी संस्था।
व्याख्या: स्रोतमे एहि संस्थादिक अपरिमित सहयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9491. एहि आन्दोलनक परिणाम की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साहित्य अकादेमीद्वारा मैथिलीकेँ मान्यता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साहित्य अकादेमीद्वारा मैथिलीकेँ मान्यता।
व्याख्या: आन्दोलनसँ नेशनल लेटर्स अकादेमी द्वारा मान्यता भेटल।

प्रश्न 9492. खण्ड ९५४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जयकान्त मिश्र शोधकर्तासँ जनजागरणकारी आन्दोलन-प्रहरी बनलाह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त मिश्र शोधकर्तासँ जनजागरणकारी आन्दोलन-प्रहरी बनलाह।
व्याख्या: ई खण्ड शोध, प्रदर्शनी, संस्था-सहयोग आ मान्यताक सम्बन्ध देखबैत अछि।

खण्ड ९५५ : विदेह-सदेह २ — सीताराम झाक पंक्ति आ अधिकार-संघर्ष

प्रश्न 9493. सरकारक उदासीनता देखि जयकान्त मिश्रक मनमे की उत्पन्न भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आक्रोश।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आक्रोश।
व्याख्या: स्रोतमे बिहार आ केन्द्र सरकारक उदासीनतासँ हुनका हृदयमे आक्रोश भेल कहल अछि।

प्रश्न 9494. ओ कोन कविक पंक्तिसँ प्रभावित भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कविवर सीताराम झा।
उत्तर: घ. कविवर सीताराम झा।
व्याख्या: स्रोतमे सीताराम झाक पंक्तिसँ अतिशय प्रभावित भेलाह।

प्रश्न 9495. सीताराम झाक पंक्तिमे सलाइ आ आगि ककर रूपक अछि?
क. संघर्षक बिना अधिकार नहि भेटबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संघर्षक बिना अधिकार नहि भेटबाक।
व्याख्या: पंक्तिक आशय अछि जे रगड़ बिना आगि नहि, संघर्ष बिना अधिकार नहि।

प्रश्न 9496. “पायब निज अधिकार” पंक्ति कोन बातपर बल दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अधिकार लेल सक्रिय झगड़बाक आवश्यकतापर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अधिकार लेल सक्रिय झगड़बाक आवश्यकतापर।
व्याख्या: स्रोतक पंक्ति अधिकार-संघर्षक सिद्धान्त रखैत अछि।

प्रश्न 9497. एहि पंक्तिक प्रभाव केकरापर व्यापक पड़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जनमानसपर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जनमानसपर।
व्याख्या: लेखमे पंक्तिक व्यापक प्रभाव जनमानसपर पड़ल कहल अछि।

प्रश्न 9498. जयकान्त मिश्र एहि पंक्तिसँ अभिभूत भऽ की चलौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जनजागरणक अभिनव अभियान।
उत्तर: घ. जनजागरणक अभिनव अभियान।
व्याख्या: स्रोतमे एहि पंक्तिसँ प्रेरित जनजागरण अभियानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9499. जनजागरण अभियानक मूल उद्देश्य की छल?
क. मातृभाषाक महत्व जनमानसकेँ बुझाएब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषाक महत्व जनमानसकेँ बुझाएब।
व्याख्या: ओ लोककेँ मातृभाषाक महत्व जानए-बुझए लेल प्रेरित करैत छलाह।

प्रश्न 9500. अधिकार प्राप्तिमे जनसहयोग किएक जरूरी मानल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बिना लोक-सहयोग आन्दोलन सफल नहि होइत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बिना लोक-सहयोग आन्दोलन सफल नहि होइत।
व्याख्या: स्रोतमे जनमानस सहयोग हेतु उताहुल होएबाक बात अछि।

प्रश्न 9501. सीताराम झाक पंक्ति आन्दोलनक भाषा कोना बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओ अधिकारक लेल संघर्षकेँ नैतिक बनबैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओ अधिकारक लेल संघर्षकेँ नैतिक बनबैत अछि।
व्याख्या: कविता आन्दोलनक भावनात्मक आ नैतिक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 9502. खण्ड ९५५क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कविता जयकान्त मिश्रक भाषा-अधिकार आन्दोलनक प्रेरक नारा बनल।
उत्तर: घ. कविता जयकान्त मिश्रक भाषा-अधिकार आन्दोलनक प्रेरक नारा बनल।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक पंक्ति आ जन-अधिकार संघर्षक सम्बन्ध देखबैत अछि।

खण्ड ९५६ : विदेह-सदेह २ — भाषा चेतना आ जन-जागरण

प्रश्न 9503. जयकान्त मिश्र कोन अभाव सर्वप्रथम अनुभव कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिलांचलवासीमे भाषा चेतनाक अभाव।
उत्तर: घ. मिथिलांचलवासीमे भाषा चेतनाक अभाव।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा चेतनाक अभाव स्पष्ट कारण रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 9504. भाषा चेतनाक अर्थमे पहिल तत्व की अछि?
क. मातृभाषाक प्रति प्रेम।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषाक प्रति प्रेम।
व्याख्या: स्रोतमे प्रेम, दायित्व-बोध, कर्तव्य-बोध, गौरव-बोध शामिल अछि।

प्रश्न 9505. भाषा चेतनामे दायित्व-बोधक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषाक विकास लेल अपन हिस्सेदारी बुझब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषाक विकास लेल अपन हिस्सेदारी बुझब।
व्याख्या: दायित्व-बोध भाषा-कार्यप्रति जिम्मेदारीक संकेत अछि।

प्रश्न 9506. भाषा चेतनामे गौरव-बोध किएक आवश्यक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मातृभाषाक सम्मान बिना विकासक आकांक्षा नहि बनैत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मातृभाषाक सम्मान बिना विकासक आकांक्षा नहि बनैत।
व्याख्या: स्रोतमे गौरव-बोध चेतनाक अंग कहल गेल।

प्रश्न 9507. भाषाक उन्नति ककर चेतनापर निर्भर करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओहि भाषा-भाषीक चेतनापर।
उत्तर: घ. ओहि भाषा-भाषीक चेतनापर।
व्याख्या: लेखमे भाषाक विकास भाषा-भाषीक चेतनापर निर्भर कहल अछि।

प्रश्न 9508. ओ मैथिल समुदायसँ सर्वप्रथम की बुझएबाक प्रयास कएलनि?
क. हम मैथिल छी, हमर मातृभाषा मैथिली थिक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हम मैथिल छी, हमर मातृभाषा मैथिली थिक।
व्याख्या: स्रोतमे ई आत्मपहिचान जगएबाक अभियानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9509. जाति-भेद आ वर्ग-भेद विषयमे हुनक आग्रह की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एकजुट भऽ परित्याग करब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एकजुट भऽ परित्याग करब।
व्याख्या: ओ छिद्रान्वेषणक प्रवृत्ति छोड़ि मिलजुलि काज करबाक कहैत छथि।

प्रश्न 9510. भाषाक विकास कार्यक प्रति लोककेँ कोना जोड़बाक बात अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मिलजुलि आन्दोलनमे सम्बद्ध भऽ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मिलजुलि आन्दोलनमे सम्बद्ध भऽ।
व्याख्या: स्रोतमे एकजुट भऽ भाषाक विकास-कार्यक आन्दोलनक आग्रह अछि।

प्रश्न 9511. जनजागरणक आत्मिक सूत्र की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषा, मिथिला आ मैथिल पहचानक संयुक्त बोध।
उत्तर: घ. भाषा, मिथिला आ मैथिल पहचानक संयुक्त बोध।
व्याख्या: मातृभाषा चेतना क्षेत्रीय-सांस्कृतिक आत्मबोधसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 9512. खण्ड ९५६क सार की अछि?
क. भाषा चेतना बिना मैथिलीक विकास आन्दोलन दुर्बल रहत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा चेतना बिना मैथिलीक विकास आन्दोलन दुर्बल रहत।
व्याख्या: ई खण्ड प्रेम, दायित्व, गौरव आ एकजुटताकेँ आन्दोलनक आधार बनबैत अछि।

खण्ड ९५७ : विदेह-सदेह २ — आन्दोलनक नव स्वरूप आ सामाजिक विस्तार

प्रश्न 9513. जयकान्त मिश्र मैथिली आन्दोलनकेँ की देबाक इच्छुक छलाह?

क. नव स्वरूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव स्वरूप।

व्याख्या: स्रोतमे ओ आन्दोलनकेँ नव स्वरूप देबाक आकांक्षी कहल गेल छथि।

प्रश्न 9514. ओ कार्यक्रम रूपायित करबाक लेल कोना लोकमे जाएबाक बात सोचैत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. झुण्ड बान्हि, ढोल बजा कऽ गाम-गाम।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. झुण्ड बान्हि, ढोल बजा कऽ गाम-गाम।

व्याख्या: स्रोतमे ढोल बजा गाम-गाम मातृभाषाक महत्व बुझएबाक रूपक अछि।

प्रश्न 9515. मुख्य-मुख्य स्थानपर की आयोजन करबाक बात छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मीटिंग।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मीटिंग।

व्याख्या: भाषा-महत्त्व आ समस्या पर ध्यान खींचए लेल मीटिंगक योजना छल।

प्रश्न 9516. मातृभाषाक वास्तविक महत्वक संग की बुझाएबाक चाहना छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तज्जनित विविध समस्या।

उत्तर: घ. तज्जनित विविध समस्या।

व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषाक महत्व आ तज्जनित समस्याक चर्चा अछि।

प्रश्न 9517. भाषापर एक जातिक वर्चस्वक प्रश्नमे हुनक दृष्टि की छल?

क. वर्चस्व समाप्त करबाक लेल आन्दोलन आवश्यक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्चस्व समाप्त करबाक लेल आन्दोलन आवश्यक।

व्याख्या: लेखमे एक जातिक वर्चस्व समाप्त करबाक आवश्यकता कहल अछि।

प्रश्न 9518. मिथिलांचलक मुसलमानकेँ सम्बन्धमे हुनक इच्छा की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आन्दोलनक संग जोड़बाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आन्दोलनक संग जोड़बाक।

व्याख्या: स्रोतमे मुसलमान समुदायकेँ आन्दोलनसँ जोड़बाक बलवती इच्छा अछि।

प्रश्न 9519. ओ कोन प्रकारक आन्दोलन चाहैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सामान्य जनक प्रतिनिधित्व वाला आन्दोलन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सामान्य जनक प्रतिनिधित्व वाला आन्दोलन।
व्याख्या: सामान्य जनक प्रतिनिधित्व क्षेत्रक सर्वांगीण उन्नतिक लेल आवश्यक मानल गेल।

प्रश्न 9520. आन्दोलनक सामाजिक लक्ष्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंचल, क्षेत्र आ समाजक सर्वांगीण उन्नति।
उत्तर: घ. अंचल, क्षेत्र आ समाजक सर्वांगीण उन्नति।
व्याख्या: स्रोतमे आन्दोलनक प्रतिनिधित्व आ सामाजिक उन्नति जुड़ल अछि।

प्रश्न 9521. नव स्वरूपक आन्दोलनक एक विशेषता की अछि?
क. भाषाकेँ समाजक सभ वर्गसँ जोड़ब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषाकेँ समाजक सभ वर्गसँ जोड़ब।
व्याख्या: जाति-वर्चस्व समाप्ति आ मुस्लिम समाजक सहभागिताक आग्रह एहि बातक संकेत अछि।

प्रश्न 9522. खण्ड ९५७क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली आन्दोलनकेँ जन-आधारित, समावेशी आ सामाजिक विकासोन्मुख बनएबाक आग्रह छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली आन्दोलनकेँ जन-आधारित, समावेशी आ सामाजिक विकासोन्मुख बनएबाक आग्रह छल।
व्याख्या: ई खण्ड आन्दोलनक सामाजिक विस्तारक रूपरेखा देखबैत अछि।

खण्ड ९५८ : विदेह-सदेह २ — उदासीनता, प्रतिनिधि आ संघर्षक पुकार

प्रश्न 9523. जयकान्त मिश्रकेँ कोन बातसँ पीड़ा छलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलांचलवासी आन्दोलनक प्रति उदासीन अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिलांचलवासी आन्दोलनक प्रति उदासीन अछि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि उदासीनताकेँ हुनक पीड़ाक कारण कहल अछि।

प्रश्न 9524. मैथिली आन्दोलनमे तीव्रता अनबा लेल केकर सहयोग जरूरी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. क्षेत्रीय सांसद आ विधायकक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. क्षेत्रीय सांसद आ विधायकक।
व्याख्या: लेखमे प्रतिनिधि लोकनिक सहयोग बिना आन्दोलन धारदार नहि होएबाक बात अछि।

प्रश्न 9525. मिथिलांचलसँ निर्वाचित प्रतिनिधि लोकनि विषयमे हुनक दुःख की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हुनका लोकनिमे जागरणक अभाव।
उत्तर: घ. हुनका लोकनिमे जागरणक अभाव।
व्याख्या: स्रोतमे प्रतिनिधिमे जागरण-अभाव परिलक्षित भेल कहल अछि।

प्रश्न 9526. मैथिली आन्दोलनक दधीचि ककरा कहल गेल?
क. बाबू भोला लाल दास।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बाबू भोला लाल दास।
व्याख्या: स्रोतमे भोला लाल दासक कथनक उल्लेख मैथिली आन्दोलनक दधीचि रूपमे अछि।

प्रश्न 9527. भोला लाल दासक मूल कथनक आशय की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चुप्प बैसलासँ न्याय नहि भेटैत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चुप्प बैसलासँ न्याय नहि भेटैत।
व्याख्या: स्रोतक कथन अन्यायविरुद्ध सक्रिय संघर्षक आग्रह अछि।

प्रश्न 9528. मिथिलांचलक सर्वांगीण विकास लेल की आवश्यक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मिथिलावासीकेँ एकबद्ध भऽ सिंहनाद करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मिथिलावासीकेँ एकबद्ध भऽ सिंहनाद करब।
व्याख्या: स्रोतमे एकबद्ध भऽ सिंहनाद करबाक आह्वान अछि।

प्रश्न 9529. अपन अधिकार लेल केहन भूमिका चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संघर्ष करबाक।
उत्तर: घ. संघर्ष करबाक।
व्याख्या: स्रोतक पंक्ति आ विवेचन अधिकार-संघर्षक आवश्यकता देखबैत अछि।

प्रश्न 9530. क्षेत्रीय नेतृत्वक जागरण किएक आवश्यक अछि?
क. आन्दोलनकेँ धार आ राजनैतिक बल भेटैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आन्दोलनकेँ धार आ राजनैतिक बल भेटैत अछि।
व्याख्या: प्रतिनिधि सहयोग बिना आन्दोलन तीव्र नहि होएबाक बात एहि आधारपर अछि।

प्रश्न 9531. उदासीनता आन्दोलनकेँ कोना प्रभावित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओकर ऊर्जा आ जनबल घटबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओकर ऊर्जा आ जनबल घटबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे उदासीनता आन्दोलनक कमजोरी रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 9532. खण्ड ९५८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जनता आ प्रतिनिधि दुनूक जागरण मैथिली आन्दोलनक धार लेल अनिवार्य अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जनता आ प्रतिनिधि दुनूक जागरण मैथिली आन्दोलनक धार लेल अनिवार्य अछि।
व्याख्या: ई खण्ड उदासीनता आ संघर्ष-दायित्वक प्रश्न उठबैत अछि।

खण्ड ९५९ : विदेह-सदेह २ — टिमटिमाइत दीप आ विराट शक्ति

प्रश्न 9533. जयकान्त मिश्र मैथिली नामपर चलाओल आन्दोलनकेँ कखन-कखन कोना मानैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. टिमटिमाइत दीप।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. टिमटिमाइत दीप।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली नामपर चलल आन्दोलनकेँ टिमटिमाइत दीप मानबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9534. साधारण संघर्ष आन्दोलनकेँ की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उजागर करैत अछि।
उत्तर: घ. उजागर करैत अछि।
व्याख्या: लेखमे संघर्ष सभ साधारणत: आन्दोलनकेँ उजागर करैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 9535. छोट-छोट बात लऽ कऽ आन्दोलन करबकेँ ओ कोना देखैत छलाह?
क. सही आन्दोलन नहि मानैत छलाह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सही आन्दोलन नहि मानैत छलाह।
व्याख्या: स्रोतमे छोट बातकेँ आन्दोलनक संज्ञा देब उचित नहि कहल अछि।

प्रश्न 9536. मैथिली आन्दोलन चलएबाक लेल की आवश्यक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विराट शक्ति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विराट शक्ति।
व्याख्या: स्रोतमे आन्दोलन लेल विराट शक्तिक प्रयोजन स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9537. वर्तमान भाषा-आन्दोलनक किछु रूपकेँ ओ विकास नहि, की मानैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विनाश।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विनाश।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली भाषी द्वारा चलाओल आन्दोलनक किछु रूपकेँ विकास नहि, विनाश मानल अछि।

प्रश्न 9538. ई आलोचना ककरा चेतावनी दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अल्पदृष्टि आ विखण्डित आन्दोलनकेँ।
उत्तर: घ. अल्पदृष्टि आ विखण्डित आन्दोलनकेँ।
व्याख्या: छोट-छोट बातक आन्दोलन पर हुनक आपत्ति व्यापकता चाहैत अछि।

प्रश्न 9539. टिमटिमाइत दीप रूपक की सूचित करैत अछि?
क. आन्दोलनमे उजास अछि, मुदा शक्ति कम अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आन्दोलनमे उजास अछि, मुदा शक्ति कम अछि।
व्याख्या: रूपक आन्दोलनक सीमित ऊर्जा देखबैत अछि।

प्रश्न 9540. विराट शक्तिक अर्थ की होएत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यापक जनबल, संगठन आ सांस्कृतिक चेतना।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. व्यापक जनबल, संगठन आ सांस्कृतिक चेतना।
व्याख्या: स्रोतक आधारपर आन्दोलनकेँ बड़ सामाजिक बल चाही।

प्रश्न 9541. आन्दोलनक सही दिशा की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समग्र भाषा-संस्कृति हितमे व्यापक संघर्ष।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समग्र भाषा-संस्कृति हितमे व्यापक संघर्ष।
व्याख्या: ओ छोट संघर्षक बदलामे व्यापक सांस्कृतिक प्रयोजन चाहैत छथि।

प्रश्न 9542. खण्ड ९५९क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जयकान्त मिश्र अल्प, टुकड़ामे बँटल आन्दोलनक स्थानपर विराट सांस्कृतिक शक्ति चाहैत छलाह।
उत्तर: घ. जयकान्त मिश्र अल्प, टुकड़ामे बँटल आन्दोलनक स्थानपर विराट सांस्कृतिक शक्ति चाहैत छलाह।
व्याख्या: ई खण्ड आन्दोलनक आत्मालोचना आ विस्तार-दृष्टि देखबैत अछि।

खण्ड ९६० : विदेह-सदेह २ — सांस्कृतिक शंखनाद आ भाषिक अस्मिता

प्रश्न 9543. मैथिली आन्दोलनक असफलताक एक कारण कोन भाषासँ तुलना मे कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पंजाबी आ उर्दूसँ भिन्न, मैथिली कोनो धर्मसँ सम्बद्ध नहि।

उत्तर: घ. पंजाबी आ उर्दूसँ भिन्न, मैथिली कोनो धर्मसँ सम्बद्ध नहि।

व्याख्या: स्रोतमे धर्मसम्बद्धता नहि होएब आन्दोलनक चुनौती रूपमे कहल अछि।

प्रश्न 9544. भारतमे मैथिली बजनिहारक संख्या सम्बन्धी संकेत की अछि?

क. सातम स्थानक उल्लेख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सातम स्थानक उल्लेख।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली बजनिहारक संख्या भारतमे सातम कहल गेल।

प्रश्न 9545. मैथिलीक स्वतंत्र लिपि सम्बन्धी तर्क की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हमर भाषाक स्वतंत्र लिपि छैक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हमर भाषाक स्वतंत्र लिपि छैक।

व्याख्या: स्रोतमे स्वतन्त्र लिपि आन्दोलनक आधार रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 9546. मैथिलीक अतीत कोना वर्णित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अत्यन्त समुज्ज्वल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अत्यन्त समुज्ज्वल।

व्याख्या: स्रोतमे अतीत समुज्ज्वल कहल गेल अछि।

प्रश्न 9547. मैथिली संस्कृतिक परम्परा कोना कही गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महान सांस्कृतिक परम्परा।

उत्तर: घ. महान सांस्कृतिक परम्परा।

व्याख्या: लेखमे महान सांस्कृतिक परम्पराक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9548. सांस्कृतिक अस्मिताक रक्षा लेल आजुक धर्म की कहल गेल?

क. आन्दोलन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्दोलन।

व्याख्या: स्रोतमे अस्मिता-रक्षा लेल आन्दोलन आजुक धर्म कहल अछि।

प्रश्न 9549. आन्दोलनमे बल कखन आओत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जखन हम संस्कृतिक शंखनाद करब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जखन हम संस्कृतिक शंखनाद करब।
व्याख्या: स्रोतमे संस्कृतिक शंखनाद आ भाषिक चेतनाक हुँकारक बात अछि।

प्रश्न 9550. जन-जनमे की भरबाक आग्रह अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषिक चेतनाक हुँकार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषिक चेतनाक हुँकार।
व्याख्या: स्रोतमे जन-जन भाषिक चेतनाक हुँकार भरबाक बात अछि।

प्रश्न 9551. आरसी प्रसाद सिंहक कोन काव्यक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बाजि गेल रनडंक।
उत्तर: घ. बाजि गेल रनडंक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि काव्यांशक उल्लेख सांस्कृतिक पुकार रूपमे अछि।

प्रश्न 9552. खण्ड ९६०क सार की अछि?
क. मैथिली आन्दोलनक बल सांस्कृतिक शंखनाद, लिपि, अतीत आ भाषिक चेतना सँ बनेत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली आन्दोलनक बल सांस्कृतिक शंखनाद, लिपि, अतीत आ भाषिक चेतना सँ बनेत।
व्याख्या: ई खण्ड अस्मिता-आधारित आन्दोलनक सूत्र स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ९६१ : विदेह-सदेह २ — स्वीकृतिक यात्रा आ उपलब्धि

प्रश्न 9553. मैथिली आन्दोलनक गति कोना वर्णित अछि?
क. सतत गतिशील।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सतत गतिशील।
व्याख्या: स्रोतमे आन्दोलन सतत गतिशील रहल कहल अछि।

प्रश्न 9554. आन्दोलनक परिणति कोना बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नीचाँसँ ऊपर ससरल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नीचाँसँ ऊपर ससरल।
व्याख्या: लेखमे आन्दोलन नीचाँसँ ऊपर ससरबाक परिणाम बताओल अछि।

प्रश्न 9555. साहित्य अकादेमीमे स्वीकृति कोन यात्रा-सोपान अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषिक-साहित्यिक मान्यता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषिक-साहित्यिक मान्यता।
व्याख्या: स्रोतमे साहित्य अकादेमीक स्वीकृति उपलब्धि रूपमे अछि।

प्रश्न 9556. भारतीय संविधानक कोन भागमे मैथिली स्वीकृत भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अष्टम अनुसूची।
उत्तर: घ. अष्टम अनुसूची।
व्याख्या: स्रोतमे अष्टम अनुसूचीमे स्वीकृतिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9557. संघ लोक सेवा आयोगमे स्वीकृति ककर उपयोगिता देखबैत अछि?
क. प्रतियोगी परीक्षा आ प्रशासनिक अवसर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रतियोगी परीक्षा आ प्रशासनिक अवसर।
व्याख्या: स्रोतमे संघ लोक सेवा आयोगक स्वीकृति उपलब्धि सूचीमे अछि।

प्रश्न 9558. बिहार लोक सेवा आयोगमे स्वीकृति कोन स्तरक संकेत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राज्यस्तरीय प्रशासनिक मान्यता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. राज्यस्तरीय प्रशासनिक मान्यता।
व्याख्या: स्रोतमे बिहार लोक सेवा आयोग सेहो उपलब्धि रूपमे देल अछि।

प्रश्न 9559. उच्चतर माध्यमिक स्तरपर मैथिली स्वीकृति ककर भाग अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शिक्षा-प्रणालीक विस्तार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शिक्षा-प्रणालीक विस्तार।
व्याख्या: स्रोतमे उच्चतर माध्यमिक अध्ययन-रूपमे स्वीकृति कहल अछि।

प्रश्न 9560. विश्वविद्यालय स्तरपर अध्ययनक रूपमे स्वीकृति की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उच्च शिक्षामे मैथिलीक स्थान।
उत्तर: घ. उच्च शिक्षामे मैथिलीक स्थान।
व्याख्या: विश्वविद्यालय स्तरक स्वीकृति अकादमिक आधार मजबूत करैत अछि।

प्रश्न 9561. जयकान्त मिश्र उपलब्ध सुविधा सभक विषयमे की मंत्र देलनि?
क. उपलब्ध सुविधाक उपयोग करू।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. उपलब्ध सुविधाक उपयोग करू।
व्याख्या: स्रोतमे जतेक सुविधा उपलब्ध भेल अछि तकर उपयोग करबाक मंत्र कहल गेल।

प्रश्न 9562. खण्ड ९६१क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आन्दोलनक उपलब्धि संस्थागत स्वीकृति सभमे बदलल, मुदा ओकर उपयोग जरूरी अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आन्दोलनक उपलब्धि संस्थागत स्वीकृति सभमे बदलल, मुदा ओकर उपयोग जरूरी अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मान्यतासँ उपयोग धरि आन्दोलनक यात्रा देखबैत अछि।

खण्ड ९६२ : विदेह-सदेह २ — राजभाषा, मिथिला राज्य आ आत्मसम्मान

प्रश्न 9563. मैथिलीक वास्तविक विकास लेल अद्यापि की अपेक्षित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आन्दोलन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आन्दोलन।
व्याख्या: स्रोतमे वास्तविक विकास लेल आन्दोलन अपेक्षित अछि।

प्रश्न 9564. आगू प्रयासक एक लक्ष्य की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. राजभाषा रूपमे स्वीकृति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. राजभाषा रूपमे स्वीकृति।
व्याख्या: लेखमे मैथिलीकेँ राजभाषा रूपमे स्वीकृति भेटएबाक प्रयासक बात अछि।

प्रश्न 9565. जीवनक परिणत वयमे जयकान्त मिश्र कोन आन्दोलन शुरू कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिला राज्यक स्थापनार्थ आन्दोलन।
उत्तर: घ. मिथिला राज्यक स्थापनार्थ आन्दोलन।
व्याख्या: स्रोतमे परिणत वयमे मिथिला राज्य लेल संघर्ष शुरू करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9566. अपन सम्मानक रक्षार्थ ओ की पुनः प्रज्ज्वलित कएलनि?
क. संघर्षक अग्नि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संघर्षक अग्नि।
व्याख्या: लेखमे सम्मान-रक्षार्थ अग्नि पुनः प्रज्ज्वलित करबाक रूपक अछि।

प्रश्न 9567. हुनक आकांक्षा राष्ट्र विषयमे की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राष्ट्रक अखण्डता आ एकता रहओ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. राष्ट्रक अखण्डता आ एकता रहओ।
व्याख्या: स्रोतमे राष्ट्रक अखण्डता एवं एकता बनल रहबाक इच्छा अछि।

प्रश्न 9568. घर-जिला-राज्य स्तरपर ओ की अक्षुण्ण रखए चाहैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपन भाषा आ संस्कृति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपन भाषा आ संस्कृति।
व्याख्या: राष्ट्र-एकता संग स्थानीय भाषा-संस्कृति संरक्षणक आग्रह अछि।

प्रश्न 9569. लोक भरिपोख भरि मन जीवित रहि की करए?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. देशक उन्नतिमे सहभागी होए।
उत्तर: घ. देशक उन्नतिमे सहभागी होए।
व्याख्या: स्रोतमे आत्मसम्मानी लोकक देश-उन्नतिमे सहभागिता कहल अछि।

प्रश्न 9570. कुंठित, कलुषित, हीन व्यक्तित्व विषयमे हुनक मान्यता की अछि?
क. एहन व्यक्तित्वक विकास सम्भव नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एहन व्यक्तित्वक विकास सम्भव नहि।
व्याख्या: स्रोतमे हीन व्यक्तित्वक विकास असम्भव कहल अछि।

प्रश्न 9571. राजभाषा आ राज्यक प्रश्न ककर संग जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषा-संस्कृति आ आत्मसम्मान।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषा-संस्कृति आ आत्मसम्मान।
व्याख्या: ई माग प्रशासनिक मात्र नहि, सांस्कृतिक सम्मानक प्रश्न सेहो अछि।

प्रश्न 9572. खण्ड ९६२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिलीक विकास राजभाषा, क्षेत्रीय आत्मसम्मान आ राष्ट्र-एकताक संतुलनसँ जुड़ल अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीक विकास राजभाषा, क्षेत्रीय आत्मसम्मान आ राष्ट्र-एकताक संतुलनसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: ई खण्ड सम्मान, राज्य, भाषा आ राष्ट्रक सम्बन्ध देखबैत अछि।

खण्ड ९६३ : विदेह-सदेह २ — मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा

प्रश्न 9573. शिक्षा आ भाषाक सम्बन्ध कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. परस्पराश्रित।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. परस्पराश्रित।

व्याख्या: स्रोतमे शिक्षा आ भाषाक विकास परस्पराश्रित कहल अछि।

प्रश्न 9574. शिक्षा मानव जीवनक की थिक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मेरुदण्ड।

उत्तर: घ. मेरुदण्ड।

व्याख्या: स्रोतमे शिक्षा मानव जीवनक मेरुदण्ड कहल अछि।

प्रश्न 9575. शिक्षाक उद्देश्य की कहल गेल?

क. ज्ञानार्जन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्ञानार्जन।

व्याख्या: लेखमे शिक्षाक उद्देश्य ज्ञानार्जन कहल गेल।

प्रश्न 9576. ज्ञानार्जनक हेतु भाषा की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. माध्यम।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. माध्यम।

व्याख्या: स्रोतमे भाषा ज्ञानार्जनक माध्यम कहल अछि।

प्रश्न 9577. कोनो भाषाक सफलता ककरापर अवलम्बित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ज्ञानार्जन आ ज्ञानक अभिव्यक्तिमे सहायक होएबाक सीमा पर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ज्ञानार्जन आ ज्ञानक अभिव्यक्तिमे सहायक होएबाक सीमा पर।

व्याख्या: स्रोतमे भाषा सफलताक माप ई कहल अछि।

प्रश्न 9578. मातृभाषा माध्यमे शिक्षा व्यक्तित्वमे की सहायक होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यक्तित्व-तत्वक निर्माण।

उत्तर: घ. व्यक्तित्व-तत्वक निर्माण।

व्याख्या: स्रोतमे अर्जित ज्ञानक अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्तित्व निर्माणक बात अछि।

प्रश्न 9579. विश्वक विकसित देशक उदाहरणमे कोन देश सभ देल गेल?
क. रूस, जापान, इंग्लैण्ड आ अमेरिका।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रूस, जापान, इंग्लैण्ड आ अमेरिका।
व्याख्या: स्रोतमे एहि देशमे मातृभाषा माध्यमक प्राथमिक शिक्षा उदाहरण अछि।

प्रश्न 9580. एहि देश सभक प्रगतिक आधारक रूपमे की संकेत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मातृभाषा माध्यमक शिक्षा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मातृभाषा माध्यमक शिक्षा।
व्याख्या: लेखमे मातृभाषा शिक्षा आ प्रगतिक सम्बन्ध देखाओल अछि।

प्रश्न 9581. मिथिलांचलमे समस्या किएक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जन-जागरणक अभाव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जन-जागरणक अभाव।
व्याख्या: स्रोतमे अभिभावक आ शिक्षकक असक्रियताक कारण जन-जागरण अभाव कहल अछि।

प्रश्न 9582. खण्ड ९६३क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मातृभाषा-आधारित प्राथमिक शिक्षा ज्ञान, व्यक्तित्व आ भाषा-विकासक आधार अछि।
उत्तर: घ. मातृभाषा-आधारित प्राथमिक शिक्षा ज्ञान, व्यक्तित्व आ भाषा-विकासक आधार अछि।
व्याख्या: ई खण्ड शिक्षा-भाषा सम्बन्धक मूल सिद्धान्त राखैत अछि।

खण्ड ९६४ : विदेह-सदेह २ — प्राथमिक शिक्षा आन्दोलन आ सरकारी उदासीनता

प्रश्न 9583. सन् १९६९ मे अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलन कतय आयोजित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिला मण्डल मुम्बइ द्वारा।
उत्तर: घ. मिथिला मण्डल मुम्बइ द्वारा।
व्याख्या: स्रोतमे १९६९क सम्मेलन मिथिला मण्डल मुम्बइ द्वारा आयोजित कहल गेल।

प्रश्न 9584. ओहि सम्मेलनक विचारणीय बिन्दु की छल?
क. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे ई विषय विचारणीय बिन्दु रूपमे देल अछि।

प्रश्न 9585. शैशवावस्थामे मातृभाषा माध्यमक पहिल लाभ की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मस्तिष्कक विकास सहज आ सुगम होइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मस्तिष्कक विकास सहज आ सुगम होइत अछि।
व्याख्या: जयकान्त मिश्रक विचारमे मातृभाषा बच्चाक प्रारम्भिक विकास सहज करैत अछि।

प्रश्न 9586. मातृभाषा माध्यमे विषय-वस्तुक ज्ञान कोना होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रारम्भिक संस्कार स्थायी होइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रारम्भिक संस्कार स्थायी होइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे विषय-वस्तुक ज्ञान आ संस्कार स्थायी होएबाक बात अछि।

प्रश्न 9587. प्रजातन्त्रक प्रथम शर्त की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जनमानसकेँ शिक्षित करब।
उत्तर: घ. जनमानसकेँ शिक्षित करब।
व्याख्या: स्रोतमे प्रजातन्त्रक प्रथम शर्त शिक्षित जनमानस अछि।

प्रश्न 9588. जीवित प्रजातन्त्रक मूल मन्त्र की कहल गेल?
क. प्राथमिक शिक्षा मातृभाषाक माध्यमे देल जाए।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्राथमिक शिक्षा मातृभाषाक माध्यमे देल जाए।
व्याख्या: स्रोतमे ई स्पष्ट मूल मन्त्र रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 9589. मैथिली कोन कारणे प्राथमिक शिक्षामे अनिवार्य लागू हेबाक योग्य कही गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई प्राचीनतम जीवित भाषा अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ई प्राचीनतम जीवित भाषा अछि।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली प्राचीनतम जीवित भाषा थिक तेँ लागू करबाक बात अछि।

प्रश्न 9590. सरकारपर की करबाक आवश्यकता बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली प्राथमिक शिक्षा लागू करबाक लेल दबाव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली प्राथमिक शिक्षा लागू करबाक लेल दबाव।
व्याख्या: बिहार-झारखण्डक मैथिलीभाषी जिलामे लागू करबाक दबाव आवश्यक कहल अछि।

प्रश्न 9591. सरकारी उदासीनताक परिणाम की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीमे पुस्तक आ अध्यापन व्यवस्था नहि बनल।
उत्तर: घ. मैथिलीमे पुस्तक आ अध्यापन व्यवस्था नहि बनल।
व्याख्या: स्रोतमे प्राथमिक शिक्षाक पुस्तक/अध्यापन व्यवस्था नहिं होएबाक चिन्ता अछि।

प्रश्न 9592. खण्ड ९६४क सार की अछि?
क. प्राथमिक शिक्षा लेल जनमत, दबाव आ सशक्त आन्दोलन आवश्यक अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्राथमिक शिक्षा लेल जनमत, दबाव आ सशक्त आन्दोलन आवश्यक अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मातृभाषा शिक्षा सिद्धान्तकेँ सरकारी नीति-संघर्षसँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ९६५ : विदेह-सदेह २ — जनमत, बधिर सरकार आ प्राथमिक शिक्षा

प्रश्न 9593. सरकारी उदासीनताक कारणेँ मैथिली प्राथमिक शिक्षा क्षेत्रमे कोन अभाव रहि गेल?
क. न मैथिलीमे पुस्तक प्रकाशित भेल, न अध्यापनक व्यवस्था भेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. न मैथिलीमे पुस्तक प्रकाशित भेल, न अध्यापनक व्यवस्था भेल।
व्याख्या: स्रोतमे सरकारक उदासीनतासँ पुस्तक आ अध्यापन दुनूक अभाव चिन्तनीय कहल गेल अछि।

प्रश्न 9594. लेखक सरकारक उदासीनताक विरोधमे की चाहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जनमत-संग्रह आ सशक्त आन्दोलन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जनमत-संग्रह आ सशक्त आन्दोलन।
व्याख्या: स्रोतमे जनमत-संग्रह कऽ बधिर सरकारकेँ जगएबाक बात अछि।

प्रश्न 9595. “बधिर सरकार” रूपक कोन बात सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जन-आवाज सुनबामे सरकारी असंवेदनशीलता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जन-आवाज सुनबामे सरकारी असंवेदनशीलता।
व्याख्या: सरकारकेँ जगएबाक आग्रह एहि असंवेदनशीलताक आलोचना अछि।

प्रश्न 9596. मिथिलांचलमे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम रूपमे मैथिलीकेँ मान्यता कखन भेटत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जखन सुसुप्त सरकारकेँ जगाओल जाएत।
उत्तर: घ. जखन सुसुप्त सरकारकेँ जगाओल जाएत।
व्याख्या: स्रोतमे सुसुप्त सरकार जागए बिना मान्यता नहि भेटबाक बात अछि।

प्रश्न 9597. मिथिला आ मैथिलीक सर्वतोभावेन विकासक लेल की अपेक्षित कहल गेल?
क. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।
व्याख्या: विविध समस्याक निदान लेल प्राथमिक शिक्षा मातृभाषामे आवश्यक मानल गेल।

प्रश्न 9598. जयकान्त मिश्रक आन्दोलनकेँ साकार करबाक लेल घर-घरमे की प्रयास अपेक्षित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बच्चा सभकेँ प्राथमिक शिक्षा देबाक दिशा मे प्रयास।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बच्चा सभकेँ प्राथमिक शिक्षा देबाक दिशा मे प्रयास।
व्याख्या: स्रोतमे घर-घरमे बच्चा सभक प्राथमिक शिक्षा दिस प्रयासक आग्रह अछि।

प्रश्न 9599. भारतीय संविधान, साहित्य अकादेमी आ अन्तरराष्ट्रीय संस्थाक मान्यता पछि प्रश्न की उठैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बिहार सरकार प्राथमिक शिक्षा मे मैथिली लागू किएक नहि करैत अछि?
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बिहार सरकार प्राथमिक शिक्षा मे मैथिली लागू किएक नहि करैत अछि?
व्याख्या: स्रोतमे एहि मान्यता सभक बाद सरकारी अस्वीकारपर प्रश्न उठाओल गेल।

प्रश्न 9600. मैथिली लागू कएलासँ सरकारक विषयमे स्रोत कोन बात कहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सरकारक प्रतिष्ठा बढ़त।
उत्तर: घ. सरकारक प्रतिष्ठा बढ़त।
व्याख्या: लेखमे लागू कएलासँ सरकारक प्रतिष्ठा बढ़बाक बात अछि।

प्रश्न 9601. एहि खण्डमे आन्दोलनक केन्द्रीय लक्ष्य की अछि?
क. प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीक व्यवहारिक कार्यान्वयन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीक व्यवहारिक कार्यान्वयन।
व्याख्या: प्रसंग पुस्तक, अध्यापन आ नीति-कार्यान्वयनक अभावपर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 9602. खण्ड ९६५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जनमत आ सशक्त संघर्ष बिना प्राथमिक शिक्षा मे मैथिली लागू नहि होएत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जनमत आ सशक्त संघर्ष बिना प्राथमिक शिक्षा मे मैथिली लागू नहि होएत।
व्याख्या: ई खण्ड सरकारी उदासीनता आ जन-दबावक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ९६६ : विदेह-सदेह २ — निष्सारण: जयकान्त मिश्रक अक्षय अवदान

प्रश्न 9603. निष्सारणमे जयकान्त मिश्रक अभियानक मूल उद्देश्य की कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली साहित्यक प्राचीनतम परम्पराकेँ सुदृढ़ करब।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली साहित्यक प्राचीनतम परम्पराकेँ सुदृढ़ करब।

व्याख्या: स्रोतमे जनजागरण अभियानकेँ प्राचीन परम्परा सुदृढ़ करबाक दिशा कहल गेल।

प्रश्न 9604. मैथिली मान्यता लेल हुनक संघर्ष कोना रूपायित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दधीचि समान हड्डी गलएबाक संघर्ष।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दधीचि समान हड्डी गलएबाक संघर्ष।

व्याख्या: लेखक दधीचि समान हड्डी गलौलनि कहि त्यागक रूपक देलनि।

प्रश्न 9605. हुनक अवदान अक्षुण्ण रखबाक कर्तव्य केकर अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रत्येक मैथिली भाषी जनमानसक।

उत्तर: घ. प्रत्येक मैथिली भाषी जनमानसक।

व्याख्या: स्रोतमे एकरा प्रत्येक मैथिली भाषीक पुनीत कर्तव्य कहल गेल।

प्रश्न 9606. हुनक आलेखादि कतय- कतय बिखरल कहल गेल?

क. विविध संग्रह, पत्रिका आदि मे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विविध संग्रह, पत्रिका आदि मे।

व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे आलेखादि यत्र-तत्र संग्रहादि आ पत्रिकादिमे प्रकाशित अछि।

प्रश्न 9607. धूलधूसरित आलेख सभकेँ की करबाक आग्रह अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संकलित कऽ प्रकाशमे आनब।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संकलित कऽ प्रकाशमे आनब।

व्याख्या: स्रोतमे बिखरल लेख सभक संकलन-प्रकाशनकेँ कर्तव्य कहल गेल।

प्रश्न 9608. वास्तविक श्रद्धाञ्जलि की मानल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हुनक विचार प्रकाशित कऽ भावी पीढ़ीकेँ दिशा-बोध कराएब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हुनक विचार प्रकाशित कऽ भावी पीढ़ीकेँ दिशा-बोध कराएब।

व्याख्या: लेखक स्पष्ट करैत छथि जे विचार-प्रकाशन भावी पीढ़ीक दिशा-बोध बनत।

प्रश्न 9609. ई काज नहि भेल तँ की आशंका व्यक्त भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अक्षय कीर्ति कालक प्रवाहमे विलीन भऽ जाएत।
उत्तर: घ. अक्षय कीर्ति कालक प्रवाहमे विलीन भऽ जाएत।
व्याख्या: स्रोतमे गिरि-गहवरमे विलीन होएबाक रूपक प्रयोग अछि।

प्रश्न 9610. निष्सारणमे जयकान्त मिश्रक स्मृति मात्र भावुकता नहि, की बनैत अछि?
क. संरक्षण, प्रकाशन आ अध्ययनक आह्वान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संरक्षण, प्रकाशन आ अध्ययनक आह्वान।
व्याख्या: लेखक श्रद्धाञ्जलिकेँ सक्रिय सम्पादन-प्रकाशनसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 9611. मैथिली भाषी समाजक पुनीत कर्तव्य कोन दोसर बात अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हुनक अभियानकेँ अग्रगति देब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हुनक अभियानकेँ अग्रगति देब।
व्याख्या: स्रोतमे अवदान अक्षुण्ण राखि ओकरा अग्रगति देबाक बात अछि।

प्रश्न 9612. खण्ड ९६६क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जयकान्त मिश्रक अवदानकेँ संकलन, प्रकाशन आ जन-दिशा-बोधसँ जीवित राखब आवश्यक अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त मिश्रक अवदानकेँ संकलन, प्रकाशन आ जन-दिशा-बोधसँ जीवित राखब आवश्यक अछि।
व्याख्या: ई निष्सारण श्रद्धा, कर्तव्य आ सांस्कृतिक स्मृति संरक्षणक पाठ दैत अछि।

खण्ड ९६७ : विदेह-सदेह २ — आदर्श पुरुष, मातृभाषानुराग आ सुनीति कुमार चटर्जी

प्रश्न 9613. लेखक अनुसार मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध आ व्यापक स्वरूप के देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जयकान्त मिश्र अपन सत्प्रयाससँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त मिश्र अपन सत्प्रयाससँ।
व्याख्या: स्रोतमे ई श्रेय आ प्रेय हिनके धनि कहल गेल अछि।

प्रश्न 9614. हुनक कार्य मैथिलीक कोन बात सुरक्षित करए मे समर्थ भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अस्तित्व।
उत्तर: घ. अस्तित्व।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे समृद्ध स्वरूप मैथिलीक अस्तित्व सुरक्षित कऽ सकल।

प्रश्न 9615. हुनका समक्ष कोन कठिनाई छल?
क. कोनो आदर्श उपलब्ध नहि छल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कोनो आदर्श उपलब्ध नहि छल।
व्याख्या: स्रोतमे हुनका समक्ष कोनो आदर्श नहि छलनि कहल गेल।

प्रश्न 9616. तथापि ओ केहन पुरुष मानल गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मातृभाषाक सम्बर्द्धनार्थ आदर्श पुरुष।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मातृभाषाक सम्बर्द्धनार्थ आदर्श पुरुष।
व्याख्या: ओ मार्ग निर्देशक आ आदर्श पुरुष रूपमे वर्णित छथि।

प्रश्न 9617. ओ मातृभाषानुरागक संबंधमे की कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बीज वपन कएलनि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बीज वपन कएलनि।
व्याख्या: स्रोतमे ओ मातृभाषानुरागक बीजक वपन कएलनि कहल गेल।

प्रश्न 9618. हुनक व्यक्तित्वक तीन प्रमुख गुण कोन-कोन कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तप, त्याग आ कर्मशीलता।
उत्तर: घ. तप, त्याग आ कर्मशीलता।
व्याख्या: स्रोतमे तप, त्याग, तपस्या, कर्मशीलता आ अटलता सभ आयल अछि।

प्रश्न 9619. मैथिली प्रेमी जनमानस लेल ओ की बनल रहताह?
क. चिरन्तन प्रेरणा-स्रोत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चिरन्तन प्रेरणा-स्रोत।
व्याख्या: लेखक हुनका सतत प्रेरणा-स्रोत कहैत छथि।

प्रश्न 9620. सुनीति कुमार चटर्जी कोन ग्रन्थक प्रथम खण्डक फारवार्ड लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली शब्द कोश।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली शब्द कोश।
व्याख्या: स्रोतमे सुनीति कुमार चटर्जी द्वारा मैथिली शब्द कोशक प्रथम खण्डक फारवार्ड उल्लेख अछि।

प्रश्न 9621. चटर्जी जयकान्त मिश्रकेँ ग्रियर्सनक बाद कोन रूपमे देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिलीक महान हितैषी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीक महान हितैषी।
व्याख्या: उद्धृत कथनक आशय अछि जे ग्रियर्सनक बाद ओ मैथिलीक महान उपकारी मानल गेलाह।

प्रश्न 9622. खण्ड ९६७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जयकान्त मिश्र आदर्श, प्रेरणा आ मैथिलीक आधुनिक हितैषी रूपमे प्रतिष्ठित छथि।
उत्तर: घ. जयकान्त मिश्र आदर्श, प्रेरणा आ मैथिलीक आधुनिक हितैषी रूपमे प्रतिष्ठित छथि।
व्याख्या: ई खण्ड हुनक वैदुष्य, मातृभाषानुराग आ बाहरी विद्वानक मान्यताकेँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ९६८ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ-सुभद्र जन्मशती आ पहिल दशकक चेतना

प्रश्न 9623. तन्त्रानाथ झा / सुभद्र झा जन्मशतवार्षिकी लेख के लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. डा. रमानन्द झा ‘रमण’।
उत्तर: घ. डा. रमानन्द झा ‘रमण’।
व्याख्या: स्रोतमे शीर्षक अघि डा. रमानन्द झा ‘रमण’ नाम देल अछि।

प्रश्न 9624. लेखक राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्रामक आगिसँ संग-संग मिथिलामे कोन चेतना घनीभूत भेल कहैत छथि?
क. भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकास-संरक्षणक चेतना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकास-संरक्षणक चेतना।
व्याख्या: स्रोतमे स्वाधीनता संग्रामक आगिसँ मिथिला चेतनाक घनीभूत होएब वर्णित अछि।

प्रश्न 9625. पहिल दशककेँ मैथिली इतिहासमे विशेष दशक किएक मानल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशन आ साहित्यकार जन्मक कारण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशन आ साहित्यकार जन्मक कारण।
व्याख्या: स्रोतमे एहि दशकमे पत्र-पत्रिका आरम्भ आ अनेक अवदानी साहित्यकारक जन्मक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9626. मैथिली पत्र-पत्रिका आरम्भ करबाक सन्दर्भमे कोन दू नाम स्मरणीय अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मधुसूदन ओझा आ मुरलीधर झा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मधुसूदन ओझा आ मुरलीधर झा।
व्याख्या: लेखमे विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा आ म.म. मुरलीधर झाक नाम अछि।

प्रश्न 9627. एहि दशकमे कमसँ कम कतेक अवदानी साहित्यकारक जन्म कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. एक सोरहि।
उत्तर: घ. एक सोरहि।
व्याख्या: स्रोतमे कमसँ कम एक सोड़हि मैथिलीक अवदानी साहित्यकार जन्म भेल कहल अछि।

प्रश्न 9628. एहि साहित्यकार सभ मैथिलीक लेल की स्थापित कएलनि?
क. भाषा लेल विभिन्न प्रतिमान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा लेल विभिन्न प्रतिमान।
व्याख्या: स्रोतमे मानकीकरण आ विभिन्न प्रतिमान स्थापित करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9629. हुनका लोकनिक संघर्षशील व्यक्तित्वसँ मैथिलीक की सुदृढ़ भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आधार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आधार।
व्याख्या: लेखमे संघर्षशील व्यक्तित्वसँ मैथिलीक आधार सुदृढ़ भेल कहल अछि।

प्रश्न 9630. जन्मशतवार्षिकी आयोजन कोना मूल्यांकित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. श्लाघ्य, प्रेरणास्पद आ स्वागतयोग्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. श्लाघ्य, प्रेरणास्पद आ स्वागतयोग्य।
व्याख्या: स्रोतमे एहन आयोजनकेँ श्लाघ्य एवं प्रेरणास्पद कहल गेल।

प्रश्न 9631. सरिसब परिसरक महत्त्व कोना आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अनेक अवदानी साहित्यकार सरिसब परिसरक वा तकरा सम्बद्ध छलाह।
उत्तर: घ. अनेक अवदानी साहित्यकार सरिसब परिसरक वा तकरा सम्बद्ध छलाह।
व्याख्या: स्रोतमे सूचीमे अधिकांश लोक सरिसब परिसरक वा सम्बद्ध कहल गेल।

प्रश्न 9632. खण्ड ९६८क निचोड़ की अछि?
क. पहिल दशकक साहित्यकार आ संस्थागत चेतना मैथिलीक आधुनिक आधार बनौलनि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पहिल दशकक साहित्यकार आ संस्थागत चेतना मैथिलीक आधुनिक आधार बनौलनि।
व्याख्या: ई खण्ड जन्मशतीकेँ इतिहास-स्मरण आ प्रेरणा-दृष्टिसँ देखैत अछि।

खण्ड ९६९ : विदेह-सदेह २ — “हम आगि” आ तन्त्रानाथ बसात

प्रश्न 9633. “हम आगि आ हमरा प्रज्ज्वलित कएनिहार तन्त्रानाथ बसात” के लिखलनि?
क. डा. सुभद्र झा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डा. सुभद्र झा।
व्याख्या: स्रोतमे ई कथन सुभद्र झाक रूपमे उद्धृत अछि।

प्रश्न 9634. सुभद्र झाक जन्म तिथि की देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ९ जुलाइ १९०९।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ९ जुलाइ १९०९।
व्याख्या: स्रोतमे सुभद्र झाक जन्म 09 जुलाइ 1909 देल अछि।

प्रश्न 9635. सुभद्र झाक देहावसान तिथि की देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १३ मई २०००।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १३ मई २०००।
व्याख्या: स्रोतमे देहावसान 13 मई 2000 कहल अछि।

प्रश्न 9636. तन्त्रानाथ झाक जन्म तिथि की देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. २२ अगस्त १९०९।
उत्तर: घ. २२ अगस्त १९०९।
व्याख्या: स्रोतमे तन्त्रानाथ झाक जन्म 22 अगस्त 1909 अछि।

प्रश्न 9637. तन्त्रानाथ झाक देहावसान तिथि की देल अछि?
क. २ मई १९८४।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. २ मई १९८४।
व्याख्या: स्रोतमे देहावसान 02 मई 1984 देल अछि।

प्रश्न 9638. दूनू व्यक्तित्वक पारिवारिक पृष्ठभूमि आ विषय सम्बन्धमे स्रोत की कहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पृष्ठभूमि, अध्ययन-विषय आ स्वभाव भिन्न छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पृष्ठभूमि, अध्ययन-विषय आ स्वभाव भिन्न छल।
व्याख्या: लेखक भिन्नता स्वीकार करैत छथि, तथापि सहयोगक महत्त्व देखबैत छथि।

प्रश्न 9639. आगि आ बसातक संयुक्त प्रभाव कोन संस्थागत बाधा हटौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक बाटक ढेंग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक बाटक ढेंग।
व्याख्या: स्रोतमे आगि-बसातक ताप सँ स्वीकृति-मार्गक ढेंग जरि सुड्डाह भेल कहल अछि।

प्रश्न 9640. दुर्गानाथ झा ‘श्रीश’ तन्त्रानाथ झाकेँ कोन रूपमे देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली साहित्यक सजग प्रहरी आ सिनेट सदस्य।
उत्तर: घ. मैथिली साहित्यक सजग प्रहरी आ सिनेट सदस्य।
व्याख्या: स्रोतमे ई विशेषण दुर्गानाथ झाक लिखबासँ उद्धृत अछि।

प्रश्न 9641. सुभद्र झाक सहयोग बिना तन्त्रानाथ झाक कोन श्रेय कठिन छल?
क. विश्वविद्यालय स्तरपर मैथिली मान्यता हेतु सफल नेतृत्व।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विश्वविद्यालय स्तरपर मैथिली मान्यता हेतु सफल नेतृत्व।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे सुभद्र सहयोग बिना ई श्रेय सम्भव नहि छल।

प्रश्न 9642. खण्ड ९६९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुभद्र झा आ तन्त्रानाथ झाक मित्रता भिन्न स्वभावकेँ मिलाए भाषिक संघर्षक शक्ति बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुभद्र झा आ तन्त्रानाथ झाक मित्रता भिन्न स्वभावकेँ मिलाए भाषिक संघर्षक शक्ति बनल।
व्याख्या: ई खण्ड आगि-बसात रूपक द्वारा सहयोगक ऐतिहासिक अर्थ खोलैत अछि।

खण्ड ९७० : विदेह-सदेह २ — पटना विश्वविद्यालय आ मैथिली स्वीकृति संघर्ष

प्रश्न 9643. तन्त्रानाथ-सुभद्र सहयोगक मुख्य संस्थागत लक्ष्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति।
व्याख्या: स्रोतमे पटना विश्वविद्यालयक स्वीकृतिक बाटक बाधा हटबाक चर्चा अछि।

प्रश्न 9644. सुभद्र झाक चतुर प्रयाससँ तन्त्रानाथ झा कोन पदपर निर्वाचित भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सिनेटर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सिनेटर।
व्याख्या: स्रोतमे सुभद्र झाक प्रयाससँ तन्त्रानाथ झा सिनेटर निर्वाचित भेल कहल अछि।

प्रश्न 9645. सिनेट सदस्यता मैथिली आन्दोलन लेल किएक महत्त्वपूर्ण छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विश्वविद्यालयीय मंचपर स्वीकृति-प्रयासक अवसर भेटल।
उत्तर: घ. विश्वविद्यालयीय मंचपर स्वीकृति-प्रयासक अवसर भेटल।
व्याख्या: सिनेटक भूमिका विश्वविद्यालय मान्यता संघर्षसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 9646. दुर्गानाथ झा अनुसार तन्त्रानाथ झा केकर संग स्वीकृति-कार्यक संयोजन करथि?
क. डॉ. सुभद्र झाक संग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डॉ. सुभद्र झाक संग।
व्याख्या: स्रोतमे तन्त्रानाथ झा अपन अनन्य मित्र सुभद्र झाक संग सभ कार्यक संयोजन कएल करथि।

प्रश्न 9647. मैथिली मान्यता संघर्षमे नेतृत्वक सफलता केकर संयुक्तता पर निर्भर बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झाक संयुक्त प्रयासपर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झाक संयुक्त प्रयासपर।
व्याख्या: स्रोत सुभद्र सहयोग बिना श्रेय सम्भव नहि मानैत अछि।

प्रश्न 9648. “सूर्पनखा” रूपक द्वारा लेखक कोन खतरा सूचित करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिलीकेँ विपरीत हाथमे पड़बाक वा अपमानित होएबाक खतरा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीकेँ विपरीत हाथमे पड़बाक वा अपमानित होएबाक खतरा।
व्याख्या: रूपक स्वीकृति-संघर्षक असफलता पर सम्भावित हानिक संकेत अछि।

प्रश्न 9649. विश्वविद्यालयीय मान्यता संघर्षक स्वरूप की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संगठित, संयोजित आ संस्थागत प्रयास।
उत्तर: घ. संगठित, संयोजित आ संस्थागत प्रयास।
व्याख्या: सिनेट, संयोजन आ सहयोग सब संस्थागत आन्दोलन देखबैत अछि।

प्रश्न 9650. सुभद्र झाक सहयोग तन्त्रानाथ लेल कोना देखाओल गेल?
क. डेग-डेग पर आवश्यक सहयोग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डेग-डेग पर आवश्यक सहयोग।
व्याख्या: स्रोतमे डेग-डेग पर सहयोग नहि भेटल रहित तँ सफलता कठिन कहल अछि।

प्रश्न 9651. एहि प्रसंगमे मित्रता मात्र निजी नहि, की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषा-अधिकारक सार्वजनिक साधन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषा-अधिकारक सार्वजनिक साधन।
व्याख्या: मित्रता विश्वविद्यालयीय स्वीकृति आन्दोलनक आधार बनल।

प्रश्न 9652. खण्ड ९७०क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली स्वीकृति तन्त्रानाथ-सुभद्रक संयुक्त संस्थागत संघर्षक फल छल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली स्वीकृति तन्त्रानाथ-सुभद्रक संयुक्त संस्थागत संघर्षक फल छल।
व्याख्या: ई खण्ड व्यक्तिगत वैदुष्यकेँ संगठन आ मंच-संघर्षसँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ९७१ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झाक आन्दोलनात्मक अवदान

प्रश्न 9653. तन्त्रानाथ झाक अवदान कोन दू कोटिमे राखल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आन्दोलनात्मक आ साहित्य-सर्जना द्वारा संवर्धन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आन्दोलनात्मक आ साहित्य-सर्जना द्वारा संवर्धन।
व्याख्या: स्रोतमे अवदानक दू कोटि स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 9654. आन्दोलनात्मक काजक पहिल क्षेत्र की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पटना विश्वविद्यालयक उच्चतर कक्षामे मैथिलीक स्वीकृति।
उत्तर: घ. पटना विश्वविद्यालयक उच्चतर कक्षामे मैथिलीक स्वीकृति।
व्याख्या: स्रोतक चारि प्रकारक काजमे ई पहिल अछि।

प्रश्न 9655. दोसरा क्षेत्रमे ओ केकर लेल संघर्ष कएलनि?
क. शिक्षक समुदायक लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शिक्षक समुदायक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे शिक्षक समुदायक लेल संघर्ष दोसर अवदान कहल अछि।

प्रश्न 9656. शिक्षा विकासक क्षेत्रमे चन्द्रधारी मिथिला कालेज सम्बन्धी की उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विभिन्न विषयक पढ़ाइक आरम्भ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विभिन्न विषयक पढ़ाइक आरम्भ।
व्याख्या: स्रोतमे चन्द्रधारी मिथिला कालेजमे विषय-पढ़ाइ आरम्भ होएबाक बात अछि।

प्रश्न 9657. सरिसबमे हुनक सत्प्रयाससँ की स्थापना भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कालेज।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कालेज।
व्याख्या: स्रोतमे सरिसबमे कालेज स्थापना हुनक सत्प्रयाससँ कहल अछि।

प्रश्न 9658. अखिल मैथिली साहित्य परिषदमे ओ कोन भूमिका मे छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मन्त्री।
उत्तर: घ. मन्त्री।
व्याख्या: स्रोतमे अखिल मैथिली साहित्य परिषदक मन्त्री रूपमे योगदान अछि।

प्रश्न 9659. परिषदक मन्त्री रूपमे मुख्य कार्य की छल?
क. मैथिली भाषा आ साहित्यक प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली भाषा आ साहित्यक प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन।
व्याख्या: स्रोतमे ई चौथा आन्दोलनात्मक काज अछि।

प्रश्न 9660. लेखक सामाजिक संलग्नता ह्रासक कोन प्रवृत्ति आलोचित करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “हमर काज केवल पढ़ाएब वा लिखब” वाली अलगाव-दृष्टि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “हमर काज केवल पढ़ाएब वा लिखब” वाली अलगाव-दृष्टि।
व्याख्या: स्रोतमे कतेको लोकक ई कथन आलोचनात्मक रूपमे देल अछि।

प्रश्न 9661. तन्त्रानाथ झा एहि अलगाव-दृष्टिसँ कोना भिन्न छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओ अधिकार-संघर्ष, अध्यापन आ सर्जनाकेँ अलग नहि मानैत छलाह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओ अधिकार-संघर्ष, अध्यापन आ सर्जनाकेँ अलग नहि मानैत छलाह।
व्याख्या: स्रोतमे तन्त्रानाथ-सुभद्र एहि विचारक नहि छलाह कहल अछि।

प्रश्न 9662. खण्ड ९७१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तन्त्रानाथ झाक आन्दोलन भाषा-स्वीकृति, शिक्षक-हित, शिक्षा-विकास आ साहित्य-संवर्धन धरि फैलल छल।
उत्तर: घ. तन्त्रानाथ झाक आन्दोलन भाषा-स्वीकृति, शिक्षक-हित, शिक्षा-विकास आ साहित्य-संवर्धन धरि फैलल छल।
व्याख्या: चारि क्षेत्रक सूची हुनक सक्रिय सार्वजनिक अवदान देखबैत अछि।

खण्ड ९७२ : विदेह-सदेह २ — साहित्य-सर्जना आ आन्दोलनक पूरकता

प्रश्न 9663. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा केहन विचारक नहि छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अधिकार-संघर्ष, संरक्षण, अध्यापन आ सर्जना अलग-अलग वर्गक दायित्व अछि।

उत्तर: घ. अधिकार-संघर्ष, संरक्षण, अध्यापन आ सर्जना अलग-अलग वर्गक दायित्व अछि।

व्याख्या: स्रोतमे एहि पृथक्करणक विचारक खण्डन अछि।

प्रश्न 9664. ओ साहित्य-सर्जना आ मैथिली आन्दोलनमे सक्रियताकेँ कोना मानैत छलाह?

क. एक-दोसरक पूरक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक-दोसरक पूरक।

व्याख्या: लेखमे ई बात स्पष्ट कहल गेल।

प्रश्न 9665. कांचीनाथ झा ‘किरण’क नाम आदरसँ किएक लेल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य-सर्जना आ जागरण-अभियान दुनूमे सक्रिय रहबाक कारण।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य-सर्जना आ जागरण-अभियान दुनूमे सक्रिय रहबाक कारण।

व्याख्या: स्रोतमे किरणक उदाहरण एही कारणसँ देल अछि।

प्रश्न 9666. सरकारी मान्यता आ सुविधाक अछैतो सामाजिक स्वीकार्यता विषयमे लेखक कोन चिन्ता करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिली प्राध्यापक वा साहित्यकारक सामाजिक स्वीकार्यता ह्रासोन्मुख अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिली प्राध्यापक वा साहित्यकारक सामाजिक स्वीकार्यता ह्रासोन्मुख अछि।

व्याख्या: स्रोतमे ई स्थिति चिन्ताजनक रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 9667. आर. केलकरक कोंकणी संघर्षक उदाहरण एहि प्रसंगमे किएक उपयोगी अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा-समृद्धि, भाषाविज्ञान आ राजनीति धरि संघर्षक रूपक लेल।

उत्तर: घ. भाषा-समृद्धि, भाषाविज्ञान आ राजनीति धरि संघर्षक रूपक लेल।

व्याख्या: स्रोतमे केलकर भाषासंरक्षण लेल लेखक, भाषावैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ बनल उदाहरण रूपमे आयल।

प्रश्न 9668. भाषाकेँ “बोली” कहि अपमानित कएल गेल तँ केलकर की बनलाह?

क. भाषाविज्ञानक छात्र।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषाविज्ञानक छात्र।

व्याख्या: स्रोतक कथनमे बोली कहि अपमान पर भाषाविज्ञानक छात्र बनबाक बात अछि।

प्रश्न 9669. गोवाकेँ मानचित्रसँ पोछबाक चालि प्रसंगमे केलकर कोन भूमिका लेलथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राजनीतिज्ञ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. राजनीतिज्ञ।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा-रक्षा संघर्षक अन्तिम रूप राजनीति बनल कहल अछि।

प्रश्न 9670. मैथिलीक विश्वविद्यालयीय मान्यता लेल के आदर्श पुरुष कहल गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा।
व्याख्या: स्रोतमे दुनूकेँ व्यूह-रचनाकार आ आदर्श पुरुष कहल गेल।

प्रश्न 9671. एहि खण्डक मुख्य विचार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषा-साहित्यक सेवा केवल लेखन नहि, सार्वजनिक संघर्ष सेहो अछि।
उत्तर: घ. भाषा-साहित्यक सेवा केवल लेखन नहि, सार्वजनिक संघर्ष सेहो अछि।
व्याख्या: स्रोत सर्जना आ आन्दोलन पूरक बतबैत अछि।

प्रश्न 9672. खण्ड ९७२क निचोड़ की अछि?
क. मैथिली सेवामे रचनाकार, शिक्षक आ आन्दोलनकारी भूमिका एक-दोसरसँ अलग नहि अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली सेवामे रचनाकार, शिक्षक आ आन्दोलनकारी भूमिका एक-दोसरसँ अलग नहि अछि।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक कर्मकेँ सामाजिक संघर्षक संग जोड़ैत अछि।

खण्ड ९७३ : विदेह-सदेह २ — विषय अलग, मातृभाषा सेवा एक

प्रश्न 9673. तन्त्रानाथ झाक व्यक्तित्वसँ लेखक कोन प्रेरणा लेबाक कहैत छथि?
क. आजीविकाक विषय भिन्न होइतो मातृभाषा सेवा सम्भव अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आजीविकाक विषय भिन्न होइतो मातृभाषा सेवा सम्भव अछि।
व्याख्या: स्रोतमे विषय भिन्न रहलहुँपर अनुराग हो तँ बाधा नहि कहल अछि।

प्रश्न 9674. मातृभाषा सेवा लेल मुख्य शर्त की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मातृभाषाक प्रति अनुराग।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मातृभाषाक प्रति अनुराग।
व्याख्या: स्रोतमे अनुराग रहला पर बाधा-व्यवधान नहि छैक कहल अछि।

प्रश्न 9675. प्रो. हरिमोहन झा की पढ़लनि-पढ़ौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दर्शनशास्त्र।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दर्शनशास्त्र।
व्याख्या: स्रोतमे हरिमोहन झा दर्शनशास्त्र पढ़लनि आ पढ़ौलनि कहल अछि।

प्रश्न 9676. हरिमोहन झा कोन भाषामे लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीमे।
उत्तर: घ. मैथिलीमे।
व्याख्या: स्रोतमे ओ दर्शन पढ़ौलनि मुदा मैथिलीमे लिखलनि कहल अछि।

प्रश्न 9677. डा. जयकान्त मिश्र आ प्रो. उमानाथ झा कोन विषय पढ़लनि-पढ़ौलनि?
क. अंग्रेजी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अंग्रेजी।
व्याख्या: स्रोतमे दुनू अंग्रेजी पढ़लनि-पढ़ौलनि कहल अछि।

प्रश्न 9678. जयकान्त मिश्र आ उमानाथ झा कोन भाषाक भंडार भरलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीक।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजी पढ़ाइतो मैथिलीक भंडार भरबाक बात अछि।

प्रश्न 9679. प्रो. प्रबोधनारायण सिंह कोन विषय पढ़लनि-पढ़ौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हिन्दी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हिन्दी।
व्याख्या: स्रोतमे ओ हिन्दी पढ़लनि-पढ़ौलनि कहल अछि।

प्रश्न 9680. प्रबोधनारायण सिंह आजीवन कोन भाषाक लेल समर्पित रहलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीक लेल।
उत्तर: घ. मैथिलीक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे आजीवन मैथिलीक लेल समर्पित रहलाह।

प्रश्न 9681. सम्प्रति आन विषयक मैथिल प्राध्यापक सम्बन्धी लेखकक चिन्ता की अछि?
क. मैथिली पढ़बा-लिखबामे अरुचि आ मातृभाषा-रचना के हीनता बुझब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली पढ़बा-लिखबामे अरुचि आ मातृभाषा-रचना के हीनता बुझब।
व्याख्या: स्रोतमे एहि मानसिकताक आलोचना अछि।

प्रश्न 9682. खण्ड ९७३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आजीविका-विषय भिन्न होएबाक बादो मातृभाषा सेवा सम्भव आ आवश्यक अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आजीविका-विषय भिन्न होएबाक बादो मातृभाषा सेवा सम्भव आ आवश्यक अछि।
व्याख्या: तन्त्रानाथ आ अन्य विद्वानक उदाहरण एहि विचारकेँ पुष्ट करैत अछि।

खण्ड ९७४ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झाक सर्जनात्मक संसार

प्रश्न 9683. तन्त्रानाथ झाक सर्जनात्मक प्रतिभा कखनसँ देखाइ लागल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बाल्यकालहिमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बाल्यकालहिमे।
व्याख्या: स्रोतमे बाल्यकालहिमे प्रतिभाक दर्शन होएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9684. हुनक सर्जनात्मक पृष्ठभूमिमे मातृकुलक कोन प्रभाव कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पाण्डित्य आ साहित्य-सर्जनाक सुदीर्घ परम्परा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पाण्डित्य आ साहित्य-सर्जनाक सुदीर्घ परम्परा।
व्याख्या: स्रोतमे मातृकुलक पाण्डित्य-परम्पराक प्रभावक सम्भावना अछि।

प्रश्न 9685. तात्कालिक प्रेरक के भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अग्रज आचार्य रमानाथ झा।
उत्तर: घ. अग्रज आचार्य रमानाथ झा।
व्याख्या: स्रोतमे रमानाथ झाक प्रेरणा सीधे देल अछि।

प्रश्न 9686. तन्त्रानाथ झा कोन रचना “मेघनाद बध”क आदर्शपर लिखलनि?
क. कीचक बध।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कीचक बध।
व्याख्या: स्रोतमे माइकेल मधुसूदन दत्तक मेघनाद बधक आदर्शपर कीचक बध लिखल गेल।

प्रश्न 9687. “कीचक बध” कोन पत्रिका लेल सर्जित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साहित्य पत्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साहित्य पत्र।
व्याख्या: स्रोतमे साहित्य पत्र लेल कीचक बधक सर्जना कहल अछि।

प्रश्न 9688. तन्त्रानाथ झाक मैथिली साहित्य-सेवा कोन दू क्षेत्रमे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गद्य आ पद्य दुनू।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गद्य आ पद्य दुनू।
व्याख्या: स्रोतमे गद्य एवं पद्य दूनू क्षेत्रक सेवा कहल अछि।

प्रश्न 9689. पद्य साहित्यमे कोन दू महाकाव्यक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कीचक बध आ कृष्णचरित।
उत्तर: घ. कीचक बध आ कृष्णचरित।
व्याख्या: स्रोतमे पद्य अन्तर्गत ई दुनू महाकाव्य देल अछि।

प्रश्न 9690. कविता-संग्रहमे कोन-कोन नाम अछि?
क. मंगलपंचाशिका, नमस्या आ कीर्ण-विकीर्ण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मंगलपंचाशिका, नमस्या आ कीर्ण-विकीर्ण।
व्याख्या: स्रोतमे ई तीन कविता संग्रहक नाम अछि।

प्रश्न 9691. गद्यमे कोन विधा सभ उल्लेखित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एकांकी, निबन्ध, ललित निबन्ध, संस्मरण, कथा आ बाल कथा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एकांकी, निबन्ध, ललित निबन्ध, संस्मरण, कथा आ बाल कथा।
व्याख्या: स्रोतमे गद्यक विविध क्षेत्र बताओल गेल।

प्रश्न 9692. खण्ड ९७४क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तन्त्रानाथ झा बाल्य प्रतिभासँ गद्य-पद्यक बहुविध सर्जक बनलाह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तन्त्रानाथ झा बाल्य प्रतिभासँ गद्य-पद्यक बहुविध सर्जक बनलाह।
व्याख्या: ई खण्ड हुनक रचनासंसारक व्यापकता देखबैत अछि।

खण्ड ९७५ : विदेह-सदेह २ — मिथिलाक्षर संरक्षण, अनुवाद आ नाट्यसार

प्रश्न 9693. मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रसार लेल तन्त्रानाथ झा की कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अपन हाथेँ किछु कथा लिखि लिथो कराए प्रकाशित करौलनि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अपन हाथेँ किछु कथा लिखि लिथो कराए प्रकाशित करौलनि।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिलाक्षर प्रचार लेल हाथेँ कथा लिखि लिथो प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9694. एहि प्रयासक महत्त्व कथा-दृष्टिसँ अतिरिक्त कोन दृष्टिसँ विशेष अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा आ मिथिलाक्षर संरक्षणक दृष्टिसँ।

उत्तर: घ. मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा आ मिथिलाक्षर संरक्षणक दृष्टिसँ।

व्याख्या: स्रोतमे कथा-दृष्टिसँ अलग सांस्कृतिक सम्पदा आ लिपि-संरक्षणक महत्त्व कहल गेल।

प्रश्न 9695. तन्त्रानाथ झा कोन दू ग्रन्थक किछु अंशक भाषा-अनुवाद कएलनि?

क. कीर्तिलता आ हितोपदेश।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कीर्तिलता आ हितोपदेश।

व्याख्या: स्रोतमे ई दुनू ग्रन्थक अंश-अनुवाद देल अछि।

प्रश्न 9696. ओ कोन तीन नाटकक गद्य नाट्यसार प्रकाशित कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हेमलेट, मालती-माधव आ रत्नावली।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हेमलेट, मालती-माधव आ रत्नावली।

व्याख्या: स्रोतमे तीनू नाम गद्यमे नाट्यसार रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 9697. एहि अनुवाद आ नाट्यसारमे लेखक कोन विशेषता देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तन्त्रानाथ झाक विलक्षण गद्य।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तन्त्रानाथ झाक विलक्षण गद्य।

व्याख्या: स्रोतमे एहि सभमे विलक्षण गद्यक दर्शन होइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 9698. हुनक अनुसंधानपरक निबन्ध कोन भाषामे छपल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अंग्रेजी वा मैथिलीमे।

उत्तर: घ. अंग्रेजी वा मैथिलीमे।

व्याख्या: स्रोतमे अङरेजी वा मैथिलीमे पत्र-पत्रिकामे छपल असंकलित निबन्धक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9699. कवि रविनाथकृत कोन विषयक वर्णन असंकलित निबन्धमे प्रमुख अछि?
क. सन १३०४ सालक रौदीक वर्णन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सन १३०४ सालक रौदीक वर्णन।
व्याख्या: स्रोतमे प्रमुख असंकलित निबन्धमे ई नाम अछि।

प्रश्न 9700. सन्तकवि सम्बन्धी कोन विषयक निबन्ध उल्लेखित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सन्तकवि रामदास।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सन्तकवि रामदास।
व्याख्या: स्रोतमे सन्तकवि रामदास प्रमुख निबन्ध रूपमे देल अछि।

प्रश्न 9701. मैथिल पण्डितक साहसिक प्रसंगमे कोन दू नाम आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सचल मिश्र आ मोहन मिश्र।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सचल मिश्र आ मोहन मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे एडवेंचर्स ऑफ मैथिल पण्डित्स प्रसंगमे ई दू नाम देल अछि।

प्रश्न 9702. खण्ड ९७५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तन्त्रानाथ झाक गद्य, अनुवाद, नाट्यसार आ मिथिलाक्षर-प्रयास साहित्य-संरक्षणक बहुमुखी रूप अछि।
उत्तर: घ. तन्त्रानाथ झाक गद्य, अनुवाद, नाट्यसार आ मिथिलाक्षर-प्रयास साहित्य-संरक्षणक बहुमुखी रूप अछि।
व्याख्या: ई खण्ड रचनात्मकता आ सांस्कृतिक संरक्षणकेँ एक संग देखबैत अछि।

खण्ड ९७६ : विदेह-सदेह २ — प्रयोगशीलता आ शिल्प-विस्तार

प्रश्न 9703. तन्त्रानाथ झाक साहित्यक पहिल विशेषता कोन रूपमे देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रयोगशीलता।
उत्तर: घ. प्रयोगशीलता।
व्याख्या: स्रोतमे “प्रयोगशीलता” शीर्षक अन्तर्गत हुनका प्रयोगशील रचनाकार कहल गेल।

प्रश्न 9704. हुनक प्रयोगशीलतासँ के लाभान्वित भेल?
क. मैथिली साहित्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली साहित्य।
व्याख्या: स्रोतमे तन्त्रानाथ झा प्रयोगशील रचनाकार छलाह, एहिसँ मैथिली साहित्य लाभान्वित भेल कहल अछि।

प्रश्न 9705. साहित्यपत्रमे पारम्परिक मानदण्डपर कोन कृति छपैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एकावली परिणय।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एकावली परिणय।
व्याख्या: स्रोतमे कविशेखर बदरीनाथ झाक एकावली परिणयक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9706. एकावली परिणय सामान्य पाठक लेल किएक कठिन कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तकर भाषा-शिल्प सरल नहि छल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तकर भाषा-शिल्प सरल नहि छल।
व्याख्या: स्रोतमे सामान्य पाठकक रसबोध लेल सरल नहि कहल जाएत कहि संकेत देल अछि।

प्रश्न 9707. तन्त्रानाथ झा एकावली परिणयक विपरीत कोन शैली अपनौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मुक्त-वृत्त आ सरल भाषा।
उत्तर: घ. मुक्त-वृत्त आ सरल भाषा।
व्याख्या: स्रोतमे मुक्त-वृत्त एवं सरल भाषामे कीचकबध लिखबाक बात अछि।

प्रश्न 9708. कीचकबध द्वारा मैथिलीमे कोन शिल्पक श्रीगणेश भेल?
क. मुक्त-वृत्त शिल्प।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मुक्त-वृत्त शिल्प।
व्याख्या: स्रोतमे कीचकबधसँ मुक्त-वृत्त शिल्पक मैथिलीमे श्रीगणेश कहल अछि।

प्रश्न 9709. मैथिली पाठक समुदाय लेल कीचकबधक प्रकाशन कोना वर्णित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गुमकीक बाद सिहकी सन सुखद।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गुमकीक बाद सिहकी सन सुखद।
व्याख्या: स्रोतमे ई रूपक प्रयुक्त अछि।

प्रश्न 9710. तन्त्रानाथ झा आओर कोन काव्य-रूप लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सोनेट।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सोनेट।
व्याख्या: स्रोतमे “एहिना ओ सोनेट लिखल” कहल अछि।

प्रश्न 9711. मैथिली कथाक क्षेत्रमे ओ की तोड़ने छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शिल्प सम्बन्धी जड़ता।
उत्तर: घ. शिल्प सम्बन्धी जड़ता।
व्याख्या: स्रोतमे कथा क्षेत्रमे शिल्प जड़ता तोड़बाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9712. खण्ड ९७६क निचोड़ की अछि?
क. तन्त्रानाथ झाक प्रयोगशीलता मुक्त-वृत्त, सरल भाषा, सोनेट आ कथा-शिल्पक नव बाट खोलैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तन्त्रानाथ झाक प्रयोगशीलता मुक्त-वृत्त, सरल भाषा, सोनेट आ कथा-शिल्पक नव बाट खोलैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड हुनका शिल्प-विधान बदलनिहार रचनाकार रूपमे रखैत अछि।

खण्ड ९७७ : विदेह-सदेह २ — व्यंग्य, कुरीति आ सामाजिक प्रहार

प्रश्न 9713. तन्त्रानाथ झाक साहित्यक दोसर विशेषता कोन अछि?
क. सामाजिक कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वासपर प्रहार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सामाजिक कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वासपर प्रहार।
व्याख्या: स्रोतमे कुरीति, आडम्बर, अन्धविश्वासपर प्रहारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9714. एहि प्रहारक शिल्प कोना बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यंग्यात्मक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. व्यंग्यात्मक।
व्याख्या: स्रोतमे प्रहारक शिल्प व्यंग्यात्मक कहल अछि।

प्रश्न 9715. व्यंग्य तन्त्रानाथ झाक साहित्य मे कोना उपलब्ध अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समस्त साहित्य मे सहज सुलभ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समस्त साहित्य मे सहज सुलभ।
व्याख्या: लेखमे ई समस्त साहित्यमे सहज सुलभ अछि कहल गेल।

प्रश्न 9716. तन्त्रानाथ झाक व्यंग्य प्रसंगमे केकर पंक्ति उद्धृत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सोमदेवक।
उत्तर: घ. सोमदेवक।
व्याख्या: स्रोतमे सोमदेवक लिखब समीचीन अछि कहि पंक्ति देल अछि।

प्रश्न 9717. “व्यंग्यधार” रूपक कोन बात सूचित करैत अछि?
क. व्यंग्यक तीखापन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. व्यंग्यक तीखापन।
व्याख्या: सोमदेवक पंक्तिमे व्यंग्यधारसँ तेज चोंच रूपक अछि।

प्रश्न 9718. मेना-कोकिल आ बगराक तुलना ककरा लेल आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यंग्यक धारक भेद देखएबाक लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. व्यंग्यक धारक भेद देखएबाक लेल।
व्याख्या: स्रोतक पंक्तिमे पक्षी-रूपक द्वारा व्यंग्यक तेज वर्णित अछि।

प्रश्न 9719. कुरीति आ अन्धविश्वासपर प्रहार साहित्यकेँ की बनबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सामाजिक आलोचनाक साधन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सामाजिक आलोचनाक साधन।
व्याख्या: स्रोतक आशय अछि जे साहित्य समाजक दोषपर व्यंग्यात्मक प्रहार करैत अछि।

प्रश्न 9720. तन्त्रानाथ झाक व्यंग्य केवल हास्य नहि, की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुधारोन्मुख सामाजिक चेतना।
उत्तर: घ. सुधारोन्मुख सामाजिक चेतना।
व्याख्या: कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वासपर प्रहार सुधार-दृष्टि सूचित करैत अछि।

प्रश्न 9721. एहि विशेषतासँ तन्त्रानाथक रचनाकार रूप की उभरैत अछि?
क. समाज-सजग व्यंग्यकार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समाज-सजग व्यंग्यकार।
व्याख्या: स्रोतक मुख्य बल सामाजिक दोषपर व्यंग्यात्मक प्रहार अछि।

प्रश्न 9722. खण्ड ९७७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तन्त्रानाथ झाक व्यंग्य सामाजिक कुरीति आ अन्धविश्वासक विरुद्ध तीक्ष्ण साहित्यिक हस्तक्षेप अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झाक व्यंग्य सामाजिक कुरीति आ अन्धविश्वासक विरुद्ध तीक्ष्ण साहित्यिक हस्तक्षेप अछि।
व्याख्या: ई खण्ड व्यंग्यकेँ समाज-संशोधनक शिल्प रूपमे देखबैत अछि।

खण्ड ९७८ : विदेह-सदेह २ — नारी-सशक्तीकरण, द्रौपदी आ स्त्री-शिक्षा

प्रश्न 9723. तन्त्रानाथ झाक साहित्यक तेसर विशेषता कोन शीर्षकसँ आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नारी सशक्तीकरण।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नारी सशक्तीकरण।

व्याख्या: स्रोतमे तेसर बिन्दु नारी सशक्तीकरण अछि।

प्रश्न 9724. चित्रलेखा देवी तन्त्रानाथ झा विषयमे की लिखलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनेको पोथी तथा गीत-कविता लिखि मैथिल समाजकेँ उठौलनि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनेको पोथी तथा गीत-कविता लिखि मैथिल समाजकेँ उठौलनि।

व्याख्या: स्रोतमे सरिसब गामक सुआसिन चित्रलेखा देवीक ई मन्तव्य अछि।

प्रश्न 9725. द्रुपद-सुताक चरित्रांकनमे कोन दृष्टि भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारीक आत्मबल आ सशक्तीकरण।

उत्तर: घ. नारीक आत्मबल आ सशक्तीकरण।

व्याख्या: स्रोत द्रुपद-सुताक प्रसंगकेँ नारी-सशक्तीकरणक उदाहरण मानैत अछि।

प्रश्न 9726. कीचकक व्यवहारसँ आतंकित द्रुपद-सुता कोन प्रश्न करैत अछि?

क. अबला, भीरु कहाबए?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अबला, भीरु कहाबए?

व्याख्या: स्रोतमे द्रौपदी आत्मसम्मानक प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 9727. द्रौपदीक आत्मबल जागरणक पंक्ति कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शार्दूली की कखनहु पाबए त्रास?

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शार्दूली की कखनहु पाबए त्रास?

व्याख्या: स्रोतमे द्रौपदीक आत्मबलक संकेत एहि पंक्तिसँ अछि।

प्रश्न 9728. तन्त्रानाथ झा स्त्रीगणकेँ संस्कृति आ सभ्यताक लेल कोन भूमिका मे देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रक्षणविधान करनिहार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रक्षणविधान करनिहार।

व्याख्या: स्रोतमे स्त्रीगण संस्कृति आ सभ्यता हेतु रक्षणविधान काज कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 9729. स्त्री-शिक्षाक प्रसार विषयमे स्रोत की कहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. द्रुत गतिएँ भऽ रहल अछि आ सामाजिक कल्याण लेल आवश्यक अछि।
उत्तर: घ. द्रुत गतिएँ भऽ रहल अछि आ सामाजिक कल्याण लेल आवश्यक अछि।
व्याख्या: स्रोतमे स्त्री-शिक्षा प्रसार सामाजिक कल्याणक दृष्टिसँ आवश्यक कहल गेल।

प्रश्न 9730. समाज अपन अर्धांशकेँ अशिक्षामे राखि की नहि कऽ सकैत?
क. उन्नतिपथपर अग्रसर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. उन्नतिपथपर अग्रसर।
व्याख्या: स्रोतमे अर्धांशकेँ अशिक्षाक अन्धकारमे राखि समाज उन्नत नहि भऽ सकैत कहल अछि।

प्रश्न 9731. नारी-सशक्तीकरण प्रसंगमे तन्त्रानाथ झाक साहित्यक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आत्मसम्मान, शिक्षा आ सांस्कृतिक संरक्षणक पक्षधरता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आत्मसम्मान, शिक्षा आ सांस्कृतिक संरक्षणक पक्षधरता।
व्याख्या: द्रौपदीक आत्मबल आ स्त्री-शिक्षा दुनू एहि अर्थकेँ पुष्ट करैत अछि।

प्रश्न 9732. खण्ड ९७८क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तन्त्रानाथ झा नारीकेँ अबला नहि, संस्कृति-रक्षिका आ शिक्षित आत्मबलक वाहक मानैत छथि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तन्त्रानाथ झा नारीकेँ अबला नहि, संस्कृति-रक्षिका आ शिक्षित आत्मबलक वाहक मानैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड स्त्री-शिक्षा आ साहित्यिक चरित्रांकनकेँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ९७९ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झा: कठिन विषय आ दुर्लभ साहित्य

प्रश्न 9733. लेखक अनुसार सुभद्र झा तन्त्रानाथ झा जकाँ कोन बातमे सौभाग्यशाली नहि छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रकाशित-अप्रकाशित साहित्य पाठक लेल सुलभ होएबामे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रकाशित-अप्रकाशित साहित्य पाठक लेल सुलभ होएबामे।
व्याख्या: स्रोतमे कहल अछि जे अन्यथा हुनकहु साहित्य सुलभ भए गेल रहैत।

प्रश्न 9734. सुभद्र झाक कार्य-क्षेत्र कोन कठिन विषय छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषा विज्ञान।
उत्तर: घ. भाषा विज्ञान।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा-साहित्यक अध्ययन-अध्यापनमे कठिन भाषा विज्ञान हुनक कार्यक्षेत्र कहल अछि।

प्रश्न 9735. बिहारक विश्वविद्यालय सम्बन्धी दुर्योग की कहल गेल?
क. स्वतन्त्र भाषा विज्ञान विभाग अद्यावधि नहि अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्वतन्त्र भाषा विज्ञान विभाग अद्यावधि नहि अछि।
व्याख्या: स्रोतमे बिहारक कोनो विश्वविद्यालयमे स्वतन्त्र भाषा विज्ञान विभाग नहि कहल अछि।

प्रश्न 9736. भाषा विज्ञान विभागक अभावसँ कोन प्रश्न उठैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहन कठिन विषय के पढ़त आ पढ़ाओत?
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एहन कठिन विषय के पढ़त आ पढ़ाओत?
व्याख्या: स्रोतमे शिक्षक-शिष्य परम्पराक अभावक समस्या पूछल गेल।

प्रश्न 9737. शिष्य नहि भेल तँ गुरुक वैदुष्य सम्बन्धी कोन समस्या होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रचार-प्रसार, स्थापना-खण्डन-मण्डन आ साहित्य-संकलन कठिन होइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रचार-प्रसार, स्थापना-खण्डन-मण्डन आ साहित्य-संकलन कठिन होइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे शिष्ये नहि तँ ई सभ कोना होएत कहि चिन्ता व्यक्त अछि।

प्रश्न 9738. सुभद्र झा स्वयं अपनाकेँ कोना कहलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हम आगि छी।
उत्तर: घ. हम आगि छी।
व्याख्या: स्रोतमे सुभद्र झाक स्वयं लिखल “हम आगि छी” उद्धृत अछि।

प्रश्न 9739. आगिक प्रयोजन होइतहुँ लोक किएक दूर रहैत अछि?
क. पकबाक डर सँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पकबाक डर सँ।
व्याख्या: स्रोतमे आगिक प्रयोजन सभकेँ होइत छैक मुदा पकबाक डरसँ केओ नहि छूबैत कहल अछि।

प्रश्न 9740. ई आगि रूपक सुभद्र झाक व्यक्तित्वक कोन पक्ष देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तीक्ष्ण वैदुष्य आ चुनौतीपूर्ण निकटता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तीक्ष्ण वैदुष्य आ चुनौतीपूर्ण निकटता।
व्याख्या: रूपक विद्वत्ताक आवश्यकता आ लोकक दूरी दुनू संकेत करैत अछि।

प्रश्न 9741. हुनक साहित्य दुर्लभ होएबाक पहिल कारण की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषाविज्ञानक कठिनता आ संस्थागत अभाव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषाविज्ञानक कठिनता आ संस्थागत अभाव।
व्याख्या: स्रोतमे तीन कारणमे पहिल ई अछि।

प्रश्न 9742. खण्ड ९७९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुभद्र झाक वैदुष्य कठिन भाषाविज्ञान, शिष्य-अभाव आ संस्थागत कमीमुळे व्यापक पाठकसँ दूर रहल।
उत्तर: घ. सुभद्र झाक वैदुष्य कठिन भाषाविज्ञान, शिष्य-अभाव आ संस्थागत कमीमुळे व्यापक पाठकसँ दूर रहल।
व्याख्या: ई खण्ड दुर्लभ साहित्यक ऐतिहासिक कारण खोलैत अछि।

खण्ड ९८० : विदेह-सदेह २ — भाषाविद सुभद्र झा आ लोकप्रियताक प्रश्न

प्रश्न 9743. सुभद्र झा केहन विद्वान कहल गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषाविद आ शास्त्र-मर्मज्ञ।
उत्तर: घ. भाषाविद आ शास्त्र-मर्मज्ञ।
व्याख्या: स्रोतमे ओ भाषाविद छलाह, शास्त्र-मर्मज्ञ छलाह कहल गेल।

प्रश्न 9744. देश-विदेशमे हुनका कोन रूपमे आदर-सम्मान छल?
क. भाषाशास्त्रीक रूपमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषाशास्त्रीक रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे देश-विदेशमे भाषाशास्त्री रूपमे आदर आ सम्मानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9745. ओ कोन लोकप्रिय साहित्य विधा सभ नहि लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कविता, कथा, नाटक, एकांकी, उपन्यास आदि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कविता, कथा, नाटक, एकांकी, उपन्यास आदि।
व्याख्या: स्रोतमे ओ एहि विधा सभ नहि लिखल कहल अछि।

प्रश्न 9746. ओ मंचपर कोन माध्यमसँ लोक-मनोरंजन नहि कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हास्य-व्यंग्यक माध्यमसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हास्य-व्यंग्यक माध्यमसँ।
व्याख्या: स्रोतमे मंचपर हास्य-व्यंग्य द्वारा मनोरंजन नहि कएलथि कहल अछि।

प्रश्न 9747. विद्वत्जनक बीच आदरणीय होएब आ सामान्य पाठकक लोकप्रियता मे की भेद देखाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गम्भीर विद्वत्ता सदैव लोकप्रिय रचनाकार नहि बनबैत।
उत्तर: घ. गम्भीर विद्वत्ता सदैव लोकप्रिय रचनाकार नहि बनबैत।
व्याख्या: स्रोतमे पूछल अछि जे विद्वत्जनक आदर-पात्र सामान्य पाठकक लोकप्रिय रचनाकार कोना होइतथि।

प्रश्न 9748. सुभद्र झा सन कीर्तिपुरुषक सन्तान सम्बन्धी तेसर कारण की कहल गेल?
क. कृतिक संरक्षण आ प्रचार-प्रसारमे अभिरुचिक अभाव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कृतिक संरक्षण आ प्रचार-प्रसारमे अभिरुचिक अभाव।
व्याख्या: स्रोतमे एहि अभावकेँ तेसर कारण कहल अछि।

प्रश्न 9749. एहि अभावक परिणाम की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रकाशित रचना दुर्लभ भेल आ अप्रकाशित प्रकाशमे नहि आबि सकल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रकाशित रचना दुर्लभ भेल आ अप्रकाशित प्रकाशमे नहि आबि सकल।
व्याख्या: स्रोतमे ई परिणाम स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 9750. हुनक रचना दुर्लभ होएबाक दू प्रमुख सामाजिक कारण की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लोकप्रिय विधासँ दूरी आ पारिवारिक संरक्षण-अभाव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लोकप्रिय विधासँ दूरी आ पारिवारिक संरक्षण-अभाव।
व्याख्या: स्रोतक दोसर आ तेसर कारण एहि रूपमे अछि।

प्रश्न 9751. एहि खण्डमे सुभद्र झाक मूल्यांकन की चेतावनी दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लोकप्रियता नहि होएब वैदुष्य-अभाव नहि अछि।
उत्तर: घ. लोकप्रियता नहि होएब वैदुष्य-अभाव नहि अछि।
व्याख्या: भाषाशास्त्रीक आदर आ लोकप्रिय विधा नहि लिखब बीच भेद स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9752. खण्ड ९८०क निचोड़ की अछि?
क. सुभद्र झा गम्भीर भाषाविद छलाह, मुदा लोकप्रिय साहित्य-विधा आ संरक्षण-अभावक कारण सामान्य पाठकसँ दूर रहलाह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सुभद्र झा गम्भीर भाषाविद छलाह, मुदा लोकप्रिय साहित्य-विधा आ संरक्षण-अभावक कारण सामान्य पाठकसँ दूर रहलाह।
व्याख्या: ई खण्ड विद्वत्ता, लोकप्रियता आ संरक्षणक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ९८१ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झाक प्रारम्भिक भाषा-विज्ञान लेखन

प्रश्न 9753. सुभद्र झाक पहिल रचना निश्चित रूपेँ ज्ञात अछि कि नहि?

क. लेखक कहैत छथि जे जनतब नहि अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेखक कहैत छथि जे जनतब नहि अछि।

व्याख्या: स्रोतमे पहिल रचना कोन आ कहिआ छपल तकर जनतब नहि अछि कहल गेल।

प्रश्न 9754. लेखककेँ देखबाक अवसर भेटल प्रकाशित पहिल रचना कोन विषयपर छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली भाषाक उत्पत्ति।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली भाषाक उत्पत्ति।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला मिहिरमे प्रकाशित “मैथिली भाषाक उत्पत्ति” लेखक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9755. ई लेख कोन पत्रिकाक एकसँ बेसी अंकमे प्रकाशित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मिथिला मिहिर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मिथिला मिहिर।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला मिहिरक एकसँ बेसी अंकक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9756. “मैथिली भाषाक उत्पत्ति” लेखमे सुभद्र झा की कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विभिन्न विद्वानक मतक खण्डन-मण्डनक उपरान्त अपन मत स्थापित कएलनि।

उत्तर: घ. विभिन्न विद्वानक मतक खण्डन-मण्डनक उपरान्त अपन मत स्थापित कएलनि।

व्याख्या: स्रोतमे एहि लेखक पद्धति स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 9757. एहि लेखसँ सुभद्र झाक कोन गुण स्पष्ट होइत अछि?

क. गम्भीर अध्ययन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गम्भीर अध्ययन।

व्याख्या: स्रोतमे ई गम्भीर अध्ययनक द्योतक कहल गेल।

प्रश्न 9758. दोसरी रचना कोन विषयक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीमे संख्यावाचक शब्द आ विशेषण।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीमे संख्यावाचक शब्द आ विशेषण।

व्याख्या: स्रोतमे “मैथिलीमे संख्यावाचक शब्द ओ विशेषण” दोसर रचना कहल अछि।

प्रश्न 9759. ई दोसरो रचना कोन मूल-गोत्रक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषावैज्ञानिक अध्ययनक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषावैज्ञानिक अध्ययनक।
व्याख्या: स्रोतमे इहो ओही मूल-गोत्रक कहल अछि।

प्रश्न 9760. एहि दू रचनासँ हुनक प्रिय विषय की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषा विज्ञानक अध्ययन।
उत्तर: घ. भाषा विज्ञानक अध्ययन।
व्याख्या: स्रोतमे सुभद्र झाक प्रिय विषय भाषा विज्ञान कहल अछि।

प्रश्न 9761. हुनक इष्ट कार्य की छल?
क. मैथिलीक भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण हुनक इष्ट छलनि कहल गेल।

प्रश्न 9762. खण्ड ९८१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुभद्र झाक प्रारम्भिक लेखन मैथिलीक उत्पत्ति, संख्या-शब्द आ वैज्ञानिक विश्लेषणपर केन्द्रित छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुभद्र झाक प्रारम्भिक लेखन मैथिलीक उत्पत्ति, संख्या-शब्द आ वैज्ञानिक विश्लेषणपर केन्द्रित छल।
व्याख्या: ई खण्ड हुनका गम्भीर भाषावैज्ञानिक परम्पराक आरम्भकर्ता रूपमे रखैत अछि।

खण्ड ९८२ : विदेह-सदेह २ — द फॉर्मेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेजक यात्रा

प्रश्न 9763. सुभद्र झा सर्वप्रथम कोन महाविद्यालयक डा. ए. बनर्जी शास्त्रीक निर्देशनमे काज आरम्भ कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पटना कालेज।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पटना कालेज।
व्याख्या: स्रोतमे पटना कालेजक डा. ए. बनर्जी शास्त्रीक निर्देशनमे आरम्भक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9764. हुनक कार्य अन्ततः केकर निर्देशनमे समाप्त भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. डा. सुनीति कुमार चटर्जी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. डा. सुनीति कुमार चटर्जी।
व्याख्या: स्रोतमे कार्य सुनीति कुमार चटर्जीक निर्देशनमे समाप्त भेल कहल अछि।

प्रश्न 9765. सुभद्र झाक रचना कतेक प्रकारक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दू प्रकारक।
उत्तर: घ. दू प्रकारक।
व्याख्या: स्रोतमे सुभद्र झाक रचना दू प्रकारक अछि कहल गेल।

प्रश्न 9766. पहिल कोटिमे कोन प्रकारक साहित्य अछि?
क. मैथिली भाषा सम्बन्धी अंग्रेजीमे लिखित साहित्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली भाषा सम्बन्धी अंग्रेजीमे लिखित साहित्य।
व्याख्या: स्रोतमे पहिल कोटि अंग्रेजीमे मैथिली भाषा सम्बन्धी साहित्य अछि।

प्रश्न 9767. पहिल कोटिमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कोन शोधकृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज।
व्याख्या: स्रोतमे ई कृति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहल गेल।

प्रश्न 9768. “द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज” कोन प्रकारक कृति थिक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हुनक शोध-प्रबन्ध।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हुनक शोध-प्रबन्ध।
व्याख्या: स्रोतमे ई हुनक शोध प्रबन्ध कहल अछि।

प्रश्न 9769. एहि शोध-प्रबन्धपर हुनका कोन उपाधि भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. डी.लिट।
उत्तर: घ. डी.लिट।
व्याख्या: स्रोतमे पटना विश्वविद्यालयमे डी.लिट उपाधि भेटबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9770. एहि शोधकृति मैथिली अध्ययनमे की करैत अछि?
क. भाषा-वैज्ञानिक आधार निर्मित करैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा-वैज्ञानिक आधार निर्मित करैत अछि।
व्याख्या: कृति मैथिलीक गठनक वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 9771. डॉ. ए. बनर्जी शास्त्री सँ सुनीति कुमार चटर्जी धरि यात्रा की सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शोधक गम्भीर मार्गदर्शन-परम्परा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शोधक गम्भीर मार्गदर्शन-परम्परा।
व्याख्या: स्रोतमे आरम्भ आ समाप्ति अलग-अलग विद्वानक निर्देशनमे देखाओल गेल।

प्रश्न 9772. खण्ड ९८२क निचोड़ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सुभद्र झाक प्रमुख शोधकृति मैथिलीक वैज्ञानिक गठन-विवेचनक आधार बनल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सुभद्र झाक प्रमुख शोधकृति मैथिलीक वैज्ञानिक गठन-विवेचनक आधार बनल।
व्याख्या: ई खण्ड निर्देशन, शोधप्रबन्ध आ डी.लिट उपलब्धिकेँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ९८३ : विदेह-सदेह २ — विद्यापति गीत आ अन्तरराष्ट्रीय पाठक

प्रश्न 9773. सुभद्र झाक अंग्रेजी कोटिक दोसर महत्त्वपूर्ण कृति कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. द साँग्स ऑफ विद्यापति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. द साँग्स ऑफ विद्यापति।
व्याख्या: स्रोतमे द फॉर्मेशन संग द साँग्स ऑफ विद्यापति महत्त्वपूर्ण कहल गेल।

प्रश्न 9774. द साँग्स ऑफ विद्यापति कोन स्रोतक आधारपर बनल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नेपाल स्रोतक आधारपर।
उत्तर: घ. नेपाल स्रोतक आधारपर।
व्याख्या: स्रोतमे नेपाल स्रोतक आधारपर विद्यापति गीत-संग्रहक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9775. एहि कृतिमे विद्यापतिक कतेक गीत संकलित अछि?
क. २६२ गीत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. २६२ गीत।
व्याख्या: स्रोतमे विद्यापतिक 262 गीतक संग्रह कहल गेल।

प्रश्न 9776. एहि कृतिमे गीतक भाषा सम्बन्धी की कार्य अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण।
व्याख्या: स्रोतमे विद्यापति गीतक भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण अछि।

प्रश्न 9777. एहि कृतिमे गीतक कोन भाषामे अनुवाद अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अंग्रेजी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अंग्रेजी।
व्याख्या: स्रोतमे गीतक अंग्रेजी अनुवादक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9778. सुभद्र झाक विद्यापति-अनुवाद सँ कोन पाठक-वर्ग मैथिली गीतसँ जुड़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष।
उत्तर: घ. अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष।
व्याख्या: स्रोतमे सुभद्र झाक महत्त्व बिन्दुमे ई बात आयल अछि।

प्रश्न 9779. भाषाशास्त्रीय विवेचन आ अनुवाद संग-संग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई पाठ आ विश्व-पाठक बीच सेतु बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ई पाठ आ विश्व-पाठक बीच सेतु बनबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे विश्लेषण आ अंग्रेजी अनुवाद दुनू देल अछि।

प्रश्न 9780. विद्यापति गीतक अध्ययनमे नेपाल स्रोतक उपयोग की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्रोत-आधारित पाठ-संग्रहक महत्त्व।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्रोत-आधारित पाठ-संग्रहक महत्त्व।
व्याख्या: नेपाल स्रोतक आधार स्रोत-शुद्धिक संकेत अछि।

प्रश्न 9781. एहि कृति सुभद्र झाक भाषाविद रूपकेँ कोना पुष्ट करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गीतक भाषावैज्ञानिक विवेचन द्वारा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गीतक भाषावैज्ञानिक विवेचन द्वारा।
व्याख्या: स्रोतमे कृतिमे भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9782. खण्ड ९८३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुभद्र झा विद्यापति गीतकेँ स्रोत, भाषाविज्ञान आ अंग्रेजी अनुवाद द्वारा विश्व-पाठक समक्ष आनलनि।
उत्तर: घ. सुभद्र झा विद्यापति गीतकेँ स्रोत, भाषाविज्ञान आ अंग्रेजी अनुवाद द्वारा विश्व-पाठक समक्ष आनलनि।
व्याख्या: ई खण्ड विद्यापति अध्ययनक अन्तरराष्ट्रीय विस्तार देखबैत अछि।

खण्ड ९८४ : विदेह-सदेह २ — मैथिली पोथी, प्रवास आ बहुभाषिक विद्वत्ता

प्रश्न 9783. सुभद्र झाक दोसर कोटिमे कोन साहित्य अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीमे सम्पादित एवं लिखित पोथी सभ।
उत्तर: घ. मैथिलीमे सम्पादित एवं लिखित पोथी सभ।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर कोटि मैथिलीमे सम्पादित आ लिखित पोथी कहल गेल।

प्रश्न 9784. विद्यापति-गीतसंग्रहमे विद्यापतिक कतेक गीत अछि?
क. ३७० गीत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ३७० गीत।
व्याख्या: स्रोतमे विद्यापति-गीतसंग्रहमे 370 गीत अछि कहल गेल।

प्रश्न 9785. विद्यापति-गीतसंग्रहक भूमिका लेखक के छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रो. आनन्द मिश्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रो. आनन्द मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे संग्रहक भूमिका लेखक प्रो. आनन्द मिश्र कहल गेल।

प्रश्न 9786. विदेश यात्रा वर्णनक दू पोथी कोन-कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रवास जीवन आ यात्रा प्रकरण शतक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रवास जीवन आ यात्रा प्रकरण शतक।
व्याख्या: स्रोतमे ई दू यात्रा-वर्णन पोथी देल अछि।

प्रश्न 9787. सुभद्र झा कहिया उच्च शिक्षा लेल फ्रांस गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. २७ अगस्त १९४६।
उत्तर: घ. २७ अगस्त १९४६।
व्याख्या: स्रोतमे 27 अगस्त 1946 कैं फ्रांस गेलाह कहल अछि।

प्रश्न 9788. ओ कतेक वर्ष लेल फ्रांस गेल छलाह?
क. दू वर्ष लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दू वर्ष लेल।
व्याख्या: स्रोतमे दू वर्षक लेल पटना विश्वविद्यालयक अनुदानपर गेलाह।

प्रश्न 9789. फ्रांस यात्रा लेल आर्थिक सहयोग केकरासँ भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पटना विश्वविद्यालयक अनुदान आ महाराज कामेश्वर सिंहक सहयोग।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पटना विश्वविद्यालयक अनुदान आ महाराज कामेश्वर सिंहक सहयोग।
व्याख्या: स्रोतमे दुनू स्रोतक आर्थिक आधार देल अछि।

प्रश्न 9790. फ्रांसमे ओ कोन विषय सभक विशेष अध्ययन कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अर्थवेदक पैप्लाद, आधुनिक भाषा विज्ञान आ ध्वनि विज्ञान।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अर्थवेदक पैप्लाद, आधुनिक भाषा विज्ञान आ ध्वनि विज्ञान।
व्याख्या: स्रोतमे ई तीन अध्ययन-विषय स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9791. “नातिक पत्रक उत्तर” कोन शैलीमे लिखित पोथी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पत्रात्मक शैलीमे।
उत्तर: घ. पत्रात्मक शैलीमे।
व्याख्या: स्रोतमे एकरा जवाहरलालक डिस्कवरी ऑफ इण्डिया सन पत्रात्मक शैलीक पोथी कहि सकैत छी कहल गेल।

प्रश्न 9792. खण्ड ९८४क निचोड़ की अछि?
क. सुभद्र झाक मैथिली सम्पादन, प्रवास-वर्णन आ बहुभाषिक अध्ययन हुनक व्यापक विद्वत्ता देखबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सुभद्र झाक मैथिली सम्पादन, प्रवास-वर्णन आ बहुभाषिक अध्ययन हुनक व्यापक विद्वत्ता देखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मैथिली पोथी, फ्रांस-प्रवास आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्ध समेटैत अछि।

खण्ड ९८५ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झाक महत्त्व: विश्व-भाषा मानचित्र

प्रश्न 9793. सुभद्र झाक पूर्व मैथिली भाषाक अध्ययन के-के कएने छलाह?
क. किछु विदेशी आ किछु भारतीय भाषाविद।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. किछु विदेशी आ किछु भारतीय भाषाविद।
व्याख्या: स्रोतमे कहल अछि जे हुनक पूर्वहु विदेशी आ भारतीय भाषाविद मैथिलीपर काज कएने छलाह।

प्रश्न 9794. सुभद्र झाक विशिष्टता कोन बातमे राखल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ पहिल भाषाविद भेलाह जे गंभीरता आ विस्तारसँ मैथिली भाषाक विश्लेषण कएलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ पहिल भाषाविद भेलाह जे गंभीरता आ विस्तारसँ मैथिली भाषाक विश्लेषण कएलनि।
व्याख्या: लेखक हुनका मैथिलीक गम्भीर भाषावैज्ञानिक विश्लेषक मानैत छथि।

प्रश्न 9795. हुनक भाषावैज्ञानिक विश्लेषणसँ मैथिलीकेँ की भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विश्व-भाषा मानचित्रपर प्रतिष्ठाक भाषावैज्ञानिक आधार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विश्व-भाषा मानचित्रपर प्रतिष्ठाक भाषावैज्ञानिक आधार।
व्याख्या: ई विश्लेषण मैथिलीकेँ अन्तरराष्ट्रीय भाषा-विमर्शमे आधार देलक।

प्रश्न 9796. स्रोतमे मैथिली भाषाक विश्लेषणक मुख्य फल की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीक स्वतंत्रता आ विशेषता स्पष्ट भेल।
उत्तर: घ. मैथिलीक स्वतंत्रता आ विशेषता स्पष्ट भेल।
व्याख्या: सुभद्र झा मैथिलीक गठन आ विशेषता तर्कसहित देखौलनि।

प्रश्न 9797. सुभद्र झाक प्रिय अध्ययन-विषय की छल?
क. भाषा-विज्ञान आ मैथिलीक वैज्ञानिक विश्लेषण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा-विज्ञान आ मैथिलीक वैज्ञानिक विश्लेषण।
व्याख्या: पूर्व खण्डमे सेहो हुनक प्रिय विषय भाषा-विज्ञान कहल गेल अछि।

प्रश्न 9798. हुनका ‘पहिल व्यक्ति भाषाविद’ कहबाक कारण की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीकेँ वैज्ञानिक ढंगेँ विस्तृत रूपसँ विश्लेषित करब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीकेँ वैज्ञानिक ढंगेँ विस्तृत रूपसँ विश्लेषित करब।
व्याख्या: ई उपाधि हुनक विधिवत भाषावैज्ञानिक काजसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 9799. एहि खण्डमे सुभद्र झाक अवदान कोन क्षेत्रसँ मूलतः सम्बद्ध अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली भाषाविज्ञान।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली भाषाविज्ञान।
व्याख्या: खण्डक केन्द्र भाषा-विश्लेषण आ भाषिक प्रतिष्ठा अछि।

प्रश्न 9800. मैथिलीक वैश्विक प्रतिष्ठामे सुभद्र झाक भूमिका कोना देखाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषावैज्ञानिक आधार तैयार करनिहार विद्वान रूपमे।
उत्तर: घ. भाषावैज्ञानिक आधार तैयार करनिहार विद्वान रूपमे।
व्याख्या: हुनक शोध मैथिलीकेँ विश्वभाषा-विमर्शमे स्थान दैत अछि।

प्रश्न 9801. सुभद्र झाक पूर्वक अध्ययन आ हुनक अध्ययनमे मुख्य अंतर की अछि?
क. हुनक अध्ययन अधिक गंभीर, विस्तृत आ वैज्ञानिक कहल गेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हुनक अध्ययन अधिक गंभीर, विस्तृत आ वैज्ञानिक कहल गेल।
व्याख्या: स्रोतमे ‘एतेक गम्भीरता एवं विस्तार’ पर बल अछि।

प्रश्न 9802. खण्ड ९८५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुभद्र झा मैथिली भाषाक वैज्ञानिक प्रतिष्ठाक प्रमुख आधार-निर्माता छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुभद्र झा मैथिली भाषाक वैज्ञानिक प्रतिष्ठाक प्रमुख आधार-निर्माता छथि।
व्याख्या: ई खण्ड हुनक भाषावैज्ञानिक महत्त्वकेँ समेटैत अछि।

खण्ड ९८६ : विदेह-सदेह २ — विद्यापति गीतक अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा

प्रश्न 9803. सुभद्र झा विद्यापति गीतक कोन पक्षक विवेचन कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषाशास्त्रीय विवेचन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषाशास्त्रीय विवेचन।
व्याख्या: स्रोतमे विद्यापति गीतक भाषा-शास्त्रीय विवेचन स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9804. विद्यापति गीतक अनुवाद कोन भाषामे कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंग्रेजीमे।
उत्तर: घ. अंग्रेजीमे।
व्याख्या: गीतक अंग्रेजी अनुवाद द्वारा विश्व-पाठक धरि पहुँच बनल।

प्रश्न 9805. विद्यापति गीतक महत्त्व सर्वप्रथम कोन पाठक-वर्ग समक्ष आनल गेल?
क. अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष।
व्याख्या: स्रोतमे ई सुभद्र झाक महत्त्वक दोसर बिन्दु अछि।

प्रश्न 9806. भाषाशास्त्रीय विवेचन आ अंग्रेजी अनुवाद मिलि की बनबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्थानीय काव्य आ विश्व-पाठक बीच सेतु।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्थानीय काव्य आ विश्व-पाठक बीच सेतु।
व्याख्या: ई कार्य विद्यापति गीतकेँ व्यापक पाठकता देलक।

प्रश्न 9807. सुभद्र झाक विद्यापति-काज हुनका कोन रूपमे देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषाविद, सम्पादक आ सेतु-निर्माता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषाविद, सम्पादक आ सेतु-निर्माता।
व्याख्या: स्रोतमे गीत-संग्रह, विश्लेषण आ अनुवाद तीनू संकेत अछि।

प्रश्न 9808. विद्यापति गीतक अध्ययनमे सुभद्र झाक योगदान केवल संग्रह धरि सीमित छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नहि, ओ विश्लेषण आ अनुवाद सेहो कएलनि।
उत्तर: घ. नहि, ओ विश्लेषण आ अनुवाद सेहो कएलनि।
व्याख्या: स्रोत कृति कैं भाषिक विवेचन आ अंग्रेजी अनुवादसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 9809. एहि काजसँ मैथिली साहित्यक कोन कवि वैश्विक पाठक लग पहुँचलाह?
क. विद्यापति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विद्यापति।
व्याख्या: विद्यापति गीतक अन्तरराष्ट्रीय प्रस्तुति खण्डक केन्द्र अछि।

प्रश्न 9810. सुभद्र झाक विद्यापति-काजक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीक काव्य-धरोहरकैं विश्व-स्तरपर पठनीय बनाओल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीक काव्य-धरोहरकैं विश्व-स्तरपर पठनीय बनाओल।
व्याख्या: ई कार्य स्थानीय परम्पराकैं अन्तरराष्ट्रीय विमर्शसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 9811. एहि खण्डमे ‘गीत’ मात्र भाव-सामग्री नहि, आओर की बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषावैज्ञानिक अध्ययनक सामग्री।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषावैज्ञानिक अध्ययनक सामग्री।
व्याख्या: भाषाशास्त्रीय विवेचन गीतकैं शोध-विषय बनबैत अछि।

प्रश्न 9812. खण्ड ९८६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुभद्र झा विद्यापति गीतकैं भाषाविज्ञान आ अनुवाद द्वारा विश्व-पाठक धरि अनलनि।
उत्तर: घ. सुभद्र झा विद्यापति गीतकैं भाषाविज्ञान आ अनुवाद द्वारा विश्व-पाठक धरि अनलनि।
व्याख्या: ई खण्ड विद्यापति अध्ययनक अन्तरराष्ट्रीय आयामक सार दैत अछि।

खण्ड ९८७ : विदेह-सदेह २ — विदेश यात्रा साहित्यक आरम्भ

प्रश्न 9813. मैथिली विदेश यात्रा साहित्यक पहिल लेखक के कहल गेलाह?

क. सुभद्र झा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुभद्र झा।

व्याख्या: स्रोतमे स्पष्ट अछि जे मैथिलीक विदेश यात्रा साहित्यक पहिल लेखक सुभद्र झा छथि।

प्रश्न 9814. सुभद्र झासँ पूर्व विदेश यात्रा करनिहार मैथिल लोक रहल होएताह, मुदा कमी कोन छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. यात्रा-अनुभवकेँ मैथिलीमे लिपिबद्ध करबाक परम्परा न्यून छल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. यात्रा-अनुभवकेँ मैथिलीमे लिपिबद्ध करबाक परम्परा न्यून छल।

व्याख्या: लेखक यात्रा कएबाक आ ओकरा मातृभाषामे लिखबाक भेद बतबैत छथि।

प्रश्न 9815. यात्रा साहित्यक संवर्धनमे सुभद्र झाक विशेषता की कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ओ अनुभवकेँ सूक्ष्मता आ व्यापक रूपसँ मैथिलीमे लिखलनि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ओ अनुभवकेँ सूक्ष्मता आ व्यापक रूपसँ मैथिलीमे लिखलनि।

व्याख्या: स्रोतमे ‘एतेक सूक्ष्मता एवं व्यापक रूपसँ’ पर बल अछि।

प्रश्न 9816. विदेश यात्रा साहित्यक सन्दर्भमे कोन लेखकक नाम अपवाद रूपमे आएल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. डा. जगदीशचन्द्र झा।

उत्तर: घ. डा. जगदीशचन्द्र झा।

व्याख्या: स्रोतमे डा. जगदीशचन्द्र झाकेँ छोड़ि बहुत कम लोकक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9817. सुभद्र झाक यात्रा-वर्णन मातृभाषाक लेल की करैत अछि?

क. मैथिली यात्रा-साहित्यक आधार आ विस्तार बनबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली यात्रा-साहित्यक आधार आ विस्तार बनबैत अछि।

व्याख्या: हुनक यात्रा लेखन विधागत विकासक आरम्भिक आधार अछि।

प्रश्न 9818. एहि खण्डमे विदेश-यात्रा केवल निजी अनुभव नहि, आओर की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मातृभाषाक साहित्य-विस्तारक अवसर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मातृभाषाक साहित्य-विस्तारक अवसर।

व्याख्या: स्रोत यात्रा-अनुभव लिपिबद्ध करबाक सांस्कृतिक महत्त्व देखबैत अछि।

प्रश्न 9819. सुभद्र झाक यात्रा लेखनक मूल्यांकन कोन शब्दद्वयसँ भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सूक्ष्मता आ व्यापकता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सूक्ष्मता आ व्यापकता।
व्याख्या: ई दूनू शब्द स्रोतमे हुनक यात्रा-वर्णन लेल आयल अछि।

प्रश्न 9820. मैथिलीमे यात्रा-साहित्य कम रहबाक एक कारण की संकेतित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. यात्रा कएला परो अनुभवकेँ मातृभाषामे नहि लिखब।
उत्तर: घ. यात्रा कएला परो अनुभवकेँ मातृभाषामे नहि लिखब।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे विदेश गेल लोक कम नहि, मुदा लिखनिहार कम।

प्रश्न 9821. एहि खण्डक साहित्यिक केन्द्र की अछि?
क. यात्रा-अनुभवक मैथिलीकरण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. यात्रा-अनुभवक मैथिलीकरण।
व्याख्या: विदेश अनुभवकेँ मातृभाषा साहित्य बनाओल खण्डक मूल बात अछि।

प्रश्न 9822. खण्ड ९८७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुभद्र झा मैथिली विदेश यात्रा साहित्यक आरम्भिक, सूक्ष्म आ व्यापक स्वर छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुभद्र झा मैथिली विदेश यात्रा साहित्यक आरम्भिक, सूक्ष्म आ व्यापक स्वर छथि।
व्याख्या: ई खण्ड हुनक यात्रा-साहित्यिक अग्रणी भूमिका रेखांकित करैत अछि।

खण्ड ९८८ : विदेह-सदेह २ — नातिक पत्रक उत्तर आ भाषा-आन्दोलन

प्रश्न 9823. ‘नातिक पत्रक उत्तर’मे सुभद्र झा कोन रूपमे विचार प्रस्तुत करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. इतिहासकार जकाँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. इतिहासकार जकाँ।
व्याख्या: स्रोतमे कहल अछि जे ओ इतिहासकार जकाँ विचार रखैत छथि।

प्रश्न 9824. एहि पोथीमे भाषा-आन्दोलन सम्बन्धी विचार कोना प्रस्तुत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सरल भाषा आ नव ढंगें।
उत्तर: घ. सरल भाषा आ नव ढंगें।
व्याख्या: स्रोतमे सरल भाषा, नव ढंग, निर्भीकता आ स्पष्टताक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9825. ‘नातिक पत्रक उत्तर’ कोन विषयपर विचार देलक?
क. मैथिलीक स्वीकृति लेल आन्दोलन आ विभिन्न समस्या।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक स्वीकृति लेल आन्दोलन आ विभिन्न समस्या।
व्याख्या: स्रोतमे स्वीकृति आन्दोलन आ समस्या सभपर विचारक बात अछि।

प्रश्न 9826. एहि पोथीक शैलीगत विशेषता की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पत्रात्मक शैली।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पत्रात्मक शैली।
व्याख्या: पूर्व खण्डमे एकरा पत्रात्मक शैलीमे लिखित कहल गेल।

प्रश्न 9827. लेखकक अनुसार एहि पोथीकेँ की कहल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषा-आन्दोलनक विचार-प्रधान इतिहासक पोथी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषा-आन्दोलनक विचार-प्रधान इतिहासक पोथी।
व्याख्या: स्रोतमे एहन कहलासँ अत्युक्ति नहि होएत, ई बात अछि।

प्रश्न 9828. ‘नातिक पत्रक उत्तर’मे विचारक स्वर कोन प्रकारक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. निर्भीक आ स्पष्ट।
उत्तर: घ. निर्भीक आ स्पष्ट।
व्याख्या: स्रोतमे निर्भीकता एवं स्पष्टताक संग विचार राखबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9829. एहि खण्डमे भाषा-आन्दोलनक अध्ययन कोन साहित्यिक रूपसँ जुड़ैत अछि?
क. पत्रात्मक विचार-लेखनसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पत्रात्मक विचार-लेखनसँ।
व्याख्या: पोथी पत्रात्मक शैलीमे आन्दोलनक विवेचन करैत अछि।

प्रश्न 9830. सुभद्र झाक आन्दोलन-सम्बन्धी दृष्टि की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समस्या-बोध आ इतिहास-बोध।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समस्या-बोध आ इतिहास-बोध।
व्याख्या: पोथी आन्दोलन, स्वीकृति आ समस्या सभकेँ जोडैत अछि।

प्रश्न 9831. एहि पोथीक महत्व केवल निजी पत्रमे सीमित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नहि, ई भाषा-आन्दोलनक विचार-इतिहास बनैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नहि, ई भाषा-आन्दोलनक विचार-इतिहास बनैत अछि।
व्याख्या: लेखक एकरा आन्दोलनक इतिहासक रूपमे देखैत छथि।

प्रश्न 9832. खण्ड ९८८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ‘नातिक पत्रक उत्तर’ मैथिली स्वीकृति आन्दोलनक निर्भीक विचार-इतिहास अछि।
उत्तर: घ. ‘नातिक पत्रक उत्तर’ मैथिली स्वीकृति आन्दोलनक निर्भीक विचार-इतिहास अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पोथीक भाषा-आन्दोलन सम्बन्धी महत्व समेटैत अछि।

खण्ड ९८९ : विदेह-सदेह २ — राष्ट्रीय भावना आ पेरिस प्रसंग

प्रश्न 9833. डा. सुभद्र झा कोन भावना सभसँ ओतप्रोत कहल गेलाह?
क. राष्ट्रीय भावना तथा मिथिला, मैथिल आ मैथिली प्रेमसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राष्ट्रीय भावना तथा मिथिला, मैथिल आ मैथिली प्रेमसँ।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तीन सांस्कृतिक प्रेमक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9834. हिनक एहि रूपक दर्शन मुख्यतः कोन पोथी सभसँ होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ‘प्रवास जीवन’ आ ‘यात्राप्रकरण शतक’सँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ‘प्रवास जीवन’ आ ‘यात्राप्रकरण शतक’सँ।
व्याख्या: स्रोतमे दूनू पोथीक नाम एहि सन्दर्भमे देल अछि।

प्रश्न 9835. पेरिसमे दर्शक सभ हुनका केकरा बुझि आकर्षित भेल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. डा. एस. राधाकृष्णन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. डा. एस. राधाकृष्णन।
व्याख्या: स्रोतमे वस्त्राभरण देखि दर्शक सभ हुनका डा. एस. राधाकृष्णन बुझलनि।

प्रश्न 9836. पेरिस प्रसंग सुभद्र झाक कोन पक्ष देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भारतीय सांस्कृतिक व्यक्तित्वक प्रभाव।
उत्तर: घ. भारतीय सांस्कृतिक व्यक्तित्वक प्रभाव।
व्याख्या: वस्त्राभरण आ व्यक्तित्वक आकर्षण राष्ट्रीय-सांस्कृतिक छवि देखबैत अछि।

प्रश्न 9837. ‘प्रवास जीवन’ आ ‘यात्राप्रकरण शतक’मे हुनक कोन भाव प्रकट अछि?
क. मिथिला-मैथिली प्रेम आ राष्ट्रीय चेतना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिला-मैथिली प्रेम आ राष्ट्रीय चेतना।
व्याख्या: स्रोत एहि पोथी सभकेँ हुनक भावनासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 9838. एहि खण्डमे विदेश प्रवासक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विदेशमे भारतीय-मिथिलाक्ष पहचानक प्रस्तुति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विदेशमे भारतीय-मिथिलाक्ष पहचानक प्रस्तुति।
व्याख्या: पेरिस प्रसंग पहचान आ आकर्षणक उदाहरण अछि।

प्रश्न 9839. सुभद्र झाक वस्त्राभरणक प्रसंग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओ हुनक सांस्कृतिक पहचानक बाह्य संकेत बनल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओ हुनक सांस्कृतिक पहचानक बाह्य संकेत बनल।
व्याख्या: दर्शक वस्त्राभरण देखि आकर्षित भेलाह।

प्रश्न 9840. एहि प्रसंगमे सुभद्र झा केवल विद्वान नहि, आओर की छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संस्कृति-प्रतिनिधि।
उत्तर: घ. संस्कृति-प्रतिनिधि।
व्याख्या: हुनक व्यक्तित्व विदेशमे सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

प्रश्न 9841. राष्ट्रीय भावना आ मिथिला-प्रेमक मेल हुनक लेखनमे कोना देखाइत अछि?
क. यात्रा-वर्णन आ भाषा-चिन्तनमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. यात्रा-वर्णन आ भाषा-चिन्तनमे।
व्याख्या: प्रवास आ भाषा दुनू हुनक सांस्कृतिक चेतनाक क्षेत्र अछि।

प्रश्न 9842. खण्ड ९८९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुभद्र झाक प्रवास-लेखन राष्ट्रीय चेतना आ मिथिला-मैथिली प्रेमसँ भरल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुभद्र झाक प्रवास-लेखन राष्ट्रीय चेतना आ मिथिला-मैथिली प्रेमसँ भरल अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पेरिस प्रसंग सहित हुनक सांस्कृतिक व्यक्तित्व देखबैत अछि।

खण्ड ९९० : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झाक सारस्वत व्यक्तित्व

प्रश्न 9843. सुभद्र झा कोन विद्याक गम्भीर वेत्ता कहल गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्राच्य विद्या।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्राच्य विद्या।
व्याख्या: स्रोतमे ‘प्राच्य विद्याक गम्भीर वेत्ता’ कहल अछि।

प्रश्न 9844. भाषाविज्ञानक क्षेत्रमे हुनका कोना विशेषित कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रकाण्ड पण्डित आ भाषाविद।
उत्तर: घ. प्रकाण्ड पण्डित आ भाषाविद।
व्याख्या: स्रोतमे ई दुनू विशेषण आयल अछि।

प्रश्न 9845. अनुवादक रूपमे हुनक मूल्यांकन की अछि?
क. सफल अनुवादक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सफल अनुवादक।
व्याख्या: स्रोतमे सफल अनुवादक रूपमे वर्णन अछि।

प्रश्न 9846. व्यक्तित्वक स्तरपर हुनका कोना देखाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सहज, सरल, निरअहंकारी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सहज, सरल, निरअहंकारी।
व्याख्या: स्रोतमे सहजता, सरलता आ निरअहंकारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9847. शोध-क्षेत्रमे सुभद्र झाक भूमिका की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सदिखन अनुसंधानरत शोध-निर्देशक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सदिखन अनुसंधानरत शोध-निर्देशक।
व्याख्या: स्रोतमे हुनका सदिखन अनुसंधानरत शोध-निर्देशक कहल अछि।

प्रश्न 9848. ‘विद्वानक बीच विद्वान एवं सामान्यक बीच सामान्य’ कथन की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हुनक विनय आ संवादशीलता।
उत्तर: घ. हुनक विनय आ संवादशीलता।
व्याख्या: ई वाक्य विद्वत्ता आ सरल जनसंपर्क दुनू देखबैत अछि।

प्रश्न 9849. सुभद्र झा केकर सारस्वत परम्पराक विभूति कहल गेलाह?
क. मिथिलाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिलाक सारस्वत परम्पराक विभूति कहल अछि।

प्रश्न 9850. मैथिल समाज हुनक नामसँ की अनुभव करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गौरव।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गौरव।
व्याख्या: स्रोतमे हुनक नामहिसँ मैथिल समाज गौरवान्वित अनुभव करैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 9851. हुनक व्यक्तित्वमे ज्ञान आ आचरणक मेल कोना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. महान विद्वत्ता संग सामान्य लोकक बीच सरलता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. महान विद्वत्ता संग सामान्य लोकक बीच सरलता।
व्याख्या: स्रोत हुनका विद्वानक बीच विद्वान, सामान्यक बीच सामान्य कहैत अछि।

प्रश्न 9852. खण्ड ९९०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुभद्र झा मिथिलाक प्राच्यविद, भाषाविद, अनुवादक आ निरअहंकारी सारस्वत विभूति छथि।
उत्तर: घ. सुभद्र झा मिथिलाक प्राच्यविद, भाषाविद, अनुवादक आ निरअहंकारी सारस्वत विभूति छथि।
व्याख्या: ई खण्ड हुनक समग्र व्यक्तित्वक सार प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड ९९१ : विदेह-सदेह २ — भाषावैज्ञानिक तर्क आ पटना विश्वविद्यालय

प्रश्न 9853. सुभद्र झा मैथिलीकेँ कोन कुलक स्वतन्त्र भाषा सिद्ध करबाक तर्क रखलनि?
क. भारोपीय कुलक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भारोपीय कुलक।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीकेँ भारोपीय कुलक स्वतन्त्र भाषा कहबाक सामग्री आ तर्कक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9854. हुनक भाषावैज्ञानिक विश्लेषण कोन आधारपर छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषा-विज्ञान सम्मत तथ्यक आधारपर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषा-विज्ञान सम्मत तथ्यक आधारपर।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा विज्ञान सम्मत तथ्यक आधारपर विश्लेषण कहल अछि।

प्रश्न 9855. ओ मैथिली भाषाक कोन बात लोककेँ परिचित करौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली भाषाक विशेषता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली भाषाक विशेषता।
व्याख्या: स्रोतमे विशेषतासँ लोककेँ परिचित कराओल कहल अछि।

प्रश्न 9856. बेर पड़लापर ओ कोन रूपमे प्रतिकूलकेँ अनुकूल बनौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नीतिकुशल कूटनीतिज्ञ जकाँ।
उत्तर: घ. नीतिकुशल कूटनीतिज्ञ जकाँ।
व्याख्या: स्रोतमे प्रतिकूलहुँ केँ अनुकूल बनाओल कहि कूटनीतिक कौशल बताओल गेल।

प्रश्न 9857. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति लेल ओ की कएलनि?
क. लोकक सङोर कए मातृभाषाक हित-साधनमे सहायक भेलाह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लोकक सङोर कए मातृभाषाक हित-साधनमे सहायक भेलाह।
व्याख्या: स्रोतमे पटना विश्वविद्यालयमे स्वीकृति हेतु लोकक सङोर कएबाक बात अछि।

प्रश्न 9858. सुभद्र झा मैथिलीक स्वतंत्रताक तर्क कतय राखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विश्व समुदायक समक्ष।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विश्व समुदायक समक्ष।
व्याख्या: स्रोतमे पर्याप्त सामग्री आ तर्क विश्व समुदाय समक्ष राखल कहल अछि।

प्रश्न 9859. हुनक लोकप्रिय मंचीय छवि कम होयबाक बादो हुनक असाधारणता कतय देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय विज्ञजनक बीच पढ़ल आ उद्धृत होयबामे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय विज्ञजनक बीच पढ़ल आ उद्धृत होयबामे।
व्याख्या: स्रोतमे हुनका विज्ञजनक बीच अधिक पढ़ल-उद्धृत कहल अछि।

प्रश्न 9860. एहि खण्डमे ‘हित-साधन’ केकर अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मातृभाषा मैथिलीक।
उत्तर: घ. मातृभाषा मैथिलीक।
व्याख्या: पटना विश्वविद्यालयमे स्वीकृति मैथिली हितक प्रसंग अछि।

प्रश्न 9861. भाषाविज्ञान आ कूटनीति एतय कोना जुड़ैत अछि?
क. तर्कसंगत भाषा-विश्लेषण आ संस्थागत स्वीकृति-दोसराक संग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तर्कसंगत भाषा-विश्लेषण आ संस्थागत स्वीकृति-दोसराक संग।
व्याख्या: सुभद्र झाक काज ज्ञान आ संस्थागत संघर्ष दुनू अछि।

प्रश्न 9862. खण्ड ९९१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुभद्र झा भाषावैज्ञानिक तर्क आ संगठित प्रयाससँ मैथिलीक स्वीकृति-संघर्षमे सहायक भेलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुभद्र झा भाषावैज्ञानिक तर्क आ संगठित प्रयाससँ मैथिलीक स्वीकृति-संघर्षमे सहायक भेलाह।
व्याख्या: ई खण्ड स्वतंत्र भाषा-तर्क आ विश्वविद्यालयीय स्वीकृति पर केन्द्रित अछि।

खण्ड ९९२ : विदेह-सदेह २ — उमा सिंह: संचारकर्मी आ प्रतिभा

प्रश्न 9863. उमा सिंहक चयन-प्रसंगमे परीक्षक सभमे लेखकक संग कोन-कोन क्षेत्रक लोक छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रेडियो प्रबन्धक, पत्रकार महासंघक सभापति आदि संचार-जगतक लोक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रेडियो प्रबन्धक, पत्रकार महासंघक सभापति आदि संचार-जगतक लोक।
व्याख्या: स्रोतमे अनुराग गिरी, उमेश साह आदि परीक्षकक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9864. उमा सिंहक उमेर तहिया कतबा कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. २३ वर्ष।
उत्तर: घ. २३ वर्ष।
व्याख्या: स्रोतमे ओ २३ वर्षक छलीह कहल अछि।

प्रश्न 9865. लेखक हुनक सादगीक वर्णन कोना करैत छथि?
क. सामान्य समीज-सलवार, सामान्य चप्पल, बिना मेकअप।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सामान्य समीज-सलवार, सामान्य चप्पल, बिना मेकअप।
व्याख्या: स्रोतमे हुनक सरल परिधान आ सादा मुखमण्डल वर्णित अछि।

प्रश्न 9866. उमा सिंह संचारक्षेत्रमे किएक आबए चाहैत छलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अपन बात कहबाक लेल आ मैथिलीमे समाचार वाचन करबाक स्वप्न लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अपन बात कहबाक लेल आ मैथिलीमे समाचार वाचन करबाक स्वप्न लेल।
व्याख्या: स्रोतमे समाचार संकलन आ मैथिली समाचार वाचनक सपना अछि।

प्रश्न 9867. रेडियो अवसर हुनका दया सँ भेटल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नहि, अपनहि प्रतिभाक बलपर भेटल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नहि, अपनहि प्रतिभाक बलपर भेटल।
व्याख्या: स्रोत स्पष्ट कहैत अछि जे अवसर दया सँ नहि, हुनक प्रतिभासँ भेटल।

प्रश्न 9868. प्रतिस्पर्धी सभ मध्य उमा सिंह कोना मानल गेलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सर्वोत्तम।
उत्तर: घ. सर्वोत्तम।
व्याख्या: स्रोतमे प्रतिस्पर्धी मध्य सर्वोत्कृष्ट छलीह कहल गेल।

प्रश्न 9869. उमा सिंह पहिल भेंटमे परीक्षक सभकेँ कोना प्रभावित कएलनि?
क. सादगी आ प्रतिभाक बलपर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सादगी आ प्रतिभाक बलपर।
व्याख्या: स्रोतमे सादगी आ प्रतिभासँ प्रभावित करबाक बात अछि।

प्रश्न 9870. उमा सिंहक संचार-जगत संग पूर्व सम्बन्ध कोना छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रत्यक्ष आ परोक्ष दुनू रूपमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रत्यक्ष आ परोक्ष दुनू रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे छापा आ विद्युतीय संचारक तालिम, सभा-सेमिनारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9871. हुनक स्वप्नमे मातृभाषाक कोन भूमिका छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिलीमे समाचार वाचन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीमे समाचार वाचन।
व्याख्या: ई मैथिली संचारक आकांक्षा देखबैत अछि।

प्रश्न 9872. खण्ड ९९२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उमा सिंह सादगी, प्रतिभा आ मैथिली संचार-स्वप्नसँ उभरल संचारकर्मी छलीह।
उत्तर: घ. उमा सिंह सादगी, प्रतिभा आ मैथिली संचार-स्वप्नसँ उभरल संचारकर्मी छलीह।
व्याख्या: ई खण्ड हुनक चयन, स्वप्न आ व्यक्तित्व समेटैत अछि।

खण्ड ९९३ : विदेह-सदेह २ — उमा सिंह: संघर्ष, परिवार आ निर्भीकता

प्रश्न 9873. उमा सिंहक पिता आ भैयाकेँ केकरा द्वारा बेपत्ता बनाओल गेल कहल अछि?

क. माओवादी कार्यकर्तासभ द्वारा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माओवादी कार्यकर्तासभ द्वारा।

व्याख्या: स्रोतमे तीन वर्ष पूर्व माओवादी द्वारा पिता आ भैयाकेँ बेपत्ता बनाओल गेल कहल अछि।

प्रश्न 9874. पिता आ भैयाक बेपत्ता भेला बाद उमा सिंहक घरमे भूमिका की भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ओ घरक एसगर मुखिया बनलीह।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ओ घरक एसगर मुखिया बनलीह।

व्याख्या: स्रोतमे घरक मुखियासभ बेपत्ता भेला बाद उमा घरक एसगर मुखिया छलीह।

प्रश्न 9875. हुनका कोन परिजन सभक देखभाल करबाक जिम्मा छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. माए, भाउज, बहिन आ भतिजा-भतिजी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. माए, भाउज, बहिन आ भतिजा-भतिजी।

व्याख्या: स्रोतमे ई सभ परिवारिक जिम्मेदारी बताओल गेल।

प्रश्न 9876. उमा सिंहक पेशागत गुण सभमे की-की कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अध्ययनशील, मेहनती, निडर आ पेशाप्रति निष्ठावान।

उत्तर: घ. अध्ययनशील, मेहनती, निडर आ पेशाप्रति निष्ठावान।

व्याख्या: स्रोतमे ई चारू गुण स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9877. लेखक हुनक मृत्युकेँ कोन प्रकारक घटना कहैत छथि?

क. अक्षम्य अपराध।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अक्षम्य अपराध।

व्याख्या: स्रोतमे ‘एकगोट अक्षम्य अपराध’ कहल गेल।

प्रश्न 9878. लेखकक अनुसार हुनकर गुण मृत्युक कारण बनल होएबाक सम्भावना कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अध्ययनशीलता, मेहनत, निडरता आ निष्ठा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अध्ययनशीलता, मेहनत, निडरता आ निष्ठा।

व्याख्या: स्रोतमे सम्भवतः ईहे गुण मृत्युकेँ कारण बनल कहल अछि।

प्रश्न 9879. उमा सिंहक पीड़ा किनका खोजसँ जुड़ल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपहरित पिता आ भैयाक खोजसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपहरित पिता आ भैयाक खोजसँ।
व्याख्या: घरक जिम्मा संग पिता-भैयाक खोज हुनक जिम्मामे आबि गेल।

प्रश्न 9880. ओ संचारक्षेत्रमे अपन बात कहए चाहैत छलीह—ई बात कोन पृष्ठभूमिसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परिवारिक हिंसा आ बेपत्ता प्रकरणसँ।
उत्तर: घ. परिवारिक हिंसा आ बेपत्ता प्रकरणसँ।
व्याख्या: स्रोत हुनक संचार-इच्छाकेँ परिवारिक त्रासदीसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 9881. उमा सिंहक कथा मैथिली संचारक कोन पक्ष देखबैत अछि?
क. प्रतिभा, संघर्ष आ सामाजिक साहस।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रतिभा, संघर्ष आ सामाजिक साहस।
व्याख्या: ई प्रसंग संचारकर्मी जीवनक जोखिम आ प्रतिबद्धता देखबैत अछि।

प्रश्न 9882. खण्ड ९९३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उमा सिंह संघर्षमय पारिवारिक पृष्ठभूमिसँ उठल निर्भीक, निष्ठावान संचारकर्मी छलीह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उमा सिंह संघर्षमय पारिवारिक पृष्ठभूमिसँ उठल निर्भीक, निष्ठावान संचारकर्मी छलीह।
व्याख्या: ई खण्ड हुनक परिवारिक पीड़ा आ पेशागत साहस समेटैत अछि।

खण्ड ९९४ : विदेह-सदेह २ — जनकपुरक चटिसारक अन्तिम प्राचार्य

प्रश्न 9883. लेखक गुरुदेवकेँ कोन पदवीसँ स्मरण करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जनकपुरक चटिसारक अन्तिम प्राचार्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जनकपुरक चटिसारक अन्तिम प्राचार्य।
व्याख्या: स्रोतमे लेखक एहि सम्बोधनक औचित्य स्पष्ट करैत छथि।

प्रश्न 9884. लेखकक मनमे एहि पदवी लिखैत काल किएक चिन्ता छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जनकपुरमे सक्रिय कलमजीवी सभक नाम-दाम-मुकामक कारण।
उत्तर: घ. जनकपुरमे सक्रिय कलमजीवी सभक नाम-दाम-मुकामक कारण।
व्याख्या: स्रोतमे सम्भावित आपत्ति आ चिन्ताक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9885. गुरुदेवक भागिरथी प्रयाससँ कतय मैथिलीमे एम.ए. पढ़ाइ शुरू भेल?
क. राराव क्याम्पसमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राराव क्याम्पसमे।
व्याख्या: स्रोतमे राराव क्याम्पसमे एम.ए. पढ़ाइ शुरू होयबाक बात अछि।

प्रश्न 9886. मैथिली एम.ए.क बाद कोन विषय सभमे स्नातकोत्तर पढ़ाइ शुरू भेल कहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक बाद आन विषय सभक पढ़ाइ शुरू भेल।

प्रश्न 9887. पहिल बैचक किछु विद्यार्थी कोन वर्गक छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपन-अपन क्षेत्रमे स्थापित विद्वान/कर्मचारी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपन-अपन क्षेत्रमे स्थापित विद्वान/कर्मचारी।
व्याख्या: स्रोतमे अधिकांश विद्यार्थी नोकरियाहा आ स्थापित कहल गेल।

प्रश्न 9888. अधिकांश विद्यार्थी नोकरियाहा रहबाक कारण कक्षा कहिया चलैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भोरमे।
उत्तर: घ. भोरमे।
व्याख्या: स्रोतमे कक्षा भोरमे संचालित होइत छल कहल अछि।

प्रश्न 9889. अधिकांश कक्षा कतय संचालित होइत छल?
क. गुरुदेवक घरेपर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गुरुदेवक घरेपर।
व्याख्या: स्रोतमे गुरुदेवक घरेपर कक्षा चलबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9890. गुरुदेवक चटिसारक अर्थ एतय की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. घर-आधारित जीवंत शिक्षण-संस्कार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. घर-आधारित जीवंत शिक्षण-संस्कार।
व्याख्या: चाह-पान, चर्चा आ डिक्टेशनक वातावरण चटिसार-परम्परा देखबैत अछि।

प्रश्न 9891. लेखक किएक पूछैत छथि जे एखन चटिसार चलैत अछि कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गुरुदेवक अद्वितीय शिक्षण-परम्परा देखाबय लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गुरुदेवक अद्वितीय शिक्षण-परम्परा देखाबय लेल।
व्याख्या: ई प्रश्न हुनका अन्तिम प्राचार्य कहबाक तर्क मजबूत करैत अछि।

प्रश्न 9892. खण्ड ९९४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गुरुदेव जनकपुरमे घर-चटिसार द्वारा मैथिली उच्च शिक्षाक जीवन्त केन्द्र बनौलनि।
उत्तर: घ. गुरुदेव जनकपुरमे घर-चटिसार द्वारा मैथिली उच्च शिक्षाक जीवन्त केन्द्र बनौलनि।
व्याख्या: ई खण्ड गुरुदेवक शैक्षिक चटिसार-परम्परा पर केन्द्रित अछि।

खण्ड ९९५ : विदेह-सदेह २ — एम.ए. मैथिली आ गुरुदेवक शिक्षा-पद्धति

प्रश्न 9893. पहिल एम.ए. मैथिली बैचमे डा. राजेन्द्रप्रसाद विमल आ जानकी रमण लाल सन नाम किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ओ सभ पहिनेसँ अपन मुकामपर स्थापित व्यक्तित्व छलाह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ सभ पहिनेसँ अपन मुकामपर स्थापित व्यक्तित्व छलाह।
व्याख्या: स्रोतमे पहिल बैचक अनेक प्रतिष्ठित नाम आयल अछि।

प्रश्न 9894. कक्षा दौरान गुरुदेव कोन प्रक्रिया अपनबैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. डिक्टेशन लिखबैत छलाह आ राय-सल्लाह करैत छलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. डिक्टेशन लिखबैत छलाह आ राय-सल्लाह करैत छलाह।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा-विज्ञानक कापी बनबैत काल राय-सल्लाहक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9895. भाषा विज्ञानक कापी तैयार करैत काल गुरुदेव किनकासँ बेर-बेर राय लैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जानकी बाबू आ विमलसरसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जानकी बाबू आ विमलसरसँ।
व्याख्या: स्रोतमे ई दू नाम स्पष्ट आएल।

प्रश्न 9896. लेखकक अनुसार ओहि कापीक आधारपर विद्यार्थी सभ की करैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परीक्षामे पास करैत छलाह।
उत्तर: घ. परीक्षामे पास करैत छलाह।
व्याख्या: स्रोतमे एखनो विद्यार्थी सभ ओही कापीसँ पास करैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 9897. कक्षा वातावरणमे चाह-पानक उल्लेख किएक अछि?
क. शिक्षा आ आत्मीयता एक संग चलबाक संकेत लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शिक्षा आ आत्मीयता एक संग चलबाक संकेत लेल।
व्याख्या: चाह-पान, हँसी आ गम्भीर चर्चा एके वातावरणमे छल।

प्रश्न 9898. कक्षा मे कोन प्रकारक बौद्धिक गतिविधि होइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विभिन्न विषयपर गंथन-मंथन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विभिन्न विषयपर गंथन-मंथन।
व्याख्या: स्रोतमे विभिन्न विषयपर गंथन-मंथन होइत छल कहल अछि।

प्रश्न 9899. गुरुदेवक शिक्षण-पद्धतिक मूल गुण की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सहभागी, परामर्शात्मक आ जीवंत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सहभागी, परामर्शात्मक आ जीवंत।
व्याख्या: राय-सल्लाह, डिक्टेशन आ चर्चा एहि गुणकेँ देखबैत अछि।

प्रश्न 9900. एम.ए. मैथिली शुरुआतक संस्थागत अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नेपालीय मिथिलामे उच्च मैथिली अध्ययनक आधार।
उत्तर: घ. नेपालीय मिथिलामे उच्च मैथिली अध्ययनक आधार।
व्याख्या: राराव क्याम्पसमे एम.ए. मैथिली आरम्भ ऐतिहासिक छल।

प्रश्न 9901. लेखकक व्यक्तिगत स्मृति शिक्षा-विवरणकेँ कोना बदलैत अछि?
क. स्रोतकेँ जीवित अनुभवक रूप दैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्रोतकेँ जीवित अनुभवक रूप दैत अछि।
व्याख्या: चाह-पान लयबाक बाल-स्मृति पाठकेँ प्रत्यक्ष बनबैत अछि।

प्रश्न 9902. खण्ड ९९५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गुरुदेवक एम.ए. मैथिली कक्षा विद्वान विद्यार्थी, संवाद आ जीवंत नोट-परम्परासँ बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गुरुदेवक एम.ए. मैथिली कक्षा विद्वान विद्यार्थी, संवाद आ जीवंत नोट-परम्परासँ बनल।
व्याख्या: ई खण्ड शिक्षण-पद्धति आ पहिल बैचक स्वरूप समेटैत अछि।

खण्ड ९९६ : विदेह-सदेह २ — गुरुदेवक शिष्य-सृजन आ नेपालीय मैथिली

प्रश्न 9903. गुरुदेव केवल साहित्यकार नहि, आओर की कहल गेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साहित्यकार सृजन करएबला ब्रह्मा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साहित्यकार सृजन करएबला ब्रह्मा।

व्याख्या: स्रोतमे ओ सृजन करएबला ब्रह्मा सेहो छलाह कहल अछि।

प्रश्न 9904. महेन्द्र मलंगियाकेँ गुरुदेव की देलथिन?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाटक लिखबाक प्रेरणा आ सीख।

उत्तर: घ. नाटक लिखबाक प्रेरणा आ सीख।

व्याख्या: स्रोतमे महेन्द्र मलंगियाकेँ नाटक लिखबाक प्रेरणा आ सिख देबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9905. रेवती रमणलालकेँ गुरुदेव कोन लेखनक आदेश देलथिन?

क. रिपोर्ट लिखबाक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिपोर्ट लिखबाक।

व्याख्या: स्रोतमे रेवती रमणलालकेँ रिपोर्ट लिखबाक आदेशक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9906. रामभरोस कापड़िकेँ कोन विधा देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता आ गीत।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता आ गीत।

व्याख्या: स्रोतमे रामभरोस कापड़िकेँ कविता आ गीतक जिम्मेवारी देल गेल।

प्रश्न 9907. भुवनेश्वर पाथेयकेँ कोन विधा देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता आ कथा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता आ कथा।

व्याख्या: स्रोतमे भुवनेश्वर पाथेयकेँ कविता आ कथा लिखबाक जिम्मा देल गेल।

प्रश्न 9908. गुरुदेव प्रतिभा आ रुचि अनुसार की करैत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जिम्मेवारी विभाजन।

उत्तर: घ. जिम्मेवारी विभाजन।

व्याख्या: स्रोतमे प्रतिभा आ रुचिक अनुसार जिम्मेवारी बाँटबाक बात अछि।

प्रश्न 9909. एहि जिम्मेवारी-विभाजनक पाछाँ कोन उद्देश्य छल?
क. नेपालीय मैथिलीमे सभ विधामे रचना हो।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नेपालीय मैथिलीमे सभ विधामे रचना हो।
व्याख्या: स्रोतमे ओ चाहने हेताह जे नेपालीय मैथिलीमे सभ विधामे रचना हो।

प्रश्न 9910. ‘नेपालीय मैथिली साहित्य’क नामकरण के कएलथि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गुरुदेव।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गुरुदेव।
व्याख्या: स्रोतमे नामकरण ओएह कएने छलाह कहल अछि।

प्रश्न 9911. गुरुदेवक शिष्य-निर्माण मैथिली लेल की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विधागत विस्तार आ साहित्यिक पीढ़ी निर्माण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विधागत विस्तार आ साहित्यिक पीढ़ी निर्माण।
व्याख्या: नाटक, रिपोर्ट, कविता, गीत, कथा सभ विधामे प्रेरणा देल गेल।

प्रश्न 9912. खण्ड ९९६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गुरुदेव शिष्य-प्रतिभाकेँ विधा अनुसार दिशा दऽ नेपालीय मैथिली साहित्यक विस्तार कएलनि।
उत्तर: घ. गुरुदेव शिष्य-प्रतिभाकेँ विधा अनुसार दिशा दऽ नेपालीय मैथिली साहित्यक विस्तार कएलनि।
व्याख्या: ई खण्ड शिष्य-सृजन आ विधा-विस्तार समेटैत अछि।

खण्ड ९९७ : विदेह-सदेह २ — भाषा अकादमी, पाण्डुलिपि आ संस्थागत पुनर्जीवन

प्रश्न 9913. भाषा अकादमी सभक पहिल प्राथमिकता की कहल गेल?
क. आधारभूत संरचनाक विकास।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आधारभूत संरचनाक विकास।
व्याख्या: स्रोतमे पहिल प्राथमिकता आधारभूत संरचनाक विकास कहल अछि।

प्रश्न 9914. आधारभूत संरचना पश्चात् कोन काज शुरू करबाक बात अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्थानीय भाषाक विकास आ शोध।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्थानीय भाषाक विकास आ शोध।
व्याख्या: स्रोतमे स्थानीय भाषा विकास आ शोधक काज शुरू करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9915. पाण्डुलिपि सम्बन्धी कोन योजना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पाण्डुलिपिक प्रकाशन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पाण्डुलिपिक प्रकाशन।
व्याख्या: स्रोतमे पाण्डुलिपिक प्रकाशन आ पुस्तक बिक्रीक व्यवस्था कहल अछि।

प्रश्न 9916. प्रकाशित पुस्तकक बिक्रीक व्यवस्था किएक जरूरी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अकादमीकेँ आर्थिक रूपसँ मजबूत बनाबय लेल।
उत्तर: घ. अकादमीकेँ आर्थिक रूपसँ मजबूत बनाबय लेल।
व्याख्या: स्रोतमे पुस्तक बिक्रीसँ आर्थिक मजबूतीक बात अछि।

प्रश्न 9917. भाषा संस्थान सभक गतिविधि बहुत वर्षसँ कोना रहल कहल गेल?
क. मंद।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मंद।
व्याख्या: स्रोतमे गतिविधि मंद पड़ल कहल अछि।

प्रश्न 9918. केवल किछु दरमाहा आ साहित्यकारक महिमा-मंडनसँ आगू बढ़य लेल की जरूरी अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सरकारक इमानदार प्रयास।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सरकारक इमानदार प्रयास।
व्याख्या: स्रोत सरकार द्वारा गतिविधि सुचारू करबाक प्रयासकेँ स्वागत योग्य कहैत अछि।

प्रश्न 9919. शोधक काज शुरू भेलासँ के लाभान्वित होएत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साहित्यक शोधार्थी आ छात्र सभ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साहित्यक शोधार्थी आ छात्र सभ।
व्याख्या: स्रोतमे शोधार्थी आ छात्र सभकेँ लाभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9920. दुर्लभ पाण्डुलिपि पुस्तकाकार रूपमे आबि गेलासँ की होएत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. साहित्यप्रेमी सोझा सामग्री आओत।
उत्तर: घ. साहित्यप्रेमी सोझा सामग्री आओत।
व्याख्या: स्रोतमे दुर्लभ पाण्डुलिपि पुस्तकाकार रूपमे अएबाक आशा अछि।

प्रश्न 9921. एहि खण्डमे संस्थागत पुनर्जीवनक आधार की अछि?
क. संरचना, शोध, प्रकाशन आ आर्थिक व्यवस्था।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संरचना, शोध, प्रकाशन आ आर्थिक व्यवस्था।
व्याख्या: चारू तत्व अकादमीक मजबूतीक लेल आवश्यक बताओल गेल।

प्रश्न 9922. खण्ड ९९७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषा अकादमी सभकेँ आधारभूत संरचना, शोध, पाण्डुलिपि-प्रकाशन आ पुस्तक-बिक्रीसँ पुनर्जीवित करबाक जरूरत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषा अकादमी सभकेँ आधारभूत संरचना, शोध, पाण्डुलिपि-प्रकाशन आ पुस्तक-बिक्रीसँ पुनर्जीवित करबाक जरूरत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड संस्थागत भाषा-विकासक योजना समेटैत अछि।

खण्ड ९९८ : विदेह-सदेह २ — सुशान्त झा: मैथिली गीत-संगीतक डिजिटल संरक्षण

प्रश्न 9923. सुशान्त झा फुरसति भेटला पर की सुनबाक कोशिश करैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली गीत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली गीत।
व्याख्या: स्रोतमे फुरसति भेटला पर मैथिली गीत सुनबाक कोशिशक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9924. यू-ट्यूबपर उपलब्ध मैथिली गीतमे बेसीतर कोन प्रकारक गीत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बियाहक गीत आ भक्ति गीत।
उत्तर: घ. बियाहक गीत आ भक्ति गीत।
व्याख्या: स्रोतमे बेसीतर बियाहक आ भक्ति गीत उपलब्ध कहल अछि।

प्रश्न 9925. मैथिलीक विराट लोकगीत-संसारक मुख्य समस्या की कहल गेल?
क. सभकेँ एकठाम पौनाई मुश्किल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सभकेँ एकठाम पौनाई मुश्किल।
व्याख्या: स्रोतमे छिड़ाएल लोकगीत सभकेँ एकठाम पौनाई कठिन कहल अछि।

प्रश्न 9926. गीत-संग्रहक दोसर कठिनाई की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सभ गीतक रिकॉर्डिंग नहि भेल वा संकलन कठिन अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सभ गीतक रिकॉर्डिंग नहि भेल वा संकलन कठिन अछि।
व्याख्या: स्रोतमे रिकॉर्डिंग आ संकलन दूनू कठिनाई बताओल अछि।

प्रश्न 9927. सुशान्त झा कोन तरहक वेबसाइट चाहैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जतय मैथिल लोक मैथिली गीत-संगीतक आनन्द लऽ सकथि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जतय मैथिल लोक मैथिली गीत-संगीतक आनन्द लऽ सकथि।
व्याख्या: स्रोतमे दिल्ली-बंबई-अमेरिका धरि मैथिल लेल वेबसाइटक कल्पना अछि।

प्रश्न 9928. कापीराइटक संकट कोन काजमे बाधा बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लोकप्रिय मैथिली गीत वेबसाइटपर राखबामे।
उत्तर: घ. लोकप्रिय मैथिली गीत वेबसाइटपर राखबामे।
व्याख्या: स्रोतमे गजेन्द्रजीसँ बातपर कापीराइट संकटक जानकारी भेटल।

प्रश्न 9929. नव तकनीकक सही उपयोग मैथिली लेल की करि सकैत अछि?
क. गीत-संगीतक विराट संसार मैथिल भाषी धरि पहुँचा सकैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गीत-संगीतक विराट संसार मैथिल भाषी धरि पहुँचा सकैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे नब तकनीक उपयोगक सम्भावना बताओल अछि।

प्रश्न 9930. डिजिटल संरक्षणक लक्ष्य केवल मनोरंजन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि, भाषा-संस्कृति रक्षाक साधन सेहो अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि, भाषा-संस्कृति रक्षाक साधन सेहो अछि।
व्याख्या: गीत-संगीतक डिजिटल पहुँच भाषाई-सांस्कृतिक रक्षा बनैत अछि।

प्रश्न 9931. सुशान्त झाक चिन्ता कोन साम्राज्यवादसँ बचबाक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अंग्रेजी आ हिंदीक भाषाई साम्राज्यवाद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अंग्रेजी आ हिंदीक भाषाई साम्राज्यवाद।
व्याख्या: स्रोतमे दुनू भाषाक साम्राज्यवादसँ बचनाई कठिन कहल अछि।

प्रश्न 9932. खण्ड ९९८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली गीत-संगीतक डिजिटल संकलन भाषा-संस्कृति संरक्षणक जरूरी उपाय अछि।
उत्तर: घ. मैथिली गीत-संगीतक डिजिटल संकलन भाषा-संस्कृति संरक्षणक जरूरी उपाय अछि।
व्याख्या: ई खण्ड डिजिटल माध्यम आ गीत-संरक्षणक आवश्यकता समेटैत अछि।

खण्ड ९९९ : विदेह-सदेह २ — मैथिली धरोहर: लोकगीत, नाटक, लोककथा

प्रश्न 9933. सुशान्त झाक अनुसार मैथिली लोकधरोहरमे की-की अछि?
क. लोकगीत, नाटक, लोककथा आ आख्यान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लोकगीत, नाटक, लोककथा आ आख्यान।
व्याख्या: स्रोतमे एहि चारू धरोहरक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9934. ई धरोहर कोन प्रकारक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बड्डु पैघ धरोहर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बड्डु पैघ धरोहर।
व्याख्या: स्रोतमे लोकगीत, नाटक, लोककथा, आख्यानकेँ पैघ धरोहर कहल अछि।

प्रश्न 9935. एहि धरोहरक लेल मुख्य जरूरत की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. संयोजन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. संयोजन।
व्याख्या: स्रोतमे ‘एकर संयोजनक जरूरत’ स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9936. आम मैथिलकेँ जोड़बाक लेल की जरूरी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीक सभ रूपकेँ दिल खोलि अपनायब।
उत्तर: घ. मैथिलीक सभ रूपकेँ दिल खोलि अपनायब।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक सभ रूप अपनाबय पर बल अछि।

प्रश्न 9937. ‘पंचकोसीक ग्रंथि’सँ बाहर आबय केँ किएक कहल गेल?
क. मैथिलीक व्यापक रूप स्वीकार करबाक लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक व्यापक रूप स्वीकार करबाक लेल।
व्याख्या: स्रोत संकीर्ण क्षेत्रीय ग्रंथि छोड़बाक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 9938. लोकधरोहरक संयोजनसँ की सम्भावना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आम मैथिलसँ मजबूत जुड़ाव।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आम मैथिलसँ मजबूत जुड़ाव।
व्याख्या: स्रोतमे आम मैथिलकेँ जोड़ि सकबाक उम्मीद अछि।

प्रश्न 9939. एहि खण्डमे मैथिली संस्कृतिक संकटक समाधान की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. धरोहरक संकलन, संयोजन आ सर्वरूप स्वीकार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. धरोहरक संकलन, संयोजन आ सर्वरूप स्वीकार।
व्याख्या: लेखक लोकधरोहर आ समावेशी दृष्टिकेँ समाधान मानैत छथि।

प्रश्न 9940. मैथिली गीत-संगीतक डिजिटल पहुँच कोन समुदाय लेल कल्पित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दिल्ली-बंबईसँ अमेरिका धरि रहएबला मैथिल लेल।
उत्तर: घ. दिल्ली-बंबईसँ अमेरिका धरि रहएबला मैथिल लेल।
व्याख्या: स्रोतमे प्रवासी मैथिल धरि पहुँचाक कल्पना अछि।

प्रश्न 9941. लोकगीत आ आख्यान एतय केवल अतीत नहि, आओर की अछि?
क. भविष्यक भाषा-जुड़ावक साधन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भविष्यक भाषा-जुड़ावक साधन।
व्याख्या: ई धरोहर नव तकनीकसँ भाषा-रक्षा मे उपयोगी बनैत अछि।

प्रश्न 9942. खण्ड ९९९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीक लोकगीत, नाटक, लोककथा आ आख्यानक संयोजन आम मैथिलकेँ भाषासँ जोड़ि सकैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीक लोकगीत, नाटक, लोककथा आ आख्यानक संयोजन आम मैथिलकेँ भाषासँ जोड़ि सकैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड लोकधरोहरक डिजिटल-सामाजिक महत्त्व देखबैत अछि।

खण्ड १००० : विदेह-सदेह २ — ऑडियो-विजुअल जमाना आ नव तकनीक

प्रश्न 9943. सुशान्त झाक अनुसार आबएबला जमाना कोन प्रकारक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ऑडियो-विजुअल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ऑडियो-विजुअल।
व्याख्या: स्रोतमे आबएबला जमाना ऑडियो-विजुअलक कहल अछि।

प्रश्न 9944. नव तकनीकक उपयोग सतर्कतासँ केलासँ मैथिलीकेँ की लाभ?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गीत-संगीतक विराट संसार भाषी लोक धरि पहुँचत।
उत्तर: घ. गीत-संगीतक विराट संसार भाषी लोक धरि पहुँचत।
व्याख्या: स्रोत नब तकनीककेँ सही उपयोग केलासँ पहुँच बढ़बाक बात कहैत अछि।

प्रश्न 9945. ऑडियो-विजुअल माध्यम मैथिली धरोहर लेल की बनैत अछि?
क. संग्रह, प्रसार आ पुनर्जीवनक साधन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संग्रह, प्रसार आ पुनर्जीवनक साधन।
व्याख्या: गीत, नाटक, लोककथा सभ ऑडियो-विजुअल माध्यममे जीवित भऽ सकैत अछि।

प्रश्न 9946. डिजिटल युगमे भाषा-संरक्षणक प्रमुख चुनौती की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बिखरल सामग्रीकेँ व्यवस्थित मंच देब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बिखरल सामग्रीकेँ व्यवस्थित मंच देब।
व्याख्या: स्रोतमे सामग्री छिड़ाएल आ खंगालबाक समस्या अछि।

प्रश्न 9947. मैथिली गीतक वेबसाइटक कल्पना कोन बुनियादी लक्ष्य रखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सहज उपलब्धता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सहज उपलब्धता।
व्याख्या: प्रवासी आ स्थानीय मैथिल सहज रूपेँ गीत-संगीत पाबथि, ई लक्ष्य अछि।

प्रश्न 9948. कापीराइट संकटक उल्लेख डिजिटल कार्यमे की सिखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संग्रह संग अधिकार-सावधानी जरूरी अछि।
उत्तर: घ. संग्रह संग अधिकार-सावधानी जरूरी अछि।
व्याख्या: स्रोत कापीराइटक बाधा बतबैत अछि।

प्रश्न 9949. ऑडियो-विजुअल जमाना लोकधरोहरक कुन पक्ष मजबूत करैत अछि?
क. सुनबाक आ देखबाक जीवंतता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सुनबाक आ देखबाक जीवंतता।
व्याख्या: नाटक, गीत, आख्यान सभ ध्वनि-दृश्य माध्यममे अधिक प्रभावी होइत अछि।

प्रश्न 9950. ई खण्ड मैथिली संस्थाक जरूरतसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संरक्षित डिजिटल भंडार बनेबाक आवश्यकता देखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संरक्षित डिजिटल भंडार बनेबाक आवश्यकता देखबैत अछि।
व्याख्या: शीर्षक स्वयं भाषा-संस्कृति रक्षाक संस्था जरूरी कहैत अछि।

प्रश्न 9951. मैथिलीकेँ नव तकनीक अपनाबयमे ककरा सँ बाहर आबय पड़त?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पंचकोसीक संकीर्ण ग्रंथिसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पंचकोसीक संकीर्ण ग्रंथिसँ।
व्याख्या: स्रोत व्यापक मैथिली-रूप अपनाबय पर जोर दैत अछि।

प्रश्न 9952. खण्ड १०००क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ऑडियो-विजुअल तकनीक मैथिली धरोहरकेँ संग्रहित, प्रसारित आ पुनर्जीवित करबाक प्रमुख साधन बनि सकैत अछि।
उत्तर: घ. ऑडियो-विजुअल तकनीक मैथिली धरोहरकेँ संग्रहित, प्रसारित आ पुनर्जीवित करबाक प्रमुख साधन बनि सकैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड नव तकनीकक सांस्कृतिक उपयोग समेटैत अछि।

खण्ड १००१ : विदेह-सदेह २ — मिथिलाक विकास-दृष्टि: पुल, बिजली आ पर्यटन

प्रश्न 9953. कोसीपर कोन दू प्रकारक पुलक चर्चा अछि?
क. रेलवे पुल आ सड़क पुल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रेलवे पुल आ सड़क पुल।
व्याख्या: स्रोतमे कोसीपर रेलवे पुल आ हाईवे सड़क पुल दुनूक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9954. ई पुल सभ मिथिलाक लेल की साबित होएत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलाकेँ फेरसँ जोड़ैबला।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाकेँ फेरसँ जोड़ैबला।
व्याख्या: कोसी नदी मिथिलाकेँ दू फाँकमे बाँटने छल, पुल जोड़ैबला कहल गेल।

प्रश्न 9955. लेखक कोन फोर लेन हाईवेक कल्पना करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मोकामासँ जयनगर तक भाया समस्तीपुर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मोकामासँ जयनगर तक भाया समस्तीपुर।
व्याख्या: स्रोतमे मोकामा-जयनगर मार्गक कल्पना अछि।

प्रश्न 9956. हाईवे नंबर 28 क सम्बन्धमे की अपेक्षा अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मुजफ्फरपुरसँ बरौनी आ आगू गुवाहाटी दिस फोर लेन बनय।
उत्तर: घ. मुजफ्फरपुरसँ बरौनी आ आगू गुवाहाटी दिस फोर लेन बनय।
व्याख्या: स्रोतमे हाईवे 28 फोर लेन बनेबाक बात अछि।

प्रश्न 9957. नेपालसँ की आओत तँ मिथिला जगमगाएत कहल गेल?
क. प्रचुर बिजली।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रचुर बिजली।
व्याख्या: स्रोतमे नेपालसँ बिजली आएलासँ मिथिलाक इलाका जगमगायब कल्पित अछि।

प्रश्न 9958. नेपालमे कोन स्थिति कायम होयबाक आशा अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शांति आ सुव्यवस्था।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शांति आ सुव्यवस्था।
व्याख्या: स्रोतमे नेपालमे जल्दी शांति आ सुव्यवस्था कायम होयबाक आशा अछि।

प्रश्न 9959. नेपाल आबएबला अन्तरराष्ट्रीय पर्यटक मिथिला दिस किएक आकि सकैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पर्यटन स्थलक विकास भेलासँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पर्यटन स्थलक विकास भेलासँ।
व्याख्या: स्रोतमे पर्यटक आकर्षित करबाक लेल पर्यटन स्थलक विकास जरूरी कहल अछि।

प्रश्न 9960. जनकपुर, वैशाली, पाटलिपुत्र, बोधगया, नालंदाकेँ की बनाओल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पर्यटन सर्किट।
उत्तर: घ. पर्यटन सर्किट।
व्याख्या: स्रोतमे एहि स्थलक जोड़ल सर्किटक विकासक बात अछि।

प्रश्न 9961. मिथिलाक संस्कृति पर्यटक लेल कोना उपयोगी बनि सकैत अछि?
क. नीक पैकेजिंग द्वारा आकर्षणक आधार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नीक पैकेजिंग द्वारा आकर्षणक आधार।
व्याख्या: स्रोतमे संस्कृतिकेँ नीक पैकेजिंगक बात अछि।

प्रश्न 9962. खण्ड १००१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पुल, सड़क, नेपालक बिजली आ सांस्कृतिक पर्यटन मिथिलाक विकास-दृष्टिक प्रमुख आधार छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पुल, सड़क, नेपालक बिजली आ सांस्कृतिक पर्यटन मिथिलाक विकास-दृष्टिक प्रमुख आधार छथि।
व्याख्या: ई खण्ड अवसंरचना आ पर्यटन विकासक कल्पना प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १००२ : विदेह-सदेह २ — पोखरि, माछ-मखान आ क्षेत्रीय अर्थनीति

प्रश्न 9963. लेखकक अनुसार मिथिलामे कोन प्राकृतिक संसाधनक कमी नहि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पोखरि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पोखरि।

व्याख्या: स्रोतमे ‘हमरा इलाकामे पोखरिक कोनो कमी नहि’ कहल अछि।

प्रश्न 9964. पोखरि व्यवस्थित केलासँ कोन उत्पादनक पैघ आधार बनि सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माछ-मखान।

उत्तर: घ. माछ-मखान।

व्याख्या: स्रोतमे पोखरि माछ-मखान उत्पादनक आधार बनि सकैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 9965. पोखरिक सौन्दर्यीकरणसँ की बढ़ावा भेटि सकैत अछि?

क. कए तरहक आर्थिक गतिविधि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कए तरहक आर्थिक गतिविधि।

व्याख्या: स्रोतमे सौन्दर्यीकरण द्वारा आर्थिक गतिविधि बढ़बाक बात अछि।

प्रश्न 9966. दरभंगा आ पूर्णिया कोन रूपमे उभरबाक कल्पना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मेडिकल हब।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मेडिकल हब।

व्याख्या: स्रोतमे दरभंगा आ पूर्णिया मेडिकल हब बनबाक कल्पना अछि।

प्रश्न 9967. मुजफ्फरपुरकेँ कोन उद्योगक केन्द्र रूपमे देखल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निर्माण आ मोटर उद्योग।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निर्माण आ मोटर उद्योग।

व्याख्या: स्रोतमे मुजफ्फरपुर निर्माण आ मोटर उद्योग केन्द्रक रूपमे आयल।

प्रश्न 9968. भागलपुर फेरसँ कोन क्षेत्रमे ख्याति अर्जित करत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सिल्क आ हस्तकला।

उत्तर: घ. सिल्क आ हस्तकला।

व्याख्या: स्रोतमे भागलपुरक सिल्क आ हस्तकलाक प्रतिष्ठा पुनः कल्पित अछि।

प्रश्न 9969. मधुबनीमे कोन प्रकारक आयोजनक कल्पना अछि?
क. कलापर आधारित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कलापर आधारित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार।
व्याख्या: स्रोतमे मधुबनीमे कला-आधारित सेमिनारक बात अछि।

प्रश्न 9970. कोसीक बाढ़िपर काबू भेलासँ कोन कल्पना आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कोसीमे स्टीमर चलि सकैत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कोसीमे स्टीमर चलि सकैत।
व्याख्या: स्रोतमे कोसीमे स्टीमर चलबाक कल्पना अछि।

प्रश्न 9971. भारत-नेपाल सम्बन्धक तुलना किनका संग कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अमेरिका आ कनाडाक सम्बन्धसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अमेरिका आ कनाडाक सम्बन्धसँ।
व्याख्या: स्रोतमे भारत-नेपाल सम्बन्ध अमेरिका-कनाडा सन होयबाक कल्पना अछि।

प्रश्न 9972. खण्ड १००२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिलाक पोखरि, कला, उद्योग, स्वास्थ्य आ नदी-संसाधन क्षेत्रीय अर्थनीतिक आधार बनि सकैत अछि।
उत्तर: घ. मिथिलाक पोखरि, कला, उद्योग, स्वास्थ्य आ नदी-संसाधन क्षेत्रीय अर्थनीतिक आधार बनि सकैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड संसाधन-आधारित विकासक सपना समेटैत अछि।

खण्ड १००३ : विदेह-सदेह २ — मैथिलीकेँ लऽ असुविधाजनक प्रश्न

प्रश्न 9973. लेखकक असुविधाजनक प्रश्न कोन मूल चिन्तासँ जुड़ल अछि?
क. मैथिली भाषा आ मिथिलांचलक विकास अपेक्षित रूपमे किएक नहि भेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली भाषा आ मिथिलांचलक विकास अपेक्षित रूपमे किएक नहि भेल।
व्याख्या: स्रोतमे ई मूल प्रश्न स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9974. लेखकक अनुसार मैथिली साहित्य आ विकासक चिन्ता केकर दिमागी कसरत बनि रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. किछु मुट्ठी भरि लोकक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. किछु मुट्ठी भरि लोकक।
व्याख्या: स्रोतमे आम मैथिलक सरोकार नहि आ किछु लोकक चिन्ता कहल अछि।

प्रश्न 9975. दरभंगा-मधुबनीमे मैथिल धियापुता कोन भाषामे बात करैत छथि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हिंदीमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हिंदीमे।
व्याख्या: स्रोतमे धियापुता मैथिली नहि, हिंदीमे बात करैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 9976. लेखक एहि स्थितिक मूल कारण खोजबाक लेल की करबाक बात करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तहमे जाएबाक।
उत्तर: घ. तहमे जाएबाक।
व्याख्या: स्रोतमे ‘अगर एकर तहमे जाइ’ कहि विश्लेषण शुरू अछि।

प्रश्न 9977. मैथिली संग पैघ अन्यायक संकेत कोन रूपमे अछि?
क. एकरा किछु खास इलाकासँ बाँधि देबाक प्रवृत्ति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एकरा किछु खास इलाकासँ बाँधि देबाक प्रवृत्ति।
व्याख्या: अगिला पंक्ति एहि अन्यायक दिशामे संकेत करैत अछि।

प्रश्न 9978. आम मैथिलक उदासीनता भाषा-विकास लेल की चुनौती बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषा-संघर्षकेँ सीमित मंडली धरि रोकैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषा-संघर्षकेँ सीमित मंडली धरि रोकैत अछि।
व्याख्या: स्रोत आम सरोकारक अभावपर चिन्ता करैत अछि।

प्रश्न 9979. बाल-पीढ़ी हिंदीमे बात करैत अछि—ई कोन संकट देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मातृभाषिक व्यवहारक कमजोर पड़ब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मातृभाषिक व्यवहारक कमजोर पड़ब।
व्याख्या: घर-परिवारक भाषिक बदलाव मैथिली-संकट देखबैत अछि।

प्रश्न 9980. एहि खण्डक प्रश्न केवल साहित्यिक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नहि, सामाजिक, शैक्षिक आ भाषिक व्यवहारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. नहि, सामाजिक, शैक्षिक आ भाषिक व्यवहारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: लेखक भाषा आ क्षेत्रीय विकास दुनूपर सवाल करैत छथि।

प्रश्न 9981. ‘असुविधाजनक प्रश्न’क उद्देश्य की अछि?
क. संतोषक आवरण हटाकऽ यथार्थपर विचार करब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संतोषक आवरण हटाकऽ यथार्थपर विचार करब।
व्याख्या: शीर्षक आ पाठ दुनू आत्मालोचनाक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 9982. खण्ड १००३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली विकासक बाधा बुझबाक लेल आम मैथिलक भाषिक व्यवहार आ उदासीनतापर कठोर प्रश्न जरूरी अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली विकासक बाधा बुझबाक लेल आम मैथिलक भाषिक व्यवहार आ उदासीनतापर कठोर प्रश्न जरूरी अछि।
व्याख्या: ई खण्ड आत्मालोचनात्मक भाषा-चिन्ता प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १००४ : विदेह-सदेह २ — डॉ. शंभु कुमार सिंह: निर्धनता आ आधुनिक मैथिली नाटक

प्रश्न 9983. डॉ. शंभु कुमार सिंहक जन्म कहिया भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १८ अप्रैल १९६५।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १८ अप्रैल १९६५।
व्याख्या: स्रोतमे जन्म 18 अप्रील 1965 कहल अछि।

प्रश्न 9984. हुनक जन्मस्थान कोन गाम/प्रखंडसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाम।
उत्तर: घ. सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाम।
व्याख्या: स्रोतमे लहुआर, महिषी, सहरसाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 9985. हुनका एम.ए. मैथिलीमे कोन उपलब्धि भेटल?
क. स्वर्णपदक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्वर्णपदक।
व्याख्या: स्रोतमे एम.ए. मैथिली स्वर्णपदक प्राप्त कहल अछि।

प्रश्न 9986. हुनक पी-एच.डी. विषय की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्तन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्तन।
व्याख्या: स्रोतमे पी-एच.डी. विषय स्पष्ट अछि।

प्रश्न 9987. आलेखक शीर्षक कोन समस्या पर केन्द्रित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित निर्धनताक समस्या।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित निर्धनताक समस्या।
व्याख्या: स्रोतमे आलेख शीर्षक एहि रूपमे अछि।

प्रश्न 9988. लेखक भारतक अधिकांश जनता कतय रहैत छथि कहलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गाममे।
उत्तर: घ. गाममे।
व्याख्या: आलेखक आरम्भमे अधिकांश जनता गाममे रहैत छथि कहल गेल।

प्रश्न 9989. गामक लोक गरीबीक जीवन किएक बिता रहल छथि?
क. अनियमित बरखा, सरकारी उपेक्षा, अशिक्षा आ पिछड़ापनक कारणेँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनियमित बरखा, सरकारी उपेक्षा, अशिक्षा आ पिछड़ापनक कारणेँ।
व्याख्या: स्रोतमे ई कारण सभ देल अछि।

प्रश्न 9990. निर्धनता मनुक्खकेँ कोना बना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बेवस, लाचार आ शक्तिहीन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बेवस, लाचार आ शक्तिहीन।
व्याख्या: स्रोतमे निर्धनताक प्रभाव एहि रूपमे आयल।

प्रश्न 9991. मैथिली नाट्य साहित्यमे निर्धनता समस्याक उदाहरणमे कोन-कोन नाटक आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. वीर-वीरेन्द्र, मनोरथ, कुहेस, कनियाँ-पुतरा, ओकरा आँगनक बारहमासा आदि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. वीर-वीरेन्द्र, मनोरथ, कुहेस, कनियाँ-पुतरा, ओकरा आँगनक बारहमासा आदि।
व्याख्या: स्रोतमे आधुनिक मैथिली नाटकक सूची देल अछि।

प्रश्न 9992. खण्ड १००४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. डॉ. शंभु कुमार सिंह आधुनिक मैथिली नाटकमे निर्धनताकेँ सामाजिक समस्या रूपमे पढ़ैत छथि।
उत्तर: घ. डॉ. शंभु कुमार सिंह आधुनिक मैथिली नाटकमे निर्धनताकेँ सामाजिक समस्या रूपमे पढ़ैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड लेखक-परिचय आ निर्धनता-विमर्शक आरम्भ समेटैत अछि।

खण्ड १००५ : विदेह-सदेह २ — निर्धनताक मानवीय असर

प्रश्न 9993. लेखक निर्धनताकेँ मानव जीवनक कोन प्रकारक समस्या मानैत छथि?

क. भयंकर अभिशाप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भयंकर अभिशाप।

व्याख्या: स्रोतमे निर्धनता वा गरीबीकेँ मानव जीवनक भयंकर अभिशाप कहल गेल।

प्रश्न 9994. निर्धन मनुक्ख कोन स्थितिमे जीबए बाध्य होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दोसरक दयापर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दोसरक दयापर।

व्याख्या: स्रोत निर्धन मनुक्खकेँ दीन-हीन आ दोसरक दयापर जीबए बाध्य बतबैत अछि।

प्रश्न 9995. दू-साँझक रोटी आ वस्त्रक अभाव कोन प्रश्न उठबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्वतंत्रता आ आत्मिक उच्चताक दावा खोखला भऽ जाइत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्वतंत्रता आ आत्मिक उच्चताक दावा खोखला भऽ जाइत अछि।

व्याख्या: लेखक पूछैत छथि जे एहन व्यक्ति स्वतंत्र वा उच्च काज कोना करि सकैत अछि।

प्रश्न 9996. निर्धनताक कारण मनुक्ख कोना बनि जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तंगदिल, कमजोर आ अपन इच्छाक मारएबला।

उत्तर: घ. तंगदिल, कमजोर आ अपन इच्छाक मारएबला।

व्याख्या: स्रोतमे निर्धनताक मनोवैज्ञानिक असर एहि रूपमे कहल गेल।

प्रश्न 9997. लेखकक अनुसार गरीब किसान शहर गेलापर की कहबैत छथि?

क. मजदूर वा बोनिहार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मजदूर वा बोनिहार।

व्याख्या: गामक गरीब लोक कमएबा शहर गेलापर मजदूर वा बोनिहार कहबैत छथि।

प्रश्न 9998. गामक गरीबीक कारणमे कोन तत्व सभ देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनियमित बरखा, सरकारी उपेक्षा, अशिक्षा आ पिछड़ापन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनियमित बरखा, सरकारी उपेक्षा, अशिक्षा आ पिछड़ापन।

व्याख्या: स्रोतमे गामक गरीबीक कारण रूपमे ई चारि तत्व आयल अछि।

प्रश्न 9999. निर्धनता केवल आर्थिक स्थिति अछि कि व्यापक मानवीय संकट?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. व्यापक मानवीय संकट।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. व्यापक मानवीय संकट।
व्याख्या: आलेख निर्धनताकेँ शरीर, विचार, स्वतंत्रता आ सम्मान सभसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 10000. लेखकक निर्धनता-विमर्शक आरम्भ कोन आधारसँ होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भारतीय ग्रामीण जीवनक गरीबीसँ।
उत्तर: घ. भारतीय ग्रामीण जीवनक गरीबीसँ।
व्याख्या: आलेख भारतक गाम, किसान आ मजदूरक स्थिति सँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 10001. निर्धनताक कारण विचार प्रकट करबामे की बाधा अबैत अछि?
क. स्वतंत्र रूपसँ विचार प्रकट करब कठिन भऽ जाइत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्वतंत्र रूपसँ विचार प्रकट करब कठिन भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे स्वतंत्र विचार-प्रकाशनपर गरीबीक बाधा संकेतित अछि।

प्रश्न 10002. खण्ड १००५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. निर्धनता मनुक्खक जीवन, इच्छा, स्वतंत्रता आ सम्मानकेँ क्षीण करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. निर्धनता मनुक्खक जीवन, इच्छा, स्वतंत्रता आ सम्मानकेँ क्षीण करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड गरीबीक मानवीय असर समेटैत अछि।

खण्ड १००६ : विदेह-सदेह २ — निर्धनता आ मैथिली नाटकक उदाहरण

प्रश्न 10003. लेखक निर्धनता समस्याक उदाहरण कोन साहित्यिक विधामे देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आधुनिक मैथिली नाटकमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आधुनिक मैथिली नाटकमे।
व्याख्या: आलेखक शीर्षक आ विवेचन आधुनिक मैथिली नाटकपर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 10004. निर्धनता-विमर्शमे हरिमोहन झाक कोन नाटक आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कनियाँ-पुतरा।
उत्तर: घ. कनियाँ-पुतरा।
व्याख्या: स्रोतमे हरिमोहन झाक कनियाँ-पुतरा सूचीबद्ध अछि।

प्रश्न 10005. महेन्द्र मलंगियाक कोन नाटक निर्धनता-विमर्शमे आयल?
क. ओकरा आँगनक बारहमासा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओकरा आँगनक बारहमासा।
व्याख्या: ई नाटक निम्नवर्गीय जीवनक प्रमुख उदाहरण रूपमे आयल।

प्रश्न 10006. नचिकेताक कोन नाटक सूचीमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नायकक नाम जीवन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नायकक नाम जीवन।
व्याख्या: स्रोतमे नचिकेताक नायकक नाम जीवनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10007. अरविन्द कुमार “अक्कू”क कोन नाटक सूचीमे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आगि धधकि रहल छै।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आगि धधकि रहल छै।
व्याख्या: स्रोतमे एहि नाटकक नाम निर्धनता-सम्बन्धी उदाहरणमे आयल।

प्रश्न 10008. गोविन्द झाक कोन नाटक गरीबीक प्रसंगमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंतिम प्रणाम।
उत्तर: घ. अंतिम प्रणाम।
व्याख्या: स्रोतमे अंतिम प्रणामक उदाहरण गरीबीक दुर्दशा लेल देल अछि।

प्रश्न 10009. गंगेश गुंजनक कोन नाटक निर्धनता उदाहरणमे आयल?
क. बुधिबधिया।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बुधिबधिया।
व्याख्या: स्रोतमे बुधिबधियामे गरीबीक दृष्टान्त कहल अछि।

प्रश्न 10010. आधुनिक मैथिली नाटकक सूची लेखक लेल की प्रमाण बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गरीबीक समस्या साहित्यिक विषय रूपमे बार-बार उठल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गरीबीक समस्या साहित्यिक विषय रूपमे बार-बार उठल अछि।
व्याख्या: कतेक नाटकक उदाहरण निर्धनता-विमर्शक व्यापकता देखबैत अछि।

प्रश्न 10011. निर्धनता-विमर्शक नाटक सभमे वर्गीय पीड़ाक केन्द्र कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. निम्नवर्ग आ सर्वहारा जीवन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. निम्नवर्ग आ सर्वहारा जीवन।
व्याख्या: स्रोतमे निम्नवर्गीय समाज आ सर्वहारा वर्गक यातना पर बल अछि।

प्रश्न 10012. खण्ड १००६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आधुनिक मैथिली नाटक गरीबीकेँ सामाजिक यथार्थक मुख्य समस्या रूपमे अंकित करैत अछि।
उत्तर: घ. आधुनिक मैथिली नाटक गरीबीकेँ सामाजिक यथार्थक मुख्य समस्या रूपमे अंकित करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड उदाहरण-सूची द्वारा नाट्य-विमर्शक दिशा देखबैत अछि।

खण्ड १००७ : विदेह-सदेह २ — “मनोरथ”मे गरीबीक बोध

प्रश्न 10013. “मनोरथ”मे लक्ष्मीनाथ अपन नामकेँ की होयबाक चाही कहैत छथि?
क. दरिद्रनाथ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दरिद्रनाथ।
व्याख्या: स्रोतमे लक्ष्मीनाथ अपन निर्धनताकेँ कोसैत “दरिद्रनाथ” शब्द कहैत छथि।

प्रश्न 10014. “मनोरथ”मे गरीबक धीया-पुताक सम्बन्धमे कोन भाव अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ सभ सोचि-समझि काज करैत आ सुख-सुविधा त्यागैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ सभ सोचि-समझि काज करैत आ सुख-सुविधा त्यागैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे गरीबक धीया-पुता अपन सुख-सुविधा त्यागैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 10015. डॉ. प्रेम शंकर सिंहक कथन कोन बात देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आर्थिक दशाक क्षीणतासँ मनुष्य संकटापन्न समस्या झेलैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आर्थिक दशाक क्षीणतासँ मनुष्य संकटापन्न समस्या झेलैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि नाटक द्वारा आर्थिक संकटक दिग्दर्शन कहल गेल।

प्रश्न 10016. “मनोरथ”क गरीबी-विमर्श व्यक्तिगत अछि कि सामाजिक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. व्यक्तिगत पीड़ासँ सामाजिक संकट धरि बढ़ैत अछि।
उत्तर: घ. व्यक्तिगत पीड़ासँ सामाजिक संकट धरि बढ़ैत अछि।
व्याख्या: लक्ष्मीनाथक आत्मपीड़ा गरीब वर्गक व्यापक दशाक प्रतीक बनैत अछि।

प्रश्न 10017. लक्ष्मीनाथक आत्म-कथनमे कोन भाव मुखर अछि?
क. अपन निर्धनतापर करुण व्यंग्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अपन निर्धनतापर करुण व्यंग्य।
व्याख्या: दरिद्रनाथ कहब आत्म-व्यंग्य आ करुणा दुनू देखबैत अछि।

प्रश्न 10018. गरीबक सुख-सुविधा त्यागबाक प्रसंग कोन वर्गीय दबाव देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आर्थिक अभावक नैतिक दबाव।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आर्थिक अभावक नैतिक दबाव।
व्याख्या: गरीबी व्यक्ति आ परिवारकेँ इच्छासँ अधिक विवशता दिस धकेलैत अछि।

प्रश्न 10019. “मनोरथ”क उदाहरण आलेखमे किएक उपयोगी अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गरीबीक नाटकीय प्रस्तुति स्पष्ट करबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गरीबीक नाटकीय प्रस्तुति स्पष्ट करबाक लेल।
व्याख्या: लेखक नाटकक माध्यमे निर्धनता समस्या देखबैत छथि।

प्रश्न 10020. “मनोरथ”मे आर्थिक कमजोरी कोन रूपमे देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मानवीय संकट आ अपमानक रूपमे।
उत्तर: घ. मानवीय संकट आ अपमानक रूपमे।
व्याख्या: नाटकक उद्धरण निर्धनताकेँ आत्मसम्मानसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 10021. गरीबीक कारणेँ विचार आ काज पर की असर पड़ैत अछि?
क. व्यक्ति विवशता मे सीमित भऽ जाइत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. व्यक्ति विवशता मे सीमित भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: “मनोरथ”क विवेचन गरीबीक व्यावहारिक बन्धन देखबैत अछि।

प्रश्न 10022. खण्ड १००७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “मनोरथ” गरीबीक निजी करुणा आ सामाजिक विवशता दुनूकेँ उजागर करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “मनोरथ” गरीबीक निजी करुणा आ सामाजिक विवशता दुनूकेँ उजागर करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड लक्ष्मीनाथक कथनक आधार पर निर्धनता बुझबैत अछि।

खण्ड १००८ : विदेह-सदेह २ — “ओकरा आँगनक बारहमासा”क निम्नवर्गीय यथार्थ

प्रश्न 10023. “ओकरा आँगनक बारहमासा”क केन्द्रबिन्दु की कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सर्वहारा वर्गक यातनापूर्ण जीवन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सर्वहारा वर्गक यातनापूर्ण जीवन।

व्याख्या: स्रोतमे एहि नाटकक केन्द्र सर्वहारा वर्गक यातना कहल अछि।

प्रश्न 10024. एहि नाटकमे बारहो मास कोन लोक लेल फुसि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीब लोक लेल।

उत्तर: घ. गरीब लोक लेल।

व्याख्या: वासन्ती पवनसँ शिशिर धरि ऋतु-रमणीयता गरीबक लेल फुसि कहल अछि।

प्रश्न 10025. कातिक मास खेतिहर मजदूर लेल कोन रूपमे आयल?

क. दुखक मास।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुखक मास।

व्याख्या: स्रोतमे कातिक मास खेतिहर मजदूरक लेल दुखक मास कहल अछि।

प्रश्न 10026. कातिकक गीतमे कोन अभाव व्यक्त अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अन्नक अभाव।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अन्नक अभाव।

व्याख्या: गीतक पंक्तिमे “अन्नक नहि कोनो बाट” कहल अछि।

प्रश्न 10027. नाटकक बारहमासा कोन परिवारक दशा देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गरीब परिवारक बारहो मासक दुर्दशा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गरीब परिवारक बारहो मासक दुर्दशा।

व्याख्या: स्रोतमे एक गरीब परिवारक बारहो मासक दुर्दैन्य स्थितिक चित्रण अछि।

प्रश्न 10028. लेखकक अनुसार कातिकमे निम्नवर्गक स्थिति कोना भऽ जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दयनीय।

उत्तर: घ. दयनीय।

व्याख्या: अन्नाभावक कारण निम्नवर्गीय स्थिति दयनीय भऽ जाएत अछि।

प्रश्न 10029. ई नाटक मिथिलाक निम्नवर्गीय समाजक की कहल गेल?
क. अलबम।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अलबम।
व्याख्या: स्रोतमे “मिथिलाक निम्नवर्गीय समाजक अलबम” कहल गेल।

प्रश्न 10030. नाटकक रोस आ हाहाकार कतयसँ उठैत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलाक लाख-लाख आँगनसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाक लाख-लाख आँगनसँ।
व्याख्या: स्रोतमे ध्वनि खाली एक आँगनसँ नहि, लाख-लाख आँगनसँ उठैत कहल अछि।

प्रश्न 10031. “ओकरा आँगनक बारहमासा”मे ऋतु-सौन्दर्य किएक उलटि जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गरीबीक अनुभवमे प्रकृति-सुख अर्थहीन भऽ जाइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गरीबीक अनुभवमे प्रकृति-सुख अर्थहीन भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: गरीब लेल ऋतु सभ आराम नहि, कष्टक संकेत बनैत अछि।

प्रश्न 10032. खण्ड १००८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई नाटक निम्नवर्गीय मिथिला समाजक बारहमासी गरीबीक मर्मस्पर्शी चित्र अछि।
उत्तर: घ. ई नाटक निम्नवर्गीय मिथिला समाजक बारहमासी गरीबीक मर्मस्पर्शी चित्र अछि।
व्याख्या: स्रोतक विवेचन एहि नाटकक सामाजिक महत्त्व रेखांकित करैत अछि।

खण्ड १००९ : विदेह-सदेह २ — “अंतिम प्रणाम” आ “बुधिबधिया”मे गरीबी

प्रश्न 10033. “अंतिम प्रणाम”मे गरीबीक कोन चरम स्थिति देखाओल गेल?
क. मुइलाक बाद कफन किनबाक लेल टका नहि रहब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मुइलाक बाद कफन किनबाक लेल टका नहि रहब।
व्याख्या: स्रोतमे गरीबक मृत्युपर कफनक टकाक अभावक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10034. “अंतिम प्रणाम”मे गरीब सभ मिलि की करबाक आशा व्यक्त करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दस गोटे मिलि किछु कऽ सकबाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दस गोटे मिलि किछु कऽ सकबाक।
व्याख्या: उद्धरणमे “दस गोटए मिलि जाए”क बात अछि।

प्रश्न 10035. “बुधिबधिया”मे गरीबीक दृष्टान्त कोन रूपमे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एकर देहपर एक बीत वस्त्र नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एकर देहपर एक बीत वस्त्र नहि।
व्याख्या: स्रोतमे वस्त्रहीनता गरीबीक तीव्र संकेत रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 10036. सरकारी व्यवस्था गरीब धरि किएक नहि पहुँचैत अछि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लाभ गरीब लोक घरि नहि पहुँचि सकैत अछि।
उत्तर: घ. लाभ गरीब लोक घरि नहि पहुँचि सकैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे सरकारक व्यवस्था भेलो पर ओकर लाभ गरीब तक नहि पहुँचबाक बात अछि।

प्रश्न 10037. “अंतिम प्रणाम”मे मुरारी कोन दुखक उल्लेख करैत अछि?
क. तीन-तीनटा बच्चाकेँ भुखले सुतैत देखब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तीन-तीनटा बच्चाकेँ भुखले सुतैत देखब।
व्याख्या: स्रोतमे मुरारीक कथनमे बच्चा भुखले सुतैत अछि।

प्रश्न 10038. मुरारी घरवालीक कोन दशा देखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. फाटल वस्त्रमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. फाटल वस्त्रमे।
व्याख्या: उद्धरणमे घरवालीकेँ फाटल वस्त्रमे देखबाक बात अछि।

प्रश्न 10039. महगी आ गरीबीक प्रसंगमे सामान्य लोकक संघर्ष कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भोजन, वस्त्र आ आवास जुटएब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भोजन, वस्त्र आ आवास जुटएब।
व्याख्या: स्रोतमे सामान्य लोक परिवार लेल भोजन-वस्त्र-आवास जुटएबामे परेशान कहल अछि।

प्रश्न 10040. “बुधिबधिया”क गरीबी-विमर्श सरकारक कोन कमी देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गरीब दिस पर्याप्त ध्यान नहि।
उत्तर: घ. गरीब दिस पर्याप्त ध्यान नहि।
व्याख्या: स्रोत सरकारक ध्यान गरीब लोकक दिस नहि जाएत अछि कहैत अछि।

प्रश्न 10041. एहि नाटक सभमे गरीबी केवल पृष्ठभूमि अछि?
क. नहि, कथा-स्थितिक नैतिक केन्द्र अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, कथा-स्थितिक नैतिक केन्द्र अछि।
व्याख्या: कफन, भूख, वस्त्र-अभाव आ सरकारी उपेक्षा कथा-विमर्शक केन्द्र बनैत अछि।

प्रश्न 10042. खण्ड १००९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “अंतिम प्रणाम” आ “बुधिबधिया” गरीबीक देहगत, पारिवारिक आ संस्थागत यातना देखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “अंतिम प्रणाम” आ “बुधिबधिया” गरीबीक देहगत, पारिवारिक आ संस्थागत यातना देखबैत अछि।
व्याख्या: दुनू उदाहरण निर्धनताक बहुस्तरीय रूप खोलैत अछि।

खण्ड १०१० : विदेह-सदेह २ — आधुनिक सामाजिक नाटकक मूल-स्वर

प्रश्न 10043. वर्तमान युगमे कोन दू शक्तिक बीच संघर्ष कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सामाजिक चेतनाक गतिशीलता आ परंपरागत रूढ़ि व्यवस्थाक जड़ता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सामाजिक चेतनाक गतिशीलता आ परंपरागत रूढ़ि व्यवस्थाक जड़ता।
व्याख्या: स्रोतमे एहि दू प्रवृत्तिक बीच तनावक बात अछि।

प्रश्न 10044. आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक मूल-स्वर कोन तत्वसँ भरल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संघर्ष, तनाव आ सामाजिक समस्या।
उत्तर: घ. संघर्ष, तनाव आ सामाजिक समस्या।
व्याख्या: स्रोत आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक मूल-स्वर एहि रूपमे बतबैत अछि।

प्रश्न 10045. नाटककारक सामाजिक दृष्टि कोन काज करैत अछि?
क. सामाजिक जीवनक यथार्थ व्यक्त करैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सामाजिक जीवनक यथार्थ व्यक्त करैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे सामाजिक यथार्थक अभिव्यक्ति नाटककारक दृष्टिपर आधारित अछि।

प्रश्न 10046. मिथिलांचलक समाजमे आर्थिक विपन्नता कोन रूपमे बदलि गेल कहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्वाभाविकता मे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्वाभाविकता मे।
व्याख्या: स्रोतमे आर्थिक विपन्न जीवनक अस्तव्यस्तता स्वाभाविकतामे बदलल कहल अछि।

प्रश्न 10047. निर्धनता-विमर्शक नाट्य-समीक्षा कोन आयाम जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साहित्यक सामाजिक उत्तरदायित्व।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साहित्यक सामाजिक उत्तरदायित्व।
व्याख्या: नाटकक उदाहरण समाजक गरीबी आ वर्गीय यथार्थकेँ सामने अनैत अछि।

प्रश्न 10048. सामाजिक नाटकमे रूढ़ि आ चेतनाक संघर्ष किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ समाजक बदलैत दबाव देखबैत अछि।
उत्तर: घ. ओ समाजक बदलैत दबाव देखबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतक तनाव-विमर्श आधुनिक नाटकक सामाजिक चेतना बुझबैत अछि।

प्रश्न 10049. आधुनिक मैथिली नाटकक गरीबी-विमर्श केकर जीवनक अस्तव्यस्तता देखबैत अछि?
क. आर्थिक विपन्न लोकक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आर्थिक विपन्न लोकक।
व्याख्या: स्रोत आर्थिक विपन्न जीवनक अस्तव्यस्तता पर जोर दैत अछि।

प्रश्न 10050. नाट्य-साहित्यक यथार्थक अभिव्यक्ति कोन बातपर निर्भर कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नाटककारक सामाजिक दृष्टि आ रचना-दृष्टिपर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नाटककारक सामाजिक दृष्टि आ रचना-दृष्टिपर।
व्याख्या: स्रोतमे ई निर्भरता स्पष्ट अछि।

प्रश्न 10051. निर्धनता विषयक आलेखक अन्तिम वैचारिक बल कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गरीबीकेँ सामाजिक संरचना आ नाट्य-संवेदना सँ जोड़ब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गरीबीकेँ सामाजिक संरचना आ नाट्य-संवेदना सँ जोड़ब।
व्याख्या: लेख समाजक आर्थिक विपन्नता आ नाटकक मूल-स्वरकेँ एक संग पढ़ैत अछि।

प्रश्न 10052. खण्ड १०१०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आधुनिक मैथिली नाटक समाजक संघर्ष, तनाव आ आर्थिक विपन्नताकेँ यथार्थ रूपमे व्यक्त करैत अछि।
उत्तर: घ. आधुनिक मैथिली नाटक समाजक संघर्ष, तनाव आ आर्थिक विपन्नताकेँ यथार्थ रूपमे व्यक्त करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड आलेखक समेकित सामाजिक निष्कर्ष प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १०११ : विदेह-सदेह २ — आशीष अनचिन्हारक व्यंग्य-आलोचना

प्रश्न 10053. आशीष अनचिन्हारक आलोचनात्मक लेखक शीर्षक की अछि?

क. अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि।

व्याख्या: स्रोतमे एहि शीर्षकक आलोचना लेख आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 10054. लेखक पूर्ण वाक्य कोन रूपमे प्रस्तुत करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि, सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि, सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।

व्याख्या: स्रोतमे शीर्षकक विस्तार एहि पूर्ण वाक्य रूपमे देल अछि।

प्रश्न 10055. शीर्षक पढ़िते पाठक रचियताकेँ की घोषित कऽ सकैत छथि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निराशावादी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निराशावादी।

व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे पाठक देरी नहि करताह निराशावादी कहबा मे।

प्रश्न 10056. लेखक पाठककेँ कोन आग्रह करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अगुताथि जुनि।

उत्तर: घ. अगुताथि जुनि।

व्याख्या: स्रोतमे लेखक बार-बार “अगुताथि जुनि” कहैत छथि।

प्रश्न 10057. शीर्षक बाहरसँ पूर्ण होइतो भीतरसँ कोना कहल गेल?

क. अपूर्ण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपूर्ण।

व्याख्या: लेखक वस्तु बाहरसँ पूर्ण मुदा भीतरसँ अपूर्ण भऽ सकैत अछि कहैत छथि।

प्रश्न 10058. आलोचनाक आरम्भमे लेखक कोन शैली अपनबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. व्यंग्यात्मक संवाद शैली।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. व्यंग्यात्मक संवाद शैली।

व्याख्या: पाठकसँ प्रत्यक्ष संवाद आ उलटबाँसी शैली व्यंग्यात्मक अछि।

प्रश्न 10059. पूर्ण वाक्यक दोसर अंश कोन सामाजिक-राजनीतिक संकेत देत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सरकारपर जनताक धाखक अभाव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सरकारपर जनताक धाखक अभाव।
व्याख्या: वाक्य जन-शक्ति आ सरकारक सम्बन्धपर व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 10060. एहि लेखमे शीर्षकक व्याख्या कोन आलोचनात्मक उपाय बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. व्यंग्यक अर्थ-क्षेत्र खोलबाक उपाय।
उत्तर: घ. व्यंग्यक अर्थ-क्षेत्र खोलबाक उपाय।
व्याख्या: शीर्षक विस्तारसँ राजनीतिक व्यंग्यक प्रवेशद्वार बनैत अछि।

प्रश्न 10061. लेखकक स्वर केवल निराशा अछि?
क. नहि, ओ व्यंग्य आ आलोचनात्मक चेतना अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, ओ व्यंग्य आ आलोचनात्मक चेतना अछि।
व्याख्या: लेखक निराशावादक आरोपकेँ उलटि आलोचनात्मक व्यंग्यक रूप दैत छथि।

प्रश्न 10062. खण्ड १०११क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आशीष अनचिन्हार शीर्षकक उलटबाँसी सँ रुपकांत ठाकुरक राजनीतिक व्यंग्य दिस पाठककेँ लऽ जाइत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आशीष अनचिन्हार शीर्षकक उलटबाँसी सँ रुपकांत ठाकुरक राजनीतिक व्यंग्य दिस पाठककेँ लऽ जाइत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड लेखन-शैली आ शीर्षक-विस्तारक अर्थ समेटैत अछि।

खण्ड १०१२ : विदेह-सदेह २ — मैथिली व्यंग्यक तीन विडम्बना

प्रश्न 10063. लेखकक अनुसार मैथिलीमे कोन विधा प्रचुर मात्रा मे नहि लिखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. व्यंग्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. व्यंग्य।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीमे व्यंग्य गुण आ परिमाण दुनू मे कम अछि कहल गेल।

प्रश्न 10064. दोसरी विडम्बना कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. व्यंग्य लिखाइतो स्तरीय आलोचना नहि होइत।
उत्तर: घ. व्यंग्य लिखाइतो स्तरीय आलोचना नहि होइत।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे लिखलाक बादो स्तरीय आलोचना दुर्लभ अछि।

प्रश्न 10065. तेसरी विडम्बना कोन अछि?
क. स्तरीय आलोचना आबितो हरिमोहन झाकेँ शिखर मानि सभकेँ भुट्टा बना देल जाइत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्तरीय आलोचना आबितो हरिमोहन झाकेँ शिखर मानि सभकेँ भुट्टा बना देल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे ई तीक्ष्ण टिप्पणी अछि।

प्रश्न 10066. आलोचक आलोचना करैत काल कोन नाम बार-बार घोसिआएल रहैत अछि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हरिमोहन बाबू।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हरिमोहन बाबू।
व्याख्या: लेखक मैथिली आलोचनामे हरिमोहन बाबूक छायाक चर्चा करैत छथि।

प्रश्न 10067. मैथिली व्यंग्यक आलोचनात्मक समस्या की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. व्यंग्यकेँ अक्सर हास्य मानि लेल जाइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. व्यंग्यकेँ अक्सर हास्य मानि लेल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे ९३% व्यंग्यकेँ हास्य मानि आलोचना करबाक बात अछि।

प्रश्न 10068. हास्य आ व्यंग्यक मिलावटसँ कोन परिणाम होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. व्यंग्यकारक असल राजनीतिक धार ओझल भऽ जाइत अछि।
उत्तर: घ. व्यंग्यकारक असल राजनीतिक धार ओझल भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: लेखक हरिमोहन आ रुपकांत दुनूक संदर्भमे ई समस्या देखबैत छथि।

प्रश्न 10069. पं. चन्द्रनाथ मिश्र “अमर” कोन क्षेत्रक प्रतिनिधि कहल गेल?
क. हास्यक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हास्यक।
व्याख्या: स्रोतमे बाँकी ७% हास्यक प्रतिनिधि पं. चन्द्रनाथ मिश्र “अमर” कहल गेल।

प्रश्न 10070. हरिमोहन बाबूकेँ लेखक कोन उपाधिसँ जुड़ल देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हास्य-व्यंग्य सम्राट।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हास्य-व्यंग्य सम्राट।
व्याख्या: स्रोतमे सुच्चा व्यंग्य लिखलाक बादो एहि उपाधिपर टिप्पणी अछि।

प्रश्न 10071. लेखकक व्यंग्य-विमर्श कोन सुधारक माँग करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. व्यंग्य आ हास्यक भेद स्पष्ट करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. व्यंग्य आ हास्यक भेद स्पष्ट करब।
व्याख्या: लेख मैथिली आलोचनामे विधागत सूक्ष्मता चाहैत अछि।

प्रश्न 10072. खण्ड १०१२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली व्यंग्यक मुख्य संकट रचनाक कमी, आलोचनाक कमी आ हास्य-व्यंग्य भेदक भ्रम अछि।
उत्तर: घ. मैथिली व्यंग्यक मुख्य संकट रचनाक कमी, आलोचनाक कमी आ हास्य-व्यंग्य भेदक भ्रम अछि।
व्याख्या: ई खण्ड लेखकक विधागत आत्मालोचना समेटैत अछि।

खण्ड १०१३ : विदेह-सदेह २ — रुपकांत ठाकुरक जीवन आ रचना

प्रश्न 10073. रुपकांत ठाकुरक जन्मक साल कोन कहल गेल?
क. १९३०।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १९३०।
व्याख्या: स्रोतमे रुपकांत ठाकुर 1930 मे जन्म-ग्रहण कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 10074. रुपकांत ठाकुर कखन रचनारत भेलाह कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९६०क लगीच।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९६०क लगीच।
व्याख्या: स्रोतमे 1960क लगीच रचनारत भेलाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10075. रुपकांत ठाकुरक मृत्यु कोन साल भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९७२।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९७२।
व्याख्या: स्रोतमे 1972 मे मृत्यु प्राप्त भेलनि कहल अछि।

प्रश्न 10076. रुपकांत ठाकुरक रचनाक सक्रिय अवधि लगभग कतबा कहल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बारह बर्ख।
उत्तर: घ. बारह बर्ख।
व्याख्या: स्रोतमे “मात्र बारह बर्ख” मे अनेक रचना आ पाँच पोथी प्रकाशित कहल अछि।

प्रश्न 10077. रुपकांत ठाकुरक कथा-संग्रह “मोमक नाक” कोन सूचीमे अछि?
क. पाँच प्रकाशित पोथीमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाँच प्रकाशित पोथीमे।
व्याख्या: स्रोतमे मोमक नाक कथा-संग्रहक नाम देल अछि।

प्रश्न 10078. “धूकल केरा” कोन प्रकारक पोथी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कथा-संग्रह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कथा-संग्रह।
व्याख्या: स्रोतक सूचीमे धूकल केरा कथा-संग्रह अछि।

प्रश्न 10079. रुपकांत ठाकुरक नाटकमे कोन नाम आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लगाम आ वचन वैष्णव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लगाम आ वचन वैष्णव।
व्याख्या: स्रोतमे प्रकाशित पोथीमे ई दुनू नाटक अछि।

प्रश्न 10080. “नहला पर दहला” कोन विधाक कृति कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उपन्यास।
उत्तर: घ. उपन्यास।
व्याख्या: स्रोतमे नहला पर दहला उपन्यास रूपमे सूचीबद्ध अछि।

प्रश्न 10081. लेखकक अनुसार आलोचना रुपकांतक कतेक रचनासँ परिचित जकाँ देखाइत अछि?
क. मात्र ६ गोट हास्य-व्यंग्य रचना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मात्र ६ गोट हास्य-व्यंग्य रचना।
व्याख्या: स्रोतमे आलोचनात्मक उल्लेख मात्र ६ गोट रचना तक सीमित कहल अछि।

प्रश्न 10082. खण्ड १०१३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रुपकांत ठाकुर अल्प आयु आ कम समयमे कथा, नाटक आ उपन्यासक महत्त्वपूर्ण व्यंग्यकार रूपमे उभरलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रुपकांत ठाकुर अल्प आयु आ कम समयमे कथा, नाटक आ उपन्यासक महत्त्वपूर्ण व्यंग्यकार रूपमे उभरलाह।
व्याख्या: ई खण्ड जीवन-काल आ कृति-सूची पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०१४ : विदेह-सदेह २ — राजनीतिक व्यंग्यक अर्थ

प्रश्न 10083. लेखक राजनीतिक व्यंग्यकेँ कोन आधारपर चिन्हैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समकालीन अथवा पूर्वकालिक राजनीति आ शासन-व्यवस्थापर निशाना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समकालीन अथवा पूर्वकालिक राजनीति आ शासन-व्यवस्थापर निशाना।
व्याख्या: स्रोतमे ई कार्यकारी परिभाषा देल गेल।

प्रश्न 10084. लेखक अपन परिभाषाकेँ कोन रूपमे सावधानीसँ रखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अकादमिक परिभाषा नहि।
उत्तर: घ. अकादमिक परिभाषा नहि।
व्याख्या: स्रोतमे “ओना ई अकादमिक परिभाषा नहि अछि” कहल अछि।

प्रश्न 10085. राजनीतिक व्यंग्यक लक्ष्य कोन-कोन होइ सकैत अछि?
क. राजनीति, शासन-व्यवस्था आ ओकर संचालक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राजनीति, शासन-व्यवस्था आ ओकर संचालक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तीनू पर निशाना साधबाक बात अछि।

प्रश्न 10086. लेखकक अनुसार मैथिली व्यंग्यकार राजनीतिक व्यंग्यकेँ कोना जनैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पर्याप्त रूपेँ नहि जनैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पर्याप्त रूपेँ नहि जनैत छथि।
व्याख्या: स्रोतमे राजनीतिक व्यंग्यक नाम तक नहि जनबाक तीक्ष्ण टिप्पणी अछि।

प्रश्न 10087. राजनीतिक व्यंग्य केवल हँसाबाक लेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नहि, सत्ता-संरचना पर चोट करबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नहि, सत्ता-संरचना पर चोट करबाक लेल।
व्याख्या: स्रोतक परिभाषा शासन आ संचालकपर निशाना साधबाक बात करैत अछि।

प्रश्न 10088. लेखक पाठककेँ राजनीतिक चेतना देखाबए किनका लग लऽ जाइत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रुपकांत ठाकुर लग।
उत्तर: घ. रुपकांत ठाकुर लग।
व्याख्या: स्रोतमे “रुपकांत ठाकुर लग ल’ चली” कहल अछि।

प्रश्न 10089. राजनीतिक व्यंग्यक विवेचन लेल कोन पोथी चुनल गेल?
क. मोमक नाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मोमक नाक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि व्यंग्य-संग्रहक परिचय कराएल गेल।

प्रश्न 10090. “मोमक नाक”मे कतेक कथा कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नौ गोट कथा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नौ गोट कथा।
व्याख्या: स्रोतमे ई व्यंग्य-संग्रह नौ गोट कथाक अछि कहल गेल।

प्रश्न 10091. लेखक कथा-क्रमक बारेमे की स्पष्ट करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओ अनिवार्य रूपेँ पहिल कथासँ शुरू नहि करताह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओ अनिवार्य रूपेँ पहिल कथासँ शुरू नहि करताह।
व्याख्या: स्रोतमे कथा-क्रम लेखकक व्यक्तिगत निर्णय कहल अछि।

प्रश्न 10092. खण्ड १०१४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. राजनीतिक व्यंग्य सत्ता, जनता आ शासन-संरचनाक आलोचना करबाक धारदार माध्यम अछि।
उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य सत्ता, जनता आ शासन-संरचनाक आलोचना करबाक धारदार माध्यम अछि।
व्याख्या: ई खण्ड विधागत परिभाषा आ रुपकांतक प्रवेशद्वार खोलैत अछि।

खण्ड १०१५ : विदेह-सदेह २ — “मर्द माने की”क सामाजिक व्यंग्य

प्रश्न 10093. “मर्द माने की” कोन संग्रहक अंतिम कथा रूपमे चर्चित अछि?
क. मोमक नाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मोमक नाक।
व्याख्या: स्रोतमे मोमक नाक संग्रहक अंतिम कथा “मर्द माने की” सँ चर्चा शुरू अछि।

प्रश्न 10094. कथाक शीर्षकसँ लेखक की संकेत करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मर्दक परिभाषा देल गेल हएत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मर्दक परिभाषा देल गेल हएत।
व्याख्या: स्रोतमे शीर्षकसँ मर्दक परिभाषा बुझाइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10095. कथामे “मर्द माने”क श्रृंखला कोन रूपमे आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मर्द माने कमौआ, कमौआ माने विआहल, विआहल माने बुड़िबक, बुड़िबक माने बड़द।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मर्द माने कमौआ, कमौआ माने विआहल, विआहल माने बुड़िबक, बुड़िबक माने बड़द।

व्याख्या: स्रोतमे ई सुच्चा मैथिल अभिव्यक्ति रूपमे उद्धृत अछि।

प्रश्न 10096. लेखकक अनुसार मैथिल समाजमे कोन धारणा देखाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कमौए मर्द होइत अछि।

उत्तर: घ. कमौए मर्द होइत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे 2009 धरि ई सामाजिक धारणा रहल कहल अछि।

प्रश्न 10097. “बुड़िबक माने बड़द”सँ कोन स्थिति संकेतित अछि?

क. खाली खटनाइसँ मतलब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खाली खटनाइसँ मतलब।

व्याख्या: स्रोतमे अधिकारक प्रति निरपेक्ष श्रमशील बड़दसदृश स्थिति संकेतित अछि।

प्रश्न 10098. कथा समाजक कोन संस्था पर व्यंग्य करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मर्दानगी आ विवाह-संस्कारक सामाजिक दबाव।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मर्दानगी आ विवाह-संस्कारक सामाजिक दबाव।

व्याख्या: कमौआ मर्दक विवाह करबएबाक समाजिक प्रवृत्ति पर व्यंग्य अछि।

प्रश्न 10099. लेखक एहि कथासँ रुपकांतक कोन पक्ष देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक चेतना।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक चेतना।

व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे एतबे सँ लेखकक चेतनाक अनुमान कऽ लिअ।

प्रश्न 10100. “मर्द माने की”मे हास्यक भीतर कोन आलोचना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुरुष-सत्ता आ श्रम-उपयोगक आलोचना।

उत्तर: घ. पुरुष-सत्ता आ श्रम-उपयोगक आलोचना।

व्याख्या: श्रृंखलाबद्ध परिभाषा समाजक मर्द-कल्पनाकेँ व्यंग्यात्मक बनबैत अछि।

प्रश्न 10101. एहि कथाक विवेचन राजनीतिक व्यंग्यसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. समाजक सत्ता-रचना पर चोट करैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समाजक सत्ता-रचना पर चोट करैत अछि।
व्याख्या: व्यक्तिगत मर्द-परिभाषा सामाजिक सत्ता-संबंध उघारि दैत अछि।

प्रश्न 10102. खण्ड १०१५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “मर्द माने की” मैथिल समाजक कमौआ-मर्द धारणा पर तीक्ष्ण सामाजिक व्यंग्य प्रस्तुत करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “मर्द माने की” मैथिल समाजक कमौआ-मर्द धारणा पर तीक्ष्ण सामाजिक व्यंग्य प्रस्तुत करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड कथा-व्याख्या आ सामाजिक संकेत समेटैत अछि।

खण्ड १०१६ : विदेह-सदेह २ — “ठोकल ठक्क” आ “जय गंगा जी”

प्रश्न 10103. “ठोकल ठक्क”मे कोन चरित्र-प्रवृत्ति देखाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कमीशन खाएबला भातिज आ जमाय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कमीशन खाएबला भातिज आ जमाय।
व्याख्या: स्रोतमे भातिज आ जमायक काजे कमीशन खाएब कहल अछि।

प्रश्न 10104. “ठोकल ठक्क”मे भातिज/जमाय किनका तक नहि छोड़ैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पित्ती आ ससुरोकेँ।
उत्तर: घ. पित्ती आ ससुरोकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे पित्ती एवं ससुरोकेँ नहि छोड़बाक बात अछि।

प्रश्न 10105. “ठोकल ठक्क”सँ लेखक तात्कालीन राजनीति कोन वाक्यमे देखैत छथि?
क. सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।
व्याख्या: स्रोतमे ई राजनीतिक टिप्पणी उद्धृत अछि।

प्रश्न 10106. “सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि”क अर्थ लेखक कोना करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बेशर्म, निर्लज्ज, हेहर, थेथर सरकार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बेशर्म, निर्लज्ज, हेहर, थेथर सरकार।
व्याख्या: स्रोतमे एहि अर्थ-व्याख्याक शब्द आयल अछि।

प्रश्न 10107. “जय गंगा जी”मे रेलगाड़ीक तुलना किनका संग कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कांग्रेसी नेता संग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कांग्रेसी नेता संग।
व्याख्या: स्रोतमे रेलगाड़ीकेँ कांग्रेसी नेता जकाँ कहल गेल।

प्रश्न 10108. रेलगाड़ी लोककेँ पेटमे राखि की बिसरि जाइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओकर सुख-दुख अथवा उन्नति-अवनति।
उत्तर: घ. ओकर सुख-दुख अथवा उन्नति-अवनति।
व्याख्या: स्रोतमे ई पंक्ति राजनीतिक रूपक बनैत अछि।

प्रश्न 10109. “जय गंगा जी”मे पवदानपर चढ़ल यात्रीक प्रश्न की देखबैत अछि?
क. विकासक लाभसँ बाहर छूटल लोक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विकासक लाभसँ बाहर छूटल लोक।
व्याख्या: प्रश्न यात्रीक वास्तविक स्थान आ उपेक्षा पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 10110. पंचवर्षीय योजनाक प्रसंगमे लेखक कोन बात पर व्यंग्य देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उन्नतिक कागजी आकड़ा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उन्नतिक कागजी आकड़ा।
व्याख्या: स्रोतमे योजनाक कागजी आँकड़ा मोन राखबाक टिप्पणी अछि।

प्रश्न 10111. “ठोकल ठक्क” आ “जय गंगा जी”क साझा राजनीतिक सूत्र की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सत्ता, भ्रष्टाचार आ विकासक खोखलापन पर व्यंग्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सत्ता, भ्रष्टाचार आ विकासक खोखलापन पर व्यंग्य।
व्याख्या: दुनू कथा समाज-राजनीतिक व्यवस्था पर चोट करैत अछि।

प्रश्न 10112. खण्ड १०१६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रुपकांत ठाकुर निजी स्वार्थ, कमीशनखोरी आ कागजी विकास पर राजनीतिक व्यंग्य करैत छथि।
उत्तर: घ. रुपकांत ठाकुर निजी स्वार्थ, कमीशनखोरी आ कागजी विकास पर राजनीतिक व्यंग्य करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड कथाद्वयक राजनीतिक अर्थ समेटैत अछि।

खण्ड १०१७ : विदेह-सदेह २ — “मोमक नाक”मे जनता आ सत्ता

प्रश्न 10113. “मोमक नाक” शीर्षक कथा कोन संग्रहक पहिल कथा आ नाम-दाता अछि?

क. मोमक नाक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोमक नाक।

व्याख्या: स्रोतमे संग्रहक पहिल कथा आ पोथीक नाम “मोमक नाक” बताओल गेल।

प्रश्न 10114. कथामे “भला आदमी”क परिभाषा कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आजुक युगमे उनटि गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आजुक युगमे उनटि गेल।

व्याख्या: स्रोतमे भला आदमीक परिभाषा उलटि गेल कहल अछि।

प्रश्न 10115. जनताकेँ कोन उपमा देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मोमक नाक जकाँ लुजबुज।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मोमक नाक जकाँ लुजबुज।

व्याख्या: स्रोतमे जनता मोमक नाक जकाँ लुजबुज कहल गेल।

प्रश्न 10116. जनता जखन जाहि दिस नफगर रहै छैक तखन की करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तिम्हरे घूमि जाइत अछि।

उत्तर: घ. तिम्हरे घूमि जाइत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे जनता अवसरानुसार घूमि जाएबाक व्यंग्य अछि।

प्रश्न 10117. लेखक एहि उद्धरणमे केकर चारित्रिक विशेषता देखैत छथि?

क. जम्बूदीप सँ एखुनका भारतीय जनता धरि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जम्बूदीप सँ एखुनका भारतीय जनता धरि।

व्याख्या: स्रोतमे स्वतंत्र भारत नहि, जम्बूदीपसँ भारतीय जनता धरि संकेत अछि।

प्रश्न 10118. रुपकांत ठाकुरक रचना आलोचक बिसरलाक बादो कतय खचित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पाठकक मोनमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पाठकक मोनमे।

व्याख्या: स्रोतमे पाठकक मोनमे रचना खचित रहबाक बात अछि।

प्रश्न 10119. लेखकक अनुसार रुपकांतक प्रथम आ अंतिम सफलता कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पाठकक मोनमे रहब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पाठकक मोनमे रहब।
व्याख्या: स्रोतमे एहि सफलता पर बल अछि।

प्रश्न 10120. “मोमक नाक”क जनता-विमर्श कोन आलोचना करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अवसरवादी जन-चरित्रक।
उत्तर: घ. अवसरवादी जन-चरित्रक।
व्याख्या: मोमक नाक उपमा जनता केर दिशाहीन लचक पर व्यंग्य करैत अछि।

प्रश्न 10121. एहि कथामे सत्ता मात्र दोषी अछि?
क. नहि, जनता सेहो आलोचनाक दायरामे अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, जनता सेहो आलोचनाक दायरामे अछि।
व्याख्या: रुपकांत दूनू पक्षकेँ व्यंग्यक लक्ष्य बनबैत छथि।

प्रश्न 10122. खण्ड १०१७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “मोमक नाक” जनता, सत्ता आ अवसरवाद पर तीक्ष्ण व्यंग्य करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “मोमक नाक” जनता, सत्ता आ अवसरवाद पर तीक्ष्ण व्यंग्य करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड रुपकांतक द्विपक्षीय आलोचनात्मक दृष्टि देखबैत अछि।

खण्ड १०१८ : विदेह-सदेह २ — हृदय नारायण झा आ लुप्तप्राय लोकगीत

प्रश्न 10123. हृदय नारायण झा कोन संस्थासँ जुड़ल कलाकार कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आकाशवाणीक बी हाइग्रेड कलाकार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आकाशवाणीक बी हाइग्रेड कलाकार।
व्याख्या: स्रोतमे हुनका आकाशवाणीक बी हाइग्रेड कलाकार कहल गेल।

प्रश्न 10124. हृदय नारायण झा कोन परम्परागत शिक्षा प्राप्त कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. योगक शिक्षा।
उत्तर: घ. योगक शिक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे परम्परागत योगक शिक्षा प्राप्त कहल अछि।

प्रश्न 10125. मिथिलाक संस्कृति आ परम्पराकेँ सुरक्षित रखबाक श्रेय किनका देल गेल?
क. मैथिली लोकगीतकेँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली लोकगीतकेँ।
व्याख्या: लेखक लोकगीतकेँ संस्कृति-सुरक्षा केर श्रेय दैत छथि।

प्रश्न 10126. लोकगीतमे सामान्यतः की नहि होइत अछि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कृत्रिमता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कृत्रिमता।
व्याख्या: स्रोतमे लोकगीतमे कृत्रिमता नहि होइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10127. मैथिली लोकगीत कोन-कोन बातक यथार्थ रूप अनुभव करबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, कला आ सामाजिक आकांक्षा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, कला आ सामाजिक आकांक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे एहि सभक उल्लेख लोकगीतक अवलोकनसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 10128. मिथिलामे जन्मसँ विवाह धरि व्यवहार कोन संग सम्पन्न होइत रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गीतक संग।
उत्तर: घ. गीतक संग।
व्याख्या: स्रोतमे सभ विधि-व्यवहार गीतक संग सम्पन्न होइबाक बात अछि।

प्रश्न 10129. लोकगीतक परंपरा विकसित करबाक उद्देश्य की छल?
क. मूल संस्कृति आ परंपराक प्रति उदार बनाबए।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मूल संस्कृति आ परंपराक प्रति उदार बनाबए।
व्याख्या: पूर्वज लोकनि समाजकेँ संस्कृति-परम्परा प्रति उदार बनाबए लेल लोकगीत विकसित कएलनि।

प्रश्न 10130. देश-काल-परिस्थिति बदललासँ लोकगीतमे की आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रचनामे विविधता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रचनामे विविधता।
व्याख्या: स्रोतमे परिवर्तनक संग लोकगीतक रचनामे विविधता आयल कहल अछि।

प्रश्न 10131. आदर्श आचार पर आधारित लोकगीत कतय स्थान पबैत रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लोककण्ठमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लोककण्ठमे।
व्याख्या: स्रोतमे ई परंपरा लोककण्ठमे स्थान पबैत रहल कहल अछि।

प्रश्न 10132. खण्ड १०१८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली लोकगीत मिथिलाक संस्कृति, व्यवहार आ सामाजिक स्मृतिक जीवित आधार अछि।
उत्तर: घ. मैथिली लोकगीत मिथिलाक संस्कृति, व्यवहार आ सामाजिक स्मृतिक जीवित आधार अछि।
व्याख्या: ई खण्ड लोकगीतक सांस्कृतिक महत्त्व प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १०१९ : विदेह-सदेह २ — सोहर, पुत्रकामना आ प्रसव-पीड़ा

प्रश्न 10133. पुत्रकामना, जन्म आ लोकाचारक गीत कोन नामसँ प्रचलित कहल गेल?
क. सोहर, खेलउना, छठिहार, पीपर पिलाई, आँख अँजाई, बधैया आदि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सोहर, खेलउना, छठिहार, पीपर पिलाई, आँख अँजाई, बधैया आदि।
व्याख्या: स्रोतमे जन्म-संबन्धी गीतक ई नाम दत्त अछि।

प्रश्न 10134. सोहरमे भक्त हृदय स्त्री कोन इच्छा व्यक्त करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पुत्रकामना।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पुत्रकामना।
व्याख्या: स्रोतमे एक भक्त हृदय स्त्रीक पुत्रकामना व्यक्त करैत सोहर अछि।

प्रश्न 10135. पुत्रकामना गीतमे “एकहि पुत्र” सँ की अभिलाषा अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जीउरा जुड़एबाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जीउरा जुड़एबाक।
व्याख्या: गीतमे एक पुत्र भेटलासँ जिउरा जुड़बैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10136. प्रसव पीड़ामे स्त्री सासु, जेठानी, ननदिकेँ कोना बूझए लगैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. स्वार्थी आ कठोर।
उत्तर: घ. स्वार्थी आ कठोर।
व्याख्या: स्रोतमे प्रसव-वेदनामे ई मनोदशा वर्णित अछि।

प्रश्न 10137. पुत्र जन्मक बाद स्त्रीक भावमे की परिवर्तन होइत अछि?
क. सभ कष्ट बिसरि जाइत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सभ कष्ट बिसरि जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे पुत्र जन्मक खुशीमे सभ कष्ट बिसरबाक बात अछि।

प्रश्न 10138. प्रसव-गीतमे स्त्री अपन मायकेँ किएक स्मरैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दरद बाँटि लेबाक आशासँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दरद बाँटि लेबाक आशासँ।
व्याख्या: गीतक पंक्तिमे अपन माएक दरद बाँटि लेबाक भाव अछि।

प्रश्न 10139. “पिया जी के माए” गीतमे कोन सम्बन्धक तनाव देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सासु-बहुक प्रसवकालीन अनुभव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सासु-बहुक प्रसवकालीन अनुभव।
व्याख्या: गीतमे सासु निरमोहिया लगबाक स्त्री-मनोदशा अछि।

प्रश्न 10140. सोहरक भाव-विस्तार केवल धार्मिक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नहि, लौकिक आ भावनात्मक दुनू अछि।
उत्तर: घ. नहि, लौकिक आ भावनात्मक दुनू अछि।
व्याख्या: स्रोतमे लौकिक आ भक्ति प्रधान विषय दुनूक समावेश कहल अछि।

प्रश्न 10141. जन्मगीत मिथिलाक सामाजिक सम्बन्धकेँ कोना देखबैत अछि?
क. परिवारक भीतर स्नेह, तनाव आ आशा सभ प्रकट करैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. परिवारक भीतर स्नेह, तनाव आ आशा सभ प्रकट करैत अछि।
व्याख्या: सोहर प्रसव, पुत्रकामना आ नातेदारीक भाव व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 10142. खण्ड १०१९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सोहर गीत जन्म, मातृत्व, पुत्रकामना आ स्त्री-मनक करुण अनुभवक लोक-साक्ष्य अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सोहर गीत जन्म, मातृत्व, पुत्रकामना आ स्त्री-मनक करुण अनुभवक लोक-साक्ष्य अछि।
व्याख्या: ई खण्ड जन्म-संस्कार गीतक भाव-भूमि देखबैत अछि।

खण्ड १०२० : विदेह-सदेह २ — छठिहार, खेलउना आ ननदि-भाउज सम्बन्ध

प्रश्न 10143. मिथिलामे जन्मक प्रथम उत्सव कोन कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. छठिहार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. छठिहार।

व्याख्या: स्रोतमे जन्मक प्रथम उत्सव छठिहार कहल अछि।

प्रश्न 10144. छठिहारक गीतमे किनका बीच हास-परिहास व्यक्त होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ननदि आ भाउजक बीच।

उत्तर: घ. ननदि आ भाउजक बीच।

व्याख्या: स्रोतमे ननदि-भाउजक हास-परिहास खेलउना आ बधइया गीतमे कहल अछि।

प्रश्न 10145. खेलउना गीत कोन सम्बन्धक मधुरता देखबैत अछि?

क. ननदि आ भाउजक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ननदि आ भाउजक।

व्याख्या: स्रोतमे ननदि आ भाउजक मधुर सम्बन्ध व्यक्त करैत खेलउना अछि।

प्रश्न 10146. गीतमे ननदि आँगन, दुअर आ सोइरीमे अबैत काल कोन वस्तुक उल्लेख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बिछिया, बोली, बेसरि आदि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बिछिया, बोली, बेसरि आदि।

व्याख्या: गीतक पंक्तिमे ननदिक आगमन आ अलंकार/माँगक बिम्ब अछि।

प्रश्न 10147. भाउज-ननदि हास-परिहासमे ननदि की माँग करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इनाम।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इनाम।

व्याख्या: स्रोतमे ननदि इनामक माँग करैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10148. ननदि बच्चा उठाकऽ चलि गेलापर भाउज की करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बउआ फिर्ता देबाक आग्रह।

उत्तर: घ. बउआ फिर्ता देबाक आग्रह।

व्याख्या: स्रोतमे बच्चा उठाकऽ चलि गेलापर भाउजक आग्रह अछि।

प्रश्न 10149. ननदि “भइया के राज” माँगलापर भाउज कोन तर्क दैत अछि?
क. बउआ की लेतै?
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बउआ की लेतै?
व्याख्या: भाउज तर्कसँ ननदिक माँग टारबाक कोशिश करैत अछि।

प्रश्न 10150. बधइया गीतमे ननदि कोन वस्तु सभ नहि लेबाक कहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अँगूठी, मुनरी, बाली, कनफूल आदि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अँगूठी, मुनरी, बाली, कनफूल आदि।
व्याख्या: गीतमे ननदि अलग-अलग गहना अस्वीकार करैत विशेष माँग करैत अछि।

प्रश्न 10151. ई गीत सभ लुप्त भेलासँ कोन प्रश्न उठैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. परंपरागत सम्बन्धक मधुरता कोना प्रभावित होएत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. परंपरागत सम्बन्धक मधुरता कोना प्रभावित होएत।
व्याख्या: स्रोतमे गीत-परंपरा लुप्त भेलासँ सम्बन्ध-मधुरता प्रभावित होयबाक बात विचारणीय कहल गेल।

प्रश्न 10152. खण्ड १०२०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. छठिहार, खेलउना आ बधइया गीत ननदि-भाउज सम्बन्धक हास्य, अधिकार आ स्नेहकेँ सुरक्षित करैत अछि।
उत्तर: घ. छठिहार, खेलउना आ बधइया गीत ननदि-भाउज सम्बन्धक हास्य, अधिकार आ स्नेहकेँ सुरक्षित करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड जन्मोत्सवक सामाजिक गीतपर आधारित अछि।

खण्ड १०२१ : विदेह-सदेह २ — विआह संस्कारक लुप्तप्राय गीत

प्रश्न 10153. विआह संस्कार गीतक परंपरा मिथिलामे कोना रहल कहल गेल?
क. अत्यन्त व्यापक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अत्यन्त व्यापक।
व्याख्या: स्रोतमे विआह संस्कार गीतक परंपरा अत्यन्त व्यापक कहल अछि।

प्रश्न 10154. विआह-पूर्व वर खोजएबाक समय गाओल गीत कोन नामसँ चिन्हित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सम्मर, कुमार, लगन आदि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सम्मर, कुमार, लगन आदि।
व्याख्या: स्रोतमे वर-खोज प्रसंगक गीतक ई नाम देल गेल।

प्रश्न 10155. विआह योग्य कन्याक लेल सुयोग्य वर खोजए के जाइत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पिता आ अन्य सम्बन्धी लोकनि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पिता आ अन्य सम्बन्धी लोकनि।
व्याख्या: स्रोतमे पिता आ अन्य सम्बन्धी लोकनि वर खोजए जाइत छथि कहल अछि।

प्रश्न 10156. विआह संस्कार गीत लोकजीवनमे कहियासँ आरम्भ होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विआहपूर्वहिसँ।
उत्तर: घ. विआहपूर्वहिसँ।
व्याख्या: स्रोतमे विआहपूर्वहिसँ गीतक रीत कहल गेल।

प्रश्न 10157. विआह गीतक परंपरा लुप्तप्राय होयब की संकेत करैत अछि?
क. सांस्कृतिक स्मृतिक कमजोर पड़ब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सांस्कृतिक स्मृतिक कमजोर पड़ब।
व्याख्या: लेख लुप्तप्राय गीतक संरक्षणक आवश्यकता देखबैत अछि।

प्रश्न 10158. विआह संस्कार गीत केवल मनोरंजन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि, विधि-व्यवहारक सांस्कृतिक विधान सेहो अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि, विधि-व्यवहारक सांस्कृतिक विधान सेहो अछि।
व्याख्या: विआहक चरण सभ गीतक संग सम्पन्न होइत अछि।

प्रश्न 10159. विवाह-गीतमे परिवारक कोन पक्ष सामने अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रिश्ता, विधि, हास्य आ करुणा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रिश्ता, विधि, हास्य आ करुणा।
व्याख्या: स्रोत विआह संस्कारक विविध गीत-धारा खोलैत अछि।

प्रश्न 10160. “लुप्तप्राय” शब्द एहि प्रसंगमे की चेतावनी दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परंपरा बचएबाक आवश्यकता।
उत्तर: घ. परंपरा बचएबाक आवश्यकता।
व्याख्या: लेखक गीतक लुप्त होयबाक संकट पर ध्यान दैत छथि।

प्रश्न 10161. विआह-पूर्व गीत सामाजिक निर्णय प्रक्रियासँ कोना जुड़ल अछि?
क. वर-खोज आ लगन-प्रसंगकेँ गीतमय बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वर-खोज आ लगन-प्रसंगकेँ गीतमय बनबैत अछि।
व्याख्या: सम्मर, कुमार, लगन आदि गीत विवाह-पूर्व व्यवहारसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 10162. खण्ड १०२१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलाक विआह संस्कार गीत विवाह-पूर्व खोजसँ विवाह-विधि धरि सामाजिक-सांस्कृतिक जीवनकेँ सँजोइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाक विआह संस्कार गीत विवाह-पूर्व खोजसँ विवाह-विधि धरि सामाजिक-सांस्कृतिक जीवनकेँ सँजोइत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड विवाह-गीतक परंपरा आ संरक्षण-संकट पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०२२ : विदेह-सदेह २ — परिछन गीत आ धुरछक

प्रश्न 10163. मिथिलाक विवाह संस्कारमे कोन गीत-धुन लुप्तप्राय कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. परिछन गीतक पारंपरिक गीत आ धुन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. परिछन गीतक पारंपरिक गीत आ धुन।
व्याख्या: स्रोतमे परिछन गीतक बहुतो पारंपरिक गीत-धुन लुप्तप्राय कहल अछि।

प्रश्न 10164. परिछन गीतमे बेटी आ जमायक कोन प्रतीकात्मक रूप व्यक्त अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बेटी लक्ष्मी आ जमाय विष्णु।
उत्तर: घ. बेटी लक्ष्मी आ जमाय विष्णु।
व्याख्या: स्रोतमे बेटीकेँ लक्ष्मी आ जमायक विष्णु रूप व्यक्त करैत परिछन अछि।

प्रश्न 10165. परिछनक विधि आरम्भ होइत काल पहिल बिछ कोन होइत अछि?
क. धुरछक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. धुरछक।
व्याख्या: स्रोतमे परिछनक आरम्भमे धुरछक अर्थात दुलहाक स्वागतगीत कहल अछि।

प्रश्न 10166. धुरछकमे सोहागिन स्त्री माथपर की लैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कलश।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कलश।
व्याख्या: स्रोतमे सोहागिन स्त्री माथपर कलश लऽ दुलहाक समक्ष ठाढ़ होइत अछि।

प्रश्न 10167. धुरछक गीतमे दुलहासँ कोन संकेत होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जलपूर्ण घटमे द्रव्य अर्पित करबाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जलपूर्ण घटमे द्रव्य अर्पित करबाक।
व्याख्या: स्रोतमे गीत दुलहासँ घटमे द्रव्य अर्पणक संकेत करैत अछि।

प्रश्न 10168. धुरछक बाद परिछन डाला मे कोन-कोन उपचार सजाओल रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चानन, सिन्दुर, काजर, बेसन, राई, लवण आदि।
उत्तर: घ. चानन, सिन्दुर, काजर, बेसन, राई, लवण आदि।
व्याख्या: स्रोतमे परिछन डाला केर विविध उपचार सूचीबद्ध अछि।

प्रश्न 10169. परिछन गीतमे दुलहाक चाल केर तुलना किनका संग अछि?
क. सिंहक निर्भय चाल संग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सिंहक निर्भय चाल संग।
व्याख्या: गीतमे दुलहा सिंह जकाँ नहू-नहू चलैत छथि।

प्रश्न 10170. दुलहाक हाथक शोभा कोन प्रतीकसँ तुलना पबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हरिक हाथक सुदर्शनसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हरिक हाथक सुदर्शनसँ।
व्याख्या: गीतमे कंगनक शोभा सुदर्शनसँ तुलना पबैत अछि।

प्रश्न 10171. परिछन गीतक सांस्कृतिक काज की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दुलहा-स्वागत आ वैवाहिक मंगलकेँ गीतमय करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दुलहा-स्वागत आ वैवाहिक मंगलकेँ गीतमय करब।
व्याख्या: परिछन विधि, प्रतीक आ स्वागतक गीत-संरचना अछि।

प्रश्न 10172. खण्ड १०२२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परिछन आ धुरछक गीत विवाह-संस्कारक मंगल, प्रतीक आ स्वागत-परंपराकेँ जीवित रखैत अछि।
उत्तर: घ. परिछन आ धुरछक गीत विवाह-संस्कारक मंगल, प्रतीक आ स्वागत-परंपराकेँ जीवित रखैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड विवाहक प्रारम्भिक विधि-गीत पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०२३ : विदेह-सदेह २ — समदाउनक करुणा

प्रश्न 10173. नवतुरिया पीढ़ीक बीच कोन गीतक पद आ भास लुप्तप्राय कहल गेल?
क. करुणा प्रधान उदासी ओ समदाउन गीत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. करुणा प्रधान उदासी ओ समदाउन गीत।
व्याख्या: स्रोतमे समदाउन गीतक पद आ भास लुप्तप्राय कहल अछि।

प्रश्न 10174. समदाउन गीतमे “बेटी के जनम जुनि देब” कहि किनका संबोधित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सूरुज गोसइयाँ/विधाता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सूरुज गोसइयाँ/विधाता।
व्याख्या: गीतमे बेटी-जनम आ निर्धन कोखिक करुण निवेदन अछि।

प्रश्न 10175. एक समदाउनमे सीताक कोन भाव व्यक्त अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नहिरासँ बिछोहक करुण भाव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नहिरासँ बिछोहक करुण भाव।
व्याख्या: स्रोतमे कहरिया भासक समदाउनमे सीताक नहिरासँ बिछोह अछि।

प्रश्न 10176. कहरिया गीतमे सीता मिथिला नगरियाकेँ कोना संबोधित करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुभग पवित्र भूमि।
उत्तर: घ. सुभग पवित्र भूमि।
व्याख्या: गीतमे “सुभग पवित्र भूमि मिथिला नगरिया” आयल अछि।

प्रश्न 10177. समदाउनमे माय-बाबू सम्बन्ध कोन बिम्बसँ व्यक्त अछि?
क. माएक नयनसँ गंगा नीर आ बाबूक कठोर हृदय।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. माएक नयनसँ गंगा नीर आ बाबूक कठोर हृदय।
व्याख्या: स्रोतक गीतमे ई करुण पंक्ति अछि।

प्रश्न 10178. सीताक बिछोह गीतमे के-के स्मृति बनि अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बाबा, काकी, भाइ-भतीजा आ सखिया-सलेहर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बाबा, काकी, भाइ-भतीजा आ सखिया-सलेहर।
व्याख्या: गीतमे नहिराक परिजन आ सखीक स्मृति अछि।

प्रश्न 10179. समदाउनक करुणा कोन सामाजिक अनुभवसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विदाई आ नहिरासँ बिछोह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विदाई आ नहिरासँ बिछोह।
व्याख्या: स्रोतक गीत विवाह-विदाईक भाव-भूमिसँ संबंधित अछि।

प्रश्न 10180. कहरिया भासक गीतमे प्राकृतिक स्मृति कोन रूपमे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बेला, चमेली, चम्पा, मालती, वन आ गाछ।
उत्तर: घ. बेला, चमेली, चम्पा, मालती, वन आ गाछ।
व्याख्या: गीतमे मिथिलाक प्रकृति नहिराक स्मृति बनैत अछि।

प्रश्न 10181. समदाउन गीत लुप्त भेलासँ कोन भाव-संपदा कमज़ोर होएत?
क. विदाईक करुण लोक-संवेदना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विदाईक करुण लोक-संवेदना।
व्याख्या: लेखक नव पीढ़ीमे एहि पद-भासक लुप्तप्रायता पर चिन्ता करैत छथि।

प्रश्न 10182. खण्ड १०२३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समदाउन गीत मिथिलाक विदाई, नहिरा-स्मृति आ स्त्री-करुणाक महत्त्वपूर्ण लोक-साक्ष्य अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समदाउन गीत मिथिलाक विदाई, नहिरा-स्मृति आ स्त्री-करुणाक महत्त्वपूर्ण लोक-साक्ष्य अछि।
व्याख्या: ई खण्ड करुणा-प्रधान विवाह गीतक अर्थ समेटैत अछि।

खण्ड १०२४ : विदेह-सदेह २ — लगनी, जँतसार आ श्रम-गीत

प्रश्न 10183. मिथिलाक व्यावहारिक लोकगीतमे कोन श्रमप्रधान गीत प्रसिद्ध कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लगनी आ जँतसार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लगनी आ जँतसार।
व्याख्या: स्रोतमे लगनी-जँतसार परस्पर सहयोग एवं श्रम प्रधान गीत कहल अछि।

प्रश्न 10184. लगनी गीत कोन गृहस्थी उपकरण/कार्यसँ जुड़ल परंपरा रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जाँत चलबएबाक।
उत्तर: घ. जाँत चलबएबाक।
व्याख्या: स्रोतमे ई गीत जाँत चलबैत दू स्त्रीक स्वरमे गाओल जाइत छल।

प्रश्न 10185. लगनी गीतमे कतेक स्त्रीक स्वरक परंपरा कहल गेल?
क. दू स्त्रीक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दू स्त्रीक।
व्याख्या: स्रोतमे जाँत चलबैत दू स्त्रीक स्वरक परंपरा अछि।

प्रश्न 10186. लगनी गीतक भाव-स्वरूप कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भक्तिभाव, करुणा आ व्यवहार प्रधान।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भक्तिभाव, करुणा आ व्यवहार प्रधान।
व्याख्या: स्रोतमे लगनी गीत ई तीनू गुण रखैत अछि।

प्रश्न 10187. लगनी गीत परस्पर सम्बन्धकेँ की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समृद्ध बनबैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समृद्ध बनबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे लगनी गीत सम्बन्ध समृद्ध बनेबामे सहायक कहल अछि।

प्रश्न 10188. मशीनीकरणक युगमे जाँतक चलन कोना भऽ गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रायः बन्द।
उत्तर: घ. प्रायः बन्द।
व्याख्या: स्रोतमे मशीनीकरणक कारण जाँतक चलन प्रायः बन्द कहल अछि।

प्रश्न 10189. दूर देहातमे लगनीक गीत एखनहुँ कतय सुरक्षित अछि?
क. लोककण्ठमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लोककण्ठमे।
व्याख्या: स्रोतमे दूर देहातमे कतहु-कतहु लोककण्ठमे सुरक्षित कहल अछि।

प्रश्न 10190. लगनी गीतक उदाहरण कोन पदावलीसँ संकलित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साहेबदास पदावलीसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साहेबदास पदावलीसँ।
व्याख्या: स्रोतमे राधाकृष्ण भक्तिपर आधारित लगनी साहेबदास पदावलीसँ संकलित कहल अछि।

प्रश्न 10191. लगनी-जँतसार लुप्त होयब कोन परिवर्तनक संकेत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गृहस्थी श्रम-संस्कृतिक बदलि जाएब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गृहस्थी श्रम-संस्कृतिक बदलि जाएब।
व्याख्या: जाँत आ श्रमगीतक क्षय घरेलू श्रम-संस्कृति पर असर देखबैत अछि।

प्रश्न 10192. खण्ड १०२४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लगनी आ जँतसार मिथिलाक श्रम, भक्ति, करुणा आ स्त्री-सहयोगक लोकगीत परंपरा अछि।
उत्तर: घ. लगनी आ जँतसार मिथिलाक श्रम, भक्ति, करुणा आ स्त्री-सहयोगक लोकगीत परंपरा अछि।
व्याख्या: ई खण्ड श्रमप्रधान लोक-संगीतक सांस्कृतिक अर्थ समेटैत अछि।

खण्ड १०२५ : विदेह-सदेह २ — लगनी गीतक भाव-संरचना

प्रश्न 10193. लगनी गीतक भाव-संरचना कोन-कोन तत्त्वसँ बनल कहल गेल?
क. भक्तिभाव, करुणा आ व्यवहार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भक्तिभाव, करुणा आ व्यवहार।
व्याख्या: स्रोतमे लगनी गीत भक्तिभाव, करुणा आ व्यवहार प्रधान कहल गेल अछि।

प्रश्न 10194. लगनी गीत परस्पर सम्बन्धकेँ की करबाक साधन कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समृद्ध करबाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समृद्ध करबाक।
व्याख्या: स्रोतमे लगनी गीत परस्पर सम्बन्धकेँ समृद्ध बनेबामे सहायक कहल अछि।

प्रश्न 10195. लगनी गीतक गायनक परंपरा कोन श्रम-काजसँ जुड़ल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जाँत चलबैत दू स्त्रीक स्वर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जाँत चलबैत दू स्त्रीक स्वर।
व्याख्या: स्रोतमे ई गीत जाँत चलबैत दू स्त्रीक स्वरमे गाओल जाइत छल कहल अछि।

प्रश्न 10196. मशीनीकरणक कारण लगनी परंपरापर की असर पड़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जाँतक चलन प्रायः बन्द भऽ गेल।
उत्तर: घ. जाँतक चलन प्रायः बन्द भऽ गेल।
व्याख्या: स्रोतमे मशीनीकरणक युगमे जाँतक चलन प्रायः बन्द कहल गेल।

प्रश्न 10197. दूर देहातमे लगनी गीत कोना बाँचल कहल गेल?
क. कतहु-कतहु लोककण्ठमे सुरक्षित।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कतहु-कतहु लोककण्ठमे सुरक्षित।
व्याख्या: स्रोतमे दूर देहातमे एखनहुँ कतहु-कतहु लोककण्ठमे सुरक्षित कहल अछि।

प्रश्न 10198. राधाकृष्ण भक्ति आधारित लगनी गीत कोन पदावलीसँ संकलित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साहेबदास पदावलीसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साहेबदास पदावलीसँ।
व्याख्या: स्रोतमे लगनी गीत साहेबदास पदावलीसँ संकलित प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 10199. लगनी-जँतसार गृहस्थीक कोन अंग कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अभिन्न अंग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अभिन्न अंग।
व्याख्या: स्रोतमे ई गीत गृहस्थीक अभिन्न अंग रहल अछि।

प्रश्न 10200. लगनी गीत श्रम आ भाव दुनूकेँ कोना जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. घर-गृहस्थी श्रमकेँ भक्ति आ करुणा संग जोड़ैत अछि।
उत्तर: घ. घर-गृहस्थी श्रमकेँ भक्ति आ करुणा संग जोड़ैत अछि।
व्याख्या: जाँत चलबैत गायन श्रमक बीच भाव-साझेदारी बनबैत अछि।

प्रश्न 10201. लगनी परंपराक क्षय कोन सांस्कृतिक चिन्ता जनबैत अछि?
क. गृहस्थी श्रमगीतक स्मृति लुप्त होयबाक चिन्ता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गृहस्थी श्रमगीतक स्मृति लुप्त होयबाक चिन्ता।
व्याख्या: मशीनीकरण आ जाँतक बंद चलनसँ गीतक व्यवहारिक आधार कम भेल।

प्रश्न 10202. खण्ड १०२५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लगनी गीत मिथिलाक श्रम, भक्ति, करुणा आ स्त्री-सहयोगक जीवित परंपरा रहल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लगनी गीत मिथिलाक श्रम, भक्ति, करुणा आ स्त्री-सहयोगक जीवित परंपरा रहल अछि।
व्याख्या: ई खण्ड लगनीक सांस्कृतिक संरचना स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १०२६ : विदेह-सदेह २ — लगनी पदमे कृष्ण-विरह

प्रश्न 10203. पहिल लगनी पदमे “बसहु वृन्दावन” कहि किनका संबोधित भाव अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कृष्ण/कान्हाकेँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कृष्ण/कान्हाकेँ।

व्याख्या: गीतमे कान्हा, माधव, मोहन आ कृष्णक संबोधन अछि।

प्रश्न 10204. “जौं तोहें जएबह हरि” पंक्तिमे कोन भाव व्यक्त अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हरि बिन एको घड़ी जीब कठिन।

उत्तर: घ. हरि बिन एको घड़ी जीब कठिन।

व्याख्या: गीतमे हरि जएला पर जियब कठिन होयबाक विरह अछि।

प्रश्न 10205. गीतमे “मधुबन तेजि” नहि जाएबाक आग्रह किनका सँ अछि?

क. मोहन सँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोहन सँ।

व्याख्या: पंक्तिमे “जाहु जुनि मधुबन तेजि कहुँ मोहन” आयल अछि।

प्रश्न 10206. लगनी पदमे “हमर सपथ तोहि माधव” कोन भावक संकेत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनुनय आ विरहपूर्ण विनती।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनुनय आ विरहपूर्ण विनती।

व्याख्या: सपथ देब प्रेमपूर्ण आग्रहक तीव्रता देखबैत अछि।

प्रश्न 10207. पहिल लगनी पदमे कंस प्रसंग किएक आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कृष्णक धर्म-संघर्ष आ अवतारी काजक संकेत लेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कृष्णक धर्म-संघर्ष आ अवतारी काजक संकेत लेल।

व्याख्या: गीतमे कंसकेँ अधम गति देबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 10208. “साहेब आओत कृष्ण माधव” पंक्ति कोन आशा रखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृष्णक पुनरागमनक आशा।

उत्तर: घ. कृष्णक पुनरागमनक आशा।

व्याख्या: गीत विरहक बीच कृष्ण आएबाक आस राखैत अछि।

प्रश्न 10209. लगनीक एहि पदमे लोकगायन आ भक्ति कोना मिलैत अछि?
क. गृहस्थी श्रमक गीत कृष्ण-विरहक भाव लैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गृहस्थी श्रमक गीत कृष्ण-विरहक भाव लैत अछि।
व्याख्या: ई श्रमगीत भक्ति-विरहक पदावलीसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 10210. कान्हा, माधव, मोहन नाम सभ एक गीतमे की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कृष्ण-भक्तिक विविध स्नेहिल संबोधन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कृष्ण-भक्तिक विविध स्नेहिल संबोधन।
व्याख्या: एहि नाम सभसँ भक्ति-संबंधक आत्मीयता बनैत अछि।

प्रश्न 10211. पहिल लगनी पदक मूल भाव की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कृष्ण-विरह आ लौटबाक प्रार्थना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कृष्ण-विरह आ लौटबाक प्रार्थना।
व्याख्या: गीतक पंक्ति सभ कृष्णक प्रस्थान रोकबाक अनुरोध करैत अछि।

प्रश्न 10212. खण्ड १०२६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लगनीक पहिल पद गृहस्थी श्रमगीतकेँ कृष्ण-विरहक भक्ति-संवेदना संग जोड़ैत अछि।
उत्तर: घ. लगनीक पहिल पद गृहस्थी श्रमगीतकेँ कृष्ण-विरहक भक्ति-संवेदना संग जोड़ैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पदक भक्तिपरक विरह भावकेँ केन्द्र करैत अछि।

खण्ड १०२७ : विदेह-सदेह २ — लगनी पदमे उधो आ मधुपुर

प्रश्न 10213. दोसर लगनी पदमे दुःख कहबाक कठिनाई कोना व्यक्त अछि?
क. वचन मुखमे नहि आबए।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वचन मुखमे नहि आबए।
व्याख्या: गीतमे “काहि कहब दुःख वचन ने आबए मुख” कहल अछि।

प्रश्न 10214. “धैरज धएलो नहि जाइछ” पंक्तिमे कोन अवस्था अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विरहक असह्य अधैर्य।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विरहक असह्य अधैर्य।
व्याख्या: उधो संबोधनक संग धैर्य न राखि सकबाक वेदना अछि।

प्रश्न 10215. गीतमे हरि कुबुजी अधीन भेल कहब की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गोकुल छोड़ल कृष्णपर लोक-विरहक शिकायत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गोकुल छोड़ल कृष्णपर लोक-विरहक शिकायत।
व्याख्या: पदमे “किए तेजि हरि गेल कुबुजी अधीन भेल” आयल अछि।

प्रश्न 10216. “कओन साहेब हरि आनब” पंक्तिमे कोन प्रश्न अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हरिकेँ फेर के आनत।
उत्तर: घ. हरिकेँ फेर के आनत।
व्याख्या: गीत विरहमे कृष्णकेँ वापस अनबाक असमर्थता देखबैत अछि।

प्रश्न 10217. तेसर लगनी पदमे माधव कतय बसैत कहल गेल?
क. मधुपुरमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मधुपुरमे।
व्याख्या: पदमे “कत दूर मधुपुर जतए बसए माधव” आयल अछि।

प्रश्न 10218. वन-वन माधव मुरली टेरए पंक्तिमे कोन छवि अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मुरली बजबैत कृष्णक स्मृति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मुरली बजबैत कृष्णक स्मृति।
व्याख्या: गीतमे वन-वन मुरली-स्वरक स्मृति अछि।

प्रश्न 10219. “दुख सुख लिखियो बनाइए” पंक्तिमे कोन संचार-भाव अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विरहिणीक संदेश लिखबाक इच्छा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विरहिणीक संदेश लिखबाक इच्छा।
व्याख्या: गीतमे चनन काठी आ भाँति-भाँति लिखबाक बात अछि।

प्रश्न 10220. “हरि बिन फाटय छाती” कोन अनुभूति प्रकट करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विरहक शारीरिक-मानसिक पीड़ा।
उत्तर: घ. विरहक शारीरिक-मानसिक पीड़ा।
व्याख्या: अँधियारी राति हरि बिन छाती फाटबाक लोक-उक्ति अछि।

प्रश्न 10221. दोसर-तेसर लगनी पदक साझा भाव की अछि?
क. कृष्ण-विरह, शिकायत आ संदेशक आकुलता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कृष्ण-विरह, शिकायत आ संदेशक आकुलता।
व्याख्या: दूनू पद उधो/सजनी संबोधनक माध्यमे विरह व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 10222. खण्ड १०२७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उधो आ मधुपुरक लगनी पद कृष्ण-विरहक असह्यता, संदेश-व्याकुलता आ गोकुल-स्मृति व्यक्त करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उधो आ मधुपुरक लगनी पद कृष्ण-विरहक असह्यता, संदेश-व्याकुलता आ गोकुल-स्मृति व्यक्त करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड लगनीक पद २–३क भाव समेटैत अछि।

खण्ड १०२८ : विदेह-सदेह २ — मलार गीतक लुप्तप्राय परंपरा

प्रश्न 10223. मिथिलामे कोन ऋतु/भावप्रधान गीत आ धुन लुप्तप्राय कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मलार गीत आ धुन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मलार गीत आ धुन।
व्याख्या: स्रोतमे मलार गीत आ धुन लुप्तप्राय कहल अछि।

प्रश्न 10224. मलार गीतक परंपरा मिथिलामे कोना रहल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समृद्ध।
उत्तर: घ. समृद्ध।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिलामे मलार गीतक परंपरा समृद्ध कहल अछि।

प्रश्न 10225. वर्तमानमे मलारक कोन अंश लुप्तप्राय कहल गेल?
क. ओ गीत आ धुन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ गीत आ धुन।
व्याख्या: स्रोतमे वर्तमानमे मलारक ओ गीत आ धुन लुप्तप्राय कहल गेल।

प्रश्न 10226. मलार गीतक किछु पद कोन पदावलीसँ संकलित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साहेबदास पदावलीसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साहेबदास पदावलीसँ।
व्याख्या: स्रोतमे मलार गीतक पद साहेबदास पदावलीसँ संकलित प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 10227. मलार परंपराक चर्चा लगनीक बाद किएक अर्थपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दूनू लुप्तप्राय लोकसंगीत परंपराक अंश अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दूनू लुप्तप्राय लोकसंगीत परंपराक अंश अछि।
व्याख्या: लेख लगनी-जँतसारक बाद मलार गीतक क्षय पर आवैत अछि।

प्रश्न 10228. मलार गीतक संरक्षण किएक आवश्यक बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिलाक ऋतु-भाव आ राग-स्मृति बचएबाक लेल।
उत्तर: घ. मिथिलाक ऋतु-भाव आ राग-स्मृति बचएबाक लेल।
व्याख्या: मलारक धुन आ पदक लुप्तता सांगीतिक स्मृतिक क्षय अछि।

प्रश्न 10229. स्रोतमे मलारक स्थिति कोन विरोधाभास देखबैत अछि?
क. परंपरा समृद्ध छल, मुदा वर्तमानमे लुप्तप्राय अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. परंपरा समृद्ध छल, मुदा वर्तमानमे लुप्तप्राय अछि।
व्याख्या: समृद्ध अतीत आ क्षीण वर्तमान एक संग रखल गेल अछि।

प्रश्न 10230. मलार गीतक पदावली-संकलन कोन काज करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लुप्तप्राय परंपराक दस्तावेजीकरण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लुप्तप्राय परंपराक दस्तावेजीकरण।
व्याख्या: संकलन पद सभकेँ भावी पाठक लेल सुरक्षित करैत अछि।

प्रश्न 10231. मलार गीतक “धुन”क उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लोकगीत केवल शब्द नहि, गायन-स्वर परंपरा सेहो अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लोकगीत केवल शब्द नहि, गायन-स्वर परंपरा सेहो अछि।
व्याख्या: लेख गीत आ धुन दुनूकेँ लुप्तप्राय बतबैत अछि।

प्रश्न 10232. खण्ड १०२८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मलार मिथिलाक समृद्ध किंतु लुप्तप्राय गीत-धुन परंपरा अछि, जकर संरक्षण जरूरी अछि।
उत्तर: घ. मलार मिथिलाक समृद्ध किंतु लुप्तप्राय गीत-धुन परंपरा अछि, जकर संरक्षण जरूरी अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मलारक सांस्कृतिक संकट पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०२९ : विदेह-सदेह २ — मलार पदमे निरमोहिया प्रियतम

प्रश्न 10233. पहिल मलार पदमे प्रियतमकेँ कोना संबोधित कएल गेल?
क. बड़ निरमोहिया।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बड़ निरमोहिया।
व्याख्या: पदमे “अली रे प्रीतम बड़ निरमोहिया” आयल अछि।

प्रश्न 10234. “आतुर वचन हमर नहि मानए” पंक्तिमे कोन भाव अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रेमिका/विरहिणीक उपेक्षित विनती।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रेमिका/विरहिणीक उपेक्षित विनती।
व्याख्या: प्रियतम आतुर वचन नहि मानैत छथि।

प्रश्न 10235. “परम विषम भेल रतिया” पंक्ति कोन अनुभव देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विरहमे राति कठिन भऽ जाएब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विरहमे राति कठिन भऽ जाएब।
व्याख्या: रातिक विषमता विरहपीड़ा बढ़बैत अछि।

प्रश्न 10236. काँपत देह आ घाम घमि आवत पंक्तिमे कोन अवस्था अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रेम-विरहक देहगत व्याकुलता।
उत्तर: घ. प्रेम-विरहक देहगत व्याकुलता।
व्याख्या: पदमे देह काँपब आ घाम आबब व्यक्त अछि।

प्रश्न 10237. “बहत नीर दुहू अँखिया” पंक्तिमे की व्यक्त अछि?
क. दूनू आँखिसँ नोर बहब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दूनू आँखिसँ नोर बहब।
व्याख्या: मलार पद विरहिणीक रुदन चित्रित करैत अछि।

प्रश्न 10238. रमानन्द भामिनिकेँ की कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. थिर रहू आ सुख बीच दुःख बताउ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. थिर रहू आ सुख बीच दुःख बताउ।
व्याख्या: पदमे भामिनिकेँ स्थिर रहि दुःख कहबाक आग्रह अछि।

प्रश्न 10239. पहिल मलार पदक मूल भाव की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. निरमोह प्रियतमक उपेक्षा आ विरहिणीक व्याकुलता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. निरमोह प्रियतमक उपेक्षा आ विरहिणीक व्याकुलता।
व्याख्या: समूचा पद प्रियतमक अनुत्तरता आ स्त्री-वेदना पर आधारित अछि।

प्रश्न 10240. एहि पदमे मलारक करुण पक्ष कोना व्यक्त अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. राति, देह, नोर आ विनतीक बिम्बसँ।
उत्तर: घ. राति, देह, नोर आ विनतीक बिम्बसँ।
व्याख्या: गीत विरहक शारीरिक आ भावनात्मक असर देखबैत अछि।

प्रश्न 10241. प्रियतमकेँ “निरमोहिया” कहब कोन भाव खोलैत अछि?
क. प्रेममे उपेक्षा आ शिकायत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रेममे उपेक्षा आ शिकायत।
व्याख्या: ई संबोधन स्नेह आ रोष दुनू व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 10242. खण्ड १०२९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पहिल मलार पद निरमोह प्रियतमक कारण उत्पन्न विरह, व्याकुलता आ करुण रुदन व्यक्त करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पहिल मलार पद निरमोह प्रियतमक कारण उत्पन्न विरह, व्याकुलता आ करुण रुदन व्यक्त करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मलारक भाव-गहनता देखबैत अछि।

खण्ड १०३० : विदेह-सदेह २ — मलार पदमे पाती आ विरह

प्रश्न 10243. दोसर मलार पदमे उधोसँ मुख्य प्रश्न की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कओने विधि पाती लिखब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कओने विधि पाती लिखब।
व्याख्या: पदमे “हे उधो लिखब कओने विधि पाती” अछि।

प्रश्न 10244. पाती लिखबाक उपकरण रूपमे कोन बिम्ब आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंचल पत्र, नयन जल, काजर आ नख।
उत्तर: घ. अंचल पत्र, नयन जल, काजर आ नख।
व्याख्या: गीतमे अंचल पत्र, नयन जल काजर, नख लिखबाक बिम्ब अछि।

प्रश्न 10245. “नख लिखि नहि थिर छाती” पंक्तिमे कोन मनःस्थिति अछि?
क. विरहमे स्थिरता न रहब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विरहमे स्थिरता न रहब।
व्याख्या: लिखबाक काजो छाती थिर नहि रहबाक कारण कठिन अछि।

प्रश्न 10246. चन्द्र किरण पियाकेँ की करत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बध करत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बध करत।
व्याख्या: गीतमे चन्द्र किरण एतय पियकेँ पीड़ा देबाक अर्थमे आयल अछि।

प्रश्न 10247. रेशम वसन, कनक तन भूषण आ पवन कोन रूपमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जिबघाती।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जिबघाती।
व्याख्या: पदमे तेसर पवन जिबघाती कहल अछि; विरहमे सुख-वस्तु सेहो पीड़ादायक अछि।

प्रश्न 10248. रमानन्द विरहिणीकेँ श्यामक सम्बन्धमे की आश्वासन दैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. श्याम आएताह।
उत्तर: घ. श्याम आएताह।
व्याख्या: पदमे “आओत श्याम विरहाती” आयल अछि।

प्रश्न 10249. पाती-विमर्श विरहिणीक कोन असमर्थता देखबैत अछि?
क. दुःख लिखि नहि सकबाक असमर्थता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दुःख लिखि नहि सकबाक असमर्थता।
व्याख्या: पत्र लिखबाक सामग्री भावक बिम्ब बनैत अछि, मुदा मन थिर नहि।

प्रश्न 10250. दोसर मलार पदमे प्रकृतिक बिम्ब कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चन्द्र किरण आ पवन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चन्द्र किरण आ पवन।
व्याख्या: एहि बिम्ब सभ विरहमे पीड़ादायक बनैत अछि।

प्रश्न 10251. “पाती” पदक भाव-संरचना की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. संदेश लिखबाक इच्छा आ विरहक अस्थिरता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. संदेश लिखबाक इच्छा आ विरहक अस्थिरता।
व्याख्या: उधो संबोधनक माध्यमे संदेश-विरहक कथा बनैत अछि।

प्रश्न 10252. खण्ड १०३०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मलारक पाती-पद विरहिणीक असमर्थ लेखन, अश्रु, प्रकृति-पीड़ा आ श्याम-आशाक गीत अछि।
उत्तर: घ. मलारक पाती-पद विरहिणीक असमर्थ लेखन, अश्रु, प्रकृति-पीड़ा आ श्याम-आशाक गीत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पदक संदेशात्मक करुणा पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०३१ : विदेह-सदेह २ — मलार पदमे चतुर घटबरबा

प्रश्न 10253. तेसर मलार पदमे उधोकेँ कोना संबोधित कएल गेल?
क. बड़ रे चतुर घटबरबा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बड़ रे चतुर घटबरबा।
व्याख्या: पदमे “हे उधो बड़ रे चतुर घटबरबा” अछि।

प्रश्न 10254. घटबरबा दूरसँ की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बजओलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बजओलनि।
व्याख्या: गीतमे दूरसँ बजाओल आ नाव चढ़ाओल प्रसंग अछि।

प्रश्न 10255. नाव चढ़ाओलाक बाद घटबरबा की केलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मँझधार लऽ गेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मँझधार लऽ गेल।
व्याख्या: पदमे खेबि लऽ मँझधार गेल कहल अछि।

प्रश्न 10256. नाव हिलओलनि पंक्तिमे नायिका पर की असर भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. डेरओलनि।
उत्तर: घ. डेरओलनि।
व्याख्या: नाव हिलाओलासँ डर लगबाक भाव अछि।

प्रश्न 10257. आँचर धएलनि आ झिकझोरलनि पंक्तिमे कोन नाटकीयता अछि?
क. चपल, छेड़छाड़पूर्ण मिलन-स्थितिक बिम्ब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चपल, छेड़छाड़पूर्ण मिलन-स्थितिक बिम्ब।
व्याख्या: गीतमे आँचर धरण, झिकझोरब आ गजमोति हर तोड़ब आयल अछि।

प्रश्न 10258. तेसर पदक कवि-संकेत कोन नामसँ अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुकविदास।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुकविदास।
व्याख्या: अंतिम पंक्तिमे “सुकविदास कह” आयल अछि।

प्रश्न 10259. “जुग जुग जीबए घटबरबा” पंक्ति कोन भाव समाप्ति दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चपल प्रेमक मंगल-कामना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चपल प्रेमक मंगल-कामना।
व्याख्या: शिकायतक बादो घटबरबाक दीर्घायु-कामना अछि।

प्रश्न 10260. नाव-मँझधारक बिम्ब प्रेमगीतमे की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिलन-खेल आ जोखिमक भाव बनबैत अछि।
उत्तर: घ. मिलन-खेल आ जोखिमक भाव बनबैत अछि।
व्याख्या: नावक खेल भावनात्मक हलचल संकेत करैत अछि।

प्रश्न 10261. तेसर मलार पद पहिल दू पदसँ कत्ते भिन्न अछि?
क. करुण विरहसँ अधिक चपल रति-लीलाक रूप लैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. करुण विरहसँ अधिक चपल रति-लीलाक रूप लैत अछि।
व्याख्या: एहि पदमे नाव, आँचर, हर टूटबाक जीवंतता अधिक अछि।

प्रश्न 10262. खण्ड १०३१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चतुर घटबरबाक मलार पद प्रेम, चपलता, नाव-बिम्ब आ रति-लीलाक लोकगीत रूप प्रस्तुत करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चतुर घटबरबाक मलार पद प्रेम, चपलता, नाव-बिम्ब आ रति-लीलाक लोकगीत रूप प्रस्तुत करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मलारक चंचल प्रेम-बिम्ब देखबैत अछि।

खण्ड १०३२ : विदेह-सदेह २ — बटगमनी गीतक परंपरा

प्रश्न 10263. बटगमनी गीतक परंपरा कोन भावसँ परिपूर्ण कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रेम, श्रृंगार आ रति-भाव।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रेम, श्रृंगार आ रति-भाव।

व्याख्या: स्रोतमे बटगमनी गीत प्रेम, श्रृंगार आ रति-भावक अभिव्यक्तिसँ परिपूर्ण कहल अछि।

प्रश्न 10264. बटगमनी गीत एखनहुँ कोन अवसर पर गाओल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मांगलिक अनुष्ठानक बाटमे।

उत्तर: घ. मांगलिक अनुष्ठानक बाटमे।

व्याख्या: स्रोतमे मांगलिक अनुष्ठानमे समूह बाटमे बटगमनी गीत गबैत अछि।

प्रश्न 10265. स्त्री-समूह कोन-कोन स्थल/विधि लेल निकलैत काल बटगमनी गबैत छथि?

क. डिहबार, ब्रह्मस्थान, माटिमंगल, आम-महु बियाह आदि लेल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डिहबार, ब्रह्मस्थान, माटिमंगल, आम-महु बियाह आदि लेल।

व्याख्या: स्रोतमे ग्राम देवता डिहबार, ब्रह्मस्थान, माटिमंगल, आम-महु बियाहक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10266. बटगमनी गबैत काल कोन बाजाक साथ कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ढोल-पिपही बाजा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ढोल-पिपही बाजा।

व्याख्या: स्रोतमे ढोल-पिपही बाजाक संग स्त्री-समूहक निकलनिहार प्रसंग अछि।

प्रश्न 10267. नब पीढ़ीक मैथिल ललनाक बीच कोन अभाव कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उमंग, उत्साह आ प्रगल्भताक अभाव।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उमंग, उत्साह आ प्रगल्भताक अभाव।

व्याख्या: स्रोतमे नव पीढ़ीमे एहि भावक कमी कहल अछि।

प्रश्न 10268. बटगमनी गीत सभ लुप्तप्राय किएक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गीतक प्रति उदासीनताक कारणे।

उत्तर: घ. गीतक प्रति उदासीनताक कारणे।

व्याख्या: स्रोतमे उदासीनताक कारणे बटगमनी लुप्तप्राय कहल अछि।

प्रश्न 10269. बटगमनी परंपरा लोकजीवनमे कोन मार्ग-संस्कृति देखबैत अछि?
क. विधि लेल जात बाटकेँ गीतमय करबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विधि लेल जात बाटकेँ गीतमय करबाक।
व्याख्या: अनुष्ठानिक यात्रा गीतक संग सामुदायिक बनैत अछि।

प्रश्न 10270. बटगमनीक स्त्री-केंद्रितता कोन बातसँ स्पष्ट अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्त्री गण लोकनिक समूह द्वारा गायन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्त्री गण लोकनिक समूह द्वारा गायन।
व्याख्या: स्रोतमे स्त्री-समूहक गायन स्पष्ट अछि।

प्रश्न 10271. बटगमनीक क्षय केवल गीतक क्षय अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नहि, अनुष्ठानिक स्त्री-उमंगक क्षय सेहो अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नहि, अनुष्ठानिक स्त्री-उमंगक क्षय सेहो अछि।
व्याख्या: लेख गीत संग उमंग, उत्साह आ प्रगल्भताक कमी देखबैत अछि।

प्रश्न 10272. खण्ड १०३२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बटगमनी मांगलिक यात्रा, स्त्री-समूह, श्रृंगार आ लोक-उत्साहक लुप्तप्राय गीत परंपरा अछि।
उत्तर: घ. बटगमनी मांगलिक यात्रा, स्त्री-समूह, श्रृंगार आ लोक-उत्साहक लुप्तप्राय गीत परंपरा अछि।
व्याख्या: ई खण्ड बटगमनीक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रसंग स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १०३३ : विदेह-सदेह २ — बटगमनीमे श्रृंगार आ नायिका-उक्ति

प्रश्न 10273. पहिल बटगमनी पदमे श्रृंगारक कथन केकर उक्तिमे अछि?
क. नायिकाक उक्तिमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नायिकाक उक्तिमे।
व्याख्या: स्रोतमे संभोगक वर्णन नायिकाक उक्तिमे प्रस्तुत कहल अछि।

प्रश्न 10274. बटगमनीमे स्नेहन, चुम्बन, आलिंगन, राग आ अनुराग कोन भाव बनबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संभोग-श्रृंगारक भाव।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संभोग-श्रृंगारक भाव।
व्याख्या: स्रोतमे ई सभ तत्त्व रति-भावक अभिव्यक्ति लेल आयल अछि।

प्रश्न 10275. “काँच कली पहु तोड़थि” पंक्तिमे कोन प्रकारक बिम्ब अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. श्रृंगारिक नायिका-बिम्ब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. श्रृंगारिक नायिका-बिम्ब।
व्याख्या: काँच कलीक बिम्ब यौवन आ श्रृंगार संकेत करैत अछि।

प्रश्न 10276. “लए कोरा बैसाए” पंक्ति कोन निकटता देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रेमी-प्रेमिकाक शारीरिक सान्निध्य।
उत्तर: घ. प्रेमी-प्रेमिकाक शारीरिक सान्निध्य।
व्याख्या: गोदमे बैसब श्रृंगारिक समीपता व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 10277. “अधर सुधा सम पीबथि” पंक्तिमे कोन रसबोध अछि?
क. अधर-स्पर्शक मधुरता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अधर-स्पर्शक मधुरता।
व्याख्या: सुधा-उपमा प्रेम-स्पर्शकेँ मधुर बनबैत अछि।

प्रश्न 10278. “यौवन देखि लोभाय” पंक्ति की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. यौवनाकर्षण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. यौवनाकर्षण।
व्याख्या: गीतमे यौवन देखिकऽ लोभायबाक श्रृंगारिक भाव अछि।

प्रश्न 10279. “भुजपाश बान्हि” पंक्तिमे कोन क्रिया अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आलिंगन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आलिंगन।
व्याख्या: भुजपाश बान्हब प्रेमी आलिंगनक बिम्ब अछि।

प्रश्न 10280. “पहु भेल कठिन कठोर” पंक्तिमे नायिकाक स्वर कोना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अनुभवक तीव्रता व्यक्त करैत।
उत्तर: घ. अनुभवक तीव्रता व्यक्त करैत।
व्याख्या: नायिका अपन रति-अनुभवक तीव्रता कहैत छथि।

प्रश्न 10281. “नहि नहि जौं हम भाखब” पंक्तिमे कोन संकेत अछि?
क. अनकहल अंतरंग अनुभव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनकहल अंतरंग अनुभव।
व्याख्या: गीत प्रत्यक्ष वर्णनसँ हटि संकेतात्मकता राखैत अछि।

प्रश्न 10282. खण्ड १०३३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बटगमनीक नायिका-उक्ति श्रृंगार, आलिंगन, यौवनाकर्षण आ संकेतात्मक रति-अनुभव व्यक्त करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बटगमनीक नायिका-उक्ति श्रृंगार, आलिंगन, यौवनाकर्षण आ संकेतात्मक रति-अनुभव व्यक्त करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड श्रृंगारिक बटगमनीक रूप देखबैत अछि।

खण्ड १०३४ : विदेह-सदेह २ — बटगमनीमे परदेशी पतिक मिलन-उत्कंठा

प्रश्न 10283. दोसर बटगमनी पदमे पति कतयसँ आएल छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. परदेशसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. परदेशसँ।
व्याख्या: स्रोतमे बहुत दिनक बाद परदेशसँ आएल पतिक प्रसंग अछि।

प्रश्न 10284. “कतेक दिवस पर प्रीतम आएल” पंक्ति कोन भाव व्यक्त करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दीर्घ विरह बाद मिलनक हर्ष।
उत्तर: घ. दीर्घ विरह बाद मिलनक हर्ष।
व्याख्या: बहुत दिन बाद प्रियतमक आगमन उत्साह जगबैत अछि।

प्रश्न 10285. “मन दए नेह लगाएब” पंक्तिमे नायिकाक कोन इच्छा अछि?
क. स्नेहपूर्वक मिलन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्नेहपूर्वक मिलन।
व्याख्या: गीतमे मन दऽ नेह लगाएबाक बात अछि।

प्रश्न 10286. “रचि रचि अंक लगाएब” पंक्तिमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आलिंगनक उत्कंठा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आलिंगनक उत्कंठा।
व्याख्या: अंक लगाएब प्रेम-आलिंगनक बिम्ब अछि।

प्रश्न 10287. नायिका पतिकेँ कोना कहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चतुर सयान।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चतुर सयान।
व्याख्या: गीतमे “पहु थिक चतुर सयानहि” आयल अछि।

प्रश्न 10288. ई दिन काटि लेलापर नायिका की करबाक कहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बर गान करबाक।
उत्तर: घ. बर गान करबाक।
व्याख्या: गीतमे “तखन करब बर गान” आयल अछि।

प्रश्न 10289. नायिका प्रियतमकेँ की सुनएबाक चाहैत अछि?
क. गीत/गान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गीत/गान।
व्याख्या: गीतमे गाबि सुनेबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 10290. “पहु करता बड़ मान” पंक्ति कोन आशा देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रियतम द्वारा आदर/मान भेटबाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रियतम द्वारा आदर/मान भेटबाक।
व्याख्या: नायिका अपेक्षा करैत अछि जे पति मान देताह।

प्रश्न 10291. बटगमनीक एहि पदमे श्रृंगार ककर संग जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विरह बाद पुनर्मिलनक उत्साह संग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विरह बाद पुनर्मिलनक उत्साह संग।
व्याख्या: परदेशी पतिक आगमन श्रृंगारिक तैयारी आ मिलन-उत्सुकता जगबैत अछि।

प्रश्न 10292. खण्ड १०३४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बटगमनीमे परदेशी पतिक आगमन स्त्रीक सजग प्रेम, मिलन-तैयारी आ गीतमय हर्षक रूपमे व्यक्त अछि।
उत्तर: घ. बटगमनीमे परदेशी पतिक आगमन स्त्रीक सजग प्रेम, मिलन-तैयारी आ गीतमय हर्षक रूपमे व्यक्त अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मिलन-उत्कंठाक बटगमनी देखबैत अछि।

खण्ड १०३५ : विदेह-सदेह २ — लुप्तप्राय लोकगीतक समेकित अर्थ

प्रश्न 10293. लगनी, मलार आ बटगमनी तीनू परंपरा कोन संकटसँ जुड़ल अछि?

क. लुप्तप्राय होयबाक संकट।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लुप्तप्राय होयबाक संकट।

व्याख्या: स्रोतमे तीनू परंपराक क्षीण/लुप्तप्राय अवस्था पर बल अछि।

प्रश्न 10294. लगनी गीत गृहस्थी श्रमसँ जुड़ैत अछि, मलार मुख्यतः कोन भावसँ?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ऋतु, विरह आ रागात्मक भावसँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ऋतु, विरह आ रागात्मक भावसँ।

व्याख्या: मलार गीतक पद सभ विरह, पाती आ चतुर घटबरबाक रागात्मकता देखबैत अछि।

प्रश्न 10295. बटगमनीक सामुदायिक स्थान कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मांगलिक अनुष्ठानक बाट।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मांगलिक अनुष्ठानक बाट।

व्याख्या: स्त्री-समूह अनुष्ठान लेल जात काल बटगमनी गबैत छथि।

प्रश्न 10296. एहि गीत सभक लुप्तता कोन व्यापक प्रश्न उठबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकस्मृति आ सांस्कृतिक व्यवहारक संरक्षण।

उत्तर: घ. लोकस्मृति आ सांस्कृतिक व्यवहारक संरक्षण।

व्याख्या: गीतक क्षय केवल शब्दक नहि, जीवन-रीतिक क्षय सेहो अछि।

प्रश्न 10297. साहेबदास पदावलीक उल्लेख कोन परंपराकेँ स्रोत देत अछि?

क. लगनी आ मलारक संकलित पदकेँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लगनी आ मलारक संकलित पदकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे दूनू पदावली-संकलनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10298. लोककण्ठमे सुरक्षित रहबाक अर्थ की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. परंपरा लिखित मात्र नहि, जीवित गायनमे रहल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. परंपरा लिखित मात्र नहि, जीवित गायनमे रहल।

व्याख्या: दूर देहातमे लोककण्ठमे गीतक बचल रहब लोक-संचार देखबैत अछि।

प्रश्न 10299. मशीनीकरण कोन गीतक व्यवहारिक आधारकेँ कमजोर करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लगनी-जँतसार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लगनी-जँतसार।
व्याख्या: जाँतक चलन बन्द भेलासँ लगनीक दैनिक प्रसंग क्षीण भेल।

प्रश्न 10300. नव पीढ़ीक उदासीनता कोन गीतक लुप्ततासँ विशेष जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बटगमनी।
उत्तर: घ. बटगमनी।
व्याख्या: स्रोतमे नब पीढ़ीक मैथिल ललना सभमे उदासीनता क कारण बटगमनी लुप्तप्राय कहल अछि।

प्रश्न 10301. समेकित दृष्टिसँ ई खण्ड सभ की मांग करैत अछि?
क. लोकगीतक संग्रह, गायन आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लोकगीतक संग्रह, गायन आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण।
व्याख्या: लुप्तप्राय स्थिति संरक्षणक आवश्यकता देखबैत अछि।

प्रश्न 10302. खण्ड १०३५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लगनी, मलार आ बटगमनी मिथिलाक श्रम, विरह, राग, श्रृंगार आ मांगलिक जीवनक लुप्तप्राय लोकधरोहर अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लगनी, मलार आ बटगमनी मिथिलाक श्रम, विरह, राग, श्रृंगार आ मांगलिक जीवनक लुप्तप्राय लोकधरोहर अछि।
व्याख्या: ई खण्ड लोकगीत-विमर्शक समेकित अर्थ प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १०३६ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्रपर विशेषक आरम्भ

प्रश्न 10303. लुप्तप्राय गीत-विमर्शक बाद कोन विशेष खण्ड आरम्भ होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जयकान्त मिश्रपर विशेष।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त मिश्रपर विशेष।
व्याख्या: स्रोतमे बटगमनीक बाद “जयकान्त मिश्रपर विशेष” शीर्षक आयल अछि।

प्रश्न 10304. जयकान्त मिश्र विशेषमे प्रथम नाम कोन लेखकक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. डॉ. गंगेश गुंजन।
उत्तर: घ. डॉ. गंगेश गुंजन।
व्याख्या: स्रोतमे विशेषक अंतर्गत पहिल नाम डॉ. गंगेश गुंजन अछि।

प्रश्न 10305. जयकान्त मिश्र विशेषमे दोसर नाम किनकर अछि?
क. विद्या मिश्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विद्या मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर नाम विद्या मिश्र देल गेल अछि।

प्रश्न 10306. डॉ. गंगेश गुंजन जयकान्त मिश्रक निधनकेँ कोन तरहक अवसर कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ऐतिहासिक शोकक अवसर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ऐतिहासिक शोकक अवसर।
व्याख्या: स्रोतमे निधनकेँ मैथिली-मिथिला-मैथिलक महान पोथीक पुस्तकालयमे सजा देबाक ऐतिहासिक शोकक अवसर कहल गेल।

प्रश्न 10307. गंगेश गुंजन जयकान्त बाबूक रूपक कोन देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. महान पोथी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. महान पोथी।
व्याख्या: ओ कहैत छथि—पोथी, अध्याय नहि, पोथी।

प्रश्न 10308. “पोथी, अध्याय नहि, पोथी” कथन जयकान्त मिश्रक कोन मान्यता देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समग्रता आ विराट ज्ञान-व्यक्तित्व।
उत्तर: घ. समग्रता आ विराट ज्ञान-व्यक्तित्व।
व्याख्या: अध्यायक बदला पोथी कहब हुनकर व्यापक विद्वत्ता मानैत अछि।

प्रश्न 10309. विशेष खण्डक स्वर कोना आरम्भ होइत अछि?
क. श्रद्धांजलि आ आलोचनात्मक स्मरणक स्वरमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. श्रद्धांजलि आ आलोचनात्मक स्मरणक स्वरमे।
व्याख्या: डॉ. गंगेश गुंजनक आरम्भ शोक, सम्मान आ मूल्यांकनसँ भरल अछि।

प्रश्न 10310. जयकान्त मिश्रपर विशेषमे व्यक्तिगत आ साहित्यिक स्मृति कोना मिलैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गंगेश गुंजनक मूल्यांकन आ विद्या मिश्रक पारिवारिक स्मरण द्वारा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गंगेश गुंजनक मूल्यांकन आ विद्या मिश्रक पारिवारिक स्मरण द्वारा।
व्याख्या: दू लेखक विशेषकेँ सार्वजनिक आ निजी दुनू आयाम दैत छथि।

प्रश्न 10311. जयकान्त मिश्र विशेषक आरम्भिक भाव की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. महान क्षति आ असाधारण विद्वत्ताक स्वीकार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. महान क्षति आ असाधारण विद्वत्ताक स्वीकार।
व्याख्या: स्रोतमे “बहुत महान क्षति” आ मौलिकताक चर्चा अछि।

प्रश्न 10312. खण्ड १०३६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जयकान्त मिश्रपर विशेष श्रद्धांजलि, विद्वत-मूल्यांकन आ पारिवारिक स्मरणक संयुक्त खण्ड रूपमे खुलैत अछि।
उत्तर: घ. जयकान्त मिश्रपर विशेष श्रद्धांजलि, विद्वत-मूल्यांकन आ पारिवारिक स्मरणक संयुक्त खण्ड रूपमे खुलैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड विशेषक रूपरेखा प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १०३७ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त बाबूक मौलिकता

प्रश्न 10313. गंगेश गुंजन जयकान्त बाबूक मौलिकताकेँ कोन दू बुद्धिक समन्वय कहैत छथि?
क. मैथिलीक लौकिक आ शास्त्रीय बुद्धिक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक लौकिक आ शास्त्रीय बुद्धिक।
व्याख्या: स्रोतमे मौलिकता मैथिलीक लौकिक एवं शास्त्रीय बुद्धि समन्वय कहल अछि।

प्रश्न 10314. जयकान्त बाबूक दृष्टि कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यवहारक अति दूरगामी दृष्टांत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. व्यवहारक अति दूरगामी दृष्टांत।
व्याख्या: स्रोतमे व्यवहारक अति दूरगामी दृष्टांत बनल कहल अछि।

प्रश्न 10315. उर्दूक गालिब फिराक गोरखपुरीक उद्धरण किएक देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अगिला पीढ़ीक ईर्ष्या-योग्य सान्निध्यक भाव व्यक्त करबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अगिला पीढ़ीक ईर्ष्या-योग्य सान्निध्यक भाव व्यक्त करबाक लेल।
व्याख्या: फिराककेँ देखबाक सौभाग्य जकाँ जयकान्त बाबूक स्नेह-शिक्षा महत्त्वपूर्ण कहल गेल।

प्रश्न 10316. हमरा लोकनिक पीढ़ी कोन सौभाग्यपर कृतार्थ बनत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जयकान्त बाबूक स्नेह-शिक्षा पर।
उत्तर: घ. जयकान्त बाबूक स्नेह-शिक्षा पर।
व्याख्या: स्रोतमे अपन पीढ़ी हुनकर स्नेह शिक्षाक सौभाग्यपर कृतार्थ बनत कहल अछि।

प्रश्न 10317. “संस्था सेहो मरि जाइत छैक” कथनक संग की अमर रहैत कहल गेल?
क. किताब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. किताब।
व्याख्या: स्रोतमे संस्था मरैत अछि, किताब जीवित रहैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10318. गंगेश गुंजनक अनुसार जयकान्त बाबूक काज संस्थासँ ऊपर किएक देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. किताबक स्थायी जीवनक कारणे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. किताबक स्थायी जीवनक कारणे।
व्याख्या: व्यक्तित्व पुस्तक-स्मृति रूपमे दीर्घजीवी ठहरैत अछि।

प्रश्न 10319. लौकिक आ शास्त्रीय बुद्धिक समन्वय जयकान्त मिश्रक कोन पक्ष देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. परंपरा आ व्यवहार दुनूक गहिरी समझ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. परंपरा आ व्यवहार दुनूक गहिरी समझ।
व्याख्या: स्रोत हुनकर मौलिकतामे लोक आ शास्त्रक संगम मानैत अछि।

प्रश्न 10320. “दूरगामी दृष्टांत” शब्द हुनकर कृतित्वक कोन असर देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दीर्घकालिक प्रभाव।
उत्तर: घ. दीर्घकालिक प्रभाव।
व्याख्या: दूरगामी दृष्टि समयक पार मूल्य राखैत अछि।

प्रश्न 10321. गंगेश गुंजनक श्रद्धांजलिमे आलोचना आ भक्ति कोना संतुलित अछि?
क. मूल्यांकन विद्वत्ताक आधारपर, स्वर श्रद्धापूर्ण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मूल्यांकन विद्वत्ताक आधारपर, स्वर श्रद्धापूर्ण।
व्याख्या: उक्तियाँ भावुक छैक, मुदा मौलिकता आ पुस्तक-स्मृति पर आधारित अछि।

प्रश्न 10322. खण्ड १०३७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गंगेश गुंजन जयकान्त मिश्रकेँ लौकिक-शास्त्रीय बुद्धि समन्वय, स्थायी पुस्तक-स्मृति आ पीढ़ीगत सौभाग्यक व्यक्तित्व मानैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गंगेश गुंजन जयकान्त मिश्रकेँ लौकिक-शास्त्रीय बुद्धि समन्वय, स्थायी पुस्तक-स्मृति आ पीढ़ीगत सौभाग्यक व्यक्तित्व मानैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड जयकान्त बाबूक मौलिकता पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०३८ : विदेह-सदेह २ — “मैथिलीक आधुनिक वेद” कथन

प्रश्न 10323. गंगेश गुंजन अंतःकरणसँ जयकान्त बाबूकेँ की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिलीक आधुनिक वेद।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिलीक आधुनिक वेद।

व्याख्या: स्रोतमे स्पष्ट कथन अछि जे जयकान्त बाबू मैथिलीक आधुनिक वेद छथि।

प्रश्न 10324. “कतोक गोटेकेँ संभव जे नहियो रुचन्हि” कथन की देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखक अपन कथनक साहस जानैत छथि।

उत्तर: घ. लेखक अपन कथनक साहस जानैत छथि।

व्याख्या: ओ स्वीकार करैत छथि जे ई कथन सभकेँ रुचि नहि सकैत अछि।

प्रश्न 10325. “आधुनिक वेद” रूपक जयकान्त बाबूक कोन गरिमा बनबैत अछि?

क. ज्ञान-स्रोत आ प्रमाण-व्यक्तित्वक गरिमा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्ञान-स्रोत आ प्रमाण-व्यक्तित्वक गरिमा।

व्याख्या: वेद रूपक हुनका आधुनिक मैथिली ज्ञानक आधार रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि।

प्रश्न 10326. ई कथन शोकमात्र अछि कि मूल्यांकन सेहो?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मूल्यांकन सेहो।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मूल्यांकन सेहो।

व्याख्या: लेखक शोकक अवसर पर हुनकर ज्ञान-स्थिति आ कृतित्वक मूल्यांकन करैत छथि।

प्रश्न 10327. जयकान्त बाबूक निधनकेँ “महान क्षति” कहबाक आधार की बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हुनकर मौलिकता आ व्यापक ज्ञान-व्यक्तित्व।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हुनकर मौलिकता आ व्यापक ज्ञान-व्यक्तित्व।

व्याख्या: पूर्व कथन सभ हुनका पोथी, आधुनिक वेद आ लौकिक-शास्त्रीय समन्वय मानैत अछि।

प्रश्न 10328. “आधुनिक वेद” कहबामे भाषा-साहित्यक कोन भाव अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली विद्वत्ता प्रति उच्चतम सम्मान।

उत्तर: घ. मैथिली विद्वत्ता प्रति उच्चतम सम्मान।

व्याख्या: वेदक उपमा ज्ञानक परम आदरक संकेत अछि।

प्रश्न 10329. लेखकक अंतःकरणसँ कथन करब कोन नैतिकता देखबैत अछि?
क. सच्चा श्रद्धा आ आत्मविश्वास।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सच्चा श्रद्धा आ आत्मविश्वास।
व्याख्या: ओ अपन भीतरक विश्वाससँ कथन करैत छथि, बाहरी प्रशंसा रूपेँ नहि।

प्रश्न 10330. ई रूपक जयकान्त मिश्रक काजकेँ कोन स्तर पर रखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सांस्कृतिक-ज्ञानात्मक आधारस्तर पर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सांस्कृतिक-ज्ञानात्मक आधारस्तर पर।
व्याख्या: आधुनिक वेद कहब हुनका मूल-स्रोतक दर्जा दैत अछि।

प्रश्न 10331. “संस्था मरि जाइत, किताब जीवित” संग “आधुनिक वेद” कथन केना जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्थायी ग्रंथीयता आ ज्ञान-स्मृति द्वारा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्थायी ग्रंथीयता आ ज्ञान-स्मृति द्वारा।
व्याख्या: दूनू कथन पुस्तक/ज्ञानक दीर्घजीवन पर बल दैत अछि।

प्रश्न 10332. खण्ड १०३८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “मैथिलीक आधुनिक वेद” कथन जयकान्त मिश्रक ज्ञान-गरिमा, स्थायी कृतित्व आ भाषिक-सांस्कृतिक महत्त्वक चरम सम्मान अछि।
उत्तर: घ. “मैथिलीक आधुनिक वेद” कथन जयकान्त मिश्रक ज्ञान-गरिमा, स्थायी कृतित्व आ भाषिक-सांस्कृतिक महत्त्वक चरम सम्मान अछि।
व्याख्या: ई खण्ड गंगेश गुंजनक मूल्यांकनक ऊँचाई देखबैत अछि।

खण्ड १०३९ : विदेह-सदेह २ — विद्या मिश्रक बाल-स्मरण

प्रश्न 10333. विद्या मिश्रक लेख शीर्षकमे जयकान्त मिश्रक स्मरण कोन संबोधनसँ अछि?
क. भाइजी काका।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाइजी काका।
व्याख्या: स्रोतमे “भाइजी काका—डॉ. जयकान्त मिश्रक स्मरण” शीर्षक अछि।

प्रश्न 10334. विद्या मिश्र बाल्यावस्थामे घरमे किनकर चर्चा सुनैत रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. डॉ. जयकान्त मिश्रक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. डॉ. जयकान्त मिश्रक।
व्याख्या: स्रोतमे घरमे अंग्रेजीक विद्वान, कवि, मैथिली लेखकक चर्चामे जयकान्त मिश्रक चर्चा होइत कहल अछि।

प्रश्न 10335. नेनपनमे विद्या मिश्र केकर विकास आ उन्नतिक प्रति जयकान्त मिश्रक समर्पणसँ प्रभावित रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिल आर मिथिलाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिल आर मिथिलाक।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिल आर मिथिलाक विकास-उन्नतिक प्रति हुनकर समर्पणक बात अछि।

प्रश्न 10336. विद्या मिश्रक लेल जयकान्त मिश्र कोन रूपमे रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आदर्श।
उत्तर: घ. आदर्श।
व्याख्या: स्रोतमे ओ हमरा लेल आदर्श रहथि कहल गेल।

प्रश्न 10337. विद्या मिश्र सदैव की करबाक लेल लालायित रहथि?
क. हुनकासँ भेंट करबाक आ देखबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हुनकासँ भेंट करबाक आ देखबाक।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकासँ भेंट/देखबाक लालसा कहल अछि।

प्रश्न 10338. बाल-स्मरणमे जयकान्त मिश्रक छवि कोन माध्यमे बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. घरक चर्चा आ विद्वत-प्रभावक माध्यमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. घरक चर्चा आ विद्वत-प्रभावक माध्यमे।
व्याख्या: घरमे चलैत चर्चा बालमनमे आदर्श छवि बनबैत अछि।

प्रश्न 10339. विद्या मिश्रक स्मरण सार्वजनिक इतिहास अछि कि निजी अनुभव?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. निजी अनुभवसँ सार्वजनिक विद्वत्ता दिस खुलैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. निजी अनुभवसँ सार्वजनिक विद्वत्ता दिस खुलैत अछि।
व्याख्या: ओ अपन बाल्य स्मृति सँ मिथिला-मैथिल विकासक चर्चा जोड़ैत छथि।

प्रश्न 10340. जयकान्त मिश्र परिवारिक सम्बन्धमे हुनकर सभसँ पैघ मामाजीक की रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. साढ़ू।
उत्तर: घ. साढ़ू।
व्याख्या: स्रोतमे ओ सभसँ पैघ मामाजीक साढ़ू रहथि कहल अछि।

प्रश्न 10341. विद्या मिश्रक बाल-स्मरण जयकान्त मिश्रक कोन पक्ष उजागर करैत अछि?
क. विद्वत्ता संग आदर्शात्मक पारिवारिक प्रतिष्ठा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विद्वत्ता संग आदर्शात्मक पारिवारिक प्रतिष्ठा।
व्याख्या: बाल-आकर्षण आ घरक चर्चा हुनकर प्रतिष्ठा देखबैत अछि।

प्रश्न 10342. खण्ड १०३९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विद्या मिश्रक स्मरण जयकान्त मिश्रकेँ बालमनक आदर्श, पारिवारिक प्रतिष्ठा आ मिथिला-मैथिली समर्पणक प्रतीक बनबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विद्या मिश्रक स्मरण जयकान्त मिश्रकेँ बालमनक आदर्श, पारिवारिक प्रतिष्ठा आ मिथिला-मैथिली समर्पणक प्रतीक बनबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड निजी स्मरणक आरम्भ समेटैत अछि।

खण्ड १०४० : विदेह-सदेह २ — विवाह-सम्बन्ध आ विद्वानक परिवार

प्रश्न 10343. विद्या मिश्र अपन स्नातकक कोन वर्षमे छलिह जखन विवाह-संबंधक प्रसंग उठल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विज्ञानक द्वितीय वर्षमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विज्ञानक द्वितीय वर्षमे।
व्याख्या: स्रोतमे ओ अपन स्नातक विज्ञानक द्वितीय वर्षमे छलिह कहल अछि।

प्रश्न 10344. डॉ. जयकान्त मिश्रक सभसँ छोट बेटा कतय आएल रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. धनबाद।
उत्तर: घ. धनबाद।
व्याख्या: स्रोतमे छोट बेटा अपन पितियौतक घरपर धनबाद आएल रहथि।

प्रश्न 10345. विद्या मिश्रक बाबूजी तहिया कतय पदस्थापित रहथि?
क. धनबादमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. धनबादमे।
व्याख्या: स्रोतमे बाबूजी ओतहि पदस्थापित रहथि कहल अछि।

प्रश्न 10346. जयकान्त मिश्रक बेटा विद्या मिश्रक विवाह लेल केकर नाम प्रस्तावित करबाक बात कहलन्हि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हेमकान्त मिश्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हेमकान्त मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे पितियौत हेमकान्त मिश्रसँ विवाह प्रस्ताव अनबाक बात अछि।

प्रश्न 10347. कतेक समयक भीतर विद्या मिश्र हेमक संग विवाहित भऽ गेलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एक मासक भीतर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एक मासक भीतर।
व्याख्या: स्रोतमे एक मासक भीतर विवाह भऽ गेल कहल अछि।

प्रश्न 10348. विवाहक समाचार सुनि विद्या मिश्र किएक प्रसन्न भेलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ विद्वान आ लेखकक परिवारसँ जुड़ए जा रहल छलीह।
उत्तर: घ. ओ विद्वान आ लेखकक परिवारसँ जुड़ए जा रहल छलीह।
व्याख्या: स्रोतमे डॉ. जयकान्त मिश्रक भातिजक संग विवाह आ विद्वान परिवारक प्रसन्नता अछि।

प्रश्न 10349. विवाह बाद हुनकर जयकान्त मिश्र संग सम्बन्ध कोना परिवर्तित भेल?
क. ओ परिवारक पुतोहु बनलीह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ परिवारक पुतोहु बनलीह।
व्याख्या: स्रोतमे आब ओहि परिवारक पुतोहु रहलाक बात अछि।

प्रश्न 10350. विद्या मिश्र विवाह प्रसंगकेँ कोन सांस्कृतिक अर्थ दैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विद्वान लेखकक परिवारमे प्रवेशक सौभाग्य।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विद्वान लेखकक परिवारमे प्रवेशक सौभाग्य।
व्याख्या: ओ विवाहकेँ केवल पारिवारिक घटना नहि, विद्वत परिवारसँ जुड़ाव मानैत छथि।

प्रश्न 10351. हेमकान्त मिश्रक उल्लेख जयकान्त मिश्र-स्मरणमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जयकान्त मिश्रक परिवार संग लेखिकाक प्रत्यक्ष सम्बन्ध जोड़ैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त मिश्रक परिवार संग लेखिकाक प्रत्यक्ष सम्बन्ध जोड़ैत अछि।
व्याख्या: भातिजक विवाह संबंध लेखिका के परिवारक भीतर लैत अछि।

प्रश्न 10352. खण्ड १०४०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विद्या मिश्रक विवाह-प्रसंग जयकान्त मिश्रक विद्वान परिवारसँ निजी सम्बन्ध आ सम्मानक पुल बनबैत अछि।
उत्तर: घ. विद्या मिश्रक विवाह-प्रसंग जयकान्त मिश्रक विद्वान परिवारसँ निजी सम्बन्ध आ सम्मानक पुल बनबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पारिवारिक स्मरणक विस्तार करैत अछि।

खण्ड १०४१ : विदेह-सदेह २ — हरिवंश राय बच्चन आ विद्वत-परंपरा

प्रश्न 10353. विद्या मिश्र कोन प्रसिद्ध लेखकसँ पत्राचार माध्यमे नजदीक रहबाक बात कहैत छथि?

क. डॉ. हरिवंश राय बच्चन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डॉ. हरिवंश राय बच्चन।

व्याख्या: स्रोतमे डॉ. हरिवंश राय बच्चनसँ पत्राचार माध्यमे नजदीक रहबाक बात अछि।

प्रश्न 10354. विद्या मिश्र बच्चनजीकेँ की सूचना देलन्हि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. इलाहाबादक डॉ. जयकान्त मिश्रक भातिजक संग विवाह होए जा रहल अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. इलाहाबादक डॉ. जयकान्त मिश्रक भातिजक संग विवाह होए जा रहल अछि।

व्याख्या: स्रोतमे विवाह-सूचना बच्चनजीकेँ देल गेल।

प्रश्न 10355. बच्चनजीक उत्तरमे विवाह कोन परिवारमे होयबाक खुशी छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विद्वानक परिवारमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विद्वानक परिवारमे।

व्याख्या: स्रोतमे विवाह एकटा विद्वानक परिवारमे होयबाक उत्तर भेटल।

प्रश्न 10356. बच्चनजी जयकान्त मिश्रकेँ कोन शैक्षिक पदसँ जोड़ि स्मरैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागाध्यक्ष।

उत्तर: घ. इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागाध्यक्ष।

व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजीक विभागाध्यक्षक प्रभार देबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 10357. बच्चनजी जयकान्त मिश्रकेँ अपन कोन मानैत छथि?

क. गुरु।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुरु।

व्याख्या: स्रोतमे ओ सर्वदा हमरा अपन गुरु मानैत छथि कहल गेल।

प्रश्न 10358. जयकान्त मिश्रक पिता डॉ. उमेश मिश्रकेँ बच्चनजी कोन मानैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अपन गुरु।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अपन गुरु।

व्याख्या: स्रोतमे डॉ. उमेश मिश्रकेँ अपन गुरु मानबाक बात अछि।

प्रश्न 10359. बच्चनजी द्वारा परिवारक वर्णन विद्या मिश्रक लेल कोना रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आह्लादकारी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आह्लादकारी।
व्याख्या: स्रोतमे प्रशंसात्मक वर्णन आह्लादकारी रहए कहल अछि।

प्रश्न 10360. एखनहुँ ओ वर्णन सोचैत विद्या मिश्र कोना अनुभव करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उत्फुल्लित।
उत्तर: घ. उत्फुल्लित।
व्याख्या: स्रोतमे एखनो सोचैत उत्फुल्लित भऽ जाएबाक बात अछि।

प्रश्न 10361. हरिवंश राय बच्चन प्रसंग जयकान्त मिश्रक की प्रमाणित करैत अछि?
क. अंग्रेजी आ मैथिली दुनू जगतक विद्वत-प्रतिष्ठा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अंग्रेजी आ मैथिली दुनू जगतक विद्वत-प्रतिष्ठा।
व्याख्या: बच्चनजीक गुरु-स्मरण जयकान्त मिश्रक व्यापक अकादमिक गरिमा देखबैत अछि।

प्रश्न 10362. खण्ड १०४१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हरिवंश राय बच्चनक स्मरण जयकान्त मिश्र आ हुनकर परिवारकेँ गहिरी विद्वत-परंपरा, गुरुता आ अकादमिक सम्मानसँ जोड़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हरिवंश राय बच्चनक स्मरण जयकान्त मिश्र आ हुनकर परिवारकेँ गहिरी विद्वत-परंपरा, गुरुता आ अकादमिक सम्मानसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड जयकान्त मिश्रक व्यापक विद्वत प्रभाव देखबैत अछि।

खण्ड १०४२ : विदेह-सदेह २ — अमेरिका, इलाहाबाद आ पारिवारिक क्षति

प्रश्न 10363. विद्या मिश्रक परिवार कहिया संयुक्त राज्य अमेरिकामे बसि गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९९९ ई. मे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९९९ ई. मे।
व्याख्या: स्रोतमे “हम सभ १९९९ ई. मे संयुक्त राज्य अमेरिकामे बसि गेलहुँ” अछि।

प्रश्न 10364. अमेरिकामे बसलाक बादो हुनकर हृदय, आत्मा आ मस्तिष्क कतय रहैत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. इलाहाबादमे।
उत्तर: घ. इलाहाबादमे।
व्याख्या: स्रोतमे हृदय, आत्मा आ मस्तिष्क सर्वदा इलाहाबादमे रहैत छी कहल अछि।

प्रश्न 10365. ओ त्रिवेणीपर भेल काज सभकेँ कोना अनुभव करैत छथि?
क. परिवारक प्रति आदर आ प्रेमक भाग रूपमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. परिवारक प्रति आदर आ प्रेमक भाग रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे छोट-छीन काज परिवार प्रति आदर-प्रेमक भाग अछि।

प्रश्न 10366. जयकान्त मिश्रक कुन गुण सभ अनुकरणीय कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समर्पण, परम्परा, सरलता आ संस्कृतिक प्रति लगाव।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समर्पण, परम्परा, सरलता आ संस्कृतिक प्रति लगाव।
व्याख्या: स्रोतमे एहि चारि गुणकेँ अनुकरणीय कहल गेल।

प्रश्न 10367. परिवार हुनका कोन-कोन रूपमे क्षति रूपेँ अनुभव करत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. परिवारक मुखिया, गुरु आ भाइजी काका।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. परिवारक मुखिया, गुरु आ भाइजी काका।
व्याख्या: स्रोतमे ई तीनू रूपमे क्षति अनुभव करबाक बात अछि।

प्रश्न 10368. विद्या मिश्रक अनुसार ई क्षति केकर लेल पैघ अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परिवार आ समाजक लेल।
उत्तर: घ. परिवार आ समाजक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे ई परिवार आ समाज लेल पैघ क्षति कहल गेल।

प्रश्न 10369. अमेरिका-इलाहाबाद प्रसंग कोन सांस्कृतिक बोध दैत अछि?
क. प्रवासमे रहितो मूल स्मृति आ परिवार-संस्कार जोगाएब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रवासमे रहितो मूल स्मृति आ परिवार-संस्कार जोगाएब।
व्याख्या: भौगोलिक दूरीक बावजूद इलाहाबाद आ त्रिवेणी हृदयमे अछि।

प्रश्न 10370. जयकान्त मिश्रक सरलता आ संस्कृति-लगाव स्मरणमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ विद्वत्ता संग मानवीय संस्कार जोड़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ विद्वत्ता संग मानवीय संस्कार जोड़ैत अछि।
व्याख्या: स्मरण हुनका केवल विद्वान नहि, पारिवारिक-सांस्कृतिक गुरु बनबैत अछि।

प्रश्न 10371. विद्या मिश्रक लेखमे “भाइजी काका” संबोधन कोन नजदीकी देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आदरपूर्ण पारिवारिक आत्मीयता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आदरपूर्ण पारिवारिक आत्मीयता।

व्याख्या: संबोधन सम्मान आ आत्मीय सम्बन्ध दुनू बतबैत अछि।

प्रश्न 10372. खण्ड १०४२क निष्कर्ष की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासक बावजूद विद्या मिश्रक स्मरण जयकान्त मिश्रकेँ इलाहाबाद, त्रिवेणी, परिवार, गुरुता आ संस्कृति-संस्कारक केन्द्र रूपमे राखैत अछि।

उत्तर: घ. प्रवासक बावजूद विद्या मिश्रक स्मरण जयकान्त मिश्रकेँ इलाहाबाद, त्रिवेणी, परिवार, गुरुता आ संस्कृति-संस्कारक केन्द्र रूपमे राखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड पारिवारिक श्रद्धांजलिक समापन भाव समेटैत अछि।

खण्ड १०४३ : विदेह-सदेह २ — होलीक संदेश: कथा आ नैतिकता

प्रश्न 10373. “होलीक संदेश” लेख किनकर नामसँ आरम्भ अछि?

क. डा. चन्देश्वर शाह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डा. चन्देश्वर शाह।

व्याख्या: स्रोतमे होलीक संदेश शीर्षकक पूर्व डा. चन्देश्वर शाह नाम अछि।

प्रश्न 10374. होलीक रंग-अबीर खेलबासँ पहिने की आवश्यक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मत जराएब/होलीका दहन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मत जराएब/होलीका दहन।

व्याख्या: स्रोतमे रंग-अबीर खेलबा सँ पहिने सम्महत जराएब आवश्यक कहल अछि।

प्रश्न 10375. होलीका कथामे प्रह्लाद कोन भक्त रहथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विष्णु भक्त।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विष्णु भक्त।

व्याख्या: स्रोतमे भक्त प्रह्लादक विष्णु भक्तिसँ हिरण्यकश्यप रुष्ट छल कहल अछि।

प्रश्न 10376. हिरण्यकश्यप प्रह्लादकेँ मारबाक लेल किनका आगिमे प्रवेश करए आज्ञा देलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. होलिकाकेँ।

उत्तर: घ. होलिकाकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे होलिका बरदानक चछरि उपयोग करैत प्रह्लाद सहित आगिमे प्रवेश करबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 10377. भगवानक कृपासँ आगिमे के सुरक्षित रहल?
क. प्रह्लाद।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रह्लाद।
व्याख्या: स्रोतमे चछरि प्रह्लादक रक्षा कएलक आ होलिका भस्म भेल।

प्रश्न 10378. होलीका कथासँ पहिल संदेश की लेल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अन्याय-अत्याचार करनिहारक अंत होइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अन्याय-अत्याचार करनिहारक अंत होइत अछि।
व्याख्या: लेख होलिकाक मृत्यु द्वारा अत्याचारीक अकाल परिणाम देखबैत अछि।

प्रश्न 10379. हिरण्यकश्यपक अहंकारक मूल कारण की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. धन-बल आ सुख-भोगक मद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. धन-बल आ सुख-भोगक मद।
व्याख्या: स्रोतमे ओ धनक बलसँ सभ किछु संभव बुझैत छल कहल अछि।

प्रश्न 10380. ईश्वरीय शक्ति वा आशीर्वादक उपयोग केना करबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जनकल्याणमे।
उत्तर: घ. जनकल्याणमे।
व्याख्या: स्रोतमे ईश्वरीय शक्ति जनकल्याणमे, नहि जनविरोधी काजमे उपयोग करबाक चाही कहल अछि।

प्रश्न 10381. होलीक कथाक नैतिक केन्द्र की अछि?
क. भक्ति, अहंकार-विनाश आ शक्ति केर सदुपयोग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भक्ति, अहंकार-विनाश आ शक्ति केर सदुपयोग।
व्याख्या: लेख प्रह्लाद, हिरण्यकश्यप आ होलिकाक कथा सँ नैतिक संदेश निकालैत अछि।

प्रश्न 10382. खण्ड १०४३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. होलीक संदेश प्रह्लाद-होलिका कथासँ अन्याय-विरोध, अहंकार-विनाश आ जनकल्याणक नैतिक शिक्षा दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. होलीक संदेश प्रह्लाद-होलिका कथासँ अन्याय-विरोध, अहंकार-विनाश आ जनकल्याणक नैतिक शिक्षा दैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड कथात्मक नैतिकता पर आधारित अछि।

खण्ड १०४४ : विदेह-सदेह २ — होलीक व्यवहारिक सावधानी

प्रश्न 10383. सम्मत जरएबाक लेल टोलक सक्रिय लोक कतेक बेर की करैत छथि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कतहुँ-कतहुँसँ लकड़ी-काठी चुप्पे अनैत छथि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कतहुँ-कतहुँसँ लकड़ी-काठी चुप्पे अनैत छथि।

व्याख्या: स्रोतमे सम्मत लेल लोकक लकड़ी-काठी उठाकऽ अनबाक सावधानी प्रसंग अछि।

प्रश्न 10384. होली दिन नीक भोजनक नामपर की करबापर चेतावनी देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ऋण करब।

उत्तर: घ. ऋण करब।

व्याख्या: स्रोतमे नीक भोजनक नामपर ऋण करबाक प्रतिफलपर चेतावनी अछि।

प्रश्न 10385. मस्ती नामपर कोन वस्तु सभक अधिक प्रयोगक चेतावनी अछि?

क. भाँग, धथुर, दारू-ताड़ी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाँग, धथुर, दारू-ताड़ी।

व्याख्या: लेख अत्यधिक नशा पर सावधान करैत अछि।

प्रश्न 10386. रंग-अबीर खेलबाक नामपर कोन हानिकारक वस्तुक उदाहरण देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अलकतरा आ इनामेल सन रंग।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अलकतरा आ इनामेल सन रंग।

व्याख्या: स्रोतमे अलकतरा/इनामेल रंगक प्रयोग पर चेतावनी अछि।

प्रश्न 10387. बीमार व्यक्तिकेँ बलपूर्वक रंग लगएबाक परिणाम की भऽ सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ओकर रोग बढ़ि सकैत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ओकर रोग बढ़ि सकैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे एहन बलपूर्वक रंग लगएबाक निन्दा अछि।

प्रश्न 10388. लेखकक अनुसार कोनो काज करैत समय केकर हित ध्यानमे रहबाक चाही?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपन आ समाजक हित।

उत्तर: घ. अपन आ समाजक हित।

व्याख्या: विद्यापति गीतक उदाहरणसँ बुद्धिमानीपूर्वक समाजहितक संदेश देल गेल।

प्रश्न 10389. विद्यापतिक गीतमे पार्वती शिवसँ की आग्रह करैत छथि?
क. नटवेश धरिकऽ नाच देखेबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नटवेश धरिकऽ नाच देखेबाक।
व्याख्या: स्रोतमे “तोँहिँ शिव धरु नटवेश नाँच देखाबहु” पंक्ति अछि।

प्रश्न 10390. शिव नाचलासँ कोन आशंका कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गंगाधार बहि धरती जलमग्न भऽ जाएत आ सर्प सभ अनर्थ करैत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गंगाधार बहि धरती जलमग्न भऽ जाएत आ सर्प सभ अनर्थ करैत।
व्याख्या: स्रोतमे शिव अपन नाचक व्यवधान बतबैत छथि।

प्रश्न 10391. विद्यापतिक गीतक अंतिम अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बुद्धिमानीपूर्वक गौराक मान राखि नाच देखाओल गेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बुद्धिमानीपूर्वक गौराक मान राखि नाच देखाओल गेल।
व्याख्या: स्रोतमे “राखल गौराक मान कि नाँच देखावल” कथनसँ सन्तुलनक शिक्षा अछि।

प्रश्न 10392. खण्ड १०४४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. होलीक व्यवहारिक संदेश उत्सवमे संयम, अहिंसा, सामाजिक जिम्मेदारी आ बुद्धिमानीपूर्वक आनंदक आग्रह करैत अछि।
उत्तर: घ. होलीक व्यवहारिक संदेश उत्सवमे संयम, अहिंसा, सामाजिक जिम्मेदारी आ बुद्धिमानीपूर्वक आनंदक आग्रह करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड होलीक व्यवहारिक सावधानी आ सांस्कृतिक निरंतरता प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १०४५ : विदेह-सदेह २ — विद्या मिश्र: यू.एस. मे मैथिलक होली

प्रश्न 10393. “मैथिल रंग बरसे” लेख केकर होली-अनुभव प्रस्तुत करैत अछि?
क. यू.एस. मे मैथिलक होली।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. यू.एस. मे मैथिलक होली।
व्याख्या: शीर्षकहि मे यू.एस. मे मैथिलक होलीक अनुभव संकेतित अछि।

प्रश्न 10394. विद्या मिश्रक वर्णनमे एहि बेरक होली कतय मनाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हुनकर घरमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हुनकर घरमे।
व्याख्या: स्रोतमे “हमर सभक एहि बेरक होली हमर घरमे मनाओल गेल” कहल अछि।

प्रश्न 10395. होली-समारोहमे मोटामोटी कतेक परिवार छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पचीस-तीस परिवार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पचीस-तीस परिवार।
व्याख्या: लेखमे 25-30 टा परिवार रहबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10396. समारोहमे उपस्थित परिवार सभ कोन समुदायसँ सम्बन्धित छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सभ मैथिल रहथि।
उत्तर: घ. सभ मैथिल रहथि।
व्याख्या: स्रोत स्पष्ट कहैत अछि जे सभ मैथिल रहथि।

प्रश्न 10397. प्रतीक झा केकर नाति आ पुत्र कहल गेलाह?
क. प्रो. हरिमोहन झाक नाति आ डॉ. रमा झाक पुत्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रो. हरिमोहन झाक नाति आ डॉ. रमा झाक पुत्र।
व्याख्या: लेखमे प्रतीक झाक परिचय एहि रूपमे देल गेल।

प्रश्न 10398. विद्या मिश्रक प्रयासक मुख्य उद्देश्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पाबनि-तिहार पारम्परिक रूपमे मनाएब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पाबनि-तिहार पारम्परिक रूपमे मनाएब।
व्याख्या: लेखिका कहैत छथि जे प्रयास पाबनि-तिहार पारम्परिक रूपमे मनएबाक अछि।

प्रश्न 10399. पारम्परिक होली मनएबाक उद्देश्य अगिला पीढ़ीक बच्चा लेल की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अनुकरण, अनुभव आ अर्थ-बोध।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अनुकरण, अनुभव आ अर्थ-बोध।
व्याख्या: स्रोतमे बच्चा सभ अनुकरण, अनुभव आ अर्थ बुझि सकए ई उद्देश्य कहल गेल।

प्रश्न 10400. यू.एस. मे मैथिलक होलीक सामाजिक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रवासमे सांस्कृतिक निरंतरता बनाएब।
उत्तर: घ. प्रवासमे सांस्कृतिक निरंतरता बनाएब।
व्याख्या: परम्परा, बच्चा आ मैथिल परिवारक सहभागिता प्रवासी सांस्कृतिक निरंतरता देखबैत अछि।

प्रश्न 10401. एहि खण्डमे होली केवल रंगक खेल रहि जाइत अछि?
क. नहि, ई सामुदायिक-सांस्कृतिक आयोजन बनैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, ई सामुदायिक-सांस्कृतिक आयोजन बनैत अछि।
व्याख्या: लेखक वर्णनमे परिवार, परम्परा, बच्चा आ सामूहिकता प्रमुख अछि।

प्रश्न 10402. खण्ड १०४५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विद्या मिश्रक लेख प्रवासी मैथिल परिवारक सामूहिक आ परम्परागत होलीक चित्र दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विद्या मिश्रक लेख प्रवासी मैथिल परिवारक सामूहिक आ परम्परागत होलीक चित्र दैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड यू.एस. मे मैथिल होलीक आयोजन आ अर्थ समेटैत अछि।

खण्ड १०४६ : विदेह-सदेह २ — प्रवासी होलीमे बाल-संस्कार

प्रश्न 10403. पछिला साल बच्चा सभ कोन नाटकक मंचन कएने रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हिरण्यकश्यप/होलिकाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हिरण्यकश्यप/होलिकाक।
व्याख्या: स्रोतमे बच्चा सभ अपन लिखल हिरण्यकश्यप/होलिकाक नाटक मंचित कएने रहथि।

प्रश्न 10404. बच्चा सभकेँ कोन बातक पूर्ण ज्ञान कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. होली पाबनि कोना आ किएक मनाओल जाइत अछि।
उत्तर: घ. होली पाबनि कोना आ किएक मनाओल जाइत अछि।
व्याख्या: लेखिका कहैत छथि जे हुनका सभकेँ होलीक कारण आ प्रक्रिया बुझल छल।

प्रश्न 10405. रंग लगएब आ गरा मिलबाक ज्ञान बच्चा सभकेँ कोन रूपमे देल गेल?
क. परम्परागत अर्थ सहित।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. परम्परागत अर्थ सहित।
व्याख्या: स्रोतमे रंग लगब, गरा मिलब, खानपान आ गीत सभक अर्थक चर्चा अछि।

प्रश्न 10406. होली-संस्कारमे खानपान आ गीतक स्थान की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. परम्पराक अभिन्न भाग।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. परम्पराक अभिन्न भाग।
व्याख्या: लेखमे पारम्परिक खानपान आ होली गीतकेँ ज्ञानक अंग मानल गेल।

प्रश्न 10407. प्रवासी बच्चा सभ लेल नाटकक प्रयोग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पर्वक कथा आ मूल्य खेल-रूपमे बुझएबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पर्वक कथा आ मूल्य खेल-रूपमे बुझएबाक लेल।
व्याख्या: बच्चा सभक अपन लिखल नाटक सांस्कृतिक शिक्षा बनैत अछि।

प्रश्न 10408. विद्या मिश्रक विवरणमे बाल-पीढ़ी कोना देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परम्परा ग्रहण करबाक सक्रिय पीढ़ी रूपमे।
उत्तर: घ. परम्परा ग्रहण करबाक सक्रिय पीढ़ी रूपमे।
व्याख्या: बच्चा सभ नाटक लिखैत, मंचित करैत आ पर्वक अर्थ बुझैत अछि।

प्रश्न 10409. प्रवासी संदर्भमे होलीक कथा-स्मरण कोन कमी पूरा करैत अछि?
क. देशसँ दूर सांस्कृतिक दूरी घटबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. देशसँ दूर सांस्कृतिक दूरी घटबैत अछि।
व्याख्या: कथा, गीत आ नाटक द्वारा प्रवासमे मिथिला-स्मृति सक्रिय रहैत अछि।

प्रश्न 10410. बाल-संस्कारक केन्द्रमे केवल मनोरंजन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि, ज्ञान आ अनुभव सेहो अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि, ज्ञान आ अनुभव सेहो अछि।
व्याख्या: स्रोतमे अनुकरण, अनुभव आ अर्थ-बोधक बात स्पष्ट अछि।

प्रश्न 10411. हिरण्यकश्यप/होलिका नाटक बाल-शिक्षामे कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. होलीक नैतिक-कथात्मक आधार समझबैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. होलीक नैतिक-कथात्मक आधार समझबैत अछि।
व्याख्या: नाटक द्वारा बच्चा सभ होलीक कारण सीखैत अछि।

प्रश्न 10412. खण्ड १०४६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रवासी होली बाल-पीढ़ीकेँ कथा, गीत, खानपान आ संस्कारसँ जोड़बाक माध्यम बनैत अछि।
उत्तर: घ. प्रवासी होली बाल-पीढ़ीकेँ कथा, गीत, खानपान आ संस्कारसँ जोड़बाक माध्यम बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड बच्चा सभक सांस्कृतिक शिक्षापर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०४७ : विदेह-सदेह २ — प्रवासी मैथिलक सहभागिता आ प्रतियोगिता

प्रश्न 10413. यू.एस. होलीमे मैथिल लोकनि कोन-कोन ठामसँ अएलाह?
क. न्यू-जर्सी, विर्जिनिया, वाशिंगटन डी.सी. आ मेरीलेण्डसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. न्यू-जर्सी, विर्जिनिया, वाशिंगटन डी.सी. आ मेरीलेण्डसँ।
व्याख्या: स्रोतमे एहि चारि क्षेत्रक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10414. लेखिका कतेक स्टेट्सक मैथिल उपस्थित रहबाक संकेत करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चारि-पाँच स्टेट्स।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चारि-पाँच स्टेट्स।
व्याख्या: स्रोतमे 4-5 गोट स्टेट्सक मैथिल रहबाक बात अछि।

प्रश्न 10415. समारोहमे सभसँ नीक उत्तरक अतिरिक्त कोन प्रतियोगिता रहए?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सर्वोत्तम ड्रेस-समन्वय आ पार्सल देबाक प्रतियोगिता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सर्वोत्तम ड्रेस-समन्वय आ पार्सल देबाक प्रतियोगिता।
व्याख्या: लेखमे एहि प्रतियोगिता सभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10416. प्रतियोगिता सभमे प्रश्न कोन विषयसँ सम्बन्धित छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिला संस्कृतिसँ।
उत्तर: घ. मिथिला संस्कृतिसँ।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिला संस्कृतिसँ सम्बन्धित गहन प्रश्न रहल कहल अछि।

प्रश्न 10417. सर्वोत्तम उत्तर चुनबाक प्रक्रिया कोना भेल?
क. सभटा उत्तर पढ़ि वोट देल गेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सभटा उत्तर पढ़ि वोट देल गेल।
व्याख्या: लेखिका कहैत छथि जे सभ उत्तर पढ़ि तखन वोट देल गेल।

प्रश्न 10418. समारोहक प्रति सहभागी लोकक भाव की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बड्ड उत्साह आ उत्सुकता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बड्ड उत्साह आ उत्सुकता।
व्याख्या: स्रोतमे सभ गोटे अवसर लेल उत्साहित आ उत्सुक कहल गेल।

प्रश्न 10419. बसंतक छुट्टीक कारण के सभ सहभागी भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्कूल-कॉलेजक बच्चा सभ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्कूल-कॉलेजक बच्चा सभ।
व्याख्या: लेखमे यू.एस.ए. मे बसंतक छुट्टी रहबाक कारण बच्चा सभ आएल कहल अछि।

प्रश्न 10420. बच्चा सभक प्रतिक्रिया कोना वर्णित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. एतेक नीक लगल जे अगिला बरिख सेहो सम्मिलित होएबाक सोचलन्हि।
उत्तर: घ. एतेक नीक लगल जे अगिला बरिख सेहो सम्मिलित होएबाक सोचलन्हि।
व्याख्या: स्रोतमे बच्चा सभक सकारात्मक प्रतिक्रिया देल अछि।

प्रश्न 10421. प्रवासी प्रतियोगिता सभक सांस्कृतिक उपयोग की अछि?
क. मिथिला-संस्कृतिकेँ खेल-प्रश्न आ सहभागितासँ जीवित राखब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिला-संस्कृतिकेँ खेल-प्रश्न आ सहभागितासँ जीवित राखब।
व्याख्या: प्रतियोगिता ज्ञान, उत्साह आ सामूहिक स्मृति केँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 10422. खण्ड १०४७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रवासी मैथिल होली बहु-राज्य सहभागिता, सांस्कृतिक प्रश्नोत्तरी आ बाल-उत्साहक आयोजन बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रवासी मैथिल होली बहु-राज्य सहभागिता, सांस्कृतिक प्रश्नोत्तरी आ बाल-उत्साहक आयोजन बनल।
व्याख्या: ई खण्ड सहभागिता आ प्रतियोगिताक सांस्कृतिक भूमिका देखबैत अछि।

खण्ड १०४८ : विदेह-सदेह २ — डॉ. गंगेश गुंजन: बजार आ कविता

प्रश्न 10423. डॉ. गंगेश गुंजनक आलेख कोन कविता-संग्रहपर केन्द्रित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विनीत उत्पलक कविता-संग्रहपर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विनीत उत्पलक कविता-संग्रहपर।
व्याख्या: शीर्षक “कविक आत्मोक्ति: कविताक अएना—विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” अछि।

प्रश्न 10424. गंगेश गुंजनक अनुसार विश्व बजारी समाजमे भाषा-साहित्यपर की असर पड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बजारे जकाँ मंदी पसरल अछि।
उत्तर: घ. बजारे जकाँ मंदी पसरल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा-साहित्यक संसारमे सेहो बजार-जकाँ मंदी पसरल कहल अछि।

प्रश्न 10425. लेखकक अनुसार साहित्यमे कोन विधा आओर बेसी अनठिआएल अछि?
क. कविता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कविता।
व्याख्या: स्रोतमे कविताक विधा आओरो अनठिआएल कहल गेल।

प्रश्न 10426. कविता केवल कोन वस्तु नहि बनि सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भव्य ड्राइंग रूमक इम्पोर्टेड दामी वस्तुक नमूना।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भव्य ड्राइंग रूमक इम्पोर्टेड दामी वस्तुक नमूना।
व्याख्या: लेखक कविता कैं प्रतिष्ठा-प्रदर्शनीक वस्तु बनयबाक विरोध करैत छथि।

प्रश्न 10427. भाषाक वर्तमान बाजारू जीवन लेखक कोन आधारपर देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषिक उपयोगिता आ क्रय-विक्रय-मूल्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषिक उपयोगिता आ क्रय-विक्रय-मूल्य।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा अपन उपयोगिता वा दामक बलें जीवित राखल जा रहल अछि कहल अछि।

प्रश्न 10428. कवि सभकैं कोन भेद नैतिक बुद्धियैं बुझबाक प्रयोजन कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बजार आ कविताक भाषाक भेद।
उत्तर: घ. बजार आ कविताक भाषाक भेद।
व्याख्या: स्रोतमे समकालीन कवि सभ लेल ई भेद बुझब आवश्यक कहल अछि।

प्रश्न 10429. बजारक दबावमे कविता कोन खतरा झेलैत अछि?
क. नव पैकेटक नव उत्पाद बनि जाएबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नव पैकेटक नव उत्पाद बनि जाएबाक।
व्याख्या: लेखक चेतावनी दैत छथि जे कविता मॉलक उत्पाद जकाँ बनि सकैत अछि।

प्रश्न 10430. गंगेश गुंजनक चर्चा कोन कारणेँ आरम्भ भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उत्पल जीक कविता-पाण्डुलिपिक लाथेँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उत्पल जीक कविता-पाण्डुलिपिक लाथेँ।
व्याख्या: स्रोतमे कवि-पाण्डुलिपि एहि चर्चा कैं प्रेरित करैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10431. एहि आलोचनाक मूल चिन्ता की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता, भाषा आ बजारक द्वन्द्व।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता, भाषा आ बजारक द्वन्द्व।
व्याख्या: लेखक भाषा-साहित्यक बाजारू परिदृश्य आ कविताक स्वायत्तता पर चिन्ता करैत छथि।

प्रश्न 10432. खण्ड १०४८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गंगेश गुंजन कविता कैं बाजारू प्रदर्शनसँ बचाकऽ भाषिक-सांस्कृतिक जीवनसँ जोड़बाक आग्रह करैत छथि।
उत्तर: घ. गंगेश गुंजन कविता कैं बाजारू प्रदर्शनसँ बचाकऽ भाषिक-सांस्कृतिक जीवनसँ जोड़बाक आग्रह करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड बजार आ कविता सम्बन्धी आलोचनात्मक चिन्ता समेटैत अछि।

खण्ड १०४९ : विदेह-सदेह २ — कविता, भाषा आ कविक दायित्व

प्रश्न 10433. लेखकक अनुसार कविता कोन सवारीपर लोक धरि यात्रा करैत अछि?
क. भाषाक सवारीपर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषाक सवारीपर।
व्याख्या: स्रोतमे “कविता भाषाहिक सवारीपर लोक धरिक अपन यात्रा करैत छैक” कहल अछि।

प्रश्न 10434. कविता-यात्रामे जेहन सवारी, जेहन सवार ताहि अनुसार की ठहरैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तेहन यात्रा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तेहन यात्रा।
व्याख्या: लेखक कविता, भाषा आ कविक सामर्थ्यक सम्बन्ध एहि वाक्यमे देलनि।

प्रश्न 10435. कवितामे गन्तव्य, काव्यबोध आ जीवन-दर्शनक संग कोन कर्म-कुशलता जोड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ड्राइभरी-पायलटी वा बहलमानी-कोचमानी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ड्राइभरी-पायलटी वा बहलमानी-कोचमानी।
व्याख्या: स्रोतमे यात्रा-रूपकमे कविता-निर्देशनक कर्मकुशलता जोड़ल गेल।

प्रश्न 10436. कवि अपन साधनाक प्रक्रियासँ की विकसित करैत जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कविताक अन्यान्य तत्व।
उत्तर: घ. कविताक अन्यान्य तत्व।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे अनेक तत्व कवि साधना आ स्वविवेकसँ विकसित करैत छथि।

प्रश्न 10437. भाषाक सवारी रूपक कविता लेल की स्पष्ट करैत अछि?
क. भाषा कविताक लोक-यात्राक माध्यम अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा कविताक लोक-यात्राक माध्यम अछि।
व्याख्या: कविता लोक धरि भाषाक माध्यमे पहुँचैत अछि।

प्रश्न 10438. कविक कर्मकुशलता रूपकमे की संकेतित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शिल्प, दिशा आ नियंत्रण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शिल्प, दिशा आ नियंत्रण।
व्याख्या: ड्राइभरी-पायलटीक रूपक कवि-कर्मक तकनीक आ उत्तरदायित्व देखबैत अछि।

प्रश्न 10439. गंगेश गुंजनक अनुसार कविताक समझ केवल कथ्य धरि सीमित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नहि, भाषा, गन्तव्य, युग आ दर्शन धरि फैलल अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नहि, भाषा, गन्तव्य, युग आ दर्शन धरि फैलल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे कविता-यात्रामे ई सभ तत्व अंतर्निहित कहल गेल।

प्रश्न 10440. कविता-भाषा सम्बन्ध पर लेखकक दृष्टि कोन प्रकारक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गंभीर आ नैतिक।
उत्तर: घ. गंभीर आ नैतिक।
व्याख्या: लेखक भाषा-बजार भेद आ कविताक लोक-यात्रा पर नैतिक दृष्टि रखैत छथि।

प्रश्न 10441. कविताक सवारी कमजोर भेलासँ की समस्या उत्पन्न होएत?
क. यात्रा आ गन्तव्य दुनू प्रभावित होएत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. यात्रा आ गन्तव्य दुनू प्रभावित होएत।
व्याख्या: रूपकक अर्थ अछि जे भाषा कमजोर तँ कविता-यात्रा सेहो कमजोर।

प्रश्न 10442. खण्ड १०४९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कविता भाषाक सवारीपर लोक धरि पहुँचैत अछि, तेँ कविक भाषा-बोध आ शिल्प-दायित्व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कविता भाषाक सवारीपर लोक धरि पहुँचैत अछि, तेँ कविक भाषा-बोध आ शिल्प-दायित्व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।
व्याख्या: ई खण्ड कविता-भाषा रूपकक अर्थ खोलैत अछि।

खण्ड १०५० : विदेह-सदेह २ — प्रकाशन, कविता आ मैथिल लेखकक यथार्थ

प्रश्न 10443. गंगेश गुंजन व्यापक भाषाक कवि सभक कोन प्रवृत्ति उल्लेख करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अपन कविता-पोथी अपने छपाबैत छथि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अपन कविता-पोथी अपने छपाबैत छथि।

व्याख्या: स्रोतमे हिन्दी सन व्यापक भाषाक कवि पर्यन्त अपन पोथी स्वयं छपबैत छथि कहल गेल।

प्रश्न 10444. ब्रांड प्रकाशकसँ छपएबाक लेल लेखक सभ की करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धन दैत छथि वा सरकारी पुस्तकालयमे खपबाक वचन दैत छथि।

उत्तर: घ. धन दैत छथि वा सरकारी पुस्तकालयमे खपबाक वचन दैत छथि।

व्याख्या: स्रोतमे प्रकाशनक एहि व्यवहारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10445. मैथिलीमे लेखक-कविकेँ सामान्यतः की करए पड़ैत छैक?

क. अपन साहित्य अपने छपबावए पड़ैत छैक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन साहित्य अपने छपबावए पड़ैत छैक।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीमे प्रायः सभटा साहित्य लेखक-कविकेँ अपने छपबावए पड़ैत अछि।

प्रश्न 10446. लेखक महाकवि यात्रीजीक प्रसंग किएक याद करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पोथी-प्रसार आ विक्रयसँ मैथिल लेखकक उद्यम देखएबाक लेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पोथी-प्रसार आ विक्रयसँ मैथिल लेखकक उद्यम देखएबाक लेल।

व्याख्या: यात्रीजीक सन्दर्भ मैथिली प्रकाशन-संघर्षक उदाहरण अछि।

प्रश्न 10447. “प्रकाशक कतए?” प्रश्न कोन यथार्थ देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिली प्रकाशन-संरचनाक अभाव।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिली प्रकाशन-संरचनाक अभाव।

व्याख्या: लेखक मैथिलीमे प्रकाशक-संकट पर चोट करैत छथि।

प्रश्न 10448. साहित्य कवि-साहित्यकारक संसारमे जीवित, अन्यथा की अनुभव कएल जा रहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मृत नहि तँ अनुपस्थित।

उत्तर: घ. मृत नहि तँ अनुपस्थित।

व्याख्या: स्रोतमे साहित्यक अनुपस्थितिक अनुभवक बात अछि।

प्रश्न 10449. एहि खण्डमे प्रकाशन-संकट मात्र आर्थिक अछि?
क. नहि, साहित्यक प्रसार आ पाठक पहुँचसँ सेहो जुड़ल अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, साहित्यक प्रसार आ पाठक पहुँचसँ सेहो जुड़ल अछि।
व्याख्या: पोथीक प्रसार, विक्रय, प्रकाशक आ पाठकक भाग्य सभ जुड़ल अछि।

प्रश्न 10450. लेखकक आलोचना मैथिली साहित्यक कोन कठिनाई सामने अनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक-निर्भर प्रकाशन व्यवस्था।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक-निर्भर प्रकाशन व्यवस्था।
व्याख्या: मैथिलीमे लेखकक स्वयं छपबाक विवशता मुख्य कठिनाई अछि।

प्रश्न 10451. पुस्तकालयमे थोक खपएबाक प्रसंग की सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रकाशनक बाजारू व्यवस्था।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रकाशनक बाजारू व्यवस्था।
व्याख्या: ब्रांड प्रकाशन आ विक्रय-वचन साहित्यक बाजार-तंत्र देखबैत अछि।

प्रश्न 10452. खण्ड १०५०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गंगेश गुंजन प्रकाशन-संकट द्वारा कविता, पाठक आ मैथिल लेखकक युग-यथार्थ उजागर करैत छथि।
उत्तर: घ. गंगेश गुंजन प्रकाशन-संकट द्वारा कविता, पाठक आ मैथिल लेखकक युग-यथार्थ उजागर करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यक आर्थिक-संस्थागत संघर्षपर आधारित अछि।

खण्ड १०५१ : विदेह-सदेह २ — विनीत उत्पल: पाण्डुलिपि आ कवि-दुस्साहस

प्रश्न 10453. एक मैथिल युवक दिल्लीमे लेखककेँ की देलनि?
क. मैथिली कविताक पाण्डुलिपि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली कविताक पाण्डुलिपि।
व्याख्या: स्रोतमे युवक अपन मैथिली कविताक पाण्डुलिपि दए भूमिका लिखबाक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 10454. युवक लेखकसँ कोन आग्रह कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भूमिका लिखि देबाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भूमिका लिखि देबाक।
व्याख्या: स्रोतमे पाण्डुलिपि दए “भूमिका” लिखि देबाक आग्रह कहल गेल।

प्रश्न 10455. प्रथम दृष्टया लेखककेँ युवक कोना बुझएलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दुस्साहसी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दुस्साहसी।

व्याख्या: गंगेश गुंजन लिखैत छथि जे युवक दुस्साहसी बुझएलाह।

प्रश्न 10456. लेखकक अनुसार साहस नहि रहत तँ कोन बाट धए सकब कठिन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविताक बाट।

उत्तर: घ. कविताक बाट।

व्याख्या: स्रोतमे साहस बिना कविताक बाट धएब कठिन कहल गेल।

प्रश्न 10457. भूमिका-लेखनक काज एहि युगमे की कऽ लेलक कहल गेल?

क. अपन धर्मान्तरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन धर्मान्तरण।

व्याख्या: लेखक भूमिका-लेखनक बदलेल प्रकृतिक टिप्पणी करैत छथि।

प्रश्न 10458. मैथिली कविताक भविष्य सामने उपस्थित भेलापर लेखकक प्रतिक्रिया की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. स्वागत करब आवश्यक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. स्वागत करब आवश्यक।

व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे भविष्य सामने हो तँ स्वागत कोना नहि हो।

प्रश्न 10459. पाण्डुलिपि पढ़लाक बाद लेखककेँ की अनुभव भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कवि-प्रतिभा प्रिय आ आश्वस्तिकारक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कवि-प्रतिभा प्रिय आ आश्वस्तिकारक।

व्याख्या: स्रोतमे पाण्डुलिपि पढ़लापछि प्रतिभा आश्वस्तिकारक बुझाएल कहल अछि।

प्रश्न 10460. विनीत उत्पलक प्रति लेखकक भाव कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वागत, स्नेह आ शुभाशंसा।

उत्तर: घ. स्वागत, स्नेह आ शुभाशंसा।

व्याख्या: लेखक उद्गारमे स्वागत आ अन्तमे स्नेह-शुभाशंसा दैत छथि।

प्रश्न 10461. एहि प्रसंगमे “दुस्साहस” नकारात्मक अछि?
क. नहि, सृजनात्मक साहसक संकेत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, सृजनात्मक साहसक संकेत अछि।
व्याख्या: कविताक बाट धएबाक लेल साहस आवश्यक कहल गेल।

प्रश्न 10462. खण्ड १०५१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विनीत उत्पलक पाण्डुलिपि लेखक लेल नव मैथिली कविताक आश्वस्तिकारक भविष्यक संकेत बनैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विनीत उत्पलक पाण्डुलिपि लेखक लेल नव मैथिली कविताक आश्वस्तिकारक भविष्यक संकेत बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पाण्डुलिपि, साहस आ स्वागतक प्रसंग समेटैत अछि।

खण्ड १०५२ : विदेह-सदेह २ — कविक प्रस्तावना आ समकालीनता

प्रश्न 10463. विनीत उत्पलक कविक प्रस्तावना की करबामे सहायक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हिनक कविताक संसार बुझबामे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हिनक कविताक संसार बुझबामे।
व्याख्या: स्रोतमे कविक प्रस्तावना कविताक संसार बुझबामे विशेष सहायक कहल गेल।

प्रश्न 10464. प्रस्तावना कोना लिखल गेल कहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. स्पष्ट बुद्धि आ पूर्ण मनोयोगसँ।
उत्तर: घ. स्पष्ट बुद्धि आ पूर्ण मनोयोगसँ।
व्याख्या: लेखक प्रस्तावनाक स्पष्टता आ मनोयोगक प्रशंसा करैत छथि।

प्रश्न 10465. प्रस्तावना हिनकर रचनाक की उद्घोष जकाँ अछि?
क. बुनियादी वर्तमान आ सरोकारक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बुनियादी वर्तमान आ सरोकारक।
व्याख्या: स्रोतमे प्रस्तावना रचनाक वर्तमान आ सरोकारक उद्घोष कहल गेल।

प्रश्न 10466. लेखकक अनुसार नवीन पीढ़ीक रचनाकारक सम्मुख सभसँ प्रखर चुनौती प्रायः की रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अपन वर्तमान।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अपन वर्तमान।
व्याख्या: स्रोतमे नवीन पीढ़ीक रचनाकारक सामने अपन वर्तमाने चुनौती कहल अछि।

प्रश्न 10467. अतीत आ भविष्य रचनाकारक सामने कोन स्थिति मे रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अढ़मे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अढ़मे।
व्याख्या: स्रोतमे अतीत आ भविष्य अढ़मे रहबाक बात अछि।

प्रश्न 10468. समाजक भविष्य निर्माणमे रचनाकारक भूमिका कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परोक्ष मुदा प्रमुख।
उत्तर: घ. परोक्ष मुदा प्रमुख।
व्याख्या: लेखक समकालीन रचनाकारक भूमिका परोक्ष मुदा प्रमुख मानैत छथि।

प्रश्न 10469. कविक दायित्व कोन अनुभवकेँ विकसित करब अछि?
क. समकालीनताक ज्ञान आ अनुभवकेँ विवेकसम्मत संवेदना रूपमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समकालीनताक ज्ञान आ अनुभवकेँ विवेकसम्मत संवेदना रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे कविक दायित्व एहि रूपमे व्याख्यायित अछि।

प्रश्न 10470. कवि जीवनक दुःख-द्वन्द्व आ यथार्थकेँ कोना पकड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सघनता आ व्यापकता सँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सघनता आ व्यापकता सँ।
व्याख्या: स्रोतमे एहि पकड़केँ प्रतिभाक सामर्थ्यसँ जोड़ल गेल।

प्रश्न 10471. रचनामे दूरगामी प्राणवत्ताक कलात्मक शिल्प देब कोन बातक चिह्न अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविक प्रतिभा-सामर्थ्यक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविक प्रतिभा-सामर्थ्यक।
व्याख्या: लेखक प्रतिभाक सामर्थ्यकेँ युग-यथार्थक कलात्मक रूपसँ मापैत छथि।

प्रश्न 10472. खण्ड १०५२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कवि अपन वर्तमान, युग-यथार्थ आ सामाजिक भविष्यकेँ विवेकसम्मत संवेदना मे रूपान्तरित करबाक दायित्व राखैत अछि।
उत्तर: घ. कवि अपन वर्तमान, युग-यथार्थ आ सामाजिक भविष्यकेँ विवेकसम्मत संवेदना मे रूपान्तरित करबाक दायित्व राखैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड कविक प्रस्तावना आ समकालीन दायित्व खोलैत अछि।

खण्ड १०५३ : विदेह-सदेह २ — कविताक जिजीविषा आ विनीतक काव्य-संसार

प्रश्न 10473. लेखकक अनुसार मनुक्खक जिजीविषा आ कविताक जिजीविषामे की भेद अछि?

क. तात्विक किछु भेद नहि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तात्विक किछु भेद नहि।

व्याख्या: स्रोतमे दुनूक जिजीविषामे तात्विक भेद नहि कहल गेल।

प्रश्न 10474. कवि अन्ततः की होइत अछि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनुक्खे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनुक्खे।

व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे कवि अंततः मनुक्खे होइत अछि।

प्रश्न 10475. विनीतजीक कविता कतेक अर्थ-छायासँ वेष्ठित अनुभव भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तीन अर्थ-छायासँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तीन अर्थ-छायासँ।

व्याख्या: स्रोतमे विनीतजीक कविता मोटामोटी तीन अर्थ छायासँ वेष्ठित कहल अछि।

प्रश्न 10476. तीन अर्थ-छाया मे कोन-कोन तत्व आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथनक कोटि, पकड़ आ प्रयोगक विधि।

उत्तर: घ. कथनक कोटि, पकड़ आ प्रयोगक विधि।

व्याख्या: स्रोतमे एहि तीन बिन्दुक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10477. विनीत उत्पलकेँ लेखक कोन प्रकारक कवि कहैत छथि?

क. टटका, ऊर्जावान-संवेदनशील कवि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टटका, ऊर्जावान-संवेदनशील कवि।

व्याख्या: स्रोतमे हिनका टटका, ऊर्जावान-संवेदनशील कवि कहल गेल।

प्रश्न 10478. लेखक विनीतक भविष्य लेल की विश्वास व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पथ प्रशस्त हेतनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पथ प्रशस्त हेतनि।

व्याख्या: स्रोतमे कविक पथ प्रशस्त होयबाक विश्वास अछि।

प्रश्न 10479. लेखक अन्तमे कोन आशा व्यक्त करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कालजयी कविताक आशा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कालजयी कविताक आशा।
व्याख्या: स्रोतमे बहुत-बहुत स्नेह-शुभाशंसाक संग कालजयी कविताक आशा अछि।

प्रश्न 10480. कविताक जिजीविषा विचार कविताकेँ कोना देखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जीवन-संघर्षक सहयात्री रूपमे।
उत्तर: घ. जीवन-संघर्षक सहयात्री रूपमे।
व्याख्या: मनुक्ख आ कविता दुनूक जिजीविषा अन्योनाश्रित कहल गेल।

प्रश्न 10481. विनीतक कविताक मूल्यांकनमे लेखकक स्वर की अछि?
क. समालोचनात्मक आ उत्साहवर्धक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समालोचनात्मक आ उत्साहवर्धक।
व्याख्या: लेखक बजारक संकट बीच प्रतिभा आ भविष्यक स्वागत करैत छथि।

प्रश्न 10482. खण्ड १०५३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गंगेश गुंजन विनीत उत्पलक कवितामे कथन, पकड़ आ विधिक आधार पर ऊर्जावान भविष्यक संकेत देखैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गंगेश गुंजन विनीत उत्पलक कवितामे कथन, पकड़ आ विधिक आधार पर ऊर्जावान भविष्यक संकेत देखैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड काव्य-मूल्यांकन आ जिजीविषा-विचार समेटैत अछि।

खण्ड १०५४ : विदेह-सदेह २ — रामभरोस कापडि “भ्रमर”: परिचय

प्रश्न 10483. रामभरोस कापडि “भ्रमर” कोन संस्थाक अध्यक्ष कहल गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साझा प्रकाशन, ललितपुर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साझा प्रकाशन, ललितपुर।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकर परिचय साझा प्रकाशन, ललितपुरक अध्यक्ष रूपमे देल गेल।

प्रश्न 10484. रामभरोस कापडि “भ्रमर”क जन्मस्थान की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बघचौरा, जिला धनुषा।
उत्तर: घ. बघचौरा, जिला धनुषा।
व्याख्या: स्रोतमे जन्मस्थान बघचौरा, जिला धनुषा नेपाल कहल गेल।

प्रश्न 10485. “बन्नकोठरी: औनाइत धुँआ” कोन विधाक कृति अछि?
क. कविता संग्रह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कविता संग्रह।
व्याख्या: परिचयमे एहि कृतिरूप कविता संग्रह देल अछि।

प्रश्न 10486. “नहि, आब नहि” कोन प्रकारक कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दीर्घ कविता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दीर्घ कविता।
व्याख्या: स्रोतमे “नहि, आब नहि” दीर्घ कविता रूपमे सूचीबद्ध अछि।

प्रश्न 10487. “तोरा संगे जएबौ रे कुजबा” कोन विधाक संग्रह अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कथा संग्रह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कथा संग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे ई कथा-संग्रह कहल गेल।

प्रश्न 10488. “मोमक पघलैत अधर” कोन विधासँ सम्बन्धित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गीत, गजल संग्रह।
उत्तर: घ. गीत, गजल संग्रह।
व्याख्या: परिचयमे ई गीत-गजल संग्रह रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 10489. “रानी चन्द्रावती” कोन विधाक कृति अछि?
क. नाटक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नाटक।
व्याख्या: स्रोत सूचीमे रानी चन्द्रावती नाटक अछि।

प्रश्न 10490. “लोक नाट्य: जट-जटिन” कोन प्रकृतिक कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अनुसन्धान।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अनुसन्धान।
व्याख्या: परिचयमे ई अनुसन्धान कृति रूपमे देल अछि।

प्रश्न 10491. रामभरोस कापडिक कृतिसूची हुनकर कोन रचनात्मक विस्तार देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता, कथा, नाटक, गीत, सांस्कृतिक निबन्ध आ अनुसन्धान।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता, कथा, नाटक, गीत, सांस्कृतिक निबन्ध आ अनुसन्धान।
व्याख्या: सूची अनेक विधामे हुनकर सक्रियता देखबैत अछि।

प्रश्न 10492. खण्ड १०५४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रामभरोस कापडि “भ्रमर” नेपालक मैथिली रचना, संस्कृति आ संस्थागत साहित्यिक क्षेत्रक बहुविध व्यक्तित्व छथि।
उत्तर: घ. रामभरोस कापडि “भ्रमर” नेपालक मैथिली रचना, संस्कृति आ संस्थागत साहित्यिक क्षेत्रक बहुविध व्यक्तित्व छथि।
व्याख्या: ई खण्ड परिचय आ कृतिसूचीपर आधारित अछि।

खण्ड १०५५ : विदेह-सदेह २ — नेपालक पत्रकारिता आ भाषिक असमानता

प्रश्न 10493. नेपालमे पत्रकारिताक विधिवत शुरुआत कोन पत्रक प्रकाशनसँ मानल गेल?
क. गोरखापत्र समाचारपत्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गोरखापत्र समाचारपत्र।
व्याख्या: स्रोतमे वि.स. १९५८ मे गोरखापत्रसँ नेपाली पत्रकारिताक शुरुआत कहल गेल।

प्रश्न 10494. गोरखापत्रक प्रकाशन कोन संवत् मे प्रारम्भ भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. वि.स. १९५८।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. वि.स. १९५८।
व्याख्या: स्रोतमे वि.स. १९५८ मे गोरखापत्र प्रारम्भ भेल कहल अछि।

प्रश्न 10495. लेखकक अनुसार गोरखापत्र मुख्यतः केकर पृष्ठपोषण करैत आएल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नेपाली भाषा आ नेपाली भाषी सभक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नेपाली भाषा आ नेपाली भाषी सभक।
व्याख्या: स्रोतमे ई पत्र नेपाली भाषा आ नेपाली भाषीक पृष्ठपोषण करैत आएल कहल अछि।

प्रश्न 10496. नेपाली पत्रकारिताक इतिहासमे की नुकाएल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समस्त नेपालक पत्रकारिताक व्यथा-कथा।
उत्तर: घ. समस्त नेपालक पत्रकारिताक व्यथा-कथा।
व्याख्या: स्रोतमे एक सए आठ वर्षक इतिहासमे पत्रकारिताक व्यथा-कथा नुकाएल कहल अछि।

प्रश्न 10497. राजनीतिकर्मी लोकनि कोन अवधिक शोषणक बात करैत छथि?
क. गोरखासँ शाह वंशीय राजघराना धरिक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गोरखासँ शाह वंशीय राजघराना धरिक।
व्याख्या: स्रोतमे दू सए चालिस वर्षक गोरखासँ शाह शासन धरिक शोषणक बात अछि।

प्रश्न 10498. लेखकक अनुसार गणतंत्र नेपालमे अवस्था की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उएह असमानता आ उपेक्षाक स्थिति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उएह असमानता आ उपेक्षाक स्थिति।
व्याख्या: स्रोतमे गणतंत्र नेपालमे सेहो अवस्था उएह रहल कहल अछि।

प्रश्न 10499. असमानता कोन-कोन क्षेत्रमे कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक अथवा संचार-साहित्यिक क्षेत्रमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक अथवा संचार-साहित्यिक क्षेत्रमे।
व्याख्या: स्रोतमे राजनीति, समाज, अर्थ आ संचार-साहित्य क्षेत्रक संकेत अछि।

प्रश्न 10500. एहि आलोचनाक केन्द्र की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नेपालक संचार-इतिहासमे भाषिक आ क्षेत्रीय उपेक्षा।
उत्तर: घ. नेपालक संचार-इतिहासमे भाषिक आ क्षेत्रीय उपेक्षा।
व्याख्या: गोरखापत्रक नेपाली-केंद्रितता आ मधेश/अन्य भाषिक उपेक्षा मुख्य बिन्दु अछि।

प्रश्न 10501. लेखक पत्रकारिताक इतिहासकेँ केवल संस्थागत उपलब्धि मानैत छथि?
क. नहि, ओहि इतिहासमे उपेक्षित समुदाय केर व्यथा देखैत छथि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, ओहि इतिहासमे उपेक्षित समुदाय केर व्यथा देखैत छथि।
व्याख्या: व्यथा-कथा शब्द उपेक्षा आ असमानता उजागर करैत अछि।

प्रश्न 10502. खण्ड १०५५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रामभरोस कापडि नेपालक पत्रकारिता-इतिहासमे नेपाली-केंद्रितता आ मधेशी/अन्य भाषिक उपेक्षाक प्रश्न उठबैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रामभरोस कापडि नेपालक पत्रकारिता-इतिहासमे नेपाली-केंद्रितता आ मधेशी/अन्य भाषिक उपेक्षाक प्रश्न उठबैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड संचार क्षेत्रक असमानता पर आधारित अछि।

खण्ड १०५६ : विदेह-सदेह २ — समावेशी संचारक अपेक्षा

प्रश्न 10503. लेखकक आलेखक शीर्षकमे संचारक संग कोन क्षेत्र जोड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साहित्य क्षेत्र।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साहित्य क्षेत्र।

व्याख्या: शीर्षक “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा” अछि।

प्रश्न 10504. शीर्षकमे “समावेशी स्वरूप” कोन माँगक संकेत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सब भाषिक-सांस्कृतिक समुदायक प्रतिनिधित्व।

उत्तर: घ. सब भाषिक-सांस्कृतिक समुदायक प्रतिनिधित्व।

व्याख्या: समावेशी शब्द संचार-साहित्यक व्यापक प्रतिनिधित्वक माँग करैत अछि।

प्रश्न 10505. नेपालक बहुभाषिक समाजमे संचारक मुख्य दायित्व की होयबाक चाही?

क. सब समुदायक आवाजकेँ स्थान देब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सब समुदायक आवाजकेँ स्थान देब।

व्याख्या: लेखक नेपाली-केंद्रित पृष्ठपोषणक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 10506. साहित्य क्षेत्रमे समावेशी अपेक्षा किएक जरूरी अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भाषिक अस्मिता आ सांस्कृतिक न्याय लेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भाषिक अस्मिता आ सांस्कृतिक न्याय लेल।

व्याख्या: संचार-साहित्य क्षेत्रमे उपेक्षा भाषिक अस्मिता केँ प्रभावित करैत अछि।

प्रश्न 10507. गोरखापत्रक उदाहरण समावेशी संचारक अभाव कोना देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एक भाषा-समुदायकेँ प्राथमिकता देबाक रूपमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एक भाषा-समुदायकेँ प्राथमिकता देबाक रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे गोरखापत्र नेपाली भाषा आ भाषी सभक पृष्ठपोषण करैत आएल कहल अछि।

प्रश्न 10508. लेखक “सत्य तँ ई अछि” कहि कोन बात पर बल दैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक परिवर्तनक बादो अवस्था उएह रहबाक।

उत्तर: घ. राजनीतिक परिवर्तनक बादो अवस्था उएह रहबाक।

व्याख्या: गणतंत्र नेपालमे सेहो समान उपेक्षा रहबाक कथन अछि।

प्रश्न 10509. समावेशी संचारक अपेक्षा केकर विरोधमे ठाढ़ अछि?
क. एकभाषी/केन्द्रित प्रभुत्वक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एकभाषी/केन्द्रित प्रभुत्वक।
व्याख्या: लेखक नेपाली-केंद्रित संचार इतिहासक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 10510. साहित्यक समावेशी स्वरूप समाजमे की मजबूत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बहुलता आ सम्मान।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बहुलता आ सम्मान।
व्याख्या: बहुभाषिक समाजमे साहित्यिक प्रतिनिधित्व सांस्कृतिक सम्मान बढ़बैत अछि।

प्रश्न 10511. एहि खण्डक आलोचनात्मक दृष्टि कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. संचार आ साहित्यकेँ लोकतांत्रिक बनएबाक आग्रह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. संचार आ साहित्यकेँ लोकतांत्रिक बनएबाक आग्रह।
व्याख्या: समावेशी स्वरूपक अपेक्षा लोकतांत्रिक संचार-साहित्यक माँग अछि।

प्रश्न 10512. खण्ड १०५६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नेपालक संचार आ साहित्य क्षेत्रमे वास्तविक समावेशिता बिना भाषिक-सांस्कृतिक न्याय संभव नहि।
उत्तर: घ. नेपालक संचार आ साहित्य क्षेत्रमे वास्तविक समावेशिता बिना भाषिक-सांस्कृतिक न्याय संभव नहि।
व्याख्या: ई खण्ड शीर्षकक मूल माँगक विवेचन करैत अछि।

खण्ड १०५७ : विदेह-सदेह २ — नेपाली राज्य, मधेश आ प्रतिनिधित्व

प्रश्न 10513. लेखक मधेशवासीक शोषणक चर्चा कोन सन्दर्भमे करैत छथि?
क. राजनीतिक इतिहास आ पत्रकारिता-संचारक उपेक्षा सन्दर्भमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राजनीतिक इतिहास आ पत्रकारिता-संचारक उपेक्षा सन्दर्भमे।
व्याख्या: स्रोतमे गोरखा-शाह शासन आ गणतंत्र नेपालक अवस्थाक चर्चा अछि।

प्रश्न 10514. राजनीतिक परिवर्तनक बावजूद लेखक केहन निरंतरता देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उपेक्षा आ असमानताक निरंतरता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उपेक्षा आ असमानताक निरंतरता।
व्याख्या: गणतंत्र नेपालमे सेहो अवस्था उएह कहल गेल।

प्रश्न 10515. मधेशी प्रश्न संचार क्षेत्रमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कारण प्रतिनिधित्व बिना लोकतंत्र अधूरा रहैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कारण प्रतिनिधित्व बिना लोकतंत्र अधूरा रहैत अछि।
व्याख्या: लेखक संचार आ साहित्यक समावेशी स्वरूप माँगैत छथि।

प्रश्न 10516. लेखकक आलोचना केवल पुरान राजतंत्र पर सीमित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नहि, एखनक गणतंत्र नेपाल धरि फैलल अछि।
उत्तर: घ. नहि, एखनक गणतंत्र नेपाल धरि फैलल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे “एखन धरिक गणतंत्र नेपालमे समेत” अवस्था उएह कहल अछि।

प्रश्न 10517. संचार-साहित्य क्षेत्रमे मधेशी उपेक्षा कोन बातक रूपक अछि?
क. राष्ट्रक बहुभाषिक यथार्थक अस्वीकार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राष्ट्रक बहुभाषिक यथार्थक अस्वीकार।
व्याख्या: नेपाली-केंद्रित संचार नीति बहुभाषिक समाजकेँ पूरा स्थान नहि दैत।

प्रश्न 10518. एहि विमर्शमे भाषा आ भूगोलक सम्बन्ध की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषा समुदायक क्षेत्रीय पहचानसँ जुड़ल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषा समुदायक क्षेत्रीय पहचानसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: मधेश, नेपाली भाषा, पत्रकारिता आ साहित्यक प्रश्न एक दोसरसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 10519. समावेशी प्रतिनिधित्वक अभावक परिणाम की होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. उपेक्षित समुदायक व्यथा-कथा दबि जाइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. उपेक्षित समुदायक व्यथा-कथा दबि जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे पत्रकारिताक इतिहासमे समस्त नेपालक व्यथा-कथा नुकाएल कहल अछि।

प्रश्न 10520. लेखकक आग्रह कोन स्वरूपक पत्रकारिता लेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बहुभाषिक आ बहुसामुदायिक पत्रकारिता।
उत्तर: घ. बहुभाषिक आ बहुसामुदायिक पत्रकारिता।
व्याख्या: समावेशी संचारक अपेक्षा एहि दिस संकेत करैत अछि।

प्रश्न 10521. मधेश विमर्श साहित्य क्षेत्रसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. साहित्य समुदायिक अनुभवकेँ आवाज दैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्य समुदायिक अनुभवकेँ आवाज दैत अछि।
व्याख्या: संचार एवं साहित्य दुनूमे समावेशिता माँगल गेल।

प्रश्न 10522. खण्ड १०५७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रामभरोस कापडि नेपाली राज्य-संचारक इतिहासमे मधेशी प्रतिनिधित्वक कमी आ समावेशी सुधारक आवश्यकता देखबैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रामभरोस कापडि नेपाली राज्य-संचारक इतिहासमे मधेशी प्रतिनिधित्वक कमी आ समावेशी सुधारक आवश्यकता देखबैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड मधेश, राज्य आ संचार-प्रतिनिधित्वक सम्बन्ध समेटैत अछि।

खण्ड १०५८ : विदेह-सदेह २ — भाषा, बाजार आ संचार-न्याय: समेकन

प्रश्न 10523. गंगेश गुंजन आ रामभरोस कापडिक आलेखक साझा चिन्ता की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषा-संस्कृति पर बाजार/प्रभुत्वक दबाव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषा-संस्कृति पर बाजार/प्रभुत्वक दबाव।
व्याख्या: गंगेश गुंजन बाजार आ कविता पर, कापडि संचार-साहित्यक प्रभुत्व पर चिन्ता करैत छथि।

प्रश्न 10524. कविता आ पत्रकारिता दुनू मे भाषा कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लोक धरि पहुँचबाक माध्यम।
उत्तर: घ. लोक धरि पहुँचबाक माध्यम।
व्याख्या: कविता भाषाक सवारीपर चलैत अछि आ पत्रकारिता सेहो भाषिक प्रतिनिधित्वसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 10525. समावेशी संचार आ कविताक नैतिक भाषा-बोधमे साझा सूत्र की अछि?
क. लोक-संवेदना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लोक-संवेदना।
व्याख्या: दुनू विमर्श भाषा केँ लोक जीवन आ न्यायसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 10526. बाजारू भाषा आ एकभाषी राज्य-भाषा दुनू कोन खतरा पैदा करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बहुल सांस्कृतिक अनुभवक क्षरण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बहुल सांस्कृतिक अनुभवक क्षरण।
व्याख्या: बाजार कविताकेँ उत्पाद बनबैत अछि, एकभाषी संचार अन्य समुदाय दबबैत अछि।

प्रश्न 10527. लेख सभकेँ साथ पढ़लासँ मैथिली साहित्यक कोन सरोकार स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषिक अस्मिता आ सांस्कृतिक न्याय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषिक अस्मिता आ सांस्कृतिक न्याय।
व्याख्या: स्रोत-आलेख सभ भाषा, कविता, संचार आ समावेशिता पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 10528. कविता, प्रवासी पर्व आ संचार-विमर्शक साझा लक्ष्य की मानल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समुदायक स्मृति आ पहचान बचाएब।
उत्तर: घ. समुदायक स्मृति आ पहचान बचाएब।
व्याख्या: होली, कविता आ संचार तीनू सामुदायिक स्मृति सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 10529. भाषा-संस्कृति विमर्शमे पाठकक भूमिका की अछि?
क. सक्रिय ग्रहणकर्ता आ संरक्षक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सक्रिय ग्रहणकर्ता आ संरक्षक।
व्याख्या: गंगेश गुंजन पाठकक पहुँच आ कविताक जीवन पर बल दैत छथि।

प्रश्न 10530. समेकित अध्ययनक आधार पर “विदेह-सदेह २” कोन रूपमे उभरैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली सामाजिक-सांस्कृतिक चेतनाक दस्तावेज।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली सामाजिक-सांस्कृतिक चेतनाक दस्तावेज।
व्याख्या: विविध लेख भाषा, समाज, प्रवास, कविता आ संचारक प्रश्न जोड़ैत अछि।

प्रश्न 10531. एहि खण्डक मुख्य निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषा आ संस्कृति केँ बाजार, उपेक्षा आ विस्मृति सँ बचएबाक साझा प्रयास आवश्यक अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषा आ संस्कृति केँ बाजार, उपेक्षा आ विस्मृति सँ बचएबाक साझा प्रयास आवश्यक अछि।
व्याख्या: पूर्ववर्ती लेख सभक सम्मिलित अर्थ एहि निष्कर्ष दिस लैत अछि।

प्रश्न 10532. खण्ड १०५८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषा, कविता, प्रवास आ संचारक चर्चा मिलिकऽ सांस्कृतिक न्याय आ स्मृति-संरक्षणक व्यापक परियोजना बनैत अछि।
उत्तर: घ. भाषा, कविता, प्रवास आ संचारक चर्चा मिलिकऽ सांस्कृतिक न्याय आ स्मृति-संरक्षणक व्यापक परियोजना बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पूर्ववर्ती विमर्श सभक समेकन अछि।

खण्ड १०५९ : विदेह-सदेह २ — भालचन्द्र झा: बाल-शिक्षणपर निबन्धक आरम्भ

प्रश्न 10533. भालचन्द्र झाक निबन्धक शीर्षक की अछि?

क. बाल-शिक्षणपर निबन्ध — हमर शिक्षण-यात्रा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-शिक्षणपर निबन्ध — हमर शिक्षण-यात्रा।

व्याख्या: स्रोतक शीर्षकमे ई नाम अछि।

प्रश्न 10534. लेखकक शिक्षण-यात्रा कतेक पुरान गप्प कहि आरम्भ होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पचीस-तीस बरख पुरान।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पचीस-तीस बरख पुरान।

व्याख्या: स्रोतमे “ई गोट पचीस-तीस बरख पुरान गप्प” कहल अछि।

प्रश्न 10535. लेखक नव-नव कोन डिप्लोमा कएने रहथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ए.टी.डी. — आर्ट टीचर्स डिप्लोमा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ए.टी.डी. — आर्ट टीचर्स डिप्लोमा।

व्याख्या: स्रोतमे ए.टी.डी.क अर्थ आर्ट टीचर्स डिप्लोमा देल अछि।

प्रश्न 10536. लेखक पहिल नोकरी कतय केलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुम्बइक एक प्रसिद्ध स्कूलक प्राथमिक विभागमे।

उत्तर: घ. मुम्बइक एक प्रसिद्ध स्कूलक प्राथमिक विभागमे।

व्याख्या: स्रोतमे मुम्बइ/तखन बम्बइक स्कूलक प्राथमिक विभागमे सहायक शिक्षक बनबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10537. लेखकक समय-विन्यास कोना छल?

क. आध दिन नोकरी आ आध दिन कॉलेजक पढ़ाइ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आध दिन नोकरी आ आध दिन कॉलेजक पढ़ाइ।

व्याख्या: स्रोतमे आध दिन नोकरी आ आध दिन अगिला पढ़ाइ कहल अछि।

प्रश्न 10538. किछुए दिनमे अभिभावक सभक उपराग ककरा लऽ कऽ आबए लागल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखकक पढ़एबाक पद्धति लऽ कऽ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखकक पढ़एबाक पद्धति लऽ कऽ।

व्याख्या: स्रोतमे पढ़एबाक पद्धति पर उपरागक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10539. उपरागक बात अन्ततः किनका धरि पहुँचि गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मुख्याध्यापक धरि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मुख्याध्यापक धरि।
व्याख्या: स्रोतमे बात मुख्याध्यापक धरि पहुँचि गेल कहल अछि।

प्रश्न 10540. मुख्याध्यापक शैक्षणिक क्षेत्रमे कोन सम्मानसँ विभूषित छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. राष्ट्रपति अवार्डसँ।
उत्तर: घ. राष्ट्रपति अवार्डसँ।
व्याख्या: स्रोतमे मुख्याध्यापक राष्ट्रपति अवार्डसँ विभूषित कहल गेल।

प्रश्न 10541. मुख्याध्यापकक समर्पणक उदाहरण कोन अछि?
क. बेटीक बियाहक दिनो भोरमे टेबुलपर हाजिर रहब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बेटीक बियाहक दिनो भोरमे टेबुलपर हाजिर रहब।
व्याख्या: स्रोतमे बेटीक विवाहक दिन सेहो काजक क्षतिपूर्तिक लेल भोरमे पहुँचबाक उदाहरण अछि।

प्रश्न 10542. खण्ड १०५९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भालचन्द्र झा अपन बाल-शिक्षण अनुभवक आरम्भ कला-शिक्षक, प्रयोगशीलता आ स्कूल-संदर्भसँ करैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भालचन्द्र झा अपन बाल-शिक्षण अनुभवक आरम्भ कला-शिक्षक, प्रयोगशीलता आ स्कूल-संदर्भसँ करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड शिक्षण-यात्राक प्रारम्भिक पृष्ठभूमि बतबैत अछि।

खण्ड १०६० : विदेह-सदेह २ — शिशु-वर्ग, चित्रकला आ आत्म-प्रगटीकरण

प्रश्न 10543. शिशु-वर्गक नेन्ना सभ पहिल बेर स्कूल अबैत की करैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. माए-बापकेँ छोड़ैत नहि आ कनैत रहैत छल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. माए-बापकेँ छोड़ैत नहि आ कनैत रहैत छल।
व्याख्या: स्रोतमे नेन्ना सभ पहिल बेर स्कूल अबैत कनबाक वर्णन अछि।

प्रश्न 10544. लेखक नेन्ना सभक ध्यान बँटएबाक लेल की आनलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कागज आ ऑइल पेस्टल।
उत्तर: घ. कागज आ ऑइल पेस्टल।
व्याख्या: स्रोतमे कागज आ मोमक रंग-पेन्सिल आनि सोझाँ राखबाक बात अछि।

प्रश्न 10545. किछु नेन्ना कागज आ पेन्सिल देखिते की केलक?
क. कागज चिरि देलक आ पेन्सिल टुकड़ी-टुकड़ी कऽ देलक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कागज चिरि देलक आ पेन्सिल टुकड़ी-टुकड़ी कऽ देलक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रतिक्रिया वर्णित अछि।

प्रश्न 10546. एक नेन्ना पेन्सिल लऽ कागजपर की केलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बिना उठौने पूरा कागज भरि देलक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बिना उठौने पूरा कागज भरि देलक।
व्याख्या: स्रोतमे ओ पेन्सिल कागजपर घसि पूरा कागज भरि देलक कहल अछि।

प्रश्न 10547. लेखक एहि क्रियाक अर्थपर कतेक दिन सोचैत रहलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बहुत दिन धरि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बहुत दिन धरि।
व्याख्या: स्रोतमे लेखक बहुत दिन धरि एहि विषयमे सोचैत रहलाह कहल अछि।

प्रश्न 10548. लेखकक विश्वास की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. छोटो-सँ-छोट प्रत्येक कृतिक किछु अर्थ आ प्रयोजन होइत अछि।
उत्तर: घ. छोटो-सँ-छोट प्रत्येक कृतिक किछु अर्थ आ प्रयोजन होइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे प्रत्येक Act किछु अर्थ-प्रयोजन राखैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 10549. लेखकक अनुसार आत्म-प्रगटीकरण हेतु कोन माध्यम अत्यन्त प्रभावी अछि?
क. चित्रकला।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चित्रकला।
व्याख्या: स्रोतमे आत्म-प्रगटीकरण हेतु चित्रकला सन प्रभावी माध्यम नहि कहल अछि।

प्रश्न 10550. चित्रकला किएक सरल आ श्रेष्ठ माध्यम कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नेन्नो बिना संस्कार वा व्याकरण अपन मोनक गप्प व्यक्त कऽ सकैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नेन्नो बिना संस्कार वा व्याकरण अपन मोनक गप्प व्यक्त कऽ सकैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे चित्रकला कैं स्वतः अभिव्यक्तिक माध्यम मानल गेल।

प्रश्न 10551. बाल-शिक्षणमे कला लेखक लेल कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बाल-मनोभाव बुझबाक सेतु।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बाल-मनोभाव बुझबाक सेतु।
व्याख्या: नेन्नाक रंग-क्रिया शिक्षक कैं ओकर आंतरिक भाव देखबैत अछि।

प्रश्न 10552. खण्ड १०६०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चित्रकला शिशु मनक क्रोध, ऊर्जा, भय आ आत्म-अभिव्यक्तिक सहज माध्यम बनैत अछि।
उत्तर: घ. चित्रकला शिशु मनक क्रोध, ऊर्जा, भय आ आत्म-अभिव्यक्तिक सहज माध्यम बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड बाल-कला आ आत्म-प्रगटीकरण पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०६१ : विदेह-सदेह २ — कक्षा, प्रयोग आ कला-शिक्षणक पद्धति

प्रश्न 10553. स्कूलक माहौलसँ नेन्ना सभ घुलि-मिलि गेलापर लेखक की कएलनि?
क. एकटा आर प्रयोग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एकटा आर प्रयोग।
व्याख्या: स्रोतमे किछु दिन बाद लेखक फेर एकटा प्रयोग केलनि।

प्रश्न 10554. प्रयोग लेल लेखक कक्षा मे की करौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साफ-सफाइ करा कऽ पूरा फर्शपर उज्जर पलेन कागज राखलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साफ-सफाइ करा कऽ पूरा फर्शपर उज्जर पलेन कागज राखलनि।
व्याख्या: स्रोतमे कक्षाक साफ-सफाइ आ फर्शपर कागज राखबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 10555. कला-शिक्षणमे रूटीनसँ हटि लेखकक रुचि कोनमे छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नव-नव प्रयोग करबामे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नव-नव प्रयोग करबामे।
व्याख्या: स्रोतमे रूटीनसँ हटिकऽ नब-नब प्रयोग करबाक रुचि कहल अछि।

प्रश्न 10556. लेखक बिनु ककरो कहने स्कूलमे कोन तरहक काज करैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अनेक तरहक विधाक काज।
उत्तर: घ. अनेक तरहक विधाक काज।
व्याख्या: स्रोतमे कला शिक्षकक हैसियतसँ बिनु कहने अनेक विधाक काज करबाक वर्णन अछि।

प्रश्न 10557. बाल-शिक्षणमे खुला फर्श-कागज प्रयोगक उद्देश्य की बुझल जा सकैत अछि?
क. बालक मुक्त अभिव्यक्ति लेल स्थान देब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बालक मुक्त अभिव्यक्ति लेल स्थान देब।
व्याख्या: फर्शपर कागज राखब सामूहिक आ मुक्त चित्र-क्रिया लेल छल।

प्रश्न 10558. लेखकक पद्धति पारम्परिक पाठशाला पद्धतिसँ कोना अलग अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ बच्चाक स्वतः क्रिया आ अनुभूति केँ महत्व दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ बच्चाक स्वतः क्रिया आ अनुभूति केँ महत्व दैत अछि।
व्याख्या: लेखकक प्रयोग बालक क्रियाक अर्थ खोजैत अछि।

प्रश्न 10559. अभिभावक सभक उपरागक बावजूद लेखकक प्रयोगशीलता की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शिक्षणक वैकल्पिक दृष्टि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शिक्षणक वैकल्पिक दृष्टि।
व्याख्या: उपरागक पृष्ठभूमिमे कला-आधारित शिक्षणक महत्त्व देखाइत अछि।

प्रश्न 10560. कला-कक्षा लेखक लेल मात्र चित्र बनएबाक स्थान अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नहि, बाल-मन पढ़बाक प्रयोगशाला अछि।
उत्तर: घ. नहि, बाल-मन पढ़बाक प्रयोगशाला अछि।
व्याख्या: लेखक प्रत्येक कृतिक प्रयोजन पर विचार करैत छथि।

प्रश्न 10561. नव-नव प्रयोग बाल-शिक्षणमे कोन मूल्य जोड़ैत अछि?
क. सृजनशीलता आ आत्मविश्वास।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सृजनशीलता आ आत्मविश्वास।
व्याख्या: कला-आधारित प्रयोग बालक केँ अभिव्यक्ति दैत अछि।

प्रश्न 10562. खण्ड १०६१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भालचन्द्र झाक कला-शिक्षण पद्धति रूटीन तोड़ि बालकक स्वतः अभिव्यक्ति आ प्रयोगपर आधारित अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भालचन्द्र झाक कला-शिक्षण पद्धति रूटीन तोड़ि बालकक स्वतः अभिव्यक्ति आ प्रयोगपर आधारित अछि।
व्याख्या: ई खण्ड शिक्षण-प्रयोगक दृष्टि स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १०६२ : विदेह-सदेह २ — बाल-व्यवहारक अर्थ आ शिक्षकक संवेदनशीलता

प्रश्न 10563. लेखक छोटो-सँ-छोट कृतिकेँ कोना देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अर्थपूर्ण आ प्रयोजनयुक्त।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अर्थपूर्ण आ प्रयोजनयुक्त।
व्याख्या: स्रोतमे प्रत्येक कृतिक किछु अर्थ आ प्रयोजन होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 10564. बालकक क्रोध वा ऊर्जा चित्रमे प्रकट भेलाक बाद की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ शांत भऽ गेल।
उत्तर: घ. ओ शांत भऽ गेल।
व्याख्या: स्रोतमे कागज भरलाक बाद नेन्ना शांत भऽ गेल कहल अछि।

प्रश्न 10565. लेखक बालकक क्रियाकेँ केना नहि देखैत छथि?
क. निरर्थक उपद्रव रूपमे नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. निरर्थक उपद्रव रूपमे नहि।
व्याख्या: लेखक ओकर भीतर अर्थ, प्रयोजन आ आत्म-प्रगटीकरण देखैत छथि।

प्रश्न 10566. शिक्षकक संवेदनशीलता कोन बातमे देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बाल-क्रियाक अर्थ बुझबाक धैर्यमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बाल-क्रियाक अर्थ बुझबाक धैर्यमे।
व्याख्या: लेखक बहुत दिन धरि ओहि घटना पर सोचैत रहलाह।

प्रश्न 10567. कला माध्यमे बालक की व्यक्त कऽ सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपन मोनक गप्प।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपन मोनक गप्प।
व्याख्या: स्रोतमे नेन्नो अपन मोनक गप्प व्यक्त कऽ सकैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 10568. बिना संस्कार वा व्याकरणक अभिव्यक्ति कोन क्षेत्रमे सम्भव बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चित्रकला मे।
उत्तर: घ. चित्रकला मे।
व्याख्या: लेखक चित्रकलाकेँ सरल आ श्रेष्ठ माध्यम कहैत छथि।

प्रश्न 10569. बाल-शिक्षणक एहि दृष्टिकेँ कोन शैक्षणिक मूल्य कहल जा सकैत अछि?
क. बाल-मनोविज्ञानक सम्मान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बाल-मनोविज्ञानक सम्मान।
व्याख्या: क्रिया-व्यवहारक अर्थ देखब बाल-मनोविज्ञानक सम्मान अछि।

प्रश्न 10570. नेन्नाक कागज फाड़ब वा रंग घसब शिक्षक लेल की बनल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अध्ययनक संकेत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अध्ययनक संकेत।
व्याख्या: लेखक एहि क्रियासँ बाल-मन बुझबाक प्रक्रिया शुरू करैत छथि।

प्रश्न 10571. एहि खण्डमे शिक्षकक भूमिका की बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दण्डदाता नहि, अर्थ-बूझनिहार सहयात्री।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दण्डदाता नहि, अर्थ-बूझनिहार सहयात्री।
व्याख्या: लेखक प्रतिक्रियाकेँ दमन नहि, समझबाक प्रयास करैत छथि।

प्रश्न 10572. खण्ड १०६२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संवेदनशील शिक्षक बालकक हर क्रियामे अर्थ खोजि ओकर आत्म-अभिव्यक्तिक मार्ग खोलैत अछि।
उत्तर: घ. संवेदनशील शिक्षक बालकक हर क्रियामे अर्थ खोजि ओकर आत्म-अभिव्यक्तिक मार्ग खोलैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड बाल-व्यवहारक अर्थ-बोध पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०६३ : विदेह-सदेह २ — बाल-शिक्षण आ परिवारक भूमिका

प्रश्न 10573. निबन्धक अन्तिम भागमे लेखक कोन बच्चाक सन्दर्भमे उपाय सुझबैत छथि?
क. विशेष पारिवारिक अनुभवसँ प्रभावित विद्यार्थीक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विशेष पारिवारिक अनुभवसँ प्रभावित विद्यार्थीक।
व्याख्या: स्रोतक अन्त भागमे विद्यार्थी, सतमाय, पिता, सतभाय-सतबहीनक प्रसंग अछि।

प्रश्न 10574. लेखक पहिने किनका बुझएबाक सलाह दैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. घरबालीकेँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. घरबालीकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे “सभसँ पहिने अपना घरबालीकेँ बुझबिऔन्ह” कहल अछि।

प्रश्न 10575. लेखक किछु दिनक लेल की करबाक सलाह दैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. छुट्टी लऽ कऽ सपरिवार बाहर घुमि आउ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. छुट्टी लऽ कऽ सपरिवार बाहर घुमि आउ।
व्याख्या: स्रोतमे किछु दिनक छुट्टी आ पन्द्रह-बीस दिन बाहर घुमबाक सलाह अछि।

प्रश्न 10576. यात्राक पूरा कार्यक्रम केकरा केन्द्रमे राखि बनाओल जेबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओहि बच्चाकेँ।
उत्तर: घ. ओहि बच्चाकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे कार्यक्रम ओकरा केन्द्रमे राखि बनएबाक बात अछि।

प्रश्न 10577. यात्रामे किनक समान सहभागिता रहबाक चाही?
क. सतभाय, सतबहीन, सतमाय आ पिता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सतभाय, सतबहीन, सतमाय आ पिता।
व्याख्या: स्रोतमे एहि सभक समान सहभागिता चाही कहल अछि।

प्रश्न 10578. बच्चाप्रति सभक व्यवहार कोन प्रकारक रहबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सहज, देखाबा रहित।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सहज, देखाबा रहित।
व्याख्या: स्रोतमे सहज व्यवहार आ कोनो देखाबा नहि रहबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 10579. बच्चाकेँ कोन शंका नहि होयबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जानि-बुझि कऽ ओकरा पर विशेष ध्यान देल जा रहल अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जानि-बुझि कऽ ओकरा पर विशेष ध्यान देल जा रहल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे ई शंका टारबाक बात अछि।

प्रश्न 10580. पुरान अनुभवक सम्बन्धमे लेखक की कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ने चर्चा होए आ ने पुनरावृत्ति।
उत्तर: घ. ने चर्चा होए आ ने पुनरावृत्ति।
व्याख्या: स्रोतमे पुरनका अनुभवक ने चर्चा ने पुनरावृत्ति करबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 10581. पारिवारिक उपचारक मूल उद्देश्य की अछि?
क. बच्चाकेँ पुरनका दुःस्वप्नसँ बाहर अनएब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बच्चाकेँ पुरनका दुःस्वप्नसँ बाहर अनएब।
व्याख्या: लेखक बच्चाकेँ पुरनका अनुभव दुःस्वप्न मानि बाहर आबय देबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 10582. खण्ड १०६३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बाल-शिक्षण केवल विद्यालयक काज नहि, परिवारक सहज, संवेदनशील आ सामूहिक व्यवहारसँ सेहो जुड़ल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बाल-शिक्षण केवल विद्यालयक काज नहि, परिवारक सहज, संवेदनशील आ सामूहिक व्यवहारसँ सेहो जुड़ल अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पारिवारिक उपचारात्मक भूमिका पर आधारित अछि।

खण्ड १०६४ : विदेह-सदेह २ — बाल-शिक्षण यात्राक समेकित अर्थ

प्रश्न 10583. लेखक अन्तमे कोन विषयकेँ सकारात्मक उद्यमक श्रेय देब योग्य मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चित्रकला सन सृजनशील विषयकेँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चित्रकला सन सृजनशील विषयकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे सकारात्मक उद्यमक श्रेय चित्रकला सन सृजनशील विषयकेँ देबाक बात अछि।

प्रश्न 10584. चित्रकला माध्यमे विद्यार्थी की करबामे सक्षम भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अपन आंतरिक भावना व्यक्त।
उत्तर: घ. अपन आंतरिक भावना व्यक्त।
व्याख्या: स्रोतमे विद्यार्थी आंतरिक भावना व्यक्त करबामे सक्षम भेल कहल अछि।

प्रश्न 10585. भालचन्द्र झाक शिक्षण-दृष्टि मे कला कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. आंतरिक भावनाकेँ बाहर आनबाक माध्यम।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आंतरिक भावनाकेँ बाहर आनबाक माध्यम।
व्याख्या: स्रोतक आरम्भ आ अन्त दुनू चित्रकलाकेँ आत्म-प्रगटीकरणसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 10586. निबन्ध विद्यालय, बालक आ परिवारक कोन सम्बन्ध देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तीनू मिलि बाल-विकासक वातावरण बनबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तीनू मिलि बाल-विकासक वातावरण बनबैत अछि।
व्याख्या: स्कूल-प्रयोग आ पारिवारिक उपाय एक दोसरसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 10587. बाल-शिक्षणक सफलताक लेल शिक्षकमे कोन गुण जरूरी देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. संवेदनशीलता, धैर्य आ सृजनशील प्रयोग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. संवेदनशीलता, धैर्य आ सृजनशील प्रयोग।
व्याख्या: लेखकक अनुभव एहि गुण सभ पर आधारित अछि।

प्रश्न 10588. निबन्धक समेकित संदेश की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बालकक भीतरक भाव बुझू आ ओकरा अभिव्यक्ति दियौ।
उत्तर: घ. बालकक भीतरक भाव बुझू आ ओकरा अभिव्यक्ति दियौ।
व्याख्या: चित्रकला, व्यवहार-बोध आ पारिवारिक सहजता एहि संदेशक भाग अछि।

प्रश्न 10589. कला-शिक्षणकेँ लेखक केवल अतिरिक्त गतिविधि मानैत छथि?
क. नहि, बाल-मन बुझबाक मूल साधन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, बाल-मन बुझबाक मूल साधन।
व्याख्या: स्रोतमे चित्रकलाकेँ प्रभावी आत्म-प्रगटीकरण माध्यम कहल गेल।

प्रश्न 10590. बालकक पुरान अनुभव पर ने चर्चा ने पुनरावृत्ति करबाक सलाह की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बाल-मनक नाजुकता प्रति सावधानी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बाल-मनक नाजुकता प्रति सावधानी।
व्याख्या: लेखक चोटकेँ दोहराए बिना सकारात्मक अनुभव देबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 10591. एहि निबन्धक शैक्षणिक महत्त्व की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बाल-केन्द्रित, कला-आधारित आ परिवार-संवेदनशील शिक्षण-दृष्टि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बाल-केन्द्रित, कला-आधारित आ परिवार-संवेदनशील शिक्षण-दृष्टि।
व्याख्या: पूरा निबन्ध बालकक अनुभव केन्द्रमे राखैत अछि।

प्रश्न 10592. खण्ड १०६४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “हमर शिक्षण-यात्रा” बाल-शिक्षणमे चित्रकला, संवेदना, प्रयोग आ परिवारक सामूहिक भूमिकाकेँ महत्त्व दैत अछि।
उत्तर: घ. “हमर शिक्षण-यात्रा” बाल-शिक्षणमे चित्रकला, संवेदना, प्रयोग आ परिवारक सामूहिक भूमिकाकेँ महत्त्व दैत अछि।
व्याख्या: ई अन्तिम समेकन खण्ड बाल-शिक्षणपर निबन्धक मुख्य भाव समेटैत अछि।

खण्ड १०६५ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: जन्म, परिवार आ आरम्भिक जीवन

प्रश्न 10593. प्रबोध सम्मान २०१० लेल चयनित जीवकान्तसँ साक्षात्कार के लेने छथि?

क. विनीत उत्पल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विनीत उत्पल।

व्याख्या: शीर्षकमे वरिष्ठ पत्रकार आ उदीयमान कवि विनीत उत्पलक साक्षात्कार कहल अछि।

प्रश्न 10594. जीवकान्तक जन्म कहिया भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. २७ जुलाई १९३६।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. २७ जुलाई १९३६।

व्याख्या: साक्षात्कारमे जन्मतिथि २७ जुलाई, १९३६ कहल गेल।

प्रश्न 10595. जीवकान्तक जन्म कतय भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मामाक गाम अभुआढ़, सुपौल जिला।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मामाक गाम अभुआढ़, सुपौल जिला।

व्याख्या: उत्तरमे मामाक गाम सुपौल जिलाक अभुआढ़मे जन्मक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10596. किछु दिन बाद जीवकान्तक लालन-पालन कतय भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपन गाम मधुबनक डेओढ़मे।

उत्तर: घ. अपन गाम मधुबनक डेओढ़मे।

व्याख्या: स्रोतमे मामक गामक बाद मधुबनक डेओढ़मे लालन-पालन कहल अछि।

प्रश्न 10597. जीवकान्तक पिता कतेक भाइ छलथि?

क. चारि भाइ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चारि भाइ।

व्याख्या: साक्षात्कारमे हमर पिता चारि भाइ छलथि कहल गेल।

प्रश्न 10598. बाल्यकालमे परिवारक प्रकृति कोन छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संयुक्त परिवार।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संयुक्त परिवार।

व्याख्या: स्रोतमे संयुक्त परिवार छल कहल अछि।

प्रश्न 10599. संयुक्त परिवारमे कतेक बच्चाक लालन-पालन संगे भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १५-१६ बच्चा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १५-१६ बच्चा।
व्याख्या: जीवकान्त १५-१६ बच्चाक संगे लालन-पालनक बात कहैत छथि।

प्रश्न 10600. जीवकान्तक छोट भाइ के छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नवकांत झा।
उत्तर: घ. नवकांत झा।
व्याख्या: परिवार-उत्तरमे छोट भाइ नवकांत झाक नाम अछि।

प्रश्न 10601. नवकांत झा कोन सेवासँ अवकाश ग्रहण कएलनि?
क. सेंट्रल बैंकक नौकरीसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सेंट्रल बैंकक नौकरीसँ।
व्याख्या: स्रोतमे नवकांत सेंट्रल बैंकक नौकरसँ अवकाशक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10602. खण्ड १०६५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवकान्तक आरम्भिक जीवन संयुक्त परिवार, अभुआढ़-जन्म आ मधुबन-लालन-पालनक पृष्ठभूमिसँ बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्तक आरम्भिक जीवन संयुक्त परिवार, अभुआढ़-जन्म आ मधुबन-लालन-पालनक पृष्ठभूमिसँ बनल।
व्याख्या: ई खण्ड जन्म, गाम आ परिवारक मूल जानकारी समेटैत अछि।

खण्ड १०६६ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्तक परिवार आ लेखन-सहयोग

प्रश्न 10603. जीवकान्तक पैघ बेटा अरुण कतय कार्यरत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चेन्नइमे बैंकमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चेन्नइमे बैंकमे।
व्याख्या: स्रोतमे पैघ बेटा अरुण चेन्नइमे बैंकमे कार्यरत कहल अछि।

प्रश्न 10604. जीवकान्तक छोट बेटा वरुण कतय काज करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लखीसरायमे एल.आई.सी.मे।
उत्तर: घ. लखीसरायमे एल.आई.सी.मे।
व्याख्या: परिवार प्रसंगमे छोट वरुण लखीसरायमे एलआईसीमे काज करैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10605. जीवकान्तक बेटी प्रेम कतय ब्याहल छथि?
क. नेपालक राजविराजमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नेपालक राजविराजमे।
व्याख्या: स्रोतमे बेटी प्रेम नेपालक राज विराजमे ब्याहल अछि।

प्रश्न 10606. घरमे आन लोक मैथिली लिखैत छल कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि, भाइ वा बच्चा मैथिलीमे नहि लिखैत छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि, भाइ वा बच्चा मैथिलीमे नहि लिखैत छल।
व्याख्या: जीवकान्त स्पष्ट कहैत छथि जे घरमे आन लोक मैथिलीमे नहि लिखैत अछि।

प्रश्न 10607. जीवकान्तक कनियाक नाम की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शचि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शचि।
व्याख्या: उत्तरमे कनियाँ शचिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10608. शुरूमे शचि जीवकान्तक लेखनकेँ कोना देखैत छलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. फालतूक काज बुझैत छलीह।
उत्तर: घ. फालतूक काज बुझैत छलीह।
व्याख्या: स्रोतमे हुनका लगैत छल जे फालतूक काज कऽ रहल छी कहल अछि।

प्रश्न 10609. रातिमे शचि लाइट किएक मिझा दैत छलीह?
क. अनिद्राक बीमारीक कारण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनिद्राक बीमारीक कारण।
व्याख्या: जीवकान्त कहैत छथि जे हुनका अनिद्राक बीमारी छलन्हि।

प्रश्न 10610. बादमे शचिक भूमिका कोना बदलल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ सहयोग करए लगलीह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ सहयोग करए लगलीह।
व्याख्या: स्रोतमे बादमे सहयोग करए लगलीह कहल गेल।

प्रश्न 10611. जीवकान्त अपन लेखन लेल किनकर आभारी छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कनियाँक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कनियाँक।
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे एकरा लेल हम कनियाँक आभारी छी।

प्रश्न 10612. खण्ड १०६६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जीवकान्तक लेखन-जीवनमे पारिवारिक विरोधसँ सहयोग धरि बदलैत वातावरण महत्त्वपूर्ण रहल।
उत्तर: घ. जीवकान्तक लेखन-जीवनमे पारिवारिक विरोधसँ सहयोग धरि बदलैत वातावरण महत्त्वपूर्ण रहल।
व्याख्या: ई खण्ड परिवार आ लेखन-सहयोगक कथा अछि।

खण्ड १०६७ : विदेह-सदेह २ — मैथिली साहित्य दिश आकर्षण

प्रश्न 10613. जीवकान्तक कहब अनुसार हुनकर पढ़ाइ कोना शुरू भेल?
क. देरीसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. देरीसँ।
व्याख्या: स्रोतमे पढ़ैक महत्व नहि छल आ पढ़ाइ देरीसँ शुरू भेल कहल अछि।

प्रश्न 10614. स्कूलमे नाम लिखएबाक लेल जीवकान्त के गेल छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ अपने गेल छलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ अपने गेल छलाह।
व्याख्या: उत्तरमे स्कूलमे नाम लिखेबा लेल अपने गेल छलहुँ कहल गेल।

प्रश्न 10615. बाल्यकालमे लिखबाक अभ्यास कोन माध्यमपर होइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. माटिपर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. माटिपर।
व्याख्या: स्रोतमे हम सभ माटिपर लिखैत छलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 10616. गाममे कोन ग्रन्थक पाठ होइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तुलसीदासक रामायणक।
उत्तर: घ. तुलसीदासक रामायणक।
व्याख्या: जीवकान्त गाममे तुलसीदासक रामायणक पाठक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 10617. रामायणक श्लोकपर लोक की करैत छल?
क. तर्क-वितर्क आ अनेक अर्थ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तर्क-वितर्क आ अनेक अर्थ।
व्याख्या: स्रोतमे श्लोकक दसटा अर्थ आ तर्क-वितर्कक प्रसंग अछि।

प्रश्न 10618. घरमे कोन प्रेससँ छपल मोटका रामायण छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बेंकटेश्वर स्टीम प्रेस।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बेंकटेश्वर स्टीम प्रेस।
व्याख्या: उत्तरमे बेंकटेश्वर स्टीम प्रेससँ छपल मोटका रामायण कहल गेल।

प्रश्न 10619. रामायण-पाठ देख जीवकान्तक मोनमे कोन प्रश्न उठल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हमहूँ किएक नहि लिखी?
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हमहूँ किएक नहि लिखी?
व्याख्या: ओ सोचैत छलाह जे तुलसीदासक लिखलपर तर्क होइत अछि तँ हमहूँ किएक नहि लिखी।

प्रश्न 10620. शुरूमे जीवकान्त की लिखलनि जे आर्यावर्तमे छपल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कविता।
उत्तर: घ. कविता।
व्याख्या: स्रोतमे शुरूमे कविता लिखलहुँ, जे आर्यावर्तमे छपल कहल अछि।

प्रश्न 10621. १९६४ ई. मे जीवकान्त कोन परीक्षा प्राइवेटसँ केलनि?
क. बी.ए.।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बी.ए.।
व्याख्या: स्रोतमे १९६४ ई. मे प्राइवेटसँ बी.ए. कएलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 10622. खण्ड १०६७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रामायण-पाठ, माटिपर लिखबाक अभ्यास आ आर्यावर्तमे कविता-प्रकाशन जीवकान्तक लेखकीय आरम्भक आधार बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रामायण-पाठ, माटिपर लिखबाक अभ्यास आ आर्यावर्तमे कविता-प्रकाशन जीवकान्तक लेखकीय आरम्भक आधार बनल।
व्याख्या: ई खण्ड मैथिली-साहित्य दिश आरम्भिक आकर्षणक कथा दैत अछि।

खण्ड १०६८ : विदेह-सदेह २ — मिथिला मिहिर, पहिल कविता आ लेखकीय निर्णय

प्रश्न 10623. जीवकान्त कतेक मास अहापोहमे रहलाह जे हिंदीमे लिखी वा मैथिलीमे?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. छह मास।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. छह मास।

व्याख्या: स्रोतमे छह मास धरि अहापोहमे रहलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 10624. कौन पत्रिका जीवकान्तकेँ बेसी प्रभावित केलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला मिहिर।

उत्तर: घ. मिथिला मिहिर।

व्याख्या: ओ कहैत छथि जे मिथिला मिहिर पढ़ैत छलहुँ, ओहिसँ बेसी प्रभावित भेलहुँ।

प्रश्न 10625. जीवकान्त रवींद्रनाथ टैगोरक साहित्यसँ प्रभावित भेलाह कि नहि?

क. हँ, प्रभावित भेलाह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हँ, प्रभावित भेलाह।

व्याख्या: स्रोतमे रवींद्रनाथ टैगोरक साहित्यसँ सेहो प्रभावित भेलहुँ कहल गेल।

प्रश्न 10626. किछु काल बाद जीवकान्त कोन निर्णय लेलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नित दिन लिखबाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नित दिन लिखबाक।

व्याख्या: स्रोतमे निर्णय लेलहुँ जे हम नित दिन लिखब कहल गेल।

प्रश्न 10627. २४ जनवरी १९६५ कैं मिथिला मिहिरमे जीवकान्तक कोन पहिल कविता छपल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इजोरिया आ टिटही।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इजोरिया आ टिटही।

व्याख्या: स्रोतमे पहिल कविता “इजोरिया आ टिटही” छपल कहल अछि।

प्रश्न 10628. पहिल कविता छपलाक बाद जीवकान्तकेँ की भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जोश।

उत्तर: घ. जोश।

व्याख्या: ओ कहैत छथि जे एकरासँ हमरा जोश भेटल।

प्रश्न 10629. जीवकान्त नौकरीक सिलसिलामे गृह जिला मधुबनीक कोन-कोन गाममे रहलाह?
क. खजौली, देहोल, पोखराम आदि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. खजौली, देहोल, पोखराम आदि।
व्याख्या: स्रोतमे खजौली, देहोल, पोखराम आदि गामक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10630. गाम-जीवनसँ जीवकान्त की पेलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवनानुभवक व्यापक अनुभव।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवनानुभवक व्यापक अनुभव।
व्याख्या: उत्तरमे जीवनानुभवक व्यापक अनुभव लिखलहुँ कहल गेल।

प्रश्न 10631. इंग्लिश मीडियम स्कूल खुजलासँ लोक की बिसरि गेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. संस्कृत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. संस्कृत।
व्याख्या: स्रोतमे इंग्लिश स्कूल खुजलासँ लोक संस्कृत बिसरि गेल कहल अछि।

प्रश्न 10632. खण्ड १०६८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिला मिहिर, पहिल कविता आ गाम-जीवनक अनुभव जीवकान्तक मैथिली-लेखन निर्णयकेँ दृढ़ केलक।
उत्तर: घ. मिथिला मिहिर, पहिल कविता आ गाम-जीवनक अनुभव जीवकान्तक मैथिली-लेखन निर्णयकेँ दृढ़ केलक।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक निर्णय आ आरम्भिक प्रकाशनक आधार देखबैत अछि।

खण्ड १०६९ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्तक कविता-दृष्टि

प्रश्न 10633. जीवकान्त कोन विधाकेँ अपन प्रिय विधा कहैत छथि?
क. कविता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कविता।
व्याख्या: स्रोतमे कविता हमर प्रिय अछि कहल गेल।

प्रश्न 10634. जीवकान्तक अनुसार कोनो गप कवितामे कोना कहल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बेसी नीकसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बेसी नीकसँ।
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे कोनो गप कवितामे बेसी नीकसँ कहल जा सकैत अछि।

प्रश्न 10635. आलोचक हुनकर कथा-लेखनपर कोन टिप्पणी करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कथामे सब किछु अलग-अलग नहि करैत छी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कथामे सब किछु अलग-अलग नहि करैत छी।
व्याख्या: स्रोतमे आलोचकक एहि टिप्पणीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10636. जीवकान्तक कथामे पाठककेँ की करए पड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अपन दिशसँ सूत्र जोड़ए।
उत्तर: घ. अपन दिशसँ सूत्र जोड़ए।
व्याख्या: उत्तरमे पाठककेँ अपन दिशसँ सूत्र जोड़ए पड़ैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10637. जीवकान्त अपन लेखनक मूल की मानैत छथि?
क. कविता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कविता।
व्याख्या: ओ स्पष्ट कहैत छथि जे हमर लेखनक मूल कविता अछि।

प्रश्न 10638. जीवकान्तकेँ अपन गप कोन चीजक संग प्रेषित करब नीक लगैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कविताक संग।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कविताक संग।
व्याख्या: स्रोतमे अपन गप कविताक संग प्रेषित करैमे नीक लगैत अछि।

प्रश्न 10639. कविताक आरम्भ कतहुसँ हो, अन्ततः कहाँ पहुँचैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तार्किक परिणति तक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तार्किक परिणति तक।
व्याख्या: स्रोतमे कविताक आरंभ कतहुसँ हो, तार्किक परिणति तक पहुँचैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 10640. लोकक अनुसार जीवकान्तक कविता आखिरमे की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. टर्न लऽ लैत अछि।
उत्तर: घ. टर्न लऽ लैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे लोक कहैत अछि जे हमर कविता आखिरमे टर्न लऽ लैत अछि।

प्रश्न 10641. अलग-अलग पाठक जीवकान्तक कवितामे की देखैत अछि?
क. अलग-अलग गप।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अलग-अलग गप।
व्याख्या: स्रोतमे अलग-अलग पाठक अलग-अलग गप देखैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 10642. खण्ड १०६९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवकान्त कविता कैँ लेखनक मूल, गहन अभिव्यक्ति आ बहु-पाठ सम्भावनाक विधा मानैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्त कविता कैँ लेखनक मूल, गहन अभिव्यक्ति आ बहु-पाठ सम्भावनाक विधा मानैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड हुनकर कविता-दृष्टि खोलैत अछि।

खण्ड १०७० : विदेह-सदेह २ — प्रोत्साहन, मिथिला मिहिर आ उपन्यास

प्रश्न 10643. जीवकान्तक कविता पढ़ि यात्रीजी सोमदेवकेँ की कहलथिन?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जीवकान्त कहियो उपन्यास लिखताह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जीवकान्त कहियो उपन्यास लिखताह।
व्याख्या: स्रोतमे यात्रीजीक एहि कथनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10644. मिथिला मिहिरसँ जीवकान्तकेँ की आएल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लिखबाक आमंत्रण।
उत्तर: घ. लिखबाक आमंत्रण।
व्याख्या: उत्तरमे मिथिला मिहिरसँ लिखबाक आमंत्रण आएल कहल गेल।

प्रश्न 10645. मिथिला मिहिरक आमंत्रणकेँ जीवकान्त कोना लेलनि?
क. चुनौतीक रूपमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चुनौतीक रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे एकरा चुनौतीक रूपमे लेलहुँ कहल गेल।

प्रश्न 10646. जीवकान्त शिक्षक संघसँ जुड़ल रहबाक कारण कतय जाइत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पटना।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पटना।
व्याख्या: स्रोतमे शिक्षक संघसँ जुड़ल रही ताहिसँ पटना जाइत रही कहल अछि।

प्रश्न 10647. पटना जाएबाक काल जीवकान्तकेँ की भेटैत रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लोकसँ भेट आ प्रोत्साहन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लोकसँ भेट आ प्रोत्साहन।
व्याख्या: स्रोतमे पटनामे लोकसँ भेट आ प्रोत्साहनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10648. जीवकान्त कतेक उपन्यास फरमाइशपर लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तीनटा।
उत्तर: घ. तीनटा।
व्याख्या: स्रोतमे तीनटा उपन्यास फरमाइशपर लिखलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 10649. फरमाइशपर लिखल उपन्यास कोन रूपमे छपल?
क. धारावाहिक रूपमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. धारावाहिक रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे उपन्यास धारावाहिक रूपमे छपल कहल गेल।

प्रश्न 10650. जीवकान्तक लेखन-यात्रामे प्रोत्साहन कोन-कोन स्रोतसँ भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. यात्रीजी, मिथिला मिहिर आ पटना-संपर्कसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. यात्रीजी, मिथिला मिहिर आ पटना-संपर्कसँ।
व्याख्या: साक्षात्कारमे एहि तीनू प्रसंगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10651. मिथिला मिहिरक भूमिका जीवकान्त लेल की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लेखनक मंच आ चुनौती।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लेखनक मंच आ चुनौती।
व्याख्या: आमंत्रणकेँ चुनौती मानि ओ लिखैत रहलाह।

प्रश्न 10652. खण्ड १०७०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. यात्रीजीक संकेत, मिथिला मिहिरक आमंत्रण आ पटना-संपर्क जीवकान्तक गद्य-लेखनकेँ गति देलक।
उत्तर: घ. यात्रीजीक संकेत, मिथिला मिहिरक आमंत्रण आ पटना-संपर्क जीवकान्तक गद्य-लेखनकेँ गति देलक।
व्याख्या: ई खण्ड प्रोत्साहन आ उपन्यासक आरम्भ समेटैत अछि।

खण्ड १०७१ : विदेह-सदेह २ — पुरस्कार, पत्रिका आ अनुवाद

प्रश्न 10653. साहित्य अकादमीक पुरस्कारकेँ जीवकान्त लोकक कोन दृष्टिसँ देखैत कहलथि?

क. संदेहक दृष्टिसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संदेहक दृष्टिसँ।

व्याख्या: स्रोतमे पुरस्कारकेँ लोक संदेहक दृष्टिसँ देखैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10654. जीवकान्त अपन विषयमे साहित्य अकादमीक राजनीति जनैत छथि कि नहि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नहि जनैत।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नहि जनैत।

व्याख्या: ओ कहैत छथि जे हम साहित्य अकादमीक पॉलिटिक्स नहि जनैत छी।

प्रश्न 10655. जीवकान्त कोन जीवन-स्थानक बात पुरस्कार-राजनीतिसँ दूरी लेल कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गाममे रहैत छी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गाममे रहैत छी।

व्याख्या: स्रोतमे गाममे रहैत छी आ दोस्त नहि बनेलहुँक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10656. समकालीन भारतीय साहित्य शुरू भेलापर जीवकान्त की कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किछु अनुवाद।

उत्तर: घ. किछु अनुवाद।

व्याख्या: स्रोतमे तखन हम किछु अनुवाद कएलहुँ कहल गेल।

प्रश्न 10657. समकालीन भारतीय साहित्यमे मैथिलीमे पहिल कहानी केकर आएल कहल गेल?

क. जीवकान्तक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवकान्तक।

व्याख्या: ओ कहैत छथि जे मैथिलीमे पहिल कहानी हमरे आएल।

प्रश्न 10658. एकटा अनुवाद के कएलथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. केदार कानन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. केदार कानन।

व्याख्या: स्रोतमे एकटा अनुवाद केदार कानन केलथि कहल गेल।

प्रश्न 10659. हिंदी संपादक आ पत्रिका जीवकान्तक रचना कोना छपैत रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आदरसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आदरसँ।
व्याख्या: स्रोतमे हिंदी संपादक आ पत्रिका आदरसँ रचना छपैत रहए कहल अछि।

प्रश्न 10660. कतेक शहरसँ प्रकाशित पत्रिकामे जीवकान्तक रचना छपै लागल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कोलकाता, मुंबइ आ दिल्ली।
उत्तर: घ. कोलकाता, मुंबइ आ दिल्ली।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तीन शहरक पत्रिकाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10661. पुरस्कार-विलम्ब पर जीवकान्तक रुख की छल?
क. ओहि सभमे नहि पड़ैत छी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओहि सभमे नहि पड़ैत छी।
व्याख्या: स्रोतमे भऽ सकैत अछि पुरस्कार विलंबसँ भेटल, मुदा एहि सभमे हम नहि पड़ैत छी कहल गेल।

प्रश्न 10662. खण्ड १०७१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवकान्त पुरस्कार-राजनीतिसँ दूर रहि अनुवाद, पत्रिका आ बहुभाषिक प्रकाशनद्वारा मैथिलीकेँ व्यापक मंच धरि लऽ गेलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्त पुरस्कार-राजनीतिसँ दूर रहि अनुवाद, पत्रिका आ बहुभाषिक प्रकाशनद्वारा मैथिलीकेँ व्यापक मंच धरि लऽ गेलाह।
व्याख्या: ई खण्ड पुरस्कार, पत्रिका आ अनुवादक प्रसंग जोड़ैत अछि।

खण्ड १०७२ : विदेह-सदेह २ — तकैत अछि चिड़ै आ काव्य-स्वीकृति

प्रश्न 10663. जीवकान्तक पहिल कविता-संग्रहक नाम की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तकैत अछि चिड़ै।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तकैत अछि चिड़ै।
व्याख्या: स्रोतमे 2003 मे “तकैत अछि चिड़ै” कविता संग्रह छपल कहल गेल।

प्रश्न 10664. “तकैत अछि चिड़ै” कोन साल छपल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. २००३।
उत्तर: घ. २००३।
व्याख्या: साक्षात्कारमे 2003 मे एहि संग्रहक प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10665. कोन संग्रहपर साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल?
क. तकैत अछि चिड़ै।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तकैत अछि चिड़ै।
व्याख्या: स्रोतमे एहि संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार देलक कहल अछि।

प्रश्न 10666. “तकैत अछि चिड़ै”क हिंदी अनुवादक नाम की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. निशांतक चिड़िया।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. निशांतक चिड़िया।
व्याख्या: स्रोतमे ओकर हिंदी अनुवाद “निशांतक चिड़िया” छपल कहल गेल।

प्रश्न 10667. हिंदी अनुवाद के छापलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साहित्य अकादमी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साहित्य अकादमी।
व्याख्या: स्रोतमे एकरो साहित्य अकादमी छपलक कहल गेल।

प्रश्न 10668. जीवकान्तक लेखनपर विश्वविद्यालयमे की भऽ रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शोध।
उत्तर: घ. शोध।
व्याख्या: स्रोतमे ढेरे विश्वविद्यालयमे शोध भऽ रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10669. प्रखर आलोचक जीवकान्तक लेखनबारे की करि रहल अछि?
क. प्रशंसा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रशंसा।
व्याख्या: साक्षात्कारमे प्रखर आलोचक लेखनक प्रशंसा कए रहल अछि कहल अछि।

प्रश्न 10670. “तकैत अछि चिड़ै” प्रसंग जीवकान्तक रचनात्मक स्थिति की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. काव्य-स्वीकृति आ संस्थागत मान्यता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. काव्य-स्वीकृति आ संस्थागत मान्यता।
व्याख्या: पुरस्कार, अनुवाद आ शोध एहि स्वीकृतिक संकेत अछि।

प्रश्न 10671. हिंदी अनुवादक प्रकाशन कोन बात सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली कविताक भाषापार पहुँच।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली कविताक भाषापार पहुँच।
व्याख्या: मैथिली संग्रहक हिंदी अनुवाद व्यापक पाठक धरि पहुँच देखबैत अछि।

प्रश्न 10672. खण्ड १०७२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “तकैत अछि चिड़ै” जीवकान्तक काव्य-स्वीकृति, पुरस्कार, अनुवाद आ अकादमिक रुचिक केन्द्र बनल।
उत्तर: घ. “तकैत अछि चिड़ै” जीवकान्तक काव्य-स्वीकृति, पुरस्कार, अनुवाद आ अकादमिक रुचिक केन्द्र बनल।
व्याख्या: ई खण्ड संग्रह आ ओकर स्वीकार्यता समेटैत अछि।

खण्ड १०७३ : विदेह-सदेह २ — समीक्षा-प्रवृत्ति आ नव लेखक

प्रश्न 10673. जीवकान्त स्वयंकेँ समीक्षक रूपमे कतेक प्रोफेशनल मानैत छथि?
क. ओते प्रोफेशनल नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओते प्रोफेशनल नहि।
व्याख्या: स्रोतमे समीक्षक तौर पर हम ओते प्रोफेशनल नहि छी कहल अछि।

प्रश्न 10674. नव पोथी पढ़लाक बाद जीवकान्त की करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. छोट-छोट टिप्पणी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. छोट-छोट टिप्पणी।
व्याख्या: उत्तरमे नव पोथी पढ़लाक बाद छोट-छोट टिप्पणी करैत छी कहल अछि।

प्रश्न 10675. ४० सालमे जीवकान्त लगभग कतेक पोथीपर टिप्पणी कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ६०-७० टा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ६०-७० टा।
व्याख्या: स्रोतमे पूरे ४० सालमे ६०-७० टा पोथीपर टिप्पणीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10676. समीक्षा बाद जीवकान्त कोन क्रियाक उल्लेख करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हास-परिहास आ चर्चा।
उत्तर: घ. हास-परिहास आ चर्चा।
व्याख्या: स्रोतमे मन बहलबैत छी, हास-परिहास आ चर्चा करैत छी कहल अछि।

प्रश्न 10677. जीवकान्तक अनुसार नव लेखक कोना आबि रहल अछि?
क. तेजीसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तेजीसँ।
व्याख्या: स्रोतमे एखन नवलेखक तेजीसँ आबि रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10678. नव लेखक कतयसँ सेहो आबि रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. देहातसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. देहातसँ।
व्याख्या: स्रोतमे देहातसँ सेहो लेखक आबि रहल अछि।

प्रश्न 10679. बीच वाला पीढ़ीमे कतेक लेखक भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अद्भुत लेखक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अद्भुत लेखक।
व्याख्या: स्रोतमे बीच वाला पीढ़ीमे अद्भुत लेखक भेल कहल अछि।

प्रश्न 10680. महाप्रकाश आ सुभाषचंद्र यादव अपन रचनामे की चित्रित करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लोक-विवशता आ निर्धनता।
उत्तर: घ. लोक-विवशता आ निर्धनता।
व्याख्या: स्रोतमे ई दुनू लोक विवशता, निर्धनताक विलक्षण चित्रण करैत छथि।

प्रश्न 10681. मैथिली कविता जीवकान्तक अनुसार कोना भऽ रहल अछि?
क. गंभीर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गंभीर।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली कविता सेहो गंभीर भऽ रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10682. खण्ड १०७३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवकान्त समीक्षा कें अनौपचारिक टिप्पणीक रूपमे करैत छथि आ नव लेखक/नव कविता मे गंभीरता देखैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्त समीक्षा कें अनौपचारिक टिप्पणीक रूपमे करैत छथि आ नव लेखक/नव कविता मे गंभीरता देखैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-प्रवृत्ति आ नवलेखनक मूल्यांकन करैत अछि।

खण्ड १०७४ : विदेह-सदेह २ — मैथिली समीक्षा पर जीवकान्तक कठोर दृष्टि

प्रश्न 10683. जीवकान्तक अनुसार समीक्षा मूलतः कतयसँ आएल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यूरोपसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यूरोपसँ।

व्याख्या: स्रोतमे समीक्षा यूरोपसँ आएल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10684. यूरोपमे समीक्षा कोन आधारपर होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्वेषण आ समुचित परिप्रेक्ष्य।

उत्तर: घ. अन्वेषण आ समुचित परिप्रेक्ष्य।

व्याख्या: स्रोतमे यूरोपमे अन्वेषणक संग समुचित परिप्रेक्ष्यमे समीक्षा कहल अछि।

प्रश्न 10685. जीवकान्तक अनुसार हिन्दुस्तान एहि विधामे कोना अछि?

क. पिछड़ल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिछड़ल।

व्याख्या: स्रोतमे हिन्दुस्तान एहि विधामे पिछड़ल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10686. जीवकान्त हिंदी समीक्षा पर की टिप्पणी करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नीक समीक्षा नहि भऽ रहल अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नीक समीक्षा नहि भऽ रहल अछि।

व्याख्या: स्रोतमे हिंदी भाषामे सेहो नीक समीक्षा नहि भऽ रहल अछि कहल अछि।

प्रश्न 10687. जीवकान्त नामवर सिंहबारे लोक-वेदक कोन कथन उद्धृत करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा नहि, भाषण दैत छथि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा नहि, भाषण दैत छथि।

व्याख्या: स्रोतमे नामवर सिंह समीक्षा नहि कऽ भाषण दैत छथिक टिप्पणी अछि।

प्रश्न 10688. समीक्षामे जीवकान्त कोन कमी देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तटस्थ मूल्यांकनक कमी।

उत्तर: घ. तटस्थ मूल्यांकनक कमी।

व्याख्या: स्रोतमे तटस्थ भऽ कऽ मूल्यांकन नहि भऽ रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10689. नीक लेखक आ अयोग्य लेखकक सम्बन्धमे जीवकान्तक शिकायत की अछि?
क. नीक लेखक दबा देल जाइत अछि, अयोग्यकेँ कन्हापर बैसा देल जाइत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नीक लेखक दबा देल जाइत अछि, अयोग्यकेँ कन्हापर बैसा देल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रकारक तीक्ष्ण टिप्पणी अछि।

प्रश्न 10690. विद्यापति पर जीवकान्तक अनुसार मैथिलीमे की कमी अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नीक समीक्षा नहि भेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नीक समीक्षा नहि भेल।
व्याख्या: स्रोतमे विद्यापतिपर आइ धरि कियो मैथिलीमे नीक समीक्षा नहि केलक कहल अछि।

प्रश्न 10691. “सोनारक काज लोहारक हथौड़ीसँ नहि” रूपक की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विधा-योग्य साधन आ दक्षताक आवश्यकता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विधा-योग्य साधन आ दक्षताक आवश्यकता।
व्याख्या: ई रूपक बतबैत अछि जे समीक्षा लेल सही बौद्धिक औजार चाही।

प्रश्न 10692. खण्ड १०७४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जीवकान्त मैथिली-हिन्दी समीक्षा मे तटस्थता, परिप्रेक्ष्य आ बौद्धिक औजारक गंभीर कमी देखैत छथि।
उत्तर: घ. जीवकान्त मैथिली-हिन्दी समीक्षा मे तटस्थता, परिप्रेक्ष्य आ बौद्धिक औजारक गंभीर कमी देखैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-विमर्शक कठोर आलोचना प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १०७५ : विदेह-सदेह २ — अनुभव, शिक्षक आ मैथिली प्रचार

प्रश्न 10693. जीवकान्तक अनुसार सभ लोकक की होइत अछि?
क. अपन अनुभव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अपन अनुभव।
व्याख्या: स्रोतमे सभ लोकक अपन अनुभव होइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10694. लेखक अपन अनुभवकेँ ठीक-ठाक कए की बना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शास्त्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शास्त्र।
व्याख्या: उत्तरमे ओकरे ठीक-ठाक कए लेखक शास्त्र बना दैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 10695. सभटा लेखक अपन अनुभवकेँ की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पुनर्जीवित।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पुनर्जीवित।
व्याख्या: स्रोतमे सभटा लेखक अपन अनुभवकेँ पुनर्जीवित करैत अछि।

प्रश्न 10696. जीवकान्तक अनुसार मैथिली प्रचार-प्रसार कोन बातसँ बढ़त?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शिक्षक स्तर बढ़लासँ।
उत्तर: घ. शिक्षक स्तर बढ़लासँ।
व्याख्या: स्रोतमे जहिना-जहिना शिक्षक स्तर बढ़त, तहिना मैथिली प्रचार-प्रसार बढ़त कहल अछि।

प्रश्न 10697. मिथिलामे जीवकान्त कोन कमी देखैत छथि?
क. शिक्षकक कमी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शिक्षकक कमी।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिलामे शिक्षकक कमी अछि कहल गेल।

प्रश्न 10698. स्त्री शिक्षा पर जीवकान्तक टिप्पणी की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एखनो बेसी नहि अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एखनो बेसी नहि अछि।
व्याख्या: स्रोतमे स्त्री शिक्षा एखनो बेसी नहि अछि कहल अछि।

प्रश्न 10699. साक्षरता बढ़लासँ आर्थिक स्थिति पर की असर कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आर्थिक स्थिति नीक होएत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आर्थिक स्थिति नीक होएत।
व्याख्या: स्रोतमे साक्षरता बढ़त तँ आर्थिक स्थिति नीक होएत कहल अछि।

प्रश्न 10700. जीवकान्तक अनुसार मैथिली कतय बढ़ि रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. इंटरनेटपर।
उत्तर: घ. इंटरनेटपर।
व्याख्या: स्रोतमे इंटरनेटेपर मैथिली बढ़ि रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10701. जीवकान्त कोन व्यक्ति/संस्थाक काज नीक कहलथि?
क. गौरीनाथ आ कोलकाताक स्वस्ति फाउंडेशन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गौरीनाथ आ कोलकाताक स्वस्ति फाउंडेशन।
व्याख्या: स्रोतमे गौरीनाथ आ स्वस्ति फाउंडेशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10702. खण्ड १०७५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवकान्त अनुभव, शिक्षक-स्तर, साक्षरता, स्त्री-शिक्षा आ इंटरनेटकेँ मैथिली विकाससँ जोड़ैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्त अनुभव, शिक्षक-स्तर, साक्षरता, स्त्री-शिक्षा आ इंटरनेटकेँ मैथिली विकाससँ जोड़ैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड प्रचार-प्रसारक सामाजिक आधार बतबैत अछि।

खण्ड १०७६ : विदेह-सदेह २ — विद्रोही प्रवृत्ति आ अन्याय-विरोध

प्रश्न 10703. जीवकान्तक अनुसार जनताकेँ सरकारसँ की चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सुरक्षा आ सड़क।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सुरक्षा आ सड़क।
व्याख्या: स्रोतमे जनताकेँ सुरक्षा चाही, सड़क चाही कहल गेल।

प्रश्न 10704. आजादीक संग जीवकान्त कोन बातक उल्लेख करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. त्रुटि सेहो भेटल।
उत्तर: घ. त्रुटि सेहो भेटल।
व्याख्या: स्रोतमे आजादी भेटल, त्रुटि सेहो भेटल कहल गेल।

प्रश्न 10705. कोन लोकक संग दुर्व्यवहार भऽ रहल अछि कहल गेल?
क. कमजोर लोकक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कमजोर लोकक।
व्याख्या: स्रोतमे कमजोर लोकक संग दुर्व्यवहार भऽ रहल अछि।

प्रश्न 10706. जीवकान्तक मनोदशा कोन पक्षमे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अन्यायक खिलाफ आवाज उठएबाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अन्यायक खिलाफ आवाज उठएबाक।
व्याख्या: स्रोतमे अन्यायक खिलाफ आवाज उठबैत हमर मनोदशा अछि कहल अछि।

प्रश्न 10707. १९७० ई. मे कोलकातामे जीवकान्तक भेट किनकासँ भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. किरणजीसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. किरणजीसँ।
व्याख्या: स्रोतमे १९७० ई. मे कोलकातामे किरणजीसँ भेटक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10708. किरणजी जीवकान्तक स्टैंडबारे की कहलथिन?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सत्ता विरोधी अछि।
उत्तर: घ. सत्ता विरोधी अछि।
व्याख्या: स्रोतमे किरणजी कहलथि जे हमर स्टैंड सत्ता विरोधी अछि।

प्रश्न 10709. जीवकान्त किरणजीक कथनकेँ कोना मानैत छथि?
क. हुनकर गप ठीक छल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हुनकर गप ठीक छल।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकर गप ठीक छल कहल अछि।

प्रश्न 10710. जीवकान्तक विद्रोह कोन सामाजिक आधारसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कमजोर लोक आ अन्याय-विरोधसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कमजोर लोक आ अन्याय-विरोधसँ।
व्याख्या: साक्षात्कारमे कमजोर लोकक दुर्व्यवहार आ अन्यायक विरोध मुख्य कारण अछि।

प्रश्न 10711. सत्ता-विरोधी रुख जीवकान्तक रचना-दृष्टिमे कोन संकेत दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. न्यायमुखी चेतना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. न्यायमुखी चेतना।
व्याख्या: अन्यायक खिलाफ आवाज उठाएब रचनात्मक नैतिकता देखबैत अछि।

प्रश्न 10712. खण्ड १०७६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जीवकान्तक विद्रोही प्रवृत्ति सत्ता-विरोध नहि मात्र, कमजोर लोकक पक्ष आ अन्याय-विरोधक साहित्यिक नैतिकता अछि।
उत्तर: घ. जीवकान्तक विद्रोही प्रवृत्ति सत्ता-विरोध नहि मात्र, कमजोर लोकक पक्ष आ अन्याय-विरोधक साहित्यिक नैतिकता अछि।
व्याख्या: ई खण्ड रचनात्मक विद्रोहक आधार खोलैत अछि।

खण्ड १०७७ : विदेह-सदेह २ — मार्क्सवाद, गरीबी आ समानता

प्रश्न 10713. जीवकान्तक अनुसार मार्क्सवादक पहिने गरीबी छल कि नहि?

क. छल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छल।

व्याख्या: स्रोतमे मार्क्सवादक पहिने सेहो गरीबी छल कहल गेल।

प्रश्न 10714. गरीबीक व्यापक वर्णन जीवकान्त कोन कविक कवितामे देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विद्यापति।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विद्यापति।

व्याख्या: स्रोतमे विद्यापति अपन कवितामे गरीबीक व्यापक वर्णन कएने छथि कहल गेल।

प्रश्न 10715. गरीबी-सन्दर्भमे जीवकान्त कोन गीतक उल्लेख करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कखन हरब दुख मोर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कखन हरब दुख मोर।

व्याख्या: स्रोतमे “कखन हरब दुख मोर” गीतक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10716. जीवकान्त अपन लेखनकेँ मार्क्सवादसँ प्रभावित मानैत छथि कि नहि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हँ, प्रभावित मानैत छथि।

उत्तर: घ. हँ, प्रभावित मानैत छथि।

व्याख्या: स्रोतमे हम सेहो मार्क्सवादसँ प्रभावित छी कहल गेल।

प्रश्न 10717. मार्क्सवादक अतिरिक्त जीवकान्त किनकासँ प्रभावित छथि?

क. लोहियासँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोहियासँ।

व्याख्या: स्रोतमे लोहियासँ सेहो प्रभावित छी कहल अछि।

प्रश्न 10718. जीवकान्त कोन विचारकेँ प्रमुखता दैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बराबरी आ समानता।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बराबरी आ समानता।

व्याख्या: स्रोतमे बराबरी आ समानताक विचारकेँ प्रमुखता दैत छी कहल गेल।

प्रश्न 10719. मार्क्सक समर्थक रहबाक लेल जीवकान्त की नहि लेलहुँ कहलथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दीक्षा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दीक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे एकरा लेल दीक्षा नहि लेलहुँ कहल गेल।

प्रश्न 10720. गरीबीक खिलाफ गरीबक पक्षमे की सभ दिन होइत रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लिखल जाइत रहल अछि।
उत्तर: घ. लिखल जाइत रहल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे गरीबीक खिलाफ गरीबक पक्षमे सभ दिन लिखल जाइत रहल अछि।

प्रश्न 10721. जीवकान्तक मार्क्सवाद बोध कोन मूल्यपर केन्द्रित अछि?
क. समानता आ गरीबक पक्ष।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समानता आ गरीबक पक्ष।
व्याख्या: उत्तर सभमे गरीबी, बराबरी, समानता आ गरीबक पक्ष प्रमुख अछि।

प्रश्न 10722. खण्ड १०७७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवकान्त मार्क्सवादकेँ गरीबी-विमर्श, बराबरी, समानता आ लोहियावादी प्रभावक संग पढ़ैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्त मार्क्सवादकेँ गरीबी-विमर्श, बराबरी, समानता आ लोहियावादी प्रभावक संग पढ़ैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड विचारधारा आ सामाजिक न्यायक सम्बन्ध देखबैत अछि।

खण्ड १०७८ : विदेह-सदेह २ — मार्क्सवादक सीमा, गांधी आ भारतीय संस्कृति

प्रश्न 10723. जीवकान्तक अनुसार मार्क्सवाद उत्तम विचार भएओ कोन पक्षमे बेसी अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हिंसाक पक्षमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हिंसाक पक्षमे।
व्याख्या: स्रोतमे मार्क्सवाद उत्तम विचार छी, मुदा हिंसाक पक्षमे बेसी अछि कहल गेल।

प्रश्न 10724. भारतीय राजनीति आ संस्कृतिमे मार्क्सवादक संभावना कतेक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कम।
उत्तर: घ. कम।
व्याख्या: स्रोतमे भारतीय राजनीति आ संस्कृतिमे मार्क्सवादक संभावना कम अछि।

प्रश्न 10725. जीवकान्तक अनुसार भारतमे कोन विचार प्रबल भेल?

क. समाजवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समाजवाद।

व्याख्या: मार्क्सवादक कम संभावना कारण एतए समाजवाद प्रबल भेल कहल अछि।

प्रश्न 10726. भारतीय संस्कृति कोन सूत्रपर आधारित कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सर्वे भवन्तु सुखिनः।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सर्वे भवन्तु सुखिनः।

व्याख्या: स्रोतमे भारतीय संस्कृति “सर्वे भवन्तु सुखिनः” पर आधारित कहल गेल।

प्रश्न 10727. एहि आधारपर जीवकान्त किनका प्रासंगिक मानैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गांधी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गांधी।

व्याख्या: स्रोतमे एतए गांधी प्रासंगिक छथि कहल गेल।

प्रश्न 10728. मार्क्सवाद बारंबार की करैत अछि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपन रास्तासँ भटकैत अछि।

उत्तर: घ. अपन रास्तासँ भटकैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे मार्क्सवाद बारंबार अपन रास्तासँ भटकैत अछि।

प्रश्न 10729. मार्क्सवादक नीति जमीनपर उतारब कोना कहल गेल?

क. कठिन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कठिन।

व्याख्या: स्रोतमे मार्क्सवादक नीतिकेँ जमीनपर उतारब कठिन अछि।

प्रश्न 10730. रूसक जमीनपर उतरल मार्क्सवाद कोन चीजक समर्थक बनि गेल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राष्ट्रवादक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राष्ट्रवादक।

व्याख्या: स्रोतमे रूसक जमीनपर उतरल मार्क्सवाद राष्ट्रवादक प्रबल समर्थक बनि गेल कहल अछि।

प्रश्न 10731. जीवकान्तक मार्क्सवाद-आलोचना कोन रूपक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समर्थक-आलोचकक विवेकपूर्ण स्थिति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समर्थक-आलोचकक विवेकपूर्ण स्थिति।
व्याख्या: ओ प्रभाव स्वीकार करैत छथि मुदा हिंसा आ व्यवहारिक सीमाक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 10732. खण्ड १०७८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जीवकान्त मार्क्सवादक समानतामूल्य स्वीकार करैत, हिंसा आ भारतीय परिस्थिति मे ओकर सीमाकेँ गांधी-संस्कृति संदर्भमे देखैत छथि।
उत्तर: घ. जीवकान्त मार्क्सवादक समानतामूल्य स्वीकार करैत, हिंसा आ भारतीय परिस्थिति मे ओकर सीमाकेँ गांधी-संस्कृति संदर्भमे देखैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड मार्क्सवादक समालोचनात्मक विवेचन अछि।

खण्ड १०७९ : विदेह-सदेह २ — सुमनजी, अध्यात्म आ सांस्कृतिक स्मृति

प्रश्न 10733. सुमनजीक बड़ाइ लिखलापर जीवकान्त अपन स्थिति कोना कहलथि?
क. अछूत भऽ गेलहुँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अछूत भऽ गेलहुँ।
व्याख्या: स्रोतमे “सुमन” जीक बड़ाइ लिखलहुँ तँ हम अछूत भऽ गेलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 10734. जीवकान्तक अनुसार सुमनजीक कोन लेखन अद्भुत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अध्यात्मपर लिखल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अध्यात्मपर लिखल।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकर अध्यात्मपर लिखल अद्भुत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10735. सुमनजी कोन भाषा मे सेहो लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. संस्कृतमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. संस्कृतमे।
व्याख्या: स्रोतमे संस्कृतमे लिखलन्हि कहल अछि।

प्रश्न 10736. सुमनजी कोन विषयक ध्वजवाहक कहल गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संस्कृति आ मूल्यक।
उत्तर: घ. संस्कृति आ मूल्यक।
व्याख्या: स्रोतमे ओ संस्कृति आ मूल्यक विषयक ध्वजवाहक छलाह कहल गेल।

प्रश्न 10737. सुमनजी मैथिली कविताकेँ कतय लऽ गेलथि कहल गेल?
क. उत्कृष्टता तक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. उत्कृष्टता तक।
व्याख्या: स्रोतमे ओ मैथिली कविताकेँ उत्कृष्टता तक लऽ गेलथि।

प्रश्न 10738. जीवकान्त मार्क्सवादी भएओ की बिसरि जाएब उचित नहि मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. वेद-पुराण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. वेद-पुराण।
व्याख्या: स्रोतमे मार्क्सवादी भऽ जाइ तकर माने वेद-पुराण बिसरि जाइ नहि कहल गेल।

प्रश्न 10739. अभिनंदन ग्रंथ लेल लेख कोना लिखाओल गेल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. फरमाइशी लेख।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. फरमाइशी लेख।
व्याख्या: स्रोतमे अभिनंदन ग्रंथ लेल फरमाइशी लेख लिखाओल गेल छल।

प्रश्न 10740. जीवकान्त सुमनजीपर कोन पक्ष लिखलथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. काव्य आ आध्यात्म।
उत्तर: घ. काव्य आ आध्यात्म।
व्याख्या: स्रोतमे हम हुनकर काव्य आ आध्यात्मपर लिखलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 10741. सुमनजी प्रसंग जीवकान्तक वैचारिकता की देखबैत अछि?
क. मार्क्सवादक संग सांस्कृतिक स्मृतिक स्वीकृति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मार्क्सवादक संग सांस्कृतिक स्मृतिक स्वीकृति।
व्याख्या: ओ मार्क्सवादी भएओ वेद-पुराण आ मूल्य-संस्कृति नहि बिसरबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 10742. खण्ड १०७९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवकान्त सुमनजीक काव्य-अध्यात्मकेँ मान दैत मार्क्सवाद आ सांस्कृतिक परम्परा बीच संवाद स्थापित करैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्त सुमनजीक काव्य-अध्यात्मकेँ मान दैत मार्क्सवाद आ सांस्कृतिक परम्परा बीच संवाद स्थापित करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड वैचारिक उदारता आ मूल्य-स्मृति पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०८० : विदेह-सदेह २ — कवितामे परिवर्तन आ विषय-विस्तार

प्रश्न 10743. जीवकान्त पाँच साल बाद की बदललहुँ कहलथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपन विषय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपन विषय।
व्याख्या: स्रोतमे पाँच साल बाद हम अपन विषय परिवर्तन केलहुँ कहल गेल।

प्रश्न 10744. जीवकान्तक अनुसार हर क्षेत्रमे की करबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परिवर्तन।
उत्तर: घ. परिवर्तन।
व्याख्या: स्रोतमे हर क्षेत्रमे अपनेकेँ परिवर्तन करबाक चाही कहल गेल।

प्रश्न 10745. जे परिवर्तनक समर्थक होएत, ओ कोना होएत कहल गेल?
क. कालजयी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कालजयी।
व्याख्या: स्रोतमे जे परिवर्तनक समर्थक होएत ओ कालजयी होएत कहल अछि।

प्रश्न 10746. असहमतिक कविता कतयसँ आएल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पंजाब आ बंगालसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पंजाब आ बंगालसँ।
व्याख्या: स्रोतमे असहमतिक कविता पंजाब आ बंगालसँ आएल।

प्रश्न 10747. बंगालक कोन कविक उल्लेख भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सुभाष मुखोपाध्याय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सुभाष मुखोपाध्याय।
व्याख्या: स्रोतमे बंगालमे सुभाष मुखोपाध्यायक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10748. जीवकान्तक अनुसार कविताक विषय कोना रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सभ दिन बदलैत।
उत्तर: घ. सभ दिन बदलैत।
व्याख्या: स्रोतमे कविताक विषय सभ दिन बदलैत रहैत अछि।

प्रश्न 10749. विद्यापति कोन दू विषय लऽ कऽ लिखलथि कहल गेल?
क. शृंगार आ भक्ति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शृंगार आ भक्ति।
व्याख्या: स्रोतमे विद्यापति शृंगार आ भक्तिकेँ लऽ कए लिखलथि।

प्रश्न 10750. दोसर विश्वयुद्धमे देशप्रेमक कविता सम्बन्धमे की देखल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई मनुष्यकेँ बर्बाद कऽ रहल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ई मनुष्यकेँ बर्बाद कऽ रहल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे देशप्रेमक गपमे मनुष्यक बरबादी देखल गेल कहल अछि।

प्रश्न 10751. जीवकान्तक अनुसार स्थायी काव्य-विषय सभमे की-की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आदमी, मित्रता, सुख-दुख।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आदमी, मित्रता, सुख-दुख।
व्याख्या: स्रोतमे आदमी, मित्रता, सुख-दुख कविताक विषय रहैत अछि।

प्रश्न 10752. खण्ड १०८०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जीवकान्त कविता मे परिवर्तन, विषय-विस्तार आ समयानुसार रूप-बदलावकेँ कालजयी सृजनक शर्त मानैत छथि।
उत्तर: घ. जीवकान्त कविता मे परिवर्तन, विषय-विस्तार आ समयानुसार रूप-बदलावकेँ कालजयी सृजनक शर्त मानैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड कविताक गतिशीलता पर आधारित अछि।

खण्ड १०८१ : विदेह-सदेह २ — मैथिली समाज, गुटबाजी आ गुणवत्ता

प्रश्न 10753. मैथिली समाजक स्थिति पर जीवकान्त कोन प्रवृत्तिक उल्लेख करैत छथि?
क. पैरवी-पैगाम आ गुटबाजी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पैरवी-पैगाम आ गुटबाजी।
व्याख्या: स्रोतमे पैरवी-पैगाम आ गुटबाजी होइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10754. जीवकान्त अपन गाम आ समाजकेँ कोना नहि मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सिद्धांतवादी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सिद्धांतवादी।
व्याख्या: स्रोतमे अपन गाम आ समाज सिद्धांतवादी नहि अछि कहल गेल।

प्रश्न 10755. गाम-समाजकेँ जीवकान्त कोन प्रवृत्तिसँ जोड़ैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जवाहरवादी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जवाहरवादी।
व्याख्या: स्रोतमे जवाहरवादी अछि ताहिसँ तुरंत झुकि जाइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10756. गुटबाजीक कारण कोन चीजसँ समझौता भऽ जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. क्वालिटीसँ।
उत्तर: घ. क्वालिटीसँ।
व्याख्या: स्रोतमे क्वालिटीसँ समझौता भऽ जाइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10757. नीक लोकक नाम लेबासँ लोक की भऽ जाएबाक डर मानैत अछि?
क. अपवित्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अपवित्र।
व्याख्या: स्रोतमे नीक लोकक नाम लेबासँ लोक अपवित्र भऽ जाइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 10758. जीवकान्तक समाज-आलोचनाक केन्द्र की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गुणवत्ता पर गुटबाजी भारी पड़ब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गुणवत्ता पर गुटबाजी भारी पड़ब।
व्याख्या: पैरवी, गुटबाजी आ क्वालिटी-संझौता मुख्य आलोचना अछि।

प्रश्न 10759. मैथिली समाजक ई आलोचना साहित्यिक क्षेत्रसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रचनात्मक मूल्यांकन प्रभावित करैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रचनात्मक मूल्यांकन प्रभावित करैत अछि।
व्याख्या: गुटबाजी आ गुणवत्ता-संझौता साहित्यिक स्वीकृति पर असर करैत अछि।

प्रश्न 10760. जीवकान्तक वाणी समाजबारे कोन प्रकारक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कटु मुदा आत्मालोचनात्मक।
उत्तर: घ. कटु मुदा आत्मालोचनात्मक।
व्याख्या: ओ अपन समाजक कमजोरी खुलिकऽ कहैत छथि।

प्रश्न 10761. गुटबाजी साहित्यक कोन मूल्यकेँ कमजोर करैत अछि?
क. न्यायपूर्ण मूल्यांकन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. न्यायपूर्ण मूल्यांकन।
व्याख्या: गुटबाजी तटस्थता आ गुणवत्ता दुनूकेँ प्रभावित करैत अछि।

प्रश्न 10762. खण्ड १०८१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवकान्त मैथिली समाजमे पैरवी, गुटबाजी आ गुणवत्ता-संझौता केँ साहित्यिक-सामाजिक संकट रूपमे देखैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्त मैथिली समाजमे पैरवी, गुटबाजी आ गुणवत्ता-संझौता केँ साहित्यिक-सामाजिक संकट रूपमे देखैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड समाज-आलोचना समेटैत अछि।

खण्ड १०८२ : विदेह-सदेह २ — चेला विवाद, प्रभाव आ रचनात्मक उत्तरदायित्व

प्रश्न 10763. जीवकान्त अपन पेशागत अतीतक कारण की छलहुँ कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गुरुजी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गुरुजी।
व्याख्या: स्रोतमे हम गुरुजी रही, साइंस टीचर रही कहल गेल।

प्रश्न 10764. साइंस टीचर रहबाक कारण जीवकान्त की स्वाभाविक मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शिष्य बनबे करत।
उत्तर: घ. शिष्य बनबे करत।
व्याख्या: स्रोतमे शिष्य तँ बनबे करत कहल अछि।

प्रश्न 10765. जीवकान्तक अनुसार सभ आदमी की छोड़ैत अछि?
क. अपन प्रभाव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अपन प्रभाव।
व्याख्या: स्रोतमे सभ आदमी अपन प्रभाव छोड़ैत अछि।

प्रश्न 10766. जीवकान्त किनका-किनका नाम प्रभाव-सन्दर्भमे उल्लेख करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कुणाल, प्रदीप बिहारी आदि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कुणाल, प्रदीप बिहारी आदि।
व्याख्या: स्रोतमे कुणाल, प्रदीप बिहारी आदि नाम अछि।

प्रश्न 10767. तारानंद वियोगी जीवकान्तक कविता कतय पढ़ैत रहल कहलथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मिथिला मिहिरमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मिथिला मिहिरमे।
व्याख्या: स्रोतमे तारानंद वियोगी मासमे दूटा कविता मिथिला मिहिरमे पढ़ैत रहबाक बात अछि।

प्रश्न 10768. जीवकान्त स्वयं किनकर चेला कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. यात्रीजी आ विद्यापतिक।
उत्तर: घ. यात्रीजी आ विद्यापतिक।
व्याख्या: स्रोतमे हम यात्रीजी आ विद्यापतिक चेला छी कहल गेल।

प्रश्न 10769. जीवकान्त की नहि बनेने छी कहलथि?
क. कमांडो, पुरस्कार-पैरवीकार वा दलाल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कमांडो, पुरस्कार-पैरवीकार वा दलाल।
व्याख्या: स्रोतमे कमांडो नहि, पुरस्कार लेल पैरवीकार नहि, दलाल नहि कहल अछि।

प्रश्न 10770. जीवकान्तक रचनासँ प्रभावित भऽ कियो रचना-कर्ममे आएल ताहिमे ओ की कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हमर की गलती?
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हमर की गलती?
व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रश्नाकुल उत्तरक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10771. चेला विवादमे जीवकान्त प्रभावकेँ कोना देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्वाभाविक साहित्यिक प्रेरणा रूपमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्वाभाविक साहित्यिक प्रेरणा रूपमे।
व्याख्या: ओ प्रभावकेँ भीड़ वा पैरवी नहि, रचनात्मक प्रेरणा मानैत छथि।

प्रश्न 10772. खण्ड १०८२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जीवकान्त चेला-विवादकेँ रचनात्मक प्रभाव आ शिक्षक-संबंधक स्वाभाविक परिणाम मानि पैरवी-संस्कृतिकेँ अस्वीकार करैत छथि।
उत्तर: घ. जीवकान्त चेला-विवादकेँ रचनात्मक प्रभाव आ शिक्षक-संबंधक स्वाभाविक परिणाम मानि पैरवी-संस्कृतिकेँ अस्वीकार करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड प्रभाव, शिष्यत्व आ नैतिक सीमाक विवेचन अछि।

खण्ड १०८३ : विदेह-सदेह २ — समीक्षा विवाद आ विषवमनक टिप्पणी

प्रश्न 10773. मोहन भारद्वाज कोन कविता-संग्रहपर समीक्षा केने रहथि?

क. गामक कविता, कविताक गाम।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक कविता, कविताक गाम।

व्याख्या: स्रोतमे विवेकानंद ठाकुरक कविता संग्रह “गामक कविता, कविताक गाम” पर समीक्षा कहल गेल।

प्रश्न 10774. मोहन भारद्वाजक समीक्षामे कवितासभबारे कोन कथन उद्धृत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सभटा समकालीन संभावनाकेँ खारिज करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सभटा समकालीन संभावनाकेँ खारिज करैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे एहि वाक्यक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10775. एहि संदर्भमे जीवकान्त किनका पत्र पठेलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गौरीनाथकेँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गौरीनाथकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे हम गौरीनाथकेँ एकटा पत्र पठेने छलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 10776. पत्रक फोटोस्टेट कॉपी जीवकान्त केना पठेलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आओरो लोककेँ।

उत्तर: घ. आओरो लोककेँ।

व्याख्या: स्रोतमे संगे-संग पत्रक फोटोस्टेट कॉपी आओरो लोककेँ पठेने छलहुँ।

प्रश्न 10777. एकहि रचनासँ सभटा कविता खारिज भऽ जाएब जीवकान्तक अनुसार की अछि?

क. संभव नहि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संभव नहि।

व्याख्या: स्रोतमे एकहि रचनासँ सभटा कविता खारिज भऽ जाए, एहन संभव नहि अछि।

प्रश्न 10778. जीवकान्तक विरोधक पत्र कोन पत्रिकामे आएल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कोनो पत्रिकामे नहि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कोनो पत्रिकामे नहि।

व्याख्या: स्रोतमे हमर विरोधक पत्र कोनो पत्रिकामे नहि आएल कहल अछि।

प्रश्न 10779. गौरीनाथ ओहि पत्रकेँ की बना देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मुद्दा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मुद्दा।
व्याख्या: स्रोतमे मुदा गौरीनाथ एकरा मुद्दा बना देलन्हि कहल अछि।

प्रश्न 10780. किछु गोटे मोहन भारद्वाजक समीक्षाकेँ की कहलन्हि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गदगदी समीक्षा।
उत्तर: घ. गदगदी समीक्षा।
व्याख्या: विनीत उत्पलक टिप्पणीमे गदगदी समीक्षा शब्द अछि।

प्रश्न 10781. जीवकान्त समीक्षक सभपर कोन तीक्ष्ण टिप्पणी करैत छथि?
क. दारू, पैसा आ मूर्खता पी कऽ विषवमन करैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दारू, पैसा आ मूर्खता पी कऽ विषवमन करैत अछि।
व्याख्या: स्रोतक शीर्षक आ उत्तरमे ई कठोर टिप्पणी अछि।

प्रश्न 10782. खण्ड १०८३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवकान्त समीक्षा-विवादमे एकपक्षीय खारिजकरण, गदगदी समीक्षा आ आलोचनात्मक अनैतिकताक कड़ा विरोध करैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवकान्त समीक्षा-विवादमे एकपक्षीय खारिजकरण, गदगदी समीक्षा आ आलोचनात्मक अनैतिकताक कड़ा विरोध करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा विवादक तीक्ष्ण पक्ष समेटैत अछि।

खण्ड १०८४ : विदेह-सदेह २ — लेखकीय नैतिकता, सत्य आ पोथी-संकट

प्रश्न 10783. स्वयं-अनुदित पोथीपर पुरस्कार प्रसंगमे जीवकान्त कोन लेखकक उदाहरण सुनैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मायानंद मिश्र।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मायानंद मिश्र।
व्याख्या: प्रश्नमे मायानंद मिश्रक “मंत्रपुत्र” प्रसंग उठाओल गेल।

प्रश्न 10784. मायानंद मिश्र पुरस्कार लेलन्हि तखन जीवकान्त की कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ जरूर सोचने हेताह।
उत्तर: घ. ओ जरूर सोचने हेताह।
व्याख्या: स्रोतमे किछु जरूर सोचने हेताह, सोचिए कऽ लेने हेताह कहल गेल।

प्रश्न 10785. साहित्य आ लेखनमे जीवकान्त लोककेँ कोना रहबाक चाही कहैत छथि?
क. ईमानदार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ईमानदार।
व्याख्या: स्रोतमे लोककेँ सभ ठाम ईमानदार हेबाक चाही कहल अछि।

प्रश्न 10786. जीवकान्त कोन कृति मे ईमानदारीसँ लिखने छी कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पंजरि प्रेम प्रकासिया।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पंजरि प्रेम प्रकासिया।
व्याख्या: स्रोतमे “पंजरि प्रेम प्रकासिया” मे हम खूब ईमानदारीसँ लिखने छी कहल अछि।

प्रश्न 10787. जीवनक सत्य आ समाजक स्थिति लिखनिहार लेखक अपन धरतीपर की भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बदनाम।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बदनाम।
व्याख्या: स्रोतमे जे लेखक जीवनक सत्य लिखलक ओ अपन धरतीपर बदनाम भऽ गेल।

प्रश्न 10788. जीवकान्त कोन लेखकक उदाहरण देलथि जे समाजक सत्य लिखलथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. राजकमल चौधरी।
उत्तर: घ. राजकमल चौधरी।
व्याख्या: स्रोतमे राजकमल चौधरी साहित्यमे समाजक सत्य लिखलक कहल अछि।

प्रश्न 10789. मधुबनीमे मैथिलीक पोथी नहि बिकएबाक सम्बन्धमे जीवकान्त मुख्य जिम्मा कोन क्षेत्रपर देखैत छथि?
क. प्रकाशक आ सर्कुलेशन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रकाशक आ सर्कुलेशन।
व्याख्या: स्रोतमे पब्लिशर्स आ सर्कुलेशनक मामलामे समर्पित लोकक जरूरत कहल अछि।

प्रश्न 10790. जीवकान्त किनका उदाहरण दैत छथि जे पोथी सभ ठाम बिकाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गीता प्रेस।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गीता प्रेस।
व्याख्या: स्रोतमे गीता प्रेसक पोथी सभ ठाम बिकाइत अछि।

प्रश्न 10791. लोक-वेदक अनुसार लोक पोथी कोना लए चाहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. खैरातमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. खैरातमे।
व्याख्या: स्रोतमे लोक-वेद खैरातमे पोथी लएले चाहैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 10792. खण्ड १०८४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जीवकान्त लेखकीय ईमानदारी, समाज-सत्यक जोखिम आ मैथिली पोथीक प्रकाशन-सर्कुलेशन संकटकेँ एकसंग देखैत छथि।
उत्तर: घ. जीवकान्त लेखकीय ईमानदारी, समाज-सत्यक जोखिम आ मैथिली पोथीक प्रकाशन-सर्कुलेशन संकटकेँ एकसंग देखैत छथि।
व्याख्या: ई अन्तिम खण्ड नैतिकता आ पोथी-प्रसारक प्रश्न समेटैत अछि।

खण्ड १०८५ : विदेह-सदेह २ — राजमोहन झासँ साक्षात्कार: साहित्य आ जन-सामान्य

प्रश्न 10793. राजमोहन झासँ साक्षात्कार के लेने छथि?
क. गजेन्द्र ठाकुर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुर।
व्याख्या: शीर्षकमे “राजमोहन झासँ गजेन्द्र ठाकुरक साक्षात्कार” स्पष्ट अछि।

प्रश्न 10794. गजेन्द्र ठाकुरक पहिल प्रश्न मैथिली साहित्यकार सभपर कोन आरोप उठबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीकेँ जन-सामान्यसँ दूर प्रदर्शनक वस्तु बनाओल गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीकेँ जन-सामान्यसँ दूर प्रदर्शनक वस्तु बनाओल गेल।
व्याख्या: स्रोतमे साहित्यकार सभ मैथिलीकेँ प्रदर्शनक वस्तु बना देलखिन्ह कहल गेल।

प्रश्न 10795. राजमोहन झा एहि आरोपपर पहिल प्रतिक्रिया की दैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साहित्यकारकेँ दोषी कोना कहब, से प्रश्न करैत छथि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साहित्यकारकेँ दोषी कोना कहब, से प्रश्न करैत छथि।
व्याख्या: ओ पूछैत छथि जे एहि लेल साहित्यकारकेँ कोना दोषी कहैत छी।

प्रश्न 10796. गजेन्द्र ठाकुरक अनुसार साहित्यकार सभ कोन सीमा धरि सीमित रहलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गोष्ठी आ कवि-सम्मेलन धरि।
उत्तर: घ. गोष्ठी आ कवि-सम्मेलन धरि।
व्याख्या: स्रोतमे अपन लिखलथि आ गोष्ठी-कवि सम्मेलन धरि सीमित रहलाह कहल अछि।

प्रश्न 10797. गजेन्द्र ठाकुरक अनुसार साहित्यकार सभ की छोड़ि देलन्हि?

क. गाम-घर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम-घर।

व्याख्या: स्रोतमे गाम-घर छोड़ि देलन्हिक स्पष्ट उल्लेख अछि।

प्रश्न 10798. गजेन्द्र ठाकुर साहित्य लिखल-पढ़ल-सुनलाकेँ कोन रूपकसँ जोड़ैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. फैशन जेकाँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. फैशन जेकाँ।

व्याख्या: प्रश्नमे फैशन जेकाँ साहित्य लिखल, पढ़ल आ सुनल गेल कहल अछि।

प्रश्न 10799. राजमोहन झाक अनुसार पहिनुका साहित्यकार सभ एना करथि कि नहि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नहि करथि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नहि करथि।

व्याख्या: ओ कहैत छथि जे पहिनुका साहित्यकार तँ एना नहि करथि।

प्रश्न 10800. एहि प्रारम्भिक बहसमे मुख्य चिन्ता की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य आ समाजक बीच बढ़ैत दूरी।

उत्तर: घ. साहित्य आ समाजक बीच बढ़ैत दूरी।

व्याख्या: दुनू पक्षक प्रश्न-उत्तर मैथिली साहित्यक जनसँ दूरी पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 10801. गजेन्द्र ठाकुर मैथिली साहित्यकार सभकेँ समाज आ राजनीतिसँ कोना देखैत छथि?

क. दूर रहल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दूर रहल।

व्याख्या: स्रोतमे साहित्यकार समाज आ राजनीतिसँ दूर रहलाह कहल अछि।

प्रश्न 10802. खण्ड १०८५क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साक्षात्कारक आरम्भ मैथिली साहित्यक जन-विमुखता, गोष्ठी-केन्द्रितता आ समाजसँ दूरीक प्रश्नसँ होइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साक्षात्कारक आरम्भ मैथिली साहित्यक जन-विमुखता, गोष्ठी-केन्द्रितता आ समाजसँ दूरीक प्रश्नसँ होइत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्य आ जन-सामान्यक सम्बन्ध पर आरम्भिक बहस अछि।

खण्ड १०८६ : विदेह-सदेह २ — हरिमोहन झाक लोकप्रियता

प्रश्न 10803. गजेन्द्र ठाकुरक अनुसार गाममे लोक मुख्यतः केकर रचना पढ़ने-सुनने छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हरिमोहन झाक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हरिमोहन झाक।

व्याख्या: स्रोतमे एकटा हरिमोहन झाकेँ छोड़ि गाममे लोक दोसरक रचना नहि पढ़ने-सुनने छथि कहल अछि।

प्रश्न 10804. मिथिला मिहिरक बारे गजेन्द्र ठाकुर की कहलथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गाम-गाम जाइत छल, बादमे बन्द भऽ गेल।

उत्तर: घ. गाम-गाम जाइत छल, बादमे बन्द भऽ गेल।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला मिहिर गाम-गाम जाइत छलै, बन्द भऽ गेलै कहल अछि।

प्रश्न 10805. हरिमोहन झाकेँ छोड़ि गामक लोक दोसर साहित्यकारक नामो सुनने छल कि नहि?

क. नहि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नहि।

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर एहि बातक स्पष्ट उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 10806. हरिमोहन झाक लोकप्रियता राजमोहन झाक अनुसार कोना बुझाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रहस्य जेकाँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रहस्य जेकाँ।

व्याख्या: स्रोतमे ई एकटा रहस्य जेकाँ छैक कहल गेल।

प्रश्न 10807. हरिमोहन झाक साहित्यपर कोन आलोचना होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ओ सम्पूर्ण समाज नहि, एक विशेष वर्ग चित्रित केलन्हि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ओ सम्पूर्ण समाज नहि, एक विशेष वर्ग चित्रित केलन्हि।

व्याख्या: राजमोहन झा दलित समाज वंचित रहबाक प्रसंग संग ई आलोचना कहैत छथि।

प्रश्न 10808. राजमोहन झाक अनुसार हरिमोहन झाक साहित्यसँ की तैयार भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पाठक-वर्ग।

उत्तर: घ. पाठक-वर्ग।

व्याख्या: स्रोतमे कहल अछि जे हुनके साहित्यसँ पाठक वर्ग तैयार भेल।

प्रश्न 10809. हरिमोहन झाक लोकप्रियता सम्बन्धी तैयार समाधान भेटल कि नहि?

क. नहि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नहि।

व्याख्या: राजमोहन झा कहैत छथि जे तैयार समाधान नहि भेटल अछि।

प्रश्न 10810. एहि बहसमे लोकप्रियताक प्रमुख प्रश्न की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दोसर साहित्यकार हरिमोहन झा जेकाँ लोकधरि किएक नहि पहुँचलाह।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दोसर साहित्यकार हरिमोहन झा जेकाँ लोकधरि किएक नहि पहुँचलाह।

व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुरक प्रश्नक केन्द्र ई तुलना अछि।

प्रश्न 10811. राजमोहन झा लोकप्रियताकेँ कोन सामाजिक परिणामसँ जोड़ैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाठक वर्गक अस्तित्वमे आएब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाठक वर्गक अस्तित्वमे आएब।

व्याख्या: ओ हरिमोहन झाक साहित्यकेँ पाठक-वर्ग निर्माणसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 10812. खण्ड १०८६क निष्कर्ष की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हरिमोहन झाक लोकप्रियता मैथिलीमे पाठक-वर्ग निर्माणक महत्त्वपूर्ण उदाहरण बनैत अछि, मुदा ओकर सीमा आ कारण दूनू बहसक विषय रहैत अछि।

उत्तर: घ. हरिमोहन झाक लोकप्रियता मैथिलीमे पाठक-वर्ग निर्माणक महत्त्वपूर्ण उदाहरण बनैत अछि, मुदा ओकर सीमा आ कारण दूनू बहसक विषय रहैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड लोकप्रियता, पाठक आ समाज-चित्रणक प्रश्न समेटैत अछि।

खण्ड १०८७ : विदेह-सदेह २ — साहित्यक उद्देश्य

प्रश्न 10813. गजेन्द्र ठाकुर साहित्यबारे कोन मूल प्रश्न उठबैत छथि?

क. साहित्य उद्देश्यपूर्ण होएबाक चाही वा मात्र मनोरंजन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य उद्देश्यपूर्ण होएबाक चाही वा मात्र मनोरंजन।

व्याख्या: स्रोतमे ई प्रश्न सीधा उठाओल गेल अछि।

प्रश्न 10814. राजमोहन झाक अनुसार साहित्यमे मनोरंजन रहबाक चाही कि नहि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रहबाक चाही।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रहबाक चाही।

व्याख्या: ओ कहैत छथि जे मनोरंजन तँ रहबाके चाही, नहि तँ कियो पढ़बे नहि करत।

प्रश्न 10815. राजमोहन झाक अनुसार साहित्यक अन्तिम उद्देश्य की नहि होएबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मात्र मनोरंजन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मात्र मनोरंजन।
व्याख्या: स्रोतमे अन्तिम उद्देश्य मनोरंजन नहि होएबाक चाही कहल अछि।

प्रश्न 10816. विभिन्न स्तरक लोक लेल साहित्य कोना होएबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विभिन्न स्तरक।
उत्तर: घ. विभिन्न स्तरक।
व्याख्या: राजमोहन झा कहैत छथि जे विभिन्न स्तरक लोक लेल विभिन्न स्तरक साहित्य चाही।

प्रश्न 10817. राजमोहन झाक अनुसार साहित्य केकर पूर्ति करबाक चाही?
क. लोकक आवश्यकता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लोकक आवश्यकता।
व्याख्या: स्रोतमे जकर जे आवश्यकता छै तकर पूर्ति होएबाक चाही कहल अछि।

प्रश्न 10818. एहि उत्तरमे साहित्यक द्वैत स्वरूप की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मनोरंजन आ उद्देश्य दूनू।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मनोरंजन आ उद्देश्य दूनू।
व्याख्या: मनोरंजन आवश्यक अछि, मुदा अन्तिम लक्ष्य मात्र ओ नहि।

प्रश्न 10819. साहित्य उद्देश्य पर राजमोहन झा कोन प्रक्रिया जरूरी मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्वयं-विश्लेषण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्वयं-विश्लेषण।
व्याख्या: ओ “सेल्फ एनालाइज” करबाक बात कहैत छथि; अर्थ स्वयं-विश्लेषण अछि।

प्रश्न 10820. साहित्य पढ़बाक प्रेरणा लेल राजमोहन झा की आवश्यक मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मनोरंजनक तत्व।
उत्तर: घ. मनोरंजनक तत्व।
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे मनोरंजन नहि रहत तँ कियो पढ़बे नहि करत।

प्रश्न 10821. ई खण्ड मैथिली साहित्यक कोन संकटसँ जुड़ैत अछि?
क. पाठकसँ दूरी कम करबाक संकट।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाठकसँ दूरी कम करबाक संकट।
व्याख्या: जन-सामान्य धरि पहुँचल साहित्यमे मनोरंजन आ उद्देश्यक संतुलन जरूरी अछि।

प्रश्न 10822. खण्ड १०८७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राजमोहन झा साहित्यकेँ मनोरंजक होएबाक संग लोकक आवश्यकता पूर्ति करनिहार उद्देश्यपूर्ण विधा मानैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. राजमोहन झा साहित्यकेँ मनोरंजक होएबाक संग लोकक आवश्यकता पूर्ति करनिहार उद्देश्यपूर्ण विधा मानैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यक लक्ष्य पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०८८ : विदेह-सदेह २ — माइग्रेशन आ भाषा-संकट

प्रश्न 10823. गजेन्द्र ठाकुर मैथिली भाषा सम्बन्धमे बारंबार सुनल कोन कथन उठबैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली भाषा मरि रहल अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली भाषा मरि रहल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे “मैथिली भाषा मरि रहल अछि” कथन उठाओल गेल अछि।

प्रश्न 10824. गजेन्द्र ठाकुर माइग्रेशनकेँ कुल मिलाकर कोन चीज कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नीक चीज।
उत्तर: घ. नीक चीज।
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे माइग्रेशन नीक चीज छियैक।

प्रश्न 10825. एक पीढ़ीमे नब्बे प्रतिशत जनसंख्या माइग्रेट कए गेलासँ की संकट आबि सकैत अछि?
क. भाषा-संरक्षणक संकट।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा-संरक्षणक संकट।
व्याख्या: प्रश्नमे माइग्रेशन आ भाषा-त्यागक सम्बन्ध रखल गेल अछि।

प्रश्न 10826. भारतसँ बाहर जाएबला लोकक भाषा कोन बनैत अछि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अंग्रेजी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अंग्रेजी।
व्याख्या: स्रोतमे भारतसँ बाहर जे जाइत छथि हुनकर भाषा अंग्रेजी कहल गेल।

प्रश्न 10827. भारतमे दोसर ठाम जाएबला अदहा गोटे कोन भाषा बजए लगैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हिन्दी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हिन्दी।

व्याख्या: स्रोतमे अदहा गोटे हिन्दी बाजए लगैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 10828. राजमोहन झाक अनुसार लोकमे कोन प्रेम घटल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा प्रेम।

उत्तर: घ. भाषा प्रेम।

व्याख्या: स्रोतमे लोकमे भाषा प्रेम घटल अछि कहल अछि।

प्रश्न 10829. राजमोहन झाक अनुसार लोक की छोड़ि रहल अछि?

क. मैथिली।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली।

व्याख्या: ओ स्पष्ट कहैत छथि जे लोक मैथिली छोड़ि रहल अछि।

प्रश्न 10830. गजेन्द्र ठाकुर नेपालमे मैथिलीकेँ ककर कारण अप्रत्यक्ष लाभ भेल कहलथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हिन्दी-विरोधक कारण।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हिन्दी-विरोधक कारण।

व्याख्या: स्रोतमे नेपालमे हिन्दी विरोधक कारण अप्रत्यक्ष रूपसँ मैथिलीकेँ लाभ कहल गेल।

प्रश्न 10831. राजमोहन झाक अनुसार भारतमे स्थिति कोना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. खराब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. खराब।

व्याख्या: स्रोतमे भारतमे स्थिति खराब छै कहल अछि।

प्रश्न 10832. खण्ड १०८८क निष्कर्ष की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माइग्रेशन, अंग्रेजी-हिन्दीक दबाव आ घटैत भाषा-प्रेम मैथिलीक जन-आधार पर संकट बनि रहल अछि, यद्यपि नेपालक स्थिति अलग संकेत दैत अछि।

उत्तर: घ. माइग्रेशन, अंग्रेजी-हिन्दीक दबाव आ घटैत भाषा-प्रेम मैथिलीक जन-आधार पर संकट बनि रहल अछि, यद्यपि नेपालक स्थिति अलग संकेत दैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड भाषा-संकट आ प्रवासक सम्बन्ध देखबैत अछि।

खण्ड १०८९ : विदेह-सदेह २ — भाषा-प्रेम आ नेपाल-भारत सन्दर्भ

प्रश्न 10833. राजमोहन झाक अनुसार पहिने लोकमे की बेसी छल?

क. समर्पण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समर्पण।

व्याख्या: स्रोतमे पहिलुका लोक जेना समर्पण आब लोकमे नहि छै कहल गेल।

प्रश्न 10834. भारतक मैथिली भाषी प्रदेशक विषयमे गजेन्द्र ठाकुर कोन बात सत्य मानैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भाषा-संकट गंभीर अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भाषा-संकट गंभीर अछि।

व्याख्या: उक्त संदर्भमे ओ भारतक मैथिली भाषी प्रदेशमे भाषा-त्यागक बात सत्य मानैत छथि।

प्रश्न 10835. नेपालमे मैथिलीकेँ अप्रत्यक्ष लाभ कोन विरोधसँ भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हिन्दी-विरोधसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हिन्दी-विरोधसँ।

व्याख्या: स्रोतमे नेपालमे हिन्दी विरोधक कारण मैथिलीकेँ लाभ कहल अछि।

प्रश्न 10836. राजमोहन झाक छोट टिप्पणी “भारतमे स्थिति खराप छै” कोन विषयपर अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषाक स्थिति।

उत्तर: घ. मैथिली भाषाक स्थिति।

व्याख्या: पूर्व-प्रश्न भाषा आ मैथिली छोड़बाक विषयक अछि।

प्रश्न 10837. भाषा-प्रेम घटलासँ मैथिलीपर की असर पड़ैत अछि?

क. लोक मैथिली छोड़ए लगैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक मैथिली छोड़ए लगैत अछि।

व्याख्या: राजमोहन झा भाषा-प्रेम घटब आ मैथिली छोड़बाक बात संग-संग कहैत छथि।

प्रश्न 10838. एहि प्रसंगमे पीढ़ीगत अन्तर कोना देखाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पहिने समर्पण बेसी, आब कम।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पहिने समर्पण बेसी, आब कम।

व्याख्या: स्रोतमे पहिलुका समर्पण आ आबक कमीक तुलना अछि।

प्रश्न 10839. भारत आ नेपालक तुलना मैथिलीबारे की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. राजनीतिक-सामाजिक परिस्थिति भाषाक स्थिति बदलैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. राजनीतिक-सामाजिक परिस्थिति भाषाक स्थिति बदलैत अछि।
व्याख्या: नेपालमे हिन्दी विरोधक अप्रत्यक्ष लाभ आ भारतमे खराब स्थिति एहि भिन्नता देखबैत अछि।

प्रश्न 10840. भाषा-संकट पर साक्षात्कारक भाव की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चिन्तित।
उत्तर: घ. चिन्तित।
व्याख्या: प्रश्न-उत्तर दुनू मैथिली छोड़बाक प्रवृत्ति पर चिन्ता व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 10841. एहि खण्डमे “भाषा प्रेम” कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. भाषा-रक्षा केर सामाजिक आधार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा-रक्षा केर सामाजिक आधार।
व्याख्या: भाषा प्रेम घटिते लोक मैथिली छोड़ि रहल अछि।

प्रश्न 10842. खण्ड १०८९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राजमोहन झा भारतमे मैथिलीक खराब स्थिति, घटैत भाषा-प्रेम आ पहिलुक समर्पणक कमी पर चिन्ता व्यक्त करैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. राजमोहन झा भारतमे मैथिलीक खराब स्थिति, घटैत भाषा-प्रेम आ पहिलुक समर्पणक कमी पर चिन्ता व्यक्त करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड भाषा-प्रेम आ क्षेत्रीय परिस्थिति पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०९० : विदेह-सदेह २ — पुरस्कार-विवाद आ आरम्भ

प्रश्न 10843. गजेन्द्र ठाकुर कोन लेखककेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार देबाक विरोधक प्रसंग उठबैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बबुआ जी झा “अज्ञात”।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बबुआ जी झा “अज्ञात”।
व्याख्या: स्रोतमे बबुआ जी झा “अज्ञात”केँ साहित्य अकादमी पुरस्कार देबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 10844. राजमोहन झाक अनुसार ओ स्वयं विरोध केने रहथि कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नहि।
उत्तर: घ. नहि।
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे हम विरोध नहि कएने रहियन्हि।

प्रश्न 10845. राजमोहन झाक अनुसार विरोध कतयक लोक कएने रहथि?
क. दिल्लीमे आन-आन सभ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दिल्लीमे आन-आन सभ।
व्याख्या: स्रोतमे दिल्लीमे आन-आन सभ कएने रहथि कहल गेल।

प्रश्न 10846. सामूहिक वक्तव्य कोन पत्रिकाक आरम्भक तीसम अंकमे आएल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आरम्भ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आरम्भ।
व्याख्या: गजेन्द्र ठाकुर आरम्भक तीसम अंकमे सामूहिक वक्तव्यक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 10847. २००१क साहित्य अकादमी पुरस्कार कोन कृतिपर देल गेल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. “प्रतिज्ञा पाण्डव”।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. “प्रतिज्ञा पाण्डव”।
व्याख्या: स्रोतमे बबुआजी झा “अज्ञात”क “प्रतिज्ञा पाण्डव”क उल्लेख अछि।

प्रश्न 10848. २००१क अनुवाद पुरस्कार किनका देल जएबाक विरोध भेल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुरेश्वर झा।
उत्तर: घ. सुरेश्वर झा।
व्याख्या: स्रोतमे अनुवाद पुरस्कार सुरेश्वर झाकेँ देल जएबाक विरोध कहल अछि।

प्रश्न 10849. राजमोहन झाक अनुसार आरम्भ बन्द भेल कि स्थगित?
क. स्थगित।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्थगित।
व्याख्या: ओ कहैत छथि जे आरम्भ बन्द नहि भेल अछि, स्थगित अछि।

प्रश्न 10850. पुरस्कार-विवादमे मुख्य प्रश्न की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विरोधक आधार आ चयन-न्याय।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विरोधक आधार आ चयन-न्याय।
व्याख्या: बात पुरस्कार, विरोध, वक्तव्य आ चयनपर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 10851. सामूहिक वक्तव्यक प्रसंग कोन बातक संकेत दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिली साहित्यिक जगतमे सार्वजनिक विवाद।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिली साहित्यिक जगतमे सार्वजनिक विवाद।

व्याख्या: स्रोतमे पुरस्कार-विरोधक सामूहिक वक्तव्यक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10852. खण्ड १०९०क निष्कर्ष की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बबुआ जी झा “अज्ञात” आ सुरेश्वर झा सम्बन्धी पुरस्कार-विवाद मैथिली साहित्यिक संसारमे चयन, विरोध आ पत्रिका-आधारित हस्तक्षेपक प्रश्न खोलैत अछि।

उत्तर: घ. बबुआ जी झा “अज्ञात” आ सुरेश्वर झा सम्बन्धी पुरस्कार-विवाद मैथिली साहित्यिक संसारमे चयन, विरोध आ पत्रिका-आधारित हस्तक्षेपक प्रश्न खोलैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड पुरस्कार-विवादक मूल सन्दर्भ दैत अछि।

खण्ड १०९१ : विदेह-सदेह २ — अनुवाद पुरस्कार आ चयन प्रक्रिया

प्रश्न 10853. भालचन्द्र झाक कोन एकांकी मूलभाषासँ सोझे अनूदित कहल गेल?

क. “बीछल बेराएल मराठी”।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. “बीछल बेराएल मराठी”।

व्याख्या: स्रोतमे एहि कृतिकेँ मूलभाषासँ सोझे अनूदित कहल अछि।

प्रश्न 10854. सुभाष चन्द्र यादवक कोन कृति बंगला सँ मैथिली अनुवाद छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. “बिहाड़ि आउ”।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. “बिहाड़ि आउ”।

व्याख्या: स्रोतमे “बिहाड़ि आउ” बंगला सँ मैथिली अनुवाद कहल गेल।

प्रश्न 10855. गजेन्द्र ठाकुरक अनुसार मूल समस्या मैथिलीक कोन-कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाठक-शून्यता, साहित्यक जनसँ दूरी, भाषाक मृत होएबाक खतरा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाठक-शून्यता, साहित्यक जनसँ दूरी, भाषाक मृत होएबाक खतरा।

व्याख्या: स्रोतमे ई तीनू समस्या एकसाथ उठाओल गेल अछि।

प्रश्न 10856. राजमोहन झा विरोधबारे की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विरोध होइत अछि, मुदा लोक परवाह नहि करैत छथि।

उत्तर: घ. विरोध होइत अछि, मुदा लोक परवाह नहि करैत छथि।

व्याख्या: स्रोतमे राजमोहन झाक ई उत्तर अछि।

प्रश्न 10857. सिद्धार्थ राईक नेपाली कविता-संग्रहक मैथिली अनुवाद कोन नामसँ भेल?

क. “ओ लोकनि जे नहि घुरलाह”।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. “ओ लोकनि जे नहि घुरलाह”।

व्याख्या: स्रोतमे ई नाम मेनका मल्लिक द्वारा अनुवादित कहल गेल।

प्रश्न 10858. “ओ लोकनि जे नहि घुरलाह”क अनुवाद के केलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मेनका मल्लिक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मेनका मल्लिक।

व्याख्या: स्रोतमे मेनका मल्लिक द्वारा अनुवादक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10859. मनप्रसाद सुब्बाक नेपाली कविता-संग्रहक अनुवाद कोन नामसँ भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. “अक्षर आर्केष्ट्रा”।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. “अक्षर आर्केष्ट्रा”।

व्याख्या: स्रोतमे एहि नामसँ अनुवाद प्रदीप बिहारी द्वारा कहल गेल।

प्रश्न 10860. “अक्षर आर्केष्ट्रा”क अनुवादक के कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रदीप बिहारी।

उत्तर: घ. प्रदीप बिहारी।

व्याख्या: स्रोतमे प्रदीप बिहारीक नाम अछि।

प्रश्न 10861. २००७ मे अनुवाद पुरस्कार लेल प्रशंसित उदाहरण के छथि?

क. अनन्त बिहारी लाल दास “इन्दु”।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनन्त बिहारी लाल दास “इन्दु”।

व्याख्या: स्रोतमे अनन्त बिहारी लाल दास “इन्दु” कैं अनुवाद पुरस्कार देबाक प्रशंसा होएबाक चाही कहल गेल।

प्रश्न 10862. खण्ड १०९१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनुवाद पुरस्कारक बहसमे सीधा अनुवाद, जूरीक पढ़ाइ, चयन-निरन्तरता आ मैथिली पाठक-संकट एकसंग उठैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनुवाद पुरस्कारक बहसमे सीधा अनुवाद, जूरीक पढ़ाइ, चयन-निरन्तरता आ मैथिली पाठक-संकट एकसंग उठैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड अनुवाद आ चयन प्रक्रियाक प्रश्न समेटैत अछि।

खण्ड १०९२ : विदेह-सदेह २ — जूरी, गुटबन्दी आ अनुवादक आवश्यकता

प्रश्न 10863. गजेन्द्र ठाकुरक अनुसार जूरीमे अधिकतर के छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पुरने लोक सभ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पुरने लोक सभ।

व्याख्या: स्रोतमे जूरीमे सभटा पुरने लोक सभ छथि कहल गेल।

प्रश्न 10864. पुरना लोकमे कोन-कोन उपाधि लेल घमासानक उल्लेख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पहिल कथा, पहिल कविता, पहिल नाटक, पहिल पत्र-पत्रिका आदि।

उत्तर: घ. पहिल कथा, पहिल कविता, पहिल नाटक, पहिल पत्र-पत्रिका आदि।

व्याख्या: स्रोतमे एहि उपाधि सभ लेल घमासानक बात अछि।

प्रश्न 10865. राजमोहन झाक अनुसार आइ-काल्हिक साहित्यकारमे की बेसी भेल अछि?

क. गुटबन्दी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुटबन्दी।

व्याख्या: स्रोतमे आइ काल्हिक साहित्यकारमे गुटबन्दी बेशी भेल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10866. राजमोहन झाक अनुसार पहिने गुटबन्दी रहए कि नहि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नहि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नहि।

व्याख्या: ओ कहैत छथि पहिने नहि रहए।

प्रश्न 10867. गजेन्द्र ठाकुर फ्रेंच भाषाक कोन लेखकक नोबेल पुरस्कारक उदाहरण दैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीन मेरी गुस्ताव ली क्लाजियो।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीन मेरी गुस्ताव ली क्लाजियो।

व्याख्या: स्रोतमे ई नाम नोबल पुरस्कारसँ जोडल गेल अछि।

प्रश्न 10868. फिलिप रॉथ कतयक लेखक रूपमे उल्लिखित छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अमेरिकाक न्यू जर्सीक।

उत्तर: घ. अमेरिकाक न्यू जर्सीक।

व्याख्या: स्रोतमे मेरिकाक न्यू जर्सीक फिलिप रॉथ कहल गेल।

प्रश्न 10869. अमेरिकाक आत्ममुग्धता प्रसंगमे कोन बात कहल गेल?
क. अनुवादपर ध्यान नहि देल जाइत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनुवादपर ध्यान नहि देल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे आत्ममुग्धताक कारण अनुवादपर ध्यान नहि देल जाइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10870. राजमोहन झा अनुवादकेँ कोना मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बहुत जरूरी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बहुत जरूरी।
व्याख्या: ओ कहैत छथि ट्रांसलेशन तँ बहुत जरूरी छैक।

प्रश्न 10871. अनुवाद कोन कार्यमे सहायक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तुलना करब आ जीवनानुभवकेँ विस्तार देब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तुलना करब आ जीवनानुभवकेँ विस्तार देब।
व्याख्या: स्रोतमे तुलना आ विस्तार दूनू बात अछि।

प्रश्न 10872. खण्ड १०९२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जूरीक पुरानपन, साहित्यिक गुटबन्दी आ अनुवादक उपेक्षा मैथिली साहित्यक तुलनात्मक विस्तारमे बाधा रूपमे देखाओल गेल अछि।
उत्तर: घ. जूरीक पुरानपन, साहित्यिक गुटबन्दी आ अनुवादक उपेक्षा मैथिली साहित्यक तुलनात्मक विस्तारमे बाधा रूपमे देखाओल गेल अछि।
व्याख्या: ई खण्ड गुटबन्दी आ अनुवादक महत्त्व पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १०९३ : विदेह-सदेह २ — रामाश्रय झा “रामरग”: परिचय

प्रश्न 10873. रामाश्रय झा “रामरग”क जन्मवर्ष कोन देल गेल अछि?
क. १९२८।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १९२८।
व्याख्या: स्रोतमे रामाश्रय झा “रामरग” (१९२८-) कहल गेल।

प्रश्न 10874. रामाश्रय झा “रामरग” किन-किन रूपमे परिचित कहल गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विद्वान, वागयकार, शिक्षक आ मंच सम्पादक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विद्वान, वागयकार, शिक्षक आ मंच सम्पादक।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकर चारि परिचय देल गेल अछि।

प्रश्न 10875. रामरंगजी सँ गप-शप के लेने छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गजेन्द्र ठाकुर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गजेन्द्र ठाकुर।
व्याख्या: शीर्षकमे रामरंगजी सँ गजेन्द्र ठाकुरक गप-शप अछि।

प्रश्न 10876. गप-शपक दिनांक की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ६ जुलाई २००८।
उत्तर: घ. ६ जुलाई २००८।
व्याख्या: स्रोतमे कोष्ठकमे ६ जुलाई २००८ देल अछि।

प्रश्न 10877. गजेन्द्र ठाकुर रामरंगजीकेँ अभिवादन कोना करैत छथि?
क. गोर लगैत छी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गोर लगैत छी।
व्याख्या: स्रोतमे आरम्भ “गोर लगैत छी”सँ होइत अछि।

प्रश्न 10878. रामरंगजी अपन वयस बारे की कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ८० बरख पार केलहुँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ८० बरख पार केलहुँ।
व्याख्या: स्रोतमे रामरंगक उत्तर अछि: ८० बरख पार केलहुँ।

प्रश्न 10879. रामरंगजी स्वास्थ्य प्रसंगमे कोन बात कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. संगीतमे बहटरल रहैत छी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. संगीतमे बहटरल रहैत छी।
व्याख्या: ओ स्वास्थ्यक उत्तरमे संगीतमे बहटरल रहबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 10880. गजेन्द्र ठाकुर संगीतकेँ कोन विशेषता देलथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संगीतक अपन फराक भाषा होइत अछि।
उत्तर: घ. संगीतक अपन फराक भाषा होइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे संगीतक तँ अपन फराक भाषा होइत छैक कहल गेल।

प्रश्न 10881. गजेन्द्र ठाकुर मैथिली संगीतक परम्परा किनका सँ रामरंग धरि जोड़ैत छथि?

क. विद्यापति आ लोचनसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापति आ लोचनसँ।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली संगीत विद्यापति आ लोचनसँ शुरू भऽ अहाँ धरि अबैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10882. खण्ड १०९३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रामाश्रय झा “रामरग”क परिचय विद्वान-संगीतकार-शिक्षक रूपमे होइत अछि आ संवाद हुनकर अस्सी बरखक संगीत-साधनासँ आरम्भ होइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रामाश्रय झा “रामरग”क परिचय विद्वान-संगीतकार-शिक्षक रूपमे होइत अछि आ संवाद हुनकर अस्सी बरखक संगीत-साधनासँ आरम्भ होइत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड रामरंगजीक परिचय आ संवादक आरम्भ दैत अछि।

खण्ड १०९४ : विदेह-सदेह २ — रामरंगजीक मिथिला-सम्बद्ध राग

प्रश्न 10883. रामरंगजी अपन मिथिलासँ सम्बन्धित कतेक रागक रचना कएने छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तीन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तीन।

व्याख्या: स्रोतमे तीन रागक रचना कएलहुँ अछि कहल गेल।

प्रश्न 10884. रामरंगजीक तीन रागमे पहिल नाम की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राग तीरभुक्ति।

उत्तर: घ. राग तीरभुक्ति।

व्याख्या: स्रोतमे १. राग तीरभुक्ति देल अछि।

प्रश्न 10885. रामरंगजीक दोसर रागक नाम की अछि?

क. राग विद्यापति कल्याण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राग विद्यापति कल्याण।

व्याख्या: स्रोतमे राग विद्यापति कल्याणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10886. रामरंगजीक तेसर रागक नाम की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राग वैदेही भैरव।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राग वैदेही भैरव।

व्याख्या: स्रोतमे राग वैदेही भैरव देल अछि।

प्रश्न 10887. तीरभुक्ति आ विद्यापति कल्याणमे कोन भाषा मे खयाल बनल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिली भाषामे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिली भाषामे।

व्याख्या: स्रोतमे एहि दुनू रागमे मैथिली भाषामे खयाल बनल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10888. संगीत रामायणक बालकाण्डमे कोन-कोन रागमे मैथिली खयाल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राग भूपाली आ बिलावल।

उत्तर: घ. राग भूपाली आ बिलावल।

व्याख्या: स्रोतमे बालकाण्डमे रागभूपाली आ बिलावलमे मैथिली खयाल कहल गेल।

प्रश्न 10889. संगीत रामायणक पृष्ठ ३ पर कोन वन्दना बिलावलमे अछि?

क. श्री गणेशजीक वन्दना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्री गणेशजीक वन्दना।

व्याख्या: स्रोतमे पृष्ठ ३ पर बिलावलमे श्री गणेशजीक वन्दना अछि।

प्रश्न 10890. संगीत रामायणक पृष्ठ २० पर भूपालीमे कोन वन्दना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. श्री शंकरजीक वन्दना।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. श्री शंकरजीक वन्दना।

व्याख्या: स्रोतमे पृष्ठ २० पर राग भूपालीमे श्री शंकरजीक वन्दना अछि।

प्रश्न 10891. संगीत रामायणक पृष्ठ ८७ पर कोन रागमे मिथिला प्रदेशक वन्दना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राग तीरभुक्ति।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राग तीरभुक्ति।

व्याख्या: स्रोतमे पृष्ठ ८७ पर राग तीरभुक्तिमे मिथिला प्रदेशक वन्दना अछि।

प्रश्न 10892. खण्ड १०९४क निष्कर्ष की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामरंगजी मिथिला-सम्बद्ध राग, मैथिली खयाल आ संगीत रामायणक रचनासँ मैथिली संगीत-परम्पराकेँ शास्त्रीय विस्तार दैत छथि।

उत्तर: घ. रामरंगजी मिथिला-सम्बद्ध राग, मैथिली खयाल आ संगीत रामायणक रचनासँ मैथिली संगीत-परम्पराकेँ शास्त्रीय विस्तार दैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड हुनकर राग-रचना आ मैथिली संगीत सामग्री समेटैत अछि।

खण्ड १०९५ : विदेह-सदेह २ — रामरंगजीक रागशास्त्र आ संरक्षण प्रश्न

प्रश्न 10893. संगीत रामायणक पृष्ठ १२० पर कोन रागक रचना कहल गेल?

क. राग वैदेही भैरव।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राग वैदेही भैरव।

व्याख्या: स्रोतमे पृष्ठ १२० पर राग वैदेही भैरवक रचना अछि।

प्रश्न 10894. वैदेही भैरवक पृष्ठ १२०क रचना कोन भाषामे कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हिन्दीमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हिन्दीमे।

व्याख्या: स्रोतमे राग वैदेही भैरवक (हिन्दीमे) रचना कहल अछि।

प्रश्न 10895. “अभिनव गीताञ्जली”क कोन भागमे विद्यापति कल्याण रागक खयाल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पंचम भाग।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पंचम भाग।

व्याख्या: स्रोतमे अभिनव गीताञ्जलीक पंचम भागमे कहल गेल।

प्रश्न 10896. अभिनव गीताञ्जलीक कोन पृष्ठपर विद्यापति कल्याणक विलम्बित-द्रुत खयाल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. २६५ आ २६६।

उत्तर: घ. २६५ आ २६६।

व्याख्या: स्रोतमे पृष्ठ २६५ आ २६६क उल्लेख अछि।

प्रश्न 10897. गजेन्द्र ठाकुर कोन कमीक उल्लेख करैत छथि?

क. तीनू रागक पूर्ण रागशास्त्र नहि अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीनू रागक पूर्ण रागशास्त्र नहि अछि।

व्याख्या: स्रोतमे पूर्ण रागशास्त्र विद्यापति कल्याण, तीरभुक्ति वा वैदेही भैरवक नहि अछि कहल गेल।

प्रश्न 10898. रामरंगजी अपन बहुत रचना सम्बन्धमे की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बहुत रचना मोन अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बहुत रचना मोन अछि।

व्याख्या: स्रोतमे बहुत रचना मोन अछि कहल गेल।

प्रश्न 10899. रामरंगजी किएक लिखब कठिन बुझबैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हाथ थरथराइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हाथ थरथराइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे हाथ थरथराइत अछि आब हमर कहल गेल।

प्रश्न 10900. गजेन्द्र ठाकुर तीनू रागक विस्तृत विवरण किएक चाहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पुस्तकाकार छपबाक लेल।
उत्तर: घ. पुस्तकाकार छपबाक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे विवरण लिखि दैतियैक तँ पुस्तकाकार छपि सकैत कहल गेल।

प्रश्न 10901. रामरंगजी अन्तमे की आश्वासन दैत छथि?
क. तीनूक विस्तृत विवरण पठाएब, लिखैत छी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तीनूक विस्तृत विवरण पठाएब, लिखैत छी।
व्याख्या: स्रोतमे तैयो हम तीनूक विस्तृत विवरण पठाएब, लिखैत छी कहल गेल।

प्रश्न 10902. खण्ड १०९५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रामरंगजीक राग-साधना संग ओकर लिखित रागशास्त्र, संरक्षण आ पुस्तकाकार प्रकाशनक आवश्यकता संवादमे प्रमुख बनैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रामरंगजीक राग-साधना संग ओकर लिखित रागशास्त्र, संरक्षण आ पुस्तकाकार प्रकाशनक आवश्यकता संवादमे प्रमुख बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड संगीत-संरक्षणक प्रश्न उठबैत अछि।

खण्ड १०९६ : विदेह-सदेह २ — जनकपुरमे चक्काजाम कवि गोष्ठी

प्रश्न 10903. “जनकपुरमे चक्काजाम कवि गोष्ठी” लेख केकर नामसँ देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जितेन्द्र झा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जितेन्द्र झा।
व्याख्या: शीर्षकसँ ठीक पहिने जितेन्द्र झाक नाम देल अछि।

प्रश्न 10904. जनकपुरधामक साहित्यकार आ रंगकर्मी कोन दिन सड़कपर कवितावाचन कएने छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शुक्र दिन ११ दिसम्बर।
उत्तर: घ. शुक्र दिन ११ दिसम्बर।
व्याख्या: स्रोतमे शुक्र दिन ११ दिसम्बर कऽ सड़कपर कवितावाचनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10905. कवि गोष्ठीमे कोन माग कएल गेल?

क. मिथिला राज्यक माग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला राज्यक माग।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला राज्यक माग कएल अछि।

प्रश्न 10906. नेपालमे चक्काजामबारे लेख की कहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई कोनो नव बात नहि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ई कोनो नव बात नहि।

व्याख्या: स्रोतमे नेपालमे चक्काजाम हएब कोनो नव बात नहि कहल गेल।

प्रश्न 10907. जनकपुरधामक साहित्यकार-रंगकर्मी कोन प्रकारक चक्काजाम कएलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रचनात्मक चक्काजाम।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रचनात्मक चक्काजाम।

व्याख्या: स्रोतमे रचनात्मक चक्काजाम कहल गेल।

प्रश्न 10908. कवि गोष्ठी कतय कएल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पिडारी चौकपर।

उत्तर: घ. पिडारी चौकपर।

व्याख्या: स्रोतमे जनकपुरक प्रवेशद्वार पिडारी चौकपर गोष्ठी कहल गेल।

प्रश्न 10909. पिडारी चौक जनकपुरक कोन रूपमे कहल गेल?

क. प्रवेशद्वार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवेशद्वार।

व्याख्या: स्रोतमे जनकपुरक प्रवेशद्वार रहल पिडारी चौक कहल अछि।

प्रश्न 10910. गोष्ठीमे कविसभ नेपालक नव संविधानमे की चाहैत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिलाराज्यक व्यवस्था।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिलाराज्यक व्यवस्था।

व्याख्या: स्रोतमे नव संविधानमे मिथिलाराज्यक व्यवस्था हएबाक माग कहल गेल।

प्रश्न 10911. नेपालमे तखन कोन प्रक्रिया चलि रहल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नव संविधान लिखबाक प्रक्रिया।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नव संविधान लिखबाक प्रक्रिया।
व्याख्या: स्रोतमे एखन नव संविधान लिखबाक प्रक्रिया चलि रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10912. खण्ड १०९६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जनकपुरक चक्काजाम कवि गोष्ठी साहित्यिक अभिव्यक्तिकेँ मिथिला राज्यक राजनीतिक-सांस्कृतिक मागसँ जोड़ैत अछि।
उत्तर: घ. जनकपुरक चक्काजाम कवि गोष्ठी साहित्यिक अभिव्यक्तिकेँ मिथिला राज्यक राजनीतिक-सांस्कृतिक मागसँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड रचनात्मक आन्दोलनक चित्र दैत अछि।

खण्ड १०९७ : विदेह-सदेह २ — मिथिला राज्यक माग आ सहभागिता

प्रश्न 10913. रंगकर्मी रन्जु झा नया संविधानमे कोन बात सुनिश्चित होएबाक चाही कहलनि?
क. मिथिला राज्य आ मधेशीक हक-अधिकार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिला राज्य आ मधेशीक हक-अधिकार।
व्याख्या: स्रोतमे रन्जु झा मिथिला राज्य आ मधेशीक हक अधिकार सुनिश्चित हएबाक चाही कहलनि।

प्रश्न 10914. गोष्ठीमे डा. राजेन्द्र प्रसाद विमल सहभागी छलाह कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. छलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. छलाह।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकर नाम सहभागीसूचीमे अछि।

प्रश्न 10915. मिनापक अध्यक्ष रूपमे कोन नाम देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सुनिल मल्लिक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सुनिल मल्लिक।
व्याख्या: स्रोतमे मिनापक अध्यक्ष सुनिल मल्लिकक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10916. गोष्ठीमे सुनिल मिश्र, काशीकान्त झा, प्रमिला मिश्र, रमेश रंजन, रंजु झा, मदन ठाकुर आदि के रूपमे उल्लिखित छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सहभागी।
उत्तर: घ. सहभागी।
व्याख्या: स्रोतमे एहि नाम सभक सहभागिताक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10917. गोष्ठी केकर सहभागितामे कएल गेल?
क. मिथिला राज्य संघर्ष समिति जनकपुर आ मिनापक सहभागितामे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिला राज्य संघर्ष समिति जनकपुर आ मिनापक सहभागितामे।
व्याख्या: स्रोतमे ई दुनू सहभागिता देल अछि।

प्रश्न 10918. चक्काजामक कारण कोन सड़क खण्डमे सवारी साधन नहि चलि सकल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जनकपुर-महेन्द्रनगर सड़क खण्ड।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जनकपुर-महेन्द्रनगर सड़क खण्ड।
व्याख्या: स्रोतमे जनकपुर महेन्द्रनगर सड़क खण्डकमे सवारी साधन नहि चलि सकल कहल गेल।

प्रश्न 10919. संविधान सभामे मिथिला राज्यक माग कोना पड़ि रहल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कमजोर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कमजोर।
व्याख्या: स्रोतमे संविधान सभामे मिथिला राज्यक माग कमजोर पड़ि रहल समय कहल गेल।

प्रश्न 10920. एहि गोष्ठीसँ मागक की परिणाम भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. थोड़बहुत चर्चा बटोरलक।
उत्तर: घ. थोड़बहुत चर्चा बटोरलक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तरहक गोष्ठीसँ मिथिला राज्यक माग थोड़बहुत चर्चा बटोरलक कहल अछि।

प्रश्न 10921. चक्काजाम कवि गोष्ठीमे साहित्यकारक भूमिका की छल?
क. राज्य-अधिकारक मागकेँ सार्वजनिक आवाज देब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राज्य-अधिकारक मागकेँ सार्वजनिक आवाज देब।
व्याख्या: साहित्यकार आ रंगकर्मी सड़कपर कवितावाचन करैत माग उठबैत छथि।

प्रश्न 10922. खण्ड १०९७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चक्काजाम कवि गोष्ठी नव संविधान, मिथिला राज्य, मधेशी अधिकार आ जनकपुरक सांस्कृतिक प्रतिरोधकेँ एक मंचपर आनैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चक्काजाम कवि गोष्ठी नव संविधान, मिथिला राज्य, मधेशी अधिकार आ जनकपुरक सांस्कृतिक प्रतिरोधकेँ एक मंचपर आनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड सहभागिता आ आन्दोलनक प्रभाव समेटैत अछि।

खण्ड १०९८ : विदेह-सदेह २ — “प्रिय पाहुन” विवाह गीत क्यासेट

प्रश्न 10923. “प्रिय पाहुन” कोन प्रकारक सामग्री समेटल क्यासेट अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पारम्परिक मैथिली विवाह गीत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पारम्परिक मैथिली विवाह गीत।

व्याख्या: स्रोतमे पारम्परिक मैथिली विवाह गीत समेटल क्यासेट कहल गेल।

प्रश्न 10924. “प्रिय पाहुन”मे विवाहक कोन चरणसँ कोन चरण धरि गीत संग्रहित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिछनसँ विदाई धरि।

उत्तर: घ. परिछनसँ विदाई धरि।

व्याख्या: स्रोतमे विआहक परिछनसँ विदाई धरिक गीत संग्रहित अछि।

प्रश्न 10925. एहि क्यासेटक प्रस्तुति कोन कलाकारक एकल प्रस्तुति अछि?

क. अंशुमाला।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंशुमाला।

व्याख्या: स्रोतमे अंशुमालाक एकल प्रस्तुति कहल गेल।

प्रश्न 10926. एहि क्यासेटक विशेषता रूपमे अंशुमाला कोन गीतक उल्लेख करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जयमाल गीत।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जयमाल गीत।

व्याख्या: स्रोतमे विशेषता जयमाल गीत रहल गायिका अंशुमाला कहैत छथि।

प्रश्न 10927. जयमाल गीतकेँ मिथिलाक कोन प्रकारक गीत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मौलिक गीत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मौलिक गीत।

व्याख्या: स्रोतमे जयमाल गीत मिथिलाक मौलिक गीत कहल गेल।

प्रश्न 10928. जीमनार गीत कोन अवसरक गीत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वरियाती खएबाक काल।

उत्तर: घ. वरियाती खएबाक काल।

व्याख्या: स्रोतमे जीमनार वरियाती खएबाक काल गाओल जाएबला गीत कहल अछि।

प्रश्न 10929. जीमनार गीत आब बहुतोक ठोरपर की नहि चढ़ैत अछि कहल गेल?
क. नहि चढ़ैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि चढ़ैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे आब बहुतोक ठोरपर नहि चढ़ैत छन्हि कहल अछि।

प्रश्न 10930. “प्रिय पाहुन”मे जीमनारकेँ की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. महत्त्व।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. महत्त्व।
व्याख्या: स्रोतमे एहि क्यासेटमे एकरा महत्व देल गेल अछि।

प्रश्न 10931. अंशुमालाक कहब अनुसार “प्रिय पाहुन” ककरा पसन्द पड़ि रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नव आ पुरान दुनू पीढ़ीक लोककेँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नव आ पुरान दुनू पीढ़ीक लोककेँ।
व्याख्या: स्रोतमे नव पुरान दुनू पीढ़ीक लोक पसन्द कऽ रहल कहल गेल।

प्रश्न 10932. खण्ड १०९८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “प्रिय पाहुन” विवाहक परम्परागत गीत-संसारकेँ परिछनसँ विदाई धरि अंशुमालाक स्वरमे सहेजबाक प्रयास अछि।
उत्तर: घ. “प्रिय पाहुन” विवाहक परम्परागत गीत-संसारकेँ परिछनसँ विदाई धरि अंशुमालाक स्वरमे सहेजबाक प्रयास अछि।
व्याख्या: ई खण्ड क्यासेटक विषय आ सांस्कृतिक महत्त्व बतबैत अछि।

खण्ड १०९९ : विदेह-सदेह २ — “प्रिय पाहुन”क गीत-संग्रह आ निर्माण

प्रश्न 10933. “प्रिय पाहुन”मे कन्या लगन गीत अछि कि नहि?
क. अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अछि।
व्याख्या: स्रोतमे कन्या लगन गीत संकलित गीतमे अछि।

प्रश्न 10934. “प्रिय पाहुन”मे परिछन गीत अछि कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अछि।
व्याख्या: स्रोतमे परिछन गीतक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10935. “देखु रसे रसे दुलहा” कोन क्यासेटमे संकलित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रिय पाहुन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रिय पाहुन।
व्याख्या: स्रोतमे ई गीत प्रिय पाहुनक गीत-सूचीमे अछि।

प्रश्न 10936. “प्रिय पाहुन”मे देहरि छेकाओनक गीत अछि कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अछि।
उत्तर: घ. अछि।
व्याख्या: गीत-सूचीमे देहरि छेकाओन देल अछि।

प्रश्न 10937. “प्रिय पाहुन”मे सिन्दुरदान आ समदाओनक गीत अछि कि नहि?
क. अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अछि।
व्याख्या: स्रोतमे सिन्दुरदान आ समदाओनक गीत संकलित अछि।

प्रश्न 10938. एहि क्यासेटमे सीमाक भीतरक हँसी-मजाक संग की देखएबाक प्रयास अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नुकाएल प्रेम।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नुकाएल प्रेम।
व्याख्या: स्रोतमे सीमाक भीतर हँसी मजाक आ ताहिभितर नुकाएल प्रेम देखएबाक प्रयास कहल गेल।

प्रश्न 10939. “प्रिय पाहुन” कोन क्यासेटक प्रस्तुति रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गंगा क्यासेट।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गंगा क्यासेट।
व्याख्या: स्रोतमे गंगा क्यासेटक प्रस्तुति कहल गेल।

प्रश्न 10940. एखन “प्रिय पाहुन” कोन रूपमे उपलब्ध कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. केवल ऑडियो रूपमे।
उत्तर: घ. केवल ऑडियो रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे एखन मात्र अडियो रूपमे अछि कहल गेल।

प्रश्न 10941. गीत-संकलन केकर अछि?
क. हृदय नारायण झा आ शशि किरण झा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हृदय नारायण झा आ शशि किरण झा।
व्याख्या: स्रोतमे गीत संकलन हृदय नारायण झा आ शशि किरण झाक कहल अछि।

प्रश्न 10942. खण्ड १०९९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “प्रिय पाहुन”मे विवाहक प्रमुख संस्कार-गीत, मर्यादित हास्य, प्रेम, गीत-संकलन आ ऑडियो प्रस्तुति एकसाथ संग्रहीत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “प्रिय पाहुन”मे विवाहक प्रमुख संस्कार-गीत, मर्यादित हास्य, प्रेम, गीत-संकलन आ ऑडियो प्रस्तुति एकसाथ संग्रहीत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड गीत-सूची आ निर्माण-सूचना समेटैत अछि।

खण्ड ११०० : विदेह-सदेह २ — “प्रिय पाहुन”क संगीत आ सांस्कृतिक आशा

प्रश्न 10943. “प्रिय पाहुन”मे संगीत केकर अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कमल मोहन चुन्नुक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कमल मोहन चुन्नुक।
व्याख्या: स्रोतमे संगीत कमल मोहन चुन्नुकक कहल गेल।

प्रश्न 10944. गायिका अंशुमालाके एहि क्यासेटसँ कतेक आशा अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बहुत बेसी आशा।
उत्तर: घ. बहुत बेसी आशा।
व्याख्या: स्रोतमे गायिका अंशुमालाके एहि क्यासेटसँ बहुत बेशी आशा छन्हि कहल गेल।

प्रश्न 10945. आधुनिक गीतक बजारमे “प्रिय पाहुन” कोन स्थान बना सकैत अछि कहल गेल?
क. अलग स्थान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अलग स्थान।
व्याख्या: स्रोतमे आधुनिक गीतक बजारमे ई विवाह गीत अलग स्थान बनाओत से आशा कहल गेल।

प्रश्न 10946. “प्रिय पाहुन”क केन्द्र आधुनिक गीत नहि, कोन परम्परा अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली विवाह-गीत परम्परा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली विवाह-गीत परम्परा।
व्याख्या: लेख भरि विवाहक परम्परागत गीत सभ पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 10947. क्यासेटक सांस्कृतिक प्रयोजन की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विवाह-संस्कारक गीत-सम्पदा सहेजब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विवाह-संस्कारक गीत-सम्पदा सहेजब।

व्याख्या: परिछन, लगन, सिन्दुरदान, विदाई आदि गीत संकलन एहि उद्देश्य देखबैत अछि।

प्रश्न 10948. जयमाल आ जीमनार गीतक उल्लेख कोन बातक संकेत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला विवाहक मौलिकता आ विलुप्ति-संकटक।

उत्तर: घ. मिथिला विवाहक मौलिकता आ विलुप्ति-संकटक।

व्याख्या: जयमाल मौलिक कहल गेल आ जीमनार ठोरसँ हटैत गीत रूपमे याद कएल गेल।

प्रश्न 10949. नव-पुरान दुनू पीढ़ीक पसन्दक उल्लेख की देखबैत अछि?

क. परम्पराक पीढ़ीगत सेतु।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परम्पराक पीढ़ीगत सेतु।

व्याख्या: क्यासेट पुरान परम्परा कैं नव पीढ़ीसँ जोड़बाक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 10950. ऑडियो क्यासेट माध्यमक महत्त्व की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गीत-परम्परा सुनबाक रूपमे जीवित रहैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गीत-परम्परा सुनबाक रूपमे जीवित रहैत अछि।

व्याख्या: क्यासेटक ऑडियो रूप विवाह-गीतक श्रव्य संरक्षण करैत अछि।

प्रश्न 10951. “प्रिय पाहुन” लेखक समापन कोन आशासँ होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ई विवाह गीत आधुनिक बजारमे अलग स्थान बनाओत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ई विवाह गीत आधुनिक बजारमे अलग स्थान बनाओत।

व्याख्या: अन्तिम वाक्य एहि आशाकैं प्रकट करैत अछि।

प्रश्न 10952. खण्ड ११००क निष्कर्ष की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. “प्रिय पाहुन” आधुनिक गीतक बजारमे मैथिली विवाह-गीत परम्पराकैं अलग पहचान देबाक सांस्कृतिक परियोजना रूपमे देखल गेल अछि।

उत्तर: घ. “प्रिय पाहुन” आधुनिक गीतक बजारमे मैथिली विवाह-गीत परम्पराकैं अलग पहचान देबाक सांस्कृतिक परियोजना रूपमे देखल गेल अछि।

व्याख्या: ई खण्ड संगीत, आशा आ सांस्कृतिक संरक्षण पर केन्द्रित अछि।

खण्ड ११०१ : विदेह-सदेह २ — अमरनाथ झा: चुनाव-स्मृति आ सामाजिक चेतना

प्रश्न 10953. अमरनाथ झा अपन लेखमे खुशवन्त सिंहक कोन प्रसंग उद्धृत करैत छथि?

क. आइ-काल्हिक चुनावपर टिप्पणी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आइ-काल्हिक चुनावपर टिप्पणी।

व्याख्या: स्रोतमे हिन्दुस्तान समाचार पत्रमे खुशवन्त सिंह जीक आइ काल्हिक चुनावपर शब्द उद्धृत अछि।

प्रश्न 10954. आशुतोषक निबन्धक उद्धरण कोन परिवर्तनक बात करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. देशक राजनीतिक दिशा बदलि रहल अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. देशक राजनीतिक दिशा बदलि रहल अछि।

व्याख्या: स्रोतमे देशक राजनीतिक दिशा बदलि रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 10955. आशुतोषक पंक्तिमे वोटर कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बुधियार भऽ रहल छथि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बुधियार भऽ रहल छथि।

व्याख्या: उद्धरणमे वोटर बुधियार भऽ रहल छथि कहल गेल।

प्रश्न 10956. आशुतोषक अनुसार नव सिविल सोसाइटी नेता लोकनिक लेल की तैयार करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जिम्मेदारी।

उत्तर: घ. जिम्मेदारी।

व्याख्या: उद्धरणमे नेता लोकनिक लेल जिम्मेदारी तैयार कए रहल अछि।

प्रश्न 10957. अमरनाथ झाकेँ १९७१क कोन घटना याद अछि?

क. भारत-पाक युद्ध।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारत-पाक युद्ध।

व्याख्या: स्रोतमे १९७१ क भारत-पाक युद्धक कालक स्मृति अछि।

प्रश्न 10958. १९७१क स्मृतिमे गामक बूढ़-पुरान लोक केकरा पर गर्व करैत रहथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भारतीय सैनिकपर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भारतीय सैनिकपर।

व्याख्या: स्रोतमे बूढ़-पुरान लोक भारतीय सैनिकपर गर्व कए रहल रहथि।

प्रश्न 10959. १९७४ आसपास अमरनाथ झाकेँ कोन आन्दोलनक मोन पड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जे.पी. आन्दोलन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जे.पी. आन्दोलन।
व्याख्या: स्रोतमे १९७४ क आसपासक जे.पी. आन्दोलनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10960. जे.पी. आन्दोलनमे युवा सभ कोना भए गेल छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. न्यायवादी-आन्दोलनकारी।
उत्तर: घ. न्यायवादी-आन्दोलनकारी।
व्याख्या: स्रोतमे सभ युवा न्यायवादी-आन्दोलनकारी भए गेल रहथि कहल अछि।

प्रश्न 10961. अमरनाथ झाक पैघ भाय आ छोट बहनोइ कतय प्रदर्शनमे भाग लेने रहथि?
क. दुमकामे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दुमकामे।
व्याख्या: स्रोतमे दुमकामे प्रदर्शनमे भाग लेने रहथि।

प्रश्न 10962. खण्ड ११०१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अमरनाथ झा वर्तमान चुनाव-चेतना केँ १९७१ युद्ध-स्मृति आ १९७४ जे.पी. आन्दोलनक ग्रामीण अनुभवसँ जोड़ैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अमरनाथ झा वर्तमान चुनाव-चेतना केँ १९७१ युद्ध-स्मृति आ १९७४ जे.पी. आन्दोलनक ग्रामीण अनुभवसँ जोड़ैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड चुनाव, स्मृति आ जनचेतना पर केन्द्रित अछि।

खण्ड ११०२ : विदेह-सदेह २ — जे.पी. आन्दोलन, आपातकाल आ किशोर चेतना

प्रश्न 10963. अमरनाथ झाक पितियौत भाय आ संगी सभक मैट्रिक परीक्षा कोना गेल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बड्ड खराब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बड्ड खराब।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकर मैट्रिकक परीक्षा बड्ड खराब गेल छलन्हि कहल अछि।

प्रश्न 10964. परीक्षा खराब गेलाक बाद ओ सभ की बनि गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आन्दोलनकारी।
उत्तर: घ. आन्दोलनकारी।
व्याख्या: स्रोतमे से ओ आन्दोलनकारी बनि गेल रहथि कहल अछि।

प्रश्न 10965. आन्दोलनकारी भेलाक बाद ओ सभ कतय गेल रहथि?
क. जेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जेल।
व्याख्या: स्रोतमे जेल गेल रहथि कहल अछि।

प्रश्न 10966. १९७५-७६ मे अमरनाथ झा अपनाकेँ कोना बुझए लागल छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पैघ क्रान्तिकारी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पैघ क्रान्तिकारी।
व्याख्या: स्रोतमे हमहूँ अपनाकेँ पैघ क्रान्तिकारी बुझए लागल छलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 10967. तहिया अमरनाथ झा कोन कक्षामे पढ़ैत रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कक्षा ७-८।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कक्षा ७-८।
व्याख्या: स्रोतमे तहिया हम कक्षा ७-८ मे पढ़ित रही कहल अछि।

प्रश्न 10968. आपातकालक विरोधमे अमरनाथ झा की लिखने छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अपन पहिल कविता।
उत्तर: घ. अपन पहिल कविता।
व्याख्या: स्रोतमे आपात कालक विरोधमे हम अपन पहिल कविता लिखने रही कहल अछि।

प्रश्न 10969. अमरनाथ झाक पहिल कविता के फाड़ि देलन्हि?
क. माझिल भाए।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. माझिल भाए।
व्याख्या: स्रोतमे माझिल भाए हँसीमे फाड़ि कए उड़ा देलन्हि।

प्रश्न 10970. १९७७क चुनावमे बहुत लोक कोन पार्टीक संग देलन्हि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जनता पार्टी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जनता पार्टी।
व्याख्या: स्रोतमे १९७७ क चुनावमे सभ गोटे जनता पार्टीक संग देलन्हि कहल अछि।

प्रश्न 10971. परिवारक कुलगुरु सेहो एहि बेर केकरा भोट देबाक कहए लगलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जनता पार्टीकेँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जनता पार्टीकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे कुलगुरु सेहो जनते पार्टीकेँ भोट देल जाए कहलनि।

प्रश्न 10972. खण्ड ११०२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जे.पी. आन्दोलन आ आपातकाल अमरनाथ झाक किशोर मनमे राजनीतिक चेतना, कविता आ जनतापक्षी उत्साहक आरम्भ बनल।
उत्तर: घ. जे.पी. आन्दोलन आ आपातकाल अमरनाथ झाक किशोर मनमे राजनीतिक चेतना, कविता आ जनतापक्षी उत्साहक आरम्भ बनल।
व्याख्या: ई खण्ड व्यक्तिगत स्मृति आ राष्ट्रीय राजनीति जोड़ैत अछि।

खण्ड ११०३ : विदेह-सदेह २ — ग्रामीण राजनीति, अभाव आ बौद्धिक व्यंग्य

प्रश्न 10973. १९७७क नारा “अन्न खाऊ कौरवक, गुण गाऊ पांडवक” कोन राजनीतिक माहौल देखबैत अछि?
क. जनता पार्टीक पक्षक माहौल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जनता पार्टीक पक्षक माहौल।
व्याख्या: स्रोतमे १९७७ चुनाव आ जनता पार्टी प्रसंगसँ ई नारा जुड़ल अछि।

प्रश्न 10974. अमरनाथ झा अपन किशोर मनकेँ कोना वर्णित करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पूर्ण क्रांतिकारी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पूर्ण क्रांतिकारी।
व्याख्या: स्रोतमे हमर १४ वर्षीय किशोर मन पूर्ण क्रांतिकारी भऽ गेल रहए कहल अछि।

प्रश्न 10975. ओ अपन स्मृति कोन आजुक राज्य/क्षेत्रक गामसँ जोड़ैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. झारखण्डक संताल परगनाक गाम।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. झारखण्डक संताल परगनाक गाम।
व्याख्या: स्रोतमे आइक झारखण्डक संताल परगनाक एक गामक खिस्सा कहल अछि।

प्रश्न 10976. हाई स्कूलक माटिक धरतीकेँ कीसँ निपबाक बात अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गोबरसँ।
उत्तर: घ. गोबरसँ।
व्याख्या: स्रोतमे माटिक धरतीकेँ गोबरसँ निपबाक हेतु पानि-गोबर आनबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 10977. स्कूल लेल पानि कतयसँ आनए पड़ैत छल?
क. १ किलोमीटरसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १ किलोमीटरसँ।
व्याख्या: स्रोतमे १ किलोमीटरसँ पानि आनए पड़ैत छल।

प्रश्न 10978. गोबर कतयसँ आनए पड़ैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लग-पासक जंगलसँ २-३ किलोमीटरसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लग-पासक जंगलसँ २-३ किलोमीटरसँ।
व्याख्या: स्रोतमे जंगलसँ २-३ किलोमीटरसँ गोबर आनए पड़ैत छल।

प्रश्न 10979. लेखक ओहि क्षेत्रबारे लोकक सामान्य धारणा कोना कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पहिने रोटी दिअ, तखन राजनीति करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पहिने रोटी दिअ, तखन राजनीति करब।
व्याख्या: स्रोतमे भूखाएल-नंगटे रहनिहार क्षेत्रक धारणा पर व्यंग्य अछि।

प्रश्न 10980. तहिया जनसाधारण मात्र नहि, के धरि हस्तक्षेप कएने रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. धर्मगुरु।
उत्तर: घ. धर्मगुरु।
व्याख्या: स्रोतमे जनसाधारण मात्र नहि वरन् धर्मगुरु धरि हस्तक्षेप कएने रहथि।

प्रश्न 10981. लेखक “विशिष्ट लोक” आ “कलमक जादूगर” कहि कोन भाव रचैत छथि?
क. स्वयम्भू बौद्धिकतापर व्यंग्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्वयम्भू बौद्धिकतापर व्यंग्य।
व्याख्या: स्रोतमे ई अभिव्यक्ति आत्म-व्यंग्य आ बौद्धिक दम्भक आलोचना रूपमे आबैत अछि।

प्रश्न 10982. खण्ड ११०३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अमरनाथ झा ग्रामीण अभाव, किशोर क्रांतिकारिता आ बौद्धिक दम्भपर व्यंग्यक माध्यमे राजनीति-स्मृति लिखैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अमरनाथ झा ग्रामीण अभाव, किशोर क्रांतिकारिता आ बौद्धिक दम्भपर व्यंग्यक माध्यमे राजनीति-स्मृति लिखैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड ग्रामीण राजनीति आ आत्मालोचना समेटैत अछि।

खण्ड ११०४ : विदेह-सदेह २ — विष्णु प्रभाकरक स्मृति

प्रश्न 10983. “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह” शीर्षक कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्रद्धा आ स्मरण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्रद्धा आ स्मरण।

व्याख्या: शीर्षक स्वयं विष्णु प्रभाकरक सादगीक स्मरण करैत अछि।

प्रश्न 10984. अमरनाथ झाक अनुसार १९९० वर्ष हुनका लेल कोना छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. काफी महत्त्वपूर्ण।

उत्तर: घ. काफी महत्त्वपूर्ण।

व्याख्या: स्रोतमे १९९० क वर्ष काफी महत्त्वपूर्ण लगैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 10985. मोहन पैलेसक छतपर चलए वाला काफी हाउसक गोष्ठीमे लेखक ककर संग गेल होएबाक अनुमान करैत छथि?

क. प्रो. राजकुमार जैनक संग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रो. राजकुमार जैनक संग।

व्याख्या: स्रोतमे शाइत प्रो. राजकुमार जैन जीक संग गेल रही कहल अछि।

प्रश्न 10986. ओहि मंडलीमे विष्णु प्रभाकर जी कोन वेशमे सुशोभित छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खादी धरी, गाँधी टोपी पहिरने।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खादी धरी, गाँधी टोपी पहिरने।

व्याख्या: स्रोतमे वयोवृद्ध खादी धरी, गाँधी टोपी पहिरने विष्णु प्रभाकरक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10987. शनिवारी गोष्ठीक सिलसिला कतेक वर्ष धरि चलल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. १९९५ तक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. १९९५ तक।

व्याख्या: स्रोतमे ई सिलसिला १९९५ तक चलल कहल गेल।

प्रश्न 10988. ओहि वर्षसभमे लेखककेँ किनकर साहचर्य भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखक, कवि, कलाकार आ पत्रकार।

उत्तर: घ. लेखक, कवि, कलाकार आ पत्रकार।

व्याख्या: स्रोतमे नामी-गिरामी लेखक, कवि, कलाकार आ पत्रकारक साहचर्य रहल कहल गेल।

प्रश्न 10989. काफी हाउस मे लोक अमरनाथ झाकेँ प्रायः कोन विषयक शिक्षक बुझैत रहथि?

क. हिन्दीक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिन्दीक।

व्याख्या: स्रोतमे इतिहास पढ़बैत छी, मुदा लोक हमरा हिन्दीक शिक्षक बुझैत रहथि कहल अछि।

प्रश्न 10990. डॉ. हेमचंद जैन अमरनाथ झाकेँ की कहैत रहथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अहाँ अपन बौद्धिक लुकसँ आतंकित करैत छी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अहाँ अपन बौद्धिक लुकसँ आतंकित करैत छी।

व्याख्या: स्रोतमे डॉक्टर हेमचंद जैनक ई टिप्पणी देल अछि।

प्रश्न 10991. १९९४ मे भारतीय भाषा लेल संघर्षक क्रममे लेखककेँ कतय पठाओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तिहाड़ जेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तिहाड़ जेल।

व्याख्या: स्रोतमे पुलिस गिरफ्तार कए तिहाड़ जेल भेज देलक कहल अछि।

प्रश्न 10992. खण्ड ११०४क निष्कर्ष की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अमरनाथ झा विष्णु प्रभाकरक सादगी, काफी हाउसक साहित्यिक मंडली आ भारतीय भाषा आन्दोलनक स्मृतिकेँ आत्मीय श्रद्धांजलि रूपमे जोड़ैत छथि।

उत्तर: घ. अमरनाथ झा विष्णु प्रभाकरक सादगी, काफी हाउसक साहित्यिक मंडली आ भारतीय भाषा आन्दोलनक स्मृतिकेँ आत्मीय श्रद्धांजलि रूपमे जोड़ैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक साहचर्य आ स्मृति पर केन्द्रित अछि।

खण्ड ११०५ : विदेह-सदेह २ — आचार्य पंकज: परिचय आ आरम्भ

प्रश्न 10993. अमरनाथ झा अपन परिचय कोन रूपमे दैत छथि?

क. दिल्ली विश्वविद्यालयक स्वामी श्रद्धानंद कॉलेजक इतिहास विभागक असोसिएट प्रोफेसर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिल्ली विश्वविद्यालयक स्वामी श्रद्धानंद कॉलेजक इतिहास विभागक असोसिएट प्रोफेसर।

व्याख्या: स्रोतमे अमरनाथ झा अपन पद आ संस्थाक परिचय एही रूपमे दैत छथि।

प्रश्न 10994. आचार्य पंकजक मूल नाम की देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ज्योतींद्र प्रसाद झा “पंकज”।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ज्योतींद्र प्रसाद झा “पंकज”।

व्याख्या: स्रोतमे श्री ज्योतींद्र प्रसाद झा “पंकज” नामक उल्लेख अछि।

प्रश्न 10995. पंकजजीक जन्म कहिया भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९१९ मे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९१९ मे।
व्याख्या: स्रोतमे पंकजजीक जन्म-वर्ष १९१९ देल गेल अछि।

प्रश्न 10996. पंकजजी १९३४ मे कतय अध्यापन शुरू कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. देवघरक हिंदी विद्यापीठमे।
उत्तर: घ. देवघरक हिंदी विद्यापीठमे।
व्याख्या: स्रोत अनुसार १९३४ मे ओ देवघरक हिंदी विद्यापीठमे अध्यापन शुरू कएलनि।

प्रश्न 10997. अमरनाथ झा पंकजजीकेँ कोन क्षेत्रमे साहित्यक अलख जगओनिहार मानैत छथि?
क. संताल परगना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संताल परगना।
व्याख्या: स्रोतमे संताल परगनामे हिंदी साहित्य आ कविता जागृत करबाक श्रेय हुनका देल गेल।

प्रश्न 10998. पंकजजीक बहुमुखी प्रतिभाक असर कोन रूपमे कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समस्त संताल परगनाकेँ शिक्षाक लौ सँ रौशन करब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समस्त संताल परगनाकेँ शिक्षाक लौ सँ रौशन करब।
व्याख्या: स्रोत हुनकर प्रतिभाकेँ क्षेत्रीय शिक्षा-जागरणसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 10999. १९४२ क भारत छोड़ो आन्दोलनमे पंकजजीक भूमिका कोन रूपमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शिक्षकक हैसियतसँ कमान सम्हारब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शिक्षकक हैसियतसँ कमान सम्हारब।
व्याख्या: स्रोतमे कहल अछि जे ओ शिक्षकक हैसियतसँ आन्दोलनक कमान सम्हारलनि।

प्रश्न 11000. पंकजजी १९५४ मे कोन महाविद्यालयसँ जुड़लाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संताल परगना महाविद्यालय, दुमका।
उत्तर: घ. संताल परगना महाविद्यालय, दुमका।
व्याख्या: स्रोतमे ओहि महाविद्यालयक संस्थापक शिक्षक आ हिंदी विभागाध्यक्ष बनबाक बात अछि।

प्रश्न 11001. पंकजजीक आरम्भिक रचनात्मक पहिचान कोन विधा सभसँ जुड़ल छल?
क. कविता, समीक्षा आ एकांकी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कविता, समीक्षा आ एकांकी।
व्याख्या: स्रोतमे तत्कालीन पत्र-पत्रिकामे एहि विधासभमे हुनकर लेखनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11002. खण्ड ११०५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आचार्य पंकज शिक्षण, आन्दोलन आ साहित्यक माध्यमे संताल परगनाक सांस्कृतिक जागरणक व्यक्तित्व छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आचार्य पंकज शिक्षण, आन्दोलन आ साहित्यक माध्यमे संताल परगनाक सांस्कृतिक जागरणक व्यक्तित्व छथि।
व्याख्या: ई खण्ड पंकजजीक आरम्भिक जीवन आ कार्यक आधार परिचय दैत अछि।

खण्ड ११०६ : विदेह-सदेह २ — पंकजजीक कृति आ पंकज-गोष्ठी

प्रश्न 11003. पंकजजीक १९५८ क कविता-संग्रहक नाम की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्नेहदीप।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्नेहदीप।
व्याख्या: स्रोतमे १९५८ मे “स्नेहदीप” नामक कविता-संग्रह छपबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11004. १९६४ मे पंकजजीक दोसर कविता-संग्रह कोन नामसँ छपल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उदगार।
उत्तर: घ. उदगार।
व्याख्या: स्रोतमे १९६४ मे “उदगार” नामक संग्रहक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11005. १९६५ मे बनल पैघ साहित्यिक संगठनक नाम की राखल गेल?
क. पंकज-गोष्ठी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पंकज-गोष्ठी।
व्याख्या: स्रोतमे संगठनक अध्यक्ष पंकजजी कैँ बनाओल गेल आ नाम हुनके नामपर राखल गेल।

प्रश्न 11006. पंकज-गोष्ठी १९६५ सँ १९७५ धरि कोन रूपमे वर्णित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संपूर्ण संताल परगनाक असगर आ सभसँ पैघ साहित्यिक आन्दोलन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संपूर्ण संताल परगनाक असगर आ सभसँ पैघ साहित्यिक आन्दोलन।
व्याख्या: स्रोतमे एहि दशकमे पंकज-गोष्ठीक व्यापकता वर्णित अछि।

प्रश्न 11007. पंकज-गोष्ठी द्वारा प्रकाशित कविता-संकलनक नाम की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अर्पण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अर्पण।
व्याख्या: स्रोतमे कविता-संकलन “अर्पण” कहल गेल।

प्रश्न 11008. पंकज-गोष्ठी द्वारा प्रकाशित एकांकी-संकलनक नाम की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. साहित्यकार।
उत्तर: घ. साहित्यकार।
व्याख्या: स्रोतमे एकांकी संकलन “साहित्यकार” नामसँ देल अछि।

प्रश्न 11009. स्रोतमे पंकजजीक समकालीन रूपमे किनकर नाम आयल?
क. लक्ष्मी नारायण “सुधांशु”, जनार्धन प्रसाद मिश्र “परमेश” आ बुद्धिनाथ झा “कैरव”।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लक्ष्मी नारायण “सुधांशु”, जनार्धन प्रसाद मिश्र “परमेश” आ बुद्धिनाथ झा “कैरव”।
व्याख्या: स्रोतमे ई समकालीन नाम पंकजजीक साहित्यिक परिप्रेक्ष्य मे आयल अछि।

प्रश्न 11010. पंकजजीक विद्वता सँ परिचित हिंदी रचनाकार सभमे कोन नाम आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रामधारी सिंह “दिनकर” आ सुमित्रानंदन पन्त आदि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रामधारी सिंह “दिनकर” आ सुमित्रानंदन पन्त आदि।
व्याख्या: स्रोतमे दिनकर, पन्त, जानकी वल्लभ शास्त्री आदि नाम उल्लेखित अछि।

प्रश्न 11011. पंकज-गोष्ठीक मान्यता बिना ओहि समय कोन स्थिति कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कोनो साहित्यकारहि नहि कहाइत रहथि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कोनो साहित्यकारहि नहि कहाइत रहथि।
व्याख्या: स्रोत पंकज-गोष्ठीक साहित्यिक मान्यताकेँ अत्यन्त प्रभावशाली बतबैत अछि।

प्रश्न 11012. खण्ड ११०६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पंकज-गोष्ठी पंकजजीक नेतृत्वमे संताल परगनाक साहित्यिक संस्थागत आन्दोलन बनल।
उत्तर: घ. पंकज-गोष्ठी पंकजजीक नेतृत्वमे संताल परगनाक साहित्यिक संस्थागत आन्दोलन बनल।
व्याख्या: ई खण्ड कृति, संस्था आ प्रभावक सम्बन्ध देखबैत अछि।

खण्ड ११०७ : विदेह-सदेह २ — पंकजजीक स्मृति आ भाषिक प्रसंग

प्रश्न 11013. पंकजजीक देहावसान कतेक वर्षक अल्पायुमे भेल कहल गेल?

क. ५८ वर्ष।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ५८ वर्ष।

व्याख्या: स्रोतमे ५८ सालक अल्पायुमे १९७७ मे दिवंगत भेल कहल गेल।

प्रश्न 11014. हिंदी जगत पंकजजीकेँ बिसरि देलाक बादो के हुनका स्मृतिमे जिबैत रखने अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संताल परगनाक साहित्यकार आ लाखों लोक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संताल परगनाक साहित्यकार आ लाखों लोक।

व्याख्या: स्रोतमे ई लोक-स्मृतिक विशेष उल्लेख अछि।

प्रश्न 11015. संताल परगनाक गाम-शहरमे पंकजजीसँ सम्बन्धित की प्रचलित कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. किम्वदंती।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. किम्वदंती।

व्याख्या: स्रोतमे कतहु पंकजजी सम्बन्धी किम्वदंती नहि होए एहन नहि कहल गेल।

प्रश्न 11016. अमरनाथ झा पंकजजीक कृतिकेँ कतय प्रस्तुत करबाक सहायता चाहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बृहत्तर हिंदी जगत समक्ष।

उत्तर: घ. बृहत्तर हिंदी जगत समक्ष।

व्याख्या: स्रोतक अन्तमे ओ एहि प्रस्तुति लेल सहायता माँगैत छथि।

प्रश्न 11017. अमरनाथ झाक परिवार कतेक बरससँ खैरबनी ग्राममे रहैत कहल गेल?

क. लगभग ३५० बरससँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लगभग ३५० बरससँ।

व्याख्या: स्रोतमे आधुनिक झारखण्डक देवघर जिला अंतर्गत खैरबनी ग्रामक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11018. अमरनाथ झा अपन घरेलू भाषाक सम्बन्धमे की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. घरमे शुद्ध मैथिली नहि बाजैत छी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. घरमे शुद्ध मैथिली नहि बाजैत छी।

व्याख्या: स्रोतमे ओ मैथिली नहि बजबाक आ मिश्रित बोलीक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 11019. हुनकर बोलीमे कोन दू भाषिक तत्वक सम्मिश्रण कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली आ अंगिका।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली आ अंगिका।
व्याख्या: स्रोतमे किछु मैथिली आ किछु अंगिका मिश्रित बोली कहल गेल।

प्रश्न 11020. भाषा-त्रुटिक सम्बन्धमे लेखक कोन आग्रह करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. क्षमा करबाक।
उत्तर: घ. क्षमा करबाक।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली लिखबामे त्रुटि होय तँ क्षमा करबाक विनय अछि।

प्रश्न 11021. पंकजजीक स्मृति-विमर्श कोन व्यापक प्रश्न उठबैत अछि?
क. स्थानीय साहित्यिक महापुरुषकेँ बृहत्तर जगतमे पुनः चिन्हएबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्थानीय साहित्यिक महापुरुषकेँ बृहत्तर जगतमे पुनः चिन्हएबाक।
व्याख्या: लेखक पंकजजीक विस्मरण आ पुनर्प्रस्तुति दुनूक प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 11022. खण्ड ११०७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पंकजजीक स्मृति लोकजीवनमे जीवित अछि आ अमरनाथ झा ओकरा व्यापक साहित्यिक मानचित्रमे पुनः राखए चाहैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पंकजजीक स्मृति लोकजीवनमे जीवित अछि आ अमरनाथ झा ओकरा व्यापक साहित्यिक मानचित्रमे पुनः राखए चाहैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड स्मृति, भाषा आ साहित्यिक पुनर्स्थापनकेँ जोड़ैत अछि।

खण्ड ११०८ : विदेह-सदेह २ — तूलिका, नव पीढ़ी आ विदेह

प्रश्न 11023. विदेह:सदेह:१ मे विदेहक पहिल २५ अंकक कतेक रचना प्रकाशित भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ११३ गोटेक रचना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ११३ गोटेक रचना।
व्याख्या: स्रोतमे पहिल २५ अंकक ११३ रचना प्रकाशित भेल कहल अछि।

प्रश्न 11024. ओहि रचनाकार-विस्तारमे कतेक वर्षक तूलिका सँ कतेक वर्षक आद्याचरण झा धरि उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १४ वर्षीय तूलिका सँ ८८ वर्षीय श्री आद्याचरण झा धरि।
उत्तर: घ. १४ वर्षीय तूलिका सँ ८८ वर्षीय श्री आद्याचरण झा धरि।
व्याख्या: स्रोतमे पीढ़ी-विस्तार एहि रूपमे देल गेल।

प्रश्न 11025. तूलिका किछु दिनसँ रचना किएक नहि पठा रहल छलीह?
क. सी.बी.एस.ई.क १०म कक्षाक तैयारीमे लागल रहबाक कारण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सी.बी.एस.ई.क १०म कक्षाक तैयारीमे लागल रहबाक कारण।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकर परीक्षा-तैयारी कारण बताओल गेल।

प्रश्न 11026. तूलिका कोन विद्यालयक छात्रा कहल गेलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. डी.ए.वी., बी.एस.ई.वी., पटना।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. डी.ए.वी., बी.एस.ई.वी., पटना।
व्याख्या: स्रोतमे विद्यालयक नाम एहि रूपमे अछि।

प्रश्न 11027. तूलिकाकेँ १०म कक्षामे कतेक प्रतिशत अंक भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ९६.८ प्रतिशत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ९६.८ प्रतिशत।
व्याख्या: स्रोतमे परीक्षा-परिणाम ९६.८ प्रतिशत देल गेल।

प्रश्न 11028. परिणामक बाद तूलिका कोन तैयारीमे लागल छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. इन्जीनियरिंगक तैयारीमे।
उत्तर: घ. इन्जीनियरिंगक तैयारीमे।
व्याख्या: स्रोतमे ओ इंजीनियरिंग तैयारीमे लागल छथि कहल अछि।

प्रश्न 11029. विदेह लेल तूलिकाक रचना पुनः आबयबाक बात कोन अर्थ दैत अछि?
क. युवा प्रतिभाक फेर पत्रिका-संवादमे प्रवेश।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. युवा प्रतिभाक फेर पत्रिका-संवादमे प्रवेश।
व्याख्या: संपादकीय टिप्पणी पुनः रचना आ पाठकक समक्ष प्रस्तुति बतबैत अछि।

प्रश्न 11030. तूलिका प्रसंग विदेहक कोन गुण देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विभिन्न पीढ़ीक रचनाकारकेँ स्थान देबाक क्षमता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विभिन्न पीढ़ीक रचनाकारकेँ स्थान देबाक क्षमता।
व्याख्या: १४ वर्षीय सँ ८८ वर्षीय धरि उल्लेख पत्रिकाक पीढ़ी-विस्तार देखबैत अछि।

प्रश्न 11031. तूलिकाक उपलब्धि केकरा संग जोड़ल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शिक्षा आ रचनात्मकता दुनू संग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शिक्षा आ रचनात्मकता दुनू संग।
व्याख्या: स्रोतमे परीक्षा-परिणाम आ रचनात्मक वापसी दुनू आयल अछि।

प्रश्न 11032. खण्ड ११०८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तूलिका प्रसंग विदेहमे नव पीढ़ीक शैक्षिक उपलब्धि आ रचनात्मक उपस्थिति दुनूक संकेत दैत अछि।
उत्तर: घ. तूलिका प्रसंग विदेहमे नव पीढ़ीक शैक्षिक उपलब्धि आ रचनात्मक उपस्थिति दुनूक संकेत दैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड नव पीढ़ीक लेखक-पाठक सम्बन्धक परिचय दैत अछि।

खण्ड ११०९ : विदेह-सदेह २ — स्वास्तिका आ बाल-उपस्थिति

प्रश्न 11033. स्वास्तिका कोन कक्षाक छात्रा रूपमे उल्लेखित छथि?
क. कक्षा २।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कक्षा २।
व्याख्या: स्रोतमे स्वास्तिकाक परिचय कक्षा २ रूपमे देल अछि।

प्रश्न 11034. स्वास्तिका कोन विद्यालयसँ जुड़ल कहल गेलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. माउन्ट कार्मेल, पटना।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. माउन्ट कार्मेल, पटना।
व्याख्या: स्रोतमे कक्षा २, माउन्ट कार्मेल, पटना लिखल अछि।

प्रश्न 11035. स्वास्तिका प्रसंग विदेहमे कोन आयु-वर्गक उपस्थिति सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बाल रचनाकार/बाल प्रतिभा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बाल रचनाकार/बाल प्रतिभा।
व्याख्या: कक्षा २क छात्राक उल्लेख बाल-उपस्थिति देखबैत अछि।

प्रश्न 11036. तूलिका आ स्वास्तिका प्रसंग मिलि विदेहक कोन स्वरूप देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पीढ़ी-समावेशक मंच।
उत्तर: घ. पीढ़ी-समावेशक मंच।
व्याख्या: एक ओर किशोर छात्रा, दोसर ओर बाल छात्रा—दुनू उल्लेख मंचक विस्तार देखबैत अछि।

प्रश्न 11037. बाल-उपस्थिति साहित्यिक पत्रिकाक लेल किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. भविष्यक पाठक-लेखक समुदाय तैयार करबाक लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भविष्यक पाठक-लेखक समुदाय तैयार करबाक लेल।
व्याख्या: स्वास्तिका प्रसंग नव पीढ़ीकेँ साहित्यिक परिप्रेक्ष्यमे रखैत अछि।

प्रश्न 11038. स्वास्तिकाक परिचयमे विस्तृत लेखन-विवरण भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि, केवल संक्षिप्त परिचय भेटैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि, केवल संक्षिप्त परिचय भेटैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे नाम, कक्षा आ विद्यालयक संक्षिप्त सूचना अछि।

प्रश्न 11039. एहन संक्षिप्त परिचयकेँ प्रश्न बनबैत समय की सावधानी चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. उपलब्ध तथ्यसँ बाहर नहि जाएब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. उपलब्ध तथ्यसँ बाहर नहि जाएब।
व्याख्या: स्रोतमे सीमित सूचना अछि, तेँ केवल ओतबेक आधारपर प्रश्न उचित अछि।

प्रश्न 11040. विदेहक बाल-लेखन सन्दर्भमे स्वास्तिका कोन संकेत दैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बाल पाठक/रचनाकारक सामाजिक उपस्थिति।
उत्तर: घ. बाल पाठक/रचनाकारक सामाजिक उपस्थिति।
व्याख्या: कक्षा २क विद्यार्थी उल्लेख बाल-संलग्नता देखबैत अछि।

प्रश्न 11041. स्वास्तिका प्रसंगकेँ तूलिका प्रसंगसँ जोड़लासँ की बुझाइत अछि?
क. विदेहमे शिशु सँ किशोर धरि प्रतिभाकेँ जगह भेटैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विदेहमे शिशु सँ किशोर धरि प्रतिभाकेँ जगह भेटैत अछि।
व्याख्या: दूनू प्रसंग पत्रिकाक पीढ़ीगत विस्तार दिखबैत अछि।

प्रश्न 11042. खण्ड ११०९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्वास्तिका प्रसंग विदेहमे बाल उपस्थिति आ भविष्यक साहित्यिक पीढ़ीक संकेत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्वास्तिका प्रसंग विदेहमे बाल उपस्थिति आ भविष्यक साहित्यिक पीढ़ीक संकेत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड न्यून स्रोत-सूचना पर आधारित तथ्यात्मक समेकन करैत अछि।

खण्ड १११० : विदेह-सदेह २ — “हुगली ऊपर बहैत गंगा”क आलोचनात्मक आरम्भ

प्रश्न 11043. “हुगली ऊपर बहैत गंगा” केकर कथा-संग्रह कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रामभरोस कापड़ि भ्रमरक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रामभरोस कापड़ि भ्रमरक।

व्याख्या: स्रोतमे ई रामभरोस कापड़ि भ्रमरक ३२ कथाक संग्रह कहल गेल।

प्रश्न 11044. एहि संग्रहमे कतेक कथा अछि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ३२ गोट कथा।

उत्तर: घ. ३२ गोट कथा।

व्याख्या: स्रोतमे ३२ गोट कथाक संग्रह कहल अछि।

प्रश्न 11045. संग्रहक नामक अन्तिम कथा कोन अछि?

क. हुगली ऊपर बहैत गंगा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हुगली ऊपर बहैत गंगा।

व्याख्या: स्रोतमे संग्रहक नामक अन्तिम कथा एहि नामसँ चिन्हित अछि।

प्रश्न 11046. शीर्षक कथामे कोन पात्र सभक माध्यमे नारी-मोनक संवेदना उभारल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हीरा आ सोना बाई।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हीरा आ सोना बाई।

व्याख्या: स्रोतमे हीरा आ सोना बाईक माध्यमे नारी संवेदना उभरबाक बात अछि।

प्रश्न 11047. आलोचक नारीकेँ केवल की नहि मानबाक बात करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. देह।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. देह।

व्याख्या: स्रोत स्पष्ट कहैत अछि—नारी मात्र देह नहि थिक।

प्रश्न 11048. कामुक पुरुष नारीक देहकेँ कोना बुझैत अछि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपन धन-सम्पत्ति।

उत्तर: घ. अपन धन-सम्पत्ति।

व्याख्या: स्रोतमे कामुक पुरुष नारीक देहक अवयवकेँ धन-सम्पत्ति बुझैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 11049. भौतिकवादी युगमे कोन लिप्सा मानवीय मूल्यकेँ गिरबैत कहल गेल?
क. धनक अतिशय लिप्सा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. धनक अतिशय लिप्सा।
व्याख्या: स्रोतमे धनलिप्सा मानवीय मूल्यबोधकेँ गिड़ने जा रहल अछि कहल अछि।

प्रश्न 11050. शीर्षक कथा आलोचक लेल कोन बड़ विषय खोलैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नारी-संवेदना आ मानवीय मर्यादा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नारी-संवेदना आ मानवीय मर्यादा।
व्याख्या: हीरा-सोनाबाई प्रसंग देह, पीड़ा, सम्मान आ मनुष्यता पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 11051. स्रोतक आरम्भिक आलोचना कोन सामाजिक दोष पर प्रहार करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नारीकेँ भोग-सामग्री बुझबाक मानसिकता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नारीकेँ भोग-सामग्री बुझबाक मानसिकता।
व्याख्या: आलोचना पुरुष-कामुकता आ अमानवीयता पर तीक्ष्ण प्रश्न उठबैत अछि।

प्रश्न 11052. खण्ड १११०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “हुगली ऊपर बहैत गंगा”क आलोचना नारी-देहक वस्तुकरणक विरोध आ नारी-मोनक प्रतिष्ठापर आरम्भ होइत अछि।
उत्तर: घ. “हुगली ऊपर बहैत गंगा”क आलोचना नारी-देहक वस्तुकरणक विरोध आ नारी-मोनक प्रतिष्ठापर आरम्भ होइत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड संग्रह आ शीर्षक कथाक मूल आलोचनात्मक धरातल दैत अछि।

खण्ड ११११ : विदेह-सदेह २ — हीरा, सोनाबाई आ मनुष्यता

प्रश्न 11053. शीर्षक कथामे हीरा सोनाबाईक ओतय किएक अबैत अछि?
क. असन्तोष आ खौंझी मेटएबाक लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. असन्तोष आ खौंझी मेटएबाक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे हीराक आगमनक उद्देश्य मोन बहटारब कहल अछि।

प्रश्न 11054. सोनाबाई अपन पेशामे कोन बात नहि करैत अछि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कोताही।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कोताही।
व्याख्या: स्रोतमे सोनाबाई अपन पेशामे कोनो कोताही नहि करैत अछि।

प्रश्न 11055. हीराकेँ सोनाबाई लग की अनुभव होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नारीक प्रति सम्मान-भाव जागि जाइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नारीक प्रति सम्मान-भाव जागि जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे हीराक हृदयमे नारीक प्रति सम्मान-भाव जागबाक बात अछि।

प्रश्न 11056. सोनाबाई हीरासँ भेटल अनुभवकेँ कोन रूपमे देखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुच्चा मनुक्खक दर्शन।
उत्तर: घ. सुच्चा मनुक्खक दर्शन।
व्याख्या: स्रोतमे सोनाक आँखि चमकि उठैत अछि आ सुच्चा मनुक्खक दर्शनक भाव अछि।

प्रश्न 11057. हीरा-सोनाक सम्बन्धमे कोन भाव जागि उठैत अछि?
क. अपनत्व-बोध।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अपनत्व-बोध।
व्याख्या: स्रोतमे दुनूक सुरक्षा-भावमे अपनत्व-बोध जागबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11058. आलोचकक अनुसार शिल्पक दृष्टिएँ ई कथा कोना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कनेक कमजोर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कनेक कमजोर।
व्याख्या: स्रोतमे शिल्पक दृष्टिएँ कथा कनेक कमजोर कहल गेल अछि।

प्रश्न 11059. कथ्यक दृष्टिएँ ई कथा की चीखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मनुष्यक मनुष्यताक स्वाद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मनुष्यक मनुष्यताक स्वाद।
व्याख्या: स्रोतमे रक्त आ स्नेहसँ अपनत्व-बोध मनुष्यताक स्वाद चीखबैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 11060. सोना आ हीराक प्रसंगमे दैहिक भोगसँ बेशी कोन तत्त्व महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मोनक राग।
उत्तर: घ. मोनक राग।
व्याख्या: स्रोतमे दैहिक भोगसँ बेसी मोनक राग पर बल अछि।

प्रश्न 11061. हीरा-सोनाबाई प्रसंग अमानवीय समाजमे कोन संभावना देखबैत अछि?
क. सम्मान आ मानवीय संवेदनाक संभावना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सम्मान आ मानवीय संवेदनाक संभावना।
व्याख्या: कथा वस्तुकरणक बीचो मानवीय पहचानक पल खोलैत अछि।

प्रश्न 11062. खण्ड १११११क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हीरा-सोनाबाई प्रसंग देह-व्यापारक अन्हारमे सेहो मनुष्यता, सम्मान आ अपनत्वक चमक देखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हीरा-सोनाबाई प्रसंग देह-व्यापारक अन्हारमे सेहो मनुष्यता, सम्मान आ अपनत्वक चमक देखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड शीर्षक कथाक भाव-मध्य पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १११२ : विदेह-सदेह २ — भौतिकता, वासना आ सामाजिक अस्मिता

प्रश्न 11063. आलोचक प्रश्न उठबैत छथि जे मनुष्यक मनुष्यताकेँ अमानवीय बनएबाक दोषी के?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जन-समाज।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जन-समाज।
व्याख्या: स्रोतमे समाज लोकेक थिक—एहि प्रश्नक रूपमे आलोचना आयल अछि।

प्रश्न 11064. कुटिल पुरुषक अहं स्त्रीकेँ कोन रूपमे बुझि पबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भोगक सामग्री।
उत्तर: घ. भोगक सामग्री।
व्याख्या: स्रोतमे स्त्रीकेँ भोगक सामग्री बुझबाक मानसिकता पर आलोचना अछि।

प्रश्न 11065. हीरा आ सोनाबाई सन निष्ठा उभरए तँ कोन चद्दर फाटत कहल गेल?
क. विकृतिक विषाक्त चद्दरि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विकृतिक विषाक्त चद्दरि।
व्याख्या: स्रोतमे विकृतिक विषाक्त चद्दरि फाटि असली छवि जगजियार होयबाक बात अछि।

प्रश्न 11066. विश्वास आ हार्दिकतामे स्त्री-पुरुषक आकर्षण की सिद्ध होएत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मानवीय आकांक्षाक पूर्तिमे सहायक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मानवीय आकांक्षाक पूर्तिमे सहायक।
व्याख्या: स्रोतमे विश्वास-हार्दिकताक आधार पर आकर्षण जीवन-सत्यक सहायक कहल अछि।

प्रश्न 11067. हीरा आ सोनाक हृदयमे कोन भाव अंकुरित होइत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. वास्तविक प्रेम-भाव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. वास्तविक प्रेम-भाव।
व्याख्या: स्रोतमे वास्तविक प्रेम-भावक अंकुरणक संकेत अछि।

प्रश्न 11068. अभिजातीय संस्कृतिक विरोधक रूपमे कोन व्यापक बोध उभरैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सामाजिक अस्मिताक व्यापक बोध।
उत्तर: घ. सामाजिक अस्मिताक व्यापक बोध।
व्याख्या: स्रोतमे स्त्री-पुरुषक सहज आकर्षणमे सामाजिक अस्मिता बोधक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11069. सामाजिक जीवनक यथार्थ कतय झलकि उठैत अछि?
क. दुनूक संघर्षमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दुनूक संघर्षमे।
व्याख्या: स्रोतमे संघर्षक माध्यमे सामाजिक यथार्थ झलकबाक बात अछि।

प्रश्न 11070. ई आलोचना केवल निजी प्रेमक कथा अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि, सामाजिक अस्मिता आ अमानवीयता-विरोधक प्रश्न अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि, सामाजिक अस्मिता आ अमानवीयता-विरोधक प्रश्न अछि।
व्याख्या: हीरा-सोनाक प्रसंग समाज, नारी, पुरुष-अहं आ मूल्यबोधसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 11071. एहि खण्डक केन्द्रीय प्रश्न की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. वासना-प्रधान समाजमे मानवीय सम्बन्ध कतेक सम्भव अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. वासना-प्रधान समाजमे मानवीय सम्बन्ध कतेक सम्भव अछि।
व्याख्या: स्रोत देह, वासना, विश्वास आ हार्दिकता बीच तनाव खोलैत अछि।

प्रश्न 11072. खण्ड १११२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भ्रमरक कथा-संसार देह-वासना आ भौतिकताक बीच सामाजिक अस्मिता आ मनुष्यता खोजैत अछि।
उत्तर: घ. भ्रमरक कथा-संसार देह-वासना आ भौतिकताक बीच सामाजिक अस्मिता आ मनुष्यता खोजैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड शीर्षक कथाक सामाजिक अर्थ समेटैत अछि।

खण्ड १११३ : विदेह-सदेह २ — भगजोगनी, कामरेड आ आत्मचेतना

प्रश्न 11073. “भगजोगनी” कथामे रेखाक कोन प्रवृत्ति घर उजारबाक सीमा धरि बढ़ैत अछि?

क. भोगवादी लिप्सा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोगवादी लिप्सा।

व्याख्या: स्रोतमे रेखाक भोगवादी लिप्सा बसल-बसाओल घर उजारबापर पहुँचैत अछि।

प्रश्न 11074. रेखा की बिसरि जाइत अछि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अर्थ-लिप्सा सम्बन्धकेँ गीडि जाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अर्थ-लिप्सा सम्बन्धकेँ गीडि जाइत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे अर्थ-लिप्सा सम्बन्धकेँ खा जाइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 11075. “भगजोगनी”मे कथाकार कोन उपसंस्कृतिपर प्रहार करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रेम आ यौन सम्बन्धी गेंठ खोलैत उपसंस्कृतिपर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रेम आ यौन सम्बन्धी गेंठ खोलैत उपसंस्कृतिपर।

व्याख्या: स्रोतमे प्रेम-यौन गेंठ फोलैत उपसंस्कृति पर प्रहारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11076. “कामरेड” कथा कोन विचारधाराकेँ लऽ कऽ सृजित भेल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साम्यवादी विचारधारा।

उत्तर: घ. साम्यवादी विचारधारा।

व्याख्या: स्रोतमे कामरेड कथा साम्यवादी विचारधारासँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 11077. “कामरेड”मे कोन नारा/भाव आयल?

क. गरीब-गरीब सभ एक हो।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीब-गरीब सभ एक हो।

व्याख्या: स्रोतमे गरीब-गरीब सभ एक हो भन्ने भाव स्पष्ट अछि।

प्रश्न 11078. “कामरेड”मे धनी-गरीबक बीच की बढ़ैत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. असमानताक खधिया।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. असमानताक खधिया।

व्याख्या: स्रोतमे धनी-गरीबक बीच असमानताक खधिया चकरगर होयबाक बात अछि।

प्रश्न 11079. “सुपत-कुपत आब हमहुँ सभ कहबै” कथन कोन उद्देश्य देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आत्मचेतना जगएबाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आत्मचेतना जगएबाक।
व्याख्या: स्रोतमे आत्मचेतना जगएबाक उद्देश्यक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11080. भगजोगनी आ कामरेड दुनू मिलि कोन द्वंद्व देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भोगवादी लिप्सा आ वर्गीय आत्मचेतना।
उत्तर: घ. भोगवादी लिप्सा आ वर्गीय आत्मचेतना।
व्याख्या: एक कथा सम्बन्ध-भंगक भोगवाद खोलैत अछि, दोसर वर्गीय जागरण।

प्रश्न 11081. एहि खण्डमे सामाजिक आलोचना कोन दिश जाएत अछि?
क. व्यक्तिगत वासना सँ वर्गीय असमानता धरि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. व्यक्तिगत वासना सँ वर्गीय असमानता धरि।
व्याख्या: स्रोतक चर्चा भोग, सम्बन्ध, गरीबी आ साम्यबादी चेतना जोड़ैत अछि।

प्रश्न 11082. खण्ड १११३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भ्रमरक कथामे भोगवादी विघटन आ गरीबक आत्मचेतना दुनू सामाजिक यथार्थक रूपमे उभरैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भ्रमरक कथामे भोगवादी विघटन आ गरीबक आत्मचेतना दुनू सामाजिक यथार्थक रूपमे उभरैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड भगजोगनी आ कामरेड प्रसंग समेटैत अछि।

खण्ड १११४ : विदेह-सदेह २ — “उड़ान” आ प्रवासी ठगी

प्रश्न 11083. “उड़ान” कथामे रजिन्दर कापर कतय उड़ान भरबाक लोभमे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कतार दिस।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कतार दिस।
व्याख्या: स्रोतमे कतार दिस उड़ान भरबाक लोभ आ पाइ कमएबाक सपना अछि।

प्रश्न 11084. रजिन्दर कापर पहिल एजेन्टकेँ कतेक टाका देल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दस हजार टाका।
उत्तर: घ. दस हजार टाका।
व्याख्या: स्रोतमे पहिल एजेन्ट दस हजार टाका लेल कहल अछि।

प्रश्न 11085. दोसर एजेन्ट कतेक टाका लेल?
क. अस्सी हजार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अस्सी हजार।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर खेप अस्सी हजारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11086. तेसर खेपक कर्जा कतेक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पन्चान्वे हजार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पन्चान्वे हजार।
व्याख्या: स्रोतमे तेसर खेप पन्चान्वे हजारक कर्जापर टाका बहबाक बात अछि।

प्रश्न 11087. रजिन्दर ठकाइतो की आशा रखने रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. उड़ान भरबाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. उड़ान भरबाक।
व्याख्या: स्रोतमे ठकायलाक बादो ओकर उड़ान भरबाक आशा रहल अछि।

प्रश्न 11088. एजेन्टक लेल उड़ान कोन अर्थ राखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चोखे नफा।
उत्तर: घ. चोखे नफा।
व्याख्या: स्रोतमे दस हजारसँ पच्चीस हजार धरिक चोखे नफाक संकेत अछि।

प्रश्न 11089. कथा पाखण्डी चरित्रक की करैत अछि?
क. पर्दाफाश।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पर्दाफाश।
व्याख्या: स्रोतमे पाखण्डी चरित्रक पर्दाफाशक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11090. “उड़ान”मे जीवनक लक्ष्य केवल की नहि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जीवन जीनाइये मात्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जीवन जीनाइये मात्र।
व्याख्या: स्रोत जीवन-मूल्यबोधक लेल जीबाक वकालत संकेत करैत अछि।

प्रश्न 11091. एहि कथा मे प्रवासक सपना कोन सामाजिक संकट बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ठगी, कर्जा आ असुरक्षित आशा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ठगी, कर्जा आ असुरक्षित आशा।
व्याख्या: रजिन्दरक कतार-सपना एजेन्ट-शोषणसँ जुड़ि जाइत अछि।

प्रश्न 11092. खण्ड १११४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “उड़ान” प्रवासी कमाइक सपनाक भीतर एजेन्ट-ठगी आ जीवन-मूल्यक संकट उजागर करैत अछि।
उत्तर: घ. “उड़ान” प्रवासी कमाइक सपनाक भीतर एजेन्ट-ठगी आ जीवन-मूल्यक संकट उजागर करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड प्रवास-लालसा आ शोषणक कथा-आलोचना समेटैत अछि।

खण्ड १११५ : विदेह-सदेह २ — मधेश, अस्मिता आ आन्दोलन

प्रश्न 11093. मधेश प्रसंगमे कोन नारा/माग आयल?
क. एक मधेश, एक प्रदेश।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एक मधेश, एक प्रदेश।
व्याख्या: स्रोतमे “जइ मधेशमे एक मधेश, एक प्रदेश”क आन्दोलनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11094. कथामे मधेशी आ पहाड़ी बीच कोन बात समानतामे पटबाक अपेक्षा अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. खधिया।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. खधिया।
व्याख्या: स्रोतमे मधेशी-पहाड़ी बीचक खधिया समानतामे पटि जाएबाक भाव अछि।

प्रश्न 11095. अयोधी मास्टरक जीवन कोना खेपाएल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मास्टेरीमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मास्टेरीमे।
व्याख्या: स्रोतमे अयोधी मास्टेरक जीवन कोहुनाक मास्टेरीमे खेपाएल कहल अछि।

प्रश्न 11096. अयोधी मास्टरक बेटा अशोककेँ की नहि भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नोकरी।
उत्तर: घ. नोकरी।
व्याख्या: स्रोतमे एकमात्र बेटा अशोककेँ नोकरी नहि भेटबाक बात अछि।

प्रश्न 11097. अपेक्षित योग्यता अछैतो कोन समस्या देखाओल गेल?
क. व्यवस्था तेहन बनल जे मधेशकेँ के पूछए।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. व्यवस्था तेहन बनल जे मधेशकेँ के पूछए।
व्याख्या: स्रोतमे योग्यता रहितो व्यवस्थागत उपेक्षा सूचित अछि।

प्रश्न 11098. अस्मितापर चोट लगलापर मनमे की पनुगैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आक्रोश।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आक्रोश।
व्याख्या: स्रोतमे अस्मितापर चोट लागलासँ पीड़ित मोनमे आक्रोश पनुगबाक बात अछि।

प्रश्न 11099. मधेशी होयबापर कोन भाव जखन विषमतासँ भिड़ैत अछि तखन पीड़ा उठैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गौरवबोध।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गौरवबोध।
व्याख्या: स्रोतमे मधेशी होयबाक गौरवबोध आ विषमताक संघर्ष अछि।

प्रश्न 11100. मधेश-आन्दोलनक कथा कोन व्यापक विषय उद्भासित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. राष्ट्रीयता, अस्मिता आ समएक सत्य।
उत्तर: घ. राष्ट्रीयता, अस्मिता आ समएक सत्य।
व्याख्या: स्रोतमे राष्ट्रीयताक परिप्रेक्ष्य, भावना आ समयक सत्यक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11101. एहि खण्डमे कथा सामाजिक आन्दोलनकेँ कोना देखैत अछि?
क. व्यक्तिगत पीड़ासँ सामूहिक अस्मिता धरि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. व्यक्तिगत पीड़ासँ सामूहिक अस्मिता धरि।
व्याख्या: अयोधी मास्टरक जीवन आ मधेश माग संग सामाजिक दृष्टि बनैत अछि।

प्रश्न 11102. खण्ड १११५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मधेश प्रसंग व्यवस्था-उपेक्षा, अस्मिताबोध आ समानताक आन्दोलनक कथा-रूप प्रस्तुत करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मधेश प्रसंग व्यवस्था-उपेक्षा, अस्मिताबोध आ समानताक आन्दोलनक कथा-रूप प्रस्तुत करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मधेशी अस्मिता आ सामाजिक न्यायक प्रश्न समेटैत अछि।

खण्ड १११६ : विदेह-सदेह २ — “नेओक जोड़” आ सामाजिक परिवर्तन

प्रश्न 11103. “नेओक जोड़” कथामे निरसन बाबूक पुत्रीक नाम की आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सरोजा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सरोजा।

व्याख्या: स्रोतमे निरसन बाबूक पुत्री सरोजाक दुःस्थितिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11104. सरोजाक जीवन केकर संग छलाइत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्तन आ रानीक संग।

उत्तर: घ. अन्तन आ रानीक संग।

व्याख्या: स्रोतमे अन्तन ओ रानीक संग छलाइत जीवनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11105. कथाकार सरोजाक कोन पीड़ा उभारैत छथि?

क. मार्मिक पीड़ा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मार्मिक पीड़ा।

व्याख्या: स्रोतमे सरोजाक मार्मिक पीड़ा उभारिक सामाजिक परिवर्तन दिस ध्यान आकृष्ट कराओल गेल।

प्रश्न 11106. ई कथा फोकिला मानसिकताक दम्भाकेँ की करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आरो उघार करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आरो उघार करैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे स्त्रीक त्रास मार्मिक उद्घाटन द्वारा दम्भ खुलबाक बात अछि।

प्रश्न 11107. ओढ़ल अभिभावकत्विक नीति कोना प्रकट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सरेआम चौबटियापर नग्न भऽ जाइत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सरेआम चौबटियापर नग्न भऽ जाइत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे अभिभावकत्विक नीतिकेँ नग्न करबाक तीक्ष्ण कथन अछि।

प्रश्न 11108. कथा निजी संवेदनाकेँ कोन रूपमे बदलैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सार्वभौमिक।

उत्तर: घ. सार्वभौमिक।

व्याख्या: स्रोतमे निजी संवेदनाकेँ सार्वभौमिक बना देबाक बात अछि।

प्रश्न 11109. कथा एक दिस की देखार करैत अछि?
क. हृदयहीनता आ मूल्यहीनता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हृदयहीनता आ मूल्यहीनता।
व्याख्या: स्रोतमे हृदयहीनता आ मूल्यहीनताकेँ देखार करबाक बात अछि।

प्रश्न 11110. दोसर दिस कथा कोन सुगबुगी देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. परिवर्तनक सुगबुगी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. परिवर्तनक सुगबुगी।
व्याख्या: स्रोतमे परिवर्तनक सुगबुगीमे मानवीय सोच आ संवेदनाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11111. “नेओक जोड़”क सामाजिक सनेस की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अमानवीयताक खोल चीरीचोंत करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अमानवीयताक खोल चीरीचोंत करब।
व्याख्या: स्रोतमे अमानवीयताक खोलकेँ चीटीचोंत करबाक सनेस कहल अछि।

प्रश्न 11112. खण्ड १११६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “नेओक जोड़” स्त्री-दुःस्थिति, अभिभावकत्विक छल आ सामाजिक परिवर्तनक आवश्यकता उजागर करैत अछि।
उत्तर: घ. “नेओक जोड़” स्त्री-दुःस्थिति, अभिभावकत्विक छल आ सामाजिक परिवर्तनक आवश्यकता उजागर करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड सरोजा प्रसंगक सामाजिक अर्थ खोलैत अछि।

खण्ड १११७ : विदेह-सदेह २ — किसुनमा, अमरलत्ती आ नैतिक संकट

प्रश्न 11113. किसुनमा कतय कमाइत घर अबैत अछि कहल गेल?
क. पंजाबमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पंजाबमे।
व्याख्या: स्रोतमे किसुनमा पंजाबमे कमाइत मनसूबा पोसने घर अबैत अछि।

प्रश्न 11114. किसुनमाक पत्नी कोन नाम/पहिचानसँ आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उत्तीमपुरवाली।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उत्तीमपुरवाली।
व्याख्या: स्रोतमे पत्नी उत्तीमपुरवालीक प्रति अनुराग-भावक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11115. किसुनमा केकर बच्चा देखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आन बापक बच्चा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आन बापक बच्चा।
व्याख्या: स्रोतमे “आन बापक बच्चा”क कारण ओकर मनोरथ भग्न होयबाक बात अछि।

प्रश्न 11116. किसुनमा अन्तिम परिणतिमे की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अबोध नेनाक हत्या।
उत्तर: घ. अबोध नेनाक हत्या।
व्याख्या: स्रोतमे नेनाक मूड़ी छपाक् करबाक निर्दय प्रसंग अछि।

प्रश्न 11117. “अमरलत्ती” कथामे रेखा कोन रूपमे चतरैत अछि?
क. अमरलती बनि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अमरलती बनि।
व्याख्या: स्रोतमे रेखाक अमरलती बनि चतरैत आनक घर उजारबाक बात अछि।

प्रश्न 11118. रेखा की करैत अछि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आनक बसल-बसाओल घर उजारैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आनक बसल-बसाओल घर उजारैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे सहारा बनैत आनक घर उजारि-पुजारि देबाक बात अछि।

प्रश्न 11119. रमेशक कामलोलुपता रेखाक कोन भाव जाग्रत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. काम-भाव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. काम-भाव।
व्याख्या: स्रोतमे रमेशक कामलोलुपतासँ रेखाक काम-भाव जाग्रत होयबाक बात अछि।

प्रश्न 11120. अमरलत्ती सामाजिक कुव्यवस्था आ मानवीय व्यथा कैं की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उभारैत अछि।
उत्तर: घ. उभारैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे कुव्यवस्था आ मानवीय व्यथाकैं कथाकार उभारलनि कहल अछि।

प्रश्न 11121. किसुनमा आ अमरलत्ती दुनू प्रसंगमे कोन साझा संकट अछि?
क. वासना, अविश्वास आ हिंसक नैतिक विघटन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वासना, अविश्वास आ हिंसक नैतिक विघटन।
व्याख्या: दूनू कथामे सम्बन्धक टूटन आ नैतिक संकट तीव्र अछि।

प्रश्न 11122. खण्ड १११७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. किसुनमा आ अमरलत्ती प्रसंग परिवार, वासना, अविश्वास आ हिंसक परिणामक सामाजिक त्रास देखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. किसुनमा आ अमरलत्ती प्रसंग परिवार, वासना, अविश्वास आ हिंसक परिणामक सामाजिक त्रास देखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड सम्बन्ध-विघटनक अँधार रूप समेटैत अछि।

खण्ड १११८ : विदेह-सदेह २ — आशा-संदीप आ नेनपनक स्मृति

प्रश्न 11123. आशाक हृदयमे कोन प्रेमक उपजामे मानसिक पीड़ा प्रतिफलित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सम्बन्धक पीड़ा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सम्बन्धक पीड़ा।
व्याख्या: स्रोतमे आशाक हृदयमे सम्बन्धक पीड़ा आ प्रेमक उपजाक मानसिक पीड़ाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11124. आशा आ संदीपक बीच कोन स्थिति भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मोन-मिलानी।
उत्तर: घ. मोन-मिलानी।
व्याख्या: स्रोतमे आशा ओ संदीपक मोन-मिलानीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11125. आशाक माय-बापक हृदयमे उठैत विरक्ति भाव की करैत अछि?
क. सम्बन्ध-सूत्र खण्डित करैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सम्बन्ध-सूत्र खण्डित करैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे विरक्ति भाव सम्बन्ध-सूत्र खण्डित करबाक कारण बनैत अछि।

प्रश्न 11126. आशा की विकसित करबाक प्रयास करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मानसिक पीड़ा सहबाक क्षमता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मानसिक पीड़ा सहबाक क्षमता।
व्याख्या: स्रोतमे आशा प्रेमक परिणामसँ उपजल पीड़ाकेँ सहबाक क्षमता विकसित करैत छथि।

प्रश्न 11127. नरेशक मोनमे कोन तरंग प्रवाहित होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्मृतिक तरंग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्मृतिक तरंग।
व्याख्या: स्रोतमे बालमोनक स्मरणसँ नरेशक मोनमे स्मृतिक तरंगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11128. फ्लैशबैक कथामे बालपनक कोन भाव सभ आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. निडरता, निश्छलता आ सौहार्द्र।
उत्तर: घ. निडरता, निश्छलता आ सौहार्द्र।
व्याख्या: स्रोतमे बालपनक निडरता, निश्छलता आ सौहार्द्र भावक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11129. उमेरक चारिम प्रहरमे कोन भाव पनुगैत कहल गेल?
क. भय, सुरक्षा, षड्यंत्र आ सामाजिक विद्रूपता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भय, सुरक्षा, षड्यंत्र आ सामाजिक विद्रूपता।
व्याख्या: स्रोतमे वयस्क जीवनक भय-सुरक्षा-षड्यंत्रक प्रसंग अछि।

प्रश्न 11130. सभ्य समाजक अंग बनबाक लेल लोक की ओढ़ैत अछि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. छल-क्षुद्रताक खोल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. छल-क्षुद्रताक खोल।
व्याख्या: स्रोतमे सामाजिक व्यक्तित्वक दोगला मुँह आ छलक खोलक आलोचना अछि।

प्रश्न 11131. आशा-संदीप आ नरेश प्रसंग कोन द्वंद्व देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रेमक पीड़ा आ बालस्मृतिक निर्मलता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रेमक पीड़ा आ बालस्मृतिक निर्मलता।
व्याख्या: स्रोतमे प्रेमजन्य संघर्ष आ बालपनक स्मृति दुनू अछि।

प्रश्न 11132. खण्ड १११८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भ्रमरक कथा प्रेम, परिवार, स्मृति आ सामाजिक मुखौटाक बीच मानवीय पीड़ाकेँ उभारैत अछि।
उत्तर: घ. भ्रमरक कथा प्रेम, परिवार, स्मृति आ सामाजिक मुखौटाक बीच मानवीय पीड़ाकेँ उभारैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड आशा-संदीप आ नरेशक प्रसंगक समेकन करैत अछि।

खण्ड १११९ : विदेह-सदेह २ — भ्रमरक कथा-दृष्टि आ नारी संघर्ष

प्रश्न 11133. नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे भ्रमरक कथामे की अछि कहल गेल?

क. जीवनक राग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवनक राग।

व्याख्या: स्रोतमे भ्रमरक कथामे जीवनक राग अछि कहल गेल।

प्रश्न 11134. भ्रमरक कथामे नव युगक नारी प्रति कोन भाव अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विशेष श्रद्धा-भाव।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विशेष श्रद्धा-भाव।

व्याख्या: स्रोतमे नारीक प्रति विशेष श्रद्धा-भावक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11135. हिनक बेसी कथामे केकर संघर्ष अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नारी जीवनक संघर्ष।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नारी जीवनक संघर्ष।

व्याख्या: स्रोतमे बेसिए कथामे नारी जीवनक संघर्ष अछि।

प्रश्न 11136. युग यथार्थक त्रासदी कोन ठाम उपजैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक विडम्बनामे।

उत्तर: घ. सामाजिक विडम्बनामे।

व्याख्या: स्रोतमे युग यथार्थक त्रासदी सामाजिक विडम्बनामे उपजैत अछि कहल।

प्रश्न 11137. कथाकारक छटपटाइत मोनमे केकर चीख अछि?

क. अबला नारीक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अबला नारीक।

व्याख्या: स्रोतमे अबला नारीक चीख आ परिवेशक दंशक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11138. भ्रमरक कथामे टूटैत सम्बन्ध आ अर्थलिप्सा संग कोन समस्या उठैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रोटीक समस्या।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रोटीक समस्या।

व्याख्या: स्रोतमे टूटैत सम्बन्ध, अर्थलिप्सा, कामुकता आ रोटीक समस्या एक संग आयल अछि।

प्रश्न 11139. कथाकारक भाषा कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सहज आ सरल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सहज आ सरल।
व्याख्या: स्रोतमे सार्थक अभिव्यक्ति सहज ओ सरल भाषामे परोसल गेल कहल अछि।

प्रश्न 11140. भ्रमरक कथा-संसारमे नारी पीड़ा कोन रूपमे आउत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सामाजिक सत्य उजागर करैत।
उत्तर: घ. सामाजिक सत्य उजागर करैत।
व्याख्या: देह-भोगक दर्द आ नारी-मनक पीड़ा सामाजिक सत्य देखबैत अछि।

प्रश्न 11141. एहि खण्डक केन्द्रीय आलोचनात्मक बिन्दु की अछि?
क. नारी संघर्षक माध्यमे समाजक विडम्बना देखब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नारी संघर्षक माध्यमे समाजक विडम्बना देखब।
व्याख्या: स्रोत भ्रमरक कथा-दृष्टिकेँ नारी संघर्षसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 11142. खण्ड १११९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भ्रमरक कथा नारी-संघर्ष, सामाजिक विडम्बना आ जीवनक रागक माध्यमे नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यकेँ समृद्ध करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भ्रमरक कथा नारी-संघर्ष, सामाजिक विडम्बना आ जीवनक रागक माध्यमे नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यकेँ समृद्ध करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड भ्रमरक कथा-दृष्टिक मूल स्वर समेटैत अछि।

खण्ड ११२० : विदेह-सदेह २ — संस्कृति, परिवर्तन आ नव मूल्यबोध

प्रश्न 11143. कोनो सभ्यता-संस्कृतिकेँ गतिशील राखब केकर दायित्व कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समाजक लोकक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समाजक लोकक।
व्याख्या: स्रोतमे समाजक लोक दायित्वे थिक कहल गेल।

प्रश्न 11144. जे सभ्यता-संस्कृति जीवनमे नहि उतरि सकए ओकरा संग की उचित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परित्याग।
उत्तर: घ. परित्याग।
व्याख्या: स्रोतमे जीवनमे नहि उतरि सकए तकर परित्याग उचित-विहित कहल गेल।

प्रश्न 11145. कथाकार जीवनक अर्थक खोजमे कोन आसरा लैत छथि?
क. प्रेमक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रेमक।
व्याख्या: स्रोतमे जीवनक अर्थक खोजमे प्रेमक आसरा लेबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11146. कथाकार समयक परिवर्तनकेँ कोना टांकए चाहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. युगक अनुकूलेँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. युगक अनुकूलेँ।
व्याख्या: स्रोतमे समएक परिवर्तनकेँ युगक अनुकूलेँ टाँकिक नव समाज बनएबाक आकांक्षा अछि।

प्रश्न 11147. सामाजिक विसंगतिसँ उत्पन्न विषयमे कथाकार कोन आयाम जोड़ैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आर्थिक स्थिति आ सांस्कृतिक आयाम।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आर्थिक स्थिति आ सांस्कृतिक आयाम।
व्याख्या: स्रोतमे सामाजिक विषमता, आर्थिक स्थिति आ सांस्कृतिक आयामपर विमर्श अछि।

प्रश्न 11148. परिवर्तनकारी सोच कोन चीजक संवाहक बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नव सामाजिक मूल्यबोधक।
उत्तर: घ. नव सामाजिक मूल्यबोधक।
व्याख्या: स्रोतमे परिवर्तनकारी सोच नव सामाजिक मूल्यबोधक संवाहक बनैत अछि।

प्रश्न 11149. भ्रमरक कथामे सड़ल-गलल परंपराक प्रति दृष्टि कोन अछि?
क. आलोचनात्मक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आलोचनात्मक।
व्याख्या: स्रोत फोकिला मानसिकताक संग सड़ल परंपरा उठबैत रहबाक विरोध करैत अछि।

प्रश्न 11150. कथा-साहित्यक सामाजिक भूमिका एहि खण्डमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समाजक परिवर्तनकारी प्रश्न पनुगबैत रहब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समाजक परिवर्तनकारी प्रश्न पनुगबैत रहब।
व्याख्या: कथाकार सामाजिक विसंगति आ सांस्कृतिक प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 11151. नव समाजक आकांक्षा कोन आधारपर उभरैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रेम, परिवर्तन आ सामाजिक मूल्यबोध।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रेम, परिवर्तन आ सामाजिक मूल्यबोध।
व्याख्या: स्रोतक तीनू प्रवाह एक संग आलोचनाक आधार बनैत अछि।

प्रश्न 11152. खण्ड ११२०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भ्रमरक कथाकार सड़ल परंपरा छोड़ि प्रेम, परिवर्तन आ नव सामाजिक मूल्यबोधक पक्षधर छथि।
उत्तर: घ. भ्रमरक कथाकार सड़ल परंपरा छोड़ि प्रेम, परिवर्तन आ नव सामाजिक मूल्यबोधक पक्षधर छथि।
व्याख्या: ई खण्ड संस्कृतिक गतिशीलता आ परिवर्तनकारी दृष्टि समेटैत अछि।

खण्ड ११२१ : विदेह-सदेह २ — शोषितक अस्मिता आ नारी-अधिकार

प्रश्न 11153. भ्रमरक लेखनी केकर अस्मिता-अधिकारक बात उठबैत अछि?
क. शोषित-पीड़ितक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शोषित-पीड़ितक।
व्याख्या: स्रोतमे हिनक लेखनी शोषित-पीड़ितक अस्मिता-अधिकारक बात उठबैत अछि।

प्रश्न 11154. कथाकार केकर पक्षमे भऽ जाइत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दबल-कुचलल लोकक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दबल-कुचलल लोकक।
व्याख्या: स्रोतमे दबल-कुचलल लोकक पक्षमे भऽ जाएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11155. पुरुषक पौरुषत्व स्रोतमे मुख्यतः कतय केन्द्रित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. वासना मे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. वासना मे।
व्याख्या: स्रोतमे पुरुषक पौरुषत्व वासनामे विशेष केन्द्रित भऽ आएल कहल अछि।

प्रश्न 11156. कथाकारक बेचैन मोनमे कोन धारा रस-प्लावित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समतामूलक आ प्रेममूलक धारा।
उत्तर: घ. समतामूलक आ प्रेममूलक धारा।
व्याख्या: स्रोतमे समतामूलक ओ प्रेममूलक धारा रस-प्लवित कहल अछि।

प्रश्न 11157. स्त्री वर्गक प्रति पुरुष वर्गक कोन मानसिकता उजागर होइत अछि?
क. दम्भ, क्रूर मानसिकता आ अव्यवस्था।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दम्भ, क्रूर मानसिकता आ अव्यवस्था।
व्याख्या: स्रोतमे स्त्री वर्गक प्रति पुरुषक दम्भ आ क्रूर मानसिकता उजागर अछि।

प्रश्न 11158. सम-सामयिक प्रश्नक झड़ीमे कथा कोन औकाति देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रोटीक औकाति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रोटीक औकाति।
व्याख्या: स्रोतमे रोटीक औकाति देखबैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 11159. नारीक अन्तरमोनमे पैसि कथाकार की स्वच्छ करबाक प्रयास करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मानसिक विकार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मानसिक विकार।
व्याख्या: स्रोतमे नारीक अन्तरमोनमे पैसिक मानसिक विकार स्वच्छ करबाक बात अछि।

प्रश्न 11160. सामाजिक नैतिकता आ धार्मिकताक अढ़मे कोन संस्कृति प्रति विद्रोह मुखरित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. साम्राज्यवादी संस्कृति।
उत्तर: घ. साम्राज्यवादी संस्कृति।
व्याख्या: स्रोतमे साम्राज्यवादी संस्कृति प्रति विद्रोह भाव मुखरित कहल अछि।

प्रश्न 11161. भ्रमरक स्त्री-विमर्श मात्र कामुकता अछि?
क. नहि, सामाजिक मूल्यबोधक संवाहक बनैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, सामाजिक मूल्यबोधक संवाहक बनैत अछि।
व्याख्या: स्रोत स्पष्ट करैत अछि जे ई केवल कामुकता नहि, मूल्यबोधक संवाहक अछि।

प्रश्न 11162. खण्ड ११२१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भ्रमरक कथा शोषितक अधिकार, नारी-अस्मिता आ पुरुष-दम्भक आलोचना मार्फत सामाजिक मूल्यबोध गढ़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भ्रमरक कथा शोषितक अधिकार, नारी-अस्मिता आ पुरुष-दम्भक आलोचना मार्फत सामाजिक मूल्यबोध गढ़ैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड सामाजिक न्याय आ नारी-विमर्शक बिन्दु समेटैत अछि।

खण्ड ११२२ : विदेह-सदेह २ — शिल्प, अनुभव आ कथा-सौन्दर्य

प्रश्न 11163. आलोचकक अनुसार भ्रमर कथ्यक प्रति जतेक सजग छथि, ततेक कोन प्रति नहि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शिल्पक प्रति।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शिल्पक प्रति।

व्याख्या: स्रोतमे कथ्यक प्रति सजग, मुदा शिल्पक प्रति ओतबे नहि कहल गेल।

प्रश्न 11164. शैलीक दृष्टिएँ सजगता कम रहबाक कारण की बाधित होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा-सौन्दर्य।

उत्तर: घ. कथा-सौन्दर्य।

व्याख्या: स्रोतमे शैलीक कमजोरी कथा-सौन्दर्यकेँ बाधित करैत अछि।

प्रश्न 11165. तैयो भ्रमरक कोन दृष्टि सतत चौकन्न रहैत अछि?

क. अनुभववादी दृष्टि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुभववादी दृष्टि।

व्याख्या: स्रोतमे अनुभववादी दृष्टि सतत चौकन्न रहल कहल गेल।

प्रश्न 11166. भ्रमरक अनुभववादी दृष्टि केकर यथार्थक चित्रण करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अपन गाम-घर आ पड़ोसियाक देखल-भोगल यथार्थ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अपन गाम-घर आ पड़ोसियाक देखल-भोगल यथार्थ।

व्याख्या: स्रोतमे गाम-घर, अड़ोसिया-पड़ोसियाक यथार्थक चित्रण कहल अछि।

प्रश्न 11167. भ्रमरमे कोन क्षमता अछि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कहबाक क्षमता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कहबाक क्षमता।

व्याख्या: स्रोतमे कहबाक क्षमता अछि, जे शिल्प-विकासमे आरो निखरत कहल अछि।

प्रश्न 11168. भ्रमरक चौकन्न दृष्टि समाजक प्रति कोना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सजग।

उत्तर: घ. सजग।

व्याख्या: स्रोतमे कथाकारक चौकन्न दृष्टि समाजक प्रति सजग कहल अछि।

प्रश्न 11169. भ्रमर समाजमे आइयो निरीह केकर सृष्टि करैत छथि?
क. पात्रक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पात्रक।
व्याख्या: स्रोतमे ओ ओहि पात्रक सृष्टि करैत छथि जे समाजमे आइयो निरीह अछि।

प्रश्न 11170. हिनक संवेदनशील मोन खास कोन पात्रसँ छुबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नारी पात्रसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नारी पात्रसँ।
व्याख्या: स्रोतमे खासक नारी पात्र हिनक संवेदनशील मोनकेँ छुबैत अछि।

प्रश्न 11171. जतय पात्रक चरित्र-चित्रण सजीव भेल, ओतय की मुखरित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कथाक सौन्दर्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कथाक सौन्दर्य।
व्याख्या: स्रोतमे सजीव चरित्र-चित्रण पर कथाक सौन्दर्य मुखरित होयबाक बात अछि।

प्रश्न 11172. खण्ड ११२२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भ्रमरक कथा शिल्पगत सीमाक बावजूद अनुभव, समाज-सजगता आ पात्र-संवेदनासँ प्रभावी बनैत अछि।
उत्तर: घ. भ्रमरक कथा शिल्पगत सीमाक बावजूद अनुभव, समाज-सजगता आ पात्र-संवेदनासँ प्रभावी बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड आलोचनात्मक संतुलन रखैत अछि—सीमा आ सामर्थ्य दुनू।

खण्ड ११२३ : विदेह-सदेह २ — नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे भ्रमरक योगदान

प्रश्न 11173. नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे भ्रमरक कथा कोन दू दृष्टिसँ प्रभाव छोड़ैत अछि?
क. मात्रात्मक आ गुणात्मक दुनू दृष्टिसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मात्रात्मक आ गुणात्मक दुनू दृष्टिसँ।
व्याख्या: स्रोतमे मात्रात्मक ओ गुणात्मक दुनू दृष्टिएँ प्रभावक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11174. भ्रमरक कथा एक दिस कथा-साहित्यक की भरैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भण्डार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भण्डार।
व्याख्या: स्रोतमे कथा-साहित्यक भण्डार भरबाक बात अछि।

प्रश्न 11175. दोसर दिस कथा-दृष्टिमे भ्रमरक कथा की बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मूल्यबोधक संवाहक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मूल्यबोधक संवाहक।
व्याख्या: स्रोतमे कथा दृष्टिमे मूल्यबोधक संवाहक कहल गेल।

प्रश्न 11176. भ्रमरक कथाक जीवन-दृष्टि कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मानवीय मूल्यबोधक जीवन-दृष्टि।
उत्तर: घ. मानवीय मूल्यबोधक जीवन-दृष्टि।
व्याख्या: स्रोतमे मानवीय मूल्यबोधक जीवन-दृष्टि नेने कथा कहल अछि।

प्रश्न 11177. भ्रमरक कथा सामाजिक परिवर्तनमे की सिद्ध करत कहल गेल?
क. अपन औकाति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अपन औकाति।
व्याख्या: स्रोतमे सामाजिक परिवर्तनमे अपन औकाति सिद्ध करबे करत कहल अछि।

प्रश्न 11178. भविष्यमे भ्रमरक कथा कोन वस्तु बनबाक आशा जगबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ऐतिहासिक मूल्यक वस्तु।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ऐतिहासिक मूल्यक वस्तु।
व्याख्या: स्रोतमे भविष्यमे ऐतिहासिक मूल्यक वस्तु बनबाक आशा अछि।

प्रश्न 11179. संग्रहक छपाइ-सफाइ कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. देखनुक आ मनमोहक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. देखनुक आ मनमोहक।
व्याख्या: स्रोतमे छपाइ-सफाइक दृष्टिएँ देखनुक आ मनमोहक कहल गेल।

प्रश्न 11180. पोथीक कोन अंश विशेष आकर्षित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आवरण।
उत्तर: घ. आवरण।
व्याख्या: स्रोतमे पोथीक आवरण विशेष आकर्षित करैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 11181. आलोचनाक अन्तिम स्वर कोन अछि?
क. आशा आ विश्वास।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आशा आ विश्वास।
व्याख्या: स्रोतक अन्तमे आशा ओ विश्वास जगबिते अछि कहल गेल।

प्रश्न 11182. खण्ड ११२३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भ्रमरक कथा नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे मात्रा, गुण, मूल्यबोध आ भविष्यक ऐतिहासिक महत्त्वक दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भ्रमरक कथा नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे मात्रा, गुण, मूल्यबोध आ भविष्यक ऐतिहासिक महत्त्वक दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-लेखकक समेकित निष्कर्ष प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड ११२४ : विदेह-सदेह २ — “आशाक किरण”: मैथिली आ टेलिभिजन

प्रश्न 11183. “आशाक किरण” लेख के लिखलनि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जितेन्द्र झा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जितेन्द्र झा।
व्याख्या: स्रोतमे शीर्षक “आशाक किरण”क बाद जितेन्द्र झाक नाम अछि।

प्रश्न 11184. लेखकक अनुसार मैथिली भाषा धीरे-धीरे कतय स्थान बना रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विद्युतीय संचार माध्यममे।
उत्तर: घ. विद्युतीय संचार माध्यममे।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीभाषा विद्युतीय संचार माध्यममे स्थान बना रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 11185. दिल्लीसँ संचालित सम्पूर्ण मैथिली टेलिभिजनक नाम की देल गेल?
क. सौभाग्य मिथिला।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सौभाग्य मिथिला।
व्याख्या: स्रोतमे दिल्लीसँ सौभाग्य मिथिला नामक टेलिभिजन संचालनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11186. सौभाग्य मिथिला कोन प्रकारक टेलिभिजन कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मनोरंजनात्मक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मनोरंजनात्मक।
व्याख्या: स्रोतमे ई मनोरंजनात्मक टेलिभिजन कहल गेल।

प्रश्न 11187. एहि टेलिभिजनमे कोन सामग्री प्रमुखता पबैत रहल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत-नाद आ टेली-श्रृंखला।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत-नाद आ टेली-श्रृंखला।

व्याख्या: स्रोतमे गीतनाद आ टेली-श्रृंखला प्रसारणक प्रमुखता देल गेल।

प्रश्न 11188. मैथिली समुदाय जनसंख्याक अनुपातमे की नहि पाबि रहल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपन संचार माध्यम।

उत्तर: घ. अपन संचार माध्यम।

व्याख्या: स्रोतमे समुदायकेँ अपन संचार माध्यमक अभाव स्पष्ट अछि।

प्रश्न 11189. भारत-नेपाल सीमामे बांटल प्रतीकात्मक मिथिला कोन बाध्यतासँ मुक्त नहि भेल?

क. आन भाषाक माध्यमसँ सुसूचित होयबाक बाध्यता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन भाषाक माध्यमसँ सुसूचित होयबाक बाध्यता।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला आन भाषाक माध्यमसँ सूचना पाबए बाध्य अछि।

प्रश्न 11190. नेपाल वनक मधेश स्पेशल कार्यक्रममे कोन भाषामे समाचार आ गीतनाद प्रसारित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली भाषामे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली भाषामे।

व्याख्या: स्रोतमे नेपाल वनक मधेश स्पेशलद्वारा मैथिली समाचार आ गीतनाद प्रसारणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11191. लेखकक अनुसार मैथिलीकेँ सुनिश्चित भविष्य लेल की चाही?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सशक्त संचार माध्यम।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सशक्त संचार माध्यम।

व्याख्या: स्रोतमे सशक्त संचार माध्यम बिना सुनिश्चित भविष्य कल्पना मात्र रहबाक बात अछि।

प्रश्न 11192. खण्ड ११२४क निष्कर्ष की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. “आशाक किरण” मैथिली टेलिभिजनक आरम्भिक प्रयास, संचार-अभाव आ भाषिक भविष्यक प्रश्नकेँ एक संग रखैत अछि।

उत्तर: घ. “आशाक किरण” मैथिली टेलिभिजनक आरम्भिक प्रयास, संचार-अभाव आ भाषिक भविष्यक प्रश्नकेँ एक संग रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड मैथिली आ इलेक्ट्रॉनिक माध्यमक सम्बन्ध समेटैत अछि।

खण्ड ११२५ : विदेह-सदेह २ — फूल चन्द्र झा “प्रवीण”: जीवन-परिचय

प्रश्न 11193. फूल चन्द्र झा “प्रवीण”क जन्म-तिथि की देल गेल अछि?

क. १० अक्टूबर १९६१।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १० अक्टूबर १९६१।

व्याख्या: स्रोतमे जन्म तिथि 10 अक्टूबर 1961 देल गेल अछि।

प्रश्न 11194. फूल चन्द्र झा “प्रवीण”क पिताक नाम की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. श्री श्याम सुन्दर झा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. श्री श्याम सुन्दर झा।

व्याख्या: स्रोत-परिचयमे पिता रूपमे श्री श्याम सुन्दर झाक नाम अछि।

प्रश्न 11195. हुनकर माताक नाम की देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्रीमती चन्द्रकला देवी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्रीमती चन्द्रकला देवी।

व्याख्या: स्रोतमे माता रूपमे श्रीमती चन्द्रकला देवी लिखल अछि।

प्रश्न 11196. फूल चन्द्र झा “प्रवीण”क ग्राम कोन कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तुमौल।

उत्तर: घ. तुमौल।

व्याख्या: स्रोतमे सम्पर्क-पतामे ग्राम–तुमौल देल गेल अछि।

प्रश्न 11197. हुनकर पत्रालय कोन देल गेल अछि?

क. पुतइ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुतइ।

व्याख्या: स्रोतमे पत्रालय–पुतइ लिखल अछि।

प्रश्न 11198. हुनकर जिला कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दरभंगा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दरभंगा।

व्याख्या: स्रोतमे जिला–दरभंगा (बिहार) देल गेल अछि।

प्रश्न 11199. फूल चन्द्र झा “प्रवीण”क व्यवसाय की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अध्यापन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अध्यापन।
व्याख्या: स्रोतमे व्यवसाय: अध्यापन कहल गेल अछि।

प्रश्न 11200. हुनकर अभिरूचि-सूचीमे लेखनक अतिरिक्त कोन क्षेत्र सभ आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चित्रकला, अभिनय, गीत-संगीत आ सामाजिक कार्य।
उत्तर: घ. चित्रकला, अभिनय, गीत-संगीत आ सामाजिक कार्य।
व्याख्या: स्रोतमे अभिरूचिमे लेखनक संग चित्रकला, अभिनय, गीत-संगीत आ सामाजिक कार्य देल गेल अछि।

प्रश्न 11201. एहि परिचयक आधारपर फूल चन्द्र झा “प्रवीण” केहन व्यक्तित्व देखाइत छथि?
क. शिक्षण, साहित्य, कला आ सामाजिक कार्यसँ जुड़ल बहुआयामी व्यक्तित्व।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शिक्षण, साहित्य, कला आ सामाजिक कार्यसँ जुड़ल बहुआयामी व्यक्तित्व।
व्याख्या: परिचयमे व्यवसाय, अभिरूचि आ रचनाक क्षेत्र बहुआयामी रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 11202. खण्ड ११२५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. फूल चन्द्र झा “प्रवीण” दरभंगाक शिक्षकीय, रचनात्मक आ सांस्कृतिक व्यक्तित्व छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा “प्रवीण” दरभंगाक शिक्षकीय, रचनात्मक आ सांस्कृतिक व्यक्तित्व छथि।
व्याख्या: ई खण्ड जीवन-परिचय, परिवार, स्थान, व्यवसाय आ अभिरूचिक तथ्य समेटैत अछि।

खण्ड ११२६ : विदेह-सदेह २ — फूल चन्द्र झा “प्रवीण”: रचना-संसार

प्रश्न 11203. फूल चन्द्र झा “प्रवीण”क कविता-संग्रहमे “आयल नवल प्रभात”क उल्लेख कोन सूचीमे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रचना संसारमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रचना संसारमे।
व्याख्या: स्रोतमे रचना संसार अन्तर्गत कविता-संग्रहक सूचीमे ई नाम अछि।

प्रश्न 11204. “वसंतक बजनिआ” कोन विधाक कृति रूपमे देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कविता-संग्रह।
उत्तर: घ. कविता-संग्रह।
व्याख्या: स्रोतक रचना-सूचीमे “वसंतक बजनिआ” कविता-संग्रह अन्तर्गत आयल अछि।

प्रश्न 11205. “पाङल गाछक छाहरि” केकर कविता-संग्रह सूचीमे अछि?
क. फूल चन्द्र झा “प्रवीण”क।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. फूल चन्द्र झा “प्रवीण”क।
व्याख्या: स्रोतमे ई हुनकर कविता-संग्रह रूपमे देल गेल।

प्रश्न 11206. “हमरा मोनक खंजन चिड़ैया” कोन विधासँ सम्बद्ध अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कविता-संग्रह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कविता-संग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे ई कविता-संग्रहक सूचीमे अछि।

प्रश्न 11207. “आन्दोलन” आ “लुत्ती” कोन विधाक रचना रूपमे देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नाटक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नाटक।
व्याख्या: स्रोतमे नाटक सूचीमे आन्दोलन, लुत्ती आदि देल गेल अछि।

प्रश्न 11208. “सामाजिक न्याय” आ “गुरूआइनि” कोन रचनावर्गमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नाटक।
उत्तर: घ. नाटक।
व्याख्या: स्रोतक नाटक-सूचीमे ई नाम आयल अछि।

प्रश्न 11209. “भूत होइत भविष्य” कोन विधाक कृति कहल गेल?
क. कथा-संग्रह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कथा-संग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे कथा-संग्रह रूपमे “भूत होइत भविष्य” देल गेल अछि।

प्रश्न 11210. “हमरा जनैत” कोन विधाक कृति कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. निबंध-संग्रह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. निबंध-संग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे निबंध-संग्रह: “हमरा जनैत” कहल गेल अछि।

प्रश्न 11211. फूल चन्द्र झा “प्रवीण” मल्लिनाथक अनुवाद कोन भाषासँ कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अंग्रेजीसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अंग्रेजीसँ।
व्याख्या: स्रोतमे अनुवाद- मल्लिनाथ (अंग्रेजीसँ) लिखल अछि।

प्रश्न 11212. खण्ड ११२६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. फूल चन्द्र झा “प्रवीण” कविता, नाटक, कथा, निबंध, सम्पादन आ अनुवाद सभमे सक्रिय रचनाकार छथि।
उत्तर: घ. फूल चन्द्र झा “प्रवीण” कविता, नाटक, कथा, निबंध, सम्पादन आ अनुवाद सभमे सक्रिय रचनाकार छथि।
व्याख्या: रचना-संसारक सूची हुनकर बहुविध साहित्यिक योगदान देखबैत अछि।

खण्ड ११२७ : विदेह-सदेह २ — फूल चन्द्र झा “प्रवीण”: सम्पादन, सम्मान आ सहभागिता

प्रश्न 11213. फूल चन्द्र झा “प्रवीण”क संकलन-सम्पादनमे “बाबू भोलालाल दास रचनावली”क कोन खण्ड देल गेल?
क. पहिल खण्ड।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पहिल खण्ड।
व्याख्या: स्रोतमे “बाबू भोलालाल दास रचनावली, (पहिल खण्ड)” लिखल अछि।

प्रश्न 11214. “मधुपजी बीछल बेरायल कविता” हुनकर कोन प्रकारक कार्यमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संकलन-सम्पादन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संकलन-सम्पादन।
व्याख्या: स्रोतमे ई संकलन-सम्पादनक सूचीमे देल गेल अछि।

प्रश्न 11215. २००६ मे हुनका कोन राष्ट्रीय शिखर सम्मान भेटल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविचूड़ामणि पं. काशीकांत मिश्र “मधुप” सम्मान।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविचूड़ामणि पं. काशीकांत मिश्र “मधुप” सम्मान।
व्याख्या: स्रोतमे साहित्यकार संसद द्वारा राष्ट्रीय शिखर सम्मान- कविचूड़ामणि पं. काशीकांत मिश्र “मधुप” (2006) देल अछि।

प्रश्न 11216. २००८ मे कोन सम्मानक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विद्यापति सम्मान।
उत्तर: घ. विद्यापति सम्मान।
व्याख्या: स्रोतमे सम्मान-सूचीमे विद्यापति (2008) अछि।

प्रश्न 11217. २००९ मे कोन सम्मानक उल्लेख अछि?

क. सुमन स्मृति सम्मान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुमन स्मृति सम्मान।

व्याख्या: स्रोतमे सुमन स्मृति सम्मान (2009) देल अछि।

प्रश्न 11218. “जखन–तखन” पत्रिकामे हुनकर भूमिका कोन रूपमे आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्पादन सहयोग।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्पादन सहयोग।

व्याख्या: स्रोतमे ‘जखन–तखन’ पत्रिकामे सम्पादन सहयोग कहल गेल।

प्रश्न 11219. स्रोतमे हुनकर सहभागिता कोन मंच सभमे कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कविसम्मेलनमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कविसम्मेलनमे।

व्याख्या: स्रोतमे राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कविसम्मेलनमे सहभागिता देल गेल अछि।

प्रश्न 11220. विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हुनकर कोन-कोन विधाक सहयोग कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गीत, कविता, कथा, लेख आ निबंध।

उत्तर: घ. गीत, कविता, कथा, लेख आ निबंध।

व्याख्या: स्रोतमे गीत, कविता, कथा, लेख, निबंध आदिक रचनात्मक सहयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11221. एहि परिचयमे सम्पादकक टिप्पणी की भूमिका निभबैत अछि?

क. रचनाकारक विस्तृत साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक संक्षिप्त परिचय देब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रचनाकारक विस्तृत साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक संक्षिप्त परिचय देब।

व्याख्या: सम्पादक-टिप्पणी रचना, सम्मान, सहभागिता आ योगदान एकत्र करैत अछि।

प्रश्न 11222. खण्ड ११२७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. फूल चन्द्र झा “प्रवीण”क कार्य रचना-संग्रहसँ आगाँ बढ़ि सम्पादन, सम्मान आ सार्वजनिक साहित्यिक सहभागिता धरि विस्तृत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. फूल चन्द्र झा “प्रवीण”क कार्य रचना-संग्रहसँ आगाँ बढ़ि सम्पादन, सम्मान आ सार्वजनिक साहित्यिक सहभागिता धरि विस्तृत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड हुनकर संस्थागत आ सार्वजनिक साहित्यिक उपस्थिति समेटैत अछि।

खण्ड ११२८ : विदेह-सदेह २ — “मैथिली शिशु साहित्य लोक”: आरम्भिक अवधारणा

प्रश्न 11223. “मैथिली शिशु साहित्य लोक” आलेखक आरम्भमे मैथिली लोक साहित्यमे केकर अम्बार कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शिशु लोक साहित्यक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शिशु लोक साहित्यक।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली लोक साहित्यमे शिशु लोक साहित्यक अम्बार लागल अछि कहल गेल।

प्रश्न 11224. शिशु लोक साहित्यक कतेक भाग लिपिबद्ध आ कतेक भाग मौखिक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किछु लिपिबद्ध आ बेसी मौखिक।

उत्तर: घ. किछु लिपिबद्ध आ बेसी मौखिक।

व्याख्या: स्रोतमे किछु लिपिबद्ध आ बेसी मौखिक कहल अछि।

प्रश्न 11225. शिशु लोक साहित्य केकर द्वारा भेल मानल गेल?

क. अज्ञात लोक रचनाकारक द्वारा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अज्ञात लोक रचनाकारक द्वारा।

व्याख्या: स्रोतमे अज्ञात समए आ अज्ञात लोक रचनाकारक बात अछि।

प्रश्न 11226. ई साहित्य हजारो वर्ष धरि कोन परम्परामे जीबैत रहल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मौखिक परम्परामे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मौखिक परम्परामे।

व्याख्या: स्रोतमे वेदक रचना जकाँ हजारो वर्ष धरि मौखिक परम्परामे जीबैत रहल कहल अछि।

प्रश्न 11227. मौखिक परम्परामे जीबाक कारणेँ एकर की नष्ट भऽ रहल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मौलिकता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मौलिकता।

व्याख्या: स्रोतमे मौलिकता दिनानुदिन नष्ट भेल जा रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 11228. लोक-विशेष, वर्ग-विशेष आ क्षेत्र-विशेषक कारणेँ कोन अन्तर पाओल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शब्द आ उच्चारणमे अन्तर।

उत्तर: घ. शब्द आ उच्चारणमे अन्तर।

व्याख्या: स्रोतमे शब्द आ उच्चारणमे अन्तर पाओल जाइत अछि।

प्रश्न 11229. आलेखमे मुख्य रूपेँ कोन विधाकेँ केन्द्रमे राखल गेल?
क. पद्य विधा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पद्य विधा।
व्याख्या: स्रोतमे पद्य विधाकेँ केन्द्रमे राखि विचार कएल गेल अछि।

प्रश्न 11230. पद्यक अतिरिक्त आलेखमे की कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. थोड़-बहुत आनो विधासभ पर विचार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. थोड़-बहुत आनो विधासभ पर विचार।
व्याख्या: स्रोतमे पद्य केन्द्रमे राखि आनो विधासभपर विचारक बात अछि।

प्रश्न 11231. शिशु लोक साहित्यक संरक्षणक समस्या एहि आरम्भमे कोना देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मौखिक परम्परा टूटलासँ शब्द, उच्चारण आ मौलिकता बदलैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मौखिक परम्परा टूटलासँ शब्द, उच्चारण आ मौलिकता बदलैत अछि।
व्याख्या: स्रोत मौखिकता, क्षेत्रीय अन्तर आ मौलिकता-नाशक समस्या उठबैत अछि।

प्रश्न 11232. खण्ड ११२८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली शिशु लोक साहित्य अज्ञात लोक-रचनाकारक मौखिक धरोहर अछि, जकर संरक्षण आवश्यक अछि।
उत्तर: घ. मैथिली शिशु लोक साहित्य अज्ञात लोक-रचनाकारक मौखिक धरोहर अछि, जकर संरक्षण आवश्यक अछि।
व्याख्या: ई खण्ड आलेखक मूल अवधारणा आ संरक्षण-संकट स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ११२९ : विदेह-सदेह २ — शिशु लोक साहित्यक स्रोत आ वर्गीकरण

प्रश्न 11233. मैथिली शिशु लोक साहित्य लिपिबद्ध करबाक प्रयासमे प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”क कोन ग्रंथ उपयोगी कहल गेल?
क. मैथिलीक नेना गीत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक नेना गीत।
व्याख्या: स्रोतमे “मैथिलीक नेना गीत” उपयोगी सिद्ध भेल कहल गेल।

प्रश्न 11234. डा. अणिमा सिंहक कोन कृति स्रोतमे देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “शिशु गीत आ खेल” तथा सम्पूर्ण बाल साहित्य।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “शिशु गीत आ खेल” तथा सम्पूर्ण बाल साहित्य।
व्याख्या: स्रोतमे डा. अणिमा सिंहक ई कृतिसभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11235. डा. दमन कुमार झाक कोन ग्रंथ उपयोगी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. “मैथिली बाल साहित्य”।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. “मैथिली बाल साहित्य”।
व्याख्या: स्रोतमे डा. दमन कुमार झाक समालोचनात्मक ग्रंथ “मैथिली बाल साहित्य”क उल्लेख अछि।

प्रश्न 11236. लेखक मैथिली शिशु लोक साहित्यकेँ कतेक भागमे बाँटैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तीन भागमे।
उत्तर: घ. तीन भागमे।
व्याख्या: स्रोतमे निम्नलिखित तीन भाग देल गेल अछि।

प्रश्न 11237. पहिल भाग कोन अछि?
क. लालन–पालनसँ सम्बद्ध।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लालन–पालनसँ सम्बद्ध।
व्याख्या: स्रोतक वर्गीकरणमे पहिल भाग लालन–पालनसँ सम्बद्ध अछि।

प्रश्न 11238. दोसर भाग कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. खेल आ मनोरंजनसँ सम्बद्ध।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. खेल आ मनोरंजनसँ सम्बद्ध।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर भाग खेल आ मनोरंजनसँ सम्बद्ध देल गेल।

प्रश्न 11239. तेसर भाग कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ज्ञानोपयोगी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ज्ञानोपयोगी।
व्याख्या: स्रोतक तेसर भाग ज्ञानोपयोगी अछि।

प्रश्न 11240. शिशु लोक साहित्यक वर्गीकरणक उद्देश्य की बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बालजीवनक भिन्न अवस्थासँ जुड़ल सामग्री व्यवस्थित करब।
उत्तर: घ. बालजीवनक भिन्न अवस्थासँ जुड़ल सामग्री व्यवस्थित करब।
व्याख्या: तीनू भाग बालक पालन, खेल आ ज्ञानक क्षेत्र अलग-अलग करैत अछि।

प्रश्न 11241. स्रोतग्रंथक उल्लेख आलेखमे कोन भूमिका निभबैत अछि?

क. पूर्व संकलन आ अध्ययनक आधार देखबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूर्व संकलन आ अध्ययनक आधार देखबैत अछि।

व्याख्या: लेखक उपयोगी ग्रंथ सभक नाम दऽ अध्ययनक आधार स्पष्ट करैत छथि।

प्रश्न 11242. खण्ड ११२९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आलेख शिशु लोक साहित्यकेँ लालन-पालन, खेल-मनोरंजन आ ज्ञानोपयोगी तीन विभागमे रखि पूर्व ग्रंथ सभक आधार स्वीकार करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आलेख शिशु लोक साहित्यकेँ लालन-पालन, खेल-मनोरंजन आ ज्ञानोपयोगी तीन विभागमे रखि पूर्व ग्रंथ सभक आधार स्वीकार करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड स्रोत, वर्गीकरण आ अध्ययन-पद्धति स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड ११३० : विदेह-सदेह २ — लालन-पालनक परिवेश आ जन्मोत्तर पद

प्रश्न 11243. लालन–पालनसँ सम्बद्ध लोक साहित्यक परिवेश कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. घर–आँगनसँ दलान धरि सीमित।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. घर–आँगनसँ दलान धरि सीमित।

व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रकारक परिवेशक सीमा घर–आँगनसँ दलान धरि कहल गेल।

प्रश्न 11244. नेनाक जन्म लितहि ओकर कानमे की पड़ैत छैक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सोहर।

उत्तर: घ. सोहर।

व्याख्या: स्रोतमे नेनाकेँ जन्म लितहि “सोहर” कानमे पड़ैत छैक कहल गेल।

प्रश्न 11245. नेनाक अवस्था बदललासँ शिशु लोक साहित्य कोना होइत अछि?

क. परिवर्तित होइत जाइत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवर्तित होइत जाइत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे अवस्था बदलिते साहित्य परिवर्त्तित होइत जाइत अछि।

प्रश्न 11246. जन्मक बाद नेनाक देह कतेको बेर कोन तेलसँ जाँतल–पीचल जाइत छैक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कड़ूतेलसँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कड़ूतेलसँ।

व्याख्या: स्रोतमे दिन-राति मिला कऽ कतेको बेर कड़ूतेलसँ जाँतल–पीचल जाइत छैक कहल अछि।

प्रश्न 11247. तेल लगबैत जतनिहारिक ठोर पर अनायास कोन पंक्ति चल अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. “चैं–चैं–चैं बौआ सूतभैं”।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. “चैं–चैं–चैं बौआ सूतभैं”।
व्याख्या: स्रोतमे एहि पंक्तिसँ आरम्भ भेल पद उद्धृत अछि।

प्रश्न 11248. “बौआ मत्था पच्चनि तेल” कोन क्रियासँ जुड़ल पद अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नेनाक देह/माथ पर तेल-पचायब आ लालन-पालन।
उत्तर: घ. नेनाक देह/माथ पर तेल-पचायब आ लालन-पालन।
व्याख्या: ई पंक्ति तेल लगबैत कालक पालन-पदमे आयल अछि।

प्रश्न 11249. चानि पर तेल पचाएलाक बाद नेनाकेँ कतय पारल जाइत अछि?
क. अपन दुनू टाँगपर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अपन दुनू टाँगपर।
व्याख्या: स्रोतमे अपन दुनू टाँगपर नेनाकेँ पारि देह उँगारबाक बात अछि।

प्रश्न 11250. “धोबियाक पाट सन” पंक्ति कोन संदर्भमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नेनाक देह उँगारबाक पालन-पदमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नेनाक देह उँगारबाक पालन-पदमे।
व्याख्या: स्रोतमे देह उँगारैत कहल जाएबला पंक्तिमे ई अंश अछि।

प्रश्न 11251. ई प्रारम्भिक पद्य शिशुक कोन अनुभवसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्पर्श, तेल-मालिश, देह-संभार आ सुतएबाक वातावरण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्पर्श, तेल-मालिश, देह-संभार आ सुतएबाक वातावरण।
व्याख्या: जन्मोत्तर लालन-पालनमे मालिश, स्पर्श आ गीत एक संग अछि।

प्रश्न 11252. खण्ड ११३०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लालन-पालनक आरम्भिक शिशु लोक साहित्य जन्म, सोहर, तेल-मालिश आ घरेलू स्नेहक पद सभसँ बनैत अछि।
उत्तर: घ. लालन-पालनक आरम्भिक शिशु लोक साहित्य जन्म, सोहर, तेल-मालिश आ घरेलू स्नेहक पद सभसँ बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड घर-आँगनक शिशु-संस्कारक लोक साहित्य देखबैत अछि।

खण्ड ११३१ : विदेह-सदेह २ — मामा-नाना गाम, संझा मैया आ रक्षा-पद्य

प्रश्न 11253. तेल आ देह-संभारक बाद नेनाकेँ हाथसँ लोकैत काल नेना की करए लगैत अछि?

क. डरे कानए लगैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डरे कानए लगैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे नेनाकेँ हाथसँ लोकैत छथि आ नेना डरे कानए लगैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 11254. “बौआ आम तोड़ / बौआ जाम तोड़” कोन प्रसंगमे कहल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नेनाकेँ बहटारए/हाथसँ लोकएबाक बाद।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नेनाकेँ बहटारए/हाथसँ लोकएबाक बाद।

व्याख्या: स्रोतमे डेराएल नेनाकेँ पुनः एहि पंक्तिसँ बहटारबाक संकेत अछि।

प्रश्न 11255. टाँग पकड़ि उनटा कऽ झुलबैत कोन गाम देखबाक पंक्ति कहल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मामा गाम, नाना गाम आ अपन गाम।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मामा गाम, नाना गाम आ अपन गाम।

व्याख्या: स्रोतमे “बौआ मामा गाम देखू / बौआ नाना गाम देखू / बौआ अपन गाम देखू” अछि।

प्रश्न 11256. जँ नेना मामा गाममे रहल तँ केकर चौल कएल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दादा–दादीक।

उत्तर: घ. दादा–दादीक।

व्याख्या: स्रोतमे मामा गाममे रहल नेनाक प्रसंगमे दादा-दादीक चौल कहल गेल।

प्रश्न 11257. जँ नेना अपन गाममे रहल तँ केकर चौल कएल जाइत अछि?

क. नाना–नानीक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाना–नानीक।

व्याख्या: स्रोतमे अपन गाममे रहल तँ नाना-नानीक चौल कएल जाइत अछि।

प्रश्न 11258. पहिल साँझ दीप लेसलाक बाद नेनाक रक्षार्थ केकरासँ प्रार्थना कएल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संझा–मैयासँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संझा–मैयासँ।

व्याख्या: स्रोतमे छोट-छोट नेनाक रक्षार्थ संझा-मैयासँ प्रार्थना कहल गेल।

प्रश्न 11259. “आको मैया चाको” पंक्ति कोन प्रकारक पद्य अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रक्षा-प्रार्थना पद्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रक्षा-प्रार्थना पद्य।
व्याख्या: ई पंक्ति संझा मैया आ नेनाक रक्षा सम्बन्धी प्रार्थनामे आयल अछि।

प्रश्न 11260. रक्षा-पद्य मे “काल–भैरव” की करथि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रक्षा करथि।
उत्तर: घ. रक्षा करथि।
व्याख्या: स्रोत पंक्तिमे “काल–भैरव रक्षा करय” अछि।

प्रश्न 11261. “बौआ सूतय सुखक राती” पंक्ति कोन आशय दैत अछि?
क. नेनाक सुख-निद्रा आ रक्षा-कामना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नेनाक सुख-निद्रा आ रक्षा-कामना।
व्याख्या: रक्षा-पद्य मे सुखक राती, दुःख-दरिद्र पाछू आ सुख-श्रृंगार आगाँक कामना अछि।

प्रश्न 11262. खण्ड ११३१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मामा-नाना गामक खेल-पद्य आ संझा मैया रक्षा-प्रार्थना नेनाक लालन-पालनमे सम्बन्ध, खेल आ सुरक्षा-कामना जोड़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मामा-नाना गामक खेल-पद्य आ संझा मैया रक्षा-प्रार्थना नेनाक लालन-पालनमे सम्बन्ध, खेल आ सुरक्षा-कामना जोड़ैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड घरेलू शिशु-संस्कारक सम्बन्धात्मक आ रक्षात्मक पक्ष समेटैत अछि।

खण्ड ११३२ : विदेह-सदेह २ — नजरि-गुजरि, दीप आ आनी-मानी

प्रश्न 11263. बेसी देखनुहुक नेनाकेँ क्यौ की लगा दै से डर रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नजरि–गुजरि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नजरि–गुजरि।
व्याख्या: स्रोतमे बेसी देखनुहुक नेनाकेँ नजरि-गुजरि लगबाक डरक प्रसंग अछि।

प्रश्न 11264. नजरि-गुजरि प्रसंगमे “हँसनी–खिलनी” कतय गेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बजार।
उत्तर: घ. बजार।
व्याख्या: स्रोतमे पंक्ति अछि: “हँसनी–खिलनी गेल बजार”।

प्रश्न 11265. नजरि-पद्य मे दोहाइ केकर देल गेल?
क. राजा धनपाल आ मौरगनी माए।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राजा धनपाल आ मौरगनी माए।
व्याख्या: स्रोत पंक्तिमे दोहाइ राजा धनपाल, दोहाइ मौरगनी माए आयल अछि।

प्रश्न 11266. दीपक इजोतपर नेना अपन दृष्टि केन्द्रित कऽ की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. डिम्हा घुमबैत आनन्द लैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. डिम्हा घुमबैत आनन्द लैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे दीपक इजोतपर दृष्टि केन्द्रित कऽ डिम्हा घुमबैत आनन्द लेबाक बात अछि।

प्रश्न 11267. छठिहारक रातिक दीप सम्बन्धी जनश्रुति कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दीप मिझा कऽ लोक राखि लैत छल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दीप मिझा कऽ लोक राखि लैत छल।
व्याख्या: स्रोतमे प्राचीन कालमे छठिहारक रातिक दीप मिझा कऽ राखबाक जनश्रुति अछि।

प्रश्न 11268. बेटाकेँ छठिहारक दीपसँ कतेक वर्ष धरि टोटमा करबाक जनश्रुति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. छः वर्ष धरि।
उत्तर: घ. छः वर्ष धरि।
व्याख्या: स्रोतमे बेटाकेँ छः वर्ष धरि एहि दीपसँ टोटमा करैत छल कहल गेल।

प्रश्न 11269. बेटीकेँ एहि दीपसँ कतेक वर्ष धरि टोटमा करबाक जनश्रुति अछि?
क. तीन वर्ष धरि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तीन वर्ष धरि।
व्याख्या: स्रोतमे बेटीकेँ तीन वर्ष धरि टोटमा करबाक बात अछि।

प्रश्न 11270. नेना बैसऽ लगैत अछि तखन लोक कोन जिज्ञासा-पद्य कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “आनी–मानी हम जानी”।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “आनी–मानी हम जानी”।
व्याख्या: स्रोतमे नेनाक कपारपर आँगुर घुमबैत एहि पंक्ति कहल जाइत अछि।

प्रश्न 11271. जँ नेना बिचला आँगुर पकड़ि लैत अछि तँ की मानल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जिज्ञासा पूरा होएबाक सम्भावना प्रबल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जिज्ञासा पूरा होएबाक सम्भावना प्रबल।
व्याख्या: स्रोतमे बिचला आँगुर पकड़लासँ जिज्ञासा पूरा होएबाक सम्भावना प्रबल मानल जाइत अछि।

प्रश्न 11272. खण्ड ११३२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नजरि-गुजरि, दीप-टोटमा आ आनी-मानी शिशु लोकविश्वास, खेल आ बालबोधक लोक विधि देखबैत अछि।
उत्तर: घ. नजरि-गुजरि, दीप-टोटमा आ आनी-मानी शिशु लोकविश्वास, खेल आ बालबोधक लोक विधि देखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड शिशु-संरक्षण आ लोकविश्वासक मिश्रित रूप समेटैत अछि।

खण्ड ११३३ : विदेह-सदेह २ — ठाढ़ होएब, डेग उठएब आ चन्ना मामा

प्रश्न 11273. नेना ठाढ़ होएब आरम्भ करैत अछि तखन की बेर-बेर घटैत अछि?
क. बेर-बेर खसि पड़ैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बेर-बेर खसि पड़ैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे ठाढ़ होएबाक आरम्भमे नेना बेर-बेर खसैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 11274. घर-परिवारक लोक नेनाकेँ कोन भऽर दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आँगुरक भऽर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आँगुरक भऽर।
व्याख्या: स्रोतमे लोक बेर-बेर आँगुरक भऽर दैत ठाढ़ होएबाक लेल प्रोत्साहित करैत अछि।

प्रश्न 11275. “था.....था.....दिग्–दिग् था” पंक्ति कोन कार्यमे प्रयोग होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नेनाकेँ ठाढ़ होएब आ डेग उठएब सिखएबामे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नेनाकेँ ठाढ़ होएब आ डेग उठएब सिखएबामे।
व्याख्या: स्रोतमे ई पद नेनाकेँ बूलब सिखएबाक माध्यम कहल गेल।

प्रश्न 11276. “डेग बढ़ैया.....हम्मर बाबू.....हम्मर भैया” कोन भाव दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रोत्साहनक भाव।
उत्तर: घ. प्रोत्साहनक भाव।
व्याख्या: ई पंक्ति नेनाक डेग उठएबाक उत्साह बढ़बैत अछि।

प्रश्न 11277. झौलाएत नेनाकेँ कोरामे लऽ घुमएबाक क्रममे कोन परम्परा रहल अछि?
क. कथा–गीतक परम्परा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कथा–गीतक परम्परा।
व्याख्या: स्रोतमे झौलाएत नेनाकेँ कोरामे लऽ कथा-गीतक परम्परा रहल कहल गेल।

प्रश्न 11278. चन्नामामाकेँ देखबैत नेनाकेँ कोन पंक्ति कहल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “चन्ना मामा आ रे आ, पारे आ”।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “चन्ना मामा आ रे आ, पारे आ”।
व्याख्या: स्रोतमे चन्नामामा गीतक एहि आरम्भिक पंक्ति अछि।

प्रश्न 11279. चन्ना मामा गीतमे सोनाक कटोरामे की नेने आबए कहल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दूध–भात।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दूध–भात।
व्याख्या: स्रोतमे “सोनाकेँ कटोरामे / दूध–भात नेने आ” अछि।

प्रश्न 11280. दोसर चन्ना मामा गीतमे केराक भारक संग की-की आनबाक बात अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पूड़ी–पकमान आ फोका मखान।
उत्तर: घ. पूड़ी–पकमान आ फोका मखान।
व्याख्या: स्रोतमे केराक भार, पूड़ी-पकमान, फोका मखान आयल अछि।

प्रश्न 11281. चन्ना मामा गीतक अभिनयमे लोक नेनाकेँ की करबाक अभिनय करैत छथि?
क. खोअएबाक अभिनय।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. खोअएबाक अभिनय।
व्याख्या: स्रोतमे हाथसँ नेनाकेँ खोअएबाक अभिनयक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11282. खण्ड ११३३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. डेग सिखएबाक पद आ चन्ना मामा गीत शिशु-चेष्टा, खेल, आहार-कल्पना आ स्नेहिल अभिनयकेँ जोड़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. डेग सिखएबाक पद आ चन्ना मामा गीत शिशु-चेष्टा, खेल, आहार-कल्पना आ स्नेहिल अभिनयकेँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड शारीरिक विकास आ कथा-गीतक संयुक्त भूमिका देखबैत अछि।

खण्ड ११३४ : विदेह-सदेह २ — तरेगण, तारा बेटी आ विनिमय-श्रृंखला

प्रश्न 11283. तरेगण दिस तकबैत कोन पंक्ति आरम्भ होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. “एक तारा दू तारा”।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. “एक तारा दू तारा”।
व्याख्या: स्रोतमे तरेगण दिस तकबैत “एक तारा दू तारा” पंक्ति आयल अछि।

प्रश्न 11284. “तारा बेटी” कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बड़ बुधियारि।
उत्तर: घ. बड़ बुधियारि।
व्याख्या: स्रोतमे “तारा बेटी बड़ बुधियारि” अछि।

प्रश्न 11285. तारा बेटी गीतमे गंगाकातसँ की अनल गेल?
क. बालु।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बालु।
व्याख्या: स्रोत पंक्तिमे “गंगाकातसँ बालु अनलक” अछि।

प्रश्न 11286. बालु के लयलक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कनुनियाँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कनुनियाँ।
व्याख्या: स्रोतमे “सेहो बालु कनुनियाँ लेलक” अछि।

प्रश्न 11287. घस्सा के खा गेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गैया।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गैया।
व्याख्या: श्रृंखलामे घस्सा गैया खेलक पंक्ति अछि।

प्रश्न 11288. गैया की देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दूध।
उत्तर: घ. दूध।
व्याख्या: स्रोतमे “सेहो गैया दूध देलक” अछि।

प्रश्न 11289. दूध के पी गेल?
क. बिलैया।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बिलैया।
व्याख्या: स्रोत पंक्तिमे दूध बिलैया पीलक अछि।

प्रश्न 11290. मूसा के खेलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चिलहोरबा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चिलहोरबा।
व्याख्या: स्रोतमे “सेहो मूसा चिलहोरबा खेलक” अछि।

प्रश्न 11291. हाथी अंततः के लयलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मामा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मामा।
व्याख्या: स्रोतमे राजा हाथी देलक आ हाथी मामा लेलक अछि।

प्रश्न 11292. खण्ड ११३४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “एक तारा दू तारा” गीत शिशु-मनोरंजनमे क्रमिक विनिमय, कल्पना आ स्मृति-श्रृंखलाक लोक-कला देखबैत अछि।
उत्तर: घ. “एक तारा दू तारा” गीत शिशु-मनोरंजनमे क्रमिक विनिमय, कल्पना आ स्मृति-श्रृंखलाक लोक-कला देखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड तरेगण-गीतक संरचना आ बालस्मृति अभ्यास समेटैत अछि।

खण्ड ११३५ : विदेह-सदेह २ — लोरी, निनियाँ आ दीर्घायु-कामना

प्रश्न 11293. सुतयबाक काल नेनाकेँ कतय लऽ बेर-बेर सोहराओल जाइत अछि?
क. जाँघपर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जाँघपर।
व्याख्या: स्रोतमे नेनाकेँ जाँघपर लऽ कनपट्टी आ माथ सोहरबैत लोरी गाबबाक बात अछि।

प्रश्न 11294. लोरी गाबैत काल जाँघकेँ कोना कएल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नीचाँ–उपर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नीचाँ–उपर।
व्याख्या: स्रोतमे जाँघकेँ नीचाँ–उपर करैत लोरीक परम्परा कहल गेल।

प्रश्न 11295. लोरीक आरम्भिक पंक्ति कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. “आगे निनियाँ आ आ”।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. “आगे निनियाँ आ आ”।
व्याख्या: स्रोतमे लोरी “आगे निनियाँ आ आ / बौआ लए निन ला ला” सँ आरम्भ अछि।

प्रश्न 11296. “निनियाँ एलै बिढ़निियाँसँ” पंक्ति कोन विधासँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लोरी।
उत्तर: घ. लोरी।
व्याख्या: स्रोतमे ई लोरीक पंक्ति रूपमे देल गेल।

प्रश्न 11297. लोरीमे बौआ कोना अयलै कहल जाइत अछि?
क. मातृकसँ/ममहरसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृकसँ/ममहरसँ।
व्याख्या: स्रोतक दू रूपमे बौआ मातृकसँ आ ममहरसँ अयलै कहल गेल।

प्रश्न 11298. ममहरमे बौआकेँ की खएबाक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आरब चाउरक भात आ सोरहिया गायक दूध।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आरब चाउरक भात आ सोरहिया गायक दूध।
व्याख्या: स्रोतमे ममहरक खानेमे आरब चाउरक भात आ सोरहिया गायक दूध अछि।

प्रश्न 11299. पोखरिक टेंगस के छोड़ाओल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बोनक बगुला।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बोनक बगुला।
व्याख्या: स्रोत पंक्तिमे “बोनक बगुला देल छोड़ाय” अछि।

प्रश्न 11300. लोरीक अन्तमे ब्राह्मण आसीस दैत कोन कामना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बौआ लाख बरीस जीबथि।
उत्तर: घ. बौआ लाख बरीस जीबथि।
व्याख्या: स्रोतमे “जिबिहेँ सै बौआ लाख बरीस” अछि।

प्रश्न 11301. लोरी सभक माध्यमसँ नेनाकेँ सुतएबाक संग की कामना कएल जाइछ?
क. दीर्घायु होएबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दीर्घायु होएबाक।
व्याख्या: स्रोतमे लोरी सभक माध्यमसँ दीर्घायु कामना सेहो कएल जाइछ कहल गेल।

प्रश्न 11302. खण्ड ११३५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोरी शिशु-निद्रा, ममहरक स्नेह, भोजन-कल्पना आ दीर्घायु-कामनाकेँ एक संग बाँधैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लोरी शिशु-निद्रा, ममहरक स्नेह, भोजन-कल्पना आ दीर्घायु-कामनाकेँ एक संग बाँधैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मैथिली लोरीक भावात्मक आ संस्कारात्मक पक्ष देखबैत अछि।

खण्ड ११३६ : विदेह-सदेह २ — घुघुआ-मना, धुआँ-चुआँ आ पालन-खेल

प्रश्न 11303. नेनाक संग अपनो मनोरंजन करबाक क्रममे लोक कोना पड़ि रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपने उतान भऽ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपने उतान भऽ।
व्याख्या: स्रोतमे लोक अपने उतान भऽ पड़ि रहैत अछि आ नेनाकेँ पैरपर बैसाय खेलैत अछि।

प्रश्न 11304. नेनाकेँ कतय बैसाकऽ पैर उपर–नीचाँ कएल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पैरपर।
उत्तर: घ. पैरपर।
व्याख्या: स्रोतमे नेनाकेँ पैरपर बैसाय बेर-बेर पैर उपर-नीचाँ करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11305. एहि पालन-गीतकेँ कतहु कोन नामसँ जानल जाइत अछि?
क. घुघुआ–मना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. घुघुआ–मना।
व्याख्या: स्रोतमे कत्तौ-कत्तौ “घुघुआ-मना” नामसँ जानल जाइत अछि।

प्रश्न 11306. एहि खेलक दोसर नाम की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. धुआँ–चुआँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. धुआँ–चुआँ।
व्याख्या: स्रोतमे कत्तौ-कत्तौ “धुआँ-चुआँ” नाम सेहो देल गेल।

प्रश्न 11307. गीतमे “मनसा नाम की” पंक्ति कोन खेलसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. घुआँ घूँ लल्ले छूँ लल्ले।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. घुआँ घूँ लल्ले छूँ लल्ले।
व्याख्या: स्रोतमे “घुआँ घूँ लल्ले छूँ लल्ले मनसा नाम की” अछि।

प्रश्न 11308. गीतमे मामा कतय गेलै कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पटना।
उत्तर: घ. पटना।
व्याख्या: स्रोत पंक्तिमे “मामा गेलै पटना” अछि।

प्रश्न 11309. “मामी सुतलै” कतय कहल गेल?
क. अंगना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अंगना।
व्याख्या: स्रोतमे “मामी सुतलै अंगना” अछि।

प्रश्न 11310. “मामा घरमे चोर पैसल” बाद की कहल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “दोड़ऽ हो भगिनमा”।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “दोड़ऽ हो भगिनमा”।
व्याख्या: स्रोत पंक्तिमे मामा घरमे चोर पैसल / दोड़ऽ हो भगिनमा अछि।

प्रश्न 11311. खेलमे “नव घर उठे” कहि की कएल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पैर उठाएल जाइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पैर उठाएल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे “नव घर उठे” कहि पैर उठाएल जाइत अछि।

प्रश्न 11312. खण्ड ११३६क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. घुघुआ-मना/धुआँ-चुआँ पालन-खेलमे देह-गतिशीलता, गीत, नाटक आ नेनाक आनन्द एक संग उपस्थित अछि।
उत्तर: घ. घुघुआ-मना/धुआँ-चुआँ पालन-खेलमे देह-गतिशीलता, गीत, नाटक आ नेनाक आनन्द एक संग उपस्थित अछि।
व्याख्या: ई खण्ड शिशु-मनोरंजनक देहात्मक लोक रूप देखबैत अछि।

खण्ड ११३७ : विदेह-सदेह २ — नेनाक मोन बहटारबाक पद्य

प्रश्न 11313. जावत काल धरि नेना जागल रहैत अछि, ओकरा की चाही कहल गेल?
क. एक ने एकटा लोकक सानिध्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एक ने एकटा लोकक सानिध्य।
व्याख्या: स्रोतमे जागल नेनाकेँ लोकक सानिध्य चाही, नहि तँ कानय लगैत अछि।

प्रश्न 11314. नेनाकेँ बहटारबाक लेल गायक अतिरिक्त के-के गाबऽ लगैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नानी, दादी, दीदी आदि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नानी, दादी, दीदी आदि।
व्याख्या: स्रोतमे गायक अतिरिक्त नानी, दादी, दीदी आदि मोन बहटारबाक लेल गाबैत छथि।

प्रश्न 11315. “अलिया गै, मलिया गै” पद्यमे गोला बड़द की खाइ छौ कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. खेत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. खेत।
व्याख्या: स्रोतमे “गोला बड़द खेत खाइ छौ गै” अछि।

प्रश्न 11316. एहि पद्यमे रखबार के कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बाबा।
उत्तर: घ. बाबा।
व्याख्या: स्रोतमे “डीहपर रखबार के गै / बाबा गै” अछि।

प्रश्न 11317. “लाल गाछी गेली” पद्यमे लाला की पेली कहल गेल?
क. आम।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आम।
व्याख्या: स्रोतमे “लाल गाछी गेली, लाला आम पेली” अछि।

प्रश्न 11318. “बाघ छै, बघिनियाँ छै” पंक्ति कोन पद्यमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लाल गाछी गेली पद्यमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लाल गाछी गेली पद्यमे।
व्याख्या: ई पंक्ति लाल गाछी/लाला आम पद्यक भाग अछि।

प्रश्न 11319. बाबा आँगनमे की कुटाइ कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चूड़ा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चूड़ा।
व्याख्या: स्रोतमे “बाबा आँगनमे चूड़ा कुटाय” अछि।

प्रश्न 11320. पड़बा किएक रूसल जाइ छै कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नजरि लगबाक कारण।
उत्तर: घ. नजरि लगबाक कारण।
व्याख्या: स्रोतमे “कोन बेटखउकी नजरि लगौलक / पड़बा रूसल जाइ छै” अछि।

प्रश्न 11321. बहटारबला पद्यक मुख्य उद्देश्य की अछि?
क. कानैत/जागैत नेनाकेँ मोनोरंजन आ सांत्वना देब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कानैत/जागैत नेनाकेँ मोनोरंजन आ सांत्वना देब।
व्याख्या: स्रोतमे नेनाक मोन बहटारबाक प्रसंगमे ई पद्य देल गेल।

प्रश्न 11322. खण्ड ११३७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नेनाक मोन बहटारबाक पद्य परिवार, पशु, खेत, डर, हास्य आ सान्त्वनाक लोक-संसार बनबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नेनाक मोन बहटारबाक पद्य परिवार, पशु, खेत, डर, हास्य आ सान्त्वनाक लोक-संसार बनबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड शिशु-मन बहटारबाक सामूहिक घरेलू परम्परा देखबैत अछि।

खण्ड ११३८ : विदेह-सदेह २ — दीदीक भूमिका आ दीदी-पद्य

प्रश्न 11323. नेनाक लालन–पालनमे माए, दादी, नानीक संग केकर महत्त्वपूर्ण योगदान कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दीदी अर्थात पिउसिक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दीदी अर्थात पिउसिक।
व्याख्या: स्रोतमे दीदी अर्थात पिउसिक बड़ महत्वपूर्ण योगदान रहलैक कहल गेल।

प्रश्न 11324. दीदी-पद्यमे “डलिया दे” की तोड़ए लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिरचाइ।
उत्तर: घ. मिरचाइ।
व्याख्या: स्रोतमे “डलिया दे मिरचाइ तोड़ए लेल” पंक्ति अछि।

प्रश्न 11325. “ककरा घर नुकाएब गे”क उत्तर कोन घर अछि?
क. बाबा घर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बाबा घर।
व्याख्या: स्रोतमे “बाबा घर नुकाएब गे” अछि।

प्रश्न 11326. “बीचे बाट पर खसली गे” बाद की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सब बरियतिया हँसली।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सब बरियतिया हँसली।
व्याख्या: स्रोतमे “सब बरियतिया हँसली गे” अछि।

प्रश्न 11327. दोसर दीदी-पद्यमे बेटा कतय कनै छी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. खोपड़ीमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. खोपड़ीमे।
व्याख्या: स्रोतमे “बेटा कनै छी खोपड़ीमे” अछि।

प्रश्न 11328. “नाचय दहिन” के कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पमरियाकेँ।
उत्तर: घ. पमरियाकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे “नाचय दहिन पमरियाकेँ” अछि।

प्रश्न 11329. खाइ लेल की देल गेल?
क. दालि भात।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दालि भात।
व्याख्या: स्रोतमे “खाइ लेल देलहुँ दालि भात” अछि।

प्रश्न 11330. खाए लेल ओ की लेलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सोहारी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सोहारी।
व्याख्या: स्रोतमे “खाए लेलक सोहारी” अछि।

प्रश्न 11331. सुतइ लेल की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अलंग–पलंग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अलंग–पलंग।
व्याख्या: स्रोतमे “सुतइ लेल देलहुँ अलंग-पलंग” अछि।

प्रश्न 11332. खण्ड ११३८क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दीदी-पद्य शिशु-लालनमे पिउसि/दीदीक भूमिकाकेँ हास्य, खेल आ घरेलू सम्बन्धक संग रखैत अछि।
उत्तर: घ. दीदी-पद्य शिशु-लालनमे पिउसि/दीदीक भूमिकाकेँ हास्य, खेल आ घरेलू सम्बन्धक संग रखैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड दीदीक योगदान आ पद्यक खेल-धर्मिता समेटैत अछि।

खण्ड ११३९ : विदेह-सदेह २ — मामा-मामीसँ जुड़ल पालन-पद्य

प्रश्न 11333. बेटीकेँ संतानक योग्यता भेलापर कोन परम्परा एखनो बाँचल कहल गेल?
क. नैहर आनि लेबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नैहर आनि लेबाक।
व्याख्या: स्रोतमे बेटीकेँ संतानक योग्यता होइत नैहर आनि लेबाक परम्परा बाँचल कहल गेल।

प्रश्न 11334. एहना स्थितिमे नेनाकेँ केकर बेसी दुलार-मलार भेटैत रहलैक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मामा, मामी, नाना, नानीक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मामा, मामी, नाना, नानीक।
व्याख्या: स्रोतमे मामा, मामी, नाना, नानीक बेसी दुलार-मलार भेटबाक बात अछि।

प्रश्न 11335. मामा पद्यमे मामा केकर भीड़पर जाएबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पोखरी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पोखरी।
व्याख्या: स्रोतमे “मामा हौ पोखरी भीड़पर जइहऽ” अछि।

प्रश्न 11336. मामा केकरा मारि आनथि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चिक्कन पड़बा।
उत्तर: घ. चिक्कन पड़बा।
व्याख्या: स्रोतमे “चिक्कन पड़बा मारिकऽ आनिहऽ” अछि।

प्रश्न 11337. मामी हाथकेँ की देबाक कहल गेल?
क. तेल फोरन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तेल फोरन।
व्याख्या: स्रोतमे “मामी हाथकेँ दीहऽ / तेल फोरन मिलाकऽ करिहऽ” अछि।

प्रश्न 11338. मामा पद्यमे “अपने खइहऽ” कोन वस्तु कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लाल–लाल कुटिया।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लाल–लाल कुटिया।
व्याख्या: स्रोतमे “अपने खइहऽ लाल-लाल कुटिया / हमरा दीहऽ झोर” अछि।

प्रश्न 11339. मामी-पद्यमे “मामी यै भात” की करैए कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. उधिआए।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. उधिआए।
व्याख्या: स्रोतमे “मामी यै भात उधिआए” अछि।

प्रश्न 11340. मामी-पद्यमे कोठी पर के स्नान करैए?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुग्गा।
उत्तर: घ. सुग्गा।
व्याख्या: स्रोतमे “कोठी पर सुग्गा स्नान करैए” अछि।

प्रश्न 11341. “आब नहि जएबै मामाक अँगना” पंक्ति कोन भाव दैत अछि?
क. ममहरक दुलार आ शिकायतक बाल-स्वर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ममहरक दुलार आ शिकायतक बाल-स्वर।
व्याख्या: पद्य मे अपने लाल-लाल कुटिया खाए आ हमरा झोर देब—एहि बाल-शिकायतक भाव अछि।

प्रश्न 11342. खण्ड ११३९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मामा-मामी पालन-पद्य नैहर, ममहरक दुलार, भोजन, शिकायत आ बाल-भावनाकेँ जीवित रखैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मामा-मामी पालन-पद्य नैहर, ममहरक दुलार, भोजन, शिकायत आ बाल-भावनाकेँ जीवित रखैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड मातृक-संबंधित शिशु लोक-संस्कारक रूप देखबैत अछि।

खण्ड ११४० : विदेह-सदेह २ — खेल आ मनोरंजनसँ सम्बद्ध शिशु लोक साहित्य

प्रश्न 11343. खेल आ मनोरंजनसँ सम्बद्ध शिशु लोक साहित्यक परिवेश कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बेसी विस्तृत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बेसी विस्तृत।

व्याख्या: स्रोतमे ई परिवेश बेसी विस्तृत कहल गेल अछि।

प्रश्न 11344. एहि खेल-मनोरंजनक ठाम सभमे रस्ता-पेराक संग कोन-कोन स्थान आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परती–पराँत, विद्यालय–परिसर आ खेलक मैदान।

उत्तर: घ. परती–पराँत, विद्यालय–परिसर आ खेलक मैदान।

व्याख्या: स्रोतमे रस्ता-पेरा, परती-पराँत, विद्यालय-परिसर, खेलक मैदान आदि ठाम कहल गेल।

प्रश्न 11345. नेनाक झुण्ड कतबा समय जमा होइत अछि कहल गेल?

क. भोर साँझ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोर साँझ।

व्याख्या: स्रोतमे नेनाक झुण्ड भोर साँझ जमा होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 11346. झुण्ड जमा भेलापर नेना सभ की करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रंग-बिरंगक खेल खेलाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रंग-बिरंगक खेल खेलाइत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे नेनाक झुण्ड जमा भऽ रंग-बिरंगक खेल खेलबाक बात अछि।

प्रश्न 11347. छोट-छोट नेना बेसीकाल कोन गीत-खेल खेलैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अटकन–मटकन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अटकन–मटकन।

व्याख्या: स्रोतमे छोट-छोट नेनाक खेलमे “अटकन-मटकन” उदाहरण रूपमे देल गेल।

प्रश्न 11348. अटकन-मटकन पद्यमे “पूस महागर”क संग की आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुरनी पत्ता।

उत्तर: घ. पुरनी पत्ता।

व्याख्या: स्रोतमे “पूस महागर पुरनी पत्ता” अछि।

प्रश्न 11349. “माघ मास”मे की फरए कहल गेल?
क. करैला।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. करैला।
व्याख्या: स्रोतमे “माघ मास करैला फरए” अछि।

प्रश्न 11350. गीतमे नेनाक विकल्प कोन दू वस्तु अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सिंगही आ मुँगरी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सिंगही आ मुँगरी।
व्याख्या: स्रोतमे “सिंगही लेबै की मुँगरी” अछि।

प्रश्न 11351. जँ नेना “सिंगही” कहैत अछि तँ ओकरा की कएल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बिट्ठू काटल जाइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बिट्ठू काटल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे सिंगही कहला पर बिट्ठू काटबाक बात अछि।

प्रश्न 11352. खण्ड ११४०क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. खेल-मनोरंजनक शिशु लोक साहित्य घरसँ बाहर रस्ता, विद्यालय आ खेलक मैदान धरि पसरल सामूहिक बाल-संसार अछि।
उत्तर: घ. खेल-मनोरंजनक शिशु लोक साहित्य घरसँ बाहर रस्ता, विद्यालय आ खेलक मैदान धरि पसरल सामूहिक बाल-संसार अछि।
व्याख्या: ई खण्ड खेलक परिवेश आ सामूहिक बाल-भागीदारी देखबैत अछि।

खण्ड ११४१ : विदेह-सदेह २ — अटकन-मटकनक रूपान्तर आ खेल-नियम

प्रश्न 11353. अटकन-मटकनक दोसर रूपमे “केरा कूस”क संग कोन शब्द आयल?
क. महागर जागर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. महागर जागर।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर रूपमे “केरा कूस महागर जागर” अछि।

प्रश्न 11354. दोसर रूपमे “पुरनिक पत्ता” कोना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हिल्लै–डोल्लै।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हिल्लै–डोल्लै।
व्याख्या: स्रोतमे “पुरनिक पत्ता हिल्लै-डोल्लै” अछि।

प्रश्न 11355. दोसर रूपमे करैला की करै कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. फूलै।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. फूलै।
व्याख्या: स्रोतमे “माघ मास करैला फूलै” अछि।

प्रश्न 11356. अटकन-मटकनक दोसर रूपमे “आमुन गोटी”क संग कोन गोटी आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जामुन गोटी।
उत्तर: घ. जामुन गोटी।
व्याख्या: स्रोतमे आमुन गोटी, जामुन गोटी कहल गेल।

प्रश्न 11357. “तेतरी सोहाग गोटी” पंक्ति कोन खेल-गीतमे आयल?
क. अटकन-मटकन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अटकन-मटकन।
व्याख्या: स्रोतमे ई पंक्ति अटकन-मटकन गीतमे अछि।

प्रश्न 11358. जँ नेना “मुँगरी” कहैत अछि तँ की होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मुक्कासँ मारल जाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मुक्कासँ मारल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे मुँगरी कहला पर मुक्कासँ मारबाक खेल-नियम अछि।

प्रश्न 11359. सिंगही-मुँगरीक प्रश्न शिशु-खेलमे की बनबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. उत्तर-आधारित खेल-क्रिया।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. उत्तर-आधारित खेल-क्रिया।
व्याख्या: नेनाक उत्तर अनुसार बिट्ठू काटब वा मुक्का मारब खेलक नियम बनैत अछि।

प्रश्न 11360. अटकन-मटकनक रूपान्तर की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मौखिक परम्परामे पाठ-भेद।
उत्तर: घ. मौखिक परम्परामे पाठ-भेद।
व्याख्या: दू रूपमे शब्द बदलल अछि, जे मौखिक परम्पराक क्षेत्रीय/लोक-भेद देखबैत अछि।

प्रश्न 11361. एहि खेलमे बालमनोविज्ञानक कोन पक्ष देखाइत अछि?
क. चयन, प्रतीक्षा आ हास्यपूर्ण दण्डक खेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चयन, प्रतीक्षा आ हास्यपूर्ण दण्डक खेल।
व्याख्या: प्रश्न-उत्तर आ क्रिया नेनाक ध्यान आ आनन्द दुनू बढ़बैत अछि।

प्रश्न 11362. खण्ड ११४१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अटकन-मटकनक विभिन्न रूप शिशु लोकगीतक मौखिक विविधता, खेल-नियम आ बाल-आनन्दक उदाहरण अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अटकन-मटकनक विभिन्न रूप शिशु लोकगीतक मौखिक विविधता, खेल-नियम आ बाल-आनन्दक उदाहरण अछि।
व्याख्या: ई खण्ड एकहि खेलक रूपान्तर आ क्रियात्मक नियम समेटैत अछि।

खण्ड ११४२ : विदेह-सदेह २ — गाछ, नदी, चकमक देवता आ खेलक चित्र

प्रश्न 11363. दोसरा खेल-पद्यमे गाछ की करै कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ठाँए–ठाँए।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ठाँए–ठाँए।
व्याख्या: स्रोतमे “गाछ करै ठाँए-ठाँए” अछि।

प्रश्न 11364. ओहि पद्यमे नदी की करै कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गौंगिआए।
उत्तर: घ. गौंगिआए।
व्याख्या: स्रोतमे “नदी गौंगिआए” अछि।

प्रश्न 11365. कमलक फूल कोना जाइत अछि कहल गेल?
क. दुनू अलगल जाए।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दुनू अलगल जाए।
व्याख्या: स्रोतमे “कमलक फूल दुनू अलगल जाए” अछि।

प्रश्न 11366. “सीकीक डाली”क संग कोन फूल आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चमेली क फूल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चमेली क फूल।
व्याख्या: स्रोतमे “सीकीक डाली चमेलीक फूल” अछि।

प्रश्न 11367. “चकमक देवता” कतय चलैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बड़ी दूर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बड़ी दूर।
व्याख्या: स्रोतमे “चकमक देवता चल बड़ी दूर” अछि।

प्रश्न 11368. हाथीपर के कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हथबरबा भैया।
उत्तर: घ. हथबरबा भैया।
व्याख्या: स्रोतमे “हाथीपर हथबरबा भैया” अछि।

प्रश्न 11369. घोड़ापर के अछि कहल गेल?
क. रजपूत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रजपूत।
व्याख्या: स्रोतमे “घोड़ापर रजपूत” अछि।

प्रश्न 11370. बंका कतबा बंका बिकाइए कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तीन–तीन बंका।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तीन–तीन बंका।
व्याख्या: स्रोतमे “बंका बिकाइए तीन-तीन बंका” अछि।

प्रश्न 11371. रामजीक सुतल पुतहुआ की करैत रहए?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. धान कूटैत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. धान कूटैत।
व्याख्या: स्रोतमे “रामजीके सुतल पुतहुआ / कूटैत रहए धान” अछि।

प्रश्न 11372. खण्ड ११४२क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गाछ-नदी-देवता-हाथी-घोड़ा-पद्य बाल-खेलमे प्रकृति, यात्रा, जातीय पात्र आ घरेलू श्रमक रंगीन लोकचित्र रचैत अछि।
उत्तर: घ. गाछ-नदी-देवता-हाथी-घोड़ा-पद्य बाल-खेलमे प्रकृति, यात्रा, जातीय पात्र आ घरेलू श्रमक रंगीन लोकचित्र रचैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड खेल-पद्यक चित्रात्मकता आ लयात्मक कल्पना देखबैत अछि।

खण्ड ११४३ : विदेह-सदेह २ — फुद्दी कथा-काव्य आ बाल मनोविज्ञान

प्रश्न 11373. लेखक बाल मनोविज्ञानक ध्यानमे राखि नेनाक समुचित विकास आ उल्लास लेल कोन साहित्य थोड़े नहि प्रतीत होइत अछि कहैत छथि?

क. मैथिली शिशु लोक साहित्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली शिशु लोक साहित्य।

व्याख्या: स्रोतमे बाल मनोविज्ञान, समुचित विकास आ उल्लास लेल मैथिली शिशु लोक साहित्य थोड़े नहि प्रतीत होइछ कहल गेल।

प्रश्न 11374. खेलसँ सम्बद्ध बाल-कथा काव्यमे एकटा की छलै?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. फुद्दी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. फुद्दी।

व्याख्या: स्रोतमे “एकटा छलै फुद्दी” सँ बाल-कथा काव्य आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 11375. फुद्दी कतय बैसल छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कुसपर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कुसपर।

व्याख्या: स्रोत पंक्तिमे “ओ बैसल कुसपर” अछि।

प्रश्न 11376. कुस ओकर की चीरि देलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पेट।

उत्तर: घ. पेट।

व्याख्या: स्रोतमे “कुस ओकर पेट चीरि देलक” अछि।

प्रश्न 11377. ओहिसँ कतेक धार निकलल?

क. तीनटा धार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीनटा धार।

व्याख्या: स्रोतमे “ओहिसँ निकलल तीनटा धार” अछि।

प्रश्न 11378. तीन धारमे कतेक सुखले-सुखले छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दूटा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दूटा।

व्याख्या: स्रोतमे “दूटा सुखले-सुखले छल” अछि।

प्रश्न 11379. जाहिमे पानि नहि छल, ताहिमे कतेक हेलबार पैसल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तीनटा हेलबार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तीनटा हेलबार।
व्याख्या: स्रोतमे “ताहिमे पैसल तीनटा हेलबार” अछि।

प्रश्न 11380. तीन हेलबारमे कतेक डुबिए-डुबिए गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दूटा।
उत्तर: घ. दूटा।
व्याख्या: स्रोतमे “दूटा डुबिए-डुबिए गेल” अछि।

प्रश्न 11381. जकर पते नहि, से कतेक ब्राह्मण नोतलक?
क. तीनटा ब्राह्मण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तीनटा ब्राह्मण।
व्याख्या: स्रोतमे “से नोतलक तीनटा ब्राह्मण” अछि।

प्रश्न 11382. खण्ड ११४३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. फुद्दी कथा-काव्य असम्भव, उलटबाँसी आ संख्या-श्रृंखला द्वारा बालमनक खेल, हास्य आ स्मृति अभ्यास करबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. फुद्दी कथा-काव्य असम्भव, उलटबाँसी आ संख्या-श्रृंखला द्वारा बालमनक खेल, हास्य आ स्मृति अभ्यास करबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड बाल-कथा काव्यक संरचना आ मनोवैज्ञानिक उपयोग देखबैत अछि।

खण्ड ११४४ : विदेह-सदेह २ — शिशु लोक साहित्य: संरक्षण, विकास आ समेकन

प्रश्न 11383. फुद्दी कथा-काव्य नेना सभ कोना सुनैत अछि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बड़ मनोयोगसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बड़ मनोयोगसँ।
व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रकारक लोक साहित्य नेना सब बड़ मनोयोगसँ सुनैत अछि।

प्रश्न 11384. लालन-पालनसँ खेल धरि शिशु लोक साहित्यक मुख्य आधार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मौखिक परम्परा।
उत्तर: घ. मौखिक परम्परा।
व्याख्या: स्रोतक आरम्भमे शिशु लोक साहित्यक मौखिक परम्पराक आधार स्पष्ट अछि।

प्रश्न 11385. शिशु लोक साहित्यक मौलिकता किएक नष्ट भेल जा रहल अछि?
क. मौखिक परम्परामे जीबाक कारणेँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मौखिक परम्परामे जीबाक कारणेँ।
व्याख्या: स्रोतमे मौखिक परम्परामे जीबाक कारणेँ मौलिकता दिनानुदिन नष्ट भेल जा रहल अछि।

प्रश्न 11386. शब्द आ उच्चारणमे अन्तर ककर कारणेँ पाओल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोक-विशेष, वर्ग-विशेष आ क्षेत्र-विशेषक कारणेँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लोक-विशेष, वर्ग-विशेष आ क्षेत्र-विशेषक कारणेँ।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तीन कारणसँ शब्द-उच्चारणक अन्तर बताओल गेल।

प्रश्न 11387. लालन-पालनक पद्य मुख्यतः कोन परिवेशमे रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. घर–आँगनसँ दलान धरि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. घर–आँगनसँ दलान धरि।
व्याख्या: स्रोतमे लालन-पालन साहित्यक परिवेश घर-आँगनसँ दलान धरि सीमित अछि।

प्रश्न 11388. खेल-मनोरंजनक साहित्य घरसँ बाहर कतय-कतय पसरैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रस्ता-पेरा, परती-पराँत, विद्यालय-परिसर आ खेलक मैदान धरि।
उत्तर: घ. रस्ता-पेरा, परती-पराँत, विद्यालय-परिसर आ खेलक मैदान धरि।
व्याख्या: स्रोतमे खेल-मनोरंजनक विस्तृत परिवेशक ठाम सभ देल गेल।

प्रश्न 11389. लोरी सभक माध्यमसँ सुतएबाक अतिरिक्त कोन कामना होइत अछि?
क. नेनाक दीर्घायु होएबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नेनाक दीर्घायु होएबाक।
व्याख्या: स्रोतमे लोरी सभसँ दीर्घायु कामना सेहो कएल जाइछ कहल गेल।

प्रश्न 11390. दीदी, मामा, मामी आ नानी-दादीक पद्य शिशु लोक साहित्यमे की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सम्बन्धक सामूहिकता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सम्बन्धक सामूहिकता।
व्याख्या: एहि पद्य सभमे परिवारक अनेक सम्बन्ध शिशुक संग सक्रिय देखाइत अछि।

प्रश्न 11391. एहि खण्डसमूहक अध्ययन लेल मुख्य सावधानी की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पद्यक पाठभेदकेँ लोक-परम्पराक अंग मानब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पद्यक पाठभेदकेँ लोक-परम्पराक अंग मानब।
व्याख्या: स्रोतमे क्षेत्र/वर्ग अनुसार शब्द-उच्चारणक अन्तरक बात अछि, तेँ पाठभेद महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 11392. खण्ड ११४४क निष्कर्ष की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली शिशु लोक साहित्य बालविकास, परिवार, लोकविश्वास, खेल, स्मृति आ मौखिक परम्पराक बहुमूल्य धरोहर अछि।
उत्तर: घ. मैथिली शिशु लोक साहित्य बालविकास, परिवार, लोकविश्वास, खेल, स्मृति आ मौखिक परम्पराक बहुमूल्य धरोहर अछि।
व्याख्या: ई समेकन खण्ड शिशु लोक साहित्यक संरक्षण आ अध्ययनक महत्त्व बतबैत अछि।

खण्ड ११४५ : विदेह-सदेह २ — रेलगाड़ी खेलक रचना आ अभिनय

प्रश्न 11393. नेना-भुटका झुण्ड कखनो काल एक-दोसरक की पकड़ि रेलगाड़ी बनबैत अछि?
क. डाँर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डाँर।
व्याख्या: स्रोतमे नेना-भुटका झुण्ड एक-दोसरक डाँर पकड़ि रेलगाड़ी बनबैत अछि।

प्रश्न 11394. रेलगाड़ी खेलमे एक गोटा नेना की बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. इंजिन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. इंजिन।
व्याख्या: स्रोतमे एक गोटा इंजिन आ आर सभ नेना डिब्बा बनबाक बात अछि।

प्रश्न 11395. रेलगाड़ी खेलमे आर सभ नेना की बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. डिब्बा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. डिब्बा।
व्याख्या: स्रोतमे इंजिन छोड़ि आर सभ नेना डिब्बा बनैत अछि।

प्रश्न 11396. रेलगाड़ी खेलमे नेना सभ कोना चलैत/घुमैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. घुमि-घुमि कऽ।
उत्तर: घ. घुमि-घुमि कऽ।
व्याख्या: स्रोतमे नेना सभ घुमि-घुमि कऽ पद्य कहबाक वर्णन अछि।

प्रश्न 11397. रेलगाड़ी पद्यमे गाड़ी कोना कहल गेल अछि?
क. झकमक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. झकमक।
व्याख्या: पद्यक आरम्भ “रेलगाड़ी झकमक” सँ होइत अछि।

प्रश्न 11398. रेलगाड़ी पद्यमे पहिया ककर कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोहारक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लोहारक।
व्याख्या: पंक्तिमे “पहिया लोहारक” अछि।

प्रश्न 11399. रेलगाड़ी पद्यमे बेल ककर कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सरकारक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सरकारक।
व्याख्या: स्रोत-पंक्तिमे “बेल सरकारक” अछि।

प्रश्न 11400. रेलगाड़ी पद्यमे कुइआमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पानी।
उत्तर: घ. पानी।
व्याख्या: पंक्तिमे “कुँइआमे पानी” अछि।

प्रश्न 11401. रेलगाड़ी पद्यमे एक सय हाथी कतय गेल कहल गेल?
क. बान्हपर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बान्हपर।
व्याख्या: स्रोतमे “एक सय हाथी बान्हपर गेल” अछि।

प्रश्न 11402. खण्ड ११४५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रेलगाड़ी खेलमे नेना सभ देह-श्रृंखला, भूमिका-विभाजन आ पद्य-लय द्वारा सामूहिक अभिनय करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रेलगाड़ी खेलमे नेना सभ देह-श्रृंखला, भूमिका-विभाजन आ पद्य-लय द्वारा सामूहिक अभिनय करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड रेलगाड़ी खेलक रचना आ अभिनय विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११४६ : विदेह-सदेह २ — कबड्डी खेलक लोक-पद्य

प्रश्न 11403. स्रोतमे मिथिलाक कोन खेलक बड्ड पुरान परम्परा कहल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कबड्डी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कबड्डी।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिलाक खेलमे कबड्डीक बड्ड पुरान परम्परा रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 11404. कबड्डीक पहिल पद्य कोन शब्दसँ शुरू होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कबड्डी-कबड्डीकार।

उत्तर: घ. कबड्डी-कबड्डीकार।

व्याख्या: स्रोतमे “कबड्डी-कबड्डीकार” पंक्ति अछि।

प्रश्न 11405. पहिल कबड्डी पद्यमे मैना बच्चा कतय अछि?

क. अण्डापार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अण्डापार।

व्याख्या: पद्य पंक्तिमे “मैना बच्चा अण्डापार” अछि।

प्रश्न 11406. दोसर कबड्डी पद्यमे “चेत कबड्डी” पछाति की कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आबऽ दे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आबऽ दे।

व्याख्या: स्रोतमे “चेत कबड्डी आबऽ दे” अछि।

प्रश्न 11407. दोसर पद्यमे तबला सम्बन्धी कोन आग्रह अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तबला बजाबऽ दे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तबला बजाबऽ दे।

व्याख्या: पंक्तिमे “तबला बजाबऽ दे” अछि।

प्रश्न 11408. दोसर पद्यमे तबलामे की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पइसा।

उत्तर: घ. पइसा।

व्याख्या: स्रोतमे “तबलामे पइसा” अछि।

प्रश्न 11409. तेसर कबड्डी पद्यमे खेलए गेलापर की फुटि गेल?
क. कपार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कपार।
व्याख्या: स्रोतमे “कबड्डी खेलऽ गेलहुँ कपार फुटि गेल” अछि।

प्रश्न 11410. तेसर पद्यमे रेशमक डोरामे की कटि गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हाथ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हाथ।
व्याख्या: पंक्तिमे “रेशमक डोरामे हाथ कटि गेल” अछि।

प्रश्न 11411. तेसर पद्यमे आम, चकलेट आ चीनीक संग कोन वस्तु आयल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्लेट।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्लेट।
व्याख्या: स्रोतमे “आम चकलेट चीनी प्लेट” अछि।

प्रश्न 11412. खण्ड ११४६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कबड्डी-पद्य पुरान खेल-परम्परा, लय, जोखिम, हास्य आ शारीरिक खेलक लोक-स्मृति समेटैत अछि।
उत्तर: घ. कबड्डी-पद्य पुरान खेल-परम्परा, लय, जोखिम, हास्य आ शारीरिक खेलक लोक-स्मृति समेटैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड कबड्डी खेलक लोक-पद्य विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११४७ : विदेह-सदेह २ — गिरगिटरानी खेलक अभिनय-विधान

प्रश्न 11413. गिरगिटरानी खेल मुख्यतः ककर मध्य खेलाएल जाइत रहल अछि?
क. मिथिलाक कन्या लोकनिक मध्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक कन्या लोकनिक मध्य।
व्याख्या: स्रोतमे ई खेल मिथिलाक कन्या लोकनिक मध्य खेलाएल जाइत रहल कहल अछि।

प्रश्न 11414. गिरगिटरानी खेलमे एकटा कन्या की बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गिरगिट।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गिरगिट।
व्याख्या: स्रोतमे एकटा कन्या गिरगिट बनैत अछि।

प्रश्न 11415. गिरगिट बनल कन्याक कतेक जाँघ पकड़ल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दूटा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दूटा।
व्याख्या: स्रोतमे दूटा कन्या ओकर दुनू जाँघ पकड़ि ठाढ़ होइत अछि।

प्रश्न 11416. एकटा कन्या ओकर कोन अंग पकड़ि बैसि जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दुनू पैर।
उत्तर: घ. दुनू पैर।
व्याख्या: स्रोतमे एकटा कन्या ओकर दुनू पैर पकड़ि ओहिपर बैसि जाइत अछि।

प्रश्न 11417. खेलक पद्य “गिरगिटमाला”मे प्रश्न की अछि?
क. कहाँ-कहाँसँ आएल छी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कहाँ-कहाँसँ आएल छी।
व्याख्या: पद्यक आरम्भमे “कहाँ-कहाँसँ आएल छी” प्रश्न अछि।

प्रश्न 11418. उत्तरमे “बौआ लाला” कोना आएल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. देस-देससँ आएल छी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. देस-देससँ आएल छी।
व्याख्या: स्रोतमे “बौआ लाला–बौआ लाला / देस-देससँ आएल छी” अछि।

प्रश्न 11419. गिरगिटरानी पद्यमे आम छोड़ि की आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गुद्दा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गुद्दा।
व्याख्या: स्रोतमे “आम छोड़ि गुद्दा” पंक्ति अछि।

प्रश्न 11420. गुद्दा ककर हाथमे देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. राजाक बेटीक हाथमे।
उत्तर: घ. राजाक बेटीक हाथमे।
व्याख्या: पद्यक क्रममे गुद्दा राजाक बेटीक हाथमे देबाक बात अछि।

प्रश्न 11421. मजे कोठलियामे की सभ अछि कहल गेल?
क. साँप आ बाघ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साँप आ बाघ।
व्याख्या: स्रोतमे “मजे कोठलिया की सब / साँप छै, बाघ छै” अछि।

प्रश्न 11422. खण्ड ११४७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गिरगिटरानी खेल कन्या-समूहक शारीरिक अभिनय, प्रश्नोत्तर पद्य आ कल्पनात्मक लोक-कथा-श्रृंखला अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गिरगिटरानी खेल कन्या-समूहक शारीरिक अभिनय, प्रश्नोत्तर पद्य आ कल्पनात्मक लोक-कथा-श्रृंखला अछि।
व्याख्या: ई खण्ड गिरगिटरानी खेलक अभिनय-विधान विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११४८ : विदेह-सदेह २ — गिरगिटियाँ रानीक दोसर पाठ

प्रश्न 11423. गिरगिटरानीक दोसर रूपमे सम्बोधन कोना शुरू होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हे गिरगिटियाँ रानी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हे गिरगिटियाँ रानी।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर पाठ “हे गिरगिटियाँ रानी!” सँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 11424. दोसर पाठमे पहिल प्रश्न की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तौँ कतएसँ अएलह।
उत्तर: घ. तौँ कतएसँ अएलह।
व्याख्या: स्रोतमे “तौँ कतएसँ अएलह” पंक्ति अछि।

प्रश्न 11425. दोसर पाठमे हमरालेल की अनलह पूछलाक बाद कोन वस्तु आयल?
क. कान खोड़ि गुजुआ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कान खोड़ि गुजुआ।
व्याख्या: स्रोतमे “कान खोड़ि गुजुआ” अछि।

प्रश्न 11426. गुजुआ ककर लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राजा बेटी हाथक लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. राजा बेटी हाथक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे “राजा बेटी हाथक लेल” पंक्ति अछि।

प्रश्न 11427. राजा बेटी की देलक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हाथी छोड़ि घोड़ा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हाथी छोड़ि घोड़ा।
व्याख्या: स्रोतमे “हाथी छोड़ि घोड़ा देल” अछि।

प्रश्न 11428. घोड़ा कतय चरए गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विरदावनमे।
उत्तर: घ. विरदावनमे।
व्याख्या: पंक्तिमे “विरदावनमे चरए गेल” अछि।

प्रश्न 11429. विरदावनमे की-की देखल कहल गेल?
क. साँप आ बाघ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साँप आ बाघ।
व्याख्या: स्रोतमे “साँप देखल, बाघ देखल” अछि।

प्रश्न 11430. गिरगिट बनल कन्या उत्तर देबाक समय की उठबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मूड़ी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मूड़ी।
व्याख्या: स्रोतमे ओ अपन मूड़ी उठा उत्तर दैत रहैत अछि।

प्रश्न 11431. तीनू सहयोगी कन्या ओकरा की करैत रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. घुमबैत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. घुमबैत।
व्याख्या: स्रोतमे तीनू सहयोगी कन्या ओकरा घुमबैत रहैत अछि।

प्रश्न 11432. खण्ड ११४८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गिरगिटियाँ रानीक दोसर पाठ यात्रा, उपहार, पशु-चित्र आ देह-अभिनयक मिश्रित बाल-लोकनाट्य अछि।
उत्तर: घ. गिरगिटियाँ रानीक दोसर पाठ यात्रा, उपहार, पशु-चित्र आ देह-अभिनयक मिश्रित बाल-लोकनाट्य अछि।
व्याख्या: ई खण्ड गिरगिटियाँ रानीक दोसर पाठ विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११४९ : विदेह-सदेह २ — कटहरक गाछ बला खेल

प्रश्न 11433. कटहरक गाछ बला खेलमे एकटा नेना ठाढ़ भऽ की अभिनय करैत अछि?

क. गाछक अभिनय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाछक अभिनय।

व्याख्या: स्रोतमे एकटा नेना ठाढ़ भऽ गाछक अभिनय करैत अछि।

प्रश्न 11434. आन नेना सभ ओकर की पकड़ि बैसि रहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पैर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पैर।

व्याख्या: स्रोतमे आओर नेना ओकर पैर पकड़ि मूड़ी गोंतिकऽ बैसि रहैत अछि।

प्रश्न 11435. पैर पकड़ि बैसल नेना सभ कोन फलक अभिनय करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कटहर फलक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कटहर फलक।

व्याख्या: स्रोतमे कटहर फलक अभिनय करैत कहबाक वर्णन अछि।

प्रश्न 11436. खेलक पद्यमे “हमरा बाड़ी” पछाति की प्रश्न अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. के हुहुआए।

उत्तर: घ. के हुहुआए।

व्याख्या: पंक्तिमे “हमरा बाड़ी–हमरा बाड़ी के हुहुआए” अछि।

प्रश्न 11437. पद्यमे उत्तर रूपमे के आयल अछि?

क. राज कोतवाल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राज कोतवाल।

व्याख्या: स्रोतमे “राज कोतवाल” अछि।

प्रश्न 11438. कोतवाल की-की मँगैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आरब चौरा, नव ढकना।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आरब चौरा, नव ढकना।

व्याख्या: स्रोतमे “आरब चौरा, नव ढकना” अछि।

प्रश्न 11439. कोतवाल फलक अभिनय करैत नेना सभकेँ हाथसँ की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. टेबैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. टेबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे कोतवाल नेना सभकेँ हाथसँ टेबैत अछि।

प्रश्न 11440. गाछ काँच फल लेल की कहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. काँच छै तऽ छोड़ि दू।
उत्तर: घ. काँच छै तऽ छोड़ि दू।
व्याख्या: स्रोतमे गाछक संवाद “काँच छै तऽ छोड़ि दू” अछि।

प्रश्न 11441. गाछ पाकल फल लेल की कहैत अछि?
क. पाकल छै तऽ लऽ लू।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाकल छै तऽ लऽ लू।
व्याख्या: स्रोतमे “पाकल छै तऽ लऽ लू” अछि।

प्रश्न 11442. खण्ड ११४९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कटहरक गाछ खेलमे नेना सभ गाछ, फल आ कोतवालक भूमिका द्वारा लोक-कृषि आ अभिनय सीखैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कटहरक गाछ खेलमे नेना सभ गाछ, फल आ कोतवालक भूमिका द्वारा लोक-कृषि आ अभिनय सीखैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड कटहरक गाछ बला खेल विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११५० : विदेह-सदेह २ — झिझिर कोना खेलक संरचना

प्रश्न 11443. “झिझिर कोना” खेल कतेक नेना द्वारा खेलाएल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पाँच गोट नेना द्वारा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पाँच गोट नेना द्वारा।
व्याख्या: स्रोतमे ई खेल पाँच गोट नेना द्वारा खेलाएल जाइत अछि।

प्रश्न 11444. झिझिर कोना खेल कतय खेलाएल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कोनो खाली घरमे।
उत्तर: घ. कोनो खाली घरमे।
व्याख्या: स्रोतमे कोनो खाली घरमे खेलबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11445. एहि खेलमे कतेक कोन होइत अछि?
क. चारिटा कोन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चारिटा कोन।
व्याख्या: स्रोतमे चारिटा कोन होएबाक बात अछि।

प्रश्न 11446. ई खेल बेसीकाल खाली दलानक कोठली वा कतय खेलाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विद्यालयमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विद्यालयमे।
व्याख्या: स्रोतमे खाली दलानक कोठली वा विद्यालयमे खेलाइत अछि।

प्रश्न 11447. खेलक पद्य कोन शब्दसँ शुरू होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. झिझिर कोना–झिझिर कोना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. झिझिर कोना–झिझिर कोना।
व्याख्या: स्रोतमे पद्य एही आवृत्तिसँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 11448. पद्यमे कोन प्रश्न पूछल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कोन कोना जैब।
उत्तर: घ. कोन कोना जैब।
व्याख्या: स्रोतमे “कोन कोना जैब” अछि।

प्रश्न 11449. उत्तरमे कोना-चयन कोना कहल गेल?
क. एहि कोना जैब, ओहि कोना जैब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एहि कोना जैब, ओहि कोना जैब।
व्याख्या: स्रोतमे एहि/ओहि कोना जाएबाक पंक्ति अछि।

प्रश्न 11450. झिझिर कोना खेलमे स्थानिक ज्ञानक आधार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चारि कोन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चारि कोन।
व्याख्या: चारि कोनक व्यवस्था नेनाक स्थान-बोधक अभ्यास बनैत अछि।

प्रश्न 11451. ई खेल व्यक्तिगत नहि, केहन खेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समूह-आधारित।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समूह-आधारित।
व्याख्या: पाँच गोट नेना आ चारि कोनक व्यवस्था सामूहिक खेलक रूप अछि।

प्रश्न 11452. खण्ड ११५०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. झिझिर कोना खेल चारि कोन, पाँच नेना आ स्थान-चयनक पद्य द्वारा बाल-स्थानबोध विकसित करैत अछि।
उत्तर: घ. झिझिर कोना खेल चारि कोन, पाँच नेना आ स्थान-चयनक पद्य द्वारा बाल-स्थानबोध विकसित करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड झिझिर कोना खेलक संरचना विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११५१ : विदेह-सदेह २ — साँप डिग-डिग सामूहिक खेल

प्रश्न 11453. “साँप डिग-डिग” केहन खेल कहल गेल अछि?
क. सामूहिक खेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सामूहिक खेल।
व्याख्या: स्रोतमे ई एकटा सामूहिक खेल थिक कहल गेल।

प्रश्न 11454. एहि खेलमे बहुत नेना कोना ठाढ़ होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हत्था जोड़ि सोझ पाँतीमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हत्था जोड़ि सोझ पाँतीमे।
व्याख्या: स्रोतमे नेना सभ हत्था जोड़ि कऽ सोझ पाँतीमे ठाढ़ होइत अछि।

प्रश्न 11455. खेलक पद्यमे पहिल प्रश्न की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. की रे बकरिया।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. की रे बकरिया।
व्याख्या: स्रोतमे “की रे बकरिया” पंक्ति अछि।

प्रश्न 11456. दोसर पंक्तिमे की रे कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. छकरिया।
उत्तर: घ. छकरिया।
व्याख्या: स्रोतमे “की रे छकरिया” अछि।

प्रश्न 11457. बकरी कतय कहल गेल?
क. खेतमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. खेतमे।
व्याख्या: स्रोतमे “बकरी कत्तऽ / खेतमे” अछि।

प्रश्न 11458. धान किएक खेलकौ पछाति उत्तर की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. खेत्तौ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. खेत्तौ।
व्याख्या: स्रोतमे “धान किएक खेलकौ / खेत्तौ” पंक्ति अछि।

प्रश्न 11459. “रोज लेब्बौ”क उत्तर की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नहि देब्बौ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नहि देब्बौ।
व्याख्या: स्रोतमे “रोज लेब्बौ / नहि देब्बौ” अछि।

प्रश्न 11460. तखन नेना सभ कोन अभिनय करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दू हाथक बीच दऽ बन्हएबाक अभिनय।
उत्तर: घ. दू हाथक बीच दऽ बन्हएबाक अभिनय।
व्याख्या: स्रोतमे दू हाथक बीच दऽ नेना सभ बन्हएबाक अभिनय करैत अछि।

प्रश्न 11461. खेलक दोहराव शब्द की अछि?
क. साँप-डिगडिग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साँप-डिगडिग।
व्याख्या: स्रोतमे “साँप–डिगडिग” बजबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11462. खण्ड ११५१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साँप डिग-डिग सामूहिक पाँती, प्रश्नोत्तर, बकरी-धान प्रसंग आ बन्हएबाक अभिनयसँ बनल खेल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साँप डिग-डिग सामूहिक पाँती, प्रश्नोत्तर, बकरी-धान प्रसंग आ बन्हएबाक अभिनयसँ बनल खेल अछि।
व्याख्या: ई खण्ड साँप डिग-डिग सामूहिक खेल विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११५२ : विदेह-सदेह २ — आत्मरक्षा, खिस्सा-पिहानी आ लोक-शिक्षा

प्रश्न 11463. लेखक पशु-पक्षी सभक अबोध नेनाकेँ की सिखबैत रहबाक तुलना करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आत्मरक्षाक उपाय।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आत्मरक्षाक उपाय।

व्याख्या: स्रोतमे पशु-पक्षी अपन नेनाकेँ दौड़ि, बाजि, खेलाए कऽ आत्मरक्षा सिखबैत अछि।

प्रश्न 11464. शिशु लोक साहित्य मे आत्मरक्षार्थ की उपलब्ध अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. खिस्सा-पिहानी गद्य आ पद्य दुनूमे।

उत्तर: घ. खिस्सा-पिहानी गद्य आ पद्य दुनूमे।

व्याख्या: स्रोतमे आत्मरक्षार्थ अनेक खिस्सा-पिहानी गद्य आ पद्य दुनूमे उपलब्ध अछि।

प्रश्न 11465. आत्मरक्षा-विषयक लोकप्रिय उदाहरणमे कोन गाछक खिस्सा आयल?

क. बगिया गाछक खिस्सा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बगिया गाछक खिस्सा।

व्याख्या: स्रोतमे बगिया गाछक खिस्सा उदाहरणस्वरूप देल गेल।

प्रश्न 11466. आत्मरक्षा-लोककथामे ककर खिस्सा बेसी लोकप्रिय भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गोनू झाक खिस्सा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गोनू झाक खिस्सा।

व्याख्या: स्रोतमे गोनू झाक खिस्सा सभसँ बेसी लोकप्रियता पाबि रहल कहल गेल।

प्रश्न 11467. ननदि-भाउजसँ जुड़ल आँझुलक खिस्साक आरम्भ की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सातो भाइ परदेस गेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सातो भाइ परदेस गेल।

व्याख्या: स्रोतमे “सातो भाइ परदेस गेल...” खिस्साक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11468. आँझुलक खिस्सामे ककर दुःख देने गेल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आँझुलकेँ।

उत्तर: घ. आँझुलकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे “आँझुलकेँ दुःख देने गेल” पंक्ति अछि।

प्रश्न 11469. झाँझी कुकुरक कोन खिस्सा आयल?
क. सौतिनक खिस्सा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सौतिनक खिस्सा।
व्याख्या: स्रोतमे झाँझी कुकुरक सौतिनक खिस्सा देल गेल।

प्रश्न 11470. सौतिनक खिस्सामे “मोर मन” सम्बन्धी भाव की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मोर मन नहि पतिआइ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मोर मन नहि पतिआइ।
व्याख्या: स्रोतमे “मोर मन मोर मन नहि पतिआइ” अछि।

प्रश्न 11471. एहि खिस्सा-पिहानीक शैक्षिक भूमिका की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अबोध नेना कैं सावधानी आ आत्मरक्षा सिखाएब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अबोध नेना कैं सावधानी आ आत्मरक्षा सिखाएब।
व्याख्या: लेखक पशु-पक्षीक आत्मरक्षा-प्रशिक्षणसँ शिशु लोक साहित्यक तुलना करैत छथि।

प्रश्न 11472. खण्ड ११५२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आत्मरक्षा-सम्बद्ध खिस्सा-पिहानी नेना सभकैं खेल-गल्पक माध्यमसँ सावधानी, बुद्धि आ जीवन-व्यवहार सिखबैत अछि।
उत्तर: घ. आत्मरक्षा-सम्बद्ध खिस्सा-पिहानी नेना सभकैं खेल-गल्पक माध्यमसँ सावधानी, बुद्धि आ जीवन-व्यवहार सिखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड आत्मरक्षा, खिस्सा-पिहानी आ लोक-शिक्षा विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११५३ : विदेह-सदेह २ — निरर्थक शब्द आ ध्वनि-आनन्द

प्रश्न 11473. लेखक किछु लोक-साहित्य मे कोन शब्द-प्रयोग बुझना जाइत अछि कहैत छथि?
क. निरर्थक शब्द सभक प्रयोग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. निरर्थक शब्द सभक प्रयोग।
व्याख्या: स्रोतमे किछु लोक-साहित्य मे निरर्थक शब्द सभक प्रयोग बुझना जाइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 11474. निरर्थक शब्दक पहिल उदाहरण कोना शुरू होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. औका-बौका।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. औका-बौका।
व्याख्या: स्रोतमे उदाहरण “औका-बौका, तीन तरौका” सँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 11475. औका-बौका पद्यमे कतेक तरौका कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तीन तरौका।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तीन तरौका।
व्याख्या: स्रोतमे “तीन तरौका” अछि।

प्रश्न 11476. औका-बौका पद्यमे लौआक संग की आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लाठी।
उत्तर: घ. लाठी।
व्याख्या: पंक्तिमे “लौआ-लाठी” अछि।

प्रश्न 11477. ओहि पद्यमे चाननक संग की आयल?
क. काठी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. काठी।
व्याख्या: स्रोतमे “चानन काठी” अछि।

प्रश्न 11478. चाननक बागमे कोन जोड़ी आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. इजय-विजय।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. इजय-विजय।
व्याख्या: पंक्तिमे “चाननके बागमे इजय-विजय” अछि।

प्रश्न 11479. दोसर उदाहरण कोन शब्दसँ आरम्भ होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ईटा-माटी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ईटा-माटी।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर उदाहरण “ईटा-माटी सोनेक टाट” सँ शुरू अछि।

प्रश्न 11480. ईटा-माटी पद्यमे कतेकम लड़की भागल जाइ?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आठम।
उत्तर: घ. आठम।
व्याख्या: पंक्तिमे “आठम लड़की भागल जाइ” अछि।

प्रश्न 11481. आलू बम बेटा बम पछाति भौजी की करैत छथि?
क. नाचए छमाछम।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नाचए छमाछम।
व्याख्या: स्रोतमे “भौजी नाचए छमाछम” अछि।

प्रश्न 11482. खण्ड ११५३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. निरर्थक प्रतीत होइत शब्द बाल-लोकपद्य मे ध्वनि, लय, हास्य आ स्मरण-आनन्दक साधन बनैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. निरर्थक प्रतीत होइत शब्द बाल-लोकपद्य मे ध्वनि, लय, हास्य आ स्मरण-आनन्दक साधन बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड निरर्थक शब्द आ ध्वनि-आनन्द विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११५४ : विदेह-सदेह २ — ज्ञानोपयोगी शिशु लोक साहित्यक आरम्भ

प्रश्न 11483. ज्ञानोपयोगी खण्डमे परिवारकेँ की कहल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला।
व्याख्या: स्रोतमे “परिवारकेँ सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला” कहल गेल।

प्रश्न 11484. मैथिली शिशु लोक साहित्यक माध्यमेँ नेनाकेँ की देल जाइत रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अनेक प्रकारक शिक्षा।
उत्तर: घ. अनेक प्रकारक शिक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे नेनाकेँ अनेक प्रकारक शिक्षा देल जाइत रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 11485. ज्ञानोपयोगी लोक-साहित्यक पहिल उदाहरण कोन ज्ञान लेल अछि?
क. अंक ज्ञान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अंक ज्ञान।
व्याख्या: स्रोतमे अंक ज्ञानक लेल “अट्टा-पट्टा” खेल देल गेल।

प्रश्न 11486. अंक ज्ञानक खेलक नाम की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अट्टा-पट्टा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अट्टा-पट्टा।
व्याख्या: स्रोतमे “अट्टा-पट्टा” खेलक नाम अछि।

प्रश्न 11487. अट्टा-पट्टा खेलमे नेनाक कोन हाथपर थापर मारल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दहिना हाथपर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दहिना हाथपर।
व्याख्या: स्रोतमे नेनाक दहिना हाथपर अपन दहिना हाथसँ थापर मारल जाइत अछि।

प्रश्न 11488. थापर मारैत बेरा-बेरी की पकड़ल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आँगुर।
उत्तर: घ. आँगुर।
व्याख्या: स्रोतमे बेरा-बेरी आँगुर पकड़ि पद्य कहल जाइत अछि।

प्रश्न 11489. अट्टा-पट्टा पद्यमे बौआकेँ कतेक बेट्टा कहल गेल?
क. पाँचगो।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाँचगो।
व्याख्या: स्रोतमे “बौआकेँ पाँचगो बेट्टा” अछि।

प्रश्न 11490. पहिल बेट्टा कतय गेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गायमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गायमे।
व्याख्या: पंक्तिमे “एगो गेल गायमे” अछि।

प्रश्न 11491. दोसर बेट्टा कतय गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. महींसमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. महींसमे।
व्याख्या: स्रोतमे “दोसर महींसमे” अछि।

प्रश्न 11492. खण्ड ११५४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ज्ञानोपयोगी शिशु लोक साहित्य परिवार, खेल आ अंक-अभ्यास द्वारा नेना सभक आरम्भिक शिक्षा करबैत अछि।
उत्तर: घ. ज्ञानोपयोगी शिशु लोक साहित्य परिवार, खेल आ अंक-अभ्यास द्वारा नेना सभक आरम्भिक शिक्षा करबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड ज्ञानोपयोगी शिशु लोक साहित्यक आरम्भ विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११५५ : विदेह-सदेह २ — अट्टा-पट्टा आ एकसँ पाँच धरि अंकज्ञान

प्रश्न 11493. अट्टा-पट्टा पद्यमे तेसर बेट्टा कतय गेल?

क. बड़दमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बड़दमे।

व्याख्या: स्रोतमे तेसर बड़दमे कहल गेल।

प्रश्न 11494. चारिम बेट्टा कतय गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बकरीमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बकरीमे।

व्याख्या: स्रोतमे चारिम गेल बकरीमे अछि।

प्रश्न 11495. पाँचम बेट्टा कतय गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. छकरीमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. छकरीमे।

व्याख्या: स्रोतमे पाँचम गेल छकरीमे अछि।

प्रश्न 11496. अट्टा-पट्टा पछाति तरहत्थीपर की रखल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपन आँगुर।

उत्तर: घ. अपन आँगुर।

व्याख्या: स्रोतमे तरहत्थीपर अपन आँगुर रखबाक वर्णन अछि।

प्रश्न 11497. बुढ़िया सम्बन्धी पंक्तिमे ओ की-की करैत अछि?

क. रन्हलक, पकौलक, खएलक, पीलक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रन्हलक, पकौलक, खएलक, पीलक।

व्याख्या: स्रोतमे एतऽ बुढ़िया रन्हलक, पकौलक, खएलक, पीलक अछि।

प्रश्न 11498. आँगुरकेँ डेगा-डेगी बढ़बैत कतय धरि लऽ जाएल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हाथसँ काँख धरि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हाथसँ काँख धरि।

व्याख्या: स्रोतमे हाथसँ काँख धरि लऽ जाएबाक बात अछि।

प्रश्न 11499. गुदगुदी लगलापर नेना की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जोर-जोरसँ हँसैत लोट-पोट भऽ जाइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जोर-जोरसँ हँसैत लोट-पोट भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे नेना गुदगुदी लगलापर हँसैत-हँसैत लोट-पोट होएबाक वर्णन अछि।

प्रश्न 11500. एहि खेलसँ नेनाकेँ कतेक धरि अंकक ज्ञान होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. एकसँ पाँच धरि।
उत्तर: घ. एकसँ पाँच धरि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रकारेँ एकसँ पाँच धरि अंकक ज्ञान कराओल जाइत अछि।

प्रश्न 11501. अट्टा-पट्टा खेलमे स्पर्श आ गुदगुदी की बनैत अछि?
क. शिक्षणक आनन्दमय साधन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शिक्षणक आनन्दमय साधन।
व्याख्या: थापर, आँगुर आ गुदगुदी अंकज्ञानकेँ खेलमे बदलैत अछि।

प्रश्न 11502. खण्ड ११५५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अट्टा-पट्टा खेल स्पर्श, आँगुर, गुदगुदी आ पशु-क्रम द्वारा एकसँ पाँच धरि अंकज्ञान करबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अट्टा-पट्टा खेल स्पर्श, आँगुर, गुदगुदी आ पशु-क्रम द्वारा एकसँ पाँच धरि अंकज्ञान करबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड अट्टा-पट्टा आ एकसँ पाँच धरि अंकज्ञान विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११५६ : विदेह-सदेह २ — दहाइ आ सैकड़ा गिनतीक खेल

प्रश्न 11503. दहाइ-सैकड़ा खेलमे कतेक नेना ठाढ़ भऽ खेलाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दू आ दूसँ अधिक नेना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दू आ दूसँ अधिक नेना।
व्याख्या: स्रोतमे दू आ दूसँ अधिक नेना ठाढ़ भऽ खेलबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11504. एहि खेलमे नेना सभ कीसँ संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आँगुरसँ।
उत्तर: घ. आँगुरसँ।
व्याख्या: स्रोतमे आँगुरसँ संकेत करैत खेलाइत अछि।

प्रश्न 11505. गिनतीक पंक्तिमे दस पछाति की आयल?
क. बीस।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बीस।
व्याख्या: स्रोतमे “दस, बीस, तीस...” अछि।

प्रश्न 11506. दससँ शुरू पंक्ति कतय धरि जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सौ धरि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सौ धरि।
व्याख्या: स्रोतमे दससँ सौ धरि क्रम देल अछि।

प्रश्न 11507. सौमे की लागल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. धागा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. धागा।
व्याख्या: पंक्तिमे “सौमे लागल धागा” अछि।

प्रश्न 11508. धागा लगलापर चोर की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. निकलिकऽ भागा।
उत्तर: घ. निकलिकऽ भागा।
व्याख्या: स्रोतमे “चोर निकलिकऽ भागा” अछि।

प्रश्न 11509. रानी बेटी की करैत अछि कहल गेल?
क. सोइती।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सोइती।
व्याख्या: पंक्तिमे “रानी बेटी सोइती” अछि।

प्रश्न 11510. फूलकेँ माला की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गोइती।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गोइती।
व्याख्या: स्रोतमे “फूलकेँ माला गोइती” अछि।

प्रश्न 11511. मेम की खाए कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बिस्कुट।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बिस्कुट।
व्याख्या: स्रोतमे “मेम खाए बिस्कुट” अछि।

प्रश्न 11512. खण्ड ११५६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दहाइ-सैकड़ा खेल गिनती, संकेत, चोर-रानी कथा आ लयक माध्यमसँ संख्याबोध बढ़बैत अछि।
उत्तर: घ. दहाइ-सैकड़ा खेल गिनती, संकेत, चोर-रानी कथा आ लयक माध्यमसँ संख्याबोध बढ़बैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड दहाइ आ सैकड़ा गिनतीक खेल विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११५७ : विदेह-सदेह २ — घो-घो रानी आ अंग-ज्ञान

प्रश्न 11513. “घो-घो रानी” खेलमे एकटा नेना कतय ठाढ़ होइत अछि?
क. बीचमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बीचमे।
व्याख्या: स्रोतमे एकटा नेना बीचमे ठाढ़ होइत अछि।

प्रश्न 11514. चारूकात नेना सभ कोना ठाढ़ होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हत्था जोड़ी कऽ वृत्ताकार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हत्था जोड़ी कऽ वृत्ताकार।
व्याख्या: स्रोतमे चारूकात नेना सभ हत्था जोड़ी कऽ वृत्ताकार ठाढ़ होइत अछि।

प्रश्न 11515. घो-घो रानी पद्यमे प्रश्न की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कत्ते पानी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कत्ते पानी।
व्याख्या: स्रोतमे बार-बार “घो-घो रानी कत्ते पानी” प्रश्न अछि।

प्रश्न 11516. पानीक पहिल स्तर कोन देह-अंग धरि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. एड़ी धरि।
उत्तर: घ. एड़ी धरि।
व्याख्या: स्रोतमे पहिल स्तर “एड़ी धरि” अछि।

प्रश्न 11517. एड़ी पछाति पानी कोन स्तर धरि पहुँचैत अछि?
क. ठेहुन धरि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ठेहुन धरि।
व्याख्या: स्रोतमे ठेहुन धरि अगिला स्तर अछि।

प्रश्न 11518. क्रममे जाँघ पछाति कोन अंग आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. डाँड़।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. डाँड़।
व्याख्या: स्रोतमे जाँघ धरि पछाति डाँड़ धरि अछि।

प्रश्न 11519. क्रममे ढोढ़ी पछाति कोन अंग अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पेट।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पेट।
व्याख्या: स्रोतमे ढोढ़ी धरि पछाति पेट धरि अछि।

प्रश्न 11520. अन्तमे “चुभुक” कहि नेना सभ की अभिनय करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. डूबि कऽ नहएबाक अभिनय।
उत्तर: घ. डूबि कऽ नहएबाक अभिनय।
व्याख्या: स्रोतमे अंतमे “चुभुक” कहि सब नेना डूबि कऽ नहएबाक अभिनय करैत अछि।

प्रश्न 11521. एहि खेलसँ नेना सभकेँ कोन ज्ञान कराओल जाइत अछि?
क. अंगक ज्ञान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अंगक ज्ञान।
व्याख्या: स्रोतमे एहि माध्यमसँ अंगक ज्ञान कराओल जाइत अछि।

प्रश्न 11522. खण्ड ११५७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. घो-घो रानी खेल पानीक स्तर, देह-अंग आ अभिनयक माध्यमसँ नेना सभकेँ अंग-ज्ञान दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. घो-घो रानी खेल पानीक स्तर, देह-अंग आ अभिनयक माध्यमसँ नेना सभकेँ अंग-ज्ञान दैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड घो-घो रानी आ अंग-ज्ञान विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११५८ : विदेह-सदेह २ — छिट्टा-पथिया आ आकार-ज्ञान

प्रश्न 11523. आकार-ज्ञानक खेलमे एकटा नेना अपन दुनू हाथकेँ की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. उठा कऽ पैघ आकार बनबैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. उठा कऽ पैघ आकार बनबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे नेना दुनू हाथ उठा पैघ आकार बनबैत अछि।

प्रश्न 11524. पैघ आकार बनलाक बाद ओ क्रमशः की करैत जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. छोट करैत जाइत अछि।
उत्तर: घ. छोट करैत जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे आकार क्रमशः छोट करबाक वर्णन अछि।

प्रश्न 11525. प्रथम प्रश्न “एतेक टा की”क उत्तर की अछि?
क. छिट्टा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. छिट्टा।
व्याख्या: स्रोतमे “एतेक टा की–छिट्टा” अछि।

प्रश्न 11526. दोसरा आकारक उत्तर की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पथिया।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पथिया।
व्याख्या: स्रोतमे “एतेक टा की–पथिया” अछि।

प्रश्न 11527. तेसरा आकारक उत्तर की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मउनी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मउनी।
व्याख्या: स्रोतमे “एतेक टा की–मउनी” अछि।

प्रश्न 11528. चारिम आकारक उत्तर की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चुक्का।
उत्तर: घ. चुक्का।
व्याख्या: स्रोतमे “एतेक टा की–चुक्का” अछि।

प्रश्न 11529. चुक्कामे की अछि कहल गेल?
क. अंडा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अंडा।
व्याख्या: स्रोतमे “चुक्कामे की–अण्डा” अछि।

प्रश्न 11530. अंडा के फोरए कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कउआ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कउआ।
व्याख्या: स्रोतमे “के फोरए–कउआ” अछि।

प्रश्न 11531. अन्तमे “ती-ती-ती” कहैत नेना सभ की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कूदऽ लगैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कूदऽ लगैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे सभ नेना कूदऽ लगैत अछि।

प्रश्न 11532. खण्ड ११५८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. छिट्टा-पथिया-मउनी-चुक्का खेल हाथक आकार, वस्तु-नाम आ कूदक माध्यमसँ आकार-ज्ञान करबैत अछि।
उत्तर: घ. छिट्टा-पथिया-मउनी-चुक्का खेल हाथक आकार, वस्तु-नाम आ कूदक माध्यमसँ आकार-ज्ञान करबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड छिट्टा-पथिया आ आकार-ज्ञान विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११५९ : विदेह-सदेह २ — वस्तु-उपयोगक श्रृंखला: लोहासँ खड़ही धरि

प्रश्न 11533. वस्तु-उपयोग खेल ककर ज्ञान करबैत अछि?
क. किछु वस्तुक उपयोगक ज्ञान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. किछु वस्तुक उपयोगक ज्ञान।
व्याख्या: स्रोतमे एहि खेलक माध्यमसँ वस्तुक उपयोगक ज्ञान कराओल जाइत अछि।

प्रश्न 11534. खेलक पंक्तिमे खेलए-धूपए गेलहुँ तँ की भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एगो लोहा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एगो लोहा।
व्याख्या: स्रोतमे “एगो लोहा पेलिऐ” अछि।

प्रश्न 11535. लोहा कथी लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हाँसू गढ़ाबऽ लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हाँसू गढ़ाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे लोहासँ हाँसू गढ़ाएबाक बात अछि।

प्रश्न 11536. हाँसू कथी लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. खड़ही कटाबऽ लेल।
उत्तर: घ. खड़ही कटाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे हाँसू खड़ही कटाबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11537. खड़ही कथी लेल कहल गेल?
क. बंगला छराबऽ लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बंगला छराबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे खड़ही बंगला छराबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11538. बंगला कथी लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भैसी बन्हाबऽ लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भैसी बन्हाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे बंगला भैसी बन्हाबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11539. भैसी कथी लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चोतबा पड़ाबऽ लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चोतबा पड़ाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे भैसी चोतबा पड़ाबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11540. चोतबा कथी लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंगना निपाबऽ लेल।
उत्तर: घ. अंगना निपाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे चोतबा अंगना निपाबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11541. एहि खेलक प्रश्न-उत्तर पद्धति ककर अभ्यास करबैत अछि?
क. कारण-कार्य आ उपयोग-सम्बन्ध।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कारण-कार्य आ उपयोग-सम्बन्ध।
व्याख्या: हर वस्तुसँ अगिला उपयोग जुड़ैत अछि, जे कारण-कार्य श्रृंखला सिखबैत अछि।

प्रश्न 11542. खण्ड ११५९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. वस्तु-उपयोग खेल लोहा, हाँसू, खड़ही, बंगला, भैसी आ चोतबा द्वारा उपयोग-श्रृंखला बुझबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. वस्तु-उपयोग खेल लोहा, हाँसू, खड़ही, बंगला, भैसी आ चोतबा द्वारा उपयोग-श्रृंखला बुझबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड वस्तु-उपयोगक श्रृंखला: लोहासँ खड़ही धरि विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११६० : विदेह-सदेह २ — वस्तु-उपयोगक श्रृंखला: अंगनासँ बौआ धरि

प्रश्न 11543. अंगना कथी लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गहूँम सुखाबऽ लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गहूँम सुखाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे अंगना गहूँम सुखाबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11544. गहूँम कथी लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आटा पिसाबऽ लेल।
उत्तर: घ. आटा पिसाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे गहूँम आटा पिसाबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11545. आटा कथी लेल कहल गेल?
क. पूरी पकाबऽ लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पूरी पकाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे आटा पूरी पकाबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11546. पूरी कथी लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भौजीकेँ मँगाबऽ लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भौजीकेँ मँगाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे पूरी भौजीकेँ मँगाबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11547. भौजी कथी लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बेटा जनमाबऽ लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बेटा जनमाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे भौजी बेटा जनमाबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11548. बेटा कथी लेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कोरामे खेलाबऽ लेल।
उत्तर: घ. कोरामे खेलाबऽ लेल।
व्याख्या: स्रोतमे बेटा कोरामे खेलाबऽ लेल अछि।

प्रश्न 11549. खेलक अन्तमे की टूटि गेल कहल गेल?
क. टाइल-गुल्ली।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. टाइल-गुल्ली।
व्याख्या: स्रोतमे “टाइल-गुल्ली टूटि गेल” अछि।

प्रश्न 11550. टाइल-गुल्ली टूटलापर बौआ की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रूसि गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रूसि गेल।
व्याख्या: स्रोतमे “बौआ रूसि गेल” अछि।

प्रश्न 11551. एहि शृंखलामे घरेलू अर्थनीति कोना देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. धान्य, आटा, भोजन, परिवार आ नेना-पालनक क्रमसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. धान्य, आटा, भोजन, परिवार आ नेना-पालनक क्रमसँ।
व्याख्या: गहूँम सँ आटा, पूरी, भौजी, बेटा आ कोरा धरि क्रम घरेलू जीवनक शृंखला बनबैत अछि।

प्रश्न 11552. खण्ड ११६०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंगना सँ बौआ धरि उपयोग-शृंखला नेना सभकेँ घरेलू श्रम, भोजन, परिवार आ पालनक सम्बन्ध सिखबैत अछि।
उत्तर: घ. अंगना सँ बौआ धरि उपयोग-शृंखला नेना सभकेँ घरेलू श्रम, भोजन, परिवार आ पालनक सम्बन्ध सिखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड वस्तु-उपयोगक शृंखला: अंगनासँ बौआ धरि विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११६१ : विदेह-सदेह २ — शिशु लोक-साहित्यक समेकित उपयोगिता

प्रश्न 11553. उपरोक्त विवेचनसँ लेखककेँ की लगैत अछि?

क. मैथिली शिशु लोक-साहित्य नेनाक प्रत्येक पक्षसँ जुड़ल रहल अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली शिशु लोक-साहित्य नेनाक प्रत्येक पक्षसँ जुड़ल रहल अछि।

व्याख्या: स्रोतमे स्पष्ट निष्कर्ष अछि जे ई नेनाक प्रत्येक पक्षसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 11554. कुन लोक साहित्यक अधिकता पाओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लालन-पालन आ खेल-मनोरंजनसँ सम्बद्ध।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लालन-पालन आ खेल-मनोरंजनसँ सम्बद्ध।

व्याख्या: स्रोतमे एहि दू प्रकारक अधिकता पाओल गेल कहल अछि।

प्रश्न 11555. खेलक माध्यमसँ मनोरंजनक संग नेना-भुटकामे की भावना जगैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एकता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एकता।

व्याख्या: स्रोतमे एकता, सहयोग, सहानुभूति आ प्रेमक भावना जगैत अछि।

प्रश्न 11556. एकताक संग दोसर कोन भावना जगैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सहयोग।

उत्तर: घ. सहयोग।

व्याख्या: स्रोतमे सहयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11557. सहयोगक अतिरिक्त कोन मानवीय भाव जगैत अछि?

क. सहानुभूति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सहानुभूति।

व्याख्या: स्रोतमे सहानुभूतिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11558. नेना-भुटकामे प्रेमक भावना ककर माध्यमसँ जगैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खेलक माध्यमसँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खेलक माध्यमसँ।

व्याख्या: स्रोतमे खेलक माध्यमसँ प्रेमक भावना जगैत अछि।

प्रश्न 11559. खेलक अतिरिक्त अभिनयक ज्ञान कखने सँ होमए लगैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आरम्भहिसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आरम्भहिसँ।
व्याख्या: स्रोतमे अभिनय, नृत्य, गीत आदिक ज्ञान आरम्भहिसँ होमए लगैत अछि।

प्रश्न 11560. अभिनयक संग कोन कला-रूपक ज्ञान होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नृत्य आ गीत।
उत्तर: घ. नृत्य आ गीत।
व्याख्या: स्रोतमे अभिनय, नृत्य, गीत आदिक ज्ञान कहल गेल।

प्रश्न 11561. अमूल्य धरोहरकेँ की करबाक प्रयोजन बताओल गेल?
क. सहेजि कऽ समेटबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सहेजि कऽ समेटबाक।
व्याख्या: स्रोतमे शिशु लोक साहित्य सन अमूल्य धरोहरकेँ सहेजि समेटबाक प्रयोजन अछि।

प्रश्न 11562. खण्ड ११६१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली शिशु लोक-साहित्य बालजीवनक प्रत्येक पक्ष, खेल, प्रेम, सहयोग, अभिनय, नृत्य आ गीतक शिक्षा समेटैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली शिशु लोक-साहित्य बालजीवनक प्रत्येक पक्ष, खेल, प्रेम, सहयोग, अभिनय, नृत्य आ गीतक शिक्षा समेटैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड शिशु लोक-साहित्यक समेकित उपयोगिता विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११६२ : विदेह-सदेह २ — मौलिकता, विकृति आ संरक्षणक आवश्यकता

प्रश्न 11563. लेखकक अनुसार धरोहर दिनानुदिन की त्यागि रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपन मौलिकता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपन मौलिकता।
व्याख्या: स्रोतमे दिनानुदिन ई अपन मौलिकताकेँ त्यागि रहल कहल गेल।

प्रश्न 11564. मौलिकता छोड़ि ई कोन रूप अपनौने जा रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विकृत रूप।
उत्तर: घ. विकृत रूप।
व्याख्या: स्रोतमे विकृत रूप अपनौने जा रहल अछि।

प्रश्न 11565. जँ हम सभ सचेष्ट नहि होएब तँ की सम्भावना अछि?
क. धरोहरक मूल्यवान वस्तु नष्ट भऽ जएबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. धरोहरक मूल्यवान वस्तु नष्ट भऽ जएबाक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि धरोहरक मूल्यवान वस्तु नष्ट होएबाक प्रबल सम्भावना कहल गेल।

प्रश्न 11566. एहि विषयपर पहिनो बहुत गोटा की कएलनि अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. काज।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. काज।
व्याख्या: स्रोतमे पहिनो बहुत गोटा काज कएलनि अछि कहल गेल।

प्रश्न 11567. लेखक मानैत छथि जे एखनो किछु लोक की करि रहलाह अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. काज।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. काज।
व्याख्या: स्रोतमे प्रायः एखनो कऽ रहलाह अछि कहल गेल।

प्रश्न 11568. एहि विषयक फलक कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ततेक विस्तृत।
उत्तर: घ. ततेक विस्तृत।
व्याख्या: स्रोतमे एकर फलक ततेक विस्तृत अछि कहल गेल।

प्रश्न 11569. उपलब्ध संकलन किएक यथेष्ट नहि मानल जा सकैत?
क. फलक अत्यन्त विस्तृत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. फलक अत्यन्त विस्तृत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे उपलब्ध संकलन यथेष्ट नहि मानल जाएबाक कारण फलक-विस्तार बताओल गेल।

प्रश्न 11570. संकलित साहित्यसँ बेसी लोक साहित्य एखनो कतय छिड़िआएल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोकक ठोरपर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लोकक ठोरपर।
व्याख्या: स्रोतमे लोकक ठोरपर छिड़िआएल रहबाक बात अछि।

प्रश्न 11571. संरक्षणक मूल प्रयोजन की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मौलिक शिशु लोक-साहित्यकेँ नष्ट होएबासँ बचाएब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मौलिक शिशु लोक-साहित्यकेँ नष्ट होएबासँ बचाएब।

व्याख्या: मौलिकता-ह्रास आ विकृति स्रोतक मुख्य चिन्ता अछि।

प्रश्न 11572. खण्ड ११६२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिशु लोक-साहित्यक मौलिकता विकृत भेल जा रहल अछि, तेँ उपलब्ध संकलनसँ आगाँ बढ़ि ठोरपर छिरिआएल सामग्री सहेजब आवश्यक अछि।

उत्तर: घ. शिशु लोक-साहित्यक मौलिकता विकृत भेल जा रहल अछि, तेँ उपलब्ध संकलनसँ आगाँ बढ़ि ठोरपर छिरिआएल सामग्री सहेजब आवश्यक अछि।

व्याख्या: ई खण्ड मौलिकता, विकृति आ संरक्षणक आवश्यकता विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११६३ : विदेह-सदेह २ — पाश्चात्य प्रभाव आ चन्न मामा प्रश्न

प्रश्न 11573. वर्तमानमे कोन सभ्यता मिथिलाकेँ चारूकातसँ गछारने जा रहल अछि कहल गेल?

क. पाश्चात्य-सभ्यता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाश्चात्य-सभ्यता।

व्याख्या: स्रोतमे पाश्चात्य-सभ्यता मिथिलाकेँ चारूकातसँ गछारने जा रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 11574. लोक “चन्न मामा आ रे आ”केँ त्यागि कोन कविता दिस भागि रहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार।

व्याख्या: स्रोतमे चन्न मामा त्यागि ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार दिस आँखि मुनिकऽ भागबाक बात अछि।

प्रश्न 11575. लोक अपन कोन वस्तु त्यागि रहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अपन विशिष्ट-वस्तु।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अपन विशिष्ट-वस्तु।

व्याख्या: स्रोतमे अपन विशिष्ट-वस्तु त्यागने जा रहल कहल गेल।

प्रश्न 11576. लेखकक समक्ष कोन प्रश्न अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यक्ष प्रश्न।

उत्तर: घ. यक्ष प्रश्न।

व्याख्या: स्रोतमे “हमरा सभक समक्ष यक्ष प्रश्न” कहल गेल।

प्रश्न 11577. मिथिलाक अमूल्य निधि ककर परिचिति दैत रहल अछि?
क. एहिठामक संस्कृतिक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एहिठामक संस्कृतिक।
व्याख्या: स्रोतमे ई निधि एहिठामक संस्कृतिक विशिष्ट परिचिति दैत रहल अछि।

प्रश्न 11578. मुख्य प्रश्न ई अछि जे एहि निधिकेँ कोना राखल जाए?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अक्षुण्ण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अक्षुण्ण।
व्याख्या: स्रोतमे “कोनाकऽ अक्षुण्ण राखल जाए” प्रश्न अछि।

प्रश्न 11579. ई चिन्ता कोन सांस्कृतिक संघर्ष देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्थानीय लोक-स्मृति आ पाश्चात्य प्रभावक संघर्ष।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्थानीय लोक-स्मृति आ पाश्चात्य प्रभावक संघर्ष।
व्याख्या: चन्न मामा बनाम ट्विंकल ट्विंकल प्रसंग एहि संघर्षक संकेत अछि।

प्रश्न 11580. “आँखि मुनिकऽ भागल” अभिव्यक्ति की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अनुकरणक अचेत प्रवृत्ति।
उत्तर: घ. अनुकरणक अचेत प्रवृत्ति।
व्याख्या: लेखक स्थानीय धरोहर त्यागि बाहरी गीत दिस भागबाक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 11581. चन्न मामा प्रतीक कोन धरोहरक प्रतिनिधि अछि?
क. मैथिली शिशु लोक-साहित्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली शिशु लोक-साहित्य।
व्याख्या: स्रोतमे चन्न मामा लोक-पद्यक स्थानीय अमूल्य निधि रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 11582. खण्ड ११६३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चन्न मामा आ ट्विंकल ट्विंकलक तुलना मिथिलाक शिशु-लोकधरोहर पर पाश्चात्य प्रभावक दबाव देखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चन्न मामा आ ट्विंकल ट्विंकलक तुलना मिथिलाक शिशु-लोकधरोहर पर पाश्चात्य प्रभावक दबाव देखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पाश्चात्य प्रभाव आ चन्न मामा प्रश्न विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११६४ : विदेह-सदेह २ — नव तकनीक आ संरक्षणक जोरगर प्रयास

प्रश्न 11583. लेखक कहैत छथि जे हम सभ कोन शताब्दीक देहति पार करि रहल छी?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इक्कीसम शताब्दीक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इक्कीसम शताब्दीक।

व्याख्या: स्रोतमे इक्कीसम शताब्दीक देहति पार करबाक बात अछि।

प्रश्न 11584. विज्ञान अपन विस्तार कतय धरि पसारि चुकल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुदूर देहात धरि।

उत्तर: घ. सुदूर देहात धरि।

व्याख्या: स्रोतमे विज्ञान सुदूर देहात धरि पसारि चुकल अछि।

प्रश्न 11585. नव-नव तकनीक द्वारा असंकलित साहित्यकेँ कतेक काल धरि जोगा राखल जा सकैत अछि?

क. चिरकाल धरि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिरकाल धरि।

व्याख्या: स्रोतमे नव तकनीक द्वारा चिरकाल धरि संकलित-जोगा राखबाक बात अछि।

प्रश्न 11586. असंकलित शिशु लोक साहित्यकेँ पहिने की कएल जा सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संकलित।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संकलित।

व्याख्या: स्रोतमे असंकलित साहित्य संकलित कऽ राखबाक बात अछि।

प्रश्न 11587. संकलनक संग एकरा की कऽ राखल जा सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जोगा कऽ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जोगा कऽ।

व्याख्या: स्रोतमे संकलित कऽ जोगा कऽ राखबाक बात अछि।

प्रश्न 11588. एहि साहित्यक प्रचार-प्रसार ककरा धरि कराओल जा सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन-जन धरि।

उत्तर: घ. जन-जन धरि।

व्याख्या: स्रोतमे जन-जन धरि प्रचार-प्रसार कराओल जा सकैत अछि।

प्रश्न 11589. एहि लेल जरूरी की अछि?
क. समधानल डेग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समधानल डेग।
व्याख्या: स्रोतमे एकटा समधानल डेग उठएबाक आवश्यकता कहल गेल।

प्रश्न 11590. समधानल डेगक संग कोन प्रयास चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जोरगर प्रयास।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जोरगर प्रयास।
व्याख्या: स्रोतमे जोरगर प्रयास करबाक बात अछि।

प्रश्न 11591. नव तकनीकक उपयोगक लक्ष्य की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लोकधरोहरक दीर्घकालिक संरक्षण आ प्रसार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लोकधरोहरक दीर्घकालिक संरक्षण आ प्रसार।
व्याख्या: चिरकाल धरि जोगा राखब आ जन-जन धरि प्रसार स्रोतक लक्ष्य अछि।

प्रश्न 11592. खण्ड ११६४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नव तकनीक, समधानल डेग आ जोरगर प्रयास द्वारा असंकलित मैथिली शिशु लोक-साहित्यक संरक्षण आ जन-प्रसार सम्भव अछि।
उत्तर: घ. नव तकनीक, समधानल डेग आ जोरगर प्रयास द्वारा असंकलित मैथिली शिशु लोक-साहित्यक संरक्षण आ जन-प्रसार सम्भव अछि।
व्याख्या: ई खण्ड नव तकनीक आ संरक्षणक जोरगर प्रयास विषयक स्रोत-विवरण पर आधारित अछि।

खण्ड ११६५ : विदेह-सदेह २ — केदार काननक समीक्षा-दृष्टि

प्रश्न 11593. “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबापर एक दृष्टि” लेख के लिखने छथि?
क. केदार कानन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. केदार कानन।
व्याख्या: शीर्षकपूर्वक स्रोतमे केदार काननक नाम देल अछि।

प्रश्न 11594. केदार कानन जगदीश प्रसाद मंडलक निजी पहचानमे कोन बात रेखांकित करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गंभीर साम्यवादी दृष्टि, जीवनानुभव आ मैथिल जीवनक चित्रण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गंभीर साम्यवादी दृष्टि, जीवनानुभव आ मैथिल जीवनक चित्रण।
व्याख्या: स्रोतमे हिनक निजी पहचानमे गंभीर साम्यवादी दृष्टि, रचल-पचल जीवनानुभव आ मैथिल जीवन-परम्पराक चित्रण कहल गेल अछि।

प्रश्न 11595. जगदीश प्रसाद मंडलक अभिव्यक्तिक संबंधमे समीक्षक की कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हुनका कहबाक अपन ढंग अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हुनका कहबाक अपन ढंग अछि।
व्याख्या: स्रोतमे अभिव्यक्तिमे कहबाक अपन ढंग हुनक पहचान कहल गेल।

प्रश्न 11596. लेखन आरम्भक समयक संबंधमे की संकेत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ एक बएसपर आबि गेलाक बाद लेखन शुरू कएलनि।
उत्तर: घ. ओ एक बएसपर आबि गेलाक बाद लेखन शुरू कएलनि।
व्याख्या: स्रोतमे “एक बएसपर आबि गेलाक बाद” लेखनक शुरुआत कहल गेल।

प्रश्न 11597. हुनक कृतिक परायणसँ लेखन देरिसँ शुरू भेल बुझाइत अछि कि नहि?
क. नहि, से बुझाइत नहि अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, से बुझाइत नहि अछि।
व्याख्या: स्रोत कहैत अछि जे देरिसँ आरम्भ भेलाक बात कृतिक परायणसँ बुझाइत नहि अछि।

प्रश्न 11598. लेखनपूर्व हुनक मानसक अवस्था कोना बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. वस्तु सभ कागतपर उतरबासँ पहिनहि मानस मे रचित-खचित छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. वस्तु सभ कागतपर उतरबासँ पहिनहि मानस मे रचित-खचित छल।
व्याख्या: स्रोतमे एहि बातक स्पष्ट उल्लेख अछि।

प्रश्न 11599. जगदीश प्रसाद मंडल जीवनक कोन अनुभव सहि लेखनमे उतरैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सघन-बीहड़ झंझावात।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सघन-बीहड़ झंझावात।
व्याख्या: स्रोतमे जीवनक सघन-बीहड़ झंझावात सहि लेखनक्षेत्रमे उतरबाक बात अछि।

प्रश्न 11600. समीक्षक हुनका कोन रूपमे स्वागत करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. श्रेष्ठ शिल्पी रूपमे।
उत्तर: घ. श्रेष्ठ शिल्पी रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे जगदीश जी सनक श्रेष्ठ शिल्पीक स्वागत करैत प्रसन्नता होइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 11601. एहि खण्डमे समीक्षा-दृष्टिक मुख्य स्वर की अछि?
क. अनुभव, विचार आ शिल्पक सम्मान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनुभव, विचार आ शिल्पक सम्मान।
व्याख्या: स्रोताधारित विवेचनमे जीवनानुभव, साम्यवादी दृष्टि आ शिल्पक सराहना अछि।

प्रश्न 11602. खण्ड ११६५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. केदार कानन जगदीश प्रसाद मंडलकेँ जीवनानुभव, साम्यवादी दृष्टि आ मैथिल अभिव्यक्तिक श्रेष्ठ कथाकार मानैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. केदार कानन जगदीश प्रसाद मंडलकेँ जीवनानुभव, साम्यवादी दृष्टि आ मैथिल अभिव्यक्तिक श्रेष्ठ कथाकार मानैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-दृष्टि आ कथाकारक निजी पहचान पर आधारित अछि।

खण्ड ११६६ : विदेह-सदेह २ — पछताबा कथा: रघुनाथ आ अमेरिका-गमन

प्रश्न 11603. “पछताबा” कथा ककर कृति रूपमे चर्चित अछि?
क. जगदीश प्रसाद मंडलक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मंडलक।
व्याख्या: स्रोतमे हिनक पछताबा कथा समीक्षा लेल प्रस्तुत अछि।

प्रश्न 11604. कथा कतय आयोजित गोष्ठीमे पढ़ल गेल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुपौलमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुपौलमे।
व्याख्या: स्रोतमे सुपौलमे आयोजित कथा गोष्ठीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11605. रघुनाथ कोन घरसँ बहराएल पात्र छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्वतंत्रता सेनानीक घरसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्वतंत्रता सेनानीक घरसँ।
व्याख्या: स्रोतमे रघुनाथ स्वतंत्रता सेनानीक घरसँ बहराएल कहल गेल।

प्रश्न 11606. रघुनाथ कोन पढ़ाइक पछाति नोकरी लेल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. इंजीनियरिंगक पढ़ाइक पछाति।
उत्तर: घ. इंजीनियरिंगक पढ़ाइक पछाति।
व्याख्या: स्रोतमे इंजीनियरिंगक पढ़ाइ पछाति नोकरी लेल अमेरिका जाएबाक बात अछि।

प्रश्न 11607. रघुनाथ किनका संग अमेरिका गेल?
क. अपन पत्नी संग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अपन पत्नी संग।
व्याख्या: स्रोतमे पत्नीक संग अमेरिका जाएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11608. अमेरिका जाएत समय रघुनाथ के-के छोड़ि गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. माता-पिता, परिवार, सर-सम्बन्धी आ समाज।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. माता-पिता, परिवार, सर-सम्बन्धी आ समाज।
व्याख्या: स्रोतमे एहि सभकेँ छोड़ि जाएबाक बात कहल गेल।

प्रश्न 11609. अमेरिकाक समाजकेँ स्रोतमे कोना चित्रित कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चाक-चिक्य आ भोगवादी समाज।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चाक-चिक्य आ भोगवादी समाज।
व्याख्या: स्रोतमे ओहिठामक चाक-चिक्य आ भोगवादी समाज कहल गेल।

प्रश्न 11610. अमेरिकामे रघुनाथ लेल मुख्य चिन्ता की रहि गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पाइ कमाएब।
उत्तर: घ. पाइ कमाएब।
व्याख्या: स्रोतमे पाइ कमएबाक अतिरिक्त कथूक चिन्ता नहि कहल गेल।

प्रश्न 11611. एहि कथानकमे प्रवासक मूल तनाव की अछि?
क. पाइ आ भोगवादी जीवनक कारण परिवार-संस्कारसँ दूरी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाइ आ भोगवादी जीवनक कारण परिवार-संस्कारसँ दूरी।
व्याख्या: रघुनाथक अमेरिका-गमन आ पारिवारिक दूरी स्रोतक मूल तनाव अछि।

प्रश्न 11612. खण्ड ११६६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रघुनाथ इंजीनियरिंगक बाद पत्नी संग अमेरिका जाइत छथि आ परिवार-समाज छोड़ि भोगवादी जीवनमे पाइ-केंद्रित भऽ जाइत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रघुनाथ इंजीनियरिंगक बाद पत्नी संग अमेरिका जाइत छथि आ परिवार-समाज छोड़ि भोगवादी जीवनमे पाइ-केंद्रित भऽ जाइत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड पछताबा कथाक आरम्भिक कथानक पर आधारित अछि।

खण्ड ११६७ : विदेह-सदेह २ — शिवनाथ दम्पती आ फ्लैशबैक संरचना

प्रश्न 11613. रघुनाथक माता-पिता ककर नामसँ चिन्हित छथि?

क. शिवनाथ आ हुनक पत्नी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिवनाथ आ हुनक पत्नी।

व्याख्या: स्रोतमे शिवनाथ आ हुनक पत्नी रघुनाथक माता-पिता रूपमे आयल छथि।

प्रश्न 11614. रघुनाथक अमेरिका गेलाक बाद माता-पिता कतय रहि जाइत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गामपर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गामपर।

व्याख्या: स्रोतमे ओ दुनू परानी गामपर रहि जाएब कहल गेल।

प्रश्न 11615. आरम्भमे माता-पिता ककर वियोगमे मलीन रहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पुत्रक वियोगमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पुत्रक वियोगमे।

व्याख्या: स्रोतमे थोड़ेक दिन पुत्रक वियोगमे मलीन रहबाक बात अछि।

प्रश्न 11616. थोड़ेक दिन पछाति शिवनाथ दम्पती कोना जीवन जीबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ढंगसँ आ सुखसँ।

उत्तर: घ. ढंगसँ आ सुखसँ।

व्याख्या: स्रोत कहैत अछि जे ओ दुनू ढंगसँ अपन जीवन जीबैत छथि आ सुखसँ रहैत छथि।

प्रश्न 11617. कथा कोन पद्धतिमे चलैत अछि?

क. फ्लैशबैकमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फ्लैशबैकमे।

व्याख्या: स्रोतमे “फ्लैश बैंकमे ई कथा चलैत अछि” कहल गेल, आशय फ्लैशबैक संरचना अछि।

प्रश्न 11618. फ्लैशबैकक माध्यमे की उदघाटित होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनेक-अनेक उपकथा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनेक-अनेक उपकथा।

व्याख्या: स्रोतमे अनेक उपकथा उदघाटित होएबाक बात अछि।

प्रश्न 11619. माता-पिताक जीवन चित्रण कोन भाव दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. वियोगक बादो स्वाभिमानी ग्रामीण संतुलन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. वियोगक बादो स्वाभिमानी ग्रामीण संतुलन।
व्याख्या: स्रोतमे वियोगक बाद सुखसँ जीवन जीबैत दम्पतीक चित्र अछि।

प्रश्न 11620. कथाक संरचना सीधी रेखा मात्र अछि कि स्मृतिमूलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. स्मृतिमूलक आ फ्लैशबैक-आधारित।
उत्तर: घ. स्मृतिमूलक आ फ्लैशबैक-आधारित।
व्याख्या: स्रोतमे कथा फ्लैशबैकमे चलबाक संकेत अछि।

प्रश्न 11621. उपकथा सभक उदघाटन कथाक की विशेषता देखबैत अछि?
क. कथानकक बहुस्तरीयता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कथानकक बहुस्तरीयता।
व्याख्या: अनेक उपकथा खुलब कथाक बहुस्तरीय गठनक संकेत अछि।

प्रश्न 11622. खण्ड ११६७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रघुनाथक माता-पिता गाममे रहि वियोगक बादो जीवन सँभालैत छथि, आ कथा फ्लैशबैकद्वारा उपकथा खोलैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रघुनाथक माता-पिता गाममे रहि वियोगक बादो जीवन सँभालैत छथि, आ कथा फ्लैशबैकद्वारा उपकथा खोलैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड माता-पिता आ कथा-रचनाक संरचना पर आधारित अछि।

खण्ड ११६८ : विदेह-सदेह २ — अमेरिका जीवन, उबाऊपन आ पश्चाताप

प्रश्न 11623. खण्ड ११६८मे अमेरिकाक जीवनसँ पहिने के उबैत अछि?
क. रघुनाथक पत्नी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रघुनाथक पत्नी।
व्याख्या: स्रोतमे अमेरिकाक जीवनसँ पहिने रघुनाथक पत्नी उबैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 11624. रघुनाथक पत्नीकेँ अमेरिकामे कोन अभाव अनुभव होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ने क्यो संगी ने क्यो गप कएनिहार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ने क्यो संगी ने क्यो गप कएनिहार।
व्याख्या: स्रोतमे संगी आ गप कएनिहारक अभावक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11625. एक दिन कोन भाव रघुनाथोकेँ होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पश्चाताप।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पश्चाताप।
व्याख्या: स्रोतमे यैह पश्चाताप रघुनाथोकेँ होएबाक बात अछि।

प्रश्न 11626. पश्चाताप भेलाक बाद रघुनाथ की करैत रहि जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओछाइनपर छटपटाइत टा रहि जाइत अछि।
उत्तर: घ. ओछाइनपर छटपटाइत टा रहि जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे रघुनाथक निष्क्रिय छटपटाहटक वर्णन अछि।

प्रश्न 11627. कथा गाम अएबाक कोन परिणति देखबैत अछि?
क. गाम अएबाक कार्यरूप परिणति नहि देखबैत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गाम अएबाक कार्यरूप परिणति नहि देखबैत।
व्याख्या: स्रोतमे गाम अएबाक कार्यरूप अथवा आन परिणति नहि देखाएल गेल।

प्रश्न 11628. रघुनाथक पश्चाताप कतेक सक्रिय अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भावनात्मक अछि, कार्यरूप नहि बनैत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भावनात्मक अछि, कार्यरूप नहि बनैत।
व्याख्या: ओ पश्चाताप करैत छथि मुदा गाम अएबाक परिणति नहि।

प्रश्न 11629. अमेरिका जीवनक अकेलापन मुख्यतः ककर अनुभवसँ शुरू होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पत्नीकेँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पत्नीकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे पत्नी पहिने उबैत छथि।

प्रश्न 11630. “ओछाइनपर छटपटाइत” छवि की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. असहाय आ निष्क्रिय अपराध-बोध।
उत्तर: घ. असहाय आ निष्क्रिय अपराध-बोध।
व्याख्या: स्रोतक छवि पश्चातापक निष्क्रियता देखबैत अछि।

प्रश्न 11631. कथाक शीर्षक “पछताबा” कथानकमे कोना सार्थक होइत अछि?
क. प्रवासक बाद उत्पन्न पश्चातापद्वारा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रवासक बाद उत्पन्न पश्चातापद्वारा।
व्याख्या: रघुनाथ आ पत्नी दुनूक अनुभवमे पछताबा प्रकट अछि।

प्रश्न 11632. खण्ड ११६८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अमेरिकाक एकाकी जीवनसँ पत्नी उबैत छथि, रघुनाथो पछताइत छथि, मुदा पश्चाताप कार्यरूप निर्णय धरि नहि पहुँचैत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अमेरिकाक एकाकी जीवनसँ पत्नी उबैत छथि, रघुनाथो पछताइत छथि, मुदा पश्चाताप कार्यरूप निर्णय धरि नहि पहुँचैत।
व्याख्या: ई खण्ड प्रवासी जीवनक उबाऊपन आ पश्चाताप पर आधारित अछि।

खण्ड ११६९ : विदेह-सदेह २ — पछताबाक मैथिल अभिव्यक्ति आ उपमा

प्रश्न 11633. समीक्षक कथा पढ़बाक अनुभव कोना बतबैत छथि?
क. मोनलग्गू।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मोनलग्गू।
व्याख्या: स्रोतमे कथा मोनलग्गू कहल गेल।

प्रश्न 11634. कथा पढ़बामे क्रम भंग कतय होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कतहु नहि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कतहु नहि।
व्याख्या: स्रोतमे पढ़बामे क्रम भंग कतहु नहि होइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 11635. कथामे कोन अभिव्यक्ति समीक्षककेँ नीक लगैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिल अभिव्यक्ति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिल अभिव्यक्ति।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिल अभिव्यक्तिक रूप नीक लगबाक बात अछि।

प्रश्न 11636. शिवनाथक अवस्था लेल पाकल आमक कोन उपमा देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आम तोड़ैसँ पहिनहि खसि पड़बाक।
उत्तर: घ. आम तोड़ैसँ पहिनहि खसि पड़बाक।
व्याख्या: स्रोतमे पाकल आम तोड़ै लेल चढ़ि आम तोड़ैसँ पहिनहि खसि पड़बाक उपमा अछि।

प्रश्न 11637. दुनूक मन टूटबाक उपमा कोन वस्तुसँ देल गेल?
क. अएनापर पाथरक लोढ़ी खसलासँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अएनापर पाथरक लोढ़ी खसलासँ।
व्याख्या: स्रोतमे मन चूर-चूर होएबाक ई उपमा अछि।

प्रश्न 11638. अरमान आ सपना टूटबाक उपमा कोन वस्तुसँ अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. फूटल फुकना बैलूनक हवा जेकाँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. फूटल फुकना बैलूनक हवा जेकाँ।
व्याख्या: स्रोतमे पैघ अरमान सपना फूटल बैलूनक हवा जेकाँ मिलि जाएबाक बात अछि।

प्रश्न 11639. करेज सक्त होएबाक उपमा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पाकल आमक आँठी जेकाँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पाकल आमक आँठी जेकाँ।
व्याख्या: स्रोतमे करेज आरो सक्त भेल पाकल आमक आँठी जेकाँ कहल गेल।

प्रश्न 11640. डिबियाक इजोतक उपमा कोन तेलसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंडीक तेलमे जरैत डिबिया।
उत्तर: घ. अंडीक तेलमे जरैत डिबिया।
व्याख्या: स्रोतमे अंडीक तेलमे जरैत डिबियाक इजोत जेकाँ अभिव्यक्ति अछि।

प्रश्न 11641. समीक्षक अंतमे लेखकसँ कोन आशा करैत छथि?
क. ओ अनुभवकेँ आरो व्यापकता दैत नव-नव कृति देताह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ अनुभवकेँ आरो व्यापकता दैत नव-नव कृति देताह।
व्याख्या: स्रोतमे व्यक्तिगत बधाइ आ नव-नव कृतिसँ परिचित करएबाक आशा व्यक्त अछि।

प्रश्न 11642. खण्ड ११६९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पछताबा कथा मोनलग्गू, अविच्छिन्न आ मैथिल उपमासँ समृद्ध कहल गेल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पछताबा कथा मोनलग्गू, अविच्छिन्न आ मैथिल उपमासँ समृद्ध कहल गेल अछि।
व्याख्या: ई खण्ड कथाक भाषा, उपमा आ समीक्षकीय सराहना पर आधारित अछि।

खण्ड ११७० : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्रक अक्षर-पुरुष व्यक्तित्व

प्रश्न 11643. “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य-साधना” लेख के लिखने छथि?

क. प्रेमशंकर सिंह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमशंकर सिंह।

व्याख्या: स्रोतमे शीर्षकपूर्वक प्रेमशंकर सिंहक नाम अछि।

प्रश्न 11644. लेखमे जयकान्त मिश्रक जीवन-काल कोना देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. १९२२-२००९।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. १९२२-२००९।

व्याख्या: स्रोतमे प्रोफेसर डाक्टर जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) कहल गेल।

प्रश्न 11645. जयकान्त मिश्रकेँ कोन प्रकारक पुरुष कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दिव्य अक्षर पुरुष।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दिव्य अक्षर पुरुष।

व्याख्या: स्रोतमे “दिव्य अक्षर पुरुष” पदप्रयोग अछि।

प्रश्न 11646. ओ मैथिलीकेँ विश्व स्तरपर की करबाक लेल संघर्षरत रहलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतिष्ठित करबाक लेल।

उत्तर: घ. प्रतिष्ठित करबाक लेल।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीकेँ विश्व स्तरपर प्रतिष्ठित करबामे संघर्ष कहल गेल।

प्रश्न 11647. ओ मातृभाषाक माध्यमे कोन शिक्षा नीति लागू करएबामे सक्रिय रहलाह?

क. प्राथमिक शिक्षा नीति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्राथमिक शिक्षा नीति।

व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा नीति लागू करएबाक बात अछि।

प्रश्न 11648. वैज्ञानिक आलोचनात्मक ग्रंथक संबंधमे हुनक योगदान की कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रणयन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रणयन।

व्याख्या: स्रोतमे वैज्ञानिक आलोचनात्मक ग्रंथक प्रणयन करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11649. ओ शोध आ अनुसंधानक कोन दिशा खोललनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नव दिशा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नव दिशा।
व्याख्या: स्रोतमे शोध एवं अनुसंधानक नव दिशा कहल गेल।

प्रश्न 11650. ओ कोन विभूतिकेँ प्रकाशमे अनबाक प्रयत्न कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. साहित्यक हेड़ाएल-भुतिआएल विभूति।
उत्तर: घ. साहित्यक हेड़ाएल-भुतिआएल विभूति।
व्याख्या: स्रोतमे एहि पदप्रयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11651. मैथिली भाषा-साहित्यक निष्प्राण धमनीमे हुनका की संचार करबाक रूपक देल गेल?
क. नव रक्तक संचार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नव रक्तक संचार।
व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषाक निष्प्राण धमनीमे नव रक्तक संचार कहल गेल।

प्रश्न 11652. खण्ड ११७०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रेमशंकर सिंह जयकान्त मिश्रकेँ मातृभाषा, शोध, शिक्षा आ साहित्य-उत्थानक दिव्य अक्षर पुरुष मानैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रेमशंकर सिंह जयकान्त मिश्रकेँ मातृभाषा, शोध, शिक्षा आ साहित्य-उत्थानक दिव्य अक्षर पुरुष मानैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड जयकान्त मिश्रक समग्र व्यक्तित्व पर आधारित अछि।

खण्ड ११७१ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्रक प्रथम दर्शन

प्रश्न 11653. लेखक छात्रावस्थासँ ककर नामसँ अवगत छलाह?
क. जयकान्त मिश्रक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जयकान्त मिश्रक।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली अध्ययन-अनुशीलनक कारण छात्रावस्थासँ नामसँ अवगत रहबाक बात अछि।

प्रश्न 11654. प्रथम दर्शनक अवसर लेखककेँ कतय भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पटना मे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पटना मे।
व्याख्या: स्रोतमे बिहारक राजधानी पटनामे प्रथम दर्शनक अवसर भेटल।

प्रश्न 11655. जयकान्त मिश्र पटना मे कोन प्रसंगमे आएल रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बिहार पब्लिक सर्भिस कमीशनमे इन्टरभ्यू देबाक हेतु।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बिहार पब्लिक सर्भिस कमीशनमे इन्टरभ्यू देबाक हेतु।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली विभागक रीडर एवं विभागाध्यक्ष इन्टरभ्यू हेतु आएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11656. लेखक कमीशन आफिसमे ककर दर्शनार्थ गेल छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रोफेसर शैलेन्द्र मोहन झा।
उत्तर: घ. प्रोफेसर शैलेन्द्र मोहन झा।
व्याख्या: स्रोतमे अपन गुरुदेव प्रोफेसर शैलेन्द्र मोहन झाक दर्शनार्थ जाएबाक बात अछि।

प्रश्न 11657. ई घटना कोन सालक कहल गेल?
क. १९६३ ई.।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १९६३ ई.।
व्याख्या: स्रोतमे सन् 1963 ई. क घटना कहल गेल।

प्रश्न 11658. ओ समय लेखक कोन कक्षाक छात्र छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पटना विश्वविद्यालयक एम.ए. मैथिलीक अन्तिम वर्ष।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पटना विश्वविद्यालयक एम.ए. मैथिलीक अन्तिम वर्ष।
व्याख्या: स्रोतमे ई विवरण अछि।

प्रश्न 11659. लेखकक विस्तृत परिचय जयकान्त मिश्रकेँ के देलथिन?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शैलेन्द्र बाबू।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शैलेन्द्र बाबू।
व्याख्या: स्रोतमे शैलेन्द्र बाबू परिचय देलथिन कहल गेल।

प्रश्न 11660. लेखक भागलपुर विश्वविद्यालयमे कोन पदपर अएलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीक लेक्चरर।
उत्तर: घ. मैथिलीक लेक्चरर।
व्याख्या: स्रोतमे भागलपुर विश्वविद्यालयमे मैथिलीक लेक्चरर होएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11661. विद्यापति पर्वमे जयकान्त मिश्र की देलनि?
क. सारगर्भित गंभीर व्याख्यान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सारगर्भित गंभीर व्याख्यान।
व्याख्या: स्रोतमे आयोजनमे सारगर्भित गंभीर व्याख्यान देबाक बात अछि।

प्रश्न 11662. खण्ड ११७१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखकक जयकान्त मिश्रसँ प्रथम परिचय पटना मे भेल आ बादमे विद्यापति पर्वमे हुनक व्याख्यान मातृभाषानुराग जगबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखकक जयकान्त मिश्रसँ प्रथम परिचय पटना मे भेल आ बादमे विद्यापति पर्वमे हुनक व्याख्यान मातृभाषानुराग जगबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड प्रथम दर्शन आ प्रारम्भिक सम्पर्क पर आधारित अछि।

खण्ड ११७२ : विदेह-सदेह २ — निजी पुस्तकालय आ शोध-सहायता

प्रश्न 11663. लेखक शोधकार्यक समय जयकान्त मिश्रक निजी पुस्तकालय देखबाक हेतु कतय गेलाह?
क. इलाहाबाद।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. इलाहाबाद।
व्याख्या: स्रोतमे निजी पुस्तकालय देखबाक हेतु इलाहाबाद जाएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11664. लेखकक मुख्य कार्य कोन उपन्यासक समालोचना देखब छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कन्यादान आ द्विरागमन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कन्यादान आ द्विरागमन।
व्याख्या: स्रोतमे हरिमोहन झाक कन्यादान आ द्विरागमन पर समालोचना देखबाक बात अछि।

प्रश्न 11665. कन्यादानक प्रकाशन-साल स्रोतमे की देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९३३।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९३३।
व्याख्या: स्रोतमे कन्यादान (1933) कहल गेल।

प्रश्न 11666. द्विरागमनक प्रकाशन-साल स्रोतमे की देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९४३।
उत्तर: घ. १९४३।
व्याख्या: स्रोतमे द्विरागमन (1943) कहल गेल।

प्रश्न 11667. हरिमोहन झाक एहि उपन्याससभ पर वृहत समालोचना के लिखने छलाह?
क. श्रीकृष्ण मिश्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. श्रीकृष्ण मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे श्रीकृष्ण मिश्रक वृहत समालोचना कहल गेल।

प्रश्न 11668. समालोचना कोन पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिला मिहिर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिला मिहिर।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल कहल गेल।

प्रश्न 11669. जयकान्त मिश्र लेखकक शोधकेँ सारगर्भित बनएबाक लेल की करबा देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आवश्यक सामग्री टाइप करबा देलनि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आवश्यक सामग्री टाइप करबा देलनि।
व्याख्या: स्रोतमे इच्छानुरूप सामग्री टाइप करबा देबाक बात अछि।

प्रश्न 11670. ओ समय कोन सुविधा उपलब्ध नहि छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जिराक्स।
उत्तर: घ. जिराक्स।
व्याख्या: स्रोतमे ओहि समय जिराक्सक आविष्कार नहि भेल छलैक कहल गेल।

प्रश्न 11671. टाइप कॉपी लेखकक पुस्तकालयमे कोन रूपमे रहल?
क. स्मृतिक धरोहर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्मृतिक धरोहर।
व्याख्या: स्रोतमे टाइप कॉपी स्मृतिक धरोहर रूपमे वर्त्तमान कहल गेल।

प्रश्न 11672. खण्ड ११७२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक निजी पुस्तकालय आ शोध-सहायता लेखक लेल अमूल्य सिद्ध भेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक निजी पुस्तकालय आ शोध-सहायता लेखक लेल अमूल्य सिद्ध भेल।
व्याख्या: ई खण्ड इलाहाबाद पुस्तकालय, पुरान पत्रिका आ शोध-सामग्री पर आधारित अछि।

खण्ड ११७३ : विदेह-सदेह २ — दीर्घ सम्पर्क आ शुभकामना

प्रश्न 11673. लेखक कहैत छथि जे जयकान्त मिश्रसँ कतेक बेर भेट भेल?

क. तकर ठेकान नहि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तकर ठेकान नहि।

व्याख्या: स्रोतमे भेटक संख्या अनिश्चित कहल गेल।

प्रश्न 11674. विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक स्तरपर लेखककेँ ककर सान्निध्य भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जयकान्त मिश्रक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक।

व्याख्या: स्रोतमे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग स्तरपर भेटक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11675. विश्वविद्यालय स्तरक अतिरिक्त कोन समितिक संगोष्ठीमे भेट भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. चेतना समितिक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. चेतना समितिक।

व्याख्या: स्रोतमे चेतना समितिक संगोष्ठीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11676. प्रयागक कोन संस्थाक आयोजनोत्सवपर भेट भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला सांस्कृतिक संगम प्रयाग।

उत्तर: घ. मिथिला सांस्कृतिक संगम प्रयाग।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला सांस्कृतिक संगम प्रयागक आयोजनोत्सवक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11677. व्रजकिशोर वर्माक कोन पुस्तकक सम्पादनक्रममे सामग्री जुटाओल गेल?

क. हुनकासँ भेट भेल छल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हुनकासँ भेट भेल छल।

व्याख्या: स्रोतमे व्रजकिशोर वर्माक “हुनकासँ भेट भेल छल” पुस्तकक सम्पादनक क्रम अछि।

प्रश्न 11678. एहि पुस्तक-संपादनक क्रममे लेखककेँ कतेक बेर दर्शन-सान्निध्य भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सहस्राधिक बेर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सहस्राधिक बेर।

व्याख्या: स्रोतमे सहस्राधिक बेर दर्शन आ सान्निध्यक बात अछि।

प्रश्न 11679. जयकान्त मिश्र लेखककेँ कोन सेवार्थ उत्प्रेरित करैत रहलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मातृभाषाक सेवार्थ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मातृभाषाक सेवार्थ।
व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषाक सेवार्थ शुभकामनासँ उत्प्रेरित करबाक बात अछि।

प्रश्न 11680. सतत शुभकामना कोन भाव व्यक्त करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गुरुतुल्य प्रेरणा आ संरक्षण।
उत्तर: घ. गुरुतुल्य प्रेरणा आ संरक्षण।
व्याख्या: स्रोतमे अशेष शुभकामना आ उत्प्रेरणाक भाव अछि।

प्रश्न 11681. दीर्घ सम्पर्कक मुख्य आधार की रहल?
क. साहित्य, विश्वविद्यालय, संगोष्ठी आ संपादन-कार्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्य, विश्वविद्यालय, संगोष्ठी आ संपादन-कार्य।
व्याख्या: स्रोतमे एहि सभ प्रसंगमे भेटक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11682. खण्ड ११७३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखकक जयकान्त मिश्रसँ दीर्घ सम्पर्क विश्वविद्यालय, संगोष्ठी, प्रयाग आयोजन आ संपादन-कार्यक माध्यमे निरन्तर गाढ़ भेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखकक जयकान्त मिश्रसँ दीर्घ सम्पर्क विश्वविद्यालय, संगोष्ठी, प्रयाग आयोजन आ संपादन-कार्यक माध्यमे निरन्तर गाढ़ भेल।
व्याख्या: ई खण्ड सान्निध्य आ प्रेरणात्मक सम्बन्ध पर आधारित अछि।

खण्ड ११७४ : विदेह-सदेह २ — पारिवारिक पृष्ठभूमि आ मातृभाषानुराग

प्रश्न 11683. जयकान्त मिश्रक पारिवारिक पृष्ठभूमिमे ककर प्रति अगाध आस्था छल?
क. संस्कृतक पठन-पाठन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संस्कृतक पठन-पाठन।
व्याख्या: स्रोतमे संस्कृतक पठन-पाठनक प्रति आस्था आ श्रद्धा कहल गेल।

प्रश्न 11684. हुनक पितामहक नाम की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. महामहोपाध्याय पण्डित जयदेव मिश्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. महामहोपाध्याय पण्डित जयदेव मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे पितामह जयदेव मिश्रक नाम अछि।

प्रश्न 11685. हुनक पिताक नाम की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. महामहोपाध्याय डाक्टर उमेश मिश्र।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. महामहोपाध्याय डाक्टर उमेश मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे पिता उमेश मिश्र (1895-1967)क नाम अछि।

प्रश्न 11686. पिता आ पितामहक अनुराग कोन क्षेत्रसँ संबंधित छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संस्कृत शिक्षण।
उत्तर: घ. संस्कृत शिक्षण।
व्याख्या: स्रोतमे संस्कृत शिक्षणक प्रति अनुराग कहल गेल।

प्रश्न 11687. जयकान्त मिश्रक पठन-पाठन कोन शिक्षा-पद्धति अनुरूप भेल?
क. पाश्चात्य शिक्षा अनुरूप।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाश्चात्य शिक्षा अनुरूप।
व्याख्या: स्रोतमे पठन-पाठन पाश्चात्य-शिक्षानुरूप भेल कहल गेल।

प्रश्न 11688. हुनक शिक्षा ककर छत्रछायामे भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पिता आ प्रोफेसर अमरनाथ झा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पिता आ प्रोफेसर अमरनाथ झा।
व्याख्या: स्रोतमे पिता एवं प्रोफेसर अमरनाथ झाक छत्रछाया कहल गेल।

प्रश्न 11689. ओहि समय इलाहाबाद कोन परम्पराक केन्द्र-बिन्दु कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आधुनिक यूरोपियन परम्परा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आधुनिक यूरोपियन परम्परा।
व्याख्या: स्रोतमे इलाहाबाद आधुनिक यूरोपियन परम्पराक केन्द्र-बिन्दु कहल गेल।

प्रश्न 11690. अमरनाथ झा कोन विभागक सर्वेसर्वा रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंग्रेजी विभाग।
उत्तर: घ. अंग्रेजी विभाग।
व्याख्या: स्रोतमे बहुभाषाविद अमरनाथ झा अंग्रेजी विभागक सर्वेसर्वा कहल गेल।

प्रश्न 11691. पाश्चात्य शिक्षित भेलाक बादो जयकान्त मिश्रक हृदयमे की बलवती छल?
क. मातृभाषानुराग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषानुराग।
व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषानुराग एतेक बलवती छल कहल गेल।

प्रश्न 11692. खण्ड ११७४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संस्कृत-प्रधान परिवार आ पाश्चात्य शिक्षा-दुनू पृष्ठभूमिक बीच जयकान्त मिश्रक मातृभाषानुराग जीवनभर सक्रिय रहल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संस्कृत-प्रधान परिवार आ पाश्चात्य शिक्षा-दुनू पृष्ठभूमिक बीच जयकान्त मिश्रक मातृभाषानुराग जीवनभर सक्रिय रहल।
व्याख्या: ई खण्ड पारिवारिक पृष्ठभूमि आ मातृभाषा-निष्ठा पर आधारित अछि।

खण्ड ११७५ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्रक अध्यापन-यात्रा

प्रश्न 11693. जयकान्त मिश्र कतेक वर्षक अवस्थामे इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे लेक्चरर भेलाह?
क. २१ वर्ष।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. २१ वर्ष।
व्याख्या: स्रोतमे मात्र 21 वर्षक अवस्थामे लेक्चरर पद सुशोभित करबाक बात अछि।

प्रश्न 11694. ओ कोन विभागमे लेक्चरर भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्टडीज एण्ड मार्डन यूरोपियन विभाग।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्टडीज एण्ड मार्डन यूरोपियन विभाग।
व्याख्या: स्रोतमे विभागक नाम एहि रूपे आयल अछि।

प्रश्न 11695. सन् १९४४ मे ओ कोन-कोन पदपर आसीन भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रीडर, यूनिभर्सिटी प्रोफेसर आ विभागाध्यक्ष।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रीडर, यूनिभर्सिटी प्रोफेसर आ विभागाध्यक्ष।
व्याख्या: स्रोतमे 1944 मे ई पदसभ देल अछि।

प्रश्न 11696. इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ अवकाश कखन ग्रहण कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९८३ ई.।
उत्तर: घ. १९८३ ई.।
व्याख्या: स्रोतमे सन् 1983 ई.मे अवकाश कहल गेल।

प्रश्न 11697. अवकाशोपरान्त हुनका अध्यापनसँ मुक्ति भेटल कि नहि?
क. नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि।
व्याख्या: स्रोतमे अवकाशोपरान्त अध्यापन कार्यसँ मुक्ति नहि भेटलनि कहल गेल।

प्रश्न 11698. सागर विश्वविद्यालय हुनका कोन रूपमे चयन कएलकनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भिजीटिंग फेलो।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भिजीटिंग फेलो।
व्याख्या: स्रोतमे सागर विश्वविद्यालय भिजीटिंग फेलो रूपमे चयन कएलक कहल गेल।

प्रश्न 11699. सागर विश्वविद्यालयमे ओ कतेक वर्ष धरि कार्यरत रहलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९८५ सँ १९८८ धरि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९८५ सँ १९८८ धरि।
व्याख्या: स्रोतमे सन् 1985 सँ सन् 1988 धरि कार्यरत रहबाक बात अछि।

प्रश्न 11700. १९८६ मे हुनका कोन बोर्ड हेतु आमंत्रित कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ऑल इण्डिया बोर्ड फार रिसर्च एवार्ड इन ह्यूमैनिटीज।
उत्तर: घ. ऑल इण्डिया बोर्ड फार रिसर्च एवार्ड इन ह्यूमैनिटीज।
व्याख्या: स्रोतमे मैसूर विश्वविद्यालयक आमंत्रणक संदर्भ अछि।

प्रश्न 11701. चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे ओ कोन पद/क्षेत्रमे रहलाह?
क. डीन फैकल्टी ऑफ लैंग्वेजेज एण्ड सोशल साइंस।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डीन फैकल्टी ऑफ लैंग्वेजेज एण्ड सोशल साइंस।
व्याख्या: स्रोतमे 1992 सँ 1994 धरि एहि विभागमे अध्यापन करबाक बात अछि।

प्रश्न 11702. खण्ड ११७५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक अध्यापन-यात्रा इलाहाबादसँ सागर, मैसूर आ चित्रकूट धरि विस्तृत रहल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक अध्यापन-यात्रा इलाहाबादसँ सागर, मैसूर आ चित्रकूट धरि विस्तृत रहल।
व्याख्या: ई खण्ड अध्यापन-जीवनक क्रम पर आधारित अछि।

खण्ड ११७६ : विदेह-सदेह २ — अनुसंधान-प्रेरणा आ अमरनाथ झा

प्रश्न 11703. जयकान्त मिश्रकेँ मैथिल सरस्वतीक कोन पुत्र कहल गेल?

क. वरद पुत्र।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वरद पुत्र।

व्याख्या: स्रोतमे प्रथम मैथिल सरस्वतीक वरद पुत्र कहल गेल।

प्रश्न 11704. लेखकक अनुसार जयकान्त मिश्र मातृभाषाकेँ की देलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जीवनदान।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जीवनदान।

व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषाकेँ जीवनदान देलनि कहल गेल।

प्रश्न 11705. ओ अनुसन्धानक दिशामे किएक उन्मुख भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इलाहाबाद विश्वविद्यालयक पृष्ठभूमि आ अध्यापन-वृत्तिसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इलाहाबाद विश्वविद्यालयक पृष्ठभूमि आ अध्यापन-वृत्तिसँ।

व्याख्या: स्रोतमे शैक्षणिक पृष्ठभूमि आ अध्यापन वृत्तिक कारण कहल गेल।

प्रश्न 11706. हुनका हृदयमे कोन तीव्र आकांक्षा छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनुसन्धानक।

उत्तर: घ. अनुसन्धानक।

व्याख्या: स्रोतमे अनुसन्धानक तीव्र आकांक्षा कहल गेल।

प्रश्न 11707. ओ आरम्भमे कोन विषयपर शोध करए चाहैत छलाह?

क. शेक्सपियरक ड्रामापर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शेक्सपियरक ड्रामापर।

व्याख्या: स्रोतमे शेक्सपियरक ड्रामापर काज करबाक इच्छा कहल गेल।

प्रश्न 11708. ई विचार लऽ कऽ ओ ककरा लग गेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रोफेसर अमरनाथ झाक लग।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रोफेसर अमरनाथ झाक लग।

व्याख्या: स्रोतमे गुरुवर अमरनाथ झाक लग जाएबाक बात अछि।

प्रश्न 11709. अमरनाथ झा शेक्सपियर विषयक बारेमे की तर्क देलथिन?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शेक्सपियरपर हजारो पोथी उपलब्ध अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शेक्सपियरपर हजारो पोथी उपलब्ध अछि।
व्याख्या: स्रोतमे विश्वक भाषामे हजारो पोथी उपलब्ध रहबाक तर्क अछि।

प्रश्न 11710. अमरनाथ झा भारतीय छात्रक पढ़ाइ संदर्भमे की प्रश्न उठौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ ऑक्सफोर्डक प्रकाशन पढ़त, भारतीय लेखकक पोथी नहि।
उत्तर: घ. ओ ऑक्सफोर्डक प्रकाशन पढ़त, भारतीय लेखकक पोथी नहि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि आशयक प्रश्न उठाओल गेल।

प्रश्न 11711. एहि संवादक परिणाम की भेल?
क. जयकान्त मिश्र मैथिली शोध दिस प्रेरित भेलाह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जयकान्त मिश्र मैथिली शोध दिस प्रेरित भेलाह।
व्याख्या: अमरनाथ झाक सलाह हुनका मैथिलीक काज दिस मोड़ैत अछि।

प्रश्न 11712. खण्ड ११७६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अमरनाथ झाक दूरदर्शी सलाह जयकान्त मिश्रकेँ शेक्सपियर छोड़ि मैथिली अनुसन्धान दिस मोड़लक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अमरनाथ झाक दूरदर्शी सलाह जयकान्त मिश्रकेँ शेक्सपियर छोड़ि मैथिली अनुसन्धान दिस मोड़लक।
व्याख्या: ई खण्ड अनुसन्धान-प्रेरणा पर आधारित अछि।

खण्ड ११७७ : विदेह-सदेह २ — अंग्रेजीमे मैथिली शोधक संकल्प

प्रश्न 11713. अमरनाथ झा जयकान्त मिश्रकेँ कोन विषयपर काज करबाक कहलथिन?
क. मैथिलीक काज।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक काज।
व्याख्या: स्रोतमे “मैथिलीक काज” स्पष्ट कहल गेल।

प्रश्न 11714. मैथिली विषय सुनि जयकान्त मिश्रक अवस्था कोना भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ सन्न रहि गेलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ सन्न रहि गेलाह।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजी शोध-प्रबन्धक विषय मैथिली कोना होएत सोचि सन्न रहबाक बात अछि।

प्रश्न 11715. जयकान्त मिश्र पुनः साहस कऽ ककरा विषयमे जिज्ञासा कएलथिन?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली।
व्याख्या: स्रोतमे ओ पुनः “मैथिली?” कहि जिज्ञासा कएलनि।

प्रश्न 11716. अमरनाथ झाक उत्तर की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हँ, मैथिली।
उत्तर: घ. हँ, मैथिली।
व्याख्या: स्रोतमे डॉ. झा “हँ, मैथिली!” कहलथिन।

प्रश्न 11717. अमरनाथ झाक अनुसार अमैथिल भाषी कोन बात जानत?
क. मैथिली साहित्यक विषय।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली साहित्यक विषय।
व्याख्या: स्रोतमे अमैथिल भाषी जानकारी प्राप्त करत कहल गेल।

प्रश्न 11718. मैथिलीपर अंग्रेजीमे लिखलासँ कोन डिग्री भेटत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अंग्रेजीमे डी.फिल.।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अंग्रेजीमे डी.फिल.।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजीमे लिखल रहतैक तँ अंग्रेजीमे डी.फिल. डिग्री भेटत कहल गेल।

प्रश्न 11719. प्रोफेसर झा कतेक प्रकारक साहित्यमनीषी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दूरदर्शी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दूरदर्शी।
व्याख्या: स्रोतमे प्रोफेसर झा एक दूरदर्शी साहित्य-मनीषी रहथि कहल गेल।

प्रश्न 11720. एहि सलाहकेँ लेखमे की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उपयुक्त सलाह आ प्रेरणा।
उत्तर: घ. उपयुक्त सलाह आ प्रेरणा।
व्याख्या: स्रोतमे उपयुक्त सलाह आ प्रेरणा देलथिन कहल गेल।

प्रश्न 11721. अमरनाथ झा कहने छलाह जे इएह काज जयकान्त मिश्रकेँ की बनाओत?
क. अजर, अमर आ अक्षुण्ण यशक भागी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अजर, अमर आ अक्षुण्ण यशक भागी।
व्याख्या: स्रोतमे एहि वाक्यक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11722. खण्ड ११७७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अमरनाथ झाक सलाहसँ जयकान्त मिश्र अंग्रेजी माध्यमे मैथिलीपर शोध करबाक ऐतिहासिक संकल्प धरलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अमरनाथ झाक सलाहसँ जयकान्त मिश्र अंग्रेजी माध्यमे मैथिलीपर शोध करबाक ऐतिहासिक संकल्प धरलनि।
व्याख्या: ई खण्ड मैथिली शोध-विषयक निर्णय पर आधारित अछि।

खण्ड ११७८ : विदेह-सदेह २ — ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचरक महत्त्व

प्रश्न 11723. जयकान्त मिश्रक अनुसंधान वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे ककर पर्याय बनि गेल?
क. मैथिली आ प्रोफेसर मिश्रक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली आ प्रोफेसर मिश्रक।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली आ प्रोफेसर मिश्र एक दोसराक पर्याय कहल गेल।

प्रश्न 11724. हुनक नामोल्लेख बिना मैथिलीक कृति कोना लगैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अनोना।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अनोना।
व्याख्या: स्रोतमे बिनु नामोल्लेख मैथिलीक कृति अनोना लगैछ कहल गेल।

प्रश्न 11725. हिनक प्रमुख अनुसन्धानात्मक कृतिक नाम की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर।
व्याख्या: स्रोतमे A History Of Maithili Literature क उल्लेख अछि।

प्रश्न 11726. एहि कृतिपर इलाहाबाद विश्वविद्यालय कोन उपाधि देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. डी.फिल.।
उत्तर: घ. डी.फिल.।
व्याख्या: स्रोतमे सन् 1948 मे डी. फिल. उपाधि देबाक बात अछि।

प्रश्न 11727. डी.फिल. उपाधि कोन वर्षमे भेटल?

क. १९४८ ई.।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १९४८ ई.।

व्याख्या: स्रोतमे सन् 1948 ई. उल्लेख अछि।

प्रश्न 11728. पश्चात् ई कृति कतेक खण्डमे प्रकाशित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दुइ खण्डमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दुइ खण्डमे।

व्याख्या: स्रोतमे कृति दुइ खण्डमे प्रकाशित भेल कहल गेल।

प्रश्न 11729. प्रकाशित होतहि ई कृति कोन रूपमे उदघोषित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि।

व्याख्या: स्रोतमे अमूल्य निधि रूपमे उदघोषित कहल गेल।

प्रश्न 11730. हुनकासँ पूर्व मैथिलीक कोन प्रकारक ग्रंथ नहि छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्येतिहासिक ग्रंथ।

उत्तर: घ. साहित्येतिहासिक ग्रंथ।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक कोनो साहित्येतिहासिक ग्रंथ नहि छल कहल गेल।

प्रश्न 11731. हुनक अनुसंधान मैथिलीमे की कहल जा सकैत अछि?

क. दिशा-बोधक अनुसंधान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिशा-बोधक अनुसंधान।

व्याख्या: स्रोतमे एहि अनुसंधानकेँ दिशा-बोधक कहल गेल।

प्रश्न 11732. खण्ड ११७८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर मैथिली साहित्येतिहासक प्रथम दिशा-बोधक अनुसन्धान रूपमे प्रतिष्ठित भेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर मैथिली साहित्येतिहासक प्रथम दिशा-बोधक अनुसन्धान रूपमे प्रतिष्ठित भेल।

व्याख्या: ई खण्ड कृतिक उपाधि, प्रकाशन आ महत्त्व पर आधारित अछि।

खण्ड ११७९ : विदेह-सदेह २ — इतिहासक स्वागत आ विद्वत् प्रतिक्रिया

प्रश्न 11733. जयकान्त मिश्रक इतिहासक फलस्वरूप अन्य भाषा-भाषीकेँ की बोध भेल?

क. मैथिली साहित्य सम्पन्न भाषा-साहित्य थिक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली साहित्य सम्पन्न भाषा-साहित्य थिक।

व्याख्या: स्रोतमे अन्य भाषा-भाषीकेँ मैथिली साहित्यक सम्पन्नता बोध भेल कहल गेल।

प्रश्न 11734. मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कोन शताब्दीसँ अविच्छिन्न कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. तेरहम शताब्दीसँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. तेरहम शताब्दीसँ।

व्याख्या: स्रोतमे तेरहम शताब्दीसँ अविच्छिन्न पृष्ठभूमि कहल गेल।

प्रश्न 11735. प्रथम खण्डपर कोन भाषा-शास्त्रीक कथन उद्धृत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी।

व्याख्या: स्रोतमे सुनीति कुमार चटर्जीक कथन अछि।

प्रश्न 11736. सुनीति कुमार चटर्जी एहि इतिहासकेँ कोना मानैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रथमे-प्रथमे प्रकाशित इतिहास, स्वागतयोग्य।

उत्तर: घ. प्रथमे-प्रथमे प्रकाशित इतिहास, स्वागतयोग्य।

व्याख्या: स्रोतमे प्रथम इतिहास प्रकाशित भेल तेँ स्वागतयोग्य कहल गेल।

प्रश्न 11737. एहि साहित्यक गरिमाकेँ जनमानसक समक्ष के प्रस्तुत कएलनि?

क. जयकान्त मिश्र।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जयकान्त मिश्र।

व्याख्या: स्रोतमे ई श्रेय हिनके छनि कहल गेल।

प्रश्न 11738. खण्ड ११७९मे ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचरक द्वितीय खण्डपर आमुख के लिखलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रोफेसर अमरनाथ झा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रोफेसर अमरनाथ झा।

व्याख्या: स्रोतमे द्वितीय खण्डपर अमरनाथ झा आमुख लिखलनि।

प्रश्न 11739. शोध-प्रबन्धक निर्देशकक नाम की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रियरंजन सेन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रियरंजन सेन।
व्याख्या: स्रोतमे प्रियरंजन सेन निर्देशक कहल गेल।

प्रश्न 11740. प्रियरंजन सेनक अनुसार जयकान्त मिश्रक काज कोन प्रकारक छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अत्यन्त साहसिक।
उत्तर: घ. अत्यन्त साहसिक।
व्याख्या: स्रोतमे गौरवमय इतिहास आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे प्रस्तुत करब साहसिक काज कहल गेल।

प्रश्न 11741. विद्वत् प्रतिक्रिया की प्रमाणित करैत अछि?
क. कृतिक ऐतिहासिक गरिमा आ स्वीकार्यता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कृतिक ऐतिहासिक गरिमा आ स्वीकार्यता।
व्याख्या: सुनीति कुमार, अमरनाथ झा आ प्रियरंजन सेनक उल्लेख एहि स्वीकार्यताक संकेत अछि।

प्रश्न 11742. खण्ड ११७९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक इतिहास सुनीति कुमार चटर्जी, अमरनाथ झा आ प्रियरंजन सेन सन विद्वानक मान्यतासँ प्रतिष्ठित भेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक इतिहास सुनीति कुमार चटर्जी, अमरनाथ झा आ प्रियरंजन सेन सन विद्वानक मान्यतासँ प्रतिष्ठित भेल।
व्याख्या: ई खण्ड इतिहासक स्वागत आ विद्वत् प्रतिक्रिया पर आधारित अछि।

खण्ड ११८० : विदेह-सदेह २ — मिथिलाक लोक-साहित्य पर जयकान्त मिश्र

प्रश्न 11743. हिनक गहन अनुसन्धानात्मक प्रवृत्तिक परिचय कोन कृतिसँ भेटैत अछि?
क. एन इण्ट्रोडक्शन टु द फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एन इण्ट्रोडक्शन टु द फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला।
व्याख्या: स्रोतमे An Introduction to the folk literature of Mithila क उल्लेख अछि।

प्रश्न 11744. एहि कृतिमे ओ ककर विश्लेषण कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलांचलक लोक साहित्य।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिलांचलक लोक साहित्य।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिलांचलक परिसरमे उपलब्ध लोक साहित्यक विश्लेषण कहल गेल।

प्रश्न 11745. शोध-साहित्य संचयनक क्रममे ओ कोन सामग्री संकलित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लोक साहित्यसँ संबंधित उपलब्ध सामग्री।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लोक साहित्यसँ संबंधित उपलब्ध सामग्री।
व्याख्या: स्रोतमे उपलब्ध लोक-साहित्य सामग्री संकलित करबाक बात अछि।

प्रश्न 11746. ओ एहि लोक साहित्यक विश्लेषण कोन भाषामे कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंग्रेजीमे।
उत्तर: घ. अंग्रेजीमे।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजीमे विश्लेषण कऽ प्रमाणित कएलनि कहल गेल।

प्रश्न 11747. ओ की प्रमाणित कएलनि?
क. समृद्धशाली विपुल लोक साहित्य जनमानसमे छिड़िआएल अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समृद्धशाली विपुल लोक साहित्य जनमानसमे छिड़िआएल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे ई बात स्पष्ट अछि।

प्रश्न 11748. लोक साहित्य दिस ककर प्रयोजन बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अनुसंधानक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अनुसंधानक।
व्याख्या: स्रोतमे ताहि दिशामे अनुसंधानक प्रयोजन कहल गेल।

प्रश्न 11749. जयकान्त मिश्र लोक साहित्यकेँ कोन रूपमे देखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मिथिलाक समृद्ध जन-सांस्कृतिक भंडार रूपमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मिथिलाक समृद्ध जन-सांस्कृतिक भंडार रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे विपुल लोक साहित्य जनमानसमे छिरिआएल प्रमाणित भेल।

प्रश्न 11750. एहि कृतिक भाषिक महत्त्व की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंग्रेजी माध्यमे मिथिलाक लोक-साहित्यक परिचय।
उत्तर: घ. अंग्रेजी माध्यमे मिथिलाक लोक-साहित्यक परिचय।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजीमे विश्लेषणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11751. लोकसाहित्य शोध जयकान्त मिश्रक अध्ययन-विस्तार की देखबैत अछि?
क. साहित्येतिहाससँ लोकसाहित्य धरि व्यापकता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्येतिहाससँ लोकसाहित्य धरि व्यापकता।
व्याख्या: इतिहास आ लोक-साहित्य दुनू पर हुनक शोध स्रोतमे आयल अछि।

प्रश्न 11752. खण्ड ११८०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्र मिथिलाक लोक-साहित्यक संकलन, अंग्रेजी विश्लेषण आ अनुसन्धानक आवश्यकता प्रमाणित करैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र मिथिलाक लोक-साहित्यक संकलन, अंग्रेजी विश्लेषण आ अनुसन्धानक आवश्यकता प्रमाणित करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्यक अध्ययन पर आधारित अछि।

खण्ड ११८१ : विदेह-सदेह २ — नेपाल-यात्रा आ पाण्डुलिपि-संचयन

प्रश्न 11753. जयकान्त मिश्र अनुसंधानक आकांक्षा पूर्ति लेल कतेक बेर नेपाल गेलाह?
क. दुइ बेर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दुइ बेर।
व्याख्या: स्रोतमे पड़ोसी राष्ट्र नेपालक दुइ बेर यात्रा कहल गेल।

प्रश्न 11754. पहिल नेपाल-यात्राक उद्देश्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शोध-प्रबन्धक सामग्री संकलन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शोध-प्रबन्धक सामग्री संकलन।
व्याख्या: स्रोतमे प्रथम यात्रा शोध-प्रबन्धक सामग्री संकलनार्थ कहल गेल।

प्रश्न 11755. दोसर नेपाल-यात्राक उद्देश्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पहिल यात्रामे नहि भेटल पाण्डुलिपिकेँ मूर्त रूप देब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पहिल यात्रामे नहि भेटल पाण्डुलिपिकेँ मूर्त रूप देब।
व्याख्या: स्रोतमे प्रथम यात्रामे नहि भेटल सामग्री हेतु पुनः जाएबाक बात अछि।

प्रश्न 11756. नेपाल-यात्राक क्रममे ओ कोन बहुमूल्य सामग्री संकलित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली भाषा आ साहित्यक नाटकादिक पाण्डुलिपि।
उत्तर: घ. मैथिली भाषा आ साहित्यक नाटकादिक पाण्डुलिपि।
व्याख्या: स्रोतमे नाटकादिक पाण्डुलिपि संचयन कऽ प्रकाशित कराओल गेल।

प्रश्न 11757. नाटकादिक पाण्डुलिपि संकलनक बाद ओ की करौलनि?
क. प्रकाशित करौलनि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रकाशित करौलनि।
व्याख्या: स्रोतमे प्रकाशित करौलनि कहल गेल।

प्रश्न 11758. एहि प्रकाशनक फलस्वरूप के लाभान्वित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भावी अनुसन्धानकर्ता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भावी अनुसन्धानकर्ता।
व्याख्या: स्रोतमे भावी अनुसन्धानकर्ताक पथ-प्रदर्शन कहल गेल।

प्रश्न 11759. उक्त कृतिक सम्पादनक्रममे भूमिका कोन-कोन भाषामे लिखल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अंग्रेजी आ मैथिलीमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अंग्रेजी आ मैथिलीमे।
व्याख्या: स्रोतमे सारगर्भित भूमिका अंग्रेजी आ मैथिलीमे लिखबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11760. भूमिका द्वारा ओ ककर मूल्यांकन कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नाटकादिक।
उत्तर: घ. नाटकादिक।
व्याख्या: स्रोतमे भूमिका द्वारा मूल्यांकन आ ऐतिहासिकता उद्घाटित कएल गेल।

प्रश्न 11761. एहि कार्यसँ मैथिलीक कतिपय समस्या पर की प्रभाव भेल?
क. ओझरौठ सोझराओल गेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओझरौठ सोझराओल गेल।
व्याख्या: स्रोतमे समस्यादिक ओझरौठकेँ सोझरा देबाक बात अछि।

प्रश्न 11762. खण्ड ११८१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक नेपाल-यात्रा मैथिली नाटक-पाण्डुलिपि संचयन, प्रकाशन आ भावी शोधक पथ-प्रदर्शन लेल महत्त्वपूर्ण रहल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक नेपाल-यात्रा मैथिली नाटक-पाण्डुलिपि संचयन, प्रकाशन आ भावी शोधक पथ-प्रदर्शन लेल महत्त्वपूर्ण रहल।
व्याख्या: ई खण्ड नेपाल-यात्रा आ पाण्डुलिपि-संपादन पर आधारित अछि।

खण्ड ११८२ : विदेह-सदेह २ — अनुसन्धानसँ बदलैत मैथिली-अवधारणा

प्रश्न 11763. जयकान्त मिश्रक अनुसन्धान कोन बात बदलि देलक?

क. सम्पूर्ण अवधारणा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्पूर्ण अवधारणा।

व्याख्या: स्रोतमे हिनक अनुसंधान सम्पूर्ण अवधारणाकेँ बदलि देलक कहल गेल।

प्रश्न 11764. अनुसंधानक बाद ई अवधारणा कोना भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सकारात्मक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सकारात्मक।

व्याख्या: स्रोतमे अवधारणा सकारात्मक भेल कहल गेल।

प्रश्न 11765. आब मैथिली कोन विषय मानल जाए लागल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गंभीर अध्ययनक विषय।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गंभीर अध्ययनक विषय।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली गंभीर अध्ययनक विषय मानल जाए लागल कहल गेल।

प्रश्न 11766. एहि सकारात्मकतासँ कोन मार्ग प्रशस्त भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली साहित्यक विकास मार्ग।

उत्तर: घ. मैथिली साहित्यक विकास मार्ग।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली साहित्यक विकास मार्ग प्रशस्त भेल कहल गेल।

प्रश्न 11767. लेखक एहि दिशामे हुनक प्रयासकेँ कोना कहैत छथि?

क. स्तुत्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्तुत्य।

व्याख्या: स्रोतमे प्रयास स्तुत्य कहल गेल।

प्रश्न 11768. अवधारणाक परिवर्तन मैथिली अध्ययनमे की संकेत करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उपेक्षासँ गंभीर शास्त्रीय अध्ययन दिस गमन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उपेक्षासँ गंभीर शास्त्रीय अध्ययन दिस गमन।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली गंभीर अध्ययनक विषय मानल जाए लगबाक बात अछि।

प्रश्न 11769. सकारात्मकता ककर विकास लेल उपयोगी ठहरल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली साहित्यक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली साहित्यक।
व्याख्या: स्रोतमे साहित्यक विकास मार्ग प्रशस्त भेल।

प्रश्न 11770. एहि खण्डमे जयकान्त मिश्रक योगदानक स्वर की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अध्ययन-मान्यता निर्माण।
उत्तर: घ. अध्ययन-मान्यता निर्माण।
व्याख्या: अनुसंधानक बाद मैथिली गंभीर अध्ययनक विषय बनल।

प्रश्न 11771. सम्पूर्ण अवधारणाकेँ बदलि देबाक मूल साधन की रहल?
क. गहन अनुसन्धान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गहन अनुसन्धान।
व्याख्या: स्रोतमे हिनक अनुसंधानक प्रभाव वर्णित अछि।

प्रश्न 11772. खण्ड ११८२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक अनुसन्धान मैथिलीकेँ गंभीर अध्ययनक विषय बनबैत सकारात्मक अवधारणा आ विकास-पथ तैयार कएलक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक अनुसन्धान मैथिलीकेँ गंभीर अध्ययनक विषय बनबैत सकारात्मक अवधारणा आ विकास-पथ तैयार कएलक।
व्याख्या: ई खण्ड शोधक प्रभाव पर आधारित अछि।

खण्ड ११८३ : विदेह-सदेह २ — साहित्य-साधना आ द्विभाषिक उद्देश्य

प्रश्न 11773. स्रोतमे अगिला उपशीर्षक कोन अछि?
क. साहित्य-साधना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्य-साधना।
व्याख्या: स्रोतमे “साहित्य–साधना” उपशीर्षक आयल अछि।

प्रश्न 11774. जयकान्त मिश्रक रचनावली कोन-कोन प्रकारक बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मौलिक, सम्पादित आ स्वतंत्र आलेखादि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मौलिक, सम्पादित आ स्वतंत्र आलेखादि।
व्याख्या: स्रोतमे साहित्य-साधनाक अन्तर्गत मौलिक, सम्पादित एवं स्वतंत्र आलेखादिक रचनावली कहल गेल।

प्रश्न 11775. हुनक रचनावली कोन-कोन भाषामे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अंग्रेजी आ मैथिलीमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अंग्रेजी आ मैथिलीमे।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजी एवं मैथिलीमे रचनावली कहल गेल।

प्रश्न 11776. ओ मैथिली साहित्यकेँ की देबाक निमित्त लेखन कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नव दिशा।
उत्तर: घ. नव दिशा।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली साहित्यकेँ नव दिशा देबाक निमित्त लेखन कहल गेल।

प्रश्न 11777. ओ दुनू भाषामे लेखन कोना कएलनि?
क. समान रूपेण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समान रूपेण।
व्याख्या: स्रोतमे उपर्युक्त दुनू भाषामे समान रूपेण लेखन कएलनि।

प्रश्न 11778. द्विभाषिक लेखनक पाछाँ कोन उद्देश्य छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अमैथिल भाषी सेहो गौरव-गरिमा जानय-बुझय।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अमैथिल भाषी सेहो गौरव-गरिमा जानय-बुझय।
व्याख्या: स्रोतमे अमैथिल भाषी सेहो गौरव-गरिमा जानए-बुझए उद्देश्य कहल गेल।

प्रश्न 11779. साहित्य-साधना मे मैथिली आ अंग्रेजी दुनू प्रयोगक महत्त्व की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्थानीय आ वैश्विक पाठक-दुनू धरि पहुँचनाइ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्थानीय आ वैश्विक पाठक-दुनू धरि पहुँचनाइ।
व्याख्या: स्रोतमे अमैथिल भाषी धरि मैथिलीक गौरव पहुँचब उद्देश्य अछि।

प्रश्न 11780. स्वतंत्र आलेखादि शब्द ककर विस्तार देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हुनक लेखनक बहुविध रूप।
उत्तर: घ. हुनक लेखनक बहुविध रूप।
व्याख्या: स्रोतमे मौलिक, सम्पादित, स्वतंत्र आलेखादि सभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11781. नव दिशा देबाक उद्देश्य कोन साहित्यसँ जुड़ल अछि?
क. मैथिली साहित्यसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली साहित्यसँ।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली साहित्यकेँ नव दिशा देबाक निमित्त कहल गेल।

प्रश्न 11782. खण्ड ११८३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक साहित्य-साधना मैथिली आ अंग्रेजी दुनू भाषामे मैथिलीक गौरव-गरिमा प्रसारित करबाक उद्देश्यसँ चलल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक साहित्य-साधना मैथिली आ अंग्रेजी दुनू भाषामे मैथिलीक गौरव-गरिमा प्रसारित करबाक उद्देश्यसँ चलल।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्य-साधनाक भाषा आ उद्देश्य पर आधारित अछि।

खण्ड ११८४ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्रक प्रमुख कृति-सूची

प्रश्न 11783. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर वॉल्यूम-१ कोन वर्षक कृति अछि?
क. १९४९।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १९४९।
व्याख्या: स्रोतमे A History of Maithili Literature Volume-I-1949 देल अछि।

प्रश्न 11784. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर वॉल्यूम-२ कोन वर्षक कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९५०।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९५०।
व्याख्या: स्रोतमे Volume-II-1950 देल अछि।

प्रश्न 11785. एन इण्ट्रोडक्शन टु फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला वॉल्यूम-१ कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९५०।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९५०।
व्याख्या: स्रोतमे ई कृति Volume-I-1950 रूपमे देल अछि।

प्रश्न 11786. एन इण्ट्रोडक्शन टु फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला वॉल्यूम-२ कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९५१।
उत्तर: घ. १९५१।
व्याख्या: स्रोतमे Volume-II-1951 देल अछि।

प्रश्न 11787. खण्ड ११८४मे जयकान्त मिश्रक ए केस ऑफ मैथिली कोन वर्षक कृति अछि?

क. १९६३।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १९६३।

व्याख्या: स्रोतमे A case of Maithili-1963 देल अछि।

प्रश्न 11788. कीर्त्तनिञा नाटक कोन वर्षक मौलिक मैथिली कृति अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. १९६५।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. १९६५।

व्याख्या: स्रोतमे मौलिक मैथिली अन्तर्गत कीर्त्तनिञा नाटक-1965 देल अछि।

प्रश्न 11789. खण्ड ११८४मे जयकान्त मिश्रक तिरहुता ककहारा कोन वर्षक मौलिक मैथिली कृति अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. १९६७।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. १९६७।

व्याख्या: स्रोतमे तिरहुता ककहारा-1967 देल अछि।

प्रश्न 11790. मैथिलीमे प्राथमिक शिक्षा कोन वर्षक कृति अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. १९६९।

उत्तर: घ. १९६९।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीमे प्राथमिक शिक्षा-1969 देल अछि।

प्रश्न 11791. वृहत मैथिली शब्दकोश खण्ड-१ कोन वर्षक कृति अछि?

क. १९७३।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १९७३।

व्याख्या: स्रोतमे वृहत मैथिली शब्दकोश खण्ड-1-1973 देल अछि।

प्रश्न 11792. खण्ड ११८४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जयकान्त मिश्रक कृति-सूचीमे मैथिली साहित्य इतिहास, लोक-साहित्य, मैथिली-प्रकरण, कीर्त्तनिञा नाटक, तिरहुता ककहारा, प्राथमिक शिक्षा आ शब्दकोश प्रमुख रूपेँ आबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक कृति-सूचीमे मैथिली साहित्य इतिहास, लोक-साहित्य, मैथिली-प्रकरण, कीर्त्तनिञा नाटक, तिरहुता ककहारा, प्राथमिक शिक्षा आ शब्दकोश प्रमुख रूपेँ आबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड अंग्रेजी आ मैथिली प्रमुख कृतिसूची पर आधारित अछि।

खण्ड ११८५ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्रक मौलिक अंग्रेजी कृति

प्रश्न 11793. जयकान्त मिश्रक जीवकोपार्जन कोन पेशासँ भेलनि?

क. अंग्रेजीक प्रोफेसरक रूपमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंग्रेजीक प्रोफेसरक रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे जीवकोपार्जन अंग्रेजीक प्रोफेसर रूपमे भेल कहल गेल।

प्रश्न 11794. ओ अंग्रेजी साहित्य मे कोन प्रवृत्तिक परिचय देलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रचनात्मक प्रवृत्ति।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रचनात्मक प्रवृत्ति।

व्याख्या: स्रोतमे ओहू साहित्य मे रचनात्मक प्रवृत्तिक परिचय देबाक बात अछि।

प्रश्न 11795. Lectures on Thomas Hardy कोन वर्ष सभमे देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. १९५५ आ १९६५।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. १९५५ आ १९६५।

व्याख्या: सूचीमे Lectures on Thomas Hardy–1955 एवं 1965 देल अछि।

प्रश्न 11796. Lectures on Four Poets क पहिल संस्करण कोन वर्ष सभसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. १९५७ आ १९६३।

उत्तर: घ. १९५७ आ १९६३।

व्याख्या: सूचीमे Lectures on Four Poets–1957 एवं 1963 देल अछि।

प्रश्न 11797. Complete style in English Poetry कोन वर्षक कृति अछि?

क. १९७७।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १९७७।

व्याख्या: सूचीमे Complete style in English Poetry–1977 देल अछि।

प्रश्न 11798. Romantic Poets सम्बन्धी Lectures on Four Poets कोन वर्षक अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. १९८७।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. १९८७।

व्याख्या: सूचीमे Romantic Poets 1987 देल अछि।

प्रश्न 11799. Victorian Poets सम्बन्धी Lectures on Four Poets कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९९२।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९९२।
व्याख्या: सूचीमे Victorian Poets 1992 देल अछि।

प्रश्न 11800. मौलिक अंग्रेजी कृतिसूची हुनक कोन पहचान देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंग्रेजी अध्यापक आ आलोचक दुनू रूप।
उत्तर: घ. अंग्रेजी अध्यापक आ आलोचक दुनू रूप।
व्याख्या: सूची हुनक अंग्रेजी साहित्यिक आलोचनात्मक कार्य देखबैत अछि।

प्रश्न 11801. अंग्रेजी कृति-सूची मैथिली-साधनाक संग कोना जुड़ैत अछि?
क. ओ द्विभाषिक वैदुष्यक प्रमाण दैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ द्विभाषिक वैदुष्यक प्रमाण दैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजी आ मैथिली दुनू भाषामे समान लेखनक बात अछि।

प्रश्न 11802. खण्ड ११८५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्र अंग्रेजीक प्रोफेसर रहि अंग्रेजी आलोचना-साहित्य मे सेहो सक्रिय रचनात्मक योगदान देलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र अंग्रेजीक प्रोफेसर रहि अंग्रेजी आलोचना-साहित्य मे सेहो सक्रिय रचनात्मक योगदान देलनि।
व्याख्या: ई खण्ड मौलिक अंग्रेजी कृतिसूची पर आधारित अछि।

खण्ड ११८६ : विदेह-सदेह २ — नेपाल-संचित सम्पादित कृति

प्रश्न 11803. नेपाल यात्रामे जयकान्त मिश्रकेँ कोन बहुमूल्य धरोहर भेटल?
क. मैथिलीक नाटकादि आ अन्य कृति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक नाटकादि आ अन्य कृति।
व्याख्या: स्रोतमे नेपाल दरबार लाइब्रेरीमे नाटकादि एवं अन्य कृति उपलब्ध भेल कहल गेल।

प्रश्न 11804. ई सामग्री कतय धूल-धूसरित भऽ रहल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नेपाल दरबार लाइब्रेरीमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नेपाल दरबार लाइब्रेरीमे।
व्याख्या: स्रोतमे नेपाल दरबार लाइब्रेरीक स्पष्ट उल्लेख अछि।

प्रश्न 11805. ओ सामग्रीकेँ कोना प्रकाशित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सयत्न आनि ऐतिहासिक भूमिका लिखि सम्पादित कऽ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सयत्न आनि ऐतिहासिक भूमिका लिखि सम्पादित कऽ।
व्याख्या: स्रोतमे तकरा सयत्न आनि भूमिका लिखि सम्पादन-प्रकाशन कहल गेल।

प्रश्न 11806. धूर्तसमागम ककर कृति रूपमे सूचीबद्ध अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ज्योतिरीश्वर।
उत्तर: घ. ज्योतिरीश्वर।
व्याख्या: सम्पादित सूचीमे धूर्तसमागम–ज्योतिरीश्वर–1960 अछि।

प्रश्न 11807. गौरी परिणय ककर कृति अछि?
क. शिवदत्त।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शिवदत्त।
व्याख्या: सूचीमे गौरी परिणय–शिवदत्त–1960 देल अछि।

प्रश्न 11808. गौरी स्वयंवरक कान्हाराम संस्करण कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९६०।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९६०।
व्याख्या: सूचीमे गौरी स्वयंवर–कान्हाराम–1960 अछि।

प्रश्न 11809. गोरक्षविजय ककर कृति रूपमे सम्पादित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विद्यापति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विद्यापति।
व्याख्या: सूचीमे गोरक्षविजय–विद्यापति–1961 देल अछि।

प्रश्न 11810. रुक्मिणी परिणय ककर कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रमापति।
उत्तर: घ. रमापति।
व्याख्या: सूचीमे रुक्मिणी परिणय–रमापति–1961 अछि।

प्रश्न 11811. सम्पादित कृतिसूची मिथिला-अध्ययनमे की देखबैत अछि?
क. पाण्डुलिपि-संरक्षण आ ऐतिहासिक संपादनक परम्परा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाण्डुलिपि-संरक्षण आ ऐतिहासिक संपादनक परम्परा।
व्याख्या: नेपालसँ प्राप्त सामग्रीक सम्पादन एहि बातक प्रमाण अछि।

प्रश्न 11812. खण्ड ११८६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्र नेपाल दरबार लाइब्रेरीसँ मैथिली नाटक-पाण्डुलिपि आनि ऐतिहासिक भूमिका सहित सम्पादित-प्रकाशित कएलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र नेपाल दरबार लाइब्रेरीसँ मैथिली नाटक-पाण्डुलिपि आनि ऐतिहासिक भूमिका सहित सम्पादित-प्रकाशित कएलनि।
व्याख्या: ई खण्ड नेपाल-संचित सम्पादित कृतिसूची पर आधारित अछि।

खण्ड ११८७ : विदेह-सदेह २ — सम्पादित कृति, सह-सम्पादन आ अनुवाद

प्रश्न 11813. कृष्ण केलिमाला ककर कृति रूपमे सूचीबद्ध अछि?
क. नन्दीपति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नन्दीपति।
व्याख्या: सूचीमे कृष्ण केलिमाला–नन्दीपति–1961 अछि।

प्रश्न 11814. श्री कृष्णजन्मरहस्य ककर कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. श्रीकान्त गणक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. श्रीकान्त गणक।
व्याख्या: सूचीमे श्री कृष्णजन्मरहस्य–श्रीकान्त गणक–1961 देल अछि।

प्रश्न 11815. गौरीस्वयंवरक लालकवि संस्करण कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९६२।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९६२।
व्याख्या: सूचीमे गौरीस्वयंवर–लालकवि–1962 देल अछि।

प्रश्न 11816. विद्या विलाप कोन शासक-संबंधी कृति रूपमे सूचीबद्ध अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मल्लशासक।
उत्तर: घ. मल्लशासक।
व्याख्या: सूचीमे विद्या विलाप–मल्लशासक–1965 अछि।

प्रश्न 11817. Encyclopadie of Indian Literature मे हुनक भूमिका कोन खण्डसँ जुड़ल अछि?
क. Maithili Section।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. Maithili Section।
व्याख्या: सूचीमे Medieval & Modern Indian Literature- Maithili Section देल अछि।

प्रश्न 11818. आधुनिक गद्यक निर्माता कोन व्यक्ति पर कृति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्र।
व्याख्या: सूचीमे आधुनिक गद्यक निर्माता महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्र–2006 अछि।

प्रश्न 11819. सह सम्पादनमे कोन कृति देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कीर्तिपताका–विद्यापति–1960।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कीर्तिपताका–विद्यापति–1960।
व्याख्या: स्रोतमे सह सम्पादन अन्तर्गत ई कृति देल अछि।

प्रश्न 11820. जयकान्त मिश्रक अनुवाद ककर मोनोग्राफसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उमेश मिश्रक।
उत्तर: घ. उमेश मिश्रक।
व्याख्या: गोविन्द झा लिखित उमेश मिश्र मोनोग्राफक अंग्रेजी अनुवादक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11821. ई अनुवाद कोन संस्थाक भारतक साहित्य निर्माता सिरीजसँ जुड़ल अछि?
क. साहित्य अकादेमी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्य अकादेमी।
व्याख्या: स्रोतमे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित भारतक साहित्य निर्माता सिरीज कहल गेल।

प्रश्न 11822. खण्ड ११८७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक सम्पादन, सह-सम्पादन आ अनुवाद मैथिली धरोहरकेँ आधुनिक शोध-पाठक धरि पहुँचबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक सम्पादन, सह-सम्पादन आ अनुवाद मैथिली धरोहरकेँ आधुनिक शोध-पाठक धरि पहुँचबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड सम्पादित कृति, सह-सम्पादन आ अनुवाद पर आधारित अछि।

खण्ड ११८८ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्रक निबन्ध-सूची: आरम्भिक दशक

प्रश्न 11823. हुनक मैथिली निबन्ध कोन पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित होइत रहल?

क. मैथिली पत्रकादिमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली पत्रकादिमे।

व्याख्या: स्रोतमे हिनक निबंध मैथिली पत्रकादिमे प्रकाशित होइत रहल कहल गेल।

प्रश्न 11824. प्रोफेसर गंगापति सिंहक सुशीला उपन्यासक समीक्षा कतय प्रकाशित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिला मिहिरमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिला मिहिरमे।

व्याख्या: सूचीमे मिथिला मिहिर–1943 देल अछि।

प्रश्न 11825. मिथिलाक जन साहित्य कोन पत्र/अंकसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. चौपाड़ि मधुमास–2011।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. चौपाड़ि मधुमास–2011।

व्याख्या: सूचीमे ई रूपे देल अछि।

प्रश्न 11826. मिथिलाक इतिहास सम्बन्धी किछु समस्या कोन सम्मेलन-संग्रहसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रथम अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन, रचना संग्रह प्रथम भाग।

उत्तर: घ. प्रथम अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन, रचना संग्रह प्रथम भाग।

व्याख्या: सूचीमे एहि शीर्षकक संदर्भ अछि।

प्रश्न 11827. प्रथम अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनमे ओ कोन विभागक अध्यक्षीय भाषण देलनि?

क. नाटक विभाग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक विभाग।

व्याख्या: सूचीमे नाटक विभागक अध्यक्षीय भाषण–1956 अछि।

प्रश्न 11828. आधुनिक मैथिली साहित्य पर अंग्रेजीक प्रभाव कतय प्रकाशित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. वैदेही नवम्बर–दिसम्बर 1957।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. वैदेही नवम्बर–दिसम्बर 1957।

व्याख्या: सूचीमे एहि पत्र आ समयक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11829. हमर नेपाल यात्रा कतय प्रकाशित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वैदेही जनवरी 1958।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वैदेही जनवरी 1958।

व्याख्या: सूचीमे हमर नेपाल यात्रा, वैदेही जनवरी–1958 अछि।

प्रश्न 11830. पूर्वांचलीय भाषा, साहित्य एवं संस्कृतिक पारस्परिक प्रभाव कोन संगोष्ठीसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चेतना समिति संगोष्ठी–1972।

उत्तर: घ. चेतना समिति संगोष्ठी–1972।

व्याख्या: सूचीमे एहि वर्षसहित देल अछि।

प्रश्न 11831. आधुनिक मिथिलामे कीर्त्तनक चेतना कोन वर्षक चेतना समिति संगोष्ठीमे आयल?

क. १९७३।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १९७३।

व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–1973 अछि।

प्रश्न 11832. खण्ड ११८८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जयकान्त मिश्रक आरम्भिक निबन्ध-सूची उपन्यास-समीक्षा, इतिहास, नाटक, अंग्रेजी-प्रभाव, नेपाल-यात्रा आ पूर्वांचलीय सांस्कृतिक विमर्श धरि फैलल अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक आरम्भिक निबन्ध-सूची उपन्यास-समीक्षा, इतिहास, नाटक, अंग्रेजी-प्रभाव, नेपाल-यात्रा आ पूर्वांचलीय सांस्कृतिक विमर्श धरि फैलल अछि।

व्याख्या: ई खण्ड निबन्ध-सूची १ सँ ८/९ धरि पर आधारित अछि।

खण्ड ११८९ : विदेह-सदेह २ — निबन्ध-सूची: भाषा, संस्कृति आ आन्दोलन

प्रश्न 11833. परम्पराक परित्याग: साहित्यक अस्तित्वक प्रश्न कोन वर्षसँ जुड़ल अछि?

क. १९७४।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १९७४।

व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–1974 देल अछि।

प्रश्न 11834. मैथिली नाटक ओ रंगमंच: वर्तमान स्थिति एवं भविष्य कोन वर्षक विषय अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. १९७७।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. १९७७।

व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–1977 देल अछि।

प्रश्न 11835. भारतीय संविधान: मैथिलीक समस्या कतय प्रकाशित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चेतना समिति स्मारिका–1977।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चेतना समिति स्मारिका–1977।
व्याख्या: सूचीमे ई जानकारी अछि।

प्रश्न 11836. जीवित जातिक जीवित भाषा कतय आ कखन प्रकाशित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिला मिहिर, 11 जून 1978।
उत्तर: घ. मिथिला मिहिर, 11 जून 1978।
व्याख्या: सूचीमे मिथिला मिहिर 11 जून–1978 देल अछि।

प्रश्न 11837. संगीत शास्त्र ओ पूर्वाञ्चलीय गीति काव्य कोन वर्षक संगोष्ठी-विषय अछि?
क. १९७९।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १९७९।
व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–1979 अछि।

प्रश्न 11838. साहित्य ओ प्रतिबद्धता कोन वर्षक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९८०।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९८०।
व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–1980 अछि।

प्रश्न 11839. साहित्य मे परिवर्तनक स्वर कोन वर्षसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९८४।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९८४।
व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–1984 देल अछि।

प्रश्न 11840. राष्ट्रीय ओ आञ्चलिक संस्कृतिक विकास कोन वर्षक विषय अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९८६।
उत्तर: घ. १९८६।
व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–1986 अछि।

प्रश्न 11841. मैथिली आन्दोलन: अद्यतन स्थिति कोन वर्षक अछि?

क. १९८९।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १९८९।

व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–1989 देल अछि।

प्रश्न 11842. खण्ड ११८९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जयकान्त मिश्रक निबन्ध भाषा, संविधान, रंगमंच, संस्कृति, प्रतिबद्धता, समालोचना आ मैथिली आन्दोलनक लगातार बौद्धिक रेखा बनबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक निबन्ध भाषा, संविधान, रंगमंच, संस्कृति, प्रतिबद्धता, समालोचना आ मैथिली आन्दोलनक लगातार बौद्धिक रेखा बनबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड निबन्ध-सूचीक मध्य आ उत्तर भाग पर आधारित अछि।

खण्ड ११९० : विदेह-सदेह २ — निबन्ध-सूची: उत्तरवर्ती लेख आ समग्र साधना

प्रश्न 11843. साहित्यिक समालोचना: सन्दर्भ इतिहास लेखनक कोन वर्षक संगोष्ठी-विषय अछि?

क. १९८७।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १९८७।

व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–1987 देल अछि।

प्रश्न 11844. विद्यापति पर्व कोना करी कतय प्रकाशित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चेतना समिति स्मारिका–1987।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चेतना समिति स्मारिका–1987।

व्याख्या: सूचीमे एहि रूपे देल अछि।

प्रश्न 11845. महाकाव्यमे युगीन संकेत कोन वर्षक विषय अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. १९८८।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. १९८८।

व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–1988 अछि।

प्रश्न 11846. यात्रीक मूल्यांकन कविक रुपमे करबाक थिक कोन वर्षसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. २०००।

उत्तर: घ. २०००।

व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी 2000 देल अछि।

प्रश्न 11847. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज कोन वर्षक संगोष्ठी-विषय अछि?

क. २००३।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २००३।

व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति संगोष्ठी–2003 अछि।

प्रश्न 11848. समग्र कृतिक अवलोकनसँ जयकान्त मिश्रक की परिचय भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य-साधनाक यथार्थ परिचय।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य-साधनाक यथार्थ परिचय।

व्याख्या: स्रोतमे समग्र कृतिक अवलोकनसँ ई परिचय भेटैत अछि कहल गेल।

प्रश्न 11849. ओ मातृभाषाक विकासार्थ कोना रहलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सतत कार्यरत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सतत कार्यरत।

व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषाक विकासार्थ सतत कार्यरत रहलाह कहल गेल।

प्रश्न 11850. ओ परवर्ती पीढ़ीक लेल की छोड़ि गेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अक्षय कृति।

उत्तर: घ. अक्षय कृति।

व्याख्या: स्रोतमे अक्षय कृति परवर्ती पीढ़ीक छोड़ि गेलाह कहल गेल।

प्रश्न 11851. हुनक वैदुष्य वर्तमान पीढ़ीक लेल की बनल?

क. पाथेय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाथेय।

व्याख्या: स्रोतमे अद्वितीय वैदुष्यक आदर्श वर्तमान पीढ़ीक लेल पाथेय बनल कहल गेल।

प्रश्न 11852. खण्ड ११९०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जयकान्त मिश्रक उत्तरवर्ती लेखन आ समग्र कृति मातृभाषा-विकासक सतत साधना आ नव जीवनक संभावना देखबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक उत्तरवर्ती लेखन आ समग्र कृति मातृभाषा-विकासक सतत साधना आ नव जीवनक संभावना देखबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड उत्तरवर्ती निबन्ध आ समग्र साहित्य-साधना पर आधारित अछि।

खण्ड ११९१ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्रक सम्मान: मूल परिप्रेक्ष्य

प्रश्न 11853. सम्मान खण्डमे जयकान्त मिश्रकेँ कोन पुरुष कहल गेल?

क. मातृभाषानुरागी एवं साहित्यानुरागी कीर्ति पुरुष।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभाषानुरागी एवं साहित्यानुरागी कीर्ति पुरुष।

व्याख्या: स्रोतमे ई पदप्रयोग अछि।

प्रश्न 11854. हुनक योगदान ककर सम्मानार्थ बताओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीक सम्मानार्थ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीक सम्मानार्थ।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक सम्मानार्थ योगदानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11855. भारतक नेशनल एकेडेमी ऑफ लेटर्सक संग कोन-कोन संस्थादि हिनका सम्मानित कएलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विभिन्न मातृभाषा सेवी संस्थादि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विभिन्न मातृभाषा सेवी संस्थादि।

व्याख्या: स्रोतमे राष्ट्रीय अकादेमी आ मातृभाषा-सेवी संस्थादिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11856. सम्मानक आधार की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभाषा आ साहित्यक सेवा।

उत्तर: घ. मातृभाषा आ साहित्यक सेवा।

व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषा, साहित्य आ मैथिलीक सम्मानार्थ योगदान प्रमुख आधार अछि।

प्रश्न 11857. हिनका सम्मानित कएल गेलाक भाव स्रोतमे कोना अछि?

क. गौरवान्वित कएल गेलन्हि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गौरवान्वित कएल गेलन्हि।

व्याख्या: स्रोतमे समए-समएपर सम्मानित गौरवान्वित कएल गेलन्हि कहल गेल।

प्रश्न 11858. नेशनल एकेडेमी ऑफ लेटर्स शब्द ककर संकेत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य अकादेमी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य अकादेमी।

व्याख्या: बादक सूचीमे नेशनल एकेडेमी ऑफ लेटर्स अर्थात् साहित्य अकादेमी कहल गेल।

प्रश्न 11859. सम्मान-सूची जयकान्त मिश्रक कोन पक्ष उजागर करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समाज-मान्य मातृभाषा-सेवक रूप।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समाज-मान्य मातृभाषा-सेवक रूप।
व्याख्या: भाषा-साहित्य सेवा पर संस्थागत सम्मान मिलल।

प्रश्न 11860. सम्मानक प्रसंगमे “अनुप्राणित” शब्द कोन बात सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हुनक योगदानसँ प्रेरित संस्था-समाज।
उत्तर: घ. हुनक योगदानसँ प्रेरित संस्था-समाज।
व्याख्या: स्रोतमे योगदानसँ अनुप्राणित भऽ सम्मानित करबाक बात अछि।

प्रश्न 11861. सम्मान-प्रसंगक मूल भाव की अछि?
क. सेवा सँ सम्मानक प्राप्ति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सेवा सँ सम्मानक प्राप्ति।
व्याख्या: मातृभाषा-साहित्य सेवा सम्मानक आधार बनल।

प्रश्न 11862. खण्ड ११९१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक मातृभाषा-साहित्य सेवा राष्ट्रीय आ मातृभाषा-सेवी संस्थाद्वारा बारम्बार सम्मानित भेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक मातृभाषा-साहित्य सेवा राष्ट्रीय आ मातृभाषा-सेवी संस्थाद्वारा बारम्बार सम्मानित भेल।
व्याख्या: ई खण्ड सम्मानक सामान्य परिप्रेक्ष्य पर आधारित अछि।

खण्ड ११९२ : विदेह-सदेह २ — आरम्भिक सम्मान आ मिथिला विभूति

प्रश्न 11863. मिथिला मण्डल मुम्बई हिनका कोन अवसरपर सम्मानित कएलक?
क. अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलनक अवसरपर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलनक अवसरपर।
व्याख्या: सूचीमे 31 दिसम्बर 1969 मे मिथिला मण्डल मुम्बईक सम्मानपत्रक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11864. मुम्बईक सम्मानपत्र कखन देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. 31 दिसम्बर 1969।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. 31 दिसम्बर 1969।
व्याख्या: सम्मान-सूचीमे ई तिथि अछि।

प्रश्न 11865. चेतना समिति पटना कोन वर्षमे सम्मानित कएलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९९०।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९९०।
व्याख्या: सूचीमे चेतना समिति 1990मे सम्मानित कएलक कहल गेल।

प्रश्न 11866. चेतना समिति कोन सम्मान देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिला विभूति ताम्रपत्र।
उत्तर: घ. मिथिला विभूति ताम्रपत्र।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिला विभूति ताम्रपत्रसँ सम्मानित कएलक कहल गेल।

प्रश्न 11867. चेतना समितिक सम्मानक कारण की छल?
क. मातृभाषाक अतुलित सेवा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषाक अतुलित सेवा।
व्याख्या: सूचीमे मातृभाषाक अतुलित सेवाक कारणेँ कहल गेल।

प्रश्न 11868. मिथिला सांस्कृतिक संगम प्रयाग कखन सम्मानपत्र समर्पित कएलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९९५ ई.।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९९५ ई.।
व्याख्या: सम्मान-सूचीमे प्रयाग–1995 ई. अछि।

प्रश्न 11869. प्रयागक सम्मान ककर आधारपर देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साहित्यिक, रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक कार्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साहित्यिक, रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक कार्य।
व्याख्या: स्रोतमे एहि कार्यसँ अनुप्राणित भऽ सम्मानपत्र देबाक बात अछि।

प्रश्न 11870. धनबाद स्थित विद्यापति समिति कखन सम्मानपत्र देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९९९ ई.।
उत्तर: घ. १९९९ ई.।
व्याख्या: सूचीमे विगत शताब्दीक अवसान बेलामे 1999 ई. कहल गेल।

प्रश्न 11871. विद्यापति समितिक सम्मानक आधार की छल?
क. मातृभाषाक उत्थानार्थ कार्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषाक उत्थानार्थ कार्य।
व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषाक उत्थानार्थ कार्यसँ अनुप्राणित भऽ सम्मानपत्र देबाक बात अछि।

प्रश्न 11872. खण्ड ११९२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मुम्बई, पटना, प्रयाग आ धनबादक संस्थासभ जयकान्त मिश्रक मातृभाषा-सेवा, आन्दोलन आ उत्थान-कार्यक सम्मान कएलक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मुम्बई, पटना, प्रयाग आ धनबादक संस्थासभ जयकान्त मिश्रक मातृभाषा-सेवा, आन्दोलन आ उत्थान-कार्यक सम्मान कएलक।
व्याख्या: ई खण्ड आरम्भिक/क्षेत्रीय सम्मान-सूची पर आधारित अछि।

खण्ड ११९३ : विदेह-सदेह २ — साहित्य अकादेमी आ उत्तरवर्ती सम्मान

प्रश्न 11873. साहित्य अकादेमी नई दिल्ली कखन भाषा सम्मान देलक?
क. २००० ई.।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. २००० ई.।
व्याख्या: सूचीमे विगत शताब्दीक अन्तिम वर्ष अर्थात् 2000 ई.मे भाषा सम्मान देल गेल।

प्रश्न 11874. साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान कोन विशेषज्ञता लेल देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कालजयी मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विशेषज्ञ रूपमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कालजयी मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विशेषज्ञ रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे एहि रूपमे विभूषित कएलक कहल गेल।

प्रश्न 11875. मीट द ऑथर कार्यक्रम कखन आयोजित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. 28 मई 2000।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. 28 मई 2000।
व्याख्या: सूचीमे 28 मई 2000 तिथि अछि।

प्रश्न 11876. मीट द ऑथर कार्यक्रमक संयुक्त तत्वावधानमे कोन संस्था सभ छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. साहित्य अकादेमी नई दिल्ली आ मिथिला सांस्कृतिक संगम प्रयाग।
उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी नई दिल्ली आ मिथिला सांस्कृतिक संगम प्रयाग।
व्याख्या: स्रोतमे संयुक्त तत्वावधानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11877. कोलकाताक कोन संस्था 2006 मे अभिनन्दन कएलक?

क. मिथिला सांस्कृतिक परिषद कोलकाता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला सांस्कृतिक परिषद कोलकाता।

व्याख्या: सूचीमे बंगभूमिक जगता ज्योति संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद कोलकाता 2006 मे अभिनन्दन कएलक।

प्रश्न 11878. कोलकाताक संस्थाकेँ स्रोतमे कोन विशेषण देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बंगभूमिक जगता ज्योति संस्था।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बंगभूमिक जगता ज्योति संस्था।

व्याख्या: स्रोतमे ई पदप्रयोग अछि।

प्रश्न 11879. भाषा सम्मान जयकान्त मिश्रक कोन राष्ट्रीय स्वीकृति देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मध्यकालीन मैथिली साहित्य विशेषज्ञक मान्यता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मध्यकालीन मैथिली साहित्य विशेषज्ञक मान्यता।

व्याख्या: भाषा सम्मानक कारणमे ई विशेषज्ञता कहल गेल।

प्रश्न 11880. मीट द ऑथर आयोजन हुनक कोन महत्त्व देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखक-व्यक्तित्वक सार्वजनिक स्वीकार्यता।

उत्तर: घ. लेखक-व्यक्तित्वक सार्वजनिक स्वीकार्यता।

व्याख्या: साहित्य अकादेमी आ प्रयागक संयुक्त आयोजन एहि स्वीकार्यताक संकेत अछि।

प्रश्न 11881. उत्तरवर्ती सम्मान-सूची मे 2000 आ 2006क स्थान की अछि?

क. राष्ट्रीय आ प्रवासी मैथिल सांस्कृतिक मान्यता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राष्ट्रीय आ प्रवासी मैथिल सांस्कृतिक मान्यता।

व्याख्या: अकादेमी आ कोलकाता परिषदक सम्मान एहि स्तरक अछि।

प्रश्न 11882. खण्ड ११९३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य अकादेमीक भाषा सम्मान, मीट द ऑथर आ कोलकाता अभिनन्दन जयकान्त मिश्रक राष्ट्रीय-प्रवासी प्रतिष्ठा प्रमाणित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य अकादेमीक भाषा सम्मान, मीट द ऑथर आ कोलकाता अभिनन्दन जयकान्त मिश्रक राष्ट्रीय-प्रवासी प्रतिष्ठा प्रमाणित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड उत्तरवर्ती सम्मान-सूची पर आधारित अछि।

खण्ड ११९४ : विदेह-सदेह २ — प्रयाग आ मैथिली संस्थान-निर्माण

प्रश्न 11883. स्रोतमे प्रयागकेँ कोन कालसँ मैथिलीक कार्यस्थल कहल गेल?

क. अति प्राचीन कालहिसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अति प्राचीन कालहिसँ।

व्याख्या: स्रोतमे प्रयाग अति प्राचीन कालहिसँ मैथिल मातृभाषानुरागीक कार्य स्थल रहल अछि।

प्रश्न 11884. प्रयाग मैथिलीक कार्यस्थल रहलाक पहिल कारण की बताओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गंगा-यमुना आ विलुप्त सरस्वतीक संगम।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गंगा-यमुना आ विलुप्त सरस्वतीक संगम।

व्याख्या: स्रोतमे धर्मावलंबी मैथिल समाजक कारणेँ संगमक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11885. दोसर कारण की बताओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विद्याक केन्द्र हैबाक कारणेँ विद्यानुरागी लोकनिक जमावड़ा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विद्याक केन्द्र हैबाक कारणेँ विद्यानुरागी लोकनिक जमावड़ा।

व्याख्या: स्रोतमे एतए विद्याक केन्द्र होएबाक कारण कहल गेल।

प्रश्न 11886. स्वाधीनतासँ पूर्व प्रयागक मातृभाषानुरागी रूपमे के उल्लेखित छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जयकान्त मिश्र।

उत्तर: घ. जयकान्त मिश्र।

व्याख्या: स्रोतमे स्वाधीनतासँ पूर्व प्रयागक मातृभाषानुरागी जयकान्त मिश्र कहल गेल।

प्रश्न 11887. ओ मैथिलीक विकासार्थ कतेक संस्था स्थापित कएलनि?

क. दू संस्था।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू संस्था।

व्याख्या: स्रोतमे दू संस्थाक स्थापना कहल गेल।

प्रश्न 11888. ओहि दू संस्थामे पहिल संस्था कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स।

व्याख्या: स्रोतमे तीरभुक्ति पब्लिकेशन्सक नाम अछि।

प्रश्न 11889. दोसर संस्था कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति।

व्याख्या: स्रोतमे ई नाम देल अछि।

प्रश्न 11890. दूनू संस्था कोन वर्षमे स्थापित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. १९४४ ई.।

उत्तर: घ. १९४४ ई.।

व्याख्या: स्रोतमे सन् 1944 ई मे कहल गेल।

प्रश्न 11891. संस्था-संस्थापक रूपमे जयकान्त मिश्रक कार्य की देखबैत अछि?

क. भाषा-साधनाक संगठनात्मक रूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा-साधनाक संगठनात्मक रूप।

व्याख्या: संस्था-स्थापना मैथिलीक विकासार्थ भेल।

प्रश्न 11892. खण्ड ११९४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रयागक सांस्कृतिक-शैक्षिक वातावरणमे जयकान्त मिश्र 1944 मे तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स आ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति स्थापित कएलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रयागक सांस्कृतिक-शैक्षिक वातावरणमे जयकान्त मिश्र 1944 मे तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स आ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति स्थापित कएलनि।

व्याख्या: ई खण्ड प्रयाग आ संस्था-निर्माण पर आधारित अछि।

खण्ड ११९५ : विदेह-सदेह २ — संस्था, प्रकाशन आ मैथिली समाचार

प्रश्न 11893. जयकान्त मिश्र स्थापित संस्थासभक वर्तमान परिदृश्य कोना कहल गेल?

क. ऐतिहासिक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऐतिहासिक।

व्याख्या: स्रोतमे जकर वर्तमान परिदृश्य ऐतिहासिक भऽ गेल अछि कहल गेल।

प्रश्न 11894. ई संस्था तत्कालीन साहित्यकार लोकनिमे की अनलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जनजागरण।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जनजागरण।

व्याख्या: स्रोतमे जनजागरण अनलक कहल गेल।

प्रश्न 11895. एहि संस्थासभ द्वारा ककर पुस्तकक प्रकाशन भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कतिपय समकालीन साहित्यकार लोकनिक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कतिपय समकालीन साहित्यकार लोकनिक।

व्याख्या: स्रोतमे समकालीन साहित्यकार लोकनिक पुस्तकक प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11896. एहि प्रकाशनक महत्त्व कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ऐतिहासिक महत्व।

उत्तर: घ. ऐतिहासिक महत्व।

व्याख्या: स्रोतमे जकर ऐतिहासिक महत्व अछि कहल गेल।

प्रश्न 11897. संस्था द्वारा प्रकाशित अनियतकालीन पत्रिका कोन अछि?

क. मैथिली समाचार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली समाचार।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली समाचार एक अनियतकालीन पत्रिका कहल गेल।

प्रश्न 11898. मैथिली समाचार पाठककेँ ककर सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नव प्रकाशन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नव प्रकाशन।

व्याख्या: स्रोतमे मात्र सूचनात्मक समाचारक अतिरिक्त नव प्रकाशनसँ पाठककेँ अवगत करबैछ कहल गेल।

प्रश्न 11899. वर्तमान परिदृश्यमे मैथिली समाचार कोन विषय समर्थनमे समाचार प्रकाशित करैत आबि रहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्वतन्त्र मिथिला राज्य।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्वतन्त्र मिथिला राज्य।

व्याख्या: स्रोतमे स्वतन्त्र मिथिला राज्यक समर्थनमे समाचार आ प्रयास प्रकाशित करैत आबि रहल अछि।

प्रश्न 11900. मैथिली समाचार कतेक दशकसँ प्रकाशित करैत आबि रहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विगत दुइ दशकसँ।

उत्तर: घ. विगत दुइ दशकसँ।

व्याख्या: स्रोतमे विगत दुइ दशकसँ प्रकाशित करैत आबि रहल अछि।

प्रश्न 11901. एकर सम्पादन के करथि?
क. जयकान्त मिश्र स्वयं।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जयकान्त मिश्र स्वयं।
व्याख्या: स्रोतमे एकर सम्पादन ओ स्वयं करथि कहल गेल।

प्रश्न 11902. खण्ड ११९५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक संस्थासभ प्रकाशन, जनजागरण आ मैथिली समाचारक माध्यमे भाषिक-सांस्कृतिक चेतना सक्रिय कएलक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक संस्थासभ प्रकाशन, जनजागरण आ मैथिली समाचारक माध्यमे भाषिक-सांस्कृतिक चेतना सक्रिय कएलक।
व्याख्या: ई खण्ड संस्थागत प्रकाशन आ पत्रिका पर आधारित अछि।

खण्ड ११९६ : विदेह-सदेह २ — पी.ई.एन. मे मैथिली

प्रश्न 11903. पी.ई.एन. संस्थाक पूर्ण आशय स्रोतमे कोना देल गेल?
क. Poets, Essayist and Novelist।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. Poets, Essayist and Novelist।
व्याख्या: स्रोतमे संक्षेपमे पी.ई.एन. कहल जाएबासँ पहिने ई नाम देल अछि।

प्रश्न 11904. पी.ई.एन. संस्थापक ककरा कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सोफिया वाडिया।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सोफिया वाडिया।
व्याख्या: स्रोतमे अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था सोफिया वाडिया द्वारा संस्थापित कहल गेल।

प्रश्न 11905. जयकान्त मिश्र पी.ई.एन. मे कोन रूपमे रहलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सक्रिय सदस्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सक्रिय सदस्य।
व्याख्या: स्रोतमे उक्त संस्थाक ई सक्रिय सदस्य भऽ कहल गेल।

प्रश्न 11906. ओ पी.ई.एन. मार्फत ककर ध्यान मैथिली दिस आकर्षित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भारतीय भाषा-साहित्यानुरागी लोकनिक।
उत्तर: घ. भारतीय भाषा-साहित्यानुरागी लोकनिक।
व्याख्या: स्रोतमे भारतीय भाषा साहित्यानुरागी लोकनिक ध्यान मैथिली दिस आकर्षित कएलनि।

प्रश्न 11907. ओ मैथिली भाषा आ साहित्यक की कएलनि?

क. पुनराख्यान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुनराख्यान।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली भाषा आ साहित्यक पुनराख्यान कएने कहल गेल।

प्रश्न 11908. पी.ई.एन. प्रसंगमे मैथिलीकेँ कोन रूपमे मान्यता दिऔलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भारतक प्राचीनतम भाषाक रूपमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भारतक प्राचीनतम भाषाक रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे एहि संस्थाद्वारा मैथिलीकेँ भारतक प्राचीनतम भाषाक रूपमे मान्यता दिऔलनि कहल गेल।

प्रश्न 11909. पी.ई.एन. मान्यताक बाद की सहायता भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अग्रिम योजनाकेँ क्रियान्वित करबामे अभूतपूर्व सहायता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अग्रिम योजनाकेँ क्रियान्वित करबामे अभूतपूर्व सहायता।

व्याख्या: स्रोतमे मान्यता भेटलाक पश्चात् ई सहायता कहल गेल।

प्रश्न 11910. पी.ई.एन.मे पढ़ल भाषणादि कतय प्रकाशित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कार्य-विवरणीमे।

उत्तर: घ. कार्य-विवरणीमे।

व्याख्या: स्रोतमे अधिवेशनमे पठित भाषणादि ओकर कार्य विवरिणीमे प्रकाशित अछि।

प्रश्न 11911. पी.ई.एन. गतिविधि जयकान्त मिश्रक कोन रणनीति देखबैत अछि?

क. अन्तर्राष्ट्रीय/भारतीय साहित्यिक मंचपर मैथिली प्रतिष्ठा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तर्राष्ट्रीय/भारतीय साहित्यिक मंचपर मैथिली प्रतिष्ठा।

व्याख्या: पी.ई.एन. मार्फत मैथिलीक ध्यान आकर्षित कराओल गेल।

प्रश्न 11912. खण्ड ११९६क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जयकान्त मिश्र पी.ई.एन. मे सक्रिय रहि मैथिलीकेँ भारतीय भाषा-साहित्य जगतमे प्राचीनतम भाषा रूपे प्रतिष्ठित करौलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र पी.ई.एन. मे सक्रिय रहि मैथिलीकेँ भारतीय भाषा-साहित्य जगतमे प्राचीनतम भाषा रूपे प्रतिष्ठित करौलनि।

व्याख्या: ई खण्ड पी.ई.एन. मे मैथिली पर आधारित अछि।

खण्ड ११९७ : विदेह-सदेह २ — पी.ई.एन. अधिवेशन आ भाषिक मान्यता

प्रश्न 11913. जयकान्त मिश्र पी.ई.एन.क कोन अधिवेशनमे 1957 मे सहभागी भेलाह?

क. बड़ौदा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बड़ौदा।

व्याख्या: स्रोतमे बड़ौदा (1957) देल अछि।

प्रश्न 11914. 1959 मे ओ कतयक अधिवेशनमे सहभागी भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भुवनेश्वर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भुवनेश्वर।

व्याख्या: स्रोतमे भुवनेश्वर (1959) अछि।

प्रश्न 11915. 1964 मे ओ कतय सम्मिलित भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लखनऊ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लखनऊ।

व्याख्या: स्रोतमे लखनऊ (1964) अछि।

प्रश्न 11916. एहि अधिवेशनसभमे सहभागी भऽ ओ ककर पुनराख्यान कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषा आ साहित्यक।

उत्तर: घ. मैथिली भाषा आ साहित्यक।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली भाषा आ साहित्यक पुनराख्यान कएलनि कहल गेल।

प्रश्न 11917. पी.ई.एन. द्वारा मान्यता भेटब मैथिली आन्दोलन लेल किएक उपयोगी छल?

क. अग्रिम योजनाकेँ क्रियान्वित करबामे सहायता भेटल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अग्रिम योजनाकेँ क्रियान्वित करबामे सहायता भेटल।

व्याख्या: स्रोतमे अभूतपूर्व सहायता भेटल कहल गेल।

प्रश्न 11918. अधिवेशनमे पठित भाषणादि ककर दस्तावेज बनल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संस्थाक कार्य-विवरणी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संस्थाक कार्य-विवरणी।

व्याख्या: स्रोतमे ओकर कार्य विवरिणीमे प्रकाशित अछि।

प्रश्न 11919. बड़ौदा, भुवनेश्वर आ लखनऊक क्रम की देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लगातार मंचीय सक्रियता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लगातार मंचीय सक्रियता।

व्याख्या: तीन अधिवेशनमे सम्मिलित भऽ मैथिली प्रस्तुत कएल गेल।

प्रश्न 11920. पी.ई.एन. प्रसंगमे जयकान्त मिश्रक लक्ष्य की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषा-साहित्यक ध्यान आकर्षण आ मान्यता।

उत्तर: घ. मैथिली भाषा-साहित्यक ध्यान आकर्षण आ मान्यता।

व्याख्या: स्रोतमे ध्यान आकर्षित करब आ मान्यता दिऔनाइ कहल गेल।

प्रश्न 11921. पी.ई.एन. गतिविधि मैथिलीक कोन रूप स्थापित करैत अछि?

क. प्राचीन आ साहित्यसम्पन्न भाषा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्राचीन आ साहित्यसम्पन्न भाषा।

व्याख्या: मान्यता प्राचीनतम भाषाक रूपमे भेटल।

प्रश्न 11922. खण्ड ११९७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. 1957, 1959 आ 1964क पी.ई.एन. अधिवेशनसभमे जयकान्त मिश्र मैथिली भाषा-साहित्यक पुनराख्यान कऽ भाषिक मान्यताक मार्ग मजबूत कएलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. 1957, 1959 आ 1964क पी.ई.एन. अधिवेशनसभमे जयकान्त मिश्र मैथिली भाषा-साहित्यक पुनराख्यान कऽ भाषिक मान्यताक मार्ग मजबूत कएलनि।

व्याख्या: ई खण्ड पी.ई.एन. अधिवेशनक्रम पर आधारित अछि।

खण्ड ११९८ : विदेह-सदेह २ — पुस्तक प्रदर्शनीक प्रेरणा

प्रश्न 11923. बिहारक तत्कालीन राज्यपालक नाम स्रोतमे की अछि?

क. डा. रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डा. रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर।

व्याख्या: स्रोतमे बिहारक तत्कालीन राज्यपाल डा. रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर कहल गेल।

प्रश्न 11924. डा. दिवाकर कोन मंचपर भाषण देलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ऑल इण्डिया पर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ऑल इण्डिया पर।

व्याख्या: स्रोतमे “आँल इण्डिया पर एक भाषण” देलनि कहल गेल।

प्रश्न 11925. ओ मैथिलीकेँ कोन प्रकारक भाषा कहलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ज्ञान ग्रन्थस्थ प्राचीन भाषा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ज्ञान ग्रन्थस्थ प्राचीन भाषा।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली ज्ञान ग्रन्थस्थ प्राचीन भाषा थिक कहल गेल।

प्रश्न 11926. मैथिलीक विकासमे एहि उद्गारक भूमिका कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अति महत्वपूर्ण।
उत्तर: घ. अति महत्वपूर्ण।
व्याख्या: स्रोतमे एकर विकासमे अति महत्वपूर्ण भूमिका कहल गेल।

प्रश्न 11927. जयकान्त मिश्र ई व्याख्यान सुनि कोना भेलाह?
क. अत्यधिक उत्साहित।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अत्यधिक उत्साहित।
व्याख्या: स्रोतमे ओ अत्यधिक उत्साहित भऽ काज प्रारम्भ कएलनि।

प्रश्न 11928. पुस्तक प्रदर्शनी प्रसंग स्रोतमे कोन व्यापक अर्थमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीक भविष्यक दिशा-निर्देश।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीक भविष्यक दिशा-निर्देश।
व्याख्या: स्रोतमे ई ऐतिहासिक परिदृश्य मैथिलीक भविष्यक दिशा-निर्देश करैछ कहल गेल।

प्रश्न 11929. दिवाकरक उद्गार जयकान्त मिश्र लेल की बनल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. काज तेज करबाक प्रेरणा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. काज तेज करबाक प्रेरणा।
व्याख्या: स्रोतमे व्याख्यान सुनि जोर-सोरसँ काज प्रारम्भ कएलनि।

प्रश्न 11930. एहि प्रसंगमे मैथिलीकेँ ककर आधारपर प्रस्तुत कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ज्ञान-ग्रन्थ आ प्राचीनता।
उत्तर: घ. ज्ञान-ग्रन्थ आ प्राचीनता।
व्याख्या: दिवाकरक भाषणमे मैथिली ज्ञान ग्रन्थस्थ प्राचीन भाषा कहल गेल।

प्रश्न 11931. पुस्तक प्रदर्शनीक आरम्भिक मानसिक आधार की छल?
क. मैथिलीक प्राचीन गौरवक सार्वजनिक प्रदर्शन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक प्राचीन गौरवक सार्वजनिक प्रदर्शन।
व्याख्या: दिवाकरक भाषण आ जयकान्त मिश्रक उत्साह एहि दिशा दिस अछि।

प्रश्न 11932. खण्ड ११९८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. डा. रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकरक मैथिली-समर्थक उद्गार जयकान्त मिश्रकेँ पुस्तक प्रदर्शनी आ मान्यता-कार्य तेज करबाक प्रेरणा देलक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. डा. रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकरक मैथिली-समर्थक उद्गार जयकान्त मिश्रकेँ पुस्तक प्रदर्शनी आ मान्यता-कार्य तेज करबाक प्रेरणा देलक।
व्याख्या: ई खण्ड पुस्तक प्रदर्शनीक प्रेरक प्रसंग पर आधारित अछि।

खण्ड ११९९ : विदेह-सदेह २ — नेहरू भेट आ मैथिली पुस्तक-उपहार

प्रश्न 11933. इलाहाबाद विश्वविद्यालयकेँ स्रोतमे कोन शिक्षाक हृदयस्थल कहल गेल?
क. प्राच्य एवं प्रतीच्य उच्च शिक्षाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्राच्य एवं प्रतीच्य उच्च शिक्षाक।
व्याख्या: स्रोतमे इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्राच्य एवं प्रतीच्य उच्च शिक्षाक हृदय स्थल कहल गेल।

प्रश्न 11934. जयकान्त मिश्रक कर्मभूमि कतय रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे।
व्याख्या: स्रोतमे हिनक कर्मभूमि ओही विश्वविद्यालयमे रहलनि कहल गेल।

प्रश्न 11935. पण्डित जवाहरलाल नेहरूक जन्मभूमि कोन स्थान कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. इलाहाबाद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. इलाहाबाद।
व्याख्या: स्रोतमे प्रथम प्रधानमंत्री नेहरूक जन्मभूमि ओही शहर कहल गेल।

प्रश्न 11936. जयकान्त मिश्र नेहरूसँ कखन दर्शनार्थी रूपमे भेटलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सन् 1960 ई. मे।
उत्तर: घ. सन् 1960 ई. मे।
व्याख्या: स्रोतमे 1960 ई.मे आनन्द भवनमे भेटक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11937. नेहरूसँ भेट कतय भेल?

क. आनन्द भवनमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आनन्द भवनमे।

व्याख्या: स्रोतमे आनन्द भवनमे दर्शनार्थीक रूपमे कहल गेल।

प्रश्न 11938. ओ ककर पदसँ नेहरू लग गेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समितिक अध्यक्ष आ अंग्रेजी विभागक व्याख्याता रूपमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समितिक अध्यक्ष आ अंग्रेजी विभागक व्याख्याता रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे ई दुहरा परिचय देल गेल।

प्रश्न 11939. नेहरूकेँ कोन काव्य-संग्रह उपहार देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. चित्रा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. चित्रा।

व्याख्या: स्रोतमे वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक काव्य-संग्रह चित्रा देल गेल।

प्रश्न 11940. नेहरूकेँ कोन कथा-संग्रह सेहो देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गल्पाञ्जलि।

उत्तर: घ. गल्पाञ्जलि।

व्याख्या: स्रोतमे गल्पाञ्जलि कथा-संग्रह उपहार देल गेल।

प्रश्न 11941. उपहार ककर कृति छल?

क. वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक।

व्याख्या: स्रोतमे वैद्यनाथ मिश्र यात्री (1911-1998)क कृति कहल गेल।

प्रश्न 11942. खण्ड ११९९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जयकान्त मिश्र 1960 मे आनन्द भवनमे नेहरूकेँ यात्रीक चित्रा आ गल्पाञ्जलि उपहार दऽ मैथिलीक साहित्यिक परम्परा रखलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र 1960 मे आनन्द भवनमे नेहरूकेँ यात्रीक चित्रा आ गल्पाञ्जलि उपहार दऽ मैथिलीक साहित्यिक परम्परा रखलनि।

व्याख्या: ई खण्ड नेहरू भेट आ पुस्तक-उपहार पर आधारित अछि।

खण्ड १२०० : विदेह-सदेह २ — नेहरू समक्ष मैथिलीक गौरव आ सरकारी मान्यता

प्रश्न 11943. जयकान्त मिश्र नेहरूसँ मैथिली सम्बन्धी कोन बात कहलनि?
क. तेरहम शताब्दीसँ गौरवशाली साहित्यिक परम्परा उपलब्ध अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तेरहम शताब्दीसँ गौरवशाली साहित्यिक परम्परा उपलब्ध अछि।
व्याख्या: स्रोतमे ई बात स्पष्ट अछि।

प्रश्न 11944. मैथिली सरकारी मान्यताक अभावमे कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सर्वथा उपेक्षित।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सर्वथा उपेक्षित।
व्याख्या: स्रोतमे सरकारी मान्यताक अभावमे सर्वथा उपेक्षित कहल गेल।

प्रश्न 11945. नेहरू हुनक कथन कोना सुनलथिन?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ध्यानसँ आ स्नेहपूर्वक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ध्यानसँ आ स्नेहपूर्वक।
व्याख्या: स्रोतमे नेहरू ध्यानसँ कथनकेँ स्नेहपूर्वक सुनलथिन।

प्रश्न 11946. नेहरूक कथनमे भाषाक समृद्धि ककर मात्र विषय नहि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संस्थागत पुनर्गठनक।
उत्तर: घ. संस्थागत पुनर्गठनक।
व्याख्या: अंग्रेजी उद्धरणमे Institutional reorganization is not soul management... आशय ई अछि।

प्रश्न 11947. नेहरूक कथनमे भाषा सम्बन्धी कोन बात स्वीकारल गेल?
क. सुदृढ़ साहित्यसँ भाषाक समृद्धि अनुभव होइत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सुदृढ़ साहित्यसँ भाषाक समृद्धि अनुभव होइत अछि।
व्याख्या: उद्धरणमे richness of a language आ sound literatureक बात अछि।

प्रश्न 11948. एहि भेटक मुख्य उद्देश्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली भाषा-साहित्यक सरकारी मान्यता लेल आग्रह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली भाषा-साहित्यक सरकारी मान्यता लेल आग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे मान्यताक अभाव आ गौरवशाली परम्परा नेहरू समक्ष रखल गेल।

प्रश्न 11949. नेहरू समक्ष तेरहम शताब्दीक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिलीक प्राचीन साहित्यिक निरन्तरता देखेबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीक प्राचीन साहित्यिक निरन्तरता देखेबाक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे गौरवशाली साहित्यिक परम्परा तेरहम शताब्दीसँ कहल गेल।

प्रश्न 11950. नेहरूक प्रतिक्रिया जयकान्त मिश्र लेल की संकेत देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली साहित्यक समृद्धि पर सहानुभूतिपूर्ण ध्यान।
उत्तर: घ. मैथिली साहित्यक समृद्धि पर सहानुभूतिपूर्ण ध्यान।
व्याख्या: नेहरू ध्यानसँ सुनलथिन आ भाषाक समृद्धि पर कथन कएलनि।

प्रश्न 11951. एहि प्रसंगमे पुस्तक-उपहार आ मौखिक निवेदनक सम्बन्ध की अछि?
क. दूनू मैथिली गौरव प्रस्तुत करबाक साधन छल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दूनू मैथिली गौरव प्रस्तुत करबाक साधन छल।
व्याख्या: चित्रा-गल्पाञ्जलि उपहार आ परम्पराक निवेदन साथ भेल।

प्रश्न 11952. खण्ड १२००क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नेहरू समक्ष जयकान्त मिश्र मैथिलीक तेरहम शताब्दीसँ चलैत साहित्यिक परम्परा आ सरकारी उपेक्षा रखलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नेहरू समक्ष जयकान्त मिश्र मैथिलीक तेरहम शताब्दीसँ चलैत साहित्यिक परम्परा आ सरकारी उपेक्षा रखलनि।
व्याख्या: ई खण्ड नेहरू समक्ष मैथिली-मान्यता निवेदन पर आधारित अछि।

खण्ड १२०१ : विदेह-सदेह २ — न्यायमूर्ति बी. मल्लिकक सलाह

प्रश्न 11953. नेहरू भेटक क्रममे जयकान्त मिश्रक भेंट ककरासँ भेल?
क. इलाहाबाद हाईकोर्टक चीफ जस्टिस न्यायमूर्ति बी. मल्लिक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. इलाहाबाद हाईकोर्टक चीफ जस्टिस न्यायमूर्ति बी. मल्लिक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि रूपे नाम देल गेल।

प्रश्न 11954. न्यायमूर्ति मल्लिक की कहलथिन?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि रूपेँ मातृभाषाकेँ मान्यता नहि भेटि सकैछ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एहि रूपेँ मातृभाषाकेँ मान्यता नहि भेटि सकैछ।
व्याख्या: स्रोतमे हुनक सलाहक आरम्भ एहि आशयसँ अछि।

प्रश्न 11955. मल्लिकक अनुसार मान्यता लेल की अपनाबए पड़त?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आन्दोलनक तरीका।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आन्दोलनक तरीका।
व्याख्या: स्रोतमे आन्दोलनक तरीका अपनाबए पड़त कहल गेल।

प्रश्न 11956. आन्दोलनक तरीका ककर ध्यान आकर्षित करबाक उपक्रम छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जनमानस आ साहित्य चिन्तक लोकनिक।
उत्तर: घ. जनमानस आ साहित्य चिन्तक लोकनिक।
व्याख्या: स्रोतमे दूनूक ध्यान आकर्षित करबाक बात अछि।

प्रश्न 11957. आन्दोलनमे ककर परम्परा प्रस्तुत करबाक कहल गेल?
क. समृद्धशाली, गौरवशाली आ वैभवशाली साहित्यक परम्परा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समृद्धशाली, गौरवशाली आ वैभवशाली साहित्यक परम्परा।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तीन विशेषणक प्रयोग अछि।

प्रश्न 11958. मल्लिकक विचारसँ जयकान्त मिश्र कोना भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उत्प्रेरित।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उत्प्रेरित।
व्याख्या: स्रोतमे न्यायमूर्ति मल्लिकक सत्प्रेरणा आ विचारसँ उत्प्रेरित भऽ कहल गेल।

प्रश्न 11959. मल्लिकक सलाह मान्यता आन्दोलनमे की मोड़ देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. निवेदनसँ जन-साहित्यिक प्रदर्शन दिस।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. निवेदनसँ जन-साहित्यिक प्रदर्शन दिस।
व्याख्या: आन्दोलनक तरीका अपनाबए आ परम्परा प्रदर्शन करबाक सलाह देल गेल।

प्रश्न 11960. आन्दोलनक तरीका मूलतः की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समृद्ध साहित्यक सार्वजनिक परिचय।
उत्तर: घ. समृद्ध साहित्यक सार्वजनिक परिचय।
व्याख्या: स्रोतमे जनमानस आ साहित्यचिन्तकक ध्यान आकर्षित करबाक बात अछि।

प्रश्न 11961. एहि खण्डमे बी. मल्लिकक भूमिका की अछि?
क. रणनीतिक मार्गदर्शक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रणनीतिक मार्गदर्शक।
व्याख्या: हुनक सलाह पछिला पुस्तक-प्रदर्शनी आयोजनक प्रेरक बनल।

प्रश्न 11962. खण्ड १२०१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. न्यायमूर्ति बी. मल्लिक जयकान्त मिश्रकेँ मैथिली मान्यता लेल साहित्य-समृद्धि देखबैत आन्दोलनक तरीका अपनाबए कहलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. न्यायमूर्ति बी. मल्लिक जयकान्त मिश्रकेँ मैथिली मान्यता लेल साहित्य-समृद्धि देखबैत आन्दोलनक तरीका अपनाबए कहलनि।
व्याख्या: ई खण्ड बी. मल्लिकक सलाह पर आधारित अछि।

खण्ड १२०२ : विदेह-सदेह २ — इलाहाबाद मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी

प्रश्न 11963. इलाहाबादमे मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी कतय आयोजित भेल?
क. सर गंगानाथ संस्कृत रिसर्च इन्सटीच्यूटमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सर गंगानाथ संस्कृत रिसर्च इन्सटीच्यूटमे।
व्याख्या: स्रोतमे ई स्थान देल अछि।

प्रश्न 11964. ई प्रदर्शनी कखन आयोजित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. 15 दिसम्बर 1961 ई. कैं।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. 15 दिसम्बर 1961 ई. कैं।
व्याख्या: स्रोतमे तिथि स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 11965. प्रदर्शनीक उद्घाटन लेल के अनुरोधित छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जस्टिस बी. मल्लिक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जस्टिस बी. मल्लिक।
व्याख्या: स्रोतमे उद्घाटन हेतु जस्टिस मल्लिकसँ अनुरोध कएल गेल।

प्रश्न 11966. ताधरि जस्टिस मल्लिक कोन पदपर छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कमीशन फॉर माइनोरिटी लैंग्वेजेजक चेयरमैन।
उत्तर: घ. कमीशन फॉर माइनोरिटी लैंग्वेजेजक चेयरमैन।
व्याख्या: स्रोतमे भारत सरकारक कमीशन फॉर माइनोरिटी लैंग्वेजेजक चेयरमैन कहल गेल।

प्रश्न 11967. जस्टिस मल्लिक प्रदर्शनी उद्घाटन स्वीकार कएलनि कि नहि?

क. स्वीकार कएलनि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वीकार कएलनि।

व्याख्या: स्रोतमे ई सुखद संयोग कहल गेल जे उद्घाटन स्वीकार कएलथिन।

प्रश्न 11968. प्रदर्शनीमे प्रबुद्ध साहित्य चिन्तक लोकनि ककरासँ अवगत भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली भाषा आ साहित्यक प्राचीनतम गौरवशाली परम्परा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली भाषा आ साहित्यक प्राचीनतम गौरवशाली परम्परा।

व्याख्या: स्रोतमे एहि अवगतताक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11969. एहि प्रदर्शनीक प्रभाव साहित्यचिन्तक लोकनि पर कोना पड़ल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अमिट छाप छोड़लक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अमिट छाप छोड़लक।

व्याख्या: स्रोतमे अपन अमिट छाप छोड़लक कहल गेल।

प्रश्न 11970. एहि अवसरपर ककर काव्यपाठ भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यशस्वी कवि वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक।

उत्तर: घ. यशस्वी कवि वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक।

व्याख्या: स्रोतमे यात्री मैथिलीमे काव्यपाठ कएने रहथि।

प्रश्न 11971. इलाहाबाद प्रदर्शनीक मूल उपलब्धि की छल?

क. मैथिलीक गौरवक सार्वजनिक विद्वत् परिचय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक गौरवक सार्वजनिक विद्वत् परिचय।

व्याख्या: प्रबुद्ध लोकनि प्राचीन परम्परासँ अवगत भेलाह।

प्रश्न 11972. खण्ड १२०२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. 1961क इलाहाबाद मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी जस्टिस मल्लिकक उद्घाटन आ यात्रीक काव्यपाठ सहित मैथिलीक गौरव सार्वजनिक कएलक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. 1961क इलाहाबाद मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी जस्टिस मल्लिकक उद्घाटन आ यात्रीक काव्यपाठ सहित मैथिलीक गौरव सार्वजनिक कएलक।

व्याख्या: ई खण्ड इलाहाबाद पुस्तक प्रदर्शनी पर आधारित अछि।

खण्ड १२०३ : विदेह-सदेह २ — दिल्ली राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी

प्रश्न 11973. इलाहाबाद प्रदर्शनीसँ प्रेरित भऽ जयकान्त मिश्र की सोचलनि?
क. दिल्लीमे एहन प्रदर्शनी आयोजित करब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दिल्लीमे एहन प्रदर्शनी आयोजित करब।
व्याख्या: स्रोतमे राजधानी दिल्लीमे आयोजन सोचल गेल।

प्रश्न 11974. दिल्ली प्रदर्शनीक आयोजनार्थ ओ कोन स्रोतसँ लोन लेलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अपन प्रोभिडेण्ट फण्डसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अपन प्रोभिडेण्ट फण्डसँ।
व्याख्या: स्रोतमे प्रोभिडेण्ट फण्डसँ लोन लऽ कऽ आयोजन कहल गेल।

प्रश्न 11975. दिल्लीक ऐतिहासिक राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी कखन भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. 8 आ 9 जनवरी 1963 ई.।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. 8 आ 9 जनवरी 1963 ई.।
व्याख्या: स्रोतमे ई तिथि देल अछि।

प्रश्न 11976. प्रदर्शनी कतय आयोजित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दिल्लीक आजाद भवनमे।
उत्तर: घ. दिल्लीक आजाद भवनमे।
व्याख्या: स्रोतमे आजाद भवनमे आयोजन कहल गेल।

प्रश्न 11977. आयोजनमे आर्थिक-सामुदायिक सहयोग कोना जुटल?
क. मिथिलांचलक विभिन्न क्षेत्रसँ चन्दा एकत्रित भेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलांचलक विभिन्न क्षेत्रसँ चन्दा एकत्रित भेल।
व्याख्या: स्रोतमे चन्दा एकत्रित भेल आ भालण्टीयर गेल रहथि।

प्रश्न 11978. प्रदर्शनीक सजावट कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हृदयाकर्षक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हृदयाकर्षक।
व्याख्या: स्रोतमे सजावट हृदयाकर्षक छल कहल गेल।

प्रश्न 11979. पुस्तक-संग्रहमे कोन संस्था विशेष उल्लेखनीय कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मिथिला इन्स्टीच्यूट दरभंगा आ पटना विश्वविद्यालय।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मिथिला इन्स्टीच्यूट दरभंगा आ पटना विश्वविद्यालय।

व्याख्या: स्रोतमे एहि दुनूक विशेष उल्लेख अछि।

प्रश्न 11980. कौन सांसद सहभागी भेल रहथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ललितनारायण मिश्र एवं यमुना प्रसाद मंडल।

उत्तर: घ. ललितनारायण मिश्र एवं यमुना प्रसाद मंडल।

व्याख्या: स्रोतमे सांसद रूपमे ई नाम अछि।

प्रश्न 11981. प्रधानमंत्री नेहरूक उद्घाटनमे सहयोग के देलनि?

क. भारत सरकारक संसदीय कार्य मंत्री बाबू सत्यनारायण सिंह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारत सरकारक संसदीय कार्य मंत्री बाबू सत्यनारायण सिंह।

व्याख्या: स्रोतमे हुनक सहयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 11982. खण्ड १२०३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. 1963क दिल्ली राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी जयकान्त मिश्रक निजी जोखिम, सामुदायिक सहयोग, विशाल पुस्तक-संग्रह आ नेहरू उद्घाटनसँ ऐतिहासिक बनल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. 1963क दिल्ली राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी जयकान्त मिश्रक निजी जोखिम, सामुदायिक सहयोग, विशाल पुस्तक-संग्रह आ नेहरू उद्घाटनसँ ऐतिहासिक बनल।

व्याख्या: ई खण्ड दिल्ली राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी पर आधारित अछि।

खण्ड १२०४ : विदेह-सदेह २ — दिल्ली प्रदर्शनीक प्रभाव आ अकादेमी प्रवेश

प्रश्न 11983. दिल्ली प्रदर्शनीमे नेहरू कतेक देर विलम्बसँ पहुँचलाह?

क. पन्द्रह मिनट।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पन्द्रह मिनट।

व्याख्या: स्रोतमे ओ पन्द्रह मिनट विलम्बसँ पहुँचलाह कहल गेल।

प्रश्न 11984. पुस्तकक अम्बार देखि नेहरू कोना भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हतप्रभ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हतप्रभ।

व्याख्या: स्रोतमे पुस्तकक अम्बार देखि हतप्रभ भऽ गेलाह कहल गेल।

प्रश्न 11985. नेहरू विजिटिंग रजिस्टरमे मैथिलीकेँ कोन प्रकारक भाषा कहलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लम्बा समयसँ रहैत आ आइयो लोकमे जीवित भाषा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लम्बा समयसँ रहैत आ आइयो लोकमे जीवित भाषा।

व्याख्या: उद्धरणमे Maithili had been for long time and is today a living language कहल गेल।

प्रश्न 11986. नेहरूक टिप्पणीमे मैथिली ककर अधिकारी कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रोत्साहनक।

उत्तर: घ. प्रोत्साहनक।

व्याख्या: उद्धरणमे the Language desires encouragement कहल गेल।

प्रश्न 11987. प्रदर्शनी सफल बनएबा लेल कोन हास्य-व्यंग्य सम्राट उपस्थित छलाह?

क. प्रोफेसर हरिमोहन झा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रोफेसर हरिमोहन झा।

व्याख्या: स्रोतमे हिनक नाम अछि।

प्रश्न 11988. प्रदर्शनीमे मायानन्द मिश्र आ रामस्वरूप नटुआक अतिरिक्त के-के आएल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनेको राजनीतिक, साहित्यिक आ मैथिली-प्रेमी गण्यमान्य।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनेको राजनीतिक, साहित्यिक आ मैथिली-प्रेमी गण्यमान्य।

व्याख्या: स्रोतमे एहि रूपे उल्लेख अछि।

प्रश्न 11989. कार्यक्रमक झाँकी कतय प्रदर्शित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सिनेमा हॉलमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सिनेमा हॉलमे।

व्याख्या: स्रोतमे शानदार सजावट कारणेँ झाँकी सिनेमा हॉलमे प्रदर्शित भेल कहल गेल।

प्रश्न 11990. पुस्तक प्रदर्शनी जयकान्त मिश्रक कोन गुणक सबल प्रमाण अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सफल आयोजक।

उत्तर: घ. सफल आयोजक।

व्याख्या: स्रोतमे उपर्युक्त प्रदर्शनी सफल आयोजक रहबाक प्रमाण कहल गेल।

प्रश्न 11991. प्रदर्शनीक बाद मैथिली आन्दोलनक स्थिति कोना कही गेल?
क. एक डेग आगू बढ़ल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एक डेग आगू बढ़ल।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली आन्दोलन एक डेग आगू बढ़ल कहल गेल।

प्रश्न 11992. खण्ड १२०४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दिल्ली प्रदर्शनी नेहरूक सकारात्मक टिप्पणी, जन-उपस्थिति आ दृश्य-प्रसारसँ मैथिली आन्दोलनकेँ एक डेग आगू बढ़ौलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दिल्ली प्रदर्शनी नेहरूक सकारात्मक टिप्पणी, जन-उपस्थिति आ दृश्य-प्रसारसँ मैथिली आन्दोलनकेँ एक डेग आगू बढ़ौलनि।
व्याख्या: ई खण्ड दिल्ली प्रदर्शनीक परिणाम आ आन्दोलन-प्रभाव पर आधारित अछि।

खण्ड १२०५ : विदेह-सदेह २ — साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदमे प्रवेश

प्रश्न 11993. साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदमे विश्वविद्यालय प्रतिनिधि कोना मनोनीत होइत छथि?
क. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालयक अक्षरानुक्रमसँ बीस प्रतिनिधि पाँच वर्ष लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालयक अक्षरानुक्रमसँ बीस प्रतिनिधि पाँच वर्ष लेल।
व्याख्या: स्रोतमे सामान्य परिषदक सदस्यता-प्रक्रिया एहि रूपमे देल अछि।

प्रश्न 11994. सामान्य परिषदक सदस्यक नामक अनुशंसा के करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सम्बद्ध विश्वविद्यालयक कुलपति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सम्बद्ध विश्वविद्यालयक कुलपति।
व्याख्या: स्रोतमे नामक अनुशंसा कुलपति द्वारा होइत अछि कहल गेल।

प्रश्न 11995. जयकान्त मिश्रक पिता के छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्र।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे हुनक पिता श्री महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्र कहल गेल अछि।

प्रश्न 11996. डा. उमेश मिश्रकेँ कोन विश्वविद्यालयक कुलपति नियुक्त कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सर कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक।
उत्तर: घ. सर कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक।
व्याख्या: स्रोतमे बिहार सरकार द्वारा ई नियुक्ति देल गेल अछि।

प्रश्न 11997. कुलपति कार्यालय प्रो. जयकान्त मिश्रक नाम कतेक बेर प्रस्तुत कएलक?
क. तीन बेर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तीन बेर।
व्याख्या: स्रोतमे तीन बेर नाम प्रस्तावित कएल गेल कहल अछि।

प्रश्न 11998. कुलपति आरम्भमे फाइल किएक वापस करैत रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हुनका आशंका छलनि जे जनमानस पुत्रक नाम अनुशंसा पर आरोप लगाओत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हुनका आशंका छलनि जे जनमानस पुत्रक नाम अनुशंसा पर आरोप लगाओत।
व्याख्या: स्रोतमे पुत्रक नाम अनुशंसित कएलनि से आरोपक आशंका वर्णित अछि।

प्रश्न 11999. अन्ततः जयकान्त मिश्रक नाम कोन कारणेँ अनुशंसित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सामाजिक दबाबक कारणेँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सामाजिक दबाबक कारणेँ।
व्याख्या: स्रोतमे अन्ततः सामाजिक दबाबक कारण कुलपति अनुशंसा कएलथिन।

प्रश्न 12000. सामान्य परिषदमे प्रवेशक बाद जयकान्त मिश्र की आरम्भ कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीक मान्यतार्थ आन्दोलन।
उत्तर: घ. मैथिलीक मान्यतार्थ आन्दोलन।
व्याख्या: स्रोतमे सदस्य बनितहि ओ मैथिलीक मान्यतार्थ आन्दोलन प्रारम्भ कएलनि कहल अछि।

खण्ड १२०५ : विदेह-सदेह २ — साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदमे प्रवेश

प्रश्न 12001. ओ अन्य भाषा-भाषी सदस्य लोकनिक ध्यान कोन दिशामे आकर्षित कएलनि?
क. मैथिलीक गौरवशाली साहित्यिक परम्परा दिस।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक गौरवशाली साहित्यिक परम्परा दिस।
व्याख्या: स्रोतमे अन्य भाषा-भाषी सदस्यक ध्यान एहि परम्परा दिस आकर्षित करबाक बात अछि।

प्रश्न 12002. खण्ड १२०५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्र सामान्य परिषदमे प्रवेश कऽ मैथिली मान्यताक आन्दोलनकेँ संस्थागत स्तरपर आगू बढ़ौलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र सामान्य परिषदमे प्रवेश कऽ मैथिली मान्यताक आन्दोलनकेँ संस्थागत स्तरपर आगू बढ़ौलनि।
व्याख्या: ई खण्ड परिषद प्रवेश आ आन्दोलनक आरम्भ पर आधारित अछि।

खण्ड १२०६ : विदेह-सदेह २ — कुलपति उमेश मिश्र आ अनुशंसाक नैतिक द्वन्द्व

प्रश्न 12003. डा. उमेश मिश्रक मनमे कोन नैतिक संकोच छल?
क. अपन पुत्रक नाम अनुशंसित करबाक आरोप लगत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अपन पुत्रक नाम अनुशंसित करबाक आरोप लगत।
व्याख्या: स्रोतमे कुलपतिक आशंका एहि रूपमे देल अछि।

प्रश्न 12004. मातृभाषानुरागी कुलपतिक इच्छा की छलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहन व्यक्तिक नाम जाय जे मैथिलीक पुरातन परम्परा सबल तर्कसँ प्रस्तुत कऽ सकए।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एहन व्यक्तिक नाम जाय जे मैथिलीक पुरातन परम्परा सबल तर्कसँ प्रस्तुत कऽ सकए।
व्याख्या: स्रोतमे कुलपतिक इच्छा मैथिलीक मान्यतार्थ समर्थ प्रतिनिधि चाहबाक रूपमे अछि।

प्रश्न 12005. कुलपति ककरा अंग्रेजीमे नेहरूकेँ कनभिन्स कऽ सकबाक योग्य बुझैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रोफेसर जयकान्त मिश्रकेँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रोफेसर जयकान्त मिश्रकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे जयकान्त मिश्रक नाम एहि योग्यता कारणेँ प्रस्तावित भेल।

प्रश्न 12006. फाइल बारम्बार कोना वापस भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बिनु कोनो टिप्पणी कएने।
उत्तर: घ. बिनु कोनो टिप्पणी कएने।
व्याख्या: स्रोतमे कुलपति फाइल बिनु टिप्पणी वापस करथि कहल अछि।

प्रश्न 12007. एहि प्रसंगमे कुलपति कार्यालयक भूमिका की छल?
क. जयकान्त मिश्रक नाम अनुमोदनार्थ प्रस्तुत करब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जयकान्त मिश्रक नाम अनुमोदनार्थ प्रस्तुत करब।
व्याख्या: स्रोतमे कार्यालय तीन बेर नाम प्रस्तुत कएलक।

प्रश्न 12008. सामाजिक दबाबक फल की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कुलपति जयकान्त मिश्रक नाम अनुशंसित कएलथिन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कुलपति जयकान्त मिश्रक नाम अनुशंसित कएलथिन।
व्याख्या: स्रोतमे सामाजिक दबाबक बाद अनुशंसा भेल कहल अछि।

प्रश्न 12009. अनुशंसाक बाद जयकान्त मिश्र कोन पदपर पहुँचलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदक सदस्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदक सदस्य।
व्याख्या: स्रोतमे ओ सामान्य परिषदक सदस्य भऽ गेलाह कहल अछि।

प्रश्न 12010. एहि घटना सँ मैथिली आन्दोलनकेँ कोन मंच भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. साहित्य अकादेमीक संस्थागत मंच।
उत्तर: घ. साहित्य अकादेमीक संस्थागत मंच।
व्याख्या: स्रोत-संदर्भमे सामान्य परिषदमे प्रवेशसँ आन्दोलनक संस्थागत आधार बनैत अछि।

प्रश्न 12011. एहि खण्डक मुख्य तनाव की अछि?
क. नैतिक संकोच आ मातृभाषा-सेवा बीचक द्वन्द्व।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नैतिक संकोच आ मातृभाषा-सेवा बीचक द्वन्द्व।
व्याख्या: कुलपतिक संकोच आ सामाजिक दबाब दुनू मिलि ई तनाव बनबैत अछि।

प्रश्न 12012. खण्ड १२०६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उमेश मिश्रक नैतिक संकोच सामाजिक दबाबक बाद हटैत अछि आ जयकान्त मिश्र अकादेमीमे मैथिलीक आवाज बनैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उमेश मिश्रक नैतिक संकोच सामाजिक दबाबक बाद हटैत अछि आ जयकान्त मिश्र अकादेमीमे मैथिलीक आवाज बनैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड अनुशंसाक नैतिक परिस्थिति पर आधारित अछि।

खण्ड १२०७ : विदेह-सदेह २ — अकादेमी प्रवेशक बाद मैथिली आन्दोलन

प्रश्न 12013. सामान्य परिषदक सदस्य बनितहि जयकान्त मिश्रक पहिल दिशा की छल?
क. मैथिलीक मान्यतार्थ आन्दोलन प्रारम्भ करब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक मान्यतार्थ आन्दोलन प्रारम्भ करब।
व्याख्या: स्रोतमे सदस्य बनितहि आन्दोलन प्रारम्भ कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12014. ओ अन्य भाषा-भाषी सदस्य लोकनिक समक्ष मैथिलीक कोन पक्ष रखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गौरवशाली साहित्यिक परम्परा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गौरवशाली साहित्यिक परम्परा।
व्याख्या: स्रोतमे साहित्यिक परम्पराक ध्यान आकर्षित करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12015. एहि आन्दोलनक उद्देश्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साहित्य अकादेमीसँ मैथिलीकेँ मान्यता दियाबय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साहित्य अकादेमीसँ मैथिलीकेँ मान्यता दियाबय।
व्याख्या: अगिला शीर्षक ‘मैथिलीक मान्यता’ मे ई उद्देश्य स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12016. मान्यताक पाछाँ हुनक जीवनक कोन पक्ष स्रोतमे रेखांकित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. त्याग आ बलिदान।
उत्तर: घ. त्याग आ बलिदान।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली मान्यताक पाछाँ त्याग आ बलिदानक इतिहास कहल गेल।

प्रश्न 12017. फाँड़ बान्हि कऽ पाछाँ पड़लनि वाक्यांश कोन बात देखबैत अछि?
क. दृढ़ संकल्प आ लगातार प्रयत्न।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दृढ़ संकल्प आ लगातार प्रयत्न।
व्याख्या: स्रोतक भाव मैथिलीक मान्यता लेल अनवरत लगन देखबैत अछि।

प्रश्न 12018. सामान्य परिषदक माननीय सदस्य लोकनिक ध्यान आकर्षित करबाक साधन की बनल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीक महत्व निरूपित करब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीक महत्व निरूपित करब।
व्याख्या: स्रोतमे सदस्य लोकनिक ध्यानकर्षण आ महत्व-निरूपण उल्लेखित अछि।

प्रश्न 12019. अंग्रेजीमे तर्क प्रस्तुत करबाक महत्त्व की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अकादेमीक राष्ट्रीय मंचपर मैथिलीक पक्ष स्पष्ट करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अकादेमीक राष्ट्रीय मंचपर मैथिलीक पक्ष स्पष्ट करब।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजीमे नेहरू आ सदस्य लोकनिक समक्ष तर्क देबाक बात अछि।

प्रश्न 12020. एहि खण्डमे जयकान्त मिश्रक छवि कोना बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संस्थागत आन्दोलनकारी आ भाषा-प्रतिनिधि।
उत्तर: घ. संस्थागत आन्दोलनकारी आ भाषा-प्रतिनिधि।
व्याख्या: स्रोतक घटनाक्रम एहि भूमिका दिस संकेत करैत अछि।

प्रश्न 12021. मैथिली आन्दोलनमे अकादेमी प्रवेशक फल की भेल?
क. भाषा-मान्यताक प्रयास परिषदक भीतर पहुँचल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा-मान्यताक प्रयास परिषदक भीतर पहुँचल।
व्याख्या: सामान्य परिषदमे प्रवेशक बाद मान्यता-प्रयास आरम्भ भेल।

प्रश्न 12022. खण्ड १२०७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अकादेमी प्रवेश जयकान्त मिश्रकेँ मैथिली मान्यताक राष्ट्रीय संस्थागत प्रवक्ता बनौलक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अकादेमी प्रवेश जयकान्त मिश्रकेँ मैथिली मान्यताक राष्ट्रीय संस्थागत प्रवक्ता बनौलक।
व्याख्या: ई खण्ड अकादेमी प्रवेशक बादक आन्दोलन पर आधारित अछि।

खण्ड १२०८ : विदेह-सदेह २ — मैथिली मान्यता लेल बुकलेट आ तर्क

प्रश्न 12023. जयकान्त मिश्र मैथिलीक मान्यतार्थ अंग्रेजीमे कतेक बुकलेट लिखलनि?
क. दू।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दू।
व्याख्या: स्रोतमे दू बुकलेट लिखलनि कहल गेल।

प्रश्न 12024. ओहि बुकलेटमे पहिल शीर्षक की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. A case for Maithili।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. A case for Maithili।
व्याख्या: स्रोतमे पहिल बुकलेटक नाम एहि रूपमे अछि।

प्रश्न 12025. दोसर बुकलेटक शीर्षक की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. They say about Maithili।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. They say about Maithili।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर शीर्षक एहि रूपमे देल अछि।

प्रश्न 12026. बुकलेट सभ केकरा बीच वितरित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. साहित्य अकादेमीक सदस्य लोकनिक बीच।
उत्तर: घ. साहित्य अकादेमीक सदस्य लोकनिक बीच।
व्याख्या: स्रोतमे सदस्य लोकनिक बीच वितरित कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12027. बुकलेट लिखबाक मूल उद्देश्य की छल?
क. मैथिलीक महत्व आ मान्यताक पक्ष स्पष्ट करब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक महत्व आ मान्यताक पक्ष स्पष्ट करब।
व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषा मैथिलीक महत्त्व निरूपित करबाक बात अछि।

प्रश्न 12028. दिल्ली पुस्तक प्रदर्शनीमे नेहरू कोन संकेत देने रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीकेँ मान्यता भेटबाक चाही।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीकेँ मान्यता भेटबाक चाही।
व्याख्या: स्रोतमे नेहरूक संकेत एहि रूपमे उल्लेखित अछि।

प्रश्न 12029. नेहरूक संकेतक बादो दुर्भाग्यजनक घटना की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नेहरूक मृत्यु भऽ गेलनि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नेहरूक मृत्यु भऽ गेलनि।
व्याख्या: स्रोतमे नेहरूक मृत्युक कारणेँ परिस्थिति बदलल कहल गेल।

प्रश्न 12030. बुकलेट रणनीति ककरा लक्ष्य कएने छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अकादेमीक माननीय सदस्य लोकनिक।
उत्तर: घ. अकादेमीक माननीय सदस्य लोकनिक।
व्याख्या: स्रोतमे सदस्य लोकनिक ध्यानकर्षण लेल बुकलेट बाँटल गेल।

प्रश्न 12031. एहि खण्डमे भाषा-अधिकारक साधन की अछि?
क. दस्तावेजी तर्क आ लिखित अभियान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दस्तावेजी तर्क आ लिखित अभियान।
व्याख्या: बुकलेट आ वितरण एहि साधनक रूपमे उपस्थित अछि।

प्रश्न 12032. खण्ड १२०८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्र दू अंग्रेजी बुकलेट द्वारा मैथिली मान्यताक संस्थागत तर्क सदस्य लोकनिक बीच पहुँचौलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र दू अंग्रेजी बुकलेट द्वारा मैथिली मान्यताक संस्थागत तर्क सदस्य लोकनिक बीच पहुँचौलनि।
व्याख्या: ई खण्ड बुकलेट-आधारित मान्यता अभियान पर आधारित अछि।

खण्ड १२०९ : विदेह-सदेह २ — सुनीति कुमार चटर्जी आ समिति गठन

प्रश्न 12033. नेहरूक मृत्युपरांत साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष के बनलाह?
क. प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी।
व्याख्या: स्रोतमे नेहरूक बाद प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी अध्यक्ष बनलाह।

प्रश्न 12034. सुनीति कुमार चटर्जी मैथिलीक कोन पक्षसँ पूर्व परिचित रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीक गौरव-गरिमा आ महत्वसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीक गौरव-गरिमा आ महत्वसँ।
व्याख्या: स्रोतमे ओ मैथिलीक गौरव-गरिमा आ महत्वसँ पूर्व परिचित छलाह।

प्रश्न 12035. हुनका अध्यक्ष बनितहि जयकान्त मिश्रक आशा कोना बढ़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मान्यता भेटबामे मात्र वैधानिक प्रक्रिया शेष बुझाए लगल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मान्यता भेटबामे मात्र वैधानिक प्रक्रिया शेष बुझाए लगल।
व्याख्या: स्रोतमे ओ अत्यधिक आशान्वित भेलाह कहल अछि।

प्रश्न 12036. मान्यता प्रसंगमे की गठित कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. एक समिति।
उत्तर: घ. एक समिति।
व्याख्या: स्रोतमे एहि लेल एक समिति गठित भेल कहल गेल।

प्रश्न 12037. समितिमे भाषाविद् डा. सुकुमार सेनक संग आर के नामित छलाह?
क. प्रो. हजारी प्रसाद द्विवेदी आ डा. सुभद्र झा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रो. हजारी प्रसाद द्विवेदी आ डा. सुभद्र झा।
व्याख्या: स्रोतमे ई तीन सदस्यक नाम अछि।

प्रश्न 12038. डा. सुकुमार सेनक जीवन-वर्ष स्रोतमे कोना देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. 1900-1992।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. 1900-1992।
व्याख्या: स्रोतमे डा. सुकुमार सेनक कोष्ठकमे 1900-1992 देल अछि।

प्रश्न 12039. प्रो. हजारी प्रसाद द्विवेदीक जीवन-वर्ष स्रोतमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. 1907-1979।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. 1907-1979।
व्याख्या: स्रोतमे प्रोफेसर हजारी प्रसाद द्विवेदीक जीवन-वर्ष देल अछि।

प्रश्न 12040. डा. सुभद्र झाक जीवन-वर्ष स्रोतमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. 1909-2000।
उत्तर: घ. 1909-2000।
व्याख्या: स्रोतमे डा. सुभद्र झाक जीवन-वर्ष देल अछि।

प्रश्न 12041. समितिक बैठक कतय आहूत भेल?
क. दिल्लीमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दिल्लीमे।
व्याख्या: स्रोतमे समितिक बैठक दिल्लीमे आहूत भेल कहल अछि।

प्रश्न 12042. खण्ड १२०९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुनीति कुमार चटर्जीक अध्यक्षताक बाद मैथिली मान्यताक प्रक्रिया समिति गठन धरि पहुँचल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुनीति कुमार चटर्जीक अध्यक्षताक बाद मैथिली मान्यताक प्रक्रिया समिति गठन धरि पहुँचल।
व्याख्या: ई खण्ड अध्यक्ष-परिवर्तन आ समिति गठन पर आधारित अछि।

खण्ड १२१० : विदेह-सदेह २ — जनजागरण आ पोस्टकार्ड अभियान

प्रश्न 12043. समिति बैठकसँ पूर्व कोन क्षेत्रमे जनजागरण भऽ गेल छल?
क. मिथिलांचलमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलांचलमे।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिलांचलमे जनजागरण भेल कहल अछि।

प्रश्न 12044. कोलकाताक कोन समूह सभ एहि अभियानसँ जुड़ल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रवासी मातृभाषा सेवी संस्थादिक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रवासी मातृभाषा सेवी संस्थादिक।
व्याख्या: स्रोतमे कोलकाताक प्रवासी मातृभाषा सेवी संस्था सभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12045. मान्यता माँगक समर्थन लेल कोन अभियान चलाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पोस्टकार्ड अभियान।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पोस्टकार्ड अभियान।
व्याख्या: स्रोतमे पोस्टकार्ड अभियान चला कऽ समर्थन कएलक कहल अछि।

प्रश्न 12046. पोस्टकार्ड अभियानक लक्ष्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली मान्यताक माँगकेँ समर्थन देब।
उत्तर: घ. मैथिली मान्यताक माँगकेँ समर्थन देब।
व्याख्या: स्रोतमे एहि माँगक समर्थनक हेतु अभियानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12047. प्रो. मिश्रक प्रयास स्रोतमे कोना कहल गेल?
क. ऐतिहासिक घटनाक रूपमे सतत चिरस्थायी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ऐतिहासिक घटनाक रूपमे सतत चिरस्थायी।
व्याख्या: स्रोतमे हुनक सत्प्रयास ऐतिहासिक घटना रूपमे चिरस्थायी रहत कहल अछि।

प्रश्न 12048. जनजागरण ककर संग समानान्तर चलल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रवासी संस्था सभक समर्थन संग।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रवासी संस्था सभक समर्थन संग।
व्याख्या: स्रोतमे कोलकाताक प्रवासी संस्था आ मिथिलांचलक जनजागरण साथ-साथ देल अछि।

प्रश्न 12049. एहि अभियानमे भाषा-आन्दोलनक कोन रूप देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जन-सहभागिता आ संस्थागत दबाब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जन-सहभागिता आ संस्थागत दबाब।
व्याख्या: पोस्टकार्ड अभियान आ जनजागरण मिलि एहि रूपकेँ देखबैत अछि।

प्रश्न 12050. कोलकाताक प्रवासी संस्था सभक भूमिका कोन छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मातृभाषा-सेवा आ समर्थन।
उत्तर: घ. मातृभाषा-सेवा आ समर्थन।
व्याख्या: स्रोतमे प्रवासी मातृभाषा सेवी संस्थादिक कहल गेल अछि।

प्रश्न 12051. एहि खण्डक मुख्य बिन्दु की अछि?
क. मान्यता अभियान केवल व्यक्तिगत नहि, सामुदायिक सेहो बनल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मान्यता अभियान केवल व्यक्तिगत नहि, सामुदायिक सेहो बनल।
व्याख्या: जनजागरण आ पोस्टकार्ड अभियानसँ सामुदायिक आधार स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12052. खण्ड १२१०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलांचल आ प्रवासी संस्था सभक जनजागरण-पोस्टकार्ड अभियान मैथिली मान्यता माँगकेँ व्यापक बनौलक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिलांचल आ प्रवासी संस्था सभक जनजागरण-पोस्टकार्ड अभियान मैथिली मान्यता माँगकेँ व्यापक बनौलक।
व्याख्या: ई खण्ड मान्यता अभियानक जनाधार पर आधारित अछि।

खण्ड १२११ : विदेह-सदेह २ — तिरहुता वा मिथिलाक्षरक स्वतंत्र अस्तित्व

प्रश्न 12053. मैथिली भाषाक प्राचीन स्वतंत्र लिपिक एक नाम की अछि?
क. तिरहुता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तिरहुता।
व्याख्या: स्रोतमे तिरहुता वा मिथिलाक्षर वा मैथिलाक्षर वा मैथिली लिपि कहल गेल।

प्रश्न 12054. मिथिलाक्षरक दोसर नाम स्रोतमे कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलाक्षर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलाक्षर।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिलाक्षर वा मैथिलाक्षर दुनू नाम अछि।

प्रश्न 12055. तिरहुता नामसँ की ज्ञान होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ई लिपि तिरहुत देशक थिक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ई लिपि तिरहुत देशक थिक।
व्याख्या: स्रोतमे तिरहुता नामसँ ई लिपि तिरहुत देशक थिक कहल अछि।

प्रश्न 12056. भाषा आ सभ्यता जकाँ लिपि आ भाषाक सम्बन्ध कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परस्पर अन्योन्याश्रित।
उत्तर: घ. परस्पर अन्योन्याश्रित।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा-सभ्यता आ लिपि-भाषाक सम्बन्ध परस्पर अन्योन्याश्रित कहल अछि।

प्रश्न 12057. मैथिली पर लिपिसँ सम्बन्ध छूटबाक प्रभाव की बताओल गेल?
क. भाषाक प्रति आकर्षण घटैत जाएत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषाक प्रति आकर्षण घटैत जाएत।
व्याख्या: स्रोतमे अपन लिपिसँ सम्बन्ध छूटलासँ भाषाक आकर्षण कम होइत जाएत कहल अछि।

प्रश्न 12058. तिरहुता जाननिहारक स्थिति स्रोतमे कोना वर्णित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संख्या दिनानुदिन नगण्य भेल जा रहल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संख्या दिनानुदिन नगण्य भेल जा रहल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे जाननिहारक संस्था नगण्य भेल जा रहल अछि कहल अछि।

प्रश्न 12059. ई स्थिति मैथिली लेल कोन प्रकारक विषय अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चिन्तनीय विषय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चिन्तनीय विषय।
व्याख्या: स्रोतमे ई मैथिली हेतु चिन्तनीय विषय कहल गेल।

प्रश्न 12060. जयकान्त मिश्र एहि प्रश्नपर कोना विचार कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गम्भीरतापूर्वक।
उत्तर: घ. गम्भीरतापूर्वक।
व्याख्या: स्रोतमे ओ गम्भीरता पूर्वक विचार कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12061. तिरहुता संरक्षणक प्रयोजन ओ किएक बुझलनि?
क. मैथिलीक स्वतंत्र पहचान बचएबाक लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक स्वतंत्र पहचान बचएबाक लेल।
व्याख्या: स्रोत-संदर्भमे लिपि आ भाषा सम्बन्धसँ ई प्रयोजन स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12062. खण्ड १२११क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तिरहुता मैथिलीक स्वतंत्र प्राचीन लिपि अछि, जकर संरक्षण भाषा-स्वातंत्र्यसँ जुड़ल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तिरहुता मैथिलीक स्वतंत्र प्राचीन लिपि अछि, जकर संरक्षण भाषा-स्वातंत्र्यसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: ई खण्ड तिरहुता-लिपिक स्वतंत्र अस्तित्व पर आधारित अछि।

खण्ड १२१२ : विदेह-सदेह २ — लिपि-भाषा सम्बन्ध आ मैथिली संकट

प्रश्न 12063. अपन लिपिसँ सम्बन्ध छूटलासँ भाषाक प्रति की घटैत अछि?
क. आकर्षण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आकर्षण।
व्याख्या: स्रोतमे भाषाक प्रति आकर्षण कम होइत जाएत कहल अछि।

प्रश्न 12064. एहि सम्बन्धक प्रत्यक्ष प्रमाण स्रोतमे कोन भाषा कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली।
व्याख्या: स्रोतमे तकर प्रत्यक्ष प्रमाण मैथिली कहल अछि।

प्रश्न 12065. तिरहुता जाननिहारक कमि ककर लेल चिन्तनीय अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली लेल।
व्याख्या: स्रोतमे ई मैथिली हेतु चिन्तनीय विषय कहल गेल।

प्रश्न 12066. जयकान्त मिश्रक विचारमे तिरहुता संरक्षण लेल की चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रयास।
उत्तर: घ. प्रयास।
व्याख्या: स्रोतमे एकर संरक्षणार्थ प्रयासक प्रयोजन अछि कहल गेल।

प्रश्न 12067. स्वतंत्र लिपि भाषाक कोन पक्ष स्थापित करैत अछि?
क. भाषाक अलग सांस्कृतिक अस्तित्व।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषाक अलग सांस्कृतिक अस्तित्व।
व्याख्या: स्रोतमे स्वतंत्र आधुनिक भारतीय भाषा जकाँ मैथिलीकेँ अपन स्वतंत्र लिपि छैक कहल गेल।

प्रश्न 12068. लिपि-विलुप्ति मैथिली लेल किएक संकटकारी अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कारण भाषा-आकर्षण आ स्वतंत्रता कमजोर पड़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कारण भाषा-आकर्षण आ स्वतंत्रता कमजोर पड़ैत अछि।
व्याख्या: स्रोतक तर्कमे लिपि-सम्बन्ध छूटला पर भाषिक आकर्षण घटैत अछि।

प्रश्न 12069. तिरहुता प्रश्नपर गम्भीर विचारक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. संरक्षणक ठोस आवश्यकता स्वीकार करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. संरक्षणक ठोस आवश्यकता स्वीकार करब।
व्याख्या: स्रोतमे संरक्षणार्थ प्रयासक प्रयोजन कहल गेल।

प्रश्न 12070. एहि खण्डमे भाषा आ लिपिक सम्बन्ध कोना देखाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. एक-दोसर पर निर्भर।
उत्तर: घ. एक-दोसर पर निर्भर।
व्याख्या: स्रोतमे अन्योन्याश्रित सम्बन्ध कहल अछि।

प्रश्न 12071. मैथिलीक स्वतंत्र भाषिक दावा लेल लिपि किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. किएक तँ स्वतंत्र लिपि स्वतंत्र परम्पराक प्रमाण बनैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. किएक तँ स्वतंत्र लिपि स्वतंत्र परम्पराक प्रमाण बनैत अछि।
व्याख्या: अकादेमी प्रसंगमे स्वतंत्र लिपिक अस्तित्व प्रश्न बनल छल।

प्रश्न 12072. खण्ड १२१२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लिपिसँ दूरी मैथिली चेतनाक क्षय करैत अछि, तेँ तिरहुता संरक्षण भाषिक अस्तित्वक शर्त बनैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लिपिसँ दूरी मैथिली चेतनाक क्षय करैत अछि, तेँ तिरहुता संरक्षण भाषिक अस्तित्वक शर्त बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड लिपि-भाषा सम्बन्धक संकट पर आधारित अछि।

खण्ड १२१३ : विदेह-सदेह २ — अकादेमी प्रश्न आ तिरहुता तर्क

प्रश्न 12073. साहित्य अकादेमी मान्यता प्रसंगमे कोन प्रश्न उठल?
क. मैथिलीक स्वतंत्र लिपिक अस्तित्व छैक वा नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक स्वतंत्र लिपिक अस्तित्व छैक वा नहि।
व्याख्या: स्रोतमे मान्यता प्रसंगमे ई प्रश्न उपस्थित भेल छल।

प्रश्न 12074. जयकान्त मिश्र एहि प्रश्नक उत्तरमे की तर्क देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीकेँ अपन स्वतंत्र लिपि छैक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीकेँ अपन स्वतंत्र लिपि छैक।
व्याख्या: स्रोतमे ओ उत्तर देलथिन जे एकरा अपन स्वतंत्र लिपि छैक।

प्रश्न 12075. ओ तिरहुताक इतिहास कोना वर्णित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पुरातन इतिहास।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पुरातन इतिहास।
व्याख्या: स्रोतमे स्वतंत्र लिपिक पुरातन इतिहास छैक कहल गेल।

प्रश्न 12076. हुनकर मान्यता अनुसार मैथिलीक स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करबामे कठिनता ककर कारणेँ भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लिपिक कारणेँ।
उत्तर: घ. लिपिक कारणेँ।
व्याख्या: स्रोतमे लिपिक कारणेँ कठिनता भेलनि कहल अछि।

प्रश्न 12077. जँ तिरहुता संरक्षित रहितए तँ कोन कठिनता नहि होइत?
क. मैथिलीक स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध करबाक कठिनता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध करबाक कठिनता।
व्याख्या: स्रोतमे वर्तमान कठिनता संरक्षित लिपि रहितहुँ नहि होइत कहल अछि।

प्रश्न 12078. अकादेमी प्रसंगमे तिरहुता कोन प्रकारक प्रमाण बनल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्वतंत्र भाषिक अस्तित्वक प्रमाण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्वतंत्र भाषिक अस्तित्वक प्रमाण।
व्याख्या: स्रोतमे स्वतंत्र लिपिक अस्तित्व मान्यता प्रश्नक उत्तर अछि।

प्रश्न 12079. जयकान्त मिश्रक तर्कक केन्द्र की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लिपि, पुरातन इतिहास आ भाषिक स्वातंत्र्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लिपि, पुरातन इतिहास आ भाषिक स्वातंत्र्य।
व्याख्या: स्रोतक तर्क एहि तीन तत्व पर आधारित अछि।

प्रश्न 12080. एहि खण्डमे तिरहुता प्रश्न ककर संग जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली मान्यताक वैधानिक प्रश्न संग।
उत्तर: घ. मैथिली मान्यताक वैधानिक प्रश्न संग।
व्याख्या: स्रोतमे साहित्य अकादेमीक मान्यता प्रसंगमे प्रश्न उठल अछि।

प्रश्न 12081. तिरहुता संरक्षणक असफलतासँ कोन आरोप बल पबैत अछि?
क. मैथिलीकेँ हिन्दी अंग कहबाक प्रवृत्ति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीकेँ हिन्दी अंग कहबाक प्रवृत्ति।
व्याख्या: आगाँक स्रोतमे लिपि लोपसँ मैथिलीकेँ हिन्दी अंग उद्घोषित करबाक बात अछि।

प्रश्न 12082. खण्ड १२१३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अकादेमीमे मैथिली मान्यताक तर्क स्वतंत्र तिरहुता लिपि आ ओकर पुरातन इतिहास पर टिकैत छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अकादेमीमे मैथिली मान्यताक तर्क स्वतंत्र तिरहुता लिपि आ ओकर पुरातन इतिहास पर टिकैत छल।
व्याख्या: ई खण्ड मान्यता-प्रसंगक लिपि-तर्क पर आधारित अछि।

खण्ड १२१४ : विदेह-सदेह २ — दरभंगा राज, कैथी आ देवनागरी प्रभाव

प्रश्न 12083. पुरातन कालमे मिथिलांचलमे तिरहुता संग कोन लिपिक प्रचलन छल?
क. कैथी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कैथी।
व्याख्या: स्रोतमे तिरहुताक संगहि कैथी लिपिक प्रचलन कहल गेल।

प्रश्न 12084. दरभंगा राजक कार्यकलापमे कोन लिपि प्रयोग होइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तिरहुता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तिरहुता।
व्याख्या: स्रोतमे दरभंगा राजक कार्यकलापमे तिरहुता प्रयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12085. तिरहुता हटाकऽ कोन लिपि लादल गेल कहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हिन्दी-बहुल देवनागरी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हिन्दी-बहुल देवनागरी।
व्याख्या: स्रोतमे तिरहुता बहिष्कृत कऽ हिन्दी बहुल देवनागरी लादल गेल कहल अछि।

प्रश्न 12086. एहि परिवर्तनक दुष्परिणाम की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तिरहुता शनैः-शनैः जनमानससँ विलुप्त होइत गेल।
उत्तर: घ. तिरहुता शनैः-शनैः जनमानससँ विलुप्त होइत गेल।
व्याख्या: स्रोतमे ई भयंकर दुष्परिणाम कहल गेल।

प्रश्न 12087. तिरहुता विलुप्तिसँ मैथिली पर कोन भाषिक आरोप लागल?
क. मैथिलीकेँ हिन्दीक अंग कहल गेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीकेँ हिन्दीक अंग कहल गेल।
व्याख्या: स्रोतमे विद्वान लोकनि मैथिलीकेँ हिन्दीक अंग उद्घोषित कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12088. एहि तुलनामे कोन भाषादिक नाम स्रोतमे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ब्रजभाषा आ अवधी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ब्रजभाषा आ अवधी।
व्याख्या: स्रोतमे ब्रजभाषा आ अवधीक प्रसंगमे कहल जाइछ लिखल अछि।

प्रश्न 12089. जँ तिरहुता प्रचलित रहैत तँ की नहि होइत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहन विवादक उद्भावना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एहन विवादक उद्भावना।
व्याख्या: स्रोतमे तिरहुता रहितए तँ एहन विवाद नहि होइत कहल गेल।

प्रश्न 12090. संस्कृत लेल वैकल्पिक रूपमे भारतभरि कोन लिपि व्यवहृत होबए लागल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. देवनागरी।
उत्तर: घ. देवनागरी।
व्याख्या: स्रोतमे संस्कृत हेतु वैकल्पिक रूपमे देवनागरीक प्रयोग बढ़ल कहल अछि।

प्रश्न 12091. देवनागरी प्रभावक परिणाम मैथिली साहित्यकार पर की भेल?
क. ओ तिरहुताक स्थानपर देवनागरी प्रयोग करए लगलाह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ तिरहुताक स्थानपर देवनागरी प्रयोग करए लगलाह।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली साहित्य निर्माता लोकनि देवनागरी प्रयोग करए लगलाह कहल अछि।

प्रश्न 12092. खण्ड १२१४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दरभंगा राजसँ जनमानस धरि तिरहुता हटि देवनागरीक प्रभाव बढ़ल, जाहिसँ मैथिलीक स्वतंत्रता विवादित भेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दरभंगा राजसँ जनमानस धरि तिरहुता हटि देवनागरीक प्रभाव बढ़ल, जाहिसँ मैथिलीक स्वतंत्रता विवादित भेल।
व्याख्या: ई खण्ड तिरहुता-देवनागरी परिवर्तनक परिणाम पर आधारित अछि।

खण्ड १२१५ : विदेह-सदेह २ — तिरहुता पुनर्जीवनक असफल प्रयास

प्रश्न 12093. तिरहुता संरक्षणार्थ स्रोतमे प्रयास भेल कि नहि?
क. कतिपय प्रयास अवश्य कएल गेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कतिपय प्रयास अवश्य कएल गेल।
व्याख्या: स्रोतमे कतिपय प्रयास अवश्य कएल गेल कहल अछि।

प्रश्न 12094. ओहि प्रयास सभक परिणाम कोना वर्णित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कोनो प्रयास सफल नहि भऽ सकल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कोनो प्रयास सफल नहि भऽ सकल।
व्याख्या: स्रोतमे कोनो प्रयास सफल नहि भेल कहल अछि।

प्रश्न 12095. दरभंगासँ तिरहुता लिपिमे की बाहर करबाक प्रयास भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समाचार पत्र।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समाचार पत्र।
व्याख्या: स्रोतमे दरभंगासँ तिरहुता लिपिमे समाचार पत्र बाहर करबाक प्रयासक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12096. दरभंगा समाचार-पत्र प्रयासक परिणाम की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओहो विफल रहल।
उत्तर: घ. ओहो विफल रहल।
व्याख्या: स्रोतमे ओहो विफल रहल कहल अछि।

प्रश्न 12097. मैथिली भाषी जनमानस कोन लिपि सभमे पढ़ैत-लिखैत छल?
क. तिरहुता आ कैथी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तिरहुता आ कैथी।
व्याख्या: स्रोतमे लोक तिरहुता आ कैथी लिपिमे पढ़ैत-लिखैत छल कहल अछि।

प्रश्न 12098. एहिसँ अतिरिक्त कोनो लिपिक ज्ञान लोककेँ छल कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि, अतिरिक्त कोनो लिपिक प्रयोगक ज्ञान नहि छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि, अतिरिक्त कोनो लिपिक प्रयोगक ज्ञान नहि छल।
व्याख्या: स्रोतमे अतिरिक्त कोनो लिपिक प्रयोगक ज्ञान नहि छलैक कहल अछि।

प्रश्न 12099. तिरहुता पुनर्जीवन लेल पुस्तक भण्डारसँ के प्रयास कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जीवनाथ राय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जीवनाथ राय।
व्याख्या: स्रोतमे जीवनाथ राय (1891-1964)क उल्लेख अछि।

प्रश्न 12100. जीवनाथ राय कोन ग्रन्थ रचलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीक प्रथम पुस्तक।
उत्तर: घ. मैथिलीक प्रथम पुस्तक।
व्याख्या: स्रोतमे ओ ‘मैथिलीक प्रथम पुस्तक’क रचना कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12101. जीवनाथ राय प्रयासक समग्र परिणाम की भेल?
क. ओ सफल नहि भऽ सकल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ सफल नहि भऽ सकल।
व्याख्या: स्रोतमे प्रयास सफल नहि भेल कहल गेल।

प्रश्न 12102. खण्ड १२१५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तिरहुता बचएबाक समाचार-पत्र आ पुस्तक-आधारित प्रयास भेल, मुदा व्यापक रूपेँ सफल नहि भऽ सकल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तिरहुता बचएबाक समाचार-पत्र आ पुस्तक-आधारित प्रयास भेल, मुदा व्यापक रूपेँ सफल नहि भऽ सकल।
व्याख्या: ई खण्ड पुनर्जीवन-प्रयासक सीमित परिणाम पर आधारित अछि।

खण्ड १२१६ : विदेह-सदेह २ — मैथिली कोश आ तिरहुता ककहारा

प्रश्न 12103. मैथिली कोश प्रकाशित करबाक प्रसंगमे जयकान्त मिश्र कोन टाइप बनएबाक प्रयास कएलनि?

क. विशुद्ध तिरहुता लिपिक टाइप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विशुद्ध तिरहुता लिपिक टाइप।

व्याख्या: स्रोतमे ओ विशुद्ध तिरहुता टाइप बनएबाक अथक प्रयास कएलनि।

प्रश्न 12104. हुनकर बलवती इच्छा की छलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कोश तिरहुता लिपिमे प्रकाशित हो।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कोश तिरहुता लिपिमे प्रकाशित हो।

व्याख्या: स्रोतमे तिरहुता लिपिमे कोश प्रकाशित होबाक इच्छा देल अछि।

प्रश्न 12105. एहि भावनासँ प्रेरित भऽ ओ कोन पुस्तक लिखलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तिरहुता ककहारा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तिरहुता ककहारा।

व्याख्या: स्रोतमे तिरहुता ककहारा (1967) नामक पुस्तक लिखलनि कहल अछि।

प्रश्न 12106. तिरहुता ककहारा कोन वर्षक पुस्तक छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 1967।

उत्तर: घ. 1967।

व्याख्या: स्रोतमे कोष्ठकमे 1967 देल अछि।

प्रश्न 12107. दैव-दुर्योगक कारणेँ हुनक प्रयासक परिणाम की भेल?

क. सफलीभूत नहि भऽ पौलनि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सफलीभूत नहि भऽ पौलनि।

व्याख्या: स्रोतमे हुनक प्रयास सफल नहि भेल कहल अछि।

प्रश्न 12108. जयकान्त मिश्रक मान्यता अनुसार तिरहुता अपनायल रहितए तँ कोन काज सुकर होइत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्राचीन एवं मध्ययुगीन कालजयी साहित्यक रिसर्च।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्राचीन एवं मध्ययुगीन कालजयी साहित्यक रिसर्च।

व्याख्या: स्रोतमे रिसर्च अधिक सुकर होइत कहल अछि।

प्रश्न 12109. वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे तिरहुताक की प्रयोजन बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पुनरुत्थान।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पुनरुत्थान।
व्याख्या: स्रोतमे वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे पुनरुत्थान प्रयोजनीय अछि कहल गेल।

प्रश्न 12110. तिरहुता शोध आ सांस्कृतिक कार्यमे कोना उपयोगी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अलंकरणक रूपमे विशेष उपादेय।
उत्तर: घ. अलंकरणक रूपमे विशेष उपादेय।
व्याख्या: स्रोतमे रिसर्च आ सांस्कृतिक कार्यादिमे अलंकरण रूपमे उपादेय कहल अछि।

प्रश्न 12111. ओ विशेष रूपेँ ककरा तिरहुता सिखबाक प्रेरणा देलनि?
क. मैथिली पढ़निहार छात्र समुदायकेँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली पढ़निहार छात्र समुदायकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे विशेषतः मैथिली पढ़निहार छात्र समुदायकेँ प्रेरणा देलनि कहल अछि।

प्रश्न 12112. खण्ड १२१६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कोश, तिरहुता टाइप आ तिरहुता ककहारा मार्फत जयकान्त मिश्र लिपि-पुनरुत्थानक ठोस प्रयास कएलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कोश, तिरहुता टाइप आ तिरहुता ककहारा मार्फत जयकान्त मिश्र लिपि-पुनरुत्थानक ठोस प्रयास कएलनि।
व्याख्या: ई खण्ड तिरहुता ककहारा आ कोश-प्रयास पर आधारित अछि।

खण्ड १२१७ : विदेह-सदेह २ — परामर्श मण्डलक संयोजक

प्रश्न 12113. साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यता भेटलाक बाद प्रवासी मातृभाषानुरागीमे की फैलल?
क. प्रसन्नताक लहरि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रसन्नताक लहरि।
व्याख्या: स्रोतमे समग्र मिथिलांचल आ प्रवासी मातृभाषानुरागीमे प्रसन्नताक लहरि फैलल कहल अछि।

प्रश्न 12114. जनमानसक भाव कोना वर्णित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आनन्दक सागरमे डुब्बी मारए लागल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आनन्दक सागरमे डुब्बी मारए लागल।
व्याख्या: स्रोतमे जनमानस आनन्दक सागरमे डुब्बी मारए लागल कहल अछि।

प्रश्न 12115. मान्यता बाद लोक कोन आशा कएलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विकासक अवरुद्ध मार्गमे नव किरण विकीर्ण होएत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विकासक अवरुद्ध मार्गमे नव किरण विकीर्ण होएत।

व्याख्या: स्रोतमे ई आशा स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 12116. मैथिली परामर्श मण्डलक प्रथम संयोजक के छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रमानाथ झा।

उत्तर: घ. रमानाथ झा।

व्याख्या: स्रोतमे प्रथम संयोजक रमानाथ झा (1906-1971)क उल्लेख अछि।

प्रश्न 12117. रमानाथ झाक आकस्मिक निधनोपरान्त संयोजक के बनलाह?

क. जयकान्त मिश्र।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जयकान्त मिश्र।

व्याख्या: स्रोतमे रमानाथ झाक निधनक बाद जयकान्त मिश्र संयोजक बनलाह।

प्रश्न 12118. जयकान्त मिश्र कतेक खेप परामर्श मण्डलक संयोजक रहलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दू खेप।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दू खेप।

व्याख्या: स्रोतमे ओ दू खेप संयोजक रहला कहल अछि।

प्रश्न 12119. हुनक कार्यकालमे उल्लेखनीय प्रकाशनक स्थिति कोना वर्णित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कोनो एहन उल्लेखनीय प्रकाशन नहि भेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कोनो एहन उल्लेखनीय प्रकाशन नहि भेल।

व्याख्या: स्रोतमे ई स्पष्ट टिप्पणी अछि।

प्रश्न 12120. परामर्श मण्डल प्रसंग कोन संस्थासँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमीसँ।

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमीसँ।

व्याख्या: स्रोतमे अकादेमी द्वारा मान्यता आ परामर्श मण्डलक सन्दर्भ अछि।

प्रश्न 12121. मान्यता पश्चात् परामर्श मण्डलक महत्व की छल?
क. मैथिलीक विकासक मार्ग खोलबाक आशा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीक विकासक मार्ग खोलबाक आशा।
व्याख्या: स्रोतमे विकासक अवरुद्ध मार्गमे नव किरणक आशा अछि।

प्रश्न 12122. खण्ड १२१७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मान्यता पश्चात् जयकान्त मिश्र रमानाथ झाक बाद परामर्श मण्डलक संयोजक बनलाह, मुदा प्रकाशन-उपलब्धि सीमित रहल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मान्यता पश्चात् जयकान्त मिश्र रमानाथ झाक बाद परामर्श मण्डलक संयोजक बनलाह, मुदा प्रकाशन-उपलब्धि सीमित रहल।
व्याख्या: ई खण्ड संयोजक-भूमिका पर आधारित अछि।

खण्ड १२१८ : विदेह-सदेह २ — संयोजक कालक प्रकाशन

प्रश्न 12123. जयकान्त मिश्रक कार्यावधिमे उमानाथ झा द्वारा सम्पादित कोन पुस्तक प्रकाशमे आएल?
क. विद्यापति गीत शती।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विद्यापति गीत शती।
व्याख्या: स्रोतमे उमानाथ झा सम्पादित विद्यापति गीत शतीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12124. जयधारी सिंह द्वारा संग्रहीत कोन पुस्तक प्रकाशमे आएल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली कथा संग्रह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली कथा संग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे जयधारी सिंह द्वारा संग्रहीत मैथिली कथा संग्रहक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12125. हुनक संयोजक कालक कतेक घटना चिरस्मरणीय कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दुइ घटना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दुइ घटना।
व्याख्या: स्रोतमे संयोजक कालक दुइ घटना चिरस्मरणीय अछि कहल गेल।

प्रश्न 12126. प्रकाशनक मूल्यांकन स्रोतमे कोना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उल्लेखनीय प्रकाशन नहि, मुदा किछु पुस्तक प्रकाशमे आएल।
उत्तर: घ. उल्लेखनीय प्रकाशन नहि, मुदा किछु पुस्तक प्रकाशमे आएल।
व्याख्या: स्रोतमे उल्लेखनीय प्रकाशन नहि भेल, तथापि किछु पुस्तकक नाम देल अछि।

प्रश्न 12127. विद्यापति गीत शतीक सम्पादक के छलाह?
क. उमानाथ झा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. उमानाथ झा।
व्याख्या: स्रोतमे उमानाथ झा द्वारा सम्पादित कहल अछि।

प्रश्न 12128. मैथिली कथा संग्रहक संग्रहकर्ता के छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयधारी सिंह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयधारी सिंह।
व्याख्या: स्रोतमे जयधारी सिंह द्वारा संग्रहीत कहल अछि।

प्रश्न 12129. संयोजक कालक प्रकाशन सूची ककर कार्यावधिसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जयकान्त मिश्रक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जयकान्त मिश्रक।
व्याख्या: स्रोतमे हिनक कार्यावधिमे निम्नस्थ पुस्तक प्रकाशमे आएल कहल अछि।

प्रश्न 12130. एहि प्रकाशनक प्रसंग ककर बाद राखल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मान्यता भेटलाक बाद परामर्श मण्डल संयोजनक बाद।
उत्तर: घ. मान्यता भेटलाक बाद परामर्श मण्डल संयोजनक बाद।
व्याख्या: स्रोत क्रममे मान्यता आ संयोजकत्वक बाद प्रकाशन चर्चा अछि।

प्रश्न 12131. एहि खण्डक संतुलित निष्कर्ष की अछि?
क. कार्यकालमे सीमित प्रकाशन भेल, मुदा ओकर उल्लेख दस्तावेजी अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कार्यकालमे सीमित प्रकाशन भेल, मुदा ओकर उल्लेख दस्तावेजी अछि।
व्याख्या: स्रोतमे प्रकाशन सीमित रहबाक बादो नामोल्लेख अछि।

प्रश्न 12132. खण्ड १२१८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संयोजक कालमे विद्यापति गीत शती आ मैथिली कथा संग्रह सन प्रकाशन भेल, मुदा उपलब्धि असाधारण नहि कहल गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संयोजक कालमे विद्यापति गीत शती आ मैथिली कथा संग्रह सन प्रकाशन भेल, मुदा उपलब्धि असाधारण नहि कहल गेल।
व्याख्या: ई खण्ड संयोजक कालक प्रकाशन पर आधारित अछि।

खण्ड १२१९ : विदेह-सदेह २ — राधाकृष्ण चौधरी इतिहास विवाद

प्रश्न 12133. अकादेमी मैथिली साहित्यक इतिहास अंग्रेजीमे लिखबाक दायित्व ककरा देलक?

क. प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरीकेँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरीकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे इतिहासकार प्रो. राधाकृष्ण चौधरीकेँ दायित्व देल गेल।

प्रश्न 12134. राधाकृष्ण चौधरीक जीवन-वर्ष स्रोतमे कोना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. 1924-1984।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. 1924-1984।

व्याख्या: स्रोतमे प्रो. राधाकृष्ण चौधरी (1924-1984) देल अछि।

प्रश्न 12135. ओ पाण्डुलिपि कतय समर्पित कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साहित्य अकादेमीमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साहित्य अकादेमीमे।

व्याख्या: स्रोतमे ओ यथासमय पाण्डुलिपि साहित्य अकादेमीमे समर्पित कएलनि।

प्रश्न 12136. पाण्डुलिपि परामर्श मण्डलक समक्ष किएक गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विचारार्थ।

उत्तर: घ. विचारार्थ।

व्याख्या: स्रोतमे विचारार्थ प्रस्तुत कएल गेल कहल अछि।

प्रश्न 12137. स्रोत अनुसार पाण्डुलिपि कोन दशामे पड़ल?

क. बभन पेंचमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बभन पेंचमे।

व्याख्या: स्रोतमे पाण्डुलिपि एहन बभन पेंचमे पड़ल कहल अछि।

प्रश्न 12138. ओ पाण्डुलिपि ककरा सँ वंचित कऽ देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रकाशनसँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रकाशनसँ।

व्याख्या: स्रोतमे कतिपय कारणेँ ओकरा प्रकाशनसँ वंचित कएल गेल।

प्रश्न 12139. एक प्रमुख कारण स्रोतमे की बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिलीक इतिहास लेखनपर प्रो. मिश्रक एकाधिकार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीक इतिहास लेखनपर प्रो. मिश्रक एकाधिकार।
व्याख्या: स्रोतमे एकर प्रमुख कारण एहि रूपमे देल अछि।

प्रश्न 12140. ई प्रसंग मैथिली इतिहास लेखनमे कोन स्थिति देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विवाद आ संस्थागत पेंच।
उत्तर: घ. विवाद आ संस्थागत पेंच।
व्याख्या: स्रोतमे पाण्डुलिपि विवादास्पद पेंचमे पड़बाक बात अछि।

प्रश्न 12141. प्रो. चौधरीक पाण्डुलिपिक विषय की छल?
क. मैथिली साहित्यक इतिहास।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली साहित्यक इतिहास।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक दायित्व देल गेल।

प्रश्न 12142. खण्ड १२१९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राधाकृष्ण चौधरीक मैथिली इतिहास-पाण्डुलिपि अकादेमीमे समर्पित भेल, मुदा संस्थागत पेंच आ विवादसँ प्रकाशन रोकायल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. राधाकृष्ण चौधरीक मैथिली इतिहास-पाण्डुलिपि अकादेमीमे समर्पित भेल, मुदा संस्थागत पेंच आ विवादसँ प्रकाशन रोकायल।
व्याख्या: ई खण्ड इतिहास-पाण्डुलिपि विवाद पर आधारित अछि।

खण्ड १२२० : विदेह-सदेह २ — दू इतिहास: ए हिस्ट्री आ ए सर्वे

प्रश्न 12143. प्रो. मिश्र अपन पूर्व प्रकाशित इतिहासक कोन खण्ड संक्षिप्त कएलनि?
क. प्रथम खण्ड आ द्वितीय खण्ड।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रथम खण्ड आ द्वितीय खण्ड।
व्याख्या: स्रोतमे पूर्व प्रकाशित इतिहास प्रथम आ द्वितीय खण्ड संक्षिप्त कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12144. अकादेमी द्वारा प्रकाशित इतिहासक अंग्रेजी शीर्षक की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. A History of Maithili Literature।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. A History of Maithili Literature।
व्याख्या: स्रोतमे एहि शीर्षकसँ 1976 मे प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12145. A History of Maithili Literature कोन वर्ष प्रकाशित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. 1976।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. 1976।
व्याख्या: स्रोतमे शीर्षकक संग 1976 देल अछि।

प्रश्न 12146. ओकर मैथिली अनुवादक शीर्षक की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली साहित्यक इतिहास।
उत्तर: घ. मैथिली साहित्यक इतिहास।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली अनुवाद ‘मैथिली साहित्यक इतिहास’ कहल गेल।

प्रश्न 12147. मैथिली अनुवाद कोन वर्ष भेल?
क. 1988।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. 1988।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली अनुवाद 1988 देल अछि।

प्रश्न 12148. प्रो. मिश्र स्वयं अनुवाद किएक कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हुनका आशंका छलनि जे अन्य अनुवादक एम्हर-ओम्हर ने कऽ देथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हुनका आशंका छलनि जे अन्य अनुवादक एम्हर-ओम्हर ने कऽ देथि।
व्याख्या: स्रोतमे ई शंका स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12149. प्रो. चौधरी अपन पाण्डुलिपि कोन नामे प्रकाशित करौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. A Survey of Maithili Literature।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. A Survey of Maithili Literature।
व्याख्या: स्रोतमे एहि नामे प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12150. A Survey of Maithili Literature कोन वर्ष प्रकाशित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. 1976।
उत्तर: घ. 1976।
व्याख्या: स्रोतमे ई शीर्षक 1976 नामे प्रकाशित कहल गेल।

प्रश्न 12151. दुनू इतिहासक स्वीकृति स्रोतमे कोना कहल अछि?
क. दुनू इतिहास मैथिलीमे विवादास्पद रहल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दुनू इतिहास मैथिलीमे विवादास्पद रहल।
व्याख्या: स्रोतमे उक्त दुनू इतिहास विवादास्पद रहल कहल अछि।

प्रश्न 12152. खण्ड १२२०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिश्रक A History आ चौधरीक A Survey दुनू 1976क इतिहास-ग्रन्थ मैथिली साहित्य-जगतमे विवादक विषय बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिश्रक A History आ चौधरीक A Survey दुनू 1976क इतिहास-ग्रन्थ मैथिली साहित्य-जगतमे विवादक विषय बनल।
व्याख्या: ई खण्ड दू इतिहास-ग्रन्थक विवाद पर आधारित अछि।

खण्ड १२२१ : विदेह-सदेह २ — इण्डियन लिटरेचर सिन्स इण्डिपेण्डेन्स विवाद

प्रश्न 12153. अकादेमी कोन पुस्तक प्रकाशित कएलक जाहि मे स्वातंत्र्योत्तर भाषिक विकासक मूल्यांकन छल?
क. Indian Literature Since Independence।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. Indian Literature Since Independence।
व्याख्या: स्रोतमे एहि पुस्तकक नाम देल अछि।

प्रश्न 12154. ई पुस्तक कोन वर्ष प्रकाशित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. 1973।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. 1973।
व्याख्या: स्रोतमे Indian Literature Since Independence (1973) देल अछि।

प्रश्न 12155. मैथिली भाषाक स्वातंत्र्योत्तर काजक विकास पर आलेख के प्रस्तुत कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रोफेसर मिश्र।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रोफेसर मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे प्रोफेसर मिश्र आलेख प्रस्तुत कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12156. प्रकाशनोपरान्त ई आलेख ककर केन्द्र-बिन्दु बनल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. साहित्य जगतमे पैघ विवादक।
उत्तर: घ. साहित्य जगतमे पैघ विवादक।
व्याख्या: स्रोतमे आलेख पैघ विवादक केन्द्र बिन्दु बनल कहल अछि।

प्रश्न 12157. आलोचना अनुसार आलेखमे समस्या की छल?

क. यथार्थ मूल्यांकनमे भ्रामक विचार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यथार्थ मूल्यांकनमे भ्रामक विचार।

व्याख्या: स्रोतमे अज्ञानता वा सूचना-अभावसँ भ्रामक विचार प्रस्तुत कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12158. विरोधमे ककर पचीस अंकक लगधक लेख छपल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिला मिहिरक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिला मिहिरक।

व्याख्या: स्रोतमे पटनासँ प्रकाशित मिथिला मिहिरक पचीस अंकक लगधक लेखन उल्लेखित अछि।

प्रश्न 12159. मिथिला मिहिरक सम्पादक के छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सुधांशु शेखर चौधरी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सुधांशु शेखर चौधरी।

व्याख्या: स्रोतमे सम्पादक सुधांशु शेखर चौधरी (1920-1990) देल अछि।

प्रश्न 12160. ओ कोन सीरिज चलौलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वादे-वादे जायते तत्वबोध।

उत्तर: घ. वादे-वादे जायते तत्वबोध।

व्याख्या: स्रोतमे एहि नामे एक सीरिज चलौलनि कहल अछि।

प्रश्न 12161. सीरिजमे प्रकाशित आलेख सभमे की भेल?

क. प्रो. मिश्रक कटु आलोचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रो. मिश्रक कटु आलोचना।

व्याख्या: स्रोतमे हुनक कटु आलोचना कएल गेल कहल अछि।

प्रश्न 12162. खण्ड १२२१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. Indian Literature Since Independence मे मिश्रक मैथिली-आलेख भ्रामक मूल्यांकनक आरोपसँ मिथिला मिहिरक व्यापक आलोचना-विवादक केन्द्र बनल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. Indian Literature Since Independence मे मिश्रक मैथिली-आलेख भ्रामक मूल्यांकनक आरोपसँ मिथिला मिहिरक व्यापक आलोचना-विवादक केन्द्र बनल।

व्याख्या: ई खण्ड स्वातंत्र्योत्तर मूल्यांकन-विवाद पर आधारित अछि।

खण्ड १२२२ : विदेह-सदेह २ — दिशा-बोधक समीक्षक आ सुशीला समीक्षा

प्रश्न 12163. जयकान्त मिश्र जीवनपर्यन्त कोन साहित्यक अध्ययन-अध्यापनमे निरत रहलाह?

क. अंग्रेजी साहित्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंग्रेजी साहित्य।

व्याख्या: स्रोतमे ओ जीवनपर्यन्त अंग्रेजी साहित्यक अध्ययन-अध्यापनमे निरत रहलाह।

प्रश्न 12164. मैथिलीमे समीक्षा लिखबाक प्रेरणा की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मातृभाषामे समीक्षाक अभाव।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मातृभाषामे समीक्षाक अभाव।

व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषामे समीक्षाक सर्वथा अभाव देखि लिखबाक शुभारम्भ कएलनि।

प्रश्न 12165. हुनक वृहत समीक्षात्मक कृति कोन उपन्यासपर आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सुशीला।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सुशीला।

व्याख्या: स्रोतमे प्रो. गंगापति सिंहक उपन्यास सुशीला पर समीक्षाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12166. सुशीला उपन्यासक लेखक के छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रोफेसर गंगापति सिंह।

उत्तर: घ. प्रोफेसर गंगापति सिंह।

व्याख्या: स्रोतमे प्रोफेसर गंगापति सिंह (1894-1969)क उपन्यास सुशीला कहल अछि।

प्रश्न 12167. सुशीला समीक्षा के प्रकाशित कएलनि?

क. मिथिला मिहिरक सम्पादक सुरेन्द्र झा सुमन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला मिहिरक सम्पादक सुरेन्द्र झा सुमन।

व्याख्या: स्रोतमे सुरेन्द्र झा सुमन (1910-2002) प्रकाशित कएलनि।

प्रश्न 12168. सुशीला समीक्षाक महत्वक एक कारण की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली शब्दक बदला हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोगक प्रतिवाद।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली शब्दक बदला हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोगक प्रतिवाद।

व्याख्या: स्रोतमे उपन्यासकारक हिन्दी शब्द-प्रयोगक सतर्क प्रतिवाद महत्त्वपूर्ण कहल अछि।

प्रश्न 12169. ई आलेख जयकान्त मिश्र लेल की खोललक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली आलोचनामे प्रवेशक द्वार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली आलोचनामे प्रवेशक द्वार।
व्याख्या: स्रोतमे ई आलेख मैथिली आलोचनामे प्रवेशक द्वार खोललक कहल अछि।

प्रश्न 12170. जनमानसक धारणा की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिलीमे जे लिखल जाइत अछि से ठीक, आलोचना नहि होमक चाही।
उत्तर: घ. मैथिलीमे जे लिखल जाइत अछि से ठीक, आलोचना नहि होमक चाही।
व्याख्या: स्रोतमे ई धारणा स्पष्ट वर्णित अछि।

प्रश्न 12171. कौन युवा साहित्यचिन्तक हिनका प्रोत्साहित कएलथिन?
क. बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन।
व्याख्या: स्रोतमे भुवनेश्वर सिंह भुवन (1907-1944) अतिशय प्रोत्साहित कएलथिन।

प्रश्न 12172. खण्ड १२२२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुशीला उपन्यासक समीक्षा जयकान्त मिश्रकेँ मैथिली आलोचनामे दिशा-बोधक समीक्षक रूपमे स्थापित कएलक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुशीला उपन्यासक समीक्षा जयकान्त मिश्रकेँ मैथिली आलोचनामे दिशा-बोधक समीक्षक रूपमे स्थापित कएलक।
व्याख्या: ई खण्ड सुशीला समीक्षा आ आलोचना-प्रवेशक प्रसंग पर आधारित अछि।

खण्ड १२२३ : विदेह-सदेह २ — इतिहास-लेखन आ आलोचनात्मक दिशा

प्रश्न 12173. मैथिलीमे इतिहास-लेखनक परम्पराक शुभारम्भ ककरासँ मानल गेल?
क. जयकान्त मिश्रसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जयकान्त मिश्रसँ।
व्याख्या: स्रोतमे हिनकहिसँ मैथिलीमे इतिहास-लेखनक परम्पराक शुभारम्भ कहल अछि।

प्रश्न 12174. इतिहास-लेखन स्रोतमे कोन श्रेणीमे परिणत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समीक्षाक श्रेणीमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समीक्षाक श्रेणीमे।
व्याख्या: स्रोतमे इतिहास-लेखन वस्तुतः समीक्षाक श्रेणीमे परिणत अछि कहल गेल।

प्रश्न 12175. आधुनिक आलोचक हुनक इतिहासमे की देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कतिपय दोष।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कतिपय दोष।
व्याख्या: स्रोतमे तथाकथित आलोचकक कथन छनि जे इतिहासमे कतिपय दोष अछि।

प्रश्न 12176. ताहि दोषक उत्तरमे स्रोत की तर्क देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हुनका समक्ष कोनो प्रतिमान नहि छलनि।
उत्तर: घ. हुनका समक्ष कोनो प्रतिमान नहि छलनि।
व्याख्या: स्रोतमे प्रतिमान नहि छलनि जेकर आलोकमे विस्तृत विश्लेषण करितथि।

प्रश्न 12177. हुनक इतिहास परवर्ती शोध लेल की देलक?
क. अनेक दिशा-निर्देश।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनेक दिशा-निर्देश।
व्याख्या: स्रोतमे अनेक दिशा निर्देश कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12178. ककरा एहि दिशामे गहन अनुसंधान करबाक छैक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. परवर्ती पीढ़ीकेँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. परवर्ती पीढ़ीकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे परवर्ती पीढ़ीकेँ गहन अनुसंधान करबाक बात अछि।

प्रश्न 12179. हुनक इतिहास मैथिली आलोचना साहित्यकेँ की करौलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दिशा-बोध।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दिशा-बोध।
व्याख्या: स्रोतमे इतिहास मैथिली आलोचना साहित्यकेँ दिशा-बोध करौलक कहल अछि।

प्रश्न 12180. स्रोत अनुसार हमसभ आगाँ बढ़ि नहि पौलहुँ, ई कोन प्रकारक विषय अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चिन्तनीय।
उत्तर: घ. चिन्तनीय।
व्याख्या: स्रोतमे ई चिन्तनीय थिक कहल अछि।

प्रश्न 12181. एहि खण्डमे आलोचना-दृष्टिक संतुलन की अछि?
क. दोष मानितो आरम्भिक प्रतिमानहीनता बुझब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दोष मानितो आरम्भिक प्रतिमानहीनता बुझब।
व्याख्या: स्रोतमे दोषक चर्चा संग प्रतिमान-अभावक तर्क अछि।

प्रश्न 12182. खण्ड १२२३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक इतिहास-लेखनमे सीमा छल, मुदा ओ मैथिली आलोचना आ शोधक मूल दिशा-निर्देशक बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक इतिहास-लेखनमे सीमा छल, मुदा ओ मैथिली आलोचना आ शोधक मूल दिशा-निर्देशक बनल।
व्याख्या: ई खण्ड इतिहास-लेखनक आलोचनात्मक महत्त्व पर आधारित अछि।

खण्ड १२२४ : विदेह-सदेह २ — लोकसाहित्य, नाटक आ आधुनिक परिवर्तन

प्रश्न 12183. जयकान्त मिश्रक लोकसाहित्य सम्बन्धी ग्रन्थक नाम की अछि?
क. An Introduction to Folk Literature of Mithila।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. An Introduction to Folk Literature of Mithila।
व्याख्या: स्रोतमे An Introdution/Introduction to Folk Literature of Mithila एहि विधाक प्रथम ग्रन्थ कहल अछि।

प्रश्न 12184. ई ग्रन्थ कोन विधाक प्रथम ग्रन्थ कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलाक लोकसाहित्य विधाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाक लोकसाहित्य विधाक।
व्याख्या: स्रोतमे लोकसाहित्य सम्बन्धी एहि विधाक प्रथम ग्रन्थ कहल अछि।

प्रश्न 12185. ग्रन्थक प्रथम खण्डमे मुख्यतः की विवेचित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लोकगीत आ लोकनाट्य सम्बन्धी गीत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लोकगीत आ लोकनाट्य सम्बन्धी गीत।
व्याख्या: स्रोतमे प्रथम खण्डमे लोकगीत, लोकनाट्य सम्बन्धी गीतक विवेचन अछि।

प्रश्न 12186. द्वितीय खण्डमे की चर्चा भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लोक विश्वास, लोक परम्परा आ कतिपय लोक कथा।
उत्तर: घ. लोक विश्वास, लोक परम्परा आ कतिपय लोक कथा।
व्याख्या: स्रोतमे द्वितीय खण्डान्तर्गत ई विषय देल अछि।

प्रश्न 12187. वैदेही समिति सम्मेलनमे ओ कोन समस्या दिस ध्यान आकर्षित कएलनि?
क. मैथिली इतिहास सम्बन्धी किछु समस्या।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली इतिहास सम्बन्धी किछु समस्या।
व्याख्या: स्रोतमे प्रथम अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनक रचना संग्रहमे एहि समस्याक चर्चा अछि।

प्रश्न 12188. अध्यक्षीय भाषणमे ओ ककर भविष्य पर प्रकाश देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नाट्य साहित्यक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नाट्य साहित्यक।
व्याख्या: स्रोतमे नाट्य साहित्यक भविष्यपर प्रकाश देबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12189. हुनक मान्यता अनुसार मैथिलीक भविष्य कोन माध्यमसँ सुरक्षित रहि सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नाटक आ रंगमंचक माध्यमसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नाटक आ रंगमंचक माध्यमसँ।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली नाटक आ रंगमंचक माध्यमे भविष्य सुनिश्चित भऽ सकैछ कहल अछि।

प्रश्न 12190. बीसम शताब्दीमे मैथिली साहित्यमे कोन स्वर गुंजित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परिवर्तनक स्वर।
उत्तर: घ. परिवर्तनक स्वर।
व्याख्या: स्रोतमे बीसम शताब्दीमे परिवर्तनक स्वर गुंजित भेल कहल अछि।

प्रश्न 12191. परिवर्तनक स्वरसँ जुड़ल कारणमे कोन विचारधारा/सिद्धान्त स्रोतमे अछि?
क. मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त।
व्याख्या: स्रोतमे आर्थिक विचारमे मार्क्सवाद, फ्रायड सिद्धान्त, बौद्धिकता वृद्धि आदिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12192. खण्ड १२२४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोकसाहित्य, नाट्य-संकेत आ आधुनिक परिवर्तनक समर्थनसँ जयकान्त मिश्र मैथिली संस्कृतिक भविष्य-दिशा देखौलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लोकसाहित्य, नाट्य-संकेत आ आधुनिक परिवर्तनक समर्थनसँ जयकान्त मिश्र मैथिली संस्कृतिक भविष्य-दिशा देखौलनि।
व्याख्या: ई खण्ड लोकसाहित्य, नाटक आ आधुनिक परिवर्तन पर आधारित अछि।

खण्ड १२२५ : विदेह-सदेह २ — कीर्त्तनिञा नाटक विवादक आरम्भ

प्रश्न 12193. A History of Maithili Literature क Volume-I मे मिथिलामे उपलब्ध नाटक सभकेँ प्रो. मिश्र कोन नामे सम्बोधित कएलनि?

क. कीर्त्तनिञा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कीर्त्तनिञा।

व्याख्या: स्रोतमे उपलब्ध नाटकादिकेँ कीर्त्तनिञा नामे सम्बोधित करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12194. प्रो. मिश्रक “कीर्त्तनिञा” नामकरणपर पहिल आपत्ति के प्रस्तुत कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रमानाथ झा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रमानाथ झा।

व्याख्या: स्रोतमे रमानाथ झा द्वारा अभिव्यञ्जनाक प्रथम अंकमे आपत्ति देल गेल अछि।

प्रश्न 12195. रमानाथ झा प्रो. मिश्रक मतक खण्डन करैत ओकरा की कहलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कीर्त्तनिञा नाच।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कीर्त्तनिञा नाच।

व्याख्या: स्रोतमे रमानाथ झा ओकरा कीर्त्तनिञा नाच कहलनि।

प्रश्न 12196. एहि मतभेदसँ मैथिली आलोचनामे कोन प्रवृत्ति शुरू भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवादक एक परम्परा।

उत्तर: घ. विवादक एक परम्परा।

व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रसंगपर आलोचनाक्षेत्रमे विवादक परम्परा शुरू भेल कहल अछि।

प्रश्न 12197. प्रो. मिश्र रमानाथ झाक मतक उत्तर कतय देलनि?

क. अभिव्यञ्जनाक अग्रिम अंकमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिव्यञ्जनाक अग्रिम अंकमे।

व्याख्या: स्रोतमे प्रो. मिश्र उक्त पत्रिकाक अग्रिम अंकमे खण्डन कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12198. रमानाथ झाक बृहत् आलोचनात्मक लेख कोन संग्रहमे आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रमानाथ झा प्रबन्ध संग्रहमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रमानाथ झा प्रबन्ध संग्रहमे।

व्याख्या: स्रोतमे रमानाथ झा प्रबन्ध संग्रह (1371 साल) मे बृहत् आलोचनाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12199. रमानाथ झा मैथिली नाटकपर कोन नामक ग्रन्थ प्रकाशित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कीर्तनिञा नाटक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कीर्तनिञा नाटक।
व्याख्या: स्रोतमे इहो कीर्तनिञा नाटक (1965) नामक ग्रन्थ प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12200. कीर्तनिञा नाटक ग्रन्थक प्रकाशन-वर्ष स्रोतमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. 1965।
उत्तर: घ. 1965।
व्याख्या: स्रोतमे कीर्तनिञा नाटकक कोष्ठकमे 1965 देल अछि।

प्रश्न 12201. एहि विवादक मुख्य विषय की छल?
क. मिथिलाक उपलब्ध नाटकादिक नामकरण आ स्वरूप।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक उपलब्ध नाटकादिक नामकरण आ स्वरूप।
व्याख्या: स्रोतमे कीर्त्तनिञा/कीर्त्तनिञा नाच नामकरणक विवाद अछि।

प्रश्न 12202. खण्ड १२२५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिश्रक कीर्त्तनिञा नामकरणपर रमानाथ झाक आपत्तिसँ मैथिली नाटक-आलोचनाक विवाद-परम्परा आरम्भ भेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिश्रक कीर्त्तनिञा नामकरणपर रमानाथ झाक आपत्तिसँ मैथिली नाटक-आलोचनाक विवाद-परम्परा आरम्भ भेल।
व्याख्या: ई खण्ड कीर्त्तनिञा नामकरण-विवाद पर आधारित अछि।

खण्ड १२२६ : विदेह-सदेह २ — इतिहासकारक ईमानदारी आ रमानाथ झा

प्रश्न 12203. प्रो. मिश्रक मान्यता अनुसार कीर्त्तनिञा प्रसंगक धनराशि केकर जगाओल छल?
क. नेपालक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नेपालक।
व्याख्या: स्रोतमे “ई नेपालक जगाओल धनराशि थिक” कहल गेल अछि।

प्रश्न 12204. इतिहास बुझबाक लेल स्रोतमे की अपेक्षा कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बड़ तहमे जाए पड़त।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बड़ तहमे जाए पड़त।
व्याख्या: स्रोतमे इतिहास बुझबाक हेतु बड़ तहमे जाए पड़त कहल अछि।

प्रश्न 12205. इतिहासकार लेल प्रो. मिश्रक मान्यता अनुसार कोन गुण परमावश्यक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ईमानदार आ निष्पक्ष होएब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ईमानदार आ निष्पक्ष होएब।
व्याख्या: स्रोतमे इतिहासकारकेँ इमानदार आ निष्पक्ष होएब परमावश्यक कहल अछि।

प्रश्न 12206. रमानाथ झा पर प्रो. मिश्रक अंग्रेजी टिप्पणी की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रमानाथ झा वाज ए कन्जरवेटिव इमैजनेटिव हिस्टोरियन।
उत्तर: घ. रमानाथ झा वाज ए कन्जरवेटिव इमैजनेटिव हिस्टोरियन।
व्याख्या: स्रोतमे ई अंग्रेजी टिप्पणी उद्धृत अछि।

प्रश्न 12207. एहि प्रसंगमे इतिहासकारक कर्तव्य कोना देखाओल गेल?
क. पूर्वग्रह छोड़ि गहिर तह धरि इतिहास पढ़ब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पूर्वग्रह छोड़ि गहिर तह धरि इतिहास पढ़ब।
व्याख्या: स्रोतमे बड़ तहमे जाएब आ निष्पक्षता पर जोर अछि।

प्रश्न 12208. रमानाथ झा सम्बन्धी टिप्पणीक भाव की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हुनका रूढ़िवादी कल्पनाशील इतिहासकार मानब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हुनका रूढ़िवादी कल्पनाशील इतिहासकार मानब।
व्याख्या: उद्धरणक अर्थ एहि आलोचनात्मक संकेत दिस जाइत अछि।

प्रश्न 12209. कीर्त्तनिञा विवादमे इतिहासक प्रश्न की बनल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नामकरणसँ बेसी पृष्ठभूमि आ स्रोत-तहक खोज।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नामकरणसँ बेसी पृष्ठभूमि आ स्रोत-तहक खोज।
व्याख्या: स्रोतमे इतिहास बुझबाक हेतु बड़ तहमे जाए पड़त कहल अछि।

प्रश्न 12210. एहि खण्डमे आलोचनाक स्वर कतेक तीक्ष्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. व्यक्तिगत मतक प्रत्यक्ष आलोचना धरि।
उत्तर: घ. व्यक्तिगत मतक प्रत्यक्ष आलोचना धरि।
व्याख्या: रमानाथ झा पर कन्जरवेटिव इमैजनेटिव हिस्टोरियन टिप्पणी देल गेल।

प्रश्न 12211. इतिहासकारक निष्पक्षता किएक जरूरी कहल गेल?
क. कारण नाटक-इतिहासक सही अर्थ गहिर स्रोत-विवेकसँ बुझाइत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कारण नाटक-इतिहासक सही अर्थ गहिर स्रोत-विवेकसँ बुझाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे इतिहासकारक ईमानदारी आ निष्पक्षता आवश्यक कहल अछि।

प्रश्न 12212. खण्ड १२२६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कीर्त्तनिञा विवादमे प्रो. मिश्र इतिहासक गहिर तह, ईमानदारी आ निष्पक्षताकेँ मूल कसौटी मानलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कीर्त्तनिञा विवादमे प्रो. मिश्र इतिहासक गहिर तह, ईमानदारी आ निष्पक्षताकेँ मूल कसौटी मानलनि।
व्याख्या: ई खण्ड इतिहासकार-दृष्टि आ रमानाथ झा पर टिप्पणी पर आधारित अछि।

खण्ड १२२७ : विदेह-सदेह २ — लीला नाटकक नव संकेत

प्रश्न 12213. कीर्त्तनिञा विवादक बाद मैथिली आलोचक लोकनि कोना विभक्त भेलाह?
क. दू भागमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दू भागमे।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली आलोचक लोकनि दू भागमे विभक्त भऽ गेलाह कहल अछि।

प्रश्न 12214. किछु वर्ष पश्चात् नव बिन्दु दिस संकेत के कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह।
व्याख्या: स्रोतमे प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह द्वारा नव बिन्दु संकेतक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12215. प्रेमशंकर सिंहक ग्रन्थक नाम की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली नाटक ओ रंगमंच।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली नाटक ओ रंगमंच।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली नाटक ओ रंगमंच नामक ग्रन्थक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12216. मैथिली नाटक ओ रंगमंच कोन वर्षक कृति छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. 1978।
उत्तर: घ. 1978।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली नाटक ओ रंगमंच (1978) देल अछि।

प्रश्न 12217. प्रेमशंकर सिंह उपलब्ध नाटक सभकेँ ने कीर्त्तनिञा ने कीर्तनिञा नाच, बरु की कहलनि?
क. लीला नाटक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लीला नाटक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि सभ नाटकादिकेँ लीला नाटक कहलनि।

प्रश्न 12218. प्रेमशंकर सिंहक मतक मूल्यांकन स्रोतमे कोना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विचार करबाक एक नव दिशाक बोध।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विचार करबाक एक नव दिशाक बोध।
व्याख्या: स्रोतमे ओ नव दिशाक बोध करौलनि जे विचारणीय थिक कहल अछि।

प्रश्न 12219. एहि विवादमे तीन नामकरण कोन-कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कीर्त्तनिञा, कीर्त्तनिञा नाच आ लीला नाटक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कीर्त्तनिञा, कीर्त्तनिञा नाच आ लीला नाटक।
व्याख्या: स्रोतक क्रममे ई तीन नाम सामने अबैत अछि।

प्रश्न 12220. लीला नाटक मत ककर मतसभसँ अलग अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रो. मिश्र आ रमानाथ झा दुनूक मतसभसँ।
उत्तर: घ. प्रो. मिश्र आ रमानाथ झा दुनूक मतसभसँ।
व्याख्या: स्रोतमे ने कीर्त्तनिञा ने कीर्तनिञा नाच, प्रत्युत लीला नाटक कहल अछि।

प्रश्न 12221. एहि खण्डमे आलोचनाक विकास की रूपमे देखाइत अछि?
क. पुरान विवादसँ नव वर्गीकरण दिस गमन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पुरान विवादसँ नव वर्गीकरण दिस गमन।
व्याख्या: कीर्त्तनिञा विवादक बाद लीला नाटकक नव संकेत भेटैत अछि।

प्रश्न 12222. खण्ड १२२७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रेमशंकर सिंह कीर्त्तनिञा विवादकेँ लीला नाटक नामक नव आलोचनात्मक दिशा दिस मोड़लनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रेमशंकर सिंह कीर्त्तनिञा विवादकेँ लीला नाटक नामक नव आलोचनात्मक दिशा दिस मोड़लनि।
व्याख्या: ई खण्ड लीला नाटक मत आ नव आलोचनात्मक दिशा पर आधारित अछि।

खण्ड १२२८ : विदेह-सदेह २ — आन्दोलनक सजग प्रहरी: नव चेतना

प्रश्न 12223. अनुसंधानोत्तर प्रो. मिश्रक मस्तिष्कमे कोन नव प्रवृत्तिक जागरण भेल?

क. मैथिलीक गौरव-गरिमाकेँ वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे जागृत करब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक गौरव-गरिमाकेँ वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे जागृत करब।

व्याख्या: स्रोतमे अनुसंधानोत्तर एहि नव प्रवृत्तिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12224. मैथिलीक गौरव जगएबाक लेल ओ कोन मार्ग अपनौलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक मार्ग।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक मार्ग।

व्याख्या: स्रोतमे रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक मार्गक अनुसरण कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12225. ओ समाजमे नवजीवनक संचार लेल कोन अभियान शुरू कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जनजागरणक अभियान।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जनजागरणक अभियान।

व्याख्या: स्रोतमे जनजागरणक अभियानक सूत्रपातक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12226. ओ समाजकेँ कोन स्थितिसँ बाहर आनय चाहैत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अकर्मण्य, निष्क्रिय, सुसुप्त, धार्मिक कट्टरता आ रूढ़िग्रस्त जीवनक अन्धकूपसँ।

उत्तर: घ. अकर्मण्य, निष्क्रिय, सुसुप्त, धार्मिक कट्टरता आ रूढ़िग्रस्त जीवनक अन्धकूपसँ।

व्याख्या: स्रोतमे समाजक ई अवस्था वर्णित अछि।

प्रश्न 12227. हुनक अभियानक लक्ष्य कोन जीवन-क्षेत्र सभ छल?

क. सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक जीवन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक जीवन।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक जीवनमे नव चेतना अनबाक बात अछि।

प्रश्न 12228. जनजागरणक प्रभाव ककरा पर पड़ल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिलावासीपर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिलावासीपर।

व्याख्या: स्रोतमे हुनक आन्दोलनात्मक प्रभाव मिथिलावासीपर पड़ल कहल अछि।

प्रश्न 12229. एहि खण्डमे प्रो. मिश्रक भूमिका कोना उभरैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रचनाकार आ आन्दोलनकारी दुनू रूपमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रचनाकार आ आन्दोलनकारी दुनू रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक रूख स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12230. हुनक आन्दोलनात्मक काजक प्रेरणा की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली गौरव-गरिमाक जागरण।
उत्तर: घ. मैथिली गौरव-गरिमाक जागरण।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक गौरव-गरिमा जागृत करबाक उद्देश्य अछि।

प्रश्न 12231. जनजागरण अभियानक मूल आशय की अछि?
क. सुप्त समाजमे भाषा-संस्कृति सम्बन्धी नव चेतना अनब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सुप्त समाजमे भाषा-संस्कृति सम्बन्धी नव चेतना अनब।
व्याख्या: स्रोतक वर्णन एहि आशयकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 12232. खण्ड १२२८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रो. मिश्र रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक जनजागरण द्वारा मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक जीवनमे नव चेतना अनबाक प्रयास कएलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रो. मिश्र रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक जनजागरण द्वारा मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक जीवनमे नव चेतना अनबाक प्रयास कएलनि।
व्याख्या: ई खण्ड आन्दोलनक सजग प्रहरी रूप पर आधारित अछि।

खण्ड १२२९ : विदेह-सदेह २ — उदासीन सरकार आ सीताराम झाक पंक्ति

प्रश्न 12233. बिहार आ केन्द्र सरकारक कोन भाव देखि प्रो. मिश्रक हृदयमे आक्रोश भेल?
क. उदासीनता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. उदासीनता।
व्याख्या: स्रोतमे बिहार एवं केन्द्र सरकारक उदासीनताक कारणेँ आक्रोशक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12234. सरकारी उदासीनताक कारणेँ मैथिली कोना देखाइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सर्वथा उपेक्षित।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सर्वथा उपेक्षित।
व्याख्या: स्रोतमे ई भाषा सर्वथा उपेक्षित देखल कहल अछि।

प्रश्न 12235. प्रो. मिश्र कविवर सीताराम झाक कोन पंक्तिसँ प्रभावित भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अछि सलाइ मे आगि, बरत की बिना रगड़ने।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अछि सलाइ मे आगि, बरत की बिना रगड़ने।
व्याख्या: स्रोतमे सीताराम झाक एहि पंक्तिक उद्धरण अछि।

प्रश्न 12236. सीताराम झाक दोसर उद्धृत पंक्ति की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पायब निज अधिकार, कतहुँ की बिना झगड़ने।।
उत्तर: घ. पायब निज अधिकार, कतहुँ की बिना झगड़ने।।
व्याख्या: स्रोतमे अधिकार-संघर्षक ई पंक्ति देल अछि।

प्रश्न 12237. सीताराम झाक जीवन-वर्ष स्रोतमे कोना देल अछि?
क. 1891-1975।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. 1891-1975।
व्याख्या: स्रोतमे कविवर सीताराम झा (1891-1975) देल अछि।

प्रश्न 12238. उद्धृत पंक्तिक व्यापक प्रभाव ककरा पर पड़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जनमानसपर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जनमानसपर।
व्याख्या: स्रोतमे कविवरक पंक्तिक व्यापक प्रभाव जनमानसपर पड़ल कहल अछि।

प्रश्न 12239. पंक्ति “बिना रगड़ने” कोन आन्दोलन-दृष्टि दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अधिकार लेल संघर्ष आवश्यक अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अधिकार लेल संघर्ष आवश्यक अछि।
व्याख्या: उद्धरणक अर्थ अधिकार संघर्ष बिना नहि भेटत भन्ने अछि।

प्रश्न 12240. एहि खण्डमे सरकारी उदासीनता कोन प्रतिक्रिया जन्मबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषा-अधिकार लेल आक्रोश आ सक्रियता।
उत्तर: घ. भाषा-अधिकार लेल आक्रोश आ सक्रियता।
व्याख्या: स्रोतमे उपेक्षा देखि हृदयमे आक्रोश आ जनजागरणक प्रसंग अछि।

प्रश्न 12241. सीताराम झाक पंक्ति प्रो. मिश्र लेल की बनल?
क. आन्दोलनक प्रेरक सूत्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आन्दोलनक प्रेरक सूत्र।
व्याख्या: स्रोतमे ओ पंक्तिसँ अतिशय प्रभावित भेलाह कहल अछि।

प्रश्न 12242. खण्ड १२२९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सरकारी उदासीनता आ सीताराम झाक संघर्ष-पंक्ति प्रो. मिश्रक भाषा-अधिकार आन्दोलनक प्रेरणा बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सरकारी उदासीनता आ सीताराम झाक संघर्ष-पंक्ति प्रो. मिश्रक भाषा-अधिकार आन्दोलनक प्रेरणा बनल।
व्याख्या: ई खण्ड सरकारक उपेक्षा आ संघर्ष-प्रेरणा पर आधारित अछि।

खण्ड १२३० : विदेह-सदेह २ — मातृभाषा चेतना आ अधिकार-बोध

प्रश्न 12243. जनजागरण अभियानक उद्देश्य जनमानसकेँ कोन महत्व बुझाएब छल?
क. मातृभाषाक महत्व।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषाक महत्व।
व्याख्या: स्रोतमे जनमानस मातृभाषाक महत्व जानए-बुझए से उद्देश्य देल अछि।

प्रश्न 12244. प्रो. मिश्र जनमानसकेँ कोन दिशा मे उताहुल देखए चाहैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समुचित अधिकार प्राप्त करबाक दिशामे सहयोग लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समुचित अधिकार प्राप्त करबाक दिशामे सहयोग लेल।
व्याख्या: स्रोतमे समुचित अधिकार प्राप्ति हेतु सहयोग लेल उताहुल होएबाक बात अछि।

प्रश्न 12245. हुनका अनुभव भेल जे मिथिलांचलवासीमे ककर अभाव अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषा चेतनाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषा चेतनाक।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा चेतनाक सर्वथा अभाव कहल अछि।

प्रश्न 12246. भाषा चेतनाक अर्थमे कोन भाव सभ सन्निहित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मातृभाषा प्रेम, दायित्व-बोध, कर्तव्य-बोध, गौरव-बोध।
उत्तर: घ. मातृभाषा प्रेम, दायित्व-बोध, कर्तव्य-बोध, गौरव-बोध।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा चेतनाक अर्थ एहि भाव सभसँ समझाओल गेल अछि।

प्रश्न 12247. भाषाक उन्नति आ विकास ककर चेतनापर निर्भर करैत अछि?
क. ओहि भाषा-भाषीक चेतनापर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओहि भाषा-भाषीक चेतनापर।
व्याख्या: स्रोतमे भाषाक विकास भाषा-भाषीक चेतनापर निर्भर कहल अछि।

प्रश्न 12248. मैथिली भाषीक चेतना पर स्रोतक टिप्पणी की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ कमजोर/अभावग्रस्त रहल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ कमजोर/अभावग्रस्त रहल।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली भाषीमे भाषा चेतनाक सर्वथा अभाव कहल अछि।

प्रश्न 12249. अधिकार प्राप्तिक मार्गमे जनजागरणक भूमिका की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जनमानसकेँ मातृभाषा-कर्तव्य दिस प्रेरित करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जनमानसकेँ मातृभाषा-कर्तव्य दिस प्रेरित करब।
व्याख्या: स्रोतमे जनमानसकेँ महत्व बुझाबय आ सहयोग लेल उताहुल करबाक बात अछि।

प्रश्न 12250. मातृभाषा चेतना किएक आवश्यक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषाक उन्नति आ विकास ओकरहि पर निर्भर अछि।
उत्तर: घ. भाषाक उन्नति आ विकास ओकरहि पर निर्भर अछि।
व्याख्या: स्रोतमे विकासक निर्भरता भाषा-भाषीक चेतनापर कहल अछि।

प्रश्न 12251. एहि खण्डमे आन्दोलनक मूल लक्ष्य की अछि?
क. भाषा-प्रेमकेँ अधिकार-बोधमे बदलनाइ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा-प्रेमकेँ अधिकार-बोधमे बदलनाइ।
व्याख्या: स्रोतमे प्रेम, दायित्व, गौरव आ अधिकार-प्राप्ति सभ एकसंग अछि।

प्रश्न 12252. खण्ड १२३०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रो. मिश्रक जनजागरण मातृभाषा-प्रेमकेँ दायित्व, गौरव आ अधिकार-बोधमे बदलबाक प्रयास छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रो. मिश्रक जनजागरण मातृभाषा-प्रेमकेँ दायित्व, गौरव आ अधिकार-बोधमे बदलबाक प्रयास छल।
व्याख्या: ई खण्ड भाषा चेतना आ अधिकार-बोध पर आधारित अछि।

खण्ड १२३१ : विदेह-सदेह २ — गाम-गाम आन्दोलनक रूपरेखा

प्रश्न 12253. प्रो. मिश्र मैथिली आन्दोलनकेँ कोन स्वरूप देबाक आकांक्षी छलाह?

क. नव स्वरूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव स्वरूप।

व्याख्या: स्रोतमे ओ मैथिली आन्दोलनकेँ नव स्वरूप प्रदान करबाक आकांक्षी रहथि कहल अछि।

प्रश्न 12254. आन्दोलन-कार्यक्रम रूपायित करबाक हुनक इच्छा कोना व्यक्त भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. झुण्ड बान्हि कऽ ढोल बजा कऽ गाम-गाम घूमि मातृभाषाक महत्व बुझाएब।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. झुण्ड बान्हि कऽ ढोल बजा कऽ गाम-गाम घूमि मातृभाषाक महत्व बुझाएब।

व्याख्या: स्रोतमे ई रूपरेखा स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 12255. मुख्य-मुख्य स्थानपर की आयोजन करबाक बात छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मीटिंग।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मीटिंग।

व्याख्या: स्रोतमे मुख्य-मुख्य स्थानपर मीटिंग आयोजनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12256. मीटिंगक उद्देश्य की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभाषाक वास्तविक महत्व आ समस्या दिस जनमानसक ध्यान आकर्षित करब।

उत्तर: घ. मातृभाषाक वास्तविक महत्व आ समस्या दिस जनमानसक ध्यान आकर्षित करब।

व्याख्या: स्रोतमे ई उद्देश्य स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12257. ओ भाषा पर कोन वर्चस्व समाप्त करबाक आवश्यकता देखलनि?

क. एक जातिक वर्चस्व।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक जातिक वर्चस्व।

व्याख्या: स्रोतमे एहि भाषापर एक जातिक वर्चस्व समाप्त करबाक लेल आन्दोलनक आवश्यकता कहल अछि।

प्रश्न 12258. मिथिलांचलक कोन समुदायकेँ आन्दोलनसँ जोड़बाक बलवती इच्छा छलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मुसलमान समुदायकेँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मुसलमान समुदायकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिलांचलक मुसलमानकेँ आन्दोलन संग जोड़बाक इच्छा उल्लेखित अछि।

प्रश्न 12259. एहि आन्दोलनक रूपरेखामे लोक-सम्पर्कक साधन की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गाम-गाम भ्रमण, ढोल आ सभा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गाम-गाम भ्रमण, ढोल आ सभा।
व्याख्या: स्रोतमे ढोल बजा कऽ गाम-गाम घूमब आ मीटिंग आयोजन देल अछि।

प्रश्न 12260. एक जातिक वर्चस्व समाप्त करबाक आशय की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली आन्दोलनकेँ व्यापक सामाजिक आधार देब।
उत्तर: घ. मैथिली आन्दोलनकेँ व्यापक सामाजिक आधार देब।
व्याख्या: स्रोतक प्रसंगमे वर्चस्व समाप्ति आ मुसलमान समुदाय जोड़ब व्यापकता दिस संकेत करैत अछि।

प्रश्न 12261. एहि खण्डमे आन्दोलनक शैली कोना अछि?
क. जनसम्पर्क-आधारित लोक-आन्दोलन शैली।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जनसम्पर्क-आधारित लोक-आन्दोलन शैली।
व्याख्या: ढोल, गाम-गाम भ्रमण, मीटिंग ई लोक-आन्दोलनक रूप अछि।

प्रश्न 12262. खण्ड १२३१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रो. मिश्र मैथिली आन्दोलनकेँ गाम-गामक जनसम्पर्क, सभा आ सामाजिक समावेशनसँ नव रूप देबए चाहैत छलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रो. मिश्र मैथिली आन्दोलनकेँ गाम-गामक जनसम्पर्क, सभा आ सामाजिक समावेशनसँ नव रूप देबए चाहैत छलाह।
व्याख्या: ई खण्ड आन्दोलनक लोक-रूपरेखा पर आधारित अछि।

खण्ड १२३२ : विदेह-सदेह २ — अन्यायी सत्ता आ महाप्रलयक हुँकार

प्रश्न 12263. स्रोतमे उद्धृत पंक्ति “अन्यायी सत्ता छी प्रलय” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?
क. अन्यायपूर्ण सत्ताक विरुद्ध प्रतिरोध।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अन्यायपूर्ण सत्ताक विरुद्ध प्रतिरोध।
व्याख्या: उद्धरणमे अन्यायी सत्ता आ हुँकारक प्रतिरोधी भाव अछि।

प्रश्न 12264. “हमरहिं लघु हुँकारसँ” पंक्ति कोन विश्वास देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. छोट आवाज सेहो महापरिवर्तन आन सकैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. छोट आवाज सेहो महापरिवर्तन आन सकैत अछि।
व्याख्या: पंक्तिमे लघु हुँकारसँ महाप्रलयक नियम कहल अछि।

प्रश्न 12265. एहि काव्यांशक उपयोग आन्दोलन-संदर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ई जनमानसकेँ अन्याय विरुद्ध बोलबाक शक्ति दैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ई जनमानसकेँ अन्याय विरुद्ध बोलबाक शक्ति दैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे आन्दोलनक नव रूपक बीच ई पंक्ति उद्धृत अछि।

प्रश्न 12266. स्रोतक पंक्ति अनुसार अन्यायी सत्ता ककर समान विषम अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गगन समान।
उत्तर: घ. गगन समान।
व्याख्या: उद्धरणमे “गगन सम अति विषम” देल अछि।

प्रश्न 12267. लघु हुँकारक फलस्वरूप की होइत अछि कहल गेल?
क. महाप्रलय।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. महाप्रलय।
व्याख्या: उद्धृत पंक्तिमे “महाप्रलय होइछ नियम” अछि।

प्रश्न 12268. एहि उद्धरणक भाषा-आन्दोलनमे प्रतीकात्मक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. छोट भाषिक प्रतिरोधो सत्ता-संरचना हिलाबय सकैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. छोट भाषिक प्रतिरोधो सत्ता-संरचना हिलाबय सकैत अछि।
व्याख्या: उद्धरण आन्दोलनक प्रतिरोधी ऊर्जा व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 12269. ई पंक्ति कोन प्रसंगक बाद अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली आन्दोलनकेँ नव स्वरूप देबाक प्रयासक बाद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली आन्दोलनकेँ नव स्वरूप देबाक प्रयासक बाद।
व्याख्या: स्रोत-क्रममे नव आन्दोलन-रूपरेखाक तुरन्त बाद ई काव्यांश अछि।

प्रश्न 12270. एहि खण्डमे आन्दोलनक स्वर कोना बदलैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समझाएबासँ संघर्षी हुँकार धरि।
उत्तर: घ. समझाएबासँ संघर्षी हुँकार धरि।
व्याख्या: ढोल-मीटिंगक लोक-रूपरेखाक बाद प्रतिरोधी पंक्ति अबैत अछि।

प्रश्न 12271. अन्यायी सत्ता विरुद्ध कविताक उपयोग की करैत अछि?
क. भाषा-आन्दोलनमे भावनात्मक ऊर्जा जोड़ैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा-आन्दोलनमे भावनात्मक ऊर्जा जोड़ैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे आन्दोलन-संदर्भमे काव्यांश उद्धृत अछि।

प्रश्न 12272. खण्ड १२३२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अन्यायी सत्ता विरुद्ध लघु हुँकारक काव्यांश मैथिली आन्दोलनकेँ प्रतिरोधी भाव आ संघर्षी ऊर्जा दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अन्यायी सत्ता विरुद्ध लघु हुँकारक काव्यांश मैथिली आन्दोलनकेँ प्रतिरोधी भाव आ संघर्षी ऊर्जा दैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड आन्दोलनक प्रतिरोधी काव्य-स्वर पर आधारित अछि।

खण्ड १२३३ : विदेह-सदेह २ — मैथिली आन्दोलनक राष्ट्रीय रूप

प्रश्न 12273. प्रो. मिश्रक धारणा अनुसार मैथिली आन्दोलनकेँ की प्रदान कएल जाएब आवश्यक छल?
क. राष्ट्रीय रूप।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राष्ट्रीय रूप।
व्याख्या: स्रोतमे जाधरि राष्ट्रीय रूप नहि देल जाएत ताधरि विकास सम्भावना नहि कहल अछि।

प्रश्न 12274. राष्ट्रीय रूप बिना ककर विकास सम्भावना नहि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीक।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक विकासक सम्भावना राष्ट्रीय रूपसँ जोड़ल अछि।

प्रश्न 12275. ओ कोन भाषा-समुदायक उदाहरण देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओड़िया, असमिया आ नेपाली भाषी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओड़िया, असमिया आ नेपाली भाषी।
व्याख्या: स्रोतमे ओड़िया, असमिया आ नेपाली भाषीक उदाहरण अछि।

प्रश्न 12276. ओहि भाषा-समुदाय सभमे कोन भाव कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अपन भाषाक प्रति अगाध श्रद्धा।
उत्तर: घ. अपन भाषाक प्रति अगाध श्रद्धा।
व्याख्या: स्रोतमे हुनका सभक अपन भाषाक प्रति अगाध श्रद्धा उल्लेखित अछि।

प्रश्न 12277. “अमार भाषा जननी”क नारा ककर संदर्भमे देल गेल?

क. अन्य भाषा-समुदाय सभक भाषिक श्रद्धाक संदर्भमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्य भाषा-समुदाय सभक भाषिक श्रद्धाक संदर्भमे।

व्याख्या: स्रोतमे ओड़िया/असमिया/नेपाली भाषीक संदर्भमे एहि नाराक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12278. मैथिली भाषीमे की उत्पन्न करबाक लेल आन्दोलन आवश्यक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अपन भाषाक प्रति स्नेह।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अपन भाषाक प्रति स्नेह।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली भाषीकेँ अपन भाषाक प्रति स्नेह उत्पन्न करबाक लेल आन्दोलनक प्रयोजन अछि।

प्रश्न 12279. साहित्य अकादेमी मान्यता प्राप्त भाषासभक अगिला माँग की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित होएब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित होएब।

व्याख्या: स्रोतमे अकादेमी मान्यता प्राप्त भाषासभक अष्टम अनुसूची प्रसंग अछि।

प्रश्न 12280. राष्ट्रीय रूपक लक्ष्य ककर कल्याणसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषाक।

उत्तर: घ. मैथिली भाषाक।

व्याख्या: स्रोतमे राष्ट्रीय रूप बिना भाषाक कल्याण सम्भावना नहि कहल अछि।

प्रश्न 12281. एहि खण्डमे आन्दोलनक विस्तार कोना देखाइत अछि?

क. क्षेत्रीय आन्दोलनसँ राष्ट्रीय भाषिक अधिकार दिस।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षेत्रीय आन्दोलनसँ राष्ट्रीय भाषिक अधिकार दिस।

व्याख्या: राष्ट्रीय रूप आ अष्टम अनुसूची प्रसंग ई विस्तार देखबैत अछि।

प्रश्न 12282. खण्ड १२३३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रो. मिश्र मैथिली आन्दोलनकेँ राष्ट्रीय रूप, भाषिक स्नेह आ अष्टम अनुसूची लक्ष्यसँ जोड़ि देखैत छलाह।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रो. मिश्र मैथिली आन्दोलनकेँ राष्ट्रीय रूप, भाषिक स्नेह आ अष्टम अनुसूची लक्ष्यसँ जोड़ि देखैत छलाह।

व्याख्या: ई खण्ड आन्दोलनक राष्ट्रीयीकरण पर आधारित अछि।

खण्ड १२३४ : विदेह-सदेह २ — वी शैल ओवरकम आ संग्राम-गीत

प्रश्न 12283. प्रो. मिश्रक धारणा अनुसार मैथिली आन्दोलनक सफलता लेल कोन प्रतीकात्मक गीत अपनाओल जा सकैत छल?

क. We Shall OverCome।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. We Shall OverCome।

व्याख्या: स्रोतमे Paul Robeson/Luther King संदर्भमे We Shall OverCome गीत देल अछि।

प्रश्न 12284. स्रोतमे गीतकेँ ककर लिखल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पौल रोबसनक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पौल रोबसनक।

व्याख्या: स्रोतमे पौल रोबसनक लिखल गीत कहल गेल।

प्रश्न 12285. स्रोतमे लूथर किंग कोन आन्दोलनमे गीतक उपयोग कएलनि कहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निग्रो आन्दोलनमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निग्रो आन्दोलनमे।

व्याख्या: स्रोतमे लूथर किंग द्वारा निग्रो आन्दोलनमे उपयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12286. प्रो. मिश्र मैथिली आन्दोलनमे गीतकेँ कोना घोषित करबाक आवश्यकता देखलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा समूहक संग्राम गीत।

उत्तर: घ. भाषा समूहक संग्राम गीत।

व्याख्या: स्रोतमे हमरा लोकनिकेँ भाषा समूहक संग्राम गीत घोषित करबाक आवश्यकता कहल अछि।

प्रश्न 12287. गीतक पहिल पंक्ति स्रोतमे की अछि?

क. We Shall OverCome, We Shall Over Come।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. We Shall OverCome, We Shall Over Come।

व्याख्या: स्रोतमे ई पंक्ति उद्धृत अछि।

प्रश्न 12288. गीतक “Some day” भाव मैथिली आन्दोलनमे की संकेत करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भविष्यक विजयक आशा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भविष्यक विजयक आशा।

व्याख्या: स्रोतमे संघर्ष-गीतक रूपमे ई आशावादी भाव अछि।

प्रश्न 12289. जाधरि मिथिलांचलवासी एहि काव्यांशसँ अनुप्राणित नहि हैताह, ताधरि की नहि होएत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आन्दोलन सफलीभूत नहि भऽ सकत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आन्दोलन सफलीभूत नहि भऽ सकत।

व्याख्या: स्रोतमे स्पष्ट ई बात देल अछि।

प्रश्न 12290. संग्राम गीतक आवश्यकता कोन बात देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आन्दोलनकेँ साझा भावनात्मक प्रतीक चाही।

उत्तर: घ. आन्दोलनकेँ साझा भावनात्मक प्रतीक चाही।

व्याख्या: स्रोतमे भाषा समूहक संग्राम गीत घोषित करबाक आवश्यकता बताओल गेल।

प्रश्न 12291. एहि खण्डमे विदेशी आन्दोलनक उदाहरण की लेल देल गेल?

क. मैथिली आन्दोलनकेँ प्रेरक जनगीत देबाक लेल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली आन्दोलनकेँ प्रेरक जनगीत देबाक लेल।

व्याख्या: पौल रोबसन-लूथर किंग उदाहरण एहि हेतु अछि।

प्रश्न 12292. खण्ड १२३४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. We Shall OverCome के उदाहरणसँ प्रो. मिश्र मैथिली आन्दोलन लेल साझा संग्राम-गीत आ विजय-विश्वासक आवश्यकता देखौलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. We Shall OverCome के उदाहरणसँ प्रो. मिश्र मैथिली आन्दोलन लेल साझा संग्राम-गीत आ विजय-विश्वासक आवश्यकता देखौलनि।

व्याख्या: ई खण्ड संग्राम-गीत आ आन्दोलन-प्रेरणा पर आधारित अछि।

खण्ड १२३५ : विदेह-सदेह २ — टिमटिमाइत दीप आ आन्दोलनक संकल्प

प्रश्न 12293. जयकान्त मिश्र मैथिलीक नामपर चलाओल आन्दोलनकेँ की मानैत रहथि?

क. टिमटिमाइत दीप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टिमटिमाइत दीप।

व्याख्या: स्रोतमे ई आन्दोलन टिमटिमाइत दीप मानल गेल अछि।

प्रश्न 12294. मैथिलीक नामपर जतेक संघर्ष चलाओल जाइत अछि, से साधारणत: की करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आन्दोलनकेँ उजागर करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आन्दोलनकेँ उजागर करैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे जतेक संघर्ष चलाओल जाइत अछि ओ आन्दोलन उजागर करैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12295. टिमटिमाइत दीपक रूपक की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आन्दोलन कमजोर सही, मुदा जीवित अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आन्दोलन कमजोर सही, मुदा जीवित अछि।
व्याख्या: दीप रूपक आन्दोलनक अस्तित्व आ अस्थिरता दुनू देखबैत अछि।

प्रश्न 12296. छोट-छोट संघर्षक महत्व की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ सभ आन्दोलनक पहचान बनेनिहार अछि।
उत्तर: घ. ओ सभ आन्दोलनक पहचान बनेनिहार अछि।
व्याख्या: स्रोतमे प्रत्येक संघर्ष आन्दोलन उजागर करैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12297. एहि खण्डमे आन्दोलनक स्थिति कोना अछि?
क. संभावनाशील मुदा अस्थिर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संभावनाशील मुदा अस्थिर।
व्याख्या: टिमटिमाइत दीपक बिम्ब एहि भावकेँ व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 12298. प्रो. मिश्रक आन्दोलन-दृष्टिमे निरन्तर संघर्ष किएक जरूरी अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आन्दोलनक ज्योति बनेने राखबाक लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आन्दोलनक ज्योति बनेने राखबाक लेल।
व्याख्या: दीपक बिम्ब आ संघर्षक उल्लेखसँ ई आशय निकलैत अछि।

प्रश्न 12299. भाषा-आन्दोलनक छोटे प्रयास सभकेँ ओ कोना देखैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. उजागर करनिहार संकेत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. उजागर करनिहार संकेत।
व्याख्या: स्रोतमे संघर्ष आन्दोलनकेँ उजागर करैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12300. टिमटिमाइत दीपक विरुद्ध अगिला आवश्यकता की बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दीपकेँ स्थिर आ व्यापक प्रकाशमे बदलब।
उत्तर: घ. दीपकेँ स्थिर आ व्यापक प्रकाशमे बदलब।
व्याख्या: स्रोतक आन्दोलनात्मक प्रसंगमे राष्ट्रीय रूप आ जनजागरण एही आवश्यकता दिखबैत अछि।

प्रश्न 12301. एहि खण्डमे संघर्षक मूल्यांकन की अछि?
क. छोट संघर्षो भाषिक चेतना जगबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. छोट संघर्षो भाषिक चेतना जगबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे जतेक संघर्ष आन्दोलन उजागर करैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12302. खण्ड १२३५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रो. मिश्र मैथिली आन्दोलनकेँ टिमटिमाइत दीप मानि प्रत्येक संघर्षकेँ ओकरा उजागर करबाक साधन बुझैत छलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रो. मिश्र मैथिली आन्दोलनकेँ टिमटिमाइत दीप मानि प्रत्येक संघर्षकेँ ओकरा उजागर करबाक साधन बुझैत छलाह।
व्याख्या: ई खण्ड आन्दोलनक जीवित मुदा नाजुक स्थिति पर आधारित अछि।

खण्ड १२३६ : विदेह-सदेह २ — जनजागरणक अभाव आ अभिभावक-शिक्षक

प्रश्न 12303. स्रोतक अनुसार मिथिलांचलमे ककर अभाव अछि?
क. जनजागरणक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जनजागरणक।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिलांचलमे जन जागरणक अभाव कारणेँ समस्या कहल अछि।

प्रश्न 12304. जनजागरणक अभावमे अभिभावक की नहि करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अपन भाषाक श्रीवृद्धि लेल प्रयत्न।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अपन भाषाक श्रीवृद्धि लेल प्रयत्न।
व्याख्या: स्रोतमे अभिभावक अपन भाषाक श्रीवृद्धि लेल प्रयत्न नहि करैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 12305. मैथिल शिक्षक कोन काज लेल प्रयत्न नहि करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली पढ़एबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली पढ़एबाक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिल शिक्षक मैथिली पढ़एबाक हेतु प्रयत्न नहि करैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 12306. मैथिलीकेँ आगाँ बढ़एबाक प्रश्नक उत्तर के देबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिल समाज।
उत्तर: घ. मैथिल समाज।
व्याख्या: स्रोतमे यावत मैथिल समाज एहि प्रश्नक उत्तर नहि देत, तावत मैथिली आगाँ नहि बढ़त भाव अछि।

प्रश्न 12307. एहि खण्डमे भाषा-विकासक उत्तरदायित्व ककरा पर राखल गेल?
क. अभिभावक, शिक्षक आ समाजपर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अभिभावक, शिक्षक आ समाजपर।
व्याख्या: स्रोतमे अभिभावक, मैथिल शिक्षक आ मैथिल समाज तीनू उल्लेखित अछि।

प्रश्न 12308. जनजागरणक अभावक प्रत्यक्ष परिणाम की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषा-शिक्षा आ भाषा-विकासमे उदासीनता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषा-शिक्षा आ भाषा-विकासमे उदासीनता।
व्याख्या: अभिभावक आ शिक्षकक प्रयत्नहीनता एहि परिणामकेँ देखबैत अछि।

प्रश्न 12309. मैथिली आगाँ नहि बढ़बाक कारणमे स्रोत की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समाज अपन उत्तरदायित्व नहि निभबैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समाज अपन उत्तरदायित्व नहि निभबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिल समाजकेँ प्रश्नक उत्तर देबाक आवश्यकता अछि।

प्रश्न 12310. एहि प्रसंगमे शिक्षकक भूमिका किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ मैथिली पढ़एबाक प्रत्यक्ष माध्यम छथि।
उत्तर: घ. ओ मैथिली पढ़एबाक प्रत्यक्ष माध्यम छथि।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिल शिक्षकक मैथिली पढ़एबाक प्रयत्नक अभाव उल्लेखित अछि।

प्रश्न 12311. भाषा-श्रीवृद्धि लेल अभिभावकक भूमिका की अछि?
क. घर-समाज स्तरपर भाषा-प्रयत्न करब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. घर-समाज स्तरपर भाषा-प्रयत्न करब।
व्याख्या: स्रोतमे अभिभावक अपन भाषाक श्रीवृद्धि लेल प्रयत्न नहि करैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 12312. खण्ड १२३६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जनजागरणक अभावमे अभिभावक, शिक्षक आ समाज मैथिलीक शिक्षा-विकासक उत्तरदायित्व पूरा नहि करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जनजागरणक अभावमे अभिभावक, शिक्षक आ समाज मैथिलीक शिक्षा-विकासक उत्तरदायित्व पूरा नहि करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड जनजागरण-अभाव आ सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित अछि।

खण्ड १२३७ : विदेह-सदेह २ — मुम्बइ सम्मेलन आ मातृभाषा शिक्षा

प्रश्न 12313. अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलन 1969 मे कोन संस्था द्वारा आयोजित छल?

क. मिथिला मण्डल मुम्बइ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला मण्डल मुम्बइ।

व्याख्या: स्रोतमे सन् 1969 मे मिथिला मण्डल मुम्बइ द्वारा आयोजित सम्मेलनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12314. ओहि सम्मेलनक विचारणीय बिन्दु की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।

व्याख्या: स्रोतमे विचारणीय बिन्दु ई देल अछि।

प्रश्न 12315. स्रोत-लेखक स्वयं ओहि सम्मेलनमे सम्मिलित भेल छलाह कि नहि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्मिलित भेल छलाह।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्मिलित भेल छलाह।

व्याख्या: स्रोतमे “हमहुँ सम्मिलित भेल छलहुँ” लिखल अछि।

प्रश्न 12316. सम्मेलनमे अपन विचार के प्रस्तुत कएने रहथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जयकान्त मिश्र।

उत्तर: घ. जयकान्त मिश्र।

व्याख्या: स्रोतमे जयकान्त मिश्र अपन विचार प्रस्तुत कएने रहथि कहल अछि।

प्रश्न 12317. प्राथमिक शिक्षा मातृभाषामे देबाक प्रश्न कोन स्तरक शिक्षा संग जुड़ल अछि?

क. शैशवावस्था आ आरम्भिक शिक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शैशवावस्था आ आरम्भिक शिक्षा।

व्याख्या: अगिला बिन्दुमे शैशवावस्थामे मातृभाषा माध्यमक चर्चा अछि।

प्रश्न 12318. एहि सम्मेलनक महत्त्व की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली शिक्षानीति पर सार्वजनिक विचार-विमर्श।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली शिक्षानीति पर सार्वजनिक विचार-विमर्श।

व्याख्या: मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा सम्मेलनक विचारणीय बिन्दु छल।

प्रश्न 12319. मुम्बइ सम्मेलन मैथिली आन्दोलनक कोन रूप देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रवासी मैथिल मंचपर भाषा-शिक्षा विमर्श।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रवासी मैथिल मंचपर भाषा-शिक्षा विमर्श।
व्याख्या: मिथिला मण्डल मुम्बइ आ अखिल भारतीय सम्मेलन एहि बातक संकेत अछि।

प्रश्न 12320. एहि खण्डमे शिक्षा-प्रश्न कोन आन्दोलनसँ जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली भाषा-अधिकार आन्दोलनसँ।
उत्तर: घ. मैथिली भाषा-अधिकार आन्दोलनसँ।
व्याख्या: मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा भाषा-अधिकारक केंद्रीय भाग अछि।

प्रश्न 12321. सम्मेलन वर्ष स्रोतमे की अछि?
क. 1969।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. 1969।
व्याख्या: स्रोतमे सन् 1969 ई.मे सम्मेलनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12322. खण्ड १२३७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. 1969क मुम्बइ सम्मेलनमे मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा मैथिली आन्दोलनक केन्द्रीय शिक्षानीतिक प्रश्न बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. 1969क मुम्बइ सम्मेलनमे मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा मैथिली आन्दोलनक केन्द्रीय शिक्षानीतिक प्रश्न बनल।
व्याख्या: ई खण्ड मुम्बइ सम्मेलन आ शिक्षा-विषय पर आधारित अछि।

खण्ड १२३८ : विदेह-सदेह २ — शैशवावस्था आ मातृभाषाक माध्यम

प्रश्न 12323. जयकान्त मिश्रक पहिल शिक्षा-बिन्दु अनुसार शैशवावस्थामे मातृभाषा माध्यम रहने की सहज होइत अछि?
क. मस्तिष्कक विकास।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मस्तिष्कक विकास।
व्याख्या: स्रोतमे मातृभाषा माध्यम रहलापर मस्तिष्कक विकास सहज-सुगम कहल अछि।

प्रश्न 12324. मातृभाषा माध्यम विषय-वस्तुक ज्ञान पर कोन प्रभाव करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रारम्भिक संस्कार स्थायी बनबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रारम्भिक संस्कार स्थायी बनबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे विषय-वस्तुक ज्ञान प्रारम्भिक संस्कार स्थायी होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12325. बालक विषय-वस्तु कोना ग्रहण करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सुगमता पूर्वक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सुगमता पूर्वक।
व्याख्या: स्रोतमे ओ सुगमता पूर्वक ग्रहण करैछ कहल अछि।

प्रश्न 12326. मातृभाषा माध्यम ककरा बुझबामे सहायक होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विषय-वस्तु।
उत्तर: घ. विषय-वस्तु।
व्याख्या: स्रोतमे विषय-वस्तु बुझबामे सहायक कहल अछि।

प्रश्न 12327. पहिल बिन्दुक मूल निष्कर्ष की अछि?
क. मातृभाषा बाल-विकास आ ज्ञानार्जनकेँ सहज बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषा बाल-विकास आ ज्ञानार्जनकेँ सहज बनबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे मस्तिष्क-विकास, ग्रहण-सुगमता आ विषय-बोधक चर्चा अछि।

प्रश्न 12328. शैशवावस्थामे शिक्षाक माध्यमक प्रश्न किएक संवेदनशील अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि समय प्रारम्भिक संस्कार स्थायी होइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एहि समय प्रारम्भिक संस्कार स्थायी होइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे प्रारम्भिक संस्कार स्थायी होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12329. मातृभाषा माध्यमे विकासक सम्भावना पर स्रोतमे की कहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विकासक सम्भावना अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विकासक सम्भावना अछि।
व्याख्या: स्रोतमे सुगमतासँ ओकर विकासक सम्भावना अछि कहल अछि।

प्रश्न 12330. विषय-वस्तु बुझबामे सहायक शक्ति की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मातृभाषाक माध्यम।
उत्तर: घ. मातृभाषाक माध्यम।
व्याख्या: पहिल बिन्दुमे मातृभाषा माध्यम विषय-वस्तु बुझबामे सहायक अछि।

प्रश्न 12331. एहि खण्डमे मातृभाषा शिक्षा कोन दृष्टिसँ समर्थित अछि?
क. मानसिक विकास आ सीखबाक सुगमताक दृष्टिसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मानसिक विकास आ सीखबाक सुगमताक दृष्टिसँ।
व्याख्या: स्रोतमे मस्तिष्क विकास आ सुगम ग्रहणक तर्क अछि।

प्रश्न 12332. खण्ड १२३८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शैशवावस्थामे मातृभाषा माध्यम बालकक मस्तिष्क-विकास, स्थायी संस्कार आ विषय-बोध लेल अनिवार्य मानल गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शैशवावस्थामे मातृभाषा माध्यम बालकक मस्तिष्क-विकास, स्थायी संस्कार आ विषय-बोध लेल अनिवार्य मानल गेल।
व्याख्या: ई खण्ड मातृभाषा माध्यमक बाल-विकास तर्क पर आधारित अछि।

खण्ड १२३९ : विदेह-सदेह २ — प्रजातन्त्र आ प्राथमिक शिक्षा

प्रश्न 12333. जयकान्त मिश्रक दोसर बिन्दु अनुसार प्रजातन्त्रक प्रथम शर्त की अछि?
क. जनमानसकेँ शिक्षित करब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जनमानसकेँ शिक्षित करब।
व्याख्या: स्रोतमे प्रजातन्त्रक प्रथम शर्त जनमानसकेँ शिक्षित करब कहल अछि।

प्रश्न 12334. शिक्षित जनमानस कोन भावसँ कार्य करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सम्पूर्ण शक्तिक संग सहर्ष।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सम्पूर्ण शक्तिक संग सहर्ष।
व्याख्या: स्रोतमे शिक्षित जनमानस सम्पूर्ण शक्ति संग सहर्ष काज करत कहल अछि।

प्रश्न 12335. समस्या उत्पन्न भेलापर शिक्षित जनमानस की कऽ पबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समाधान आसानीसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समाधान आसानीसँ।
व्याख्या: स्रोतमे समस्या उत्थान पर समाधान आसानीसँ कऽ पबैछ कहल अछि।

प्रश्न 12336. जीवित प्रजातन्त्रक मूल मन्त्र की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्राथमिक शिक्षा मातृभाषाक माध्यमे देल जाए।
उत्तर: घ. प्राथमिक शिक्षा मातृभाषाक माध्यमे देल जाए।
व्याख्या: स्रोतमे ई वाक्य स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12337. मातृभाषा शिक्षा प्रजातन्त्रसँ कोना जुड़ल अछि?
क. जनमानसकेँ सचेत, समर्थ आ समस्या-समाधानक्षम बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जनमानसकेँ सचेत, समर्थ आ समस्या-समाधानक्षम बनबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे शिक्षित जनमानस आ समाधान-क्षमता पर जोर अछि।

प्रश्न 12338. एहि बिन्दुमे शिक्षा केवल ज्ञान नहि, की बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोकतांत्रिक शक्ति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लोकतांत्रिक शक्ति।
व्याख्या: प्रजातन्त्रक प्रथम शर्त आ जनशिक्षा प्रसंग ई भाव दैत अछि।

प्रश्न 12339. प्राथमिक शिक्षा मातृभाषामे देबाक राजनीतिक अर्थ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जीवित प्रजातन्त्रक आधार बनब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जीवित प्रजातन्त्रक आधार बनब।
व्याख्या: स्रोतमे जीवित प्रजातन्त्रक मूल मन्त्र एहि रूपमे अछि।

प्रश्न 12340. जनमानसक शक्ति विषय-वस्तु बुझबामे सहायक होइत अछि, ई कोन माध्यमसँ सम्भव अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मातृभाषा-आधारित शिक्षा सँ।
उत्तर: घ. मातृभाषा-आधारित शिक्षा सँ।
व्याख्या: स्रोतक दोसर बिन्दु मातृभाषा प्राथमिक शिक्षा पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 12341. एहि खण्डक मुख्य सूत्र की अछि?
क. लोकतन्त्र आ मातृभाषा-शिक्षा एक-दोसरसँ जुड़ल अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लोकतन्त्र आ मातृभाषा-शिक्षा एक-दोसरसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे प्रजातन्त्रक मूल मन्त्र मातृभाषा माध्यमक प्राथमिक शिक्षा कहल अछि।

प्रश्न 12342. खण्ड १२३९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्राथमिक शिक्षा मातृभाषामे देब जीवित प्रजातन्त्रक आधार अछि, किएक तँ ई जनमानसकेँ शिक्षित आ समर्थ बनबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्राथमिक शिक्षा मातृभाषामे देब जीवित प्रजातन्त्रक आधार अछि, किएक तँ ई जनमानसकेँ शिक्षित आ समर्थ बनबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड प्रजातन्त्र आ मातृभाषा शिक्षा पर आधारित अछि।

खण्ड १२४० : विदेह-सदेह २ — मैथिली प्राचीन जीवित भाषा आ अनिवार्य शिक्षा

प्रश्न 12343. जयकान्त मिश्र मैथिलीकेँ कोन प्रकारक भाषा कहलनि?

क. प्राचीनतम जीवित भाषा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्राचीनतम जीवित भाषा।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली एक प्राचीनतम जीवित भाषा थिक कहल अछि।

प्रश्न 12344. प्राचीनतम जीवित भाषा होएबाक कारणेँ एकरा कोना लागू करबाक आवश्यकता कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनिवार्य रूपेँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनिवार्य रूपेँ।

व्याख्या: स्रोतमे एकरा अनिवार्य रूपेँ लागू करबाक प्रयासक प्रयोजन अछि।

प्रश्न 12345. मैथिली लागू करबाक लेल ककरा पर बाध्यकारी दबावक आवश्यकता कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सरकारपर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सरकारपर।

व्याख्या: स्रोतमे सरकारपर एकरा लागू करबाक हेतु बाध्य करबाक प्रयोजन कहल अछि।

प्रश्न 12346. मैथिली कोन राज्य सभक अधिकांश जिलामे बाजल जाइत अछि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बिहार एवं झारखण्ड।

उत्तर: घ. बिहार एवं झारखण्ड।

व्याख्या: स्रोतमे बिहार एवं झारखण्ड राज्यक अधिकांश जिलामे ई बाजल जाइत अछि।

प्रश्न 12347. जहाँ मैथिली बाजल जाइत अछि, ततय की आवश्यक कहल गेल?

क. अनिवार्य रूपेँ लागू करब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनिवार्य रूपेँ लागू करब।

व्याख्या: स्रोतमे अधिकांश जिलामे अनिवार्य लागू करबाक दबावक बात अछि।

प्रश्न 12348. एहि खण्डमे भाषा-अधिकारक आधार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीक प्राचीनता, जीवितता आ भाषाभौगोलिक विस्तार।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीक प्राचीनता, जीवितता आ भाषाभौगोलिक विस्तार।

व्याख्या: स्रोतमे प्राचीनतम जीवित भाषा आ बिहार-झारखण्ड जिलाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12349. सरकारपर दबाव किएक आवश्यक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अनिवार्य मातृभाषा शिक्षा लागू करए लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अनिवार्य मातृभाषा शिक्षा लागू करए लेल।
व्याख्या: स्रोतमे सरकारपर बाध्य करबाक प्रयोजन अछि।

प्रश्न 12350. मैथिली शिक्षा लागू करबाक माग कोन स्तरपर अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्राथमिक शिक्षाक स्तरपर।
उत्तर: घ. प्राथमिक शिक्षाक स्तरपर।
व्याख्या: पूर्व प्रसंग मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा अछि।

प्रश्न 12351. एहि खण्डमे मैथिली शिक्षा केवल सांस्कृतिक नहि, की बनैत अछि?
क. नीतिगत आ प्रशासनिक माँग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नीतिगत आ प्रशासनिक माँग।
व्याख्या: सरकारपर दबाव आ अनिवार्य लागू करबाक बात ई दर्शबैत अछि।

प्रश्न 12352. खण्ड १२४०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली प्राचीनतम जीवित भाषा आ बिहार-झारखण्डक व्यापक बोली होएबाक कारणेँ प्राथमिक शिक्षामे अनिवार्य लागू होबाक अधिकारी मानल गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली प्राचीनतम जीवित भाषा आ बिहार-झारखण्डक व्यापक बोली होएबाक कारणेँ प्राथमिक शिक्षामे अनिवार्य लागू होबाक अधिकारी मानल गेल।
व्याख्या: ई खण्ड अनिवार्य मैथिली शिक्षा तर्क पर आधारित अछि।

खण्ड १२४१ : विदेह-सदेह २ — सरकारी उदासीनता आ पाठ्यपुस्तक संकट

प्रश्न 12353. सरकारक उदासीनताक कारणेँ मैथिलीमे की प्रकाशित नहि भेल?
क. प्राथमिक शिक्षाक पुस्तक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्राथमिक शिक्षाक पुस्तक।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीमे प्राथमिक शिक्षाक पुस्तक प्रकाशित नहि भेल कहल अछि।

प्रश्न 12354. केवल पुस्तक नहि, आओर कोन व्यवस्था नहि अछि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अध्यापनक व्यवस्था।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अध्यापनक व्यवस्था।
व्याख्या: स्रोतमे ओकर अध्यापनक व्यवस्था नहि अछि कहल गेल।

प्रश्न 12355. एहि स्थिति कैँ स्रोतमे कोना वर्णित कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चिन्तनीय विषय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चिन्तनीय विषय।
व्याख्या: स्रोतमे ई चिन्तनीय विषय थिक कहल अछि।

प्रश्न 12356. सरकारी उदासीनता विरुद्ध की करबाक आवश्यकता कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जनमत संग्रह आ सशक्त आन्दोलन।
उत्तर: घ. जनमत संग्रह आ सशक्त आन्दोलन।
व्याख्या: स्रोतमे विरोधमे जनमत संग्रह कऽ सशक्त आन्दोलनक आवश्यकता देल अछि।

प्रश्न 12357. ककरा जगएबाक प्रयोजन कहल गेल?
क. बधिर सरकारकेँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बधिर सरकारकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे बधिर सरकारकेँ जगएबाक प्रयोजन कहल गेल।

प्रश्न 12358. सरकारकेँ कोना वर्णित कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुसुप्त।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुसुप्त।
व्याख्या: स्रोतमे सुसुप्त सरकारकेँ जगाओल नहि जाएत ताधरि मान्यता नहि भेटत कहल अछि।

प्रश्न 12359. जाधरि सरकार नहि जगाओल जाएत, ताधरि की नहि भेटत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मिथिलांचलमे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमसँ मैथिलीकेँ मान्यता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मिथिलांचलमे प्राथमिक शिक्षाक माध्यमसँ मैथिलीकेँ मान्यता।
व्याख्या: स्रोतमे एहि आशयक वाक्य स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12360. एहि खण्डमे पाठ्यपुस्तक आ अध्यापनक अभाव कोन समस्या बनेलै?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली प्राथमिक शिक्षा लागू नहि होएबाक।
उत्तर: घ. मैथिली प्राथमिक शिक्षा लागू नहि होएबाक।
व्याख्या: स्रोतमे पुस्तक आ अध्यापनक अभाव मातृभाषा शिक्षाक बाधा अछि।

प्रश्न 12361. सरकारी उदासीनता विरुद्ध जनमत संग्रह किएक चाही?

क. सामाजिक दबावसँ नीति बदलएबाक लेल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक दबावसँ नीति बदलएबाक लेल।

व्याख्या: स्रोतमे जनमत संग्रह आ सशक्त आन्दोलनक आवश्यकता कहल अछि।

प्रश्न 12362. खण्ड १२४१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली प्राथमिक शिक्षाक पुस्तक आ अध्यापन व्यवस्था नहि बनल, तेँ बधिर-सुसुप्त सरकार विरुद्ध जनमत आ आन्दोलन आवश्यक कहल गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली प्राथमिक शिक्षाक पुस्तक आ अध्यापन व्यवस्था नहि बनल, तेँ बधिर-सुसुप्त सरकार विरुद्ध जनमत आ आन्दोलन आवश्यक कहल गेल।

व्याख्या: ई खण्ड पाठ्यपुस्तक-संकट आ सरकारी उदासीनता पर आधारित अछि।

खण्ड १२४२ : विदेह-सदेह २ — मिथिला विकास लेल संघर्ष-शक्ति

प्रश्न 12363. मिथिला आ मैथिलीक सर्वतोभावेन विकास कखन सम्भव कहल गेल?

क. जखन समस्या सभसँ लड़बाक शक्ति जुटत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जखन समस्या सभसँ लड़बाक शक्ति जुटत।

व्याख्या: स्रोतमे विकास आ निदान ताधरि सम्भव नहि, जाधरि लड़बाक शक्ति नहि कहल अछि।

प्रश्न 12364. विविध समस्या सभक निदान ककर बिना सम्भव नहि अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लड़बाक शक्ति बिना।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लड़बाक शक्ति बिना।

व्याख्या: स्रोतमे समस्या निदान ओकरा सँ लड़बाक शक्ति पर निर्भर कहल अछि।

प्रश्न 12365. मातृभाषा शिक्षा आन्दोलन व्यापक रूपेँ ककर विकाससँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मिथिला आ मैथिलीक सर्वांगीण विकाससँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मिथिला आ मैथिलीक सर्वांगीण विकाससँ।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला आ मैथिलीक सर्वतोभावेन विकासक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12366. एहि खण्डमे भाषा-अधिकार ककर रूपमे देखल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सम्पूर्ण क्षेत्रीय विकासक आधार।

उत्तर: घ. सम्पूर्ण क्षेत्रीय विकासक आधार।

व्याख्या: मिथिला आ मैथिलीक सर्वतोभावेन विकास भाषा-शिक्षा संघर्षसँ जोड़ल अछि।

प्रश्न 12367. स्रोतक अनुसार केवल निवेदन नहि, की आवश्यक अछि?
क. संघर्ष-शक्ति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संघर्ष-शक्ति।
व्याख्या: स्रोतमे लड़बाक शक्ति पर जोर अछि।

प्रश्न 12368. सरकारक उदासीनता दूर करबाक लेल जनसमाजमे की चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संगठित प्रतिरोधक शक्ति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संगठित प्रतिरोधक शक्ति।
व्याख्या: सशक्त आन्दोलन आ लड़बाक शक्ति स्रोतक भाव अछि।

प्रश्न 12369. मैथिली प्राथमिक शिक्षा मान्यता ककर रास्ता खोलैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मिथिला-मैथिलीक विकास आ समस्या-निदानक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मिथिला-मैथिलीक विकास आ समस्या-निदानक।
व्याख्या: स्रोतमे प्राथमिक शिक्षा मान्यता नहि भेटल ताधरि विकास सम्भव नहि।

प्रश्न 12370. एहि खण्डक संघर्ष-दृष्टि कोन पूर्व पंक्ति संग मेल खाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पायब निज अधिकार, कतहुँ की बिना झगड़ने।
उत्तर: घ. पायब निज अधिकार, कतहुँ की बिना झगड़ने।
व्याख्या: पूर्व स्रोत-पंक्ति आ लड़बाक शक्ति एके भाव दैत अछि।

प्रश्न 12371. भाषिक संघर्षक लक्ष्य केवल पाठ्यक्रम नहि, आओर की अछि?
क. क्षेत्रीय अस्मिता आ विकासक संरक्षण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. क्षेत्रीय अस्मिता आ विकासक संरक्षण।
व्याख्या: मिथिला आ मैथिलीक सर्वतोभावेन विकासक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12372. खण्ड १२४२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली प्राथमिक शिक्षा संघर्ष मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकास आ समस्या-निदान लेल आवश्यक संघर्ष-शक्ति बनि उठैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली प्राथमिक शिक्षा संघर्ष मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकास आ समस्या-निदान लेल आवश्यक संघर्ष-शक्ति बनि उठैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड संघर्ष-शक्ति आ सर्वांगीण विकास पर आधारित अछि।

खण्ड १२४३ : विदेह-सदेह २ — निःसारण: अवदानक संरक्षण

प्रश्न 12373. निःसारण भागमे जयकान्त मिश्रक अभियानक मूल लक्ष्य की कहल गेल?

क. मैथिली साहित्यक प्राचीनतम परम्परा सुदृढ़ करब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली साहित्यक प्राचीनतम परम्परा सुदृढ़ करब।

व्याख्या: स्रोतमे प्राचीनतम परम्पराकेँ सुदृढ़ करबाक जनजागरण अभियानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12374. मैथिली मान्यता लेल हुनक संघर्ष कोना रूपायित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दधीचिक समान हड्डी गलौलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दधीचिक समान हड्डी गलौलनि।

व्याख्या: स्रोतमे दधीचिक समान हड्डी गलौलनि कहल गेल।

प्रश्न 12375. हुनक अक्षय अवदानकेँ की करब प्रत्येक मैथिली भाषीक कर्तव्य कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अक्षुण्ण रखब आ अग्रगति करब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अक्षुण्ण रखब आ अग्रगति करब।

व्याख्या: स्रोतमे ई प्रत्येक मैथिली भाषी जनमानसक पुनीत कर्तव्य कहल अछि।

प्रश्न 12376. हुनक आलेखादि कतय-ततय प्रकाशित अछि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विविध संग्रह आ पत्रिका सभमे।

उत्तर: घ. विविध संग्रह आ पत्रिका सभमे।

व्याख्या: स्रोतमे आलेखादि यत्र-तत्र विविध संग्रहादि, पत्रिकादिमे प्रकाशित कहल अछि।

प्रश्न 12377. ओहि आलेख सभक वर्तमान दशा कोना वर्णित अछि?

क. धूलधूसरित भऽ रहल अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धूलधूसरित भऽ रहल अछि।

व्याख्या: स्रोतमे वर्तमानमे धूलधूसरित भऽ रहल अछि कहल गेल।

प्रश्न 12378. एहि लेख सभकेँ प्रकाशमे आनब ककर पुनीत कर्तव्य कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रत्येक मैथिली भाषीक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रत्येक मैथिली भाषीक।

व्याख्या: स्रोतमे संकलित कऽ प्रकाशमे आनब प्रत्येक मैथिली भाषीक पुनीत कर्तव्य अछि।

प्रश्न 12379. युगपुरुषक प्रति वास्तविक श्रद्धाञ्जलि की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हुनक धूलधूसरित लेखन-संपदाकेँ संकलित-प्रकाशित करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हुनक धूलधूसरित लेखन-संपदाकेँ संकलित-प्रकाशित करब।
व्याख्या: स्रोतक भाव युगपुरुष प्रति वास्तविक श्रद्धाञ्जलि एहि काजमे देखैत अछि।

प्रश्न 12380. निःसारण भागमे अवदान-संरक्षण कोन रूपमे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषिक-सांस्कृतिक दायित्व।
उत्तर: घ. भाषिक-सांस्कृतिक दायित्व।
व्याख्या: स्रोतमे प्रत्येक मैथिली भाषीक कर्तव्य कहल अछि।

प्रश्न 12381. दधीचि-उपमा ककर तीव्रता देखबैत अछि?
क. त्याग आ संघर्षक तीव्रता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. त्याग आ संघर्षक तीव्रता।
व्याख्या: दधीचिक समान हड्डी गलौलनि वाक्य तप-त्यागक बिम्ब अछि।

प्रश्न 12382. खण्ड १२४३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्रक धूलधूसरित आलेख-संपदा संकलित-प्रकाशित करब मैथिली समाजक पुनीत कर्तव्य कहल गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्रक धूलधूसरित आलेख-संपदा संकलित-प्रकाशित करब मैथिली समाजक पुनीत कर्तव्य कहल गेल।
व्याख्या: ई खण्ड निःसारणक अवदान-संरक्षण पर आधारित अछि।

खण्ड १२४४ : विदेह-सदेह २ — आदर्श पुरुष आ चिरन्तन प्रेरणा

प्रश्न 12383. जयकान्त मिश्र अपन सत्प्रयाससँ मैथिली साहित्यकेँ की प्रदान कएलनि?
क. समृद्ध आ व्यापक स्वरूप।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समृद्ध आ व्यापक स्वरूप।
व्याख्या: स्रोतमे हिनके धनि जे ओ मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध आ व्यापक स्वरूप प्रदान कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12384. हुनक प्रयाससँ मैथिलीक की सुरक्षित भऽ सकल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अस्तित्व।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अस्तित्व।
व्याख्या: स्रोतमे जे मैथिलीक अस्तित्वकेँ सुरक्षित कऽ सकल कहल अछि।

प्रश्न 12385. हुनका समक्ष कोनो की नहि छलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आदर्श।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आदर्श।
व्याख्या: स्रोतमे हुनका समक्ष कोनो आदर्श नहि छलनि कहल अछि।

प्रश्न 12386. तथापि मातृभाषा सम्बर्द्धनार्थ ओ कोना वर्णित छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आदर्श पुरुष।
उत्तर: घ. आदर्श पुरुष।
व्याख्या: स्रोतमे तथापि मातृभाषाक सम्बर्द्धनार्थ ओ आदर्श पुरुष रहथि कहल अछि।

प्रश्न 12387. ओ की बनि मातृभाषानुरागक बीज वपन कएलनि?
क. मार्ग निर्देशक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मार्ग निर्देशक।
व्याख्या: स्रोतमे ओ मार्ग निर्देशक बनि मातृभाषानुरागक बीज वपन कएलनि।

प्रश्न 12388. ओ मैथिली प्रेमी जनमानस लेल कोन प्रेरणा-स्रोत बनल रहता?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चिरन्तन प्रेरणा-स्रोत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चिरन्तन प्रेरणा-स्रोत।
व्याख्या: स्रोतमे ओ मैथिली प्रेमी जनमानसकेँ चिरन्तन प्रेरणा-स्रोत बनल रहता कहल अछि।

प्रश्न 12389. स्रोतमे हुनक व्यक्तित्वक गुण सभमे की-की देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तप, त्याग, तपस्या, कर्मशीलता आ वैचारिक अटलता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तप, त्याग, तपस्या, कर्मशीलता आ वैचारिक अटलता।
व्याख्या: स्रोतमे एहि गुण सभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12390. हुनक वैदुष्यक आदर्श कोना वर्णित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अद्वितीय।
उत्तर: घ. अद्वितीय।
व्याख्या: स्रोतमे ओ अपन अद्वितीय वैदुष्यक आदर्श छोड़ि गेलाह कहल अछि।

प्रश्न 12391. एहि समापनमे प्रो. मिश्रक मुख्य छवि की अछि?
क. मातृभाषा सम्बर्द्धनक मार्गदर्शक आदर्श पुरुष।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषा सम्बर्द्धनक मार्गदर्शक आदर्श पुरुष।
व्याख्या: स्रोतक समापन ई छवि निर्मित करैत अछि।

प्रश्न 12392. खण्ड १२४४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जयकान्त मिश्र मैथिली साहित्यक अस्तित्व-सुरक्षा, मातृभाषानुराग आ वैचारिक अटलताक चिरन्तन प्रेरणा-स्रोत रूपमे प्रतिष्ठित छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जयकान्त मिश्र मैथिली साहित्यक अस्तित्व-सुरक्षा, मातृभाषानुराग आ वैचारिक अटलताक चिरन्तन प्रेरणा-स्रोत रूपमे प्रतिष्ठित छथि।
व्याख्या: ई खण्ड समापनक आदर्श-पुरुष मूल्यांकन पर आधारित अछि।

खण्ड १२४५ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथझा-सुभद्रझा जन्मशतवार्षिकीक आरम्भ

प्रश्न 12393. डा. रमानन्द झा ‘रमण’क लेख कोन जन्मशतवार्षिकी प्रसंगसँ आरम्भ होइत अछि?
क. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झाक जन्मशतवार्षिकी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झाक जन्मशतवार्षिकी।
व्याख्या: स्रोतमे “तन्त्रानाथझा/ सुभद्रझा जन्मशतवार्षिकी” शीर्षक देल अछि।

प्रश्न 12394. सुभद्र झाक प्रसिद्ध कथनमे ओ स्वयंकेँ की कहलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हम आगि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हम आगि।
व्याख्या: स्रोतमे उद्धृत पंक्ति “हम आगि...” सँ ई स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12395. ओहि कथनमे तन्त्रानाथ झाकेँ सुभद्र झा की कहलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हमरा प्रज्ज्वलित कएनिहार बसात।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हमरा प्रज्ज्वलित कएनिहार बसात।
व्याख्या: उद्धरणमे तन्त्रनाथकेँ आगि प्रज्ज्वलित करनिहार बसात कहल गेल अछि।

प्रश्न 12396. राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्रामक आगि बढ़लासँ मिथिला-समाजमे कोन चेतना घनीभूत भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकास-प्रचार-प्रसार-संरक्षणक चेतना।
उत्तर: घ. भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकास-प्रचार-प्रसार-संरक्षणक चेतना।
व्याख्या: स्रोतमे स्वाधीनता-संग्रामक आगिसँ एहि चेतनाक घनीभूत होएबाक चर्चा अछि।

प्रश्न 12397. लेखकक अनुसार गत शताब्दीक पहिल दशक मैथिली भाषा-साहित्य लेल कोना अछि?

क. अत्यन्त महत्त्वपूर्ण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अत्यन्त महत्त्वपूर्ण।

व्याख्या: स्रोतमे पहिल दशक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहल गेल अछि।

प्रश्न 12398. सांस्कृतिक मिथिलाक प्रबुद्ध मैथिल ओहि दशकमे की आरम्भ कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन।

व्याख्या: स्रोतमे पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशन ओहि दशकमे आरम्भ भेल कहल अछि।

प्रश्न 12399. एहि पत्र-पत्रिका आरम्भक प्रसंगमे कोन दू नाम आदरसँ स्मरण कएल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मधुसूदन ओझा आ मुरलीधर झा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मधुसूदन ओझा आ मुरलीधर झा।

व्याख्या: स्रोतमे विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा एवं म.म. मुरलीधर झाक नाम देल अछि।

प्रश्न 12400. लेखकक अनुसार ओहि दशकमे लगभग कतेक अवदानी मैथिली साहित्यकारक जन्म भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक सोड़हि।

उत्तर: घ. एक सोड़हि।

व्याख्या: स्रोतमे कमसँ कम एक सोड़हि मैथिलीक अवदानी साहित्यकारक जन्म भेल कहल अछि।

प्रश्न 12401. खण्ड १२४५क मुख्य आरम्भिक सूत्र की अछि?

क. स्वाधीनता-चेतना आ मैथिली सांस्कृतिक जागरण एक-दोसरसँ जुड़ल छल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वाधीनता-चेतना आ मैथिली सांस्कृतिक जागरण एक-दोसरसँ जुड़ल छल।

व्याख्या: स्रोतमे स्वाधीनता-संग्रामक आगि संग भाषा-संस्कृति चेतनाक घनीभवन जोड़ल अछि।

प्रश्न 12402. एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. तन्त्रानाथ झा-सुभद्र झा जन्मशतवार्षिकी प्रसंग मैथिली भाषा-साहित्यक पहिल दशकक जागरण आ सांस्कृतिक चेतनाक पृष्ठभूमिमे राखल गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झा-सुभद्र झा जन्मशतवार्षिकी प्रसंग मैथिली भाषा-साहित्यक पहिल दशकक जागरण आ सांस्कृतिक चेतनाक पृष्ठभूमिमे राखल गेल।

व्याख्या: ई खण्ड जन्मशतवार्षिकी आ प्रारम्भिक भाषा-सांस्कृतिक जागरण पर आधारित अछि।

खण्ड १२४६ : विदेह-सदेह २ — पहिल दशकक मैथिली आधार-निर्माता

प्रश्न 12403. गत शताब्दीक पहिल दशकमे जनमल साहित्यकार सभ की कएलनि?

क. मैथिली भाषाक मानकीकरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषाक मानकीकरण।

व्याख्या: स्रोतमे ओ सभ मातृभाषा प्रेमसँ मैथिली भाषाक मानकीकरण कएल कहल अछि।

प्रश्न 12404. ओ सभ भाषा लेल की स्थापित कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विभिन्न प्रकारक प्रतिमान।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विभिन्न प्रकारक प्रतिमान।

व्याख्या: स्रोतमे भाषा लेल विभिन्न प्रतिमान स्थापित कएल कहल अछि।

प्रश्न 12405. हुनका लोकनिक संघर्षशील व्यक्तित्वसँ मैथिलीक की सुदृढ़ भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आधार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आधार।

व्याख्या: स्रोतमे संघर्षशील व्यक्तित्वसँ मैथिलीक आधार सुदृढ़ भेल कहल अछि।

प्रश्न 12406. लेखक मैथिलीकेँ सरहपाद, ज्योतिरीश्वर आ ककर भाषा कहलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महाकवि विद्यापतिक।

उत्तर: घ. महाकवि विद्यापतिक।

व्याख्या: स्रोतमे सरहपाद, ज्योतिरीश्वर आ महाकवि विद्यापतिक भाषा मैथिली कहल अछि।

प्रश्न 12407. एहि प्रयाससँ मैथिली भाषा-कुलमे कोन स्थान पाबि सकल?

क. राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर गरिमापूर्ण स्थान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर गरिमापूर्ण स्थान।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीकेँ राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर गरिमापूर्ण स्थान पाबि सकल कहल अछि।

प्रश्न 12408. ओ साहित्यकार सभ अपन कारयित्री प्रतिभासँ मैथिली साहित्यमे की लगा देलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उत्कृष्ट विविधवर्णी रचनाक पथार।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उत्कृष्ट विविधवर्णी रचनाक पथार।

व्याख्या: स्रोतमे उत्कृष्ट विविधवर्णी रचनाक पथार लगाओल कहल अछि।

प्रश्न 12409. हुनका लोकनिक ऊर्जा मुख्य रूपेँ ककर संवर्धन लेल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली साहित्यक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली साहित्यक।
व्याख्या: स्रोतमे समस्त क्षमता आ ऊर्जा मैथिली साहित्यक संवर्धन लेल छल कहल अछि।

प्रश्न 12410. ओ सभ आबएबाला युगमे मातृभाषाप्रति लोकमे की रहए चाहैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सहज अनुराग, सम्बद्धता आ प्रतिबद्धता।
उत्तर: घ. सहज अनुराग, सम्बद्धता आ प्रतिबद्धता।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तीनू बातक कमी नहि आबए से चिंता देल अछि।

प्रश्न 12411. परती-पराँत जोति-कोड़ि भूमि तैआर करबाक बिम्ब की देखबैत अछि?
क. भावी साहित्य-सर्जना लेल आधारभूमि निर्माण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भावी साहित्य-सर्जना लेल आधारभूमि निर्माण।
व्याख्या: स्रोतक कृषि-बिम्ब भविष्यक सर्जना-भूमि तैयार करबाक संकेत अछि।

प्रश्न 12412. खण्ड १२४६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पहिल दशकक मैथिली साहित्यकार सभ मानकीकरण, प्रतिमान, साहित्य-सर्जना आ भावी मातृभाषा-अनुराग लेल आधारभूमि निर्मित कएलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पहिल दशकक मैथिली साहित्यकार सभ मानकीकरण, प्रतिमान, साहित्य-सर्जना आ भावी मातृभाषा-अनुराग लेल आधारभूमि निर्मित कएलनि।
व्याख्या: ई खण्ड मैथिलीक आधार-निर्माता पीढ़ी पर आधारित अछि।

खण्ड १२४७ : विदेह-सदेह २ — सरिसब परिसर आ साहित्यकार-सूची

प्रश्न 12413. लेखक पहिल दशकक अवदानी साहित्यकार सभकेँ ककर रूपमे स्मरण करय चाहैत छथि?
क. मैथिली साहित्यक खाम्ह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली साहित्यक खाम्ह।
व्याख्या: स्रोतमे हुनका लोकनिकेँ मैथिली साहित्यक खाम्ह कहल गेल अछि।

प्रश्न 12414. सूचीमे अच्युतानन्द दत्त, ईशनाथ झा, कालीकुमार दास आदिक नाम कोन रूपमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अवदानी मैथिली साहित्यकार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अवदानी मैथिली साहित्यकार।
व्याख्या: स्रोतमे ई नाम सभ अवदानी साहित्यकारक सूचीमे देल अछि।

प्रश्न 12415. लेखकक अनुसार सूचीमे अधिकांश लोक कोन परिसरक छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सरिसब परिसरक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सरिसब परिसरक।
व्याख्या: स्रोतमे अधिकांश लोक सरिसब परिसरक छथि कहल अछि।

प्रश्न 12416. सरिसब परिसरसँ सम्बन्धित लोकनिक प्रतिभा कोना विकसित भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शिष्यत्व ग्रहण कएलापर अंकुर प्रस्फुटित भऽ पल्लवित-पुष्पित भेल।
उत्तर: घ. शिष्यत्व ग्रहण कएलापर अंकुर प्रस्फुटित भऽ पल्लवित-पुष्पित भेल।
व्याख्या: स्रोतमे सरिसब परिसरक शिष्यत्व आ प्रतिभा-विकासक बिम्ब अछि।

प्रश्न 12417. लेखक सरिसब परिसरकेँ कोना सम्बोधित करैत छथि?
क. उर्वर परिसर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. उर्वर परिसर।
व्याख्या: स्रोतमे एहि उर्वर परिसरक समागत मातृभाषा अनुरागी सभकेँ प्रणाम देल अछि।

प्रश्न 12418. सरिसब परिसरक लोक भाषा-साहित्य लेल कोन भाव राखैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रचार-प्रसार आ संरक्षण लेल सदिखन तत्पर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रचार-प्रसार आ संरक्षण लेल सदिखन तत्पर।
व्याख्या: स्रोतमे अपन भाषा-साहित्यक प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण लेल सदिखन तत्पर कहल अछि।

प्रश्न 12419. जन्मशतवार्षिकी आयोजन लेखकक दृष्टिमे कोना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. श्लाघ्य, प्रेरणास्पद आ स्वागत योग्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. श्लाघ्य, प्रेरणास्पद आ स्वागत योग्य।
व्याख्या: स्रोतमे ई आयोजन श्लाघ्य एवं प्रेरणास्पद आ स्वागत योग्य कहल अछि।

प्रश्न 12420. लेखक आयोजक लोकनिक प्रति कोन भाव प्रकट करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. धन्यवाद।
उत्तर: घ. धन्यवाद।
व्याख्या: स्रोतमे आयोजक आ आयोजन-प्रेरक व्यक्ति धन्यवादक पात्र कहल अछि।

प्रश्न 12421. सरिसब परिसरक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. कारण ओ मैथिली साहित्यक अनेक खाम्हक साझा बौद्धिक भूमि अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कारण ओ मैथिली साहित्यक अनेक खाम्हक साझा बौद्धिक भूमि अछि।
व्याख्या: स्रोतमे अधिकांश साहित्यकार सरिसब परिसरक वा सम्बद्ध कहल गेल।

प्रश्न 12422. खण्ड १२४७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सरिसब परिसर मैथिली साहित्यक खाम्ह समान अनेक अवदानी लेखकक उर्वर आधारभूमि रूपमे चिन्हित अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सरिसब परिसर मैथिली साहित्यक खाम्ह समान अनेक अवदानी लेखकक उर्वर आधारभूमि रूपमे चिन्हित अछि।
व्याख्या: ई खण्ड सरिसब परिसर आ साहित्यकार-सूची पर आधारित अछि।

खण्ड १२४८ : विदेह-सदेह २ — आगि आ बसात: मित्रता आ स्वीकृति-संग्राम

प्रश्न 12423. सुभद्र झाक जन्म-तिथि स्रोतमे की देल अछि?
क. 09 जुलाइ 1909।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. 09 जुलाइ 1909।
व्याख्या: स्रोतमे डा. सुभद्र झा जन्म 09 जुलाइ, 1909 देल अछि।

प्रश्न 12424. सुभद्र झाक देहावसान-तिथि स्रोतमे की देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. 13 मइ 2000।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. 13 मइ 2000।
व्याख्या: स्रोतमे देहावसान 13 मइ, 2000 देल अछि।

प्रश्न 12425. तन्त्रानाथ झाक जन्म-तिथि स्रोतमे की देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. 22 अगस्त 1909।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. 22 अगस्त 1909।
व्याख्या: स्रोतमे तन्त्रानाथ झा जन्म 22 अगस्त, 1909 देल अछि।

प्रश्न 12426. तन्त्रानाथ झाक देहावसान-तिथि स्रोतमे की देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. 02 मइ 1984।
उत्तर: घ. 02 मइ 1984।
व्याख्या: स्रोतमे देहावसान 02 मइ, 1984 देल अछि।

प्रश्न 12427. सुभद्र झा आ तन्त्रानाथ झाक पृष्ठभूमि कोना कहल गेल?

क. पारिवारिक पृष्ठभूमि, अध्ययन-अध्यापनक विषय आ स्वभाव भिन्न।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक पृष्ठभूमि, अध्ययन-अध्यापनक विषय आ स्वभाव भिन्न।

व्याख्या: स्रोतमे तीनू भिन्नता स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12428. आगिक दाहकता आ बसातक गति पाबि कोन काज भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक बाटक बाधा जरि गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक बाटक बाधा जरि गेल।

व्याख्या: स्रोतमे कतेको ढेङ जरि सुड्डाह भेल कहि स्वीकृति-मार्गक संकेत अछि।

प्रश्न 12429. एहन समर्पण आ निःस्वार्थ मित्रभावक उदाहरण स्रोतमे कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सर्वथा दुर्लभ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सर्वथा दुर्लभ।

व्याख्या: स्रोतमे प्रतिकूल पृष्ठभूमि लोकमे एहन मित्रभाव सर्वथा दुर्लभ कहल अछि।

प्रश्न 12430. डा. दुर्गानाथ झा ‘श्रीश’ तन्त्रानाथ झाकेँ कोन रूपमे देखलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली साहित्यक सजग प्रहरी सिनेटक सदस्य।

उत्तर: घ. मैथिली साहित्यक सजग प्रहरी सिनेटक सदस्य।

व्याख्या: स्रोतमे ई वर्णन देल अछि।

प्रश्न 12431. सुभद्र झाक सहयोग बिना तन्त्रानाथ झाक कौन श्रेय सम्भव नहि कहल गेल?

क. विश्वविद्यालय स्तरपर मैथिली मान्यताक संग्रामी दलक सफल नेतृत्व।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विश्वविद्यालय स्तरपर मैथिली मान्यताक संग्रामी दलक सफल नेतृत्व।

व्याख्या: स्रोतमे डेग-डेग पर सुभद्र झाक सहयोगक आवश्यकता कहल अछि।

प्रश्न 12432. खण्ड १२४८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भिन्न स्वभाव-पृष्ठभूमि बावजूद तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झाक मित्रता पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली स्वीकृति-संग्रामक निर्णायक शक्ति बनल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भिन्न स्वभाव-पृष्ठभूमि बावजूद तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झाक मित्रता पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली स्वीकृति-संग्रामक निर्णायक शक्ति बनल।

व्याख्या: ई खण्ड आगि-बसात रूपक आ स्वीकृति-संग्राम पर आधारित अछि।

खण्ड १२४९ : विदेह-सदेह २ — मैथिली स्वीकृतिक संयोजन आ नेतृत्व

प्रश्न 12433. डा. दुर्गानाथ झा ‘श्रीश’ अनुसार तन्त्रानाथ झा कक्कर संग मैथिलीक स्वीकृतिक कार्य संयोजित करैत छलाह?

क. डा. सुभद्र झाक संग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डा. सुभद्र झाक संग।

व्याख्या: स्रोतमे तन्त्रानाथ झा अपन अनन्य मित्र डा. सुभद्र झाक संग स्वीकृतिक सभ कार्यक संयोजन कएल करथि कहल अछि।

प्रश्न 12434. सुभद्र झाक चतुर-प्रयाससँ तन्त्रानाथ झा की निर्वाचित भेल छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सिनेटर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सिनेटर।

व्याख्या: स्रोतमे सुभद्र झाक चतुर-प्रयाससँ तन्त्रानाथ झा सिनेटर निर्वाचित भेल कहल अछि।

प्रश्न 12435. तन्त्रानाथ झाकेँ सफल नेतृत्वक श्रेय कक्कर सहयोगसँ सम्भव भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. डा. सुभद्र झाक डेग-डेग सहयोगसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. डा. सुभद्र झाक डेग-डेग सहयोगसँ।

व्याख्या: स्रोतमे स्पष्ट अछि जे सुभद्र झाक सहयोग बिना ओ श्रेय सम्भव नहि होइत।

प्रश्न 12436. लेखकक रूपक अनुसार सहयोग नहि भेटल रहित तँ मैथिलीकेँ के झपटा लेने रहित?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सूर्पनखा।

उत्तर: घ. सूर्पनखा।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली सूर्पनखाक हाथेँ झपटा लेल गेल रहितथि कहि तीव्र रूपक देल अछि।

प्रश्न 12437. स्वीकृति-संग्राममे तन्त्रानाथ झाक संस्था-संबंधी भूमिका की छल?

क. पटना विश्वविद्यालयक सिनेटक सदस्यक भूमिका।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पटना विश्वविद्यालयक सिनेटक सदस्यक भूमिका।

व्याख्या: स्रोतमे सिनेटक सदस्य तन्त्रानाथ झा कहल अछि।

प्रश्न 12438. एहि प्रसंगमे सुभद्र झाक भूमिका केवल सहायक नहि, की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रणनीतिक संयोजक आ समर्थक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रणनीतिक संयोजक आ समर्थक।

व्याख्या: सिनेटर निर्वाचित करएबाक चतुर-प्रयास आ डेग-डेग सहयोग ई देखबैत अछि।

प्रश्न 12439. विश्वविद्यालय-स्तरक मैथिली मान्यता कोन प्रयासक फल रूपमे देखाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मित्रता, रणनीति आ संस्थागत संघर्षक संयुक्त प्रयास।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मित्रता, रणनीति आ संस्थागत संघर्षक संयुक्त प्रयास।

व्याख्या: स्रोतमे अनन्य मित्रता, सिनेटर भूमिका आ स्वीकृति-कार्यक संयोजन अछि।

प्रश्न 12440. तन्त्रानाथ झाक नेतृत्वक मूल क्षेत्र कोन छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विश्वविद्यालयक स्तरपर मैथिलीक मान्यता।

उत्तर: घ. विश्वविद्यालयक स्तरपर मैथिलीक मान्यता।

व्याख्या: स्रोतमे विश्वविद्यालयक स्तरपर मैथिलीक मान्यताक हेतु संग्रामी दलक नेतृत्वक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12441. एहि खण्डमे स्वीकृतिक कथा कोना बनैत अछि?

क. व्यक्ति-मित्रता सँ संस्थागत भाषा-संघर्ष धरि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यक्ति-मित्रता सँ संस्थागत भाषा-संघर्ष धरि।

व्याख्या: सुभद्र-तन्त्रानाथ सम्बन्ध आ पटना विश्वविद्यालय स्वीकृति जोड़ित अछि।

प्रश्न 12442. खण्ड १२४९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुभद्र झाक रणनीतिक सहयोग आ तन्त्रानाथ झाक सिनेट-भूमिका मिलि पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली स्वीकृति-संग्रामक नेतृत्व सम्भव बनौलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुभद्र झाक रणनीतिक सहयोग आ तन्त्रानाथ झाक सिनेट-भूमिका मिलि पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली स्वीकृति-संग्रामक नेतृत्व सम्भव बनौलनि।

व्याख्या: ई खण्ड स्वीकृति-संग्रामक संयोजन आ नेतृत्व पर आधारित अछि।

खण्ड १२५० : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झाक आन्दोलनात्मक अवदान

प्रश्न 12443. तन्त्रानाथ झाक अवदान दू कोटिमे राखल गेल; पहिल कोटि की अछि?

क. आन्दोलनात्मक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्दोलनात्मक।

व्याख्या: स्रोतमे तन्त्रानाथ झाक अवदान दू कोटिमे: आन्दोलनात्मक आ साहित्य-सर्जना द्वारा संवर्धन।

प्रश्न 12444. तन्त्रानाथ झाक अवदानक दोसर कोटि की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य-सर्जना द्वारा मैथिली साहित्यक संवर्धन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य-सर्जना द्वारा मैथिली साहित्यक संवर्धन।

व्याख्या: स्रोतमे दोसर कोटि एहि रूपमे अछि।

प्रश्न 12445. आन्दोलनात्मक काजक पहिल प्रकार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पटना विश्वविद्यालयक उच्चतर कक्षामे मैथिलीक स्वीकृति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पटना विश्वविद्यालयक उच्चतर कक्षामे मैथिलीक स्वीकृति।
व्याख्या: स्रोतमे चारि प्रकारमे पहिल ई देल अछि।

प्रश्न 12446. आन्दोलनात्मक काजक दोसर प्रकार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शिक्षक समुदायक लेल संघर्ष।
उत्तर: घ. शिक्षक समुदायक लेल संघर्ष।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर बिन्दु शिक्षक समुदायक लेल संघर्ष अछि।

प्रश्न 12447. तिसर आन्दोलनात्मक क्षेत्र शिक्षामे कोन विकासकार्यसँ जुड़ल अछि?
क. चन्द्रधारी मिथिला कालेजमे विभिन्न विषयक पढ़ाइ आ सरिसबमे कालेज स्थापना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चन्द्रधारी मिथिला कालेजमे विभिन्न विषयक पढ़ाइ आ सरिसबमे कालेज स्थापना।
व्याख्या: स्रोतमे तिसर बिन्दुमे ई दू विकास-कार्य देल अछि।

प्रश्न 12448. चौठ आन्दोलनात्मक काज कोन संस्था-संबंधी भूमिका अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अखिल मैथिली साहित्य परिषदक मन्त्रीक रूपमे प्रचार-प्रसार आ संवर्धन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अखिल मैथिली साहित्य परिषदक मन्त्रीक रूपमे प्रचार-प्रसार आ संवर्धन।
व्याख्या: स्रोतमे चौठ बिन्दु एहि रूपमे अछि।

प्रश्न 12449. तन्त्रानाथ झाक आन्दोलनात्मक अवदान मोटामोटी कतेक प्रकारक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चारि प्रकारक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चारि प्रकारक।
व्याख्या: स्रोतमे “मोटामोटी चारि प्रकारक” अछि।

प्रश्न 12450. एहि चारि प्रकारमे भाषा, शिक्षक, शिक्षा-संस्था आ साहित्य-परिषद कोन बात देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हुनक काजक बहुआयामी सामाजिक विस्तार।
उत्तर: घ. हुनक काजक बहुआयामी सामाजिक विस्तार।
व्याख्या: स्रोतमे चारू क्षेत्रक विविधता स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12451. तन्त्रानाथ झाक अवदानमे शिक्षाक क्षेत्र कतेक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. विश्वविद्यालय स्वीकृति सँ कालेज-विकास धरि व्यापक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विश्वविद्यालय स्वीकृति सँ कालेज-विकास धरि व्यापक।

व्याख्या: स्वीकृति, उच्चतर कक्षा, शिक्षक संघर्ष आ कालेज स्थापना स्रोतमे अछि।

प्रश्न 12452. खण्ड १२५०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. तन्त्रानाथ झाक आन्दोलनात्मक अवदान विश्वविद्यालय स्वीकृति, शिक्षक संघर्ष, कालेज-विकास आ साहित्य परिषदक प्रचार-संवर्धन धरि फैलल अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झाक आन्दोलनात्मक अवदान विश्वविद्यालय स्वीकृति, शिक्षक संघर्ष, कालेज-विकास आ साहित्य परिषदक प्रचार-संवर्धन धरि फैलल अछि।

व्याख्या: ई खण्ड तन्त्रानाथ झाक आन्दोलनात्मक अवदान पर आधारित अछि।

खण्ड १२५१ : विदेह-सदेह २ — साहित्य-सर्जना आ आन्दोलनक पूरकता

प्रश्न 12453. कतेको मैथिल वा प्राध्यापक की कहैत सुनल जाइत छथि?

क. हमर काज पढ़ाएब वा लिखब थिक, आन्दोलन करब नहि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर काज पढ़ाएब वा लिखब थिक, आन्दोलन करब नहि।

व्याख्या: स्रोतमे कतेको लोक ई कहैत छथि जे हमर काज पढ़ाएब/लिखब अछि, आन्दोलन नहि।

प्रश्न 12454. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा एहि विचारक छलाह कि नहि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नहि छलाह।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नहि छलाह।

व्याख्या: स्रोतमे स्पष्ट अछि जे ओ एहि विचारक नहि छलाह।

प्रश्न 12455. ओ मैथिलीक अधिकारक संघर्ष, अधिकार-सुरक्षा, अध्यापन आ साहित्य-सर्जनाकेँ कोना देखैत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एक-दोसरसँ पृथक दायित्व नहि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एक-दोसरसँ पृथक दायित्व नहि।

व्याख्या: स्रोतमे ई काज पृथक-पृथक वर्गक दायित्व नहि मानल गेल।

प्रश्न 12456. ओ साहित्य-सर्जना आ मैथिली आन्दोलनमे सक्रियताकेँ की मानैत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक दोसरक पूरक।

उत्तर: घ. एक दोसरक पूरक।

व्याख्या: स्रोतमे एक दोसरक पूरक मानैत छलाह देल अछि।

प्रश्न 12457. कांचीनाथ झा ‘किरण’क नाम आदरसँ किएक लेल जाइत अछि?
क. साहित्य-सर्जना आ जागरण-अभियानमे सक्रियताक कारण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्य-सर्जना आ जागरण-अभियानमे सक्रियताक कारण।
व्याख्या: स्रोतमे ई कारण देल अछि।

प्रश्न 12458. एहि खण्डमे व्यक्ति-केन्द्रित विचारधाराक परिणाम कोना देखाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सामाजिक संलग्नता आ सामाजिक कार्यमे रुचिक ह्रास।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सामाजिक संलग्नता आ सामाजिक कार्यमे रुचिक ह्रास।
व्याख्या: स्रोतमे एहि परिणामक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12459. तन्त्रानाथ-सुभद्र दृष्टिमे अध्यापन आ आन्दोलनक सम्बन्ध की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दू अलग खेमाक नहि, साझा उत्तरदायित्वक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दू अलग खेमाक नहि, साझा उत्तरदायित्वक।
व्याख्या: स्रोतमे पृथक-पृथक वर्गक दायित्व मानबाक विरोध अछि।

प्रश्न 12460. एहि विचारसँ मैथिली प्राध्यापक लेल कोन संदेश निकलैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पढ़ाएब-सर्जना संग भाषा-अधिकारक संघर्षो आवश्यक अछि।
उत्तर: घ. पढ़ाएब-सर्जना संग भाषा-अधिकारक संघर्षो आवश्यक अछि।
व्याख्या: स्रोतक पूरकता सिद्धान्त एहि अर्थकेँ दैत अछि।

प्रश्न 12461. साहित्य-सर्जना अकेले पर्याप्त नहि किएक?
क. किएक तँ अधिकारक संघर्ष आ सुरक्षा सेहो भाषा-विकासक अंग अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. किएक तँ अधिकारक संघर्ष आ सुरक्षा सेहो भाषा-विकासक अंग अछि।
व्याख्या: स्रोतमे संघर्ष, सुरक्ष, अध्यापन आ सर्जना साथ मानल गेल।

प्रश्न 12462. खण्ड १२५१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा साहित्य-सर्जना, अध्यापन, अधिकार-संघर्ष आ जागरण-अभियानकेँ परस्पर पूरक मानैत छलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा साहित्य-सर्जना, अध्यापन, अधिकार-संघर्ष आ जागरण-अभियानकेँ परस्पर पूरक मानैत छलाह।
व्याख्या: ई खण्ड सर्जना-आन्दोलन पूरकता पर आधारित अछि।

खण्ड १२५२ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झाक साहित्यिक कृति-संपदा

प्रश्न 12463. तन्त्रानाथ झाक साहित्यिक सेवा कोन दू क्षेत्रमे कहल गेल?

क. गद्य आ पद्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गद्य आ पद्य।

व्याख्या: स्रोतमे हिनक साहित्यिक सेवा गद्य एवं पद्य दूनू क्षेत्रमे अछि।

प्रश्न 12464. पद्य साहित्यक अन्तर्गत कोन महाकाव्य सभ देल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कीचक बध आ कृष्णचरित।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कीचक बध आ कृष्णचरित।

व्याख्या: स्रोतमे पद्य साहित्यक अन्तर्गत “कीचक बध” एवं “कृष्णचरित” महाकाव्य अछि।

प्रश्न 12465. तन्त्रानाथ झाक कविता-संग्रहमे कोन-कोन नाम देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मंगलपंचाशिका, नमस्या आ कीर्ण-विकीर्ण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मंगलपंचाशिका, नमस्या आ कीर्ण-विकीर्ण।

व्याख्या: स्रोतमे ई तीन कविता-संग्रह नामित अछि।

प्रश्न 12466. गद्यमे हिनक रचना-संपदामे की-की देल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एकांकी चयनिका, निबन्ध, ललित निबन्ध आ संस्मरण।

उत्तर: घ. एकांकी चयनिका, निबन्ध, ललित निबन्ध आ संस्मरण।

व्याख्या: स्रोतमे गद्यक अन्तर्गत ई नाम सभ अछि।

प्रश्न 12467. तन्त्रानाथ झा किछु कोन विधाक रचना सेहो लिखलनि?

क. कथा आ बालकथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा आ बालकथा।

व्याख्या: स्रोतमे ओ किछु कथा सेहो लिखल, बाल कथा लिखल देल अछि।

प्रश्न 12468. मिथिलाक्षर प्रचार लेल ओ की कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अपन हाथेँ किछु कथा लिखि लिथो कराए प्रकाशित करौलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अपन हाथेँ किछु कथा लिखि लिथो कराए प्रकाशित करौलनि।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रसार लेल ई काज देल अछि।

प्रश्न 12469. मिथिलाक्षर कथाक महत्त्व मुख्यतः कोन दृष्टिसँ कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सांस्कृतिक सम्पदा, मिथिलाक्षर संरक्षण आ प्रचार-प्रसार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सांस्कृतिक सम्पदा, मिथिलाक्षर संरक्षण आ प्रचार-प्रसार।
व्याख्या: स्रोतमे एहि दृष्टिसँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहल अछि।

प्रश्न 12470. तन्त्रानाथ झाक साहित्यिक व्यक्तित्व कतेक बहुविध छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. महाकाव्य, कविता, एकांकी, निबन्ध, संस्मरण, कथा आ बालकथा धरि।
उत्तर: घ. महाकाव्य, कविता, एकांकी, निबन्ध, संस्मरण, कथा आ बालकथा धरि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि विभिन्न विधा सभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12471. एहि खण्डमे कृति-संपदाक सबसे बड़ा संकेत की अछि?
क. तन्त्रानाथ झा गद्य-पद्य दुनूमे व्यापक प्रयोगशील रचनाकार छलाह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तन्त्रानाथ झा गद्य-पद्य दुनूमे व्यापक प्रयोगशील रचनाकार छलाह।
व्याख्या: स्रोतक कृतिसूची एहि व्यापकता देखबैत अछि।

प्रश्न 12472. खण्ड १२५२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तन्त्रानाथ झाक साहित्यिक कृति-संपदा गद्य-पद्यक अनेक विधा, मिथिलाक्षर-प्रचार आ बालसाहित्य धरि विस्तृत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झाक साहित्यिक कृति-संपदा गद्य-पद्यक अनेक विधा, मिथिलाक्षर-प्रचार आ बालसाहित्य धरि विस्तृत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड तन्त्रानाथ झाक साहित्यिक कृति-संपदा पर आधारित अछि।

खण्ड १२५३ : विदेह-सदेह २ — अनुवाद, नाट्यसार आ अनुसंधान

प्रश्न 12473. तन्त्रानाथ झा कीर्तिलता आ हितोपदेशक किछु अंशक की कएलनि?
क. भाषा अनुवाद।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा अनुवाद।
व्याख्या: स्रोतमे “कीर्तिलता” एवं “हितोपदेश”क किछु अंशक भाषा अनुवाद कहल अछि।

प्रश्न 12474. ओ हेमलेट, मालती-माधव आ रत्नावलीक की लिखि प्रकाशित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गद्यमे नाट्यसार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गद्यमे नाट्यसार।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तीनू कृतिक गद्य नाट्यसार प्रकाशित कएल कहल अछि।

प्रश्न 12475. एहि सभमे तन्त्रानाथ झाक ककर दर्शन होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विलक्षण गद्यक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विलक्षण गद्यक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि सभमे तन्त्रानाथ झाक विलक्षणक गद्यक दर्शन होइत अछि।

प्रश्न 12476. हिनक अनुसंधानपरक निबन्ध कोन भाषा सभमे छपल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अङरेजी वा मैथिलीमे।
उत्तर: घ. अङरेजी वा मैथिलीमे।
व्याख्या: स्रोतमे अङरेजी वा मैथिलीमे विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छपल कहल अछि।

प्रश्न 12477. अनुसंधानपरक निबन्ध सभ अद्यावधि कोना अछि कहल गेल?
क. असंकलित।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. असंकलित।
व्याख्या: स्रोतमे हिनक अनुसंधान परक निबन्ध अद्यावधि असंकलित अछि।

प्रश्न 12478. कवि रविनाथकृत कोन विषयपर तन्त्रानाथ झाक निबन्धक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सन 1304 सालक रौदीक वर्णन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सन 1304 सालक रौदीक वर्णन।
व्याख्या: स्रोतमे ई प्रमुख निबन्धमे देल अछि।

प्रश्न 12479. तन्त्रानाथ झाक अनुसंधानपरक निबन्धमे कोन संत-कविक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सन्तकवि रामदास।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सन्तकवि रामदास।
व्याख्या: स्रोतमे “सन्तकवि रामदास” प्रमुख निबन्धमे अछि।

प्रश्न 12480. Vishnu Puri सम्बन्धी निबन्धक उपशीर्षक स्रोतमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. The Maithil Vaishnav Savant।
उत्तर: घ. The Maithil Vaishnav Savant।
व्याख्या: स्रोतमे Vishnu Puri : The Maithil Vaishnav Savant देल अछि।

प्रश्न 12481. Adventures of Maithil Pandits मे कोन दू पंडितक नाम कोष्ठकमे देल अछि?
क. सचल मिश्र आ मोहन मिश्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सचल मिश्र आ मोहन मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे Adventures of Maithil Pandits (Sachal Mishra and Mohan Mishra) देल अछि।

प्रश्न 12482. खण्ड १२५३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तन्त्रानाथ झाक अनुवाद, नाट्यसार आ असंकलित अनुसंधान-निबन्ध हुनक विलक्षण गद्य, शास्त्रीयता आ शोधशीलता देखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झाक अनुवाद, नाट्यसार आ असंकलित अनुसंधान-निबन्ध हुनक विलक्षण गद्य, शास्त्रीयता आ शोधशीलता देखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड अनुवाद-नाट्यसार-अनुसंधान पर आधारित अछि।

खण्ड १२५४ : विदेह-सदेह २ — प्रयोगशीलता आ कीचक बध

प्रश्न 12483. तन्त्रानाथ झाक रचना साहित्यक पहिल विशेषता स्रोतमे की कहल गेल?
क. प्रयोगशीलता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रयोगशीलता।
व्याख्या: स्रोतमे विशेषताक पहिल बिन्दु “प्रयोगशीलता” अछि।

प्रश्न 12484. प्रयोगशीलता सँ कोन साहित्य लाभान्वित भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली साहित्य।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली साहित्य।
व्याख्या: स्रोतमे एहिसँ मैथिली साहित्य लाभान्वित भेल अछि कहल अछि।

प्रश्न 12485. साहित्यपत्रामे पारम्परिक महाकाव्य मानदण्डक आधारपर ककर एकावली परिणय छपैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविशेखर बदरीनाथ झाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविशेखर बदरीनाथ झाक।
व्याख्या: स्रोतमे कविशेखर बदरीनाथ झाक “एकावली परिणय”क उल्लेख अछि।

प्रश्न 12486. एकावली परिणय सामान्य पाठकक रसबोध लेल कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सरल नहि।
उत्तर: घ. सरल नहि।
व्याख्या: स्रोतमे सामान्य पाठकक रसबोध लेल सरल नहि कहल गेल।

प्रश्न 12487. तन्त्रानाथ झा सामान्य पाठकक स्थिति बूझि कोन रचना लिखलनि?

क. कीचकबध।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कीचकबध।

व्याख्या: स्रोतमे ओही समय मुक्त-वृत्त आ सरल भाषामे “कीचकबध” लिखलनि।

प्रश्न 12488. कीचकबध कोन शिल्प आ भाषामे लिखल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मुक्त-वृत्त आ सरल भाषा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मुक्त-वृत्त आ सरल भाषा।

व्याख्या: स्रोतमे “मुक्त-वृत्त एवं सरल भाषामे” कहल अछि।

प्रश्न 12489. कीचकबध द्वारा मैथिलीमे ककर श्रीगणेश भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मुक्त-वृत्त शिल्पक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मुक्त-वृत्त शिल्पक।

व्याख्या: स्रोतमे मुक्त-वृत्त शिल्पक मैथिलीमे श्रीगणेश कहल अछि।

प्रश्न 12490. कीचक बधक प्रकाशन पाठक समुदाय लेल कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गुमकीक बाद सिहकी सन सुखद।

उत्तर: घ. गुमकीक बाद सिहकी सन सुखद।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक पाठक समुदाय लेल ई रूपक देल अछि।

प्रश्न 12491. तन्त्रानाथ झा आओर कोन काव्य-रूप लिखलनि?

क. सोनेट।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सोनेट।

व्याख्या: स्रोतमे “एहिना ओ सोनेट लिखल” देल अछि।

प्रश्न 12492. खण्ड १२५४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. तन्त्रानाथ झा सरल भाषा, मुक्त-वृत्त कीचकबध, सोनेट आ नव शिल्पद्वारा मैथिली साहित्यक जड़ता तोड़निहार प्रयोगशील रचनाकार छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झा सरल भाषा, मुक्त-वृत्त कीचकबध, सोनेट आ नव शिल्पद्वारा मैथिली साहित्यक जड़ता तोड़निहार प्रयोगशील रचनाकार छथि।

व्याख्या: ई खण्ड प्रयोगशीलता आ कीचकबध पर आधारित अछि।

खण्ड १२५५ : विदेह-सदेह २ — कथा-शिल्प आ जड़ता-भंग

प्रश्न 12493. मैथिली कथाक क्षेत्रमे तन्त्रानाथ झा कोन बात तोड़ने छलाह?

क. शिल्प सम्बन्धी जड़ता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिल्प सम्बन्धी जड़ता।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली कथाक क्षेत्रमे शिल्प सम्बन्धी जड़ता तोड़ने छलाह कहल अछि।

प्रश्न 12494. शिल्प-जड़ता तोड़बाक उदाहरणमे प्रो. उमानाथ झाक कोन संग्रहक उल्लेख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रेखाचित्र।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रेखाचित्र।

व्याख्या: स्रोतमे प्रो. उमानाथ झा “रेखाचित्र”मे संकलित कथाक माध्यमसँ उल्लेख अछि।

प्रश्न 12495. सर्जनात्मक प्रतिभा सम्पन्न कल्पनाशील रचनाकार जड़ता तोड़बाक लेल कोन दू वर्गमे प्रयोग करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथ्यवर्ग आ शिल्पवर्ग।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथ्यवर्ग आ शिल्पवर्ग।

व्याख्या: स्रोतमे कथ्यवर्ग एवं शिल्पवर्गमे प्रयोगक बात अछि।

प्रश्न 12496. तन्त्रानाथ झाक विपुल साहित्य ककर उदाहरण कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जड़ता तोड़बाक हेतु कथ्य-शिल्प प्रयोगक।

उत्तर: घ. जड़ता तोड़बाक हेतु कथ्य-शिल्प प्रयोगक।

व्याख्या: स्रोतमे विपुल साहित्य एहि प्रयोगक उदाहरण थिक कहल अछि।

प्रश्न 12497. एहि खण्डमे प्रयोग केवल कविता धरि सीमित अछि कि कथा धरि सेहो?

क. कथा धरि सेहो।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा धरि सेहो।

व्याख्या: स्रोतमे कथाक क्षेत्रमे शिल्प-जड़ता तोड़बाक बात अछि।

प्रश्न 12498. तन्त्रानाथ झाक कथा-संबंधी महत्व कोन रूपमे अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली कथाशिल्पमे नवीनता अनबाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली कथाशिल्पमे नवीनता अनबाक।

व्याख्या: शिल्प सम्बन्धी जड़ता तोड़बाक उल्लेख एहि महत्वकेँ दर्शबैत अछि।

प्रश्न 12499. कथ्यवर्गमे प्रयोगक अर्थ की?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विषय-वस्तुक चयन आ प्रस्तुति नव बनब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विषय-वस्तुक चयन आ प्रस्तुति नव बनब।
व्याख्या: स्रोतमे कथ्यवर्गमे प्रयोगक चर्चा अछि।

प्रश्न 12500. शिल्पवर्गमे प्रयोगक अर्थ की?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रचना-रूप, विधान आ शैलीमे नवीनता।
उत्तर: घ. रचना-रूप, विधान आ शैलीमे नवीनता।
व्याख्या: स्रोतमे शिल्पवर्गमे प्रयोगक चर्चा अछि।

प्रश्न 12501. एहि खण्डमे तन्त्रानाथ झाक रचनाकार-छवि की बनैत अछि?
क. जड़ता-भंजक नवाचारी सर्जक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जड़ता-भंजक नवाचारी सर्जक।
व्याख्या: कथ्य-शिल्प प्रयोग आ जड़ता-भंगक उल्लेख एहि छविक निर्माण करैत अछि।

प्रश्न 12502. खण्ड १२५५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तन्त्रानाथ झा कथा सहित मैथिली साहित्यक कथ्य आ शिल्प दुनू क्षेत्रमे प्रयोग कऽ जड़ता तोड़निहार सर्जक छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झा कथा सहित मैथिली साहित्यक कथ्य आ शिल्प दुनू क्षेत्रमे प्रयोग कऽ जड़ता तोड़निहार सर्जक छथि।
व्याख्या: ई खण्ड कथा-शिल्प आ जड़ता-भंग पर आधारित अछि।

खण्ड १२५६ : विदेह-सदेह २ — व्यंग्य आ सामाजिक कुरीति पर प्रहार

प्रश्न 12503. तन्त्रानाथ झाक साहित्यमे समाजक कोन विकार सभपर प्रहार अछि?
क. कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वास।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वास।
व्याख्या: स्रोतमे समाजमे व्याप्त कुरीति, आडम्बर, अन्धविश्वासपर प्रहार कहल अछि।

प्रश्न 12504. एहि प्रहारक शिल्प कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यंग्यात्मक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. व्यंग्यात्मक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रहारक शिल्प व्यंग्यात्मक अछि।

प्रश्न 12505. व्यंग्य तन्त्रानाथ झाक साहित्यक कतेक भागमे उपलब्ध कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समस्त साहित्यमे सहज सुलभ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समस्त साहित्यमे सहज सुलभ।
व्याख्या: स्रोतमे ई समस्त साहित्यमे सहज सुलभ अछि कहल अछि।

प्रश्न 12506. तन्त्रानाथ झाक व्यंग्य प्रसंगमे ककर लिखब समीचीन कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सोमदेवक।
उत्तर: घ. सोमदेवक।
व्याख्या: स्रोतमे सोमदेवक लिखब समीचीन अछि कहल अछि।

प्रश्न 12507. सोमदेवक पंक्तिमे मेना-कोकिल आ बगरामे की कहल गेल?
क. तेज अछि बाझ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तेज अछि बाझ।
व्याख्या: स्रोतमे “मेना-कोकिल, आ बगरामे जेना तेज अछि बाझ” अछि।

प्रश्न 12508. सोमदेव तन्त्रानाथ झाक कवि-चोंचकेँ ककर धारसँ पिजल कहलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यंग्यधारसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. व्यंग्यधारसँ।
व्याख्या: स्रोतमे “व्यंग्यधारसँ पिजा चोँच” अछि।

प्रश्न 12509. व्यंग्यात्मक प्रहारक लक्ष्य केवल हास्य नहि, की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सामाजिक सुधार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सामाजिक सुधार।
व्याख्या: कुरीति, आडम्बर, अन्धविश्वासपर प्रहार सामाजिक सुधारक संकेत अछि।

प्रश्न 12510. एहि खण्डमे तन्त्रानाथक व्यंग्य कोन रूपमे देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. धारदार आलोचनात्मक शस्त्र।
उत्तर: घ. धारदार आलोचनात्मक शस्त्र।
व्याख्या: व्यंग्यधार आ प्रहारक शिल्प एहि भावकेँ बनबैत अछि।

प्रश्न 12511. तन्त्रानाथ झाक व्यंग्यक विशेषता की अछि?
क. सहज सुलभता आ सामाजिक लक्ष्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सहज सुलभता आ सामाजिक लक्ष्य।
व्याख्या: स्रोतमे समस्त साहित्यमे सहज सुलभ आ सामाजिक विकारपर प्रहार अछि।

प्रश्न 12512. खण्ड १२५६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तन्त्रानाथ झाक व्यंग्य सामाजिक कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वासपर धारदार प्रहार करैत सुधारक साहित्यिक शक्ति बनैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झाक व्यंग्य सामाजिक कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वासपर धारदार प्रहार करैत सुधारक साहित्यिक शक्ति बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड व्यंग्य आ सामाजिक कुरीति-विरोध पर आधारित अछि।

खण्ड १२५७ : विदेह-सदेह २ — नारी सशक्तीकरण आ द्रुपद-सुता

प्रश्न 12513. तन्त्रानाथ झाक साहित्यिक विशेषतामे तेसर बिन्दु की अछि?
क. नारी सशक्तीकरण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नारी सशक्तीकरण।
व्याख्या: स्रोतमे तेसर बिन्दु “नारी सशक्तीकरण” अछि।

प्रश्न 12514. चित्रलेखा देवी कोन गामक सुआसिन कहल गेल छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सरिसब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सरिसब।
व्याख्या: स्रोतमे एही सरिसब गामक सुआसिन चित्रलेखा देवी कहल अछि।

प्रश्न 12515. चित्रलेखा देवी अनुसार तन्त्रानाथ झा पोथी, गीत आ कविता लिखि ककरा उठौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिल समाजकेँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिल समाजकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिल समाजकेँ उठौलनि कहल अछि।

प्रश्न 12516. नारी सशक्तीकरणक उदाहरण कोन चरित्रांकनमे भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. द्रुपद-सुताक चरित्रांकनमे।
उत्तर: घ. द्रुपद-सुताक चरित्रांकनमे।
व्याख्या: स्रोतमे द्रुपद-सुताक चरित्रांकनमे दृष्टिक उदाहरण भेटैत अछि।

प्रश्न 12517. कीचकक व्यवहारसँ आतंकित द्रुपद-सुता कोन प्रश्न करैत अछि?
क. अबला, भीरु कहाबए?
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अबला, भीरु कहाबए?
व्याख्या: स्रोतमे द्रुपद-सुता “अबला भीरु कहाबए?” प्रश्न करैत छथि।

प्रश्न 12518. द्रुपद-सुता अपन जन्म कोन कुलमे पाओल कहल छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. द्रुपद-राजकुल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. द्रुपद-राजकुल।
व्याख्या: स्रोतमे “की हम द्रुपद-राजकुल पाओल जन्म” अछि।

प्रश्न 12519. द्रुपद-सुता पाण्डुक कोन रूपमे स्वयंकेँ देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पाण्डु-बधू।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पाण्डु-बधू।
व्याख्या: स्रोतमे “क्षत्रिय-केतु पाण्डु-बधू भए” अछि।

प्रश्न 12520. द्रौपदीक आत्मबल जगबाक पंक्ति मे शार्दूली कखन त्रास पाबए पूछल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कखनहु नहि।
उत्तर: घ. कखनहु नहि।
व्याख्या: स्रोतमे “शार्दूली की कखनहु पाबए त्रास?” अछि।

प्रश्न 12521. द्रुपद-सुताक चरित्रांकन नारीकेँ कोन रूपमे देखबैत अछि?
क. आत्मबलसंपन्न प्रतिरोधी व्यक्तित्व।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आत्मबलसंपन्न प्रतिरोधी व्यक्तित्व।
व्याख्या: स्रोतमे अबला-भीरु अस्वीकार आ आत्मबल जागरण अछि।

प्रश्न 12522. खण्ड १२५७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तन्त्रानाथ झाक द्रुपद-सुता चरित्रांकन नारीकेँ अबला नहि, आत्मबलसंपन्न प्रतिरोधी शक्ति रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झाक द्रुपद-सुता चरित्रांकन नारीकेँ अबला नहि, आत्मबलसंपन्न प्रतिरोधी शक्ति रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड नारी सशक्तीकरण आ द्रुपद-सुता पर आधारित अछि।

खण्ड १२५८ : विदेह-सदेह २ — स्त्री-शिक्षा, संस्कृति आ सभ्यता

प्रश्न 12523. तन्त्रानाथ झाक अनुसार स्त्रीगण हमरा लोकनिक संस्कृति आ सभ्यताक हेतु की कएलनि?

क. रक्षणविधान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रक्षणविधान।

व्याख्या: स्रोतमे स्त्रीगण संस्कृति ओ सभ्यताक हेतु “रक्षणविधान” काज कएलनि कहल अछि।

प्रश्न 12524. स्रोतमे स्त्री-शिक्षाक प्रसार कोन गतिएँ भऽ रहल अछि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. द्रुत गतिएँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. द्रुत गतिएँ।

व्याख्या: स्रोतमे सम्प्रति स्त्री-शिक्षाक प्रसार द्रुत गतिएँ भऽ रहल अछि।

प्रश्न 12525. स्त्री-शिक्षाक प्रसार सामाजिक कल्याणक दृष्टिसँ कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आवश्यक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आवश्यक।

व्याख्या: स्रोतमे सामाजिक कल्याणक दृष्टिसँ आवश्यक थिक कहल अछि।

प्रश्न 12526. कोनो समाज अपन अर्धांशकेँ ककर अन्धकारमे राखि उन्नति पथपर अग्रसर नहि भऽ सकैत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अशिक्षा।

उत्तर: घ. अशिक्षा।

व्याख्या: स्रोतमे अर्धांशकेँ अशिक्षाक अन्धकार मध्य राखि उन्नति नहि कहल अछि।

प्रश्न 12527. स्त्रीगण सभ्यता-संस्कृति लेल ककरा रूपमे देखल गेल?

क. संरक्षक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संरक्षक।

व्याख्या: रक्षणविधान काजक भाव स्त्रीकेँ सभ्यता-संस्कृतिक संरक्षक बनबैत अछि।

प्रश्न 12528. एहि खण्डमे स्त्री-शिक्षा केवल व्यक्तिगत नहि, की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सामाजिक कल्याणक शर्त।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सामाजिक कल्याणक शर्त।

व्याख्या: स्रोतमे सामाजिक कल्याणक दृष्टिसँ आवश्यक कहल अछि।

प्रश्न 12529. अर्धांशक अशिक्षा बिम्ब ककर असम्भवता देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समाजक पूर्ण उन्नतिक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समाजक पूर्ण उन्नतिक।
व्याख्या: स्रोतमे अर्धांश अशिक्षित रहला समाज उन्नतिपथपर अग्रसर नहि भऽ सकैत।

प्रश्न 12530. तन्त्रानाथक नारी-दृष्टि में शिक्षा आ संस्कृति कोना जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. स्त्री शिक्षित भेलासँ सभ्यता-संस्कृति संरक्षण आ समाज-उन्नति सम्भव होइत अछि।
उत्तर: घ. स्त्री शिक्षित भेलासँ सभ्यता-संस्कृति संरक्षण आ समाज-उन्नति सम्भव होइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे रक्षणविधान, स्त्री-शिक्षा आ उन्नति-पथ जुड़े अछि।

प्रश्न 12531. एहि खण्डक मुख्य सामाजिक निष्कर्ष की अछि?
क. स्त्री-शिक्षा बिना समाजक समग्र उन्नति सम्भव नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्त्री-शिक्षा बिना समाजक समग्र उन्नति सम्भव नहि।
व्याख्या: स्रोतक अर्धांश-अशिक्षा तर्क ई निष्कर्ष दैत अछि।

प्रश्न 12532. खण्ड १२५८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तन्त्रानाथ झा स्त्रीकेँ संस्कृति-सभ्यताक संरक्षक मानि स्त्री-शिक्षाकेँ समाजक पूर्ण उन्नति लेल आवश्यक ठहरबैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तन्त्रानाथ झा स्त्रीकेँ संस्कृति-सभ्यताक संरक्षक मानि स्त्री-शिक्षाकेँ समाजक पूर्ण उन्नति लेल आवश्यक ठहरबैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड स्त्री-शिक्षा आ संस्कृति-संरक्षण पर आधारित अछि।

खण्ड १२५९ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झाक असुलभ कृति: पहिल कारण

प्रश्न 12533. सुभद्र झा अपन अनन्य मित्र तन्त्रानाथ झा जकाँ कोना नहि छलाह कहल गेल?
क. सौभाग्यशाली।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सौभाग्यशाली।
व्याख्या: स्रोतमे सुभद्र झा अपन मित्र तन्त्रनाथ झा जकाँ सौभाग्यशाली नहि छलाह कहल अछि।

प्रश्न 12534. हुनक प्रकाशित-अप्रकाशित साहित्य आजुक पाठक लेल सुलभ नहि होएबाक कतेक प्रमुख कारण लेखक जनैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तीनटा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तीनटा।
व्याख्या: स्रोतमे हमरा जनैत एकर तीनटा प्रमुख कारण अछि कहल गेल।

प्रश्न 12535. पहिल कारणमे सुभद्र झाक कार्य-क्षेत्र कोन कठिन विषय छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषा विज्ञान।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषा विज्ञान।
व्याख्या: स्रोतमे कठिन भाषा विज्ञान सुभद्र झाक कार्य-क्षेत्र छल कहल अछि।

प्रश्न 12536. बिहारक कोनो विश्वविद्यालयमे स्वतन्त्र कोन विभाग अद्यावधि नहि अछि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषा विज्ञानक विभाग।
उत्तर: घ. भाषा विज्ञानक विभाग।
व्याख्या: स्रोतमे स्वतन्त्र भाषा विज्ञानक विभाग नहि अछि कहल गेल।

प्रश्न 12537. भाषा विज्ञानक विभाग नहि रहला शिष्यत्वक प्रश्न कोना उठैत अछि?
क. एहन कठिन विषय के पढ़त-पढ़ाओत आ शिष्यत्व के ग्रहण करत?
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एहन कठिन विषय के पढ़त-पढ़ाओत आ शिष्यत्व के ग्रहण करत?
व्याख्या: स्रोतमे ई प्रश्नवाचक रूपमे देल अछि।

प्रश्न 12538. शिष्य नहि रहला गुरुक वैदुष्यक प्रचार-प्रसार कोना प्रभावित होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्थापनाक खंडन-मंडन आ साहित्य-संकलन कठिन भऽ जाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्थापनाक खंडन-मंडन आ साहित्य-संकलन कठिन भऽ जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे शिष्य नहिँ तँ प्रचार-प्रसार, खंडन-मंडन, संकलन-प्रकाशन कोना होएत कहल अछि।

प्रश्न 12539. सुभद्र झा स्वयंकेँ ककर उपमा देने छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आगि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आगि।
व्याख्या: स्रोतमे ओ स्वयं लिखने छथि जे हम आगि छी।

प्रश्न 12540. आगिक प्रयोजन सभकेँ होइत छैक, मुदा लोक किएक कात भऽ जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पकबाक डरसँ।
उत्तर: घ. पकबाक डरसँ।
व्याख्या: स्रोतमे पकबाक डरसँ केओ छूबैत नहि, कात भऽ जाइत अछि।

प्रश्न 12541. पहिल कारण सुभद्र झाक असुलभताक मूल की देखबैत अछि?
क. भाषाविज्ञानक कठिनता आ संस्थागत अभाव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषाविज्ञानक कठिनता आ संस्थागत अभाव।
व्याख्या: स्रोतमे कठिन विषय आ विभागक अभाव मुख्य अछि।

प्रश्न 12542. खण्ड १२५९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुभद्र झाक कृति असुलभ रहबाक पहिल कारण भाषा-विज्ञानक कठिनता, संस्थागत विभाग-अभाव आ शिष्य-परम्पराक कमी अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुभद्र झाक कृति असुलभ रहबाक पहिल कारण भाषा-विज्ञानक कठिनता, संस्थागत विभाग-अभाव आ शिष्य-परम्पराक कमी अछि।
व्याख्या: ई खण्ड सुभद्र झाक कृति-असुलभताक पहिल कारण पर आधारित अछि।

खण्ड १२६० : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झाक असुलभ कृति: लोकप्रियता आ संरक्षण

प्रश्न 12543. दोसर कारणमे सुभद्र झा कोन रूपमे वर्णित छथि?
क. भाषाविद आ शास्त्र-मर्मज्ञ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषाविद आ शास्त्र-मर्मज्ञ।
व्याख्या: स्रोतमे ओ भाषाविद छलाह, शास्त्र-मर्मज्ञ छलाह कहल अछि।

प्रश्न 12544. सुभद्र झाकेँ देश-विदेशमे कोन रूपमे आदर-सम्मान छलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषाशास्त्रीक रूपमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषाशास्त्रीक रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे देश-विदेशमे एक भाषाशास्त्रीक रूपमे आदर आ सम्मान छलनि।

प्रश्न 12545. सुभद्र झा कोन लोकप्रिय साहित्यिक विधा सभ नहि लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता, कथा, नाटक, एकांकी, उपन्यास आदि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता, कथा, नाटक, एकांकी, उपन्यास आदि।
व्याख्या: स्रोतमे ई विधा सभ नहि लिखल कहल अछि।

प्रश्न 12546. ओ मंचपर जाए की नहि कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हास्य-व्यंग्यक माध्यमसँ लोकक मनोरंजन।
उत्तर: घ. हास्य-व्यंग्यक माध्यमसँ लोकक मनोरंजन।
व्याख्या: स्रोतमे मंचपर जाए हास्य-व्यंग्यसँ मनोरंजन नहि कएल कहल अछि।

प्रश्न 12547. तँ सामान्य पाठकक लोकप्रिय रचनाकार बनब हुनका लेल कोना छल?

क. कठिन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कठिन।

व्याख्या: स्रोतमे सामान्य पाठकक लोकप्रिय रचनाकार होइतथि कोना? प्रश्न एहि कठिनाईकेँ देखबैत अछि।

प्रश्न 12548. तेसर कारण ककर अभिरुचि-अभावसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हुनक संतानक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हुनक संतानक।

व्याख्या: स्रोतमे संतानमे कृतिक संरक्षण एवं प्रचार-प्रसारक प्रति अभिरुचिक अभाव कहल अछि।

प्रश्न 12549. अभिरुचि-अभावक कारणेँ हिनक प्रकाशित रचना कोना भऽ गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दुर्लभ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दुर्लभ।

व्याख्या: स्रोतमे प्रकाशित रचना दुर्लभ भए गेल कहल अछि।

प्रश्न 12550. अप्रकाशित रचना सम्बन्धमे स्रोतमे की कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकाशमे नहि आबि सकल।

उत्तर: घ. प्रकाशमे नहि आबि सकल।

व्याख्या: स्रोतमे अप्रकाशित प्रकाशमे नहि आबि सकल अछि।

प्रश्न 12551. सुभद्र झा लोकप्रिय नहि बनबाक कारण की छल?

क. ओ गम्भीर भाषाशास्त्री छलाह, जनमनोरंजनक विधा नहि अपनौलनि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ गम्भीर भाषाशास्त्री छलाह, जनमनोरंजनक विधा नहि अपनौलनि।

व्याख्या: स्रोतमे भाषाविद रूप आ लोकप्रिय विधा-अभाव दूनू अछि।

प्रश्न 12552. खण्ड १२६०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुभद्र झाक गम्भीर भाषाशास्त्रीय व्यक्तित्व, लोकप्रिय साहित्य-विधा सँ दूरी आ संतानक संरक्षण-अभिरुचि अभाव हुनक कृति असुलभ बनौलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुभद्र झाक गम्भीर भाषाशास्त्रीय व्यक्तित्व, लोकप्रिय साहित्य-विधा सँ दूरी आ संतानक संरक्षण-अभिरुचि अभाव हुनक कृति असुलभ बनौलनि।

व्याख्या: ई खण्ड लोकप्रियता आ संरक्षण-अभाव पर आधारित अछि।

खण्ड १२६१ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झाक आरम्भिक भाषा-विज्ञान कृति

प्रश्न 12553. सुभद्र झा कतेक भाषाक ज्ञाता कहल गेल छथि?

क. संस्कृत, हिन्दी, अङरेजी, फ्रेंच एवं जर्मन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कृत, हिन्दी, अङरेजी, फ्रेंच एवं जर्मन।

व्याख्या: स्रोतमे ई पाँच भाषा नामित अछि।

प्रश्न 12554. लेखककेँ सुभद्र झाक जे प्रकाशित पहिल रचना देखबाक अवसर भेटल, ओकर विषय की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली भाषाक उत्पत्ति।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली भाषाक उत्पत्ति।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला मिहिरमे प्रकाशित “मैथिली भाषाक उत्पत्ति” लेखक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12555. मैथिली भाषाक उत्पत्ति लेखमे ओ की कए अपन मत स्थापित कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विभिन्न विद्वानक मतक खंडन-मंडन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विभिन्न विद्वानक मतक खंडन-मंडन।

व्याख्या: स्रोतमे विभिन्न विद्वानक मतक खंडन-मंडनक उपरान्त अपन मत स्थापित कएल कहल अछि।

प्रश्न 12556. सुभद्र झाक दोसर आरम्भिक लेख कोन विषयपर छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिलीमे संख्यावाचक शब्द ओ विशेषण।

उत्तर: घ. मैथिलीमे संख्यावाचक शब्द ओ विशेषण।

व्याख्या: स्रोतमे दोसर लेख “मैथिलीमे संख्यावाचक शब्द ओ विशेषण” देल अछि।

प्रश्न 12557. एहि आरम्भिक लेख सभ सुभद्र झाक कोन गुणक द्योतक अछि?

क. गम्भीर अध्ययन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गम्भीर अध्ययन।

व्याख्या: स्रोतमे “गम्भीर अध्ययनक द्योतक” कहल अछि।

प्रश्न 12558. एहि लेखसभसँ सुभद्र झाक प्रिय विषय की स्पष्ट अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भाषा विज्ञानक अध्ययन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भाषा विज्ञानक अध्ययन।

व्याख्या: स्रोतमे प्रिय विषय भाषा विज्ञानक अध्ययन छल कहल अछि।

प्रश्न 12559. सुभद्र झाक इष्ट की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिलीक भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिलीक भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण करब हुनक इष्ट छलनि।

प्रश्न 12560. The Formation of The Maithili Language अनुसार ओ सर्वप्रथम ककर निर्देशनमे काज आरम्भ कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. डा. ए. बनर्जी शास्त्री।

उत्तर: घ. डा. ए. बनर्जी शास्त्री।

व्याख्या: स्रोतमे पटना कालेजक डा. ए. बनर्जी शास्त्रीक निर्देशनमे काज आरम्भ कहल अछि।

प्रश्न 12561. ओ शोध ककर निर्देशनमे समाप्त भेलनि?

क. डा. सुनीति कुमार चटर्जी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डा. सुनीति कुमार चटर्जी।

व्याख्या: स्रोतमे समाप्त भेलनि डा. सुनीति कुमार चटर्जीक निर्देशनमे कहल अछि।

प्रश्न 12562. खण्ड १२६१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुभद्र झाक आरम्भिक लेख मैथिली भाषाक उत्पत्ति, संख्या-विशेषण आ भाषा-विज्ञानक गम्भीर अध्ययन द्वारा हुनक भाषावैज्ञानिक दिशा स्पष्ट करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुभद्र झाक आरम्भिक लेख मैथिली भाषाक उत्पत्ति, संख्या-विशेषण आ भाषा-विज्ञानक गम्भीर अध्ययन द्वारा हुनक भाषावैज्ञानिक दिशा स्पष्ट करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड आरम्भिक भाषा-विज्ञान कृति पर आधारित अछि।

खण्ड १२६२ : विदेह-सदेह २ — The Formation, The Songs आ विद्यापति

प्रश्न 12563. सुभद्र झाक रचना दू प्रकारक कहल गेल; पहिल कोटि की अछि?

क. मैथिली भाषा सम्बन्धी अङरेजीमे लिखित साहित्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा सम्बन्धी अङरेजीमे लिखित साहित्य।

व्याख्या: स्रोतमे पहिल कोटिमे मैथिली भाषा सम्बन्धी अङरेजीमे लिखित साहित्य अछि।

प्रश्न 12564. पहिल कोटिक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थमे एक कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. The Formation of The Maithili Language।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. The Formation of The Maithili Language।

व्याख्या: स्रोतमे ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देल अछि।

प्रश्न 12565. पहिल कोटिक दोसर महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. The Songs of Vidyapati।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. The Songs of Vidyapati।
व्याख्या: स्रोतमे The Songs of Vidyapati देल अछि।

प्रश्न 12566. The Formation of The Maithili Language ककर शोध प्रबन्ध अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुभद्र झाक।
उत्तर: घ. सुभद्र झाक।
व्याख्या: स्रोतमे हिनक शोध प्रबन्ध थिक कहल अछि।

प्रश्न 12567. The Formation पर पटना विश्वविद्यालयमे सुभद्र झाकेँ कोन उपाधि भेटल?
क. डी.लिट।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डी.लिट।
व्याख्या: स्रोतमे डी.लिट क उपाधि भेटल छलनि कहल अछि।

प्रश्न 12568. The Songs of Vidyapati कोन स्रोतक आधारपर गीत-संग्रह अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नेपाल स्रोतक आधारपर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नेपाल स्रोतक आधारपर।
व्याख्या: स्रोतमे नेपाल स्रोतक आधारपर विद्यापतिक 262 गीतक संग्रह कहल अछि।

प्रश्न 12569. The Songs of Vidyapati मे विद्यापतिक कतेक गीत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. 262 गीत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. 262 गीत।
व्याख्या: स्रोतमे 262 गीतक संग्रह अछि।

प्रश्न 12570. एहि ग्रन्थमे विद्यापति गीतक की-की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण आ अङरेजी अनुवाद।
उत्तर: घ. भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण आ अङरेजी अनुवाद।
व्याख्या: स्रोतमे गीतक भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण एवं अङरेजी अनुवाद अछि।

प्रश्न 12571. सुभद्र झाक दोसर कोटिमे कोन प्रकारक पोथी सभ अबैत अछि?

क. मैथिलीमे सम्पादित एवं लिखित पोथी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीमे सम्पादित एवं लिखित पोथी।

व्याख्या: स्रोतमे दोसर कोटि एहि रूपमे अछि।

प्रश्न 12572. खण्ड १२६२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुभद्र झाक The Formation आ The Songs मैथिली भाषा-विज्ञान, डी.लिट शोध आ विद्यापति गीतक अन्तरराष्ट्रीय प्रस्तुति लेल प्रमुख कृति छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुभद्र झाक The Formation आ The Songs मैथिली भाषा-विज्ञान, डी.लिट शोध आ विद्यापति गीतक अन्तरराष्ट्रीय प्रस्तुति लेल प्रमुख कृति छथि।

व्याख्या: ई खण्ड अंग्रेजी कृति आ विद्यापति-विश्लेषण पर आधारित अछि।

खण्ड १२६३ : विदेह-सदेह २ — विदेश यात्रा, प्रवास जीवन आ नातिक पत्र

प्रश्न 12573. विद्यापति-गीतसंग्रहमे विद्यापतिक कतेक गीत अछि?

क. 370 गीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 370 गीत।

व्याख्या: स्रोतमे “विद्यापति-गीतसंग्रह”मे 370 गीत अछि।

प्रश्न 12574. विद्यापति-गीतसंग्रहक भूमिका लेखक के छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रो. आनन्द मिश्र।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रो. आनन्द मिश्र।

व्याख्या: स्रोतमे भूमिका लेखक प्रो. आनन्द मिश्र कहल अछि।

प्रश्न 12575. सुभद्र झाक विदेश यात्रा-वर्णनक दू पोथी कोन-कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रवास जीवन आ यात्रा प्रकरण शतक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रवास जीवन आ यात्रा प्रकरण शतक।

व्याख्या: स्रोतमे ई दूटा पोथीक नाम देल अछि।

प्रश्न 12576. प्रवास जीवनक प्रकाशन-वर्ष कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 1950।

उत्तर: घ. 1950।

व्याख्या: स्रोतमे प्रवास जीवन (1950) देल अछि।

प्रश्न 12577. यात्रा प्रकरण शतकक प्रकाशन-वर्ष कोन अछि?

क. 1981।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 1981।

व्याख्या: स्रोतमे यात्रा प्रकरण शतक (1981) देल अछि।

प्रश्न 12578. सुभद्र झा उच्च शिक्षा हेतु फ्रांस कहिया गेल छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. 27 अगस्त 1946।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. 27 अगस्त 1946।

व्याख्या: स्रोतमे 27 अगस्त 1946 कैं दू वर्षक लेल फ्रांस गेल छलाह।

प्रश्न 12579. फ्रांस यात्रा लेल विश्वविद्यालयक अनुदान संग आर्थिक सहयोग केकरासँ भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. महाराज कामेश्वर सिंहसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. महाराज कामेश्वर सिंहसँ।

व्याख्या: स्रोतमे महाराज कामेश्वर सिंहसँ प्राप्त आर्थिक सहयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12580. फ्रांसमे ओ कोन-कोन विषयक विशेष अध्ययन कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अर्थवेदक पैप्लाद, आधुनिक भाषा विज्ञान आ ध्वनि विज्ञान।

उत्तर: घ. अर्थवेदक पैप्लाद, आधुनिक भाषा विज्ञान आ ध्वनि विज्ञान।

व्याख्या: स्रोतमे एहि तीन विषयक विशेष अध्ययन देल अछि।

प्रश्न 12581. नातिक पत्राक उत्तर कोन शैलीमे लिखित पोथी कहल गेल?

क. पत्रात्मक शैलीमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रात्मक शैलीमे।

व्याख्या: स्रोतमे पत्रात्मक शैलीमे, Discovery of Indiaक शैलीक तुलना देल अछि।

प्रश्न 12582. खण्ड १२६३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुभद्र झाक विद्यापति-गीतसंग्रह, फ्रांस-यात्रा, प्रवास जीवन, यात्रा प्रकरण शतक आ नातिक पत्राक उत्तर मैथिली यात्रा-साहित्य आ विचारपरक लेखनकैं समृद्ध करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुभद्र झाक विद्यापति-गीतसंग्रह, फ्रांस-यात्रा, प्रवास जीवन, यात्रा प्रकरण शतक आ नातिक पत्राक उत्तर मैथिली यात्रा-साहित्य आ विचारपरक लेखनकैं समृद्ध करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड विदेश यात्रा आ पत्रात्मक कृति पर आधारित अछि।

खण्ड १२६४ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झाक महत्त्व आ अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा

प्रश्न 12583. सुभद्र झासँ पूर्व मैथिली भाषाक अध्ययन के कएने छलाह?

क. किछु विदेशी आ किछु भारतीय भाषाविद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु विदेशी आ किछु भारतीय भाषाविद।

व्याख्या: स्रोतमे सुभद्र झासँ पूर्वहु किछु विदेशी आ भारतीय भाषाविद अध्ययन प्रस्तुत कएने छलाह कहल अछि।

प्रश्न 12584. मैथिली भाषाक एतेक गम्भीरता आ विस्तारसँ विश्लेषण करनिहार पहिल व्यक्ति भाषाविद के कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डा. सुभद्र झा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डा. सुभद्र झा।

व्याख्या: स्रोतमे पहिल व्यक्ति भाषाविद डा. सुभद्र झा भेलाह कहल अछि।

प्रश्न 12585. हुनक विश्लेषणसँ विश्व-भाषाक मानचित्रपर मैथिलीकेँ की भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रतिष्ठापित होएबाक भाषावैज्ञानिक आधार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रतिष्ठापित होएबाक भाषावैज्ञानिक आधार।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीकेँ भाषावैज्ञानिक आधार भेटल कहल अछि।

प्रश्न 12586. विद्यापति गीतक महत्व ओ सर्वप्रथम ककर समक्ष आनलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष।

उत्तर: घ. अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष।

व्याख्या: स्रोतमे विद्यापति गीतक महत्व अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष आनल कहल अछि।

प्रश्न 12587. मैथिलीक विदेश यात्रा साहित्यक पहिल लेखक के कहल गेल?

क. सुभद्र झा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुभद्र झा।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक विदेश यात्रा साहित्यक पहिल लेखक छथि सुभद्र झा कहल अछि।

प्रश्न 12588. नातिक पत्रक उत्तरकेँ जँ भाषा-आन्दोलनक विचारप्रधान इतिहासक पोथी कहल जाए तँ की नहि होएत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अत्युक्ति नहि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अत्युक्ति नहि।

व्याख्या: स्रोतमे एहि कथनमे अत्युक्ति नहि होएत कहल अछि।

प्रश्न 12589. डा. सुभद्र झा ककर प्रेमसँ ओतप्रोत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राष्ट्रीय भावना, मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक प्रेमसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राष्ट्रीय भावना, मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक प्रेमसँ।

व्याख्या: स्रोतमे ई तीनू प्रेम/भावना देल अछि।

प्रश्न 12590. सुभद्र झाक वस्त्राभरण देखि पेरिसमे दर्शक सभ ककरा बुझि आकर्षित भेल छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. डा. एस. राधाकृष्णन।

उत्तर: घ. डा. एस. राधाकृष्णन।

व्याख्या: स्रोतमे पेरिसमे दर्शक सभ डा. एस. राधाकृष्णन बुझि आकर्षित भेल छलाह।

प्रश्न 12591. सुभद्र झा ककरा रूपमे मिथिलाक सारस्वत परम्पराक विभूति कहल गेल?

क. प्राच्य विद्याक वेत्ता, भाषाविज्ञानक पण्डित, अनुवादक आ निरअहंकारी विद्वान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्राच्य विद्याक वेत्ता, भाषाविज्ञानक पण्डित, अनुवादक आ निरअहंकारी विद्वान।

व्याख्या: स्रोतमे एहि गुण सभक संयुक्त वर्णन अछि।

प्रश्न 12592. खण्ड १२६४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुभद्र झा मैथिलीक भाषावैज्ञानिक प्रतिष्ठा, विद्यापति गीतक अन्तरराष्ट्रीय प्रस्तुति, यात्रा-साहित्य आ भाषा-आन्दोलन चिन्तनक महान सारस्वत विभूति छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुभद्र झा मैथिलीक भाषावैज्ञानिक प्रतिष्ठा, विद्यापति गीतक अन्तरराष्ट्रीय प्रस्तुति, यात्रा-साहित्य आ भाषा-आन्दोलन चिन्तनक महान सारस्वत विभूति छथि।

व्याख्या: ई खण्ड सुभद्र झाक महत्त्व आ अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा पर आधारित अछि।

खण्ड १२६५ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झाक अन्तिम मूल्यांकन आ भाषावैज्ञानिक आधार

प्रश्न 12593. अन्तिम मूल्यांकनमे सुभद्र झाकेँ लोकप्रिय मंच-लेखकक बदला कोना देखाओल गेल?

क. राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर विज्ञजनक बीच पढ़ल आ उद्धृत भाषाविद रूपमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर विज्ञजनक बीच पढ़ल आ उद्धृत भाषाविद रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे कहल गेल जे ओ कथा-उपन्यासक लोकप्रिय लेखक नहि, मुदा विज्ञजनक बीच अत्यधिक पढ़ल-उद्धृत छथि।

प्रश्न 12594. सुभद्र झा मैथिलीक कोन स्वरूप विश्व समुदाय समक्ष रखलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भारोपीय कुलक एक स्वतन्त्र भाषा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भारोपीय कुलक एक स्वतन्त्र भाषा।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीकेँ भारोपीय कुलक स्वतन्त्र भाषा सिद्ध करबाक पर्याप्त सामग्री आ तर्क रखल कहल अछि।

प्रश्न 12595. मैथिलीक विशेषता लोककेँ परिचित करए लेल ओ कोन आधार प्रयोग कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषाविज्ञान सम्मत तथ्य।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषाविज्ञान सम्मत तथ्य।

व्याख्या: स्रोतमे भाषा विज्ञान सम्मत तथ्यक आधारपर विस्तारसँ विश्लेषणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12596. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति लेल ओ कोना सहायक भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतिकूलहुँकेँ अनुकूल बना लोकक सङोर कएलनि।

उत्तर: घ. प्रतिकूलहुँकेँ अनुकूल बना लोकक सङोर कएलनि।

व्याख्या: स्रोतमे हुनका नीतिकुशल कूटनीतिज्ञ जकाँ प्रतिकूलहुँकेँ अनुकूल बनएबाक बात अछि।

प्रश्न 12597. सुभद्र झाक अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा ककर कारणेँ विशेष बनल?

क. मैथिलीक भाषावैज्ञानिक विश्लेषण आ तथ्यपूर्ण प्रस्तुति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक भाषावैज्ञानिक विश्लेषण आ तथ्यपूर्ण प्रस्तुति।

व्याख्या: स्रोतक अन्तिम निष्कर्ष एहि भाषावैज्ञानिक कार्यकेँ हुनक वैशिष्ट्य बनबैत अछि।

प्रश्न 12598. लेखकक मतानुसार सुभद्र झा कोन क्षेत्रमे अद्वितीय छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली भाषाक वैज्ञानिक विश्लेषणमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली भाषाक वैज्ञानिक विश्लेषणमे।

व्याख्या: स्रोतमे “ई मात्र डा. सुभद्र झा थिकाह” कहि एहि विश्लेषणक विशिष्टता रेखांकित अछि।

प्रश्न 12599. सुभद्र झा मैथिली हित-साधनमे कोन प्रवृत्ति देखौलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आन्दोलनी भाषाविद साहित्यकारक प्रवृत्ति।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आन्दोलनी भाषाविद साहित्यकारक प्रवृत्ति।

व्याख्या: स्रोतमे अन्तमे हुनका आन्दोलनी भाषाविद साहित्यकार कहल गेल अछि।

प्रश्न 12600. मैथिलीकेँ विश्व-भाषाक मानचित्रपर प्रतिष्ठा देबामे की निर्णायक बनल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गम्भीर आ विस्तृत भाषावैज्ञानिक आधार।

उत्तर: घ. गम्भीर आ विस्तृत भाषावैज्ञानिक आधार।

व्याख्या: पूर्ववर्ती पंक्तिमे मैथिली प्रतिष्ठित होएबाक भाषावैज्ञानिक आधार हुनक कार्यसँ भेटल कहल अछि।

प्रश्न 12601. सुभद्र झा लोकप्रिय लेखक नहि भेलहुँ कोन रूपमे महत्त्वशाली रहलाह?
क. विज्ञानसम्मत भाषा-तर्कक राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय प्रवक्ता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विज्ञानसम्मत भाषा-तर्कक राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय प्रवक्ता।
व्याख्या: स्रोतमे लोकप्रियता कम आ विद्वत्-उद्धरण अधिक रहबाक संतुलित मूल्यांकन अछि।

प्रश्न 12602. खण्ड १२६५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुभद्र झा मैथिलीकेँ स्वतन्त्र भाषा सिद्ध करएवला अन्तरराष्ट्रीय भाषावैज्ञानिक आधारक प्रमुख निर्माता छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुभद्र झा मैथिलीकेँ स्वतन्त्र भाषा सिद्ध करएवला अन्तरराष्ट्रीय भाषावैज्ञानिक आधारक प्रमुख निर्माता छथि।
व्याख्या: ई खण्ड सुभद्र झाक अन्तिम मूल्यांकन आ भाषावैज्ञानिक अवदान पर आधारित अछि।

खण्ड १२६६ : विदेह-सदेह २ — गोवा, कोङ्कणी आ भाषा-संघर्षक तुलनात्मक सन्दर्भ

प्रश्न 12603. स्रोत-टिप्पणीमे कोन कोङ्कणी लेखकक कथन उद्धृत अछि?
क. डा. आर. केलकर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डा. आर. केलकर।
व्याख्या: नोटमे Planning for the Survival of Konkani सन्दर्भसँ डा. आर. केलकरक कथन देल अछि।

प्रश्न 12604. केलकरक कथनमे भाषा ककर प्रतीक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पहिचानक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पहिचानक।
व्याख्या: अंग्रेजी उद्धरणमे “our language was the symbol of our identity” कहल अछि।

प्रश्न 12605. भाषाकेँ बोली कहि अपमानित कएल गेलापर लेखक लोकनि की बनलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषाविज्ञानक छात्र।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषाविज्ञानक छात्र।
व्याख्या: नोटमे बोली कहि अपमानित भेलापर linguisticsक student बनबाक बात अछि।

प्रश्न 12606. गोवाकेँ भारतक राजनीतिक मानचित्रसँ मेटएबाक चालि चललापर ओ सभ की बनलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. राजनीतिज्ञ।
उत्तर: घ. राजनीतिज्ञ।
व्याख्या: उद्धरणमे भाषा आ स्थान समाप्त करबाक चालिक उत्तरमे politicians बनबाक बात अछि।

प्रश्न 12607. ई कोङ्कणी सन्दर्भ मैथिली आन्दोलनसँ कोना जुड़ैत अछि?
क. भाषा-साहित्य, भाषाविज्ञान आ राजनीति तीनूक आवश्यकताक तुलनात्मक बोध करबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा-साहित्य, भाषाविज्ञान आ राजनीति तीनूक आवश्यकताक तुलनात्मक बोध करबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे तन्त्रानाथ-सुभद्र झाक आदर्श संग डा. केलकरक कथनक नोट देल अछि।

प्रश्न 12608. केलकरक उदाहरणमे साहित्य-सर्जना ककर लेल कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषाक प्रगति लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषाक प्रगति लेल।
व्याख्या: उद्धरणमे भाषा-साहित्य लेखन सेवा आ progress लेल कहल गेल।

प्रश्न 12609. भाषिक अपमानक उत्तरमे भाषाविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषाकेँ बोली नहि, भाषा सिद्ध करबाक तर्क देबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषाकेँ बोली नहि, भाषा सिद्ध करबाक तर्क देबाक लेल।
व्याख्या: उद्धरणक क्रममे dialect आरोपक उत्तर linguistics बनेबाक बात अछि।

प्रश्न 12610. गोवा सन्दर्भमे भाषा-संघर्ष कोन स्तर धरि पहुँचल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. राजनीतिक अस्तित्व-रक्षाक स्तर धरि।
उत्तर: घ. राजनीतिक अस्तित्व-रक्षाक स्तर धरि।
व्याख्या: उद्धरणमे language and place of origin Goa केँ wipe out करबाक गम्भीर चालिक चर्चा अछि।

प्रश्न 12611. मैथिली-सन्दर्भमे ई नोट कोन चेतावनी दैत अछि?
क. मातृभाषा-सेवा साहित्यसँ आगू बढ़ि संस्थागत आ राजनीतिक सजगतासँ जुड़ैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषा-सेवा साहित्यसँ आगू बढ़ि संस्थागत आ राजनीतिक सजगतासँ जुड़ैत अछि।
व्याख्या: तन्त्रानाथ-सुभद्र प्रसंगमे ई तुलनात्मक नोट भाषा-संघर्षक व्यापक रूप देखबैत अछि।

प्रश्न 12612. खण्ड १२६६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कोङ्कणी उदाहरण भाषा-पहिचान, भाषाविज्ञान आ राजनीति बीचक सम्बन्ध बुझा मैथिली आन्दोलनक तुलनात्मक अर्थ खोलैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कोङ्कणी उदाहरण भाषा-पहिचान, भाषाविज्ञान आ राजनीति बीचक सम्बन्ध बुझा मैथिली आन्दोलनक तुलनात्मक अर्थ खोलैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड स्रोत-टिप्पणीमे देल भाषा-संघर्षक तुलनात्मक सन्दर्भ पर आधारित अछि।

खण्ड १२६७ : विदेह-सदेह २ — The Formation, The Songs आ अनुवाद-सूची

प्रश्न 12613. The Formation of The Maithili Languageक प्रकाशक-सन्दर्भमे कोन कम्पनी देल अछि?

क. Luzac & Company Ltd., London।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. Luzac & Company Ltd., London।

व्याख्या: नोटमे 1958क प्रकाशन-सन्दर्भ Luzac & Company Ltd., London देल अछि।

प्रश्न 12614. The Formation सम्बन्धी टिप्पणीमे मैथिली लगभग कतेक लोकक भाषा कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नेपाल आ भारतक करीब दू करोड़ लोकक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नेपाल आ भारतक करीब दू करोड़ लोकक।

व्याख्या: अंग्रेजी टिप्पणीमे Maithili spoken by about 2 crores people of Nepal and India कहल अछि।

प्रश्न 12615. टिप्पणी अनुसार मैथिली कोन क्षेत्रक वैष्णव कवि सभक साहित्यिक वाहन रहल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बंगाल, असम आ उड़ीसाक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बंगाल, असम आ उड़ीसाक।

व्याख्या: नोटमे Bengal, Assam and Orissaक Vaisnava poetsक literary vehicle कहल अछि।

प्रश्न 12616. टिप्पणी अनुसार मैथिली ककर कवि सभकेँ प्रेरित कएलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चण्डीदाससँ रवीन्द्रनाथ ठाकुर धरि बंगालक कवि सभकेँ।

उत्तर: घ. चण्डीदाससँ रवीन्द्रनाथ ठाकुर धरि बंगालक कवि सभकेँ।

व्याख्या: नोटमे Chandidasa upto Rabindranath Tagore धरि प्रेरणाक बात अछि।

प्रश्न 12617. राजनीतिक दृष्टिसँ मैथिलीकेँ कोन समूहमे राखल गेल कहल अछि?

क. हिन्दीक बोलीसभमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिन्दीक बोलीसभमे।

व्याख्या: टिप्पणीमे राजनीतिक दृष्टिसँ dialects of Hindi मे included कहल अछि।

प्रश्न 12618. भाषावैज्ञानिक दृष्टिसँ मैथिली कोन दू भाषाक बीच अलग स्वरूप राखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बंगला आ हिन्दी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बंगला आ हिन्दी।

व्याख्या: नोटमे linguistically Bengali and Hindi बीच, मुदा दुनूसँ भिन्न कहल अछि।

प्रश्न 12619. मैथिलीकेँ आधुनिक भारतीय साहित्यिक भाषा सभसँ अलग करनिहार बात की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एकर अपन संरचनात्मक रूप आ विशेष विशेषता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एकर अपन संरचनात्मक रूप आ विशेष विशेषता।
व्याख्या: अंग्रेजी नोटमे own structural form आ special featuresक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12620. The Songs of Vidyapati कोन वर्ष आ प्रकाशक-सन्दर्भसँ देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. 1954, Motilal Banarsi Dass, Vanarasi।
उत्तर: घ. 1954, Motilal Banarsi Dass, Vanarasi।
व्याख्या: स्रोत-नोटमे The Songs of Vidyapati, 1954, Motilal Banarsi Dass, Vanarasi देल अछि।

प्रश्न 12621. सुभद्र झाक अनुवाद-सूचीमे R. Pischelक कोन ग्रन्थ अछि?
क. Grammar of the Prakrit Language।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. Grammar of the Prakrit Language।
व्याख्या: नोटमे Grammar of the Prakrit Language by R. Pischel - Translator Subhadra Jha देल अछि।

प्रश्न 12622. खण्ड १२६७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्रोत-टिप्पणी सुभद्र झाक भाषाविज्ञान, विद्यापति-गीत आ जर्मन-फ्रेंच स्रोतक अनुवाद-दक्षता प्रमाणित करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्रोत-टिप्पणी सुभद्र झाक भाषाविज्ञान, विद्यापति-गीत आ जर्मन-फ्रेंच स्रोतक अनुवाद-दक्षता प्रमाणित करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड ग्रन्थ-सूची आ भाषावैज्ञानिक टिप्पणी पर आधारित अछि।

खण्ड १२६८ : विदेह-सदेह २ — पेरिसमे राधाकृष्णन प्रसंग

प्रश्न 12623. यात्रा प्रकरण शतकक नोटमे पेरिसमे ककर प्रसंग आयल अछि?
क. श्रीराधाकृष्णनक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. श्रीराधाकृष्णनक।
व्याख्या: नोट 15 मे यात्रा प्रकरण शतकसँ श्रीराधाकृष्णनक प्रदर्शनी प्रसंग देल अछि।

प्रश्न 12624. राधाकृष्णन कैँ लेखक कोन ठाठमे बैसल देखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विशुद्ध साहेबी ठाठमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विशुद्ध साहेबी ठाठमे।
व्याख्या: नोटमे “विशुद्ध साहेबी ठाठमे बैसल” लिखल अछि।

प्रश्न 12625. राधाकृष्णन माथपर की नहि बन्हने रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मुरेट्ठा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मुरेट्ठा।
व्याख्या: नोटमे माथ पर मुरेट्ठा नहि बन्हने रहथि कहल अछि।

प्रश्न 12626. लेखक आ मनकूर कतय बैसलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओहि बड़की बेंचक दोसर छोरपर।
उत्तर: घ. ओहि बड़की बेंचक दोसर छोरपर।
व्याख्या: स्रोतमे राधाकृष्णन बैसल बेंचक दोसर छोरपर हम आ मनकूर बैसि गेलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 12627. लेखकक वेश-भूषा की छल?
क. मिरजइ आ धोती।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिरजइ आ धोती।
व्याख्या: नोटमे “हम मिरजइ आ धोतीमे रही” लिखल अछि।

प्रश्न 12628. जे आगन्तुक राधाकृष्णनकेँ चिन्हैत छलाह, ओ की करैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हुनका लग जाए भारत आ भारतक सभ्यता विषयक चर्चा करैत छलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हुनका लग जाए भारत आ भारतक सभ्यता विषयक चर्चा करैत छलाह।
व्याख्या: स्रोतमे चिन्हनिहार लोक राधाकृष्णन लग जा भारत-सभ्यता विषयक चर्चा करथि कहल अछि।

प्रश्न 12629. जे राधाकृष्णनकेँ नहि चिन्हैत छलाह, ओ लेखककेँ ककरा बुझि चर्चा करैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. राधाकृष्णन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. राधाकृष्णन।
व्याख्या: स्रोतमे वेष-भूषाक आधारपर हमरे राधाकृष्णन् बुझि चर्चा करबाक बात अछि।

प्रश्न 12630. एहि भ्रमक परिणाम की भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. राधाकृष्णन लग सात-आठ व्यक्ति रहलाह, मुदा लेखककेँ करीब पचास लोक घेरि लेल।
उत्तर: घ. राधाकृष्णन लग सात-आठ व्यक्ति रहलाह, मुदा लेखककेँ करीब पचास लोक घेरि लेल।
व्याख्या: नोटमे सात वा आठ आ पचासक अन्दाज लोकक तुलना अछि।

प्रश्न 12631. लेखक ककरो की भान नहि होअए देलनि?
क. जे ओ राधाकृष्णन नहि छथि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जे ओ राधाकृष्णन नहि छथि।
व्याख्या: स्रोतमे “हमहुँ ककरो भान नहि होअए दिऐक” कहल अछि।

प्रश्न 12632. खण्ड १२६८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पेरिसक प्रसंग सुभद्र झाक भारतीय वेश, सांस्कृतिक उपस्थिति आ विनोदी आत्मानुभवकेँ उजागर करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पेरिसक प्रसंग सुभद्र झाक भारतीय वेश, सांस्कृतिक उपस्थिति आ विनोदी आत्मानुभवकेँ उजागर करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड यात्रा-वर्णनक राधाकृष्णन-संबंधी प्रसंग पर आधारित अछि।

खण्ड १२६९ : विदेह-सदेह २ — Bachcha Thakurक सुभद्र झा मूल्यांकन

प्रश्न 12633. Bachcha Thakurक नोटमे सुभद्र झाकेँ प्रकृतिक कोना कहल गेल?
क. Close to nature।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. Close to nature।
व्याख्या: नोटमे Bachcha Thakurक अंग्रेजी शीर्षक “Close to nature, people till his very last” अछि।

प्रश्न 12634. ई लेख कोन पत्रमे छपल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. The Indian Nation, Patna।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. The Indian Nation, Patna।
व्याख्या: नोटमे The Indian Nation, Patna, 22 May 2000 देल अछि।

प्रश्न 12635. लेखक सुभद्र झाकेँ intellectuals बीच कोना देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. A vibrant intellectual।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. A vibrant intellectual।
व्याख्या: उद्धरणमे “A vibrant intellectual in the midst of intellectuals” कहल अछि।

प्रश्न 12636. ordinary लोक बीच सुभद्र झा कोना कहल गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. An ordinary man।
उत्तर: घ. An ordinary man।
व्याख्या: उद्धरणमे “an ordinary man in the midst of the ordinary” देल अछि।

प्रश्न 12637. जाति-सन्दर्भमे सुभद्र झाक दोसर रूप की कहल गेल?

क. A casteless figure in the midst of cross-sections of society।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. A casteless figure in the midst of cross-sections of society।

व्याख्या: उद्धरणमे Maithil Brahminक संग casteless figureक विरोधात्मक वर्णन अछि।

प्रश्न 12638. राजनीतिक-विचार सन्दर्भमे सुभद्र झा कोना चित्रित छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. Progressives बीच progressive आ rightists बीच leftist।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. Progressives बीच progressive आ rightists बीच leftist।

व्याख्या: उद्धरणमे progressive आ leftist रूपक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12639. विविध धाराक बीच हुनक मनोभाव कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. Oceanic calm and poise।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. Oceanic calm and poise।

व्याख्या: उद्धरणमे divergent cross-currents with oceanic calm and poise कहल अछि।

प्रश्न 12640. ई नोट सुभद्र झाक व्यक्तित्वक कोन पक्ष देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विविध सामाजिक-विचारधारात्मक वृत्तमे सहज उपस्थिति।

उत्तर: घ. विविध सामाजिक-विचारधारात्मक वृत्तमे सहज उपस्थिति।

व्याख्या: उद्धरणमे intellectual, ordinary, caste, progressive, leftist आदि अनेक वृत्तक संग हुनक उपस्थिति अछि।

प्रश्न 12641. एहि मूल्यांकनमे सुभद्र झाक मूल छवि की अछि?

क. बहुधाराक बीच संतुलित, सहज आ निरहंकारी व्यक्तित्व।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुधाराक बीच संतुलित, सहज आ निरहंकारी व्यक्तित्व।

व्याख्या: स्रोत-उद्धरणक संयोजन एहि निष्कर्षकेँ समर्थित करैत अछि।

प्रश्न 12642. खण्ड १२६९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. Bachcha Thakurक मूल्यांकन सुभद्र झाकेँ विद्वान, लोक-सहज, जाति-पार आ विचार-संतुलित व्यक्तित्व रूपमे देखबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. Bachcha Thakurक मूल्यांकन सुभद्र झाकेँ विद्वान, लोक-सहज, जाति-पार आ विचार-संतुलित व्यक्तित्व रूपमे देखबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड The Indian Nationमे उद्धृत व्यक्तित्व-मूल्यांकन पर आधारित अछि।

खण्ड १२७० : विदेह-सदेह २ — आह उमा! वाह उमा!: पहिल भेंट

प्रश्न 12643. “आह उमा! वाह उमा!” शीर्षक श्रद्धांजलि के लिखलनि?

क. श्यामसुन्दर शशि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्यामसुन्दर शशि।

व्याख्या: स्रोतमे शीर्षकक ऊपर श्यामसुन्दर शशिक नाम देल अछि।

प्रश्न 12644. लेखक उमा सिंहसँ पहिल बेर कोन प्रसंगमे भेटलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रेडियो टुडे लेल कार्यक्रम संचालक आ समाचार वाचक छनौट प्रक्रियामे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रेडियो टुडे लेल कार्यक्रम संचालक आ समाचार वाचक छनौट प्रक्रियामे।

व्याख्या: स्रोतमे रेडियो टुडेक वास्ते छनौट प्रक्रियाक प्रसंग स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12645. पहिल भेंट कतय भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जनकपुर उद्योग वाणिज्य संघक सभाकक्षमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जनकपुर उद्योग वाणिज्य संघक सभाकक्षमे।

व्याख्या: स्रोतमे सभाकक्षक नाम देल अछि।

प्रश्न 12646. छनौट प्रक्रियामे उमा सिंह ककर रूपमे उपस्थित छलीह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतिस्पर्धीक रूपमे।

उत्तर: घ. प्रतिस्पर्धीक रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे ओ प्रतिस्पर्धीक रूपमे सामने खाढ़ छलीह कहल अछि।

प्रश्न 12647. परीक्षकमे बृजकुमार यादवक परिचय की देल अछि?

क. जनकपुर टुडेक सम्पादक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर टुडेक सम्पादक।

व्याख्या: स्रोतमे परीक्षक सूचीमे बृजकुमार यादवकेँ जनकपुर टुडेक सम्पादक कहल अछि।

प्रश्न 12648. रमेशरंजन झा कोन रूपमे परीक्षक छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संचारकर्मी तथा साहित्यकार।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संचारकर्मी तथा साहित्यकार।

व्याख्या: स्रोतमे रमेशरंजन झाकेँ संचारकर्मी तथा साहित्यकार लिखल अछि।

प्रश्न 12649. अनुराग गिरीक भूमिका की देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रेडियो टुडेक प्रवन्धक निर्देशक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रेडियो टुडेक प्रवन्धक निर्देशक।
व्याख्या: स्रोतमे अनुराग गिरीकेँ रेडियो टुडेक प्रवन्धक निर्देशक कहल अछि।

प्रश्न 12650. उमेश साहक परिचय स्रोतमे कोना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पत्रकार महासंघ धनुषाक वर्तमान सभापति।
उत्तर: घ. पत्रकार महासंघ धनुषाक वर्तमान सभापति।
व्याख्या: स्रोतमे परीक्षक सूचीमे उमेश साहक ई परिचय अछि।

प्रश्न 12651. पहिल भेटक समय उमा सिंहक उमेर कतबा छल?
क. २३ वर्ष।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. २३ वर्ष।
व्याख्या: स्रोतमे तहिया ओ २३ वर्षक छलीह लिखल अछि।

प्रश्न 12652. खण्ड १२७०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक उमा सिंहसँ रेडियो टुडे छनौट प्रक्रियामे भेटलाह, जतय हुनक प्रतिभा आ सादगी तुरन्त प्रभाव छोड़लक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक उमा सिंहसँ रेडियो टुडे छनौट प्रक्रियामे भेटलाह, जतय हुनक प्रतिभा आ सादगी तुरन्त प्रभाव छोड़लक।
व्याख्या: ई खण्ड पहिल भेंट आ छनौट प्रसंग पर आधारित अछि।

खण्ड १२७१ : विदेह-सदेह २ — उमा सिंहक सादगी, सपना आ प्रतिभा

प्रश्न 12653. लेखक उमा सिंहक आधुनिकता-विहीन सादगीकेँ कोना देखौलनि?
क. सादा पोशाक, सामान्य चप्पल आ मेकअप-विहीन चमकैत मुखमण्डल द्वारा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सादा पोशाक, सामान्य चप्पल आ मेकअप-विहीन चमकैत मुखमण्डल द्वारा।
व्याख्या: स्रोतमे मलिछांह समीज-सलवार, सामान्य चप्पल आ मेकअप-विहीन मुखमण्डलक वर्णन अछि।

प्रश्न 12654. उमा सिंहक उपमा लेखक कोन फूलसँ देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नदी किनारक लत्तरिक फूलल अनेरुवा गुलावसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नदी किनारक लत्तरिक फूलल अनेरुवा गुलावसँ।
व्याख्या: स्रोतमे ओ अनेरुवा गुलाव जकाँ लागि रहल छलीह कहल अछि।

प्रश्न 12655. स्रोतमे ओकर सुख्खल देह-यष्टि की बखान करैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भीतरक पीड़ा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भीतरक पीड़ा।
व्याख्या: स्रोतमे सुख्खल देहयष्टि भीतरक पीड़ाक बखान कऽ रहल छल कहल अछि।

प्रश्न 12656. उमा सिंह स्नातकक कोन अवस्था मे छलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अन्तिम वर्षक परीक्षा बाद व्यावसायिक जीवनमे प्रवेश चाहैत छलीह।
उत्तर: घ. अन्तिम वर्षक परीक्षा बाद व्यावसायिक जीवनमे प्रवेश चाहैत छलीह।
व्याख्या: स्रोतमे स्नातकक अन्तिम वर्षक परीक्षाक बाद व्यावसायिक जीवनमे प्रवेश चाहबाक बात अछि।

प्रश्न 12657. संचार-जगतसँ हुनक पूर्व सम्बन्ध कोना छल?
क. प्रत्यक्ष आ परोक्ष दुनू।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रत्यक्ष आ परोक्ष दुनू।
व्याख्या: स्रोतमे छापा आ विद्युतीय संचार सम्बन्धी तालिम, सभा, सेमिनारमे सहभागी भेलाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12658. उमा सिंहक सपना की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रेडियोक लेल समाचार संकलन आ मैथिलीमे समाचार वाचन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रेडियोक लेल समाचार संकलन आ मैथिलीमे समाचार वाचन।
व्याख्या: स्रोतमे ई सपना स्पष्ट रूपेँ देल अछि।

प्रश्न 12659. लेखकक अनुसार मौका ओकरा कोना भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपनहि प्रतिभाक बलपर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपनहि प्रतिभाक बलपर।
व्याख्या: स्रोतमे ई अवसर दया सँ नहि, अपन प्रतिभाक बलपर भेटल कहल अछि।

प्रश्न 12660. प्रतिस्पर्धी सभमध्ये उमा सिंह कोना छलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सर्वोत्तम।
उत्तर: घ. सर्वोत्तम।
व्याख्या: स्रोतमे “प्रतिस्पर्धी सभ मध्यओ सर्वोत्तम छलीह” लिखल अछि।

प्रश्न 12661. संचारक्षेत्रमे आबयक एक गहिर कारण की अनुमानित अछि?
क. अपन बात कहबाक आकांक्षा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अपन बात कहबाक आकांक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे पिता-भैया बेपत्ता भेलापछि बहुत किछु कहबाक चाह आ संचारक्षेत्रमे आबयक बात अछि।

प्रश्न 12662. खण्ड १२७१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उमा सिंह सादगी, पीड़ा, प्रशिक्षण आ मैथिली समाचार-वाचनक सपनाक संग अपन प्रतिभासँ संचारक्षेत्रमे प्रवेश कएलनि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उमा सिंह सादगी, पीड़ा, प्रशिक्षण आ मैथिली समाचार-वाचनक सपनाक संग अपन प्रतिभासँ संचारक्षेत्रमे प्रवेश कएलनि।
व्याख्या: ई खण्ड उमा सिंहक व्यक्तित्व आ सपना पर आधारित अछि।

खण्ड १२७२ : विदेह-सदेह २ — उमा सिंह: सहकर्मी, विद्यार्थी आ पत्रकार-गुण

प्रश्न 12663. पहिल भेंटक बाद लेखक उमा सिंहकेँ कोन दू सम्बन्धमे स्मरण करैत छथि?
क. सहकर्मी आ विद्यार्थी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सहकर्मी आ विद्यार्थी।
व्याख्या: स्रोतमे “हमर सहकर्मी आ विद्यार्थी उमा सिंह” कहल अछि।

प्रश्न 12664. लेखक उमा सिंहक संग कतेक महिना तालिमक मौका पएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एक महिना।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एक महिना।
व्याख्या: स्रोतमे तकराबाद एक महिने तालिम कहल अछि।

प्रश्न 12665. लेखक उमा सिंहक संग करीब कतेक महिना काज कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ९ महिना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ९ महिना।
व्याख्या: स्रोतमे करीब ९ महिना ओकरासंग काज करबाक मौका भेटल कहल अछि।

प्रश्न 12666. लेखक कतार प्रवासक क्रममे उमा सिंहसँ कोना बात करैत रहलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. इन्टरनेट मार्फत।
उत्तर: घ. इन्टरनेट मार्फत।
व्याख्या: स्रोतमे आठ महिने कतार प्रवासक क्रममे बेर-बेर इन्टरनेट मार्फत बात भेल कहल अछि।

प्रश्न 12667. उमा सिंहक एक उलहन की छलनि?
क. सर, अहाँक गेलाक बाद हमर भाषाक शुद्धा-शुद्धी केओ नहि देखि दैत छथि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सर, अहाँक गेलाक बाद हमर भाषाक शुद्धा-शुद्धी केओ नहि देखि दैत छथि।
व्याख्या: स्रोतमे ई वाक्य उलहनक रूपमे देल अछि।

प्रश्न 12668. उमा सिंहक अशुभ समाचार लेखककेँ कहिया भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सोम दिन भोरे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सोम दिन भोरे।
व्याख्या: स्रोतमे सोम दिन भोरे अत्यन्त अशुभ समाचार सुनलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 12669. लेखकक मनःस्थिति समाचार सुनि कोना भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मोन घोर भऽ गेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मोन घोर भऽ गेल।
व्याख्या: स्रोतमे मोन घोर भऽ गेल छल कहल अछि।

प्रश्न 12670. लेखक घटनाक निष्कर्ष कोना देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जे भेल से बड़ अधलाह, अक्षम्य अपराध।
उत्तर: घ. जे भेल से बड़ अधलाह, अक्षम्य अपराध।
व्याख्या: स्रोतमे एक्के निचोड़ ई देल अछि।

प्रश्न 12671. उमा सिंहमे संचारकर्मीमे होएवला कोन गुण छल?
क. अध्ययनशीलता, मेहनत, निडरता आ पेसाप्रति निष्ठा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अध्ययनशीलता, मेहनत, निडरता आ पेसाप्रति निष्ठा।
व्याख्या: स्रोतमे ई चारि गुण स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 12672. खण्ड १२७२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उमा सिंह सहकर्मी-विद्यार्थी रूपमे भाषा-सजग, अध्ययनशील, मेहनती, निडर आ पेशाप्रति निष्ठावान पत्रकार छलीह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उमा सिंह सहकर्मी-विद्यार्थी रूपमे भाषा-सजग, अध्ययनशील, मेहनती, निडर आ पेशाप्रति निष्ठावान पत्रकार छलीह।
व्याख्या: ई खण्ड सहकर्मी-स्मृति आ पत्रकार-गुण पर आधारित अछि।

खण्ड १२७३ : विदेह-सदेह २ — उमा सिंहक पारिवारिक संकट आ धमकी

प्रश्न 12673. उमा सिंहक पिता रंजीत सिंह आ भैयाकेँ के बेपत्ता बनौने छल?

क. माओवादी कार्यकर्ता सभ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माओवादी कार्यकर्ता सभ।

व्याख्या: स्रोतमे माओवादी कार्यकर्ता सभ पिता रंजीत सिंह आ भैया केँ अपहरण कऽ बेपत्ता बनौने छल कहल अछि।

प्रश्न 12674. अपहरण कतयसँ भेल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सिरहाक रामनगर मिर्चैयासँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सिरहाक रामनगर मिर्चैयासँ।

व्याख्या: स्रोतमे सिरहाक रामनगर मिर्चैयासँ अपहरणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12675. दूनू गोटेक अवस्था स्रोतमे कोना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एखनोधरि कोनो अत्ता-पत्ता नहि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एखनोधरि कोनो अत्ता-पत्ता नहि।

व्याख्या: स्रोतमे दूनूगोटेक एखनोधरि कोनो अत्ता-पत्ता नहि छनि कहल अछि।

प्रश्न 12676. घरक मुखिया सभ बेपत्ता भेलापछि उमा सिंहक भूमिका की भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. घरक एसगर मुखिया।

उत्तर: घ. घरक एसगर मुखिया।

व्याख्या: स्रोतमे उमा अपन घरक एसगर मुखिया छलीह कहल अछि।

प्रश्न 12677. ककर देखभाल हुनक जिम्मामे आयल?

क. माए, भाउज, बहिन आ भतिजा-भतिजीक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माए, भाउज, बहिन आ भतिजा-भतिजीक।

व्याख्या: स्रोतमे बेसहारा माए, भाउज, बहिन, भतिजा-भतिजीक देखभालक जिम्मेवारी अछि।

प्रश्न 12678. अपहरित पिता आ भैयाक खोजी लेल के पहल करबाक जिम्मा लएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उमा सिंह।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उमा सिंह।

व्याख्या: स्रोतमे खोजीक पहल करब हुनके जिम्मामे आवि गेल कहल अछि।

प्रश्न 12679. आर्थिक संकटक भार ककरा पर पड़ल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उमा सिंह पर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उमा सिंह पर।

व्याख्या: स्रोतमे घरक बिगरैत आर्थिक संकटक भार सेहो ओकरेपर छलै कहल अछि।

प्रश्न 12680. पारिवारिक जिम्मेवारी कारणेँ उमा सिंह की नहि कएने छलीह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह।

उत्तर: घ. विवाह।

व्याख्या: स्रोतमे विवाह पर्यन्त नहि कएने छलीह कहल अछि।

प्रश्न 12681. पिता आ भैयाक मुक्ति लेल ओ कतय हार-गुहार करैत आएल छलीह?

क. राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय निकाय सभमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय निकाय सभमे।

व्याख्या: स्रोतमे ई बात स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 12682. खण्ड १२७३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पिता-भैयाक बेपत्ता भेलापछि उमा सिंह घरक मुखिया, आर्थिक सहारा आ न्याय-खोजी बनलीह, धमकीक कारणेँ जनकपुर अएलहुँ सुरक्षित नहि रहि सकलीह।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पिता-भैयाक बेपत्ता भेलापछि उमा सिंह घरक मुखिया, आर्थिक सहारा आ न्याय-खोजी बनलीह, धमकीक कारणेँ जनकपुर अएलहुँ सुरक्षित नहि रहि सकलीह।

व्याख्या: ई खण्ड पारिवारिक संकट आ धमकीक प्रसंग पर आधारित अछि।

खण्ड १२७४ : विदेह-सदेह २ — उमा सिंहक हत्या आ पत्रकारिता-बलिदान

प्रश्न 12683. उमा सिंह करीब दू वर्षसँ कतय रहैत आएल छलीह?

क. जनकपुर नगरपालिका १४, रजौल स्थित एक साथीक घरमे भाड़ापर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर नगरपालिका १४, रजौल स्थित एक साथीक घरमे भाड़ापर।

व्याख्या: स्रोतमे ई निवास-विवरण स्पष्ट अछि।

प्रश्न 12684. हमला कहिया आ कतबा बजे भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रविदिन सन्ध्याक सात बजे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रविदिन सन्ध्याक सात बजे।

व्याख्या: स्रोतमे रविदिन सन्ध्याक सात बजे डेरामे होबाक वर्णन अछि।

प्रश्न 12685. हमला करएवला समूह कोन हथियारसँ प्रहार कएलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. खुकुरी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. खुकुरी।
व्याख्या: स्रोतमे हथियारधारी समूह अन्धाधुन्न खुकुरी प्रहार कएलक कहल अछि।

प्रश्न 12686. उमा सिंहक मृत्यु कतय लऽ जाइत काल भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. काठमाण्डू लऽ जाइत काल बाटेमे।
उत्तर: घ. काठमाण्डू लऽ जाइत काल बाटेमे।
व्याख्या: स्रोतमे उपचारार्थ काठमाण्डू लऽ जाइत काल बाटेमे मृत्यु भेल कहल अछि।

प्रश्न 12687. हत्याक प्रारम्भिक अनुमान कोन बातसँ जुड़ल अछि?
क. समाचारक विषयसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समाचारक विषयसँ।
व्याख्या: स्रोतमे समाचारक विषय लऽ कऽ हत्या भेल होएबाक प्रारम्भिक अनुमान अछि।

प्रश्न 12688. नेपालमे हत्या कएल गेल उमा कोन पत्रकार कहल गेलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पहिल महिला पत्रकार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पहिल महिला पत्रकार।
व्याख्या: स्रोतमे नेपालमे हत्या कएल गेल उमा पहिल महिला पत्रकार अछि लिखल अछि।

प्रश्न 12689. हत्याक वास्तविक कारण पत्ता लगब कोना सम्भव कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दोषी पहिचान आ गिरफ्तारी बाद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दोषी पहिचान आ गिरफ्तारी बाद।
व्याख्या: स्रोतमे दोषी पहिचान आ गिरफ्तारी नहि होए धरि कारण पत्ता लगब कठिन कहल अछि।

प्रश्न 12690. लेखक सरकारसँ दोषीकेँ दण्ड देबाक सम्भावना कोना देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बहुत न्यूनतम।
उत्तर: घ. बहुत न्यूनतम।
व्याख्या: स्रोतमे वर्तमान सरकार दोषी पत्ता लगा दण्ड करत तकर सम्भावना न्यूनतम कहल अछि।

प्रश्न 12691. लेखकक अनुसार उमासिंहक बलिदान किएक बेकार नहि जाएत?
क. कलमक धार अवरुद्ध करएवला कहियो जीवित नहि रहि सकल अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कलमक धार अवरुद्ध करएवला कहियो जीवित नहि रहि सकल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे कलमक धार रोकएवला नष्ट होइत इतिहासक साक्षी कहल अछि।

प्रश्न 12692. खण्ड १२७४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उमा सिंहक हत्या पत्रकारिताक जोखिम, कलमक स्वतन्त्रता आ जन-अधिकारक पक्षमे देल बलिदान रूपमे चित्रित अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उमा सिंहक हत्या पत्रकारिताक जोखिम, कलमक स्वतन्त्रता आ जन-अधिकारक पक्षमे देल बलिदान रूपमे चित्रित अछि।
व्याख्या: ई खण्ड हत्या-प्रसंग आ बलिदानक अर्थ पर आधारित अछि।

खण्ड १२७५ : विदेह-सदेह २ — वीराङ्गना उमा आ श्रद्धा-पंक्ति

प्रश्न 12693. लेखक सैनिक शहीदक उदाहरण किएक देलनि?
क. देशहितमे मृत्यु आदरणीय होइत अछि बुझाबए लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. देशहितमे मृत्यु आदरणीय होइत अछि बुझाबए लेल।
व्याख्या: स्रोतमे रणक्षेत्रमे देशरक्षा लेल मरनिहार सैनिककेँ शहीद कहल जाएत अछि।

प्रश्न 12694. लेखक उमा सिंहकेँ कोन सम्बोधन देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बीराङ्गणा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बीराङ्गणा।
व्याख्या: स्रोतमे “हे बीराङ्गणा!” लिखल अछि।

प्रश्न 12695. लेखकक अनुसार उमा सिंह ककर मनमानसमे रहताह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दुनियाभरिक कलमजीवी सभक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दुनियाभरिक कलमजीवी सभक।
व्याख्या: स्रोतमे दुनियाभरिक कलमजीवी सभक मनमानसमे रहव कहल अछि।

प्रश्न 12696. लेखक अन्तमे ककर पंक्ति द्वारा श्रद्धा-सुमन व्यक्त करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गुरुवर डा. धीरेन्द्रक।
उत्तर: घ. गुरुवर डा. धीरेन्द्रक।
व्याख्या: स्रोतमे अन्तिमे गुरुवर डा. धीरेन्द्रेक पंक्ति द्वारा श्रद्धा सुमन व्यक्त करबाक बात अछि।

प्रश्न 12697. श्रद्धा-पंक्तिमे जीवन कोन चीजसँ निर्मित कहल गेल?
क. नोरक टघारेसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नोरक टघारेसँ।
व्याख्या: स्रोतमे “नोरक टघारेसँ जीवन जँ निर्मित” पंक्ति अछि।

प्रश्न 12698. श्रद्धा-पंक्तिमे आशाकेर कमल कतय अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हृदय केर दहमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हृदय केर दहमे।
व्याख्या: स्रोतमे “आशा केर कमल अछि हृदय केर दहमे” अछि।

प्रश्न 12699. पंक्तिमे जीवन-संघर्ष कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कठिन युद्ध।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कठिन युद्ध।
व्याख्या: स्रोतमे “कठिन युद्ध अछि ई तँ लडिए रहल छी” पंक्ति अछि।

प्रश्न 12700. पंक्तिक अन्तिम भरोसा की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हारब नहि, जीत निश्चित।
उत्तर: घ. हारब नहि, जीत निश्चित।
व्याख्या: स्रोतमे “हारव ने कहियो... जीत निश्चित” आशय अछि।

प्रश्न 12701. “आह उमा! वाह उमा!” शीर्षकमे भावक कोन संगम अछि?
क. शोक आ गौरव दुनू।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शोक आ गौरव दुनू।
व्याख्या: आह शोकक आ वाह वीरता/गौरवक भावसँ शीर्षक बनल अछि।

प्रश्न 12702. खण्ड १२७५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उमा सिंहकेँ लेखक पत्रकार-शहीद, बीराङ्गना आ कलमजीवी स्मृतिमे अमर बलिदानी रूपमे नमन करैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उमा सिंहकेँ लेखक पत्रकार-शहीद, बीराङ्गना आ कलमजीवी स्मृतिमे अमर बलिदानी रूपमे नमन करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड श्रद्धांजलिक अन्तिम भाव आ पंक्ति पर आधारित अछि।

खण्ड १२७६ : विदेह-सदेह २ — नमन गुरुदेव: धीरेश्वर झा धीरेन्द्र

प्रश्न 12703. “नमन गुरुदेव” लेख ककर स्मृतिसभा प्रसंगसँ जुड़ल अछि?

क. डा. धीरेश्वर झा ‘धीरेन्द्र’।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डा. धीरेश्वर झा ‘धीरेन्द्र’।

व्याख्या: स्रोतमे गुरुदेव डा. धीरेश्वर झा ‘धीरेन्द्र’क छठम स्मृतिसभाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12704. धीरेश्वर झाकेँ नेपालीय मैथिली साहित्यक की कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जनक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जनक।

व्याख्या: स्रोतमे “नेपालीय मैथिली साहित्यक जनक” कहल अछि।

प्रश्न 12705. ओ जनकपुरक चटिसारक कोन प्राचार्य कहल गेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अन्तिम प्राचार्य।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अन्तिम प्राचार्य।

व्याख्या: स्रोतमे “जनकपुरक चटिसारक अन्तिम प्राचार्य” लिखल अछि।

प्रश्न 12706. छठम स्मृतिसभा कखन सम्पन्न भेल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुस २७ गते।

उत्तर: घ. पुस २७ गते।

व्याख्या: स्रोतमे पुस २७ गते सम्पन्न भेल कहल अछि।

प्रश्न 12707. हुनका प्रेरणासँ जन्मल कोन संस्था हुनका स्मरण कएलक?

क. मिथिला नाट्यकला परिषद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला नाट्यकला परिषद।

व्याख्या: स्रोतमे हुनक प्रेरणासँ जन्मग्रहण कएने मिथिला नाट्यकला परिषद स्मरण कएलक कहल अछि।

प्रश्न 12708. लेखकक अनुसार देवताक असली पूजा की थिक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. देवताक देखाओल बाटपर चलब।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. देवताक देखाओल बाटपर चलब।

व्याख्या: स्रोतमे असली पूजा आदर्शक पालन आ देखाओल बाटपर चलब कहल अछि।

प्रश्न 12709. घोषणा सम्बन्धमे लेखक कोन प्रश्न उठबैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. घोषणा सभ कार्यरूपमे आएल कि नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. घोषणा सभ कार्यरूपमे आएल कि नहि।
व्याख्या: स्रोतमे घोषणा सभ कार्यरूपमे आएल कि नहि देखबाक बात अछि।

प्रश्न 12710. गुरुदेवकेँ मंचपर स्मरण करी वा मोने-मोन, लेखकक मत की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कोनो अन्तर नहि।
उत्तर: घ. कोनो अन्तर नहि।
व्याख्या: स्रोतमे मंच वा मोने-मोन स्मरणमे अन्तर नहि कहल अछि।

प्रश्न 12711. गुरुदेवक स्मरणक सही रूप की कहल गेल?
क. हुनकर आदर्शकेँ पालना करब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हुनकर आदर्शकेँ पालना करब।
व्याख्या: स्रोतमे असली पूजा आदर्शक पालन कहल अछि।

प्रश्न 12712. खण्ड १२७६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. धीरेश्वर झा धीरेन्द्रकेँ नेपालीय मैथिलीक जनक, चटिसारक अन्तिम प्राचार्य आ आदर्श-पालनयोग्य गुरुदेव रूपमे स्मरण कएल गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. धीरेश्वर झा धीरेन्द्रकेँ नेपालीय मैथिलीक जनक, चटिसारक अन्तिम प्राचार्य आ आदर्श-पालनयोग्य गुरुदेव रूपमे स्मरण कएल गेल।
व्याख्या: ई खण्ड नमन गुरुदेव लेखक आरम्भिक मूल्यांकन पर आधारित अछि।

खण्ड १२७७ : विदेह-सदेह २ — चटिसारक अन्तिम प्राचार्य आ एम.ए. पहिल बैच

प्रश्न 12713. लेखक “अन्तिम प्राचार्य” कहबासँ पहिने कोन शंका अनुभव कएलनि?
क. जनकपुरक सक्रिय कलमजीवी सभक नाम-दाम-मुकाम देखैत प्रतिवादक सम्भावना।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जनकपुरक सक्रिय कलमजीवी सभक नाम-दाम-मुकाम देखैत प्रतिवादक सम्भावना।
व्याख्या: स्रोतमे लेखक कहैत छथि जे एहन लोक छथि तँ केओ पूछत “अन्तिम प्राचार्य कोना?”

प्रश्न 12714. लेखक अपन तर्क लेल कोन दृश्य खोलए चाहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली एम.ए. पहिल बैचक जमावड़ाक दृश्य।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली एम.ए. पहिल बैचक जमावड़ाक दृश्य।
व्याख्या: स्रोतमे पहिल बैचक जमावड़ाक दृश्य उद्घाटन करबाक बात अछि।

प्रश्न 12715. गुरुदेवक भागीरथी प्रयाससँ कतय मैथिलीमे एम.ए. पढ़ाइ शुरू भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राराव क्याम्पसमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राराव क्याम्पसमे।

व्याख्या: स्रोतमे राराव क्याम्पसमे मैथिलीमे एम.ए. पढ़ाइ शुरू भेल कहल अछि।

प्रश्न 12716. मैथिलीक बाद कोन विषय सभमे स्नातकोत्तर पढ़ाइ शुरू भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र वा अन्य विषय।

उत्तर: घ. राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र वा अन्य विषय।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक बादे ई विषय सभक स्नातकोत्तर पढ़ाइ शुरू भेल कहल अछि।

प्रश्न 12717. मैथिली एम.ए. पहिल बैचक विद्यार्थीमे डा. राजेन्द्रप्रसाद विमलक संग के-के नाम आयल?

क. जानकी रमण लाल, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, डा. पशुपतिनाथ झा आदि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जानकी रमण लाल, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, डा. पशुपतिनाथ झा आदि।

व्याख्या: स्रोतमे पहिल बैचक विस्तृत विद्यार्थी-सूची देल अछि।

प्रश्न 12718. अधिकांश विद्यार्थी नोकरियाहा छलाह, तें कक्षा कखन चलैत छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भोरमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भोरमे।

व्याख्या: स्रोतमे अधिकांश विद्यार्थी नोकरियाहा छलाह तेँ कक्षा भोरमे चलैत छल कहल अछि।

प्रश्न 12719. अधिकांश कक्षा कतय संचालित होइत छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गुरुदेवक घरेपर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गुरुदेवक घरेपर।

व्याख्या: स्रोतमे अधिकतर कक्षा गुरुदेवक घरपर चलैत छल कहल अछि।

प्रश्न 12720. भाषा विज्ञानक कापी तैयार करैत काल गुरुदेव ककरासँ राय-सल्लाह लैत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जानकी बाबू आ विमलसरसँ।

उत्तर: घ. जानकी बाबू आ विमलसरसँ।

व्याख्या: स्रोतमे गुरुदेव जानकी बाबू आ विमलसरसँ राय-सल्लाह करथि कहल अछि।

प्रश्न 12721. ओहि कापीक वर्तमान महत्त्व लेखक कोना बतबैत छथि?
क. एखनो मैथिली एम.ए. विद्यार्थी सभ ओहि आधारपर परीक्षा पास करैत छथि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एखनो मैथिली एम.ए. विद्यार्थी सभ ओहि आधारपर परीक्षा पास करैत छथि।
व्याख्या: स्रोतमे ई कथन स्पष्ट रूपेँ अछि।

प्रश्न 12722. खण्ड १२७७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. धीरेश्वर झाक घर-आधारित चटिसार परम्परा मैथिली एम.ए.क पहिल बैच आ भाषा-विज्ञान पाठक आधार बनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. धीरेश्वर झाक घर-आधारित चटिसार परम्परा मैथिली एम.ए.क पहिल बैच आ भाषा-विज्ञान पाठक आधार बनल।
व्याख्या: ई खण्ड एम.ए. आरम्भ आ चटिसार तर्क पर आधारित अछि।

खण्ड १२७८ : विदेह-सदेह २ — साहित्यकार-निर्माता धीरेश्वर झा

प्रश्न 12723. लेखक धीरेश्वर झाकेँ मात्र साहित्यकार नहि, कोन रूपमे देखैत छथि?
क. साहित्यकार सृजना करएवला ब्रह्मा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्यकार सृजना करएवला ब्रह्मा।
व्याख्या: स्रोतमे “साहित्यकार सृजना करएबला ब्रह्मा” कहल अछि।

प्रश्न 12724. महेंद्र मलंगियाकेँ गुरुदेव की देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नाटक लिखबाक प्रेरणा आ सीख दुनू।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नाटक लिखबाक प्रेरणा आ सीख दुनू।
व्याख्या: स्रोतमे महेन्द्र मलंगियाकेँ नाटक लिखबाक प्रेरणा आ सिख देलथिन कहल अछि।

प्रश्न 12725. रेवती रमणलालकेँ गुरुदेव कोन आदेश देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रिपोर्ट लिखबाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रिपोर्ट लिखबाक।
व्याख्या: स्रोतमे रेवती रमणलालकेँ रिपोर्ट लिखबाक आदेश देलथिन कहल अछि।

प्रश्न 12726. रामभरोस कापड़िकेँ की लिखबाक जिम्मेवारी देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कविता आ गीत।
उत्तर: घ. कविता आ गीत।
व्याख्या: स्रोतमे रामभरोस कापड़िकेँ कविता आ गीतक जिम्मेवारी देलनि।

प्रश्न 12727. भुवनेश्वर पाथेयकेँ कोन विधाक जिम्मेवारी देल गेल?

क. कविता आ कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता आ कथा।

व्याख्या: स्रोतमे भुवनेश्वर पाथेयकेँ कविता आ कथा लिखबाक जिम्मेवारी देलनि।

प्रश्न 12728. प्रतिभा आ रुचि अनुसार जिम्मेवारी बाँटबाक पाछाँ लेखक कोन उद्देश्य देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नेपालीय मैथिलीमे सभ विधामे रचना हो।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नेपालीय मैथिलीमे सभ विधामे रचना हो।

व्याख्या: स्रोतमे गुरुदेव चाहने हेताह जे नेपालीय मैथिलीमे सभ विधामे रचना हो।

प्रश्न 12729. लेखकक अनुसार “नेपालीय मैथिली साहित्य”क नामाकरण के कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गुरुदेव धीरेश्वर झा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गुरुदेव धीरेश्वर झा।

व्याख्या: स्रोतमे भले किछु शिष्य षडयंत्र कएलक, मुदा नामाकरण ओएह कएने छलाह कहल अछि।

प्रश्न 12730. लेखक गुरुदेवसँ अन्तमे कोन प्रेरणा माँगैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुरमे फेरसँ गुरुकुल परम्परा चलि सकए।

उत्तर: घ. जनकपुरमे फेरसँ गुरुकुल परम्परा चलि सकए।

व्याख्या: स्रोतमे “अहाँ प्रेरणा दियौ जे जनकपुरमे फेरसँ गुरुकुल परम्परा चलि सकए” कहल अछि।

प्रश्न 12731. लेखकक अनुसार एखन मैथिल सभकेँ साहित्य-सृजनसँ बेसी की चाही?

क. अधिकार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधिकार।

व्याख्या: स्रोतमे एखन साहित्य श्रृजनसँ बेसी अधिकारक आवश्यकता छैक कहल अछि।

प्रश्न 12732. खण्ड १२७८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. धीरेश्वर झा प्रतिभा अनुसार विधा-विभाजन कऽ नेपालीय मैथिली साहित्यक लेखक-निर्माता आ गुरुकुल-प्रेरक बनलाह।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. धीरेश्वर झा प्रतिभा अनुसार विधा-विभाजन कऽ नेपालीय मैथिली साहित्यक लेखक-निर्माता आ गुरुकुल-प्रेरक बनलाह।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यकार-निर्माता गुरुदेव पर आधारित अछि।

खण्ड १२७९ : विदेह-सदेह २ — चेतना समिति आ पदाधिकारी चुनाव

प्रश्न 12733. चेतना समितिक आम सभामे कोन अवधि लेल पदाधिकारी चुनल गेल?

क. वर्ष २००९–११ लेल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्ष २००९–११ लेल।

व्याख्या: स्रोतमे वर्ष २००९-११क लेल नव पदाधिकारीक चुनाव भेल कहल अछि।

प्रश्न 12734. चेतना समिति कोन क्षेत्रक प्रतिनिधि सामाजिक संस्था कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिलांचलक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिलांचलक।

व्याख्या: स्रोतमे “मिथिलांचलक प्रतिनिधि सामाजिक संस्था” कहल अछि।

प्रश्न 12735. कौन पद छोड़ि आन पदाधिकारी निर्विरोध चुनल गेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपाध्यक्ष।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपाध्यक्ष।

व्याख्या: स्रोतमे उपाध्यक्षकेँ छोड़ि आन पदाधिकारी निर्विरोध चुनल गेलाह।

प्रश्न 12736. निर्वर्तमान अध्यक्ष विजय कुमार मिश्र फेर कोन पदपर बनलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अध्यक्ष।

उत्तर: घ. अध्यक्ष।

व्याख्या: स्रोतमे विजय कुमार मिश्र पुनः अध्यक्ष बनलाह।

प्रश्न 12737. सचिव पदपर के निर्वाचित भेलाह?

क. विवेकानन्द ठाकुर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवेकानन्द ठाकुर।

व्याख्या: स्रोतमे सचिव पदपर विवेकानन्द ठाकुर निर्वाचित भेलाह।

प्रश्न 12738. उपाध्यक्षक तीन पद लेल के-के निर्वाचित घोषित भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रेमकान्त झा, प्रमीला झा आ पुरुषोत्तम झा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रेमकान्त झा, प्रमीला झा आ पुरुषोत्तम झा।

व्याख्या: स्रोतमे मतदानक बाद ई तीन नाम उपाध्यक्ष पदपर घोषित भेल।

प्रश्न 12739. संयुक्त सचिव के-के बनलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मधुकान्त झा, सत्यनारायण मेहता आ प्राणमोहन मिश्र।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मधुकान्त झा, सत्यनारायण मेहता आ प्राणमोहन मिश्र।
व्याख्या: स्रोतमे संयुक्त सचिवक रूपमे ई तीन नाम देल अछि।

प्रश्न 12740. कोषाध्यक्ष के बनाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. योगेन्द्र नारायण मल्लिक।
उत्तर: घ. योगेन्द्र नारायण मल्लिक।
व्याख्या: स्रोतमे कोषाध्यक्ष योगेन्द्र नारायण मल्लिक देल अछि।

प्रश्न 12741. प्रचार सचिव के बनाओल गेल?
क. सुरेन्द्र नारायण यादव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सुरेन्द्र नारायण यादव।
व्याख्या: स्रोतमे प्रचार सचिव सुरेन्द्र नारायण यादवकेँ बनाओल गेल कहल अछि।

प्रश्न 12742. खण्ड १२७९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चेतना समितिक आम सभामे २००९–११ लेल नव पदाधिकारी चुनल गेल, अध्यक्ष विजय कुमार मिश्र आ सचिव विवेकानन्द ठाकुर बनलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चेतना समितिक आम सभामे २००९–११ लेल नव पदाधिकारी चुनल गेल, अध्यक्ष विजय कुमार मिश्र आ सचिव विवेकानन्द ठाकुर बनलाह।
व्याख्या: ई खण्ड चेतना समिति चुनाव-सूचना पर आधारित अछि।

खण्ड १२८० : विदेह-सदेह २ — भाषाई अकादमीक विकासक सरकारी डेग

प्रश्न 12743. बिहारमे भाषाक विकास लेल कोन प्रकारक संस्था सभ कार्यरत कहल गेल?
क. भाषाई अकादमी सभ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषाई अकादमी सभ।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली, मगही, भोजपुरी, संस्कृत, बांग्ला आ दक्षिण भारतीय भाषा अकादमीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12744. भाषाई अकादमी सभक मुख्य समस्या स्रोतमे की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ठेकान-पता आ स्थायी ठेकानक अभाव।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ठेकान-पता आ स्थायी ठेकानक अभाव।
व्याख्या: स्रोतमे एहि अकादमी सभक ठेकान पाता लगाएब मुश्किल आ स्थायी ठेकान नहि अछि कहल अछि।

प्रश्न 12745. कतेक अकादमी विकाससँ दूर कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली, मगही, भोजपुरी, संस्कृत, बांग्ला आ दक्षिण भारतीय भाषा अकादमी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली, मगही, भोजपुरी, संस्कृत, बांग्ला आ दक्षिण भारतीय भाषा अकादमी।
व्याख्या: स्रोतमे एहि छह भाषाई अकादमीक नाम देल अछि।

प्रश्न 12746. वर्तमान राजग सरकारक नजरि अकादमी दिस कखन गेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. न्यायक संग विकासक तीन वर्ष पूरा कऽ चुकलाक बाद।
उत्तर: घ. न्यायक संग विकासक तीन वर्ष पूरा कऽ चुकलाक बाद।
व्याख्या: स्रोतमे ई समय-संकेत स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 12747. कौन विभागक नियंत्रणाधीन एहि संस्थान सभक विकास लेल ब्लू प्रिन्ट बनल?
क. मानव संसाधन विकास विभाग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मानव संसाधन विकास विभाग।
व्याख्या: स्रोतमे विभागक नियंत्रणाधीन संस्थान आ ब्लू प्रिन्टक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12748. योजनामे शोधक संग की करबाक व्यवस्था सोचल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पाण्डुलिपि प्रकाशन आ ओकर बिक्री।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पाण्डुलिपि प्रकाशन आ ओकर बिक्री।
व्याख्या: स्रोतमे शोधक काज, पाण्डुलिपि प्रकाशन आ बिक्री व्यवस्था देल अछि।

प्रश्न 12749. राजधानीमे अकादमी कार्यालय सभ लेल कोन प्रयास तेज भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एक छत नीचा अनबाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एक छत नीचा अनबाक।
व्याख्या: स्रोतमे कार्यालय एक छत नीचा अनबाक प्रयास तेजीसँ चलि रहल अछि।

प्रश्न 12750. सभ भाषाई अकादमी एक परिसरमे रहए लेल कोन स्थान सभक चयन पर विचार अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् परिसर आ लगक संस्कृत विद्यालयक खाली जमीन।
उत्तर: घ. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् परिसर आ लगक संस्कृत विद्यालयक खाली जमीन।
व्याख्या: स्रोतमे एहि दू स्थानमे सँ एक चयनक चर्चा अछि।

प्रश्न 12751. सरकारक पहिल प्राथमिकता की कहल गेल?

क. आधारभूत संरचनाक विकास।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधारभूत संरचनाक विकास।

व्याख्या: स्रोतमे सरकारक मंशा आ पहिल प्राथमिकता आधारभूत संरचना विकास कहल अछि।

प्रश्न 12752. खण्ड १२८०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बिहारक भाषाई अकादमी सभक बदहाली दूर करए लेल सरकार ब्लू प्रिन्ट, साझा परिसर, शोध, पाण्डुलिपि प्रकाशन आ बिक्री-व्यवस्था पर विचार करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बिहारक भाषाई अकादमी सभक बदहाली दूर करए लेल सरकार ब्लू प्रिन्ट, साझा परिसर, शोध, पाण्डुलिपि प्रकाशन आ बिक्री-व्यवस्था पर विचार करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड भाषाई अकादमी विकास समाचार पर आधारित अछि।

खण्ड १२८१ : विदेह-सदेह २ — अकादमीक उद्देश्य, पाण्डुलिपि आ शोध

प्रश्न 12753. स्रोत अनुसार अकादमी सभक गठन कतेक वर्ष पूर्व भेल छल?

क. कतेको वर्ष पूर्व।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतेको वर्ष पूर्व।

व्याख्या: स्रोतमे कतेको वर्ष पूर्व जाहि उद्देश्यसँ गठन भेल छल कहल अछि।

प्रश्न 12754. वर्तमान स्थिति देखि की स्पष्ट भऽ जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गठनक उद्देश्य मे कतबा सफलता भेटल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गठनक उद्देश्य मे कतबा सफलता भेटल।

व्याख्या: स्रोतमे संस्थानक वर्तमान स्थितिसँ उद्देश्य-सफलता स्पष्ट होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12755. प्रारम्भिक काल बाद अकादमी सभक गतिविधि कोना पड़ि गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मंद।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मंद।

व्याख्या: स्रोतमे कतेको वर्षसँ गतिविधि मंद पड़ल अछि।

प्रश्न 12756. संस्थान सभपर आलोचनात्मक टिप्पणीमे कोन गतिविधि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किछु गोटेक दरमाहा आ किछु साहित्यकारकेँ महिमामण्डित करब।

उत्तर: घ. किछु गोटेक दरमाहा आ किछु साहित्यकारकेँ महिमामण्डित करब।

व्याख्या: स्रोतमे मात्र किछु दरमाहा आ साहित्यकार महिमामण्डनक आलोचना अछि।

प्रश्न 12757. सरकार द्वारा गतिविधि सुचारू करबाक प्रयास लेखक कोना देखैत छथि?
क. स्वागत योग्य।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्वागत योग्य।
व्याख्या: स्रोतमे प्रयास प्रारम्भ करब स्वागत योग्य कहल अछि।

प्रश्न 12758. इमानदारीसँ प्रयास भेल तँ की साहित्यप्रेमी सोझा आओत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दुर्लभ पाण्डुलिपि पुस्तकाकार रूपमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दुर्लभ पाण्डुलिपि पुस्तकाकार रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे कतेको लब्ध साहित्यकारक दुर्लभ पाण्डुलिपि पुस्तककार रूपमे सामने आओत कहल अछि।

प्रश्न 12759. शोधक काज शुरू भेलासँ कोन लाभ होएत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषाक सन्दर्भमे नव-नव जनतब सोझा आओत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषाक सन्दर्भमे नव-नव जनतब सोझा आओत।
व्याख्या: स्रोतमे शोधादिक काजसँ नव जनतब सामने आबयक बात अछि।

प्रश्न 12760. नव जनतबक लाभ के सभकेँ भेटत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. साहित्यक शोधार्थी आ छात्र सभकेँ।
उत्तर: घ. साहित्यक शोधार्थी आ छात्र सभकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे शोधार्थी आ छात्र सभकेँ लाभ भेटत कहल अछि।

प्रश्न 12761. प्रकाशित पुस्तकक बिक्री व्यवस्था किएक महत्त्वपूर्ण कहल गेल?
क. अकादमीकेँ आर्थिक रूपसँ मजबूत करबाक लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अकादमीकेँ आर्थिक रूपसँ मजबूत करबाक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे बिक्री व्यवस्था अकादमी सभकेँ आर्थिक रूपसँ मजगूत बनएबाक संग जुड़ल अछि।

प्रश्न 12762. खण्ड १२८१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अकादमी सुधारक सार शोध, पाण्डुलिपि प्रकाशन, पुस्तक-विक्री आ विद्यार्थी-शोधार्थी लेल नव जनतब उपलब्ध करबामे अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अकादमी सुधारक सार शोध, पाण्डुलिपि प्रकाशन, पुस्तक-विक्री आ विद्यार्थी-शोधार्थी लेल नव जनतब उपलब्ध करबामे अछि।
व्याख्या: ई खण्ड अकादमीक उद्देश्य आ सुधार-लाभ पर आधारित अछि।

खण्ड १२८२ : विदेह-सदेह २ — मैथिली भाषा-संस्कृतिक संस्था: सुशान्त झाक प्रस्ताव

प्रश्न 12763. “मैथिली भाषा-संस्कृतिक रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि” शीर्षक लेखक के छथि?

क. सुशान्त झा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुशान्त झा।

व्याख्या: स्रोतमे एहि शीर्षकक ठीक ऊपर सुशान्त झाक नाम अछि।

प्रश्न 12764. लेखक फुरसति भेटलापर कोन भाषा/संगीत सुनबाक कोशिश करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली गीत।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली गीत।

व्याख्या: स्रोतमे फुरसति भेटए तँ मैथिली गीत सुनबाक कोशिश रहैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12765. यू-ट्यूबपर उपलब्ध मैथिली गीत सभमे बेसीतर कोन प्रकारक गीत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बियाहक गीत आ भक्ति गीत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बियाहक गीत आ भक्ति गीत।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली गीतमे बेसीतर विवाह आ भक्ति गीतक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12766. छिड़िआएल लोकगीत सभक बारे लेखक कोन कठिनाई बतबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सभकेँ एकठाम पौनाई मुश्किल।

उत्तर: घ. सभकेँ एकठाम पौनाई मुश्किल।

व्याख्या: स्रोतमे विराट संसारमे छिड़िआएल लोकगीत सभ एकठाम पौनाई कठिन कहल अछि।

प्रश्न 12767. लेखक गजेंद्रजीकेँ फोन किएक केलनि?

क. लोकप्रिय मैथिली गीत वेबसाइटपर डालल जा सकैत अछि कि नहि जानबाक लेल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकप्रिय मैथिली गीत वेबसाइटपर डालल जा सकैत अछि कि नहि जानबाक लेल।

व्याख्या: स्रोतमे लेखक एहि प्रश्न लेल फोन केलन्हि कहल अछि।

प्रश्न 12768. गीत वेबसाइटपर डालबामे कोन संकट पता लागल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कापीराइटक संकट।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कापीराइटक संकट।

व्याख्या: स्रोतमे पता चलल जे कापीराइटक संकट अछि।

प्रश्न 12769. लेखक ककरा लेल एक वेबसाइट चाहैत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दिल्ली-बंबईसँ अमेरिका धरि रहएवला मैथिल लेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दिल्ली-बंबईसँ अमेरिका धरि रहएवला मैथिल लेल।

व्याख्या: स्रोतमे दिल्ली बंबईसँ लऽ कऽ अमेरिका तकमे रहएवला मैथिलक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12770. नव तकनीक सतर्कतासँ उपयोग कएल जाए तँ की सम्भव अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली गीत-संगीतक विराट संसार मैथिल भाषी तक पहुँचाओल जा सकैत अछि।

उत्तर: घ. मैथिली गीत-संगीतक विराट संसार मैथिल भाषी तक पहुँचाओल जा सकैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे नव तकनीकक उपयोगसँ गीत-संगीत आसानीसँ पहुँचबाक आशा अछि।

प्रश्न 12771. लेखक मैथिली लोकधरोहरमे कोन-कोन रूप गनबैत छथि?

क. लोकगीत, नाटक, लोककथा आ आख्यान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत, नाटक, लोककथा आ आख्यान।

व्याख्या: स्रोतमे ई चारि धरोहरक रूपमे देल अछि।

प्रश्न 12772. खण्ड १२८२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुशान्त झा मैथिली गीत-संगीत आ लोकधरोहरकेँ डिजिटल माध्यमे जोड़बाक लेल संस्थागत, कापीराइट-सजग प्रयासक आवश्यकता बतबैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुशान्त झा मैथिली गीत-संगीत आ लोकधरोहरकेँ डिजिटल माध्यमे जोड़बाक लेल संस्थागत, कापीराइट-सजग प्रयासक आवश्यकता बतबैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड भाषा-संस्कृति रक्षा लेल संस्था प्रस्ताव पर आधारित अछि।

खण्ड १२८३ : विदेह-सदेह २ — ऑडियो-विजुअल युग आ संस्थागत प्रयास

प्रश्न 12773. लेखकक अनुसार आबएवला जमाना कोन प्रकारक अछि?

क. ऑडियो-विजुअल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऑडियो-विजुअल।

व्याख्या: स्रोतमे आबएबला जमाना आडियो विजुअलक छैक कहल अछि।

प्रश्न 12774. दुनियाँमे लोकक कोन रुचि दुर्भाग्यजनक रूपसँ घटि रहल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पढ़बामे रुचि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पढ़बामे रुचि।

व्याख्या: स्रोतमे लोक पढ़ैमे रुचि घटि रहल अछि कहल अछि।

प्रश्न 12775. लोक आब की बेसी देखए चाहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ऑडियो आ विजुअल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ऑडियो आ विजुअल।
व्याख्या: स्रोतमे लोक आडियो आ विजुअल बेसी देखए चाहैत अछि।

प्रश्न 12776. जे मैथिल जीवनमे पोथी नहि पढ़लन्हि, ओ मैथिली गीत सुनि की होइत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विभोर।
उत्तर: घ. विभोर।
व्याख्या: स्रोतमे एकटा मैथिली पोथी नहि पढ़लन्हि, मुदा गीत सुनि विभोर भऽ जाइ छथि कहल अछि।

प्रश्न 12777. मैथिलीमे छिटपुट स्तरपर की बनैत अछि?
क. गीत-संगीतक कैसेट आ फिल्म।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गीत-संगीतक कैसेट आ फिल्म।
व्याख्या: स्रोतमे गीत-संगीतक कैसेट बनैत अछि, फिल्मो बनि रहल अछि कहल अछि।

प्रश्न 12778. एकटा कोन माध्यमक सुनगुनी सेहो बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. टीवी चैनल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. टीवी चैनल।
व्याख्या: स्रोतमे आब एकटा टीवी चैनलक सेहो सुनगुनी अछि।

प्रश्न 12779. लेखकक अनुसार मुख्य कमी की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कोनो संस्थागत प्रयास नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कोनो संस्थागत प्रयास नहि।
व्याख्या: स्रोतमे “एकर कोनो संस्थागत प्रयास नहि भऽ रहल अछि” कहल अछि।

प्रश्न 12780. संविधानमे भाषाक स्थान भेटलाक बादो लेखक सरकारसँ कोना आशा देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बहुत उम्मीद नहि।
उत्तर: घ. बहुत उम्मीद नहि।
व्याख्या: स्रोतमे सरकारसँ बड्डु उम्मीद नहि कऽ सकैत छी कहल अछि।

प्रश्न 12781. लेखक गजेंद्रजीक प्रयासकेँ कोना मूल्यांकित करैत छथि?

क. वास्तवमे स्तुत्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वास्तवमे स्तुत्य।

व्याख्या: स्रोतमे गजेंद्रजीक प्रयास स्तुत्य छन्हि कहल अछि।

प्रश्न 12782. खण्ड १२८३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ऑडियो-विजुअल युगमे मैथिली संस्कृति बचएबाक लेल सरकारक प्रतीक्षासँ बेसी गैरसरकारी, संस्थागत आ डिजिटल प्रयास आवश्यक कहल गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ऑडियो-विजुअल युगमे मैथिली संस्कृति बचएबाक लेल सरकारक प्रतीक्षासँ बेसी गैरसरकारी, संस्थागत आ डिजिटल प्रयास आवश्यक कहल गेल।

व्याख्या: ई खण्ड आधुनिक माध्यम आ संस्थागत प्रयास पर आधारित अछि।

खण्ड १२८४ : विदेह-सदेह २ — हमर सपनाक मिथिला: विकास, शिक्षा आ नियोजन

प्रश्न 12783. “हमर सपनाक मिथिला”मे लेखक भविष्यक दिस कोना देखि रहल छथि?

क. टकटकी लगा कए।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टकटकी लगा कए।

व्याख्या: स्रोतमे भविष्यक दिस टकटकी लगा कए देखबाक बात अछि।

प्रश्न 12784. सपना-मिथिलामे एखन तक कोन-किछु रंग भरल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दरभंगामे यूनिवर्सिटी आ मेडिकल कालेज, जयनगर तक बड़ी लाइन, नेशनल हाईवे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दरभंगामे यूनिवर्सिटी आ मेडिकल कालेज, जयनगर तक बड़ी लाइन, नेशनल हाईवे।

व्याख्या: स्रोतमे ई प्रारम्भिक विकास-चिह्न गनाओल गेल अछि।

प्रश्न 12785. हाईवेक किनारमे लेखक कोन संस्था सभ खुलबाक कल्पना करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दर्जनों इंजीनियरिंग आ मेडिकल कालेज।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दर्जनों इंजीनियरिंग आ मेडिकल कालेज।

व्याख्या: स्रोतमे हाईवेक किनारमे दर्जनों इंजीनियरिंग आ मेडिकल कालेज खुलबाक कल्पना अछि।

प्रश्न 12786. झंझारपुरक बायोटेक्नोलॉजी कालेजमे ककर बच्चा सभ एडमिशन लेत से कल्पना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. केरलाक बच्चा सभ।

उत्तर: घ. केरलाक बच्चा सभ।

व्याख्या: स्रोतमे केरलक बच्चा सभ एडमिशन लेत तँ कतेक नीक हेतै कहल अछि।

प्रश्न 12787. लेखक नार्थ-इस्ट आ दक्षिण भारतक बच्चा सभक कोन यात्रा कल्पना करैत छथि?

क. गाड़ी रिजर्व कऽ काठमांडू टूर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाड़ी रिजर्व कऽ काठमांडू टूर।

व्याख्या: स्रोतमे नार्थ-इस्ट आ दक्षिण भारतक बच्चा सभ काठमांडूक टूर पर निकलत कहल अछि।

प्रश्न 12788. कस्बा रूपमे गनल स्थान सभमे की खुलबाक कल्पना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ढेर उद्योग-धन्धा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ढेर उद्योग-धन्धा।

व्याख्या: स्रोतमे झंझारपुर, निर्मली, सकरी, सुपौल, उदाकिसुनगंजमे उद्योग धंधा खुलबाक बात अछि।

प्रश्न 12789. मिथिलाक इलाकामे घर लग सभकेँ की भेटबाक सपना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रोजगार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रोजगार।

व्याख्या: स्रोतमे अपन घर लग रोजगार भेटबाक कल्पना अछि।

प्रश्न 12790. लेखक मखानक की होएबाक कल्पना करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दुनियाँ भरिमे ब्राण्डिङ्ग।

उत्तर: घ. दुनियाँ भरिमे ब्राण्डिङ्ग।

व्याख्या: स्रोतमे मखानक दुनियाँ भरिमे ब्रांडिंग होएबाक बात अछि।

प्रश्न 12791. मिथिलामे लेखक कोन चीजक कमी नहि मानैत छथि?

क. मानव श्रम, पानि आ मेधाक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानव श्रम, पानि आ मेधाक।

व्याख्या: स्रोतमे मानव श्रम, पाइनि आ मेधा कमी नहि कहल अछि।

प्रश्न 12792. खण्ड १२८४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हमर सपनाक मिथिला शिक्षा, सड़क, उद्योग, रोजगार, मखान-ब्राण्डिङ्ग आ नियोजनक माध्यमे समृद्ध क्षेत्र बनबाक विकास-दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हमर सपनाक मिथिला शिक्षा, सड़क, उद्योग, रोजगार, मखान-ब्राण्डिङ्ग आ नियोजनक माध्यमे समृद्ध क्षेत्र बनबाक विकास-दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड विकास-कल्पना आ नियोजनक अभाव पर आधारित अछि।

खण्ड १२८५ : विदेह-सदेह २ — हमर सपनाक मिथिला: कोसी, पुल आ हाईवे

प्रश्न 12793. कोसीपर लेखक कोन पुल बनि रहल कहलनि?

क. रेलवे पुल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रेलवे पुल।

व्याख्या: स्रोतमे “कोसीपर रेलवे पुल सेहो बनि रहल अछि” कहल अछि।

प्रश्न 12794. हाईवे योजना अन्तर्गत कोसीपर कोन दोसर पुल बनबाक बात अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सड़क पुल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सड़क पुल।

व्याख्या: स्रोतमे हाईवे अंतर्गत सड़क पुल सेहो बनबे करत कहल अछि।

प्रश्न 12795. रेलवे पुल आ सड़क पुल दुनू मिलि मिथिलाक लेल की साबित होएत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मिथिलाकेँ फेरसँ जोड़एवला।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मिथिलाकेँ फेरसँ जोड़एवला।

व्याख्या: स्रोतमे ई दुनू पुल मिथिला जोड़एबला साबित होएत कहल अछि।

प्रश्न 12796. कोसी नदी मिथिलाक संग की कएने छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाकेँ दू फाँकमे बाँटि देने छल।

उत्तर: घ. मिथिलाकेँ दू फाँकमे बाँटि देने छल।

व्याख्या: स्रोतमे कोसी नदी मिथिलाकेँ दू फाँकमे बाँटि देने छल कहल अछि।

प्रश्न 12797. लेखक मोकामासँ जयनगर धरि कोन तरहक सड़क चाहैत छथि?

क. भाया समस्तीपुर फोर लेन हाईवे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाया समस्तीपुर फोर लेन हाईवे।

व्याख्या: स्रोतमे मोकामासँ जयनगर धरि भाया समस्तीपुर फोर लेन हाईवेक कल्पना अछि।

प्रश्न 12798. सरकारसँ हाईवे नंबर २८ सम्बन्धमे लेखक की चाहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मुजफ्फरपुरसँ बरौनी आ आगू गोहाटी जाएवला हाईवे सेहो फोर लेन बनाओल जाए।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मुजफ्फरपुरसँ बरौनी आ आगू गोहाटी जाएवला हाईवे सेहो फोर लेन बनाओल जाए।

व्याख्या: स्रोतमे हाईवे नंबर 28 केँ सेहो फोर लेन बनएबाक अपेक्षा अछि।

प्रश्न 12799. फोर लेन हाईवे निर्माणक मुख्य उद्देश्य की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. इलाकाक समग्र विकास सम्भव करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. इलाकाक समग्र विकास सम्भव करब।
व्याख्या: स्रोतमे अहि इलाकाक समग्र विकास सम्भव भऽ जाईक कहल अछि।

प्रश्न 12800. लेखक नेपालमे कोन स्थिति जल्दीए कायम होएबाक कल्पना करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शांति आ सुव्यवस्था।
उत्तर: घ. शांति आ सुव्यवस्था।
व्याख्या: स्रोतमे नेपालमे जल्दीए शांति आ सुव्यवस्था कायम होएबाक कल्पना अछि।

प्रश्न 12801. नेपालसँ प्रचुर मात्रामे की आबि मिथिला जगमगाएत?
क. बिजली।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बिजली।
व्याख्या: स्रोतमे नेपालसँ प्रचुर मात्रामे बिजली आबि मिथिलाक इलाका जगमगाएत कहल अछि।

प्रश्न 12802. खण्ड १२८५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कोसीक पुल, फोर लेन हाईवे आ नेपालक बिजली मिथिलाक पुनर्संयोजन आ समग्र विकासक आधार रूपमे देखल गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कोसीक पुल, फोर लेन हाईवे आ नेपालक बिजली मिथिलाक पुनर्संयोजन आ समग्र विकासक आधार रूपमे देखल गेल।
व्याख्या: ई खण्ड “हमर सपनाक मिथिला”क आधारभूत संरचना सम्बन्धी अंश पर आधारित अछि।

खण्ड १२८६ : विदेह-सदेह २ — पर्यटन, सांस्कृतिक पैकेजिङ्ग आ ऐतिहासिक सर्किट

प्रश्न 12803. नेपाल आबएवला अन्तरराष्ट्रीय टूरिस्ट लोकनि ककर रुखि करताह से लेखक कल्पना करैत छथि?
क. मिथिलाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक।
व्याख्या: स्रोतमे नेपाल आबैवला अन्तरराष्ट्रीय टूरिस्ट लोकनि मिथिलाक रुखि करताह कहल अछि।

प्रश्न 12804. टूरिस्टकेँ आकर्षित करबाक लेल लेखक पहिने कोन काज आवश्यक मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पर्यटन स्थलक विकास।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पर्यटन स्थलक विकास।
व्याख्या: स्रोतमे अपन पर्यटन स्थलक विकास करए पड़त कहल अछि।

प्रश्न 12805. मिथिलामे बहुत रास ऐतिहासिक स्थल नहि छैक, तइयो लेखक कोन उपाय सुझबैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. संस्कृतिकेँ नीक पैकेजिङ्ग कऽ प्रस्तुत करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. संस्कृतिकेँ नीक पैकेजिङ्ग कऽ प्रस्तुत करब।
व्याख्या: स्रोतमे संस्कृति नीक पैकेजिङ्ग कऽ टूरिस्ट आकर्षित करबाक बात अछि।

प्रश्न 12806. सीताक जन्मस्थान आ मिथिलाक प्राचीन राजधानी रूपमे कोन स्थान देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जनकपुर।
उत्तर: घ. जनकपुर।
व्याख्या: स्रोतमे सीताक जन्मस्थान आ मिथिलाक प्राचीन राजधानी जनकपुर कहल अछि।

प्रश्न 12807. जनकपुरक संग कोन-कोन स्थान जोड़ि सर्किट विकासक कल्पना अछि?
क. वैशाली, पाटलिपुत्र, बोधगया आ नालन्दा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वैशाली, पाटलिपुत्र, बोधगया आ नालन्दा।
व्याख्या: स्रोतमे जनकपुर, वैशाली, पाटलिपुत्र-बोधगया-नालन्दा जोड़एवला सर्किटक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12808. ऐतिहासिक-सांस्कृतिक सर्किट विकसित भेल तँ की आकर्षित भऽ सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. झुंडक झुंड टूरिस्ट।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. झुंडक झुंड टूरिस्ट।
व्याख्या: स्रोतमे झुंडक झुंड टूरिस्ट आकर्षित होएबाक बात अछि।

प्रश्न 12809. मिथिलाक कोन सांस्कृतिक रूप पर आधारित कार्यशाला आवश्यक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लोककला, गीत आ पेंटिङ्ग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लोककला, गीत आ पेंटिङ्ग।
व्याख्या: स्रोतमे लोककला, गीत आ पेंटिंगपर आधारित कार्यशाला आवश्यक कहल अछि।

प्रश्न 12810. कार्यशालाक संग लेखक कोन सांस्कृतिक संरचना बनएबाक आवश्यकता बतबैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. म्यूजियम।
उत्तर: घ. म्यूजियम।
व्याख्या: स्रोतमे कार्यशाला आ म्यूजियम बनबैक आवश्यकता अछि।

प्रश्न 12811. पर्यटन दृष्टिमे लेखकक मूल बल कोन बातपर अछि?

क. स्थल-विकास आ संस्कृतिक आकर्षक प्रस्तुति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्थल-विकास आ संस्कृतिक आकर्षक प्रस्तुति।

व्याख्या: स्रोतक भाव ई अछि जे पर्यटन खाली इतिहास नहि, सांस्कृतिक प्रस्तुति पर सेहो निर्भर अछि।

प्रश्न 12812. खण्ड १२८६क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिला पर्यटन लेल जनकपुर-वैशाली-पाटलिपुत्र-बोधगया-नालन्दा सर्किट, लोककला-गीत-पेंटिङ्ग कार्यशाला आ म्यूजियमक योजना रखल गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिला पर्यटन लेल जनकपुर-वैशाली-पाटलिपुत्र-बोधगया-नालन्दा सर्किट, लोककला-गीत-पेंटिङ्ग कार्यशाला आ म्यूजियमक योजना रखल गेल।

व्याख्या: ई खण्ड पर्यटन आ सांस्कृतिक पैकेजिङ्ग पर आधारित अछि।

खण्ड १२८७ : विदेह-सदेह २ — पोखरि, माछ-मखान आ क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधि

प्रश्न 12813. लेखकक अनुसार हमरा इलाकामे ककर कोनो कमी नहि?

क. पोखरिक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोखरिक।

व्याख्या: स्रोतमे “हमरा इलाकामे पोखरिक कोनो कमी नहि” कहल अछि।

प्रश्न 12814. पोखरिक व्यवस्थित उपयोगसँ कोन उत्पादनक पैघ आधार बनि सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. माछ-मखानक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. माछ-मखानक।

व्याख्या: स्रोतमे पोखरि माछ-मखान उत्पादनक पैघ आधार बनि सकए कहल अछि।

प्रश्न 12815. पोखरिक सौन्दर्यीकरणसँ लेखक की बढ़एबाक सम्भावना देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कए तरहक आर्थिक गतिविधि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कए तरहक आर्थिक गतिविधि।

व्याख्या: स्रोतमे सौन्दर्यीकरणसँ आर्थिक गतिविधि बढ़एबाक बात अछि।

प्रश्न 12816. दरभंगा आ पूर्णिया कोन रूपमे उभरबाक कल्पना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मेडिकल हब।

उत्तर: घ. मेडिकल हब।

व्याख्या: स्रोतमे दरभंगा आ पूर्णिया मेडिकल हब रूपमे उभरत कहल अछि।

प्रश्न 12817. मुजफ्फरपुरकेँ लेखक कोन उद्योगक केन्द्र रूपमे देखैत छथि?

क. निर्माण आ मोटर उद्योग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निर्माण आ मोटर उद्योग।

व्याख्या: स्रोतमे मुजफ्फरपुर निर्माण आ मोटर उद्योगक केन्द्र बनबाक कल्पना अछि।

प्रश्न 12818. भागलपुर फेरसँ कोन क्षेत्रमे ख्याति अर्जित करत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सिल्क आ हस्तकला।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सिल्क आ हस्तकला।

व्याख्या: स्रोतमे भागलपुर फेरसँ सिल्क आ हस्तकला क्षेत्रमे ख्याति अर्जित करत कहल अछि।

प्रश्न 12819. मधुबनीमे लेखक कोन प्रकारक आयोजनक कल्पना करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कलापर आधारित पैघ-पैघ अन्तरराष्ट्रीय सेमिनार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कलापर आधारित पैघ-पैघ अन्तरराष्ट्रीय सेमिनार।

व्याख्या: स्रोतमे मधुबनीमे कला-आधारित अन्तरराष्ट्रीय सेमिनारक कल्पना अछि।

प्रश्न 12820. कोसीक बाढ़िपर काबू भेल तँ लेखक कोन जल-यात्राक सपना देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोसीमे स्टीमर सँ कलकत्ता धरि यात्रा।

उत्तर: घ. कोसीमे स्टीमर सँ कलकत्ता धरि यात्रा।

व्याख्या: स्रोतमे कोसीमे स्टीमर चलब आ कलकत्ता यात्रा करबाक कल्पना अछि।

प्रश्न 12821. भारत-नेपाल सम्बन्ध लेखक ककर जकाँ होएबाक चाहैत छथि?

क. अमेरिका आ कनाडाक सम्बन्ध जकाँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अमेरिका आ कनाडाक सम्बन्ध जकाँ।

व्याख्या: स्रोतमे भारत-नेपाल बीच अमेरिका-कनाडा सन सम्बन्धक कल्पना अछि।

प्रश्न 12822. खण्ड १२८७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पोखरि, माछ-मखान, मेडिकल हब, उद्योग, सिल्क, हस्तकला, कला-सेमिनार आ भारत-नेपाल संसाधन-साझेदारी मिथिला विकासक आर्थिक कल्पना बनैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पोखरि, माछ-मखान, मेडिकल हब, उद्योग, सिल्क, हस्तकला, कला-सेमिनार आ भारत-नेपाल संसाधन-साझेदारी मिथिला विकासक आर्थिक कल्पना बनैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड क्षेत्रीय संसाधन आ आर्थिक गतिविधि पर आधारित अछि।

खण्ड १२८८ : विदेह-सदेह २ — मैथिलीकेँ लऽ कऽ असुविधाजनक प्रश्न

प्रश्न 12823. लेखक कोन असुविधाजनक प्रश्न उठबैत छथि?

क. मैथिली भाषा आ मिथिलांचलक विकास दोसर प्रान्त/भाषा जकाँ किएक नहि भेल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा आ मिथिलांचलक विकास दोसर प्रान्त/भाषा जकाँ किएक नहि भेल।

व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रश्नसँ असुविधाजनक प्रश्नक आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 12824. एखुनका परिदृश्य अनुसार मैथिली विकासक चिंता ककर दिमागी कसरत बुझाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. किछु मुट्ठी भरि लोकक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. किछु मुट्ठी भरि लोकक।

व्याख्या: स्रोतमे चिंता सिर्फ किछु मुट्ठी भरि लोकक दिमागी कसरत कहल अछि।

प्रश्न 12825. आम मैथिलक मैथिली विकाससँ सम्बन्ध लेखक कोना देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कोनो सरोकार नहि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कोनो सरोकार नहि।

व्याख्या: स्रोतमे आम मैथिलकेँ एहिसँ कोनो सरोकार नहि कहल अछि।

प्रश्न 12826. दरभंगा-मधुबनीमे मैथिल धियापुता कोन भाषामे बात करैत छथि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हिन्दीमे।

उत्तर: घ. हिन्दीमे।

व्याख्या: स्रोतमे धियापुता मैथिली नहि, हिन्दीमे बात करैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 12827. लेखक “एकर की कारण” कहि कोन बातक तहमे जाए चाहैत छथि?

क. मैथिली सँ जनसामान्यक दूरीक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली सँ जनसामान्यक दूरीक।

व्याख्या: स्रोतमे एना किएक भेलैक पूछल गेल अछि।

प्रश्न 12828. लेखकक असुविधाजनक प्रश्नक मूल चिन्ता की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भाषा, क्षेत्रीय विकास आ आम लोकक अलगाव।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भाषा, क्षेत्रीय विकास आ आम लोकक अलगाव।

व्याख्या: स्रोतक प्रारम्भिक अंश एहि तीनू चिन्ताकेँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 12829. मैथिली साहित्य-विकासक बहस सीमित रहबाक संकेत कोना देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ओकरा मुट्ठी भरि लोकक चिन्ता कहल गेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ओकरा मुट्ठी भरि लोकक चिन्ता कहल गेल।

व्याख्या: स्रोतमे एहि बहसक सीमित सामाजिक आधार पर आलोचना अछि।

प्रश्न 12830. धियापुता द्वारा हिन्दी बाजब स्रोतमे कोन व्यापक संकटक चिन्ह अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. घरेलू/स्थानीय भाषा-संचारक कमजोर पड़ब।

उत्तर: घ. घरेलू/स्थानीय भाषा-संचारक कमजोर पड़ब।

व्याख्या: स्रोतमे दरभंगा-मधुबनीक धियापुताक उदाहरण मैथिली दूरीक चिन्ह रूपमे अछि।

प्रश्न 12831. लेखकक प्रश्न मैथिली आन्दोलनकेँ कोन दिशा दिस धकेलैत अछि?

क. आत्मसमीक्षा दिस।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मसमीक्षा दिस।

व्याख्या: स्रोतमे कारण खोजबाक आग्रह आ आत्मालोचनात्मक स्वर अछि।

प्रश्न 12832. खण्ड १२८८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली विकासक समस्या केवल सत्ता वा संस्था नहि, आम मैथिलसँ दूरी, हिन्दी-प्रवृत्ति आ मुट्ठीभर चिन्तन तक सीमित रहबाक संकट रूपमे उठाओल गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली विकासक समस्या केवल सत्ता वा संस्था नहि, आम मैथिलसँ दूरी, हिन्दी-प्रवृत्ति आ मुट्ठीभर चिन्तन तक सीमित रहबाक संकट रूपमे उठाओल गेल।

व्याख्या: ई खण्ड असुविधाजनक प्रश्नक आरम्भिक अंश पर आधारित अछि।

खण्ड १२८९ : विदेह-सदेह २ — इलाका, जाति आ “किताबी मैथिली”क आलोचना

प्रश्न 12833. लेखकक अनुसार मैथिली संग सभसँ पैघ अन्याय की भेल?

क. एकरा किछु खास इलाका आ खास लोकक भाषा बनएबाक प्रयास।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकरा किछु खास इलाका आ खास लोकक भाषा बनएबाक प्रयास।

व्याख्या: स्रोतमे सभसँ पैघ अन्याय ई कहल गेल अछि।

प्रश्न 12834. मैथिलीकेँ कोन दू जिलासँ विशेष रूपेँ जोड़ि राखल गेल कहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दरभंगा आ मधुबनी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दरभंगा आ मधुबनी।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीकेँ दरभंगा-मधुबनीक भाषा बनाकऽ राखल गेल कहल अछि।

प्रश्न 12835. खास कए मैथिलीकेँ ककर भाषा बनएबाक आलोचना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओतुक्का ब्राह्मणक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओतुक्का ब्राह्मणक।
व्याख्या: स्रोतमे खासकए ओतुक्का ब्राह्मणक भाषा बनाकऽ राखल गेल कहल अछि।

प्रश्न 12836. मधेपुरा-पूर्णियाक बात छोड़ि दरभंगा-मधुबनीक विशाल जनसमुदाय कोन भाषा नहि बजैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. किताबी मैथिली।
उत्तर: घ. किताबी मैथिली।
व्याख्या: स्रोतमे विशाल जनसमुदाय ओ भाषा नहि बजैत अछि जे किताबी मैथिली रूपमे दर्ज अछि कहल अछि।

प्रश्न 12837. आन भाषासँ तुलना करैत लेखक कोन अन्तर बतबैत छथि?
क. ओतय स्थानीय रूपकेँ हिकारत वा हेय दृष्टिसँ नहि देखल जाइत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओतय स्थानीय रूपकेँ हिकारत वा हेय दृष्टिसँ नहि देखल जाइत।
व्याख्या: स्रोतमे दोसरो भाषामे भिन्नता होइत अछि, मुदा स्थानीय रूपक अपमान नहि कहल अछि।

प्रश्न 12838. मैथिलीमे स्थानीय प्रयोग सभ संग की भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बर्जित कऽ देल गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बर्जित कऽ देल गेल।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तरहक कोनो प्रयोग बर्जित कऽ देल गेलैक कहल अछि।

प्रश्न 12839. मिथिलाक कोन समूह सभ किताबी भाषामे अपन तस्वीर नहि देखि सकल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. खेतिहर, मजूर, मुसलमान आ निम्नवर्ग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. खेतिहर, मजूर, मुसलमान आ निम्नवर्ग।
व्याख्या: स्रोतमे ई समूह सभक नाम अछि।

प्रश्न 12840. मिथिला राज्यक मांग उठलापर सीमा कतय धरि गनल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मुंगेर धरि।
उत्तर: घ. मुंगेर धरि।
व्याख्या: स्रोतमे राज्यक मांगमे मुंगेर तक अपनामे गनबाक बात अछि।

प्रश्न 12841. भाषाक बात होइतहि मैथिली कतय सीमित भऽ जाइत अछि कहल गेल?

क. मधुबनीक पंचकोसी वा मधुबनी-झंझारपुर धरि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुबनीक पंचकोसी वा मधुबनी-झंझारपुर धरि।

व्याख्या: स्रोतमे भाषाक बातमे पंचकोसी/मधुबनी-झंझारपुर धरि सीमित होएबाक आलोचना अछि।

प्रश्न 12842. खण्ड १२८९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मैथिलीकेँ खास इलाका, खास जाति आ किताबी रूपमे सीमित कएलासँ खेतिहर, मजूर, मुसलमान, निम्नवर्ग आ विस्तृत मिथिला दूर भेल कहलनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मैथिलीकेँ खास इलाका, खास जाति आ किताबी रूपमे सीमित कएलासँ खेतिहर, मजूर, मुसलमान, निम्नवर्ग आ विस्तृत मिथिला दूर भेल कहलनि।

व्याख्या: ई खण्ड भाषिक संकुचनक आलोचना पर आधारित अछि।

खण्ड १२९० : विदेह-सदेह २ — इलाकाई भिन्नता, आन्दोलन आ सरकारी उपेक्षा

प्रश्न 12843. सहरसा वा पूर्णियाक लोकक भाषा मधुबनी क्षेत्रमे कोना देखल जाइत अछि?

क. अलग दृष्टिसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अलग दृष्टिसँ।

व्याख्या: स्रोतमे लेखककेँ याद अछि जे सहरसा/पूर्णियाक भाषाकेँ अलग दृष्टिसँ देखल जाइत अछि।

प्रश्न 12844. लेखक इलाकाई भिन्नताकेँ कोन रूपमे मानैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. स्वाभाविक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. स्वाभाविक।

व्याख्या: स्रोतमे इलाकाई भिन्नता कोनो भाषामे स्वाभाविक कहल अछि।

प्रश्न 12845. भाषिक भिन्नता जँ अहंकारबोधसँ ग्रस्त भऽ जाए तँ भाषा ककर भरोसे रहि जाएत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भगवानक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भगवानक।

व्याख्या: स्रोतमे “ओहि भाषाकेँ भगवाने मालिक” कहल अछि।

प्रश्न 12846. भाषाई आधारपर राज्य मांग उठलापर विराट जनसमुदाय ओहिसँ की नहि कऽ सकल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपनाकेँ जोड़ि।

उत्तर: घ. अपनाकेँ जोड़ि।

व्याख्या: स्रोतमे विराट जनसमुदाय आन्दोलनसँ अपनाकेँ नहि जोड़ि सकल कहल अछि।

प्रश्न 12847. राज्यक मांगक आन्दोलनक सम्बन्धमे लेखक की कहैत छथि?

क. लाख सम्भावनाक बावजूद उठि नहि सकल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाख सम्भावनाक बावजूद उठि नहि सकल।

व्याख्या: स्रोतमे आन्दोलन लाख सम्भावनाक बावजूद नहि उठि सकल कहल अछि।

प्रश्न 12848. राज्य सरकारक रवैया कोन रहल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली विरोधी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली विरोधी।

व्याख्या: स्रोतमे रहल-सहल कसरि राज्य सरकारक मैथिली विरोधी रवैया पूरा कएलक कहल अछि।

प्रश्न 12849. मैथिलीकेँ कोन परीक्षा-संस्थासँ हटा देल गेल कहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीपीएससीसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीपीएससीसँ।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीकेँ बीपीएससीसँ हटा देल गेलैक कहल अछि।

प्रश्न 12850. मैथिली अकादमीकेँ कोना बना देल गेल कहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. निर्जीवप्राय।

उत्तर: घ. निर्जीवप्राय।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली अकादमीकेँ निर्जीवप्राय कऽ देल गेलैक कहल अछि।

प्रश्न 12851. सत्ता दोषक सीमा लेखक कोना बतबैत छथि?

क. जनताक दिससँ प्रवल प्रतिरोध नहि छल तँ सत्ता अपन खेल करबे करत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनताक दिससँ प्रवल प्रतिरोध नहि छल तँ सत्ता अपन खेल करबे करत।

व्याख्या: स्रोतमे सत्ता पर दोष देबाक संग जन-प्रतिरोधक अभाव सेहो कहल अछि।

प्रश्न 12852. खण्ड १२९०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. इलाकाई अहंकार, व्यापक जनसमुदायसँ दूरी, बीपीएससीसँ मैथिली हटब, अकादमी निर्जीव होएब आ जन-प्रतिरोधक अभाव आन्दोलनक कमजोरी रूपमे देखाओल गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. इलाकाई अहंकार, व्यापक जनसमुदायसँ दूरी, बीपीएससीसँ मैथिली हटब, अकादमी निर्जीव होएब आ जन-प्रतिरोधक अभाव आन्दोलनक कमजोरी रूपमे देखाओल गेल।

व्याख्या: ई खण्ड आन्दोलन आ सत्ता-समीक्षा पर आधारित अछि।

खण्ड १२९१ : विदेह-सदेह २ — प्रगतिशील स्वर, समाज-सुधार आ संस्था-समीक्षा

प्रश्न 12853. लेखक ई मानैत छथि कि मैथिलीमे आम जनताक स्वर नहि उठल?

क. नहि; ओ कहैत छथि स्वर उठल, मुदा व्यापक नहि भऽ सकल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नहि; ओ कहैत छथि स्वर उठल, मुदा व्यापक नहि भऽ सकल।

व्याख्या: स्रोतमे आम जनता वा प्रगतिशील चेतनाक स्वर मुखरित भेल, मुदा व्यापक नहि भेल कहल अछि।

प्रश्न 12854. आम जनता वा प्रगतिशील चेतनाक स्वर रचनामे कोन दर्जा नहि पाबि सकल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मुख्यधारा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मुख्यधारा।

व्याख्या: स्रोतमे ओ मैथिली रचनामे मुख्यधारा नहि भऽ सकल कहल अछि।

प्रश्न 12855. लेखक मिथिलामे ककर अभाव बतबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाज सुधारक आन्दोलनक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाज सुधारक आन्दोलनक।

व्याख्या: स्रोतमे बंगाल वा महाराष्ट्र जकाँ समाज सुधारक आन्दोलन नहि भेल कहल अछि।

प्रश्न 12856. लेखक बंगाल आ महाराष्ट्रक उदाहरण किएक देलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समाज सुधारक आन्दोलनक तुलना लेल।

उत्तर: घ. समाज सुधारक आन्दोलनक तुलना लेल।

व्याख्या: स्रोतमे बंगाल वा महाराष्ट्रमे समाज सुधारक आन्दोलन देखल गेल कहल अछि।

प्रश्न 12857. लेखकक अनुसार समाजक आन क्षेत्रमे जड़ता रहिते खाली ककर विकास कठिन अछि?

क. भाषाक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषाक।

व्याख्या: स्रोतमे सिर्फ भाषाक विकास आ समाजक जड़ता बीच विरोध उठाओल गेल अछि।

प्रश्न 12858. मिथिला या मैथिलीक लेल बनल संस्था सभक की आवश्यक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कामकाजक समीक्षा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कामकाजक समीक्षा।

व्याख्या: स्रोतमे संस्था सभक कामकाजक समीक्षा परम आवश्यक कहल अछि।

प्रश्न 12859. मैथिली विकासक लेल बनल संस्था सभमे अग्रगण्य नाम कोन देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चेतना समिति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चेतना समिति।
व्याख्या: स्रोतमे चेतना समितिक नाम अग्रगण्य कहल अछि।

प्रश्न 12860. चेतना समितिक योगदान सम्बन्धमे लेखक कोन प्रश्न उठबैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सालाना जलसा आ सेमिनारक अलावा भाषाक लेल की योगदान अछि।
उत्तर: घ. सालाना जलसा आ सेमिनारक अलावा भाषाक लेल की योगदान अछि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि योगदानक विशद समीक्षा चाही कहल अछि।

प्रश्न 12861. मैथिली बजनिहार केबल भारतमे नहि, कतय सेहो छथि?
क. नेपालमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नेपालमे।
व्याख्या: स्रोतमे भारत आ नेपाल दुनू दिस मैथिली बजनिहारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 12862. खण्ड १२९१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रगतिशील स्वरक सीमितता, समाज-सुधार अभाव, संस्था-समीक्षा आ भारत-नेपाल मैथिलीभाषीकेँ जोड़बाक ठोस उपाय आवश्यक कहल गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रगतिशील स्वरक सीमितता, समाज-सुधार अभाव, संस्था-समीक्षा आ भारत-नेपाल मैथिलीभाषीकेँ जोड़बाक ठोस उपाय आवश्यक कहल गेल।
व्याख्या: ई खण्ड संस्था आ समाज-सुधार समीक्षा पर आधारित अछि।

खण्ड १२९२ : विदेह-सदेह २ — संवैधानिक मान्यता, जनता आ बुद्धिजीवीक जिम्मेवारी

प्रश्न 12863. मैथिलीकेँ संविधानमे मान्यता भेटलाक बाद कोन संस्थाक गतिविधि बेसी देखाइत अछि?
क. साहित्य अकादमीक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्य अकादमीक।
व्याख्या: स्रोतमे मान्यता बाद साहित्य अकादमीक गतिविधि बेसी देखएमे आबि रहल अछि कहल अछि।

प्रश्न 12864. मैथिली आन्दोलन धार कखन पकड़ि सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जखन आम जनता आ ओकर सरोकारसँ जोड़ल जाए।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जखन आम जनता आ ओकर सरोकारसँ जोड़ल जाए।
व्याख्या: स्रोतमे आम जनता आ ओकर सरोकारसँ जोड़ल बिना आन्दोलन धार नहि पकड़ि सकैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12865. मैथिली आन्दोलनक सभसँ पैघ जिम्मेवारी ककरा पर अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओहि बुद्धिजीवी लोकनिपर जे मैथिलीक पुरोधा कहबै छथि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओहि बुद्धिजीवी लोकनिपर जे मैथिलीक पुरोधा कहबै छथि।
व्याख्या: स्रोतमे ई जिम्मेवारी बुद्धिजीवी पुरोधा लोकनिपर राखल गेल अछि।

प्रश्न 12866. बुद्धिजीवी लोकनिसँ लेखक कोन प्रकारक समाधान अपेक्षित मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ठोस, सर्वग्राही आ समीचीन समाधान।
उत्तर: घ. ठोस, सर्वग्राही आ समीचीन समाधान।
व्याख्या: स्रोतमे ई तीन विशेषण सहित समाधान सामने आनबाक अपेक्षा अछि।

प्रश्न 12867. समाधान आएलाक बाद ओकरा पर की होएबाक चाही?
क. समग्र रूपे चर्चा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समग्र रूपे चर्चा।
व्याख्या: स्रोतमे ओहिपर समग्र रूपे चर्चा होएबाक बात अछि।

प्रश्न 12868. संवैधानिक मान्यताकेँ लेखक पर्याप्त मानैत छथि कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि; जनता-सरोकारसँ जोड़ब जरूरी मानैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि; जनता-सरोकारसँ जोड़ब जरूरी मानैत छथि।
व्याख्या: स्रोतमे मान्यता बादो आम जनता सँ जोड़ब जरूरी कहल अछि।

प्रश्न 12869. आन्दोलन धार नहि पकड़बाक मूल कारण एहि अंशमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जनता आ ओकर सरोकारसँ सम्बन्धक अभाव।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जनता आ ओकर सरोकारसँ सम्बन्धक अभाव।
व्याख्या: स्रोतमे ई स्पष्ट शर्त अछि।

प्रश्न 12870. पुरोधा बुद्धिजीवीक भूमिका केवल भाषण नहि, कोन काज थिक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. व्यापक समाधान सामने आनब।
उत्तर: घ. व्यापक समाधान सामने आनब।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकासँ ठोस-सर्वग्राही-समीचीन समाधानक अपेक्षा अछि।

प्रश्न 12871. “असुविधाजनक प्रश्न” अंशक अन्तिम स्वर कोन अछि?

क. जन-आधारित आत्मसमीक्षा आ समाधानक आग्रह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन-आधारित आत्मसमीक्षा आ समाधानक आग्रह।

व्याख्या: स्रोतक अन्तिम अंश जनता, बुद्धिजीवी आ समाधान पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 12872. खण्ड १२९२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संवैधानिक मान्यता बादो मैथिली आन्दोलनकेँ जनसरोकार, भारत-नेपाल सम्बन्ध, बुद्धिजीवी जिम्मेवारी आ ठोस-सर्वग्राही समाधानक जरूरत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संवैधानिक मान्यता बादो मैथिली आन्दोलनकेँ जनसरोकार, भारत-नेपाल सम्बन्ध, बुद्धिजीवी जिम्मेवारी आ ठोस-सर्वग्राही समाधानक जरूरत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड असुविधाजनक प्रश्नक निष्कर्ष पर आधारित अछि।

खण्ड १२९३ : विदेह-सदेह २ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: जीवन आ शैक्षिक परिचय

प्रश्न 12873. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक जन्म कहिया भेल?

क. १८ अप्रील १९६५।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १८ अप्रील १९६५।

व्याख्या: स्रोतमे जन्म 18 अप्रील 1965 देल अछि।

प्रश्न 12874. हुनकर जन्म कोन जिलाक कोन गाममे भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे।

व्याख्या: स्रोतमे सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाम देल अछि।

प्रश्न 12875. हुनकर आरम्भिक शिक्षा कतय भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गामहिसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गामहिसँ।

व्याख्या: स्रोतमे आरंभिक शिक्षा गामहिसँ कहल अछि।

प्रश्न 12876. एम.ए. मैथिलीमे हुनका कोन उपलब्धि भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वर्णपदक।

उत्तर: घ. स्वर्णपदक।

व्याख्या: स्रोतमे एम.ए. मैथिली स्वर्णपदक प्राप्त कहल अछि।

प्रश्न 12877. डॉ. सिंह कोन विश्वविद्यालयसँ पढ़लाह?

क. तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर।

व्याख्या: स्रोतमे आइ.ए., बी.ए., एम.ए. एहि विश्वविद्यालयसँ कहल अछि।

प्रश्न 12878. हुनका BET कहिया उत्तीर्ण कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. १९९५ मे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. १९९५ मे।

व्याख्या: स्रोतमे BET 1995 उत्तीर्ण देल अछि।

प्रश्न 12879. हुनकर पी-एच.डी. विषय की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्तन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्तन।

व्याख्या: स्रोतमे “मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन” विषय देल अछि।

प्रश्न 12880. हुनकर पी-एच.डी. वर्ष कोन छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. २००८।

उत्तर: घ. २००८।

व्याख्या: स्रोतमे पी-एच.डी. वर्ष 2008 लिखल अछि।

प्रश्न 12881. वर्तमानमे ओ कोन पदपर कार्यरत कहल गेलाह?

क. शैक्षिक सलाहकार (मैथिली), राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शैक्षिक सलाहकार (मैथिली), राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर।

व्याख्या: स्रोतमे वर्तमान पद आ संस्था देल अछि।

प्रश्न 12882. खण्ड १२९३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंह सहरसाक लहुआर गामक मैथिली विद्वान, स्वर्णपदक प्राप्त, BET उत्तीर्ण, नाटक-विषयक पी-एच.डी. आ राष्ट्रीय अनुवाद मिशनसँ जुड़ल सलाहकार छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंह सहरसाक लहुआर गामक मैथिली विद्वान, स्वर्णपदक प्राप्त, BET उत्तीर्ण, नाटक-विषयक पी-एच.डी. आ राष्ट्रीय अनुवाद मिशनसँ जुड़ल सलाहकार छथि।

व्याख्या: ई खण्ड डॉ. सिंहक परिचय पर आधारित अछि।

खण्ड १२९४ : विदेह-सदेह २ — आधुनिक मैथिली नाटकमे निर्धनताक सामाजिक पृष्ठभूमि

प्रश्न 12883. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक आलेखक शीर्षक की अछि?

क. आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित : निर्धनताक समस्या।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित : निर्धनताक समस्या।

व्याख्या: स्रोतमे आलेखक शीर्षक स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 12884. लेखक भारतकेँ कोन प्रकारक देश कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गरीबक देश।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गरीबक देश।

व्याख्या: स्रोतमे “भारत गरीबक देश थिक” अछि।

प्रश्न 12885. भारतक अधिकांश जनता एखनहुँ कतय रहैत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गाममे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गाममे।

व्याख्या: स्रोतमे अधिकांश जनता एखनहुँ गाममे रहैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 12886. गामक जनता मुख्यतः ककरा पर निर्भर कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृषि कार्य आ बरखा पर।

उत्तर: घ. कृषि कार्य आ बरखा पर।

व्याख्या: स्रोतमे कृषि कार्यपर निर्भर आ बरखापर कहल अछि।

प्रश्न 12887. गामक गरीबीक कारणमे अनियमित बरखाक संग की-की अछि?

क. सरकारी उपेक्षा, अशिक्षा आ पिछड़ापन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरकारी उपेक्षा, अशिक्षा आ पिछड़ापन।

व्याख्या: स्रोतमे अनियमित बरखा, सरकारी उपेक्षा, अशिक्षा तथा पिछड़ापन कारण कहल अछि।

प्रश्न 12888. गामक गरीब किसान शहर गेलापर कोन नामसँ कहबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मजदूर वा बोनिहार।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मजदूर वा बोनिहार।

व्याख्या: स्रोतमे कमएबा हेतु शहर गेल किसान मजदूर वा बोनिहार कहबैत छथि।

प्रश्न 12889. शहरमे ई मजदूर सभ कोन जीवन जीबाक लेल बाध्य होइत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नारकीय जीवन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नारकीय जीवन।
व्याख्या: स्रोतमे ओतहुँ नारकीय जीवन जीवाक बाध्यता कहल अछि।

प्रश्न 12890. भारतक कुल आबादीक लगपास कतेक प्रतिशत लोक न्यूनतम आवश्यकता पूरा करबामे अक्षम कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पैंतीस प्रतिशत।
उत्तर: घ. पैंतीस प्रतिशत।
व्याख्या: स्रोतमे 35 प्रतिशतक लगपास लोक एहन छथि कहल अछि।

प्रश्न 12891. निर्धनता विषयक आलेखक आरम्भिक धरातल की अछि?
क. गाम, कृषि-निर्भरता, बेरोजगारी आ न्यूनतम आवश्यकताक अभाव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गाम, कृषि-निर्भरता, बेरोजगारी आ न्यूनतम आवश्यकताक अभाव।
व्याख्या: स्रोतक आरम्भ गरीबीक सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करैत अछि।

प्रश्न 12892. खण्ड १२९४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आलेख निर्धनताकेँ गाम, कृषि-निर्भरता, बरखा, सरकारी उपेक्षा, अशिक्षा, मजदूरी आ न्यूनतम आवश्यकता-अभावसँ जोड़ि देखैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आलेख निर्धनताकेँ गाम, कृषि-निर्भरता, बरखा, सरकारी उपेक्षा, अशिक्षा, मजदूरी आ न्यूनतम आवश्यकता-अभावसँ जोड़ि देखैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड निर्धनताक सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित अछि।

खण्ड १२९५ : विदेह-सदेह २ — निर्धनताक मनुष्यपर प्रभाव

प्रश्न 12893. निर्धनता मनुष्यकेँ कोना बना दैत अछि?
क. बेवस, लाचार आ शक्तिहीन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बेवस, लाचार आ शक्तिहीन।
व्याख्या: स्रोतमे निर्धनता मनुक्खकेँ बेवस, लाचार आ शक्तिहीन बना दैत अछि।

प्रश्न 12894. निर्धन मनुष्य कोन-कोन अवस्था मे जीबए बाध्य होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पिछड़ल, दीन-हीन, बाधाग्रस्त आ दोसरक दयारपर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पिछड़ल, दीन-हीन, बाधाग्रस्त आ दोसरक दयारपर।
व्याख्या: स्रोतमे निर्धन मनुक्खक ई दशा देल अछि।

प्रश्न 12895. लेखक गरीबीकेँ मानव जीवनक की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भयंकर अभिशाप।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भयंकर अभिशाप।

व्याख्या: स्रोतमे निर्धनता वा गरीबी मानव जीवनक भयंकर अभिशाप कहल अछि।

प्रश्न 12896. जाहि मनुष्य लग दू साँझक रोटी नहि, ओकर अवस्था वर्णनमे आओर की-की नहि अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वस्त्र, घर, दवाय-दारूक उपाय।

उत्तर: घ. वस्त्र, घर, दवाय-दारूक उपाय।

व्याख्या: स्रोतमे रोटी, वस्त्र, घर आ दवाय-दारू अभाव गनाओल गेल अछि।

प्रश्न 12897. एहन अभावमे आत्माक उच्चताक दावा लेखक कोना देखैत छथि?

क. मिथ्या।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथ्या।

व्याख्या: स्रोतमे से मिथ्याक सिवाय किछु नहि भऽ सकैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12898. लेखक पूछैत छथि निर्धन मनुष्य स्वतंत्र कोना भऽ सकैत अछि; ई प्रश्न ककर संकट देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आर्थिक अभावसँ स्वतंत्रता बाधित होएबाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आर्थिक अभावसँ स्वतंत्रता बाधित होएबाक।

व्याख्या: स्रोतमे गरीबी स्वतंत्र विचार आ बढ़का काजक बाधा रूपमे अछि।

प्रश्न 12899. निर्धनताक कारणेँ मनुष्य अपन इच्छाक संग की करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अपन इच्छाकेँ मारैत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अपन इच्छाकेँ मारैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे निर्धनता मनुष्यकेँ अपन ईच्छाक मारएबला बना दैत अछि।

प्रश्न 12900. निर्धनताक मानसिक प्रभावमे तंगदिलक संग कोन-कोन शब्द आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तुच्छ, ओछ आ कमजोर।

उत्तर: घ. तुच्छ, ओछ आ कमजोर।

व्याख्या: स्रोतमे तंगदिल, तुच्छ, ओछ, कमजोर शब्द देल अछि।

प्रश्न 12901. लेखक निर्धनताकेँ केबल पैसाक कमी नहि, कोन संकट मानैत छथि?
क. मानवीय स्वतंत्रता आ आत्मविश्वासक संकट।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मानवीय स्वतंत्रता आ आत्मविश्वासक संकट।
व्याख्या: स्रोतक भाव गरीबीकेँ सम्पूर्ण जीवन-अवरोध रूपमे देखबैत अछि।

प्रश्न 12902. खण्ड १२९५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. निर्धनता मनुष्यकेँ रोटी-वस्त्र-घर-दवा अभावसँ आगू बढ़ि बेवस, शक्तिहीन, स्वतंत्रताहीन आ इच्छा-दमित बना दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. निर्धनता मनुष्यकेँ रोटी-वस्त्र-घर-दवा अभावसँ आगू बढ़ि बेवस, शक्तिहीन, स्वतंत्रताहीन आ इच्छा-दमित बना दैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड गरीबीक मानवीय प्रभाव पर आधारित अछि।

खण्ड १२९६ : विदेह-सदेह २ — मैथिली नाटकमे निर्धनता: नाटक-सूची आ मनोरथ

प्रश्न 12903. मैथिली नाट्य साहित्यमे निर्धनताक विश्लेषण कतेक नाटक सभमे देखाओल गेल?
क. अनेक नाटकमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनेक नाटकमे।
व्याख्या: स्रोतमे निम्नस्थ नाटक सभक सूची देल अछि।

प्रश्न 12904. जीवनाथ झाक कोन नाटक सूचीमे अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. वीर-वीरेन्द्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. वीर-वीरेन्द्र।
व्याख्या: स्रोतमे जीवनाथ झाक “वीर–वीरेन्द्र” (1956) देल अछि।

प्रश्न 12905. भाग्य नारायण झाक कोन नाटक निर्धनता-सन्दर्भमे देल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मनोरथ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मनोरथ।
व्याख्या: स्रोतमे भाग्य नारायण झाक “मनोरथ” (1966) देल अछि।

प्रश्न 12906. बाबूसाहेब चौधरीक कोन नाटकक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कुहेस।
उत्तर: घ. कुहेस।
व्याख्या: स्रोतमे बाबूसाहेब चौधरीक “कुहेस” (1967) अछि।

प्रश्न 12907. गुणनाथ झाक कोन नाटक सूचीमे अछि?

क. कनियाँ-पुतरा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कनियाँ-पुतरा।

व्याख्या: स्रोतमे गुणनाथ झाक “कनियाँ–पुतरा” (1967) देल अछि।

प्रश्न 12908. महेंद्र मलंगियाक निर्धनता-सन्दर्भक नाटक कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ओकरा आँगनक बारहमासा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ओकरा आँगनक बारहमासा।

व्याख्या: स्रोतमे महेन्द्र मलंगियाक “ओकरा आँगनक बारहमासा” (1980) अछि।

प्रश्न 12909. नचिकेताक कोन नाटक सूचीमे अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नायकक नाम जीवन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नायकक नाम जीवन।

व्याख्या: स्रोतमे नचिकेताक “नायकक नाम जीवन” (1971) देल अछि।

प्रश्न 12910. “मनोरथ”मे लक्ष्मीनाथ अपन नाम कोना होएबाक चाहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दरिद्रनाथ।

उत्तर: घ. दरिद्रनाथ।

व्याख्या: स्रोतमे लक्ष्मीनाथ कहैत छथि “हमर नाम तँ दरिद्रनाथ होमक चाही”।

प्रश्न 12911. डॉ. प्रेम शंकर सिंहक कथन अनुसार “मनोरथ” की देखबैत अछि?

क. आर्थिक दशाक क्षीणतासँ मनुष्यक संकटापन्न समस्या।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आर्थिक दशाक क्षीणतासँ मनुष्यक संकटापन्न समस्या।

व्याख्या: स्रोतमे प्रेम शंकर सिंहक कथन एहि आशयक अछि।

प्रश्न 12912. खण्ड १२९६क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. निर्धनता आधुनिक मैथिली नाटकक बहु-नाटकीय विषय अछि, जकर उदाहरण वीर-वीरेन्द्र, मनोरथ, कुहेस, कनियाँ-पुतरा, ओकरा आँगनक बारहमासा आदि मे भेटैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. निर्धनता आधुनिक मैथिली नाटकक बहु-नाटकीय विषय अछि, जकर उदाहरण वीर-वीरेन्द्र, मनोरथ, कुहेस, कनियाँ-पुतरा, ओकरा आँगनक बारहमासा आदि मे भेटैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड नाटक-सूची आ मनोरथ पर आधारित अछि।

खण्ड १२९७ : विदेह-सदेह २ — नाटकक लेल आ ओकरा आँगनक बारहमासा

प्रश्न 12913. लेखकक अनुसार गरीबीक पराकाष्ठा की अछि?

क. क्यो खाइत-खाइत मरैत अछि तँ क्यो कमाइत-कमाइत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्यो खाइत-खाइत मरैत अछि तँ क्यो कमाइत-कमाइत।

व्याख्या: स्रोतमे गरीबीक पराकाष्ठा एहि वाक्यसँ देल अछि।

प्रश्न 12914. गरीबी प्रसंगमे समुचित ककर अभाव कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. व्यवस्थाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. व्यवस्थाक।

व्याख्या: स्रोतमे “एतय समुचित व्यवस्थाक अभाव अछि” लिखल अछि।

प्रश्न 12915. अधिकांश नेनाक स्थिति कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जन्मोपरान्त रोजी-रोटीक जोगाड़मे लागि जाइत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जन्मोपरान्त रोजी-रोटीक जोगाड़मे लागि जाइत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे नेना सभक ई स्थिति कहल अछि।

प्रश्न 12916. “नाटकक लेल”मे लोक कूड़ाक ढेरसँ की करैत देखाओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. की सभने बीछि रहल छल।

उत्तर: घ. की सभने बीछि रहल छल।

व्याख्या: स्रोतमे कूड़ाक ढेरसँ किछु बीछबाक दृश्य अछि।

प्रश्न 12917. निम्नवर्गक यथार्थ चित्रणक दृष्टिसँ कोन नाटक अद्वितीय कहल गेल?

क. ओकरा आँगनक बारहमासा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओकरा आँगनक बारहमासा।

व्याख्या: स्रोतमे ई नाटक अद्वितीय स्थान राखैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 12918. ओकरा आँगनक बारहमासाक केन्द्रबिन्दु की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सर्वहारा वर्गक यातनापूर्ण जीवन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सर्वहारा वर्गक यातनापूर्ण जीवन।

व्याख्या: स्रोतमे एहि नाटकक केन्द्रबिन्दु सर्वहारा वर्गक यातनापूर्ण जीवन कहल अछि।

प्रश्न 12919. बारहमासामे कोन ऋतु-अनुभव गरीबक लेल फुसि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त आ शिशिरक सुख।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त आ शिशिरक सुख।

व्याख्या: स्रोतमे ऋतु-चित्र गरीबक हेतु फुसि कहल अछि।

प्रश्न 12920. कातिक मास खेतिहर मजदूर लेल कोन मास कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दुखक मास।

उत्तर: घ. दुखक मास।

व्याख्या: स्रोतमे कातिक मास खेतिहर मजदूरक लेल दुखक मास कहल अछि।

प्रश्न 12921. “अन्न बिना पेट जरिते हय...” पंक्ति निर्धनताक कोन समस्या देखबैत अछि?

क. अन्न, वस्त्र आ घरक जटिल समस्या।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्न, वस्त्र आ घरक जटिल समस्या।

व्याख्या: स्रोतमे अन्न, बस्तर, घर अभावक समस्या पर बल अछि।

प्रश्न 12922. खण्ड १२९७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटकक लेल आ ओकरा आँगनक बारहमासा गरीबीक बाल-श्रम, कूड़ा-जीवन, सर्वहारा यातना, अन्नाभाव, वस्त्राभाव आ आवास-संकटकेँ तीख रूपमे देखबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटकक लेल आ ओकरा आँगनक बारहमासा गरीबीक बाल-श्रम, कूड़ा-जीवन, सर्वहारा यातना, अन्नाभाव, वस्त्राभाव आ आवास-संकटकेँ तीख रूपमे देखबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड गरीबीक नाटकीय उदाहरण पर आधारित अछि।

खण्ड १२९८ : विदेह-सदेह २ — अन्तिम प्रणाम, बुधिबधिया आ गरीबीक निष्कर्ष

प्रश्न 12923. “अंतिम प्रणाम”मे गरीबक मृत्यु बाद कोन वस्तु किनबाक टका नहि रहैत अछि?

क. कफन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कफन।

व्याख्या: स्रोतमे मुइलाक उपरान्त कफन किनबाक टका नहि रहबाक बात अछि।

प्रश्न 12924. “अंतिम प्रणाम”मे सामूहिक सहयोगक आशा कोना व्यक्त भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आनिपर दस गोटए मिलि जाए तँ की ने कऽ सकैत छी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आनिपर दस गोटए मिलि जाए तँ की ने कऽ सकैत छी।

व्याख्या: स्रोतमे समाजक दारुण स्थिति एहि कथनसँ देखाओल अछि।

प्रश्न 12925. “बुधिबधिया”मे गरीबीक कोन दृष्टान्त देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. देहपर एक बीत वस्त्र नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. देहपर एक बीत वस्त्र नहि।
व्याख्या: स्रोतमे “एकरा देहपर एक बीत वस्त्र नहि” उद्धरण अछि।

प्रश्न 12926. सरकारी व्यवस्था भएलो ओकर लाभ ककरा घरि नहि पहुँचि सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गरीब लोक घरि।
उत्तर: घ. गरीब लोक घरि।
व्याख्या: स्रोतमे लाभ गरीब लोक घरि नहि पहुँचबाक बात अछि।

प्रश्न 12927. समाजक अधिकांश लोक कोन रेखाक नीचाँ कहल गेल?
क. गरीबी रेखाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गरीबी रेखाक।
व्याख्या: स्रोतमे अधिकांश लोक गरीबी रेखाक नीचाँ अछि कहल अछि।

प्रश्न 12928. महँगाईक स्थिति कोना कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आकाश छुबि रहल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आकाश छुबि रहल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे महगी आकाश छुबि रहल अछि।

प्रश्न 12929. सामान्य लोक परिवार लेल की जुटएबामे परेशान अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भोजन, वस्त्र आ आवास।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भोजन, वस्त्र आ आवास।
व्याख्या: स्रोतमे सामान्य लोक ई तीनू जुटएबामे परेशान कहल अछि।

प्रश्न 12930. “अंतिम प्रणाम”मे मुरारी ककरा भुखले सुतैत देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तीन-तीनटा बच्चाकेँ।
उत्तर: घ. तीन-तीनटा बच्चाकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे मुरारीक कथनमे तीन-तीनटा बच्चोकेँ भुखले सुतैत देखबाक बात अछि।

प्रश्न 12931. आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक मूल स्वर ककरा सँ भरल कहल गेल?

क. संघर्ष, तनाव आ सामाजिक समस्या सभसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संघर्ष, तनाव आ सामाजिक समस्या सभसँ।

व्याख्या: स्रोतमे आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक मूल स्वर एहि सभसँ भरल कहल अछि।

प्रश्न 12932. खण्ड १२९८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अन्तिम प्रणाम आ बुधिबधिया गरीबीक चरम दशा—कफन अभाव, वस्त्रहीनता, सरकारी लाभक दूरी, भुखल बच्चा आ सामाजिक संघर्ष—कैं नाटकीय रूप दैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अन्तिम प्रणाम आ बुधिबधिया गरीबीक चरम दशा—कफन अभाव, वस्त्रहीनता, सरकारी लाभक दूरी, भुखल बच्चा आ सामाजिक संघर्ष—कैं नाटकीय रूप दैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड गरीबीक निष्कर्षात्मक नाट्य उदाहरण पर आधारित अछि।

खण्ड १२९९ : विदेह-सदेह २ — अन्हारपर इजोत: शीर्षक आ पूर्ण वाक्य

प्रश्न 12933. “अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि” आलोचना लेखक के छथि?

क. आशीष अनचिन्हार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आशीष अनचिन्हार।

व्याख्या: स्रोतमे शीर्षकसँ पहिने आशीष अनचिन्हारक नाम अछि।

प्रश्न 12934. शीर्षक पढ़िते पाठक रचियताकेँ कोना घोषित कऽ सकैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. निराशावादी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. निराशावादी।

व्याख्या: स्रोतमे पाठक रचियताकेँ निराशावादी घोषित करताह कहल अछि।

प्रश्न 12935. लेखक पाठक लोकनिकेँ बार-बार कोन आग्रह करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अगुताथि जुनि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अगुताथि जुनि।

व्याख्या: स्रोतमे “अगुताथि जुनि” आग्रह आवैत अछि।

प्रश्न 12936. लेखकक अनुसार कोनो वस्तु बाहरसँ पूर्ण होइतो भीतरसँ कोना भऽ सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपूर्ण।

उत्तर: घ. अपूर्ण।

व्याख्या: स्रोतमे बाहरसँ पूर्ण होइतो भीतरसँ अपूर्ण होइत छैक कहल अछि।

प्रश्न 12937. शीर्षकक पूर्ण वाक्य लेखक कोना प्रस्तुत करैत छथि?

क. अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि, सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि, सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।

व्याख्या: स्रोतमे पूर्ण वाक्य एहि रूपमे देल अछि।

प्रश्न 12938. लेखक अपन विद्वताक दाबी छोड़ि की करबाक बात कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पूर्ण वाक्यक दर्शन करएबाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पूर्ण वाक्यक दर्शन करएबाक।

व्याख्या: स्रोतमे “पूर्ण वाक्यक दर्शन कराबी” कहल अछि।

प्रश्न 12939. शीर्षकक अपूर्णता लेखक कोन आलोचनात्मक युक्ति रूपमे प्रयोग करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाठकक उतावलापन रोकबाक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाठकक उतावलापन रोकबाक।

व्याख्या: स्रोतमे अगुता नहि आ पूर्ण वाक्य प्रतीक्षा करबाक आग्रह अछि।

प्रश्न 12940. “सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि” अंश ककर आलोचनात्मक लक्ष्य खोलैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शासन-व्यवस्था।

उत्तर: घ. शासन-व्यवस्था।

व्याख्या: स्रोतमे शीर्षक पूरा भेलापर सरकार-जनता सम्बन्ध पर व्यंग खुलैत अछि।

प्रश्न 12941. एहि आरम्भिक अंशक शैली कोन अछि?

क. व्यंग्यात्मक संवादात्मक आलोचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्यात्मक संवादात्मक आलोचना।

व्याख्या: स्रोतमे पाठकसँ सीधा संवाद आ व्यंग्यात्मक टोन अछि।

प्रश्न 12942. खण्ड १२९९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आशीष अनचिन्हार शीर्षकक अपूर्णता-सिद्धि द्वारा पाठकक उतावलापन रोकि शासन-जनता सम्बन्धक व्यंग्यात्मक आलोचना खोलैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आशीष अनचिन्हार शीर्षकक अपूर्णता-सिद्धि द्वारा पाठकक उतावलापन रोकि शासन-जनता सम्बन्धक व्यंग्यात्मक आलोचना खोलैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड आलोचनाक आरम्भिक शीर्षक-युक्ति पर आधारित अछि।

खण्ड १३०० : विदेह-सदेह २ — मैथिली व्यंगक तीन कमी आ हरिमोहन-केंद्रिता

प्रश्न 12943. लेखकक अनुसार मैथिली साहित्यमे सभ किछु अछि, मुदा कतेक वस्तु छोड़ि?

क. तीन गोट वस्तु।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीन गोट वस्तु।

व्याख्या: स्रोतमे तीन गोट वस्तु छोड़ि सभ किछु अछि कहल अछि।

प्रश्न 12944. पहिल कमी कोन बताओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीमे व्यंग प्रचुर मात्रा मे नहि लिखाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीमे व्यंग प्रचुर मात्रा मे नहि लिखाइत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे गुण आ परिमाण दुनू अर्थमे प्रचुर व्यंग अभाव कहल अछि।

प्रश्न 12945. दोसर कमी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लिखाइतो अछि तँ स्तरीय आलोचना नहि होइत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लिखाइतो अछि तँ स्तरीय आलोचना नहि होइत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे झोंक-झाँकमे लिखाइतो स्तरीय आलोचना नहि कहल अछि।

प्रश्न 12946. तेसर कमीमे हरिमोहन झाकेँ की मानि आन सभकेँ भुट्टा बनाओल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिखर।

उत्तर: घ. शिखर।

व्याख्या: स्रोतमे हरिमोहन झाकेँ शिखर मानि सभकेँ भुट्टा बनाओल जाइत अछि।

प्रश्न 12947. लेखक मैथिली आलोचनाक एक और महान विडम्बना की बतबैत छथि?

क. आलोचना फल्लाँ बाबूक होइतो हरिमोहन बाबू घोसिआएल रहैत छथि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आलोचना फल्लाँ बाबूक होइतो हरिमोहन बाबू घोसिआएल रहैत छथि।

व्याख्या: स्रोतमे हरिमोहन बाबूक आलोचना बुझाए लागबाक बात अछि।

प्रश्न 12948. पाठक एहन आलोचनाकेँ प्रायः ककर आलोचना बुझैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हरिमोहन बाबूक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हरिमोहन बाबूक।

व्याख्या: स्रोतमे पाठक एहन आलोचनाकेँ हरिमोहने बाबूक आलोचना बुझैत छथि।

प्रश्न 12949. लेखक व्यंगक समस्या मात्र सृजनक नहि, ककर समस्या सेहो मानैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचनाक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचनाक।

व्याख्या: स्रोतमे व्यंग लेखन आ स्तरीय आलोचना दुनू समस्या बनल अछि।

प्रश्न 12950. हरिमोहन-केंद्रिता आन व्यंगकार सभ पर कोन प्रभाव डालैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओ सभ ओझराइ वा दबि जाइत छथि।

उत्तर: घ. ओ सभ ओझराइ वा दबि जाइत छथि।

व्याख्या: स्रोतक आशय अछि जे हरिमोहन केन्द्र बनलासँ आन रचनाकारक स्वतंत्र मूल्यांकन नहि होइत।

प्रश्न 12951. लेखकक आलोचनात्मक लक्ष्य की अछि?

क. मैथिली व्यंगक व्यापक आ संतुलित पुनर्मूल्यांकन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली व्यंगक व्यापक आ संतुलित पुनर्मूल्यांकन।

व्याख्या: स्रोतमे तीन कमी गिना एहि पुनर्विचारक जमीन बनाओल गेल अछि।

प्रश्न 12952. खण्ड १३००क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली व्यंग कम लिखाइत, कम आलोचित होइत आ हरिमोहन-केंद्रित आलोचनामे आन व्यंगकार ओझराइत छथि—ई लेखकक मूल शिकायत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली व्यंग कम लिखाइत, कम आलोचित होइत आ हरिमोहन-केंद्रित आलोचनामे आन व्यंगकार ओझराइत छथि—ई लेखकक मूल शिकायत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड मैथिली व्यंगक समस्या-स्थापन पर आधारित अछि।

खण्ड १३०१ : विदेह-सदेह २ — रुपकांत ठाकुर: बिसरल नाम आ कृति-संपदा

प्रश्न 12953. लेखक मैथिली व्यंगमे ककरा “बिसरल नाम” कहैत छथि?

क. रुपकांत ठाकुर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रुपकांत ठाकुर।

व्याख्या: स्रोतमे आलोचनाक स्तरपर रुपकांत ठाकुर बिसरल नाम कहल अछि।

प्रश्न 12954. रुपकांत ठाकुरक बिसरबाक पुष्टि लेल लेखक कोन पोथीक लेखक उल्लेख करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ली कथाक विकास।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ली कथाक विकास।

व्याख्या: स्रोतमे 2003क साहित्य अकादेमी प्रकाशित पोथी “ली कथाक विकास”क उल्लेख अछि।

प्रश्न 12955. प्रो. विद्यापति झाक लेखमे १९६३ सँ १९६७ बीच रुपकांतक कतेक कथा चर्चित भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मात्र ६ गोट।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मात्र ६ गोट।
व्याख्या: स्रोतमे पृष्ठ 168 पर मात्र 6 गोट कथाक चर्चा कहल अछि।

प्रश्न 12956. रुपकांत ठाकुरक जन्म-वर्ष की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९३०।
उत्तर: घ. १९३०।
व्याख्या: स्रोतमे रुपकांत ठाकुर 1930 मे जन्मग्रहण कएलाह कहल अछि।

प्रश्न 12957. ओ १९६०क लगीच की भेलाह?
क. रचनारत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रचनारत।
व्याख्या: स्रोतमे 1960क लगीच रचनारत भेलाह कहल अछि।

प्रश्न 12958. रुपकांत ठाकुरक मृत्यु कखन भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९७२ मे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९७२ मे।
व्याख्या: स्रोतमे 1972 मे मृत्युकेँ प्राप्त भेलाह कहल अछि।

प्रश्न 12959. बारह बर्खमे हुनक प्रकाशित पोथी कतेक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पाँच गोट।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पाँच गोट।
व्याख्या: स्रोतमे पाँच गोट पोथी प्रकाशित छन्हि कहल अछि।

प्रश्न 12960. “मोमक नाक” आ “धूकल केरा” कोन विधाक पोथी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कथा संग्रह।
उत्तर: घ. कथा संग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे ई दुनू कथा संग्रहक रूपमे देल अछि।

प्रश्न 12961. “लगाम” आ “वचन वैष्णव” कोन विधाक रचना अछि?

क. नाटक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक।

व्याख्या: स्रोतमे ई दुनू नाटकक रूपमे गनल अछि।

प्रश्न 12962. खण्ड १३०१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रुपकांत ठाकुर कम चर्चित भेलहुँ १९३०-१९७२क बीच अल्प अवधिमे कथा-संग्रह, नाटक आ उपन्यास सहित महत्त्वपूर्ण व्यंग्य-संपदा छोड़ने छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रुपकांत ठाकुर कम चर्चित भेलहुँ १९३०-१९७२क बीच अल्प अवधिमे कथा-संग्रह, नाटक आ उपन्यास सहित महत्त्वपूर्ण व्यंग्य-संपदा छोड़ने छथि।

व्याख्या: ई खण्ड रुपकांत ठाकुरक परिचय आ कृतिसूची पर आधारित अछि।

खण्ड १३०२ : विदेह-सदेह २ — राजनीतिक व्यंग आ “मर्द माने की”

प्रश्न 12963. लेखक मैथिली व्यंगकार सभ पर कोन आरोप करैत छथि?

क. राजनीतिक व्यंगक अर्थ नहि बुझबाक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंगक अर्थ नहि बुझबाक।

व्याख्या: स्रोतमे “राजनीतिक व्यंगइ हमरा जनैत मैथिली व्यंगकार नहि जनैत छथि” कहल अछि।

प्रश्न 12964. लेखकक अनुसार मैथिलीमे ९३ प्रतिशत व्यंगकेँ आलोचक की मानि लैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हास्य।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हास्य।

व्याख्या: स्रोतमे 93% व्यंगकेँ 93% आलोचक हास्य मानि आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 12965. हरिमोहन बाबू सुच्चा व्यंग लिखलाक बादो कोन उपाधिसँ कहेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य-व्यंग सम्राट।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य-व्यंग सम्राट।

व्याख्या: स्रोतमे हास्यकार पहिले आ व्यंगकार बादक आशय अछि।

प्रश्न 12966. बाँकी ७ प्रतिशत हास्यक प्रतिनिधि के कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पं. चन्द्रनाथ मिश्र “अमर”।

उत्तर: घ. पं. चन्द्रनाथ मिश्र “अमर”।

व्याख्या: स्रोतमे 7% हास्यक प्रतिनिधि अमरजी कहल गेल।

प्रश्न 12967. लेखक राजनीतिक व्यंगक साधारण परिभाषा की दैत छथि?

क. समकालीन वा पूर्वकालिक राजनीति, शासन-व्यवस्था वा संचालक पर निशाना साधल व्यंग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन वा पूर्वकालिक राजनीति, शासन-व्यवस्था वा संचालक पर निशाना साधल व्यंग।

व्याख्या: स्रोतमे अपन परिभाषा अकादमिक नहि, मुदा एहि आशयक देल अछि।

प्रश्न 12968. रुपकांत ठाकुरक राजनीतिक चेतना देखए लेल लेखक कोन पोथीक परिचय करबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मोमक नाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मोमक नाक।

व्याख्या: स्रोतमे एहि व्यंग-संग्रहक परिचयक बात अछि।

प्रश्न 12969. “मोमक नाक” संग्रहमे कतेक कथा कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नौ गोट।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नौ गोट।

व्याख्या: स्रोतमे एहि व्यंग-संग्रहमे नौ गोट कथा अछि कहल अछि।

प्रश्न 12970. लेखक संग्रहक कोन कथा सँ आरम्भ करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मर्द माने की।

उत्तर: घ. मर्द माने की।

व्याख्या: स्रोतमे संग्रहक अंतिम कथा “मर्द माने की” सँ आरम्भ करबाक बात अछि।

प्रश्न 12971. “मर्द माने की”मे मर्दक सूत्र कोना देल गेल?

क. मर्द माने कमौआ, कमौआ माने विआहल, विआहल माने बुड़िबक, बुड़िबक माने बड़द।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मर्द माने कमौआ, कमौआ माने विआहल, विआहल माने बुड़िबक, बुड़िबक माने बड़द।

व्याख्या: स्रोतमे ई सूत्र उद्धृत अछि।

प्रश्न 12972. खण्ड १३०२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मैथिली व्यंगमे राजनीतिक व्यंगक पहचानक कमी देखबैत रुपकांत ठाकुरक “मोमक नाक” आ “मर्द माने की” द्वारा सामाजिक-राजनीतिक चेतना सिद्ध करैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मैथिली व्यंगमे राजनीतिक व्यंगक पहचानक कमी देखबैत रुपकांत ठाकुरक “मोमक नाक” आ “मर्द माने की” द्वारा सामाजिक-राजनीतिक चेतना सिद्ध करैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड राजनीतिक व्यंग आ “मर्द माने की” पर आधारित अछि।

खण्ड १३०३ : विदेह-सदेह २ — ठोकल ठक्क, जय गंगा जी आ फूजल ऊक

प्रश्न 12973. “ठोकल ठक्क”मे लेखक कोन प्रकारक भातिज आ जमाएक दर्शन करबैत छथि?

क. कमीशन खाएवला।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कमीशन खाएवला।

व्याख्या: स्रोतमे भातिज-जमाय जकर काज कमीशन खाएब अछि कहल अछि।

प्रश्न 12974. कमीशन लेल ओ सभ ककरो नहि छोड़ैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पित्ती आ ससुरोकेँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पित्ती आ ससुरोकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे अपन पित्ती एवं ससुरोकेँ नहि छोड़ैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 12975. “ठोकल ठक्क” माध्यमे रुपकांत तात्कालीन राजनीति कोना देखबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।

व्याख्या: स्रोतमे ई वाक्य एहि कथा-सन्दर्भमे देल अछि।

प्रश्न 12976. एहि सरकारक वर्णनमे कोन विशेषण सभ आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेशर्म, निर्लज्ज, हेहर, थेथर।

उत्तर: घ. बेशर्म, निर्लज्ज, हेहर, थेथर।

व्याख्या: स्रोतमे ई चारि शब्द सरकार लेल प्रयुक्त अछि।

प्रश्न 12977. “जय गंगा जी”मे रेलगाड़ीकेँ ककर जकाँ लोककेँ पेटमे राखि आगू बढ़ैत कहल गेल?

क. कांग्रेसी नेता जकाँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कांग्रेसी नेता जकाँ।

व्याख्या: स्रोतमे रेलगाड़ीक तुलना कांग्रेसी नेता सँ कएल गेल अछि।

प्रश्न 12978. रेलगाड़ी अपन बले नहि, ककर बलें आगू बढ़ैत छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कोइला आ पानिक बलें।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कोइला आ पानिक बलें।

व्याख्या: स्रोतमे अपना बले नहि, कोइला आ पानिक बलें कहल अछि।

प्रश्न 12979. पंचवर्षी योजना सभक आलोचनामे कोन बात मोन राखबाक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उन्नतिक कागजी आँकड़ा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उन्नतिक कागजी आँकड़ा।

व्याख्या: स्रोतमे पंचवर्षीय योजना सभमे उन्नतिक कागजी आँकड़ा मोन राखबाक व्यंग अछि।

प्रश्न 12980. “फूजल ऊक”मे सुधार विषयक मूल कथन की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मात्र सुधारवादी दृष्टि रखला मात्रसँ सुधार नहि भऽ सकैछ।

उत्तर: घ. मात्र सुधारवादी दृष्टि रखला मात्रसँ सुधार नहि भऽ सकैछ।

व्याख्या: स्रोतमे ई उद्धरण देल अछि।

प्रश्न 12981. लेखक एहि कथनकेँ आधुनिक रूपमे कोना पढ़बाक बात करैत छथि?

क. प्रगतिशील विचार लिखला मात्रसँ प्रगतिशीलता नहि आबि सकैछ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रगतिशील विचार लिखला मात्रसँ प्रगतिशीलता नहि आबि सकैछ।

व्याख्या: स्रोतमे लेखक भाव बचबैत एहि वाक्य रूपमे लिखबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 12982. खण्ड १३०३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ठोकल ठक्क भ्रष्ट कमीशनखोरी, जय गंगा जी सरकारी विकासक कागजी आँकड़ा, आ फूजल ऊक खोखला सुधारवाद पर राजनीतिक-सामाजिक व्यंग करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ठोकल ठक्क भ्रष्ट कमीशनखोरी, जय गंगा जी सरकारी विकासक कागजी आँकड़ा, आ फूजल ऊक खोखला सुधारवाद पर राजनीतिक-सामाजिक व्यंग करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड तीन कथा-सन्दर्भ पर आधारित अछि।

खण्ड १३०४ : विदेह-सदेह २ — मोमक नाक: जनता, आलोचक आ पाठक-स्मृति

प्रश्न 12983. लेखक रुपकांत ठाकुरकेँ एकपक्षीय व्यंगकार मानैत छथि कि नहि?

क. नहि, ओ दूनू पक्षकेँ चोट करैत छथि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नहि, ओ दूनू पक्षकेँ चोट करैत छथि।

व्याख्या: स्रोतमे ठाकुरजी एकपक्षीय व्यंगकार नहि छथि, दूनू पक्षकेँ प्रताड़ना दैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 12984. पोथीक पहिल कथा आ संग्रहक नाम की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मोमक नाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मोमक नाक।

व्याख्या: स्रोतमे पहिल कथा, जे पोथीक नाम सेहो अछि, “मोमक नाक” कहल अछि।

प्रश्न 12985. “आजुक युगमे भला आदमीक परिभाषा” सम्बन्धमे लेखक की कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. परिभाषा उनटि गेल छैक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. परिभाषा उनटि गेल छैक।
व्याख्या: स्रोतमे “आजुक युगमे भला आदमीक परिभाषा उनटि गेल छैक” उद्धृत अछि।

प्रश्न 12986. जनताकेँ कोन उपमा देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मोमक नाक जकाँ लुजबुज।
उत्तर: घ. मोमक नाक जकाँ लुजबुज।
व्याख्या: स्रोतमे जनता मोमक नाक जकाँ लुजबुज कहल अछि।

प्रश्न 12987. जनता जखन जाहि दिस नफगर रहै छैक तखन की करैत अछि?
क. तिम्हरे लोक घूमि जाइछ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तिम्हरे लोक घूमि जाइछ।
व्याख्या: स्रोतमे जनता लाभक दिस घूमि जाएबाक व्यंग अछि।

प्रश्न 12988. लेखकक अनुसार ई उद्धरण ककर चारित्रिक विशेषता देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जम्बूदीपक जनतासँ एखुनका भारतीय जनता धरि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जम्बूदीपक जनतासँ एखुनका भारतीय जनता धरि।
व्याख्या: स्रोतमे स्वतंत्र भारत नहि, जम्बूदीपक जनतासँ एखुनका भारतीय जनता धरि कहल अछि।

प्रश्न 12989. एतेक देखेलाक पछातिओ आलोचक रुपकांतक संबंधमे की कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नाम बिसरि गेलाह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नाम बिसरि गेलाह।
व्याख्या: स्रोतमे आलोचक रुपकांतक नाम बिसरि गेल छथि कहल अछि।

प्रश्न 12990. आलोचक नाम बिसरलहुँ रुपकांतक रचना कतय खचित रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पाठकक मोनमे।
उत्तर: घ. पाठकक मोनमे।
व्याख्या: स्रोतमे पाठकक मोनमे रचना खचित अछि कहल अछि।

प्रश्न 12991. लेखकक अनुसार रुपकांतक प्रथम आ अंतिम सफलता की अछि?

क. पाठकक मोनमे रचना खचित रहब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाठकक मोनमे रचना खचित रहब।

व्याख्या: स्रोतमे कोनो प्रथम आ अंतिम सफलता इएह छैक कहल अछि।

प्रश्न 12992. खण्ड १३०४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मोमक नाक जनता आ सत्ता दुनू पर चोट करैत अछि; आलोचक भले रुपकांतकेँ बिसरि गेलाह, पाठक-स्मृतिमे हुनक व्यंग्य रचना खचित रहल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मोमक नाक जनता आ सत्ता दुनू पर चोट करैत अछि; आलोचक भले रुपकांतकेँ बिसरि गेलाह, पाठक-स्मृतिमे हुनक व्यंग्य रचना खचित रहल।

व्याख्या: ई खण्ड “मोमक नाक” आ रुपकांतक मूल्यांकन पर आधारित अछि।

खण्ड १३०५ : विदेह-सदेह २ — वर्तनी-विकल्प: सूचीबद्ध रूप आ सावधानी

प्रश्न 12993. सूचीमे “फारकती”क संग कोन वैकल्पिक रूप देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भऽ गेल, भए गेल, भय गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भऽ गेल, भए गेल, भय गेल।

व्याख्या: स्रोतक वर्तनी-सूचीमे फारकतीक बाद ई रूप-भेद देल अछि।

प्रश्न 12994. “कुनो”क स्थानपर कोन रूप सूचीमे देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कोनो।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कोनो।

व्याख्या: वर्तनी-सूचीमे कुनो/कोनो रूप देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 12995. “गेलन्हि”क संग सूचीमे कोन रूप आ अर्थ-सावधानी देल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गेलाह, अर्थ परिवर्तनक संकेत सहित।

उत्तर: घ. गेलाह, अर्थ परिवर्तनक संकेत सहित।

व्याख्या: स्रोतमे गेलन्हि/गेलाहक संग अर्थ परिवर्तनक सूचना अछि।

प्रश्न 12996. “लय”क संग कोन रूप देल गेल आ की चेतावनी अछि?

क. लए, अर्थ परिवर्तनक चेतावनी सहित।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लए, अर्थ परिवर्तनक चेतावनी सहित।

व्याख्या: सूचीमे लय/लएक सन्दर्भमे अर्थ परिवर्तनक संकेत अछि।

प्रश्न 12997. “हेक्टेअर”क मानक रूप सूचीमे की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हेक्टेयर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हेक्टेयर।
व्याख्या: स्रोतमे हेक्टेअर/हेक्टेयर रूप-भेद देल अछि।

प्रश्न 12998. पहिल अक्षरमे “ढ” आ बीचमे ककर प्रयोगक संकेत देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ढ़।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ढ़।
व्याख्या: सूचीमे पहिल अक्षर रहने ढ, बीचमे रहने ढ़ लिखबाक संकेत अछि।

प्रश्न 12999. “लगैए”क संग कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लगैये।
उत्तर: घ. लगैये।
व्याख्या: वर्तनी-सूचीमे लगैए/लगैये देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 13000. “होएत”क संग कोन वैकल्पिक रूप देल गेल?
क. हएत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हएत।
व्याख्या: सूचीमे होएत/हएत रूप देल अछि।

प्रश्न 13001. “जाएत”क संग कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जएत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जएत।
व्याख्या: स्रोत-सूचीमे जाएत/जएत रूप-भेद अछि।

प्रश्न 13002. खण्ड १३०५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ई खण्ड मैथिली वर्तनीक अनेक वैकल्पिक रूप आ अर्थ-परिवर्तनक सावधानी देखबैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ई खण्ड मैथिली वर्तनीक अनेक वैकल्पिक रूप आ अर्थ-परिवर्तनक सावधानी देखबैत अछि।
व्याख्या: सूची २५२सँ आगू अनेक रूप-भेद संकलित कएल गेल अछि।

खण्ड १३०६ : विदेह-सदेह २ — वर्तनी-सूची: क्रिया, मात्रा आ संयुक्ताक्षर

प्रश्न 13003. “आएत”क संग सूचीमे कोन-कोन रूप देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अएत आ आओत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अएत आ आओत।

व्याख्या: स्रोतमे आएत/अएत/आओत देल अछि।

प्रश्न 13004. “खाएत”क संग कोन-कोन रूप सूचीबद्ध अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. खएत आ खैत।

उत्तर: घ. खएत आ खैत।

व्याख्या: सूचीमे खाएत/खएत/खैत रूप देल अछि।

प्रश्न 13005. “अएताह”क संग कोन रूप सभ देल गेल?

क. अओताह आ एताह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अओताह आ एताह।

व्याख्या: स्रोतमे अएताह/अओताह/एताह रूप-भेद अछि।

प्रश्न 13006. “जाइत”क संग कोन रूप सभ देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जैतए आ जइतए।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जैतए आ जइतए।

व्याख्या: सूचीमे जाइत/जैतए/जइतए रूप अछि।

प्रश्न 13007. “आएल”क संग कोन रूप देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अएल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अएल।

व्याख्या: स्रोतमे आएल/अएल रूप-भेद देल अछि।

प्रश्न 13008. “कैक”क संग कोन रूप देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कएक।

उत्तर: घ. कएक।

व्याख्या: सूचीमे कैक/कएक रूप देल अछि।

प्रश्न 13009. “सँ”क संग कोन रूप देल गेल, मुदा कोन शब्द अलग राखल गेल?
क. सऽ; मुदा दऽ आ लऽ अलग संकेतित अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सऽ; मुदा दऽ आ लऽ अलग संकेतित अछि।
व्याख्या: स्रोतमे सऽ/सँ लिखबाक संग मुदा दऽ, लऽ उल्लेख अछि।

प्रश्न 13010. “त्त्व” सम्बन्धमे स्रोतक मुख्य सुझाव की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बहुतेक ठाम त्व लिखब, तीन अक्षरक संयुक्त टारब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बहुतेक ठाम त्व लिखब, तीन अक्षरक संयुक्त टारब।
व्याख्या: स्रोतमे महत्त्व/महत्व, वक्तव्य आदि उदाहरणसँ संयुक्ताक्षर-सावधानी अछि।

प्रश्न 13011. “वार्त्ता”क मानक रूप रूपमे की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. वार्ता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. वार्ता।
व्याख्या: सूचीमे वार्त्ता/वार्ता रूप देल अछि।

प्रश्न 13012. खण्ड १३०६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. क्रिया-रूप, स्वर-मात्रा आ संयुक्ताक्षरक प्रयोगमे अर्थ आ उच्चारणक सावधानी आवश्यक अछि।
उत्तर: घ. क्रिया-रूप, स्वर-मात्रा आ संयुक्ताक्षरक प्रयोगमे अर्थ आ उच्चारणक सावधानी आवश्यक अछि।
व्याख्या: सूचीमे क्रिया, मात्रा आ संयुक्ताक्षरक अनेक उदाहरण देल अछि।

खण्ड १३०७ : विदेह-सदेह २ — नेपालक मानक शैली: पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार

प्रश्न 13013. नेपालक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि बनाओल शैलीमे पहिल विषय की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार।
उत्तर: घ. पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार।
व्याख्या: मानक शैलीक पहिल शीर्षक पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार अछि।

प्रश्न 13014. पञ्चमाक्षर अन्तर्गत कोन अक्षर सभ अबैत अछि?
क. ङ, ञ, ण, न आ म।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ङ, ञ, ण, न आ म।
व्याख्या: स्रोतमे पञ्चमाक्षरान्तर्गत ई पाँच अक्षर गनाओल अछि।

प्रश्न 13015. संस्कृत नियम अनुसार शब्दक अन्तमे पञ्चमाक्षर कोना निर्धारित होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जाहि वर्गक अक्षर रहै, ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जाहि वर्गक अक्षर रहै, ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे संस्कृत भाषाक नियम एहि रूपमे बुझाओल अछि।

प्रश्न 13016. “अङ्क”मे ङ किएक आयल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. क वर्गक कारणे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. क वर्गक कारणे।

व्याख्या: उदाहरणमे अङ्कक अन्तमे ङ् क वर्गक कारणे कहल अछि।

प्रश्न 13017. “पञ्च”मे ञ किएक आयल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. च वर्गक कारणे।

उत्तर: घ. च वर्गक कारणे।

व्याख्या: स्रोतमे पञ्चक उदाहरण च वर्गसँ जोड़ल अछि।

प्रश्न 13018. मैथिलीमे पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश ठाम की देखल जाइत अछि?

क. अनुस्वार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुस्वार।

व्याख्या: स्रोतमे पञ्चमाक्षरक बदलामे अनुस्वारक प्रयोग बहुल कहल अछि।

प्रश्न 13019. पण्डित गोविन्द झाक कहब अनुसार कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व की लिखल जाए?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनुस्वार।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनुस्वार।

व्याख्या: स्रोतमे गोविन्द झाक मत कवर्ग-चवर्ग-टवर्गसँ पूर्व अनुस्वारक अछि।

प्रश्न 13020. तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व गोविन्द झा की लिखबाक कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पञ्चमाक्षर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पञ्चमाक्षर।

व्याख्या: स्रोतमे तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षर लिखबाक बात अछि।

प्रश्न 13021. अनुस्वारक छोट बिन्दु अस्पष्ट भेलासँ की संकट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अर्थक अनर्थ।
उत्तर: घ. अर्थक अनर्थ।
व्याख्या: स्रोतमे हस्तलेखन वा मुद्रणमे बिन्दु अस्पष्ट भेलासँ अर्थक अनर्थक चेतावनी अछि।

प्रश्न 13022. खण्ड १३०७क सार की अछि?
क. पञ्चमाक्षर- अनुस्वारक प्रयोगमे वर्ग, उच्चारण आ स्पष्ट लेखनक संतुलन आवश्यक अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पञ्चमाक्षर- अनुस्वारक प्रयोगमे वर्ग, उच्चारण आ स्पष्ट लेखनक संतुलन आवश्यक अछि।
व्याख्या: नेपालक मानक शैली एहि विषयकेँ विस्तारसँ बुझबैत अछि।

खण्ड १३०८ : विदेह-सदेह २ — ढ-ढ़, व-ब, य-ज आ ए-य

प्रश्न 13023. ढ़क उच्चारण स्रोतमे कोना कहल गेल?
क. “र् ह” जकाँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. “र् ह” जकाँ।
व्याख्या: मानक शैलीमे ढ़क उच्चारण “र् ह” जकाँ होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 13024. जतऽ “र् ह”क उच्चारण हो, ओतऽ की लिखबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ढ़।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ढ़।
व्याख्या: स्रोतमे ओतहि मात्र ढ़ लिखबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 13025. आनठाम सामान्यतया की लिखबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ढ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ढ।
व्याख्या: स्रोतमे आनठाम खालि ढ लिखबाक चाही कहल अछि।

प्रश्न 13026. शब्दक शुरूमे सामान्यतया कोन अक्षर अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ढ।
उत्तर: घ. ढ।
व्याख्या: उदाहरणसभ देखला पर शब्दक शुरूमे ढ कहल अछि।

प्रश्न 13027. मध्य आ अन्तमे सामान्यतया कोन अक्षर अबैत अछि?

क. ढ़।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ढ़।

व्याख्या: स्रोतमे मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 13028. मैथिलीमे “व”क उच्चारण ककर जकाँ होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ब।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ब।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीमे वक उच्चारण ब कएल जाइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 13029. उच्चारण ब भेलहुँ “व”कें कोना लिखबाक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व रूपे लिखबाक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व रूपे लिखबाक।

व्याख्या: स्रोतमे ओकरा ब रूपमे नहि लिखबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 13030. कतहु-कतहु “य”क उच्चारण कोना करैत देखल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ज जकाँ।

उत्तर: घ. ज जकाँ।

व्याख्या: स्रोतमे यक उच्चारण ज जकाँ करबाक प्रवृत्ति बताओल अछि।

प्रश्न 13031. “यदि, यमुना, युग” आदि शब्दमे ज लिखबाक चाही कि य?

क. य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. य।

व्याख्या: स्रोतमे उच्चारण ज जकाँ भेलहुँ य रूपे लिखबाक कहल अछि।

प्रश्न 13032. खण्ड १३०८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उच्चारण अलग होइतो मानक लेखनमे ढ-ढ़, व, य आ ए-यक नियत रूपक ध्यान राखल जाए।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उच्चारण अलग होइतो मानक लेखनमे ढ-ढ़, व, य आ ए-यक नियत रूपक ध्यान राखल जाए।

व्याख्या: मानक शैली ध्वनि आ वर्तनीक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १३०९ : विदेह-सदेह २ — हि-हु, ष-ख आ ध्वनि-लोप

प्रश्न 13033. प्राचीन लेखन-परम्परामे बल देबाक लेल शब्दक पाछाँ की लगाओल जाइत छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हि आ हु।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हि आ हु।

व्याख्या: स्रोतमे हुनकहि, अपनहु आदि उदाहरण देल अछि।

प्रश्न 13034. आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर प्रायः की प्रयुक्त होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एकार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एकार।

व्याख्या: स्रोतमे हिक स्थानपर एकारक प्रयोग देखल जाइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 13035. हुक स्थानपर आधुनिक लेखनमे प्रायः की प्रयुक्त होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओकार।

उत्तर: घ. ओकार।

व्याख्या: स्रोतमे हुक स्थानपर ओकारक प्रयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13036. मैथिलीमे अधिकांशतः षक उच्चारण कोना होइत अछि?

क. ख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ख।

व्याख्या: स्रोतमे षक उच्चारण ख होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 13037. षड्यन्त्रक उच्चारण उदाहरणमे कोना देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खड़यन्त्र।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खड़यन्त्र।

व्याख्या: स्रोतमे षड्यन्त्रक उच्चारण खड़यन्त्र जकाँ देल अछि।

प्रश्न 13038. क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भेलासँ पहिने अक उच्चारण कोना होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दीर्घ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दीर्घ।

व्याख्या: ध्वनि-लोप नियममे पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि।

प्रश्न 13039. लोप-सूचक चिह्न रूपमे की लगाओल जाइछ?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विकारी वा ऽ।
उत्तर: घ. विकारी वा ऽ।
व्याख्या: स्रोतमे लोप-सूचक चिह्न वा विकारी लगाओल जाइछ कहल अछि।

प्रश्न 13040. “पढ़ए गेलाह”क अपूर्ण रूप की देल गेल?
क. पढ़ऽ गेलाह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पढ़ऽ गेलाह।
व्याख्या: उदाहरणमे पढ़ए/पढ़य गेलाहक अपूर्ण रूप पढ़ऽ गेलाह अछि।

प्रश्न 13041. पूर्वकालिक आय/आए प्रत्ययमे य/ए लुप्त भेलासँ विकारी लगाओल जाइत अछि कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि।
व्याख्या: स्रोतमे खा गेल, पठा देब आदि मे विकारी नहि लगाओल जाइछ कहल अछि।

प्रश्न 13042. खण्ड १३०९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हि-हु, षक उच्चारण आ ध्वनि-लोप मैथिलीक लेखन-उच्चारणक महत्त्वपूर्ण नियम छथि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हि-हु, षक उच्चारण आ ध्वनि-लोप मैथिलीक लेखन-उच्चारणक महत्त्वपूर्ण नियम छथि।
व्याख्या: मानक शैली एहि तीनू विषयकेँ उदाहरणसहित देलक।

खण्ड १३१० : विदेह-सदेह २ — ध्वनि-स्थानान्तरण आ हलन्त

प्रश्न 13043. ध्वनि स्थानान्तरण मुख्यतः कोन स्वर-ध्वनि पर लागू होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ह्रस्व इ आ उ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ह्रस्व इ आ उ।
व्याख्या: स्रोतमे खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू कहल अछि।

प्रश्न 13044. मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दमे ह्रस्व इ वा उ कतय आबए तँ स्थानान्तरित होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मध्य वा अन्तमे।
उत्तर: घ. मध्य वा अन्तमे।
व्याख्या: स्रोतमे मध्य वा अन्तमे इ/उ आबए तँ ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबैत अछि।

प्रश्न 13045. “पानि”क ध्वनि-स्थानान्तरण उदाहरणमे कोना देल गेल?
क. पाइन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाइन।
व्याख्या: स्रोतमे पानि (पाइन) उदाहरण देल अछि।

प्रश्न 13046. “माटि”क उच्चारण उदाहरणमे कोना देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. माइट।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. माइट।
व्याख्या: स्रोतमे माटि (माइट) देल अछि।

प्रश्न 13047. तत्सम शब्दसभमे ई नियम लागू होइत अछि कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नहि।
व्याख्या: स्रोतमे रश्मि, सुधांशु उदाहरणसँ नियम लागू नहि होएबाक बात अछि।

प्रश्न 13048. मैथिली भाषामे सामान्यतया ककर आवश्यकता नहि होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हलन्तक।
उत्तर: घ. हलन्तक।
व्याख्या: स्रोतमे सामान्यतया हलन्तक आवश्यकता नहि होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 13049. तत्सम शब्दसभमे हलन्तक प्रयोग कोना होइत अछि?
क. संस्कृतसँ जहिनाक तहिना आएल शब्दमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संस्कृतसँ जहिनाक तहिना आएल शब्दमे।
व्याख्या: स्रोतमे तत्सम शब्दसभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि।

प्रश्न 13050. प्रस्तुत पोथीमे सामान्यतया शब्दकेँ कोना राखल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिली नियमअनुसार हलन्तविहीन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिली नियमअनुसार हलन्तविहीन।
व्याख्या: स्रोतमे सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली नियमअनुसार हलन्तविहीन राखल कहल अछि।

प्रश्न 13051. हलन्त कतहु-कतहु किएक देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्याकरणसम्बन्धी अत्यावश्यक प्रयोजन लेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्याकरणसम्बन्धी अत्यावश्यक प्रयोजन लेल।

व्याख्या: स्रोतमे अत्यावश्यक व्याकरण प्रयोजन लेल कतहु-कतहु हलन्त देल गेल अछि।

प्रश्न 13052. खण्ड १३१०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ध्वनि-स्थानान्तरण आ हलन्त-प्रयोगमे मैथिलीक स्वाभाविक उच्चारण, तत्सम परम्परा आ व्याकरणक आवश्यकता बीच संतुलन राखल गेल अछि।

उत्तर: घ. ध्वनि-स्थानान्तरण आ हलन्त-प्रयोगमे मैथिलीक स्वाभाविक उच्चारण, तत्सम परम्परा आ व्याकरणक आवश्यकता बीच संतुलन राखल गेल अछि।

व्याख्या: मानक शैली एहि विषयसभक स्पष्ट उदाहरण दैत अछि।

खण्ड १३११ : विदेह-सदेह २ — मैथिली अकादमी पटना: प्रारम्भिक लेखन-नियम

प्रश्न 13053. मैथिली अकादमी पटना द्वारा निर्धारित शैलीमे प्राचीन कालसँ प्रचलित शब्द कोना लिखबाक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामान्यतः ताहि प्रचलित वर्तनीमे।

उत्तर: घ. सामान्यतः ताहि प्रचलित वर्तनीमे।

व्याख्या: अकादमी नियम १मे प्राचीन कालसँ प्रचलित वर्तनी राखबाक बात अछि।

प्रश्न 13054. “एखन”क अग्राह्य रूपमे की-की देल गेल?

क. अखन, अखनि, एखेन, अखनी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अखन, अखनि, एखेन, अखनी।

व्याख्या: अकादमी उदाहरणमे एखन ग्राह्य आ ई रूप अग्राह्य देल अछि।

प्रश्न 13055. कोन तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जा सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भ गेल/भय गेल/भए गेल आदि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भ गेल/भय गेल/भए गेल आदि।

व्याख्या: नियम २मे भ गेल, भय गेल, भए गेल; जाए/जाय/जा रहल अछि; कर’/करय/करए गेलाह देल अछि।

प्रश्न 13056. प्राचीन मैथिलीक “न्ह” ध्वनिक स्थानमे की लिखल जा सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. न।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. न।

व्याख्या: नियम ३मे न्हक स्थानमे न लिखल जा सकैत अछि।

प्रश्न 13057. “कहलन्हि”क वैकल्पिक रूप की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कहलनि।
उत्तर: घ. कहलनि।
व्याख्या: अकादमी नियममे कहलनि वा कहलन्हि उदाहरण अछि।

प्रश्न 13058. “ऐ” तथा “औ” कतय लिखबाक कहल गेल?
क. जतऽ स्पष्टतः अइ आ अउ सदृश उच्चारण इष्ट हो।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जतऽ स्पष्टतः अइ आ अउ सदृश उच्चारण इष्ट हो।
व्याख्या: नियम ४मे ऐ/औक प्रयोगक शर्त देल अछि।

प्रश्न 13059. “देखैत” कोन नियमक उदाहरण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ऐ प्रयोगक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ऐ प्रयोगक।
व्याख्या: अकादमी नियम ४मे देखैत उदाहरण अछि।

प्रश्न 13060. मैथिलीक जैह, सैह, इएह आदि शब्द कोना प्रयुक्त होएत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि रूपे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एहि रूपे।
व्याख्या: नियम ५मे जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह, दैह देल अछि।

प्रश्न 13061. ह्रस्व इकारांत शब्दमे इ लुप्त करब सामान्यतः की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अग्राह्य।
उत्तर: घ. अग्राह्य।
व्याख्या: नियम ६मे देखि आबह, मालिनि गेलि उदाहरणसहित इ लुप्त करब अग्राह्य कहल अछि।

प्रश्न 13062. खण्ड १३११क सार की अछि?
क. अकादमी शैली प्रचलित वर्तनी, वैकल्पिक रूप, न्ह/न, ऐ/औ आ इकारांत रूपक नियम निर्धारित करैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अकादमी शैली प्रचलित वर्तनी, वैकल्पिक रूप, न्ह/न, ऐ/औ आ इकारांत रूपक नियम निर्धारित करैत अछि।
व्याख्या: पटना अकादमीक प्रारम्भिक नियमसभ एहि विषय पर केन्द्रित छथि।

खण्ड १३१२ : विदेह-सदेह २ — अकादमी शैली: ए-य, नासिक स्वर आ विभक्ति

प्रश्न 13063. स्वतंत्र ह्रस्व ए वा य प्राचीन उद्धरणमे कोना राखल जाए?

क. यथावत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यथावत।

व्याख्या: अकादमी नियम ७मे प्राचीन मैथिली उद्धरणमे यथावत राखबाक बात अछि।

प्रश्न 13064. आधुनिक प्रयोगमे ए वा य कोना लिखल जा सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. वैकल्पिक रूपे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. वैकल्पिक रूपे।

व्याख्या: नियम ७मे कयल/कएल, जाय/जाए आदि वैकल्पिक कहल अछि।

प्रश्न 13065. दू स्वरक बीच स्वतः अबैत “य” ध्वनिक लेखन कोना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वैकल्पिक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वैकल्पिक।

व्याख्या: नियम ८मे धीआ/धीया, विआह/बियाह आदि वैकल्पिक अछि।

प्रश्न 13066. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थानपर यथासंभव की लिखबाक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ञ वा सानुनासिक स्वर।

उत्तर: घ. ञ वा सानुनासिक स्वर।

व्याख्या: नियम ९मे मैञा वा मैआँ आदि उदाहरण अछि।

प्रश्न 13067. कारक विभक्तिक उदाहरणमे हाथक संग कोन रूप देल गेल?

क. हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे।

व्याख्या: नियम १०मे एहि रूपसभकेँ ग्राह्य कहल गेल।

प्रश्न 13068. “मे”मे अनुस्वारक सम्बन्धमे अकादमी नियम की कहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सर्वथा त्याज्य।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सर्वथा त्याज्य।

व्याख्या: नियम १०मे “मे”मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य कहल अछि।

प्रश्न 13069. “क”क वैकल्पिक रूप कोन राखल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. केर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. केर।
व्याख्या: नियम १०मे कक वैकल्पिक रूप केर कहल अछि।

प्रश्न 13070. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद कोन अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कय वा कए।
उत्तर: घ. कय वा कए।
व्याख्या: नियम ११मे देखि कय/देखि कए उदाहरण अछि।

प्रश्न 13071. “माँग” आ “भाँग”क स्थानमे कोन रूप लिखबाक नियम देल गेल?
क. माङ आ भाङ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. माङ आ भाङ।
व्याख्या: नियम १२मे माँग/भाँगक स्थानमे माङ/भाङ लिखबाक बात अछि।

प्रश्न 13072. खण्ड १३१२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ए-य विकल्प, य-ध्वनि, नासिक स्वर, कारक विभक्ति आ पूर्वकालिक अव्ययक लेखनमे अकादमी शैली लचीलापन आ स्पष्टता दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ए-य विकल्प, य-ध्वनि, नासिक स्वर, कारक विभक्ति आ पूर्वकालिक अव्ययक लेखनमे अकादमी शैली लचीलापन आ स्पष्टता दैत अछि।
व्याख्या: अकादमी नियम ७सँ १२ एहि विषयसभ पर केन्द्रित छथि।

खण्ड १३१३ : विदेह-सदेह २ — अकादमी शैली: अर्द्धाक्षर, हलन्त, चिह्न आ अंक

प्रश्न 13073. अर्द्ध न आ अर्द्ध मक बदला की नहि लिखबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अनुसार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अनुसार।
व्याख्या: नियम १३मे अर्द्ध न/मक बदला अनुसार नहि लिखबाक बात अछि।

प्रश्न 13074. छापाक सुविधार्थ अर्द्ध ङ, ञ, णक बदला की लिखल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अनुस्वार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अनुस्वार।
व्याख्या: नियम १३मे अङ्क/अंक, अञ्चल/अंचल आदि उदाहरण अछि।

प्रश्न 13075. हलन्त चिह्न नियमतः लगाओल जाए, मुदा विभक्तिक संग कोना प्रयोग होएत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अकारांत।
उत्तर: घ. अकारांत।
व्याख्या: नियम १४मे श्रीमान्, मुदा श्रीमानक उदाहरण अछि।

प्रश्न 13076. एकल कारक चिह्न शब्दमे कोना लिखबाक कहल गेल?
क. सटा कऽ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सटा कऽ।
व्याख्या: नियम १५मे एकल कारक चिह्न सटा कऽ लिखबाक बात अछि।

प्रश्न 13077. संयुक्त विभक्तिक हेतु कारक चिह्न कोना लिखबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. फराक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. फराक।
व्याख्या: नियम १५मे घर परक उदाहरण देल अछि।

प्रश्न 13078. अनुनासिककेँ सामान्यतः ककर द्वारा व्यक्त करबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चन्द्रबिन्दु।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चन्द्रबिन्दु।
व्याख्या: नियम १६मे अनुनासिक चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त करबाक बात अछि।

प्रश्न 13079. जटिल मात्रापर मुद्रणक सुविधार्थ चन्द्रबिन्दुक बदला की प्रयोग भऽ सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अनुस्वार।
उत्तर: घ. अनुस्वार।
व्याख्या: नियम १६मे हिँक बदला हिं उदाहरण अछि।

प्रश्न 13080. पूर्ण विराम कोना सूचित करबाक कहल गेल?
क. पासीसँ (।)।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पासीसँ (।)।
व्याख्या: नियम १७मे पूर्ण विराम पासीसँ सूचित कएल जाए कहल अछि।

प्रश्न 13081. अंक कोन रूपमे राखबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. देवनागरी रूपमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. देवनागरी रूपमे।
व्याख्या: नियम २०मे अंक देवनागरी रूपमे राखबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 13082. खण्ड १३१३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अकादमी शैली अर्द्धाक्षर, हलन्त, कारक, अनुनासिक, पूर्णविराम आ अंकक लेखनक व्यावहारिक नियम दैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अकादमी शैली अर्द्धाक्षर, हलन्त, कारक, अनुनासिक, पूर्णविराम आ अंकक लेखनक व्यावहारिक नियम दैत अछि।
व्याख्या: नियम १३सँ २० एहि बातक आधार अछि।

खण्ड १३१४ : विदेह-सदेह २ — उच्चारण निर्देश: न-ण, श-ष-स आ व-य

प्रश्न 13083. दन्त न क उच्चारणमे जीह कतय सटत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दाँतमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दाँतमे।
व्याख्या: उच्चारण निर्देशमे दन्त न लेल जीह दाँतमे सटबाक बात अछि।

प्रश्न 13084. ण क उच्चारणमे जीह कतय सटत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मूर्धामे।
उत्तर: घ. मूर्धामे।
व्याख्या: स्रोतमे ण उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत कहल अछि।

प्रश्न 13085. तालव्य शमे जीह कतय सटत?
क. तालुसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तालुसँ।
व्याख्या: उच्चारण निर्देशमे श, ष, स तीनूक स्थान देल अछि।

प्रश्न 13086. षमे जीह कतय सटत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मूर्धासँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मूर्धासँ।
व्याख्या: निर्देशमे षमे जीह मूर्धासँ सटबाक बात अछि।

प्रश्न 13087. दन्त समे जीह कतय सटत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दाँतसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दाँतसँ।
व्याख्या: निर्देशमे समे दाँतसँ सटबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13088. मैथिलीमे ष कैं वैदिक संस्कृत जेकाँ कोना उच्चरित कएल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ख।
उत्तर: घ. ख।
व्याख्या: स्रोतमे वर्षा, दोष आदि उदाहरणसहित ष कैं ख उच्चरित कहल अछि।

प्रश्न 13089. य अनेको स्थानपर ककर जकाँ उच्चरित होइत अछि?
क. ज।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ज।
व्याख्या: उच्चारण निर्देशमे य अनेक ठाम ज जेकाँ कहल अछि।

प्रश्न 13090. ण क उच्चारण ककर जकाँ सेहो कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ड़।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ड़।
व्याख्या: स्रोतमे गणेशक उच्चारण गड़ेस जकाँ उल्लेख अछि।

प्रश्न 13091. मैथिलीमे व क उच्चारण सामान्यतः कोना होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ब।
व्याख्या: निर्देशमे वक उच्चारण ब सेहो होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 13092. खण्ड १३१४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली उच्चारणमे जीहक स्थान, श-ष-स भेद, व-ब, य-ज आ ण-ड़क व्यवहार बुझनाइ आवश्यक अछि।
उत्तर: घ. मैथिली उच्चारणमे जीहक स्थान, श-ष-स भेद, व-ब, य-ज आ ण-ड़क व्यवहार बुझनाइ आवश्यक अछि।
व्याख्या: उच्चारण निर्देश ई ध्वन्यात्मक आधार देलक।

खण्ड १३१५ : विदेह-सदेह २ — ह्रस्व इ, स्वर-मात्रा आ संयुक्ताक्षर

प्रश्न 13093. ह्रस्व इ मैथिलीमे बेशीकाल कतय बाजल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पहिने।

उत्तर: घ. पहिने।

व्याख्या: स्रोतमे ह्रस्व इ मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 13094. देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ कोना लिखल आ बाजल जएबाक चाही?

क. अक्षरक पहिने।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अक्षरक पहिने।

व्याख्या: स्रोतमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जएबाक चाही कहल अछि।

प्रश्न 13095. हिन्दीमे ह्रस्व इक दोषपूर्ण उच्चारण ककर कारण कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिक्षा पद्धतिक दोष।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिक्षा पद्धतिक दोष।

व्याख्या: स्रोतमे हिन्दी माध्यमक शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण बताओल अछि।

प्रश्न 13096. “अछि”क ध्वनि-विभाजन स्रोतमे कोना संकेतित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अ इ छ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अ इ छ।

व्याख्या: उच्चारण निर्देशमे अछि- अ इ छ ऐछ रूप अछि।

प्रश्न 13097. “पहुँचि”क ध्वनि-विभाजन कोना देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प हुँ इ च।

उत्तर: घ. प हुँ इ च।

व्याख्या: स्रोतमे पहुँचि- प हुँ इ च देल अछि।

प्रश्न 13098. ऋ कैं कोना उच्चरित करब गलत कहल गेल?

क. री रूपमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. री रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे ऋ कैं री रूपमे उच्चरित करब अनुचित कहल अछि।

प्रश्न 13099. देखियौ लेल कोन रूप अनुचित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. देखिऔ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. देखिऔ।
व्याख्या: स्रोतमे देखियौ लेल देखिऔक प्रयोग अनुचित कहल अछि।

प्रश्न 13100. देखिऐ लेल कोन रूप अनुचित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. देखियै।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. देखियै।
व्याख्या: स्रोतमे देखिऐ लेल देखियै अनुचित कहल अछि।

प्रश्न 13101. ज्ञ कोन संयुक्ताक्षर अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ज् आ ञक संयुक्त।
उत्तर: घ. ज् आ ञक संयुक्त।
व्याख्या: निर्देशमे ज्ञ ज् आ ञक संयुक्त कहल अछि।

प्रश्न 13102. खण्ड १३१५क सार की अछि?
क. ह्रस्व इ, ऋ, देखियौ/देखिऐ आ ज्ञ-क्ष-श्र-स-त्रक सही ज्ञान मैथिली उच्चारणक मूल अंग अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ह्रस्व इ, ऋ, देखियौ/देखिऐ आ ज्ञ-क्ष-श्र-स-त्रक सही ज्ञान मैथिली उच्चारणक मूल अंग अछि।
व्याख्या: उच्चारण निर्देश संयुक्ताक्षर आ मात्रा पर सावधान करैत अछि।

खण्ड १३१६ : विदेह-सदेह २ — कैँ-सँ-पर, टा, बला-वाली

प्रश्न 13103. कैँ, सँ आ पर पूर्व अक्षरसँ कोना लिखबाक कहल गेल?
क. सटा कऽ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सटा कऽ।
व्याख्या: स्रोतमे कैँ/सँ/पर पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू कहल अछि।

प्रश्न 13104. तँ, के आ कऽ कोना लिखबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हटा कऽ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हटा कऽ।
व्याख्या: स्रोतमे तँ/के/कऽ हटा कऽ लिखबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 13105. दू “मे” रहलापर पहिल आ बादबला कोना लिखबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पहिल सटा कऽ, बादबला हटा कऽ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पहिल सटा कऽ, बादबला हटा कऽ।
व्याख्या: स्रोतमे “एहिमे सँ मे पहिल सटा कऽ आ बादबला हटा कऽ” निर्देश अछि।

प्रश्न 13106. अंकक बाद “टा” कोना लिखबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सटा कऽ।
उत्तर: घ. सटा कऽ।
व्याख्या: उदाहरणमे छहटा देल अछि।

प्रश्न 13107. अन्य ठाम “टा” कोना लिखबाक कहल गेल?
क. हटा कऽ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हटा कऽ।
व्याख्या: उदाहरणमे सभ टा देल अछि।

प्रश्न 13108. ६अ मे कोन रूप लिखबाक निर्देश अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सातम।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सातम।
व्याख्या: स्रोतमे ६अ म सातम लिखू, छठम-सातम नहि कहल अछि।

प्रश्न 13109. घरबलामे कोन रूप प्रयुक्त करबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बला।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बला।
व्याख्या: स्रोतमे घरबलामे बला देल अछि।

प्रश्न 13110. घरवालीमे कोन रूप प्रयुक्त करबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. वाली।
उत्तर: घ. वाली।
व्याख्या: स्रोतमे घरवालीमे वाली प्रयुक्त करू कहल अछि।

प्रश्न 13111. “रहए” आ “रहै”मे की सम्बन्ध बताओल गेल?
क. कखनो काल अर्थ भिन्नता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कखनो काल अर्थ भिन्नता।
व्याख्या: स्रोतमे रहए/रहैमे अर्थ भिन्नता उदाहरण सहित अछि।

प्रश्न 13112. खण्ड १३१६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विभक्ति, टा, संख्यात्मक रूप आ बला-वालीक लेखनमे सटाब-हटाब आ अर्थ-भेदक नियम महत्त्वपूर्ण अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विभक्ति, टा, संख्यात्मक रूप आ बला-वालीक लेखनमे सटाब-हटाब आ अर्थ-भेदक नियम महत्त्वपूर्ण अछि।
व्याख्या: उच्चारण निर्देशक अन्तिम भाग एहि व्यवहार पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १३१७ : विदेह-सदेह २ — रहए-रहै, केर-क आ चन्द्रबिन्दु

प्रश्न 13113. “रहए” आ “रहै” सम्बन्धमे स्रोतक मुख्य सावधानी की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अर्थ भिन्नता भऽ सकैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अर्थ भिन्नता भऽ सकैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे रहए आ रहैमे अर्थ भिन्नता सेहो कहल अछि।

प्रश्न 13114. “छलै” आ “छलए”मे की देखाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओहि प्रकारक अर्थ/उच्चारण भेद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओहि प्रकारक अर्थ/उच्चारण भेद।
व्याख्या: स्रोतमे छलै, छलएमे सेहो एहि तरहक भेल कहल अछि।

प्रश्न 13115. संयोगक उच्चारण उदाहरणमे कोना देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संजोगने।
उत्तर: घ. संजोगने।
व्याख्या: स्रोतमे संयोगने-संजोगने रूप देल अछि।

प्रश्न 13116. कैँक संग कोन दू रूप अलग सन्दर्भमे देल गेल?
क. के आ कऽ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. के आ कऽ।
व्याख्या: स्रोतमे कैँ-के/कऽ रूपक भेद देल अछि।

प्रश्न 13117. केरक स्थानपर की प्रयोग नहि करबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. क।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. क।
व्याख्या: स्रोतमे “केर- क (केर क प्रयोग नहि करू)” लिखल अछि।

प्रश्न 13118. चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वारमे कोन मुख्य ध्वनि-भेद कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अनुस्वारमे कंठ धरि प्रयोग होइत अछि, चन्द्रबिन्दुमे नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अनुस्वारमे कंठ धरि प्रयोग होइत अछि, चन्द्रबिन्दुमे नहि।
व्याख्या: स्रोतमे ई स्पष्ट भेद देल अछि।

प्रश्न 13119. रामसँक उच्चारण उदाहरण कोना देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. राम सऽ।
उत्तर: घ. राम सऽ।
व्याख्या: स्रोतमे रामसँ- राम सऽ उदाहरण अछि।

प्रश्न 13120. रामकेँक हिन्दी समतुल्य अर्थ की देल गेल?
क. राम को।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राम को।
व्याख्या: स्रोतमे केँ हिन्दीक “को”क समतुल्य देल अछि।

प्रश्न 13121. रामकक हिन्दी समतुल्य अर्थ की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राम का।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. राम का।
व्याख्या: स्रोतमे क हिन्दीक “का”क समतुल्य कहल अछि।

प्रश्न 13122. खण्ड १३१७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रहए/रहै, छलै/छलए, केर/क आ चन्द्रबिन्दु-अनुस्वारक भेद अर्थ आ उच्चारण दुनू लेल निर्णायक अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रहए/रहै, छलै/छलए, केर/क आ चन्द्रबिन्दु-अनुस्वारक भेद अर्थ आ उच्चारण दुनू लेल निर्णायक अछि।
व्याख्या: स्रोतक निर्देश एहि सूक्ष्म भेदसभ पर आधारित अछि।

खण्ड १३१८ : विदेह-सदेह २ — निषेध, त्व, सम्पति आ राष्ट्रिय

प्रश्न 13123. नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँक उच्चारण कोना संकेतित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नै।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नै।

व्याख्या: स्रोतमे एहि सभक उच्चारण नै देल अछि।

प्रश्न 13124. त्त्वक बदलामे सामान्यतः कोन रूपक सुझाव अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. त्व।

उत्तर: घ. त्व।

व्याख्या: स्रोतमे त्त्वक बदला त्व लिखबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 13125. तीन अक्षरक संयुक्ताक्षर कतय उचित कहल गेल?

क. जतए अर्थ बदलि जाए।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जतए अर्थ बदलि जाए।

व्याख्या: स्रोतमे अर्थ बदलि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षर उचित कहल अछि।

प्रश्न 13126. “सम्पति”क उच्चारण-विभाजन कोना देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. स म्प इ त।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. स म्प इ त।

व्याख्या: स्रोतमे सम्पतिक सही उच्चारण संकेत देल अछि।

प्रश्न 13127. “सम्पत्ति”क प्रयोग किएक टारबाक संकेत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नहि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नहि।

व्याख्या: स्रोतमे सम्पत्ति नहि, कारण सही उच्चारण कठिन कहल अछि।

प्रश्न 13128. “सर्वोत्तम” सम्बन्धमे की सावधानी देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सर्वोतम नहि।

उत्तर: घ. सर्वोतम नहि।

व्याख्या: स्रोतमे मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नहि) देल अछि।

प्रश्न 13129. राष्ट्रीयक बदला कोन रूप देल गेल?
क. राष्ट्रिय।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राष्ट्रिय।
व्याख्या: स्रोतमे राष्ट्रिय (राष्ट्रीय नहि) लिखल अछि।

प्रश्न 13130. “सकैए/सकै” सम्बन्धमे स्रोत की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अर्थ परिवर्तन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अर्थ परिवर्तन।
व्याख्या: स्रोतमे सकैए/सकै अर्थ परिवर्तनक संकेत अछि।

प्रश्न 13131. “करैछ/सकैछ” सम्बन्धमे गद्यमे की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रयोगक आवश्यकता नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रयोगक आवश्यकता नहि।
व्याख्या: स्रोतमे सकैछ/करैछ गद्यमे प्रयोगक आवश्यकता नहि कहल अछि।

प्रश्न 13132. खण्ड १३१८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. निषेध-रूप, त्व/त्त्व, सम्पति/सम्पत्ति, राष्ट्रिय आ सकैए/सकै जकाँ रूपसभमे उच्चारण आ अर्थ-सावधानी आवश्यक अछि।
उत्तर: घ. निषेध-रूप, त्व/त्त्व, सम्पति/सम्पत्ति, राष्ट्रिय आ सकैए/सकै जकाँ रूपसभमे उच्चारण आ अर्थ-सावधानी आवश्यक अछि।
व्याख्या: स्रोतक उच्चारण-वर्तनी निर्देश एहि निष्कर्षकेँ आधार दैत अछि।

खण्ड १३१९ : विदेह-सदेह २ — ओहि, जएबेँ, जकाँ आ रोजमर्रा शब्द

प्रश्न 13133. “ओ लोकनि” सम्बन्धमे की निर्देश अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हटा कऽ लिखू, ओमे बिकारी नहि।
उत्तर: घ. हटा कऽ लिखू, ओमे बिकारी नहि।
व्याख्या: स्रोतमे ओ लोकनि हटा कऽ, ओमे बिकारी नहि लिखल अछि।

प्रश्न 13134. ओइक स्थानपर कोन रूप देल गेल?
क. ओहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओहि।
व्याख्या: सूचीमे ओइ/ओहि रूप-भेद देल अछि।

प्रश्न 13135. ओहिले क स्थानपर कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओहि लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओहि लेल।
व्याख्या: स्रोतमे ओहिले/ओहि लेल देल अछि।

प्रश्न 13136. जएबँक संग कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बैसबैं।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बैसबैं।
व्याख्या: स्रोतमे जएबैं/बैसबैं रूप-भेद सूचीबद्ध अछि।

प्रश्न 13137. पँचभइयाँ कोन रूपैं देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पँचभइयाँ।
उत्तर: घ. पँचभइयाँ।
व्याख्या: स्रोतमे पँचभइयाँ रूप स्वयं उदाहरण रूपमे अछि।

प्रश्न 13138. देखियौक सम्बन्धमे कोन गलत रूपक उदाहरण देल गेल?
क. देखिऔक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. देखिऔक।
व्याख्या: स्रोतमे देखियौक लेल देखिऔक बहि कहल अछि।

प्रश्न 13139. जकाँक संग कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जेकाँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जेकाँ।
व्याख्या: सूचीमे जकाँ/जेकाँ रूप देल अछि।

प्रश्न 13140. तँइक संग कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तैँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तैँ।
व्याख्या: स्रोतमे तँइ/तैँ रूप-भेद देल अछि।

प्रश्न 13141. गाइ नहि, कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गाए।
उत्तर: घ. गाए।
व्याख्या: स्रोतमे गाए (गाइ नहि) लिखल अछि।

प्रश्न 13142. खण्ड १३१९क सार की अछि?
क. ओहि, ओहि लेल, जकाँ, तैँ, गाए आदि रूपसभ रोजमर्रा मैथिली वर्तनीमे मानक-सावधानीक उदाहरण छथि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओहि, ओहि लेल, जकाँ, तैँ, गाए आदि रूपसभ रोजमर्रा मैथिली वर्तनीमे मानक-सावधानीक उदाहरण छथि।
व्याख्या: स्रोतक सूचीक पछिला अंश एहि रूपसभक निर्देश दैत अछि।

खण्ड १३२० : विदेह-सदेह २ — सब-संभाषण, धरि, गप आ विभक्ति-सटाब

प्रश्न 13143. सबक स्थानपर कोन रूप देल गेल?
क. सभ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सभ।
व्याख्या: स्रोतमे सब-सभ रूप-भेद देल अछि।

प्रश्न 13144. सबहकक स्थानपर कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सभहक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सभहक।
व्याख्या: स्रोतमे सबहक-सभहक देल अछि।

प्रश्न 13145. तकक स्थानपर कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. धरि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. धरि।
व्याख्या: स्रोतमे धरि-तक रूप-भेद अछि।

प्रश्न 13146. बातक स्थानपर कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गप।
उत्तर: घ. गप।
व्याख्या: स्रोतमे गप-बात रूप-भेद देल अछि।

प्रश्न 13147. समझबक स्थानपर कोन रूप देल गेल?
क. बूझब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बूझब।
व्याख्या: स्रोतमे बूझब-समझब देल अछि।

प्रश्न 13148. समझलहुँक स्थानपर कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बुझलहुँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बुझलहुँ।
व्याख्या: स्रोतमे बुझलहुँ-समझलहुँ लिखल अछि।

प्रश्न 13149. हम सभक संग कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हमरा आर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हमरा आर।
व्याख्या: स्रोतमे हमरा आर-हम सभ रूप-भेद अछि।

प्रश्न 13150. आ कि सम्बन्धमे कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आकि।
उत्तर: घ. आकि।
व्याख्या: स्रोतमे आकि-आ कि देल अछि।

प्रश्न 13151. मे, कैं, सँ, पर शब्दसँ कोना लिखबाक कहल गेल?
क. सटा कऽ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सटा कऽ।
व्याख्या: स्रोतमे मे कैं सँ पर शब्दसँ सटा कऽ लिखबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 13152. खण्ड १३२०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सभ, धरि, गप, बूझब, आकि आ विभक्ति-सटाब मैथिली शब्दचयन आ लेखन-एकरूपताक महत्त्वपूर्ण अंग अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सभ, धरि, गप, बूझब, आकि आ विभक्ति-सटाब मैथिली शब्दचयन आ लेखन-एकरूपताक महत्त्वपूर्ण अंग अछि।
व्याख्या: स्रोतक वर्तनी-सूची आ निर्देश एहि आधार पर अछि।

खण्ड १३२१ : विदेह-सदेह २ — टा, बिकारी आ अपोस्ट्रोफी

प्रश्न 13153. “कैक टा” सम्बन्धमे की उदाहरण देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एकटा-दूटा मुदा कैक टा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. एकटा-दूटा मुदा कैक टा।

व्याख्या: स्रोतमे एकटा-दूटा, मुदा कैक टा लिखल अछि।

प्रश्न 13154. बिकारीक प्रयोग सामान्यतः कतय करबाक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शब्दक अन्तमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शब्दक अन्तमे।

व्याख्या: स्रोतमे बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे कहल अछि।

प्रश्न 13155. शब्दक बीचमे बिकारीक प्रयोग कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनावश्यक।

उत्तर: घ. अनावश्यक।

व्याख्या: स्रोतमे बीचमे अनावश्यक रूपेँ नहि कहल अछि।

प्रश्न 13156. आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग कोना कहल गेल?

क. नहि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नहि।

व्याख्या: स्रोतमे आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नहि कहल अछि।

प्रश्न 13157. “दिअ” सम्बन्धमे की निर्देश अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बिकारी नहि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बिकारी नहि।

व्याख्या: स्रोतमे दिअ उदाहरणसहित बिकारी नहि लगबाक बात अछि।

प्रश्न 13158. अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारीक बदलामे करब कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुचित।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुचित।

व्याख्या: स्रोतमे अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारीक बदला अनुचित कहल अछि।

प्रश्न 13159. अपोस्ट्रोफीकेँ स्रोतमे मुख्यतः ककर तकनीकी न्यूनता कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. फॉन्टक।
उत्तर: घ. फॉन्टक।
व्याख्या: स्रोतमे ई फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचाएक कहल अछि।

प्रश्न 13160. बिकारीक संस्कृत रूपक नाम की कहल गेल?
क. अवग्रह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अवग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल अछि।

प्रश्न 13161. फ्रेंच उदाहरणमे अपोस्ट्रोफी अवकाश दैत अछि कि जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जोड़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जोड़ैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे raison d’etre उदाहरणसँ अपोस्ट्रोफी अवकाश नहि, जोड़ैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 13162. खण्ड १३२१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. टा, बिकारी, अवग्रह आ अपोस्ट्रोफीक प्रयोगमे मैथिली लेखनक आन्तरिक नियम आ तकनीकी सावधानी दुनू महत्त्वपूर्ण अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. टा, बिकारी, अवग्रह आ अपोस्ट्रोफीक प्रयोगमे मैथिली लेखनक आन्तरिक नियम आ तकनीकी सावधानी दुनू महत्त्वपूर्ण अछि।
व्याख्या: स्रोतक अन्तिम निर्देश एहि विषयक विस्तृत व्याख्या करैत अछि।

खण्ड १३२२ : विदेह-सदेह २ — अइमे, तँ-सँ, गाछ तर आ जो

प्रश्न 13163. अइमेक संग कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहिमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एहिमे।
व्याख्या: स्रोतमे अइमे, एहिमे देल अछि।

प्रश्न 13164. जइमेक संग कोन रूप देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जाहिमे।
उत्तर: घ. जाहिमे।
व्याख्या: स्रोतमे जइमे, जाहिमे देल अछि।

प्रश्न 13165. एखनक संग कोन-कोन रूप देल गेल?
क. अखन आ अइखन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अखन आ अइखन।
व्याख्या: स्रोतमे एखन/अखन/अइखन रूप-भेद अछि।

प्रश्न 13166. कैँ सम्बन्धमे स्रोत की निर्देश करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. के नहि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. के नहि।
व्याख्या: स्रोतमे कैँ (के नहि) लिखल अछि।

प्रश्न 13167. मे सम्बन्धमे की निर्देश अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अनुस्वार रहित।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अनुस्वार रहित।
व्याख्या: स्रोतमे मे (अनुस्वार रहित) देल अछि।

प्रश्न 13168. तँक सम्बन्धमे कोन गलत रूप सभ टारबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तऽ आ त।
उत्तर: घ. तऽ आ त।
व्याख्या: स्रोतमे तँ (तऽ त नहि) निर्देश अछि।

प्रश्न 13169. सँक सम्बन्धमे कोन गलत रूप सभ टारबाक कहल गेल?
क. सऽ आ स।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सऽ आ स।
व्याख्या: स्रोतमे सँ (सऽ स नहि) देल अछि।

प्रश्न 13170. गाछ सम्बन्धी कोन दू प्रयोग देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गाछ तर आ गाछ लग।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गाछ तर आ गाछ लग।
व्याख्या: स्रोतमे गाछ तर, गाछ लग देल अछि।

प्रश्न 13171. साँझ सम्बन्धी कोन प्रयोग देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साँझ खन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साँझ खन।
व्याख्या: स्रोतमे साँझ खन उदाहरण अछि।

प्रश्न 13172. खण्ड १३२२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अइमे/एहिमे, कैँ/मे/तँ/सँ, गाछ तर-लग आ साँझ खन जकाँ प्रयोग मैथिलीक सूक्ष्म व्यवहारिक लेखन-संकेत छथि।
उत्तर: घ. अइमे/एहिमे, कैँ/मे/तँ/सँ, गाछ तर-लग आ साँझ खन जकाँ प्रयोग मैथिलीक सूक्ष्म व्यवहारिक लेखन-संकेत छथि।
व्याख्या: स्रोतक अन्तिम सूची एहि प्रयोगसभक निर्देश करैत अछि।

खण्ड १३२३ : विदेह-सदेह २ — नेपाल शैली आ अकादमी शैलीक सामंजस्य

प्रश्न 13173. नेपालक मानक शैली मुख्यतः कोन विद्वानक धारणाकेँ सङ्ग लऽ निर्धारित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. डा. रामावतार यादव।
उत्तर: घ. डा. रामावतार यादव।
व्याख्या: स्रोतमे भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित कहल अछि।

प्रश्न 13174. नेपाल शैलीमे पञ्चमाक्षर-अनुस्वारक चर्चाक मुख्य लक्ष्य की अछि?
क. उच्चारण आ लेखनक स्पष्टता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. उच्चारण आ लेखनक स्पष्टता।
व्याख्या: विस्तारमे बिन्दु अस्पष्टता, उच्चारण-दोष आ वर्ग-नियमक बात अछि।

प्रश्न 13175. अकादमी शैलीमे प्रचलित वर्तनीक महत्त्व किएक छैक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्राचीन कालसँ आइ धरि प्रचलित रूपकेँ मान्यता देबाक लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्राचीन कालसँ आइ धरि प्रचलित रूपकेँ मान्यता देबाक लेल।
व्याख्या: नियम १मे प्रचलित वर्तनी यथावत राखबाक बात अछि।

प्रश्न 13176. दुनू शैलीमे वैकल्पिक रूपक स्वीकार्यता की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषाक जीवित प्रयोग आ लेखन-लचीलापन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषाक जीवित प्रयोग आ लेखन-लचीलापन।
व्याख्या: ए-य, कय/कए, भए/भय आदि अनेक विकल्प देल अछि।

प्रश्न 13177. हलन्त सम्बन्धमे नेपाल शैली आ अकादमी शैलीक साझा चिन्ता की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तत्सम, विभक्ति आ व्याकरणक सन्दर्भमे सावधानी।

उत्तर: घ. तत्सम, विभक्ति आ व्याकरणक सन्दर्भमे सावधानी।

व्याख्या: नेपाल शैली हलन्तविहीन मैथिली आ तत्सम हलन्त कहैत अछि; अकादमी श्रीमान्/श्रीमानक उदाहरण दैत अछि।

प्रश्न 13178. कारक चिह्नक सटाब सम्बन्धमे अकादमी नियम की दैत अछि?

क. एकल कारक चिह्न सटा कऽ लिखबाक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकल कारक चिह्न सटा कऽ लिखबाक।

व्याख्या: नियम १५मे ई निर्देश अछि।

प्रश्न 13179. उच्चारण निर्देशमे देवनागरी लेखनक कोन समस्या बारम्बार उठल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हिन्दी-प्रभावजनित उच्चारण-दोष।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हिन्दी-प्रभावजनित उच्चारण-दोष।

व्याख्या: ह्रस्व इ, ऋ, व/ब, य/ज आदि ठाम हिन्दी-प्रभावक सावधानी अछि।

प्रश्न 13180. स्रोतक भाषा-निर्देशक उद्देश्य की बुझाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखनमे एकरूपता राखि मैथिलीक मूल विशेषता बचाएब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखनमे एकरूपता राखि मैथिलीक मूल विशेषता बचाएब।

व्याख्या: स्रोतमे सहजता आ एकरूपतासँ संगहि मूल विशेषता कुण्ठित नहि होइक कहल अछि।

प्रश्न 13181. डॉ. रामावतार यादवक चेतावनीक मूल आशय की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरलताक खोजमे भाषाक विशेषता छाँहमे नहि पड़ए।

उत्तर: घ. सरलताक खोजमे भाषाक विशेषता छाँहमे नहि पड़ए।

व्याख्या: स्रोतमे एहि आशयक वाक्य उद्धृत अछि।

प्रश्न 13182. खण्ड १३२३क सार की अछि?

क. नेपाल शैली आ अकादमी शैली दुनू मैथिलीक लेखन-सरलता, ध्वनि-शुद्धता आ भाषिक विशेषता बचएबाक संयुक्त प्रयत्न छथि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल शैली आ अकादमी शैली दुनू मैथिलीक लेखन-सरलता, ध्वनि-शुद्धता आ भाषिक विशेषता बचएबाक संयुक्त प्रयत्न छथि।

व्याख्या: दुनू स्रोतखण्डक समेकित अध्ययनसँ ई निष्कर्ष बनैत अछि।

खण्ड १३२४ : विदेह-सदेह २ — भाषा-मानक अध्ययनक समेकन

प्रश्न 13183. स्रोतक अन्तिम भाग मैथिली अध्ययनकेँ कोन दिशामे लऽ जाइत अछि?

क. वर्तनी, उच्चारण आ मानक लेखन दिशामे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्तनी, उच्चारण आ मानक लेखन दिशामे।

व्याख्या: अन्तिम भागमे वर्तनी-सूची, नेपाल शैली, अकादमी शैली आ उच्चारण निर्देश अछि।

प्रश्न 13184. विद्यार्थी लेल एहि भागक पहिल उपयोग की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रूप-भेद चिन्हबाक क्षमता।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रूप-भेद चिन्हबाक क्षमता।

व्याख्या: सूचीमे अनेक रूप-भेद देल गेल, जाहिसँ विद्यार्थी भिन्न रूप चिन्हि सकैत अछि।

प्रश्न 13185. दोसरे उपयोग की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मानक लेखनक कारण बुझब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मानक लेखनक कारण बुझब।

व्याख्या: पञ्चमाक्षर, ए-य, हलन्त, विभक्ति आदि नियम कारण सहित देल अछि।

प्रश्न 13186. तेसर उपयोग की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उच्चारण-दोषसँ बचब।

उत्तर: घ. उच्चारण-दोषसँ बचब।

व्याख्या: न/ण, श/ष/स, ह्रस्व इ, ऋ आ संयुक्ताक्षरक निर्देश उच्चारण-दोष टारैत अछि।

प्रश्न 13187. चौथ उपयोग की अछि?

क. साहित्यिक पाठकेँ एकरूपे पढ़ब-लिखब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक पाठकेँ एकरूपे पढ़ब-लिखब।

व्याख्या: मानक शैली पाठ-संपादन आ लेखन-दुनू लेल आधार दैत अछि।

प्रश्न 13188. बिकारी, अनुस्वार आ चन्द्रबिन्दु कोन स्तरक सावधानी माँगैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चिह्न आ ध्वनि दुनू स्तरक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चिह्न आ ध्वनि दुनू स्तरक।

व्याख्या: स्रोतमे चिह्नक लेखन आ उच्चारण-दोष दुनू पर चर्चा अछि।

प्रश्न 13189. कैक टा, गाछ तर, साँझ खन जकाँ उदाहरण की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. छोट शब्द-संयोजन सेहो मानक लेखनमे महत्त्वपूर्ण अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. छोट शब्द-संयोजन सेहो मानक लेखनमे महत्त्वपूर्ण अछि।
व्याख्या: अन्तिम सूची व्यवहारिक वाक्यांश-लेखनक उदाहरण दैत अछि।

प्रश्न 13190. स्रोतक भाषा-दृष्टि केवल शुद्धतावादी अछि कि व्यावहारिक सेहो?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. व्यावहारिक सेहो।
उत्तर: घ. व्यावहारिक सेहो।
व्याख्या: स्रोतमे मुद्रण, हस्तलेखन, समय-स्थान बचत आ तकनीकी दृष्टिसँ सरलताक चर्चा अछि।

प्रश्न 13191. भाषाक मूल विशेषता कुण्ठित नहि होए, ई कोन प्रकारक सावधानी अछि?
क. सांस्कृतिक-भाषिक सावधानी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सांस्कृतिक-भाषिक सावधानी।
व्याख्या: डॉ. रामावतार यादवक चेतावनी एहि व्यापक भाषिक दृष्टि दिस संकेत करैत अछि।

प्रश्न 13192. खण्ड १३२४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषा-मानक अध्ययन मैथिली पाठक-लेखककेँ वर्तनी, उच्चारण, चिह्न, विभक्ति आ सांस्कृतिक भाषा-स्वरूपक समेकित समझ दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषा-मानक अध्ययन मैथिली पाठक-लेखककेँ वर्तनी, उच्चारण, चिह्न, विभक्ति आ सांस्कृतिक भाषा-स्वरूपक समेकित समझ दैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड १३०५–१३२३क समेकित अध्ययन-निष्कर्ष अछि।

खण्ड १३२५ : विदेह-सदेह २ — भालचन्द्र झा: बाल-शिक्षणपर निबन्धक आरम्भ

प्रश्न 13193. “बाल-शिक्षणपर निबन्ध”क लेखक के छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भालचन्द्र झा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भालचन्द्र झा।
व्याख्या: निबन्धक आरम्भमे लेखकक नाम भालचन्द्र झा देल गेल अछि।

प्रश्न 13194. एहि निबन्धक उपशीर्षक/मुख्य प्रसंग की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हमर शिक्षण-यात्रा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हमर शिक्षण-यात्रा।
व्याख्या: निबन्ध “हमर शिक्षण-यात्रा” शीर्षकसँ आरम्भ होइत अछि।

प्रश्न 13195. लेखक पहिने कोन प्रशिक्षण कएने छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ए.टी.डी. अर्थात् आर्ट टीचर्स डिप्लोमा।
उत्तर: घ. ए.टी.डी. अर्थात् आर्ट टीचर्स डिप्लोमा।
व्याख्या: लेखक नव-नव ए.टी.डी. कएने रहबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 13196. लेखक पहिल नोकरी कतय धेलनि?
क. मुम्बइक एक प्रसिद्ध स्कूलक प्राथमिक विभागमे सहायक शिक्षकक रूपमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मुम्बइक एक प्रसिद्ध स्कूलक प्राथमिक विभागमे सहायक शिक्षकक रूपमे।
व्याख्या: आरम्भिक प्रसंगमे ओ बम्बइ/मुम्बइक प्रसिद्ध स्कूलक प्राथमिक विभागमे गेलाह।

प्रश्न 13197. ओहि समय लेखकक दिनचर्या कोना छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आध दिन नोकरी आ आध दिन कॉलेजक आगूक पढ़ाइ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आध दिन नोकरी आ आध दिन कॉलेजक आगूक पढ़ाइ।
व्याख्या: लेखक आध दिन नोकरी आ आध दिन पढ़ाइ करबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 13198. आरम्भमे अभिभावक सभक उपराग कोन विषय पर आबए लागल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लेखकक पढ़एबाक पद्धति पर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लेखकक पढ़एबाक पद्धति पर।
व्याख्या: किछु दिनमे पढ़एबाक पद्धति लऽ अभिभावकक शिकायत उठल।

प्रश्न 13199. उपरागक स्वर क्रमशः कोना भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. धीरे-धीरे कनेक ऊँच बुझाए लागल।
उत्तर: घ. धीरे-धीरे कनेक ऊँच बुझाए लागल।
व्याख्या: स्रोतमे उपरागक स्वर नहूँ-नहूँ ऊँच होएबाक बात अछि।

प्रश्न 13200. ई बात अन्ततः कतय पहुँचल?
क. मुख्याध्यापक धरि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मुख्याध्यापक धरि।
व्याख्या: अभिभावकक शिकायत मुख्याध्यापक धरि पहुँचि गेल।

प्रश्न 13201. पहिल खण्डमे लेखक अपन अनुभवकेँ कोन काल-दूरीसँ देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पचीस-तीस बरख पुरान गप्प रूपमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पचीस-तीस बरख पुरान गप्प रूपमे।
व्याख्या: लेखक एहि घटनाकेँ पचीस-तीस बरख पुरान गप्प कहैत छथि।

प्रश्न 13202. खण्ड १३२५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. निबन्ध लेखकक आरम्भिक कला-शिक्षक जीवन आ अभिभावक-विरोधक प्रसंगसँ शुरू होइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. निबन्ध लेखकक आरम्भिक कला-शिक्षक जीवन आ अभिभावक-विरोधक प्रसंगसँ शुरू होइत अछि।
व्याख्या: आरम्भिक अनुच्छेद नोकरी, पढ़ाइ, पद्धति आ शिकायतक पृष्ठभूमि बनबैत अछि।

खण्ड १३२६ : विदेह-सदेह २ — मुख्याध्यापक: समर्पण, अनुशासन आ शिक्षक-विश्वास

प्रश्न 13203. लेखकक पहिल स्कूलक मुख्याध्यापक कोन सम्मानसँ विभूषित छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. राष्ट्रपति अवार्डसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. राष्ट्रपति अवार्डसँ।
व्याख्या: लेखक मुख्याध्यापककेँ शैक्षणिक क्षेत्रमे राष्ट्रपति अवार्डसँ विभूषित बतबैत छथि।

प्रश्न 13204. मुख्याध्यापक अपन काज प्रति कोन रूपेँ समर्पित छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बेटीक बियाहक दिनो भोरमे टेबुलपर उपस्थित रहबाक स्तर धरि।
उत्तर: घ. बेटीक बियाहक दिनो भोरमे टेबुलपर उपस्थित रहबाक स्तर धरि।
व्याख्या: स्रोतमे बेटी विवाहक दिनो भोर पाँचे बजे काज करबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 13205. मुख्याध्यापक अपन बेटीक बियाहक दिन कखन काजपर पहुँचि गेलाह?
क. भोर पाँचे बजे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भोर पाँचे बजे।
व्याख्या: लेखक भोरमे पाँचे बजे हुनकर टेबुलपर हाजिर होएबाक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 13206. विवाह-मण्डपमे मुख्याध्यापक कखन पहुँचला?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मुहूर्तक समएसँ किछु पहिने।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मुहूर्तक समएसँ किछु पहिने।
व्याख्या: फोनक बाद ओ कन्यादान लेल मुहूर्तक किछु पहिने पहुँचलाह।

प्रश्न 13207. महाराष्ट्रमे विवाह सामान्यतः कखन होइत अछि, लेखक कोना स्पष्ट करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दिनमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दिनमे।
व्याख्या: लेखक कोष्ठकमे महाराष्ट्रमे विवाह दिनमे होइत अछि कहैत छथि।

प्रश्न 13208. एक दिन प्यूने लेखककेँ कोन सूचना देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हेड गुरूजी अपनेकेँ याद कएलनि अछि।
उत्तर: घ. हेड गुरूजी अपनेकेँ याद कएलनि अछि।
व्याख्या: स्रोतमे प्यूनेक संदेश एहि रूपमे देल गेल अछि।

प्रश्न 13209. मुख्याध्यापक बिना कारण लोककेँ डिस्टर्ब करैत छलाह कि नहि?
क. नहि, बिना कारण नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, बिना कारण नहि।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे ओ बिना कोनो कारण ककरो डिस्टर्ब नहि करैत छलाह।

प्रश्न 13210. लेखकप्रति मुख्याध्यापकक विशेष लगावक एक कारण की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक नवतुरिया शिक्षक छलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक नवतुरिया शिक्षक छलाह।
व्याख्या: लेखक शिक्षक-समूहमे नवतुरिया रहबाक कारणे विशेष लगाव बतबैत छथि।

प्रश्न 13211. कला शिक्षक रूपमे लेखक कोन प्रवृत्ति राखैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रूटीनसँ हटि नब-नब प्रयोग करबाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रूटीनसँ हटि नब-नब प्रयोग करबाक।
व्याख्या: लेखक स्कूलमे अनेक विधाक काज आ नब प्रयोग करैत छलाह।

प्रश्न 13212. खण्ड १३२६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मुख्याध्यापकक अनुशासन आ लेखकक प्रयोगशीलता मिलि निबन्धक शैक्षिक पृष्ठभूमि बनबैत अछि।
उत्तर: घ. मुख्याध्यापकक अनुशासन आ लेखकक प्रयोगशीलता मिलि निबन्धक शैक्षिक पृष्ठभूमि बनबैत अछि।
व्याख्या: मुख्याध्यापकक समर्पण आ लेखकक नव प्रयोग आगामी घटनाक आधार बनैत अछि।

खण्ड १३२७ : विदेह-सदेह २ — शिशु-वर्ग, रोनिहार नेन्ना आ कागज-पेन्सिल प्रयोग

प्रश्न 13213. शिशु-वर्गक नेन्ना पहिल बेर स्कूल अबैत की नहि छोड़ैत छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माए-बापकेँ।

उत्तर: घ. माए-बापकेँ।

व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे नेन्ना पहिल-पहिल बेर स्कूल अबैत माए-बापकेँ छोड़ैत नहि।

प्रश्न 13214. नेन्ना सभक रोअनि-झौहरिक कारण स्कूलक वातावरण कोना बनैत छल?

क. कान देब कठिन भऽ जाइत छल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कान देब कठिन भऽ जाइत छल।

व्याख्या: स्रोतमे झौहरि एतेक पड़बाक बात अछि जे कान नहि देल जाइत छल।

प्रश्न 13215. नेन्ना सभक ध्यान बाँटबाक लेल लेखक की आनि सोझाँ राखलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कागज आ ऑइल पेस्टल रंग-पेन्सिल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कागज आ ऑइल पेस्टल रंग-पेन्सिल।

व्याख्या: लेखक कागज आ मोमक रंग-पेन्सिल आनलनि।

प्रश्न 13216. किछु नेन्ना कागज भेटिते की कएलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कागज चिर्री-चिर्री कऽ देलक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कागज चिर्री-चिर्री कऽ देलक।

व्याख्या: स्रोतमे किछु नेन्ना कागज चिर्री-चिर्री करबाक वर्णन अछि।

प्रश्न 13217. पेन्सिलक संग किछु नेन्ना की कएलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. टुकड़ी-टुकड़ी कऽ बीगि देलक।

उत्तर: घ. टुकड़ी-टुकड़ी कऽ बीगि देलक।

व्याख्या: लेखक पेन्सिल टुकड़ी-टुकड़ी करबाक प्रसंग देलनि।

प्रश्न 13218. एहि प्रयोगक तात्कालिक उद्देश्य की छल?

क. नेन्ना सभक ध्यान बँटाएब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेन्ना सभक ध्यान बँटाएब।

व्याख्या: लेखक कागज-पेन्सिल नेन्ना सभक ध्यान बँटेबाक लेल राखलनि।

प्रश्न 13219. प्रयोगक परिणाम लेखककेँ जल्दी देखाएल कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जल्दिये देखाए लागल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जल्दिये देखाए लागल।
व्याख्या: स्रोतमे परिणामो जल्दिये देखाए लागल कहल गेल अछि।

प्रश्न 13220. कागज-पेन्सिल देखिते किछु बच्चा पर की प्रभाव पड़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तरंग जकाँ प्रतिक्रिया जागल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तरंग जकाँ प्रतिक्रिया जागल।
व्याख्या: लेखक रूपकमे “तरबा लहरि” मगजमे पहुँचबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 13221. शिशु-वर्ग प्रसंगमे पूरा स्टाफ कोन प्रयासमे लागल रहैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बच्चा सभकेँ तरह-तरहसँ बौंसबाक।
उत्तर: घ. बच्चा सभकेँ तरह-तरहसँ बौंसबाक।
व्याख्या: स्कूलक पूरा स्टाफ बच्चा सभकेँ सम्भारबाक प्रयास करैत छल।

प्रश्न 13222. खण्ड १३२७क सार की अछि?
क. कला-सामग्री शिशु-वर्गक अस्थिर भावनाकेँ देखबाक पहिल शिक्षण-प्रयोग बनल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कला-सामग्री शिशु-वर्गक अस्थिर भावनाकेँ देखबाक पहिल शिक्षण-प्रयोग बनल।
व्याख्या: कागज-पेन्सिल प्रयोग बाल-मनक प्रतिक्रिया बुझबाक आधार बनैत अछि।

खण्ड १३२८ : विदेह-सदेह २ — एक नेन्नाक चित्र-कृति आ आत्म-प्रगटीकरण

प्रश्न 13223. एक नेन्ना पेन्सिल छीनि कागजपर कोना लागल?
क. जेना टूटि पड़ल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जेना टूटि पड़ल।
व्याख्या: स्रोतमे ओ पेन्सिल छीनि कागजपर टूटि पड़बाक छवि अछि।

प्रश्न 13224. ओ नेन्ना पेन्सिलकेँ कागजपर कोना घसऽ लागल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हाँजि-हाँजि कऽ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हाँजि-हाँजि कऽ।
व्याख्या: लेखक बच्चाक तीव्र कृतिकेँ हाँजि-हाँजि कऽ घसब कहैत छथि।

प्रश्न 13225. ओ एक बेर पेन्सिल राखलाक बाद की कएलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बिनु उठओने पूरा कागज भरि देलक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बिनु उठओने पूरा कागज भरि देलक।
व्याख्या: स्रोतमे बिनु उठौनहें पूरा कागज भरि देबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13226. ओहि कृतिक बाद बच्चा कोना भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शांत।
उत्तर: घ. शांत।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे एहि के बाद ओ शांत भऽ गेल।

प्रश्न 13227. लेखकक अनुसार छोटोसँ छोट कृतिकमे की रहैत अछि?
क. किछु अर्थ आ प्रयोजन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. किछु अर्थ आ प्रयोजन।
व्याख्या: लेखक प्रत्येक कृतिक किछु अर्थ आ प्रयोजन मानैत छथि।

प्रश्न 13228. लेखकक अनुसार बिना प्रयोजनक कृति सम्भव अछि कि नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि।
व्याख्या: स्रोतमे बिना कोनो प्रयोजन कृति नहि भऽ सकैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 13229. आत्म-प्रगटीकरण लेल लेखक कोन माध्यमकेँ अत्यन्त प्रभावी मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चित्रकला।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चित्रकला।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे आत्म-प्रगटीकरण हेतु चित्रकला सन प्रभावी माध्यम नहि।

प्रश्न 13230. चित्रकला बच्चाकेँ कोन सुविधा दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संस्कार वा व्याकरण बिना मोनक गप्प व्यक्त करबाक।
उत्तर: घ. संस्कार वा व्याकरण बिना मोनक गप्प व्यक्त करबाक।
व्याख्या: स्रोतमे बच्चा बिना संस्कार/व्याकरण चित्रकला द्वारा अपन मोन व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 13231. लेखक चित्रकलाकेँ बच्चा लेल कोन प्रकारक माध्यम मानैत छथि?
क. सरल आ श्रेष्ठ माध्यम।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सरल आ श्रेष्ठ माध्यम।
व्याख्या: लेखक पुछैत छथि जे एहि सँ सरल आ श्रेष्ठ कोन माध्यम होएत।

प्रश्न 13232. खण्ड १३२८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एक बच्चाक तीव्र रेखांकन लेखककेँ चित्रकलाक आत्म-अभिव्यक्ति-शक्ति बुझबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एक बच्चाक तीव्र रेखांकन लेखककेँ चित्रकलाक आत्म-अभिव्यक्ति-शक्ति बुझबैत अछि।
व्याख्या: एहि प्रसंगसँ लेखक प्रत्येक कृतिक अर्थ आ चित्रकलाक महत्त्व निकालैत छथि।

खण्ड १३२९ : विदेह-सदेह २ — रंग-छाप: गीत, पएर आ सामूहिक सृजन

प्रश्न 13233. दोसर प्रयोग कखन कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नेन्ना सभ स्कूलक माहौलसँ घुलि-मिलि गेलाक बाद।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नेन्ना सभ स्कूलक माहौलसँ घुलि-मिलि गेलाक बाद।
व्याख्या: लेखक किछु दिन बाद, बच्चा सभ माहौलसँ घुलि-मिलि गेलाक उपरान्त प्रयोग कएलनि।

प्रश्न 13234. लेखक कक्षा तैयार करबाक लेल पहिने की करेलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. साफ-सफाइ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. साफ-सफाइ।
व्याख्या: स्रोतमे कक्षाक साफ-सफाइ करा कऽ फर्शपर कागज पसारल गेल।

प्रश्न 13235. पूरा फर्शपर की पसारल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उज्जर प्लेन कागज।
उत्तर: घ. उज्जर प्लेन कागज।
व्याख्या: प्रयोगमे फर्शपर उज्जर प्लेन कागज पसारल गेल।

प्रश्न 13236. कोठरीमे की टँगाओल गेल?
क. स्पीकर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्पीकर।
व्याख्या: लेखक कोठरीमे एक गोट स्पीकर टँगवेलनि।

प्रश्न 13237. रंग कतय राखल/हेरल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कोठरीक बाहरक जमीनपर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कोठरीक बाहरक जमीनपर।
व्याख्या: डोलमे रंग घोरि कोठरीक बाहर जमीनपर हेरल गेल।

प्रश्न 13238. बच्चा सभकेँ कोठरीमे कोना प्रवेश कराओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. खाली पएर रंगपर सँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. खाली पएर रंगपर सँ।
व्याख्या: नेन्ना सभकेँ खाली पएर रंगपर सँ जाइ कहल गेल।

प्रश्न 13239. स्पीकरपर की शुरू कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नेन्ना सभक परिचित गीत।
उत्तर: घ. नेन्ना सभक परिचित गीत।
व्याख्या: स्रोतमे परिचित गीत शुरू करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13240. रंग पोताएल पएर लऽ बच्चा सभ की करऽ लागल?
क. गीतक तालपर कागजपर नाचऽ लागल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गीतक तालपर कागजपर नाचऽ लागल।
व्याख्या: नेन्ना सभ रंगसँ पोताएल तरबा लऽ गीतक तालपर नाचल।

प्रश्न 13241. बनल रंग-छापकेँ बादमे की कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चुनि-चुनि फ्रेम बनाओल गेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चुनि-चुनि फ्रेम बनाओल गेल।
व्याख्या: रंग-बिरंगा छाप चुनि फ्रेम बनाओल गेल।

प्रश्न 13242. खण्ड १३२९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रंग, पएर, गीत आ गति मिलि बाल-सृजनकेँ उत्सव आ आत्म-पहिचानमे बदलैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रंग, पएर, गीत आ गति मिलि बाल-सृजनकेँ उत्सव आ आत्म-पहिचानमे बदलैत अछि।
व्याख्या: बच्चा सभ अपन पएरक छाप चिन्हि आनन्द पबैत रहल।

खण्ड १३३० : विदेह-सदेह २ — अभिभावकक शिकायत आ प्रचलित शिक्षा-पद्धतिक आलोचना

प्रश्न 13243. मुख्याध्यापक लेखककेँ किएक बजौलनि, ई बादमे स्पष्ट भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अभिभावक सभ पढ़एबाक पद्धतिक विरोधमे पहुँचि गेल रहथि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अभिभावक सभ पढ़एबाक पद्धतिक विरोधमे पहुँचि गेल रहथि।

व्याख्या: स्रोतमे अभिभावकक उपराग मुख्याध्यापक धरि पहुँचल बताओल अछि।

प्रश्न 13244. अभिभावकक मुख्य शिकायत की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखक नेन्ना सभकेँ चित्र बनाएब नहि सिखबैत छथि।

उत्तर: घ. लेखक नेन्ना सभकेँ चित्र बनाएब नहि सिखबैत छथि।

व्याख्या: शिकायत छल जे बच्चा सभक चित्र पूरा करबाक जिम्मेदारी घरपर पड़ैत अछि।

प्रश्न 13245. घरमे बच्चा सभक चित्र पूरा करबाक भार ककरा उठबऽ पड़ैत छल?

क. माए-बापकेँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माए-बापकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे अभिभावक कहैत छथि जे चित्र पूरा करबाक जिम्मेदारी माए-बाप उठबऽ पड़ैत छैक।

प्रश्न 13246. लेखक एहि सोचक मूल स्रोत की मानैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रचलित शिक्षा-पद्धति।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रचलित शिक्षा-पद्धति।

व्याख्या: उपराग सुनिते लेखक मूल स्रोत प्रचलित शिक्षा पद्धति कहैत छथि।

प्रश्न 13247. लेखकक अनुसार शिक्षा-पद्धतिक भारी समस्या की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नेन्ना सभक मोनपर अपेक्षित संस्कार नहि पड़ि रहल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नेन्ना सभक मोनपर अपेक्षित संस्कार नहि पड़ि रहल।

व्याख्या: स्रोतमे शिक्षा-पद्धतिसँ अपेक्षित संस्कार नहि पड़बाक बात अछि।

प्रश्न 13248. विद्यार्थीकेँ स्वयंसिद्ध बनएबाक लेल कोन चीजक आवश्यकता अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ज्ञान, मेहनत आ संयम।

उत्तर: घ. ज्ञान, मेहनत आ संयम।

व्याख्या: लेखक ज्ञान, मेहनत आ संयमक पूर्ण अभाव देखैत छथि।

प्रश्न 13249. किताबक शब्द पढ़ि वा पढ़वा देब लेखकक नजरिमे पर्याप्त अछि कि नहि?
क. नहि, ई सतही पद्धति अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, ई सतही पद्धति अछि।
व्याख्या: लेखक किताबक शब्द पढ़ि देबाकेँ छुतिका छुटि गेलै जकाँ आलोचित करैत छथि।

प्रश्न 13250. लेखकक आलोचनामे पर्यायवाची शब्द कहि देब कोन प्रवृत्तिक चिन्ह अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. यांत्रिक पढ़ाइ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. यांत्रिक पढ़ाइ।
व्याख्या: स्रोतमे शब्द आ पर्यायवाची कहि देबाक यंत्रवत प्रवृत्ति पर चोट अछि।

प्रश्न 13251. अभिभावकक शिकायतसँ लेखक कोन बड़का शिक्षा-विषय पर पहुँचैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शिक्षा-पद्धतिक दोष।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शिक्षा-पद्धतिक दोष।
व्याख्या: छोट शिकायतसँ लेखक प्रचलित शिक्षा-व्यवस्थाक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 13252. खण्ड १३३०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चित्र-सिखावन पर शिकायत लेखककेँ रटन्त आ परिणाम-केंद्रित शिक्षा-पद्धतिक आलोचना धरि लऽ जाइत अछि।
उत्तर: घ. चित्र-सिखावन पर शिकायत लेखककेँ रटन्त आ परिणाम-केंद्रित शिक्षा-पद्धतिक आलोचना धरि लऽ जाइत अछि।
व्याख्या: अभिभावकक सोचकेँ लेखक शिक्षा-पद्धतिक उत्पाद मानैत छथि।

खण्ड १३३१ : विदेह-सदेह २ — शान्तिनिकेतन, नवीनता आ आइन्स्टाइन प्रसंग

प्रश्न 13253. लेखक गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कोन संस्थाक उल्लेख करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शान्तिनिकेतन।
उत्तर: घ. शान्तिनिकेतन।
व्याख्या: स्रोतमे शान्तिनिकेतन आरम्भ करबाक आवश्यकता बुझाएबाक प्रसंग अछि।

प्रश्न 13254. शान्तिनिकेतनक उल्लेख लेखक कोन सन्दर्भमे करैत छथि?
क. प्रचलित शिक्षा-लकीरसँ बाहर सोचबाक आवश्यकता सन्दर्भमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रचलित शिक्षा-लकीरसँ बाहर सोचबाक आवश्यकता सन्दर्भमे।
व्याख्या: लेखक लकीरक फकीर बनबाक विरुद्ध शान्तिनिकेतनक संकेत दैत छथि।

प्रश्न 13255. लेखकक अनुसार हम सभ एखनो कोन प्रवृत्तिमे लागल छी?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लकीरक फकीर बनाबऽमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लकीरक फकीर बनाबऽमे।
व्याख्या: स्रोतमे एखनो वएह लकीरक फकीर बनेबाक बात अछि।

प्रश्न 13256. नवीनताकेँ स्वीकारब लेखकक अनुसार लोककेँ कोना बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पाप जकाँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पाप जकाँ।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि नवीनताकेँ स्वीकारब जेना पाप बुझाइत रहैत अछि।

प्रश्न 13257. लेखक कोन महान वैज्ञानिकक उद्धरणक उल्लेख करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आइन्स्टाइन।
उत्तर: घ. आइन्स्टाइन।
व्याख्या: स्रोतमे महान वैज्ञानिक आइन्स्टाइनक कथन देल अछि।

प्रश्न 13258. आइन्स्टाइनक कथन शिक्षा-दीक्षाक सम्बन्धमे कोन भाव प्रकट करैत अछि?
क. स्कूलमे भर्ती भेल दिनसँ शिक्षा-दीक्षा समाप्त भऽ गेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्कूलमे भर्ती भेल दिनसँ शिक्षा-दीक्षा समाप्त भऽ गेल।
व्याख्या: लेखक आइन्स्टाइनक कथन एहि रूपमे उद्धृत करैत छथि।

प्रश्न 13259. एहि प्रसंगमे स्कूलक आलोचना कोन आधारपर अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रचनात्मकता दमन आ नव सोचक अस्वीकार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रचनात्मकता दमन आ नव सोचक अस्वीकार।
व्याख्या: शान्तिनिकेतन आ आइन्स्टाइन प्रसंग रचनात्मक शिक्षाक पक्ष लैत अछि।

प्रश्न 13260. लेखक परम्परागत शिक्षाकेँ कोन रूपमे देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नवीनता-विरोधी लकीर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नवीनता-विरोधी लकीर।
व्याख्या: स्रोतमे लकीरक फकीर आ नवीनता पाप बुझबाक बात अछि।

प्रश्न 13261. ई भाग कला-शिक्षाक पक्षमे की तर्क दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बच्चाक स्वतंत्र विकास लेल नब पद्धति चाही।
उत्तर: घ. बच्चाक स्वतंत्र विकास लेल नब पद्धति चाही।
व्याख्या: लेखक स्वतंत्र सृजनशील शिक्षाक आवश्यकता रेखांकित करैत छथि।

प्रश्न 13262. खण्ड १३३१क सार की अछि?
क. शान्तिनिकेतन आ आइन्स्टाइन प्रसंगद्वारा लेखक रटन्त स्कूल-व्यवस्थाक विरुद्ध नब, सृजनशील शिक्षाक पक्ष लैत छथि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शान्तिनिकेतन आ आइन्स्टाइन प्रसंगद्वारा लेखक रटन्त स्कूल-व्यवस्थाक विरुद्ध नब, सृजनशील शिक्षाक पक्ष लैत छथि।
व्याख्या: ई भाग शिक्षा-आलोचनाकेँ व्यापक वैचारिक आधार दैत अछि।

खण्ड १३३२ : विदेह-सदेह २ — ब्लैकबोर्डक चित्र आ वयस्क प्रतिमाक दबाव

प्रश्न 13263. कला जकाँ सृजनशील विषयक अवस्था लेखकक अनुसार कोना अछि?
क. आन विषयसँ भिन्न नहि; ओहो गलत पद्धतिसँ ग्रस्त अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आन विषयसँ भिन्न नहि; ओहो गलत पद्धतिसँ ग्रस्त अछि।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि कला जकाँ सृजनशील विषएक अवस्था कोनो भिन्न नहि।

प्रश्न 13264. प्रचलित कला-शिक्षामे शिक्षक ब्लैकबोर्डपर की करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कोनो चित्र खीचि दैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कोनो चित्र खीचि दैत छथि।
व्याख्या: स्रोतमे ब्लैकबोर्डपर चित्र खीचि देबाक उदाहरण अछि।

प्रश्न 13265. बच्चा सभकेँ ब्लैकबोर्डक चित्र देखि की कहल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओकरे जकाँ चित्र बनाउ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओकरे जकाँ चित्र बनाउ।
व्याख्या: शिक्षकक आदेश होइत अछि जे एकरा देखि चित्र बनबै जाऊ।

प्रश्न 13266. गार्जियन सभ बच्चाक कॉपी भरल देखि कोना अनुभव करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रसन्न होइत छथि।
उत्तर: घ. प्रसन्न होइत छथि।
व्याख्या: स्रोतमे गार्जियन कॉपी भरल देखि पढ़ाइ होइत अछि मानि प्रसन्न होइत छथि।

प्रश्न 13267. ब्लैकबोर्डपर बनल चित्र लेखकक अनुसार ककर दिमागक प्रतिमा अछि?
क. वयस्कक दिमागक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वयस्कक दिमागक।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे ब्लैकबोर्डक चित्र वयस्कक दिमागक प्रतिमा अछि।

प्रश्न 13268. लेखक ककर दिमागमे वयस्क प्रतिमा स्थापित करबाक विरोध करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नेन्ना सभक दिमागमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नेन्ना सभक दिमागमे।
व्याख्या: स्रोतमे नेन्ना सभक दिमागमे ओहि प्रतिमा स्थापित करबाक धड़फड़ीक आलोचना अछि।

प्रश्न 13269. बच्चा सभक दिमागमे की हेबाक चाही, लेखकक मत अनुसार?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओकर अपन प्रतिमा/बिम्ब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओकर अपन प्रतिमा/बिम्ब।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे बच्चाक विकास-क्रमक अनुरूप ओकर अपनो प्रतिमा हेबे करत।

प्रश्न 13270. अपन प्रतिमा सोझा अनबाक प्रयास किएक जरूरी अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. स्वतंत्र विकास लेल।
उत्तर: घ. स्वतंत्र विकास लेल।
व्याख्या: लेखक बच्चाक अपन बिम्ब आ स्वतंत्र विकास पर जोर दैत छथि।

प्रश्न 13271. कला-शिक्षाक मूल दोष एहि खण्डमे की देखाएल गेल?
क. अनुकरणकेँ सृजनशीलता बुझब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनुकरणकेँ सृजनशीलता बुझब।
व्याख्या: ब्लैकबोर्डक नकल बाल-सृजन पर वयस्क प्रतिमाक दबाव अछि।

प्रश्न 13272. खण्ड १३३२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ब्लैकबोर्डक नकल-पद्धति बच्चाक स्वतंत्र बिम्ब, व्यक्तित्व आ विकासक विरुद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ब्लैकबोर्डक नकल-पद्धति बच्चाक स्वतंत्र बिम्ब, व्यक्तित्व आ विकासक विरुद्ध अछि।
व्याख्या: लेखक कला-शिक्षामे अनुकरणक बदला आत्म-प्रकटन चाहैत छथि।

खण्ड १३३३ : विदेह-सदेह २ — फुजल छत्ता, मिती आ बाल-चित्रक “गलती”

प्रश्न 13273. लेखक उदाहरण लेल कोन वस्तुक चित्रक बात करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. फुजल छत्ता।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. फुजल छत्ता।

व्याख्या: स्रोतमे शिक्षक फुजल छत्ताक चित्र बनबैत छथि।

प्रश्न 13274. ब्लैकबोर्डपर बनल फुजल छत्ता सामान्यतः कोन आकारक देखाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अर्धगोल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अर्धगोल।

व्याख्या: लेखक भौमितिक आकारक अनुरूप अर्धगोल देखाइत कहैत छथि।

प्रश्न 13275. छोट बच्चाक मानस पटलपर कोन बात स्पष्ट नहि भेल रहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भौमितिक मिती/डाइमेंशन।

उत्तर: घ. भौमितिक मिती/डाइमेंशन।

व्याख्या: स्रोतमे बच्चाक दिमागमे मितीक अंतर स्पष्ट नहि होएबाक बात अछि।

प्रश्न 13276. मितीक अंतर बच्चाक दिमागमे कखन स्पष्ट भऽ सकैत अछि?

क. पचमा-छठमा दर्जामे भूमिति पढ़लाक बाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पचमा-छठमा दर्जामे भूमिति पढ़लाक बाद।

व्याख्या: लेखक पचमा-छठमा दर्जामे भूमिति पढ़ाएल जाए तँ मिती स्पष्ट होएबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 13277. वयस्क शिक्षक अपन चित्रसँ तुलना कऽ बच्चाक चित्रमे की करऽ लगैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गलती सुधारऽ लगैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गलती सुधारऽ लगैत छथि।

व्याख्या: स्रोतमे शिक्षक अपन चित्रक तुलनामे बच्चाक गलती सुधारबाक बात अछि।

प्रश्न 13278. एहि सुधारसँ बच्चाक भीतर की शुरू भऽ जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. घोंघाउज/कन्फ्यूजन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. घोंघाउज/कन्फ्यूजन।

व्याख्या: लेखक कहैत छथि बच्चा भीतर-भीतर घोंघाउजमे पड़ैत अछि।

प्रश्न 13279. बच्चा किएक भ्रमित होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओकरा जनिते ओहो वएह चित्र बनौने अछि।
उत्तर: घ. ओकरा जनिते ओहो वएह चित्र बनौने अछि।
व्याख्या: बच्चाक दृष्टिमे ओ वएह चित्र बनौने रहैत अछि, तैं गलती बुझि नहि पबैत।

प्रश्न 13280. लेखकक अनुसार बच्चाक चित्र वयस्कक चित्रसँ भिन्न भऽ सकैत अछि, मुदा की नहि?
क. गलत नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गलत नहि।
व्याख्या: स्रोतमे बच्चाक चित्र भिन्न होइतो गलत नहि भऽ सकैत कहल अछि।

प्रश्न 13281. बाल-चित्रक प्रति लेखकक मुख्य दृष्टि की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. देखबाक नहि, पढ़बाक वस्तु।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. देखबाक नहि, पढ़बाक वस्तु।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि नेन्ना सभक चित्र देखबाक नहि पढ़बाक वस्तु होइत अछि।

प्रश्न 13282. खण्ड १३३३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बच्चाक चित्रमे वयस्कक मापदंड लागू कएलासँ भ्रम उपजैत अछि; बाल-चित्र पढ़बाक चाही, दोष ठहरएबाक नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बच्चाक चित्रमे वयस्कक मापदंड लागू कएलासँ भ्रम उपजैत अछि; बाल-चित्र पढ़बाक चाही, दोष ठहरएबाक नहि।
व्याख्या: छत्ता उदाहरण मिती, भ्रम आ बाल-दृष्टिक फर्क बुझबैत अछि।

खण्ड १३३४ : विदेह-सदेह २ — स्वतंत्र बिम्ब, आत्मविश्वास आ कला-शिक्षाक उद्देश्य

प्रश्न 13283. लेखक ब्लैकबोर्डपर चित्र बना कऽ पढ़एबाक कोन परिणाम मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नेन्ना सभक स्वतंत्र सोचपर अन्याय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नेन्ना सभक स्वतंत्र सोचपर अन्याय।
व्याख्या: स्रोतमे ई पद्धति स्वतंत्र सोचपर अन्याय कहल गेल।

प्रश्न 13284. एहन पद्धति बच्चाकेँ कोना बनबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आश्रित।
उत्तर: घ. आश्रित।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे ई बच्चाकेँ आश्रित बनेनाइ भेल।

प्रश्न 13285. लेखक कोन पद्धतिमे अधिक विश्वास राखैत छथि?
क. विषयपर नेन्ना सभक स्तरपर चर्चा कऽ प्रेरित करबामे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विषयपर नेन्ना सभक स्तरपर चर्चा कऽ प्रेरित करबामे।
व्याख्या: स्रोतमे लेखक योजना-विषयपर बच्चाक स्तरपर चर्चा आ प्रेरणा पर जोर दैत छथि।

प्रश्न 13286. बच्चाक मानस पटलपर विषयक सम्बन्धमे की बनबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओकर अपन स्वतंत्र बिम्ब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओकर अपन स्वतंत्र बिम्ब।
व्याख्या: लेखक चाहैत छथि जे बच्चाक अपन स्वतंत्र बिम्ब बनौ।

प्रश्न 13287. बच्चाक चित्र वयस्क दृष्टिएँ बेढब वा आकारहीन भेलहुँ लेखक की देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओहिमे बच्चाक व्यक्तित्व।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओहिमे बच्चाक व्यक्तित्व।
व्याख्या: स्रोतमे बेढब, आकारहीन, मितिहीन चित्रमे सेहो अपन व्यक्तित्व हेबाक बात अछि।

प्रश्न 13288. स्वतंत्र चित्र बच्चामे की बढ़बैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आत्मविश्वास।
उत्तर: घ. आत्मविश्वास।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे एहिसँ ओकर आत्मविश्वास बढ़तैक।

प्रश्न 13289. एहि स्तरपर चित्रकला पढ़एबाक मूल उद्देश्य की अछि?
क. चित्रकार बनएब नहि, विषयप्रति आत्मीयता उत्पन्न करब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चित्रकार बनएब नहि, विषयप्रति आत्मीयता उत्पन्न करब।
व्याख्या: स्रोतमे लेखक चित्रकार बनेनाइ नहि, आत्मीयता उत्पन्न करब मुख्य उद्देश्य कहैत छथि।

प्रश्न 13290. एहि विषयक माध्यमसँ बच्चामे कोन क्षमता पर आस्था जागृत कएल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नवनिर्माणक क्षमता।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नवनिर्माणक क्षमता।
व्याख्या: लेखक नवनिर्माणक क्षमतापर आस्था जागरणक बात करैत छथि।

प्रश्न 13291. बच्चाक चित्रसँ अति अपेक्षा लेखककेँ की बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपराध।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपराध।
व्याख्या: स्रोतमे नेन्ना सभक चित्रमे एहिसँ अधिक अपेक्षा अपराध बुझाइत अछि।

प्रश्न 13292. खण्ड १३३४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कला-शिक्षाक उद्देश्य बच्चाक स्वतंत्र बिम्ब, आत्मीयता, आत्मविश्वास आ नवनिर्माणक क्षमता जगाएब अछि।
उत्तर: घ. कला-शिक्षाक उद्देश्य बच्चाक स्वतंत्र बिम्ब, आत्मीयता, आत्मविश्वास आ नवनिर्माणक क्षमता जगाएब अछि।
व्याख्या: लेखक अनुकरणक बदला स्वतंत्र सृजनशील विकासकेँ मूल मानैत छथि।

खण्ड १३३५ : विदेह-सदेह २ — मुर्गी-अंडा, प्राकृतिक यथार्थ आ एक्स-रे दृष्टि

प्रश्न 13293. लेखक बच्चाक चित्र-विचार बुझएबाक लेल कोन ठोस उदाहरण दैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मुर्गीक पेटमे अंडा देखेबाक।
उत्तर: घ. मुर्गीक पेटमे अंडा देखेबाक।
व्याख्या: स्रोतमे बच्चा मुर्गीक पेटमे अंडा बनबैत अछि।

प्रश्न 13294. साधारणतः बच्चा सभकेँ की बनाबऽ कहल जाइत अछि?
क. मुर्गीक चित्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मुर्गीक चित्र।
व्याख्या: लेखक मुर्गीक चित्र बनबएबाक उदाहरण दैत छथि।

प्रश्न 13295. बच्चा मुर्गीक पेटमे की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अंडा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अंडा।
व्याख्या: स्रोतमे मुर्गीक पेटमे अंडा देखेबाक उदाहरण अछि।

प्रश्न 13296. वयस्क लोक एहि चित्रकेँ देखि कोना प्रतिक्रिया दैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गुम भऽ जाइत छथि आ गलती बुझाबऽ लगैत छथि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गुम भऽ जाइत छथि आ गलती बुझाबऽ लगैत छथि।
व्याख्या: लेखक तथाकथित संस्कारग्रस्त लोकक प्रतिक्रिया वर्णित करैत छथि।

प्रश्न 13297. लेखकक अनुसार आठ-दस साल धरि बच्चाक दृष्टि कोना रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्राकृतिक यथार्थ दृष्टि।
उत्तर: घ. प्राकृतिक यथार्थ दृष्टि।
व्याख्या: स्रोतमे आठ-दस साल धरि यथार्थ दृष्टि प्राकृतिक रूपसँ भेटबाक बात अछि।

प्रश्न 13298. एहि दृष्टिकेँ दोसर शब्दमे की कहल जा सकैत अछि?
क. एक्स-रे दृष्टि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एक्स-रे दृष्टि।
व्याख्या: लेखक दोसर शब्दमे “एक्स रे” दृष्टि कहैत छथि।

प्रश्न 13299. बच्चा वस्तुकेँ कोना देख सकैत अछि, लेखकक शब्दमे?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आर-पार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आर-पार।
व्याख्या: स्रोतमे वस्तुकेँ आर-पार देख सकबाक बात अछि।

प्रश्न 13300. मुर्गी अंडा दैत अछि, ई सोच बच्चाकेँ कतय अंडा देखबए लऽ जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पेटमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पेटमे।
व्याख्या: लेखक बच्चाक तर्क-श्रृंखला मुँहसँ खाएल अन्न पेटमे जाइत अछि सँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 13301. वैज्ञानिक सत्य बच्चाकेँ कखन स्पष्ट होएत, लेखकक मतानुसार?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उम्र बढ़त, ऊपरका दर्जामे जाएत तखन।
उत्तर: घ. उम्र बढ़त, ऊपरका दर्जामे जाएत तखन।
व्याख्या: स्रोतमे बच्चाक उम्र आ दर्जा बढ़लाक बाद वैज्ञानिक सत्य स्पष्ट होएबाक बात अछि।

प्रश्न 13302. खण्ड १३५क सार की अछि?
क. मुर्गीक पेटमे अंडा बाल-तर्कक गलती नहि, प्राकृतिक यथार्थ, स्मरण आ प्रतीकात्मक दृष्टिक परिणाम अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मुर्गीक पेटमे अंडा बाल-तर्कक गलती नहि, प्राकृतिक यथार्थ, स्मरण आ प्रतीकात्मक दृष्टिक परिणाम अछि।
व्याख्या: लेखक बच्चाक चित्रकेँ सुधारबाक बदला ओकर दृष्टिकोण पढ़बाक आग्रह करैत छथि।

खण्ड १३३६ : विदेह-सदेह २ — पहिल भागक उपसंहार: दखल बन्द आ मानसिक विकास

प्रश्न 13303. मुर्गी-अंडा प्रसंगमे लेखक शिक्षक आ गार्जियन पर कोन आरोप करैत छथि?

क. अपन कल्पना बच्चापर लादबाक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन कल्पना बच्चापर लादबाक।

व्याख्या: स्रोतमे शिक्षक-गार्जियन अपन कल्पना लादि बच्चाक दृष्टि कुंठित करैत छथि।

प्रश्न 13304. अपन कल्पना लादलासँ बच्चाक कोन क्षमता कुंठित होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्राकृतिक यथार्थ, तार्किक दृष्टिकोण आ स्मरणशक्ति।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्राकृतिक यथार्थ, तार्किक दृष्टिकोण आ स्मरणशक्ति।

व्याख्या: लेखक एहि तीनू विकासकेँ कुंठित होएबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 13305. एखन शिक्षकक उद्देश्य की होबाक चाही?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बच्चा निडरतासँ अपना आपकेँ व्यक्त करए।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बच्चा निडरतासँ अपना आपकेँ व्यक्त करए।

व्याख्या: लेखक स्पष्ट कहैत छथि जे एखन उद्देश्य निडरतासँ अभिव्यक्ति होय।

प्रश्न 13306. लेखक सभाक उपसंहारमे की कहलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बच्चाक चित्रमे दखल बन्द कएल दिनसँ मानसिक विकास शुरू होएत।

उत्तर: घ. बच्चाक चित्रमे दखल बन्द कएल दिनसँ मानसिक विकास शुरू होएत।

व्याख्या: स्रोतक उपसंहारमे ई स्पष्ट निष्कर्ष देल अछि।

प्रश्न 13307. चित्रमे दखल बन्द करबाक आग्रह ककरा सम्बोधित अछि?

क. अभिभावक आ शिक्षक सभकेँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिभावक आ शिक्षक सभकेँ।

व्याख्या: लेखक “अपने सभ” कहि दखल बन्द करबाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 13308. पहिल भागमे कला-शिक्षाक मुख्य भूमिका की बनि कऽ अबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बाल-मनक स्वतंत्र अभिव्यक्ति आ विकासक साधन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बाल-मनक स्वतंत्र अभिव्यक्ति आ विकासक साधन।

व्याख्या: पूरा पहिल भाग एहि निष्कर्ष धरि जाइत अछि।

प्रश्न 13309. बच्चाक चित्र “गलती” नहि, की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अन्तरंग दृष्टिक अभिव्यक्ति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अन्तरंग दृष्टिक अभिव्यक्ति।
व्याख्या: लेखक चित्रकेँ पढ़बाक वस्तु आ बाल-दृष्टिक संकेत मानैत छथि।

प्रश्न 13310. अभिभावक-विरोध लेखक लेल कोन अवसर बनल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शिक्षा-पद्धतिक मूल दोष बुझएबाक अवसर।
उत्तर: घ. शिक्षा-पद्धतिक मूल दोष बुझएबाक अवसर।
व्याख्या: मुख्याध्यापकक बैठकसँ लेखक शिक्षा-विचार खोलैत छथि।

प्रश्न 13311. पहिल भागक तर्कक केन्द्रमे कोन विषय अछि?
क. चित्रकला द्वारा आत्म-प्रगटीकरण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चित्रकला द्वारा आत्म-प्रगटीकरण।
व्याख्या: कागज, रंग-छाप, ब्लैकबोर्ड आ मुर्गी उदाहरण एहि तर्ककेँ पुष्ट करैत अछि।

प्रश्न 13312. खण्ड १३३६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पहिल भाग दखल-मुक्त चित्रकला, निडर आत्म-अभिव्यक्ति आ बाल-मानसिक विकासक पक्षमे समाप्त होइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पहिल भाग दखल-मुक्त चित्रकला, निडर आत्म-अभिव्यक्ति आ बाल-मानसिक विकासक पक्षमे समाप्त होइत अछि।
व्याख्या: उपसंहारमे दखल बन्द करबाक दिनसँ विकास शुरू होएबाक बात अछि।

खण्ड १३३७ : विदेह-सदेह २ — दोसरा भाग: मास्टरी छोड़ब आ झुग्गी-बस्ती स्कूल

प्रश्न 13313. दोसरा भागक आरम्भमे लेखक कतेक बरखमे मास्टरीसँ ऊबि गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दुइये बरखमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दुइये बरखमे।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि दुइये बरखमे मास्टरीसँ मोन उपटि गेल।

प्रश्न 13314. नोकरी छोड़िते लेखककेँ की भावना रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्कूल नहि, अपन सिखबाक प्रयोगशाला छोड़ि रहल छी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्कूल नहि, अपन सिखबाक प्रयोगशाला छोड़ि रहल छी।
व्याख्या: स्रोतमे लेखक स्कूलकेँ अपन सिखबाक प्रयोगशाला मानैत छथि।

प्रश्न 13315. पुरना स्कूलक कोन व्यक्ति लेखककेँ नब स्कूलक सूचना देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. एक गोट अभिन्न स्टाफ।
उत्तर: घ. एक गोट अभिन्न स्टाफ।
व्याख्या: लेखकक पुरना स्कूलक एक अभिन्न स्टाफ हुनका भेटि सूचना देलनि।

प्रश्न 13316. नब स्कूल कतय खुलि रहल छल?
क. एक झुग्गी-बस्तीमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एक झुग्गी-बस्तीमे।
व्याख्या: स्रोतमे झुग्गी बस्तीमे स्कूल खुलबाक बात अछि।

प्रश्न 13317. ओहि स्कूलक विशेषता की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जे विद्यार्थी आन स्कूलमे एडमिशन नहि पबैत, तकरा एडमिशन देब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जे विद्यार्थी आन स्कूलमे एडमिशन नहि पबैत, तकरा एडमिशन देब।
व्याख्या: स्रोतमे एहन विद्यार्थीकेँ प्रवेश देबाक ध्येय बताओल गेल।

प्रश्न 13318. लेखक एहि स्कूलक ध्येयकेँ कोना देखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ध्यान देबऽ योग्य।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ध्यान देबऽ योग्य।
व्याख्या: लेखक गप्पकेँ ध्यान देबऽ योग्य कहैत छथि।

प्रश्न 13319. लेखक फेर मास्टरीमे किएक संकोच करैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओहि रूटीनमे फेर फँसऽ नहि चाहैत छलाह।
उत्तर: घ. ओहि रूटीनमे फेर फँसऽ नहि चाहैत छलाह।
व्याख्या: स्रोतमे लेखक फेरसँ रूटीनमे फँसए नहि चाहबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 13320. लेखक तुरन्त वचन देलनि कि नहि?
क. नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि।
व्याख्या: लेखक तत्काल कोनो वचन नहि देलनि।

प्रश्न 13321. ई प्रसंग कोन सालक आसपासक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १९८१-८२।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १९८१-८२।
व्याख्या: स्रोतमे ई १९८१-८२ क गप्प कहल अछि।

प्रश्न 13322. खण्ड १३३७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लेखक मास्टरी छोड़लाक बादो शिक्षण-प्रयोगक खिंचावसँ झुग्गी-बस्ती स्कूलक चुनौती दिस आकृष्ट होइत छथि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लेखक मास्टरी छोड़लाक बादो शिक्षण-प्रयोगक खिंचावसँ झुग्गी-बस्ती स्कूलक चुनौती दिस आकृष्ट होइत छथि।
व्याख्या: दोसरा भाग नब प्रयोगशालाक प्रवेशद्वार खोलैत अछि।

खण्ड १३३८ : विदेह-सदेह २ — झुग्गी-बस्ती स्कूलक कठिन वातावरण आ साहसी मुख्याध्यापक

प्रश्न 13323. लेखक नब मुख्याध्यापकसँ भेंट करबाक निर्णय किएक लेलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शिष्टाचारक धर्म बुझि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शिष्टाचारक धर्म बुझि।
व्याख्या: स्रोतमे शिष्टाचारक धर्म बुझि भेंट करबाक निर्णय अछि।

प्रश्न 13324. मुख्याध्यापकक कथा-वार्तासँ लेखक पर की प्रभाव पड़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बड्डु प्रभावित भेलाह।
उत्तर: घ. बड्डु प्रभावित भेलाह।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे हुनक कथा-वार्तासँ बड्डु प्रभावित भेलहुँ।

प्रश्न 13325. लेखक ऑफर कोना स्वीकार कएलनि?
क. ट्रायल बेसिसपर किछु दिन लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ट्रायल बेसिसपर किछु दिन लेल।
व्याख्या: स्रोतमे ट्रायल बेसिसपर ऑफर स्वीकार करबाक बात अछि।

प्रश्न 13326. एहिबेर लेखकक नियुक्ति कोन दर्जा लेल भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. माध्यमिक दर्जा, पँचमा सँ दसमा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. माध्यमिक दर्जा, पँचमा सँ दसमा।
व्याख्या: स्रोतमे पँचमा सँ दसमा दर्जा हेतु नियुक्ति बताओल अछि।

प्रश्न 13327. झुग्गी-बस्ती स्कूलमे कोन अपराध सभ बेरोकटोक चलैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दारू बनेनाइ-बेचनाइ-पिनाइ आ जूआ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दारू बनेनाइ-बेचनाइ-पिनाइ आ जूआ।
व्याख्या: लेखक दारू आ जूआकेँ साधारण गप्प बतबैत छथि।

प्रश्न 13328. स्कूलक वातावरणमे दुर्गन्धिक कारण की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बस्ती अस्वच्छता आ दारूक गंध।
उत्तर: घ. बस्ती अस्वच्छता आ दारूक गंध।
व्याख्या: स्रोतमे अस्वच्छता आ दारूक गंधसँ नाक नहि देल जाइत कहल अछि।

प्रश्न 13329. स्कूलक खिड़कीक नीचाँ की चलैत छल?
क. जूआक दाँव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जूआक दाँव।
व्याख्या: स्रोतमे खिड़कीक निच्चा जुआक दाँव लगबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13330. मुख्याध्यापक एहि असामाजिक गतिविधिसँ कोना निपटैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लाठी लऽ खिहारि-खिहारि भगबैत छलाह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लाठी लऽ खिहारि-खिहारि भगबैत छलाह।
व्याख्या: लेखक मुख्याध्यापकक निडर व्यवहार वर्णित करैत छथि।

प्रश्न 13331. लेखक मुख्याध्यापकक साहसकेँ की कहल जएबाक चाही मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तपस्या।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तपस्या।
व्याख्या: स्रोतमे एहि साहसकेँ तपस्या कहल जएबाक चाही कहल अछि।

प्रश्न 13332. खण्ड १३३८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रतिकूल बस्ती-परिवेशमे मुख्याध्यापकक निर्भीक शिक्षा-सेवा लेखककेँ नब अनुभवक दिस आकर्षित करैत अछि।
उत्तर: घ. प्रतिकूल बस्ती-परिवेशमे मुख्याध्यापकक निर्भीक शिक्षा-सेवा लेखककेँ नब अनुभवक दिस आकर्षित करैत अछि।
व्याख्या: स्कूलक जोखिम आ मुख्याध्यापकक तपस्या एहि खण्डक केन्द्र अछि।

खण्ड १३३९ : विदेह-सदेह २ — टाइम-टेबुल, विषय-क्रम आ स्कूल-मशीनक रूपक

प्रश्न 13333. स्कूल टाइम-टेबुलमे “चित्रकला” सामान्यतः कोन विषय मानल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगह भरऽ बला विषय।

उत्तर: घ. जगह भरऽ बला विषय।

व्याख्या: लेखक चित्रकला केँ Filter/जगह भरबला विषय कहैत छथि।

प्रश्न 13334. टाइम-टेबुलमे सभसँ अग्रिम स्थान कोन विषय पबैत अछि?

क. गणित।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गणित।

व्याख्या: स्रोतमे गणित/हिसाबकेँ पहिल स्थान देल गेल अछि।

प्रश्न 13335. गणितक बाद कोन विषयक मान देल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विज्ञान।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विज्ञान।

व्याख्या: लेखक दोसर मान विज्ञानक बतबैत छथि।

प्रश्न 13336. भाषामे पहिल स्थान लेखकक अनुसार ककरा देल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अंग्रेजीकेँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अंग्रेजीकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे भाषाक्रममे अंग्रेजीक स्थान प्रथम कहल अछि।

प्रश्न 13337. मातृभाषा टाइम-टेबुलमे अंग्रेजीक बाद कतय अबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अंग्रेजीक बाद, द्वितीय भाषा सँ पहिने।

उत्तर: घ. अंग्रेजीक बाद, द्वितीय भाषा सँ पहिने।

व्याख्या: लेखक मातृभाषाकेँ अंग्रेजीक बाद राखल देखबैत छथि।

प्रश्न 13338. इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्रकेँ कोना फिट कएल जाइत अछि?

क. कोनहुना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोनहुना।

व्याख्या: स्रोतमे चारिम स्थानपर इतिहास-भूगोल-नागरिक शास्त्र कोनहुना फिट कएल जाइत अछि।

प्रश्न 13339. कार्य-अनुभव, हस्तकला, चित्रकला, पी.टी. आदि ककरा अन्तर्गत देखाएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पॉलिसी मैटरबला विषय।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पॉलिसी मैटरबला विषय।
व्याख्या: लेखक एहि विषयसभकेँ पॉलिसी मैटरबला विषय कहैत छथि।

प्रश्न 13340. पी.टी. केँ लेखक कोन टिप्पणीसँ जोड़ैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. खेलक नामपर शहीद कएल जाइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. खेलक नामपर शहीद कएल जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे पी.टी. “खेल” नामपर शहीद होएबाक व्यंग्य अछि।

प्रश्न 13341. लेखक आजुक स्कूलकेँ कोन मशीन-जकाँ बुझैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विद्यार्थी बनाबऽ बला बड़का मशीन।
उत्तर: घ. विद्यार्थी बनाबऽ बला बड़का मशीन।
व्याख्या: आटा-मशीन रूपकसँ स्कूलक यांत्रिकता देखाओल गेल अछि।

प्रश्न 13342. खण्ड १३३९क सार की अछि?
क. टाइम-टेबुलक विषय-क्रम सृजनशील विषयक अवमूल्यन आ स्कूलक यांत्रिकता उजागर करैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. टाइम-टेबुलक विषय-क्रम सृजनशील विषयक अवमूल्यन आ स्कूलक यांत्रिकता उजागर करैत अछि।
व्याख्या: लेखक शिक्षा-पद्धतिकेँ आटा-पीसऽ मशीनसँ तुलना करैत छथि।

खण्ड १३४० : विदेह-सदेह २ — तनाव, आराम आ सृजनशील विषयक संतुलन

प्रश्न 13343. लेखकक अनुसार त्रुटि दृष्टिकोणमे अछि कि कार्यान्वयनमे?
क. कार्यन्वयनमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कार्यन्वयनमे।
व्याख्या: स्रोतमे त्रुटि दृष्टिकोणमे नहि, कार्यान्वयनमे कहल गेल।

प्रश्न 13344. लेखक पॉलिसी मैटरबला विषयसभकेँ कतेक श्रेणीमे राखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दू श्रेणीमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दू श्रेणीमे।
व्याख्या: स्रोतमे एहि विषयसभकेँ दू गोट श्रेणीमे रखबाक बात अछि।

प्रश्न 13345. पहिल श्रेणी कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दिमागमे तनाव पैदा करऽ बला विषय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दिमागमे तनाव पैदा करऽ बला विषय।
व्याख्या: लेखक पहिल श्रेणी तनाव उत्पन्न करबला विषय कहैत छथि।

प्रश्न 13346. दोसर श्रेणी कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दिमागी तनावकेँ ढील देबऽ बला विषय।
उत्तर: घ. दिमागी तनावकेँ ढील देबऽ बला विषय।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर श्रेणी Relax करबला विषय कहल अछि।

प्रश्न 13347. मुख्य विषयसभ कोन प्रकारक ज्ञान दैत अछि?
क. सिद्धान्तक व्याकरणक ज्ञान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सिद्धान्तक व्याकरणक ज्ञान।
व्याख्या: लेखक मुख्य विषयसभमे सिद्धान्तक व्याकरणक ज्ञान देखैत छथि।

प्रश्न 13348. मुख्य विषयमे शरीर आ दिमागक अवस्था कोना रहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शरीर स्थिर, दिमागी एकाग्रता- सतर्कता चरम पर।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शरीर स्थिर, दिमागी एकाग्रता- सतर्कता चरम पर।
व्याख्या: स्रोतमे मुख्य विषयक दबाव एहि रूपमे वर्णित अछि।

प्रश्न 13349. हस्तकला, चित्रकला, संगीत, कार्यानुभव, खेल मे की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नवनिर्मितिक आनन्द।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नवनिर्मितिक आनन्द।
व्याख्या: लेखक एहि विषयसभमे नवनिर्मितिक आनन्द कहैत छथि।

प्रश्न 13350. सृजनशील/गतिशील विषय तनाव पर की प्रभाव डालैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तनाव आ दबावकेँ ढील देबामे मदति।
उत्तर: घ. तनाव आ दबावकेँ ढील देबामे मदति।
व्याख्या: स्रोतमे एहि विषयसभसँ तनाव ढील होएबाक बात अछि।

प्रश्न 13351. टाइम-टेबुलमे विषयसभकेँ कोना बाँधबाक चाही?
क. तनाव आ आरामक संतुलन बनल रहए।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तनाव आ आरामक संतुलन बनल रहए।
व्याख्या: लेखक दुनू तरहक विषयकेँ समतोल राखि बाँधबाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 13352. खण्ड १३४०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शिक्षा-योजनामे बौद्धिक दबाव आ सृजनशील विश्रामक संतुलन बच्चाक क्षमता बढ़बैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शिक्षा-योजनामे बौद्धिक दबाव आ सृजनशील विश्रामक संतुलन बच्चाक क्षमता बढ़बैत अछि।
व्याख्या: लेखक तनाव-पश्चात तनावमुक्त विषयक योजना चाहैत छथि।

खण्ड १३४१ : विदेह-सदेह २ — शिक्षक-अभाव, विषय-क्षतिपूर्ति आ अर्थशास्त्र पढ़ेनाइ

प्रश्न 13353. झुग्गी-बस्ती स्कूलमे शिक्षकक कमी किएक बनल रहैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कठिन वातावरणमे टिकब कठिन छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कठिन वातावरणमे टिकब कठिन छल।
व्याख्या: स्रोतमे एहन वातावरणमे के टिकए प्रश्नसँ शिक्षकक कमी बुझाओल अछि।

प्रश्न 13354. शिक्षक नियुक्तिमे कोन व्यवस्था आर अड़चन पैदा करैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कोटा पद्धति।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कोटा पद्धति।
व्याख्या: लेखक कोटा पद्धतिसँ शिक्षक नियुक्ति आर अड़चन पैदा होएबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 13355. विषयक शिक्षक नहि भेटलासँ की कएल जाइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आपसमे एडजस्ट कऽ विषय पढ़ाओल जाइत छल।
उत्तर: घ. आपसमे एडजस्ट कऽ विषय पढ़ाओल जाइत छल।
व्याख्या: स्रोतमे आपसमे कहुना एडजस्ट करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13356. लेखककेँ बेगरतू कक्षामे किएक पठाओल जाइत छल?
क. आन शिक्षकक क्षतिपूर्ति लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आन शिक्षकक क्षतिपूर्ति लेल।
व्याख्या: लेखक शिक्षकक क्षतिपूर्ति करबाक लेल कक्षामे पठाओल जाइत छलाह।

प्रश्न 13357. लेखक ई स्थिति कोना लैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एक गोट मौका बूझि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एक गोट मौका बूझि।
व्याख्या: स्रोतमे लेखक एकरा मौका बूझि टाइम-टेबुलक विषय पढ़ाबऽ लगैत छथि।

प्रश्न 13358. लेखक कतहु-कतहु कोन-कोन विषय पढ़ौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अंग्रेजी, मराठी, हिन्दी आ आन विषय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अंग्रेजी, मराठी, हिन्दी आ आन विषय।
व्याख्या: स्रोतमे कतहु अंग्रेजी, कतहु मराठी, कतहु हिन्दी पढ़ाएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13359. ए.टी.डी.क बाद लेखक कोन कॉलेजसँ बी.ए. कएने रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रुपारेल कॉलेजसँ।
उत्तर: घ. रुपारेल कॉलेजसँ।
व्याख्या: लेखक रुपारेल कॉलेजसँ बी.ए. कएबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 13360. लेखकक बी.ए. विषय की छल?
क. अर्थशास्त्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अर्थशास्त्र।
व्याख्या: स्रोतमे बी.ए. अर्थशास्त्र लऽ कएने रहबाक बात अछि।

प्रश्न 13361. दसमा वर्गमे कोन विषय पढ़एबाक जिम्मा लेखककेँ देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अर्थशास्त्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अर्थशास्त्र।
व्याख्या: लेखक दसमा वर्गक अर्थशास्त्र पढ़एबाक जिम्मा पओलनि।

प्रश्न 13362. खण्ड १३४१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कठिन स्कूल-परिस्थितिमे शिक्षक-अभाव लेखककेँ विविध विषय पढ़एबाक अवसर आ शिक्षण-प्रयोगक मैदान दैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कठिन स्कूल-परिस्थितिमे शिक्षक-अभाव लेखककेँ विविध विषय पढ़एबाक अवसर आ शिक्षण-प्रयोगक मैदान दैत अछि।
व्याख्या: शिक्षक-अभाव, एडजस्टमेंट आ अर्थशास्त्र पढ़ेनाइ एहि खण्डक आधार अछि।

खण्ड १३४२ : विदेह-सदेह २ — रुचि-सिद्धान्त, फेल विद्यार्थी आ दत्तक प्रयोग

प्रश्न 13363. लेखकक मनमे एकदिन कोन प्रश्न उठल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एके कक्षामे एक विद्यार्थी प्रथम आ दोसर फेल किएक?
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एके कक्षामे एक विद्यार्थी प्रथम आ दोसर फेल किएक?
व्याख्या: स्रोतमे एकहि कक्षाक विपरीत परिणामक प्रश्न उठाओल अछि।

प्रश्न 13364. फेल विद्यार्थी कोनो विषयमे नीक अंक आ कोनोमे खराब किएक आनैत अछि, एहि पर लेखक की बुझलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रुचि/पसीनक भेद कारण भऽ सकैत अछि।
उत्तर: घ. रुचि/पसीनक भेद कारण भऽ सकैत अछि।
व्याख्या: लेखक जाहि विषयमे अधिक अंक, ओहिमे पसीन होएबाक बात सोचलनि।

प्रश्न 13365. जाहि विषयमे विद्यार्थी बेसी अंक आनैत अछि, ओहि विषयमे की रहैत अछि?
क. ओकरा पसिन्न किछु बात।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओकरा पसिन्न किछु बात।
व्याख्या: स्रोतमे ओहि विषयमे ओकर पसीन रहबाक तर्क अछि।

प्रश्न 13366. लेखकक प्रयोगक मुख्य अनुमान की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एक विषयक रुचि दोसर विषयमे पैदा कऽ परिणाम बदलल जा सकैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एक विषयक रुचि दोसर विषयमे पैदा कऽ परिणाम बदलल जा सकैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे पसीन तकि दोसर विषयमे पैदा करबाक सम्भावना पूछल गेल।

प्रश्न 13367. तहिया कक्षा-विभाजन कोन अक्षरक्रमे कएल जाइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अ-ब-क-ड-ई आदि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अ-ब-क-ड-ई आदि।
व्याख्या: स्रोतमे अ, ब, क, ड, ई विभागक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13368. व्यवस्था अनुसार “अ-ब” विभागमे सामान्यतः के राखल जाइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नीक/पास होबऽ बला विद्यार्थी।
उत्तर: घ. नीक/पास होबऽ बला विद्यार्थी।
व्याख्या: स्रोतमे अ-ब मे बढ़िआँ पास विद्यार्थी राखबाक बात अछि।

प्रश्न 13369. बादक दर्जामे के सभ राखल जाइत छल?
क. भुसकौल, फेल होबऽ बला विद्यार्थी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भुसकौल, फेल होबऽ बला विद्यार्थी।
व्याख्या: स्रोतमे बादक विभागमे फेल विद्यार्थी राखबाक बात अछि।

प्रश्न 13370. लेखक कोन वर्गक चारि विद्यार्थी चुनलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आठमा “ड”क।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आठमा “ड”क।
व्याख्या: लेखक आठमा ड क चारि विद्यार्थी हेरि लेलनि।

प्रश्न 13371. ओ चारि विद्यार्थीक लेल लेखक कोन जिम्मा लेलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. परीक्षा-परिणाम बदलबाक मार्गदर्शन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. परीक्षा-परिणाम बदलबाक मार्गदर्शन।
व्याख्या: स्रोतमे चारि विद्यार्थीकेँ दत्तक लऽ परिणाम बदलबाक जिम्मा लेल गेल।

प्रश्न 13372. खण्ड १३४२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विद्यार्थीक रुचि चिन्हि ओकर परिणाम बदलबाक उद्देश्यसँ लेखक चारि कमजोर विद्यार्थीक दत्तक-मार्गदर्शन प्रयोग शुरू करैत छथि।
उत्तर: घ. विद्यार्थीक रुचि चिन्हि ओकर परिणाम बदलबाक उद्देश्यसँ लेखक चारि कमजोर विद्यार्थीक दत्तक-मार्गदर्शन प्रयोग शुरू करैत छथि।
व्याख्या: ई भाग रुचि, परिणाम आ व्यक्तिगत मार्गदर्शनक प्रयोग पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १३४३ : विदेह-सदेह २ — चित्रकला द्वारा मानसिकता-परीक्षण आ “हमर परिवार” चित्र

प्रश्न 13373. विद्यार्थी सभक मानसिकता परखबाक लेल लेखक कोन आधार बनौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चित्रकला।
उत्तर: घ. चित्रकला।
व्याख्या: स्रोतमे लेखक चित्रकलाकेँ विद्यार्थी मानसिकता परखबाक आधार बनबैत छथि।

प्रश्न 13374. प्रयोगक पराकाष्ठामे लेखककेँ कोन बात सभ भेटल?
क. आश्चर्यजनक बात सभ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आश्चर्यजनक बात सभ।
व्याख्या: स्रोतमे प्रयोगक पराकाष्ठामे आश्चर्यजनक गप्प पता लागबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13375. पँचमा दर्जाक एक विद्यार्थी चित्र बनए काल कॉपी कोना पकड़ैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ठाढ़/Vertical अवस्थामे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ठाढ़/Vertical अवस्थामे।
व्याख्या: लेखक एक विद्यार्थी कॉपी ठाढ़े पकड़ैत रहल कहैत छथि।

प्रश्न 13376. पहिने लेखक एहि बातकेँ कोना लेलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गम्भीरतासँ नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गम्भीरतासँ नहि।
व्याख्या: स्रोतमे पहिने गम्भीरतासँ नहि लऽ पओलाक बात अछि।

प्रश्न 13377. पुनरावृत्ति भेलाक बाद लेखक की कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रत्येक कृतिकेँ अध्ययनक विषय बना लेलनि।
उत्तर: घ. प्रत्येक कृतिकेँ अध्ययनक विषय बना लेलनि।
व्याख्या: लेखक जानि-बूझि प्रत्येक कृति अध्ययनक विषय बनबैत छथि।

प्रश्न 13378. लेखक विद्यार्थीकेँ कोन-कोन पक्षसँ देखलनि?
क. रचना, आकृति, रंगक चुनाव आ रंगबाक पद्धति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रचना, आकृति, रंगक चुनाव आ रंगबाक पद्धति।
व्याख्या: स्रोतमे एहि चारि पक्षक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13379. प्रयोगक चरम कोन विषयक चित्र पर आबि गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हमर परिवार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हमर परिवार।
व्याख्या: लेखक “हमर परिवार” विषय देबाक बाद चकित होएबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 13380. “हमर परिवार” चित्र लेखक पर कोन प्रभाव पाड़लक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जेना भक दऽ आँखि फोलि देलक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जेना भक दऽ आँखि फोलि देलक।
व्याख्या: स्रोतमे ई चित्र लेखकक आँखि फोलि देबाक रूपक अछि।

प्रश्न 13381. कॉपी ठाढ़ पकड़बाक पाछाँ लेखक कोन संकेत पढ़लनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जगहक संकोच।
उत्तर: घ. जगहक संकोच।
व्याख्या: स्रोतमे ठाढ़ आयताकार कागजसँ जगहक संकोच दिस ध्यान आकृष्ट करबाक बात अछि।

प्रश्न 13382. खण्ड १३४३क सार की अछि?
क. एक विद्यार्थी अपन कॉपी, रंग, संरचना आ “हमर परिवार” चित्रद्वारा अपना मानसिक संसारक संकेत देलक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एक विद्यार्थी अपन कॉपी, रंग, संरचना आ “हमर परिवार” चित्रद्वारा अपना मानसिक संसारक संकेत देलक।
व्याख्या: लेखक चित्रकलाकेँ मानसिक अध्ययनक साधन बनबैत छथि।

खण्ड १३४४ : विदेह-सदेह २ — परिवार-चित्रक अर्थ, सतमाय प्रसंग आ उपचारक सलाह

प्रश्न 13383. विद्यार्थी “हमर परिवार” चित्रमे कागजक भीतर की खींचने छल?
क. चारूकात एक-दू इंच छोड़ि ठाढ़ आयताकार रेघ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चारूकात एक-दू इंच छोड़ि ठाढ़ आयताकार रेघ।
व्याख्या: स्रोतमे कागजक भीतर आर एक ठाढ़ आयत बनाओल वर्णित अछि।

प्रश्न 13384. चित्रक परिपूर्णतामे ओ संरचना ककर जकाँ देखाइत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. डायनिंग टेबुल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. डायनिंग टेबुल।
व्याख्या: लेखक ओहि संरचनाकेँ डायनिंग टेबुल जकाँ देखलनि।

प्रश्न 13385. टेबुलक उपरका हिस्सामे के सभ चित्रित छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दू अल्पवयी नेन्नाक बीचमे एक वयस्क स्त्री।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दू अल्पवयी नेन्नाक बीचमे एक वयस्क स्त्री।
व्याख्या: स्रोतमे सम्भवत: माए आ भाएक छवि बताओल अछि।

प्रश्न 13386. निचलुका हिस्सामे की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. केवल एक गोट नेन्नाक आकार।
उत्तर: घ. केवल एक गोट नेन्नाक आकार।
व्याख्या: लेखक सम्भवत: ओ स्वयं छल कहैत छथि।

प्रश्न 13387. चित्रमे वयस्क पुरुषक अनुपस्थिति लेखककेँ कोन संकेत देलक?
क. परिवारसँ गाएब पिताक अस्तित्व।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. परिवारसँ गाएब पिताक अस्तित्व।
व्याख्या: स्रोतमे वयस्क पुरुषक अनुपस्थिति पिताक गाएब अस्तित्वसँ जोड़ल गेल।

प्रश्न 13388. टेबुलक दोसर कोनटाक एकसरि नेन्ना की देखबैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एकसरिपन/लोनलीनेस।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एकसरिपन/लोनलीनेस।
व्याख्या: लेखक एक गोट नेन्नाक आकारमे एकसरिपन देखैत छथि।

प्रश्न 13389. बापसँ गप्प भेलाक बाद परिवार-स्थितिक मूल दुख की उजागर भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पहिल पत्नीक मृत्यु, दोसर बियाह, आ सतमायक बदलल व्यवहार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पहिल पत्नीक मृत्यु, दोसर बियाह, आ सतमायक बदलल व्यवहार।
व्याख्या: स्रोतमे बच्चा नान्हि रहिते पहिल पत्नीक मृत्यु आ बादक परिस्थिति देल अछि।

प्रश्न 13390. नेन्ना धीरे-धीरे कोन भावसँ घेराइत गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. असुरक्षा।
उत्तर: घ. असुरक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे नेन्नाकेँ असुरक्षाक भाव घेरऽ लगलैक कहल अछि।

प्रश्न 13391. लेखक पिताकेँ पहिल उपाय रूपमे की सलाह देलनि?
क. घरबालीकेँ व्यवहारक परिणाम बुझाउ आ परिवार सहित किछु दिन बाहर घुमि आउ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. घरबालीकेँ व्यवहारक परिणाम बुझाउ आ परिवार सहित किछु दिन बाहर घुमि आउ।
व्याख्या: स्रोतमे सतमायकेँ बुझाएब, छुट्टी लऽ परिवार सहित बाहर जाएब सुझाव अछि।

प्रश्न 13392. खण्ड १३४४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बाल-चित्र परिवारक छिपल तनाव, असुरक्षा आ उपचारक दिशा खोलि सकैत अछि; चित्रकला सचमुच पढ़बाक वस्तु अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बाल-चित्र परिवारक छिपल तनाव, असुरक्षा आ उपचारक दिशा खोलि सकैत अछि; चित्रकला सचमुच पढ़बाक वस्तु अछि।
व्याख्या: अन्तिम प्रसंग चित्रकलाक प्रतीकात्मक भाषा आ उपचारात्मक सम्भावना प्रमाणित करैत अछि।

खण्ड १३४५ : विदेह-सदेह २ — परिवार-चित्रक रंग-पठन: उदासीनता, लाल रंग आ मरखाहा संकेत

प्रश्न 13393. गहिर-पाठमे परिवार-चित्रक रंग लगेनाइ कोना वर्णित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रंग जे भेटल, ओकरा पोछि-पाछि देल गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रंग जे भेटल, ओकरा पोछि-पाछि देल गेल।

व्याख्या: लेखक रंगक अनगढ़ प्रयोगकेँ मनोभावक संकेत मानैत छथि।

प्रश्न 13394. एहि रंग-प्रयोगमे वस्तु सभ प्रति कोन भाव प्रकट भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उदासीनता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उदासीनता।

व्याख्या: स्रोतमे रंग-व्यवहार प्रत्येक वस्तुप्रति उदासीनता प्रकट करैत अछि।

प्रश्न 13395. चित्रमे लाल रंगक मात्रा लेखककेँ कोना बुझाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किछु बेसी।

उत्तर: घ. किछु बेसी।

व्याख्या: लाल रंगक उपयोग प्रमाणमे अधिक बुझाएल कहलगेल अछि।

प्रश्न 13396. लाल रंगक अधिकता सँ लेखक कोन मनोवृत्ति पढ़लनि?

क. मरखाहा/आक्रामक प्रवृत्ति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मरखाहा/आक्रामक प्रवृत्ति।

व्याख्या: स्रोतमे लाल रंगक अधिकता कैं मरखाहा प्रवृत्तिक निदर्शक कहल गेल।

प्रश्न 13397. रंग-पठनमे लेखक सौन्दर्यक चर्चा करैत छथि कि मनोभावक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनोभावक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनोभावक।

व्याख्या: रंगक विश्लेषण सजावटक नहि, बच्चाक भीतरक स्थिति पढ़बाक प्रयत्न अछि।

प्रश्न 13398. रंगक पोछि-पाछि देनाइ ककर प्रति बालक उदासीनता सूचित करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. चित्रित वस्तु सभ प्रति।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. चित्रित वस्तु सभ प्रति।

व्याख्या: लेखक वस्तुप्रति उदासीनता स्पष्ट कहैत छथि।

प्रश्न 13399. एहि रंग-पठनक पाछाँ लेखकीय मान्यता की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हर कृतिक पाछाँ अर्थ होइत अछि।
उत्तर: घ. हर कृतिक पाछाँ अर्थ होइत अछि।
व्याख्या: लेखक आरम्भे सँ प्रत्येक कृतिक प्रयोजन मानैत छथि।

प्रश्न 13400. लाल रंगक संकेत बच्चाक कोन दबाएल भाव दिस लऽ जा सकैत अछि?
क. आक्रोश वा तनाव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आक्रोश वा तनाव।
व्याख्या: मरखाहा प्रवृत्ति दबाएल आघातक संकेत रूपमे पढ़ल गेल।

प्रश्न 13401. चित्रक छोट-मोट विवरण सभक विषयमे लेखक की स्वीकार करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. किछु बिसरि गेल होएत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. किछु बिसरि गेल होएत।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे आर किछु विवरण भऽ सकैत अछि जे ओ बिसरि गेलाह।

प्रश्न 13402. खण्ड १३४५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रंग, विशेषतः लाल रंग, बालक आन्तरिक उदासीनता, तनाव आ आक्रामक संकेत पढ़बाक साधन बनैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रंग, विशेषतः लाल रंग, बालक आन्तरिक उदासीनता, तनाव आ आक्रामक संकेत पढ़बाक साधन बनैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड चित्रक रंग-पहलूकेँ मनोवैज्ञानिक पाठ बनबैत अछि।

खण्ड १३४६ : विदेह-सदेह २ — चित्र-विषय “हमर परिवार” आ खाइक बेरक दृश्य

प्रश्न 13403. गहिर-पाठमे परिवार-चित्रक मूल विषय की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हमर परिवार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हमर परिवार।
व्याख्या: लेखक “हमर परिवार” विषय देलाक बाद चित्र सँ चकित भेलाह।

प्रश्न 13404. बच्चा परिवार देखए लेल कोन क्षण चुनलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. खाइक बेर।
उत्तर: घ. खाइक बेर।
व्याख्या: लेखक भोजन-दृश्यक चुनावकेँ महत्त्वपूर्ण संकेत मानैत छथि।

प्रश्न 13405. खाइक बेरक दृश्य परिवारक कोन पक्ष खोलैत अछि?
क. निकटता आ दूरी दुनू।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. निकटता आ दूरी दुनू।
व्याख्या: भोजनक समय परिवारक बनावट आ अलगाव स्पष्ट होइत अछि।

प्रश्न 13406. विद्यार्थी भोजन-दृश्य किएक चुनने होएत, लेखकक संकेत की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. परिवारक आत्मीयता/अभाव ओकर मनक केन्द्र छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. परिवारक आत्मीयता/अभाव ओकर मनक केन्द्र छल।
व्याख्या: विषय परिवार छल, मुदा दृश्य भोजनक बनल; ई गहिर मनोभावक संकेत अछि।

प्रश्न 13407. चित्रमे थारी-बाटि-गिलास सदृश वस्तु सभ ककरा स्पष्ट करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भोजनक प्रसंग।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भोजनक प्रसंग।
व्याख्या: स्रोतमे पात्र सभक आगू बासन सदृश वस्तु सभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13408. “खाइक बेर” दृश्य बच्चाक अनुभवमे की बनि गेल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. परिवारक वास्तविक दूरीक रंगमंच।
उत्तर: घ. परिवारक वास्तविक दूरीक रंगमंच।
व्याख्या: चित्रक पात्र-वितरण परिवारक दूरी देखबैत अछि।

प्रश्न 13409. एहि दृश्यकेँ केवल टी.भी. वा सिनेमा प्रभाव मानब पर्याप्त अछि?
क. नहि, ओहि प्रभावक भीतर बच्चाक घरक अनुभव छिपल अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि, ओहि प्रभावक भीतर बच्चाक घरक अनुभव छिपल अछि।
व्याख्या: डायनिंग टेबुलक छवि आधुनिक दृश्य-संस्कृति सँ आएल होए, मुदा अर्थ निजी अनुभवक अछि।

प्रश्न 13410. परिवार-चित्रक भोजन-दृश्य बालक मनक कोन प्रश्न उठा रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हम परिवारमे कतय छी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हम परिवारमे कतय छी।
व्याख्या: एकसरि नेन्ना आ अलग छोर बच्चाक अपना स्थानक संकट खोलैत अछि।

प्रश्न 13411. लेखक चित्रक विषय आ संरचना कैँ एकसाथ किएक पढ़ैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कारण दुनू मिलि पारिवारिक सत्यक संकेत दैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कारण दुनू मिलि पारिवारिक सत्यक संकेत दैत अछि।
व्याख्या: विषय “परिवार” आ संरचना “दूरी” एक साथ अर्थ बनबैत अछि।

प्रश्न 13412. खण्ड १३४६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “हमर परिवार” मे भोजन-दृश्य परिवारक भौतिक उपस्थिति नहि, भावनात्मक दूरी आ बालक स्थान-संकट उघारैत अछि।
उत्तर: घ. “हमर परिवार” मे भोजन-दृश्य परिवारक भौतिक उपस्थिति नहि, भावनात्मक दूरी आ बालक स्थान-संकट उघारैत अछि।
व्याख्या: चित्रक दृश्य-चयन स्वयं एक मनोवैज्ञानिक कथन बनि जाइत अछि।

खण्ड १३४७ : विदेह-सदेह २ — डायनिंग टेबुलक रचना आ पात्र-वितरण

प्रश्न 13413. चित्रमे कागजक भीतर किछु छोड़ि कोन आकार खींचल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ठाढ़ आयताकार रेघ।
उत्तर: घ. ठाढ़ आयताकार रेघ।
व्याख्या: स्रोतमे चारूकात एक-दू इंच छोड़ि भीतर ठाढ़ आयत बनाओल गेल।

प्रश्न 13414. पूरा संरचना लेखककेँ ककर जकाँ देखाएल?
क. डायनिंग टेबुल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डायनिंग टेबुल।
व्याख्या: लेखक स्पष्ट करैत छथि जे चित्र परिपूर्णतामे डायनिंग टेबुल जकाँ छल।

प्रश्न 13415. डायनिंग टेबुलक छवि बच्चाकेँ कहाँसँ भेटल होएबाक सम्भावना लेखक देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सिनेमा आ टीभी कार्यक्रमसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सिनेमा आ टीभी कार्यक्रमसँ।
व्याख्या: स्रोतमे आइ-काल्हुक सिनेमा आ टीभी कार्यक्रमक देन कहल अछि।

प्रश्न 13416. टेबुलक उपरका हिस्सामे कोन पात्र-विन्यास छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दू अल्पवयी नेन्नाक बीचमे वयस्क स्त्री।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दू अल्पवयी नेन्नाक बीचमे वयस्क स्त्री।
व्याख्या: स्रोतमे ई विन्यास स्पष्ट अछि।

प्रश्न 13417. टेबुलक निचलुका हिस्सामे के छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. केवल एक नेन्ना।
उत्तर: घ. केवल एक नेन्ना।
व्याख्या: लेखक सम्भवत: ओ स्वयं छल कहैत छथि।

प्रश्न 13418. दू समूहक बीचक दूरी कोन सामाजिक-संबंधक संकेत बनैत अछि?
क. परिवारमे अलगाव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. परिवारमे अलगाव।
व्याख्या: टेबुलक छोर सभ भावनात्मक दूरीक संकेत छथि।

प्रश्न 13419. बिचला खाली पसरल क्षेत्र ककर प्रतीक बुझल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संबंधक खाधि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संबंधक खाधि।
व्याख्या: पात्र सभ अलग-अलग छोर पर रहबाक कारण बीचक दूरी अर्थवान होइत अछि।

प्रश्न 13420. एकसरि नेन्नाक स्थान चित्रमे ककर अनुभूति खोलैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अकेलापन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अकेलापन।
व्याख्या: लेखक एहि आकृतिमे एकसरिपन पढ़ैत छथि।

प्रश्न 13421. स्त्री आ दू नेन्ना साथ रहबाक विपरीत एकसरि बालक की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समूहसँ काटल स्थान।
उत्तर: घ. समूहसँ काटल स्थान।
व्याख्या: चित्रक विभाजन बालकक अपन परिवारमे अलगाव व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 13422. खण्ड १३४७क सार की अछि?
क. डायनिंग टेबुलक भीतर पात्र-वितरण परिवारक समूह, एकसरिपन आ भावनात्मक फाँकक दृश्य-भाषा बनैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डायनिंग टेबुलक भीतर पात्र-वितरण परिवारक समूह, एकसरिपन आ भावनात्मक फाँकक दृश्य-भाषा बनैत अछि।
व्याख्या: रचना, आकार आ स्थान एकसाथ बच्चाक अनुभव बयान करैत अछि।

खण्ड १३४८ : विदेह-सदेह २ — वयस्क पुरुषक अनुपस्थिति आ पितृ-संकेत

प्रश्न 13423. परिवार-चित्रमे सभसँ चौंकाबऽ बला कमी की छल?

क. वयस्क पुरुषक अनुपस्थिति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वयस्क पुरुषक अनुपस्थिति।

व्याख्या: लेखक एहि बातकेँ विशेष चौंकाबऽ बला मानैत छथि।

प्रश्न 13424. चित्रमे वयस्क पुरुष नहि रहब लेखकक अनुसार ककर संकेत छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. परिवारसँ पिताक गाएब अस्तित्व।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. परिवारसँ पिताक गाएब अस्तित्व।

व्याख्या: स्रोतमे पिताक गाएब अस्तित्व दिस संकेत अछि।

प्रश्न 13425. पिता जीवित रहितहुँ चित्रमे अनुपस्थित किएक पढ़ल जा सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बालकक अनुभवमे पिता भावनात्मक रूपेँ अनुपस्थित छलाह।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बालकक अनुभवमे पिता भावनात्मक रूपेँ अनुपस्थित छलाह।

व्याख्या: दिनभर अनुपस्थिति आ घरेलू वास्तविकतासँ अनभिज्ञता एहि अर्थकेँ पुष्ट करैत अछि।

प्रश्न 13426. वयस्क पुरुषक अनुपस्थिति परिवारक कोन संरचनात्मक संकट देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुरक्षा-आधारक अभाव।

उत्तर: घ. सुरक्षा-आधारक अभाव।

व्याख्या: बच्चाक असुरक्षा पितृ-अनुपस्थितिसँ जुड़ि जाइत अछि।

प्रश्न 13427. चित्रमे स्त्री आ दू नेन्ना अछि, मुदा पिता नहि — एहि विरोध सँ की उभरैत अछि?

क. घरक सत्ता आ स्नेह-वितरणक असंतुलन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घरक सत्ता आ स्नेह-वितरणक असंतुलन।

व्याख्या: पात्रक उपस्थिति-अनुपस्थिति बच्चाक अनुभवजनित सत्ता-संबंध खोलैत अछि।

प्रश्न 13428. लेखक एहि अनुपस्थिति पर ठोस निर्णय तुरन्त केलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नहि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नहि।

व्याख्या: ओ पहिने विद्यार्थीसँ संवाद आ पितासँ गप्प कएलनि।

प्रश्न 13429. वयस्क पुरुषक अनुपस्थिति मात्र चित्रक दोष अछि कि मनक भाषा?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मनक भाषा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मनक भाषा।
व्याख्या: लेखक चित्रकलाकेँ पढ़बाक वस्तु मानि एहि अर्थ धरि पहुँचैत छथि।

प्रश्न 13430. पितृ-अनुपस्थिति बादक जीवन-तथ्य सँ कोना पुष्ट भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पिता भोरसँ साँझ धरि घरसँ बाहर आ सत्यसँ अनभिज्ञ छलाह।
उत्तर: घ. पिता भोरसँ साँझ धरि घरसँ बाहर आ सत्यसँ अनभिज्ञ छलाह।
व्याख्या: पारिवारिक पृष्ठभूमि चित्रक संकेत सत्य करैत अछि।

प्रश्न 13431. एहि संकेतक आधार पर लेखक कोन अगिला कदम लेलनि?
क. विद्यार्थी आ पितासँ सावधानीपूर्वक गप्प।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विद्यार्थी आ पितासँ सावधानीपूर्वक गप्प।
व्याख्या: चित्र संकेतक बाद संवादात्मक जाँच शुरू भेल।

प्रश्न 13432. खण्ड १३४८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चित्रमे पिता नहि देखब बालकक भीतरी अनुभवमे सुरक्षा, उपस्थिति आ अधिकारक अभावक गूढ़ संकेत बनैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चित्रमे पिता नहि देखब बालकक भीतरी अनुभवमे सुरक्षा, उपस्थिति आ अधिकारक अभावक गूढ़ संकेत बनैत अछि।
व्याख्या: लेखक एहि संकेतकेँ जाँचि वास्तविक पारिवारिक संकट धरि पहुँचैत छथि।

खण्ड १३४९ : विदेह-सदेह २ — विद्यार्थीकेँ विश्वासमे लेबाक पद्धति

प्रश्न 13433. चित्र देखलाक बाद लेखक पहिल व्यक्तिगत कदम की लेलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विद्यार्थीसँ गप्प करबाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विद्यार्थीसँ गप्प करबाक।
व्याख्या: ठोस निर्णय पहिने ओ विद्यार्थीक बात सुनय चाहलनि।

प्रश्न 13434. विद्यार्थीकेँ विश्वासपात्र बनएबाक प्रयत्न कतेक समय चलल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. किछुए दिन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. किछुए दिन।
व्याख्या: स्रोतमे किछुए दिनमे विद्यार्थी बधि गेल कहलगेल।

प्रश्न 13435. लेखक संवादमे कोन भाव टारए चाहैत छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शंका।
उत्तर: घ. शंका।
व्याख्या: ओ ध्यान रखैत छलाह जे बच्चाकेँ कोनो तरहक शंका नहि हो।

प्रश्न 13436. लेखकक प्रश्न-पद्धति कोना छल?
क. फुसिए आहे-माहे, पोल्हा-पोल्हा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. फुसिए आहे-माहे, पोल्हा-पोल्हा।
व्याख्या: स्रोतमे धीरे-धीरे, नरम तरीकासँ गप्प करबाक वर्णन अछि।

प्रश्न 13437. ई संवाद-पद्धति शिक्षकक कोन गुण देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संवेदनशीलता आ धैर्य।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संवेदनशीलता आ धैर्य।
व्याख्या: बालकक पीड़ा बुझबाक लेल कठोर पूछताछ नहि कएल गेल।

प्रश्न 13438. लेखक सीधे परिवारपर आरोप लगौलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नहि।
व्याख्या: ओ पहिने दिनक्रम आ घरक परिस्थिति सावधानीसँ बुझलनि।

प्रश्न 13439. विद्यार्थीकेँ विश्वासमे लएबाक उद्देश्य की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चित्रक प्रतीकक सत्य बुझब।
उत्तर: घ. चित्रक प्रतीकक सत्य बुझब।
व्याख्या: चित्रक अर्थ जीवन-स्थितिसँ मिलान करब आवश्यक छल।

प्रश्न 13440. बच्चासँ संवादमे लेखक कोन सामाजिक मर्यादा निभौलनि?
क. गोपनीयता आ बाल-सुरक्षा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गोपनीयता आ बाल-सुरक्षा।
व्याख्या: ओ शंका नहि उठय, एहि पर विशेष ध्यान दैत छथि।

प्रश्न 13441. संवाद बिना चित्रक अर्थ पर निर्भर रहब किएक अधूरा होइत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कारण चित्र संकेत अछि, पूर्ण कथा नहि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कारण चित्र संकेत अछि, पूर्ण कथा नहि।
व्याख्या: लेखक संकेतक पुष्टि लेल बच्चाक अनुभव सुनैत छथि।

प्रश्न 13442. खण्ड १३४९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चित्रक संकेत बुझबाक लेल लेखक बच्चाकेँ विश्वासमे लैत छथि आ संवादक धीमा, सुरक्षित मार्ग अपनबैत छथि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चित्रक संकेत बुझबाक लेल लेखक बच्चाकेँ विश्वासमे लैत छथि आ संवादक धीमा, सुरक्षित मार्ग अपनबैत छथि।
व्याख्या: ई शिक्षक-संवेदनशीलता बाल-मानस अध्ययनक आधार बनैत अछि।

खण्ड १३५० : विदेह-सदेह २ — पितासँ भेंट: चिन्ता, खंडन आ शंकाक बीज

प्रश्न 13443. लेखक पितासँ भेंट किएक जरूरी बुझलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बेटाक जीवन-सत्य बुझबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बेटाक जीवन-सत्य बुझबाक लेल।
व्याख्या: विद्यार्थीसँ बातक बाद पिता सँ संवाद आवश्यक बनल।

प्रश्न 13444. पिता कतेक बेर समादक बाद आएल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दू-तीन बेरुक समादक बाद।
उत्तर: घ. दू-तीन बेरुक समादक बाद।
व्याख्या: स्रोतमे दू-तीन बेर समाद पठेलाक बाद पिताक भेंट अछि।

प्रश्न 13445. पितासँ बातचीतक प्रारम्भमे लेखक कोन भाव व्यक्त करैत गेलाह?
क. बेटाक बारेमे गम्भीर चिन्ता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बेटाक बारेमे गम्भीर चिन्ता।
व्याख्या: लेखक जतबे गम्भीरता देखबैत गेलाह, पिता खंडन करैत रहल।

प्रश्न 13446. पिताक पहिल प्रतिक्रिया की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दृढ़ खंडन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दृढ़ खंडन।
व्याख्या: पिता लेखकक चिन्ताकेँ मानए नहि चाहैत छल।

प्रश्न 13447. पिता लेखकक चिन्ताकेँ कोना बुझि रहल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अनेरे गम्भीर बनाओल बात।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अनेरे गम्भीर बनाओल बात।
व्याख्या: स्रोतमे पिताक मोने लेखक अनेरे बातकेँ गम्भीर मानि रहल छथि।

प्रश्न 13448. लेखक पिताक अविश्वासक बादो की कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मर्यादामे संकेत पहुँचा देलनि।
उत्तर: घ. मर्यादामे संकेत पहुँचा देलनि।
व्याख्या: लेखक अपन मर्यादा रखैत पिता धरि चिन्ताक बात पहुँचौलनि।

प्रश्न 13449. लेखक पिताक हृदयमे की रोपि देलनि?
क. शंकाक बीज।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शंकाक बीज।
व्याख्या: बादमे पिता कहैत अछि जे ई शंका ओकरा राति-दिन खिहारऽ लगल।

प्रश्न 13450. शंकाक बीज पिताकेँ कोन दिशा देलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. घरक वास्तविकता जाँचबाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. घरक वास्तविकता जाँचबाक।
व्याख्या: ओ बातक तहमे जाएबाक निश्चय केलक।

प्रश्न 13451. एहि भेंटमे शिक्षकक कथन आरोप छल कि सावधान संकेत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सावधान संकेत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सावधान संकेत।
व्याख्या: लेखक ठोस आरोप नहि, चिन्ता आ जाँचक दिशा देलनि।

प्रश्न 13452. खण्ड १३५०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पितासँ पहिल भेंटमे अविश्वास रहितहुँ लेखकक सावधान चिन्ता शंकाक बीज बनि आगाँ सत्य-जाँचक कारण बनैत अछि।
उत्तर: घ. पितासँ पहिल भेंटमे अविश्वास रहितहुँ लेखकक सावधान चिन्ता शंकाक बीज बनि आगाँ सत्य-जाँचक कारण बनैत अछि।
व्याख्या: बालक हितमे शिक्षकक मर्यादित हस्तक्षेप निर्णायक होइत अछि।

खण्ड १३५१ : विदेह-सदेह २ — परिवारक छिपल पृष्ठभूमि आ पिताक अनभिज्ञता

प्रश्न 13453. विद्यार्थीक पहिल माएक मृत्यु कखन भेल छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटा नान्हिएटा रहिते।

उत्तर: घ. बेटा नान्हिएटा रहिते।

व्याख्या: स्रोतमे बेटा नान्हि रहिते पहिल स्त्रीक मृत्यु अछि।

प्रश्न 13454. पिताने दोसर बियाह कोन भावसँ कएल?

क. टुअर बच्चाकेँ माएक कमी नहि बुझाइ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टुअर बच्चाकेँ माएक कमी नहि बुझाइ।

व्याख्या: दोसर विवाहक घोषित उद्देश्य मातृ-संरक्षण छल।

प्रश्न 13455. दोसरी पत्नी सँ के-के जन्मल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एक बेटा आ एक बेटी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. एक बेटा आ एक बेटी।

व्याख्या: स्रोतमे नव माउगिसँ दू नेन्ना — बेटा आ बेटी — कहलगेल अछि।

प्रश्न 13456. घरक आर्थिक भार मुख्यतः के उठबैत छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पिता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पिता।

व्याख्या: स्रोतमे कमाए जोगरि वएह एकटा व्यक्ति रहबाक बात अछि।

प्रश्न 13457. पिताक दिनचर्या परिवारक सच्चाइ बुझबामे बाधा किएक बनल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भोरमे काजपर जाएब आ साँझे घुरब।

उत्तर: घ. भोरमे काजपर जाएब आ साँझे घुरब।

व्याख्या: दिनभर अनुपस्थित रहबाक कारण घरक व्यवहार देखाइत नहि छल।

प्रश्न 13458. पिता बच्चाक शिकायतकेँ की बुझि टारि दैत छल?

क. नेन्ना सभक गप्प।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेन्ना सभक गप्प।

व्याख्या: स्रोतमे बेटाक गप्पकेँ बाल-गप्प बुझि टारि देबाक बात अछि।

प्रश्न 13459. दोसरी पत्नी गंभीर बातकेँ कोना हलुक करैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हँसी-मजाकक आधार लऽ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हँसी-मजाकक आधार लऽ।
व्याख्या: पत्नी गम्भीरता स्पष्ट नहि होमए दैत छल।

प्रश्न 13460. पिता असली व्यवहारसँ किएक अनभिज्ञ रहल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कारण व्यवहार पिताक परोक्षमे होइत छल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कारण व्यवहार पिताक परोक्षमे होइत छल।
व्याख्या: स्रोतमे पतिक परोक्षमे बच्चासँ व्यवहार बदलल रहबाक बात अछि।

प्रश्न 13461. एहि पृष्ठभूमिसँ “पिता नहि” चित्र-संकेत कोना स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पिता घरमे रहितहुँ बालकक अनुभवमे अनुपस्थित छलाह।
उत्तर: घ. पिता घरमे रहितहुँ बालकक अनुभवमे अनुपस्थित छलाह।
व्याख्या: पिताक अनभिज्ञता चित्रक अनुपस्थिति सँ मिलैत अछि।

प्रश्न 13462. खण्ड १३५१क सार की अछि?
क. पहिल माएक मृत्यु, दोसर विवाह, नव संतान आ पिताक नोकरी-बाध्य अनुपस्थिति मिलि बालकक असुरक्षा बनबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पहिल माएक मृत्यु, दोसर विवाह, नव संतान आ पिताक नोकरी-बाध्य अनुपस्थिति मिलि बालकक असुरक्षा बनबैत अछि।
व्याख्या: परिवारक छिपल पृष्ठभूमि चित्रक संकेत कैँ सामाजिक सत्य बनबैत अछि।

खण्ड १३५२ : विदेह-सदेह २ — पिताक गुप्त जाँच आ सतमायक व्यवहार

प्रश्न 13463. लेखकसँ चर्चाक बाद पिता घर कोना घुरए लगल?
क. बहन्ना बना कऽ औचक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बहन्ना बना कऽ औचक।
व्याख्या: स्रोतमे पिता काजपर सँ बहन्ने औचक घर घुरए लगल।

प्रश्न 13464. पिता घरबाक व्यवहार कोना देखए लगल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दूरेसँ नजरि राखि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दूरेसँ नजरि राखि।
व्याख्या: ओ प्रत्यक्ष टकराव नहि, दूर सँ निरीक्षण करैत छल।

प्रश्न 13465. पड़ोसक कथनक सत्यता पिताकेँ कोना देखाएल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. घरक व्यवहारमे परिणाम देखाइत गेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. घरक व्यवहारमे परिणाम देखाइत गेल।
व्याख्या: लोकक बात आ देखल व्यवहार मेल खाइत गेल।

प्रश्न 13466. सतमाय स्कूल छुटलाक बाद की करैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दरबज्जा नहि खोलैत छल।
उत्तर: घ. दरबज्जा नहि खोलैत छल।
व्याख्या: स्रोतमे ई कठोर दृश्य विस्तार सँ देल अछि।

प्रश्न 13467. बच्चा दरबज्जा पर कतय बैसल रहैत?
क. चौकठपर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चौकठपर।
व्याख्या: भूखल-पिआसल बच्चा चौकठपर बाट जोहैत छल।

प्रश्न 13468. बच्चा दरबज्जा ठोकैत कोन अवस्था मे रहैत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कानि-बाजि कऽ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कानि-बाजि कऽ।
व्याख्या: स्रोतमे ठोकैत-ठोकैत कानि-बाजि प्रतीक्षा करबाक बात अछि।

प्रश्न 13469. पड़ोसी नजरि पड़लासँ की करैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. किछु खुआ दैत छल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. किछु खुआ दैत छल।
व्याख्या: पड़ोसी सभ बालकक तत्काल सहारा बनैत छल।

प्रश्न 13470. सतमाय जागलाक बाद की स्पष्टीकरण दैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बहन्ना।
उत्तर: घ. बहन्ना।
व्याख्या: स्रोतमे पत्नी उठि बहन्ना बना देबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13471. एहि निरीक्षणसँ पिता की बुझलक?
क. लेखकक शंका निराधार नहि छल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लेखकक शंका निराधार नहि छल।
व्याख्या: घरक दृश्य पिताक शंका कैं सत्य दिस लऽ गेल।

प्रश्न 13472. खण्ड १३५२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पिताक औचक निरीक्षणसँ सतमायक उपेक्षापूर्ण व्यवहार, बच्चाक भूख-प्यास आ घरक छिपल हिंसा उजागर होइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पिताक औचक निरीक्षणसँ सतमायक उपेक्षापूर्ण व्यवहार, बच्चाक भूख-प्यास आ घरक छिपल हिंसा उजागर होइत अछि।
व्याख्या: जाँच चित्रक संकेतकैं प्रत्यक्ष प्रमाणमे बदलि दैत अछि।

खण्ड १३५३ : विदेह-सदेह २ — भूखल-पिआसल प्रतीक्षा आ बाल-मनक टूटन

प्रश्न 13473. दरबज्जा नहि खुललासँ बच्चा कतेक समय धरि प्रतीक्षा करैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सतमाय उठबाक धरि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सतमाय उठबाक धरि।
व्याख्या: स्रोतमे ओ उठबाक बाट जोहैत बैसल रहबाक बात अछि।

प्रश्न 13474. बच्चाक शारीरिक अवस्था कोना वर्णित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भूखल-पिआसल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भूखल-पिआसल।
व्याख्या: ई शब्द बालकक उपेक्षा कैं तीव्र बनबैत अछि।

प्रश्न 13475. बालक दरबज्जा ठोकब संग की करैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कानि-बाजि रहल छल।
उत्तर: घ. कानि-बाजि रहल छल।
व्याख्या: स्रोतमे बच्चाक कानि-बाजि प्रतीक्षा करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13476. सतमायक व्यवहार परिवारक कोन विडम्बना देखबैत अछि?
क. घर रहितहुँ बालक घरबाहिर बनि गेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. घर रहितहुँ बालक घरबाहिर बनि गेल।
व्याख्या: दरबज्जा नहि खुलनाइ घरमे अधिकारक अभाव देखबैत अछि।

प्रश्न 13477. चौकठपर बैसल बच्चा चित्रक कोन आकृति सँ मिलैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. टेबुलक दोसर छोरक एकसरि नेन्ना सँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. टेबुलक दोसर छोरक एकसरि नेन्ना सँ।
व्याख्या: चित्रमे एकसरिपन वास्तविक जीवन-दृश्य सँ मेल खाइत अछि।

प्रश्न 13478. भूख-प्यास मात्र शारीरिक दुख अछि कि भावनात्मक संकेत सेहो?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दुनू।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दुनू।
व्याख्या: उपेक्षा शरीर आ मन दुनूकेँ चोट पहुँचबैत अछि।

प्रश्न 13479. पड़ोसीक सहारा परिवारक कोन कमी उजागर करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. घरक भीतर स्नेह-सुरक्षाक कमी।
उत्तर: घ. घरक भीतर स्नेह-सुरक्षाक कमी।
व्याख्या: जे सहारा घरसँ भेटबाक चाही, से बाहरक लोक दैत छथि।

प्रश्न 13480. सतमायक बहन्ना ककरा धोखा दैत छल?
क. पिताकेँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पिताकेँ।
व्याख्या: बहन्ना पिताक नजरिमे सच्चाइ ढाँकबाक उपाय बनैत अछि।

प्रश्न 13481. एहि दृश्यसँ बच्चाक “कोशमे घुसब” किएक समझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बारम्बार उपेक्षा ओकरा भीतर-बंद करैत छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बारम्बार उपेक्षा ओकरा भीतर-बंद करैत छल।
व्याख्या: आगाँ लेखक बच्चाक अपना कोशमे घुसबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 13482. खण्ड १३५३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भूखल-पिआसल चौकठपर प्रतीक्षा बालकक शरीर, मन आ घरक अधिकार तीनूक संकट देखबैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भूखल-पिआसल चौकठपर प्रतीक्षा बालकक शरीर, मन आ घरक अधिकार तीनूक संकट देखबैत अछि।
व्याख्या: एहि दृश्यसँ चित्रक अकेलापन पूर्ण अर्थ पबैत अछि।

खण्ड १३५४ : विदेह-सदेह २ — कोश, असुरक्षा आ नेन्नाक अहं

प्रश्न 13483. उपेक्षा बाद नेन्ना नहूँ-नहूँ कतय घुसऽ लगल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अपना कोशमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अपना कोशमे।
व्याख्या: स्रोतमे नेन्ना अपना कोशमे घुसऽ लगलैक कहल अछि।

प्रश्न 13484. लेखक “कोश” रूपक सँ की बुझबैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भीतरक बंद दुनिया।
उत्तर: घ. भीतरक बंद दुनिया।
व्याख्या: Cell रूपक सामाजिक अलगावक मनोवैज्ञानिक रूप अछि।

प्रश्न 13485. नेन्नाकेँ कोन भाव घेरि लेलक?
क. असुरक्षा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. असुरक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे असुरक्षाक भाव स्पष्ट अछि।

प्रश्न 13486. नेन्ना सभक “अहं” कतेक व्यापक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बहुत व्यापक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बहुत व्यापक।
व्याख्या: लेखक बाल-अहंकेँ सियान लोक सँ कम नहि मानैत छथि।

प्रश्न 13487. अहं केँ नान्हियो धक्का लगलासँ की होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओ लोहछि जाइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओ लोहछि जाइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे अहं केँ नान्हियोटा धक्का लगलासँ लोहछि जाएबाक बात अछि।

प्रश्न 13488. बच्चाक लोहछल अहं ओकर चित्रमे कोना देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अलगाव, लाल रंग आ उदासीनता रूपमे।
उत्तर: घ. अलगाव, लाल रंग आ उदासीनता रूपमे।
व्याख्या: चित्रक तीनू संकेत मानसिक चोटक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

प्रश्न 13489. असुरक्षा बच्चाकेँ परिवारसँ दूर करैत अछि कि नजदीक?
क. दूर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दूर।
व्याख्या: कोशमे घुसब दूरीक रूपक अछि।

प्रश्न 13490. बच्चाक आत्म-संरक्षण कोन रूपमे उभरैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भीतर सिमटि जाएब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भीतर सिमटि जाएब।
व्याख्या: अपना कोशमे घुसब मनक बचाव-पद्धति अछि।

प्रश्न 13491. लेखक बाल-मनक नाजुकता कोना स्पष्ट करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अहं पर नान्हि धक्को गहिर चोट दैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अहं पर नान्हि धक्को गहिर चोट दैत अछि।
व्याख्या: ई बाल-मनक संवेदनशीलता पर जोर दैत अछि।

प्रश्न 13492. खण्ड १३५४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लगातार उपेक्षा बच्चाकेँ असुरक्षित, भीतर-बंद आ आहत-अहं बला बना दैत अछि।
उत्तर: घ. लगातार उपेक्षा बच्चाकेँ असुरक्षित, भीतर-बंद आ आहत-अहं बला बना दैत अछि।
व्याख्या: चित्रक भाषा एहि मनोवैज्ञानिक टूटनक बाहरी संकेत अछि।

खण्ड १३५५ : विदेह-सदेह २ — शब्द-अभाव आ प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति

प्रश्न 13493. नेन्ना सभ लग दर्द व्यक्त करबाक लेल की नहि होइत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सियान सन साधन।
उत्तर: घ. सियान सन साधन।
व्याख्या: स्रोतमे सियान सन साधन नहि होएबाक बात अछि।

प्रश्न 13494. नेन्ना सभ लग कोन संग्रह पर्याप्त नहि होइत?
क. योग्य शब्द-संग्रह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. योग्य शब्द-संग्रह।
व्याख्या: लेखक योग्य शब्द-संग्रहक अभाव स्पष्ट करैत छथि।

प्रश्न 13495. शब्द-अभावमे बच्चा अपन भावना कोना व्यक्त करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रतीकात्मक रूपसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रतीकात्मक रूपसँ।
व्याख्या: स्रोतमे प्रतीकात्मक अभिव्यक्तिक बात अछि।

प्रश्न 13496. प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति उम्रक संग कोना बदलैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भिन्न-भिन्न रूप लैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भिन्न-भिन्न रूप लैत अछि।
व्याख्या: लेखक उम्रक अलग-अलग अवस्थामे प्रतीकात्मकता बदलबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 13497. शैशवावस्थाक प्रतीकात्मक भाषा कोन उदाहरणसँ बुझाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विभिन्न तरहक कानब।
उत्तर: घ. विभिन्न तरहक कानब।
व्याख्या: कानब भाव-भाषाक आरम्भिक रूप कहल गेल।

प्रश्न 13498. बच्चाक कानब केवल रोदन अछि कि भाषा सेहो?
क. भाषा सेहो।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषा सेहो।
व्याख्या: लेखक एहि भाषाक विश्लेषण सम्भव होएबाक बात कहैत छथि।

प्रश्न 13499. बाल-चित्रकला एहि प्रतीकात्मक श्रृंखलामे कोन स्थान पबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. महत्त्वपूर्ण अध्याय।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. महत्त्वपूर्ण अध्याय।
व्याख्या: चित्रकला भावनात्मक प्रतीक-भाषाक महत्त्वपूर्ण रूप अछि।

प्रश्न 13500. प्रतीकात्मक भाषा बुझब शिक्षक लेल किएक जरूरी?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बच्चाक अनकहल पीड़ा सुनबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बच्चाक अनकहल पीड़ा सुनबाक लेल।
व्याख्या: बालक शब्द नहि पबैत अछि, तें प्रतीक पढ़ब पड़ैत अछि।

प्रश्न 13501. चित्रक प्रतीक नबका बाल-संवाद किएक बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ मनक बात बिना शब्द कहि दैत अछि।
उत्तर: घ. ओ मनक बात बिना शब्द कहि दैत अछि।
व्याख्या: पूरा प्रसंगमे चित्र एही भूमिका निभबैत अछि।

प्रश्न 13502. खण्ड १३५५क सार की अछि?
क. बच्चाक शब्द-अभाव ओकरा प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति दिस लऽ जाइत अछि, जाहिमे चित्रकला महत्त्वपूर्ण भाषा बनैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बच्चाक शब्द-अभाव ओकरा प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति दिस लऽ जाइत अछि, जाहिमे चित्रकला महत्त्वपूर्ण भाषा बनैत अछि।
व्याख्या: लेखक बाल-चित्रकेँ अनकहल पीड़ाक पढ़न योग्य पाठ मानैत छथि।

खण्ड १३५६ : विदेह-सदेह २ — चित्रकला: देखबाक नहि, पढ़बाक वस्तु

प्रश्न 13503. लेखकक मुख्य वाक्य की अछि?
क. नेना सभक चित्रकला देखबाक नहि, पढ़बाक वस्तु होइत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नेना सभक चित्रकला देखबाक नहि, पढ़बाक वस्तु होइत अछि।
व्याख्या: ई निष्कर्ष निबन्धक केन्द्रीय सूत्र अछि।

प्रश्न 13504. “देखबाक” आ “पढ़बाक” मे मुख्य अंतर की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दृश्य रूप सँ अर्थ-पाठ धरि बढ़ब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दृश्य रूप सँ अर्थ-पाठ धरि बढ़ब।
व्याख्या: लेखक आकृति मात्र नहि, ओकर पाछाँक भाव पढ़बाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 13505. चित्रकला पढ़लासँ शिक्षक की पाबि सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बालकक आन्तरिक भावनाकेँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बालकक आन्तरिक भावनाकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे चित्र माध्यमसँ आंतरिक भावना व्यक्त होएबाक बात अछि।

प्रश्न 13506. चित्रकला बालक लेल कोन साधन बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आंतरिक भावना व्यक्त करबाक साधन।
उत्तर: घ. आंतरिक भावना व्यक्त करबाक साधन।
व्याख्या: अन्तिम अनुच्छेदमे ई स्पष्ट कहल गेल अछि।

प्रश्न 13507. लेखक चित्रकलाकेँ सृजनशील विषय किएक कहैत छथि?
क. कारण ओ आत्म-प्रगटीकरणक मार्ग खोलैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कारण ओ आत्म-प्रगटीकरणक मार्ग खोलैत अछि।
व्याख्या: पूरा निबन्धमे कला-शिक्षा आत्मप्रगटीकरणसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 13508. चित्र पढ़लाक बाद शिक्षकक जिम्मेदारी की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बालकक सहायता करब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बालकक सहायता करब।
व्याख्या: लेखक पिताकेँ उपाय सुझा कऽ सहायता-दिशा देखबैत छथि।

प्रश्न 13509. बाल-चित्र गलत-सहीक कापी-जाँच नहि, की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मनक संकेत-पत्र।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मनक संकेत-पत्र।
व्याख्या: चित्रक पंक्ति, रंग, रचना आ पात्र मनोभाव सूचित करैत अछि।

प्रश्न 13510. चित्र पढ़बाक प्रक्रिया शिक्षकमे कोन वृत्ति माँगैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. धैर्य, संवेदना आ जिज्ञासा।
उत्तर: घ. धैर्य, संवेदना आ जिज्ञासा।
व्याख्या: लेखक विद्यार्थी आ पिता सँ सावधानीपूर्वक संवाद करैत छथि।

प्रश्न 13511. चित्रकला पढ़बाक उपेक्षा कएलासँ की छूटि सकैत अछि?
क. बालकक गहिर पीड़ा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बालकक गहिर पीड़ा।
व्याख्या: एहि केस मे चित्रे छिपल संकट खोललक।

प्रश्न 13512. खण्ड १३५६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बाल-चित्रकला सौन्दर्य-जाँच नहि, मनोभाव, पीड़ा आ सहायता-दिशा पढ़बाक गंभीर शैक्षिक साधन अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बाल-चित्रकला सौन्दर्य-जाँच नहि, मनोभाव, पीड़ा आ सहायता-दिशा पढ़बाक गंभीर शैक्षिक साधन अछि।
व्याख्या: लेखकक सूत्र पूरा निबन्धक शिक्षा-दर्शन बनि उठैत अछि।

खण्ड १३५७ : विदेह-सदेह २ — पिताकेँ बुझाओल गेल बालकक टूटन

प्रश्न 13513. लेखक पिताकेँ बालकक भीतरक स्थिति कोना बतौलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ओ भीतरसँ पूर्ण रूपेँ टूटि गेल अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ओ भीतरसँ पूर्ण रूपेँ टूटि गेल अछि।

व्याख्या: स्रोतमे बेटा भीतरसँ टूटि गेल होएबाक बात कहल गेल।

प्रश्न 13514. बालकक मूल स्वभाव पर आनब लेखकक अनुसार कतेक जरूरी छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अति आवश्यक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अति आवश्यक।

व्याख्या: लेखक शीघ्रातिशीघ्र मूल स्वभावपर आनबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 13515. पिताक प्रश्न “आब उपाय की” ककर संकेत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समस्या स्वीकार करबाक।

उत्तर: घ. समस्या स्वीकार करबाक।

व्याख्या: पहिले खंडन करनिहार पिता आब उपाय पूछैत अछि।

प्रश्न 13516. लेखक उपाय देबाक पहिने पितामे कोन परिवर्तन देखैत छथि?

क. ठहराव आ स्वीकार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ठहराव आ स्वीकार।

व्याख्या: “ई सुनि कऽ ओ किछु ठहकल” पिताक आन्तरिक झटका देखबैत अछि।

प्रश्न 13517. बालकक टूटनक स्रोत केबल स्कूल छल कि घरक वातावरण?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. घरक वातावरण।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. घरक वातावरण।

व्याख्या: उपेक्षा, दरबज्जा, सतमायक व्यवहार मुख्य कारण रूपेँ उजागर भेल।

प्रश्न 13518. लेखक पिताकेँ अपराध-बोध देनाइ चाहैत छथि कि समाधान?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाधान।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाधान।

व्याख्या: ओ आरोपक बदला सुधारक उपाय देलनि।

प्रश्न 13519. बालकक मूल स्वभाव पर आनब किएक कठिन छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कारण ओ अपना कोशमे घुसि गेल छल।
उत्तर: घ. कारण ओ अपना कोशमे घुसि गेल छल।
व्याख्या: कोश रूपक बालकक गहिर आन्तरिक सिमटाव देखबैत अछि।

प्रश्न 13520. पिताकेँ बालकक पीड़ा बुझएबामे चित्रक भूमिका की रहल?
क. प्रमाणक प्रारम्भिक संकेत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रमाणक प्रारम्भिक संकेत।
व्याख्या: चित्रे लेखककेँ गम्भीर चिन्ता धरि लएलक।

प्रश्न 13521. बालकक टूटनक इलाजमे परिवारक भूमिका किएक प्रमुख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पीड़ाक स्रोत परिवारक व्यवहारमे छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पीड़ाक स्रोत परिवारक व्यवहारमे छल।
व्याख्या: उपचार घरबालीक व्यवहार आ सपरिवार यात्रा सँ जोड़ल गेल।

प्रश्न 13522. खण्ड १३५७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पिताकेँ बालकक टूटन बुझेलाक बाद समस्या खंडनसँ समाधान दिस मुड़ैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पिताकेँ बालकक टूटन बुझेलाक बाद समस्या खंडनसँ समाधान दिस मुड़ैत अछि।
व्याख्या: चित्रक संकेत अब परिवारिक उपचारक ठोस आग्रह बनैत अछि।

खण्ड १३५८ : विदेह-सदेह २ — उपचारक पहिल डेग: व्यवहारक परिणाम बुझेनाइ

प्रश्न 13523. लेखकक पहिल उपाय की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. घरबालीकेँ व्यवहारक परिणाम बुझाउ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. घरबालीकेँ व्यवहारक परिणाम बुझाउ।
व्याख्या: स्रोतमे पहिल सलाह पत्नीकेँ व्यवहारक परिणाम बुझएबाक अछि।

प्रश्न 13524. घरबालीकेँ व्यवहारक परिणाम बुझेनाइ किएक जरूरी छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कारण बच्चाक पीड़ा ओहि व्यवहारसँ जुड़ल छल।
उत्तर: घ. कारण बच्चाक पीड़ा ओहि व्यवहारसँ जुड़ल छल।
व्याख्या: सतमायक कठोरता बालकक असुरक्षा बनल।

प्रश्न 13525. लेखक सुधारक शुरुआत ककरा सँ करब कहैत छथि?
क. घरक वयस्क व्यवहार सँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. घरक वयस्क व्यवहार सँ।
व्याख्या: बच्चाकेँ बदलबाक पहिने वातावरणक व्यवहार बदलबाक बात अछि।

प्रश्न 13526. व्यवहारक परिणाम बतओनाइ दण्ड अछि कि जागरण?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जागरण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जागरण।
व्याख्या: लेखक पत्नीकेँ बुझएबाक बात करैत छथि, दण्डक नहि।

प्रश्न 13527. पिताक भूमिका एहि पहिल डेगमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. घरबालीसँ संवाद करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. घरबालीसँ संवाद करब।
व्याख्या: लेखक पिताकेँ घरबालीकेँ बुझाबय लेल कहैत छथि।

प्रश्न 13528. कठोर व्यवहारक परिणाम बच्चामे की रूपेँ देखल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. असुरक्षा, सिमटाव आ टूटन।
उत्तर: घ. असुरक्षा, सिमटाव आ टूटन।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तीनू अवस्था क्रमसँ उभरैत अछि।

प्रश्न 13529. लेखक समाधानकेँ केवल स्कूलक सीमा मे राखलनि?
क. नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि।
व्याख्या: समाधान परिवारक भीतरक व्यवहार सुधारसँ शुरू होइत अछि।

प्रश्न 13530. व्यवहार-सुधार बालक लेल कोन अनुभव पुनर्स्थापित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुरक्षा आ अपनत्व।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुरक्षा आ अपनत्व।
व्याख्या: उपचारक लक्ष्य बालक केँ सुरक्षित अनुभव कराएब अछि।

प्रश्न 13531. पहिल डेग पूरा भेलाक बाद अगिला सलाह की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. किछु दिनक छुट्टी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. किछु दिनक छुट्टी।
व्याख्या: स्रोतमे व्यवहार बुझेलाक बाद छुट्टी लएबाक बात अछि।

प्रश्न 13532. खण्ड १३५८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उपचारक पहिल डेग घरक वयस्क व्यवहारक परिणाम बुझेनाइ अछि, जाहिसँ बालकक असुरक्षा घटि सकैत अछि।
उत्तर: घ. उपचारक पहिल डेग घरक वयस्क व्यवहारक परिणाम बुझेनाइ अछि, जाहिसँ बालकक असुरक्षा घटि सकैत अछि।
व्याख्या: लेखक समस्या कैं परिवारिक जिम्मेदारीक रूपमे देखैत छथि।

खण्ड १३५९ : विदेह-सदेह २ — माहौलसँ बाहर निकालब आ सपरिवार यात्रा

प्रश्न 13533. व्यवहार बुझेलाक बाद लेखक पिताकैं की कहलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. किछु दिनक छुट्टी लिअ।
उत्तर: घ. किछु दिनक छुट्टी लिअ।
व्याख्या: स्रोतमे छुट्टी लएबाक स्पष्ट सलाह अछि।

प्रश्न 13534. छुट्टीक उद्देश्य की छल?
क. बच्चाकैं एहि माहौलसँ बाहर निकालब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बच्चाकैं एहि माहौलसँ बाहर निकालब।
व्याख्या: लेखक तनावपूर्ण माहौलसँ बच्चा बाहर निकालबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 13535. लेखक कतबा दिनक लेल बाहर जाएबाक सलाह देलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पन्द्रह-बीस दिन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पन्द्रह-बीस दिन।
व्याख्या: स्रोतमे सपरिवार पन्द्रह-बीस दिन बाहर घुमि एबाक सुझाव अछि।

प्रश्न 13536. यात्रा अकेले पिता-बेटा लेल छल कि सपरिवार?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सपरिवार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सपरिवार।
व्याख्या: लेखक सपरिवार बाहर घुमि एबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 13537. सपरिवार यात्रा किएक जरूरी छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बच्चाकेँ परिवारक अपनत्व अनुभव करएबाक लेल।
उत्तर: घ. बच्चाकेँ परिवारक अपनत्व अनुभव करएबाक लेल।
व्याख्या: माहौल-बदलाव संग परिवारिक निकटता लक्ष्य अछि।

प्रश्न 13538. माहौल बदललासँ बालकक कोन आन्तरिक जकड़न ढीली होएत?
क. असुरक्षा आ कोशमे सिमटाव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. असुरक्षा आ कोशमे सिमटाव।
व्याख्या: बाहर निकलनाइ मानसिक कोशसँ निकलबाक प्रतीक सेहो अछि।

प्रश्न 13539. यात्रा उपचारक स्थायी समाधान अछि कि आरम्भिक राहत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आरम्भिक राहत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आरम्भिक राहत।
व्याख्या: व्यवहार-सुधारक संग यात्रा बालकक टूटन सँ बाहर आनबाक उपाय अछि।

प्रश्न 13540. सपरिवार समय बितेनाइ ककर भरपाई करए चाहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. उपेक्षा आ दूरीक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. उपेक्षा आ दूरीक।
व्याख्या: चित्रमे देखल दूरी सपरिवार निकटता सँ घटाएबाक प्रयास अछि।

प्रश्न 13541. लेखक यात्रा दौरान बालक केँ कोन बात अनुभव करएबाक कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुरक्षित अपनत्व।
उत्तर: घ. सुरक्षित अपनत्व।
व्याख्या: पूरा सलाहक आशय बालकक मूल स्वभाव पुनः जागृत करब अछि।

प्रश्न 13542. खण्ड १३५९क सार की अछि?
क. माहौल बदलि सपरिवार पन्द्रह-बीस दिन बाहर जाएब बालककेँ डर, दूरी आ उपेक्षा सँ राहत देबाक उपचारक उपाय अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. माहौल बदलि सपरिवार पन्द्रह-बीस दिन बाहर जाएब बालककेँ डर, दूरी आ उपेक्षा सँ राहत देबाक उपचारक उपाय अछि।
व्याख्या: लेखक परिवारिक निकटता केँ मानसिक पुनर्स्थापनक साधन मानैत छथि।

खण्ड १३६० : विदेह-सदेह २ — स्कूल छोड़लाक बादो लेखकक विश्वास

प्रश्न 13543. घटनाक किछुए दिन बाद लेखक की कएलनि?

क. स्कूल छोड़ि देलनि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्कूल छोड़ि देलनि।

व्याख्या: स्रोतमे लेखक किछुए दिन बाद स्कूल छोड़ि देने रहबाक बात अछि।

प्रश्न 13544. स्कूल छोड़लाक बादो लेखक कोन विश्वास रखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विद्यार्थीक जीवनमे सकारात्मक उद्यम भेल हेतैक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विद्यार्थीक जीवनमे सकारात्मक उद्यम भेल हेतैक।

व्याख्या: अन्तिम अनुच्छेदमे लेखक एहि विश्वासक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 13545. सकारात्मक परिवर्तनक श्रेय लेखक ककरा दैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. चित्रकला सन सृजनशील विषयकेँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. चित्रकला सन सृजनशील विषयकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे पूर्ण श्रेय चित्रकला सन सृजनशील विषयकेँ देबाक बात अछि।

प्रश्न 13546. चित्रकलाक माध्यमसँ विद्यार्थी की करए सक्षम भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपन आन्तरिक भावना व्यक्त करब।

उत्तर: घ. अपन आन्तरिक भावना व्यक्त करब।

व्याख्या: अन्तिम वाक्यमे ई स्पष्ट अछि।

प्रश्न 13547. लेखक अपन भूमिका कैँ निर्णायक बतबैत छथि कि चित्रकलाक?

क. चित्रकलाक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्रकलाक।

व्याख्या: ओ श्रेय सृजनशील विषय कैँ दैत छथि।

प्रश्न 13548. एहि निष्कर्षमे कला-शिक्षाक अंतिम मूल्य की बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आत्म-अभिव्यक्ति आ जीवन-सहायता।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आत्म-अभिव्यक्ति आ जीवन-सहायता।

व्याख्या: चित्रकला बालकक भावना व्यक्त करबा आ सहायता करबा दुनू मे उपयोगी बनल।

प्रश्न 13549. स्कूल छोड़नाइ कथाकेँ समाप्त करैत अछि कि विश्वासक साथ छोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विश्वासक साथ छोड़ैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विश्वासक साथ छोड़ैत अछि।
व्याख्या: लेखक भविष्यक सकारात्मक सम्भावना पर भरोसा रखैत छथि।

प्रश्न 13550. विद्यार्थीक जीवनमे परिवर्तनक प्रत्यक्ष विवरण भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नहि, विश्वास व्यक्त अछि।
उत्तर: घ. नहि, विश्वास व्यक्त अछि।
व्याख्या: लेखक पूर्ण विश्वास अछि कहैत छथि, विस्तृत परिणाम नहि दैत छथि।

प्रश्न 13551. चित्रकला विषयक अन्तिम प्रतिपादन कोन अछि?
क. ई सृजनशील माध्यम बालकक आंतरिक भाव प्रकट करा सकैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ई सृजनशील माध्यम बालकक आंतरिक भाव प्रकट करा सकैत अछि।
व्याख्या: अन्तिम निष्कर्ष यही पर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 13552. खण्ड १३६०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक स्कूल छोड़लाक बादो भरोसा रखैत छथि जे चित्रकलाक माध्यमसँ बालकक जीवनमे सकारात्मक परिवर्तन भेल होएत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक स्कूल छोड़लाक बादो भरोसा रखैत छथि जे चित्रकलाक माध्यमसँ बालकक जीवनमे सकारात्मक परिवर्तन भेल होएत।
व्याख्या: ई निबन्ध कला-शिक्षाक मानवीय शक्ति पर समाप्त होइत अछि।

खण्ड १३६१ : विदेह-सदेह २ — कला शिक्षक आ सत्य-सन्धानक विद्यार्थी

प्रश्न 13553. लेखक स्वयंकेँ दू रूपमे कोना देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कला शिक्षक आ सत्य-सन्धानमे रुचि राखऽ बला विद्यार्थी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कला शिक्षक आ सत्य-सन्धानमे रुचि राखऽ बला विद्यार्थी।
व्याख्या: स्रोतमे लेखक ई दू भूमिका स्पष्ट करैत छथि।

प्रश्न 13554. कला शिक्षक रूपमे लेखक चित्रकेँ कोना देखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मात्र चित्र नहि, अर्थपूर्ण संकेत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मात्र चित्र नहि, अर्थपूर्ण संकेत।
व्याख्या: रंग, आकृति, संरचना आ पात्र-वितरण सभ पढ़ल गेल।

प्रश्न 13555. सत्य-सन्धानक विद्यार्थी रूपमे लेखकक प्रवृत्ति की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रत्येक कृतिक पाछाँक सत्य ताकब।
उत्तर: घ. प्रत्येक कृतिक पाछाँक सत्य ताकब।
व्याख्या: स्रोतमे प्रत्येक कृतिक पाछाँ सत्यक सन्धानक रुचि अछि।

प्रश्न 13556. एहि दू भूमिकाक मेल सँ की सम्भव भेल?
क. बालकक छिपल पारिवारिक पीड़ा चिन्हब।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बालकक छिपल पारिवारिक पीड़ा चिन्हब।
व्याख्या: कला-दृष्टि आ सत्य-जिज्ञासा मिलि संकट उजागर करैत अछि।

प्रश्न 13557. लेखक चित्र देखिते अन्तिम निर्णय केलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नहि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नहि।
व्याख्या: ओ संवाद, पिता-भेंट आ जाँचक क्रम धरि गेलाह।

प्रश्न 13558. सत्य-सन्धानक प्रक्रिया मे कोन-कोन साधन जुड़ल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चित्र, विद्यार्थी-संवाद, पिता-संवाद आ सामाजिक जानकारी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चित्र, विद्यार्थी-संवाद, पिता-संवाद आ सामाजिक जानकारी।
व्याख्या: पूरा प्रकरण बहुस्तरीय जाँचक रूप अछि।

प्रश्न 13559. कला शिक्षकक सफलताक कसौटी एतय की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बच्चाक मन पढ़ि सहायता करब।
उत्तर: घ. बच्चाक मन पढ़ि सहायता करब।
व्याख्या: कॉपी-सुधार नहि, जीवन-संवेदनशीलता मुख्य बनल।

प्रश्न 13560. ई भूमिका पारम्परिक कला-शिक्षक छवि सँ कोना भिन्न अछि?
क. ओ नकल सुधारक नहि, मनोभाव पाठक छथि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ नकल सुधारक नहि, मनोभाव पाठक छथि।
व्याख्या: लेखक ब्लैकबोर्ड नकल-पद्धति सँ अलग दृष्टि अपनबैत छथि।

प्रश्न 13561. सत्य-सन्धानमे मर्यादा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. परिवारक निजी पीड़ा सँ सामना छल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. परिवारक निजी पीड़ा सँ सामना छल।
व्याख्या: लेखक सावधानीसँ पिताकेँ संकेत दैत छथि।

प्रश्न 13562. खण्ड १३६१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लेखकक कला शिक्षक आ सत्य-सन्धानक विद्यार्थी रूप मिलि बाल-चित्रकेँ संवेदनशील जाँच आ सहायता-दिशा बना दैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लेखकक कला शिक्षक आ सत्य-सन्धानक विद्यार्थी रूप मिलि बाल-चित्रकेँ संवेदनशील जाँच आ सहायता-दिशा बना दैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड शिक्षकक गहिर मानवीय जिम्मेदारी देखबैत अछि।

खण्ड १३६२ : विदेह-सदेह २ — बाल-चित्र अध्ययनक नैतिक नियम

प्रश्न 13563. बाल-चित्र पढ़ैत समय पहिल नैतिक सावधानी की होएबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तुरन्त दोषारोपण नहि करब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तुरन्त दोषारोपण नहि करब।
व्याख्या: लेखक चित्रक आधार पर धैर्यपूर्वक जाँच करैत छथि।

प्रश्न 13564. चित्रक संकेत भेटलाक बाद सीधा परिवारपर आरोप लगेनाइ किएक उचित नहि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कारण संकेतक पुष्टि जरूरी अछि।
उत्तर: घ. कारण संकेतक पुष्टि जरूरी अछि।
व्याख्या: लेखक संवाद आ जाँचक मार्ग अपनबैत छथि।

प्रश्न 13565. बच्चासँ गप्प करैत समय लेखक ककर परहेज रखलनि?
क. शंका पैदा करबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शंका पैदा करबाक।
व्याख्या: ओ पोल्हा-पोल्हा प्रश्न करैत छथि।

प्रश्न 13566. पितासँ गप्प करैत लेखक कोन मर्यादा राखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संकेत देलनि, आरोप नहि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संकेत देलनि, आरोप नहि।
व्याख्या: लेखक मर्यादामे बात हृदय धरि पहुँचेलनि।

प्रश्न 13567. बाल-चित्रक अर्थ पढ़लाक बाद शिक्षकक लक्ष्य की होएबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बालकक हित आ सहायता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बालकक हित आ सहायता।
व्याख्या: लेखक उपचारक उपाय सुझबैत छथि।

प्रश्न 13568. चित्र-पठनमे संवेदना किएक आवश्यक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कारण चित्रक पाछाँ पीड़ा भऽ सकैत अछि।
उत्तर: घ. कारण चित्रक पाछाँ पीड़ा भऽ सकैत अछि।
व्याख्या: परिवार-चित्रक पाछाँ गंभीर असुरक्षा भेटल।

प्रश्न 13569. चित्रकला कैँ परीक्षा-प्रतिलिपि बुझलासँ की हानि होइत अछि?
क. बालकक आन्तरिक संकेत छूटि जाइत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बालकक आन्तरिक संकेत छूटि जाइत अछि।
व्याख्या: लेखक चित्र देखबाक बदला पढ़बाक बात करैत छथि।

प्रश्न 13570. नैतिक चित्र-पठनमे शिक्षक कैँ कोन संतुलन चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जिज्ञासा आ मर्यादा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जिज्ञासा आ मर्यादा।
व्याख्या: सत्य ताकब जरूरी अछि, मुदा पारिवारिक गोपनीयता आ बालकक सुरक्षा सेहो।

प्रश्न 13571. बालकक चित्रक अर्थ सदा एकरेखीय होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नहि।
व्याख्या: लेखक रचना, रंग, संवाद आ जीवन-तथ्य एकसाथ पढ़ैत छथि।

प्रश्न 13572. खण्ड १३६२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बाल-चित्र अध्ययन धैर्य, मर्यादा, संकेत-पुष्टि आ बाल-हितक नैतिक नियमसँ चलबाक चाही।
उत्तर: घ. बाल-चित्र अध्ययन धैर्य, मर्यादा, संकेत-पुष्टि आ बाल-हितक नैतिक नियमसँ चलबाक चाही।
व्याख्या: लेखकक प्रक्रिया बाल-मन पढ़बाक उत्तरदायी पद्धति प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १३६३ : विदेह-सदेह २ — पहिल भाग सँ दोसरा भाग धरि शिक्षा-दर्शनक निरन्तरता

प्रश्न 13573. पहिल भागमे लेखक चित्रकला सँ कोन मूल सिद्धान्त निकालैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दखल-बन्दी आ स्वतंत्र अभिव्यक्ति।
उत्तर: घ. दखल-बन्दी आ स्वतंत्र अभिव्यक्ति।
व्याख्या: पहिल भाग बाल-चित्रमे वयस्क दखल रोकबाक निष्कर्ष दैत अछि।

प्रश्न 13574. दोसरा भागमे ई सिद्धान्त कोना आगू बढ़ैत अछि?
क. चित्रकला बाल-मन पढ़बाक साधन बनैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. चित्रकला बाल-मन पढ़बाक साधन बनैत अछि।
व्याख्या: दोसरा भाग परिवार-चित्रक मनोवैज्ञानिक पाठ करैत अछि।

प्रश्न 13575. दूनू भागमे बालकक चित्रक प्रति सामान्य धारा की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओकरा गलती नहि, अभिव्यक्ति मानब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओकरा गलती नहि, अभिव्यक्ति मानब।
व्याख्या: पहिल भाग गलती-सुधारक विरोध करैत अछि; दोसर भाग चित्र पढ़ैत अछि।

प्रश्न 13576. पहिल भागमे शिक्षकक दखल रोकब किएक आवश्यक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मानसिक विकास लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मानसिक विकास लेल।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि दखल बन्द भेल दिन मानसिक विकास शुरू होएत।

प्रश्न 13577. दोसरा भागमे शिक्षकक दखल कखन उचित बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जखन ओ सहायता आ संरक्षणक रूप ले।
उत्तर: घ. जखन ओ सहायता आ संरक्षणक रूप ले।
व्याख्या: लेखक चित्रमे दखल नहि, जीवन-सहायताक हस्तक्षेप करैत छथि।

प्रश्न 13578. दूनू भाग कला-शिक्षाकेँ कोन स्थान दैत अछि?
क. सृजनशील आ मानवीय विषयक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सृजनशील आ मानवीय विषयक।
व्याख्या: कला मात्र टाइम-पास नहि, विकास आ सहायता दुनू अछि।

प्रश्न 13579. पहिल भागक मुर्गी-अंडा उदाहरण आ दोसरा भागक परिवार-चित्रक समानता की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दूनू बाल-दृष्टि पढ़बाक आग्रह करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दूनू बाल-दृष्टि पढ़बाक आग्रह करैत अछि।
व्याख्या: दूनू ठाम वयस्क मापदंड छोड़ि बालक मन देखबाक बात अछि।

प्रश्न 13580. दोसरा भाग पहिल भागक सिद्धान्तकेँ कोना प्रमाणित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चित्र सचमुच पढ़बाक वस्तु अछि, ई जीवंत केस सँ देखबैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चित्र सचमुच पढ़बाक वस्तु अछि, ई जीवंत केस सँ देखबैत अछि।
व्याख्या: परिवार-चित्रक उदाहरण सिद्धान्तक व्यावहारिक प्रमाण अछि।

प्रश्न 13581. समूचा निबन्ध शिक्षकक भूमिका ककरा रूपमे देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सृजन-प्रेरक, पाठक आ संरक्षक।
उत्तर: घ. सृजन-प्रेरक, पाठक आ संरक्षक।
व्याख्या: लेखक तीनू भूमिका निभबैत छथि।

प्रश्न 13582. खण्ड १३६३क सार की अछि?
क. निबन्धक पहिल भाग स्वतंत्र चित्रकला सिद्धान्त दैत अछि, दोसरा भाग ओकर जीवंत मनोवैज्ञानिक उपयोग देखबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. निबन्धक पहिल भाग स्वतंत्र चित्रकला सिद्धान्त दैत अछि, दोसरा भाग ओकर जीवंत मनोवैज्ञानिक उपयोग देखबैत अछि।
व्याख्या: दूनू मिलि कला-शिक्षाक व्यापक मानवीय अर्थ स्थापित करैत अछि।

खण्ड १३६४ : विदेह-सदेह २ — बाल-शिक्षणपर निबन्ध: समेकित निष्कर्ष

प्रश्न 13583. पूरा निबन्धक केन्द्रमे कोन शिक्षा-विषय अछि?
क. बाल-चित्रकला द्वारा आत्म-प्रगटीकरण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बाल-चित्रकला द्वारा आत्म-प्रगटीकरण।
व्याख्या: आरम्भ सँ अन्त धरि चित्रकला बाल अभिव्यक्ति सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 13584. लेखक प्रचलित ब्लैकबोर्ड-नकल पद्धतिक विरोध किएक करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ बालक स्वतंत्र बिम्बक विरुद्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ बालक स्वतंत्र बिम्बक विरुद्ध अछि।
व्याख्या: पहिल भागमे ई आलोचना विस्तारसँ देल अछि।

प्रश्न 13585. बालकक गलती सुधारबाक बदला लेखक की करबाक कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओकर चित्र पढ़बाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओकर चित्र पढ़बाक।
व्याख्या: चित्र देखबाक नहि, पढ़बाक वस्तु अछि — ई मूल सूत्र अछि।

प्रश्न 13586. निबन्धमे कला-शिक्षाक पहिल लाभ की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. निडर अभिव्यक्ति।
उत्तर: घ. निडर अभिव्यक्ति।
व्याख्या: बच्चा अपना आपकेँ निडरतासँ व्यक्त करए, ई उद्देश्य बताओल गेल।

प्रश्न 13587. निबन्धमे कला-शिक्षाक दोसर लाभ की अछि?
क. आन्तरिक पीड़ा व्यक्त करबाक क्षमता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आन्तरिक पीड़ा व्यक्त करबाक क्षमता।
व्याख्या: परिवार-चित्र बालकक छिपल पीड़ा व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 13588. निबन्धमे शिक्षकक आदर्श भूमिका की बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. दखल देब नहि, प्रेरित करब आ जरूरत पर सहायक बनब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. दखल देब नहि, प्रेरित करब आ जरूरत पर सहायक बनब।
व्याख्या: लेखक बाल-चित्रमे दखल बन्द करबाक आ सहायता करबाक दुनू बात जोड़ैत छथि।

प्रश्न 13589. निबन्ध अभिभावक सभकेँ कोन चेतावनी दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बच्चाक चित्रमे अनावश्यक दखल नहि करू।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बच्चाक चित्रमे अनावश्यक दखल नहि करू।
व्याख्या: लेखक सभाक उपसंहारमे दखल बन्द करबाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 13590. निबन्ध परिवारक व्यवहारक विषयमे कोन सन्देश दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. वयस्कक व्यवहार बालकक मन तोड़ि सकैत अछि।
उत्तर: घ. वयस्कक व्यवहार बालकक मन तोड़ि सकैत अछि।
व्याख्या: सतमायक व्यवहार आ बालकक टूटन एहि सन्देशकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 13591. निबन्धक अन्तिम भरोसा ककर शक्ति पर अछि?

क. सृजनशील चित्रकलाक शक्ति पर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सृजनशील चित्रकलाक शक्ति पर।

व्याख्या: लेखक श्रेय चित्रकला सन सृजनशील विषयकेँ दैत छथि।

प्रश्न 13592. खण्ड १३६४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. “बाल-शिक्षणपर निबन्ध” कला-शिक्षाकेँ स्वतंत्र अभिव्यक्ति, बाल-मन-पाठ, पारिवारिक पीड़ा-पहचान आ मानवीय उपचारक साधन रूपमे स्थापित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. “बाल-शिक्षणपर निबन्ध” कला-शिक्षाकेँ स्वतंत्र अभिव्यक्ति, बाल-मन-पाठ, पारिवारिक पीड़ा-पहचान आ मानवीय उपचारक साधन रूपमे स्थापित करैत अछि।

व्याख्या: ई समेकन निबन्धक शिक्षा-दर्शन, मनोविज्ञान आ सामाजिक संवेदना एकत्र करैत अछि।

खण्ड १३६५ : विदेह-सदेह २ — मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्व: आरम्भिक रूपरेखा

प्रश्न 13593. गहिर-पाठमे “मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्व” लेख के लिखलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकुर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुर।

व्याख्या: स्रोत-शीर्षकमे लेखकक नाम स्पष्ट रूपेँ देल अछि।

प्रश्न 13594. लेखक कोन विधाक समीक्षा-तत्वपर विचार करबाक आग्रह करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिली कथा-कविताक समीक्षा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिली कथा-कविताक समीक्षा।

व्याख्या: लेखक कथा-कविताक समीक्षाक आवश्यक तत्व चिन्हित करबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 13595. नव समीक्षाकेँ सर्वप्रथम कोन बात चिन्हित करबाक चाही?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव वातावरणमे अवस्थित नव समस्या।

उत्तर: घ. नव वातावरणमे अवस्थित नव समस्या।

व्याख्या: स्रोतमे नव वातावरण आ नव समस्याक पहिचानकेँ आरम्भिक बिन्दु बनाओल गेल अछि।

प्रश्न 13596. व्यक्तिगत अनुभवकेँ समीक्षा कोन क्षेत्रसँ जोड़ि देखए?

क. सार्वजनिक जीवनसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सार्वजनिक जीवनसँ।

व्याख्या: व्यक्तिगत अनुभव सार्वजनिक जीवनसँ जुड़ैत अछि कि नहि, से समीक्षा देखत।

प्रश्न 13597. लेखक सूत्रबद्धता पर किएक ध्यान दैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कारण विवादित वस्तु घोसिआएबाक प्रवृत्ति चिन्हित हो।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कारण विवादित वस्तु घोसिआएबाक प्रवृत्ति चिन्हित हो।
व्याख्या: सूत्रबद्धता वा ओकर अभाव समीक्षा लेल जाँचक विषय अछि।

प्रश्न 13598. वादक प्रतीक-चिह्नकेँ ठूसि देबाक प्रवृत्ति ककर चिन्ह हो सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ब्लैकमेलर साहित्यक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ब्लैकमेलर साहित्यक।
व्याख्या: लेखक एहि प्रवृत्तिकेँ ब्लैकमेलर साहित्य चिन्हित करबाक आधार मानैत छथि।

प्रश्न 13599. गहिर-पाठमे समीक्षा केवल प्रशंसा अछि कि जाँच-पद्धति?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जाँच-पद्धति।
उत्तर: घ. जाँच-पद्धति।
व्याख्या: लेखक समीक्षा कैँ तथ्य, प्रवृत्ति आ सामाजिक संकेतक आलोचनात्मक परीक्षा बनबैत छथि।

प्रश्न 13600. समीक्षा नव समस्या चिन्हित नहि करत तँ की जोखिम अछि?
क. साहित्यक सामाजिक संदर्भ छूटि जायत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्यक सामाजिक संदर्भ छूटि जायत।
व्याख्या: नव वातावरण बिना साहित्यक जीवन-संबंध अधूरा रहि जाइत अछि।

प्रश्न 13601. व्यक्तिगत अनुभव आ सार्वजनिक जीवन जोड़बाक जाँच सँ की बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रचनाक सामाजिक अर्थ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रचनाक सामाजिक अर्थ।
व्याख्या: लेखक निजी अनुभूतिक सार्वजनिक प्रयोजन खोजैत छथि।

प्रश्न 13602. खण्ड १३६५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली समीक्षा नव समस्या, सार्वजनिक जीवन, सूत्रबद्धता आ वाद-प्रतीकक आलोचनात्मक जाँचसँ शुरू होएबाक चाही।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली समीक्षा नव समस्या, सार्वजनिक जीवन, सूत्रबद्धता आ वाद-प्रतीकक आलोचनात्मक जाँचसँ शुरू होएबाक चाही।
व्याख्या: ई खण्ड लेखकीय समीक्षा-दृष्टिक प्रारम्भिक रूपरेखा दैत अछि।

खण्ड १३६६ : विदेह-सदेह २ — ब्लैकमेलर साहित्य, हीन भावना आ जाति-सांप्रदायिकता

प्रश्न 13603. ब्लैकमेलर साहित्यकार कथा-कवितामे की प्रयोग कऽ सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अपन व्यक्तिगत प्रशंसा आ दोसरापर आक्षेप।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अपन व्यक्तिगत प्रशंसा आ दोसरापर आक्षेप।

व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रवृत्तिक सम्भावना स्पष्ट लिखल अछि।

प्रश्न 13604. तथ्यपूर्ण मूल्यांकन कोन प्रवृत्तिकेँ चिन्हित करत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यक्तिगत प्रशंसा-आक्षेपक दुरुपयोग।

उत्तर: घ. व्यक्तिगत प्रशंसा-आक्षेपक दुरुपयोग।

व्याख्या: लेखक तथ्यपूर्ण मूल्यांकनकेँ एहन प्रवृत्ति पकड़बाक उपाय मानैत छथि।

प्रश्न 13605. लेखक कोन प्रश्न उठबैत छथि—हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य की कोना भऽ सकत?

क. कल्याणकारी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कल्याणकारी।

व्याख्या: हीन भावना साहित्यक कल्याणकारी सामर्थ्यपर प्रश्नचिह्न लगबैत अछि।

प्रश्न 13606. बदलैत समीकरणक परिप्रेक्ष्यमे समीक्षा केकर रेखांकन करए?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एकभग्गू प्रस्तुतिक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. एकभग्गू प्रस्तुतिक।

व्याख्या: सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक परिवर्तनमे एकतरफा प्रस्तुति चिन्हित करबाक बात अछि।

प्रश्न 13607. कथाकार-कविक व्यक्तिगत जीवनक अदृढ़ता साहित्यमे की भऽ जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. देखार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. देखार।

व्याख्या: लेखक मानैत छथि जे निजी अदृढ़ता रचनामे प्रकट भऽ जाइत अछि।

प्रश्न 13608. व्यक्तिगत अदृढ़ता वाद, जाति वा धर्म प्रति हो तँ साहित्य मे की घुसि सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जातिवाद आ सांप्रदायिकतावाद।

उत्तर: घ. जातिवाद आ सांप्रदायिकतावाद।

व्याख्या: स्रोतमे मूल दोषक रूपमे ई प्रवृत्ति चिन्हित अछि।

प्रश्न 13609. बारम्बार परिमार्जन-परिवर्धन करितो एहन साहित्य की सँ दूर नहि भऽ पबैत?
क. मूल दोषसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मूल दोषसँ।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे मूल दोष रचना मे रहि जाइत अछि।

प्रश्न 13610. समीक्षा जातिवाद-सांप्रदायिकता प्रति कोन भूमिका लेत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चिन्हित करबाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चिन्हित करबाक।
व्याख्या: एहन सामाजिक दोष पकड़ब समीक्षा-कर्तव्य बनैत अछि।

प्रश्न 13611. हीन भावना साहित्यक सामाजिक उपयोगिताकेँ किएक कमजोर करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कारण ओ कल्याणकारी दृष्टि नहिं बनए दैत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कारण ओ कल्याणकारी दृष्टि नहिं बनए दैत।
व्याख्या: लेखक साहित्यक नैतिक-सामाजिक स्वास्थ्य पर जोर दैत छथि।

प्रश्न 13612. खण्ड १३६६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समीक्षा ब्लैकमेलर प्रशंसा, आक्षेप, हीन भावना, जाति-धर्मक अदृढ़ता आ सांप्रदायिक प्रवृत्तिकेँ तथ्यपूर्वक पहचानए।
उत्तर: घ. समीक्षा ब्लैकमेलर प्रशंसा, आक्षेप, हीन भावना, जाति-धर्मक अदृढ़ता आ सांप्रदायिक प्रवृत्तिकेँ तथ्यपूर्वक पहचानए।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा केँ नैतिक-सामाजिक छानबीन बनबैत अछि।

खण्ड १३६७ : विदेह-सदेह २ — गपाष्टक आ समीक्षा: भेद आ सावधानी

प्रश्न 13613. लेखक कोन दू वस्तुक अंतर चिन्हित करबाक बात करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गपाष्टक आ समीक्षा।
उत्तर: घ. गपाष्टक आ समीक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे “गपाष्टक आ समीक्षाक अंतर” मुख्य सावधानी रूपमे देल अछि।

प्रश्न 13614. गपाष्टकक एक लक्षण की देल गेल?
क. कियो हुनका कहियो पुछलकन्हि—सन अपुष्ट गप।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कियो हुनका कहियो पुछलकन्हि—सन अपुष्ट गप।
व्याख्या: लेखक अफवाह-जकाँ कथनकेँ समीक्षा नहि मानैत छथि।

प्रश्न 13615. “हिनकर रचनाकेँ पाठक नहि बूझि पबैए” सन वाक्य केकर प्रवृत्ति दिस संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गप आधारित निर्णय।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गप आधारित निर्णय।
व्याख्या: ई ठोस पाठ-परीक्षा नहि, व्यक्तिपरक गपक रूप अछि।

प्रश्न 13616. “ई फलनाक बेटा छथि” कहि रचनाक मूल्यांकन करब कोन दोष देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. व्यक्ति-आधारित पूर्वाग्रह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. व्यक्ति-आधारित पूर्वाग्रह।
व्याख्या: लेखक वंश, पद, जाति, धन आदिक आधारपर निर्णयक विरोध करैत छथि।

प्रश्न 13617. “ई पाइबला छथि, होटल छन्हि” सन आधार समीक्षा लेल उचित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नहि।
उत्तर: घ. नहि।
व्याख्या: लेखक एहन सामाजिक-आर्थिक आधारकेँ साहित्यिक मूल्यांकन नहि मानैत।

प्रश्न 13618. एक पाँतिक वक्तव्य “विरोध/समर्थन” किएक अपर्याप्त अछि?
क. ओ पाठाधारित विवेचना नहि दैत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ पाठाधारित विवेचना नहि दैत।
व्याख्या: स्रोतमे एक पाँतिक समर्थन-विरोध प्रवृत्ति चिन्हित अछि।

प्रश्न 13619. “ई हमरा लेल नीक लोक छथि तेँ नीक लिखै छथि” कोन समीक्षा-दोष अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यक्तिगत सम्बन्धक पक्षपात।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. व्यक्तिगत सम्बन्धक पक्षपात।
व्याख्या: लेखक व्यक्तिगत लाभ-हानि आधारित प्रशंसा पर प्रहार करैत छथि।

प्रश्न 13620. जाति वा भविष्यक फायदा आधारपर प्रशंसा ककर लक्षण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गपाष्टक/लाभपरक मूल्यांकनक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गपाष्टक/लाभपरक मूल्यांकनक।
व्याख्या: ई रचनाक गुण-दोष नहि, स्वार्थक आधार अछि।

प्रश्न 13621. सच्ची समीक्षा गपाष्टकसँ कोना अलग होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ पाठ, तथ्य आ तर्कपर आधारित होइत अछि।
उत्तर: घ. ओ पाठ, तथ्य आ तर्कपर आधारित होइत अछि।
व्याख्या: लेखकक आग्रह तथ्यपूर्ण मूल्यांकनपर अछि।

प्रश्न 13622. खण्ड १३६७क सार की अछि?
क. समीक्षा गप, वंश, पद, जाति, धन, निजी लाभ आ एक-पाँतिक समर्थनसँ अलग तथ्यपूर्ण पाठ-विवेचना होएबाक चाही।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समीक्षा गप, वंश, पद, जाति, धन, निजी लाभ आ एक-पाँतिक समर्थनसँ अलग तथ्यपूर्ण पाठ-विवेचना होएबाक चाही।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा आ अफवाह-आधारित गपाष्टकक भेद स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १३६८ : विदेह-सदेह २ — पूर्वाग्रह, पाठक-संकट आ साहित्यिक अहम्

प्रश्न 13623. समीक्षकक कोन दोष लेखक चिन्हित करबाक कहैत छथि?
क. पूर्वाग्रह वा घृणा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पूर्वाग्रह वा घृणा।
व्याख्या: मूल गप बुझबासँ पहिने निर्णय देब समीक्षा-दोष अछि।

प्रश्न 13624. सम्पूर्ण गप बुझबासँ पूर्वे निर्णय सुनाएब कोन प्रवृत्ति अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अधैर्यपूर्ण पूर्वनिर्णय।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अधैर्यपूर्ण पूर्वनिर्णय।
व्याख्या: लेखक पूर्ण पाठ-बोधक पहिने निर्णयक विरोध करैत छथि।

प्रश्न 13625. लेखक मैथिली साहित्यक पाठक-संख्या विषयमे कोन कटु टिप्पणी करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पाठकक संख्या शून्य छैक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पाठकक संख्या शून्य छैक।
व्याख्या: ई कथन समीक्षा-संकटकेँ तीखा रूपमे व्यक्त करैत अछि।

प्रश्न 13626. पाठक-संकटवला साहित्यिक क्षेत्रमे के दोसराक समीक्षा करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. एक साहित्यकार दोसराक।
उत्तर: घ. एक साहित्यकार दोसराक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि व्यवस्था सँ व्यक्तिगत अहम् आ ब्लैकमेलिंगक गुंजाइश बताओल अछि।

प्रश्न 13627. एहन परिस्थिति मे कोन गुंजाइश पूर्ण रहैत अछि?
क. व्यक्तिगत अहम् आ ब्लैकमेलिंगक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. व्यक्तिगत अहम् आ ब्लैकमेलिंगक।
व्याख्या: पाठक-अभावमे आपसी समीक्षाक सत्ता-खेल बढ़ि सकैत अछि।

प्रश्न 13628. कवि-कथाकार सम्मेलनमे उद्घोषणा आ थोपड़ी की चिन्हित कऽ सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उद्घोषक आ साहित्यकारक पूर्वाग्रह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उद्घोषक आ साहित्यकारक पूर्वाग्रह।
व्याख्या: लेखक सम्मेलन-संस्कृति मे पूर्वाग्रह देखबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 13629. पूर्वाग्रहयुक्त समीक्षा मे पाठकक हित कहाँ रहि जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हाशियापर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हाशियापर।
व्याख्या: एहन समीक्षा साहित्यक बदला व्यक्ति-सम्बन्ध सँ चलैत अछि।

प्रश्न 13630. लेखकक नजरि मे समीक्षा पहिने की बुझए?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सम्पूर्ण गप।
उत्तर: घ. सम्पूर्ण गप।
व्याख्या: पूर्ण संदर्भ बिना निर्णय असंगत अछि।

प्रश्न 13631. अहम्-प्रेरित समीक्षा साहित्यिक वातावरणकेँ की करैत अछि?
क. दूषित।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दूषित।
व्याख्या: व्यक्तिगत अहम् साहित्यिक न्यायकेँ बिगाड़ैत अछि।

प्रश्न 13632. खण्ड १३६८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पूर्वाग्रह, अधूरा निर्णय, पाठक-अभाव, आपसी समीक्षा आ सम्मेलन-पूर्वाग्रह मैथिली समीक्षा लेल गंभीर संकट अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पूर्वाग्रह, अधूरा निर्णय, पाठक-अभाव, आपसी समीक्षा आ सम्मेलन-पूर्वाग्रह मैथिली समीक्षा लेल गंभीर संकट अछि।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा-परिसरक सामाजिक विकृति देखबैत अछि।

खण्ड १३६९ : विदेह-सदेह २ — स्वतंत्रता, आरक्षण आ समान अधिकार

प्रश्न 13633. लेखक कोन दू विषयपर “घमर्थन” होएबाक बात करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्वतंत्रता आ आरक्षण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्वतंत्रता आ आरक्षण।
व्याख्या: स्रोतमे स्वतंत्रता/आरक्षणक प्रसंग अलग बिन्दु रूपमे देल अछि।

प्रश्न 13634. शोषक वर्ग स्वतंत्रता पर सतही होएबाक आरोप कोना करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्वतंत्रता सतही छल, मतदान नकली अछि कहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्वतंत्रता सतही छल, मतदान नकली अछि कहि।
व्याख्या: लेखक शोषक वर्गक घमर्थनक रूपमे ई कथन दैत छथि।

प्रश्न 13635. शोषक वर्ग आरक्षणकेँ कोना देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भेदभावपर आधारित।
उत्तर: घ. भेदभावपर आधारित।
व्याख्या: स्रोतमे आरक्षण-विरोधक आलोचनात्मक रूप उपस्थित अछि।

प्रश्न 13636. लेखकक अनुसार स्वतंत्रता केकर जन्म देलक?
क. मतदानक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मतदानक।
व्याख्या: स्वतंत्रता मतदान आ सामाजिक परिवर्तनक नब समीकरणसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 13637. पाँच सालपर मतदान की जन्म दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सामाजिक परिवर्तनक ढेर रास नव समीकरण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सामाजिक परिवर्तनक ढेर रास नव समीकरण।
व्याख्या: लेखक चुनावी चक्रकेँ सामाजिक परिवर्तनक उपकरण मानैत छथि।

प्रश्न 13638. ई नव समीकरण केकर लेल हितकारी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शोषित वर्ग लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शोषित वर्ग लेल।
व्याख्या: स्रोतमे सामाजिक परिवर्तन शोषित वर्गक हितमे देखाओल गेल।

प्रश्न 13639. असमान सामाजिक स्तरकेँ समान अधिकार देबाक प्रक्रिया ककर मूल तर्क अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आरक्षणक।
उत्तर: घ. आरक्षणक।
व्याख्या: लेखक असमानता-सुधार लेल समान अधिकारक नीति पर जोर दैत छथि।

प्रश्न 13640. समीक्षा स्वतंत्रता-आरक्षण विषयक साहित्यकेँ कोना पढ़ए?
क. सामाजिक न्यायक परिप्रेक्ष्यसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सामाजिक न्यायक परिप्रेक्ष्यसँ।
व्याख्या: लेखक सतही विरोधक बदला ऐतिहासिक-सामाजिक अर्थ देखबाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 13641. मतदानक मूल्य लेखकक दृष्टिमे किएक महत्वपूर्ण?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ शोषितक सामाजिक समीकरण बदलि सकैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ शोषितक सामाजिक समीकरण बदलि सकैत अछि।
व्याख्या: राजनीतिक अधिकार सामाजिक परिवर्तनक साधन बनैत अछि।

प्रश्न 13642. खण्ड १३६९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्वतंत्रता, मतदान आ आरक्षणक समीक्षा शोषक-वर्गीय घमर्थन नहि, समान अधिकार आ शोषित-हितक दृष्टिसँ होएबाक चाही।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्वतंत्रता, मतदान आ आरक्षणक समीक्षा शोषक-वर्गीय घमर्थन नहि, समान अधिकार आ शोषित-हितक दृष्टिसँ होएबाक चाही।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक समीक्षा मे सामाजिक न्यायक कसौटी जोड़ैत अछि।

खण्ड १३७० : विदेह-सदेह २ — शोषक-शोषित सम्बन्ध, अपराधबोध आ मेडियोक्रिटी

प्रश्न 13643. शोषक द्वारा शोषितपर उपकारक भावसँ लिखल साहित्य मे कोन भावना रहि सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पैघत्वक भावना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पैघत्वक भावना।
व्याख्या: स्रोतमे शोषकक उपकार वा अपराधबोध सँ उपजल पैघत्वक बात अछि।

प्रश्न 13644. एहि पैघत्वक भावकेँ लेखक कोन भावनाक रूप मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हीन भावनाक एक रूप।
उत्तर: घ. हीन भावनाक एक रूप।
व्याख्या: लेखक पैघत्वकेँ नैतिक श्रेष्ठता नहि, हीन भावनाक रूप मानैत छथि।

प्रश्न 13645. समीक्षा एहन पैघत्व भावक संग की करए?
क. ओकरा चिन्हित करए।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओकरा चिन्हित करए।
व्याख्या: लेखक एहन प्रवृत्ति पकड़बाक निर्देश दैत छथि।

प्रश्न 13646. “मेडियोक्रिटी चिन्हित करू” मे लेखक कोन चीजक आलोचना करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. तकिया कलाम आ चालू ब्रेकिंग न्यूज।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. तकिया कलाम आ चालू ब्रेकिंग न्यूज।
व्याख्या: आधुनिकताक नामपर सतहीपन पर प्रहार अछि।

प्रश्न 13647. चालू ब्रेकिंग न्यूजक सहारे लिखल आधुनिकता मे की नहि भेटत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. युगक प्रमेयकेँ माटि देबाक विचार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. युगक प्रमेयकेँ माटि देबाक विचार।
व्याख्या: लेखक गहिर ऐतिहासिक दृष्टि खोजैत छथि।

प्रश्न 13648. बुश-सद्दाम पर सतही आलोचना किएक धार नहि पबैत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य गहिर नहि बुझल गेलाक कारण।
उत्तर: घ. अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य गहिर नहि बुझल गेलाक कारण।
व्याख्या: स्रोतमे उदाहरण देल अछि जे बाहरी विषयक सतही विरोधमे धार नहि आबि पबैत।

प्रश्न 13649. मन्दिर-मस्जिद वा नन्दीग्राम-लालगढ़क समर्थन-विरोध कतेक पर्याप्त अछि?
क. केवल समर्थन-विरोध पर्याप्त नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. केवल समर्थन-विरोध पर्याप्त नहि।
व्याख्या: लेखक प्रवृत्ति, आधार आ युग-दृष्टि खोजैत छथि।

प्रश्न 13650. समीक्षा मेडियोक्रिटीकेँ किएक पकड़े?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सतही आधुनिकता आ चालू नारा साहित्यक गहिराई ढाँकैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सतही आधुनिकता आ चालू नारा साहित्यक गहिराई ढाँकैत अछि।
व्याख्या: लेखक औसतपनक विरोध करैत छथि।

प्रश्न 13651. शोषित-विषयक साहित्य मे समीक्षकक खास सावधानी की?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. उपकारवादी पैघत्व आ अपराधबोधक भावक जाँच।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. उपकारवादी पैघत्व आ अपराधबोधक भावक जाँच।
व्याख्या: ई दृष्टि शोषितक वास्तविक गरिमा बचेबाक लेल जरूरी अछि।

प्रश्न 13652. खण्ड १३७०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समीक्षा शोषकक पैघत्व-अपराधबोध आ आधुनिकताक नामपर तकिया कलाम/ब्रेकिंग न्यूज आधारित मेडियोक्रिटी चिन्हित करए।
उत्तर: घ. समीक्षा शोषकक पैघत्व-अपराधबोध आ आधुनिकताक नामपर तकिया कलाम/ब्रेकिंग न्यूज आधारित मेडियोक्रिटी चिन्हित करए।
व्याख्या: ई खण्ड सतही सामाजिकता आ बनावटी आधुनिकता पर चोट करैत अछि।

खण्ड १३७१ : विदेह-सदेह २ — क्रान्ति, विकास आ सामाजिक-आर्थिक संदर्भ

प्रश्न 13653. भारतमे राजनीतिक क्रान्तिक बाद कोन दू क्रान्तिक संकल्प कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. औद्योगिक आ सामाजिक क्रान्ति।
उत्तर: घ. औद्योगिक आ सामाजिक क्रान्ति।
व्याख्या: स्रोतमे भारतीय प्रक्रिया एहि क्रममे बताओल गेल अछि।

प्रश्न 13654. विकसित देशमे औद्योगिक क्रान्तिक पहिने कोन क्रान्ति भेल कहल गेल?
क. सामाजिक क्रान्ति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सामाजिक क्रान्ति।
व्याख्या: लेखक तुलनात्मक विकास-क्रम देलनि।

प्रश्न 13655. भारतीय कठिन परिस्थिति ककर परिणाम रूपमे देखाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. राजनीतिक, औद्योगिक आ सामाजिक क्रान्तिक क्रमभेदक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. राजनीतिक, औद्योगिक आ सामाजिक क्रान्तिक क्रमभेदक।
व्याख्या: लेखक विकासक असमान ऐतिहासिक क्रमपर ध्यान दैत छथि।

प्रश्न 13656. लोकाचार, चिन्तन क्रम आ दृष्टिकोणक संग किनका पर सेहो ध्यान देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पोषण, स्वास्थ्य, सफाइ, चिकित्सा आ शिक्षा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पोषण, स्वास्थ्य, सफाइ, चिकित्सा आ शिक्षा।
व्याख्या: समीक्षा जीवन-स्थितिक ठोस सूचक सभ देखबाक आग्रह करैत अछि।

प्रश्न 13657. लेखक आयु-प्रत्याशा मे वृद्धि तक किएक जोड़ैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विकासक सामाजिक सूचक रूपमे।
उत्तर: घ. विकासक सामाजिक सूचक रूपमे।
व्याख्या: साहित्यिक संदर्भक समीक्षा मे जीवन-स्तरक संकेत महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 13658. समाजक धनाढ्य आ निर्धनमे विभाजनक कोन पक्ष समीक्षा देखए?
क. दुनू वर्गक आकार, स्तर आ दूरी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दुनू वर्गक आकार, स्तर आ दूरी।
व्याख्या: स्रोतमे वर्गीय आकार, स्तर आ बीचक दूरी पर बल अछि।

प्रश्न 13659. धनाढ्य-निर्धन दूरी साहित्यिक समीक्षा लेल किएक उपयोगी?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ सामाजिक यथार्थक माप दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ सामाजिक यथार्थक माप दैत अछि।
व्याख्या: रचना समाजक वर्ग-विन्यास सँ अलग नहि अछि।

प्रश्न 13660. समीक्षा सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि बिना की खोएत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रचनाक युग-संदर्भ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रचनाक युग-संदर्भ।
व्याख्या: लेखक साहित्यक अर्थ बदलैत परिस्थिति मे पढ़ब चाहैत छथि।

प्रश्न 13661. विकास-सूचक सभक उल्लेख लेखकक समीक्षा-दृष्टि कैं कोना व्यापक बनबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ओ साहित्यकैं जीवन-संरचना सँ जोड़ैत अछि।
उत्तर: घ. ओ साहित्यकैं जीवन-संरचना सँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: समीक्षा केवल अलंकार नहि, समाज-विज्ञानक चेतना सेहो अछि।

प्रश्न 13662. खण्ड १३७१क सार की अछि?
क. समीक्षा राजनीतिक, औद्योगिक, सामाजिक क्रान्ति, जीवन-स्तर, स्वास्थ्य-शिक्षा आ वर्ग-दूरीक पृष्ठभूमिमे साहित्य पढ़ए।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समीक्षा राजनीतिक, औद्योगिक, सामाजिक क्रान्ति, जीवन-स्तर, स्वास्थ्य-शिक्षा आ वर्ग-दूरीक पृष्ठभूमिमे साहित्य पढ़ए।
व्याख्या: ई खण्ड विकास-संदर्भक आलोचनात्मक कसौटी दैत अछि।

खण्ड १३७२ : विदेह-सदेह २ — नव राज्य, समुदाय, आदिवासी आ जाति-समीक्षा

प्रश्न 13663. स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद नवीन राज्य कोन समस्याक सामना करैत अछि?

क. राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन।

व्याख्या: स्रोतमे नव राज्यक बहुआयामी समस्या उल्लेखित अछि।

प्रश्न 13664. नव राज्य मे परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया कखन-कखन कोना होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कखनो काल परस्पर विरोधी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कखनो काल परस्पर विरोधी।

व्याख्या: लेखक एकीकरणक जटिलता देखबैत छथि।

प्रश्न 13665. मानवशास्त्रीय, जातीय, धार्मिक, भाषिक निष्ठा ककर रूपमे देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्राथमिक आ लघु निष्ठा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्राथमिक आ लघु निष्ठा।

व्याख्या: समीक्षा स्थानिक-जातीय-धार्मिक-भाषिक आस्था देखबाक बात करैत अछि।

प्रश्न 13666. आदिवासी उदाहरणमे कोन समुदायनाम आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सतार आ गिदरमारा।

उत्तर: घ. सतार आ गिदरमारा।

व्याख्या: स्रोतमे आदिवासी विविधता लेल ई उदाहरण अछि।

प्रश्न 13667. आदिवासी जीवनक कोन गुण सभ उल्लेखित अछि?

क. प्रकृतिसँ लगाव, सरलता, निश्छलता, कृतज्ञता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृतिसँ लगाव, सरलता, निश्छलता, कृतज्ञता।

व्याख्या: लेखक आदिवासी सांस्कृतिक जीवनक लक्षण बतबैत छथि।

प्रश्न 13668. प्रकृति-पूजामे कोन-कोन प्रतीक आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सूर्य, चन्द्र, वृक्ष, पर्वत, पृथ्वी, जलाशय आ नक्षत्र।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सूर्य, चन्द्र, वृक्ष, पर्वत, पृथ्वी, जलाशय आ नक्षत्र।

व्याख्या: स्रोतमे प्रकृति-आस्थाक विस्तृत सूची अछि।

प्रश्न 13669. व्यक्तिक प्रतिष्ठा कोन आधारपर बनल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्थान-जाति आधारित।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्थान-जाति आधारित।
व्याख्या: समीक्षा जाति-प्रतिष्ठाक सामाजिक संरचना चिन्हित करए।

प्रश्न 13670. वर्ण-व्यवस्था ककर रूपमे देखाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. धार्मिक नहि, सामाजिक प्रथा।
उत्तर: घ. धार्मिक नहि, सामाजिक प्रथा।
व्याख्या: लेखक वर्ण-व्यवस्थाक उपयोगिता समाप्त मानैत छथि।

प्रश्न 13671. विदेशी मानसिकता ककर रूपमे आयल?
क. विघटनकारी तत्व।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विघटनकारी तत्व।
व्याख्या: जाति-संरचनाक आलोचना मे बाहरी मानसिकता व विघटनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13672. खण्ड १३७२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समीक्षा नव राज्यक निष्ठा-संघर्ष, आदिवासी प्रकृति-संस्कृति, जाति-प्रतिष्ठा आ वर्ण-व्यवस्थाक सामाजिक उपयोगहीनता चिन्हित करए।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समीक्षा नव राज्यक निष्ठा-संघर्ष, आदिवासी प्रकृति-संस्कृति, जाति-प्रतिष्ठा आ वर्ण-व्यवस्थाक सामाजिक उपयोगहीनता चिन्हित करए।
व्याख्या: ई खण्ड समुदाय आ जाति-संरचनाक आलोचनात्मक पाठ खोलैत अछि।

खण्ड १३७३ : विदेह-सदेह २ — महिला-बाल विकास, स्त्री-स्वातंत्र्य आ धर्मनिरपेक्षता

प्रश्न 13673. महिला आ बाल-विकास प्रसंगमे महिलाकेँ की देबाक बात अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अधिकार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अधिकार।
व्याख्या: स्रोतमे महिलाक अधिकार पर बल अछि।

प्रश्न 13674. महिला-विकास लेल शिक्षा-प्रणालीकेँ कोना करबाक बात अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सक्रिय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सक्रिय।
व्याख्या: लेखक शिक्षा-प्रणाली सक्रिय करबाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 13675. पाठ्यक्रममे कोन अध्ययन जोड़बाक बात आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. महिला अध्ययन।
उत्तर: घ. महिला अध्ययन।
व्याख्या: महिला अध्ययन पाठ्यक्रमक हिस्सा होएबाक चाही।

प्रश्न 13676. महिलाक कोन शिक्षामे प्रतिशत बढ़ाएबाक बात अछि?
क. व्यावसायिक आ तकनीकी शिक्षा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. व्यावसायिक आ तकनीकी शिक्षा।
व्याख्या: स्रोतमे स्त्रीक पेशागत-तकनीकी सहभागिता बढ़ेबाक संकेत अछि।

प्रश्न 13677. महिला आन्दोलन किन-किन ऐतिहासिक क्षेत्रसँ जुड़ल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्वतंत्रता, पर्यावरण आ दहेज-विरोधी आन्दोलन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्वतंत्रता, पर्यावरण आ दहेज-विरोधी आन्दोलन।
व्याख्या: लेखक महिलाक संघर्षक विभिन्न क्षेत्रक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 13678. स्त्री-स्वातंत्र्यवादक उल्लेख कोन व्यापक विषयक बाद आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. महिला आ बाल-विकास।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. महिला आ बाल-विकास।
व्याख्या: स्त्री-मुक्ति महिला-विकासक वैचारिक विस्तार रूपमे आयल अछि।

प्रश्न 13679. धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक संस्था ककर हितपर आधारित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संपूर्ण समुदायक आर्थिक आ सामाजिक हितपर।
उत्तर: घ. संपूर्ण समुदायक आर्थिक आ सामाजिक हितपर।
व्याख्या: स्रोतमे धर्म-नस्ल-पंथ भेद रहित संस्था पर जोर अछि।

प्रश्न 13680. धर्मनिरपेक्षता कोन आधारपर विभाजन अस्वीकार करैत अछि?
क. धर्म, आस्था वा सामाजिक मूलक आधारपर।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. धर्म, आस्था वा सामाजिक मूलक आधारपर।
व्याख्या: व्यक्ति वा समूहक बीच एहन विभाजन अस्वीकार्य कहल गेल।

प्रश्न 13681. सभ समुदाय शक्तिक उपयोग कोना करए?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उत्तरदायित्व आ कर्तव्यक निर्वहन जेकाँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उत्तरदायित्व आ कर्तव्यक निर्वहन जेकाँ।
व्याख्या: धर्मनिरपेक्षता वितरणात्मक न्याय सँ जोड़ल अछि।

प्रश्न 13682. खण्ड १३७३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समीक्षा महिला-अधिकार, शिक्षा, स्त्री-स्वातंत्र्यवाद, आन्दोलन-सहभागिता आ धर्मनिरपेक्ष वितरणात्मक न्यायक कसौटी अपनाबए।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समीक्षा महिला-अधिकार, शिक्षा, स्त्री-स्वातंत्र्यवाद, आन्दोलन-सहभागिता आ धर्मनिरपेक्ष वितरणात्मक न्यायक कसौटी अपनाबए।
व्याख्या: ई खण्ड लैंगिक आ धर्मनिरपेक्ष सामाजिक दृष्टि जोड़ैत अछि।

खण्ड १३७४ : विदेह-सदेह २ — दार्शनिक प्रवृत्ति, शिक्षा-विकास आ विज्ञान

प्रश्न 13683. लेखक टैगोरक कोन वादक उल्लेख करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कलात्मकतावाद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कलात्मकतावाद।
व्याख्या: स्रोतमे टैगोरक कलात्मकतावाद सूचीबद्ध अछि।

प्रश्न 13684. गाँधीक संदर्भमे कोन वाद आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नैतिकतावाद।
उत्तर: घ. नैतिकतावाद।
व्याख्या: लेखक गाँधीकेँ नैतिकतावादसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 13685. अरविन्द घोषक विचार कोना कहल गेल?
क. रहस्यवादी आध्यात्म दर्शन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रहस्यवादी आध्यात्म दर्शन।
व्याख्या: स्रोतमे अरविन्द घोषक रहस्यवादी आध्यात्म दर्शन आयल अछि।

प्रश्न 13686. विवेकानन्दक विचारक उल्लेख कोना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. व्यावहारिक वेदान्तवाद।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. व्यावहारिक वेदान्तवाद।
व्याख्या: लेखक विवेकानन्दक दार्शनिक प्रवृत्तिकेँ एना चिन्हित करैत छथि।

प्रश्न 13687. विकास आर्थिकसँ पहिने कोन हो तँ जनसामान्य साझी भऽ सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शैक्षिक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शैक्षिक।
व्याख्या: स्रोतमे शैक्षिक विकासक प्राथमिकता पर बल अछि।

प्रश्न 13688. शैक्षिक विकास सँ लोकमे की बढ़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सर्जन क्षमता आ उत्तरदायित्वक बोध।
उत्तर: घ. सर्जन क्षमता आ उत्तरदायित्वक बोध।
व्याख्या: लेखक शिक्षा कैं रचनात्मक क्षमता आ उत्तरदायित्वसँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 13689. विज्ञान आ प्रौद्योगिकी विकसित-अविकसित राष्ट्रक बीचक अंतरक कोन कारण बनैत अछि?
क. मानवीय समस्याक समाधानक आधार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मानवीय समस्याक समाधानक आधार।
व्याख्या: स्रोतमे विज्ञान-प्रौद्योगिकी बीमारी, अज्ञानता, असुरक्षा समाधानसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 13690. विज्ञानक विकास केकर असीमित विस्तारक आधार कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आकांक्षा, आशा आ सुविधाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आकांक्षा, आशा आ सुविधाक।
व्याख्या: लेखक विज्ञानसँ आशा व सुविधा विस्तार देखैत छथि।

प्रश्न 13691. विज्ञान-प्रौद्योगिकी वैयक्तिक आ राष्ट्रीय स्तरपर की करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शक्तिक अभिवृद्धि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शक्तिक अभिवृद्धि।
व्याख्या: स्रोतमे वैयक्तिक आ राष्ट्रीय शक्ति-वृद्धि कहल गेल।

प्रश्न 13692. खण्ड १३७४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समीक्षा दार्शनिक प्रवृत्ति, शैक्षिक प्राथमिकता आ विज्ञान-प्रौद्योगिकीकैं सामाजिक विकासक मूल कसौटी रूपमे देखए।
उत्तर: घ. समीक्षा दार्शनिक प्रवृत्ति, शैक्षिक प्राथमिकता आ विज्ञान-प्रौद्योगिकीकैं सामाजिक विकासक मूल कसौटी रूपमे देखए।
व्याख्या: ई खण्ड विचार, शिक्षा आ विज्ञानकैं साहित्यिक परिप्रेक्ष्य बनबैत अछि।

खण्ड १३७५ : विदेह-सदेह २ — विधि, नागरिक स्वतंत्रता आ प्रेस

प्रश्न 13693. विधि-व्यवस्थाक प्रयोग केकर न्याय लेल होएबाक चाही?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. निर्धन आ पिछड़ल वर्ग लेल।

उत्तर: घ. निर्धन आ पिछड़ल वर्ग लेल।

व्याख्या: स्रोतमे विधि-व्यवस्था निर्धन-पिछड़ल वर्गकेँ न्याय देबाक साधन कहल गेल।

प्रश्न 13694. न्याय-प्रणालीमे कोन संस्थाकेँ पुनःजीवन देबाक बात आयल?

क. न्याय पंचायत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. न्याय पंचायत।

व्याख्या: लेखक न्याय पंचायत पुनर्जीवित करबाक बात करैत छथि।

प्रश्न 13695. नागरिक स्वतंत्रता ककर लोकतांत्रिक अधिकारसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मानवक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मानवक।

व्याख्या: स्रोतमे नागरिक स्वतंत्रता मानवक लोकतांत्रिक अधिकार रूपमे आयल।

प्रश्न 13696. नागरिक स्वतंत्रता कोन समाजक सृष्टि चाहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्वतंत्र चिन्तन क्षमतापूर्ण समाज।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्वतंत्र चिन्तन क्षमतापूर्ण समाज।

व्याख्या: लेखक स्वतंत्र चिन्तनक समाज पर बल दैत छथि।

प्रश्न 13697. नागरिक स्वतंत्रता प्रतिबन्ध आ दबाब सँ की चाहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुक्ति।

उत्तर: घ. मुक्ति।

व्याख्या: अधिकारक उत्पीड़नसँ बचाव नागरिक स्वतंत्रताक भाग अछि।

प्रश्न 13698. प्रेस केकर बीच कड़ी कहल गेल?

क. शासक आ शासितक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शासक आ शासितक।

व्याख्या: स्रोतमे प्रेसकेँ शासन आ जनता बीचक कड़ी कहल गेल।

प्रश्न 13699. प्रेसक भूमिका कोन जीवन-क्षेत्र सभमे कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक जीवनमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक जीवनमे।
व्याख्या: प्रेस लोकतांत्रिक जीवनक व्यापक अंग अछि।

प्रश्न 13700. आब जनमतकेँ प्रभावित करबाक खतरा केकरा सँ बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रभावशाली विज्ञापन एजेंसीसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रभावशाली विज्ञापन एजेंसीसँ।
व्याख्या: लेखक विज्ञापन एजेंसीक प्रभाव पर चेतावनी दैत छथि।

प्रश्न 13701. प्रेस लोकतंत्रक कोन भूमिका निभबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रहरी आ संरक्षक।
उत्तर: घ. प्रहरी आ संरक्षक।
व्याख्या: स्रोतमे प्रेसकेँ व्यवस्थाक स्थायित्व आ लोकतंत्रक प्रहरी कहल गेल।

प्रश्न 13702. खण्ड १३७५क सार की अछि?
क. समीक्षा विधि-न्याय, नागरिक स्वतंत्रता, स्वतंत्र चिन्तन आ प्रेसक लोकतांत्रिक प्रहरी-भूमिका पर ध्यान देत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समीक्षा विधि-न्याय, नागरिक स्वतंत्रता, स्वतंत्र चिन्तन आ प्रेसक लोकतांत्रिक प्रहरी-भूमिका पर ध्यान देत।
व्याख्या: ई खण्ड अधिकार, न्याय आ संचार-सत्ता पर आलोचनात्मक कसौटी बनबैत अछि।

खण्ड १३७६ : विदेह-सदेह २ — संस्था-निर्माण, लोकतंत्र आ प्रदूषण

प्रश्न 13703. लेखक नव संस्थाक निर्माण वा वर्तमानमे सुधार ककर विरुद्ध मानैत छथि?
क. सामन्तवादी, जनजातीय, जातीय आ पंथगत निष्ठाक विरुद्ध।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सामन्तवादी, जनजातीय, जातीय आ पंथगत निष्ठाक विरुद्ध।
व्याख्या: स्रोतमे संस्था-सुधारक विरोधी लक्ष्य सूचीबद्ध अछि।

प्रश्न 13704. लोकतंत्र संग लेखक कोन वैचारिक शब्द सभ जोड़ैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उदारवाद, गणतंत्रवाद, संविधानवाद, समाजवाद, समतावाद।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उदारवाद, गणतंत्रवाद, संविधानवाद, समाजवाद, समतावाद।
व्याख्या: संस्था-विमर्शमे ई विचार-शृंखला देल अछि।

प्रश्न 13705. लोकतंत्रक आधारमे कोन अधिकारक अस्तित्व आवश्यक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सांवैधानिक अधिकार।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सांवैधानिक अधिकार।
व्याख्या: सांवैधानिक अधिकार लोकतंत्रक मुख्य आधार अछि।

प्रश्न 13706. जनप्रिय चुनावक कोन गुण उल्लेखित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समएबद्ध।
उत्तर: घ. समएबद्ध।
व्याख्या: लोकतंत्रमे नियमित चुनाव अनिवार्य संकेत अछि।

प्रश्न 13707. संघीय व्यवस्था मे कोन विभाजन उल्लेखित अछि?
क. शक्ति विभाजन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शक्ति विभाजन।
व्याख्या: स्रोतमे संघीय शक्ति विभाजनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13708. जनमतक महत्व कोन व्यवस्था-संदर्भमे आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लोकतांत्रिक संस्था-सुधारमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लोकतांत्रिक संस्था-सुधारमे।
व्याख्या: जन-संप्रभुता आ जनमत लोकतंत्रक मूल तत्व अछि।

प्रश्न 13709. प्रदूषण कोन चार क्षेत्रक हानिकारक परिवर्तन सँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जल, थल, वायु आ आकाश।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जल, थल, वायु आ आकाश।
व्याख्या: स्रोतमे भौतिक-रासायनिक-जैविक परिवर्तनक कारण प्रदूषण कहल गेल।

प्रश्न 13710. प्रदूषण प्रकृतिमे की उत्पन्न करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. असंतुलन।
उत्तर: घ. असंतुलन।
व्याख्या: पर्यावरणीय हानि प्रकृति-असंतुलन बनबैत अछि।

प्रश्न 13711. समीक्षा मे पर्यावरणक उल्लेख किएक आवश्यक?
क. सामाजिक जीवन आ साहित्यक पृष्ठभूमि प्रकृति सँ जुड़ल अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सामाजिक जीवन आ साहित्यक पृष्ठभूमि प्रकृति सँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: लेखक सामाजिक-सांस्कृतिक समीक्षा मे पर्यावरणक कसौटी जोड़ैत छथि।

प्रश्न 13712. खण्ड १३७६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समीक्षा संस्था-निर्माण, लोकतंत्र, अधिकार, चुनाव, जनमत, संघीय शक्ति-विभाजन आ पर्यावरण-प्रदूषणक प्रश्नकेँ साथ पढ़ए।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समीक्षा संस्था-निर्माण, लोकतंत्र, अधिकार, चुनाव, जनमत, संघीय शक्ति-विभाजन आ पर्यावरण-प्रदूषणक प्रश्नकेँ साथ पढ़ए।
व्याख्या: ई खण्ड राजनीति आ प्रकृति-दृष्टिक मिलन करैत अछि।

खण्ड १३७७ : विदेह-सदेह २ — कला, सौन्दर्यीकरण आ मानसिक क्रिया

प्रश्न 13713. लेखक प्रश्न करैत छथि जे कला लेल कोन चीज होएबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन।
व्याख्या: स्रोतमे कला-सिद्धान्तक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

प्रश्न 13714. कला सामाजिक संवेदनाक संग ककर एक रूप कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मानव क्रियाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मानव क्रियाक।
व्याख्या: लेखक कला कैँ मानवक सामाजिक क्रिया मानैत छथि।

प्रश्न 13715. कला जगतक कोन प्रस्तुति कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति।
उत्तर: घ. सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति।
व्याख्या: स्रोतमे कला जगतक सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति अछि।

प्रश्न 13716. लेखक सौन्दर्यक संग कोन बात जोड़ैत छथि?
क. उपयोगिता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. उपयोगिता।
व्याख्या: कला-सौन्दर्य उपयोगितासँ अलग नहि मानल गेल।

प्रश्न 13717. कलापूर्णताक कला ककर संग जोड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जीवन-दर्शन आ संप्रदाय संग।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जीवन-दर्शन आ संप्रदाय संग।

व्याख्या: स्रोतमे कला, जीवन-दर्शन आ संप्रदायक सम्बन्ध देखल गेल।

प्रश्न 13718. भावनात्मक वातावरणमे सत्य आ कलाक कार्य कोना देखल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सौन्दर्यीकृत अवलोकन रूपमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सौन्दर्यीकृत अवलोकन रूपमे।

व्याख्या: लेखक कलात्मक अनुभवक भावनात्मक परिवेश बतबैत छथि।

प्रश्न 13719. प्रकृति कलाविशिष्ट प्रभावशाली स्थिति मे कोन भाव सम्भव अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शोकजनक आ हास्य दुनू।

उत्तर: घ. शोकजनक आ हास्य दुनू।

व्याख्या: स्रोतमे सौन्दर्य-अनुभवक विविध भाव-संभावना आयल अछि।

प्रश्न 13720. मानवक सौन्दर्यक अनुभव बिना की सम्भव नहि?

क. ओकर अनुभव।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओकर अनुभव।

व्याख्या: सौन्दर्य अनुभूति व्यक्तिगत व सामाजिक अनुभव सँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 13721. मानसिक क्रिया संदर्भमे मनुष्य कोना प्राणी कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सोचैबला प्राणी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सोचैबला प्राणी।

व्याख्या: स्रोतमे मनुष्यक मानसिक-भौतिक अनुभूति पर विचार अछि।

प्रश्न 13722. खण्ड १३७७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कला सामाजिक संवेदना, मानव क्रिया, सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति, उपयोगिता, भावनात्मक वातावरण आ मानसिक अनुभवक संयुक्त क्षेत्र अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कला सामाजिक संवेदना, मानव क्रिया, सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति, उपयोगिता, भावनात्मक वातावरण आ मानसिक अनुभवक संयुक्त क्षेत्र अछि।

व्याख्या: ई खण्ड कला-समीक्षाक सौन्दर्यशास्त्रीय आधार दैत अछि।

खण्ड १३७८ : विदेह-सदेह २ — छद्म-आभास, काण्टक जाल आ बाल-किशोर साहित्य

प्रश्न 13723. लेखक विरोधाभास वा छद्म आभासकेँ कोन शब्दसँ जोड़ैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अस्पष्टता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अस्पष्टता।

व्याख्या: स्रोतमे विरोधाभास/छद्म आभास आ अस्पष्टता एक साथ आयल अछि।

प्रश्न 13724. छद्म आभाससँ कोन प्रकारक लाभक उल्लेख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सैद्धांतिक लाभ।

उत्तर: घ. सैद्धांतिक लाभ।

व्याख्या: लेखक अस्पष्टता मे सिद्धान्तगत लाभ देखबाक सावधानी दैत छथि।

प्रश्न 13725. काण्टक दर्शन बुझएबा लेल लेखक कोन रूपक दैत छथि?

क. मछहरमे जाल फेकबाक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मछहरमे जाल फेकबाक।

व्याख्या: दू इंच अवकाशवला जालक उदाहरण समीक्षा-पद्धतिक रूपक अछि।

प्रश्न 13726. दू इंचक जाल फेकलासँ कोन माँछ नहि भेटत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दू इंचसँ कमबला माँछ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दू इंचसँ कमबला माँछ।

व्याख्या: रूपक बतबैत अछि जे औजारक सीमा निष्कर्षक सीमा बनैत अछि।

प्रश्न 13727. पोखरिमे छोट माँछ नहि अछि—एहन निष्कर्ष किएक गलत भऽ सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जालक छिद्र पैघ छल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जालक छिद्र पैघ छल।

व्याख्या: लेखक समीक्षा-औजारक सीमा पर चेतावनी दैत छथि।

प्रश्न 13728. समीक्षकक जाल जतेक महीन होए ततेक की?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नीक।

उत्तर: घ. नीक।

व्याख्या: महीन जाल अधिक सूक्ष्म अर्थ पकड़ैत अछि।

प्रश्न 13729. बाल-किशोर साहित्य पढ़ल बच्चा बादमे कोन दिस घुरि सकैत अछि?
क. भाषाक प्रति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भाषाक प्रति।
व्याख्या: लेखक बाल-किशोर साहित्य कैं भाषा-प्रेमक आधार मानैत छथि।

प्रश्न 13730. नोकरी-चाकरी स्थिर भेलाक बाद भाषाक प्रति घुरबाक कारण की बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बचपनमे पढ़ल बाल-किशोर साहित्य।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बचपनमे पढ़ल बाल-किशोर साहित्य।
व्याख्या: बाल्य-पठन दीर्घकालिक भाषिक स्मृति बनबैत अछि।

प्रश्न 13731. मैथिली बाल साहित्य नहि पढ़ने बच्चा किएक मैथिलीसँ प्रेम नहि करैत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कारण भाषा ओकर पढ़ाइ-जीवनमे नहि आयल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कारण भाषा ओकर पढ़ाइ-जीवनमे नहि आयल।
व्याख्या: लेखक शिक्षा आ बाल-साहित्यक अभावकेँ भाषा-विमुखता सँ जोड़ैत छथि।

प्रश्न 13732. खण्ड १३७८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. समीक्षा अस्पष्टता, सिद्धान्तक औजार, काण्टक जाल-जकाँ कसौटी आ बाल-किशोर साहित्यक भाषा-निर्माण भूमिका पर सजग रहए।
उत्तर: घ. समीक्षा अस्पष्टता, सिद्धान्तक औजार, काण्टक जाल-जकाँ कसौटी आ बाल-किशोर साहित्यक भाषा-निर्माण भूमिका पर सजग रहए।
व्याख्या: ई खण्ड सूक्ष्म समीक्षा-औजार आ बाल-पठनक भविष्यगत महत्व बतबैत अछि।

खण्ड १३७९ : विदेह-सदेह २ — “सगर राति दीप जरए” आ समीक्षा-युद्धक कारण

प्रश्न 13733. “सगर राति दीप जरए” प्रसंगमे समीक्षा-युद्धक कारण कतेक प्रकारक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आ तात्कालिक।
उत्तर: घ. सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आ तात्कालिक।
व्याख्या: स्रोतमे चार कारण-क्षेत्र स्पष्ट आयल अछि।

प्रश्न 13734. केवल तात्कालिक कारण रटि लेब लेखकक अनुसार पर्याप्त अछि?
क. नहि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नहि।
व्याख्या: लेखक मात्र तात्कालिकता पर टिकि समीक्षा करबाक आलोचना करैत छथि।

प्रश्न 13735. सभटा खरापे-खराप लिखब कोन प्रकारक समीक्षा-दोष अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एकांगी सामान्यीकरण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एकांगी सामान्यीकरण।
व्याख्या: लेखक सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर यांत्रिक टिप्पणीक विरोध करैत छथि।

प्रश्न 13736. फ्रांसीसी क्रान्तिक उदाहरण किएक देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सामान्य कथनक ऐतिहासिक अशुद्धि देखएबाक लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सामान्य कथनक ऐतिहासिक अशुद्धि देखएबाक लेल।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि जे ओहि समय फ्रांसक किसानक आर्थिक दशा इंग्लैंडसँ नीक रहि सकैत छल।

प्रश्न 13737. फ्रांसीसी क्रान्तिक तुलना समीक्षा मे की सिखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. तथ्य आ संदर्भ बिना कारण-निर्धारण गलत होइत अछि।
उत्तर: घ. तथ्य आ संदर्भ बिना कारण-निर्धारण गलत होइत अछि।
व्याख्या: ऐतिहासिक तुलना सूक्ष्मता माँगैत अछि।

प्रश्न 13738. समीक्षा-युद्धक कारण खोजैत समय समीक्षककेँ कोन जालसँ बचबाक चाही?
क. तत्कालिक कारणमे सीमित रहबासँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. तत्कालिक कारणमे सीमित रहबासँ।
व्याख्या: लेखक गहिर सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक पाठ माँगैत छथि।

प्रश्न 13739. “सगर राति दीप जरए” समीक्षा में लेखक कोन दृष्टि चाहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बहु-कारणात्मक दृष्टि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बहु-कारणात्मक दृष्टि।
व्याख्या: चार कारण-क्षेत्रक उल्लेख बहुस्तरीय विश्लेषणक मांग अछि।

प्रश्न 13740. सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर तैयार वाक्य लिखि देनाइ किएक दोषपूर्ण?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओ पाठ आ इतिहासक विशिष्टता नहि देखैत।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओ पाठ आ इतिहासक विशिष्टता नहि देखैत।
व्याख्या: समीक्षा सूत्र-वाक्य नहि, विशिष्ट पाठ-परीक्षा हो।

प्रश्न 13741. तात्कालिक कारणक संग आर कोन कारण देखबाक चाही?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक, आर्थिक आ राजनैतिक।

उत्तर: घ. सामाजिक, आर्थिक आ राजनैतिक।

व्याख्या: लेखक समग्र कारण-क्रमक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 13742. खण्ड १३७९क सार की अछि?

क. “सगर राति दीप जरए”क समीक्षा बहु-कारणात्मक, तथ्य-सचेत आ ऐतिहासिक रूपेँ सूक्ष्म होएबाक चाही, केवल तात्कालिक दोषारोपण नहि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. “सगर राति दीप जरए”क समीक्षा बहु-कारणात्मक, तथ्य-सचेत आ ऐतिहासिक रूपेँ सूक्ष्म होएबाक चाही, केवल तात्कालिक दोषारोपण नहि।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक विवादक कारण-पाठक पद्धति दैत अछि।

खण्ड १३८० : विदेह-सदेह २ — दलित साहित्य, ऋतु-संदर्भ आ तथ्य-जाँच

प्रश्न 13743. लेखक मैथिलीमे दलित साहित्यक स्थिति पर कोन कठोर टिप्पणी करैत छथि?

क. किछु नाम छोड़ि मैथिलीमे दलित लेखक आ दलित साहित्य शून्य अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु नाम छोड़ि मैथिलीमे दलित लेखक आ दलित साहित्य शून्य अछि।

व्याख्या: स्रोतमे महेन्द्र नारायण राम, बिलट पासवान विहंगम आदि छोड़ि शून्यता कहल गेल।

प्रश्न 13744. दलित साहित्य प्रसंगमे कोन दुई नाम उदाहरण रूपमे आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. महेन्द्र नारायण राम आ बिलट पासवान विहंगम।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. महेन्द्र नारायण राम आ बिलट पासवान विहंगम।

व्याख्या: लेखक एहि नाम सभकेँ अपवाद रूपमे रखैत छथि।

प्रश्न 13745. लेखक ऋतु-संदर्भ जाँच लेल कोन फसल/ऋतु शब्द उठबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. खेसारी, माघ, आम, शरद ऋतु, धूमकेतु।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. खेसारी, माघ, आम, शरद ऋतु, धूमकेतु।

व्याख्या: स्रोतमे साहित्यिक तिथि-ऋतु विसंगति जाँचक उदाहरण अछि।

प्रश्न 13746. यात्रीक उपन्यासमे कोन समस्या संकेतित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दू पृष्ठक अन्तरपर आषाढ़क आ दोसर मासक तिथि।

उत्तर: घ. दू पृष्ठक अन्तरपर आषाढ़क आ दोसर मासक तिथि।

व्याख्या: लेखक तिथि-संगति पर आलोचनात्मक ध्यान दैत छथि।

प्रश्न 13747. मोहन भारद्वाज आ कुमार पवनक उल्लेख कोन प्रसंगमे आयल?
क. समीक्षा-संदर्भ आ तथ्य-जाँचक प्रसंगमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समीक्षा-संदर्भ आ तथ्य-जाँचक प्रसंगमे।
व्याख्या: स्रोतमे ऋतु-तिथि टिप्पणीक संग ई नाम आयल अछि।

प्रश्न 13748. मोड़पर पृष्ठ १ मे धानक सीस आ खेसारीक गद्दा प्रसंग किएक उठल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ऋतु-क्रमक असंगति देखएबाक लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ऋतु-क्रमक असंगति देखएबाक लेल।
व्याख्या: लेखक कहैत छथि खेसारी धानक बाद होइत अछि।

प्रश्न 13749. खेसारीक गद्दरि कखन होएबाक संकेत देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अगहनक बाद, धानक बाद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अगहनक बाद, धानक बाद।
व्याख्या: स्रोतमे खेसारीक समय-संदर्भ स्पष्ट अछि।

प्रश्न 13750. समीक्षा मे फसल-ऋतु जाँच किएक जरूरी?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. यथार्थक सूक्ष्मता आ तथ्य-संगति लेल।
उत्तर: घ. यथार्थक सूक्ष्मता आ तथ्य-संगति लेल।
व्याख्या: साहित्यक यथार्थ बाहरी लोकज्ञानसँ जाँचल जा सकैत अछि।

प्रश्न 13751. दलित साहित्यक शून्यता टिप्पणी साहित्यिक इतिहास मे की माँग करैत अछि?
क. प्रतिनिधित्वक गंभीर जाँच।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रतिनिधित्वक गंभीर जाँच।
व्याख्या: लेखक उपेक्षित वर्गक साहित्यिक उपस्थिति पर प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 13752. खण्ड १३८०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. समीक्षा दलित प्रतिनिधित्वक अभाव, फसल-ऋतु-तिथि तथ्य आ साहित्यिक यथार्थक सूक्ष्म जाँचक माँग करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. समीक्षा दलित प्रतिनिधित्वक अभाव, फसल-ऋतु-तिथि तथ्य आ साहित्यिक यथार्थक सूक्ष्म जाँचक माँग करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड सामाजिक प्रतिनिधित्व आ तथ्य-शुद्धिकेँ जोड़ैत अछि।

खण्ड १३८१ : विदेह-सदेह २ — “मोड़पर” आ “यात्री समग्र”: सूक्ष्म तथ्य-संगति

प्रश्न 13753. “मोड़पर”क पृष्ठ १ मे धानक सीस कोना वर्णित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ठाढ़ आ कतौ अरड़ा कऽ ओलड़ि गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ठाढ़ आ कतौ अरड़ा कऽ ओलड़ि गेल।

व्याख्या: स्रोतमे धानक सीसक दृश्य-वर्णन आलोचनात्मक उदाहरण रूपमे आयल।

प्रश्न 13754. ओहि वर्णनक संग कोन फसलक गद्दा लिखल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हरियर कचोर खेसारीक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हरियर कचोर खेसारीक।

व्याख्या: खेसारीक गद्दाक ऋतु-संगति पर लेखक प्रश्न उठबैत छथि।

प्रश्न 13755. लेखक कहैत छथि खेसारी कोन क्रममे होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धानक बाद।

उत्तर: घ. धानक बाद।

व्याख्या: ई फसल-क्रमक लोकज्ञान आधारित तथ्य-जाँच अछि।

प्रश्न 13756. “यात्री समग्र” मे जेठ सुदी चतुर्दशी ककर अवसरसँ जुड़ल आयल?

क. रहनि पीसाक वर्षी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रहनि पीसाक वर्षी।

व्याख्या: स्रोतमे पृष्ठ २२०क उदाहरण देल अछि।

प्रश्न 13757. यात्री समग्रक अगिला उदाहरणमे कोन तिथि आयल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अषाढ़ बढ़ि तृतिया।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अषाढ़ बढ़ि तृतिया।

व्याख्या: स्रोतमे पृष्ठ २२२ पर तिथि-संदर्भक भिन्नता देखाओल गेल।

प्रश्न 13758. दू पृष्ठक भीतर तिथि-फेरबदल समीक्षा मे की बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संगति-जाँचक आधार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संगति-जाँचक आधार।

व्याख्या: लेखक तिथि-सम्बन्धी असंगति पकड़ैत छथि।

प्रश्न 13759. साहित्यिक समीक्षा मे कृषि-ज्ञान किएक उपयोगी बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ऋतु-यथार्थ परखबाक लेल।
उत्तर: घ. ऋतु-यथार्थ परखबाक लेल।
व्याख्या: धान-खेसारी प्रसंग साहित्यक लोक-यथार्थ जाँचैत अछि।

प्रश्न 13760. समीक्षक जँ लोकजीवनक समय-क्रम नहि बुझए तँ की चूक होएत?
क. वर्णनक असंगति नहि पकड़ि सकत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वर्णनक असंगति नहि पकड़ि सकत।
व्याख्या: लेखक सूक्ष्म तथ्य-ज्ञानक महत्त्व बतबैत छथि।

प्रश्न 13761. मोड़पर प्रसंग समीक्षाकेँ कोन दिशा दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. वर्णनक यथार्थ-संगति जाँचबाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. वर्णनक यथार्थ-संगति जाँचबाक।
व्याख्या: साहित्यक दृश्य केवल सुन्दर नहि, तथ्य-संबद्ध सेहो हो।

प्रश्न 13762. खण्ड १३८१क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. “मोड़पर” आ “यात्री समग्र” उदाहरण समीक्षा केँ फसल, ऋतु, तिथि आ पृष्ठ-संगति तक सूक्ष्म तथ्य-जाँच करबाक शिक्षा दैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. “मोड़पर” आ “यात्री समग्र” उदाहरण समीक्षा केँ फसल, ऋतु, तिथि आ पृष्ठ-संगति तक सूक्ष्म तथ्य-जाँच करबाक शिक्षा दैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक यथार्थक महीन परीक्षणक उदाहरण अछि।

खण्ड १३८२ : विदेह-सदेह २ — “बलचनमा” समीक्षा आ काल्पनिक प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 13763. बलचनमाक समीक्षा प्रसंगमे मोहन भारद्वाज केकर कथन उद्धृत करैत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. यात्रीजीक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. यात्रीजीक।
व्याख्या: स्रोतमे मोहन भारद्वाज द्वारा यात्रीजी प्रसंग उठाओल गेल अछि।

प्रश्न 13764. कथित प्रश्न की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बलचनमाक दोसर भाग लिखबा लेल के पूछलकन्हि।
उत्तर: घ. बलचनमाक दोसर भाग लिखबा लेल के पूछलकन्हि।
व्याख्या: स्रोतमे “क्यो यात्रीजीकेँ पुछलकन्हि” शैलीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13765. यात्रीक कथित उत्तर की देल गेल?
क. बलचनमाकेँ तँ आब धोधि भऽ गेल होएतैक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बलचनमाकेँ तँ आब धोधि भऽ गेल होएतैक।
व्याख्या: लेखक एहि कथनक आलोचनात्मक जाँच करैत छथि।

प्रश्न 13766. लेखक प्रश्न उठबैत छथि—यात्रीकेँ के पुछलकन्हि? ई की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. काल्पनिक प्रश्नोत्तरी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. काल्पनिक प्रश्नोत्तरी।
व्याख्या: स्रोतमे “काल्पनिक प्रश्नोत्तरी” शब्द स्पष्ट अछि।

प्रश्न 13767. बलचनमा पढ़निहारकेँ की बुझल होएबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बलचनमाकेँ मारि कऽ पाड़ि देल गेलै।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बलचनमाकेँ मारि कऽ पाड़ि देल गेलै।
व्याख्या: लेखक कथ्य-स्मृतिक आधारपर समीक्षा-वाक्यक जाँच करैत छथि।

प्रश्न 13768. मृत बलचनमाकेँ धोधि भऽ गेल कहब किएक समस्याजनक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कथा-स्थितिसँ मेल नहि खाइत।
उत्तर: घ. कथा-स्थितिसँ मेल नहि खाइत।
व्याख्या: लेखक पाठक वास्तविक घटनाक्रमसँ कथित कथन मिलबैत छथि।

प्रश्न 13769. एहि प्रसंगमे समीक्षा केँ कोन काम करबाक चाही?
क. कथित उद्धरण आ मूल पाठक मिलान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कथित उद्धरण आ मूल पाठक मिलान।
व्याख्या: समीक्षा तथ्य-जाँच बिना गपाष्टक भऽ सकैत अछि।

प्रश्न 13770. काल्पनिक प्रश्नोत्तरीक खतरा की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखकीय वा पात्र-सत्य बिगड़ि सकैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखकीय वा पात्र-सत्य बिगड़ि सकैत अछि।
व्याख्या: बिनु प्रमाणक प्रश्नोत्तर समीक्षा केँ अस्थिर बनबैत अछि।

प्रश्न 13771. बलचनमा प्रसंग समीक्षा-सिद्धान्तमे कोन बात जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. स्मृति, उद्धरण आ पाठ-संगतिक परीक्षा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. स्मृति, उद्धरण आ पाठ-संगतिक परीक्षा।
व्याख्या: लेखकक दृष्टि सूक्ष्म पाठ-जाँच पर केंद्रित अछि।

प्रश्न 13772. खण्ड १३८२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “बलचनमा” समीक्षा प्रसंग कथित उद्धरण, काल्पनिक प्रश्नोत्तरी आ मूल पाठ-संगतिक कठोर जाँचक आवश्यकता बतबैत अछि।
उत्तर: घ. “बलचनमा” समीक्षा प्रसंग कथित उद्धरण, काल्पनिक प्रश्नोत्तरी आ मूल पाठ-संगतिक कठोर जाँचक आवश्यकता बतबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड समीक्षा मे प्रमाणिकता आ पाठ-स्मृति पर बल दैत अछि।

खण्ड १३८३ : विदेह-सदेह २ — कुमार पवनक “पइठ” आ कथ्य-लक्ष्य

प्रश्न 13773. स्रोतमे कुमार पवनक कोन कथा “सर्वश्रेष्ठ मैथिली कथा” कहि उठाओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पइठ।
उत्तर: घ. पइठ।
व्याख्या: लेखक “कुमार पवनक पइठ” प्रसंगमे कथा-लक्ष्यक टिप्पणी करैत छथि।

प्रश्न 13774. “पइठ” मे अन्तमे कोन बात पर असहमति सूचित भेल?
क. दूनू भाइक लड़ाइ आदि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दूनू भाइक लड़ाइ आदि।
व्याख्या: लेखक अन्तिम लक्ष्यक दिशा पर प्रश्न करैत छथि।

प्रश्न 13775. लेखकक अनुसार एहि अन्तक बदला कोन लक्ष्य होएबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शोषण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शोषण।
व्याख्या: स्रोतमे स्पष्ट अछि—एकर बदला दोसर लक्ष्य, जेना शोषण।

प्रश्न 13776. कथा-लक्ष्य बदलबाक आग्रह समीक्षा मे की देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सामाजिक केन्द्रक खोज।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सामाजिक केन्द्रक खोज।
व्याख्या: लेखक व्यक्तिगत झगड़ासँ व्यापक शोषण-दृष्टि दिस बढ़बाक आग्रह करैत छथि।

प्रश्न 13777. दूनू भाइक लड़ाइ कोन स्तर पर सीमित रहि सकैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवारिक/व्यक्तिगत स्तर पर।

उत्तर: घ. परिवारिक/व्यक्तिगत स्तर पर।

व्याख्या: लेखक व्यापक सामाजिक अर्थ चाहैत छथि।

प्रश्न 13778. शोषणक लक्ष्य कथा कैं कोन दिशा दैत?

क. सामाजिक-संरचनात्मक दिशा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक-संरचनात्मक दिशा।

व्याख्या: शोषण पर केन्द्रित कथा व्यापक समाज-पाठ बनेत।

प्रश्न 13779. समीक्षकक भूमिका कथा-अन्त पर की होएबाक चाही?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ओकर लक्ष्य-संगति परखबाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ओकर लक्ष्य-संगति परखबाक।

व्याख्या: लेखक कथा कहाँ पहुँचैत अछि, से जाँचैत छथि।

प्रश्न 13780. “पइठ” प्रसंगमे लेखक प्रशंसा आ आलोचना कैं कोना जोड़ैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्रेष्ठता स्वीकार करैत लक्ष्यक कमी देखबैत छथि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्रेष्ठता स्वीकार करैत लक्ष्यक कमी देखबैत छथि।

व्याख्या: ई संतुलित समीक्षा-दृष्टिक उदाहरण अछि।

प्रश्न 13781. कथा कैं शोषण दिस मोड़बाक सुझाव साहित्यक कोन मूल्य पर बल दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक न्याय।

उत्तर: घ. सामाजिक न्याय।

व्याख्या: लेखक कथ्य कैं समाजक दबल-संरचना सँ जोड़ब चाहैत छथि।

प्रश्न 13782. खण्ड १३८३क सार की अछि?

क. “पइठ” प्रसंगमे लेखक कथाक श्रेष्ठता स्वीकार करितो अन्तिम लक्ष्यकैं पारिवारिक लड़ाइ सँ सामाजिक शोषण दिस मोड़बाक आग्रह करैत छथि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. “पइठ” प्रसंगमे लेखक कथाक श्रेष्ठता स्वीकार करितो अन्तिम लक्ष्यकैं पारिवारिक लड़ाइ सँ सामाजिक शोषण दिस मोड़बाक आग्रह करैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड कथा-लक्ष्य आ सामाजिक अर्थक समीक्षा अछि।

खण्ड १३८४ : विदेह-सदेह २ — चुनल संपादकीय आ रामाश्रय झा “रामरंग”

प्रश्न 13783. सम्पादकीय खण्ड केकर नामसँ आरम्भ होइत अछि?

क. गजेन्द्र ठाकुर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुर।

व्याख्या: स्रोतमे “संपादकीय –गजेन्द्र ठाकुर” शीर्षक अछि।

प्रश्न 13784. सम्पादकीय परिचयमे कोन अंक-सीमा देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. २६अम सँ ५० अम अंक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. २६अम सँ ५० अम अंक।

व्याख्या: स्रोतमे २६ सँ ५० अंकक चुनल संपादकीय आ रचना समग्र कहल अछि।

प्रश्न 13785. रामाश्रय झा “रामरंग” के कोन उपाधि/पहिचानसँ प्रसिद्ध कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अभिनव भातखण्डे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अभिनव भातखण्डे।

व्याख्या: स्रोतमे “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे” रूपमे उल्लेख अछि।

प्रश्न 13786. रामरंग जीक मृत्यु कहिया भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. १ जनवरी २००९।

उत्तर: घ. १ जनवरी २००९।

व्याख्या: सम्पादकीयमे मृत्यु-तिथि स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 13787. रामरंग जीक मृत्यु कतय भेल?

क. कोलकातामे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोलकातामे।

व्याख्या: स्रोतमे स्थान कोलकाता देल अछि।

प्रश्न 13788. मृत्यु समय रामरंग जीक आयु कतेक छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ८० बरख।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ८० बरख।

व्याख्या: स्रोतमे ओ ८० बरखक छलाह कहल गेल।

प्रश्न 13789. रामरंग जी २००५ मे कोन अकादेमी पुरस्कार प्राप्त कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्लीक पुरस्कार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्लीक पुरस्कार।

व्याख्या: स्रोतमे २००५क पुरस्कार उल्लेखित अछि।

प्रश्न 13790. रामरंग जीकेँ कोन फेलोशिप सेहो देल गेल छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यू.पी. संगीत नाटकक फेलोशिप।

उत्तर: घ. यू.पी. संगीत नाटकक फेलोशिप।

व्याख्या: सम्पादकीयमे ई फेलोशिप सेहो आयल अछि।

प्रश्न 13791. रामाश्रय झा “रामरंग”क जन्म कतय भेल?

क. मधुबनी जिलाक खजुरा गाममे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुबनी जिलाक खजुरा गाममे।

व्याख्या: स्रोतमे जन्म-स्थान खजुरा गाम देल अछि।

प्रश्न 13792. खण्ड १३८४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चुनल संपादकीय २६–५० अंकक रचना-समग्रक द्वार खोलैत अछि आ रामाश्रय झा “रामरंग”क निधन, संगीत-साधना आ अभिनव भातखण्डे पहिचानकेँ दर्ज करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चुनल संपादकीय २६–५० अंकक रचना-समग्रक द्वार खोलैत अछि आ रामाश्रय झा “रामरंग”क निधन, संगीत-साधना आ अभिनव भातखण्डे पहिचानकेँ दर्ज करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड संपादकीय आरम्भ आ रामरंग-स्मृति दुनूकेँ समेटैत अछि।

खण्ड १३८५ : विदेह-सदेह २ — रामरंग: आरम्भिक शिक्षा आ शास्त्रीय साधना

प्रश्न 13793. रामरंग जीक संगीतक प्रारम्भिक शिक्षा केकरासँ भेटलन्हि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अपन पिता सुखदेव झासँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अपन पिता सुखदेव झासँ।

व्याख्या: स्रोतमे रामरंग जीक प्रारम्भिक संगीत-शिक्षा हुनक पिता सुखदेव झासँ भेटल कहल गेल अछि।

प्रश्न 13794. रामरंग जी बादमे कतय नाटक कम्पनीमे बहुत दिन संगीत देलन्हि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वाराणसीमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वाराणसीमे।

व्याख्या: रामरंग जी वाराणसीक नाटक कम्पनीमे बहुत दिन संगीत देलन्हि।

प्रश्न 13795. वाराणसीक बाद रामरंग जी कोन स्थानमे संगीत-शिक्षा लेल गेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. एलाहाबादमे।
उत्तर: घ. एलाहाबादमे।
व्याख्या: स्रोत कहैत अछि जे ओ बादमे एलाहाबादमे संगीतक शिक्षा प्राप्त कएलन्हि।

प्रश्न 13796. एलाहाबादमे रामरंग जी केकरासँ संगीत-शिक्षा प्राप्त कएलन्हि?
क. पं. भोलाराम भट्टसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पं. भोलाराम भट्टसँ।
व्याख्या: एलाहाबादमे हुनकर शिक्षा पं. भोलाराम भट्टसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 13797. रामरंग जी इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे कोन विभागसँ संबंधित रहलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संगीत विभागसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संगीत विभागसँ।
व्याख्या: ओ इलाहाबाद विश्वविद्यालयक संगीत विभागमे रहलाह।

प्रश्न 13798. इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे रामरंग जीक पद-स्थिति की कहल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रोफेसर आ हेड।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रोफेसर आ हेड।
व्याख्या: स्रोतमे ओ संगीत विभागमे प्रोफेसर आ हेड रहलाह कहल गेल अछि।

प्रश्न 13799. रामरंग जीक जीवन-यात्रा खजुरासँ कोन शास्त्रीय केन्द्र धरि पहुँचैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. वाराणसी आ एलाहाबाद धरि।
उत्तर: घ. वाराणसी आ एलाहाबाद धरि।
व्याख्या: हुनकर साधना खजुरा सँ वाराणसी आ एलाहाबादक संगीत-परम्परा धरि पहुँचैत अछि।

प्रश्न 13800. रामरंग जीक आरम्भिक संस्कारमे परिवारक कोन भूमिका देखाइत अछि?
क. पिता सुखदेव झा संगीत-दीक्षा देनिहार छलाह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पिता सुखदेव झा संगीत-दीक्षा देनिहार छलाह।
व्याख्या: पितासँ भेटल प्रारम्भिक शिक्षा हुनकर पारिवारिक संगीत-संस्कार देखबैत अछि।

प्रश्न 13801. नाटक कम्पनीक अनुभव रामरंग जीक साधनामे की जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मंचीय संगीतक दीर्घ अनुभव।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मंचीय संगीतक दीर्घ अनुभव।
व्याख्या: वाराणसीक नाटक कम्पनीमे संगीत देनाइ हुनकर मंच-साधना सूचित करैत अछि।

प्रश्न 13802. खण्ड १३८५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रामरंग जीक साधना पिता सँ आरम्भ भऽ वाराणसीक नाटक कम्पनी आ एलाहाबाद विश्वविद्यालयक संगीत विभाग धरि पहुँचैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रामरंग जीक साधना पिता सँ आरम्भ भऽ वाराणसीक नाटक कम्पनी आ एलाहाबाद विश्वविद्यालयक संगीत विभाग धरि पहुँचैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड हुनकर आरम्भिक शिक्षा आ संस्थागत संगीत-साधना कैँ समेटैत अछि।

खण्ड १३८६ : विदेह-सदेह २ — रामरंग: राग-रचना, अभिनव गीताञ्जलि आ संगीत रामायण

प्रश्न 13803. रामरंग जी ढेर रास कोन प्रकारक रचना बनओलन्हि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. खयाल रचना।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. खयाल रचना।
व्याख्या: स्रोतमे रामरंग जी द्वारा ढेर रास खयाल रचना बनाओल गेल कहल अछि।

प्रश्न 13804. रामरंग जीक संगीत-सृजनमे नव निर्माणक कोन रूप आयल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कतेक नव रागक निर्माण।
उत्तर: घ. कतेक नव रागक निर्माण।
व्याख्या: ओ कतेक रास नव रागक निर्माण कएलन्हि।

प्रश्न 13805. रामरंग जीक प्रसिद्ध ग्रंथ “अभिनव गीताञ्जलि” कतेक खण्डमे कहल गेल अछि?
क. पाँच खण्डमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाँच खण्डमे।
व्याख्या: स्रोतमे नव आ पुरान रागक वर्णन-समालोचना पाँच खण्डमे “अभिनव गीताञ्जलि” कहल गेल अछि।

प्रश्न 13806. “अभिनव गीताञ्जलि” मे कोन सामग्रीक वर्णन आ समालोचना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नव आ पुरान रागक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नव आ पुरान रागक।
व्याख्या: ग्रंथ नव आ पुरान रागक विवेचनसँ संबंधित अछि।

प्रश्न 13807. रामरंग जी “अभिनव गीताञ्जलि”क कारण कोन नामसँ प्रसिद्ध भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अभिनव भातखण्डे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अभिनव भातखण्डे।

व्याख्या: एहि कृतिक कारण ओ “अभिनव भातखण्डे” नामसँ प्रसिद्ध भेलाह।

प्रश्न 13808. “संगीत रामायण” रामरंग जी केकरा समर्पित कएलन्हि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हनुमानकेँ।

उत्तर: घ. हनुमानकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे “संगीत रामायण” हनुमानकेँ समर्पित कहल गेल अछि।

प्रश्न 13809. रामरंग जी “संगीत रामायण” कोन आधारपर रचलन्हि?

क. अपन ध्रुपद आ खयाल रचनाक आधारपर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन ध्रुपद आ खयाल रचनाक आधारपर।

व्याख्या: संगीत रामायण हुनकर ध्रुपद आ खयाल रचनासँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 13810. विदेह लेल रामरंग जी कोन नव राग पठओने रहथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राग विद्यापति कल्याण, राग तीरभुक्ति, राग वैदेही भैरव आदि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राग विद्यापति कल्याण, राग तीरभुक्ति, राग वैदेही भैरव आदि।

व्याख्या: मैथिलीमे विदेह लेल पठाओल राग सभमे ई नाम विशेष रूपसँ देल अछि।

प्रश्न 13811. रामरंग जीक वार्तालाप-स्मरणमे हुनकर कतेक रचना कंठस्थ कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हजारो रचना।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हजारो रचना।

व्याख्या: लेखक लिखैत छथि जे रामरंग जीकेँ हजारो रचना कंठस्थ मोन छलन्हि।

प्रश्न 13812. खण्ड १३८६क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामरंग जी नव राग, खयाल, “अभिनव गीताञ्जलि”, “संगीत रामायण” आ मैथिली राग-सृजनक कारण विशिष्ट संगीताचार्य रूपमे उभरैत छथि।

उत्तर: घ. रामरंग जी नव राग, खयाल, “अभिनव गीताञ्जलि”, “संगीत रामायण” आ मैथिली राग-सृजनक कारण विशिष्ट संगीताचार्य रूपमे उभरैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड रामरंग जीक रचनात्मक आ शास्त्रीय योगदान पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १३८७ : विदेह-सदेह २ — मैथिली-भोजपुरी अकादमी: कविता महोत्सव, सम्मान आ पत्रिका

प्रश्न 13813. मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली कोन अवसरपर कविता महोत्सव आयोजित कएलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गणतंत्र दिवसक अवसरपर।

उत्तर: घ. गणतंत्र दिवसक अवसरपर।

व्याख्या: स्रोतमे गणतंत्र दिवसक अवसरपर कविता महोत्सवक आयोजन कहल अछि।

प्रश्न 13814. कविता महोत्सवमे मैथिलीमे रमण कुमार सिंहक संग के सभ काव्य-पाठ कएलनि?

क. सारंग कुमार, रवीन्द्र लाल दास, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, कामिनी कामायनी आ गंगेश गुंजन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सारंग कुमार, रवीन्द्र लाल दास, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, कामिनी कामायनी आ गंगेश गुंजन।

व्याख्या: स्रोतमे एहि कवि-नाम सभक काव्य-पाठ उल्लेखित अछि।

प्रश्न 13815. अकादमी मैथिलीमे कोन सम्मान देबाक बात कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विद्यापति सम्मान।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विद्यापति सम्मान।

व्याख्या: मैथिलीमे विद्यापति सम्मान देबाक योजना स्रोतमे अछि।

प्रश्न 13816. भोजपुरीमे अकादमी कोन सम्मान देबाक बात कहलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भिखारी ठाकुर सम्मान।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भिखारी ठाकुर सम्मान।

व्याख्या: भोजपुरीक लेल भिखारी ठाकुर सम्मानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13817. विद्यापति सम्मान आ भिखारी ठाकुर सम्मानक राशि कतेक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रत्येक ५१-५१ हजार टाका।

उत्तर: घ. प्रत्येक ५१-५१ हजार टाका।

व्याख्या: स्रोतमे दुनू सम्मानक राशि ५१-५१ हजार टाका कहल अछि।

प्रश्न 13818. ई सम्मान केकरा देबाक बात छल?

क. साहित्यकार, कलाकार आ संस्कृतिकर्मीकेँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यकार, कलाकार आ संस्कृतिकर्मीकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे साहित्यकार/कलाकार/संस्कृतिकर्मीकेँ सम्मान देबाक बात अछि।

प्रश्न 13819. अकादमी मैथिली आ भोजपुरीमे कोन प्रकाशन योजना रखैत छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अलग-अलग पत्रिका प्रकाशित करबाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अलग-अलग पत्रिका प्रकाशित करबाक।

व्याख्या: अकादमी द्वारा मैथिली आ भोजपुरीमे अलग-अलग पत्रिका प्रकाशनक योजना देल गेल अछि।

प्रश्न 13820. एहि पत्रिका सभमे कोन-कोन विधा प्रकाशित होएबाक बात कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा, कविता, लेख, निबन्ध, समीक्षा आ सर्जनात्मक टिप्पणी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा, कविता, लेख, निबन्ध, समीक्षा आ सर्जनात्मक टिप्पणी।

व्याख्या: स्रोतमे पत्रिका सामग्रीक रूपमे एहि विधा सभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13821. मैथिली-भोजपुरी अकादमीक ई योजना भाषिक दृष्टिसँ की संकेत करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली आ भोजपुरी दुनू लेल संस्थागत सांस्कृतिक मंच।

उत्तर: घ. मैथिली आ भोजपुरी दुनू लेल संस्थागत सांस्कृतिक मंच।

व्याख्या: सम्मान आ पत्रिका दुनू भाषाक सार्वजनिक उपस्थिति बढ़बैत अछि।

प्रश्न 13822. खण्ड १३८७क सार की अछि?

क. अकादमी कविता महोत्सव, विद्यापति-भिखारी ठाकुर सम्मान आ मैथिली-भोजपुरी पत्रिका द्वारा भाषिक-सांस्कृतिक मंच बनेबाक योजना रखैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकादमी कविता महोत्सव, विद्यापति-भिखारी ठाकुर सम्मान आ मैथिली-भोजपुरी पत्रिका द्वारा भाषिक-सांस्कृतिक मंच बनेबाक योजना रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड अकादमिक-सांस्कृतिक संस्थागत प्रयासक चित्र अछि।

खण्ड १३८८ : विदेह-सदेह २ — मैलोरंग सेमीनार: लोककथा आ फील्डवर्क

प्रश्न 13823. मैलोरंग सेमीनारमे लोककथा सम्बन्धी आग्रह के कएलनि?

क. सुभाषचन्द्र यादवजी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुभाषचन्द्र यादवजी।

व्याख्या: स्रोतमे सुभाषचन्द्र यादवजी द्वारा आग्रहक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13824. सुभाषचन्द्र यादवजी लोककथा लेखनमे कोन आधारक आग्रह कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. फील्डवर्कक आधार।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. फील्डवर्कक आधार।

व्याख्या: ओ लोककथा फील्डवर्कक आधारपर लिखबाक आग्रह कएने छलाह।

प्रश्न 13825. फील्डवर्कक आग्रहक कारण की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दादी-मैयाँसँ सुनल कथा क्षेत्रमे पसरल विभिन्न स्वरूप ग्रहण करबामे सक्षम नहि होइत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दादी-मैयाँसँ सुनल कथा क्षेत्रमे पसरल विभिन्न स्वरूप ग्रहण करबामे सक्षम नहि होइत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे निजी सुनेल कथा आ क्षेत्रीय विविध रूपक अन्तर स्पष्ट अछि।

प्रश्न 13826. लोककथा सम्बन्धमे विदेहक प्रतिक्रिया की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. एहि सम्बन्धमे काज शुरू भऽ गेल अछि।
उत्तर: घ. एहि सम्बन्धमे काज शुरू भऽ गेल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे विदेह द्वारा काज शुरू भेल कहल गेल अछि।

प्रश्न 13827. विदेहक लोककथा-काजक परिणाम कतय देखबाक आशा कहल गेल?
क. ई-पत्रिकामे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ई-पत्रिकामे।
व्याख्या: स्रोतमे शीघ्र परिणाम ई-पत्रिकामे देखबामे आएत कहल अछि।

प्रश्न 13828. दादी-मैयाँसँ सुनल कथा स्रोतमे कोन सीमा देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ स्थानीय विविध स्वरूपक पूर्ण प्रतिनिधित्व नहि करैत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ स्थानीय विविध स्वरूपक पूर्ण प्रतिनिधित्व नहि करैत।
व्याख्या: लेखक क्षेत्रमे पसरल अनेक रूप ग्रहण करबाक आवश्यकता बतबैत छथि।

प्रश्न 13829. फील्डवर्क लोककथा-संकलनमे की जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. क्षेत्रीय रूप, प्रसंग आ विविधता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. क्षेत्रीय रूप, प्रसंग आ विविधता।
व्याख्या: क्षेत्रमे जाएबासँ कथा-परम्पराक विभिन्न रूप बुझाइत अछि।

प्रश्न 13830. मैलोरंग सेमीनारक ई प्रसंग कोन विधाक अनुसन्धानसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लोककथा-अनुसन्धानसँ।
उत्तर: घ. लोककथा-अनुसन्धानसँ।
व्याख्या: प्रसंग लोककथा संग्रह आ लेखनक पद्धति पर अछि।

प्रश्न 13831. विदेहक आरम्भ कएल काज कोन माध्यमसँ सार्वजनिक होएबाक संकेत देल गेल?

क. ई-पत्रिकाक माध्यमसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई-पत्रिकाक माध्यमसँ।

व्याख्या: स्रोतमे ई-पत्रिका परिणामक मंच बताओल गेल अछि।

प्रश्न 13832. खण्ड १३८८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैलोरंग सेमीनार लोककथा लेखनमे फील्डवर्क, क्षेत्रीय विविधता आ विदेहक आरम्भ कएल अनुसंधान-काजक आवश्यकता रेखांकित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैलोरंग सेमीनार लोककथा लेखनमे फील्डवर्क, क्षेत्रीय विविधता आ विदेहक आरम्भ कएल अनुसंधान-काजक आवश्यकता रेखांकित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड लोक-साहित्यक स्रोत-पद्धति पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १३८९ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: निधन, सेवा आ संस्था-संबंध

प्रश्न 13833. मैथिलीक पुरोधा जयकान्त मिश्रक निधन कहिया भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ३ फरबरी २००९ कैं।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ३ फरबरी २००९ कैं।

व्याख्या: स्रोतमे जयकान्त मिश्रक निधन ३ फरबरी २००९ कैं सात बजे साँझमे कहल अछि।

प्रश्न 13834. जयकान्त मिश्रक निधनक समय कतबा बजे साँझक उल्लेख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सात बजे साँझमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सात बजे साँझमे।

व्याख्या: स्रोतमे समय सात बजे साँझ देल अछि।

प्रश्न 13835. जयकान्त मिश्र १९८२ ई. मे कोन विश्वविद्यालयक विभागसँ सेवा निवृत्त भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागसँ।

उत्तर: घ. इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागसँ।

व्याख्या: स्रोतमे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पदक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13836. इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे जयकान्त मिश्रक पद की छल?

क. प्रोफेसर आ हेड।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रोफेसर आ हेड।

व्याख्या: ओ विभागक प्रोफेसर आ हेड पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह।

प्रश्न 13837. सेवा-निवृत्तिक बाद जयकान्त मिश्र कतय डीन रूपमे कार्य कएलन्हि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे।

व्याख्या: स्रोतमे चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयक भाषा आ समाज विज्ञानक डीन पद देल अछि।

प्रश्न 13838. चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे हुनकर क्षेत्र की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषा आ समाज विज्ञान।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषा आ समाज विज्ञान।

व्याख्या: ओ भाषा आ समाज विज्ञानक डीन रूपमे कार्य कएलन्हि।

प्रश्न 13839. जयकान्त मिश्र कोन समिति, इलाहाबादक अध्यक्ष रहलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति।

उत्तर: घ. अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति।

व्याख्या: स्रोतमे ई समिति आ अध्यक्ष पदक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13840. जयकान्त मिश्र गंगानाथ रिसर्च इंस्टीट्यूटमे कोन भूमिका निभौलन्हि?

क. अवैतनिक सचिव आ सम्पादक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अवैतनिक सचिव आ सम्पादक।

व्याख्या: स्रोतमे गंगानाथ रिसर्च इंस्टीट्यूट, इलाहाबादक अवैतनिक सचिव आ सम्पादक कहल अछि।

प्रश्न 13841. साहित्य अकादमी, नई दिल्लीमे जयकान्त मिश्रक कोन सम्बन्ध कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली प्रतिनिधि आ भाषा सम्पादक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली प्रतिनिधि आ भाषा सम्पादक।

व्याख्या: स्रोतमे हुनका साहित्य अकादमीक मैथिली प्रतिनिधि आ भाषा सम्पादक कहल गेल अछि।

प्रश्न 13842. खण्ड १३८९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जयकान्त मिश्रक निधन-सूचना हुनकर विश्वविद्यालयी सेवा, शोध-संस्था, साहित्य समिति आ साहित्य अकादमीसँ गहिर सम्बन्धकेँ दर्ज करैत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जयकान्त मिश्रक निधन-सूचना हुनकर विश्वविद्यालयी सेवा, शोध-संस्था, साहित्य समिति आ साहित्य अकादमीसँ गहिर सम्बन्धकेँ दर्ज करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड जयकान्त मिश्रक संस्थागत साहित्यिक व्यक्तित्व पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १३९० : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: ग्रन्थ, शब्दकोष आ प्रेरणा

प्रश्न 13843. जयकान्त मिश्रक एक प्रमुख ग्रंथक नाम स्रोतमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली साहित्यक इतिहास।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली साहित्यक इतिहास।
व्याख्या: स्रोतमे “मैथिली साहित्यक इतिहास” हुनक लिखित ग्रंथमे देल अछि।

प्रश्न 13844. जयकान्त मिश्रक “फोक लिटेरेचर ऑफ मिथिला” कोन क्षेत्रसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिलाक लोक-साहित्यसँ।
उत्तर: घ. मिथिलाक लोक-साहित्यसँ।
व्याख्या: ग्रंथक नामे मिथिलाक लोक-साहित्यक अध्ययन सूचित करैत अछि।

प्रश्न 13845. कीर्तनिया ड्रामा सम्बन्धमे जयकान्त मिश्रक कोन काम कहल गेल?
क. क्रिटिकल एडीशन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. क्रिटिकल एडीशन।
व्याख्या: स्रोतमे कीर्तनिया ड्रामा सभक क्रिटिकल एडीशन हुनक ग्रंथ-काममे अछि।

प्रश्न 13846. थॉमस हार्डी पर जयकान्त मिश्रक ग्रंथक नाम की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेक्चर्स ऑन थॉमस हार्डी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेक्चर्स ऑन थॉमस हार्डी।
व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजी साहित्य सम्बन्धी ई ग्रंथ देल गेल अछि।

प्रश्न 13847. जयकान्त मिश्रक “लेक्चर्स ऑन फोर पोएट्स” कोन भाषिक-साहित्यिक रुचि देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अंग्रेजी साहित्य अध्ययनक रुचि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अंग्रेजी साहित्य अध्ययनक रुचि।
व्याख्या: ई ग्रंथ हुनक अंग्रेजी साहित्य-शिक्षण आ अध्ययनक क्षेत्र देखबैत अछि।

प्रश्न 13848. जयकान्त मिश्रक “द कॉम्प्लेक्स स्टाइल इन एंगलिश पोएट्री” कोन विषयसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अंग्रेजी पद्यक शैली-विवेचनसँ।
उत्तर: घ. अंग्रेजी पद्यक शैली-विवेचनसँ।
व्याख्या: ग्रंथ अंग्रेजी कविता शैलीक विश्लेषण संकेत करैत अछि।

प्रश्न 13849. जयकान्त मिश्रक वृहत मैथिली शब्दकोष कतेक खण्ड प्रकाशित भऽ सकल?

क. मात्र दू खण्ड।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मात्र दू खण्ड।

व्याख्या: स्रोतमे शब्दकोषक मात्र दू खण्ड प्रकाशित भऽ सकल कहल अछि।

प्रश्न 13850. ओहि शब्दकोषमे देवनागरीक संग कोन लिपि सेहो छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिलाक्षर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिलाक्षर।

व्याख्या: स्रोतमे देवनागरीक संग मिथिलाक्षर आ फोनेटिक अंग्रेजी देल अछि।

प्रश्न 13851. जयकान्त मिश्रक शब्दकोष मैथिली शब्दकोष-संकलक लेल की रहत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सर्वदा प्रेरणास्पद।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सर्वदा प्रेरणास्पद।

व्याख्या: स्रोतमे ई दुनू खण्ड शब्दकोष-संकलक लोकनि लेल सर्वदा प्रेरणास्पद रहत कहल अछि।

प्रश्न 13852. खण्ड १३९०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जयकान्त मिश्र मैथिली इतिहास, लोक-साहित्य, कीर्तनिया ड्रामा, अंग्रेजी साहित्य आ वृहत शब्दकोष द्वारा बहुभाषिक विद्वत्ता प्रस्तुत करैत छथि।

उत्तर: घ. जयकान्त मिश्र मैथिली इतिहास, लोक-साहित्य, कीर्तनिया ड्रामा, अंग्रेजी साहित्य आ वृहत शब्दकोष द्वारा बहुभाषिक विद्वत्ता प्रस्तुत करैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड हुनकर ग्रंथ-संपदा आ शब्दकोषीय प्रेरणा पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १३९१ : विदेह-सदेह २ — साझा प्रकाशन: भ्रमर जी आ मैथिली प्रकाशन योजना

प्रश्न 13853. डॉ. रामभरोस कापड़ि “भ्रमर” जी कैं कोन संस्थाक चेयरमैन नियुक्त कएल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपालक सरकारी प्रकाशन संस्था “साझा प्रकाशन”क।

उत्तर: घ. नेपालक सरकारी प्रकाशन संस्था “साझा प्रकाशन”क।

व्याख्या: स्रोतमे साझा प्रकाशनक चेयरमैन नियुक्तिक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13854. साझा प्रकाशन कोन देशक सरकारी प्रकाशन संस्था कहल गेल?

क. नेपालक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालक।

व्याख्या: स्रोतमे नेपालक एकमात्र सरकारी प्रकाशन संस्था कहल अछि।

प्रश्न 13855. साझा प्रकाशनक ४५ बरखक इतिहासमे भ्रमर जीक नियुक्ति किएक विशेष कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पहिल बेर कोनो मधेसीकेँ ई सम्मान भेटल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पहिल बेर कोनो मधेसीकेँ ई सम्मान भेटल।
व्याख्या: स्रोतमे ४५ बरखक इतिहासमे ई पहिल बेर मधेसीकेँ सम्मान भेटल कहल अछि।

प्रश्न 13856. भ्रमर जी कार्यभार सम्हारिते कोन चित्र प्रकाशित कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विद्यापतिक फोटो।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विद्यापतिक फोटो।
व्याख्या: स्रोतमे कार्यभार सम्हारिते विद्यापतिक फोटो प्रकाशित भेल कहल अछि।

प्रश्न 13857. साझा प्रकाशन पहिने मुख्यतः कोन भाषाक लेल काज करैत छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नेपालीक लेल।
उत्तर: घ. नेपालीक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे “नेपालीक लेल मात्र काज केनिहार” संस्था कहल अछि।

प्रश्न 13858. भ्रमर जीक कार्यभारक बाद मैथिलीमे कोन प्रकाशन योजना अछि?
क. व्याकरण, शब्दकोष, बालकथा, कथासंग्रह आदि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. व्याकरण, शब्दकोष, बालकथा, कथासंग्रह आदि।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीमे एहि प्रकाशन सभक योजना देल अछि।

प्रश्न 13859. साझा प्रकाशनक ई परिवर्तन मैथिली लेल की संकेत करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सरकारी प्रकाशन-क्षेत्रमे मैथिलीक प्रवेश।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सरकारी प्रकाशन-क्षेत्रमे मैथिलीक प्रवेश।
व्याख्या: नेपाली-केन्द्रित संस्थासँ मैथिली प्रकाशन योजनाक उल्लेख महत्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 13860. भ्रमर जीक नियुक्ति मधेसी प्रतिनिधित्वक दृष्टिसँ की महत्त्व रखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ४५ बरखक संस्थागत इतिहासमे पहिल सम्मानित अवसर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ४५ बरखक संस्थागत इतिहासमे पहिल सम्मानित अवसर।
व्याख्या: स्रोतमे ई नियुक्ति मधेसी प्रतिनिधित्वक ऐतिहासिक क्षण रूपमे अछि।

प्रश्न 13861. विद्यापतिक फोटो प्रकाशित होएब कोन सांस्कृतिक संकेत दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली सांस्कृतिक सम्मानक संकेत।

उत्तर: घ. मैथिली सांस्कृतिक सम्मानक संकेत।

व्याख्या: विद्यापति मैथिली साहित्य-संस्कृतिक प्रमुख प्रतीक छथि।

प्रश्न 13862. खण्ड १३९१क सार की अछि?

क. भ्रमर जीक साझा प्रकाशन अध्यक्षता नेपाली-केन्द्रित सरकारी प्रकाशनमे मधेसी प्रतिनिधित्व आ मैथिली व्याकरण-शब्दकोष-बालकथा प्रकाशनक संभावना खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रमर जीक साझा प्रकाशन अध्यक्षता नेपाली-केन्द्रित सरकारी प्रकाशनमे मधेसी प्रतिनिधित्व आ मैथिली व्याकरण-शब्दकोष-बालकथा प्रकाशनक संभावना खोलैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड नेपालक प्रकाशन-संस्था आ मैथिली भाषिक अधिकार पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १३९२ : विदेह-सदेह २ — हेल्लो मिथिला, चौबटिया आ मैथिली युवा लेखन संगोष्ठी

प्रश्न 13863. “हेल्लो मिथिला” कार्यक्रम कोन विषयपर केन्द्रित कहल गेल?

क. सामाजिक तथा सांस्कृतिक विषए वस्तुपर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक तथा सांस्कृतिक विषए वस्तुपर।

व्याख्या: स्रोतमे हेल्लो मिथिला सामाजिक तथा सांस्कृतिक विषयपर केन्द्रित कहल अछि।

प्रश्न 13864. “हेल्लो मिथिला” प्रत्येक कोन दिन प्रसारित होइत छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रत्येक शनि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रत्येक शनि।

व्याख्या: स्रोतमे प्रत्येक शनि राति कार्यक्रमक समय देल अछि।

प्रश्न 13865. “हेल्लो मिथिला”क नेपाली समयानुसार प्रसारण समय की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राति ९.३० बजेसँ ११ बजेधरि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राति ९.३० बजेसँ ११ बजेधरि।

व्याख्या: स्रोतमे ई समय स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 13866. “चौबटिया” कार्यक्रम कोन विषयपर केन्द्रित छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक विषए वस्तुपर।

उत्तर: घ. राजनीतिक विषए वस्तुपर।

व्याख्या: स्रोतमे चौबटिया राजनीतिक विषयवस्तुपर केन्द्रित कहल अछि।

प्रश्न 13867. “चौबटिया” कोन दिन आ समय प्रसारित होइत छल?
क. प्रत्येक सोम राति १० सँ ११ बजेधरि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रत्येक सोम राति १० सँ ११ बजेधरि।
व्याख्या: स्रोतमे सोम राति १० सँ ११ समय देल अछि।

प्रश्न 13868. नेपाली समय भारतीय समयसँ कतबा पाछाँ कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. १५ मिनट पाछाँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. १५ मिनट पाछाँ।
व्याख्या: स्रोतमे नेपाली समय भारतीय समयसँ १५ मिनट पाछाँ कहल अछि।

प्रश्न 13869. “मैथिली युवा लेखन दशा आ दिशा” संगोष्ठी कतय भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. शहीद भगत सिंह कॉलेज, नई दिल्लीमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. शहीद भगत सिंह कॉलेज, नई दिल्लीमे।
व्याख्या: स्रोतमे १६.०२.२००९ कैं शहीद भगत सिंह कॉलेजमे आयोजन कहल अछि।

प्रश्न 13870. एहि युवा लेखन संगोष्ठीक आयोजन केकर तत्वावधानमे भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली मंडनक तत्वावधानमे।
उत्तर: घ. मैथिली मंडनक तत्वावधानमे।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली मंडनक तत्वावधान स्पष्ट अछि।

प्रश्न 13871. संगोष्ठीक संचालन के कएलथि?
क. कुमार सौरभ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कुमार सौरभ।
व्याख्या: स्रोतमे युवतम रचनाकार कुमार सौरभ द्वारा संचालन कहल अछि।

प्रश्न 13872. खण्ड १३९२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हेल्लो मिथिला, चौबटिया आ युवा लेखन संगोष्ठी मीडिया, राजनीति, संस्कृति आ नव पीढ़ीक लेखन-चिन्ताकेँ जोड़ैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हेल्लो मिथिला, चौबटिया आ युवा लेखन संगोष्ठी मीडिया, राजनीति, संस्कृति आ नव पीढ़ीक लेखन-चिन्ताकेँ जोड़ैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड प्रसारण आ युवा साहित्यिक संवादक संगम अछि।

खण्ड १३९३ : विदेह-सदेह २ — अनिलचन्द्र ठाकुर: जीवन, रोग आ रचना

प्रश्न 13873. अनिलचन्द्र ठाकुर जीक जन्म कहिया भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. १३ सितम्बर १९५४ ई. कैं।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. १३ सितम्बर १९५४ ई. कैं।

व्याख्या: स्रोतमे जन्म-तिथि १३ सितम्बर १९५४ देल अछि।

प्रश्न 13874. अनिलचन्द्र ठाकुर जीक जन्म कतय भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कटिहार जिलाक समेली गाममे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कटिहार जिलाक समेली गाममे।

व्याख्या: स्रोतमे कटिहार जिलाक समेली गाम जन्म-स्थान अछि।

प्रश्न 13875. अनिलचन्द्र ठाकुर १९८२ ई. मे कोन विषयमे स्नातकोत्तर कएलन्हि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हिन्दी साहित्यमे।

उत्तर: घ. हिन्दी साहित्यमे।

व्याख्या: स्रोतमे १९८२ ई. मे हिन्दी साहित्य स्नातकोत्तर कहल अछि।

प्रश्न 13876. ओ नवम्बर १९९३ सँ नवम्बर १९९४ धरि कोन पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कएलन्हि?

क. “सुबह” हस्तलिखित पत्रिका।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. “सुबह” हस्तलिखित पत्रिका।

व्याख्या: स्रोतमे “सुबह” हस्तलिखित पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13877. अनिलचन्द्र ठाकुर कोन बैंकमे अधिकारी रहथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कोशी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कोशी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकमे।

व्याख्या: स्रोतमे कोशी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकक अधिकारी पदक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13878. अनिलचन्द्र ठाकुर कोन-कोन भाषामे समान रूपेँ लेखन करैत छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेजीमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेजीमे।

व्याख्या: स्रोतमे एहि चारि भाषा सभक नाम देल अछि।

प्रश्न 13879. मृत्युक पूर्व अनिलचन्द्र ठाकुर कोन रोगसँ बीमार चलि रहल छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ब्रेन ट्यूमर सँ।

उत्तर: घ. ब्रेन ट्यूमर सँ।

व्याख्या: स्रोतमे मृत्युक पूर्व ब्रेन ट्यूमरक बीमारी उल्लेखित अछि।

प्रश्न 13880. अनिलचन्द्र ठाकुरक मैथिली उपन्यासक नाम की अछि?

क. आब मानि जाउ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आब मानि जाउ।

व्याख्या: स्रोतमे “आब मानि जाउ” मैथिली उपन्यास रूपमे देल अछि।

प्रश्न 13881. “आब मानि जाउ” पहिने कतय प्रकाशित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भारती-मंडन पत्रिकामे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भारती-मंडन पत्रिकामे।

व्याख्या: स्रोतमे पहिने भारती-मंडन पत्रिकामे प्रकाशन, फेर पुस्तकाकार प्रकाशन कहल अछि।

प्रश्न 13882. खण्ड १३९३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनिलचन्द्र ठाकुर बहुभाषिक लेखक, बैंक अधिकारी, हस्तलिखित पत्रिका-सम्पादक आ “आब मानि जाउ” उपन्यासकार रूपमे स्मरणीय छथि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनिलचन्द्र ठाकुर बहुभाषिक लेखक, बैंक अधिकारी, हस्तलिखित पत्रिका-सम्पादक आ “आब मानि जाउ” उपन्यासकार रूपमे स्मरणीय छथि।

व्याख्या: ई खण्ड हुनकर जीवन, भाषा-सक्रियता आ कृति-सूची पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १३९४ : विदेह-सदेह २ — दिल्ली सेमीनार, समकालीन दायित्व आ “किंकर्तव्यविमूढ़”

प्रश्न 13883. २९ मार्च २००९ कैं दिल्लीमे सेमीनार के आयोजित कएलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिली-भोजपुरी अकादमी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिली-भोजपुरी अकादमी।

व्याख्या: स्रोतमे २९ मार्च २००९ कैं मैथिली-भोजपुरी अकादमी द्वारा दिल्लीमे सेमीनारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13884. सेमीनारक विषय की छल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन रचनाकारक दायित्व।

उत्तर: घ. समकालीन रचनाकारक दायित्व।

व्याख्या: स्रोतमे समकालीन रचनाकारक दायित्वपर गोष्ठी कहल अछि।

प्रश्न 13885. एहि गोष्ठीमे मोहन भारद्वाजक संग के सभ वक्ता भाग लेलन्हि?
क. विदित, प्रदीप बिहारी, नीता झा आदि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विदित, प्रदीप बिहारी, नीता झा आदि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि वक्ता-नाम सभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13886. सांझमे कोन संस्था नाटक मंचित कएलक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलांगन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिलांगन।
व्याख्या: स्रोतमे सांझमे मिथिलांगन द्वारा नाटक मंचन कहल अछि।

प्रश्न 13887. मिथिलांगन द्वारा मंचित नाटकक नाम की छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. “किंकर्तव्यविमूढ़”।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. “किंकर्तव्यविमूढ़”।
व्याख्या: स्रोतमे नाटकक नाम “किंकर्तव्यविमूढ़” देल अछि।

प्रश्न 13888. “किंकर्तव्यविमूढ़” नाटक के लिखलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रोहिणी रमण झा।
उत्तर: घ. रोहिणी रमण झा।
व्याख्या: स्रोतमे रोहिणी रमण झा लिखित कहल अछि।

प्रश्न 13889. “किंकर्तव्यविमूढ़” के निर्देशित कएलन्हि?
क. संजय चौधरी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. संजय चौधरी।
व्याख्या: स्रोतमे संजय चौधरी द्वारा निर्देशित कहल अछि।

प्रश्न 13890. दिल्ली सेमीनार साहित्यिक चर्चाक संग कोन कला-विधाकेँ जोड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नाट्य-मंचनकेँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नाट्य-मंचनकेँ।
व्याख्या: गोष्ठीक बाद नाटक मंचन साहित्य आ रंगकर्मक संगम देखबैत अछि।

प्रश्न 13891. समकालीन रचनाकारक दायित्व विषय कोन व्यापक प्रश्न उठबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लेखकक सामाजिक-साहित्यिक उत्तरदायित्व।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लेखकक सामाजिक-साहित्यिक उत्तरदायित्व।
व्याख्या: गोष्ठी शीर्षके रचनाकारक दायित्व पर विमर्शक संकेत अछि।

प्रश्न 13892. खण्ड १३९४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. २९ मार्च २००९क दिल्ली आयोजन समकालीन रचनाकारक दायित्व-विमर्श आ “किंकर्तव्यविमूढ़” नाटकक मंचनकेँ एक संग रखैत अछि।
उत्तर: घ. २९ मार्च २००९क दिल्ली आयोजन समकालीन रचनाकारक दायित्व-विमर्श आ “किंकर्तव्यविमूढ़” नाटकक मंचनकेँ एक संग रखैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक गोष्ठी आ रंगमंचक संयुक्त दस्तावेज अछि।

खण्ड १३९५ : विदेह-सदेह २ — काठमाण्डू अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन: सम्मानित व्यक्तित्व

प्रश्न 13893. काठमाण्डू-ललितपुरमे भेल अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनमे के योगदान देनिहार व्यक्तित्वकेँ सम्मानित कएलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रधानमन्त्री प्रचण्ड।
उत्तर: घ. प्रधानमन्त्री प्रचण्ड।
व्याख्या: स्रोतमे प्रधानमन्त्री प्रचण्ड द्वारा मैथिली भाषा-संस्कृति योगदानकर्ता सम्मानित कएल गेल कहल अछि।

प्रश्न 13894. सम्मेलनमे संस्थागत सुदृढिकरणकर्ता रूपमे के सम्मानित भेलाह?
क. मुखीलाल चौधरी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मुखीलाल चौधरी।
व्याख्या: स्रोतमे मुखीलाल चौधरीक सम्मानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13895. सम्मेलनमे रंगकर्मी रूपमे के सम्मानित भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रन्जु झा।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रन्जु झा।
व्याख्या: स्रोतमे रंगकर्मी रन्जु झा सम्मानित भेल कहल अछि।

प्रश्न 13896. मैथिली पढाइ उत्प्रेरक कार्यदल कतयक बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. राजविराजक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. राजविराजक।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली पढाइ उत्प्रेरक कार्यदल राजविराजक सम्मानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13897. भारत बिहारक रहिका निवासी मैथिली आन्दोलन अगुवा के सम्मानित कएल गेलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चुनचुन मिश्र।

उत्तर: घ. चुनचुन मिश्र।

व्याख्या: स्रोतमे रहिका निवासी चुनचुन मिश्रक सम्मान देल अछि।

प्रश्न 13898. लोकसाहित्यकार रूपमे के सम्मानित भेलाह?

क. डा. महेन्द्रनारायण राम।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डा. महेन्द्रनारायण राम।

व्याख्या: स्रोतमे लोकसाहित्यकार डा. महेन्द्रनारायण रामक सम्मानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13899. काठमाण्डूमे महाकवि विद्यापतिकेँ की बनेबाक प्रतिबद्धता व्यक्त भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. स्मारक बनेबाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. स्मारक बनेबाक।

व्याख्या: स्रोतमे विद्यापतिक स्मारक बनएबामे सहयोगक प्रतिबद्धता देल अछि।

प्रश्न 13900. सम्मेलनमे नेपाल पत्रकार महासंघक अध्यक्ष के छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. धर्मेन्द्र झा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. धर्मेन्द्र झा।

व्याख्या: स्रोतमे नेपाल पत्रकार महासंघक अध्यक्ष धर्मेन्द्र झाक वक्तव्य अछि।

प्रश्न 13901. सम्मेलनक संयोजक के छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामरिझन यादव।

उत्तर: घ. रामरिझन यादव।

व्याख्या: स्रोतमे संयोजक रामरिझन यादव सम्मेलनक औचित्य पर बाजल कहल अछि।

प्रश्न 13902. खण्ड १३९५क सार की अछि?

क. काठमाण्डू अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मैथिली भाषा-संस्कृति योगदानकर्ता, रंगकर्मी, शिक्षा-कार्यदल, आन्दोलनकारी आ लोकसाहित्यकारक सम्मानक मंच बनल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काठमाण्डू अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मैथिली भाषा-संस्कृति योगदानकर्ता, रंगकर्मी, शिक्षा-कार्यदल, आन्दोलनकारी आ लोकसाहित्यकारक सम्मानक मंच बनल।

व्याख्या: ई खण्ड सम्मेलनक सम्मान-आयाम पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १३९६ : विदेह-सदेह २ — मिथिला राज्य, प्राथमिक शिक्षा आ भाषिक लगाव

प्रश्न 13903. धर्मेन्द्र झा संघीय राज्यप्रणालीक प्रसंगमे कोन बात पर जोर देबाक कहलनि?

क. मिथिला राज्यपर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला राज्यपर।

व्याख्या: स्रोतमे संघीय राज्यप्रणाली तय रहल अवस्थामे मिथिला राज्यपर जोर देबाक बात अछि।

प्रश्न 13904. कृषि तथा सहकारी मन्त्री जयप्रकाश प्रसाद गुप्ता मधेशीक मूल समस्या की बतौलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आन्तरिक औपनिवेशीकरण।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आन्तरिक औपनिवेशीकरण।

व्याख्या: स्रोतमे मधेशीक मूल समस्या आन्तरिक औपनिवेशीकरण कहल गेल अछि।

प्रश्न 13905. धनाकर ठाकुर मिथिला राज्यक स्थापना कोना संभव कहलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मिथिलावासीक संघर्षसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मिथिलावासीक संघर्षसँ।

व्याख्या: स्रोतमे धनाकर ठाकुरक कथन अछि जे संघर्षसँ मात्र मिथिला राज्यक स्थापना हएत।

प्रश्न 13906. सम्मेलनक अध्यक्षता के कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भुवनेश्वर गुरमैता।

उत्तर: घ. भुवनेश्वर गुरमैता।

व्याख्या: स्रोतमे परिषदक अध्यक्ष भुवनेश्वर गुरमैताक सभापतित्व कहल अछि।

प्रश्न 13907. सम्मेलनक बाद कोन कार्यक्रम भेल छल?

क. मैथिली सांस्कृतिक कार्यक्रम।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली सांस्कृतिक कार्यक्रम।

व्याख्या: स्रोतमे उदघाटन कार्यक्रमक बाद मैथिली सांस्कृतिक कार्यक्रम भेल कहल अछि।

प्रश्न 13908. ओतुक्का नव संविधान सभामे कोन राज्यक अस्तित्वमे अनबाक प्रयास जोरपर कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिला राज्यक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिला राज्यक।

व्याख्या: स्रोतमे नव संविधान सभामे मिथिला राज्यक प्रयास जोरपर कहल अछि।

प्रश्न 13909. भारतमे मिथिला राज्यक प्रयासक स्थिति की कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विभिन्न कारणसँ शिथिल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विभिन्न कारणसँ शिथिल।

व्याख्या: स्रोतमे भारतमे ई प्रयास शिथिल कहल गेल अछि।

प्रश्न 13910. कोन स्तर धरि मैथिलीमे शिक्षा नहि देल गेलासँ बौद्धिक-सांस्कृतिक लगाव नहि जगत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्राथमिक शिक्षा यावत धरि।

उत्तर: घ. प्राथमिक शिक्षा यावत धरि।

व्याख्या: स्रोतमे प्राथमिक शिक्षा धरि मैथिलीमे शिक्षा आवश्यक कहल अछि।

प्रश्न 13911. रोजी-रोटीक जोगाड़क कारण की गौण पड़ि गेल कहल गेल?

क. सभ किछु।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सभ किछु।

व्याख्या: स्रोतमे रोजी-रोटीक जोगाड़मे सभ किछु गौण पड़ि गेल कहल अछि।

प्रश्न 13912. खण्ड १३९६क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मेलनक बहस मिथिला राज्य, संघीयता, आन्तरिक औपनिवेशीकरण, संघर्ष, प्राथमिक मैथिली शिक्षा आ भाषिक लगावक प्रश्न उठबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मेलनक बहस मिथिला राज्य, संघीयता, आन्तरिक औपनिवेशीकरण, संघर्ष, प्राथमिक मैथिली शिक्षा आ भाषिक लगावक प्रश्न उठबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड राजनीति, शिक्षा आ भाषिक अस्मिताक संबंध देखबैत अछि।

खण्ड १३९७ : विदेह-सदेह २ — “मिथिला दर्शन”: पारिवारिक पत्रिका आ सम्पादकीय संरचना

प्रश्न 13913. “मिथिला दर्शन” के कोन रूपमे वर्णित कएल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नव रूप-रंगमे संपूर्ण पारिवारिक पत्र।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नव रूप-रंगमे संपूर्ण पारिवारिक पत्र।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला दर्शनक नव रूप-रंग आ पारिवारिक पत्र रूप वर्णन अछि।

प्रश्न 13914. “मिथिला दर्शन”मे नेना-भुटका लेल की सम्मिलित कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा-कविता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा-कविता।

व्याख्या: स्रोतमे नेना-भुटका लेल कथा-कविताक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13915. महिला स्तम्भक अन्तर्गत “मिथिला दर्शन”मे की-की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भानस-भात आ साज-श्रृंगार।
उत्तर: घ. भानस-भात आ साज-श्रृंगार।
व्याख्या: स्रोतमे महिला स्तम्भमे भानस-भात आ साज-श्रृंगार अछि।

प्रश्न 13916. “मिथिला दर्शन”क स्थापना कहिया भेल रहए?
क. १९५३ ई. मे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १९५३ ई. मे।
व्याख्या: स्रोतमे पत्रिकाक स्थापना १९५३ ई. मे कहल अछि।

प्रश्न 13917. “मिथिला दर्शन”क प्रतिष्ठाता सम्पादक के सभ रहथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रोफेसर प्रबोध नारायण सिंह आ डॉ. अणिमा सिंह।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रोफेसर प्रबोध नारायण सिंह आ डॉ. अणिमा सिंह।
व्याख्या: स्रोतमे प्रतिष्ठाता सम्पादकक रूपमे ई दुनू नाम देल अछि।

प्रश्न 13918. नव रूपमे “मिथिला दर्शन”क प्रधान सम्पादक के छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नचिकेता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नचिकेता।
व्याख्या: स्रोतमे प्रधान सम्पादक नचिकेता कहल अछि।

प्रश्न 13919. “मिथिला दर्शन”क कार्यकारी सम्पादक के छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रामलोचन ठाकुर।
उत्तर: घ. रामलोचन ठाकुर।
व्याख्या: स्रोतमे रामलोचन ठाकुर कार्यकारी सम्पादक छथि।

प्रश्न 13920. पत्रिकाक कला सम्पादक के कहल गेल?
क. डॉ. रमानन्द झा “रमण”।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. डॉ. रमानन्द झा “रमण”।
व्याख्या: स्रोतमे डॉ. रमानन्द झा “रमण” कला सम्पादक कहल अछि।

प्रश्न 13921. पत्रिका के प्रकाशित आ मुद्रित कऽ रहल छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. अणिमा सिंह।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. अणिमा सिंह।

व्याख्या: स्रोतमे डॉ. अणिमा सिंह द्वारा प्रकाशित-मुद्रित कहल अछि।

प्रश्न 13922. खण्ड १३९७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. “मिथिला दर्शन” १९५३क परम्परासँ नव पारिवारिक पत्रिका रूपमे आर्थिक लेख, बाल-सामग्री, महिला स्तम्भ, समीक्षा आ कथा-कविता समेटैत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. “मिथिला दर्शन” १९५३क परम्परासँ नव पारिवारिक पत्रिका रूपमे आर्थिक लेख, बाल-सामग्री, महिला स्तम्भ, समीक्षा आ कथा-कविता समेटैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड पत्रिकाक इतिहास आ सम्पादकीय संरचना पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १३९८ : विदेह-सदेह २ — प्रगतिशील साहित्य: अनुभव, समाज आ यथार्थ

प्रश्न 13923. प्रगतिशील साहित्यमे लेखक कोन काजक बात करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुभवक पुनर्निर्माण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुभवक पुनर्निर्माण।

व्याख्या: स्रोतमे प्रगतिशील साहित्यमे अनुभवक पुनर्निर्माण परिवर्तनशील समाज लेल कहल अछि।

प्रश्न 13924. अनुभवक पुनर्निर्माण केकर लेल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवर्तनशील समाज लेल।

उत्तर: घ. परिवर्तनशील समाज लेल।

व्याख्या: लेखक परिवर्तनशील समाजक संदर्भमे अनुभव पुनर्निर्माणक बात करैत छथि।

प्रश्न 13925. प्रगतिशील साहित्य प्राकृतिक आ सामाजिक यथार्थक बीच की चाहैत अछि?

क. समायोजन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समायोजन।

व्याख्या: स्रोतमे प्राकृतिक आ सामाजिक यथार्थक बीच समायोजनक बात अछि।

प्रश्न 13926. परिवर्तनशील समयकेँ स्थायित्व देबाक लेल कोन तत्वपर आधारित कथाक प्रश्न उठाओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. परम्पराक स्थायी आ मूल तत्वपर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. परम्पराक स्थायी आ मूल तत्वपर।

व्याख्या: स्रोतमे परम्पराक स्थायी मूल तत्वक आधारपर कथाक आवश्यकता पूछल गेल अछि।

प्रश्न 13927. व्यक्ति-हित आ समाज-हितक सम्बन्ध स्रोतमे कोना कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. द्वैध आ परस्पर विरोधी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. द्वैध आ परस्पर विरोधी।

व्याख्या: स्रोतमे व्यक्ति-हित आ समाज-हितमे द्वैध आ विरोध कहल अछि।

प्रश्न 13928. व्यक्ति-हित आ समाज-हितमे की आवश्यक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संयोजन।

उत्तर: घ. संयोजन।

व्याख्या: स्रोतमे द्वैधक बीच संयोजन आवश्यक कहल अछि।

प्रश्न 13929. प्रगतिशील कथा लेल कोन दृष्टि आवश्यक कहल गेल?

क. विश्व दृष्टि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विश्व दृष्टि।

व्याख्या: स्रोतमे विश्व दृष्टि आवश्यक कहल अछि।

प्रश्न 13930. कथा मात्र की नहि अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विचारक उत्पत्ति मात्र नहि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विचारक उत्पत्ति मात्र नहि।

व्याख्या: लेखक कहैत छथि कथा मात्र विचारक उत्पत्ति नहि जे रोशनाइसँ कागतपर उतारि देल जाए।

प्रश्न 13931. कथा कोन दशासँ निर्दिशित होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ।

व्याख्या: स्रोतमे कथा सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ निर्दिशित कहल अछि।

प्रश्न 13932. खण्ड १३९८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रगतिशील साहित्य अनुभव-पुनर्निर्माण, प्राकृतिक-सामाजिक यथार्थक समायोजन, व्यक्ति-समाज हितक संयोजन आ सामाजिक-ऐतिहासिक कथा-दृष्टि पर बल दैत अछि।

उत्तर: घ. प्रगतिशील साहित्य अनुभव-पुनर्निर्माण, प्राकृतिक-सामाजिक यथार्थक समायोजन, व्यक्ति-समाज हितक संयोजन आ सामाजिक-ऐतिहासिक कथा-दृष्टि पर बल दैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्य-सिद्धान्त आ सामाजिक यथार्थक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १३९९ : विदेह-सदेह २ — मैथिली लेखन, घरक भाषा आ पाठक-विस्तार

प्रश्न 13933. स्रोतमे कवि-कथाकार मैथिलीकेँ की बना लेलन्हि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपन कैरिअर।

उत्तर: घ. अपन कैरिअर।

व्याख्या: लेखक आलोचनात्मक ढंगसँ कहैत छथि जे कवि-कथाकार मैथिलीकेँ अपन कैरिअर बना लेलन्हि।

प्रश्न 13934. घरमे मैथिलीकेँ निष्कासित कऽ कतयक वस्तु बना देल गेल कहल अछि?

क. सेमीनारक वस्तु।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सेमीनारक वस्तु।

व्याख्या: स्रोतमे घरमे मैथिली निष्कासित कऽ सेमीनारक वस्तु बना देबाक आलोचना अछि।

प्रश्न 13935. लेखकक अनुसार बच्चाकेँ की भेटब आवश्यक अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीक वातावरण।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीक वातावरण।

व्याख्या: स्रोतमे बच्चाकेँ मैथिलीक वातावरण भेटबाक चिन्ता अछि।

प्रश्न 13936. लेखक सभ जातिक लोकसँ मैथिली प्रति की चाहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रेम।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रेम।

व्याख्या: स्रोतमे सभ जातिक लोक एहि भाषासँ प्रेम करथि, से बात अछि।

प्रश्न 13937. लेखक कोन प्रकारक कथाक कमीक प्रश्न उठबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विज्ञान कथा आ बाल-किशोर कथा-कविता।

उत्तर: घ. विज्ञान कथा आ बाल-किशोर कथा-कविता।

व्याख्या: स्रोतमे विज्ञान कथा, बाल-किशोर कथा-कविता कतए अछि, से प्रश्न अछि।

प्रश्न 13938. लेखकक आलोचनामे पोथी छपबाक सामान्य संख्या कतबा कहल गेल?

क. सए-दू सए कॉपी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सए-दू सए कॉपी।

व्याख्या: स्रोतमे सए-दू सए कॉपी पोथी छपबाक आलोचना अछि।

प्रश्न 13939. पुरस्कार लेल लेखक सभ की सम्हारि राखि रहल छथि कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. फोटोस्टेट कॉपी घरमे फोल्डर बना कऽ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. फोटोस्टेट कॉपी घरमे फोल्डर बना कऽ।
व्याख्या: स्रोतमे फोटोस्टेट कॉपी फोल्डर बना पुरस्कार लेल राखबाक आलोचना अछि।

प्रश्न 13940. सिलेबसमे किताब लगेबा लेल कोन वातावरणक आलोचना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तिकड़मक वातावरण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तिकड़मक वातावरण।
व्याख्या: स्रोतमे सिलेबसमे अपन किताब लगेबा लेल तिकड़मक वातावरण कहल गेल।

प्रश्न 13941. लेखकक आस अन्तमे कोन पाठक-लेखक समूहपर स्थिर भेल कहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखकपर।
उत्तर: घ. गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखकपर।
व्याख्या: स्रोतमे ई आलोचनात्मक आशा-वाक्य देल अछि।

प्रश्न 13942. खण्ड १३९९क सार की अछि?
क. लेखक मैथिलीकेँ सेमीनारक वस्तु नहि, घरक भाषा, बच्चाक वातावरण, विज्ञान-बाल साहित्य आ व्यापक पाठक-वर्गक भाषा बनेबाक आग्रह करैत छथि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. लेखक मैथिलीकेँ सेमीनारक वस्तु नहि, घरक भाषा, बच्चाक वातावरण, विज्ञान-बाल साहित्य आ व्यापक पाठक-वर्गक भाषा बनेबाक आग्रह करैत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड मैथिली लेखनक सामाजिक पहुँच आ भाषा-वातावरण पर केन्द्रित अछि।

खण्ड १४०० : विदेह-सदेह २ — ताराकान्त झा: अनुवाद पुरस्कार आ मिथिला समाद

प्रश्न 13943. श्री ताराकान्त झाकेँ २००८ केर कोन पुरस्कार भेटल?
क. साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।
व्याख्या: स्रोतमे २००८ केर साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार देल अछि।

प्रश्न 13944. ताराकान्त झाकेँ पुरस्कार कोन कृतिक अनुवादपर भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “संरचनावाद उत्तर-संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र”।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “संरचनावाद उत्तर-संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र”।
व्याख्या: स्रोतमे एहि शीर्षकक अनुवादपर पुरस्कारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13945. मूल कृति केकर अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गोपीचन्द नारंगक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गोपीचन्द नारंगक।
व्याख्या: स्रोतमे गोपीचन्द नारंगक कृति कहल गेल अछि।

प्रश्न 13946. ताराकान्त झाक अनुवाद कोन भाषासँ मैथिलीमे छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उर्दूसँ मैथिली।
उत्तर: घ. उर्दूसँ मैथिली।
व्याख्या: स्रोतमे उर्दूसँ मैथिली अनुवाद स्पष्ट अछि।

प्रश्न 13947. ताराकान्त झा कोन क्षेत्रसँ जुड़ल छथि?
क. पत्रकारितासँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पत्रकारितासँ।
व्याख्या: स्रोतमे श्री ताराकान्त झा पत्रकारितासँ जुड़ल छथि कहल अछि।

प्रश्न 13948. पत्र-पत्रिकामे निबन्धक अतिरिक्त ओ कोन भाषासँ हिन्दीमे अनुवाद करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. बंगलासँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. बंगलासँ।
व्याख्या: स्रोतमे बंगलासँ हिन्दी आ बंगलासँ मैथिलीमे एकाधिक पोथी प्रकाशित कहल अछि।

प्रश्न 13949. ताराकान्त झा बंगलासँ कोन भाषामे पोथी प्रकाशित कएलन्हि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. हिन्दी आ मैथिलीमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. हिन्दी आ मैथिलीमे।
व्याख्या: स्रोतमे बंगलासँ हिन्दी आ मैथिली दुनूमे पोथीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13950. ताराकान्त झा संप्रति कोन दैनिकक सम्पादक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली दैनिक “मिथिला समाद”क।
उत्तर: घ. मैथिली दैनिक “मिथिला समाद”क।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली दैनिक “मिथिला समाद”क सम्पादक कहल अछि।

प्रश्न 13951. ई पुरस्कार मैथिलीमे कोन ज्ञान-विधाक अनुवादक मान्यता देखबैत अछि?

क. साहित्य-सिद्धान्त आ काव्यशास्त्रक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य-सिद्धान्त आ काव्यशास्त्रक।

व्याख्या: शीर्षक संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद आ प्राच्य काव्यशास्त्रसँ संबंधित अछि।

प्रश्न 13952. खण्ड १४००क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ताराकान्त झाक पुरस्कार उर्दू सँ मैथिलीमे साहित्य-सिद्धान्तक अनुवाद, पत्रकारिता, बंगलासँ अनुवाद आ “मिथिला समाद” सम्पादनक परिचय दैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ताराकान्त झाक पुरस्कार उर्दू सँ मैथिलीमे साहित्य-सिद्धान्तक अनुवाद, पत्रकारिता, बंगलासँ अनुवाद आ “मिथिला समाद” सम्पादनक परिचय दैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड अनुवाद, पत्रकारिता आ मैथिली ज्ञान-परम्पराक संगम अछि।

खण्ड १४०१ : विदेह-सदेह २ — सौभाग्य मिथिला: २४x७ चैनल आ कार्यक्रम

प्रश्न 13953. “सौभाग्य मिथिला” कतेक समय चलयवला चैनल रूपमे कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. २४x७ चैनल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. २४x७ चैनल।

व्याख्या: स्रोतमे “सौभाग्य मिथिला” मैथिलीमे २४x७ चैनल आबि गेल अछि कहल अछि।

प्रश्न 13954. “सौभाग्य मिथिला” कोन कम्पनी द्वारा प्रारम्भ भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सौभाग्य मीडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सौभाग्य मीडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा।

व्याख्या: स्रोतमे चैनलक आरम्भ सौभाग्य मीडिया प्राइवेट लिमिटेडसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 13955. चैनल कतेक मैथिल भाषीकेँ ध्यानमे राखि आनल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पाँच करोड़ मैथिल भाषीकेँ।

उत्तर: घ. पाँच करोड़ मैथिल भाषीकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे पाँच करोड़ मैथिल भाषीक लेल चैनल कहल अछि।

प्रश्न 13956. “सौभाग्य मिथिला” कोन प्रकारक चैनल कहल गेल?

क. संपूर्ण मैथिली इंटरटेनमेंट चैनल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संपूर्ण मैथिली इंटरटेनमेंट चैनल।

व्याख्या: स्रोतमे एहि चैनलकेँ संपूर्ण मैथिली मनोरंजन चैनल कहल गेल अछि।

प्रश्न 13957. चैनलपर मैथिल परंपराक संग की-की उतारल गेल कहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बोली, साहित्य, संस्कृति, गीत-संगीत आ लोक जीवन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बोली, साहित्य, संस्कृति, गीत-संगीत आ लोक जीवन।

व्याख्या: स्रोतमे एहि सांस्कृतिक घटक सभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13958. एहि मैथिली चैनलपर कतेक घंटा भोजपुरी कार्यक्रम प्रसारित होएबाक बात अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दू घंटा।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दू घंटा।

व्याख्या: स्रोतमे दू घंटा भोजपुरी कार्यक्रम सेहो कहल अछि।

प्रश्न 13959. “सौभाग्य मिथिला”पर कोन महाकाव्यात्मक प्रस्तुति प्रसारित होएबाक बात अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संपूर्ण मैथिल रामायण।

उत्तर: घ. संपूर्ण मैथिल रामायण।

व्याख्या: स्रोतमे संपूर्ण मैथिल रामायण प्रसारित कएल जाएत कहल अछि।

प्रश्न 13960. “फूलडालि” आ “मैथिली मजा” कोन सूचीमे देल गेल?

क. चैनलक कार्यक्रम-सूचीमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चैनलक कार्यक्रम-सूचीमे।

व्याख्या: स्रोतमे फूलडालि, मैथिली मजा आदि कार्यक्रमक नाम अछि।

प्रश्न 13961. चैनलक दिल्ली कार्यालय कतय कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ए-६/१, मायापुरी फेज-१ मे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ए-६/१, मायापुरी फेज-१ मे।

व्याख्या: स्रोतमे दिल्लीमे आफिस ए-६/१, मायापुरी फेज-१ देल अछि।

प्रश्न 13962. खण्ड १४०१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सौभाग्य मिथिला पाँच करोड़ मैथिल भाषी लेल २४x७ मनोरंजन चैनल रूपमे परम्परा, बोली, साहित्य, संस्कृति, गीत-संगीत, लोकजीवन आ मैथिल रामायणक मंच बनेबाक दावा करैत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सौभाग्य मिथिला पाँच करोड़ मैथिल भाषी लेल २४x७ मनोरंजन चैनल रूपमे परम्परा, बोली, साहित्य, संस्कृति, गीत-संगीत, लोकजीवन आ मैथिल रामायणक मंच बनेबाक दावा करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड मैथिली दृश्य-माध्यमक विस्तारक दस्तावेज अछि।

खण्ड १४०२ : विदेह-सदेह २ — भारतीय बजट २००८-०९: विकास, कर, रोजगार आ शिक्षा

प्रश्न 13963. भारतीय बजट २००८-०९ के प्रस्तुत कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी।

व्याख्या: स्रोतमे वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी द्वारा बजट प्रस्तुत कएल गेल कहल अछि।

प्रश्न 13964. ई बजट कहिया प्रस्तुत भेल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ६ जुलाइ २००९ कैं।

उत्तर: घ. ६ जुलाइ २००९ कैं।

व्याख्या: स्रोतमे प्रस्तुति-तिथि ६ जुलाइ २००९ अछि।

प्रश्न 13965. आर्थिक विकास दर कतबा रहल होएबाक सम्भावना व्यक्त भेल?

क. ६.७ प्रतिशत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ६.७ प्रतिशत।

व्याख्या: स्रोतमे आर्थिक विकास दर ६.७ प्रतिशत रहल होएबाक सम्भावना अछि।

प्रश्न 13966. करदाता लेल बेसिक छूट कतयसँ कतय बढ़ाओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एक लाख ५० हजार सँ एक लाख ६० हजार टाका।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. एक लाख ५० हजार सँ एक लाख ६० हजार टाका।

व्याख्या: स्रोतमे बेसिक छूट १.५० लाख सँ १.६० लाख कएल गेल अछि।

प्रश्न 13967. आयकरपर कतेक प्रतिशत सरचार्ज हटाओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दस प्रतिशत।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दस प्रतिशत।

व्याख्या: स्रोतमे आयकरपर दस प्रतिशत सरचार्ज हटाओल गेल अछि।

प्रश्न 13968. रोजगार गारंटी योजनामे की होएबाक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विस्तार।

उत्तर: घ. विस्तार।

व्याख्या: स्रोतमे रोजगार गारंटी योजनामे विस्तार कएल जएत कहल अछि।

प्रश्न 13969. २५ किलो अनाज कतबा दरपर उपलब्ध कराओल जएत कहल गेल?

क. तीन टाका प्रति किलो।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीन टाका प्रति किलो।

व्याख्या: स्रोतमे २५ किलो अनाज तीन टाका प्रति किलो दरपर उपलब्ध करबाक बात अछि।

प्रश्न 13970. प्रत्येक राज्यमे कोन संस्थान स्थापित करबाक योजना अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एक केंद्रीय विश्वविद्यालय।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. एक केंद्रीय विश्वविद्यालय।

व्याख्या: स्रोतमे प्रत्येक राज्यमे एक केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापित करबाक योजना अछि।

प्रश्न 13971. नव आई.आई.टी. आ एन.आई.टी. लेल कतबा खर्चक योजना देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ४५० करोड़ टाका।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ४५० करोड़ टाका।

व्याख्या: स्रोतमे नव आई.आई.टी. आ एन.आई.टी. लेल ४५० करोड़ टाका खर्चक योजना अछि।

प्रश्न 13972. खण्ड १४०२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भारतीय बजटमे विकास दर, कर-छूट, सरचार्ज हटेनाइ, रोजगार गारंटी, सस्ता अनाज, कृषि-लघु उद्योग, विश्वविद्यालय आ तकनीकी संस्थान सभक योजना देखाओल गेल।

उत्तर: घ. भारतीय बजटमे विकास दर, कर-छूट, सरचार्ज हटेनाइ, रोजगार गारंटी, सस्ता अनाज, कृषि-लघु उद्योग, विश्वविद्यालय आ तकनीकी संस्थान सभक योजना देखाओल गेल।

व्याख्या: ई खण्ड आर्थिक नीति आ सामाजिक राहतक बजट-सूचना समेटैत अछि।

खण्ड १४०३ : विदेह-सदेह २ — नेपाल बजट २००९-१०: कला-गाम, सड़क, घर आ विद्यापति पुरस्कार

प्रश्न 13973. नेपालक बजट २००९-१० के प्रस्तुत कएलनि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वित्तमंत्री सुरेन्द्र पाण्डेय।

उत्तर: घ. वित्तमंत्री सुरेन्द्र पाण्डेय।

व्याख्या: स्रोतमे नेपालमे वित्तमंत्री सुरेन्द्र पाण्डेय द्वारा बजट प्रस्तुत कहल अछि।

प्रश्न 13974. नेपालक बजट कहिया प्रस्तुत भेल?

क. १३ जुलाई २००९ कैं।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १३ जुलाई २००९ कैं।

व्याख्या: स्रोतमे प्रस्तुति तिथि १३ जुलाई २००९ अछि।

प्रश्न 13975. किसान लेल सब्सिडी कतेक ने.रु. देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ५००० लाख ने.रु.।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ५००० लाख ने.रु.।
व्याख्या: स्रोतमे किसान लेल ५००० लाख ने.रु. सब्सिडी कहल अछि।

प्रश्न 13976. कला-गामक विकास कोन-कोन भाषायी क्षेत्रमे करबाक योजना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिली, भोजपुरी, थारू, लापचा, लिम्बू आ धीमाल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिली, भोजपुरी, थारू, लापचा, लिम्बू आ धीमाल।
व्याख्या: स्रोतमे एहि भाषायी क्षेत्र सभक नाम अछि।

प्रश्न 13977. जनकपुर, राजबिराज आदि हवाइ अड्डाक विकासार्थ कतबा राशि देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. २५०० लाख ने.रु.।
उत्तर: घ. २५०० लाख ने.रु.।
व्याख्या: स्रोतमे हवाइ अड्डा विकासार्थ २५०० लाख ने.रु. देल गेल अछि।

प्रश्न 13978. जनकपुरमे कोन विश्वविद्यालयक स्थापना कएल जएत कहल गेल?
क. राजश्री जनक विश्वविद्यालय।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राजश्री जनक विश्वविद्यालय।
व्याख्या: स्रोतमे जनकपुरमे राजश्री जनक विश्वविद्यालयक स्थापना कहल अछि।

प्रश्न 13979. धालकेबार-जनकपुर रोड कहिया धरि पूर्ण करबाक बात अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अगिला वित्त वर्ष धरि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अगिला वित्त वर्ष धरि।
व्याख्या: स्रोतमे अगिला वित्त वर्षधरि पूर्ण करबाक बात अछि।

प्रश्न 13980. डोम, मुसहर, चमार, दुसाध, खतबे आ गरीब मुस्लिम लेल कतेक घर बनाओल जएत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ३००० घर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ३००० घर।
व्याख्या: स्रोतमे सिरहा, सप्तरी आ कपिलवस्तुमे एक-एक हजार, कुल ३००० घर कहल अछि।

प्रश्न 13981. मैथिली भाषा-साहित्य-संस्कृति लेल कोन पुरस्कार गुथीक स्थापना भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महाकवि विद्यापति पुरस्कार गुथी।

उत्तर: घ. महाकवि विद्यापति पुरस्कार गुथी।

व्याख्या: स्रोतमे एक करोड़ ने.रु.क योगसँ महाकवि विद्यापति पुरस्कार गुथीक स्थापना अछि।

प्रश्न 13982. खण्ड १४०३क सार की अछि?

क. नेपाल बजट किसान सब्सिडी, भाषायी कला-गाम, जनकपुर-राजबिराज विकास, राजश्री जनक विश्वविद्यालय, दलित-गरीब घर, छात्रवृत्ति आ विद्यापति पुरस्कार गुथी समेटैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल बजट किसान सब्सिडी, भाषायी कला-गाम, जनकपुर-राजबिराज विकास, राजश्री जनक विश्वविद्यालय, दलित-गरीब घर, छात्रवृत्ति आ विद्यापति पुरस्कार गुथी समेटैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड नेपालक बजटमे मैथिली-क्षेत्रीय विकासक संकेत देखबैत अछि।

खण्ड १४०४ : विदेह-सदेह २ — “हम मैथिल”, कोलकाता बैसार आ नागरिक-सामाजिक चेतना

प्रश्न 13983. “हम मैथिल” कोन प्रकारक पत्रिका कहल गेल?

क. मैथिली त्रैमासिक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली त्रैमासिक।

व्याख्या: स्रोतमे “हम मैथिल” मैथिली त्रैमासिक कोलकातासँ लोकार्पित भेल कहल अछि।

प्रश्न 13984. “हम मैथिल” कतयसँ लोकार्पित भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कोलकातासँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कोलकातासँ।

व्याख्या: स्रोतमे कोलकातासँ लोकार्पित भेल अछि।

प्रश्न 13985. “हम मैथिल”क प्रधान सम्पादक के कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्री रामलोचन ठाकुर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्री रामलोचन ठाकुर।

व्याख्या: स्रोतमे प्रधान सम्पादक श्री रामलोचन ठाकुर कहल अछि।

प्रश्न 13986. “हम मैथिल”क सम्पादक के छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मनमोहन मिश्र “चंचल”।

उत्तर: घ. मनमोहन मिश्र “चंचल”।

व्याख्या: स्रोतमे सम्पादक मनमोहन मिश्र “चंचल” देल अछि।

प्रश्न 13987. कोलकाता सम्पर्कक मासिक बैसार कहिया भेल?

क. १२ जुलाइ २००९ कैं।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १२ जुलाइ २००९ कैं।

व्याख्या: स्रोतमे १२ जुलाइ २००९ कैं मासिक बैसारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13988. कोलकाता सम्पर्कक मासिक बैसार नियमानुसार मासक कोन दिन भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दोसर रवि कैं।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दोसर रवि कैं।

व्याख्या: स्रोतमे मासक दोसर रविकें बैसार कहल अछि।

प्रश्न 13989. १५ अगस्त १९४७ आ १५ अगस्त २००९क तुलना मे लेखक भारतक कोन रूप बतबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विश्वक सोझाँ अविचल आर्थिक छविवला रूप।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विश्वक सोझाँ अविचल आर्थिक छविवला रूप।

व्याख्या: स्रोतमे भारत विश्वक आर्थिक मन्दीमे सेहो अविचल छवि बनेने अछि कहल अछि।

प्रश्न 13990. लेखकक अनुसार असामान्य नगरीकरणमे कोन समस्या बढ़ल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. केवल महानगरपर बोझ बढ़ल आ छोट नगरक विकास अवरुद्ध भेल।

उत्तर: घ. केवल महानगरपर बोझ बढ़ल आ छोट नगरक विकास अवरुद्ध भेल।

व्याख्या: स्रोतमे महानगरक बोझ आ छोट-छोट नगरक अवरुद्ध विकासक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13991. स्वाइन-फ्लू प्रसंगमे सरकारक मोबाइल नम्बर सूचीबारे की आश्चर्यजनक कहल गेल?

क. एम्स आ पैघ हॉस्पीटल सहित नम्बर स्विच-ऑफ रहैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एम्स आ पैघ हॉस्पीटल सहित नम्बर स्विच-ऑफ रहैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे डॉक्टर सभक मोबाइल नम्बर स्विच-ऑफ रहबाक आलोचना अछि।

प्रश्न 13992. खण्ड १४०४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. “हम मैथिल” त्रैमासिक, कोलकाता बैसार, स्वतन्त्रता-पश्चात भारतक परिवर्तन, नगरीकरण, गामक बिला जाएब आ स्वाइन-फ्लू प्रबन्धक आलोचना एकसंग नागरिक चेतना बनबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. “हम मैथिल” त्रैमासिक, कोलकाता बैसार, स्वतन्त्रता-पश्चात भारतक परिवर्तन, नगरीकरण, गामक बिला जाएब आ स्वाइन-फ्लू प्रबन्धक आलोचना एकसंग नागरिक चेतना बनबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड पत्रिका-समाचारसँ सामाजिक-राष्ट्रीय टिप्पणी धरि पहुँचैत अछि।

खण्ड १४०५ : विदेह-सदेह २ — पञ्जी डाटाबेस: डिजिटल इमेजिंग, अंकन आ लिप्यंतरण

प्रश्न 13993. पञ्जी डाटाबेसक निर्माणमे कोन-कोन प्रक्रिया कहल गेल?

क. डिजिटल इमेजिंग, अंकन, मिथिलाक्षरसँ देवनागरी लिप्यंतरण, संकलन आ सम्पादन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डिजिटल इमेजिंग, अंकन, मिथिलाक्षरसँ देवनागरी लिप्यंतरण, संकलन आ सम्पादन।

व्याख्या: स्रोतमे पञ्जी डाटाबेसक काज चारि-पाँच चरणमे — छवि, अंकन, लिप्यंतरण, संकलन आ सम्पादन — रूपमे देल अछि।

प्रश्न 13994. एहि पञ्जी-पुस्तकक प्रणयन/सम्पादनमे किनकर-किनकर नाम आएल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा।

व्याख्या: स्रोतमे एहि पुस्तकक कारण/प्रणयनक संग गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झाक नाम अछि।

प्रश्न 13995. आवरणमे कोन पुरान हस्ताक्षरक उपयोग भेल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झा पञ्जीकारजीक १७६६ केर हस्ताक्षर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झा पञ्जीकारजीक १७६६ केर हस्ताक्षर।

व्याख्या: स्रोत पञ्जीकार छोटी झाक १७६६ केर हस्ताक्षरक आवरण-प्रयोगक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 13996. पञ्जी-स्रोतमे माण्डर मूलक पोथी सम्बन्धी की विशेष बात कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रघुदेव झाक लिखल माण्डर मूलक पोथीक प्राचीनतम डिजिटल इमेजिंग।

उत्तर: घ. रघुदेव झाक लिखल माण्डर मूलक पोथीक प्राचीनतम डिजिटल इमेजिंग।

व्याख्या: स्रोतमे पितामह पञ्जीकार रघुदेव झाक माण्डर मूलक पोथीक प्राचीनतम डिजिटल इमेजिंगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 13997. एहि खण्डमे पञ्जी डाटाबेसक मुख्य सांस्कृतिक प्रयोजन की बुझाइत अछि?

क. वंशावली, हस्ताक्षर, मूल-पोथी आ मिथिलाक्षर सामग्रीक संरक्षण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वंशावली, हस्ताक्षर, मूल-पोथी आ मिथिलाक्षर सामग्रीक संरक्षण।

व्याख्या: डिजिटल छवि आ लिप्यंतरण द्वारा पञ्जीक पुरान सामग्री सुरक्षित आ पठनीय बनाओल जाएत अछि।

प्रश्न 13998. मिथिलाक्षरसँ देवनागरी लिप्यंतरणक महत्व की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पुरान पञ्जी-पाठकेँ नव पाठक लेल पढ़बा योग्य बनबेनाइ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पुरान पञ्जी-पाठकेँ नव पाठक लेल पढ़बा योग्य बनबेनाइ।

व्याख्या: लिप्यंतरण पुरान लिपिक सामग्रीकेँ आधुनिक देवनागरी पाठक धरि पहुँचबैत अछि।

प्रश्न 13999. पञ्जी डाटाबेसमे “अंकन” शब्दक अर्थ एहि प्रसंगमे की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लिखित अभिलेखकेँ व्यवस्थित रूपसँ पाठ्य रूपमे उतारब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लिखित अभिलेखकेँ व्यवस्थित रूपसँ पाठ्य रूपमे उतारब।
व्याख्या: स्रोतमे डिजिटल इमेजिंगक संग अंकन देल अछि, जाहिसँ छविसँ पाठ्य-आधार बनैत अछि।

प्रश्न 14000. पञ्जीकार विद्यानन्द झाक नाम एहि खण्डमे कोन रूपमे जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पञ्जी-कार्यक प्रणयन/सम्पादन-संयोगमे।
उत्तर: घ. पञ्जी-कार्यक प्रणयन/सम्पादन-संयोगमे।
व्याख्या: स्रोतमे पञ्जीकार विद्यानन्द झा एहि पुस्तकक कार्यसँ जोड़ल गेल छथि।

प्रश्न 14001. ई खण्ड पञ्जीकेँ केवल निजी वंशावली नहि, कोन रूपमे देखबैत अछि?
क. मिथिलाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक अभिलेख रूपमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक अभिलेख रूपमे।
व्याख्या: पुरान हस्ताक्षर, मूल-पोथी आ डिजिटल संरक्षण पञ्जीकेँ सार्वजनिक इतिहास-स्रोत बनबैत अछि।

प्रश्न 14002. खण्ड १४०५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पञ्जी डाटाबेस मिथिलाक्षर पञ्जीक छवि, पाठ, लिप्यंतरण आ अभिलेखीय संरक्षणक सामूहिक प्रयास अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पञ्जी डाटाबेस मिथिलाक्षर पञ्जीक छवि, पाठ, लिप्यंतरण आ अभिलेखीय संरक्षणक सामूहिक प्रयास अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पञ्जी-सामग्रीकेँ डिजिटल युगमे सुरक्षित करबाक आधार बतबैत अछि।

खण्ड १४०६ : विदेह-सदेह २ — आर्यभट्टक पञ्जी-विवरण आ माण्डर मूल

प्रश्न 14003. आर्यभट्टक विवरणमे कोन मूलक उल्लेख अछि?
क. मंगरौनी माण्डर / माण्डर मूलक संकेत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मंगरौनी माण्डर / माण्डर मूलक संकेत।
व्याख्या: स्रोतक आर्यभट्ट विवरणमे मंगरौनी-माण्डर शृंखला आ माण्डर मूलक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14004. आर्यभट्टक विवरणमे त्रिनयनभट्टक स्थान कोन रूपमे आएल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. वंश-शृंखलाक आरम्भिक महत्त्वपूर्ण पुरुख रूपमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. वंश-शृंखलाक आरम्भिक महत्त्वपूर्ण पुरुख रूपमे।
व्याख्या: विवरणमे वीजी त्रिनयनभट्टसँ आगाँक संतति-क्रम देल गेल अछि।

प्रश्न 14005. आर्यभट्टक पञ्जी-विवरणक शैली कोन तरहक अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. “ए सुतो...” रूपी वंश-क्रमक शैली।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. “ए सुतो...” रूपी वंश-क्रमक शैली।
व्याख्या: स्रोतमे लगातार “ए सुतो” द्वारा पिता-पुत्र/वंशानुक्रम चलैत अछि।

प्रश्न 14006. आर्यभट्टक विवरणमे सुलोचनभट सम्बन्धी कोन वैकल्पिक नाम देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सुनयनभट्ट।
उत्तर: घ. सुनयनभट्ट।
व्याख्या: स्रोतमे “सुलोचनभट (सुनयनभट्ट)” रूपमे वैकल्पिक पाठ देल अछि।

प्रश्न 14007. आर्यभट्ट विवरणमे नरसिंहक परिचय कोन पदावलीसँ जुड़ल अछि?
क. महामहोपाध्याय आ शस्त्र/महास्त्र विद्यापारंगत पदावलीसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. महामहोपाध्याय आ शस्त्र/महास्त्र विद्यापारंगत पदावलीसँ।
व्याख्या: विवरणक अन्त्य भागमे नरसिंहक विद्या-पारंगत आ महामहोपाध्याय रूपक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14008. पञ्जी-विवरणमे “मूल” कोन काज करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. वंशक पुरान स्थान/पहचानक चिह्न बनैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. वंशक पुरान स्थान/पहचानक चिह्न बनैत अछि।
व्याख्या: माण्डर मूलक उल्लेख व्यक्ति-शृंखला कैं भू-वंशीय आधार दैत अछि।

प्रश्न 14009. आर्यभट्ट विवरणक क्रममे अजयसिंह आ विजयसिंह कोन रूपमे आएल छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. वंश-क्रमक मध्यवर्ती व्यक्तित्व रूपमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. वंश-क्रमक मध्यवर्ती व्यक्तित्व रूपमे।
व्याख्या: स्रोतक शृंखलामे विघुजटी मिश्रक बाद अजयसिंह आ विजयसिंहक नाम आएल अछि।

प्रश्न 14010. महिपतिय: मंगरौनी माण्डैर सै... जेकाँ पाठ पञ्जीक कोन विशेषता देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संक्षिप्त, सूत्रवत्, अभिलेखीय भाषा।
उत्तर: घ. संक्षिप्त, सूत्रवत्, अभिलेखीय भाषा।
व्याख्या: पञ्जी-पाठ व्यक्तिगत कथा नहि, सूत्राकारे वंश-क्रम देबैत अछि।

प्रश्न 14011. आर्यभट्टक विवरणक उपयोग इतिहास-पठनमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विद्वानक वंश, मूल आ क्रमक अभिलेखीय संकेत दैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ई विद्वानक वंश, मूल आ क्रमक अभिलेखीय संकेत दैत अछि।
व्याख्या: एहन पञ्जी-विवरण सांस्कृतिक इतिहासक नाम-वंश-सूत्र देबैत अछि।

प्रश्न 14012. खण्ड १४०६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आर्यभट्टक पञ्जी-विवरण माण्डर मूल आ त्रिनयनभट्टसँ चलैत वंश-शृंखला द्वारा पञ्जीक अभिलेखीय मूल्य देखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आर्यभट्टक पञ्जी-विवरण माण्डर मूल आ त्रिनयनभट्टसँ चलैत वंश-शृंखला द्वारा पञ्जीक अभिलेखीय मूल्य देखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पञ्जीकेँ वंशक्रम आ ऐतिहासिक संकेतक रूपमे पढ़ैत अछि।

खण्ड १४०७ : विदेह-सदेह २ — पञ्जीमे उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्य आ समाज-स्मृति

प्रश्न 14013. पञ्जीमे पञ्जीकार लोकनि पर “तस्कर” उपाधिक प्रसंग किएक आएल?
क. पाँजिक रक्षार्थ कन्या चोराकेँ बिआह कएलाक कारण राजा द्वारा उपाधि जोड़बाक कथासँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाँजिक रक्षार्थ कन्या चोराकेँ बिआह कएलाक कारण राजा द्वारा उपाधि जोड़बाक कथासँ।
व्याख्या: स्रोतमे महाराजाक हेतु निहुछल कन्यासँ अपन पाँजिक रक्षा लेल बिआह आ तस्कर उपाधि प्रसंग देल अछि।

प्रश्न 14014. गंगेश उपाध्यायक जन्म सम्बन्धी कोन असामान्य तथ्य पञ्जीमे देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पिताक मृत्युक पाँच साल बाद जन्म होएब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पिताक मृत्युक पाँच साल बाद जन्म होएब।
व्याख्या: स्रोतमे नैय्यायिक गंगेश उपाध्यायक जन्म पिताक मृत्युक पाँच सालक बाद कहल गेल अछि।

प्रश्न 14015. महेश ठाकुरक बहिनक बिआह कतयक राजकुमारसँ जुड़ल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कूच-बिहारक राजकुमारसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कूच-बिहारक राजकुमारसँ।
व्याख्या: पञ्जीमे महेश ठाकुरक बहिनक बिआह कूच-बिहार राजकुमारसँ होएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14016. कविशेखर ज्योतिरीश्वरक प्रसंगमे पञ्जी किएक महत्त्वपूर्ण कहल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नेपालक पुस्तकालयसँ पाण्डुलिपि भेटबाक पहिनेसँ उपाधिक उल्लेख रहबाक कारण।
उत्तर: घ. नेपालक पुस्तकालयसँ पाण्डुलिपि भेटबाक पहिनेसँ उपाधिक उल्लेख रहबाक कारण।
व्याख्या: स्रोतमे ज्योतिरीश्वरक उपाधिक संग उल्लेख पाण्डुलिपि-प्राप्तिसँ पूर्व पञ्जीमे रहबाक बात अछि।

प्रश्न 14017. पञ्जीमे ढाकाकवि आ कविशेखर लोकनिक विवरण कोन अर्थ रखैत अछि?
क. साहित्यिक उपाधि आ व्यक्तित्व-स्मृतिक अभिलेखीय संरक्षण।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्यिक उपाधि आ व्यक्तित्व-स्मृतिक अभिलेखीय संरक्षण।
व्याख्या: एहि उल्लेखसँ पञ्जी साहित्यिक-सांस्कृतिक इतिहासक स्रोत बनैत अछि।

प्रश्न 14018. मुस्लिम आ चर्मकारसँ विवाहक विवरणसँ पञ्जी समाजबारे की संकेत दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विविध विवाह-संबंधक अभिलेख आ सन्ततिक प्रति दुराग्रहक अभावक संकेत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विविध विवाह-संबंधक अभिलेख आ सन्ततिक प्रति दुराग्रहक अभावक संकेत।
व्याख्या: स्रोतमे एहन विवाह-विवरण आ सन्ततिक प्रति कोनो दुराग्रहक अभाव कहल गेल अछि।

प्रश्न 14019. पञ्जीमे उपलब्ध तथ्यक उपयोग केवल वंशावली धरि सीमित नहि किएक?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओ सामाजिक इतिहास, विवाह, जातीय सम्पर्क आ साहित्यिक स्मृति सेहो देखबैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओ सामाजिक इतिहास, विवाह, जातीय सम्पर्क आ साहित्यिक स्मृति सेहो देखबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतक उदाहरण सभ पञ्जीकेँ बहुआयामी इतिहास-स्रोत बनबैत अछि।

प्रश्न 14020. आर्यभट्टक विवरण पुनः देल जाएबाक कारण की बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मुख्य वंश-शृंखलाक प्रामाणिकता आ पुनर्पुष्टि।
उत्तर: घ. मुख्य वंश-शृंखलाक प्रामाणिकता आ पुनर्पुष्टि।
व्याख्या: स्रोतमे आर्यभट्ट विवरण पुनरावृत्त भेल अछि, जे वंश-सूत्रक महत्त्व देखबैत अछि।

प्रश्न 14021. पञ्जीमे “दुराग्रहक अभाव” वाक्यांश कोन सामाजिक बातपर बल दैत अछि?
क. विवाह-सन्तान सम्बन्धी सामाजिक स्वीकृति/स्मृतिक जटिलता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विवाह-सन्तान सम्बन्धी सामाजिक स्वीकृति/स्मृतिक जटिलता।
व्याख्या: स्रोत समाजक मिश्रित सम्बन्ध सभकेँ अभिलेखित करबाक बात करैत अछि।

प्रश्न 14022. खण्ड १४०७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पञ्जी राजकीय उपाधि, गंगेश, महेश ठाकुर, ज्योतिरीश्वर, विवाह-संबंध आ सामाजिक स्मृतिक तथ्य सभकेँ सुरक्षित रखैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पञ्जी राजकीय उपाधि, गंगेश, महेश ठाकुर, ज्योतिरीश्वर, विवाह-संबंध आ सामाजिक स्मृतिक तथ्य सभकेँ सुरक्षित रखैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पञ्जीक सामाजिक-ऐतिहासिक महत्त्वकेँ उजागर करैत अछि।

खण्ड १४०८ : विदेह-सदेह २ — चैतन्य, गंगेश, उदयनाचार्य आ पञ्जी-संकेत

प्रश्न 14023. चैतन्य महाप्रभुक गुरु रूपमे केकर नाम देल गेल?

क. रमापति उपाध्याय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रमापति उपाध्याय।

व्याख्या: स्रोतमे रमापति उपाध्यायकेँ चैतन्य महाप्रभुक गुरु/शिष्य-सम्बन्धक प्रसंगमे देल अछि।

प्रश्न 14024. रमापति उपाध्याय कोन मूल/गामसँ जुड़ल कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. करमहा मूलक तरौनी गामसँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. करमहा मूलक तरौनी गामसँ।

व्याख्या: स्रोतमे रमापति उपाध्याय करमहा मूलक तरौनी गामक कहल गेल छथि।

प्रश्न 14025. गंगेश उपाध्यायक पञ्जी-संकेतमे कोन नाम-युग्म आएल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. छादन-छादन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. छादन-छादन।

व्याख्या: स्रोतमे गंगेश उपाध्याय — छादन छादन रूपमे उल्लेखित छथि।

प्रश्न 14026. उदयनाचार्यक पञ्जी-संकेतमे कोन स्थान आएल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ननौतीवार ननौती, करियन, समस्तीपुर।

उत्तर: घ. ननौतीवार ननौती, करियन, समस्तीपुर।

व्याख्या: स्रोतमे उदयनाचार्यक संग ननौतीवार ननौती आ करियन, समस्तीपुरक संकेत अछि।

प्रश्न 14027. महेश ठाकुरक मातृक सम्बन्ध कोन रूपमे देल गेल?

क. काश्यप गोत्री सकराढ़ी मूलमे रुद्र झासँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काश्यप गोत्री सकराढ़ी मूलमे रुद्र झासँ।

व्याख्या: स्रोत महेश ठाकुरक मातृक काश्यप गोत्री सकराढ़ी मूलमे रुद्र झाक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 14028. हलायुध आ नरसिंहक सम्बन्धबारे स्रोत की कहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दूनू समकालीन छलाह।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दूनू समकालीन छलाह।

व्याख्या: स्रोतमे हलायुध आ नरसिंह समकालीन रहल कहल गेल अछि।

प्रश्न 14029. सिंहाश्रम मूलक महामहोपाध्याय हलायुधसँ बारह पुस्त पूर्व केकर उल्लेख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. माण्डर मूलक बीजी महामहोपाध्याय त्रिनैन भट्ट।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. माण्डर मूलक बीजी महामहोपाध्याय त्रिनैन भट्ट।

व्याख्या: स्रोतमे हलायुधसँ १२ पुस्त पूर्व त्रिनैन भट्टकेँ पोथीक प्रस्थान-बिन्दु कहल अछि।

प्रश्न 14030. त्रिनैन भट्टक अनुमानित समय कतबा कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लगभग ४०० ईस्वी।

उत्तर: घ. लगभग ४०० ईस्वी।

व्याख्या: स्रोतमे म.म. त्रिनैन भट्टक समय लगभग ४०० ए.डी. कहल अछि।

प्रश्न 14031. एहि पञ्जी-संकेत सभसँ कोन पद्धति स्पष्ट होइत अछि?

क. विद्वान, मूल, गोत्र, गाम आ परम्पराकेँ एक सूत्रमे पढ़बाक पद्धति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्वान, मूल, गोत्र, गाम आ परम्पराकेँ एक सूत्रमे पढ़बाक पद्धति।

व्याख्या: चैतन्य, गंगेश, उदयनाचार्य आदि प्रसंग पञ्जीक बहुस्तरीय संकेत-भाषा देखबैत अछि।

प्रश्न 14032. खण्ड १४०८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चैतन्य, रमापति, गंगेश, उदयनाचार्य, महेश ठाकुर, हलायुध आ त्रिनैन भट्टक पञ्जी-संकेत मिथिलाक विद्वत्-वंश स्मृति उजागर करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चैतन्य, रमापति, गंगेश, उदयनाचार्य, महेश ठाकुर, हलायुध आ त्रिनैन भट्टक पञ्जी-संकेत मिथिलाक विद्वत्-वंश स्मृति उजागर करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड पञ्जीकेँ विद्वानक ऐतिहासिक नेटवर्कक स्रोत मानैत अछि।

खण्ड १४०९ : विदेह-सदेह २ — “अक्खर खम्भा” आ स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कविता

प्रश्न 14033. “अक्खर खम्भा” कोन संस्थाद्वारा प्रकाशित संकलन कहल गेल?

क. नेशनल बुक ट्रस्टद्वारा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेशनल बुक ट्रस्टद्वारा।

व्याख्या: स्रोतमे नेशनल बुक ट्रस्टद्वारा स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कविता संकलन अक्खर खम्भाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14034. “अक्खर खम्भा” कैँ कोन पुरस्कार भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रगति मैदान दिल्लीक २००९ अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलादिससँ सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन पुरस्कार।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रगति मैदान दिल्लीक २००९ अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलादिससँ सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन पुरस्कार।

व्याख्या: स्रोतमे २००९ अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, प्रगति मैदान, दिल्लीक सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन पुरस्कारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14035. “अक्खर” शब्दक अर्थ स्रोतमे कोना स्पष्ट कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. अक्षर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. अक्षर।
व्याख्या: स्रोतमे “अक्खर (अक्षर)” रूपमे अर्थ देल गेल अछि।

प्रश्न 14036. “खम्भा” शब्दक अर्थ स्रोतमे की देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संचयन।
उत्तर: घ. संचयन।
व्याख्या: स्रोतमे “खम्भा (संचयन)” रूपमे अर्थ-व्याख्या अछि।

प्रश्न 14037. “अक्खर खम्भा” शीर्षकक व्याख्यामे कोन ग्रंथक दोहा उद्धृत अछि?
क. कीर्तिलता प्रथम पल्लवक पहिल दोहा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कीर्तिलता प्रथम पल्लवक पहिल दोहा।
व्याख्या: स्रोत शीर्षक-व्याख्यामे कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा दैत अछि।

प्रश्न 14038. संकलनमे कतेक कविक कविता सम्मिलित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ६१ कविक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ६१ कविक।
व्याख्या: स्रोतमे ६१ कविक २९५ टा कविता संकलित कहल गेल अछि।

प्रश्न 14039. संकलनमे कुल कतेक कविता कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. २९५ टा कविता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. २९५ टा कविता।
व्याख्या: “अक्खर खम्भा”मे ६१ कविक २९५ कविता देल गेल अछि।

प्रश्न 14040. संकलनक अन्तमे की देल गेल कहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कवि लोकनिक संक्षिप्त परिचय।
उत्तर: घ. कवि लोकनिक संक्षिप्त परिचय।
व्याख्या: स्रोतमे अन्तमे कवि लोकनिक संक्षिप्त परिचय देल गेल कहल अछि।

प्रश्न 14041. काशीकान्त मिश्र “मधुप” सम्बन्धी कोन छपाइ-सूचना देल गेल?
क. अनुक्रममे नाम बोल्डफेस नहि रहने सोझाँक पृष्ठ संख्या नहि आएल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनुक्रममे नाम बोल्डफेस नहि रहने सोझाँक पृष्ठ संख्या नहि आएल।
व्याख्या: स्रोतमे मधुपक नाम अनुक्रममे बोल्डफेस नहि रहबाक कारण पृष्ठ संख्या नहि आएबाक बात अछि।

प्रश्न 14042. खण्ड १४०९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. “अक्खर खम्भा” स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कविताक ६१ कवि आ २९५ कविता-वला पुरस्कृत संकलन रूपमे रेखांकित अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. “अक्खर खम्भा” स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कविताक ६१ कवि आ २९५ कविता-वला पुरस्कृत संकलन रूपमे रेखांकित अछि।
व्याख्या: ई खण्ड आधुनिक मैथिली कविता-संचयनक सार्वजनिक मान्यता देखबैत अछि।

खण्ड १४१० : विदेह-सदेह २ — हर्टा मुलर आ २००९ साहित्य नोबल

प्रश्न 14043. २००९ ई.क साहित्यक नोबल पुरस्कार कैँ देल गेल?
क. हर्टा मुलरकैँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हर्टा मुलरकैँ।
व्याख्या: स्रोतमे रुमानियामे जन्मल जर्मन लेखिका हर्टा मुलरकैँ २००९ साहित्य नोबल भेटबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14044. हर्टा मुलर कतय जनमल छलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रुमानियामे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रुमानियामे।
व्याख्या: स्रोतमे मुलर रुमानियामे जनमल जर्मन लेखिका कहल गेल छथि।

प्रश्न 14045. हर्टा मुलरक जन्म-वर्ष कतेक देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९५३ ई.।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९५३ ई.।
व्याख्या: स्रोतमे हर्टा मुलरक जन्म १९५३ ई.मे कहल गेल अछि।

प्रश्न 14046. मुलर केकर शासनक अप्रिय परिस्थिति निरूपण लेल चर्चित छलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. निकोल चौसेस्कूक शासनक।
उत्तर: घ. निकोल चौसेस्कूक शासनक।
व्याख्या: स्रोतमे चौसेस्कू शासनक अप्रिय परिस्थिति चित्रणक कारण हुनकर चर्चा अछि।

प्रश्न 14047. स्वेडिश एकेडमी हुनकर कोन-दूनू विधाकेँ प्रशंसनीय कहल?

क. गद्य आ पद्य दूनू।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गद्य आ पद्य दूनू।

व्याख्या: स्रोतमे स्टॉकहोमक स्वेडिश एकेडमी हुनकर गद्य आ पद्य दूनूकेँ प्रशंसनीय कहल अछि।

प्रश्न 14048. मुलरक पहिल जर्मन भाषाक लघुकथा-संग्रह कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नादिर्स।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नादिर्स।

व्याख्या: स्रोतमे १९८२ ई.क पहिल जर्मन भाषाक लघुकथा-संग्रह नादिर्स देल अछि।

प्रश्न 14049. “नादिर्स” कोन समाज/गामकेँ केन्द्रित कऽ कथा कहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रुमानियाक जर्मन भाषी गामकेँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रुमानियाक जर्मन भाषी गामकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे नादिर्स रुमानियाक जर्मन भाषी गामकेँ केन्द्रित कहल अछि।

प्रश्न 14050. “नादिर्स” रुमानियामे कोन दशा भोगलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतिबन्धित कएल गेल।

उत्तर: घ. प्रतिबन्धित कएल गेल।

व्याख्या: स्रोतमे नादिर्स पोथी रुमानियामे प्रतिबन्धित भेल कहल अछि।

प्रश्न 14051. मुलरक “द एप्वाइन्टमेन्ट” उपन्यासक शैली कोन रूपमे वर्णित अछि?

क. फ्लैशबैकमे भूतकालक वर्णन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फ्लैशबैकमे भूतकालक वर्णन।

व्याख्या: स्रोतमे द एप्वाइन्टमेन्ट फ्लैशबैकमे अतीतक वर्णन करैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 14052. खण्ड १४१०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हर्टा मुलरक नोबल रुमानियाई दमन, जर्मन भाषिक लेखन, गरीब-गुरबाक स्थिति आ स्मृति-आधारित कथनक मान्यता अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हर्टा मुलरक नोबल रुमानियाई दमन, जर्मन भाषिक लेखन, गरीब-गुरबाक स्थिति आ स्मृति-आधारित कथनक मान्यता अछि।

व्याख्या: ई खण्ड २००९ साहित्य नोबलकेँ सामाजिक-दमनक साहित्यिक अभिव्यक्ति रूपमे देखैत अछि।

खण्ड १४११ : विदेह-सदेह २ — वेंकटरमन रामकृष्णन आ रसायनशास्त्र नोबल

प्रश्न 14053. २००९ ई.क रसायनशास्त्रक नोबल भारतीय मूलक कोन वैज्ञानिककेँ भेटल?

क. वेंकटरमन रामकृष्णनकेँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वेंकटरमन रामकृष्णनकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे भारतीय मूलक अमेरिकी नागरिक वेंकटरमन रामकृष्णनकेँ २००९ रसायनशास्त्र नोबल देल गेल अछि।

प्रश्न 14054. वेंकटरमन रामकृष्णनक नागरिकता स्रोतमे कोन रूपमे देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भारतीय मूलक अमेरिकी नागरिक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भारतीय मूलक अमेरिकी नागरिक।

व्याख्या: स्रोतमे हुनका भारतीय मूलक अमेरिकी नागरिक कहल गेल अछि।

प्रश्न 14055. हुनका पुरस्कार कोन रिसर्च लेल भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राइबोजोम जीनक ब्लूप्रिंटकेँ जीवित पदार्थ/प्रोटीनमे बदलैत अछि — एहि अध्ययन लेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राइबोजोम जीनक ब्लूप्रिंटकेँ जीवित पदार्थ/प्रोटीनमे बदलैत अछि — एहि अध्ययन लेल।

व्याख्या: स्रोत राइबोजोम द्वारा जीनक ब्लूप्रिंटसँ प्रोटीन निर्माणक रिसर्चक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 14056. राइबोजोम सम्बन्धी शोधसँ कोन क्षेत्रमे प्रगति होएबाक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एंटीबायोटिक रिसर्चमे।

उत्तर: घ. एंटीबायोटिक रिसर्चमे।

व्याख्या: स्रोतमे एहि शोधसँ एंटीबायोटिक रिसर्चमे प्रगति होएबाक बात अछि।

प्रश्न 14057. सेलमे जीनक ब्लूप्रिंटकेँ जीवित पदार्थमे बदलबाक सन्दर्भ कोन वैज्ञानिक प्रक्रियासँ जुड़ल अछि?

क. प्रोटीन निर्माणसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रोटीन निर्माणसँ।

व्याख्या: स्रोतमे राइबोजोम जीवित पदार्थमे बदलैत अछि जे प्रोटीन बनबैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 14058. एहि खण्डमे रसायनशास्त्र नोबलक भारतीय-संबंध कोन रूपमे देखाओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भारतीय मूलक वैज्ञानिकक वैश्विक उपलब्धि रूपमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भारतीय मूलक वैज्ञानिकक वैश्विक उपलब्धि रूपमे।

व्याख्या: रामकृष्णन भारतीय मूलक अमेरिकी नागरिक रूपमे रेखांकित छथि।

प्रश्न 14059. रामकृष्णनक शोध जीवविज्ञान आ रसायनशास्त्रक कोन संगम देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कोशिका, जीन, राइबोजोम आ प्रोटीन संश्लेषणक संगम।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कोशिका, जीन, राइबोजोम आ प्रोटीन संश्लेषणक संगम।

व्याख्या: स्रोतक विवरण राइबोजोमक कोशिकीय कार्यपर केन्द्रित अछि।

प्रश्न 14060. नोबल विवरणमे “संयुक्त रूपसँ” शब्दक अर्थ की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पुरस्कार साझा रूपमे देल गेल।

उत्तर: घ. ई पुरस्कार साझा रूपमे देल गेल।

व्याख्या: स्रोत रामकृष्णनकेँ रसायनशास्त्रक नोबल संयुक्त रूपसँ सम्मानित कहल अछि।

प्रश्न 14061. एंटीबायोटिक शोधक सन्दर्भ एहि पुरस्कारकेँ कोन व्यावहारिक महत्व दैत अछि?

क. रोग-उपचार आ औषधि-अनुसन्धानमे उपयोगिताक संकेत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रोग-उपचार आ औषधि-अनुसन्धानमे उपयोगिताक संकेत।

व्याख्या: राइबोजोमक ज्ञान एंटीबायोटिक रिसर्चमे सहायक कहल गेल अछि।

प्रश्न 14062. खण्ड १४११क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. वेंकटरमन रामकृष्णनक २००९ रसायन नोबल राइबोजोम, जीन-ब्लूप्रिंट, प्रोटीन निर्माण आ एंटीबायोटिक शोधक महत्त्व उजागर करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. वेंकटरमन रामकृष्णनक २००९ रसायन नोबल राइबोजोम, जीन-ब्लूप्रिंट, प्रोटीन निर्माण आ एंटीबायोटिक शोधक महत्त्व उजागर करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड विज्ञान-सूचनाकेँ भारतीय मूलक वैश्विक उपलब्धि रूपमे रखैत अछि।

खण्ड १४१२ : विदेह-सदेह २ — भारतीय/भारतीय मूलक नोबल संकेत

प्रश्न 14063. मलेरियापर खोज लेल १९०२ ई.मे मेडिसीनक नोबल कैं भेटल?

क. रोनाल्ड रॉसकेँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रोनाल्ड रॉसकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे अल्मोड़ा, उत्तराखण्डमे जनमल रोनाल्ड रॉसकेँ मलेरियापर खोज लेल १९०२ मेडिसीन नोबल देल अछि।

प्रश्न 14064. १९०७ ई.क साहित्यक नोबल बम्बैमे जनमल कोन ब्रिटिश लेखककेँ भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रुडयार्ड किपलिंगकेँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रुडयार्ड किपलिंगकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे बम्बैमे जन्मल ब्रिटिश रुडयार्ड किपलिंगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14065. रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ १९१३ ई.मे नोबल कोन कृति लेल भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीतांजली लेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीतांजली लेल।

व्याख्या: स्रोतमे गीतांजली बांग्ला पद्य-संग्रहक आधारपर साहित्यक नोबल देल गेल कहल अछि।

प्रश्न 14066. चन्द्रशेखर वेंकटरमनकेँ १९३० ई.मे भौतिकीक नोबल कोन विषयपर भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकाश किरणक बिन नमरएबला पसारपर।

उत्तर: घ. प्रकाश किरणक बिन नमरएबला पसारपर।

व्याख्या: स्रोतमे भौतिकी नोबलक विषय एहि रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14067. डॉ. हरगोविन्द खुरानाकेँ १९६८ ई.मे कोन नोबल भेटल?

क. मेडिसीनक नोबल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेडिसीनक नोबल।

व्याख्या: स्रोतमे डॉ. हरगोविन्द खुरानाकेँ गेनेटिक कोड आ प्रोटीन-संश्लेषण सम्बन्धी कार्यपर मेडिसीन नोबल देल गेल अछि।

प्रश्न 14068. मदर टेरेसाकेँ १९७९ ई.मे कोन नोबल भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शांतिक नोबल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शांतिक नोबल।

व्याख्या: स्रोतमे गरीबी आ दुखसँ संघर्ष लेल शांतिक नोबलक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14069. अबदुस सलामकेँ १९७९ ई.मे कोन विषयपर भौतिकी नोबल भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इलेक्ट्रोवीक यूनिफिकेशनपर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इलेक्ट्रोवीक यूनिफिकेशनपर।

व्याख्या: स्रोतमे अविभाजित भारतमे जन्मल अबदुस सलामक नोबल विषय देल अछि।

प्रश्न 14070. सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखरकेँ १९८३ ई.मे कोन विषयपर भौतिकी नोबल भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तरेगणक सैद्धांतिक स्वरूप आ निर्माण-विकासपर।

उत्तर: घ. तरेगणक सैद्धांतिक स्वरूप आ निर्माण-विकासपर।

व्याख्या: स्रोतमे तारक-संरचना सम्बन्धी भौतिकी नोबलक विवरण अछि।

प्रश्न 14071. अमर्त्य सेनकेँ १९९८ ई.मे कोन क्षेत्रक नोबल भेटल?
क. अर्थशास्त्रक नोबल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अर्थशास्त्रक नोबल।
व्याख्या: स्रोतमे अमर्त्य सेनकेँ कल्याणकारी अर्थशास्त्र लेल नोबल देल अछि।

प्रश्न 14072. खण्ड १४१२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई सूची भारतीय/भारतीय मूलक नोबल-सम्बन्धक विज्ञान, साहित्य, शांति आ अर्थशास्त्रक व्यापक परम्परा देखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ई सूची भारतीय/भारतीय मूलक नोबल-सम्बन्धक विज्ञान, साहित्य, शांति आ अर्थशास्त्रक व्यापक परम्परा देखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड नोबल-सूचनाकेँ भारतीय बौद्धिक-सांस्कृतिक सन्दर्भमे रखैत अछि।

खण्ड १४१३ : विदेह-सदेह २ — यात्री चेतना पुरस्कार २००९

प्रश्न 14073. २००९ ई.क यात्री-चेतना पुरस्कार केँ देल गेल?
क. श्री प्रेमशंकर सिंहकेँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. श्री प्रेमशंकर सिंहकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे एहि वर्षक यात्री-चेतना पुरस्कार श्री प्रेमशंकर सिंहकेँ देल गेल अछि।

प्रश्न 14074. यात्री चेतना पुरस्कार कोन संस्थासँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चेतना समिति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चेतना समिति।
व्याख्या: स्रोतमे चेतना समिति द्वारा स्थापित पुरस्कार कहल अछि।

प्रश्न 14075. ई पुरस्कार केकर स्मृतिमे स्थापित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”क स्मृतिमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”क स्मृतिमे।
व्याख्या: स्रोतमे चेतना समितिक संस्थापक आ अक्षरपुरुष वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक स्मृतिमे पुरस्कार कहल अछि।

प्रश्न 14076. यात्री चेतना पुरस्कार कोन क्षेत्रमे अवदान लेल देल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली भाषा आ साहित्यक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण अवदान लेल।
उत्तर: घ. मैथिली भाषा आ साहित्यक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण अवदान लेल।
व्याख्या: स्रोत पुरस्कारक उद्देश्य मैथिली भाषा-साहित्यक अवदान बतबैत अछि।

प्रश्न 14077. यात्री चेतना पुरस्कार कोन वर्षसँ प्रतिवर्ष देल जाइत अछि?
क. २००० ई.सँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. २००० ई.सँ।
व्याख्या: स्रोतमे वर्ष २००० ई.सँ प्रतिवर्ष पुरस्कार देल जाएबाक बात अछि।

प्रश्न 14078. यात्री चेतना पुरस्कारक राशि कतबा कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पाँच हजार टाका।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पाँच हजार टाका।
व्याख्या: स्रोतमे पुरस्कार राशि पाँच हजार टाका देल अछि।

प्रश्न 14079. २००० ई.मे ई पुरस्कार कैं देल गेल छल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पं. सुरेन्द्र झा “सुमन”कैं।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पं. सुरेन्द्र झा “सुमन”कैं।
व्याख्या: स्रोतमे पूर्व-पुरस्कार सूचीमे २००० ई. लेल पं. सुरेन्द्र झा “सुमन”क नाम अछि।

प्रश्न 14080. २००२ ई. लेल यात्री चेतना पुरस्कारक सूचीमे के छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. श्री महेन्द्र मलंगिया।
उत्तर: घ. श्री महेन्द्र मलंगिया।
व्याख्या: स्रोतमे २००२ लेल महेन्द्र मलंगियाक नाम अछि।

प्रश्न 14081. २००८ ई. लेल यात्री चेतना पुरस्कार कैं भेटल?
क. श्री मंत्रेश्वर झा, लालगंज, मधुबनीकैं।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. श्री मंत्रेश्वर झा, लालगंज, मधुबनीकैं।
व्याख्या: स्रोतक पूर्व सूचीमे २००८ लेल श्री मंत्रेश्वर झाक नाम अछि।

प्रश्न 14082. खण्ड १४१३क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. यात्री चेतना पुरस्कार चेतना समिति द्वारा मैथिली भाषा-साहित्यक अवदानक मान्यता अछि, जे २००० सँ देल जाएत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. यात्री चेतना पुरस्कार चेतना समिति द्वारा मैथिली भाषा-साहित्यक अवदानक मान्यता अछि, जे २००० सँ देल जाएत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड पुरस्कार-परम्परा आ २००९क प्राप्तकर्ता प्रेमशंकर सिंहकैं रेखांकित करैत अछि।

खण्ड १४१४ : विदेह-सदेह २ — कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान

प्रश्न 14083. कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान कोन आधारपर स्थापित भेल?

क. कवि कीर्तिनारायण मिश्रक परिवारक सदस्य द्वारा चेतना समितिक नामे जमा निश्चित राशिक ब्याजसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि कीर्तिनारायण मिश्रक परिवारक सदस्य द्वारा चेतना समितिक नामे जमा निश्चित राशिक ब्याजसँ।

व्याख्या: स्रोतमे परिवार द्वारा जमा निश्चित राशि पर ब्याजसँ सम्मान चलबाक बात अछि।

प्रश्न 14084. कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान कोन वर्षसँ प्रारम्भ भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. २००८ ई.सँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. २००८ ई.सँ।

व्याख्या: स्रोतमे सम्मान २००८ सँ प्रारम्भ भेल कहल अछि।

प्रश्न 14085. ई सम्मान कोन प्रकारक कृतिक लेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिलीमे प्रकाशित आधुनिक बोधक उत्कृष्ट मौलिक कृति लेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिलीमे प्रकाशित आधुनिक बोधक उत्कृष्ट मौलिक कृति लेल।

व्याख्या: स्रोतमे आधुनिक बोधक उत्कृष्ट मौलिक मैथिली कृति पुरस्कारक आधार कहल अछि।

प्रश्न 14086. कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मानक राशि कतबा अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ११,००० टाका।

उत्तर: घ. ११,००० टाका।

व्याख्या: स्रोतमे एहि सम्मानक अन्तर्गत ११,००० टाका देल जाएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14087. २००८ ई. लेल ई सम्मान कैँ भेटल?

क. श्री हरेकृष्ण झाकैँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्री हरेकृष्ण झाकैँ।

व्याख्या: स्रोतमे २००८ लेल हरेकृष्ण झाक नाम अछि।

प्रश्न 14088. हरेकृष्ण झाकैँ कोन कृति लेल सम्मान भेटल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. “एना तँ नहि जे” कविता-संग्रह लेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. “एना तँ नहि जे” कविता-संग्रह लेल।

व्याख्या: स्रोतमे हरेकृष्ण झाक कविता-संग्रह “एना तँ नहि जे” देल अछि।

प्रश्न 14089. २००९ ई. लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान कैं भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. श्री उदय नारायण सिंह “नचिकेता”कैं।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. श्री उदय नारायण सिंह “नचिकेता”कैं।
व्याख्या: स्रोतमे २००९ लेल उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क नाम अछि।

प्रश्न 14090. नचिकेता कैं कोन नाटक लेल सम्मान भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. “नो एण्ट्री: मा प्रविश” लेल।
उत्तर: घ. “नो एण्ट्री: मा प्रविश” लेल।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकर नाटक “नो एण्ट्री: मा प्रविश” लेल सम्मान देल गेल अछि।

प्रश्न 14091. “नो एण्ट्री: मा प्रविश” विदेहक कोन अंक धरि ई-प्रकाशित भेल छल?
क. ८म सँ १५म अंक धरि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ८म सँ १५म अंक धरि।
व्याख्या: स्रोतमे नाटक विदेहक ८म सँ १५म अंक धरि ई-प्रकाशित भेल कहल अछि।

प्रश्न 14092. खण्ड १४१४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान आधुनिक बोधक मौलिक मैथिली कृतिसभक सम्मान-परम्परा अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान आधुनिक बोधक मौलिक मैथिली कृतिसभक सम्मान-परम्परा अछि।
व्याख्या: ई खण्ड २००८ आ २००९क सम्मानित लेखक-कृति स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १४१५ : विदेह-सदेह २ — जीवन-व्यवहारक नीति-सूत्र: सेवा, धोखा आ परिवार

प्रश्न 14093. सफलताक आकलन कोन आधारपर करबाक सलाह देल गेल?
क. अनका प्रति कएल सेवासँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनका प्रति कएल सेवासँ।
व्याख्या: स्रोतमे सफलताकैं अनका प्रति सेवा द्वारा नापबाक सलाह अछि।

प्रश्न 14094. स्रोतक अनुसार सफलताकैं कोन आधारपर नहि नापबाक चाही?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अनका हानि पहुँचा कऽ प्राप्त वस्तुसँ नहि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अनका हानि पहुँचा कऽ प्राप्त वस्तुसँ नहि।
व्याख्या: स्रोत स्पष्ट कहैत अछि जे हानि पहुँचा कऽ प्राप्त वस्तु सफलताक माप नहि हो।

प्रश्न 14095. धोखा सम्बन्धी कोन नीति-सूत्र देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. धोखा देनाइ खराप अछि, धोखा खेनाइ नहि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. धोखा देनाइ खराप अछि, धोखा खेनाइ नहि।
व्याख्या: स्रोतमे धोखा देबाक निन्दा कएल गेल, धोखा खेनाइकेँ नहि।

प्रश्न 14096. अफवाह सम्बन्धी की सावधानी देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अफवाह सुनू मुदा अपना दिससँ वृद्धि वा योगदान नहि करू।
उत्तर: घ. अफवाह सुनू मुदा अपना दिससँ वृद्धि वा योगदान नहि करू।
व्याख्या: स्रोत अफवाहमे अपन योगदान नहि देबाक नीति दैत अछि।

प्रश्न 14097. बच्चाक चिन्ता वा भएपर की करबाक कहल गेल?
क. ध्यान देबाक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ध्यान देबाक।
व्याख्या: स्रोत माता-पिताकेँ बच्चाक चिन्ता/भयपर ध्यान देबाक सलाह दैत अछि।

प्रश्न 14098. माएक संग व्यवहारमे कोन सलाह अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. माएक संग बहस नहि करू।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. माएक संग बहस नहि करू।
व्याख्या: स्रोतमे माएक संग बहस नहि करबाक स्पष्ट नीति-सूत्र अछि।

प्रश्न 14099. सुनलाहा चीज सम्बन्धी की चेतावनी देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सभटा सुनलाहा चीजपर विश्वास नहि करू।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सभटा सुनलाहा चीजपर विश्वास नहि करू।
व्याख्या: स्रोत सूचना-सावधानीक बात करैत अछि।

प्रश्न 14100. धन-व्यय सम्बन्धी कोन नीति देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जतेक पाइ अछि ओहिमेसँ किछु बचा कए खर्च करू।
उत्तर: घ. जतेक पाइ अछि ओहिमेसँ किछु बचा कए खर्च करू।
व्याख्या: स्रोत खर्चसँ पहिने बचत-सोच रखबाक सलाह दैत अछि।

प्रश्न 14101. बूढ़-पुरान लोकसँ कोन व्यवहार करबाक कहल गेल?
क. भद्र व्यवहार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भद्र व्यवहार।
व्याख्या: स्रोतमे बूढ़-पुरानक संग भद्र व्यवहार करबाक बात अछि।

प्रश्न 14102. खण्ड १४१५क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई नीति-सूत्र सेवा, ईमानदारी, परिवार-सम्मान, बचत, बच्चाक भावनात्मक देखभाल आ सामाजिक सजगता सिखबैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ई नीति-सूत्र सेवा, ईमानदारी, परिवार-सम्मान, बचत, बच्चाक भावनात्मक देखभाल आ सामाजिक सजगता सिखबैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड व्यवहारिक जीवनक मूल नैतिक बात सभ समेटैत अछि।

खण्ड १४१६ : विदेह-सदेह २ — जीवन-व्यवहारक नीति-सूत्र: काज, साहस आ नम्रता

प्रश्न 14103. बुराइ आ अन्यायक सम्बन्धमे कोन नीति देल गेल?
क. कखनो बर्दाश्त नहि करू।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कखनो बर्दाश्त नहि करू।
व्याख्या: स्रोतमे बुराइ आ अन्यायकेँ कखनो सहन नहि करबाक बात अछि।

प्रश्न 14104. प्रशंसात्मक पत्रबारे की करबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सम्हारि कऽ राखू।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सम्हारि कऽ राखू।
व्याख्या: स्रोत प्रशंसात्मक पत्रकेँ सुरक्षित राखबाक सलाह दैत अछि।

प्रश्न 14105. सेमीनारमे भाषण सम्बन्धी कोन सावधानी देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाषण देलाक बादे छपल भाषण वितरित करू।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाषण देलाक बादे छपल भाषण वितरित करू।
व्याख्या: स्रोतमे पहिने भाषण, तकर बाद छपल प्रति वितरणक सलाह अछि।

प्रश्न 14106. बिआहक बाद कोन दीर्घकालीन बचत आरम्भ करबाक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बच्चाक शिक्षा लेल पाइ बचेनाइ।
उत्तर: घ. बच्चाक शिक्षा लेल पाइ बचेनाइ।
व्याख्या: स्रोत बिआहक बादसँ बच्चाक शिक्षाक लेल बचत शुरू करबाक सलाह दैत अछि।

प्रश्न 14107. माता-पिता बच्चाकेँ कोन गुण सिखाबथि?
क. आत्मनिर्भर रहनाइ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आत्मनिर्भर रहनाइ।
व्याख्या: स्रोतमे माता-पिताकेँ बच्चा सभकेँ आत्मनिर्भरता सिखेबाक आग्रह अछि।

प्रश्न 14108. मानसिक स्वतंत्रता कखन सम्भव कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अपन समस्याक समाधान लेल दोसराक मुँहतक्की नहि करब तखन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अपन समस्याक समाधान लेल दोसराक मुँहतक्की नहि करब तखन।
व्याख्या: स्रोत मानसिक स्वतंत्रताकेँ आत्म-समाधान क्षमतासँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 14109. हँसी सम्बन्धी कोन सरल जीवन-सूत्र देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जखन अहाँ हँसब तँ स्वतः सुन्दर देखा पड़ब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जखन अहाँ हँसब तँ स्वतः सुन्दर देखा पड़ब।
व्याख्या: स्रोत हँसबाकेँ आत्म-प्रसन्नता आ सौन्दर्यसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 14110. नव सीखबाक लेल कोन काज जरूरी कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नव-नव काज करब।
उत्तर: घ. नव-नव काज करब।
व्याख्या: स्रोत कहैत अछि जे नव काज बिना नव सीखब सम्भव नहि।

प्रश्न 14111. त्रुटि-भयक सम्बन्धमे की चेतावनी देल गेल?
क. बिना त्रुटिक काज चाहब तँ काज कहियो नहि भऽ सकत।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. बिना त्रुटिक काज चाहब तँ काज कहियो नहि भऽ सकत।
व्याख्या: स्रोत पूर्णतावादी भयक विरोध करैत अछि।

प्रश्न 14112. खण्ड १४१६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई सूत्र आत्मनिर्भरता, नव-प्रयोग, अन्यायक विरोध, नम्रता, साहस आ सम्बन्ध-सुधारक व्यवहारिक पाठ दैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ई सूत्र आत्मनिर्भरता, नव-प्रयोग, अन्यायक विरोध, नम्रता, साहस आ सम्बन्ध-सुधारक व्यवहारिक पाठ दैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड जीवन-नीतिक सक्रिय पक्षकेँ समेटैत अछि।

खण्ड १४१७ : विदेह-सदेह २ — श्री उमानाथ झा: जीवन, पद आ कृति

प्रश्न 14113. श्री उमानाथ झाक जन्म कहिया भेल?

क. ०१-०१-१९२३ कैं।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ०१-०१-१९२३ कैं।

व्याख्या: स्रोतमे जन्म 01-01-1923 देल अछि।

प्रश्न 14114. श्री उमानाथ झाक निधन कहिया भेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ०७-१२-२००९ कैं।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ०७-१२-२००९ कैं।

व्याख्या: स्रोतमे निधन 07-12-2009 कहल गेल अछि।

प्रश्न 14115. उमानाथ झाक जन्म-स्थान/सम्बन्धित स्थान कोन देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. महरैल, मधुबनी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. महरैल, मधुबनी।

व्याख्या: स्रोतमे महरैल, मधुबनीक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14116. उमानाथ झा कोन विभागक भूतपूर्व अध्यक्ष छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अंग्रेजी विभागाध्यक्ष।

उत्तर: घ. अंग्रेजी विभागाध्यक्ष।

व्याख्या: स्रोतमे भूतपूर्व अंग्रेजी विभागाध्यक्ष कहल गेल अछि।

प्रश्न 14117. उमानाथ झा कोन विश्वविद्यालयीय पदसँ सेहो जुड़ल छलाह?

क. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक प्रति-कुलपति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक प्रति-कुलपति।

व्याख्या: स्रोतमे प्रति-कुलपति, मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14118. उमानाथ झाक कथा-संग्रह रूपमे कोन नाम देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रेखाचित्र आ अतीत।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रेखाचित्र आ अतीत।

व्याख्या: स्रोतमे रेखाचित्र, अतीत कथा-संग्रह रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14119. उमानाथ झाक “मैथिली नवीन साहित्य” कोन श्रेणीमे उल्लेखित अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रचना/आलोचनात्मक साहित्यक सूचीमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रचना/आलोचनात्मक साहित्यक सूचीमे।
व्याख्या: स्रोत रचनामे मैथिली नवीन साहित्यक नाम दैत अछि।

प्रश्न 14120. “इन्द्र धनुष” उमानाथ झाक कोन काजक भाग रूपमे देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सम्पादन-कार्यक सूचीमे।
उत्तर: घ. सम्पादन-कार्यक सूचीमे।
व्याख्या: स्रोतमे इन्द्र धनुष सम्पादनक अंतर्गत अछि।

प्रश्न 14121. “विद्यापति गीतशती” उमानाथ झासँ कोन रूपमे जुड़ल अछि?
क. सम्पादन रूपमे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सम्पादन रूपमे।
व्याख्या: स्रोतमे विद्यापति गीतशतीक सम्पादन उमानाथ झासँ जोड़ल अछि।

प्रश्न 14122. खण्ड १४१७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उमानाथ झा अंग्रेजी विभागाध्यक्ष, प्रति-कुलपति, कथाकार आ सम्पादक रूपमे मैथिली साहित्य-संसारमे स्मरणीय छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उमानाथ झा अंग्रेजी विभागाध्यक्ष, प्रति-कुलपति, कथाकार आ सम्पादक रूपमे मैथिली साहित्य-संसारमे स्मरणीय छथि।
व्याख्या: ई खण्ड हुनकर जीवन-तिथि, पद आ मुख्य कृति सभक परिचय दैत अछि।

खण्ड १४१८ : विदेह-सदेह २ — साहित्य अकादमी पुरस्कार २००९: मनमोहन झा

प्रश्न 14123. मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार २००९ कैं देल गेल?
क. स्व. मनमोहन झाकेँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्व. मनमोहन झाकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार २००९ स्व. मनमोहन झाकेँ देल गेल कहल अछि।

प्रश्न 14124. मनमोहन झाकेँ पुरस्कार कोन कृति लेल भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कथा-संग्रह “गंगापुत्र” लेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कथा-संग्रह “गंगापुत्र” लेल।
व्याख्या: स्रोतमे कथा संग्रह गंगापुत्रपर पुरस्कार देल गेल अछि।

प्रश्न 14125. मनमोहन झाक जन्म-वर्ष कतबा देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. १९१८ ई.।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. १९१८ ई.।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकर जन्म 1918 ई.मे सरिसबमे भेल कहल अछि।

प्रश्न 14126. मनमोहन झा कतय जन्मल छलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सरिसबमे।
उत्तर: घ. सरिसबमे।
व्याख्या: स्रोतमे जन्म-स्थान सरिसब देल अछि।

प्रश्न 14127. मनमोहन झाक मृत्यु-वर्ष कोन देल गेल?
क. २००९ ई.।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. २००९ ई.।
व्याख्या: स्रोतमे मृत्यु 2009 ई.मे भेल कहल अछि।

प्रश्न 14128. मनमोहन झाक रचना-सभमे कोन नाम देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अश्रुकण, वीरभोग्या, मिथिलाक निशापुरमे, गंगापुत्र।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अश्रुकण, वीरभोग्या, मिथिलाक निशापुरमे, गंगापुत्र।
व्याख्या: स्रोतमे हुनकर चारि रचना-नामक सूची अछि।

प्रश्न 14129. एहि बेरसँ साहित्य अकादमी पुरस्कार राशि कतबा कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एक लाख टाका।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एक लाख टाका।
व्याख्या: स्रोतमे पुरस्कार राशि बढ़ा कए एक लाख टाका कएल गेल अछि।

प्रश्न 14130. पुरस्कार कहिया देल जाएत कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १६ फरबरी २०१० कैं।
उत्तर: घ. १६ फरबरी २०१० कैं।
व्याख्या: स्रोतमे पुरस्कार 16 फरबरी 2010 कैं देल जाएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14131. “गंगापुत्र” कोन विधाक कृति अछि?
क. कथा-संग्रह।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. कथा-संग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे गंगापुत्र कथा-संग्रह कहल गेल अछि।

प्रश्न 14132. खण्ड १४१८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. २००९क मैथिली साहित्य अकादमी पुरस्कार मनमोहन झाक “गंगापुत्र” कथा-संग्रहकेँ भेटल आ राशि एक लाख टाका भेल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. २००९क मैथिली साहित्य अकादमी पुरस्कार मनमोहन झाक “गंगापुत्र” कथा-संग्रहकेँ भेटल आ राशि एक लाख टाका भेल।
व्याख्या: ई खण्ड पुरस्कार, लेखक-जीवन आ कृति-सूचना स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १४१९ : विदेह-सदेह २ — मैथिलीक SWOT विश्लेषण: शक्ति

प्रश्न 14133. SWOT विश्लेषणमे “Strength”क मैथिली अर्थ कोन देल गेल?
क. शक्ति, सामर्थ्य, बल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शक्ति, सामर्थ्य, बल।
व्याख्या: स्रोतमे Strengthक अर्थ शक्ति, सामर्थ्य, बल रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14134. मैथिली लेल हृदयमे की छैक कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अग्नि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अग्नि।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली लेल सभक हृदयमे अग्नि छैक कहल अछि।

प्रश्न 14135. मैथिलीक आरोह-अवरोह आ भाषिक वैशिष्ट्यबारे की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. जनक बीचमे ओकरा लेल आदर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. जनक बीचमे ओकरा लेल आदर अछि।
व्याख्या: स्रोतमे भाषिक वैशिष्ट्य लेल आदरक बात अछि।

प्रश्न 14136. मैथिली नहि बजनिहार कोन वर्ग सेहो एहि आदरमे सम्मिलित कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषाविद्।
उत्तर: घ. भाषाविद्।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली नहि बजनिहार भाषाविद् सेहो सम्मिलित कहल अछि।

प्रश्न 14137. मैथिली महत्त्वपूर्ण होएबाक एक आध्यात्मिक-सांस्कृतिक कारण की कहल गेल?
क. आध्यात्मिक आ सांस्कृतिक महत्व।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आध्यात्मिक आ सांस्कृतिक महत्व।
व्याख्या: स्रोतमे आध्यात्मिक-सांस्कृतिक महत्वक कारण मैथिली महत्त्वपूर्ण कहल अछि।

प्रश्न 14138. भाषाक आन्तरिक गुणबारे स्रोत की कहैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीमे एकटा आन्तरिक शक्ति अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीमे एकटा आन्तरिक शक्ति अछि।
व्याख्या: स्रोत स्पष्ट कहैत अछि जे एहि भाषामे आन्तरिक शक्ति अछि।

प्रश्न 14139. मैथिलीक विकास लेल कोन प्रकारक संस्था तत्पर कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. बहुत रास संस्था, किछु जातिवादी आ सांप्रदायिक संस्था सहित।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. बहुत रास संस्था, किछु जातिवादी आ सांप्रदायिक संस्था सहित।
व्याख्या: स्रोतमे विविध संस्था सभक तत्परता उल्लेखित अछि।

प्रश्न 14140. मैथिली जननिहार लोक केवल कतय नहि, आब आन ठाम सेहो पसरल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भारत-नेपालक अतिरिक्त आन-आन देश-प्रदेशमे।
उत्तर: घ. भारत-नेपालक अतिरिक्त आन-आन देश-प्रदेशमे।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली जननिहार लोक भारत-नेपालसँ बाहर सेहो पसरल कहल अछि।

प्रश्न 14141. Strength भागमे मैथिलीक मुख्य सामर्थ्य कोन रूपमे देखाइत अछि?
क. भावनात्मक अनुराग, भाषिक विशिष्टता, संस्कृति आ प्रवासी विस्तार।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भावनात्मक अनुराग, भाषिक विशिष्टता, संस्कृति आ प्रवासी विस्तार।
व्याख्या: स्रोतक शक्ति-बिन्दु मैथिलीक भाव, भाषा, संस्कृति आ जन-विस्तार पर आधारित अछि।

प्रश्न 14142. खण्ड १४१९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीक शक्ति ओकर आन्तरिक भाषिक बल, सांस्कृतिक महत्त्व, जन-अनुराग, संस्था-सक्रियता आ वैश्विक मैथिल प्रसारमे अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीक शक्ति ओकर आन्तरिक भाषिक बल, सांस्कृतिक महत्त्व, जन-अनुराग, संस्था-सक्रियता आ वैश्विक मैथिल प्रसारमे अछि।
व्याख्या: ई खण्ड SWOTक शक्ति-पक्ष समेटैत अछि।

खण्ड १४२० : विदेह-सदेह २ — मैथिलीक SWOT विश्लेषण: दुर्बलता

प्रश्न 14143. SWOT मे Weaknessक मैथिली अर्थ कोन-कोन देल गेल?
क. न्यूनता, दुर्बलता, मूर्खता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. न्यूनता, दुर्बलता, मूर्खता।
व्याख्या: स्रोतमे Weaknessक अर्थ एहि तीन शब्दमे देल अछि।

प्रश्न 14144. दुर्बलता भागमे कोन प्रशंसा-परम्पराक आलोचना अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आत्मप्रशंसा आ परस्पर प्रशंसा, जाहिमे दोसराक निन्दा सेहो सम्मिलित अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आत्मप्रशंसा आ परस्पर प्रशंसा, जाहिमे दोसराक निन्दा सेहो सम्मिलित अछि।
व्याख्या: स्रोतमे प्रशंसा-परम्पराक भीतर आत्मप्रशंसा, परस्पर प्रशंसा आ निन्दाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14145. सरकार सम्बन्धी कोन निर्भरता मैथिलीक दुर्बलता कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सरकारपर आलम्बन।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सरकारपर आलम्बन।
व्याख्या: स्रोतमे सरकारपर अधिक आश्रयकेँ दुर्बलता मानल गेल अछि।

प्रश्न 14146. प्राथमिकताक अज्ञानक उदाहरण कोन रूपमे देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भाषा मरि रहल रहला पर महाकवि बनबा/बनेबाक व्यग्रता।
उत्तर: घ. भाषा मरि रहल रहला पर महाकवि बनबा/बनेबाक व्यग्रता।
व्याख्या: स्रोतमे प्राथमिकताक अज्ञान एहि रूपमे आलोचित अछि।

प्रश्न 14147. कार्ययोजना सम्बन्धी कोन कमी बताओल गेल?
क. स्पष्ट कार्ययोजनाक अभाव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. स्पष्ट कार्ययोजनाक अभाव।
व्याख्या: स्रोतमे जेना-तेना किछु करबाक प्रवृत्ति आ स्पष्ट योजना-अभावक बात अछि।

प्रश्न 14148. घर-परिवारमे मैथिली सम्बन्धी कोन चिन्ताजनक प्रवृत्ति कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. स्वयं मैथिली नहि बाजि बाल-बच्चाकेँ मैथिलीसँ दूर रखब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. स्वयं मैथिली नहि बाजि बाल-बच्चाकेँ मैथिलीसँ दूर रखब।
व्याख्या: स्रोतमे एहि प्रवृत्तिकेँ अभियान-जेकाँ चलल बताओल गेल अछि।

प्रश्न 14149. मैथिली कार्यकर्ता लोकनिक कोन संगठनात्मक कमी बताओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कएक ध्रुवमे बँटल रहबाक कारण समर्थनपरक लॉबिइंग कर्ताक अभाव।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कएक ध्रुवमे बँटल रहबाक कारण समर्थनपरक लॉबिइंग कर्ताक अभाव।

व्याख्या: स्रोतमे बिखराव आ लॉबिइंगक अभाव दुर्बलता कहल गेल अछि।

प्रश्न 14150. उत्पाद आ विक्रय सम्बन्धी कोन कमी देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उत्तम उत्पादक आ विक्रय-कौशलक अभाव।

उत्तर: घ. उत्तम उत्पादक आ विक्रय-कौशलक अभाव।

व्याख्या: स्रोतमे उत्तम उत्पादक अभाव संग विक्रयकौशलक अभावक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14151. मैथिली छात्रक सम्बन्धमे कोन दुर्बलता बताओल गेल?

क. मैथिली छात्रक संख्याक अभाव।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली छात्रक संख्याक अभाव।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली छात्रक संख्या कम होएबाक बात अछि।

प्रश्न 14152. खण्ड १४२०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीक दुर्बलता आत्मप्रशंसा, सरकारी निर्भरता, योजना-अभाव, बाल-बच्चाकेँ भाषासँ दूर रखब, कार्यकर्ता-विखंडन आ विक्रय-कौशलक कमीमे अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीक दुर्बलता आत्मप्रशंसा, सरकारी निर्भरता, योजना-अभाव, बाल-बच्चाकेँ भाषासँ दूर रखब, कार्यकर्ता-विखंडन आ विक्रय-कौशलक कमीमे अछि।

व्याख्या: ई खण्ड SWOTक न्यूनता-पक्ष स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १४२१ : विदेह-सदेह २ — मैथिलीक SWOT विश्लेषण: अवसर

प्रश्न 14153. SWOT मे Opportunityक मैथिली अर्थ कोन-कोन देल गेल?

क. अवसर, योग, अवकाश।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अवसर, योग, अवकाश।

व्याख्या: स्रोतमे Opportunityक अर्थ अवसर, योग, अवकाश देल अछि।

प्रश्न 14154. मैथिलीमे कोन प्रकारक लेखनक अभाव अवसरक रूपमे चिन्हित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विशिष्ट विषयक लेखनक अभाव।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विशिष्ट विषयक लेखनक अभाव।

व्याख्या: स्रोतमे मात्र कथा-कविता पर निर्भरता आ विशिष्ट विषयक अभाव अवसर रूपमे अछि।

प्रश्न 14155. मैथिलीमे कोन-कोन विषयक पोथीक अभाव बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. चित्र-शृंखला, चित्रकथा, विज्ञान, समाज-विज्ञान, आध्यात्म, भौतिक, रसायन, जीव, स्वास्थ्य आदि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. चित्र-शृंखला, चित्रकथा, विज्ञान, समाज-विज्ञान, आध्यात्म, भौतिक, रसायन, जीव, स्वास्थ्य आदि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि विविध विषय सभक पोथीक अभाव स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 14156. ताड़ग्रन्थ सम्बन्धी कोन अवसर बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. संगणकक उपयोग कऽ प्रकाशन।
उत्तर: घ. संगणकक उपयोग कऽ प्रकाशन।
व्याख्या: स्रोतमे ताड़ग्रन्थक संगणक-आधारित प्रकाशनक आवश्यकता अछि।

प्रश्न 14157. छात्र शक्तिक उपयोगबारे स्रोत की कहैत अछि?
क. छात्र शक्तिक प्रयोग न्यून अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. छात्र शक्तिक प्रयोग न्यून अछि।
व्याख्या: स्रोत विद्यार्थी-शक्तिक कम उपयोगकेँ अवसर मानैत अछि।

प्रश्न 14158. शिक्षा लेल संध्या विद्यालयक संग कोन माध्यमक उल्लेख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. चित्रकला-संगीतक माध्यम।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. चित्रकला-संगीतक माध्यम।
व्याख्या: स्रोतमे संध्या विद्यालय आ चित्रकला-संगीतक माध्यमसँ शिक्षा नहि देल जाएबाक बात अवसर रूपमे अछि।

प्रश्न 14159. मैथिलीक पढ़ाइ लेल कोन आधुनिक माध्यमक अत्यधिक आवश्यकता कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दूरस्थ शिक्षा आ अन्तर्जालिक माध्यम।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दूरस्थ शिक्षा आ अन्तर्जालिक माध्यम।
व्याख्या: स्रोत दूरस्थ/अन्तर्जाल माध्यमसँ मैथिली पढ़ाइक जरूरत बतबैत अछि।

प्रश्न 14160. मैथिलीमे वर्तमान विषय सभपर की करबाक आवश्यकता कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अनुवाद आ पुस्तक लेखन।
उत्तर: घ. अनुवाद आ पुस्तक लेखन।
व्याख्या: स्रोतमे वर्तमान विषय सभपर पुस्तक लेखन आ अनुवादक आवश्यकता अछि।

प्रश्न 14161. प्रवासी मैथिल लेल कोन पाठ्यक्रमक आवश्यकता अछि?

क. भाषा पाठन-लेखन-सम्पादन पाठ्यक्रम।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा पाठन-लेखन-सम्पादन पाठ्यक्रम।

व्याख्या: स्रोत प्रवासी मैथिल लेल भाषा पाठन-लेखन-सम्पादन पाठ्यक्रम चाहैत अछि।

प्रश्न 14162. खण्ड १४२१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीक अवसर विशिष्ट विषयक लेखन, विज्ञान-ज्ञान, ताड़ग्रन्थ प्रकाशन, छात्र-शक्ति, दूरस्थ शिक्षा, अनुवाद आ प्रवासी पाठ्यक्रममे अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीक अवसर विशिष्ट विषयक लेखन, विज्ञान-ज्ञान, ताड़ग्रन्थ प्रकाशन, छात्र-शक्ति, दूरस्थ शिक्षा, अनुवाद आ प्रवासी पाठ्यक्रममे अछि।

व्याख्या: ई खण्ड SWOTक अवसर-पक्षकेँ कार्य-सूचीमे बदलैत अछि।

खण्ड १४२२ : विदेह-सदेह २ — मैथिलीक SWOT विश्लेषण: भीषिका

प्रश्न 14163. SWOT मे Threatक मैथिली अर्थ कोन देल गेल?

क. भीषिका, सम्भाव्य विपद्।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भीषिका, सम्भाव्य विपद्।

व्याख्या: स्रोतमे Threatक अर्थ भीषिका, समभाव्यविपद् रूपमे अछि।

प्रश्न 14164. भीषिका भागमे मानसिक स्थितिसँ जुड़ल कोन समस्या देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हताशा आ आत्महीनता।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हताशा आ आत्महीनता।

व्याख्या: स्रोतमे हताशा आ आत्महीनता मैथिलीक खतरा कहल गेल अछि।

प्रश्न 14165. शिक्षा सम्बन्धी कोन विपद् बताओल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शिक्षासँ निष्कासन आ पारम्परिक पाठशालामे शिक्षाक माध्यम रूपमे मैथिलीक अभाव।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शिक्षासँ निष्कासन आ पारम्परिक पाठशालामे शिक्षाक माध्यम रूपमे मैथिलीक अभाव।

व्याख्या: स्रोतमे शिक्षा-संस्था आ माध्यमक संकट स्पष्ट अछि।

प्रश्न 14166. शास्त्रज्ञ सम्बन्धी कोन संकट देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विरल शास्त्रज्ञ।

उत्तर: घ. विरल शास्त्रज्ञ।

व्याख्या: स्रोतमे शास्त्रज्ञक विरलता भीषिका रूपमे अछि।

प्रश्न 14167. ताड़पत्र सम्बन्धी कोन खतरा कहल गेल?
क. उपेक्षा आ विदेशमे बिक्री।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. उपेक्षा आ विदेशमे बिक्री।
व्याख्या: स्रोतमे ताड़पत्रक उपेक्षा तथा विदेशमे बिकबाक खतरा अछि।

प्रश्न 14168. भाषिक स्तरपर कोन दू संकट देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भाषा शैथिल्य आ भाषा प्रदूषण।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भाषा शैथिल्य आ भाषा प्रदूषण।
व्याख्या: स्रोतमे भाषा शैथिल्य आ सांस्कृतिक प्रदूषणक परिणामस्वरूप भाषा प्रदूषणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14169. सांस्कृतिक स्तरपर कोन संकट बताओल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सांस्कृतिक प्रदूषण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सांस्कृतिक प्रदूषण।
व्याख्या: स्रोतमे सांस्कृतिक प्रदूषण मैथिलीकेँ असर करैत खतरा अछि।

प्रश्न 14170. सामाजिक छवि सम्बन्धी कोन खतरा देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मुख्यधारासँ दूर भेनाइ आ मात्र दू जातिक भाषा भेनाइ।
उत्तर: घ. मुख्यधारासँ दूर भेनाइ आ मात्र दू जातिक भाषा भेनाइ।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीकेँ संकीर्ण जातीय छविमे सीमित होएबाक खतरा बताओल गेल अछि।

प्रश्न 14171. राजनीतिक स्तरपर कोन भीषिका अछि?
क. राजनैतिक स्वार्थवश मैथिलीक विरोध।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. राजनैतिक स्वार्थवश मैथिलीक विरोध।
व्याख्या: स्रोतमे राजनीतिक स्वार्थक कारण मैथिलीक विरोध विपद् अछि।

प्रश्न 14172. खण्ड १४२२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मैथिलीक भीषिका हताशा, शिक्षा-संकट, ताड़पत्र-उपेक्षा, भाषा-सांस्कृतिक प्रदूषण, जातीय संकीर्णता आ राजनीतिक विरोधमे अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मैथिलीक भीषिका हताशा, शिक्षा-संकट, ताड़पत्र-उपेक्षा, भाषा-सांस्कृतिक प्रदूषण, जातीय संकीर्णता आ राजनीतिक विरोधमे अछि।
व्याख्या: ई खण्ड SWOTक खतरा-पक्ष व्यवस्थित करैत अछि।

खण्ड १४२३ : विदेह-सदेह २ — विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक कार्ययोजना

प्रश्न 14173. विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन कोन लक्ष्यक प्रक्रममे लागल कहल गेल?

क. मैथिलीकेँ जनभाषा बनएबाक प्रक्रममे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीकेँ जनभाषा बनएबाक प्रक्रममे।

व्याख्या: स्रोतमे विदेह आन्दोलन मैथिलीकेँ जनभाषा बनएबाक प्रक्रिया मे लागल कहल अछि।

प्रश्न 14174. ई आन्दोलन कतबा बेर विचिन्ता करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पाक्षिक रूपेँ मासमे दू बेर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पाक्षिक रूपेँ मासमे दू बेर।

व्याख्या: स्रोतमे पाक्षिक रूपेँ मासमे दू बेर विचिन्ताक बात अछि।

प्रश्न 14175. आन्दोलन कोन तरहक चिन्तनसँ अवरोधित नहि होएत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नकारात्मक चिन्तन, परदूषण आ अभाव-भाषणसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नकारात्मक चिन्तन, परदूषण आ अभाव-भाषणसँ।

व्याख्या: स्रोत नकारात्मकता आ अभाव-भाषणकेँ अवरोधक मानैत अछि मुदा आन्दोलन नहि रुकत कहल अछि।

प्रश्न 14176. SWOTक बिन्दु सभ केकर कार्ययोजनाक विषय कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रबन्धन-विज्ञानक कार्ययोजना।

उत्तर: घ. प्रबन्धन-विज्ञानक कार्ययोजना।

व्याख्या: स्रोतमे ऊपर वर्णित बिन्दु प्रबन्धन-विज्ञानक कार्ययोजना कहल अछि।

प्रश्न 14177. स्रोतक अनुसार भाषण नहि, कोन चीजक आवश्यकता अछि?

क. कार्यक आवश्यकता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कार्यक आवश्यकता।

व्याख्या: स्रोत स्पष्ट कहैत अछि जे भाषण नहि, कार्य चाही।

प्रश्न 14178. नव सर्वांगीन साहित्यक निर्माण लेल सभकेँ कोना प्रयास करए पड़त?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एकमुखी, एक स्तरीय आ एक यत्नसँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. एकमुखी, एक स्तरीय आ एक यत्नसँ।

व्याख्या: स्रोतमे सम्भाषण, पाठन आ नव साहित्यक लेल एकमुखी/एक स्तरीय/एक यत्नक आग्रह अछि।

प्रश्न 14179. धनक अभाव कखन होइत अछि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सरकारी सहायतापर आस लगेने रहला पर।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सरकारी सहायतापर आस लगेने रहला पर।

व्याख्या: स्रोतमे सरकारी सहायता पर निर्भरता धन-अभावक कारण रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14180. सार्वजनिक सहायताबारे स्रोत की कहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सार्वजनिक सहायताक अवलम्ब धरू।

उत्तर: घ. सार्वजनिक सहायताक अवलम्ब धरू।

व्याख्या: स्रोतमे सार्वजनिक सहायता लेबाक आ स्वीकारकर्ताक अभावक बात अछि।

प्रश्न 14181. “दाताक अभाव नहि स्वीकारकर्ताक अभाव” कथनक आशय की अछि?

क. सहयोग उपलब्ध अछि, मुदा ओकरा स्वीकार/संगठित करबाक क्षमता चाही।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सहयोग उपलब्ध अछि, मुदा ओकरा स्वीकार/संगठित करबाक क्षमता चाही।

व्याख्या: स्रोत सार्वजनिक सहयोगक सम्भावना देखबैत अछि।

प्रश्न 14182. खण्ड १४२३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विदेह आन्दोलन मैथिलीकेँ जनभाषा बनएबाक लेल प्रबन्धन-आधारित कार्ययोजना, नियमित विचिन्ता, नव साहित्य, पाठन आ सार्वजनिक सहयोगपर बल दैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विदेह आन्दोलन मैथिलीकेँ जनभाषा बनएबाक लेल प्रबन्धन-आधारित कार्ययोजना, नियमित विचिन्ता, नव साहित्य, पाठन आ सार्वजनिक सहयोगपर बल दैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड SWOTकेँ व्यवहारिक आन्दोलन-सूत्रमे बदलैत अछि।

खण्ड १४२४ : विदेह-सदेह २ — प्रबोध सम्मान २०१० आ मिथिला दर्शन पत्रकारिता पुरस्कार

प्रश्न 14183. प्रबोध सम्मान २०१० केँ भेटल?

क. जीवकान्तकेँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवकान्तकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे प्रबोध सम्मान २०१० जीवकान्तकेँ भेटलन्हि कहल अछि।

प्रश्न 14184. पुरस्कार चयन प्रक्रियामे शुरुआती दौड़मे कतेक गोटे छलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. २१ गोटे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. २१ गोटे।

व्याख्या: स्रोतमे २१ गोटेक शुरुआती दौड़क उल्लेख अछि।

प्रश्न 14185. पहिल बेरमे कतेक गोटे बहार भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ७ गोटे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ७ गोटे।
व्याख्या: स्रोतमे पहिल बेरमे ७ गोटे बहार भेलाह कहल अछि।

प्रश्न 14186. दोसर बेरमे कतेक गोटे बहार भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ८ गोटे।
उत्तर: घ. ८ गोटे।
व्याख्या: स्रोतमे दोसर बेर आठ गोटे बहार भेलाह कहल अछि।

प्रश्न 14187. तेसर दौड़मे कतेक गोटे बचलाह?
क. ६ गोटे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ६ गोटे।
व्याख्या: स्रोतमे तेसर दौड़मे मात्र छह गोटे बचलाह कहल अछि।

प्रश्न 14188. जीवकान्तकेँ कतेक अंक भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ४८ अंक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ४८ अंक।
व्याख्या: स्रोतमे जीवकान्त ४८ अंकसँ पहिल स्थानपर छथि।

प्रश्न 14189. सोमदेवकेँ कतेक अंक भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. २२ अंक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. २२ अंक।
व्याख्या: स्रोतमे सोमदेव २२ अंक देल अछि।

प्रश्न 14190. भीमनाथ झा आ रमानन्द रेणुकेँ कतेक-कतेक अंक भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १७-१७ अंक।
उत्तर: घ. १७-१७ अंक।
व्याख्या: स्रोतमे भीमनाथ झा आ रमानन्द रेणु दुनूकेँ १७ अंक देल अछि।

प्रश्न 14191. मिथिला दर्शन पत्रकारिता पुरस्कार कोन उद्देश्यँ आरम्भ भेल?

क. मैथिली पत्रकारिताक विकास आ युवा पत्रकारकेँ प्रोत्साहन लेल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली पत्रकारिताक विकास आ युवा पत्रकारकेँ प्रोत्साहन लेल।

व्याख्या: स्रोतमे एहि उद्देश्यें २०१० सँ पुरस्कार आरम्भ भेल कहल अछि।

प्रश्न 14192. खण्ड १४२४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रबोध सम्मान २०१०मे जीवकान्त ४८ अंकसँ सम्मानित भेलाह, आ मिथिला दर्शन पत्रकारिता पुरस्कार युवा पत्रकारिता-प्रोत्साहन लेल घोषित भेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रबोध सम्मान २०१०मे जीवकान्त ४८ अंकसँ सम्मानित भेलाह, आ मिथिला दर्शन पत्रकारिता पुरस्कार युवा पत्रकारिता-प्रोत्साहन लेल घोषित भेल।

व्याख्या: ई खण्ड पुरस्कार-प्रक्रिया, अंक-वितरण आ पत्रकारिता-प्रोत्साहनक सूचना दैत अछि।

खण्ड १४२५ : विदेह-सदेह २ — रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्ति ०९: आरम्भिक सूची

प्रश्न 14193. “रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्ति ०९” खण्डक मूल विषय की अछि?

क. मैथिली रंगकर्मसँ जुड़ल युवा/महिला कलाकारक चयन आ परिचय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली रंगकर्मसँ जुड़ल युवा/महिला कलाकारक चयन आ परिचय।

व्याख्या: स्रोतमे एहि शीर्षकक नीचा प्रथम, द्वितीय आ तृतीय रूपमे तीन रंगकर्मी परिचय देल गेल अछि।

प्रश्न 14194. एहि नाट्यवृत्तिमे प्रथम स्थानक रूपमे केकर नाम देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रियंका झा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रियंका झा।

व्याख्या: स्रोतमे “प्रथम”क बाद प्रियंका झा (जनकपुर)क नाम अछि।

प्रश्न 14195. एहि नाट्यवृत्तिमे द्वितीय स्थानक रूपमे केकर नाम देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रूपम श्री।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रूपम श्री।

व्याख्या: स्रोतमे “द्वितीय”क बाद रूपम श्री (सहरसा)क नाम देल अछि।

प्रश्न 14196. एहि नाट्यवृत्तिमे तृतीय स्थानक रूपमे केकर नाम देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कल्पना मिश्रा।

उत्तर: घ. कल्पना मिश्रा।

व्याख्या: स्रोतमे “तृतीय”क बाद कल्पना मिश्रा (दिल्ली)क नाम अछि।

प्रश्न 14197. प्रियंका झाक नामक संग कोन स्थान देल गेल?

क. जनकपुर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर।

व्याख्या: स्रोतमे प्रियंका झा (जनकपुर) रूपमे उल्लेख अछि।

प्रश्न 14198. रूपम श्रीक नामक संग कोन स्थान देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सहरसा।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सहरसा।

व्याख्या: स्रोतमे रूपम श्री (सहरसा) रूपमे उल्लेख अछि।

प्रश्न 14199. कल्पना मिश्राक नामक संग कोन स्थान देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दिल्ली।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दिल्ली।

व्याख्या: स्रोतमे कल्पना मिश्रा (दिल्ली) रूपमे उल्लेख अछि।

प्रश्न 14200. ई नाट्यवृत्ति सूची मैथिली रंगमंचमे कोन प्रवृत्ति देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महिला रंगकर्मी सभक सक्रिय उपस्थिति आ मान्यता।

उत्तर: घ. महिला रंगकर्मी सभक सक्रिय उपस्थिति आ मान्यता।

व्याख्या: तीनू चयनित व्यक्तित्व महिला रंगकर्मी छथि, जे मैथिली रंगमंचक स्त्री-भागीदारी देखबैत अछि।

प्रश्न 14201. एहि खण्डमे जीवन-वृत्तक प्रस्तुति कोन क्रममे अछि?

क. स्थान, शिक्षा, प्रशिक्षण, संस्था, प्रस्तुति आ रुचि/सम्मानक आधारपर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्थान, शिक्षा, प्रशिक्षण, संस्था, प्रस्तुति आ रुचि/सम्मानक आधारपर।

व्याख्या: तीनू परिचयमे जन्म-स्थान, प्रशिक्षण, नाट्य-कार्य आ सम्मान/रुचि सँ जुड़ल जानकारी देल गेल अछि।

प्रश्न 14202. खण्ड १४२५क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्ति ०९ प्रियंका झा, रूपम श्री आ कल्पना मिश्राक माध्यमे मैथिली रंगकर्मक नारी-उपस्थिति चिन्हित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्ति ०९ प्रियंका झा, रूपम श्री आ कल्पना मिश्राक माध्यमे मैथिली रंगकर्मक नारी-उपस्थिति चिन्हित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड नाट्यवृत्ति सूची आ ताहि सूचीमे चयनित तीन रंगकर्मी परिचयक आधार बनबैत अछि।

खण्ड १४२६ : विदेह-सदेह २ — प्रियंका झा: जनकपुर, शिक्षा आ रंगधरोहरि

प्रश्न 14203. प्रियंका झाक जन्म कतय भेल कहल गेल?

क. जनकपुर धाम, नेपालमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर धाम, नेपालमे।

व्याख्या: स्रोत प्रियंका झाक जन्म प्राचीन मिथिलाक राजधानी जनकपुर धाम नेपालमे भेल कहैत अछि।

प्रश्न 14204. प्रियंका झाक कर्मभूमि कोन स्थान कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जनकपुर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जनकपुर।

व्याख्या: स्रोतमे जनकपुरे हुनकर कर्मभूमि बनल कहल अछि।

प्रश्न 14205. प्रियंका झा त्रिभूवन विश्वविद्यालयक कोन कैम्पससँ जुड़ल छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जनकपुर कैम्पससँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जनकपुर कैम्पससँ।

व्याख्या: स्रोतमे त्रिभूवन विश्वविद्यालयक जनकपुर कैम्पसक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14206. प्रियंका झाक पढ़ाइक विषय कोन कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कॉमर्स।

उत्तर: घ. कॉमर्स।

व्याख्या: स्रोतमे कॉमर्स विषयसँ अंतरस्नातक धरि पढ़बाक बात अछि।

प्रश्न 14207. प्रियंकाकेँ रंगमंचक धरोहरि केकरासँ भेटल कहल गेल?

क. हिनकर पिता श्री रमेश झासँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिनकर पिता श्री रमेश झासँ।

व्याख्या: स्रोतमे पिता श्री रमेश झासँ रंगमंच धरोहरि प्राप्त भेल कहल अछि।

प्रश्न 14208. प्रियंका झाक पिता मैथिली रंगमंचमे कोन रूपमे वर्णित छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अति महत्वपूर्ण हस्ताक्षर।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अति महत्वपूर्ण हस्ताक्षर।

व्याख्या: स्रोत हिनकर पिता केँ मैथिली रंगमंचक अति महत्वपूर्ण हस्ताक्षर कहैत अछि।

प्रश्न 14209. प्रियंका झाक जीवनक कोन अवस्था सँ रंगमंचपर उपस्थिति कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. छोटपनेसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. छोटपनेसँ।
व्याख्या: स्रोत कहैत अछि जे प्रियंका छोटपनेसँ मैथिली रंगमंचपर महत्वपूर्ण उपस्थिति देबए लगलीह।

प्रश्न 14210. प्रियंका झाक प्रशिक्षण मुख्यतः कोन विधासँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रस्तुति विधासँ।
उत्तर: घ. प्रस्तुति विधासँ।
व्याख्या: स्रोतमे प्रस्तुति विधाक लेल अनेक प्रशिक्षण प्राप्त कएबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14211. प्रियंका झाक परिचयमे शिक्षा आ रंगमंच कोना जुड़ैत अछि?
क. औपचारिक पढ़ाइ जनकपुर कैम्पससँ आ रंगकर्म पारिवारिक-सांस्कृतिक धरोहरिसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. औपचारिक पढ़ाइ जनकपुर कैम्पससँ आ रंगकर्म पारिवारिक-सांस्कृतिक धरोहरिसँ।
व्याख्या: स्रोत शिक्षा, जनकपुर कर्मभूमि आ पिताक रंगधरोहरि कैं एक संग रखैत अछि।

प्रश्न 14212. खण्ड १४२६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रियंका झा जनकपुर धामक रंगपरम्परा, कॉमर्स-शिक्षा आ पिता रमेश झाक रंगधरोहरिसँ बनल सक्रिय मैथिली रंगकर्मी छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रियंका झा जनकपुर धामक रंगपरम्परा, कॉमर्स-शिक्षा आ पिता रमेश झाक रंगधरोहरिसँ बनल सक्रिय मैथिली रंगकर्मी छथि।
व्याख्या: ई खण्ड हुनकर जन्म, कर्मभूमि, शिक्षा आ पारिवारिक रंगभूमि परिचय दैत अछि।

खण्ड १४२७ : विदेह-सदेह २ — प्रियंका झा: प्रशिक्षण, संस्था आ प्रस्तुति

प्रश्न 14213. प्रियंका झा कोन-कोन प्रशिक्षण संस्थासँ जुड़ल कहल गेल?
क. गुरुकुल, आरोहण, एक्सन एड आ शिल्पी आदि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गुरुकुल, आरोहण, एक्सन एड आ शिल्पी आदि।
व्याख्या: स्रोतमे प्रस्तुतिविधानक प्रशिक्षणक संदर्भमे एहि संस्थासभक नाम अछि।

प्रश्न 14214. प्रियंका झा मैथिली रंगमंचक कोन सुप्रसिद्ध संस्थासँ लगातार काज करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिनाप, जनकपुरसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिनाप, जनकपुरसँ।
व्याख्या: स्रोतमे मिनाप, जनकपुरसँ लगातार मैथिली रंगकर्म करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14215. प्रियंका झा लगभग कतेक मैथिली नाटकक प्रस्तुति कएने छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लगभग ६ टा मैथिली नाटक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लगभग ६ टा मैथिली नाटक।
व्याख्या: स्रोतमे लगभग 6 टा मैथिली नाटकक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14216. प्रियंका झा लगभग कतेक नाट्य-प्रस्तुति कएने छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. लगभग ३७ टा प्रस्तुति।
उत्तर: घ. लगभग ३७ टा प्रस्तुति।
व्याख्या: स्रोतमे 6 नाटकक लगभग 37 प्रस्तुति देल गेल अछि।

प्रश्न 14217. प्रियंका झा लगभग कतेक मैथिली सड़क नाटकसँ जुड़ल छथि?
क. १० टा मैथिली सड़क नाटक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. १० टा मैथिली सड़क नाटक।
व्याख्या: स्रोतमे 10 टा मैथिली सड़क नाटकक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14218. प्रियंका झा मैथिली सड़क नाटकक लगभग कतेक प्रस्तुति कएने छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ५ सयसँ बेसी प्रस्तुति।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ५ सयसँ बेसी प्रस्तुति।
व्याख्या: स्रोतमे सड़क नाटकक पाँच सौ सँ बेसी प्रस्तुति कहल गेल अछि।

प्रश्न 14219. प्रियंका झाक प्रमुख नाटकसभमे कोन-कोन नाम देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ओ खाली मुँह देखै छै, छुतहा घैल, ओकरा ऑगनक बारहमासा, सुनिते करैये हरान, हाय रे हमर घरबाली आ बगिया।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ओ खाली मुँह देखै छै, छुतहा घैल, ओकरा ऑगनक बारहमासा, सुनिते करैये हरान, हाय रे हमर घरबाली आ बगिया।
व्याख्या: स्रोतमे प्रियंकाक प्रमुख नाट्य-प्रस्तुति सभक ई सूची अछि।

प्रश्न 14220. प्रियंका झाक सड़क नाटकसभमे कोन-कोन नाम देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चिन्हियौ नेपाल, लेहुआयल आँचर, नै आब नै, ककर लाल, कोंटा सिंगार आदि।
उत्तर: घ. चिन्हियौ नेपाल, लेहुआयल आँचर, नै आब नै, ककर लाल, कोंटा सिंगार आदि।
व्याख्या: स्रोतमे सड़क नाटकक रूपमे एहि नामसभक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14221. प्रियंका झाक रंग-कार्यक पैमाना कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?
क. नाटकक ३७ प्रस्तुति आ सड़क नाटकक ५ सयसँ बेसी प्रस्तुति सँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नाटकक ३७ प्रस्तुति आ सड़क नाटकक ५ सयसँ बेसी प्रस्तुति सँ।
व्याख्या: स्रोतक संख्या हुनकर व्यापक रंग-कार्य देखबैत अछि।

प्रश्न 14222. खण्ड १४२७क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रियंका झा प्रशिक्षित प्रस्तुति-कर्मी छथि, जे मिनाप जनकपुरसँ जुड़ि नाटक आ सड़क नाटकक व्यापक प्रस्तुति कएने छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रियंका झा प्रशिक्षित प्रस्तुति-कर्मी छथि, जे मिनाप जनकपुरसँ जुड़ि नाटक आ सड़क नाटकक व्यापक प्रस्तुति कएने छथि।
व्याख्या: ई खण्ड प्रशिक्षण, संस्था, नाटक-सूची आ प्रस्तुति-संख्या समेटैत अछि।

खण्ड १४२८ : विदेह-सदेह २ — रूपम श्री: सहरसा, संगीत आ रंगमंच

प्रश्न 14223. रूपम श्रीक जन्म कतय भेल कहल गेल?
क. सहरसामे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सहरसामे।
व्याख्या: स्रोतमे रूपम श्रीक जन्म सहरसामे भेलन्हि कहल अछि।

प्रश्न 14224. रूपम श्रीक शिक्षा सम्बन्धी कोन सूचना देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ओ स्नातकमे पढ़ैत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ओ स्नातकमे पढ़ैत छथि।
व्याख्या: स्रोतमे स्नातकमे पढ़ैत छी कहल गेल अछि।

प्रश्न 14225. रूपम श्री संगीतमे कोन अध्ययन करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रभाकर।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रभाकर।
व्याख्या: स्रोतमे संगीतसँ प्रभाकर कऽ रहल छी कहल अछि।

प्रश्न 14226. रूपम श्रीक रंगमंचसँ लगाव कहिया सँ भेल कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. १९९५ सँ।
उत्तर: घ. १९९५ सँ।
व्याख्या: स्रोतमे सुजीक प्रयाससँ 1995 सँ रंगमंच लगाव भेल कहल अछि।

प्रश्न 14227. रूपम श्रीक रंगमंच-लगावमे केकर प्रयासक उल्लेख अछि?
क. सुजीक प्रयासक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सुजीक प्रयासक।
व्याख्या: स्रोतमे सुजीक प्रयाससँ रंगमंचसँ लगाव भेल कहल गेल अछि।

प्रश्न 14228. रूपम श्री कोन-कोन प्रमुख संस्थासँ रंगमंच करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. इप्टा आ पंच कोसी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. इप्टा आ पंच कोसी।
व्याख्या: स्रोतमे प्रमुख संस्थामे इप्टा आ पंच कोसी देल अछि।

प्रश्न 14229. रूपम श्रीक परिचयमे संगीत आ नाट्यक सम्बन्ध कोना देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. संगीत-प्रभाकरक अध्ययन आ रंगमंचक नियमित अभ्यास दुनू संग-संग चलैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. संगीत-प्रभाकरक अध्ययन आ रंगमंचक नियमित अभ्यास दुनू संग-संग चलैत अछि।
व्याख्या: स्रोत हुनकर संगीत-अध्ययन आ रंगमंच-सक्रियता कैं संग देल अछि।

प्रश्न 14230. रूपम श्रीक रंगकार्यक आरम्भिक सामाजिक आधार की बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. स्थानीय संस्था आ सहयोगी प्रयास।
उत्तर: घ. स्थानीय संस्था आ सहयोगी प्रयास।
व्याख्या: स्रोत सुजीक प्रयास आ संस्था-संग रंगमंचक उल्लेख करैत अछि।

प्रश्न 14231. रूपम श्रीक जीवन-परिचयमे सहरसा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ओ जन्म-स्थान आ रंग-परिसरक पृष्ठभूमि रूपमे आएल अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ जन्म-स्थान आ रंग-परिसरक पृष्ठभूमि रूपमे आएल अछि।
व्याख्या: स्रोत सहरसाकेँ जन्म-स्थान रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14232. खण्ड १४२८क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रूपम श्री सहरसाक रंगकर्मी छथि, जे स्नातक-पढ़ाइ, संगीत-प्रभाकर आ १९९५ सँ चलैत रंगमंच-सक्रियता सँ परिचित होइत छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रूपम श्री सहरसाक रंगकर्मी छथि, जे स्नातक-पढ़ाइ, संगीत-प्रभाकर आ १९९५ सँ चलैत रंगमंच-सक्रियता सँ परिचित होइत छथि।
व्याख्या: ई खण्ड जन्म, शिक्षा, संगीत आ रंगमंच-संस्था परिचय दैत अछि।

खण्ड १४२९ : विदेह-सदेह २ — रूपम श्री: प्रस्तुति, रुचि आ सम्मान

प्रश्न 14233. रूपम श्रीक महत्वपूर्ण नाट्य प्रस्तुतिमे कोन-कोन नाम देल गेल?
क. मधुश्रावणी, कनियाँ पुतरा आ पाँच पत्र।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मधुश्रावणी, कनियाँ पुतरा आ पाँच पत्र।
व्याख्या: स्रोतमे एहि तीन नाट्य-प्रस्तुतिक नाम अछि।

प्रश्न 14234. रूपम श्रीक प्रिय नाटककार के कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. महेन्द्र मलंगिया।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. महेन्द्र मलंगिया।
व्याख्या: स्रोतमे प्रिय नाटककार महेन्द्र मलंगिया कहल गेल अछि।

प्रश्न 14235. रूपम श्रीक प्रिय निर्देशक के कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. उत्पल झा।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. उत्पल झा।
व्याख्या: स्रोतमे प्रिय निर्देशक उत्पल झा कहल गेल अछि।

प्रश्न 14236. रूपम श्री मैथिली रंगमंचमे काज करबाबारे की अनुभव व्यक्त करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मैथिली रंगमंचमे काज करए मे नीक लगैत अछि।
उत्तर: घ. मैथिली रंगमंचमे काज करए मे नीक लगैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि भावक स्पष्ट उल्लेख अछि।

प्रश्न 14237. २००३ मे खगौल, पटनामे रूपम श्री कैं कोन सम्मान भेटल?
क. सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री सम्मान।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री सम्मान।
व्याख्या: स्रोतमे 2003 मे खगौल, पटनामे सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री सँ सम्मानित भेल कहल अछि।

प्रश्न 14238. तरंग महोत्सवमे रूपम श्री कैं कोन पुरस्कार भेटल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उत्कृष्ट नृत्य लेल द्वितीय पुरस्कार।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उत्कृष्ट नृत्य लेल द्वितीय पुरस्कार।
व्याख्या: स्रोतमे तरंग महोत्सवमे उत्कृष्ट नृत्य लेल द्वितीय पुरस्कारक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14239. तरंग महोत्सवक पुरस्कार रूपम श्री केकर हाथसँ ग्रहण केलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा सिंहदेवी पाटीलसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा सिंहदेवी पाटीलसँ।
व्याख्या: स्रोतमे राष्ट्रपति प्रतिभा सिंहदेवी पाटीलसँ पुरस्कार ग्रहण करबाक बात अछि।

प्रश्न 14240. रूपम श्रीक परिचयमे नृत्य आ अभिनय कोना जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अभिनेत्री सम्मान आ उत्कृष्ट नृत्य पुरस्कार दुनू हुनकर प्रस्तुति-कौशल देखबैत अछि।
उत्तर: घ. अभिनेत्री सम्मान आ उत्कृष्ट नृत्य पुरस्कार दुनू हुनकर प्रस्तुति-कौशल देखबैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे नाट्य-प्रस्तुति, अभिनेत्री सम्मान आ नृत्य पुरस्कार एक संग आएल अछि।

प्रश्न 14241. रूपम श्रीक रंग-संस्कार कोन व्यक्तिसभक रुचि सँ स्पष्ट होइत अछि?
क. महेन्द्र मलंगिया आ उत्पल झाक प्रति हुनकर अनुरागसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. महेन्द्र मलंगिया आ उत्पल झाक प्रति हुनकर अनुरागसँ।
व्याख्या: प्रिय नाटककार-निर्देशकक उल्लेख हुनकर रंग-रुचि बतबैत अछि।

प्रश्न 14242. खण्ड १४२९क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रूपम श्री मधुश्रावणी आदि नाटक, महेन्द्र मलंगिया-उत्पल झाक प्रति रुचि, सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री सम्मान आ नृत्य पुरस्कारसँ चिन्हित सक्रिय रंगकर्मी छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रूपम श्री मधुश्रावणी आदि नाटक, महेन्द्र मलंगिया-उत्पल झाक प्रति रुचि, सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री सम्मान आ नृत्य पुरस्कारसँ चिन्हित सक्रिय रंगकर्मी छथि।
व्याख्या: ई खण्ड प्रस्तुतिसूची, रुचि आ सम्मानक आधारपर हुनकर रंग-परिचय दैत अछि।

खण्ड १४३० : विदेह-सदेह २ — कल्पना मिश्रा: जन्म, संगीत आ प्रशिक्षण

प्रश्न 14243. कल्पना मिश्राक जन्म कतय भेल कहल गेल?
क. मिथिलाक नागदह गाममे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलाक नागदह गाममे।
व्याख्या: स्रोतमे कल्पना मिश्राक जन्म मिथिलाक नागदह गाममे भेलन्हि कहल अछि।

प्रश्न 14244. कल्पना मिश्राक लगाव बच्चेसँ कोन कलासँ भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. संगीतसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. संगीतसँ।
व्याख्या: स्रोतमे बच्चेसँ संगीतसँ लगाव भेल कहल अछि।

प्रश्न 14245. कल्पना मिश्राले शास्त्रीय संगीतक प्रशिक्षण कतयसँ प्राप्त केलनि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प्रयाग विद्यापीठ संगीत समिति, इलाहाबादसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प्रयाग विद्यापीठ संगीत समिति, इलाहाबादसँ।
व्याख्या: स्रोतमे एहि संस्थासँ शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14246. कल्पना मिश्राक शिक्षा-दीक्षा कतय भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. बेगूसरायमे।
उत्तर: घ. बेगूसरायमे।
व्याख्या: स्रोतमे शिक्षा-दीक्षा बेगूसरायमे भेल कहल अछि।

प्रश्न 14247. कल्पना मिश्राक आरम्भिक झुकाव कोन दिस छल?
क. मैथिली संगीत दिस।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली संगीत दिस।
व्याख्या: स्रोत कहैत अछि जे पहिने हुनकर झुकाव मैथिली संगीत दिस भेल।

प्रश्न 14248. मैथिली संगीतक बाद कल्पना मिश्रा कोन दिस आकर्षित भेलीह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अभिनय दिस।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अभिनय दिस।
व्याख्या: स्रोतमे तत्पश्चात अभिनय दिस आकर्षित भेलीह कहल अछि।

प्रश्न 14249. कल्पना मिश्राक जीवन-परिचयमे नागदह आ बेगूसराय कोना जुड़ैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नागदह जन्म-स्थान आ बेगूसराय शिक्षा-दीक्षाक स्थान रूपमे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नागदह जन्म-स्थान आ बेगूसराय शिक्षा-दीक्षाक स्थान रूपमे।
व्याख्या: स्रोत एहि दुनू स्थानक अलग-अलग भूमिका दैत अछि।

प्रश्न 14250. कल्पना मिश्राक कला-यात्रा मे संगीतक भूमिका की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई अभिनय दिस बढ़बाक पहिल आधार बनैत अछि।
उत्तर: घ. ई अभिनय दिस बढ़बाक पहिल आधार बनैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे पहिले संगीत, तकर बाद अभिनय दिस आकर्षणक क्रम अछि।

प्रश्न 14251. कल्पना मिश्राक प्रशिक्षणक प्रकृति कोन प्रकारक अछि?
क. शास्त्रीय संगीत-आधारित।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शास्त्रीय संगीत-आधारित।
व्याख्या: प्रयाग विद्यापीठ संगीत समितिसँ शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षणक उल्लेख एहि बातक आधार अछि।

प्रश्न 14252. खण्ड १४३०क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कल्पना मिश्रा नागदहमे जन्मल, बेगूसरायमे शिक्षित, शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षित आ संगीतसँ अभिनय दिस बढ़ल रंगकर्मी छथि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कल्पना मिश्रा नागदहमे जन्मल, बेगूसरायमे शिक्षित, शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षित आ संगीतसँ अभिनय दिस बढ़ल रंगकर्मी छथि।
व्याख्या: ई खण्ड हुनकर जन्म, शिक्षा, संगीत प्रशिक्षण आ कला-यात्राक आरम्भ समेटैत अछि।

खण्ड १४३१ : विदेह-सदेह २ — कल्पना मिश्रा: रंगकर्म, नाटक आ दृष्टि

प्रश्न 14253. कल्पना मिश्रा दिल्ली स्थित कोन संस्थासँ रंगकर्म करैत छथि?
क. मिथिलांगन संस्थासँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलांगन संस्थासँ।
व्याख्या: स्रोतमे दिल्ली स्थित मिथिलांगन संस्थासँ रंगकर्म करबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14254. कल्पना मिश्रा मैथिलीक अतिरिक्त कोन-कोन भाषामे पहचान बनेबाक प्रसंगमे देल गेल छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. भोजपुरी आ हिन्दीमे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. भोजपुरी आ हिन्दीमे।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक संग भोजपुरी, हिन्दीमे सेहो पहचान बनेबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14255. कल्पना मिश्रा रंगमंचक संग किनका लेल काज करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. फिल्म आ टेलीविजन लेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. फिल्म आ टेलीविजन लेल।
व्याख्या: स्रोतमे रंगमंचक संग फिल्म, टेलीविजन लेल लगातार काज करबाक बात अछि।

प्रश्न 14256. कल्पना मिश्राक प्रमुख मैथिली नाट्य प्रस्तुतिमे कोन-कोन नाम अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जट जटिन, उगना हॉल्ट, सामा चकेबा आदि।
उत्तर: घ. जट जटिन, उगना हॉल्ट, सामा चकेबा आदि।
व्याख्या: स्रोतमे एहि नाट्य-प्रस्तुतिक नाम देल गेल अछि।

प्रश्न 14257. कल्पना मिश्राक सामाजिक इच्छा कोन रूपमे व्यक्त भेल?

क. महिला कलाकारक प्रति मिथिला समाजक नजरियामे बदलाव आबय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महिला कलाकारक प्रति मिथिला समाजक नजरियामे बदलाव आबय।

व्याख्या: स्रोतमे हिनक इच्छा महिला कलाकारक प्रति समाजक दृष्टि-बदलाव रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14258. कल्पना मिश्राक प्रिय निर्देशक के कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संजय चौधरी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संजय चौधरी।

व्याख्या: स्रोतमे प्रिय निर्देशक संजय चौधरीक नाम अछि।

प्रश्न 14259. कल्पना मिश्राक प्रिय नाटककार के कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. महेन्द्र मलंगिया।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. महेन्द्र मलंगिया।

व्याख्या: स्रोतमे प्रिय नाटककार महेन्द्र मलंगिया कहल अछि।

प्रश्न 14260. कल्पना मिश्राक रंग-परिसर कोन-कोन माध्यममे फैलल देखाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमंच, फिल्म आ टेलीविजनमे।

उत्तर: घ. रंगमंच, फिल्म आ टेलीविजनमे।

व्याख्या: स्रोत एहि तीनू माध्यममे हुनकर सक्रियता देखबैत अछि।

प्रश्न 14261. कल्पना मिश्राक परिचयमे भाषा-विस्तार कोना प्रकट होइत अछि?

क. मैथिली, भोजपुरी आ हिन्दीमे पहचान बनेबाक बातसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली, भोजपुरी आ हिन्दीमे पहचान बनेबाक बातसँ।

व्याख्या: स्रोत बहुभाषिक प्रदर्शन-क्षेत्रक संकेत दैत अछि।

प्रश्न 14262. खण्ड १४३१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कल्पना मिश्रा मिथिलांगनसँ जुड़ल, मैथिली-भोजपुरी-हिन्दीमे सक्रिय, फिल्म-टेलीविजनमे कार्यरत आ महिला कलाकारक सामाजिक सम्मानक पक्षधर रंगकर्मी छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कल्पना मिश्रा मिथिलांगनसँ जुड़ल, मैथिली-भोजपुरी-हिन्दीमे सक्रिय, फिल्म-टेलीविजनमे कार्यरत आ महिला कलाकारक सामाजिक सम्मानक पक्षधर रंगकर्मी छथि।

व्याख्या: ई खण्ड हुनकर संस्था, माध्यम, नाटक, प्रिय कलाकार-चिन्तन आ सामाजिक दृष्टि दैत अछि।

खण्ड १४३२ : विदेह-सदेह २ — साहित्यिक नैतिकता, जाँच आ मूल लेखनक आग्रह

प्रश्न 14263. सूचना खण्डमे विदेह आन्दोलनक मुख्य चिन्ता कोन विषयसँ जुड़ल अछि?
क. साहित्यिक चोरि, मूल लेखन आ बौद्धिक सम्पदा अधिकारसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. साहित्यिक चोरि, मूल लेखन आ बौद्धिक सम्पदा अधिकारसँ।
व्याख्या: स्रोतमे चोरिक पुष्टि, जाँच आ साहित्यिक नैतिकताक प्रसंग देल गेल अछि।

प्रश्न 14264. सूचना खण्डमे पाठकक भूमिकाक कोन बात सामने अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सुधी पाठकक सूचना आ पारखी नजरिक महत्व।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सुधी पाठकक सूचना आ पारखी नजरिक महत्व।
व्याख्या: स्रोतमे पाठकक सूचनाक बाद सत्यापन आ भविष्यक जानकारी पठेबाक आग्रह अछि।

प्रश्न 14265. विदेहक सूचना अनुसार चोरि-सम्बन्धी घटना पर कोन कार्रवाई-भाव व्यक्त भेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लेखककेँ आन्दोलन/आर्काइवसँ अलग करबाक कठोर रुख।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लेखककेँ आन्दोलन/आर्काइवसँ अलग करबाक कठोर रुख।
व्याख्या: स्रोतमे बैन, आर्काइवसँ पोथी हटेबाक आ उचित कार्रवाईक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14266. साहित्यिक नैतिकताक प्रसंगमे “सत्यापन” किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आरोपकेँ केवल सुनी-सुनाओल नहि, जाँचल तथ्यक आधारपर राखबाक लेल।
उत्तर: घ. आरोपकेँ केवल सुनी-सुनाओल नहि, जाँचल तथ्यक आधारपर राखबाक लेल।
व्याख्या: स्रोतमे पाठक सूचना बाद सत्यापनक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14267. एहि सूचना खण्डमे मूल लेखक आ अनुवाद सम्बन्धी कोन नैतिक प्रश्न उठैत अछि?
क. अनुवाद अथवा रूपान्तरणकेँ मूल रचना रूपमे छपेबाक अनुचितता।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. अनुवाद अथवा रूपान्तरणकेँ मूल रचना रूपमे छपेबाक अनुचितता।
व्याख्या: स्रोतमे पंक्तिशः अनुवादकेँ मूल लेखकक रूपमे छपेबाक आरोपक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14268. विदेहक दृष्टिमे आर्काइवक शुद्धता किएक महत्त्वपूर्ण बुझाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कारण आर्काइव साहित्यिक अभिलेख आ सार्वजनिक स्मृति बनैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कारण आर्काइव साहित्यिक अभिलेख आ सार्वजनिक स्मृति बनैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे आर्काइवसँ सम्बद्ध सामग्री हटेबाक बात साहित्यिक अभिलेखक शुद्धतासँ जुड़ैत अछि।

प्रश्न 14269. सूचना खण्डमे पाठकक आगाँक सहयोग कोना माँगल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहन घटना फेर नहि हो, ताहि लेल जानकारी पठेबाक आग्रहसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एहन घटना फेर नहि हो, ताहि लेल जानकारी पठेबाक आग्रहसँ।

व्याख्या: स्रोतमे भविष्यमे पुनरावृत्ति रोकबा लेल पाठकक पारखी नजरि चाहल गेल अछि।

प्रश्न 14270. ई प्रसंग मैथिली साहित्य आन्दोलनक कोन पक्ष देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचनात्मकता संग अनुशासन आ बौद्धिक ईमानदारीक आग्रह।

उत्तर: घ. रचनात्मकता संग अनुशासन आ बौद्धिक ईमानदारीक आग्रह।

व्याख्या: स्रोतमे साहित्य आन्दोलनक भीतर कठोर नैतिक रुख प्रकट अछि।

प्रश्न 14271. एहि खण्डमे “चोरि” प्रश्न व्यक्तिगत नहि, कोन व्यापक प्रश्न बनैत अछि?

क. साहित्यिक प्रतिष्ठा, पाठक-विश्वास आ मौलिकता संरक्षणक प्रश्न।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक प्रतिष्ठा, पाठक-विश्वास आ मौलिकता संरक्षणक प्रश्न।

व्याख्या: स्रोतक सूचना व्यक्तिगत घटना पार कऽ साहित्यिक व्यवस्था पर बल दैत अछि।

प्रश्न 14272. खण्ड १४३२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विदेहक सूचना साहित्यिक चोरि-विरोध, सत्यापन, आर्काइव-शुद्धता, पाठक-सहयोग आ बौद्धिक सम्पदा अधिकारक दृढ़ रुख प्रस्तुत करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विदेहक सूचना साहित्यिक चोरि-विरोध, सत्यापन, आर्काइव-शुद्धता, पाठक-सहयोग आ बौद्धिक सम्पदा अधिकारक दृढ़ रुख प्रस्तुत करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड मूल लेखन आ नैतिक साहित्यिक व्यवहारक आग्रह समेटैत अछि।

खण्ड १४३३ : विदेह-सदेह २ — “नताशा फॉर किड्स” आ देवांशु वत्सक मैथिली कॉमिक्स

प्रश्न 14273. “नताशा फॉर किड्स” घोषणा कोन रूपमे देल गेल?

क. पहिल मैथिली कॉमिक्सक घोषणा रूपमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पहिल मैथिली कॉमिक्सक घोषणा रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे “first ever Maithili comics Natasha”क घोषणा अछि।

प्रश्न 14274. “नताशा” मैथिली कॉमिक्सक सर्जक के कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. देवांशु वत्स।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. देवांशु वत्स।

व्याख्या: स्रोतमे नताशा कॉमिक्स देवांशु वत्स द्वारा घोषित अछि।

प्रश्न 14275. “नताशा”क पी.डी.एफ. संस्करण कोना पठाएबाक कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ई-मेल द्वारा सभकेँ पठाएबाक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ई-मेल द्वारा सभकेँ पठाएबाक।

व्याख्या: स्रोतमे पी.डी.एफ. संस्करण ई-मेलसँ पठाएबाक बात अछि।

प्रश्न 14276. “नताशा”क प्रिंट संस्करणक मूल्य कतबा कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ५० टाका।

उत्तर: घ. ५० टाका।

व्याख्या: स्रोतमे प्रिंट संस्करण ५० रुपया/टाका मे उपलब्ध कहल अछि।

प्रश्न 14277. “नताशा”मे कतेक कार्टून कथा कहल गेल?

क. ४८ कार्टून कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ४८ कार्टून कथा।

व्याख्या: स्रोतमे 48 cartoon storiesक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14278. “नताशा”क पी.डी.एफ. संस्करणबारे कोन खुला उपयोगक बात कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डाउनलोड आ प्रिन्ट बिना प्रतिबन्ध कएल जा सकैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डाउनलोड आ प्रिन्ट बिना प्रतिबन्ध कएल जा सकैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे पी.डी.एफ. डाउनलोड आ प्रिंट करबाक छूटक बात अछि।

प्रश्न 14279. घोषणामे मैथिलीभाषी बच्चा सभसँ सम्बन्धी कोन आग्रह अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि समाचारकेँ आसपासक मैथिली भाषी बच्चा सभ धरि पहुँचाउ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एहि समाचारकेँ आसपासक मैथिली भाषी बच्चा सभ धरि पहुँचाउ।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिली speaking kids in your vicinity तक खबर साझा करबाक आग्रह अछि।

प्रश्न 14280. “नताशा” घोषणा विदेहक बाल-साहित्य दृष्टि कोना देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल पाठक लेल चित्रकथा/कॉमिक्स माध्यमक प्रयोगसँ।

उत्तर: घ. बाल पाठक लेल चित्रकथा/कॉमिक्स माध्यमक प्रयोगसँ।

व्याख्या: कॉमिक्सक घोषणा मैथिली बाल-साहित्यकेँ दृश्य-माध्यमसँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 14281. देवांशु वत्सक प्रसंगमे स्रोत कोन सकारात्मक बातपर बल दैत अछि?

क. मैथिलीमे सृजनशील लोक सेहो छथि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीमे सृजनशील लोक सेहो छथि।

व्याख्या: स्रोतमे रचनात्मक लोकक उदाहरण रूपमे देवांशु वत्सक नाम देल अछि।

प्रश्न 14282. खण्ड १४३३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. “नताशा फॉर किड्स” देवांशु वत्सक ४८ कार्टून कथावला पहिल मैथिली कॉमिक्स रूपमे घोषित भेल, जकर पी.डी.एफ. खुला उपयोग लेल आ प्रिंट संस्करण ५० टाकामे उपलब्ध कहल गेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. “नताशा फॉर किड्स” देवांशु वत्सक ४८ कार्टून कथावला पहिल मैथिली कॉमिक्स रूपमे घोषित भेल, जकर पी.डी.एफ. खुला उपयोग लेल आ प्रिंट संस्करण ५० टाकामे उपलब्ध कहल गेल।

व्याख्या: ई खण्ड बाल-कॉमिक्स, खुला प्रसार आ मैथिली बच्चा धरि पहुँचबाक आग्रह समेटैत अछि।

खण्ड १४३४ : विदेह-सदेह २ — विदेह आन्दोलन: दृढ़ता, अधिकार आ पाठक-सुरक्षा

प्रश्न 14283. विदेह घोषणा “आन्दोलन टिकि रहत” प्रकारक कोन संदेश दैत अछि?

क. विदेह भाषा आ साहित्य आन्दोलन टिकाऊ अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह भाषा आ साहित्य आन्दोलन टिकाऊ अछि।

व्याख्या: स्रोतमे “Videha Language and Literature Movement is here to stay”क भाव अछि।

प्रश्न 14284. घोषणामे पाठकप्रति विदेहक भाव कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हम अहाँक चिन्ता करैत छी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हम अहाँक चिन्ता करैत छी।

व्याख्या: स्रोतमे “We care for you”क भाव देल अछि।

प्रश्न 14285. विदेह घोषणा बौद्धिक सम्पदा अधिकारक उल्लंघनप्रति कोन रुख दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कठोर आ सजग रुख।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कठोर आ सजग रुख।

व्याख्या: स्रोतमे intellectual property right thieves प्रति stern रहबाक बात अछि।

प्रश्न 14286. घोषणामे “आरो मजबूत उभरब” कोन प्रसंगमे कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भविष्यक चुनौतीक सामना करैत आन्दोलनक दृढ़ता देखेबाक लेल।

उत्तर: घ. भविष्यक चुनौतीक सामना करैत आन्दोलनक दृढ़ता देखेबाक लेल।

व्याख्या: स्रोतमे दोबारा प्रयास भेलो पर विदेह मजबूत उभरत कहैत अछि।

प्रश्न 14287. अन्तर्जालपर दुरुपयोग रोकबा लेल स्रोत कोन संस्थासभकेँ सूचित करबाक बात करैत अछि?
क. गूगल, चिट्ठाजगत आ ब्लोगवानीकेँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गूगल, चिट्ठाजगत आ ब्लोगवानीकेँ।
व्याख्या: स्रोतमे ब्लैकमेलिंग विरुद्ध एहि मंचसभकेँ सूचित करबाक आग्रह अछि।

प्रश्न 14288. साइबर अपराध आ दुरुपयोग सम्बन्धी स्रोत कोन बात याद दिलबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रोकथाम लेल प्रावधान उपलब्ध अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रोकथाम लेल प्रावधान उपलब्ध अछि।
व्याख्या: स्रोतमे साइबर क्राइम/ब्लैकमेलिंग रोकबा लेल प्रावधानक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14289. विदेहक पाठक-सहयोगक अपेक्षा कोन रूपमे देखाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. पत्रकार, पत्रिका, लेखक आ विद्वान सभकेँ घटनासँ सूचित करबाक आग्रह।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. पत्रकार, पत्रिका, लेखक आ विद्वान सभकेँ घटनासँ सूचित करबाक आग्रह।
व्याख्या: स्रोतमे पाठकगणसँ व्यापक सूचना-साझेदारीक अनुरोध अछि।

प्रश्न 14290. एहि घोषणा-समूहमे आन्दोलनक नैतिक केन्द्र की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पाठक-सुरक्षा, मौलिकता आ अधिकार-संरक्षण।
उत्तर: घ. पाठक-सुरक्षा, मौलिकता आ अधिकार-संरक्षण।
व्याख्या: स्रोतक अलग-अलग वाक्य पाठक, अधिकार आ आन्दोलन-सुरक्षा केँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 14291. विदेह आन्दोलनक कठोरता कोनसँ संतुलित अछि?
क. पाठकप्रति चिन्ता आ सृजनात्मकता संरक्षणसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाठकप्रति चिन्ता आ सृजनात्मकता संरक्षणसँ।
व्याख्या: स्रोतमे care for you आ stern with IPR thieves दुनू भाव संग अछि।

प्रश्न 14292. खण्ड १४३४क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. विदेह आन्दोलन अपन टिकाउपन, पाठक-सुरक्षा, साइबर-सजगता आ बौद्धिक सम्पदा अधिकारक रक्षाक दृढ़ घोषणा करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. विदेह आन्दोलन अपन टिकाउपन, पाठक-सुरक्षा, साइबर-सजगता आ बौद्धिक सम्पदा अधिकारक रक्षाक दृढ़ घोषणा करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड आन्दोलनक नैतिक-संगठनात्मक दृढ़ता स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १४३५ : विदेह-सदेह २ — पाठक पहुँच, गूगल विश्लेषण आ विश्वव्यापी उपस्थिति

प्रश्न 14293. विदेहकेँ १ जनवरी २००८ सँ १४ जनवरी २०१० धरि कतेक देशसँ देखल गेल कहल अछि?

क. ९३ देशसँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ९३ देशसँ।

व्याख्या: स्रोतमे ९३ देशक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14294. विदेहकेँ एहि अवधिमे कतेक ठामसँ देखल गेल कहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. १,०४२ ठामसँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. १,०४२ ठामसँ।

व्याख्या: स्रोतमे १,०४२ ठामक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14295. एहि अवधिमे विदेहकेँ कतेक गोटे देखल कहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ३६,७१७ गोटे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ३६,७१७ गोटे।

व्याख्या: स्रोतमे ३६,७१७ गोटेक संख्या देल अछि।

प्रश्न 14296. एहि अवधिमे विदेहकेँ कतेक बेर देखल गेल कहल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. २,१९,८९१ बेर।

उत्तर: घ. २,१९,८९१ बेर।

व्याख्या: स्रोतमे २,१९,८९१ बेर देखल गेलक गूगल विश्लेषण डाटा अछि।

प्रश्न 14297. एहि पाठक-डाटाक स्रोत कोन कहल गेल?

क. गूगल एनेलेटिक्स डाटा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गूगल एनेलेटिक्स डाटा।

व्याख्या: स्रोतमे ई संख्या गूगल एनेलेटिक्स डाटा कहल गेल अछि।

प्रश्न 14298. एहि पाठक-डाटा कोन अवधिक अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. १ जनवरी २००८ सँ १४ जनबरी २०१० धरि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. १ जनवरी २००८ सँ १४ जनबरी २०१० धरि।

व्याख्या: स्रोतमे अवधि स्पष्ट देल अछि।

प्रश्न 14299. ९३ देशक उल्लेख विदेहक कोन विशेषता देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विश्वव्यापी पहुँच।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विश्वव्यापी पहुँच।

व्याख्या: देश-संख्याक उल्लेख ई-पत्रिकाक अन्तरराष्ट्रीय प्रसार देखबैत अछि।

प्रश्न 14300. १,०४२ ठामसँ देखल गेलक अर्थ की संकेत करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विविध भौगोलिक केन्द्रसँ पाठकीय पहुँच।

उत्तर: घ. विविध भौगोलिक केन्द्रसँ पाठकीय पहुँच।

व्याख्या: स्रोतक स्थान-संख्या पाठक-भूगोलक विस्तार दैत अछि।

प्रश्न 14301. गूगल विश्लेषण डाटा प्रकाशनक उद्देश्य की बुझाइत अछि?

क. पाठकगणकेँ प्रसारक प्रमाण देब आ धन्यवाद देब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाठकगणकेँ प्रसारक प्रमाण देब आ धन्यवाद देब।

व्याख्या: स्रोत संख्या दऽ अंतमे पाठकगणकेँ धन्यवाद दैत अछि।

प्रश्न 14302. खण्ड १४३५क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विदेहक गूगल विश्लेषण डाटा ९३ देश, १,०४२ ठाम, ३६,७१७ पाठक आ २,१९,८९१ दर्शन द्वारा ई-पत्रिकाक विश्वव्यापी पहुँच देखबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विदेहक गूगल विश्लेषण डाटा ९३ देश, १,०४२ ठाम, ३६,७१७ पाठक आ २,१९,८९१ दर्शन द्वारा ई-पत्रिकाक विश्वव्यापी पहुँच देखबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड पाठकीय पहुँचक संख्यात्मक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १४३६ : विदेह-सदेह २ — संदेश: गोविन्द झा आ रमानन्द रेणु

प्रश्न 14303. श्री गोविन्द झा विदेहक कोन उपलब्धिपर बल दैत छथि?

क. तरंगजालपर मैथिलीक लहरि जगाएबाक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तरंगजालपर मैथिलीक लहरि जगाएबाक।

व्याख्या: स्रोतमे गोविन्द झा विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरि मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल कहैत छथि।

प्रश्न 14304. गोविन्द झा अपन अनुपस्थिति/सहयोगबारे की खेद व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. महाभियानमे एखन धरि संग नहि दऽ सकलहुँ।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. महाभियानमे एखन धरि संग नहि दऽ सकलहुँ।

व्याख्या: स्रोतमे ओ एहि महाभियानमे संग नहि दए सकलाक खेद व्यक्त करैत छथि।

प्रश्न 14305. गोविन्द झा विदेहक सम्पादकीय स्वभावबारे की सुनने छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सुझाव आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सुझाव आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि।
व्याख्या: स्रोतमे ओ ई बात लिखैत छथि।

प्रश्न 14306. गोविन्द झा अपन भविष्यक सहयोगबारे की कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हमर सहायता आ सहयोग सदा उपलब्ध रहत।
उत्तर: घ. हमर सहायता आ सहयोग सदा उपलब्ध रहत।
व्याख्या: स्रोतमे सहायता-सहयोग उपलब्ध रहबाक आश्वासन अछि।

प्रश्न 14307. श्री रमानन्द रेणु विदेहक कोन काजक लेल धन्यवाद दैत छथि?
क. पाक्षिक मैथिली ई-पत्रिका चला कऽ मातृभाषाक प्रचार लेल।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. पाक्षिक मैथिली ई-पत्रिका चला कऽ मातृभाषाक प्रचार लेल।
व्याख्या: स्रोतमे रमानन्द रेणु ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ मातृभाषाक प्रचारक लेल धन्यवाद दैत छथि।

प्रश्न 14308. रमानन्द रेणु विदेहक आगाँक कार्य लेल कोन भाव व्यक्त करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हृदयसँ शुभकामना।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हृदयसँ शुभकामना।
व्याख्या: स्रोतमे समस्त मैथिली कार्यक हेतु हृदयसँ शुभकामना देल अछि।

प्रश्न 14309. गोविन्द झाक संदेशमे “मातृभाषा” कोन भावसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विश्वभरि मैथिली लहरि जगाएबाक भावसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विश्वभरि मैथिली लहरि जगाएबाक भावसँ।
व्याख्या: स्रोत तरंगजाल आ मातृभाषा लहरि केँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 14310. रमानन्द रेणुक संदेशमे “पाक्षिक” शब्दक महत्त्व की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नियमित प्रकाशन-प्रयासक मान्यता।
उत्तर: घ. नियमित प्रकाशन-प्रयासक मान्यता।
व्याख्या: ओ पाक्षिक ई-पत्रिका चलाएबाक श्रमकेँ धन्यवाद दैत छथि।

प्रश्न 14311. दूनू संदेश मिलि विदेहक कोन रूप देखबैत अछि?

क. ऑनलाइन, नियमित आ सहयोग-आधारित मैथिली आन्दोलन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऑनलाइन, नियमित आ सहयोग-आधारित मैथिली आन्दोलन।

व्याख्या: गोविन्द झा आ रमानन्द रेणु दुनू संदेश विदेहक डिजिटल/पाक्षिक/मातृभाषा कार्यक प्रशंसा करैत अछि।

प्रश्न 14312. खण्ड १४३६क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गोविन्द झा विदेहक तरंगजाल-आधारित वैश्विक मैथिली लहरि आ सहयोगक वचन दैत छथि, रमानन्द रेणु पाक्षिक ई-पत्रिकाक मातृभाषा-प्रचारक लेल धन्यवाद दैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गोविन्द झा विदेहक तरंगजाल-आधारित वैश्विक मैथिली लहरि आ सहयोगक वचन दैत छथि, रमानन्द रेणु पाक्षिक ई-पत्रिकाक मातृभाषा-प्रचारक लेल धन्यवाद दैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड प्रारम्भिक शुभकामना-संदेश सभक अर्थ समेटैत अछि।

खण्ड १४३७ : विदेह-सदेह २ — संदेश: विद्यानाथ झा “विदित” आ नचिकेता

प्रश्न 14313. विद्यानाथ झा “विदित” कोन युगक संदर्भमे विदेहक महिमा देखैत छथि?

क. संचार आ प्रौद्योगिकीक प्रतिस्पर्धी वैश्विक युगमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संचार आ प्रौद्योगिकीक प्रतिस्पर्धी वैश्विक युगमे।

व्याख्या: स्रोतमे संचार आ प्रौद्योगिकीक ग्लोबल युगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14314. विदितजी विदेहकेँ देखलापर कोन भाव व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रसन्नता आ संतोष।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रसन्नता आ संतोष।

व्याख्या: स्रोतमे विदेहकेँ अपना देहमे प्रकट देखि प्रसन्नता आ संतोषक बात अछि।

प्रश्न 14315. विदितजीक अनुसार विदेहक ऐतिहासिक मूल्यांकन कहिया धरि प्रकट होएत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि शताब्दीक अंत धरि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एहि शताब्दीक अंत धरि।

व्याख्या: स्रोतमे शताब्दीक अंत धरि ऐतिहासिक मूल्यांकन आ सांस्कृतिक प्रतिफलनक बात अछि।

प्रश्न 14316. विदितजी विदेहक प्रतिफलनकेँ कोन शब्दसँ वर्णित करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आश्चर्यजनक।

उत्तर: घ. आश्चर्यजनक।

व्याख्या: स्रोतमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट हैत कहल अछि।

प्रश्न 14317. प्रो. उदय नारायण सिंह “नचिकेता” विदेहक काजबारे की कहैत छथि?

क. ई काज एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे चर्चित होएत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई काज एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे चर्चित होएत।

व्याख्या: स्रोतमे नचिकेताक ई कथन अछि।

प्रश्न 14318. नचिकेता विदेहक पाठक-संख्याबारे की भाव व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एतेक मैथिल पढ़ि रहल छथि, ई जानि आनन्द भए रहल अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. एतेक मैथिल पढ़ि रहल छथि, ई जानि आनन्द भए रहल अछि।

व्याख्या: स्रोतमे एतेक गोट मैथिल विदेह पढ़ि रहल छथि कहि आनन्द व्यक्त अछि।

प्रश्न 14319. नचिकेता कोन अंक-सीमा पुरबाक लेल अभिनन्दन दैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विदेहक चालीसम अंक पुरबाक लेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विदेहक चालीसम अंक पुरबाक लेल।

व्याख्या: स्रोतमे चालीसम अंक पुरबाक लेल अभिनन्दन अछि।

प्रश्न 14320. विदितजी आ नचिकेता दुनू संदेशमे विदेहक कोन साझा विशेषता उभरैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इतिहास-निर्माण आ डिजिटल प्रसार।

उत्तर: घ. इतिहास-निर्माण आ डिजिटल प्रसार।

व्याख्या: विदितजी ऐतिहासिक मूल्यांकन कहैत छथि, नचिकेता मैथिली इतिहासमे चर्चा कहैत छथि।

प्रश्न 14321. विदेहक “देहमे प्रकट” रूपक अर्थ की बुझाइत अछि?

क. ऑनलाइन विदेहकेँ मूर्त अनुभव रूपमे देखब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऑनलाइन विदेहकेँ मूर्त अनुभव रूपमे देखब।

व्याख्या: विदितजीक वाक्य डिजिटल पत्रिकाक प्रत्यक्ष अनुभवक रूपक अछि।

प्रश्न 14322. खण्ड १४३७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विदितजी विदेहकेँ वैश्विक प्रौद्योगिकी युगक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक घटना मानैत छथि, नचिकेता एकरा मैथिली भाषाक भविष्यक इतिहासमे चर्चित काज कहैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विदितजी विदेहकेँ वैश्विक प्रौद्योगिकी युगक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक घटना मानैत छथि, नचिकेता एकरा मैथिली भाषाक भविष्यक इतिहासमे चर्चित काज कहैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड विदेहक ऐतिहासिकता आ डिजिटल पाठक-विस्तारक प्रशंसा समेटैत अछि।

खण्ड १४३८ : विदेह-सदेह २ — संदेश: गंगेश गुंजन, रामाश्रय झा आ ब्रजेन्द्र त्रिपाठी

प्रश्न 14323. डॉ. गंगेश गुंजन विदेह-कर्ममे केकर समर्पण देखैत छथि?
क. सम्वेदनशील मन आ मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनति।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सम्वेदनशील मन आ मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनति।
व्याख्या: स्रोतमे गंगेश गुंजन विदेह-कर्ममे सम्वेदनशील मन आ समर्पित मेहनत देखैत छथि।

प्रश्न 14324. गंगेश गुंजनक विश्वास अनुसार ई विदेह-कर्म इतिहासमे की करएत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एकटा विशिष्ट फराक अध्याय आरम्भ करत।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एकटा विशिष्ट फराक अध्याय आरम्भ करत।
व्याख्या: स्रोतमे ई विश्वास व्यक्त अछि।

प्रश्न 14325. गंगेश गुंजन “कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक”कैं कोन प्रकारक पोथी कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भव्य आ उपयोगी।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भव्य आ उपयोगी।
व्याख्या: स्रोतमे पोथी प्रथम दृष्टया भव्य तथा उपयोगी बुझाइछ कहल अछि।

प्रश्न 14326. गंगेश गुंजनक अनुसार मैथिलीमे एहन पोथी कोन अर्थमे पहिले अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अपन स्वरूपक प्रायः पहिल भव्य अवतार।
उत्तर: घ. अपन स्वरूपक प्रायः पहिल भव्य अवतार।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीमे अपना स्वरूपक प्रायः पहिले एहन भव्य अवतारक पोथी कहल अछि।

प्रश्न 14327. श्री रामाश्रय झा “रामरंग” संदेशमे कोन विषयसँ अवगत भेल कहल गेल?
क. मिथिलासँ संबंधित विषय-वस्तुसँ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मिथिलासँ संबंधित विषय-वस्तुसँ।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिलासँ संबंधित विषय वस्तुसँ अवगत भेलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 14328. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी कोन संस्थासँ सम्बद्ध रूपमे उल्लेखित छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. साहित्य अकादमी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. साहित्य अकादमी।
व्याख्या: स्रोतमे श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी लिखा अछि।

प्रश्न 14329. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी विदेहक लेल की स्वीकार करबाक कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बधाई आ शुभकामना।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बधाई आ शुभकामना।

व्याख्या: स्रोतमे इंटरनेटपर प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका लेल बधाई आ शुभकामना स्वीकार करबाक बात अछि।

प्रश्न 14330. गंगेश गुंजनक संदेशमे “अमृत रंग” कोन भावक प्रतीक अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिलीप्रति समर्पित मेहनतक सृजनात्मक प्रभाव।

उत्तर: घ. मैथिलीप्रति समर्पित मेहनतक सृजनात्मक प्रभाव।

व्याख्या: स्रोत समर्पित मेहनतिक अमृत रंग कहैत अछि।

प्रश्न 14331. एहि तीन संदेशमे विदेहक कोन आयाम उभरैत अछि?

क. समर्पित साहित्य-कर्म, मिथिला-विषयकता आ संस्थागत मान्यता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समर्पित साहित्य-कर्म, मिथिला-विषयकता आ संस्थागत मान्यता।

व्याख्या: गंगेश गुंजन साहित्यिक मेहनति, रामाश्रय झा मिथिला-विषय, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी संस्थागत शुभकामना दैत छथि।

प्रश्न 14332. खण्ड १४३८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गंगेश गुंजन विदेह-कर्मकेँ इतिहासक विशिष्ट अध्याय मानैत छथि; रामाश्रय झा मिथिला-विषयकता आ ब्रजेन्द्र त्रिपाठी प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिकाक शुभकामना दैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गंगेश गुंजन विदेह-कर्मकेँ इतिहासक विशिष्ट अध्याय मानैत छथि; रामाश्रय झा मिथिला-विषयकता आ ब्रजेन्द्र त्रिपाठी प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिकाक शुभकामना दैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड तीन साहित्यिक संदेशक मुख्य भाव समेटैत अछि।

खण्ड १४३९ : विदेह-सदेह २ — संदेश: मौन, शिवप्रसाद यादव, आद्याचरण झा आ विजय ठाकुर

प्रश्न 14333. प्रफुल्लकुमार सिंह “मौन” विदेहक प्रकाशनक समाचार सुनि कोन भाव व्यक्त करैत छथि?

क. चकित मुदा बेसी आह्लादित।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चकित मुदा बेसी आह्लादित।

व्याख्या: स्रोतमे ओ कनेक चकित मुदा बेसी आह्लादित भेलहुँ कहैत छथि।

प्रश्न 14334. “मौन” विदेहमे कोन गुणक परिचय देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कालचक्रकेँ पकड़ि दूरदृष्टि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कालचक्रकेँ पकड़ि दूरदृष्टि।

व्याख्या: स्रोतमे कालचक्रकेँ पकड़ि दूरदृष्टिक परिचय देबाक बात अछि।

प्रश्न 14335. डॉ. शिवप्रसाद यादव विदेहक काजकेँ कोन क्षेत्रमे साहसिक कदम मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश।
व्याख्या: स्रोतमे एहि बातक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14336. शिवप्रसाद यादव विदेहक नव प्रयोगबारे की कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. पत्रकारितामे एहि नव प्रयोगक स्वागत करैत छी।
उत्तर: घ. पत्रकारितामे एहि नव प्रयोगक स्वागत करैत छी।
व्याख्या: स्रोतमे नव प्रयोगक स्वागत आ सफलताक शुभकामना अछि।

प्रश्न 14337. श्री आद्याचरण झा अपन अनुभव कतेक वर्षक कहल छथि?
क. ७५ वर्षक अनुभव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ७५ वर्षक अनुभव।
व्याख्या: स्रोतमे ८८ वर्षमे ७५ वर्षक अनुभव रहल कहल अछि।

प्रश्न 14338. आद्याचरण झा विदेहक प्रकाशनकेँ कोन रूपक संग जोड़ैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. महान यज्ञ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. महान यज्ञ।
व्याख्या: स्रोतमे एतेक पैघ महान यज्ञमे श्रद्धापूर्ण आहुति भेटबाक बात अछि।

प्रश्न 14339. श्री विजय ठाकुर कोन विश्वविद्यालयसँ सम्बद्ध रूपमे उल्लेखित छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मिशिगन विश्वविद्यालय।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मिशिगन विश्वविद्यालय।
व्याख्या: स्रोतमे विजय ठाकुर- मिशिगन विश्वविद्यालयक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14340. विजय ठाकुर विदेह टीमबारे की कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि।
उत्तर: घ. सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि।
व्याख्या: स्रोतमे अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि कहल अछि।

प्रश्न 14341. एहि संदेशसभमे विदेहक कोन गुण बारम्बार प्रकट होइत अछि?

क. नव प्रयोग, दूरदृष्टि आ सामूहिक परिश्रम।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव प्रयोग, दूरदृष्टि आ सामूहिक परिश्रम।

व्याख्या: मौन, शिवप्रसाद यादव, आद्याचरण झा आ विजय ठाकुर सभ विदेहक प्रयासक प्रशंसा करैत छथि।

प्रश्न 14342. खण्ड १४३९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मौन विदेहक दूरदृष्टि, शिवप्रसाद यादव सूचना-क्रान्तिक नव प्रयोग, आद्याचरण झा महान यज्ञ आ विजय ठाकुर टीमक सामूहिक श्रमक प्रशंसा करैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मौन विदेहक दूरदृष्टि, शिवप्रसाद यादव सूचना-क्रान्तिक नव प्रयोग, आद्याचरण झा महान यज्ञ आ विजय ठाकुर टीमक सामूहिक श्रमक प्रशंसा करैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड चार शुभकामना-संदेशक निचोड़ दैत अछि।

खण्ड १४४० : विदेह-सदेह २ — संदेश: सुगंध, सहयोग आ अन्तरराष्ट्रीय पहुँच

प्रश्न 14343. सुभाषचन्द्र यादव विदेहबारे की भाव व्यक्त करैत छथि?

क. ई-पत्रिकाबारे जानि प्रसन्नता भेल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई-पत्रिकाबारे जानि प्रसन्नता भेल।

व्याख्या: स्रोतमे ई-पत्रिका “विदेह”क बारेमे जानि प्रसन्नता भेल कहल अछि।

प्रश्न 14344. सुभाषचन्द्र यादव विदेह लेल कोन कामना करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. निरन्तर पल्लवित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक सुगंध पसारय।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. निरन्तर पल्लवित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक सुगंध पसारय।

व्याख्या: स्रोतमे ई शुभकामना स्पष्ट अछि।

प्रश्न 14345. मैथिलीपुत्र प्रदीप विदेहक सफलताक कामना केकरासँ करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भगवतीसँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भगवतीसँ।

व्याख्या: स्रोतमे ई-पत्रिका “विदेह” केर सफलताक भगवतीसँ कामना कहल अछि।

प्रश्न 14346. मैथिलीपुत्र प्रदीप अपन सहयोगबारे की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हमर पूर्ण सहयोग रहत।

उत्तर: घ. हमर पूर्ण सहयोग रहत।

व्याख्या: स्रोतमे पूर्ण सहयोगक वचन अछि।

प्रश्न 14347. डॉ. भीमनाथ झा “विदेह” नामक औचित्य कोना देखैत छथि?

क. विदेह इन्टरनेट पर अछि तेँ नाम उचित।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह इन्टरनेट पर अछि तेँ नाम उचित।

व्याख्या: स्रोतमे “विदेह” इन्टरनेट पर अछि तेँ नाम उचित कहल गेल अछि।

प्रश्न 14348. भीमनाथ झा कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक देखिकए की भाव व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अति प्रसन्नता आ मैथिलीक लेल घटना।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अति प्रसन्नता आ मैथिलीक लेल घटना।

व्याख्या: स्रोतमे पोथी देखि अति प्रसन्नता आ मैथिलीक लेल घटना कहल अछि।

प्रश्न 14349. रामभरोस कापड़ि “भ्रमर” विदेहक कोन उपलब्धि लेल बधाई दैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मैथिलीकेँ अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे पहुँचेलहुँ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मैथिलीकेँ अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे पहुँचेलहुँ।

व्याख्या: स्रोतमे जनकपुरधामसँ भ्रमरजी विदेह ऑनलाइन देखि अन्तर्राष्ट्रीय पहुँचक बधाई दैत छथि।

प्रश्न 14350. भ्रमरजी विदेहक कोन संकलनकेँ अपूर्व कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला रत्न सभक संकलन।

उत्तर: घ. मिथिला रत्न सभक संकलन।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिला रत्न संकलन अपूर्व कहल अछि।

प्रश्न 14351. भ्रमरजी नेपालक सहयोगबारे की विश्वास व्यक्त करैत छथि?

क. नेपालोक सहयोग भेटत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालोक सहयोग भेटत।

व्याख्या: स्रोतमे नेपालोक सहयोग भेटत, से विश्वास करी कहल अछि।

प्रश्न 14352. खण्ड १४४०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुभाषचन्द्र यादव, मैथिलीपुत्र प्रदीप, भीमनाथ झा आ रामभरोस कापड़ि “भ्रमर” विदेहक सुगंध, सहयोग, नामक औचित्य आ अन्तरराष्ट्रीय मैथिली पहुँचक प्रशंसा करैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुभाषचन्द्र यादव, मैथिलीपुत्र प्रदीप, भीमनाथ झा आ रामभरोस कापड़ि “भ्रमर” विदेहक सुगंध, सहयोग, नामक औचित्य आ अन्तरराष्ट्रीय मैथिली पहुँचक प्रशंसा करैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड सहयोगी शुभकामना आ वैश्विक मैथिली पहुँचक संदेश समेटैत अछि।

खण्ड १४४१ : विदेह-सदेह २ — राजनन्दन लालदासक संदेश: प्रशंसा, आलोचना आ स्पष्टीकरण

प्रश्न 14353. राजनन्दन लालदास विदेहक काजबारे आरम्भमे की कहैत छथि?
क. ई-पत्रिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ई-पत्रिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी।
व्याख्या: स्रोतमे ओ नातिक स्थानपर विदेह देखलाक बाद नीक काजक प्रशंसा करैत छथि।

प्रश्न 14354. राजनन्दन लालदास वार्षिक अंकबारे कोन आग्रह करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. प्रिंट निकालब तँ हमरा पठायब।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. प्रिंट निकालब तँ हमरा पठायब।
व्याख्या: स्रोतमे वार्षिक अंक प्रिंट निकालल जाए तँ पठेबाक आग्रह अछि।

प्रश्न 14355. राजनन्दन लालदास कोन शहरमे बहुत गोटेकेँ साइटक पता लिखाए देने छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कलकत्तामे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कलकत्तामे।
व्याख्या: स्रोतमे कलकत्तामे बहुत गोटेकेँ साइटक पता लिखाए देबाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14356. राजनन्दन लालदास “कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक”केँ कोन प्रकारक काज कहैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उत्कृष्ट प्रकाशन आ अद्भुत काज।
उत्तर: घ. उत्कृष्ट प्रकाशन आ अद्भुत काज।
व्याख्या: स्रोतमे उत्कृष्ट प्रकाशन आ अद्भुत काज कहल अछि।

प्रश्न 14357. राजनन्दन लालदासक आलोचनामे कोन भाषिक चिन्ता उठैत अछि?
क. आमुखमे हिन्दी, उर्दू आ अंग्रेजी शब्दक प्रयोग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आमुखमे हिन्दी, उर्दू आ अंग्रेजी शब्दक प्रयोग।
व्याख्या: स्रोतमे ओ आमुखक पंक्तिमे हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी शब्दक चर्चा करैत छथि।

प्रश्न 14358. सम्पादकीय स्पष्टीकरणमे आमुखक लेखकत्वबारे की कहल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. उद्धृत अंश कैलास कुमार मिश्रजीक आमुखक अछि, सम्पादकक नहि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. उद्धृत अंश कैलास कुमार मिश्रजीक आमुखक अछि, सम्पादकक नहि।
व्याख्या: स्रोतमे स्पष्टीकरण देल अछि जे ओ अंश कैलास कुमार मिश्रजीक आमुखक अछि।

प्रश्न 14359. राजनन्दन लालदासक आलोचनाक उत्तरमे निःशुल्क आर्काइवबारे की संकेत देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विदेह द्वारा ई-प्रकाशित सामग्री आर्काइवमे बिना मूल्य उपलब्ध अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विदेह द्वारा ई-प्रकाशित सामग्री आर्काइवमे बिना मूल्य उपलब्ध अछि।

व्याख्या: स्रोतक स्पष्टीकरणमे सामग्री बिना मूल्य आर्काइवमे उपलब्ध होएबाक भाव अछि।

प्रश्न 14360. एहि संदेशमे प्रशंसा आ आलोचना कोना साथे-साथ चलैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेहक कार्यक शुभकामना संग भाषा, व्यापार आ प्रस्तुति पर प्रश्न उठैत अछि।

उत्तर: घ. विदेहक कार्यक शुभकामना संग भाषा, व्यापार आ प्रस्तुति पर प्रश्न उठैत अछि।

व्याख्या: स्रोत प्रशंसा करैत हुए अनेक आलोचनात्मक बिन्दु सेहो रखैत अछि।

प्रश्न 14361. राजनन्दन लालदासक संदेश विदेहक पाठक-संवादक कोन रूप देखबैत अछि?

क. प्रशंसा, कठोर आलोचना आ सम्पादकीय स्पष्टीकरणक खुला संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रशंसा, कठोर आलोचना आ सम्पादकीय स्पष्टीकरणक खुला संवाद।

व्याख्या: स्रोतमे संदेशक बाद सम्पादकीय स्पष्टीकरण जोड़ल गेल अछि।

प्रश्न 14362. खण्ड १४४१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजनन्दन लालदास विदेहक काज आ कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनकक प्रशंसा करैत, भाषा-प्रयोग आ प्रकाशनक प्रश्न उठबैत छथि; सम्पादक स्पष्टीकरण द्वारा संवाद खोलैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राजनन्दन लालदास विदेहक काज आ कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनकक प्रशंसा करैत, भाषा-प्रयोग आ प्रकाशनक प्रश्न उठबैत छथि; सम्पादक स्पष्टीकरण द्वारा संवाद खोलैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड प्रशंसा-आलोचना-उत्तरक खुला साहित्यिक संवाद समेटैत अछि।

खण्ड १४४२ : विदेह-सदेह २ — संदेश: प्रेमशंकर सिंह सँ जीवकान्त धरि

प्रश्न 14363. डॉ. प्रेमशंकर सिंह विदेहकेँ कोन रूपमे प्रशंसा करैत छथि?

क. इंटरनेटपर पहिल मैथिली पत्रिका।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इंटरनेटपर पहिल मैथिली पत्रिका।

व्याख्या: स्रोतमे ओ मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल पत्रिका विदेह प्रकाशित कएल कहैत छथि।

प्रश्न 14364. प्रेमशंकर सिंह सम्पादकक भावकेँ कोन शब्दसँ देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अद्भुत मातृभाषानुराग।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अद्भुत मातृभाषानुराग।

व्याख्या: स्रोतमे अद्भुत मातृभाषानुरागक परिचय देल अछि।

प्रश्न 14365. शेफालिका वर्मा विदेह ई-पत्रिका देखिकए की भाव व्यक्त करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मोन उल्लाससँ भरि गेल।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मोन उल्लाससँ भरि गेल।
व्याख्या: स्रोतमे विदेह ई-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ भरि गेल कहल अछि।

प्रश्न 14366. शेफालिका वर्मा “कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक”केँ कोन रूपक संग तुलना करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गागरमे सागर।
उत्तर: घ. गागरमे सागर।
व्याख्या: स्रोतमे विषयवस्तुक दृष्टिसँ गागरमे सागर कहल अछि।

प्रश्न 14367. हेतुकर झा विदेहक सेवाकेँ कोन भावसँ देखैत छथि?
क. समर्पण भावसँ मिथिला-मैथिलीक सेवा।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समर्पण भावसँ मिथिला-मैथिलीक सेवा।
व्याख्या: स्रोतमे मिथिला-मैथिलीक सेवामे तत्परता स्तुत्य कहल अछि।

प्रश्न 14368. हेतुकर झा देशक राजधानीसँ उठल मैथिलीक शंखनादक परिणाम की मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास।
व्याख्या: स्रोतमे एहि परिणामक आशा अछि।

प्रश्न 14369. योगानन्द झा “कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक”बारे की अनुभव करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्ताक्षरक परिचय देखि आह्लादित।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्ताक्षरक परिचय देखि आह्लादित।
व्याख्या: स्रोतमे पोथीकेँ निकटसँ देखबाक अवसर आ आह्लादक बात अछि।

प्रश्न 14370. किशोरीकान्त मिश्र विदेहमे कोन बात देखि विशेष प्रसन्न भेलाह?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. मिथिलाक्षर देखि।
उत्तर: घ. मिथिलाक्षर देखि।
व्याख्या: स्रोतमे कविता, कथा, रिपोर्टक सचित्र संग्रह आ मिथिलाक्षर देखि बधाई देल अछि।

प्रश्न 14371. जीवकान्त मुद्रित विदेह अंकबारे की कहैत छथि?

क. अद्भुत मेहनति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अद्भुत मेहनति।

व्याख्या: स्रोतमे “विदेहक मुद्रित अंक पढ़ल- अद्भुत मेहनति” कहल अछि।

प्रश्न 14372. खण्ड १४४२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रेमशंकर सिंहसँ जीवकान्त धरि संदेशसभ विदेहक मातृभाषानुराग, उल्लास, चेतना-विकास, मिथिलाक्षर, मुद्रित अंक आ समर्पित श्रमक प्रशंसा करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रेमशंकर सिंहसँ जीवकान्त धरि संदेशसभ विदेहक मातृभाषानुराग, उल्लास, चेतना-विकास, मिथिलाक्षर, मुद्रित अंक आ समर्पित श्रमक प्रशंसा करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड विविध पाठक-साहित्यकारक शुभकामना-संदेश समेटैत अछि।

खण्ड १४४३ : विदेह-सदेह २ — कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक पर प्रतिक्रियासभ

प्रश्न 14373. भालचन्द्र झा “कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक” देखिकए कोन अनुभूति व्यक्त करैत छथि?

क. जेना हम अपने छपलहुँ अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जेना हम अपने छपलहुँ अछि।

व्याख्या: स्रोतमे भालचन्द्र झा एहि प्रकारक आत्मीय अनुभूति व्यक्त करैत छथि।

प्रश्न 14374. भालचन्द्र झाक अनुसार पोथीक विशालकाय आकृति कोन बातक परिचायक अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सर्वसमावेशता।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सर्वसमावेशता।

व्याख्या: स्रोतमे विशालकाय आकृति सर्वसमावेशताक परिचायक कहल अछि।

प्रश्न 14375. डॉ. नीता झा “कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक”मे कोन-कोन अंश उत्तम कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ज्योतिरीश्वर शब्दावली, कृषि-मत्स्य शब्दावली, सीत बसन्त, कथा, कविता, उपन्यास आ बाल-किशोर साहित्य।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ज्योतिरीश्वर शब्दावली, कृषि-मत्स्य शब्दावली, सीत बसन्त, कथा, कविता, उपन्यास आ बाल-किशोर साहित्य।

व्याख्या: स्रोतमे नीता झा एहि सभ अंशक प्रशंसा करैत छथि।

प्रश्न 14376. नीता झाक अनुसार पोथीमे मैथिलीक कोन लक्ष्य दृष्टिगोचर होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उत्तरोत्तर विकासक लक्ष्य।

उत्तर: घ. उत्तरोत्तर विकासक लक्ष्य।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक उत्तरोत्तर विकासक लक्ष्य दृष्टिगोचर कहल अछि।

प्रश्न 14377. मायानन्द मिश्र कोन विषयपर विरोध व्यक्त करैत छथि?

क. हिनकर उपन्यास “स्त्रीधन”क समालोचना/विरोधक प्रसंगपर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिनकर उपन्यास “स्त्रीधन”क समालोचना/विरोधक प्रसंगपर।

व्याख्या: स्रोतमे ओ स्त्रीधनक विरोध कएल गेल तकर विरोध करैत छथि।

प्रश्न 14378. सम्पादकीय टिप्पणी मायानन्द मिश्रक आपत्तिबारे की कहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. समालोचनाकेँ विरोधक रूपमे नहि लेल जाए।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. समालोचनाकेँ विरोधक रूपमे नहि लेल जाए।

व्याख्या: स्रोतमे गजेन्द्र ठाकुरक स्पष्टीकरण एहि रूपमे अछि।

प्रश्न 14379. महेन्द्र हजारी पोथी पढ़ि कोन भाव व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मोन हर्षित भऽ गेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मोन हर्षित भऽ गेल।

व्याख्या: स्रोतमे हर्षित भेलहुँ आ जतेक पढ़लहुँ आह्लादित कएलक कहल अछि।

प्रश्न 14380. केदारनाथ चौधरी “कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक”बारे की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अद्भुत लागल आ मैथिली साहित्य लेल प्रतिमान बनत।

उत्तर: घ. अद्भुत लागल आ मैथिली साहित्य लेल प्रतिमान बनत।

व्याख्या: स्रोतमे ई स्पष्ट प्रशंसा अछि।

प्रश्न 14381. सत्यानन्द पाठक पोथी देखिकए कोन भाव व्यक्त करैत छथि?

क. मोन आह्लादित भऽ उठल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोन आह्लादित भऽ उठल।

व्याख्या: स्रोतमे विदेहक नियमित पाठक रहबाक संग पोथी देखि आह्लादक बात अछि।

प्रश्न 14382. खण्ड १४४३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भालचन्द्र झा, नीता झा, मायानन्द मिश्र, महेन्द्र हजारी, केदारनाथ चौधरी आ सत्यानन्द पाठकक प्रतिक्रिया कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनकक आत्मीयता, वैविध्य, आलोचना-संवाद आ प्रतिमान-मूल्य देखबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भालचन्द्र झा, नीता झा, मायानन्द मिश्र, महेन्द्र हजारी, केदारनाथ चौधरी आ सत्यानन्द पाठकक प्रतिक्रिया कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनकक आत्मीयता, वैविध्य, आलोचना-संवाद आ प्रतिमान-मूल्य देखबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड पोथी-प्रतिक्रियाक विविध स्वर समेटैत अछि।

खण्ड १४४४ : विदेह-सदेह २ — संदेश-समेकन: वैविध्य, निरन्तरता आ भविष्य-दृष्टि

प्रश्न 14383. रमा झा “कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक”क कोन पक्ष देखि प्रसन्न भेल कहल गेल?

क. प्रिंट फॉर्म आ गुणवत्ता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रिंट फॉर्म आ गुणवत्ता।

व्याख्या: स्रोतमे रमा झा प्रिंट फॉर्म पढ़ि आ गुणवत्ता देखि प्रसन्न भेल कहल अछि।

प्रश्न 14384. नरेन्द्र झा विदेहबारे की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विदेह नियमित देखैत छी आ मैथिली लेल अद्भुत काज कऽ रहल छी।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विदेह नियमित देखैत छी आ मैथिली लेल अद्भुत काज कऽ रहल छी।

व्याख्या: स्रोतमे नरेन्द्र झाक ई संक्षिप्त प्रतिक्रिया अछि।

प्रश्न 14385. रामलोचन ठाकुर विदेहक कोन रूप देखि प्रसन्न छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मिथिलाक्षर विदेह।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मिथिलाक्षर विदेह।

व्याख्या: स्रोतमे मिथिलाक्षर विदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भरि उठल कहल अछि।

प्रश्न 14386. तारानन्द वियोगी विदेह आ कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक देखिकए कोन भाव व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चकबिदोर लागि गेल, आश्चर्य।

उत्तर: घ. चकबिदोर लागि गेल, आश्चर्य।

व्याख्या: स्रोतमे एहि रूपक आश्चर्य व्यक्त अछि।

प्रश्न 14387. प्रेमलता मिश्र “प्रेम” कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनकक रचनासभबारे की कहैत छथि?

क. सभ रचना उच्चकोटिक लागल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सभ रचना उच्चकोटिक लागल।

व्याख्या: स्रोतमे प्रेमलता मिश्रक ई प्रतिक्रिया अछि।

प्रश्न 14388. कीर्तिनारायण मिश्र पोथीबारे की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बड्डु नीक लागल आ आगांक काज लेल बधाई।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बड्डु नीक लागल आ आगांक काज लेल बधाई।

व्याख्या: स्रोतमे हुनकर शुभकामना एहि रूपमे अछि।

प्रश्न 14389. महाप्रकाश कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनककेँ कोन शब्दसभसँ देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नीक, विशालकाय आ उत्तमकोटिक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नीक, विशालकाय आ उत्तमकोटिक।

व्याख्या: स्रोतमे महाप्रकाशक एहि तीन भावक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14390. अग्निपुष्प विदेहक कुन पक्षकेँ “दुस्साहसिक” कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक्षर आ देवाक्षर विदेहक प्रकाशन-प्रयास।

उत्तर: घ. मिथिलाक्षर आ देवाक्षर विदेहक प्रकाशन-प्रयास।

व्याख्या: स्रोतमे ओ ई प्रथम तँ अछि, मुदा दुस्साहसिक कहब लिखैत छथि।

प्रश्न 14391. मंजर सुलेमान विदेहबारे की कहैत छथि?

क. विदेहक जतेक प्रशंसा कएल जाए कम होएत; सभ चीज उत्तम।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेहक जतेक प्रशंसा कएल जाए कम होएत; सभ चीज उत्तम।

व्याख्या: स्रोतमे मंजर सुलेमानक ई प्रतिक्रिया अछि।

प्रश्न 14392. खण्ड १४४४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रमा झासँ मंजर सुलेमान धरि प्रतिक्रियासभ विदेहक गुणवत्ता, मिथिलाक्षर, वैविध्य, निरन्तरता, विशालता आ भविष्यक शुभकामनाकेँ समेकित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रमा झासँ मंजर सुलेमान धरि प्रतिक्रियासभ विदेहक गुणवत्ता, मिथिलाक्षर, वैविध्य, निरन्तरता, विशालता आ भविष्यक शुभकामनाकेँ समेकित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड संदेश-समेकन द्वारा विदेहक पाठकीय-साहित्यिक स्वीकृति देखबैत अछि।

खण्ड १४४५ : विदेह-सदेह २ — संदेश: केदार कानन सँ अजीत मिश्र धरि

प्रश्न 14393. केदार कानन “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” लेल की स्वीकार करबाक कहैत छथि?

क. अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ बधाइ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ बधाइ।

व्याख्या: स्रोतमे केदार कानन पोथी लेल धन्यवाद, शुभकामना आ बधाइ स्वीकार करबाक कहैत छथि।

प्रश्न 14394. केदार कानन नचिकेताक भूमिका पढ़ि आरम्भमे कोन भ्रम अनुभव करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जेना कोनो उपन्यास सृजित भेल अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जेना कोनो उपन्यास सृजित भेल अछि।

व्याख्या: स्रोतमे ओ कहैत छथि जे शुरुआतमे उपन्यास जेकाँ लागल।

प्रश्न 14395. केदार कानन पोथी उनटौलापर कोन निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहिमे सभ विधा समाहित अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. एहिमे सभ विधा समाहित अछि।
व्याख्या: स्रोतक वाक्यमे पोथीमे सभ विधाक समावेश स्पष्ट अछि।

प्रश्न 14396. धनाकर ठाकुर फोटो गैलरीबारे कोन सुझाव दैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. चित्र एहि शताब्दीक जन्मतिथिक अनुसार रहैत तऽ नीक।
उत्तर: घ. चित्र एहि शताब्दीक जन्मतिथिक अनुसार रहैत तऽ नीक।
व्याख्या: स्रोतमे ओ फोटो गैलरीक क्रमपर सुझाव दैत छथि।

प्रश्न 14397. आशीष झा पुस्तककेँ मात्र किताब नहि, की कहैत छथि?
क. एकटा उम्मीद।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. एकटा उम्मीद।
व्याख्या: स्रोतमे किताबकेँ मैथिलीक भविष्यक उम्मीद रूपमे देखल गेल अछि।

प्रश्न 14398. आशीष झाक अनुसार मैथिली केकर सेवा सँ समृद्ध होएत?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. अहाँ सन पुत्रक सेवा सँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. अहाँ सन पुत्रक सेवा सँ।
व्याख्या: स्रोतमे मैथिली निरंतर समृद्ध होइत चिरजीवन पएबाक भाव अछि।

प्रश्न 14399. शम्भु कुमार सिंह विदेहक कोन गुण देखि आह्लादित छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तत्परता आ क्रियाशीलता।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तत्परता आ क्रियाशीलता।
व्याख्या: स्रोतमे विदेहक तत्परता आ क्रियाशीलता देखि आह्लाद व्यक्त अछि।

प्रश्न 14400. शम्भु कुमार सिंह समकालीन मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे विदेहक नाम कोना लिखल जाएत मानैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. स्वर्णाक्षरमे।
उत्तर: घ. स्वर्णाक्षरमे।
व्याख्या: स्रोतमे विदेहक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत कहल अछि।

प्रश्न 14401. शम्भु कुमार सिंह “कुरुक्षेत्रम्”केँ अशेष किएक कहैत छथि?

क. महाभारतक कुरुक्षेत्र अठारह दिनमे समाप्त भेल, मुदा ई कुरुक्षेत्र अशेष अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाभारतक कुरुक्षेत्र अठारह दिनमे समाप्त भेल, मुदा ई कुरुक्षेत्र अशेष अछि।

व्याख्या: स्रोतमे ओ ऐतिहासिक कुरुक्षेत्र आ पुस्तकक व्यापकता केँ तुलना करैत छथि।

प्रश्न 14402. खण्ड १४४५क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. केदार काननसँ अजीत मिश्र धरि संदेशसभ पोथीक विधा-वैविध्य, सुधार-सुझाव, मैथिली-आशा, विदेहक क्रियाशीलता आ दीर्घकालिक महत्त्व रेखांकित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. केदार काननसँ अजीत मिश्र धरि संदेशसभ पोथीक विधा-वैविध्य, सुधार-सुझाव, मैथिली-आशा, विदेहक क्रियाशीलता आ दीर्घकालिक महत्त्व रेखांकित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड अनेक संदेशक मुख्य भाव समेटैत अछि।

खण्ड १४४६ : विदेह-सदेह २ — संदेश: बीरेन्द्र मल्लिक सँ लक्ष्मण झा “सागर” धरि

प्रश्न 14403. बीरेन्द्र मल्लिक कोन-कोन कृति पढ़ि प्रसन्न भेलाह?

क. कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक आ विदेह:सदेह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक आ विदेह:सदेह।

व्याख्या: स्रोतमे दुनू पढ़ि अति प्रसन्नता व्यक्त अछि।

प्रश्न 14404. बीरेन्द्र मल्लिक कोन शुभकामना दैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. स्वास्थ्य ठीक रहए आ उत्साह बनल रहए।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. स्वास्थ्य ठीक रहए आ उत्साह बनल रहए।

व्याख्या: स्रोतमे स्वास्थ्य आ उत्साह लेल कामना अछि।

प्रश्न 14405. कुमार राधारमण विदेहकेँ कोन रूपमे देखि प्रसन्न छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पहिल मैथिली ई-जर्नल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पहिल मैथिली ई-जर्नल।

व्याख्या: स्रोतमे अहाँक दिशा-निर्देशमे विदेह पहिल मैथिली ई-जर्नल देखबाक प्रसन्नता अछि।

प्रश्न 14406. फूलचन्द्र झा प्रवीण कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक देखि कोन विश्वास व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली नहि मरत।

उत्तर: घ. मैथिली नहि मरत।

व्याख्या: स्रोतमे पोथी देखि ई विश्वास भेल कहल अछि।

प्रश्न 14407. विभूति आनन्द विदेह:सदेहक कोन पक्ष देखि प्रसन्न भेलाह?

क. ओकर विस्तार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओकर विस्तार।

व्याख्या: स्रोतमे विदेह:सदेह देखि आ ओकर विस्तार देखि प्रसन्नता अछि।

प्रश्न 14408. मानेश्वर मनुज कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनकक भव्यताबारे की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एतेक विशाल ग्रन्थ मैथिलीमे आइ धरि नहि देखने रही।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. एतेक विशाल ग्रन्थ मैथिलीमे आइ धरि नहि देखने रही।

व्याख्या: स्रोतमे पोथीक भव्यता आ विशालता पर बल अछि।

प्रश्न 14409. विद्यानन्द झा कोन संस्थासँ सम्बद्ध रूपमे उल्लेखित छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आइ.आइ.एम. कोलकाता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आइ.आइ.एम. कोलकाता।

व्याख्या: स्रोतमे विद्यानन्द झा-आइ.आइ.एम. कोलकाता उल्लेख अछि।

प्रश्न 14410. विद्यानन्द झा पोथीक कोन-कोन पक्ष देखि प्रसन्न भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विस्तार, छपाई आ गुणवत्ता।

उत्तर: घ. विस्तार, छपाई आ गुणवत्ता।

व्याख्या: स्रोतमे एहि तीनू पक्षक प्रशंसा अछि।

प्रश्न 14411. अरविन्द ठाकुर कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनककेँ कोन रूपमे देखैत छथि?

क. मैथिली साहित्यमे एहि तरहक पहिल प्रयोग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली साहित्यमे एहि तरहक पहिल प्रयोग।

व्याख्या: स्रोतमे पहिल प्रयोग कहि शुभकामना देल गेल अछि।

प्रश्न 14412. खण्ड १४४६क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बीरेन्द्र मल्लिकसँ अरविन्द ठाकुर धरि संदेशसभ विदेह:सदेह आ कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनकक प्रसन्नता, स्वास्थ्य-शुभकामना, ई-जर्नल, विशालता, गुणवत्ता आ पहिल प्रयोगक मूल्य रेखांकित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बीरेन्द्र मल्लिकसँ अरविन्द ठाकुर धरि संदेशसभ विदेह:सदेह आ कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनकक प्रसन्नता, स्वास्थ्य-शुभकामना, ई-जर्नल, विशालता, गुणवत्ता आ पहिल प्रयोगक मूल्य रेखांकित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड प्रतिक्रियासभक साझा भाव समेकित करैत अछि।

खण्ड १४४७ : विदेह-सदेह २ — संदेश: कुमार पवन सँ लक्ष्मण झा “सागर” धरि

प्रश्न 14413. कुमार पवन कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनकमे कोन विधा पढ़ि रहल छथि?

क. लघुकथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा।

व्याख्या: स्रोतमे ओ किछु लघुकथा पढ़लाक उल्लेख करैत छथि।

प्रश्न 14414. कुमार पवन पढ़ल लघुकथासभकेँ कोन शब्दसँ वर्णित करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बहुत मार्मिक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बहुत मार्मिक।

व्याख्या: स्रोतमे लघुकथा बहुत मार्मिक छल कहल अछि।

प्रश्न 14415. प्रदीप बिहारी कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक देखिकए की दैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बधाई।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बधाई।

व्याख्या: स्रोतमे संक्षेपेँ “देखल, बधाई” कहल अछि।

प्रश्न 14416. मणिकान्त ठाकुर कतयसँ सम्बद्ध रूपमे उल्लेखित छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कैलिफोर्निया।

उत्तर: घ. कैलिफोर्निया।

व्याख्या: स्रोतमे डॉ. मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया लिखल अछि।

प्रश्न 14417. मणिकान्त ठाकुर विदेहक नियमित सेवाकेँ कोना अनुभव करैत छथि?

क. हृदयमे विदेह सदेह भऽ गेल अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हृदयमे विदेह सदेह भऽ गेल अछि।

व्याख्या: स्रोतमे विलक्षण नियमित सेवासँ विदेह हृदयमे सदेह भेल कहल अछि।

प्रश्न 14418. धीरेन्द्र प्रेमर्षि सम्पादकक प्रयासबारे की कहैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. समस्त प्रयास सराहनीय।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. समस्त प्रयास सराहनीय।

व्याख्या: स्रोतमे ओ प्रयासक प्रशंसा करैत छथि।

प्रश्न 14419. धीरेन्द्र प्रेमर्षि कोन बातपर दुख व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अपेक्षित सहयोग नहि कऽ पबैत छी।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अपेक्षित सहयोग नहि कऽ पबैत छी।

व्याख्या: स्रोतमे सहयोग नहि देबाक दुख अछि।

प्रश्न 14420. देवशंकर नवीन विदेहकेँ ऐतिहासिक बनबैत कोन पक्ष मानैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. निरन्तरता, विशाल स्वरूप आ विशाल पाठक वर्ग।

उत्तर: घ. निरन्तरता, विशाल स्वरूप आ विशाल पाठक वर्ग।

व्याख्या: स्रोतमे एहि तीनू कारणक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14421. फजलुर रहमान हाशमी केकर मेहनतक लेल साधुवाद दैत छथि?

क. कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनकमे कएल गेल एतेक मेहनतक लेल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनकमे कएल गेल एतेक मेहनतक लेल।

व्याख्या: स्रोतमे मेहनति लेल साधुवादक अधिकारी कहल अछि।

प्रश्न 14422. खण्ड १४४७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुमार पवनसँ फजलुर रहमान हाशमी धरि प्रतिक्रियासभ लघुकथाक मार्मिकता, नियमित सेवा, सहयोगक अभावक पीड़ा, विदेहक ऐतिहासिकता आ मेहनतक साधुवाद जोड़ैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुमार पवनसँ फजलुर रहमान हाशमी धरि प्रतिक्रियासभ लघुकथाक मार्मिकता, नियमित सेवा, सहयोगक अभावक पीड़ा, विदेहक ऐतिहासिकता आ मेहनतक साधुवाद जोड़ैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड संक्षिप्त संदेशसभक भाव निचोड़ैत अछि।

खण्ड १४४८ : विदेह-सदेह २ — जगदीश प्रसाद मंडल आ सामाजिक समालोचना-दृष्टि

प्रश्न 14423. जगदीश प्रसाद मंडल कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनकमे कोन-कोन अंश पढ़लाक उल्लेख करैत छथि?

क. कथा सभ आ उपन्यास “सहस्रबाढ़नि”।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा सभ आ उपन्यास “सहस्रबाढ़नि”।

व्याख्या: स्रोतमे कथा सभ आ सहस्रबाढ़नि पूर्णरूपेँ पढ़लाक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14424. जगदीश प्रसाद मंडल “सहस्रबाढ़नि”मे कोन वर्णन देखि चकित भेलाह?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गाम-घरक भौगोलिक विवरणक सूक्ष्म वर्णन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गाम-घरक भौगोलिक विवरणक सूक्ष्म वर्णन।

व्याख्या: स्रोतमे गाम-घरक भौगोलिक विवरणक सूक्ष्मता पर आश्चर्य अछि।

प्रश्न 14425. जगदीश प्रसाद मंडलक अनुसार एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे की अनलक?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विविधता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विविधता।

व्याख्या: स्रोतमे कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विविधता अनलक कहल अछि।

प्रश्न 14426. जगदीश प्रसाद मंडल समालोचना शास्त्रमे सम्पादकक दृष्टिकेँ वैयक्तिक नहि, कोन रूपमे देखैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक आ कल्याणकारी।

उत्तर: घ. सामाजिक आ कल्याणकारी।

व्याख्या: स्रोतमे समालोचना-दृष्टि सामाजिक आ कल्याणकारी कहल अछि।

प्रश्न 14427. जगदीश प्रसाद मंडलक प्रतिक्रिया कोन व्यापक मूल्यांकन प्रस्तुत करैत अछि?

क. रचनात्मक वैविध्य आ सामाजिक समालोचना-दृष्टि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रचनात्मक वैविध्य आ सामाजिक समालोचना-दृष्टि।

व्याख्या: स्रोतक प्रतिक्रिया कथात्मक आ आलोचनात्मक दुनू पक्ष जोड़ैत अछि।

प्रश्न 14428. अशोक झा कोन संस्थाक अध्यक्ष रूपमे उल्लेखित छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिला विकास परिषद।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिला विकास परिषद।

व्याख्या: स्रोतमे अशोक झा-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद लिखल अछि।

प्रश्न 14429. अशोक झा कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल की दैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बधाई आ आगाँ लेल शुभकामना।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बधाई आ आगाँ लेल शुभकामना।

व्याख्या: स्रोतमे संक्षेपेँ ई संदेश अछि।

प्रश्न 14430. ठाकुर प्रसाद मुर्मु विदेहक काजबारे कोन शब्द प्रयोग करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अद्भुत प्रयास।

उत्तर: घ. अद्भुत प्रयास।

व्याख्या: स्रोतमे अद्भुत प्रयास आ धन्यवादक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14431. ठाकुर प्रसाद मुर्मु अंक-समायोजनमे कोन बातक ध्यान राखबाक कहैत छथि?

क. अपन माटि-पानिकेँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन माटि-पानिकेँ।

व्याख्या: स्रोतमे अपन माटि-पानिकेँ ध्यानमे राखि अंकक समायोजनक प्रार्थना अछि।

प्रश्न 14432. खण्ड १४४८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जगदीश प्रसाद मंडल पोथीक कथा-विविधता आ सामाजिक समालोचना-दृष्टि देखैत छथि; अशोक झा आ ठाकुर प्रसाद मुर्मु बधाई, शुभकामना आ माटि-पानिक ध्यानक सुझाव दैत छथि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जगदीश प्रसाद मंडल पोथीक कथा-विविधता आ सामाजिक समालोचना-दृष्टि देखैत छथि; अशोक झा आ ठाकुर प्रसाद मुर्मु बधाई, शुभकामना आ माटि-पानिक ध्यानक सुझाव दैत छथि।

व्याख्या: ई खण्ड साहित्यिक मूल्यांकन आ सांस्कृतिक संवेदनशीलताक संदेश जोड़ैत अछि।

खण्ड १४४९ : विदेह-सदेह २ — संदेश: बुद्धिनाथ मिश्र सँ कमला चौधरी धरि

प्रश्न 14433. बुद्धिनाथ मिश्र विदेह आ कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनककेँ कोन शब्दसँ वर्णित करैत छथि?

क. विलक्षण पत्रिका आ विलक्षण पोथी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विलक्षण पत्रिका आ विलक्षण पोथी।

व्याख्या: स्रोतमे विदेह आ पोथी दुनूक लेल विलक्षण शब्द अछि।

प्रश्न 14434. बुद्धिनाथ मिश्रक अनुसार एहि प्रयत्नसँ की होएत?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिलीक विकास होएत।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिलीक विकास होएत।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीक विकास निस्संदेह कहल अछि।

प्रश्न 14435. बृखेश चन्द्र लाल पुस्तक पढ़ि कोन भाव व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मोन गदगद भऽ गेल।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मोन गदगद भऽ गेल।

व्याख्या: स्रोतमे पुस्तक पढ़ि मोन गदगद भय गेल लिखल अछि।

प्रश्न 14436. परमेश्वर कापड़ि कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक पढ़ि कोन दू भाव व्यक्त करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गदगद आ नेहाल।

उत्तर: घ. गदगद आ नेहाल।

व्याख्या: स्रोतमे गदगद आ नेहाल भेलहुँ कहल अछि।

प्रश्न 14437. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विदेहमे कोन आलेख पढ़लाक उल्लेख करैत छथि?

क. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपर आलेख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपर आलेख।

व्याख्या: स्रोतमे ई आलेख पढ़लाक बात अछि।

प्रश्न 14438. रवीन्द्रनाथ ठाकुर मैथिली गजल आलेखबारे कोन आपत्ति उठबैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ओहिमे मात्र जानल-पहिचानल लोकक चर्चा भेल।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ओहिमे मात्र जानल-पहिचानल लोकक चर्चा भेल।

व्याख्या: स्रोतमे ओ मठ-परम्परा जेकाँ सीमित चर्चाक आरोप करैत छथि।

प्रश्न 14439. सम्पादकीय स्पष्टीकरणमे रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ की आमंत्रण देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि विषयपर विस्तृत आलेख लिखबाक।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एहि विषयपर विस्तृत आलेख लिखबाक।

व्याख्या: स्रोतमे विषयपर विस्तृत आलेख सादर आमंत्रित अछि कहल अछि।

प्रश्न 14440. मंत्रेश्वर झा मैथिलीक लेल कएल जा रहल कार्यकेँ कोन शब्दसँ वर्णित करैत छथि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अतुलनीय।

उत्तर: घ. अतुलनीय।

व्याख्या: स्रोतमे समस्त कार्य अतुलनीय कहल अछि।

प्रश्न 14441. हरेकृष्ण झा कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनककेँ मैथिलीमे कोन रूपमे देखैत छथि?

क. अपन तरहक एकमात्र ग्रन्थ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन तरहक एकमात्र ग्रन्थ।

व्याख्या: स्रोतमे लेखकक समग्र दृष्टि आ फील्डवर्कसँ जुड़ल रचना-कौशलक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14442. खण्ड १४४९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बुद्धिनाथ मिश्रसँ हरेकृष्ण झा धरि संदेशसभ विलक्षणता, मैथिली-विकास, आत्मीय प्रसन्नता, गजल-आलेखक आलोचना, अतुलनीय कार्य आ समग्र दृष्टिक मूल्यांकन करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बुद्धिनाथ मिश्रसँ हरेकृष्ण झा धरि संदेशसभ विलक्षणता, मैथिली-विकास, आत्मीय प्रसन्नता, गजल-आलेखक आलोचना, अतुलनीय कार्य आ समग्र दृष्टिक मूल्यांकन करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड शेष संदेशसभक मुख्य स्वर समेटैत अछि।

खण्ड १४५० : विदेह-सदेह २ — शेष प्रतिक्रिया आ भाषा सम्पादन पाठ्यक्रमक आरम्भ

प्रश्न 14443. सुकान्त सोम कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनकमे कोन जुड़ाव नीक लागल कहैत छथि?
क. समाजक इतिहास आ वर्तमानसँ जुड़ाव।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. समाजक इतिहास आ वर्तमानसँ जुड़ाव।
व्याख्या: स्रोतमे समाजक इतिहास आ वर्तमानसँ जुड़ाव नीक लागल कहल अछि।

प्रश्न 14444. सुकान्त सोम आगाँ की आशा व्यक्त करैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एहि क्षेत्रमे आर आगाँ काज करबाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एहि क्षेत्रमे आर आगाँ काज करबाक।
व्याख्या: स्रोतमे एहि क्षेत्रमे आगाँ काजक आशा अछि।

प्रश्न 14445. प्रोफेसर मदन मिश्र कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनककेँ कोन रूपमे देखैत छथि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. मैथिलीमे पहिले सन किताब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. मैथिलीमे पहिले सन किताब।
व्याख्या: स्रोतमे सन किताब मैथिलीमे पहिले अछि कहल गेल अछि।

प्रश्न 14446. मदन मिश्रक अनुसार एतेक विशाल संग्रहपर की कएल जा सकैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शोध।
उत्तर: घ. शोध।
व्याख्या: स्रोतमे विशाल संग्रहपर शोध कएल जा सकैत अछि कहल अछि।

प्रश्न 14447. प्रोफेसर कमला चौधरीक पुरान आकांक्षा की छल?
क. मैथिलीमे एहन गुण-रूप दुनूमे निस्सन पोथी आबय।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीमे एहन गुण-रूप दुनूमे निस्सन पोथी आबय।
व्याख्या: स्रोतमे एहन पोथीक बहुत दिनसँ आकांक्षा छल कहल अछि।

प्रश्न 14448. कमला चौधरीक अनुसार पोथी आब कोना चलि रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एक हाथसँ दोसर हाथ घुमि रहल अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एक हाथसँ दोसर हाथ घुमि रहल अछि।
व्याख्या: स्रोतमे पोथी पाठक-हस्तान्तरणक छवि देल अछि।

प्रश्न 14449. “मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम” किएक प्रस्तुत कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रूफ रीडिंग आ भाषा सम्पादनकेँ अलग करबाक प्रयास रूपमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रूफ रीडिंग आ भाषा सम्पादनकेँ अलग करबाक प्रयास रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे मैथिलीमे दुनू एक्के विधा बुझल जा रहल अछि, से सुधारबाक प्रयास अछि।

प्रश्न 14450. अंग्रेजी प्रकाशन-संस्कृतिबारे पाठ्यक्रममे कोन बात कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रूफ रीडरक संग लैंग्वेज एडिटर सेहो राखल जाइत छथि।

उत्तर: घ. प्रूफ रीडरक संग लैंग्वेज एडिटर सेहो राखल जाइत छथि।

व्याख्या: स्रोतमे अंग्रेजी प्रकाशक सभ भाषा सम्पादक राखैत छथि कहल अछि।

प्रश्न 14451. भाषा सम्पादन पाठ्यक्रममे लैंग्वेज एडिटरकेँ की चुनबाक कहि सूची देल गेल?

क. उचित रूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उचित रूप।

व्याख्या: स्रोतमे विकल्पसभमे सँ उचित रूप चुनबाक पाठ्यक्रमीय अभ्यास अछि।

प्रश्न 14452. खण्ड १४५०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुकान्त सोम, मदन मिश्र आ कमला चौधरीक प्रतिक्रियासँ पोथीक शोध-मूल्य आ पाठकीय प्रसार स्पष्ट होइत अछि; तकर बाद भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम प्रूफ रीडिंगसँ अलग भाषा-चयनक अभ्यास आरम्भ करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुकान्त सोम, मदन मिश्र आ कमला चौधरीक प्रतिक्रियासँ पोथीक शोध-मूल्य आ पाठकीय प्रसार स्पष्ट होइत अछि; तकर बाद भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम प्रूफ रीडिंगसँ अलग भाषा-चयनक अभ्यास आरम्भ करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड प्रतिक्रिया-समापन आ पाठ्यक्रम-आरम्भ जोड़ैत अछि।

खण्ड १४५१ : विदेह-सदेह २ — भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम: आरम्भिक रूप-चयन

प्रश्न 14453. भाषा सम्पादन सूचीमे “होयबला/होबएबला/होएबाक” आदि रूप ककर अभ्यास करबैत अछि?

क. बला/बाला रूप आ क्रियात्मक प्रत्यय-चयन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बला/बाला रूप आ क्रियात्मक प्रत्यय-चयन।

व्याख्या: सूची आरम्भमे होयबला, होबएबला, होएबाक आदि विकल्प देल अछि।

प्रश्न 14454. “आ’/आऽ/आ” विकल्पमे मुख्य सम्पादकीय प्रश्न की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आबि/संयोजक अर्थमे आ-रूपक सही उपयोग।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आबि/संयोजक अर्थमे आ-रूपक सही उपयोग।

व्याख्या: सूचीमे आ रूपक विभिन्न चिह्नित रूप देल अछि।

प्रश्न 14455. “कऽ लेने/कए लेने/कय लेने” विकल्प कोन प्रकारक चयन सिखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कऽ, कए, कय सन क्रियान्वयी रूपक भेद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कऽ, कए, कय सन क्रियान्वयी रूपक भेद।
व्याख्या: सूचीमे क/कऽ/कए/कय रूपसभक भाषा-सम्पादन अभ्यास अछि।

प्रश्न 14456. “भऽ गेल/भय गेल/भए गेल” विकल्प कोन पाठ-संपादन समस्या देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भऽ/भए/भय रूपक मानक चयन।
उत्तर: घ. भऽ/भए/भय रूपक मानक चयन।
व्याख्या: सूचीमे एहि रूपसभक विकल्प देल गेल अछि।

प्रश्न 14457. “करए गेलाह/करय गेलाह” विकल्पमे की चुनेबाक अभ्यास अछि?
क. ए आ य द्वारा क्रियान्वयी रूपक लेखन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ए आ य द्वारा क्रियान्वयी रूपक लेखन।
व्याख्या: सूची करए/करय/करऽ रूपसभक तुलना करैत अछि।

प्रश्न 14458. “लिअ/दिअ” रूप कोन अशुद्ध विस्तारसँ अलग कएल जा रहल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लिय’, दिय’ सन अप्रामाणिक चिह्नित रूपसभसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लिय’, दिय’ सन अप्रामाणिक चिह्नित रूपसभसँ।
व्याख्या: सूचीमे लिअ/दिअक साथ लिय’, दिय’ आदि विकल्प देल अछि।

प्रश्न 14459. “बला/वला” विकल्प कोन शब्द-प्रत्ययक प्रश्न उठबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. करबला/करएबला सन व्यक्ति-वाचक प्रत्ययक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. करबला/करएबला सन व्यक्ति-वाचक प्रत्ययक।
व्याख्या: सूचीमे बला/वला रूपक चयन आवश्यकीय अछि।

प्रश्न 14460. “आङ्ल/आंग्ल” विकल्प कोन ध्वन्यात्मक प्रश्नसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ङ आ अनुस्वार/नासिक्य लेखनसँ।
उत्तर: घ. ङ आ अनुस्वार/नासिक्य लेखनसँ।
व्याख्या: सूचीमे आङ्ल आ आंग्ल विकल्प देल गेल अछि।

प्रश्न 14461. “दुःख/दुख” विकल्प कोन प्रकारक वर्तनी-संशोधनक उदाहरण अछि?

क. तत्सम/सरलीकृत लेखनक भेद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तत्सम/सरलीकृत लेखनक भेद।

व्याख्या: सूची दुःख आ दुख विकल्प सामने रखैत अछि।

प्रश्न 14462. खण्ड १४५१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भाषा सम्पादन पाठ्यक्रमक आरम्भिक सूची क्रियान्वयी रूप, बिकारी/चिह्न, बला-प्रत्यय, नासिक्य लेखन आ तत्सम-सरलीकरणक सही चयन सिखबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भाषा सम्पादन पाठ्यक्रमक आरम्भिक सूची क्रियान्वयी रूप, बिकारी/चिह्न, बला-प्रत्यय, नासिक्य लेखन आ तत्सम-सरलीकरणक सही चयन सिखबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड सूची १–१२क सम्पादकीय संकेत समेटैत अछि।

खण्ड १४५२ : विदेह-सदेह २ — भाषा सम्पादन: क्रिया, सर्वनाम आ पद-रूप

प्रश्न 14463. “चलि गेल/चल गेल/चैल गेल” विकल्पमे की सुरक्षित राखबाक प्रश्न अछि?

क. ह्रस्व इकारान्त क्रियारूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ह्रस्व इकारान्त क्रियारूप।

व्याख्या: सूचीमे चलि गेल रूपक तुलनामे चल/चैल रूप देल अछि।

प्रश्न 14464. “देलखिन्ह/देलकिन्ह/देलखिन” विकल्प कोन विषयसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. क्रियापदक पुरुष-सम्मान सूचक रूप।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. क्रियापदक पुरुष-सम्मान सूचक रूप।

व्याख्या: सूचीमे देलखिन्ह आदि रूपसभक तुलना अछि।

प्रश्न 14465. “देखलन्हि/देखलनि” विकल्पमे मुख्य भेद की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. न्हि आ नि प्रत्ययक लेखन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. न्हि आ नि प्रत्ययक लेखन।

व्याख्या: सूचीमे देखलन्हि, देखलनि, देखलैन्ह विकल्प अछि।

प्रश्न 14466. “छथिन्ह/छलन्हि” प्रकारक रूप भाषा सम्पादनमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्रियापदक सम्मानसूचक प्रत्यय शुद्ध रखबाक लेल।

उत्तर: घ. क्रियापदक सम्मानसूचक प्रत्यय शुद्ध रखबाक लेल।

व्याख्या: सूचीमे छथिन्ह/छलन्हि आ तकर विकल्प देल अछि।

प्रश्न 14467. “चलैत/दैत” बनाम “चलति/दैति” मे की सुधारबाक बात अछि?

क. वर्तमान कृदन्तक प्रचलित रूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्तमान कृदन्तक प्रचलित रूप।

व्याख्या: सूची चलैत/दैत रूपक चयनक ओर संकेत करैत अछि।

प्रश्न 14468. “एखनो/अखनो” विकल्प कोन कालवाचक शब्दक चयन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एखन/अखन परिवारक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. एखन/अखन परिवारक।

व्याख्या: सूचीमे एखनो आ अखनो तुलना अछि।

प्रश्न 14469. “ओ” सर्वनाम आ “ओ” संयोजकक भेद भाषा सम्पादनमे किएक आवश्यक अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एक रूप सर्वनाम, दोसर संयोजक अर्थ दैत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एक रूप सर्वनाम, दोसर संयोजक अर्थ दैत अछि।

व्याख्या: सूचीमे ओ’/ओऽ सर्वनाम आ ओ संयोजकक भेद देल अछि।

प्रश्न 14470. “फाँगि/फाइंग” विकल्पमे कोन ध्वनि-वर्तनी प्रश्न अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ङ/ं आ ह्रस्व-दीर्घ ध्वनिक लेखन।

उत्तर: घ. ङ/ं आ ह्रस्व-दीर्घ ध्वनिक लेखन।

व्याख्या: सूचीमे फाँगि, फाङ्गि, फाइंग, फाइङ विकल्प अछि।

प्रश्न 14471. “ना-नुकुर/ना-नुकर” विकल्प कोन प्रकारक शब्द-संरक्षण अछि?

क. प्रचलित मुहावरेदार रूपक संरक्षण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रचलित मुहावरेदार रूपक संरक्षण।

व्याख्या: सूचीमे ना-नुकुर सही रूप-संकेत रूपमे आबैत अछि।

प्रश्न 14472. खण्ड १४५२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई खण्ड चलि गेल, देलखिन्ह, देखलन्हि, छथिन्ह, चलैत, एखनो, ओ-सर्वनाम/संयोजक, फाँगि आ ना-नुकुर सन रूपसभक सम्पादकीय भेद स्पष्ट करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ई खण्ड चलि गेल, देलखिन्ह, देखलन्हि, छथिन्ह, चलैत, एखनो, ओ-सर्वनाम/संयोजक, फाँगि आ ना-नुकुर सन रूपसभक सम्पादकीय भेद स्पष्ट करैत अछि।

व्याख्या: सूची १३–३०क आधारपर क्रिया, सर्वनाम आ पद-रूपक चयन समेटल गेल अछि।

खण्ड १४५३ : विदेह-सदेह २ — भाषा सम्पादन: शब्दरूप, उच्चारण आ अर्थ-भेद

प्रश्न 14473. “कूदि/यादि” बनाम “कूद/याद” विकल्पमे कोन बात देखायल गेल?

क. मैथिली रूप आ उच्चारण-स्थानान्तरणक भेद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली रूप आ उच्चारण-स्थानान्तरणक भेद।

व्याख्या: सूचीमे कूदि, यादि, कूइद, याइद, कूद, याद, इआद विकल्प देल अछि।

प्रश्न 14474. “हँसए/हँसय” विकल्प कोन नियमक अभ्यास अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ए आ यक क्रियात्मक प्रयोग।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ए आ यक क्रियात्मक प्रयोग।

व्याख्या: सूचीमे हँसए/हँसय/हँस’ रूप अछि।

प्रश्न 14475. “नौ आकि दस/नौ किंवा दस/नौ वा दस” मे भाषा सम्पादनक प्रश्न की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संयोजक विकल्पक प्रसंगानुकूल चयन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संयोजक विकल्पक प्रसंगानुकूल चयन।

व्याख्या: सूचीमे आकि, किंवा, वा तीनू विकल्प अछि।

प्रश्न 14476. “सासु-ससुर/सास-ससुर” विकल्प कोन शब्दरूपक संरक्षण अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली पारिवारिक सम्बन्ध-शब्दक।

उत्तर: घ. मैथिली पारिवारिक सम्बन्ध-शब्दक।

व्याख्या: सूचीमे सासु-ससुर रूप देल गेल अछि।

प्रश्न 14477. “छह/सात” बनाम “छ/छः” मे कोन लेखन-नीति जुड़ल अछि?

क. संख्या-शब्दक साधारण मैथिली रूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संख्या-शब्दक साधारण मैथिली रूप।

व्याख्या: सूचीमे छह/सात विकल्पक तुलना अछि।

प्रश्न 14478. “जबाब/जवाब” विकल्प कोन भाषिक निकटता-संशोधनक उदाहरण अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हिन्दी/उर्दू निकट रूपक स्थानपर मैथिली-प्रयोग चयन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हिन्दी/उर्दू निकट रूपक स्थानपर मैथिली-प्रयोग चयन।

व्याख्या: सूचीमे जबाब आ जवाब विकल्प देल अछि।

प्रश्न 14479. “जाइत छल/जाति छल” विकल्पमे मुख्य अर्थगत सावधानी की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जाइत क्रियारूपकेँ जाति संज्ञासँ अलग राखब।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जाइत क्रियारूपकेँ जाति संज्ञासँ अलग राखब।

व्याख्या: सूचीमे जाइत छल आ जाति छलक भेद अछि।

प्रश्न 14480. “जबान/जवान” विकल्पमे अर्थ-भेद कोना देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जबान युवा अर्थमे आ जवान फौजी अर्थमे।

उत्तर: घ. जबान युवा अर्थमे आ जवान फौजी अर्थमे।

व्याख्या: सूचीमे अर्थ टिप्पणीसहित दुनू रूप देल अछि।

प्रश्न 14481. “एखन/अखने” विकल्पमे सम्पादनक मुद्दा की अछि?

क. एखन परिवारक समयवाचक रूपक सही चयन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एखन परिवारक समयवाचक रूपक सही चयन।

व्याख्या: सूचीमे एखन, अखने, अखन, एखने विकल्प अछि।

प्रश्न 14482. खण्ड १४५३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई खण्ड उच्चारण, संयोजक, संख्या, सम्बन्ध-शब्द, जबाब/जवाब, जाइत/जाति, जबान/जवान आ एखन-अखन सन रूपसभमे अर्थ-भेद आ सम्पादकीय सावधानी देखबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ई खण्ड उच्चारण, संयोजक, संख्या, सम्बन्ध-शब्द, जबाब/जवाब, जाइत/जाति, जबान/जवान आ एखन-अखन सन रूपसभमे अर्थ-भेद आ सम्पादकीय सावधानी देखबैत अछि।

व्याख्या: सूची ३१–५०क आधारपर ई सार बनल अछि।

खण्ड १४५४ : विदेह-सदेह २ — भाषा सम्पादन: सम्बन्ध-शब्द, नकार आ ध्वनि-रूप

प्रश्न 14483. “बहिन/बहिनि” विकल्प कोन शब्दरूपक प्रश्न अछि?

क. स्त्री-सम्बन्ध शब्दक मैथिली रूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री-सम्बन्ध शब्दक मैथिली रूप।

व्याख्या: सूचीमे बहिन आ बहिनि विकल्प देल अछि।

प्रश्न 14484. “नहि/नै” विकल्पमे की सम्पादकीय सावधानी अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नकारक रूप प्रसंगानुसार चुनेबाक।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नकारक रूप प्रसंगानुसार चुनेबाक।

व्याख्या: सूचीमे नहि/नै विकल्प अछि।

प्रश्न 14485. “भाय/भै/भाए” विकल्प कोन सम्बन्ध-शब्दसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. भाइ/भाय परिवारक रूपसँ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. भाइ/भाय परिवारक रूपसँ।
व्याख्या: सूचीमे भाय, भै, भाए विकल्प अछि।

प्रश्न 14486. “यावत/जावत” विकल्पमे कोन शब्द-भेद सामने अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. य-प्रारम्भ आ ज-उच्चारणक भेद।
उत्तर: घ. य-प्रारम्भ आ ज-उच्चारणक भेद।
व्याख्या: सूची यावत/जावत विकल्प दैत अछि।

प्रश्न 14487. “माय/मै/माए” विकल्पमे कोन नियमक परीक्षण अछि?
क. ए आ य/ऐ ध्वनि-संबंधी लेखन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ए आ य/ऐ ध्वनि-संबंधी लेखन।
व्याख्या: सूचीमे माय, मै, माए तुलना अछि।

प्रश्न 14488. “ओ (संयोजक) / ओऽ (सर्वनाम)” विकल्प का सिखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. एकरूप लिखाइमे अर्थ-भेदक सावधानी।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. एकरूप लिखाइमे अर्थ-भेदक सावधानी।
व्याख्या: सूचीमे ओ संयोजक आ ओऽ सर्वनाम स्पष्ट कएल अछि।

प्रश्न 14489. “पैरे/पएरे” विकल्पमे अर्थ कोन देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. on foot, पैदल अर्थ।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. on foot, पैदल अर्थ।
व्याख्या: सूचीमे पैरे शब्दक अंग्रेजी अर्थ टिप्पणी देल अछि।

प्रश्न 14490. “पुत्रीक” रूप कोन प्रकारक व्याकरणिक सम्बन्ध सूचित करैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सम्बन्धकारक/षष्ठी रूप।
उत्तर: घ. सम्बन्धकारक/षष्ठी रूप।
व्याख्या: सूचीमे पुत्रीक स्वतंत्र बिन्दु रूपमे देल गेल अछि।

प्रश्न 14491. “दिनुका/दिनका” विकल्प कोन समय-संबंधी विशेषणक चयन अछि?

क. दिनसँ बनल विशेषणरूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिनसँ बनल विशेषणरूप।

व्याख्या: सूचीमे दिनुका आ दिनका तुलना अछि।

प्रश्न 14492. खण्ड १४५४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बहिनि, नकार, भाय-माय, यावत, ओ संयोजक/सर्वनाम, पैरे, पुत्रीक आ दिनुका सन रूपसभ भाषा सम्पादनमे अर्थ, ध्वनि आ व्याकरणिक सम्बन्धक सावधानी सिखबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बहिनि, नकार, भाय-माय, यावत, ओ संयोजक/सर्वनाम, पैरे, पुत्रीक आ दिनुका सन रूपसभ भाषा सम्पादनमे अर्थ, ध्वनि आ व्याकरणिक सम्बन्धक सावधानी सिखबैत अछि।

व्याख्या: सूची ५१–७५क संकेत एहि खण्डमे समेटल गेल अछि।

खण्ड १४५५ : विदेह-सदेह २ — भाषा सम्पादन: ध्वनि-चिह्न, लोक-रूप आ अशुद्धि-चयन

प्रश्न 14493. “चिन्ह”क स्थानपर सूचीमे कोन रूप देल गेल?

क. चेन्ह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेन्ह।

व्याख्या: सूचीमे “चेन्ह चिन्ह(अशुद्ध)” लिखल अछि।

प्रश्न 14494. “छूबि” बिन्दु कोन प्रकारक रूप-संरक्षण सूचित करैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ह्रस्व इकारान्त मैथिली रूप।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ह्रस्व इकारान्त मैथिली रूप।

व्याख्या: सूचीमे छूबि स्वतंत्र रूपमे आएल अछि।

प्रश्न 14495. “पुबारि/पुबाइ” विकल्प कोन दिशासूचक रूपसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पूरब/पूर्व दिशा सम्बन्धी रूप।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पूरब/पूर्व दिशा सम्बन्धी रूप।

व्याख्या: सूचीमे पुबारि आ पुबाइ विकल्प देल अछि।

प्रश्न 14496. “झगड़ा-झाँटी/झगड़ा-झाँटि” मे कोन प्रत्यय-सावधानी अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्त्य इकार आ ईकारक भेद।

उत्तर: घ. अन्त्य इकार आ ईकारक भेद।

व्याख्या: सूचीमे झाँटी/झाँटि तुलना अछि।

प्रश्न 14497. “खेलएबाक/खेलेबाक/खेलाएबाक” विकल्पमे कोन क्रियात्मक प्रश्न अछि?

क. खेल क्रियासँ causative/कराउ रूपक लेखन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खेल क्रियासँ causative/कराउ रूपक लेखन।

व्याख्या: सूचीमे खेलएबाक, खेलेबाक, खेलाएबाक विकल्प अछि।

प्रश्न 14498. “बुझल/बूझल” विकल्पमे कखन अर्थ-भेद सम्भव कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बूझल संबोधन अर्थमे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बूझल संबोधन अर्थमे।

व्याख्या: सूचीमे बुझल/बूझल आ बूझल संबोधन अर्थमे अलग देल अछि।

प्रश्न 14499. “निन्न/निन्द” विकल्प कोन लोक-रूपक चयन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नींद/निद्रा सम्बन्धी मैथिली रूप।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नींद/निद्रा सम्बन्धी मैथिली रूप।

व्याख्या: सूचीमे निन्न आ निन्द तुलना अछि।

प्रश्न 14500. “बिनु/बिन” विकल्पमे की चुनबाक अभ्यास अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्राचीन/प्रचलित अव्ययरूपक।

उत्तर: घ. प्राचीन/प्रचलित अव्ययरूपक।

व्याख्या: सूचीमे बिनु आ बिन तुलना अछि।

प्रश्न 14501. “छत पर आबि जाइ” बिन्दु ककर संकेत अछि?

क. वाक्य-अन्तमे जाइ रूपक प्रसंग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वाक्य-अन्तमे जाइ रूपक प्रसंग।

व्याख्या: सूचीमे जाइ संबंधी अलग बिन्दु अछि।

प्रश्न 14502. खण्ड १४५५क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चेन्ह, छूबि, पुबारि, झाँटी/झाँटि, खेलएबाक, बुझल/बूझल, निन्न, बिनु आ जाइ सन रूपसभ भाषिक सूक्ष्मता आ अर्थ-भेद सिखबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चेन्ह, छूबि, पुबारि, झाँटी/झाँटि, खेलएबाक, बुझल/बूझल, निन्न, बिनु आ जाइ सन रूपसभ भाषिक सूक्ष्मता आ अर्थ-भेद सिखबैत अछि।

व्याख्या: सूची ७६–१०५क मुख्य संकेत एहि खण्डमे समेटल अछि।

खण्ड १४५६ : विदेह-सदेह २ — भाषा सम्पादन: क्रियारूप आ अर्थ-भिन्नता

प्रश्न 14503. “शिकाइत/शिकायत” विकल्पमे भाषा सम्पादनक मुद्दा की अछि?
क. मैथिलीकरण आ बाहरी रूपक भेद।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिलीकरण आ बाहरी रूपक भेद।
व्याख्या: सूचीमे शिकाइत आ शिकायत तुलना अछि।

प्रश्न 14504. “पढ़/पढ” विकल्प कोन ध्वनि-चिह्नसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ढ़/ढक भेदसँ।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. ढ़/ढक भेदसँ।
व्याख्या: सूचीमे पढ़ आ पढ तुलना अछि।

प्रश्न 14505. “राकस/राकश” विकल्पमे कोन शब्दरूप चुनेबाक बात अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लोक-प्रचलित मैथिली रूप।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लोक-प्रचलित मैथिली रूप।
व्याख्या: सूचीमे राकस आ राकश विकल्प अछि।

प्रश्न 14506. “अउरदा/औरदा” विकल्पमे कोन ध्वनि-लेखन प्रश्न अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अउ/औ ध्वनिक भेद।
उत्तर: घ. अउ/औ ध्वनिक भेद।
व्याख्या: सूचीमे अउरदा आ औरदा तुलना अछि।

प्रश्न 14507. “बुझेलन्हि” सूचीमे कोन अर्थ टिप्पणीसहित देल गेल?
क. got understand अर्थात बुझबाक अर्थ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. got understand अर्थात बुझबाक अर्थ।
व्याख्या: सूचीमे बुझेलन्हि लेल अर्थ टिप्पणी अछि।

प्रश्न 14508. “बुझएलन्हि/बुझयलन्हि” कोन अर्थसँ अलग कएल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. understood himself अर्थात स्वयं बुझल।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. understood himself अर्थात स्वयं बुझल।
व्याख्या: सूचीमे बुझएलन्हि/बुझयलन्हि लेल ई अर्थ-सूचना अछि।

प्रश्न 14509. “चलि/चल” विकल्पमे सम्पादकीय सावधानी की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. ह्रस्व इकारान्त क्रियारूप सुरक्षित राखब।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. ह्रस्व इकारान्त क्रियारूप सुरक्षित राखब।
व्याख्या: सूचीमे चलि आ चल विकल्प अछि।

प्रश्न 14510. “कैक/कएक/कइएक” विकल्प कोन संख्या-सूचक रूपक प्रश्न अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. कतेक/कैक प्रकारक परिमाणवाचक शब्द।
उत्तर: घ. कतेक/कैक प्रकारक परिमाणवाचक शब्द।
व्याख्या: सूचीमे तीनू रूप देल अछि।

प्रश्न 14511. “ओजन/वजन” विकल्पमे कोन भाषाई रूपान्तर देखा रहल अछि?
क. व ध्वनिक ब/ओ निकट उच्चारण आ शब्दरूपक भेद।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. व ध्वनिक ब/ओ निकट उच्चारण आ शब्दरूपक भेद।
व्याख्या: सूचीमे ओजन आ वजन तुलना अछि।

प्रश्न 14512. खण्ड १४५६क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. शिकाइत, पढ़, राकस, अउरदा, बुझेलन्हि/बुझएलन्हि, चलि, कैक आ ओजन सन रूपसभमे अर्थ-भिन्नता, लोक-रूप आ ध्वनि-लेखनक अभ्यास अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. शिकाइत, पढ़, राकस, अउरदा, बुझेलन्हि/बुझएलन्हि, चलि, कैक आ ओजन सन रूपसभमे अर्थ-भिन्नता, लोक-रूप आ ध्वनि-लेखनक अभ्यास अछि।
व्याख्या: सूची १०६–१३३क आधारपर ई प्रश्न बनल अछि।

खण्ड १४५७ : विदेह-सदेह २ — भाषा सम्पादन: नकार, कर्ता-रूप आ व्यवहारिक शब्द

प्रश्न 14513. “नञ/ने” विकल्पमे की भेद अभ्यासमे अछि?
क. नकारक रूपक प्रसंगानुसार प्रयोग।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नकारक रूपक प्रसंगानुसार प्रयोग।
व्याख्या: सूचीमे नञ/ने आ बच्चा नञ/ने पिचा जाय सन उदाहरण अछि।

प्रश्न 14514. “तखन ने/नञ कहैत अछि” उदाहरण कोन बात देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. नकार-रूप अर्थ आ वाक्य-प्रसंगसँ बदलैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. नकार-रूप अर्थ आ वाक्य-प्रसंगसँ बदलैत अछि।
व्याख्या: सूचीमे तखन ने कहैत अछि प्रकारक उदाहरण अछि।

प्रश्न 14515. “कतेक गोटे/कताक गोटे” विकल्प कोन परिमाणवाचक संरचनासँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गोटे द्वारा व्यक्ति-गणनाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गोटे द्वारा व्यक्ति-गणनाक।
व्याख्या: सूचीमे कतेक गोटे आ कताक गोटे तुलना अछि।

प्रश्न 14516. “कमाइ-धमाइ/कमाई-धमाई” विकल्पमे कोन प्रत्यय-रूप देखल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आइ बनाम आईक भेद।
उत्तर: घ. आइ बनाम आईक भेद।
व्याख्या: सूचीमे कमाइ-धमाइ आ कमाई-धमाई तुलना अछि।

प्रश्न 14517. “कुरसी/कुर्सी” विकल्पमे की सम्पादकीय संकेत अछि?
क. मैथिली-उच्चारणानुकूल रूपक चयन।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मैथिली-उच्चारणानुकूल रूपक चयन।
व्याख्या: सूचीमे कुरसी आ कुर्सी तुलना अछि।

प्रश्न 14518. “चरचा/चर्चा” विकल्प कोन शब्दरूपक प्रश्न अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. सरलीकृत मैथिली रूप आ तत्सम/हिन्दी-निकट रूपक भेद।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. सरलीकृत मैथिली रूप आ तत्सम/हिन्दी-निकट रूपक भेद।
व्याख्या: सूचीमे चरचा आ चर्चा तुलना अछि।

प्रश्न 14519. “कर्म/करम” विकल्पमे कोन सावधानी अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. तत्सम अर्थ आ लोक-रूपक भेद।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. तत्सम अर्थ आ लोक-रूपक भेद।
व्याख्या: सूचीमे कर्म करम तुलना अछि।

प्रश्न 14520. “गरमी/गर्मी” विकल्पमे भाषा सम्पादनक मुद्दा की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हिन्दी-निकट रूपक स्थानपर मैथिली रूपक चयन।
उत्तर: घ. हिन्दी-निकट रूपक स्थानपर मैथिली रूपक चयन।
व्याख्या: सूचीमे गरमी आ गर्मी तुलना अछि।

प्रश्न 14521. “दरबज्जा/दरबजा” विकल्प कोन घर-सम्बन्धी शब्दक रूपभेद अछि?

क. दरवाजा/द्वार सम्बन्धी लोकशब्द।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दरवाजा/द्वार सम्बन्धी लोकशब्द।

व्याख्या: सूचीमे दरबज्जा/दरबजा देल अछि।

प्रश्न 14522. खण्ड १४५७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नकार, गोटे, कमाइ, कुरसी, चरचा, कर्म/करम, गरमी आ दरबज्जा सन रूपसभ भाषा सम्पादनमे व्यवहारिक मैथिली शब्दरूपक सजग चयन सिखबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नकार, गोटे, कमाइ, कुरसी, चरचा, कर्म/करम, गरमी आ दरबज्जा सन रूपसभ भाषा सम्पादनमे व्यवहारिक मैथिली शब्दरूपक सजग चयन सिखबैत अछि।

व्याख्या: सूची १३५–१७०क बिन्दुसभ एहि खण्डमे समेटल अछि।

खण्ड १४५८ : विदेह-सदेह २ — भाषा सम्पादन: उच्चारण, अर्थ-भेद आ परवर्ती सूची

प्रश्न 14523. “तोँ/तूँ” विकल्पमे कोन सर्वनामिक सावधानी अछि?

क. द्वितीय पुरुष सम्बोधनक रूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. द्वितीय पुरुष सम्बोधनक रूप।

व्याख्या: सूचीमे तोँ/तूँ आ तोँहि/तोँही रूप देल अछि।

प्रश्न 14524. “सुनि” लेल सूचीमे कोन उच्चारण संकेत देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुइन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुइन।

व्याख्या: सूचीमे सुनि (उच्चारण सुइन) लिखल अछि।

प्रश्न 14525. “अछि” लेल सूचीमे कोन उच्चारण संकेत देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अइछ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अइछ।

व्याख्या: सूचीमे अछि (उच्चारण अइछ) देल अछि।

प्रश्न 14526. “लय/लए” विकल्पबारे सूचीमे की टिप्पणी अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अर्थ-परिवर्तन होइत अछि।

उत्तर: घ. अर्थ-परिवर्तन होइत अछि।

व्याख्या: सूचीमे लय/लए लेल अर्थ-परिवर्तनक सूचना अछि।

प्रश्न 14527. “कनीक/कनेक” विकल्प कोन मात्रा-सूचक शब्दसँ जुड़ल अछि?

क. थोड़/कनेक अर्थक शब्द।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. थोड़/कनेक अर्थक शब्द।

व्याख्या: सूचीमे कनीक/कनेक तुलना अछि।

प्रश्न 14528. “सबहक/सभक” विकल्पमे कोन सामूहिक सम्बन्धरूपक भेद अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सभ शब्दक षष्ठी/सम्बन्ध रूप।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सभ शब्दक षष्ठी/सम्बन्ध रूप।

व्याख्या: सूचीमे सबहक आ सभक तुलना अछि।

प्रश्न 14529. “निअम/नियम” विकल्पमे की देखायल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ध्वनि-आधारित मैथिली रूप आ संस्कृत/हिन्दी-निकट रूपक भेद।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ध्वनि-आधारित मैथिली रूप आ संस्कृत/हिन्दी-निकट रूपक भेद।

व्याख्या: सूचीमे निअम/नियम देल अछि।

प्रश्न 14530. “आकारान्तमे बिकारीक प्रयोग उचित नहि” बिन्दु कोन चिह्न-सावधानी देत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शब्दक अन्त वा बीचमे बिकारी/अपोस्ट्रोफीक अनुचित प्रयोग टारब।

उत्तर: घ. शब्दक अन्त वा बीचमे बिकारी/अपोस्ट्रोफीक अनुचित प्रयोग टारब।

व्याख्या: सूचीमे आकारान्तमे बिकारी नहि आ अपोस्ट्रोफीक बदला अवग्रहक बात अछि।

प्रश्न 14531. “केर/-क/कऽ/के” विकल्पमे कोन व्याकरणिक क्षेत्र अछि?

क. सम्बन्ध, कर्म आ क्रियान्वयी विभक्ति/कणक भेद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्बन्ध, कर्म आ क्रियान्वयी विभक्ति/कणक भेद।

व्याख्या: सूचीमे एहि रूपसभक भेद अभ्यासमे देल अछि।

प्रश्न 14532. खण्ड १४५८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. तोँ/तूँ, सुनि-सुइन, अछि-अइछ, लय/लए, कनीक/कनेक, सभक, निअम, बिकारी आ केर/-क/कऽ/के सन रूपसभ उच्चारण, अर्थ-भेद आ चिह्न-प्रयोगक सम्पादकीय पाठ देत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. तोँ/तूँ, सुनि-सुइन, अछि-अइछ, लय/लए, कनीक/कनेक, सभक, निअम, बिकारी आ केर/-क/कऽ/के सन रूपसभ उच्चारण, अर्थ-भेद आ चिह्न-प्रयोगक सम्पादकीय पाठ देत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड सूचीक परवर्ती बिन्दुसभक सार अछि।

खण्ड १४५९ : विदेह-सदेह २ — भाषा सम्पादन: आएत, जाइत, तत्त्व आ मानक रूप

प्रश्न 14533. “होएत/हएत” विकल्प कोन क्रियारूपक सम्पादन अछि?
क. भविष्यकाल/भावी रूपक।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भविष्यकाल/भावी रूपक।
व्याख्या: सूचीमे होएत/हएत देल अछि।

प्रश्न 14534. “जाएत/जएत” विकल्पमे मुख्य प्रश्न की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. जाए/जए ध्वनि-रूपक चयन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. जाए/जए ध्वनि-रूपक चयन।
व्याख्या: सूचीमे जाएत/जएत तुलना अछि।

प्रश्न 14535. “आएत/अएत/आओत” विकल्प कोन क्रियाक भावी रूपसँ जुड़ल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आब/आएल क्रियाक।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आब/आएल क्रियाक।
व्याख्या: सूचीमे आएत, अएत, आओत देल अछि।

प्रश्न 14536. “खाएत/खएत/खैत” विकल्पमे की भेद देखल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. खाय क्रियाक भविष्य/वर्तमान रूपक सूक्ष्मता।
उत्तर: घ. खाय क्रियाक भविष्य/वर्तमान रूपक सूक्ष्मता।
व्याख्या: सूचीमे तीनू रूप देल अछि।

प्रश्न 14537. “जाइत/जैतए/जइतए” विकल्प कोन गतिशील क्रियारूपक सम्पादन अछि?
क. जा क्रियासँ बनल चलैत रूप।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जा क्रियासँ बनल चलैत रूप।
व्याख्या: सूचीमे जाइत/जैतए/जइतए अछि।

प्रश्न 14538. “आएल/अएल” विकल्प कोन भूतकालीन आगमनरूपक चयन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. आब/आएल क्रियाक।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. आब/आएल क्रियाक।
व्याख्या: सूचीमे आएल/अएल परिवारक रूप देल अछि।

प्रश्न 14539. “सकै/सकए/सकय” विकल्पमे की अभ्यास अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सक क्रियाक ए/य रूप-चयन।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सक क्रियाक ए/य रूप-चयन।

व्याख्या: सूचीमे सकै, सकए, सकय देल अछि।

प्रश्न 14540. “त्त्व”क बदला “त्व”बारे स्रोत की कहैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तीन अक्षरक मेलक आवश्यकता नहि, त्व आदि उपयोग उचित।

उत्तर: घ. तीन अक्षरक मेलक आवश्यकता नहि, त्व आदि उपयोग उचित।

व्याख्या: सूचीमे महत्त्व/महत्व/कर्त्ता/कर्ता आदि संदर्भ अछि।

प्रश्न 14541. “अन्तर्राष्ट्रिय/अन्तर्राष्ट्रीय” विकल्प कोन स्तरक शब्दरूप अछि?

क. राष्ट्रिय/राष्ट्रीय परिवारक मानक चयन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राष्ट्रिय/राष्ट्रीय परिवारक मानक चयन।

व्याख्या: सूचीमे अन्तर्राष्ट्रिय/अन्तर्राष्ट्रीय देल अछि।

प्रश्न 14542. खण्ड १४५९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. होएत, जाएत, आएत, खाएत, जाइत, आएल, सकै, त्त्व/त्व आ अन्तर्राष्ट्रिय सन रूपसभ भविष्य, भूत, सहायक क्रिया आ संयुक्ताक्षर-सरलीकरणक मानक अभ्यास करबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. होएत, जाएत, आएत, खाएत, जाइत, आएल, सकै, त्त्व/त्व आ अन्तर्राष्ट्रिय सन रूपसभ भविष्य, भूत, सहायक क्रिया आ संयुक्ताक्षर-सरलीकरणक मानक अभ्यास करबैत अछि।

व्याख्या: सूची २६८–३००क आधारपर ई सार अछि।

खण्ड १४६० : विदेह-सदेह २ — मानक उच्चारण-लेखन: पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार

प्रश्न 14543. नेपाल आ भारतक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल शैलीक पहिल उपविषय की अछि?

क. मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन।

व्याख्या: स्रोतमे मानक उच्चारण आ लेखन शैलीक अन्तर्गत ई शीर्षक अछि।

प्रश्न 14544. मानक शैली खण्डमे पञ्चमाक्षरमे कोन-कोन अक्षर गनाओल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ङ, ञ, ण, न आ म।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ङ, ञ, ण, न आ म।

व्याख्या: स्रोतमे पञ्चमाक्षरान्तर्गत ई पाँच अक्षर देल अछि।

प्रश्न 14545. संस्कृत नियमानुसार अङ्कमे अन्तमे ङ किएक अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. क वर्गक कारणे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. क वर्गक कारणे।
व्याख्या: स्रोतमे अङ्क उदाहरणमे क वर्गक कारण ङ् आएल कहल अछि।

प्रश्न 14546. पञ्च शब्दमे ञ किएक अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. च वर्गक कारणे।
उत्तर: घ. च वर्गक कारणे।
व्याख्या: स्रोतमे पञ्च उदाहरणमे च वर्गक कारण ञ् देल अछि।

प्रश्न 14547. खण्ड शब्दमे ण किएक अबैत अछि?
क. ट वर्गक कारणे।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ट वर्गक कारणे।
व्याख्या: स्रोतमे खण्ड उदाहरणमे ट वर्गक कारण ण् देल अछि।

प्रश्न 14548. सन्धि शब्दमे न किएक अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. त वर्गक कारणे।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. त वर्गक कारणे।
व्याख्या: स्रोतमे सन्धि उदाहरणमे त वर्गक कारण न् देल अछि।

प्रश्न 14549. खम्भ शब्दमे म किएक अबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. प वर्गक कारणे।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. प वर्गक कारणे।
व्याख्या: स्रोतमे खम्भ उदाहरणमे प वर्गक कारण म् देल अछि।

प्रश्न 14550. मानक शैली अनुसार मैथिलीमे पञ्चमाक्षरक बदला अधिकांश जगह की प्रयोग देखल जाइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. अनुस्वार।
उत्तर: घ. अनुस्वार।
व्याख्या: स्रोतमे अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि रूप देल अछि।

प्रश्न 14551. पण्डित गोविन्द झाक सुझाव अनुसार तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व की लिखल जाए?

क. पञ्चमाक्षर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पञ्चमाक्षर।

व्याख्या: स्रोतमे कवर्ग, चवर्ग, टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार आ तवर्ग-पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरक सुझाव अछि।

प्रश्न 14552. खण्ड १४६०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मानक शैली पञ्चमाक्षर आ अनुस्वारक प्रयोगमे वर्गानुसार ध्वनि, लेखन-स्पष्टता, उच्चारण-दोषक सावधानी आ सुविधाजनक लेखनक संतुलन चाहैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मानक शैली पञ्चमाक्षर आ अनुस्वारक प्रयोगमे वर्गानुसार ध्वनि, लेखन-स्पष्टता, उच्चारण-दोषक सावधानी आ सुविधाजनक लेखनक संतुलन चाहैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड पञ्चमाक्षर-नियमक आधारभूत विवेचन समेटैत अछि।

खण्ड १४६१ : विदेह-सदेह २ — मानक शैली: ढ/ढ़, व/ब, य/ज आ ए/य

प्रश्न 14553. मानक शैलीमे ढ़क उच्चारण कोना कहल गेल?

क. “र् ह” जकाँ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. “र् ह” जकाँ।

व्याख्या: स्रोतमे ढ़क उच्चारण “र् ह” जकाँ कहल अछि।

प्रश्न 14554. ढ लेखबाक उदाहरणमे कोन-कोन शब्द देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ आदि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ आदि।

व्याख्या: स्रोतमे ढ वर्गक उदाहरण देल अछि।

प्रश्न 14555. ढ़ लेखबाक उदाहरणमे कोन-कोन शब्द देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा आदि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा आदि।

व्याख्या: स्रोतमे ढ़ वर्गक उदाहरण अछि।

प्रश्न 14556. ढ/ढ़ नियम अनुसार शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य/अन्तमे की अबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ढ़।

उत्तर: घ. ढ़।

व्याख्या: स्रोतमे ई सामान्य प्रवृत्ति कहल गेल अछि।

प्रश्न 14557. व/ब नियम अनुसार वक उच्चारण ब होइतो ओकरा कोना लिखबाक चाही?

क. व रूपमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे बैद्यनाथ उच्चारण भए तैं वैद्यनाथ लिखबाक चाही कहल अछि।

प्रश्न 14558. वक उदाहरणमे कोन-कोन शुद्ध लेखन देल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना।

व्याख्या: स्रोतमे एहि शब्दसभक लेखन-रूप देल अछि।

प्रश्न 14559. य/ज नियम अनुसार यक उच्चारण ज जेकाँ भए तइयो ओकरा कोना लिखबाक चाही?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. य रूपमे।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. य रूपमे।

व्याख्या: स्रोतमे यज्ञ, यदि, यमुना, युग आदि रूप लिखबाक चाही कहल अछि।

प्रश्न 14560. ए/य नियममे प्राचीन वर्तनीक उदाहरण कोन-कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए।

उत्तर: घ. कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए।

व्याख्या: स्रोतमे प्राचीन वर्तनीक ई सूची अछि।

प्रश्न 14561. ए/य नियममे नवीन वर्तनीक उदाहरण कोन-कोन अछि?

क. कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय।

व्याख्या: स्रोतमे नवीन वर्तनीक ई सूची अछि।

प्रश्न 14562. खण्ड १४६१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मानक शैली ढ/ढ़, व/ब, य/ज आ ए/यक लेखनमे उच्चारणसँ प्रभावित अशुद्ध लेखन नहि करि मानक वर्तनी सुरक्षित रखबाक आग्रह करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मानक शैली ढ/ढ़, व/ब, य/ज आ ए/यक लेखनमे उच्चारणसँ प्रभावित अशुद्ध लेखन नहि करि मानक वर्तनी सुरक्षित रखबाक आग्रह करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड ध्वनि आ वर्तनीक भेद स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड १४६२ : विदेह-सदेह २ — मानक शैली: हि/हु, ष/ख आ ध्वनि-लोप

प्रश्न 14563. हि/हु नियममे प्राचीन लेखन-परम्परामे बल देबाक लेल शब्दक पाछाँ की लगाओल जाइत छल?

क. हि आ हु।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हि आ हु।

व्याख्या: स्रोतमे हुनकहि, अपनहु, ओकरहु आदि उदाहरण अछि।

प्रश्न 14564. आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर कोन प्रयोग देखल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. एकार।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. एकार।

व्याख्या: स्रोतमे हुनके, तत्काले, चोट्टे आदि रूप देल अछि।

प्रश्न 14565. आधुनिक लेखनमे हुक स्थानपर कोन प्रयोग देखल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ओकार।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ओकार।

व्याख्या: स्रोतमे अपनो, आनो आदि रूप देल अछि।

प्रश्न 14566. ष/ख नियममे मैथिलीमे अधिकांशतः षक उच्चारण कोना होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ख जेकाँ।

उत्तर: घ. ख जेकाँ।

व्याख्या: स्रोतमे षड्यन्त्र, षोडशी, षट्कोण आदि उदाहरण अछि।

प्रश्न 14567. ध्वनि-लोपक पहिल उदाहरण कोन प्रत्ययसम्बन्धी अछि?

क. क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे पढ़ए/पढ़य गेलाह सँ पढ़ऽ गेलाह प्रकारक उदाहरण अछि।

प्रश्न 14568. पूर्वकालिक कृत आय/आए प्रत्ययमे कोन ध्वनि लुप्त भऽ जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. य वा ए।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. य वा ए।

व्याख्या: स्रोतमे खाए गेल, पठाय देब, नहाए अएलाहक अपूर्ण रूप देल अछि।

प्रश्न 14569. स्त्री प्रत्यय इक लोपक उदाहरणमे कोन वाक्य देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दोसरि मालिनि चलि गेलि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दोसरि मालिनि चलि गेलि।
व्याख्या: स्रोतमे पूर्ण आ अपूर्ण रूपक तुलना अछि।

प्रश्न 14570. वर्तमान कृदन्तक अन्तिम कोन ध्वनि लुप्त होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. त।
उत्तर: घ. त।
व्याख्या: स्रोतमे पढ़ैत अछि सँ पढ़ै अछि उदाहरण अछि।

प्रश्न 14571. क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोपक उदाहरण की अछि?
क. छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि सँ छनि, कहलनि, कहलौं, गेलऽ, नइ/नै।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि सँ छनि, कहलनि, कहलौं, गेलऽ, नइ/नै।
व्याख्या: स्रोतमे ई रूपसभ देल अछि।

प्रश्न 14572. खण्ड १४६२क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. हि/हु, षक ख-उच्चारण आ ध्वनि-लोपक नियम मैथिली लेखनमे बल, उच्चारण आ रूप-संक्षेपक मानक समझ विकसित करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. हि/हु, षक ख-उच्चारण आ ध्वनि-लोपक नियम मैथिली लेखनमे बल, उच्चारण आ रूप-संक्षेपक मानक समझ विकसित करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड ध्वनि-लोपक उपविभागसभ समेटैत अछि।

खण्ड १४६३ : विदेह-सदेह २ — ध्वनि स्थानान्तरण, हलन्त आ अकादमी शैली

प्रश्न 14573. ध्वनि स्थानान्तरण नियम विशेषतः कोन स्वर-ध्वनिसँ जुड़ल कहल गेल?
क. ह्रस्व इ आ उ।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ह्रस्व इ आ उ।
व्याख्या: स्रोतमे ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे स्थानान्तरण नियम अछि।

प्रश्न 14574. ध्वनि स्थानान्तरण उदाहरणमे “पानि”क उच्चारण कोना देल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पाइन।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पाइन।
व्याख्या: स्रोतमे शनि-शइन, पानि-पाइन, दालि-दाइल आदि देल अछि।

प्रश्न 14575. तत्सम शब्दसभमे ध्वनि स्थानान्तरण नियम लागू होइत अछि कि नहि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नहि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नहि।

व्याख्या: स्रोतमे रश्मि कैं रइश्म आ सुधांशु कैं सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।

प्रश्न 14576. हलन्त नियममे मैथिली भाषामे सामान्यतया कोन चिह्नक आवश्यकता नहि कहल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हलन्त।

उत्तर: घ. हलन्त।

व्याख्या: स्रोतमे सामान्यतया हलन्तक आवश्यकता नहि होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 14577. हलन्त नियम अनुसार तत्सम शब्दसभमे हलन्त प्रयोग कहिया कएल जाइत अछि?

क. संस्कृतसँ जहिनाक तहिना आएल शब्दमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कृतसँ जहिनाक तहिना आएल शब्दमे।

व्याख्या: स्रोतमे तत्सम शब्दमे हलन्त प्रयोगक उल्लेख अछि।

प्रश्न 14578. हलन्त नियम अनुसार पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकैं कोन प्रकारे राखल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मैथिली नियमअनुसार हलन्तविहीन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मैथिली नियमअनुसार हलन्तविहीन।

व्याख्या: स्रोतमे हलन्तविहीन रखबाक बात अछि।

प्रश्न 14579. सरलताक अनुसन्धानमे कोन सावधानी डॉ. रामावतार यादवक मतसँ जुड़ल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषाक विशेषता छाँहमे नहि पड़ए।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषाक विशेषता छाँहमे नहि पड़ए।

व्याख्या: स्रोतमे भाषाशास्त्रीक ई धारणा उद्धृत अछि।

प्रश्न 14580. मैथिली अकादमी, पटना शैलीमे प्राचीन कालसँ प्रचलित शब्द कोना लिखबाक बात अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रचलित वर्तनीमे।

उत्तर: घ. प्रचलित वर्तनीमे।

व्याख्या: स्रोतमे एखन, ठाम, जकर, अछि आदि ग्राह्य रूप देल अछि।

प्रश्न 14581. अकादमी शैलीमे भ गेल/भय गेल/भए गेल आदि रूपक स्थिति की अछि?

क. तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जा सकैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जा सकैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे वैकल्पिक रूपसभक निर्देश अछि।

प्रश्न 14582. खण्ड १४६३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ध्वनि स्थानान्तरण, हलन्त-न्यूनता, तत्सम अपवाद, भाषिक विशेषता-संरक्षण आ मैथिली अकादमीक वैकल्पिक वर्तनी मिलि मानक लेखनक व्यावहारिक आधार बनबैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ध्वनि स्थानान्तरण, हलन्त-न्यूनता, तत्सम अपवाद, भाषिक विशेषता-संरक्षण आ मैथिली अकादमीक वैकल्पिक वर्तनी मिलि मानक लेखनक व्यावहारिक आधार बनबैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड ध्वनि आ शैली-निर्देशक मुख्य नियम समेटैत अछि।

खण्ड १४६४ : विदेह-सदेह २ — उच्चारण निर्देश आ व्यवहारिक लेखन-नियम

प्रश्न 14583. उच्चारण निर्देशमे दन्त न बजैत काल जीह कतय सटैत अछि?

क. दाँतमे।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दाँतमे।

व्याख्या: स्रोतमे दन्त न लेल दाँतमे जीह सटबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 14584. उच्चारण निर्देशमे ण बजैत काल जीह कतय सटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मूर्धामे।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मूर्धामे।

व्याख्या: स्रोतमे ण लेल जीह मूर्धामे सटबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 14585. तालव्य श, मूर्धन्य ष आ दन्त स उच्चारणमे कोन भेद अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शमे तालु, षमे मूर्धा, समे दाँतसँ जीह सटैत अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शमे तालु, षमे मूर्धा, समे दाँतसँ जीह सटैत अछि।

व्याख्या: स्रोतमे तीनू ध्वनिक उच्चारण-स्थान देल अछि।

प्रश्न 14586. उच्चारण निर्देशमे मैथिलीमे वक उच्चारण कोना सेहो होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ब।

उत्तर: घ. ब।

व्याख्या: स्रोतमे वक उच्चारण ब सेहो होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 14587. उच्चारण निर्देशमे मैथिलीमे शक उच्चारण कोना सेहो होइत अछि?

क. स।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स।

व्याख्या: स्रोतमे शक उच्चारण स सेहो होइत अछि कहल अछि।

प्रश्न 14588. उच्चारण निर्देशमे ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे कतय बाजल जाइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पहिने।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पहिने।

व्याख्या: स्रोतमे देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ पहिने लिखल आ बाजल जएबाक चाही कहल अछि।

प्रश्न 14589. व्यवहारिक लेखनमे कैँ, सँ, पर आदि विभक्ति कोना लिखबाक निर्देश अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ।

व्याख्या: स्रोतमे कैँ/सँ/पर पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखबाक निर्देश अछि।

प्रश्न 14590. व्यवहारिक लेखनमे तँ, कऽ, धऽ, दऽ कोना लिखबाक निर्देश अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हटा कऽ।

उत्तर: घ. हटा कऽ।

व्याख्या: स्रोतमे तँ/कऽ/धऽ/दऽ शब्दसँ हटा कऽ लिखबाक नियम अछि।

प्रश्न 14591. व्यवहारिक लेखनमे अंकक बाद “टा” कोना लिखबाक निर्देश अछि?

क. सटा कऽ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सटा कऽ।

व्याख्या: स्रोतमे छहटा जेकाँ अंकक बाद टा सटा कऽ लिखबाक बात अछि।

प्रश्न 14592. खण्ड १४६४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उच्चारण निर्देश दन्त-मूर्धा-तालु, व/श/यक वैकल्पिक उच्चारण, ह्रस्व इ, संयुक्ताक्षर, विभक्ति-सटाव, कण-विराम आ टा-प्रयोगक व्यावहारिक नियम स्पष्ट करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उच्चारण निर्देश दन्त-मूर्धा-तालु, व/श/यक वैकल्पिक उच्चारण, ह्रस्व इ, संयुक्ताक्षर, विभक्ति-सटाव, कण-विराम आ टा-प्रयोगक व्यावहारिक नियम स्पष्ट करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड अन्तिम व्यवहारिक उच्चारण-लेखन मार्गदर्शिका समेटैत अछि।

खण्ड 1465 : विदेह-सदेह ३ — महेन्द्र कुमार मिश्र: राजनीतिक कविता आ मधेश स्वर

प्रश्न 14593. महेन्द्र कुमार मिश्रक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. राजनीतिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक कविता

व्याख्या: सूचकांकमे महेन्द्र कुमार मिश्रक रचना “राजनीतिक कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14594. “राजनीतिक कविता”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14595. “राजनीतिक कविता”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/राजनीतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/राजनीतिक

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ व्यंग्य/राजनीतिक रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14596. महेन्द्र कुमार मिश्रक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पूर्व सांसद, नेपाल

उत्तर: घ. पूर्व सांसद, नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “पूर्व सांसद, नेपाल” अछि।

प्रश्न 14597. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार महेन्द्र कुमार मिश्रक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. पूर्व सांसद, नेपाल; मधेश आन्दोलन; वीर रस; ग्राम्शी; फानोन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूर्व सांसद, नेपाल; मधेश आन्दोलन; वीर रस; ग्राम्शी; फानोन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “पूर्व सांसद, नेपाल; मधेश आन्दोलन; वीर रस; ग्राम्शी; फानोन” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14598. महेन्द्र कुमार मिश्रक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. व्यंग्य/राजनीतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. व्यंग्य/राजनीतिक

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ व्यंग्य/राजनीतिक क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14599. “राजनीतिक कविता”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक महेन्द्र कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य/राजनीतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक महेन्द्र कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य/राजनीतिक

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14600. महेन्द्र कुमार मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14601. “राजनीतिक कविता”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14602. खण्ड 1465क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. महेन्द्र कुमार मिश्रक “राजनीतिक कविता” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. महेन्द्र कुमार मिश्रक “राजनीतिक कविता” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1466 : विदेह-सदेह ३ — रोशन जनकपुरी: चप्पल, सड़क आ दलित करुणा

प्रश्न 14603. रोशन जनकपुरीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. चप्पल आ सड़क

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चप्पल आ सड़क

व्याख्या: सूचकांकमे रोशन जनकपुरीक रचना “चप्पल आ सड़क” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14604. “चप्पल आ सड़क”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14605. “चप्पल आ सड़क”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14606. रोशन जनकपुरीक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर

उत्तर: घ. जनकपुर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “जनकपुर” अछि।

प्रश्न 14607. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार रोशन जनकपुरीक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. जनकपुर; दलित/सबाल्टर्न; करुण रस; स्पिवाक; अम्बेडकर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर; दलित/सबाल्टर्न; करुण रस; स्पिवाक; अम्बेडकर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “जनकपुर; दलित/सबाल्टर्न; करुण रस; स्पिवाक; अम्बेडकर” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14608. रोशन जनकपुरीक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14609. “चप्पल आ सड़क”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक रोशन जनकपुरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक रोशन जनकपुरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14610. रोशन जनकपुरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14611. “चप्पल आ सड़क”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14612. खण्ड 1466क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रोशन जनकपुरीक “चप्पल आ सड़क” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रोशन जनकपुरीक “चप्पल आ सड़क” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1467 : विदेह-सदेह ३ — ओम कुमार झा: मधेश आन्दोलन आ वीर-कविता

प्रश्न 14613. ओम कुमार झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर

व्याख्या: सूचकांकमे ओम कुमार झाक रचना “थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14614. “थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14615. “थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14616. ओम कुमार झाक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधेश आन्दोलन

उत्तर: घ. मधेश आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “मधेश आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 14617. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार ओम कुमार झाक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. मधेश आन्दोलन; वीर रस; फानोन; ग्राम्शी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधेश आन्दोलन; वीर रस; फानोन; ग्राम्शी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “मधेश आन्दोलन; वीर रस; फानोन; ग्राम्शी” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14618. ओम कुमार झाक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14619. “थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक ओम कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक ओम कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14620. ओम कुमार झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14621. “थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14622. खण्ड 1467क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ओम कुमार झाक “थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ओम कुमार झाक “थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1468 : विदेह-सदेह ३ — प्रेम विदेह ललन: एकइसम सदीक सामाजिक व्यंग्य

प्रश्न 14623. प्रेम विदेह ललनक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. एकइसम सदीक नाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकइसम सदीक नाम

व्याख्या: सूचकांकमे प्रेम विदेह ललनक रचना “एकइसम सदीक नाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14624. “एकइसम सदीक नाम”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14625. “एकइसम सदीक नाम”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ व्यंग्य रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14626. प्रेम विदेह ललनक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. २१म सदीक सामाजिक व्यंग्य

उत्तर: घ. २१म सदीक सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “२१म सदीक सामाजिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 14627. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार प्रेम विदेह ललनक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. २१म सदीक सामाजिक व्यंग्य; बीभत्स+हास्य रस; बेन्यामिन; बाख्तिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २१म सदीक सामाजिक व्यंग्य; बीभत्स+हास्य रस; बेन्यामिन; बाख्तिन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “२१म सदीक सामाजिक व्यंग्य; बीभत्स+हास्य रस; बेन्यामिन; बाख्तिन” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14628. प्रेम विदेह ललनक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ व्यंग्य क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14629. “एकइसम सदीक नाम”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक प्रेम विदेह ललन, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक प्रेम विदेह ललन, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14630. प्रेम विदेह ललनक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14631. “एकइसम सदीक नाम”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14632. खण्ड 1468क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रेम विदेह ललनक “एकइसम सदीक नाम” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रेम विदेह ललनक “एकइसम सदीक नाम” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1469 : विदेह-सदेह ३ — सुदीप कुमार झा: प्रकृति, नारी-दृष्टि आ दूटा पद

प्रश्न 14633. सुदीप कुमार झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. दूटा पद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दूटा पद

व्याख्या: सूचकांकमे सुदीप कुमार झाक रचना “दूटा पद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14634. “दूटा पद”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14635. “दूटा पद”क उप-विधा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14636. सुदीप कुमार झाक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. प्रकृति आ नारीवादी दृष्टि
उत्तर: घ. प्रकृति आ नारीवादी दृष्टि
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “प्रकृति आ नारीवादी दृष्टि” अछि।

प्रश्न 14637. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार सुदीप कुमार झाक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?
क. प्रकृति आ नारीवादी दृष्टि; शृंगार+करुण; स्पिवाक
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रकृति आ नारीवादी दृष्टि; शृंगार+करुण; स्पिवाक
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “प्रकृति आ नारीवादी दृष्टि; शृंगार+करुण; स्पिवाक” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14638. सुदीप कुमार झाक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कविता
व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14639. “दूटा पद”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लेखक सुदीप कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लेखक सुदीप कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14640. सुदीप कुमार झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।
उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।
व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14641. “दूटा पद”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14642. खण्ड 1469क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुदीप कुमार झाक “दूटा पद” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुदीप कुमार झाक “दूटा पद” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1470 : विदेह-सदेह ३ — अयोध्या नाथ चौधरी: भूमि, सत्य आ अस्तित्ववादी स्वर

प्रश्न 14643. अयोध्या नाथ चौधरीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. एक भूमि जोड़ एक सत्य; एक परिवोधन आ शेष कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक भूमि जोड़ एक सत्य; एक परिवोधन आ शेष कविता

व्याख्या: सूचकांकमे अयोध्या नाथ चौधरीक रचना “एक भूमि जोड़ एक सत्य; एक परिवोधन आ शेष कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14644. “एक भूमि जोड़ एक सत्य; एक परिवोधन आ शेष कविता”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14645. “एक भूमि जोड़ एक सत्य; एक परिवोधन आ शेष कविता”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14646. अयोध्या नाथ चौधरीक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अस्तित्ववादी

उत्तर: घ. अस्तित्ववादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “अस्तित्ववादी” अछि।

प्रश्न 14647. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार अयोध्या नाथ चौधरीक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. अस्तित्ववादी; शान्त रस; नव्य-न्याय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्ववादी; शान्त रस; नव्य-न्याय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “अस्तित्ववादी; शान्त रस; नव्य-न्याय” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14648. अयोध्या नाथ चौधरीक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14649. “एक भूमि जोड़ एक सत्य; एक परिवोधन आ शेष कविता”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक अयोध्या नाथ चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक अयोध्या नाथ चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14650. अयोध्या नाथ चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14651. “एक भूमि जोड़ एक सत्य; एक परिवोधन आ शेष कविता”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14652. खण्ड 1470क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अयोध्या नाथ चौधरीक “एक भूमि जोड़ एक सत्य; एक परिवोधन आ शेष कविता” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अयोध्या नाथ चौधरीक “एक भूमि जोड़ एक सत्य; एक परिवोधन आ शेष कविता” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1471 : विदेह-सदेह ३ — शान्त मिश्र: क्षणिका आ सूक्ष्म पद्य-विन्यास

प्रश्न 14653. शान्त मिश्रक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. क्षणिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षणिका

व्याख्या: सूचकांकमे शान्त मिश्रक रचना “क्षणिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14654. “क्षणिका”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14655. “क्षणिका”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. क्षणिका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. क्षणिका

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ क्षणिका रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14656. शान्त मिश्रक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सूक्ष्मतावादी

उत्तर: घ. सूक्ष्मतावादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “सूक्ष्मतावादी” अछि।

प्रश्न 14657. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार शान्त मिश्रक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. सूक्ष्मतावादी; शान्त रस; हाइकू परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूक्ष्मतावादी; शान्त रस; हाइकू परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “सूक्ष्मतावादी; शान्त रस; हाइकू परम्परा” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14658. शान्त मिश्रक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. क्षणिका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. क्षणिका

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ क्षणिका क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14659. “क्षणिका”कँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक शान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक शान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14660. शान्त मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14661. “क्षणिका”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14662. खण्ड 1471क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शान्त मिश्रक “क्षणिका” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शान्त मिश्रक “क्षणिका” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1472 : विदेह-सदेह ३ — कुमार मनोज कश्यप: दोहा, विद्यापति-रेखा आ शृंगार-वीर

प्रश्न 14663. कुमार मनोज कश्यपक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. वसन्ती दोहा; निहि सुति रहब अहाँ चन्द्रित तानि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसन्ती दोहा; निहि सुति रहब अहाँ चन्द्रित तानि

व्याख्या: सूचकांकमे कुमार मनोज कश्यपक रचना “वसन्ती दोहा; निहि सुति रहब अहाँ चन्द्रित तानि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14664. “वसन्ती दोहा; निहि सुति रहब अहाँ चन्द्रित तानि”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14665. “वसन्ती दोहा; निहि सुति रहब अहाँ चन्द्रित तानि”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दोहा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दोहा

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ दोहा रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14666. कुमार मनोज कश्यपक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दोहा परम्परा

उत्तर: घ. दोहा परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “दोहा परम्परा” अछि।

प्रश्न 14667. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार कुमार मनोज कश्यपक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. दोहा परम्परा; विद्यापति परम्परा; शृंगार+वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोहा परम्परा; विद्यापति परम्परा; शृंगार+वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “दोहा परम्परा; विद्यापति परम्परा; शृंगार+वीर” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14668. कुमार मनोज कश्यपक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दोहा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दोहा

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ दोहा क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14669. “वसन्ती दोहा; निहि सुति रहब अहाँ चन्द्रित तानि”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा पद्य, उप-विधा दोहा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा पद्य, उप-विधा दोहा

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14670. कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14671. “वसन्ती दोहा; निहि सुति रहब अहाँ चन्द्रित तानि”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14672. खण्ड 1472क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुमार मनोज कश्यपक “वसन्ती दोहा; निहि सुति रहब अहाँ चन्द्रित तानि” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुमार मनोज कश्यपक “वसन्ती दोहा; निहि सुति रहब अहाँ चन्द्रित तानि” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1473 : विदेह-सदेह ३ — कल्पना शरण: हेरायल सखी आ नारी स्वर

प्रश्न 14673. कल्पना शरणक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. एकटा हेरायल सखी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा हेरायल सखी

व्याख्या: सूचकांकमे कल्पना शरणक रचना “एकटा हेरायल सखी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14674. “एकटा हेरायल सखी”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14675. “एकटा हेरायल सखी”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14676. कल्पना शरणक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 14677. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार कल्पना शरणक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. नारी स्वर; सखी-परम्परा; करुण+शृंगार; स्पिवाक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर; सखी-परम्परा; करुण+शृंगार; स्पिवाक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “नारी स्वर; सखी-परम्परा; करुण+शृंगार; स्पिवाक” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14678. कल्पना शरणक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14679. “एकटा हेरायल सखी”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक कल्पना शरण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक कल्पना शरण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14680. कल्पना शरणक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14681. “एकटा हेरायल सखी”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14682. खण्ड 1473क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कल्पना शरणक “एकटा हेरायल सखी” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कल्पना शरणक “एकटा हेरायल सखी” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1474 : विदेह-सदेह ३ — बिनीत ठाकुर: गीत आ शृंगार परम्परा

प्रश्न 14683. बिनीत ठाकुरक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांकमे बिनीत ठाकुरक रचना “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14684. “गीत”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14685. “गीत”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ गीत रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14686. बिनीत ठाकुरक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गीत परम्परा

उत्तर: घ. गीत परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “गीत परम्परा” अछि।

प्रश्न 14687. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार बिनीत ठाकुरक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. गीत परम्परा; शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत परम्परा; शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “गीत परम्परा; शृंगार” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14688. बिनीत ठाकुरक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गीत

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ गीत क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14689. “गीत”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक बिनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक बिनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14690. बिनीत ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14691. “गीत”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14692. खण्ड 1474क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बिनीत ठाकुरक “गीत” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बिनीत ठाकुरक “गीत” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1475 : विदेह-सदेह ३ — सतीश चन्द्र झा: जीवन-कविता आ करुण-शान्त भाव

प्रश्न 14693. सतीश चन्द्र झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. ई जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई जीवन

व्याख्या: सूचकांकमे सतीश चन्द्र झाक रचना “ई जीवन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14694. “ई जीवन”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14695. “ई जीवन”क उप-विधा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14696. सतीश चन्द्र झाक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जीवन-कविता
उत्तर: घ. जीवन-कविता
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “जीवन-कविता” अछि।

प्रश्न 14697. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार सतीश चन्द्र झाक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?
क. जीवन-कविता; करुण+शान्त
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जीवन-कविता; करुण+शान्त
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “जीवन-कविता; करुण+शान्त” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14698. सतीश चन्द्र झाक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कविता
व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14699. “ई जीवन”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14700. सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।
उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।
व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14701. “ई जीवन”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14702. खण्ड 1475क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सतीश चन्द्र झाक “ई जीवन” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सतीश चन्द्र झाक “ई जीवन” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1476 : विदेह-सदेह ३ — बी.के. कर्ण: खेल-पहचान आ मिथिलाक ओलम्पिक स्वप्न

प्रश्न 14703. बी.के. कर्णक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल

व्याख्या: सूचकांकमे बी.के. कर्णक रचना “मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14704. “मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14705. “मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14706. बी.के. कर्णक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. खेल-पहचान

उत्तर: घ. खेल-पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “खेल-पहचान” अछि।

प्रश्न 14707. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार बी.के. कर्णक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. खेल-पहचान; वीर रस; बूर्ध्यू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खेल-पहचान; वीर रस; बूर्ध्यू

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “खेल-पहचान; वीर रस; बूर्ध्यू” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14708. बी.के. कर्णक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14709. “मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक बी.के. कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक बी.के. कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14710. बी.के. कर्णक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14711. “मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14712. खण्ड 1476क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बी.के. कर्णक “मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बी.के. कर्णक “मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1477 : विदेह-सदेह ३ — सुबोध ठाकुर: गाम-प्रेम आ रहबाक संकल्प

प्रश्न 14713. सुबोध ठाकुरक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हम गामेमे रहबइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम गामेमे रहबइ

व्याख्या: सूचकांकमे सुबोध ठाकुरक रचना “हम गामेमे रहबइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14714. “हम गामेमे रहबइ”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14715. “हम गामेमे रहबइ”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14716. सुबोध ठाकुरक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्राम-प्रेम

उत्तर: घ. ग्राम-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “ग्राम-प्रेम” अछि।

प्रश्न 14717. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार सुबोध ठाकुरक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. ग्राम-प्रेम; वात्सल्य+शान्त; विदेह रूपरेखा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्राम-प्रेम; वात्सल्य+शान्त; विदेह रूपरेखा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “ग्राम-प्रेम; वात्सल्य+शान्त; विदेह रूपरेखा” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14718. सुबोध ठाकुरक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14719. “हम गामेमे रहबइ”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक सुबोध ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक सुबोध ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14720. सुबोध ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14721. “हम गामेमे रहबइ”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14722. खण्ड 1477क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुबोध ठाकुरक “हम गामेमे रहबइ” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुबोध ठाकुरक “हम गामेमे रहबइ” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1478 : विदेह-सदेह ३ — निमिष झा: असमर्पित उन्माद, बुद्ध आ आतंक

प्रश्न 14723. निमिष झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. असमर्पित उन्माद; बुद्ध आ आतंक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असमर्पित उन्माद; बुद्ध आ आतंक

व्याख्या: सूचकांकमे निमिष झाक रचना “असमर्पित उन्माद; बुद्ध आ आतंक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14724. “असमर्पित उन्माद; बुद्ध आ आतंक”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14725. “असमर्पित उन्माद; बुद्ध आ आतंक”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14726. निमिष झाक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वैयक्तिक उत्कंठा आ दार्शनिक स्वर

उत्तर: घ. वैयक्तिक उत्कंठा आ दार्शनिक स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “वैयक्तिक उत्कंठा आ दार्शनिक स्वर” अछि।

प्रश्न 14727. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार निमिष झाक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. वैयक्तिक उत्कंठा आ दार्शनिक स्वर; बेन्यामिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वैयक्तिक उत्कंठा आ दार्शनिक स्वर; बेन्यामिन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “वैयक्तिक उत्कंठा आ दार्शनिक स्वर; बेन्यामिन” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14728. निमिष झाक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14729. “असमर्पित उन्माद; बुद्ध आ आतंक”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक निमिष झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक निमिष झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14730. निमिष झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14731. “असमर्पित उन्माद; बुद्ध आ आतंक”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14732. खण्ड 1478क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. निमिष झाक “असमर्पित उन्माद; बुद्ध आ आतंक” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. निमिष झाक “असमर्पित उन्माद; बुद्ध आ आतंक” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1479 : विदेह-सदेह ३ — कामिनी कामायनी: चन्दा आ नारी-शृंगार स्वर

प्रश्न 14733. कामिनी कामायनीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. चन्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चन्दा

व्याख्या: सूचकांकमे कामिनी कामायनीक रचना “चन्दा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14734. “चन्दा”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14735. “चन्दा”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14736. कामिनी कामायनीक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 14737. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार कामिनी कामायनीक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. नारी स्वर; शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर; शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “नारी स्वर; शृंगार” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14738. कामिनी कामायनीक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14739. “चन्दा”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14740. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14741. “चन्दा”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14742. खण्ड 1479क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कामिनी कामायनीक “चन्दा” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कामिनी कामायनीक “चन्दा” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1480 : विदेह-सदेह ३ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: लोरी, अतीत आ आस

प्रश्न 14743. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. लोरी; अतीत; आस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोरी; अतीत; आस

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक रचना “लोरी; अतीत; आस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14744. “लोरी; अतीत; आस”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14745. “लोरी; अतीत; आस”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/लोरी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/लोरी

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता/लोरी रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14746. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य आ स्मृति

उत्तर: घ. बाल साहित्य आ स्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “बाल साहित्य आ स्मृति” अछि।

प्रश्न 14747. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार डॉ. शम्भु कुमार सिंहक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. बाल साहित्य आ स्मृति; वात्सल्य+करुण+शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य आ स्मृति; वात्सल्य+करुण+शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “बाल साहित्य आ स्मृति; वात्सल्य+करुण+शान्त” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14748. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता/लोरी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता/लोरी

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता/लोरी क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14749. “लोरी; अतीत; आस”कैं पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लोरी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लोरी

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14750. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकैं संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकैं संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14751. “लोरी; अतीत; आस”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14752. खण्ड 1480क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “लोरी; अतीत; आस” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकैं जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “लोरी; अतीत; आस” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकैं जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1481 : विदेह-सदेह ३ — निशा भा झा: भगवती गीत आ लोकगीत-संकलन

प्रश्न 14753. निशा भा झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. भगवती गीत (लोकगीत संकलन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भगवती गीत (लोकगीत संकलन)

व्याख्या: सूचकांकमे निशा भा झाक रचना “भगवती गीत (लोकगीत संकलन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14754. “भगवती गीत (लोकगीत संकलन)”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकैं पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14755. “भगवती गीत (लोकगीत संकलन)”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोकगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोकगीत

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ लोकगीत रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14756. निशा भा झाक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अभिलेखीकरण

उत्तर: घ. अभिलेखीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “अभिलेखीकरण” अछि।

प्रश्न 14757. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार निशा भा झाक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. अभिलेखीकरण; भगवती लोकगीत; बेन्यामिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिलेखीकरण; भगवती लोकगीत; बेन्यामिन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “अभिलेखीकरण; भगवती लोकगीत; बेन्यामिन” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14758. निशा भा झाक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोकगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोकगीत

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ लोकगीत क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14759. “भगवती गीत (लोकगीत संकलन)”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक निशा भा झा, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक निशा भा झा, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14760. निशा भा झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14761. “भगवती गीत (लोकगीत संकलन)”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14762. खण्ड 1481क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. निशा भा झाक “भगवती गीत (लोकगीत संकलन)” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. निशा भा झाक “भगवती गीत (लोकगीत संकलन)” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1482 : विदेह-सदेह ३ — विवेकानन्द झा: कविता, सुजाता आ चान-चारी

प्रश्न 14763. विवेकानन्द झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कविता आ की सुजाता; चान आ चारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता आ की सुजाता; चान आ चारी

व्याख्या: सूचकांकमे विवेकानन्द झाक रचना “कविता आ की सुजाता; चान आ चारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14764. “कविता आ की सुजाता; चान आ चारी”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14765. “कविता आ की सुजाता; चान आ चारी”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14766. विवेकानन्द झाक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर

उत्तर: घ. कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर” अछि।

प्रश्न 14767. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार विवेकानन्द झाक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14768. विवेकानन्द झाक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14769. “कविता आ की सुजाता; चान आ चारी”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक विवेकानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक विवेकानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14770. विवेकानन्द झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14771. “कविता आ की सुजाता; चान आ चारी”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14772. खण्ड 1482क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विवेकानन्द झाक “कविता आ की सुजाता; चान आ चारी” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विवेकानन्द झाक “कविता आ की सुजाता; चान आ चारी” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1483 : विदेह-सदेह ३ — मणिकान्त मिश्र “मनिष”: मिथिला वन्दना आ क्षेत्रीय पहचान

प्रश्न 14773. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मिथिला वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला वन्दना

व्याख्या: सूचकांकमे मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क रचना “मिथिला वन्दना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14774. “मिथिला वन्दना”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14775. “मिथिला वन्दना”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14776. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वन्दना परम्परा

उत्तर: घ. वन्दना परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “वन्दना परम्परा” अछि।

प्रश्न 14777. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. वन्दना परम्परा; भक्ति+शान्त; क्षेत्रीय पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वन्दना परम्परा; भक्ति+शान्त; क्षेत्रीय पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “वन्दना परम्परा; भक्ति+शान्त; क्षेत्रीय पहचान” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14778. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14779. “मिथिला वन्दना”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक मणिकान्त मिश्र 'मनिष', विधा पद्य, उप-विधा कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक मणिकान्त मिश्र 'मनिष', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14780. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14781. “मिथिला वन्दना”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14782. खण्ड 1483क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क “मिथिला वन्दना” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क “मिथिला वन्दना” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1484 : विदेह-सदेह ३ — आशीष अनचिन्हार: गजल, गद्य-कविता आ आखर आन्दोलन

प्रश्न 14783. आशीष अनचिन्हारक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गजल; किछु गद्य कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल; किछु गद्य कविता

व्याख्या: सूचकांकमे आशीष अनचिन्हारक रचना “गजल; किछु गद्य कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14784. “गजल; किछु गद्य कविता”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

प्रश्न 14785. “गजल; किछु गद्य कविता”क उप-विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/गद्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/गद्य कविता

व्याख्या: सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ गजल/गद्य कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

प्रश्न 14786. आशीष अनचिन्हारक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सहायक सम्पादक, विदेह

उत्तर: घ. सहायक सम्पादक, विदेह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत “सहायक सम्पादक, विदेह” अछि।

प्रश्न 14787. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार आशीष अनचिन्हारक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

क. सहायक सम्पादक, विदेह; अनचिन्हार आखर आन्दोलन; बाखिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सहायक सम्पादक, विदेह; अनचिन्हार आखर आन्दोलन; बाखिन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन “सहायक सम्पादक, विदेह; अनचिन्हार आखर आन्दोलन; बाखिन” रूपमे भेटैत अछि।

प्रश्न 14788. आशीष अनचिन्हारक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजल/गद्य कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजल/गद्य कविता

व्याख्या: उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ गजल/गद्य कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

प्रश्न 14789. “गजल; किछु गद्य कविता”केँ पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल/गद्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल/गद्य कविता

व्याख्या: सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

प्रश्न 14790. आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

उत्तर: घ. रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।

व्याख्या: ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

प्रश्न 14791. “गजल; किछु गद्य कविता”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

प्रश्न 14792. खण्ड 1484क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आशीष अनचिन्हारक “गजल; किछु गद्य कविता” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आशीष अनचिन्हारक “गजल; किछु गद्य कविता” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

खण्ड 1485 : विदेह-सदेह ३ — वौएलाल साह: मधेशक आवाज

प्रश्न 14793. वौएलाल साहक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मधेशक आवाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधेशक आवाज

व्याख्या: सूचकांकमे वौएलाल साहक रचना “मधेशक आवाज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14794. “मधेशक आवाज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14795. “मधेशक आवाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14796. वौएलाल साहक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधेश राजनीतिक आवाज

उत्तर: घ. मधेश राजनीतिक आवाज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधेश राजनीतिक आवाज” अछि।

प्रश्न 14797. वौएलाल साहक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मधेश राजनीतिक आवाज; फानन; वीर आ रौद्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधेश राजनीतिक आवाज; फानन; वीर आ रौद्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मधेश राजनीतिक आवाज; फानन; वीर आ रौद्र” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14798. “मधेशक आवाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वौएलाल साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वौएलाल साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14799. वौएलाल साहक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14800. “मधेशक आवाज”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14801. वौएलाल साहक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14802. खण्ड 1485क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. वौएलाल साहक “मधेशक आवाज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मधेश राजनीतिक आवाज; फानन; वीर आ रौद्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. वौएलाल साहक “मधेशक आवाज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मधेश राजनीतिक आवाज; फानन; वीर आ रौद्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1486 : विदेह-सदेह ३ — सन्तोष कुमार मिश्र: हमर मीत

प्रश्न 14803. सन्तोष कुमार मिश्रक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हमर मीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर मीत

व्याख्या: सूचकांकमे सन्तोष कुमार मिश्रक रचना “हमर मीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14804. “हमर मीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14805. “हमर मीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14806. सन्तोष कुमार मिश्रक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मित्र-भाव

उत्तर: घ. मित्र-भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मित्र-भाव” अछि।

प्रश्न 14807. सन्तोष कुमार मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मित्र-भाव; मधुर रस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मित्र-भाव; मधुर रस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मित्र-भाव; मधुर रस” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14808. “हमर मीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14809. सन्तोष कुमार मिश्रक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14810. “हमर मीत”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14811. सन्तोष कुमार मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14812. खण्ड 1486क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सन्तोष कुमार मिश्रक “हमर मीत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मित्र-भाव; मधुर रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सन्तोष कुमार मिश्रक “हमर मीत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मित्र-भाव; मधुर रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1487 : विदेह-सदेह ३ — हेमांग आत्मनिकुमार देसाइ: समीकरण

प्रश्न 14813. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. समीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीकरण

व्याख्या: सूचकांकमे हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक रचना “समीकरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14814. “समीकरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14815. “समीकरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14816. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान

उत्तर: घ. गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान” अछि।

प्रश्न 14817. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान; अद्भुत रस; बूर्धू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान; अद्भुत रस; बूर्धू

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान; अद्भुत रस; बूर्धू” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14818. “समीकरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेमांग आत्मनिकुमार देसाइ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेमांग आत्मनिकुमार देसाइ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14819. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14820. “समीकरण”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14821. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14822. खण्ड 1487क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक “समीकरण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान; अद्भुत रस; बूर्ह्यू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक “समीकरण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान; अद्भुत रस; बूर्ह्यू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1488 : विदेह-सदेह ३ — अशोक चौधरी: (शीर्षकहीन)

प्रश्न 14823. अशोक चौधरीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. (शीर्षकहीन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (शीर्षकहीन)

व्याख्या: सूचकांकमे अशोक चौधरीक रचना “(शीर्षकहीन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14824. “(शीर्षकहीन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14825. “(शीर्षकहीन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14826. अशोक चौधरीक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शीर्षक-अभाव

उत्तर: घ. शीर्षक-अभाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शीर्षक-अभाव” अछि।

प्रश्न 14827. अशोक चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शीर्षक-अभाव; मौनक शक्ति; नव्य-न्याय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शीर्षक-अभाव; मौनक शक्ति; नव्य-न्याय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शीर्षक-अभाव; मौनक शक्ति; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14828. “(शीर्षकहीन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14829. अशोक चौधरीक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14830. “(शीर्षकहीन)”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14831. अशोक चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14832. खण्ड 1488क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अशोक चौधरीक “(शीर्षकहीन)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शीर्षक-अभाव; मौनक शक्ति; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अशोक चौधरीक “(शीर्षकहीन)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शीर्षक-अभाव; मौनक शक्ति; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1489 : विदेह-सदेह ३ — उपेन्द्र भगत नागवंशी: बुढ़वा

प्रश्न 14833. उपेन्द्र भगत नागवंशीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बुढ़वा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुढ़वा

व्याख्या: सूचकांकमे उपेन्द्र भगत नागवंशीक रचना “बुढ़वा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14834. “बुढ़वा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14835. “बुढ़वा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14836. उपेन्द्र भगत नागवंशीक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित स्वर

उत्तर: घ. दलित स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित स्वर” अछि।

प्रश्न 14837. उपेन्द्र भगत नागवंशीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित स्वर; करुण; अम्बेडकर; फानन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित स्वर; करुण; अम्बेडकर; फानन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित स्वर; करुण; अम्बेडकर; फानन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14838. “बुढ़वा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उपेन्द्र भगत नागवंशी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उपेन्द्र भगत नागवंशी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14839. उपेन्द्र भगत नागवंशीक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14840. “बुढ़वा”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14841. उपेन्द्र भगत नागवंशीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14842. खण्ड 1489क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उपेन्द्र भगत नागवंशीक “बुढ़वा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित स्वर; करुण; अम्बेडकर; फानन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उपेन्द्र भगत नागवंशीक “बुढ़वा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित स्वर; करुण; अम्बेडकर; फानन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1490 : विदेह-सदेह ३ — डॉ. सुरेश लाभ: इतिहास

प्रश्न 14843. डॉ. सुरेश लाभक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. इतिहास; इन्कलाब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इतिहास; इन्कलाब

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. सुरेश लाभक रचना “इतिहास; इन्कलाब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14844. “इतिहास; इन्कलाब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14845. “इतिहास; इन्कलाब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14846. डॉ. सुरेश लाभक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ऐतिहासिक आ राजनीतिक

उत्तर: घ. ऐतिहासिक आ राजनीतिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ऐतिहासिक आ राजनीतिक” अछि।

प्रश्न 14847. डॉ. सुरेश लाभक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. ऐतिहासिक आ राजनीतिक; वीर आ रौद्र; ग्राम्शी; बेन्यामिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऐतिहासिक आ राजनीतिक; वीर आ रौद्र; ग्राम्शी; बेन्यामिन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “ऐतिहासिक आ राजनीतिक; वीर आ रौद्र; ग्राम्शी; बेन्यामिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14848. “इतिहास; इन्कलाब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. सुरेश लाभ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. सुरेश लाभ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14849. डॉ. सुरेश लाभक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14850. “इतिहास; इन्कलाब”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14851. डॉ. सुरेश लाभक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14852. खण्ड 1490क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. सुरेश लाभक “इतिहास; इन्कलाब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ऐतिहासिक आ राजनीतिक; वीर आ रौद्र; ग्राम्शी; बेन्यामिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. सुरेश लाभक “इतिहास; इन्कलाब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ऐतिहासिक आ राजनीतिक; वीर आ रौद्र; ग्राम्शी; बेन्यामिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1491 : विदेह-सदेह ३ — सरस्वती चौधरी 'रचना': सम्बन्धक कोनो सू

प्रश्न 14853. सरस्वती चौधरी 'रचना'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सम्बन्धक कोनो सू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्बन्धक कोनो सू

व्याख्या: सूचकांकमे सरस्वती चौधरी 'रचना'क रचना “सम्बन्धक कोनो सू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14854. “सम्बन्धक कोनो सू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14855. “सम्बन्धक कोनो सू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14856. सरस्वती चौधरी 'रचना'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी दृष्टि

उत्तर: घ. नारी दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी दृष्टि” अछि।

प्रश्न 14857. सरस्वती चौधरी 'रचना'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी दृष्टि; वियोग-शृंगार; स्पिवाक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी दृष्टि; वियोग-शृंगार; स्पिवाक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी दृष्टि; वियोग-शृंगार; स्पिवाक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14858. “सम्बन्धक कोनो सू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सरस्वती चौधरी 'रचना', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सरस्वती चौधरी 'रचना', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14859. सरस्वती चौधरी 'रचना'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14860. “सम्बन्धक कोनो सू”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14861. सरस्वती चौधरी 'रचना'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14862. खण्ड 1491क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सरस्वती चौधरी 'रचना'क “सम्बन्धक कोनो सू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी दृष्टि; वियोग-शृंगार; स्पिवाक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सरस्वती चौधरी 'रचना'क “सम्बन्धक कोनो सू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी दृष्टि; वियोग-शृंगार; स्पिवाक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1492 : विदेह-सदेह ३ — डॉ. अजित मिश्र: मिथिला-धाम

प्रश्न 14863. डॉ. अजित मिश्रक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मिथिला-धाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला-धाम

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. अजित मिश्रक रचना “मिथिला-धाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14864. “मिथिला-धाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14865. “मिथिला-धाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14866. डॉ. अजित मिश्रक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तीर्थ-परम्परा

उत्तर: घ. तीर्थ-परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तीर्थ-परम्परा” अछि।

प्रश्न 14867. डॉ. अजित मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. तीर्थ-परम्परा; भक्ति आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीर्थ-परम्परा; भक्ति आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “तीर्थ-परम्परा; भक्ति आ शान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14868. “मिथिला-धाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अजित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अजित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14869. डॉ. अजित मिश्रक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14870. “मिथिला-धाम”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14871. डॉ. अजित मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14872. खण्ड 1492क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. अजित मिश्रक “मिथिला-धाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “तीर्थ-परम्परा; भक्ति आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. अजित मिश्रक “मिथिला-धाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “तीर्थ-परम्परा; भक्ति आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1493 : विदेह-सदेह ३ — सुनीलकुमार मल्लिक: घड़ी

प्रश्न 14873. सुनीलकुमार मल्लिकक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. घड़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घड़ी

व्याख्या: सूचकांकमे सुनीलकुमार मल्लिकक रचना “घड़ी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14874. “घड़ी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14875. “घड़ी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14876. सुनीलकुमार मल्लिकक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समय-कविता

उत्तर: घ. समय-कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समय-कविता” अछि।

प्रश्न 14877. सुनीलकुमार मल्लिकक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. समय-कविता; सूक्ष्मतावादी; शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समय-कविता; सूक्ष्मतावादी; शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “समय-कविता; सूक्ष्मतावादी; शान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14878. “घड़ी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुनीलकुमार मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुनीलकुमार मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14879. सुनीलकुमार मल्लिकक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14880. “घड़ी”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14881. सुनीलकुमार मल्लिकक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14882. खण्ड 1493क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुनीलकुमार मल्लिकक “घड़ी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समय-कविता; सूक्ष्मतावादी; शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुनीलकुमार मल्लिकक “घड़ी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समय-कविता; सूक्ष्मतावादी; शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1494 : विदेह-सदेह ३ — राजकमल चौधरी: बही-खाता

प्रश्न 14883. राजकमल चौधरीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता

व्याख्या: सूचकांकमे राजकमल चौधरीक रचना “बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14884. “बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14885. “बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14886. राजकमल चौधरीक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. (१९२९-१९६७)

उत्तर: घ. (१९२९-१९६७)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “(१९२९-१९६७)” अछि।

प्रश्न 14887. राजकमल चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. (१९२९-१९६७); अप्रकाशित रचना; सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन; बाख्तिन; नव्य-न्याय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (१९२९-१९६७); अप्रकाशित रचना; सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन; बाख्तिन; नव्य-न्याय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “(१९२९-१९६७); अप्रकाशित रचना; सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन; बाख्तिन; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14888. “बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजकमल चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजकमल चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14889. राजकमल चौधरीक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14890. “बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14891. राजकमल चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14892. खण्ड 1494क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजकमल चौधरीक “बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “(१९२९-१९६७); अप्रकाशित रचना; सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन; बाख्तिन; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राजकमल चौधरीक “बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “(१९२९-१९६७); अप्रकाशित रचना; सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन; बाख्तिन; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1495 : विदेह-सदेह ३ — जीवकान्त: वनदेवी

प्रश्न 14893. जीवकान्तक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. वनदेवी; जन-जन याचक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वनदेवी; जन-जन याचक

व्याख्या: सूचकांकमे जीवकान्तक रचना “वनदेवी; जन-जन याचक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14894. “वनदेवी; जन-जन याचक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14895. “वनदेवी; जन-जन याचक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14896. जीवकान्तक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म २५.०७.१९३६

उत्तर: घ. जन्म २५.०७.१९३६

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म २५.०७.१९३६” अछि।

प्रश्न 14897. जीवकान्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म २५.०७.१९३६; साहित्य अकादेमी १९९८; आदिवासी विस्थापन; फानन; स्पिवाक; अम्बेडकर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म २५.०७.१९३६; साहित्य अकादेमी १९९८; आदिवासी विस्थापन; फानन; स्पिवाक; अम्बेडकर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म २५.०७.१९३६; साहित्य अकादेमी १९९८; आदिवासी विस्थापन; फानन; स्पिवाक; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14898. “वनदेवी; जन-जन याचक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीवकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीवकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14899. जीवकान्तक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14900. “वनदेवी; जन-जन याचक”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14901. जीवकान्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14902. खण्ड 1495क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जीवकान्तक “वनदेवी; जन-जन याचक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २५.०७.१९३६; साहित्य अकादेमी १९९८; आदिवासी विस्थापन; फानन; स्पिवाक; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जीवकान्तक “वनदेवी; जन-जन याचक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २५.०७.१९३६; साहित्य अकादेमी १९९८; आदिवासी विस्थापन; फानन; स्पिवाक; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1496 : विदेह-सदेह ३ — रूपा धीरू: सर्व-पीड़ा

प्रश्न 14903. रूपा धीरूक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सर्व-पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सर्व-पीड़ा

व्याख्या: सूचकांकमे रूपा धीरूक रचना “सर्व-पीड़ा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14904. “सर्व-पीड़ा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14905. “सर्व-पीड़ा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14906. रूपा धीरूक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी सामूहिक पीड़ा

उत्तर: घ. नारी सामूहिक पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी सामूहिक पीड़ा” अछि।

प्रश्न 14907. रूपा धीरूक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी सामूहिक पीड़ा; करुण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी सामूहिक पीड़ा; करुण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी सामूहिक पीड़ा; करुण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14908. “सर्व-पीड़ा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूपा धीरू, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूपा धीरू, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14909. रूपा धीरूक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14910. “सर्व-पीड़ा”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14911. रूपा धीरूक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14912. खण्ड 1496क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रूपा धीरूक “सर्व-पीड़ा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी सामूहिक पीड़ा; करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रूपा धीरूक “सर्व-पीड़ा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी सामूहिक पीड़ा; करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1497 : विदेह-सदेह ३ — अग्रावरन देवेन्द्र: पानि अछि, मा आँखिक नोर

प्रश्न 14913. अग्रावरन देवेन्द्रक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. पानि अछि, मा आँखिक नोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पानि अछि, मा आँखिक नोर

व्याख्या: सूचकांकमे अग्रावरन देवेन्द्रक रचना “पानि अछि, मा आँखिक नोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14914. “पानि अछि, मा आँखिक नोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14915. “पानि अछि, मा आँखिक नोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14916. अग्रावरन देवेन्द्रक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अश्रु-कविता

उत्तर: घ. अश्रु-कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अश्रु-कविता” अछि।

प्रश्न 14917. अग्रावरन देवेन्द्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. अश्रु-कविता; करुण; minimalism

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अश्रु-कविता; करुण; minimalism

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “अश्रु-कविता; करुण; minimalism” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14918. “पानि अछि, मा आँखिक नोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अग्रावरन देवेन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अग्रावरन देवेन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14919. अग्रावरन देवेन्द्रक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14920. “पानि अछि, मा आँखिक नोर”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14921. अग्रावरन देवेन्द्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14922. खण्ड 1497क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अग्रावरन देवेन्द्रक “पानि अछि, मा आँखिक नोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अश्रु-कविता; करुण; minimalism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अग्रावरन देवेन्द्रक “पानि अछि, मा आँखिक नोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अश्रु-कविता; करुण; minimalism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1498 : विदेह-सदेह ३ — अमरेश यादव: आह्वान

प्रश्न 14923. अमरेश यादवक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आह्वान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आह्वान

व्याख्या: सूचकांकमे अमरेश यादवक रचना “आह्वान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14924. “आह्वान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14925. “आह्वान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14926. अमरेश यादवक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओ.बी.सी. पहचान

उत्तर: घ. ओ.बी.सी. पहचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओ.बी.सी. पहचान” अछि।

प्रश्न 14927. अमरेश यादवक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. ओ.बी.सी. पहचान; वीर; अम्बेडकर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ.बी.सी. पहचान; वीर; अम्बेडकर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “ओ.बी.सी. पहचान; वीर; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14928. “आह्वान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरेश यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरेश यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14929. अमरेश यादवक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14930. “आह्वान”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14931. अमरेश यादवक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14932. खण्ड 1498क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अमरेश यादवक “आह्वान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ओ.बी.सी. पहचान; वीर; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अमरेश यादवक “आह्वान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ओ.बी.सी. पहचान; वीर; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1499 : विदेह-सदेह ३ — श्यामल सुमन: मैथिली दोहा

प्रश्न 14933. श्यामल सुमनक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मैथिली दोहा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली दोहा

व्याख्या: सूचकांकमे श्यामल सुमनक रचना “मैथिली दोहा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14934. “मैथिली दोहा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14935. “मैथिली दोहा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. दोहा
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. दोहा
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप दोहा अछि।

प्रश्न 14936. श्यामल सुमनक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दोहा परम्परा
उत्तर: घ. दोहा परम्परा
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दोहा परम्परा” अछि।

प्रश्न 14937. श्यामल सुमनक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. दोहा परम्परा; शान्त; विदेह folk-modernism
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दोहा परम्परा; शान्त; विदेह folk-modernism
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दोहा परम्परा; शान्त; विदेह folk-modernism” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14938. “मैथिली दोहा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक श्यामल सुमन, विधा पद्य, उप-विधा दोहा
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक श्यामल सुमन, विधा पद्य, उप-विधा दोहा
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14939. श्यामल सुमनक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14940. “मैथिली दोहा”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ दोहाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ दोहाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14941. श्यामल सुमनक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14942. खण्ड 1499क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. श्यामल सुमनक “मैथिली दोहा” प्रविष्टि पद्य, दोहा आ “दोहा परम्परा; शान्त; विदेह folk-modernism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. श्यामल सुमनक “मैथिली दोहा” प्रविष्टि पद्य, दोहा आ “दोहा परम्परा; शान्त; विदेह folk-modernism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1500 : विदेह-सदेह ३ — हिमांशु चौधरी: बाल गीत

प्रश्न 14943. हिमांशु चौधरीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ

व्याख्या: सूचकांकमे हिमांशु चौधरीक रचना “बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14944. “बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14945. “बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप बाल गीत अछि।

प्रश्न 14946. हिमांशु चौधरीक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य

उत्तर: घ. बाल साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।

प्रश्न 14947. हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य; वात्सल्य; liberatory pedagogy

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य; वात्सल्य; liberatory pedagogy

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “बाल साहित्य; वात्सल्य; liberatory pedagogy” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14948. “बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा बाल गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा बाल गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14949. हिमांशु चौधरीक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14950. “बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14951. हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14952. खण्ड 1500क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हिमांशु चौधरीक “बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ” प्रविष्टि पद्य, बाल गीत आ “बाल साहित्य; वात्सल्य; liberatory pedagogy” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हिमांशु चौधरीक “बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ” प्रविष्टि पद्य, बाल गीत आ “बाल साहित्य; वात्सल्य; liberatory pedagogy” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1501 : विदेह-सदेह ३ — दयाकान्त: पाँच लाख बौआक दाम

प्रश्न 14953. दयाकान्तक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. पाँच लाख बौआक दाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाँच लाख बौआक दाम

व्याख्या: सूचकांकमे दयाकान्तक रचना “पाँच लाख बौआक दाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14954. “पाँच लाख बौआक दाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14955. “पाँच लाख बौआक दाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप व्यंग्य अछि।

प्रश्न 14956. दयाकान्तक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज-विरोधी व्यंग्य

उत्तर: घ. दहेज-विरोधी व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज-विरोधी व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 14957. दयाकान्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज-विरोधी व्यंग्य; बीभत्स आ हास्य; अम्बेडकर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज-विरोधी व्यंग्य; बीभत्स आ हास्य; अम्बेडकर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दहेज-विरोधी व्यंग्य; बीभत्स आ हास्य; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14958. “पाँच लाख बौआक दाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14959. दयाकान्तक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14960. “पाँच लाख बौआक दाम”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14961. दयाकान्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14962. खण्ड 1501क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दयाकान्तक “पाँच लाख बौआक दाम” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “दहेज-विरोधी व्यंग्य; बीभत्स आ हास्य; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दयाकान्तक “पाँच लाख बौआक दाम” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “दहेज-विरोधी व्यंग्य; बीभत्स आ हास्य; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1502 : विदेह-सदेह ३ — अजित कुमार झा: ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ

प्रश्न 14963. अजित कुमार झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ

व्याख्या: सूचकांकमे अजित कुमार झाक रचना “ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14964. “ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14965. “ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप व्यंग्य अछि।

प्रश्न 14966. अजित कुमार झाक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 14967. अजित कुमार झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य; हास्य; बाख्तिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य; हास्य; बाख्तिन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “राजनीतिक व्यंग्य; हास्य; बाख्तिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14968. “ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अजित कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अजित कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14969. अजित कुमार झाक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14970. “ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14971. अजित कुमार झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14972. खण्ड 1502क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अजित कुमार झाक “ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक व्यंग्य; हास्य; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अजित कुमार झाक “ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक व्यंग्य; हास्य; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1503 : विदेह-सदेह ३ — सुमित आनन्द: जे हरे देखू ते हरे लाइन!!

प्रश्न 14973. सुमित आनन्दक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. जे हरे देखू ते हरे लाइन!!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जे हरे देखू ते हरे लाइन!!

व्याख्या: सूचकांकमे सुमित आनन्दक रचना “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14974. “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14975. “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप व्यंग्य अछि।

प्रश्न 14976. सुमित आनन्दक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. queue-culture व्यंग्य

उत्तर: घ. queue-culture व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “queue-culture व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 14977. सुमित आनन्दक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. queue-culture व्यंग्य; हास्य आ बीभत्स; काफ्का

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. queue-culture व्यंग्य; हास्य आ बीभत्स; काफ्का

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “queue-culture व्यंग्य; हास्य आ बीभत्स; काफ्का” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14978. “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14979. सुमित आनन्दक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14980. “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14981. सुमित आनन्दक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14982. खण्ड 1503क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुमित आनन्दक “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “queue-culture व्यंग्य; हास्य आ बीभत्स; काफ्का” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुमित आनन्दक “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “queue-culture व्यंग्य; हास्य आ बीभत्स; काफ्का” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1504 : विदेह-सदेह ३ — विजया अर्याल: आजुक जीवन

प्रश्न 14983. विजया अर्यालक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आजुक जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजुक जीवन

व्याख्या: सूचकांकमे विजया अर्यालक रचना “आजुक जीवन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14984. “आजुक जीवन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14985. “आजुक जीवन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14986. विजया अर्यालक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 14987. विजया अर्यालक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल; आगामी अएना; अस्तित्ववादी; कामू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल; आगामी अएना; अस्तित्ववादी; कामू

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नेपाल; आगामी अएना; अस्तित्ववादी; कामू” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14988. “आजुक जीवन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजया अर्याल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजया अर्याल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14989. विजया अर्यालक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 14990. “आजुक जीवन”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 14991. विजया अर्यालक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 14992. खण्ड 1504क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विजया अर्यालक “आजुक जीवन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल; आगामी अएना; अस्तित्ववादी; कामू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विजया अर्यालक “आजुक जीवन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल; आगामी अएना; अस्तित्ववादी; कामू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1505 : विदेह-सदेह ३ — सरोज खिलाडी: मनक बात मनमे

प्रश्न 14993. सरोज खिलाडीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मनक बात मनमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनक बात मनमे

व्याख्या: सूचकांकमे सरोज खिलाडीक रचना “मनक बात मनमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 14994. “मनक बात मनमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 14995. “मनक बात मनमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 14996. सरोज खिलाडीक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. आगामी अएना
उत्तर: घ. आगामी अएना
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आगामी अएना” अछि।

प्रश्न 14997. सरोज खिलाडीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. आगामी अएना; नारी confessional; अएना motif; लाकाँ
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. आगामी अएना; नारी confessional; अएना motif; लाकाँ
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “आगामी अएना; नारी confessional; अएना motif; लाकाँ” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 14998. “मनक बात मनमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक सरोज खिलाडी, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक सरोज खिलाडी, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 14999. सरोज खिलाडीक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15000. “मनक बात मनमे”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15001. सरोज खिलाडीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15002. खण्ड 1505क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सरोज खिलाडीक “मनक बात मनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आगामी अएना; नारी confessional; अएना motif; लाकाँ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सरोज खिलाडीक “मनक बात मनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आगामी अएना; नारी confessional; अएना motif; लाकाँ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1506 : विदेह-सदेह ३ — उमेश मंडल: गिनियारि पिसबाक गीत

प्रश्न 15003. उमेश मंडलक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर

व्याख्या: सूचकांकमे उमेश मंडलक रचना “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15004. “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15005. “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोकगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोकगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लोकगीत अछि।

प्रश्न 15006. उमेश मंडलक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सहायक सम्पादक, विदेह

उत्तर: घ. सहायक सम्पादक, विदेह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सहायक सम्पादक, विदेह” अछि।

प्रश्न 15007. उमेश मंडलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. सहायक सम्पादक, विदेह; महिला श्रम गीत आ सोहर; बेन्यामिन; अम्बेडकर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सहायक सम्पादक, विदेह; महिला श्रम गीत आ सोहर; बेन्यामिन; अम्बेडकर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सहायक सम्पादक, विदेह; महिला श्रम गीत आ सोहर; बेन्यामिन; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15008. “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15009. उमेश मंडलक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15010. “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15011. उमेश मंडलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15012. खण्ड 1506क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उमेश मंडलक “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर” प्रविष्टि पद्य, लोकगीत आ “सहायक सम्पादक, विदेह; महिला श्रम गीत आ सोहर; बेन्यामिन; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उमेश मंडलक “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर” प्रविष्टि पद्य, लोकगीत आ “सहायक सम्पादक, विदेह; महिला श्रम गीत आ सोहर; बेन्यामिन; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1507 : विदेह-सदेह ३ — रूपेश कुमार झा 'श्रेथ': खेली सम्पत जा भुइयाँ थान

प्रश्न 15013. रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. खेली सम्पत जा भुइयाँ थान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खेली सम्पत जा भुइयाँ थान

व्याख्या: सूचकांकमे रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'क रचना “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15014. “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15015. “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15016. रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य

उत्तर: घ. बाल साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।

प्रश्न 15017. रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य; वात्सल्य; ग्रामीण बचपन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य; वात्सल्य; ग्रामीण बचपन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “बाल साहित्य; वात्सल्य; ग्रामीण बचपन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15018. “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूपेश कुमार झा 'श्रेथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूपेश कुमार झा 'श्रेथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15019. रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15020. “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15021. रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15022. खण्ड 1507क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'क “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल साहित्य; वात्सल्य; ग्रामीण बचपन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'क “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल साहित्य; वात्सल्य; ग्रामीण बचपन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1508 : विदेह-सदेह ३ — विनीत उत्पल: मनुख आ माल

प्रश्न 15023. विनीत उत्पलक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मनुख आ माल; समाजक ई रूप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनुख आ माल; समाजक ई रूप

व्याख्या: सूचकांकमे विनीत उत्पलक रचना “मनुख आ माल; समाजक ई रूप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15024. “मनुख आ माल; समाजक ई रूप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15025. “मनुख आ माल; समाजक ई रूप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15026. विनीत उत्पलक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक यथार्थ

उत्तर: घ. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 15027. विनीत उत्पलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक यथार्थ; बीभत्स; मार्क्स; commodity fetishism

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ; बीभत्स; मार्क्स; commodity fetishism

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सामाजिक यथार्थ; बीभत्स; मार्क्स; commodity fetishism” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15028. “मनुख आ माल; समाजक ई रूप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15029. विनीत उत्पलक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15030. “मनुख आ माल; समाजक ई रूप”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15031. विनीत उत्पलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15032. खण्ड 1508क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विनीत उत्पलक “मनुख आ माल; समाजक ई रूप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक यथार्थ; बीभत्स; मार्क्स; commodity fetishism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विनीत उत्पलक “मनुख आ माल; समाजक ई रूप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक यथार्थ; बीभत्स; मार्क्स; commodity fetishism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1509 : विदेह-सदेह ३ — राजदेव मंडल: आह

प्रश्न 15033. राजदेव मंडलक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति

व्याख्या: सूचकांकमे राजदेव मंडलक रचना “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15034. “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15035. “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15036. राजदेव मंडलक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ८ कविता

उत्तर: घ. ८ कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “८ कविता” अछि।

प्रश्न 15037. राजदेव मंडलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. ८ कविता; सर्वाधिक; caste आ ecology; करुण आ वीर आ बीभत्स; अम्बेडकर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ८ कविता; सर्वाधिक; caste आ ecology; करुण आ वीर आ बीभत्स; अम्बेडकर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “८ कविता; सर्वाधिक; caste आ ecology; करुण आ वीर आ बीभत्स; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15038. “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15039. राजदेव मंडलक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15040. “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15041. राजदेव मंडलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15042. खण्ड 1509क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजदेव मंडलक “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “८ कविता; सर्वाधिक; caste आ ecology; करुण आ वीर आ बीभत्स; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राजदेव मंडलक “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “८ कविता; सर्वाधिक; caste आ ecology; करुण आ वीर आ बीभत्स; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1510 : विदेह-सदेह ३ — शेफालिका वर्मा: बाजी

प्रश्न 15043. शेफालिका वर्माक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास

व्याख्या: सूचकांकमे शेफालिका वर्माक रचना “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15044. “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15045. “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15046. शेफालिका वर्माक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर

उत्तर: घ. जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर” अछि।

प्रश्न 15047. शेफालिका वर्माक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर; PhD पटना; eco-feminist; बीभत्स; स्पिवाक; नव्य-न्याय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर; PhD पटना; eco-feminist; बीभत्स; स्पिवाक; नव्य-न्याय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर; PhD पटना; eco-feminist; बीभत्स; स्पिवाक; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15048. “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15049. शेफालिका वर्माक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15050. “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15051. शेफालिका वर्माक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15052. खण्ड 1510क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शेफालिका वर्माक “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर; PhD पटना; eco-feminist; बीभत्स; स्पिवाक; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शेफालिका वर्माक “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर; PhD पटना; eco-feminist; बीभत्स; स्पिवाक; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1511 : विदेह-सदेह ३ — महाकान्त ठाकुर: की चाहलौं

प्रश्न 15053. महाकान्त ठाकुरक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. की चाहलौं; उदारीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की चाहलौं; उदारीकरण

व्याख्या: सूचकांकमे महाकान्त ठाकुरक रचना “की चाहलौं; उदारीकरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15054. “की चाहलौं; उदारीकरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15055. “की चाहलौं; उदारीकरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15056. महाकान्त ठाकुरक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. उदारीकरण-विरोधी
उत्तर: घ. उदारीकरण-विरोधी
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उदारीकरण-विरोधी” अछि।

प्रश्न 15057. महाकान्त ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. उदारीकरण-विरोधी; करुण आ बीभत्स; ग्राम्शी
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. उदारीकरण-विरोधी; करुण आ बीभत्स; ग्राम्शी
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “उदारीकरण-विरोधी; करुण आ बीभत्स; ग्राम्शी” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15058. “की चाहलौं; उदारीकरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15059. महाकान्त ठाकुरक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15060. “की चाहलौं; उदारीकरण”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15061. महाकान्त ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15062. खण्ड 1511क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. महाकान्त ठाकुरक “की चाहलौं; उदारीकरण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उदारीकरण-विरोधी; करुण आ बीभत्स; ग्राम्शी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. महाकान्त ठाकुरक “की चाहलौं; उदारीकरण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उदारीकरण-विरोधी; करुण आ बीभत्स; ग्राम्शी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1512 : विदेह-सदेह ३ — स्व. कालीकांत झा 'बुच': विरक्ति

प्रश्न 15063. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना

व्याख्या: सूचकांकमे स्व. कालीकांत झा 'बुच'क रचना “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15064. “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15065. “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15066. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. (१९३४-२००९)

उत्तर: घ. (१९३४-२००९)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “(१९३४-२००९)” अछि।

प्रश्न 15067. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. (१९३४-२००९); करियन, समस्तीपुर; मरणोत्तर; शोक-गीतात्मक आ वात्सल्य; नव्य-न्याय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (१९३४-२००९); करियन, समस्तीपुर; मरणोत्तर; शोक-गीतात्मक आ वात्सल्य; नव्य-न्याय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “(१९३४-२००९); करियन, समस्तीपुर; मरणोत्तर; शोक-गीतात्मक आ वात्सल्य; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15068. “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक स्व. कालीकांत झा 'बुच', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक स्व. कालीकांत झा 'बुच', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15069. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15070. “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15071. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15072. खण्ड 1512क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “(१९३४-२००९); करियन, समस्तीपुर; मरणोत्तर; शोक-गीतात्मक आ वात्सल्य; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “(१९३४-२००९); करियन, समस्तीपुर; मरणोत्तर; शोक-गीतात्मक आ वात्सल्य; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1513 : विदेह-सदेह ३ — मनीष ठाकुर: विरह गीत

प्रश्न 15073. मनीष ठाकुरक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?
क. विरह गीत
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. विरह गीत
व्याख्या: सूचकांकमे मनीष ठाकुरक रचना “विरह गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15074. “विरह गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पद्य
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पद्य
व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15075. “विरह गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गीत
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गीत
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप गीत अछि।

प्रश्न 15076. मनीष ठाकुरक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. वियोग परम्परा
उत्तर: घ. वियोग परम्परा
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वियोग परम्परा” अछि।

प्रश्न 15077. मनीष ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. वियोग परम्परा; शृंगार-वियोग
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वियोग परम्परा; शृंगार-वियोग
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वियोग परम्परा; शृंगार-वियोग” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15078. “विरह गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक मनीष ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक मनीष ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15079. मनीष ठाकुरक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15080. “विरह गीत”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15081. मनीष ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15082. खण्ड 1513क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनीष ठाकुरक “विरह गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “वियोग परम्परा; शृंगार-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनीष ठाकुरक “विरह गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “वियोग परम्परा; शृंगार-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1514 : विदेह-सदेह ३ — चन्द्रकान्त मिश्र: जागु-जागु मैथिल

प्रश्न 15083. चन्द्रकान्त मिश्रक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. जागु-जागु मैथिल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जागु-जागु मैथिल

व्याख्या: सूचकांकमे चन्द्रकान्त मिश्रक रचना “जागु-जागु मैथिल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15084. “जागु-जागु मैथिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15085. “जागु-जागु मैथिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15086. चन्द्रकान्त मिश्रक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. जागरण कविता
उत्तर: घ. जागरण कविता
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जागरण कविता” अछि।

प्रश्न 15087. चन्द्रकान्त मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. जागरण कविता; वीर; विदेह framework
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. जागरण कविता; वीर; विदेह framework
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जागरण कविता; वीर; विदेह framework” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15088. “जागु-जागु मैथिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक चन्द्रकान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक चन्द्रकान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15089. चन्द्रकान्त मिश्रक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15090. “जागु-जागु मैथिल”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15091. चन्द्रकान्त मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15092. खण्ड 1514क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जागरण कविता; वीर; विदेह framework” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जागरण कविता; वीर; विदेह framework” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1515 : विदेह-सदेह ३ — कुसुम ठाकुर: चुलबुली क्या बनि गेलहुँ

प्रश्न 15093. कुसुम ठाकुरक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा

व्याख्या: सूचकांकमे कुसुम ठाकुरक रचना “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15094. “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15095. “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15096. कुसुम ठाकुरक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी आत्म-खोज

उत्तर: घ. नारी आत्म-खोज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी आत्म-खोज” अछि।

प्रश्न 15097. कुसुम ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी आत्म-खोज; हास्य आ शृंगार; स्पिवाक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी आत्म-खोज; हास्य आ शृंगार; स्पिवाक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी आत्म-खोज; हास्य आ शृंगार; स्पिवाक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15098. “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15099. कुसुम ठाकुरक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15100. “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15101. कुसुम ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15102. खण्ड 1515क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुसुम ठाकुरक “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी आत्म-खोज; हास्य आ शृंगार; स्पिवाक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुसुम ठाकुरक “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी आत्म-खोज; हास्य आ शृंगार; स्पिवाक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1516 : विदेह-सदेह ३ — शिव कुमार झा 'टिल्लू': चन्द्राक बोखार

प्रश्न 15103. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप

व्याख्या: सूचकांकमे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क रचना “चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15104. “चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15105. “चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15106. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहुरंगी

उत्तर: घ. बहुरंगी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुरंगी” अछि।

प्रश्न 15107. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. बहुरंगी; ४ भिन्न रस; शृंगार आ हास्य आ रौद्र आ करुण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुरंगी; ४ भिन्न रस; शृंगार आ हास्य आ रौद्र आ करुण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “बहुरंगी; ४ भिन्न रस; शृंगार आ हास्य आ रौद्र आ करुण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15108. “चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15109. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15110. “चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15111. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15112. खण्ड 1516क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बहुरंगी; ४ भिन्न रस; शृंगार आ हास्य आ रौद्र आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बहुरंगी; ४ भिन्न रस; शृंगार आ हास्य आ रौद्र आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1517 : विदेह-सदेह ३ — धर्म विकल: बाबाक अवसान

प्रश्न 15113. धर्म विकलक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही

व्याख्या: सूचकांकमे धर्म विकलक रचना “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15114. “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15115. “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15116. धर्म विकलक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ रौद्र

उत्तर: घ. करुण आ रौद्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ रौद्र” अछि।

प्रश्न 15117. धर्म विकलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ रौद्र; अम्बेडकर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ रौद्र; अम्बेडकर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ रौद्र; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15118. “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धर्म विकल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धर्म विकल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15119. धर्म विकलक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15120. “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15121. धर्म विकलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15122. खण्ड 1517क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. धर्म विकलक “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ रौद्र; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. धर्म विकलक “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ रौद्र; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1518 : विदेह-सदेह ३ — रघुनाथ मुखिया: अनुश्रित

प्रश्न 15123. रघुनाथ मुखियाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ

व्याख्या: सूचकांकमे रघुनाथ मुखियाक रचना “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15124. “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15125. “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15126. रघुनाथ मुखियाक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य-स्वभाव-विमर्शी

उत्तर: घ. साहित्य-स्वभाव-विमर्शी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य-स्वभाव-विमर्शी” अछि।

प्रश्न 15127. रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; postmodern; बाख्तिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; postmodern; बाख्तिन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; postmodern; बाख्तिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15128. “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15129. रघुनाथ मुखियाक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15130. “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15131. रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15132. खण्ड 1518क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रघुनाथ मुखियाक “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; postmodern; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रघुनाथ मुखियाक “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; postmodern; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1519 : विदेह-सदेह ३ — लक्ष्मण झा 'सागर': चुन्नीधारी

प्रश्न 15133. लक्ष्मण झा 'सागर'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. चुन्नीधारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चुन्नीधारी

व्याख्या: सूचकांकमे लक्ष्मण झा 'सागर'क रचना “चुन्नीधारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15134. “चुन्नीधारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15135. “चुन्नीधारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15136. लक्ष्मण झा 'सागर'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सबाल्टर्न street vendor

उत्तर: घ. सबाल्टर्न street vendor

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सबाल्टर्न street vendor” अछि।

प्रश्न 15137. लक्ष्मण झा 'सागर'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. सबाल्टर्न street vendor; करुण; स्पिवाक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सबाल्टर्न street vendor; करुण; स्पिवाक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सबाल्टर्न street vendor; करुण; स्पिवाक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15138. “चुन्नीधारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक लक्ष्मण झा 'सागर', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक लक्ष्मण झा 'सागर', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15139. लक्ष्मण झा 'सागर'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15140. “चुन्नीधारी”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15141. लक्ष्मण झा 'सागर'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15142. खण्ड 1519क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लक्ष्मण झा 'सागर'क “चुन्नीधारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सबाल्टर्न street vendor; करुण; स्पिवाक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लक्ष्मण झा 'सागर'क “चुन्नीधारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सबाल्टर्न street vendor; करुण; स्पिवाक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1520 : विदेह-सदेह ३ — विभूति आनन्द: एक-दू...नओटा कविता

प्रश्न 15143. विभूति आनन्दक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)

व्याख्या: सूचकांकमे विभूति आनन्दक रचना “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15144. “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15145. “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15146. विभूति आनन्दक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी

उत्तर: घ. जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी” अछि।

प्रश्न 15147. विभूति आनन्दक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी; साहित्य अकादेमी २००६; दिनकर सम्मान २००८; शान्त आ बीभत्स; नव्य-न्याय; बाख्तिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी; साहित्य अकादेमी २००६; दिनकर सम्मान २००८; शान्त आ बीभत्स; नव्य-न्याय; बाख्तिन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी; साहित्य अकादेमी २००६; दिनकर सम्मान २००८; शान्त आ बीभत्स; नव्य-न्याय; बाख्तिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15148. “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विभूति आनन्द, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विभूति आनन्द, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15149. विभूति आनन्दक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15150. “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15151. विभूति आनन्दक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15152. खण्ड 1520क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विभूति आनन्दक “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी; साहित्य अकादेमी २००६; दिनकर सम्मान २००८; शान्त आ बीभत्स; नव्य-न्याय; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विभूति आनन्दक “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी; साहित्य अकादेमी २००६; दिनकर सम्मान २००८; शान्त आ बीभत्स; नव्य-न्याय; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1521 : विदेह-सदेह ३ — रमण कुमार सिंह: गुमशुदगी रिपोर्ट

प्रश्न 15153. रमण कुमार सिंहक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गुमशुदगी रिपोर्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुमशुदगी रिपोर्ट

व्याख्या: सूचकांकमे रमण कुमार सिंहक रचना “गुमशुदगी रिपोर्ट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15154. “गुमशुदगी रिपोर्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15155. “गुमशुदगी रिपोर्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15156. रमण कुमार सिंहक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. missing-person metaphor

उत्तर: घ. missing-person metaphor

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “missing-person metaphor” अछि।

प्रश्न 15157. रमण कुमार सिंहक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. missing-person metaphor; करुण आ अद्भुत; काफ्का

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. missing-person metaphor; करुण आ अद्भुत; काफ्का

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “missing-person metaphor; करुण आ अद्भुत; काफ्का” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15158. “गुमशुदगी रिपोर्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15159. रमण कुमार सिंहक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15160. “गुमशुदगी रिपोर्ट”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15161. रमण कुमार सिंहक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15162. खण्ड 1521क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रमण कुमार सिंहक “गुमशुदगी रिपोर्ट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “missing-person metaphor; करुण आ अद्भुत; काफ्का” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रमण कुमार सिंहक “गुमशुदगी रिपोर्ट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “missing-person metaphor; करुण आ अद्भुत; काफ्का” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1522 : विदेह-सदेह ३ — मायानाथ झा: मातृगिरा

प्रश्न 15163. मायानाथ झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मातृगिरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृगिरा

व्याख्या: सूचकांकमे मायानाथ झाक रचना “मातृगिरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15164. “मातृगिरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15165. “मातृगिरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15166. मायानाथ झाक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभाषा कविता

उत्तर: घ. मातृभाषा कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभाषा कविता” अछि।

प्रश्न 15167. मायानाथ झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृभाषा कविता; शान्त आ वात्सल्य; भाषाई पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभाषा कविता; शान्त आ वात्सल्य; भाषाई पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मातृभाषा कविता; शान्त आ वात्सल्य; भाषाई पहचान” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15168. “मातृगिरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मायानाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मायानाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15169. मायानाथ झाक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15170. “मातृगिरा”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15171. मायानाथ झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15172. खण्ड 1522क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मायानाथ झाक “मातृगिरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृभाषा कविता; शान्त आ वात्सल्य; भाषाई पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मायानाथ झाक “मातृगिरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृभाषा कविता; शान्त आ वात्सल्य; भाषाई पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1523 : विदेह-सदेह ३ — सच्चिदानन्द 'सौरभ': देखू नै...

प्रश्न 15173. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत

व्याख्या: सूचकांकमे सच्चिदानन्द 'सौरभ'क रचना “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15174. “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15175. “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15176. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. trilogy

उत्तर: घ. trilogy

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “trilogy” अछि।

प्रश्न 15177. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. trilogy; बीभत्स आ शृंगार आ करुण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. trilogy; बीभत्स आ शृंगार आ करुण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “trilogy; बीभत्स आ शृंगार आ करुण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15178. “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सच्चिदानन्द 'सौरभ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सच्चिदानन्द 'सौरभ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15179. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15180. “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15181. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15182. खण्ड 1523क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “trilogy; बीभत्स आ शृंगार आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “trilogy; बीभत्स आ शृंगार आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1524 : विदेह-सदेह ३ — अशोक दत्त: बाल गीत (३)

प्रश्न 15183. अशोक दत्तक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाल गीत (३); ओदि उपाड़

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गीत (३); ओदि उपाड़

व्याख्या: सूचकांकमे अशोक दत्तक रचना “बाल गीत (३); ओदि उपाड़” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15184. “बाल गीत (३); ओदि उपाड़”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15185. “बाल गीत (३); ओदि उपाड़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गीत/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गीत/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप बाल गीत/व्यंग्य अछि।

प्रश्न 15186. अशोक दत्तक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. बाल साहित्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 15187. अशोक दत्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य आ व्यंग्य; वात्सल्य आ हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य आ व्यंग्य; वात्सल्य आ हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “बाल साहित्य आ व्यंग्य; वात्सल्य आ हास्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15188. “बाल गीत (३); ओदि उपाड़”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा बाल गीत/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा बाल गीत/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15189. अशोक दत्तक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15190. “बाल गीत (३); ओदि उपाड़”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गीत/व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गीत/व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15191. अशोक दत्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15192. खण्ड 1524क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अशोक दत्तक “बाल गीत (३); ओदि उपाड़” प्रविष्टि पद्य, बाल गीत/व्यंग्य आ “बाल साहित्य आ व्यंग्य; वात्सल्य आ हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अशोक दत्तक “बाल गीत (३); ओदि उपाड़” प्रविष्टि पद्य, बाल गीत/व्यंग्य आ “बाल साहित्य आ व्यंग्य; वात्सल्य आ हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1525 : विदेह-सदेह 3 — शीतल झा: टी..ऽऽ..स

प्रश्न 15193. शीतल झाक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. टी..ऽऽ..स

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टी..ऽऽ..स

व्याख्या: सूचकांकमे शीतल झाक रचना “टी..ऽऽ..स” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15194. “टी..ऽऽ..स”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15195. “टी..ऽऽ..स”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल-प्रेरित

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल-प्रेरित

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप गजल-प्रेरित अछि।

प्रश्न 15196. शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 15197. शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल; एन.सी.पी. एमाले; शृंगार आ वीर; द्व्यर्थी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल; एन.सी.पी. एमाले; शृंगार आ वीर; द्व्यर्थी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नेपाल; एन.सी.पी. एमाले; शृंगार आ वीर; द्व्यर्थी” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15198. “टी..ऽऽ..स”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल-प्रेरित

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल-प्रेरित

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15199. शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15200. “टी..ऽऽ..स”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल-प्रेरितक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल-प्रेरितक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15201. शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15202. खण्ड 1525क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” प्रविष्टि पद्य, गजल-प्रेरित आ “नेपाल; एन.सी.पी. एमाले; शृंगार आ वीर; द्व्यर्थी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” प्रविष्टि पद्य, गजल-प्रेरित आ “नेपाल; एन.सी.पी. एमाले; शृंगार आ वीर; द्व्यर्थी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1526 : विदेह-सदेह 3 — शम्भु नाथ झा 'वत्स': मिथिलाक दशा

प्रश्न 15203. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मिथिलाक दशा; मोनसँ पढ़ू बढ़ू; मिथिला बचाउ; बेरोजगारीक समस्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक दशा; मोनसँ पढ़ू बढ़ू; मिथिला बचाउ; बेरोजगारीक समस्या

व्याख्या: सूचकांकमे शम्भु नाथ झा 'वत्स'क रचना “मिथिलाक दशा; मोनसँ पढ़ू बढ़ू; मिथिला बचाउ; बेरोजगारीक समस्या” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15204. “मिथिलाक दशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15205. “मिथिलाक दशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15206. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्याचार्य, वेदविद्

उत्तर: घ. साहित्याचार्य, वेदविद्

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्याचार्य, वेदविद्” अछि।

प्रश्न 15207. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्याचार्य, वेदविद्; करुण आ बीभत्स; परम्परा बनाम आधुनिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्याचार्य, वेदविद्; करुण आ बीभत्स; परम्परा बनाम आधुनिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “साहित्याचार्य, वेदविद्; करुण आ बीभत्स; परम्परा बनाम आधुनिकता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15208. “मिथिलाक दशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शम्भु नाथ झा 'वत्स', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शम्भु नाथ झा 'वत्स', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15209. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15210. “मिथिलाक दशा”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15211. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15212. खण्ड 1526क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्याचार्य, वेदविद्; करुण आ बीभत्स; परम्परा बनाम आधुनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्याचार्य, वेदविद्; करुण आ बीभत्स; परम्परा बनाम आधुनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1527 : विदेह-सदेह 3 — डॉ. योगानन्द झा: घर

प्रश्न 15213. डॉ. योगानन्द झाक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. घर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घर

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. योगानन्द झाक रचना “घर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15214. “घर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15215. “घर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15216. डॉ. योगानन्द झाक “घर” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा

उत्तर: घ. जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा” अछि।

प्रश्न 15217. डॉ. योगानन्द झाक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा; साहित्य अकादेमी अनुवाद २००५; दार्शनिक; करुण; नव्य-न्याय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा; साहित्य अकादेमी अनुवाद २००५; दार्शनिक; करुण; नव्य-न्याय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा; साहित्य अकादेमी अनुवाद २००५; दार्शनिक; करुण; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15218. “घर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15219. डॉ. योगानन्द झाक “घर” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15220. “घर”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15221. डॉ. योगानन्द झाक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15222. खण्ड 1527क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. योगानन्द झाक “घर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा; साहित्य अकादेमी अनुवाद २००५; दार्शनिक; करुण; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. योगानन्द झाक “घर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा; साहित्य अकादेमी अनुवाद २००५; दार्शनिक; करुण; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1528 : विदेह-सदेह 3 — वीरेन्द्र मल्लिक: गतिशीलता

प्रश्न 15223. वीरेन्द्र मल्लिकक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गतिशीलता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गतिशीलता

व्याख्या: सूचकांकमे वीरेन्द्र मल्लिकक रचना “गतिशीलता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15224. “गतिशीलता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15225. “गतिशीलता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15226. वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सूक्ष्मतावादी

उत्तर: घ. सूक्ष्मतावादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सूक्ष्मतावादी” अछि।

प्रश्न 15227. वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. सूक्ष्मतावादी; बाख्तिन; शान्त; self-transformation

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूक्ष्मतावादी; बाख्तिन; शान्त; self-transformation

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सूक्ष्मतावादी; बाख्तिन; शान्त; self-transformation” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15228. “गतिशीलता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वीरेन्द्र मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वीरेन्द्र मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15229. वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15230. “गतिशीलता”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15231. वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15232. खण्ड 1528क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सूक्ष्मतावादी; बाख्तिन; शान्त; self-transformation” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सूक्ष्मतावादी; बाख्तिन; शान्त; self-transformation” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1529 : विदेह-सदेह 3 — गंगेश गुंजन: राधा-१६म खेप

प्रश्न 15233. गंगेश गुंजनक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. राधा-१६म खेप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राधा-१६म खेप

व्याख्या: सूचकांकमे गंगेश गुंजनक रचना “राधा-१६म खेप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15234. “राधा-१६म खेप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15235. “राधा-१६म खेप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15236. गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. वरिष्ठ कवि
उत्तर: घ. वरिष्ठ कवि
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वरिष्ठ कवि” अछि।

प्रश्न 15237. गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. वरिष्ठ कवि; राधा श्रृंखला; नारीवादी पुनर्पाठ; शृंगार-वियोग
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वरिष्ठ कवि; राधा श्रृंखला; नारीवादी पुनर्पाठ; शृंगार-वियोग
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वरिष्ठ कवि; राधा श्रृंखला; नारीवादी पुनर्पाठ; शृंगार-वियोग” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15238. “राधा-१६म खेप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15239. गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15240. “राधा-१६म खेप”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15241. गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15242. खण्ड 1529क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वरिष्ठ कवि; राधा श्रृंखला; नारीवादी पुनर्पाठ; शृंगार-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वरिष्ठ कवि; राधा श्रृंखला; नारीवादी पुनर्पाठ; शृंगार-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1530 : विदेह-सदेह 3 — कीर्तिनारायण मिश्र: अकाल

प्रश्न 15243. कीर्तिनारायण मिश्रक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अकाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकाल

व्याख्या: सूचकांकमे कीर्तिनारायण मिश्रक रचना “अकाल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15244. “अकाल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15245. “अकाल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15246. कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अकाल व्यंग्य

उत्तर: घ. अकाल व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अकाल व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 15247. कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. अकाल व्यंग्य; करुण आ रौद्र; मार्क्स आ अम्बेडकर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकाल व्यंग्य; करुण आ रौद्र; मार्क्स आ अम्बेडकर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “अकाल व्यंग्य; करुण आ रौद्र; मार्क्स आ अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15248. “अकाल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कीर्तिनारायण मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कीर्तिनारायण मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15249. कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15250. “अकाल”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15251. कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15252. खण्ड 1530क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अकाल व्यंग्य; करुण आ रौद्र; मार्क्स आ अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अकाल व्यंग्य; करुण आ रौद्र; मार्क्स आ अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1531 : विदेह-सदेह 3 — स्व. शान्त: करू की वृद्ध अथबल छी

प्रश्न 15253. स्व. शान्तक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. करू की वृद्ध अथबल छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करू की वृद्ध अथबल छी

व्याख्या: सूचकांकमे स्व. शान्तक रचना “करू की वृद्ध अथबल छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15254. “करू की वृद्ध अथबल छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15255. “करू की वृद्ध अथबल छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15256. स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पूर्णियाँक कवि

उत्तर: घ. पूर्णियाँक कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पूर्णियाँक कवि” अछि।

प्रश्न 15257. स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. पूर्णियाँक कवि; स्मृति-आधारित; मरणोत्तर; करुण आ हास्य; नव्य-न्याय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूर्णियाँक कवि; स्मृति-आधारित; मरणोत्तर; करुण आ हास्य; नव्य-न्याय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “पूर्णियाँक कवि; स्मृति-आधारित; मरणोत्तर; करुण आ हास्य; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15258. “करू की वृद्ध अथबल छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक स्व. शान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक स्व. शान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15259. स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15260. “करू की वृद्ध अथबल छी”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15261. स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15262. खण्ड 1531क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पूर्णियाँक कवि; स्मृति-आधारित; मरणोत्तर; करुण आ हास्य; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पूर्णियाँक कवि; स्मृति-आधारित; मरणोत्तर; करुण आ हास्य; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1532 : विदेह-सदेह 3 — कालिनाथ ठाकुर: सून मिथिला चल

प्रश्न 15263. कालिनाथ ठाकुरक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सून मिथिला चल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सून मिथिला चल

व्याख्या: सूचकांकमे कालिनाथ ठाकुरक रचना “सून मिथिला चल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15264. “सून मिथिला चल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15265. “सून मिथिला चल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15266. कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी

उत्तर: घ. जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी” अछि।

प्रश्न 15267. कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी; करुण आ रौद्र; ग्राम्शी; usury व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी; करुण आ रौद्र; ग्राम्शी; usury व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी; करुण आ रौद्र; ग्राम्शी; usury व्यंग्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15268. “सून मिथिला चल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालिनाथ ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालिनाथ ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15269. कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15270. “सून मिथिला चल”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15271. कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15272. खण्ड 1532क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी; करुण आ रौद्र; ग्राम्शी; usury व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी; करुण आ रौद्र; ग्राम्शी; usury व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1533 : विदेह-सदेह 3 — अरविन्द ठाकुर 'अरबिन': गजल १-४

प्रश्न 15273. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गजल १-४

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल १-४

व्याख्या: सूचकांकमे अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क रचना “गजल १-४” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15274. “गजल १-४”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15275. “गजल १-४”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप गजल अछि।

प्रश्न 15276. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ४ गजल

उत्तर: घ. ४ गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “४ गजल” अछि।

प्रश्न 15277. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. ४ गजल; राजनीतिक आ प्रणयात्मक आ flood; विदेह गजल आन्दोलन; बाख्तिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ४ गजल; राजनीतिक आ प्रणयात्मक आ flood; विदेह गजल आन्दोलन; बाख्तिन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “४ गजल; राजनीतिक आ प्रणयात्मक आ flood; विदेह गजल आन्दोलन; बाख्तिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15278. “गजल १-४”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरविन्द ठाकुर 'अरबिन', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरविन्द ठाकुर 'अरबिन', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15279. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15280. “गजल १-४”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15281. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15282. खण्ड 1533क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “४ गजल; राजनीतिक आ प्रणयात्मक आ flood; विदेह गजल आन्दोलन; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “४ गजल; राजनीतिक आ प्रणयात्मक आ flood; विदेह गजल आन्दोलन; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1534 : विदेह-सदेह 3 — कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा): निहि बिसरैछ

प्रश्न 15283. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. निहि बिसरैछ; काँति तँ रवि छैए

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निहि बिसरैछ; काँति तँ रवि छैए

व्याख्या: सूचकांकमे कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क रचना “निहि बिसरैछ; काँति तँ रवि छैए” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15284. “निहि बिसरैछ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15285. “निहि बिसरैछ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15286. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा

उत्तर: घ. जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा” अछि।

प्रश्न 15287. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा; KV कटिहार; बाल-गरीबी कविता; बेन्यामिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा; KV कटिहार; बाल-गरीबी कविता; बेन्यामिन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा; KV कटिहार; बाल-गरीबी कविता; बेन्यामिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15288. “निहि बिसरैछ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा), विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा), विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15289. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15290. “निहि बिसरैछ”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15291. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15292. खण्ड 1534क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा; KV कटिहार; बाल-गरीबी कविता; बेन्यामिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा; KV कटिहार; बाल-गरीबी कविता; बेन्यामिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1535 : विदेह-सदेह 3 — श्री विज्ञानन्द झा: कोशीक ताण्डव

प्रश्न 15293. श्री विज्ञानन्द झाक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कोशीक ताण्डव; दहेज दानव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोशीक ताण्डव; दहेज दानव

व्याख्या: सूचकांकमे श्री विज्ञानन्द झाक रचना “कोशीक ताण्डव; दहेज दानव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15294. “कोशीक ताण्डव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15295. “कोशीक ताण्डव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15296. श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी

उत्तर: घ. कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी” अछि।

प्रश्न 15297. श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी; रौद्र आ करुण आ बीभत्स

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी; रौद्र आ करुण आ बीभत्स

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी; रौद्र आ करुण आ बीभत्स” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15298. “कोशीक ताण्डव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्री विज्ञानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्री विज्ञानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15299. श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15300. “कोशीक ताण्डव”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15301. श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15302. खण्ड 1535क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी; रौद्र आ करुण आ बीभत्स” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी; रौद्र आ करुण आ बीभत्स” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1536 : विदेह-सदेह 3 — मो. गुल हसन: सभटा चौपट भऽ गेल

प्रश्न 15303. मो. गुल हसनक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सभटा चौपट भऽ गेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सभटा चौपट भऽ गेल

व्याख्या: सूचकांकमे मो. गुल हसनक रचना “सभटा चौपट भऽ गेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15304. “सभटा चौपट भऽ गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15305. “सभटा चौपट भऽ गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप व्यंग्य अछि।

प्रश्न 15306. मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुसलिम मैथिली आवाज

उत्तर: घ. मुसलिम मैथिली आवाज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुसलिम मैथिली आवाज” अछि।

प्रश्न 15307. मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मुसलिम मैथिली आवाज; बीभत्स आ हास्य; बूर्ध्; विदेह की बहुलतावादी नीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुसलिम मैथिली आवाज; बीभत्स आ हास्य; बूर्ध्; विदेह की बहुलतावादी नीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मुसलिम मैथिली आवाज; बीभत्स आ हास्य; बूर्ध्; विदेह की बहुलतावादी नीति” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15308. “सभटा चौपट भऽ गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मो. गुल हसन, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मो. गुल हसन, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15309. मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15310. “सभटा चौपट भऽ गेल”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15311. मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15312. खण्ड 1536क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “मुसलिम मैथिली आवाज; बीभत्स आ हास्य; बूर्ध्; विदेह की बहुलतावादी नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “मुसलिम मैथिली आवाज; बीभत्स आ हास्य; बूर्ध्; विदेह की बहुलतावादी नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1537 : विदेह-सदेह 3 — मनोज कुमार मंडल: बहीन

प्रश्न 15313. मनोज कुमार मंडलक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बहीन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहीन

व्याख्या: सूचकांकमे मनोज कुमार मंडलक रचना “बहीन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15314. “बहीन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15315. “बहीन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15316. मनोज कुमार मंडलक “बहीन” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाई-बहिन

उत्तर: घ. भाई-बहिन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाई-बहिन” अछि।

प्रश्न 15317. मनोज कुमार मंडलक “बहीन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. भाई-बहिन; वात्सल्य आ करुण; औचित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाई-बहिन; वात्सल्य आ करुण; औचित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “भाई-बहिन; वात्सल्य आ करुण; औचित्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15318. “बहीन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15319. मनोज कुमार मंडलक “बहीन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15320. “बहीन”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15321. मनोज कुमार मंडलक “बहीन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15322. खण्ड 1537क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनोज कुमार मंडलक “बहीन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाई-बहिन; वात्सल्य आ करुण; औचित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनोज कुमार मंडलक “बहीन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाई-बहिन; वात्सल्य आ करुण; औचित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1538 : विदेह-सदेह 3 — आमोद कुमार झा: मैथल नइँ — छोटका

प्रश्न 15323. आमोद कुमार झाक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मैथल नइँ — छोटका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथल नइँ — छोटका

व्याख्या: सूचकांकमे आमोद कुमार झाक रचना “मैथल नइँ — छोटका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15324. “मैथल नइँ — छोटका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15325. “मैथल नइँ — छोटका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15326. आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पहचान-राजनीति

उत्तर: घ. पहचान-राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पहचान-राजनीति” अछि।

प्रश्न 15327. आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. पहचान-राजनीति; करुण आ अद्भुत; भाषाई पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पहचान-राजनीति; करुण आ अद्भुत; भाषाई पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “पहचान-राजनीति; करुण आ अद्भुत; भाषाई पहचान” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15328. “मैथल नइँ — छोटका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आमोद कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आमोद कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15329. आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15330. “मैथल नइँ — छोटका”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15331. आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15332. खण्ड 1538क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पहचान-राजनीति; करुण आ अद्भुत; भाषाई पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पहचान-राजनीति; करुण आ अद्भुत; भाषाई पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1539 : विदेह-सदेह 3 — गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक): आकाश मध्य लिखल हमर लेख

प्रश्न 15333. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आकाश मध्य लिखल हमर लेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आकाश मध्य लिखल हमर लेख

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क रचना “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15334. “आकाश मध्य लिखल हमर लेख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15335. “आकाश मध्य लिखल हमर लेख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

प्रश्न 15336. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सम्पादक-कवि

उत्तर: घ. सम्पादक-कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्पादक-कवि” अछि।

प्रश्न 15337. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. सम्पादक-कवि; साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; शान्त आ अद्भुत; विदेह founder; बाख्तिन; नव्य-न्याय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्पादक-कवि; साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; शान्त आ अद्भुत; विदेह founder; बाख्तिन; नव्य-न्याय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सम्पादक-कवि; साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; शान्त आ अद्भुत; विदेह founder; बाख्तिन; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15338. “आकाश मध्य लिखल हमर लेख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक), विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक), विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15339. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15340. “आकाश मध्य लिखल हमर लेख”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15341. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15342. खण्ड 1539क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सम्पादक-कवि; साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; शान्त आ अद्भुत; विदेह founder; बाख्तिन; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सम्पादक-कवि; साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; शान्त आ अद्भुत; विदेह founder; बाख्तिन; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1540 : विदेह-सदेह 4 — कुमार मनोज कश्यप: चौबिटया पर (पृ. १-३)

प्रश्न 15343. कुमार मनोज कश्यपक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. चौबिटया पर (पृ. १-३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चौबिटया पर (पृ. १-३)

व्याख्या: सूचकांकमे कुमार मनोज कश्यपक रचना “चौबिटया पर (पृ. १-३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15344. “चौबिटया पर (पृ. १-३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15345. “चौबिटया पर (पृ. १-३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15346. कुमार मनोज कश्यपक “चौबिटया पर (पृ. १-३)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी

उत्तर: घ. जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी” अछि।

प्रश्न 15347. कुमार मनोज कश्यपक “चौबिटया पर (पृ. १-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी; केन्द्रीय सचिवालय; करुण; बूर्ह्यू शैक्षिक पूँजी; नव्य-न्याय मिथ्या व्याप्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी; केन्द्रीय सचिवालय; करुण; बूर्ह्यू शैक्षिक पूँजी; नव्य-न्याय मिथ्या व्याप्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी; केन्द्रीय सचिवालय; करुण; बूर्ह्यू शैक्षिक पूँजी; नव्य-न्याय मिथ्या व्याप्ति” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15348. “चौबिटया पर (पृ. १-३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15349. कुमार मनोज कश्यपक “चौबिटया पर (पृ. १-३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15350. “चौबिटया पर (पृ. १-३)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15351. कुमार मनोज कश्यपक “चौबिटया पर (पृ. १-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15352. खण्ड 1540क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुमार मनोज कश्यपक “चौबिटया पर (पृ. १-३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी; केन्द्रीय सचिवालय; करुण; बूर्ध्यू शैक्षिक पूँजी; नव्य-न्याय मिथ्या व्याप्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुमार मनोज कश्यपक “चौबिटया पर (पृ. १-३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी; केन्द्रीय सचिवालय; करुण; बूर्ध्यू शैक्षिक पूँजी; नव्य-न्याय मिथ्या व्याप्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1541 : विदेह-सदेह 4 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): एकटा आर रबि (पृ. ४-८)

प्रश्न 15353. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. एकटा आर रबि (पृ. ४-८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा आर रबि (पृ. ४-८)

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क रचना “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15354. “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15355. “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुदित कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुदित कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप अनुदित कथा अछि।

प्रश्न 15356. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा

उत्तर: घ. जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा” अछि।

प्रश्न 15357. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा; बेन्यामिन अनुवादकेँ पाठोत्तर जीवन; करुण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा; बेन्यामिन अनुवादकेँ पाठोत्तर जीवन; करुण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा; बेन्यामिन अनुवादकेँ पाठोत्तर जीवन; करुण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15358. “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15359. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15360. “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15361. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15362. खण्ड 1541क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा; बेन्यामिन अनुवादकेँ पाठोत्तर जीवन; करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा; बेन्यामिन अनुवादकेँ पाठोत्तर जीवन; करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1542 : विदेह-सदेह 4 — कुसुम ठाकुर: व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)

प्रश्न 15363. कुसुम ठाकुरक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)

व्याख्या: सूचकांकमे कुसुम ठाकुरक रचना “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15364. “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15365. “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15366. कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कथाकार

उत्तर: घ. नारी कथाकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कथाकार” अछि।

प्रश्न 15367. कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी कथाकार; वियोग-शृंगार आ करुण; स्पिवाक नारीवादी; नव्य-न्याय प्रत्यभिज्ञा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी कथाकार; वियोग-शृंगार आ करुण; स्पिवाक नारीवादी; नव्य-न्याय प्रत्यभिज्ञा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी कथाकार; वियोग-शृंगार आ करुण; स्पिवाक नारीवादी; नव्य-न्याय प्रत्यभिज्ञा” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15368. “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15369. कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15370. “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)”कैं विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15371. कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15372. खण्ड 1542क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; वियोग-शृंगार आ करुण; स्पिवाक नारीवादी; नव्य-न्याय प्रत्यभिज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; वियोग-शृंगार आ करुण; स्पिवाक नारीवादी; नव्य-न्याय प्रत्यभिज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1543 : विदेह-सदेह 4 — सुरेश किशोर झा: साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)

प्रश्न 15373. सुरेश किशोर झाक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)

व्याख्या: सूचकांकमे सुरेश किशोर झाक रचना “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15374. “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15375. “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15376. सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मध्यमवर्गीय पारिवारिक

उत्तर: घ. मध्यमवर्गीय पारिवारिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मध्यमवर्गीय पारिवारिक” अछि।

प्रश्न 15377. सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मध्यमवर्गीय पारिवारिक; करुण; लुकाच आलोचनात्मक यथार्थवाद; नव्य-न्याय व्याप्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मध्यमवर्गीय पारिवारिक; करुण; लुकाच आलोचनात्मक यथार्थवाद; नव्य-न्याय व्याप्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मध्यमवर्गीय पारिवारिक; करुण; लुकाच आलोचनात्मक यथार्थवाद; नव्य-न्याय व्याप्ति” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15378. “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुरेश किशोर झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुरेश किशोर झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15379. सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15380. “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15381. सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15382. खण्ड 1543क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “मध्यमवर्गीय पारिवारिक; करुण; लुकाच आलोचनात्मक यथार्थवाद; नव्य-न्याय व्याप्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “मध्यमवर्गीय पारिवारिक; करुण; लुकाच आलोचनात्मक यथार्थवाद; नव्य-न्याय व्याप्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1544 : विदेह-सदेह 4 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)

प्रश्न 15383. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक रचना “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15384. “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15385. “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मौलिक कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मौलिक कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप मौलिक कथा अछि।

प्रश्न 15386. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर आ करुण

उत्तर: घ. वीर आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ करुण” अछि।

प्रश्न 15387. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ करुण; सार्त्र कर्म-स्वातन्त्र्य आ भाग्यक टकराव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ करुण; सार्त्र कर्म-स्वातन्त्र्य आ भाग्यक टकराव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वीर आ करुण; सार्त्र कर्म-स्वातन्त्र्य आ भाग्यक टकराव” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15388. “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा मौलिक कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा मौलिक कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15389. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15390. “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ मौलिक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ मौलिक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15391. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15392. खण्ड 1544क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)” प्रविष्टि गद्य, मौलिक कथा आ “वीर आ करुण; सार्त्र कर्म-स्वातन्त्र्य आ भाग्यक टकराव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)” प्रविष्टि गद्य, मौलिक कथा आ “वीर आ करुण; सार्त्र कर्म-स्वातन्त्र्य आ भाग्यक टकराव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1545 : विदेह-सदेह ४ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): सअँगर (पृ. ३६-४४)

प्रश्न 15393. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क विदेह-सदेह ४मे “सअँगर (पृ. ३६-४४)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. सअँगर (पृ. ३६-४४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सअँगर (पृ. ३६-४४)

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क रचना “सअँगर (पृ. ३६-४४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15394. “सअँगर (पृ. ३६-४४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15395. “सअँगर (पृ. ३६-४४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुदित कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुदित कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप अनुदित कथा अछि।

प्रश्न 15396. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअँगर (पृ. ३६-४४)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोड्कणीसँ मैथिली

उत्तर: घ. कोड्कणीसँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोड्कणीसँ मैथिली” अछि।

प्रश्न 15397. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअँगर (पृ. ३६-४४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. कोड्कणीसँ मैथिली; बेन्जामिन अनुवाद-सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोड्कणीसँ मैथिली; बेन्जामिन अनुवाद-सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “कोड्कणीसँ मैथिली; बेन्जामिन अनुवाद-सिद्धान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15398. “सअँगर (पृ. ३६-४४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15399. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअँगर (पृ. ३६-४४)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15400. “सअँगर (पृ. ३६-४४)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15401. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअँगर (पृ. ३६-४४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15402. खण्ड १५४५क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअँगर (पृ. ३६-४४)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “कोड्कणीसँ मैथिली; बेन्जामिन अनुवाद-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअँगर (पृ. ३६-४४)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “कोड्कणीसँ मैथिली; बेन्जामिन अनुवाद-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1546 : विदेह-सदेह ४ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): नागपंचमी (पृ. ४५-४९)

प्रश्न 15403. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क विदेह-सदेह ४मे “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. नागपंचमी (पृ. ४५-४९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नागपंचमी (पृ. ४५-४९)

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क रचना “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15404. “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15405. “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुदित कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुदित कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप अनुदित कथा अछि।

प्रश्न 15406. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोड्कणीसँ मैथिली

उत्तर: घ. कोड्कणीसँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोड्कणीसँ मैथिली” अछि।

प्रश्न 15407. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. कोड्कणीसँ मैथिली; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान; विदेहक समावेशी साहित्य-सूची

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोड्कणीसँ मैथिली; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान; विदेहक समावेशी साहित्य-सूची

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “कोड्कणीसँ मैथिली; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान; विदेहक समावेशी साहित्य-सूची” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15408. “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15409. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15410. “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15411. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15412. खण्ड १५४६क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “कोङ्कणीसँ मैथिली; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान; विदेहक समावेशी साहित्य-सूची” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “कोङ्कणीसँ मैथिली; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान; विदेहक समावेशी साहित्य-सूची” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1547 : विदेह-सदेह ४ — अनमोल झा: प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)

प्रश्न 15413. अनमोल झाक विदेह-सदेह ४मे “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)

व्याख्या: सूचकांकमे अनमोल झाक रचना “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15414. “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15415. “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15416. अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ बौद्धिक

उत्तर: घ. शान्त आ बौद्धिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ बौद्धिक” अछि।

प्रश्न 15417. अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ बौद्धिक; सार्त्रक अस्तित्व-पहिने-सार सिद्धान्त; चयनहि पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ बौद्धिक; सार्त्रक अस्तित्व-पहिने-सार सिद्धान्त; चयनहि पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ बौद्धिक; सार्त्रक अस्तित्व-पहिने-सार सिद्धान्त; चयनहि पहचान” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15418. “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15419. अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15420. “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15421. अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15422. खण्ड १५४७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ बौद्धिक; सार्त्रक अस्तित्व-पहिने-सार सिद्धान्त; चयनहि पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ बौद्धिक; सार्त्रक अस्तित्व-पहिने-सार सिद्धान्त; चयनहि पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1548 : विदेह-सदेह ४ — मिथिलेश कुमार झा: एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)

प्रश्न 15423. मिथिलेश कुमार झाक विदेह-सदेह ४मे “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)

व्याख्या: सूचकांकमे मिथिलेश कुमार झाक रचना “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15424. “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15425. “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15426. मिथिलेश कुमार झाक “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर

उत्तर: घ. जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर” अछि।

प्रश्न 15427. मिथिलेश कुमार झाक “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर; हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन बहुभाषिकता; अंग्रेजी-मैथिली मिश्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर; हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन बहुभाषिकता; अंग्रेजी-मैथिली मिश्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर; हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन बहुभाषिकता; अंग्रेजी-मैथिली मिश्रण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15428. “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15429. मिथिलेश कुमार झाक “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15430. “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15431. मिथिलेश कुमार झाक “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15432. खण्ड १५४८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिलेश कुमार झाक “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर; हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन बहुभाषिकता; अंग्रेजी-मैथिली मिश्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिलेश कुमार झाक “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर; हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन बहुभाषिकता; अंग्रेजी-मैथिली मिश्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1549 : विदेह-सदेह ४ — पालन झा: गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)

प्रश्न 15433. पालन झाक विदेह-सदेह ४मे “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)

व्याख्या: सूचकांकमे पालन झाक रचना “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15434. “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15435. “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15436. पालन झाक “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण

उत्तर: घ. करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण” अछि।

प्रश्न 15437. पालन झाक “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण; मार्क्स आ आंबेडकर वर्ग-जाति अन्तर्सम्बन्ध; नव्य-न्याय अभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण; मार्क्स आ आंबेडकर वर्ग-जाति अन्तर्सम्बन्ध; नव्य-न्याय अभाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण; मार्क्स आ आंबेडकर वर्ग-जाति अन्तर्सम्बन्ध; नव्य-न्याय अभाव” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15438. “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पालन झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पालन झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15439. पालन झाक “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15440. “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15441. पालन झाक “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15442. खण्ड १५४९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पालन झाक “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “करुण; मार्क्स आ आंबेडकर वर्ग-जाति अन्तर्सम्बन्ध; नव्य-न्याय अभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पालन झाक “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “करुण; मार्क्स आ आंबेडकर वर्ग-जाति अन्तर्सम्बन्ध; नव्य-न्याय अभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1550 : विदेह-सदेह ४ — कामिनी कामायनी: लाल काकी (पृ. ६०-६३)

प्रश्न 15443. कामिनी कामायनीक विदेह-सदेह ४मे “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. लाल काकी (पृ. ६०-६३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाल काकी (पृ. ६०-६३)

व्याख्या: सूचकांकमे कामिनी कामायनीक रचना “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15444. “लाल काकी (पृ. ६०-६३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15445. “लाल काकी (पृ. ६०-६३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15446. कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कथाकार

उत्तर: घ. नारी कथाकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कथाकार” अछि।

प्रश्न 15447. कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी कथाकार; करुण आ शृंगार; बोवुआरक अदृश्य स्त्री-विचार; नारीवादी पुनर्पहिचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी कथाकार; करुण आ शृंगार; बोवुआरक अदृश्य स्त्री-विचार; नारीवादी पुनर्पहिचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी कथाकार; करुण आ शृंगार; बोवुआरक अदृश्य स्त्री-विचार; नारीवादी पुनर्पहिचान” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15448. “लाल काकी (पृ. ६०-६३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15449. कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15450. “लाल काकी (पृ. ६०-६३)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15451. कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15452. खण्ड १५५०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; करुण आ शृंगार; बोवुआरक अदृश्य स्त्री-विचार; नारीवादी पुनर्पहिचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; करुण आ शृंगार; बोवुआरक अदृश्य स्त्री-विचार; नारीवादी पुनर्पहिचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1551 : विदेह-सदेह ४ — जगदीश प्रसाद मंडल: बहीन (पृ. ६४-७२)

प्रश्न 15453. जगदीश प्रसाद मंडलक विदेह-सदेह ४मे “बहीन (पृ. ६४-७२)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. बहीन (पृ. ६४-७२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहीन (पृ. ६४-७२)

व्याख्या: सूचकांकमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना “बहीन (पृ. ६४-७२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15454. “बहीन (पृ. ६४-७२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15455. “बहीन (पृ. ६४-७२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15456. जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित कथाकार

उत्तर: घ. दलित कथाकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित कथाकार” अछि।

प्रश्न 15457. जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित कथाकार; वात्सल्य आ करुण; आंबेडकरक दृष्टिमे दलित स्त्रीक दोहर दमन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित कथाकार; वात्सल्य आ करुण; आंबेडकरक दृष्टिमे दलित स्त्रीक दोहर दमन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित कथाकार; वात्सल्य आ करुण; आंबेडकरक दृष्टिमे दलित स्त्रीक दोहर दमन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15458. “बहीन (पृ. ६४-७२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15459. जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15460. “बहीन (पृ. ६४-७२)”कें विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15461. जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15462. खण्ड १५५१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दलित कथाकार; वात्सल्य आ करुण; आंबेडकरक दृष्टिमे दलित स्त्रीक दोहर दमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दलित कथाकार; वात्सल्य आ करुण; आंबेडकरक दृष्टिमे दलित स्त्रीक दोहर दमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1552 : विदेह-सदेह ४ — साकेतानन्द: कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)

प्रश्न 15463. साकेतानन्दक विदेह-सदेह ४मे “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)

व्याख्या: सूचकांकमे साकेतानन्दक रचना “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15464. “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15465. “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15466. साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संस्कृत शीर्षक

उत्तर: घ. संस्कृत शीर्षक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृत शीर्षक” अछि।

प्रश्न 15467. साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. संस्कृत शीर्षक; शान्त आ करुण; बाख्तिन अन्तर-पाठीयता; कर्म-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कृत शीर्षक; शान्त आ करुण; बाख्तिन अन्तर-पाठीयता; कर्म-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “संस्कृत शीर्षक; शान्त आ करुण; बाख्तिन अन्तर-पाठीयता; कर्म-दर्शन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15468. “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक साकेतानन्द, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक साकेतानन्द, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15469. साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15470. “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15471. साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15472. खण्ड १५५२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “संस्कृत शीर्षक; शान्त आ करुण; बाखिन अन्तर-पाठीयता; कर्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “संस्कृत शीर्षक; शान्त आ करुण; बाखिन अन्तर-पाठीयता; कर्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1553 : विदेह-सदेह ४ — सुजीत कुमार झा: प्रियंका (पृ. ७९-८३)

प्रश्न 15473. सुजीत कुमार झाक विदेह-सदेह ४मे “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. प्रियंका (पृ. ७९-८३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रियंका (पृ. ७९-८३)

व्याख्या: सूचकांकमे सुजीत कुमार झाक रचना “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15474. “प्रियंका (पृ. ७९-८३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15475. “प्रियंका (पृ. ७९-८३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15476. सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ करुण

उत्तर: घ. शृंगार आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ करुण” अछि।

प्रश्न 15477. सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ करुण; नारीवादी नाम-राजनीति — प्रियंका पहचानक रूपमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ करुण; नारीवादी नाम-राजनीति — प्रियंका पहचानक रूपमे

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शृंगार आ करुण; नारीवादी नाम-राजनीति — प्रियंका पहचानक रूपमे” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15478. “प्रियंका (पृ. ७९-८३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15479. सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15480. “प्रियंका (पृ. ७९-८३)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15481. सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15482. खण्ड १५५३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शृंगार आ करुण; नारीवादी नाम-राजनीति — प्रियंका पहचानक रूपमे” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शृंगार आ करुण; नारीवादी नाम-राजनीति — प्रियंका पहचानक रूपमे” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1554 : विदेह-सदेह ४ — आशीष चमन: पछता रोटी (पृ. ८४-८९)

प्रश्न 15483. आशीष चमनक विदेह-सदेह ४मे “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. पछता रोटी (पृ. ८४-८९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पछता रोटी (पृ. ८४-८९)

व्याख्या: सूचकांकमे आशीष चमनक रचना “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15484. “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15485. “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15486. आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र

उत्तर: घ. मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र” अछि।

प्रश्न 15487. आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र; करुण आ बीभत्स; सार्त्रक मिथ्या-आस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र; करुण आ बीभत्स; सार्त्रक मिथ्या-आस्था

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र; करुण आ बीभत्स; सार्त्रक मिथ्या-आस्था” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15488. “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष चमन, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष चमन, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15489. आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15490. “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15491. आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15492. खण्ड १५५४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र; करुण आ बीभत्स; सार्त्रक मिथ्या-आस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र; करुण आ बीभत्स; सार्त्रक मिथ्या-आस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1555 : विदेह-सदेह ४ — आशीष कुमार चौधरी: जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)

प्रश्न 15493. आशीष कुमार चौधरीक विदेह-सदेह ४मे “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)

व्याख्या: सूचकांकमे आशीष कुमार चौधरीक रचना “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15494. “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15495. “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15496. आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर

उत्तर: घ. वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर” अछि।

प्रश्न 15497. आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर; विजय-कथा; स्वामित्व-दाबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर; विजय-कथा; स्वामित्व-दाबी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वीर; विजय-कथा; स्वामित्व-दाबी” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15498. “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष कुमार चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष कुमार चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15499. आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15500. “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15501. आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15502. खण्ड १५५५क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “वीर; विजय-कथा; स्वामित्व-दाबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “वीर; विजय-कथा; स्वामित्व-दाबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1556 : विदेह-सदेह ४ — दुर्गानन्द मंडल: बकलेल (पृ. ९१-९५)

प्रश्न 15503. दुर्गानन्द मंडलक विदेह-सदेह ४मे “बकलेल (पृ. ९१-९५)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. बकलेल (पृ. ९१-९५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बकलेल (पृ. ९१-९५)

व्याख्या: सूचकांकमे दुर्गानन्द मंडलक रचना “बकलेल (पृ. ९१-९५)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15504. “बकलेल (पृ. ९१-९५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15505. “बकलेल (पृ. ९१-९५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15506. दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पिछड़ल-वर्ग/दलित

उत्तर: घ. पिछड़ल-वर्ग/दलित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पिछड़ल-वर्ग/दलित” अछि।

प्रश्न 15507. दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. पिछड़ल-वर्ग/दलित; करुण आ रौद्र; फैनोन औपनिवेशिक अलगाव आ आंबेडकर जाति-बहिष्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिछड़ल-वर्ग/दलित; करुण आ रौद्र; फैनोन औपनिवेशिक अलगाव आ आंबेडकर जाति-बहिष्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “पिछड़ल-वर्ग/दलित; करुण आ रौद्र; फैनोन औपनिवेशिक अलगाव आ आंबेडकर जाति-बहिष्कार” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15508. “बकलेल (पृ. ९१-९५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15509. दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15510. “बकलेल (पृ. ९१-९५)”कैँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15511. दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15512. खण्ड १५५६क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिछड़ल-वर्ग/दलित; करुण आ रौद्र; फैनोन औपनिवेशिक अलगाव आ आंबेडकर जाति-बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिछड़ल-वर्ग/दलित; करुण आ रौद्र; फैनोन औपनिवेशिक अलगाव आ आंबेडकर जाति-बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1557 : विदेह-सदेह ४ — कपिलेश्वर राउत: छूआ-छूत (पृ. ९६)

प्रश्न 15513. कपिलेश्वर राउतक विदेह-सदेह ४मे “छूआ-छूत (पृ. ९६)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. छूआ-छूत (पृ. ९६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छूआ-छूत (पृ. ९६)

व्याख्या: सूचकांकमे कपिलेश्वर राउतक रचना “छूआ-छूत (पृ. ९६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15514. “छूआ-छूत (पृ. ९६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15515. “छूआ-छूत (पृ. ९६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15516. कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित चेतना

उत्तर: घ. दलित चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित चेतना” अछि।

प्रश्न 15517. कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित चेतना; रौद्र आ करुण; आंबेडकरक जाति-उन्मूलन; दुर्गा-पूजा बहिष्कार-कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित चेतना; रौद्र आ करुण; आंबेडकरक जाति-उन्मूलन; दुर्गा-पूजा बहिष्कार-कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित चेतना; रौद्र आ करुण; आंबेडकरक जाति-उन्मूलन; दुर्गा-पूजा बहिष्कार-कथा” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15518. “छूआ-छूत (पृ. ९६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15519. कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15520. “छूआ-छूत (पृ. ९६)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15521. कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15522. खण्ड १५५७क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दलित चेतना; रौद्र आ करुण; आंबेडकरक जाति-उन्मूलन; दुर्गा-पूजा बहिष्कार-कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दलित चेतना; रौद्र आ करुण; आंबेडकरक जाति-उन्मूलन; दुर्गा-पूजा बहिष्कार-कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1558 : विदेह-सदेह ४ — राजदेव मंडल: रखबार (पृ. ९७-१०३)

प्रश्न 15523. राजदेव मंडलक विदेह-सदेह ४मे “रखबार (पृ. ९७-१०३)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. रखबार (पृ. ९७-१०३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रखबार (पृ. ९७-१०३)

व्याख्या: सूचकांकमे राजदेव मंडलक रचना “रखबार (पृ. ९७-१०३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15524. “रखबार (पृ. ९७-१०३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15525. “रखबार (पृ. ९७-१०३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15526. राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ करुण

उत्तर: घ. शान्त आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ करुण” अछि।

प्रश्न 15527. राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ करुण; ग्राम्शीक जैविक बौद्धिक; समुदाय-रक्षक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ करुण; ग्राम्शीक जैविक बौद्धिक; समुदाय-रक्षक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ करुण; ग्राम्शीक जैविक बौद्धिक; समुदाय-रक्षक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15528. “रखबार (पृ. ९७-१०३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15529. राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15530. “रखबार (पृ. ९७-१०३)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15531. राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15532. खण्ड १५५८क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ करुण; ग्राम्शीक जैविक बौद्धिक; समुदाय-रक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ करुण; ग्राम्शीक जैविक बौद्धिक; समुदाय-रक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1559 : विदेह-सदेह ४ — शरदिन्दु चौधरी: समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)

प्रश्न 15533. शरदिन्दु चौधरीक विदेह-सदेह ४मे “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)

व्याख्या: सूचकांकमे शरदिन्दु चौधरीक रचना “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15534. “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15535. “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15536. शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त

उत्तर: घ. शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

प्रश्न 15537. शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त; बेन्जामिनक एखन-क्षण; काल-बोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त; बेन्जामिनक एखन-क्षण; काल-बोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त; बेन्जामिनक एखन-क्षण; काल-बोध” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15538. “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शरदिन्दु चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शरदिन्दु चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15539. शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15540. “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15541. शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15542. खण्ड १५५९क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त; बेन्जामिनक एखन-क्षण; काल-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त; बेन्जामिनक एखन-क्षण; काल-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1560 : विदेह-सदेह ४ — विजय-हरीश: छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)

प्रश्न 15543. विजय-हरीशक विदेह-सदेह ४मे “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)

व्याख्या: सूचकांकमे विजय-हरीशक रचना “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15544. “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15545. “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 15546. विजय-हरीशक “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र

उत्तर: घ. मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र” अछि।

प्रश्न 15547. विजय-हरीशक “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र; हास्य, करुण आ वीर; चेखव कथन-संक्षेप; नव्य-न्याय तर्क-संक्षेप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र; हास्य, करुण आ वीर; चेखव कथन-संक्षेप; नव्य-न्याय तर्क-संक्षेप

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र; हास्य, करुण आ वीर; चेखव कथन-संक्षेप; नव्य-न्याय तर्क-संक्षेप” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15548. “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजय-हरीश, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजय-हरीश, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15549. विजय-हरीशक “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15550. “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15551. विजय-हरीशक “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15552. खण्ड १५६०क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विजय-हरीशक “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र; हास्य, करुण आ वीर; चेखव कथन-संक्षेप; नव्य-न्याय तर्क-संक्षेप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विजय-हरीशक “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र; हास्य, करुण आ वीर; चेखव कथन-संक्षेप; नव्य-न्याय तर्क-संक्षेप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1561 : विदेह-सदेह ४ — सुनीता ठाकुर: अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)

प्रश्न 15553. सुनीता ठाकुरक विदेह-सदेह ४मे “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)

व्याख्या: सूचकांकमे सुनीता ठाकुरक रचना “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15554. “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15555. “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15556. सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कथाकार

उत्तर: घ. नारी कथाकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कथाकार” अछि।

प्रश्न 15557. सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी कथाकार; रौद्र आ करुण; नारीवादी अपराध-कथा; स्त्रीक सक्रियता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी कथाकार; रौद्र आ करुण; नारीवादी अपराध-कथा; स्त्रीक सक्रियता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी कथाकार; रौद्र आ करुण; नारीवादी अपराध-कथा; स्त्रीक सक्रियता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15558. “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुनीता ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुनीता ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15559. सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15560. “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15561. सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15562. खण्ड १५६१क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; रौद्र आ करुण; नारीवादी अपराध-कथा; स्त्रीक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; रौद्र आ करुण; नारीवादी अपराध-कथा; स्त्रीक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1562 : विदेह-सदेह ४ — राकेश कुमार रोशन: पंचैति (पृ. ११०-११२)

प्रश्न 15563. राकेश कुमार रोशनक विदेह-सदेह ४मे “पंचैति (पृ. ११०-११२)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. पंचैति (पृ. ११०-११२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंचैति (पृ. ११०-११२)

व्याख्या: सूचकांकमे राकेश कुमार रोशनक रचना “पंचैति (पृ. ११०-११२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15564. “पंचैति (पृ. ११०-११२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15565. “पंचैति (पृ. ११०-११२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15566. राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ रौद्र

उत्तर: घ. करुण आ रौद्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ रौद्र” अछि।

प्रश्न 15567. राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ रौद्र; ग्राम्शीक स्थानीय प्रभुत्व; पंचैती शक्ति-संरचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ रौद्र; ग्राम्शीक स्थानीय प्रभुत्व; पंचैती शक्ति-संरचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ रौद्र; ग्राम्शीक स्थानीय प्रभुत्व; पंचैती शक्ति-संरचना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15568. “पंचैति (पृ. ११०-११२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राकेश कुमार रोशन, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राकेश कुमार रोशन, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15569. राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15570. “पंचैति (पृ. ११०-११२)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15571. राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15572. खण्ड १५६२क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “करुण आ रौद्र; ग्राम्शीक स्थानीय प्रभुत्व; पंचैती शक्ति-संरचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “करुण आ रौद्र; ग्राम्शीक स्थानीय प्रभुत्व; पंचैती शक्ति-संरचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1563 : विदेह-सदेह ४ — हेमचन्द्र झा: बाट (पृ. ११३-११७)

प्रश्न 15573. हेमचन्द्र झाक विदेह-सदेह ४मे “बाट (पृ. ११३-११७)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. बाट (पृ. ११३-११७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाट (पृ. ११३-११७)

व्याख्या: सूचकांकमे हेमचन्द्र झाक रचना “बाट (पृ. ११३-११७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15574. “बाट (पृ. ११३-११७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15575. “बाट (पृ. ११३-११७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15576. हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शान्त आ करुण
उत्तर: घ. शान्त आ करुण
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ करुण” अछि।

प्रश्न 15577. हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. शान्त आ करुण; हाइडेगरक जगत-स्थित अस्तित्व; बाट जीवन-रूपक
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शान्त आ करुण; हाइडेगरक जगत-स्थित अस्तित्व; बाट जीवन-रूपक
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ करुण; हाइडेगरक जगत-स्थित अस्तित्व; बाट जीवन-रूपक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15578. “बाट (पृ. ११३-११७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15579. हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15580. “बाट (पृ. ११३-११७)”कें विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15581. हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15582. खण्ड १५६३क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ करुण; हाइडेगरक जगत-स्थित अस्तित्व; बाट जीवन-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ करुण; हाइडेगरक जगत-स्थित अस्तित्व; बाट जीवन-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1564 : विदेह-सदेह ४ — सुभाष चन्द्र यादव: पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)

प्रश्न 15583. सुभाष चन्द्र यादवक विदेह-सदेह ४मे “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

क. पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)

व्याख्या: सूचकांकमे सुभाष चन्द्र यादवक रचना “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15584. “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15585. “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15586. सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पिछड़ल-वर्ग

उत्तर: घ. पिछड़ल-वर्ग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पिछड़ल-वर्ग” अछि।

प्रश्न 15587. सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. पिछड़ल-वर्ग; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन संवादवाद; घरेलू समानता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिछड़ल-वर्ग; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन संवादवाद; घरेलू समानता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “पिछड़ल-वर्ग; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन संवादवाद; घरेलू समानता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15588. “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15589. सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15590. “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15591. सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15592. खण्ड १५६४क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिछड़ल-वर्ग; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन संवादवाद; घरेलू समानता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिछड़ल-वर्ग; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन संवादवाद; घरेलू समानता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1565 : विदेह-सदेह 4 — मानेश्वर मनुज: जीत (पृ. १२०-१२८)

प्रश्न 15593. मानेश्वर मनुजक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. जीत (पृ. १२०-१२८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीत (पृ. १२०-१२८)

व्याख्या: सूचकांकमे मानेश्वर मनुजक रचना “जीत (पृ. १२०-१२८)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15594. “जीत (पृ. १२०-१२८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15595. “जीत (पृ. १२०-१२८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15596. मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर आ करुण

उत्तर: घ. वीर आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ करुण” अछि।

प्रश्न 15597. मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ करुण; अम्बेडकर सामाजिक गतिशीलता; ग्राम्शी स्थितिगत संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ करुण; अम्बेडकर सामाजिक गतिशीलता; ग्राम्शी स्थितिगत संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वीर आ करुण; अम्बेडकर सामाजिक गतिशीलता; ग्राम्शी स्थितिगत संघर्ष” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15598. “जीत (पृ. १२०-१२८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15599. मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15600. “जीत (पृ. १२०-१२८)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15601. मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15602. खण्ड 1565क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “वीर आ करुण; अम्बेडकर सामाजिक गतिशीलता; ग्राम्शी स्थितिगत संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “वीर आ करुण; अम्बेडकर सामाजिक गतिशीलता; ग्राम्शी स्थितिगत संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1566 : विदेह-सदेह 4 — परमेश्वर कापड़ि: धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)

प्रश्न 15603. परमेश्वर कापड़िक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)

व्याख्या: सूचकांकमे परमेश्वर कापड़िक रचना “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15604. “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15605. “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15606. परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 15607. परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल; रौद्र आ वीर; विदेहक सीमा-पार मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल; रौद्र आ वीर; विदेहक सीमा-पार मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नेपाल; रौद्र आ वीर; विदेहक सीमा-पार मैथिली” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15608. “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15609. परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15610. “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)”कें विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15611. परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15612. खण्ड 1566क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नेपाल; रौद्र आ वीर; विदेहक सीमा-पार मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नेपाल; रौद्र आ वीर; विदेहक सीमा-पार मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1567 : विदेह-सदेह 4 — ऋषि वशिष्ठ: जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)

प्रश्न 15613. ऋषि वशिष्ठक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)

व्याख्या: सूचकांकमे ऋषि वशिष्ठक रचना “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15614. “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15615. “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा/व्यंग्य अछि।

प्रश्न 15616. ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ वीर

उत्तर: घ. हास्य आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ वीर” अछि।

प्रश्न 15617. ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ वीर; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; युवा विद्रोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ वीर; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; युवा विद्रोह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ वीर; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; युवा विद्रोह” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15618. “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ऋषि वशिष्ठ, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ऋषि वशिष्ठ, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15619. ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15620. “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15621. ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15622. खण्ड 1567क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “हास्य आ वीर; बाखिन उत्सवी उलटबाँसी; युवा विद्रोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “हास्य आ वीर; बाखिन उत्सवी उलटबाँसी; युवा विद्रोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1568 : विदेह-सदेह 4 — शिवशंकर श्रीनिवास: पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)

प्रश्न 15623. शिवशंकर श्रीनिवासक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)

व्याख्या: सूचकांकमे शिवशंकर श्रीनिवासक रचना “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15624. “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15625. “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15626. शिवशंकर श्रीनिवासक “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: लोहना, मधुबनी

उत्तर: घ. जन्म: लोहना, मधुबनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: लोहना, मधुबनी” अछि।

प्रश्न 15627. शिवशंकर श्रीनिवासक “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: लोहना, मधुबनी; करुण आ शान्त; बूर्धू सांस्कृतिक पूँजी-संक्रमण; पीढ़ी-अन्तर सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: लोहना, मधुबनी; करुण आ शान्त; बूर्धू सांस्कृतिक पूँजी-संक्रमण; पीढ़ी-अन्तर सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: लोहना, मधुबनी; करुण आ शान्त; बूर्धू सांस्कृतिक पूँजी-संक्रमण; पीढ़ी-अन्तर सम्बन्ध” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15628. “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवशंकर श्रीनिवास, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवशंकर श्रीनिवास, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15629. शिवशंकर श्रीनिवासक “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15630. “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15631. शिवशंकर श्रीनिवासक “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15632. खण्ड 1568क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिवशंकर श्रीनिवासक “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: लोहना, मधुबनी; करुण आ शान्त; बूर्ह्यू सांस्कृतिक पूँजी-संक्रमण; पीढ़ी-अन्तर सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिवशंकर श्रीनिवासक “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: लोहना, मधुबनी; करुण आ शान्त; बूर्ह्यू सांस्कृतिक पूँजी-संक्रमण; पीढ़ी-अन्तर सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1569 : विदेह-सदेह 4 — श्यामल सुमन: अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ....

प्रश्न 15633. श्यामल सुमनक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)

व्याख्या: सूचकांकमे श्यामल सुमनक रचना “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15634. “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15635. “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा/व्यंग्य अछि।

प्रश्न 15636. श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ रौद्र

उत्तर: घ. हास्य आ रौद्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ रौद्र” अछि।

प्रश्न 15637. श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ रौद्र; संस्कृतनिष्ठ भाषा-स्तर आ राजनीतिक व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ रौद्र; संस्कृतनिष्ठ भाषा-स्तर आ राजनीतिक व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ रौद्र; संस्कृतनिष्ठ भाषा-स्तर आ राजनीतिक व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15638. “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्यामल सुमन, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्यामल सुमन, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15639. श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15640. “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15641. श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15642. खण्ड 1569क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “हास्य आ रौद्र; संस्कृतनिष्ठ भाषा-स्तर आ राजनीतिक व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “हास्य आ रौद्र; संस्कृतनिष्ठ भाषा-स्तर आ राजनीतिक व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1570 : विदेह-सदेह 4 — मनोज झा 'मुक्ति': इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)

प्रश्न 15643. मनोज झा 'मुक्ति'क विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)

व्याख्या: सूचकांकमे मनोज झा 'मुक्ति'क रचना “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15644. “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15645. “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15646. मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रौद्र आ करुण

उत्तर: घ. रौद्र आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र आ करुण” अछि।

प्रश्न 15647. मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. रौद्र आ करुण; अम्बेडकर इज्जत-संस्कृतिक आलोचना; इज्जत-आधारित सामाजिक नियन्त्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौद्र आ करुण; अम्बेडकर इज्जत-संस्कृतिक आलोचना; इज्जत-आधारित सामाजिक नियन्त्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “रौद्र आ करुण; अम्बेडकर इज्जत-संस्कृतिक आलोचना; इज्जत-आधारित सामाजिक नियन्त्रण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15648. “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा 'मुक्ति', विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा 'मुक्ति', विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15649. मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15650. “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15651. मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15652. खण्ड 1570क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “रौद्र आ करुण; अम्बेडकर इज्जत-संस्कृतिक आलोचना; इज्जत-आधारित सामाजिक नियन्त्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “रौद्र आ करुण; अम्बेडकर इज्जत-संस्कृतिक आलोचना; इज्जत-आधारित सामाजिक नियन्त्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1571 : विदेह-सदेह 4 — जगदीश प्रसाद मंडल: बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (...

प्रश्न 15653. जगदीश प्रसाद मंडलक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-१५१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-१५१)

व्याख्या: सूचकांकमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-१५१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15654. “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15655. “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप बाल-कथा अछि।

प्रश्न 15656. जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वात्सल्य आ वीर

उत्तर: घ. वात्सल्य आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य आ वीर” अछि।

प्रश्न 15657. जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; मैथिली सामुदायिक मूल्य-संक्रमण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; मैथिली सामुदायिक मूल्य-संक्रमण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; मैथिली सामुदायिक मूल्य-संक्रमण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15658. “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा बाल-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा बाल-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15659. जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15660. “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...”कें विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15661. जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15662. खण्ड 1571क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-१५१)” प्रविष्टि गद्य, बाल-कथा आ “वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; मैथिली सामुदायिक मूल्य-संक्रमण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-१५१)” प्रविष्टि गद्य, बाल-कथा आ “वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; मैथिली सामुदायिक मूल्य-संक्रमण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1572 : विदेह-सदेह 4 — डा. सुरेश लाभ: माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)

प्रश्न 15663. डा. सुरेश लाभक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)

व्याख्या: सूचकांकमे डा. सुरेश लाभक रचना “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15664. “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15665. “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15666. डा. सुरेश लाभक “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण

उत्तर: घ. करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण” अछि।

प्रश्न 15667. डा. सुरेश लाभक “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण; मार्क्स आ अम्बेडकर भूख-राजनीति; नव्य-न्याय अन्वय-व्यतिरेक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण; मार्क्स आ अम्बेडकर भूख-राजनीति; नव्य-न्याय अन्वय-व्यतिरेक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण; मार्क्स आ अम्बेडकर भूख-राजनीति; नव्य-न्याय अन्वय-व्यतिरेक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15668. “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. सुरेश लाभ, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. सुरेश लाभ, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15669. डा. सुरेश लाभक “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15670. “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15671. डा. सुरेश लाभक “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15672. खण्ड 1572क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डा. सुरेश लाभक “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “करुण; मार्क्स आ अम्बेडकर भूख-राजनीति; नव्य-न्याय अन्वय-व्यतिरेक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डा. सुरेश लाभक “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “करुण; मार्क्स आ अम्बेडकर भूख-राजनीति; नव्य-न्याय अन्वय-व्यतिरेक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1573 : विदेह-सदेह 4 — श्री ललन प्रसाद ठाकुर: साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ....

प्रश्न 15673. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९)

व्याख्या: सूचकांकमे श्री ललन प्रसाद ठाकुरक रचना “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15674. “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15675. “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कव्वाली

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कव्वाली

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कव्वाली अछि।

प्रश्न 15676. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर

उत्तर: घ. जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर” अछि।

प्रश्न 15677. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; मैथिली-उर्दू लोक-संगम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; मैथिली-उर्दू लोक-संगम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; मैथिली-उर्दू लोक-संगम” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15678. “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्री ललन प्रसाद ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कव्वाली

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्री ललन प्रसाद ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कव्वाली

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15679. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15680. “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कव्वालीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कव्वालीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15681. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15682. खण्ड 1573क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९)” प्रविष्टि गद्य, कव्वाली आ “जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; मैथिली-उर्दू लोक-संगम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९)” प्रविष्टि गद्य, कव्वाली आ “जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; मैथिली-उर्दू लोक-संगम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1574 : विदेह-सदेह 4 — उमेश मंडल: परहेज (पृ. १६०)

प्रश्न 15683. उमेश मंडलक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. परहेज (पृ. १६०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परहेज (पृ. १६०)

व्याख्या: सूचकांकमे उमेश मंडलक रचना “परहेज (पृ. १६०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15684. “परहेज (पृ. १६०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15685. “परहेज (पृ. १६०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15686. उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सहायक सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सहायक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सहायक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 15687. उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह सहायक सम्पादक; शान्त आ करुण; अम्बेडकर untouchability; चिकित्सा-सामाजिक समानान्तर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सहायक सम्पादक; शान्त आ करुण; अम्बेडकर untouchability; चिकित्सा-सामाजिक समानान्तर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह सहायक सम्पादक; शान्त आ करुण; अम्बेडकर untouchability; चिकित्सा-सामाजिक समानान्तर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15688. “परहेज (पृ. १६०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15689. उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15690. “परहेज (पृ. १६०)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15691. उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15692. खण्ड 1574क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “विदेह सहायक सम्पादक; शान्त आ करुण; अम्बेडकर untouchability; चिकित्सा-सामाजिक समानान्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “विदेह सहायक सम्पादक; शान्त आ करुण; अम्बेडकर untouchability; चिकित्सा-सामाजिक समानान्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1575 : विदेह-सदेह 4 — कमला चौधरी: कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)

प्रश्न 15693. कमला चौधरीक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)

व्याख्या: सूचकांकमे कमला चौधरीक रचना “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15694. “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15695. “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15696. कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कथाकार

उत्तर: घ. नारी कथाकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कथाकार” अछि।

प्रश्न 15697. कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी कथाकार; अद्भुत; कथा-स्वभाव-विमर्श; बाख्तिन उपन्यासधर्मिता; गणितीय रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी कथाकार; अद्भुत; कथा-स्वभाव-विमर्श; बाख्तिन उपन्यासधर्मिता; गणितीय रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी कथाकार; अद्भुत; कथा-स्वभाव-विमर्श; बाख्तिन उपन्यासधर्मिता; गणितीय रूपक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15698. “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कमला चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कमला चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15699. कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15700. “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15701. कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15702. खण्ड 1575क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; अद्भुत; कथा-स्वभाव-विमर्श; बाख्तिन उपन्यासधर्मिता; गणितीय रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; अद्भुत; कथा-स्वभाव-विमर्श; बाख्तिन उपन्यासधर्मिता; गणितीय रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1576 : विदेह-सदेह 4 — बेचन ठाकुर: छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)

प्रश्न 15703. बेचन ठाकुरक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)

व्याख्या: सूचकांकमे बेचन ठाकुरक रचना “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15704. “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15705. “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा/नाटक अछि।

प्रश्न 15706. बेचन ठाकुरक “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भिखारी ठाकुर परम्परा

उत्तर: घ. भिखारी ठाकुर परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भिखारी ठाकुर परम्परा” अछि।

प्रश्न 15707. बेचन ठाकुरक “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. भिखारी ठाकुर परम्परा; लोकनाट्य प्रारूप; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी — दोहरा दमन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भिखारी ठाकुर परम्परा; लोकनाट्य प्रारूप; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी — दोहरा दमन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “भिखारी ठाकुर परम्परा; लोकनाट्य प्रारूप; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी — दोहरा दमन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15708. “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा/नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा/नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15709. बेचन ठाकुरक “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15710. “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15711. बेचन ठाकुरक “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15712. खण्ड 1576क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बेचन ठाकुरक “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)” प्रविष्टि गद्य, कथा/नाटक आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; लोकनाट्य प्रारूप; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी — दोहरा दमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बेचन ठाकुरक “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)” प्रविष्टि गद्य, कथा/नाटक आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; लोकनाट्य प्रारूप; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी — दोहरा दमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1577 : विदेह-सदेह 4 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)

प्रश्न 15713. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक रचना “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15714. “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15715. “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

प्रश्न 15716. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: ८ फरवरी १९६७

उत्तर: घ. जन्म: ८ फरवरी १९६७

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ८ फरवरी १९६७” अछि।

प्रश्न 15717. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: ८ फरवरी १९६७; दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एससी., एम.फिल.; हास्य आ वीर; बाख्तिन प्रतिस्पर्धात्मक संवाद; प्रतिस्पर्धी मैत्री

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: ८ फरवरी १९६७; दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एससी., एम.फिल.; हास्य आ वीर; बाख्तिन प्रतिस्पर्धात्मक संवाद; प्रतिस्पर्धी मैत्री

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: ८ फरवरी १९६७; दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एससी., एम.फिल.; हास्य आ वीर; बाख्तिन प्रतिस्पर्धात्मक संवाद; प्रतिस्पर्धी मैत्री” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15718. “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15719. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15720. “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15721. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15722. खण्ड 1577क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: ८ फरवरी १९६७; दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एससी., एम.फिल.; हास्य आ वीर; बाख्तिन प्रतिस्पर्धात्मक संवाद; प्रतिस्पर्धी मैत्री” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: ८ फरवरी १९६७; दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एससी., एम.फिल.; हास्य आ वीर; बाख्तिन प्रतिस्पर्धात्मक संवाद; प्रतिस्पर्धी मैत्री” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1578 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर: सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३...

प्रश्न 15723. गजेन्द्र ठाकुरक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15724. “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15725. “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास अंश

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास अंश

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप उपन्यास अंश अछि।

प्रश्न 15726. गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।

प्रश्न 15727. गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह सम्पादक; अद्भुत; वैदिक-आधुनिक समन्वय; जायस यूलिसिस parallel; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सम्पादक; अद्भुत; वैदिक-आधुनिक समन्वय; जायस यूलिसिस parallel; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह सम्पादक; अद्भुत; वैदिक-आधुनिक समन्वय; जायस यूलिसिस parallel; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15728. “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास अंश

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास अंश

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15729. गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15730. “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यास अंशक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यास अंशक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15731. गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15732. खण्ड 1578क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास अंश आ “विदेह सम्पादक; अद्भुत; वैदिक-आधुनिक समन्वय; जायस यूलिसिस parallel; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास अंश आ “विदेह सम्पादक; अद्भुत; वैदिक-आधुनिक समन्वय; जायस यूलिसिस parallel; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1579 : विदेह-सदेह 4 — विज्ञानन्द झा: किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०...

प्रश्न 15733. विज्ञानन्द झाक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)

व्याख्या: सूचकांकमे विज्ञानन्द झाक रचना “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15734. “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15735. “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. किशोर-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. किशोर-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप किशोर-कथा अछि।

प्रश्न 15736. विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह भाषा-सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह भाषा-सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह भाषा-सम्पादक” अछि।

प्रश्न 15737. विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह भाषा-सम्पादक; वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; भाषा-सम्पादक आ कथाकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह भाषा-सम्पादक; वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; भाषा-सम्पादक आ कथाकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह भाषा-सम्पादक; वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; भाषा-सम्पादक आ कथाकार” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15738. “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विज्ञानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा किशोर-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विज्ञानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा किशोर-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15739. विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15740. “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ किशोर-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ किशोर-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15741. विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15742. खण्ड 1579क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” प्रविष्टि गद्य, किशोर-कथा आ “विदेह भाषा-सम्पादक; वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; भाषा-सम्पादक आ कथाकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” प्रविष्टि गद्य, किशोर-कथा आ “विदेह भाषा-सम्पादक; वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; भाषा-सम्पादक आ कथाकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1580 : विदेह-सदेह 5 — गजेन्द्र ठाकुर: (क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स...

प्रश्न 15743. गजेन्द्र ठाकुरक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. (क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र (ख) शारदानगर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र (ख) शारदानगर

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र (ख) शारदानगर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15744. “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15745. “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15746. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।

प्रश्न 15747. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह सम्पादक; जायस क्षणिक बोध-सिद्धान्त; चेखव सूक्ष्मतावाद; नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र; विधा-सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सम्पादक; जायस क्षणिक बोध-सिद्धान्त; चेखव सूक्ष्मतावाद; नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र; विधा-सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह सम्पादक; जायस क्षणिक बोध-सिद्धान्त; चेखव सूक्ष्मतावाद; नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र; विधा-सिद्धान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15748. “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15749. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15750. “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना निबन्ध आ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना निबन्ध आ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15751. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15752. खण्ड 1580क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समी...” प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा आ “विदेह सम्पादक; जायस क्षणिक बोध-सिद्धान्त; चेखव सूक्ष्मतावाद; नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र; विधा-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समी...” प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा आ “विदेह सम्पादक; जायस क्षणिक बोध-सिद्धान्त; चेखव सूक्ष्मतावाद; नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र; विधा-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1581 : विदेह-सदेह 5 — मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण): (क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि...

प्रश्न 15753. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. (क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख) रेवाज/दरेग/भूख/विजातीय/राष्ट्रभक्ति (ग) डॉ. तारानन्द वियोगीसँ गप-सप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख) रेवाज/दरेग/भूख/विजातीय/राष्ट्रभक्ति (ग) डॉ. तारानन्द वियोगीसँ गप-सप

व्याख्या: सूचकांकमे मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क रचना “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख) रेवाज/दरेग/भूख/विजातीय/राष्ट्रभक्ति (ग) डॉ. तारानन्द वियोगीसँ गप-सप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15754. “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15755. “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार अछि।

प्रश्न 15756. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता

उत्तर: घ. विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता” अछि।

प्रश्न 15757. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता; ग्राम्शी जैविक बुद्धिजीवी; बाख्तिन बहु-स्वरीयता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता; ग्राम्शी जैविक बुद्धिजीवी; बाख्तिन बहु-स्वरीयता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता; ग्राम्शी जैविक बुद्धिजीवी; बाख्तिन बहु-स्वरीयता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15758. “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण), विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण), विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15759. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15760. “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...”कें विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15761. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15762. खण्ड 1581क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख) रेवाज/दरेग/भ...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार आ “विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता; ग्राम्शी जैविक बुद्धिजीवी; बाख्तिन बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख) रेवाज/दरेग/भ...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार आ “विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता; ग्राम्शी जैविक बुद्धिजीवी; बाख्तिन बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1582 : विदेह-सदेह 5 — ज्योति सुनीत चौधरी: नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानि...

प्रश्न 15763. ज्योति सुनीत चौधरीक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह / हिमदूत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह / हिमदूत

व्याख्या: सूचकांकमे ज्योति सुनीत चौधरीक रचना “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह / हिमदूत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15764. “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15765. “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15766. ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार

उत्तर: घ. जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार” अछि।

प्रश्न 15767. ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार; लन्दन; करुण आ शान्त आ अद्भुत; स्पिवाक प्रवासी अनुभव; विदेहक वैश्विक लेखक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार; लन्दन; करुण आ शान्त आ अद्भुत; स्पिवाक प्रवासी अनुभव; विदेहक वैश्विक लेखक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार; लन्दन; करुण आ शान्त आ अद्भुत; स्पिवाक प्रवासी अनुभव; विदेहक वैश्विक लेखक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15768. “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15769. ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15770. “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15771. ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15772. खण्ड 1582क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह...” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार; लन्दन; करुण आ शान्त आ अद्भुत; स्पिवाक प्रवासी अनुभव; विदेहक वैश्विक लेखक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह...” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार; लन्दन; करुण आ शान्त आ अद्भुत; स्पिवाक प्रवासी अनुभव; विदेहक वैश्विक लेखक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1583 : विदेह-सदेह 5 — दुर्गानन्द मंडल: पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी

प्रश्न 15773. दुर्गानन्द मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी

व्याख्या: सूचकांकमे दुर्गानन्द मंडलक रचना “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15774. “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15775. “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15776. दुर्गानन्द मंडलक “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित

उत्तर: घ. दलित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित” अछि।

प्रश्न 15777. दुर्गानन्द मंडलक “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित; बीभत्स आ रौद्र आ करुण; अम्बेडकर पर्यावरण-जाति सम्बन्ध; सामाजिक शव-परीक्षण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित; बीभत्स आ रौद्र आ करुण; अम्बेडकर पर्यावरण-जाति सम्बन्ध; सामाजिक शव-परीक्षण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित; बीभत्स आ रौद्र आ करुण; अम्बेडकर पर्यावरण-जाति सम्बन्ध; सामाजिक शव-परीक्षण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15778. “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15779. दुर्गानन्द मंडलक “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15780. “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15781. दुर्गानन्द मंडलक “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15782. खण्ड 1583क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दुर्गानन्द मंडलक “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “दलित; बीभत्स आ रौद्र आ करुण; अम्बेडकर पर्यावरण-जाति सम्बन्ध; सामाजिक शव-परीक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दुर्गानन्द मंडलक “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “दलित; बीभत्स आ रौद्र आ करुण; अम्बेडकर पर्यावरण-जाति सम्बन्ध; सामाजिक शव-परीक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1584 : विदेह-सदेह 5 — कपिलेश्वर राउत: कलियुगक निर्णए

प्रश्न 15783. कपिलेश्वर राउतक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कलियुगक निर्णए

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कलियुगक निर्णए

व्याख्या: सूचकांकमे कपिलेश्वर राउतक रचना “कलियुगक निर्णए” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15784. “कलियुगक निर्णए”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15785. “कलियुगक निर्णए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विहनि कथा
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विहनि कथा
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15786. कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दलित
उत्तर: घ. दलित
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित” अछि।

प्रश्न 15787. कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. दलित; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर कलियुगकेँ जाति-युग रूपमे पढ़ब
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. दलित; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर कलियुगकेँ जाति-युग रूपमे पढ़ब
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर कलियुगकेँ जाति-युग रूपमे पढ़ब” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15788. “कलियुगक निर्णए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15789. कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15790. “कलियुगक निर्णए”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15791. कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15792. खण्ड 1584क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “दलित; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर कलियुगकेँ जाति-युग रूपमे पढ़ब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “दलित; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर कलियुगकेँ जाति-युग रूपमे पढ़ब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1585 : विदेह-सदेह 5 — धीरेश्वर कुमार: राम-कथाक समापन

प्रश्न 15793. धीरेश्वर कुमारक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. राम-कथाक समापन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम-कथाक समापन

व्याख्या: सूचकांकमे धीरेश्वर कुमारक रचना “राम-कथाक समापन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15794. “राम-कथाक समापन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15795. “राम-कथाक समापन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15796. धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ अद्भुत

उत्तर: घ. शान्त आ अद्भुत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ अद्भुत” अछि।

प्रश्न 15797. धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ अद्भुत; देरिदा supplement; mythological पुनर्पाठism

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ अद्भुत; देरिदा supplement; mythological पुनर्पाठism

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ अद्भुत; देरिदा supplement; mythological पुनर्पाठism” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15798. “राम-कथाक समापन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेश्वर कुमार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेश्वर कुमार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15799. धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15800. “राम-कथाक समापन”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15801. धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15802. खण्ड 1585क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ अद्भुत; देरिदा supplement; mythological पुनर्पाठism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ अद्भुत; देरिदा supplement; mythological पुनर्पाठism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1586 : विदेह-सदेह 5 — राजदेव मंडल: बढ़िया गप्प / ठोकर

प्रश्न 15803. राजदेव मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बढ़िया गप्प / ठोकर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बढ़िया गप्प / ठोकर

व्याख्या: सूचकांकमे राजदेव मंडलक रचना “बढ़िया गप्प / ठोकर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15804. “बढ़िया गप्प / ठोकर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15805. “बढ़िया गप्प / ठोकर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15806. राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ करुण

उत्तर: घ. हास्य आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ करुण” अछि।

प्रश्न 15807. राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ करुण; कथा-स्वभाव-विमर्श; ग्राम्शी समुदाय-कथा-वाचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ करुण; कथा-स्वभाव-विमर्श; ग्राम्शी समुदाय-कथा-वाचन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ करुण; कथा-स्वभाव-विमर्श; ग्राम्शी समुदाय-कथा-वाचन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15808. “बढ़िया गप्प / ठोकर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15809. राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15810. “बढ़िया गप्प / ठोकर”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15811. राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15812. खण्ड 1586क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ करुण; कथा-स्वभाव-विमर्श; ग्राम्शी समुदाय-कथा-वाचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ करुण; कथा-स्वभाव-विमर्श; ग्राम्शी समुदाय-कथा-वाचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1587 : विदेह-सदेह 5 — बेचन ठाकुर: आत्महत्या / फुसिक फल

प्रश्न 15813. बेचन ठाकुरक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आत्महत्या / फुसिक फल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्महत्या / फुसिक फल

व्याख्या: सूचकांकमे बेचन ठाकुरक रचना “आत्महत्या / फुसिक फल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15814. “आत्महत्या / फुसिक फल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15815. “आत्महत्या / फुसिक फल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15816. बेचन ठाकुरक “आत्महत्या / फुसिक फल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भिखारी ठाकुर परम्परा

उत्तर: घ. भिखारी ठाकुर परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भिखारी ठाकुर परम्परा” अछि।

प्रश्न 15817. बेचन ठाकुरक “आत्महत्या / फुसिक फल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. भिखारी ठाकुर परम्परा; करुण आ व्यंग्य; कामू निरर्थकताबोध; लोक-नीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भिखारी ठाकुर परम्परा; करुण आ व्यंग्य; कामू निरर्थकताबोध; लोक-नीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “भिखारी ठाकुर परम्परा; करुण आ व्यंग्य; कामू निरर्थकताबोध; लोक-नीति” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15818. “आत्महत्या / फुसिक फल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15819. बेचन ठाकुरक “आत्महत्या / फुसिक फल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15820. “आत्महत्या / फुसिक फल”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15821. बेचन ठाकुरक “आत्महत्या / फुसिक फल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15822. खण्ड 1587क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बेचन ठाकुरक “आत्महत्या / फुसिक फल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; करुण आ व्यंग्य; कामू निरर्थकताबोध; लोक-नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बेचन ठाकुरक “आत्महत्या / फुसिक फल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; करुण आ व्यंग्य; कामू निरर्थकताबोध; लोक-नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1588 : विदेह-सदेह 5 — राम प्रवेश मंडल: पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-म...

प्रश्न 15823. राम प्रवेश मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र

व्याख्या: सूचकांकमे राम प्रवेश मंडलक रचना “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15824. “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15825. “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15826. राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 15827. राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी fool; चार-कथा विस्तार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी fool; चार-कथा विस्तार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी fool; चार-कथा विस्तार” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15828. “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम प्रवेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम प्रवेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15829. राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15830. “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15831. राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15832. खण्ड 1588क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी fool; चार-कथा विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी fool; चार-कथा विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1589 : विदेह-सदेह 5 — भारत भूषण झा: प्रेम

प्रश्न 15833. भारत भूषण झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: सूचकांकमे भारत भूषण झाक रचना “प्रेम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15834. “प्रेम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15835. “प्रेम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15836. भारत भूषण झाक “प्रेम” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 15837. भारत भूषण झाक “प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार; एक-शब्द शीर्षक; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार; एक-शब्द शीर्षक; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शृंगार; एक-शब्द शीर्षक; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष सम्बन्ध” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15838. “प्रेम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भारत भूषण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भारत भूषण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15839. भारत भूषण झाक “प्रेम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15840. “प्रेम”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15841. भारत भूषण झाक “प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15842. खण्ड 1589क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भारत भूषण झाक “प्रेम” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शृंगार; एक-शब्द शीर्षक; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भारत भूषण झाक “प्रेम” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शृंगार; एक-शब्द शीर्षक; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1590 : विदेह-सदेह 5 — मानेश्वर मनुज: ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-...

प्रश्न 15843. मानेश्वर मनुजक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर

व्याख्या: सूचकांकमे मानेश्वर मनुजक रचना “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15844. “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15845. “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15846. मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles

उत्तर: घ. सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles” अछि।

प्रश्न 15847. मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles; वात्सल्य आ करुण आ व्यंग्य; मैथिली शब्द-क्रीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles; वात्सल्य आ करुण आ व्यंग्य; मैथिली शब्द-क्रीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles; वात्सल्य आ करुण आ व्यंग्य; मैथिली शब्द-क्रीड़ा” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15848. “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15849. मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15850. “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...”कें विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15851. मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15852. खण्ड 1590क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles; वात्सल्य आ करुण आ व्यंग्य; मैथिली शब्द-क्रीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles; वात्सल्य आ करुण आ व्यंग्य; मैथिली शब्द-क्रीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1591 : विदेह-सदेह 5 — उमेश मंडल: दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी /...

प्रश्न 15853. उमेश मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी

व्याख्या: सूचकांकमे उमेश मंडलक रचना “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15854. “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15855. “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15856. उमेश मंडलक “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सह-सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सह-सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सह-सम्पादक” अछि।

प्रश्न 15857. उमेश मंडलक “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह सह-सम्पादक; मधुर आ व्यंग्य आ करुण आ शान्त; विदेहक सामूहिक उत्पादन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सह-सम्पादक; मधुर आ व्यंग्य आ करुण आ शान्त; विदेहक सामूहिक उत्पादन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह सह-सम्पादक; मधुर आ व्यंग्य आ करुण आ शान्त; विदेहक सामूहिक उत्पादन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15858. “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15859. उमेश मंडलक “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15860. “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन...”कें विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15861. उमेश मंडलक “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15862. खण्ड 1591क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उमेश मंडलक “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “विदेह सह-सम्पादक; मधुर आ व्यंग्य आ करुण आ शान्त; विदेहक सामूहिक उत्पादन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उमेश मंडलक “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “विदेह सह-सम्पादक; मधुर आ व्यंग्य आ करुण आ शान्त; विदेहक सामूहिक उत्पादन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1592 : विदेह-सदेह 5 — डॉ. शेफालिका वर्मा: आनक बड़ाइ

प्रश्न 15863. डॉ. शेफालिका वर्माक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आनक बड़ाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आनक बड़ाइ

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. शेफालिका वर्माक रचना “आनक बड़ाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15864. “आनक बड़ाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15865. “आनक बड़ाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15866. डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी” अछि।

प्रश्न 15867. डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी; हास्य आ करुण; बूर्द्यू symbolic capital

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी; हास्य आ करुण; बूर्द्यू symbolic capital

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “साहित्य अकादेमी; हास्य आ करुण; बूर्द्यू symbolic capital” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15868. “आनक बड़ाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15869. डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15870. “आनक बड़ाइ”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15871. डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15872. खण्ड 1592क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “साहित्य अकादेमी; हास्य आ करुण; बूर्द्धू symbolic capital” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “साहित्य अकादेमी; हास्य आ करुण; बूर्द्धू symbolic capital” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1593 : विदेह-सदेह 5 — जगदीश प्रसाद मंडल: थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत...

प्रश्न 15873. जगदीश प्रसाद मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन

व्याख्या: सूचकांकमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15874. “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15875. “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15876. जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित

उत्तर: घ. दलित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित” अछि।

प्रश्न 15877. जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित; भूमि-अधिकार त्रयी; अम्बेडकर न्याय-साक्ष्य; पर्यावरणीय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित; भूमि-अधिकार त्रयी; अम्बेडकर न्याय-साक्ष्य; पर्यावरणीय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित; भूमि-अधिकार त्रयी; अम्बेडकर न्याय-साक्ष्य; पर्यावरणीय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15878. “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15879. जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15880. “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15881. जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15882. खण्ड 1593क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “दलित; भूमि-अधिकार त्रयी; अम्बेडकर न्याय-साक्ष्य; पर्यावरणीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “दलित; भूमि-अधिकार त्रयी; अम्बेडकर न्याय-साक्ष्य; पर्यावरणीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1594 : विदेह-सदेह 5 — रामकृष्ण मंडल 'छोटू': बाबूजी लेल

प्रश्न 15883. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाबूजी लेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबूजी लेल

व्याख्या: सूचकांकमे रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क रचना “बाबूजी लेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15884. “बाबूजी लेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15885. “बाबूजी लेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15886. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वात्सल्य उलट — child-for-father

उत्तर: घ. वात्सल्य उलट — child-for-father

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य उलट — child-for-father” अछि।

प्रश्न 15887. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वात्सल्य उलट — child-for-father; वृद्धावस्था/निर्भरता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वात्सल्य उलट — child-for-father; वृद्धावस्था/निर्भरता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वात्सल्य उलट — child-for-father; वृद्धावस्था/निर्भरता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15888. “बाबूजी लेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामकृष्ण मंडल 'छोटू', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामकृष्ण मंडल 'छोटू', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15889. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15890. “बाबूजी लेल”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15891. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15892. खण्ड 1594क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वात्सल्य उलट — child-for-father; वृद्धावस्था/निर्भरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वात्सल्य उलट — child-for-father; वृद्धावस्था/निर्भरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1595 : विदेह-सदेह 5 — रामलोचन ठाकुर: गिरगिट / भारत रत्न

प्रश्न 15893. रामलोचन ठाकुरक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गिरगिट / भारत रत्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गिरगिट / भारत रत्न

व्याख्या: सूचकांकमे रामलोचन ठाकुरक रचना “गिरगिट / भारत रत्न” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15894. “गिरगिट / भारत रत्न”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15895. “गिरगिट / भारत रत्न”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15896. रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 15897. रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसीesque shapeshifter; राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसीesque shapeshifter; राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसीesque shapeshifter; राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15898. “गिरगिट / भारत रत्न”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामलोचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामलोचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15899. रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15900. “गिरगिट / भारत रत्न”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15901. रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15902. खण्ड 1595क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसीesque shapeshifter; राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसीesque shapeshifter; राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1596 : विदेह-सदेह 5 — परमेश्वर कापड़ि: सतबरती

प्रश्न 15903. परमेश्वर कापड़िक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सतबरती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सतबरती

व्याख्या: सूचकांकमे परमेश्वर कापड़िक रचना “सतबरती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15904. “सतबरती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15905. “सतबरती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विहनि कथा
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विहनि कथा
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15906. परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. नेपाल
उत्तर: घ. नेपाल
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 15907. परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. नेपाल; शृंगार आ करुण; विवाह-शपथ आलोचना
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. नेपाल; शृंगार आ करुण; विवाह-शपथ आलोचना
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नेपाल; शृंगार आ करुण; विवाह-शपथ आलोचना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15908. “सतबरती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15909. परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15910. “सतबरती”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15911. परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15912. खण्ड 1596क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “नेपाल; शृंगार आ करुण; विवाह-शपथ आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “नेपाल; शृंगार आ करुण; विवाह-शपथ आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1597 : विदेह-सदेह 5 — अमरनाथ: देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट /...

प्रश्न 15913. अमरनाथक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ

व्याख्या: सूचकांकमे अमरनाथक रचना “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15914. “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15915. “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15916. अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता

उत्तर: घ. मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता” अछि।

प्रश्न 15917. अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता; 'क्षणिका' १९७५; चेखव सूक्ष्मतावाद; एक-शब्द शीर्षकऽ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता; 'क्षणिका' १९७५; चेखव सूक्ष्मतावाद; एक-शब्द शीर्षकऽ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता; 'क्षणिका' १९७५; चेखव सूक्ष्मतावाद; एक-शब्द शीर्षकऽ” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15918. “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरनाथ, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरनाथ, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15919. अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15920. “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15921. अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15922. खण्ड 1597क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता; 'क्षणिका' १९७५; चेखव सूक्ष्मतावाद; एक-शब्द शीर्षकऽ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता; 'क्षणिका' १९७५; चेखव सूक्ष्मतावाद; एक-शब्द शीर्षकऽ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1598 : विदेह-सदेह 5 — चन्द्रेश खरे: चेकिंग / कछमछी / बिसवास

प्रश्न 15923. चन्द्रेश खरेक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. चेकिंग / कछमछी / बिसवास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेकिंग / कछमछी / बिसवास

व्याख्या: सूचकांकमे चन्द्रेश खरेक रचना “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15924. “चेकिंग / कछमछी / बिसवास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15925. “चेकिंग / कछमछी / बिसवास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15926. चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य आ शान्त

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य आ शान्त” अछि।

प्रश्न 15927. चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य आ शान्त; अंग्रेजी-मैथिली कोड-बदलाव; surveillance व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य आ शान्त; अंग्रेजी-मैथिली कोड-बदलाव; surveillance व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य आ शान्त; अंग्रेजी-मैथिली कोड-बदलाव; surveillance व्यंग्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15928. “चेकिंग / कछमछी / बिसवास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रेश खरे, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रेश खरे, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15929. चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15930. “चेकिंग / कछमछी / बिसवास”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15931. चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15932. खण्ड 1598क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य आ शान्त; अंग्रेजी-मैथिली कोड-बदलाव; surveillance व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य आ शान्त; अंग्रेजी-मैथिली कोड-बदलाव; surveillance व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1599 : विदेह-सदेह 5 — रघुनाथ मुखिया: इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ...

प्रश्न 15933. रघुनाथ मुखियाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर

व्याख्या: सूचकांकमे रघुनाथ मुखियाक रचना “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15934. “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15935. “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15936. रघुनाथ मुखियाक “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 15937. रघुनाथ मुखियाक “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य; फूको power; climate change व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य; फूको power; climate change व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य; फूको power; climate change व्यंग्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15938. “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15939. रघुनाथ मुखियाक “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15940. “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15941. रघुनाथ मुखियाक “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15942. खण्ड 1599क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. रघुनाथ मुखियाक “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य; फूको power; climate change व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. रघुनाथ मुखियाक “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य; फूको power; climate change व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1600 : विदेह-सदेह 5 — ऋषि वशिष्ठ: प्रमाण-पत्र / मनमौजी

प्रश्न 15943. ऋषि वशिष्ठक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?
क. प्रमाण-पत्र / मनमौजी
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. प्रमाण-पत्र / मनमौजी
व्याख्या: सूचकांकमे ऋषि वशिष्ठक रचना “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15944. “प्रमाण-पत्र / मनमौजी”क मुख्य विधा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गद्य
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गद्य
व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15945. “प्रमाण-पत्र / मनमौजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विहनि कथा
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विहनि कथा
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15946. ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हास्य आ व्यंग्य
उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 15947. ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य; काफ्का नौकरशाही; प्रमाण-पत्र रूपी अस्तित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य; काफ्का नौकरशाही; प्रमाण-पत्र रूपी अस्तित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; काफ्का नौकरशाही; प्रमाण-पत्र रूपी अस्तित्व” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15948. “प्रमाण-पत्र / मनमौजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ऋषि वशिष्ठ, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ऋषि वशिष्ठ, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15949. ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15950. “प्रमाण-पत्र / मनमौजी”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15951. ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15952. खण्ड 1600क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; काफ्का नौकरशाही; प्रमाण-पत्र रूपी अस्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; काफ्का नौकरशाही; प्रमाण-पत्र रूपी अस्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1601 : विदेह-सदेह 5 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': फुसि नै बाजू

प्रश्न 15953. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. फुसि नै बाजू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फुसि नै बाजू

व्याख्या: सूचकांकमे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क रचना “फुसि नै बाजू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15954. “फुसि नै बाजू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15955. “फुसि नै बाजू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15956. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ शान्त

उत्तर: घ. हास्य आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शान्त” अछि।

प्रश्न 15957. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ शान्त; आज्ञार्थक शीर्षक; सामाजिक पाखण्ड

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ शान्त; आज्ञार्थक शीर्षक; सामाजिक पाखण्ड

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ शान्त; आज्ञार्थक शीर्षक; सामाजिक पाखण्ड” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15958. “फुसि नै बाजू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15959. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15960. “फुसि नै बाजू”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15961. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15962. खण्ड 1601क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त; आज्ञार्थक शीर्षक; सामाजिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त; आज्ञार्थक शीर्षक; सामाजिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1602 : विदेह-सदेह 5 — मिथिलेश कुमार झा: झीक

प्रश्न 15963. मिथिलेश कुमार झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. झीक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झीक

व्याख्या: सूचकांकमे मिथिलेश कुमार झाक रचना “झीक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15964. “झीक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15965. “झीक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विहनि कथा
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विहनि कथा
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15966. मिथिलेश कुमार झाक “झीक” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शुद्ध मैथिली शब्द
उत्तर: घ. शुद्ध मैथिली शब्द
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शुद्ध मैथिली शब्द” अछि।

प्रश्न 15967. मिथिलेश कुमार झाक “झीक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. शुद्ध मैथिली शब्द; करुण; भाषिक प्रतिरोध
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शुद्ध मैथिली शब्द; करुण; भाषिक प्रतिरोध
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शुद्ध मैथिली शब्द; करुण; भाषिक प्रतिरोध” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15968. “झीक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15969. मिथिलेश कुमार झाक “झीक” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15970. “झीक”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15971. मिथिलेश कुमार झाक “झीक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15972. खण्ड 1602क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिलेश कुमार झाक “झीक” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शुद्ध मैथिली शब्द; करुण; भाषिक प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिलेश कुमार झाक “झीक” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शुद्ध मैथिली शब्द; करुण; भाषिक प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1603 : विदेह-सदेह 5 — सत्येश्वर कुमार झा: लेटेस्ट

प्रश्न 15973. सत्येश्वर कुमार झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. लेटेस्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेटेस्ट

व्याख्या: सूचकांकमे सत्येश्वर कुमार झाक रचना “लेटेस्ट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15974. “लेटेस्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15975. “लेटेस्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15976. सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 15977. सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य; मैथिलीमे अंग्रेजी शीर्षक; बाख्तिन बहु-स्वरीयता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य; मैथिलीमे अंग्रेजी शीर्षक; बाख्तिन बहु-स्वरीयता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; मैथिलीमे अंग्रेजी शीर्षक; बाख्तिन बहु-स्वरीयता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15978. “लेटेस्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्येश्वर कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्येश्वर कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15979. सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15980. “लेटेस्ट”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15981. सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15982. खण्ड 1603क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; मैथिलीमे अंग्रेजी शीर्षक; बाख्तिन बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; मैथिलीमे अंग्रेजी शीर्षक; बाख्तिन बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1604 : विदेह-सदेह 5 — नवनीत कुमार झा: गाम आबह

प्रश्न 15983. नवनीत कुमार झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गाम आबह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम आबह

व्याख्या: सूचकांकमे नवनीत कुमार झाक रचना “गाम आबह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15984. “गाम आबह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15985. “गाम आबह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15986. नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ वात्सल्य

उत्तर: घ. शान्त आ वात्सल्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ वात्सल्य” अछि।

प्रश्न 15987. नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ वात्सल्य; प्रवासी अनुभव/प्रवास; आमन्त्रणात्मक आज्ञा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ वात्सल्य; प्रवासी अनुभव/प्रवास; आमन्त्रणात्मक आज्ञा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ वात्सल्य; प्रवासी अनुभव/प्रवास; आमन्त्रणात्मक आज्ञा” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15988. “गाम आबह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवनीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवनीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15989. नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 15990. “गाम आबह”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 15991. नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 15992. खण्ड 1604क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ वात्सल्य; प्रवासी अनुभव/प्रवास; आमन्त्रणात्मक आज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ वात्सल्य; प्रवासी अनुभव/प्रवास; आमन्त्रणात्मक आज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1605 : विदेह-सदेह 5 — कौशल कुमार: दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन...

प्रश्न 15993. कौशल कुमारक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत

व्याख्या: सूचकांकमे कौशल कुमारक रचना “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 15994. “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 15995. “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 15996. कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ शान्त आ वीर

उत्तर: घ. हास्य आ शान्त आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शान्त आ वीर” अछि।

प्रश्न 15997. कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ शान्त आ वीर; पाखण्डसँ आध्यात्मिकता आ गरिमा धरि कथा-वक्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ शान्त आ वीर; पाखण्डसँ आध्यात्मिकता आ गरिमा धरि कथा-वक्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ शान्त आ वीर; पाखण्डसँ आध्यात्मिकता आ गरिमा धरि कथा-वक्र” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 15998. “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कौशल कुमार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कौशल कुमार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 15999. कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16000. “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड 1605 : विदेह-सदेह 5 — कौशल कुमार: दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन...

प्रश्न 16001. कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16002. खण्ड 1605क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त आ वीर; पाखण्डसँ आध्यात्मिकता आ गरिमा धरि कथा-वक्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त आ वीर; पाखण्डसँ आध्यात्मिकता आ गरिमा धरि कथा-वक्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1606 : विदेह-सदेह 5 — अनमोल झा: चेतना

प्रश्न 16003. अनमोल झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेतना

व्याख्या: सूचकांकमे अनमोल झाक रचना “चेतना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16004. “चेतना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16005. “चेतना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16006. अनमोल झाक “चेतना” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर आ शान्त

उत्तर: घ. वीर आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ शान्त” अछि।

प्रश्न 16007. अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ शान्त; चेतना-बीज रूपक; सामाजिक जागरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ शान्त; चेतना-बीज रूपक; सामाजिक जागरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वीर आ शान्त; चेतना-बीज रूपक; सामाजिक जागरण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16008. “चेतना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16009. अनमोल झाक “चेतना” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16010. “चेतना”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16011. अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16012. खण्ड 1606क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वीर आ शान्त; चेतना-बीज रूपक; सामाजिक जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वीर आ शान्त; चेतना-बीज रूपक; सामाजिक जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1607 : विदेह-सदेह 5 — कुमार मनोज कश्यप: मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल प...

प्रश्न 16013. कुमार मनोज कश्यपक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू

व्याख्या: सूचकांकमे कुमार मनोज कश्यपक रचना “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16014. “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16015. “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16016. कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर

उत्तर: घ. करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर” अछि।

प्रश्न 16017. कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर; ग्राम्शीक अधीनस्थ-वर्ग दृष्टि; आकांक्षी युवा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर; ग्राम्शीक अधीनस्थ-वर्ग दृष्टि; आकांक्षी युवा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर; ग्राम्शीक अधीनस्थ-वर्ग दृष्टि; आकांक्षी युवा” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16018. “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16019. कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16020. “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16021. कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16022. खण्ड 1607क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर; ग्राम्शीक अधीनस्थ-वर्ग दृष्टि; आकांक्षी युवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर; ग्राम्शीक अधीनस्थ-वर्ग दृष्टि; आकांक्षी युवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1608 : विदेह-सदेह 5 — विनीत उत्पल: श्री गुरुवै नमः

प्रश्न 16023. विनीत उत्पलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. श्री गुरुवै नमः

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्री गुरुवै नमः

व्याख्या: सूचकांकमे विनीत उत्पलक रचना “श्री गुरुवै नमः” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16024. “श्री गुरुवै नमः”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16025. “श्री गुरुवै नमः”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16026. विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह अनुवाद सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह अनुवाद सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह अनुवाद सम्पादक” अछि।

प्रश्न 16027. विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह अनुवाद सम्पादक; शान्त आ व्यंग्य; संस्कृत-मङ्गलाचरणक विडम्बना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह अनुवाद सम्पादक; शान्त आ व्यंग्य; संस्कृत-मङ्गलाचरणक विडम्बना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह अनुवाद सम्पादक; शान्त आ व्यंग्य; संस्कृत-मङ्गलाचरणक विडम्बना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16028. “श्री गुरुवै नमः”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16029. विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16030. “श्री गुरुवै नमः”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16031. विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16032. खण्ड 1608क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “विदेह अनुवाद सम्पादक; शान्त आ व्यंग्य; संस्कृत-मङ्गलाचरणक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “विदेह अनुवाद सम्पादक; शान्त आ व्यंग्य; संस्कृत-मङ्गलाचरणक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1609 : विदेह-सदेह 5 — डॉ. धनाकर ठाकुर: हमरा एकर एक बायोडाटा चाही

प्रश्न 16033. डॉ. धनाकर ठाकुरक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हमरा एकर एक बायोडाटा चाही

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमरा एकर एक बायोडाटा चाही

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. धनाकर ठाकुरक रचना “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16034. “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16035. “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16036. डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16037. डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य; longest title; काफ्का-बेकेट शैलीक नौकरशाही निरर्थकताबोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य; longest title; काफ्का-बेकेट शैलीक नौकरशाही निरर्थकताबोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; longest title; काफ्का-बेकेट शैलीक नौकरशाही निरर्थकताबोध” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16038. “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16039. डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16040. “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16041. डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16042. खण्ड 1609क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; longest title; काफ्का-बेकेट शैलीक नौकरशाही निरर्थकताबोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; longest title; काफ्का-बेकेट शैलीक नौकरशाही निरर्थकताबोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1610 : विदेह-सदेह 5 — आशीष अनचिन्हार: नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर

प्रश्न 16043. आशीष अनचिन्हारक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर

व्याख्या: सूचकांकमे आशीष अनचिन्हारक रचना “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16044. “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16045. “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16046. आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सहायक सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सहायक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सहायक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 16047. आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह सहायक सम्पादक; ghazal movement; शान्त आ अद्भुत; देरिदाक भिन्नता-विलम्ब सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सहायक सम्पादक; ghazal movement; शान्त आ अद्भुत; देरिदाक भिन्नता-विलम्ब सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह सहायक सम्पादक; ghazal movement; शान्त आ अद्भुत; देरिदाक भिन्नता-विलम्ब सिद्धान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16048. “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16049. आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16050. “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16051. आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16052. खण्ड 1610क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “विदेह सहायक सम्पादक; ghazal movement; शान्त आ अद्भुत; देरिदाक भिन्नता-विलम्ब सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “विदेह सहायक सम्पादक; ghazal movement; शान्त आ अद्भुत; देरिदाक भिन्नता-विलम्ब सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1611 : विदेह-सदेह 5 — सतीश चन्द्र झा: नोकरी

प्रश्न 16053. सतीश चन्द्र झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नोकरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोकरी

व्याख्या: सूचकांकमे सतीश चन्द्र झाक रचना “नोकरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16054. “नोकरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16055. “नोकरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विहनि कथा
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विहनि कथा
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16056. सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. करुण
उत्तर: घ. करुण
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण” अछि।

प्रश्न 16057. सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. करुण; मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता; रोजगारीकेँ गरिमा रूपमे देखब
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. करुण; मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता; रोजगारीकेँ गरिमा रूपमे देखब
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण; मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता; रोजगारीकेँ गरिमा रूपमे देखब” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16058. “नोकरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16059. सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16060. “नोकरी”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16061. सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16062. खण्ड 1611क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता; रोजगारीकेँ गरिमा रूपमे देखब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता; रोजगारीकेँ गरिमा रूपमे देखब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1612 : विदेह-सदेह 5 — भवनाथ झा: ऊँचका डीह / हेराफेरी

प्रश्न 16063. भवनाथ झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. ऊँचका डीह / हेराफेरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऊँचका डीह / हेराफेरी

व्याख्या: सूचकांकमे भवनाथ झाक रचना “ऊँचका डीह / हेराफेरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16064. “ऊँचका डीह / हेराफेरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16065. “ऊँचका डीह / हेराफेरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16066. भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ व्यंग्य

उत्तर: घ. शान्त आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16067. भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ व्यंग्य; स्थान-रूपक आ सामाजिक आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ व्यंग्य; स्थान-रूपक आ सामाजिक आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ व्यंग्य; स्थान-रूपक आ सामाजिक आलोचना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16068. “ऊँचका डीह / हेराफेरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भवनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भवनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16069. भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16070. “ऊँचका डीह / हेराफेरी”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16071. भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16072. खण्ड 1612क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; स्थान-रूपक आ सामाजिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; स्थान-रूपक आ सामाजिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1613 : विदेह-सदेह 5 — नबोनारायण मिश्र: घमण्डक फल

प्रश्न 16073. नबोनारायण मिश्रक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. घमण्डक फल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घमण्डक फल

व्याख्या: सूचकांकमे नबोनारायण मिश्रक रचना “घमण्डक फल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16074. “घमण्डक फल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16075. “घमण्डक फल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16076. नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16077. नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य; लोक-नीति कथा; कर्म-फल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य; लोक-नीति कथा; कर्म-फल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; लोक-नीति कथा; कर्म-फल” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16078. “घमण्डक फल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नबोनारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नबोनारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16079. नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16080. “घमण्डक फल”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16081. नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16082. खण्ड 1613क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; लोक-नीति कथा; कर्म-फल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; लोक-नीति कथा; कर्म-फल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1614 : विदेह-सदेह 5 — राम विलास साहु: परिश्रमक भीख

प्रश्न 16083. राम विलास साहुक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. परिश्रमक भीख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिश्रमक भीख

व्याख्या: सूचकांकमे राम विलास साहुक रचना “परिश्रमक भीख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16084. “परिश्रमक भीख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16085. “परिश्रमक भीख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विहनि कथा
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विहनि कथा
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16086. राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. करुण आ व्यंग्य
उत्तर: घ. करुण आ व्यंग्य
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16087. राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. करुण आ व्यंग्य; अम्बेडकरक श्रम-गरिमा दृष्टि; श्रम-भीख विरोधाभास
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. करुण आ व्यंग्य; अम्बेडकरक श्रम-गरिमा दृष्टि; श्रम-भीख विरोधाभास
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ व्यंग्य; अम्बेडकरक श्रम-गरिमा दृष्टि; श्रम-भीख विरोधाभास” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16088. “परिश्रमक भीख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक राम विलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16089. राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16090. “परिश्रमक भीख”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16091. राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16092. खण्ड 1614क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; अम्बेडकरक श्रम-गरिमा दृष्टि; श्रम-भीख विरोधाभास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; अम्बेडकरक श्रम-गरिमा दृष्टि; श्रम-भीख विरोधाभास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1615 : विदेह-सदेह 5 — मुस्नी कामत: हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण

प्रश्न 16093. मुस्नी कामतक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण

व्याख्या: सूचकांकमे मुस्नी कामतक रचना “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16094. “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16095. “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16096. मुस्नी कामतक “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ हास्य

उत्तर: घ. शान्त आ हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ हास्य” अछि।

प्रश्न 16097. मुस्नी कामतक “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ हास्य; लोक-ज्ञान; करैला-मीठ रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ हास्य; लोक-ज्ञान; करैला-मीठ रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ हास्य; लोक-ज्ञान; करैला-मीठ रूपक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16098. “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुस्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुस्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16099. मुस्नी कामतक “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16100. “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16101. मुस्नी कामतक “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16102. खण्ड 1615क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मुस्नी कामतक “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ हास्य; लोक-ज्ञान; करैला-मीठ रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मुस्नी कामतक “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ हास्य; लोक-ज्ञान; करैला-मीठ रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1616 : विदेह-सदेह 5 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी

प्रश्न 16103. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक रचना “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16104. “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16105. “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16106. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ व्यंग्य

उत्तर: घ. शान्त आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16107. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ व्यंग्य; मैथिली पंचांग-संवेदना; पर्यावरणीय चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ व्यंग्य; मैथिली पंचांग-संवेदना; पर्यावरणीय चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ व्यंग्य; मैथिली पंचांग-संवेदना; पर्यावरणीय चेतना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16108. “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16109. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16110. “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16111. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16112. खण्ड 1616क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; मैथिली पंचांग-संवेदना; पर्यावरणीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; मैथिली पंचांग-संवेदना; पर्यावरणीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1617 : विदेह-सदेह 5 — संजय कुमार मंडल: अनरेजिस्टर्ड घुसखोर

प्रश्न 16113. संजय कुमार मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अनरेजिस्टर्ड घुसखोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनरेजिस्टर्ड घुसखोर

व्याख्या: सूचकांकमे संजय कुमार मंडलक रचना “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16114. “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16115. “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16116. संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16117. संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य; अंग्रेजी-मैथिली मिश्र शीर्षक; भ्रष्टाचार-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य; अंग्रेजी-मैथिली मिश्र शीर्षक; भ्रष्टाचार-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; अंग्रेजी-मैथिली मिश्र शीर्षक; भ्रष्टाचार-व्यंग्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16118. “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संजय कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संजय कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16119. संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16120. “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16121. संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16122. खण्ड 1617क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; अंग्रेजी-मैथिली मिश्र शीर्षक; भ्रष्टाचार-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; अंग्रेजी-मैथिली मिश्र शीर्षक; भ्रष्टाचार-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1618 : विदेह-सदेह 5 — डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र: वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर...

प्रश्न 16123. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (अनुवाद: योगानन्द झा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (अनुवाद: योगानन्द झा)

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक रचना “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (अनुवाद: योगानन्द झा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16124. “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16125. “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्कृत विहनि कथा (अनूदित)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्कृत विहनि कथा (अनूदित)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप संस्कृत विहनि कथा (अनूदित) अछि।

प्रश्न 16126. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सदेह ५क विशिष्ट योगदान

उत्तर: घ. सदेह ५क विशिष्ट योगदान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सदेह ५क विशिष्ट योगदान” अछि।

प्रश्न 16127. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. सदेह ५क विशिष्ट योगदान; संस्कृतसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; नव्य-न्यायिक मध्यमार्ग सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सदेह ५क विशिष्ट योगदान; संस्कृतसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; नव्य-न्यायिक मध्यमार्ग सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सदेह ५क विशिष्ट योगदान; संस्कृतसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; नव्य-न्यायिक मध्यमार्ग सिद्धान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16128. “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा संस्कृत विहनि कथा (अनूदित)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा संस्कृत विहनि कथा (अनूदित)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16129. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16130. “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्कृत विहनि कथा (अनूदित)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्कृत विहनि कथा (अनूदित)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16131. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16132. खण्ड 1618क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (अनुवाद: योगान...” प्रविष्टि गद्य, संस्कृत विहनि कथा (अनूदित) आ “सदेह ५क विशिष्ट योगदान; संस्कृतसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; नव्य-न्यायिक मध्यमार्ग सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (अनुवाद: योगान...” प्रविष्टि गद्य, संस्कृत विहनि कथा (अनूदित) आ “सदेह ५क विशिष्ट योगदान; संस्कृतसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; नव्य-न्यायिक मध्यमार्ग सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1619 : विदेह-सदेह 5 — मिथिलेश मंडल: विदेशी बाबू

प्रश्न 16133. मिथिलेश मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. विदेशी बाबू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेशी बाबू

व्याख्या: सूचकांकमे मिथिलेश मंडलक रचना “विदेशी बाबू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16134. “विदेशी बाबू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16135. “विदेशी बाबू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16136. मिथिलेश मंडलक “विदेशी बाबू” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16137. मिथिलेश मंडलक “विदेशी बाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य; उत्तर-औपनिवेशिक चिन्ता; विदेशीकेँ आकांक्षा आ समस्या दुनू रूपमे देखब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य; उत्तर-औपनिवेशिक चिन्ता; विदेशीकेँ आकांक्षा आ समस्या दुनू रूपमे देखब

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; उत्तर-औपनिवेशिक चिन्ता; विदेशीकेँ आकांक्षा आ समस्या दुनू रूपमे देखब” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16138. “विदेशी बाबू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16139. मिथिलेश मंडलक “विदेशी बाबू” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16140. “विदेशी बाबू”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16141. मिथिलेश मंडलक “विदेशी बाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16142. खण्ड 1619क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिलेश मंडलक “विदेशी बाबू” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; उत्तर-औपनिवेशिक चिन्ता; विदेशीकेँ आकांक्षा आ समस्या दुनू रूपमे देखब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिलेश मंडलक “विदेशी बाबू” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; उत्तर-औपनिवेशिक चिन्ता; विदेशीकेँ आकांक्षा आ समस्या दुनू रूपमे देखब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1620 : विदेह-सदेह 5 — प्रदीप बिहारी: सत्संगी / थापड़

प्रश्न 16143. प्रदीप बिहारीक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सत्संगी / थापड़

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सत्संगी / थापड़

व्याख्या: सूचकांकमे प्रदीप बिहारीक रचना “सत्संगी / थापड़” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16144. “सत्संगी / थापड़”क मुख्य विधा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गद्य
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गद्य
व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16145. “सत्संगी / थापड़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. विहनि कथा
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. विहनि कथा
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16146. प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शान्त आ रौद्र
उत्तर: घ. शान्त आ रौद्र
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ रौद्र” अछि।

प्रश्न 16147. प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. शान्त आ रौद्र; आध्यात्मिकता सँ हिंसा धरि विरोध; सामाजिक पाखण्ड
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शान्त आ रौद्र; आध्यात्मिकता सँ हिंसा धरि विरोध; सामाजिक पाखण्ड
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ रौद्र; आध्यात्मिकता सँ हिंसा धरि विरोध; सामाजिक पाखण्ड” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16148. “सत्संगी / थापड़”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक प्रदीप बिहारी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक प्रदीप बिहारी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16149. प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16150. “सत्संगी / थापड़”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16151. प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16152. खण्ड 1620क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ रौद्र; आध्यात्मिकता सँ हिंसा धरि विरोध; सामाजिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ रौद्र; आध्यात्मिकता सँ हिंसा धरि विरोध; सामाजिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1621 : विदेह-सदेह 5 — लक्ष्मी दास: बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी

प्रश्न 16153. लक्ष्मी दासक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी

व्याख्या: सूचकांकमे लक्ष्मी दासक रचना “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16154. “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16155. “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16156. लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16157. लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य; चरम मूर्खता; दाढ़ीकेँ संकेत-चिह्न रूपमे पढ़ब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य; चरम मूर्खता; दाढ़ीकेँ संकेत-चिह्न रूपमे पढ़ब

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; चरम मूर्खता; दाढ़ीकेँ संकेत-चिह्न रूपमे पढ़ब” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16158. “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16159. लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16160. “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16161. लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16162. खण्ड 1621क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; चरम मूर्खता; दाढ़ीकेँ संकेत-चिह्न रूपमे पढ़ब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; चरम मूर्खता; दाढ़ीकेँ संकेत-चिह्न रूपमे पढ़ब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1622 : विदेह-सदेह 5 — अमित मिश्र: इशारा / सरधुआ

प्रश्न 16163. अमित मिश्रक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. इशारा / सरधुआ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इशारा / सरधुआ

व्याख्या: सूचकांकमे अमित मिश्रक रचना “इशारा / सरधुआ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16164. “इशारा / सरधुआ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16165. “इशारा / सरधुआ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16166. अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ बीभत्स

उत्तर: घ. शान्त आ बीभत्स

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ बीभत्स” अछि।

प्रश्न 16167. अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ बीभत्स; अवाक् संचार; पानि-धुँधलापन रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ बीभत्स; अवाक् संचार; पानि-धुँधलापन रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ बीभत्स; अवाक् संचार; पानि-धुँधलापन रूपक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16168. “इशारा / सरधुआ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16169. अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16170. “इशारा / सरधुआ”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16171. अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16172. खण्ड 1622क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ बीभत्स; अवाक् संचार; पानि-धुँधलापन रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ बीभत्स; अवाक् संचार; पानि-धुँधलापन रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1623 : विदेह-सदेह 5 — जगदानन्द झा 'मनु': मसोमात / रहस्य

प्रश्न 16173. जगदानन्द झा 'मनु'क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मसोमात / रहस्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मसोमात / रहस्य

व्याख्या: सूचकांकमे जगदानन्द झा 'मनु'क रचना “मसोमात / रहस्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16174. “मसोमात / रहस्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16175. “मसोमात / रहस्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16176. जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ अद्भुत

उत्तर: घ. करुण आ अद्भुत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ अद्भुत” अछि।

प्रश्न 16177. जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ अद्भुत; विधवाक सामाजिक बहिष्कार; हिन्दू विधवापन पर अम्बेडकरक दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ अद्भुत; विधवाक सामाजिक बहिष्कार; हिन्दू विधवापन पर अम्बेडकरक दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ अद्भुत; विधवाक सामाजिक बहिष्कार; हिन्दू विधवापन पर अम्बेडकरक दृष्टि” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16178. “मसोमात / रहस्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16179. जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16180. “मसोमात / रहस्य”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16181. जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16182. खण्ड 1623क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ अद्भुत; विधवाक सामाजिक बहिष्कार; हिन्दू विधवापन पर अम्बेडकरक दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ अद्भुत; विधवाक सामाजिक बहिष्कार; हिन्दू विधवापन पर अम्बेडकरक दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1624 : विदेह-सदेह 5 — चन्दन कुमार झा: सङ्गति / अनकर दुर्गति

प्रश्न 16183. चन्दन कुमार झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सङ्गति / अनकर दुर्गति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सङ्गति / अनकर दुर्गति

व्याख्या: सूचकांकमे चन्दन कुमार झाक रचना “सङ्गति / अनकर दुर्गति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16184. “सङ्गति / अनकर दुर्गति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16185. “सङ्गति / अनकर दुर्गति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16186. चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ करुण आ व्यंग्य

उत्तर: घ. शान्त आ करुण आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ करुण आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16187. चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ करुण आ व्यंग्य; सामाजिक जोड़ीकरण; परपीड़ा-सुख व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ करुण आ व्यंग्य; सामाजिक जोड़ीकरण; परपीड़ा-सुख व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ करुण आ व्यंग्य; सामाजिक जोड़ीकरण; परपीड़ा-सुख व्यंग्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16188. “सङ्गति / अनकर दुर्गति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16189. चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16190. “सङ्गति / अनकर दुर्गति”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16191. चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16192. खण्ड 1624क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ करुण आ व्यंग्य; सामाजिक जोड़ीकरण; परपीड़ा-सुख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ करुण आ व्यंग्य; सामाजिक जोड़ीकरण; परपीड़ा-सुख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1625 : विदेह-सदेह 5 — ओमप्रकाश झा: कपारक लिखल / स्पेशल परमिट

प्रश्न 16193. ओमप्रकाश झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कपारक लिखल / स्पेशल परमिट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कपारक लिखल / स्पेशल परमिट

व्याख्या: सूचकांकमे ओमप्रकाश झाक रचना “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16194. “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16195. “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16196. ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ व्यंग्य

उत्तर: घ. शान्त आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16197. ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ व्यंग्य; भाग्य-कथन मुहावरा; नौकरशाही-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ व्यंग्य; भाग्य-कथन मुहावरा; नौकरशाही-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ व्यंग्य; भाग्य-कथन मुहावरा; नौकरशाही-व्यंग्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16198. “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16199. ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16200. “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16201. ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16202. खण्ड 1625क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; भाग्य-कथन मुहावरा; नौकरशाही-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; भाग्य-कथन मुहावरा; नौकरशाही-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1626 : विदेह-सदेह 5 — सन्दीप कुमार साफी: अन्ध विश्वास

प्रश्न 16203. सन्दीप कुमार साफीक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अन्ध विश्वास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्ध विश्वास

व्याख्या: सूचकांकमे सन्दीप कुमार साफीक रचना “अन्ध विश्वास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16204. “अन्ध विश्वास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16205. “अन्ध विश्वास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16206. सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य आ करुण

उत्तर: घ. व्यंग्य आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य आ करुण” अछि।

प्रश्न 16207. सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य आ करुण; सामाजिक सुधार; अन्धविश्वास-आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य आ करुण; सामाजिक सुधार; अन्धविश्वास-आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “व्यंग्य आ करुण; सामाजिक सुधार; अन्धविश्वास-आलोचना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16208. “अन्ध विश्वास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16209. सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16210. “अन्ध विश्वास”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16211. सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16212. खण्ड 1626क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “व्यंग्य आ करुण; सामाजिक सुधार; अन्धविश्वास-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “व्यंग्य आ करुण; सामाजिक सुधार; अन्धविश्वास-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1627 : विदेह-सदेह 5 — जवाहर लाल कश्यप: हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास...

प्रश्न 16213. जवाहर लाल कश्यपक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ्ट

व्याख्या: सूचकांकमे जवाहर लाल कश्यपक रचना “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ्ट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16214. “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16215. “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16216. जवाहर लाल कश्यपक “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य

उत्तर: घ. वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य” अछि।

प्रश्न 16217. जवाहर लाल कश्यपक “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य; बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक छवि; पाँच-कथा विस्तार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य; बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक छवि; पाँच-कथा विस्तार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य; बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक छवि; पाँच-कथा विस्तार” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16218. “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16219. जवाहर लाल कश्यपक “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16220. “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16221. जवाहर लाल कश्यपक “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16222. खण्ड 1627क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जवाहर लाल कश्यपक “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ...” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य; बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक छवि; पाँच-कथा विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जवाहर लाल कश्यपक “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ...” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य; बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक छवि; पाँच-कथा विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1628 : विदेह-सदेह 5 — मिहिर झा: १०० टाका

प्रश्न 16223. मिहिर झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. १०० टाका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १०० टाका

व्याख्या: सूचकांकमे मिहिर झाक रचना “१०० टाका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16224. “१०० टाका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16225. “१०० टाका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16226. मिहिर झाक “१०० टाका” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ व्यंग्य

उत्तर: घ. करुण आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16227. मिहिर झाक “१०० टाका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ व्यंग्य; नेपाल-भारत dual currency; सीमा-पार पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ व्यंग्य; नेपाल-भारत dual currency; सीमा-पार पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ व्यंग्य; नेपाल-भारत dual currency; सीमा-पार पहचान” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16228. “१०० टाका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिहिर झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिहिर झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16229. मिहिर झाक “१०० टाका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16230. “१०० टाका”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16231. मिहिर झाक “१०० टाका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16232. खण्ड 1628क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिहिर झाक “१०० टाका” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; नेपाल-भारत dual currency; सीमा-पार पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिहिर झाक “१०० टाका” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; नेपाल-भारत dual currency; सीमा-पार पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1629 : विदेह-सदेह 5 — रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार': अम्लूक चुमौन

प्रश्न 16233. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अम्लूक चुमौन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अम्लूक चुमौन

व्याख्या: सूचकांकमे रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क रचना “अम्लूक चुमौन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16234. “अम्लूक चुमौन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16235. “अम्लूक चुमौन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16236. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ शान्त

उत्तर: घ. हास्य आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शान्त” अछि।

प्रश्न 16237. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ शान्त; शुद्ध मैथिली लोक-मुहावरा; मौखिक परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ शान्त; शुद्ध मैथिली लोक-मुहावरा; मौखिक परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ शान्त; शुद्ध मैथिली लोक-मुहावरा; मौखिक परम्परा” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16238. “अम्लूक चुमौन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16239. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16240. “अम्लूक चुमौन”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16241. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16242. खण्ड 1629क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त; शुद्ध मैथिली लोक-मुहावरा; मौखिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त; शुद्ध मैथिली लोक-मुहावरा; मौखिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1630 : विदेह-सदेह 5 — प्रेमचन्द्र पंकज: क्रमश:....

प्रश्न 16243. प्रेमचन्द्र पंकजक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. क्रमश:....

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्रमश:....

व्याख्या: सूचकांकमे प्रेमचन्द्र पंकजक रचना “क्रमश:....” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16244. “क्रमश:....”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16245. “क्रमश:....”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16246. प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमश:....” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अद्भुत

उत्तर: घ. अद्भुत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अद्भुत” अछि।

प्रश्न 16247. प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमश:....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. अद्भुत; त्रुटिबिन्दुकेँ शीर्षक रूपमे राखब; देरिदाक खुला-पाठ दृष्टि; समापन-विरोधी उत्तर-आधुनिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अद्भुत; त्रुटिबिन्दुकेँ शीर्षक रूपमे राखब; देरिदाक खुला-पाठ दृष्टि; समापन-विरोधी उत्तर-आधुनिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “अद्भुत; त्रुटिबिन्दुकेँ शीर्षक रूपमे राखब; देरिदाक खुला-पाठ दृष्टि; समापन-विरोधी उत्तर-आधुनिकता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16248. “क्रमश:....”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमचन्द्र पंकज, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमचन्द्र पंकज, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16249. प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमश:....” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16250. “क्रमश:....”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16251. प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमश:....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16252. खण्ड 1630क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमश:....” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “अद्भुत; त्रुटिबिन्दुकेँ शीर्षक रूपमे राखब; देरिदाक खुला-पाठ दृष्टि; समापन-विरोधी उत्तर-आधुनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमश:....” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “अद्भुत; त्रुटिबिन्दुकेँ शीर्षक रूपमे राखब; देरिदाक खुला-पाठ दृष्टि; समापन-विरोधी उत्तर-आधुनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1631 : विदेह-सदेह 5 — अखिलेश कुमार मंडल: टीटनेस

प्रश्न 16253. अखिलेश कुमार मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. टीटनेस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टीटनेस

व्याख्या: सूचकांकमे अखिलेश कुमार मंडलक रचना “टीटनेस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16254. “टीटनेस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16255. “टीटनेस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16256. अखिलेश कुमार मंडलक “टीटनेस” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीभत्स आ करुण

उत्तर: घ. बीभत्स आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीभत्स आ करुण” अछि।

प्रश्न 16257. अखिलेश कुमार मंडलक “टीटनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. बीभत्स आ करुण; टीटनेसकेँ सामाजिक जड़ता रूपमे पढ़ब; चिकित्सकीय रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीभत्स आ करुण; टीटनेसकेँ सामाजिक जड़ता रूपमे पढ़ब; चिकित्सकीय रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “बीभत्स आ करुण; टीटनेसकेँ सामाजिक जड़ता रूपमे पढ़ब; चिकित्सकीय रूपक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16258. “टीटनेस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अखिलेश कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अखिलेश कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16259. अखिलेश कुमार मंडलक “टीटनेस” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16260. “टीटनेस”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16261. अखिलेश कुमार मंडलक “टीटनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16262. खण्ड 1631क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अखिलेश कुमार मंडलक “टीटनेस” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “बीभत्स आ करुण; टीटनेसकेँ सामाजिक जड़ता रूपमे पढ़ब; चिकित्सकीय रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अखिलेश कुमार मंडलक “टीटनेस” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “बीभत्स आ करुण; टीटनेसकेँ सामाजिक जड़ता रूपमे पढ़ब; चिकित्सकीय रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1632 : विदेह-सदेह 5 — मनोज कुमार मंडल: बेमेल बिआह

प्रश्न 16263. मनोज कुमार मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बेमेल बिआह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेमेल बिआह

व्याख्या: सूचकांकमे मनोज कुमार मंडलक रचना “बेमेल बिआह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16264. “बेमेल बिआह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16265. “बेमेल बिआह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16266. मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ व्यंग्य

उत्तर: घ. करुण आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16267. मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ व्यंग्य; व्यवस्थित विवाह पर अम्बेडकरक दृष्टि; जाति-आधारित बेमेलपन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ व्यंग्य; व्यवस्थित विवाह पर अम्बेडकरक दृष्टि; जाति-आधारित बेमेलपन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ व्यंग्य; व्यवस्थित विवाह पर अम्बेडकरक दृष्टि; जाति-आधारित बेमेलपन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16268. “बेमेल बिआह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16269. मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16270. “बेमेल बिआह”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16271. मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16272. खण्ड 1632क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; व्यवस्थित विवाह पर अम्बेडकरक दृष्टि; जाति-आधारित बेमेलपन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; व्यवस्थित विवाह पर अम्बेडकरक दृष्टि; जाति-आधारित बेमेलपन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1633 : विदेह-सदेह 5 — सत्यनारायण झा: सुटिया

प्रश्न 16273. सत्यनारायण झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सुटिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुटिया

व्याख्या: सूचकांकमे सत्यनारायण झाक रचना “सुटिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16274. “सुटिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16275. “सुटिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16276. सत्यनारायण झाक “सुटिया” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण

उत्तर: घ. करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण” अछि।

प्रश्न 16277. सत्यनारायण झाक “सुटिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण; शुद्ध बोली-शब्द; दलित देह-राजनीति; गरीबीक सूखल देह-संकेत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण; शुद्ध बोली-शब्द; दलित देह-राजनीति; गरीबीक सूखल देह-संकेत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण; शुद्ध बोली-शब्द; दलित देह-राजनीति; गरीबीक सूखल देह-संकेत” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16278. “सुटिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16279. सत्यनारायण झाक “सुटिया” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16280. “सुटिया”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16281. सत्यनारायण झाक “सुटिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16282. खण्ड 1633क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सत्यनारायण झाक “सुटिया” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; शुद्ध बोली-शब्द; दलित देह-राजनीति; गरीबीक सूखल देह-संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सत्यनारायण झाक “सुटिया” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; शुद्ध बोली-शब्द; दलित देह-राजनीति; गरीबीक सूखल देह-संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1634 : विदेह-सदेह 5 — पंकज चौधरी 'नवलश्री': ई नोर छै गरीबीक

प्रश्न 16283. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. ई नोर छै गरीबीक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई नोर छै गरीबीक

व्याख्या: सूचकांकमे पंकज चौधरी 'नवलश्री'क रचना “ई नोर छै गरीबीक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16284. “ई नोर छै गरीबीक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16285. “ई नोर छै गरीबीक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16286. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण

उत्तर: घ. करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण” अछि।

प्रश्न 16287. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण; वाक्यकेँ शीर्षक रूपमे राखब; मार्क्सीय गरीबी-यथार्थवाद; प्रत्यक्ष राजनीतिक कथन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण; वाक्यकेँ शीर्षक रूपमे राखब; मार्क्सीय गरीबी-यथार्थवाद; प्रत्यक्ष राजनीतिक कथन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण; वाक्यकेँ शीर्षक रूपमे राखब; मार्क्सीय गरीबी-यथार्थवाद; प्रत्यक्ष राजनीतिक कथन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16288. “ई नोर छै गरीबीक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज चौधरी 'नवलश्री', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज चौधरी 'नवलश्री', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16289. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16290. “ई नोर छै गरीबीक”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16291. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16292. खण्ड 1634क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; वाक्यकेँ शीर्षक रूपमे राखब; मार्क्सीय गरीबी-यथार्थवाद; प्रत्यक्ष राजनीतिक कथन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; वाक्यकेँ शीर्षक रूपमे राखब; मार्क्सीय गरीबी-यथार्थवाद; प्रत्यक्ष राजनीतिक कथन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1635 : विदेह-सदेह 5 — रवि भूषण पाठक: मुक्ति / बिदाइ / एकातबला

प्रश्न 16293. रवि भूषण पाठकक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मुक्ति / बिदाइ / एकातबला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुक्ति / बिदाइ / एकातबला

व्याख्या: सूचकांकमे रवि भूषण पाठकक रचना “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16294. “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16295. “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

प्रश्न 16296. रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर आ करुण आ शान्त

उत्तर: घ. वीर आ करुण आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ करुण आ शान्त” अछि।

प्रश्न 16297. रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ करुण आ शान्त; हाइडेगरक अस्तित्ववादी त्रयी; मुक्तिसँ बिदाइ आ एकान्त धरि कथा-वक्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ करुण आ शान्त; हाइडेगरक अस्तित्ववादी त्रयी; मुक्तिसँ बिदाइ आ एकान्त धरि कथा-वक्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वीर आ करुण आ शान्त; हाइडेगरक अस्तित्ववादी त्रयी; मुक्तिसँ बिदाइ आ एकान्त धरि कथा-वक्र” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16298. “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16299. रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16300. “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16301. रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16302. खण्ड 1635क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वीर आ करुण आ शान्त; हाइडेगरक अस्तित्ववादी त्रयी; मुक्तिसँ बिदाइ आ एकान्त धरि कथा-वक्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वीर आ करुण आ शान्त; हाइडेगरक अस्तित्ववादी त्रयी; मुक्तिसँ बिदाइ आ एकान्त धरि कथा-वक्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1636 : विदेह-सदेह 5 — डॉ. तारानन्द वियोगी: विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्न...

प्रश्न 16303. डॉ. तारानन्द वियोगीक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप-सप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप-सप

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. तारानन्द वियोगीक रचना “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप-सप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16304. “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16305. “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार (विषय)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार (विषय)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप साक्षात्कार (विषय) अछि।

प्रश्न 16306. डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 16307. डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार; बेन्यामिनक साहित्यिक पाठोत्तर जीवन; सक्रिय विधा-सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार; बेन्यामिनक साहित्यिक पाठोत्तर जीवन; सक्रिय विधा-सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार; बेन्यामिनक साहित्यिक पाठोत्तर जीवन; सक्रिय विधा-सिद्धान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16308. “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. तारानन्द वियोगी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार (विषय)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. तारानन्द वियोगी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार (विषय)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16309. डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16310. “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कार (विषय)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कार (विषय)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16311. डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16312. खण्ड 1636क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप-सप” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार (विषय) आ “साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार; बेन्यामिनक साहित्यिक पाठोत्तर जीवन; सक्रिय विधा-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप-सप” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार (विषय) आ “साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार; बेन्यामिनक साहित्यिक पाठोत्तर जीवन; सक्रिय विधा-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1637 : विदेह-सदेह 5 — देवशंकर नवीन: विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व

प्रश्न 16313. देवशंकर नवीनक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व

व्याख्या: सूचकांकमे देवशंकर नवीनक रचना “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16314. “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16315. “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप आलोचना निबन्ध अछि।

प्रश्न 16316. देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ बौद्धिक

उत्तर: घ. शान्त आ बौद्धिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ बौद्धिक” अछि।

प्रश्न 16317. देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ बौद्धिक; बूर्धूक साहित्यिक क्षेत्र-राजनीति; नव्य-न्यायिक अवरोध-विश्लेषण; ईमानदार आत्म-आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ बौद्धिक; बूर्धूक साहित्यिक क्षेत्र-राजनीति; नव्य-न्यायिक अवरोध-विश्लेषण; ईमानदार आत्म-आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ बौद्धिक; बूर्धूक साहित्यिक क्षेत्र-राजनीति; नव्य-न्यायिक अवरोध-विश्लेषण; ईमानदार आत्म-आलोचना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16318. “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16319. देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16320. “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16321. देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16322. खण्ड 1637क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ “शान्त आ बौद्धिक; बूर्घूक साहित्यिक क्षेत्र-राजनीति; नव्य-न्यायिक अवरोध-विश्लेषण; ईमानदार आत्म-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ “शान्त आ बौद्धिक; बूर्घूक साहित्यिक क्षेत्र-राजनीति; नव्य-न्यायिक अवरोध-विश्लेषण; ईमानदार आत्म-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1638 : विदेह-सदेह 6 — गजेन्द्र ठाकुर: (क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्था...

प्रश्न 16323. गजेन्द्र ठाकुरक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. (क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र (ख) दिल्ली (पृ. २२१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र (ख) दिल्ली (पृ. २२१)

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र (ख) दिल्ली (पृ. २२१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16324. “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16325. “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना निबन्ध आ लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना निबन्ध आ लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप आलोचना निबन्ध आ लघुकथा अछि।

प्रश्न 16326. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।

प्रश्न 16327. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह सम्पादक; नारीवाद आ अस्तित्ववाद आ मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त; दिल्लीकेँ बूर्धूक साहित्यिक क्षेत्र रूपमे पढ़ब; नव्य-न्यायिक देश-काल-सीमा दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सम्पादक; नारीवाद आ अस्तित्ववाद आ मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त; दिल्लीकेँ बूर्धूक साहित्यिक क्षेत्र रूपमे पढ़ब; नव्य-न्यायिक देश-काल-सीमा दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह सम्पादक; नारीवाद आ अस्तित्ववाद आ मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त; दिल्लीकेँ बूर्धूक साहित्यिक क्षेत्र रूपमे पढ़ब; नव्य-न्यायिक देश-काल-सीमा दृष्टि” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16328. “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध आ लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध आ लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16329. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16330. “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक...”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना निबन्ध आ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना निबन्ध आ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16331. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16332. खण्ड 1638क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशा...” प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ लघुकथा आ “विदेह सम्पादक; नारीवाद आ अस्तित्ववाद आ मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त; दिल्लीकेँ बूर्धूक साहित्यिक क्षेत्र रूपमे पढ़ब; नव्य-न्यायिक देश-काल-सीमा दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशा...” प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ लघुकथा आ “विदेह सम्पादक; नारीवाद आ अस्तित्ववाद आ मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त; दिल्लीकेँ बूर्धूक साहित्यिक क्षेत्र रूपमे पढ़ब; नव्य-न्यायिक देश-काल-सीमा दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1639 : विदेह-सदेह 6 — मीना झा: ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)

प्रश्न 16333. मीना झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)

व्याख्या: सूचकांकमे मीना झाक रचना “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16334. “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16335. “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16336. मीना झाक “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दरभंगा

उत्तर: घ. दरभंगा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दरभंगा” अछि।

प्रश्न 16337. मीना झाक “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी १९८०; नेपाल-भारत; करुण आ वीर; सोनटैगक रोग-रूपक दृष्टि; नारीवादी देह-राजनीति; वर्जित विषय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी १९८०; नेपाल-भारत; करुण आ वीर; सोनटैगक रोग-रूपक दृष्टि; नारीवादी देह-राजनीति; वर्जित विषय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी १९८०; नेपाल-भारत; करुण आ वीर; सोनटैगक रोग-रूपक दृष्टि; नारीवादी देह-राजनीति; वर्जित विषय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16338. “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मीना झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मीना झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16339. मीना झाक “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16340. “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16341. मीना झाक “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16342. खण्ड 1639क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मीना झाक “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी १९८०; नेपाल-भारत; करुण आ वीर; सोनटैगक रोग-रूपक दृष्टि; नारीवादी देह-राजनीति; वर्जित विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मीना झाक “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी १९८०; नेपाल-भारत; करुण आ वीर; सोनटैगक रोग-रूपक दृष्टि; नारीवादी देह-राजनीति; वर्जित विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1640 : विदेह-सदेह 6 — रोशन जनकपुरी: अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)

प्रश्न 16343. रोशन जनकपुरीक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)

व्याख्या: सूचकांकमे रोशन जनकपुरीक रचना “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16344. “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16345. “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16346. रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर, नेपाल

उत्तर: घ. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर, नेपाल” अछि।

प्रश्न 16347. रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकपुर, नेपाल; रौद्र आ वीर; फाननक क्रान्तिकारी आगि; सामूहिक प्रतिरोध; फूल-आगि द्वय-प्रतीक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर, नेपाल; रौद्र आ वीर; फाननक क्रान्तिकारी आगि; सामूहिक प्रतिरोध; फूल-आगि द्वय-प्रतीक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जनकपुर, नेपाल; रौद्र आ वीर; फाननक क्रान्तिकारी आगि; सामूहिक प्रतिरोध; फूल-आगि द्वय-प्रतीक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16348. “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रोशन जनकपुरी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रोशन जनकपुरी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16349. रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16350. “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16351. रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16352. खण्ड 1640क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जनकपुर, नेपाल; रौद्र आ वीर; फाननक क्रान्तिकारी आगि; सामूहिक प्रतिरोध; फूल-आगि द्वय-प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जनकपुर, नेपाल; रौद्र आ वीर; फाननक क्रान्तिकारी आगि; सामूहिक प्रतिरोध; फूल-आगि द्वय-प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1641 : विदेह-सदेह 6 — महाकाश: संभावना (पृ. २१)

प्रश्न 16353. महाकाशक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. संभावना (पृ. २१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संभावना (पृ. २१)

व्याख्या: सूचकांकमे महाकाशक रचना “संभावना (पृ. २१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16354. “संभावना (पृ. २१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16355. “संभावना (पृ. २१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16356. महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा

उत्तर: घ. जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा” अछि।

प्रश्न 16357. महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा; शान्त आ वीर; ग्राम्शीक इच्छाशक्ति-आशावाद; वंचितमे सम्भावना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा; शान्त आ वीर; ग्राम्शीक इच्छाशक्ति-आशावाद; वंचितमे सम्भावना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा; शान्त आ वीर; ग्राम्शीक इच्छाशक्ति-आशावाद; वंचितमे सम्भावना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16358. “संभावना (पृ. २१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महाकाश, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महाकाश, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16359. महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16360. “संभावना (पृ. २१)”कें विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16361. महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16362. खण्ड 1641क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा; शान्त आ वीर; ग्राम्शीक इच्छाशक्ति-आशावाद; वंचितमे सम्भावना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा; शान्त आ वीर; ग्राम्शीक इच्छाशक्ति-आशावाद; वंचितमे सम्भावना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1642 : विदेह-सदेह 6 — वसंत भगवंत सावंत: (कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)

प्रश्न 16363. वसंत भगवंत सावंतक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. (कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)

व्याख्या: सूचकांकमे वसंत भगवंत सावंतक रचना “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16364. “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16365. “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली) अछि।

प्रश्न 16366. वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोंकणी original

उत्तर: घ. कोंकणी original

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोंकणी original” अछि।

प्रश्न 16367. वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. कोंकणी original; करुण आ वीर; बेन्यामिनक अनुवाद-पाठोत्तर जीवन; दुइ उपेक्षित भाषाक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोंकणी original; करुण आ वीर; बेन्यामिनक अनुवाद-पाठोत्तर जीवन; दुइ उपेक्षित भाषाक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “कोंकणी original; करुण आ वीर; बेन्यामिनक अनुवाद-पाठोत्तर जीवन; दुइ उपेक्षित भाषाक सम्बन्ध” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16368. “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वसंत भगवंत सावंत, विधा गद्य, उप-विधा अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वसंत भगवंत सावंत, विधा गद्य, उप-विधा अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16369. वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16370. “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16371. वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16372. खण्ड 1642क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली) आ “कोंकणी original; करुण आ वीर; बेन्यामिनक अनुवाद-पाठोत्तर जीवन; दुइ उपेक्षित भाषाक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली) आ “कोंकणी original; करुण आ वीर; बेन्यामिनक अनुवाद-पाठोत्तर जीवन; दुइ उपेक्षित भाषाक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1643 : विदेह-सदेह 6 — बीनू भाइ: उद्गाप (पृ. ३४)

प्रश्न 16373. बीनू भाइक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. उद्गाप (पृ. ३४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उद्गाप (पृ. ३४)

व्याख्या: सूचकांकमे बीनू भाइक रचना “उद्गाप (पृ. ३४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16374. “उद्गाप (पृ. ३४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16375. “उद्गाप (पृ. ३४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16376. बीनू भाइक “उद्गाप (पृ. ३४)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली प्रवासी अनुभव

उत्तर: घ. मैथिली प्रवासी अनुभव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली प्रवासी अनुभव” अछि।

प्रश्न 16377. बीनू भाइक “उद्गाप (पृ. ३४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली प्रवासी अनुभव; शान्त आ अद्भुत; नव्य-न्याय परिणामवाद; रूपान्तरण-सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली प्रवासी अनुभव; शान्त आ अद्भुत; नव्य-न्याय परिणामवाद; रूपान्तरण-सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मैथिली प्रवासी अनुभव; शान्त आ अद्भुत; नव्य-न्याय परिणामवाद; रूपान्तरण-सिद्धान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16378. “उद्घाप (पृ. ३४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बीनू भाइ, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बीनू भाइ, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16379. बीनू भाइक “उद्घाप (पृ. ३४)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16380. “उद्घाप (पृ. ३४)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16381. बीनू भाइक “उद्घाप (पृ. ३४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16382. खण्ड 1643क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बीनू भाइक “उद्घाप (पृ. ३४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मैथिली प्रवासी अनुभव; शान्त आ अद्भुत; नव्य-न्याय परिणामवाद; रूपान्तरण-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बीनू भाइक “उद्घाप (पृ. ३४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मैथिली प्रवासी अनुभव; शान्त आ अद्भुत; नव्य-न्याय परिणामवाद; रूपान्तरण-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1644 : विदेह-सदेह 6 — शम्भु कुमार सिंह: भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)

प्रश्न 16383. शम्भु कुमार सिंहक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)

व्याख्या: सूचकांकमे शम्भु कुमार सिंहक रचना “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16384. “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16385. “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16386. शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा

उत्तर: घ. जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा” अछि।

प्रश्न 16387. शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा; वात्सल्य आ करुण; अम्बेडकरक पितृसत्तात्मक परिवार-दृष्टि; सत्य-दावा रूपी विधा-संकेत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा; वात्सल्य आ करुण; अम्बेडकरक पितृसत्तात्मक परिवार-दृष्टि; सत्य-दावा रूपी विधा-संकेत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा; वात्सल्य आ करुण; अम्बेडकरक पितृसत्तात्मक परिवार-दृष्टि; सत्य-दावा रूपी विधा-संकेत” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16388. “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16389. शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16390. “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)”कें विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16391. शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16392. खण्ड 1644क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा; वात्सल्य आ करुण; अम्बेडकरक पितृसत्तात्मक परिवार-दृष्टि; सत्य-दावा रूपी विधा-संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा; वात्सल्य आ करुण; अम्बेडकरक पितृसत्तात्मक परिवार-दृष्टि; सत्य-दावा रूपी विधा-संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1645 : विदेह-सदेह 6 — दुर्गानन्द मंडल: लाल भौजी (पृ. ४५)

प्रश्न 16393. दुर्गानन्द मंडलक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. लाल भौजी (पृ. ४५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाल भौजी (पृ. ४५)

व्याख्या: सूचकांकमे दुर्गानन्द मंडलक रचना “लाल भौजी (पृ. ४५)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16394. “लाल भौजी (पृ. ४५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16395. “लाल भौजी (पृ. ४५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16396. दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित

उत्तर: घ. दलित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित” अछि।

प्रश्न 16397. दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित; शृंगार आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी दलित women doubly constrained

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित; शृंगार आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी दलित women doubly constrained

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित; शृंगार आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी दलित women doubly constrained” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16398. “लाल भौजी (पृ. ४५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16399. दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16400. “लाल भौजी (पृ. ४५)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16401. दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16402. खण्ड 1645क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दलित; शृंगार आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी दलित women doubly constrained” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दलित; शृंगार आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी दलित women doubly constrained” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1646 : विदेह-सदेह 6 — वीरेन्द्र कुमार यादव: हमर समाज (पृ. ४९)

प्रश्न 16403. वीरेन्द्र कुमार यादवक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हमर समाज (पृ. ४९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर समाज (पृ. ४९)

व्याख्या: सूचकांकमे वीरेन्द्र कुमार यादवक रचना “हमर समाज (पृ. ४९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16404. “हमर समाज (पृ. ४९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16405. “हमर समाज (पृ. ४९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16406. वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओ.बी.सी.

उत्तर: घ. ओ.बी.सी.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओ.बी.सी.” अछि।

प्रश्न 16407. वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. ओ.बी.सी.; रौद्र आ वीर; ग्राम्शी आ अम्बेडकर ओ.बी.सी. exclusion from 'society' definition

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ.बी.सी.; रौद्र आ वीर; ग्राम्शी आ अम्बेडकर ओ.बी.सी. exclusion from 'society' definition

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “ओ.बी.सी.; रौद्र आ वीर; ग्राम्शी आ अम्बेडकर ओ.बी.सी. exclusion from 'society' definition” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16408. “हमर समाज (पृ. ४९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16409. वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16410. “हमर समाज (पृ. ४९)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16411. वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16412. खण्ड 1646क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ओ.बी.सी.; रौद्र आ वीर; ग्राम्शी आ अम्बेडकर ओ.बी.सी. exclusion from 'society' definition” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ओ.बी.सी.; रौद्र आ वीर; ग्राम्शी आ अम्बेडकर ओ.बी.सी. exclusion from 'society' definition” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1647 : विदेह-सदेह 6 — उमेश मंडल: अमैआ भार (पृ. ५२)

प्रश्न 16413. उमेश मंडलक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अमैआ भार (पृ. ५२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अमैआ भार (पृ. ५२)

व्याख्या: सूचकांकमे उमेश मंडलक रचना “अमैआ भार (पृ. ५२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16414. “अमैआ भार (पृ. ५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16415. “अमैआ भार (पृ. ५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16416. उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा

उत्तर: घ. जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा” अछि।

प्रश्न 16417. उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा; विदेह सह-सम्पादक; शान्त आ करुण; mango tree as exploitation metaphor; पर्यावरणीय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा; विदेह सह-सम्पादक; शान्त आ करुण; mango tree as exploitation metaphor; पर्यावरणीय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा; विदेह सह-सम्पादक; शान्त आ करुण; mango tree as exploitation metaphor; पर्यावरणीय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16418. “अमैआ भार (पृ. ५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16419. उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16420. “अमैआ भार (पृ. ५२)”कें विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16421. उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16422. खण्ड 1647क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा; विदेह सह-सम्पादक; शान्त आ करुण; mango tree as exploitation metaphor; पर्यावरणीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा; विदेह सह-सम्पादक; शान्त आ करुण; mango tree as exploitation metaphor; पर्यावरणीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1648 : विदेह-सदेह 6 — नन्द विलास राय: बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)

प्रश्न 16423. नन्द विलास रायक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)

व्याख्या: सूचकांकमे नन्द विलास रायक रचना “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16424. “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16425. “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16426. नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: 02.01.1957, भपटियाही

उत्तर: घ. जन्म: 02.01.1957, भपटियाही

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: 02.01.1957, भपटियाही” अछि।

प्रश्न 16427. नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: 02.01.1957, भपटियाही; भक्ति आ शान्त आ अद्भुत; लाकाँ mirror-stage; self-confrontation

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: 02.01.1957, भपटियाही; भक्ति आ शान्त आ अद्भुत; लाकाँ mirror-stage; self-confrontation

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: 02.01.1957, भपटियाही; भक्ति आ शान्त आ अद्भुत; लाकाँ mirror-stage; self-confrontation” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16428. “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16429. नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16430. “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16431. नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16432. खण्ड 1648क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: 02.01.1957, भपटियाही; भक्ति आ शान्त आ अद्भुत; लाकाँ mirror-stage; self-confrontation” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: 02.01.1957, भपटियाही; भक्ति आ शान्त आ अद्भुत; लाकाँ mirror-stage; self-confrontation” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1649 : विदेह-सदेह 6 — सुजीत कुमार झा: एकटा अधिकार (पृ. ६२)

प्रश्न 16433. सुजीत कुमार झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. एकटा अधिकार (पृ. ६२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा अधिकार (पृ. ६२)

व्याख्या: सूचकांकमे सुजीत कुमार झाक रचना “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16434. “एकटा अधिकार (पृ. ६२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16435. “एकटा अधिकार (पृ. ६२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16436. सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर आ करुण

उत्तर: घ. वीर आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ करुण” अछि।

प्रश्न 16437. सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ करुण; 'एकटा' सूक्ष्मतावादी demand = devastating commentary; अम्बेडकर rights

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ करुण; 'एकटा' सूक्ष्मतावादी demand = devastating commentary; अम्बेडकर rights

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वीर आ करुण; 'एकटा' सूक्ष्मतावादी demand = devastating commentary; अम्बेडकर rights” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16438. “एकटा अधिकार (पृ. ६२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16439. सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16440. “एकटा अधिकार (पृ. ६२)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16441. सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16442. खण्ड 1649क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वीर आ करुण; 'एकटा' सूक्ष्मतावादी demand = devastating commentary; अम्बेडकर rights” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वीर आ करुण; 'एकटा' सूक्ष्मतावादी demand = devastating commentary; अम्बेडकर rights” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1650 : विदेह-सदेह 6 — सन्तोष कुमार मिश्र: मुसीबत (पृ. ६८)

प्रश्न 16443. सन्तोष कुमार मिश्रक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मुसीबत (पृ. ६८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुसीबत (पृ. ६८)

व्याख्या: सूचकांकमे सन्तोष कुमार मिश्रक रचना “मुसीबत (पृ. ६८)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16444. “मुसीबत (पृ. ६८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16445. “मुसीबत (पृ. ६८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16446. सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ हास्य

उत्तर: घ. करुण आ हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ हास्य” अछि।

प्रश्न 16447. सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ हास्य; Urdu code-switching; बाख्तिनक दृष्टिसँ रोजमर्राक जीवन साहित्यिक विषय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ हास्य; Urdu code-switching; बाख्तिनक दृष्टिसँ रोजमर्राक जीवन साहित्यिक विषय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ हास्य; Urdu code-switching; बाख्तिनक दृष्टिसँ रोजमर्राक जीवन साहित्यिक विषय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16448. “मुसीबत (पृ. ६८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16449. सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16450. “मुसीबत (पृ. ६८)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16451. सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16452. खण्ड 1650क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण आ हास्य; Urdu code-switching; बाख्तिनक दृष्टिसँ रोजमर्राक जीवन साहित्यिक विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण आ हास्य; Urdu code-switching; बाख्तिनक दृष्टिसँ रोजमर्राक जीवन साहित्यिक विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1651 : विदेह-सदेह 6 — कामिनी कामायनी: टुटल तारा (पृ. ७१)

प्रश्न 16453. कामिनी कामायनीक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. टुटल तारा (पृ. ७१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टुटल तारा (पृ. ७१)

व्याख्या: सूचकांकमे कामिनी कामायनीक रचना “टुटल तारा (पृ. ७१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16454. “टुटल तारा (पृ. ७१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16455. “टुटल तारा (पृ. ७१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16456. कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कथाकार

उत्तर: घ. नारी कथाकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कथाकार” अछि।

प्रश्न 16457. कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी कथाकार; करुण आ शान्त; स्पिवाकक दृष्टिसँ नारीक आकांक्षाक संरचनात्मक टूटन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी कथाकार; करुण आ शान्त; स्पिवाकक दृष्टिसँ नारीक आकांक्षाक संरचनात्मक टूटन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी कथाकार; करुण आ शान्त; स्पिवाकक दृष्टिसँ नारीक आकांक्षाक संरचनात्मक टूटन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16458. “टुटल तारा (पृ. ७१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16459. कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16460. “टुटल तारा (पृ. ७१)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16461. कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16462. खण्ड 1651क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नारी कथाकार; करुण आ शान्त; स्पिवाकक दृष्टिसँ नारीक आकांक्षाक संरचनात्मक टूटन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नारी कथाकार; करुण आ शान्त; स्पिवाकक दृष्टिसँ नारीक आकांक्षाक संरचनात्मक टूटन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1652 : विदेह-सदेह 6 — राज नाथ मिश्र: मस्ती (पृ. ७७)

प्रश्न 16463. राज नाथ मिश्रक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मस्ती (पृ. ७७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मस्ती (पृ. ७७)

व्याख्या: सूचकांकमे राज नाथ मिश्रक रचना “मस्ती (पृ. ७७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16464. “मस्ती (पृ. ७७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16465. “मस्ती (पृ. ७७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16466. राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ शृंगार

उत्तर: घ. हास्य आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 16467. राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ शृंगार; बाख्तिनक उत्सवी उलटबाँसी; सामाजिक श्रेणी-व्यवस्था suspended

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ शृंगार; बाख्तिनक उत्सवी उलटबाँसी; सामाजिक श्रेणी-व्यवस्था suspended

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ शृंगार; बाख्तिनक उत्सवी उलटबाँसी; सामाजिक श्रेणी-व्यवस्था suspended” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16468. “मस्ती (पृ. ७७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राज नाथ मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राज नाथ मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16469. राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16470. “मस्ती (पृ. ७७)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16471. राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16472. खण्ड 1652क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य आ शृंगार; बाखिनक उत्सवी उलटबाँसी; सामाजिक श्रेणी-व्यवस्था suspended” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य आ शृंगार; बाखिनक उत्सवी उलटबाँसी; सामाजिक श्रेणी-व्यवस्था suspended” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1653 : विदेह-सदेह 6 — असगर वजाहत: (हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)

प्रश्न 16473. असगर वजाहतक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. (हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)

व्याख्या: सूचकांकमे असगर वजाहतक रचना “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16474. “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16475. “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली) अछि।

प्रश्न 16476. असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार

उत्तर: घ. प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार” अछि।

प्रश्न 16477. असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार; रौद्र आ करुण आ हास्य; फाननक निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन दृष्टि; विदेह secular pluralism

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार; रौद्र आ करुण आ हास्य; फाननक निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन दृष्टि; विदेह secular pluralism

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार; रौद्र आ करुण आ हास्य; फाननक निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन दृष्टि; विदेह secular pluralism” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16478. “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक असगर वजाहत, विधा गद्य, उप-विधा अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक असगर वजाहत, विधा गद्य, उप-विधा अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16479. असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16480. “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)”कें विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16481. असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16482. खण्ड 1653क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली) आ “प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार; रौद्र आ करुण आ हास्य; फाननक निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन दृष्टि; विदेह secular pluralism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली) आ “प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार; रौद्र आ करुण आ हास्य; फाननक निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन दृष्टि; विदेह secular pluralism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1654 : विदेह-सदेह 6 — अतुलेश्वर: बसात (पृ. ९०)

प्रश्न 16483. अतुलेश्वरक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बसात (पृ. ९०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बसात (पृ. ९०)

व्याख्या: सूचकांकमे अतुलेश्वरक रचना “बसात (पृ. ९०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16484. “बसात (पृ. ९०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16485. “बसात (पृ. ९०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16486. अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ करुण

उत्तर: घ. शान्त आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ करुण” अछि।

प्रश्न 16487. अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ करुण; 'बसात' = residence आ worth dual meaning; place as determinant of human value

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ करुण; 'बसात' = residence आ worth dual meaning; place as determinant of human value

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ करुण; 'बसात' = residence आ worth dual meaning; place as determinant of human value” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16488. “बसात (पृ. ९०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16489. अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16490. “बसात (पृ. ९०)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16491. अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16492. खण्ड 1654क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ करुण; 'बसात' = residence आ worth dual meaning; place as determinant of human value” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ करुण; 'बसात' = residence आ worth dual meaning; place as determinant of human value” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1655 : विदेह-सदेह 6 — योगेन्द्र पाठक 'वियोगी': देववाणी (पृ. ९४)

प्रश्न 16493. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. देववाणी (पृ. ९४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देववाणी (पृ. ९४)

व्याख्या: सूचकांकमे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क रचना “देववाणी (पृ. ९४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16494. “देववाणी (पृ. ९४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16495. “देववाणी (पृ. ९४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16496. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य

उत्तर: घ. भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16497. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य; बूर्ह्यू linguistic capital; संस्कृत 'divine' status questioned

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य; बूर्ह्यू linguistic capital; संस्कृत 'divine' status questioned

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य; बूर्ह्यू linguistic capital; संस्कृत 'divine' status questioned” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16498. “देववाणी (पृ. ९४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16499. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16500. “देववाणी (पृ. ९४)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16501. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16502. खण्ड 1655क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य; बूर्घू linguistic capital; संस्कृत 'divine' status questioned” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य; बूर्घू linguistic capital; संस्कृत 'divine' status questioned” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1656 : विदेह-सदेह 6 — कुमार मनोज कश्यप: नोरक दू ठोप (पृ. १०२)

प्रश्न 16503. कुमार मनोज कश्यपक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नोरक दू ठोप (पृ. १०२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोरक दू ठोप (पृ. १०२)

व्याख्या: सूचकांकमे कुमार मनोज कश्यपक रचना “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16504. “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16505. “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16506. कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: १९६९, सलेमपुर

उत्तर: घ. जन्म: १९६९, सलेमपुर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १९६९, सलेमपुर” अछि।

प्रश्न 16507. कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: १९६९, सलेमपुर; करुण; चेखव understatement; two drops > flood

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: १९६९, सलेमपुर; करुण; चेखव understatement; two drops > flood

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १९६९, सलेमपुर; करुण; चेखव understatement; two drops > flood” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16508. “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16509. कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16510. “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16511. कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16512. खण्ड 1656क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९६९, सलेमपुर; करुण; चेखव understatement; two drops > flood” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९६९, सलेमपुर; करुण; चेखव understatement; two drops > flood” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1657 : विदेह-सदेह 6 — सतीश चन्द्र झा: हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)

प्रश्न 16513. सतीश चन्द्र झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)

व्याख्या: सूचकांकमे सतीश चन्द्र झाक रचना “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16514. “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16515. “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16516. सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ हास्य

उत्तर: घ. शान्त आ हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ हास्य” अछि।

प्रश्न 16517. सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ हास्य; 'हमहूँ' inclusive belated comprehension

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ हास्य; 'हमहूँ' inclusive belated comprehension

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ हास्य; 'हमहूँ' inclusive belated comprehension” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16518. “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16519. सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16520. “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16521. सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16522. खण्ड 1657क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ हास्य; 'हमहूँ' inclusive belated comprehension” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ हास्य; 'हमहूँ' inclusive belated comprehension” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1658 : विदेह-सदेह 6 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्...

प्रश्न 16523. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ. १०९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ. १०९)

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक रचना “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ. १०९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16524. “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16525. “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16526. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: ८.०२.१९६७

उत्तर: घ. जन्म: ८.०२.१९६७

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ८.०२.१९६७” अछि।

प्रश्न 16527. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: ८.०२.१९६७; बूर्द्धू Distinction; class-aesthetic contrast; moon-named woman

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: ८.०२.१९६७; बूर्द्धू Distinction; class-aesthetic contrast; moon-named woman

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: ८.०२.१९६७; बूर्द्धू Distinction; class-aesthetic contrast; moon-named woman” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16528. “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16529. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16530. “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16531. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16532. खण्ड 1658क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ. १०९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ८.०२.१९६७; बूर्घू Distinction; class-aesthetic contrast; moon-named woman” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ. १०९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ८.०२.१९६७; बूर्घू Distinction; class-aesthetic contrast; moon-named woman” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1659 : विदेह-सदेह 6 — सत्यनारायण झा: रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)

प्रश्न 16533. सत्यनारायण झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)

व्याख्या: सूचकांकमे सत्यनारायण झाक रचना “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16534. “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16535. “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16536. सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ करुण आ अद्भुत

उत्तर: घ. शान्त आ करुण आ अद्भुत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ करुण आ अद्भुत” अछि।

प्रश्न 16537. सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ करुण आ अद्भुत; हाइडेगर Being-toward-death; 'पलट' = Kehre दार्शनिक turning

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ करुण आ अद्भुत; हाइडेगर Being-toward-death; 'पलट' = Kehre दार्शनिक turning

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ करुण आ अद्भुत; हाइडेगर Being-toward-death; 'पलट' = Kehre दार्शनिक turning” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16538. “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16539. सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16540. “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16541. सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16542. खण्ड 1659क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ करुण आ अद्भुत; हाइडेगर Being-toward-death; 'पलट' = Kehre दार्शनिक turning” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ करुण आ अद्भुत; हाइडेगर Being-toward-death; 'पलट' = Kehre दार्शनिक turning” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1660 : विदेह-सदेह 6 — बचेश्वर झा: संगित (पृ. १४५)

प्रश्न 16543. बचेश्वर झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. संगित (पृ. १४५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संगित (पृ. १४५)

व्याख्या: सूचकांकमे बचेश्वर झाक रचना “संगित (पृ. १४५)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16544. “संगित (पृ. १४५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16545. “संगित (पृ. १४५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16546. बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ शान्त

उत्तर: घ. शृंगार आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ शान्त” अछि।

प्रश्न 16547. बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ शान्त; नव्य-न्याय सम्बन्ध; music as perfect relation model

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ शान्त; नव्य-न्याय सम्बन्ध; music as perfect relation model

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शृंगार आ शान्त; नव्य-न्याय सम्बन्ध; music as perfect relation model” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16548. “संगित (पृ. १४५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16549. बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16550. “संगित (पृ. १४५)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16551. बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16552. खण्ड 1660क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शृंगार आ शान्त; नव्य-न्याय सम्बन्ध; music as perfect relation model” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शृंगार आ शान्त; नव्य-न्याय सम्बन्ध; music as perfect relation model” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1661 : विदेह-सदेह 6 — कपिलेश्वर राउत: थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४...

प्रश्न 16553. कपिलेश्वर राउतक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)

व्याख्या: सूचकांकमे कपिलेश्वर राउतक रचना “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16554. “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16555. “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16556. कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित

उत्तर: घ. दलित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित” अछि।

प्रश्न 16557. कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित; रौद्र आ करुण आ वीर आ हास्य; अम्बेडकर fear-in-body; economic self-sufficiency

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित; रौद्र आ करुण आ वीर आ हास्य; अम्बेडकर fear-in-body; economic self-sufficiency

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित; रौद्र आ करुण आ वीर आ हास्य; अम्बेडकर fear-in-body; economic self-sufficiency” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16558. “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16559. कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16560. “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16561. कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16562. खण्ड 1661क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दलित; रौद्र आ करुण आ वीर आ हास्य; अम्बेडकर fear-in-body; economic self-sufficiency” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दलित; रौद्र आ करुण आ वीर आ हास्य; अम्बेडकर fear-in-body; economic self-sufficiency” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1662 : विदेह-सदेह 6 — मनोज कुमार मंडल: घासवाली (पृ. १५७)

प्रश्न 16563. मनोज कुमार मंडलक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. घासवाली (पृ. १५७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घासवाली (पृ. १५७)

व्याख्या: सूचकांकमे मनोज कुमार मंडलक रचना “घासवाली (पृ. १५७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16564. “घासवाली (पृ. १५७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16565. “घासवाली (पृ. १५७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16566. मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ वीर

उत्तर: घ. करुण आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ वीर” अछि।

प्रश्न 16567. मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर; मार्क्स नारीवादी invisible labour; grass-cutter as foundational worker

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर; मार्क्स नारीवादी invisible labour; grass-cutter as foundational worker

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ वीर; मार्क्स नारीवादी invisible labour; grass-cutter as foundational worker” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16568. “घासवाली (पृ. १५७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16569. मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16570. “घासवाली (पृ. १५७)”कें विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16571. मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16572. खण्ड 1662क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण आ वीर; मार्क्स नारीवादी invisible labour; grass-cutter as foundational worker” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण आ वीर; मार्क्स नारीवादी invisible labour; grass-cutter as foundational worker” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1663 : विदेह-सदेह 6 — अनमोल झा: अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१...

प्रश्न 16573. अनमोल झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)

व्याख्या: सूचकांकमे अनमोल झाक रचना “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16574. “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16575. “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16576. अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: १९७०, नरेगाँव

उत्तर: घ. जन्म: १९७०, नरेगाँव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १९७०, नरेगाँव” अछि।

प्रश्न 16577. अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: १९७०, नरेगाँव; वीर आ हास्य आ करुण; फूको madness as resistance

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: १९७०, नरेगाँव; वीर आ हास्य आ करुण; फूको madness as resistance

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १९७०, नरेगाँव; वीर आ हास्य आ करुण; फूको madness as resistance” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16578. “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16579. अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16580. “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16581. अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16582. खण्ड 1663क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९७०, नरेगाँव; वीर आ हास्य आ करुण; फूको madness as resistance” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९७०, नरेगाँव; वीर आ हास्य आ करुण; फूको madness as resistance” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1664 : विदेह-सदेह 6 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ....

प्रश्न 16583. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)

व्याख्या: सूचकांकमे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क रचना “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16584. “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16585. “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

प्रश्न 16586. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: ११.१२.१९७३

उत्तर: घ. जन्म: ११.१२.१९७३

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ११.१२.१९७३” अछि।

प्रश्न 16587. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: ११.१२.१९७३; करुण आ वीर आ रौद्र; labour dual meaning; नारीवादी invisible labour

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: ११.१२.१९७३; करुण आ वीर आ रौद्र; labour dual meaning; नारीवादी invisible labour

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: ११.१२.१९७३; करुण आ वीर आ रौद्र; labour dual meaning; नारीवादी invisible labour” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

प्रश्न 16588. “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16589. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16590. “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16591. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16592. खण्ड 1664क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ११.१२.१९७३; करुण आ वीर आ रौद्र; labour dual meaning; नारीवादी invisible labour” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ११.१२.१९७३; करुण आ वीर आ रौद्र; labour dual meaning; नारीवादी invisible labour” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1665 : विदेह-सदेह 6 — भात राय भट्ट: रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)

प्रश्न 16593. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)

व्याख्या: सूचकांकमे भात राय भट्टक रचना “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16594. “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16595. “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16596. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल, महोत्तरी

उत्तर: घ. नेपाल, महोत्तरी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल, महोत्तरी” अछि।

प्रश्न 16597. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16598. “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भात राय भट्ट, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भात राय भट्ट, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16599. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16600. “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16601. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16602. खण्ड 1665क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नेपाल, महोत्तरी; करुण+वीर; मार्क्स नेपाल-मधेश विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नेपाल, महोत्तरी; करुण+वीर; मार्क्स नेपाल-मधेश विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1666 : विदेह-सदेह 6 — शम्भुनाथ झा 'वत्स': अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे...

प्रश्न 16603. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)

व्याख्या: सूचकांकमे शम्भुनाथ झा 'वत्स'क रचना “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16604. “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16605. “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16606. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण+रौद्र+शृंगार

उत्तर: घ. करुण+रौद्र+शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण+रौद्र+शृंगार” अछि।

प्रश्न 16607. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ रौद्र आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ रौद्र आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ रौद्र आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16608. “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शम्भुनाथ झा 'वत्स', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शम्भुनाथ झा 'वत्स', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16609. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16610. “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16611. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16612. खण्ड 1666क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण+रौद्र+शृंगार; कोसी विषय-सूत्र 2008 विषय-सूत्र; बेन्जामिन विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण+रौद्र+शृंगार; कोसी विषय-सूत्र 2008 विषय-सूत्र; बेन्जामिन विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1667 : विदेह-सदेह 6 — किशन कारीगर: दाम-दिगर (पृ. १८९)

प्रश्न 16613. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. दाम-दिगर (पृ. १८९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दाम-दिगर (पृ. १८९)

व्याख्या: सूचकांकमे किशन कारीगरक रचना “दाम-दिगर (पृ. १८९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16614. “दाम-दिगर (पृ. १८९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16615. “दाम-दिगर (पृ. १८९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16616. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य+व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य+व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य+व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16617. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16618. “दाम-दिगर (पृ. १८९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16619. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16620. “दाम-दिगर (पृ. १८९)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16621. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16622. खण्ड 1667क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+व्यंग्य; 'दाम+दिगर' = विषय-सूत्र+विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+व्यंग्य; 'दाम+दिगर' = विषय-सूत्र+विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1668 : विदेह-सदेह 6 — पंकज कुमार प्रियदर्शी: जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)

प्रश्न 16623. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)

व्याख्या: सूचकांकमे पंकज कुमार प्रियदर्शीक रचना “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16624. “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16625. “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16626. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: ०३.०२.१९८५

उत्तर: घ. जन्म: ०३.०२.१९८५

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ०३.०२.१९८५” अछि।

प्रश्न 16627. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16628. “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज कुमार प्रियदर्शी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज कुमार प्रियदर्शी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16629. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16630. “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16631. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16632. खण्ड 1668क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ०३.०२.१९८५; शान्त+शृंगार; वर्ड्सवर्थ 'विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ०३.०२.१९८५; शान्त+शृंगार; वर्ड्सवर्थ 'विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1669 : विदेह-सदेह 6 — नवीन ठाकुर: मिथिला उवाच (पृ. १९६)

प्रश्न 16633. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मिथिला उवाच (पृ. १९६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला उवाच (पृ. १९६)

व्याख्या: सूचकांकमे नवीन ठाकुरक रचना “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16634. “मिथिला उवाच (पृ. १९६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16635. “मिथिला उवाच (पृ. १९६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16636. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना

उत्तर: घ. जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना” अछि।

प्रश्न 16637. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16638. “मिथिला उवाच (पृ. १९६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16639. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16640. “मिथिला उवाच (पृ. १९६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16641. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16642. खण्ड 1669क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना; वीर+शान्त; 'उवाच' विषय-सूत्र — विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विदेह समानान्तर इतिहास विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना; वीर+शान्त; 'उवाच' विषय-सूत्र — विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विदेह समानान्तर इतिहास विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1670 : विदेह-सदेह 6 — ओमप्रकाश झा: सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक म...

प्रश्न 16643. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)

व्याख्या: सूचकांकमे ओमप्रकाश झाक रचना “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16644. “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16645. “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16646. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य+करुण+वात्सल्य+व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य+करुण+वात्सल्य+व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य+करुण+वात्सल्य+व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16647. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ हास्य आ वात्सल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ हास्य आ वात्सल्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ हास्य आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16648. “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16649. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16650. “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16651. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16652. खण्ड 1670क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+करुण+वात्सल्य+व्यंग्य; ग्राम्शी विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+करुण+वात्सल्य+व्यंग्य; ग्राम्शी विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1671 : विदेह-सदेह 6 — अमित मिश्र: प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)

प्रश्न 16653. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)

व्याख्या: सूचकांकमे अमित मिश्रक रचना “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16654. “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16655. “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16656. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रौद्र+करुण

उत्तर: घ. रौद्र+करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र+करुण” अछि।

प्रश्न 16657. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ रौद्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ रौद्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ रौद्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16658. “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16659. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16660. “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16661. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16662. खण्ड 1671क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “रौद्र+करुण; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; नारीवादी विषाक्त सम्बन्ध-विचार; घरूआ हिंसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “रौद्र+करुण; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; नारीवादी विषाक्त सम्बन्ध-विचार; घरूआ हिंसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1672 : विदेह-सदेह 6 — राजदेव मंडल: इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)

प्रश्न 16663. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)

व्याख्या: सूचकांकमे राजदेव मंडलक रचना “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16664. “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16665. “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16666. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य+रौद्र

उत्तर: घ. हास्य+रौद्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य+रौद्र” अछि।

प्रश्न 16667. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. रौद्र आ हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौद्र आ हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “रौद्र आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16668. “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16669. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16670. “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16671. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16672. खण्ड 1672क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+रौद्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; ग्राम्शी वर्चस्वी अनुष्ठान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+रौद्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; ग्राम्शी वर्चस्वी अनुष्ठान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1673 : विदेह-सदेह 6 — गजेन्द्र ठाकुर: दिल्ली (पृ. २२१)

प्रश्न 16673. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. दिल्ली (पृ. २२१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिल्ली (पृ. २२१)

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना “दिल्ली (पृ. २२१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16674. “दिल्ली (पृ. २२१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16675. “दिल्ली (पृ. २२१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16676. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।

प्रश्न 16677. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16678. “दिल्ली (पृ. २२१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16679. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16680. “दिल्ली (पृ. २२१)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16681. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16682. खण्ड 1673क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह सम्पादक; करुण+व्यंग्य; बुरदियू प्रतीकात्मक पूँजी; मैथिली प्रवासी मानस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह सम्पादक; करुण+व्यंग्य; बुरदियू प्रतीकात्मक पूँजी; मैथिली प्रवासी मानस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1674 : विदेह-सदेह 6 — जगदीश प्रसाद मंडल: सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)

प्रश्न 16683. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)

व्याख्या: सूचकांकमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16684. “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16685. “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16686. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा

उत्तर: घ. जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा” अछि।

प्रश्न 16687. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16688. “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16689. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16690. “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16691. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16692. खण्ड 1674क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा; २२ पृष्ठ; मार्क्स+विषय-सूत्र सूद-शोषण; दलित ग्रामीण सामाजिक मानचित्र: विषय-सूत्र+विषय-सूत्र+विषय-सूत्र+विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा; २२ पृष्ठ; मार्क्स+विषय-सूत्र सूद-शोषण; दलित ग्रामीण सामाजिक मानचित्र: विषय-सूत्र+विषय-सूत्र+विषय-सूत्र+विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1675 : विदेह-सदेह 6 — आशीष अनचिन्हार: काटल कथा (पृ. २५०)

प्रश्न 16693. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. काटल कथा (पृ. २५०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काटल कथा (पृ. २५०)

व्याख्या: सूचकांकमे आशीष अनचिन्हारक रचना “काटल कथा (पृ. २५०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16694. “काटल कथा (पृ. २५०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16695. “काटल कथा (पृ. २५०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16696. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सहायक सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सहायक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सहायक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 16697. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. रौद्र आ अद्भुत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौद्र आ अद्भुत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “रौद्र आ अद्भुत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16698. “काटल कथा (पृ. २५०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16699. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16700. “काटल कथा (पृ. २५०)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16701. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16702. खण्ड 1675क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह सहायक सम्पादक; अद्भुत+रौद्र; फूको नियन्त्रण; आत्मसंदर्भी कथा; विदेह विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह सहायक सम्पादक; अद्भुत+रौद्र; फूको नियन्त्रण; आत्मसंदर्भी कथा; विदेह विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1676 : विदेह-सदेह 6 — विनीत उत्पल: बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)

प्रश्न 16703. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)

व्याख्या: सूचकांकमे विनीत उत्पलक रचना “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16704. “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16705. “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16706. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह अनुवाद सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह अनुवाद सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह अनुवाद सम्पादक” अछि।

प्रश्न 16707. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ अद्भुत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ अद्भुत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ अद्भुत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16708. “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16709. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16710. “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)”कें विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16711. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16712. खण्ड 1676क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह अनुवाद सम्पादक; शृंगार+अद्भुत; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; फ्रायड विषय-सूत्र; हॉलीवुड→मैथिली सांस्कृतिक संकरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह अनुवाद सम्पादक; शृंगार+अद्भुत; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; फ्रायड विषय-सूत्र; हॉलीवुड→मैथिली सांस्कृतिक संकरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1677 : विदेह-सदेह 6 — कुमार भास्कर: लछिमनीया (पृ. २६४)

प्रश्न 16713. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. लछिमनीया (पृ. २६४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लछिमनीया (पृ. २६४)

व्याख्या: सूचकांकमे कुमार भास्करक रचना “लछिमनीया (पृ. २६४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16714. “लछिमनीया (पृ. २६४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16715. “लछिमनीया (पृ. २६४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 16716. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संकलनक अन्तिम रचना

उत्तर: घ. संकलनक अन्तिम रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संकलनक अन्तिम रचना” अछि।

प्रश्न 16717. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वात्सल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वात्सल्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16718. “लछिमनीया (पृ. २६४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार भास्कर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार भास्कर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16719. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16720. “लछिमनीया (पृ. २६४)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16721. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16722. खण्ड 1677क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “संकलनक अन्तिम रचना; वात्सल्य+करुण; लक्ष्मी विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र. विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “संकलनक अन्तिम रचना; वात्सल्य+करुण; लक्ष्मी विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र. विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1678 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर: पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण...

प्रश्न 16723. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16724. “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16725. “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना + बहुविधाक कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना + बहुविधाक कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना + बहुविधाक कविता” अछि।

प्रश्न 16726. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।

प्रश्न 16727. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “विदेह सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16728. “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा आलोचना + बहुविधाक कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा आलोचना + बहुविधाक कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16729. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16730. “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना + बहुविधाक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना + बहुविधाक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16731. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16732. खण्ड 1678क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि पद्य, आलोचना + बहुविधाक कविता आ “विदेह सम्पादक; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; मैथिली विषय-सूत्र विषय-सूत्र; नव्य-न्याय; विश्व-काव्य तुलना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि पद्य, आलोचना + बहुविधाक कविता आ “विदेह सम्पादक; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; मैथिली विषय-सूत्र विषय-सूत्र; नव्य-न्याय; विश्व-काव्य तुलना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1679 : विदेह-सदेह 7 — अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी': आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गी...

प्रश्न 16733. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी

व्याख्या: सूचकांकमे अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क रचना “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16734. “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16735. “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गीत” अछि।

प्रश्न 16736. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर+करुण+व्यंग्य

उत्तर: घ. वीर+करुण+व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर+करुण+व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16737. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16738. “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी', विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी', विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16739. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16740. “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16741. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16742. खण्ड 1679क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “वीर+करुण+व्यंग्य; ग्राम्शी विषय-सूत्र; कोसी विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “वीर+करुण+व्यंग्य; ग्राम्शी विषय-सूत्र; कोसी विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1680 : विदेह-सदेह 7 — मिथिलेश कुमार झा: खबरदार / गजल

प्रश्न 16743. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. खबरदार / गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खबरदार / गजल

व्याख्या: सूचकांकमे मिथिलेश कुमार झाक रचना “खबरदार / गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16744. “खबरदार / गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16745. “खबरदार / गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गजल” अछि।

प्रश्न 16746. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर+शृंगार-वियोग

उत्तर: घ. वीर+शृंगार-वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर+शृंगार-वियोग” अछि।

प्रश्न 16747. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ शृंगार आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ शृंगार आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16748. “खबरदार / गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16749. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16750. “खबरदार / गजल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16751. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16752. खण्ड 1680क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता / गजल आ “वीर+शृंगार-वियोग; विषय-सूत्र सजगता + विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता / गजल आ “वीर+शृंगार-वियोग; विषय-सूत्र सजगता + विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1681 : विदेह-सदेह 7 — बलराम साह: आकि नींद टूटि गेल

प्रश्न 16753. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आकि नींद टूटि गेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आकि नींद टूटि गेल

व्याख्या: सूचकांकमे बलराम साहक रचना “आकि नींद टूटि गेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16754. “आकि नींद टूटि गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16755. “आकि नींद टूटि गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16756. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. वीर+शान्त
उत्तर: घ. वीर+शान्त
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर+शान्त” अछि।

प्रश्न 16757. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. वीर आ शान्त
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वीर आ शान्त
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16758. “आकि नींद टूटि गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक बलराम साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक बलराम साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16759. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16760. “आकि नींद टूटि गेल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16761. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16762. खण्ड 1681क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर+शान्त; जागरण-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर+शान्त; जागरण-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1682 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर: कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबू...

प्रश्न 16763. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16764. “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16765. “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बहुविध पद्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बहुविध पद्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बहुविध पद्य” अछि।

प्रश्न 16766. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सम्पादक-कवि

उत्तर: घ. सम्पादक-कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्पादक-कवि” अछि।

प्रश्न 16767. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. सम्पादक-कवि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्पादक-कवि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “सम्पादक-कवि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16768. “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा बहुविध पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा बहुविध पद्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16769. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16770. “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बहुविध पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बहुविध पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16771. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16772. खण्ड 1682क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि पद्य, बहुविध पद्य आ “सम्पादक-कवि; जॉयस विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विदेह विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि पद्य, बहुविध पद्य आ “सम्पादक-कवि; जॉयस विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विदेह विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1683 : विदेह-सदेह 7 — रवि भूषण पाठक: हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश...

प्रश्न 16773. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)

व्याख्या: सूचकांकमे रवि भूषण पाठकक रचना “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16774. “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16775. “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू + कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू + कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू + कविता” अछि।

प्रश्न 16776. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित विषय-सूत्र

उत्तर: घ. दलित विषय-सूत्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित विषय-सूत्र” अछि।

प्रश्न 16777. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16778. “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू + कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू + कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16779. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16780. “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू + कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू + कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16781. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16782. खण्ड 1683क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू + कविता आ “दलित विषय-सूत्र; 'चमारक ऋण' पहचान-कविता; करुण+वीर+शान्त; विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू + कविता आ “दलित विषय-सूत्र; 'चमारक ऋण' पहचान-कविता; करुण+वीर+शान्त; विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1684 : विदेह-सदेह 7 — राजेश मोहन झा 'गुंजन': मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केह...

प्रश्न 16783. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)

व्याख्या: सूचकांकमे राजेश मोहन झा 'गुंजन'क रचना “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16784. “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16785. “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16786. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य+व्यंग्य+करुण

उत्तर: घ. हास्य+व्यंग्य+करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य+व्यंग्य+करुण” अछि।

प्रश्न 16787. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ हास्य आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ हास्य आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16788. “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश मोहन झा 'गुंजन', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश मोहन झा 'गुंजन', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16789. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16790. “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16791. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16792. खण्ड 1684क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य+व्यंग्य+करुण; राजनीतिक व्यंग्य; पलायन; नारीवादी अंत:पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य+व्यंग्य+करुण; राजनीतिक व्यंग्य; पलायन; नारीवादी अंत:पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1685 : विदेह-सदेह 7 — नवीन कुमार 'आशा': सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल

प्रश्न 16793. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल

व्याख्या: सूचकांकमे नवीन कुमार 'आशा'क रचना “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16794. “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16795. “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16796. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ वीर

उत्तर: घ. करुण आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ वीर” अछि।

प्रश्न 16797. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16798. “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार 'आशा', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार 'आशा', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16799. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16800. “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16801. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16802. खण्ड 1685क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ वीर; रोटी आ रोजी; मैथिली युवा स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ वीर; रोटी आ रोजी; मैथिली युवा स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1686 : विदेह-सदेह 7 — शम्भुनाथ झा 'वत्स': उद्वादी बनि जाइ

प्रश्न 16803. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्वादी बनि जाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. उद्वादी बनि जाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उद्वादी बनि जाइ

व्याख्या: सूचकांकमे शम्भुनाथ झा 'वत्स'क रचना “उद्वादी बनि जाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16804. “उद्बादी बनि जाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16805. “उद्बादी बनि जाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16806. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्बादी बनि जाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्याचार्य वेदविद्

उत्तर: घ. साहित्याचार्य वेदविद्

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्याचार्य वेदविद्” अछि।

प्रश्न 16807. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्बादी बनि जाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16808. “उद्बादी बनि जाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शम्भुनाथ झा 'वत्स', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शम्भुनाथ झा 'वत्स', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16809. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्बादी बनि जाइ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16810. “उद्बादी बनि जाइ”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16811. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्बादी बनि जाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16812. खण्ड 1686क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्बादी बनि जाइ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्याचार्य वेदविद्; वीर; मिथिला-पहचान आ आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्बादी बनि जाइ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्याचार्य वेदविद्; वीर; मिथिला-पहचान आ आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1687 : विदेह-सदेह 7 — अजित मिश्र: नव वर्ष

प्रश्न 16813. अजित मिश्रक “नव वर्ष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नव वर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव वर्ष

व्याख्या: सूचकांकमे अजित मिश्रक रचना “नव वर्ष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16814. “नव वर्ष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16815. “नव वर्ष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16816. अजित मिश्रक “नव वर्ष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ शृंगार

उत्तर: घ. शान्त आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 16817. अजित मिश्रक “नव वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16818. “नव वर्ष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अजित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अजित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16819. अजित मिश्रक “नव वर्ष” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16820. “नव वर्ष”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16821. अजित मिश्रक “नव वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16822. खण्ड 1687क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अजित मिश्रक “नव वर्ष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; नववर्षीय मनन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अजित मिश्रक “नव वर्ष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; नववर्षीय मनन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1688 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. शेफालिका वर्मा: नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / व...

प्रश्न 16823. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. शेफालिका वर्माक रचना “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16824. “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16825. “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16826. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी” अछि।

प्रश्न 16827. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ बीभत्स

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ बीभत्स

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ बीभत्स” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16828. “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16829. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16830. “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16831. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16832. खण्ड 1688क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी; पर्यावरण-नारीवादी; करुण आ बीभत्स; स्पिवाकक हाशियाकरण-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी; पर्यावरण-नारीवादी; करुण आ बीभत्स; स्पिवाकक हाशियाकरण-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1689 : विदेह-सदेह 7 — सतीश चन्द्र झा: चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पे...

प्रश्न 16833. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी

व्याख्या: सूचकांकमे सतीश चन्द्र झाक रचना “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16834. “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16835. “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16836. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य आ करुण आ वीर

उत्तर: घ. व्यंग्य आ करुण आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य आ करुण आ वीर” अछि।

प्रश्न 16837. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16838. “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16839. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16840. “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16841. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16842. खण्ड 1689क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” प्रविष्टि पद्य, कविता / व्यंग्य आ “व्यंग्य आ करुण आ वीर; ग्राम्शीक चुनावी राजनीति-दृष्टि; बिहार चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” प्रविष्टि पद्य, कविता / व्यंग्य आ “व्यंग्य आ करुण आ वीर; ग्राम्शीक चुनावी राजनीति-दृष्टि; बिहार चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1690 : विदेह-सदेह 7 — सुबोध कुमार ठाकुर: विडम्बना / प्रतीक्षा

प्रश्न 16843. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. विडम्बना / प्रतीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विडम्बना / प्रतीक्षा

व्याख्या: सूचकांकमे सुबोध कुमार ठाकुरक रचना “विडम्बना / प्रतीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16844. “विडम्बना / प्रतीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16845. “विडम्बना / प्रतीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16846. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ शान्त

उत्तर: घ. करुण आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शान्त” अछि।

प्रश्न 16847. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16848. “विडम्बना / प्रतीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16849. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16850. “विडम्बना / प्रतीक्षा”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16851. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16852. खण्ड 1690क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; अस्तित्वगत प्रतीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; अस्तित्वगत प्रतीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1691 : विदेह-सदेह 7 — किशन कारीगर: दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह

प्रश्न 16853. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह

व्याख्या: सूचकांकमे किशन कारीगरक रचना “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16854. “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16855. “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16856. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ शृंगार

उत्तर: घ. करुण आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 16857. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16858. “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16859. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16860. “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16861. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16862. खण्ड 1691क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार; प्रवास आ हानि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार; प्रवास आ हानि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1692 : विदेह-सदेह 7 — राम विलास साहु: कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत

प्रश्न 16863. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत

व्याख्या: सूचकांकमे राम विलास साहुक रचना “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16864. “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16865. “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गीत” अछि।

प्रश्न 16866. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ शान्त

उत्तर: घ. शृंगार आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ शान्त” अछि।

प्रश्न 16867. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16868. “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16869. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16870. “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16871. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16872. खण्ड 1692क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “शृंगार आ शान्त; ऋतु-छवि; विद्यापति-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “शृंगार आ शान्त; ऋतु-छवि; विद्यापति-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1693 : विदेह-सदेह 7 — पंकज कुमार झा: भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष /...

प्रश्न 16873. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर

व्याख्या: सूचकांकमे पंकज कुमार झाक रचना “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16874. “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16875. “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16876. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर आ करुण

उत्तर: घ. वीर आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ करुण” अछि।

प्रश्न 16877. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16878. “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16879. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16880. “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16881. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16882. खण्ड 1693क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ करुण; रीढ़-विहीन पुरुष पर व्यंग्य; सामाजिक जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ करुण; रीढ़-विहीन पुरुष पर व्यंग्य; सामाजिक जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1694 : विदेह-सदेह 7 — मुन्नाजी: हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार

प्रश्न 16883. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार

व्याख्या: सूचकांकमे मुन्नाजीक रचना “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16884. “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16885. “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू आ कविता” अछि।

प्रश्न 16886. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विहनि कथा आन्दोलनक अग्रणी

उत्तर: घ. विहनि कथा आन्दोलनक अग्रणी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विहनि कथा आन्दोलनक अग्रणी” अछि।

प्रश्न 16887. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16888. “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16889. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16890. “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16891. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16892. खण्ड 1694क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “विहनि कथा आन्दोलनक अग्रणी; करुण आ वीर; श्रमिकक स्वर; ग्राम्शी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “विहनि कथा आन्दोलनक अग्रणी; करुण आ वीर; श्रमिकक स्वर; ग्राम्शी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1695 : विदेह-सदेह 7 — ज्योति सुनीत चौधरी: हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जात...

प्रश्न 16893. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)

व्याख्या: सूचकांकमे ज्योति सुनीत चौधरीक रचना “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16894. “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16895. “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू-टनका आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू-टनका आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू-टनका आ कविता” अछि।

प्रश्न 16896. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लन्दन-निवासी

उत्तर: घ. लन्दन-निवासी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लन्दन-निवासी” अछि।

प्रश्न 16897. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. लन्दन-निवासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लन्दन-निवासी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “लन्दन-निवासी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16898. “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू-टनका आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू-टनका आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16899. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16900. “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू-टनका आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू-टनका आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16901. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16902. खण्ड 1695क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू-टनका आ कविता आ “लन्दन-निवासी; स्पिवाकक प्रवासी-दृष्टि; भ्रष्टाचार-विरोधी; मिथिला चित्रकला; जात्यन्धता-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू-टनका आ कविता आ “लन्दन-निवासी; स्पिवाकक प्रवासी-दृष्टि; भ्रष्टाचार-विरोधी; मिथिला चित्रकला; जात्यन्धता-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1696 : विदेह-सदेह 7 — अग्रावरन देवेन्द्र: तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)

प्रश्न 16903. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)

व्याख्या: सूचकांकमे अग्रावरन देवेन्द्रक रचना “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16904. “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16905. “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)” अछि।

प्रश्न 16906. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तेलुगुसँ मैथिली

उत्तर: घ. तेलुगुसँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगुसँ मैथिली” अछि।

प्रश्न 16907. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. तेलुगुसँ मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तेलुगुसँ मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “तेलुगुसँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16908. “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अग्रावरन देवेन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अग्रावरन देवेन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16909. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16910. “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16911. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16912. खण्ड 1696क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली) आ “तेलुगुसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली) आ “तेलुगुसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1697 : विदेह-सदेह 7 — गिरीश चन्द्र लाल: नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक र...

प्रश्न 16913. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग

व्याख्या: सूचकांकमे गिरीश चन्द्र लालक रचना “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16914. “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16915. “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16916. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ शृंगार

उत्तर: घ. शान्त आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 16917. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16918. “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गिरीश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गिरीश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16919. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16920. “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16921. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16922. खण्ड 1697क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; आकाश-छवि; भोरक रूपक; आशावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; आकाश-छवि; भोरक रूपक; आशावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1698 : विदेह-सदेह 7 — गंगेश गुंजन: आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०

प्रश्न 16923. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०

व्याख्या: सूचकांकमे गंगेश गुंजनक रचना “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16924. “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16925. “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आजाद गजल आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आजाद गजल आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आजाद गजल आ कविता” अछि।

प्रश्न 16926. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी” अछि।

प्रश्न 16927. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “साहित्य अकादेमी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16928. “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16929. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16930. “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आजाद गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आजाद गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16931. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16932. खण्ड 1698क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ कविता आ “साहित्य अकादेमी; आजाद गजल; स्वतन्त्रता-दिवस मनन; बाख्तिनक बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ कविता आ “साहित्य अकादेमी; आजाद गजल; स्वतन्त्रता-दिवस मनन; बाख्तिनक बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1699 : विदेह-सदेह 7 — मनीष झा 'बौआभाइ': भेल एहेन अवतार छल

प्रश्न 16933. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. भेल एहेन अवतार छल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भेल एहेन अवतार छल

व्याख्या: सूचकांकमे मनीष झा 'बौआभाइ'क रचना “भेल एहेन अवतार छल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16934. “भेल एहेन अवतार छल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16935. “भेल एहेन अवतार छल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16936. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अद्भुत आ व्यंग्य

उत्तर: घ. अद्भुत आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अद्भुत आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16937. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. अद्भुत आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अद्भुत आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “अद्भुत आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16938. “भेल एहेन अवतार छल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनीष झा 'बौआभाइ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनीष झा 'बौआभाइ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16939. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16940. “भेल एहेन अवतार छल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16941. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16942. खण्ड 1699क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ व्यंग्य; अवतार-रूपक; विदेहक नव स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ व्यंग्य; अवतार-रूपक; विदेहक नव स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1700 : विदेह-सदेह 7 — लालबाबू कर्ण: जन्मभूमि

प्रश्न 16943. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. जन्मभूमि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्मभूमि

व्याख्या: सूचकांकमे लालबाबू कर्णक रचना “जन्मभूमि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16944. “जन्मभूमि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16945. “जन्मभूमि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 16946. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वात्सल्य आ शान्त

उत्तर: घ. वात्सल्य आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य आ शान्त” अछि।

प्रश्न 16947. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ वात्सल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ वात्सल्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16948. “जन्मभूमि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक लालबाबू कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक लालबाबू कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16949. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16950. “जन्मभूमि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16951. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16952. खण्ड 1700क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वात्सल्य आ शान्त; जन्मभूमिकेँ पहचान रूपमे देखब; मिथिला-लगाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वात्सल्य आ शान्त; जन्मभूमिकेँ पहचान रूपमे देखब; मिथिला-लगाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1701 : विदेह-सदेह 7 — चन्द्रशेखर कामित: आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी...

प्रश्न 16953. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत

व्याख्या: सूचकांकमे चन्द्रशेखर कामितक रचना “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16954. “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16955. “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गीत” अछि।

प्रश्न 16956. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ शृंगार

उत्तर: घ. हास्य आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 16957. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16958. “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रशेखर कामित, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रशेखर कामित, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16959. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16960. “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16961. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16962. खण्ड 1701क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “हास्य आ शृंगार; घरूआ हास्य; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “हास्य आ शृंगार; घरूआ हास्य; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1702 : विदेह-सदेह 7 — मनोज झा 'मुक्ति': हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे

प्रश्न 16963. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे

व्याख्या: सूचकांकमे मनोज झा 'मुक्ति'क रचना “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16964. “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16965. “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू आ कविता” अछि।

प्रश्न 16966. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ व्यंग्य

उत्तर: घ. शान्त आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 16967. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16968. “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा 'मुक्ति', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा 'मुक्ति', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16969. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16970. “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16971. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16972. खण्ड 1702क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “शान्त आ व्यंग्य; पाखण्ड-आलोचना; सूक्ष्मतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “शान्त आ व्यंग्य; पाखण्ड-आलोचना; सूक्ष्मतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1703 : विदेह-सदेह 7 — राजेन्द्र चौधरी: श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन

प्रश्न 16973. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन

व्याख्या: सूचकांकमे राजेन्द्र चौधरीक रचना “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16974. “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16975. “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भजन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भजन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भजन” अछि।

प्रश्न 16976. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति रस

उत्तर: घ. भक्ति रस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति रस” अछि।

प्रश्न 16977. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16978. “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेन्द्र चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा भजन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेन्द्र चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा भजन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16979. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16980. “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16981. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16982. खण्ड 1703क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति रस; भक्ति-परम्परा; भक्तिपरक रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति रस; भक्ति-परम्परा; भक्तिपरक रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1704 : विदेह-सदेह 7 — रमाकान्त राय 'रमा': वन्दना

प्रश्न 16983. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वन्दना

व्याख्या: सूचकांकमे रमाकान्त राय 'रमा'क रचना “वन्दना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16984. “वन्दना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16985. “वन्दना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वन्दना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वन्दना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “वन्दना” अछि।

प्रश्न 16986. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति आ शान्त

उत्तर: घ. भक्ति आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति आ शान्त” अछि।

प्रश्न 16987. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16988. “वन्दना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा पद्य, उप-विधा वन्दना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा पद्य, उप-विधा वन्दना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16989. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 16990. “वन्दना”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ वन्दनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ वन्दनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 16991. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 16992. खण्ड 1704क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” प्रविष्टि पद्य, वन्दना आ “भक्ति आ शान्त; स्तुतिपरक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” प्रविष्टि पद्य, वन्दना आ “भक्ति आ शान्त; स्तुतिपरक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1705 : विदेह-सदेह 7 — प्रकाश प्रेमी: गीत

प्रश्न 16993. प्रकाश प्रेमीक “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांकमे प्रकाश प्रेमीक रचना “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 16994. प्रकाश प्रेमीक “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 16995. प्रकाश प्रेमीक “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गीत
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गीत
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 16996. प्रकाश प्रेमीक “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शृंगार आ शान्त
उत्तर: घ. शृंगार आ शान्त
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ शान्त” अछि।

प्रश्न 16997. प्रकाश प्रेमीक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. शृंगार आ शान्त
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शृंगार आ शान्त
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 16998. प्रकाश प्रेमीक “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक प्रकाश प्रेमी, विधा पद्य, उप-विधा गीत
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक प्रकाश प्रेमी, विधा पद्य, उप-विधा गीत
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 16999. प्रकाश प्रेमीक “गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17000. प्रकाश प्रेमीक “गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17001. प्रकाश प्रेमीक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17002. खण्ड 1705क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रकाश प्रेमीक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार आ शान्त; गीत-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रकाश प्रेमीक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार आ शान्त; गीत-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1706 : विदेह-सदेह 7 — सुमन झा 'सृजन': कैक्टस जक दिल / बलि

प्रश्न 17003. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कैक्टस जक दिल / बलि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कैक्टस जक दिल / बलि

व्याख्या: सूचकांकमे सुमन झा 'सृजन'क रचना “कैक्टस जक दिल / बलि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17004. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17005. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17006. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ व्यंग्य

उत्तर: घ. करुण आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 17007. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17008. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुमन झा 'सृजन', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुमन झा 'सृजन', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17009. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17010. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि”कें विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17011. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17012. खण्ड 1706क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ व्यंग्य; कैक्टस-दिल रूपक; बलिदान-विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ व्यंग्य; कैक्टस-दिल रूपक; बलिदान-विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1707 : विदेह-सदेह 7 — शिवकुमार मिश्र: भलमानुस समाज

प्रश्न 17013. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. भलमानुस समाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भलमानुस समाज

व्याख्या: सूचकांकमे शिवकुमार मिश्रक रचना “भलमानुस समाज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17014. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17015. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17016. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 17017. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17018. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17019. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17020. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17021. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17022. खण्ड 1707क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; भलमानुस समाजक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; भलमानुस समाजक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1708 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. बचेश्वर झा: भट / भावाञ्जलि

प्रश्न 17023. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. भट / भावाञ्जलि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भट / भावाञ्जलि

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. बचेश्वर झाक रचना “भट / भावाञ्जलि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17024. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17025. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17026. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ करुण

उत्तर: घ. शान्त आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ करुण” अछि।

प्रश्न 17027. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17028. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17029. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17030. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17031. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17032. खण्ड 1708क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण; ग्राम्य-संवेदना आ शोकगीतात्मकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण; ग्राम्य-संवेदना आ शोकगीतात्मकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1709 : विदेह-सदेह 7 — श्यामल सुमन: सय

प्रश्न 17033. श्यामल सुमनक “सय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सय

व्याख्या: सूचकांकमे श्यामल सुमनक रचना “सय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17034. श्यामल सुमनक “सय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17035. श्यामल सुमनक “सय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17036. श्यामल सुमनक “सय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दोहा-परम्परा

उत्तर: घ. दोहा-परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दोहा-परम्परा” अछि।

प्रश्न 17037. श्यामल सुमनक “सय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17038. श्यामल सुमनक “सय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्यामल सुमन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्यामल सुमन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17039. श्यामल सुमनक “सय” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17040. श्यामल सुमनक “सय”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17041. श्यामल सुमनक “सय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17042. खण्ड 1709क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. श्यामल सुमनक “सय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दोहा-परम्परा; शान्त; सूक्ष्मतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. श्यामल सुमनक “सय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दोहा-परम्परा; शान्त; सूक्ष्मतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1710 : विदेह-सदेह 7 — जय प्रकाश मंडल: उपराग / भूल कतए भेल

प्रश्न 17043. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. उपराग / भूल कतए भेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपराग / भूल कतए भेल

व्याख्या: सूचकांकमे जय प्रकाश मंडलक रचना “उपराग / भूल कतए भेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17044. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17045. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17046. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ शान्त

उत्तर: घ. करुण आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शान्त” अछि।

प्रश्न 17047. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17048. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जय प्रकाश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जय प्रकाश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17049. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17050. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17051. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17052. खण्ड 1710क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; ग्रहण-रूपक; आत्म-प्रश्नाकुलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; ग्रहण-रूपक; आत्म-प्रश्नाकुलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1711 : विदेह-सदेह 7 — सत्येश्वर कुमार झा: दस गोट क्षणिका

प्रश्न 17053. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. दस गोट क्षणिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दस गोट क्षणिका

व्याख्या: सूचकांकमे सत्येश्वर कुमार झाक रचना “दस गोट क्षणिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17054. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17055. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. क्षणिका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. क्षणिका

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “क्षणिका” अछि।

प्रश्न 17056. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त

उत्तर: घ. शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

प्रश्न 17057. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17058. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्येश्वर कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्येश्वर कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17059. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17060. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17061. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17062. खण्ड 1711क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त; दस सूक्ष्म क्षण-चित्र; चेखवक संक्षिप्ति-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त; दस सूक्ष्म क्षण-चित्र; चेखवक संक्षिप्ति-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1712 : विदेह-सदेह 7 — कपिलेश्वर साहु: कोसी

प्रश्न 17063. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कोसी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसी

व्याख्या: सूचकांकमे कपिलेश्वर साहुक रचना “कोसी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17064. कपिलेश्वर साहुक “कोसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17065. कपिलेश्वर साहुक “कोसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17066. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रौद्र आ करुण

उत्तर: घ. रौद्र आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र आ करुण” अछि।

प्रश्न 17067. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ रौद्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ रौद्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ रौद्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17068. कपिलेश्वर साहुक “कोसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कपिलेश्वर साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कपिलेश्वर साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17069. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17070. कपिलेश्वर साहुक “कोसी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17071. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17072. खण्ड 1712क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ करुण; २००८ क कोसी-बाढ़; पर्यावरण आ दलित-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ करुण; २००८ क कोसी-बाढ़; पर्यावरण आ दलित-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1713 : विदेह-सदेह 7 — राधाकान्त मंडल 'रमण': स्वागत गीत

प्रश्न 17073. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. स्वागत गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वागत गीत

व्याख्या: सूचकांकमे राधाकान्त मंडल 'रमण'क रचना “स्वागत गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17074. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17075. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 17076. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वात्सल्य आ शृंगार

उत्तर: घ. वात्सल्य आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17077. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ वात्सल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ वात्सल्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17078. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राधाकान्त मंडल 'रमण', विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राधाकान्त मंडल 'रमण', विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17079. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17080. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17081. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17082. खण्ड 1713क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “वात्सल्य आ शृंगार; स्वागत-गीत परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “वात्सल्य आ शृंगार; स्वागत-गीत परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1714 : विदेह-सदेह 7 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२

प्रश्न 17083. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२

व्याख्या: सूचकांकमे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक रचना “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17084. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17085. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. फगुआ गीत आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. फगुआ गीत आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “फगुआ गीत आ गजल” अछि।

प्रश्न 17086. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ शृंगार

उत्तर: घ. हास्य आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17087. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17088. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा पद्य, उप-विधा फगुआ गीत आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा पद्य, उप-विधा फगुआ गीत आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17089. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17090. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ फगुआ गीत आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ फगुआ गीत आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17091. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17092. खण्ड 1714क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, फगुआ गीत आ गजल आ “हास्य आ शृंगार; फगुआ-परम्परा; बाखिनक लोक-उत्सवी दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, फगुआ गीत आ गजल आ “हास्य आ शृंगार; फगुआ-परम्परा; बाखिनक लोक-उत्सवी दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1715 : विदेह-सदेह 7 — सरोज 'खिलाड़ी': गीत

प्रश्न 17093. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांकमे सरोज 'खिलाड़ी'क रचना “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17094. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17095. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 17096. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गीत-परम्परा

उत्तर: घ. गीत-परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गीत-परम्परा” अछि।

प्रश्न 17097. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. गीत-परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत-परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “गीत-परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17098. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सरोज 'खिलाड़ी', विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सरोज 'खिलाड़ी', विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17099. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17100. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17101. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17102. खण्ड 1715क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गीत-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गीत-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1716 : विदेह-सदेह 7 — नन्द विलास राय: गीत १-२ / जनसंख्या

प्रश्न 17103. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गीत १-२ / जनसंख्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत १-२ / जनसंख्या

व्याख्या: सूचकांकमे नन्द विलास रायक रचना “गीत १-२ / जनसंख्या” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17104. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17105. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत आ कविता” अछि।

प्रश्न 17106. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: 02.01.1957

उत्तर: घ. जन्म: 02.01.1957

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: 02.01.1957” अछि।

प्रश्न 17107. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17108. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17109. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17110. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17111. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17112. खण्ड 1716क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” प्रविष्टि पद्य, गीत आ कविता आ “जन्म: 02.01.1957; गीत आ व्यंग्य; जनसंख्या-संकट पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” प्रविष्टि पद्य, गीत आ कविता आ “जन्म: 02.01.1957; गीत आ व्यंग्य; जनसंख्या-संकट पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1717 : विदेह-सदेह 7 — विनीत ठाकुर: शान्ति दूत परवा

प्रश्न 17113. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. शान्ति दूत परवा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्ति दूत परवा

व्याख्या: सूचकांकमे विनीत ठाकुरक रचना “शान्ति दूत परवा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17114. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17115. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17116. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शान्त आ वीर
उत्तर: घ. शान्त आ वीर
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ वीर” अछि।

प्रश्न 17117. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. वीर आ शान्त
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वीर आ शान्त
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17118. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17119. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17120. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17121. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17122. खण्ड 1717क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वीर; शान्ति-दूत रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वीर; शान्ति-दूत रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1718 : विदेह-सदेह 7 — इन्द्रकान्त झा: गीत १-२

प्रश्न 17123. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गीत १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत १-२

व्याख्या: सूचकांकमे इन्द्रकान्त झाक रचना “गीत १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17124. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17125. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 17126. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 17127. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17128. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इन्द्रकान्त झा, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इन्द्रकान्त झा, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17129. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17130. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17131. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17132. खण्ड 1718क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार; गीतात्मक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार; गीतात्मक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1719 : विदेह-सदेह 7 — मनोज कुमार मंडल: जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी...

प्रश्न 17133. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)

व्याख्या: सूचकांकमे मनोज कुमार मंडलक रचना “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17134. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17135. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17136. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ हास्य आ वीर

उत्तर: घ. करुण आ हास्य आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ हास्य आ वीर” अछि।

प्रश्न 17137. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर आ हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर आ हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17138. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17139. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17140. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17141. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17142. खण्ड 1719क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ हास्य आ वीर; ‘बेटी’मे नारीवादी स्वर; मिथिला-पहचान; फैशन-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ हास्य आ वीर; ‘बेटी’मे नारीवादी स्वर; मिथिला-पहचान; फैशन-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1720 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्मा: हमर गाम

प्रश्न 17143. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हमर गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर गाम

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक रचना “हमर गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17144. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17145. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दम्पति कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दम्पति कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दम्पति कविता” अछि।

प्रश्न 17146. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दम्पति-लेखन परम्परा

उत्तर: घ. दम्पति-लेखन परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दम्पति-लेखन परम्परा” अछि।

प्रश्न 17147. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ वात्सल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ वात्सल्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17148. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा दम्पति कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा दम्पति कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17149. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17150. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दम्पति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दम्पति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17151. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17152. खण्ड 1720क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” प्रविष्टि पद्य, दम्पति कविता आ “दम्पति-लेखन परम्परा; शान्त आ वात्सल्य; संयुक्त लेखकीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” प्रविष्टि पद्य, दम्पति कविता आ “दम्पति-लेखन परम्परा; शान्त आ वात्सल्य; संयुक्त लेखकीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1721 : विदेह-सदेह 7 — रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर': गजल / गीत

प्रश्न 17153. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गजल / गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल / गीत

व्याख्या: सूचकांकमे रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क रचना “गजल / गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17154. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17155. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल आ गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल आ गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल आ गीत” अछि।

प्रश्न 17156. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: १९५१

उत्तर: घ. जन्म: १९५१

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १९५१” अछि।

प्रश्न 17157. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: १९५१

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: १९५१

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “जन्म: १९५१” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17158. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', विधा पद्य, उप-विधा गजल आ गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', विधा पद्य, उप-विधा गजल आ गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17159. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17160. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17161. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17162. खण्ड 1721क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” प्रविष्टि पद्य, गजल आ गीत आ “जन्म: १९५१; विदेह-सहभागिता; लोक-आधुनिक सेतु” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” प्रविष्टि पद्य, गजल आ गीत आ “जन्म: १९५१; विदेह-सहभागिता; लोक-आधुनिक सेतु” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1722 : विदेह-सदेह 7 — कामिनी कामायनी: वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन

प्रश्न 17163. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन

व्याख्या: सूचकांकमे कामिनी कामायनीक रचना “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17164. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17165. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17166. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कवि

उत्तर: घ. नारी कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

प्रश्न 17167. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ बीभत्स

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ बीभत्स

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ बीभत्स” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17168. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17169. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17170. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17171. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17172. खण्ड 1722क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; शृंगार आ बीभत्स; स्पिवाकक वस्तुकरण-दृष्टि; बाजार-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; शृंगार आ बीभत्स; स्पिवाकक वस्तुकरण-दृष्टि; बाजार-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1723 : विदेह-सदेह 7 — बेचन ठाकुर: गीत

प्रश्न 17173. बेचन ठाकुरक “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांकमे बेचन ठाकुरक रचना “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17174. बेचन ठाकुरक “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पद्य
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पद्य
व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17175. बेचन ठाकुरक “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. गीत
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. गीत
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 17176. बेचन ठाकुरक “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भिखारी ठाकुर परम्परा
उत्तर: घ. भिखारी ठाकुर परम्परा
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भिखारी ठाकुर परम्परा” अछि।

प्रश्न 17177. बेचन ठाकुरक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. भिखारी ठाकुर परम्परा
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भिखारी ठाकुर परम्परा
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “भिखारी ठाकुर परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17178. बेचन ठाकुरक “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17179. बेचन ठाकुरक “गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17180. बेचन ठाकुरक “गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17181. बेचन ठाकुरक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17182. खण्ड 1723क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बेचन ठाकुरक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बेचन ठाकुरक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1724 : विदेह-सदेह 7 — रमण कुमार सिंह: दिल्लीमे...

प्रश्न 17183. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. दिल्लीमे...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिल्लीमे...

व्याख्या: सूचकांकमे रमण कुमार सिंहक रचना “दिल्लीमे...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17184. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17185. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17186. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. करुण आ व्यंग्य
उत्तर: घ. करुण आ व्यंग्य
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 17187. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. करुण आ व्यंग्य
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. करुण आ व्यंग्य
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17188. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक रमण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक रमण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17189. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17190. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...”कें विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17191. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17192. खण्ड 1724क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ व्यंग्य; बुर्दियो-दृष्टिसँ दिल्ली-क्षेत्र; प्रवासी अलगाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ व्यंग्य; बुर्दियो-दृष्टिसँ दिल्ली-क्षेत्र; प्रवासी अलगाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1725 : विदेह-सदेह 7 — विज्ञानन्द झा 'विदू': हमर मिथिला / दहेज

प्रश्न 17193. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हमर मिथिला / दहेज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर मिथिला / दहेज

व्याख्या: सूचकांकमे विज्ञानन्द झा 'विदू'क रचना “हमर मिथिला / दहेज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17194. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17195. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17196. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह भाषा-सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह भाषा-सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह भाषा-सम्पादक” अछि।

प्रश्न 17197. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ रौद्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ रौद्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ रौद्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17198. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विज्ञानन्द झा 'विदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विज्ञानन्द झा 'विदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17199. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17200. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17201. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17202. खण्ड 1725क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विदेह भाषा-सम्पादक; वीर आ रौद्र; दहेज-विरोध आ मिथिला-पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विदेह भाषा-सम्पादक; वीर आ रौद्र; दहेज-विरोध आ मिथिला-पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1726 : विदेह-सदेह 7 — इन्दु भूषण कुमार: सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साह...

प्रश्न 17203. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)

व्याख्या: सूचकांकमे इन्दु भूषण कुमारक रचना “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17204. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17205. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17206. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर आ करुण आ व्यंग्य

उत्तर: घ. वीर आ करुण आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ करुण आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 17207. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17208. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इन्दु भूषण कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इन्दु भूषण कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17209. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17210. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17211. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17212. खण्ड 1726क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ करुण आ व्यंग्य; सफलता-विषयक विडम्बना; नगर-जीवन; साहस-विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ करुण आ व्यंग्य; सफलता-विषयक विडम्बना; नगर-जीवन; साहस-विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1727 : विदेह-सदेह 7 — विवेकानन्द झा: नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चा...

प्रश्न 17213. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)

व्याख्या: सूचकांकमे विवेकानन्द झाक रचना “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17214. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17215. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / हाइकू

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / हाइकू

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / हाइकू” अछि।

प्रश्न 17216. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहुत अधिक सृजनशील

उत्तर: घ. बहुत अधिक सृजनशील

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुत अधिक सृजनशील” अछि।

प्रश्न 17217. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17218. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विवेकानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / हाइकू

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विवेकानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / हाइकू

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17219. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17220. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17221. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17222. खण्ड 1727क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता / हाइकू आ “बहुत अधिक सृजनशील; शृंगार आ करुण आ अस्तित्वगत; कामू-संदर्भित आत्महत्या-कविता; हाइडेगरक प्रामाणिकता-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता / हाइकू आ “बहुत अधिक सृजनशील; शृंगार आ करुण आ अस्तित्वगत; कामू-संदर्भित आत्महत्या-कविता; हाइडेगरक प्रामाणिकता-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1728 : विदेह-सदेह 7 — रोशन झा: किछु हाइकू / गजल

प्रश्न 17223. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. किछु हाइकू / गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु हाइकू / गजल

व्याख्या: सूचकांकमे रोशन झाक रचना “किछु हाइकू / गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17224. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17225. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू आ गजल” अछि।

प्रश्न 17226. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ शृंगार-वियोग

उत्तर: घ. शान्त आ शृंगार-वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ शृंगार-वियोग” अछि।

प्रश्न 17227. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ शान्त आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ शान्त आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17228. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रोशन झा, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रोशन झा, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17229. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17230. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17231. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17232. खण्ड 1728क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ गजल आ “शान्त आ शृंगार-वियोग; सूक्ष्मतावाद आ गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ गजल आ “शान्त आ शृंगार-वियोग; सूक्ष्मतावाद आ गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1729 : विदेह-सदेह 7 — प्रबीण चौधरी 'तीक': किछु हाइकू-क्षणिका / गजल

प्रश्न 17233. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. किछु हाइकू-क्षणिका / गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु हाइकू-क्षणिका / गजल

व्याख्या: सूचकांकमे प्रबीण चौधरी 'तीक'क रचना “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17234. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17235. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू आ गजल” अछि।

प्रश्न 17236. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ शृंगार

उत्तर: घ. शान्त आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17237. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17238. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रबीण चौधरी 'तीक', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रबीण चौधरी 'तीक', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17239. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17240. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17241. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17242. खण्ड 1729क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ गजल आ “शान्त आ शृंगार; झलक-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ गजल आ “शान्त आ शृंगार; झलक-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1730 : विदेह-सदेह 7 — सुभाष चन्द्र: क्षणिका

प्रश्न 17243. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. क्षणिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षणिका

व्याख्या: सूचकांकमे सुभाष चन्द्रक रचना “क्षणिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17244. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17245. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. क्षणिका
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. क्षणिका
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “क्षणिका” अछि।

प्रश्न 17246. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सूक्ष्मतावादी
उत्तर: घ. सूक्ष्मतावादी
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सूक्ष्मतावादी” अछि।

प्रश्न 17247. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. सूक्ष्मतावादी
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सूक्ष्मतावादी
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “सूक्ष्मतावादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17248. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक सुभाष चन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17249. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17250. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17251. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17252. खण्ड 1730क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “सूक्ष्मतावादी; एक-छवि-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “सूक्ष्मतावादी; एक-छवि-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1731 : विदेह-सदेह 7 — रवीन्द्र कुमार दास: क्षणिका

प्रश्न 17253. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. क्षणिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षणिका

व्याख्या: सूचकांकमे रवीन्द्र कुमार दासक रचना “क्षणिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17254. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17255. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. क्षणिका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. क्षणिका

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “क्षणिका” अछि।

प्रश्न 17256. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त रस

उत्तर: घ. शान्त रस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त रस” अछि।

प्रश्न 17257. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17258. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवीन्द्र कुमार दास, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवीन्द्र कुमार दास, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17259. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17260. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17261. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17262. खण्ड 1731क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त रस; शुद्ध अवलोकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त रस; शुद्ध अवलोकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1732 : विदेह-सदेह 7 — कुसुम ठाकुर: हाइकू / शेनयू

प्रश्न 17263. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हाइकू / शेनयू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू / शेनयू

व्याख्या: सूचकांकमे कुसुम ठाकुरक रचना “हाइकू / शेनयू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17264. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17265. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू आ शेनयू

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू आ शेनयू

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू आ शेनयू” अछि।

प्रश्न 17266. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कवि

उत्तर: घ. नारी कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

प्रश्न 17267. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17268. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ शेनयू

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ शेनयू

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17269. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17270. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू आ शेनयूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू आ शेनयूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17271. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17272. खण्ड 1732क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ शेनयू आ “नारी कवि; शान्त; प्रकृति-छवि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ शेनयू आ “नारी कवि; शान्त; प्रकृति-छवि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1733 : विदेह-सदेह 7 — रमाकान्त झा 'सौराठ': घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा /...

प्रश्न 17273. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन

व्याख्या: सूचकांकमे रमाकान्त झा 'सौराठ'क रचना “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17274. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17275. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गीत” अछि।

प्रश्न 17276. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ शृंगार

उत्तर: घ. करुण आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17277. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17278. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमाकान्त झा 'सौराठ', विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमाकान्त झा 'सौराठ', विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17279. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17280. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17281. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17282. खण्ड 1733क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “करुण आ शृंगार; टूटल घरक रूपक; प्रकृति-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “करुण आ शृंगार; टूटल घरक रूपक; प्रकृति-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1734 : विदेह-सदेह 7 — मृदुला प्रधान: एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल ग...

प्रश्न 17283. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम

व्याख्या: सूचकांकमे मृदुला प्रधानक रचना “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17284. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17285. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17286. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कवि

उत्तर: घ. नारी कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

प्रश्न 17287. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17288. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मृदुला प्रधान, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मृदुला प्रधान, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17289. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17290. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17291. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17292. खण्ड 1734क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; करुण आ व्यंग्य आ वीर; गणतन्त्र-दिवस शोकगीत; यमुना-पर्यावरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; करुण आ व्यंग्य आ वीर; गणतन्त्र-दिवस शोकगीत; यमुना-पर्यावरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1735 : विदेह-सदेह 7 — प्रवीण कश्यप: आच्छादन

प्रश्न 17293. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आच्छादन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आच्छादन

व्याख्या: सूचकांकमे प्रवीण कश्यपक रचना “आच्छादन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17294. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17295. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17296. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त

उत्तर: घ. शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

प्रश्न 17297. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17298. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रवीण कश्यप, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रवीण कश्यप, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17299. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17300. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17301. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17302. खण्ड 1735क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त; आच्छादन-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त; आच्छादन-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1736 : विदेह-सदेह 7 — अरविन्द ठाकुर: आजाद गजल १-२

प्रश्न 17303. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आजाद गजल १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल १-२

व्याख्या: सूचकांकमे अरविन्द ठाकुरक रचना “आजाद गजल १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17304. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पद्य
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पद्य
व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17305. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. आजाद गजल
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. आजाद गजल
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आजाद गजल” अछि।

प्रश्न 17306. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. विदेह गजल-आन्दोलन
उत्तर: घ. विदेह गजल-आन्दोलन
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह गजल-आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 17307. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. वियोग
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वियोग
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17308. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक अरविन्द ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक अरविन्द ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17309. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17310. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17311. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17312. खण्ड 1736क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “विदेह गजल-आन्दोलन; वियोग आ राजनीतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “विदेह गजल-आन्दोलन; वियोग आ राजनीतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1737 : विदेह-सदेह 7 — धीरेश्वर कुमार: हमर गाम

प्रश्न 17313. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हमर गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर गाम

व्याख्या: सूचकांकमे धीरेश्वर कुमारक रचना “हमर गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17314. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17315. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17316. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शान्त आ वात्सल्य
उत्तर: घ. शान्त आ वात्सल्य
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ वात्सल्य” अछि।

प्रश्न 17317. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. शान्त आ वात्सल्य
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शान्त आ वात्सल्य
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17318. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक धीरेश्वर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक धीरेश्वर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17319. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17320. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17321. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17322. खण्ड 1737क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वात्सल्य; गामक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वात्सल्य; गामक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1738 : विदेह-सदेह 7 — अखिलेश कुमार मंडल: ट्रेनक चोरबा

प्रश्न 17323. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. ट्रेनक चोरबा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ट्रेनक चोरबा

व्याख्या: सूचकांकमे अखिलेश कुमार मंडलक रचना “ट्रेनक चोरबा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17324. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17325. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17326. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 17327. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17328. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अखिलेश कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अखिलेश कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17329. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17330. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17331. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17332. खण्ड 1738क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; ट्रेन-चोर प्रसंग; काफ्काक विसंगति-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; ट्रेन-चोर प्रसंग; काफ्काक विसंगति-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1739 : विदेह-सदेह 7 — कालीनाथ झा: अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोक...

प्रश्न 17333. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक

व्याख्या: सूचकांकमे कालीनाथ झाक रचना “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17334. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17335. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कुण्डलिया आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कुण्डलिया आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कुण्डलिया आ कविता” अछि।

प्रश्न 17336. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: 24.06.1946

उत्तर: घ. जन्म: 24.06.1946

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: 24.06.1946” अछि।

प्रश्न 17337. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: 24.06.1946

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: 24.06.1946

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “जन्म: 24.06.1946” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17338. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कुण्डलिया आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कुण्डलिया आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17339. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17340. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक”कें विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कुण्डलिया आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कुण्डलिया आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17341. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17342. खण्ड 1739क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” प्रविष्टि पद्य, कुण्डलिया आ कविता आ “जन्म: 24.06.1946; कानपुर; शास्त्रीय कुण्डलिया-रूप; बापक शापक विषय; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” प्रविष्टि पद्य, कुण्डलिया आ कविता आ “जन्म: 24.06.1946; कानपुर; शास्त्रीय कुण्डलिया-रूप; बापक शापक विषय; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1740 : विदेह-सदेह 7 — सत्यानन्द पाठक: आह! जाड़ चलि गेल!

प्रश्न 17343. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आह! जाड़ चलि गेल!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आह! जाड़ चलि गेल!

व्याख्या: सूचकांकमे सत्यानन्द पाठकक रचना “आह! जाड़ चलि गेल!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17344. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17345. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17346. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ शान्त

उत्तर: घ. हास्य आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शान्त” अछि।

प्रश्न 17347. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17348. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यानन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यानन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17349. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17350. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17351. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17352. खण्ड 1740क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शान्त; जाड़-बिदाइ; ऋतुजन्य हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शान्त; जाड़-बिदाइ; ऋतुजन्य हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1741 : विदेह-सदेह 7 — दयाकान्त: मैथिल

प्रश्न 17353. दयाकान्तक “मैथिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मैथिल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल

व्याख्या: सूचकांकमे दयाकान्तक रचना “मैथिल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17354. दयाकान्तक “मैथिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17355. दयाकान्तक “मैथिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17356. दयाकान्तक “मैथिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर आ शान्त

उत्तर: घ. वीर आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ शान्त” अछि।

प्रश्न 17357. दयाकान्तक “मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17358. दयाकान्तक “मैथिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17359. दयाकान्तक “मैथिल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17360. दयाकान्तक “मैथिल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17361. दयाकान्तक “मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17362. खण्ड 1741क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दयाकान्तक “मैथिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ शान्त; मैथिली-पहचानक समर्थन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दयाकान्तक “मैथिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ शान्त; मैथिली-पहचानक समर्थन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1742 : विदेह-सदेह 7 — रमेश: गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत

प्रश्न 17363. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत

व्याख्या: सूचकांकमे रमेशक रचना “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17364. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17365. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गद्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गद्य कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गद्य कविता” अछि।

प्रश्न 17366. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गद्य-कविता

उत्तर: घ. गद्य-कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गद्य-कविता” अछि।

प्रश्न 17367. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. गद्य-कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गद्य-कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “गद्य-कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17368. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा गद्य कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा गद्य कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17369. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17370. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गद्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गद्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17371. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17372. खण्ड 1742क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” प्रविष्टि पद्य, गद्य कविता आ “गद्य-कविता; दार्शनिक अद्वैत-दृष्टि; अद्वैत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” प्रविष्टि पद्य, गद्य कविता आ “गद्य-कविता; दार्शनिक अद्वैत-दृष्टि; अद्वैत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1743 : विदेह-सदेह 7 — शिवशंकर सिंह ठाकुर: बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावना...

प्रश्न 17373. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि

व्याख्या: सूचकांकमे शिवशंकर सिंह ठाकुरक रचना “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17374. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17375. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाइ आ गजल आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाइ आ गजल आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाइ आ गजल आ कविता” अछि।

प्रश्न 17376. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ करुण

उत्तर: घ. शृंगार आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ करुण” अछि।

प्रश्न 17377. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17378. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवशंकर सिंह ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा बाइ आ गजल आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवशंकर सिंह ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा बाइ आ गजल आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17379. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17380. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाइ आ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाइ आ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17381. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17382. खण्ड 1743क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” प्रविष्टि पद्य, बाइ आ गजल आ कविता आ “शृंगार आ करुण; बाइ-रूप; सोनाक उपमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” प्रविष्टि पद्य, बाइ आ गजल आ कविता आ “शृंगार आ करुण; बाइ-रूप; सोनाक उपमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1744 : विदेह-सदेह 7 — इरा मल्लिक: भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टन...

प्रश्न 17383. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन

व्याख्या: सूचकांकमे इरा मल्लिकक रचना “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17384. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17385. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता आ हाइकू

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता आ हाइकू

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ हाइकू” अछि।

प्रश्न 17386. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कवि

उत्तर: घ. नारी कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

प्रश्न 17387. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17388. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ हाइकू

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ हाइकू

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17389. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17390. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता आ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता आ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17391. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17392. खण्ड 1744क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ हाइकू आ “नारी कवि; करुण आ शान्त; निद्राहीन राति; बहुरूपी शिल्प” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ हाइकू आ “नारी कवि; करुण आ शान्त; निद्राहीन राति; बहुरूपी शिल्प” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1745 : विदेह-सदेह 7 — विनीता झा: हम छी बुद्धिक थोड़

प्रश्न 17393. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?
क. हम छी बुद्धिक थोड़
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. हम छी बुद्धिक थोड़
व्याख्या: सूचकांकमे विनीता झाक रचना “हम छी बुद्धिक थोड़” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17394. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़”क मुख्य विधा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पद्य
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पद्य
व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17395. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17396. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. हास्य आ शान्त
उत्तर: घ. हास्य आ शान्त
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शान्त” अछि।

प्रश्न 17397. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. शान्त आ हास्य
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शान्त आ हास्य
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17398. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक विनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक विनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17399. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17400. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17401. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17402. खण्ड 1745क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शान्त; अपने बुद्धि पर विनम्र हास्यात्मक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शान्त; अपने बुद्धि पर विनम्र हास्यात्मक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1746 : विदेह-सदेह 7 — अन्य कुमार चौधरी: वाणिक लैस

प्रश्न 17403. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. वाणिक लैस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वाणिक लैस

व्याख्या: सूचकांकमे अन्य कुमार चौधरीक रचना “वाणिक लैस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17404. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17405. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17406. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर

उत्तर: घ. वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर” अछि।

प्रश्न 17407. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17408. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अन्य कुमार चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अन्य कुमार चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17409. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17410. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17411. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17412. खण्ड 1746क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर; शस्त्रवत् वाणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर; शस्त्रवत् वाणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1747 : विदेह-सदेह 7 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': गजल १-१२

प्रश्न 17413. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गजल १-१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल १-१२

व्याख्या: सूचकांकमे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क रचना “गजल १-१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17414. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17415. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 17416. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह गजल-आन्दोलनक आधार-स्तम्भ

उत्तर: घ. विदेह गजल-आन्दोलनक आधार-स्तम्भ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह गजल-आन्दोलनक आधार-स्तम्भ” अछि।

प्रश्न 17417. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17418. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17419. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17420. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17421. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17422. खण्ड 1747क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विदेह गजल-आन्दोलनक आधार-स्तम्भ; शृंगार आ वियोग आ दार्शनिक; बाख्तिनक संवादवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विदेह गजल-आन्दोलनक आधार-स्तम्भ; शृंगार आ वियोग आ दार्शनिक; बाख्तिनक संवादवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1748 : विदेह-सदेह 7 — विकास झा रंजन: नजरि / गजल

प्रश्न 17423. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नजरि / गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नजरि / गजल

व्याख्या: सूचकांकमे विकास झा रंजनक रचना “नजरि / गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17424. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17425. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ गजल” अछि।

प्रश्न 17426. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ वियोग

उत्तर: घ. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वियोग” अछि।

प्रश्न 17427. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17428. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विकास झा रंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विकास झा रंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17429. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17430. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17431. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17432. खण्ड 1748क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “शृंगार आ वियोग; नजरि-कविता आ गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “शृंगार आ वियोग; नजरि-कविता आ गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1749 : विदेह-सदेह 7 — अनिल मल्लिक: गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति

प्रश्न 17433. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति

व्याख्या: सूचकांकमे अनिल मल्लिकक रचना “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17434. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17435. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत आ गजल आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत आ गजल आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत आ गजल आ कविता” अछि।

प्रश्न 17436. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ वीर

उत्तर: घ. शृंगार आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वीर” अछि।

प्रश्न 17437. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17438. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनिल मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ गजल आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनिल मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ गजल आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17439. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17440. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत आ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत आ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17441. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17442. खण्ड 1749क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” प्रविष्टि पद्य, गीत आ गजल आ कविता आ “शृंगार आ वीर; स्वीकारोक्ति-कविता; बहुरूपी विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” प्रविष्टि पद्य, गीत आ गजल आ कविता आ “शृंगार आ वीर; स्वीकारोक्ति-कविता; बहुरूपी विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1750 : विदेह-सदेह 7 — आनन्द झा 'मैथिल': पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी

प्रश्न 17443. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी

व्याख्या: सूचकांकमे आनन्द झा 'मैथिल'क रचना “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17444. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17445. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17446. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ करुण

उत्तर: घ. हास्य आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ करुण” अछि।

प्रश्न 17447. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17448. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आनन्द झा 'मैथिल', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आनन्द झा 'मैथिल', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17449. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17450. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17451. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17452. खण्ड 1750क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ करुण; गामक पंचैती-कविता; चिट्ठी-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ करुण; गामक पंचैती-कविता; चिट्ठी-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1751 : विदेह-सदेह 7 — भात राय भट्ट: जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा

प्रश्न 17453. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा

व्याख्या: सूचकांकमे भात राय भट्टक रचना “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17454. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17455. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17456. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 17457. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17458. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भात राय भट्ट, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भात राय भट्ट, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17459. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17460. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17461. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17462. खण्ड 1751क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल; सीताक जन्मभूमि; वीर आ भक्ति; तीर्थयात्रा-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल; सीताक जन्मभूमि; वीर आ भक्ति; तीर्थयात्रा-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1752 : विदेह-सदेह 7 — अमित मोहन झा: कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार

प्रश्न 17463. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार

व्याख्या: सूचकांकमे अमित मोहन झाक रचना “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17464. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17465. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17466. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ शृंगार

उत्तर: घ. शान्त आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17467. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17468. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17469. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17470. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17471. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17472. खण्ड 1752क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; जीवन-प्रश्न आ त्योहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; जीवन-प्रश्न आ त्योहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1753 : विदेह-सदेह 7 — गुलसारिका: संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक...

प्रश्न 17473. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक

व्याख्या: सूचकांकमे गुलसारिकाक रचना “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17474. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17475. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17476. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कवि

उत्तर: घ. नारी कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

प्रश्न 17477. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शृंगार आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शृंगार आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17478. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गुलसारिका, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गुलसारिका, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17479. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17480. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17481. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17482. खण्ड 1753क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; शान्त आ करुण आ शृंगार; बहिनक बाल्यकाल-स्मृति; सन्तोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; शान्त आ करुण आ शृंगार; बहिनक बाल्यकाल-स्मृति; सन्तोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1754 : विदेह-सदेह 7 — भावना नवीन: आजाद गजल १-४

प्रश्न 17483. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आजाद गजल १-४

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल १-४

व्याख्या: सूचकांकमे भावना नवीनक रचना “आजाद गजल १-४” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17484. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17485. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आजाद गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आजाद गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आजाद गजल” अछि।

प्रश्न 17486. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी गजल

उत्तर: घ. नारी गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी गजल” अछि।

प्रश्न 17487. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17488. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भावना नवीन, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भावना नवीन, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17489. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17490. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17491. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17492. खण्ड 1754क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “नारी गजल; शृंगार आ वियोग; गजल-रूपमे स्त्री-स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “नारी गजल; शृंगार आ वियोग; गजल-रूपमे स्त्री-स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1755 : विदेह-सदेह 7 — मिहिर झा: बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल /...

प्रश्न 17493. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह

व्याख्या: सूचकांकमे मिहिर झाक रचना “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17494. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17495. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बहुविध पद्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बहुविध पद्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बहुविध पद्य” अछि।

प्रश्न 17496. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सम्पादकक अनुसार श्रेष्ठ मैथिली बाइ

उत्तर: घ. सम्पादकक अनुसार श्रेष्ठ मैथिली बाइ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्पादकक अनुसार श्रेष्ठ मैथिली बाइ” अछि।

प्रश्न 17497. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17498. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिहिर झा, विधा पद्य, उप-विधा बहुविध पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिहिर झा, विधा पद्य, उप-विधा बहुविध पद्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17499. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17500. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बहुविध पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बहुविध पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17501. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17502. खण्ड 1755क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” प्रविष्टि पद्य, बहुविध पद्य आ “सम्पादकक अनुसार श्रेष्ठ मैथिली बाइ; बहुरूपी शिल्प अस्पष्ट-विदेशी-शब्द; शृंगार आ दार्शनिक; फारसी-अरबी रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” प्रविष्टि पद्य, बहुविध पद्य आ “सम्पादकक अनुसार श्रेष्ठ मैथिली बाइ; बहुरूपी शिल्प अस्पष्ट-विदेशी-शब्द; शृंगार आ दार्शनिक; फारसी-अरबी रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1756 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. शशिधर कुमार: की इएह कहबैछ सुन्दरता?

प्रश्न 17503. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. की इएह कहबैछ सुन्दरता?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की इएह कहबैछ सुन्दरता?

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. शशिधर कुमारक रचना “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17504. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17505. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17506. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अद्भुत आ व्यंग्य

उत्तर: घ. अद्भुत आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अद्भुत आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 17507. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. अद्भुत आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अद्भुत आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “अद्भुत आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17508. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शशिधर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शशिधर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17509. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17510. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17511. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17512. खण्ड 1756क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ व्यंग्य; सौन्दर्य पर प्रश्न; प्लेटोक सौन्दर्य-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ व्यंग्य; सौन्दर्य पर प्रश्न; प्लेटोक सौन्दर्य-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1757 : विदेह-सदेह 7 — अमरेन्द्र कुमार मिश्र: नेता

प्रश्न 17513. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नेता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेता

व्याख्या: सूचकांकमे अमरेन्द्र कुमार मिश्रक रचना “नेता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17514. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17515. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17516. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 17517. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17518. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरेन्द्र कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरेन्द्र कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17519. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17520. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17521. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17522. खण्ड 1757क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; नेता-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; नेता-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1758 : विदेह-सदेह 7 — सुबोध झा: बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ...

प्रश्न 17523. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)

व्याख्या: सूचकांकमे सुबोध झाक रचना “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17524. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17525. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता आ शाइरी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता आ शाइरी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ शाइरी” अछि।

प्रश्न 17526. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ करुण

उत्तर: घ. हास्य आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ करुण” अछि।

प्रश्न 17527. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17528. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ शाइरी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ शाइरी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17529. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17530. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता आ शाइरीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता आ शाइरीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17531. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17532. खण्ड 1758क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ शाइरी आ “हास्य आ करुण; बहुरूपी शिल्प; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ शाइरी आ “हास्य आ करुण; बहुरूपी शिल्प; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1759 : विदेह-सदेह 7 — मो. गुल हसन: सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...

प्रश्न 17533. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...

व्याख्या: सूचकांकमे मो. गुल हसनक रचना “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17534. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17535. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17536. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुसलमान मैथिली स्वर

उत्तर: घ. मुसलमान मैथिली स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुसलमान मैथिली स्वर” अछि।

प्रश्न 17537. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17538. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मो. गुल हसन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मो. गुल हसन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17539. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17540. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17541. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17542. खण्ड 1759क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मुसलमान मैथिली स्वर; करुण आ व्यंग्य; बुर्दियो बहुलतावाद; किसान-पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मुसलमान मैथिली स्वर; करुण आ व्यंग्य; बुर्दियो बहुलतावाद; किसान-पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1760 : विदेह-सदेह 7 — प्रीति प्रिया झा: बेटी

प्रश्न 17543. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बेटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी

व्याख्या: सूचकांकमे प्रीति प्रिया झाक रचना “बेटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17544. प्रीति प्रिया झाक “बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17545. प्रीति प्रिया झाक “बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17546. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कवि

उत्तर: घ. नारी कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

प्रश्न 17547. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17548. प्रीति प्रिया झाक “बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रीति प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रीति प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17549. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17550. प्रीति प्रिया झाक “बेटी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17551. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17552. खण्ड 1760क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; करुण आ वीर; बेटीक असुरक्षा; नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; करुण आ वीर; बेटीक असुरक्षा; नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1761 : विदेह-सदेह 7 — पवन कुमार साह: प्रेम / गीत १-२

प्रश्न 17553. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. प्रेम / गीत १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम / गीत १-२

व्याख्या: सूचकांकमे पवन कुमार साहक रचना “प्रेम / गीत १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17554. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17555. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता आ गीत
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता आ गीत
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ गीत” अछि।

प्रश्न 17556. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शृंगार
उत्तर: घ. शृंगार
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 17557. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. शृंगार
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शृंगार
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17558. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक पवन कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गीत
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक पवन कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गीत
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17559. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17560. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविता आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविता आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17561. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17562. खण्ड 1761क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गीत आ “शृंगार; प्रेम आ गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गीत आ “शृंगार; प्रेम आ गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1762 : विदेह-सदेह 7 — स्तुति नारायण: मन पड़ैत अछि

प्रश्न 17563. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मन पड़ैत अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मन पड़ैत अछि

व्याख्या: सूचकांकमे स्तुति नारायणक रचना “मन पड़ैत अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17564. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17565. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17566. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ शान्त

उत्तर: घ. करुण आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शान्त” अछि।

प्रश्न 17567. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17568. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक स्तुति नारायण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक स्तुति नारायण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17569. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17570. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17571. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17572. खण्ड 1762क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; स्मृति-व्याकुलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; स्मृति-व्याकुलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1763 : विदेह-सदेह 7 — स्वाती शाक्यभरी: पिताजी

प्रश्न 17573. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. पिताजी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिताजी

व्याख्या: सूचकांकमे स्वाती शाक्यभरीक रचना “पिताजी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17574. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17575. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17576. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वात्सल्य आ करुण

उत्तर: घ. वात्सल्य आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य आ करुण” अछि।

प्रश्न 17577. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ भक्ति आ वात्सल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ भक्ति आ वात्सल्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ भक्ति आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17578. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक स्वाती शाक्यभरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक स्वाती शाक्यभरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17579. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17580. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17581. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17582. खण्ड 1763क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वात्सल्य आ करुण; पिताक प्रति श्रद्धांजलि; सन्तान-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वात्सल्य आ करुण; पिताक प्रति श्रद्धांजलि; सन्तान-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1764 : विदेह-सदेह 7 — अरविन्द रंजन दास: क्षणिका

प्रश्न 17583. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. क्षणिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षणिका

व्याख्या: सूचकांकमे अरविन्द रंजन दासक रचना “क्षणिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17584. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17585. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. क्षणिका
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. क्षणिका
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “क्षणिका” अछि।

प्रश्न 17586. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सूक्ष्म अवलोकन
उत्तर: घ. सूक्ष्म अवलोकन
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सूक्ष्म अवलोकन” अछि।

प्रश्न 17587. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. सूक्ष्म अवलोकन
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सूक्ष्म अवलोकन
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “सूक्ष्म अवलोकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17588. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक अरविन्द रंजन दास, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक अरविन्द रंजन दास, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17589. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17590. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17591. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17592. खण्ड 1764क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “सूक्ष्म अवलोकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “सूक्ष्म अवलोकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1765 : विदेह-सदेह 7 — बि.पि.उदासी: एलै जिबनक आहार

प्रश्न 17593. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. एलै जिबनक आहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एलै जिबनक आहार

व्याख्या: सूचकांकमे बि.पि.उदासीक रचना “एलै जिबनक आहार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17594. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17595. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17596. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण

उत्तर: घ. करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण” अछि।

प्रश्न 17597. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17598. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बि.पि.उदासी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बि.पि.उदासी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17599. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17600. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17601. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17602. खण्ड 1765क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1766 : विदेह-सदेह 7 — प्रमोद रंगीले: देखियौ अपन देशमे

प्रश्न 17603. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. देखियौ अपन देशमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देखियौ अपन देशमे

व्याख्या: सूचकांकमे प्रमोद रंगीलेक रचना “देखियौ अपन देशमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17604. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17605. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17606. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य आ रौद्र

उत्तर: घ. व्यंग्य आ रौद्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य आ रौद्र” अछि।

प्रश्न 17607. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य आ रौद्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य आ रौद्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “व्यंग्य आ रौद्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17608. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रमोद रंगीले, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रमोद रंगीले, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17609. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17610. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17611. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17612. खण्ड 1766क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ रौद्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ रौद्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1767 : विदेह-सदेह 7 — रवि मिश्र 'भारद्वाज': अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद...

प्रश्न 17613. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया

व्याख्या: सूचकांकमे रवि मिश्र 'भारद्वाज'क रचना “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17614. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17615. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ गजल” अछि।

प्रश्न 17616. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण, व्यंग्य आ शृंगार

उत्तर: घ. करुण, व्यंग्य आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण, व्यंग्य आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17617. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण, व्यंग्य आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण, व्यंग्य आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण, व्यंग्य आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17618. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि मिश्र 'भारद्वाज', विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि मिश्र 'भारद्वाज', विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17619. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17620. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17621. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17622. खण्ड 1767क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “करुण, व्यंग्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “करुण, व्यंग्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1768 : विदेह-सदेह 7 — मधुपनाथ झा: धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए

प्रश्न 17623. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए

व्याख्या: सूचकांकमे मधुपनाथ झाक रचना “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17624. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17625. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17626. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पर्यावरणीय

उत्तर: घ. पर्यावरणीय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरणीय” अछि।

प्रश्न 17627. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ करुण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ करुण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ करुण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17628. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मधुपनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मधुपनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17629. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17630. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17631. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17632. खण्ड 1768क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1769 : विदेह-सदेह 7 — बृषेश चन्द्र लाल: टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना

प्रश्न 17633. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना

व्याख्या: सूचकांकमे बृषेश चन्द्र लालक रचना “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17634. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17635. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. टनका, हाइकू आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. टनका, हाइकू आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “टनका, हाइकू आ कविता” अछि।

प्रश्न 17636. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त

उत्तर: घ. शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

प्रश्न 17637. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17638. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा टनका, हाइकू आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा टनका, हाइकू आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17639. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17640. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ टनका, हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ टनका, हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17641. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17642. खण्ड 1769क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” प्रविष्टि पद्य, टनका, हाइकू आ कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” प्रविष्टि पद्य, टनका, हाइकू आ कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1770 : विदेह-सदेह 7 — आशुतोष मिश्र: गीत १-३ / आजाद गजल १-२

प्रश्न 17643. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गीत १-३ / आजाद गजल १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत १-३ / आजाद गजल १-२

व्याख्या: सूचकांकमे आशुतोष मिश्रक रचना “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17644. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17645. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत आ गजल” अछि।

प्रश्न 17646. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ वियोग

उत्तर: घ. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वियोग” अछि।

प्रश्न 17647. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17648. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशुतोष मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशुतोष मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17649. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17650. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17651. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17652. खण्ड 1770क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1771 : विदेह-सदेह 7 — इन्सिता सारंगी: ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)

प्रश्न 17653. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)

व्याख्या: सूचकांकमे इन्सिता सारंगीक रचना “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17654. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17655. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)” अछि।

प्रश्न 17656. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओड़िया सँ मैथिली

उत्तर: घ. ओड़िया सँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओड़िया सँ मैथिली” अछि।

प्रश्न 17657. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. ओड़िया सँ मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओड़िया सँ मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “ओड़िया सँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17658. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इन्सिता सारंगी, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इन्सिता सारंगी, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17659. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17660. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17661. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17662. खण्ड 1771क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली) आ “ओड़िया सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली) आ “ओड़िया सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1772 : विदेह-सदेह 7 — मनोज कुमार झा: शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)

प्रश्न 17663. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)

व्याख्या: सूचकांकमे मनोज कुमार झाक रचना “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17664. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17665. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17666. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रौद्र आ वीर

उत्तर: घ. रौद्र आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र आ वीर” अछि।

प्रश्न 17667. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. रौद्र आ वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौद्र आ वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “रौद्र आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17668. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17669. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17670. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17671. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17672. खण्ड 1772क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1773 : विदेह-सदेह 7 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / ग...

प्रश्न 17673. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६

व्याख्या: सूचकांकमे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक रचना “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17674. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17675. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू, गद्य कविता आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू, गद्य कविता आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू, गद्य कविता आ गजल” अछि।

प्रश्न 17676. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कवि

उत्तर: घ. नारी कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

प्रश्न 17677. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17678. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू, गद्य कविता आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू, गद्य कविता आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17679. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17680. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू, गद्य कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू, गद्य कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17681. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17682. खण्ड 1773क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” प्रविष्टि पद्य, हाइकू, गद्य कविता आ गजल आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” प्रविष्टि पद्य, हाइकू, गद्य कविता आ गजल आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1774 : विदेह-सदेह 7 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': हाइकू / क्षण भा

प्रश्न 17683. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हाइकू / क्षण भा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू / क्षण भा

व्याख्या: सूचकांकमे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क रचना “हाइकू / क्षण भा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17684. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17685. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू आ कविता” अछि।

प्रश्न 17686. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त

उत्तर: घ. शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

प्रश्न 17687. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17688. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17689. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17690. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17691. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17692. खण्ड 1774क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1775 : विदेह-सदेह 7 — नवीन ठाकुर: अन्त — एक अनुभूति / अनुभव

प्रश्न 17693. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. अन्त — एक अनुभूति / अनुभव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्त — एक अनुभूति / अनुभव

व्याख्या: सूचकांकमे नवीन ठाकुरक रचना “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17694. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17695. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17696. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: १५.०५.१९८४

उत्तर: घ. जन्म: १५.०५.१९८४

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १५.०५.१९८४” अछि।

प्रश्न 17697. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ करुण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ करुण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ करुण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17698. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17699. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17700. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17701. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17702. खण्ड 1775क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1776 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी

प्रश्न 17703. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. अरुण कुमार सिंहक रचना “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17704. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17705. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17706. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ व्यंग्य

उत्तर: घ. शान्त आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 17707. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17708. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17709. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17710. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17711. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17712. खण्ड 1776क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1777 : विदेह-सदेह 7 — कुन्दन कुमार: आँखि झूठ नै बजैत अछि

प्रश्न 17713. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आँखि झूठ नै बजैत अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आँखि झूठ नै बजैत अछि

व्याख्या: सूचकांकमे कुन्दन कुमारक रचना “आँखि झूठ नै बजैत अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17714. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17715. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17716. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त

उत्तर: घ. शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

प्रश्न 17717. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17718. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17719. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17720. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17721. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17722. खण्ड 1777क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1778 : विदेह-सदेह 7 — झा हेमन्त बापी: माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / ज...

प्रश्न 17723. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान

व्याख्या: सूचकांकमे झा हेमन्त बापीक रचना “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17724. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17725. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17726. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण, रौद्र आ शृंगार

उत्तर: घ. करुण, रौद्र आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण, रौद्र आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17727. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण, रौद्र आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण, रौद्र आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण, रौद्र आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17728. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक झा हेमन्त बापी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक झा हेमन्त बापी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17729. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17730. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17731. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17732. खण्ड 1778क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, रौद्र आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, रौद्र आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1779 : विदेह-सदेह 7 — राहुल राही: हमर प्रियतम!

प्रश्न 17733. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हमर प्रियतम!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर प्रियतम!

व्याख्या: सूचकांकमे राहुल राहीक रचना “हमर प्रियतम!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17734. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17735. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17736. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शृंगार
उत्तर: घ. शृंगार
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 17737. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. शृंगार
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शृंगार
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17738. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक राहुल राही, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक राहुल राही, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17739. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17740. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17741. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17742. खण्ड 1779क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1780 : विदेह-सदेह 7 — जवाहर लाल कश्यप: खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना...

प्रश्न 17743. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?

व्याख्या: सूचकांकमे जवाहर लाल कश्यपक रचना “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17744. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17745. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17746. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण, वीर आ व्यंग्य

उत्तर: घ. करुण, वीर आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण, वीर आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 17747. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण, वीर आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण, वीर आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण, वीर आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17748. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17749. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17750. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17751. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17752. खण्ड 1780क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, वीर आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, वीर आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1781 : विदेह-सदेह 7 — अच्छेलाल शास्त्री: की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य

प्रश्न 17753. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य

व्याख्या: सूचकांकमे अच्छेलाल शास्त्रीक रचना “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17754. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17755. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17756. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य आ करुण

उत्तर: घ. व्यंग्य आ करुण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य आ करुण” अछि।

प्रश्न 17757. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य आ करुण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य आ करुण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “व्यंग्य आ करुण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17758. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अच्छेलाल शास्त्री, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अच्छेलाल शास्त्री, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17759. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17760. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17761. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17762. खण्ड 1781क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1782 : विदेह-सदेह 7 — सत्यनारायण झा: पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर त...

प्रश्न 17763. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी

व्याख्या: सूचकांकमे सत्यनारायण झाक रचना “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17764. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17765. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17766. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त

उत्तर: घ. शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

प्रश्न 17767. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17768. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17769. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17770. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी”कें विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17771. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17772. खण्ड 1782क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1783 : विदेह-सदेह 7 — शिवशंकर श्रीनिवास: गीत १-२

प्रश्न 17773. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गीत १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत १-२

व्याख्या: सूचकांकमे शिवशंकर श्रीनिवासक रचना “गीत १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17774. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17775. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 17776. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शृंगार आ शान्त
उत्तर: घ. शृंगार आ शान्त
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ शान्त” अछि।

प्रश्न 17777. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. शृंगार आ शान्त
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शृंगार आ शान्त
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17778. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक शिवशंकर श्रीनिवास, विधा पद्य, उप-विधा गीत
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक शिवशंकर श्रीनिवास, विधा पद्य, उप-विधा गीत
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17779. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17780. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17781. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17782. खण्ड 1783क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1784 : विदेह-सदेह 7 — विनीत उत्पल: राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल...

प्रश्न 17783. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२

व्याख्या: सूचकांकमे विनीत उत्पलक रचना “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17784. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17785. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ गजल” अछि।

प्रश्न 17786. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह अनुवाद सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह अनुवाद सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह अनुवाद सम्पादक” अछि।

प्रश्न 17787. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य, करुण आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य, करुण आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “व्यंग्य, करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17788. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17789. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17790. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17791. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17792. खण्ड 1784क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “व्यंग्य, करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “व्यंग्य, करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1785 : विदेह-सदेह 7 — नित्या प्रियदर्शिनी: मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँ...

प्रश्न 17793. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे

व्याख्या: सूचकांकमे नित्या प्रियदर्शिनीक रचना “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17794. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17795. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17796. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कवि

उत्तर: घ. नारी कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

प्रश्न 17797. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. अद्भुत आ करुण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अद्भुत आ करुण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “अद्भुत आ करुण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17798. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नित्या प्रियदर्शिनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नित्या प्रियदर्शिनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17799. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17800. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17801. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17802. खण्ड 1785क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1786 : विदेह-सदेह 7 — नारायण झा: सरकार / जाड़

प्रश्न 17803. नारायण झाक “सरकार / जाड़” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सरकार / जाड़

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरकार / जाड़

व्याख्या: सूचकांकमे नारायण झाक रचना “सरकार / जाड़” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17804. नारायण झाक “सरकार / जाड़”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17805. नारायण झाक “सरकार / जाड़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17806. नारायण झाक “सरकार / जाड़” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. व्यंग्य आ शान्त
उत्तर: घ. व्यंग्य आ शान्त
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य आ शान्त” अछि।

प्रश्न 17807. नारायण झाक “सरकार / जाड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. व्यंग्य आ शान्त
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. व्यंग्य आ शान्त
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “व्यंग्य आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17808. नारायण झाक “सरकार / जाड़”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17809. नारायण झाक “सरकार / जाड़” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17810. नारायण झाक “सरकार / जाड़”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17811. नारायण झाक “सरकार / जाड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17812. खण्ड 1786क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नारायण झाक “सरकार / जाड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नारायण झाक “सरकार / जाड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1787 : विदेह-सदेह 7 — गणेश कुमार झा 'बावरा': बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु

प्रश्न 17813. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु

व्याख्या: सूचकांकमे गणेश कुमार झा 'बावरा'क रचना “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17814. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17815. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17816. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण, शृंगार आ वीर

उत्तर: घ. करुण, शृंगार आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण, शृंगार आ वीर” अछि।

प्रश्न 17817. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण, शृंगार आ वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण, शृंगार आ वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण, शृंगार आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17818. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गणेश कुमार झा 'बावरा', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गणेश कुमार झा 'बावरा', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17819. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17820. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17821. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17822. खण्ड 1787क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, शृंगार आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, शृंगार आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1788 : विदेह-सदेह 7 — परिचय दास: भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)

प्रश्न 17823. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)

व्याख्या: सूचकांकमे परिचय दासक रचना “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17824. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17825. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)” अछि।

प्रश्न 17826. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भोजपुरी सँ मैथिली

उत्तर: घ. भोजपुरी सँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भोजपुरी सँ मैथिली” अछि।

प्रश्न 17827. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. भोजपुरी सँ मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोजपुरी सँ मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “भोजपुरी सँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17828. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक परिचय दास, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक परिचय दास, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17829. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17830. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17831. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17832. खण्ड 1788क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली) आ “भोजपुरी सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली) आ “भोजपुरी सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1789 : विदेह-सदेह 7 — स्वाती लाल: गजल १-२

प्रश्न 17833. स्वाती लालक “गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गजल १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल १-२

व्याख्या: सूचकांकमे स्वाती लालक रचना “गजल १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17834. स्वाती लालक “गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17835. स्वाती लालक “गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 17836. स्वाती लालक “गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी गजल

उत्तर: घ. नारी गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी गजल” अछि।

प्रश्न 17837. स्वाती लालक “गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17838. स्वाती लालक “गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक स्वाती लाल, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक स्वाती लाल, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17839. स्वाती लालक “गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17840. स्वाती लालक “गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17841. स्वाती लालक “गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17842. खण्ड 1789क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. स्वाती लालक “गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. स्वाती लालक “गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1790 : विदेह-सदेह 7 — मुकुन्द मयंक: गजल १-३

प्रश्न 17843. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गजल १-३

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल १-३

व्याख्या: सूचकांकमे मुकुन्द मयंकक रचना “गजल १-३” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17844. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17845. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 17846. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ दार्शनिकता

उत्तर: घ. शृंगार आ दार्शनिकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ दार्शनिकता” अछि।

प्रश्न 17847. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ दार्शनिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ दार्शनिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ दार्शनिकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17848. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुकुन्द मयंक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुकुन्द मयंक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17849. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17850. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17851. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17852. खण्ड 1790क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार आ दार्शनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार आ दार्शनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1791 : विदेह-सदेह 7 — आशीष अनचिन्हार: बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत...

प्रश्न 17853. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत

व्याख्या: सूचकांकमे आशीष अनचिन्हारक रचना “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17854. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17855. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बन्द, कता, नात आ गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बन्द, कता, नात आ गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बन्द, कता, नात आ गीत” अछि।

प्रश्न 17856. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सहायक सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सहायक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सहायक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 17857. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह सहायक सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सहायक सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “विदेह सहायक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17858. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा बन्द, कता, नात आ गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा बन्द, कता, नात आ गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17859. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17860. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बन्द, कता, नात आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बन्द, कता, नात आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17861. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17862. खण्ड 1791क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” प्रविष्टि पद्य, बन्द, कता, नात आ गीत आ “विदेह सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” प्रविष्टि पद्य, बन्द, कता, नात आ गीत आ “विदेह सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1792 : विदेह-सदेह 7 — पवन झा 'अग्निवाण': चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम

प्रश्न 17863. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम

व्याख्या: सूचकांकमे पवन झा 'अग्निवाण'क रचना “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17864. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17865. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17866. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर आ भक्ति

उत्तर: घ. वीर आ भक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ भक्ति” अछि।

प्रश्न 17867. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17868. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पवन झा 'अग्निवाण', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पवन झा 'अग्निवाण', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17869. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17870. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17871. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17872. खण्ड 1792क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1793 : विदेह-सदेह 7 — प्रवीण नारायण चौधरी: सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान

प्रश्न 17873. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान

व्याख्या: सूचकांकमे प्रवीण नारायण चौधरीक रचना “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17874. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17875. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17876. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ शृंगार

उत्तर: घ. हास्य आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17877. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17878. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रवीण नारायण चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रवीण नारायण चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17879. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17880. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17881. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17882. खण्ड 1793क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1794 : विदेह-सदेह 7 — संजीव कुमार 'शर्मा': प्रतिदीप

प्रश्न 17883. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. प्रतिदीप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतिदीप

व्याख्या: सूचकांकमे संजीव कुमार 'शर्मा'क रचना “प्रतिदीप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17884. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17885. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17886. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर

उत्तर: घ. वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर” अछि।

प्रश्न 17887. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17888. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संजीव कुमार 'शर्मा', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संजीव कुमार 'शर्मा', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17889. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17890. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17891. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17892. खण्ड 1794क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1795 : विदेह-सदेह 7 — सुधीर कुमार 'सुमन': समए

प्रश्न 17893. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. समए

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समए

व्याख्या: सूचकांकमे सुधीर कुमार 'सुमन'क रचना “समए” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17894. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17895. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17896. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. शान्त
उत्तर: घ. शान्त
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

प्रश्न 17897. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. शान्त
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. शान्त
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17898. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक सुधीर कुमार 'सुमन', विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक सुधीर कुमार 'सुमन', विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17899. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17900. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17901. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17902. खण्ड 1795क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1796 : विदेह-सदेह 7 — उपेन्द्र नारायण 'अनुपम': दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम

प्रश्न 17903. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम

व्याख्या: सूचकांकमे उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क रचना “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17904. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17905. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17906. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ शृंगार

उत्तर: घ. करुण आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17907. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17908. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उपेन्द्र नारायण 'अनुपम', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उपेन्द्र नारायण 'अनुपम', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17909. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17910. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17911. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17912. खण्ड 1796क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1797 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. शिव कुमार प्रसाद: निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ

प्रश्न 17913. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ

व्याख्या: सूचकांकमे डॉ. शिव कुमार प्रसादक रचना “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17914. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17915. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17916. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ वीर

उत्तर: घ. शान्त आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ वीर” अछि।

प्रश्न 17917. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17918. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शिव कुमार प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शिव कुमार प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17919. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17920. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17921. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17922. खण्ड 1797क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1798 : विदेह-सदेह 7 — प्रो. राजकुमार नीलकंठ: श्रद्धा

प्रश्न 17923. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. श्रद्धा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रद्धा

व्याख्या: सूचकांकमे प्रो. राजकुमार नीलकंठक रचना “श्रद्धा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17924. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17925. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17926. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. भक्ति आ शान्त
उत्तर: घ. भक्ति आ शान्त
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति आ शान्त” अछि।

प्रश्न 17927. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. भक्ति आ शान्त
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. भक्ति आ शान्त
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “भक्ति आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17928. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक प्रो. राजकुमार नीलकंठ, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक प्रो. राजकुमार नीलकंठ, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17929. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17930. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा”कें विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17931. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17932. खण्ड 1798क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भक्ति आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भक्ति आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1799 : विदेह-सदेह 7 — राजदेव मंडल: देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा...

प्रश्न 17933. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान

व्याख्या: सूचकांकमे राजदेव मंडलक रचना “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17934. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17935. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. देश-गीत आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. देश-गीत आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “देश-गीत आ कविता” अछि।

प्रश्न 17936. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर, करुण आ व्यंग्य

उत्तर: घ. वीर, करुण आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर, करुण आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 17937. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर, करुण आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर, करुण आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर, करुण आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17938. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा पद्य, उप-विधा देश-गीत आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा पद्य, उप-विधा देश-गीत आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17939. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17940. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ देश-गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ देश-गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17941. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17942. खण्ड 1799क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” प्रविष्टि पद्य, देश-गीत आ कविता आ “वीर, करुण आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” प्रविष्टि पद्य, देश-गीत आ कविता आ “वीर, करुण आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1800 : विदेह-सदेह 7 — जगदीश प्रसाद मंडल: जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी /...

प्रश्न 17943. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६

व्याख्या: सूचकांकमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17944. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17945. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता आ गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता आ गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ गीत” अछि।

प्रश्न 17946. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्म: ५ जुलाई १९४७

उत्तर: घ. जन्म: ५ जुलाई १९४७

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ५ जुलाई १९४७” अछि।

प्रश्न 17947. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्म: ५ जुलाई १९४७

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म: ५ जुलाई १९४७

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “जन्म: ५ जुलाई १९४७” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17948. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17949. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17950. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17951. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17952. खण्ड 1800क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गीत आ “जन्म: ५ जुलाई १९४७” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गीत आ “जन्म: ५ जुलाई १९४७” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1801 : विदेह-सदेह 7 — मुस्नी कामत: समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प /...

प्रश्न 17953. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ

व्याख्या: सूचकांकमे मुस्नी कामतक रचना “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17954. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17955. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 17956. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कवि

उत्तर: घ. नारी कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

प्रश्न 17957. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17958. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुस्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुस्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17959. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17960. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17961. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17962. खण्ड 1801क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1802 : विदेह-सदेह 7 — सुनील कुमार झा: टनका-हाइकू / गजल १-२

प्रश्न 17963. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. टनका-हाइकू / गजल १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टनका-हाइकू / गजल १-२

व्याख्या: सूचकांकमे सुनील कुमार झाक रचना “टनका-हाइकू / गजल १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17964. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17965. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. टनका-हाइकू आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. टनका-हाइकू आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “टनका-हाइकू आ गजल” अछि।

प्रश्न 17966. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ शृंगार

उत्तर: घ. शान्त आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17967. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17968. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुनील कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा टनका-हाइकू आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुनील कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा टनका-हाइकू आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17969. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17970. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ टनका-हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ टनका-हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17971. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17972. खण्ड 1802क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, टनका-हाइकू आ गजल आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, टनका-हाइकू आ गजल आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1803 : विदेह-सदेह 7 — जगदानन्द झा 'मनु': हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब

प्रश्न 17973. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब

व्याख्या: सूचकांकमे जगदानन्द झा 'मनु'क रचना “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17974. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17975. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हजल, बाइ आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हजल, बाइ आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हजल, बाइ आ गजल” अछि।

प्रश्न 17976. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहुरूपी हजल-बाइ-गजल

उत्तर: घ. बहुरूपी हजल-बाइ-गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुरूपी हजल-बाइ-गजल” अछि।

प्रश्न 17977. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. बहुरूपी हजल-बाइ-गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुरूपी हजल-बाइ-गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “बहुरूपी हजल-बाइ-गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17978. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा हजल, बाइ आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा हजल, बाइ आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17979. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17980. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हजल, बाइ आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हजल, बाइ आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17981. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17982. खण्ड 1803क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” प्रविष्टि पद्य, हजल, बाइ आ गजल आ “बहुरूपी हजल-बाइ-गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” प्रविष्टि पद्य, हजल, बाइ आ गजल आ “बहुरूपी हजल-बाइ-गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1804 : विदेह-सदेह 7 — कुन्दन कुमार कर्ण: आजाद गजल १-३

प्रश्न 17983. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आजाद गजल १-३

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल १-३

व्याख्या: सूचकांकमे कुन्दन कुमार कर्णक रचना “आजाद गजल १-३” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17984. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17985. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आजाद गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आजाद गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आजाद गजल” अछि।

प्रश्न 17986. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ वियोग

उत्तर: घ. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वियोग” अछि।

प्रश्न 17987. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17988. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17989. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 17990. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 17991. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 17992. खण्ड 1804क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1805 : विदेह-सदेह 7 — अमित मिश्र: हजल / गजल १-५

प्रश्न 17993. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. हजल / गजल १-५

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हजल / गजल १-५

व्याख्या: सूचकांकमे अमित मिश्रक रचना “हजल / गजल १-५” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 17994. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 17995. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हजल आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हजल आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हजल आ गजल” अछि।

प्रश्न 17996. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ शृंगार

उत्तर: घ. हास्य आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 17997. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 17998. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा हजल आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा हजल आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 17999. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18000. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हजल आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हजल आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18001. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18002. खण्ड 1805क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” प्रविष्टि पद्य, हजल आ गजल आ “हास्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” प्रविष्टि पद्य, हजल आ गजल आ “हास्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1806 : विदेह-सदेह 7 — चन्दन कुमार झा: बाइ / हजल / गजल १-३

प्रश्न 18003. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाइ / हजल / गजल १-३

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाइ / हजल / गजल १-३

व्याख्या: सूचकांकमे चन्दन कुमार झाक रचना “बाइ / हजल / गजल १-३” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18004. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18005. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाइ, हजल आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाइ, हजल आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाइ, हजल आ गजल” अछि।

प्रश्न 18006. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. त्रिविध रूप

उत्तर: घ. त्रिविध रूप

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “त्रिविध रूप” अछि।

प्रश्न 18007. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार, हास्य आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार, हास्य आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार, हास्य आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18008. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा बाइ, हजल आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा बाइ, हजल आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18009. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18010. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाइ, हजल आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाइ, हजल आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18011. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18012. खण्ड 1806क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, बाइ, हजल आ गजल आ “शृंगार, हास्य आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, बाइ, हजल आ गजल आ “शृंगार, हास्य आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1807 : विदेह-सदेह 7 — प्रबी झा: गजल

प्रश्न 18013. प्रबी झाक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांकमे प्रबी झाक रचना “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18014. प्रबी झाक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18015. प्रबी झाक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 18016. प्रबी झाक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ वियोग

उत्तर: घ. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वियोग” अछि।

प्रश्न 18017. प्रबी झाक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18018. प्रबी झाक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रबी झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रबी झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18019. प्रबी झाक “गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18020. प्रबी झाक “गजल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18021. प्रबी झाक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18022. खण्ड 1807क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रबी झाक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रबी झाक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1808 : विदेह-सदेह 7 — अनुष्ठिया योग: किछु क्षणिका

प्रश्न 18023. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. किछु क्षणिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु क्षणिका

व्याख्या: सूचकांकमे अनुष्ठिया योगक रचना “किछु क्षणिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18024. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18025. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. क्षणिका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. क्षणिका

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “क्षणिका” अछि।

प्रश्न 18026. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लघु रूप

उत्तर: घ. लघु रूप

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लघु रूप” अछि।

प्रश्न 18027. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18028. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुष्ठिया योग, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुष्ठिया योग, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18029. अनुष्टिया योगक “किछु क्षणिका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18030. अनुष्टिया योगक “किछु क्षणिका”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18031. अनुष्टिया योगक “किछु क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18032. खण्ड 1808क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनुष्टिया योगक “किछु क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनुष्टिया योगक “किछु क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1809 : विदेह-सदेह 7 — सज्जे आलम गौहर: गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभ...

प्रश्न 18033. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक

व्याख्या: सूचकांकमे सज्जे आलम गौहरक रचना “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18034. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18035. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल आ कविता” अछि।

प्रश्न 18036. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुस्लिम मैथिली स्वर

उत्तर: घ. मुस्लिम मैथिली स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुस्लिम मैथिली स्वर” अछि।

प्रश्न 18037. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मुस्लिम मैथिली स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुस्लिम मैथिली स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मुस्लिम मैथिली स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18038. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सज्जे आलम गौहर, विधा पद्य, उप-विधा गजल आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सज्जे आलम गौहर, विधा पद्य, उप-विधा गजल आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18039. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18040. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18041. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18042. खण्ड 1809क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” प्रविष्टि पद्य, गजल आ कविता आ “मुस्लिम मैथिली स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” प्रविष्टि पद्य, गजल आ कविता आ “मुस्लिम मैथिली स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1810 : विदेह-सदेह 7 — बिनोद मिश्र: प्रेम पुष्प

प्रश्न 18043. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. प्रेम पुष्प

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम पुष्प

व्याख्या: सूचकांकमे बिनोद मिश्रक रचना “प्रेम पुष्प” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18044. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18045. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18046. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 18047. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18048. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिनोद मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिनोद मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18049. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18050. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18051. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18052. खण्ड 1810क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1811 : विदेह-सदेह 7 — रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार': झा (झा लोकगीत विधा)

प्रश्न 18053. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. झा (झा लोकगीत विधा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झा (झा लोकगीत विधा)

व्याख्या: सूचकांकमे रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क रचना “झा (झा लोकगीत विधा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18054. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18055. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. झा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. झा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “झा” अछि।

प्रश्न 18056. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर

उत्तर: घ. मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर” अछि।

प्रश्न 18057. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18058. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार', विधा पद्य, उप-विधा झा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार', विधा पद्य, उप-विधा झा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18059. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18060. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ झाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ झाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18061. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18062. खण्ड 1811क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” प्रविष्टि पद्य, झा आ “मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” प्रविष्टि पद्य, झा आ “मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1812 : विदेह-सदेह 7 — ओमप्रकाश झा: बाइ १-२ / गजल १-४

प्रश्न 18063. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. बाइ १-२ / गजल १-४

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाइ १-२ / गजल १-४

व्याख्या: सूचकांकमे ओमप्रकाश झाक रचना “बाइ १-२ / गजल १-४” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18064. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18065. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाइ आ गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाइ आ गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाइ आ गजल” अछि।

प्रश्न 18066. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ वियोग

उत्तर: घ. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वियोग” अछि।

प्रश्न 18067. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18068. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा बाइ आ गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा बाइ आ गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18069. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18070. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाइ आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाइ आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18071. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18072. खण्ड 1812क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, बाइ आ गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, बाइ आ गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1813 : विदेह-सदेह 7 — त्रिपुरारी कुमार शर्मा: आजाद गजल १-२

प्रश्न 18073. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आजाद गजल १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल १-२

व्याख्या: सूचकांकमे त्रिपुरारी कुमार शर्माक रचना “आजाद गजल १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18074. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18075. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आजाद गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आजाद गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आजाद गजल” अछि।

प्रश्न 18076. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार आ वियोग

उत्तर: घ. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वियोग” अछि।

प्रश्न 18077. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार आ वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार आ वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18078. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक त्रिपुरारी कुमार शर्मा, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक त्रिपुरारी कुमार शर्मा, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18079. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18080. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18081. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18082. खण्ड 1813क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1814 : विदेह-सदेह 7 — राजीव रंजन मिश्र: भक्ति गजल १-३

प्रश्न 18083. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. भक्ति गजल १-३

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति गजल १-३

व्याख्या: सूचकांकमे राजीव रंजन मिश्रक रचना “भक्ति गजल १-३” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18084. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18085. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गजल” अछि।

प्रश्न 18086. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति आ शृंगार

उत्तर: घ. भक्ति आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 18087. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “भक्ति आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18088. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18089. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18090. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18091. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18092. खण्ड 1814क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गजल आ “भक्ति आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गजल आ “भक्ति आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1815 : विदेह-सदेह 7 — दीप नारायण विद्यार्थी: आजाद गजल

प्रश्न 18093. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. आजाद गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांकमे दीप नारायण विद्यार्थीक रचना “आजाद गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18094. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18095. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आजाद गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आजाद गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आजाद गजल” अछि।

प्रश्न 18096. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आजाद गजल-रूप

उत्तर: घ. आजाद गजल-रूप

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आजाद गजल-रूप” अछि।

प्रश्न 18097. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. आजाद गजल-रूप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल-रूप

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “आजाद गजल-रूप” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18098. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दीप नारायण विद्यार्थी, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दीप नारायण विद्यार्थी, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18099. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18100. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18101. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18102. खण्ड 1815क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “आजाद गजल-रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “आजाद गजल-रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1816 : विदेह-सदेह 7 — उमेश मंडल: भोगी / श्रोता

प्रश्न 18103. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. भोगी / श्रोता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोगी / श्रोता

व्याख्या: सूचकांकमे उमेश मंडलक रचना “भोगी / श्रोता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18104. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18105. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18106. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सह-सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सह-सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सह-सम्पादक” अछि।

प्रश्न 18107. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18108. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18109. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18110. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18111. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18112. खण्ड 1816क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1817 : विदेह-सदेह 7 — उमेश पासवान: गवहा संक्रान्ति

प्रश्न 18113. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. गवहा संक्रान्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गवहा संक्रान्ति

व्याख्या: सूचकांकमे उमेश पासवानक रचना “गवहा संक्रान्ति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18114. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18115. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18116. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित स्वर

उत्तर: घ. दलित स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित स्वर” अछि।

प्रश्न 18117. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “दलित स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18118. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश पासवान, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश पासवान, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18119. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18120. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18121. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18122. खण्ड 1817क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1818 : विदेह-सदेह 7 — संजय कुमार मंडल: मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि

प्रश्न 18123. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि

व्याख्या: सूचकांकमे संजय कुमार मंडलक रचना “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18124. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18125. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18126. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ शृंगार

उत्तर: घ. करुण आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 18127. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18128. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संजय कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संजय कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18129. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18130. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18131. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18132. खण्ड 1818क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1819 : विदेह-सदेह 7 — प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ': खाएब की / हम छी आजुक नेता

प्रश्न 18133. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. खाएब की / हम छी आजुक नेता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खाएब की / हम छी आजुक नेता

व्याख्या: सूचकांकमे प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क रचना “खाएब की / हम छी आजुक नेता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18134. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18135. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18136. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य आ व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 18137. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य आ व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य आ व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18138. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18139. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18140. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18141. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18142. खण्ड 1819क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1820 : विदेह-सदेह 7 — कामोद झा: किओ नै

प्रश्न 18143. कामोद झाक “किओ नै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. किओ नै

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किओ नै

व्याख्या: सूचकांकमे कामोद झाक रचना “किओ नै” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18144. कामोद झाक “किओ नै”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18145. कामोद झाक “किओ नै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18146. कामोद झाक “किओ नै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण आ शान्त

उत्तर: घ. करुण आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शान्त” अछि।

प्रश्न 18147. कामोद झाक “किओ नै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18148. कामोद झाक “किओ नै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामोद झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामोद झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18149. कामोद झाक “किओ नै” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18150. कामोद झाक “किओ नै”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18151. कामोद झाक “किओ नै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18152. खण्ड 1820क सार की अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. कामोद झाक “किओ नै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. कामोद झाक “किओ नै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1821 : विदेह-सदेह 7 — कपिलेश्वर राउत: मातृभाषा

प्रश्न 18153. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?
क. मातृभाषा
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. मातृभाषा
व्याख्या: सूचकांकमे कपिलेश्वर राउतक रचना “मातृभाषा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18154. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा”क मुख्य विधा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. पद्य
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. पद्य
व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18155. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. कविता
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. कविता
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18156. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. दलित स्वर
उत्तर: घ. दलित स्वर
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित स्वर” अछि।

प्रश्न 18157. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?
क. वीर आ शान्त
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. वीर आ शान्त
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18158. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा पद्य, उप-विधा कविता
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा पद्य, उप-विधा कविता
व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18159. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18160. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18161. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18162. खण्ड 1821क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1822 : विदेह-सदेह 7 — जीबू कुमार झा: प्रार्थना गीत / पहिल भेट

प्रश्न 18163. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. प्रार्थना गीत / पहिल भेट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रार्थना गीत / पहिल भेट

व्याख्या: सूचकांकमे जीबू कुमार झाक रचना “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18164. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18165. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रार्थना गीत आ कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रार्थना गीत आ कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रार्थना गीत आ कविता” अछि।

प्रश्न 18166. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति आ शृंगार

उत्तर: घ. भक्ति आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 18167. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “भक्ति आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18168. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीबू कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा प्रार्थना गीत आ कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीबू कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा प्रार्थना गीत आ कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18169. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18170. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रार्थना गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रार्थना गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18171. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18172. खण्ड 1822क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” प्रविष्टि पद्य, प्रार्थना गीत आ कविता आ “भक्ति आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” प्रविष्टि पद्य, प्रार्थना गीत आ कविता आ “भक्ति आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1823 : विदेह-सदेह 7 — अनामिका राज: नवका बाट

प्रश्न 18173. अनामिका राजक “नवका बाट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. नवका बाट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवका बाट

व्याख्या: सूचकांकमे अनामिका राजक रचना “नवका बाट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18174. अनामिका राजक “नवका बाट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18175. अनामिका राजक “नवका बाट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18176. अनामिका राजक “नवका बाट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर आ शान्त

उत्तर: घ. वीर आ शान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ शान्त” अछि।

प्रश्न 18177. अनामिका राजक “नवका बाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर आ शान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर आ शान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18178. अनामिका राजक “नवका बाट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनामिका राज, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनामिका राज, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18179. अनामिका राजक “नवका बाट” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18180. अनामिका राजक “नवका बाट”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18181. अनामिका राजक “नवका बाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18182. खण्ड 1823क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अनामिका राजक “नवका बाट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अनामिका राजक “नवका बाट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1824 : विदेह-सदेह 7 — प्रो. चम्पा शर्मा: डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)

प्रश्न 18183. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

क. डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)

व्याख्या: सूचकांकमे प्रो. चम्पा शर्माक रचना “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18184. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18185. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)” अछि।

प्रश्न 18186. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. डोगरी सँ मैथिली

उत्तर: घ. डोगरी सँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “डोगरी सँ मैथिली” अछि।

प्रश्न 18187. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. डोगरी सँ मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डोगरी सँ मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “डोगरी सँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18188. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रो. चम्पा शर्मा, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रो. चम्पा शर्मा, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18189. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18190. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18191. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18192. खण्ड 1824क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली) आ “डोगरी सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली) आ “डोगरी सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1825 : विदेह-सदेह 7 — मोहन प्रसाद: आउ करी नव मिथिलाक निर्माण

प्रश्न 18193. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. आउ करी नव मिथिलाक निर्माण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आउ करी नव मिथिलाक निर्माण

व्याख्या: सूचकांकमे मोहन प्रसादक प्रविष्टि “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18194. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18195. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18196. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर

उत्तर: घ. वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर” अछि।

प्रश्न 18197. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18198. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम मोहन प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम मोहन प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18199. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18200. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18201. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18202. खण्ड 1825क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1826 : विदेह-सदेह 7 — नगीना कुमारी झा: साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप

प्रश्न 18203. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप

व्याख्या: सूचकांकमे नगीना कुमारी झाक प्रविष्टि “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18204. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18205. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18206. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी कवि

उत्तर: घ. नारी कवि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

प्रश्न 18207. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी कवि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी कवि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “नारी कवि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18208. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम नगीना कुमारी झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम नगीना कुमारी झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18209. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18210. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18211. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18212. खण्ड 1826क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1827 : विदेह-सदेह 7 — लालबाबू मंडल: जुलूस

प्रश्न 18213. लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. जुलूस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जुलूस

व्याख्या: सूचकांकमे लालबाबू मंडलक प्रविष्टि “जुलूस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18214. लालबाबू मंडलक “जुलूस”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18215. लालबाबू मंडलक “जुलूस”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18216. लालबाबू मंडलक “जुलूस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रौद्र आ वीर

उत्तर: घ. रौद्र आ वीर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र आ वीर” अछि।

प्रश्न 18217. लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. रौद्र आ वीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौद्र आ वीर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “रौद्र आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18218. लालबाबू मंडलक “जुलूस”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम लालबाबू मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम लालबाबू मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18219. लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18220. लालबाबू मंडलक “जुलूस”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18221. लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18222. खण्ड 1827क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1828 : विदेह-सदेह 7 — संदीप कुमार साफी: भकजोगनी / वसन्त पंचमी

प्रश्न 18223. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. भकजोगनी / वसन्त पंचमी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भकजोगनी / वसन्त पंचमी

व्याख्या: सूचकांकमे संदीप कुमार साफीक प्रविष्टि “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18224. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18225. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 18226. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्त आ शृंगार

उत्तर: घ. शान्त आ शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ शृंगार” अछि।

प्रश्न 18227. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्त आ शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्त आ शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18228. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम संदीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम संदीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18229. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18230. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18231. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18232. खण्ड 1828क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1829 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: हम पुछेत छी – सम्पादकीय

प्रश्न 18233. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. हम पुछेत छी – सम्पादकीय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम पुछेत छी – सम्पादकीय

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18234. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18235. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय/प्रस्तावना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय/प्रस्तावना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “सम्पादकीय/प्रस्तावना” अछि।

प्रश्न 18236. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष

उत्तर: घ. विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष” अछि।

प्रश्न 18237. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18238. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/प्रस्तावना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/प्रस्तावना

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18239. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18240. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय”केँ विदेह-सदेह 8क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि सम्पादकीय/प्रस्तावनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि सम्पादकीय/प्रस्तावनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18241. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18242. खण्ड 1829क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/प्रस्तावना आ “विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/प्रस्तावना आ “विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1830 : विदेह-सदेह 8 — शिल्पी कुमारी: विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)

प्रश्न 18243. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)

व्याख्या: सूचकांकमे शिल्पी कुमारीक प्रविष्टि “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18244. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18245. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अभिनय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अभिनय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “अभिनय” अछि।

प्रश्न 18246. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. युवा नारी कलाकार

उत्तर: घ. युवा नारी कलाकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “युवा नारी कलाकार” अछि।

प्रश्न 18247. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. युवा नारी कलाकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युवा नारी कलाकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “युवा नारी कलाकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18248. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम शिल्पी कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा अभिनय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम शिल्पी कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा अभिनय

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18249. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18250. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18251. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18252. खण्ड 1830क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “युवा नारी कलाकार” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “युवा नारी कलाकार” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1831 : विदेह-सदेह 8 — शोभा कान्त महतो: विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)

प्रश्न 18253. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)

व्याख्या: सूचकांकमे शोभा कान्त महतोक प्रविष्टि “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18254. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18255. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अभिनय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अभिनय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “अभिनय” अछि।

प्रश्न 18256. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किशोर अभिनेता

उत्तर: घ. किशोर अभिनेता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “किशोर अभिनेता” अछि।

प्रश्न 18257. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. किशोर अभिनेता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किशोर अभिनेता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “किशोर अभिनेता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18258. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम शोभा कान्त महतो, विधा सम्मान, उप-विधा अभिनय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम शोभा कान्त महतो, विधा सम्मान, उप-विधा अभिनय

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18259. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18260. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18261. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18262. खण्ड 1831क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “किशोर अभिनेता” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “किशोर अभिनेता” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1832 : विदेह-सदेह 8 — प्रियंका कुमारी: विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२

प्रश्न 18263. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२

व्याख्या: सूचकांकमे प्रियंका कुमारीक प्रविष्टि “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18264. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18265. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य-अभिनय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य-अभिनय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “हास्य-अभिनय” अछि।

प्रश्न 18266. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महिला हास्य कलाकार

उत्तर: घ. महिला हास्य कलाकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महिला हास्य कलाकार” अछि।

प्रश्न 18267. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. महिला हास्य कलाकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महिला हास्य कलाकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “महिला हास्य कलाकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18268. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम प्रियंका कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा हास्य-अभिनय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम प्रियंका कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा हास्य-अभिनय

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18269. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18270. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि हास्य-अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि हास्य-अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18271. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18272. खण्ड 1832क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि हास्य-अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “महिला हास्य कलाकार” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि हास्य-अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “महिला हास्य कलाकार” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1833 : विदेह-सदेह 8 — दुर्गानंद ठाकूर: विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२

प्रश्न 18273. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२

व्याख्या: सूचकांकमे दुर्गानंद ठाकूरक प्रविष्टि “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18274. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18275. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य-अभिनय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य-अभिनय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “हास्य-अभिनय” अछि।

प्रश्न 18276. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मंचपर व्यंग्य-हास्य

उत्तर: घ. मंचपर व्यंग्य-हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मंचपर व्यंग्य-हास्य” अछि।

प्रश्न 18277. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मंचपर व्यंग्य-हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मंचपर व्यंग्य-हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मंचपर व्यंग्य-हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18278. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम दुर्गानंद ठाकूर, विधा सम्मान, उप-विधा हास्य-अभिनय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम दुर्गानंद ठाकूर, विधा सम्मान, उप-विधा हास्य-अभिनय

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18279. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18280. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि हास्य-अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि हास्य-अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18281. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18282. खण्ड 1833क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि हास्य-अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “मंचपर व्यंग्य-हास्य” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि हास्य-अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “मंचपर व्यंग्य-हास्य” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1834 : विदेह-सदेह 8 — सुलेखा कुमारी: विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२

प्रश्न 18283. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२

व्याख्या: सूचकांकमे सुलेखा कुमारीक प्रविष्टि “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18284. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18285. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नृत्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नृत्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “नृत्य” अछि।

प्रश्न 18286. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी

उत्तर: घ. लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी” अछि।

प्रश्न 18287. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18288. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम सुलेखा कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा नृत्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम सुलेखा कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा नृत्य

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18289. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18290. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”कें विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि नृत्यक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि नृत्यक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18291. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18292. खण्ड 1834क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि नृत्य क्षेत्रमे देल सम्मान, “लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि नृत्य क्षेत्रमे देल सम्मान, “लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1835 : विदेह-सदेह 8 — अमित रंजन: विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२

प्रश्न 18293. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२

व्याख्या: सूचकांकमे अमित रंजनक प्रविष्टि “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18294. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18295. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नृत्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नृत्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “नृत्य” अछि।

प्रश्न 18296. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. युवा नर्तक

उत्तर: घ. युवा नर्तक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “युवा नर्तक” अछि।

प्रश्न 18297. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिल लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मैथिल लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18298. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम अमित रंजन, विधा सम्मान, उप-विधा नृत्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम अमित रंजन, विधा सम्मान, उप-विधा नृत्य

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18299. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18300. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि नृत्यक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि नृत्यक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18301. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18302. खण्ड 1835क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि नृत्य क्षेत्रमे देल सम्मान, “मैथिल लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि नृत्य क्षेत्रमे देल सम्मान, “मैथिल लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1836 : विदेह-सदेह 8 — पनकलाल मण्डल: विदेह चित्रकला सम्मान २०१२

प्रश्न 18303. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह चित्रकला सम्मान २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह चित्रकला सम्मान २०१२

व्याख्या: सूचकांकमे पनकलाल मण्डलक प्रविष्टि “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18304. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18305. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “चित्रकला” अछि।

प्रश्न 18306. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधुबनी चित्रकला

उत्तर: घ. मधुबनी चित्रकला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुबनी चित्रकला” अछि।

प्रश्न 18307. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मधुबनी चित्रकला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुबनी चित्रकला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मधुबनी चित्रकला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18308. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम पनकलाल मण्डल, विधा सम्मान, उप-विधा चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम पनकलाल मण्डल, विधा सम्मान, उप-विधा चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18309. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18310. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि चित्रकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि चित्रकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18311. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18312. खण्ड 1836क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि चित्रकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “मधुबनी चित्रकला” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि चित्रकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “मधुबनी चित्रकला” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1837 : विदेह-सदेह 8 — रमेश कुमार भारती: विदेह चित्रकला सम्मान २०१२

प्रश्न 18313. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह चित्रकला सम्मान २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह चित्रकला सम्मान २०१२

व्याख्या: सूचकांकमे रमेश कुमार भारतीक प्रविष्टि “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18314. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18315. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “चित्रकला” अछि।

प्रश्न 18316. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन मिथिला चित्रशैली

उत्तर: घ. समकालीन मिथिला चित्रशैली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन मिथिला चित्रशैली” अछि।

प्रश्न 18317. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन मिथिला चित्रशैली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन मिथिला चित्रशैली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “समकालीन मिथिला चित्रशैली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18318. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम रमेश कुमार भारती, विधा सम्मान, उप-विधा चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम रमेश कुमार भारती, विधा सम्मान, उप-विधा चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18319. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18320. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि चित्रकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि चित्रकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18321. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18322. खण्ड 1837क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि चित्रकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “समकालीन मिथिला चित्रशैली” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि चित्रकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “समकालीन मिथिला चित्रशैली” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1838 : विदेह-सदेह 8 — परमानंद ठाकूर: विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)

प्रश्न 18323. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)

व्याख्या: सूचकांकमे परमानंद ठाकूरक प्रविष्टि “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18324. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18325. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वाद्य-संगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वाद्य-संगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “वाद्य-संगीत” अछि।

प्रश्न 18326. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हारमोनियम वादन

उत्तर: घ. हारमोनियम वादन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हारमोनियम वादन” अछि।

प्रश्न 18327. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हारमोनियम वादन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हारमोनियम वादन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हारमोनियम वादन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18328. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम परमानंद ठाकूर, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम परमानंद ठाकूर, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18329. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18330. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18331. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18332. खण्ड 1838क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “हारमोनियम वादन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “हारमोनियम वादन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1839 : विदेह-सदेह 8 — बुलन राउत: विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)

प्रश्न 18333. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)

व्याख्या: सूचकांकमे बुलन राउतक प्रविष्टि “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18334. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18335. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वाद्य-संगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वाद्य-संगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “वाद्य-संगीत” अछि।

प्रश्न 18336. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ढोलक वादनक परम्परा

उत्तर: घ. ढोलक वादनक परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ढोलक वादनक परम्परा” अछि।

प्रश्न 18337. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. ढोलक वादनक परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ढोलक वादनक परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “ढोलक वादनक परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18338. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम बुलन राउत, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम बुलन राउत, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18339. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18340. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18341. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18342. खण्ड 1839क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “ढोलक वादनक परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “ढोलक वादनक परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1840 : विदेह-सदेह 8 — बहादुर राम: विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)

प्रश्न 18343. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)

व्याख्या: सूचकांकमे बहादुर रामक प्रविष्टि “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18344. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18345. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वाद्य-संगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वाद्य-संगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “वाद्य-संगीत” अछि।

प्रश्न 18346. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रसनचौकी वादन

उत्तर: घ. रसनचौकी वादन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रसनचौकी वादन” अछि।

प्रश्न 18347. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. रसनचौकी वादन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रसनचौकी वादन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “रसनचौकी वादन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18348. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम बहादुर राम, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम बहादुर राम, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18349. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18350. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18351. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18352. खण्ड 1840क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “रसनचौकी वादन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “रसनचौकी वादन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1841 : विदेह-सदेह 8 — जगदीश मल्लिक: विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२

प्रश्न 18353. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२

व्याख्या: सूचकांकमे जगदीश मल्लिकक प्रविष्टि “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18354. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18355. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शिल्प

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शिल्प

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “शिल्प” अछि।

प्रश्न 18356. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हस्तशिल्प

उत्तर: घ. हस्तशिल्प

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हस्तशिल्प” अछि।

प्रश्न 18357. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. हस्तशिल्प

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हस्तशिल्प

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हस्तशिल्प” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18358. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम जगदीश मल्लिक, विधा सम्मान, उप-विधा शिल्प

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम जगदीश मल्लिक, विधा सम्मान, उप-विधा शिल्प

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18359. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18360. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि शिल्पक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि शिल्पक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18361. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18362. खण्ड 1841क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि शिल्प क्षेत्रमे देल सम्मान, “हस्तशिल्प” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि शिल्प क्षेत्रमे देल सम्मान, “हस्तशिल्प” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1842 : विदेह-सदेह 8 — यदुनंदन पंडित: विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२

प्रश्न 18363. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२

व्याख्या: सूचकांकमे यदुनंदन पंडितक प्रविष्टि “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18364. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18365. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मूर्तिकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मूर्तिकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “मूर्तिकला” अछि।

प्रश्न 18366. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माटिक मूर्ति-परम्परा

उत्तर: घ. माटिक मूर्ति-परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माटिक मूर्ति-परम्परा” अछि।

प्रश्न 18367. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. माटिक मूर्ति-परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माटिक मूर्ति-परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “माटिक मूर्ति-परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18368. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम यदुनंदन पंडित, विधा सम्मान, उप-विधा मूर्तिकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम यदुनंदन पंडित, विधा सम्मान, उप-विधा मूर्तिकला

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18369. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18370. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि मूर्तिकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि मूर्तिकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18371. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18372. खण्ड 1842क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि मूर्तिकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “माटिक मूर्ति-परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि मूर्तिकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “माटिक मूर्ति-परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1843 : विदेह-सदेह 8 — झमेली मुखिया: विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२

प्रश्न 18373. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२

व्याख्या: सूचकांकमे झमेली मुखियाक प्रविष्टि “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18374. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18375. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. काष्ठशिल्प

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. काष्ठशिल्प

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “काष्ठशिल्प” अछि।

प्रश्न 18376. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लकड़ी कला

उत्तर: घ. लकड़ी कला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लकड़ी कला” अछि।

प्रश्न 18377. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. लकड़ी कला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लकड़ी कला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “लकड़ी कला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18378. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम झमेली मुखिया, विधा सम्मान, उप-विधा काष्ठशिल्प

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम झमेली मुखिया, विधा सम्मान, उप-विधा काष्ठशिल्प

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18379. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18380. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि काष्ठशिल्पक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि काष्ठशिल्पक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18381. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18382. खण्ड 1843क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि काष्ठशिल्प क्षेत्रमे देल सम्मान, “लकड़ी कला” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि काष्ठशिल्प क्षेत्रमे देल सम्मान, “लकड़ी कला” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1844 : विदेह-सदेह 8 — लक्ष्मी दास: विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२

प्रश्न 18383. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

क. विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२

व्याख्या: सूचकांकमे लक्ष्मी दासक प्रविष्टि “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18384. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सम्मान

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18385. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. किसानी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. किसानी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “किसानी” अछि।

प्रश्न 18386. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा

उत्तर: घ. मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा” अछि।

प्रश्न 18387. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18388. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाम लक्ष्मी दास, विधा सम्मान, उप-विधा किसानी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाम लक्ष्मी दास, विधा सम्मान, उप-विधा किसानी

व्याख्या: सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18389. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18390. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई प्रविष्टि किसानीक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई प्रविष्टि किसानीक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18391. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18392. खण्ड 1844क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टि किसानी क्षेत्रमे देल सम्मान, “मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टि किसानी क्षेत्रमे देल सम्मान, “मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1845 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र

प्रश्न 18393. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18394. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. समीक्षा/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. समीक्षा/शोध

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “समीक्षा/शोध” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18395. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाट्य-सिद्धान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाट्य-सिद्धान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाट्य-सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 18396. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

उत्तर: घ. जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” अछि।

प्रश्न 18397. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18398. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा समीक्षा/शोध, उप-विधा नाट्य-सिद्धान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा समीक्षा/शोध, उप-विधा नाट्य-सिद्धान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18399. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18400. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”केँ विदेह-सदेह 8क समीक्षा/शोध-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाट्य-सिद्धान्तक रूपमे समीक्षा/शोध-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाट्य-सिद्धान्तक रूपमे समीक्षा/शोध-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18401. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18402. खण्ड 1845क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि समीक्षा/शोध, नाट्य-सिद्धान्त आ “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि समीक्षा/शोध, नाट्य-सिद्धान्त आ “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1846 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा...

प्रश्न 18403. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18404. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक-समीक्षा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक-समीक्षा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18405. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक यथार्थ

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 18406. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

उत्तर: घ. जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” अछि।

प्रश्न 18407. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18408. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक-समीक्षा, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक-समीक्षा, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18409. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18410. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-समीक्षा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18411. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18412. खण्ड 1846क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि नाटक-समीक्षा, सामाजिक यथार्थ आ “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि नाटक-समीक्षा, सामाजिक यथार्थ आ “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1847 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)

प्रश्न 18413. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18414. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक (रूपान्तर)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक (रूपान्तर)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18415. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

प्रश्न 18416. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली रंगमंच पर मार्लो

उत्तर: घ. मैथिली रंगमंच पर मार्लो

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” अछि।

प्रश्न 18417. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली रंगमंच पर मार्लो

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली रंगमंच पर मार्लो

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18418. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18419. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18420. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18421. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18422. खण्ड 1847क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1848 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)

प्रश्न 18423. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18424. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक (रूपान्तर)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक (रूपान्तर)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18425. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

प्रश्न 18426. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह

उत्तर: घ. मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह” अछि।

प्रश्न 18427. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18428. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18429. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18430. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18431. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18432. खण्ड 1848क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1849 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)

प्रश्न 18433. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18434. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक (रूपान्तर)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक (रूपान्तर)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18435. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

प्रश्न 18436. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एलियटक धार्मिक-राजनीति

उत्तर: घ. एलियटक धार्मिक-राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एलियटक धार्मिक-राजनीति” अछि।

प्रश्न 18437. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शहादत, सत्ता-विरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शहादत, सत्ता-विरोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शहादत, सत्ता-विरोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18438. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18439. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18440. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18441. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18442. खण्ड 1849क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “शहादत, सत्ता-विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “शहादत, सत्ता-विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1850 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)

प्रश्न 18443. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18444. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक (रूपान्तर)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक (रूपान्तर)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18445. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

प्रश्न 18446. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. औद्योगिक संघर्ष

उत्तर: घ. औद्योगिक संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “औद्योगिक संघर्ष” अछि।

प्रश्न 18447. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. औद्योगिक संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. औद्योगिक संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “औद्योगिक संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18448. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18449. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18450. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18451. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18452. खण्ड 1850क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “औद्योगिक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “औद्योगिक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1851 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप

प्रश्न 18453. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप

व्याख्या: सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18454. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. वार्ता/सन्दर्भ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. वार्ता/सन्दर्भ

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “वार्ता/सन्दर्भ” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18455. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 18456. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा

उत्तर: घ. निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा” अछि।

प्रश्न 18457. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमंचीय लोकाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमंचीय लोकाचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमंचीय लोकाचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18458. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा वार्ता/सन्दर्भ, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा वार्ता/सन्दर्भ, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18459. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18460. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”केँ विदेह-सदेह 8क वार्ता/सन्दर्भ-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे वार्ता/सन्दर्भ-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे वार्ता/सन्दर्भ-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18461. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18462. खण्ड 1851क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि वार्ता/सन्दर्भ, साक्षात्कार आ “रंगमंचीय लोकाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि वार्ता/सन्दर्भ, साक्षात्कार आ “रंगमंचीय लोकाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1852 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)

प्रश्न 18463. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)

व्याख्या: सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18464. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चिन्तन/लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चिन्तन/लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “चिन्तन/लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18465. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निर्देशन-विधि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निर्देशन-विधि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निर्देशन-विधि” अछि।

प्रश्न 18466. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रायोगिक रंगमंच

उत्तर: घ. प्रायोगिक रंगमंच

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रायोगिक रंगमंच” अछि।

प्रश्न 18467. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रायोगिक रंगमंच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रायोगिक रंगमंच

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रायोगिक रंगमंच” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18468. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा चिन्तन/लेख, उप-विधा निर्देशन-विधि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा चिन्तन/लेख, उप-विधा निर्देशन-विधि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18469. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18470. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”केँ विदेह-सदेह 8क चिन्तन/लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निर्देशन-विधिक रूपमे चिन्तन/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निर्देशन-विधिक रूपमे चिन्तन/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18471. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18472. खण्ड 1852क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि चिन्तन/लेख, निर्देशन-विधि आ “प्रायोगिक रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि चिन्तन/लेख, निर्देशन-विधि आ “प्रायोगिक रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1853 : विदेह-सदेह 8 — उदय नारायण सिंह “नचिकेता”: नो एंट्री : मा प्रविश

प्रश्न 18473. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नो एंट्री : मा प्रविश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नो एंट्री : मा प्रविश

व्याख्या: सूचकांकमे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क प्रविष्टि “नो एंट्री : मा प्रविश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18474. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18475. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अस्तित्ववादी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अस्तित्ववादी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अस्तित्ववादी” अछि।

प्रश्न 18476. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

उत्तर: घ. यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” अछि।

प्रश्न 18477. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18478. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा अस्तित्ववादी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा अस्तित्ववादी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18479. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18480. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अस्तित्ववादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अस्तित्ववादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18481. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18482. खण्ड 1853क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि नाटक, अस्तित्ववादी आ “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि नाटक, अस्तित्ववादी आ “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1854 : विदेह-सदेह 8 — उदय नारायण सिंह “नचिकेता”: जडैत मोमबत्ती

प्रश्न 18483. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जडैत मोमबत्ती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जडैत मोमबत्ती

व्याख्या: सूचकांकमे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क प्रविष्टि “जडैत मोमबत्ती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18484. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18485. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रतीकात्मक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रतीकात्मक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रतीकात्मक” अछि।

प्रश्न 18486. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति

उत्तर: घ. मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति” अछि।

प्रश्न 18487. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अस्तित्ववादी कोण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्ववादी कोण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अस्तित्ववादी कोण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18488. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा प्रतीकात्मक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा प्रतीकात्मक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18489. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18490. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रतीकात्मकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रतीकात्मकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18491. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18492. खण्ड 1854क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि नाटक, प्रतीकात्मक आ “अस्तित्ववादी कोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि नाटक, प्रतीकात्मक आ “अस्तित्ववादी कोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1855 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: संकष्टन (नाटक)

प्रश्न 18493. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संकष्टन (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संकष्टन (नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “संकष्टन (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18494. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18495. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक-यथार्थवादी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक-यथार्थवादी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-यथार्थवादी” अछि।

प्रश्न 18496. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

उत्तर: घ. मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” अछि।

प्रश्न 18497. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18498. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-यथार्थवादी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-यथार्थवादी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18499. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18500. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक-यथार्थवादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक-यथार्थवादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18501. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18502. खण्ड 1855क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-यथार्थवादी आ “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-यथार्थवादी आ “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1856 : विदेह-सदेह 8 — विभा रानी: बलचन्दा (नाटक)

प्रश्न 18503. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बलचन्दा (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बलचन्दा (नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे विभा रानीक प्रविष्टि “बलचन्दा (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18504. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18505. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्त्री-विमर्शी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्त्री-विमर्शी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्त्री-विमर्शी” अछि।

प्रश्न 18506. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

उत्तर: घ. पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” अछि।

प्रश्न 18507. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18508. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा स्त्री-विमर्शी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा स्त्री-विमर्शी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18509. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18510. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ स्त्री-विमर्शीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ स्त्री-विमर्शीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18511. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18512. खण्ड 1856क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, स्त्री-विमर्शी आ “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, स्त्री-विमर्शी आ “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1857 : विदेह-सदेह 8 — विभा रानी: भाग रौ (नाटक)

प्रश्न 18513. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाग रौ (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाग रौ (नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे विभा रानीक प्रविष्टि “भाग रौ (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18514. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18515. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. सामाजिक यथार्थ
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. सामाजिक यथार्थ
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 18516. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना
उत्तर: घ. गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” अछि।

प्रश्न 18517. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
क. गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18518. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक यथार्थ
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक यथार्थ
व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18519. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18520. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।
उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।
व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18521. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18522. खण्ड 1857क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक यथार्थ आ “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक यथार्थ आ “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1858 : विदेह-सदेह 8 — ज्योति सुनीत चौधरी: कैसर (नाटक)

प्रश्न 18523. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कैसर (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कैसर (नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “कैसर (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18524. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18525. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक-राजनीतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक-राजनीतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-राजनीतिक” अछि।

प्रश्न 18526. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

उत्तर: घ. शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” अछि।

प्रश्न 18527. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18528. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-राजनीतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-राजनीतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18529. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18530. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक-राजनीतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक-राजनीतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18531. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18532. खण्ड 1858क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-राजनीतिक आ “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-राजनीतिक आ “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1859 : विदेह-सदेह 8 — सरोज खिलाड़ी: बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)

प्रश्न 18533. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे सरोज खिलाड़ीक प्रविष्टि “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18534. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18535. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक-नैतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक-नैतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-नैतिक” अछि।

प्रश्न 18536. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

उत्तर: घ. समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” अछि।

प्रश्न 18537. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18538. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-नैतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-नैतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18539. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18540. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक-नैतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक-नैतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18541. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18542. खण्ड 1859क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-नैतिक आ “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-नैतिक आ “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1860 : विदेह-सदेह 8 — जीवन झा: सुन्दर संयोग (नाटक)

प्रश्न 18543. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुन्दर संयोग (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुन्दर संयोग (नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे जीवन झाक प्रविष्टि “सुन्दर संयोग (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18544. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18545. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रणय-सामाजिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रणय-सामाजिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रणय-सामाजिक” अछि।

प्रश्न 18546. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

उत्तर: घ. प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” अछि।

प्रश्न 18547. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18548. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा प्रणय-सामाजिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा प्रणय-सामाजिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18549. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18550. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रणय-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रणय-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18551. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18552. खण्ड 1860क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, प्रणय-सामाजिक आ “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, प्रणय-सामाजिक आ “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1861 : विदेह-सदेह 8 — जीवन झा: सामवती पुनर्जन्म (नाटक)

प्रश्न 18553. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सामवती पुनर्जन्म (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामवती पुनर्जन्म (नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे जीवन झाक प्रविष्टि “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18554. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18555. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दार्शनिक-पौराणिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दार्शनिक-पौराणिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दार्शनिक-पौराणिक” अछि।

प्रश्न 18556. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त

उत्तर: घ. पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 18557. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18558. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा दार्शनिक-पौराणिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा दार्शनिक-पौराणिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18559. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18560. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दार्शनिक-पौराणिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दार्शनिक-पौराणिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18561. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18562. खण्ड 1861क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, दार्शनिक-पौराणिक आ “पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, दार्शनिक-पौराणिक आ “पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1862 : विदेह-सदेह 8 — शिव कुमार झा: अंधविश्वास (नाटक)

प्रश्न 18563. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अंधविश्वास (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंधविश्वास (नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे शिव कुमार झाक प्रविष्टि “अंधविश्वास (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18564. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18565. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक-व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक-व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 18566. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अंधविश्वास विरोधी चेतना

उत्तर: घ. अंधविश्वास विरोधी चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अंधविश्वास विरोधी चेतना” अछि।

प्रश्न 18567. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अंधविश्वास विरोधी चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंधविश्वास विरोधी चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अंधविश्वास विरोधी चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18568. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18569. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18570. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक-व्यंग्यक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक-व्यंग्यक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18571. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18572. खण्ड 1862क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-व्यंग्य आ “अंधविश्वास विरोधी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-व्यंग्य आ “अंधविश्वास विरोधी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1863 : विदेह-सदेह 8 — रवि भूषण पाठक: भफाइत चाहक जिनगी

प्रश्न 18573. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भफाइत चाहक जिनगी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भफाइत चाहक जिनगी

व्याख्या: सूचकांकमे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “भफाइत चाहक जिनगी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18574. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18575. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यक्ति-चरित्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यक्ति-चरित्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यक्ति-चरित्र” अछि।

प्रश्न 18576. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी जीवन-विसंगति

उत्तर: घ. प्रवासी जीवन-विसंगति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवन-विसंगति” अछि।

प्रश्न 18577. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी जीवन-विसंगति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी जीवन-विसंगति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवन-विसंगति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18578. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा नाटक, उप-विधा व्यक्ति-चरित्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा नाटक, उप-विधा व्यक्ति-चरित्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18579. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18580. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यक्ति-चरित्रक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यक्ति-चरित्रक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18581. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18582. खण्ड 1863क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि नाटक, व्यक्ति-चरित्र आ “प्रवासी जीवन-विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि नाटक, व्यक्ति-चरित्र आ “प्रवासी जीवन-विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1864 : विदेह-सदेह 8 — शम्भू कुमार सिंह: मिथिलाक बेटी (नाटक)

प्रश्न 18583. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक बेटी (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक बेटी (नाटक)

व्याख्या: सूचकांकमे शम्भू कुमार सिंहक प्रविष्टि “मिथिलाक बेटी (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18584. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18585. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नारी-केन्द्रित

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नारी-केन्द्रित

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नारी-केन्द्रित” अछि।

प्रश्न 18586. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला नारी-दशा

उत्तर: घ. मिथिला नारी-दशा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला नारी-दशा” अछि।

प्रश्न 18587. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला नारी-दशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला नारी-दशा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला नारी-दशा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18588. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शम्भू कुमार सिंह, विधा नाटक, उप-विधा नारी-केन्द्रित

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शम्भू कुमार सिंह, विधा नाटक, उप-विधा नारी-केन्द्रित

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18589. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18590. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नारी-केन्द्रितक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नारी-केन्द्रितक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18591. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18592. खण्ड 1864क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, नारी-केन्द्रित आ “मिथिला नारी-दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, नारी-केन्द्रित आ “मिथिला नारी-दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1865 : विदेह-सदेह 8 — दुगानन्द मण्डल: आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)

प्रश्न 18593. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांकमे दुगानन्द मण्डलक प्रविष्टि “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18594. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संस्मरण/लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संस्मरण/लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “संस्मरण/लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18595. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ऐतिहासिक मूल्यांकन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ऐतिहासिक मूल्यांकन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “ऐतिहासिक मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 18596. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण

उत्तर: घ. मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण” अछि।

प्रश्न 18597. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18598. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा संस्मरण/लेख, उप-विधा ऐतिहासिक मूल्यांकन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा संस्मरण/लेख, उप-विधा ऐतिहासिक मूल्यांकन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18599. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18600. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 8क संस्मरण/लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ ऐतिहासिक मूल्यांकनक रूपमे संस्मरण/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ ऐतिहासिक मूल्यांकनक रूपमे संस्मरण/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18601. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18602. खण्ड 1865क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि संस्मरण/लेख, ऐतिहासिक मूल्यांकन आ “मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि संस्मरण/लेख, ऐतिहासिक मूल्यांकन आ “मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1866 : विदेह-सदेह 8 — सुजीत कुमार झा: मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन

प्रश्न 18603. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन

व्याख्या: सूचकांकमे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18604. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18605. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्ट्रीट थियेटर

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्ट्रीट थियेटर

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्ट्रीट थियेटर” अछि।

प्रश्न 18606. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा

उत्तर: घ. जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” अछि।

प्रश्न 18607. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18608. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा स्ट्रीट थियेटर

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा स्ट्रीट थियेटर

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18609. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18610. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ स्ट्रीट थियेटरक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ स्ट्रीट थियेटरक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18611. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18612. खण्ड 1866क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, स्ट्रीट थियेटर आ “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, स्ट्रीट थियेटर आ “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1867 : विदेह-सदेह 8 — सुजीत कुमार झा: उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे

प्रश्न 18613. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे

व्याख्या: सूचकांकमे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18614. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18615. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक” अछि।

प्रश्न 18616. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व

उत्तर: घ. नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” अछि।

प्रश्न 18617. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18618. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा राजनीतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा राजनीतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18619. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18620. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18621. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18622. खण्ड 1867क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि रिपोर्ताज, राजनीतिक आ “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि रिपोर्ताज, राजनीतिक आ “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1868 : विदेह-सदेह 8 — तरुणेश मिश्र: महाविद्यालय-झंकार

प्रश्न 18623. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाविद्यालय-झंकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाविद्यालय-झंकार

व्याख्या: सूचकांकमे तरुणेश मिश्रक प्रविष्टि “महाविद्यालय-झंकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18624. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18625. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शैक्षिक-सांस्कृतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शैक्षिक-सांस्कृतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शैक्षिक-सांस्कृतिक” अछि।

प्रश्न 18626. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि

उत्तर: घ. छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” अछि।

प्रश्न 18627. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18628. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तरुणेश मिश्र, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा शैक्षिक-सांस्कृतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तरुणेश मिश्र, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा शैक्षिक-सांस्कृतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18629. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18630. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शैक्षिक-सांस्कृतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शैक्षिक-सांस्कृतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18631. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18632. खण्ड 1868क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि रिपोर्ताज, शैक्षिक-सांस्कृतिक आ “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि रिपोर्ताज, शैक्षिक-सांस्कृतिक आ “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1869 : विदेह-सदेह 8 — उमेश मण्डल: विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

प्रश्न 18633. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

व्याख्या: सूचकांकमे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18634. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18635. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाट्य-महोत्सव

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाट्य-महोत्सव

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाट्य-महोत्सव” अछि।

प्रश्न 18636. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दस्तावेजीकरण

उत्तर: घ. दस्तावेजीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दस्तावेजीकरण” अछि।

प्रश्न 18637. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दस्तावेजीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दस्तावेजीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दस्तावेजीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18638. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा नाट्य-महोत्सव

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा नाट्य-महोत्सव

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18639. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18640. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाट्य-महोत्सवक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाट्य-महोत्सवक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18641. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18642. खण्ड 1869क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि रिपोर्ताज, नाट्य-महोत्सव आ “दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि रिपोर्ताज, नाट्य-महोत्सव आ “दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1870 : विदेह-सदेह 8 — मयंक सुन्दर शशि: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन

प्रश्न 18643. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन

व्याख्या: सूचकांकमे मयंक सुन्दर शशिक प्रविष्टि “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18644. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18645. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य” अछि।

प्रश्न 18646. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली

उत्तर: घ. डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” अछि।

प्रश्न 18647. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18648. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मयंक सुन्दर शशि, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मयंक सुन्दर शशि, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18649. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18650. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अन्तर्राष्ट्रिय नाट्यक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अन्तर्राष्ट्रिय नाट्यक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18651. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18652. खण्ड 1870क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य आ “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य आ “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1871 : विदेह-सदेह 8 — जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा): नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन

प्रश्न 18653. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन

व्याख्या: सूचकांकमे जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क प्रविष्टि “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18654. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18655. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मंचन-विवरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मंचन-विवरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “मंचन-विवरण” अछि।

प्रश्न 18656. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण

उत्तर: घ. राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 18657. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18658. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा), विधा रिपोर्ताज, उप-विधा मंचन-विवरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा), विधा रिपोर्ताज, उप-विधा मंचन-विवरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18659. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18660. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ मंचन-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ मंचन-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18661. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18662. खण्ड 1871क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, मंचन-विवरण आ “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, मंचन-विवरण आ “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1872 : विदेह-सदेह 8 — सत्यनारायण झा: मैथिली फिल्मक लिस्ट

प्रश्न 18663. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली फिल्मक लिस्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली फिल्मक लिस्ट

व्याख्या: सूचकांकमे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “मैथिली फिल्मक लिस्ट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18664. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सूची/दस्तावेज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सूची/दस्तावेज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सूची/दस्तावेज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18665. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सिनेमा-परम्परा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सिनेमा-परम्परा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सिनेमा-परम्परा” अछि।

प्रश्न 18666. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली चलचित्रक अभिलेख

उत्तर: घ. मैथिली चलचित्रक अभिलेख

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” अछि।

प्रश्न 18667. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली चलचित्रक अभिलेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली चलचित्रक अभिलेख

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18668. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा सूची/दस्तावेज, उप-विधा सिनेमा-परम्परा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा सूची/दस्तावेज, उप-विधा सिनेमा-परम्परा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18669. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18670. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”केँ विदेह-सदेह 8क सूची/दस्तावेज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सिनेमा-परम्पराक रूपमे सूची/दस्तावेज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सिनेमा-परम्पराक रूपमे सूची/दस्तावेज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18671. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18672. खण्ड 1872क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि सूची/दस्तावेज, सिनेमा-परम्परा आ “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि सूची/दस्तावेज, सिनेमा-परम्परा आ “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1873 : विदेह-सदेह 8 — सत्यनारायण झा: आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार

प्रश्न 18673. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार

व्याख्या: सूचकांकमे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18674. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पुरस्कार-वृत्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पुरस्कार-वृत्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-वृत्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18675. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्मान-रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्मान-रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 18676. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली रंगकर्मी सम्मान

उत्तर: घ. मैथिली रंगकर्मी सम्मान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” अछि।

प्रश्न 18677. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली रंगकर्मी सम्मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली रंगकर्मी सम्मान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18678. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18679. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18680. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”केँ विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-वृत्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18681. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18682. खण्ड 1873क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1874 : विदेह-सदेह 8 — सत्यनारायण झा: रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार

प्रश्न 18683. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार

व्याख्या: सूचकांकमे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18684. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पुरस्कार-वृत्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पुरस्कार-वृत्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-वृत्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18685. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्मान-रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्मान-रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 18686. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महिला रंगकर्मी सम्मान

उत्तर: घ. महिला रंगकर्मी सम्मान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महिला रंगकर्मी सम्मान” अछि।

प्रश्न 18687. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महिला रंगकर्मी सम्मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महिला रंगकर्मी सम्मान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महिला रंगकर्मी सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18688. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18689. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18690. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”केँ विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-वृत्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18691. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18692. खण्ड 1874क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “महिला रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “महिला रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1875 : विदेह-सदेह 8 — — (रिपोर्ताज): बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित

प्रश्न 18693. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित

व्याख्या: सूचकांकमे — (रिपोर्ताज)क प्रविष्टि “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18694. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मंचन-सूचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मंचन-सूचना

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “मंचन-सूचना” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18695. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक-प्रदर्शन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक-प्रदर्शन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-प्रदर्शन” अछि।

प्रश्न 18696. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन

उत्तर: घ. कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” अछि।

प्रश्न 18697. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18698. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक — (रिपोर्ताज), विधा मंचन-सूचना, उप-विधा नाटक-प्रदर्शन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक — (रिपोर्ताज), विधा मंचन-सूचना, उप-विधा नाटक-प्रदर्शन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18699. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18700. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”केँ विदेह-सदेह 8क मंचन-सूचना-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक-प्रदर्शनक रूपमे मंचन-सूचना-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक-प्रदर्शनक रूपमे मंचन-सूचना-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18701. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18702. खण्ड 1875क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि मंचन-सूचना, नाटक-प्रदर्शन आ “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि मंचन-सूचना, नाटक-प्रदर्शन आ “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1876 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पु...

प्रश्न 18703. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18704. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पुरस्कार-वृत्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पुरस्कार-वृत्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-वृत्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18705. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्मान-रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्मान-रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 18706. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता

उत्तर: घ. युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” अछि।

प्रश्न 18707. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18708. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18709. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18710. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”केँ विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-वृत्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18711. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18712. खण्ड 1876क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1877 : विदेह-सदेह 8 — — (रिपोर्ताज): "भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक

प्रश्न 18713. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक

व्याख्या: सूचकांकमे — (रिपोर्ताज)क प्रविष्टि “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18714. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक/मंचन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक/मंचन

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक/मंचन” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18715. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक यथार्थ

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 18716. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विस्मृति, भूल, पहिचान

उत्तर: घ. विस्मृति, भूल, पहिचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विस्मृति, भूल, पहिचान” अछि।

प्रश्न 18717. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विस्मृति, भूल, पहिचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विस्मृति, भूल, पहिचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विस्मृति, भूल, पहिचान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18718. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक — (रिपोर्ताज), विधा नाटक/मंचन, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक — (रिपोर्ताज), विधा नाटक/मंचन, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18719. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18720. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक/मंचन-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक/मंचन-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक/मंचन-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18721. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18722. खण्ड 1877क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि नाटक/मंचन, सामाजिक यथार्थ आ “विस्मृति, भूल, पहिचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि नाटक/मंचन, सामाजिक यथार्थ आ “विस्मृति, भूल, पहिचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1878 : विदेह-सदेह 8 — मुन्ना जी: मैथिलोत्सव २०११

प्रश्न 18723. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलोत्सव २०११

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलोत्सव २०११

व्याख्या: सूचकांकमे मुन्ना जीक प्रविष्टि “मैथिलोत्सव २०११” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18724. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18725. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. महोत्सव-विवरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. महोत्सव-विवरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “महोत्सव-विवरण” अछि।

प्रश्न 18726. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता

उत्तर: घ. मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” अछि।

प्रश्न 18727. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18728. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा महोत्सव-विवरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा महोत्सव-विवरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18729. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18730. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ महोत्सव-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ महोत्सव-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18731. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18732. खण्ड 1878क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि रिपोर्ताज, महोत्सव-विवरण आ “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि रिपोर्ताज, महोत्सव-विवरण आ “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1879 : विदेह-सदेह 8 — पूनम मण्डल: जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य...

प्रश्न 18733. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११

व्याख्या: सूचकांकमे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18734. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पुरस्कार-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पुरस्कार-रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18735. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साहित्य सम्मान

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साहित्य सम्मान

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साहित्य सम्मान” अछि।

प्रश्न 18736. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण

उत्तर: घ. ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” अछि।

प्रश्न 18737. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18738. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा पुरस्कार-रिपोर्ताज, उप-विधा साहित्य सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा पुरस्कार-रिपोर्ताज, उप-विधा साहित्य सम्मान

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18739. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18740. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”केँ विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साहित्य सम्मानक रूपमे पुरस्कार-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साहित्य सम्मानक रूपमे पुरस्कार-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18741. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18742. खण्ड 1879क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-रिपोर्ताज, साहित्य सम्मान आ “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-रिपोर्ताज, साहित्य सम्मान आ “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1880 : विदेह-सदेह 8 — मनोज कुमार मण्डल: "बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन

प्रश्न 18743. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन

व्याख्या: सूचकांकमे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18744. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मंचन-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मंचन-रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “मंचन-रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18745. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सिल थियेटर

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सिल थियेटर

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सिल थियेटर” अछि।

प्रश्न 18746. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पितृ-संकट

उत्तर: घ. पितृ-संकट

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृ-संकट” अछि।

प्रश्न 18747. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पितृ-संकट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पितृ-संकट

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृ-संकट” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18748. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18749. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18750. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”केँ विदेह-सदेह 8क मंचन-रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18751. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18752. खण्ड 1880क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “पितृ-संकट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “पितृ-संकट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1881 : विदेह-सदेह 8 — मनोज कुमार मण्डल: "अधिकार" नाटक – सिल मंचन

प्रश्न 18753. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "अधिकार" नाटक – सिल मंचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "अधिकार" नाटक – सिल मंचन

व्याख्या: सूचकांकमे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18754. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मंचन-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मंचन-रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “मंचन-रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18755. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सिल थियेटर

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सिल थियेटर

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सिल थियेटर” अछि।

प्रश्न 18756. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष

उत्तर: घ. अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” अछि।

प्रश्न 18757. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18758. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18759. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18760. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”कें विदेह-सदेह 8क मंचन-रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18761. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18762. खण्ड 1881क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1882 : विदेह-सदेह 8 — बृषेश चन्द्र लाल: तितिया प्रस्तुति

प्रश्न 18763. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तितिया प्रस्तुति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तितिया प्रस्तुति

व्याख्या: सूचकांकमे बृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “तितिया प्रस्तुति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18764. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18765. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सांस्कृतिक प्रस्तुति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सांस्कृतिक प्रस्तुति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सांस्कृतिक प्रस्तुति” अछि।

प्रश्न 18766. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन

उत्तर: घ. रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” अछि।

प्रश्न 18767. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18768. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा सांस्कृतिक प्रस्तुति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा सांस्कृतिक प्रस्तुति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18769. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18770. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सांस्कृतिक प्रस्तुतिक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सांस्कृतिक प्रस्तुतिक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18771. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18772. खण्ड 1882क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि रिपोर्ताज, सांस्कृतिक प्रस्तुति आ “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि रिपोर्ताज, सांस्कृतिक प्रस्तुति आ “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1883 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)

प्रश्न 18773. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18774. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18775. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय/प्रस्तावना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय/प्रस्तावना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय/प्रस्तावना” अछि।

प्रश्न 18776. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह आन्दोलनक उद्घोष

उत्तर: घ. विदेह आन्दोलनक उद्घोष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह आन्दोलनक उद्घोष” अछि।

प्रश्न 18777. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह आन्दोलनक उद्घोष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह आन्दोलनक उद्घोष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह आन्दोलनक उद्घोष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18778. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/प्रस्तावना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/प्रस्तावना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18779. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18780. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)”केँ विदेह-सदेह 8क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीय/प्रस्तावनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीय/प्रस्तावनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18781. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18782. खण्ड 1883क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/प्रस्तावना आ “विदेह आन्दोलनक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/प्रस्तावना आ “विदेह आन्दोलनक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1884 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी

प्रश्न 18783. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी

व्याख्या: सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18784. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18785. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पुरस्कार-वृत्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पुरस्कार-वृत्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पुरस्कार-वृत्त” अछि।

प्रश्न 18786. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमंचीय सम्मान

उत्तर: घ. रंगमंचीय सम्मान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमंचीय सम्मान” अछि।

प्रश्न 18787. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमंचीय सम्मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमंचीय सम्मान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमंचीय सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18788. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा लेख, उप-विधा पुरस्कार-वृत्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा लेख, उप-विधा पुरस्कार-वृत्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18789. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18790. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी”केँ विदेह-सदेह 8क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पुरस्कार-वृत्तक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पुरस्कार-वृत्तक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18791. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18792. खण्ड 1884क सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” प्रविष्टि लेख, पुरस्कार-वृत्त आ “रंगमंचीय सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” प्रविष्टि लेख, पुरस्कार-वृत्त आ “रंगमंचीय सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1885 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र

प्रश्न 18793. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 576मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18794. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. समीक्षा/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. समीक्षा/शोध

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “समीक्षा/शोध” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18795. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाट्य-सिद्धान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाट्य-सिद्धान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाट्य-सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 18796. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

उत्तर: घ. जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” अछि।

प्रश्न 18797. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18798. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा समीक्षा/शोध, उप-विधा नाट्य-सिद्धान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा समीक्षा/शोध, उप-विधा नाट्य-सिद्धान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18799. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18800. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”केँ विदेह-सदेह 8क समीक्षा/शोध-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाट्य-सिद्धान्तक रूपमे समीक्षा/शोध-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाट्य-सिद्धान्तक रूपमे समीक्षा/शोध-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18801. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18802. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि समीक्षा/शोध, नाट्य-सिद्धान्त आ “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि समीक्षा/शोध, नाट्य-सिद्धान्त आ “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1886 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा...

प्रश्न 18803. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 577मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18804. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक-समीक्षा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक-समीक्षा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18805. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक यथार्थ

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 18806. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

उत्तर: घ. जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” अछि।

प्रश्न 18807. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18808. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक-समीक्षा, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक-समीक्षा, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18809. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18810. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-समीक्षा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18811. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18812. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577मे गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि नाटक-समीक्षा, सामाजिक यथार्थ आ “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577मे गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि नाटक-समीक्षा, सामाजिक यथार्थ आ “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1887 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)

प्रश्न 18813. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 578मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18814. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक (रूपान्तर)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक (रूपान्तर)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18815. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

प्रश्न 18816. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली रंगमंच पर मार्लो

उत्तर: घ. मैथिली रंगमंच पर मार्लो

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” अछि।

प्रश्न 18817. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली रंगमंच पर मार्लो

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली रंगमंच पर मार्लो

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18818. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18819. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18820. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18821. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18822. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578मे बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578मे बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1888 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)

प्रश्न 18823. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 579मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18824. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक (रूपान्तर)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक (रूपान्तर)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18825. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

प्रश्न 18826. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह

उत्तर: घ. मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह” अछि।

प्रश्न 18827. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रूपान्तरशास्त्र, चॉम्स्की

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रूपान्तरशास्त्र, चॉम्स्की

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रूपान्तरशास्त्र, चॉम्स्की” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18828. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18829. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18830. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18831. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18832. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579मे बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “रूपान्तरशास्त्र, चॉम्स्की” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579मे बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “रूपान्तरशास्त्र, चॉम्स्की” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1889 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)

प्रश्न 18833. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 580मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18834. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक (रूपान्तर)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक (रूपान्तर)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18835. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

प्रश्न 18836. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एलियटक धार्मिक-राजनीति

उत्तर: घ. एलियटक धार्मिक-राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एलियटक धार्मिक-राजनीति” अछि।

प्रश्न 18837. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शहादत, सत्ता-विरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शहादत, सत्ता-विरोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शहादत, सत्ता-विरोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18838. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18839. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18840. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18841. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18842. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580मे बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “शहादत, सत्ता-विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580मे बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “शहादत, सत्ता-विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1890 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)

प्रश्न 18843. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 581मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18844. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक (रूपान्तर)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक (रूपान्तर)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18845. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

प्रश्न 18846. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. औद्योगिक संघर्ष

उत्तर: घ. औद्योगिक संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “औद्योगिक संघर्ष” अछि।

प्रश्न 18847. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. औद्योगिक संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. औद्योगिक संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “औद्योगिक संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18848. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18849. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18850. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18851. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18852. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581मे बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “औद्योगिक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581मे बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “औद्योगिक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1891 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप

प्रश्न 18853. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 582मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18854. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. वार्ता/सन्दर्भ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. वार्ता/सन्दर्भ

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “वार्ता/सन्दर्भ” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18855. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 18856. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा

उत्तर: घ. निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा” अछि।

प्रश्न 18857. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमंचीय लोकाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमंचीय लोकाचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमंचीय लोकाचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18858. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा वार्ता/सन्दर्भ, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा वार्ता/सन्दर्भ, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18859. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18860. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”केँ विदेह-सदेह 8क वार्ता/सन्दर्भ-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे वार्ता/सन्दर्भ-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे वार्ता/सन्दर्भ-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18861. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18862. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582मे बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि वार्ता/सन्दर्भ, साक्षात्कार आ “रंगमंचीय लोकाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582मे बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि वार्ता/सन्दर्भ, साक्षात्कार आ “रंगमंचीय लोकाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1892 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)

प्रश्न 18863. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 583मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18864. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चिन्तन/लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चिन्तन/लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “चिन्तन/लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18865. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निर्देशन-विधि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निर्देशन-विधि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निर्देशन-विधि” अछि।

प्रश्न 18866. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रायोगिक रंगमंच

उत्तर: घ. प्रायोगिक रंगमंच

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रायोगिक रंगमंच” अछि।

प्रश्न 18867. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रायोगिक रंगमंच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रायोगिक रंगमंच

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रायोगिक रंगमंच” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18868. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा चिन्तन/लेख, उप-विधा निर्देशन-विधि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा चिन्तन/लेख, उप-विधा निर्देशन-विधि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18869. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18870. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”कें विदेह-सदेह 8क चिन्तन/लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निर्देशन-विधिक रूपमे चिन्तन/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निर्देशन-विधिक रूपमे चिन्तन/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18871. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18872. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583मे बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि चिन्तन/लेख, निर्देशन-विधि आ “प्रायोगिक रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583मे बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि चिन्तन/लेख, निर्देशन-विधि आ “प्रायोगिक रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1893 : विदेह-सदेह 8 — उदय नारायण सिंह “नचिकेता”: नो एंट्री : मा प्रविश

प्रश्न 18873. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नो एंट्री : मा प्रविश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नो एंट्री : मा प्रविश

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 584मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क प्रविष्टि “नो एंट्री : मा प्रविश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18874. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18875. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अस्तित्ववादी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अस्तित्ववादी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अस्तित्ववादी” अछि।

प्रश्न 18876. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

उत्तर: घ. यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” अछि।

प्रश्न 18877. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18878. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा अस्तित्ववादी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा अस्तित्ववादी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18879. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18880. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अस्तित्ववादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अस्तित्ववादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18881. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18882. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि नाटक, अस्तित्ववादी आ “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि नाटक, अस्तित्ववादी आ “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1894 : विदेह-सदेह 8 — उदय नारायण सिंह “नचिकेता”: जडैत मोमबत्ती

प्रश्न 18883. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जडैत मोमबत्ती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जडैत मोमबत्ती

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 585मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क प्रविष्टि “जडैत मोमबत्ती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18884. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18885. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रतीकात्मक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रतीकात्मक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रतीकात्मक” अछि।

प्रश्न 18886. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति

उत्तर: घ. मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति” अछि।

प्रश्न 18887. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अस्तित्ववादी कोण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्ववादी कोण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अस्तित्ववादी कोण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18888. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा प्रतीकात्मक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा प्रतीकात्मक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18889. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18890. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रतीकात्मकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रतीकात्मकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18891. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18892. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि नाटक, प्रतीकात्मक आ “अस्तित्ववादी कोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि नाटक, प्रतीकात्मक आ “अस्तित्ववादी कोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1895 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: संकष्टन (नाटक)

प्रश्न 18893. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संकष्टन (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संकष्टन (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 586मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “संकष्टन (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18894. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18895. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक-यथार्थवादी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक-यथार्थवादी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-यथार्थवादी” अछि।

प्रश्न 18896. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

उत्तर: घ. मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” अछि।

प्रश्न 18897. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18898. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-यथार्थवादी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-यथार्थवादी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18899. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18900. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक-यथार्थवादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक-यथार्थवादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18901. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18902. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586मे गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-यथार्थवादी आ “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586मे गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-यथार्थवादी आ “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1896 : विदेह-सदेह 8 — विभा रानी: बलचन्दा (नाटक)

प्रश्न 18903. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बलचन्दा (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बलचन्दा (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 587मे विभा रानीक प्रविष्टि “बलचन्दा (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18904. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18905. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्त्री-विमर्शी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्त्री-विमर्शी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्त्री-विमर्शी” अछि।

प्रश्न 18906. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

उत्तर: घ. पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” अछि।

प्रश्न 18907. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18908. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा स्त्री-विमर्शी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा स्त्री-विमर्शी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18909. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18910. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ स्त्री-विमर्शीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ स्त्री-विमर्शीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18911. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18912. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587मे विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, स्त्री-विमर्शी आ “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587मे विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, स्त्री-विमर्शी आ “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1897 : विदेह-सदेह 8 — विभा रानी: भाग रौ (नाटक)

प्रश्न 18913. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाग रौ (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाग रौ (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 588मे विभा रानीक प्रविष्टि “भाग रौ (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18914. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18915. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक यथार्थ

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 18916. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना

उत्तर: घ. गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” अछि।

प्रश्न 18917. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18918. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18919. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18920. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18921. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18922. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588मे विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक यथार्थ आ “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588मे विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक यथार्थ आ “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1898 : विदेह-सदेह 8 — ज्योति सुनीत चौधरी: कैसर (नाटक)

प्रश्न 18923. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कैसर (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कैसर (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 589मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “कैसर (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18924. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18925. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक-राजनीतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक-राजनीतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-राजनीतिक” अछि।

प्रश्न 18926. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

उत्तर: घ. शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” अछि।

प्रश्न 18927. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18928. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-राजनीतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-राजनीतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18929. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18930. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक-राजनीतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक-राजनीतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18931. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18932. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589मे ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-राजनीतिक आ “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589मे ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-राजनीतिक आ “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1899 : विदेह-सदेह 8 — सरोज खिलाड़ी: नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनु...

प्रश्न 18933. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 590मे सरोज खिलाड़ीक प्रविष्टि “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18934. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18935. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक-नैतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक-नैतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-नैतिक” अछि।

प्रश्न 18936. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

उत्तर: घ. समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” अछि।

प्रश्न 18937. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18938. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-नैतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-नैतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18939. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18940. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक-नैतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक-नैतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18941. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18942. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-नैतिक आ “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-नैतिक आ “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1900 : विदेह-सदेह 8 — सरोज खिलाड़ी: नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)

प्रश्न 18943. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 591मे सरोज खिलाड़ीक प्रविष्टि “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18944. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18945. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नारी-सामाजिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नारी-सामाजिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नारी-सामाजिक” अछि।

प्रश्न 18946. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-केन्द्रित विमर्श

उत्तर: घ. नारी-केन्द्रित विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-केन्द्रित विमर्श” अछि।

प्रश्न 18947. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-केन्द्रित विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-केन्द्रित विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-केन्द्रित विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18948. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा नारी-सामाजिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा नारी-सामाजिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18949. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18950. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नारी-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नारी-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18951. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18952. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” प्रविष्टि नाटक, नारी-सामाजिक आ “नारी-केन्द्रित विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” प्रविष्टि नाटक, नारी-सामाजिक आ “नारी-केन्द्रित विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1901 : विदेह-सदेह 8 — सरोज खिलाड़ी: नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)

प्रश्न 18953. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 592मे सरोज खिलाड़ीक प्रविष्टि “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18954. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18955. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पारिवारिक-विघटन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पारिवारिक-विघटन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पारिवारिक-विघटन” अछि।

प्रश्न 18956. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व

उत्तर: घ. परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 18957. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18958. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा पारिवारिक-विघटन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा पारिवारिक-विघटन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18959. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18960. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पारिवारिक-विघटनक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पारिवारिक-विघटनक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18961. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18962. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” प्रविष्टि नाटक, पारिवारिक-विघटन आ “परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” प्रविष्टि नाटक, पारिवारिक-विघटन आ “परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1902 : विदेह-सदेह 8 — जीवन झा: सुन्दर संयोग (नाटक)

प्रश्न 18963. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुन्दर संयोग (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुन्दर संयोग (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 593मे जीवन झाक प्रविष्टि “सुन्दर संयोग (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18964. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18965. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रणय-सामाजिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रणय-सामाजिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रणय-सामाजिक” अछि।

प्रश्न 18966. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

उत्तर: घ. प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” अछि।

प्रश्न 18967. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18968. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा प्रणय-सामाजिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा प्रणय-सामाजिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18969. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18970. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रणय-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रणय-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18971. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18972. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593मे जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, प्रणय-सामाजिक आ “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593मे जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, प्रणय-सामाजिक आ “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1903 : विदेह-सदेह 8 — जीवन झा: सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)

प्रश्न 18973. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 594मे जीवन झाक प्रविष्टि “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18974. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18975. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दार्शनिक-पौराणिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दार्शनिक-पौराणिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दार्शनिक-पौराणिक” अछि।

प्रश्न 18976. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त

उत्तर: घ. पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 18977. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव्य-न्याय, भारतीय दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव्य-न्याय, भारतीय दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव्य-न्याय, भारतीय दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18978. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा दार्शनिक-पौराणिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा दार्शनिक-पौराणिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18979. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18980. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)”कें विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दार्शनिक-पौराणिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दार्शनिक-पौराणिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18981. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18982. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594मे जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, दार्शनिक-पौराणिक आ “नव्य-न्याय, भारतीय दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594मे जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, दार्शनिक-पौराणिक आ “नव्य-न्याय, भारतीय दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1904 : विदेह-सदेह 8 — शिव कुमार झा: अंधविश्वास (नाटक)

प्रश्न 18983. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अंधविश्वास (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंधविश्वास (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 595मे शिव कुमार झाक प्रविष्टि “अंधविश्वास (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18984. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18985. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक-व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक-व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 18986. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अंधविश्वास विरोधी चेतना

उत्तर: घ. अंधविश्वास विरोधी चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अंधविश्वास विरोधी चेतना” अछि।

प्रश्न 18987. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अंधविश्वास विरोधी चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंधविश्वास विरोधी चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अंधविश्वास विरोधी चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18988. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18989. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 18990. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक-व्यंग्यक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक-व्यंग्यक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 18991. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 18992. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595मे शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-व्यंग्य आ “अंधविश्वास विरोधी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595मे शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-व्यंग्य आ “अंधविश्वास विरोधी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1905 : विदेह-सदेह 8 — रवि भूषण पाठक: भफाइत चाहक जिनगी

प्रश्न 18993. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भफाइत चाहक जिनगी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भफाइत चाहक जिनगी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 596मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “भफाइत चाहक जिनगी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 18994. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 18995. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यक्ति-चरित्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यक्ति-चरित्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यक्ति-चरित्र” अछि।

प्रश्न 18996. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी जीवन-विसंगति

उत्तर: घ. प्रवासी जीवन-विसंगति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवन-विसंगति” अछि।

प्रश्न 18997. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी जीवन-विसंगति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी जीवन-विसंगति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवन-विसंगति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 18998. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा नाटक, उप-विधा व्यक्ति-चरित्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा नाटक, उप-विधा व्यक्ति-चरित्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 18999. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19000. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यक्ति-चरित्रक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यक्ति-चरित्रक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19001. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19002. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596मे रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि नाटक, व्यक्ति-चरित्र आ “प्रवासी जीवन-विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596मे रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि नाटक, व्यक्ति-चरित्र आ “प्रवासी जीवन-विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1906 : विदेह-सदेह 8 — शम्भू कुमार सिंह: मिथिलाक बेटी (नाटक)

प्रश्न 19003. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक बेटी (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक बेटी (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 597मे शम्भू कुमार सिंहक प्रविष्टि “मिथिलाक बेटी (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19004. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19005. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नारी-केन्द्रित

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नारी-केन्द्रित

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नारी-केन्द्रित” अछि।

प्रश्न 19006. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला नारी-दशा

उत्तर: घ. मिथिला नारी-दशा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला नारी-दशा” अछि।

प्रश्न 19007. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला नारी-दशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला नारी-दशा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला नारी-दशा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19008. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शम्भू कुमार सिंह, विधा नाटक, उप-विधा नारी-केन्द्रित

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शम्भू कुमार सिंह, विधा नाटक, उप-विधा नारी-केन्द्रित

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19009. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19010. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नारी-केन्द्रितक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नारी-केन्द्रितक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19011. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19012. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597मे शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, नारी-केन्द्रित आ “मिथिला नारी-दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597मे शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, नारी-केन्द्रित आ “मिथिला नारी-दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1907 : विदेह-सदेह 8 — दुगानन्द मण्डल: आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)

प्रश्न 19013. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598: दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 598मे दुगानन्द मण्डलक प्रविष्टि “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19014. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598: दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संस्मरण/लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संस्मरण/लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “संस्मरण/लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19015. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598: दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ऐतिहासिक मूल्यांकन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ऐतिहासिक मूल्यांकन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “ऐतिहासिक मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 19016. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598: दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण

उत्तर: घ. मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण” अछि।

प्रश्न 19017. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598: दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19018. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598: दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा संस्मरण/लेख, उप-विधा ऐतिहासिक मूल्यांकन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा संस्मरण/लेख, उप-विधा ऐतिहासिक मूल्यांकन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19019. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598: दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19020. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598: दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 8क संस्मरण/लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ ऐतिहासिक मूल्यांकनक रूपमे संस्मरण/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ ऐतिहासिक मूल्यांकनक रूपमे संस्मरण/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19021. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598: दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19022. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598मे दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि संस्मरण/लेख, ऐतिहासिक मूल्यांकन आ “मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1907, सूचकांक पंक्ति 598मे दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि संस्मरण/लेख, ऐतिहासिक मूल्यांकन आ “मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1908 : विदेह-सदेह 8 — सुजीत कुमार झा: मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन

प्रश्न 19023. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599: सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 599मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19024. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599: सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19025. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599: सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्ट्रीट थियेटर

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्ट्रीट थियेटर

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्ट्रीट थियेटर” अछि।

प्रश्न 19026. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599: सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा

उत्तर: घ. जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” अछि।

प्रश्न 19027. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599: सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19028. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599: सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा स्ट्रीट थियेटर

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा स्ट्रीट थियेटर

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19029. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599: सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19030. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599: सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ स्ट्रीट थियेटरक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ स्ट्रीट थियेटरक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19031. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599: सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19032. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599मे सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, स्ट्रीट थियेटर आ “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1908, सूचकांक पंक्ति 599मे सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, स्ट्रीट थियेटर आ “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1909 : विदेह-सदेह 8 — सुजीत कुमार झा: उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे

प्रश्न 19033. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600: सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 600मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19034. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600: सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19035. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600: सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक” अछि।

प्रश्न 19036. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600: सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व

उत्तर: घ. नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” अछि।

प्रश्न 19037. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600: सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19038. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600: सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा राजनीतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा राजनीतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19039. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600: सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19040. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600: सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19041. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600: सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19042. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600मे सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि रिपोर्ताज, राजनीतिक आ “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1909, सूचकांक पंक्ति 600मे सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि रिपोर्ताज, राजनीतिक आ “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1910 : विदेह-सदेह 8 — तरुणेश मिश्र: महाविद्यालय-झंकार

प्रश्न 19043. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601: तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाविद्यालय-झंकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाविद्यालय-झंकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 601मे तरुणेश मिश्रक प्रविष्टि “महाविद्यालय-झंकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19044. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601: तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19045. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601: तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शैक्षिक-सांस्कृतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शैक्षिक-सांस्कृतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शैक्षिक-सांस्कृतिक” अछि।

प्रश्न 19046. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601: तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि

उत्तर: घ. छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” अछि।

प्रश्न 19047. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601: तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19048. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601: तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तरुणेश मिश्र, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा शैक्षिक-सांस्कृतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तरुणेश मिश्र, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा शैक्षिक-सांस्कृतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19049. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601: तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19050. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601: तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शैक्षिक-सांस्कृतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शैक्षिक-सांस्कृतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19051. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601: तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19052. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601मे तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि रिपोर्ताज, शैक्षिक-सांस्कृतिक आ “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1910, सूचकांक पंक्ति 601मे तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि रिपोर्ताज, शैक्षिक-सांस्कृतिक आ “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1911 : विदेह-सदेह 8 — उमेश मण्डल: विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

प्रश्न 19053. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602: उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 602मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19054. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602: उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19055. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602: उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाट्य-महोत्सव

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाट्य-महोत्सव

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाट्य-महोत्सव” अछि।

प्रश्न 19056. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602: उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दस्तावेजीकरण

उत्तर: घ. दस्तावेजीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दस्तावेजीकरण” अछि।

प्रश्न 19057. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602: उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दस्तावेजीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दस्तावेजीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दस्तावेजीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19058. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602: उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा नाट्य-महोत्सव

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा नाट्य-महोत्सव

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19059. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602: उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19060. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602: उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”कें विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाट्य-महोत्सवक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाट्य-महोत्सवक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19061. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602: उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19062. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602मे उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि रिपोर्ताज, नाट्य-महोत्सव आ “दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1911, सूचकांक पंक्ति 602मे उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि रिपोर्ताज, नाट्य-महोत्सव आ “दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1912 : विदेह-सदेह 8 — मयंक सुन्दर शशि: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन

प्रश्न 19063. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603: मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 603मे मयंक सुन्दर शशिक प्रविष्टि “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19064. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603: मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19065. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603: मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य” अछि।

प्रश्न 19066. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603: मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली

उत्तर: घ. डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” अछि।

प्रश्न 19067. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603: मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19068. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603: मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मयंक सुन्दर शशि, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मयंक सुन्दर शशि, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19069. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603: मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19070. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603: मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अन्तर्राष्ट्रिय नाट्यक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अन्तर्राष्ट्रिय नाट्यक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19071. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603: मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19072. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603मे मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य आ “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1912, सूचकांक पंक्ति 603मे मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य आ “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1913 : विदेह-सदेह 8 — जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा): नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन

प्रश्न 19073. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604: जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 604मे जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क प्रविष्टि “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19074. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604: जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19075. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604: जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मंचन-विवरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मंचन-विवरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “मंचन-विवरण” अछि।

प्रश्न 19076. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604: जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण

उत्तर: घ. राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 19077. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604: जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19078. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604: जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा), विधा रिपोर्ताज, उप-विधा मंचन-विवरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा), विधा रिपोर्ताज, उप-विधा मंचन-विवरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19079. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604: जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19080. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604: जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ मंचन-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ मंचन-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19081. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604: जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19082. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604मे जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, मंचन-विवरण आ “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1913, सूचकांक पंक्ति 604मे जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, मंचन-विवरण आ “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1914 : विदेह-सदेह 8 — सत्यनारायण झा: मैथिली फिल्मक लिस्ट

प्रश्न 19083. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605: सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली फिल्मक लिस्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली फिल्मक लिस्ट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 605मे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “मैथिली फिल्मक लिस्ट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19084. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605: सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सूची/दस्तावेज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सूची/दस्तावेज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सूची/दस्तावेज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19085. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605: सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सिनेमा-परम्परा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सिनेमा-परम्परा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सिनेमा-परम्परा” अछि।

प्रश्न 19086. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605: सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली चलचित्रक अभिलेख

उत्तर: घ. मैथिली चलचित्रक अभिलेख

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” अछि।

प्रश्न 19087. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605: सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली चलचित्रक अभिलेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली चलचित्रक अभिलेख

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19088. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605: सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा सूची/दस्तावेज, उप-विधा सिनेमा-परम्परा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा सूची/दस्तावेज, उप-विधा सिनेमा-परम्परा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19089. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605: सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19090. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605: सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”केँ विदेह-सदेह 8क सूची/दस्तावेज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सिनेमा-परम्पराक रूपमे सूची/दस्तावेज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सिनेमा-परम्पराक रूपमे सूची/दस्तावेज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19091. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605: सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19092. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605मे सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि सूची/दस्तावेज, सिनेमा-परम्परा आ “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1914, सूचकांक पंक्ति 605मे सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि सूची/दस्तावेज, सिनेमा-परम्परा आ “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1915 : विदेह-सदेह 8 — सत्यनारायण झा: आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार

प्रश्न 19093. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606: सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 606मे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19094. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606: सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पुरस्कार-वृत्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पुरस्कार-वृत्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-वृत्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19095. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606: सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्मान-रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्मान-रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 19096. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606: सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली रंगकर्मी सम्मान

उत्तर: घ. मैथिली रंगकर्मी सम्मान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” अछि।

प्रश्न 19097. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606: सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली रंगकर्मी सम्मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली रंगकर्मी सम्मान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19098. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606: सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19099. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606: सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19100. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606: सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”केँ विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-वृत्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19101. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606: सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19102. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606मे सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1915, सूचकांक पंक्ति 606मे सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1916 : विदेह-सदेह 8 — सत्यनारायण झा: रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार

प्रश्न 19103. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607: सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 607मे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19104. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607: सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पुरस्कार-वृत्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पुरस्कार-वृत्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-वृत्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19105. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607: सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्मान-रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्मान-रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 19106. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607: सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महिला रंगकर्मी सम्मान

उत्तर: घ. महिला रंगकर्मी सम्मान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महिला रंगकर्मी सम्मान” अछि।

प्रश्न 19107. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607: सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महिला रंगकर्मी सम्मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महिला रंगकर्मी सम्मान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महिला रंगकर्मी सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19108. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607: सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19109. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607: सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19110. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607: सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”केँ विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-वृत्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19111. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607: सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19112. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607मे सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “महिला रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1916, सूचकांक पंक्ति 607मे सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “महिला रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1917 : विदेह-सदेह 8 — — (रिपोर्ताज): बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित

प्रश्न 19113. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608: — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 608मे — (रिपोर्ताज)क प्रविष्टि “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19114. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608: — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मंचन-सूचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मंचन-सूचना

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “मंचन-सूचना” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19115. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608: — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक-प्रदर्शन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक-प्रदर्शन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-प्रदर्शन” अछि।

प्रश्न 19116. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608: — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन

उत्तर: घ. कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” अछि।

प्रश्न 19117. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608: — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19118. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608: — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक — (रिपोर्ताज), विधा मंचन-सूचना, उप-विधा नाटक-प्रदर्शन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक — (रिपोर्ताज), विधा मंचन-सूचना, उप-विधा नाटक-प्रदर्शन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19119. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608: — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19120. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608: — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”केँ विदेह-सदेह 8क मंचन-सूचना-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक-प्रदर्शनक रूपमे मंचन-सूचना-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक-प्रदर्शनक रूपमे मंचन-सूचना-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19121. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608: — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19122. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608मे — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि मंचन-सूचना, नाटक-प्रदर्शन आ “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1917, सूचकांक पंक्ति 608मे — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि मंचन-सूचना, नाटक-प्रदर्शन आ “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1918 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पु...

प्रश्न 19123. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 609मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19124. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पुरस्कार-वृत्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पुरस्कार-वृत्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-वृत्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19125. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्मान-रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्मान-रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 19126. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता

उत्तर: घ. युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” अछि।

प्रश्न 19127. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19128. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19129. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19130. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”केँ विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-वृत्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19131. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19132. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609मे गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1918, सूचकांक पंक्ति 609मे गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1919 : विदेह-सदेह 8 — — (रिपोर्ताज): "भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक

प्रश्न 19133. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610: — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 610मे — (रिपोर्ताज)क प्रविष्टि “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19134. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610: — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. नाटक/मंचन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. नाटक/मंचन

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक/मंचन” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19135. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610: — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक यथार्थ

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 19136. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610: — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विस्मृति, भूल, पहिचान

उत्तर: घ. विस्मृति, भूल, पहिचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विस्मृति, भूल, पहिचान” अछि।

प्रश्न 19137. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610: — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विस्मृति, भूल, पहिचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विस्मृति, भूल, पहिचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विस्मृति, भूल, पहिचान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19138. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610: — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक — (रिपोर्ताज), विधा नाटक/मंचन, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक — (रिपोर्ताज), विधा नाटक/मंचन, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19139. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610: — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19140. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610: — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक/मंचन-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक/मंचन-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक/मंचन-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19141. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610: — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19142. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610मे — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि नाटक/मंचन, सामाजिक यथार्थ आ “विस्मृति, भूल, पहिचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1919, सूचकांक पंक्ति 610मे — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि नाटक/मंचन, सामाजिक यथार्थ आ “विस्मृति, भूल, पहिचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1920 : विदेह-सदेह 8 — मुन्ना जी: मैथिलोत्सव २०११

प्रश्न 19143. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611: मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलोत्सव २०११

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलोत्सव २०११

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 611मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “मैथिलोत्सव २०११” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19144. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611: मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19145. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611: मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. महोत्सव-विवरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. महोत्सव-विवरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “महोत्सव-विवरण” अछि।

प्रश्न 19146. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611: मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता

उत्तर: घ. मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” अछि।

प्रश्न 19147. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611: मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19148. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611: मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा महोत्सव-विवरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा महोत्सव-विवरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19149. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611: मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19150. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611: मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ महोत्सव-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ महोत्सव-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19151. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611: मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19152. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611मे मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि रिपोर्ताज, महोत्सव-विवरण आ “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1920, सूचकांक पंक्ति 611मे मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि रिपोर्ताज, महोत्सव-विवरण आ “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1921 : विदेह-सदेह 8 — पूनम मण्डल: जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य...

प्रश्न 19153. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612: पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 612मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19154. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612: पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पुरस्कार-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पुरस्कार-रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19155. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612: पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साहित्य सम्मान

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साहित्य सम्मान

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साहित्य सम्मान” अछि।

प्रश्न 19156. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612: पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण

उत्तर: घ. ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” अछि।

प्रश्न 19157. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612: पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19158. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612: पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा पुरस्कार-रिपोर्ताज, उप-विधा साहित्य सम्मान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा पुरस्कार-रिपोर्ताज, उप-विधा साहित्य सम्मान

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19159. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612: पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19160. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612: पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”कें विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साहित्य सम्मानक रूपमे पुरस्कार-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साहित्य सम्मानक रूपमे पुरस्कार-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19161. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612: पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19162. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612मे पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-रिपोर्ताज, साहित्य सम्मान आ “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1921, सूचकांक पंक्ति 612मे पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-रिपोर्ताज, साहित्य सम्मान आ “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1922 : विदेह-सदेह 8 — मनोज कुमार मण्डल: "बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन

प्रश्न 19163. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613: मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 613मे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19164. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613: मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मंचन-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मंचन-रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “मंचन-रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19165. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613: मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सिल थियेटर

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सिल थियेटर

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सिल थियेटर” अछि।

प्रश्न 19166. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613: मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पितृ-संकट

उत्तर: घ. पितृ-संकट

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृ-संकट” अछि।

प्रश्न 19167. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613: मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पितृ-संकट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पितृ-संकट

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृ-संकट” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19168. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613: मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19169. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613: मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19170. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613: मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”केँ विदेह-सदेह 8क मंचन-रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19171. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613: मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19172. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613मे मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “पितृ-संकट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1922, सूचकांक पंक्ति 613मे मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “पितृ-संकट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1923 : विदेह-सदेह 8 — मनोज कुमार मण्डल: "अधिकार" नाटक – सिल मंचन

प्रश्न 19173. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614: मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "अधिकार" नाटक – सिल मंचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "अधिकार" नाटक – सिल मंचन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 614मे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19174. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614: मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. मंचन-रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. मंचन-रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “मंचन-रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19175. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614: मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सिल थियेटर

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सिल थियेटर

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सिल थियेटर” अछि।

प्रश्न 19176. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614: मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष

उत्तर: घ. अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” अछि।

प्रश्न 19177. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614: मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19178. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614: मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19179. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614: मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19180. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614: मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”केँ विदेह-सदेह 8क मंचन-रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19181. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614: मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19182. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614मे मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1923, सूचकांक पंक्ति 614मे मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1924 : विदेह-सदेह 8 — बृषेश चन्द्र लाल: तितिया प्रस्तुति

प्रश्न 19183. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615: बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तितिया प्रस्तुति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तितिया प्रस्तुति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 615मे बृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “तितिया प्रस्तुति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19184. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615: बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रिपोर्ताज

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19185. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615: बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सांस्कृतिक प्रस्तुति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सांस्कृतिक प्रस्तुति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सांस्कृतिक प्रस्तुति” अछि।

प्रश्न 19186. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615: बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन

उत्तर: घ. रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” अछि।

प्रश्न 19187. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615: बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19188. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615: बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा सांस्कृतिक प्रस्तुति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा सांस्कृतिक प्रस्तुति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19189. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615: बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19190. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615: बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सांस्कृतिक प्रस्तुतिक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सांस्कृतिक प्रस्तुतिक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19191. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615: बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19192. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615मे बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि रिपोर्ताज, सांस्कृतिक प्रस्तुति आ “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1924, सूचकांक पंक्ति 615मे बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि रिपोर्ताज, सांस्कृतिक प्रस्तुति आ “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1925 : विदेह-सदेह 9 — गजेन्द्र ठाकूर: शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

प्रश्न 19193. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616: गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 616मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19194. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616: गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19195. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616: गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना/प्रस्तावना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना/प्रस्तावना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना/प्रस्तावना” अछि।

प्रश्न 19196. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616: गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भरतमुनिक रससिद्धान्त – बाल-हृदयसंवाद

उत्तर: घ. भरतमुनिक रससिद्धान्त – बाल-हृदयसंवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भरतमुनिक रससिद्धान्त – बाल-हृदयसंवाद” अछि।

प्रश्न 19197. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616: गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भरतमुनिक रससिद्धान्त – बाल-हृदयसंवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भरतमुनिक रससिद्धान्त – बाल-हृदयसंवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भरतमुनिक रससिद्धान्त – बाल-हृदयसंवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19198. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616: गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना/प्रस्तावना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना/प्रस्तावना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19199. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616: गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19200. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616: गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र”केँ विदेह-सदेह 9क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचना/प्रस्तावनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचना/प्रस्तावनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19201. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616: गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19202. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616मे गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि गद्य, समालोचना/प्रस्तावना आ “भरतमुनिक रससिद्धान्त – बाल-हृदयसंवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1925, सूचकांक पंक्ति 616मे गजेन्द्र ठाकूरक “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि गद्य, समालोचना/प्रस्तावना आ “भरतमुनिक रससिद्धान्त – बाल-हृदयसंवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1926 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: ध्वनि-प्रतिध्वनि

प्रश्न 19203. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617: ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ध्वनि-प्रतिध्वनि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ध्वनि-प्रतिध्वनि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 617मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “ध्वनि-प्रतिध्वनि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19204. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617: ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कहानी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कहानी

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कहानी” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19205. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617: ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चेतना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चेतना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चेतना” अछि।

प्रश्न 19206. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617: ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ध्वनि-प्रतिध्वनि – वैदिक उपमा

उत्तर: घ. ध्वनि-प्रतिध्वनि – वैदिक उपमा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ध्वनि-प्रतिध्वनि – वैदिक उपमा” अछि।

प्रश्न 19207. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617: ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ध्वनि-प्रतिध्वनि – वैदिक उपमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ध्वनि-प्रतिध्वनि – वैदिक उपमा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ध्वनि-प्रतिध्वनि – वैदिक उपमा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19208. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617: ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कहानी, उप-विधा बाल-चेतना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कहानी, उप-विधा बाल-चेतना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19209. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617: ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19210. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617: ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि”केँ विदेह-सदेह 9क कहानी-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चेतनाक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चेतनाक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19211. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617: ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19212. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617मे ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि” प्रविष्टि कहानी, बाल-चेतना आ “ध्वनि-प्रतिध्वनि – वैदिक उपमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1926, सूचकांक पंक्ति 617मे ज्योति सुनीत चौधरीक “ध्वनि-प्रतिध्वनि” प्रविष्टि कहानी, बाल-चेतना आ “ध्वनि-प्रतिध्वनि – वैदिक उपमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1927 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: अदृश्य बन्धन

प्रश्न 19213. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618: ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अदृश्य बन्धन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अदृश्य बन्धन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 618मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “अदृश्य बन्धन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19214. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618: ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कहानी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कहानी

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कहानी” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19215. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618: ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-मनोविज्ञान

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 19216. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618: ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माया-भ्रामकता

उत्तर: घ. माया-भ्रामकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माया-भ्रामकता” अछि।

प्रश्न 19217. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618: ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माया-भ्रामकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माया-भ्रामकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माया-भ्रामकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19218. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618: ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कहानी, उप-विधा बाल-मनोविज्ञान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कहानी, उप-विधा बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19219. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618: ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19220. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618: ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन”केँ विदेह-सदेह 9क कहानी-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-मनोविज्ञानक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-मनोविज्ञानक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19221. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618: ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19222. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618मे ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन” प्रविष्टि कहानी, बाल-मनोविज्ञान आ “माया-भ्रामकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1927, सूचकांक पंक्ति 618मे ज्योति सुनीत चौधरीक “अदृश्य बन्धन” प्रविष्टि कहानी, बाल-मनोविज्ञान आ “माया-भ्रामकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1928 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी

प्रश्न 19223. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 619मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19224. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19225. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शिशु-साहित्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शिशु-साहित्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शिशु-साहित्य” अछि।

प्रश्न 19226. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोभ-परिणाम

उत्तर: घ. लोभ-परिणाम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोभ-परिणाम” अछि।

प्रश्न 19227. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोभ-परिणाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोभ-परिणाम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोभ-परिणाम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19228. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लोककथा, उप-विधा शिशु-साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लोककथा, उप-विधा शिशु-साहित्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19229. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19230. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शिशु-साहित्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शिशु-साहित्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19231. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19232. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619मे ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी” प्रविष्टि लोककथा, शिशु-साहित्य आ “लोभ-परिणाम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1928, सूचकांक पंक्ति 619मे ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – भलुनिया मौसी” प्रविष्टि लोककथा, शिशु-साहित्य आ “लोभ-परिणाम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1929 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल

प्रश्न 19233. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 620मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19234. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19235. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शिशु-साहित्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शिशु-साहित्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शिशु-साहित्य” अछि।

प्रश्न 19236. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मणि-अंगूठी प्रतीक

उत्तर: घ. मणि-अंगूठी प्रतीक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मणि-अंगूठी प्रतीक” अछि।

प्रश्न 19237. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेट्टेलहाइमक परीकथा-विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेट्टेलहाइमक परीकथा-विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेट्टेलहाइमक परीकथा-विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19238. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लोककथा, उप-विधा शिशु-साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लोककथा, उप-विधा शिशु-साहित्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19239. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19240. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शिशु-साहित्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शिशु-साहित्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19241. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19242. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620मे ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल” प्रविष्टि लोककथा, शिशु-साहित्य आ “बेट्टेलहाइमक परीकथा-विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1929, सूचकांक पंक्ति 620मे ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सित्रूरक पुल” प्रविष्टि लोककथा, शिशु-साहित्य आ “बेट्टेलहाइमक परीकथा-विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1930 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी

प्रश्न 19243. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 621मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19244. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19245. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शिशु-साहित्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शिशु-साहित्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शिशु-साहित्य” अछि।

प्रश्न 19246. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनुरणन-पुनरुद्धार

उत्तर: घ. अनुरणन-पुनरुद्धार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुरणन-पुनरुद्धार” अछि।

प्रश्न 19247. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लूकाच्सक ‘सामाजिक यथार्थ’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लूकाच्सक ‘सामाजिक यथार्थ’

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लूकाच्सक ‘सामाजिक यथार्थ’” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19248. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लोककथा, उप-विधा शिशु-साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लोककथा, उप-विधा शिशु-साहित्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19249. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19250. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शिशु-साहित्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शिशु-साहित्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19251. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19252. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621मे ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी” प्रविष्टि लोककथा, शिशु-साहित्य आ “लूकाच्सक ‘सामाजिक यथार्थ’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1930, सूचकांक पंक्ति 621मे ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – एक राजाक सात मेहरी” प्रविष्टि लोककथा, शिशु-साहित्य आ “लूकाच्सक ‘सामाजिक यथार्थ’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1931 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि

प्रश्न 19253. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 622मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19254. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19255. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शिशु-साहित्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शिशु-साहित्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शिशु-साहित्य” अछि।

प्रश्न 19256. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बुद्धि-पराक्रम (नारी)

उत्तर: घ. बुद्धि-पराक्रम (नारी)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बुद्धि-पराक्रम (नारी)” अछि।

प्रश्न 19257. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बुद्धि-पराक्रम (नारी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुद्धि-पराक्रम (नारी)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बुद्धि-पराक्रम (नारी)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19258. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लोककथा, उप-विधा शिशु-साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लोककथा, उप-विधा शिशु-साहित्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19259. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19260. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शिशु-साहित्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शिशु-साहित्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19261. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19262. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622मे ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि” प्रविष्टि लोककथा, शिशु-साहित्य आ “बुद्धि-पराक्रम (नारी)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1931, सूचकांक पंक्ति 622मे ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – पन्साया कुमरि” प्रविष्टि लोककथा, शिशु-साहित्य आ “बुद्धि-पराक्रम (नारी)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1932 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: नानीक खिस्सा – सुहान बोन

प्रश्न 19263. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नानीक खिस्सा – सुहान बोन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नानीक खिस्सा – सुहान बोन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 623मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “नानीक खिस्सा – सुहान बोन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19264. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19265. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शिशु-साहित्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शिशु-साहित्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शिशु-साहित्य” अछि।

प्रश्न 19266. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राक्षसी-विजय (असत्य पर सत्य)

उत्तर: घ. राक्षसी-विजय (असत्य पर सत्य)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राक्षसी-विजय (असत्य पर सत्य)” अछि।

प्रश्न 19267. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राक्षसी-विजय (असत्य पर सत्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राक्षसी-विजय (असत्य पर सत्य)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राक्षसी-विजय (असत्य पर सत्य)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19268. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लोककथा, उप-विधा शिशु-साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लोककथा, उप-विधा शिशु-साहित्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19269. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19270. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शिशु-साहित्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शिशु-साहित्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19271. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623: ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19272. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623मे ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन” प्रविष्टि लोककथा, शिशु-साहित्य आ “राक्षसी-विजय (असत्य पर सत्य)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1932, सूचकांक पंक्ति 623मे ज्योति सुनीत चौधरीक “नानीक खिस्सा – सुहान बोन” प्रविष्टि लोककथा, शिशु-साहित्य आ “राक्षसी-विजय (असत्य पर सत्य)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1933 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: राहुलजी एक नजरिमे

प्रश्न 19273. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624: ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राहुलजी एक नजरिमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राहुलजी एक नजरिमे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 624मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “राहुलजी एक नजरिमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19274. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624: ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19275. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624: ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-जीवनी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-जीवनी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-जीवनी” अछि।

प्रश्न 19276. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624: ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ज्ञान-यात्रा, भ्रमणकथा

उत्तर: घ. ज्ञान-यात्रा, भ्रमणकथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ज्ञान-यात्रा, भ्रमणकथा” अछि।

प्रश्न 19277. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624: ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ज्ञान-यात्रा, भ्रमणकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्ञान-यात्रा, भ्रमणकथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ज्ञान-यात्रा, भ्रमणकथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19278. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624: ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लेख, उप-विधा बाल-जीवनी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लेख, उप-विधा बाल-जीवनी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19279. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624: ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19280. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624: ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-जीवनीक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-जीवनीक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19281. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624: ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19282. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624मे ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि लेख, बाल-जीवनी आ “ज्ञान-यात्रा, भ्रमणकथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1933, सूचकांक पंक्ति 624मे ज्योति सुनीत चौधरीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि लेख, बाल-जीवनी आ “ज्ञान-यात्रा, भ्रमणकथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1934 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: कैदी

प्रश्न 19283. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कैदी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कैदी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 625मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “कैदी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19284. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19285. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रेरणादायक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रेरणादायक” अछि।

प्रश्न 19286. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चित्रकारक चित्र-सत्य

उत्तर: घ. चित्रकारक चित्र-सत्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकारक चित्र-सत्य” अछि।

प्रश्न 19287. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चित्रकारक चित्र-सत्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्रकारक चित्र-सत्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकारक चित्र-सत्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19288. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लेख, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लेख, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19289. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19290. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19291. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19292. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625मे ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी” प्रविष्टि लेख, बाल-प्रेरणादायक आ “चित्रकारक चित्र-सत्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1934, सूचकांक पंक्ति 625मे ज्योति सुनीत चौधरीक “कैदी” प्रविष्टि लेख, बाल-प्रेरणादायक आ “चित्रकारक चित्र-सत्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1935 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: हमर प्रिये नेना भुटका

प्रश्न 19293. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626: ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर प्रिये नेना भुटका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर प्रिये नेना भुटका

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 626मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “हमर प्रिये नेना भुटका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19294. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626: ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19295. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626: ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चेतना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चेतना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चेतना” अछि।

प्रश्न 19296. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626: ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभाषाक महिमा (भरत ‘स्वभाषा-रस’)

उत्तर: घ. मातृभाषाक महिमा (भरत ‘स्वभाषा-रस’)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभाषाक महिमा (भरत ‘स्वभाषा-रस’)” अछि।

प्रश्न 19297. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626: ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृभाषाक महिमा (भरत ‘स्वभाषा-रस’)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभाषाक महिमा (भरत ‘स्वभाषा-रस’)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृभाषाक महिमा (भरत ‘स्वभाषा-रस’)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19298. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626: ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लेख, उप-विधा बाल-चेतना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा लेख, उप-विधा बाल-चेतना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19299. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626: ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19300. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626: ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चेतनाक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चेतनाक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19301. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626: ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19302. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626मे ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका” प्रविष्टि लेख, बाल-चेतना आ “मातृभाषाक महिमा (भरत ‘स्वभाषा-रस’)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1935, सूचकांक पंक्ति 626मे ज्योति सुनीत चौधरीक “हमर प्रिये नेना भुटका” प्रविष्टि लेख, बाल-चेतना आ “मातृभाषाक महिमा (भरत ‘स्वभाषा-रस’)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1936 : विदेह-सदेह 9 — ब्युटी कुमारी: राहुलजी एक नजरिमे

प्रश्न 19303. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राहुलजी एक नजरिमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राहुलजी एक नजरिमे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 627मे ब्युटी कुमारीक प्रविष्टि “राहुलजी एक नजरिमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19304. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19305. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-जीवनी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-जीवनी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-जीवनी” अछि।

प्रश्न 19306. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राहुल सांकृत्यायन – बाल-साहित्य हेतु आदर्श चरित

उत्तर: घ. राहुल सांकृत्यायन – बाल-साहित्य हेतु आदर्श चरित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राहुल सांकृत्यायन – बाल-साहित्य हेतु आदर्श चरित” अछि।

प्रश्न 19307. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राहुल सांकृत्यायन – बाल-साहित्य हेतु आदर्श चरित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राहुल सांकृत्यायन – बाल-साहित्य हेतु आदर्श चरित

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राहुल सांकृत्यायन – बाल-साहित्य हेतु आदर्श चरित” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19308. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ब्युटी कुमारी, विधा लेख, उप-विधा बाल-जीवनी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ब्युटी कुमारी, विधा लेख, उप-विधा बाल-जीवनी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19309. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19310. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-जीवनीक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-जीवनीक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19311. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19312. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627मे ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि लेख, बाल-जीवनी आ “राहुल सांकृत्यायन – बाल-साहित्य हेतु आदर्श चरित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1936, सूचकांक पंक्ति 627मे ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि लेख, बाल-जीवनी आ “राहुल सांकृत्यायन – बाल-साहित्य हेतु आदर्श चरित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1937 : विदेह-सदेह 9 — भावना नवीन: हमर प्रिये नेना भुटका

प्रश्न 19313. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628: भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर प्रिये नेना भुटका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर प्रिये नेना भुटका

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 628मे भावना नवीनक प्रविष्टि “हमर प्रिये नेना भुटका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19314. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628: भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19315. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628: भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चेतना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चेतना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चेतना” अछि।

प्रश्न 19316. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628: भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभाषा-प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी-मैथिली संवाद

उत्तर: घ. मातृभाषा-प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी-मैथिली संवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभाषा-प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी-मैथिली संवाद” अछि।

प्रश्न 19317. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628: भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृभाषा-प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी-मैथिली संवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभाषा-प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी-मैथिली संवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृभाषा-प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी-मैथिली संवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19318. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628: भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भावना नवीन, विधा लेख, उप-विधा बाल-चेतना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भावना नवीन, विधा लेख, उप-विधा बाल-चेतना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19319. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628: भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19320. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628: भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चेतनाक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चेतनाक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19321. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628: भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19322. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628मे भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका” प्रविष्टि लेख, बाल-चेतना आ “मातृभाषा-प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी-मैथिली संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1937, सूचकांक पंक्ति 628मे भावना नवीनक “हमर प्रिये नेना भुटका” प्रविष्टि लेख, बाल-चेतना आ “मातृभाषा-प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी-मैथिली संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1938 : विदेह-सदेह 9 — शबनम श्री: कंप्यूटरक खेल

प्रश्न 19323. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629: शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कंप्यूटरक खेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कंप्यूटरक खेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 629मे शबनम श्रीक प्रविष्टि “कंप्यूटरक खेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19324. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629: शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19325. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629: शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शैक्षिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शैक्षिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शैक्षिक” अछि।

प्रश्न 19326. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629: शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पियाजेक आपरेशनल अवस्था – कम्प्यूटर सीखल

उत्तर: घ. पियाजेक आपरेशनल अवस्था – कम्प्यूटर सीखल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पियाजेक आपरेशनल अवस्था – कम्प्यूटर सीखल” अछि।

प्रश्न 19327. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629: शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पियाजेक आपरेशनल अवस्था – कम्प्यूटर सीखल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पियाजेक आपरेशनल अवस्था – कम्प्यूटर सीखल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पियाजेक आपरेशनल अवस्था – कम्प्यूटर सीखल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19328. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629: शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शबनम श्री, विधा लेख, उप-विधा बाल-शैक्षिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शबनम श्री, विधा लेख, उप-विधा बाल-शैक्षिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19329. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629: शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19330. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629: शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शैक्षिकक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शैक्षिकक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19331. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629: शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19332. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629मे शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल” प्रविष्टि लेख, बाल-शैक्षिक आ “पियाजेक आपरेशनल अवस्था – कम्प्यूटर सीखल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1938, सूचकांक पंक्ति 629मे शबनम श्रीक “कंप्यूटरक खेल” प्रविष्टि लेख, बाल-शैक्षिक आ “पियाजेक आपरेशनल अवस्था – कम्प्यूटर सीखल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1939 : विदेह-सदेह 9 — डॉ. रमण झा: गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

प्रश्न 19333. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630: डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 630मे डॉ. रमण झाक प्रविष्टि “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19334. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630: डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. समीक्षा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “समीक्षा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19335. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630: डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-पुस्तक-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-पुस्तक-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-पुस्तक-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 19336. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630: डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चित्र-कथा परम्परा

उत्तर: घ. चित्र-कथा परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्र-कथा परम्परा” अछि।

प्रश्न 19337. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630: डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चित्र-कथा परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्र-कथा परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्र-कथा परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19338. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630: डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. रमण झा, विधा समीक्षा, उप-विधा बाल-पुस्तक-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. रमण झा, विधा समीक्षा, उप-विधा बाल-पुस्तक-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19339. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630: डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19340. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630: डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”केँ विदेह-सदेह 9क समीक्षा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-पुस्तक-समीक्षाक रूपमे समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-पुस्तक-समीक्षाक रूपमे समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19341. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630: डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19342. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630मे डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि समीक्षा, बाल-पुस्तक-समीक्षा आ “चित्र-कथा परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1939, सूचकांक पंक्ति 630मे डॉ. रमण झाक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि समीक्षा, बाल-पुस्तक-समीक्षा आ “चित्र-कथा परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1940 : विदेह-सदेह 9 — विनीत उत्पल: कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार

प्रश्न 19343. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631: विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 631मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19344. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631: विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19345. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631: विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-सिनेमा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-सिनेमा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-सिनेमा” अछि।

प्रश्न 19346. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631: विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-कलाकारक परिणति

उत्तर: घ. बाल-कलाकारक परिणति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-कलाकारक परिणति” अछि।

प्रश्न 19347. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631: विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-कलाकारक परिणति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-कलाकारक परिणति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-कलाकारक परिणति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19348. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631: विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा लेख, उप-विधा बाल-सिनेमा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा लेख, उप-विधा बाल-सिनेमा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19349. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631: विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19350. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631: विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-सिनेमाक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-सिनेमाक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19351. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631: विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19352. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631मे विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि लेख, बाल-सिनेमा आ “बाल-कलाकारक परिणति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1940, सूचकांक पंक्ति 631मे विनीत उत्पलक “कतए गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि लेख, बाल-सिनेमा आ “बाल-कलाकारक परिणति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1941 : विदेह-सदेह 9 — डॉ. अभ्यधारी सिंह: अभिनव वर्ष

प्रश्न 19353. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632: डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अभिनव वर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिनव वर्ष

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 632मे डॉ. अभ्यधारी सिंहक प्रविष्टि “अभिनव वर्ष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19354. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632: डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19355. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632: डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-जानकारी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-जानकारी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-जानकारी” अछि।

प्रश्न 19356. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632: डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विक्रम संवत्क प्राचीनता

उत्तर: घ. विक्रम संवत्क प्राचीनता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विक्रम संवत्क प्राचीनता” अछि।

प्रश्न 19357. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632: डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विक्रम संवत्क प्राचीनता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विक्रम संवत्क प्राचीनता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विक्रम संवत्क प्राचीनता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19358. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632: डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अभ्यधारी सिंह, विधा लेख, उप-विधा बाल-जानकारी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अभ्यधारी सिंह, विधा लेख, उप-विधा बाल-जानकारी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19359. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632: डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19360. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632: डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-जानकारीक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-जानकारीक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19361. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632: डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19362. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632मे डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष” प्रविष्टि लेख, बाल-जानकारी आ “विक्रम संवत्क प्राचीनता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1941, सूचकांक पंक्ति 632मे डॉ. अभ्यधारी सिंहक “अभिनव वर्ष” प्रविष्टि लेख, बाल-जानकारी आ “विक्रम संवत्क प्राचीनता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1942 : विदेह-सदेह 9 — अनमोल झा: एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर

प्रश्न 19363. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633: अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 633मे अनमोल झाक प्रविष्टि “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19364. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633: अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19365. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633: अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 19366. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633: अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य-व्यंग्य (ललित कला)

उत्तर: घ. हास्य-व्यंग्य (ललित कला)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य-व्यंग्य (ललित कला)” अछि।

प्रश्न 19367. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633: अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य-व्यंग्य (ललित कला)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य (ललित कला)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य-व्यंग्य (ललित कला)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19368. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633: अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19369. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633: अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19370. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633: अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर”केँ विदेह-सदेह 9क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-व्यंग्यक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-व्यंग्यक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19371. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633: अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19372. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633मे अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-व्यंग्य आ “हास्य-व्यंग्य (ललित कला)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1942, सूचकांक पंक्ति 633मे अनमोल झाक “एकटा बाल विहनि कथा – भण्डाफोर” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-व्यंग्य आ “हास्य-व्यंग्य (ललित कला)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1943 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: तरंगन देखाइए

प्रश्न 19373. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तरंगन देखाइए

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तरंगन देखाइए

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 634मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “तरंगन देखाइए” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19374. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19375. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-हास्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-हास्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-हास्य” अछि।

प्रश्न 19376. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-जीवन, कथा-प्रवाह

उत्तर: घ. लोक-जीवन, कथा-प्रवाह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-जीवन, कथा-प्रवाह” अछि।

प्रश्न 19377. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-जीवन, कथा-प्रवाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-जीवन, कथा-प्रवाह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-जीवन, कथा-प्रवाह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19378. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-हास्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-हास्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19379. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19380. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए”केँ विदेह-सदेह 9क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19381. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19382. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-हास्य आ “लोक-जीवन, कथा-प्रवाह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1943, सूचकांक पंक्ति 634मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन देखाइए” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-हास्य आ “लोक-जीवन, कथा-प्रवाह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1944 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: दहीक ठोप

प्रश्न 19383. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दहीक ठोप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहीक ठोप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 635मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “दहीक ठोप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19384. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19385. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-हास्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-हास्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-हास्य” अछि।

प्रश्न 19386. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्राम्य-व्यंग्य

उत्तर: घ. ग्राम्य-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम्य-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 19387. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्राम्य-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्राम्य-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम्य-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19388. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-हास्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-हास्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19389. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19390. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप”केँ विदेह-सदेह 9क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19391. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19392. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-हास्य आ “ग्राम्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1944, सूचकांक पंक्ति 635मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “दहीक ठोप” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-हास्य आ “ग्राम्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1945 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: खाँइछक लेल साडी

प्रश्न 19393. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खाँइछक लेल साडी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खाँइछक लेल साडी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 636मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “खाँइछक लेल साडी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19394. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19395. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-मार्मिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-मार्मिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-मार्मिक” अछि।

प्रश्न 19396. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-प्रेम, दीन-दर्शन

उत्तर: घ. मातृ-प्रेम, दीन-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-प्रेम, दीन-दर्शन” अछि।

प्रश्न 19397. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-प्रेम, दीन-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-प्रेम, दीन-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-प्रेम, दीन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19398. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-मार्मिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-मार्मिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19399. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19400. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी”केँ विदेह-सदेह 9क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-मार्मिकक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-मार्मिकक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19401. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19402. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-मार्मिक आ “मातृ-प्रेम, दीन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1945, सूचकांक पंक्ति 636मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “खाँइछक लेल साडी” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-मार्मिक आ “मातृ-प्रेम, दीन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1946 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: नारियल-गाछ

प्रश्न 19403. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “नारियल-गाछ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नारियल-गाछ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारियल-गाछ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 637मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “नारियल-गाछ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19404. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “नारियल-गाछ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19405. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “नारियल-गाछ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-संस्मरण” अछि।

प्रश्न 19406. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "नारियल-गाछ" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वृक्ष-संस्कार

उत्तर: घ. वृक्ष-संस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "वृक्ष-संस्कार" अछि।

प्रश्न 19407. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "नारियल-गाछ" प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वृक्ष-संस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृक्ष-संस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "वृक्ष-संस्कार" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19408. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "नारियल-गाछ"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19409. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "नारियल-गाछ" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19410. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "नारियल-गाछ"केँ विदेह-सदेह 9क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-संस्मरणक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-संस्मरणक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19411. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "नारियल-गाछ" प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19412. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “नारियल-गाछ” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-संस्मरण आ “वृक्ष-संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1946, सूचकांक पंक्ति 637मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “नारियल-गाछ” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-संस्मरण आ “वृक्ष-संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1947 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: मिथिलाक लोकदेवता

प्रश्न 19413. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “मिथिलाक लोकदेवता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक लोकदेवता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक लोकदेवता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 638मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “मिथिलाक लोकदेवता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19414. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “मिथिलाक लोकदेवता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19415. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “मिथिलाक लोकदेवता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-सांस्कृतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-सांस्कृतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-सांस्कृतिक” अछि।

प्रश्न 19416. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “मिथिलाक लोकदेवता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकदेवता-पूजा

उत्तर: घ. लोकदेवता-पूजा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकदेवता-पूजा” अछि।

प्रश्न 19417. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “मिथिलाक लोकदेवता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकदेवता-पूजा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकदेवता-पूजा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकदेवता-पूजा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19418. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मिथिलाक लोकदेवता"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा लेख, उप-विधा बाल-सांस्कृतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा लेख, उप-विधा बाल-सांस्कृतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19419. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मिथिलाक लोकदेवता" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19420. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मिथिलाक लोकदेवता"केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-सांस्कृतिकक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-सांस्कृतिकक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19421. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मिथिलाक लोकदेवता" प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19422. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मिथिलाक लोकदेवता" प्रविष्टि लेख, बाल-सांस्कृतिक आ "लोकदेवता-पूजा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1947, सूचकांक पंक्ति 638मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मिथिलाक लोकदेवता" प्रविष्टि लेख, बाल-सांस्कृतिक आ "लोकदेवता-पूजा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1948 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: तरंगन आनक बडाइ

प्रश्न 19423. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तरंगन आनक बडाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तरंगन आनक बडाइ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 639मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “तरंगन आनक बडाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19424. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. समीक्षा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “समीक्षा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19425. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-पुस्तक-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-पुस्तक-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-पुस्तक-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 19426. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘तरंगन’ – बाल-नैतिकता, कर्म-सिद्धान्त

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘तरंगन’ – बाल-नैतिकता, कर्म-सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘तरंगन’ – बाल-नैतिकता, कर्म-सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 19427. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘तरंगन’ – बाल-नैतिकता, कर्म-सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘तरंगन’ – बाल-नैतिकता, कर्म-सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘तरंगन’ – बाल-नैतिकता, कर्म-सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19428. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा समीक्षा, उप-विधा बाल-पुस्तक-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा समीक्षा, उप-विधा बाल-पुस्तक-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19429. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19430. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ”केँ विदेह-सदेह 9क समीक्षा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-पुस्तक-समीक्षाक रूपमे समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-पुस्तक-समीक्षाक रूपमे समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19431. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19432. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ” प्रविष्टि समीक्षा, बाल-पुस्तक-समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘तरंगन’ – बाल-नैतिकता, कर्म-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1948, सूचकांक पंक्ति 639मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “तरंगन आनक बडाइ” प्रविष्टि समीक्षा, बाल-पुस्तक-समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘तरंगन’ – बाल-नैतिकता, कर्म-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1949 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: साबरमती आश्रम

प्रश्न 19433. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “साबरमती आश्रम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साबरमती आश्रम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साबरमती आश्रम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 640मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “साबरमती आश्रम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19434. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "साबरमती आश्रम"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. यात्रा-संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. यात्रा-संस्मरण

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "यात्रा-संस्मरण" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19435. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "साबरमती आश्रम"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रेरणादायक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "बाल-प्रेरणादायक" अछि।

प्रश्न 19436. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "साबरमती आश्रम" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गाँधीजीक अहिंसा

उत्तर: घ. गाँधीजीक अहिंसा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "गाँधीजीक अहिंसा" अछि।

प्रश्न 19437. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "साबरमती आश्रम" प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गाँधीजीक अहिंसा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाँधीजीक अहिंसा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "गाँधीजीक अहिंसा" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19438. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "साबरमती आश्रम"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा यात्रा-संस्मरण, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा यात्रा-संस्मरण, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19439. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "साबरमती आश्रम" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19440. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “साबरमती आश्रम”कैं विदेह-सदेह 9क यात्रा-संस्मरण-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे यात्रा-संस्मरण-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे यात्रा-संस्मरण-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19441. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “साबरमती आश्रम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19442. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “साबरमती आश्रम” प्रविष्टि यात्रा-संस्मरण, बाल-प्रेरणादायक आ “गाँधीजीक अहिंसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1949, सूचकांक पंक्ति 640मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “साबरमती आश्रम” प्रविष्टि यात्रा-संस्मरण, बाल-प्रेरणादायक आ “गाँधीजीक अहिंसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1950 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: मूर्ख राजा आ ओकर बेटा

प्रश्न 19443. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “मूर्ख राजा आ ओकर बेटा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मूर्ख राजा आ ओकर बेटा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मूर्ख राजा आ ओकर बेटा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 641मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “मूर्ख राजा आ ओकर बेटा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19444. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “मूर्ख राजा आ ओकर बेटा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कहानी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कहानी

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “कहानी” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19445. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “मूर्ख राजा आ ओकर बेटा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिक्षाप्रद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिक्षाप्रद” अछि।

प्रश्न 19446. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मूर्ख राजा आ ओकर बेटा" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मूर्ख-राजा बिम्ब – कौटिल्य 'अर्थशास्त्र'

उत्तर: घ. मूर्ख-राजा बिम्ब – कौटिल्य 'अर्थशास्त्र'

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "मूर्ख-राजा बिम्ब – कौटिल्य 'अर्थशास्त्र'" अछि।

प्रश्न 19447. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मूर्ख राजा आ ओकर बेटा" प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरस्तू: करुणा-भय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरस्तू: करुणा-भय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "अरस्तू: करुणा-भय" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19448. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मूर्ख राजा आ ओकर बेटा"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा कहानी, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा कहानी, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19449. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मूर्ख राजा आ ओकर बेटा" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19450. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मूर्ख राजा आ ओकर बेटा"केँ विदेह-सदेह 9क कहानी-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19451. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "मूर्ख राजा आ ओकर बेटा" प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19452. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “मूर्ख राजा आ ओकर बेटा” प्रविष्टि कहानी, बाल-शिक्षाप्रद आ “अरस्तू: करुणा-भय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1950, सूचकांक पंक्ति 641मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “मूर्ख राजा आ ओकर बेटा” प्रविष्टि कहानी, बाल-शिक्षाप्रद आ “अरस्तू: करुणा-भय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1951 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: देश-प्रेम

प्रश्न 19453. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “देश-प्रेम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देश-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देश-प्रेम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 642मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “देश-प्रेम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19454. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “देश-प्रेम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कहानी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कहानी

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कहानी” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19455. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “देश-प्रेम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-देशभक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-देशभक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-देशभक्ति” अछि।

प्रश्न 19456. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “देश-प्रेम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रूस-जापान युद्ध – बलिदान

उत्तर: घ. रूस-जापान युद्ध – बलिदान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रूस-जापान युद्ध – बलिदान” अछि।

प्रश्न 19457. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “देश-प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रूस-जापान युद्ध – बलिदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रूस-जापान युद्ध – बलिदान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रूस-जापान युद्ध – बलिदान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19458. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "देश-प्रेम"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा कहानी, उप-विधा बाल-देशभक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा कहानी, उप-विधा बाल-देशभक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19459. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "देश-प्रेम" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19460. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "देश-प्रेम"केँ विदेह-सदेह 9क कहानी-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-देशभक्तिक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-देशभक्तिक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19461. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "देश-प्रेम" प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19462. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "देश-प्रेम" प्रविष्टि कहानी, बाल-देशभक्ति आ "रूस-जापान युद्ध – बलिदान" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1951, सूचकांक पंक्ति 642मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "देश-प्रेम" प्रविष्टि कहानी, बाल-देशभक्ति आ "रूस-जापान युद्ध – बलिदान" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1952 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

प्रश्न 19463. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 643मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19464. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. समीक्षा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “समीक्षा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19465. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-पुस्तक-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-पुस्तक-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-पुस्तक-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 19466. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रीति ठाकूर – शब्द-चित्र संवाद, पियाजेक दृश्य-सीख

उत्तर: घ. प्रीति ठाकूर – शब्द-चित्र संवाद, पियाजेक दृश्य-सीख

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रीति ठाकूर – शब्द-चित्र संवाद, पियाजेक दृश्य-सीख” अछि।

प्रश्न 19467. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रीति ठाकूर – शब्द-चित्र संवाद, पियाजेक दृश्य-सीख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रीति ठाकूर – शब्द-चित्र संवाद, पियाजेक दृश्य-सीख

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रीति ठाकूर – शब्द-चित्र संवाद, पियाजेक दृश्य-सीख” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19468. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा समीक्षा, उप-विधा बाल-पुस्तक-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा समीक्षा, उप-विधा बाल-पुस्तक-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19469. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19470. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”केँ विदेह-सदेह 9क समीक्षा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-पुस्तक-समीक्षाक रूपमे समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-पुस्तक-समीक्षाक रूपमे समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19471. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19472. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि समीक्षा, बाल-पुस्तक-समीक्षा आ “प्रीति ठाकूर – शब्द-चित्र संवाद, पियाजेक दृश्य-सीख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1952, सूचकांक पंक्ति 643मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि समीक्षा, बाल-पुस्तक-समीक्षा आ “प्रीति ठाकूर – शब्द-चित्र संवाद, पियाजेक दृश्य-सीख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1953 : विदेह-सदेह 9 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: बाल दिवस

प्रश्न 19473. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “बाल दिवस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल दिवस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल दिवस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 644मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “बाल दिवस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19474. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "बाल दिवस"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "लेख" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19475. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "बाल दिवस"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-जानकारी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-जानकारी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "बाल-जानकारी" अछि।

प्रश्न 19476. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "बाल दिवस" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेहरू – बाल-मैत्री, विज्ञान-प्रेम

उत्तर: घ. नेहरू – बाल-मैत्री, विज्ञान-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "नेहरू – बाल-मैत्री, विज्ञान-प्रेम" अछि।

प्रश्न 19477. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "बाल दिवस" प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेहरू – बाल-मैत्री, विज्ञान-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेहरू – बाल-मैत्री, विज्ञान-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "नेहरू – बाल-मैत्री, विज्ञान-प्रेम" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19478. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "बाल दिवस"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा लेख, उप-विधा बाल-जानकारी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा लेख, उप-विधा बाल-जानकारी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19479. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क "बाल दिवस" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19480. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “बाल दिवस”कैं विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-जानकारीक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-जानकारीक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19481. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “बाल दिवस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19482. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “बाल दिवस” प्रविष्टि लेख, बाल-जानकारी आ “नेहरू – बाल-मैत्री, विज्ञान-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1953, सूचकांक पंक्ति 644मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “बाल दिवस” प्रविष्टि लेख, बाल-जानकारी आ “नेहरू – बाल-मैत्री, विज्ञान-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1954 : विदेह-सदेह 9 — शेफालिका वर्मा: विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)

प्रश्न 19483. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645: शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 645मे शेफालिका वर्माक प्रविष्टि “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19484. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645: शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19485. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645: शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिक्षाप्रद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिक्षाप्रद” अछि।

प्रश्न 19486. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645: शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘आसनम प्रभु चालन’ – छल-भेद

उत्तर: घ. ‘आसनम प्रभु चालन’ – छल-भेद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘आसनम प्रभु चालन’ – छल-भेद” अछि।

प्रश्न 19487. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645: शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘आसनम प्रभु चालन’ – छल-भेद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘आसनम प्रभु चालन’ – छल-भेद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘आसनम प्रभु चालन’ – छल-भेद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19488. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645: शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शेफालिका वर्मा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शेफालिका वर्मा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19489. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645: शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19490. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645: शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19491. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645: शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19492. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645मे शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “‘आसनम प्रभु चालन’ – छल-भेद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1954, सूचकांक पंक्ति 645मे शेफालिका वर्माक “विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “‘आसनम प्रभु चालन’ – छल-भेद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1955 : विदेह-सदेह 9 — शेफालिका वर्मा: पथ दर्शन

प्रश्न 19493. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646: शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पथ दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पथ दर्शन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 646मे शेफालिका वर्माक प्रविष्टि “पथ दर्शन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19494. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646: शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19495. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646: शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिक्षाप्रद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिक्षाप्रद” अछि।

प्रश्न 19496. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646: शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-गीत ‘आवारा’ पर व्यंग्य – सांस्कृतिक पतन

उत्तर: घ. बाल-गीत ‘आवारा’ पर व्यंग्य – सांस्कृतिक पतन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-गीत ‘आवारा’ पर व्यंग्य – सांस्कृतिक पतन” अछि।

प्रश्न 19497. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646: शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-गीत ‘आवारा’ पर व्यंग्य – सांस्कृतिक पतन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-गीत ‘आवारा’ पर व्यंग्य – सांस्कृतिक पतन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-गीत ‘आवारा’ पर व्यंग्य – सांस्कृतिक पतन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19498. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646: शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शेफालिका वर्मा, विधा लेख, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शेफालिका वर्मा, विधा लेख, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19499. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646: शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19500. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646: शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19501. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646: शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19502. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646मे शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन” प्रविष्टि लेख, बाल-शिक्षाप्रद आ “बाल-गीत ‘आवारा’ पर व्यंग्य – सांस्कृतिक पतन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1955, सूचकांक पंक्ति 646मे शेफालिका वर्माक “पथ दर्शन” प्रविष्टि लेख, बाल-शिक्षाप्रद आ “बाल-गीत ‘आवारा’ पर व्यंग्य – सांस्कृतिक पतन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1956 : विदेह-सदेह 9 — पवनकान्त झा: बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप

प्रश्न 19503. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647: पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 647मे पवनकान्त झाक प्रविष्टि “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19504. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647: पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19505. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647: पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिक्षाप्रद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिक्षाप्रद” अछि।

प्रश्न 19506. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647: पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सहस्रमुख दीप (कल्पना-यथार्थ)

उत्तर: घ. सहस्रमुख दीप (कल्पना-यथार्थ)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सहस्रमुख दीप (कल्पना-यथार्थ)” अछि।

प्रश्न 19507. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647: पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सहस्रमुख दीप (कल्पना-यथार्थ)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सहस्रमुख दीप (कल्पना-यथार्थ)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सहस्रमुख दीप (कल्पना-यथार्थ)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19508. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647: पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19509. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647: पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19510. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647: पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19511. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647: पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19512. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647मे पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “सहस्रमुख दीप (कल्पना-यथार्थ)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1956, सूचकांक पंक्ति 647मे पवनकान्त झाक “बाबूक सुनाएल खिस्सा – सहस्मुखक दीप” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “सहस्रमुख दीप (कल्पना-यथार्थ)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1957 : विदेह-सदेह 9 — पवनकान्त झा: गप्पक अर्थ

प्रश्न 19513. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648: पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गप्पक अर्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गप्पक अर्थ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 648मे पवनकान्त झाक प्रविष्टि “गप्पक अर्थ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19514. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648: पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19515. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648: पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिक्षाप्रद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिक्षाप्रद” अछि।

प्रश्न 19516. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648: पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नटुआक गीत – संयम

उत्तर: घ. नटुआक गीत – संयम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नटुआक गीत – संयम” अछि।

प्रश्न 19517. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648: पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरस्तू: कथानक-बोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरस्तू: कथानक-बोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरस्तू: कथानक-बोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19518. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648: पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19519. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648: पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19520. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648: पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19521. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648: पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19522. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648मे पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “अरस्तू: कथानक-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1957, सूचकांक पंक्ति 648मे पवनकान्त झाक “गप्पक अर्थ” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “अरस्तू: कथानक-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1958 : विदेह-सदेह 9 — पवनकान्त झा: जिहियासँ काल धेलक

प्रश्न 19523. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649: पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जिहियासँ काल धेलक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जिहियासँ काल धेलक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 649मे पवनकान्त झाक प्रविष्टि “जिहियासँ काल धेलक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19524. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649: पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19525. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649: पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 19526. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649: पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ज्योतिषी-साँप – व्यंग्य-शिक्षा

उत्तर: घ. ज्योतिषी-साँप – व्यंग्य-शिक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ज्योतिषी-साँप – व्यंग्य-शिक्षा” अछि।

प्रश्न 19527. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649: पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ज्योतिषी-साँप – व्यंग्य-शिक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्योतिषी-साँप – व्यंग्य-शिक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ज्योतिषी-साँप – व्यंग्य-शिक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19528. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649: पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19529. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649: पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19530. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649: पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-व्यंग्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-व्यंग्यक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19531. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649: पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19532. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649मे पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक” प्रविष्टि लोककथा, बाल-व्यंग्य आ “ज्योतिषी-साँप – व्यंग्य-शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1958, सूचकांक पंक्ति 649मे पवनकान्त झाक “जिहियासँ काल धेलक” प्रविष्टि लोककथा, बाल-व्यंग्य आ “ज्योतिषी-साँप – व्यंग्य-शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1959 : विदेह-सदेह 9 — पवनकान्त झा: नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?

प्रश्न 19533. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650: पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 650मे पवनकान्त झाक प्रविष्टि “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19534. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650: पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19535. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650: पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिक्षाप्रद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिक्षाप्रद” अछि।

प्रश्न 19536. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650: पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पण्डित-राजकुमार

उत्तर: घ. पण्डित-राजकुमार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पण्डित-राजकुमार” अछि।

प्रश्न 19537. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650: पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पण्डित-राजकुमार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पण्डित-राजकुमार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पण्डित-राजकुमार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19538. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650: पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19539. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650: पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19540. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650: पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19541. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650: पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19542. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650मे पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “पण्डित-राजकुमार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1959, सूचकांक पंक्ति 650मे पवनकान्त झाक “नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “पण्डित-राजकुमार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1960 : विदेह-सदेह 9 — पवनकान्त झा: पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी

प्रश्न 19543. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651: पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 651मे पवनकान्त झाक प्रविष्टि “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19544. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651: पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19545. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651: पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिक्षाप्रद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिक्षाप्रद” अछि।

प्रश्न 19546. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651: पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कण-कणमे भगवान – व्यवहार-ज्ञान

उत्तर: घ. कण-कणमे भगवान – व्यवहार-ज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कण-कणमे भगवान – व्यवहार-ज्ञान” अछि।

प्रश्न 19547. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651: पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कण-कणमे भगवान – व्यवहार-ज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कण-कणमे भगवान – व्यवहार-ज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कण-कणमे भगवान – व्यवहार-ज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19548. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651: पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19549. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651: पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19550. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651: पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19551. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651: पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19552. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651मे पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “कण-कणमे भगवान – व्यवहार-ज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1960, सूचकांक पंक्ति 651मे पवनकान्त झाक “पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “कण-कणमे भगवान – व्यवहार-ज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1961 : विदेह-सदेह 9 — पवनकान्त झा: अकलक मोल

प्रश्न 19553. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652: पवनकान्त झाक “अकलक मोल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अकलक मोल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकलक मोल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 652मे पवनकान्त झाक प्रविष्टि “अकलक मोल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19554. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652: पवनकान्त झाक “अकलक मोल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19555. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652: पवनकान्त झाक “अकलक मोल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिक्षाप्रद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिक्षाप्रद” अछि।

प्रश्न 19556. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652: पवनकान्त झाक “अकलक मोल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वृद्ध-युवा मंत्री – प्रज्ञा-परीक्षा

उत्तर: घ. वृद्ध-युवा मंत्री – प्रज्ञा-परीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वृद्ध-युवा मंत्री – प्रज्ञा-परीक्षा” अछि।

प्रश्न 19557. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652: पवनकान्त झाक “अकलक मोल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वृद्ध-युवा मंत्री – प्रज्ञा-परीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृद्ध-युवा मंत्री – प्रज्ञा-परीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृद्ध-युवा मंत्री – प्रज्ञा-परीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19558. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652: पवनकान्त झाक “अकलक मोल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पवनकान्त झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19559. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652: पवनकान्त झाक “अकलक मोल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19560. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652: पवनकान्त झाक “अकलक मोल”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19561. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652: पवनकान्त झाक “अकलक मोल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19562. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652मे पवनकान्त झाक “अकलक मोल” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “वृद्ध-युवा मंत्री – प्रज्ञा-परीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1961, सूचकांक पंक्ति 652मे पवनकान्त झाक “अकलक मोल” प्रविष्टि लोककथा, बाल-शिक्षाप्रद आ “वृद्ध-युवा मंत्री – प्रज्ञा-परीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1962 : विदेह-सदेह 9 — गंगेश गुंजन: लाट साहेबक किरानी

प्रश्न 19563. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लाट साहेबक किरानी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाट साहेबक किरानी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 653मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “लाट साहेबक किरानी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19564. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19565. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 19566. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भिखारी-व्यवस्था

उत्तर: घ. भिखारी-व्यवस्था

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भिखारी-व्यवस्था” अछि।

प्रश्न 19567. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भिखारी-व्यवस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भिखारी-व्यवस्था

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भिखारी-व्यवस्था” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19568. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19569. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19570. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी”केँ विदेह-सदेह 9क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-व्यंग्यक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-व्यंग्यक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19571. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19572. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653मे गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-व्यंग्य आ “भिखारी-व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1962, सूचकांक पंक्ति 653मे गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-व्यंग्य आ “भिखारी-व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1963 : विदेह-सदेह 9 — दुर्गानन्द मण्डल: पारस

प्रश्न 19573. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654: दुर्गानन्द मण्डलक “पारस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पारस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 654मे दुर्गानन्द मण्डलक प्रविष्टि “पारस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19574. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654: दुर्गानन्द मण्डलक “पारस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19575. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654: दुर्गानन्द मण्डलक “पारस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रेरणादायक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रेरणादायक” अछि।

प्रश्न 19576. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654: दुर्गानन्द मण्डलक “पारस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चायबला पारस – विद्या-अर्जन

उत्तर: घ. चायबला पारस – विद्या-अर्जन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चायबला पारस – विद्या-अर्जन” अछि।

प्रश्न 19577. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654: दुर्गानन्द मण्डलक “पारस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चायबला पारस – विद्या-अर्जन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चायबला पारस – विद्या-अर्जन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चायबला पारस – विद्या-अर्जन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19578. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654: दुर्गानन्द मण्डलक “पारस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19579. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654: दुर्गानन्द मण्डलक “पारस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19580. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654: दुर्गानन्द मण्डलक “पारस”केँ विदेह-सदेह 9क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19581. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654: दुर्गानन्द मण्डलक “पारस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19582. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654मे दुर्गानन्द मण्डलक “पारस” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-प्रेरणादायक आ “चायबला पारस – विद्या-अर्जन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1963, सूचकांक पंक्ति 654मे दुर्गानन्द मण्डलक “पारस” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-प्रेरणादायक आ “चायबला पारस – विद्या-अर्जन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1964 : विदेह-सदेह 9 — दुर्गानन्द मण्डल: राखी

प्रश्न 19583. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655: दुर्गानन्द मण्डलक “राखी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राखी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राखी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 655मे दुर्गानन्द मण्डलक प्रविष्टि “राखी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19584. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655: दुर्गानन्द मण्डलक “राखी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19585. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655: दुर्गानन्द मण्डलक “राखी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-सांस्कृतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-सांस्कृतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-सांस्कृतिक” अछि।

प्रश्न 19586. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655: दुर्गानन्द मण्डलक “राखी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रक्षा-बन्धन – संस्कार

उत्तर: घ. रक्षा-बन्धन – संस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रक्षा-बन्धन – संस्कार” अछि।

प्रश्न 19587. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655: दुर्गानन्द मण्डलक “राखी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रक्षा-बन्धन – संस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रक्षा-बन्धन – संस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रक्षा-बन्धन – संस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19588. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655: दुर्गानन्द मण्डलक “राखी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा लेख, उप-विधा बाल-सांस्कृतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा लेख, उप-विधा बाल-सांस्कृतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19589. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655: दुर्गानन्द मण्डलक “राखी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19590. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655: दुर्गानन्द मण्डलक “राखी”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-सांस्कृतिकक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-सांस्कृतिकक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19591. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655: दुर्गानन्द मण्डलक “राखी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19592. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655मे दुर्गानन्द मण्डलक “राखी” प्रविष्टि लेख, बाल-सांस्कृतिक आ “रक्षा-बन्धन – संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1964, सूचकांक पंक्ति 655मे दुर्गानन्द मण्डलक “राखी” प्रविष्टि लेख, बाल-सांस्कृतिक आ “रक्षा-बन्धन – संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1965 : विदेह-सदेह 9 — दुर्गानन्द मण्डल: स्वतंत्रता दिवस

प्रश्न 19593. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656: दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्वतंत्रता दिवस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वतंत्रता दिवस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 656मे दुर्गानन्द मण्डलक प्रविष्टि “स्वतंत्रता दिवस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19594. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656: दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19595. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656: दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-देशभक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-देशभक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-देशभक्ति” अछि।

प्रश्न 19596. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656: दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भ्रष्टाचार-व्यंग्य, राजनीति-पाखंड

उत्तर: घ. भ्रष्टाचार-व्यंग्य, राजनीति-पाखंड

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार-व्यंग्य, राजनीति-पाखंड” अछि।

प्रश्न 19597. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656: दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भ्रष्टाचार-व्यंग्य, राजनीति-पाखंड

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचार-व्यंग्य, राजनीति-पाखंड

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार-व्यंग्य, राजनीति-पाखंड” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19598. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656: दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा लेख, उप-विधा बाल-देशभक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा लेख, उप-विधा बाल-देशभक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19599. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656: दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19600. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656: दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-देशभक्तिक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-देशभक्तिक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19601. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656: दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19602. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656मे दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस” प्रविष्टि लेख, बाल-देशभक्ति आ “भ्रष्टाचार-व्यंग्य, राजनीति-पाखंड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1965, सूचकांक पंक्ति 656मे दुर्गानन्द मण्डलक “स्वतंत्रता दिवस” प्रविष्टि लेख, बाल-देशभक्ति आ “भ्रष्टाचार-व्यंग्य, राजनीति-पाखंड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1966 : विदेह-सदेह 9 — नवीन ठाकूर: चंदा मामा आ चंद्रमा

प्रश्न 19603. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657: नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चंदा मामा आ चंद्रमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चंदा मामा आ चंद्रमा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 657मे नवीन ठाकूरक प्रविष्टि “चंदा मामा आ चंद्रमा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19604. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657: नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19605. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657: नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-वैज्ञानिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-वैज्ञानिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-वैज्ञानिक” अछि।

प्रश्न 19606. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657: नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चन्दा-मामा परीकथा

उत्तर: घ. चन्दा-मामा परीकथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चन्दा-मामा परीकथा” अछि।

प्रश्न 19607. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657: नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चन्दा-मामा परीकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चन्दा-मामा परीकथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चन्दा-मामा परीकथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19608. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657: नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन ठाकूर, विधा कविता, उप-विधा बाल-वैज्ञानिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन ठाकूर, विधा कविता, उप-विधा बाल-वैज्ञानिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19609. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657: नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19610. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657: नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-वैज्ञानिकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-वैज्ञानिकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19611. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657: नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19612. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657मे नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा” प्रविष्टि कविता, बाल-वैज्ञानिक आ “चन्दा-मामा परीकथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1966, सूचकांक पंक्ति 657मे नवीन ठाकूरक “चंदा मामा आ चंद्रमा” प्रविष्टि कविता, बाल-वैज्ञानिक आ “चन्दा-मामा परीकथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1967 : विदेह-सदेह 9 — विपिन कुमार झा: ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?

प्रश्न 19613. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658: विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 658मे विपिन कुमार झाक प्रविष्टि “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19614. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658: विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोककथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोककथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19615. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658: विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-दार्शनिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-दार्शनिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 19616. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658: विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ब्रह्मा-वनराज संवाद

उत्तर: घ. ब्रह्मा-वनराज संवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ब्रह्मा-वनराज संवाद” अछि।

प्रश्न 19617. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658: विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ब्रह्मा-वनराज संवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ब्रह्मा-वनराज संवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ब्रह्मा-वनराज संवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19618. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658: विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विपिन कुमार झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-दार्शनिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विपिन कुमार झा, विधा लोककथा, उप-विधा बाल-दार्शनिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19619. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658: विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19620. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658: विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?”केँ विदेह-सदेह 9क लोककथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-दार्शनिकक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-दार्शनिकक रूपमे लोककथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19621. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658: विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19622. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658मे विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?” प्रविष्टि लोककथा, बाल-दार्शनिक आ “ब्रह्मा-वनराज संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1967, सूचकांक पंक्ति 658मे विपिन कुमार झाक “ऐ चराचर जगत मे मनुक्ख के?” प्रविष्टि लोककथा, बाल-दार्शनिक आ “ब्रह्मा-वनराज संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1968 : विदेह-सदेह 9 — अनिल मल्लिक: दादीक गीत

प्रश्न 19623. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659: अनिल मल्लिकक “दादीक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दादीक गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दादीक गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 659मे अनिल मल्लिकक प्रविष्टि “दादीक गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19624. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659: अनिल मल्लिकक “दादीक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लोकगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लोकगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लोकगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19625. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659: अनिल मल्लिकक “दादीक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-लोकसाहित्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-लोकसाहित्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-लोकसाहित्य” अछि।

प्रश्न 19626. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659: अनिल मल्लिकक “दादीक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘उठू फूलकुमैर रानी’ – ग्राम-संस्कार

उत्तर: घ. ‘उठू फूलकुमैर रानी’ – ग्राम-संस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘उठू फूलकुमैर रानी’ – ग्राम-संस्कार” अछि।

प्रश्न 19627. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659: अनिल मल्लिकक “दादीक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘उठू फूलकुमैर रानी’ – ग्राम-संस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘उठू फूलकुमैर रानी’ – ग्राम-संस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘उठू फूलकुमैर रानी’ – ग्राम-संस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19628. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659: अनिल मल्लिकक “दादीक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनिल मल्लिक, विधा लोकगीत, उप-विधा बाल-लोकसाहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनिल मल्लिक, विधा लोकगीत, उप-विधा बाल-लोकसाहित्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19629. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659: अनिल मल्लिकक “दादीक गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19630. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659: अनिल मल्लिकक “दादीक गीत”केँ विदेह-सदेह 9क लोकगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-लोकसाहित्यक रूपमे लोकगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-लोकसाहित्यक रूपमे लोकगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19631. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659: अनिल मल्लिकक “दादीक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19632. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659मे अनिल मल्लिकक “दादीक गीत” प्रविष्टि लोकगीत, बाल-लोकसाहित्य आ “‘उठू फूलकुमैर रानी’ – ग्राम-संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1968, सूचकांक पंक्ति 659मे अनिल मल्लिकक “दादीक गीत” प्रविष्टि लोकगीत, बाल-लोकसाहित्य आ “‘उठू फूलकुमैर रानी’ – ग्राम-संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1969 : विदेह-सदेह 9 — बृषेश चन्द्र लाल: गोलबा

प्रश्न 19633. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गोलबा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोलबा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 660मे बृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “गोलबा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19634. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कहानी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कहानी

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कहानी” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19635. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-मार्मिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-मार्मिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-मार्मिक” अछि।

प्रश्न 19636. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गोलबा (बकरा) – बलिदान

उत्तर: घ. गोलबा (बकरा) – बलिदान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गोलबा (बकरा) – बलिदान” अछि।

प्रश्न 19637. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गोलबा (बकरा) – बलिदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोलबा (बकरा) – बलिदान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गोलबा (बकरा) – बलिदान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19638. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा कहानी, उप-विधा बाल-मार्मिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा कहानी, उप-विधा बाल-मार्मिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19639. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19640. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा”केँ विदेह-सदेह 9क कहानी-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-मार्मिकक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-मार्मिकक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19641. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19642. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660मे बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा” प्रविष्टि कहानी, बाल-मार्मिक आ “गोलबा (बकरा) – बलिदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1969, सूचकांक पंक्ति 660मे बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा” प्रविष्टि कहानी, बाल-मार्मिक आ “गोलबा (बकरा) – बलिदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1970 : विदेह-सदेह 9 — बृषेश चन्द्र लाल: एकदन्त हाथी आ नौलखा हार

प्रश्न 19643. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661: बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकदन्त हाथी आ नौलखा हार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकदन्त हाथी आ नौलखा हार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 661मे बृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19644. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661: बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कहानी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कहानी

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कहानी” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19645. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661: बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-ऐतिहासिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-ऐतिहासिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-ऐतिहासिक” अछि।

प्रश्न 19646. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661: बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री-अस्मिता, दहेज-विरोध

उत्तर: घ. स्त्री-अस्मिता, दहेज-विरोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-अस्मिता, दहेज-विरोध” अछि।

प्रश्न 19647. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661: बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19648. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661: बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा कहानी, उप-विधा बाल-ऐतिहासिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा कहानी, उप-विधा बाल-ऐतिहासिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19649. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661: बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19650. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661: बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार”केँ विदेह-सदेह 9क कहानी-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-ऐतिहासिकक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-ऐतिहासिकक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19651. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661: बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19652. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661मे बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार” प्रविष्टि कहानी, बाल-ऐतिहासिक आ “नारी-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1970, सूचकांक पंक्ति 661मे बृषेश चन्द्र लालक “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार” प्रविष्टि कहानी, बाल-ऐतिहासिक आ “नारी-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1971 : विदेह-सदेह 9 — जगदानन्द झा ‘मनु’: चोनहा

प्रश्न 19653. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662: जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चोनहा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चोनहा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 662मे जगदानन्द झा ‘मनु’क प्रविष्टि “चोनहा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19654. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662: जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कहानी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कहानी

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कहानी” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19655. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662: जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-सामाजिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-सामाजिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-सामाजिक” अछि।

प्रश्न 19656. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662: जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आँखि-कमजोरी, माता-पिताक उपेक्षा – पियाजे

उत्तर: घ. आँखि-कमजोरी, माता-पिताक उपेक्षा – पियाजे

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आँखि-कमजोरी, माता-पिताक उपेक्षा – पियाजे” अछि।

प्रश्न 19657. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662: जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आँखि-कमजोरी, माता-पिताक उपेक्षा – पियाजे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आँखि-कमजोरी, माता-पिताक उपेक्षा – पियाजे

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आँखि-कमजोरी, माता-पिताक उपेक्षा – पियाजे” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19658. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662: जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा कहानी, उप-विधा बाल-सामाजिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा कहानी, उप-विधा बाल-सामाजिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19659. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662: जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19660. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662: जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा”केँ विदेह-सदेह 9क कहानी-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-सामाजिकक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-सामाजिकक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19661. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662: जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19662. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा” प्रविष्टि कहानी, बाल-सामाजिक आ “आँखि-कमजोरी, माता-पिताक उपेक्षा – पियाजे” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1971, सूचकांक पंक्ति 662मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “चोनहा” प्रविष्टि कहानी, बाल-सामाजिक आ “आँखि-कमजोरी, माता-पिताक उपेक्षा – पियाजे” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1972 : विदेह-सदेह 9 — जगदीश प्रसाद मण्डल: बुद्धिया दादी

प्रश्न 19663. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663: जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुद्धिया दादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुद्धिया दादी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 663मे जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रविष्टि “बुद्धिया दादी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19664. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663: जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19665. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663: जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-हास्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-हास्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-हास्य” अछि।

प्रश्न 19666. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663: जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दादी-पोता – सजमनियाँ तोड़ा

उत्तर: घ. दादी-पोता – सजमनियाँ तोड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दादी-पोता – सजमनियाँ तोड़ा” अछि।

प्रश्न 19667. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663: जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19668. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663: जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-हास्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-हास्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19669. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663: जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19670. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663: जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी”केँ विदेह-सदेह 9क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19671. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663: जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19672. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-हास्य आ “लोक-हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1972, सूचकांक पंक्ति 663मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “बुद्धिया दादी” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-हास्य आ “लोक-हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1973 : विदेह-सदेह 9 — जगदीश प्रसाद मण्डल: मान

प्रश्न 19673. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664: जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 664मे जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रविष्टि “मान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19674. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664: जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19675. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664: जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-सामाजिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-सामाजिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-सामाजिक” अछि।

प्रश्न 19676. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664: जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘आद्रा’ – कर्म-ईमानदारी

उत्तर: घ. ‘आद्रा’ – कर्म-ईमानदारी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘आद्रा’ – कर्म-ईमानदारी” अछि।

प्रश्न 19677. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664: जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘आद्रा’ – कर्म-ईमानदारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘आद्रा’ – कर्म-ईमानदारी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘आद्रा’ – कर्म-ईमानदारी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19678. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664: जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-सामाजिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा लघुकथा, उप-विधा बाल-सामाजिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19679. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664: जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19680. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664: जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान”केँ विदेह-सदेह 9क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-सामाजिकक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-सामाजिकक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19681. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664: जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19682. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-सामाजिक आ “‘आद्रा’ – कर्म-ईमानदारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1973, सूचकांक पंक्ति 664मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “मान” प्रविष्टि लघुकथा, बाल-सामाजिक आ “‘आद्रा’ – कर्म-ईमानदारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1974 : विदेह-सदेह 9 — गजेन्द्र ठाकूर: तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)

प्रश्न 19683. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665: गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 665मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19684. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665: गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. उपन्यास

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “उपन्यास” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19685. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665: गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-फंतासी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-फंतासी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-फंतासी” अछि।

प्रश्न 19686. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665: गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परीलोक – वैज्ञानिक-कल्पना

उत्तर: घ. परीलोक – वैज्ञानिक-कल्पना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परीलोक – वैज्ञानिक-कल्पना” अछि।

प्रश्न 19687. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665: गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परीलोक – वैज्ञानिक-कल्पना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परीलोक – वैज्ञानिक-कल्पना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परीलोक – वैज्ञानिक-कल्पना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19688. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665: गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा उपन्यास, उप-विधा बाल-फंतासी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा उपन्यास, उप-विधा बाल-फंतासी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19689. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665: गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19690. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665: गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)”केँ विदेह-सदेह 9क उपन्यास-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-फंतासीक रूपमे उपन्यास-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-फंतासीक रूपमे उपन्यास-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19691. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665: गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19692. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665मे गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)” प्रविष्टि उपन्यास, बाल-फंतासी आ “परीलोक – वैज्ञानिक-कल्पना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1974, सूचकांक पंक्ति 665मे गजेन्द्र ठाकूरक “तरहरिमे परीलोक (बाल उपन्यास)” प्रविष्टि उपन्यास, बाल-फंतासी आ “परीलोक – वैज्ञानिक-कल्पना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1975 : विदेह-सदेह 9 — दमन कुमार झा: हीरा-मोती

प्रश्न 19693. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666: दमन कुमार झाक “हीरा-मोती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हीरा-मोती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हीरा-मोती

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 666मे दमन कुमार झाक प्रविष्टि “हीरा-मोती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19694. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666: दमन कुमार झाक “हीरा-मोती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कहानी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कहानी

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कहानी” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19695. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666: दमन कुमार झाक “हीरा-मोती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिक्षाप्रद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिक्षाप्रद” अछि।

प्रश्न 19696. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666: दमन कुमार झाक “हीरा-मोती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सत्य-रुपी हीरा, प्रेम-रुपी मोती – सदाचार

उत्तर: घ. सत्य-रुपी हीरा, प्रेम-रुपी मोती – सदाचार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सत्य-रुपी हीरा, प्रेम-रुपी मोती – सदाचार” अछि।

प्रश्न 19697. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666: दमन कुमार झाक “हीरा-मोती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सत्य-रुपी हीरा, प्रेम-रुपी मोती – सदाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सत्य-रुपी हीरा, प्रेम-रुपी मोती – सदाचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सत्य-रुपी हीरा, प्रेम-रुपी मोती – सदाचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19698. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666: दमन कुमार झाक “हीरा-मोती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दमन कुमार झा, विधा कहानी, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दमन कुमार झा, विधा कहानी, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19699. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666: दमन कुमार झाक “हीरा-मोती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19700. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666: दमन कुमार झाक “हीरा-मोती”केँ विदेह-सदेह 9क कहानी-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे कहानी-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19701. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666: दमन कुमार झाक “हीरा-मोती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19702. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666मे दमन कुमार झाक “हीरा-मोती” प्रविष्टि कहानी, बाल-शिक्षाप्रद आ “सत्य-रुपी हीरा, प्रेम-रुपी मोती – सदाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1975, सूचकांक पंक्ति 666मे दमन कुमार झाक “हीरा-मोती” प्रविष्टि कहानी, बाल-शिक्षाप्रद आ “सत्य-रुपी हीरा, प्रेम-रुपी मोती – सदाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1976 : विदेह-सदेह 9 — डॉ. शिशिधर कुमार: दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष

प्रश्न 19703. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667: डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 667मे डॉ. शिशिधर कुमारक प्रविष्टि “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19704. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667: डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19705. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667: डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-भूगोल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-भूगोल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-भूगोल” अछि।

प्रश्न 19706. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667: डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अण्टाकंटिका – वैज्ञानिक-रोमांच

उत्तर: घ. अण्टाकंटिका – वैज्ञानिक-रोमांच

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अण्टाकंटिका – वैज्ञानिक-रोमांच” अछि।

प्रश्न 19707. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667: डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अण्टाकंटिका – वैज्ञानिक-रोमांच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अण्टाकंटिका – वैज्ञानिक-रोमांच

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अण्टाकंटिका – वैज्ञानिक-रोमांच” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19708. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667: डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शिशिधर कुमार, विधा लेख, उप-विधा बाल-भूगोल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शिशिधर कुमार, विधा लेख, उप-विधा बाल-भूगोल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19709. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667: डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19710. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667: डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष”केँ विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-भूगोलक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-भूगोलक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19711. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667: डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19712. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667मे डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष” प्रविष्टि लेख, बाल-भूगोल आ “अण्टाकंटिका – वैज्ञानिक-रोमांच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1976, सूचकांक पंक्ति 667मे डॉ. शिशिधर कुमारक “दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष” प्रविष्टि लेख, बाल-भूगोल आ “अण्टाकंटिका – वैज्ञानिक-रोमांच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1977 : विदेह-सदेह 9 — डॉ. शिशिधर कुमार: उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम

प्रश्न 19713. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668: डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 668मे डॉ. शिशिधर कुमारक प्रविष्टि “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19714. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668: डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेख

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19715. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668: डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्राणी-विज्ञान

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्राणी-विज्ञान

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्राणी-विज्ञान” अछि।

प्रश्न 19716. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668: डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. न उड़ेबला पक्षी – जीव-वैविध्य

उत्तर: घ. न उड़ेबला पक्षी – जीव-वैविध्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “न उड़ेबला पक्षी – जीव-वैविध्य” अछि।

प्रश्न 19717. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668: डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. न उड़ेबला पक्षी – जीव-वैविध्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. न उड़ेबला पक्षी – जीव-वैविध्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “न उड़ेबला पक्षी – जीव-वैविध्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19718. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668: डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शिशिधर कुमार, विधा लेख, उप-विधा बाल-प्राणी-विज्ञान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शिशिधर कुमार, विधा लेख, उप-विधा बाल-प्राणी-विज्ञान

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19719. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668: डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19720. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668: डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम”कैं विदेह-सदेह 9क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्राणी-विज्ञानक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्राणी-विज्ञानक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19721. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668: डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19722. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668मे डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम” प्रविष्टि लेख, बाल-प्राणी-विज्ञान आ “न उड़ेबला पक्षी – जीव-वैविध्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1977, सूचकांक पंक्ति 668मे डॉ. शिशिधर कुमारक “उड़ै ने सकी पर उड़ै छी हम” प्रविष्टि लेख, बाल-प्राणी-विज्ञान आ “न उड़ेबला पक्षी – जीव-वैविध्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1978 : विदेह-सदेह 9 — — (सामूहिक/अनाम): चल रॉकेट उड़ान भर

प्रश्न 19723. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669: — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चल रॉकेट उड़ान भर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चल रॉकेट उड़ान भर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 669मे — (सामूहिक/अनाम)क प्रविष्टि “चल रॉकेट उड़ान भर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19724. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669: — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बालगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बालगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “बालगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19725. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669: — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कविता” अछि।

प्रश्न 19726. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669: — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रॉकेट-चाँद – कल्पना-विज्ञान

उत्तर: घ. रॉकेट-चाँद – कल्पना-विज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रॉकेट-चाँद – कल्पना-विज्ञान” अछि।

प्रश्न 19727. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669: — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रॉकेट-चाँद – कल्पना-विज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रॉकेट-चाँद – कल्पना-विज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रॉकेट-चाँद – कल्पना-विज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19728. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669: — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक — (सामूहिक/अनाम), विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक — (सामूहिक/अनाम), विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19729. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669: — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19730. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669: — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर”केँ विदेह-सदेह 9क बालगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19731. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669: — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19732. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669मे — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “रॉकेट-चाँद – कल्पना-विज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1978, सूचकांक पंक्ति 669मे — (सामूहिक/अनाम)क “चल रॉकेट उड़ान भर” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “रॉकेट-चाँद – कल्पना-विज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1979 : विदेह-सदेह 9 — पंकज कुमार झा: माए गइ माए

प्रश्न 19733. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670: पंकज कुमार झाक “माए गइ माए” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माए गइ माए

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माए गइ माए

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 670मे पंकज कुमार झाक प्रविष्टि “माए गइ माए” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19734. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670: पंकज कुमार झाक “माए गइ माए”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बालगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बालगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “बालगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19735. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670: पंकज कुमार झाक “माए गइ माए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कविता” अछि।

प्रश्न 19736. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670: पंकज कुमार झाक “माए गइ माए” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माँ-पुकार – लोक-विविधता

उत्तर: घ. माँ-पुकार – लोक-विविधता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माँ-पुकार – लोक-विविधता” अछि।

प्रश्न 19737. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670: पंकज कुमार झाक “माए गइ माए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माँ-पुकार – लोक-विविधता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँ-पुकार – लोक-विविधता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माँ-पुकार – लोक-विविधता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19738. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670: पंकज कुमार झाक “माए गइ माए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज कुमार झा, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज कुमार झा, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19739. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670: पंकज कुमार झाक “माए गइ माए” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19740. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670: पंकज कुमार झाक “माए गइ माए”केँ विदेह-सदेह 9क बालगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19741. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670: पंकज कुमार झाक “माए गइ माए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19742. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670मे पंकज कुमार झाक “माए गइ माए” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “माँ-पुकार – लोक-विविधता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1979, सूचकांक पंक्ति 670मे पंकज कुमार झाक “माए गइ माए” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “माँ-पुकार – लोक-विविधता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1980 : विदेह-सदेह 9 — गजेन्द्र ठाकूर: बड़द करैए दाउन ने यौ

प्रश्न 19743. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671: गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बड़द करैए दाउन ने यौ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बड़द करैए दाउन ने यौ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 671मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “बड़द करैए दाउन ने यौ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19744. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671: गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बालगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बालगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “बालगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19745. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671: गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कविता” अछि।

प्रश्न 19746. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671: गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पशु-पक्षी नाम – सीख

उत्तर: घ. पशु-पक्षी नाम – सीख

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पशु-पक्षी नाम – सीख” अछि।

प्रश्न 19747. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671: गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पशु-पक्षी नाम – सीख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पशु-पक्षी नाम – सीख

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पशु-पक्षी नाम – सीख” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19748. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671: गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19749. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671: गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19750. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671: गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ”कें विदेह-सदेह 9क बालगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19751. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671: गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19752. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671मे गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “पशु-पक्षी नाम – सीख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1980, सूचकांक पंक्ति 671मे गजेन्द्र ठाकूरक “बड़द करैए दाउन ने यौ” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “पशु-पक्षी नाम – सीख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1981 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: बालपन

प्रश्न 19753. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672: ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बालपन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बालपन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 672मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “बालपन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19754. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672: ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19755. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672: ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-संस्मरण” अछि।

प्रश्न 19756. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672: ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बचपनक बीतल पल – नॉस्टेल्जिया

उत्तर: घ. बचपनक बीतल पल – नॉस्टेल्जिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बचपनक बीतल पल – नॉस्टेल्जिया” अछि।

प्रश्न 19757. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672: ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बचपनक बीतल पल – नॉस्टेल्जिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बचपनक बीतल पल – नॉस्टेल्जिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बचपनक बीतल पल – नॉस्टेल्जिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19758. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672: ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कविता, उप-विधा बाल-संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कविता, उप-विधा बाल-संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19759. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672: ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19760. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672: ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-संस्मरणक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-संस्मरणक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19761. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672: ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19762. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672मे ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन” प्रविष्टि कविता, बाल-संस्मरण आ “बचपनक बीतल पल – नॉस्टेल्जिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1981, सूचकांक पंक्ति 672मे ज्योति सुनीत चौधरीक “बालपन” प्रविष्टि कविता, बाल-संस्मरण आ “बचपनक बीतल पल – नॉस्टेल्जिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1982 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: सैण्टाक अस्तित्व

प्रश्न 19763. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673: ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सैण्टाक अस्तित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सैण्टाक अस्तित्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 673मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “सैण्टाक अस्तित्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19764. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673: ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19765. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673: ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-दार्शनिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-दार्शनिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 19766. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673: ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांता-उपग्रह – सत्य-असत्य

उत्तर: घ. सांता-उपग्रह – सत्य-असत्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांता-उपग्रह – सत्य-असत्य” अछि।

प्रश्न 19767. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673: ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांता-उपग्रह – सत्य-असत्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांता-उपग्रह – सत्य-असत्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांता-उपग्रह – सत्य-असत्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19768. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673: ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कविता, उप-विधा बाल-दार्शनिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कविता, उप-विधा बाल-दार्शनिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19769. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673: ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19770. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673: ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-दार्शनिकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-दार्शनिकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19771. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673: ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19772. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673मे ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व” प्रविष्टि कविता, बाल-दार्शनिक आ “सांता-उपग्रह – सत्य-असत्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1982, सूचकांक पंक्ति 673मे ज्योति सुनीत चौधरीक “सैण्टाक अस्तित्व” प्रविष्टि कविता, बाल-दार्शनिक आ “सांता-उपग्रह – सत्य-असत्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1983 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: दलमा

प्रश्न 19773. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674: ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दलमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलमा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 674मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “दलमा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19774. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674: ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19775. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674: ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रकृति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रकृति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रकृति” अछि।

प्रश्न 19776. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674: ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हाथी-सैलानी – प्रकृति-संघर्ष

उत्तर: घ. हाथी-सैलानी – प्रकृति-संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हाथी-सैलानी – प्रकृति-संघर्ष” अछि।

प्रश्न 19777. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674: ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हाथी-सैलानी – प्रकृति-संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाथी-सैलानी – प्रकृति-संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हाथी-सैलानी – प्रकृति-संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19778. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674: ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19779. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674: ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19780. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674: ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19781. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674: ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19782. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674मे ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “हाथी-सैलानी – प्रकृति-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1983, सूचकांक पंक्ति 674मे ज्योति सुनीत चौधरीक “दलमा” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “हाथी-सैलानी – प्रकृति-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1984 : विदेह-सदेह 9 — जगदीश प्रसाद मण्डल: सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ

प्रश्न 19783. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675: जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 675मे जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रविष्टि “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19784. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675: जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19785. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675: जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रेरणादायक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रेरणादायक” अछि।

प्रश्न 19786. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675: जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-प्रेरणा-गीत

उत्तर: घ. बाल-प्रेरणा-गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-प्रेरणा-गीत” अछि।

प्रश्न 19787. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675: जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-प्रेरणा-गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-प्रेरणा-गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-प्रेरणा-गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19788. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675: जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19789. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675: जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19790. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675: जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19791. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675: जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19792. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रेरणादायक आ “बाल-प्रेरणा-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1984, सूचकांक पंक्ति 675मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रेरणादायक आ “बाल-प्रेरणा-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1985 : विदेह-सदेह 9 — जगदीश प्रसाद मण्डल: पुत्र-शपता सम्वाद

प्रश्न 19793. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पुत्र-शपता सम्वाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुत्र-शपता सम्वाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 676मे जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रविष्टि “पुत्र-शपता सम्वाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19794. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संवाद

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “संवाद” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19795. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-दार्शनिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-दार्शनिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 19796. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धर्म-पाप-विवेचना

उत्तर: घ. धर्म-पाप-विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धर्म-पाप-विवेचना” अछि।

प्रश्न 19797. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धर्म-पाप-विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धर्म-पाप-विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धर्म-पाप-विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19798. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा संवाद, उप-विधा बाल-दार्शनिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा संवाद, उप-विधा बाल-दार्शनिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19799. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19800. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद”केँ विदेह-सदेह 9क संवाद-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-दार्शनिकक रूपमे संवाद-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-दार्शनिकक रूपमे संवाद-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19801. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19802. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद” प्रविष्टि संवाद, बाल-दार्शनिक आ “धर्म-पाप-विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1985, सूचकांक पंक्ति 676मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “पुत्र-शपता सम्वाद” प्रविष्टि संवाद, बाल-दार्शनिक आ “धर्म-पाप-विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1986 : विदेह-सदेह 9 — डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’: बाल गीत

प्रश्न 19803. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677: डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 677मे डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क प्रविष्टि “बाल गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19804. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677: डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बालगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बालगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “बालगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19805. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677: डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-देशभक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-देशभक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-देशभक्ति” अछि।

प्रश्न 19806. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677: डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गंगा-हिमालय – देश-प्रेम

उत्तर: घ. गंगा-हिमालय – देश-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गंगा-हिमालय – देश-प्रेम” अछि।

प्रश्न 19807. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677: डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गंगा-हिमालय – देश-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गंगा-हिमालय – देश-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गंगा-हिमालय – देश-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19808. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677: डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-देशभक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-देशभक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19809. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677: डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19810. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677: डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत”केँ विदेह-सदेह 9क बालगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-देशभक्तिक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-देशभक्तिक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19811. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677: डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19812. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677मे डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत” प्रविष्टि बालगीत, बाल-देशभक्ति आ “गंगा-हिमालय – देश-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1986, सूचकांक पंक्ति 677मे डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’क “बाल गीत” प्रविष्टि बालगीत, बाल-देशभक्ति आ “गंगा-हिमालय – देश-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1987 : विदेह-सदेह 9 — संस्कृति वर्मा: कतए जाइ

प्रश्न 19813. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678: संस्कृति वर्माक “कतए जाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कतए जाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतए जाइ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 678मे संस्कृति वर्माक प्रविष्टि “कतए जाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19814. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678: संस्कृति वर्माक “कतए जाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19815. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678: संस्कृति वर्माक “कतए जाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-सामाजिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-सामाजिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-सामाजिक” अछि।

प्रश्न 19816. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678: संस्कृति वर्माक “कतए जाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दिल्ली-फ्लैट मे बच्चीक अकेलापन

उत्तर: घ. दिल्ली-फ्लैट मे बच्चीक अकेलापन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दिल्ली-फ्लैट मे बच्चीक अकेलापन” अछि।

प्रश्न 19817. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678: संस्कृति वर्माक “कतए जाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दिल्ली-फ्लैट मे बच्चीक अकेलापन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिल्ली-फ्लैट मे बच्चीक अकेलापन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दिल्ली-फ्लैट मे बच्चीक अकेलापन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19818. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678: संस्कृति वर्माक “कतए जाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संस्कृति वर्मा, विधा कविता, उप-विधा बाल-सामाजिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संस्कृति वर्मा, विधा कविता, उप-विधा बाल-सामाजिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19819. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678: संस्कृति वर्माक “कतए जाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19820. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678: संस्कृति वर्माक “कतए जाइ”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-सामाजिकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-सामाजिकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19821. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678: संस्कृति वर्माक “कतए जाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19822. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678मे संस्कृति वर्माक “कतए जाइ” प्रविष्टि कविता, बाल-सामाजिक आ “दिल्ली-फ्लैट मे बच्चीक अकेलापन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1987, सूचकांक पंक्ति 678मे संस्कृति वर्माक “कतए जाइ” प्रविष्टि कविता, बाल-सामाजिक आ “दिल्ली-फ्लैट मे बच्चीक अकेलापन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1988 : विदेह-सदेह 9 — अनमोल झा: अपन गाम

प्रश्न 19823. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679: अनमोल झाक “अपन गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 679मे अनमोल झाक प्रविष्टि “अपन गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19824. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679: अनमोल झाक “अपन गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19825. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679: अनमोल झाक “अपन गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-ग्राम्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-ग्राम्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-ग्राम्य” अछि।

प्रश्न 19826. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679: अनमोल झाक “अपन गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गाम-मामा गाम – बाल-दृष्टि

उत्तर: घ. गाम-मामा गाम – बाल-दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गाम-मामा गाम – बाल-दृष्टि” अछि।

प्रश्न 19827. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679: अनमोल झाक “अपन गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गाम-मामा गाम – बाल-दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम-मामा गाम – बाल-दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गाम-मामा गाम – बाल-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19828. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679: अनमोल झाक “अपन गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-ग्राम्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-ग्राम्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19829. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679: अनमोल झाक “अपन गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19830. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679: अनमोल झाक “अपन गाम”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-ग्राम्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-ग्राम्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19831. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679: अनमोल झाक “अपन गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19832. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679मे अनमोल झाक “अपन गाम” प्रविष्टि कविता, बाल-ग्राम्य आ “गाम-मामा गाम – बाल-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1988, सूचकांक पंक्ति 679मे अनमोल झाक “अपन गाम” प्रविष्टि कविता, बाल-ग्राम्य आ “गाम-मामा गाम – बाल-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1989 : विदेह-सदेह 9 — राजेश मोहन झा ‘गुंजन’: साओन कुमार

प्रश्न 19833. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680: राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साओन कुमार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साओन कुमार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 680मे राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क प्रविष्टि “साओन कुमार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19834. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680: राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19835. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680: राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रकृति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रकृति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रकृति” अछि।

प्रश्न 19836. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680: राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सावन-मेघ-दृश्य

उत्तर: घ. सावन-मेघ-दृश्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सावन-मेघ-दृश्य” अछि।

प्रश्न 19837. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680: राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सावन-मेघ-दृश्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सावन-मेघ-दृश्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सावन-मेघ-दृश्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19838. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680: राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश मोहन झा ‘गुंजन’, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश मोहन झा ‘गुंजन’, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19839. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680: राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19840. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680: राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19841. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680: राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19842. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680मे राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “सावन-मेघ-दृश्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1989, सूचकांक पंक्ति 680मे राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क “साओन कुमार” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “सावन-मेघ-दृश्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1990 : विदेह-सदेह 9 — राजेश मोहन झा: छुट्टी

प्रश्न 19843. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681: राजेश मोहन झाक “छुट्टी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छुट्टी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छुट्टी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 681मे राजेश मोहन झाक प्रविष्टि “छुट्टी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19844. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681: राजेश मोहन झाक “छुट्टी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19845. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681: राजेश मोहन झाक “छुट्टी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-छुट्टी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-छुट्टी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-छुट्टी” अछि।

प्रश्न 19846. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681: राजेश मोहन झाक “छुट्टी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छुट्टीक आनन्द

उत्तर: घ. छुट्टीक आनन्द

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छुट्टीक आनन्द” अछि।

प्रश्न 19847. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681: राजेश मोहन झाक “छुट्टी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छुट्टीक आनन्द

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छुट्टीक आनन्द

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छुट्टीक आनन्द” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19848. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681: राजेश मोहन झाक “छुट्टी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश मोहन झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-छुट्टी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश मोहन झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-छुट्टी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19849. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681: राजेश मोहन झाक “छुट्टी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19850. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681: राजेश मोहन झाक “छुट्टी”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-छुट्टीक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-छुट्टीक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19851. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681: राजेश मोहन झाक “छुट्टी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19852. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681मे राजेश मोहन झाक “छुट्टी” प्रविष्टि कविता, बाल-छुट्टी आ “छुट्टीक आनन्द” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1990, सूचकांक पंक्ति 681मे राजेश मोहन झाक “छुट्टी” प्रविष्टि कविता, बाल-छुट्टी आ “छुट्टीक आनन्द” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1991 : विदेह-सदेह 9 — शिव कुमार झा: पेटू गोलू

प्रश्न 19853. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682: शिव कुमार झाक “पेटू गोलू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पेटू गोलू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पेटू गोलू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 682मे शिव कुमार झाक प्रविष्टि “पेटू गोलू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19854. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682: शिव कुमार झाक “पेटू गोलू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19855. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682: शिव कुमार झाक “पेटू गोलू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-हास्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-हास्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-हास्य” अछि।

प्रश्न 19856. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682: शिव कुमार झाक “पेटू गोलू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पेटू-गोलू – आहार-व्यंग्य

उत्तर: घ. पेटू-गोलू – आहार-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पेटू-गोलू – आहार-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 19857. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682: शिव कुमार झाक “पेटू गोलू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पेटू-गोलू – आहार-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पेटू-गोलू – आहार-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पेटू-गोलू – आहार-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19858. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682: शिव कुमार झाक “पेटू गोलू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-हास्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-हास्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19859. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682: शिव कुमार झाक “पेटू गोलू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19860. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682: शिव कुमार झाक “पेटू गोलू”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19861. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682: शिव कुमार झाक “पेटू गोलू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19862. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682मे शिव कुमार झाक “पेटू गोलू” प्रविष्टि कविता, बाल-हास्य आ “पेटू-गोलू – आहार-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1991, सूचकांक पंक्ति 682मे शिव कुमार झाक “पेटू गोलू” प्रविष्टि कविता, बाल-हास्य आ “पेटू-गोलू – आहार-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1992 : विदेह-सदेह 9 — रमाकान्त राय रमा: उल्लूक शिकारी

प्रश्न 19863. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683: रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उल्लूक शिकारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उल्लूक शिकारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 683मे रमाकान्त राय रमाक प्रविष्टि “उल्लूक शिकारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19864. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683: रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19865. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683: रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-हास्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-हास्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-हास्य” अछि।

प्रश्न 19866. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683: रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उल्लू-शिकार – हास्य

उत्तर: घ. उल्लू-शिकार – हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उल्लू-शिकार – हास्य” अछि।

प्रश्न 19867. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683: रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उल्लू-शिकार – हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उल्लू-शिकार – हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उल्लू-शिकार – हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19868. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683: रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमाकान्त राय रमा, विधा कविता, उप-विधा बाल-हास्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमाकान्त राय रमा, विधा कविता, उप-विधा बाल-हास्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19869. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683: रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19870. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683: रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19871. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683: रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19872. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683मे रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी” प्रविष्टि कविता, बाल-हास्य आ “उल्लू-शिकार – हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1992, सूचकांक पंक्ति 683मे रमाकान्त राय रमाक “उल्लूक शिकारी” प्रविष्टि कविता, बाल-हास्य आ “उल्लू-शिकार – हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1993 : विदेह-सदेह 9 — मिथिलेश कुमार झा: बाबाक रोपल गाछ

प्रश्न 19873. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684: मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाबाक रोपल गाछ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबाक रोपल गाछ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 684मे मिथिलेश कुमार झाक प्रविष्टि “बाबाक रोपल गाछ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19874. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684: मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19875. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684: मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-ग्राम्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-ग्राम्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-ग्राम्य” अछि।

प्रश्न 19876. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684: मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाबाक आम पेड़ – संस्मरण

उत्तर: घ. बाबाक आम पेड़ – संस्मरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाबाक आम पेड़ – संस्मरण” अछि।

प्रश्न 19877. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684: मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाबाक आम पेड़ – संस्मरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबाक आम पेड़ – संस्मरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाबाक आम पेड़ – संस्मरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19878. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684: मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-ग्राम्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-ग्राम्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19879. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684: मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19880. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684: मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ”कें विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-ग्राम्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-ग्राम्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19881. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684: मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19882. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684मे मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ” प्रविष्टि कविता, बाल-ग्राम्य आ “बाबाक आम पेड़ – संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1993, सूचकांक पंक्ति 684मे मिथिलेश कुमार झाक “बाबाक रोपल गाछ” प्रविष्टि कविता, बाल-ग्राम्य आ “बाबाक आम पेड़ – संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1994 : विदेह-सदेह 9 — महाकान्त ठाकुर: सिनेहक सरगम

प्रश्न 19883. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685: महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सिनेहक सरगम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सिनेहक सरगम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 685मे महाकान्त ठाकुरक प्रविष्टि “सिनेहक सरगम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19884. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685: महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19885. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685: महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रेम

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रेम

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रेम” अछि।

प्रश्न 19886. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685: महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्नेह-प्रेम-भावना

उत्तर: घ. स्नेह-प्रेम-भावना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्नेह-प्रेम-भावना” अछि।

प्रश्न 19887. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685: महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्नेह-प्रेम-भावना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्नेह-प्रेम-भावना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्नेह-प्रेम-भावना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19888. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685: महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रेम

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रेम

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19889. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685: महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19890. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685: महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रेमक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रेमक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19891. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685: महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19892. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685मे महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रेम आ “स्नेह-प्रेम-भावना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1994, सूचकांक पंक्ति 685मे महाकान्त ठाकुरक “सिनेहक सरगम” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रेम आ “स्नेह-प्रेम-भावना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1995 : विदेह-सदेह 9 — महाकान्त ठाकुर: अपन भूमि

प्रश्न 19893. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686: महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन भूमि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन भूमि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 686मे महाकान्त ठाकुरक प्रविष्टि “अपन भूमि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19894. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686: महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19895. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686: महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-देशभक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-देशभक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-देशभक्ति” अछि।

प्रश्न 19896. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686: महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माटी-मोह

उत्तर: घ. माटी-मोह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माटी-मोह” अछि।

प्रश्न 19897. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686: महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माटी-मोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माटी-मोह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माटी-मोह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19898. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686: महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा कविता, उप-विधा बाल-देशभक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा कविता, उप-विधा बाल-देशभक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19899. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686: महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19900. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686: महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-देशभक्तिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-देशभक्तिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19901. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686: महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19902. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686मे महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि” प्रविष्टि कविता, बाल-देशभक्ति आ “माटी-मोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1995, सूचकांक पंक्ति 686मे महाकान्त ठाकुरक “अपन भूमि” प्रविष्टि कविता, बाल-देशभक्ति आ “माटी-मोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1996 : विदेह-सदेह 9 — महाकान्त ठाकुर: भोर पोख

प्रश्न 19903. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687: महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भोर पोख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोर पोख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 687मे महाकान्त ठाकुरक प्रविष्टि “भोर पोख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19904. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687: महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सूचकांकमे विधा रिक्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सूचकांकमे विधा रिक्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सूचकांकमे विधा रिक्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19905. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687: महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सूचकांकमे उप-विधा रिक्त” अछि।

प्रश्न 19906. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687: महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुख्य साहित्यिक संकेत

उत्तर: घ. मुख्य साहित्यिक संकेत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुख्य साहित्यिक संकेत” अछि।

प्रश्न 19907. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687: महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुख्य साहित्यिक संकेत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुख्य साहित्यिक संकेत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुख्य साहित्यिक संकेत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19908. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687: महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा सूचकांकमे विधा रिक्त, उप-विधा सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा सूचकांकमे विधा रिक्त, उप-विधा सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19909. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687: महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19910. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687: महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख”कें विदेह-सदेह 9क सूचकांकमे विधा रिक्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सूचकांकमे उप-विधा रिक्तक रूपमे सूचकांकमे विधा रिक्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सूचकांकमे उप-विधा रिक्तक रूपमे सूचकांकमे विधा रिक्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19911. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687: महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19912. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687मे महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख” प्रविष्टि सूचकांकमे विधा रिक्त, सूचकांकमे उप-विधा रिक्त आ “मुख्य साहित्यिक संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1996, सूचकांक पंक्ति 687मे महाकान्त ठाकुरक “भोर पोख” प्रविष्टि सूचकांकमे विधा रिक्त, सूचकांकमे उप-विधा रिक्त आ “मुख्य साहित्यिक संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1997 : विदेह-सदेह 9 — सुबह-पोखर।: सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त

प्रश्न 19913. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688: सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 688मे सुबह-पोखर।क प्रविष्टि “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19914. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688: सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सूचकांकमे विधा रिक्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सूचकांकमे विधा रिक्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “सूचकांकमे विधा रिक्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19915. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688: सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सूचकांकमे उप-विधा रिक्त” अछि।

प्रश्न 19916. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688: सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुख्य साहित्यिक संकेत

उत्तर: घ. मुख्य साहित्यिक संकेत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुख्य साहित्यिक संकेत” अछि।

प्रश्न 19917. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688: सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुख्य साहित्यिक संकेत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुख्य साहित्यिक संकेत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुख्य साहित्यिक संकेत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19918. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688: सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबह-पोखर।, विधा सूचकांकमे विधा रिक्त, उप-विधा सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबह-पोखर।, विधा सूचकांकमे विधा रिक्त, उप-विधा सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19919. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688: सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19920. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688: सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त”केँ विदेह-सदेह 9क सूचकांकमे विधा रिक्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सूचकांकमे उप-विधा रिक्तक रूपमे सूचकांकमे विधा रिक्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सूचकांकमे उप-विधा रिक्तक रूपमे सूचकांकमे विधा रिक्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19921. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688: सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19922. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688मे सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” प्रविष्टि सूचकांकमे विधा रिक्त, सूचकांकमे उप-विधा रिक्त आ “मुख्य साहित्यिक संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1997, सूचकांक पंक्ति 688मे सुबह-पोखर।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” प्रविष्टि सूचकांकमे विधा रिक्त, सूचकांकमे उप-विधा रिक्त आ “मुख्य साहित्यिक संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1998 : विदेह-सदेह 9 — महाकान्त ठाकुर: ज्ञान दीप

प्रश्न 19923. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689: महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ज्ञान दीप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्ञान दीप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 689मे महाकान्त ठाकुरक प्रविष्टि “ज्ञान दीप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19924. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689: महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19925. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689: महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिक्षाप्रद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिक्षाप्रद” अछि।

प्रश्न 19926. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689: महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ज्ञान-प्रकाश

उत्तर: घ. ज्ञान-प्रकाश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ज्ञान-प्रकाश” अछि।

प्रश्न 19927. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689: महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ज्ञान-प्रकाश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्ञान-प्रकाश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ज्ञान-प्रकाश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19928. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689: महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा कविता, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा कविता, उप-विधा बाल-शिक्षाप्रद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19929. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689: महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19930. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689: महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिक्षाप्रदक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19931. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689: महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19932. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689मे महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप” प्रविष्टि कविता, बाल-शिक्षाप्रद आ “ज्ञान-प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1998, सूचकांक पंक्ति 689मे महाकान्त ठाकुरक “ज्ञान दीप” प्रविष्टि कविता, बाल-शिक्षाप्रद आ “ज्ञान-प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 1999 : विदेह-सदेह 9 — डॉ. जया वर्मा: बेटी

प्रश्न 19933. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690: डॉ. जया वर्माक “बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 690मे डॉ. जया वर्माक प्रविष्टि “बेटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19934. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690: डॉ. जया वर्माक “बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19935. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690: डॉ. जया वर्माक “बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-नारी-चेतना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-नारी-चेतना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-नारी-चेतना” अछि।

प्रश्न 19936. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690: डॉ. जया वर्माक “बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटी-रक्षा-सम्मान

उत्तर: घ. बेटी-रक्षा-सम्मान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटी-रक्षा-सम्मान” अछि।

प्रश्न 19937. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690: डॉ. जया वर्माक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेटी-रक्षा-सम्मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी-रक्षा-सम्मान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटी-रक्षा-सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19938. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690: डॉ. जया वर्माक “बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. जया वर्मा, विधा कविता, उप-विधा बाल-नारी-चेतना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. जया वर्मा, विधा कविता, उप-विधा बाल-नारी-चेतना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19939. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690: डॉ. जया वर्माक “बेटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19940. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690: डॉ. जया वर्माक “बेटी”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-नारी-चेतनाक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-नारी-चेतनाक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19941. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690: डॉ. जया वर्माक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19942. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690मे डॉ. जया वर्माक “बेटी” प्रविष्टि कविता, बाल-नारी-चेतना आ “बेटी-रक्षा-सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 1999, सूचकांक पंक्ति 690मे डॉ. जया वर्माक “बेटी” प्रविष्टि कविता, बाल-नारी-चेतना आ “बेटी-रक्षा-सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2000 : विदेह-सदेह 9 — चन्द्रशेखर कामत: भात छै नाम-नाम

प्रश्न 19943. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691: चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भात छै नाम-नाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भात छै नाम-नाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 691मे चन्द्रशेखर कामतक प्रविष्टि “भात छै नाम-नाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19944. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691: चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बालगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बालगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “बालगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19945. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691: चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कविता” अछि।

प्रश्न 19946. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691: चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भात-दाल-तरकारी

उत्तर: घ. भात-दाल-तरकारी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भात-दाल-तरकारी” अछि।

प्रश्न 19947. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691: चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भात-दाल-तरकारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भात-दाल-तरकारी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भात-दाल-तरकारी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19948. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691: चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रशेखर कामत, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रशेखर कामत, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19949. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691: चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19950. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691: चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम”केँ विदेह-सदेह 9क बालगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19951. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691: चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19952. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691मे चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “भात-दाल-तरकारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2000, सूचकांक पंक्ति 691मे चन्द्रशेखर कामतक “भात छै नाम-नाम” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “भात-दाल-तरकारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2001 : विदेह-सदेह 9 — चन्द्रशेखर कामत: गीत (छल-छल-छल)

प्रश्न 19953. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692: चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत (छल-छल-छल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत (छल-छल-छल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 692मे चन्द्रशेखर कामतक प्रविष्टि “गीत (छल-छल-छल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19954. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692: चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बालगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बालगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “बालगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19955. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692: चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कविता” अछि।

प्रश्न 19956. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692: चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नानी-गाम

उत्तर: घ. नानी-गाम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नानी-गाम” अछि।

प्रश्न 19957. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692: चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नानी-गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नानी-गाम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नानी-गाम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19958. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692: चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रशेखर कामत, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रशेखर कामत, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19959. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692: चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19960. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692: चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)”केँ विदेह-सदेह 9क बालगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19961. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692: चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19962. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692मे चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “नानी-गाम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2001, सूचकांक पंक्ति 692मे चन्द्रशेखर कामतक “गीत (छल-छल-छल)” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “नानी-गाम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2002 : विदेह-सदेह 9 — डॉ. शिशिधर कुमार: हम फूल बनब, हम काँट बनब

प्रश्न 19963. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693: डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम फूल बनब, हम काँट बनब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम फूल बनब, हम काँट बनब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 693मे डॉ. शिशिधर कुमारक प्रविष्टि “हम फूल बनब, हम काँट बनब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19964. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693: डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19965. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693: डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रेरणादायक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रेरणादायक” अछि।

प्रश्न 19966. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693: डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. फूल-काँट – आत्म-शक्ति

उत्तर: घ. फूल-काँट – आत्म-शक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “फूल-काँट – आत्म-शक्ति” अछि।

प्रश्न 19967. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693: डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. फूल-काँट – आत्म-शक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फूल-काँट – आत्म-शक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “फूल-काँट – आत्म-शक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19968. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693: डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शिशिधर कुमार, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शिशिधर कुमार, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19969. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693: डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19970. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693: डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19971. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693: डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19972. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693मे डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रेरणादायक आ “फूल-काँट – आत्म-शक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2002, सूचकांक पंक्ति 693मे डॉ. शिशिधर कुमारक “हम फूल बनब, हम काँट बनब” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रेरणादायक आ “फूल-काँट – आत्म-शक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2003 : विदेह-सदेह 9 — सरे आलम गौहर: नेना भुटकाक कविता

प्रश्न 19973. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694: सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेना भुटकाक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेना भुटकाक कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 694मे सरे आलम गौहरक प्रविष्टि “नेना भुटकाक कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19974. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694: सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बालगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बालगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “बालगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19975. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694: सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कविता” अछि।

प्रश्न 19976. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694: सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्कूल-प्रेरणा

उत्तर: घ. स्कूल-प्रेरणा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्कूल-प्रेरणा” अछि।

प्रश्न 19977. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694: सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्कूल-प्रेरणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्कूल-प्रेरणा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्कूल-प्रेरणा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19978. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694: सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सरे आलम गौहर, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सरे आलम गौहर, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19979. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694: सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19980. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694: सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता”केँ विदेह-सदेह 9क बालगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19981. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694: सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19982. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694मे सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “स्कूल-प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2003, सूचकांक पंक्ति 694मे सरे आलम गौहरक “नेना भुटकाक कविता” प्रविष्टि बालगीत, बाल-कविता आ “स्कूल-प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2004 : विदेह-सदेह 9 — जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’: बाल गीत (हमरवह खावतर)

प्रश्न 19983. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गीत (हमरवह खावतर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गीत (हमरवह खावतर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 695मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क प्रविष्टि “बाल गीत (हमरवह खावतर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19984. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बालगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बालगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “बालगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19985. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रकृति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रकृति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रकृति” अछि।

प्रश्न 19986. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सूरज-चाँद-धरती हमरा लेल

उत्तर: घ. सूरज-चाँद-धरती हमरा लेल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सूरज-चाँद-धरती हमरा लेल” अछि।

प्रश्न 19987. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सूरज-चाँद-धरती हमरा लेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूरज-चाँद-धरती हमरा लेल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सूरज-चाँद-धरती हमरा लेल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19988. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-प्रकृति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-प्रकृति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19989. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 19990. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)”केँ विदेह-सदेह 9क बालगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 19991. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 19992. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)” प्रविष्टि बालगीत, बाल-प्रकृति आ “सूरज-चाँद-धरती हमरा लेल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2004, सूचकांक पंक्ति 695मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “बाल गीत (हमरवह खावतर)” प्रविष्टि बालगीत, बाल-प्रकृति आ “सूरज-चाँद-धरती हमरा लेल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2005 : विदेह-सदेह 9 — प्रेमेन्द्र मिश्र: अपन बेटा अभिनव मिश्र केँ बल दै लेल कविता

प्रश्न 19993. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696: प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र केँ बल दै लेल कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन बेटा अभिनव मिश्र केँ बल दै लेल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन बेटा अभिनव मिश्र केँ बल दै लेल कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 696मे प्रेमेन्द्र मिश्रक प्रविष्टि “अपन बेटा अभिनव मिश्र केँ बल दै लेल कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 19994. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696: प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र केँ बल दै लेल कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 19995. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696: प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र केँ बल दै लेल कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रेरणादायक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रेरणादायक” अछि।

प्रश्न 19996. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696: प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र कैँ बल दै लेल कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘कोशिश करैबला के हार नहि’

उत्तर: घ. ‘कोशिश करैबला के हार नहि’

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘कोशिश करैबला के हार नहि’” अछि।

प्रश्न 19997. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696: प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र कैँ बल दै लेल कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘कोशिश करैबला के हार नहि’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘कोशिश करैबला के हार नहि’

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘कोशिश करैबला के हार नहि’” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 19998. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696: प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र कैँ बल दै लेल कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमेन्द्र मिश्र, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमेन्द्र मिश्र, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 19999. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696: प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र कैँ बल दै लेल कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20000. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696: प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र कैँ बल दै लेल कविता”कैँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड 2005 : विदेह-सदेह 9 — प्रेमेन्द्र मिश्र: अपन बेटा अभिनव मिश्र कैं बल दै लेल कविता

प्रश्न 20001. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696: प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र कैं बल दै लेल कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20002. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696मे प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र कैं बल दै लेल कविता” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रेरणादायक आ “‘कोशिश करैबला के हार नहि’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2005, सूचकांक पंक्ति 696मे प्रेमेन्द्र मिश्रक “अपन बेटा अभिनव मिश्र कैं बल दै लेल कविता” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रेरणादायक आ “‘कोशिश करैबला के हार नहि’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2006 : विदेह-सदेह 9 — बृषेश चन्द्र लाल: बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)

प्रश्न 20003. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697: बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 697मे बृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20004. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697: बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सूचकांकमे विधा रिक्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सूचकांकमे विधा रिक्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “सूचकांकमे विधा रिक्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20005. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697: बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सूचकांकमे उप-विधा रिक्त” अछि।

प्रश्न 20006. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697: बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुख्य साहित्यिक संकेत

उत्तर: घ. मुख्य साहित्यिक संकेत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुख्य साहित्यिक संकेत” अछि।

प्रश्न 20007. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697: बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुख्य साहित्यिक संकेत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुख्य साहित्यिक संकेत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुख्य साहित्यिक संकेत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20008. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697: बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा सूचकांकमे विधा रिक्त, उप-विधा सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा सूचकांकमे विधा रिक्त, उप-विधा सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20009. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697: बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20010. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697: बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)”केँ विदेह-सदेह 9क सूचकांकमे विधा रिक्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सूचकांकमे उप-विधा रिक्तक रूपमे सूचकांकमे विधा रिक्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सूचकांकमे उप-विधा रिक्तक रूपमे सूचकांकमे विधा रिक्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20011. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697: बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20012. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697मे बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)” प्रविष्टि सूचकांकमे विधा रिक्त, सूचकांकमे उप-विधा रिक्त आ “मुख्य साहित्यिक संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2006, सूचकांक पंक्ति 697मे बृषेश चन्द्र लालक “बाल-कविता (छिनीकटोरा, डमरू, गुड्डी)” प्रविष्टि सूचकांकमे विधा रिक्त, सूचकांकमे उप-विधा रिक्त आ “मुख्य साहित्यिक संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2007 : विदेह-सदेह 9 — तुकांत-मनोरंजन।: सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त

प्रश्न 20013. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698: तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 698मे तुकांत-मनोरंजन।क प्रविष्टि “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20014. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698: तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. सूचकांकमे विधा रिक्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. सूचकांकमे विधा रिक्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सूचकांकमे विधा रिक्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20015. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698: तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सूचकांकमे उप-विधा रिक्त” अछि।

प्रश्न 20016. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698: तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुख्य साहित्यिक संकेत

उत्तर: घ. मुख्य साहित्यिक संकेत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुख्य साहित्यिक संकेत” अछि।

प्रश्न 20017. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698: तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुख्य साहित्यिक संकेत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुख्य साहित्यिक संकेत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुख्य साहित्यिक संकेत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20018. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698: तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तुकांत-मनोरंजन।, विधा सूचकांकमे विधा रिक्त, उप-विधा सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तुकांत-मनोरंजन।, विधा सूचकांकमे विधा रिक्त, उप-विधा सूचकांकमे उप-विधा रिक्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20019. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698: तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20020. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698: तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त”केँ विदेह-सदेह 9क सूचकांकमे विधा रिक्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सूचकांकमे उप-विधा रिक्तक रूपमे सूचकांकमे विधा रिक्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सूचकांकमे उप-विधा रिक्तक रूपमे सूचकांकमे विधा रिक्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20021. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698: तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20022. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698मे तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” प्रविष्टि सूचकांकमे विधा रिक्त, सूचकांकमे उप-विधा रिक्त आ “मुख्य साहित्यिक संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2007, सूचकांक पंक्ति 698मे तुकांत-मनोरंजन।क “सूचकांकमे पाठ-नाम रिक्त” प्रविष्टि सूचकांकमे विधा रिक्त, सूचकांकमे उप-विधा रिक्त आ “मुख्य साहित्यिक संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2008 : विदेह-सदेह 9 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: बाल गजल (शिशु सिया उपमा)

प्रश्न 20023. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (शिशु सिया उपमा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (शिशु सिया उपमा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 699मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20024. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजल

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गजल” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20025. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-गजल” अछि।

प्रश्न 20026. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटी-प्रशंसा

उत्तर: घ. बेटी-प्रशंसा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटी-प्रशंसा” अछि।

प्रश्न 20027. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेटी-प्रशंसा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी-प्रशंसा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटी-प्रशंसा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20028. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा गजल, उप-विधा बाल-गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा गजल, उप-विधा बाल-गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20029. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20030. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)”केँ विदेह-सदेह 9क गजल-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-गजलक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-गजलक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20031. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20032. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)” प्रविष्टि गजल, बाल-गजल आ “बेटी-प्रशंसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2008, सूचकांक पंक्ति 699मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (शिशु सिया उपमा)” प्रविष्टि गजल, बाल-गजल आ “बेटी-प्रशंसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2009 : विदेह-सदेह 9 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: बाल गजल (कोबी टमाटर)

प्रश्न 20033. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (कोबी टमाटर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (कोबी टमाटर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 700मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “बाल गजल (कोबी टमाटर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20034. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजल

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गजल” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20035. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-गजल” अछि।

प्रश्न 20036. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सब्जी-तुकांत

उत्तर: घ. सब्जी-तुकांत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सब्जी-तुकांत” अछि।

प्रश्न 20037. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सब्जी-तुकांत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सब्जी-तुकांत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सब्जी-तुकांत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20038. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा गजल, उप-विधा बाल-गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा गजल, उप-विधा बाल-गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20039. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20040. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)”केँ विदेह-सदेह 9क गजल-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-गजलक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-गजलक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20041. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20042. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)” प्रविष्टि गजल, बाल-गजल आ “सब्जी-तुकांत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2009, सूचकांक पंक्ति 700मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (कोबी टमाटर)” प्रविष्टि गजल, बाल-गजल आ “सब्जी-तुकांत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2010 : विदेह-सदेह 9 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: बाल गजल (सोए छी हम)

प्रश्न 20043. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (सोए छी हम)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (सोए छी हम)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 701मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “बाल गजल (सोए छी हम)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20044. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजल

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गजल” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20045. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-संस्मरण” अछि।

प्रश्न 20046. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बचपन-खेल

उत्तर: घ. बचपन-खेल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बचपन-खेल” अछि।

प्रश्न 20047. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बचपन-खेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बचपन-खेल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बचपन-खेल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20048. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा गजल, उप-विधा बाल-संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा गजल, उप-विधा बाल-संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20049. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20050. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)”केँ विदेह-सदेह 9क गजल-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-संस्मरणक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-संस्मरणक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20051. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20052. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)” प्रविष्टि गजल, बाल-संस्मरण आ “बचपन-खेल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2010, सूचकांक पंक्ति 701मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बाल गजल (सोए छी हम)” प्रविष्टि गजल, बाल-संस्मरण आ “बचपन-खेल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2011 : विदेह-सदेह 9 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: गजल (पेट मे भल खड़ नहि)

प्रश्न 20053. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (पेट मे भल खड़ नहि)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (पेट मे भल खड़ नहि)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 702मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20054. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजल

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गजल” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20055. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-हास्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-हास्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-हास्य” अछि।

प्रश्न 20056. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नुनुआ-शरारत

उत्तर: घ. नुनुआ-शरारत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नुनुआ-शरारत” अछि।

प्रश्न 20057. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नुनुआ-शरारत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नुनुआ-शरारत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नुनुआ-शरारत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20058. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा गजल, उप-विधा बाल-हास्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा गजल, उप-विधा बाल-हास्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20059. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20060. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)”केँ विदेह-सदेह 9क गजल-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20061. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20062. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)” प्रविष्टि गजल, बाल-हास्य आ “नुनुआ-शरारत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2011, सूचकांक पंक्ति 702मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल (पेट मे भल खड़ नहि)” प्रविष्टि गजल, बाल-हास्य आ “नुनुआ-शरारत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2012 : विदेह-सदेह 9 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: कुम्हर

प्रश्न 20063. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुम्हर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुम्हर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 703मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “कुम्हर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20064. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20065. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-ग्राम्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-ग्राम्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-ग्राम्य” अछि।

प्रश्न 20066. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कुम्हार-उपयोगिता

उत्तर: घ. कुम्हार-उपयोगिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कुम्हार-उपयोगिता” अछि।

प्रश्न 20067. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कुम्हार-उपयोगिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुम्हार-उपयोगिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कुम्हार-उपयोगिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20068. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा कविता, उप-विधा बाल-ग्राम्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा कविता, उप-विधा बाल-ग्राम्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20069. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20070. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-ग्राम्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-ग्राम्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20071. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20072. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर” प्रविष्टि कविता, बाल-ग्राम्य आ “कुम्हार-उपयोगिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2012, सूचकांक पंक्ति 703मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कुम्हर” प्रविष्टि कविता, बाल-ग्राम्य आ “कुम्हार-उपयोगिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2013 : विदेह-सदेह 9 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: बरखा रानी

प्रश्न 20073. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बरखा रानी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बरखा रानी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 704मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “बरखा रानी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20074. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20075. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रकृति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रकृति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रकृति” अछि।

प्रश्न 20076. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बरखा-वर्णन (भरत ‘ऋतु-वर्णन’)

उत्तर: घ. बरखा-वर्णन (भरत ‘ऋतु-वर्णन’)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बरखा-वर्णन (भरत ‘ऋतु-वर्णन’)” अछि।

प्रश्न 20077. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बरखा-वर्णन (भरत ‘ऋतु-वर्णन’)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बरखा-वर्णन (भरत ‘ऋतु-वर्णन’)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बरखा-वर्णन (भरत ‘ऋतु-वर्णन’)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20078. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20079. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20080. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20081. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20082. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “बरखा-वर्णन (भरत ‘ऋतु-वर्णन’)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2013, सूचकांक पंक्ति 704मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “बरखा रानी” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “बरखा-वर्णन (भरत ‘ऋतु-वर्णन’)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2014 : विदेह-सदेह 9 — इरा मल्लिक: छिम-छिम बरसा

प्रश्न 20083. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705: इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छिम-छिम बरसा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छिम-छिम बरसा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 705मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “छिम-छिम बरसा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20084. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705: इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20085. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705: इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रकृति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रकृति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रकृति” अछि।

प्रश्न 20086. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705: इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बरखा-बिजली

उत्तर: घ. बरखा-बिजली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बरखा-बिजली” अछि।

प्रश्न 20087. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705: इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बरखा-बिजली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बरखा-बिजली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बरखा-बिजली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20088. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705: इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20089. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705: इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20090. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705: इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20091. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705: इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20092. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705मे इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “बरखा-बिजली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2014, सूचकांक पंक्ति 705मे इरा मल्लिकक “छिम-छिम बरसा” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “बरखा-बिजली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2015 : विदेह-सदेह 9 — इरा मल्लिक: माँ!

प्रश्न 20093. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706: इरा मल्लिकक “माँ!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माँ!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँ!

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 706मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “माँ!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20094. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706: इरा मल्लिकक “माँ!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20095. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706: इरा मल्लिकक “माँ!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-अभिव्यक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-अभिव्यक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-अभिव्यक्ति” अछि।

प्रश्न 20096. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706: इरा मल्लिकक “माँ!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माँ-खिलौना – बाल-इच्छा

उत्तर: घ. माँ-खिलौना – बाल-इच्छा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माँ-खिलौना – बाल-इच्छा” अछि।

प्रश्न 20097. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706: इरा मल्लिकक “माँ!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माँ-खिलौना – बाल-इच्छा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँ-खिलौना – बाल-इच्छा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माँ-खिलौना – बाल-इच्छा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20098. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706: इरा मल्लिकक “माँ!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा कविता, उप-विधा बाल-अभिव्यक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा कविता, उप-विधा बाल-अभिव्यक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20099. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706: इरा मल्लिकक “माँ!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20100. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706: इरा मल्लिकक “माँ!”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-अभिव्यक्तिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-अभिव्यक्तिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20101. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706: इरा मल्लिकक “माँ!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20102. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706मे इरा मल्लिकक “माँ!” प्रविष्टि कविता, बाल-अभिव्यक्ति आ “माँ-खिलौना – बाल-इच्छा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2015, सूचकांक पंक्ति 706मे इरा मल्लिकक “माँ!” प्रविष्टि कविता, बाल-अभिव्यक्ति आ “माँ-खिलौना – बाल-इच्छा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2016 : विदेह-सदेह 9 — नीलम कुमार: बहंगलू भाइ यौ वटंगलू

प्रश्न 20103. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707: नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बहंगलू भाइ यौ वटंगलू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहंगलू भाइ यौ वटंगलू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 707मे नीलम कुमारक प्रविष्टि “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20104. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707: नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. बालगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. बालगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “बालगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20105. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707: नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-हास्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-हास्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-हास्य” अछि।

प्रश्न 20106. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707: नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुस्ती-व्यंग्य

उत्तर: घ. सुस्ती-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुस्ती-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 20107. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707: नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुस्ती-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुस्ती-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुस्ती-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20108. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707: नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नीलम कुमार, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-हास्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नीलम कुमार, विधा बालगीत, उप-विधा बाल-हास्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20109. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707: नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20110. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707: नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू”केँ विदेह-सदेह 9क बालगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे बालगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20111. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707: नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20112. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707मे नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू” प्रविष्टि बालगीत, बाल-हास्य आ “सुस्ती-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2016, सूचकांक पंक्ति 707मे नीलम कुमारक “बहंगलू भाइ यौ वटंगलू” प्रविष्टि बालगीत, बाल-हास्य आ “सुस्ती-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2017 : विदेह-सदेह 9 — मुन्नी कामत: जड़ैत ज्योत

प्रश्न 20113. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708: मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जड़ैत ज्योत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जड़ैत ज्योत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 708मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “जड़ैत ज्योत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20114. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708: मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20115. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708: मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-नारी-शिक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-नारी-शिक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-नारी-शिक्षा” अछि।

प्रश्न 20116. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708: मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लड़कीक पढ़बाक इच्छा

उत्तर: घ. लड़कीक पढ़बाक इच्छा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लड़कीक पढ़बाक इच्छा” अछि।

प्रश्न 20117. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708: मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लड़कीक पढ़बाक इच्छा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लड़कीक पढ़बाक इच्छा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लड़कीक पढ़बाक इच्छा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20118. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708: मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा कविता, उप-विधा बाल-नारी-शिक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा कविता, उप-विधा बाल-नारी-शिक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20119. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708: मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20120. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708: मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-नारी-शिक्षाक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-नारी-शिक्षाक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20121. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708: मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20122. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708मे मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत” प्रविष्टि कविता, बाल-नारी-शिक्षा आ “लड़कीक पढ़बाक इच्छा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2017, सूचकांक पंक्ति 708मे मुन्नी कामतक “जड़ैत ज्योत” प्रविष्टि कविता, बाल-नारी-शिक्षा आ “लड़कीक पढ़बाक इच्छा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2018 : विदेह-सदेह 9 — राजदेव मण्डल: मुवनयाँक सन्देता

प्रश्न 20123. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709: राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुवनयाँक सन्देता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुवनयाँक सन्देता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 709मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “मुवनयाँक सन्देता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20124. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709: राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20125. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709: राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-हास्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-हास्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-हास्य” अछि।

प्रश्न 20126. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709: राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटा-जन्म – दादीक ताना

उत्तर: घ. बेटा-जन्म – दादीक ताना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटा-जन्म – दादीक ताना” अछि।

प्रश्न 20127. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709: राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेटा-जन्म – दादीक ताना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटा-जन्म – दादीक ताना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटा-जन्म – दादीक ताना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20128. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709: राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा कविता, उप-विधा बाल-हास्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा कविता, उप-विधा बाल-हास्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20129. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709: राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20130. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709: राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20131. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709: राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20132. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709मे राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता” प्रविष्टि कविता, बाल-हास्य आ “बेटा-जन्म – दादीक ताना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2018, सूचकांक पंक्ति 709मे राजदेव मण्डलक “मुवनयाँक सन्देता” प्रविष्टि कविता, बाल-हास्य आ “बेटा-जन्म – दादीक ताना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2019 : विदेह-सदेह 9 — राजदेव मण्डल: कनीक गाछ

प्रश्न 20133. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710: राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कनीक गाछ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कनीक गाछ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 710मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “कनीक गाछ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20134. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710: राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20135. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710: राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 20136. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710: राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सब-कोयल-गाछ

उत्तर: घ. सब-कोयल-गाछ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सब-कोयल-गाछ” अछि।

प्रश्न 20137. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710: राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सब-कोयल-गाछ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सब-कोयल-गाछ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सब-कोयल-गाछ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20138. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710: राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा कविता, उप-विधा बाल-व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा कविता, उप-विधा बाल-व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20139. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710: राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20140. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710: राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-व्यंग्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-व्यंग्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20141. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710: राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20142. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710मे राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ” प्रविष्टि कविता, बाल-व्यंग्य आ “सब-कोयल-गाछ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2019, सूचकांक पंक्ति 710मे राजदेव मण्डलक “कनीक गाछ” प्रविष्टि कविता, बाल-व्यंग्य आ “सब-कोयल-गाछ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2020 : विदेह-सदेह 9 — चन्दन कुमार झा: हमहूँ पढ़ै आब

प्रश्न 20143. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711: चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमहूँ पढ़ै आब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमहूँ पढ़ै आब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 711मे चन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “हमहूँ पढ़ै आब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20144. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711: चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20145. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711: चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-नारी-शिक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-नारी-शिक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-नारी-शिक्षा” अछि।

प्रश्न 20146. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711: चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लड़की-अधिकार

उत्तर: घ. लड़की-अधिकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लड़की-अधिकार” अछि।

प्रश्न 20147. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711: चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लड़की-अधिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लड़की-अधिकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लड़की-अधिकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20148. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711: चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-नारी-शिक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-नारी-शिक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20149. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711: चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20150. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711: चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-नारी-शिक्षाक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-नारी-शिक्षाक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20151. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711: चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20152. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711मे चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब” प्रविष्टि कविता, बाल-नारी-शिक्षा आ “लड़की-अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2020, सूचकांक पंक्ति 711मे चन्दन कुमार झाक “हमहूँ पढ़ै आब” प्रविष्टि कविता, बाल-नारी-शिक्षा आ “लड़की-अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2021 : विदेह-सदेह 9 — चन्दन कुमार झा: बुन्नी

प्रश्न 20153. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712: चन्दन कुमार झाक “बुन्नी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुन्नी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुन्नी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 712मे चन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “बुन्नी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20154. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712: चन्दन कुमार झाक “बुन्नी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20155. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712: चन्दन कुमार झाक “बुन्नी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रकृति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रकृति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रकृति” अछि।

प्रश्न 20156. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712: चन्दन कुमार झाक “बुन्नी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मेंढक-हास्य

उत्तर: घ. मेंढक-हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मेंढक-हास्य” अछि।

प्रश्न 20157. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712: चन्दन कुमार झाक “बुन्नी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मेंढक-हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेंढक-हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मेंढक-हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20158. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712: चन्दन कुमार झाक “बुन्नी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20159. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712: चन्दन कुमार झाक “बुन्नी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20160. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712: चन्दन कुमार झाक “बुन्नी”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20161. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712: चन्दन कुमार झाक “बुन्नी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20162. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712मे चन्दन कुमार झाक “बुन्नी” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “मेंढक-हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2021, सूचकांक पंक्ति 712मे चन्दन कुमार झाक “बुन्नी” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “मेंढक-हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2022 : विदेह-सदेह 9 — शंभू नाथ झा: न्यूटनक सिद्धान्त

प्रश्न 20163. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713: शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. न्यूटनक सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. न्यूटनक सिद्धान्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 713मे शंभू नाथ झाक प्रविष्टि “न्यूटनक सिद्धान्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20164. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713: शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20165. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713: शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-वैज्ञानिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-वैज्ञानिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-वैज्ञानिक” अछि।

प्रश्न 20166. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713: शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. न्यूटन-गति-सिद्धान्त

उत्तर: घ. न्यूटन-गति-सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “न्यूटन-गति-सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 20167. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713: शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. न्यूटन-गति-सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. न्यूटन-गति-सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “न्यूटन-गति-सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20168. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713: शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शंभू नाथ झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-वैज्ञानिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शंभू नाथ झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-वैज्ञानिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20169. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713: शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20170. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713: शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-वैज्ञानिकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-वैज्ञानिकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20171. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713: शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20172. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713मे शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त” प्रविष्टि कविता, बाल-वैज्ञानिक आ “न्यूटन-गति-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2022, सूचकांक पंक्ति 713मे शंभू नाथ झाक “न्यूटनक सिद्धान्त” प्रविष्टि कविता, बाल-वैज्ञानिक आ “न्यूटन-गति-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2023 : विदेह-सदेह 9 — शंभू नाथ झा: पाकल आम

प्रश्न 20173. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714: शंभू नाथ झाक “पाकल आम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पाकल आम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाकल आम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 714मे शंभू नाथ झाक प्रविष्टि “पाकल आम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20174. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714: शंभू नाथ झाक “पाकल आम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20175. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714: शंभू नाथ झाक “पाकल आम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-ग्राम्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-ग्राम्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-ग्राम्य” अछि।

प्रश्न 20176. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714: शंभू नाथ झाक “पाकल आम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आमक आनन्द

उत्तर: घ. आमक आनन्द

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आमक आनन्द” अछि।

प्रश्न 20177. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714: शंभू नाथ झाक “पाकल आम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आमक आनन्द

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आमक आनन्द

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आमक आनन्द” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20178. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714: शंभू नाथ झाक “पाकल आम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शंभू नाथ झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-ग्राम्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शंभू नाथ झा, विधा कविता, उप-विधा बाल-ग्राम्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20179. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714: शंभू नाथ झाक “पाकल आम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20180. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714: शंभू नाथ झाक “पाकल आम”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-ग्राम्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-ग्राम्यक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20181. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714: शंभू नाथ झाक “पाकल आम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20182. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714मे शंभू नाथ झाक “पाकल आम” प्रविष्टि कविता, बाल-ग्राम्य आ “आमक आनन्द” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2023, सूचकांक पंक्ति 714मे शंभू नाथ झाक “पाकल आम” प्रविष्टि कविता, बाल-ग्राम्य आ “आमक आनन्द” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2024 : विदेह-सदेह 9 — चन्दन कुमार झा: दू टा अगड़म-बगड़म

प्रश्न 20183. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715: चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दू टा अगड़म-बगड़म

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू टा अगड़म-बगड़म

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 715मे चन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “दू टा अगड़म-बगड़म” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20184. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715: चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दोहा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दोहा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “दोहा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20185. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715: चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-लोक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-लोक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-लोक” अछि।

प्रश्न 20186. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715: चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दो पंक्तिक लोक-रचना

उत्तर: घ. दो पंक्तिक लोक-रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दो पंक्तिक लोक-रचना” अछि।

प्रश्न 20187. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715: चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दो पंक्तिक लोक-रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दो पंक्तिक लोक-रचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दो पंक्तिक लोक-रचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20188. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715: चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा दोहा, उप-विधा बाल-लोक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा दोहा, उप-विधा बाल-लोक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20189. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715: चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20190. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715: चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म”केँ विदेह-सदेह 9क दोहा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-लोकक रूपमे दोहा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-लोकक रूपमे दोहा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20191. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715: चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20192. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715मे चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म” प्रविष्टि दोहा, बाल-लोक आ “दो पंक्तिक लोक-रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2024, सूचकांक पंक्ति 715मे चन्दन कुमार झाक “दू टा अगड़म-बगड़म” प्रविष्टि दोहा, बाल-लोक आ “दो पंक्तिक लोक-रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2025 : विदेह-सदेह 9 — मनोज कुमार मण्डल: खेल

प्रश्न 20193. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716: मनोज कुमार मण्डलक “खेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 716मे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “खेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20194. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716: मनोज कुमार मण्डलक “खेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20195. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716: मनोज कुमार मण्डलक “खेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-दार्शनिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-दार्शनिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 20196. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716: मनोज कुमार मण्डलक “खेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-खेल – इमान-बेइमानी

उत्तर: घ. जीवन-खेल – इमान-बेइमानी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-खेल – इमान-बेइमानी” अछि।

प्रश्न 20197. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716: मनोज कुमार मण्डलक “खेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-खेल – इमान-बेइमानी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-खेल – इमान-बेइमानी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-खेल – इमान-बेइमानी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20198. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716: मनोज कुमार मण्डलक “खेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा कविता, उप-विधा बाल-दार्शनिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा कविता, उप-विधा बाल-दार्शनिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20199. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716: मनोज कुमार मण्डलक “खेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20200. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716: मनोज कुमार मण्डलक “खेल”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-दार्शनिकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-दार्शनिकक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20201. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716: मनोज कुमार मण्डलक “खेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20202. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716मे मनोज कुमार मण्डलक “खेल” प्रविष्टि कविता, बाल-दार्शनिक आ “जीवन-खेल – इमान-बेइमानी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2025, सूचकांक पंक्ति 716मे मनोज कुमार मण्डलक “खेल” प्रविष्टि कविता, बाल-दार्शनिक आ “जीवन-खेल – इमान-बेइमानी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2026 : विदेह-सदेह 9 — प्रभात राय भट्ट: चुनमुन-चुनमुन

प्रश्न 20203. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717: प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चुनमुन-चुनमुन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चुनमुन-चुनमुन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 717मे प्रभात राय भट्टक प्रविष्टि “चुनमुन-चुनमुन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20204. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717: प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20205. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717: प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रकृति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रकृति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रकृति” अछि।

प्रश्न 20206. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717: प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चिड़ैया-आग – पश्चाताप

उत्तर: घ. चिड़ैया-आग – पश्चाताप

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चिड़ैया-आग – पश्चाताप” अछि।

प्रश्न 20207. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717: प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चिड़ैया-आग – पश्चाताप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिड़ैया-आग – पश्चाताप

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चिड़ैया-आग – पश्चाताप” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20208. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717: प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रभात राय भट्ट, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रभात राय भट्ट, विधा कविता, उप-विधा बाल-प्रकृति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20209. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717: प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20210. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717: प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रकृतिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20211. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717: प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20212. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717मे प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “चिड़ैया-आग – पश्चाताप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2026, सूचकांक पंक्ति 717मे प्रभात राय भट्टक “चुनमुन-चुनमुन” प्रविष्टि कविता, बाल-प्रकृति आ “चिड़ैया-आग – पश्चाताप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2027 : विदेह-सदेह 9 — दुर्गानन्द मण्डल: हम हिन्दुस्तानी छी

प्रश्न 20213. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718: दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम हिन्दुस्तानी छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम हिन्दुस्तानी छी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 718मे दुर्गानन्द मण्डलक प्रविष्टि “हम हिन्दुस्तानी छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20214. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718: दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20215. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718: दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-देशभक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-देशभक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-देशभक्ति” अछि।

प्रश्न 20216. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718: दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हिन्दुस्तानी-गौरव

उत्तर: घ. हिन्दुस्तानी-गौरव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हिन्दुस्तानी-गौरव” अछि।

प्रश्न 20217. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718: दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हिन्दुस्तानी-गौरव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिन्दुस्तानी-गौरव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हिन्दुस्तानी-गौरव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20218. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718: दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा कविता, उप-विधा बाल-देशभक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा कविता, उप-विधा बाल-देशभक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20219. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718: दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20220. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718: दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी”केँ विदेह-सदेह 9क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-देशभक्तिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-देशभक्तिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20221. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718: दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20222. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718मे दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी” प्रविष्टि कविता, बाल-देशभक्ति आ “हिन्दुस्तानी-गौरव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2027, सूचकांक पंक्ति 718मे दुर्गानन्द मण्डलक “हम हिन्दुस्तानी छी” प्रविष्टि कविता, बाल-देशभक्ति आ “हिन्दुस्तानी-गौरव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2028 : विदेह-सदेह 9 — अश्वत मिश्र: बाल रुबाई

प्रश्न 20223. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719: अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल रुबाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल रुबाई

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 719मे अश्वत मिश्रक प्रविष्टि “बाल रुबाई” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20224. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719: अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. रुबाई

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. रुबाई

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रुबाई” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20225. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719: अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रेरणादायक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रेरणादायक” अछि।

प्रश्न 20226. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719: अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भोर-इजोत

उत्तर: घ. भोर-इजोत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भोर-इजोत” अछि।

प्रश्न 20227. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719: अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भोर-इजोत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोर-इजोत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोर-इजोत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20228. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719: अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अश्वत मिश्र, विधा रुबाई, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अश्वत मिश्र, विधा रुबाई, उप-विधा बाल-प्रेरणादायक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20229. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719: अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20230. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719: अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई”केँ विदेह-सदेह 9क रुबाई-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे रुबाई-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रेरणादायकक रूपमे रुबाई-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20231. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719: अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20232. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719मे अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई” प्रविष्टि रुबाई, बाल-प्रेरणादायक आ “भोर-इजोत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2028, सूचकांक पंक्ति 719मे अश्वत मिश्रक “बाल रुबाई” प्रविष्टि रुबाई, बाल-प्रेरणादायक आ “भोर-इजोत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2029 : विदेह-सदेह 9 — अश्वत मिश्र: बाल गजल (बौआ हमर)

प्रश्न 20233. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720: अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (बौआ हमर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (बौआ हमर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 720मे अश्वत मिश्रक प्रविष्टि “बाल गजल (बौआ हमर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20234. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720: अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजल

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गजल” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20235. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720: अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-गजल” अछि।

प्रश्न 20236. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720: अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बालकक मेहनत

उत्तर: घ. बालकक मेहनत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बालकक मेहनत” अछि।

प्रश्न 20237. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720: अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बालकक मेहनत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बालकक मेहनत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बालकक मेहनत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20238. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720: अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अश्वत मिश्र, विधा गजल, उप-विधा बाल-गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अश्वत मिश्र, विधा गजल, उप-विधा बाल-गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20239. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720: अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20240. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720: अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)”केँ विदेह-सदेह 9क गजल-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-गजलक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-गजलक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20241. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720: अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20242. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720मे अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)” प्रविष्टि गजल, बाल-गजल आ “बालकक मेहनत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2029, सूचकांक पंक्ति 720मे अश्वत मिश्रक “बाल गजल (बौआ हमर)” प्रविष्टि गजल, बाल-गजल आ “बालकक मेहनत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2030 : विदेह-सदेह 9 — आशुतोष मिश्र: बाल गजल (फेंकै झटहा)

प्रश्न 20243. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721: आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (फेंकै झटहा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (फेंकै झटहा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 721मे आशुतोष मिश्रक प्रविष्टि “बाल गजल (फेंकै झटहा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20244. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721: आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजल

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गजल” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20245. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721: आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-हास्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-हास्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-हास्य” अछि।

प्रश्न 20246. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721: आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आम-तोड़-विवाद

उत्तर: घ. आम-तोड़-विवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आम-तोड़-विवाद” अछि।

प्रश्न 20247. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721: आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आम-तोड़-विवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आम-तोड़-विवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आम-तोड़-विवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20248. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721: आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशुतोष मिश्र, विधा गजल, उप-विधा बाल-हास्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशुतोष मिश्र, विधा गजल, उप-विधा बाल-हास्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20249. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721: आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20250. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721: आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)”केँ विदेह-सदेह 9क गजल-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-हास्यक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20251. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721: आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20252. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721मे आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)” प्रविष्टि गजल, बाल-हास्य आ “आम-तोड़-विवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2030, सूचकांक पंक्ति 721मे आशुतोष मिश्रक “बाल गजल (फेंकै झटहा)” प्रविष्टि गजल, बाल-हास्य आ “आम-तोड़-विवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2031 : विदेह-सदेह 9 — देवांशु वत्स: प्रगतिक रहस्य

प्रश्न 20253. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722: देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रगतिक रहस्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रगतिक रहस्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 722मे देवांशु वत्सक प्रविष्टि “प्रगतिक रहस्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20254. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722: देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. चित्रकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. चित्रकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “चित्रकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20255. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722: देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-प्रेरणा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-प्रेरणा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-प्रेरणा” अछि।

प्रश्न 20256. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722: देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. (पाठ-चित्र)

उत्तर: घ. (पाठ-चित्र)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “(पाठ-चित्र)” अछि।

प्रश्न 20257. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722: देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. (पाठ-चित्र)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (पाठ-चित्र)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “(पाठ-चित्र)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20258. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722: देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवांशु वत्स, विधा चित्रकथा, उप-विधा बाल-प्रेरणा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवांशु वत्स, विधा चित्रकथा, उप-विधा बाल-प्रेरणा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20259. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722: देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20260. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722: देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य”केँ विदेह-सदेह 9क चित्रकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-प्रेरणाक रूपमे चित्रकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-प्रेरणाक रूपमे चित्रकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20261. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722: देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20262. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722मे देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य” प्रविष्टि चित्रकथा, बाल-प्रेरणा आ “(पाठ-चित्र)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2031, सूचकांक पंक्ति 722मे देवांशु वत्सक “प्रगतिक रहस्य” प्रविष्टि चित्रकथा, बाल-प्रेरणा आ “(पाठ-चित्र)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2032 : विदेह-सदेह 9 — तुनिशा प्रियम: चित्र

प्रश्न 20263. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723: तुनिशा प्रियमक “चित्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चित्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 723मे तुनिशा प्रियमक प्रविष्टि “चित्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20264. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723: तुनिशा प्रियमक “चित्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20265. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723: तुनिशा प्रियमक “चित्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चित्रकला” अछि।

प्रश्न 20266. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723: तुनिशा प्रियमक “चित्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पृष्ठ 302 पर

उत्तर: घ. पृष्ठ 302 पर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पृष्ठ 302 पर” अछि।

प्रश्न 20267. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723: तुनिशा प्रियमक “चित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पृष्ठ 302 पर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पृष्ठ 302 पर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पृष्ठ 302 पर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20268. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723: तुनिशा प्रियमक “चित्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तुनिशा प्रियम, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तुनिशा प्रियम, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20269. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723: तुनिशा प्रियमक “चित्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20270. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723: तुनिशा प्रियमक “चित्र”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20271. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723: तुनिशा प्रियमक “चित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20272. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723मे तुनिशा प्रियमक “चित्र” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “पृष्ठ 302 पर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2032, सूचकांक पंक्ति 723मे तुनिशा प्रियमक “चित्र” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “पृष्ठ 302 पर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2033 : विदेह-सदेह 9 — गुंजन कर्ण: चित्र

प्रश्न 20273. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724: गुंजन कर्णक “चित्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चित्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 724मे गुंजन कर्णक प्रविष्टि “चित्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20274. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724: गुंजन कर्णक “चित्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20275. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724: गुंजन कर्णक “चित्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चित्रकला” अछि।

प्रश्न 20276. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724: गुंजन कर्णक “चित्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पृष्ठ 304 पर

उत्तर: घ. पृष्ठ 304 पर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पृष्ठ 304 पर” अछि।

प्रश्न 20277. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724: गुंजन कर्णक “चित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पृष्ठ 304 पर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पृष्ठ 304 पर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पृष्ठ 304 पर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20278. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724: गुंजन कर्णक “चित्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गुंजन कर्ण, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गुंजन कर्ण, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20279. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724: गुंजन कर्णक “चित्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20280. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724: गुंजन कर्णक “चित्र”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20281. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724: गुंजन कर्णक “चित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20282. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724मे गुंजन कर्णक “चित्र” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “पृष्ठ 304 पर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2033, सूचकांक पंक्ति 724मे गुंजन कर्णक “चित्र” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “पृष्ठ 304 पर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2034 : विदेह-सदेह 9 — गणेश ठाकूर: चित्र

प्रश्न 20283. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725: गणेश ठाकूरक “चित्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चित्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 725मे गणेश ठाकूरक प्रविष्टि “चित्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20284. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725: गणेश ठाकूरक “चित्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20285. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725: गणेश ठाकूरक “चित्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चित्रकला” अछि।

प्रश्न 20286. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725: गणेश ठाकूरक “चित्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कक्षा-८, पोखवड़भीरा

उत्तर: घ. कक्षा-८, पोखवड़भीरा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कक्षा-८, पोखवड़भीरा” अछि।

प्रश्न 20287. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725: गणेश ठाकूरक “चित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कक्षा-८, पोखवड़भीरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कक्षा-८, पोखवड़भीरा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कक्षा-८, पोखवड़भीरा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20288. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725: गणेश ठाकूरक “चित्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गणेश ठाकूर, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गणेश ठाकूर, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20289. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725: गणेश ठाकूरक “चित्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20290. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725: गणेश ठाकूरक “चित्र”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20291. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725: गणेश ठाकूरक “चित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20292. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725मे गणेश ठाकूरक “चित्र” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “कक्षा-८, पोखवड़भीरा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2034, सूचकांक पंक्ति 725मे गणेश ठाकूरक “चित्र” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “कक्षा-८, पोखवड़भीरा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2035 : विदेह-सदेह 9 — अनुपमा प्रियदर्शिनी: चित्र-परिचय

प्रश्न 20293. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726: अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चित्र-परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्र-परिचय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 726मे अनुपमा प्रियदर्शिनीक प्रविष्टि “चित्र-परिचय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20294. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726: अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20295. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726: अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चित्रकला” अछि।

प्रश्न 20296. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726: अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अमेरिका-निवासी

उत्तर: घ. अमेरिका-निवासी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अमेरिका-निवासी” अछि।

प्रश्न 20297. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726: अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अमेरिका-निवासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अमेरिका-निवासी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अमेरिका-निवासी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20298. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726: अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुपमा प्रियदर्शिनी, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुपमा प्रियदर्शिनी, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20299. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726: अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20300. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726: अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20301. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726: अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20302. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726मे अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “अमेरिका-निवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2035, सूचकांक पंक्ति 726मे अनुपमा प्रियदर्शिनीक “चित्र-परिचय” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “अमेरिका-निवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2036 : विदेह-सदेह 9 — श्वेता झा चौधरी: कला-परिचय

प्रश्न 20303. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727: श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कला-परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कला-परिचय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 727मे श्वेता झा चौधरीक प्रविष्टि “कला-परिचय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20304. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727: श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20305. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727: श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चित्रकला” अछि।

प्रश्न 20306. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727: श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जमशेदपुर-लंदन-प्रदर्शनी

उत्तर: घ. जमशेदपुर-लंदन-प्रदर्शनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जमशेदपुर-लंदन-प्रदर्शनी” अछि।

प्रश्न 20307. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727: श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जमशेदपुर-लंदन-प्रदर्शनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जमशेदपुर-लंदन-प्रदर्शनी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जमशेदपुर-लंदन-प्रदर्शनी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20308. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727: श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्वेता झा चौधरी, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्वेता झा चौधरी, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20309. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727: श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20310. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727: श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20311. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727: श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20312. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727मे श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “जमशेदपुर-लंदन-प्रदर्शनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2036, सूचकांक पंक्ति 727मे श्वेता झा चौधरीक “कला-परिचय” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “जमशेदपुर-लंदन-प्रदर्शनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2037 : विदेह-सदेह 9 — श्वेता झा (सिंगापुर): चित्र

प्रश्न 20313. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728: श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चित्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 728मे श्वेता झा (सिंगापुर)क प्रविष्टि “चित्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20314. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728: श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20315. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728: श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चित्रकला” अछि।

प्रश्न 20316. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728: श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पृष्ठ 318 पर

उत्तर: घ. पृष्ठ 318 पर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पृष्ठ 318 पर” अछि।

प्रश्न 20317. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728: श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पृष्ठ 318 पर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पृष्ठ 318 पर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पृष्ठ 318 पर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20318. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728: श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्वेता झा (सिंगापुर), विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्वेता झा (सिंगापुर), विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20319. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728: श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20320. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728: श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20321. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728: श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20322. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728मे श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “पृष्ठ 318 पर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2037, सूचकांक पंक्ति 728मे श्वेता झा (सिंगापुर)क “चित्र” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “पृष्ठ 318 पर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2038 : विदेह-सदेह 9 — प्रवीण कुमार ठाकूर: फैशन डिजाइन

प्रश्न 20323. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729: प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फैशन डिजाइन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फैशन डिजाइन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 729मे प्रवीण कुमार ठाकूरक प्रविष्टि “फैशन डिजाइन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20324. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729: प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20325. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729: प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-शिल्प

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-शिल्प

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-शिल्प” अछि।

प्रश्न 20326. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729: प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. फैशन डिजाइनर, दिल्ली

उत्तर: घ. फैशन डिजाइनर, दिल्ली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “फैशन डिजाइनर, दिल्ली” अछि।

प्रश्न 20327. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729: प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. फैशन डिजाइनर, दिल्ली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फैशन डिजाइनर, दिल्ली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “फैशन डिजाइनर, दिल्ली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20328. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729: प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रवीण कुमार ठाकूर, विधा कला, उप-विधा बाल-शिल्प

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रवीण कुमार ठाकूर, विधा कला, उप-विधा बाल-शिल्प

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20329. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729: प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20330. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729: प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-शिल्पक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-शिल्पक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20331. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729: प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20332. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729मे प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन” प्रविष्टि कला, बाल-शिल्प आ “फैशन डिजाइनर, दिल्ली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2038, सूचकांक पंक्ति 729मे प्रवीण कुमार ठाकूरक “फैशन डिजाइन” प्रविष्टि कला, बाल-शिल्प आ “फैशन डिजाइनर, दिल्ली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2039 : विदेह-सदेह 9 — कैलाश कुमार कामत: फोटोग्राफी

प्रश्न 20333. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730: कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फोटोग्राफी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फोटोग्राफी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 730मे कैलाश कुमार कामतक प्रविष्टि “फोटोग्राफी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20334. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730: कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20335. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730: कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-फोटोग्राफी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-फोटोग्राफी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-फोटोग्राफी” अछि।

प्रश्न 20336. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730: कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सातम् कक्षा, बेरमा

उत्तर: घ. सातम् कक्षा, बेरमा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सातम् कक्षा, बेरमा” अछि।

प्रश्न 20337. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730: कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सातम् कक्षा, बेरमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सातम् कक्षा, बेरमा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सातम् कक्षा, बेरमा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20338. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730: कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कैलाश कुमार कामत, विधा कला, उप-विधा बाल-फोटोग्राफी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कैलाश कुमार कामत, विधा कला, उप-विधा बाल-फोटोग्राफी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20339. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730: कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20340. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730: कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-फोटोग्राफीक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-फोटोग्राफीक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20341. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730: कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20342. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730मे कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी” प्रविष्टि कला, बाल-फोटोग्राफी आ “सातम् कक्षा, बेरमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2039, सूचकांक पंक्ति 730मे कैलाश कुमार कामतक “फोटोग्राफी” प्रविष्टि कला, बाल-फोटोग्राफी आ “सातम् कक्षा, बेरमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2040 : विदेह-सदेह 9 — मोना पाण्डेय: चित्र

प्रश्न 20343. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731: मोना पाण्डेयक “चित्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चित्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 731मे मोना पाण्डेयक प्रविष्टि “चित्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20344. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731: मोना पाण्डेयक “चित्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20345. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731: मोना पाण्डेयक “चित्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चित्रकला” अछि।

प्रश्न 20346. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731: मोना पाण्डेयक “चित्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पृष्ठ 320 पर

उत्तर: घ. पृष्ठ 320 पर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पृष्ठ 320 पर” अछि।

प्रश्न 20347. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731: मोना पाण्डेयक “चित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पृष्ठ 320 पर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पृष्ठ 320 पर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पृष्ठ 320 पर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20348. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731: मोना पाण्डेयक “चित्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मोना पाण्डेय, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मोना पाण्डेय, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20349. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731: मोना पाण्डेयक “चित्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20350. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731: मोना पाण्डेयक “चित्र”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20351. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731: मोना पाण्डेयक “चित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20352. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731मे मोना पाण्डेयक “चित्र” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “पृष्ठ 320 पर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2040, सूचकांक पंक्ति 731मे मोना पाण्डेयक “चित्र” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “पृष्ठ 320 पर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2041 : विदेह-सदेह 9 — इरा मल्लिक: जन्म-परिचय

प्रश्न 20353. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732: इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जन्म-परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्म-परिचय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 732मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “जन्म-परिचय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20354. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732: इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. जीवनी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. जीवनी

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “जीवनी” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20355. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732: इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-लेखिका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-लेखिका

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-लेखिका” अछि।

प्रश्न 20356. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732: इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दरभंगा-निवासी

उत्तर: घ. दरभंगा-निवासी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दरभंगा-निवासी” अछि।

प्रश्न 20357. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732: इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दरभंगा-निवासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दरभंगा-निवासी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दरभंगा-निवासी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20358. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732: इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा जीवनी, उप-विधा बाल-लेखिका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा जीवनी, उप-विधा बाल-लेखिका

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20359. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732: इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20360. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732: इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय”केँ विदेह-सदेह 9क जीवनी-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-लेखिकाक रूपमे जीवनी-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-लेखिकाक रूपमे जीवनी-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20361. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732: इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20362. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732मे इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय” प्रविष्टि जीवनी, बाल-लेखिका आ “दरभंगा-निवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2041, सूचकांक पंक्ति 732मे इरा मल्लिकक “जन्म-परिचय” प्रविष्टि जीवनी, बाल-लेखिका आ “दरभंगा-निवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2042 : विदेह-सदेह 9 — ज्योति सुनीत चौधरी: चित्र-परिचय

प्रश्न 20363. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733: ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चित्र-परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्र-परिचय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 733मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “चित्र-परिचय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20364. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733: ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20365. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733: ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कलाकार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कलाकार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कलाकार” अछि।

प्रश्न 20366. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733: ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लंदन-निवासी शिल्पी

उत्तर: घ. लंदन-निवासी शिल्पी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लंदन-निवासी शिल्पी” अछि।

प्रश्न 20367. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733: ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लंदन-निवासी शिल्पी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लंदन-निवासी शिल्पी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लंदन-निवासी शिल्पी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20368. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733: ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कला, उप-विधा बाल-कलाकार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा कला, उप-विधा बाल-कलाकार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20369. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733: ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20370. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733: ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कलाकारक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कलाकारक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20371. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733: ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20372. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733मे ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय” प्रविष्टि कला, बाल-कलाकार आ “लंदन-निवासी शिल्पी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2042, सूचकांक पंक्ति 733मे ज्योति सुनीत चौधरीक “चित्र-परिचय” प्रविष्टि कला, बाल-कलाकार आ “लंदन-निवासी शिल्पी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2043 : विदेह-सदेह 9 — श्रेता झा चौधरी: मिथिला चित्रकला

प्रश्न 20373. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734: श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला चित्रकला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 734मे श्रेता झा चौधरीक प्रविष्टि “मिथिला चित्रकला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20374. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734: श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20375. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734: श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चित्रकला” अछि।

प्रश्न 20376. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734: श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला-चित्रशैली

उत्तर: घ. मिथिला-चित्रशैली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला-चित्रशैली” अछि।

प्रश्न 20377. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734: श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला-चित्रशैली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला-चित्रशैली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला-चित्रशैली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20378. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734: श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्रेता झा चौधरी, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्रेता झा चौधरी, विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20379. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734: श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20380. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734: श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20381. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734: श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20382. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734मे श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “मिथिला-चित्रशैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2043, सूचकांक पंक्ति 734मे श्रेता झा चौधरीक “मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “मिथिला-चित्रशैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2044 : विदेह-सदेह 9 — श्रेता झा (सिंगापुर): चित्रकला

प्रश्न 20383. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735: श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चित्रकला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 735मे श्रेता झा (सिंगापुर)क प्रविष्टि “चित्रकला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20384. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735: श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कला

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कला” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20385. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735: श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-चित्रकला” अछि।

प्रश्न 20386. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735: श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्तर्राष्ट्रिय-मिथिला कला

उत्तर: घ. अन्तर्राष्ट्रिय-मिथिला कला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्तर्राष्ट्रिय-मिथिला कला” अछि।

प्रश्न 20387. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735: श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्तर्राष्ट्रिय-मिथिला कला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तर्राष्ट्रिय-मिथिला कला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्तर्राष्ट्रिय-मिथिला कला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20388. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735: श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्रेता झा (सिंगापुर), विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्रेता झा (सिंगापुर), विधा कला, उप-विधा बाल-चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20389. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735: श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20390. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735: श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला”केँ विदेह-सदेह 9क कला-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-चित्रकलाक रूपमे कला-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20391. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735: श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 9क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20392. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735मे श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “अन्तर्राष्ट्रिय-मिथिला कला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2044, सूचकांक पंक्ति 735मे श्रेता झा (सिंगापुर)क “चित्रकला” प्रविष्टि कला, बाल-चित्रकला आ “अन्तर्राष्ट्रिय-मिथिला कला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 9क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2045 : विदेह-सदेह 10 — गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक): 'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्...

प्रश्न 20393. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736: गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 736मे गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क प्रविष्टि "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20394. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736: गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य/पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20395. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736: गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रबन्ध/समालोचना/निबन्ध/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रबन्ध/समालोचना/निबन्ध/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "प्रबन्ध/समालोचना/निबन्ध/रिपोर्ताज" अछि।

प्रश्न 20396. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736: गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह पत्रिकाक सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह पत्रिकाक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेह पत्रिकाक सम्पादक" अछि।

प्रश्न 20397. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736: गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह पत्रिकाक सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह पत्रिकाक सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "विदेह पत्रिकाक सम्पादक" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20398. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736: गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा प्रबन्ध/समालोचना/निबन्ध/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा प्रबन्ध/समालोचना/निबन्ध/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20399. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736: गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20400. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736: गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रबन्ध/समालोचना/निबन्ध/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रबन्ध/समालोचना/निबन्ध/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20401. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736: गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20402. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736मे गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज" प्रविष्टि गद्य/पद्य, प्रबन्ध/समालोचना/निबन्ध/रिपोर्ताज आ "विदेह पत्रिकाक सम्पादक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2045, सूचकांक पंक्ति 736मे गजेन्द्र ठाकूर (सम्पादक)क "'प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना'; गजल, रुबाइ, कता, हाइकू विधापर विचार; मैथिली गजलक विमर्श; रिपोर्ताज" प्रविष्टि गद्य/पद्य, प्रबन्ध/समालोचना/निबन्ध/रिपोर्ताज आ "विदेह पत्रिकाक सम्पादक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2046 : विदेह-सदेह 10 — राज: 'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)

प्रश्न 20403. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737: राजक "'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 737मे राजक प्रविष्टि "'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20404. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737: राजक "'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20405. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737: राजक "'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "समीक्षा/आलेख" अछि।

प्रश्न 20406. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737: राजक "'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यात्रीक कवितामे ग्राम्य-चेतना आ स्थानीयताक विश्लेषण

उत्तर: घ. यात्रीक कवितामे ग्राम्य-चेतना आ स्थानीयताक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "यात्रीक कवितामे ग्राम्य-चेतना आ स्थानीयताक विश्लेषण" अछि।

प्रश्न 20407. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737: राजक "'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यात्रीक कवितामे ग्राम्य-चेतना आ स्थानीयताक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रीक कवितामे ग्राम्य-चेतना आ स्थानीयताक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "यात्रीक कवितामे ग्राम्य-चेतना आ स्थानीयताक विश्लेषण" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20408. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737: राजक "'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राज, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राज, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20409. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737: राजक “'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20410. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737: राजक “'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20411. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737: राजक “'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20412. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737मे राजक “'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलेख आ “यात्रीक कवितामे ग्राम्य-चेतना आ स्थानीयताक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2046, सूचकांक पंक्ति 737मे राजक “'यात्रीक कवितामे गाम' (आलेख/समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलेख आ “यात्रीक कवितामे ग्राम्य-चेतना आ स्थानीयताक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2047 : विदेह-सदेह 10 — डॉ. राजीव कुमार वर्मा: 'कारी घटा बरसैत मेघ'

प्रश्न 20413. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कारी घटा बरसैत मेघ'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कारी घटा बरसैत मेघ'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 738मे डॉ. राजीव कुमार वर्माक प्रविष्टि “'कारी घटा बरसैत मेघ'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20414. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20415. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/संस्मरण” अछि।

प्रश्न 20416. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दिल्लीक वास्तविकता आ गामक सुन्दरतामे अन्तर

उत्तर: घ. दिल्लीक वास्तविकता आ गामक सुन्दरतामे अन्तर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दिल्लीक वास्तविकता आ गामक सुन्दरतामे अन्तर” अछि।

प्रश्न 20417. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दिल्लीक वास्तविकता आ गामक सुन्दरतामे अन्तर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिल्लीक वास्तविकता आ गामक सुन्दरतामे अन्तर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दिल्लीक वास्तविकता आ गामक सुन्दरतामे अन्तर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20418. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. राजीव कुमार वर्मा, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. राजीव कुमार वर्मा, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20419. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20420. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'”कें विदेह-सदेह 10क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/संस्मरणक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/संस्मरणक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20421. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20422. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738मे डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/संस्मरण आ “दिल्लीक वास्तविकता आ गामक सुन्दरतामे अन्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2047, सूचकांक पंक्ति 738मे डॉ. राजीव कुमार वर्माक “'कारी घटा बरसैत मेघ'” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/संस्मरण आ “दिल्लीक वास्तविकता आ गामक सुन्दरतामे अन्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2048 : विदेह-सदेह 10 — अशोक: 'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्ष...

प्रश्न 20423. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739: अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 739मे अशोकक प्रविष्टि “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20424. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739: अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20425. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739: अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20426. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739: अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुभाष चन्द्र यादवक कथा-साहित्यक सूक्ष्म विश्लेषण

उत्तर: घ. सुभाष चन्द्र यादवक कथा-साहित्यक सूक्ष्म विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुभाष चन्द्र यादवक कथा-साहित्यक सूक्ष्म विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 20427. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739: अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुभाष चन्द्र यादवक कथा-साहित्यक सूक्ष्म विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुभाष चन्द्र यादवक कथा-साहित्यक सूक्ष्म विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुभाष चन्द्र यादवक कथा-साहित्यक सूक्ष्म विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20428. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739: अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20429. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739: अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20430. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739: अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20431. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739: अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20432. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739मे अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सुभाष चन्द्र यादवक कथा-साहित्यक सूक्ष्म विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2048, सूचकांक पंक्ति 739मे अशोकक “'बनैत-बिगडैत' (सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रहक समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सुभाष चन्द्र यादवक कथा-साहित्यक सूक्ष्म विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2049 : विदेह-सदेह 10 — चन्द्रेश: 'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'

प्रश्न 20433. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740: चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 740मे चन्द्रेशक प्रविष्टि “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20434. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740: चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20435. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740: चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20436. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740: चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे आयोजित झिझिया नृत्यक प्रस्तुति

उत्तर: घ. नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे आयोजित झिझिया नृत्यक प्रस्तुति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे आयोजित झिझिया नृत्यक प्रस्तुति” अछि।

प्रश्न 20437. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740: चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे आयोजित झिझिया नृत्यक प्रस्तुति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे आयोजित झिझिया नृत्यक प्रस्तुति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे आयोजित झिझिया नृत्यक प्रस्तुति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20438. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740: चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20439. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740: चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20440. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740: चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20441. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740: चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20442. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740मे चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/समीक्षा आ “नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे आयोजित झिझिया नृत्यक प्रस्तुति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2049, सूचकांक पंक्ति 740मे चन्द्रेशक “'यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/समीक्षा आ “नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे आयोजित झिझिया नृत्यक प्रस्तुति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2050 : विदेह-सदेह 10 — दुगानन्द मण्डल: 'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'

प्रश्न 20443. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741: दुगानन्द मण्डलक “'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 741मे दुगानन्द मण्डलक प्रविष्टि “'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20444. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741: दुगानन्द मण्डलक “'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20445. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741: दुगानन्द मण्डलक “'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20446. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741: दुगानन्द मण्डलक “'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक सामाजिक समरसता आ आदर्शवादी दृष्टिक मूल्यांकन

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक सामाजिक समरसता आ आदर्शवादी दृष्टिक मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक सामाजिक समरसता आ आदर्शवादी दृष्टिक मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 20447. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741: दुगानन्द मण्डलक "'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक सामाजिक समरसता आ आदर्शवादी दृष्टिक मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक सामाजिक समरसता आ आदर्शवादी दृष्टिक मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक सामाजिक समरसता आ आदर्शवादी दृष्टिक मूल्यांकन" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20448. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741: दुगानन्द मण्डलक "'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20449. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741: दुगानन्द मण्डलक "'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20450. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741: दुगानन्द मण्डलक "'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20451. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741: दुगानन्द मण्डलक "'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20452. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741मे दुगानन्द मण्डलक “'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक सामाजिक समरसता आ आदर्शवादी दृष्टिक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2050, सूचकांक पंक्ति 741मे दुगानन्द मण्डलक “'पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक सामाजिक समरसता आ आदर्शवादी दृष्टिक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2051 : विदेह-सदेह 10 — अच्छेलाल शास्त्री: 'रणभूमि आ कविता'

प्रश्न 20453. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742: अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'रणभूमि आ कविता'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'रणभूमि आ कविता'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 742मे अच्छेलाल शास्त्रीक प्रविष्टि “'रणभूमि आ कविता'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20454. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742: अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20455. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742: अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/आलेख” अछि।

प्रश्न 20456. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742: अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक जागरण आ कविताक प्रेरणा

उत्तर: घ. सामाजिक जागरण आ कविताक प्रेरणा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक जागरण आ कविताक प्रेरणा” अछि।

प्रश्न 20457. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742: अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक जागरण आ कविताक प्रेरणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक जागरण आ कविताक प्रेरणा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक जागरण आ कविताक प्रेरणा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20458. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742: अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अच्छेलाल शास्त्री, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अच्छेलाल शास्त्री, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20459. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742: अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20460. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742: अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'”केँ विदेह-सदेह 10क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/आलेखक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/आलेखक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20461. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742: अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20462. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742मे अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/आलेख आ “सामाजिक जागरण आ कविताक प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2051, सूचकांक पंक्ति 742मे अच्छेलाल शास्त्रीक “'रणभूमि आ कविता'” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/आलेख आ “सामाजिक जागरण आ कविताक प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2052 : विदेह-सदेह 10 — परमेश्वर कापडि: 'मानकताक बात विखपाद अछि !'

प्रश्न 20463. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743: परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मानकताक बात विखपाद अछि !'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मानकताक बात विखपाद अछि !'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 743मे परमेश्वर कापडिक प्रविष्टि “'मानकताक बात विखपाद अछि !'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20464. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743: परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20465. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743: परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 20466. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743: परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपालक सन्दर्भमे मानकता आ भाषिक विखण्डनक विरोध

उत्तर: घ. नेपालक सन्दर्भमे मानकता आ भाषिक विखण्डनक विरोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपालक सन्दर्भमे मानकता आ भाषिक विखण्डनक विरोध” अछि।

प्रश्न 20467. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743: परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपालक सन्दर्भमे मानकता आ भाषिक विखण्डनक विरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालक सन्दर्भमे मानकता आ भाषिक विखण्डनक विरोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपालक सन्दर्भमे मानकता आ भाषिक विखण्डनक विरोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20468. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743: परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक परमेश्वर कापडि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक परमेश्वर कापडि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20469. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743: परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20470. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743: परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'”कैं विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20471. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743: परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20472. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743मे परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “नेपालक सन्दर्भमे मानकता आ भाषिक विखण्डनक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2052, सूचकांक पंक्ति 743मे परमेश्वर कापडिक “'मानकताक बात विखपाद अछि !'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “नेपालक सन्दर्भमे मानकता आ भाषिक विखण्डनक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2053 : विदेह-सदेह 10 — अतुलेशर: 'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'

प्रश्न 20473. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744: अतुलेशरक “'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 744मे अतुलेशरक प्रविष्टि “'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20474. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744: अतुलेशरक "'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20475. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744: अतुलेशरक "'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "निबन्ध" अछि।

प्रश्न 20476. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744: अतुलेशरक "'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक महत्व

उत्तर: घ. मैथिली भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक महत्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "मैथिली भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक महत्व" अछि।

प्रश्न 20477. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744: अतुलेशरक "'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक महत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक महत्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "मैथिली भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक महत्व" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20478. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744: अतुलेशरक "'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेशर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेशर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20479. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744: अतुलेशरक "'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20480. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744: अतुलेशरक “'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20481. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744: अतुलेशरक “'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20482. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744मे अतुलेशरक “'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक महत्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2053, सूचकांक पंक्ति 744मे अतुलेशरक “'पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक महत्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2054 : विदेह-सदेह 10 — उमेश मण्डल: 'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष...

प्रश्न 20483. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745: उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 745मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20484. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745: उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20485. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745: उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/संस्मरण” अछि।

प्रश्न 20486. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745: उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली कथा गोष्ठीक सुन्दर विवरण

उत्तर: घ. मैथिली कथा गोष्ठीक सुन्दर विवरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली कथा गोष्ठीक सुन्दर विवरण” अछि।

प्रश्न 20487. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745: उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली कथा गोष्ठीक सुन्दर विवरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली कथा गोष्ठीक सुन्दर विवरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली कथा गोष्ठीक सुन्दर विवरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20488. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745: उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20489. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745: उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20490. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745: उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20491. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745: उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20492. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745मे उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/संस्मरण आ “मैथिली कथा गोष्ठीक सुन्दर विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2054, सूचकांक पंक्ति 745मे उमेश मण्डलक “'निर्मलीसँ जनकपुर धाम' (रिपोर्ताज); 'सुपौलक कथा गोष्टी'; '७५म कथा गोष्टी'; 'मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/संस्मरण आ “मैथिली कथा गोष्ठीक सुन्दर विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2055 : विदेह-सदेह 10 — संजीव कुमार 'शमा': 'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'

प्रश्न 20493. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746: संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 746मे संजीव कुमार 'शमा'क प्रविष्टि “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20494. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746: संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20495. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746: संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20496. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746: संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लालदास जयन्तीक आयोजन, कविता पाठ आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक विवरण

उत्तर: घ. लालदास जयन्तीक आयोजन, कविता पाठ आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक विवरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लालदास जयन्तीक आयोजन, कविता पाठ आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक विवरण” अछि।

प्रश्न 20497. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746: संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लालदास जयन्तीक आयोजन, कविता पाठ आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक विवरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लालदास जयन्तीक आयोजन, कविता पाठ आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक विवरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लालदास जयन्तीक आयोजन, कविता पाठ आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक विवरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20498. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746: संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संजीव कुमार 'शमा', विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संजीव कुमार 'शमा', विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20499. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746: संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20500. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746: संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20501. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746: संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20502. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746मे संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “लालदास जयन्तीक आयोजन, कविता पाठ आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2055, सूचकांक पंक्ति 746मे संजीव कुमार 'शमा'क “'महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “लालदास जयन्तीक आयोजन, कविता पाठ आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2056 : विदेह-सदेह 10 — मुत्राजी: 'मैथिली गजलपर परिचर्चा'

प्रश्न 20503. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747: मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली गजलपर परिचर्चा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली गजलपर परिचर्चा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 747मे मुत्राजीक प्रविष्टि “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20504. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747: मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20505. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747: मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. परिचर्चा/संयोजन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. परिचर्चा/संयोजन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “परिचर्चा/संयोजन” अछि।

प्रश्न 20506. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747: मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकासपर विमर्श

उत्तर: घ. मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकासपर विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकासपर विमर्श” अछि।

प्रश्न 20507. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747: मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकासपर विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकासपर विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकासपर विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20508. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747: मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुत्राजी, विधा गद्य, उप-विधा परिचर्चा/संयोजन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुत्राजी, विधा गद्य, उप-विधा परिचर्चा/संयोजन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20509. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747: मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20510. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747: मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ परिचर्चा/संयोजनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ परिचर्चा/संयोजनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20511. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747: मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20512. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747मे मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'” प्रविष्टि गद्य, परिचर्चा/संयोजन आ “मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकासपर विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2056, सूचकांक पंक्ति 747मे मुत्राजीक “'मैथिली गजलपर परिचर्चा'” प्रविष्टि गद्य, परिचर्चा/संयोजन आ “मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकासपर विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2057 : विदेह-सदेह 10 — गंगेश गुंजन: 'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)

प्रश्न 20513. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748: गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 748मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20514. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748: गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20515. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748: गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/पत्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/पत्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/पत्र” अछि।

प्रश्न 20516. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748: गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजलक मूल पाठ, रचनाकारक सतत सृजन-सक्रियता

उत्तर: घ. गजलक मूल पाठ, रचनाकारक सतत सृजन-सक्रियता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजलक मूल पाठ, रचनाकारक सतत सृजन-सक्रियता” अछि।

प्रश्न 20517. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748: गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजलक मूल पाठ, रचनाकारक सतत सृजन-सक्रियता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलक मूल पाठ, रचनाकारक सतत सृजन-सक्रियता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजलक मूल पाठ, रचनाकारक सतत सृजन-सक्रियता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20518. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748: गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/पत्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/पत्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20519. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748: गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20520. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748: गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20521. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748: गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20522. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748मे गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)” प्रविष्टि गद्य, आलेख/पत्र आ “गजलक मूल पाठ, रचनाकारक सतत सृजन-सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2057, सूचकांक पंक्ति 748मे गंगेश गुंजनक “'मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास' (विचार)” प्रविष्टि गद्य, आलेख/पत्र आ “गजलक मूल पाठ, रचनाकारक सतत सृजन-सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2058 : विदेह-सदेह 10 — प्रेमचन्द्र पंकज: 'मैथिली गजल : एक नजरिमे'

प्रश्न 20523. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749: प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली गजल : एक नजरिमे'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली गजल : एक नजरिमे'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 749मे प्रेमचन्द्र पंकजक प्रविष्टि “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20524. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749: प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20525. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749: प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 20526. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749: प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजलक सहजता एवं भाव-चमत्कार

उत्तर: घ. गजलक सहजता एवं भाव-चमत्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजलक सहजता एवं भाव-चमत्कार” अछि।

प्रश्न 20527. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749: प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजलक सहजता एवं भाव-चमत्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलक सहजता एवं भाव-चमत्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजलक सहजता एवं भाव-चमत्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20528. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749: प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमचन्द्र पंकज, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमचन्द्र पंकज, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20529. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749: प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20530. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749: प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20531. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749: प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20532. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749मे प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “गजलक सहजता एवं भाव-चमत्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2058, सूचकांक पंक्ति 749मे प्रेमचन्द्र पंकजक “'मैथिली गजल : एक नजरिमे'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “गजलक सहजता एवं भाव-चमत्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2059 : विदेह-सदेह 10 — राजेन्द्र बिमल: गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार

प्रश्न 20533. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750: राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 750मे राजेन्द्र बिमलक प्रविष्टि “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20534. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750: राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20535. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750: राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार/विचार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार/विचार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार/विचार” अछि।

प्रश्न 20536. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750: राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली गजलक भविष्य उज्जवल

उत्तर: घ. मैथिली गजलक भविष्य उज्जवल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली गजलक भविष्य उज्जवल” अछि।

प्रश्न 20537. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750: राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली गजलक भविष्य उज्जवल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली गजलक भविष्य उज्जवल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली गजलक भविष्य उज्जवल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20538. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750: राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेन्द्र बिमल, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार/विचार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेन्द्र बिमल, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार/विचार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20539. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750: राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20540. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750: राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कार/विचारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कार/विचारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20541. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750: राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20542. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750मे राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार/विचार आ “मैथिली गजलक भविष्य उज्जवल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2059, सूचकांक पंक्ति 750मे राजेन्द्र बिमलक “गजलपर परिचर्चामे साक्षात्कार/विचार” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार/विचार आ “मैथिली गजलक भविष्य उज्जवल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2060 : विदेह-सदेह 10 — मिहिर झा: 'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)

प्रश्न 20543. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751: मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 751मे मिहिर झाक प्रविष्टि “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20544. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751: मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20545. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751: मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 20546. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751: मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा

उत्तर: घ. गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा” अछि।

प्रश्न 20547. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751: मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक संस्कार ओ परिवेश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक संस्कार ओ परिवेश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक संस्कार ओ परिवेश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20548. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751: मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिहिर झा, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिहिर झा, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20549. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751: मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20550. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751: मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20551. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751: मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20552. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751मे मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख आ “मिथिलाक संस्कार ओ परिवेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2060, सूचकांक पंक्ति 751मे मिहिर झाक “'मैथिली गजलक वर्तमान' (आलेख)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख आ “मिथिलाक संस्कार ओ परिवेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2061 : विदेह-सदेह 10 — ओमप्रकाश झा: 'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)

प्रश्न 20553. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752: ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 752मे ओमप्रकाश झाक प्रविष्टि “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20554. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752: ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20555. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752: ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 20556. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752: ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली गजलक संक्षिप्त इतिहास

उत्तर: घ. मैथिली गजलक संक्षिप्त इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली गजलक संक्षिप्त इतिहास” अछि।

प्रश्न 20557. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752: ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली गजलक संक्षिप्त इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली गजलक संक्षिप्त इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली गजलक संक्षिप्त इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20558. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752: ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20559. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752: ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20560. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752: ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20561. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752: ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20562. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752मे ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली गजलक संक्षिप्त इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2061, सूचकांक पंक्ति 752मे ओमप्रकाश झाक “'मैथिली गजल पर परिचर्चा' (विचार)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली गजलक संक्षिप्त इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2062 : विदेह-सदेह 10 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: 'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'

प्रश्न 20563. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 753मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रविष्टि “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20564. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753: धीरेन्द्र प्रेमर्षक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20565. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753: धीरेन्द्र प्रेमर्षक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 20566. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753: धीरेन्द्र प्रेमर्षक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गीत आ गजलक अन्तर

उत्तर: घ. गीत आ गजलक अन्तर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गीत आ गजलक अन्तर” अछि।

प्रश्न 20567. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753: धीरेन्द्र प्रेमर्षक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गीत आ गजलक अन्तर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत आ गजलक अन्तर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गीत आ गजलक अन्तर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20568. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753: धीरेन्द्र प्रेमर्षक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्ष, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्ष, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20569. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753: धीरेन्द्र प्रेमर्षक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20570. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753: धीरेन्द्र प्रेमर्षक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20571. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753: धीरेन्द्र प्रेमर्षक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20572. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753मे धीरेन्द्र प्रेमर्षक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “गीत आ गजलक अन्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2062, सूचकांक पंक्ति 753मे धीरेन्द्र प्रेमर्षक “'मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “गीत आ गजलक अन्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2063 : विदेह-सदेह 10 — आशीष अनचिन्हार: 'मैथिली गजलक वर्तमान'

प्रश्न 20573. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754: आशीष अनचिन्हारक “'मैथिली गजलक वर्तमान'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली गजलक वर्तमान'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली गजलक वर्तमान'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 754मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “'मैथिली गजलक वर्तमान'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20574. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754: आशीष अनचिन्हारक “'मैथिली गजलक वर्तमान'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20575. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754: आशीष अनचिन्हारक “'मैथिली गजलक वर्तमान'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 20576. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754: आशीष अनचिन्हारक “'मैथिली गजलक वर्तमान'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनचिन्हार आखर ब्लॉगक माध्यमे गजलक शुद्धिकरण

उत्तर: घ. अनचिन्हार आखर ब्लॉगक माध्यमे गजलक शुद्धिकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनचिन्हार आखर ब्लॉगक माध्यमे गजलक शुद्धिकरण” अछि।

प्रश्न 20577. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754: आशीष अनचिन्हारक “'मैथिली गजलक वर्तमान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनचिन्हार आखर ब्लॉगक माध्यमे गजलक शुद्धिकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनचिन्हार आखर ब्लॉगक माध्यमे गजलक शुद्धिकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनचिन्हार आखर ब्लॉगक माध्यमे गजलक शुद्धिकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20578. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754: आशीष अनचिन्हारक “'मैथिली गजलक वर्तमान'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20579. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754: आशीष अनचिन्हारक “'मैथिली गजलक वर्तमान'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20580. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754: आशीष अनचिन्हारक “'मैथिली गजलक वर्तमान'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20581. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754: आशीष अनचिन्हारक “'मैथिली गजलक वर्तमान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20582. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754मे आशीष अनचिन्हारक "'मैथिली गजलक वर्तमान'" प्रविष्टि गद्य, आलेख आ "अनचिन्हार आखर ब्लॉगक माध्यमे गजलक शुद्धिकरण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2063, सूचकांक पंक्ति 754मे आशीष अनचिन्हारक "'मैथिली गजलक वर्तमान'" प्रविष्टि गद्य, आलेख आ "अनचिन्हार आखर ब्लॉगक माध्यमे गजलक शुद्धिकरण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2064 : विदेह-सदेह 10 — शेफालिका वर्मा: गजल पर परिचर्चामे विचार

प्रश्न 20583. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755: शेफालिका वर्माक "गजल पर परिचर्चामे विचार" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल पर परिचर्चामे विचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल पर परिचर्चामे विचार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 755मे शेफालिका वर्माक प्रविष्टि "गजल पर परिचर्चामे विचार" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20584. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755: शेफालिका वर्माक "गजल पर परिचर्चामे विचार"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20585. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755: शेफालिका वर्माक "गजल पर परिचर्चामे विचार"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "आलेख" अछि।

प्रश्न 20586. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755: शेफालिका वर्माक "गजल पर परिचर्चामे विचार" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजलक प्रेम-मुहब्बत के रूप

उत्तर: घ. गजलक प्रेम-मुहब्बत के रूप

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "गजलक प्रेम-मुहब्बत के रूप" अछि।

प्रश्न 20587. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755: शेफालिका वर्माक "गजल पर परिचर्चामे विचार" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजलक प्रेम-मुहब्बत के रूप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलक प्रेम-मुहब्बत के रूप

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "गजलक प्रेम-मुहब्बत के रूप" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20588. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755: शेफालिका वर्माक “गजल पर परिचर्चामे विचार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20589. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755: शेफालिका वर्माक “गजल पर परिचर्चामे विचार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20590. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755: शेफालिका वर्माक “गजल पर परिचर्चामे विचार”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20591. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755: शेफालिका वर्माक “गजल पर परिचर्चामे विचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20592. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755मे शेफालिका वर्माक “गजल पर परिचर्चामे विचार” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “गजलक प्रेम-मुहब्बत के रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2064, सूचकांक पंक्ति 755मे शेफालिका वर्माक “गजल पर परिचर्चामे विचार” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “गजलक प्रेम-मुहब्बत के रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2065 : विदेह-सदेह 10 — पूनम मण्डल: 'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म...

प्रश्न 20593. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756: पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 756मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20594. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756: पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20595. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756: पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20596. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756: पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पद्म पुरस्कारक विवरण

उत्तर: घ. पद्म पुरस्कारक विवरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पद्म पुरस्कारक विवरण” अछि।

प्रश्न 20597. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756: पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पद्म पुरस्कारक विवरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पद्म पुरस्कारक विवरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पद्म पुरस्कारक विवरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20598. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756: पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20599. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756: पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20600. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756: पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20601. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756: पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20602. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756मे पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “पद्म पुरस्कारक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2065, सूचकांक पंक्ति 756मे पूनम मण्डलक “'महासुन्दरी देबीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११ क पद्म श्री'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “पद्म पुरस्कारक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2066 : विदेह-सदेह 10 — राजेन्द्र कुमार प्रधान: '२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासम...

प्रश्न 20603. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757: राजेन्द्र कुमार प्रधानक "'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. '२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. '२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 757मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक प्रविष्टि "'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20604. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757: राजेन्द्र कुमार प्रधानक "'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20605. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757: राजेन्द्र कुमार प्रधानक "'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "शोध-आलेख" अछि।

प्रश्न 20606. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757: राजेन्द्र कुमार प्रधानक "'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डल, गजेन्द्र ठाकूर आदिक उपन्यासमे राजनीतिक विश्लेषण

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डल, गजेन्द्र ठाकूर आदिक उपन्यासमे राजनीतिक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "जगदीश प्रसाद मण्डल, गजेन्द्र ठाकूर आदिक उपन्यासमे राजनीतिक विश्लेषण" अछि।

प्रश्न 20607. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757: राजेन्द्र कुमार प्रधानक "'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डल, गजेन्द्र ठाकूर आदिक उपन्यासमे राजनीतिक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डल, गजेन्द्र ठाकूर आदिक उपन्यासमे राजनीतिक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "जगदीश प्रसाद मण्डल, गजेन्द्र ठाकूर आदिक उपन्यासमे राजनीतिक विश्लेषण" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20608. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20609. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20610. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20611. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20612. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “जगदीश प्रसाद मण्डल, गजेन्द्र ठाकूर आदिक उपन्यासमे राजनीतिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2066, सूचकांक पंक्ति 757मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “'२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “जगदीश प्रसाद मण्डल, गजेन्द्र ठाकूर आदिक उपन्यासमे राजनीतिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2067 : विदेह-सदेह 10 — विनीत उत्पल: 'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'

प्रश्न 20613. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758: विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 758मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20614. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758: विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20615. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758: विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20616. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758: विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दिल्लीक सेक्स वर्करक जीवनक सचित्र वर्णन

उत्तर: घ. दिल्लीक सेक्स वर्करक जीवनक सचित्र वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दिल्लीक सेक्स वर्करक जीवनक सचित्र वर्णन” अछि।

प्रश्न 20617. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758: विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दिल्लीक सेक्स वर्करक जीवनक सचित्र वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिल्लीक सेक्स वर्करक जीवनक सचित्र वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दिल्लीक सेक्स वर्करक जीवनक सचित्र वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20618. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758: विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20619. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758: विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20620. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758: विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20621. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758: विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20622. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758मे विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “दिल्लीक सेक्स वर्करक जीवनक सचित्र वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2067, सूचकांक पंक्ति 758मे विनीत उत्पलक “'की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “दिल्लीक सेक्स वर्करक जीवनक सचित्र वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2068 : विदेह-सदेह 10 — सुजीत कुमार झा: 'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभ...

प्रश्न 20623. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759: सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 759मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20624. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759: सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20625. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759: सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20626. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759: सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपालमे मैथिली अनौपचारिक शिक्षाक सफलता

उत्तर: घ. नेपालमे मैथिली अनौपचारिक शिक्षाक सफलता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपालमे मैथिली अनौपचारिक शिक्षाक सफलता” अछि।

प्रश्न 20627. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759: सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपालमे मैथिली अनौपचारिक शिक्षाक सफलता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालमे मैथिली अनौपचारिक शिक्षाक सफलता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपालमे मैथिली अनौपचारिक शिक्षाक सफलता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20628. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759: सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20629. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759: सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20630. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759: सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20631. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759: सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20632. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759मे सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “नेपालमे मैथिली अनौपचारिक शिक्षाक सफलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2068, सूचकांक पंक्ति 759मे सुजीत कुमार झाक “'अनौपचारिक शिक्षामे मैथिली, पढ़ाइक हिसाबसँ प्रभावकारी भऽ रहल'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “नेपालमे मैथिली अनौपचारिक शिक्षाक सफलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2069 : विदेह-सदेह 10 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम...

प्रश्न 20633. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 760मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20634. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20635. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 20636. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा शिक्षण

उत्तर: घ. भाषा शिक्षण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा शिक्षण” अछि।

प्रश्न 20637. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा शिक्षण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा शिक्षण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा शिक्षण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20638. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20639. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20640. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20641. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20642. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “भाषा शिक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2069, सूचकांक पंक्ति 760मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा... कम्प्यूटर आ भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “भाषा शिक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2070 : विदेह-सदेह 10 — डॉ. शशिधर कुमर: 'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'

प्रश्न 20643. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761: डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 761मे डॉ. शशिधर कुमरक प्रविष्टि “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20644. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761: डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20645. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761: डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20646. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761: डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रह

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रह” अछि।

प्रश्न 20647. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761: डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20648. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761: डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शशिधर कुमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शशिधर कुमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20649. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761: डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20650. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761: डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20651. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761: डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20652. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761मे डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2070, सूचकांक पंक्ति 761मे डॉ. शशिधर कुमरक “'पोथी समीक्षा : गामक जिनगी'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2071 : विदेह-सदेह 10 — जितेन्द्र झा: 'के राखत रुमालक इज्जत?'

प्रश्न 20653. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762: जितेन्द्र झाक “'के राखत रुमालक इज्जत?'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'के राखत रुमालक इज्जत?'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'के राखत रुमालक इज्जत?'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 762मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “'के राखत रुमालक इज्जत?'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20654. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762: जितेन्द्र झाक “'के राखत रुमालक इज्जत?'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20655. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762: जितेन्द्र झाक “'के राखत रुमालक इज्जत?'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/आलेख” अछि।

प्रश्न 20656. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762: जितेन्द्र झाक “'के राखत रुमालक इज्जत?'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शहीद दुर्गानन्द झाक स्मृति आ उपेक्षाक विरोध

उत्तर: घ. शहीद दुर्गानन्द झाक स्मृति आ उपेक्षाक विरोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शहीद दुर्गानन्द झाक स्मृति आ उपेक्षाक विरोध” अछि।

प्रश्न 20657. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762: जितेन्द्र झाक “'के राखत रुमालक इज्जत?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपालक राजनीतिक स्थिति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालक राजनीतिक स्थिति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपालक राजनीतिक स्थिति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20658. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762: जितेन्द्र झाक "'के राखत रुमालक इज्जत?'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20659. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762: जितेन्द्र झाक "'के राखत रुमालक इज्जत?'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20660. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762: जितेन्द्र झाक "'के राखत रुमालक इज्जत?'"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20661. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762: जितेन्द्र झाक "'के राखत रुमालक इज्जत?'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20662. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762मे जितेन्द्र झाक "'के राखत रुमालक इज्जत?'" प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/आलेख आ "नेपालक राजनीतिक स्थिति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2071, सूचकांक पंक्ति 762मे जितेन्द्र झाक "'के राखत रुमालक इज्जत?'" प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/आलेख आ "नेपालक राजनीतिक स्थिति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2072 : विदेह-सदेह 10 — मानेश्वर मनुज: 'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'

प्रश्न 20663. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763: मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 763मे मानेश्वर मनुजक प्रविष्टि “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20664. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763: मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20665. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763: मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20666. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763: मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुम्बइक यथार्थ

उत्तर: घ. मुम्बइक यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुम्बइक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 20667. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763: मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुम्बइक यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुम्बइक यथार्थ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुम्बइक यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20668. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763: मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20669. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763: मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20670. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763: मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20671. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763: मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20672. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763मे मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “मुम्बइक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2072, सूचकांक पंक्ति 763मे मानेश्वर मनुजक “'मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “मुम्बइक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2073 : विदेह-सदेह 10 — नवेन्दु कुमार झा: 'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्...

प्रश्न 20673. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764: नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 764मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20674. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764: नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20675. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764: नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20676. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764: नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भारत-नेपाल रेल संबंध

उत्तर: घ. भारत-नेपाल रेल संबंध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भारत-नेपाल रेल संबंध” अछि।

प्रश्न 20677. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764: नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जाति व्यवस्था पर प्रो. शर्माक व्याख्यान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाति व्यवस्था पर प्रो. शर्माक व्याख्यान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाति व्यवस्था पर प्रो. शर्माक व्याख्यान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20678. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764: नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20679. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764: नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20680. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764: नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'”कें विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20681. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764: नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20682. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764मे नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “जाति व्यवस्था पर प्रो. शर्माक व्याख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2073, सूचकांक पंक्ति 764मे नवेन्दु कुमार झाक “'रेल लाइन...' (समाचार); 'भारतीय सामाजिक बेवस्थामे... जाति बेवस्था'; 'प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग...'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “जाति व्यवस्था पर प्रो. शर्माक व्याख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2074 : विदेह-सदेह 10 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: 'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान...

प्रश्न 20683. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 765मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20684. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20685. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 20686. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला चित्रकलाक शास्त्रीय विवेचना

उत्तर: घ. मिथिला चित्रकलाक शास्त्रीय विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला चित्रकलाक शास्त्रीय विवेचना” अछि।

प्रश्न 20687. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला चित्रकलाक शास्त्रीय विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला चित्रकलाक शास्त्रीय विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला चित्रकलाक शास्त्रीय विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20688. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20689. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20690. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20691. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20692. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिला चित्रकलाक शास्त्रीय विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2074, सूचकांक पंक्ति 765मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य'” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिला चित्रकलाक शास्त्रीय विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2075 : विदेह-सदेह 10 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: 'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर...

प्रश्न 20693. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 766मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20694. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20695. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 20696. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक "'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पूर्वोत्तर भारतक सजीव यात्रा-संस्मरण

उत्तर: घ. पूर्वोत्तर भारतक सजीव यात्रा-संस्मरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "पूर्वोत्तर भारतक सजीव यात्रा-संस्मरण" अछि।

प्रश्न 20697. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक "'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पूर्वोत्तर भारतक सजीव यात्रा-संस्मरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूर्वोत्तर भारतक सजीव यात्रा-संस्मरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "पूर्वोत्तर भारतक सजीव यात्रा-संस्मरण" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20698. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक "'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20699. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक "'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20700. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक "'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20701. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक "'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20702. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “पूर्वोत्तर भारतक सजीव यात्रा-संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2075, सूचकांक पंक्ति 766मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'यायावरी-(हॉफलोंग; भावमय बुन्दावन; लोअर दिवांग घाटी...)'” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “पूर्वोत्तर भारतक सजीव यात्रा-संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2076 : विदेह-सदेह 10 — मंत्रेशर झा: 'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)

प्रश्न 20703. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767: मंत्रेशर झाक “'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 767मे मंत्रेशर झाक प्रविष्टि “'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20704. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767: मंत्रेशर झाक “'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20705. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767: मंत्रेशर झाक “'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20706. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767: मंत्रेशर झाक “'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास आ कथा साहित्यक पात्र विधान पर विमर्श

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास आ कथा साहित्यक पात्र विधान पर विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास आ कथा साहित्यक पात्र विधान पर विमर्श” अछि।

प्रश्न 20707. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767: मंत्रेशर झाक "'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास आ कथा साहित्यक पात्र विधान पर विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास आ कथा साहित्यक पात्र विधान पर विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास आ कथा साहित्यक पात्र विधान पर विमर्श" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20708. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767: मंत्रेशर झाक "'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मंत्रेशर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मंत्रेशर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20709. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767: मंत्रेशर झाक "'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20710. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767: मंत्रेशर झाक "'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20711. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767: मंत्रेशर झाक "'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20712. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767मे मंत्रेशर झाक “'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास आ कथा साहित्यक पात्र विधान पर विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2076, सूचकांक पंक्ति 767मे मंत्रेशर झाक “'चरित्र चित्रणक बाजीगर-जगदीश प्रसाद मंडल' (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास आ कथा साहित्यक पात्र विधान पर विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2077 : विदेह-सदेह 10 — आशीष अनचिन्हार: 'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल...

प्रश्न 20713. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768: आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 768मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20714. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768: आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20715. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768: आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20716. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768: आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वियोगीक गजलमे शब्द चयन, काव्यगत त्रुटि आ समालोचनाक आधार

उत्तर: घ. वियोगीक गजलमे शब्द चयन, काव्यगत त्रुटि आ समालोचनाक आधार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वियोगीक गजलमे शब्द चयन, काव्यगत त्रुटि आ समालोचनाक आधार” अछि।

प्रश्न 20717. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768: आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वियोगीक गजलमे शब्द चयन, काव्यगत त्रुटि आ समालोचनाक आधार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वियोगीक गजलमे शब्द चयन, काव्यगत त्रुटि आ समालोचनाक आधार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वियोगीक गजलमे शब्द चयन, काव्यगत त्रुटि आ समालोचनाक आधार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20718. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768: आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20719. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768: आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20720. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768: आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20721. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768: आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20722. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768मे आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “वियोगीक गजलमे शब्द चयन, काव्यगत त्रुटि आ समालोचनाक आधार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2077, सूचकांक पंक्ति 768मे आशीष अनचिन्हारक “'समालोचना- गजलक साक्ष्य' (तारानन्द वियोगीक गजल संग्रहक समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “वियोगीक गजलमे शब्द चयन, काव्यगत त्रुटि आ समालोचनाक आधार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2078 : विदेह-सदेह 10 — डॉ. मेघन प्रसाद: 'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'

प्रश्न 20723. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769: डॉ. मेघन प्रसादक “'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 769मे डॉ. मेघन प्रसादक प्रविष्टि “'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20724. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769: डॉ. मेघन प्रसादक “'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20725. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769: डॉ. मेघन प्रसादक “'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 20726. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769: डॉ. मेघन प्रसादक “'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनुवादक कला, चुनौती

उत्तर: घ. अनुवादक कला, चुनौती

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवादक कला, चुनौती” अछि।

प्रश्न 20727. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769: डॉ. मेघन प्रसादक "'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनुवादक कला, चुनौती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुवादक कला, चुनौती

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "अनुवादक कला, चुनौती" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20728. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769: डॉ. मेघन प्रसादक "'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. मेघन प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. मेघन प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20729. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769: डॉ. मेघन प्रसादक "'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20730. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769: डॉ. मेघन प्रसादक "'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20731. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769: डॉ. मेघन प्रसादक "'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20732. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769मे डॉ. मेघन प्रसादक "'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'" प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ "अनुवादक कला, चुनौती" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2078, सूचकांक पंक्ति 769मे डॉ. मेघन प्रसादक "'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास'" प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ "अनुवादक कला, चुनौती" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2079 : विदेह-सदेह 10 — सुमित आनन्द: 'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'

प्रश्न 20733. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770: सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 770मे सुमित आनन्दक प्रविष्टि “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20734. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770: सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20735. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770: सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20736. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770: सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भारतीय भाषा संस्थानक तत्वावधानमे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयमे अनुवाद कार्यशाला

उत्तर: घ. भारतीय भाषा संस्थानक तत्वावधानमे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयमे अनुवाद कार्यशाला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भारतीय भाषा संस्थानक तत्वावधानमे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयमे अनुवाद कार्यशाला” अछि।

प्रश्न 20737. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770: सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भारतीय भाषा संस्थानक तत्वावधानमे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयमे अनुवाद कार्यशाला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारतीय भाषा संस्थानक तत्वावधानमे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयमे अनुवाद कार्यशाला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भारतीय भाषा संस्थानक तत्वावधानमे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयमे अनुवाद कार्यशाला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20738. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770: सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20739. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770: सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20740. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770: सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20741. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770: सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20742. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770मे सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “भारतीय भाषा संस्थानक तत्वावधानमे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयमे अनुवाद कार्यशाला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2079, सूचकांक पंक्ति 770मे सुमित आनन्दक “'संवाद- कार्यशालाक आयोजन'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “भारतीय भाषा संस्थानक तत्वावधानमे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयमे अनुवाद कार्यशाला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2080 : विदेह-सदेह 10 — धनाकर ठाकूर: 'जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी”'

प्रश्न 20743. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771: धनाकर ठाकूरक “'जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी”'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी”'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी”'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 771मे धनाकर ठाकूरक प्रविष्टि “'जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी”'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20744. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771: धनाकर ठाकूरक "'जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी"'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20745. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771: धनाकर ठाकूरक "'जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी"'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "समीक्षा" अछि।

प्रश्न 20746. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771: धनाकर ठाकूरक "'जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी"'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मंडलजीक कथा संग्रहक पात्र आ समाज

उत्तर: घ. मंडलजीक कथा संग्रहक पात्र आ समाज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "मंडलजीक कथा संग्रहक पात्र आ समाज" अछि।

प्रश्न 20747. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771: धनाकर ठाकूरक "'जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी"'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मंडलजीक कथा संग्रहक पात्र आ समाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मंडलजीक कथा संग्रहक पात्र आ समाज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "मंडलजीक कथा संग्रहक पात्र आ समाज" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20748. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771: धनाकर ठाकूरक "'जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी"'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धनाकर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धनाकर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20749. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771: धनाकर ठाकूरक "'जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी"'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20750. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771: धनाकर ठाकूरक “'जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी”'”कें विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20751. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771: धनाकर ठाकूरक “'जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी”'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20752. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771मे धनाकर ठाकूरक “'जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी”'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मंडलजीक कथा संग्रहक पात्र आ समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2080, सूचकांक पंक्ति 771मे धनाकर ठाकूरक “'जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी”'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मंडलजीक कथा संग्रहक पात्र आ समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2081 : विदेह-सदेह 10 — बिपिन झा: 'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'

प्रश्न 20753. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772: बिपिन झाक “'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 772मे बिपिन झाक प्रविष्टि “'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20754. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772: बिपिन झाक “'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20755. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772: बिपिन झाक “'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 20756. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772: बिपिन झाक "'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कम्प्यूटरीकृत अनुवादमे बहुअर्थी शब्द (बहुअर्थकता) क समस्या आ समाधान

उत्तर: घ. कम्प्यूटरीकृत अनुवादमे बहुअर्थी शब्द (बहुअर्थकता) क समस्या आ समाधान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "कम्प्यूटरीकृत अनुवादमे बहुअर्थी शब्द (बहुअर्थकता) क समस्या आ समाधान" अछि।

प्रश्न 20757. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772: बिपिन झाक "'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कम्प्यूटरीकृत अनुवादमे बहुअर्थी शब्द (बहुअर्थकता) क समस्या आ समाधान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कम्प्यूटरीकृत अनुवादमे बहुअर्थी शब्द (बहुअर्थकता) क समस्या आ समाधान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "कम्प्यूटरीकृत अनुवादमे बहुअर्थी शब्द (बहुअर्थकता) क समस्या आ समाधान" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20758. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772: बिपिन झाक "'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20759. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772: बिपिन झाक "'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20760. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772: बिपिन झाक "'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20761. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772: बिपिन झाक "'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20762. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772मे बिपिन झाक “'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “कम्प्यूटरीकृत अनुवादमे बहुअर्थी शब्द (बहुअर्थकता) क समस्या आ समाधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2081, सूचकांक पंक्ति 772मे बिपिन झाक “'यान्त्रिक अनुवाद आ बहुअर्थकता'” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “कम्प्यूटरीकृत अनुवादमे बहुअर्थी शब्द (बहुअर्थकता) क समस्या आ समाधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2082 : विदेह-सदेह 10 — वीरेन्द्र कुमार यादव: 'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'

प्रश्न 20763. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773: वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 773मे वीरेन्द्र कुमार यादवक प्रविष्टि “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20764. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773: वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20765. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773: वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20766. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773: वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यज्ञ-मेलाक आडम्बर आ धार्मिक अन्धविश्वासपर व्यंग्य

उत्तर: घ. यज्ञ-मेलाक आडम्बर आ धार्मिक अन्धविश्वासपर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यज्ञ-मेलाक आडम्बर आ धार्मिक अन्धविश्वासपर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 20767. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773: वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यज्ञ-मेलाक आडम्बर आ धार्मिक अन्धविश्वासपर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यज्ञ-मेलाक आडम्बर आ धार्मिक अन्धविश्वासपर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यज्ञ-मेलाक आडम्बर आ धार्मिक अन्धविश्वासपर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20768. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773: वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20769. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773: वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20770. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773: वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20771. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773: वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20772. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773मे वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “यज्ञ-मेलाक आडम्बर आ धार्मिक अन्धविश्वासपर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2082, सूचकांक पंक्ति 773मे वीरेन्द्र कुमार यादवक “'महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “यज्ञ-मेलाक आडम्बर आ धार्मिक अन्धविश्वासपर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2083 : विदेह-सदेह 10 — रामभरोस कापड़ि "भ्रमर": 'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'

प्रश्न 20773. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774: रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क "'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 774मे रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क प्रविष्टि "'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20774. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774: रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क "'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20775. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774: रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क "'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20776. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774: रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क "'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. काठमाण्डूमे सम्पन्न सम्मेलन

उत्तर: घ. काठमाण्डूमे सम्पन्न सम्मेलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “काठमाण्डूमे सम्पन्न सम्मेलन” अछि।

प्रश्न 20777. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774: रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क "'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलारत्न आ मिथिलांशी सम्मानक विवरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलारत्न आ मिथिलांशी सम्मानक विवरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलारत्न आ मिथिलांशी सम्मानक विवरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20778. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774: रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क “'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापड़ि "भ्रमर", विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापड़ि "भ्रमर", विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20779. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774: रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क “'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20780. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774: रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क “'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20781. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774: रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क “'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20782. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774मे रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क “'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मिथिलारत्न आ मिथिलांशी सम्मानक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2083, सूचकांक पंक्ति 774मे रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क “'अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन : २०६७'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मिथिलारत्न आ मिथिलांशी सम्मानक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2084 : विदेह-सदेह 10 — रमेश: 'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'

प्रश्न 20783. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775: रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 775मे रमेशक प्रविष्टि “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20784. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775: रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20785. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775: रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 20786. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775: रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मायानन्द मिश्रक कथा-साहित्यक सीमा आ विशेषता

उत्तर: घ. मायानन्द मिश्रक कथा-साहित्यक सीमा आ विशेषता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मायानन्द मिश्रक कथा-साहित्यक सीमा आ विशेषता” अछि।

प्रश्न 20787. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775: रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मायानन्द मिश्रक कथा-साहित्यक सीमा आ विशेषता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मायानन्द मिश्रक कथा-साहित्यक सीमा आ विशेषता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मायानन्द मिश्रक कथा-साहित्यक सीमा आ विशेषता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20788. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775: रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमेश, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमेश, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20789. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775: रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20790. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775: रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20791. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775: रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20792. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775मे रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “मायानन्द मिश्रक कथा-साहित्यक सीमा आ विशेषता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2084, सूचकांक पंक्ति 775मे रमेशक “'प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल ‘मुदा'” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “मायानन्द मिश्रक कथा-साहित्यक सीमा आ विशेषता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2086 : विदेह-सदेह 10 — रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु): 'गामक जिनगी' (पोथी समीक...

प्रश्न 20793. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 777मे रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क प्रविष्टि “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20794. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20795. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20796. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रहक समीक्षा

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रहक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रहक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20797. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रहक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रहक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रहक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20798. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु), विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु), विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20799. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20800. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20801. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20802. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777मे रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2086, सूचकांक पंक्ति 777मे रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'गामक जिनगी' (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2087 : विदेह-सदेह 10 — रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु): 'आरसी बाबूक व्यक्तित्व...

प्रश्न 20803. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 778मे रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क प्रविष्टि “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20804. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20805. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20806. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आरसी प्रसाद सिंह पर साहित्य अकादेमी आ बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालयक आयोजन

उत्तर: घ. आरसी प्रसाद सिंह पर साहित्य अकादेमी आ बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालयक आयोजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आरसी प्रसाद सिंह पर साहित्य अकादेमी आ बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालयक आयोजन” अछि।

प्रश्न 20807. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आरसी प्रसाद सिंह पर साहित्य अकादेमी आ बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालयक आयोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आरसी प्रसाद सिंह पर साहित्य अकादेमी आ बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालयक आयोजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आरसी प्रसाद सिंह पर साहित्य अकादेमी आ बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालयक आयोजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20808. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु), विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु), विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20809. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20810. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'”कँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20811. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778: रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20812. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778मे रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “आरसी प्रसाद सिंह पर साहित्य अकादेमी आ बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालयक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2087, सूचकांक पंक्ति 778मे रमाकान्त राय ‘रमा’ (आचार्य दिव्यचक्षु)क “'आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “आरसी प्रसाद सिंह पर साहित्य अकादेमी आ बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालयक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2088 : विदेह-सदेह 10 — डॉ. योगानन्द झा: 'गामक जिनगी' (समीक्षा)

प्रश्न 20813. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779: डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'गामक जिनगी' (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गामक जिनगी' (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 779मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “'गामक जिनगी' (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20814. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779: डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20815. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779: डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20816. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779: डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्र. मण्डलक कथा-संग्रहमे आस्था, जिजीविषा आ संघर्षक प्रवाह

उत्तर: घ. जगदीश प्र. मण्डलक कथा-संग्रहमे आस्था, जिजीविषा आ संघर्षक प्रवाह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्र. मण्डलक कथा-संग्रहमे आस्था, जिजीविषा आ संघर्षक प्रवाह” अछि।

प्रश्न 20817. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779: डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्र. मण्डलक कथा-संग्रहमे आस्था, जिजीविषा आ संघर्षक प्रवाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्र. मण्डलक कथा-संग्रहमे आस्था, जिजीविषा आ संघर्षक प्रवाह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्र. मण्डलक कथा-संग्रहमे आस्था, जिजीविषा आ संघर्षक प्रवाह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20818. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779: डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20819. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779: डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20820. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779: डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20821. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779: डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20822. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779मे डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्र. मण्डलक कथा-संग्रहमे आस्था, जिजीविषा आ संघर्षक प्रवाह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2088, सूचकांक पंक्ति 779मे डॉ. योगानन्द झाक “'गामक जिनगी' (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्र. मण्डलक कथा-संग्रहमे आस्था, जिजीविषा आ संघर्षक प्रवाह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2089 : विदेह-सदेह 10 — डॉ. योगानन्द झा: 'उषा किरण खानक ‘जाइ सँ पहिने’ (समीक्षा)

प्रश्न 20823. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780: डॉ. योगानन्द झाक “'उषा किरण खानक ‘जाइ सँ पहिने’ (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'उषा किरण खानक ‘जाइ सँ पहिने’ (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'उषा किरण खानक ‘जाइ सँ पहिने’ (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 780मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “'उषा किरण खानक ‘जाइ सँ पहिने’ (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20824. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780: डॉ. योगानन्द झाक “'उषा किरण खानक ‘जाइ सँ पहिने’ (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20825. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780: डॉ. योगानन्द झाक “'उषा किरण खानक ‘जाइ सँ पहिने’ (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20826. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780: डॉ. योगानन्द झाक “'उषा किरण खानक ‘जाइ सँ पहिने’ (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीता-चरित्रक आधुनिक सन्दर्भ

उत्तर: घ. सीता-चरित्रक आधुनिक सन्दर्भ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीता-चरित्रक आधुनिक सन्दर्भ” अछि।

प्रश्न 20827. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780: डॉ. योगानन्द झाक "'उषा किरण खानक 'जाइ सँ पहिने' (समीक्षा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-अस्मिताक गाथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-अस्मिताक गाथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "नारी-अस्मिताक गाथा" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20828. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780: डॉ. योगानन्द झाक "'उषा किरण खानक 'जाइ सँ पहिने' (समीक्षा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20829. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780: डॉ. योगानन्द झाक "'उषा किरण खानक 'जाइ सँ पहिने' (समीक्षा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20830. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780: डॉ. योगानन्द झाक "'उषा किरण खानक 'जाइ सँ पहिने' (समीक्षा)"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20831. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780: डॉ. योगानन्द झाक "'उषा किरण खानक 'जाइ सँ पहिने' (समीक्षा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20832. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780मे डॉ. योगानन्द झाक "'उषा किरण खानक 'जाइ सँ पहिने' (समीक्षा)" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "नारी-अस्मिताक गाथा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2089, सूचकांक पंक्ति 780मे डॉ. योगानन्द झाक "'उषा किरण खानक 'जाइ सँ पहिने' (समीक्षा)" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "नारी-अस्मिताक गाथा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2090 : विदेह-सदेह 10 — डॉ. योगानन्द झा: 'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'

प्रश्न 20833. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781: डॉ. योगानन्द झाक "'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 781मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि "'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20834. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781: डॉ. योगानन्द झाक "'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20835. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781: डॉ. योगानन्द झाक "'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "समीक्षा" अछि।

प्रश्न 20836. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781: डॉ. योगानन्द झाक "'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्र. मंडलक उपन्यासक आदर्शवादी विचारधाराक विश्लेषण

उत्तर: घ. जगदीश प्र. मंडलक उपन्यासक आदर्शवादी विचारधाराक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "जगदीश प्र. मंडलक उपन्यासक आदर्शवादी विचारधाराक विश्लेषण" अछि।

प्रश्न 20837. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781: डॉ. योगानन्द झाक "'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्र. मंडलक उपन्यासक आदर्शवादी विचारधाराक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्र. मंडलक उपन्यासक आदर्शवादी विचारधाराक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "जगदीश प्र. मंडलक उपन्यासक आदर्शवादी विचारधाराक विश्लेषण" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20838. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781: डॉ. योगानन्द झाक "'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20839. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781: डॉ. योगानन्द झाक “'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20840. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781: डॉ. योगानन्द झाक “'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20841. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781: डॉ. योगानन्द झाक “'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20842. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781मे डॉ. योगानन्द झाक “'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्र. मंडलक उपन्यासक आदर्शवादी विचारधाराक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2090, सूचकांक पंक्ति 781मे डॉ. योगानन्द झाक “'आदर्शक उपस्थापन- मौलाइल गाछक फूल'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्र. मंडलक उपन्यासक आदर्शवादी विचारधाराक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2091 : विदेह-सदेह 10 — मानेश्वर मनुज: 'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'

प्रश्न 20843. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782: मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 782मे मानेश्वर मनुजक प्रविष्टि “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20844. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782: मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20845. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782: मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20846. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782: मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विभा रानीक कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि

उत्तर: घ. विभा रानीक कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विभा रानीक कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि” अछि।

प्रश्न 20847. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782: मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विभा रानीक कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विभा रानीक कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विभा रानीक कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20848. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782: मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20849. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782: मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20850. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782: मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'”कें विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20851. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782: मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20852. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782मे मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विभा रानीक कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2091, सूचकांक पंक्ति 782मे मानेश्वर मनुजक “'बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विभा रानीक कथा पर आलोचनात्मक दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2092 : विदेह-सदेह 10 — मानेश्वर मनुज: 'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'

प्रश्न 20853. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783: मानेश्वर मनुजक “'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 783मे मानेश्वर मनुजक प्रविष्टि “'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20854. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783: मानेश्वर मनुजक “'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20855. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783: मानेश्वर मनुजक "'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "समालोचना" अछि।

प्रश्न 20856. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783: मानेश्वर मनुजक "'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेमचन्द आ मैथिली रूपान्तरण

उत्तर: घ. प्रेमचन्द आ मैथिली रूपान्तरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "प्रेमचन्द आ मैथिली रूपान्तरण" अछि।

प्रश्न 20857. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783: मानेश्वर मनुजक "'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेमचन्द आ मैथिली रूपान्तरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमचन्द आ मैथिली रूपान्तरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "प्रेमचन्द आ मैथिली रूपान्तरण" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20858. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783: मानेश्वर मनुजक "'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20859. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783: मानेश्वर मनुजक "'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20860. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783: मानेश्वर मनुजक "'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20861. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783: मानेश्वर मनुजक “'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20862. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783मे मानेश्वर मनुजक “'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “प्रेमचन्द आ मैथिली रूपान्तरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2092, सूचकांक पंक्ति 783मे मानेश्वर मनुजक “'मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता'” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “प्रेमचन्द आ मैथिली रूपान्तरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2093 : विदेह-सदेह 10 — ज्योति झा चौधरी: 'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/...

प्रश्न 20863. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784: ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 784मे ज्योति झा चौधरीक प्रविष्टि “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20864. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784: ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20865. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784: ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20866. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784: ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लन्डनमे मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी

उत्तर: घ. लन्डनमे मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लन्डनमे मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी” अछि।

प्रश्न 20867. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784: ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लन्डनमे मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लन्डनमे मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लन्डनमे मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20868. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784: ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति झा चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति झा चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20869. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784: ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20870. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784: ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20871. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784: ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20872. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784मे ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “लन्डनमे मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2093, सूचकांक पंक्ति 784मे ज्योति झा चौधरीक “'इलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी/ यूके मे भेल २०११ क वार्षिक मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “लन्डनमे मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2094 : विदेह-सदेह 10 — शिव कुमार झा ‘टिल्लू’: 'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चि...

प्रश्न 20873. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 785मे शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20874. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20875. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 20876. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली उपन्यासमे दलित विमर्श

उत्तर: घ. मैथिली उपन्यासमे दलित विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली उपन्यासमे दलित विमर्श” अछि।

प्रश्न 20877. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली उपन्यासमे दलित विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली उपन्यासमे दलित विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली उपन्यासमे दलित विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20878. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा ‘टिल्लू’, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा ‘टिल्लू’, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20879. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20880. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20881. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20882. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785मे शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मैथिली उपन्यासमे दलित विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2094, सूचकांक पंक्ति 785मे शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण'” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मैथिली उपन्यासमे दलित विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2095 : विदेह-सदेह 10 — शिव कुमार झा ‘टिल्लू’: 'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली...

प्रश्न 20883. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 786मे शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20884. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20885. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20886. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजेन्द्र ठाकुर, ज्योति चौधरी, राजदेव मंडल आदिक कृति पर विविध समीक्षा

उत्तर: घ. गजेन्द्र ठाकुर, ज्योति चौधरी, राजदेव मंडल आदिक कृति पर विविध समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजेन्द्र ठाकुर, ज्योति चौधरी, राजदेव मंडल आदिक कृति पर विविध समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20887. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजेन्द्र ठाकुर, ज्योति चौधरी, राजदेव मंडल आदिक कृति पर विविध समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुर, ज्योति चौधरी, राजदेव मंडल आदिक कृति पर विविध समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजेन्द्र ठाकुर, ज्योति चौधरी, राजदेव मंडल आदिक कृति पर विविध समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20888. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा ‘टिल्लू’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा ‘टिल्लू’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20889. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20890. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'”कैँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20891. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20892. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786मे शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गजेन्द्र ठाकुर, ज्योति चौधरी, राजदेव मंडल आदिक कृति पर विविध समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2095, सूचकांक पंक्ति 786मे शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक/ अर्चिस/ मैथिली चित्रकथा/ अम्बरा'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गजेन्द्र ठाकुर, ज्योति चौधरी, राजदेव मंडल आदिक कृति पर विविध समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2096 : विदेह-सदेह 10 — सुशान्त झा: 'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'

प्रश्न 20893. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787: सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 787मे सुशान्त झाक प्रविष्टि “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20894. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787: सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20895. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787: सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विचार/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विचार/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विचार/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 20896. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787: सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषा आ लिपिक प्रश्न

उत्तर: घ. मैथिली भाषा आ लिपिक प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा आ लिपिक प्रश्न” अछि।

प्रश्न 20897. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787: सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली भाषा आ लिपिक प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा आ लिपिक प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा आ लिपिक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20898. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787: सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशान्त झा, विधा गद्य, उप-विधा विचार/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशान्त झा, विधा गद्य, उप-विधा विचार/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20899. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787: सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20900. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787: सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विचार/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विचार/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20901. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787: सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20902. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787मे सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'” प्रविष्टि गद्य, विचार/निबन्ध आ “मैथिली भाषा आ लिपिक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2096, सूचकांक पंक्ति 787मे सुशान्त झाक “'मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य'” प्रविष्टि गद्य, विचार/निबन्ध आ “मैथिली भाषा आ लिपिक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2097 : विदेह-सदेह 10 — डॉ. बचेश्वर झा: 'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)

प्रश्न 20903. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788: डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 788मे डॉ. बचेश्वर झाक प्रविष्टि “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20904. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788: डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20905. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788: डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20906. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788: डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्र. मंडलक उपन्यास

उत्तर: घ. जगदीश प्र. मंडलक उपन्यास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्र. मंडलक उपन्यास” अछि।

प्रश्न 20907. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788: डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्र. मंडलक उपन्यास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्र. मंडलक उपन्यास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्र. मंडलक उपन्यास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20908. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788: डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20909. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788: डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20910. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788: डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20911. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788: डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20912. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788मे डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्र. मंडलक उपन्यास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2097, सूचकांक पंक्ति 788मे डॉ. बचेश्वर झाक “'मौलाइल गाछक फूल' (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्र. मंडलक उपन्यास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2098 : विदेह-सदेह 10 — राजेश्वर नेपाली: 'कवि पं. प्रतापनारायण झाकेँ छअम पुण्यतिथिपर हा...

प्रश्न 20913. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789: राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकेँ छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कवि पं. प्रतापनारायण झाकेँ छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कवि पं. प्रतापनारायण झाकेँ छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 789मे राजेश्वर नेपालीक प्रविष्टि “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकेँ छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20914. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789: राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकेँ छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20915. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789: राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकें छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्रद्धाञ्जलि/समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्रद्धाञ्जलि/समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्रद्धाञ्जलि/समालोचना” अछि।

प्रश्न 20916. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789: राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकें छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतापनारायण झाक जीवनी आ रचना संसार

उत्तर: घ. प्रतापनारायण झाक जीवनी आ रचना संसार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतापनारायण झाक जीवनी आ रचना संसार” अछि।

प्रश्न 20917. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789: राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकें छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रतापनारायण झाक जीवनी आ रचना संसार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतापनारायण झाक जीवनी आ रचना संसार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतापनारायण झाक जीवनी आ रचना संसार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20918. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789: राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकें छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश्वर नेपाली, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा श्रद्धाञ्जलि/समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश्वर नेपाली, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा श्रद्धाञ्जलि/समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20919. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789: राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकें छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20920. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789: राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकें छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'”कें विदेह-सदेह 10क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ श्रद्धाञ्जलि/समालोचनाक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ श्रद्धाञ्जलि/समालोचनाक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20921. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789: राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकें छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20922. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789मे राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकें छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'” प्रविष्टि गद्य/पद्य, श्रद्धाञ्जलि/समालोचना आ “प्रतापनारायण झाक जीवनी आ रचना संसार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2098, सूचकांक पंक्ति 789मे राजेश्वर नेपालीक “'कवि पं. प्रतापनारायण झाकें छअम पुण्यतिथिपर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि'” प्रविष्टि गद्य/पद्य, श्रद्धाञ्जलि/समालोचना आ “प्रतापनारायण झाक जीवनी आ रचना संसार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2099 : विदेह-सदेह 10 — बसंत झा: 'उगना'

प्रश्न 20923. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790: बसंत झाक “'उगना'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'उगना'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'उगना'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 790मे बसंत झाक प्रविष्टि “'उगना'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20924. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790: बसंत झाक “'उगना'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20925. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790: बसंत झाक “'उगना'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोककथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोककथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोककथा” अछि।

प्रश्न 20926. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790: बसंत झाक “'उगना'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महाकवि विद्यापति आ उगना (महादेव)क लोककथा

उत्तर: घ. महाकवि विद्यापति आ उगना (महादेव)क लोककथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महाकवि विद्यापति आ उगना (महादेव)क लोककथा” अछि।

प्रश्न 20927. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790: बसंत झाक “'उगना'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महाकवि विद्यापति आ उगना (महादेव)क लोककथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाकवि विद्यापति आ उगना (महादेव)क लोककथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महाकवि विद्यापति आ उगना (महादेव)क लोककथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20928. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790: बसंत झाक “'उगना'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बसंत झा, विधा गद्य, उप-विधा लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बसंत झा, विधा गद्य, उप-विधा लोककथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20929. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790: बसंत झाक “'उगना'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20930. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790: बसंत झाक “'उगना'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोककथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोककथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20931. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790: बसंत झाक “'उगना'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20932. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790मे बसंत झाक “'उगना'” प्रविष्टि गद्य, लोककथा आ “महाकवि विद्यापति आ उगना (महादेव)क लोककथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2099, सूचकांक पंक्ति 790मे बसंत झाक “'उगना'” प्रविष्टि गद्य, लोककथा आ “महाकवि विद्यापति आ उगना (महादेव)क लोककथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2100 : विदेह-सदेह 10 — जीवकान्त: 'जगदीश प्रसाद मंडलक ‘जिनगीक जीत’ उपन्यासपर'

प्रश्न 20933. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791: जीवकान्तक “'जगदीश प्रसाद मंडलक ‘जिनगीक जीत’ उपन्यासपर'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'जगदीश प्रसाद मंडलक ‘जिनगीक जीत’ उपन्यासपर'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'जगदीश प्रसाद मंडलक ‘जिनगीक जीत’ उपन्यासपर'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 791मे जीवकान्तक प्रविष्टि “'जगदीश प्रसाद मंडलक ‘जिनगीक जीत’ उपन्यासपर'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20934. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791: जीवकान्तक “'जगदीश प्रसाद मंडलक ‘जिनगीक जीत’ उपन्यासपर'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20935. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791: जीवकान्तक “'जगदीश प्रसाद मंडलक ‘जिनगीक जीत’ उपन्यासपर'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20936. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791: जीवकान्तक “'जगदीश प्रसाद मंडलक ‘जिनगीक जीत’ उपन्यासपर'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश

उत्तर: घ. मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश” अछि।

प्रश्न 20937. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791: जीवकान्तक “'जगदीश प्रसाद मंडलक ‘जिनगीक जीत’ उपन्यासपर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20938. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791: जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20939. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791: जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20940. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791: जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर'"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20941. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791: जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20942. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791मे जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2100, सूचकांक पंक्ति 791मे जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2101 : विदेह-सदेह 10 — जीवकान्त: 'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल”'

प्रश्न 20943. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792: जीवकान्तक “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल”'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल”'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल”'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 792मे जीवकान्तक प्रविष्टि “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल”'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20944. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792: जीवकान्तक “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल”'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20945. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792: जीवकान्तक “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल”'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20946. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792: जीवकान्तक “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल”'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश

उत्तर: घ. मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश” अछि।

प्रश्न 20947. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792: जीवकान्तक “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल”'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20948. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792: जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास "मौलाइल गाछक फूल"'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20949. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792: जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास "मौलाइल गाछक फूल"'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20950. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792: जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास "मौलाइल गाछक फूल"'"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20951. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792: जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास "मौलाइल गाछक फूल"'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20952. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792मे जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास "मौलाइल गाछक फूल"'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2101, सूचकांक पंक्ति 792मे जीवकान्तक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास "मौलाइल गाछक फूल"'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "मण्डलजीक उपन्यासक कथानक आ सन्देश" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2102 : विदेह-सदेह 10 — धीरेन्द्र कुमार: 'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मै...

प्रश्न 20953. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793: धीरेन्द्र कुमारक “'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 793मे धीरेन्द्र कुमारक प्रविष्टि “'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20954. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793: धीरेन्द्र कुमारक “'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20955. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793: धीरेन्द्र कुमारक “'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20956. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793: धीरेन्द्र कुमारक “'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य आ चित्रकलाक माध्यमे मैथिलीक समृद्धता

उत्तर: घ. बाल साहित्य आ चित्रकलाक माध्यमे मैथिलीक समृद्धता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य आ चित्रकलाक माध्यमे मैथिलीक समृद्धता” अछि।

प्रश्न 20957. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793: धीरेन्द्र कुमारक “'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य आ चित्रकलाक माध्यमे मैथिलीक समृद्धता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य आ चित्रकलाक माध्यमे मैथिलीक समृद्धता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य आ चित्रकलाक माध्यमे मैथिलीक समृद्धता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20958. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793: धीरेन्द्र कुमारक "'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20959. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793: धीरेन्द्र कुमारक "'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20960. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793: धीरेन्द्र कुमारक "'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20961. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793: धीरेन्द्र कुमारक "'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20962. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793मे धीरेन्द्र कुमारक "'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "बाल साहित्य आ चित्रकलाक माध्यमे मैथिलीक समृद्धता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2102, सूचकांक पंक्ति 793मे धीरेन्द्र कुमारक "'प्रीति ठाकुरक गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली चित्रकथा'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "बाल साहित्य आ चित्रकलाक माध्यमे मैथिलीक समृद्धता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2103 : विदेह-सदेह 10 — धीरेन्द्र कुमार: 'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- “मौलाइल गाछक फूल”'

प्रश्न 20963. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794: धीरेन्द्र कुमारक “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- “मौलाइल गाछक फूल”'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- “मौलाइल गाछक फूल”'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- “मौलाइल गाछक फूल”'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 794मे धीरेन्द्र कुमारक प्रविष्टि “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- “मौलाइल गाछक फूल”'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20964. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794: धीरेन्द्र कुमारक “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- “मौलाइल गाछक फूल”'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20965. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794: धीरेन्द्र कुमारक “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- “मौलाइल गाछक फूल”'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 20966. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794: धीरेन्द्र कुमारक “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- “मौलाइल गाछक फूल”'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आदर्शवादी चित्रण

उत्तर: घ. आदर्शवादी चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आदर्शवादी चित्रण” अछि।

प्रश्न 20967. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794: धीरेन्द्र कुमारक “'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- “मौलाइल गाछक फूल”'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आदर्शवादी चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आदर्शवादी चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आदर्शवादी चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20968. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794: धीरेन्द्र कुमारक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- "मौलाइल गाछक फूल"'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20969. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794: धीरेन्द्र कुमारक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- "मौलाइल गाछक फूल"'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20970. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794: धीरेन्द्र कुमारक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- "मौलाइल गाछक फूल"'"केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20971. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794: धीरेन्द्र कुमारक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- "मौलाइल गाछक फूल"'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20972. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794मे धीरेन्द्र कुमारक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- "मौलाइल गाछक फूल"'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "आदर्शवादी चित्रण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2103, सूचकांक पंक्ति 794मे धीरेन्द्र कुमारक "'जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास- "मौलाइल गाछक फूल"'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "आदर्शवादी चित्रण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2104 : विदेह-सदेह 10 — राजदेव मंडल: 'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'

प्रश्न 20973. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795: राजदेव मंडलक "'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 795मे राजदेव मंडलक प्रविष्टि "'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20974. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795: राजदेव मंडलक "'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20975. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795: राजदेव मंडलक "'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "पत्र" अछि।

प्रश्न 20976. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795: राजदेव मंडलक "'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजेन्द्र ठाकूरक पोथी "कुरूक्षेत्रम्"क सराहना

उत्तर: घ. गजेन्द्र ठाकूरक पोथी "कुरूक्षेत्रम्"क सराहना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "गजेन्द्र ठाकूरक पोथी "कुरूक्षेत्रम्"क सराहना" अछि।

प्रश्न 20977. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795: राजदेव मंडलक "'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजेन्द्र ठाकूरक पोथी "कुरूक्षेत्रम्"क सराहना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकूरक पोथी "कुरूक्षेत्रम्"क सराहना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "गजेन्द्र ठाकूरक पोथी "कुरूक्षेत्रम्"क सराहना" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20978. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795: राजदेव मंडलक "'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा पत्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा पत्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20979. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795: राजदेव मंडलक “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20980. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795: राजदेव मंडलक “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20981. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795: राजदेव मंडलक “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20982. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795मे राजदेव मंडलक “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “गजेन्द्र ठाकूरक पोथी “कुरूक्षेत्रम्”क सराहना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2104, सूचकांक पंक्ति 795मे राजदेव मंडलक “'कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र'” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “गजेन्द्र ठाकूरक पोथी “कुरूक्षेत्रम्”क सराहना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2105 : विदेह-सदेह 10 — राजदेव मंडल: 'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- ‘गामक जिनगी’'

प्रश्न 20983. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796: राजदेव मंडलक “'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- ‘गामक जिनगी’'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- ‘गामक जिनगी’'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- ‘गामक जिनगी’'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 796मे राजदेव मंडलक प्रविष्टि “'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- ‘गामक जिनगी’'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20984. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796: राजदेव मंडलक "'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- 'गामक जिनगी''"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20985. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796: राजदेव मंडलक "'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- 'गामक जिनगी''"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "समीक्षा" अछि।

प्रश्न 20986. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796: राजदेव मंडलक "'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- 'गामक जिनगी''" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा-संग्रहक शैली, भाषा आ सामाजिक सन्दर्भ

उत्तर: घ. कथा-संग्रहक शैली, भाषा आ सामाजिक सन्दर्भ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "कथा-संग्रहक शैली, भाषा आ सामाजिक सन्दर्भ" अछि।

प्रश्न 20987. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796: राजदेव मंडलक "'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- 'गामक जिनगी''" प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा-संग्रहक शैली, भाषा आ सामाजिक सन्दर्भ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा-संग्रहक शैली, भाषा आ सामाजिक सन्दर्भ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "कथा-संग्रहक शैली, भाषा आ सामाजिक सन्दर्भ" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20988. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796: राजदेव मंडलक "'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- 'गामक जिनगी''"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20989. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796: राजदेव मंडलक "'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- 'गामक जिनगी''" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 20990. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796: राजदेव मंडलक “'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- ‘गामक जिनगी’'”कें विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 20991. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796: राजदेव मंडलक “'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- ‘गामक जिनगी’'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 20992. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796मे राजदेव मंडलक “'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- ‘गामक जिनगी’'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा-संग्रहक शैली, भाषा आ सामाजिक सन्दर्भ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2105, सूचकांक पंक्ति 796मे राजदेव मंडलक “'जगदीश प्रसाद मंडलक लघुकथा संग्रह- ‘गामक जिनगी’'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा-संग्रहक शैली, भाषा आ सामाजिक सन्दर्भ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2106 : विदेह-सदेह 10 — कृपानन्द झा: 'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'

प्रश्न 20993. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797: कृपानन्द झाक “'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 797मे कृपानन्द झाक प्रविष्टि “'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 20994. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797: कृपानन्द झाक “'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 20995. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797: कृपानन्द झाक “'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 20996. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797: कृपानन्द झाक “'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चुनचुन मिश्रक जीवन, संघर्ष आ मैथिली आन्दोलन

उत्तर: घ. चुनचुन मिश्रक जीवन, संघर्ष आ मैथिली आन्दोलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चुनचुन मिश्रक जीवन, संघर्ष आ मैथिली आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 20997. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797: कृपानन्द झाक “'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चुनचुन मिश्रक जीवन, संघर्ष आ मैथिली आन्दोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चुनचुन मिश्रक जीवन, संघर्ष आ मैथिली आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चुनचुन मिश्रक जीवन, संघर्ष आ मैथिली आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 20998. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797: कृपानन्द झाक “'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कृपानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कृपानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 20999. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797: कृपानन्द झाक “'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21000. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797: कृपानन्द झाक “'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'”केँ विदेह-सदेह 10क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21001. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797: कृपानन्द झाक “'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 10क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21002. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797मे कृपानन्द झाक "'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'" प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ "चुनचुन मिश्रक जीवन, संघर्ष आ मैथिली आन्दोलन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2106, सूचकांक पंक्ति 797मे कृपानन्द झाक "'मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र'" प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ "चुनचुन मिश्रक जीवन, संघर्ष आ मैथिली आन्दोलन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 10क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2107 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकूर: सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्...

प्रश्न 21003. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798: गजेन्द्र ठाकूरक "सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री"/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री"/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री"/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 798मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि "सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री"/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21004. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798: गजेन्द्र ठाकूरक "सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री"/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21005. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798: गजेन्द्र ठाकूरक "सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री"/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय/निबन्ध/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय/निबन्ध/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "सम्पादकीय/निबन्ध/रिपोर्ताज" अछि।

प्रश्न 21006. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेहक प्रधान सम्पादक

उत्तर: घ. विदेहक प्रधान सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेहक प्रधान सम्पादक” अछि।

प्रश्न 21007. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा-प्रौद्योगिकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा-प्रौद्योगिकी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-प्रौद्योगिकी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21008. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/निबन्ध/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/निबन्ध/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21009. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21010. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी”कें विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीय/निबन्ध/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीय/निबन्ध/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21011. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21012. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798मे गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/निबन्ध/रिपोर्ताज आ “भाषा-प्रौद्योगिकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2107, सूचकांक पंक्ति 798मे गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय: टॉमस ट्रांसट्रोमर/ विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ दूर्वाक्षत/ मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी/ विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११/ स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”/ हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली/ विकीपीडिया-गूगल-ट्रिवटर आदिपर मैथिली- तिरहूता आ कैथी यूनीकोड/ विद्यापति पुरस्कार कोषक पुरस्कार/ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३/ टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११/ समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग/ विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/निबन्ध/रिपोर्ताज आ “भाषा-प्रौद्योगिकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2108 : विदेह-सदेह 11 — शिव कुमार झा “टिल्लू”: सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल

प्रश्न 21013. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 799मे शिव कुमार झा “टिल्लू”क प्रविष्टि “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21014. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21015. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 21016. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जातिवाद विरोधी

उत्तर: घ. जातिवाद विरोधी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिवाद विरोधी” अछि।

प्रश्न 21017. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातिवाद विरोधी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातिवाद विरोधी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवाद विरोधी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21018. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा “टिल्लू”, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा “टिल्लू”, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21019. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21020. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीय/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीय/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21021. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21022. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799मे शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/निबन्ध आ “जातिवाद विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2108, सूचकांक पंक्ति 799मे शिव कुमार झा “टिल्लू”क “सम्पादकीय- बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/निबन्ध आ “जातिवाद विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2109 : विदेह-सदेह 11 — डा. अरुण कुमार सिंह: उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्त...

प्रश्न 21023. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800: डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 800मे डा. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21024. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800: डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21025. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800: डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/संस्मरण” अछि।

प्रश्न 21026. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800: डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण-शहरी विभाजन

उत्तर: घ. ग्रामीण-शहरी विभाजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण-शहरी विभाजन” अछि।

प्रश्न 21027. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800: डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा-समाजशास्त्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा-समाजशास्त्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-समाजशास्त्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21028. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800: डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21029. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800: डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21030. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800: डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति”कैँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21031. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800: डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21032. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800मे डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/संस्मरण आ “भाषा-समाजशास्त्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2109, सूचकांक पंक्ति 800मे डा. अरुण कुमार सिंहक “उजड़ैत गाम: बसैत शहर??/ भाषा जातिगत सम्पत्ति नै अपितु सामाजिक सम्पत्ति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/संस्मरण आ “भाषा-समाजशास्त्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2110 : विदेह-सदेह 11 — राम भरोस कापडि भ्रमर: मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकन...

प्रश्न 21033. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801: राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेस: चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेस: चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेस: चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 801मे राम भरोस कापडि भ्रमरक प्रविष्टि “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेस: चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21034. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801: राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेस: चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21035. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801: राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेस: चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 21036. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801: राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेसः चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकनायक सलहेस

उत्तर: घ. लोकनायक सलहेस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकनायक सलहेस” अछि।

प्रश्न 21037. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801: राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेसः चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकनायक सलहेस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकनायक सलहेस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकनायक सलहेस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21038. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801: राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेसः चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम भरोस कापडि भ्रमर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम भरोस कापडि भ्रमर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21039. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801: राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेसः चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21040. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801: राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेसः चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21041. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801: राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेसः चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21042. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801मे राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेस: चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “लोकनायक सलहेस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2110, सूचकांक पंक्ति 801मे राम भरोस कापडि भ्रमरक “मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तरगत लोकनायक सलहेस: चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम सम्पन्न” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “लोकनायक सलहेस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2111 : विदेह-सदेह 11 — मधुपनाथ झा: बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)

प्रश्न 21043. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802: मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 802मे मधुपनाथ झाक प्रविष्टि “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21044. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802: मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21045. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802: मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/अनुवाद” अछि।

प्रश्न 21046. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802: मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. फणीश्वरनाथ रेणु

उत्तर: घ. फणीश्वरनाथ रेणु

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “फणीश्वरनाथ रेणु” अछि।

प्रश्न 21047. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802: मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली लोकनाट्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोकनाट्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लोकनाट्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21048. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802: मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मधुपनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मधुपनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21049. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802: मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21050. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802: मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21051. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802: मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21052. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802मे मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/अनुवाद आ “मैथिली लोकनाट्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2111, सूचकांक पंक्ति 802मे मधुपनाथ झाक “बिदापत नाच (फणीशर नाथ रेणुक रिपोतांजक अनुवाद)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/अनुवाद आ “मैथिली लोकनाट्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2112 : विदेह-सदेह 11 — अतुलेशर: सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग,...

प्रश्न 21053. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803: अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 803मे अतुलेशरक प्रविष्टि “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21054. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803: अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21055. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803: अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/टिप्पणी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/टिप्पणी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 21056. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803: अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आलोचनात्मक

उत्तर: घ. आलोचनात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आलोचनात्मक” अछि।

प्रश्न 21057. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803: अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातिवाद विरोधी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातिवाद विरोधी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवाद विरोधी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21058. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803: अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेशर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/टिप्पणी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेशर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/टिप्पणी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21059. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803: अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21060. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803: अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21061. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803: अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21062. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803मे अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/टिप्पणी आ “जातिवाद विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2112, सूचकांक पंक्ति 803मे अतुलेशरक “सगर राति दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज/ वैश्विक सोच?/ पाग, मिशिला आ जातिवादक राजनीति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/टिप्पणी आ “जातिवाद विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2113 : विदेह-सदेह 11 — विनीत उत्पल: आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगम...

प्रश्न 21063. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804: विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 804मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21064. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804: विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21065. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804: विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 21066. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804: विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक मैथिली नाटक

उत्तर: घ. आधुनिक मैथिली नाटक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक मैथिली नाटक” अछि।

प्रश्न 21067. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804: विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक मैथिली नाटक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक मैथिली नाटक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक मैथिली नाटक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21068. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804: विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21069. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804: विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21070. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804: विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21071. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804: विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21072. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804मे विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/रिपोर्ताज आ “आधुनिक मैथिली नाटक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2113, सूचकांक पंक्ति 804मे विनीत उत्पलक “आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्या नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टी: सगर राति दीप जरय: एकटा बहन्ना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/रिपोर्ताज आ “आधुनिक मैथिली नाटक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2114 : विदेह-सदेह 11 — पूनम मण्डल: आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृत...

प्रश्न 21073. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805: पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 805मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21074. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805: पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21075. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805: पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/संस्मरण” अछि।

प्रश्न 21076. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805: पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आरती कुमारीक स्मृति

उत्तर: घ. आरती कुमारीक स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आरती कुमारीक स्मृति” अछि।

प्रश्न 21077. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805: पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला सांस्कृतिक समारोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला सांस्कृतिक समारोह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला सांस्कृतिक समारोह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21078. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805: पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21079. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805: पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21080. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805: पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21081. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805: पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21082. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805मे पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/संस्मरण आ “मिथिला सांस्कृतिक समारोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2114, सूचकांक पंक्ति 805मे पूनम मण्डलक “आरती कुमारी आ सगर राति दीप जरय/ मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१२” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/संस्मरण आ “मिथिला सांस्कृतिक समारोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2115 : विदेह-सदेह 11 — आशीष अनिचन्हार: मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय...

प्रश्न 21083. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 806मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21084. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21085. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/परिचय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/परिचय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/परिचय” अछि।

प्रश्न 21086. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजलकार परिचय

उत्तर: घ. गजलकार परिचय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजलकार परिचय” अछि।

प्रश्न 21087. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजलकार परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलकार परिचय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजलकार परिचय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21088. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/परिचय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/परिचय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21089. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21090. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21091. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21092. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806मे आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/परिचय आ “गजलकार परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2115, सूचकांक पंक्ति 806मे आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजलकार पिरचय श्रृंखला/ "सगर राति दीप जरय"केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्टीक उदय” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/परिचय आ “गजलकार परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2116 : विदेह-सदेह 11 — सुमित आनन्द: सोसाइटी टुडेक लोकापण

प्रश्न 21093. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807: सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सोसाइटी टुडेक लोकापण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सोसाइटी टुडेक लोकापण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 807मे सुमित आनन्दक प्रविष्टि “सोसाइटी टुडेक लोकापण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21094. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807: सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21095. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807: सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 21096. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807: सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रिका लोकार्पण समारोह

उत्तर: घ. पत्रिका लोकार्पण समारोह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रिका लोकार्पण समारोह” अछि।

प्रश्न 21097. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807: सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रिका लोकार्पण समारोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रिका लोकार्पण समारोह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रिका लोकार्पण समारोह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21098. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807: सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21099. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807: सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21100. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807: सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21101. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807: सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21102. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807मे सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “पत्रिका लोकार्पण समारोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2116, सूचकांक पंक्ति 807मे सुमित आनन्दक “सोसाइटी टुडेक लोकापण” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “पत्रिका लोकार्पण समारोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2117 : विदेह-सदेह 11 — परमेश्वर कापडि: मिथिला राज्य संघर्ष समिति

प्रश्न 21103. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808: परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला राज्य संघर्ष समिति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला राज्य संघर्ष समिति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 808मे परमेश्वर कापडिक प्रविष्टि “मिथिला राज्य संघर्ष समिति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21104. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808: परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21105. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808: परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 21106. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808: परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला राज्य आन्दोलन

उत्तर: घ. मिथिला राज्य आन्दोलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला राज्य आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 21107. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808: परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला राज्य आन्दोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला राज्य आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला राज्य आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21108. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808: परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक परमेश्वर कापडि, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक परमेश्वर कापडि, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21109. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808: परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21110. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808: परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21111. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808: परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21112. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808मे परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मिथिला राज्य आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2117, सूचकांक पंक्ति 808मे परमेश्वर कापडिक “मिथिला राज्य संघर्ष समिति” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मिथिला राज्य आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2118 : विदेह-सदेह 11 — डॉ. दमन कुमार झा: एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य

प्रश्न 21113. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809: डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 809मे डॉ. दमन कुमार झाक प्रविष्टि “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21114. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809: डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21115. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809: डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21116. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809: डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली बाल साहित्यक समीक्षा

उत्तर: घ. मैथिली बाल साहित्यक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली बाल साहित्यक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21117. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809: डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली बाल साहित्यक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली बाल साहित्यक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली बाल साहित्यक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21118. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809: डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. दमन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. दमन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21119. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809: डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21120. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809: डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21121. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809: डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21122. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809मे डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “मैथिली बाल साहित्यक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2118, सूचकांक पंक्ति 809मे डॉ. दमन कुमार झाक “एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बालसाहित्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “मैथिली बाल साहित्यक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2119 : विदेह-सदेह 11 — सन्दीप कुमार साप्ति: अपन गाँव

प्रश्न 21123. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810: सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन गाँव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन गाँव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 810मे सन्दीप कुमार साप्तिक प्रविष्टि “अपन गाँव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21124. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810: सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21125. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810: सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21126. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810: सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।

प्रश्न 21127. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810: सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21128. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810: सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार साप्ति, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार साप्ति, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21129. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810: सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21130. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810: सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21131. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810: सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21132. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810मे सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2119, सूचकांक पंक्ति 810मे सन्दीप कुमार साप्तिक “अपन गाँव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2120 : विदेह-सदेह 11 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: गजल १ - ४

प्रश्न 21133. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल १ - ४

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल १ - ४

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 811मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “गजल १ - ४” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21134. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21135. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 21136. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महिला गजलकार

उत्तर: घ. महिला गजलकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महिला गजलकार” अछि।

प्रश्न 21137. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक विषय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विषय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विषय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21138. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21139. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21140. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21141. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21142. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2120, सूचकांक पंक्ति 811मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “गजल १ - ४” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2121 : विदेह-सदेह 11 — रमेश रञ्जन: बारुद

प्रश्न 21143. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812: रमेश रञ्जनक “बारुद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बारुद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बारुद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 812मे रमेश रञ्जनक प्रविष्टि “बारुद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21144. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812: रमेश रञ्जनक “बारुद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21145. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812: रमेश रञ्जनक “बारुद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21146. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812: रमेश रञ्जनक “बारुद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आन्दोलनकारी कविता

उत्तर: घ. आन्दोलनकारी कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आन्दोलनकारी कविता” अछि।

प्रश्न 21147. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812: रमेश रञ्जनक “बारुद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आन्दोलनकारी कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्दोलनकारी कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आन्दोलनकारी कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21148. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812: रमेश रञ्जनक “बारुद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमेश रञ्जन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमेश रञ्जन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21149. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812: रमेश रञ्जनक “बारुद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21150. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812: रमेश रञ्जनक “बारुद”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21151. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812: रमेश रञ्जनक “बारुद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21152. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812मे रमेश रञ्जनक “बारुद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्दोलनकारी कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2121, सूचकांक पंक्ति 812मे रमेश रञ्जनक “बारुद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्दोलनकारी कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2122 : विदेह-सदेह 11 — प्रकाश प्रेमी: रे गोधिया तो कोत्री छे?

प्रश्न 21153. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813: प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रे गोधिया तो कोत्री छे?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रे गोधिया तो कोत्री छे?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 813मे प्रकाश प्रेमीक प्रविष्टि “रे गोधिया तो कोत्री छे?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21154. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813: प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21155. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813: प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गीत” अछि।

प्रश्न 21156. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813: प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत शैली

उत्तर: घ. लोकगीत शैली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत शैली” अछि।

प्रश्न 21157. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813: प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत शैली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत शैली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत शैली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21158. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813: प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश प्रेमी, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश प्रेमी, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21159. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813: प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21160. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813: प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?”कैं विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21161. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813: प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21162. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813मे प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “लोकगीत शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2122, सूचकांक पंक्ति 813मे प्रकाश प्रेमीक “रे गोधिया तो कोत्री छे?” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “लोकगीत शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2123 : विदेह-सदेह 11 — कामिनी कामायनी: काशीक घाट/ फागुन राग

प्रश्न 21163. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814: कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. काशीक घाट/ फागुन राग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काशीक घाट/ फागुन राग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 814मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “काशीक घाट/ फागुन राग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21164. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814: कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21165. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814: कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21166. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814: कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आध्यात्मिक/प्रकृति

उत्तर: घ. आध्यात्मिक/प्रकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आध्यात्मिक/प्रकृति” अछि।

प्रश्न 21167. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814: कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आध्यात्मिक/प्रकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आध्यात्मिक/प्रकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आध्यात्मिक/प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21168. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814: कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21169. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814: कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21170. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814: कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21171. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814: कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21172. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814मे कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आध्यात्मिक/प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2123, सूचकांक पंक्ति 814मे कामिनी कामायनीक “काशीक घाट/ फागुन राग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आध्यात्मिक/प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2124 : विदेह-सदेह 11 — ज्योवत झा चौधरी: प्रजातंिक पुनवनवमार्

प्रश्न 21173. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815: ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रजातंिक पुनवनवमार्

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रजातंिक पुनवनवमार्

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 815मे ज्योवत झा चौधरीक प्रविष्टि “प्रजातंिक पुनवनवमार्” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21174. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815: ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21175. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815: ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21176. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815: ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकतान्त्रिक चेतना

उत्तर: घ. लोकतान्त्रिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकतान्त्रिक चेतना” अछि।

प्रश्न 21177. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815: ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकतान्त्रिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकतान्त्रिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकतान्त्रिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21178. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815: ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योवत झा चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योवत झा चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21179. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815: ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21180. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815: ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्”कें विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21181. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815: ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21182. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815मे ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोकतान्त्रिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2124, सूचकांक पंक्ति 815मे ज्योवत झा चौधरीक “प्रजातंिक पुनवनवमार्” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोकतान्त्रिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2125 : विदेह-सदेह 11 — रुबी झा: वनमोही/ ओढ़नी लाल

प्रश्न 21183. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816: रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वनमोही/ ओढ़नी लाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वनमोही/ ओढ़नी लाल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 816मे रुबी झाक प्रविष्टि “वनमोही/ ओढ़नी लाल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21184. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816: रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21185. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816: रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21186. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816: रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगारिक

उत्तर: घ. शृंगारिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगारिक” अछि।

प्रश्न 21187. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816: रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगारिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगारिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगारिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21188. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816: रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रुबी झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रुबी झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21189. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816: रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21190. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816: रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21191. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816: रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21192. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816मे रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2125, सूचकांक पंक्ति 816मे रुबी झाक “वनमोही/ ओढ़नी लाल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2126 : विदेह-सदेह 11 — डॉ. धनाकर ठाकूर: जँ हो अपना पर विश्वास

प्रश्न 21193. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817: डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जँ हो अपना पर विश्वास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जँ हो अपना पर विश्वास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 817मे डॉ. धनाकर ठाकूरक प्रविष्टि “जँ हो अपना पर विश्वास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21194. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817: डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21195. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817: डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21196. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817: डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेरणात्मक

उत्तर: घ. प्रेरणात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरणात्मक” अछि।

प्रश्न 21197. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817: डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेरणात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेरणात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरणात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21198. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817: डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. धनाकर ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. धनाकर ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21199. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817: डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21200. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817: डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21201. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817: डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21202. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817मे डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेरणात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2126, सूचकांक पंक्ति 817मे डॉ. धनाकर ठाकूरक “जँ हो अपना पर विश्वास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेरणात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2127 : विदेह-सदेह 11 — ओमप्रकाश झा: कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत

प्रश्न 21203. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818: ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 818मे ओमप्रकाश झाक प्रविष्टि “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21204. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818: ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21205. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818: ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कुण्डलिया/रुबाइ/कविता/गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कुण्डलिया/रुबाइ/कविता/गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कुण्डलिया/रुबाइ/कविता/गीत” अछि।

प्रश्न 21206. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818: ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विविध छन्द

उत्तर: घ. विविध छन्द

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विविध छन्द” अछि।

प्रश्न 21207. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818: ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विविध छन्द

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विविध छन्द

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विविध छन्द” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21208. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818: ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कुण्डलिया/रुबाइ/कविता/गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कुण्डलिया/रुबाइ/कविता/गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21209. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818: ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21210. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818: ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कुण्डलिया/रुबाइ/कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कुण्डलिया/रुबाइ/कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21211. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818: ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21212. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818मे ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत” प्रविष्टि पद्य, कुण्डलिया/रुबाइ/कविता/गीत आ “विविध छन्द” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2127, सूचकांक पंक्ति 818मे ओमप्रकाश झाक “कुण्डनलया/ रुबाइ/ कनिता/ गीत” प्रविष्टि पद्य, कुण्डलिया/रुबाइ/कविता/गीत आ “विविध छन्द” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2128 : विदेह-सदेह 11 — जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनल: गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत

प्रश्न 21213. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819: जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 819मे जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनलक प्रविष्टि “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21214. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21215. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कविता” अछि।

प्रश्न 21216. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक व्यंग्य

उत्तर: घ. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 21217. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21218. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्न ठाकुर अवनल, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्न ठाकुर अवनल, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21219. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21220. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819: जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत”कें विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21221. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819: जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21222. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819मे जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2128, सूचकांक पंक्ति 819मे जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनलक “गजल १-४/ सभ्यता आ संस्कृवत” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2129 : विदेह-सदेह 11 — मुन्नी कामत: नोराएल आँवख/ वकए ी हम अिूत/ हमर वमविला हमर प्रार्...

प्रश्न 21223. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820: मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अिूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नोराएल आँवख/ वकए ी हम अिूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोराएल आँवख/ वकए ी हम अिूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 820मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अिूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21224. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820: मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अिूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21225. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820: मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21226. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820: मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित/नारीवादी

उत्तर: घ. दलित/नारीवादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित/नारीवादी” अछि।

प्रश्न 21227. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820: मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित/नारीवादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित/नारीवादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित/नारीवादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21228. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820: मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21229. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820: मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21230. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820: मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21231. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820: मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21232. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820मे मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित/नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2129, सूचकांक पंक्ति 820मे मुन्नी कामतक “नोराएल आँवख/ वकए ी हम अूत/ हमर वमविला हमर प्रार्/ नारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित/नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2130 : विदेह-सदेह 11 — पंकज झा: स्ियंकेँ रीढ़ युक्तत बनाबएमे लागल ी/ मानु ने मानु

प्रश्न 21233. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821: पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्तत बनाबएमे लागल ी/ मानु ने मानु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्ियंकेँ रीढ़ युक्तत बनाबएमे लागल ी/ मानु ने मानु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्ियंकेँ रीढ़ युक्तत बनाबएमे लागल ी/ मानु ने मानु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 821मे पंकज झाक प्रविष्टि “स्ियंकेँ रीढ़ युक्तत बनाबएमे लागल ी/ मानु ने मानु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21234. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821: पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्तत बनाबएमे लागल ी/ मानु ने मानु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21235. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821: पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्तत बनाबएमे लागल ी/ मानु ने मानु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21236. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821: पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्टत बनाबएमे लागल िी/ मानु ने मानु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चेतना

उत्तर: घ. सामाजिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चेतना” अछि।

प्रश्न 21237. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821: पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्टत बनाबएमे लागल िी/ मानु ने मानु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21238. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821: पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्टत बनाबएमे लागल िी/ मानु ने मानु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21239. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821: पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्टत बनाबएमे लागल िी/ मानु ने मानु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21240. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821: पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्टत बनाबएमे लागल िी/ मानु ने मानु”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21241. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821: पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्टत बनाबएमे लागल िी/ मानु ने मानु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21242. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821मे पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्टत बनाबएमे लागल ी/ मानु ने मानु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2130, सूचकांक पंक्ति 821मे पंकज झाक “स्ियंकेँ रीढ़ युक्टत बनाबएमे लागल ी/ मानु ने मानु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2131 : विदेह-सदेह 11 — राजदि मण् डल: कामना

प्रश्न 21243. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822: राजदि मण् डलक “कामना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कामना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कामना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 822मे राजदि मण् डलक प्रविष्टि “कामना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21244. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822: राजदि मण् डलक “कामना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21245. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822: राजदि मण् डलक “कामना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21246. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822: राजदि मण् डलक “कामना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक

उत्तर: घ. पारिवारिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक” अछि।

प्रश्न 21247. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822: राजदि मण् डलक “कामना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21248. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822: राजदि मण् डलक “कामना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदि मण् डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदि मण् डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21249. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822: राजदि मण् डलक “कामना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21250. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822: राजदि मण् डलक “कामना”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21251. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822: राजदि मण् डलक “कामना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21252. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822मे राजदि मण् डलक “कामना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2131, सूचकांक पंक्ति 822मे राजदि मण् डलक “कामना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2132 : विदेह-सदेह 11 — अवमत वमश्र: गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ि कवनयाँक/ मच्...

प्रश्न 21253. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823: अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ि कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ि कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ि कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 823मे अवमत वमश्रक प्रविष्टि “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ि कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21254. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823: अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ि कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21255. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823: अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ि कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/कविता/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/कविता/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता/कथा” अछि।

प्रश्न 21256. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823: अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ि कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक व्यंग्य/बाल

उत्तर: घ. सामाजिक व्यंग्य/बाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक व्यंग्य/बाल” अछि।

प्रश्न 21257. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823: अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ि कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक व्यंग्य/बाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक व्यंग्य/बाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक व्यंग्य/बाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21258. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823: अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ी कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा गीत/कविता/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा गीत/कविता/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21259. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823: अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ी कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21260. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823: अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ी कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/कविता/कथाक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/कविता/कथाक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21261. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823: अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ी कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21262. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823मे अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ी कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड” प्रविष्टि पद्य/गद्य, गीत/कविता/कथा आ “सामाजिक व्यंग्य/बाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2132, सूचकांक पंक्ति 823मे अवमत वमश्रक “गीत/ पवहल वटकुला/ बुढ़ी काकी/ गुलाम ी कवनयाँक/ मच्ि/ आधुवनक बैण्ड” प्रविष्टि पद्य/गद्य, गीत/कविता/कथा आ “सामाजिक व्यंग्य/बाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2133 : विदेह-सदेह 11 — निंन ठाकुर: द्वंद्व वनिाह

प्रश्न 21263. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824: निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. द्वंद्व वनिाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. द्वंद्व वनिाह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 824मे निंन ठाकुरक प्रविष्टि “द्वंद्व वनिाह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21264. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824: निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21265. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824: निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21266. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824: निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 21267. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824: निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21268. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824: निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक निंन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक निंन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21269. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824: निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21270. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824: निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21271. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824: निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21272. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824मे निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2133, सूचकांक पंक्ति 824मे निंन ठाकुरक “द्वंद्व वनिाह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2134 : विदेह-सदेह 11 — डॉ. अरुण कुमार नसंह: भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली

प्रश्न 21273. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825: डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 825मे डॉ. अरुण कुमार नसंहक प्रविष्टि “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21274. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825: डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21275. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825: डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21276. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825: डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषाप्रेम

उत्तर: घ. भाषाप्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषाप्रेम” अछि।

प्रश्न 21277. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825: डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषाप्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषाप्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषाप्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21278. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825: डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार नसंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार नसंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21279. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825: डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21280. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825: डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21281. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825: डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21282. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825मे डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाषाप्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2134, सूचकांक पंक्ति 825मे डॉ. अरुण कुमार नसंहक “भारतीय भाषाक हम बेटी मैविली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाषाप्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2135 : विदेह-सदेह 11 — ि/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ि◌ागुन मौसमक श्रृंगार: देहाती रचना...

प्रश्न 21283. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826: ि/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ि◌ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देहाती रचना श्रेणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देहाती रचना श्रेणी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 826मे ि/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ि◌ागुन मौसमक श्रृंगारक प्रविष्टि “देहाती रचना श्रेणी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21284. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826: ि/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ि◌ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21285. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826: ि/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ि◌ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 21286. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826: ी/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. होली/फागुन

उत्तर: घ. होली/फागुन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “होली/फागुन” अछि।

प्रश्न 21287. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826: ी/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. होली/फागुन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होली/फागुन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “होली/फागुन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21288. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826: ी/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ी/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ागुन मौसमक श्रृंगार, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ी/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ागुन मौसमक श्रृंगार, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21289. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826: ी/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21290. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826: ी/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21291. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826: ी/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21292. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826मे ी/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “होली/ फागुन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2135, सूचकांक पंक्ति 826मे ी/ वक मुखडा पर चान देखलहुँ/ ागुन मौसमक श्रृंगारक “देहाती रचना श्रेणी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “होली/फागुन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2136 : विदेह-सदेह 11 — वदनेश रवसया: हम पिकार

प्रश्न 21293. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827: वदनेश रवसयाक “हम पिकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम पिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम पिकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 827मे वदनेश रवसयाक प्रविष्टि “हम पिकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21294. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827: वदनेश रवसयाक “हम पिकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21295. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827: वदनेश रवसयाक “हम पिकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21296. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827: वदनेश रवसयाक “हम पिकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रकारिता

उत्तर: घ. पत्रकारिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रकारिता” अछि।

प्रश्न 21297. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827: वदनेश रवसयाक “हम पिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रकारिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रकारिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21298. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827: वदनेश रवसयाक “हम पिकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वदनेश रवसया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वदनेश रवसया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21299. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827: वदनेश रवसयाक “हम पिकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21300. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827: वदनेश रवसयाक “हम पिकार”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21301. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827: वदनेश रवसयाक “हम पिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21302. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827मे वदनेश रवसयाक “हम पिकार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2136, सूचकांक पंक्ति 827मे वदनेश रवसयाक “हम पिकार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2137 : विदेह-सदेह 11 — जिहर लाल कमयप: यौ मीत

प्रश्न 21303. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828: जिहर लाल कमयपक “यौ मीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यौ मीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यौ मीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 828मे जिहर लाल कमयपक प्रविष्टि “यौ मीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21304. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828: जिहर लाल कमयपक “यौ मीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21305. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828: जिहर लाल कमयपक “यौ मीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21306. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828: जिहर लाल कमयपक “यौ मीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक

उत्तर: घ. दार्शनिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 21307. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828: जिहर लाल कमयपक “यौ मीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21308. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828: जिहर लाल कमयपक “यौ मीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जिहर लाल कमयप, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जिहर लाल कमयप, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21309. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828: जिहर लाल कमयपक “यौ मीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21310. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828: जिहर लाल कमयपक “यौ मीत”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21311. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828: जिहर लाल कमयपक “यौ मीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21312. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828मे जिहर लाल कमयपक “यौ मीत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2137, सूचकांक पंक्ति 828मे जिहर लाल कमयपक “यौ मीत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2138 : विदेह-सदेह 11 — अयोध्यानाथ चौधरी: कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही

प्रश्न 21313. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829: अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 829मे अयोध्यानाथ चौधरीक प्रविष्टि “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21314. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829: अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21315. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829: अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21316. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829: अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्षेत्रीयता

उत्तर: घ. क्षेत्रीयता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “क्षेत्रीयता” अछि।

प्रश्न 21317. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829: अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. क्षेत्रीयता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षेत्रीयता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्षेत्रीयता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21318. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829: अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अयोध्यानाथ चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अयोध्यानाथ चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21319. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829: अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21320. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829: अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21321. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829: अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21322. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829मे अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “क्षेत्रीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2138, सूचकांक पंक्ति 829मे अयोध्यानाथ चौधरीक “कोनो वकम्मत पर वमविला महान चाही” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “क्षेत्रीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2139 : विदेह-सदेह 11 — रवि भूषर् पाठक: बामे गाम दवहने गाम

प्रश्न 21323. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830: रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बामे गाम दवहने गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बामे गाम दवहने गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 830मे रवि भूषर् पाठकक प्रविष्टि “बामे गाम दवहने गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21324. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830: रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21325. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830: रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21326. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830: रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।

प्रश्न 21327. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830: रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21328. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830: रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषर् पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषर् पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21329. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830: रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21330. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830: रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21331. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830: रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21332. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830मे रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2139, सूचकांक पंक्ति 830मे रवि भूषर् पाठकक “बामे गाम दवहने गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2140 : विदेह-सदेह 11 — इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक): गप (ओवडया कविताक मैथि...

प्रश्न 21333. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831: इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 831मे इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क प्रविष्टि “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21334. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831: इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21335. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831: इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद कविता” अछि।

प्रश्न 21336. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831: इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्तरभाषीय

उत्तर: घ. अन्तरभाषीय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्तरभाषीय” अछि।

प्रश्न 21337. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831: इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्तरभाषीय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तरभाषीय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्तरभाषीय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21338. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831: इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21339. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831: इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21340. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831: इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21341. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831: इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21342. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831मे इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद कविता आ “अन्तरभाषीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2140, सूचकांक पंक्ति 831मे इवप्सता सारंगीक/गजेन्द्र ठाकूर (अनुवादक)क “गप (ओवडया कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद कविता आ “अन्तरभाषीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2141 : विदेह-सदेह 11 — नन्द विलास राय: मानिता/ वशिवत बेरोजगार

प्रश्न 21343. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832: नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मानिता/ वशिवत बेरोजगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानिता/ वशिवत बेरोजगार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 832मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “मानिता/ वशिवत बेरोजगार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21344. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832: नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21345. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832: नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21346. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832: नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेरक/सामाजिक

उत्तर: घ. प्रेरक/सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरक/सामाजिक” अछि।

प्रश्न 21347. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832: नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेरक/सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेरक/सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरक/सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21348. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832: नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21349. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832: नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21350. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832: नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21351. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832: नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21352. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832मे नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेरक/सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2141, सूचकांक पंक्ति 832मे नन्द विलास रायक “मानिता/ वशिवत बेरोजगार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेरक/सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2142 : विदेह-सदेह 11 — दमन कुमार झा: एकरा की कहबै..?

प्रश्न 21353. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833: दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकरा की कहबै..?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकरा की कहबै..?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 833मे दमन कुमार झाक प्रविष्टि “एकरा की कहबै..?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21354. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833: दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21355. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833: दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21356. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833: दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 21357. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833: दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21358. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833: दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दमन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दमन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21359. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833: दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21360. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833: दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21361. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833: दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21362. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833मे दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2142, सूचकांक पंक्ति 833मे दमन कुमार झाक “एकरा की कहबै..?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2143 : विदेह-सदेह 11 — नारायर् झा: सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान

प्रश्न 21363. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834: नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 834मे नारायर् झाक प्रविष्टि “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21364. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834: नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21365. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834: नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21366. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834: नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आन्दोलनकारी

उत्तर: घ. आन्दोलनकारी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आन्दोलनकारी” अछि।

प्रश्न 21367. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834: नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आन्दोलनकारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्दोलनकारी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आन्दोलनकारी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21368. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834: नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नारायर् झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नारायर् झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21369. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834: नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21370. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834: नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21371. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834: नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21372. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834मे नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्दोलनकारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2143, सूचकांक पंक्ति 834मे नारायर् झाक “सम् मान/ रहुआ संग्राम/ वमविला राज्यक आह्वान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्दोलनकारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2144 : विदेह-सदेह 11 — बेचन ठाकुर: िनभोज

प्रश्न 21373. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835: बेचन ठाकुरक “िनभोज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. िनभोज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. िनभोज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 835मे बेचन ठाकुरक प्रविष्टि “िनभोज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21374. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835: बेचन ठाकुरक “िनभोज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21375. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835: बेचन ठाकुरक “िनभोज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21376. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835: बेचन ठाकुरक “िनभोज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 21377. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835: बेचन ठाकुरक “िनभोज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21378. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835: बेचन ठाकुरक “िनभोज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21379. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835: बेचन ठाकुरक “िनभोज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21380. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835: बेचन ठाकुरक “िनभोज”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21381. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835: बेचन ठाकुरक “िनभोज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21382. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835मे बेचन ठाकुरक “िनभोज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2144, सूचकांक पंक्ति 835मे बेचन ठाकुरक “िनभोज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2145 : विदेह-सदेह 11 — रमेश मण् डल: ई िव स् कूल प्राइट ट्यूटर

प्रश्न 21383. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836: रमेश मण् डलक “ई िव स् कूल प्राइट ट्यूटर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई िव स् कूल प्राइट ट्यूटर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई िव स् कूल प्राइट ट्यूटर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 836मे रमेश मण् डलक प्रविष्टि “ई िव स् कूल प्राइट ट्यूटर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21384. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836: रमेश मण् डलक “ई िवि स् कूल प्राइिट ट्यूटर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21385. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836: रमेश मण् डलक “ई िवि स् कूल प्राइिट ट्यूटर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21386. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836: रमेश मण् डलक “ई िवि स् कूल प्राइिट ट्यूटर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षा

उत्तर: घ. शिक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा” अछि।

प्रश्न 21387. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836: रमेश मण् डलक “ई िवि स् कूल प्राइिट ट्यूटर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21388. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836: रमेश मण् डलक “ई िवि स् कूल प्राइिट ट्यूटर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमेश मण् डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमेश मण् डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21389. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836: रमेश मण् डलक “ई िवि स् कूल प्राइिट ट्यूटर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21390. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836: रमेश मण् डलक “ई िवि स् कूल प्राइिट ट्यूटर”कें विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21391. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836: रमेश मण् डलक “ई िवि स् कूल प्राइिट ट्यूटर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21392. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836मे रमेश मण् डलक “ई िवि स् कूल प्राइिट ट्यूटर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2145, सूचकांक पंक्ति 836मे रमेश मण् डलक “ई िवि स् कूल प्राइिट ट्यूटर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2146 : विदेह-सदेह 11 — सोनू कुमार झा ‘रवमम’: संतुलन

प्रश्न 21393. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837: सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संतुलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संतुलन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 837मे सोनू कुमार झा ‘रवमम’क प्रविष्टि “संतुलन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21394. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837: सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21395. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837: सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21396. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837: सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारीवादी

उत्तर: घ. नारीवादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारीवादी” अछि।

प्रश्न 21397. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837: सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारीवादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारीवादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारीवादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21398. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837: सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सोनू कुमार झा ‘रवमम’, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सोनू कुमार झा ‘रवमम’, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21399. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837: सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21400. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837: सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21401. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837: सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21402. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837मे सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2146, सूचकांक पंक्ति 837मे सोनू कुमार झा ‘रवमम’क “संतुलन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2147 : विदेह-सदेह 11 — वकशन कारीगर: मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/...

प्रश्न 21403. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838: वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 838मे वकशन कारीगरक प्रविष्टि “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21404. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838: वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21405. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838: वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हास्य कविता” अछि।

प्रश्न 21406. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838: वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 21407. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838: वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21408. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838: वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वकशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा हास्य कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वकशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा हास्य कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21409. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838: वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21410. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838: वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हास्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हास्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21411. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838: वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21412. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838मे वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया” प्रविष्टि पद्य, हास्य कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2147, सूचकांक पंक्ति 838मे वकशन कारीगरक “मुवखया जी दिवहन/ पदक दुरूपयोग/ अवगला अंक मे िपत/ एना वकए ई की?/ करीक्का रूपैया” प्रविष्टि पद्य, हास्य कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2148 : विदेह-सदेह 11 — कवपलेश्वर राउत: माइक ओरमे जे भाषा वसखलक

प्रश्न 21413. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839: कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माइक ओरमे जे भाषा वसखलक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माइक ओरमे जे भाषा वसखलक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 839मे कवपलेश्वर राउतक प्रविष्टि “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21414. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839: कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21415. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839: कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21416. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839: कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषाप्रेम

उत्तर: घ. भाषाप्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषाप्रेम” अछि।

प्रश्न 21417. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839: कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषाप्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषाप्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषाप्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21418. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839: कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कवपलेश्वर राउत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कवपलेश्वर राउत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21419. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839: कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21420. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839: कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21421. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839: कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21422. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839मे कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाषाप्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2148, सूचकांक पंक्ति 839मे कवपलेश्वर राउतक “माइक ओरमे जे भाषा वसखलक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाषाप्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2149 : विदेह-सदेह 11 — मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.): बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली...

प्रश्न 21423. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840: मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकि कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकि कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकि कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 840मे मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क प्रविष्टि “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकि कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21424. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840: मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकि कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21425. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840: मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकि कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद कविता” अछि।

प्रश्न 21426. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840: मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकि कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक हिन्दी कविताक अनुवाद

उत्तर: घ. आधुनिक हिन्दी कविताक अनुवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक हिन्दी कविताक अनुवाद” अछि।

प्रश्न 21427. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840: मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकि कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक हिन्दी कविताक अनुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक हिन्दी कविताक अनुवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक हिन्दी कविताक अनुवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21428. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840: मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकु कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21429. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840: मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकु कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21430. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840: मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकु कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21431. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840: मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकु कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21432. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840मे मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकु कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद कविता आ “आधुनिक हिन्दी कविताक अनुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2149, सूचकांक पंक्ति 840मे मंगलेश डबराल/ विनीत उत्पल (अनु.)क “बेर-बेर कहैत िलौं हम/ वदल्ली मे एकटा वदन/ भोविआएल/ अवभनय/ वकु कालक लेल/ घर शांत अवि (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद कविता आ “आधुनिक हिन्दी कविताक अनुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2150 : विदेह-सदेह 11 — स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुर: हे रे चन्दा

प्रश्न 21433. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841: स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हे रे चन्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हे रे चन्दा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 841मे स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक प्रविष्टि “हे रे चन्दा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21434. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841: स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21435. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841: स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 21436. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841: स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विरह

उत्तर: घ. विरह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विरह” अछि।

प्रश्न 21437. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841: स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विरह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विरह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विरह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21438. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841: स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21439. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841: स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21440. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841: स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21441. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841: स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21442. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841मे स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “विरह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2150, सूचकांक पंक्ति 841मे स्ि. लल्लन प्रसाद ठाकुरक “हे रे चन्दा” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “विरह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2151 : विदेह-सदेह 11 — वशि कुमार झा ‘वटल्लू’: सगर राति दीप जरय

प्रश्न 21443. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842: वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सगर राति दीप जरय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सगर राति दीप जरय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 842मे वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क प्रविष्टि “सगर राति दीप जरय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21444. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842: वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21445. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842: वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21446. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842: वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक आन्दोलन

उत्तर: घ. साहित्यिक आन्दोलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 21447. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842: वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक आन्दोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21448. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842: वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वशि कुमार झा ‘वटल्लू’, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वशि कुमार झा ‘वटल्लू’, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21449. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842: वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21450. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842: वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21451. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842: वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21452. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842मे वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्यिक आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2151, सूचकांक पंक्ति 842मे वशि कुमार झा ‘वटल्लू’क “सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्यिक आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2152 : विदेह-सदेह 11 — कमल मोहन चुन्नू: आजाद गजल १-२

प्रश्न 21453. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843: कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आजाद गजल १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल १-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 843मे कमल मोहन चुन्नूक प्रविष्टि “आजाद गजल १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21454. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843: कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21455. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843: कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 21456. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843: कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक

उत्तर: घ. सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक” अछि।

प्रश्न 21457. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843: कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21458. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843: कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कमल मोहन चुन्नू, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कमल मोहन चुन्नू, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21459. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843: कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21460. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843: कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21461. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843: कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21462. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843मे कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2152, सूचकांक पंक्ति 843मे कमल मोहन चुन्नूक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2153 : विदेह-सदेह 11 — अवनल मवल्लक: गजल

प्रश्न 21463. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844: अवनल मवल्लकक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 844मे अवनल मवल्लकक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21464. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844: अवनल मवल्लकक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21465. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844: अवनल मवल्लकक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 21466. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844: अवनल मवल्लकक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वियोग

उत्तर: घ. वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वियोग” अछि।

प्रश्न 21467. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844: अवनल मवल्लकक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21468. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844: अवनल मवल्लकक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अवनल मवल्लक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अवनल मवल्लक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21469. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844: अवनल मवल्लकक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21470. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844: अवनल मवल्लकक “गजल”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21471. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844: अवनल मवल्लकक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21472. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844मे अवनल मवल्लकक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2153, सूचकांक पंक्ति 844मे अवनल मवल्लकक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2154 : विदेह-सदेह 11 — कुसुम ठाकुर: हाइकू

प्रश्न 21473. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845: कुसुम ठाकुरक “हाइकू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाइकू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 845मे कुसुम ठाकुरक प्रविष्टि “हाइकू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21474. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845: कुसुम ठाकुरक “हाइकू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21475. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845: कुसुम ठाकुरक “हाइकू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू” अछि।

प्रश्न 21476. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845: कुसुम ठाकुरक “हाइकू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषाप्रेम

उत्तर: घ. भाषाप्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषाप्रेम” अछि।

प्रश्न 21477. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845: कुसुम ठाकुरक “हाइकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषाप्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषाप्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषाप्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21478. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845: कुसुम ठाकुरक “हाइकू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21479. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845: कुसुम ठाकुरक “हाइकू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21480. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845: कुसुम ठाकुरक “हाइकू”कें विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21481. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845: कुसुम ठाकुरक “हाइकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21482. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845मे कुसुम ठाकुरक “हाइकू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “भाषाप्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2154, सूचकांक पंक्ति 845मे कुसुम ठाकुरक “हाइकू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “भाषाप्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2155 : विदेह-सदेह 11 — प्रेमचन्द्र पंकज: आजाद गजल १-२

प्रश्न 21483. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846: प्रेमचन्द्र पंकजक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आजाद गजल १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल १-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 846मे प्रेमचन्द्र पंकजक प्रविष्टि “आजाद गजल १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21484. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846: प्रेमचन्द्र पंकजक “आजाद गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21485. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846: प्रेमचन्द्र पंकजक “आजाद गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 21486. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846: प्रेमचन्द्र पंकजक “आजाद गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक

उत्तर: घ. सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक” अछि।

प्रश्न 21487. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846: प्रेमचन्द्र पंकजक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21488. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846: प्रेमचन्द्र पंकजक “आजाद गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमचन्द्र पंकज, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमचन्द्र पंकज, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21489. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846: प्रेमचन्द्र पंकजक “आजाद गजल १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21490. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846: प्रेमचन्द्र पंकजक “आजाद गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21491. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846: प्रेमचन्द्र पंकजक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21492. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846मे प्रेमचन्न पंकजक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2155, सूचकांक पंक्ति 846मे प्रेमचन्न पंकजक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2156 : विदेह-सदेह 11 — वमवहर झा: हाइकू/ गिनु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)

प्रश्न 21493. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847: वमवहर झाक “हाइकू/ गिनु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाइकू/ गिनु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू/ गिनु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 847मे वमवहर झाक प्रविष्टि “हाइकू/ गिनु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21494. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847: वमवहर झाक “हाइकू/ गिनु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21495. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847: वमवहर झाक “हाइकू/ गिनु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21496. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847: वमवहर झाक “हाइकू/ गिनु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति/बाल

उत्तर: घ. प्रकृति/बाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति/बाल” अछि।

प्रश्न 21497. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847: वमवहर झाक “हाइकू/ ँनिु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति/बाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति/बाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति/बाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21498. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847: वमवहर झाक “हाइकू/ ँनिु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वमवहर झा, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वमवहर झा, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21499. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847: वमवहर झाक “हाइकू/ ँनिु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21500. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847: वमवहर झाक “हाइकू/ ँनिु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21501. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847: वमवहर झाक “हाइकू/ ँनिु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21502. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847मे वमवहर झाक “हाइकू/ ँनिु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू/बाल गजल आ “प्रकृति/बाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2156, सूचकांक पंक्ति 847मे वमवहर झाक “हाइकू/ ँनिु उत्सि (बाल गजल १-२ सहित)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू/बाल गजल आ “प्रकृति/बाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2157 : विदेह-सदेह 11 — प्रभात राय भट्ट: गीत १-४/ गजल

प्रश्न 21503. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848: प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत १-४/ गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत १-४/ गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 848मे प्रभात राय भट्टक प्रविष्टि “गीत १-४/ गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21504. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848: प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21505. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848: प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/गजल” अछि।

प्रश्न 21506. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848: प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला महिमा

उत्तर: घ. मिथिला महिमा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला महिमा” अछि।

प्रश्न 21507. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848: प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला महिमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला महिमा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला महिमा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21508. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848: प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रभात राय भट्ट, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रभात राय भट्ट, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21509. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848: प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21510. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848: प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21511. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848: प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21512. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848मे प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल आ “मिथिला महिमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2157, सूचकांक पंक्ति 848मे प्रभात राय भट्टक “गीत १-४/ गजल” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल आ “मिथिला महिमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2158 : विदेह-सदेह 11 — अवमत वमश्र: बाल गजल १-२

प्रश्न 21513. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849: अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल १-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 849मे अवमत वमश्रक प्रविष्टि “बाल गजल १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21514. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849: अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21515. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849: अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21516. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849: अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 21517. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849: अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21518. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849: अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21519. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849: अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21520. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849: अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21521. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849: अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21522. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849मे अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2158, सूचकांक पंक्ति 849मे अवमत वमश्रक “बाल गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2159 : विदेह-सदेह 11 — चंदन कुमार झा: बाल गजल (१-८)

प्रश्न 21523. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850: चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (१-८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (१-८)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 850मे चंदन कुमार झाक प्रविष्टि “बाल गजल (१-८)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21524. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850: चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21525. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850: चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21526. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850: चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल गीत/गजल

उत्तर: घ. बाल गीत/गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल गीत/गजल” अछि।

प्रश्न 21527. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850: चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल गीत/गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गीत/गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गीत/गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21528. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850: चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21529. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850: चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21530. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850: चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21531. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850: चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21532. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850मे चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल गीत/गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2159, सूचकांक पंक्ति 850मे चंदन कुमार झाक “बाल गजल (१-८)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल गीत/गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2160 : विदेह-सदेह 11 — जगदानन्द झा मनु: बाल गजल

प्रश्न 21533. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 851मे जगदानन्द झा मनुक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21534. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21535. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21536. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल

उत्तर: घ. बाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल” अछि।

प्रश्न 21537. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21538. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21539. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21540. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21541. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21542. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851मे जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2160, सूचकांक पंक्ति 851मे जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2161 : विदेह-सदेह 11 — रूबी झा: बाल गजल

प्रश्न 21543. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852: रूबी झाक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 852मे रूबी झाक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21544. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852: रूबी झाक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21545. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852: रूबी झाक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21546. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852: रूबी झाक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल

उत्तर: घ. बाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल” अछि।

प्रश्न 21547. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852: रूबी झाक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21548. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852: रूबी झाक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूबी झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूबी झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21549. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852: रूबी झाक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21550. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852: रूबी झाक “बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21551. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852: रूबी झाक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21552. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852मे रूबी झाक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2161, सूचकांक पंक्ति 852मे रूबी झाक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2162 : विदेह-सदेह 11 — डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”: बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिा...

प्रश्न 21553. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 853मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क प्रविष्टि “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21554. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21555. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21556. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य/प्रकृति/समीक्षा

उत्तर: घ. बाल साहित्य/प्रकृति/समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य/प्रकृति/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21557. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य/प्रकृति/समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य/प्रकृति/समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य/प्रकृति/समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21558. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा बाल कविता/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा बाल कविता/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21559. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21560. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविता/समीक्षाक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविता/समीक्षाक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21561. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21562. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा” प्रविष्टि पद्य/गद्य, बाल कविता/समीक्षा आ “बाल साहित्य/प्रकृति/समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2162, सूचकांक पंक्ति 853मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “बखा रानी १-२/ वमविलाक वधया/ नेनपन/ पयिारण बचाउ/ रौदी दाही/ हमहूँ आइ सँ इस्कूल जएबै/ कीवन दे हमरो खेलौना/ पोथी समीक्षा अम्बरा” प्रविष्टि पद्य/गद्य, बाल कविता/समीक्षा आ “बाल साहित्य/प्रकृति/समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2163 : विदेह-सदेह 11 — जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनल: बाल गजल

प्रश्न 21563. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854: जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनलक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 854मे जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनलक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21564. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854: जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनलक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21565. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854: जगदीश चन्द्र ठाकुर अवनलक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21566. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल

उत्तर: घ. बाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल” अछि।

प्रश्न 21567. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21568. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्न ठाकुर अवनल, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्न ठाकुर अवनल, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21569. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21570. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21571. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854: जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21572. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854मे जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2163, सूचकांक पंक्ति 854मे जगदीश चन्न ठाकुर अवनलक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2164 : विदेह-सदेह 11 — जगदीश प्रसाद मण् डल: लघुकथा- एकोटा ने

प्रश्न 21573. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855: जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- एकोटा ने

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- एकोटा ने

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 855मे जगदीश प्रसाद मण् डलक प्रविष्टि “लघुकथा- एकोटा ने” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21574. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855: जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21575. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855: जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/बाल कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/बाल कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/बाल कथा” अछि।

प्रश्न 21576. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855: जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. टैगोर पुरस्कार

उत्तर: घ. टैगोर पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “टैगोर पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 21577. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855: जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21578. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855: जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण् डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/बाल कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण् डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/बाल कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21579. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855: जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21580. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855: जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/बाल कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/बाल कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21581. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855: जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21582. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855मे जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/बाल कथा आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2164, सूचकांक पंक्ति 855मे जगदीश प्रसाद मण् डलक “लघुकथा- एकोटा ने” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/बाल कथा आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2165 : विदेह-सदेह 11 — अरविन्द ठाकुर: वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु

प्रश्न 21583. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856: अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 856मे अरविन्द ठाकुरक प्रविष्टि “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21584. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856: अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21585. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856: अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 21586. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856: अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समाजशास्त्रीय

उत्तर: घ. समाजशास्त्रीय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समाजशास्त्रीय” अछि।

प्रश्न 21587. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856: अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समाजशास्त्रीय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समाजशास्त्रीय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समाजशास्त्रीय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21588. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856: अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरविन्द ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरविन्द ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21589. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856: अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21590. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856: अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21591. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856: अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21592. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856मे अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “समाजशास्त्रीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2165, सूचकांक पंक्ति 856मे अरविन्द ठाकुरक “वमविलाक संस्कृवत:वकि अवप्रय वबन्दु” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “समाजशास्त्रीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2166 : विदेह-सदेह 11 — गुर्नि झा/ चंदन कुमार झा: िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक...

प्रश्न 21593. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857: गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 857मे गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक प्रविष्टि “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21594. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857: गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21595. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857: गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 21596. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857: गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वरिष्ठ नाटककारसँ संवाद

उत्तर: घ. वरिष्ठ नाटककारसँ संवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वरिष्ठ नाटककारसँ संवाद” अछि।

प्रश्न 21597. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857: गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वरिष्ठ नाटककारसँ संवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वरिष्ठ नाटककारसँ संवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वरिष्ठ नाटककारसँ संवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21598. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857: गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गुर्नि झा/ चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गुर्नि झा/ चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21599. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857: गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21600. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857: गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21601. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857: गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21602. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857मे गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “वरिष्ठ नाटककारसँ संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2166, सूचकांक पंक्ति 857मे गुर्नि झा/ चंदन कुमार झाक “िाटककार गुर्नि झासँ चंदन कुमार झाक गपशप” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “वरिष्ठ नाटककारसँ संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2167 : विदेह-सदेह 11 — सुजीत कुमार झा: वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार

प्रश्न 21603. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 858मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21604. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21605. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/कथा” अछि।

प्रश्न 21606. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक/पारिवारिक

उत्तर: घ. सांस्कृतिक/पारिवारिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक/पारिवारिक” अछि।

प्रश्न 21607. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक/पारिवारिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक/पारिवारिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक/पारिवारिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21608. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21609. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21610. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21611. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21612. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858मे सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/कथा आ “सांस्कृतिक/पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2167, सूचकांक पंक्ति 858मे सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता/ नव व्यापार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/कथा आ “सांस्कृतिक/पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2168 : विदेह-सदेह 11 — जगदान्द् द मनु: जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगित...

प्रश्न 21613. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859: जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िागर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िागर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िागर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 859मे जगदान्द् द मनुक प्रविष्टि “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िागर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21614. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859: जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िागर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21615. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859: जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िागर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 21616. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859: जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िगर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक व्यंग्य

उत्तर: घ. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 21617. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859: जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िगर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21618. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859: जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िगर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदान्द् द मनु, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदान्द् द मनु, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21619. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859: जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िगर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21620. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859: जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िगर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21621. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859: जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िागर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21622. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859मे जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िागर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2168, सूचकांक पंक्ति 859मे जगदान्द् द मनुक “जबि भोज/ अनाथ/ मार बाढ़तन- तेसरो बेटीए/ की भगिती हमर घर एती?/ उपकार/ बवलक िागर/ २-जगह/ खुशी/ आठ लाखक कार/ कुवण्ठत मानिता” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2169 : विदेह-सदेह 11 — दुगानन्द् द मण् डल: कुकमा

प्रश्न 21623. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860: दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुकमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुकमा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 860मे दुगानन्द् द मण् डलक प्रविष्टि “कुकमा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21624. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860: दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21625. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860: दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोककथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोककथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोककथा” अछि।

प्रश्न 21626. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860: दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पौराणिक

उत्तर: घ. पौराणिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पौराणिक” अछि।

प्रश्न 21627. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860: दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पौराणिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पौराणिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पौराणिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21628. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860: दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुगानन्द् द मण् डल, विधा गद्य, उप-विधा लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुगानन्द् द मण् डल, विधा गद्य, उप-विधा लोककथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21629. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860: दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21630. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860: दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोककथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोककथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21631. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860: दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21632. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860मे दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा” प्रविष्टि गद्य, लोककथा आ “पौराणिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2169, सूचकांक पंक्ति 860मे दुगानन्द् द मण् डलक “कुकमा” प्रविष्टि गद्य, लोककथा आ “पौराणिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2170 : विदेह-सदेह 11 — ज्योवत झा चौधरी: पुनरन्द्ि्षण

प्रश्न 21633. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861: ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पुनरन्द्ि्षण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुनरन्द्ि्षण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 861मे ज्योवत झा चौधरीक प्रविष्टि “पुनरन्द्ि्षण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21634. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861: ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21635. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861: ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 21636. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861: ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी जीवन

उत्तर: घ. प्रवासी जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवन” अछि।

प्रश्न 21637. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861: ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21638. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861: ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योवत झा चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योवत झा चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21639. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861: ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21640. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861: ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21641. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861: ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21642. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861मे ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रवासी जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2170, सूचकांक पंक्ति 861मे ज्योवत झा चौधरीक “पुनरन्द्ि्षण” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रवासी जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2171 : विदेह-सदेह 11 — अवमत वमश्र: प्रेमक अंत

प्रश्न 21643. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862: अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेमक अंत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक अंत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 862मे अवमत वमश्रक प्रविष्टि “प्रेमक अंत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21644. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862: अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21645. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862: अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 21646. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862: अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम/सामाजिक

उत्तर: घ. प्रेम/सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम/सामाजिक” अछि।

प्रश्न 21647. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862: अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम/सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम/सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम/सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21648. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862: अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21649. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862: अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21650. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862: अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21651. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862: अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21652. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862मे अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रेम/सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2171, सूचकांक पंक्ति 862मे अवमत वमश्रक “प्रेमक अंत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रेम/सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2172 : विदेह-सदेह 11 — चंदन कुमार झा: ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/...

प्रश्न 21653. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863: चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 863मे चंदन कुमार झाक प्रविष्टि “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21654. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863: चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21655. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863: चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/लघुकथा” अछि।

प्रश्न 21656. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863: चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक यथार्थ

उत्तर: घ. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 21657. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863: चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21658. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863: चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21659. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863: चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21660. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863: चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21661. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863: चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21662. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863मे चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत” प्रविष्टि गद्य, कथा/लघुकथा आ “सामाजिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2172, सूचकांक पंक्ति 863मे चंदन कुमार झाक “ठकबुवद्ध/ लोहनिाली/ बुच्चू भइया/ समए होत बलबान/ अनकर दुगडवत” प्रविष्टि गद्य, कथा/लघुकथा आ “सामाजिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2173 : विदेह-सदेह 11 — जिहर लाल कमयप: ड्युटी

प्रश्न 21663. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864: जिहर लाल कमयपक “ड्युटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ड्युटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ड्युटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 864मे जिहर लाल कमयपक प्रविष्टि “ड्युटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21664. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864: जिहर लाल कमयपक “ड्युटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21665. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864: जिहर लाल कमयपक “ड्युटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 21666. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864: जिहर लाल कमयपक “ड्युटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी श्रमिक

उत्तर: घ. प्रवासी श्रमिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी श्रमिक” अछि।

प्रश्न 21667. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864: जिहर लाल कमयपक “ड्युटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी श्रमिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी श्रमिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी श्रमिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21668. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864: जिहर लाल कमयपक “ड्युटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जिहर लाल कमयप, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जिहर लाल कमयप, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21669. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864: जिहर लाल कमयपक “ड्युटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21670. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864: जिहर लाल कमयपक “ड्युटी”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21671. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864: जिहर लाल कमयपक “ड्युटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21672. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864मे जिहर लाल कमयपक “ड्युटी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रवासी श्रमिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2173, सूचकांक पंक्ति 864मे जिहर लाल कमयपक “ड्युटी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रवासी श्रमिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2174 : विदेह-सदेह 11 — रवि भूषर् पाठक: तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना

प्रश्न 21673. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865: रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 865मे रवि भूषर् पाठकक प्रविष्टि “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21674. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865: रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21675. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865: रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/दीर्घ कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/दीर्घ कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/दीर्घ कथा” अछि।

प्रश्न 21676. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865: रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण/यथार्थ

उत्तर: घ. ग्रामीण/यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण/यथार्थ” अछि।

प्रश्न 21677. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865: रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण/यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण/यथार्थ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण/यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21678. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865: रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषर् पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/दीर्घ कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषर् पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/दीर्घ कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21679. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865: रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21680. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865: रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना”कैं विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/दीर्घ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/दीर्घ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21681. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865: रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21682. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865मे रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/दीर्घ कथा आ “ग्रामीण/यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2174, सूचकांक पंक्ति 865मे रवि भूषर् पाठकक “तीनटा विहवन कथा/ ओक्कर तोहर हमर सपना” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/दीर्घ कथा आ “ग्रामीण/यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2175 : विदेह-सदेह 11 — सत्यनारायण झा: डायरी/ पाहुन

प्रश्न 21683. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866: सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डायरी/ पाहुन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डायरी/ पाहुन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 866मे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “डायरी/ पाहुन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21684. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866: सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21685. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866: सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. डायरी/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. डायरी/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “डायरी/कथा” अछि।

प्रश्न 21686. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866: सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यथार्थवादी

उत्तर: घ. यथार्थवादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थवादी” अछि।

प्रश्न 21687. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866: सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यथार्थवादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यथार्थवादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थवादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21688. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866: सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा डायरी/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा डायरी/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21689. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866: सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21690. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866: सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ डायरी/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ डायरी/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21691. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866: सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21692. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866मे सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन” प्रविष्टि गद्य, डायरी/कथा आ “यथार्थवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2175, सूचकांक पंक्ति 866मे सत्यनारायण झाक “डायरी/ पाहुन” प्रविष्टि गद्य, डायरी/कथा आ “यथार्थवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2176 : विदेह-सदेह 11 — ओमप्रकाश झा: वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवप...

प्रश्न 21693. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867: ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 867मे ओमप्रकाश झाक प्रविष्टि “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21694. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867: ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21695. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867: ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21696. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867: ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक/गजल समीक्षा

उत्तर: घ. सामाजिक/गजल समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक/गजल समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21697. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867: ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक/गजल समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक/गजल समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक/गजल समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21698. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867: ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21699. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867: ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21700. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867: ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21701. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867: ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21702. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867मे ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, कथा/समीक्षा आ “सामाजिक/गजल समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2176, सूचकांक पंक्ति 867मे ओमप्रकाश झाक “वनमोवहया/ गहीर आँवखक व्यथा/ ढेपमारा गोसाइ/ बहुरूवपया रचना मे (समीक्षा)/ घोघ उठबैत गजल (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, कथा/समीक्षा आ “सामाजिक/गजल समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2177 : विदेह-सदेह 11 — उमेश मण्डल: मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्...

प्रश्न 21703. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868: उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 868मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21704. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868: उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21705. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868: उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट् य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 21706. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868: उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट् य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा-साहित्य चिन्तन

उत्तर: घ. भाषा-साहित्य चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा-साहित्य चिन्तन” अछि।

प्रश्न 21707. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868: उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट् य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा-साहित्य चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा-साहित्य चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-साहित्य चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21708. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868: उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट् य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21709. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868: उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट् य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21710. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868: उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट् य”कँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21711. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868: उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट् य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21712. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868मे उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट् य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा-साहित्य चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2177, सूचकांक पंक्ति 868मे उमेश मण्डलक “मैवथली यिुा रचना-धवमडता :: परंपरा पवरित्तडन आ भविष्ट् य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा-साहित्य चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2178 : विदेह-सदेह 11 — सुजीत कुमार झा: वमवथलाक कण कणमे रामसीता

प्रश्न 21713. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वमवथलाक कण कणमे रामसीता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वमवथलाक कण कणमे रामसीता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 869मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “वमवथलाक कण कणमे रामसीता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21714. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21715. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 21716. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक

उत्तर: घ. सांस्कृतिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक” अछि।

प्रश्न 21717. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21718. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21719. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21720. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21721. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869: सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21722. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869मे सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2178, सूचकांक पंक्ति 869मे सुजीत कुमार झाक “वमवथलाक कण कणमे रामसीता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2179 : विदेह-सदेह 11 — वकशन कारीगर: अकि भेल ि (हास्य कथा)

प्रश्न 21723. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870: वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अकि भेल ि (हास्य कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकि भेल ि (हास्य कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 870मे वकशन कारीगरक प्रविष्टि “अकि भेल ि (हास्य कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21724. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870: वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21725. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870: वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हास्य कथा” अछि।

प्रश्न 21726. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870: वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 21727. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870: वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21728. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870: वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वकशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा हास्य कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वकशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा हास्य कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21729. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870: वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21730. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870: वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हास्य कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हास्य कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21731. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870: वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21732. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870मे वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)” प्रविष्टि गद्य, हास्य कथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2179, सूचकांक पंक्ति 870मे वकशन कारीगरक “अकि भेल ि (हास्य कथा)” प्रविष्टि गद्य, हास्य कथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2180 : विदेह-सदेह 11 — जगदानन्द झा 'मनु': (पृ. 212-232 मे संकलित)

प्रश्न 21733. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871: जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. (पृ. 212-232 मे संकलित)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (पृ. 212-232 मे संकलित)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 871मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “(पृ. 212-232 मे संकलित)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21734. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871: जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21735. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871: जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/कविता” अछि।

प्रश्न 21736. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871: जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक

उत्तर: घ. सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक” अछि।

प्रश्न 21737. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871: जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21738. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871: जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21739. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871: जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21740. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871: जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21741. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871: जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21742. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871मे जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/कविता आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2180, सूचकांक पंक्ति 871मे जगदानन्द झा 'मनु'क “(पृ. 212-232 मे संकलित)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/कविता आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2181 : विदेह-सदेह 11 — दुगानन्द् द मण् डल: (पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्...

प्रश्न 21743. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872: दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. (पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 872मे दुगानन्द् द मण् डलक प्रविष्टि “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21744. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872: दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21745. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872: दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/लोककथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/लोककथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/लोककथा” अछि।

प्रश्न 21746. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872: दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यात्रा वृत्तान्त

उत्तर: घ. यात्रा वृत्तान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यात्रा वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 21747. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872: दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यात्रा वृत्तान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रा वृत्तान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यात्रा वृत्तान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21748. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872: दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुगानन्द् द मण् डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/लोककथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुगानन्द् द मण् डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/लोककथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21749. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872: दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21750. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872: दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)”कैं विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/लोककथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/लोककथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21751. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872: दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21752. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872मे दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/लोककथा आ “यात्रा वृत्तान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2181, सूचकांक पंक्ति 872मे दुगानन्द् द मण् डलक “(पृ. 172/221 मे संकलित: टैगोर पुरस्कार यात्रा/कुकमा)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/लोककथा आ “यात्रा वृत्तान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2182 : विदेह-सदेह 11 — आशीष अनचिन्हार: कुरानक मैथिली अनुिाद

प्रश्न 21753. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873: आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुिाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुरानक मैथिली अनुिाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुरानक मैथिली अनुिाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 873मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “कुरानक मैथिली अनुिाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21754. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873: आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुिाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21755. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873: आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुिाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद” अछि।

प्रश्न 21756. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873: आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुवाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धार्मिक अनुवाद

उत्तर: घ. धार्मिक अनुवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धार्मिक अनुवाद” अछि।

प्रश्न 21757. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873: आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धार्मिक अनुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धार्मिक अनुवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धार्मिक अनुवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21758. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873: आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुवाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21759. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873: आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुवाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21760. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873: आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुवाद”केँ विदेह-सदेह 11क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21761. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873: आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21762. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873मे आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद आ “धार्मिक अनुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2182, सूचकांक पंक्ति 873मे आशीष अनचिन्हारक “कुरानक मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद आ “धार्मिक अनुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2183 : विदेह-सदेह 11 — निंन कुमार “आशा”: विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त कर...

प्रश्न 21763. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874: निंन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 874मे निंन कुमार “आशा”क प्रविष्टि “विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21764. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874: निंन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21765. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874: निंन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21766. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874: निंन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संस्थाप्रेम/सामाजिक

उत्तर: घ. संस्थाप्रेम/सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्थाप्रेम/सामाजिक” अछि।

प्रश्न 21767. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874: निंीन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संस्थाप्रेम/सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्थाप्रेम/सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्थाप्रेम/सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21768. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874: निंीन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक निंीन कुमार “आशा”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक निंीन कुमार “आशा”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21769. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874: निंीन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21770. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874: निंीन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21771. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874: निंीन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक अिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21772. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874मे निीन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक आिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “संस्थाप्रेम/सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2183, सूचकांक पंक्ति 874मे निीन कुमार “आशा”क “विदेह पवरिार/ गभडक आिाज/ यौ भाइ दहेजक अन्त करु/ वमवथलाक की करू बखान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “संस्थाप्रेम/सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2184 : विदेह-सदेह 11 — श्यामल सुमन: वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँ...

प्रश्न 21773. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875: श्यामल सुमनक “वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्द्तान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/ विषय कोन अछि?

क. वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्द्तान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्द्तान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 875मे श्यामल सुमनक प्रविष्टि “वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्द्तान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21774. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875: श्यामल सुमनक “वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्द्तान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21775. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875: श्यामल सुमनक “वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्द्तान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21776. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875: श्यामल सुमनक “वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्द्तान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नीति/सामाजिक

उत्तर: घ. नीति/सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नीति/सामाजिक” अछि।

प्रश्न 21777. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875: श्यामल सुमनक “वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्दतान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नीति/सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नीति/सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नीति/सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21778. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875: श्यामल सुमनक “वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्दतान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्यामल सुमन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्यामल सुमन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21779. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875: श्यामल सुमनक “वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्दतान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21780. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875: श्यामल सुमनक “वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्दतान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21781. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875: श्यामल सुमनक “वनरीिण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्दतान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21782. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875मे श्यामल सुमनक “वनरीण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्दतान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नीति/सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2184, सूचकांक पंक्ति 875मे श्यामल सुमनक “वनरीण/ साँच/ बेटी/ मैवथल वमवथला नाज हमर/ हँसी मुँह पर/ खटहा अंगूर/ संस्कार सन्दतान/ हमर संगी/ कोहबर/ मोन वकयै/ कानय/ खूब मोन/ वक मुखड़ा पर/ फागुन मौसम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नीति/ सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2185 : विदेह-सदेह 11 — वदनेश रवसया: (पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)

प्रश्न 21783. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876: वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. (पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 876मे वदनेश रवसयाक प्रविष्टि “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21784. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876: वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21785. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876: वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 21786. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876: वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक

उत्तर: घ. सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक” अछि।

प्रश्न 21787. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876: वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21788. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876: वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वदनेश रवसया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वदनेश रवसया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21789. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876: वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21790. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876: वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)”केँ विदेह-सदेह 11क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21791. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876: वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 11क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21792. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876मे वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2185, सूचकांक पंक्ति 876मे वदनेश रवसयाक “(पृ. 407-408 मे संकलित: अतिरिक्त कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 11क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2186 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर: सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू ब...

प्रश्न 21793. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877: गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 877मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21794. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877: गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21795. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877: गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21796. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877: गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रधान सम्पादक

उत्तर: घ. प्रधान सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रधान सम्पादक” अछि।

प्रश्न 21797. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877: गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातिवादक विरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातिवादक विरोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवादक विरोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21798. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877: गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा सम्पादकीय/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा सम्पादकीय/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21799. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877: गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21800. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877: गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")”कैँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीय/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीय/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21801. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877: गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21802. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877मे गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")” प्रविष्टि गद्य/पद्य, सम्पादकीय/बाल गजल आ “जातिवादक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2186, सूचकांक पंक्ति 877मे गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय; बाल गजल ("जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबी")” प्रविष्टि गद्य/पद्य, सम्पादकीय/बाल गजल आ “जातिवादक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2187 : विदेह-सदेह 12 — डा. राजेन्द्र विमल: "नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" —...

प्रश्न 21803. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878: डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 878मे डा. राजेन्द्र विमलक प्रविष्टि “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21804. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878: डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21805. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878: डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21806. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878: डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा

उत्तर: घ. कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21807. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878: डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21808. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878: डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21809. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878: डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21810. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878: डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21811. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878: डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21812. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878मे डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2187, सूचकांक पंक्ति 878मे डा. राजेन्द्र विमलक “"नव नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिही" — समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2188 : विदेह-सदेह 12 — जितेन्द्र झा: "राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार

प्रश्न 21813. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879: जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 879मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21814. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879: जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21815. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879: जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 21816. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879: जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर, नेपाल

उत्तर: घ. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर, नेपाल” अछि।

प्रश्न 21817. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879: जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकपुर, नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर, नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21818. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879: जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21819. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879: जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21820. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879: जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21821. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879: जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21822. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879मे जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार” प्रविष्टि गद्य, समाचार/रिपोर्ताज आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2188, सूचकांक पंक्ति 879मे जितेन्द्र झाक “"राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित" — समाचार” प्रविष्टि गद्य, समाचार/रिपोर्ताज आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2189 : विदेह-सदेह 12 — अरविन्द श्रीवास्तव: "‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पु...

प्रश्न 21823. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880: अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 880मे अरविन्द श्रीवास्तवक प्रविष्टि “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21824. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880: अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21825. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880: अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 21826. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880: अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. डा. देवनारायण साहक पुस्तक लोकापण

उत्तर: घ. डा. देवनारायण साहक पुस्तक लोकापण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “डा. देवनारायण साहक पुस्तक लोकापण” अछि।

प्रश्न 21827. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880: अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. डा. देवनारायण साहक पुस्तक लोकापण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डा. देवनारायण साहक पुस्तक लोकापण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “डा. देवनारायण साहक पुस्तक लोकापण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21828. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880: अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरविन्द श्रीवास्तव, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरविन्द श्रीवास्तव, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21829. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880: अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21830. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880: अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21831. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880: अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21832. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880मे अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार” प्रविष्टि गद्य, समाचार/रिपोर्ताज आ “डा. देवनारायण साहक पुस्तक लोकापण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2189, सूचकांक पंक्ति 880मे अरविन्द श्रीवास्तवक “"‘मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन’ पुस्तकक लोकापण" — समाचार” प्रविष्टि गद्य, समाचार/रिपोर्ताज आ “डा. देवनारायण साहक पुस्तक लोकापण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2190 : विदेह-सदेह 12 — मुन्नी कामत: "कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); क...

प्रश्न 21833. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881: मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 881मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21834. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881: मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21835. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881: मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/लघुकथा/नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/लघुकथा/नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/लघुकथा/नाटक” अछि।

प्रश्न 21836. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881: मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 21837. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881: मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21838. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881: मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा/नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा/नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21839. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881: मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21840. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881: मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/लघुकथा/नाटकक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/लघुकथा/नाटकक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21841. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881: मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21842. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881मे मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"” प्रविष्टि गद्य/पद्य, कविता/लघुकथा/नाटक आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2190, सूचकांक पंक्ति 881मे मुन्नी कामतक “"कतऽ जा रहल छी हम!" (कविता); "टूटल मन" (लघुकथा); कविता सभ ("भ्रष्टाचारक प्रसाद" आदि); नाटक: "शिक्षित बेटी"” प्रविष्टि गद्य/पद्य, कविता/लघुकथा/नाटक आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2191 : विदेह-सदेह 12 — दुर्गानन्द मण्डल: "जीवन-मरण: समीक्षा"

प्रश्न 21843. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882: दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "जीवन-मरण: समीक्षा"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "जीवन-मरण: समीक्षा"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 882मे दुर्गानन्द मण्डलक प्रविष्टि “"जीवन-मरण: समीक्षा"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21844. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882: दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21845. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882: दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21846. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882: दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास 'जीवन-मरण'क समीक्षा

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास 'जीवन-मरण'क समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास 'जीवन-मरण'क समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21847. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882: दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास 'जीवन-मरण'क समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास 'जीवन-मरण'क समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास 'जीवन-मरण'क समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21848. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882: दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21849. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882: दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21850. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882: दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21851. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882: दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21852. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882मे दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास 'जीवन-मरण'क समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2191, सूचकांक पंक्ति 882मे दुर्गानन्द मण्डलक “"जीवन-मरण: समीक्षा"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास 'जीवन-मरण'क समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2192 : विदेह-सदेह 12 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: "स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक सम...

प्रश्न 21853. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 883मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21854. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा""क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21855. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा""क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 21856. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक समरसता

उत्तर: घ. सामाजिक समरसता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक समरसता” अछि।

प्रश्न 21857. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"" प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक समरसता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक समरसता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक समरसता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21858. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा""क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21859. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21860. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"”कैं विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेख/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेख/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21861. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21862. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख/निबन्ध आ “सामाजिक समरसता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2192, सूचकांक पंक्ति 883मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “"स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता"; "मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा"” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख/निबन्ध आ “सामाजिक समरसता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2193 : विदेह-सदेह 12 — आशीष अनचिन्हार: "कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल ग...

प्रश्न 21863. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884: आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 884मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21864. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884: आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21865. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884: आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/गजल/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/गजल/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/गजल/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21866. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884: आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सहायक सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सहायक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सहायक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 21867. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884: आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल गजल अवधारणाक सूत्रधार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल अवधारणाक सूत्रधार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गजल अवधारणाक सूत्रधार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21868. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884: आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख/गजल/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख/गजल/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21869. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884: आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21870. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884: आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/गजल/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/गजल/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21871. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884: आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21872. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884मे आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख/गजल/बाल गजल आ “बाल गजल अवधारणाक सूत्रधार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2193, सूचकांक पंक्ति 884मे आशीष अनचिन्हारक “"कावियो" (गजल व्याकरण); "की थिक बाल गजल"; बाल गजल सभ; गजल सभ” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख/गजल/बाल गजल आ “बाल गजल अवधारणाक सूत्रधार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2194 : विदेह-सदेह 12 — मुन्नाजी: "बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ

प्रश्न 21873. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885: मुन्नाजीक “"बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 885मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “"बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21874. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885: मुन्नाजीक “"बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21875. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885: मुन्नाजीक “"बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21876. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885: मुन्नाजीक “"बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल गजलक प्रारम्भिक समीक्षा

उत्तर: घ. बाल गजलक प्रारम्भिक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल गजलक प्रारम्भिक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21877. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885: मुन्नाजीक “"बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल गजलक प्रारम्भिक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजलक प्रारम्भिक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गजलक प्रारम्भिक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21878. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885: मुन्नाजीक “"बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21879. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885: मुन्नाजीक “"बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21880. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885: मुन्नाजीक “"बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21881. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885: मुन्नाजीक “"बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21882. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885मे मुन्नाजीक “"बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख/बाल गजल आ “बाल गजलक प्रारम्भिक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2194, सूचकांक पंक्ति 885मे मुन्नाजीक “"बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा"; बाल गजल सभ” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख/बाल गजल आ “बाल गजलक प्रारम्भिक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2195 : विदेह-सदेह 12 — ओम प्रकाश झा: "विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"

प्रश्न 21883. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886: ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 886मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21884. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886: ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21885. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886: ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21886. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886: ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 21887. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886: ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21888. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886: ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21889. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886: ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21890. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886: ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21891. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886: ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21892. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886मे ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/बाल गजल आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2195, सूचकांक पंक्ति 886मे ओम प्रकाश झाक “"विहिनि कथा - प्रोग्रेसभ"; "बीस टाका"; "बाल गजल"” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/बाल गजल आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2196 : विदेह-सदेह 12 — जगदानन्द झा मनु: "बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह...

प्रश्न 21893. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887: जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 887मे जगदानन्द झा मनुक प्रविष्टि “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21894. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887: जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21895. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887: जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/लघुकथा/गीत/गजल/बाल गजल/प्रेरक कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/लघुकथा/गीत/गजल/बाल गजल/प्रेरक कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/लघुकथा/गीत/गजल/बाल गजल/प्रेरक कथा” अछि।

प्रश्न 21896. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887: जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल गजल अवधारणाक समर्थक

उत्तर: घ. बाल गजल अवधारणाक समर्थक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल गजल अवधारणाक समर्थक” अछि।

प्रश्न 21897. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887: जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल गजल अवधारणाक समर्थक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल अवधारणाक समर्थक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गजल अवधारणाक समर्थक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21898. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887: जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख/लघुकथा/गीत/गजल/बाल गजल/प्रेरक कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख/लघुकथा/गीत/गजल/बाल गजल/प्रेरक कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21899. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887: जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21900. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887: जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/लघुकथा/गीत/गजल/बाल गजल/प्रेरक कथाक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/लघुकथा/गीत/गजल/बाल गजल/प्रेरक कथाक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21901. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887: जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21902. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887मे जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख/लघुकथा/गीत/गजल/बाल गजल/प्रेरक कथा आ “बाल गजल अवधारणाक समर्थक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2196, सूचकांक पंक्ति 887मे जगदानन्द झा मनुक “"बाल गजलक अवधारणा"; "रोटीक स्वाद"; "अन्तिम जगह"; गीत (१-५); गजल; "हम एहन किएक छी?"; "कोना मदर डे हैप्पी?"; बाल गजल (१-३); "करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह"” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख/लघुकथा/गीत/गजल/बाल गजल/प्रेरक कथा आ “बाल गजल अवधारणाक समर्थक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2197 : विदेह-सदेह 12 — चन्दन कुमार झा: "मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघ...

प्रश्न 21903. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888: चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 888मे चन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21904. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888: चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21905. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888: चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/लघुकथा/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/लघुकथा/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/लघुकथा/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 21906. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888: चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली बाल साहित्यक इतिहास

उत्तर: घ. मैथिली बाल साहित्यक इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली बाल साहित्यक इतिहास” अछि।

प्रश्न 21907. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888: चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली बाल साहित्यक इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली बाल साहित्यक इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली बाल साहित्यक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21908. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888: चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख/लघुकथा/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्दन कुमार झा, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख/लघुकथा/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21909. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888: चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21910. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888: चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/लघुकथा/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/लघुकथा/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21911. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888: चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21912. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888मे चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख/लघुकथा/बाल गजल आ “मैथिली बाल साहित्यक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2197, सूचकांक पंक्ति 888मे चन्दन कुमार झाक “"मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल"; "टटका रचना" (लघुकथा); बाल गजल (१-३)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख/लघुकथा/बाल गजल आ “मैथिली बाल साहित्यक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2198 : विदेह-सदेह 12 — अमित मिश्र: "बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहर...

प्रश्न 21913. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889: अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 889मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21914. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889: अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21915. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889: अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/बाल गजल/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/बाल गजल/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/बाल गजल/गजल” अछि।

प्रश्न 21916. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889: अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ीक सक्रिय गजलकार

उत्तर: घ. नव पीढ़ीक सक्रिय गजलकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ीक सक्रिय गजलकार” अछि।

प्रश्न 21917. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889: अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21918. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889: अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख/बाल गजल/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आलेख/बाल गजल/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21919. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889: अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21920. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889: अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/बाल गजल/गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/बाल गजल/गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21921. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889: अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21922. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889मे अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख/बाल गजल/गजल आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2198, सूचकांक पंक्ति 889मे अमित मिश्रक “"बाल गजल: कोमल करेजक आखर"; बाल गजल (१-३); बहर उदाहरण सभ” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आलेख/बाल गजल/गजल आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2199 : विदेह-सदेह 12 — मिहिर झा: "बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कवि...

प्रश्न 21923. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890: मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 890मे मिहिर झाक प्रविष्टि “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21924. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890: मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21925. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890: मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल/समीक्षा/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल/समीक्षा/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल/समीक्षा/कविता” अछि।

प्रश्न 21926. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890: मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल समीक्षक

उत्तर: घ. गजल समीक्षक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल समीक्षक” अछि।

प्रश्न 21927. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890: मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21928. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890: मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिहिर झा, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा बाल गजल/समीक्षा/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिहिर झा, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा बाल गजल/समीक्षा/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21929. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890: मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21930. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890: मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)”कैँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजल/समीक्षा/कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजल/समीक्षा/कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21931. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890: मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21932. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890मे मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, बाल गजल/समीक्षा/कविता आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2199, सूचकांक पंक्ति 890मे मिहिर झाक “"बाल गजल" (रचना); "भोथ हथियार" (समीक्षा); "महगी" (कविता); बाल गजल (१-४)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, बाल गजल/समीक्षा/कविता आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2200 : विदेह-सदेह 12 — नवेन्दु कुमार झा: "बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'"...

प्रश्न 21933. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891: नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 891मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21934. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891: नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21935. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891: नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 21936. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891: नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विकास पत्रकारिता

उत्तर: घ. विकास पत्रकारिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विकास पत्रकारिता” अछि।

प्रश्न 21937. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891: नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विकास पत्रकारिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विकास पत्रकारिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विकास पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21938. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891: नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21939. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891: नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21940. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891: नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21941. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891: नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21942. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891मे नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार” प्रविष्टि गद्य, समाचार/रिपोर्ताज आ “विकास पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2200, सूचकांक पंक्ति 891मे नवेन्दु कुमार झाक “"बिजलीक क्षेत्र मे आत्म निर्भरताक लेल सरकार'" आदि समाचार” प्रविष्टि गद्य, समाचार/रिपोर्ताज आ “विकास पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2201 : विदेह-सदेह 12 — राजदेव मण्डल: "जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कवि...

प्रश्न 21943. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892: राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 892मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21944. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892: राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21945. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892: राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/कविता” अछि।

प्रश्न 21946. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892: राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक यथार्थ

उत्तर: घ. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 21947. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892: राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21948. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892: राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा समीक्षा/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा समीक्षा/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21949. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892: राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21950. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892: राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21951. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892: राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21952. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892मे राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, समीक्षा/कविता आ “सामाजिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2201, सूचकांक पंक्ति 892मे राजदेव मण्डलक “"जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रहः राति-दिन"; कविता सभ ("कानैत हँसी" आदि)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, समीक्षा/कविता आ “सामाजिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2202 : विदेह-सदेह 12 — डॉ. धनाकर ठाकूर: "समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"

प्रश्न 21953. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893: डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 893मे डॉ. धनाकर ठाकूरक प्रविष्टि “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21954. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893: डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21955. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893: डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21956. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893: डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सियाराम झा सरसक बाल साहित्य

उत्तर: घ. सियाराम झा सरसक बाल साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सियाराम झा सरसक बाल साहित्य” अछि।

प्रश्न 21957. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893: डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सियाराम झा सरसक बाल साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सियाराम झा सरसक बाल साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सियाराम झा सरसक बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21958. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893: डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. धनाकर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. धनाकर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21959. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893: डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21960. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893: डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21961. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893: डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21962. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893मे डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सियाराम झा सरसक बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2202, सूचकांक पंक्ति 893मे डॉ. धनाकर ठाकूरक “"समीक्षा: फूल तितली आ तुलबुल"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सियाराम झा सरसक बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2203 : विदेह-सदेह 12 — कैलास दास: "म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "मह...

प्रश्न 21963. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894: कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 894मे कैलास दासक प्रविष्टि “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21964. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894: कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत""क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21965. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894: कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत""क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/समीक्षा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/समीक्षा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/समीक्षा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 21966. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894: कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर, नेपाल

उत्तर: घ. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर, नेपाल” अछि।

प्रश्न 21967. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894: कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"" प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21968. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894: कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत""क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/समीक्षा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/समीक्षा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21969. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894: कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21970. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894: कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"”कैं विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/समीक्षा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/समीक्षा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21971. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894: कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21972. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894मे कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/समीक्षा/निबन्ध आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2203, सूचकांक पंक्ति 894मे कैलास दासक “"म्याराथन दौड आ जनकपुर"; "अंगना सुखल घरमे पानि"; "महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिही"; "खोजए पड़ि मातृत्व बालगीत"” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/समीक्षा/निबन्ध आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2204 : विदेह-सदेह 12 — सुजीत कुमार झा: "मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्र...

प्रश्न 21973. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895: सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 895मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21974. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895: सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21975. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895: सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/सूचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/सूचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/सूचना” अछि।

प्रश्न 21976. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895: सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला पेन्टिङ्

उत्तर: घ. मिथिला पेन्टिङ्

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला पेन्टिङ्” अछि।

प्रश्न 21977. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895: सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी कला केन्द्र, जनकपुर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी कला केन्द्र, जनकपुर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी कला केन्द्र, जनकपुर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21978. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895: सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/सूचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/सूचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21979. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895: सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21980. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895: सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/सूचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/सूचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21981. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895: सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21982. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895मे सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/सूचना आ “नारी कला केन्द्र, जनकपुर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2204, सूचकांक पंक्ति 895मे सुजीत कुमार झाक “"मिथिला पेन्टिङ्क विदेशमे मांग बढ़ल"; कथा संग्रह "जिही"क चर्चा” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/सूचना आ “नारी कला केन्द्र, जनकपुर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2205 : विदेह-सदेह 12 — शत्रूधन प्रसाद साह: "मैथिली महिला आ जिही"

प्रश्न 21983. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896: शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "मैथिली महिला आ जिही"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "मैथिली महिला आ जिही"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 896मे शत्रूधन प्रसाद साहक प्रविष्टि “"मैथिली महिला आ जिही"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21984. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896: शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21985. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896: शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21986. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896: शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुजीत कुमार झाक 'जिही' कथा संग्रहक समीक्षा

उत्तर: घ. सुजीत कुमार झाक 'जिही' कथा संग्रहक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुजीत कुमार झाक 'जिही' कथा संग्रहक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21987. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896: शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुजीत कुमार झाक 'जिही' कथा संग्रहक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुजीत कुमार झाक 'जिही' कथा संग्रहक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुजीत कुमार झाक 'जिही' कथा संग्रहक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21988. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896: शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शत्रूधन प्रसाद साह, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शत्रूधन प्रसाद साह, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21989. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896: शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 21990. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896: शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 21991. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896: शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 21992. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896मे शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सुजीत कुमार झाक 'जिही' कथा संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2205, सूचकांक पंक्ति 896मे शत्रूधन प्रसाद साहक “"मैथिली महिला आ जिही"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सुजीत कुमार झाक 'जिही' कथा संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2206 : विदेह-सदेह 12 — विजय मस्त: "सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"

प्रश्न 21993. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897: विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 897मे विजय मस्तक प्रविष्टि “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 21994. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897: विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 21995. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897: विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21996. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897: विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुजीतक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा

उत्तर: घ. सुजीतक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुजीतक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा” अछि।

प्रश्न 21997. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897: विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुजीतक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुजीतक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुजीतक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 21998. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897: विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजय मस्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजय मस्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 21999. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897: विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22000. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897: विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22001. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897: विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22002. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897मे विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सुजीतक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2206, सूचकांक पंक्ति 897मे विजय मस्तक “"सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सुजीतक कथा संग्रह 'जिही'क समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2207 : विदेह-सदेह 12 — बलराम साह: "विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"

प्रश्न 22003. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898: बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 898मे बलराम साहक प्रविष्टि “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22004. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898: बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22005. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898: बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22006. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898: बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक संस्कृति

उत्तर: घ. लोक संस्कृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक संस्कृति” अछि।

प्रश्न 22007. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898: बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक संस्कृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22008. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898: बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बलराम साह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बलराम साह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22009. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898: बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22010. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898: बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22011. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898: बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22012. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898मे बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2207, सूचकांक पंक्ति 898मे बलराम साहक “"विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति"” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2208 : विदेह-सदेह 12 — पूनम मण्डल: "मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्त...

प्रश्न 22013. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899: पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 899मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22014. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899: पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22015. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899: पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 22016. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899: पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सह-सम्पादिका

उत्तर: घ. सह-सम्पादिका

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सह-सम्पादिका” अछि।

प्रश्न 22017. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899: पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक पत्रकारिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक पत्रकारिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22018. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899: पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22019. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899: पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22020. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899: पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."”कैं विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22021. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899: पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22022. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899मे पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."” प्रविष्टि गद्य, समाचार/रिपोर्ताज आ “साहित्यिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2208, सूचकांक पंक्ति 899मे पूनम मण्डलक “"मैथिलीक तेसर विकीलीक्स" आदि समाचार; "मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलांगन..."” प्रविष्टि गद्य, समाचार/रिपोर्ताज आ “साहित्यिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2209 : विदेह-सदेह 12 — पंकज चौधरी (निलश्री): लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल...

प्रश्न 22023. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900: पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 900मे पंकज चौधरी (निलश्री)क प्रविष्टि “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22024. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900: पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22025. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900: पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर""क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/गजल/बाल गजल/बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/गजल/बाल गजल/बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/गजल/बाल गजल/बाल कविता” अछि।

प्रश्न 22026. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900: पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी मैथिल लेखक

उत्तर: घ. प्रवासी मैथिल लेखक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मैथिल लेखक” अछि।

प्रश्न 22027. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900: पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"" प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी मैथिल लेखक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी मैथिल लेखक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मैथिल लेखक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22028. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900: पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर""क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज चौधरी (निलश्री), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/गजल/बाल गजल/बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज चौधरी (निलश्री), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/गजल/बाल गजल/बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22029. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900: पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22030. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900: पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर""केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/गजल/बाल गजल/बाल कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/गजल/बाल गजल/बाल कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22031. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900: पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22032. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900मे पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/गजल/बाल गजल/बाल कविता आ “प्रवासी मैथिल लेखक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2209, सूचकांक पंक्ति 900मे पंकज चौधरी (निलश्री)क “लघुकथा: "ई नोर छै गरीबीक"; गजल (१-३); बाल गजल (१-८); बाल कविता: "मेघक चोर"” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/गजल/बाल गजल/बाल कविता आ “प्रवासी मैथिल लेखक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2210 : विदेह-सदेह 12 — राम विलास साहु: लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर...

प्रश्न 22033. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901: राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 901मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22034. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901: राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22035. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901: राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/कविता” अछि।

प्रश्न 22036. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901: राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 22037. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901: राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22038. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901: राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22039. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901: राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22040. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901: राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22041. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901: राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22042. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901मे राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2210, सूचकांक पंक्ति 901मे राम विलास साहुक “लघुकथा: "स्कूलक खिचड़ी"; "चोर-सिपाही"; "सिम्मर केर फूल"; "ओलम्पिक"” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2211 : विदेह-सदेह 12 — जवाहर लाल काश्यप: "जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल

प्रश्न 22043. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902: जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 902मे जवाहर लाल काश्यपक प्रविष्टि “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22044. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902: जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22045. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902: जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 22046. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902: जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक परिवर्तन

उत्तर: घ. सामाजिक परिवर्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक परिवर्तन” अछि।

प्रश्न 22047. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902: जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक परिवर्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक परिवर्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक परिवर्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22048. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902: जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जवाहर लाल काश्यप, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जवाहर लाल काश्यप, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22049. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902: जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22050. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902: जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल”कैं विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/बाल गजलक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22051. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902: जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22052. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902मे जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/बाल गजल आ “सामाजिक परिवर्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2211, सूचकांक पंक्ति 902मे जवाहर लाल काश्यपक “"जमाना बदल गेलै" (लघुकथा); बाल गजल” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/बाल गजल आ “सामाजिक परिवर्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2212 : विदेह-सदेह 12 — कामिनी कामायनी: लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभ...

प्रश्न 22053. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903: कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 903मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22054. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903: कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22055. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903: कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/कविता” अछि।

प्रश्न 22056. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903: कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी विमर्श

उत्तर: घ. नारी विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी विमर्श” अछि।

प्रश्न 22057. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903: कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22058. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903: कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22059. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903: कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22060. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903: कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/कविताक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22061. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903: कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22062. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903मे कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/कविता आ “नारी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2212, सूचकांक पंक्ति 903मे कामिनी कामायनीक “लघुकथा: "कलंकित चान"; "उत्तराक नोर"; "बिड़ैक अभिलाष" (कविता)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/कविता आ “नारी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2213 : विदेह-सदेह 12 — नन्द विलास राय: कविता: "कन्यादान"; "बेपार"

प्रश्न 22063. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904: नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता: "कन्यादान"; "बेपार"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता: "कन्यादान"; "बेपार"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 904मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22064. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904: नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22065. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904: नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22066. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904: नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक व्यंग्य

उत्तर: घ. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 22067. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904: नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22068. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904: नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22069. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904: नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22070. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904: नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"”कें विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22071. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904: नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22072. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904मे नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2213, सूचकांक पंक्ति 904मे नन्द विलास रायक “कविता: "कन्यादान"; "बेपार"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2214 : विदेह-सदेह 12 — रूबी झा: गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)

प्रश्न 22073. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905: रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 905मे रूबी झाक प्रविष्टि “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22074. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905: रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22075. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905: रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 22076. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905: रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 22077. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905: रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22078. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905: रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूबी झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूबी झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22079. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905: रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22080. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905: रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22081. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905: रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22082. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905मे रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)” प्रविष्टि पद्य, गजल/बाल गजल आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2214, सूचकांक पंक्ति 905मे रूबी झाक “गजल (१-२); बाल गजल (१-१३)” प्रविष्टि पद्य, गजल/बाल गजल आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2215 : विदेह-सदेह 12 — कुसुम ठाकुर: हाइकू

प्रश्न 22083. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906: कुसुम ठाकुरक “हाइकू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाइकू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 906मे कुसुम ठाकुरक प्रविष्टि “हाइकू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22084. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906: कुसुम ठाकुरक “हाइकू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22085. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906: कुसुम ठाकुरक “हाइकू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू” अछि।

प्रश्न 22086. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906: कुसुम ठाकुरक “हाइकू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभाषा प्रेम

उत्तर: घ. मातृभाषा प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभाषा प्रेम” अछि।

प्रश्न 22087. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906: कुसुम ठाकुरक “हाइकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृभाषा प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभाषा प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृभाषा प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22088. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906: कुसुम ठाकुरक “हाइकू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22089. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906: कुसुम ठाकुरक “हाइकू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22090. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906: कुसुम ठाकुरक “हाइकू”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22091. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906: कुसुम ठाकुरक “हाइकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22092. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906मे कुसुम ठाकुरक “हाइकू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “मातृभाषा प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2215, सूचकांक पंक्ति 906मे कुसुम ठाकुरक “हाइकू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “मातृभाषा प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2216 : विदेह-सदेह 12 — हेम नारायण साहु: कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समत...

प्रश्न 22093. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907: हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 907मे हेम नारायण साहुक प्रविष्टि “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22094. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907: हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22095. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907: हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22096. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907: हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक अन्याय

उत्तर: घ. सामाजिक अन्याय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक अन्याय” अछि।

प्रश्न 22097. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907: हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक अन्याय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक अन्याय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक अन्याय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22098. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907: हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेम नारायण साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेम नारायण साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22099. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907: हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22100. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907: हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22101. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907: हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22102. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907मे हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक अन्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2216, सूचकांक पंक्ति 907मे हेम नारायण साहुक “कविता: "जुलुम भऽ रहल अछि..."; "भष्टाचार"; "समता"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक अन्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2217 : विदेह-सदेह 12 — बाल मुकुन्द पाठक: गजल (१-४)

प्रश्न 22103. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-४)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 908मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “गजल (१-४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22104. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22105. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 22106. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 22107. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22108. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22109. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22110. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22111. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22112. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2217, सूचकांक पंक्ति 908मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-४)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2218 : विदेह-सदेह 12 — पवन कुमार साह: कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"

प्रश्न 22113. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909: पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 909मे पवन कुमार साहक प्रविष्टि “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22114. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909: पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात""क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22115. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909: पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात""क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22116. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909: पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला प्रेम

उत्तर: घ. मिथिला प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला प्रेम” अछि।

प्रश्न 22117. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909: पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"" प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22118. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909: पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात""क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पवन कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पवन कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22119. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909: पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22120. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909: पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22121. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909: पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22122. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909मे पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2218, सूचकांक पंक्ति 909मे पवन कुमार साहक “कविता: "भाय-यौ भाय-यौ..."; "मोनक बात"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2219 : विदेह-सदेह 12 — शशिधर कुमर: "पूर्ण प्रयास" — कविता

प्रश्न 22123. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910: शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "पूर्ण प्रयास" — कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "पूर्ण प्रयास" — कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 910मे शशिधर कुमरक प्रविष्टि “"पूर्ण प्रयास" — कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22124. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910: शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22125. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910: शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22126. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910: शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दरभंगा-पूर्णिया रेल यात्राक लम्बी कविता

उत्तर: घ. दरभंगा-पूर्णिया रेल यात्राक लम्बी कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दरभंगा-पूर्णिया रेल यात्राक लम्बी कविता” अछि।

प्रश्न 22127. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910: शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दरभंगा-पूर्णिया रेल यात्राक लम्बी कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दरभंगा-पूर्णिया रेल यात्राक लम्बी कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दरभंगा-पूर्णिया रेल यात्राक लम्बी कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22128. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910: शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शशिधर कुमर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शशिधर कुमर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22129. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910: शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22130. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910: शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22131. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910: शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22132. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910मे शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दरभंगा-पूर्णिया रेल यात्राक लम्बी कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2219, सूचकांक पंक्ति 910मे शशिधर कुमरक “"पूर्ण प्रयास" — कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दरभंगा-पूर्णिया रेल यात्राक लम्बी कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2220 : विदेह-सदेह 12 — सत्यनारायण झा: "ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता

प्रश्न 22133. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911: सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 911मे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22134. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911: सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22135. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911: सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22136. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911: सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पितृ-पुत्र सम्बन्ध

उत्तर: घ. पितृ-पुत्र सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृ-पुत्र सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 22137. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911: सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पितृ-पुत्र सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पितृ-पुत्र सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृ-पुत्र सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22138. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911: सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22139. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911: सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22140. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911: सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22141. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911: सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22142. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911मे सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पितृ-पुत्र सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2220, सूचकांक पंक्ति 911मे सत्यनारायण झाक “"ओहिना मोन अछि ओ दिन" — कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पितृ-पुत्र सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2221 : विदेह-सदेह 12 — किशन कारीगर: हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि

प्रश्न 22143. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912: किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 912मे किशन कारीगरक प्रविष्टि “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22144. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912: किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22145. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912: किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हास्य कविता” अछि।

प्रश्न 22146. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912: किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक व्यंग्य

उत्तर: घ. साहित्यिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 22147. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912: किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22148. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912: किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा हास्य कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा हास्य कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22149. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912: किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22150. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912: किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हास्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हास्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22151. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912: किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22152. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912मे किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि” प्रविष्टि पद्य, हास्य कविता आ “साहित्यिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2221, सूचकांक पंक्ति 912मे किशन कारीगरक “हास्य कविता: "पंडा आ दलाल" आदि” प्रविष्टि पद्य, हास्य कविता आ “साहित्यिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2222 : विदेह-सदेह 12 — शिव कुमार झा बिल्लू: कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिको...

प्रश्न 22153. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913: शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 913मे शिव कुमार झा बिल्लूक प्रविष्टि “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22154. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913: शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22155. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913: शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गजल” अछि।

प्रश्न 22156. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913: शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चेतना

उत्तर: घ. सामाजिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चेतना” अछि।

प्रश्न 22157. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913: शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22158. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913: शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा बिल्लू, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा बिल्लू, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22159. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913: शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22160. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913: शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"”कैं विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22161. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913: शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22162. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913मे शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"” प्रविष्टि पद्य, कविता/गजल आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2222, सूचकांक पंक्ति 913मे शिव कुमार झा बिल्लूक “कविता: "सुखाड़"; आजाद गजल (१-२); "दृष्टिकोण"” प्रविष्टि पद्य, कविता/गजल आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2223 : विदेह-सदेह 12 — बिनीत उत्पल: "नामदारक शहरमे" (कविता); गजल

प्रश्न 22163. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914: बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "नामदारक शहरमे" (कविता); गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "नामदारक शहरमे" (कविता); गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 914मे बिनीत उत्पलक प्रविष्टि “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22164. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914: बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22165. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914: बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गजल” अछि।

प्रश्न 22166. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914: बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक आलोचना

उत्तर: घ. सामाजिक आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक आलोचना” अछि।

प्रश्न 22167. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914: बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22168. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914: बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22169. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914: बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22170. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914: बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22171. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914: बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22172. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914मे बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता/गजल आ “सामाजिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2223, सूचकांक पंक्ति 914मे बिनीत उत्पलक “"नामदारक शहरमे" (कविता); गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता/गजल आ “सामाजिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2224 : विदेह-सदेह 12 — शिव कुमार यादव: "बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल;...

प्रश्न 22173. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915: शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 915मे शिव कुमार यादवक प्रविष्टि “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22174. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915: शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22175. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915: शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/कविता/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/कविता/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 22176. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915: शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।

प्रश्न 22177. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915: शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22178. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915: शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार यादव, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार यादव, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22179. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915: शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22180. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915: शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/कविता/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/कविता/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22181. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915: शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22182. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915मे शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता/बाल गजल आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2224, सूचकांक पंक्ति 915मे शिव कुमार यादवक “"बरखाक मौसम ऐलए"; "हमर एतबह अपराध छल"; बाल गजल; "बौआ हमरा आब जवन तंग कर"” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता/बाल गजल आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2225 : विदेह-सदेह 12 — इरा मल्लिक: बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)

प्रश्न 22183. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916: इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 916मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22184. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916: इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22185. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916: इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल/बाल गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल/बाल गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल/बाल गीत” अछि।

प्रश्न 22186. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916: इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य

उत्तर: घ. बाल साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।

प्रश्न 22187. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916: इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22188. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916: इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल/बाल गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल/बाल गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22189. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916: इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22190. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916: इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजल/बाल गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजल/बाल गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22191. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916: इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22192. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916मे इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल/बाल गीत आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2225, सूचकांक पंक्ति 916मे इरा मल्लिकक “बाल गजल (१-२); "मेघ बरसलै" (बाल गीत)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल/बाल गीत आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2226 : विदेह-सदेह 12 — प्रशान्त मैथिल: बाल गजल

प्रश्न 22193. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917: प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 917मे प्रशान्त मैथिलक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22194. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917: प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22195. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917: प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 22196. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917: प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य

उत्तर: घ. बाल साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।

प्रश्न 22197. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917: प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22198. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917: प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रशान्त मैथिल, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रशान्त मैथिल, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22199. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917: प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22200. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917: प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22201. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917: प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22202. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917मे प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2226, सूचकांक पंक्ति 917मे प्रशान्त मैथिलक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2227 : विदेह-सदेह 12 — क्रान्ति कुमार सुदर्शन: बाल गजल

प्रश्न 22203. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918: क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 918मे क्रान्ति कुमार सुदर्शनक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22204. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918: क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22205. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918: क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 22206. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918: क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 22207. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918: क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22208. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918: क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक क्रान्ति कुमार सुदर्शन, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक क्रान्ति कुमार सुदर्शन, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22209. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918: क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22210. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918: क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22211. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918: क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22212. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918मे क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2227, सूचकांक पंक्ति 918मे क्रान्ति कुमार सुदर्शनक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2228 : विदेह-सदेह 12 — जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल: बाल गजल

प्रश्न 22213. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919: जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 919मे जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22214. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919: जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22215. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919: जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 22216. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919: जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य

उत्तर: घ. बाल साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।

प्रश्न 22217. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919: जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22218. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919: जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22219. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919: जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22220. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919: जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22221. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919: जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22222. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919मे जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2228, सूचकांक पंक्ति 919मे जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2229 : विदेह-सदेह 12 — राजीव रंजन मिश्र: गजल (१-४)

प्रश्न 22223. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-४)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 920मे राजीव रंजन मिश्रक प्रविष्टि “गजल (१-४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22224. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22225. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 22226. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृत्व

उत्तर: घ. मातृत्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृत्व” अछि।

प्रश्न 22227. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22228. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22229. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22230. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22231. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22232. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)” प्रविष्टि पद्य, गजल/बाल गजल आ “बाल चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2229, सूचकांक पंक्ति 920मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-४)” प्रविष्टि पद्य, गजल/बाल गजल आ “बाल चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2230 : विदेह-सदेह 12 — अविनाश झा अंशु: गजल

प्रश्न 22233. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921: अविनाश झा अंशुक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 921मे अविनाश झा अंशुक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22234. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921: अविनाश झा अंशुक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22235. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921: अविनाश झा अंशुक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 22236. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921: अविनाश झा अंशुक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 22237. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921: अविनाश झा अंशुक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22238. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921: अविनाश झा अंशुक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अविनाश झा अंशु, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अविनाश झा अंशु, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22239. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921: अविनाश झा अंशुक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22240. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921: अविनाश झा अंशुक “गजल”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22241. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921: अविनाश झा अंशुक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22242. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921मे अविनाश झा अंशुक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2230, सूचकांक पंक्ति 921मे अविनाश झा अंशुक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2231 : विदेह-सदेह 12 — राजेश कुमार झा (कन्हैया): "एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्...

प्रश्न 22243. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922: राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 922मे राजेश कुमार झा (कन्हैया)क प्रविष्टि “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22244. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922: राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22245. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922: राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22246. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922: राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम+विरह

उत्तर: घ. प्रेम+विरह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम+विरह” अछि।

प्रश्न 22247. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922: राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम+विरह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम+विरह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम+विरह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22248. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922: राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश कुमार झा (कन्हैया), विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश कुमार झा (कन्हैया), विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22249. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922: राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22250. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922: राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22251. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922: राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22252. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922मे राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम+विरह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2231, सूचकांक पंक्ति 922मे राजेश कुमार झा (कन्हैया)क “"एकटा प्रेम विरहक कविता"; "माँ"; "पश्चिमी सभ्यता"; "तामस"; "देश भक्त"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम+विरह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2232 : विदेह-सदेह 12 — नारायण झा: "एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"

प्रश्न 22253. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923: नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 923मे नारायण झाक प्रविष्टि “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22254. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923: नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22255. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923: नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22256. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923: नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वतन्त्रता चेतना

उत्तर: घ. स्वतन्त्रता चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वतन्त्रता चेतना” अछि।

प्रश्न 22257. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923: नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वतन्त्रता चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वतन्त्रता चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वतन्त्रता चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22258. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923: नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22259. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923: नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22260. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923: नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22261. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923: नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22262. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923मे नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्वतन्त्रता चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2232, सूचकांक पंक्ति 923मे नारायण झाक “"एखिनु जकड़ल छी"; "एकता"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्वतन्त्रता चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2233 : विदेह-सदेह 12 — प्रमोद रंगीले: "नेताजी जिन्दाबाद"

प्रश्न 22263. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924: प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "नेताजी जिन्दाबाद"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "नेताजी जिन्दाबाद"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 924मे प्रमोद रंगीलेक प्रविष्टि “"नेताजी जिन्दाबाद"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22264. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924: प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22265. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924: प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हास्य कविता” अछि।

प्रश्न 22266. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924: प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 22267. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924: प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22268. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924: प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रमोद रंगीले, विधा पद्य, उप-विधा हास्य कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रमोद रंगीले, विधा पद्य, उप-विधा हास्य कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22269. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924: प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22270. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924: प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हास्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हास्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22271. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924: प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22272. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924मे प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"” प्रविष्टि पद्य, हास्य कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2233, सूचकांक पंक्ति 924मे प्रमोद रंगीलेक “"नेताजी जिन्दाबाद"” प्रविष्टि पद्य, हास्य कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2234 : विदेह-सदेह 12 — अनिल मल्लिक: गजल (१-२)

प्रश्न 22273. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925: अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 925मे अनिल मल्लिकक प्रविष्टि “गजल (१-२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22274. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925: अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22275. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925: अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 22276. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925: अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री विमर्श

उत्तर: घ. स्त्री विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री विमर्श” अछि।

प्रश्न 22277. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925: अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल स्मृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल स्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22278. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925: अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनिल मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनिल मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22279. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925: अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22280. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925: अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22281. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925: अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22282. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925मे अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बाल स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2234, सूचकांक पंक्ति 925मे अनिल मल्लिकक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बाल स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2235 : विदेह-सदेह 12 — कुमार सम्भव 'भारद्वाज': "हमर भारत देश महान"

प्रश्न 22283. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926: कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "हमर भारत देश महान"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "हमर भारत देश महान"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 926मे कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क प्रविष्टि “"हमर भारत देश महान"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22284. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926: कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22285. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926: कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22286. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926: कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल कवि (उम्र १२)

उत्तर: घ. बाल कवि (उम्र १२)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल कवि (उम्र १२)” अछि।

प्रश्न 22287. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926: कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल कवि (उम्र १२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल कवि (उम्र १२)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल कवि (उम्र १२)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22288. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926: कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार सम्भव 'भारद्वाज', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार सम्भव 'भारद्वाज', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22289. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926: कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22290. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926: कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22291. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926: कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22292. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926मे कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल कवि (उम्र १२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2235, सूचकांक पंक्ति 926मे कुमार सम्भव 'भारद्वाज'क “"हमर भारत देश महान"” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल कवि (उम्र १२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2236 : विदेह-सदेह 12 — प्रीति प्रिया झा: "ज्ञानक बल" — कविता

प्रश्न 22293. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927: प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "ज्ञानक बल" — कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "ज्ञानक बल" — कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 927मे प्रीति प्रिया झाक प्रविष्टि “"ज्ञानक बल" — कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22294. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927: प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22295. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927: प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22296. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927: प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चेतना

उत्तर: घ. सामाजिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चेतना” अछि।

प्रश्न 22297. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927: प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22298. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927: प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रीति प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रीति प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22299. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927: प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22300. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927: प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता”केँ विदेह-सदेह 12क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22301. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927: प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22302. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927मे प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2236, सूचकांक पंक्ति 927मे प्रीति प्रिया झाक “"ज्ञानक बल" — कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2237 : विदेह-सदेह 12 — जगदीश प्रसाद मण्डल: "घटक काका" (बाल लघुकथा)

प्रश्न 22303. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928: जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "घटक काका" (बाल लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "घटक काका" (बाल लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 928मे जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रविष्टि “"घटक काका" (बाल लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22304. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928: जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22305. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928: जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल लघुकथा” अछि।

प्रश्न 22306. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928: जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 22307. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928: जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22308. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928: जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा बाल लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा बाल लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22309. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928: जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22310. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928: जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 12क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22311. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928: जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 12क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22312. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल लघुकथा आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2237, सूचकांक पंक्ति 928मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “"घटक काका" (बाल लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल लघुकथा आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 12क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2238 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकूर: सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)

प्रश्न 22313. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 929मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22314. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22315. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।

प्रश्न 22316. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली साहित्य के समानान्तर परम्पराक स्थापना

उत्तर: घ. मैथिली साहित्य के समानान्तर परम्पराक स्थापना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली साहित्य के समानान्तर परम्पराक स्थापना” अछि।

प्रश्न 22317. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली साहित्य के समानान्तर परम्पराक स्थापना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली साहित्य के समानान्तर परम्पराक स्थापना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली साहित्य के समानान्तर परम्पराक स्थापना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22318. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22319. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22320. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)”कें विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22321. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22322. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929मे गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “मैथिली साहित्य के समानान्तर परम्पराक स्थापना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2238, सूचकांक पंक्ति 929मे गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय (समन्वय २०१२ इवडिया हैबीटेट सेन्टर...)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “मैथिली साहित्य के समानान्तर परम्पराक स्थापना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2239 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकूर: फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति

प्रश्न 22323. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930: गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 930मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22324. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930: गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22325. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930: गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22326. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930: गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रेणु के विद्यापति नाच पर रिपोर्ताज के माध्यम सँ समानान्तर लोक-परम्पराक रेखांकन

उत्तर: घ. रेणु के विद्यापति नाच पर रिपोर्ताज के माध्यम सँ समानान्तर लोक-परम्पराक रेखांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रेणु के विद्यापति नाच पर रिपोर्ताज के माध्यम सँ समानान्तर लोक-परम्पराक रेखांकन” अछि।

प्रश्न 22327. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930: गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रेणु के विद्यापति नाच पर रिपोर्ताज के माध्यम सँ समानान्तर लोक-परम्पराक रेखांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रेणु के विद्यापति नाच पर रिपोर्ताज के माध्यम सँ समानान्तर लोक-परम्पराक रेखांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रेणु के विद्यापति नाच पर रिपोर्ताज के माध्यम सँ समानान्तर लोक-परम्पराक रेखांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22328. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930: गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22329. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930: गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22330. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930: गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22331. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930: गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22332. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930मे गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रेणु के विद्यापति नाच पर रिपोर्ताज के माध्यम सँ समानान्तर लोक-परम्पराक रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2239, सूचकांक पंक्ति 930मे गजेन्द्र ठाकूरक “फणीशर नाथ रेणु – एकटा लोकगीतक विद्यापति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रेणु के विद्यापति नाच पर रिपोर्ताज के माध्यम सँ समानान्तर लोक-परम्पराक रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2240 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकूर: की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?

प्रश्न 22333. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 931मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22334. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22335. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22336. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार वितरण आ जातिगत आँकड़ा के माध्यम सँ मैथिली साहित्य मे ब्राह्मणवादी कब्जाक विश्लेषण

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार वितरण आ जातिगत आँकड़ा के माध्यम सँ मैथिली साहित्य मे ब्राह्मणवादी कब्जाक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार वितरण आ जातिगत आँकड़ा के माध्यम सँ मैथिली साहित्य मे ब्राह्मणवादी कब्जाक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 22337. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार वितरण आ जातिगत आँकड़ा के माध्यम सँ मैथिली साहित्य मे ब्राह्मणवादी कब्जाक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार वितरण आ जातिगत आँकड़ा के माध्यम सँ मैथिली साहित्य मे ब्राह्मणवादी कब्जाक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार वितरण आ जातिगत आँकड़ा के माध्यम सँ मैथिली साहित्य मे ब्राह्मणवादी कब्जाक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22338. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22339. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22340. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22341. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22342. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931मे गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार वितरण आ जातिगत आँकड़ा के माध्यम सँ मैथिली साहित्य मे ब्राह्मणवादी कब्जाक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2240, सूचकांक पंक्ति 931मे गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार वितरण आ जातिगत आँकड़ा के माध्यम सँ मैथिली साहित्य मे ब्राह्मणवादी कब्जाक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2241 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकूर: की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर...

प्रश्न 22343. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 932मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22344. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22345. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22346. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार बँटवाराक जातिगत आँकड़ा सहित ब्राह्मणक मैथिली पर एकाधिकार प्रश्न पर गहन टिप्पणी

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार बँटवाराक जातिगत आँकड़ा सहित ब्राह्मणक मैथिली पर एकाधिकार प्रश्न पर गहन टिप्पणी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार बँटवाराक जातिगत आँकड़ा सहित ब्राह्मणक मैथिली पर एकाधिकार प्रश्न पर गहन टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 22347. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार बँटवाराक जातिगत आँकड़ा सहित ब्राह्मणक मैथिली पर एकाधिकार प्रश्न पर गहन टिप्पणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार बँटवाराक जातिगत आँकड़ा सहित ब्राह्मणक मैथिली पर एकाधिकार प्रश्न पर गहन टिप्पणी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार बँटवाराक जातिगत आँकड़ा सहित ब्राह्मणक मैथिली पर एकाधिकार प्रश्न पर गहन टिप्पणी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22348. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22349. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22350. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22351. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932: गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22352. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932मे गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार बँटवाराक जातिगत आँकड़ा सहित ब्राह्मणक मैथिली पर एकाधिकार प्रश्न पर गहन टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2241, सूचकांक पंक्ति 932मे गजेन्द्र ठाकूरक “की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? (दोसर खण्ड)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार बँटवाराक जातिगत आँकड़ा सहित ब्राह्मणक मैथिली पर एकाधिकार प्रश्न पर गहन टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2242 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिलीकें बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...

प्रश्न 22353. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकें बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीकें बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीकें बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 933मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिलीकें बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22354. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकें बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22355. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकें बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22356. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकेँ बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बी.पी.एस.सी. सँ मैथिली हटाएबाक राजनीति आ एकरा लेल जिम्मेवार पक्ष सभक विवेचन

उत्तर: घ. बी.पी.एस.सी. सँ मैथिली हटाएबाक राजनीति आ एकरा लेल जिम्मेवार पक्ष सभक विवेचन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बी.पी.एस.सी. सँ मैथिली हटाएबाक राजनीति आ एकरा लेल जिम्मेवार पक्ष सभक विवेचन” अछि।

प्रश्न 22357. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकेँ बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली शिक्षा नीति पर प्रहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली शिक्षा नीति पर प्रहार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली शिक्षा नीति पर प्रहार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22358. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकेँ बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22359. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकेँ बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22360. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकेँ बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22361. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकेँ बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22362. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकें बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली शिक्षा नीति पर प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2242, सूचकांक पंक्ति 933मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिलीकें बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली शिक्षा नीति पर प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2243 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकूर: विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञो...

प्रश्न 22363. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 934मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22364. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22365. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22366. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति केँ ब्राह्मण बनेबाक कुकृत्य के रूप मे देखल गेल

उत्तर: घ. मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति केँ ब्राह्मण बनेबाक कुकृत्य के रूप मे देखल गेल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति केँ ब्राह्मण बनेबाक कुकृत्य के रूप मे देखल गेल” अछि।

प्रश्न 22367. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति कैँ ब्राह्मण बनेबाक कुकृत्य के रूप मे देखल गेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति कैँ ब्राह्मण बनेबाक कुकृत्य के रूप मे देखल गेल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति कैँ ब्राह्मण बनेबाक कुकृत्य के रूप मे देखल गेल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22368. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22369. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22370. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...”कैँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22371. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22372. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934मे गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति केँ ब्राह्मण बनेबाक कुकृत्य के रूप मे देखल गेल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2243, सूचकांक पंक्ति 934मे गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति केँ ब्राह्मण बनेबाक कुकृत्य के रूप मे देखल गेल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2244 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकूर: विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण

प्रश्न 22373. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 935मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22374. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22375. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22376. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत-अवहदु बला विद्यापतिक अन्तर पर व्यापक शोध

उत्तर: घ. पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत-अवहदु बला विद्यापतिक अन्तर पर व्यापक शोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत-अवहदु बला विद्यापतिक अन्तर पर व्यापक शोध” अछि।

प्रश्न 22377. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत-अवहदु बला विद्यापतिक अन्तर पर व्यापक शोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत-अवहदु बला विद्यापतिक अन्तर पर व्यापक शोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत-अवहदु बला विद्यापतिक अन्तर पर व्यापक शोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22378. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22379. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22380. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22381. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935: गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22382. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935मे गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत-अवहदु बला विद्यापतिक अन्तर पर व्यापक शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2244, सूचकांक पंक्ति 935मे गजेन्द्र ठाकूरक “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत-अवहदु बला विद्यापतिक अन्तर पर व्यापक शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2245 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकूर: साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी

प्रश्न 22383. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936: गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 936मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22384. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936: गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22385. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936: गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22386. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936: गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी मे मैथिली समन्वयक पद लेल संस्था सभ द्वारा हेब बला अनियमितता आ कालाबाजारी पर खुलासा

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी मे मैथिली समन्वयक पद लेल संस्था सभ द्वारा हेब बला अनियमितता आ कालाबाजारी पर खुलासा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी मे मैथिली समन्वयक पद लेल संस्था सभ द्वारा हेब बला अनियमितता आ कालाबाजारी पर खुलासा” अछि।

प्रश्न 22387. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936: गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी मे मैथिली समन्वयक पद लेल संस्था सभ द्वारा हेब बला अनियमितता आ कालाबाजारी पर खुलासा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी मे मैथिली समन्वयक पद लेल संस्था सभ द्वारा हेब बला अनियमितता आ कालाबाजारी पर खुलासा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी मे मैथिली समन्वयक पद लेल संस्था सभ द्वारा हेब बला अनियमितता आ कालाबाजारी पर खुलासा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22388. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936: गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22389. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936: गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22390. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936: गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22391. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936: गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22392. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936मे गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्य अकादेमी मे मैथिली समन्वयक पद लेल संस्था सभ द्वारा हेब बला अनियमितता आ कालाबाजारी पर खुलासा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2245, सूचकांक पंक्ति 936मे गजेन्द्र ठाकूरक “साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्य अकादेमी मे मैथिली समन्वयक पद लेल संस्था सभ द्वारा हेब बला अनियमितता आ कालाबाजारी पर खुलासा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2246 : विदेह-सदेह 13 — श्रुति प्रकाशन: विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)

प्रश्न 22393. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937: श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 937मे श्रुति प्रकाशनक प्रविष्टि “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22394. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937: श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. -

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. -

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “-” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22395. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937: श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रकाशन-सूचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रकाशन-सूचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रकाशन-सूचना” अछि।

प्रश्न 22396. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937: श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रिकाक मुखपृष्ठ सम्बन्धी सूचना

उत्तर: घ. पत्रिकाक मुखपृष्ठ सम्बन्धी सूचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रिकाक मुखपृष्ठ सम्बन्धी सूचना” अछि।

प्रश्न 22397. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937: श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रिकाक मुखपृष्ठ सम्बन्धी सूचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रिकाक मुखपृष्ठ सम्बन्धी सूचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रिकाक मुखपृष्ठ सम्बन्धी सूचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22398. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937: श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा -, उप-विधा प्रकाशन-सूचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा -, उप-विधा प्रकाशन-सूचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22399. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937: श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22400. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937: श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)”केँ विदेह-सदेह 13क -- भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रकाशन-सूचनाक रूपमे --संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रकाशन-सूचनाक रूपमे --संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22401. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937: श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22402. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937मे श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)” प्रविष्टि -, प्रकाशन-सूचना आ “पत्रिकाक मुखपृष्ठ सम्बन्धी सूचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2246, सूचकांक पंक्ति 937मे श्रुति प्रकाशनक “विदेह-प्रथम मैथिली पाशिक ई-पत्रिका (मुखपृष्ठ)” प्रविष्टि -, प्रकाशन-सूचना आ “पत्रिकाक मुखपृष्ठ सम्बन्धी सूचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2247 : विदेह-सदेह 13 — श्रुति प्रकाशन: अनुक्रम

प्रश्न 22403. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938: श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनुक्रम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुक्रम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 938मे श्रुति प्रकाशनक प्रविष्टि “अनुक्रम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22404. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938: श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. -

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. -

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “-” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22405. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938: श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुक्रमणिका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुक्रमणिका

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुक्रमणिका” अछि।

प्रश्न 22406. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938: श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रिकाक अन्तर्वस्तु के सूची

उत्तर: घ. पत्रिकाक अन्तर्वस्तु के सूची

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रिकाक अन्तर्वस्तु के सूची” अछि।

प्रश्न 22407. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938: श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रिकाक अन्तर्वस्तु के सूची

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रिकाक अन्तर्वस्तु के सूची

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रिकाक अन्तर्वस्तु के सूची” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22408. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938: श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा -, उप-विधा अनुक्रमणिका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा -, उप-विधा अनुक्रमणिका

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22409. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938: श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22410. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938: श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम”केँ विदेह-सदेह 13क --भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुक्रमणिकाक रूपमे --संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुक्रमणिकाक रूपमे --संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22411. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938: श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22412. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938मे श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम” प्रविष्टि -, अनुक्रमणिका आ “पत्रिकाक अन्तर्वस्तु के सूची” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2247, सूचकांक पंक्ति 938मे श्रुति प्रकाशनक “अनुक्रम” प्रविष्टि -, अनुक्रमणिका आ “पत्रिकाक अन्तर्वस्तु के सूची” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2248 : विदेह-सदेह 13 — श्रुति प्रकाशन: विदेह भाषा सम्मान 2012-13

प्रश्न 22413. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदेह भाषा सम्मान 2012-13

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह भाषा सम्मान 2012-13

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 939मे श्रुति प्रकाशनक प्रविष्टि “विदेह भाषा सम्मान 2012-13” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22414. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22415. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार/घोषणा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार/घोषणा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/घोषणा” अछि।

प्रश्न 22416. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार के रूप मे प्रसिद्ध विदेह भाषा सम्मानक घोषणा

उत्तर: घ. समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार के रूप मे प्रसिद्ध विदेह भाषा सम्मानक घोषणा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार के रूप मे प्रसिद्ध विदेह भाषा सम्मानक घोषणा” अछि।

प्रश्न 22417. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार के रूप मे प्रसिद्ध विदेह भाषा सम्मानक घोषणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार के रूप मे प्रसिद्ध विदेह भाषा सम्मानक घोषणा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार के रूप मे प्रसिद्ध विदेह भाषा सम्मानक घोषणा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22418. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/घोषणा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/घोषणा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22419. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22420. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार/घोषणाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार/घोषणाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22421. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22422. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939मे श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13” प्रविष्टि गद्य, समाचार/घोषणा आ “समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार के रूप मे प्रसिद्ध विदेह भाषा सम्मानक घोषणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2248, सूचकांक पंक्ति 939मे श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान 2012-13” प्रविष्टि गद्य, समाचार/घोषणा आ “समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार के रूप मे प्रसिद्ध विदेह भाषा सम्मानक घोषणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2249 : विदेह-सदेह 13 — श्रुति प्रकाशन: विद्यापति पुरस्कारक घोषणा

प्रश्न 22423. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940: श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विद्यापति पुरस्कारक घोषणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापति पुरस्कारक घोषणा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 940मे श्रुति प्रकाशनक प्रविष्टि “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22424. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940: श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22425. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940: श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार/घोषणा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार/घोषणा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/घोषणा” अछि।

प्रश्न 22426. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940: श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल सरकार द्वारा रामभरोस कापड़ि भ्रमर कैँ विद्यापति पुरस्कार देबाक घोषणा

उत्तर: घ. नेपाल सरकार द्वारा रामभरोस कापड़ि भ्रमर कैँ विद्यापति पुरस्कार देबाक घोषणा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल सरकार द्वारा रामभरोस कापड़ि भ्रमर कैँ विद्यापति पुरस्कार देबाक घोषणा” अछि।

प्रश्न 22427. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940: श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल सरकार द्वारा रामभरोस कापड़ि भ्रमर कैँ विद्यापति पुरस्कार देबाक घोषणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल सरकार द्वारा रामभरोस कापड़ि भ्रमर कैँ विद्यापति पुरस्कार देबाक घोषणा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल सरकार द्वारा रामभरोस कापड़ि भ्रमर कैँ विद्यापति पुरस्कार देबाक घोषणा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22428. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940: श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/घोषणा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/घोषणा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22429. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940: श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22430. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940: श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा”कैँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार/घोषणाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार/घोषणाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22431. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940: श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22432. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940मे श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा” प्रविष्टि गद्य, समाचार/घोषणा आ “नेपाल सरकार द्वारा रामभरोस कापड़ि भ्रमर कैं विद्यापति पुरस्कार देबाक घोषणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2249, सूचकांक पंक्ति 940मे श्रुति प्रकाशनक “विद्यापति पुरस्कारक घोषणा” प्रविष्टि गद्य, समाचार/घोषणा आ “नेपाल सरकार द्वारा रामभरोस कापड़ि भ्रमर कैं विद्यापति पुरस्कार देबाक घोषणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2250 : विदेह-सदेह 13 — श्रुति प्रकाशन: रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय

प्रश्न 22433. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941: श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 941मे श्रुति प्रकाशनक प्रविष्टि “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22434. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941: श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22435. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941: श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. परिचय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. परिचय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “परिचय” अछि।

प्रश्न 22436. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941: श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपालक बहुआयामी साहित्यकार रामभरोस कापड़ि भ्रमर के परिचय

उत्तर: घ. नेपालक बहुआयामी साहित्यकार रामभरोस कापड़ि भ्रमर के परिचय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपालक बहुआयामी साहित्यकार रामभरोस कापड़ि भ्रमर के परिचय” अछि।

प्रश्न 22437. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941: श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपालक बहुआयामी साहित्यकार रामभरोस कापड़ि भ्रमर के परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालक बहुआयामी साहित्यकार रामभरोस कापड़ि भ्रमर के परिचय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपालक बहुआयामी साहित्यकार रामभरोस कापड़ि भ्रमर के परिचय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22438. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941: श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा गद्य, उप-विधा परिचय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा गद्य, उप-विधा परिचय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22439. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941: श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22440. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941: श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22441. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941: श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22442. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941मे श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय” प्रविष्टि गद्य, परिचय आ “नेपालक बहुआयामी साहित्यकार रामभरोस कापड़ि भ्रमर के परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2250, सूचकांक पंक्ति 941मे श्रुति प्रकाशनक “रामभरोस कापडि भ्रमर – परिचय” प्रविष्टि गद्य, परिचय आ “नेपालक बहुआयामी साहित्यकार रामभरोस कापड़ि भ्रमर के परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2251 : विदेह-सदेह 13 — श्रुति प्रकाशन: समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...

प्रश्न 22443. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942: श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 942मे श्रुति प्रकाशनक प्रविष्टि “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22444. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942: श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22445. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942: श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार/सूचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार/सूचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/सूचना” अछि।

प्रश्न 22446. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942: श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इण्डिया हैबीटेट सेन्टर मे भारतीय भाषा महोत्सव-समन्वय २०१२ क सूचना

उत्तर: घ. इण्डिया हैबीटेट सेन्टर मे भारतीय भाषा महोत्सव-समन्वय २०१२ क सूचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इण्डिया हैबीटेट सेन्टर मे भारतीय भाषा महोत्सव-समन्वय २०१२ क सूचना” अछि।

प्रश्न 22447. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942: श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. इण्डिया हैबीटेट सेन्टर मे भारतीय भाषा महोत्सव-समन्वय २०१२ क सूचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इण्डिया हैबीटेट सेन्टर मे भारतीय भाषा महोत्सव-समन्वय २०१२ क सूचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इण्डिया हैबीटेट सेन्टर मे भारतीय भाषा महोत्सव-समन्वय २०१२ क सूचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22448. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942: श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/सूचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/सूचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22449. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942: श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22450. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942: श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार/सूचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार/सूचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22451. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942: श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22452. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942मे श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...” प्रविष्टि गद्य, समाचार/सूचना आ “इण्डिया हैबीटेट सेन्टर मे भारतीय भाषा महोत्सव-समन्वय २०१२ क सूचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2251, सूचकांक पंक्ति 942मे श्रुति प्रकाशनक “समन्वय २-४ नवम्बर २०१२...” प्रविष्टि गद्य, समाचार/सूचना आ “इण्डिया हैबीटेट सेन्टर मे भारतीय भाषा महोत्सव-समन्वय २०१२ क सूचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2252 : विदेह-सदेह 13 — श्रुति प्रकाशन: विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...

प्रश्न 22453. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 943मे श्रुति प्रकाशनक प्रविष्टि “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22454. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22455. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार/घोषणा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार/घोषणा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/घोषणा” अछि।

प्रश्न 22456. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजदेव मण्डल आ जगदीश प्रसाद मण्डल जी कैँ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ देबाक विवरण

उत्तर: घ. राजदेव मण्डल आ जगदीश प्रसाद मण्डल जी कैँ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ देबाक विवरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजदेव मण्डल आ जगदीश प्रसाद मण्डल जी कैँ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ देबाक विवरण” अछि।

प्रश्न 22457. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजदेव मण्डल आ जगदीश प्रसाद मण्डल जी कैं विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ देबाक विवरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजदेव मण्डल आ जगदीश प्रसाद मण्डल जी कैं विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ देबाक विवरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजदेव मण्डल आ जगदीश प्रसाद मण्डल जी कैं विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ देबाक विवरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22458. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/घोषणा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्रुति प्रकाशन, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/घोषणा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22459. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22460. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...”कैं विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार/घोषणाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार/घोषणाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22461. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943: श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22462. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943मे श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...” प्रविष्टि गद्य, समाचार/घोषणा आ “राजदेव मण्डल आ जगदीश प्रसाद मण्डल जी कैं विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ देबाक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2252, सूचकांक पंक्ति 943मे श्रुति प्रकाशनक “विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३...” प्रविष्टि गद्य, समाचार/घोषणा आ “राजदेव मण्डल आ जगदीश प्रसाद मण्डल जी कैं विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ देबाक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2253 : विदेह-सदेह 13 — रामविलास साहु: घुसहा घर

प्रश्न 22463. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944: रामविलास साहुक “घुसहा घर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घुसहा घर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घुसहा घर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 944मे रामविलास साहुक प्रविष्टि “घुसहा घर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22464. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944: रामविलास साहुक “घुसहा घर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22465. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944: रामविलास साहुक “घुसहा घर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिन कथा” अछि।

प्रश्न 22466. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944: रामविलास साहुक “घुसहा घर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इन्दिरा आवास योजना मे फाइल लगेबाक खेल

उत्तर: घ. इन्दिरा आवास योजना मे फाइल लगेबाक खेल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इन्दिरा आवास योजना मे फाइल लगेबाक खेल” अछि।

प्रश्न 22467. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944: रामविलास साहुक “घुसहा घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पंचायत व्यवस्थाक यथार्थपरक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंचायत व्यवस्थाक यथार्थपरक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पंचायत व्यवस्थाक यथार्थपरक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22468. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944: रामविलास साहुक “घुसहा घर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामविलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामविलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22469. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944: रामविलास साहुक “घुसहा घर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22470. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944: रामविलास साहुक “घुसहा घर”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22471. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944: रामविलास साहुक “घुसहा घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22472. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944मे रामविलास साहुक “घुसहा घर” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “पंचायत व्यवस्थाक यथार्थपरक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2253, सूचकांक पंक्ति 944मे रामविलास साहुक “घुसहा घर” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “पंचायत व्यवस्थाक यथार्थपरक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2254 : विदेह-सदेह 13 — रामविलास साहु: इमानदारीक पाठ

प्रश्न 22473. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945: रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इमानदारीक पाठ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इमानदारीक पाठ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 945मे रामविलास साहुक प्रविष्टि “इमानदारीक पाठ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22474. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945: रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22475. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945: रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिन कथा” अछि।

प्रश्न 22476. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945: रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गाम आ शहरक स्कूली शिक्षाक अन्तर पर करारा व्यंग्य

उत्तर: घ. गाम आ शहरक स्कूली शिक्षाक अन्तर पर करारा व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गाम आ शहरक स्कूली शिक्षाक अन्तर पर करारा व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 22477. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945: रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गाम आ शहरक स्कूली शिक्षाक अन्तर पर करारा व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम आ शहरक स्कूली शिक्षाक अन्तर पर करारा व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गाम आ शहरक स्कूली शिक्षाक अन्तर पर करारा व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22478. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945: रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामविलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामविलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22479. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945: रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22480. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945: रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22481. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945: रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22482. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945मे रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “गाम आ शहरक स्कूली शिक्षाक अन्तर पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2254, सूचकांक पंक्ति 945मे रामविलास साहुक “इमानदारीक पाठ” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “गाम आ शहरक स्कूली शिक्षाक अन्तर पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2255 : विदेह-सदेह 13 — रामविलास साहु: बौआ बाजल

प्रश्न 22483. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946: रामविलास साहुक “बौआ बाजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बौआ बाजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बौआ बाजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 946मे रामविलास साहुक प्रविष्टि “बौआ बाजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22484. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946: रामविलास साहुक “बौआ बाजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22485. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946: रामविलास साहुक “बौआ बाजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिन कथा” अछि।

प्रश्न 22486. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946: रामविलास साहुक “बौआ बाजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक बच्चाक मुख सँ कवि-लेखक के जीविकाक समस्या पर गहन उद्गार

उत्तर: घ. एक बच्चाक मुख सँ कवि-लेखक के जीविकाक समस्या पर गहन उद्गार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक बच्चाक मुख सँ कवि-लेखक के जीविकाक समस्या पर गहन उद्गार” अछि।

प्रश्न 22487. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946: रामविलास साहुक “बौआ बाजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पेशाक आ मरण के दार्शनिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पेशाक आ मरण के दार्शनिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पेशाक आ मरण के दार्शनिकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22488. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946: रामविलास साहुक “बौआ बाजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामविलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामविलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22489. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946: रामविलास साहुक “बौआ बाजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22490. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946: रामविलास साहुक “बौआ बाजल”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22491. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946: रामविलास साहुक “बौआ बाजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22492. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946मे रामविलास साहुक “बौआ बाजल” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “पेशाक आ मरण के दार्शनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2255, सूचकांक पंक्ति 946मे रामविलास साहुक “बौआ बाजल” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “पेशाक आ मरण के दार्शनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2256 : विदेह-सदेह 13 — सत्यनारायण झा: सुवटया

प्रश्न 22493. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947: सत्यनारायण झाक “सुवटया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुवटया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुवटया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 947मे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “सुवटया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22494. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947: सत्यनारायण झाक “सुवटया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22495. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947: सत्यनारायण झाक “सुवटया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिन कथा” अछि।

प्रश्न 22496. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947: सत्यनारायण झाक “सुवटया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीब खबासनी सुवटिया आ ओकर बेटाक मृत्यु पर मार्मिक कथा

उत्तर: घ. गरीब खबासनी सुवटिया आ ओकर बेटाक मृत्यु पर मार्मिक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीब खबासनी सुवटिया आ ओकर बेटाक मृत्यु पर मार्मिक कथा” अछि।

प्रश्न 22497. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947: सत्यनारायण झाक “सुवटया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीब खबासनी सुवटिया आ ओकर बेटाक मृत्यु पर मार्मिक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीब खबासनी सुवटिया आ ओकर बेटाक मृत्यु पर मार्मिक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीब खबासनी सुवटिया आ ओकर बेटाक मृत्यु पर मार्मिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22498. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947: सत्यनारायण झाक “सुवटया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22499. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947: सत्यनारायण झाक “सुवटया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22500. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947: सत्यनारायण झाक “सुवटया”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22501. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947: सत्यनारायण झाक “सुवटया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22502. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947मे सत्यनारायण झाक “सुवटया” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “गरीब खबासनी सुवटिया आ ओकर बेटाक मृत्यु पर मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2256, सूचकांक पंक्ति 947मे सत्यनारायण झाक “सुवटया” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “गरीब खबासनी सुवटिया आ ओकर बेटाक मृत्यु पर मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2257 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: कैंसर

प्रश्न 22503. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948: मुन्नी कामतक “कैंसर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कैंसर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कैंसर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 948मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “कैंसर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22504. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948: मुन्नी कामतक “कैंसर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22505. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948: मुन्नी कामतक “कैंसर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिन कथा” अछि।

प्रश्न 22506. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948: मुन्नी कामतक “कैंसर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अस्पताल मे डॉक्टर-रोगी संवाद के माध्यम सँ गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी कैँ सामाजिक कैंसरक रूप मे चित्रित

उत्तर: घ. अस्पताल मे डॉक्टर-रोगी संवाद के माध्यम सँ गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी कैँ सामाजिक कैंसरक रूप मे चित्रित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अस्पताल मे डॉक्टर-रोगी संवाद के माध्यम सँ गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी कैँ सामाजिक कैंसरक रूप मे चित्रित” अछि।

प्रश्न 22507. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948: मुन्नी कामतक “कैंसर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अस्पताल मे डॉक्टर-रोगी संवाद के माध्यम सँ गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी कैँ सामाजिक कैंसरक रूप मे चित्रित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्पताल मे डॉक्टर-रोगी संवाद के माध्यम सँ गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी कैँ सामाजिक कैंसरक रूप मे चित्रित

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अस्पताल मे डॉक्टर-रोगी संवाद के माध्यम सँ गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी कैँ सामाजिक कैंसरक रूप मे चित्रित” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22508. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948: मुन्नी कामतक “कैंसर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22509. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948: मुन्नी कामतक “कैंसर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22510. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948: मुन्नी कामतक “कैंसर”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22511. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948: मुन्नी कामतक “कैंसर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22512. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948मे मुन्नी कामतक “कैंसर” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “अस्पताल मे डॉक्टर-रोगी संवाद के माध्यम सँ गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी कैँ सामाजिक कैंसरक रूप मे चित्रित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2257, सूचकांक पंक्ति 948मे मुन्नी कामतक “कैंसर” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “अस्पताल मे डॉक्टर-रोगी संवाद के माध्यम सँ गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी कैँ सामाजिक कैंसरक रूप मे चित्रित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2258 : विदेह-सदेह 13 — जगदानन्द झा मनु: प्रेमक बवल

प्रश्न 22513. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949: जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेमक बवल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक बवल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 949मे जगदानन्द झा मनुक प्रविष्टि “प्रेमक बवल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22514. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949: जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22515. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949: जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिन कथा” अछि।

प्रश्न 22516. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949: जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ब्राह्मण आ तेली जातिक प्रेमी युगलक आत्महत्या के माध्यम सँ जातिगत भेदभाव आ रूढ़िवादी समाज पर करारा प्रहार

उत्तर: घ. ब्राह्मण आ तेली जातिक प्रेमी युगलक आत्महत्या के माध्यम सँ जातिगत भेदभाव आ रूढ़िवादी समाज पर करारा प्रहार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ब्राह्मण आ तेली जातिक प्रेमी युगलक आत्महत्या के माध्यम सँ जातिगत भेदभाव आ रूढ़िवादी समाज पर करारा प्रहार” अछि।

प्रश्न 22517. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949: जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ब्राह्मण आ तेली जातिक प्रेमी युगलक आत्महत्या के माध्यम सँ जातिगत भेदभाव आ रूढ़िवादी समाज पर करारा प्रहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ब्राह्मण आ तेली जातिक प्रेमी युगलक आत्महत्या के माध्यम सँ जातिगत भेदभाव आ रूढ़िवादी समाज पर करारा प्रहार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ब्राह्मण आ तेली जातिक प्रेमी युगलक आत्महत्या के माध्यम सँ जातिगत भेदभाव आ रूढ़िवादी समाज पर करारा प्रहार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22518. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949: जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22519. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949: जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22520. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949: जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22521. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949: जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22522. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949मे जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “ब्राह्मण आ तेली जातिक प्रेमी युगलक आत्महत्या के माध्यम सँ जातिगत भेदभाव आ रूढ़िवादी समाज पर करारा प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2258, सूचकांक पंक्ति 949मे जगदानन्द झा मनुक “प्रेमक बवल” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “ब्राह्मण आ तेली जातिक प्रेमी युगलक आत्महत्या के माध्यम सँ जातिगत भेदभाव आ रूढ़िवादी समाज पर करारा प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2259 : विदेह-सदेह 13 — अवमत वमश्र: पवरभाषा

प्रश्न 22523. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950: अवमत वमश्रक “पवरभाषा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पवरभाषा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पवरभाषा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 950मे अवमत वमश्रक प्रविष्टि “पवरभाषा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22524. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950: अवमत वमश्रक “पवरभाषा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22525. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950: अवमत वमश्रक “पवरभाषा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिन कथा” अछि।

प्रश्न 22526. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950: अवमत वमश्रक “पवरभाषा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शहर कैँ श्मशानक रूप मे परिभाषित करैत एक बालक द्वारा देल गेल निर्णय

उत्तर: घ. शहर कैँ श्मशानक रूप मे परिभाषित करैत एक बालक द्वारा देल गेल निर्णय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शहर कैँ श्मशानक रूप मे परिभाषित करैत एक बालक द्वारा देल गेल निर्णय” अछि।

प्रश्न 22527. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950: अवमत वमश्रक “पवरभाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शहर कैँ श्मशानक रूप मे परिभाषित करैत एक बालक द्वारा देल गेल निर्णय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शहर कैँ श्मशानक रूप मे परिभाषित करैत एक बालक द्वारा देल गेल निर्णय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शहर कैँ श्मशानक रूप मे परिभाषित करैत एक बालक द्वारा देल गेल निर्णय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22528. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950: अवमत वमश्रक “पवरभाषा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22529. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950: अवमत वमश्रक “पवरभाषा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22530. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950: अवमत वमश्रक “पवरभाषा”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22531. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950: अवमत वमश्रक “पवरभाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22532. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950मे अवमत वमश्रक “पवरभाषा” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “शहर केँ श्मशानक रूप मे परिभाषित करैत एक बालक द्वारा देल गेल निर्णय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2259, सूचकांक पंक्ति 950मे अवमत वमश्रक “पवरभाषा” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “शहर केँ श्मशानक रूप मे परिभाषित करैत एक बालक द्वारा देल गेल निर्णय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2260 : विदेह-सदेह 13 — सन्दीप कुमार सिीः साउस पुतोहु

प्रश्न 22533. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951: सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साउस पुतोहु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साउस पुतोहु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 951मे सन्दीप कुमार सिीक प्रविष्टि “साउस पुतोहु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22534. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951: सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22535. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951: सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिन कथा” अछि।

प्रश्न 22536. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951: सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सासु-बहू के रोजमर्राक संवाद मे ग्रामीण जीवनक यथार्थ

उत्तर: घ. सासु-बहू के रोजमर्राक संवाद मे ग्रामीण जीवनक यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सासु-बहू के रोजमर्राक संवाद मे ग्रामीण जीवनक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 22537. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951: सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक तनावक सहज चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक तनावक सहज चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक तनावक सहज चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22538. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951: सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार सिी, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार सिी, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22539. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951: सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22540. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951: सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22541. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951: सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22542. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951मे सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “पारिवारिक तनावक सहज चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2260, सूचकांक पंक्ति 951मे सन्दीप कुमार सिीक “साउस पुतोहु” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “पारिवारिक तनावक सहज चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2261 : विदेह-सदेह 13 — सन्दीप कुमार सिी: सगुन

प्रश्न 22543. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952: सन्दीप कुमार सिीक “सगुन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सगुन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सगुन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 952मे सन्दीप कुमार सिीक प्रविष्टि “सगुन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22544. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952: सन्दीप कुमार सिीक “सगुन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22545. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952: सन्दीप कुमार सिीक “सगुन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिन कथा” अछि।

प्रश्न 22546. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952: सन्दीप कुमार सिीक “सगुन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक ग्रामीण परम्परा आ संस्कृति पर आधारित कथा

उत्तर: घ. मिथिलाक ग्रामीण परम्परा आ संस्कृति पर आधारित कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक ग्रामीण परम्परा आ संस्कृति पर आधारित कथा” अछि।

प्रश्न 22547. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952: सन्दीप कुमार सिीक “सगुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक ग्रामीण परम्परा आ संस्कृति पर आधारित कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक ग्रामीण परम्परा आ संस्कृति पर आधारित कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक ग्रामीण परम्परा आ संस्कृति पर आधारित कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22548. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952: सन्दीप कुमार सिीक “सगुन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार सिी, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार सिी, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22549. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952: सन्दीप कुमार सिीक “सगुन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22550. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952: सन्दीप कुमार सिीक “सगुन”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22551. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952: सन्दीप कुमार सिीक “सगुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22552. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952मे सन्दीप कुमार सिीक “सगुन” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “मिथिलाक ग्रामीण परम्परा आ संस्कृति पर आधारित कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2261, सूचकांक पंक्ति 952मे सन्दीप कुमार सिीक “सगुन” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “मिथिलाक ग्रामीण परम्परा आ संस्कृति पर आधारित कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2262 : विदेह-सदेह 13 — कैलास दास: लाँज

प्रश्न 22553. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953: कैलास दासक “लाँज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लाँज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाँज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 953मे कैलास दासक प्रविष्टि “लाँज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22554. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953: कैलास दासक “लाँज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22555. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953: कैलास दासक “लाँज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 22556. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953: कैलास दासक “लाँज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेश मे रहल पतिक दुरी पर मार्मिक आधुनिक कथा

उत्तर: घ. विदेश मे रहल पतिक दुरी पर मार्मिक आधुनिक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेश मे रहल पतिक दुरी पर मार्मिक आधुनिक कथा” अछि।

प्रश्न 22557. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953: कैलास दासक “लाँज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेश मे रहल पतिक दुरी पर मार्मिक आधुनिक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेश मे रहल पतिक दुरी पर मार्मिक आधुनिक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेश मे रहल पतिक दुरी पर मार्मिक आधुनिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22558. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953: कैलास दासक “लाँज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22559. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953: कैलास दासक “लाँज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22560. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953: कैलास दासक “लाँज”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22561. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953: कैलास दासक “लाँज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22562. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953मे कैलास दासक “लाँज” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेश मे रहल पतिक दुरी पर मार्मिक आधुनिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2262, सूचकांक पंक्ति 953मे कैलास दासक “लाँज” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेश मे रहल पतिक दुरी पर मार्मिक आधुनिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2263 : विदेह-सदेह 13 — कीरेन्द्र कुमार यादव: बाबाक गाछी

प्रश्न 22563. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954: कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाबाक गाछी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबाक गाछी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 954मे कीरेन्द्र कुमार यादवक प्रविष्टि “बाबाक गाछी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22564. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954: कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22565. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954: कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 22566. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954: कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम मे जातिक अदृश्यता

उत्तर: घ. प्रेम मे जातिक अदृश्यता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम मे जातिक अदृश्यता” अछि।

प्रश्न 22567. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954: कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम मे जातिक अदृश्यता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम मे जातिक अदृश्यता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम मे जातिक अदृश्यता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22568. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954: कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22569. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954: कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22570. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954: कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी”कें विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22571. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954: कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22572. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954मे कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रेम मे जातिक अदृश्यता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2263, सूचकांक पंक्ति 954मे कीरेन्द्र कुमार यादवक “बाबाक गाछी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रेम मे जातिक अदृश्यता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2264 : विदेह-सदेह 13 — डॉ. अरूणा चौधरी: विलना

प्रश्न 22573. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955: डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विलना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विलना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 955मे डॉ. अरूणा चौधरीक प्रविष्टि “विलना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22574. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955: डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22575. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955: डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 22576. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955: डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आशा आ छलनाक बीच जीवनक मर्म

उत्तर: घ. आशा आ छलनाक बीच जीवनक मर्म

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आशा आ छलनाक बीच जीवनक मर्म” अछि।

प्रश्न 22577. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955: डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक स्त्रीक जीवन-कथा मे मनोवैज्ञानिक गहराई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक स्त्रीक जीवन-कथा मे मनोवैज्ञानिक गहराई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक स्त्रीक जीवन-कथा मे मनोवैज्ञानिक गहराई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22578. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955: डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरूणा चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरूणा चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22579. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955: डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22580. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955: डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22581. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955: डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22582. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955मे डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एक स्त्रीक जीवन-कथा मे मनोवैज्ञानिक गहराई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2264, सूचकांक पंक्ति 955मे डॉ. अरूणा चौधरीक “विलना” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एक स्त्रीक जीवन-कथा मे मनोवैज्ञानिक गहराई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2265 : विदेह-सदेह 13 — डॉ. अजीत वमश्र: व्यथा

प्रश्न 22583. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956: डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. व्यथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 956मे डॉ. अजीत वमश्रक प्रविष्टि “व्यथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22584. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956: डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22585. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956: डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 22586. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956: डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हावड़ा-मैसूर रेल यात्राक दौरान एक मानसिक रोगी के मनोदशा पर संवेदनशील कथा

उत्तर: घ. हावड़ा-मैसूर रेल यात्राक दौरान एक मानसिक रोगी के मनोदशा पर संवेदनशील कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हावड़ा-मैसूर रेल यात्राक दौरान एक मानसिक रोगी के मनोदशा पर संवेदनशील कथा” अछि।

प्रश्न 22587. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956: डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हावड़ा-मैसूर रेल यात्राक दौरान एक मानसिक रोगी के मनोदशा पर संवेदनशील कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हावड़ा-मैसूर रेल यात्राक दौरान एक मानसिक रोगी के मनोदशा पर संवेदनशील कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हावड़ा-मैसूर रेल यात्राक दौरान एक मानसिक रोगी के मनोदशा पर संवेदनशील कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22588. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956: डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अजीत वमश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अजीत वमश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22589. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956: डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22590. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956: डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22591. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956: डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22592. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956मे डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हावड़ा-मैसूर रेल यात्राक दौरान एक मानसिक रोगी के मनोदशा पर संवेदनशील कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2265, सूचकांक पंक्ति 956मे डॉ. अजीत वमश्रक “व्यथा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हावड़ा-मैसूर रेल यात्राक दौरान एक मानसिक रोगी के मनोदशा पर संवेदनशील कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2266 : विदेह-सदेह 13 — कामिनी कामायनी: कठजीब

प्रश्न 22593. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957: कामिनी कामायनीक “कठजीब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कठजीब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कठजीब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 957मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “कठजीब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22594. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957: कामिनी कामायनीक “कठजीब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22595. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957: कामिनी कामायनीक “कठजीब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 22596. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957: कामिनी कामायनीक “कठजीब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गामक एक गरीब स्त्रीक कठिन जीवन आ निःस्वार्थ सेवाक मार्मिक कथा

उत्तर: घ. गामक एक गरीब स्त्रीक कठिन जीवन आ निःस्वार्थ सेवाक मार्मिक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक एक गरीब स्त्रीक कठिन जीवन आ निःस्वार्थ सेवाक मार्मिक कथा” अछि।

प्रश्न 22597. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957: कामिनी कामायनीक “कठजीब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक एक गरीब स्त्रीक कठिन जीवन आ निःस्वार्थ सेवाक मार्मिक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक एक गरीब स्त्रीक कठिन जीवन आ निःस्वार्थ सेवाक मार्मिक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक एक गरीब स्त्रीक कठिन जीवन आ निःस्वार्थ सेवाक मार्मिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22598. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957: कामिनी कामायनीक “कठजीब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22599. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957: कामिनी कामायनीक “कठजीब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22600. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957: कामिनी कामायनीक “कठजीब”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22601. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957: कामिनी कामायनीक “कठजीब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22602. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957मे कामिनी कामायनीक “कठजीब” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “गामक एक गरीब स्त्रीक कठिन जीवन आ निःस्वार्थ सेवाक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2266, सूचकांक पंक्ति 957मे कामिनी कामायनीक “कठजीब” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “गामक एक गरीब स्त्रीक कठिन जीवन आ निःस्वार्थ सेवाक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2267 : विदेह-सदेह 13 — जगदानन्द झा मतु: कमलू

प्रश्न 22603. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958: जगदानन्द झा मतुक “कमलू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कमलू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कमलू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 958मे जगदानन्द झा मतुक प्रविष्टि “कमलू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22604. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958: जगदानन्द झा मतुक “कमलू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22605. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958: जगदानन्द झा मतुक “कमलू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 22606. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958: जगदानन्द झा मतुक “कमलू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चारू बेटाक बाप कमलू के मार्मिक कथा

उत्तर: घ. चारू बेटाक बाप कमलू के मार्मिक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चारू बेटाक बाप कमलू के मार्मिक कथा” अछि।

प्रश्न 22607. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958: जगदानन्द झा मतुक “कमलू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चारू बेटाक बाप कमलू के मार्मिक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चारू बेटाक बाप कमलू के मार्मिक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चारू बेटाक बाप कमलू के मार्मिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22608. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958: जगदानन्द झा मतुक “कमलू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा मतु, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा मतु, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22609. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958: जगदानन्द झा मतुक “कमलू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22610. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958: जगदानन्द झा मतुक “कमलू”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22611. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958: जगदानन्द झा मतुक “कमलू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22612. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958मे जगदानन्द झा मतुक “कमलू” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चारू बेटाक बाप कमलू के मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2267, सूचकांक पंक्ति 958मे जगदानन्द झा मतुक “कमलू” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चारू बेटाक बाप कमलू के मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2268 : विदेह-सदेह 13 — खुशबू झा: रुपाली

प्रश्न 22613. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959: खुशबू झाक “रुपाली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रुपाली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रुपाली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 959मे खुशबू झाक प्रविष्टि “रुपाली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22614. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959: खुशबू झाक “रुपाली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22615. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959: खुशबू झाक “रुपाली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 22616. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959: खुशबू झाक “रुपाली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक बेटी बउवाक सम्पूर्ण जीवन-यात्रा

उत्तर: घ. एक बेटी बउवाक सम्पूर्ण जीवन-यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक बेटी बउवाक सम्पूर्ण जीवन-यात्रा” अछि।

प्रश्न 22617. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959: खुशबू झाक “रुपाली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक बेटी बउवाक सम्पूर्ण जीवन-यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक बेटी बउवाक सम्पूर्ण जीवन-यात्रा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक बेटी बउवाक सम्पूर्ण जीवन-यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22618. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959: खुशबू झाक “रुपाली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22619. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959: खुशबू झाक “रुपाली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22620. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959: खुशबू झाक “रुपाली”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22621. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959: खुशबू झाक “रुपाली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22622. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959मे खुशबू झाक “रुपाली” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एक बेटी बउवाक सम्पूर्ण जीवन-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2268, सूचकांक पंक्ति 959मे खुशबू झाक “रुपाली” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एक बेटी बउवाक सम्पूर्ण जीवन-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2269 : विदेह-सदेह 13 — संजीव कुमार शमा: महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह

प्रश्न 22623. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960: संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 960मे संजीव कुमार शमाक प्रविष्टि “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22624. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960: संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22625. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960: संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रबन्ध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रबन्ध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22626. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960: संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लालदासक जयंती पर आयोजित समारोहक विस्तृत रिपोर्ताज

उत्तर: घ. लालदासक जयंती पर आयोजित समारोहक विस्तृत रिपोर्ताज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लालदासक जयंती पर आयोजित समारोहक विस्तृत रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 22627. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960: संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लालदासक जयंती पर आयोजित समारोहक विस्तृत रिपोर्ताज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लालदासक जयंती पर आयोजित समारोहक विस्तृत रिपोर्ताज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लालदासक जयंती पर आयोजित समारोहक विस्तृत रिपोर्ताज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22628. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960: संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संजीव कुमार शमा, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संजीव कुमार शमा, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22629. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960: संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22630. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960: संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22631. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960: संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22632. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960मे संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “लालदासक जयंती पर आयोजित समारोहक विस्तृत रिपोर्ताज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2269, सूचकांक पंक्ति 960मे संजीव कुमार शमाक “महाकवि पं. लालदासक १५६म जयंती समारोह” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “लालदासक जयंती पर आयोजित समारोहक विस्तृत रिपोर्ताज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2270 : विदेह-सदेह 13 — सन्दीप कुमार साफी: आत्मकथा

प्रश्न 22633. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961: सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आत्मकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मकथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 961मे सन्दीप कुमार साफीक प्रविष्टि “आत्मकथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22634. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961: सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22635. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961: सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आत्मकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आत्मकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आत्मकथा” अछि।

प्रश्न 22636. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961: सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली साहित्य मे दलित आत्मकथाक प्रथम प्रयास

उत्तर: घ. मैथिली साहित्य मे दलित आत्मकथाक प्रथम प्रयास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली साहित्य मे दलित आत्मकथाक प्रथम प्रयास” अछि।

प्रश्न 22637. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961: सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली साहित्य मे दलित आत्मकथाक प्रथम प्रयास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली साहित्य मे दलित आत्मकथाक प्रथम प्रयास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली साहित्य मे दलित आत्मकथाक प्रथम प्रयास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22638. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961: सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा गद्य, उप-विधा आत्मकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा गद्य, उप-विधा आत्मकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22639. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961: सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22640. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961: सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आत्मकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आत्मकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22641. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961: सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22642. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961मे सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा” प्रविष्टि गद्य, आत्मकथा आ “मैथिली साहित्य मे दलित आत्मकथाक प्रथम प्रयास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2270, सूचकांक पंक्ति 961मे सन्दीप कुमार साफीक “आत्मकथा” प्रविष्टि गद्य, आत्मकथा आ “मैथिली साहित्य मे दलित आत्मकथाक प्रथम प्रयास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2271 : विदेह-सदेह 13 — उमेश मण्डल: दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...

प्रश्न 22643. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962: उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 962मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22644. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962: उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22645. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962: उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रबन्ध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रबन्ध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22646. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962: उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दरभंगामे सम्पन्न सगर राति दीप जरयक दोसर चरणक विस्तृत रिपोर्ट

उत्तर: घ. दरभंगामे सम्पन्न सगर राति दीप जरयक दोसर चरणक विस्तृत रिपोर्ट

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दरभंगामे सम्पन्न सगर राति दीप जरयक दोसर चरणक विस्तृत रिपोर्ट” अछि।

प्रश्न 22647. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962: उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 37 टा पोथीक लोकार्पण सहित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 37 टा पोथीक लोकार्पण सहित

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “37 टा पोथीक लोकार्पण सहित” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22648. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962: उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22649. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962: उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22650. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962: उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22651. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962: उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22652. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962मे उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “37 टा पोथीक लोकार्पण सहित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2271, सूचकांक पंक्ति 962मे उमेश मण्डलक “दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय...” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “37 टा पोथीक लोकार्पण सहित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2272 : विदेह-सदेह 13 — प्रमोद रंगिले: प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...

प्रश्न 22653. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963: प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 963मे प्रमोद रंगिलेक प्रविष्टि “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22654. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963: प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22655. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963: प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रबन्ध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रबन्ध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22656. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963: प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपालक राजनीतिक संकट पर तीखी टिप्पणी

उत्तर: घ. नेपालक राजनीतिक संकट पर तीखी टिप्पणी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपालक राजनीतिक संकट पर तीखी टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 22657. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963: प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपालक राजनीतिक संकट पर तीखी टिप्पणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालक राजनीतिक संकट पर तीखी टिप्पणी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपालक राजनीतिक संकट पर तीखी टिप्पणी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22658. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963: प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रमोद रंगिले, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रमोद रंगिले, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22659. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963: प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22660. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963: प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22661. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963: प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22662. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963मे प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “नेपालक राजनीतिक संकट पर तीखी टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2272, सूचकांक पंक्ति 963मे प्रमोद रंगिलेक “प्रचण्ड प्रयोग कपलथि नया हथियार...” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “नेपालक राजनीतिक संकट पर तीखी टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2273 : विदेह-सदेह 13 — आशीष अनचिन्हार: माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय

प्रश्न 22663. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964: आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 964मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22664. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964: आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22665. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964: आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रबन्ध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रबन्ध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22666. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964: आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पंजाबी साहित्यक विधा माहिया पर प्रारम्भिक परिचय

उत्तर: घ. पंजाबी साहित्यक विधा माहिया पर प्रारम्भिक परिचय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पंजाबी साहित्यक विधा माहिया पर प्रारम्भिक परिचय” अछि।

प्रश्न 22667. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964: आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पंजाबी साहित्यक विधा माहिया पर प्रारम्भिक परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंजाबी साहित्यक विधा माहिया पर प्रारम्भिक परिचय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पंजाबी साहित्यक विधा माहिया पर प्रारम्भिक परिचय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22668. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964: आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22669. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964: आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22670. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964: आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22671. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964: आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22672. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964मे आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “पंजाबी साहित्यक विधा माहिया पर प्रारम्भिक परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2273, सूचकांक पंक्ति 964मे आशीष अनचिन्हारक “माहिया/ लघु-दीर्घ निर्णय” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “पंजाबी साहित्यक विधा माहिया पर प्रारम्भिक परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2274 : विदेह-सदेह 13 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय

प्रश्न 22673. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 965मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22674. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22675. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रबन्ध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रबन्ध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22676. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोककला सांझी पर व्यापक शोधपरक निबन्ध

उत्तर: घ. लोककला सांझी पर व्यापक शोधपरक निबन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोककला सांझी पर व्यापक शोधपरक निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22677. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोककला सांझी पर व्यापक शोधपरक निबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोककला सांझी पर व्यापक शोधपरक निबन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोककला सांझी पर व्यापक शोधपरक निबन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22678. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22679. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22680. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22681. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22682. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “लोककला सांझी पर व्यापक शोधपरक निबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2274, सूचकांक पंक्ति 965मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “लोककला सांझी पर व्यापक शोधपरक निबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2275 : विदेह-सदेह 13 — रामभरोस कापडि भ्रमर: ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट

प्रश्न 22683. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966: रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 966मे रामभरोस कापडि भ्रमरक प्रविष्टि “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22684. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966: रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22685. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966: रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा प्रसंग

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा प्रसंग

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा प्रसंग” अछि।

प्रश्न 22686. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966: रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सियान मे ह्वेन सांगक स्मृतिस्थल पर आधारित यात्रा वृत्तान्त

उत्तर: घ. सियान मे ह्वेन सांगक स्मृतिस्थल पर आधारित यात्रा वृत्तान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सियान मे ह्वेन सांगक स्मृतिस्थल पर आधारित यात्रा वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 22687. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966: रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सियान मे ह्वेन सांगक स्मृतिस्थल पर आधारित यात्रा वृत्तान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सियान मे ह्वेन सांगक स्मृतिस्थल पर आधारित यात्रा वृत्तान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सियान मे ह्वेन सांगक स्मृतिस्थल पर आधारित यात्रा वृत्तान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22688. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966: रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापडि भ्रमर, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा प्रसंग

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापडि भ्रमर, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा प्रसंग

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22689. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966: रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22690. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966: रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22691. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966: रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22692. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966मे रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि गद्य, यात्रा प्रसंग आ “सियान मे ह्वेन सांगक स्मृतिस्थल पर आधारित यात्रा वृत्तान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2275, सूचकांक पंक्ति 966मे रामभरोस कापडि भ्रमरक “ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि गद्य, यात्रा प्रसंग आ “सियान मे ह्वेन सांगक स्मृतिस्थल पर आधारित यात्रा वृत्तान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2276 : विदेह-सदेह 13 — नागेन्द्रकुमार कणश: सुवजत कुमार झा पर

प्रश्न 22693. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967: नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुवजत कुमार झा पर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुवजत कुमार झा पर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 967मे नागेन्द्रकुमार कणशक प्रविष्टि “सुवजत कुमार झा पर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22694. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967: नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22695. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967: नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पोथी समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पोथी समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पोथी समीक्षा” अछि।

प्रश्न 22696. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967: नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह पर केन्द्रित समीक्षा

उत्तर: घ. सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह पर केन्द्रित समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह पर केन्द्रित समीक्षा” अछि।

प्रश्न 22697. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967: नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह पर केन्द्रित समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह पर केन्द्रित समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह पर केन्द्रित समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22698. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967: नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नागेन्द्रकुमार कणश, विधा गद्य, उप-विधा पोथी समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नागेन्द्रकुमार कणश, विधा गद्य, उप-विधा पोथी समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22699. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967: नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22700. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967: नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पोथी समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पोथी समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22701. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967: नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22702. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967मे नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर” प्रविष्टि गद्य, पोथी समीक्षा आ “सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह पर केन्द्रित समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2276, सूचकांक पंक्ति 967मे नागेन्द्रकुमार कणशक “सुवजत कुमार झा पर” प्रविष्टि गद्य, पोथी समीक्षा आ “सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह पर केन्द्रित समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2277 : विदेह-सदेह 13 — खुशबू झा: मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर

प्रश्न 22703. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 968मे खुशबू झाक प्रविष्टि “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22704. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22705. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पोथी समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पोथी समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पोथी समीक्षा” अछि।

प्रश्न 22706. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह वजद्दी के पाठकीय प्रतिक्रिया

उत्तर: घ. सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह वजद्दी के पाठकीय प्रतिक्रिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह वजद्दी के पाठकीय प्रतिक्रिया” अछि।

प्रश्न 22707. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह वजद्दी के पाठकीय प्रतिक्रिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह वजद्दी के पाठकीय प्रतिक्रिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह वजद्दी के पाठकीय प्रतिक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22708. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा पोथी समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा पोथी समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22709. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22710. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पोथी समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पोथी समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22711. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22712. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968मे खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर” प्रविष्टि गद्य, पोथी समीक्षा आ “सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह वजद्दी के पाठकीय प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2277, सूचकांक पंक्ति 968मे खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह वजद्दी पढ़लापर” प्रविष्टि गद्य, पोथी समीक्षा आ “सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह वजद्दी के पाठकीय प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2278 : विदेह-सदेह 13 — नवेन्दु कुमार झा: आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह

प्रश्न 22713. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969: नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 969मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22714. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969: नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22715. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969: नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रबन्ध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रबन्ध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 22716. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969: नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चेतना समिति के त्रिदिवसीय समारोह कैँ आर्थिक संकट सँ दू-दिवसीय हेबाक विवरण

उत्तर: घ. चेतना समिति के त्रिदिवसीय समारोह कैँ आर्थिक संकट सँ दू-दिवसीय हेबाक विवरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चेतना समिति के त्रिदिवसीय समारोह कैँ आर्थिक संकट सँ दू-दिवसीय हेबाक विवरण” अछि।

प्रश्न 22717. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969: नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलांचलक सांस्कृतिक राजनीति पर टिप्पणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलांचलक सांस्कृतिक राजनीति पर टिप्पणी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलांचलक सांस्कृतिक राजनीति पर टिप्पणी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22718. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969: नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा प्रबन्ध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22719. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969: नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22720. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969: नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह”कँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रबन्ध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22721. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969: नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22722. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969मे नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “मिथिलांचलक सांस्कृतिक राजनीति पर टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2278, सूचकांक पंक्ति 969मे नवेन्दु कुमार झाक “आर्थिक संकट मे चेतना, दू वदनक हएत समारोह” प्रविष्टि गद्य, प्रबन्ध-निबन्ध आ “मिथिलांचलक सांस्कृतिक राजनीति पर टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2279 : विदेह-सदेह 13 — पूनम मण्डल: १.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...

प्रश्न 22723. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970: पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. १.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 970मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22724. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970: पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22725. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970: पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पोथी-समीक्षा/सूचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पोथी-समीक्षा/सूचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पोथी-समीक्षा/सूचना” अछि।

प्रश्न 22726. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970: पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गौरीनाथक उपन्यास दाग के लोकार्पण आ समीक्षा

उत्तर: घ. गौरीनाथक उपन्यास दाग के लोकार्पण आ समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गौरीनाथक उपन्यास दाग के लोकार्पण आ समीक्षा” अछि।

प्रश्न 22727. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970: पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गौरीनाथक उपन्यास दाग के लोकार्पण आ समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गौरीनाथक उपन्यास दाग के लोकार्पण आ समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गौरीनाथक उपन्यास दाग के लोकार्पण आ समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22728. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970: पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा पोथी-समीक्षा/सूचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा पोथी-समीक्षा/सूचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22729. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970: पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22730. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970: पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पोथी-समीक्षा/सूचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पोथी-समीक्षा/सूचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22731. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970: पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22732. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970मे पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...” प्रविष्टि गद्य, पोथी-समीक्षा/सूचना आ “गौरीनाथक उपन्यास दाग के लोकार्पण आ समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2279, सूचकांक पंक्ति 970मे पूनम मण्डलक “१.दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ- लोकापर्ण...” प्रविष्टि गद्य, पोथी-समीक्षा/सूचना आ “गौरीनाथक उपन्यास दाग के लोकार्पण आ समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2280 : विदेह-सदेह 13 — हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”: मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मै...

प्रश्न 22733. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971: हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 971मे हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क प्रविष्टि “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22734. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971: हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22735. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971: हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद” अछि।

प्रश्न 22736. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971: हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ऋष्यश्रृङ्गक जन्म आ लोककथा पर आधारित पौराणिक आलेखक मैथिली अनुवाद

उत्तर: घ. ऋष्यश्रृङ्गक जन्म आ लोककथा पर आधारित पौराणिक आलेखक मैथिली अनुवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ऋष्यश्रृङ्गक जन्म आ लोककथा पर आधारित पौराणिक आलेखक मैथिली अनुवाद” अछि।

प्रश्न 22737. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971: हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ऋष्यश्रृङ्गक जन्म आ लोककथा पर आधारित पौराणिक आलेखक मैथिली अनुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऋष्यश्रृङ्गक जन्म आ लोककथा पर आधारित पौराणिक आलेखक मैथिली अनुवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऋष्यश्रृङ्गक जन्म आ लोककथा पर आधारित पौराणिक आलेखक मैथिली अनुवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22738. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971: हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”, विधा गद्य, उप-विधा हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”, विधा गद्य, उप-विधा हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22739. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971: हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22740. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971: हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हिन्दीसँ मैथिली अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हिन्दीसँ मैथिली अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22741. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971: हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22742. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971मे हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद आ “ऋष्यश्रृङ्गक जन्म आ लोककथा पर आधारित पौराणिक आलेखक मैथिली अनुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2280, सूचकांक पंक्ति 971मे हरवशंकर श्रीवास्तव “शलभ”क “मन्त्रदृष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद आ “ऋष्यश्रृङ्गक जन्म आ लोककथा पर आधारित पौराणिक आलेखक मैथिली अनुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2281 : विदेह-सदेह 13 — वकशन कारीगर: घोटालाबला पाइ

प्रश्न 22743. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972: वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घोटालाबला पाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घोटालाबला पाइ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 972मे वकशन कारीगरक प्रविष्टि “घोटालाबला पाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22744. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972: वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22745. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972: वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता (हास्य)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता (हास्य)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता (हास्य)” अछि।

प्रश्न 22746. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972: वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर करारा हास्य-व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर करारा हास्य-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक भ्रष्टाचार पर करारा हास्य-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 22747. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972: वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर करारा हास्य-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर करारा हास्य-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक भ्रष्टाचार पर करारा हास्य-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22748. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972: वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वकशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता (हास्य)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वकशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता (हास्य)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22749. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972: वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22750. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972: वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता (हास्य)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता (हास्य)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22751. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972: वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22752. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972मे वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ” प्रविष्टि पद्य, कविता (हास्य) आ “राजनीतिक भ्रष्टाचार पर करारा हास्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2281, सूचकांक पंक्ति 972मे वकशन कारीगरक “घोटालाबला पाइ” प्रविष्टि पद्य, कविता (हास्य) आ “राजनीतिक भ्रष्टाचार पर करारा हास्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2282 : विदेह-सदेह 13 — अजीत वमश्र: दीआबाती

प्रश्न 22753. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973: अजीत वमश्रक “दीआबाती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दीआबाती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीआबाती

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 973मे अजीत वमश्रक प्रविष्टि “दीआबाती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22754. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973: अजीत वमश्रक “दीआबाती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22755. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973: अजीत वमश्रक “दीआबाती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22756. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973: अजीत वमश्रक “दीआबाती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दीपावली पर्व पर आधारित भावप्रवण कविता

उत्तर: घ. दीपावली पर्व पर आधारित भावप्रवण कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दीपावली पर्व पर आधारित भावप्रवण कविता” अछि।

प्रश्न 22757. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973: अजीत वमश्रक “दीआबाती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक लोक-संस्कृति आ परम्पराक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक लोक-संस्कृति आ परम्पराक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक लोक-संस्कृति आ परम्पराक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22758. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973: अजीत वमश्रक “दीआबाती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अजीत वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अजीत वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22759. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973: अजीत वमश्रक “दीआबाती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22760. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973: अजीत वमश्रक “दीआबाती”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22761. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973: अजीत वमश्रक “दीआबाती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22762. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973मे अजीत वमश्रक “दीआबाती” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिलाक लोक-संस्कृति आ परम्पराक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2282, सूचकांक पंक्ति 973मे अजीत वमश्रक “दीआबाती” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिलाक लोक-संस्कृति आ परम्पराक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2283 : विदेह-सदेह 13 — श्याम दवरहरे: ओबामा ओबामा ओबामा

प्रश्न 22763. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974: श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ओबामा ओबामा ओबामा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबामा ओबामा ओबामा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 974मे श्याम दवरहरेक प्रविष्टि “ओबामा ओबामा ओबामा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22764. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974: श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22765. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974: श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22766. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974: श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर व्यंग्यात्मक कविता

उत्तर: घ. अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर व्यंग्यात्मक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर व्यंग्यात्मक कविता” अछि।

प्रश्न 22767. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974: श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर व्यंग्यात्मक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर व्यंग्यात्मक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर व्यंग्यात्मक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22768. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974: श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्याम दवरहरे, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्याम दवरहरे, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22769. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974: श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22770. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974: श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22771. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974: श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22772. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974मे श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर व्यंग्यात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2283, सूचकांक पंक्ति 974मे श्याम दवरहरेक “ओबामा ओबामा ओबामा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर व्यंग्यात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2284 : विदेह-सदेह 13 — वमवहर झा: विदागरी

प्रश्न 22773. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975: वमवहर झाक “विदागरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदागरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदागरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 975मे वमवहर झाक प्रविष्टि “विदागरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22774. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975: वमवहर झाक “विदागरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22775. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975: वमवहर झाक “विदागरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22776. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975: वमवहर झाक “विदागरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संस्मरणात्मक कविता

उत्तर: घ. संस्मरणात्मक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्मरणात्मक कविता” अछि।

प्रश्न 22777. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975: वमवहर झाक “विदागरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चलचित्र आ अतीतक स्मृति सँ जुड़ल भावनाक ओस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चलचित्र आ अतीतक स्मृति सँ जुड़ल भावनाक ओस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चलचित्र आ अतीतक स्मृति सँ जुड़ल भावनाक ओस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22778. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975: वमवहर झाक “विदागरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वमवहर झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वमवहर झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22779. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975: वमवहर झाक “विदागरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22780. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975: वमवहर झाक “विदागरी”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22781. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975: वमवहर झाक “विदागरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22782. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975मे वमवहर झाक “विदागरी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चलचित्र आ अतीतक स्मृति सँ जुड़ल भावनाक ओस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2284, सूचकांक पंक्ति 975मे वमवहर झाक “विदागरी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चलचित्र आ अतीतक स्मृति सँ जुड़ल भावनाक ओस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2285 : विदेह-सदेह 13 — वमवहर झा: गजल (सारंगीक तार पर जेना...)

प्रश्न 22783. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976: वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (सारंगीक तार पर जेना...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (सारंगीक तार पर जेना...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 976मे वमवहर झाक प्रविष्टि “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22784. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976: वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22785. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976: वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 22786. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976: वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संगीत आ स्मृतिक संगम पर आधारित गजल

उत्तर: घ. संगीत आ स्मृतिक संगम पर आधारित गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संगीत आ स्मृतिक संगम पर आधारित गजल” अछि।

प्रश्न 22787. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976: वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘उँगरी’ के माध्यम सँ विविध जीवनानुभवक मार्मिक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘उँगरी’ के माध्यम सँ विविध जीवनानुभवक मार्मिक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘उँगरी’ के माध्यम सँ विविध जीवनानुभवक मार्मिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22788. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976: वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वमवहर झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वमवहर झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22789. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976: वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22790. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976: वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22791. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976: वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22792. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976मे वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “‘उँगरी’ के माध्यम सँ विविध जीवनानुभवक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2285, सूचकांक पंक्ति 976मे वमवहर झाक “गजल (सारंगीक तार पर जेना...)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “‘उँगरी’ के माध्यम सँ विविध जीवनानुभवक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2286 : विदेह-सदेह 13 — पंकज चौधरी (निलश्री): चावरटा गजल (१-४)

प्रश्न 22793. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977: पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चावरटा गजल (१-४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चावरटा गजल (१-४)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 977मे पंकज चौधरी (निलश्री)क प्रविष्टि “चावरटा गजल (१-४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22794. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977: पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22795. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977: पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 22796. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977: पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभाषा, मिथिला प्रेम, सामाजिक चेतना आ प्रवासी जीवन पर केन्द्रित चारि गजल

उत्तर: घ. मातृभाषा, मिथिला प्रेम, सामाजिक चेतना आ प्रवासी जीवन पर केन्द्रित चारि गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभाषा, मिथिला प्रेम, सामाजिक चेतना आ प्रवासी जीवन पर केन्द्रित चारि गजल” अछि।

प्रश्न 22797. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977: पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृभाषा, मिथिला प्रेम, सामाजिक चेतना आ प्रवासी जीवन पर केन्द्रित चारि गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभाषा, मिथिला प्रेम, सामाजिक चेतना आ प्रवासी जीवन पर केन्द्रित चारि गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृभाषा, मिथिला प्रेम, सामाजिक चेतना आ प्रवासी जीवन पर केन्द्रित चारि गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22798. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977: पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज चौधरी (निलश्री), विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज चौधरी (निलश्री), विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22799. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977: पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22800. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977: पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22801. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977: पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22802. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977मे पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “मातृभाषा, मिथिला प्रेम, सामाजिक चेतना आ प्रवासी जीवन पर केन्द्रित चारि गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2286, सूचकांक पंक्ति 977मे पंकज चौधरी (निलश्री)क “चावरटा गजल (१-४)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “मातृभाषा, मिथिला प्रेम, सामाजिक चेतना आ प्रवासी जीवन पर केन्द्रित चारि गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2287 : विदेह-सदेह 13 — वबन्देश्वर ठाकुर: अभागलमे शुभकामना एक

प्रश्न 22803. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978: वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अभागलमे शुभकामना एक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभागलमे शुभकामना एक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 978मे वबन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “अभागलमे शुभकामना एक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22804. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978: वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22805. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978: वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22806. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978: वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी मैथिलक वेदना

उत्तर: घ. प्रवासी मैथिलक वेदना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मैथिलक वेदना” अछि।

प्रश्न 22807. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978: वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी मैथिलक वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी मैथिलक वेदना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मैथिलक वेदना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22808. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978: वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22809. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978: वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22810. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978: वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22811. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978: वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22812. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978मे वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी मैथिलक वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2287, सूचकांक पंक्ति 978मे वबन्देश्वर ठाकुरक “अभागलमे शुभकामना एक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी मैथिलक वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2288 : विदेह-सदेह 13 — वबन्देश्वर ठाकुर: अस्पतालक हाल

प्रश्न 22813. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979: वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अस्पतालक हाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्पतालक हाल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 979मे वबन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “अस्पतालक हाल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22814. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979: वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22815. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979: वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22816. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979: वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर अञ्चल अस्पतालक दयनीय स्थिति पर व्यंग्य

उत्तर: घ. जनकपुर अञ्चल अस्पतालक दयनीय स्थिति पर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर अञ्चल अस्पतालक दयनीय स्थिति पर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 22817. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979: वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकपुर अञ्चल अस्पतालक दयनीय स्थिति पर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर अञ्चल अस्पतालक दयनीय स्थिति पर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर अञ्चल अस्पतालक दयनीय स्थिति पर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22818. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979: वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22819. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979: वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22820. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979: वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22821. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979: वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22822. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979मे वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जनकपुर अञ्चल अस्पतालक दयनीय स्थिति पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2288, सूचकांक पंक्ति 979मे वबन्देश्वर ठाकुरक “अस्पतालक हाल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जनकपुर अञ्चल अस्पतालक दयनीय स्थिति पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2289 : विदेह-सदेह 13 — वबन्देश्वर ठाकुर: जनकपुरक रेल्वे

प्रश्न 22823. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980: वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जनकपुरक रेल्वे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुरक रेल्वे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 980मे वबन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “जनकपुरक रेल्वे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22824. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980: वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22825. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980: वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22826. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980: वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुरक रेल्वे स्टेशनक खस्ता हालत आ जीर्ण-शीर्ण अवस्था पर तीखी टिप्पणी

उत्तर: घ. जनकपुरक रेल्वे स्टेशनक खस्ता हालत आ जीर्ण-शीर्ण अवस्था पर तीखी टिप्पणी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुरक रेल्वे स्टेशनक खस्ता हालत आ जीर्ण-शीर्ण अवस्था पर तीखी टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 22827. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980: वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकपुरक रेल्वे स्टेशनक खस्ता हालत आ जीर्ण-शीर्ण अवस्था पर तीखी टिप्पणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुरक रेल्वे स्टेशनक खस्ता हालत आ जीर्ण-शीर्ण अवस्था पर तीखी टिप्पणी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुरक रेल्वे स्टेशनक खस्ता हालत आ जीर्ण-शीर्ण अवस्था पर तीखी टिप्पणी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22828. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980: वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22829. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980: वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22830. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980: वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22831. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980: वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22832. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980मे वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जनकपुरक रेल्वे स्टेशनक खस्ता हालत आ जीर्ण-शीर्ण अवस्था पर तीखी टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2289, सूचकांक पंक्ति 980मे वबन्देश्वर ठाकुरक “जनकपुरक रेल्वे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जनकपुरक रेल्वे स्टेशनक खस्ता हालत आ जीर्ण-शीर्ण अवस्था पर तीखी टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2290 : विदेह-सदेह 13 — वबन्देश्वर ठाकुर: एक एहनो नारी

प्रश्न 22833. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981: वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एक एहनो नारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक एहनो नारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 981मे वबन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “एक एहनो नारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22834. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981: वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22835. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981: वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22836. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981: वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक नारीक भौतिकतावादी जीवनशैली पर व्यंग्य

उत्तर: घ. आधुनिक नारीक भौतिकतावादी जीवनशैली पर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक नारीक भौतिकतावादी जीवनशैली पर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 22837. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981: वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक नारीक भौतिकतावादी जीवनशैली पर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक नारीक भौतिकतावादी जीवनशैली पर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक नारीक भौतिकतावादी जीवनशैली पर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22838. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981: वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22839. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981: वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22840. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981: वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22841. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981: वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22842. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981मे वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आधुनिक नारीक भौतिकतावादी जीवनशैली पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2290, सूचकांक पंक्ति 981मे वबन्देश्वर ठाकुरक “एक एहनो नारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आधुनिक नारीक भौतिकतावादी जीवनशैली पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2291 : विदेह-सदेह 13 — वबन्देश्वर ठाकुर: गजल (१-२)

प्रश्न 22843. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982: वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 982मे वबन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “गजल (१-२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22844. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982: वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22845. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982: वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 22846. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982: वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी जीवन, गाम-घरक स्मृति, आ घरपरिवारक प्रति कर्तव्य बोध पर दूटा गजल

उत्तर: घ. प्रवासी जीवन, गाम-घरक स्मृति, आ घरपरिवारक प्रति कर्तव्य बोध पर दूटा गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवन, गाम-घरक स्मृति, आ घरपरिवारक प्रति कर्तव्य बोध पर दूटा गजल” अछि।

प्रश्न 22847. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982: वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी जीवन, गाम-घरक स्मृति, आ घरपरिवारक प्रति कर्तव्य बोध पर दूटा गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी जीवन, गाम-घरक स्मृति, आ घरपरिवारक प्रति कर्तव्य बोध पर दूटा गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवन, गाम-घरक स्मृति, आ घरपरिवारक प्रति कर्तव्य बोध पर दूटा गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22848. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982: वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22849. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982: वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22850. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982: वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22851. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982: वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22852. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982मे वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रवासी जीवन, गाम-घरक स्मृति, आ घरपरिवारक प्रति कर्तव्य बोध पर दूटा गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2291, सूचकांक पंक्ति 982मे वबन्देश्वर ठाकुरक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रवासी जीवन, गाम-घरक स्मृति, आ घरपरिवारक प्रति कर्तव्य बोध पर दूटा गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2292 : विदेह-सदेह 13 — वबन्देश्वर ठाकुर: गीत (१-२)

प्रश्न 22853. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983: वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत (१-२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत (१-२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 983मे वबन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “गीत (१-२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22854. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983: वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22855. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983: वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 22856. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983: वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यौवन आ प्रणयक मादकता पर आधारित दूटा लोकप्रिय शैलीक गीत

उत्तर: घ. यौवन आ प्रणयक मादकता पर आधारित दूटा लोकप्रिय शैलीक गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यौवन आ प्रणयक मादकता पर आधारित दूटा लोकप्रिय शैलीक गीत” अछि।

प्रश्न 22857. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983: वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यौवन आ प्रणयक मादकता पर आधारित दूटा लोकप्रिय शैलीक गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यौवन आ प्रणयक मादकता पर आधारित दूटा लोकप्रिय शैलीक गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यौवन आ प्रणयक मादकता पर आधारित दूटा लोकप्रिय शैलीक गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22858. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983: वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22859. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983: वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22860. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983: वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22861. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983: वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22862. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983मे वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “यौवन आ प्रणयक मादकता पर आधारित दूटा लोकप्रिय शैलीक गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2292, सूचकांक पंक्ति 983मे वबन्देश्वर ठाकुरक “गीत (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “यौवन आ प्रणयक मादकता पर आधारित दूटा लोकप्रिय शैलीक गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2293 : विदेह-सदेह 13 — वबन्देश्वर ठाकुर: चेतना

प्रश्न 22863. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984: वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेतना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 984मे वबन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “चेतना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22864. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984: वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22865. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984: वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22866. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984: वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक सजगता आ आत्माभिमान पर आधारित प्रबोधन कविता

उत्तर: घ. सामाजिक सजगता आ आत्माभिमान पर आधारित प्रबोधन कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सजगता आ आत्माभिमान पर आधारित प्रबोधन कविता” अछि।

प्रश्न 22867. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984: वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक सजगता आ आत्माभिमान पर आधारित प्रबोधन कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक सजगता आ आत्माभिमान पर आधारित प्रबोधन कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सजगता आ आत्माभिमान पर आधारित प्रबोधन कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22868. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984: वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वबन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22869. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984: वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22870. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984: वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22871. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984: वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22872. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984मे वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक सजगता आ आत्माभिमान पर आधारित प्रबोधन कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2293, सूचकांक पंक्ति 984मे वबन्देश्वर ठाकुरक “चेतना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक सजगता आ आत्माभिमान पर आधारित प्रबोधन कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2294 : विदेह-सदेह 13 — अवमत वमश्र: भगिती गीत

प्रश्न 22873. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985: अवमत वमश्रक “भगिती गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भगिती गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भगिती गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 985मे अवमत वमश्रक प्रविष्टि “भगिती गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22874. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985: अवमत वमश्रक “भगिती गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22875. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985: अवमत वमश्रक “भगिती गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 22876. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985: अवमत वमश्रक “भगिती गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दुर्गा माताक भक्ति गीत

उत्तर: घ. दुर्गा माताक भक्ति गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दुर्गा माताक भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 22877. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985: अवमत वमश्रक “भगिती गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दुर्गा माताक भक्ति गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुर्गा माताक भक्ति गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दुर्गा माताक भक्ति गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22878. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985: अवमत वमश्रक “भगिती गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22879. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985: अवमत वमश्रक “भगिती गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22880. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985: अवमत वमश्रक “भगिती गीत”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22881. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985: अवमत वमश्रक “भगिती गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22882. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985मे अवमत वमश्रक “भगिती गीत” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “दुर्गा माताक भक्ति गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2294, सूचकांक पंक्ति 985मे अवमत वमश्रक “भगिती गीत” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “दुर्गा माताक भक्ति गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2295 : विदेह-सदेह 13 — अवमत वमश्र: गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)

प्रश्न 22883. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986: अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 986मे अवमत वमश्रक प्रविष्टि “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22884. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986: अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22885. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986: अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 22886. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986: अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक आ राजनीतिक चेतना पर आधारित गजल

उत्तर: घ. सामाजिक आ राजनीतिक चेतना पर आधारित गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक आ राजनीतिक चेतना पर आधारित गजल” अछि।

प्रश्न 22887. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986: अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक आ राजनीतिक चेतना पर आधारित गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक आ राजनीतिक चेतना पर आधारित गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक आ राजनीतिक चेतना पर आधारित गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22888. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986: अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22889. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986: अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22890. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986: अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22891. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986: अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22892. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986मे अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक आ राजनीतिक चेतना पर आधारित गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2295, सूचकांक पंक्ति 986मे अवमत वमश्रक “गजल (उवठ कऽ बैसल मरदबा...)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक आ राजनीतिक चेतना पर आधारित गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2296 : विदेह-सदेह 13 — अच्छे लाल शास्त्री: वकसानक भेल वपसान

प्रश्न 22893. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987: अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वकसानक भेल वपसान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वकसानक भेल वपसान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 987मे अच्छे लाल शास्त्रीक प्रविष्टि “वकसानक भेल वपसान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22894. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987: अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22895. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987: अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22896. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987: अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किसानी संकट पर केन्द्रित कविता

उत्तर: घ. किसानी संकट पर केन्द्रित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “किसानी संकट पर केन्द्रित कविता” अछि।

प्रश्न 22897. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987: अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. किसानी संकट पर केन्द्रित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किसानी संकट पर केन्द्रित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसानी संकट पर केन्द्रित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22898. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987: अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अच्छे लाल शास्त्री, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अच्छे लाल शास्त्री, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22899. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987: अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22900. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987: अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22901. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987: अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22902. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987मे अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किसानी संकट पर केन्द्रित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2296, सूचकांक पंक्ति 987मे अच्छे लाल शास्त्रीक “वकसानक भेल वपसान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किसानी संकट पर केन्द्रित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2297 : विदेह-सदेह 13 — अच्छे लाल शास्त्री: आबो चेत चलू

प्रश्न 22903. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988: अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आबो चेत चलू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आबो चेत चलू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 988मे अच्छे लाल शास्त्रीक प्रविष्टि “आबो चेत चलू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22904. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988: अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22905. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988: अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22906. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988: अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक मूल्यक पतन पर चिन्ता

उत्तर: घ. सामाजिक मूल्यक पतन पर चिन्ता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक मूल्यक पतन पर चिन्ता” अछि।

प्रश्न 22907. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988: अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक मूल्यक पतन पर चिन्ता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक मूल्यक पतन पर चिन्ता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक मूल्यक पतन पर चिन्ता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22908. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988: अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अच्छे लाल शास्त्री, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अच्छे लाल शास्त्री, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22909. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988: अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22910. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988: अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22911. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988: अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22912. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988मे अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक मूल्यक पतन पर चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2297, सूचकांक पंक्ति 988मे अच्छे लाल शास्त्रीक “आबो चेत चलू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक मूल्यक पतन पर चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2298 : विदेह-सदेह 13 — जगदानन्द झा मनु: उगैत सूरज पएर पसावर

प्रश्न 22913. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989: जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उगैत सूरज पएर पसावर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उगैत सूरज पएर पसावर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 989मे जगदानन्द झा मनुक प्रविष्टि “उगैत सूरज पएर पसावर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22914. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989: जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22915. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989: जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22916. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989: जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण भोरक सुन्दर चित्रण

उत्तर: घ. ग्रामीण भोरक सुन्दर चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण भोरक सुन्दर चित्रण” अछि।

प्रश्न 22917. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989: जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण भोरक सुन्दर चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण भोरक सुन्दर चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण भोरक सुन्दर चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22918. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989: जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22919. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989: जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22920. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989: जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22921. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989: जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22922. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989मे जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण भोरक सुन्दर चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2298, सूचकांक पंक्ति 989मे जगदानन्द झा मनुक “उगैत सूरज पएर पसावर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण भोरक सुन्दर चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2299 : विदेह-सदेह 13 — जगदानन्द झा मनु: गजल १-११

प्रश्न 22923. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990: जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल १-११

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल १-११

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 990मे जगदानन्द झा मनुक प्रविष्टि “गजल १-११” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22924. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990: जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22925. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990: जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 22926. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990: जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम, दर्शन, सामाजिक यथार्थ आ मानवीय सम्बन्धक विविध आयाम पर आधारित एगारह गजल

उत्तर: घ. प्रेम, दर्शन, सामाजिक यथार्थ आ मानवीय सम्बन्धक विविध आयाम पर आधारित एगारह गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, दर्शन, सामाजिक यथार्थ आ मानवीय सम्बन्धक विविध आयाम पर आधारित एगारह गजल” अछि।

प्रश्न 22927. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990: जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम, दर्शन, सामाजिक यथार्थ आ मानवीय सम्बन्धक विविध आयाम पर आधारित एगारह गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम, दर्शन, सामाजिक यथार्थ आ मानवीय सम्बन्धक विविध आयाम पर आधारित एगारह गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, दर्शन, सामाजिक यथार्थ आ मानवीय सम्बन्धक विविध आयाम पर आधारित एगारह गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22928. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990: जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22929. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990: जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22930. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990: जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22931. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990: जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22932. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990मे जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम, दर्शन, सामाजिक यथार्थ आ मानवीय सम्बन्धक विविध आयाम पर आधारित एगारह गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2299, सूचकांक पंक्ति 990मे जगदानन्द झा मनुक “गजल १-११” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम, दर्शन, सामाजिक यथार्थ आ मानवीय सम्बन्धक विविध आयाम पर आधारित एगारह गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2300 : विदेह-सदेह 13 — कैलास दास: कम्प्यूटर

प्रश्न 22933. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991: कैलास दासक “कम्प्यूटर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कम्प्यूटर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कम्प्यूटर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 991मे कैलास दासक प्रविष्टि “कम्प्यूटर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22934. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991: कैलास दासक “कम्प्यूटर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22935. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991: कैलास दासक “कम्प्यूटर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22936. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991: कैलास दासक “कम्प्यूटर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कम्प्यूटर के माध्यम सँ आधुनिक जीवनक यथार्थ पर विनोदपूर्ण कविता

उत्तर: घ. कम्प्यूटर के माध्यम सँ आधुनिक जीवनक यथार्थ पर विनोदपूर्ण कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कम्प्यूटर के माध्यम सँ आधुनिक जीवनक यथार्थ पर विनोदपूर्ण कविता” अछि।

प्रश्न 22937. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991: कैलास दासक “कम्प्यूटर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मानसिकताक सहज प्रस्तुति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मानसिकताक सहज प्रस्तुति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मानसिकताक सहज प्रस्तुति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22938. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991: कैलास दासक “कम्प्यूटर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कैलास दास, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कैलास दास, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22939. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991: कैलास दासक “कम्प्यूटर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22940. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991: कैलास दासक “कम्प्यूटर”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22941. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991: कैलास दासक “कम्प्यूटर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22942. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991मे कैलास दासक “कम्प्यूटर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल-मानसिकताक सहज प्रस्तुति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2300, सूचकांक पंक्ति 991मे कैलास दासक “कम्प्यूटर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल-मानसिकताक सहज प्रस्तुति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2301 : विदेह-सदेह 13 — कैलास दास: नेता जी

प्रश्न 22943. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992: कैलास दासक “नेता जी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेता जी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेता जी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 992मे कैलास दासक प्रविष्टि “नेता जी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22944. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992: कैलास दासक “नेता जी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22945. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992: कैलास दासक “नेता जी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22946. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992: कैलास दासक “नेता जी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेता सभक भ्रष्ट आचरण पर करारा व्यंग्य

उत्तर: घ. नेता सभक भ्रष्ट आचरण पर करारा व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेता सभक भ्रष्ट आचरण पर करारा व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 22947. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992: कैलास दासक “नेता जी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेता सभक भ्रष्ट आचरण पर करारा व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेता सभक भ्रष्ट आचरण पर करारा व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेता सभक भ्रष्ट आचरण पर करारा व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22948. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992: कैलास दासक “नेता जी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कैलास दास, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कैलास दास, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22949. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992: कैलास दासक “नेता जी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22950. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992: कैलास दासक “नेता जी”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22951. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992: कैलास दासक “नेता जी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22952. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992मे कैलास दासक “नेता जी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेता सभक भ्रष्ट आचरण पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2301, सूचकांक पंक्ति 992मे कैलास दासक “नेता जी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेता सभक भ्रष्ट आचरण पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2302 : विदेह-सदेह 13 — प्रमोद रंगीले: मच्छर राज

प्रश्न 22953. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993: प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मच्छर राज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मच्छर राज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 993मे प्रमोद रंगीलेक प्रविष्टि “मच्छर राज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22954. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993: प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22955. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993: प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22956. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993: प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मच्छर सँ संघर्ष पर हास्य-व्यंग्य प्रधान कविता

उत्तर: घ. मच्छर सँ संघर्ष पर हास्य-व्यंग्य प्रधान कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मच्छर सँ संघर्ष पर हास्य-व्यंग्य प्रधान कविता” अछि।

प्रश्न 22957. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993: प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मच्छर सँ संघर्ष पर हास्य-व्यंग्य प्रधान कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मच्छर सँ संघर्ष पर हास्य-व्यंग्य प्रधान कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मच्छर सँ संघर्ष पर हास्य-व्यंग्य प्रधान कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22958. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993: प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रमोद रंगीले, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रमोद रंगीले, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22959. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993: प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22960. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993: प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22961. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993: प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22962. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993मे प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मच्छर सँ संघर्ष पर हास्य-व्यंग्य प्रधान कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2302, सूचकांक पंक्ति 993मे प्रमोद रंगीलेक “मच्छर राज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मच्छर सँ संघर्ष पर हास्य-व्यंग्य प्रधान कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2303 : विदेह-सदेह 13 — जवाहर लाल कमयप: गीत (ऑख सँ जे झहरल...)

प्रश्न 22963. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994: जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत (ऑख सँ जे झहरल...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत (ऑख सँ जे झहरल...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 994मे जवाहर लाल कमयपक प्रविष्टि “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22964. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994: जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22965. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994: जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 22966. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994: जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-संघर्ष आ लक्ष्य प्राप्तिक भावना पर आधारित प्रेरणादायक गीत

उत्तर: घ. जीवन-संघर्ष आ लक्ष्य प्राप्तिक भावना पर आधारित प्रेरणादायक गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-संघर्ष आ लक्ष्य प्राप्तिक भावना पर आधारित प्रेरणादायक गीत” अछि।

प्रश्न 22967. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994: जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-संघर्ष आ लक्ष्य प्राप्तिक भावना पर आधारित प्रेरणादायक गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-संघर्ष आ लक्ष्य प्राप्तिक भावना पर आधारित प्रेरणादायक गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-संघर्ष आ लक्ष्य प्राप्तिक भावना पर आधारित प्रेरणादायक गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22968. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994: जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जवाहर लाल कमयप, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जवाहर लाल कमयप, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22969. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994: जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22970. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994: जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22971. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994: जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22972. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994मे जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “जीवन-संघर्ष आ लक्ष्य प्राप्तिक भावना पर आधारित प्रेरणादायक गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2303, सूचकांक पंक्ति 994मे जवाहर लाल कमयपक “गीत (ऑख सँ जे झहरल...)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “जीवन-संघर्ष आ लक्ष्य प्राप्तिक भावना पर आधारित प्रेरणादायक गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2304 : विदेह-सदेह 13 — कवपलेश्वर राउत: रौदी

प्रश्न 22973. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995: कवपलेश्वर राउतक “रौदी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रौदी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौदी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 995मे कवपलेश्वर राउतक प्रविष्टि “रौदी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22974. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995: कवपलेश्वर राउतक “रौदी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22975. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995: कवपलेश्वर राउतक “रौदी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 22976. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995: कवपलेश्वर राउतक “रौदी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रौदी (सूखा) आ दाही (बाढ़) के प्राकृतिक आपदा पर आधारित कविता

उत्तर: घ. रौदी (सूखा) आ दाही (बाढ़) के प्राकृतिक आपदा पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रौदी (सूखा) आ दाही (बाढ़) के प्राकृतिक आपदा पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 22977. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995: कवपलेश्वर राउतक “रौदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. किसानक पीड़ा आ सामाजिक असमानता पर प्रहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किसानक पीड़ा आ सामाजिक असमानता पर प्रहार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसानक पीड़ा आ सामाजिक असमानता पर प्रहार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22978. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995: कवपलेश्वर राउतक “रौदी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कवपलेश्वर राउत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कवपलेश्वर राउत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22979. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995: कवपलेश्वर राउतक “रौदी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22980. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995: कवपलेश्वर राउतक “रौदी”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22981. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995: कवपलेश्वर राउतक “रौदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22982. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995मे कवपलेश्वर राउतक “रौदी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किसानक पीड़ा आ सामाजिक असमानता पर प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2304, सूचकांक पंक्ति 995मे कवपलेश्वर राउतक “रौदी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किसानक पीड़ा आ सामाजिक असमानता पर प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2305 : विदेह-सदेह 13 — ओम प्रकाश: गजल (१-२)

प्रश्न 22983. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996: ओम प्रकाशक “गजल (१-२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 996मे ओम प्रकाशक प्रविष्टि “गजल (१-२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22984. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996: ओम प्रकाशक “गजल (१-२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22985. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996: ओम प्रकाशक “गजल (१-२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 22986. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996: ओम प्रकाशक “गजल (१-२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवनक नश्वरता आ मनोव्यथा पर आधारित दूटा गजल

उत्तर: घ. जीवनक नश्वरता आ मनोव्यथा पर आधारित दूटा गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवनक नश्वरता आ मनोव्यथा पर आधारित दूटा गजल” अछि।

प्रश्न 22987. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996: ओम प्रकाशक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवनक नश्वरता आ मनोव्यथा पर आधारित दूटा गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवनक नश्वरता आ मनोव्यथा पर आधारित दूटा गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवनक नश्वरता आ मनोव्यथा पर आधारित दूटा गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22988. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996: ओम प्रकाशक “गजल (१-२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22989. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996: ओम प्रकाशक “गजल (१-२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 22990. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996: ओम प्रकाशक “गजल (१-२)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 22991. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996: ओम प्रकाशक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 22992. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996मे ओम प्रकाशक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवनक नश्वरता आ मनोव्यथा पर आधारित दूटा गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2305, सूचकांक पंक्ति 996मे ओम प्रकाशक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवनक नश्वरता आ मनोव्यथा पर आधारित दूटा गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2306 : विदेह-सदेह 13 — वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारी: इवन्दरा आवास

प्रश्न 22993. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997: वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इवन्दरा आवास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इवन्दरा आवास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 997मे वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक प्रविष्टि “इवन्दरा आवास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 22994. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997: वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 22995. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997: वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 22996. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997: वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इन्दिरा आवास योजना मे भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य गीत

उत्तर: घ. इन्दिरा आवास योजना मे भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इन्दिरा आवास योजना मे भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य गीत” अछि।

प्रश्न 22997. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997: वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. इन्दिरा आवास योजना मे भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इन्दिरा आवास योजना मे भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इन्दिरा आवास योजना मे भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 22998. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997: वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारी, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारी, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 22999. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997: वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23000. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997: वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23001. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997: वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23002. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997मे वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “इन्दिरा आवास योजना मे भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2306, सूचकांक पंक्ति 997मे वशिनाथ यादव/ अचवना कुमारीक “इवन्दरा आवास” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “इन्दिरा आवास योजना मे भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2307 : विदेह-सदेह 13 — हेमनारायण साहु: हम ि नीमक गाछ

प्रश्न 23003. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998: हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम ि नीमक गाछ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम ि नीमक गाछ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 998मे हेमनारायण साहुक प्रविष्टि “हम ि नीमक गाछ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23004. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998: हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23005. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998: हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23006. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998: हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नीमक गाछ के माध्यम सँ पर्यावरण आ प्रकृति प्रेम पर आधारित कविता

उत्तर: घ. नीमक गाछ के माध्यम सँ पर्यावरण आ प्रकृति प्रेम पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नीमक गाछ के माध्यम सँ पर्यावरण आ प्रकृति प्रेम पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23007. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998: हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नीमक गाछ के माध्यम सँ पर्यावरण आ प्रकृति प्रेम पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नीमक गाछ के माध्यम सँ पर्यावरण आ प्रकृति प्रेम पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नीमक गाछ के माध्यम सँ पर्यावरण आ प्रकृति प्रेम पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23008. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998: हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेमनारायण साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेमनारायण साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23009. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998: हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23010. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998: हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23011. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998: हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23012. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998मे हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नीमक गाछ के माध्यम सँ पर्यावरण आ प्रकृति प्रेम पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2307, सूचकांक पंक्ति 998मे हेमनारायण साहुक “हम ि नीमक गाछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नीमक गाछ के माध्यम सँ पर्यावरण आ प्रकृति प्रेम पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2308 : विदेह-सदेह 13 — हेमनारायण साहु: जोन-बोवनहार

प्रश्न 23013. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999: हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जोन-बोवनहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जोन-बोवनहार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 999मे हेमनारायण साहुक प्रविष्टि “जोन-बोवनहार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23014. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999: हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23015. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999: हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23016. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999: हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित आ गरीब जनता के शोषण पर केन्द्रित विद्रोही कविता

उत्तर: घ. दलित आ गरीब जनता के शोषण पर केन्द्रित विद्रोही कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित आ गरीब जनता के शोषण पर केन्द्रित विद्रोही कविता” अछि।

प्रश्न 23017. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999: हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक न्याय आ चेतनाक आह्वान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक न्याय आ चेतनाक आह्वान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक न्याय आ चेतनाक आह्वान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23018. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999: हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेमनारायण साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेमनारायण साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23019. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999: हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23020. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999: हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23021. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999: हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23022. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999मे हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक न्याय आ चेतनाक आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2308, सूचकांक पंक्ति 999मे हेमनारायण साहुक “जोन-बोवनहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक न्याय आ चेतनाक आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2309 : विदेह-सदेह 13 — वशि कुमार यादव: ई की भेल

प्रश्न 23023. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000: वशि कुमार यादवक “ई की भेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई की भेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई की भेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1000मे वशि कुमार यादवक प्रविष्टि “ई की भेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23024. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000: वशि कुमार यादवक “ई की भेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23025. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000: वशि कुमार यादवक “ई की भेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23026. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000: वशि कुमार यादवक “ई की भेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज हिंसा पर आधारित कविता

उत्तर: घ. दहेज हिंसा पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज हिंसा पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23027. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000: वशि कुमार यादवक “ई की भेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक नन्हकबी आगि मे झुलसि मरलाक विभत्स चित्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक नन्हकबी आगि मे झुलसि मरलाक विभत्स चित्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक नन्हकबी आगि मे झुलसि मरलाक विभत्स चित्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23028. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000: वशि कुमार यादवक “ई की भेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वशि कुमार यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वशि कुमार यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23029. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000: वशि कुमार यादवक “ई की भेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23030. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000: वशि कुमार यादवक “ई की भेल”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23031. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000: वशि कुमार यादवक “ई की भेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23032. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000मे वशि कुमार यादवक “ई की भेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक नन्हकबी आगि मे झुलसि मरलाक विभत्स चित्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2309, सूचकांक पंक्ति 1000मे वशि कुमार यादवक “ई की भेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक नन्हकबी आगि मे झुलसि मरलाक विभत्स चित्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2310 : विदेह-सदेह 13 — वशि कुमार यादव: विमिला गीत

प्रश्न 23033. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001: वशि कुमार यादवक “विमिला गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विमिला गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विमिला गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1001मे वशि कुमार यादवक प्रविष्टि “विमिला गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23034. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001: वशि कुमार यादवक “विमिला गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23035. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001: वशि कुमार यादवक “विमिला गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 23036. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001: वशि कुमार यादवक “विमिला गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक सांस्कृतिक पहचान पर आधारित गीत

उत्तर: घ. मिथिलाक सांस्कृतिक पहचान पर आधारित गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक सांस्कृतिक पहचान पर आधारित गीत” अछि।

प्रश्न 23037. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001: वशि कुमार यादवक “विमिला गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक सांस्कृतिक पहचान पर आधारित गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक पहचान पर आधारित गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक सांस्कृतिक पहचान पर आधारित गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23038. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001: वशि कुमार यादवक “विमिला गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वशि कुमार यादव, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वशि कुमार यादव, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23039. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001: वशि कुमार यादवक “विमिला गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23040. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001: वशि कुमार यादवक “विमिला गीत”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23041. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001: वशि कुमार यादवक “विमिला गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23042. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001मे वशि कुमार यादवक “विमिला गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मिथिलाक सांस्कृतिक पहचान पर आधारित गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2310, सूचकांक पंक्ति 1001मे वशि कुमार यादवक “विमिला गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मिथिलाक सांस्कृतिक पहचान पर आधारित गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2311 : विदेह-सदेह 13 — वशि कुमार झा "वटल्लू": वसनेह

प्रश्न 23043. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002: वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वसनेह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसनेह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1002मे वशि कुमार झा "वटल्लू"क प्रविष्टि “वसनेह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23044. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002: वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23045. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002: वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 23046. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002: वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम आ स्नेहक सूक्ष्म भाव पर आधारित लोकप्रिय गीत

उत्तर: घ. प्रेम आ स्नेहक सूक्ष्म भाव पर आधारित लोकप्रिय गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम आ स्नेहक सूक्ष्म भाव पर आधारित लोकप्रिय गीत” अछि।

प्रश्न 23047. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002: वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम आ स्नेहक सूक्ष्म भाव पर आधारित लोकप्रिय गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम आ स्नेहक सूक्ष्म भाव पर आधारित लोकप्रिय गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम आ स्नेहक सूक्ष्म भाव पर आधारित लोकप्रिय गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23048. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002: वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वशि कुमार झा "वटल्लू", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वशि कुमार झा "वटल्लू", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23049. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002: वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23050. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002: वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23051. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002: वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23052. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002मे वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रेम आ स्नेहक सूक्ष्म भाव पर आधारित लोकप्रिय गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2311, सूचकांक पंक्ति 1002मे वशि कुमार झा "वटल्लू"क “वसनेह” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रेम आ स्नेहक सूक्ष्म भाव पर आधारित लोकप्रिय गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2312 : विदेह-सदेह 13 — शंभु सौरभ: गीत (चलैत चल चलैत चल...)

प्रश्न 23053. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003: शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत (चलैत चल चलैत चल...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत (चलैत चल चलैत चल...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1003मे शंभु सौरभक प्रविष्टि “गीत (चलैत चल चलैत चल...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23054. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003: शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23055. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003: शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 23056. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003: शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रगतिशील आधुनिक गीत

उत्तर: घ. प्रगतिशील आधुनिक गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रगतिशील आधुनिक गीत” अछि।

प्रश्न 23057. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003: शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कर्म, चेतना आ मानवीय संघर्षक दार्शनिक चित्रण सहित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कर्म, चेतना आ मानवीय संघर्षक दार्शनिक चित्रण सहित

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कर्म, चेतना आ मानवीय संघर्षक दार्शनिक चित्रण सहित” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23058. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003: शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शंभु सौरभ, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शंभु सौरभ, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23059. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003: शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23060. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003: शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23061. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003: शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23062. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003मे शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “कर्म, चेतना आ मानवीय संघर्षक दार्शनिक चित्रण सहित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2312, सूचकांक पंक्ति 1003मे शंभु सौरभक “गीत (चलैत चल चलैत चल...)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “कर्म, चेतना आ मानवीय संघर्षक दार्शनिक चित्रण सहित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2313 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: वचर प्रतीक्षा

प्रश्न 23063. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004: राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वचर प्रतीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वचर प्रतीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1004मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “वचर प्रतीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23064. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004: राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23065. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004: राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23066. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004: राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वियोग शृंगार पर आधारित भावप्रवण कविता

उत्तर: घ. वियोग शृंगार पर आधारित भावप्रवण कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वियोग शृंगार पर आधारित भावप्रवण कविता” अछि।

प्रश्न 23067. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004: राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वियोग शृंगार पर आधारित भावप्रवण कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वियोग शृंगार पर आधारित भावप्रवण कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वियोग शृंगार पर आधारित भावप्रवण कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23068. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004: राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23069. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004: राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23070. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004: राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23071. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004: राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23072. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004मे राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वियोग शृंगार पर आधारित भावप्रवण कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2313, सूचकांक पंक्ति 1004मे राजदेव मण्डलक “वचर प्रतीक्षा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वियोग शृंगार पर आधारित भावप्रवण कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2314 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: हाथ

प्रश्न 23073. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005: राजदेव मण्डलक “हाथ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाथ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाथ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1005मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “हाथ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23074. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005: राजदेव मण्डलक “हाथ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23075. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005: राजदेव मण्डलक “हाथ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23076. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005: राजदेव मण्डलक “हाथ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हाथ के माध्यम सँ मानवीय कर्म आ सृजन के दार्शनिक व्याख्या

उत्तर: घ. हाथ के माध्यम सँ मानवीय कर्म आ सृजन के दार्शनिक व्याख्या

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हाथ के माध्यम सँ मानवीय कर्म आ सृजन के दार्शनिक व्याख्या” अछि।

प्रश्न 23077. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005: राजदेव मण्डलक “हाथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हाथ के माध्यम सँ मानवीय कर्म आ सृजन के दार्शनिक व्याख्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाथ के माध्यम सँ मानवीय कर्म आ सृजन के दार्शनिक व्याख्या

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हाथ के माध्यम सँ मानवीय कर्म आ सृजन के दार्शनिक व्याख्या” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23078. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005: राजदेव मण्डलक “हाथ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23079. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005: राजदेव मण्डलक “हाथ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23080. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005: राजदेव मण्डलक “हाथ”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23081. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005: राजदेव मण्डलक “हाथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23082. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005मे राजदेव मण्डलक “हाथ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हाथ के माध्यम सँ मानवीय कर्म आ सृजन के दार्शनिक व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2314, सूचकांक पंक्ति 1005मे राजदेव मण्डलक “हाथ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हाथ के माध्यम सँ मानवीय कर्म आ सृजन के दार्शनिक व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2315 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: ठक

प्रश्न 23083. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006: राजदेव मण्डलक “ठक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ठक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ठक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1006मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “ठक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23084. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006: राजदेव मण्डलक “ठक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23085. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006: राजदेव मण्डलक “ठक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23086. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006: राजदेव मण्डलक “ठक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छल-कपट आ ठगीक जीवन पर व्यंग्य

उत्तर: घ. छल-कपट आ ठगीक जीवन पर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छल-कपट आ ठगीक जीवन पर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 23087. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006: राजदेव मण्डलक “ठक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छल-कपट आ ठगीक जीवन पर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छल-कपट आ ठगीक जीवन पर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छल-कपट आ ठगीक जीवन पर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23088. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006: राजदेव मण्डलक “ठक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23089. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006: राजदेव मण्डलक “ठक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23090. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006: राजदेव मण्डलक “ठक”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23091. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006: राजदेव मण्डलक “ठक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23092. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006मे राजदेव मण्डलक “ठक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छल-कपट आ ठगीक जीवन पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2315, सूचकांक पंक्ति 1006मे राजदेव मण्डलक “ठक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छल-कपट आ ठगीक जीवन पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2316 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: बलात्

प्रश्न 23093. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007: राजदेव मण्डलक “बलात्” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बलात्

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बलात्

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1007मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बलात्” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23094. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007: राजदेव मण्डलक “बलात्”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23095. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007: राजदेव मण्डलक “बलात्”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23096. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007: राजदेव मण्डलक “बलात्” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण पंचायत व्यवस्था मे न्यायिक प्रक्रियाक विसंगति पर व्यंग्य

उत्तर: घ. ग्रामीण पंचायत व्यवस्था मे न्यायिक प्रक्रियाक विसंगति पर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था मे न्यायिक प्रक्रियाक विसंगति पर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 23097. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007: राजदेव मण्डलक “बलात्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण पंचायत व्यवस्था मे न्यायिक प्रक्रियाक विसंगति पर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण पंचायत व्यवस्था मे न्यायिक प्रक्रियाक विसंगति पर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था मे न्यायिक प्रक्रियाक विसंगति पर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23098. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007: राजदेव मण्डलक “बलात्”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23099. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007: राजदेव मण्डलक “बलात्” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23100. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007: राजदेव मण्डलक “बलात्”कें विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23101. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007: राजदेव मण्डलक “बलात्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23102. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007मे राजदेव मण्डलक “बलात्” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था मे न्यायिक प्रक्रियाक विसंगति पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2316, सूचकांक पंक्ति 1007मे राजदेव मण्डलक “बलात्” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था मे न्यायिक प्रक्रियाक विसंगति पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2317 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: झूठक वगयान

प्रश्न 23103. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008: राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. झूठक वगयान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झूठक वगयान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1008मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “झूठक वगयान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23104. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008: राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23105. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008: राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23106. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008: राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. झूठ के विज्ञान पर आधारित कविता

उत्तर: घ. झूठ के विज्ञान पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “झूठ के विज्ञान पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23107. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008: राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. झूठ के विज्ञान पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झूठ के विज्ञान पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “झूठ के विज्ञान पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23108. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008: राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23109. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008: राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23110. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008: राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23111. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008: राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23112. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008मे राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “झूठ के विज्ञान पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2317, सूचकांक पंक्ति 1008मे राजदेव मण्डलक “झूठक वगयान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “झूठ के विज्ञान पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2318 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: जेहने अहाँ तेहने हम

प्रश्न 23113. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009: राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जेहने अहाँ तेहने हम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जेहने अहाँ तेहने हम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1009मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “जेहने अहाँ तेहने हम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23114. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009: राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23115. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009: राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23116. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009: राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मित्रता आ एकरसता पर आधारित कविता

उत्तर: घ. मित्रता आ एकरसता पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मित्रता आ एकरसता पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23117. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009: राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मित्रता आ एकरसता पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मित्रता आ एकरसता पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मित्रता आ एकरसता पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23118. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009: राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23119. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009: राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23120. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009: राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23121. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009: राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23122. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009मे राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मित्रता आ एकरसता पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2318, सूचकांक पंक्ति 1009मे राजदेव मण्डलक “जेहने अहाँ तेहने हम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मित्रता आ एकरसता पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2319 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: इमानदारी

प्रश्न 23123. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010: राजदेव मण्डलक “इमानदारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इमानदारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इमानदारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1010मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “इमानदारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23124. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010: राजदेव मण्डलक “इमानदारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23125. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010: राजदेव मण्डलक “इमानदारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23126. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010: राजदेव मण्डलक “इमानदारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इमानदारी के बाजार मे बिकयबाक कटु यथार्थ पर आधारित कविता

उत्तर: घ. इमानदारी के बाजार मे बिकयबाक कटु यथार्थ पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इमानदारी के बाजार मे बिकयबाक कटु यथार्थ पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23127. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010: राजदेव मण्डलक “इमानदारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. इमानदारी के बाजार मे बिकयबाक कटु यथार्थ पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इमानदारी के बाजार मे बिकयबाक कटु यथार्थ पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इमानदारी के बाजार मे बिकयबाक कटु यथार्थ पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23128. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010: राजदेव मण्डलक “इमानदारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23129. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010: राजदेव मण्डलक “इमानदारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23130. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010: राजदेव मण्डलक “इमानदारी”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23131. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010: राजदेव मण्डलक “इमानदारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23132. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010मे राजदेव मण्डलक “इमानदारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “इमानदारी के बाजार मे बिकयबाक कटु यथार्थ पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2319, सूचकांक पंक्ति 1010मे राजदेव मण्डलक “इमानदारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “इमानदारी के बाजार मे बिकयबाक कटु यथार्थ पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2320 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: बीआ

प्रश्न 23133. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011: राजदेव मण्डलक “बीआ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीआ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीआ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1011मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बीआ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23134. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011: राजदेव मण्डलक “बीआ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23135. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011: राजदेव मण्डलक “बीआ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23136. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011: राजदेव मण्डलक “बीआ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीजक प्रस्फोटन सँ सृजनक दार्शनिक प्रक्रिया पर आधारित प्रतीकात्मक कविता

उत्तर: घ. बीजक प्रस्फोटन सँ सृजनक दार्शनिक प्रक्रिया पर आधारित प्रतीकात्मक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीजक प्रस्फोटन सँ सृजनक दार्शनिक प्रक्रिया पर आधारित प्रतीकात्मक कविता” अछि।

प्रश्न 23137. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011: राजदेव मण्डलक “बीआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीजक प्रस्फोटन सँ सृजनक दार्शनिक प्रक्रिया पर आधारित प्रतीकात्मक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीजक प्रस्फोटन सँ सृजनक दार्शनिक प्रक्रिया पर आधारित प्रतीकात्मक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीजक प्रस्फोटन सँ सृजनक दार्शनिक प्रक्रिया पर आधारित प्रतीकात्मक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23138. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011: राजदेव मण्डलक “बीआ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23139. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011: राजदेव मण्डलक “बीआ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23140. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011: राजदेव मण्डलक “बीआ”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23141. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011: राजदेव मण्डलक “बीआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23142. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011मे राजदेव मण्डलक “बीआ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बीजक प्रस्फोटन सँ सृजनक दार्शनिक प्रक्रिया पर आधारित प्रतीकात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2320, सूचकांक पंक्ति 1011मे राजदेव मण्डलक “बीआ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बीजक प्रस्फोटन सँ सृजनक दार्शनिक प्रक्रिया पर आधारित प्रतीकात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2321 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: उपयोग

प्रश्न 23143. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012: राजदेव मण्डलक “उपयोग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उपयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपयोग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1012मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “उपयोग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23144. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012: राजदेव मण्डलक “उपयोग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23145. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012: राजदेव मण्डलक “उपयोग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23146. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012: राजदेव मण्डलक “उपयोग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सम्बन्ध मे उपयोगितावादी सोच पर व्यंग्य

उत्तर: घ. सम्बन्ध मे उपयोगितावादी सोच पर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्बन्ध मे उपयोगितावादी सोच पर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 23147. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012: राजदेव मण्डलक “उपयोग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सम्बन्ध मे उपयोगितावादी सोच पर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्बन्ध मे उपयोगितावादी सोच पर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सम्बन्ध मे उपयोगितावादी सोच पर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23148. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012: राजदेव मण्डलक “उपयोग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23149. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012: राजदेव मण्डलक “उपयोग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23150. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012: राजदेव मण्डलक “उपयोग”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23151. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012: राजदेव मण्डलक “उपयोग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23152. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012मे राजदेव मण्डलक “उपयोग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सम्बन्ध मे उपयोगितावादी सोच पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2321, सूचकांक पंक्ति 1012मे राजदेव मण्डलक “उपयोग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सम्बन्ध मे उपयोगितावादी सोच पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2322 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: द्वन्द्व

प्रश्न 23153. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013: राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. द्वन्द्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1013मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “द्वन्द्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23154. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013: राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23155. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013: राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23156. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013: राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मन आ परिस्थितिक बीचक आन्तरिक द्वन्द्व पर आधारित कविता

उत्तर: घ. मन आ परिस्थितिक बीचक आन्तरिक द्वन्द्व पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मन आ परिस्थितिक बीचक आन्तरिक द्वन्द्व पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23157. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013: राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मन आ परिस्थितिक बीचक आन्तरिक द्वन्द्व पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मन आ परिस्थितिक बीचक आन्तरिक द्वन्द्व पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मन आ परिस्थितिक बीचक आन्तरिक द्वन्द्व पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23158. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013: राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23159. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013: राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23160. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013: राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23161. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013: राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23162. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013मे राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मन आ परिस्थितिक बीचक आन्तरिक द्वन्द्व पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2322, सूचकांक पंक्ति 1013मे राजदेव मण्डलक “द्वन्द्व” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मन आ परिस्थितिक बीचक आन्तरिक द्वन्द्व पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2323 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: कुहेस

प्रश्न 23163. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014: राजदेव मण्डलक “कुहेस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुहेस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुहेस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1014मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “कुहेस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23164. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014: राजदेव मण्डलक “कुहेस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23165. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014: राजदेव मण्डलक “कुहेस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23166. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014: राजदेव मण्डलक “कुहेस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोहरे के माध्यम सँ सामाजिक जड़ता आ अन्धकारक प्रतीक पर आधारित कविता

उत्तर: घ. कोहरे के माध्यम सँ सामाजिक जड़ता आ अन्धकारक प्रतीक पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोहरे के माध्यम सँ सामाजिक जड़ता आ अन्धकारक प्रतीक पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23167. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014: राजदेव मण्डलक “कुहेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोहरे के माध्यम सँ सामाजिक जड़ता आ अन्धकारक प्रतीक पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोहरे के माध्यम सँ सामाजिक जड़ता आ अन्धकारक प्रतीक पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोहरे के माध्यम सँ सामाजिक जड़ता आ अन्धकारक प्रतीक पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23168. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014: राजदेव मण्डलक “कुहेस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23169. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014: राजदेव मण्डलक “कुहेस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23170. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014: राजदेव मण्डलक “कुहेस”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23171. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014: राजदेव मण्डलक “कुहेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23172. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014मे राजदेव मण्डलक “कुहेस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोहरे के माध्यम सँ सामाजिक जड़ता आ अन्धकारक प्रतीक पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2323, सूचकांक पंक्ति 1014मे राजदेव मण्डलक “कुहेस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोहरे के माध्यम सँ सामाजिक जड़ता आ अन्धकारक प्रतीक पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2324 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: जानिरक बोली

प्रश्न 23173. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015: राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जानिरक बोली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जानिरक बोली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1015मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “जानिरक बोली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23174. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015: राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23175. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015: राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23176. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015: राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जानवर सँ संवाद के माध्यम सँ मनुष्य आ प्रकृति के बीचक सम्बन्ध पर दार्शनिक कविता

उत्तर: घ. जानवर सँ संवाद के माध्यम सँ मनुष्य आ प्रकृति के बीचक सम्बन्ध पर दार्शनिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जानवर सँ संवाद के माध्यम सँ मनुष्य आ प्रकृति के बीचक सम्बन्ध पर दार्शनिक कविता” अछि।

प्रश्न 23177. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015: राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जानवर सँ संवाद के माध्यम सँ मनुष्य आ प्रकृति के बीचक सम्बन्ध पर दार्शनिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जानवर सँ संवाद के माध्यम सँ मनुष्य आ प्रकृति के बीचक सम्बन्ध पर दार्शनिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जानवर सँ संवाद के माध्यम सँ मनुष्य आ प्रकृति के बीचक सम्बन्ध पर दार्शनिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23178. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015: राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23179. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015: राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23180. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015: राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23181. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015: राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23182. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015मे राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जानवर सँ संवाद के माध्यम सँ मनुष्य आ प्रकृति के बीचक सम्बन्ध पर दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2324, सूचकांक पंक्ति 1015मे राजदेव मण्डलक “जानिरक बोली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जानवर सँ संवाद के माध्यम सँ मनुष्य आ प्रकृति के बीचक सम्बन्ध पर दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2325 : विदेह-सदेह 13 — डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”: मृगतृष्णा मे पावन तकै छी

प्रश्न 23183. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मृगतृष्णा मे पावन तकै छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मृगतृष्णा मे पावन तकै छी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1016मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क प्रविष्टि “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23184. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23185. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23186. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मृगतृष्णा के माध्यम सँ जीवनक भ्रम आ अप्राप्ति पर आधारित दार्शनिक कविता

उत्तर: घ. मृगतृष्णा के माध्यम सँ जीवनक भ्रम आ अप्राप्ति पर आधारित दार्शनिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मृगतृष्णा के माध्यम सँ जीवनक भ्रम आ अप्राप्ति पर आधारित दार्शनिक कविता” अछि।

प्रश्न 23187. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मृगतृष्णा के माध्यम सँ जीवनक भ्रम आ अप्राप्ति पर आधारित दार्शनिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मृगतृष्णा के माध्यम सँ जीवनक भ्रम आ अप्राप्ति पर आधारित दार्शनिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृगतृष्णा के माध्यम सँ जीवनक भ्रम आ अप्राप्ति पर आधारित दार्शनिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23188. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23189. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23190. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23191. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23192. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मृगतृष्णा के माध्यम सँ जीवनक भ्रम आ अप्राप्ति पर आधारित दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2325, सूचकांक पंक्ति 1016मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “मृगतृष्णा मे पावन तकै छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मृगतृष्णा के माध्यम सँ जीवनक भ्रम आ अप्राप्ति पर आधारित दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2326 : विदेह-सदेह 13 — डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”: आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी

प्रश्न 23193. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1017मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क प्रविष्टि “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23194. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23195. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23196. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रियजनक प्रशंसा पर आधारित प्रेम-कविता

उत्तर: घ. प्रियजनक प्रशंसा पर आधारित प्रेम-कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रियजनक प्रशंसा पर आधारित प्रेम-कविता” अछि।

प्रश्न 23197. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रियजनक प्रशंसा पर आधारित प्रेम-कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रियजनक प्रशंसा पर आधारित प्रेम-कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रियजनक प्रशंसा पर आधारित प्रेम-कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23198. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23199. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23200. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23201. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23202. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रियजनक प्रशंसा पर आधारित प्रेम-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2326, सूचकांक पंक्ति 1017मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ अहाँ बड़ नीक लगै छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रियजनक प्रशंसा पर आधारित प्रेम-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2327 : विदेह-सदेह 13 — डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”: आइ याद हुनक बहुते आयल

प्रश्न 23203. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आइ याद हुनक बहुते आयल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आइ याद हुनक बहुते आयल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1018मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क प्रविष्टि “आइ याद हुनक बहुते आयल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23204. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23205. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23206. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अतीतक स्मृति आ विरह पर आधारित कविता

उत्तर: घ. अतीतक स्मृति आ विरह पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अतीतक स्मृति आ विरह पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23207. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अतीतक स्मृति आ विरह पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अतीतक स्मृति आ विरह पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अतीतक स्मृति आ विरह पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23208. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23209. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23210. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23211. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23212. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अतीतक स्मृति आ विरह पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2327, सूचकांक पंक्ति 1018मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “आइ याद हुनक बहुते आयल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अतीतक स्मृति आ विरह पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2328 : विदेह-सदेह 13 — डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”: छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...

प्रश्न 23213. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1019मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क प्रविष्टि “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23214. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23215. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23216. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छात्र जीवनक अनुभव आ प्रियजनक स्मृति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता

उत्तर: घ. छात्र जीवनक अनुभव आ प्रियजनक स्मृति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छात्र जीवनक अनुभव आ प्रियजनक स्मृति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता” अछि।

प्रश्न 23217. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छात्र जीवनक अनुभव आ प्रियजनक स्मृति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छात्र जीवनक अनुभव आ प्रियजनक स्मृति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छात्र जीवनक अनुभव आ प्रियजनक स्मृति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23218. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23219. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23220. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23221. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019: डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23222. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छात्र जीवनक अनुभव आ प्रियजनक स्मृति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2328, सूचकांक पंक्ति 1019मे डॉ॰ शवशधर कुमर “विदेह”क “छी बैसल एहि ठाँ क्लासहि मे...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छात्र जीवनक अनुभव आ प्रियजनक स्मृति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2329 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: वसया तोरे कारण

प्रश्न 23223. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020: मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वसया तोरे कारण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसया तोरे कारण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1020मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “वसया तोरे कारण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23224. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020: मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23225. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020: मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23226. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020: मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीता के माध्यम सँ नारी जीवनक शोषण आ प्रश्न पर आधारित स्त्रीवादी कविता

उत्तर: घ. सीता के माध्यम सँ नारी जीवनक शोषण आ प्रश्न पर आधारित स्त्रीवादी कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीता के माध्यम सँ नारी जीवनक शोषण आ प्रश्न पर आधारित स्त्रीवादी कविता” अछि।

प्रश्न 23227. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020: मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीता के माध्यम सँ नारी जीवनक शोषण आ प्रश्न पर आधारित स्त्रीवादी कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीता के माध्यम सँ नारी जीवनक शोषण आ प्रश्न पर आधारित स्त्रीवादी कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीता के माध्यम सँ नारी जीवनक शोषण आ प्रश्न पर आधारित स्त्रीवादी कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23228. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020: मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23229. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020: मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23230. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020: मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23231. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020: मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23232. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020मे मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीता के माध्यम सँ नारी जीवनक शोषण आ प्रश्न पर आधारित स्त्रीवादी कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2329, सूचकांक पंक्ति 1020मे मुन्नी कामतक “वसया तोरे कारण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीता के माध्यम सँ नारी जीवनक शोषण आ प्रश्न पर आधारित स्त्रीवादी कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2330 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: वठठुराबैत जाड़

प्रश्न 23233. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021: मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वठठुराबैत जाड़

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वठठुराबैत जाड़

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1021मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “वठठुराबैत जाड़” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23234. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021: मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23235. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021: मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23236. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021: मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जाड़क मौसम मे गरीबक पीड़ा पर आधारित संवेदनशील कविता

उत्तर: घ. जाड़क मौसम मे गरीबक पीड़ा पर आधारित संवेदनशील कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जाड़क मौसम मे गरीबक पीड़ा पर आधारित संवेदनशील कविता” अछि।

प्रश्न 23237. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021: मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जाड़क मौसम मे गरीबक पीड़ा पर आधारित संवेदनशील कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाड़क मौसम मे गरीबक पीड़ा पर आधारित संवेदनशील कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाड़क मौसम मे गरीबक पीड़ा पर आधारित संवेदनशील कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23238. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021: मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23239. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021: मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23240. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021: मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23241. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021: मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23242. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021मे मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जाड़क मौसम मे गरीबक पीड़ा पर आधारित संवेदनशील कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2330, सूचकांक पंक्ति 1021मे मुन्नी कामतक “वठठुराबैत जाड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जाड़क मौसम मे गरीबक पीड़ा पर आधारित संवेदनशील कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2331 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: बंवदश

प्रश्न 23243. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022: मुन्नी कामतक “बंवदश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बंवदश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बंवदश

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1022मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “बंवदश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23244. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022: मुन्नी कामतक “बंवदश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23245. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022: मुन्नी कामतक “बंवदश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23246. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022: मुन्नी कामतक “बंवदश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पक्षाघातग्रस्त व्यक्तिक पीड़ा पर मार्मिक कविता

उत्तर: घ. पक्षाघातग्रस्त व्यक्तिक पीड़ा पर मार्मिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पक्षाघातग्रस्त व्यक्तिक पीड़ा पर मार्मिक कविता” अछि।

प्रश्न 23247. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022: मुन्नी कामतक “बंवदश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पक्षाघातग्रस्त व्यक्तिक पीड़ा पर मार्मिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पक्षाघातग्रस्त व्यक्तिक पीड़ा पर मार्मिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पक्षाघातग्रस्त व्यक्तिक पीड़ा पर मार्मिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23248. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022: मुन्नी कामतक “बंवदश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23249. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022: मुन्नी कामतक “बंवदश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23250. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022: मुन्नी कामतक “बंवदश”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23251. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022: मुन्नी कामतक “बंवदश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23252. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022मे मुन्नी कामतक “बंवदश” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पक्षाघातग्रस्त व्यक्तिक पीड़ा पर मार्मिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2331, सूचकांक पंक्ति 1022मे मुन्नी कामतक “बंवदश” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पक्षाघातग्रस्त व्यक्तिक पीड़ा पर मार्मिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2332 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: पैसा सँ वबयाह

प्रश्न 23253. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023: मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पैसा सँ वबयाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पैसा सँ वबयाह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1023मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “पैसा सँ वबयाह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23254. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023: मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23255. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023: मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23256. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023: मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज आ गरीबी के कारण विवाह मे होइत बला अड़चन पर आधारित सामाजिक कविता

उत्तर: घ. दहेज आ गरीबी के कारण विवाह मे होइत बला अड़चन पर आधारित सामाजिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज आ गरीबी के कारण विवाह मे होइत बला अड़चन पर आधारित सामाजिक कविता” अछि।

प्रश्न 23257. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023: मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज आ गरीबी के कारण विवाह मे होइत बला अड़चन पर आधारित सामाजिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज आ गरीबी के कारण विवाह मे होइत बला अड़चन पर आधारित सामाजिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज आ गरीबी के कारण विवाह मे होइत बला अड़चन पर आधारित सामाजिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23258. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023: मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23259. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023: मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23260. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023: मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23261. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023: मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23262. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023मे मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दहेज आ गरीबी के कारण विवाह मे होइत बला अड़चन पर आधारित सामाजिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2332, सूचकांक पंक्ति 1023मे मुन्नी कामतक “पैसा सँ वबयाह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दहेज आ गरीबी के कारण विवाह मे होइत बला अड़चन पर आधारित सामाजिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2333 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया

प्रश्न 23263. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024: मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1024मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23264. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024: मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23265. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024: मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23266. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024: मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. युवावस्थाक आकांक्षा आ वास्तविकताक बीचक द्वन्द्व पर आधारित कविता

उत्तर: घ. युवावस्थाक आकांक्षा आ वास्तविकताक बीचक द्वन्द्व पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “युवावस्थाक आकांक्षा आ वास्तविकताक बीचक द्वन्द्व पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23267. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024: मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. युवावस्थाक आकांक्षा आ वास्तविकताक बीचक द्वन्द्व पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युवावस्थाक आकांक्षा आ वास्तविकताक बीचक द्वन्द्व पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “युवावस्थाक आकांक्षा आ वास्तविकताक बीचक द्वन्द्व पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23268. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024: मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23269. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024: मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23270. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024: मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया”कें विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23271. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024: मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23272. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024मे मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “युवावस्थाक आकांक्षा आ वास्तविकताक बीचक द्वन्द्व पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2333, सूचकांक पंक्ति 1024मे मुन्नी कामतक “काँच बाँस जकाँ लचपच उमवरया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “युवावस्थाक आकांक्षा आ वास्तविकताक बीचक द्वन्द्व पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2334 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: मनक वेदना

प्रश्न 23273. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025: मुन्नी कामतक “मनक वेदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मनक वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनक वेदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1025मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “मनक वेदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23274. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025: मुन्नी कामतक “मनक वेदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23275. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025: मुन्नी कामतक “मनक वेदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23276. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025: मुन्नी कामतक “मनक वेदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवनक अन्तिम पड़ाव पर पहुँचल व्यक्तिक मनोदशा पर आधारित मार्मिक कविता

उत्तर: घ. जीवनक अन्तिम पड़ाव पर पहुँचल व्यक्तिक मनोदशा पर आधारित मार्मिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवनक अन्तिम पड़ाव पर पहुँचल व्यक्तिक मनोदशा पर आधारित मार्मिक कविता” अछि।

प्रश्न 23277. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025: मुन्नी कामतक “मनक वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवनक अन्तिम पड़ाव पर पहुँचल व्यक्तिक मनोदशा पर आधारित मार्मिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवनक अन्तिम पड़ाव पर पहुँचल व्यक्तिक मनोदशा पर आधारित मार्मिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवनक अन्तिम पड़ाव पर पहुँचल व्यक्तिक मनोदशा पर आधारित मार्मिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23278. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025: मुन्नी कामतक “मनक वेदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23279. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025: मुन्नी कामतक “मनक वेदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23280. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025: मुन्नी कामतक “मनक वेदना”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23281. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025: मुन्नी कामतक “मनक वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23282. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025मे मुन्नी कामतक “मनक वेदना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवनक अन्तिम पड़ाव पर पहुँचल व्यक्तिक मनोदशा पर आधारित मार्मिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2334, सूचकांक पंक्ति 1025मे मुन्नी कामतक “मनक वेदना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवनक अन्तिम पड़ाव पर पहुँचल व्यक्तिक मनोदशा पर आधारित मार्मिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2335 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: शरहद

प्रश्न 23283. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026: मुन्नी कामतक “शरहद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शरहद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शरहद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1026मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “शरहद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23284. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026: मुन्नी कामतक “शरहद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23285. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026: मुन्नी कामतक “शरहद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23286. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026: मुन्नी कामतक “शरहद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीमा रेखा के कृत्रिमता आ मानवीय एकता पर आधारित दार्शनिक कविता

उत्तर: घ. सीमा रेखा के कृत्रिमता आ मानवीय एकता पर आधारित दार्शनिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीमा रेखा के कृत्रिमता आ मानवीय एकता पर आधारित दार्शनिक कविता” अछि।

प्रश्न 23287. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026: मुन्नी कामतक “शरहद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीमा रेखा के कृत्रिमता आ मानवीय एकता पर आधारित दार्शनिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीमा रेखा के कृत्रिमता आ मानवीय एकता पर आधारित दार्शनिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीमा रेखा के कृत्रिमता आ मानवीय एकता पर आधारित दार्शनिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23288. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026: मुन्नी कामतक “शरहद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23289. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026: मुन्नी कामतक “शरहद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23290. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026: मुन्नी कामतक “शरहद”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23291. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026: मुन्नी कामतक “शरहद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23292. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026मे मुन्नी कामतक “शरहद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीमा रेखा के कृत्रिमता आ मानवीय एकता पर आधारित दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2335, सूचकांक पंक्ति 1026मे मुन्नी कामतक “शरहद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीमा रेखा के कृत्रिमता आ मानवीय एकता पर आधारित दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2336 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: भेल पुरा आस

प्रश्न 23293. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027: मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भेल पुरा आस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भेल पुरा आस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1027मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “भेल पुरा आस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23294. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027: मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23295. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027: मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23296. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027: मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्षा के आगमन सँ किसानक खुशी पर आधारित प्रकृति-प्रेमक कविता

उत्तर: घ. वर्षा के आगमन सँ किसानक खुशी पर आधारित प्रकृति-प्रेमक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा के आगमन सँ किसानक खुशी पर आधारित प्रकृति-प्रेमक कविता” अछि।

प्रश्न 23297. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027: मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्षा के आगमन सँ किसानक खुशी पर आधारित प्रकृति-प्रेमक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्षा के आगमन सँ किसानक खुशी पर आधारित प्रकृति-प्रेमक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा के आगमन सँ किसानक खुशी पर आधारित प्रकृति-प्रेमक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23298. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027: मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23299. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027: मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23300. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027: मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23301. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027: मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23302. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027मे मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्षा के आगमन सँ किसानक खुशी पर आधारित प्रकृति-प्रेमक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2336, सूचकांक पंक्ति 1027मे मुन्नी कामतक “भेल पुरा आस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्षा के आगमन सँ किसानक खुशी पर आधारित प्रकृति-प्रेमक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2337 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: भाइयक स्नेह

प्रश्न 23303. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028: मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाइयक स्नेह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाइयक स्नेह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1028मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “भाइयक स्नेह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23304. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028: मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23305. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028: मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23306. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028: मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित भावप्रवण कविता

उत्तर: घ. भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित भावप्रवण कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित भावप्रवण कविता” अछि।

प्रश्न 23307. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028: मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित भावप्रवण कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित भावप्रवण कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित भावप्रवण कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23308. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028: मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23309. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028: मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23310. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028: मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23311. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028: मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23312. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028मे मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित भावप्रवण कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2337, सूचकांक पंक्ति 1028मे मुन्नी कामतक “भाइयक स्नेह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित भावप्रवण कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2338 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: अलहर मेघ

प्रश्न 23313. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029: मुन्नी कामतक “अलहर मेघ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अलहर मेघ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अलहर मेघ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1029मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “अलहर मेघ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23314. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029: मुन्नी कामतक “अलहर मेघ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23315. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029: मुन्नी कामतक “अलहर मेघ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23316. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029: मुन्नी कामतक “अलहर मेघ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बादल के माध्यम सँ प्रकृतिक चंचलता पर आधारित कविता

उत्तर: घ. बादल के माध्यम सँ प्रकृतिक चंचलता पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बादल के माध्यम सँ प्रकृतिक चंचलता पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23317. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029: मुन्नी कामतक “अलहर मेघ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बादल के माध्यम सँ प्रकृतिक चंचलता पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बादल के माध्यम सँ प्रकृतिक चंचलता पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बादल के माध्यम सँ प्रकृतिक चंचलता पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23318. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029: मुन्नी कामतक “अलहर मेघ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23319. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029: मुन्नी कामतक “अलहर मेघ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23320. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029: मुन्नी कामतक “अलहर मेघ”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23321. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029: मुन्नी कामतक “अलहर मेघ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23322. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029मे मुन्नी कामतक “अलहर मेघ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बादल के माध्यम सँ प्रकृतिक चंचलता पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2338, सूचकांक पंक्ति 1029मे मुन्नी कामतक “अलहर मेघ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बादल के माध्यम सँ प्रकृतिक चंचलता पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2339 : विदेह-सदेह 13 — शेफालवका झा: रे मन

प्रश्न 23323. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030: शेफालवका झाक “रे मन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रे मन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रे मन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1030मे शेफालवका झाक प्रविष्टि “रे मन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23324. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030: शेफालवका झाक “रे मन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23325. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030: शेफालवका झाक “रे मन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23326. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030: शेफालवका झाक “रे मन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आन्तरिक आह्वान पर आधारित दार्शनिक कविता

उत्तर: घ. आन्तरिक आह्वान पर आधारित दार्शनिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आन्तरिक आह्वान पर आधारित दार्शनिक कविता” अछि।

प्रश्न 23327. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030: शेफालवका झाक “रे मन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आन्तरिक आह्वान पर आधारित दार्शनिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्तरिक आह्वान पर आधारित दार्शनिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आन्तरिक आह्वान पर आधारित दार्शनिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23328. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030: शेफालवका झाक “रे मन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शेफालवका झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शेफालवका झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23329. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030: शेफालवका झाक “रे मन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23330. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030: शेफालवका झाक “रे मन”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23331. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030: शेफालवका झाक “रे मन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23332. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030मे शेफालवका झाक “रे मन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक आह्वान पर आधारित दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2339, सूचकांक पंक्ति 1030मे शेफालवका झाक “रे मन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक आह्वान पर आधारित दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2340 : विदेह-सदेह 13 — प्रवीण चौधरी प्रतीक: देखही रौ वमता

प्रश्न 23333. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031: प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देखही रौ वमता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देखही रौ वमता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1031मे प्रवीण चौधरी प्रतीकक प्रविष्टि “देखही रौ वमता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23334. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031: प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23335. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031: प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23336. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031: प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम आ चैन चोरायब पर आधारित आधुनिक शैलीक कविता

उत्तर: घ. प्रेम आ चैन चोरायब पर आधारित आधुनिक शैलीक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम आ चैन चोरायब पर आधारित आधुनिक शैलीक कविता” अछि।

प्रश्न 23337. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031: प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम आ चैन चोरायब पर आधारित आधुनिक शैलीक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम आ चैन चोरायब पर आधारित आधुनिक शैलीक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम आ चैन चोरायब पर आधारित आधुनिक शैलीक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23338. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031: प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रवीण चौधरी प्रतीक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रवीण चौधरी प्रतीक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23339. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031: प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23340. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031: प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23341. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031: प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23342. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031मे प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम आ चैन चोरायब पर आधारित आधुनिक शैलीक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2340, सूचकांक पंक्ति 1031मे प्रवीण चौधरी प्रतीकक “देखही रौ वमता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम आ चैन चोरायब पर आधारित आधुनिक शैलीक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2341 : विदेह-सदेह 13 — सत्यनारायण झा: हे भगवान

प्रश्न 23343. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032: सत्यनारायण झाक “हे भगवान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हे भगवान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हे भगवान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1032मे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “हे भगवान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23344. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032: सत्यनारायण झाक “हे भगवान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23345. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032: सत्यनारायण झाक “हे भगवान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23346. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032: सत्यनारायण झाक “हे भगवान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रूपकात्मक शैली मे देसक स्थिति पर व्यंग्य

उत्तर: घ. रूपकात्मक शैली मे देसक स्थिति पर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रूपकात्मक शैली मे देसक स्थिति पर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 23347. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032: सत्यनारायण झाक “हे भगवान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रूपकात्मक शैली मे देसक स्थिति पर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रूपकात्मक शैली मे देसक स्थिति पर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रूपकात्मक शैली मे देसक स्थिति पर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23348. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032: सत्यनारायण झाक “हे भगवान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23349. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032: सत्यनारायण झाक “हे भगवान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23350. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032: सत्यनारायण झाक “हे भगवान”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23351. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032: सत्यनारायण झाक “हे भगवान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23352. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032मे सत्यनारायण झाक “हे भगवान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रूपकात्मक शैली मे देसक स्थिति पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2341, सूचकांक पंक्ति 1032मे सत्यनारायण झाक “हे भगवान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रूपकात्मक शैली मे देसक स्थिति पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2342 : विदेह-सदेह 13 — आशुतोष वमश्र: गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)

प्रश्न 23353. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033: आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1033मे आशुतोष वमश्रक प्रविष्टि “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23354. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033: आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23355. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033: आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 23356. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033: आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल सुलभ मानसिकता पर आधारित गीत

उत्तर: घ. बाल सुलभ मानसिकता पर आधारित गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल सुलभ मानसिकता पर आधारित गीत” अछि।

प्रश्न 23357. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033: आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल सुलभ मानसिकता पर आधारित गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल सुलभ मानसिकता पर आधारित गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल सुलभ मानसिकता पर आधारित गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23358. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033: आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशुतोष वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशुतोष वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23359. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033: आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23360. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033: आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23361. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033: आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23362. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033मे आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “बाल सुलभ मानसिकता पर आधारित गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2342, सूचकांक पंक्ति 1033मे आशुतोष वमश्रक “गीत (अहाँ वकए अखन एना छी...)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “बाल सुलभ मानसिकता पर आधारित गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2343 : विदेह-सदेह 13 — रूबी झा: गजल (१-३)

प्रश्न 23363. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034: रूबी झाक “गजल (१-३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-३)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1034मे रूबी झाक प्रविष्टि “गजल (१-३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23364. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034: रूबी झाक “गजल (१-३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23365. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034: रूबी झाक “गजल (१-३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 23366. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034: रूबी झाक “गजल (१-३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विरह, वेदना आ जीवनक नश्वरता पर आधारित तीनटा गजल

उत्तर: घ. विरह, वेदना आ जीवनक नश्वरता पर आधारित तीनटा गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विरह, वेदना आ जीवनक नश्वरता पर आधारित तीनटा गजल” अछि।

प्रश्न 23367. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034: रूबी झाक “गजल (१-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विरह, वेदना आ जीवनक नश्वरता पर आधारित तीनटा गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विरह, वेदना आ जीवनक नश्वरता पर आधारित तीनटा गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विरह, वेदना आ जीवनक नश्वरता पर आधारित तीनटा गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23368. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034: रूबी झाक “गजल (१-३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूबी झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूबी झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23369. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034: रूबी झाक “गजल (१-३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23370. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034: रूबी झाक “गजल (१-३)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23371. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034: रूबी झाक “गजल (१-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23372. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034मे रूबी झाक “गजल (१-३)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विरह, वेदना आ जीवनक नश्वरता पर आधारित तीनटा गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2343, सूचकांक पंक्ति 1034मे रूबी झाक “गजल (१-३)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विरह, वेदना आ जीवनक नश्वरता पर आधारित तीनटा गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2344 : विदेह-सदेह 13 — शावन्तलक्ष्मी चौधरी: जर-जाजन

प्रश्न 23373. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जर-जाजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जर-जाजन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1035मे शावन्तलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “जर-जाजन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23374. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23375. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23376. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जर-जाजन (बड़का भोज) पर आधारित वर्णनात्मक कविता

उत्तर: घ. जर-जाजन (बड़का भोज) पर आधारित वर्णनात्मक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जर-जाजन (बड़का भोज) पर आधारित वर्णनात्मक कविता” अछि।

प्रश्न 23377. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक लोक-संस्कृति आ पाक-पद्धतिक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक लोक-संस्कृति आ पाक-पद्धतिक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक लोक-संस्कृति आ पाक-पद्धतिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23378. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शावन्तलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शावन्तलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23379. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23380. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन”कें विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23381. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23382. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035मे शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिलाक लोक-संस्कृति आ पाक-पद्धतिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2344, सूचकांक पंक्ति 1035मे शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “जर-जाजन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिलाक लोक-संस्कृति आ पाक-पद्धतिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2345 : विदेह-सदेह 13 — शावन्तलक्ष्मी चौधरी: दुगापूजा

प्रश्न 23383. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दुगापूजा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुगापूजा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1036मे शावन्तलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “दुगापूजा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23384. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23385. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23386. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दुर्गापूजाक समय पर आधारित सांस्कृतिक कविता

उत्तर: घ. दुर्गापूजाक समय पर आधारित सांस्कृतिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दुर्गापूजाक समय पर आधारित सांस्कृतिक कविता” अछि।

प्रश्न 23387. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दुर्गापूजाक समय पर आधारित सांस्कृतिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुर्गापूजाक समय पर आधारित सांस्कृतिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दुर्गापूजाक समय पर आधारित सांस्कृतिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23388. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शावन्तलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शावन्तलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23389. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23390. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23391. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036: शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23392. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036मे शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दुर्गापूजाक समय पर आधारित सांस्कृतिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2345, सूचकांक पंक्ति 1036मे शावन्तलक्ष्मी चौधरीक “दुगापूजा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दुर्गापूजाक समय पर आधारित सांस्कृतिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2346 : विदेह-सदेह 13 — नंद विलास राय: वोट

प्रश्न 23393. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037: नंद विलास रायक “वोट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वोट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वोट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1037मे नंद विलास रायक प्रविष्टि “वोट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23394. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037: नंद विलास रायक “वोट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23395. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037: नंद विलास रायक “वोट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23396. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037: नंद विलास रायक “वोट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पंचायत चुनाव मे वोटक महत्व आ राजनीति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता

उत्तर: घ. पंचायत चुनाव मे वोटक महत्व आ राजनीति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पंचायत चुनाव मे वोटक महत्व आ राजनीति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता” अछि।

प्रश्न 23397. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037: नंद विलास रायक “वोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पंचायत चुनाव मे वोटक महत्व आ राजनीति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंचायत चुनाव मे वोटक महत्व आ राजनीति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पंचायत चुनाव मे वोटक महत्व आ राजनीति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23398. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037: नंद विलास रायक “वोट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नंद विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नंद विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23399. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037: नंद विलास रायक “वोट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23400. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037: नंद विलास रायक “वोट”कें विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23401. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037: नंद विलास रायक “वोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23402. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037मे नंद विलास रायक “वोट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पंचायत चुनाव मे वोटक महत्व आ राजनीति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2346, सूचकांक पंक्ति 1037मे नंद विलास रायक “वोट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पंचायत चुनाव मे वोटक महत्व आ राजनीति पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2347 : विदेह-सदेह 13 — पवन कुमार साह: विमिला वासी

प्रश्न 23403. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038: पवन कुमार साहक “विमिला वासी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विमिला वासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विमिला वासी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1038मे पवन कुमार साहक प्रविष्टि “विमिला वासी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23404. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038: पवन कुमार साहक “विमिला वासी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23405. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038: पवन कुमार साहक “विमिला वासी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23406. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038: पवन कुमार साहक “विमिला वासी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक गौरवशाली अतीत आ वर्तमानक जातिगत विभाजन पर आधारित जागरण कविता

उत्तर: घ. मिथिलाक गौरवशाली अतीत आ वर्तमानक जातिगत विभाजन पर आधारित जागरण कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक गौरवशाली अतीत आ वर्तमानक जातिगत विभाजन पर आधारित जागरण कविता” अछि।

प्रश्न 23407. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038: पवन कुमार साहक “विमिला वासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक गौरवशाली अतीत आ वर्तमानक जातिगत विभाजन पर आधारित जागरण कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक गौरवशाली अतीत आ वर्तमानक जातिगत विभाजन पर आधारित जागरण कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक गौरवशाली अतीत आ वर्तमानक जातिगत विभाजन पर आधारित जागरण कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23408. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038: पवन कुमार साहक “विमिला वासी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पवन कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पवन कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23409. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038: पवन कुमार साहक “विमिला वासी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23410. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038: पवन कुमार साहक “विमिला वासी”कें विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23411. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038: पवन कुमार साहक “विमिला वासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23412. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038मे पवन कुमार साहक “विमिला वासी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिलाक गौरवशाली अतीत आ वर्तमानक जातिगत विभाजन पर आधारित जागरण कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2347, सूचकांक पंक्ति 1038मे पवन कुमार साहक “विमिला वासी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिलाक गौरवशाली अतीत आ वर्तमानक जातिगत विभाजन पर आधारित जागरण कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2348 : विदेह-सदेह 13 — विवपन कुमार कर्ण: देखु केहेन ई भारत वॅनमार्

प्रश्न 23413. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039: विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देखु केहेन ई भारत वॅनमार्

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देखु केहेन ई भारत वॅनमार्

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1039मे विवपन कुमार कर्णक प्रविष्टि “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23414. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039: विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23415. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039: विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23416. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039: विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्तमान भारतक निर्माण प्रक्रिया पर व्यंग्य

उत्तर: घ. वर्तमान भारतक निर्माण प्रक्रिया पर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्तमान भारतक निर्माण प्रक्रिया पर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 23417. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039: विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्तमान भारतक निर्माण प्रक्रिया पर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्तमान भारतक निर्माण प्रक्रिया पर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्तमान भारतक निर्माण प्रक्रिया पर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23418. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039: विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विवपन कुमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विवपन कुमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23419. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039: विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23420. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039: विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23421. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039: विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23422. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039मे विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्तमान भारतक निर्माण प्रक्रिया पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2348, सूचकांक पंक्ति 1039मे विवपन कुमार कर्णक “देखु केहेन ई भारत वॅनमार्” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्तमान भारतक निर्माण प्रक्रिया पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2349 : विदेह-सदेह 13 — रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’: एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ ज...

प्रश्न 23423. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1040मे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क प्रविष्टि “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23424. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23425. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 23426. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आर्थिक असमानता पर आधारित गीत

उत्तर: घ. आर्थिक असमानता पर आधारित गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आर्थिक असमानता पर आधारित गीत” अछि।

प्रश्न 23427. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आर्थिक असमानता पर आधारित गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आर्थिक असमानता पर आधारित गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आर्थिक असमानता पर आधारित गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23428. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23429. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23430. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23431. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23432. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040मे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “आर्थिक असमानता पर आधारित गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2349, सूचकांक पंक्ति 1040मे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क “एकटा अनुपम गीत (तूमलोग केना कऽ जीविते...)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “आर्थिक असमानता पर आधारित गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2350 : विदेह-सदेह 13 — वबनीता झा: भूखल

प्रश्न 23433. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041: वबनीता झाक “भूखल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भूखल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भूखल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1041मे वबनीता झाक प्रविष्टि “भूखल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23434. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041: वबनीता झाक “भूखल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23435. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041: वबनीता झाक “भूखल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23436. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041: वबनीता झाक “भूखल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति आ मनुष्य दुनूक भूख के सूक्ष्म चित्रण पर आधारित दार्शनिक कविता

उत्तर: घ. प्रकृति आ मनुष्य दुनूक भूख के सूक्ष्म चित्रण पर आधारित दार्शनिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति आ मनुष्य दुनूक भूख के सूक्ष्म चित्रण पर आधारित दार्शनिक कविता” अछि।

प्रश्न 23437. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041: वबनीता झाक “भूखल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति आ मनुष्य दुनूक भूख के सूक्ष्म चित्रण पर आधारित दार्शनिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति आ मनुष्य दुनूक भूख के सूक्ष्म चित्रण पर आधारित दार्शनिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति आ मनुष्य दुनूक भूख के सूक्ष्म चित्रण पर आधारित दार्शनिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23438. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041: वबनीता झाक “भूखल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वबनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वबनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23439. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041: वबनीता झाक “भूखल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23440. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041: वबनीता झाक “भूखल”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23441. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041: वबनीता झाक “भूखल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23442. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041मे वबनीता झाक “भूखल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति आ मनुष्य दुनूक भूख के सूक्ष्म चित्रण पर आधारित दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2350, सूचकांक पंक्ति 1041मे वबनीता झाक “भूखल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति आ मनुष्य दुनूक भूख के सूक्ष्म चित्रण पर आधारित दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2351 : विदेह-सदेह 13 — वबनीता झा: प्रकृवत

प्रश्न 23443. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042: वबनीता झाक “प्रकृवत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रकृवत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृवत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1042मे वबनीता झाक प्रविष्टि “प्रकृवत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23444. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042: वबनीता झाक “प्रकृवत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23445. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042: वबनीता झाक “प्रकृवत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23446. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042: वबनीता झाक “प्रकृवत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति के मूक भाषा आ ओकर आत्मनिर्भरता पर आधारित सुन्दर कविता

उत्तर: घ. प्रकृति के मूक भाषा आ ओकर आत्मनिर्भरता पर आधारित सुन्दर कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति के मूक भाषा आ ओकर आत्मनिर्भरता पर आधारित सुन्दर कविता” अछि।

प्रश्न 23447. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042: वबनीता झाक “प्रकृवत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति के मूक भाषा आ ओकर आत्मनिर्भरता पर आधारित सुन्दर कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति के मूक भाषा आ ओकर आत्मनिर्भरता पर आधारित सुन्दर कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति के मूक भाषा आ ओकर आत्मनिर्भरता पर आधारित सुन्दर कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23448. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042: वबनीता झाक “प्रकृवत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वबनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वबनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23449. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042: वबनीता झाक “प्रकृवत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23450. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042: वबनीता झाक “प्रकृवत”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23451. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042: वबनीता झाक “प्रकृवत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23452. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042मे वबनीता झाक “प्रकृवत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति के मूक भाषा आ ओकर आत्मनिर्भरता पर आधारित सुन्दर कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2351, सूचकांक पंक्ति 1042मे वबनीता झाक “प्रकृवत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति के मूक भाषा आ ओकर आत्मनिर्भरता पर आधारित सुन्दर कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2352 : विदेह-सदेह 13 — बाल मुकुन्द पाठक: गजल (१-१०)

प्रश्न 23453. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-१०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-१०)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1043मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “गजल (१-१०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23454. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23455. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 23456. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दीपावली, विरह, प्रेम, जीवन-दर्शन, आ सामाजिक विसंगति पर आधारित दसटा गजल

उत्तर: घ. दीपावली, विरह, प्रेम, जीवन-दर्शन, आ सामाजिक विसंगति पर आधारित दसटा गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दीपावली, विरह, प्रेम, जीवन-दर्शन, आ सामाजिक विसंगति पर आधारित दसटा गजल” अछि।

प्रश्न 23457. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दीपावली, विरह, प्रेम, जीवन-दर्शन, आ सामाजिक विसंगति पर आधारित दसटा गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीपावली, विरह, प्रेम, जीवन-दर्शन, आ सामाजिक विसंगति पर आधारित दसटा गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दीपावली, विरह, प्रेम, जीवन-दर्शन, आ सामाजिक विसंगति पर आधारित दसटा गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23458. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23459. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23460. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23461. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23462. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “दीपावली, विरह, प्रेम, जीवन-दर्शन, आ सामाजिक विसंगति पर आधारित दसटा गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2352, सूचकांक पंक्ति 1043मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (१-१०)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “दीपावली, विरह, प्रेम, जीवन-दर्शन, आ सामाजिक विसंगति पर आधारित दसटा गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2353 : विदेह-सदेह 13 — सन्दीप कुमार साफी: कावतकक पूर्विमा

प्रश्न 23463. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044: सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कावतकक पूर्विमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कावतकक पूर्विमा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1044मे सन्दीप कुमार साफीक प्रविष्टि “कावतकक पूर्विमा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23464. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044: सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23465. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044: सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23466. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044: सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कार्तिक पूर्णिमाक मेला पर आधारित सांस्कृतिक कविता

उत्तर: घ. कार्तिक पूर्णिमाक मेला पर आधारित सांस्कृतिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कार्तिक पूर्णिमाक मेला पर आधारित सांस्कृतिक कविता” अछि।

प्रश्न 23467. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044: सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कार्तिक पूर्णिमाक मेला पर आधारित सांस्कृतिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कार्तिक पूर्णिमाक मेला पर आधारित सांस्कृतिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कार्तिक पूर्णिमाक मेला पर आधारित सांस्कृतिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23468. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044: सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23469. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044: सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23470. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044: सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23471. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044: सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23472. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044मे सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कार्तिक पूर्णिमाक मेला पर आधारित सांस्कृतिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2353, सूचकांक पंक्ति 1044मे सन्दीप कुमार साफीक “कावतकक पूर्विमा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कार्तिक पूर्णिमाक मेला पर आधारित सांस्कृतिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2354 : विदेह-सदेह 13 — सन्दीप कुमार साफी: गामक इनार

प्रश्न 23473. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045: सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गामक इनार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक इनार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1045मे सन्दीप कुमार साफीक प्रविष्टि “गामक इनार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23474. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045: सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23475. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045: सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23476. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045: सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गामक पुरान इनार आ ओकर विलुप्त होइत महत्व पर आधारित विरह-कविता

उत्तर: घ. गामक पुरान इनार आ ओकर विलुप्त होइत महत्व पर आधारित विरह-कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक पुरान इनार आ ओकर विलुप्त होइत महत्व पर आधारित विरह-कविता” अछि।

प्रश्न 23477. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045: सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक पुरान इनार आ ओकर विलुप्त होइत महत्व पर आधारित विरह-कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक पुरान इनार आ ओकर विलुप्त होइत महत्व पर आधारित विरह-कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक पुरान इनार आ ओकर विलुप्त होइत महत्व पर आधारित विरह-कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23478. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045: सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23479. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045: सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23480. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045: सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23481. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045: सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23482. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045मे सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक पुरान इनार आ ओकर विलुप्त होइत महत्व पर आधारित विरह-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2354, सूचकांक पंक्ति 1045मे सन्दीप कुमार साफीक “गामक इनार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक पुरान इनार आ ओकर विलुप्त होइत महत्व पर आधारित विरह-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2355 : विदेह-सदेह 13 — सन्दीप कुमार साफी: माघक शीतलहरी

प्रश्न 23483. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046: सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माघक शीतलहरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माघक शीतलहरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1046मे सन्दीप कुमार साफीक प्रविष्टि “माघक शीतलहरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23484. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046: सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23485. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046: सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23486. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046: सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माघ महिनाक जाड़ आ ओकर सँ जनजीवन पर पड़यबला प्रभाव पर आधारित कविता

उत्तर: घ. माघ महिनाक जाड़ आ ओकर सँ जनजीवन पर पड़यबला प्रभाव पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माघ महिनाक जाड़ आ ओकर सँ जनजीवन पर पड़यबला प्रभाव पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23487. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046: सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माघ महिनाक जाड़ आ ओकर सँ जनजीवन पर पड़यबला प्रभाव पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माघ महिनाक जाड़ आ ओकर सँ जनजीवन पर पड़यबला प्रभाव पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माघ महिनाक जाड़ आ ओकर सँ जनजीवन पर पड़यबला प्रभाव पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23488. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046: सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23489. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046: सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23490. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046: सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23491. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046: सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23492. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046मे सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माघ महिनाक जाड़ आ ओकर सँ जनजीवन पर पड़यबला प्रभाव पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2355, सूचकांक पंक्ति 1046मे सन्दीप कुमार साफीक “माघक शीतलहरी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माघ महिनाक जाड़ आ ओकर सँ जनजीवन पर पड़यबला प्रभाव पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2356 : विदेह-सदेह 13 — सन्दीप कुमार साफी: रसगुल्लाक जबार

प्रश्न 23493. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047: सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रसगुल्लाक जबार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रसगुल्लाक जबार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1047मे सन्दीप कुमार साफीक प्रविष्टि “रसगुल्लाक जबार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23494. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047: सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23495. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047: सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23496. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047: सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन मे भोज आ नोतक सहज चित्रण पर आधारित हास्य-विनोद कविता

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन मे भोज आ नोतक सहज चित्रण पर आधारित हास्य-विनोद कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन मे भोज आ नोतक सहज चित्रण पर आधारित हास्य-विनोद कविता” अछि।

प्रश्न 23497. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047: सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवन मे भोज आ नोतक सहज चित्रण पर आधारित हास्य-विनोद कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवन मे भोज आ नोतक सहज चित्रण पर आधारित हास्य-विनोद कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन मे भोज आ नोतक सहज चित्रण पर आधारित हास्य-विनोद कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23498. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047: सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23499. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047: सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23500. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047: सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23501. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047: सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23502. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047मे सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण जीवन मे भोज आ नोतक सहज चित्रण पर आधारित हास्य-विनोद कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2356, सूचकांक पंक्ति 1047मे सन्दीप कुमार साफीक “रसगुल्लाक जबार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण जीवन मे भोज आ नोतक सहज चित्रण पर आधारित हास्य-विनोद कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2357 : विदेह-सदेह 13 — अंशु माला पाण्डेय: विमिला महान

प्रश्न 23503. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048: अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विमिला महान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विमिला महान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1048मे अंशु माला पाण्डेयक प्रविष्टि “विमिला महान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23504. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048: अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23505. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048: अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 23506. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048: अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक खान-पान आ संस्कृति के गौरवगान पर आधारित लोक-शैलीक कविता

उत्तर: घ. मिथिलाक खान-पान आ संस्कृति के गौरवगान पर आधारित लोक-शैलीक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक खान-पान आ संस्कृति के गौरवगान पर आधारित लोक-शैलीक कविता” अछि।

प्रश्न 23507. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048: अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक खान-पान आ संस्कृति के गौरवगान पर आधारित लोक-शैलीक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक खान-पान आ संस्कृति के गौरवगान पर आधारित लोक-शैलीक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक खान-पान आ संस्कृति के गौरवगान पर आधारित लोक-शैलीक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23508. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048: अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अंशु माला पाण्डेय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अंशु माला पाण्डेय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23509. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048: अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23510. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048: अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23511. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048: अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23512. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048मे अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिलाक खान-पान आ संस्कृति के गौरवगान पर आधारित लोक-शैलीक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2357, सूचकांक पंक्ति 1048मे अंशु माला पाण्डेयक “विमिला महान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिलाक खान-पान आ संस्कृति के गौरवगान पर आधारित लोक-शैलीक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2358 : विदेह-सदेह 13 — विनीत उत्पल: गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)

प्रश्न 23513. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049: विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1049मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23514. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049: विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23515. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049: विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 23516. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049: विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-प्रेमक सुन्दर चित्रण पर आधारित गजल

उत्तर: घ. मातृ-प्रेमक सुन्दर चित्रण पर आधारित गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-प्रेमक सुन्दर चित्रण पर आधारित गजल” अछि।

प्रश्न 23517. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049: विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-प्रेमक सुन्दर चित्रण पर आधारित गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-प्रेमक सुन्दर चित्रण पर आधारित गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-प्रेमक सुन्दर चित्रण पर आधारित गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23518. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049: विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23519. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049: विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23520. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049: विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23521. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049: विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23522. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049मे विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “मातृ-प्रेमक सुन्दर चित्रण पर आधारित गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2358, सूचकांक पंक्ति 1049मे विनीत उत्पलक “गजल (नेनामे जखन कानैत रही...)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “मातृ-प्रेमक सुन्दर चित्रण पर आधारित गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2359 : विदेह-सदेह 13 — अवनल मवल्लक: गजल (१-२)

प्रश्न 23523. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050: अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1050मे अवनल मवल्लकक प्रविष्टि “गजल (१-२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23524. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050: अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23525. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050: अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 23526. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050: अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम, विरह आ भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित दूटा गजल

उत्तर: घ. प्रेम, विरह आ भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित दूटा गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, विरह आ भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित दूटा गजल” अछि।

प्रश्न 23527. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050: अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम, विरह आ भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित दूटा गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम, विरह आ भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित दूटा गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, विरह आ भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित दूटा गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23528. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050: अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अवनल मवल्लक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अवनल मवल्लक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23529. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050: अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23530. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050: अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23531. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050: अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23532. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050मे अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम, विरह आ भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित दूटा गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2359, सूचकांक पंक्ति 1050मे अवनल मवल्लकक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम, विरह आ भाई-बहिनक सम्बन्ध पर आधारित दूटा गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2360 : विदेह-सदेह 13 — वकशन कारीगर: लोक करए लूटमार जेकाँ

प्रश्न 23533. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051: वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लोक करए लूटमार जेकाँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक करए लूटमार जेकाँ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1051मे वकशन कारीगरक प्रविष्टि “लोक करए लूटमार जेकाँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23534. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051: वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23535. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051: वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता (हास्य)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता (हास्य)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता (हास्य)” अछि।

प्रश्न 23536. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051: वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भ्रष्टाचार आ लूटमार के सामान्यीकरण पर आधारित तीखी व्यंग्य कविता

उत्तर: घ. भ्रष्टाचार आ लूटमार के सामान्यीकरण पर आधारित तीखी व्यंग्य कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार आ लूटमार के सामान्यीकरण पर आधारित तीखी व्यंग्य कविता” अछि।

प्रश्न 23537. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051: वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भ्रष्टाचार आ लूटमार के सामान्यीकरण पर आधारित तीखी व्यंग्य कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचार आ लूटमार के सामान्यीकरण पर आधारित तीखी व्यंग्य कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार आ लूटमार के सामान्यीकरण पर आधारित तीखी व्यंग्य कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23538. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051: वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वकशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता (हास्य)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वकशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता (हास्य)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23539. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051: वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23540. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051: वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता (हास्य)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता (हास्य)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23541. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051: वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23542. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051मे वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ” प्रविष्टि पद्य, कविता (हास्य) आ “भ्रष्टाचार आ लूटमार के सामान्यीकरण पर आधारित तीखी व्यंग्य कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2360, सूचकांक पंक्ति 1051मे वकशन कारीगरक “लोक करए लूटमार जेकाँ” प्रविष्टि पद्य, कविता (हास्य) आ “भ्रष्टाचार आ लूटमार के सामान्यीकरण पर आधारित तीखी व्यंग्य कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2361 : विदेह-सदेह 13 — वशिकुमार झा ‘वटल्लू’: वबना रदीफक बाल-गजल

प्रश्न 23543. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052: वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वबना रदीफक बाल-गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वबना रदीफक बाल-गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1052मे वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क प्रविष्टि “वबना रदीफक बाल-गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23544. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052: वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23545. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052: वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-गजल” अछि।

प्रश्न 23546. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052: वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्कूल जेबाक दिनचर्या पर आधारित बाल मनोविज्ञान सँ युक्त गजल

उत्तर: घ. स्कूल जेबाक दिनचर्या पर आधारित बाल मनोविज्ञान सँ युक्त गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्कूल जेबाक दिनचर्या पर आधारित बाल मनोविज्ञान सँ युक्त गजल” अछि।

प्रश्न 23547. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052: वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्कूल जेबाक दिनचर्या पर आधारित बाल मनोविज्ञान सँ युक्त गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्कूल जेबाक दिनचर्या पर आधारित बाल मनोविज्ञान सँ युक्त गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्कूल जेबाक दिनचर्या पर आधारित बाल मनोविज्ञान सँ युक्त गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23548. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052: वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वशिकुमार झा ‘वटल्लू’, विधा पद्य, उप-विधा बाल-गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वशिकुमार झा ‘वटल्लू’, विधा पद्य, उप-विधा बाल-गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23549. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052: वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23550. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052: वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23551. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052: वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23552. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052मे वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल-गजल आ “स्कूल जेबाक दिनचर्या पर आधारित बाल मनोविज्ञान सँ युक्त गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2361, सूचकांक पंक्ति 1052मे वशिकुमार झा ‘वटल्लू’क “वबना रदीफक बाल-गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल-गजल आ “स्कूल जेबाक दिनचर्या पर आधारित बाल मनोविज्ञान सँ युक्त गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2362 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: बेटी

प्रश्न 23553. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053: मुन्नी कामतक “बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1053मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “बेटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23554. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053: मुन्नी कामतक “बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23555. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053: मुन्नी कामतक “बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23556. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053: मुन्नी कामतक “बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटी-बेटाक अन्तर पर पितृ-सुलभ प्रश्न सँ आरम्भ बाल कविता

उत्तर: घ. बेटी-बेटाक अन्तर पर पितृ-सुलभ प्रश्न सँ आरम्भ बाल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटी-बेटाक अन्तर पर पितृ-सुलभ प्रश्न सँ आरम्भ बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23557. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053: मुन्नी कामतक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेटी-बेटाक अन्तर पर पितृ-सुलभ प्रश्न सँ आरम्भ बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी-बेटाक अन्तर पर पितृ-सुलभ प्रश्न सँ आरम्भ बाल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटी-बेटाक अन्तर पर पितृ-सुलभ प्रश्न सँ आरम्भ बाल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23558. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053: मुन्नी कामतक “बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23559. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053: मुन्नी कामतक “बेटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23560. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053: मुन्नी कामतक “बेटी”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23561. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053: मुन्नी कामतक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23562. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053मे मुन्नी कामतक “बेटी” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बेटी-बेटाक अन्तर पर पितृ-सुलभ प्रश्न सँ आरम्भ बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2362, सूचकांक पंक्ति 1053मे मुन्नी कामतक “बेटी” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बेटी-बेटाक अन्तर पर पितृ-सुलभ प्रश्न सँ आरम्भ बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2363 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: कारी-बजार

प्रश्न 23563. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054: मुन्नी कामतक “कारी-बजार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कारी-बजार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कारी-बजार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1054मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “कारी-बजार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23564. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054: मुन्नी कामतक “कारी-बजार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23565. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054: मुन्नी कामतक “कारी-बजार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23566. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054: मुन्नी कामतक “कारी-बजार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देश मे फैलल कालाबाजारी पर आधारित बाल कविता

उत्तर: घ. देश मे फैलल कालाबाजारी पर आधारित बाल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देश मे फैलल कालाबाजारी पर आधारित बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23567. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054: मुन्नी कामतक “कारी-बजार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देश मे फैलल कालाबाजारी पर आधारित बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देश मे फैलल कालाबाजारी पर आधारित बाल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देश मे फैलल कालाबाजारी पर आधारित बाल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23568. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054: मुन्नी कामतक “कारी-बजार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23569. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054: मुन्नी कामतक “कारी-बजार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23570. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054: मुन्नी कामतक “कारी-बजार”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23571. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054: मुन्नी कामतक “कारी-बजार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23572. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054मे मुन्नी कामतक “कारी-बजार” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “देश मे फैलल कालाबाजारी पर आधारित बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2363, सूचकांक पंक्ति 1054मे मुन्नी कामतक “कारी-बजार” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “देश मे फैलल कालाबाजारी पर आधारित बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2364 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: शब्दक खेल

प्रश्न 23573. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055: मुन्नी कामतक “शब्दक खेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शब्दक खेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शब्दक खेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1055मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “शब्दक खेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23574. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055: मुन्नी कामतक “शब्दक खेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23575. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055: मुन्नी कामतक “शब्दक खेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23576. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055: मुन्नी कामतक “शब्दक खेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माय आ बच्चाक संवाद पर आधारित शैक्षिक बाल कविता

उत्तर: घ. माय आ बच्चाक संवाद पर आधारित शैक्षिक बाल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माय आ बच्चाक संवाद पर आधारित शैक्षिक बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23577. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055: मुन्नी कामतक “शब्दक खेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माय आ बच्चाक संवाद पर आधारित शैक्षिक बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माय आ बच्चाक संवाद पर आधारित शैक्षिक बाल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माय आ बच्चाक संवाद पर आधारित शैक्षिक बाल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23578. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055: मुन्नी कामतक “शब्दक खेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23579. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055: मुन्नी कामतक “शब्दक खेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23580. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055: मुन्नी कामतक “शब्दक खेल”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23581. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055: मुन्नी कामतक “शब्दक खेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23582. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055मे मुन्नी कामतक “शब्दक खेल” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “माय आ बच्चाक संवाद पर आधारित शैक्षिक बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2364, सूचकांक पंक्ति 1055मे मुन्नी कामतक “शब्दक खेल” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “माय आ बच्चाक संवाद पर आधारित शैक्षिक बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2365 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: मां बता तूँ एगो बात

प्रश्न 23583. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056: मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मां बता तूँ एगो बात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मां बता तूँ एगो बात

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1056मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “मां बता तूँ एगो बात” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23584. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056: मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23585. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056: मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23586. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056: मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति के रहस्य पर आधारित बाल-जिज्ञासा सँ भरल कविता

उत्तर: घ. प्रकृति के रहस्य पर आधारित बाल-जिज्ञासा सँ भरल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति के रहस्य पर आधारित बाल-जिज्ञासा सँ भरल कविता” अछि।

प्रश्न 23587. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056: मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति के रहस्य पर आधारित बाल-जिज्ञासा सँ भरल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति के रहस्य पर आधारित बाल-जिज्ञासा सँ भरल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति के रहस्य पर आधारित बाल-जिज्ञासा सँ भरल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23588. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056: मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23589. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056: मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23590. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056: मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23591. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056: मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23592. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056मे मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “प्रकृति के रहस्य पर आधारित बाल-जिज्ञासा सँ भरल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2365, सूचकांक पंक्ति 1056मे मुन्नी कामतक “मां बता तूँ एगो बात” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “प्रकृति के रहस्य पर आधारित बाल-जिज्ञासा सँ भरल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2366 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: अनहार घरमे हत्या

प्रश्न 23593. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057: मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनहार घरमे हत्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनहार घरमे हत्या

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1057मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “अनहार घरमे हत्या” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23594. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057: मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23595. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057: मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23596. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057: मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गर्भ मे बेटीक हत्या पर आधारित बाल कविता

उत्तर: घ. गर्भ मे बेटीक हत्या पर आधारित बाल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गर्भ मे बेटीक हत्या पर आधारित बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23597. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057: मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गर्भ मे बेटीक हत्या पर आधारित बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गर्भ मे बेटीक हत्या पर आधारित बाल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गर्भ मे बेटीक हत्या पर आधारित बाल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23598. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057: मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23599. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057: मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23600. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057: मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23601. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057: मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23602. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057मे मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “गर्भ मे बेटीक हत्या पर आधारित बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2366, सूचकांक पंक्ति 1057मे मुन्नी कामतक “अनहार घरमे हत्या” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “गर्भ मे बेटीक हत्या पर आधारित बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2367 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: जतरा

प्रश्न 23603. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058: मुन्नी कामतक “जतरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जतरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जतरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1058मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “जतरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23604. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058: मुन्नी कामतक “जतरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23605. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058: मुन्नी कामतक “जतरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23606. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058: मुन्नी कामतक “जतरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मेला घुमबाक बाल-सुलभ इच्छा पर आधारित कविता

उत्तर: घ. मेला घुमबाक बाल-सुलभ इच्छा पर आधारित कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मेला घुमबाक बाल-सुलभ इच्छा पर आधारित कविता” अछि।

प्रश्न 23607. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058: मुन्नी कामतक “जतरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मेला घुमबाक बाल-सुलभ इच्छा पर आधारित कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेला घुमबाक बाल-सुलभ इच्छा पर आधारित कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मेला घुमबाक बाल-सुलभ इच्छा पर आधारित कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23608. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058: मुन्नी कामतक “जतरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23609. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058: मुन्नी कामतक “जतरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23610. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058: मुन्नी कामतक “जतरा”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23611. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058: मुन्नी कामतक “जतरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23612. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058मे मुन्नी कामतक “जतरा” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “मेला घुमबाक बाल-सुलभ इच्छा पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2367, सूचकांक पंक्ति 1058मे मुन्नी कामतक “जतरा” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “मेला घुमबाक बाल-सुलभ इच्छा पर आधारित कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2368 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: अंकक मेल

प्रश्न 23613. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059: मुन्नी कामतक “अंकक मेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अंकक मेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंकक मेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1059मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “अंकक मेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23614. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059: मुन्नी कामतक “अंकक मेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23615. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059: मुन्नी कामतक “अंकक मेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23616. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059: मुन्नी कामतक “अंकक मेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अंक जोड़ के माध्यम सँ एकताक सन्देश दैत शैक्षिक बाल कविता

उत्तर: घ. अंक जोड़ के माध्यम सँ एकताक सन्देश दैत शैक्षिक बाल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अंक जोड़ के माध्यम सँ एकताक सन्देश दैत शैक्षिक बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23617. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059: मुन्नी कामतक “अंकक मेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अंक जोड़ के माध्यम सँ एकताक सन्देश दैत शैक्षिक बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंक जोड़ के माध्यम सँ एकताक सन्देश दैत शैक्षिक बाल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अंक जोड़ के माध्यम सँ एकताक सन्देश दैत शैक्षिक बाल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23618. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059: मुन्नी कामतक “अंकक मेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23619. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059: मुन्नी कामतक “अंकक मेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23620. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059: मुन्नी कामतक “अंकक मेल”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23621. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059: मुन्नी कामतक “अंकक मेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23622. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059मे मुन्नी कामतक “अंकक मेल” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “अंक जोड़ के माध्यम सँ एकताक सन्देश दैत शैक्षिक बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2368, सूचकांक पंक्ति 1059मे मुन्नी कामतक “अंकक मेल” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “अंक जोड़ के माध्यम सँ एकताक सन्देश दैत शैक्षिक बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2369 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: माय हमरा एगो बवहन आवन दे

प्रश्न 23623. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060: मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माय हमरा एगो बवहन आवन दे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माय हमरा एगो बवहन आवन दे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1060मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “माय हमरा एगो बवहन आवन दे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23624. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060: मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23625. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060: मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23626. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060: मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाई-बहिनक स्नेह पर आधारित बाल कविता

उत्तर: घ. भाई-बहिनक स्नेह पर आधारित बाल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाई-बहिनक स्नेह पर आधारित बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23627. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060: मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाई-बहिनक स्नेह पर आधारित बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाई-बहिनक स्नेह पर आधारित बाल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाई-बहिनक स्नेह पर आधारित बाल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23628. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060: मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23629. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060: मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23630. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060: मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23631. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060: मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23632. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060मे मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “भाई-बहिनक स्नेह पर आधारित बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2369, सूचकांक पंक्ति 1060मे मुन्नी कामतक “माय हमरा एगो बवहन आवन दे” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “भाई-बहिनक स्नेह पर आधारित बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2370 : विदेह-सदेह 13 — राजदेव मण्डल: वीपपर दीप

प्रश्न 23633. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061: राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वीपपर दीप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीपपर दीप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1061मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “वीपपर दीप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23634. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061: राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23635. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061: राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23636. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061: राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दीपक के समर्पण भाव आ प्रकाश के माध्यम सँ बाल-सुलभ नैतिक शिक्षा

उत्तर: घ. दीपक के समर्पण भाव आ प्रकाश के माध्यम सँ बाल-सुलभ नैतिक शिक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दीपक के समर्पण भाव आ प्रकाश के माध्यम सँ बाल-सुलभ नैतिक शिक्षा” अछि।

प्रश्न 23637. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061: राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दीपक के समर्पण भाव आ प्रकाश के माध्यम सँ बाल-सुलभ नैतिक शिक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीपक के समर्पण भाव आ प्रकाश के माध्यम सँ बाल-सुलभ नैतिक शिक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दीपक के समर्पण भाव आ प्रकाश के माध्यम सँ बाल-सुलभ नैतिक शिक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23638. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061: राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23639. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061: राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23640. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061: राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23641. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061: राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23642. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061मे राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “दीपक के समर्पण भाव आ प्रकाश के माध्यम सँ बाल-सुलभ नैतिक शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2370, सूचकांक पंक्ति 1061मे राजदेव मण्डलक “वीपपर दीप” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “दीपक के समर्पण भाव आ प्रकाश के माध्यम सँ बाल-सुलभ नैतिक शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2371 : विदेह-सदेह 13 — रामविलास साहु: मेघक बवरआती

प्रश्न 23643. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062: रामविलास साहुक “मेघक बवरआती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मेघक बवरआती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेघक बवरआती

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1062मे रामविलास साहुक प्रविष्टि “मेघक बवरआती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23644. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062: रामविलास साहुक “मेघक बवरआती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23645. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062: रामविलास साहुक “मेघक बवरआती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23646. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062: रामविलास साहुक “मेघक बवरआती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मेघ के बारातक रूप मे चित्रित करैत प्रकृति-वर्णन पर आधारित बाल कविता

उत्तर: घ. मेघ के बारातक रूप मे चित्रित करैत प्रकृति-वर्णन पर आधारित बाल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मेघ के बारातक रूप मे चित्रित करैत प्रकृति-वर्णन पर आधारित बाल कविता” अछि।

प्रश्न 23647. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062: रामविलास साहुक “मेघक बवरआती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मेघ के बारातक रूप मे चित्रित करैत प्रकृति-वर्णन पर आधारित बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेघ के बारातक रूप मे चित्रित करैत प्रकृति-वर्णन पर आधारित बाल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मेघ के बारातक रूप मे चित्रित करैत प्रकृति-वर्णन पर आधारित बाल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23648. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062: रामविलास साहुक “मेघक बवरआती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामविलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामविलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23649. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062: रामविलास साहुक “मेघक बवरआती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23650. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062: रामविलास साहुक “मेघक बवरआती”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23651. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062: रामविलास साहुक “मेघक बवरआती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23652. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062मे रामविलास साहुक “मेघक बवरआती” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “मेघ के बारातक रूप मे चित्रित करैत प्रकृति-वर्णन पर आधारित बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2371, सूचकांक पंक्ति 1062मे रामविलास साहुक “मेघक बवरआती” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “मेघ के बारातक रूप मे चित्रित करैत प्रकृति-वर्णन पर आधारित बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2372 : विदेह-सदेह 13 — बाल मुकुन्द पाठक: बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)

प्रश्न 23653. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063: बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1063मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23654. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063: बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23655. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063: बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 23656. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063: बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल

उत्तर: घ. मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल” अछि।

प्रश्न 23657. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063: बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23658. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063: बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23659. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063: बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23660. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063: बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23661. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063: बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23662. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063मे बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2372, सूचकांक पंक्ति 1063मे बाल मुकुन्द पाठकक “बाल गजल (मेला चलब हमहुँ...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2373 : विदेह-सदेह 13 — जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’: बाल गजल (१-२)

प्रश्न 23663. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (१-२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (१-२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1064मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क प्रविष्टि “बाल गजल (१-२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23664. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23665. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 23666. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति आ जीवन-मूल्य पर आधारित दूटा बाल गजल

उत्तर: घ. प्रकृति आ जीवन-मूल्य पर आधारित दूटा बाल गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति आ जीवन-मूल्य पर आधारित दूटा बाल गजल” अछि।

प्रश्न 23667. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति आ जीवन-मूल्य पर आधारित दूटा बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति आ जीवन-मूल्य पर आधारित दूटा बाल गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति आ जीवन-मूल्य पर आधारित दूटा बाल गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23668. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23669. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23670. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23671. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23672. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “प्रकृति आ जीवन-मूल्य पर आधारित दूटा बाल गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2373, सूचकांक पंक्ति 1064मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “प्रकृति आ जीवन-मूल्य पर आधारित दूटा बाल गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2374 : विदेह-सदेह 13 — जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’: बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)

प्रश्न 23673. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1065मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क प्रविष्टि “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23674. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23675. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गीत” अछि।

प्रश्न 23676. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महात्मा गान्धी के जीवन पर आधारित बाल गीत

उत्तर: घ. महात्मा गान्धी के जीवन पर आधारित बाल गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महात्मा गान्धी के जीवन पर आधारित बाल गीत” अछि।

प्रश्न 23677. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महात्मा गान्धी के जीवन पर आधारित बाल गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महात्मा गान्धी के जीवन पर आधारित बाल गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महात्मा गान्धी के जीवन पर आधारित बाल गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23678. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’, विधा पद्य, उप-विधा बाल गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’, विधा पद्य, उप-विधा बाल गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23679. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23680. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23681. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23682. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गीत आ “महात्मा गान्धी के जीवन पर आधारित बाल गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2374, सूचकांक पंक्ति 1065मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अवनल’क “बाल गीत (सत्य अवहंसाकेर पुजारी...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गीत आ “महात्मा गान्धी के जीवन पर आधारित बाल गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2375 : विदेह-सदेह 13 — अवमत वमश्र: बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)

प्रश्न 23683. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066: अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1066मे अवमत वमश्रक प्रविष्टि “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23684. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066: अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23685. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066: अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 23686. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066: अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभूमि प्रेम आ नैतिक मूल्य पर आधारित प्रेरणादायक बाल गजल

उत्तर: घ. मातृभूमि प्रेम आ नैतिक मूल्य पर आधारित प्रेरणादायक बाल गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभूमि प्रेम आ नैतिक मूल्य पर आधारित प्रेरणादायक बाल गजल” अछि।

प्रश्न 23687. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066: अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृभूमि प्रेम आ नैतिक मूल्य पर आधारित प्रेरणादायक बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभूमि प्रेम आ नैतिक मूल्य पर आधारित प्रेरणादायक बाल गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृभूमि प्रेम आ नैतिक मूल्य पर आधारित प्रेरणादायक बाल गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23688. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066: अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अवमत वमश्र, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23689. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066: अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23690. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066: अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23691. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066: अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23692. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066मे अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “मातृभूमि प्रेम आ नैतिक मूल्य पर आधारित प्रेरणादायक बाल गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2375, सूचकांक पंक्ति 1066मे अवमत वमश्रक “बाल गजल (माँवटकेँ कर जोवि...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “मातृभूमि प्रेम आ नैतिक मूल्य पर आधारित प्रेरणादायक बाल गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2376 : विदेह-सदेह 13 — जगदानन्द झा मनु: बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)

प्रश्न 23693. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1067मे जगदानन्द झा मनुक प्रविष्टि “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23694. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23695. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 23696. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल

उत्तर: घ. मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल” अछि।

प्रश्न 23697. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23698. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23699. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23700. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)”केँ विदेह-सदेह 13क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23701. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067: जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23702. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067मे जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2376, सूचकांक पंक्ति 1067मे जगदानन्द झा मनुक “बाल गजल (चलै चुनमुन चलै...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “मेला घुमबाक बाल-सुलभ खुशी पर आधारित गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2377 : विदेह-सदेह 13 — जगदानन्द झा मनु: मावटक बासन (बाल लघुकथा)

प्रश्न 23703. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068: जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मावटक बासन (बाल लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मावटक बासन (बाल लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1068मे जगदानन्द झा मनुक प्रविष्टि “मावटक बासन (बाल लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23704. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068: जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23705. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068: जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल लघुकथा” अछि।

प्रश्न 23706. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068: जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कुम्हारक बेटाक कलात्मक विकास पर आधारित बाल-कथा

उत्तर: घ. कुम्हारक बेटाक कलात्मक विकास पर आधारित बाल-कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कुम्हारक बेटाक कलात्मक विकास पर आधारित बाल-कथा” अछि।

प्रश्न 23707. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068: जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कुम्हारक बेटाक कलात्मक विकास पर आधारित बाल-कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुम्हारक बेटाक कलात्मक विकास पर आधारित बाल-कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कुम्हारक बेटाक कलात्मक विकास पर आधारित बाल-कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23708. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068: जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा गद्य, उप-विधा बाल लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा मनु, विधा गद्य, उप-विधा बाल लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23709. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068: जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23710. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068: जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23711. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068: जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23712. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068मे जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल लघुकथा आ “कुम्हारक बेटाक कलात्मक विकास पर आधारित बाल-कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2377, सूचकांक पंक्ति 1068मे जगदानन्द झा मनुक “मावटक बासन (बाल लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल लघुकथा आ “कुम्हारक बेटाक कलात्मक विकास पर आधारित बाल-कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2378 : विदेह-सदेह 13 — दुगानन्द मण्डल: नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा

प्रश्न 23713. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069: दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1069मे दुगानन्द मण्डलक प्रविष्टि “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23714. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069: दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23715. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069: दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-साहित्य समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-साहित्य समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-साहित्य समीक्षा” अछि।

प्रश्न 23716. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069: दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. श्रीमती प्रीति ठाकुर द्वारा लिखित मैथिली चित्रकथाक समीक्षा

उत्तर: घ. श्रीमती प्रीति ठाकुर द्वारा लिखित मैथिली चित्रकथाक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “श्रीमती प्रीति ठाकुर द्वारा लिखित मैथिली चित्रकथाक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 23717. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069: दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. श्रीमती प्रीति ठाकुर द्वारा लिखित मैथिली चित्रकथाक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रीमती प्रीति ठाकुर द्वारा लिखित मैथिली चित्रकथाक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “श्रीमती प्रीति ठाकुर द्वारा लिखित मैथिली चित्रकथाक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23718. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069: दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा बाल-साहित्य समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा बाल-साहित्य समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23719. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069: दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23720. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069: दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा”कें विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-साहित्य समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-साहित्य समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23721. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069: दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23722. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069मे दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा” प्रविष्टि गद्य, बाल-साहित्य समीक्षा आ “श्रीमती प्रीति ठाकुर द्वारा लिखित मैथिली चित्रकथाक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2378, सूचकांक पंक्ति 1069मे दुगानन्द मण्डलक “नेना लेल सुन्दर वचत्रकिा” प्रविष्टि गद्य, बाल-साहित्य समीक्षा आ “श्रीमती प्रीति ठाकुर द्वारा लिखित मैथिली चित्रकथाक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2379 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: हत्यारा समाज

प्रश्न 23723. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070: मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हत्यारा समाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हत्यारा समाज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1070मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “हत्यारा समाज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23724. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070: मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23725. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070: मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एकांकी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एकांकी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “एकांकी” अछि।

प्रश्न 23726. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070: मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित सामाजिक एकांकी

उत्तर: घ. कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित सामाजिक एकांकी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित सामाजिक एकांकी” अछि।

प्रश्न 23727. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070: मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित सामाजिक एकांकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित सामाजिक एकांकी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित सामाजिक एकांकी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23728. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070: मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23729. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070: मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23730. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070: मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ एकांकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ एकांकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23731. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070: मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23732. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070मे मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज” प्रविष्टि गद्य, एकांकी आ “कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित सामाजिक एकांकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2379, सूचकांक पंक्ति 1070मे मुन्नी कामतक “हत्यारा समाज” प्रविष्टि गद्य, एकांकी आ “कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित सामाजिक एकांकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2380 : विदेह-सदेह 13 — मुन्नी कामत: वजन्दगीक मोल

प्रश्न 23733. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071: मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वजन्दगीक मोल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वजन्दगीक मोल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1071मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “वजन्दगीक मोल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23734. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071: मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23735. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071: मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एकांकी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एकांकी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “एकांकी” अछि।

प्रश्न 23736. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071: मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मनुष्य जीवनक मूल्य आ दवा कम्पनीक क्रूर परीक्षण पर आधारित एकांकी

उत्तर: घ. मनुष्य जीवनक मूल्य आ दवा कम्पनीक क्रूर परीक्षण पर आधारित एकांकी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मनुष्य जीवनक मूल्य आ दवा कम्पनीक क्रूर परीक्षण पर आधारित एकांकी” अछि।

प्रश्न 23737. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071: मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पूँजीवादी शोषणक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूँजीवादी शोषणक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पूँजीवादी शोषणक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23738. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071: मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23739. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071: मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23740. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071: मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ एकांकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ एकांकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23741. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071: मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23742. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071मे मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल” प्रविष्टि गद्य, एकांकी आ “पूँजीवादी शोषणक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2380, सूचकांक पंक्ति 1071मे मुन्नी कामतक “वजन्दगीक मोल” प्रविष्टि गद्य, एकांकी आ “पूँजीवादी शोषणक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2381 : विदेह-सदेह 13 — महेन्द्र मलंगिया: मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व

प्रश्न 23743. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072: महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1072मे महेन्द्र मलंगियाक प्रविष्टि “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23744. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072: महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23745. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072: महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक पाठ/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक पाठ/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक पाठ/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 23746. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072: महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘मूदा’ नाटक पर विस्तृत समीक्षा

उत्तर: घ. ‘मूदा’ नाटक पर विस्तृत समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘मूदा’ नाटक पर विस्तृत समीक्षा” अछि।

प्रश्न 23747. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072: महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘मूदा’ नाटक पर विस्तृत समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘मूदा’ नाटक पर विस्तृत समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘मूदा’ नाटक पर विस्तृत समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23748. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072: महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा नाटक पाठ/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा नाटक पाठ/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23749. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072: महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23750. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072: महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”केँ विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक पाठ/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक पाठ/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23751. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072: महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23752. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072मे महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि गद्य, नाटक पाठ/समीक्षा आ “‘मूदा’ नाटक पर विस्तृत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2381, सूचकांक पंक्ति 1072मे महेन्द्र मलंगियाक “मूदा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि गद्य, नाटक पाठ/समीक्षा आ “‘मूदा’ नाटक पर विस्तृत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2382 : विदेह-सदेह 13 — गोविन्द झा: गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना

प्रश्न 23753. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073: गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1073मे गोविन्द झाक प्रविष्टि “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23754. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073: गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23755. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073: गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 23756. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073: गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवास, पारिवारिक द्वन्द्व, आ अन्तर-सांस्कृतिक विवाह पर आधारित नाटक

उत्तर: घ. प्रवास, पारिवारिक द्वन्द्व, आ अन्तर-सांस्कृतिक विवाह पर आधारित नाटक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवास, पारिवारिक द्वन्द्व, आ अन्तर-सांस्कृतिक विवाह पर आधारित नाटक” अछि।

प्रश्न 23757. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073: गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवास, पारिवारिक द्वन्द्व, आ अन्तर-सांस्कृतिक विवाह पर आधारित नाटक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवास, पारिवारिक द्वन्द्व, आ अन्तर-सांस्कृतिक विवाह पर आधारित नाटक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवास, पारिवारिक द्वन्द्व, आ अन्तर-सांस्कृतिक विवाह पर आधारित नाटक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23758. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073: गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गोविन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गोविन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23759. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073: गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23760. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073: गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना”कैं विदेह-सदेह 13क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23761. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073: गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 13क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23762. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073मे गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “प्रवास, पारिवारिक द्वन्द्व, आ अन्तर-सांस्कृतिक विवाह पर आधारित नाटक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2382, सूचकांक पंक्ति 1073मे गोविन्द झाक “गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “प्रवास, पारिवारिक द्वन्द्व, आ अन्तर-सांस्कृतिक विवाह पर आधारित नाटक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 13क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2383 : विदेह-सदेह 14 — गजेन्द्र ठाकूर: नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचा...

प्रश्न 23763. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1074मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23764. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (निबन्ध/नाटक)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (निबन्ध/नाटक)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य (निबन्ध/नाटक)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23765. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक, विचार, आन्दोलन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक, विचार, आन्दोलन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक, विचार, आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 23766. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समानान्तर मैथिली रंगमंच, २०१२ नाट्य उत्सव, विद्यापति विवाद, आरटीआइ उत्तर — प्रगतिशील चिन्तन, अनुवाद सिद्धान्त। विदेह-प्रथम मैथिली ई-पत्रिकाक सम्पादक

उत्तर: घ. समानान्तर मैथिली रंगमंच, २०१२ नाट्य उत्सव, विद्यापति विवाद, आरटीआइ उत्तर — प्रगतिशील चिन्तन, अनुवाद सिद्धान्त। विदेह-प्रथम मैथिली ई-पत्रिकाक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समानान्तर मैथिली रंगमंच, २०१२ नाट्य उत्सव, विद्यापति विवाद, आरटीआइ उत्तर — प्रगतिशील चिन्तन, अनुवाद सिद्धान्त। विदेह-प्रथम मैथिली ई-पत्रिकाक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 23767. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समानान्तर मैथिली रंगमंच, २०१२ नाट्य उत्सव, विद्यापति विवाद, आरटीआइ उत्तर — प्रगतिशील चिन्तन, अनुवाद सिद्धान्त। विदेह-प्रथम मैथिली ई-पत्रिकाक सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समानान्तर मैथिली रंगमंच, २०१२ नाट्य उत्सव, विद्यापति विवाद, आरटीआइ उत्तर — प्रगतिशील चिन्तन, अनुवाद सिद्धान्त। विदेह-प्रथम मैथिली ई-पत्रिकाक सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समानान्तर मैथिली रंगमंच, २०१२ नाट्य उत्सव, विद्यापति विवाद, आरटीआइ उत्तर — प्रगतिशील चिन्तन, अनुवाद सिद्धान्त। विदेह-प्रथम मैथिली ई-पत्रिकाक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23768. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य (निबन्ध/नाटक), उप-विधा नाटक, विचार, आन्दोलन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य (निबन्ध/नाटक), उप-विधा नाटक, विचार, आन्दोलन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23769. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23770. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य (निबन्ध/नाटक)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक, विचार, आन्दोलनक रूपमे गद्य (निबन्ध/नाटक)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक, विचार, आन्दोलनक रूपमे गद्य (निबन्ध/नाटक)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23771. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074: गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23772. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074मे गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७” प्रविष्टि गद्य (निबन्ध/नाटक), नाटक, विचार, आन्दोलन आ “समानान्तर मैथिली रंगमंच, २०१२ नाट्य उत्सव, विद्यापति विवाद, आरटीआइ उत्तर — प्रगतिशील चिन्तन, अनुवाद सिद्धान्त। विदेह-प्रथम मैथिली ई-पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2383, सूचकांक पंक्ति 1074मे गजेन्द्र ठाकूरक “नाटक: गंगा ब्रिज (पूरा नाटक), मैथिली:२०१२ (विचार), विद्यापति, टैगोर लिटरेचर, गूगल विदेह बुक्स, साहित्य अकादेमी राजनीति, पागक राजनीति, प्राथमिक शिक्षा माध्यम, नेपालमे मैथिली, मैथिली केवल ब्राह्मणक भाषा?, विदेह:लोगो, अनुवाद कथा, मैथिलीमे गजल, धूत-समागम २०१३-१७” प्रविष्टि गद्य (निबन्ध/नाटक), नाटक, विचार, आन्दोलन आ “समानान्तर मैथिली रंगमंच, २०१२ नाट्य उत्सव, विद्यापति विवाद, आरटीआइ उत्तर — प्रगतिशील चिन्तन, अनुवाद सिद्धान्त। विदेह-प्रथम मैथिली ई-पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2384 : विदेह-सदेह 14 — जगदीश प्रसाद मण्डल: लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)

प्रश्न 23773. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075: जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1075मे जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रविष्टि “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23774. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075: जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23775. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075: जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 23776. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075: जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गामक पटियाबला (बिछानाक कारोबार) केर यथार्थ चित्रण। गरीबी, मजदूरी आ जीवनक कठोरता। टैगोर लिटरेचर अवार्ड प्राप्त। मैथिली लघुकथामे सामाजिक यथार्थवादक सशक्त हस्ताक्षर

उत्तर: घ. गामक पटियाबला (बिछानाक कारोबार) केर यथार्थ चित्रण। गरीबी, मजदूरी आ जीवनक कठोरता। टैगोर लिटरेचर अवार्ड प्राप्त। मैथिली लघुकथामे सामाजिक यथार्थवादक सशक्त हस्ताक्षर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक पटियाबला (बिछानाक कारोबार) केर यथार्थ चित्रण। गरीबी, मजदूरी आ जीवनक कठोरता। टैगोर लिटरेचर अवार्ड प्राप्त। मैथिली लघुकथामे सामाजिक यथार्थवादक सशक्त हस्ताक्षर” अछि।

प्रश्न 23777. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075: जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक पटियाबला (बिछानाक कारोबार) केर यथार्थ चित्रण। गरीबी, मजदूरी आ जीवनक कठोरता। टैगोर लिटरेचर अवार्ड प्राप्त। मैथिली लघुकथामे सामाजिक यथार्थवादक सशक्त हस्ताक्षर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक पटियाबला (बिछानाक कारोबार) केर यथार्थ चित्रण। गरीबी, मजदूरी आ जीवनक कठोरता। टैगोर लिटरेचर अवार्ड प्राप्त। मैथिली लघुकथामे सामाजिक यथार्थवादक सशक्त हस्ताक्षर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक पटियाबला (बिछानाक कारोबार) केर यथार्थ चित्रण। गरीबी, मजदूरी आ जीवनक कठोरता। टैगोर लिटरेचर अवार्ड प्राप्त। मैथिली लघुकथामे सामाजिक यथार्थवादक सशक्त हस्ताक्षर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23778. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075: जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23779. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075: जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23780. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075: जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23781. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075: जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23782. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “गामक पटियाबला (बिछानाक कारोबार) केर यथार्थ चित्रण। गरीबी, मजदूरी आ जीवनक कठोरता। टैगोर लिटरेचर अवार्ड प्राप्त। मैथिली लघुकथामे सामाजिक यथार्थवादक सशक्त हस्ताक्षर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2384, सूचकांक पंक्ति 1075मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “लघुकथा-पटियाबला (पृ. ५८-७१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “गामक पटियाबला (बिछानाक कारोबार) केर यथार्थ चित्रण। गरीबी, मजदूरी आ जीवनक कठोरता। टैगोर लिटरेचर अवार्ड प्राप्त। मैथिली लघुकथामे सामाजिक यथार्थवादक सशक्त हस्ताक्षर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2385 : विदेह-सदेह 14 — बिन्देश्वर ठाकूर: टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र...

प्रश्न 23783. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076: बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1076मे बिन्देश्वर ठाकूरक प्रविष्टि “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23784. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076: बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23785. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076: बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा / लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा / लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहनि कथा / लघुकथा” अछि।

प्रश्न 23786. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076: बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल–कतार प्रवासी पीड़ा, भ्रष्टाचार, शोषण, बलात्कार संवेदनशीलता। ‘भुखाएल जानवर सभ’ वीभत्स आ करुण रसक गहन प्रस्तुति

उत्तर: घ. नेपाल–कतार प्रवासी पीड़ा, भ्रष्टाचार, शोषण, बलात्कार संवेदनशीलता। ‘भुखाएल जानवर सभ’ वीभत्स आ करुण रसक गहन प्रस्तुति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल–कतार प्रवासी पीड़ा, भ्रष्टाचार, शोषण, बलात्कार संवेदनशीलता। ‘भुखाएल जानवर सभ’ वीभत्स आ करुण रसक गहन प्रस्तुति” अछि।

प्रश्न 23787. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076: बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल–कतार प्रवासी पीड़ा, भ्रष्टाचार, शोषण, बलात्कार संवेदनशीलता। ‘भुखाएल जानवर सभ’ वीभत्स आ करुण रसक गहन प्रस्तुति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल–कतार प्रवासी पीड़ा, भ्रष्टाचार, शोषण, बलात्कार संवेदनशीलता। ‘भुखाएल जानवर सभ’ वीभत्स आ करुण रसक गहन प्रस्तुति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल–कतार प्रवासी पीड़ा, भ्रष्टाचार, शोषण, बलात्कार संवेदनशीलता। ‘भुखाएल जानवर सभ’ वीभत्स आ करुण रसक गहन प्रस्तुति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23788. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076: बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा / लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा / लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23789. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076: बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23790. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076: बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथा / लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथा / लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23791. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076: बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23792. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076मे बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा / लघुकथा आ “नेपाल–कतार प्रवासी पीड़ा, भ्रष्टाचार, शोषण, बलात्कार संवेदनशीलता। ‘भुखाएल जानवर सभ’ वीभत्स आ करुण रसक गहन प्रस्तुति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2385, सूचकांक पंक्ति 1076मे बिन्देश्वर ठाकूरक “टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भुखाएल जानवर सभ, बिपतियाक विदेश” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा / लघुकथा आ “नेपाल–कतार प्रवासी पीड़ा, भ्रष्टाचार, शोषण, बलात्कार संवेदनशीलता। ‘भुखाएल जानवर सभ’ वीभत्स आ करुण रसक गहन प्रस्तुति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2386 : विदेह-सदेह 14 — नवेन्दु कुमार झा: गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि...

प्रश्न 23793. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1077मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23794. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23795. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज / आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज / आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज / आलेख” अछि।

प्रश्न 23796. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानस बिहारी वर्माक मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला (), मैथिली भाषाक बँटवारा आ राजनीति। साम्प्रदायिक/भाषिक विमर्श

उत्तर: घ. मानस बिहारी वर्माक मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला (), मैथिली भाषाक बँटवारा आ राजनीति। साम्प्रदायिक/भाषिक विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानस बिहारी वर्माक मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला (), मैथिली भाषाक बँटवारा आ राजनीति। साम्प्रदायिक/भाषिक विमर्श” अछि।

प्रश्न 23797. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानस बिहारी वर्माक मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला (), मैथिली भाषाक बँटवारा आ राजनीति। साम्प्रदायिक/भाषिक विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानस बिहारी वर्माक मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला (), मैथिली भाषाक बँटवारा आ राजनीति। साम्प्रदायिक/भाषिक विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानस बिहारी वर्माक मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला (), मैथिली भाषाक बँटवारा आ राजनीति। साम्प्रदायिक/भाषिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23798. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज / आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज / आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23799. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23800. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला”कैँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज / आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज / आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23801. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23802. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077मे नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज / आलेख आ “मानस बिहारी वर्माक मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला (), मैथिली भाषाक बँटवारा आ राजनीति। साम्प्रदायिक/भाषिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2386, सूचकांक पंक्ति 1077मे नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी, बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज / आलेख आ “मानस बिहारी वर्माक मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला (), मैथिली भाषाक बँटवारा आ राजनीति। साम्प्रदायिक/भाषिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2387 : विदेह-सदेह 14 — सत्यनारायण झा: भोला, स्मरण

प्रश्न 23803. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078: सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भोला, स्मरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोला, स्मरण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1078मे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “भोला, स्मरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23804. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078: सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23805. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078: सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा / संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा / संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा / संस्मरण” अछि।

प्रश्न 23806. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078: सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्राम्य जीवन, स्मृतिक आत्मीयता, साधारण मनुखक चितेर। करुण रस प्रबल

उत्तर: घ. ग्राम्य जीवन, स्मृतिक आत्मीयता, साधारण मनुखक चितेर। करुण रस प्रबल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम्य जीवन, स्मृतिक आत्मीयता, साधारण मनुखक चितेर। करुण रस प्रबल” अछि।

प्रश्न 23807. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078: सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्राम्य जीवन, स्मृतिक आत्मीयता, साधारण मनुखक चितेर। करुण रस प्रबल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्राम्य जीवन, स्मृतिक आत्मीयता, साधारण मनुखक चितेर। करुण रस प्रबल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम्य जीवन, स्मृतिक आत्मीयता, साधारण मनुखक चितेर। करुण रस प्रबल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23808. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078: सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा / संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा / संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23809. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078: सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23810. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078: सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा / संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा / संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23811. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078: सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23812. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078मे सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण” प्रविष्टि गद्य, कथा / संस्मरण आ “ग्राम्य जीवन, स्मृतिक आत्मीयता, साधारण मनुखक चितेर। करुण रस प्रबल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2387, सूचकांक पंक्ति 1078मे सत्यनारायण झाक “भोला, स्मरण” प्रविष्टि गद्य, कथा / संस्मरण आ “ग्राम्य जीवन, स्मृतिक आत्मीयता, साधारण मनुखक चितेर। करुण रस प्रबल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2388 : विदेह-सदेह 14 — शिवकुमार झा ‘टिल्लू’: द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सका...

प्रश्न 23813. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1079मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23814. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23815. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास / समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास / समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास / समालोचना” अछि।

प्रश्न 23816. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हरिमोहन झाक उपन्यास ‘कन्यादान’ पर प्रतिक्रिया, साम्यवादी चेतना, चतुरानन मिश्रक ‘कला’ क उत्थान। ब्राह्मणवादी समाजक व्यंग्य

उत्तर: घ. हरिमोहन झाक उपन्यास ‘कन्यादान’ पर प्रतिक्रिया, साम्यवादी चेतना, चतुरानन मिश्रक ‘कला’ क उत्थान। ब्राह्मणवादी समाजक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हरिमोहन झाक उपन्यास ‘कन्यादान’ पर प्रतिक्रिया, साम्यवादी चेतना, चतुरानन मिश्रक ‘कला’ क उत्थान। ब्राह्मणवादी समाजक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 23817. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हरिमोहन झाक उपन्यास ‘कन्यादान’ पर प्रतिक्रिया, साम्यवादी चेतना, चतुरानन मिश्रक ‘कला’ क उत्थान। ब्राह्मणवादी समाजक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हरिमोहन झाक उपन्यास ‘कन्यादान’ पर प्रतिक्रिया, साम्यवादी चेतना, चतुरानन मिश्रक ‘कला’ क उत्थान। ब्राह्मणवादी समाजक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हरिमोहन झाक उपन्यास ‘कन्यादान’ पर प्रतिक्रिया, साम्यवादी चेतना, चतुरानन मिश्रक ‘कला’ क उत्थान। ब्राह्मणवादी समाजक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23818. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास / समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा ‘टिल्लू’, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास / समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23819. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23820. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यास / समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यास / समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23821. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079: शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23822. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास / समालोचना आ “हरिमोहन झाक उपन्यास ‘कन्यादान’ पर प्रतिक्रिया, साम्यवादी चेतना, चतुरानन मिश्रक ‘कला’ क उत्थान। ब्राह्मणवादी समाजक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2388, सूचकांक पंक्ति 1079मे शिवकुमार झा ‘टिल्लू’क “द्विरागमन, सबल समाजक अन्तर्द्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास / समालोचना आ “हरिमोहन झाक उपन्यास ‘कन्यादान’ पर प्रतिक्रिया, साम्यवादी चेतना, चतुरानन मिश्रक ‘कला’ क उत्थान। ब्राह्मणवादी समाजक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2389 : विदेह-सदेह 14 — अमित मिश्र: हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख

प्रश्न 23823. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080: अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1080मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23824. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080: अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य / नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य / नाटक

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य / नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23825. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080: अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक / लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक / लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक / लघुकथा” अछि।

प्रश्न 23826. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080: अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेरोजगारी, घूसखोरी, डॉक्टर व मजदूरक मनोविज्ञान। ‘हारल विजेता’ एक सशक्त सामाजिक नाटक। अधिकार, भूख – यथार्थवादी

उत्तर: घ. बेरोजगारी, घूसखोरी, डॉक्टर व मजदूरक मनोविज्ञान। ‘हारल विजेता’ एक सशक्त सामाजिक नाटक। अधिकार, भूख – यथार्थवादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेरोजगारी, घूसखोरी, डॉक्टर व मजदूरक मनोविज्ञान। ‘हारल विजेता’ एक सशक्त सामाजिक नाटक। अधिकार, भूख – यथार्थवादी” अछि।

प्रश्न 23827. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080: अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेरोजगारी, घूसखोरी, डॉक्टर व मजदूरक मनोविज्ञान। ‘हारल विजेता’ एक सशक्त सामाजिक नाटक। अधिकार, भूख – यथार्थवादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेरोजगारी, घूसखोरी, डॉक्टर व मजदूरक मनोविज्ञान। ‘हारल विजेता’ एक सशक्त सामाजिक नाटक। अधिकार, भूख – यथार्थवादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेरोजगारी, घूसखोरी, डॉक्टर व मजदूरक मनोविज्ञान। ‘हारल विजेता’ एक सशक्त सामाजिक नाटक। अधिकार, भूख – यथार्थवादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23828. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080: अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य / नाटक, उप-विधा नाटक / लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य / नाटक, उप-विधा नाटक / लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23829. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080: अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23830. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080: अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य / नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक / लघुकथाक रूपमे गद्य / नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक / लघुकथाक रूपमे गद्य / नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23831. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080: अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23832. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080मे अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख” प्रविष्टि गद्य / नाटक, नाटक / लघुकथा आ “बेरोजगारी, घूसखोरी, डॉक्टर व मजदूरक मनोविज्ञान। ‘हारल विजेता’ एक सशक्त सामाजिक नाटक। अधिकार, भूख – यथार्थवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2389, सूचकांक पंक्ति 1080मे अमित मिश्रक “हारल विजेता (नाटक), दरमाहा, हँसी, अधिकार, भूख” प्रविष्टि गद्य / नाटक, नाटक / लघुकथा आ “बेरोजगारी, घूसखोरी, डॉक्टर व मजदूरक मनोविज्ञान। ‘हारल विजेता’ एक सशक्त सामाजिक नाटक। अधिकार, भूख – यथार्थवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2390 : विदेह-सदेह 14 — जवाहर लाल कश्यप: सीता (विहनि कथा)

प्रश्न 23833. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081: जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सीता (विहनि कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीता (विहनि कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1081मे जवाहर लाल कश्यपक प्रविष्टि “सीता (विहनि कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23834. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081: जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23835. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081: जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 23836. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081: जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीता नाम-विवाद, नारी सशक्तिकरण, पितृसत्ताक प्रश्न। चौंकावल नारी दृष्टिकोण

उत्तर: घ. सीता नाम-विवाद, नारी सशक्तिकरण, पितृसत्ताक प्रश्न। चौंकावल नारी दृष्टिकोण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीता नाम-विवाद, नारी सशक्तिकरण, पितृसत्ताक प्रश्न। चौंकावल नारी दृष्टिकोण” अछि।

प्रश्न 23837. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081: जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीता नाम-विवाद, नारी सशक्तिकरण, पितृसत्ताक प्रश्न। चौंकावल नारी दृष्टिकोण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीता नाम-विवाद, नारी सशक्तिकरण, पितृसत्ताक प्रश्न। चौंकावल नारी दृष्टिकोण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीता नाम-विवाद, नारी सशक्तिकरण, पितृसत्ताक प्रश्न। चौंकावल नारी दृष्टिकोण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23838. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081: जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23839. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081: जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23840. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081: जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23841. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081: जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23842. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081मे जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सीता नाम-विवाद, नारी सशक्तिकरण, पितृसत्ताक प्रश्न। चौंकावल नारी दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2390, सूचकांक पंक्ति 1081मे जवाहर लाल कश्यपक “सीता (विहनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सीता नाम-विवाद, नारी सशक्तिकरण, पितृसत्ताक प्रश्न। चौंकावल नारी दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2391 : विदेह-सदेह 14 — सुमित आनन्द: शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण

प्रश्न 23843. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082: सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1082मे सुमित आनन्दक प्रविष्टि “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23844. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082: सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23845. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082: सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 23846. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082: सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली शोध-पत्रिकाक नव अंक, विद्वान सभक वक्तव्य

उत्तर: घ. ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली शोध-पत्रिकाक नव अंक, विद्वान सभक वक्तव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली शोध-पत्रिकाक नव अंक, विद्वान सभक वक्तव्य” अछि।

प्रश्न 23847. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082: सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली शोध-पत्रिकाक नव अंक, विद्वान सभक वक्तव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली शोध-पत्रिकाक नव अंक, विद्वान सभक वक्तव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली शोध-पत्रिकाक नव अंक, विद्वान सभक वक्तव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23848. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082: सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23849. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082: सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23850. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082: सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23851. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082: सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23852. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082मे सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली शोध-पत्रिकाक नव अंक, विद्वान सभक वक्तव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2391, सूचकांक पंक्ति 1082मे सुमित आनन्दक “शोध-पत्रिका मैथिली केर लोकापण” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली शोध-पत्रिकाक नव अंक, विद्वान सभक वक्तव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2392 : विदेह-सदेह 14 — जगदानन्द झा ‘मनु’: वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सन...

प्रश्न 23853. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083: जगदानन्द झा ‘मनु’क “वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1083मे जगदानन्द झा ‘मनु’क प्रविष्टि “वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23854. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083: जगदानन्द झा ‘मनु’क “वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23855. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083: जगदानन्द झा ‘मनु’क “वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा / लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा / लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहनि कथा / लघुकथा” अछि।

प्रश्न 23856. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083: जगदानन्द झा 'मनु'क "वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवार, बुढ़ापा, स्त्री-दृष्टि, विडम्बना, बाल मनोविज्ञान, माए-बेटी आर्थिक दोहन। बहुआयामी कथाकार

उत्तर: घ. परिवार, बुढ़ापा, स्त्री-दृष्टि, विडम्बना, बाल मनोविज्ञान, माए-बेटी आर्थिक दोहन। बहुआयामी कथाकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "परिवार, बुढ़ापा, स्त्री-दृष्टि, विडम्बना, बाल मनोविज्ञान, माए-बेटी आर्थिक दोहन। बहुआयामी कथाकार" अछि।

प्रश्न 23857. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083: जगदानन्द झा 'मनु'क "वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी" प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिवार, बुढ़ापा, स्त्री-दृष्टि, विडम्बना, बाल मनोविज्ञान, माए-बेटी आर्थिक दोहन। बहुआयामी कथाकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवार, बुढ़ापा, स्त्री-दृष्टि, विडम्बना, बाल मनोविज्ञान, माए-बेटी आर्थिक दोहन। बहुआयामी कथाकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "परिवार, बुढ़ापा, स्त्री-दृष्टि, विडम्बना, बाल मनोविज्ञान, माए-बेटी आर्थिक दोहन। बहुआयामी कथाकार" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23858. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083: जगदानन्द झा 'मनु'क "वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा / लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा / लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23859. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083: जगदानन्द झा 'मनु'क "वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23860. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083: जगदानन्द झा 'मनु'क "वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी"केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथा / लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथा / लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23861. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083: जगदानन्द झा 'मनु'क "वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी" प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23862. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083मे जगदानन्द झा 'मनु'क "वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा / लघुकथा आ "परिवार, बुढ़ापा, स्त्री-दृष्टि, विडम्बना, बाल मनोविज्ञान, माए-बेटी आर्थिक दोहन। बहुआयामी कथाकार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2392, सूचकांक पंक्ति 1083मे जगदानन्द झा 'मनु'क "वसितानामा, बुद्धारीक डर, जादूक छडी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए..., समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्दी" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा / लघुकथा आ "परिवार, बुढ़ापा, स्त्री-दृष्टि, विडम्बना, बाल मनोविज्ञान, माए-बेटी आर्थिक दोहन। बहुआयामी कथाकार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2393 : विदेह-सदेह 14 — राम भरोस कापड़ि भ्रमर: यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उ...

प्रश्न 23863. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084: राम भरोस कापड़ि भ्रमरक "यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1084मे राम भरोस कापड़ि भ्रमरक प्रविष्टि "यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23864. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084: राम भरोस कापड़ि भ्रमरक "यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23865. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084: राम भरोस कापड़ि भ्रमरक "यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "यात्रा-वृत्तान्त" अछि।

प्रश्न 23866. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084: राम भरोस कापड़ि भ्रमरक “यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छत्तीसगढ़ प्रवास, मैथिली महोत्सव, मनीष झाक आयोजन, सम्मान, सांस्कृतिक आयोजन

उत्तर: घ. छत्तीसगढ़ प्रवास, मैथिली महोत्सव, मनीष झाक आयोजन, सम्मान, सांस्कृतिक आयोजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छत्तीसगढ़ प्रवास, मैथिली महोत्सव, मनीष झाक आयोजन, सम्मान, सांस्कृतिक आयोजन” अछि।

प्रश्न 23867. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084: राम भरोस कापड़ि भ्रमरक “यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छत्तीसगढ़ प्रवास, मैथिली महोत्सव, मनीष झाक आयोजन, सम्मान, सांस्कृतिक आयोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छत्तीसगढ़ प्रवास, मैथिली महोत्सव, मनीष झाक आयोजन, सम्मान, सांस्कृतिक आयोजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छत्तीसगढ़ प्रवास, मैथिली महोत्सव, मनीष झाक आयोजन, सम्मान, सांस्कृतिक आयोजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23868. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084: राम भरोस कापड़ि भ्रमरक “यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम भरोस कापड़ि भ्रमर, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम भरोस कापड़ि भ्रमर, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23869. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084: राम भरोस कापड़ि भ्रमरक “यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23870. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084: राम भरोस कापड़ि भ्रमरक “यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23871. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084: राम भरोस कापड़ि भ्रमरक “यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23872. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084मे राम भरोस कापड़ि भ्रमरक “यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “छत्तीसगढ़ प्रवास, मैथिली महोत्सव, मनीष झाक आयोजन, सम्मान, सांस्कृतिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2393, सूचकांक पंक्ति 1084मे राम भरोस कापड़ि भ्रमरक “यात्रा प्रसंग- रायपुरक मिथिला महोत्सवः उत्साहक बादल आ मनीष झा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “छत्तीसगढ़ प्रवास, मैथिली महोत्सव, मनीष झाक आयोजन, सम्मान, सांस्कृतिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2394 : विदेह-सदेह 14 — रमेश रञ्जन: मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)

प्रश्न 23873. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085: रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1085मे रमेश रञ्जनक प्रविष्टि “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23874. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085: रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23875. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085: रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना / नाट्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना / नाट्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना / नाट्य” अछि।

प्रश्न 23876. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085: रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परमेश्वर कापड़िक नाट्य संघ ‘चौआरि’, बालनाट्य विधाक सैद्धान्तिक विवेचन, विद्यापति पुरस्कार कोष द्वारा पुरस्कृत

उत्तर: घ. परमेश्वर कापड़िक नाट्य संघ ‘चौआरि’, बालनाट्य विधाक सैद्धान्तिक विवेचन, विद्यापति पुरस्कार कोष द्वारा पुरस्कृत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परमेश्वर कापड़िक नाट्य संघ ‘चौआरि’, बालनाट्य विधाक सैद्धान्तिक विवेचन, विद्यापति पुरस्कार कोष द्वारा पुरस्कृत” अछि।

प्रश्न 23877. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085: रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परमेश्वर कापड़िक नाट्य संघ ‘चौआरि’, बालनाट्य विधाक सैद्धान्तिक विवेचन, विद्यापति पुरस्कार कोष द्वारा पुरस्कृत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परमेश्वर कापड़िक नाट्य संघ ‘चौआरि’, बालनाट्य विधाक सैद्धान्तिक विवेचन, विद्यापति पुरस्कार कोष द्वारा पुरस्कृत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परमेश्वर कापड़िक नाट्य संघ ‘चौआरि’, बालनाट्य विधाक सैद्धान्तिक विवेचन, विद्यापति पुरस्कार कोष द्वारा पुरस्कृत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23878. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085: रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमेश रञ्जन, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना / नाट्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमेश रञ्जन, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना / नाट्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23879. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085: रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23880. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085: रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना / नाट्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना / नाट्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23881. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085: रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23882. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085मे रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना / नाट्य आ “परमेश्वर कापड़िक नाट्य संघ ‘चौआरि’, बालनाट्य विधाक सैद्धान्तिक विवेचन, विद्यापति पुरस्कार कोष द्वारा पुरस्कृत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2394, सूचकांक पंक्ति 1085मे रमेश रञ्जनक “मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत – ‘चौआरि’ (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना / नाट्य आ “परमेश्वर कापड़िक नाट्य संघ ‘चौआरि’, बालनाट्य विधाक सैद्धान्तिक विवेचन, विद्यापति पुरस्कार कोष द्वारा पुरस्कृत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2395 : विदेह-सदेह 14 — प्रसुन सिंह: नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)

प्रश्न 23883. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086: प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1086मे प्रसुन सिंहक प्रविष्टि “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23884. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086: प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23885. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086: प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पुस्तक समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पुस्तक समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पुस्तक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 23886. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086: प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुजित कुमार झाक कथा-संग्रह ‘जिही’, नारी मुख्य पात्र, मिथिलाञ्चलक स्त्री जीवनक बहुरंगी चित्रण

उत्तर: घ. सुजित कुमार झाक कथा-संग्रह ‘जिही’, नारी मुख्य पात्र, मिथिलाञ्चलक स्त्री जीवनक बहुरंगी चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुजित कुमार झाक कथा-संग्रह ‘जिही’, नारी मुख्य पात्र, मिथिलाञ्चलक स्त्री जीवनक बहुरंगी चित्रण” अछि।

प्रश्न 23887. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086: प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुजित कुमार झाक कथा-संग्रह ‘जिही’, नारी मुख्य पात्र, मिथिलाञ्चलक स्त्री जीवनक बहुरंगी चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुजित कुमार झाक कथा-संग्रह ‘जिही’, नारी मुख्य पात्र, मिथिलाञ्चलक स्त्री जीवनक बहुरंगी चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुजित कुमार झाक कथा-संग्रह ‘जिही’, नारी मुख्य पात्र, मिथिलाञ्चलक स्त्री जीवनक बहुरंगी चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23888. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086: प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रसुन सिंह, विधा गद्य, उप-विधा पुस्तक समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रसुन सिंह, विधा गद्य, उप-विधा पुस्तक समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23889. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086: प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23890. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086: प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पुस्तक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पुस्तक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23891. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086: प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23892. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086मे प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, पुस्तक समीक्षा आ “सुजित कुमार झाक कथा-संग्रह ‘जिही’, नारी मुख्य पात्र, मिथिलाञ्चलक स्त्री जीवनक बहुरंगी चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2395, सूचकांक पंक्ति 1086मे प्रसुन सिंहक “नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह ‘जिही’ (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, पुस्तक समीक्षा आ “सुजित कुमार झाक कथा-संग्रह ‘जिही’, नारी मुख्य पात्र, मिथिलाञ्चलक स्त्री जीवनक बहुरंगी चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2396 : विदेह-सदेह 14 — ओम प्रकाश झा: गजलक लेल (समीक्षा)

प्रश्न 23893. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजलक लेल (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलक लेल (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1087मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “गजलक लेल (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23894. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23895. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 23896. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विजय नाथ झाक गीत-गजल संग्रह ‘अहींक लेल’, काफिया, रदीफ, अरबी बहरक प्रयोग – तकनीकी समीक्षा

उत्तर: घ. विजय नाथ झाक गीत-गजल संग्रह ‘अहींक लेल’, काफिया, रदीफ, अरबी बहरक प्रयोग – तकनीकी समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विजय नाथ झाक गीत-गजल संग्रह ‘अहींक लेल’, काफिया, रदीफ, अरबी बहरक प्रयोग – तकनीकी समीक्षा” अछि।

प्रश्न 23897. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विजय नाथ झाक गीत-गजल संग्रह ‘अहींक लेल’, काफिया, रदीफ, अरबी बहरक प्रयोग – तकनीकी समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विजय नाथ झाक गीत-गजल संग्रह ‘अहींक लेल’, काफिया, रदीफ, अरबी बहरक प्रयोग – तकनीकी समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विजय नाथ झाक गीत-गजल संग्रह ‘अहींक लेल’, काफिया, रदीफ, अरबी बहरक प्रयोग – तकनीकी समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23898. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23899. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23900. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23901. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23902. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087मे ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विजय नाथ झाक गीत-गजल संग्रह ‘अहींक लेल’, काफिया, रदीफ, अरबी बहरक प्रयोग – तकनीकी समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2396, सूचकांक पंक्ति 1087मे ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विजय नाथ झाक गीत-गजल संग्रह ‘अहींक लेल’, काफिया, रदीफ, अरबी बहरक प्रयोग – तकनीकी समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2397 : विदेह-सदेह 14 — जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिल: की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्त...

प्रश्न 23903. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088: जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1088मे जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक प्रविष्टि “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23904. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088: जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23905. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088: जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत / गजल / आत्मकथ्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत / गजल / आत्मकथ्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत / गजल / आत्मकथ्य” अछि।

प्रश्न 23906. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088: जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवनक उपलब्धि आ क्षति पर गम्भीर चिन्तन। गजलमे विदेही आ वैचारिक मौलिकता

उत्तर: घ. जीवनक उपलब्धि आ क्षति पर गम्भीर चिन्तन। गजलमे विदेही आ वैचारिक मौलिकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवनक उपलब्धि आ क्षति पर गम्भीर चिन्तन। गजलमे विदेही आ वैचारिक मौलिकता” अछि।

प्रश्न 23907. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088: जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवनक उपलब्धि आ क्षति पर गम्भीर चिन्तन। गजलमे विदेही आ वैचारिक मौलिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवनक उपलब्धि आ क्षति पर गम्भीर चिन्तन। गजलमे विदेही आ वैचारिक मौलिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवनक उपलब्धि आ क्षति पर गम्भीर चिन्तन। गजलमे विदेही आ वैचारिक मौलिकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23908. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088: जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिल, विधा पद्य, उप-विधा गीत / गजल / आत्मकथ्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिल, विधा पद्य, उप-विधा गीत / गजल / आत्मकथ्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23909. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088: जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23910. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088: जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत / गजल / आत्मकथ्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत / गजल / आत्मकथ्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23911. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088: जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23912. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088मे जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गीत / गजल / आत्मकथ्य आ “जीवनक उपलब्धि आ क्षति पर गम्भीर चिन्तन। गजलमे विदेही आ वैचारिक मौलिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2397, सूचकांक पंक्ति 1088मे जगदीश चन्द्र ठाकूर अनिलक “की भेटल आ की हेरा गेल (आत्म गीत), भक्ति गजल, किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गीत / गजल / आत्मकथ्य आ “जीवनक उपलब्धि आ क्षति पर गम्भीर चिन्तन। गजलमे विदेही आ वैचारिक मौलिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2398 : विदेह-सदेह 14 — पंकज चौधरी निलश्री: बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति...

प्रश्न 23913. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089: पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1089मे पंकज चौधरी निलश्रीक प्रविष्टि “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23914. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089: पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23915. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089: पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल / भक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल / भक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल / भक्ति” अछि।

प्रश्न 23916. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089: पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. निलश्री बालसाहित्यमे नव प्रयोग, हास्य-विनोद, गजल विधाक बालोपयोगी रूप। बाल गजल विधाक उदाहरण

उत्तर: घ. निलश्री बालसाहित्यमे नव प्रयोग, हास्य-विनोद, गजल विधाक बालोपयोगी रूप। बाल गजल विधाक उदाहरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “निलश्री बालसाहित्यमे नव प्रयोग, हास्य-विनोद, गजल विधाक बालोपयोगी रूप। बाल गजल विधाक उदाहरण” अछि।

प्रश्न 23917. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089: पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. निलश्री बालसाहित्यमे नव प्रयोग, हास्य-विनोद, गजल विधाक बालोपयोगी रूप। बाल गजल विधाक उदाहरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निलश्री बालसाहित्यमे नव प्रयोग, हास्य-विनोद, गजल विधाक बालोपयोगी रूप। बाल गजल विधाक उदाहरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “निलश्री बालसाहित्यमे नव प्रयोग, हास्य-विनोद, गजल विधाक बालोपयोगी रूप। बाल गजल विधाक उदाहरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23918. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089: पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज चौधरी निलश्री, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल / भक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज चौधरी निलश्री, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल / भक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23919. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089: पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23920. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089: पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजल / भक्तिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजल / भक्तिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23921. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089: पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23922. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089मे पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल / भक्ति आ “निलश्री बालसाहित्यमे नव प्रयोग, हास्य-विनोद, गजल विधाक बालोपयोगी रूप। बाल गजल विधाक उदाहरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2398, सूचकांक पंक्ति 1089मे पंकज चौधरी निलश्रीक “बाल गजल (दीदी जँ चढ़ गेल कनहा-गाछी...), भक्ति गजल, गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल / भक्ति आ “निलश्री बालसाहित्यमे नव प्रयोग, हास्य-विनोद, गजल विधाक बालोपयोगी रूप। बाल गजल विधाक उदाहरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2399 : विदेह-सदेह 14 — मनोज कुमार मण्डल: कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे म...

प्रश्न 23923. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090: मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1090मे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23924. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090: मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23925. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090: मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बालगीत / कविता / व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बालगीत / कविता / व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बालगीत / कविता / व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 23926. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090: मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीख देवैत बालगीत, जीवन संघर्ष, मैथिली भाषाक प्रश्न, पीड़ा आ अस्तित्व। ‘प्रश्न’ समकालीन मैथिलीपर चिन्ता

उत्तर: घ. सीख देवैत बालगीत, जीवन संघर्ष, मैथिली भाषाक प्रश्न, पीड़ा आ अस्तित्व। ‘प्रश्न’ समकालीन मैथिलीपर चिन्ता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीख देवैत बालगीत, जीवन संघर्ष, मैथिली भाषाक प्रश्न, पीड़ा आ अस्तित्व। ‘प्रश्न’ समकालीन मैथिलीपर चिन्ता” अछि।

प्रश्न 23927. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090: मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीख देवैत बालगीत, जीवन संघर्ष, मैथिली भाषाक प्रश्न, पीड़ा आ अस्तित्व। ‘प्रश्न’ समकालीन मैथिलीपर चिन्ता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीख देवैत बालगीत, जीवन संघर्ष, मैथिली भाषाक प्रश्न, पीड़ा आ अस्तित्व। ‘प्रश्न’ समकालीन मैथिलीपर चिन्ता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीख देवैत बालगीत, जीवन संघर्ष, मैथिली भाषाक प्रश्न, पीड़ा आ अस्तित्व। ‘प्रश्न’ समकालीन मैथिलीपर चिन्ता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23928. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090: मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा बालगीत / कविता / व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा बालगीत / कविता / व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23929. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090: मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23930. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090: मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बालगीत / कविता / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बालगीत / कविता / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23931. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090: मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23932. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090मे मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न” प्रविष्टि पद्य, बालगीत / कविता / व्यंग्य आ “सीख देवैत बालगीत, जीवन संघर्ष, मैथिली भाषाक प्रश्न, पीड़ा आ अस्तित्व। ‘प्रश्न’ समकालीन मैथिलीपर चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2399, सूचकांक पंक्ति 1090मे मनोज कुमार मण्डलक “कित-कित, सुन बाबू सुन, लोभ, बक-बक, इंजन, रे मन!, भाव भरल अछि, के छथि ई आत्मा, बचपन, नहि त’अ ई बहि चलत, हम छी पागल, प्रश्न” प्रविष्टि पद्य, बालगीत / कविता / व्यंग्य आ “सीख देवैत बालगीत, जीवन संघर्ष, मैथिली भाषाक प्रश्न, पीड़ा आ अस्तित्व। ‘प्रश्न’ समकालीन मैथिलीपर चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2400 : विदेह-सदेह 14 — मो. गुल हसन: उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)

प्रश्न 23933. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091: मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1091मे मो. गुल हसनक प्रविष्टि “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23934. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091: मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23935. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091: मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत / लोकगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत / लोकगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत / लोकगीत” अछि।

प्रश्न 23936. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091: मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गामक उदासी, किसानक पीड़ा, गुल हसन सरल भाषामे करुण भाव

उत्तर: घ. गामक उदासी, किसानक पीड़ा, गुल हसन सरल भाषामे करुण भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक उदासी, किसानक पीड़ा, गुल हसन सरल भाषामे करुण भाव” अछि।

प्रश्न 23937. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091: मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक उदासी, किसानक पीड़ा, गुल हसन सरल भाषामे करुण भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक उदासी, किसानक पीड़ा, गुल हसन सरल भाषामे करुण भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक उदासी, किसानक पीड़ा, गुल हसन सरल भाषामे करुण भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23938. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091: मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मो. गुल हसन, विधा पद्य, उप-विधा गीत / लोकगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मो. गुल हसन, विधा पद्य, उप-विधा गीत / लोकगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23939. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091: मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23940. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091: मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत / लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत / लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23941. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091: मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23942. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091मे मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)” प्रविष्टि पद्य, गीत / लोकगीत आ “गामक उदासी, किसानक पीड़ा, गुल हसन सरल भाषामे करुण भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2400, सूचकांक पंक्ति 1091मे मो. गुल हसनक “उदास लागै...., किसानक खरिहान (पद्य)” प्रविष्टि पद्य, गीत / लोकगीत आ “गामक उदासी, किसानक पीड़ा, गुल हसन सरल भाषामे करुण भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2401 : विदेह-सदेह 14 — अमित मिश्र (पद्य): बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, ने...

प्रश्न 23943. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092: अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1092मे अमित मिश्र (पद्य)क प्रविष्टि “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23944. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092: अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23945. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092: अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल / भक्ति / गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल / भक्ति / गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल / भक्ति / गीत” अछि।

प्रश्न 23946. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092: अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारीक रूप – गहन नारीवादी चेतना, बाल गजलमे कल्पना, भक्ति मे मधुरता। ‘जागू’ आन्दोलनात्मक

उत्तर: घ. नारीक रूप – गहन नारीवादी चेतना, बाल गजलमे कल्पना, भक्ति मे मधुरता। ‘जागू’ आन्दोलनात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारीक रूप – गहन नारीवादी चेतना, बाल गजलमे कल्पना, भक्ति मे मधुरता। ‘जागू’ आन्दोलनात्मक” अछि।

प्रश्न 23947. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092: अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारीक रूप – गहन नारीवादी चेतना, बाल गजलमे कल्पना, भक्ति मे मधुरता। ‘जागू’ आन्दोलनात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारीक रूप – गहन नारीवादी चेतना, बाल गजलमे कल्पना, भक्ति मे मधुरता। ‘जागू’ आन्दोलनात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारीक रूप – गहन नारीवादी चेतना, बाल गजलमे कल्पना, भक्ति मे मधुरता। ‘जागू’ आन्दोलनात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23948. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092: अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र (पद्य), विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल / भक्ति / गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र (पद्य), विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल / भक्ति / गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23949. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092: अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23950. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092: अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजल / भक्ति / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजल / भक्ति / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23951. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092: अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23952. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092मे अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल / भक्ति / गीत आ “नारीक रूप – गहन नारीवादी चेतना, बाल गजलमे कल्पना, भक्ति मे मधुरता। ‘जागू’ आन्दोलनात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2401, सूचकांक पंक्ति 1092मे अमित मिश्र (पद्य)क “बाल गजल, भक्तिगजल, आइ मिथिलामे सीया सीया, नेङगरा दरबान, पतंग बनाबै रे, बाबाकेँ, उसनल अण्डाक, राधा दीवाली, जनमदिन, प्रमाण, गीत, जीवन एहना चलैत, जागू, समयक संग, नारीक रूप” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल / भक्ति / गीत आ “नारीक रूप – गहन नारीवादी चेतना, बाल गजलमे कल्पना, भक्ति मे मधुरता। ‘जागू’ आन्दोलनात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2402 : विदेह-सदेह 14 — कुन्दन कुमार कर्ण: बाल गजल, गजल

प्रश्न 23953. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093: कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल, गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल, गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1093मे कुन्दन कुमार कर्णक प्रविष्टि “बाल गजल, गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23954. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093: कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23955. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093: कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 23956. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093: कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शुद्ध गजल विधाक अभ्यास, सरल आखर

उत्तर: घ. शुद्ध गजल विधाक अभ्यास, सरल आखर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शुद्ध गजल विधाक अभ्यास, सरल आखर” अछि।

प्रश्न 23957. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093: कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शुद्ध गजल विधाक अभ्यास, सरल आखर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शुद्ध गजल विधाक अभ्यास, सरल आखर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शुद्ध गजल विधाक अभ्यास, सरल आखर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23958. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093: कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23959. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093: कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23960. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093: कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23961. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093: कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23962. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093मे कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शुद्ध गजल विधाक अभ्यास, सरल आखर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2402, सूचकांक पंक्ति 1093मे कुन्दन कुमार कर्णक “बाल गजल, गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शुद्ध गजल विधाक अभ्यास, सरल आखर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2403 : विदेह-सदेह 14 — आशीष अनचिन्हार: नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ...

प्रश्न 23963. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094: आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1094मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23964. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094: आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य / गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य / गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य / गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23965. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094: आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल / आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल / आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल / आलेख” अछि।

प्रश्न 23966. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094: आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बलात्कारक मनोविज्ञान, गजलमे अभूतपूर्व ‘विक्त गजल’ के अग्रदूत। विदेह सहायक सम्पादक

उत्तर: घ. बलात्कारक मनोविज्ञान, गजलमे अभूतपूर्व ‘विक्त गजल’ के अग्रदूत। विदेह सहायक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बलात्कारक मनोविज्ञान, गजलमे अभूतपूर्व ‘विक्त गजल’ के अग्रदूत। विदेह सहायक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 23967. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094: आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बलात्कारक मनोविज्ञान, गजलमे अभूतपूर्व ‘विक्त गजल’ के अग्रदूत। विदेह सहायक सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बलात्कारक मनोविज्ञान, गजलमे अभूतपूर्व ‘विक्त गजल’ के अग्रदूत। विदेह सहायक सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बलात्कारक मनोविज्ञान, गजलमे अभूतपूर्व ‘विक्त गजल’ के अग्रदूत। विदेह सहायक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23968. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094: आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य / गद्य, उप-विधा गजल / आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य / गद्य, उप-विधा गजल / आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23969. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094: आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23970. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094: आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य / गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल / आलेखक रूपमे पद्य / गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल / आलेखक रूपमे पद्य / गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23971. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094: आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23972. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094मे आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल” प्रविष्टि पद्य / गद्य, गजल / आलेख आ “बलात्कारक मनोविज्ञान, गजलमे अभूतपूर्व ‘विक्त गजल’ के अग्रदूत। विदेह सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2403, सूचकांक पंक्ति 1094मे आशीष अनचिन्हारक “नुकाएल बलात्कारी रूप (गद्य/पद्य मिश्रित), किष्ठ गजल” प्रविष्टि पद्य / गद्य, गजल / आलेख आ “बलात्कारक मनोविज्ञान, गजलमे अभूतपूर्व ‘विक्त गजल’ के अग्रदूत। विदेह सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2404 : विदेह-सदेह 14 — किशन कारीगर: होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना...

प्रश्न 23973. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095: किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1095मे किशन कारीगरक प्रविष्टि “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23974. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095: किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23975. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095: किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य कविता / बालकविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य कविता / बालकविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हास्य कविता / बालकविता” अछि।

प्रश्न 23976. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095: किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. होली, भोज-राजनीति, मनुखता खोज, सामाजिक व्यंग्य। ‘डिनर डिल्लोमेसी’ राजनीतिक हास्य

उत्तर: घ. होली, भोज-राजनीति, मनुखता खोज, सामाजिक व्यंग्य। ‘डिनर डिल्लोमेसी’ राजनीतिक हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “होली, भोज-राजनीति, मनुखता खोज, सामाजिक व्यंग्य। ‘डिनर डिल्लोमेसी’ राजनीतिक हास्य” अछि।

प्रश्न 23977. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095: किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. होली, भोज-राजनीति, मनुखता खोज, सामाजिक व्यंग्य। ‘डिनर डिल्लोमेसी’ राजनीतिक हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होली, भोज-राजनीति, मनुखता खोज, सामाजिक व्यंग्य। ‘डिनर डिल्लोमेसी’ राजनीतिक हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “होली, भोज-राजनीति, मनुखता खोज, सामाजिक व्यंग्य। ‘डिनर डिल्लोमेसी’ राजनीतिक हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23978. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095: किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा हास्य कविता / बालकविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा हास्य कविता / बालकविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23979. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095: किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23980. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095: किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हास्य कविता / बालकविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हास्य कविता / बालकविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23981. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095: किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23982. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095मे किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?” प्रविष्टि पद्य, हास्य कविता / बालकविता आ “होली, भोज-राजनीति, मनुखता खोज, सामाजिक व्यंग्य। ‘डिनर डिल्लोमेसी’ राजनीतिक हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2404, सूचकांक पंक्ति 1095मे किशन कारीगरक “होरी मे मचाउ हुरदंग, डिनर डिल्लोमेसी, दूधपीबा नेना, मनुक्ख बनब कोना?” प्रविष्टि पद्य, हास्य कविता / बालकविता आ “होली, भोज-राजनीति, मनुखता खोज, सामाजिक व्यंग्य। ‘डिनर डिल्लोमेसी’ राजनीतिक हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2405 : विदेह-सदेह 14 — मुत्री कामत: ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी...

प्रश्न 23983. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096: मुत्री कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1096मे मुत्री कामतक प्रविष्टि “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23984. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096: मुत्री कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23985. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096: मुत्री कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / विरह / चिन्तन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / विरह / चिन्तन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / विरह / चिन्तन” अछि।

प्रश्न 23986. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096: मुत्री कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटी जन्म पीड़ा, समकालीन हिंसा, फगुआक रंग। ‘बेटी-लहास’ मर्मस्पर्शी

उत्तर: घ. बेटी जन्म पीड़ा, समकालीन हिंसा, फगुआक रंग। ‘बेटी-लहास’ मर्मस्पर्शी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटी जन्म पीड़ा, समकालीन हिंसा, फगुआक रंग। ‘बेटी-लहास’ मर्मस्पर्शी” अछि।

प्रश्न 23987. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096: मुत्री कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेटी जन्म पीड़ा, समकालीन हिंसा, फगुआक रंग। ‘बेटी-लहास’ मर्मस्पर्शी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी जन्म पीड़ा, समकालीन हिंसा, फगुआक रंग। ‘बेटी-लहास’ मर्मस्पर्शी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटी जन्म पीड़ा, समकालीन हिंसा, फगुआक रंग। ‘बेटी-लहास’ मर्मस्पर्शी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23988. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096: मुन्नी कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता / विरह / चिन्तन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता / विरह / चिन्तन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23989. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096: मुन्नी कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 23990. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096: मुन्नी कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / विरह / चिन्तनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / विरह / चिन्तनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 23991. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096: मुन्नी कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 23992. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096मे मुन्नी कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन” प्रविष्टि पद्य, कविता / विरह / चिन्तन आ “बेटी जन्म पीड़ा, समकालीन हिंसा, फगुआक रंग। ‘बेटी-लहास’ मर्मस्पर्शी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2405, सूचकांक पंक्ति 1096मे मुन्नी कामतक “ककए बेटी बनेलहक विधाता?, दुनियाँ तबाह भ गेल!, बेटी-लहास, फगुआ, आनहर कानुन” प्रविष्टि पद्य, कविता / विरह / चिन्तन आ “बेटी जन्म पीड़ा, समकालीन हिंसा, फगुआक रंग। ‘बेटी-लहास’ मर्मस्पर्शी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2406 : विदेह-सदेह 14 — प्रीति प्रिया झा: कड देलिखन उपकार महाशय

प्रश्न 23993. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097: प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कड देलिखन उपकार महाशय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कड देलिखन उपकार महाशय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1097मे प्रीति प्रिया झाक प्रविष्टि “कड देलिखन उपकार महाशय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 23994. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097: प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 23995. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097: प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य गीत” अछि।

प्रश्न 23996. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097: प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटा-बेटी भेदभाव, पितृसत्ता के प्रति व्यंग

उत्तर: घ. बेटा-बेटी भेदभाव, पितृसत्ता के प्रति व्यंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटा-बेटी भेदभाव, पितृसत्ता के प्रति व्यंग” अछि।

प्रश्न 23997. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097: प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेटा-बेटी भेदभाव, पितृसत्ता के प्रति व्यंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटा-बेटी भेदभाव, पितृसत्ता के प्रति व्यंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटा-बेटी भेदभाव, पितृसत्ता के प्रति व्यंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 23998. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097: प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रीति प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रीति प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 23999. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097: प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24000. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097: प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड 2406 : विदेह-सदेह 14 — प्रीति प्रिया झा: कड देलिखन उपकार महाशय

प्रश्न 24001. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097: प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24002. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097मे प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य गीत आ “बेटा-बेटी भेदभाव, पितृसत्ता के प्रति व्यंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2406, सूचकांक पंक्ति 1097मे प्रीति प्रिया झाक “कड देलिखन उपकार महाशय” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य गीत आ “बेटा-बेटी भेदभाव, पितृसत्ता के प्रति व्यंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2407 : विदेह-सदेह 14 — राजीव रंजन मिश्र: गजल, जानकी गीत

प्रश्न 24003. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098: राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल, जानकी गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल, जानकी गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1098मे राजीव रंजन मिश्रक प्रविष्टि “गजल, जानकी गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24004. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098: राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24005. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098: राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल / गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल / गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल / गीत” अछि।

प्रश्न 24006. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098: राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जानकी जन्मोत्सव, मैथिली अभिमान, श्रद्धा गीत

उत्तर: घ. जानकी जन्मोत्सव, मैथिली अभिमान, श्रद्धा गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जानकी जन्मोत्सव, मैथिली अभिमान, श्रद्धा गीत” अछि।

प्रश्न 24007. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098: राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जानकी जन्मोत्सव, मैथिली अभिमान, श्रद्धा गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जानकी जन्मोत्सव, मैथिली अभिमान, श्रद्धा गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जानकी जन्मोत्सव, मैथिली अभिमान, श्रद्धा गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24008. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098: राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल / गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल / गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24009. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098: राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24010. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098: राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24011. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098: राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24012. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत” प्रविष्टि पद्य, गजल / गीत आ “जानकी जन्मोत्सव, मैथिली अभिमान, श्रद्धा गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2407, सूचकांक पंक्ति 1098मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल, जानकी गीत” प्रविष्टि पद्य, गजल / गीत आ “जानकी जन्मोत्सव, मैथिली अभिमान, श्रद्धा गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2408 : विदेह-सदेह 14 — राजदेव मण्डल: पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर...

प्रश्न 24013. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099: राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1099मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24014. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099: राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24015. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099: राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / गीत / मुक्तक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / गीत / मुक्तक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गीत / मुक्तक” अछि।

प्रश्न 24016. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099: राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति, श्रमिक, दार्शनिक गम्भीरता, अस्तित्ववादी चिन्तन, समाजक कोलाहल। विदेह मैथिली सम्मान २०१२ प्राप्त

उत्तर: घ. प्रकृति, श्रमिक, दार्शनिक गम्भीरता, अस्तित्ववादी चिन्तन, समाजक कोलाहल। विदेह मैथिली सम्मान २०१२ प्राप्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति, श्रमिक, दार्शनिक गम्भीरता, अस्तित्ववादी चिन्तन, समाजक कोलाहल। विदेह मैथिली सम्मान २०१२ प्राप्त” अछि।

प्रश्न 24017. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099: राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति, श्रमिक, दार्शनिक गम्भीरता, अस्तित्ववादी चिन्तन, समाजक कोलाहल। विदेह मैथिली सम्मान २०१२ प्राप्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति, श्रमिक, दार्शनिक गम्भीरता, अस्तित्ववादी चिन्तन, समाजक कोलाहल। विदेह मैथिली सम्मान २०१२ प्राप्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति, श्रमिक, दार्शनिक गम्भीरता, अस्तित्ववादी चिन्तन, समाजक कोलाहल। विदेह मैथिली सम्मान २०१२ प्राप्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24018. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099: राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत / मुक्तक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत / मुक्तक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24019. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099: राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24020. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099: राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / गीत / मुक्तकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / गीत / मुक्तकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24021. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099: राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24022. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099मे राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत / मुक्तक आ “प्रकृति, श्रमिक, दार्शनिक गम्भीरता, अस्तित्ववादी चिन्तन, समाजक कोलाहल। विदेह मैथिली सम्मान २०१२ प्राप्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2408, सूचकांक पंक्ति 1099मे राजदेव मण्डलक “पसरैत प्रशाखा, खसैत बुन्द, गन्तव्यक भरम, दरदक भोर, केहेन मांग, लटकल छी, बटमारिक गीत, रूचिगर, बजैत एकान्त, स्वरक चेन्ह, सुखक भाय, हएत अगारी, मनुखदेवा, अप्पन हारि, दग्ध सुर, इजोतक वस्त्र, बाबा केर लाठी, गीतक पूर्व संगीत, शिशुक स्वर, बोलती बन्न, दिलक आवाज, नेगरा मजदूर, मनक दुआर, छाँहक रूप” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत / मुक्तक आ “प्रकृति, श्रमिक, दार्शनिक गम्भीरता, अस्तित्ववादी चिन्तन, समाजक कोलाहल। विदेह मैथिली सम्मान २०१२ प्राप्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2409 : विदेह-सदेह 14 — राम स्वलास साफी: पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ

प्रश्न 24023. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100: राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1100मे राम स्वलास साफीक प्रविष्टि “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24024. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100: राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24025. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100: राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य कविता” अछि।

प्रश्न 24026. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100: राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पढ़ल-लिखल ठाकुर-बाबू पर तीखा व्यंग्य, छुआछूत आ पाखण्डपर कटाक्ष

उत्तर: घ. पढ़ल-लिखल ठाकुर-बाबू पर तीखा व्यंग्य, छुआछूत आ पाखण्डपर कटाक्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पढ़ल-लिखल ठाकुर-बाबू पर तीखा व्यंग्य, छुआछूत आ पाखण्डपर कटाक्ष” अछि।

प्रश्न 24027. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100: राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पढ़ल-लिखल ठाकुर-बाबू पर तीखा व्यंग्य, छुआछूत आ पाखण्डपर कटाक्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पढ़ल-लिखल ठाकुर-बाबू पर तीखा व्यंग्य, छुआछूत आ पाखण्डपर कटाक्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पढ़ल-लिखल ठाकुर-बाबू पर तीखा व्यंग्य, छुआछूत आ पाखण्डपर कटाक्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24028. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100: राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम स्वलास साफी, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम स्वलास साफी, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24029. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100: राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24030. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100: राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24031. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100: राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24032. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100मे राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य कविता आ “पढ़ल-लिखल ठाकुर-बाबू पर तीखा व्यंग्य, छुआछूत आ पाखण्डपर कटाक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2409, सूचकांक पंक्ति 1100मे राम स्वलास साफीक “पढ़ल-लिखल तिन गौर किरयो बबूआ” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य कविता आ “पढ़ल-लिखल ठाकुर-बाबू पर तीखा व्यंग्य, छुआछूत आ पाखण्डपर कटाक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2410 : विदेह-सदेह 14 — सन्तोष कुमार मिश्र: गुलामी डे

प्रश्न 24033. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101: सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गुलामी डे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुलामी डे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1101मे सन्तोष कुमार मिश्रक प्रविष्टि “गुलामी डे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24034. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101: सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24035. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101: सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत / प्रतिरोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत / प्रतिरोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत / प्रतिरोध” अछि।

प्रश्न 24036. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101: सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नोकरी, अन्याय, गुलामीक मानसिकता, नेपाली मैथिली कविता

उत्तर: घ. नोकरी, अन्याय, गुलामीक मानसिकता, नेपाली मैथिली कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नोकरी, अन्याय, गुलामीक मानसिकता, नेपाली मैथिली कविता” अछि।

प्रश्न 24037. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101: सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नोकरी, अन्याय, गुलामीक मानसिकता, नेपाली मैथिली कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोकरी, अन्याय, गुलामीक मानसिकता, नेपाली मैथिली कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नोकरी, अन्याय, गुलामीक मानसिकता, नेपाली मैथिली कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24038. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101: सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गीत / प्रतिरोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गीत / प्रतिरोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24039. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101: सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24040. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101: सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत / प्रतिरोधक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत / प्रतिरोधक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24041. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101: सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24042. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101मे सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे” प्रविष्टि पद्य, गीत / प्रतिरोध आ “नोकरी, अन्याय, गुलामीक मानसिकता, नेपाली मैथिली कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2410, सूचकांक पंक्ति 1101मे सन्तोष कुमार मिश्रक “गुलामी डे” प्रविष्टि पद्य, गीत / प्रतिरोध आ “नोकरी, अन्याय, गुलामीक मानसिकता, नेपाली मैथिली कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2411 : विदेह-सदेह 14 — अब्दुल रजाक: गणतान्त्रिक देश

प्रश्न 24043. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102: अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गणतान्त्रिक देश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गणतान्त्रिक देश

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1102मे अब्दुल रजाकक प्रविष्टि “गणतान्त्रिक देश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24044. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102: अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24045. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102: अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीतिक कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीतिक कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक कविता” अछि।

प्रश्न 24046. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102: अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाली राजनैतिक उथल-पुथल, राणा-राजा-गणतन्त्र

उत्तर: घ. नेपाली राजनैतिक उथल-पुथल, राणा-राजा-गणतन्त्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाली राजनैतिक उथल-पुथल, राणा-राजा-गणतन्त्र” अछि।

प्रश्न 24047. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102: अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाली राजनैतिक उथल-पुथल, राणा-राजा-गणतन्त्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाली राजनैतिक उथल-पुथल, राणा-राजा-गणतन्त्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाली राजनैतिक उथल-पुथल, राणा-राजा-गणतन्त्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24048. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102: अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अब्दुल रजाक, विधा पद्य, उप-विधा राजनीतिक कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अब्दुल रजाक, विधा पद्य, उप-विधा राजनीतिक कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24049. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102: अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24050. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102: अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीतिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीतिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24051. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102: अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24052. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102मे अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश” प्रविष्टि पद्य, राजनीतिक कविता आ “नेपाली राजनैतिक उथल-पुथल, राणा-राजा-गणतन्त्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2411, सूचकांक पंक्ति 1102मे अब्दुल रजाकक “गणतान्त्रिक देश” प्रविष्टि पद्य, राजनीतिक कविता आ “नेपाली राजनैतिक उथल-पुथल, राणा-राजा-गणतन्त्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2412 : विदेह-सदेह 14 — जगदानन्द झा ‘मनु’ (पद्य): किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल,...

प्रश्न 24053. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103: जगदानन्द झा ‘मनु’ (पद्य)क “किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1103मे जगदानन्द झा ‘मनु’ (पद्य)क प्रविष्टि “किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24054. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103: जगदानन्द झा 'मनु' (पद्य)क "किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24055. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103: जगदानन्द झा 'मनु' (पद्य)क "किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रुबाइ / गजल / बालकविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रुबाइ / गजल / बालकविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "रुबाइ / गजल / बालकविता" अछि।

प्रश्न 24056. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103: जगदानन्द झा 'मनु' (पद्य)क "किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहुविध प्रतिभा, बाल गजल, रुबाइमे दार्शनिकता, भक्ति गजल। 'होएत जँ' कृष्ण कल्पना

उत्तर: घ. बहुविध प्रतिभा, बाल गजल, रुबाइमे दार्शनिकता, भक्ति गजल। 'होएत जँ' कृष्ण कल्पना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "बहुविध प्रतिभा, बाल गजल, रुबाइमे दार्शनिकता, भक्ति गजल। 'होएत जँ' कृष्ण कल्पना" अछि।

प्रश्न 24057. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103: जगदानन्द झा 'मनु' (पद्य)क "किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ" प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बहुविध प्रतिभा, बाल गजल, रुबाइमे दार्शनिकता, भक्ति गजल। 'होएत जँ' कृष्ण कल्पना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुविध प्रतिभा, बाल गजल, रुबाइमे दार्शनिकता, भक्ति गजल। 'होएत जँ' कृष्ण कल्पना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "बहुविध प्रतिभा, बाल गजल, रुबाइमे दार्शनिकता, भक्ति गजल। 'होएत जँ' कृष्ण कल्पना" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24058. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103: जगदानन्द झा 'मनु' (पद्य)क "किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु' (पद्य), विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ / गजल / बालकविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु' (पद्य), विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ / गजल / बालकविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24059. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103: जगदानन्द झा 'मनु' (पद्य)क "किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24060. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103: जगदानन्द झा ‘मनु’ (पद्य)क “किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रुबाइ / गजल / बालकविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रुबाइ / गजल / बालकविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24061. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103: जगदानन्द झा ‘मनु’ (पद्य)क “किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24062. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103मे जगदानन्द झा ‘मनु’ (पद्य)क “किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ / गजल / बालकविता आ “बहुविध प्रतिभा, बाल गजल, रुबाइमे दार्शनिकता, भक्ति गजल। ‘होएत जँ’ कृष्ण कल्पना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2412, सूचकांक पंक्ति 1103मे जगदानन्द झा ‘मनु’ (पद्य)क “किछु रुबाइ, बाल गजल, किछु भक्ति गजल, किछु गजल, बाल कविता- होएत जँ” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ / गजल / बालकविता आ “बहुविध प्रतिभा, बाल गजल, रुबाइमे दार्शनिकता, भक्ति गजल। ‘होएत जँ’ कृष्ण कल्पना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2413 : विदेह-सदेह 14 — शिव कुमार यादव: किछु गजल

प्रश्न 24063. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104: शिव कुमार यादवक “किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1104मे शिव कुमार यादवक प्रविष्टि “किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24064. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104: शिव कुमार यादवक “किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24065. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104: शिव कुमार यादवक “किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24066. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104: शिव कुमार यादवक “किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक सरोकार, सरल गजल

उत्तर: घ. सामाजिक सरोकार, सरल गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सरोकार, सरल गजल” अछि।

प्रश्न 24067. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104: शिव कुमार यादवक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक सरोकार, सरल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक सरोकार, सरल गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सरोकार, सरल गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24068. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104: शिव कुमार यादवक “किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार यादव, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार यादव, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24069. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104: शिव कुमार यादवक “किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24070. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104: शिव कुमार यादवक “किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24071. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104: शिव कुमार यादवक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24072. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104मे शिव कुमार यादवक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक सरोकार, सरल गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2413, सूचकांक पंक्ति 1104मे शिव कुमार यादवक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक सरोकार, सरल गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2414 : विदेह-सदेह 14 — रामविलास साह: सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी...

प्रश्न 24073. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105: रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1105मे रामविलास साहक प्रविष्टि “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24074. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105: रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24075. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105: रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत / विद्रोह / व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत / विद्रोह / व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत / विद्रोह / व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 24076. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105: रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जलवायु-किसान-गरीबी, जातिवादी छुआछूत, भारत मिथक पर मर्मान्तक प्रश्न

उत्तर: घ. जलवायु-किसान-गरीबी, जातिवादी छुआछूत, भारत मिथक पर मर्मान्तक प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जलवायु-किसान-गरीबी, जातिवादी छुआछूत, भारत मिथक पर मर्मान्तक प्रश्न” अछि।

प्रश्न 24077. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105: रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जलवायु-किसान-गरीबी, जातिवादी छुआछूत, भारत मिथक पर मर्मान्तक प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जलवायु-किसान-गरीबी, जातिवादी छुआछूत, भारत मिथक पर मर्मान्तक प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जलवायु-किसान-गरीबी, जातिवादी छुआछूत, भारत मिथक पर मर्मान्तक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24078. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105: रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामविलास साह, विधा पद्य, उप-विधा गीत / विद्रोह / व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामविलास साह, विधा पद्य, उप-विधा गीत / विद्रोह / व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24079. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105: रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24080. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105: रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत / विद्रोह / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत / विद्रोह / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24081. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105: रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24082. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105मे रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान” प्रविष्टि पद्य, गीत / विद्रोह / व्यंग्य आ “जलवायु-किसान-गरीबी, जातिवादी छुआछूत, भारत मिथक पर मर्मान्तक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2414, सूचकांक पंक्ति 1105मे रामविलास साहक “सुखल खेत आ भूखल पेट, मिथिलाक पियास, किअए छुबाइ छी, पुसक राति, केना कहब भारत महान” प्रविष्टि पद्य, गीत / विद्रोह / व्यंग्य आ “जलवायु-किसान-गरीबी, जातिवादी छुआछूत, भारत मिथक पर मर्मान्तक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2415 : विदेह-सदेह 14 — रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’: किछु झारू, किछु गीत

प्रश्न 24083. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु झारू, किछु गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु झारू, किछु गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1106मे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क प्रविष्टि “किछु झारू, किछु गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24084. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24085. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्तिगीत / व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्तिगीत / व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्तिगीत / व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 24086. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. झारू (बिहनि) के माध्यमे सामाजिक सफाई, दोहरा अर्थ, ‘झारू विनु घरक शोभा’

उत्तर: घ. झारू (बिहनि) के माध्यमे सामाजिक सफाई, दोहरा अर्थ, ‘झारू विनु घरक शोभा’

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “झारू (बिहनि) के माध्यमे सामाजिक सफाई, दोहरा अर्थ, ‘झारू विनु घरक शोभा’” अछि।

प्रश्न 24087. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. झारू (बिहनि) के माध्यमे सामाजिक सफाई, दोहरा अर्थ, ‘झारू विनु घरक शोभा’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झारू (बिहनि) के माध्यमे सामाजिक सफाई, दोहरा अर्थ, ‘झारू विनु घरक शोभा’

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “झारू (बिहनि) के माध्यमे सामाजिक सफाई, दोहरा अर्थ, ‘झारू विनु घरक शोभा’” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24088. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’, विधा पद्य, उप-विधा भक्तिगीत / व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’, विधा पद्य, उप-विधा भक्तिगीत / व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24089. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24090. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्तिगीत / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्तिगीत / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24091. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24092. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106मे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत” प्रविष्टि पद्य, भक्तिगीत / व्यंग्य आ “झारू (बिहनि) के माध्यमे सामाजिक सफाई, दोहरा अर्थ, ‘झारू विनु घरक शोभा’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2415, सूचकांक पंक्ति 1106मे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “किछु झारू, किछु गीत” प्रविष्टि पद्य, भक्तिगीत / व्यंग्य आ “झारू (बिहनि) के माध्यमे सामाजिक सफाई, दोहरा अर्थ, ‘झारू विनु घरक शोभा’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2416 : विदेह-सदेह 14 — शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य): पुरीक यात्रा

प्रश्न 24093. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107: शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पुरीक यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुरीक यात्रा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1107मे शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क प्रविष्टि “पुरीक यात्रा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24094. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107: शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24095. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107: शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दीर्घ कविता / दार्शनिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दीर्घ कविता / दार्शनिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घ कविता / दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 24096. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107: शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मृत्यु, जीवन यात्रा, बाबाक अन्तिम यात्रा, आध्यात्मिक आकुलता

उत्तर: घ. मृत्यु, जीवन यात्रा, बाबाक अन्तिम यात्रा, आध्यात्मिक आकुलता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु, जीवन यात्रा, बाबाक अन्तिम यात्रा, आध्यात्मिक आकुलता” अछि।

प्रश्न 24097. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107: शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मृत्यु, जीवन यात्रा, बाबाक अन्तिम यात्रा, आध्यात्मिक आकुलता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मृत्यु, जीवन यात्रा, बाबाक अन्तिम यात्रा, आध्यात्मिक आकुलता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृत्यु, जीवन यात्रा, बाबाक अन्तिम यात्रा, आध्यात्मिक आकुलता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24098. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107: शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य), विधा पद्य, उप-विधा दीर्घ कविता / दार्शनिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य), विधा पद्य, उप-विधा दीर्घ कविता / दार्शनिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24099. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107: शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24100. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107: शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दीर्घ कविता / दार्शनिकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दीर्घ कविता / दार्शनिकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24101. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107: शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24102. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107मे शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा” प्रविष्टि पद्य, दीर्घ कविता / दार्शनिक आ “मृत्यु, जीवन यात्रा, बाबाक अन्तिम यात्रा, आध्यात्मिक आकुलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2416, सूचकांक पंक्ति 1107मे शिव कुमार झा टिल्लू (पद्य)क “पुरीक यात्रा” प्रविष्टि पद्य, दीर्घ कविता / दार्शनिक आ “मृत्यु, जीवन यात्रा, बाबाक अन्तिम यात्रा, आध्यात्मिक आकुलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2417 : विदेह-सदेह 14 — सुमित मिश्र: किछु भक्ति गजल, किछु गजल

प्रश्न 24103. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108: सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु भक्ति गजल, किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु भक्ति गजल, किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1108मे सुमित मिश्रक प्रविष्टि “किछु भक्ति गजल, किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24104. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108: सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24105. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108: सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24106. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108: सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति आ श्रृङ्गारक सम्मिलन, सहज बोली

उत्तर: घ. भक्ति आ श्रृङ्गारक सम्मिलन, सहज बोली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति आ श्रृङ्गारक सम्मिलन, सहज बोली” अछि।

प्रश्न 24107. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108: सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति आ श्रृङ्गारक सम्मिलन, सहज बोली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति आ श्रृङ्गारक सम्मिलन, सहज बोली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति आ श्रृङ्गारक सम्मिलन, सहज बोली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24108. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108: सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24109. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108: सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24110. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108: सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24111. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108: सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24112. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108मे सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भक्ति आ श्रृङ्गारक सम्मिलन, सहज बोली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2417, सूचकांक पंक्ति 1108मे सुमित मिश्रक “किछु भक्ति गजल, किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भक्ति आ श्रृङ्गारक सम्मिलन, सहज बोली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2418 : विदेह-सदेह 14 — सुरेन्द्र शैल: मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड

प्रश्न 24113. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109: सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1109मे सुरेन्द्र शैलक प्रविष्टि “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24114. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109: सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24115. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109: सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रश्नमूलक / व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रश्नमूलक / व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रश्नमूलक / व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 24116. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109: सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. असमंजस, लुटेरा शासन, चूहाड के माध्यमे सत्ता पीड़ा

उत्तर: घ. असमंजस, लुटेरा शासन, चूहाड के माध्यमे सत्ता पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “असमंजस, लुटेरा शासन, चूहाड के माध्यमे सत्ता पीड़ा” अछि।

प्रश्न 24117. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109: सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. असमंजस, लुटेरा शासन, चूहाड के माध्यमे सत्ता पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असमंजस, लुटेरा शासन, चूहाड के माध्यमे सत्ता पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “असमंजस, लुटेरा शासन, चूहाड के माध्यमे सत्ता पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24118. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109: सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुरेन्द्र शैल, विधा पद्य, उप-विधा प्रश्नमूलक / व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुरेन्द्र शैल, विधा पद्य, उप-विधा प्रश्नमूलक / व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24119. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109: सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24120. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109: सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रश्नमूलक / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रश्नमूलक / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24121. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109: सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24122. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109मे सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड” प्रविष्टि पद्य, प्रश्नमूलक / व्यंग्य आ “असमंजस, लुटेरा शासन, चूहाड के माध्यमे सत्ता पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2418, सूचकांक पंक्ति 1109मे सुरेन्द्र शैलक “मुदा करबै की?, बटोही, नवका महेशवाणी, चूहाड” प्रविष्टि पद्य, प्रश्नमूलक / व्यंग्य आ “असमंजस, लुटेरा शासन, चूहाड के माध्यमे सत्ता पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2419 : विदेह-सदेह 14 — बाल मुकुन्द पाठक: किछु गजल

प्रश्न 24123. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110: बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1110मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24124. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110: बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24125. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110: बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24126. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110: बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भ्रष्टाचार, चिंतन, ग्रामीण पीड़ा। ‘भ्रष्टाचारी शासनमे लोक चुप’

उत्तर: घ. भ्रष्टाचार, चिंतन, ग्रामीण पीड़ा। ‘भ्रष्टाचारी शासनमे लोक चुप’

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार, चिंतन, ग्रामीण पीड़ा। ‘भ्रष्टाचारी शासनमे लोक चुप’” अछि।

प्रश्न 24127. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110: बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भ्रष्टाचार, चिंतन, ग्रामीण पीड़ा। ‘भ्रष्टाचारी शासनमे लोक चुप’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचार, चिंतन, ग्रामीण पीड़ा। ‘भ्रष्टाचारी शासनमे लोक चुप’

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार, चिंतन, ग्रामीण पीड़ा। ‘भ्रष्टाचारी शासनमे लोक चुप’” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24128. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110: बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24129. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110: बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24130. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110: बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24131. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110: बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24132. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110मे बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भ्रष्टाचार, चिंतन, ग्रामीण पीड़ा। ‘भ्रष्टाचारी शासनमे लोक चुप’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2419, सूचकांक पंक्ति 1110मे बाल मुकुन्द पाठकक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भ्रष्टाचार, चिंतन, ग्रामीण पीड़ा। ‘भ्रष्टाचारी शासनमे लोक चुप’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2420 : विदेह-सदेह 14 — प्रदीप पुष्प: गजल

प्रश्न 24133. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111: प्रदीप पुष्पक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1111मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24134. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111: प्रदीप पुष्पक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24135. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111: प्रदीप पुष्पक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24136. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111: प्रदीप पुष्पक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अल्पाक्षर गजल, पिड़ा-विद्रोह। ‘दोसरक गीत उगबै अछि चान’

उत्तर: घ. अल्पाक्षर गजल, पिड़ा-विद्रोह। ‘दोसरक गीत उगबै अछि चान’

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अल्पाक्षर गजल, पिड़ा-विद्रोह। ‘दोसरक गीत उगबै अछि चान’” अछि।

प्रश्न 24137. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111: प्रदीप पुष्पक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अल्पाक्षर गजल, पिड़ा-विद्रोह। ‘दोसरक गीत उगबै अछि चान’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अल्पाक्षर गजल, पिड़ा-विद्रोह। ‘दोसरक गीत उगबै अछि चान’

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अल्पाक्षर गजल, पिड़ा-विद्रोह। ‘दोसरक गीत उगबै अछि चान’” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24138. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111: प्रदीप पुष्पक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24139. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111: प्रदीप पुष्पक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24140. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111: प्रदीप पुष्पक “गजल”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24141. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111: प्रदीप पुष्पक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24142. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111मे प्रदीप पुष्पक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “अल्पाक्षर गजल, पिड़ा-विद्रोह। ‘दोसरक गीत उगबै अछि चान’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2420, सूचकांक पंक्ति 1111मे प्रदीप पुष्पक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “अल्पाक्षर गजल, पिड़ा-विद्रोह। ‘दोसरक गीत उगबै अछि चान’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2421 : विदेह-सदेह 14 — इरा मिलिक: किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति

प्रश्न 24143. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112: इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1112मे इरा मिलिकक प्रविष्टि “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24144. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112: इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24145. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112: इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल / भक्ति / कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल / भक्ति / कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल / भक्ति / कविता” अछि।

प्रश्न 24146. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112: इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी आध्यात्मिकता, होलीक रंग। ‘लऽ चलू नदीक पार सखी’ प्रेमगीत

उत्तर: घ. नारी आध्यात्मिकता, होलीक रंग। ‘लऽ चलू नदीक पार सखी’ प्रेमगीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी आध्यात्मिकता, होलीक रंग। ‘लऽ चलू नदीक पार सखी’ प्रेमगीत” अछि।

प्रश्न 24147. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112: इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी आध्यात्मिकता, होलीक रंग। ‘लऽ चलू नदीक पार सखी’ प्रेमगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी आध्यात्मिकता, होलीक रंग। ‘लऽ चलू नदीक पार सखी’ प्रेमगीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी आध्यात्मिकता, होलीक रंग। ‘लऽ चलू नदीक पार सखी’ प्रेमगीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24148. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112: इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मिलिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल / भक्ति / कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मिलिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल / भक्ति / कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24149. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112: इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24150. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112: इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल / भक्ति / कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल / भक्ति / कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24151. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112: इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24152. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112मे इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति” प्रविष्टि पद्य, गजल / भक्ति / कविता आ “नारी आध्यात्मिकता, होलीक रंग। ‘लऽ चलू नदीक पार सखी’ प्रेमगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2421, सूचकांक पंक्ति 1112मे इरा मिलिकक “किछु भक्ति गजल, गजल, कविता, होलीक एक दूटा पाँति” प्रविष्टि पद्य, गजल / भक्ति / कविता आ “नारी आध्यात्मिकता, होलीक रंग। ‘लऽ चलू नदीक पार सखी’ प्रेमगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2422 : विदेह-सदेह 14 — रमा कान्त झा: होलीक हुरदंग

प्रश्न 24153. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113: रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. होलीक हुरदंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होलीक हुरदंग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1113मे रमा कान्त झाक प्रविष्टि “होलीक हुरदंग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24154. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113: रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24155. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113: रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. फागुवा गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. फागुवा गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “फागुवा गीत” अछि।

प्रश्न 24156. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113: रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परम्परागत होली, नाच, रंग, स्त्री-पुरुष हर्ष

उत्तर: घ. परम्परागत होली, नाच, रंग, स्त्री-पुरुष हर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परम्परागत होली, नाच, रंग, स्त्री-पुरुष हर्ष” अछि।

प्रश्न 24157. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113: रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परम्परागत होली, नाच, रंग, स्त्री-पुरुष हर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परम्परागत होली, नाच, रंग, स्त्री-पुरुष हर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परम्परागत होली, नाच, रंग, स्त्री-पुरुष हर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24158. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113: रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमा कान्त झा, विधा पद्य, उप-विधा फागुवा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमा कान्त झा, विधा पद्य, उप-विधा फागुवा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24159. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113: रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24160. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113: रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ फागुवा गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ फागुवा गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24161. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113: रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24162. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113मे रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग” प्रविष्टि पद्य, फागुवा गीत आ “परम्परागत होली, नाच, रंग, स्त्री-पुरुष हर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2422, सूचकांक पंक्ति 1113मे रमा कान्त झाक “होलीक हुरदंग” प्रविष्टि पद्य, फागुवा गीत आ “परम्परागत होली, नाच, रंग, स्त्री-पुरुष हर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2423 : विदेह-सदेह 14 — बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोक: प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त...

प्रश्न 24163. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114: बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1114मे बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक प्रविष्टि “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24164. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114: बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24165. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114: बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्लोक / मन्त्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्लोक / मन्त्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्लोक / मन्त्र” अछि।

प्रश्न 24166. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114: बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-संस्कार, वैदिक परम्परा, नित्य कर्मक मन्त्र (कराग्रे वसते लक्ष्मीः इत्यादि)

उत्तर: घ. बाल-संस्कार, वैदिक परम्परा, नित्य कर्मक मन्त्र (कराग्रे वसते लक्ष्मीः इत्यादि)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-संस्कार, वैदिक परम्परा, नित्य कर्मक मन्त्र (कराग्रे वसते लक्ष्मीः इत्यादि)” अछि।

प्रश्न 24167. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114: बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-संस्कार, वैदिक परम्परा, नित्य कर्मक मन्त्र (कराग्रे वसते लक्ष्मीः इत्यादि)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-संस्कार, वैदिक परम्परा, नित्य कर्मक मन्त्र (कराग्रे वसते लक्ष्मीः इत्यादि)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-संस्कार, वैदिक परम्परा, नित्य कर्मक मन्त्र (कराग्रे वसते लक्ष्मीः इत्यादि)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24168. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114: बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोक, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा श्लोक / मन्त्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोक, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा श्लोक / मन्त्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24169. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114: बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24170. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114: बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ श्लोक / मन्त्रक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ श्लोक / मन्त्रक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24171. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114: बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24172. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114मे बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि” प्रविष्टि गद्य/पद्य, श्लोक / मन्त्र आ “बाल-संस्कार, वैदिक परम्परा, नित्य कर्मक मन्त्र (कराग्रे वसते लक्ष्मीः इत्यादि)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2423, सूचकांक पंक्ति 1114मे बच्चा लोकिन द्वारा स्मरणीय श्लोकक “प्रातःकाल, संध्या, स्नान मन्त्र, आशीर्वचन आदि” प्रविष्टि गद्य/पद्य, श्लोक / मन्त्र आ “बाल-संस्कार, वैदिक परम्परा, नित्य कर्मक मन्त्र (कराग्रे वसते लक्ष्मीः इत्यादि)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2424 : विदेह-सदेह 14 — राजदेव मण्डल (साक्षात्कार): उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित...

प्रश्न 24173. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115: राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1115मे राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क प्रविष्टि “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24174. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115: राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24175. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115: राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 24176. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115: राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह साहित्य सम्मान प्राप्त रचनाकारक दृष्टि। ‘लोक कल्याणक भावना’ – साहित्यक परम अभीष्ट

उत्तर: घ. विदेह साहित्य सम्मान प्राप्त रचनाकारक दृष्टि। ‘लोक कल्याणक भावना’ – साहित्यक परम अभीष्ट

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह साहित्य सम्मान प्राप्त रचनाकारक दृष्टि। ‘लोक कल्याणक भावना’ – साहित्यक परम अभीष्ट” अछि।

प्रश्न 24177. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115: राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह साहित्य सम्मान प्राप्त रचनाकारक दृष्टि। ‘लोक कल्याणक भावना’ – साहित्यक परम अभीष्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह साहित्य सम्मान प्राप्त रचनाकारक दृष्टि। ‘लोक कल्याणक भावना’ – साहित्यक परम अभीष्ट

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह साहित्य सम्मान प्राप्त रचनाकारक दृष्टि। ‘लोक कल्याणक भावना’ – साहित्यक परम अभीष्ट” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24178. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115: राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल (साक्षात्कार), विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल (साक्षात्कार), विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24179. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115: राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24180. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115: राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24181. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115: राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24182. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115मे राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “विदेह साहित्य सम्मान प्राप्त रचनाकारक दृष्टि। ‘लोक कल्याणक भावना’ – साहित्यक परम अभीष्ट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2424, सूचकांक पंक्ति 1115मे राजदेव मण्डल (साक्षात्कार)क “उमेश मण्डलद्वारा साक्षात्कार: साहित्यक उद्देश्य, इतिहास, साहित्यक शक्ति” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “विदेह साहित्य सम्मान प्राप्त रचनाकारक दृष्टि। ‘लोक कल्याणक भावना’ – साहित्यक परम अभीष्ट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2425 : विदेह-सदेह 14 — विनीत उत्पल: राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ...

प्रश्न 24183. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116: विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1116मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24184. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116: विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24185. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116: विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 24186. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116: विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्ध विद्यालय

उत्तर: घ. अन्ध विद्यालय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्ध विद्यालय” अछि।

प्रश्न 24187. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116: विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्ध विद्यालय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्ध विद्यालय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्ध विद्यालय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24188. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116: विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24189. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116: विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24190. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116: विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24191. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116: विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24192. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116मे विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “अन्ध विद्यालय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2425, सूचकांक पंक्ति 1116मे विनीत उत्पलक “राजकुमार झा (नेत्रहीन संगीतकार) संग साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “अन्ध विद्यालय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2426 : विदेह-सदेह 14 — विदेह नाट्य उत्सव २०१३: नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-...

प्रश्न 24193. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117: विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1117मे विदेह नाट्य उत्सव २०१३क प्रविष्टि “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24194. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117: विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/नाट्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/नाट्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/नाट्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24195. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117: विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाट्य उत्सव / रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाट्य उत्सव / रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाट्य उत्सव / रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 24196. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117: विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह नाट्य आयोजनमे जगदीश मण्डल

उत्तर: घ. विदेह नाट्य आयोजनमे जगदीश मण्डल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह नाट्य आयोजनमे जगदीश मण्डल” अछि।

प्रश्न 24197. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117: विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह नाट्य आयोजनमे जगदीश मण्डल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह नाट्य आयोजनमे जगदीश मण्डल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह नाट्य आयोजनमे जगदीश मण्डल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24198. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117: विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विदेह नाट्य उत्सव २०१३, विधा गद्य/नाट्य, उप-विधा नाट्य उत्सव / रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विदेह नाट्य उत्सव २०१३, विधा गद्य/नाट्य, उप-विधा नाट्य उत्सव / रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24199. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117: विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24200. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117: विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य/नाट्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाट्य उत्सव / रिपोर्ताजक रूपमे गद्य/नाट्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाट्य उत्सव / रिपोर्ताजक रूपमे गद्य/नाट्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24201. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117: विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24202. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117मे विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...” प्रविष्टि गद्य/नाट्य, नाट्य उत्सव / रिपोर्ताज आ “विदेह नाट्य आयोजनमे जगदीश मण्डल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2426, सूचकांक पंक्ति 1117मे विदेह नाट्य उत्सव २०१३क “नाट्योत्सवक समाचार-आयोजन, सम्मानित व्यक्ति सूची (कुल ४५+ सम्मान), नाटक-सतमाए, गंगा ब्रिज, जजावत, ऊँ...” प्रविष्टि गद्य/नाट्य, नाट्य उत्सव / रिपोर्ताज आ “विदेह नाट्य आयोजनमे जगदीश मण्डल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2427 : विदेह-सदेह 14 — डॉ. मन्जु कुमार सिंह: ‘पाखलो’ (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा

प्रश्न 24203. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118: डॉ. मन्जु कुमार सिंहक “‘पाखलो’ (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ‘पाखलो’ (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘पाखलो’ (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1118मे डॉ. मन्जु कुमार सिंहक प्रविष्टि “‘पाखलो’ (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24204. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118: डॉ. मन्जु कुमार सिंहक “‘पाखलो’ (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24205. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118: डॉ. मन्जु कुमार सिंहक “‘पाखलो’ (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद / समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद / समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद / समीक्षा” अछि।

प्रश्न 24206. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118: डॉ. मन्जु कुमार सिंहक “‘पाखलो’ (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोंकणी साहित्यक कोश

उत्तर: घ. कोंकणी साहित्यक कोश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोंकणी साहित्यक कोश” अछि।

प्रश्न 24207. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118: डॉ. मन्जु कुमार सिंहक “‘पाखलो’ (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोंकणी साहित्यक कोश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोंकणी साहित्यक कोश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोंकणी साहित्यक कोश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24208. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118: डॉ. मन्जु कुमार सिंहक "'पाखलो' (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. मन्जु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद / समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. मन्जु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद / समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24209. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118: डॉ. मन्जु कुमार सिंहक "'पाखलो' (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24210. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118: डॉ. मन्जु कुमार सिंहक "'पाखलो' (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा"केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद / समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद / समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24211. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118: डॉ. मन्जु कुमार सिंहक "'पाखलो' (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा" प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24212. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118मे डॉ. मन्जु कुमार सिंहक "'पाखलो' (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा" प्रविष्टि गद्य, अनुवाद / समीक्षा आ "कोंकणी साहित्यक कोश" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2427, सूचकांक पंक्ति 1118मे डॉ. मन्जु कुमार सिंहक "'पाखलो' (तुकाराम राठ मूल कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद आ समीक्षा" प्रविष्टि गद्य, अनुवाद / समीक्षा आ "कोंकणी साहित्यक कोश" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2428 : विदेह-सदेह 14 — तुकाराम राठ (मूल कोंकणी): ‘पाखलो’ – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)

प्रश्न 24213. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119: तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क “‘पाखलो’ – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ‘पाखलो’ – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘पाखलो’ – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1119मे तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क प्रविष्टि “‘पाखलो’ – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24214. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119: तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क “‘पाखलो’ – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24215. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119: तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क “‘पाखलो’ – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास (मूल)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास (मूल)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास (मूल)” अछि।

प्रश्न 24216. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119: तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क “‘पाखलो’ – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गोवाक पाखलो (पुतली) पीड़ित मानसिकता

उत्तर: घ. गोवाक पाखलो (पुतली) पीड़ित मानसिकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गोवाक पाखलो (पुतली) पीड़ित मानसिकता” अछि।

प्रश्न 24217. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119: तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क “‘पाखलो’ – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गोवाक पाखलो (पुतली) पीड़ित मानसिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोवाक पाखलो (पुतली) पीड़ित मानसिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गोवाक पाखलो (पुतली) पीड़ित मानसिकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24218. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119: तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क "'पाखलो' – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तुकाराम राठ (मूल कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास (मूल)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तुकाराम राठ (मूल कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास (मूल)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24219. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119: तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क "'पाखलो' – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24220. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119: तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क "'पाखलो' – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)"केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यास (मूल)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यास (मूल)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24221. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119: तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क "'पाखलो' – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24222. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119मे तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क "'पाखलो' – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)" प्रविष्टि गद्य, उपन्यास (मूल) आ "गोवाक पाखलो (पुतली) पीड़ित मानसिकता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2428, सूचकांक पंक्ति 1119मे तुकाराम राठ (मूल कोंकणी)क "'पाखलो' – कोंकणी उपन्यास (मैथिली अनुवाद हेतु मूल स्रोत)" प्रविष्टि गद्य, उपन्यास (मूल) आ "गोवाक पाखलो (पुतली) पीड़ित मानसिकता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2429 : विदेह-सदेह 14 — राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक): साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २

प्रश्न 24223. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120: राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1120मे राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क प्रविष्टि “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24224. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120: राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24225. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120: राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 24226. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120: राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दरभंगा अन्ध विद्यालय

उत्तर: घ. दरभंगा अन्ध विद्यालय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दरभंगा अन्ध विद्यालय” अछि।

प्रश्न 24227. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120: राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दरभंगा अन्ध विद्यालय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दरभंगा अन्ध विद्यालय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दरभंगा अन्ध विद्यालय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24228. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120: राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक), विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक), विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24229. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120: राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24230. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120: राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24231. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120: राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24232. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120मे राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “दरभंगा अन्ध विद्यालय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2429, सूचकांक पंक्ति 1120मे राजकुमार झा (नेत्रहीन लोक गायक)क “साक्षात्कार – ‘हम आन्हर रही तइसँ अभ्यास खूब केलौं’ भाग २” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “दरभंगा अन्ध विद्यालय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2430 : विदेह-सदेह 14 — बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म): नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘सा...

प्रश्न 24233. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121: बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1121मे बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क प्रविष्टि “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24234. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121: बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/नाट्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/नाट्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/नाट्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24235. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121: बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाट्य लेखन / निर्देशन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाट्य लेखन / निर्देशन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाट्य लेखन / निर्देशन” अछि।

प्रश्न 24236. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121: बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह नाट्योत्सव २०१३ के संयोजक

उत्तर: घ. विदेह नाट्योत्सव २०१३ के संयोजक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह नाट्योत्सव २०१३ के संयोजक” अछि।

प्रश्न 24237. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121: बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह नाट्योत्सव २०१३ के संयोजक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह नाट्योत्सव २०१३ के संयोजक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह नाट्योत्सव २०१३ के संयोजक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24238. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121: बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म), विधा गद्य/नाट्य, उप-विधा नाट्य लेखन / निर्देशन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म), विधा गद्य/नाट्य, उप-विधा नाट्य लेखन / निर्देशन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24239. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121: बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24240. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121: बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य/नाट्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाट्य लेखन / निर्देशनक रूपमे गद्य/नाट्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाट्य लेखन / निर्देशनक रूपमे गद्य/नाट्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24241. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121: बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24242. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121मे बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन” प्रविष्टि गद्य/नाट्य, नाट्य लेखन / निर्देशन आ “विदेह नाट्योत्सव २०१३ के संयोजक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2430, सूचकांक पंक्ति 1121मे बेचन ठाकुर (नाट्यकर्म)क “नाट्य निर्देशन – ‘सतमाए’, ‘गंगा ब्रिज’, ‘जजावत’, ‘ऊँच-नीच’, नुक्कड़ ‘साइकिलक पाइ’, नाट्योत्सव संयोजन” प्रविष्टि गद्य/नाट्य, नाट्य लेखन / निर्देशन आ “विदेह नाट्योत्सव २०१३ के संयोजक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2431 : विदेह-सदेह 14 — उमेश मण्डल: साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’

प्रश्न 24243. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122: उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1122मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24244. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122: उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य / पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य / पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य / पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24245. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122: उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार / कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार / कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार / कविता” अछि।

प्रश्न 24246. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122: उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह नाट्योत्सवमे मंच संचालन

उत्तर: घ. विदेह नाट्योत्सवमे मंच संचालन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह नाट्योत्सवमे मंच संचालन” अछि।

प्रश्न 24247. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122: उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह नाट्योत्सवमे मंच संचालन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह नाट्योत्सवमे मंच संचालन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह नाट्योत्सवमे मंच संचालन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24248. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122: उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य / पद्य, उप-विधा साक्षात्कार / कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य / पद्य, उप-विधा साक्षात्कार / कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24249. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122: उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठकेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24250. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122: उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’”केँ विदेह-सदेह 14क गद्य / पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कार / कविताक रूपमे गद्य / पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कार / कविताक रूपमे गद्य / पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24251. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122: उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24252. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122मे उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’” प्रविष्टि गद्य / पद्य, साक्षात्कार / कविता आ “विदेह नाट्योत्सवमे मंच संचालन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2431, सूचकांक पंक्ति 1122मे उमेश मण्डलक “साक्षात्कारकर्ता (राजदेव मण्डलके साथ), कवि सम्मेलनमे कविता ‘कागज’” प्रविष्टि गद्य / पद्य, साक्षात्कार / कविता आ “विदेह नाट्योत्सवमे मंच संचालन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2432 : विदेह-सदेह 14 — रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदि: कवि सम्मेलन प्रस्तुति – 'सुरुज मारए', 'कागज', 'खखतुओं भुखल', 'व्यवस्थाक...

प्रश्न 24253. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123: रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक "कवि सम्मेलन प्रस्तुति – 'सुरुज मारए', 'कागज', 'खखतुओं भुखल', 'व्यवस्थाक जाति-पाति', 'मिथिला वर्णन',..." प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कवि सम्मेलन प्रस्तुति – 'सुरुज मारए', 'कागज', 'खखतुओं भुखल', 'व्यवस्थाक जाति-पाति', 'मिथिला वर्णन',...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि सम्मेलन प्रस्तुति – 'सुरुज मारए', 'कागज', 'खखतुओं भुखल', 'व्यवस्थाक जाति-पाति', 'मिथिला वर्णन',...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1123मे रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक प्रविष्टि "कवि सम्मेलन प्रस्तुति – 'सुरुज मारए', 'कागज', 'खखतुओं भुखल', 'व्यवस्थाक जाति-पाति', 'मिथिला वर्णन',..." रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24254. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123: रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक "कवि सम्मेलन प्रस्तुति – 'सुरुज मारए', 'कागज', 'खखतुओं भुखल', 'व्यवस्थाक जाति-पाति', 'मिथिला वर्णन',..."क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24255. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123: रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक "कवि सम्मेलन प्रस्तुति – 'सुरुज मारए', 'कागज', 'खखतुओं भुखल', 'व्यवस्थाक जाति-पाति', 'मिथिला वर्णन',..."क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समूह कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समूह कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "समूह कविता" अछि।

प्रश्न 24256. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123: रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक "कवि सम्मेलन प्रस्तुति – 'सुरुज मारए', 'कागज', 'खखतुओं भुखल', 'व्यवस्थाक जाति-पाति', 'मिथिला वर्णन',..." पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह नाट्योत्सव कवि सम्मेलनमे अनेक कवि (शम्भु सौरभ

उत्तर: घ. विदेह नाट्योत्सव कवि सम्मेलनमे अनेक कवि (शम्भु सौरभ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेह नाट्योत्सव कवि सम्मेलनमे अनेक कवि (शम्भु सौरभ" अछि।

प्रश्न 24257. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123: रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक "कवि सम्मेलन प्रस्तुति – 'सुरुज मारए', 'कागज', 'खखतुओं भुखल', 'व्यवस्थाक जाति-पाति', 'मिथिला वर्णन',..." प्रविष्टि विदेह-सदेह 14मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह नाट्योत्सव कवि सम्मेलनमे अनेक कवि (शम्भु सौरभ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह नाट्योत्सव कवि सम्मेलनमे अनेक कवि (शम्भु सौरभ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "विदेह नाट्योत्सव कवि सम्मेलनमे अनेक कवि (शम्भु सौरभ" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24258. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123: रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक “कवि सम्मेलन प्रस्तुति – ‘सुरुज मारए’, ‘कागज’, ‘खखतुओं भुखल’, ‘व्यवस्थाक जाति-पाति’, ‘मिथिला वर्णन’,...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदि, विधा पद्य, उप-विधा समूह कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदि, विधा पद्य, उप-विधा समूह कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24259. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123: रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक “कवि सम्मेलन प्रस्तुति – ‘सुरुज मारए’, ‘कागज’, ‘खखतुओं भुखल’, ‘व्यवस्थाक जाति-पाति’, ‘मिथिला वर्णन’,...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24260. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123: रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक “कवि सम्मेलन प्रस्तुति – ‘सुरुज मारए’, ‘कागज’, ‘खखतुओं भुखल’, ‘व्यवस्थाक जाति-पाति’, ‘मिथिला वर्णन’,...”केँ विदेह-सदेह 14क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समूह कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समूह कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24261. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123: रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक “कवि सम्मेलन प्रस्तुति – ‘सुरुज मारए’, ‘कागज’, ‘खखतुओं भुखल’, ‘व्यवस्थाक जाति-पाति’, ‘मिथिला वर्णन’,...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 14क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24262. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123मे रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक “कवि सम्मेलन प्रस्तुति – ‘सुरुज मारए’, ‘कागज’, ‘खखतुओं भुखल’, ‘व्यवस्थाक जाति-पाति’, ‘मिथिला वर्णन’,...” प्रविष्टि पद्य, समूह कविता आ “विदेह नाट्योत्सव कवि सम्मेलनमे अनेक कवि (शम्भु सौरभ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2432, सूचकांक पंक्ति 1123मे रामविलास साह, नन्द विलास राय, शम्भु सौरभ, उमेश पासवान, परमानन्द प्रभाकर, विपीन कर्ण आदिक “कवि सम्मेलन प्रस्तुति – ‘सुरुज मारए’, ‘कागज’, ‘खखतुओं भुखल’, ‘व्यवस्थाक जाति-पाति’, ‘मिथिला वर्णन’,...” प्रविष्टि पद्य, समूह कविता आ “विदेह नाट्योत्सव कवि सम्मेलनमे अनेक कवि (शम्भु सौरभ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 14क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2433 : विदेह-सदेह 15 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिलीक वर्त्तमान-गजल

प्रश्न 24263. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीक वर्त्तमान-गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक वर्त्तमान-गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1124मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24264. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24265. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24266. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजलक छन्द/बहर पर विविध गजलकारक कमजोरीक पर्दाफाश

उत्तर: घ. गजलक छन्द/बहर पर विविध गजलकारक कमजोरीक पर्दाफाश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजलक छन्द/बहर पर विविध गजलकारक कमजोरीक पर्दाफाश” अछि।

प्रश्न 24267. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजलक छन्द/बहर पर विविध गजलकारक कमजोरीक पर्दाफाश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलक छन्द/बहर पर विविध गजलकारक कमजोरीक पर्दाफाश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजलक छन्द/बहर पर विविध गजलकारक कमजोरीक पर्दाफाश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24268. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24269. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24270. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24271. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24272. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “गजलक छन्द/बहर पर विविध गजलकारक कमजोरीक पर्दाफाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2433, सूचकांक पंक्ति 1124मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक वर्त्तमान-गजल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “गजलक छन्द/बहर पर विविध गजलकारक कमजोरीक पर्दाफाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2434 : विदेह-सदेह 15 — गजेन्द्र ठाकुर: माँझ आंगन्मे कतिआएल छी

प्रश्न 24273. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125: गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माँझ आंगन्मे कतिआएल छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँझ आंगन्मे कतिआएल छी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1125मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24274. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125: गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24275. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125: गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पोथी-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पोथी-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पोथी-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 24276. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125: गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुन्नाजीक रुबाइ-गजल संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' कें हृदयग्राही आ भावपूर्ण बतबैत ओकर स...

उत्तर: घ. मुन्नाजीक रुबाइ-गजल संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' कें हृदयग्राही आ भावपूर्ण बतबैत ओकर स...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुन्नाजीक रुबाइ-गजल संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' कें हृदयग्राही आ भावपूर्ण बतबैत ओकर स...” अछि।

प्रश्न 24277. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125: गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुन्नाजीक रुबाइ-गजल संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' कें हृदयग्राही आ भावपूर्ण बतबैत ओकर स...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुन्नाजीक रुबाइ-गजल संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' कें हृदयग्राही आ भावपूर्ण बतबैत ओकर स...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुन्नाजीक रुबाइ-गजल संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' कें हृदयग्राही आ भावपूर्ण बतबैत ओकर स...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24278. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125: गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा पोथी-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा पोथी-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24279. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125: गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24280. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125: गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी”कें विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पोथी-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पोथी-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24281. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125: गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24282. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125मे गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी” प्रविष्टि गद्य, पोथी-समीक्षा आ “मुन्नाजीक रुबाइ-गजल संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' कें हृदयग्राही आ भावपूर्ण बतबैत ओकर स...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2434, सूचकांक पंक्ति 1125मे गजेन्द्र ठाकुरक “माँझ आंगन्मे कतिआएल छी” प्रविष्टि गद्य, पोथी-समीक्षा आ “मुन्नाजीक रुबाइ-गजल संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' कें हृदयग्राही आ भावपूर्ण बतबैत ओकर स...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2435 : विदेह-सदेह 15 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

प्रश्न 24283. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1126मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रविष्टि “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24284. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24285. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साहित्यिक परिचय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साहित्यिक परिचय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साहित्यिक परिचय” अछि।

प्रश्न 24286. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गीत-गजलकें सहोदर मानैत प्रारम्भिक आधुनिक मैथिली गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा आ संरचनागत नियम

उत्तर: घ. गीत-गजलकें सहोदर मानैत प्रारम्भिक आधुनिक मैथिली गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा आ संरचनागत नियम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गीत-गजलकें सहोदर मानैत प्रारम्भिक आधुनिक मैथिली गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा आ संरचनागत नियम” अछि।

प्रश्न 24287. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गीत-गजलकें सहोदर मानैत प्रारम्भिक आधुनिक मैथिली गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा आ संरचनागत नियम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत-गजलकें सहोदर मानैत प्रारम्भिक आधुनिक मैथिली गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा आ संरचनागत नियम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गीत-गजलकें सहोदर मानैत प्रारम्भिक आधुनिक मैथिली गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा आ संरचनागत नियम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24288. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा साहित्यिक परिचय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा साहित्यिक परिचय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24289. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24290. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साहित्यिक परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साहित्यिक परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24291. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24292. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि गद्य, साहित्यिक परिचय आ “गीत-गजलकेँ सहोदर मानैत प्रारम्भिक आधुनिक मैथिली गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा आ संरचनागत नियम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2435, सूचकांक पंक्ति 1126मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि गद्य, साहित्यिक परिचय आ “गीत-गजलकेँ सहोदर मानैत प्रारम्भिक आधुनिक मैथिली गजलक ऐतिहासिक विकास-यात्रा आ संरचनागत नियम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2436 : विदेह-सदेह 15 — मुन्नाजी: बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा

प्रश्न 24293. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127: मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1127मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24294. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127: मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24295. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127: मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विधा-परिचय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विधा-परिचय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विधा-परिचय” अछि।

प्रश्न 24296. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127: मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. २०१२ मे आशीष अनचिन्हारद्वारा प्रस्तावित बाल गजल अवधारणाक ऐतिहासिक स्वीकृति आ प्रारम्भिक प...

उत्तर: घ. २०१२ मे आशीष अनचिन्हारद्वारा प्रस्तावित बाल गजल अवधारणाक ऐतिहासिक स्वीकृति आ प्रारम्भिक प...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “२०१२ मे आशीष अनचिन्हारद्वारा प्रस्तावित बाल गजल अवधारणाक ऐतिहासिक स्वीकृति आ प्रारम्भिक प...” अछि।

प्रश्न 24297. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127: मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. २०१२ मे आशीष अनचिन्हारद्वारा प्रस्तावित बाल गजल अवधारणाक ऐतिहासिक स्वीकृति आ प्रारम्भिक प...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २०१२ मे आशीष अनचिन्हारद्वारा प्रस्तावित बाल गजल अवधारणाक ऐतिहासिक स्वीकृति आ प्रारम्भिक प...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “२०१२ मे आशीष अनचिन्हारद्वारा प्रस्तावित बाल गजल अवधारणाक ऐतिहासिक स्वीकृति आ प्रारम्भिक प...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24298. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127: मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा विधा-परिचय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा विधा-परिचय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24299. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127: मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24300. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127: मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विधा-परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विधा-परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24301. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127: मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24302. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127मे मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि गद्य, विधा-परिचय आ “२०१२ मे आशीष अनचिन्हारद्वारा प्रस्तावित बाल गजल अवधारणाक ऐतिहासिक स्वीकृति आ प्रारम्भिक प...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2436, सूचकांक पंक्ति 1127मे मुन्नाजीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि गद्य, विधा-परिचय आ “२०१२ मे आशीष अनचिन्हारद्वारा प्रस्तावित बाल गजल अवधारणाक ऐतिहासिक स्वीकृति आ प्रारम्भिक प...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2437 : विदेह-सदेह 15 — कामिनी कामायनी: सोर, कोन डारि पर केकर खोता

प्रश्न 24303. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128: कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सोर, कोन डारि पर केकर खोता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सोर, कोन डारि पर केकर खोता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1128मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “सोर, कोन डारि पर केकर खोता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24304. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128: कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24305. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128: कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 24306. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128: कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यौन शोषणपर आधारित स्त्री-मनोविज्ञानक अत्यन्त मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्रण

उत्तर: घ. यौन शोषणपर आधारित स्त्री-मनोविज्ञानक अत्यन्त मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यौन शोषणपर आधारित स्त्री-मनोविज्ञानक अत्यन्त मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्रण” अछि।

प्रश्न 24307. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128: कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यौन शोषणपर आधारित स्त्री-मनोविज्ञानक अत्यन्त मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यौन शोषणपर आधारित स्त्री-मनोविज्ञानक अत्यन्त मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यौन शोषणपर आधारित स्त्री-मनोविज्ञानक अत्यन्त मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24308. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128: कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24309. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128: कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24310. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128: कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24311. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128: कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24312. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128मे कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यौन शोषणपर आधारित स्त्री-मनोविज्ञानक अत्यन्त मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2437, सूचकांक पंक्ति 1128मे कामिनी कामायनीक “सोर, कोन डारि पर केकर खोता” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यौन शोषणपर आधारित स्त्री-मनोविज्ञानक अत्यन्त मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2438 : विदेह-सदेह 15 — कुमार पृथु: नापल तौलल पसरल पथार

प्रश्न 24313. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129: कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नापल तौलल पसरल पथार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नापल तौलल पसरल पथार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1129मे कुमार पृथुक प्रविष्टि “नापल तौलल पसरल पथार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24314. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129: कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24315. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129: कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पोथी-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पोथी-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पोथी-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 24316. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129: कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परमेश्वर कापड़िक कथा-संग्रह 'पथार'केँ सहज लोकभाषा

उत्तर: घ. परमेश्वर कापड़िक कथा-संग्रह 'पथार'केँ सहज लोकभाषा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परमेश्वर कापड़िक कथा-संग्रह 'पथार'केँ सहज लोकभाषा” अछि।

प्रश्न 24317. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129: कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परमेश्वर कापड़िक कथा-संग्रह 'पथार'कें सहज लोकभाषा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परमेश्वर कापड़िक कथा-संग्रह 'पथार'कें सहज लोकभाषा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परमेश्वर कापड़िक कथा-संग्रह 'पथार'कें सहज लोकभाषा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24318. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129: कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार पृथु, विधा गद्य, उप-विधा पोथी-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार पृथु, विधा गद्य, उप-विधा पोथी-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24319. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129: कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24320. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129: कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार”कें विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पोथी-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पोथी-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24321. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129: कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24322. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129मे कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार” प्रविष्टि गद्य, पोथी-समीक्षा आ “परमेश्वर कापड़िक कथा-संग्रह 'पथार'कें सहज लोकभाषा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2438, सूचकांक पंक्ति 1129मे कुमार पृथुक “नापल तौलल पसरल पथार” प्रविष्टि गद्य, पोथी-समीक्षा आ “परमेश्वर कापड़िक कथा-संग्रह 'पथार'कें सहज लोकभाषा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2439 : विदेह-सदेह 15 — डॉ. अरूण कुमार सिंह: अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण

प्रश्न 24323. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130: डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1130मे डॉ. अरूण कुमार सिंहक प्रविष्टि “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24324. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130: डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24325. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130: डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

प्रश्न 24326. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130: डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिलीक लेल पद-चिह्न टैग-सेट सहित भाषा-प्रौद्योगिकीक दृष्टिसँ कम्प्यूटेशनल व्याकरण निर्म...

उत्तर: घ. मैथिलीक लेल पद-चिह्न टैग-सेट सहित भाषा-प्रौद्योगिकीक दृष्टिसँ कम्प्यूटेशनल व्याकरण निर्म...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलीक लेल पद-चिह्न टैग-सेट सहित भाषा-प्रौद्योगिकीक दृष्टिसँ कम्प्यूटेशनल व्याकरण निर्म...” अछि।

प्रश्न 24327. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130: डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिलीक लेल पद-चिह्न टैग-सेट सहित भाषा-प्रौद्योगिकीक दृष्टिसँ कम्प्यूटेशनल व्याकरण निर्म...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक लेल पद-चिह्न टैग-सेट सहित भाषा-प्रौद्योगिकीक दृष्टिसँ कम्प्यूटेशनल व्याकरण निर्म...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिलीक लेल पद-चिह्न टैग-सेट सहित भाषा-प्रौद्योगिकीक दृष्टिसँ कम्प्यूटेशनल व्याकरण निर्म...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24328. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130: डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरूण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरूण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24329. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130: डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24330. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130: डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24331. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130: डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24332. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130मे डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “मैथिलीक लेल पद-चिह्न टैग-सेट सहित भाषा-प्रौद्योगिकीक दृष्टिसँ कम्प्यूटेशनल व्याकरण निर्म...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2439, सूचकांक पंक्ति 1130मे डॉ. अरूण कुमार सिंहक “अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (संगणनात्मक) मैथिली व्याकरण” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “मैथिलीक लेल पद-चिह्न टैग-सेट सहित भाषा-प्रौद्योगिकीक दृष्टिसँ कम्प्यूटेशनल व्याकरण निर्म...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2440 : विदेह-सदेह 15 — अनामिका राज: सीमा

प्रश्न 24333. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131: अनामिका राजक “सीमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सीमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीमा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1131मे अनामिका राजक प्रविष्टि “सीमा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24334. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131: अनामिका राजक “सीमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24335. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131: अनामिका राजक “सीमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-कथा” अछि।

प्रश्न 24336. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131: अनामिका राजक “सीमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज विरोधी परिवारमे बेटीक विवाहोपरान्त सम्पत्ति आ नैहरसँ सम्बन्ध विच्छेदक विडम्बना

उत्तर: घ. दहेज विरोधी परिवारमे बेटीक विवाहोपरान्त सम्पत्ति आ नैहरसँ सम्बन्ध विच्छेदक विडम्बना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज विरोधी परिवारमे बेटीक विवाहोपरान्त सम्पत्ति आ नैहरसँ सम्बन्ध विच्छेदक विडम्बना” अछि।

प्रश्न 24337. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131: अनामिका राजक “सीमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज विरोधी परिवारमे बेटीक विवाहोपरान्त सम्पत्ति आ नैहरसँ सम्बन्ध विच्छेदक विडम्बना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज विरोधी परिवारमे बेटीक विवाहोपरान्त सम्पत्ति आ नैहरसँ सम्बन्ध विच्छेदक विडम्बना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज विरोधी परिवारमे बेटीक विवाहोपरान्त सम्पत्ति आ नैहरसँ सम्बन्ध विच्छेदक विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24338. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131: अनामिका राजक “सीमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनामिका राज, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनामिका राज, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24339. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131: अनामिका राजक “सीमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24340. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131: अनामिका राजक “सीमा”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24341. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131: अनामिका राजक “सीमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24342. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131मे अनामिका राजक “सीमा” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “दहेज विरोधी परिवारमे बेटीक विवाहोपरान्त सम्पत्ति आ नैहरसँ सम्बन्ध विच्छेदक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2440, सूचकांक पंक्ति 1131मे अनामिका राजक “सीमा” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “दहेज विरोधी परिवारमे बेटीक विवाहोपरान्त सम्पत्ति आ नैहरसँ सम्बन्ध विच्छेदक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2441 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: पहरा-अधपहरा

प्रश्न 24343. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132: आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पहरा-अधपहरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पहरा-अधपहरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1132मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “पहरा-अधपहरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24344. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132: आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24345. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132: आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24346. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132: आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाबा बैद्यनाथक गजल-संग्रह 'पहरा इमानपर' मे बहर

उत्तर: घ. बाबा बैद्यनाथक गजल-संग्रह 'पहरा इमानपर' मे बहर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाबा बैद्यनाथक गजल-संग्रह 'पहरा इमानपर' मे बहर” अछि।

प्रश्न 24347. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132: आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाबा बैद्यनाथक गजल-संग्रह 'पहरा इमानपर' मे बहर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबा बैद्यनाथक गजल-संग्रह 'पहरा इमानपर' मे बहर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाबा बैद्यनाथक गजल-संग्रह 'पहरा इमानपर' मे बहर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24348. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132: आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24349. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132: आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24350. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132: आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24351. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132: आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24352. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132मे आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “बाबा बैद्यनाथक गजल-संग्रह 'पहरा इमानपर' मे बहर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2441, सूचकांक पंक्ति 1132मे आशीष अनचिन्हारक “पहरा-अधपहरा” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “बाबा बैद्यनाथक गजल-संग्रह 'पहरा इमानपर' मे बहर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2442 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील

प्रश्न 24353. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133: आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1133मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24354. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133: आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24355. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133: आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अपील/निर्देश

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अपील/निर्देश

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अपील/निर्देश” अछि।

प्रश्न 24356. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133: आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल प्रकाशनमे मैथिली वर्तनी आ बहरक टूटबासँ बचबाक लेल गजलकार एवं संपादक सभसँ व्यावहारिक आग...

उत्तर: घ. गजल प्रकाशनमे मैथिली वर्तनी आ बहरक टूटबासँ बचबाक लेल गजलकार एवं संपादक सभसँ व्यावहारिक आग...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल प्रकाशनमे मैथिली वर्तनी आ बहरक टूटबासँ बचबाक लेल गजलकार एवं संपादक सभसँ व्यावहारिक आग...” अछि।

प्रश्न 24357. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133: आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल प्रकाशनमे मैथिली वर्तनी आ बहरक टूटबासँ बचबाक लेल गजलकार एवं संपादक सभसँ व्यावहारिक आग...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल प्रकाशनमे मैथिली वर्तनी आ बहरक टूटबासँ बचबाक लेल गजलकार एवं संपादक सभसँ व्यावहारिक आग...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल प्रकाशनमे मैथिली वर्तनी आ बहरक टूटबासँ बचबाक लेल गजलकार एवं संपादक सभसँ व्यावहारिक आग...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24358. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133: आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा अपील/निर्देश

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा अपील/निर्देश

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24359. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133: आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24360. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133: आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अपील/निर्देशक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अपील/निर्देशक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24361. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133: आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24362. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133मे आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील” प्रविष्टि गद्य, अपील/निर्देश आ “गजल प्रकाशनमे मैथिली वर्तनी आ बहरक टूटबासँ बचबाक लेल गजलकार एवं संपादक सभसँ व्यावहारिक आग...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2442, सूचकांक पंक्ति 1133मे आशीष अनचिन्हारक “मुद्रित पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील” प्रविष्टि गद्य, अपील/निर्देश आ “गजल प्रकाशनमे मैथिली वर्तनी आ बहरक टूटबासँ बचबाक लेल गजलकार एवं संपादक सभसँ व्यावहारिक आग...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2443 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल

प्रश्न 24363. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134: आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1134मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24364. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134: आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24365. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134: आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/आलोचना” अछि।

प्रश्न 24366. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134: आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'तत-बाहर' पत्रिकाक संपादकपर बेबहर गजल प्रकाशन आ गीत-गजलक भेद नहि बूझबाक आरोप

उत्तर: घ. 'तत-बाहर' पत्रिकाक संपादकपर बेबहर गजल प्रकाशन आ गीत-गजलक भेद नहि बूझबाक आरोप

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'तत-बाहर' पत्रिकाक संपादकपर बेबहर गजल प्रकाशन आ गीत-गजलक भेद नहि बूझबाक आरोप” अछि।

प्रश्न 24367. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134: आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'तत-बाहर' पत्रिकाक संपादकपर बेबहर गजल प्रकाशन आ गीत-गजलक भेद नहि बूझबाक आरोप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'तत-बाहर' पत्रिकाक संपादकपर बेबहर गजल प्रकाशन आ गीत-गजलक भेद नहि बूझबाक आरोप

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'तत-बाहर' पत्रिकाक संपादकपर बेबहर गजल प्रकाशन आ गीत-गजलक भेद नहि बूझबाक आरोप” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24368. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134: आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24369. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134: आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24370. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134: आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24371. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134: आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24372. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134मे आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/आलोचना आ “'तत-बाहर' पत्रिकाक संपादकपर बेबहर गजल प्रकाशन आ गीत-गजलक भेद नहि बूझबाक आरोप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2443, सूचकांक पंक्ति 1134मे आशीष अनचिन्हारक “अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/आलोचना आ “'तत-बाहर' पत्रिकाक संपादकपर बेबहर गजल प्रकाशन आ गीत-गजलक भेद नहि बूझबाक आरोप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2444 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका

प्रश्न 24373. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1135मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24374. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24375. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 24376. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मायानन्द मिश्रक 'गीतल' आ सियाराम झा 'सरस' गुटकेँ मूलतः दुनू गुट व्याकरणहीन गजल लिखबाक कार...

उत्तर: घ. मायानन्द मिश्रक 'गीतल' आ सियाराम झा 'सरस' गुटकेँ मूलतः दुनू गुट व्याकरणहीन गजल लिखबाक कार...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मायानन्द मिश्रक 'गीतल' आ सियाराम झा 'सरस' गुटकेँ मूलतः दुनू गुट व्याकरणहीन गजल लिखबाक कार...” अछि।

प्रश्न 24377. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मायानन्द मिश्रक 'गीतल' आ सियाराम झा 'सरस' गुटकेँ मूलतः दुनू गुट व्याकरणहीन गजल लिखबाक कार...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मायानन्द मिश्रक 'गीतल' आ सियाराम झा 'सरस' गुटकेँ मूलतः दुनू गुट व्याकरणहीन गजल लिखबाक कार...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मायानन्द मिश्रक 'गीतल' आ सियाराम झा 'सरस' गुटकेँ मूलतः दुनू गुट व्याकरणहीन गजल लिखबाक कार...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24378. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24379. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24380. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24381. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24382. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135मे आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “मायानन्द मिश्रक 'गीतल' आ सियाराम झा 'सरस' गुटकेँ मूलतः दुनू गुट व्याकरणहीन गजल लिखबाक कार...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2444, सूचकांक पंक्ति 1135मे आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलमे लोथ गजलकार भूमिका” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “मायानन्द मिश्रक 'गीतल' आ सियाराम झा 'सरस' गुटकेँ मूलतः दुनू गुट व्याकरणहीन गजल लिखबाक कार...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2445 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)

प्रश्न 24383. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136: आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1136मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24384. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136: आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24385. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136: आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शास्त्रीय निरूपण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शास्त्रीय निरूपण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शास्त्रीय निरूपण” अछि।

प्रश्न 24386. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136: आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली छन्द-शास्त्रमे चन्द्रबिन्दु आ संयुक्ताक्षरक लघु/गुरु निर्णय पर पं. गोविन्द झाक विरोधाभ...

उत्तर: घ. मैथिली छन्द-शास्त्रमे चन्द्रबिन्दु आ संयुक्ताक्षरक लघु/गुरु निर्णय पर पं. गोविन्द झाक विरोधाभ...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली छन्द-शास्त्रमे चन्द्रबिन्दु आ संयुक्ताक्षरक लघु/गुरु निर्णय पर पं. गोविन्द झाक विरोधाभ...” अछि।

प्रश्न 24387. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136: आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली छन्द-शास्त्रमे चन्द्रबिन्दु आ संयुक्ताक्षरक लघु/गुरु निर्णय पर पं. गोविन्द झाक विरोधाभ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली छन्द-शास्त्रमे चन्द्रबिन्दु आ संयुक्ताक्षरक लघु/गुरु निर्णय पर पं. गोविन्द झाक विरोधाभ...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली छन्द-शास्त्रमे चन्द्रबिन्दु आ संयुक्ताक्षरक लघु/गुरु निर्णय पर पं. गोविन्द झाक विरोधाभ...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24388. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136: आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शास्त्रीय निरूपण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शास्त्रीय निरूपण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24389. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136: आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24390. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136: आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शास्त्रीय निरूपणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शास्त्रीय निरूपणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24391. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136: आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24392. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136मे आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)” प्रविष्टि गद्य, शास्त्रीय निरूपण आ “मैथिली छन्द-शास्त्रमे चन्द्रबिन्दु आ संयुक्ताक्षरक लघु/गुरु निर्णय पर पं. गोविन्द झाक विरोधाभ...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2445, सूचकांक पंक्ति 1136मे आशीष अनचिन्हारक “लघु-गुरु निर्णय (दू भाग एक दाम)” प्रविष्टि गद्य, शास्त्रीय निरूपण आ “मैथिली छन्द-शास्त्रमे चन्द्रबिन्दु आ संयुक्ताक्षरक लघु/गुरु निर्णय पर पं. गोविन्द झाक विरोधाभ...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2446 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: मैथिलीमे बाल गजल

प्रश्न 24393. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137: आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीमे बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीमे बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1137मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “मैथिलीमे बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24394. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137: आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24395. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137: आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विधा-परिचय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विधा-परिचय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विधा-परिचय” अछि।

प्रश्न 24396. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137: आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भारतीय भाषामे पहिल बेर मैथिलीमे शुरू बाल गजल

उत्तर: घ. भारतीय भाषामे पहिल बेर मैथिलीमे शुरू बाल गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भारतीय भाषामे पहिल बेर मैथिलीमे शुरू बाल गजल” अछि।

प्रश्न 24397. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137: आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भारतीय भाषामे पहिल बेर मैथिलीमे शुरू बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारतीय भाषामे पहिल बेर मैथिलीमे शुरू बाल गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भारतीय भाषामे पहिल बेर मैथिलीमे शुरू बाल गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24398. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137: आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विधा-परिचय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विधा-परिचय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24399. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137: आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24400. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137: आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विधा-परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विधा-परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24401. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137: आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24402. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137मे आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल” प्रविष्टि गद्य, विधा-परिचय आ “भारतीय भाषामे पहिल बेर मैथिलीमे शुरू बाल गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2446, सूचकांक पंक्ति 1137मे आशीष अनचिन्हारक “मैथिलीमे बाल गजल” प्रविष्टि गद्य, विधा-परिचय आ “भारतीय भाषामे पहिल बेर मैथिलीमे शुरू बाल गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2447 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: भक्ति गजल

प्रश्न 24403. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138: आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भक्ति गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1138मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “भक्ति गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24404. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138: आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24405. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138: आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विधा-परिचय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विधा-परिचय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विधा-परिचय” अछि।

प्रश्न 24406. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138: आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल गजलक बाद दोसर नव प्रारूप भक्ति गजल

उत्तर: घ. बाल गजलक बाद दोसर नव प्रारूप भक्ति गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल गजलक बाद दोसर नव प्रारूप भक्ति गजल” अछि।

प्रश्न 24407. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138: आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल गजलक बाद दोसर नव प्रारूप भक्ति गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजलक बाद दोसर नव प्रारूप भक्ति गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गजलक बाद दोसर नव प्रारूप भक्ति गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24408. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138: आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विधा-परिचय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विधा-परिचय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24409. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138: आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24410. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138: आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विधा-परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विधा-परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24411. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138: आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24412. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138मे आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल” प्रविष्टि गद्य, विधा-परिचय आ “बाल गजलक बाद दोसर नव प्रारूप भक्ति गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2447, सूचकांक पंक्ति 1138मे आशीष अनचिन्हारक “भक्ति गजल” प्रविष्टि गद्य, विधा-परिचय आ “बाल गजलक बाद दोसर नव प्रारूप भक्ति गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2448 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: गजलक साक्ष्य

प्रश्न 24413. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजलक साक्ष्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलक साक्ष्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1139मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “गजलक साक्ष्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24414. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24415. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24416. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तारानन्द वियोगीक गजल-संग्रह 'अपन युद्धक साक्ष्य' मे काफिया

उत्तर: घ. तारानन्द वियोगीक गजल-संग्रह 'अपन युद्धक साक्ष्य' मे काफिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तारानन्द वियोगीक गजल-संग्रह 'अपन युद्धक साक्ष्य' मे काफिया” अछि।

प्रश्न 24417. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तारानन्द वियोगीक गजल-संग्रह 'अपन युद्धक साक्ष्य' मे काफिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तारानन्द वियोगीक गजल-संग्रह 'अपन युद्धक साक्ष्य' मे काफिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तारानन्द वियोगीक गजल-संग्रह 'अपन युद्धक साक्ष्य' मे काफिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24418. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24419. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24420. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24421. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24422. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139मे आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “तारानन्द वियोगीक गजल-संग्रह 'अपन युद्धक साक्ष्य' मे काफिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2448, सूचकांक पंक्ति 1139मे आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “तारानन्द वियोगीक गजल-संग्रह 'अपन युद्धक साक्ष्य' मे काफिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2449 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त

प्रश्न 24423. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140: आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1140मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24424. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140: आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24425. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140: आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24426. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140: आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजेन्द्र विमलक गजल-संग्रहमे गीत-गजलक भ्रम

उत्तर: घ. राजेन्द्र विमलक गजल-संग्रहमे गीत-गजलक भ्रम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजेन्द्र विमलक गजल-संग्रहमे गीत-गजलक भ्रम” अछि।

प्रश्न 24427. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140: आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजेन्द्र विमलक गजल-संग्रहमे गीत-गजलक भ्रम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजेन्द्र विमलक गजल-संग्रहमे गीत-गजलक भ्रम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजेन्द्र विमलक गजल-संग्रहमे गीत-गजलक भ्रम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24428. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140: आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24429. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140: आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24430. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140: आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24431. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140: आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24432. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140मे आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “राजेन्द्र विमलक गजल-संग्रहमे गीत-गजलक भ्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2449, सूचकांक पंक्ति 1140मे आशीष अनचिन्हारक “सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “राजेन्द्र विमलक गजल-संग्रहमे गीत-गजलक भ्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2450 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: मैथिली गजलक वर्तमान

प्रश्न 24433. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली गजलक वर्तमान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली गजलक वर्तमान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1141मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “मैथिली गजलक वर्तमान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24434. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24435. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सर्वेक्षण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सर्वेक्षण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सर्वेक्षण” अछि।

प्रश्न 24436. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'अनचिन्हार आखर' युगक बाद मैथिली गजलक स्पष्ट अभिव्यक्ति क्षमता आ राजनीतिक-सामाजिक सरोकारक मार्...

उत्तर: घ. 'अनचिन्हार आखर' युगक बाद मैथिली गजलक स्पष्ट अभिव्यक्ति क्षमता आ राजनीतिक-सामाजिक सरोकारक मार्...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'अनचिन्हार आखर' युगक बाद मैथिली गजलक स्पष्ट अभिव्यक्ति क्षमता आ राजनीतिक-सामाजिक सरोकारक मार्...” अछि।

प्रश्न 24437. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'अनचिन्हार आखर' युगक बाद मैथिली गजलक स्पष्ट अभिव्यक्ति क्षमता आ राजनीतिक-सामाजिक सरोकारक मार्...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनचिन्हार आखर' युगक बाद मैथिली गजलक स्पष्ट अभिव्यक्ति क्षमता आ राजनीतिक-सामाजिक सरोकारक मार्...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'अनचिन्हार आखर' युगक बाद मैथिली गजलक स्पष्ट अभिव्यक्ति क्षमता आ राजनीतिक-सामाजिक सरोकारक मार्...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24438. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा सर्वेक्षण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा सर्वेक्षण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24439. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24440. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सर्वेक्षणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सर्वेक्षणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24441. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141: आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24442. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141मे आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान” प्रविष्टि गद्य, सर्वेक्षण आ “'अनचिन्हार आखर' युगक बाद मैथिली गजलक स्पष्ट अभिव्यक्ति क्षमता आ राजनीतिक-सामाजिक सरोकारक मार्...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2450, सूचकांक पंक्ति 1141मे आशीष अनचिन्हारक “मैथिली गजलक वर्तमान” प्रविष्टि गद्य, सर्वेक्षण आ “'अनचिन्हार आखर' युगक बाद मैथिली गजलक स्पष्ट अभिव्यक्ति क्षमता आ राजनीतिक-सामाजिक सरोकारक मार्...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2451 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: विहनि कथा- खाए बला पार्टी

प्रश्न 24443. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142: आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विहनि कथा- खाए बला पार्टी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विहनि कथा- खाए बला पार्टी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1142मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “विहनि कथा- खाए बला पार्टी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24444. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142: आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24445. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142: आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहनि कथा” अछि।

प्रश्न 24446. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142: आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिमे 'खाए बला पार्टी' आम बात पर पारिवारिक संवादसँ उपजल तीख व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिमे 'खाए बला पार्टी' आम बात पर पारिवारिक संवादसँ उपजल तीख व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिमे 'खाए बला पार्टी' आम बात पर पारिवारिक संवादसँ उपजल तीख व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 24447. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142: आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिमे 'खाए बला पार्टी' आम बात पर पारिवारिक संवादसँ उपजल तीख व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिमे 'खाए बला पार्टी' आम बात पर पारिवारिक संवादसँ उपजल तीख व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिमे 'खाए बला पार्टी' आम बात पर पारिवारिक संवादसँ उपजल तीख व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24448. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142: आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24449. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142: आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24450. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142: आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24451. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142: आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24452. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142मे आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “राजनीतिमे 'खाए बला पार्टी' आम बात पर पारिवारिक संवादसँ उपजल तीख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2451, सूचकांक पंक्ति 1142मे आशीष अनचिन्हारक “विहनि कथा- खाए बला पार्टी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “राजनीतिमे 'खाए बला पार्टी' आम बात पर पारिवारिक संवादसँ उपजल तीख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2452 : विदेह-सदेह 15 — बाल मुकुन्द पाठक: प्रेम : वरदान वा अभिशाप

प्रश्न 24453. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143: बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेम : वरदान वा अभिशाप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम : वरदान वा अभिशाप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1143मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “प्रेम : वरदान वा अभिशाप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24454. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143: बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24455. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143: बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 24456. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143: बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. टेलिफोन प्रेम

उत्तर: घ. टेलिफोन प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “टेलिफोन प्रेम” अछि।

प्रश्न 24457. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143: बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. टेलिफोन प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टेलिफोन प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “टेलिफोन प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24458. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143: बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24459. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143: बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24460. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143: बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24461. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143: बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24462. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143मे बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “टेलिफोन प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2452, सूचकांक पंक्ति 1143मे बाल मुकुन्द पाठकक “प्रेम : वरदान वा अभिशाप” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “टेलिफोन प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2453 : विदेह-सदेह 15 — पूनम मण्डल: प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित

प्रश्न 24463. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144: पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1144मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24464. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144: पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24465. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144: पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 24466. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144: पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केँ नेपाल भाषा परिषद्वारा मैथिली साहित्यक योगदान लेल 'केशवलाल बाखं ...

उत्तर: घ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केँ नेपाल भाषा परिषद्वारा मैथिली साहित्यक योगदान लेल 'केशवलाल बाखं ...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केँ नेपाल भाषा परिषद्वारा मैथिली साहित्यक योगदान लेल 'केशवलाल बाखं ...” अछि।

प्रश्न 24467. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144: पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केँ नेपाल भाषा परिषद्वारा मैथिली साहित्यक योगदान लेल 'केशवलाल बाखं ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केँ नेपाल भाषा परिषद्वारा मैथिली साहित्यक योगदान लेल 'केशवलाल बाखं ...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केँ नेपाल भाषा परिषद्वारा मैथिली साहित्यक योगदान लेल 'केशवलाल बाखं ...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24468. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144: पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24469. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144: पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24470. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144: पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24471. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144: पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24472. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144मे पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केँ नेपाल भाषा परिषद्द्वारा मैथिली साहित्यक योगदान लेल 'केशवलाल बाखं ...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2453, सूचकांक पंक्ति 1144मे पूनम मण्डलक “प्राज्ञ कापिड केशवलाल बाखं शिरपा सम्मानसँ सम्मानित” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केँ नेपाल भाषा परिषद्द्वारा मैथिली साहित्यक योगदान लेल 'केशवलाल बाखं ...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2454 : विदेह-सदेह 15 — पूनम मण्डल: 'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...

प्रश्न 24473. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145: पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1145मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24474. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145: पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24475. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145: पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 24476. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145: पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'सगर राति दीप जरय' कथा-गोष्ठीक क्रमबद्ध इतिहास

उत्तर: घ. 'सगर राति दीप जरय' कथा-गोष्ठीक क्रमबद्ध इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति दीप जरय' कथा-गोष्ठीक क्रमबद्ध इतिहास” अछि।

प्रश्न 24477. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145: पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'सगर राति दीप जरय' कथा-गोष्ठीक क्रमबद्ध इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सगर राति दीप जरय' कथा-गोष्ठीक क्रमबद्ध इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति दीप जरय' कथा-गोष्ठीक क्रमबद्ध इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24478. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145: पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24479. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145: पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24480. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145: पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24481. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145: पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24482. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145मे पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति दीप जरय' कथा-गोष्ठीक क्रमबद्ध इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2454, सूचकांक पंक्ति 1145मे पूनम मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क ७९ म आयोजन... ८० म...” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति दीप जरय' कथा-गोष्ठीक क्रमबद्ध इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2455 : विदेह-सदेह 15 — रवि भूषण पाठक: ओइ साल

प्रश्न 24483. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ओइ साल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओइ साल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1146मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “ओइ साल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24484. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24485. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 24486. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. असाधारण आलू उत्पादन

उत्तर: घ. असाधारण आलू उत्पादन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “असाधारण आलू उत्पादन” अछि।

प्रश्न 24487. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. असाधारण आलू उत्पादन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असाधारण आलू उत्पादन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “असाधारण आलू उत्पादन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24488. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24489. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24490. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24491. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24492. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146मे रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “असाधारण आलू उत्पादन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2455, सूचकांक पंक्ति 1146मे रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “असाधारण आलू उत्पादन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2456 : विदेह-सदेह 15 — रवि भूषण पाठक: घर

प्रश्न 24493. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147: रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1147मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “घर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24494. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147: रवि भूषण पाठकक “घर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24495. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147: रवि भूषण पाठकक “घर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 24496. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147: रवि भूषण पाठकक “घर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विडम्बनापूर्ण पारिवारिक जीवन

उत्तर: घ. विडम्बनापूर्ण पारिवारिक जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विडम्बनापूर्ण पारिवारिक जीवन” अछि।

प्रश्न 24497. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147: रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विडम्बनापूर्ण पारिवारिक जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विडम्बनापूर्ण पारिवारिक जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विडम्बनापूर्ण पारिवारिक जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24498. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147: रवि भूषण पाठकक “घर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24499. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147: रवि भूषण पाठकक “घर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24500. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147: रवि भूषण पाठकक “घर”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24501. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147: रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24502. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147मे रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “विडम्बनापूर्ण पारिवारिक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2456, सूचकांक पंक्ति 1147मे रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “विडम्बनापूर्ण पारिवारिक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2457 : विदेह-सदेह 15 — रवि भूषण पाठक: बाबूक चट्टी

प्रश्न 24503. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाबूक चट्टी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबूक चट्टी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1148मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाबूक चट्टी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24504. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24505. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/संस्मरण” अछि।

प्रश्न 24506. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रमायण पाठक आयोजनमे चप्पल चोरी

उत्तर: घ. रमायण पाठक आयोजनमे चप्पल चोरी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रमायण पाठक आयोजनमे चप्पल चोरी” अछि।

प्रश्न 24507. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रमायण पाठक आयोजनमे चप्पल चोरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रमायण पाठक आयोजनमे चप्पल चोरी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रमायण पाठक आयोजनमे चप्पल चोरी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24508. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24509. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24510. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24511. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24512. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148मे रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/संस्मरण आ “रमायण पाठक आयोजनमे चप्पल चोरी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2457, सूचकांक पंक्ति 1148मे रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/संस्मरण आ “रमायण पाठक आयोजनमे चप्पल चोरी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2458 : विदेह-सदेह 15 — सन्दीप कुमार साफी: राजा अओर परजा

प्रश्न 24513. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149: सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राजा अओर परजा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजा अओर परजा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1149मे सन्दीप कुमार साफीक प्रविष्टि “राजा अओर परजा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24514. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149: सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24515. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149: सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वैचारिक लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वैचारिक लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “वैचारिक लेख” अछि।

प्रश्न 24516. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149: सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परम्परागत न्यायप्रिय राजा सँ आधुनिक स्वार्थी जनप्रतिनिधि धरिक राजनीतिक गिरावट

उत्तर: घ. परम्परागत न्यायप्रिय राजा सँ आधुनिक स्वार्थी जनप्रतिनिधि धरिक राजनीतिक गिरावट

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परम्परागत न्यायप्रिय राजा सँ आधुनिक स्वार्थी जनप्रतिनिधि धरिक राजनीतिक गिरावट” अछि।

प्रश्न 24517. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149: सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परम्परागत न्यायप्रिय राजा सँ आधुनिक स्वार्थी जनप्रतिनिधि धरिक राजनीतिक गिरावट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परम्परागत न्यायप्रिय राजा सँ आधुनिक स्वार्थी जनप्रतिनिधि धरिक राजनीतिक गिरावट

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परम्परागत न्यायप्रिय राजा सँ आधुनिक स्वार्थी जनप्रतिनिधि धरिक राजनीतिक गिरावट” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24518. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149: सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24519. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149: सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24520. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149: सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ वैचारिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ वैचारिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24521. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149: सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24522. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149मे सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा” प्रविष्टि गद्य, वैचारिक लेख आ “परम्परागत न्यायप्रिय राजा सँ आधुनिक स्वार्थी जनप्रतिनिधि धरिक राजनीतिक गिरावट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2458, सूचकांक पंक्ति 1149मे सन्दीप कुमार साफीक “राजा अओर परजा” प्रविष्टि गद्य, वैचारिक लेख आ “परम्परागत न्यायप्रिय राजा सँ आधुनिक स्वार्थी जनप्रतिनिधि धरिक राजनीतिक गिरावट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2459 : विदेह-सदेह 15 — नवेन्दु कुमार झा: टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...

प्रश्न 24523. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150: नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1150मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24524. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150: नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24525. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150: नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 24526. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150: नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरायगढ़-निर्मली रेल परियोजना आ सहरसा-फारबिसगंज रेलखंडक अमान परिवर्तन काजमे अर्थाभावक विस्तृत ...

उत्तर: घ. सरायगढ़-निर्मली रेल परियोजना आ सहरसा-फारबिसगंज रेलखंडक अमान परिवर्तन काजमे अर्थाभावक विस्तृत ...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरायगढ़-निर्मली रेल परियोजना आ सहरसा-फारबिसगंज रेलखंडक अमान परिवर्तन काजमे अर्थाभावक विस्तृत ...” अछि।

प्रश्न 24527. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150: नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरायगढ़-निर्मली रेल परियोजना आ सहरसा-फारबिसगंज रेलखंडक अमान परिवर्तन काजमे अर्थाभावक विस्तृत ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरायगढ़-निर्मली रेल परियोजना आ सहरसा-फारबिसगंज रेलखंडक अमान परिवर्तन काजमे अर्थाभावक विस्तृत ...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरायगढ़-निर्मली रेल परियोजना आ सहरसा-फारबिसगंज रेलखंडक अमान परिवर्तन काजमे अर्थाभावक विस्तृत ...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24528. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150: नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24529. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150: नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24530. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150: नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24531. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150: नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24532. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150मे नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सरायगढ़-निर्मली रेल परियोजना आ सहरसा-फारबिसगंज रेलखंडक अमान परिवर्तन काजमे अर्थाभावक विस्तृत ...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2459, सूचकांक पंक्ति 1150मे नवेन्दु कुमार झाक “टाकाक आभाव मे टप्प अछि कोसी महासेतूक काज...” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सरायगढ़-निर्मली रेल परियोजना आ सहरसा-फारबिसगंज रेलखंडक अमान परिवर्तन काजमे अर्थाभावक विस्तृत ...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2460 : विदेह-सदेह 15 — नवेन्दु कुमार झा: ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...

प्रश्न 24533. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151: नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1151मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24534. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151: नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24535. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151: नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 24536. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151: नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली लेखक संघ सम्मेलनमे ललितेश मिश्र 'ललित' पर केन्द्रित साहित्यिक मूल्यांकन आ समकालीन कथा-...

उत्तर: घ. मैथिली लेखक संघ सम्मेलनमे ललितेश मिश्र 'ललित' पर केन्द्रित साहित्यिक मूल्यांकन आ समकालीन कथा-...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लेखक संघ सम्मेलनमे ललितेश मिश्र 'ललित' पर केन्द्रित साहित्यिक मूल्यांकन आ समकालीन कथा-...” अछि।

प्रश्न 24537. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151: नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली लेखक संघ सम्मेलनमे ललितेश मिश्र 'ललित' पर केन्द्रित साहित्यिक मूल्यांकन आ समकालीन कथा-...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लेखक संघ सम्मेलनमे ललितेश मिश्र 'ललित' पर केन्द्रित साहित्यिक मूल्यांकन आ समकालीन कथा-...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लेखक संघ सम्मेलनमे ललितेश मिश्र 'ललित' पर केन्द्रित साहित्यिक मूल्यांकन आ समकालीन कथा-...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24538. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151: नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24539. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151: नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24540. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151: नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24541. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151: नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24542. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151मे नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मैथिली लेखक संघ सम्मेलनमे ललितेश मिश्र 'ललित' पर केन्द्रित साहित्यिक मूल्यांकन आ समकालीन कथा-...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2460, सूचकांक पंक्ति 1151मे नवेन्दु कुमार झाक “ललितक बहत्रे मैथिलीक कथाक दशा-दिशा...” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मैथिली लेखक संघ सम्मेलनमे ललितेश मिश्र 'ललित' पर केन्द्रित साहित्यिक मूल्यांकन आ समकालीन कथा-...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2461 : विदेह-सदेह 15 — नवेन्दु कुमार झा: उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...

प्रश्न 24543. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152: नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1152मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24544. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152: नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24545. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152: नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 24546. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152: नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चेतना समिति पटनाक स्थापना दिवस पर मैथिली-संवर्धन

उत्तर: घ. चेतना समिति पटनाक स्थापना दिवस पर मैथिली-संवर्धन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चेतना समिति पटनाक स्थापना दिवस पर मैथिली-संवर्धन” अछि।

प्रश्न 24547. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152: नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चेतना समिति पटनाक स्थापना दिवस पर मैथिली-संवर्धन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेतना समिति पटनाक स्थापना दिवस पर मैथिली-संवर्धन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चेतना समिति पटनाक स्थापना दिवस पर मैथिली-संवर्धन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24548. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152: नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24549. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152: नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24550. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152: नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24551. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152: नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24552. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152मे नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “चेतना समिति पटनाक स्थापना दिवस पर मैथिली-संवर्धन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2461, सूचकांक पंक्ति 1152मे नवेन्दु कुमार झाक “उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति...” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “चेतना समिति पटनाक स्थापना दिवस पर मैथिली-संवर्धन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2462 : विदेह-सदेह 15 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': बडका साहेब

प्रश्न 24553. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बडका साहेब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बडका साहेब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1153मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “बडका साहेब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24554. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24555. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाट्य-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाट्य-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाट्य-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 24556. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ललन प्रसाद ठाकुरक नाटक 'बडका साहेब' मे परम्परागत संस्कारक पराभव आ शहरीकरणक पाश्चात्य-अन्धानुक...

उत्तर: घ. ललन प्रसाद ठाकुरक नाटक 'बडका साहेब' मे परम्परागत संस्कारक पराभव आ शहरीकरणक पाश्चात्य-अन्धानुक...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ललन प्रसाद ठाकुरक नाटक 'बडका साहेब' मे परम्परागत संस्कारक पराभव आ शहरीकरणक पाश्चात्य-अन्धानुक...” अछि।

प्रश्न 24557. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ललन प्रसाद ठाकुरक नाटक 'बडका साहेब' मे परम्परागत संस्कारक पराभव आ शहरीकरणक पाश्चात्य-अन्धानुक...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ललन प्रसाद ठाकुरक नाटक 'बडका साहेब' मे परम्परागत संस्कारक पराभव आ शहरीकरणक पाश्चात्य-अन्धानुक...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ललन प्रसाद ठाकुरक नाटक 'बडका साहेब' मे परम्परागत संस्कारक पराभव आ शहरीकरणक पाश्चात्य-अन्धानुक...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24558. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा नाट्य-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा नाट्य-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24559. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24560. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाट्य-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाट्य-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24561. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24562. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब” प्रविष्टि गद्य, नाट्य-समीक्षा आ “ललन प्रसाद ठाकुरक नाटक 'बडका साहेब' मे परम्परागत संस्कारक पराभव आ शहरीकरणक पाश्चात्य-अन्धानुक...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2462, सूचकांक पंक्ति 1153मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब” प्रविष्टि गद्य, नाट्य-समीक्षा आ “ललन प्रसाद ठाकुरक नाटक 'बडका साहेब' मे परम्परागत संस्कारक पराभव आ शहरीकरणक पाश्चात्य-अन्धानुक...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2463 : विदेह-सदेह 15 — मो. असरफ: शहरीया घरवाली

प्रश्न 24563. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154: मो. असरफक “शहरीया घरवाली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शहरीया घरवाली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शहरीया घरवाली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1154मे मो. असरफक प्रविष्टि “शहरीया घरवाली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24564. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154: मो. असरफक “शहरीया घरवाली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24565. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154: मो. असरफक “शहरीया घरवाली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहनि कथा” अछि।

प्रश्न 24566. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154: मो. असरफक “शहरीया घरवाली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शहरी आधुनिक स्त्रीक ग्रामीण पारिवारिक जीवनमे असमंजसता आ पारिवारिक कलहक शिक्षाप्रद कथा

उत्तर: घ. शहरी आधुनिक स्त्रीक ग्रामीण पारिवारिक जीवनमे असमंजसता आ पारिवारिक कलहक शिक्षाप्रद कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शहरी आधुनिक स्त्रीक ग्रामीण पारिवारिक जीवनमे असमंजसता आ पारिवारिक कलहक शिक्षाप्रद कथा” अछि।

प्रश्न 24567. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154: मो. असरफक “शहरीया घरवाली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शहरी आधुनिक स्त्रीक ग्रामीण पारिवारिक जीवनमे असमंजसता आ पारिवारिक कलहक शिक्षाप्रद कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शहरी आधुनिक स्त्रीक ग्रामीण पारिवारिक जीवनमे असमंजसता आ पारिवारिक कलहक शिक्षाप्रद कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शहरी आधुनिक स्त्रीक ग्रामीण पारिवारिक जीवनमे असमंजसता आ पारिवारिक कलहक शिक्षाप्रद कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24568. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154: मो. असरफक “शहरीया घरवाली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मो. असरफ, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मो. असरफ, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24569. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154: मो. असरफक “शहरीया घरवाली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24570. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154: मो. असरफक “शहरीया घरवाली”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24571. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154: मो. असरफक “शहरीया घरवाली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24572. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154मे मो. असरफक “शहरीया घरवाली” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शहरी आधुनिक स्त्रीक ग्रामीण पारिवारिक जीवनमे असमंजसता आ पारिवारिक कलहक शिक्षाप्रद कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2463, सूचकांक पंक्ति 1154मे मो. असरफक “शहरीया घरवाली” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शहरी आधुनिक स्त्रीक ग्रामीण पारिवारिक जीवनमे असमंजसता आ पारिवारिक कलहक शिक्षाप्रद कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2464 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: पश्चताप

प्रश्न 24573. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155: बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पश्चताप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पश्चताप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1155मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “पश्चताप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24574. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155: बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24575. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155: बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-कथा” अछि।

प्रश्न 24576. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155: बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुत्रक शिक्षामे असफलता आ पश्चातापक सजीव चित्रण

उत्तर: घ. पुत्रक शिक्षामे असफलता आ पश्चातापक सजीव चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुत्रक शिक्षामे असफलता आ पश्चातापक सजीव चित्रण” अछि।

प्रश्न 24577. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155: बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुत्रक शिक्षामे असफलता आ पश्चातापक सजीव चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुत्रक शिक्षामे असफलता आ पश्चातापक सजीव चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुत्रक शिक्षामे असफलता आ पश्चातापक सजीव चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24578. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155: बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24579. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155: बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24580. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155: बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24581. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155: बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24582. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155मे बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “पुत्रक शिक्षामे असफलता आ पश्चातापक सजीव चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2464, सूचकांक पंक्ति 1155मे बिन्देश्वर ठाकुरक “पश्चताप” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “पुत्रक शिक्षामे असफलता आ पश्चातापक सजीव चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2465 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: उपकारके चुपकार

प्रश्न 24583. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156: बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उपकारके चुपकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपकारके चुपकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1156मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “उपकारके चुपकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24584. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156: बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24585. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156: बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-कथा” अछि।

प्रश्न 24586. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156: बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. घरेलू हिंसा सँ पीड़ित स्त्रीक सहायता करबाक उपकारक बदला स्वयं अपमानित होयबाक विडम्बना

उत्तर: घ. घरेलू हिंसा सँ पीड़ित स्त्रीक सहायता करबाक उपकारक बदला स्वयं अपमानित होयबाक विडम्बना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “घरेलू हिंसा सँ पीड़ित स्त्रीक सहायता करबाक उपकारक बदला स्वयं अपमानित होयबाक विडम्बना” अछि।

प्रश्न 24587. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156: बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. घरेलू हिंसा सँ पीड़ित स्त्रीक सहायता करबाक उपकारक बदला स्वयं अपमानित होयबाक विडम्बना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घरेलू हिंसा सँ पीड़ित स्त्रीक सहायता करबाक उपकारक बदला स्वयं अपमानित होयबाक विडम्बना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “घरेलू हिंसा सँ पीड़ित स्त्रीक सहायता करबाक उपकारक बदला स्वयं अपमानित होयबाक विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24588. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156: बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24589. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156: बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24590. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156: बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार”कँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24591. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156: बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24592. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156मे बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “घरेलू हिंसा सँ पीड़ित स्त्रीक सहायता करबाक उपकारक बदला स्वयं अपमानित होयबाक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2465, सूचकांक पंक्ति 1156मे बिन्देश्वर ठाकुरक “उपकारके चुपकार” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “घरेलू हिंसा सँ पीड़ित स्त्रीक सहायता करबाक उपकारक बदला स्वयं अपमानित होयबाक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2466 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: प्रतिशोध

प्रश्न 24593. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157: बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रतिशोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतिशोध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1157मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “प्रतिशोध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24594. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157: बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24595. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157: बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-कथा” अछि।

प्रश्न 24596. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157: बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेजक बोझ सँ दबल आ खरीदल गेल मानैत नवविवाहिता कन्याक मनोवैज्ञानिक प्रतिशोध

उत्तर: घ. दहेजक बोझ सँ दबल आ खरीदल गेल मानैत नवविवाहिता कन्याक मनोवैज्ञानिक प्रतिशोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेजक बोझ सँ दबल आ खरीदल गेल मानैत नवविवाहिता कन्याक मनोवैज्ञानिक प्रतिशोध” अछि।

प्रश्न 24597. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157: बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेजक बोझ सँ दबल आ खरीदल गेल मानैत नवविवाहिता कन्याक मनोवैज्ञानिक प्रतिशोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेजक बोझ सँ दबल आ खरीदल गेल मानैत नवविवाहिता कन्याक मनोवैज्ञानिक प्रतिशोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेजक बोझ सँ दबल आ खरीदल गेल मानैत नवविवाहिता कन्याक मनोवैज्ञानिक प्रतिशोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24598. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157: बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24599. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157: बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24600. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157: बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24601. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157: बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24602. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157मे बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “दहेजक बोझ सँ दबल आ खरीदल गेल मानैत नवविवाहिता कन्याक मनोवैज्ञानिक प्रतिशोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2466, सूचकांक पंक्ति 1157मे बिन्देश्वर ठाकुरक “प्रतिशोध” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “दहेजक बोझ सँ दबल आ खरीदल गेल मानैत नवविवाहिता कन्याक मनोवैज्ञानिक प्रतिशोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2467 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: जेहन करणी तेहन भरणी

प्रश्न 24603. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158: बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जेहन करणी तेहन भरणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जेहन करणी तेहन भरणी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1158मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “जेहन करणी तेहन भरणी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24604. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158: बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24605. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158: बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-कथा” अछि।

प्रश्न 24606. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158: बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परपुरुषगमन करबनिहार स्त्रीक अन्ततः प्रेमीद्वारा ठगाएल जेबाक दृष्टान्तमूलक कथा

उत्तर: घ. परपुरुषगमन करबनिहार स्त्रीक अन्ततः प्रेमीद्वारा ठगाएल जेबाक दृष्टान्तमूलक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परपुरुषगमन करबनिहार स्त्रीक अन्ततः प्रेमीद्वारा ठगाएल जेबाक दृष्टान्तमूलक कथा” अछि।

प्रश्न 24607. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158: बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परपुरुषगमन करबनिहार स्त्रीक अन्ततः प्रेमीद्वारा ठगाएल जेबाक दृष्टान्तमूलक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परपुरुषगमन करबनिहार स्त्रीक अन्ततः प्रेमीद्वारा ठगाएल जेबाक दृष्टान्तमूलक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परपुरुषगमन करबनिहार स्त्रीक अन्ततः प्रेमीद्वारा ठगाएल जेबाक दृष्टान्तमूलक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24608. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158: बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24609. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158: बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24610. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158: बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24611. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158: बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24612. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158मे बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “परपुरुषगमन करबनिहार स्त्रीक अन्ततः प्रेमीद्वारा ठगाएल जेबाक दृष्टान्तमूलक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2467, सूचकांक पंक्ति 1158मे बिन्देश्वर ठाकुरक “जेहन करणी तेहन भरणी” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “परपुरुषगमन करबनिहार स्त्रीक अन्ततः प्रेमीद्वारा ठगाएल जेबाक दृष्टान्तमूलक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2468 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: न्याय

प्रश्न 24613. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159: बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. न्याय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. न्याय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1159मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “न्याय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24614. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159: बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24615. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159: बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-कथा” अछि।

प्रश्न 24616. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159: बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुखियाक पुत्रद्वारा छेड़छाड़क घटना पर सामूहिक सामाजिक दबाब पाड़ि पंचायत कराए न्यायक स्थापना

उत्तर: घ. मुखियाक पुत्रद्वारा छेड़छाड़क घटना पर सामूहिक सामाजिक दबाब पाड़ि पंचायत कराए न्यायक स्थापना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुखियाक पुत्रद्वारा छेड़छाड़क घटना पर सामूहिक सामाजिक दबाब पाड़ि पंचायत कराए न्यायक स्थापना” अछि।

प्रश्न 24617. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159: बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुखियाक पुत्रद्वारा छेड़छाड़क घटना पर सामूहिक सामाजिक दबाब पाड़ि पंचायत कराए न्यायक स्थापना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुखियाक पुत्रद्वारा छेड़छाड़क घटना पर सामूहिक सामाजिक दबाब पाड़ि पंचायत कराए न्यायक स्थापना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुखियाक पुत्रद्वारा छेड़छाड़क घटना पर सामूहिक सामाजिक दबाब पाड़ि पंचायत कराए न्यायक स्थापना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24618. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159: बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24619. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159: बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24620. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159: बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24621. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159: बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24622. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159मे बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “मुखियाक पुत्रद्वारा छेड़छाड़क घटना पर सामूहिक सामाजिक दबाब पाड़ि पंचायत कराए न्यायक स्थापना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2468, सूचकांक पंक्ति 1159मे बिन्देश्वर ठाकुरक “न्याय” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “मुखियाक पुत्रद्वारा छेड़छाड़क घटना पर सामूहिक सामाजिक दबाब पाड़ि पंचायत कराए न्यायक स्थापना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2469 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: आत्मग्लानि

प्रश्न 24623. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160: बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आत्मग्लानि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मग्लानि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1160मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “आत्मग्लानि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24624. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160: बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24625. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160: बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-कथा” अछि।

प्रश्न 24626. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160: बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दिवालीमे बच्चाक फुलझड़ी नहि किनि सकबाक असमर्थता पर गरीब माएक करुण आत्मग्लानि

उत्तर: घ. दिवालीमे बच्चाक फुलझड़ी नहि किनि सकबाक असमर्थता पर गरीब माएक करुण आत्मग्लानि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दिवालीमे बच्चाक फुलझड़ी नहि किनि सकबाक असमर्थता पर गरीब माएक करुण आत्मग्लानि” अछि।

प्रश्न 24627. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160: बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दिवालीमे बच्चाक फुलझड़ी नहि किनि सकबाक असमर्थता पर गरीब माएक करुण आत्मग्लानि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिवालीमे बच्चाक फुलझड़ी नहि किनि सकबाक असमर्थता पर गरीब माएक करुण आत्मग्लानि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दिवालीमे बच्चाक फुलझड़ी नहि किनि सकबाक असमर्थता पर गरीब माएक करुण आत्मग्लानि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24628. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160: बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24629. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160: बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24630. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160: बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24631. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160: बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24632. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160मे बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “दिवालीमे बच्चाक फुलझड़ी नहि किनि सकबाक असमर्थता पर गरीब माएक करुण आत्मग्लानि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2469, सूचकांक पंक्ति 1160मे बिन्देश्वर ठाकुरक “आत्मग्लानि” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “दिवालीमे बच्चाक फुलझड़ी नहि किनि सकबाक असमर्थता पर गरीब माएक करुण आत्मग्लानि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2470 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: अभिशाप

प्रश्न 24633. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161: बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अभिशाप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिशाप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1161मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “अभिशाप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24634. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161: बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24635. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161: बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-कथा” अछि।

प्रश्न 24636. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161: बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेजक कारण विवाहक किछुए मासमे पुत्रीकेँ जलाक मारि देबाक समाजशोषित अभिशापक कथा

उत्तर: घ. दहेजक कारण विवाहक किछुए मासमे पुत्रीकेँ जलाक मारि देबाक समाजशोषित अभिशापक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेजक कारण विवाहक किछुए मासमे पुत्रीकेँ जलाक मारि देबाक समाजशोषित अभिशापक कथा” अछि।

प्रश्न 24637. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161: बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेजक कारण विवाहक किछुए मासमे पुत्रीकेँ जलाक मारि देबाक समाजशोषित अभिशापक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेजक कारण विवाहक किछुए मासमे पुत्रीकेँ जलाक मारि देबाक समाजशोषित अभिशापक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेजक कारण विवाहक किछुए मासमे पुत्रीकेँ जलाक मारि देबाक समाजशोषित अभिशापक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24638. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161: बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24639. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161: बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24640. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161: बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24641. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161: बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24642. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161मे बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “दहेजक कारण विवाहक किछुए मासमे पुत्रीकेँ जलाक मारि देबाक समाजशोषित अभिशापक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2470, सूचकांक पंक्ति 1161मे बिन्देश्वर ठाकुरक “अभिशाप” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “दहेजक कारण विवाहक किछुए मासमे पुत्रीकेँ जलाक मारि देबाक समाजशोषित अभिशापक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2471 : विदेह-सदेह 15 — परमेश्वर कापड़ि: लक्ष्मी आ गोधन

प्रश्न 24643. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162: परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लक्ष्मी आ गोधन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लक्ष्मी आ गोधन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1162मे परमेश्वर कापड़िक प्रविष्टि “लक्ष्मी आ गोधन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24644. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162: परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24645. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162: परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पौराणिक कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पौराणिक कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पौराणिक कथा” अछि।

प्रश्न 24646. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162: परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लक्ष्मी जीक गोमातासँ स्थान माँगबा आ गोबर-गोमूत्रमे बास पाबैक लोकप्रचलित पौराणिक व्याख्या

उत्तर: घ. लक्ष्मी जीक गोमातासँ स्थान माँगबा आ गोबर-गोमूत्रमे बास पाबैक लोकप्रचलित पौराणिक व्याख्या

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लक्ष्मी जीक गोमातासँ स्थान माँगबा आ गोबर-गोमूत्रमे बास पाबैक लोकप्रचलित पौराणिक व्याख्या” अछि।

प्रश्न 24647. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162: परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लक्ष्मी जीक गोमातासँ स्थान माँगबा आ गोबर-गोमूत्रमे बास पाबैक लोकप्रचलित पौराणिक व्याख्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लक्ष्मी जीक गोमातासँ स्थान माँगबा आ गोबर-गोमूत्रमे बास पाबैक लोकप्रचलित पौराणिक व्याख्या

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लक्ष्मी जीक गोमातासँ स्थान माँगबा आ गोबर-गोमूत्रमे बास पाबैक लोकप्रचलित पौराणिक व्याख्या” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24648. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162: परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा पौराणिक कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा पौराणिक कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24649. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162: परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24650. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162: परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पौराणिक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पौराणिक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24651. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162: परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24652. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162मे परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन” प्रविष्टि गद्य, पौराणिक कथा आ “लक्ष्मी जीक गोमातासँ स्थान माँगबा आ गोबर-गोमूत्रमे बास पाबैक लोकप्रचलित पौराणिक व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2471, सूचकांक पंक्ति 1162मे परमेश्वर कापड़िक “लक्ष्मी आ गोधन” प्रविष्टि गद्य, पौराणिक कथा आ “लक्ष्मी जीक गोमातासँ स्थान माँगबा आ गोबर-गोमूत्रमे बास पाबैक लोकप्रचलित पौराणिक व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2472 : विदेह-सदेह 15 — राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर': चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग

प्रश्न 24653. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1163मे राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क प्रविष्टि “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24654. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24655. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वैचारिक लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वैचारिक लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “वैचारिक लेख” अछि।

प्रश्न 24656. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली दैनिक 'मिथिला आवाज' क विफलताक उदाहरण दैत समाजक उदासीनता आ नव-भाषिक समूहक सुनियोजित षड्...

उत्तर: घ. मैथिली दैनिक 'मिथिला आवाज' क विफलताक उदाहरण दैत समाजक उदासीनता आ नव-भाषिक समूहक सुनियोजित षड्...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली दैनिक 'मिथिला आवाज' क विफलताक उदाहरण दैत समाजक उदासीनता आ नव-भाषिक समूहक सुनियोजित षड्...” अछि।

प्रश्न 24657. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली दैनिक 'मिथिला आवाज' क विफलताक उदाहरण दैत समाजक उदासीनता आ नव-भाषिक समूहक सुनियोजित षड्...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली दैनिक 'मिथिला आवाज' क विफलताक उदाहरण दैत समाजक उदासीनता आ नव-भाषिक समूहक सुनियोजित षड्...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली दैनिक 'मिथिला आवाज' क विफलताक उदाहरण दैत समाजक उदासीनता आ नव-भाषिक समूहक सुनियोजित षड्...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24658. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24659. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24660. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ वैचारिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ वैचारिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24661. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24662. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163मे राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग” प्रविष्टि गद्य, वैचारिक लेख आ “मैथिली दैनिक 'मिथिला आवाज' क विफलताक उदाहरण दैत समाजक उदासीनता आ नव-भाषिक समूहक सुनियोजित षड्...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2472, सूचकांक पंक्ति 1163मे राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “चिन्तन- मैथिलीक भविष्यक प्रसंग” प्रविष्टि गद्य, वैचारिक लेख आ “मैथिली दैनिक 'मिथिला आवाज' क विफलताक उदाहरण दैत समाजक उदासीनता आ नव-भाषिक समूहक सुनियोजित षड्...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2473 : विदेह-सदेह 15 — कुमार अभिनन्दन: दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया

प्रश्न 24663. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164: कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1164मे कुमार अभिनन्दनक प्रविष्टि “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24664. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164: कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24665. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164: कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

प्रश्न 24666. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164: कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक तान्त्रिक लोक-नृत्य 'झिझिया'क सांस्कृतिक

उत्तर: घ. मिथिलाक तान्त्रिक लोक-नृत्य 'झिझिया'क सांस्कृतिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक तान्त्रिक लोक-नृत्य 'झिझिया'क सांस्कृतिक” अछि।

प्रश्न 24667. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164: कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक तान्त्रिक लोक-नृत्य 'झिझिया'क सांस्कृतिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक तान्त्रिक लोक-नृत्य 'झिझिया'क सांस्कृतिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक तान्त्रिक लोक-नृत्य 'झिझिया'क सांस्कृतिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24668. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164: कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार अभिनन्दन, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार अभिनन्दन, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24669. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164: कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24670. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164: कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24671. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164: कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24672. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164मे कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “मिथिलाक तान्त्रिक लोक-नृत्य 'झिझिया'क सांस्कृतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2473, सूचकांक पंक्ति 1164मे कुमार अभिनन्दनक “दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा: झिझिया” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “मिथिलाक तान्त्रिक लोक-नृत्य 'झिझिया'क सांस्कृतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2474 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': गजलक लहास

प्रश्न 24673. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजलक लहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलक लहास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1165मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “गजलक लहास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24674. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24675. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24676. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कलानन्द भट्टक गजल-संग्रह 'कान्हपर लहास हमर' मे काफिया-रदीफक व्यापक दोष आ मात्रिक-वार्णिक बेबह...

उत्तर: घ. कलानन्द भट्टक गजल-संग्रह 'कान्हपर लहास हमर' मे काफिया-रदीफक व्यापक दोष आ मात्रिक-वार्णिक बेबह...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कलानन्द भट्टक गजल-संग्रह 'कान्हपर लहास हमर' मे काफिया-रदीफक व्यापक दोष आ मात्रिक-वार्णिक बेबह...” अछि।

प्रश्न 24677. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कलानन्द भट्टक गजल-संग्रह 'कान्हपर लहास हमर' मे काफिया-रदीफक व्यापक दोष आ मात्रिक-वार्णिक बेबह...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कलानन्द भट्टक गजल-संग्रह 'कान्हपर लहास हमर' मे काफिया-रदीफक व्यापक दोष आ मात्रिक-वार्णिक बेबह...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कलानन्द भट्टक गजल-संग्रह 'कान्हपर लहास हमर' मे काफिया-रदीफक व्यापक दोष आ मात्रिक-वार्णिक बेबह...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24678. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24679. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24680. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24681. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24682. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165मे जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “कलानन्द भट्टक गजल-संग्रह 'कान्हपर लहास हमर' मे काफिया-रदीफक व्यापक दोष आ मात्रिक-वार्णिक बेबह...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2474, सूचकांक पंक्ति 1165मे जगदानन्द झा 'मनु'क “गजलक लहास” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “कलानन्द भट्टक गजल-संग्रह 'कान्हपर लहास हमर' मे काफिया-रदीफक व्यापक दोष आ मात्रिक-वार्णिक बेबह...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2475 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': सेल्समेन

प्रश्न 24683. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166: जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सेल्समेन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सेल्समेन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1166मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “सेल्समेन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24684. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166: जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24685. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166: जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-कथा/प्रसंग

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-कथा/प्रसंग

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-कथा/प्रसंग” अछि।

प्रश्न 24686. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166: जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पिता-भक्त बालक आ अपन ग्राहक सँ ओकर पिता कैँ पागल कहि दोकान चलाबै बला सेल्समेनक शिक्षाप्रद संव...

उत्तर: घ. पिता-भक्त बालक आ अपन ग्राहक सँ ओकर पिता कैँ पागल कहि दोकान चलाबै बला सेल्समेनक शिक्षाप्रद संव...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पिता-भक्त बालक आ अपन ग्राहक सँ ओकर पिता कैँ पागल कहि दोकान चलाबै बला सेल्समेनक शिक्षाप्रद संव...” अछि।

प्रश्न 24687. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166: जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पिता-भक्त बालक आ अपन ग्राहक सँ ओकर पिता कैँ पागल कहि दोकान चलाबै बला सेल्समेनक शिक्षाप्रद संव...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिता-भक्त बालक आ अपन ग्राहक सँ ओकर पिता कैँ पागल कहि दोकान चलाबै बला सेल्समेनक शिक्षाप्रद संव...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिता-भक्त बालक आ अपन ग्राहक सँ ओकर पिता कैँ पागल कहि दोकान चलाबै बला सेल्समेनक शिक्षाप्रद संव...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24688. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166: जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा/प्रसंग

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा/प्रसंग

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24689. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166: जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24690. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166: जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-कथा/प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-कथा/प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24691. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166: जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24692. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166मे जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा/प्रसंग आ “पिता-भक्त बालक आ अपन ग्राहक सँ ओकर पिता केँ पागल कहि दोकान चलाबै बला सेल्समेनक शिक्षाप्रद संव...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2475, सूचकांक पंक्ति 1166मे जगदानन्द झा 'मनु'क “सेल्समेन” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा/प्रसंग आ “पिता-भक्त बालक आ अपन ग्राहक सँ ओकर पिता केँ पागल कहि दोकान चलाबै बला सेल्समेनक शिक्षाप्रद संव...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2476 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': उपहार

प्रश्न 24693. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167: जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उपहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपहार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1167मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “उपहार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24694. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167: जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24695. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167: जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-प्रसंग

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-प्रसंग

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-प्रसंग” अछि।

प्रश्न 24696. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167: जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्नेह कैँ ओकर मोलक दृष्टिसँ नहि

उत्तर: घ. स्नेह कैँ ओकर मोलक दृष्टिसँ नहि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्नेह कैँ ओकर मोलक दृष्टिसँ नहि” अछि।

प्रश्न 24697. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167: जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्नेह कैँ ओकर मोलक दृष्टिसँ नहि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्नेह कैँ ओकर मोलक दृष्टिसँ नहि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्नेह कैँ ओकर मोलक दृष्टिसँ नहि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24698. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167: जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघु-प्रसंग

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघु-प्रसंग

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24699. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167: जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24700. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167: जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार”कैँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24701. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167: जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24702. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167मे जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार” प्रविष्टि गद्य, लघु-प्रसंग आ “स्नेह कैँ ओकर मोलक दृष्टिसँ नहि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2476, सूचकांक पंक्ति 1167मे जगदानन्द झा 'मनु'क “उपहार” प्रविष्टि गद्य, लघु-प्रसंग आ “स्नेह कैँ ओकर मोलक दृष्टिसँ नहि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2477 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': नीक

प्रश्न 24703. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168: जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नीक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नीक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1168मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “नीक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24704. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168: जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24705. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168: जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-प्रसंग

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-प्रसंग

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-प्रसंग” अछि।

प्रश्न 24706. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168: जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परस्पर भेंटसँ अच्छा लगबाक सहज भावपूर्ण अभिव्यक्ति

उत्तर: घ. परस्पर भेंटसँ अच्छा लगबाक सहज भावपूर्ण अभिव्यक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परस्पर भेंटसँ अच्छा लगबाक सहज भावपूर्ण अभिव्यक्ति” अछि।

प्रश्न 24707. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168: जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परस्पर भेंटसँ अच्छा लगबाक सहज भावपूर्ण अभिव्यक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परस्पर भेंटसँ अच्छा लगबाक सहज भावपूर्ण अभिव्यक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परस्पर भेंटसँ अच्छा लगबाक सहज भावपूर्ण अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24708. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168: जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघु-प्रसंग

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघु-प्रसंग

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24709. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168: जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24710. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168: जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24711. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168: जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24712. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168मे जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक” प्रविष्टि गद्य, लघु-प्रसंग आ “परस्पर भेंटसँ अच्छा लगबाक सहज भावपूर्ण अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2477, सूचकांक पंक्ति 1168मे जगदानन्द झा 'मनु'क “नीक” प्रविष्टि गद्य, लघु-प्रसंग आ “परस्पर भेंटसँ अच्छा लगबाक सहज भावपूर्ण अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2478 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': पिआर

प्रश्न 24713. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पिआर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिआर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1169मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “पिआर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24714. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24715. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-प्रसंग

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-प्रसंग

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-प्रसंग” अछि।

प्रश्न 24716. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेमक पारदर्शिता आ हृदय-दर्पण जकाँ एक-दोसरकेँ देखबाक दार्शनिक भाव

उत्तर: घ. प्रेमक पारदर्शिता आ हृदय-दर्पण जकाँ एक-दोसरकेँ देखबाक दार्शनिक भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेमक पारदर्शिता आ हृदय-दर्पण जकाँ एक-दोसरकेँ देखबाक दार्शनिक भाव” अछि।

प्रश्न 24717. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेमक पारदर्शिता आ हृदय-दर्पण जकाँ एक-दोसरकेँ देखबाक दार्शनिक भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक पारदर्शिता आ हृदय-दर्पण जकाँ एक-दोसरकेँ देखबाक दार्शनिक भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेमक पारदर्शिता आ हृदय-दर्पण जकाँ एक-दोसरकेँ देखबाक दार्शनिक भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24718. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघु-प्रसंग

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघु-प्रसंग

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24719. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24720. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24721. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24722. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169मे जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर” प्रविष्टि गद्य, लघु-प्रसंग आ “प्रेमक पारदर्शिता आ हृदय-दर्पण जकाँ एक-दोसरकेँ देखबाक दार्शनिक भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2478, सूचकांक पंक्ति 1169मे जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआर” प्रविष्टि गद्य, लघु-प्रसंग आ “प्रेमक पारदर्शिता आ हृदय-दर्पण जकाँ एक-दोसरकेँ देखबाक दार्शनिक भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2479 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': कनियाँ दाइ

प्रश्न 24723. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170: जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कनियाँ दाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कनियाँ दाइ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1170मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “कनियाँ दाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24724. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170: जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24725. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170: जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य-प्रसंग

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य-प्रसंग

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हास्य-प्रसंग” अछि।

प्रश्न 24726. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170: जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सबसँ छोट उमरक ब्याहता स्त्रीक सगुनिया दाइ आ नव-दुलहा जमाइक हास्यास्पद परिहास

उत्तर: घ. सबसँ छोट उमरक ब्याहता स्त्रीक सगुनिया दाइ आ नव-दुलहा जमाइक हास्यास्पद परिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सबसँ छोट उमरक ब्याहता स्त्रीक सगुनिया दाइ आ नव-दुलहा जमाइक हास्यास्पद परिहास” अछि।

प्रश्न 24727. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170: जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सबसँ छोट उमरक ब्याहता स्त्रीक सगुनिया दाइ आ नव-दुलहा जमाइक हास्यास्पद परिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सबसँ छोट उमरक ब्याहता स्त्रीक सगुनिया दाइ आ नव-दुलहा जमाइक हास्यास्पद परिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सबसँ छोट उमरक ब्याहता स्त्रीक सगुनिया दाइ आ नव-दुलहा जमाइक हास्यास्पद परिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24728. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170: जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा हास्य-प्रसंग

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा हास्य-प्रसंग

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24729. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170: जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24730. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170: जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हास्य-प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हास्य-प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24731. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170: जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24732. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170मे जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ” प्रविष्टि गद्य, हास्य-प्रसंग आ “सबसँ छोट उमरक ब्याहता स्त्रीक सगुनिया दाइ आ नव-दुलहा जमाइक हास्यास्पद परिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2479, सूचकांक पंक्ति 1170मे जगदानन्द झा 'मनु'क “कनियाँ दाइ” प्रविष्टि गद्य, हास्य-प्रसंग आ “सबसँ छोट उमरक ब्याहता स्त्रीक सगुनिया दाइ आ नव-दुलहा जमाइक हास्यास्पद परिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2480 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': मौसी

प्रश्न 24733. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171: जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मौसी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मौसी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1171मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “मौसी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24734. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171: जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24735. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171: जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य-प्रसंग

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य-प्रसंग

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हास्य-प्रसंग” अछि।

प्रश्न 24736. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171: जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सखीसभक नोक-झोंकमे नवका बर कैँ ओतबे रास मौसी कहि सभ सखी सभकेँ चुप कराबैक तीख हाजिरजवाबी

उत्तर: घ. सखीसभक नोक-झोंकमे नवका बर कैँ ओतबे रास मौसी कहि सभ सखी सभकेँ चुप कराबैक तीख हाजिरजवाबी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सखीसभक नोक-झोंकमे नवका बर कैँ ओतबे रास मौसी कहि सभ सखी सभकेँ चुप कराबैक तीख हाजिरजवाबी” अछि।

प्रश्न 24737. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171: जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सखीसभक नोक-झोंकमे नवका बर कैँ ओतबे रास मौसी कहि सभ सखी सभकें चुप कराबैक तीख हाजिरजवाबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सखीसभक नोक-झोंकमे नवका बर कैँ ओतबे रास मौसी कहि सभ सखी सभकें चुप कराबैक तीख हाजिरजवाबी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सखीसभक नोक-झोंकमे नवका बर कैँ ओतबे रास मौसी कहि सभ सखी सभकें चुप कराबैक तीख हाजिरजवाबी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24738. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171: जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा हास्य-प्रसंग

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा हास्य-प्रसंग

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24739. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171: जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24740. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171: जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी”कैँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हास्य-प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हास्य-प्रसंगक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24741. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171: जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24742. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171मे जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी” प्रविष्टि गद्य, हास्य-प्रसंग आ “सखीसभक नोक-झोंकमे नवका बर कैँ ओतबे रास मौसी कहि सभ सखी सभकें चुप कराबैक तीख हाजिरजवाबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2480, सूचकांक पंक्ति 1171मे जगदानन्द झा 'मनु'क “मौसी” प्रविष्टि गद्य, हास्य-प्रसंग आ “सखीसभक नोक-झोंकमे नवका बर कैँ ओतबे रास मौसी कहि सभ सखी सभकें चुप कराबैक तीख हाजिरजवाबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2481 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': हारि

प्रश्न 24743. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172: जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हारि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हारि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1172मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “हारि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24744. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172: जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24745. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172: जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहनि कथा” अछि।

प्रश्न 24746. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172: जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्याहपूर्व प्रेम आ व्याहोपरान्त विवशता

उत्तर: घ. व्याहपूर्व प्रेम आ व्याहोपरान्त विवशता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्याहपूर्व प्रेम आ व्याहोपरान्त विवशता” अछि।

प्रश्न 24747. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172: जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्याहपूर्व प्रेम आ व्याहोपरान्त विवशता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्याहपूर्व प्रेम आ व्याहोपरान्त विवशता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्याहपूर्व प्रेम आ व्याहोपरान्त विवशता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24748. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172: जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24749. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172: जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24750. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172: जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24751. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172: जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24752. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172मे जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “व्याहपूर्व प्रेम आ व्याहोपरान्त विवशता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2481, सूचकांक पंक्ति 1172मे जगदानन्द झा 'मनु'क “हारि” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “व्याहपूर्व प्रेम आ व्याहोपरान्त विवशता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2482 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': डिबिया

प्रश्न 24753. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173: जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डिबिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डिबिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1173मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “डिबिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24754. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173: जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24755. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173: जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहनि कथा” अछि।

प्रश्न 24756. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173: जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रातिमे डिबिया बुझाबय पोखर गेल स्त्रीक आलसी पतिक तीख व्यंग्य

उत्तर: घ. रातिमे डिबिया बुझाबय पोखर गेल स्त्रीक आलसी पतिक तीख व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रातिमे डिबिया बुझाबय पोखर गेल स्त्रीक आलसी पतिक तीख व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 24757. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173: जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रातिमे डिबिया बुझाबय पोखर गेल स्त्रीक आलसी पतिक तीख व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रातिमे डिबिया बुझाबय पोखर गेल स्त्रीक आलसी पतिक तीख व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रातिमे डिबिया बुझाबय पोखर गेल स्त्रीक आलसी पतिक तीख व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24758. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173: जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24759. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173: जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24760. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173: जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24761. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173: जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24762. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173मे जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “रातिमे डिबिया बुझाबय पोखर गेल स्त्रीक आलसी पतिक तीख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2482, सूचकांक पंक्ति 1173मे जगदानन्द झा 'मनु'क “डिबिया” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “रातिमे डिबिया बुझाबय पोखर गेल स्त्रीक आलसी पतिक तीख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2483 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': पिआस

प्रश्न 24763. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पिआस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिआस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1174मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “पिआस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24764. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24765. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहनि कथा” अछि।

प्रश्न 24766. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इनार आ पियासलक रूपकसँ प्रेमक गहन आत्मीयता आ समर्पणक व्यंजना

उत्तर: घ. इनार आ पियासलक रूपकसँ प्रेमक गहन आत्मीयता आ समर्पणक व्यंजना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इनार आ पियासलक रूपकसँ प्रेमक गहन आत्मीयता आ समर्पणक व्यंजना” अछि।

प्रश्न 24767. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. इनार आ पियासलक रूपकसँ प्रेमक गहन आत्मीयता आ समर्पणक व्यंजना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इनार आ पियासलक रूपकसँ प्रेमक गहन आत्मीयता आ समर्पणक व्यंजना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इनार आ पियासलक रूपकसँ प्रेमक गहन आत्मीयता आ समर्पणक व्यंजना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24768. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24769. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24770. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24771. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174: जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24772. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174मे जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “इनार आ पियासलक रूपकसँ प्रेमक गहन आत्मीयता आ समर्पणक व्यंजना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2483, सूचकांक पंक्ति 1174मे जगदानन्द झा 'मनु'क “पिआस” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “इनार आ पियासलक रूपकसँ प्रेमक गहन आत्मीयता आ समर्पणक व्यंजना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2484 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': प्रेम दीवानी

प्रश्न 24773. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेम दीवानी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम दीवानी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1175मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “प्रेम दीवानी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24774. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24775. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहनि कथा” अछि।

प्रश्न 24776. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेमक अन्तिम छोर पाबय प्राण गँवाबय जा रहल प्रेमिकाक सामूहिक आत्मदाहक विभत्स दृश्य पर व्यंग्य

उत्तर: घ. प्रेमक अन्तिम छोर पाबय प्राण गँवाबय जा रहल प्रेमिकाक सामूहिक आत्मदाहक विभत्स दृश्य पर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेमक अन्तिम छोर पाबय प्राण गँवाबय जा रहल प्रेमिकाक सामूहिक आत्मदाहक विभत्स दृश्य पर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 24777. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेमक अन्तिम छोर पाबय प्राण गँवाबय जा रहल प्रेमिकाक सामूहिक आत्मदाहक विभत्स दृश्य पर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक अन्तिम छोर पाबय प्राण गँवाबय जा रहल प्रेमिकाक सामूहिक आत्मदाहक विभत्स दृश्य पर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेमक अन्तिम छोर पाबय प्राण गँवाबय जा रहल प्रेमिकाक सामूहिक आत्मदाहक विभत्स दृश्य पर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24778. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24779. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24780. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24781. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24782. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175मे जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “प्रेमक अन्तिम छोर पाबय प्राण गँवाबय जा रहल प्रेमिकाक सामूहिक आत्मदाहक विभत्स दृश्य पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2484, सूचकांक पंक्ति 1175मे जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम दीवानी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “प्रेमक अन्तिम छोर पाबय प्राण गँवाबय जा रहल प्रेमिकाक सामूहिक आत्मदाहक विभत्स दृश्य पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2485 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': खापरि धिपा कर

प्रश्न 24783. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176: जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खापरि धिपा कर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खापरि धिपा कर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1176मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “खापरि धिपा कर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24784. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176: जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24785. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176: जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहनि कथा” अछि।

प्रश्न 24786. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176: जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ललिताक वर देखय गेल स्त्रीक सखी सँ 'हँस-बोल' करय कहलापर ओकर मुखर आ तीव्र प्रतिक्रिया

उत्तर: घ. ललिताक वर देखय गेल स्त्रीक सखी सँ 'हँस-बोल' करय कहलापर ओकर मुखर आ तीव्र प्रतिक्रिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ललिताक वर देखय गेल स्त्रीक सखी सँ 'हँस-बोल' करय कहलापर ओकर मुखर आ तीव्र प्रतिक्रिया” अछि।

प्रश्न 24787. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176: जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ललिताक वर देखय गेल स्त्रीक सखी सँ 'हँस-बोल' करय कहलापर ओकर मुखर आ तीव्र प्रतिक्रिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ललिताक वर देखय गेल स्त्रीक सखी सँ 'हँस-बोल' करय कहलापर ओकर मुखर आ तीव्र प्रतिक्रिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ललिताक वर देखय गेल स्त्रीक सखी सँ 'हँस-बोल' करय कहलापर ओकर मुखर आ तीव्र प्रतिक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24788. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176: जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24789. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176: जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24790. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176: जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर”कें विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24791. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176: जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24792. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176मे जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “ललिताक वर देखय गेल स्त्रीक सखी सँ 'हँस-बोल' करय कहलापर ओकर मुखर आ तीव्र प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2485, सूचकांक पंक्ति 1176मे जगदानन्द झा 'मनु'क “खापरि धिपा कर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “ललिताक वर देखय गेल स्त्रीक सखी सँ 'हँस-बोल' करय कहलापर ओकर मुखर आ तीव्र प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2486 : विदेह-सदेह 15 — अखिलेश कुमार मण्डल: पँचवेदी

प्रश्न 24793. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177: अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पँचवेदी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पँचवेदी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1177मे अखिलेश कुमार मण्डलक प्रविष्टि “पँचवेदी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24794. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177: अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24795. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177: अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु-कथा” अछि।

प्रश्न 24796. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177: अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह-भोजक सामाजिक स्टेटस सिम्बल पर करारा व्यंग्य आ पंचकें दार्शनिक व्याख्या

उत्तर: घ. विवाह-भोजक सामाजिक स्टेटस सिम्बल पर करारा व्यंग्य आ पंचकें दार्शनिक व्याख्या

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह-भोजक सामाजिक स्टेटस सिम्बल पर करारा व्यंग्य आ पंचकें दार्शनिक व्याख्या” अछि।

प्रश्न 24797. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177: अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाह-भोजक सामाजिक स्टेटस सिम्बल पर करारा व्यंग्य आ पंचकें दार्शनिक व्याख्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाह-भोजक सामाजिक स्टेटस सिम्बल पर करारा व्यंग्य आ पंचकें दार्शनिक व्याख्या

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह-भोजक सामाजिक स्टेटस सिम्बल पर करारा व्यंग्य आ पंचकें दार्शनिक व्याख्या” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24798. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177: अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अखिलेश कुमार मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अखिलेश कुमार मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघु-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24799. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177: अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24800. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177: अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24801. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177: अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24802. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177मे अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “विवाह-भोजक सामाजिक स्टेटस सिम्बल पर करारा व्यंग्य आ पंचकेँ दार्शनिक व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2486, सूचकांक पंक्ति 1177मे अखिलेश कुमार मण्डलक “पँचवेदी” प्रविष्टि गद्य, लघु-कथा आ “विवाह-भोजक सामाजिक स्टेटस सिम्बल पर करारा व्यंग्य आ पंचकेँ दार्शनिक व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2487 : विदेह-सदेह 15 — उमेश मण्डल: जीविते नर्क

प्रश्न 24803. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178: उमेश मण्डलक “जीविते नर्क” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जीविते नर्क

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीविते नर्क

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1178मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “जीविते नर्क” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24804. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178: उमेश मण्डलक “जीविते नर्क”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24805. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178: उमेश मण्डलक “जीविते नर्क”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 24806. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178: उमेश मण्डलक “जीविते नर्क” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पैतृक सम्पत्तिमे बँटवाराक जटिलता आ ग्रामीण राजनीतिमे रिश्ताक गिरावटक हृदयविदारक पारिवारिक कथा

उत्तर: घ. पैतृक सम्पत्तिमे बँटवाराक जटिलता आ ग्रामीण राजनीतिमे रिश्ताक गिरावटक हृदयविदारक पारिवारिक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पैतृक सम्पत्तिमे बँटवाराक जटिलता आ ग्रामीण राजनीतिमे रिश्ताक गिरावटक हृदयविदारक पारिवारिक कथा” अछि।

प्रश्न 24807. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178: उमेश मण्डलक “जीविते नर्क” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पैतृक सम्पत्तिमे बँटवाराक जटिलता आ ग्रामीण राजनीतिमे रिश्ताक गिरावटक हृदयविदारक पारिवारिक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पैतृक सम्पत्तिमे बँटवाराक जटिलता आ ग्रामीण राजनीतिमे रिश्ताक गिरावटक हृदयविदारक पारिवारिक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पैतृक सम्पत्तिमे बँटवाराक जटिलता आ ग्रामीण राजनीतिमे रिश्ताक गिरावटक हृदयविदारक पारिवारिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24808. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178: उमेश मण्डलक “जीविते नर्क”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24809. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178: उमेश मण्डलक “जीविते नर्क” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24810. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178: उमेश मण्डलक “जीविते नर्क”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24811. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178: उमेश मण्डलक “जीविते नर्क” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24812. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178मे उमेश मण्डलक “जीविते नर्क” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पैतृक सम्पत्तिमे बँटवाराक जटिलता आ ग्रामीण राजनीतिमे रिश्ताक गिरावटक हृदयविदारक पारिवारिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2487, सूचकांक पंक्ति 1178मे उमेश मण्डलक “जीविते नर्क” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पैतृक सम्पत्तिमे बँटवाराक जटिलता आ ग्रामीण राजनीतिमे रिश्ताक गिरावटक हृदयविदारक पारिवारिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2488 : विदेह-सदेह 15 — राम विलास साह: शिक्षाक महत

प्रश्न 24813. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179: राम विलास साहक “शिक्षाक महत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शिक्षाक महत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षाक महत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1179मे राम विलास साहक प्रविष्टि “शिक्षाक महत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24814. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179: राम विलास साहक “शिक्षाक महत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24815. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179: राम विलास साहक “शिक्षाक महत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 24816. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179: राम विलास साहक “शिक्षाक महत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. निरक्षरताक कारण जमीन हराएल गरीब परिवारक शिक्षाक महत्त्व बुझि बेटा-बेटीकेँ पढ़ाबयक संकल्पक प्र...

उत्तर: घ. निरक्षरताक कारण जमीन हराएल गरीब परिवारक शिक्षाक महत्त्व बुझि बेटा-बेटीकेँ पढ़ाबयक संकल्पक प्र...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “निरक्षरताक कारण जमीन हराएल गरीब परिवारक शिक्षाक महत्त्व बुझि बेटा-बेटीकेँ पढ़ाबयक संकल्पक प्र...” अछि।

प्रश्न 24817. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179: राम विलास साहक “शिक्षाक महत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. निरक्षरताक कारण जमीन हराएल गरीब परिवारक शिक्षाक महत्त्व बुझि बेटा-बेटीकेँ पढ़ाबयक संकल्पक प्र...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निरक्षरताक कारण जमीन हराएल गरीब परिवारक शिक्षाक महत्त्व बुझि बेटा-बेटीकेँ पढ़ाबयक संकल्पक प्र...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “निरक्षरताक कारण जमीन हराएल गरीब परिवारक शिक्षाक महत्त्व बुझि बेटा-बेटीकेँ पढ़ाबयक संकल्पक प्र...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24818. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179: राम विलास साहक “शिक्षाक महत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24819. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179: राम विलास साहक “शिक्षाक महत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24820. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179: राम विलास साहक “शिक्षाक महत”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24821. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179: राम विलास साहक “शिक्षाक महत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24822. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179मे राम विलास साहक “शिक्षाक महत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “निरक्षरताक कारण जमीन हराएल गरीब परिवारक शिक्षाक महत्त्व बुझि बेटा-बेटीकेँ पढ़ाबयक संकल्पक प्र...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2488, सूचकांक पंक्ति 1179मे राम विलास साहक “शिक्षाक महत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “निरक्षरताक कारण जमीन हराएल गरीब परिवारक शिक्षाक महत्त्व बुझि बेटा-बेटीकेँ पढ़ाबयक संकल्पक प्र...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2489 : विदेह-सदेह 15 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल

प्रश्न 24823. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1180मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24824. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24825. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24826. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सियाराम झा 'सरस'क 'थोड़े आगि थोड़े पानि' मे व्याकरणिक दोषक बावजूद सशक्त भावपक्षक स्वीकारात्मक...

उत्तर: घ. सियाराम झा 'सरस'क 'थोड़े आगि थोड़े पानि' मे व्याकरणिक दोषक बावजूद सशक्त भावपक्षक स्वीकारात्मक...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सियाराम झा 'सरस'क 'थोड़े आगि थोड़े पानि' मे व्याकरणिक दोषक बावजूद सशक्त भावपक्षक स्वीकारात्मक...” अछि।

प्रश्न 24827. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सियाराम झा 'सरस'क 'थोड़े आगि थोड़े पानि' मे व्याकरणिक दोषक बावजूद सशक्त भावपक्षक स्वीकारात्मक...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सियाराम झा 'सरस'क 'थोड़े आगि थोड़े पानि' मे व्याकरणिक दोषक बावजूद सशक्त भावपक्षक स्वीकारात्मक...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सियाराम झा 'सरस'क 'थोड़े आगि थोड़े पानि' मे व्याकरणिक दोषक बावजूद सशक्त भावपक्षक स्वीकारात्मक...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24828. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24829. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24830. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24831. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24832. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “सियाराम झा 'सरस'क 'थोड़े आगि थोड़े पानि' मे व्याकरणिक दोषक बावजूद सशक्त भावपक्षक स्वीकारात्मक...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2489, सूचकांक पंक्ति 1180मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “सियाराम झा 'सरस'क 'थोड़े आगि थोड़े पानि' मे व्याकरणिक दोषक बावजूद सशक्त भावपक्षक स्वीकारात्मक...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2490 : विदेह-सदेह 15 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': अरविन्दजीक आजाद गजल

प्रश्न 24833. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरविन्दजीक आजाद गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्दजीक आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1181मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “अरविन्दजीक आजाद गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24834. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24835. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24836. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे गजल-व्याकरणक अभाव स्वीकारैत संवेदनात्मक अभिव्यक्ति आ भ...

उत्तर: घ. अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे गजल-व्याकरणक अभाव स्वीकारैत संवेदनात्मक अभिव्यक्ति आ भ...

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे गजल-व्याकरणक अभाव स्वीकारैत संवेदनात्मक अभिव्यक्ति आ भ...” अछि।

प्रश्न 24837. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे गजल-व्याकरणक अभाव स्वीकारैत संवेदनात्मक अभिव्यक्ति आ भ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे गजल-व्याकरणक अभाव स्वीकारैत संवेदनात्मक अभिव्यक्ति आ भ...

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे गजल-व्याकरणक अभाव स्वीकारैत संवेदनात्मक अभिव्यक्ति आ भ...” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24838. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24839. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24840. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24841. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24842. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे गजल-व्याकरणक अभाव स्वीकारैत संवेदनात्मक अभिव्यक्ति आ भ...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2490, सूचकांक पंक्ति 1181मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे गजल-व्याकरणक अभाव स्वीकारैत संवेदनात्मक अभिव्यक्ति आ भ...” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2491 : विदेह-सदेह 15 — ओम प्रकाश झा: बहुलपिया रचनामे

प्रश्न 24843. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182: ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बहुलपिया रचनामे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुलपिया रचनामे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1182मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “बहुलपिया रचनामे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24844. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182: ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24845. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182: ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24846. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182: ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे बहरक अभाव

उत्तर: घ. अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे बहरक अभाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे बहरक अभाव” अछि।

प्रश्न 24847. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182: ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे बहरक अभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे बहरक अभाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे बहरक अभाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24848. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182: ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24849. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182: ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24850. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182: ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24851. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182: ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24852. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182मे ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे बहरक अभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2491, सूचकांक पंक्ति 1182मे ओम प्रकाश झाक “बहुलपिया रचनामे” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' मे बहरक अभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2492 : विदेह-सदेह 15 — ओम प्रकाश झा: घोघ उठबैत गजल

प्रश्न 24853. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घोघ उठबैत गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घोघ उठबैत गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1183मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “घोघ उठबैत गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24854. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24855. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24856. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विभूति आनन्दक गजल-संग्रहक समीक्षा करैत बहर दोषक बावजूद काफिया अनुपालन आ मजबूत कथ्यक सराहना

उत्तर: घ. विभूति आनन्दक गजल-संग्रहक समीक्षा करैत बहर दोषक बावजूद काफिया अनुपालन आ मजबूत कथ्यक सराहना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विभूति आनन्दक गजल-संग्रहक समीक्षा करैत बहर दोषक बावजूद काफिया अनुपालन आ मजबूत कथ्यक सराहना” अछि।

प्रश्न 24857. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विभूति आनन्दक गजल-संग्रहक समीक्षा करैत बहर दोषक बावजूद काफिया अनुपालन आ मजबूत कथ्यक सराहना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विभूति आनन्दक गजल-संग्रहक समीक्षा करैत बहर दोषक बावजूद काफिया अनुपालन आ मजबूत कथ्यक सराहना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विभूति आनन्दक गजल-संग्रहक समीक्षा करैत बहर दोषक बावजूद काफिया अनुपालन आ मजबूत कथ्यक सराहना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24858. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24859. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24860. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24861. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24862. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183मे ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “विभूति आनन्दक गजल-संग्रहक समीक्षा करैत बहर दोषक बावजूद काफिया अनुपालन आ मजबूत कथ्यक सराहना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2492, सूचकांक पंक्ति 1183मे ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “विभूति आनन्दक गजल-संग्रहक समीक्षा करैत बहर दोषक बावजूद काफिया अनुपालन आ मजबूत कथ्यक सराहना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2493 : विदेह-सदेह 15 — ओम प्रकाश झा: समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल

प्रश्न 24863. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184: ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1184मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24864. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184: ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24865. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184: ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24866. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184: ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेमचन्द्र पंकजक दूटा गजलमे रदीफ आ काफियाक दोष तथा कोनो बहरमे नहि रहबाक प्रमाणिक विश्लेषण

उत्तर: घ. प्रेमचन्द्र पंकजक दूटा गजलमे रदीफ आ काफियाक दोष तथा कोनो बहरमे नहि रहबाक प्रमाणिक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेमचन्द्र पंकजक दूटा गजलमे रदीफ आ काफियाक दोष तथा कोनो बहरमे नहि रहबाक प्रमाणिक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 24867. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184: ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेमचन्द्र पंकजक दूटा गजलमे रदीफ आ काफियाक दोष तथा कोनो बहरमे नहि रहबाक प्रमाणिक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमचन्द्र पंकजक दूटा गजलमे रदीफ आ काफियाक दोष तथा कोनो बहरमे नहि रहबाक प्रमाणिक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेमचन्द्र पंकजक दूटा गजलमे रदीफ आ काफियाक दोष तथा कोनो बहरमे नहि रहबाक प्रमाणिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24868. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184: ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24869. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184: ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24870. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184: ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24871. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184: ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24872. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184मे ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “प्रेमचन्द्र पंकजक दूटा गजलमे रदीफ आ काफियाक दोष तथा कोनो बहरमे नहि रहबाक प्रमाणिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2493, सूचकांक पंक्ति 1184मे ओम प्रकाश झाक “समीक्षा- प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “प्रेमचन्द्र पंकजक दूटा गजलमे रदीफ आ काफियाक दोष तथा कोनो बहरमे नहि रहबाक प्रमाणिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2494 : विदेह-सदेह 15 — ओम प्रकाश झा: मैथिली बाल गजलक अवधारणा

प्रश्न 24873. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली बाल गजलक अवधारणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली बाल गजलक अवधारणा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1185मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24874. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24875. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विधा-परिचय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विधा-परिचय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विधा-परिचय” अछि।

प्रश्न 24876. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. २०१२ मे शुरू मैथिली बाल गजलक तीव्र विकास

उत्तर: घ. २०१२ मे शुरू मैथिली बाल गजलक तीव्र विकास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “२०१२ मे शुरू मैथिली बाल गजलक तीव्र विकास” अछि।

प्रश्न 24877. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. २०१२ मे शुरू मैथिली बाल गजलक तीव्र विकास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २०१२ मे शुरू मैथिली बाल गजलक तीव्र विकास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “२०१२ मे शुरू मैथिली बाल गजलक तीव्र विकास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24878. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा विधा-परिचय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा विधा-परिचय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24879. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24880. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विधा-परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विधा-परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24881. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24882. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185मे ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, विधा-परिचय आ “२०१२ मे शुरू मैथिली बाल गजलक तीव्र विकास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2494, सूचकांक पंक्ति 1185मे ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, विधा-परिचय आ “२०१२ मे शुरू मैथिली बाल गजलक तीव्र विकास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2495 : विदेह-सदेह 15 — ओम प्रकाश झा: भोथ हथियार

प्रश्न 24883. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भोथ हथियार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोथ हथियार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1186मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “भोथ हथियार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24884. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24885. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24886. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुरेन्द्र नाथक 'गजल हमर हथियार थिक' मे काफिया

उत्तर: घ. सुरेन्द्र नाथक 'गजल हमर हथियार थिक' मे काफिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुरेन्द्र नाथक 'गजल हमर हथियार थिक' मे काफिया” अछि।

प्रश्न 24887. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुरेन्द्र नाथक 'गजल हमर हथियार थिक' मे काफिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुरेन्द्र नाथक 'गजल हमर हथियार थिक' मे काफिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुरेन्द्र नाथक 'गजल हमर हथियार थिक' मे काफिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24888. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24889. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24890. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24891. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24892. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186मे ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “सुरेन्द्र नाथक 'गजल हमर हथियार थिक' मे काफिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2495, सूचकांक पंक्ति 1186मे ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “सुरेन्द्र नाथक 'गजल हमर हथियार थिक' मे काफिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2496 : विदेह-सदेह 15 — ओम प्रकाश झा: गजलक लेल

प्रश्न 24893. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजलक लेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलक लेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1187मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “गजलक लेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24894. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24895. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24896. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विजय नाथ झाक 'अहींक लेल' मे काफियाक आंशिक दोषक बावजूद अरबी बहरक अनुपालनक प्रयासक प्रशंसा

उत्तर: घ. विजय नाथ झाक 'अहींक लेल' मे काफियाक आंशिक दोषक बावजूद अरबी बहरक अनुपालनक प्रयासक प्रशंसा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विजय नाथ झाक 'अहींक लेल' मे काफियाक आंशिक दोषक बावजूद अरबी बहरक अनुपालनक प्रयासक प्रशंसा” अछि।

प्रश्न 24897. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विजय नाथ झाक 'अहींक लेल' मे काफियाक आंशिक दोषक बावजूद अरबी बहरक अनुपालनक प्रयासक प्रशंसा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विजय नाथ झाक 'अहींक लेल' मे काफियाक आंशिक दोषक बावजूद अरबी बहरक अनुपालनक प्रयासक प्रशंसा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विजय नाथ झाक 'अहींक लेल' मे काफियाक आंशिक दोषक बावजूद अरबी बहरक अनुपालनक प्रयासक प्रशंसा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24898. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24899. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24900. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24901. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187: ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24902. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187मे ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “विजय नाथ झाक 'अहींक लेल' मे काफियाक आंशिक दोषक बावजूद अरबी बहरक अनुपालनक प्रयासक प्रशंसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2496, सूचकांक पंक्ति 1187मे ओम प्रकाश झाक “गजलक लेल” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “विजय नाथ झाक 'अहींक लेल' मे काफियाक आंशिक दोषक बावजूद अरबी बहरक अनुपालनक प्रयासक प्रशंसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2497 : विदेह-सदेह 15 — अमित मिश्र: कतिआएल आखर

प्रश्न 24903. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कतिआएल आखर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतिआएल आखर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1188मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “कतिआएल आखर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24904. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24905. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 24906. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुन्ना जीक गजल-संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' मे अधिकांश गजलमे चारिए शेर रहबा

उत्तर: घ. मुन्ना जीक गजल-संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' मे अधिकांश गजलमे चारिए शेर रहबा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुन्ना जीक गजल-संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' मे अधिकांश गजलमे चारिए शेर रहबा” अछि।

प्रश्न 24907. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुन्ना जीक गजल-संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' मे अधिकांश गजलमे चारिए शेर रहबा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुन्ना जीक गजल-संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' मे अधिकांश गजलमे चारिए शेर रहबा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुन्ना जीक गजल-संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' मे अधिकांश गजलमे चारिए शेर रहबा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24908. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24909. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24910. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24911. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24912. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188मे अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “मुन्ना जीक गजल-संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' मे अधिकांश गजलमे चारिए शेर रहबा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2497, सूचकांक पंक्ति 1188मे अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “मुन्ना जीक गजल-संग्रह 'माँझ आंगन्मे कतिआएल छी' मे अधिकांश गजलमे चारिए शेर रहबा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2498 : विदेह-सदेह 15 — अमित मिश्र: गजल आ गीत मे अंतर की छै?

प्रश्न 24913. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189: अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल आ गीत मे अंतर की छै?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल आ गीत मे अंतर की छै?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1189मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “गजल आ गीत मे अंतर की छै?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24914. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189: अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24915. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189: अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शास्त्रीय निरूपण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शास्त्रीय निरूपण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शास्त्रीय निरूपण” अछि।

प्रश्न 24916. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189: अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गीत-गजलक सहज अन्तर

उत्तर: घ. गीत-गजलक सहज अन्तर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गीत-गजलक सहज अन्तर” अछि।

प्रश्न 24917. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189: अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गीत-गजलक सहज अन्तर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत-गजलक सहज अन्तर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गीत-गजलक सहज अन्तर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24918. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189: अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शास्त्रीय निरूपण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शास्त्रीय निरूपण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24919. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189: अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24920. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189: अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?”कैँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शास्त्रीय निरूपणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शास्त्रीय निरूपणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24921. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189: अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24922. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189मे अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?” प्रविष्टि गद्य, शास्त्रीय निरूपण आ “गीत-गजलक सहज अन्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2498, सूचकांक पंक्ति 1189मे अमित मिश्रक “गजल आ गीत मे अंतर की छै?” प्रविष्टि गद्य, शास्त्रीय निरूपण आ “गीत-गजलक सहज अन्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2499 : विदेह-सदेह 15 — चंदन कुमार झा: बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा

प्रश्न 24923. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190: चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1190मे चंदन कुमार झाक प्रविष्टि “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24924. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190: चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24925. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190: चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पोथी-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पोथी-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पोथी-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 24926. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190: चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. २१वीं सदीक प्रथम दशकक मैथिली गजल नवजागरण

उत्तर: घ. २१वीं सदीक प्रथम दशकक मैथिली गजल नवजागरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “२१वीं सदीक प्रथम दशकक मैथिली गजल नवजागरण” अछि।

प्रश्न 24927. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190: चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. २१वीं सदीक प्रथम दशकक मैथिली गजल नवजागरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २१वीं सदीक प्रथम दशकक मैथिली गजल नवजागरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “२१वीं सदीक प्रथम दशकक मैथिली गजल नवजागरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24928. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190: चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा पोथी-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा पोथी-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24929. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190: चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24930. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190: चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा”केँ विदेह-सदेह 15क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पोथी-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पोथी-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24931. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190: चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24932. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190मे चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा” प्रविष्टि गद्य, पोथी-समीक्षा आ “२१वीं सदीक प्रथम दशकक मैथिली गजल नवजागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2499, सूचकांक पंक्ति 1190मे चंदन कुमार झाक “बहुत किछु बुझबैर : कियो बूझि नहि सकल हमरा” प्रविष्टि गद्य, पोथी-समीक्षा आ “२१वीं सदीक प्रथम दशकक मैथिली गजल नवजागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2500 : विदेह-सदेह 15 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)

प्रश्न 24933. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1191मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24934. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24935. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24936. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” अछि।

प्रश्न 24937. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24938. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24939. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24940. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24941. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24942. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2500, सूचकांक पंक्ति 1191मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “युद्ध करू जुवन शोक करू (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2501 : विदेह-सदेह 15 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)

प्रश्न 24943. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1192मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24944. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24945. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24946. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” अछि।

प्रश्न 24947. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24948. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24949. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठकेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24950. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24951. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24952. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2501, सूचकांक पंक्ति 1192मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अहाँ जं हंसबै, हंसतै दुनिया (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2502 : विदेह-सदेह 15 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)

प्रश्न 24953. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1193मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24954. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24955. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24956. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” अछि।

प्रश्न 24957. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24958. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24959. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24960. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24961. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24962. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2502, सूचकांक पंक्ति 1193मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “हम कनै छी, हंसैए लोक (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2503 : विदेह-सदेह 15 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': कविता गीत गजल राखू (गजल)

प्रश्न 24963. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता गीत गजल राखू (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता गीत गजल राखू (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1194मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “कविता गीत गजल राखू (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24964. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24965. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24966. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10) — आध्यात्मिक

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10) — आध्यात्मिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10) — आध्यात्मिक” अछि।

प्रश्न 24967. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10) — आध्यात्मिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10) — आध्यात्मिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10) — आध्यात्मिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24968. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24969. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24970. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24971. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24972. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10) — आध्यात्मिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2503, सूचकांक पंक्ति 1194मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “कविता गीत गजल राखू (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-10) — आध्यात्मिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2504 : विदेह-सदेह 15 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': एते बाझल किए रहै छी... (गजल)

प्रश्न 24973. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एते बाझल किए रहै छी... (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एते बाझल किए रहै छी... (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1195मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24974. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24975. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24976. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16) — प्रवासी

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16) — प्रवासी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16) — प्रवासी” अछि।

प्रश्न 24977. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16) — प्रवासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16) — प्रवासी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16) — प्रवासी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24978. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24979. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24980. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24981. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24982. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16) — प्रवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2504, सूचकांक पंक्ति 1195मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “एते बाझल किए रहै छी... (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16) — प्रवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2505 : विदेह-सदेह 15 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)

प्रश्न 24983. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1196मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24984. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24985. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24986. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16)

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16)” अछि।

प्रश्न 24987. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24988. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24989. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 24990. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 24991. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 24992. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2505, सूचकांक पंक्ति 1196मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जंगल आओर पहाड देखलौं... (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-16)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2506 : विदेह-सदेह 15 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)

प्रश्न 24993. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1197मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 24994. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 24995. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 24996. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर — व्यंग्यपरक

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर — व्यंग्यपरक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर — व्यंग्यपरक” अछि।

प्रश्न 24997. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर — व्यंग्यपरक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर — व्यंग्यपरक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर — व्यंग्यपरक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 24998. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 24999. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25000. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25001. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25002. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर — व्यंग्यपरक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2506, सूचकांक पंक्ति 1197मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “अपन कहैए, सुनैए हमरा (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर — व्यंग्यपरक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2507 : विदेह-सदेह 15 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)

प्रश्न 25003. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1198मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25004. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25005. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25006. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-18)

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-18)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-18)” अछि।

प्रश्न 25007. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-18)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-18)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-18)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25008. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25009. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25010. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25011. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25012. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-18)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2507, सूचकांक पंक्ति 1198मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “थिक युद्धक मैदान ई जीवन... (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-18)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2508 : विदेह-सदेह 15 — मुन्नाजी: जट-जटिन (लोक-संगीत)

प्रश्न 25013. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199: मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जट-जटिन (लोक-संगीत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जट-जटिन (लोक-संगीत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1199मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “जट-जटिन (लोक-संगीत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25014. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199: मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25015. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199: मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोक-गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोक-गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक-गीत” अछि।

प्रश्न 25016. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199: मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवास-पीडा

उत्तर: घ. प्रवास-पीडा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवास-पीडा” अछि।

प्रश्न 25017. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199: मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवास-पीडा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवास-पीडा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवास-पीडा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25018. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199: मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा लोक-गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा लोक-गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25019. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199: मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25020. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199: मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोक-गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोक-गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25021. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199: मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25022. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199मे मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)” प्रविष्टि पद्य, लोक-गीत आ “प्रवास-पीडा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2508, सूचकांक पंक्ति 1199मे मुन्नाजीक “जट-जटिन (लोक-संगीत)” प्रविष्टि पद्य, लोक-गीत आ “प्रवास-पीडा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2509 : विदेह-सदेह 15 — मुन्नाजी: दर्द दिस (कविता)

प्रश्न 25023. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200: मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दर्द दिस (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दर्द दिस (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1200मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “दर्द दिस (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25024. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200: मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25025. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200: मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25026. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200: मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उत्तराखण्ड त्रासदी पर कुदरतक प्रकोप आ मानवीय लोभक मार्मिक आलोचना

उत्तर: घ. उत्तराखण्ड त्रासदी पर कुदरतक प्रकोप आ मानवीय लोभक मार्मिक आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तराखण्ड त्रासदी पर कुदरतक प्रकोप आ मानवीय लोभक मार्मिक आलोचना” अछि।

प्रश्न 25027. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200: मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उत्तराखण्ड त्रासदी पर कुदरतक प्रकोप आ मानवीय लोभक मार्मिक आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उत्तराखण्ड त्रासदी पर कुदरतक प्रकोप आ मानवीय लोभक मार्मिक आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तराखण्ड त्रासदी पर कुदरतक प्रकोप आ मानवीय लोभक मार्मिक आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25028. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200: मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25029. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200: मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25030. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200: मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25031. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200: मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25032. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200मे मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उत्तराखण्ड त्रासदी पर कुदरतक प्रकोप आ मानवीय लोभक मार्मिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2509, सूचकांक पंक्ति 1200मे मुन्नाजीक “दर्द दिस (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उत्तराखण्ड त्रासदी पर कुदरतक प्रकोप आ मानवीय लोभक मार्मिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2510 : विदेह-सदेह 15 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: लेस्बियन कॉन्टिन्युअम

प्रश्न 25033. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लेस्बियन कॉन्टिन्युअम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेस्बियन कॉन्टिन्युअम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1201मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25034. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25035. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25036. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एड्रियन रिचक लेस्बियन सातत्य पर मैथिलीक विश्व-प्रथम स्त्रीवादी

उत्तर: घ. एड्रियन रिचक लेस्बियन सातत्य पर मैथिलीक विश्व-प्रथम स्त्रीवादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एड्रियन रिचक लेस्बियन सातत्य पर मैथिलीक विश्व-प्रथम स्त्रीवादी” अछि।

प्रश्न 25037. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एड्रियन रिचक लेस्बियन सातत्य पर मैथिलीक विश्व-प्रथम स्त्रीवादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एड्रियन रिचक लेस्बियन सातत्य पर मैथिलीक विश्व-प्रथम स्त्रीवादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एड्रियन रिचक लेस्बियन सातत्य पर मैथिलीक विश्व-प्रथम स्त्रीवादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25038. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25039. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25040. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25041. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25042. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एड्रियन रिचक लेस्बियन सातत्य पर मैथिलीक विश्व-प्रथम स्त्रीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2510, सूचकांक पंक्ति 1201मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एड्रियन रिचक लेस्बियन सातत्य पर मैथिलीक विश्व-प्रथम स्त्रीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2511 : विदेह-सदेह 15 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: मातृत्व

प्रश्न 25043. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मातृत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृत्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1202मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “मातृत्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25044. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25045. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25046. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी आधुनिक प्रसव

उत्तर: घ. प्रवासी आधुनिक प्रसव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी आधुनिक प्रसव” अछि।

प्रश्न 25047. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी आधुनिक प्रसव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी आधुनिक प्रसव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी आधुनिक प्रसव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25048. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25049. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25050. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25051. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25052. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी आधुनिक प्रसव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2511, सूचकांक पंक्ति 1202मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “मातृत्व” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी आधुनिक प्रसव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2512 : विदेह-सदेह 15 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: कीयेक एना धरफराइत अछि...

प्रश्न 25053. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कीयेक एना धरफराइत अछि...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कीयेक एना धरफराइत अछि...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1203मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक प्रविष्टि “कीयेक एना धरफराइत अछि...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25054. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25055. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25056. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दल-बदलू राजनेताक कंगारू संस्कृतिक तीख व्यंग्य

उत्तर: घ. दल-बदलू राजनेताक कंगारू संस्कृतिक तीख व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दल-बदलू राजनेताक कंगारू संस्कृतिक तीख व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 25057. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दल-बदलू राजनेताक कंगारू संस्कृतिक तीख व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दल-बदलू राजनेताक कंगारू संस्कृतिक तीख व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दल-बदलू राजनेताक कंगारू संस्कृतिक तीख व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25058. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25059. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25060. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25061. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203: शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25062. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दल-बदलू राजनेताक कंगारू संस्कृतिक तीख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2512, सूचकांक पंक्ति 1203मे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “कीयेक एना धरफराइत अछि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दल-बदलू राजनेताक कंगारू संस्कृतिक तीख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2513 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)

प्रश्न 25063. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204: जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1204मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25064. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204: जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25065. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204: जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25066. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204: जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहर-ए-असम

उत्तर: घ. बहर-ए-असम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बहर-ए-असम” अछि।

प्रश्न 25067. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204: जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बहर-ए-असम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहर-ए-असम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बहर-ए-असम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25068. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204: जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25069. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204: जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25070. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204: जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25071. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204: जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25072. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204मे जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बहर-ए-असम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2513, सूचकांक पंक्ति 1204मे जगदानन्द झा 'मनु'क “हम जँ पीलहँ शराबी कहलक जमाना (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बहर-ए-असम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2514 : विदेह-सदेह 15 — जगदानन्द झा 'मनु': कै पितयापत... (गजल)

प्रश्न 25073. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205: जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कै पितयापत... (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कै पितयापत... (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1205मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “कै पितयापत... (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25074. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205: जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25075. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205: जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25076. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205: जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी वेदना

उत्तर: घ. नारी वेदना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी वेदना” अछि।

प्रश्न 25077. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205: जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी वेदना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी वेदना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25078. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205: जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25079. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205: जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25080. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205: जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25081. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205: जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25082. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205मे जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “नारी वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2514, सूचकांक पंक्ति 1205मे जगदानन्द झा 'मनु'क “कै पितयापत... (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “नारी वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2515 : विदेह-सदेह 15 — मनोज कुमार मण्डल: देशी कौआ

प्रश्न 25083. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206: मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देशी कौआ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देशी कौआ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1206मे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “देशी कौआ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25084. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206: मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25085. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206: मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25086. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206: मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण पाहुन संस्कृतिक विलोप आ आधुनिक कार-कौआक अमंगलता

उत्तर: घ. ग्रामीण पाहुन संस्कृतिक विलोप आ आधुनिक कार-कौआक अमंगलता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण पाहुन संस्कृतिक विलोप आ आधुनिक कार-कौआक अमंगलता” अछि।

प्रश्न 25087. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206: मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण पाहुन संस्कृतिक विलोप आ आधुनिक कार-कौआक अमंगलता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण पाहुन संस्कृतिक विलोप आ आधुनिक कार-कौआक अमंगलता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण पाहुन संस्कृतिक विलोप आ आधुनिक कार-कौआक अमंगलता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25088. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206: मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25089. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206: मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25090. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206: मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25091. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206: मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25092. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206मे मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण पाहुन संस्कृतिक विलोप आ आधुनिक कार-कौआक अमंगलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2515, सूचकांक पंक्ति 1206मे मनोज कुमार मण्डलक “देशी कौआ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण पाहुन संस्कृतिक विलोप आ आधुनिक कार-कौआक अमंगलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2516 : विदेह-सदेह 15 — मनोज कुमार मण्डल: माटिक

प्रश्न 25093. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207: मनोज कुमार मण्डलक “माटिक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माटिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माटिक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1207मे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “माटिक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25094. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207: मनोज कुमार मण्डलक “माटिक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25095. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207: मनोज कुमार मण्डलक “माटिक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25096. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207: मनोज कुमार मण्डलक “माटिक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृतिक संरक्षक माटिक जलावन लेल मजबूर कुम्हारक विवशता

उत्तर: घ. प्रकृतिक संरक्षक माटिक जलावन लेल मजबूर कुम्हारक विवशता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृतिक संरक्षक माटिक जलावन लेल मजबूर कुम्हारक विवशता” अछि।

प्रश्न 25097. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207: मनोज कुमार मण्डलक “माटिक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृतिक संरक्षक माटिक जलावन लेल मजबूर कुम्हारक विवशता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृतिक संरक्षक माटिक जलावन लेल मजबूर कुम्हारक विवशता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृतिक संरक्षक माटिक जलावन लेल मजबूर कुम्हारक विवशता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25098. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207: मनोज कुमार मण्डलक “माटिक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25099. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207: मनोज कुमार मण्डलक “माटिक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25100. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207: मनोज कुमार मण्डलक “माटिक”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25101. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207: मनोज कुमार मण्डलक “माटिक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25102. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207मे मनोज कुमार मण्डलक “माटिक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृतिक संरक्षक माटिक जलावन लेल मजबूर कुम्हारक विवशता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2516, सूचकांक पंक्ति 1207मे मनोज कुमार मण्डलक “माटिक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृतिक संरक्षक माटिक जलावन लेल मजबूर कुम्हारक विवशता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2517 : विदेह-सदेह 15 — मनोज कुमार मण्डल: गजल (१-३)

प्रश्न 25103. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208: मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-३)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1208मे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “गजल (१-३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25104. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208: मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25105. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208: मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25106. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208: मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विरह-वेदना

उत्तर: घ. विरह-वेदना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विरह-वेदना” अछि।

प्रश्न 25107. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208: मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विरह-वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विरह-वेदना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विरह-वेदना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25108. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208: मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25109. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208: मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25110. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208: मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25111. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208: मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25112. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208मे मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विरह-वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2517, सूचकांक पंक्ति 1208मे मनोज कुमार मण्डलक “गजल (१-३)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विरह-वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2518 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)

प्रश्न 25113. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209: कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1209मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25114. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209: कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25115. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209: कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25116. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209: कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहर-ए-मुतदारिक

उत्तर: घ. बहर-ए-मुतदारिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बहर-ए-मुतदारिक” अछि।

प्रश्न 25117. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209: कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बहर-ए-मुतदारिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहर-ए-मुतदारिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बहर-ए-मुतदारिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25118. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209: कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25119. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209: कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25120. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209: कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25121. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209: कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25122. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209मे कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बहर-ए-मुतदारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2518, सूचकांक पंक्ति 1209मे कुन्दन कुमार झाक “दूर रहिक अहाँसँ गहब हम कोना (गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बहर-ए-मुतदारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2519 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (जिनगी एक वरदान छी)

प्रश्न 25123. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210: कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (जिनगी एक वरदान छी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (जिनगी एक वरदान छी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1210मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (जिनगी एक वरदान छी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25124. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210: कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25125. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210: कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25126. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210: कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-दर्शन

उत्तर: घ. जीवन-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-दर्शन” अछि।

प्रश्न 25127. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210: कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25128. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210: कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25129. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210: कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25130. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210: कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25131. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210: कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25132. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2519, सूचकांक पंक्ति 1210मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (जिनगी एक वरदान छी)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2520 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (पथिक)

प्रश्न 25133. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (पथिक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (पथिक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1211मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (पथिक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25134. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25135. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25136. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रूपक-प्रधान

उत्तर: घ. रूपक-प्रधान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रूपक-प्रधान” अछि।

प्रश्न 25137. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रूपक-प्रधान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रूपक-प्रधान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रूपक-प्रधान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25138. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25139. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25140. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25141. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25142. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “रूपक-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “रूपक-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2521 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (अपने पाछू)

प्रश्न 25143. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (अपने पाछू)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (अपने पाछू)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1212मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (अपने पाछू)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25144. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25145. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25146. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्मान्वेषण

उत्तर: घ. आत्मान्वेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मान्वेषण” अछि।

प्रश्न 25147. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्मान्वेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मान्वेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मान्वेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25148. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25149. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25150. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25151. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25152. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “आत्मान्वेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “आत्मान्वेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2522 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (एगारह टप्पर)

प्रश्न 25153. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (एगारह टप्पर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (एगारह टप्पर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1213मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (एगारह टप्पर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25154. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25155. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25156. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक व्यंग्य

उत्तर: घ. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 25157. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25158. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25159. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25160. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25161. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25162. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2523 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (सपना)

प्रश्न 25163. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (सपना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (सपना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1214मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (सपना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25164. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25165. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25166. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. काल्पनिकता

उत्तर: घ. काल्पनिकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “काल्पनिकता” अछि।

प्रश्न 25167. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. काल्पनिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काल्पनिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काल्पनिकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25168. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25169. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25170. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25171. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25172. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “काल्पनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “काल्पनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2524 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (सत्य)

प्रश्न 25173. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (सत्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (सत्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1215मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (सत्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25174. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25175. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25176. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यथार्थपरक

उत्तर: घ. यथार्थपरक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थपरक” अछि।

प्रश्न 25177. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यथार्थपरक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यथार्थपरक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थपरक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25178. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25179. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25180. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25181. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25182. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “यथार्थपरक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “यथार्थपरक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2525 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (घर-आँगन)

प्रश्न 25183. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (घर-आँगन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (घर-आँगन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1216मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (घर-आँगन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25184. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25185. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25186. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण-पारिवारिक

उत्तर: घ. ग्रामीण-पारिवारिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण-पारिवारिक” अछि।

प्रश्न 25187. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण-पारिवारिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण-पारिवारिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण-पारिवारिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25188. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25189. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25190. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25191. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25192. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “ग्रामीण-पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “ग्रामीण-पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2526 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (राजनीति अउर मनुख)

प्रश्न 25193. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (राजनीति अउर मनुख)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (राजनीति अउर मनुख)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1217मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (राजनीति अउर मनुख)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25194. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25195. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25196. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक कटाक्ष

उत्तर: घ. राजनीतिक कटाक्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक कटाक्ष” अछि।

प्रश्न 25197. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक कटाक्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक कटाक्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक कटाक्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25198. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25199. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25200. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25201. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25202. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “राजनीतिक कटाक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “राजनीतिक कटाक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2527 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: डायरीक पत्रा (१-१०)

प्रश्न 25203. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डायरीक पत्रा (१-१०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डायरीक पत्रा (१-१०)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1218मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “डायरीक पत्रा (१-१०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25204. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25205. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25206. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष

उत्तर: घ. दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष” अछि।

प्रश्न 25207. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25208. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25209. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25210. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25211. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25212. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218मे राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218मे राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2528 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)

प्रश्न 25213. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1219मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25214. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25215. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. काव्य-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. काव्य-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “काव्य-कथा” अछि।

प्रश्न 25216. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्धविश्वास

उत्तर: घ. अन्धविश्वास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्धविश्वास” अछि।

प्रश्न 25217. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्धविश्वास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्धविश्वास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्धविश्वास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25218. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा काव्य-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा काव्य-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25219. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25220. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ काव्य-कथाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ काव्य-कथाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25221. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25222. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219मे राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” प्रविष्टि पद्य, काव्य-कथा आ “अन्धविश्वास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219मे राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” प्रविष्टि पद्य, काव्य-कथा आ “अन्धविश्वास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2529 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: जानवरक बोली (कविता)

प्रश्न 25223. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जानवरक बोली (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जानवरक बोली (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1220मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “जानवरक बोली (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25224. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25225. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25226. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतीकात्मक

उत्तर: घ. प्रतीकात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीकात्मक” अछि।

प्रश्न 25227. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रतीकात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतीकात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25228. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25229. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25230. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25231. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25232. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220मे राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220मे राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2530 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: अजगर (कविता)

प्रश्न 25233. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अजगर (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अजगर (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1221मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अजगर (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25234. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25235. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25236. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण

उत्तर: घ. शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण” अछि।

प्रश्न 25237. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25238. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25239. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25240. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25241. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25242. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221मे राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221मे राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2531 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)

प्रश्न 25243. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1222मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25244. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25245. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25246. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक

उत्तर: घ. ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक” अछि।

प्रश्न 25247. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25248. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25249. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25250. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25251. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25252. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222मे राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222मे राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2532 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: बीआ केर पता (कविता)

प्रश्न 25253. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीआ केर पता (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीआ केर पता (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1223मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बीआ केर पता (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25254. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25255. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25256. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्म-अन्वेषण

उत्तर: घ. आत्म-अन्वेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्म-अन्वेषण” अछि।

प्रश्न 25257. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्म-अन्वेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्म-अन्वेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्म-अन्वेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25258. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25259. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25260. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25261. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25262. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223मे राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्म-अन्वेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223मे राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्म-अन्वेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2533 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: कटैत गाछ (कविता)

प्रश्न 25263. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कटैत गाछ (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कटैत गाछ (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1224मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “कटैत गाछ (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25264. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25265. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25266. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वृक्ष-आत्मकथात्मक

उत्तर: घ. वृक्ष-आत्मकथात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वृक्ष-आत्मकथात्मक” अछि।

प्रश्न 25267. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वृक्ष-आत्मकथात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृक्ष-आत्मकथात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृक्ष-आत्मकथात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25268. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25269. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25270. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25271. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25272. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224मे राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वृक्ष-आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224मे राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वृक्ष-आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2534 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत ह...

प्रश्न 25273. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1225मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25274. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25275. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25276. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय

उत्तर: घ. बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय” अछि।

प्रश्न 25277. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25278. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25279. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25280. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25281. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25282. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225मे राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225मे राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2535 : विदेह-सदेह 15 — सत्य नारायण झा: लहकैत समाज (कविता)

प्रश्न 25283. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लहकैत समाज (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लहकैत समाज (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1226मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “लहकैत समाज (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25284. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25285. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25286. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. निष्क्रिय

उत्तर: घ. निष्क्रिय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “निष्क्रिय” अछि।

प्रश्न 25287. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. निष्क्रिय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निष्क्रिय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “निष्क्रिय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25288. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25289. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25290. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25291. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25292. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226मे सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “निष्क्रिय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226मे सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “निष्क्रिय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2536 : विदेह-सदेह 15 — राम विलास साहु: किछु टुनका (कविता-पञ्चक)

प्रश्न 25293. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु टुनका (कविता-पञ्चक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु टुनका (कविता-पञ्चक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1227मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25294. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25295. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25296. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 25297. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25298. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25299. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25300. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25301. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25302. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227मे राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227मे राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2537 : विदेह-सदेह 15 — राम विलास साहु: मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)

प्रश्न 25303. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1228मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25304. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25305. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 25306. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माया-जालक व्यंग्य

उत्तर: घ. माया-जालक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माया-जालक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 25307. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माया-जालक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माया-जालक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माया-जालक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25308. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25309. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25310. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25311. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25312. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228मे राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “माया-जालक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228मे राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “माया-जालक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2538 : विदेह-सदेह 15 — सुरेन्द्र 'शैल': अभिसारिका (कविता)

प्रश्न 25313. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अभिसारिका (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिसारिका (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1229मे सुरेन्द्र 'शैल'क प्रविष्टि “अभिसारिका (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25314. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25315. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25316. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन

उत्तर: घ. संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन” अछि।

प्रश्न 25317. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25318. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुरेन्द्र 'शैल', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुरेन्द्र 'शैल', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25319. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25320. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25321. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25322. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229मे सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229मे सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2539 : विदेह-सदेह 15 — सुरेन्द्र 'शैल': सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)

प्रश्न 25323. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1230मे सुरेन्द्र 'शैल'क प्रविष्टि “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25324. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25325. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25326. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध

उत्तर: घ. सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध” अछि।

प्रश्न 25327. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25328. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुरेन्द्र 'शैल', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुरेन्द्र 'शैल', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25329. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25330. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25331. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25332. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230मे सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230मे सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2540 : विदेह-सदेह 15 — राजीव रंजन मिश्र: गजल (१-२)

प्रश्न 25333. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (१-२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (१-२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1231मे राजीव रंजन मिश्रक प्रविष्टि “गजल (१-२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25334. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25335. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25336. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल

उत्तर: घ. जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल” अछि।

प्रश्न 25337. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25338. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25339. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25340. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25341. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25342. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2541 : विदेह-सदेह 15 — मुन्नाजी: बाल हाइकू (१२ टा)

प्रश्न 25343. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल हाइकू (१२ टा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल हाइकू (१२ टा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1232मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “बाल हाइकू (१२ टा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25344. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25345. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू” अछि।

प्रश्न 25346. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू

उत्तर: घ. बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू” अछि।

प्रश्न 25347. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25348. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25349. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25350. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25351. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25352. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232मे मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232मे मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2542 : विदेह-सदेह 15 — रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार': अभिनन्दन (कविता)

प्रश्न 25353. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अभिनन्दन (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिनन्दन (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1233मे रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क प्रविष्टि “अभिनन्दन (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25354. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25355. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25356. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता

उत्तर: घ. विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता” अछि।

प्रश्न 25357. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25358. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25359. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25360. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25361. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25362. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233मे रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233मे रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2543 : विदेह-सदेह 15 — इरा मल्लिक: बाल गजल (भरि रस्ता...)

प्रश्न 25363. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (भरि रस्ता...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (भरि रस्ता...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1234मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “बाल गजल (भरि रस्ता...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25364. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25365. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 25366. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण

उत्तर: घ. वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण” अछि।

प्रश्न 25367. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25368. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25369. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25370. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25371. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25372. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234मे इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234मे इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2544 : विदेह-सदेह 15 — इरा मल्लिक: बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)

प्रश्न 25373. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1235मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25374. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25375. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 25376. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन

उत्तर: घ. बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन” अछि।

प्रश्न 25377. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25378. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25379. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25380. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25381. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25382. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235मे इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235मे इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2545 : विदेह-सदेह 15 — इरा मल्लिक: शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)

प्रश्न 25383. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1236मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25384. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25385. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25386. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल

उत्तर: घ. वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल” अछि।

प्रश्न 25387. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25388. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25389. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25390. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25391. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25392. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236मे इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236मे इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2546 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: गजल (अही छी हमर भवानी मैया)

प्रश्न 25393. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (अही छी हमर भवानी मैया)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (अही छी हमर भवानी मैया)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1237मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25394. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25395. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25396. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)” अछि।

प्रश्न 25397. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25398. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25399. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25400. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25401. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25402. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237मे बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237मे बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2547 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)

प्रश्न 25403. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1238मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25404. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25405. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25406. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान

उत्तर: घ. मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान” अछि।

प्रश्न 25407. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25408. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25409. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25410. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25411. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25412. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238मे बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238मे बिन्देश्वर ठाकुरक “पुन: चमकत रमझमला राज (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2548 : विदेह-सदेह 15 — अनिल मल्लिक: गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)

प्रश्न 25413. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1239मे अनिल मल्लिकक प्रविष्टि “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25414. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25415. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25416. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)

उत्तर: घ. विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)” अछि।

प्रश्न 25417. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25418. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनिल मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनिल मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25419. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25420. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25421. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25422. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239मे अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239मे अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2549 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)

प्रश्न 25423. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1240मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25424. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25425. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25426. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)

उत्तर: घ. प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)” अछि।

प्रश्न 25427. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25428. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25429. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25430. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25431. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25432. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240मे आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240मे आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2550 : विदेह-सदेह 15 — रवि भूषण पाठक: फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)

प्रश्न 25433. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1241मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25434. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25435. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25436. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सात टा कविता

उत्तर: घ. सात टा कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सात टा कविता” अछि।

प्रश्न 25437. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सात टा कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सात टा कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सात टा कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25438. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25439. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25440. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25441. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25442. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241मे रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सात टा कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241मे रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकइ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सात टा कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2551 : विदेह-सदेह 15 — बाल मुकुन्द पाठक: गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)

प्रश्न 25443. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1242मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25444. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25445. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25446. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)” अछि।

प्रश्न 25447. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25448. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25449. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25450. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25451. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25452. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहौं आब बेहाल अछि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2552 : विदेह-सदेह 15 — बाल मुकुन्द पाठक: गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)

प्रश्न 25453. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1243मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25454. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25455. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25456. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)

उत्तर: घ. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)” अछि।

प्रश्न 25457. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25458. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25459. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25460. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25461. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25462. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2553 : विदेह-सदेह 15 — अनामिका राज: क्षमाप्रार्थना (कविता)

प्रश्न 25463. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. क्षमाप्रार्थना (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षमाप्रार्थना (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1244मे अनामिका राजक प्रविष्टि “क्षमाप्रार्थना (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25464. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25465. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25466. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता

उत्तर: घ. नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता” अछि।

प्रश्न 25467. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25468. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनामिका राज, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनामिका राज, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25469. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25470. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25471. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25472. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244मे अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244मे अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2554 : विदेह-सदेह 15 — सन्दीप कुमार साफी: बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)

प्रश्न 25473. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1245मे सन्दीप कुमार साफीक प्रविष्टि “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25474. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25475. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25476. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रीष्म-वर्णन

उत्तर: घ. ग्रीष्म-वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रीष्म-वर्णन” अछि।

प्रश्न 25477. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रीष्म-वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रीष्म-वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रीष्म-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25478. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25479. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25480. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25481. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25482. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245मे सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रीष्म-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245मे सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रीष्म-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2555 : विदेह-सदेह 15 — भालचन्द्र झा: आजुक बेटी (कविता)

प्रश्न 25483. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आजुक बेटी (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजुक बेटी (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1246मे भालचन्द्र झाक प्रविष्टि “आजुक बेटी (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25484. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25485. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25486. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण

उत्तर: घ. कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण” अछि।

प्रश्न 25487. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25488. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भालचन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भालचन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25489. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25490. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25491. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25492. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246मे भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246मे भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2556 : विदेह-सदेह 15 — अमित मिश्र: हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)

प्रश्न 25493. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1247मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25494. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25495. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कविता” अछि।

प्रश्न 25496. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध

उत्तर: घ. भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध” अछि।

प्रश्न 25497. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25498. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा बाल-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा बाल-कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25499. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25500. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25501. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25502. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247मे अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल-कविता आ “भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247मे अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल-कविता आ “भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2557 : विदेह-सदेह 15 — कामिनी कामायनी: संग देब सदिखन अहिना (कविता)

प्रश्न 25503. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संग देब सदिखन अहिना (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संग देब सदिखन अहिना (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1248मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25504. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25505. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25506. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 25507. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25508. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25509. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25510. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25511. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25512. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248मे कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248मे कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2558 : विदेह-सदेह 15 — दुखन प्रसाद यादव: लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर

प्रश्न 25513. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1249मे दुखन प्रसाद यादवक प्रविष्टि “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25514. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25515. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25516. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भ्रष्टाचार

उत्तर: घ. भ्रष्टाचार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार” अछि।

प्रश्न 25517. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भ्रष्टाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25518. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुखन प्रसाद यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुखन प्रसाद यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25519. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25520. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25521. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25522. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249मे दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249मे दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2559 : विदेह-सदेह 15 — सुबोध कुमार ठाकुर: केकरा सँ कहबै (कविता)

प्रश्न 25523. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. केकरा सँ कहबै (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. केकरा सँ कहबै (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1250मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “केकरा सँ कहबै (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25524. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25525. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 25526. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता

उत्तर: घ. प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता” अछि।

प्रश्न 25527. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25528. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25529. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25530. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25531. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25532. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250मे सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250मे सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2560 : विदेह-सदेह 15 — ओम प्रकाश झा: गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)

प्रश्न 25533. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1251मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25534. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25535. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25536. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन

उत्तर: घ. अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन” अछि।

प्रश्न 25537. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25538. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25539. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25540. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25541. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25542. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251मे ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251मे ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2561 : विदेह-सदेह 15 — ओम प्रकाश झा: गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)

प्रश्न 25543. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1252मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25544. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25545. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25546. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन

उत्तर: घ. अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन” अछि।

प्रश्न 25547. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25548. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25549. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25550. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25551. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25552. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252मे ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252मे ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2562 : विदेह-सदेह 15 — गंगेश गुंजन: गजल (नेता जी बकवास करै छथि)

प्रश्न 25553. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (नेता जी बकवास करै छथि)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (नेता जी बकवास करै छथि)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1253मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25554. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25555. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 25556. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य

उत्तर: घ. भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 25557. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25558. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25559. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25560. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25561. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25562. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253मे गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253मे गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2563 : विदेह-सदेह 16 — साहित्यकारक नाम: सदेह १६ मे रचना

प्रश्न 25563. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सदेह १६ मे रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सदेह १६ मे रचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1254मे साहित्यकारक नामक प्रविष्टि “सदेह १६ मे रचना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25564. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. विधा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. विधा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “विधा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25565. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उप-विधा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उप-विधा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उप-विधा” अछि।

प्रश्न 25566. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समालोचनात्मक टिप्पणी

उत्तर: घ. समालोचनात्मक टिप्पणी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समालोचनात्मक टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 25567. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समालोचनात्मक टिप्पणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समालोचनात्मक टिप्पणी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समालोचनात्मक टिप्पणी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25568. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक साहित्यकारक नाम, विधा विधा, उप-विधा उप-विधा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक साहित्यकारक नाम, विधा विधा, उप-विधा उप-विधा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25569. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25570. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना”केँ विदेह-सदेह 16क विधा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उप-विधाक रूपमे विधा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उप-विधाक रूपमे विधा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25571. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25572. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254मे साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना” प्रविष्टि विधा, उप-विधा आ “समालोचनात्मक टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254मे साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना” प्रविष्टि विधा, उप-विधा आ “समालोचनात्मक टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2564 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर: मचण्ड (नाटक)

प्रश्न 25573. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मचण्ड (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मचण्ड (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1255मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मचण्ड (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25574. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25575. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 25576. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आतंकवाद

उत्तर: घ. आतंकवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आतंकवाद” अछि।

प्रश्न 25577. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आतंकवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आतंकवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आतंकवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25578. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25579. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25580. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25581. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25582. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255मे गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “आतंकवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255मे गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “आतंकवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2565 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर: कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख

प्रश्न 25583. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1256मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25584. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25585. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/समालोचना” अछि।

प्रश्न 25586. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन

उत्तर: घ. गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन” अछि।

प्रश्न 25587. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25588. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25589. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25590. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25591. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25592. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256मे गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समालोचना आ “गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256मे गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समालोचना आ “गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2566 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर: रेस (बाल विहिन)

प्रश्न 25593. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रेस (बाल विहिन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रेस (बाल विहिन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1257मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “रेस (बाल विहिन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25594. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25595. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल विहिन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल विहिन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल विहिन” अछि।

प्रश्न 25596. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. खेल-भावना

उत्तर: घ. खेल-भावना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “खेल-भावना” अछि।

प्रश्न 25597. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. खेल-भावना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खेल-भावना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “खेल-भावना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25598. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा बाल विहिन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा बाल विहिन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25599. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25600. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल विहिनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल विहिनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25601. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25602. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257मे गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” प्रविष्टि गद्य, बाल विहिन आ “खेल-भावना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257मे गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” प्रविष्टि गद्य, बाल विहिन आ “खेल-भावना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2567 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर: संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास

प्रश्न 25603. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1258मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25604. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25605. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।

प्रश्न 25606. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज

उत्तर: घ. मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज” अछि।

प्रश्न 25607. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25608. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25609. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25610. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25611. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25612. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258मे गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258मे गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2568 : विदेह-सदेह 16 — अक्षय कुमार झा: प्रेमक अधिकार

प्रश्न 25613. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेमक अधिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक अधिकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1259मे अक्षय कुमार झाक प्रविष्टि “प्रेमक अधिकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25614. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25615. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 25616. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

उत्तर: घ. पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 25617. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25618. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अक्षय कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अक्षय कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25619. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25620. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25621. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25622. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259मे अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259मे अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2569 : विदेह-सदेह 16 — जगदीश प्रसाद मण्डल: पलभरि

प्रश्न 25623. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पलभरि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पलभरि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1260मे जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रविष्टि “पलभरि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25624. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25625. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25626. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यथार्थवादी

उत्तर: घ. यथार्थवादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थवादी” अछि।

प्रश्न 25627. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यथार्थवादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यथार्थवादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थवादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25628. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25629. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25630. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25631. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25632. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यथार्थवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यथार्थवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2570 : विदेह-सदेह 16 — जगदीश प्रसाद मण्डल: रिजल्ट

प्रश्न 25633. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रिजल्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिजल्ट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1261मे जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रविष्टि “रिजल्ट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25634. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25635. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25636. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परीक्षा-परिणामक चिन्ता

उत्तर: घ. परीक्षा-परिणामक चिन्ता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परीक्षा-परिणामक चिन्ता” अछि।

प्रश्न 25637. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परीक्षा-परिणामक चिन्ता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परीक्षा-परिणामक चिन्ता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परीक्षा-परिणामक चिन्ता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25638. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25639. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25640. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25641. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25642. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “परीक्षा-परिणामक चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “परीक्षा-परिणामक चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2571 : विदेह-सदेह 16 — उमेश पासवान: अजोह

प्रश्न 25643. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अजोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अजोह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1262मे उमेश पासवानक प्रविष्टि “अजोह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25644. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25645. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25646. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-जीवनक शरारत

उत्तर: घ. बाल-जीवनक शरारत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-जीवनक शरारत” अछि।

प्रश्न 25647. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-जीवनक शरारत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-जीवनक शरारत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-जीवनक शरारत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25648. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश पासवान, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश पासवान, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25649. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25650. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25651. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25652. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262मे उमेश पासवानक “अजोह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “बाल-जीवनक शरारत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262मे उमेश पासवानक “अजोह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “बाल-जीवनक शरारत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2572 : विदेह-सदेह 16 — लक्ष्मी दास: दुष्टपना

प्रश्न 25653. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दुष्टपना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुष्टपना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1263मे लक्ष्मी दासक प्रविष्टि “दुष्टपना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25654. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25655. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 25656. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किसानक पीड़ा

उत्तर: घ. किसानक पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “किसानक पीड़ा” अछि।

प्रश्न 25657. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. किसानक पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किसानक पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसानक पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25658. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25659. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25660. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25661. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25662. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263मे लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “किसानक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263मे लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “किसानक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2573 : विदेह-सदेह 16 — योगेन्द्र पाठक 'वियोगी': खजाना

प्रश्न 25663. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खजाना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खजाना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1264मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क प्रविष्टि “खजाना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25664. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25665. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25666. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी बालक

उत्तर: घ. प्रवासी बालक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी बालक” अछि।

प्रश्न 25667. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी बालक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी बालक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी बालक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25668. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25669. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25670. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25671. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25672. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रवासी बालक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रवासी बालक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2574 : विदेह-सदेह 16 — योगेन्द्र पाठक 'वियोगी': विजय (१ आ २)

प्रश्न 25673. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विजय (१ आ २)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विजय (१ आ २)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1265मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क प्रविष्टि “विजय (१ आ २)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25674. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25675. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25676. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी सशक्तिकरण

उत्तर: घ. नारी सशक्तिकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी सशक्तिकरण” अछि।

प्रश्न 25677. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी सशक्तिकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी सशक्तिकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी सशक्तिकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25678. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25679. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25680. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)”कैँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25681. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25682. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2575 : विदेह-सदेह 16 — जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी': बेटी रूपी बोझ

प्रश्न 25683. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटी रूपी बोझ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी रूपी बोझ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1266मे जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क प्रविष्टि “बेटी रूपी बोझ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25684. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25685. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25686. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज प्रथा

उत्तर: घ. दहेज प्रथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज प्रथा” अछि।

प्रश्न 25687. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज प्रथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज प्रथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज प्रथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25688. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी', विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी', विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25689. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25690. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25691. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25692. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266मे जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दहेज प्रथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266मे जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दहेज प्रथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2576 : विदेह-सदेह 16 — शारदा नन्द सिंह: की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)

प्रश्न 25693. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1267मे शारदा नन्द सिंहक प्रविष्टि “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25694. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25695. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिनि कथा” अछि।

प्रश्न 25696. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण ऋणग्रस्तता

उत्तर: घ. ग्रामीण ऋणग्रस्तता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण ऋणग्रस्तता” अछि।

प्रश्न 25697. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण ऋणग्रस्तता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण ऋणग्रस्तता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण ऋणग्रस्तता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25698. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25699. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25700. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25701. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25702. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267मे शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “ग्रामीण ऋणग्रस्तता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267मे शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “ग्रामीण ऋणग्रस्तता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2577 : विदेह-सदेह 16 — कपिलेश्वर राउत: बडका खीरा

प्रश्न 25703. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बडका खीरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बडका खीरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1268मे कपिलेश्वर राउतक प्रविष्टि “बडका खीरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25704. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25705. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25706. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रयोगात्मक कृषि

उत्तर: घ. प्रयोगात्मक कृषि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रयोगात्मक कृषि” अछि।

प्रश्न 25707. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रयोगात्मक कृषि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रयोगात्मक कृषि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रयोगात्मक कृषि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25708. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25709. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25710. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25711. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25712. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268मे कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रयोगात्मक कृषि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268मे कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रयोगात्मक कृषि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2578 : विदेह-सदेह 16 — कपिलेश्वर राउत: अधला

प्रश्न 25713. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अधला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1269मे कपिलेश्वर राउतक प्रविष्टि “अधला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25714. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25715. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25716. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-कथा शैली

उत्तर: घ. लोक-कथा शैली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-कथा शैली” अछि।

प्रश्न 25717. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-कथा शैली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-कथा शैली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-कथा शैली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25718. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25719. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25720. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25721. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25722. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269मे कपिलेश्वर राउतक “अधला” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “लोक-कथा शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269मे कपिलेश्वर राउतक “अधला” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “लोक-कथा शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2579 : विदेह-सदेह 16 — दुर्गानन्द मण्डल: बुधि

प्रश्न 25723. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुधि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुधि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1270मे दुर्गानन्द मण्डलक प्रविष्टि “बुधि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25724. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25725. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25726. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-कथा रंग

उत्तर: घ. लोक-कथा रंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-कथा रंग” अछि।

प्रश्न 25727. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-कथा रंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-कथा रंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-कथा रंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25728. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25729. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25730. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि”कैं विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25731. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25732. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270मे दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “लोक-कथा रंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270मे दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “लोक-कथा रंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2580 : विदेह-सदेह 16 — दुर्गानन्द मण्डल: छुतहरि

प्रश्न 25733. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छुतहरि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छुतहरि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1271मे दुर्गानन्द मण्डलक प्रविष्टि “छुतहरि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25734. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25735. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25736. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक मूल्य

उत्तर: घ. सामाजिक मूल्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक मूल्य” अछि।

प्रश्न 25737. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक मूल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक मूल्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक मूल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25738. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25739. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25740. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25741. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25742. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271मे दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “सामाजिक मूल्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271मे दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “सामाजिक मूल्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2581 : विदेह-सदेह 16 — राजदेव मण्डल: रुसल बौआ (बाल विहिन)

प्रश्न 25743. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रुसल बौआ (बाल विहिन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रुसल बौआ (बाल विहिन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1272मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “रुसल बौआ (बाल विहिन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25744. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25745. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिनि कथा” अछि।

प्रश्न 25746. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 25747. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25748. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25749. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25750. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25751. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25752. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272मे राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272मे राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2582 : विदेह-सदेह 16 — राजदेव मण्डल: दोख केकर

प्रश्न 25753. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दोख केकर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोख केकर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1273मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “दोख केकर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25754. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25755. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 25756. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सास-बहू सम्बन्ध

उत्तर: घ. सास-बहू सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सास-बहू सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 25757. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सास-बहू सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सास-बहू सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सास-बहू सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25758. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25759. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25760. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25761. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25762. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273मे राजदेव मण्डलक “दोख केकर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सास-बहू सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273मे राजदेव मण्डलक “दोख केकर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सास-बहू सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2583 : विदेह-सदेह 16 — राजदेव मण्डल: जाल (पटकथा)

प्रश्न 25763. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जाल (पटकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाल (पटकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1274मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “जाल (पटकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25764. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25765. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पटकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पटकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पटकथा” अछि।

प्रश्न 25766. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग

उत्तर: घ. मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग” अछि।

प्रश्न 25767. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25768. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा पटकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा पटकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25769. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25770. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पटकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पटकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25771. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25772. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274मे राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” प्रविष्टि गद्य, पटकथा आ “मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274मे राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” प्रविष्टि गद्य, पटकथा आ “मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2584 : विदेह-सदेह 16 — जितेन्द्र झा: गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल

प्रश्न 25773. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1275मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25774. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25775. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 25776. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 25777. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25778. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25779. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25780. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25781. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25782. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275मे जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275मे जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2585 : विदेह-सदेह 16 — जितेन्द्र झा: सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?

प्रश्न 25783. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1276मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25784. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25785. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 25786. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण

उत्तर: घ. जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 25787. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25788. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25789. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25790. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25791. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25792. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276मे जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276मे जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2586 : विदेह-सदेह 16 — जगदानन्द झा 'मनु': अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा

प्रश्न 25793. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1277मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25794. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25795. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 25796. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा

उत्तर: घ. विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा” अछि।

प्रश्न 25797. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25798. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25799. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25800. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25801. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25802. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277मे जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277मे जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2587 : विदेह-सदेह 16 — जगदानन्द झा 'मनु': मैथिलीमे एकरूपताक अभाव

प्रश्न 25803. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीमे एकरूपताक अभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीमे एकरूपताक अभाव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1278मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25804. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25805. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषा-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषा-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषा-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 25806. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानक मैथिलीक पैरवी

उत्तर: घ. मानक मैथिलीक पैरवी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानक मैथिलीक पैरवी” अछि।

प्रश्न 25807. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानक मैथिलीक पैरवी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानक मैथिलीक पैरवी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानक मैथिलीक पैरवी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25808. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा भाषा-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा भाषा-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25809. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25810. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाब”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भाषा-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भाषा-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25811. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25812. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278मे जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाब” प्रविष्टि गद्य, भाषा-निबन्ध आ “मानक मैथिलीक पैरवी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278मे जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाब” प्रविष्टि गद्य, भाषा-निबन्ध आ “मानक मैथिलीक पैरवी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2588 : विदेह-सदेह 16 — जगदानन्द झा 'मनु': मनुखक जीवन

प्रश्न 25813. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मनुखक जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनुखक जीवन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1279मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “मनुखक जीवन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25814. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25815. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 25816. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न

उत्तर: घ. मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न” अछि।

प्रश्न 25817. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25818. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25819. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25820. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25821. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25822. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279मे जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279मे जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2589 : विदेह-सदेह 16 — जगदानन्द झा 'मनु': बाबीक पिआर

प्रश्न 25823. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाबीक पिआर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबीक पिआर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1280मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “बाबीक पिआर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25824. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25825. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 25826. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम

उत्तर: घ. प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम” अछि।

प्रश्न 25827. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25828. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25829. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25830. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25831. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25832. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280मे जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280मे जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2590 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: अरण्य देश

प्रश्न 25833. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरण्य देश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरण्य देश

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1281मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “अरण्य देश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25834. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25835. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25836. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रूपकात्मक

उत्तर: घ. रूपकात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रूपकात्मक” अछि।

प्रश्न 25837. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रूपकात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रूपकात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रूपकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25838. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25839. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25840. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25841. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25842. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281मे सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “रूपकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281मे सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “रूपकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2591 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: जनक (विहिनि कथा)

प्रश्न 25843. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जनक (विहिनि कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनक (विहिनि कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1282मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “जनक (विहिनि कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25844. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25845. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिनि कथा” अछि।

प्रश्न 25846. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पिता-पुत्र सम्बन्ध

उत्तर: घ. पिता-पुत्र सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पिता-पुत्र सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 25847. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पिता-पुत्र सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिता-पुत्र सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिता-पुत्र सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25848. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25849. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25850. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25851. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25852. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282मे सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “पिता-पुत्र सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282मे सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “पिता-पुत्र सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2592 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: निशीथ (विहिनि कथा)

प्रश्न 25853. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निशीथ (विहिनि कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निशीथ (विहिनि कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1283मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “निशीथ (विहिनि कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25854. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25855. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिनि कथा” अछि।

प्रश्न 25856. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेमक विरह

उत्तर: घ. प्रेमक विरह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेमक विरह” अछि।

प्रश्न 25857. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेमक विरह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक विरह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेमक विरह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25858. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25859. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25860. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25861. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25862. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283मे सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “प्रेमक विरह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283मे सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “प्रेमक विरह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2593 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: बेचारा लोक

प्रश्न 25863. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेचारा लोक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेचारा लोक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1284मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “बेचारा लोक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25864. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25865. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25866. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आर्थिक विषमता

उत्तर: घ. आर्थिक विषमता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आर्थिक विषमता” अछि।

प्रश्न 25867. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आर्थिक विषमता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आर्थिक विषमता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आर्थिक विषमता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25868. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25869. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25870. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25871. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25872. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284मे सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “आर्थिक विषमता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284मे सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “आर्थिक विषमता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2594 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: स्मृति (विहिनि कथा)

प्रश्न 25873. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्मृति (विहिनि कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्मृति (विहिनि कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1285मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “स्मृति (विहिनि कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25874. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25875. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विहिनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विहिनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिनि कथा” अछि।

प्रश्न 25876. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-स्मृति

उत्तर: घ. प्रेम-स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-स्मृति” अछि।

प्रश्न 25877. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-स्मृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-स्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25878. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25879. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25880. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25881. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25882. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285मे सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “प्रेम-स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285मे सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “प्रेम-स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2595 : विदेह-सदेह 16 — लक्ष्मी दास: गंगाजलक धोल

प्रश्न 25883. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गंगाजलक धोल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गंगाजलक धोल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1286मे लक्ष्मी दासक प्रविष्टि “गंगाजलक धोल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25884. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25885. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 25886. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य

उत्तर: घ. दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 25887. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25888. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25889. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25890. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25891. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25892. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286मे लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286मे लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2596 : विदेह-सदेह 16 — गौरी शंकर साह: छोटकी

प्रश्न 25893. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छोटकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छोटकी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1287मे गौरी शंकर साहक प्रविष्टि “छोटकी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25894. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25895. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25896. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चरित्र-प्रधान

उत्तर: घ. चरित्र-प्रधान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चरित्र-प्रधान” अछि।

प्रश्न 25897. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चरित्र-प्रधान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चरित्र-प्रधान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चरित्र-प्रधान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25898. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गौरी शंकर साह, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गौरी शंकर साह, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25899. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25900. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25901. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25902. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287मे गौरी शंकर साहक “छोटकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “चरित्र-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287मे गौरी शंकर साहक “छोटकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “चरित्र-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2597 : विदेह-सदेह 16 — डा. शिवकुमार प्रसाद: सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)

प्रश्न 25903. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1288मे डा. शिवकुमार प्रसादक प्रविष्टि “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25904. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25905. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 25906. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण

उत्तर: घ. नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 25907. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25908. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25909. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25910. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25911. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25912. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288मे डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288मे डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2598 : विदेह-सदेह 16 — डा. शिवकुमार प्रसाद: अदिया इमकी

प्रश्न 25913. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अदिया इमकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अदिया इमकी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1289मे डा. शिवकुमार प्रसादक प्रविष्टि “अदिया इमकी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25914. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25915. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25916. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षा व्यवस्था

उत्तर: घ. शिक्षा व्यवस्था

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा व्यवस्था” अछि।

प्रश्न 25917. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षा व्यवस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा व्यवस्था

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा व्यवस्था” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25918. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25919. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25920. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25921. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25922. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289मे डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शिक्षा व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289मे डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शिक्षा व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2599 : विदेह-सदेह 16 — ओम प्रकाश झा: कूलच्छनी

प्रश्न 25923. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कूलच्छनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कूलच्छनी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1290मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “कूलच्छनी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25924. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25925. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25926. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा

उत्तर: घ. पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा” अछि।

प्रश्न 25927. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25928. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25929. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25930. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25931. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25932. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290मे ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290मे ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2600 : विदेह-सदेह 16 — ओम प्रकाश झा: बेटीक बिआह

प्रश्न 25933. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटीक बिआह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटीक बिआह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1291मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “बेटीक बिआह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25934. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25935. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25936. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज प्रथा पर करारा प्रहार

उत्तर: घ. दहेज प्रथा पर करारा प्रहार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज प्रथा पर करारा प्रहार” अछि।

प्रश्न 25937. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज प्रथा पर करारा प्रहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज प्रथा पर करारा प्रहार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज प्रथा पर करारा प्रहार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25938. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25939. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25940. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25941. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25942. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291मे ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दहेज प्रथा पर करारा प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291मे ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दहेज प्रथा पर करारा प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2601 : विदेह-सदेह 16 — डॉ. कीर्तिनाथ झा: शेफाली, फूलपरासवाली आ हम

प्रश्न 25943. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शेफाली, फूलपरासवाली आ हम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शेफाली, फूलपरासवाली आ हम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1292मे डॉ. कीर्तिनाथ झाक प्रविष्टि “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25944. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25945. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 25946. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्म-कथात्मक

उत्तर: घ. आत्म-कथात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्म-कथात्मक” अछि।

प्रश्न 25947. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्म-कथात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्म-कथात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्म-कथात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25948. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कीर्तिनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कीर्तिनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25949. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25950. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25951. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25952. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292मे डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “आत्म-कथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292मे डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “आत्म-कथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2602 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)

प्रश्न 25953. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1293मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25954. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25955. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।

प्रश्न 25956. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तीख व्यंग्य

उत्तर: घ. तीख व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तीख व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 25957. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तीख व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीख व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीख व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25958. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25959. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25960. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25961. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25962. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293मे आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “तीख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293मे आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “तीख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2603 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)

प्रश्न 25963. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1294मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25964. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25965. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।

प्रश्न 25966. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य

उत्तर: घ. शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 25967. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25968. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25969. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25970. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25971. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25972. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294मे आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294मे आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2604 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)

प्रश्न 25973. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1295मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25974. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25975. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 25976. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन

उत्तर: घ. श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन” अछि।

प्रश्न 25977. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25978. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25979. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25980. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25981. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25982. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295मे आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295मे आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरआती प्रयोग (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2605 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)

प्रश्न 25983. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1296मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25984. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25985. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 25986. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण

उत्तर: घ. रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 25987. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25988. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25989. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 25990. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 25991. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 25992. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296मे आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296मे आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2606 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)

प्रश्न 25993. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1297मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 25994. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 25995. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 25996. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न

उत्तर: घ. इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न” अछि।

प्रश्न 25997. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 25998. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 25999. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26000. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26001. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26002. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297मे आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297मे आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक "मैथिली साहित्यिक इतिहास" (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2607 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा

प्रश्न 26003. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1298मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26004. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26005. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 26006. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी

उत्तर: घ. रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी” अछि।

प्रश्न 26007. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26008. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26009. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26010. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26011. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26012. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298मे आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298मे आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2608 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)

प्रश्न 26013. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1299मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26014. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26015. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 26016. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा

उत्तर: घ. विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 26017. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26018. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26019. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26020. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26021. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26022. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299मे आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299मे आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2609 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: कलंकित चान (समालोचना)

प्रश्न 26023. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कलंकित चान (समालोचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कलंकित चान (समालोचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1300मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “कलंकित चान (समालोचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26024. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26025. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 26026. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा

उत्तर: घ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 26027. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26028. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26029. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26030. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26031. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26032. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300मे आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300मे आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2610 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान

प्रश्न 26033. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1301मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26034. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26035. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 26036. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा-मनोविज्ञान

उत्तर: घ. भाषा-मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा-मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 26037. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा-मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा-मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26038. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26039. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26040. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26041. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26042. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301मे आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “भाषा-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301मे आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “भाषा-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2611 : विदेह-सदेह 16 — डॉ अरुण कुमार सिंह: सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा

प्रश्न 26043. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1302मे डॉ अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26044. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26045. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/क्षेत्रीय अध्ययन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/क्षेत्रीय अध्ययन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/क्षेत्रीय अध्ययन” अछि।

प्रश्न 26046. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा

उत्तर: घ. कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा” अछि।

प्रश्न 26047. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26048. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध/क्षेत्रीय अध्ययन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध/क्षेत्रीय अध्ययन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26049. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26050. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/क्षेत्रीय अध्ययनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/क्षेत्रीय अध्ययनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26051. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26052. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302मे डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” प्रविष्टि गद्य, शोध/क्षेत्रीय अध्ययन आ “कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302मे डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” प्रविष्टि गद्य, शोध/क्षेत्रीय अध्ययन आ “कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2612 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': बडका साहेब: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २

प्रश्न 26053. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बडका साहेब: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बडका साहेब: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1303मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “बडका साहेब: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26054. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26055. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 26056. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेब: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन

उत्तर: घ. ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन” अछि।

प्रश्न 26057. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26058. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26059. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26060. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26061. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26062. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा आ “ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा आ “ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2613 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति

प्रश्न 26063. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1304मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26064. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26065. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. काव्य-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. काव्य-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “काव्य-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 26066. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना

उत्तर: घ. कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना” अछि।

प्रश्न 26067. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26068. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा काव्य-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा काव्य-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26069. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26070. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ काव्य-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ काव्य-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26071. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26072. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” प्रविष्टि गद्य, काव्य-समीक्षा आ “कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” प्रविष्टि गद्य, काव्य-समीक्षा आ “कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2614 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन

प्रश्न 26073. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1305मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26074. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26075. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 26076. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन

उत्तर: घ. ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन” अछि।

प्रश्न 26077. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26078. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26079. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26080. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26081. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26082. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2615 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी

प्रश्न 26083. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1306मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26084. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26085. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. काव्य-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. काव्य-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “काव्य-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 26086. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा

उत्तर: घ. कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 26087. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26088. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा काव्य-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा काव्य-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26089. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26090. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ काव्य-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ काव्य-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26091. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26092. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी” प्रविष्टि गद्य, काव्य-समीक्षा आ “कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ छी” प्रविष्टि गद्य, काव्य-समीक्षा आ “कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2616 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा

प्रश्न 26093. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1307मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26094. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26095. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक-समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक-समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 26096. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा

उत्तर: घ. बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 26097. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26098. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26099. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26100. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26101. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26102. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा आ “बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा आ “बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2617 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास

प्रश्न 26103. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1308मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26104. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26105. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 26106. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा

उत्तर: घ. बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा” अछि।

प्रश्न 26107. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26108. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26109. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26110. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26111. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26112. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2618 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': "आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)

प्रश्न 26113. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1309मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26114. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26115. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 26116. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 26117. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26118. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26119. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26120. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26121. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26122. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2619 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)

प्रश्न 26123. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1310मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26124. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26125. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल विहिनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल विहिनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल विहिनि कथा” अछि।

प्रश्न 26126. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य

उत्तर: घ. हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य” अछि।

प्रश्न 26127. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26128. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा बाल विहिनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा बाल विहिनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26129. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26130. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26131. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26132. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल विहिनि कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल विहिनि कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2620 : विदेह-सदेह 16 — अमर कान्त अमर: सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल

प्रश्न 26133. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1311मे अमर कान्त अमरक प्रविष्टि “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26134. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26135. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 26136. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन

उत्तर: घ. सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन” अछि।

प्रश्न 26137. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26138. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमर कान्त अमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमर कान्त अमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26139. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26140. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26141. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26142. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311मे अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311मे अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2621 : विदेह-सदेह 16 — उमेश मण्डल: दूध

प्रश्न 26143. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दूध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दूध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1312मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “दूध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26144. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26145. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 26146. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य

उत्तर: घ. हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य” अछि।

प्रश्न 26147. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26148. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26149. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26150. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26151. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26152. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312मे उमेश मण्डलक “दूध” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312मे उमेश मण्डलक “दूध” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2622 : विदेह-सदेह 16 — उमेश मण्डल: 81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)

प्रश्न 26153. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1313मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26154. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26155. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 26156. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज

उत्तर: घ. 'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज” अछि।

प्रश्न 26157. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26158. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26159. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26160. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26161. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26162. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313मे उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313मे उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2623 : विदेह-सदेह 16 — उमेश मण्डल: मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)

प्रश्न 26163. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1314मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26164. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26165. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषण” अछि।

प्रश्न 26166. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा-राजनीति

उत्तर: घ. भाषा-राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा-राजनीति” अछि।

प्रश्न 26167. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा-राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा-राजनीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26168. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा भाषण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा भाषण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26169. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26170. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भाषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भाषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26171. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26172. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314मे उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” प्रविष्टि गद्य, भाषण आ “भाषा-राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314मे उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” प्रविष्टि गद्य, भाषण आ “भाषा-राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2624 : विदेह-सदेह 16 — उमेश मण्डल: 80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)

प्रश्न 26173. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1315मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26174. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26175. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 26176. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सगर राति आन्दोलन

उत्तर: घ. सगर राति आन्दोलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सगर राति आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 26177. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सगर राति आन्दोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सगर राति आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सगर राति आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26178. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26179. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26180. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26181. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26182. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315मे उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सगर राति आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315मे उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सगर राति आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2625 : विदेह-सदेह 16 — उमेश मण्डल: विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)

प्रश्न 26183. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1316मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26184. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26185. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इतिहास/दस्तावेज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इतिहास/दस्तावेज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास/दस्तावेज” अछि।

प्रश्न 26186. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास

उत्तर: घ. विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास” अछि।

प्रश्न 26187. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26188. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास/दस्तावेज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास/दस्तावेज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26189. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26190. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ इतिहास/दस्तावेजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ इतिहास/दस्तावेजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26191. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26192. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316मे उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” प्रविष्टि गद्य, इतिहास/दस्तावेज आ “विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316मे उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” प्रविष्टि गद्य, इतिहास/दस्तावेज आ “विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2626 : विदेह-सदेह 16 — नन्द विलास राय: मदन-अमर

प्रश्न 26193. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मदन-अमर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मदन-अमर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1317मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “मदन-अमर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26194. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26195. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 26196. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जातिगत भेदभाव

उत्तर: घ. जातिगत भेदभाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिगत भेदभाव” अछि।

प्रश्न 26197. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातिगत भेदभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातिगत भेदभाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिगत भेदभाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26198. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26199. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26200. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26201. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26202. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317मे नन्द विलास रायक “मदन-अमर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जातिगत भेदभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317मे नन्द विलास रायक “मदन-अमर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जातिगत भेदभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2627 : विदेह-सदेह 16 — पूनम मण्डल: "सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज

प्रश्न 26203. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1318मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26204. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26205. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 26206. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण

उत्तर: घ. सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण” अछि।

प्रश्न 26207. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26208. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26209. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26210. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26211. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26212. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318मे पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318मे पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2628 : विदेह-सदेह 16 — राम विलास साहु: बाल-बोध

प्रश्न 26213. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल-बोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-बोध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1319मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बाल-बोध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26214. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26215. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 26216. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी

उत्तर: घ. गरीबी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।

प्रश्न 26217. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26218. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26219. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26220. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26221. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26222. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319मे राम विलास साहुक “बाल-बोध” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319मे राम विलास साहुक “बाल-बोध” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2629 : विदेह-सदेह 16 — सुरेन्द्र शैल: धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल

प्रश्न 26223. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1320मे सुरेन्द्र शैलक प्रविष्टि “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26224. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26225. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 26226. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पौराणिक परम्पराक विवेचन

उत्तर: घ. पौराणिक परम्पराक विवेचन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पौराणिक परम्पराक विवेचन” अछि।

प्रश्न 26227. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पौराणिक परम्पराक विवेचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पौराणिक परम्पराक विवेचन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पौराणिक परम्पराक विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26228. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुरेन्द्र शैल, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुरेन्द्र शैल, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26229. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26230. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26231. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26232. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320मे सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “पौराणिक परम्पराक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320मे सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “पौराणिक परम्पराक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2630 : विदेह-सदेह 16 — अमित मिश्र: बस एकटा गल्फ्रेहड

प्रश्न 26233. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बस एकटा गल्फ्रेहड

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बस एकटा गल्फ्रेहड

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1321मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “बस एकटा गल्फ्रेहड” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26234. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26235. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 26236. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 26237. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26238. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26239. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26240. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26241. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26242. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321मे अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321मे अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2631 : विदेह-सदेह 16 — डॉ. बचेश्वर झा: सासुरक साइधकलक कथा-बेथा

प्रश्न 26243. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सासुरक साइधकलक कथा-बेथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सासुरक साइधकलक कथा-बेथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1322मे डॉ. बचेश्वर झाक प्रविष्टि “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26244. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26245. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 26246. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य

उत्तर: घ. हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य” अछि।

प्रश्न 26247. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26248. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26249. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26250. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26251. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26252. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322मे डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322मे डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2632 : विदेह-सदेह 16 — जवाहर लाल कश्यप: स्ट्रेस बस्टर

प्रश्न 26253. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्ट्रेस बस्टर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्ट्रेस बस्टर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1323मे जवाहर लाल कश्यपक प्रविष्टि “स्ट्रेस बस्टर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26254. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26255. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 26256. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-पुरुष सम्बन्ध

उत्तर: घ. नारी-पुरुष सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-पुरुष सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 26257. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-पुरुष सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-पुरुष सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-पुरुष सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26258. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26259. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26260. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26261. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26262. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323मे जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-पुरुष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323मे जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-पुरुष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2633 : विदेह-सदेह 16 — फागुलाल साहु: माइक डाँट

प्रश्न 26263. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माइक डाँट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माइक डाँट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1324मे फागुलाल साहुक प्रविष्टि “माइक डाँट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26264. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26265. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 26266. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेरणादायी

उत्तर: घ. प्रेरणादायी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरणादायी” अछि।

प्रश्न 26267. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेरणादायी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेरणादायी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरणादायी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26268. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक फागुलाल साहु, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक फागुलाल साहु, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26269. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26270. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26271. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26272. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324मे फागुलाल साहुक “माइक डाँट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रेरणादायी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324मे फागुलाल साहुक “माइक डाँट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रेरणादायी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2634 : विदेह-सदेह 16 — अखिलेश मण्डल: ललियाएल मुँह

प्रश्न 26273. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ललियाएल मुँह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ललियाएल मुँह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1325मे अखिलेश मण्डलक प्रविष्टि “ललियाएल मुँह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26274. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26275. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 26276. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 26277. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26278. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अखिलेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अखिलेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26279. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26280. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26281. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26282. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325मे अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325मे अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2635 : विदेह-सदेह 16 — बिपिन कुमार कर्ण 'करण': सरकारीए नौकरी किए?

प्रश्न 26283. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सरकारीए नौकरी किए?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरकारीए नौकरी किए?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1326मे बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क प्रविष्टि “सरकारीए नौकरी किए?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26284. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26285. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 26286. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बिहारक सरकारी नौकरीक मोह

उत्तर: घ. बिहारक सरकारी नौकरीक मोह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बिहारक सरकारी नौकरीक मोह” अछि।

प्रश्न 26287. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बिहारक सरकारी नौकरीक मोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहारक सरकारी नौकरीक मोह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बिहारक सरकारी नौकरीक मोह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26288. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन कुमार कर्ण 'करण', विधा गद्य, उप-विधा कथा/साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन कुमार कर्ण 'करण', विधा गद्य, उप-विधा कथा/साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26289. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26290. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26291. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26292. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326मे बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?” प्रविष्टि गद्य, कथा/साक्षात्कार आ “बिहारक सरकारी नौकरीक मोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326मे बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?” प्रविष्टि गद्य, कथा/साक्षात्कार आ “बिहारक सरकारी नौकरीक मोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2636 : विदेह-सदेह 16 — बेचन ठाकुर: हरिया इन्सपेक्टर

प्रश्न 26293. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हरिया इन्सपेक्टर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हरिया इन्सपेक्टर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1327मे बेचन ठाकुरक प्रविष्टि “हरिया इन्सपेक्टर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26294. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26295. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 26296. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यवस्था पर व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यवस्था पर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यवस्था पर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 26297. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यवस्था पर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यवस्था पर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यवस्था पर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26298. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26299. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26300. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26301. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26302. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327मे बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यवस्था पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327मे बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यवस्था पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2637 : विदेह-सदेह 16 — संजय कुमार मण्डल: एकन्त

प्रश्न 26303. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकन्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकन्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1328मे संजय कुमार मण्डलक प्रविष्टि “एकन्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26304. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26305. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 26306. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी

उत्तर: घ. गरीबी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।

प्रश्न 26307. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26308. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संजय कुमार मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संजय कुमार मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26309. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26310. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26311. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26312. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328मे संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328मे संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2638 : विदेह-सदेह 16 — ललन कुमार कामत: स्कूलक फीस

प्रश्न 26313. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्कूलक फीस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्कूलक फीस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1329मे ललन कुमार कामतक प्रविष्टि “स्कूलक फीस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26314. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26315. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 26316. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी

उत्तर: घ. गरीबी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।

प्रश्न 26317. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26318. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26319. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26320. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26321. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26322. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329मे ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329मे ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2639 : विदेह-सदेह 16 — ललन कुमार कामत: सफरनामा

प्रश्न 26323. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सफरनामा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सफरनामा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1330मे ललन कुमार कामतक प्रविष्टि “सफरनामा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26324. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26325. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 26326. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण

उत्तर: घ. 'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण” अछि।

प्रश्न 26327. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26328. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26329. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26330. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26331. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26332. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330मे ललन कुमार कामतक “सफरनामा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330मे ललन कुमार कामतक “सफरनामा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2640 : विदेह-सदेह 16 — ललन कुमार कामत: बेटी

प्रश्न 26333. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1331मे ललन कुमार कामतक प्रविष्टि “बेटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26334. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26335. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 26336. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पिता-पुत्री सम्बन्ध

उत्तर: घ. पिता-पुत्री सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पिता-पुत्री सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 26337. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पिता-पुत्री सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिता-पुत्री सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिता-पुत्री सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26338. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26339. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26340. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26341. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26342. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331मे ललन कुमार कामतक “बेटी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिता-पुत्री सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331मे ललन कुमार कामतक “बेटी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिता-पुत्री सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2641 : विदेह-सदेह 16 — जगदानंद झा 'मनु': छुट्टी भड गेले (बाल कविता)

प्रश्न 26343. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छुट्टी भड गेले (बाल कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छुट्टी भड गेले (बाल कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1332मे जगदानंद झा 'मनु'क प्रविष्टि “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26344. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26345. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 26346. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 26347. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26348. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26349. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26350. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26351. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26352. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332मे जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332मे जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2642 : विदेह-सदेह 16 — जगदानंद झा 'मनु': प्रकृति (बाल कविता)

प्रश्न 26353. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रकृति (बाल कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति (बाल कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1333मे जगदानंद झा 'मनु'क प्रविष्टि “प्रकृति (बाल कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26354. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26355. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 26356. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-वर्णन

उत्तर: घ. प्रकृति-वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-वर्णन” अछि।

प्रश्न 26357. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26358. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26359. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26360. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)”कैं विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26361. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26362. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333मे जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “प्रकृति-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333मे जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “प्रकृति-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2643 : विदेह-सदेह 16 — जगदानंद झा 'मनु': किछु गजल (बहुते)

प्रश्न 26363. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु गजल (बहुते)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु गजल (बहुते)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1334मे जगदानंद झा 'मनु'क प्रविष्टि “किछु गजल (बहुते)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26364. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26365. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 26366. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 26367. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26368. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26369. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26370. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26371. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26372. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334मे जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334मे जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2644 : विदेह-सदेह 16 — जगदानंद झा 'मनु': भवित गजल

प्रश्न 26373. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भवित गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भवित गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1335मे जगदानंद झा 'मनु'क प्रविष्टि “भवित गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26374. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26375. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 26376. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति

उत्तर: घ. भक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति” अछि।

प्रश्न 26377. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26378. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26379. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26380. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26381. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26382. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335मे जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335मे जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2645 : विदेह-सदेह 16 — नीतीश कर्ण: प्रेमक बुत्री

प्रश्न 26383. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेमक बुत्री

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक बुत्री

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1336मे नीतीश कर्णक प्रविष्टि “प्रेमक बुत्री” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26384. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26385. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26386. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 26387. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26388. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नीतीश कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नीतीश कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26389. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26390. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26391. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26392. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336मे नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336मे नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2646 : विदेह-सदेह 16 — नीतीश कर्ण: कोना सुनाबु

प्रश्न 26393. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोना सुनाबु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोना सुनाबु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1337मे नीतीश कर्णक प्रविष्टि “कोना सुनाबु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26394. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26395. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26396. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 26397. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26398. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नीतीश कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नीतीश कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26399. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26400. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26401. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26402. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337मे नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337मे नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2647 : विदेह-सदेह 16 — बिनीता झा: जिनगी

प्रश्न 26403. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जिनगी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जिनगी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1338मे बिनीता झाक प्रविष्टि “जिनगी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26404. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26405. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26406. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-दर्शन

उत्तर: घ. जीवन-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-दर्शन” अछि।

प्रश्न 26407. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26408. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26409. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26410. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26411. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26412. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338मे बिनीता झाक “जिनगी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338मे बिनीता झाक “जिनगी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2648 : विदेह-सदेह 16 — बिनीता झा: किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल

प्रश्न 26413. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1339मे बिनीता झाक प्रविष्टि “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26414. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26415. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भजन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भजन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भजन” अछि।

प्रश्न 26416. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आध्यात्मिकता

उत्तर: घ. आध्यात्मिकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आध्यात्मिकता” अछि।

प्रश्न 26417. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आध्यात्मिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आध्यात्मिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आध्यात्मिकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26418. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा भजन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा भजन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26419. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26420. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26421. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26422. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339मे बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “आध्यात्मिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339मे बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “आध्यात्मिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2649 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: पैसा एतड कमा रहल छी

प्रश्न 26423. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पैसा एतड कमा रहल छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पैसा एतड कमा रहल छी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1340मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “पैसा एतड कमा रहल छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26424. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26425. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26426. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी मजदूरक पीड़ा

उत्तर: घ. प्रवासी मजदूरक पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मजदूरक पीड़ा” अछि।

प्रश्न 26427. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी मजदूरक पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी मजदूरक पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मजदूरक पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26428. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26429. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26430. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26431. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26432. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340मे विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी मजदूरक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340मे विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी मजदूरक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2650 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: एना मनाएब एहिबेरक दशै

प्रश्न 26433. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एना मनाएब एहिबेरक दशै

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एना मनाएब एहिबेरक दशै

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1341मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “एना मनाएब एहिबेरक दशै” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26434. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26435. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26436. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशौ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 26437. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशौ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26438. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशौ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26439. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशौ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26440. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशौ”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26441. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशौ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26442. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341मे विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341मे विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2651 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: गजल, गजल सन, गीत (बहुते)

प्रश्न 26443. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल, गजल सन, गीत (बहुते)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल, गजल सन, गीत (बहुते)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1342मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26444. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26445. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/गीत” अछि।

प्रश्न 26446. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 26447. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26448. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल/गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल/गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26449. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26450. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26451. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26452. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342मे विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल/गीत आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342मे विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल/गीत आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2652 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: भेटब दोसर दिवालीमे

प्रश्न 26453. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भेटब दोसर दिवालीमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भेटब दोसर दिवालीमे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1343मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “भेटब दोसर दिवालीमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26454. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26455. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 26456. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक

उत्तर: घ. सांस्कृतिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक” अछि।

प्रश्न 26457. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26458. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26459. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26460. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26461. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26462. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343मे विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सांस्कृतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343मे विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सांस्कृतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2653 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: छठिक शुभकामना

प्रश्न 26463. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छठिक शुभकामना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छठिक शुभकामना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1344मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “छठिक शुभकामना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26464. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26465. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26466. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-आस्था

उत्तर: घ. लोक-आस्था

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-आस्था” अछि।

प्रश्न 26467. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-आस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-आस्था

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-आस्था” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26468. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26469. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26470. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26471. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26472. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344मे विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोक-आस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344मे विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोक-आस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2654 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: रक्षाबन्धन

प्रश्न 26473. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रक्षाबन्धन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रक्षाबन्धन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1345मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “रक्षाबन्धन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26474. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26475. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26476. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाई-बहिनक प्रेम

उत्तर: घ. भाई-बहिनक प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाई-बहिनक प्रेम” अछि।

प्रश्न 26477. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाई-बहिनक प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाई-बहिनक प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाई-बहिनक प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26478. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26479. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26480. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26481. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26482. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345मे विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाई-बहिनक प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345मे विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाई-बहिनक प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2655 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: अहा किये कनलौ?

प्रश्न 26483. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अहा किये कनलौ?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अहा किये कनलौ?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1346मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “अहा किये कनलौ?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26484. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26485. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26486. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 26487. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26488. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26489. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26490. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26491. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26492. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346मे विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346मे विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2656 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: ललकार

प्रश्न 26493. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ललकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ललकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1347मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “ललकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26494. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26495. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26496. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक जागरण

उत्तर: घ. सामाजिक जागरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक जागरण” अछि।

प्रश्न 26497. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक जागरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक जागरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक जागरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26498. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26499. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26500. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26501. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26502. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347मे विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347मे विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2657 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: पूसिक शान

प्रश्न 26503. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पूसिक शान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूसिक शान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1348मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “पूसिक शान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26504. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26505. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26506. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देशभक्ति

उत्तर: घ. देशभक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देशभक्ति” अछि।

प्रश्न 26507. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देशभक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देशभक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देशभक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26508. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26509. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26510. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26511. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26512. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348मे विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348मे विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2658 : विदेह-सदेह 16 — पंकज झा: हम बुरबकहा

प्रश्न 26513. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम बुरबकहा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम बुरबकहा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1349मे पंकज झाक प्रविष्टि “हम बुरबकहा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26514. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26515. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26516. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक विसंगति

उत्तर: घ. सामाजिक विसंगति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विसंगति” अछि।

प्रश्न 26517. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक विसंगति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विसंगति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विसंगति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26518. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26519. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26520. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26521. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26522. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349मे पंकज झाक “हम बुरबकहा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349मे पंकज झाक “हम बुरबकहा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2659 : विदेह-सदेह 16 — बेचन महतो: खुशीके नोर

प्रश्न 26523. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खुशीके नोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खुशीके नोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1350मे बेचन महतोक प्रविष्टि “खुशीके नोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26524. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26525. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26526. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक समरसता

उत्तर: घ. सामाजिक समरसता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक समरसता” अछि।

प्रश्न 26527. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक समरसता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक समरसता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक समरसता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26528. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26529. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26530. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26531. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26532. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350मे बेचन महतोक “खुशीके नोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक समरसता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350मे बेचन महतोक “खुशीके नोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक समरसता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2660 : विदेह-सदेह 16 — बेचन महतो: आउ हमसब एक हउ

प्रश्न 26533. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आउ हमसब एक हउ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आउ हमसब एक हउ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1351मे बेचन महतोक प्रविष्टि “आउ हमसब एक हउ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26534. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26535. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26536. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एकता

उत्तर: घ. एकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एकता” अछि।

प्रश्न 26537. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26538. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26539. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26540. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26541. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26542. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351मे बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351मे बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2661 : विदेह-सदेह 16 — बेचन महतो: सपनाके बिज

प्रश्न 26543. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सपनाके बिज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सपनाके बिज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1352मे बेचन महतोक प्रविष्टि “सपनाके बिज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26544. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26545. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26546. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वप्न

उत्तर: घ. स्वप्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वप्न” अछि।

प्रश्न 26547. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वप्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वप्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वप्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26548. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26549. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26550. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26551. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26552. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352मे बेचन महतोक “सपनाके बिज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्वप्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352मे बेचन महतोक “सपनाके बिज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्वप्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2662 : विदेह-सदेह 16 — कृन्दन कृमार कर्ण: हजल (बहुते)

प्रश्न 26553. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हजल (बहुते)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हजल (बहुते)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1353मे कृन्दन कृमार कर्णक प्रविष्टि “हजल (बहुते)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26554. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26555. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 26556. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 26557. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26558. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26559. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26560. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26561. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26562. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353मे कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353मे कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2663 : विदेह-सदेह 16 — कृन्दन कृमार कर्ण: किछु बाल गजल

प्रश्न 26563. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1354मे कृन्दन कृमार कर्णक प्रविष्टि “किछु बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26564. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26565. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।

प्रश्न 26566. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-मनोरंजन

उत्तर: घ. बाल-मनोरंजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोरंजन” अछि।

प्रश्न 26567. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मनोरंजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मनोरंजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोरंजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26568. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26569. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26570. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26571. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26572. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354मे कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354मे कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2664 : विदेह-सदेह 16 — कृन्दन कृमार कर्ण: किछु गजल

प्रश्न 26573. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1355मे कृन्दन कृमार कर्णक प्रविष्टि “किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26574. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26575. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 26576. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 26577. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26578. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26579. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26580. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26581. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26582. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355मे कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355मे कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2665 : विदेह-सदेह 16 — बिनीत ठाकुर: जलवायु परिवर्तन

प्रश्न 26583. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जलवायु परिवर्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जलवायु परिवर्तन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1356मे बिनीत ठाकुरक प्रविष्टि “जलवायु परिवर्तन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26584. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26585. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26586. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पर्यावरण चेतना

उत्तर: घ. पर्यावरण चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरण चेतना” अछि।

प्रश्न 26587. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पर्यावरण चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पर्यावरण चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पर्यावरण चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26588. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26589. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26590. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26591. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26592. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356मे बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पर्यावरण चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356मे बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पर्यावरण चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2666 : विदेह-सदेह 16 — राम कृमार मिश्र: किछु रुबाइ

प्रश्न 26593. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु रुबाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु रुबाइ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1357मे राम कृमार मिश्रक प्रविष्टि “किछु रुबाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26594. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26595. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रुबाइ

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रुबाइ

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रुबाइ” अछि।

प्रश्न 26596. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक यथार्थ

उत्तर: घ. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 26597. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26598. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम कृमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम कृमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26599. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26600. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26601. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26602. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357मे राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ आ “सामाजिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357मे राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ आ “सामाजिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2667 : विदेह-सदेह 16 — राम कृमार मिश्र: किछु गजल

प्रश्न 26603. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कृमार मिश्रक “किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1358मे राम कृमार मिश्रक प्रविष्टि “किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26604. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कृमार मिश्रक “किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26605. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कृमार मिश्रक “किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 26606. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कृमार मिश्रक “किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक

उत्तर: घ. सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक” अछि।

प्रश्न 26607. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कृमार मिश्रक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26608. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कृमार मिश्रक “किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम कृमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम कृमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26609. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कृमार मिश्रक “किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26610. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कृमार मिश्रक “किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26611. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कृमार मिश्रक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26612. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358मे राम कृमार मिश्रक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358मे राम कृमार मिश्रक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2668 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: प्रियतम

प्रश्न 26613. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रियतम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रियतम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1359मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “प्रियतम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26614. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26615. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26616. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 26617. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26618. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26619. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26620. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26621. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26622. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359मे सत्य नारायण झाक “प्रियतम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359मे सत्य नारायण झाक “प्रियतम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2669 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: व्यथित मोन

प्रश्न 26623. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. व्यथित मोन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यथित मोन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1360मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “व्यथित मोन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26624. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26625. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26626. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आन्तरिक वेदना

उत्तर: घ. आन्तरिक वेदना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आन्तरिक वेदना” अछि।

प्रश्न 26627. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आन्तरिक वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्तरिक वेदना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आन्तरिक वेदना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26628. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26629. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26630. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26631. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26632. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360मे सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360मे सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2670 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: मोनक बात

प्रश्न 26633. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मोनक बात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोनक बात

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1361मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “मोनक बात” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26634. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26635. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26636. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक

उत्तर: घ. दार्शनिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 26637. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26638. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26639. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26640. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26641. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26642. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361मे सत्य नारायण झाक “मोनक बात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361मे सत्य नारायण झाक “मोनक बात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2671 : विदेह-सदेह 16 — श्याम शेखर झा: साजन

प्रश्न 26643. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साजन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1362मे श्याम शेखर झाक प्रविष्टि “साजन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26644. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26645. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गीत” अछि।

प्रश्न 26646. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति

उत्तर: घ. प्रकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।

प्रश्न 26647. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26648. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्याम शेखर झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्याम शेखर झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26649. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26650. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26651. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26652. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362मे श्याम शेखर झाक “साजन” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362मे श्याम शेखर झाक “साजन” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2672 : विदेह-सदेह 16 — पंकज चौधरी 'नवलश्री': जुनि बिसरू

प्रश्न 26653. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जुनि बिसरू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जुनि बिसरू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1363मे पंकज चौधरी 'नवलश्री'क प्रविष्टि “जुनि बिसरू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26654. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26655. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26656. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।

प्रश्न 26657. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26658. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज चौधरी 'नवलश्री', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज चौधरी 'नवलश्री', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26659. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26660. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26661. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26662. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363मे पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363मे पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2673 : विदेह-सदेह 16 — अमित मिश्र: किष्ठ गजल (बहुते)

प्रश्न 26663. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किष्ठ गजल (बहुते)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किष्ठ गजल (बहुते)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1364मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “किष्ठ गजल (बहुते)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26664. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26665. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 26666. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 26667. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26668. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26669. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26670. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26671. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26672. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364मे अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364मे अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2674 : विदेह-सदेह 16 — कंचन कुमारी झा: मंजिल

प्रश्न 26673. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मंजिल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मंजिल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1365मे कंचन कुमारी झाक प्रविष्टि “मंजिल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26674. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26675. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26676. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेरणादायी

उत्तर: घ. प्रेरणादायी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरणादायी” अछि।

प्रश्न 26677. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेरणादायी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेरणादायी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरणादायी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26678. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कंचन कुमारी झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कंचन कुमारी झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26679. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26680. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26681. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26682. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365मे कंचन कुमारी झाक “मंजिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेरणादायी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365मे कंचन कुमारी झाक “मंजिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेरणादायी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2675 : विदेह-सदेह 16 — संजय झा: हे माय तोरा प्रणाम

प्रश्न 26683. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हे माय तोरा प्रणाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हे माय तोरा प्रणाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1366मे संजय झाक प्रविष्टि “हे माय तोरा प्रणाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26684. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26685. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26686. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-वन्दना

उत्तर: घ. मातृ-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-वन्दना” अछि।

प्रश्न 26687. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26688. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संजय झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संजय झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26689. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26690. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26691. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26692. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366मे संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366मे संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2676 : विदेह-सदेह 16 — शारदा नन्द सिंह: नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल

प्रश्न 26693. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1367मे शारदा नन्द सिंहक प्रविष्टि “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26694. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26695. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26696. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 26697. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26698. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26699. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26700. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26701. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26702. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367मे शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367मे शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2677 : विदेह-सदेह 16 — शारदा नन्द सिंह: अयोग्य शासक

प्रश्न 26703. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अयोग्य शासक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अयोग्य शासक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1368मे शारदा नन्द सिंहक प्रविष्टि “अयोग्य शासक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26704. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26705. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26706. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 26707. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26708. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26709. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26710. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26711. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26712. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368मे शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368मे शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2678 : विदेह-सदेह 16 — शारदा नन्द सिंह: चिरकि जाएब

प्रश्न 26713. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चिरकि जाएब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिरकि जाएब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1369मे शारदा नन्द सिंहक प्रविष्टि “चिरकि जाएब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26714. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26715. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26716. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-क्षणभंगुरता

उत्तर: घ. जीवन-क्षणभंगुरता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-क्षणभंगुरता” अछि।

प्रश्न 26717. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-क्षणभंगुरता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-क्षणभंगुरता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-क्षणभंगुरता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26718. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26719. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26720. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26721. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26722. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369मे शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-क्षणभंगुरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369मे शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-क्षणभंगुरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2679 : विदेह-सदेह 16 — शारदा नन्द सिंह: भूमिजा भैया

प्रश्न 26723. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भूमिजा भैया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भूमिजा भैया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1370मे शारदा नन्द सिंहक प्रविष्टि “भूमिजा भैया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26724. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26725. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26726. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. सामाजिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 26727. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26728. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26729. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26730. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26731. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26732. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370मे शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370मे शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2680 : विदेह-सदेह 16 — अरुण चन्द्र राय: अर्थशास्त्र

प्रश्न 26733. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अर्थशास्त्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अर्थशास्त्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1371मे अरुण चन्द्र रायक प्रविष्टि “अर्थशास्त्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26734. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26735. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26736. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आर्थिक विडम्बना

उत्तर: घ. आर्थिक विडम्बना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आर्थिक विडम्बना” अछि।

प्रश्न 26737. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आर्थिक विडम्बना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आर्थिक विडम्बना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आर्थिक विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26738. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरुण चन्द्र राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरुण चन्द्र राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26739. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26740. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26741. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26742. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371मे अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आर्थिक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371मे अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आर्थिक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2681 : विदेह-सदेह 16 — इरा मलिलक: संग अहाँक पाबि

प्रश्न 26743. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संग अहाँक पाबि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संग अहाँक पाबि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1372मे इरा मलिलकक प्रविष्टि “संग अहाँक पाबि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26744. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26745. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26746. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 26747. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26748. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26749. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26750. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26751. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26752. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372मे इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372मे इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2682 : विदेह-सदेह 16 — इरा मलिलक: किष्ठ गजल

प्रश्न 26753. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किष्ठ गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किष्ठ गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1373मे इरा मलिलकक प्रविष्टि “किष्ठ गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26754. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26755. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 26756. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 26757. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26758. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26759. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26760. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26761. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26762. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373मे इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373मे इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2683 : विदेह-सदेह 16 — इरा मलिलक: गीत (श्रुनार)

प्रश्न 26763. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत (श्रुनार)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत (श्रुनार)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1374मे इरा मलिलकक प्रविष्टि “गीत (श्रुनार)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26764. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26765. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 26766. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 26767. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26768. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26769. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26770. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26771. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26772. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374मे इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374मे इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2684 : विदेह-सदेह 16 — इरा मलिलक: सूर्जक पहिल किरण

प्रश्न 26773. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सूर्जक पहिल किरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूर्जक पहिल किरण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1375मे इरा मलिलकक प्रविष्टि “सूर्जक पहिल किरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26774. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26775. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26776. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 26777. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26778. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26779. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26780. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26781. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26782. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375मे इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375मे इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2685 : विदेह-सदेह 16 — सुरेन्द्र शैल: पोसुआ कूकूर

प्रश्न 26783. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोसुआ कूकूर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोसुआ कूकूर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1376मे सुरेन्द्र शैलक प्रविष्टि “पोसुआ कूकूर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26784. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26785. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26786. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 26787. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26788. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुरेन्द्र शैल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुरेन्द्र शैल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26789. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26790. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26791. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26792. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376मे सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376मे सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2686 : विदेह-सदेह 16 — रसिक लाल सदाय: दीनक दुदंशा

प्रश्न 26793. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दीनक दुदंशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीनक दुदंशा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1377मे रसिक लाल सदायक प्रविष्टि “दीनक दुदंशा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26794. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26795. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26796. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक

उत्तर: घ. सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक” अछि।

प्रश्न 26797. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26798. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26799. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26800. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26801. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26802. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377मे रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377मे रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2687 : विदेह-सदेह 16 — रसिक लाल सदाय: अनुभव

प्रश्न 26803. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनुभव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुभव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1378मे रसिक लाल सदायक प्रविष्टि “अनुभव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26804. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26805. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26806. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-अनुभव

उत्तर: घ. जीवन-अनुभव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-अनुभव” अछि।

प्रश्न 26807. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-अनुभव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-अनुभव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-अनुभव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26808. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26809. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26810. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26811. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26812. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378मे रसिक लाल सदायक “अनुभव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-अनुभव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378मे रसिक लाल सदायक “अनुभव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-अनुभव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2688 : विदेह-सदेह 16 — रसिक लाल सदाय: स्कूल गीत

प्रश्न 26813. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्कूल गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्कूल गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1379मे रसिक लाल सदायक प्रविष्टि “स्कूल गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26814. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26815. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 26816. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षा

उत्तर: घ. शिक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा” अछि।

प्रश्न 26817. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26818. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26819. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26820. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26821. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26822. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379मे रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379मे रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2689 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': सपना

प्रश्न 26823. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सपना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सपना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1380मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “सपना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26824. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26825. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26826. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 26827. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26828. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26829. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26830. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26831. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26832. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380मे महेश झा 'डखरामी'क “सपना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380मे महेश झा 'डखरामी'क “सपना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2690 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': उनटा बसात

प्रश्न 26833. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उनटा बसात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उनटा बसात

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1381मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “उनटा बसात” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26834. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26835. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26836. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक व्यंग्य

उत्तर: घ. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 26837. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26838. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26839. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26840. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26841. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26842. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381मे महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381मे महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2691 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': अनुराग

प्रश्न 26843. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनुराग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुराग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1382मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “अनुराग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26844. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26845. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26846. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 26847. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26848. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26849. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26850. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26851. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26852. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382मे महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382मे महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2692 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': राधे श्याम

प्रश्न 26853. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राधे श्याम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राधे श्याम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1383मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “राधे श्याम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26854. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26855. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भजन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भजन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भजन” अछि।

प्रश्न 26856. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति

उत्तर: घ. भक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति” अछि।

प्रश्न 26857. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26858. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा भजन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा भजन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26859. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26860. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26861. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26862. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383मे महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383मे महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2693 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': बेटी

प्रश्न 26863. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1384मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “बेटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26864. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26865. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26866. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-जीवन

उत्तर: घ. नारी-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-जीवन” अछि।

प्रश्न 26867. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26868. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26869. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26870. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26871. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26872. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384मे महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384मे महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2694 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': मनोदगार

प्रश्न 26873. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मनोदगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनोदगार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1385मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “मनोदगार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26874. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26875. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26876. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 26877. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26878. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26879. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26880. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26881. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26882. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385मे महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385मे महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2695 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': क्रोध

प्रश्न 26883. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. क्रोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्रोध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1386मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “क्रोध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26884. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26885. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26886. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रौद्र रस

उत्तर: घ. रौद्र रस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र रस” अछि।

प्रश्न 26887. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रौद्र रस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौद्र रस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रौद्र रस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26888. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26889. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26890. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26891. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26892. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386मे महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386मे महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2696 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': छैडत मैय्या

प्रश्न 26893. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छैडत मैय्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छैडत मैय्या

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1387मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “छैडत मैय्या” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26894. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26895. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भजन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भजन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भजन” अछि।

प्रश्न 26896. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति

उत्तर: घ. भक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति” अछि।

प्रश्न 26897. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26898. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा भजन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा भजन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26899. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26900. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26901. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26902. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387मे महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387मे महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2697 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': नारी

प्रश्न 26903. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1388मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “नारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26904. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26905. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26906. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-गरिमा

उत्तर: घ. नारी-गरिमा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-गरिमा” अछि।

प्रश्न 26907. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-गरिमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-गरिमा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-गरिमा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26908. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26909. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26910. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26911. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26912. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388मे महेश झा 'डखरामी'क “नारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-गरिमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388मे महेश झा 'डखरामी'क “नारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-गरिमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2698 : विदेह-सदेह 16 — शेफालिका वर्मा: दीयाबाती मनेलौं आली

प्रश्न 26913. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दीयाबाती मनेलौं आली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीयाबाती मनेलौं आली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1389मे शेफालिका वर्माक प्रविष्टि “दीयाबाती मनेलौं आली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26914. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26915. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26916. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दीपावली

उत्तर: घ. दीपावली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दीपावली” अछि।

प्रश्न 26917. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दीपावली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीपावली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दीपावली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26918. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26919. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26920. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26921. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26922. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389मे शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीपावली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389मे शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीपावली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2699 : विदेह-सदेह 16 — केलाश: जहिना करब ओहिना पाएब

प्रश्न 26923. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जहिना करब ओहिना पाएब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जहिना करब ओहिना पाएब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1390मे केलाशक प्रविष्टि “जहिना करब ओहिना पाएब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26924. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26925. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26926. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक

उत्तर: घ. पारिवारिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक” अछि।

प्रश्न 26927. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26928. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केलाश, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केलाश, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26929. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26930. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26931. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26932. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390मे केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390मे केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2700 : विदेह-सदेह 16 — संतोष कुमार राय 'चंदू': गिरवी

प्रश्न 26933. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गिरवी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गिरवी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1391मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क प्रविष्टि “गिरवी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26934. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26935. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26936. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी

उत्तर: घ. गरीबी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।

प्रश्न 26937. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26938. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार राय 'चंदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार राय 'चंदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26939. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26940. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26941. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26942. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2701 : विदेह-सदेह 16 — संतोष कुमार राय 'चंदू': प्रधानमंत्री के छथि?

प्रश्न 26943. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रधानमंत्री के छथि?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रधानमंत्री के छथि?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1392मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क प्रविष्टि “प्रधानमंत्री के छथि?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26944. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26945. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26946. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 26947. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26948. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार राय 'चंदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार राय 'चंदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26949. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26950. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?”कैं विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26951. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26952. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2702 : विदेह-सदेह 16 — डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह': ओजोन

प्रश्न 26953. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ओजोन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओजोन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1393मे डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क प्रविष्टि “ओजोन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26954. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26955. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26956. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विज्ञान चेतना

उत्तर: घ. विज्ञान चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विज्ञान चेतना” अछि।

प्रश्न 26957. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विज्ञान चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विज्ञान चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विज्ञान चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26958. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26959. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26960. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26961. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26962. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393मे डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विज्ञान चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393मे डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “ओजोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विज्ञान चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2703 : विदेह-सदेह 16 — डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह': प्रदूषण

प्रश्न 26963. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रदूषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रदूषण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1394मे डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क प्रविष्टि “प्रदूषण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26964. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26965. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26966. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पर्यावरण

उत्तर: घ. पर्यावरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरण” अछि।

प्रश्न 26967. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पर्यावरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पर्यावरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पर्यावरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26968. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26969. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26970. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26971. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26972. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394मे डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पर्यावरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394मे डॉ. शिशधर कुमर 'विदेह'क “प्रदूषण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पर्यावरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2704 : विदेह-सदेह 16 — राजीव रंजन मिश्र: गजल

प्रश्न 26973. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1395मे राजीव रंजन मिश्रक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26974. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26975. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 26976. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 26977. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26978. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26979. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26980. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26981. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26982. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2705 : विदेह-सदेह 16 — स्व. कविवर सीताराम झा: गजल (भवक्त गजल)

प्रश्न 26983. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (भवक्त गजल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (भवक्त गजल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1396मे स्व. कविवर सीताराम झाक प्रविष्टि “गजल (भवक्त गजल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26984. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26985. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 26986. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति

उत्तर: घ. भक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति” अछि।

प्रश्न 26987. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26988. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक स्व. कविवर सीताराम झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक स्व. कविवर सीताराम झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26989. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 26990. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 26991. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 26992. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396मे स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396मे स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2706 : विदेह-सदेह 16 — अब्दुर रज्जाक: घोरमठा राजनैतिक

प्रश्न 26993. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घोरमठा राजनैतिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घोरमठा राजनैतिक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1397मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “घोरमठा राजनैतिक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 26994. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 26995. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 26996. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 26997. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 26998. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 26999. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27000. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27001. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27002. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397मे अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397मे अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2707 : विदेह-सदेह 16 — किशन कारीर: बीर जबान

प्रश्न 27003. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीर जबान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीर जबान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1398मे किशन कारीरक प्रविष्टि “बीर जबान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27004. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27005. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27006. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देशभक्ति

उत्तर: घ. देशभक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देशभक्ति” अछि।

प्रश्न 27007. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देशभक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देशभक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देशभक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27008. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27009. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27010. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27011. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27012. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398मे किशन कारीरक “बीर जबान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398मे किशन कारीरक “बीर जबान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2708 : विदेह-सदेह 16 — किशन कारीर: बारूद के ढेड़ी पर बैसि

प्रश्न 27013. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बारूद के ढेड़ी पर बैसि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बारूद के ढेड़ी पर बैसि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1399मे किशन कारीरक प्रविष्टि “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27014. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27015. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27016. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आतंकवाद विरोधी

उत्तर: घ. आतंकवाद विरोधी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आतंकवाद विरोधी” अछि।

प्रश्न 27017. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आतंकवाद विरोधी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आतंकवाद विरोधी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आतंकवाद विरोधी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27018. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27019. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27020. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27021. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27022. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399मे किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आतंकवाद विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399मे किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आतंकवाद विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2709 : विदेह-सदेह 16 — किशन कारीर: गजल सन किछु

प्रश्न 27023. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल सन किछु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल सन किछु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1400मे किशन कारीरक प्रविष्टि “गजल सन किछु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27024. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27025. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 27026. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 27027. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27028. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27029. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27030. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27031. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27032. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400मे किशन कारीरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400मे किशन कारीरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2710 : विदेह-सदेह 16 — प्रदीप पुष्प: शेर, रुबाइ (बहुते)

प्रश्न 27033. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शेर, रुबाइ (बहुते)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शेर, रुबाइ (बहुते)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1401मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “शेर, रुबाइ (बहुते)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27034. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27035. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रुबाइ/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रुबाइ/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रुबाइ/गजल” अछि।

प्रश्न 27036. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 27037. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27038. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27039. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27040. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रुबाइ/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रुबाइ/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27041. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27042. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401मे प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ/गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401मे प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ/गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2711 : विदेह-सदेह 16 — मो. अशरफ राईन: रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)

प्रश्न 27043. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1402मे मो. अशरफ राईनक प्रविष्टि “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27044. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27045. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/रुबाइ/गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/रुबाइ/गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/रुबाइ/गीत” अछि।

प्रश्न 27046. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 27047. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27048. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मो. अशरफ राईन, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मो. अशरफ राईन, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27049. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27050. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/रुबाइ/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/रुबाइ/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27051. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27052. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402मे मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/गीत आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402मे मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/गीत आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2712 : विदेह-सदेह 16 — राजदेव मण्डल: हेतिार

प्रश्न 27053. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतिार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हेतिार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हेतिार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1403मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “हेतिार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27054. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतिार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27055. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतिार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27056. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतिार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतीकात्मक

उत्तर: घ. प्रतीकात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीकात्मक” अछि।

प्रश्न 27057. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतिार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रतीकात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतीकात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27058. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतिार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27059. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतिार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27060. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतिार”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27061. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतिार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27062. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403मे राजदेव मण्डलक “हेतिार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403मे राजदेव मण्डलक “हेतिार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2713 : विदेह-सदेह 16 — सुनीति मोहन ठाकुर: अहि बेर देखि फागु

प्रश्न 27063. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अहि बेर देखि फागु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अहि बेर देखि फागु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1404मे सुनीति मोहन ठाकुरक प्रविष्टि “अहि बेर देखि फागु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27064. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27065. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27066. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ऋतु-वर्णन

उत्तर: घ. ऋतु-वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ऋतु-वर्णन” अछि।

प्रश्न 27067. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ऋतु-वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऋतु-वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऋतु-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27068. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुनीति मोहन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुनीति मोहन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27069. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27070. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27071. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27072. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404मे सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ऋतु-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404मे सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ऋतु-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2714 : विदेह-सदेह 16 — नवहदनी पाठक: ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल

प्रश्न 27073. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1405मे नवहदनी पाठकक प्रविष्टि “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27074. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27075. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27076. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 27077. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27078. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवहदनी पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवहदनी पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27079. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27080. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27081. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27082. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405मे नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405मे नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2715 : विदेह-सदेह 16 — मो. सुभान: गीत — छोटका किसान

प्रश्न 27083. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत — छोटका किसान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत — छोटका किसान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1406मे मो. सुभानक प्रविष्टि “गीत — छोटका किसान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27084. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27085. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 27086. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किसान-जीवन

उत्तर: घ. किसान-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “किसान-जीवन” अछि।

प्रश्न 27087. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. किसान-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किसान-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसान-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27088. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मो. सुभान, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मो. सुभान, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27089. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27090. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27091. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27092. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406मे मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “किसान-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406मे मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “किसान-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2716 : विदेह-सदेह 16 — शारदानन्द दास 'परिमल': पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत

प्रश्न 27093. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1407मे शारदानन्द दास 'परिमल'क प्रविष्टि “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27094. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27095. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गीत” अछि।

प्रश्न 27096. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आध्यात्मिक

उत्तर: घ. आध्यात्मिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आध्यात्मिक” अछि।

प्रश्न 27097. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आध्यात्मिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आध्यात्मिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आध्यात्मिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27098. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शारदानन्द दास 'परिमल', विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शारदानन्द दास 'परिमल', विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27099. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27100. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27101. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27102. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407मे शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “आध्यात्मिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407मे शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “आध्यात्मिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2717 : विदेह-सदेह 16 — योगानन्द हीरा: गजल (बहुते); बाल गजल

प्रश्न 27103. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (बहुते); बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (बहुते); बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1408मे योगानन्द हीराक प्रविष्टि “गजल (बहुते); बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27104. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27105. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/बाल गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/बाल गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/बाल गजल” अछि।

प्रश्न 27106. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 27107. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27108. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगानन्द हीरा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/बाल गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगानन्द हीरा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27109. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27110. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27111. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27112. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408मे योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल/बाल गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408मे योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल/बाल गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2718 : विदेह-सदेह 16 — विमिहर झा: बाल गजल; शेर; कता

प्रश्न 27113. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल; शेर; कता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल; शेर; कता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1409मे विमिहर झाक प्रविष्टि “बाल गजल; शेर; कता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27114. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27115. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/कता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/कता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कता” अछि।

प्रश्न 27116. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-साहित्य

उत्तर: घ. बाल-साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-साहित्य” अछि।

प्रश्न 27117. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27118. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विमिहर झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विमिहर झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27119. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27120. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27121. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27122. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409मे विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” प्रविष्टि पद्य, गजल/कता आ “बाल-साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409मे विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” प्रविष्टि पद्य, गजल/कता आ “बाल-साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2719 : विदेह-सदेह 16 — वृषेश चन्द्र लाल: चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत

प्रश्न 27123. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1410मे वृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27124. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27125. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता” अछि।

प्रश्न 27126. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति

उत्तर: घ. प्रकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।

प्रश्न 27127. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27128. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वृषेश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वृषेश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27129. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27130. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27131. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27132. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410मे वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410मे वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2720 : विदेह-सदेह 16 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता

प्रश्न 27133. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1411मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27134. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27135. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू/तानका/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू/तानका/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू/तानका/कविता” अछि।

प्रश्न 27136. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति

उत्तर: घ. प्रकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।

प्रश्न 27137. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27138. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू/तानका/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू/तानका/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27139. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27140. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू/तानका/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू/तानका/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27141. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27142. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” प्रविष्टि पद्य, हाइकू/तानका/कविता आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” प्रविष्टि पद्य, हाइकू/तानका/कविता आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2721 : विदेह-सदेह 16 — पम्मी प्रिया झा: रौ सिरगुनमा

प्रश्न 27143. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रौ सिरगुनमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौ सिरगुनमा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1412मे पम्मी प्रिया झाक प्रविष्टि “रौ सिरगुनमा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27144. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27145. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27146. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक विसंगति

उत्तर: घ. सामाजिक विसंगति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विसंगति” अछि।

प्रश्न 27147. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक विसंगति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विसंगति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विसंगति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27148. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पम्मी प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पम्मी प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27149. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27150. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27151. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27152. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412मे पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412मे पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2722 : विदेह-सदेह 16 — झा हेमन्त 'बापी': दानग

प्रश्न 27153. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दानग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दानग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1413मे झा हेमन्त 'बापी'क प्रविष्टि “दानग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27154. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27155. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27156. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज प्रथा विरोधी

उत्तर: घ. दहेज प्रथा विरोधी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज प्रथा विरोधी” अछि।

प्रश्न 27157. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज प्रथा विरोधी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज प्रथा विरोधी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज प्रथा विरोधी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27158. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक झा हेमन्त 'बापी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक झा हेमन्त 'बापी', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27159. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27160. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27161. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27162. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413मे झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दहेज प्रथा विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413मे झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दहेज प्रथा विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2723 : विदेह-सदेह 16 — नवहदनी पाठक: ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल

प्रश्न 27163. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1414मे नवहदनी पाठकक प्रविष्टि “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27164. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27165. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27166. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 27167. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27168. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवहदनी पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवहदनी पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27169. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27170. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27171. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27172. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414मे नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414मे नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2724 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर: अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय

प्रश्न 27173. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1415मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27174. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27175. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय/आलेख” अछि।

प्रश्न 27176. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व

उत्तर: घ. अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व” अछि।

प्रश्न 27177. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27178. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27179. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27180. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीय/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीय/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27181. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27182. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415मे गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415मे गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2725 : विदेह-सदेह 17 — ओम प्रकाश झा: काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल

प्रश्न 27183. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1416मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27184. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27185. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 27186. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधुपक गजल-यात्रा

उत्तर: घ. मधुपक गजल-यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुपक गजल-यात्रा” अछि।

प्रश्न 27187. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मधुपक गजल-यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुपक गजल-यात्रा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुपक गजल-यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27188. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27189. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27190. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27191. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27192. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416मे ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मधुपक गजल-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416मे ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मधुपक गजल-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2726 : विदेह-सदेह 17 — ओम प्रकाश झा: बहुरूपिया रचनामे

प्रश्न 27193. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बहुरूपिया रचनामे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुरूपिया रचनामे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1417मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “बहुरूपिया रचनामे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27194. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27195. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27196. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण

उत्तर: घ. मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 27197. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27198. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27199. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27200. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27201. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27202. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417मे ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417मे ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2727 : विदेह-सदेह 17 — आशीष चमन: अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर

प्रश्न 27203. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1418मे आशीष चमनक प्रविष्टि “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27204. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27205. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 27206. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश

उत्तर: घ. अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश” अछि।

प्रश्न 27207. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27208. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष चमन, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष चमन, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27209. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27210. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर”कैं विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27211. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27212. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418मे आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418मे आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2728 : विदेह-सदेह 17 — डा. योगानन्द झा: अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि

प्रश्न 27213. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1419मे डा. योगानन्द झाक प्रविष्टि “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27214. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27215. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27216. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख

उत्तर: घ. अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख” अछि।

प्रश्न 27217. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27218. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27219. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27220. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27221. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27222. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419मे डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419मे डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2729 : विदेह-सदेह 17 — जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल': अरविन्दजीक आजाद गजल

प्रश्न 27223. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरविन्दजीक आजाद गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्दजीक आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1420मे जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “अरविन्दजीक आजाद गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27224. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27225. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27226. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन

उत्तर: घ. आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 27227. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27228. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27229. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27230. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27231. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27232. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420मे जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420मे जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2730 : विदेह-सदेह 17 — योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’: अन्हारक रखवार

प्रश्न 27233. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्हारक रखवार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हारक रखवार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1421मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क प्रविष्टि “अन्हारक रखवार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27234. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27235. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 27236. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार

उत्तर: घ. अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार” अछि।

प्रश्न 27237. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27238. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27239. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27240. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27241. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27242. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2731 : विदेह-सदेह 17 — योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’: एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता

प्रश्न 27243. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1422मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क प्रविष्टि “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27244. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27245. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 27246. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन

उत्तर: घ. 'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन” अछि।

प्रश्न 27247. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27248. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27249. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27250. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27251. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27252. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2732 : विदेह-सदेह 17 — योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’: जमाना जमानाक स्टाइल

प्रश्न 27253. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जमाना जमानाक स्टाइल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जमाना जमानाक स्टाइल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1423मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क प्रविष्टि “जमाना जमानाक स्टाइल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27254. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27255. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 27256. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण

उत्तर: घ. बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 27257. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27258. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27259. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27260. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27261. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27262. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “जमाना जमानाक स्टाइल” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2733 : विदेह-सदेह 17 — योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’: उचित जगह

प्रश्न 27263. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उचित जगह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उचित जगह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1424मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क प्रविष्टि “उचित जगह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27264. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27265. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 27266. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन

उत्तर: घ. साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन” अछि।

प्रश्न 27267. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27268. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27269. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27270. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27271. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27272. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “उचित जगह” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2734 : विदेह-सदेह 17 — चंद्र मोहन झा 'पडवा': अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज

प्रश्न 27273. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1425मे चंद्र मोहन झा 'पडवा'क प्रविष्टि “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27274. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27275. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 27276. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका

उत्तर: घ. पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका” अछि।

प्रश्न 27277. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27278. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चंद्र मोहन झा 'पडवा', विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चंद्र मोहन झा 'पडवा', विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27279. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27280. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27281. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27282. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425मे चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425मे चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2735 : विदेह-सदेह 17 — डॉ. श्रीमोहन झा: मिशिलाक इतिहास

प्रश्न 27283. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिशिलाक इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिशिलाक इतिहास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1426मे डॉ. श्रीमोहन झाक प्रविष्टि “मिशिलाक इतिहास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27284. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27285. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 27286. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन

उत्तर: घ. मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन” अछि।

प्रश्न 27287. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27288. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. श्रीमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. श्रीमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27289. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27290. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27291. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27292. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426मे डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426मे डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2736 : विदेह-सदेह 17 — डा. शिवकुमार प्रसाद: बनमानुष

प्रश्न 27293. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बनमानुष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बनमानुष

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1427मे डा. शिवकुमार प्रसादक प्रविष्टि “बनमानुष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27294. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27295. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 27296. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यथार्थवादी कथा

उत्तर: घ. यथार्थवादी कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थवादी कथा” अछि।

प्रश्न 27297. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यथार्थवादी कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यथार्थवादी कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थवादी कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27298. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27299. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27300. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27301. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27302. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427मे डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यथार्थवादी कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427मे डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यथार्थवादी कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2737 : विदेह-सदेह 17 — डा. शिवकुमार प्रसाद: जमीला

प्रश्न 27303. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जमीला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जमीला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1428मे डा. शिवकुमार प्रसादक प्रविष्टि “जमीला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27304. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27305. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 27306. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री-जीवन

उत्तर: घ. स्त्री-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-जीवन” अछि।

प्रश्न 27307. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्री-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27308. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27309. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27310. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27311. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27312. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428मे डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “स्त्री-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428मे डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “स्त्री-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2738 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: अंबर (संस्मरण)

प्रश्न 27313. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अंबर (संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंबर (संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1429मे प्रणव झाक प्रविष्टि “अंबर (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27314. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27315. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 27316. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्मकथात्मक

उत्तर: घ. आत्मकथात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मकथात्मक” अछि।

प्रश्न 27317. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्मकथात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मकथात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मकथात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27318. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27319. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27320. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27321. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27322. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429मे प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429मे प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2739 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: तेसर प्रण (संस्मरण)

प्रश्न 27323. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तेसर प्रण (संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तेसर प्रण (संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1430मे प्रणव झाक प्रविष्टि “तेसर प्रण (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27324. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27325. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 27326. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-दर्शन

उत्तर: घ. जीवन-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-दर्शन” अछि।

प्रश्न 27327. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27328. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27329. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27330. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27331. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27332. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430मे प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430मे प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2740 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: अपन अपन धर्म (संस्मरण)

प्रश्न 27333. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन अपन धर्म (संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन अपन धर्म (संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1431मे प्रणव झाक प्रविष्टि “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27334. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27335. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 27336. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धर्म-दर्शन

उत्तर: घ. धर्म-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धर्म-दर्शन” अछि।

प्रश्न 27337. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धर्म-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धर्म-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धर्म-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27338. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27339. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27340. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27341. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27342. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431मे प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “धर्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431मे प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “धर्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2741 : विदेह-सदेह 17 — नन्द विलास राय: दिव्या

प्रश्न 27343. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दिव्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिव्या

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1432मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “दिव्या” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27344. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27345. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 27346. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 27347. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27348. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27349. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27350. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27351. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27352. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432मे नन्द विलास रायक “दिव्या” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432मे नन्द विलास रायक “दिव्या” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2742 : विदेह-सदेह 17 — नन्द विलास राय: सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट

प्रश्न 27353. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1433मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27354. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27355. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 27356. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 27357. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27358. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27359. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27360. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27361. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27362. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433मे नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433मे नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2743 : विदेह-सदेह 17 — अब्दुर रज्जाक: गामक चौबटिया पर

प्रश्न 27363. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गामक चौबटिया पर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक चौबटिया पर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1434मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “गामक चौबटिया पर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27364. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27365. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 27366. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।

प्रश्न 27367. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27368. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27369. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27370. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27371. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27372. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434मे अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434मे अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2744 : विदेह-सदेह 17 — अब्दुर रज्जाक: सैदी परल अछि

प्रश्न 27373. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सैदी परल अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सैदी परल अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1435मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “सैदी परल अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27374. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27375. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 27376. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण परिवेश

उत्तर: घ. ग्रामीण परिवेश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण परिवेश” अछि।

प्रश्न 27377. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण परिवेश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण परिवेश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण परिवेश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27378. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27379. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27380. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27381. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27382. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435मे अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ग्रामीण परिवेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435मे अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ग्रामीण परिवेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2745 : विदेह-सदेह 17 — विन्देश्वर ठाकूर: बेलहाबालीके जितिया

प्रश्न 27383. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेलहाबालीके जितिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेलहाबालीके जितिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1436मे विन्देश्वर ठाकूरक प्रविष्टि “बेलहाबालीके जितिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27384. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27385. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 27386. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 27387. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27388. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27389. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27390. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27391. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27392. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436मे विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436मे विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2746 : विदेह-सदेह 17 — विन्देश्वर ठाकूर: आसे आसमे जिन्गी

प्रश्न 27393. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आसे आसमे जिन्गी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आसे आसमे जिन्गी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1437मे विन्देश्वर ठाकूरक प्रविष्टि “आसे आसमे जिन्गी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27394. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27395. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 27396. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी जीवनक आशा-निराशा

उत्तर: घ. प्रवासी जीवनक आशा-निराशा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवनक आशा-निराशा” अछि।

प्रश्न 27397. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी जीवनक आशा-निराशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी जीवनक आशा-निराशा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवनक आशा-निराशा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27398. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27399. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27400. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27401. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27402. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437मे विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रवासी जीवनक आशा-निराशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437मे विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रवासी जीवनक आशा-निराशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2747 : विदेह-सदेह 17 — राजदेव मण्डल: डरक नदी

प्रश्न 27403. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डरक नदी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डरक नदी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1438मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “डरक नदी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27404. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27405. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 27406. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति

उत्तर: घ. प्रकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।

प्रश्न 27407. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27408. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27409. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27410. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27411. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27412. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438मे राजदेव मण्डलक “डरक नदी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438मे राजदेव मण्डलक “डरक नदी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2748 : विदेह-सदेह 17 — राजदेव मण्डल: पंचैती (लघु पटकथा)

प्रश्न 27413. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पंचैती (लघु पटकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंचैती (लघु पटकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1439मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “पंचैती (लघु पटकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27414. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27415. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पटकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पटकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पटकथा” अछि।

प्रश्न 27416. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण पंचायत व्यवस्था

उत्तर: घ. ग्रामीण पंचायत व्यवस्था

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था” अछि।

प्रश्न 27417. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण पंचायत व्यवस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण पंचायत व्यवस्था

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27418. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा पटकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा पटकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27419. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27420. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पटकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पटकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27421. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27422. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439मे राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” प्रविष्टि गद्य, पटकथा आ “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439मे राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” प्रविष्टि गद्य, पटकथा आ “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2749 : विदेह-सदेह 17 — राजदेव मण्डल: लाज (एकांकी)

प्रश्न 27423. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लाज (एकांकी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाज (एकांकी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1440मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “लाज (एकांकी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27424. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27425. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एकांकी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एकांकी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “एकांकी” अछि।

प्रश्न 27426. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाट्य-विधा

उत्तर: घ. नाट्य-विधा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाट्य-विधा” अछि।

प्रश्न 27427. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाट्य-विधा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाट्य-विधा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाट्य-विधा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27428. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27429. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27430. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ एकांकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ एकांकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27431. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27432. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440मे राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” प्रविष्टि गद्य, एकांकी आ “नाट्य-विधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440मे राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” प्रविष्टि गद्य, एकांकी आ “नाट्य-विधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2750 : विदेह-सदेह 17 — डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”: गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा

प्रश्न 27433. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1441मे डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क प्रविष्टि “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27434. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27435. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27436. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27437. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27438. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27439. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27440. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27441. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27442. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441मे डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441मे डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2751 : विदेह-सदेह 17 — राजदेव मण्डल ‘रमण’: दियादी डाह

प्रश्न 27443. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दियादी डाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दियादी डाह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1442मे राजदेव मण्डल ‘रमण’क प्रविष्टि “दियादी डाह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27444. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27445. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 27446. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 27447. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27448. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल ‘रमण’, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल ‘रमण’, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27449. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27450. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27451. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27452. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442मे राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442मे राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2752 : विदेह-सदेह 17 — राजेन्द्र कुमार प्रधान: जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना

प्रश्न 27453. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1443मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27454. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27455. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 27456. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपन्यास-समीक्षा

उत्तर: घ. उपन्यास-समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27457. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपन्यास-समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपन्यास-समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास-समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27458. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27459. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27460. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27461. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27462. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “उपन्यास-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “उपन्यास-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2753 : विदेह-सदेह 17 — राजेन्द्र कुमार प्रधान: २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना

प्रश्न 27463. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1444मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक प्रविष्टि “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27464. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27465. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 27466. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली उपन्यास

उत्तर: घ. मैथिली उपन्यास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली उपन्यास” अछि।

प्रश्न 27467. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली उपन्यास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली उपन्यास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली उपन्यास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27468. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27469. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27470. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27471. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27472. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मैथिली उपन्यास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मैथिली उपन्यास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2754 : विदेह-सदेह 17 — पंकज कुमार प्रभाकर: समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी

प्रश्न 27473. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1445मे पंकज कुमार प्रभाकरक प्रविष्टि “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27474. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27475. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27476. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपन्यास-समीक्षा

उत्तर: घ. उपन्यास-समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27477. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपन्यास-समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपन्यास-समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास-समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27478. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज कुमार प्रभाकर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज कुमार प्रभाकर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27479. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27480. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27481. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27482. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445मे पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445मे पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विागनी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2755 : विदेह-सदेह 17 — पल्लवी: चोरविद्या

प्रश्न 27483. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चोरविद्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चोरविद्या

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1446मे पल्लवीक प्रविष्टि “चोरविद्या” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27484. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27485. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 27486. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 27487. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27488. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पल्लवी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पल्लवी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27489. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27490. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27491. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27492. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446मे पल्लवीक “चोरविद्या” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446मे पल्लवीक “चोरविद्या” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2756 : विदेह-सदेह 17 — पल्लवी: प्रेण्ड

प्रश्न 27493. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेण्ड

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेण्ड

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1447मे पल्लवीक प्रविष्टि “प्रेण्ड” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27494. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27495. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 27496. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. सामाजिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 27497. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27498. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पल्लवी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पल्लवी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27499. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27500. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27501. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27502. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447मे पल्लवीक “प्रेण्ड” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447मे पल्लवीक “प्रेण्ड” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2757 : विदेह-सदेह 17 — पूनम मण्डल: रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल

प्रश्न 27503. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1448मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27504. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27505. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 27506. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण

उत्तर: घ. 'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण” अछि।

प्रश्न 27507. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27508. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27509. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27510. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27511. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27512. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448मे पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448मे पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2758 : विदेह-सदेह 17 — मुन्नाजी: जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप

प्रश्न 27513. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1449मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27514. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27515. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 27516. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि

उत्तर: घ. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि” अछि।

प्रश्न 27517. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27518. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27519. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27520. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27521. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27522. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449मे मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449मे मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2759 : विदेह-सदेह 17 — मुन्नाजी: परती टूटि गेले

प्रश्न 27523. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परती टूटि गेले

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परती टूटि गेले

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1450मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “परती टूटि गेले” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27524. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27525. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/आलेख” अछि।

प्रश्न 27526. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक विसंगति

उत्तर: घ. सामाजिक विसंगति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विसंगति” अछि।

प्रश्न 27527. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक विसंगति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विसंगति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विसंगति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27528. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27529. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27530. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27531. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27532. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450मे मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/आलेख आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450मे मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/आलेख आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2760 : विदेह-सदेह 17 — मुन्नाजी: अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन

प्रश्न 27533. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1451मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27534. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27535. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 27536. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत

उत्तर: घ. अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत” अछि।

प्रश्न 27537. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27538. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27539. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27540. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27541. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27542. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451मे मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451मे मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2761 : विदेह-सदेह 17 — चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’: अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

प्रश्न 27543. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1452मे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27544. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27545. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र” अछि।

प्रश्न 27546. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक पत्राचार

उत्तर: घ. साहित्यिक पत्राचार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक पत्राचार” अछि।

प्रश्न 27547. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक पत्राचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक पत्राचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक पत्राचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27548. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’, विधा गद्य, उप-विधा पत्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’, विधा गद्य, उप-विधा पत्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27549. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27550. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27551. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27552. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452मे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्यिक पत्राचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452मे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्यिक पत्राचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2762 : विदेह-सदेह 17 — नारायण जी: अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

प्रश्न 27553. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1453मे नारायण जीक प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27554. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27555. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र” अछि।

प्रश्न 27556. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक पत्र

उत्तर: घ. साहित्यिक पत्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक पत्र” अछि।

प्रश्न 27557. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक पत्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक पत्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक पत्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27558. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नारायण जी, विधा गद्य, उप-विधा पत्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नारायण जी, विधा गद्य, उप-विधा पत्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27559. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27560. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27561. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27562. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453मे नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्यिक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453मे नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्यिक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2763 : विदेह-सदेह 17 — प्रमोद कुमार झा: अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

प्रश्न 27563. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1454मे प्रमोद कुमार झाक प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27564. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27565. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र” अछि।

प्रश्न 27566. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य-मित्रता

उत्तर: घ. साहित्य-मित्रता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य-मित्रता” अछि।

प्रश्न 27567. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य-मित्रता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य-मित्रता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य-मित्रता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27568. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रमोद कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा पत्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रमोद कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा पत्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27569. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27570. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27571. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27572. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454मे प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्य-मित्रता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454मे प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्य-मित्रता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2764 : विदेह-सदेह 17 — शैलेन्द्र आनन्द: हाली-हाली बहुधु कोसी

प्रश्न 27573. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाली-हाली बहुधु कोसी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाली-हाली बहुधु कोसी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1455मे शैलेन्द्र आनन्दक प्रविष्टि “हाली-हाली बहुधु कोसी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27574. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27575. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 27576. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोसी क्षेत्रक जन-जीवन

उत्तर: घ. कोसी क्षेत्रक जन-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोसी क्षेत्रक जन-जीवन” अछि।

प्रश्न 27577. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोसी क्षेत्रक जन-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसी क्षेत्रक जन-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोसी क्षेत्रक जन-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27578. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शैलेन्द्र आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शैलेन्द्र आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27579. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27580. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27581. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27582. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455मे शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “कोसी क्षेत्रक जन-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455मे शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “कोसी क्षेत्रक जन-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2765 : विदेह-सदेह 17 — मिशिलेश कुमार राय: अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व

प्रश्न 27583. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1456मे मिशिलेश कुमार रायक प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27584. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27585. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 27586. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण

उत्तर: घ. अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण” अछि।

प्रश्न 27587. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27588. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिशिलेश कुमार राय, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिशिलेश कुमार राय, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27589. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27590. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27591. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27592. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456मे मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456मे मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूरः अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2766 : विदेह-सदेह 17 — अजित आजाद: अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम

प्रश्न 27593. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1457मे अजित आजादक प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27594. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27595. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 27596. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार

उत्तर: घ. आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार” अछि।

प्रश्न 27597. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27598. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अजित आजाद, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अजित आजाद, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27599. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27600. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27601. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27602. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457मे अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457मे अजित आजादक “अरविन्द ठाकूरः हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2767 : विदेह-सदेह 17 — विजयनाथ झा: नव वर्षक एहि मधुर पहरमे

प्रश्न 27603. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नव वर्षक एहि मधुर पहरमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव वर्षक एहि मधुर पहरमे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1458मे विजयनाथ झाक प्रविष्टि “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27604. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27605. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27606. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नववर्ष-स्वागत

उत्तर: घ. नववर्ष-स्वागत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नववर्ष-स्वागत” अछि।

प्रश्न 27607. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नववर्ष-स्वागत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नववर्ष-स्वागत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नववर्ष-स्वागत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27608. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27609. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27610. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27611. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27612. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458मे विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नववर्ष-स्वागत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458मे विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नववर्ष-स्वागत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2768 : विदेह-सदेह 17 — विजयनाथ झा: हमर नाम परिचय सादर सुरत हम

प्रश्न 27613. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर नाम परिचय सादर सुरत हम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर नाम परिचय सादर सुरत हम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1459मे विजयनाथ झाक प्रविष्टि “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27614. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27615. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27616. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिचयात्मक

उत्तर: घ. परिचयात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिचयात्मक” अछि।

प्रश्न 27617. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिचयात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिचयात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिचयात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27618. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27619. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27620. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27621. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27622. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459मे विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परिचयात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459मे विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परिचयात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2769 : विदेह-सदेह 17 — विजयनाथ झा: चेतना केर नव सृजनमे

प्रश्न 27623. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चेतना केर नव सृजनमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेतना केर नव सृजनमे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1460मे विजयनाथ झाक प्रविष्टि “चेतना केर नव सृजनमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27624. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27625. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27626. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चेतना आ सृजन

उत्तर: घ. चेतना आ सृजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चेतना आ सृजन” अछि।

प्रश्न 27627. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चेतना आ सृजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेतना आ सृजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चेतना आ सृजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27628. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27629. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27630. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27631. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27632. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460मे विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चेतना आ सृजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460मे विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चेतना आ सृजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2770 : विदेह-सदेह 17 — रमेश: महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)

प्रश्न 27633. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1461मे रमेशक प्रविष्टि “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27634. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27635. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दीर्घ गद्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दीर्घ गद्य कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घ गद्य कविता” अछि।

प्रश्न 27636. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रयोगात्मक

उत्तर: घ. प्रयोगात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रयोगात्मक” अछि।

प्रश्न 27637. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रयोगात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रयोगात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रयोगात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27638. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा दीर्घ गद्य कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा दीर्घ गद्य कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27639. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27640. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दीर्घ गद्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दीर्घ गद्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27641. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27642. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461मे रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” प्रविष्टि पद्य, दीर्घ गद्य कविता आ “प्रयोगात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461मे रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” प्रविष्टि पद्य, दीर्घ गद्य कविता आ “प्रयोगात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2771 : विदेह-सदेह 17 — सुकोसुत शिशिर: मोन विकल

प्रश्न 27643. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मोन विकल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोन विकल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1462मे सुकोसुत शिशिरक प्रविष्टि “मोन विकल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27644. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27645. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27646. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्म-विमर्श

उत्तर: घ. आत्म-विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्म-विमर्श” अछि।

प्रश्न 27647. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्म-विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्म-विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्म-विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27648. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुकोसुत शिशिर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुकोसुत शिशिर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27649. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27650. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27651. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27652. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462मे सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्म-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462मे सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्म-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2772 : विदेह-सदेह 17 — सुकोसुत शिशिर: पडिकल जम

प्रश्न 27653. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पडिकल जम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पडिकल जम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1463मे सुकोसुत शिशिरक प्रविष्टि “पडिकल जम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27654. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27655. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27656. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 27657. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27658. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुकोसुत शिशिर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुकोसुत शिशिर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27659. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27660. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27661. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27662. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463मे सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463मे सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2773 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ

प्रश्न 27663. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1464मे प्रणव झाक प्रविष्टि “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27664. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27665. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27666. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला-चेतना

उत्तर: घ. मिथिला-चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला-चेतना” अछि।

प्रश्न 27667. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला-चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला-चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला-चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27668. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27669. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27670. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27671. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27672. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464मे प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464मे प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2774 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: अकांड तांडव

प्रश्न 27673. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अकांड तांडव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकांड तांडव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1465मे प्रणव झाक प्रविष्टि “अकांड तांडव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27674. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27675. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27676. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रलय-चित्रण

उत्तर: घ. प्रलय-चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रलय-चित्रण” अछि।

प्रश्न 27677. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रलय-चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रलय-चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रलय-चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27678. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27679. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27680. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27681. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27682. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465मे प्रणव झाक “अकांड तांडव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रलय-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465मे प्रणव झाक “अकांड तांडव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रलय-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2775 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)

प्रश्न 27683. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1466मे प्रणव झाक प्रविष्टि “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27684. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27685. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 27686. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-मनोरंजन

उत्तर: घ. बाल-मनोरंजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोरंजन” अछि।

प्रश्न 27687. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मनोरंजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मनोरंजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोरंजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27688. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27689. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27690. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27691. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27692. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466मे प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466मे प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2776 : विदेह-सदेह 17 — राजदेव मण्डल ‘रमण’: जुरमाना करेए...

प्रश्न 27693. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जुरमाना करेए...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जुरमाना करेए...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1467मे राजदेव मण्डल ‘रमण’क प्रविष्टि “जुरमाना करेए...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27694. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27695. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27696. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 27697. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27698. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल ‘रमण’, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल ‘रमण’, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27699. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27700. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27701. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27702. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467मे राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467मे राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2777 : विदेह-सदेह 17 — किशन कारीगर: गजल सन किछु

प्रश्न 27703. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल सन किछु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल सन किछु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1468मे किशन कारीगरक प्रविष्टि “गजल सन किछु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27704. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27705. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 27706. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार

उत्तर: घ. शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

प्रश्न 27707. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27708. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27709. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27710. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27711. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27712. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468मे किशन कारीगरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468मे किशन कारीगरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2778 : विदेह-सदेह 17 — अशरफ राईन: गजल

प्रश्न 27713. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1469मे अशरफ राईनक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27714. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27715. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 27716. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 27717. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27718. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशरफ राईन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशरफ राईन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27719. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27720. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27721. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27722. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469मे अशरफ राईनक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469मे अशरफ राईनक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2779 : विदेह-सदेह 17 — डॉ. उमा शंकर चौधरी: दू आखर

प्रश्न 27723. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दू आखर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू आखर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1470मे डॉ. उमा शंकर चौधरीक प्रविष्टि “दू आखर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27724. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27725. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कविता” अछि।

प्रश्न 27726. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाव-संक्षेप

उत्तर: घ. भाव-संक्षेप

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाव-संक्षेप” अछि।

प्रश्न 27727. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाव-संक्षेप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाव-संक्षेप

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाव-संक्षेप” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27728. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. उमा शंकर चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा लघु कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. उमा शंकर चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा लघु कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27729. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27730. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27731. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27732. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470मे डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” प्रविष्टि पद्य, लघु कविता आ “भाव-संक्षेप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470मे डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” प्रविष्टि पद्य, लघु कविता आ “भाव-संक्षेप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2780 : विदेह-सदेह 17 — चित्रा अंशु: अस्तित्वकेँ चिन्हू

प्रश्न 27733. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकेँ चिन्हू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अस्तित्वकेँ चिन्हू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्वकेँ चिन्हू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1471मे चित्रा अंशुक प्रविष्टि “अस्तित्वकेँ चिन्हू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27734. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकेँ चिन्हू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27735. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 27736. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 27737. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27738. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चित्रा अंशु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चित्रा अंशु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27739. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27740. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27741. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकेँ चिन्हू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27742. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471मे चित्रा अंशुक “अस्तित्वकेँ चिन्हू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471मे चित्रा अंशुक “अस्तित्वकेँ चिन्हू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2781 : विदेह-सदेह 17 — बीणा प्रसाद: निर्मलीक गीत

प्रश्न 27743. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निर्मलीक गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निर्मलीक गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1472मे बीणा प्रसादक प्रविष्टि “निर्मलीक गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27744. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27745. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 27746. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-गीत

उत्तर: घ. लोक-गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-गीत” अछि।

प्रश्न 27747. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27748. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बीणा प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बीणा प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27749. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27750. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27751. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27752. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472मे बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोक-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472मे बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोक-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2782 : विदेह-सदेह 17 — राम विलास साहू: किछु तानका (बहुते)

प्रश्न 27753. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु तानका (बहुते)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु तानका (बहुते)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1473मे राम विलास साहूक प्रविष्टि “किछु तानका (बहुते)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27754. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27755. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तानका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तानका

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तानका” अछि।

प्रश्न 27756. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति

उत्तर: घ. प्रकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।

प्रश्न 27757. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27758. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहू, विधा पद्य, उप-विधा तानका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहू, विधा पद्य, उप-विधा तानका

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27759. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27760. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ तानकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ तानकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27761. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27762. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473मे राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, तानका आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473मे राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, तानका आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2783 : विदेह-सदेह 18 — गजेन्द्र ठाकूर: सम्पादकीय

प्रश्न 27763. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सम्पादकीय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्पादकीय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1474मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “सम्पादकीय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27764. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27765. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।

प्रश्न 27766. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक

उत्तर: घ. 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 27767. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27768. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27769. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27770. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27771. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27772. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474मे गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474मे गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2784 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)

प्रश्न 27773. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1475मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27774. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27775. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आत्मकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आत्मकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आत्मकथा” अछि।

प्रश्न 27776. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।

उत्तर: घ. अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।” अछि।

प्रश्न 27777. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27778. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा आत्मकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा आत्मकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27779. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27780. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आत्मकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आत्मकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27781. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27782. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” प्रविष्टि गद्य, आत्मकथा आ “अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” प्रविष्टि गद्य, आत्मकथा आ “अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2785 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता

प्रश्न 27783. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1476मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27784. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27785. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी” अछि।

प्रश्न 27786. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।

उत्तर: घ. सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।” अछि।

प्रश्न 27787. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27788. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27789. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27790. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27791. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27792. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी आ “सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी आ “सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2786 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’

प्रश्न 27793. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1477मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27794. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27795. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आत्मालोचनात्मक लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आत्मालोचनात्मक लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आत्मालोचनात्मक लेख” अछि।

प्रश्न 27796. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'गजल-गुंगा' केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।

उत्तर: घ. 'गजल-गुंगा' केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'गजल-गुंगा' केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।” अछि।

प्रश्न 27797. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'गजल-गुंगा' केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गजल-गुंगा' केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'गजल-गुंगा' केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27798. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा आत्मालोचनात्मक लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा आत्मालोचनात्मक लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27799. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27800. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आत्मालोचनात्मक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आत्मालोचनात्मक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27801. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27802. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” प्रविष्टि गद्य, आत्मालोचनात्मक लेख आ “'गजल-गुंगा' केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” प्रविष्टि गद्य, आत्मालोचनात्मक लेख आ “'गजल-गुंगा' केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2787 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’

प्रश्न 27803. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1478मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27804. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27805. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 27806. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर" वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।

उत्तर: घ. आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर" वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर" वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।” अछि।

प्रश्न 27807. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर" वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर" वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर" वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27808. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27809. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27810. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27811. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27812. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर" वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर" वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2788 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: रामक ‘अम्बरा’

प्रश्न 27813. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रामक ‘अम्बरा’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामक ‘अम्बरा’

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1479मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “रामक ‘अम्बरा’” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27814. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27815. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27816. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।

उत्तर: घ. राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।” अछि।

प्रश्न 27817. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27818. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27819. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27820. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27821. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27822. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2789 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल

प्रश्न 27823. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1480मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27824. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27825. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27826. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।

उत्तर: घ. सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।” अछि।

प्रश्न 27827. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27828. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27829. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27830. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27831. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27832. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2790 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: अरविन्दजीक आजाद गजल

प्रश्न 27833. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरविन्दजीक आजाद गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्दजीक आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1481मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “अरविन्दजीक आजाद गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27834. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27835. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27836. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।

उत्तर: घ. अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।” अछि।

प्रश्न 27837. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27838. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27839. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27840. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27841. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27842. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2791 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: कोरांटी (एकांकी)

प्रश्न 27843. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोरांटी (एकांकी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोरांटी (एकांकी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1482मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “कोरांटी (एकांकी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27844. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27845. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एकांकी नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एकांकी नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “एकांकी नाटक” अछि।

प्रश्न 27846. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।

उत्तर: घ. विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।” अछि।

प्रश्न 27847. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27848. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27849. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27850. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ एकांकी नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ एकांकी नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27851. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27852. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)” प्रविष्टि गद्य, एकांकी नाटक आ “विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)” प्रविष्टि गद्य, एकांकी नाटक आ “विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2792 : विदेह-सदेह 18 — विनीत उत्पल: नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)

प्रश्न 27853. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1483मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27854. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27855. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27856. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।” अछि।

प्रश्न 27857. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27858. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27859. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27860. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27861. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27862. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483मे विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483मे विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2793 : विदेह-सदेह 18 — कामिनी कामायनी: नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)

प्रश्न 27863. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1484मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27864. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/गद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/गद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/गद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27865. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा” अछि।

प्रश्न 27866. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।

उत्तर: घ. यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।” अछि।

प्रश्न 27867. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27868. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य/गद्य/गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य/गद्य/गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27869. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27870. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य/गद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथाक रूपमे गद्य/गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथाक रूपमे गद्य/गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27871. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27872. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484मे कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य/गद्य/गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा आ “यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484मे कामिनी कामायनीक “नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य/गद्य/गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा आ “यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2794 : विदेह-सदेह 18 — कामिनी कामायनी: गीत-गंगा (समीक्षा)

प्रश्न 27873. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत-गंगा (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत-गंगा (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1485मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “गीत-गंगा (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27874. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27875. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27876. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।

उत्तर: घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।” अछि।

प्रश्न 27877. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27878. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27879. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27880. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27881. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27882. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485मे कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485मे कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2795 : विदेह-सदेह 18 — रतन झा: मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप

प्रश्न 27883. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1486मे रतन झाक प्रविष्टि “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27884. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27885. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27886. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।

उत्तर: घ. समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।” अछि।

प्रश्न 27887. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27888. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रतन झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रतन झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27889. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27890. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27891. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27892. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486मे रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/समीक्षा आ “समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486मे रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/समीक्षा आ “समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2796 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. विद्यानाथ झा: डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य

प्रश्न 27893. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1487मे डॉ. विद्यानाथ झाक प्रविष्टि “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27894. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27895. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/स्वास्थ्य लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/स्वास्थ्य लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/स्वास्थ्य लेख” अछि।

प्रश्न 27896. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।

उत्तर: घ. स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।” अछि।

प्रश्न 27897. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27898. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. विद्यानाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/स्वास्थ्य लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. विद्यानाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/स्वास्थ्य लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27899. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27900. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/स्वास्थ्य लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/स्वास्थ्य लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27901. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27902. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487मे डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/स्वास्थ्य लेख आ “स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487मे डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/स्वास्थ्य लेख आ “स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2797 : विदेह-सदेह 18 — कामिनी: गीत-गंगा (समीक्षा)

प्रश्न 27903. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत-गंगा (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत-गंगा (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1488मे कामिनीक प्रविष्टि “गीत-गंगा (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27904. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27905. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27906. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।

उत्तर: घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।” अछि।

प्रश्न 27907. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27908. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27909. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27910. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27911. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27912. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488मे कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488मे कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गुंगा" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2798 : विदेह-सदेह 18 — जगदानन्द झा 'मनु': "गजल गंगा" (समीक्षा)

प्रश्न 27913. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "गजल गंगा" (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "गजल गंगा" (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1489मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “"गजल गंगा" (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27914. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27915. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27916. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन "गजल-गुंगा" पर समीक्षा।

उत्तर: घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन "गजल-गुंगा" पर समीक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन "गजल-गुंगा" पर समीक्षा।” अछि।

प्रश्न 27917. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन "गजल-गुंगा" पर समीक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन "गजल-गुंगा" पर समीक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन "गजल-गुंगा" पर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27918. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27919. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27920. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27921. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27922. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489मे जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन "गजल-गुंगा" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489मे जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन "गजल-गुंगा" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2799 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. अजीत मिश्र: मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)

प्रश्न 27923. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1490मे डॉ. अजीत मिश्रक प्रविष्टि “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27924. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27925. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27926. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।

उत्तर: घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।” अछि।

प्रश्न 27927. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27928. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अजीत मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अजीत मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27929. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27930. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27931. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27932. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490मे डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490मे डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2800 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: धारक "अइ" पार (समीक्षा)

प्रश्न 27933. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. धारक "अइ" पार (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धारक "अइ" पार (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1491मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27934. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27935. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 27936. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।

उत्तर: घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।” अछि।

प्रश्न 27937. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27938. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27939. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27940. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27941. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27942. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491मे आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491मे आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2801 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)

प्रश्न 27943. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1492मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27944. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27945. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।

प्रश्न 27946. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 27947. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27948. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27949. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27950. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27951. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27952. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492मे आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492मे आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2802 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)

प्रश्न 27953. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1493मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27954. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27955. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 27956. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।

उत्तर: घ. लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।” अछि।

प्रश्न 27957. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27958. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27959. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27960. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27961. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27962. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493मे आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493मे आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2803 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)

प्रश्न 27963. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1494मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27964. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27965. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।

प्रश्न 27966. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।

उत्तर: घ. सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 27967. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27968. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27969. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27970. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27971. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27972. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494मे आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494मे आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2804 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)

प्रश्न 27973. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1495मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27974. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27975. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।

प्रश्न 27976. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।

उत्तर: घ. वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 27977. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27978. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27979. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27980. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27981. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27982. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495मे आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495मे आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2805 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)

प्रश्न 27983. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1496मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27984. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27985. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।

प्रश्न 27986. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

उत्तर: घ. साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 27987. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27988. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27989. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 27990. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 27991. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 27992. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496मे आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496मे आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मिपिशाच (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2806 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: बाल गजल

प्रश्न 27993. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1497मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 27994. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 27995. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल (बाल)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल (बाल)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल (बाल)” अछि।

प्रश्न 27996. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक

उत्तर: घ. 'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक” अछि।

प्रश्न 27997. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 27998. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल (बाल)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल (बाल)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 27999. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28000. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल (बाल)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल (बाल)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड 2806 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: बाल गजल

प्रश्न 28001. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28002. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497मे आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल (बाल) आ “'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497मे आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल (बाल) आ “'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2807 : विदेह-सदेह 18 — परमानन्द प्रभाकर: कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा

प्रश्न 28003. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1498मे परमानन्द प्रभाकरक प्रविष्टि “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28004. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28005. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 28006. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

उत्तर: घ. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” अछि।

प्रश्न 28007. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28008. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक परमानन्द प्रभाकर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक परमानन्द प्रभाकर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28009. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28010. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28011. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28012. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498मे परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498मे परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2808 : विदेह-सदेह 18 — छत्रानन्द सिंह झा: ‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि

प्रश्न 28013. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1499मे छत्रानन्द सिंह झाक प्रविष्टि “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28014. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28015. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 28016. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

उत्तर: घ. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” अछि।

प्रश्न 28017. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28018. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक "'गीत-गंगा'मे सब किछु अछि"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक छत्रानन्द सिंह झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक छत्रानन्द सिंह झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28019. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक "'गीत-गंगा'मे सब किछु अछि" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28020. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक "'गीत-गंगा'मे सब किछु अछि"केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28021. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक "'गीत-गंगा'मे सब किछु अछि" प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28022. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499मे छत्रानन्द सिंह झाक "'गीत-गंगा'मे सब किछु अछि" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499मे छत्रानन्द सिंह झाक "'गीत-गंगा'मे सब किछु अछि" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2809 : विदेह-सदेह 18 — केदार कानन: गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)

प्रश्न 28023. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1500मे केदार काननक प्रविष्टि “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28024. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28025. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 28026. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

उत्तर: घ. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” अछि।

प्रश्न 28027. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28028. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28029. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28030. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28031. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28032. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500मे केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500मे केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2810 : विदेह-सदेह 18 — केदार कानन: सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)

प्रश्न 28033. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1501मे केदार काननक प्रविष्टि “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28034. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28035. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 28036. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रमानन्द रेणु पर संस्मरण।

उत्तर: घ. रमानन्द रेणु पर संस्मरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रमानन्द रेणु पर संस्मरण।” अछि।

प्रश्न 28037. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रमानन्द रेणु पर संस्मरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रमानन्द रेणु पर संस्मरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रमानन्द रेणु पर संस्मरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28038. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28039. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28040. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28041. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28042. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501मे केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “रमानन्द रेणु पर संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501मे केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “रमानन्द रेणु पर संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2811 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. अमर नाथ ठाकूर: ‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)

प्रश्न 28043. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1502मे डॉ. अमर नाथ ठाकूरक प्रविष्टि “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28044. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28045. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 28046. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

उत्तर: घ. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” अछि।

प्रश्न 28047. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28048. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अमर नाथ ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अमर नाथ ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28049. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28050. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28051. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28052. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502मे डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502मे डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2812 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”: अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)

प्रश्न 28053. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1503मे डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क प्रविष्टि “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28054. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28055. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 28056. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर प्रकाश डालैत आलेख।

उत्तर: घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर प्रकाश डालैत आलेख।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर प्रकाश डालैत आलेख।” अछि।

प्रश्न 28057. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर प्रकाश डालैत आलेख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर प्रकाश डालैत आलेख।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर प्रकाश डालैत आलेख।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28058. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28059. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28060. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28061. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28062. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503मे डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर प्रकाश डालैत आलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503मे डॉ. शशिधर कूमर “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्त्व (आलेख)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर प्रकाश डालैत आलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2813 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारी: भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)

प्रश्न 28063. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1504मे डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक प्रविष्टि “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28064. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28065. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कथा (विज्ञान)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कथा (विज्ञान)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कथा (विज्ञान)” अछि।

प्रश्न 28066. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल मनोविज्ञानकेँ ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।

उत्तर: घ. बाल मनोविज्ञानकेँ ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञानकेँ ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।” अछि।

प्रश्न 28067. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल मनोविज्ञानकेँ ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञानकेँ ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञानकेँ ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28068. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बाल कथा (विज्ञान)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बाल कथा (विज्ञान)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28069. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28070. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कथा (विज्ञान)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कथा (विज्ञान)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28071. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28072. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504मे डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल कथा (विज्ञान) आ “बाल मनोविज्ञानकेँ ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504मे डॉ. शशिधर कुमर “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल कथा (विज्ञान) आ “बाल मनोविज्ञानकेँ ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2814 : विदेह-सदेह 18 — सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा): जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा

प्रश्न 28073. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1505मे सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क प्रविष्टि “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28074. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28075. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण/व्यंग्य कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण/व्यंग्य कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण/व्यंग्य कथा” अछि।

प्रश्न 28076. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनिलजी पर संस्मरण।

उत्तर: घ. अनिलजी पर संस्मरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनिलजी पर संस्मरण।” अछि।

प्रश्न 28077. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनिलजी पर संस्मरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनिलजी पर संस्मरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनिलजी पर संस्मरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28078. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा), विधा गद्य/गद्य, उप-विधा संस्मरण/व्यंग्य कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा), विधा गद्य/गद्य, उप-विधा संस्मरण/व्यंग्य कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28079. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28080. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरण/व्यंग्य कथाक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरण/व्यंग्य कथाक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28081. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28082. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505मे सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, संस्मरण/व्यंग्य कथा आ “अनिलजी पर संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505मे सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, संस्मरण/व्यंग्य कथा आ “अनिलजी पर संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2815 : विदेह-सदेह 18 — बाल मुकुन्द पाठक: मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)

प्रश्न 28083. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1506मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28084. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28085. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 28086. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।

उत्तर: घ. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।” अछि।

प्रश्न 28087. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28088. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28089. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28090. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28091. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28092. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506मे बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506मे बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2816 : विदेह-सदेह 18 — अरविन्द ठाकूर: ‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)

प्रश्न 28093. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1507मे अरविन्द ठाकूरक प्रविष्टि “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28094. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28095. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 28096. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'गीत-गुंगा' पर समीक्षात्मक लेख।

उत्तर: घ. 'गीत-गुंगा' पर समीक्षात्मक लेख।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'गीत-गुंगा' पर समीक्षात्मक लेख।” अछि।

प्रश्न 28097. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'गीत-गुंगा' पर समीक्षात्मक लेख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गीत-गुंगा' पर समीक्षात्मक लेख।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'गीत-गुंगा' पर समीक्षात्मक लेख।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28098. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरविन्द ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरविन्द ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28099. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28100. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28101. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28102. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507मे अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “'गीत-गुंगा' पर समीक्षात्मक लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507मे अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “'गीत-गुंगा' पर समीक्षात्मक लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2817 : विदेह-सदेह 18 — मुन्नाजी: (विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)

प्रश्न 28103. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. (विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1508मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28104. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28105. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 28106. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।

उत्तर: घ. अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।” अछि।

प्रश्न 28107. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28108. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28109. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28110. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28111. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28112. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508मे मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508मे मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2818 : विदेह-सदेह 18 — मुन्नाजी: प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट

प्रश्न 28113. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1509मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28114. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28115. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य कथा” अछि।

प्रश्न 28116. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।

उत्तर: घ. समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।” अछि।

प्रश्न 28117. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28118. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28119. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28120. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28121. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28122. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509मे मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य कथा आ “समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509मे मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य कथा आ “समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2819 : विदेह-सदेह 18 — मुन्नाजी: धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी

प्रश्न 28123. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1510मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28124. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28125. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 28126. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ज्योति चौधरीक रचना "देवीजी" केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।

उत्तर: घ. ज्योति चौधरीक रचना "देवीजी" केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ज्योति चौधरीक रचना "देवीजी" केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।” अछि।

प्रश्न 28127. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ज्योति चौधरीक रचना "देवीजी" केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्योति चौधरीक रचना "देवीजी" केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ज्योति चौधरीक रचना "देवीजी" केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28128. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28129. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28130. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28131. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28132. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510मे मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/निबन्ध आ “ज्योति चौधरीक रचना "देवीजी" केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510मे मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/निबन्ध आ “ज्योति चौधरीक रचना "देवीजी" केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2820 : विदेह-सदेह 18 — मुन्नाजी: अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)

प्रश्न 28133. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1511मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28134. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28135. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद (लघुकथा)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद (लघुकथा)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद (लघुकथा)” अछि।

प्रश्न 28136. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।

उत्तर: घ. उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।” अछि।

प्रश्न 28137. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28138. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद (लघुकथा)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28139. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28140. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद (लघुकथा)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद (लघुकथा)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28141. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28142. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511मे मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद (लघुकथा) आ “उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511मे मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद (लघुकथा) आ “उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2821 : विदेह-सदेह 18 — राम लोचन ठाकूर: रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)

प्रश्न 28143. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1512मे राम लोचन ठाकूरक प्रविष्टि “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28144. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28145. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 28146. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।

उत्तर: घ. रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।” अछि।

प्रश्न 28147. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28148. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम लोचन ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम लोचन ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28149. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28150. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28151. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28152. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512मे राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512मे राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2822 : विदेह-सदेह 18 — योगेन्द्र पाठक “वियोगी”: एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)

प्रश्न 28153. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1513मे योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क प्रविष्टि “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28154. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28155. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 28156. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।

उत्तर: घ. राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।” अछि।

प्रश्न 28157. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28158. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगेन्द्र पाठक “वियोगी”, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगेन्द्र पाठक “वियोगी”, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28159. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28160. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28161. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28162. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513मे योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513मे योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2823 : विदेह-सदेह 18 — नवो नारायण मिश्र: युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास

प्रश्न 28163. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1514मे नवो नारायण मिश्रक प्रविष्टि “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28164. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28165. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/रेखाचित्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/रेखाचित्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/रेखाचित्र” अछि।

प्रश्न 28166. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर लेख।

उत्तर: घ. राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर लेख।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर लेख।” अछि।

प्रश्न 28167. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर लेख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर लेख।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर लेख।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28168. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवो नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/रेखाचित्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवो नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/रेखाचित्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28169. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28170. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28171. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28172. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514मे नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” प्रविष्टि गद्य, आलेख/रेखाचित्र आ “राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514मे नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” प्रविष्टि गद्य, आलेख/रेखाचित्र आ “राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्त्व पर लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2824 : विदेह-सदेह 18 — ओम प्रकाश झा: विशोहक नोर (व्यंग्य)

प्रश्न 28173. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विशोहक नोर (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विशोहक नोर (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1515मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “विशोहक नोर (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28174. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28175. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28176. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।

उत्तर: घ. तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।” अछि।

प्रश्न 28177. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28178. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28179. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28180. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28181. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28182. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515मे ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515मे ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2825 : विदेह-सदेह 18 — ओम प्रकाश झा: मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)

प्रश्न 28183. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1516मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28184. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28185. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28186. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28187. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28188. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28189. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28190. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28191. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28192. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516मे ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516मे ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2826 : विदेह-सदेह 18 — अनिल झा: अनटोटल गप (व्यंग्य)

प्रश्न 28193. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनटोटल गप (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनटोटल गप (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1517मे अनिल झाक प्रविष्टि “अनटोटल गप (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28194. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28195. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28196. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।

उत्तर: घ. राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28197. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28198. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनिल झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनिल झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28199. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28200. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28201. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28202. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517मे अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517मे अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2827 : विदेह-सदेह 18 — रवि भूषण पाठक: दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)

प्रश्न 28203. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1518मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28204. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28205. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28206. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28207. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28208. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28209. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28210. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28211. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28212. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518मे रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518मे रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2828 : विदेह-सदेह 18 — रवि भूषण पाठक: दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)

प्रश्न 28213. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1519मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28214. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28215. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु कथा (व्यंग्य)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु कथा (व्यंग्य)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा (व्यंग्य)” अछि।

प्रश्न 28216. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28217. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28218. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा (व्यंग्य)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28219. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28220. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु कथा (व्यंग्य)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु कथा (व्यंग्य)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28221. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28222. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519मे रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा (व्यंग्य) आ “नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519मे रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा (व्यंग्य) आ “नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2829 : विदेह-सदेह 18 — रवि भूषण पाठक: फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)

प्रश्न 28223. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1520मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28224. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28225. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28226. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28227. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28228. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28229. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28230. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28231. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28232. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520मे रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520मे रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2830 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र

प्रश्न 28233. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1521मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28234. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28235. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र” अछि।

प्रश्न 28236. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।

उत्तर: घ. जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।” अछि।

प्रश्न 28237. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28238. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा पत्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा पत्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28239. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28240. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28241. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28242. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2831 : विदेह-सदेह 18 — राजदेव मण्डल: अवाक (लघुकथा)

प्रश्न 28243. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अवाक (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अवाक (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1522मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अवाक (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28244. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28245. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा” अछि।

प्रश्न 28246. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।

उत्तर: घ. सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।” अछि।

प्रश्न 28247. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28248. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28249. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28250. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28251. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28252. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522मे राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522मे राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2832 : विदेह-सदेह 18 — विन्देश्वर ठाकूर: राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा

प्रश्न 28253. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1523मे विन्देश्वर ठाकूरक प्रविष्टि “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28254. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28255. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28256. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।

उत्तर: घ. सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” अछि।

प्रश्न 28257. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28258. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य/गद्य, उप-विधा व्यंग्य/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य/गद्य, उप-विधा व्यंग्य/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28259. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28260. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28261. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28262. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523मे विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, व्यंग्य/व्यंग्य आ “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523मे विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, व्यंग्य/व्यंग्य आ “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2833 : विदेह-सदेह 18 — अब्दुर रज्जाक: किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा

प्रश्न 28263. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1524मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28264. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28265. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28266. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।

उत्तर: घ. सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” अछि।

प्रश्न 28267. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28268. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य/गद्य, उप-विधा व्यंग्य/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य/गद्य, उप-विधा व्यंग्य/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28269. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28270. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28271. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28272. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524मे अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, व्यंग्य/व्यंग्य आ “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524मे अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, व्यंग्य/व्यंग्य आ “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2834 : विदेह-सदेह 18 — अब्दुर रज्जाक: कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)

प्रश्न 28273. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1525मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28274. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28275. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

प्रश्न 28276. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।

उत्तर: घ. प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।” अछि।

प्रश्न 28277. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28278. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28279. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28280. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28281. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28282. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525मे अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525मे अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2835 : विदेह-सदेह 18 — अब्दुर रज्जाक: दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)

प्रश्न 28283. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1526मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28284. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28285. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 28286. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।

उत्तर: घ. प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।” अछि।

प्रश्न 28287. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28288. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28289. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28290. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28291. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28292. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526मे अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526मे अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2836 : विदेह-सदेह 18 — उमेश मण्डल: मुड़नक मुर (व्यंग्य)

प्रश्न 28293. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुड़नक मुर (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुड़नक मुर (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1527मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28294. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28295. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28296. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।

उत्तर: घ. पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28297. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28298. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28299. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28300. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28301. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28302. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527मे उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527मे उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2837 : विदेह-सदेह 18 — उमेश मण्डल: रिपोटा-- सगर राति दीप जरल

प्रश्न 28303. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रिपोटा-- सगर राति दीप जरल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिपोटा-- सगर राति दीप जरल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1528मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28304. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28305. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 28306. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।

उत्तर: घ. 'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।” अछि।

प्रश्न 28307. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28308. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28309. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28310. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28311. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28312. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528मे उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528मे उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2838 : विदेह-सदेह 18 — उमेश मण्डल: 88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)

प्रश्न 28313. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1529मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28314. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28315. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 28316. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।

उत्तर: घ. मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।” अछि।

प्रश्न 28317. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28318. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28319. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28320. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28321. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28322. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529मे उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529मे उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2839 : विदेह-सदेह 18 — अखिलेश कुमार: बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)

प्रश्न 28323. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1530मे अखिलेश कुमारक प्रविष्टि “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28324. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28325. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 28326. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।

उत्तर: घ. बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।” अछि।

प्रश्न 28327. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28328. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अखिलेश कुमार, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अखिलेश कुमार, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28329. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28330. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28331. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28332. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530मे अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530मे अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2840 : विदेह-सदेह 18 — राम विलास साह: ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)

प्रश्न 28333. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1531मे राम विलास साहक प्रविष्टि “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28334. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28335. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28336. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।

उत्तर: घ. सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।” अछि।

प्रश्न 28337. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28338. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28339. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28340. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28341. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28342. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531मे राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531मे राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2841 : विदेह-सदेह 18 — राम विलास साह: चोर-सिपाही (व्यंग्य)

प्रश्न 28343. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चोर-सिपाही (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चोर-सिपाही (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1532मे राम विलास साहक प्रविष्टि “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28344. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28345. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28346. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28347. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28348. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28349. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28350. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28351. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28352. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532मे राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532मे राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2842 : विदेह-सदेह 18 — राम विलास साह: जाति (व्यंग्य)

प्रश्न 28353. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जाति (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाति (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1533मे राम विलास साहक प्रविष्टि “जाति (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28354. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28355. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28356. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28357. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28358. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28359. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28360. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28361. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28362. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533मे राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533मे राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2843 : विदेह-सदेह 18 — लक्ष्मी दास: बापक धरम (व्यंग्य)

प्रश्न 28363. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बापक धरम (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बापक धरम (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1534मे लक्ष्मी दासक प्रविष्टि “बापक धरम (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28364. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28365. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28366. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28367. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28368. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28369. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28370. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28371. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28372. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534मे लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534मे लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2844 : विदेह-सदेह 18 — ललन कुमार कामत: बाबाक लोटा (व्यंग्य)

प्रश्न 28373. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाबाक लोटा (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबाक लोटा (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1535मे ललन कुमार कामतक प्रविष्टि “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28374. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28375. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 28376. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।” अछि।

प्रश्न 28377. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28378. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28379. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28380. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28381. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28382. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535मे ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535मे ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2845 : विदेह-सदेह 18 — मुन्नाजी: गजल, कविता ऐब की बेरिया

प्रश्न 28383. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल, कविता ऐब की बेरिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल, कविता ऐब की बेरिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1536मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “गजल, कविता ऐब की बेरिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28384. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28385. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कविता” अछि।

प्रश्न 28386. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।

उत्तर: घ. प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।” अछि।

प्रश्न 28387. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28388. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28389. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28390. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28391. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28392. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536मे मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536मे मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2846 : विदेह-सदेह 18 — रमेश: ताजीवन हमर नहि (कविता)

प्रश्न 28393. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ताजीवन हमर नहि (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ताजीवन हमर नहि (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1537मे रमेशक प्रविष्टि “ताजीवन हमर नहि (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28394. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28395. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 28396. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।

उत्तर: घ. स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।” अछि।

प्रश्न 28397. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28398. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28399. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28400. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28401. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28402. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537मे रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537मे रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2847 : विदेह-सदेह 18 — नन्द विलास राय: नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार

प्रश्न 28403. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1538मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28404. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28405. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 28406. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।

उत्तर: घ. राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।” अछि।

प्रश्न 28407. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28408. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28409. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28410. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28411. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28412. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538मे नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538मे नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2848 : विदेह-सदेह 18 — कामिनी कामायनी: अंकोरवट मन्दिर (कविता)

प्रश्न 28413. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अंकोरवट मन्दिर (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंकोरवट मन्दिर (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1539मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28414. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28415. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 28416. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।

उत्तर: घ. कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।” अछि।

प्रश्न 28417. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28418. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28419. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28420. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28421. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28422. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539मे कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539मे कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2849 : विदेह-सदेह 18 — किशन कारीगर: इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)

प्रश्न 28423. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1540मे किशन कारीगरक प्रविष्टि “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28424. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28425. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 28426. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।

उत्तर: घ. बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।” अछि।

प्रश्न 28427. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28428. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28429. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28430. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28431. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28432. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540मे किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540मे किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2850 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: बाल गजल

प्रश्न 28433. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1541मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28434. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28435. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल (बाल)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल (बाल)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल (बाल)” अछि।

प्रश्न 28436. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।

उत्तर: घ. बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।” अछि।

प्रश्न 28437. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28438. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल (बाल)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल (बाल)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28439. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28440. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल (बाल)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल (बाल)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28441. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28442. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541मे आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल (बाल) आ “बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541मे आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल (बाल) आ “बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2851 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”: मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,

प्रश्न 28443. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1542मे डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क प्रविष्टि “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28444. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28445. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता/प्रकृति कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता/प्रकृति कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता/प्रकृति कविता” अछि।

प्रश्न 28446. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।

उत्तर: घ. बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।” अछि।

प्रश्न 28447. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28448. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता/प्रकृति कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता/प्रकृति कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28449. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28450. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविता/प्रकृति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविता/प्रकृति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28451. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28452. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542मे डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता/प्रकृति कविता आ “बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542मे डॉ. शशिधर कुमर “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता/प्रकृति कविता आ “बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2852 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता

प्रश्न 28453. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1543मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28454. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28455. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी” अछि।

प्रश्न 28456. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वयंक रचना।

उत्तर: घ. स्वयंक रचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वयंक रचना।” अछि।

प्रश्न 28457. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वयंक रचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वयंक रचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वयंक रचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28458. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28459. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28460. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28461. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28462. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी आ “स्वयंक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी आ “स्वयंक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2853 : विदेह-सदेह 18 — जगदानन्द झा 'मनु': गजल

प्रश्न 28463. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1544मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28464. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28465. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 28466. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वयंक रचना।

उत्तर: घ. स्वयंक रचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वयंक रचना।” अछि।

प्रश्न 28467. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वयंक रचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वयंक रचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वयंक रचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28468. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28469. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28470. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28471. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28472. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544मे जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “स्वयंक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544मे जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “स्वयंक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2854 : विदेह-सदेह 18 — दिलीप कुमार साह: अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...

प्रश्न 28473. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1545मे दिलीप कुमार साहक प्रविष्टि “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28474. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28475. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/गजल” अछि।

प्रश्न 28476. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।

उत्तर: घ. प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।” अछि।

प्रश्न 28477. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28478. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दिलीप कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दिलीप कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28479. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28480. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28481. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28482. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545मे दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल आ “प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545मे दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल आ “प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2855 : विदेह-सदेह 18 — विनीता झा: रखबार राघव (भक्तिगीत)

प्रश्न 28483. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रखबार राघव (भक्तिगीत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रखबार राघव (भक्तिगीत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1546मे विनीता झाक प्रविष्टि “रखबार राघव (भक्तिगीत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28484. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28485. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्तिगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्तिगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्तिगीत” अछि।

प्रश्न 28486. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।

उत्तर: घ. राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।” अछि।

प्रश्न 28487. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28488. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा भक्तिगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा भक्तिगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28489. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28490. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्तिगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्तिगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28491. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28492. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546मे विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” प्रविष्टि पद्य, भक्तिगीत आ “राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546मे विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” प्रविष्टि पद्य, भक्तिगीत आ “राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2856 : विदेह-सदेह 18 — विकास झा: एले फागुन मास सखी हे (गीत)

प्रश्न 28493. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एले फागुन मास सखी हे (गीत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एले फागुन मास सखी हे (गीत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1547मे विकास झाक प्रविष्टि “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28494. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28495. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 28496. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।

उत्तर: घ. फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।” अछि।

प्रश्न 28497. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28498. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विकास झा, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विकास झा, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28499. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28500. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28501. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28502. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547मे विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547मे विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2857 : विदेह-सदेह 18 — नीरज कर्ण: गजल

प्रश्न 28503. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1548मे नीरज कर्णक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28504. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28505. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 28506. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवनक विडम्बनापर गजल।

उत्तर: घ. जीवनक विडम्बनापर गजल।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवनक विडम्बनापर गजल।” अछि।

प्रश्न 28507. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवनक विडम्बनापर गजल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवनक विडम्बनापर गजल।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवनक विडम्बनापर गजल।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28508. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नीरज कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नीरज कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28509. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28510. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28511. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28512. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548मे नीरज कर्णक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवनक विडम्बनापर गजल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548मे नीरज कर्णक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवनक विडम्बनापर गजल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2858 : विदेह-सदेह 19 — गजेन्द्र ठाकूर: संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

प्रश्न 28513. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1549मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28514. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28515. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।

प्रश्न 28516. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक

उत्तर: घ. 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 28517. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28518. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28519. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28520. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28521. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28522. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549मे गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549मे गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2859 : विदेह-सदेह 19 — गजेन्द्र ठाकूर: संपादकीय (विस्तृत)

प्रश्न 28523. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संपादकीय (विस्तृत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संपादकीय (विस्तृत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1550मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “संपादकीय (विस्तृत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28524. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28525. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।

प्रश्न 28526. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।

उत्तर: घ. समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।” अछि।

प्रश्न 28527. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28528. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28529. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28530. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28531. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28532. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550मे गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550मे गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2860 : विदेह-सदेह 19 — कामिनी: पांच टा कविता

प्रश्न 28533. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पांच टा कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पांच टा कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1551मे कामिनीक प्रविष्टि “पांच टा कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28534. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28535. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 28536. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन नारी स्वर

उत्तर: घ. समकालीन नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 28537. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28538. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामिनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामिनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28539. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28540. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28541. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28542. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551मे कामिनीक “पांच टा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समकालीन नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551मे कामिनीक “पांच टा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समकालीन नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2861 : विदेह-सदेह 19 — मधुकान्त झा: कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी

प्रश्न 28543. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1552मे मधुकान्त झाक प्रविष्टि “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28544. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28545. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 28546. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।

उत्तर: घ. समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।” अछि।

प्रश्न 28547. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28548. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मधुकान्त झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मधुकान्त झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28549. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28550. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28551. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28552. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552मे मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552मे मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2862 : विदेह-सदेह 19 — प्रयास प्रेमी मेथिल: "जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)

प्रश्न 28553. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1553मे प्रयास प्रेमी मेथिलक प्रविष्टि “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28554. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28555. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 28556. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।

उत्तर: घ. कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।” अछि।

प्रश्न 28557. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28558. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रयास प्रेमी मेथिल, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रयास प्रेमी मेथिल, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28559. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28560. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28561. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28562. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553मे प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553मे प्रयास प्रेमी मेथिलक “"जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही" (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2863 : विदेह-सदेह 19 — ओम प्रकाश झा: सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा

प्रश्न 28563. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1554मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28564. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28565. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कविता” अछि।

प्रश्न 28566. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।

उत्तर: घ. विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” अछि।

प्रश्न 28567. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28568. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28569. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28570. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28571. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28572. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554मे ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554मे ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2864 : विदेह-सदेह 19 — मुन्ना जी: लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन

प्रश्न 28573. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1555मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28574. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28575. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 28576. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विहनि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।

उत्तर: घ. विहनि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विहनि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।” अछि।

प्रश्न 28577. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विहनि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विहनि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विहनि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28578. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28579. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28580. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28581. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28582. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555मे मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “विहनि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555मे मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहनिकथा- तुलनात्मक विवेचन” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “विहनि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2865 : विदेह-सदेह 19 — मुन्ना जी: बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)

प्रश्न 28583. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1556मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28584. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28585. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 28586. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।

उत्तर: घ. न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।” अछि।

प्रश्न 28587. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28588. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28589. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28590. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28591. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28592. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556मे मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556मे मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2866 : विदेह-सदेह 19 — मुन्ना जी: प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)

प्रश्न 28593. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1557मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28594. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28595. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रेम बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रेम बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रेम बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 28596. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।

उत्तर: घ. प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।” अछि।

प्रश्न 28597. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28598. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा प्रेम बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा प्रेम बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28599. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28600. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रेम बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रेम बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28601. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28602. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557मे मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” प्रविष्टि गद्य, प्रेम बीहनि कथा आ “प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557मे मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” प्रविष्टि गद्य, प्रेम बीहनि कथा आ “प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2867 : विदेह-सदेह 19 — अब्दूर रज्जाक: बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२

प्रश्न 28603. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1558मे अब्दूर रज्जाकक प्रविष्टि “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28604. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28605. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 28606. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।

उत्तर: घ. साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।” अछि।

प्रश्न 28607. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28608. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अब्दूर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अब्दूर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28609. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28610. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28611. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28612. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558मे अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558मे अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2868 : विदेह-सदेह 19 — राजीव कर्ण: बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)

प्रश्न 28613. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1559मे राजीव कर्णक प्रविष्टि “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28614. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28615. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 28616. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

उत्तर: घ. नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28617. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28618. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजीव कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजीव कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28619. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28620. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28621. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28622. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559मे राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559मे राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2869 : विदेह-सदेह 19 — नीरज कर्ण: बीहिन कथा (नोर, फादस डे)

प्रश्न 28623. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा (नोर, फादस डे)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा (नोर, फादस डे)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1560मे नीरज कर्णक प्रविष्टि “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28624. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28625. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 28626. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।

उत्तर: घ. सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।” अछि।

प्रश्न 28627. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28628. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नीरज कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नीरज कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28629. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28630. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)”कैँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28631. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28632. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560मे नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560मे नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2870 : विदेह-सदेह 19 — राम सोगारथ यादव: बीहिन कथा- सपना सपने अछि

प्रश्न 28633. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा- सपना सपने अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा- सपना सपने अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1561मे राम सोगारथ यादवक प्रविष्टि “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28634. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28635. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 28636. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकेँ सामने रखैत।

उत्तर: घ. यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकेँ सामने रखैत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकेँ सामने रखैत।” अछि।

प्रश्न 28637. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकेँ सामने रखैत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकेँ सामने रखैत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकेँ सामने रखैत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28638. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम सोगारथ यादव, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम सोगारथ यादव, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28639. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28640. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28641. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28642. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561मे राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकेँ सामने रखैत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561मे राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकेँ सामने रखैत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2871 : विदेह-सदेह 19 — नारायण मधुशाला: बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२

प्रश्न 28643. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1562मे नारायण मधुशालाक प्रविष्टि “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28644. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28645. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 28646. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'विदेह' आन्दोलनसं जुड़ल नव कथा-स्वर।

उत्तर: घ. 'विदेह' आन्दोलनसं जुड़ल नव कथा-स्वर।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'विदेह' आन्दोलनसं जुड़ल नव कथा-स्वर।” अछि।

प्रश्न 28647. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'विदेह' आन्दोलनसं जुड़ल नव कथा-स्वर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'विदेह' आन्दोलनसं जुड़ल नव कथा-स्वर।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'विदेह' आन्दोलनसं जुड़ल नव कथा-स्वर।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28648. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नारायण मधुशाला, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नारायण मधुशाला, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28649. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28650. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28651. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28652. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562मे नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “'विदेह' आन्दोलनसं जुड़ल नव कथा-स्वर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562मे नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “'विदेह' आन्दोलनसं जुड़ल नव कथा-स्वर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2872 : विदेह-सदेह 19 — मलय नाथ मण्डन: बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया

प्रश्न 28653. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1563मे मलय नाथ मण्डनक प्रविष्टि “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28654. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28655. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहनि कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 28656. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहनि कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।

उत्तर: घ. न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 28657. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहनि कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28658. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहनि कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मलय नाथ मण्डन, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मलय नाथ मण्डन, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28659. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहनि कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28660. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहनि कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28661. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28662. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563मे मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563मे मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2873 : विदेह-सदेह 19 — जगदानन्द झा ‘मनु’: बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)

प्रश्न 28663. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1564मे जगदानन्द झा ‘मनु’क प्रविष्टि “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28664. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28665. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 28666. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहनि कथा (बेटाक बाप, रभसल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।

उत्तर: घ. सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।” अछि।

प्रश्न 28667. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहनि कथा (बेटाक बाप, रभसल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28668. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहनि कथा (बेटाक बाप, रभसल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28669. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहनि कथा (बेटाक बाप, रभसल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28670. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहनि कथा (बेटाक बाप, रभसल)”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28671. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहनि कथा (बेटाक बाप, रभसल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28672. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2874 : विदेह-सदेह 19 — जगदानन्द झा ‘मनु’: प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)

प्रश्न 28673. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1565मे जगदानन्द झा ‘मनु’क प्रविष्टि “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28674. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28675. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रेम बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रेम बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रेम बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 28676. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।

उत्तर: घ. प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।” अछि।

प्रश्न 28677. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28678. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा गद्य, उप-विधा प्रेम बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा गद्य, उप-विधा प्रेम बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28679. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28680. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रेम बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रेम बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28681. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28682. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” प्रविष्टि गद्य, प्रेम बीहनि कथा आ “प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” प्रविष्टि गद्य, प्रेम बीहनि कथा आ “प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2875 : विदेह-सदेह 19 — उमेश मण्डल: ...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)

प्रश्न 28683. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1566मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28684. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28685. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 28686. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।

उत्तर: घ. 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।” अछि।

प्रश्न 28687. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28688. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28689. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28690. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28691. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28692. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566मे उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566मे उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2876 : विदेह-सदेह 19 — उमेश मण्डल: इतिहास- सगर राति दीप जरय

प्रश्न 28693. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इतिहास- सगर राति दीप जरय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इतिहास- सगर राति दीप जरय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1567मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “इतिहास- सगर राति दीप जरय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28694. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28695. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इतिहास लेखन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इतिहास लेखन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास लेखन” अछि।

प्रश्न 28696. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।

उत्तर: घ. एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।” अछि।

प्रश्न 28697. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28698. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास लेखन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास लेखन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28699. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28700. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ इतिहास लेखनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ इतिहास लेखनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28701. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28702. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567मे उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि गद्य, इतिहास लेखन आ “एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567मे उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि गद्य, इतिहास लेखन आ “एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2877 : विदेह-सदेह 19 — विदेह पत्रिका: विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण

प्रश्न 28703. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1568मे विदेह पत्रिकाक प्रविष्टि “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28704. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/चित्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/चित्र

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/चित्र” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28705. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 28706. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकेँ चुनौती।

उत्तर: घ. समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकेँ चुनौती।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकेँ चुनौती।” अछि।

प्रश्न 28707. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)-सचित्र विवरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकेँ चुनौती।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकेँ चुनौती।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकेँ चुनौती।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28708. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)-सचित्र विवरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विदेह पत्रिका, विधा गद्य/चित्र, उप-विधा समाचार/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विदेह पत्रिका, विधा गद्य/चित्र, उप-विधा समाचार/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28709. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)-सचित्र विवरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28710. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)-सचित्र विवरण”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य/चित्र-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य/चित्र-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य/चित्र-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28711. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)-सचित्र विवरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28712. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568मे विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” प्रविष्टि गद्य/चित्र, समाचार/रिपोर्ताज आ “समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकेँ चुनौती।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568मे विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” प्रविष्टि गद्य/चित्र, समाचार/रिपोर्ताज आ “समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकेँ चुनौती।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2878 : विदेह-सदेह 19 — राम सोगारथ यादव: गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकेँ जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल

प्रश्न 28713. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकेँ जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकेँ जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकेँ जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1569मे राम सोगारथ यादवक प्रविष्टि “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकेँ जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28714. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28715. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/कविता/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/कविता/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता/गजल” अछि।

प्रश्न 28716. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।

उत्तर: घ. जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।” अछि।

प्रश्न 28717. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28718. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम सोगारथ यादव, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम सोगारथ यादव, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28719. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28720. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28721. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28722. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569मे राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता/गजल आ “जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569मे राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ?, महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु", भुत लागल कतेकेँ ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुर्वाइल स्वाद, भधरया, प्रर्वास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रर्वासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिाामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता/गजल आ “जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2879 : विदेह-सदेह 19 — मंगलेश डबराल: मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)

प्रश्न 28723. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570: मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1570मे मंगलेश डबरालक प्रविष्टि “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28724. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570: मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28725. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570: मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद कविता” अछि।

प्रश्न 28726. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570: मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हिन्दी आ मैथिलीक बीच साहित्यिक सेतु। अनुवादक कौशलक उत्कृष्ट नमूना।

उत्तर: घ. हिन्दी आ मैथिलीक बीच साहित्यिक सेतु। अनुवादक कौशलक उत्कृष्ट नमूना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हिन्दी आ मैथिलीक बीच साहित्यिक सेतु। अनुवादक कौशलक उत्कृष्ट नमूना।” अछि।

प्रश्न 28727. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570: मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हिन्दी आ मैथिलीक बीच साहित्यिक सेतु। अनुवादक कौशलक उत्कृष्ट नमूना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिन्दी आ मैथिलीक बीच साहित्यिक सेतु। अनुवादक कौशलक उत्कृष्ट नमूना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हिन्दी आ मैथिलीक बीच साहित्यिक सेतु। अनुवादक कौशलक उत्कृष्ट नमूना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28728. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570: मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मंगलेश डबराल, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मंगलेश डबराल, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28729. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570: मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28730. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570: मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28731. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570: मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28732. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570मे मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद कविता आ “हिन्दी आ मैथिलीक बीच साहित्यिक सेतु। अनुवादक कौशलक उत्कृष्ट नमूना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2879, सूचकांक पंक्ति 1570मे मंगलेश डबरालक “मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल द्वारा)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद कविता आ “हिन्दी आ मैथिलीक बीच साहित्यिक सेतु। अनुवादक कौशलक उत्कृष्ट नमूना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2880 : विदेह-सदेह 19 — पंकज चतुर्वेदी: किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)

प्रश्न 28733. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571: पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1571मे पंकज चतुर्वेदीक प्रविष्टि “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28734. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571: पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28735. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571: पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद (डायरी/कविता)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद (डायरी/कविता)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद (डायरी/कविता)” अछि।

प्रश्न 28736. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571: पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्तरभाषायी साहित्यिक आदान-प्रदान।

उत्तर: घ. अन्तरभाषायी साहित्यिक आदान-प्रदान।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्तरभाषायी साहित्यिक आदान-प्रदान।” अछि।

प्रश्न 28737. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571: पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्तरभाषायी साहित्यिक आदान-प्रदान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तरभाषायी साहित्यिक आदान-प्रदान।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्तरभाषायी साहित्यिक आदान-प्रदान।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28738. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571: पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज चतुर्वेदी, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा अनुवाद (डायरी/कविता)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज चतुर्वेदी, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा अनुवाद (डायरी/कविता)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28739. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571: पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28740. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571: पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद (डायरी/कविता)क रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद (डायरी/कविता)क रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28741. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571: पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28742. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571मे पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, अनुवाद (डायरी/कविता) आ “अन्तरभाषायी साहित्यिक आदान-प्रदान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2880, सूचकांक पंक्ति 1571मे पंकज चतुर्वेदीक “किछु डायरी आ कविता (अनुवाद-भावानुवाद आशीष अनचिन्हार द्वारा)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, अनुवाद (डायरी/कविता) आ “अन्तरभाषायी साहित्यिक आदान-प्रदान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2881 : विदेह-सदेह 19 — संतोष चतुर्वेदी: संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)

प्रश्न 28743. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572: संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1572मे संतोष चतुर्वेदीक प्रविष्टि “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28744. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572: संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28745. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572: संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद कविता” अछि।

प्रश्न 28746. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572: संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हिन्दी-मैथिली साहित्यिक आदान-प्रदान।

उत्तर: घ. हिन्दी-मैथिली साहित्यिक आदान-प्रदान।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हिन्दी-मैथिली साहित्यिक आदान-प्रदान।” अछि।

प्रश्न 28747. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572: संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हिन्दी-मैथिली साहित्यिक आदान-प्रदान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिन्दी-मैथिली साहित्यिक आदान-प्रदान।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हिन्दी-मैथिली साहित्यिक आदान-प्रदान।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28748. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572: संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष चतुर्वेदी, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष चतुर्वेदी, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28749. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572: संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28750. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572: संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28751. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572: संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28752. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572मे संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद कविता आ “हिन्दी-मैथिली साहित्यिक आदान-प्रदान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2881, सूचकांक पंक्ति 1572मे संतोष चतुर्वेदीक “संतोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (आशीष अनचिन्हार द्वारा)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद कविता आ “हिन्दी-मैथिली साहित्यिक आदान-प्रदान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2882 : विदेह-सदेह 19 — अशरफ राइन: गजल

प्रश्न 28753. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573: अशरफ राइनक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1573मे अशरफ राइनक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28754. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573: अशरफ राइनक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28755. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573: अशरफ राइनक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 28756. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573: अशरफ राइनक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुस्लिम मैथिल पहचानक सशक्त स्वर। शृंगार आ वियोग शास्त्रीय परम्परा।

उत्तर: घ. मुस्लिम मैथिल पहचानक सशक्त स्वर। शृंगार आ वियोग शास्त्रीय परम्परा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुस्लिम मैथिल पहचानक सशक्त स्वर। शृंगार आ वियोग शास्त्रीय परम्परा।” अछि।

प्रश्न 28757. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573: अशरफ राइनक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुस्लिम मैथिल पहचानक सशक्त स्वर। शृंगार आ वियोग शास्त्रीय परम्परा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुस्लिम मैथिल पहचानक सशक्त स्वर। शृंगार आ वियोग शास्त्रीय परम्परा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुस्लिम मैथिल पहचानक सशक्त स्वर। शृंगार आ वियोग शास्त्रीय परम्परा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28758. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573: अशरफ राइनक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशरफ राइन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशरफ राइन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28759. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573: अशरफ राइनक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28760. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573: अशरफ राइनक “गजल”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28761. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573: अशरफ राइनक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28762. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573मे अशरफ राइनक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “मुस्लिम मैथिल पहचानक सशक्त स्वर। शृंगार आ वियोग शास्त्रीय परम्परा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2882, सूचकांक पंक्ति 1573मे अशरफ राइनक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “मुस्लिम मैथिल पहचानक सशक्त स्वर। शृंगार आ वियोग शास्त्रीय परम्परा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2883 : विदेह-सदेह 19 — नारायण मधुशाला: गीत

प्रश्न 28763. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574: नारायण मधुशालाक “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1574मे नारायण मधुशालाक प्रविष्टि “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28764. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574: नारायण मधुशालाक “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28765. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574: नारायण मधुशालाक “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 28766. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574: नारायण मधुशालाक “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गेयता आ माधुर्यसँ युक्त पद्य रचना।

उत्तर: घ. गेयता आ माधुर्यसँ युक्त पद्य रचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गेयता आ माधुर्यसँ युक्त पद्य रचना।” अछि।

प्रश्न 28767. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574: नारायण मधुशालाक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गेयता आ माधुर्यसँ युक्त पद्य रचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गेयता आ माधुर्यसँ युक्त पद्य रचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गेयता आ माधुर्यसँ युक्त पद्य रचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28768. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574: नारायण मधुशालाक “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नारायण मधुशाला, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नारायण मधुशाला, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28769. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574: नारायण मधुशालाक “गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28770. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574: नारायण मधुशालाक “गीत”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28771. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574: नारायण मधुशालाक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28772. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574मे नारायण मधुशालाक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेयता आ माधुर्यसँ युक्त पद्य रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2883, सूचकांक पंक्ति 1574मे नारायण मधुशालाक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेयता आ माधुर्यसँ युक्त पद्य रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2884 : विदेह-सदेह 19 — दिनेश रसिया: गजल

प्रश्न 28773. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575: दिनेश रसियाक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1575मे दिनेश रसियाक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28774. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575: दिनेश रसियाक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28775. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575: दिनेश रसियाक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 28776. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575: दिनेश रसियाक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'विदेह' गजल आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।

उत्तर: घ. 'विदेह' गजल आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'विदेह' गजल आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” अछि।

प्रश्न 28777. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575: दिनेश रसियाक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'विदेह' गजल आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'विदेह' गजल आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'विदेह' गजल आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28778. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575: दिनेश रसियाक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दिनेश रसिया, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दिनेश रसिया, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28779. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575: दिनेश रसियाक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28780. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575: दिनेश रसियाक “गजल”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28781. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575: दिनेश रसियाक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28782. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575मे दिनेश रसियाक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “'विदेह' गजल आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2884, सूचकांक पंक्ति 1575मे दिनेश रसियाक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “'विदेह' गजल आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2885 : विदेह-सदेह 19 — सुकोसुत शिशिर: फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता

प्रश्न 28783. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576: सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1576मे सुकोसुत शिशिरक प्रविष्टि “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28784. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576: सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28785. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576: सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 28786. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576: सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ीक प्रयोगशील कवि।

उत्तर: घ. नव पीढ़ीक प्रयोगशील कवि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ीक प्रयोगशील कवि।” अछि।

प्रश्न 28787. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576: सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ीक प्रयोगशील कवि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ीक प्रयोगशील कवि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ीक प्रयोगशील कवि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28788. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576: सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुकोसुत शिशिर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुकोसुत शिशिर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28789. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576: सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28790. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576: सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28791. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576: सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28792. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576मे सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ीक प्रयोगशील कवि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2885, सूचकांक पंक्ति 1576मे सुकोसुत शिशिरक “फूड्स बाजी त’ वज्र खसन्ता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ीक प्रयोगशील कवि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2886 : विदेह-सदेह 19 — राजदेव मण्डल: शिशुक स्वर

प्रश्न 28793. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577: राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शिशुक स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिशुक स्वर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1577मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “शिशुक स्वर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28794. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577: राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28795. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577: राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 28796. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577: राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्यमे महत्वपूर्ण योगदान। वात्सल्य रसक श्रेष्ठ उदाहरण।

उत्तर: घ. बाल साहित्यमे महत्वपूर्ण योगदान। वात्सल्य रसक श्रेष्ठ उदाहरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्यमे महत्वपूर्ण योगदान। वात्सल्य रसक श्रेष्ठ उदाहरण।” अछि।

प्रश्न 28797. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577: राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्यमे महत्वपूर्ण योगदान। वात्सल्य रसक श्रेष्ठ उदाहरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्यमे महत्वपूर्ण योगदान। वात्सल्य रसक श्रेष्ठ उदाहरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्यमे महत्वपूर्ण योगदान। वात्सल्य रसक श्रेष्ठ उदाहरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28798. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577: राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28799. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577: राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28800. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577: राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28801. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577: राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28802. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577मे राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल साहित्यमे महत्वपूर्ण योगदान। वात्सल्य रसक श्रेष्ठ उदाहरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2886, सूचकांक पंक्ति 1577मे राजदेव मण्डलक “शिशुक स्वर” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल साहित्यमे महत्वपूर्ण योगदान। वात्सल्य रसक श्रेष्ठ उदाहरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2887 : विदेह-सदेह 19 — सृजन शेखर 'अज्ञेय': दूटा कविता

प्रश्न 28803. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578: सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दूटा कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दूटा कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1578मे सृजन शेखर 'अज्ञेय'क प्रविष्टि “दूटा कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28804. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578: सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28805. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578: सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 28806. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578: सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अस्तित्ववादी चिन्तन आ आधुनिक काव्य-दृष्टि।

उत्तर: घ. अस्तित्ववादी चिन्तन आ आधुनिक काव्य-दृष्टि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अस्तित्ववादी चिन्तन आ आधुनिक काव्य-दृष्टि।” अछि।

प्रश्न 28807. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578: सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अस्तित्ववादी चिन्तन आ आधुनिक काव्य-दृष्टि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्ववादी चिन्तन आ आधुनिक काव्य-दृष्टि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अस्तित्ववादी चिन्तन आ आधुनिक काव्य-दृष्टि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28808. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578: सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सृजन शेखर 'अज्ञेय', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सृजन शेखर 'अज्ञेय', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28809. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578: सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28810. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578: सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28811. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578: सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28812. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578मे सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अस्तित्ववादी चिन्तन आ आधुनिक काव्य-दृष्टि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2887, सूचकांक पंक्ति 1578मे सृजन शेखर 'अज्ञेय'क “दूटा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अस्तित्ववादी चिन्तन आ आधुनिक काव्य-दृष्टि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2888 : विदेह-सदेह 19 — डो. शशिधर कूमर: अनेकौं बाल कविता

प्रश्न 28813. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579: डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनेकौं बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनेकौं बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1579मे डो. शशिधर कूमरक प्रविष्टि “अनेकौं बाल कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28814. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579: डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28815. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579: डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 28816. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579: डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति, विज्ञान, आ नैतिक शिक्षासँ युक्त विविध विषयक बाल कविता। बाल साहित्य आन्दोलनक स्तम्भ।

उत्तर: घ. प्रकृति, विज्ञान, आ नैतिक शिक्षासँ युक्त विविध विषयक बाल कविता। बाल साहित्य आन्दोलनक स्तम्भ।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति, विज्ञान, आ नैतिक शिक्षासँ युक्त विविध विषयक बाल कविता। बाल साहित्य आन्दोलनक स्तम्भ।” अछि।

प्रश्न 28817. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579: डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति, विज्ञान, आ नैतिक शिक्षासँ युक्त विविध विषयक बाल कविता। बाल साहित्य आन्दोलनक स्तम्भ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति, विज्ञान, आ नैतिक शिक्षासँ युक्त विविध विषयक बाल कविता। बाल साहित्य आन्दोलनक स्तम्भ।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति, विज्ञान, आ नैतिक शिक्षासँ युक्त विविध विषयक बाल कविता। बाल साहित्य आन्दोलनक स्तम्भ।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28818. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579: डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डो. शशिधर कूमर, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डो. शशिधर कूमर, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28819. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579: डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28820. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579: डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28821. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579: डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28822. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579मे डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “प्रकृति, विज्ञान, आ नैतिक शिक्षासँ युक्त विविध विषयक बाल कविता। बाल साहित्य आन्दोलनक स्तम्भ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2888, सूचकांक पंक्ति 1579मे डो. शशिधर कूमरक “अनेकौं बाल कविता” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “प्रकृति, विज्ञान, आ नैतिक शिक्षासँ युक्त विविध विषयक बाल कविता। बाल साहित्य आन्दोलनक स्तम्भ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2889 : विदेह-सदेह 19 — अब्दुर रज्जाक राइन: किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार

प्रश्न 28823. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580: अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1580मे अब्दुर रज्जाक राइनक प्रविष्टि “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28824. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580: अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28825. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580: अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कता/गजल/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कता/गजल/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कता/गजल/कविता” अछि।

प्रश्न 28826. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580: अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पिछड़ा वर्गक आवाज। सामाजिक न्याय आ समताक पक्षधर।

उत्तर: घ. पिछड़ा वर्गक आवाज। सामाजिक न्याय आ समताक पक्षधर।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पिछड़ा वर्गक आवाज। सामाजिक न्याय आ समताक पक्षधर।” अछि।

प्रश्न 28827. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580: अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पिछड़ा वर्गक आवाज। सामाजिक न्याय आ समताक पक्षधर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिछड़ा वर्गक आवाज। सामाजिक न्याय आ समताक पक्षधर।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिछड़ा वर्गक आवाज। सामाजिक न्याय आ समताक पक्षधर।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28828. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580: अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अब्दुर रज्जाक राइन, विधा पद्य, उप-विधा कता/गजल/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अब्दुर रज्जाक राइन, विधा पद्य, उप-विधा कता/गजल/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28829. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580: अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28830. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580: अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कता/गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कता/गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28831. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580: अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28832. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580मे अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार” प्रविष्टि पद्य, कता/गजल/कविता आ “पिछड़ा वर्गक आवाज। सामाजिक न्याय आ समताक पक्षधर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2889, सूचकांक पंक्ति 1580मे अब्दुर रज्जाक राइनक “किछु कता, किछु गजल, मुसहर डोम आ चमार” प्रविष्टि पद्य, कता/गजल/कविता आ “पिछड़ा वर्गक आवाज। सामाजिक न्याय आ समताक पक्षधर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2890 : विदेह-सदेह 19 — प्रयास प्रेमी मैथिल: किछु कविता, किछु गजल

प्रश्न 28833. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581: प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु कविता, किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु कविता, किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1581मे प्रयास प्रेमी मैथिलक प्रविष्टि “किछु कविता, किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28834. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581: प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28835. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581: प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गजल” अछि।

प्रश्न 28836. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581: प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहुमुखी प्रतिभाक स्वामी। मैथिली पहचान आ प्रेमक सशक्त अभिव्यक्ति।

उत्तर: घ. बहुमुखी प्रतिभाक स्वामी। मैथिली पहचान आ प्रेमक सशक्त अभिव्यक्ति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुमुखी प्रतिभाक स्वामी। मैथिली पहचान आ प्रेमक सशक्त अभिव्यक्ति।” अछि।

प्रश्न 28837. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581: प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बहुमुखी प्रतिभाक स्वामी। मैथिली पहचान आ प्रेमक सशक्त अभिव्यक्ति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुमुखी प्रतिभाक स्वामी। मैथिली पहचान आ प्रेमक सशक्त अभिव्यक्ति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बहुमुखी प्रतिभाक स्वामी। मैथिली पहचान आ प्रेमक सशक्त अभिव्यक्ति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28838. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581: प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रयास प्रेमी मैथिल, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रयास प्रेमी मैथिल, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28839. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581: प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28840. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581: प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28841. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581: प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28842. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581मे प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता/गजल आ “बहुमुखी प्रतिभाक स्वामी। मैथिली पहचान आ प्रेमक सशक्त अभिव्यक्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2890, सूचकांक पंक्ति 1581मे प्रयास प्रेमी मैथिलक “किछु कविता, किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता/गजल आ “बहुमुखी प्रतिभाक स्वामी। मैथिली पहचान आ प्रेमक सशक्त अभिव्यक्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2891 : विदेह-सदेह 19 — राजेश मोहन झा "गुंजन": बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर

प्रश्न 28843. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1582मे राजेश मोहन झा "गुंजन"क प्रविष्टि “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28844. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28845. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/आलेख” अछि।

प्रश्न 28846. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' पर श्रद्धांजलि स्वरूप आलेख आ मौलिक कविता। कवि-आलोचक।

उत्तर: घ. बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' पर श्रद्धांजलि स्वरूप आलेख आ मौलिक कविता। कवि-आलोचक।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' पर श्रद्धांजलि स्वरूप आलेख आ मौलिक कविता। कवि-आलोचक।” अछि।

प्रश्न 28847. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' पर श्रद्धांजलि स्वरूप आलेख आ मौलिक कविता। कवि-आलोचक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' पर श्रद्धांजलि स्वरूप आलेख आ मौलिक कविता। कवि-आलोचक।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' पर श्रद्धांजलि स्वरूप आलेख आ मौलिक कविता। कवि-आलोचक।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28848. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश मोहन झा "गुंजन", विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश मोहन झा "गुंजन", विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28849. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28850. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/आलेखक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/आलेखक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28851. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28852. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582मे राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/आलेख आ “बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' पर श्रद्धांजलि स्वरूप आलेख आ मौलिक कविता। कवि-आलोचक।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2891, सूचकांक पंक्ति 1582मे राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बिनु राधाक ब्रज, जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/आलेख आ “बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' पर श्रद्धांजलि स्वरूप आलेख आ मौलिक कविता। कवि-आलोचक।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2892 : विदेह-सदेह 19 — राजेश मोहन झा "गुंजन": बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद

प्रश्न 28853. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1583मे राजेश मोहन झा "गुंजन"क प्रविष्टि “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28854. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28855. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता/भक्ति पद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता/भक्ति पद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता/भक्ति पद” अछि।

प्रश्न 28856. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परम्परा आ आधुनिक बोधक समन्वय। वात्सल्य आ भक्ति रस।

उत्तर: घ. परम्परा आ आधुनिक बोधक समन्वय। वात्सल्य आ भक्ति रस।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परम्परा आ आधुनिक बोधक समन्वय। वात्सल्य आ भक्ति रस।” अछि।

प्रश्न 28857. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परम्परा आ आधुनिक बोधक समन्वय। वात्सल्य आ भक्ति रस।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परम्परा आ आधुनिक बोधक समन्वय। वात्सल्य आ भक्ति रस।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परम्परा आ आधुनिक बोधक समन्वय। वात्सल्य आ भक्ति रस।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28858. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश मोहन झा "गुंजन", विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता/भक्ति पद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश मोहन झा "गुंजन", विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता/भक्ति पद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28859. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28860. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद”केँ विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविता/भक्ति पदक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविता/भक्ति पदक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28861. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583: राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28862. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583मे राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता/भक्ति पद आ “परम्परा आ आधुनिक बोधक समन्वय। वात्सल्य आ भक्ति रस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2892, सूचकांक पंक्ति 1583मे राजेश मोहन झा "गुंजन"क “बाल कविता- भादवक अन्हरिया, कृष्ण छठिहारक पद” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता/भक्ति पद आ “परम्परा आ आधुनिक बोधक समन्वय। वात्सल्य आ भक्ति रस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2893 : विदेह-सदेह 20 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)

प्रश्न 28863. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1584मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28864. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/सूची

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/सूची

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/सूची” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28865. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संगीत समीक्षा / संकलन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संगीत समीक्षा / संकलन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संगीत समीक्षा / संकलन” अछि।

प्रश्न 28866. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत, झूमर, भगैत, बालगीतक अभाव उजागर

उत्तर: घ. लोकगीत, झूमर, भगैत, बालगीतक अभाव उजागर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत, झूमर, भगैत, बालगीतक अभाव उजागर” अछि।

प्रश्न 28867. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत, झूमर, भगैत, बालगीतक अभाव उजागर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत, झूमर, भगैत, बालगीतक अभाव उजागर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत, झूमर, भगैत, बालगीतक अभाव उजागर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28868. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य/सूची, उप-विधा संगीत समीक्षा / संकलन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य/सूची, उप-विधा संगीत समीक्षा / संकलन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28869. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28870. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य/सूची-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संगीत समीक्षा / संकलनक रूपमे गद्य/सूची-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संगीत समीक्षा / संकलनक रूपमे गद्य/सूची-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28871. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28872. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)” प्रविष्टि गद्य/सूची, संगीत समीक्षा / संकलन आ “लोकगीत, झूमर, भगैत, बालगीतक अभाव उजागर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2893, सूचकांक पंक्ति 1584मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (लिस्ट + बाल सीडी)” प्रविष्टि गद्य/सूची, संगीत समीक्षा / संकलन आ “लोकगीत, झूमर, भगैत, बालगीतक अभाव उजागर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2894 : विदेह-सदेह 20 — गजेन्द्र ठाकूर: भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)

प्रश्न 28873. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585: गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1585मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28874. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585: गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28875. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585: गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इंटरनेट उपस्थिति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इंटरनेट उपस्थिति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इंटरनेट उपस्थिति” अछि।

प्रश्न 28876. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585: गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिलीक पहिल वेब जर्नल/ब्लाग

उत्तर: घ. मैथिलीक पहिल वेब जर्नल/ब्लाग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलीक पहिल वेब जर्नल/ब्लाग” अछि।

प्रश्न 28877. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585: गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिलीक पहिल वेब जर्नल/ब्लाग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक पहिल वेब जर्नल/ब्लाग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिलीक पहिल वेब जर्नल/ब्लाग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28878. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585: गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा इंटरनेट उपस्थिति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा इंटरनेट उपस्थिति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28879. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585: गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28880. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585: गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ इंटरनेट उपस्थितिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ इंटरनेट उपस्थितिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28881. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585: गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28882. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585मे गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)” प्रविष्टि गद्य, इंटरनेट उपस्थिति आ “मैथिलीक पहिल वेब जर्नल/ब्लाग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2894, सूचकांक पंक्ति 1585मे गजेन्द्र ठाकूरक “भालसरिक गाछ (याहू सिटीज / ब्लागर)” प्रविष्टि गद्य, इंटरनेट उपस्थिति आ “मैथिलीक पहिल वेब जर्नल/ब्लाग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2895 : विदेह-सदेह 20 — दिनेश यादव: नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”

प्रश्न 28883. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586: दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1586मे दिनेश यादवक प्रविष्टि “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28884. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586: दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था””क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28885. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586: दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था””क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख / विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख / विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख / विमर्श” अछि।

प्रश्न 28886. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586: दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाली मैथिलीक व्यावसायिकता, गुटबन्दी, कलाकारक प्रोत्साहनक अभाव चिन्ता।

उत्तर: घ. नेपाली मैथिलीक व्यावसायिकता, गुटबन्दी, कलाकारक प्रोत्साहनक अभाव चिन्ता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाली मैथिलीक व्यावसायिकता, गुटबन्दी, कलाकारक प्रोत्साहनक अभाव चिन्ता।” अछि।

प्रश्न 28887. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586: दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाली मैथिलीक व्यावसायिकता, गुटबन्दी, कलाकारक प्रोत्साहनक अभाव चिन्ता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाली मैथिलीक व्यावसायिकता, गुटबन्दी, कलाकारक प्रोत्साहनक अभाव चिन्ता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाली मैथिलीक व्यावसायिकता, गुटबन्दी, कलाकारक प्रोत्साहनक अभाव चिन्ता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28888. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586: दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था””क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दिनेश यादव, विधा गद्य, उप-विधा आलेख / विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दिनेश यादव, विधा गद्य, उप-विधा आलेख / विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28889. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586: दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28890. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586: दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था””केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख / विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख / विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28891. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586: दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28892. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586मे दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”” प्रविष्टि गद्य, आलेख / विमर्श आ “नेपाली मैथिलीक व्यावसायिकता, गुटबन्दी, कलाकारक प्रोत्साहनक अभाव चिन्ता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2895, सूचकांक पंक्ति 1586मे दिनेश यादवक “नेपाल मे “मैथिली गीत-संगीतक अवस्था”” प्रविष्टि गद्य, आलेख / विमर्श आ “नेपाली मैथिलीक व्यावसायिकता, गुटबन्दी, कलाकारक प्रोत्साहनक अभाव चिन्ता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2896 : विदेह-सदेह 20 — प्रदीप पुष्प: सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि

प्रश्न 28893. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587: प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1587मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28894. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587: प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28895. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587: प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संगीत समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संगीत समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संगीत समीक्षा” अछि।

प्रश्न 28896. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587: प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कुंज बिहारी मिश्रक गायन, गीतक शब्द-संगीत विश्लेषण, पैरोडी, गजलनुमा शैली।

उत्तर: घ. कुंज बिहारी मिश्रक गायन, गीतक शब्द-संगीत विश्लेषण, पैरोडी, गजलनुमा शैली।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कुंज बिहारी मिश्रक गायन, गीतक शब्द-संगीत विश्लेषण, पैरोडी, गजलनुमा शैली।” अछि।

प्रश्न 28897. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587: प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कुंज बिहारी मिश्रक गायन, गीतक शब्द-संगीत विश्लेषण, पैरोडी, गजलनुमा शैली।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुंज बिहारी मिश्रक गायन, गीतक शब्द-संगीत विश्लेषण, पैरोडी, गजलनुमा शैली।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कुंज बिहारी मिश्रक गायन, गीतक शब्द-संगीत विश्लेषण, पैरोडी, गजलनुमा शैली।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28898. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587: प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा गद्य, उप-विधा संगीत समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा गद्य, उप-विधा संगीत समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28899. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587: प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28900. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587: प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संगीत समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संगीत समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28901. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587: प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28902. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587मे प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि” प्रविष्टि गद्य, संगीत समीक्षा आ “कुंज बिहारी मिश्रक गायन, गीतक शब्द-संगीत विश्लेषण, पैरोडी, गजलनुमा शैली।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2896, सूचकांक पंक्ति 1587मे प्रदीप पुष्पक “सिनेहिया (एल्बम समीक्षा) – गोरी सजना, सभक पाहुन शरीफा, आदि” प्रविष्टि गद्य, संगीत समीक्षा आ “कुंज बिहारी मिश्रक गायन, गीतक शब्द-संगीत विश्लेषण, पैरोडी, गजलनुमा शैली।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2897 : विदेह-सदेह 20 — योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’: वन्दनाक स्वरूप

प्रश्न 28903. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वन्दनाक स्वरूप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वन्दनाक स्वरूप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1588मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क प्रविष्टि “वन्दनाक स्वरूप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28904. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28905. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सांस्कृतिक विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सांस्कृतिक विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सांस्कृतिक विमर्श” अछि।

प्रश्न 28906. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली प्रार्थना/वन्दनाक एकरूप लय बनावाक आग्रह

उत्तर: घ. मैथिली प्रार्थना/वन्दनाक एकरूप लय बनावाक आग्रह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली प्रार्थना/वन्दनाक एकरूप लय बनावाक आग्रह” अछि।

प्रश्न 28907. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली प्रार्थना/वन्दनाक एकरूप लय बनावाक आग्रह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली प्रार्थना/वन्दनाक एकरूप लय बनावाक आग्रह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली प्रार्थना/वन्दनाक एकरूप लय बनावाक आग्रह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28908. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28909. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28910. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सांस्कृतिक विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सांस्कृतिक विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28911. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28912. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक विमर्श आ “मैथिली प्रार्थना/वन्दनाक एकरूप लय बनावाक आग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2897, सूचकांक पंक्ति 1588मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “वन्दनाक स्वरूप” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक विमर्श आ “मैथिली प्रार्थना/वन्दनाक एकरूप लय बनावाक आग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2898 : विदेह-सदेह 20 — चंद्रेश: अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन

प्रश्न 28913. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589: चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1589मे चंद्रेशक प्रविष्टि “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28914. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589: चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28915. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589: चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एल्बम समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एल्बम समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “एल्बम समीक्षा” अछि।

प्रश्न 28916. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589: चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम भरोस कापूरि ‘भ्रमर’, गुरुदेव कामत, हिरशंकर चौधरी आदिक स्वर

उत्तर: घ. राम भरोस कापूरि ‘भ्रमर’, गुरुदेव कामत, हिरशंकर चौधरी आदिक स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम भरोस कापूरि ‘भ्रमर’, गुरुदेव कामत, हिरशंकर चौधरी आदिक स्वर” अछि।

प्रश्न 28917. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589: चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम भरोस कापूरि ‘भ्रमर’, गुरुदेव कामत, हिरशंकर चौधरी आदिक स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम भरोस कापूरि ‘भ्रमर’, गुरुदेव कामत, हिरशंकर चौधरी आदिक स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम भरोस कापूरि ‘भ्रमर’, गुरुदेव कामत, हिरशंकर चौधरी आदिक स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28918. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589: चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चंद्रेश, विधा गद्य, उप-विधा एल्बम समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चंद्रेश, विधा गद्य, उप-विधा एल्बम समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28919. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589: चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28920. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589: चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ एल्बम समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ एल्बम समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28921. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589: चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28922. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589मे चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन” प्रविष्टि गद्य, एल्बम समीक्षा आ “राम भरोस कापूरि ‘भ्रमर’, गुरुदेव कामत, हिरशंकर चौधरी आदिक स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2898, सूचकांक पंक्ति 1589मे चंद्रेशक “अरिपन (भिडियो एल्बम समीक्षा) – नओ गीतक संकलन” प्रविष्टि गद्य, एल्बम समीक्षा आ “राम भरोस कापूरि ‘भ्रमर’, गुरुदेव कामत, हिरशंकर चौधरी आदिक स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2899 : विदेह-सदेह 20 — इरा मल्लिक: शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम

प्रश्न 28923. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590: इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1590मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28924. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590: इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28925. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590: इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पारंपरिक गीत समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पारंपरिक गीत समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पारंपरिक गीत समीक्षा” अछि।

प्रश्न 28926. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590: इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिल विवाह-गीतक मौलिकता, स्वरक खनक, संस्कार सौरभ

उत्तर: घ. मैथिल विवाह-गीतक मौलिकता, स्वरक खनक, संस्कार सौरभ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिल विवाह-गीतक मौलिकता, स्वरक खनक, संस्कार सौरभ” अछि।

प्रश्न 28927. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590: इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिल विवाह-गीतक मौलिकता, स्वरक खनक, संस्कार सौरभ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल विवाह-गीतक मौलिकता, स्वरक खनक, संस्कार सौरभ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिल विवाह-गीतक मौलिकता, स्वरक खनक, संस्कार सौरभ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28928. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590: इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा गद्य, उप-विधा पारंपरिक गीत समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा गद्य, उप-विधा पारंपरिक गीत समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28929. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590: इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28930. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590: इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पारंपरिक गीत समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पारंपरिक गीत समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28931. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590: इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28932. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590मे इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम” प्रविष्टि गद्य, पारंपरिक गीत समीक्षा आ “मैथिल विवाह-गीतक मौलिकता, स्वरक खनक, संस्कार सौरभ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2899, सूचकांक पंक्ति 1590मे इरा मल्लिकक “शारदा सिन्हाजीक “विवाह गीत” अल्बम” प्रविष्टि गद्य, पारंपरिक गीत समीक्षा आ “मैथिल विवाह-गीतक मौलिकता, स्वरक खनक, संस्कार सौरभ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2900 : विदेह-सदेह 20 — मनीष झा ‘बौआभाइ’: वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ

प्रश्न 28933. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591: मनीष झा ‘बौआभाइ’क “वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1591मे मनीष झा ‘बौआभाइ’क प्रविष्टि “वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28934. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591: मनीष झा ‘बौआभाइ’क “वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28935. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591: मनीष झा ‘बौआभाइ’क “वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा / विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा / विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा / विमर्श” अछि।

प्रश्न 28936. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591: मनीष झा 'बौआभाइ'क "वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक लोकगीत, डी-टोनक व्यावसायिकता, गीतकार-संगीतकार असंतुलन, डिजिटल प्रभाव।

उत्तर: घ. आधुनिक लोकगीत, डी-टोनक व्यावसायिकता, गीतकार-संगीतकार असंतुलन, डिजिटल प्रभाव।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "आधुनिक लोकगीत, डी-टोनक व्यावसायिकता, गीतकार-संगीतकार असंतुलन, डिजिटल प्रभाव।" अछि।

प्रश्न 28937. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591: मनीष झा 'बौआभाइ'क "वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ" प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक लोकगीत, डी-टोनक व्यावसायिकता, गीतकार-संगीतकार असंतुलन, डिजिटल प्रभाव।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक लोकगीत, डी-टोनक व्यावसायिकता, गीतकार-संगीतकार असंतुलन, डिजिटल प्रभाव।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "आधुनिक लोकगीत, डी-टोनक व्यावसायिकता, गीतकार-संगीतकार असंतुलन, डिजिटल प्रभाव।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28938. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591: मनीष झा 'बौआभाइ'क "वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनीष झा 'बौआभाइ', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा / विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनीष झा 'बौआभाइ', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा / विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28939. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591: मनीष झा 'बौआभाइ'क "वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28940. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591: मनीष झा 'बौआभाइ'क "वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ"केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा / विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा / विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28941. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591: मनीष झा 'बौआभाइ'क "वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ" प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28942. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591मे मनीष झा ‘बौआभाइ’क “वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा / विमर्श आ “आधुनिक लोकगीत, डी-टोनक व्यावसायिकता, गीतकार-संगीतकार असंतुलन, डिजिटल प्रभाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2900, सूचकांक पंक्ति 1591मे मनीष झा ‘बौआभाइ’क “वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा / विमर्श आ “आधुनिक लोकगीत, डी-टोनक व्यावसायिकता, गीतकार-संगीतकार असंतुलन, डिजिटल प्रभाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2901 : विदेह-सदेह 20 — रवि भूषण पाठक: औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)

प्रश्न 28943. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1592मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28944. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28945. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विचार-डायरी/अंश

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विचार-डायरी/अंश

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विचार-डायरी/अंश” अछि।

प्रश्न 28946. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समालोचकक भूमिका, मैथिलीक साहित्यिक दायित्व, परदेशीपन, ओकादि बदलैक मनोविज्ञान।

उत्तर: घ. समालोचकक भूमिका, मैथिलीक साहित्यिक दायित्व, परदेशीपन, ओकादि बदलैक मनोविज्ञान।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समालोचकक भूमिका, मैथिलीक साहित्यिक दायित्व, परदेशीपन, ओकादि बदलैक मनोविज्ञान।” अछि।

प्रश्न 28947. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समालोचकक भूमिका, मैथिलीक साहित्यिक दायित्व, परदेशीपन, ओकादि बदलैक मनोविज्ञान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समालोचकक भूमिका, मैथिलीक साहित्यिक दायित्व, परदेशीपन, ओकादि बदलैक मनोविज्ञान।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समालोचकक भूमिका, मैथिलीक साहित्यिक दायित्व, परदेशीपन, ओकादि बदलैक मनोविज्ञान।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28948. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा विचार-डायरी/अंश

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा विचार-डायरी/अंश

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28949. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28950. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विचार-डायरी/अंशक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विचार-डायरी/अंशक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28951. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28952. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592मे रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)” प्रविष्टि गद्य, विचार-डायरी/अंश आ “समालोचकक भूमिका, मैथिलीक साहित्यिक दायित्व, परदेशीपन, ओकादि बदलैक मनोविज्ञान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2901, सूचकांक पंक्ति 1592मे रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी (दिनांक 07-04-17 सं 15-04-17)” प्रविष्टि गद्य, विचार-डायरी/अंश आ “समालोचकक भूमिका, मैथिलीक साहित्यिक दायित्व, परदेशीपन, ओकादि बदलैक मनोविज्ञान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2902 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)

प्रश्न 28953. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1593मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28954. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/संस्मरण

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/संस्मरण” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28955. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गायन विश्लेषण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गायन विश्लेषण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गायन विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 28956. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रो. चण्डेश्वर झाक शास्त्रीय-लोक संगम, भक्ति-शृंगार रस

उत्तर: घ. प्रो. चण्डेश्वर झाक शास्त्रीय-लोक संगम, भक्ति-शृंगार रस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रो. चण्डेश्वर झाक शास्त्रीय-लोक संगम, भक्ति-शृंगार रस” अछि।

प्रश्न 28957. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रो. चण्डेश्वर झाक शास्त्रीय-लोक संगम, भक्ति-शृंगार रस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रो. चण्डेश्वर झाक शास्त्रीय-लोक संगम, भक्ति-शृंगार रस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रो. चण्डेश्वर झाक शास्त्रीय-लोक संगम, भक्ति-शृंगार रस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28958. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य/संस्मरण, उप-विधा गायन विश्लेषण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य/संस्मरण, उप-विधा गायन विश्लेषण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28959. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28960. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य/संस्मरण-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गायन विश्लेषणक रूपमे गद्य/संस्मरण-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गायन विश्लेषणक रूपमे गद्य/संस्मरण-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28961. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28962. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)” प्रविष्टि गद्य/संस्मरण, गायन विश्लेषण आ “प्रो. चण्डेश्वर झाक शास्त्रीय-लोक संगम, भक्ति-शृंगार रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2902, सूचकांक पंक्ति 1593मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “प्रो. चण्डेश्वर झाक गीत (जोगिया मोर, हे हिर, सबहक सुधि, बड अजगत)” प्रविष्टि गद्य/संस्मरण, गायन विश्लेषण आ “प्रो. चण्डेश्वर झाक शास्त्रीय-लोक संगम, भक्ति-शृंगार रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2903 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में

प्रश्न 28963. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1594मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28964. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28965. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक विमर्श (नारी)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक विमर्श (नारी)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक विमर्श (नारी)” अछि।

प्रश्न 28966. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक संरचना, पत्नी-पति संबंध, सौतिन-प्रथा, संस्थागत शोषण।

उत्तर: घ. परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक संरचना, पत्नी-पति संबंध, सौतिन-प्रथा, संस्थागत शोषण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक संरचना, पत्नी-पति संबंध, सौतिन-प्रथा, संस्थागत शोषण।” अछि।

प्रश्न 28967. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक संरचना, पत्नी-पति संबंध, सौतिन-प्रथा, संस्थागत शोषण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक संरचना, पत्नी-पति संबंध, सौतिन-प्रथा, संस्थागत शोषण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक संरचना, पत्नी-पति संबंध, सौतिन-प्रथा, संस्थागत शोषण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28968. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा सामाजिक विमर्श (नारी)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा सामाजिक विमर्श (नारी)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28969. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28970. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक विमर्श (नारी)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक विमर्श (नारी)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28971. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28972. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में” प्रविष्टि गद्य, सामाजिक विमर्श (नारी) आ “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक संरचना, पत्नी-पति संबंध, सौतिन-प्रथा, संस्थागत शोषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2903, सूचकांक पंक्ति 1594मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ में” प्रविष्टि गद्य, सामाजिक विमर्श (नारी) आ “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक संरचना, पत्नी-पति संबंध, सौतिन-प्रथा, संस्थागत शोषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2904 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?

प्रश्न 28973. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1595मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28974. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28975. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोककथा विवेचन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोककथा विवेचन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोककथा विवेचन” अछि।

प्रश्न 28976. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधुश्रावणीक तांत्रिक-लोक मूल्य, स्त्री-पुरुषक मर्यादा, गौरीक तीन रूपक प्रतीकात्मक अर्थ।

उत्तर: घ. मधुश्रावणीक तांत्रिक-लोक मूल्य, स्त्री-पुरुषक मर्यादा, गौरीक तीन रूपक प्रतीकात्मक अर्थ।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुश्रावणीक तांत्रिक-लोक मूल्य, स्त्री-पुरुषक मर्यादा, गौरीक तीन रूपक प्रतीकात्मक अर्थ।” अछि।

प्रश्न 28977. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मधुश्रावणीक तांत्रिक-लोक मूल्य, स्त्री-पुरुषक मर्यादा, गौरीक तीन रूपक प्रतीकात्मक अर्थ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुश्रावणीक तांत्रिक-लोक मूल्य, स्त्री-पुरुषक मर्यादा, गौरीक तीन रूपक प्रतीकात्मक अर्थ।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुश्रावणीक तांत्रिक-लोक मूल्य, स्त्री-पुरुषक मर्यादा, गौरीक तीन रूपक प्रतीकात्मक अर्थ।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28978. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लोककथा विवेचन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लोककथा विवेचन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28979. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28980. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोककथा विवेचनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोककथा विवेचनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28981. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28982. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?” प्रविष्टि गद्य, लोककथा विवेचन आ “मधुश्रावणीक तांत्रिक-लोक मूल्य, स्त्री-पुरुषक मर्यादा, गौरीक तीन रूपक प्रतीकात्मक अर्थ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2904, सूचकांक पंक्ति 1595मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर दोन्द?” प्रविष्टि गद्य, लोककथा विवेचन आ “मधुश्रावणीक तांत्रिक-लोक मूल्य, स्त्री-पुरुषक मर्यादा, गौरीक तीन रूपक प्रतीकात्मक अर्थ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2905 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे

प्रश्न 28983. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1596मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28984. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28985. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 28986. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. असफल प्रेम, फौजी अधिकारी बनबाक आकांक्षा, विश्वासघात आ ऋचा-प्रकाश-चंद्रकला मे उलझन।

उत्तर: घ. असफल प्रेम, फौजी अधिकारी बनबाक आकांक्षा, विश्वासघात आ ऋचा-प्रकाश-चंद्रकला मे उलझन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “असफल प्रेम, फौजी अधिकारी बनबाक आकांक्षा, विश्वासघात आ ऋचा-प्रकाश-चंद्रकला मे उलझन।” अछि।

प्रश्न 28987. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. असफल प्रेम, फौजी अधिकारी बनबाक आकांक्षा, विश्वासघात आ ऋचा-प्रकाश-चंद्रकला मे उलझन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असफल प्रेम, फौजी अधिकारी बनबाक आकांक्षा, विश्वासघात आ ऋचा-प्रकाश-चंद्रकला मे उलझन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “असफल प्रेम, फौजी अधिकारी बनबाक आकांक्षा, विश्वासघात आ ऋचा-प्रकाश-चंद्रकला मे उलझन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28988. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28989. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 28990. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 28991. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 28992. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “असफल प्रेम, फौजी अधिकारी बनबाक आकांक्षा, विश्वासघात आ ऋचा-प्रकाश-चंद्रकला मे उलझन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2905, सूचकांक पंक्ति 1596मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “असफल प्रेम, फौजी अधिकारी बनबाक आकांक्षा, विश्वासघात आ ऋचा-प्रकाश-चंद्रकला मे उलझन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2906 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना

प्रश्न 28993. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1597मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 28994. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 28995. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोक-साहित्यिक विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोक-साहित्यिक विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक-साहित्यिक विमर्श” अछि।

प्रश्न 28996. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम-सीता लोकधारा, सीता परीक्षा/बहिष्कार, मैथिलानीक सामूहिक वेदना, दहेज/जन्मान्तर कथा।

उत्तर: घ. राम-सीता लोकधारा, सीता परीक्षा/बहिष्कार, मैथिलानीक सामूहिक वेदना, दहेज/जन्मान्तर कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम-सीता लोकधारा, सीता परीक्षा/बहिष्कार, मैथिलानीक सामूहिक वेदना, दहेज/जन्मान्तर कथा।” अछि।

प्रश्न 28997. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम-सीता लोकधारा, सीता परीक्षा/बहिष्कार, मैथिलानीक सामूहिक वेदना, दहेज/जन्मान्तर कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम-सीता लोकधारा, सीता परीक्षा/बहिष्कार, मैथिलानीक सामूहिक वेदना, दहेज/जन्मान्तर कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम-सीता लोकधारा, सीता परीक्षा/बहिष्कार, मैथिलानीक सामूहिक वेदना, दहेज/जन्मान्तर कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 28998. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लोक-साहित्यिक विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लोक-साहित्यिक विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 28999. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29000. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोक-साहित्यिक विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोक-साहित्यिक विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29001. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29002. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना” प्रविष्टि गद्य, लोक-साहित्यिक विमर्श आ “राम-सीता लोकधारा, सीता परीक्षा/बहिष्कार, मैथिलानीक सामूहिक वेदना, दहेज/जन्मान्तर कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2906, सूचकांक पंक्ति 1597मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाईं केर वेदना” प्रविष्टि गद्य, लोक-साहित्यिक विमर्श आ “राम-सीता लोकधारा, सीता परीक्षा/बहिष्कार, मैथिलानीक सामूहिक वेदना, दहेज/जन्मान्तर कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2907 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन

प्रश्न 29003. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1598मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29004. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29005. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मानवशास्त्रीय निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मानवशास्त्रीय निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “मानवशास्त्रीय निबन्ध” अछि।

प्रश्न 29006. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधुश्रावणीकेँ होलीमून सँ तुलना, नाग-नागिनी पूजा, लोकविद्या आ शिक्षा व्यवस्था।

उत्तर: घ. मधुश्रावणीकेँ होलीमून सँ तुलना, नाग-नागिनी पूजा, लोकविद्या आ शिक्षा व्यवस्था।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुश्रावणीकेँ होलीमून सँ तुलना, नाग-नागिनी पूजा, लोकविद्या आ शिक्षा व्यवस्था।” अछि।

प्रश्न 29007. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मधुश्रावणीकेँ होलीमून सँ तुलना, नाग-नागिनी पूजा, लोकविद्या आ शिक्षा व्यवस्था।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुश्रावणीकेँ होलीमून सँ तुलना, नाग-नागिनी पूजा, लोकविद्या आ शिक्षा व्यवस्था।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुश्रावणीकेँ होलीमून सँ तुलना, नाग-नागिनी पूजा, लोकविद्या आ शिक्षा व्यवस्था।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29008. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा मानवशास्त्रीय निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा मानवशास्त्रीय निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29009. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29010. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ मानवशास्त्रीय निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ मानवशास्त्रीय निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29011. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29012. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि गद्य, मानवशास्त्रीय निबन्ध आ “मधुश्रावणीकेँ होलीमून सँ तुलना, नाग-नागिनी पूजा, लोकविद्या आ शिक्षा व्यवस्था।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2907, सूचकांक पंक्ति 1598मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि गद्य, मानवशास्त्रीय निबन्ध आ “मधुश्रावणीकेँ होलीमून सँ तुलना, नाग-नागिनी पूजा, लोकविद्या आ शिक्षा व्यवस्था।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2908 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव

प्रश्न 29013. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1599मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29014. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29015. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोकगीत विवेचन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोकगीत विवेचन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोकगीत विवेचन” अछि।

प्रश्न 29016. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जोग गीतमे तांत्रिक ओ प्रेम-उत्तेजना, स्त्री-स्वतंत्रता आ आकर्षणक क्रिया।

उत्तर: घ. जोग गीतमे तांत्रिक ओ प्रेम-उत्तेजना, स्त्री-स्वतंत्रता आ आकर्षणक क्रिया।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जोग गीतमे तांत्रिक ओ प्रेम-उत्तेजना, स्त्री-स्वतंत्रता आ आकर्षणक क्रिया।” अछि।

प्रश्न 29017. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जोग गीतमे तांत्रिक ओ प्रेम-उत्तेजना, स्त्री-स्वतंत्रता आ आकर्षणक क्रिया।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जोग गीतमे तांत्रिक ओ प्रेम-उत्तेजना, स्त्री-स्वतंत्रता आ आकर्षणक क्रिया।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जोग गीतमे तांत्रिक ओ प्रेम-उत्तेजना, स्त्री-स्वतंत्रता आ आकर्षणक क्रिया।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29018. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लोकगीत विवेचन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लोकगीत विवेचन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29019. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29020. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोकगीत विवेचनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोकगीत विवेचनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29021. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29022. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, लोकगीत विवेचन आ “जोग गीतमे तांत्रिक ओ प्रेम-उत्तेजना, स्त्री-स्वतंत्रता आ आकर्षणक क्रिया।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2908, सूचकांक पंक्ति 1599मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, लोकगीत विवेचन आ “जोग गीतमे तांत्रिक ओ प्रेम-उत्तेजना, स्त्री-स्वतंत्रता आ आकर्षणक क्रिया।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2909 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति

प्रश्न 29023. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1600मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29024. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29025. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 29026. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तमाकुलक सामाजिक स्वीकारोक्ति, स्वास्थ्य-विज्ञान विरोधाभास, मिथिलामे व्यसनक विडम्बना।

उत्तर: घ. तमाकुलक सामाजिक स्वीकारोक्ति, स्वास्थ्य-विज्ञान विरोधाभास, मिथिलामे व्यसनक विडम्बना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तमाकुलक सामाजिक स्वीकारोक्ति, स्वास्थ्य-विज्ञान विरोधाभास, मिथिलामे व्यसनक विडम्बना।” अछि।

प्रश्न 29027. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तमाकुलक सामाजिक स्वीकारोक्ति, स्वास्थ्य-विज्ञान विरोधाभास, मिथिलामे व्यसनक विडम्बना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तमाकुलक सामाजिक स्वीकारोक्ति, स्वास्थ्य-विज्ञान विरोधाभास, मिथिलामे व्यसनक विडम्बना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तमाकुलक सामाजिक स्वीकारोक्ति, स्वास्थ्य-विज्ञान विरोधाभास, मिथिलामे व्यसनक विडम्बना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29028. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा सामाजिक समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा सामाजिक समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29029. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29030. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29031. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29032. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, सामाजिक समीक्षा आ “तमाकुलक सामाजिक स्वीकारोक्ति, स्वास्थ्य-विज्ञान विरोधाभास, मिथिलामे व्यसनक विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2909, सूचकांक पंक्ति 1600मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, सामाजिक समीक्षा आ “तमाकुलक सामाजिक स्वीकारोक्ति, स्वास्थ्य-विज्ञान विरोधाभास, मिथिलामे व्यसनक विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2910 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी के: स्त्री? पुरुष?

प्रश्न 29033. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी के: स्त्री? पुरुष?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी के: स्त्री? पुरुष?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी के: स्त्री? पुरुष?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1601मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी के: स्त्री? पुरुष?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29034. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी के: स्त्री? पुरुष?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29035. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी के: स्त्री? पुरुष?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नारी विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नारी विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नारी विमर्श” अछि।

प्रश्न 29036. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी के: स्त्री? पुरुष?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली स्त्री-लेखनक बहस, किपलदेव ठाकूर सँ विद्यापति धरि, नेटिव आउटसाइडर द्वन्द।

उत्तर: घ. मैथिली स्त्री-लेखनक बहस, किपलदेव ठाकूर सँ विद्यापति धरि, नेटिव आउटसाइडर द्वन्द।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली स्त्री-लेखनक बहस, किपलदेव ठाकूर सँ विद्यापति धरि, नेटिव आउटसाइडर द्वन्द।” अछि।

प्रश्न 29037. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी केः स्त्री? पुरुष?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली स्त्री-लेखनक बहस, किपलदेव ठाकूर सँ विद्यापति धरि, नेटिव आउटसाइडर द्वन्द।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली स्त्री-लेखनक बहस, किपलदेव ठाकूर सँ विद्यापति धरि, नेटिव आउटसाइडर द्वन्द।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली स्त्री-लेखनक बहस, किपलदेव ठाकूर सँ विद्यापति धरि, नेटिव आउटसाइडर द्वन्द।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29038. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी केः स्त्री? पुरुष?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा नारी विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा नारी विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29039. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी केः स्त्री? पुरुष?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29040. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी केः स्त्री? पुरुष?”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नारी विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नारी विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29041. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी केः स्त्री? पुरुष?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29042. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी के: स्त्री? पुरुष?” प्रविष्टि गद्य, नारी विमर्श आ “मैथिली स्त्री-लेखनक बहस, किपलदेव ठाकूर सँ विद्यापति धरि, नेटिव आउटसाइडर द्वन्द।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2910, सूचकांक पंक्ति 1601मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा केर अधिकारी के: स्त्री? पुरुष?” प्रविष्टि गद्य, नारी विमर्श आ “मैथिली स्त्री-लेखनक बहस, किपलदेव ठाकूर सँ विद्यापति धरि, नेटिव आउटसाइडर द्वन्द।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2911 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज

प्रश्न 29043. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1602मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29044. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29045. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इतिहास-शोध निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इतिहास-शोध निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास-शोध निबन्ध” अछि।

प्रश्न 29046. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मणिपुरक राजा गरीब नबाज (1709-48) केर जीवन, अरामबाई अस्त्र, समय मशीन, पोलो।

उत्तर: घ. मणिपुरक राजा गरीब नबाज (1709-48) केर जीवन, अरामबाई अस्त्र, समय मशीन, पोलो।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मणिपुरक राजा गरीब नबाज (1709-48) केर जीवन, अरामबाई अस्त्र, समय मशीन, पोलो।” अछि।

प्रश्न 29047. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मणिपुरक राजा गरीब नबाज (1709-48) केर जीवन, अरामबाई अस्त्र, समय मशीन, पोलो।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मणिपुरक राजा गरीब नबाज (1709-48) केर जीवन, अरामबाई अस्त्र, समय मशीन, पोलो।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मणिपुरक राजा गरीब नबाज (1709-48) केर जीवन, अरामबाई अस्त्र, समय मशीन, पोलो।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29048. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास-शोध निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास-शोध निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29049. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29050. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ इतिहास-शोध निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ इतिहास-शोध निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29051. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29052. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज” प्रविष्टि गद्य, इतिहास-शोध निबन्ध आ “मणिपुरक राजा गरीब नबाज (1709-48) केर जीवन, अरामबाई अस्त्र, समय मशीन, पोलो।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2911, सूचकांक पंक्ति 1602मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज” प्रविष्टि गद्य, इतिहास-शोध निबन्ध आ “मणिपुरक राजा गरीब नबाज (1709-48) केर जीवन, अरामबाई अस्त्र, समय मशीन, पोलो।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2912 : विदेह-सदेह 20 — जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल': महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम

प्रश्न 29053. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603: जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1603मे जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क प्रविष्टि “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29054. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603: जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29055. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603: जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एल्बम समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एल्बम समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “एल्बम समीक्षा” अछि।

प्रश्न 29056. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603: जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वर: विकास झा, रश्मि झा

उत्तर: घ. स्वर: विकास झा, रश्मि झा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वर: विकास झा, रश्मि झा” अछि।

प्रश्न 29057. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603: जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वर: विकास झा, रश्मि झा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वर: विकास झा, रश्मि झा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वर: विकास झा, रश्मि झा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29058. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603: जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा एल्बम समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा एल्बम समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29059. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603: जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29060. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603: जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ एल्बम समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ एल्बम समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29061. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603: जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29062. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603मे जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम” प्रविष्टि गद्य, एल्बम समीक्षा आ “स्वर: विकास झा, रश्मि झा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2912, सूचकांक पंक्ति 1603मे जगदीश चंद्र ठाकूर 'अनिल'क “महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्डक एलबम” प्रविष्टि गद्य, एल्बम समीक्षा आ “स्वर: विकास झा, रश्मि झा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2913 : विदेह-सदेह 20 — वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार): दायित्व (हिन्दी कथा)

प्रश्न 29063. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604: वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दायित्व (हिन्दी कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दायित्व (हिन्दी कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1604मे वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क प्रविष्टि “दायित्व (हिन्दी कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29064. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604: वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29065. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604: वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा / अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा / अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा / अनुवाद” अछि।

प्रश्न 29066. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604: वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रमणीकक पितृसत्ताक परिवार, वारिसक असमर्थता, बेटाक निर्भरता ओ विसंगति।

उत्तर: घ. रमणीकक पितृसत्ताक परिवार, वारिसक असमर्थता, बेटाक निर्भरता ओ विसंगति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रमणीकक पितृसत्ताक परिवार, वारिसक असमर्थता, बेटाक निर्भरता ओ विसंगति।” अछि।

प्रश्न 29067. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604: वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रमणीकक पितृसत्ताक परिवार, वारिसक असमर्थता, बेटाक निर्भरता ओ विसंगति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रमणीकक पितृसत्ताक परिवार, वारिसक असमर्थता, बेटाक निर्भरता ओ विसंगति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रमणीकक पितृसत्ताक परिवार, वारिसक असमर्थता, बेटाक निर्भरता ओ विसंगति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29068. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604: वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार), विधा गद्य, उप-विधा कथा / अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार), विधा गद्य, उप-विधा कथा / अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29069. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604: वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29070. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604: वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा / अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा / अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29071. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604: वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29072. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604मे वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)” प्रविष्टि गद्य, कथा / अनुवाद आ “रमणीकक पितृसत्ताक परिवार, वारिसक असमर्थता, बेटाक निर्भरता ओ विसंगति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2913, सूचकांक पंक्ति 1604मे वन्दना अवस्थी दुबे (अनुवाद: आशीष अनचिन्हार)क “दायित्व (हिन्दी कथा)” प्रविष्टि गद्य, कथा / अनुवाद आ “रमणीकक पितृसत्ताक परिवार, वारिसक असमर्थता, बेटाक निर्भरता ओ विसंगति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2914 : विदेह-सदेह 20 — आशीष अनचिन्हार: प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)

प्रश्न 29073. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605: आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1605मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29074. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605: आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29075. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605: आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 29076. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605: आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मात्राक विश्लेषण

उत्तर: घ. मात्राक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मात्राक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 29077. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605: आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मात्राक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मात्राक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मात्राक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29078. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605: आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29079. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605: आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29080. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605: आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)”केँ विदेह-सदेह 20क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29081. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605: आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29082. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605मे आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)” प्रविष्टि पद्य, गजल/व्यंग्य आ “मात्राक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2914, सूचकांक पंक्ति 1605मे आशीष अनचिन्हारक “प्रो. हरिमोहन झाजीक गजल (ने लडलहूँ फौजदारी जाँ...)” प्रविष्टि पद्य, गजल/व्यंग्य आ “मात्राक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2915 : विदेह-सदेह 20 — आशीष अनचिन्हार: भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)

प्रश्न 29083. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606: आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1606मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29084. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606: आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29085. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606: आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषा-विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषा-विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषा-विमर्श” अछि।

प्रश्न 29086. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606: आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली मे मधुरताक सामन्ती मूल, ब्राह्मण-कायस्थ आ दलित भाषा केर अन्तर, राज्य आन्दोलन।

उत्तर: घ. मैथिली मे मधुरताक सामन्ती मूल, ब्राह्मण-कायस्थ आ दलित भाषा केर अन्तर, राज्य आन्दोलन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली मे मधुरताक सामन्ती मूल, ब्राह्मण-कायस्थ आ दलित भाषा केर अन्तर, राज्य आन्दोलन।” अछि।

प्रश्न 29087. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606: आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली मे मधुरताक सामन्ती मूल, ब्राह्मण-कायस्थ आ दलित भाषा केर अन्तर, राज्य आन्दोलन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली मे मधुरताक सामन्ती मूल, ब्राह्मण-कायस्थ आ दलित भाषा केर अन्तर, राज्य आन्दोलन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली मे मधुरताक सामन्ती मूल, ब्राह्मण-कायस्थ आ दलित भाषा केर अन्तर, राज्य आन्दोलन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29088. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606: आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा भाषा-विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा भाषा-विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29089. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606: आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29090. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606: आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भाषा-विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भाषा-विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29091. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606: आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29092. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606मे आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)” प्रविष्टि गद्य, भाषा-विमर्श आ “मैथिली मे मधुरताक सामन्ती मूल, ब्राह्मण-कायस्थ आ दलित भाषा केर अन्तर, राज्य आन्दोलन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2915, सूचकांक पंक्ति 1606मे आशीष अनचिन्हारक “भाषा केर मनोविज्ञान (तीन टा बिंदू)” प्रविष्टि गद्य, भाषा-विमर्श आ “मैथिली मे मधुरताक सामन्ती मूल, ब्राह्मण-कायस्थ आ दलित भाषा केर अन्तर, राज्य आन्दोलन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2916 : विदेह-सदेह 20 — आशीष अनचिन्हार: मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट

प्रश्न 29093. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607: आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1607मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29094. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607: आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29095. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607: आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रतिवेदन/चित्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रतिवेदन/चित्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रतिवेदन/चित्र” अछि।

प्रश्न 29096. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607: आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाढ़ पीड़ित सहायता, ठोस काज, मिथिला राज्यक दृष्टि, सामूहिक समर्थन।

उत्तर: घ. बाढ़ पीड़ित सहायता, ठोस काज, मिथिला राज्यक दृष्टि, सामूहिक समर्थन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाढ़ पीड़ित सहायता, ठोस काज, मिथिला राज्यक दृष्टि, सामूहिक समर्थन।” अछि।

प्रश्न 29097. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607: आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाढ़ पीड़ित सहायता, ठोस काज, मिथिला राज्यक दृष्टि, सामूहिक समर्थन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाढ़ पीड़ित सहायता, ठोस काज, मिथिला राज्यक दृष्टि, सामूहिक समर्थन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाढ़ पीड़ित सहायता, ठोस काज, मिथिला राज्यक दृष्टि, सामूहिक समर्थन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29098. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607: आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा प्रतिवेदन/चित्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा प्रतिवेदन/चित्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29099. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607: आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29100. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607: आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रतिवेदन/चित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रतिवेदन/चित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29101. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607: आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29102. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607मे आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट” प्रविष्टि गद्य, प्रतिवेदन/चित्र आ “बाढ़ पीड़ित सहायता, ठोस काज, मिथिला राज्यक दृष्टि, सामूहिक समर्थन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2916, सूचकांक पंक्ति 1607मे आशीष अनचिन्हारक “मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काज पर रिपोर्ट” प्रविष्टि गद्य, प्रतिवेदन/चित्र आ “बाढ़ पीड़ित सहायता, ठोस काज, मिथिला राज्यक दृष्टि, सामूहिक समर्थन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2917 : विदेह-सदेह 20 — आशीष अनचिन्हार: "कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि

प्रश्न 29103. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608: आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1608मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29104. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608: आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29105. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608: आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्रकारिता/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्रकारिता/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्रकारिता/शोध” अछि।

प्रश्न 29106. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608: आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भालसरिक गाछ (2000) सँ पल्लवमिथिला, समदया, प्रकरांतर क्रम

उत्तर: घ. भालसरिक गाछ (2000) सँ पल्लवमिथिला, समदया, प्रकरांतर क्रम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भालसरिक गाछ (2000) सँ पल्लवमिथिला, समदया, प्रकरांतर क्रम” अछि।

प्रश्न 29107. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608: आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भालसरिक गाछ (2000) सँ पल्लवमिथिला, समदया, प्रकरांतर क्रम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भालसरिक गाछ (2000) सँ पल्लवमिथिला, समदया, प्रकरांतर क्रम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भालसरिक गाछ (2000) सँ पल्लवमिथिला, समदया, प्रकरांतर क्रम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29108. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608: आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा पत्रकारिता/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा पत्रकारिता/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29109. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608: आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29110. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608: आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि”कें विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्रकारिता/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्रकारिता/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29111. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608: आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29112. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608मे आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि” प्रविष्टि गद्य, पत्रकारिता/शोध आ “भालसरिक गाछ (2000) सँ पल्लवमिथिला, समदया, प्रकरांतर क्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2917, सूचकांक पंक्ति 1608मे आशीष अनचिन्हारक “"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि” प्रविष्टि गद्य, पत्रकारिता/शोध आ “भालसरिक गाछ (2000) सँ पल्लवमिथिला, समदया, प्रकरांतर क्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2918 : विदेह-सदेह 20 — नन्द विलास राय: हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)

प्रश्न 29113. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609: नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1609मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29114. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609: नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29115. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609: नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29116. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609: नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ट्रेन भेट, आधुनिक महिलासँ भेँट, वैवाहिक जीवनमे फेरबदल, पत्नीक अपेक्षा।

उत्तर: घ. ट्रेन भेट, आधुनिक महिलासँ भेँट, वैवाहिक जीवनमे फेरबदल, पत्नीक अपेक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ट्रेन भेट, आधुनिक महिलासँ भेँट, वैवाहिक जीवनमे फेरबदल, पत्नीक अपेक्षा।” अछि।

प्रश्न 29117. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609: नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ट्रेन भेट, आधुनिक महिलासँ भेँट, वैवाहिक जीवनमे फेरबदल, पत्नीक अपेक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ट्रेन भेट, आधुनिक महिलासँ भेँट, वैवाहिक जीवनमे फेरबदल, पत्नीक अपेक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ट्रेन भेट, आधुनिक महिलासँ भेँट, वैवाहिक जीवनमे फेरबदल, पत्नीक अपेक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29118. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609: नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29119. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609: नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29120. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609: नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29121. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609: नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29122. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609मे नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ट्रेन भेट, आधुनिक महिलासँ भेँट, वैवाहिक जीवनमे फेरबदल, पत्नीक अपेक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2918, सूचकांक पंक्ति 1609मे नन्द विलास रायक “हमर लॉटरी निकलल (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ट्रेन भेट, आधुनिक महिलासँ भेँट, वैवाहिक जीवनमे फेरबदल, पत्नीक अपेक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2919 : विदेह-सदेह 20 — नन्द विलास राय: शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)

प्रश्न 29123. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610: नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1610मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29124. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610: नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29125. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610: नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य कथा” अछि।

प्रश्न 29126. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610: नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छात्र भाषणमे शिक्षाक उद्देश्य: चरित्र निर्माण, दहेज लेब, इत्यादि विडम्बना।

उत्तर: घ. छात्र भाषणमे शिक्षाक उद्देश्य: चरित्र निर्माण, दहेज लेब, इत्यादि विडम्बना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छात्र भाषणमे शिक्षाक उद्देश्य: चरित्र निर्माण, दहेज लेब, इत्यादि विडम्बना।” अछि।

प्रश्न 29127. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610: नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छात्र भाषणमे शिक्षाक उद्देश्य: चरित्र निर्माण, दहेज लेब, इत्यादि विडम्बना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छात्र भाषणमे शिक्षाक उद्देश्य: चरित्र निर्माण, दहेज लेब, इत्यादि विडम्बना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छात्र भाषणमे शिक्षाक उद्देश्य: चरित्र निर्माण, दहेज लेब, इत्यादि विडम्बना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29128. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610: नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29129. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610: नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29130. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610: नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29131. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610: नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29132. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610मे नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य कथा आ “छात्र भाषणमे शिक्षाक उद्देश्य: चरित्र निर्माण, दहेज लेब, इत्यादि विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2919, सूचकांक पंक्ति 1610मे नन्द विलास रायक “शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य (प्रतियोगिता भाषण)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य कथा आ “छात्र भाषणमे शिक्षाक उद्देश्य: चरित्र निर्माण, दहेज लेब, इत्यादि विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2920 : विदेह-सदेह 20 — नन्द विलास राय: कठही साइकिल (लघुकथा)

प्रश्न 29133. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611: नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कठही साइकिल (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कठही साइकिल (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1611मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “कठही साइकिल (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29134. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611: नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29135. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611: नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29136. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611: नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुरनका साइकिलपर संघर्ष, गेनालाल आ जययालालक बेटा-डीएसपी बनलाक कथा।

उत्तर: घ. पुरनका साइकिलपर संघर्ष, गेनालाल आ जययालालक बेटा-डीएसपी बनलाक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुरनका साइकिलपर संघर्ष, गेनालाल आ जययालालक बेटा-डीएसपी बनलाक कथा।” अछि।

प्रश्न 29137. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611: नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुरनका साइकिलपर संघर्ष, गेनालाल आ जययालालक बेटा-डीएसपी बनलाक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुरनका साइकिलपर संघर्ष, गेनालाल आ जययालालक बेटा-डीएसपी बनलाक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुरनका साइकिलपर संघर्ष, गेनालाल आ जययालालक बेटा-डीएसपी बनलाक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29138. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611: नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29139. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611: नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29140. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611: नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29141. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611: नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29142. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611मे नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पुरनका साइकिलपर संघर्ष, गेनालाल आ जययालालक बेटा-डीएसपी बनलाक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2920, सूचकांक पंक्ति 1611मे नन्द विलास रायक “कठही साइकिल (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पुरनका साइकिलपर संघर्ष, गेनालाल आ जययालालक बेटा-डीएसपी बनलाक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2921 : विदेह-सदेह 20 — नन्द विलास राय: हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)

प्रश्न 29143. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612: नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1612मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29144. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612: नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29145. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612: नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29146. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612: नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंग-संगार, रेलयात्रामे धोखा, पत्नीक सजावटक मनोरथ।

उत्तर: घ. रंग-संगार, रेलयात्रामे धोखा, पत्नीक सजावटक मनोरथ।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंग-संगार, रेलयात्रामे धोखा, पत्नीक सजावटक मनोरथ।” अछि।

प्रश्न 29147. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612: नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंग-संगार, रेलयात्रामे धोखा, पत्नीक सजावटक मनोरथ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंग-संगार, रेलयात्रामे धोखा, पत्नीक सजावटक मनोरथ।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंग-संगार, रेलयात्रामे धोखा, पत्नीक सजावटक मनोरथ।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29148. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612: नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29149. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612: नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29150. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612: नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29151. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612: नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29152. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612मे नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “रंग-संगार, रेलयात्रामे धोखा, पत्नीक सजावटक मनोरथ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2921, सूचकांक पंक्ति 1612मे नन्द विलास रायक “हमर पत्नीक मनोरथ (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “रंग-संगार, रेलयात्रामे धोखा, पत्नीक सजावटक मनोरथ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2922 : विदेह-सदेह 20 — नन्द विलास राय: चरितर कक्षाक ब्लडपेसर

प्रश्न 29153. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613: नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चरितर कक्षाक ब्लडपेसर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चरितर कक्षाक ब्लडपेसर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1613मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29154. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613: नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29155. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613: नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29156. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613: नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चरितर काकाक ब्लडप्रेशर, गहुम पटवनिक चिन्ता, पुल निर्माण।

उत्तर: घ. चरितर काकाक ब्लडप्रेशर, गहुम पटवनिक चिन्ता, पुल निर्माण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चरितर काकाक ब्लडप्रेशर, गहुम पटवनिक चिन्ता, पुल निर्माण।” अछि।

प्रश्न 29157. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613: नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चरितर काकाक ब्लडप्रेशर, गहुम पटवनिक चिन्ता, पुल निर्माण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चरितर काकाक ब्लडप्रेशर, गहुम पटवनिक चिन्ता, पुल निर्माण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चरितर काकाक ब्लडप्रेशर, गहुम पटवनिक चिन्ता, पुल निर्माण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29158. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613: नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29159. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613: नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29160. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613: नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29161. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613: नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29162. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613मे नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चरितर काकाक ब्लडप्रेशर, गहुम पटवनिक चिन्ता, पुल निर्माण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2922, सूचकांक पंक्ति 1613मे नन्द विलास रायक “चरितर कक्षाक ब्लडपेसर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चरितर काकाक ब्लडप्रेशर, गहुम पटवनिक चिन्ता, पुल निर्माण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2923 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)

प्रश्न 29163. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1614मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29164. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29165. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 29166. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्लोवेनिया, ऑस्ट्रिया, वियना, बेनिस, पेरिस भ्रमण

उत्तर: घ. स्लोवेनिया, ऑस्ट्रिया, वियना, बेनिस, पेरिस भ्रमण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्लोवेनिया, ऑस्ट्रिया, वियना, बेनिस, पेरिस भ्रमण” अछि।

प्रश्न 29167. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्लोवेनिया, ऑस्ट्रिया, वियना, बेनिस, पेरिस भ्रमण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्लोवेनिया, ऑस्ट्रिया, वियना, बेनिस, पेरिस भ्रमण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्लोवेनिया, ऑस्ट्रिया, वियना, बेनिस, पेरिस भ्रमण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29168. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29169. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29170. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29171. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29172. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “स्लोवेनिया, ऑस्ट्रिया, वियना, बेनिस, पेरिस भ्रमण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2923, सूचकांक पंक्ति 1614मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “यूरोप यात्रा (प्रशिक्षण 2009)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “स्लोवेनिया, ऑस्ट्रिया, वियना, बेनिस, पेरिस भ्रमण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2924 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: अमृतसर यात्रा

प्रश्न 29173. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अमृतसर यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अमृतसर यात्रा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1615मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “अमृतसर यात्रा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29174. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29175. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-विवरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-विवरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-विवरण” अछि।

प्रश्न 29176. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वर्ण मन्दिर, जलियाँवाला बाग, दुर्गियाना मन्दिर, सीमा झण्डा समारोह।

उत्तर: घ. स्वर्ण मन्दिर, जलियाँवाला बाग, दुर्गियाना मन्दिर, सीमा झण्डा समारोह।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वर्ण मन्दिर, जलियाँवाला बाग, दुर्गियाना मन्दिर, सीमा झण्डा समारोह।” अछि।

प्रश्न 29177. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वर्ण मन्दिर, जलियाँवाला बाग, दुर्गियाना मन्दिर, सीमा झण्डा समारोह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वर्ण मन्दिर, जलियाँवाला बाग, दुर्गियाना मन्दिर, सीमा झण्डा समारोह।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वर्ण मन्दिर, जलियाँवाला बाग, दुर्गियाना मन्दिर, सीमा झण्डा समारोह।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29178. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-विवरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-विवरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29179. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29180. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-विवरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-विवरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29181. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29182. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-विवरण आ “स्वर्ण मन्दिर, जलियाँवाला बाग, दुर्गियाना मन्दिर, सीमा झण्डा समारोह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2924, सूचकांक पंक्ति 1615मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “अमृतसर यात्रा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-विवरण आ “स्वर्ण मन्दिर, जलियाँवाला बाग, दुर्गियाना मन्दिर, सीमा झण्डा समारोह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2925 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: पहिल नौकरी (संस्मरण)

प्रश्न 29183. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पहिल नौकरी (संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पहिल नौकरी (संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1616मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “पहिल नौकरी (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29184. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29185. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 29186. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. टेलीफोन निरीक्षक, राँची, जमशेदपुर, सुपौल, विवाह, थानान्तरण।

उत्तर: घ. टेलीफोन निरीक्षक, राँची, जमशेदपुर, सुपौल, विवाह, थानान्तरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “टेलीफोन निरीक्षक, राँची, जमशेदपुर, सुपौल, विवाह, थानान्तरण।” अछि।

प्रश्न 29187. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. टेलीफोन निरीक्षक, राँची, जमशेदपुर, सुपौल, विवाह, थानान्तरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टेलीफोन निरीक्षक, राँची, जमशेदपुर, सुपौल, विवाह, थानान्तरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “टेलीफोन निरीक्षक, राँची, जमशेदपुर, सुपौल, विवाह, थानान्तरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29188. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29189. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29190. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29191. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29192. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “टेलीफोन निरीक्षक, राँची, जमशेदपुर, सुपौल, विवाह, थानान्तरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2925, सूचकांक पंक्ति 1616मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “पहिल नौकरी (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “टेलीफोन निरीक्षक, राँची, जमशेदपुर, सुपौल, विवाह, थानान्तरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2926 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: एकसरि (लघुकथा)

प्रश्न 29193. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकसरि (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकसरि (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1617मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “एकसरि (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29194. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29195. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29196. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मीरा एकसर भेल, बापक मृत्युपर जमीन हथियाएबाक चक्र, अन्तमे बेघर।

उत्तर: घ. मीरा एकसर भेल, बापक मृत्युपर जमीन हथियाएबाक चक्र, अन्तमे बेघर।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मीरा एकसर भेल, बापक मृत्युपर जमीन हथियाएबाक चक्र, अन्तमे बेघर।” अछि।

प्रश्न 29197. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मीरा एकसर भेल, बापक मृत्युपर जमीन हथियाएबाक चक्र, अन्तमे बेघर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मीरा एकसर भेल, बापक मृत्युपर जमीन हथियाएबाक चक्र, अन्तमे बेघर।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मीरा एकसर भेल, बापक मृत्युपर जमीन हथियाएबाक चक्र, अन्तमे बेघर।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29198. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29199. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29200. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29201. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29202. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मीरा एकसर भेल, बापक मृत्युपर जमीन हथियाएबाक चक्र, अन्तमे बेघर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2926, सूचकांक पंक्ति 1617मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “एकसरि (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मीरा एकसर भेल, बापक मृत्युपर जमीन हथियाएबाक चक्र, अन्तमे बेघर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2927 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: असगुन (लघुकथा)

प्रश्न 29203. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. असगुन (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असगुन (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1618मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “असगुन (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29204. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29205. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29206. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. असगुन सँ डरैबला पण्डितजी

उत्तर: घ. असगुन सँ डरैबला पण्डितजी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “असगुन सँ डरैबला पण्डितजी” अछि।

प्रश्न 29207. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. असगुन सँ डरैबला पण्डितजी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असगुन सँ डरैबला पण्डितजी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “असगुन सँ डरैबला पण्डितजी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29208. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29209. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29210. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29211. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29212. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “असगुन सँ डरैबला पण्डितजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2927, सूचकांक पंक्ति 1618मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “असगुन (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “असगुन सँ डरैबला पण्डितजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2928 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)

प्रश्न 29213. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1619मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29214. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29215. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक विमर्श” अछि।

प्रश्न 29216. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विधवाक पुनर्विवाह, ऐतिहासिक सतीप्रथा, समाजक दोहरा मापदण्ड।

उत्तर: घ. विधवाक पुनर्विवाह, ऐतिहासिक सतीप्रथा, समाजक दोहरा मापदण्ड।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विधवाक पुनर्विवाह, ऐतिहासिक सतीप्रथा, समाजक दोहरा मापदण्ड।” अछि।

प्रश्न 29217. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विधवाक पुनर्विवाह, ऐतिहासिक सतीप्रथा, समाजक दोहरा मापदण्ड।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विधवाक पुनर्विवाह, ऐतिहासिक सतीप्रथा, समाजक दोहरा मापदण्ड।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विधवाक पुनर्विवाह, ऐतिहासिक सतीप्रथा, समाजक दोहरा मापदण्ड।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29218. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा सामाजिक विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा सामाजिक विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29219. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29220. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29221. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29222. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)” प्रविष्टि गद्य, सामाजिक विमर्श आ “विधवाक पुनर्विवाह, ऐतिहासिक सतीप्रथा, समाजक दोहरा मापदण्ड।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2928, सूचकांक पंक्ति 1619मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बिधवा विवाह (निबन्धात्मक)” प्रविष्टि गद्य, सामाजिक विमर्श आ “विधवाक पुनर्विवाह, ऐतिहासिक सतीप्रथा, समाजक दोहरा मापदण्ड।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2929 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)

प्रश्न 29223. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1620मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29224. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29225. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दार्शनिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दार्शनिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 29226. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-मरण, गीता, भगवानक दृष्टि, मृत्युक अनिवार्यता।

उत्तर: घ. जीवन-मरण, गीता, भगवानक दृष्टि, मृत्युक अनिवार्यता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-मरण, गीता, भगवानक दृष्टि, मृत्युक अनिवार्यता।” अछि।

प्रश्न 29227. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-मरण, गीता, भगवानक दृष्टि, मृत्युक अनिवार्यता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-मरण, गीता, भगवानक दृष्टि, मृत्युक अनिवार्यता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-मरण, गीता, भगवानक दृष्टि, मृत्युक अनिवार्यता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29228. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29229. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29230. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दार्शनिकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दार्शनिकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29231. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29232. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक आ “जीवन-मरण, गीता, भगवानक दृष्टि, मृत्युक अनिवार्यता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2929, सूचकांक पंक्ति 1620मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आगाँ के देखलक अछि? (दार्शनिक निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक आ “जीवन-मरण, गीता, भगवानक दृष्टि, मृत्युक अनिवार्यता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2930 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: नवका पोखैर (संस्मरण)

प्रश्न 29233. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नवका पोखैर (संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवका पोखैर (संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1621मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “नवका पोखैर (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29234. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29235. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ग्रामीण संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ग्रामीण संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “ग्रामीण संस्मरण” अछि।

प्रश्न 29236. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पोखर, महादेव मन्दिर, धार्मिक-सांस्कृतिक क्रियाकलाप, ग्रामीण पर्यावरण।

उत्तर: घ. पोखर, महादेव मन्दिर, धार्मिक-सांस्कृतिक क्रियाकलाप, ग्रामीण पर्यावरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पोखर, महादेव मन्दिर, धार्मिक-सांस्कृतिक क्रियाकलाप, ग्रामीण पर्यावरण।” अछि।

प्रश्न 29237. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पोखर, महादेव मन्दिर, धार्मिक-सांस्कृतिक क्रियाकलाप, ग्रामीण पर्यावरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोखर, महादेव मन्दिर, धार्मिक-सांस्कृतिक क्रियाकलाप, ग्रामीण पर्यावरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पोखर, महादेव मन्दिर, धार्मिक-सांस्कृतिक क्रियाकलाप, ग्रामीण पर्यावरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29238. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा ग्रामीण संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा ग्रामीण संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29239. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29240. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ ग्रामीण संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ ग्रामीण संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29241. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29242. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, ग्रामीण संस्मरण आ “पोखर, महादेव मन्दिर, धार्मिक-सांस्कृतिक क्रियाकलाप, ग्रामीण पर्यावरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2930, सूचकांक पंक्ति 1621मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “नवका पोखैर (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, ग्रामीण संस्मरण आ “पोखर, महादेव मन्दिर, धार्मिक-सांस्कृतिक क्रियाकलाप, ग्रामीण पर्यावरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2931 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)

प्रश्न 29243. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1622मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29244. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29245. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कानूनी सूचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कानूनी सूचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कानूनी सूचना” अछि।

प्रश्न 29246. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वसीयत बनाबक विधि, प्रोबेट, उत्तराधिकारी, पारिवारिक झगडा निवारण।

उत्तर: घ. वसीयत बनाबक विधि, प्रोबेट, उत्तराधिकारी, पारिवारिक झगडा निवारण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वसीयत बनाबक विधि, प्रोबेट, उत्तराधिकारी, पारिवारिक झगडा निवारण।” अछि।

प्रश्न 29247. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वसीयत बनाबक विधि, प्रोबेट, उत्तराधिकारी, पारिवारिक झगडा निवारण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसीयत बनाबक विधि, प्रोबेट, उत्तराधिकारी, पारिवारिक झगडा निवारण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वसीयत बनाबक विधि, प्रोबेट, उत्तराधिकारी, पारिवारिक झगडा निवारण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29248. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कानूनी सूचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कानूनी सूचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29249. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29250. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कानूनी सूचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कानूनी सूचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29251. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29252. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, कानूनी सूचना आ “वसीयत बनाबक विधि, प्रोबेट, उत्तराधिकारी, पारिवारिक झगडा निवारण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2931, सूचकांक पंक्ति 1622मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “इच्छा पत्र (उपदेशात्मक निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, कानूनी सूचना आ “वसीयत बनाबक विधि, प्रोबेट, उत्तराधिकारी, पारिवारिक झगडा निवारण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2932 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)

प्रश्न 29253. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1623मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29254. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29255. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा” अछि।

प्रश्न 29256. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पद्मनाभस्वामी मन्दिर, केरलक राजधानी, सांस्कृतिक समृद्धि।

उत्तर: घ. पद्मनाभस्वामी मन्दिर, केरलक राजधानी, सांस्कृतिक समृद्धि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पद्मनाभस्वामी मन्दिर, केरलक राजधानी, सांस्कृतिक समृद्धि।” अछि।

प्रश्न 29257. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पद्मनाभस्वामी मन्दिर, केरलक राजधानी, सांस्कृतिक समृद्धि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पद्मनाभस्वामी मन्दिर, केरलक राजधानी, सांस्कृतिक समृद्धि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पद्मनाभस्वामी मन्दिर, केरलक राजधानी, सांस्कृतिक समृद्धि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29258. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29259. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29260. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्राक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्राक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29261. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29262. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा आ “पद्मनाभस्वामी मन्दिर, केरलक राजधानी, सांस्कृतिक समृद्धि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2932, सूचकांक पंक्ति 1623मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “तिरुअनन्तपुरम् (यात्रा)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा आ “पद्मनाभस्वामी मन्दिर, केरलक राजधानी, सांस्कृतिक समृद्धि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2933 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)

प्रश्न 29263. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1624मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29264. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29265. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कानूनी विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कानूनी विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कानूनी विमर्श” अछि।

प्रश्न 29266. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज उत्पीड़न, कानूनक दुरुपयोग, अदालती सुरक्षा उपाय।

उत्तर: घ. दहेज उत्पीड़न, कानूनक दुरुपयोग, अदालती सुरक्षा उपाय।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज उत्पीड़न, कानूनक दुरुपयोग, अदालती सुरक्षा उपाय।” अछि।

प्रश्न 29267. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज उत्पीड़न, कानूनक दुरुपयोग, अदालती सुरक्षा उपाय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज उत्पीड़न, कानूनक दुरुपयोग, अदालती सुरक्षा उपाय।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज उत्पीड़न, कानूनक दुरुपयोग, अदालती सुरक्षा उपाय।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29268. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कानूनी विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कानूनी विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29269. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29270. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कानूनी विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कानूनी विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29271. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29272. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)” प्रविष्टि गद्य, कानूनी विमर्श आ “दहेज उत्पीड़न, कानूनक दुरुपयोग, अदालती सुरक्षा उपाय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2933, सूचकांक पंक्ति 1624मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “कानूनी आतंकवाद (आइ.पी.सी. ४९८ए)” प्रविष्टि गद्य, कानूनी विमर्श आ “दहेज उत्पीड़न, कानूनक दुरुपयोग, अदालती सुरक्षा उपाय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2934 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: आजादक अन्त्येष्टि

प्रश्न 29273. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आजादक अन्त्येष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजादक अन्त्येष्टि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1625मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “आजादक अन्त्येष्टि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29274. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29275. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ऐतिहासिक संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ऐतिहासिक संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “ऐतिहासिक संस्मरण” अछि।

प्रश्न 29276. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चन्द्रशेखर आजादक अन्त्येष्टि, पं. शिवनायक मिश्र, कमला नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन।

उत्तर: घ. चन्द्रशेखर आजादक अन्त्येष्टि, पं. शिवनायक मिश्र, कमला नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चन्द्रशेखर आजादक अन्त्येष्टि, पं. शिवनायक मिश्र, कमला नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन।” अछि।

प्रश्न 29277. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चन्द्रशेखर आजादक अन्त्येष्टि, पं. शिवनायक मिश्र, कमला नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चन्द्रशेखर आजादक अन्त्येष्टि, पं. शिवनायक मिश्र, कमला नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चन्द्रशेखर आजादक अन्त्येष्टि, पं. शिवनायक मिश्र, कमला नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29278. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा ऐतिहासिक संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा ऐतिहासिक संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29279. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29280. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ ऐतिहासिक संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ ऐतिहासिक संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29281. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29282. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि” प्रविष्टि गद्य, ऐतिहासिक संस्मरण आ “चन्द्रशेखर आजादक अन्त्येष्टि, पं. शिवनायक मिश्र, कमला नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2934, सूचकांक पंक्ति 1625मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “आजादक अन्त्येष्टि” प्रविष्टि गद्य, ऐतिहासिक संस्मरण आ “चन्द्रशेखर आजादक अन्त्येष्टि, पं. शिवनायक मिश्र, कमला नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2935 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: मकर संक्रान्ति

प्रश्न 29283. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मकर संक्रान्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मकर संक्रान्ति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1626मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “मकर संक्रान्ति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29284. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29285. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सांस्कृतिक लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सांस्कृतिक लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सांस्कृतिक लेख” अछि।

प्रश्न 29286. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पोंगल, लोहड़ी, थतल संक्रान्ति, जल्लीकट्टू, तिलदान, उत्तरायण महत्व।

उत्तर: घ. पोंगल, लोहड़ी, थतल संक्रान्ति, जल्लीकट्टू, तिलदान, उत्तरायण महत्व।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पोंगल, लोहड़ी, थतल संक्रान्ति, जल्लीकट्टू, तिलदान, उत्तरायण महत्व।” अछि।

प्रश्न 29287. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पोंगल, लोहड़ी, थतल संक्रान्ति, जल्लीकट्टू, तिलदान, उत्तरायण महत्व।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोंगल, लोहड़ी, थतल संक्रान्ति, जल्लीकट्टू, तिलदान, उत्तरायण महत्व।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पोंगल, लोहड़ी, थतल संक्रान्ति, जल्लीकट्टू, तिलदान, उत्तरायण महत्व।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29288. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29289. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29290. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सांस्कृतिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सांस्कृतिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29291. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29292. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक लेख आ “पोंगल, लोहड़ी, थतल संक्रान्ति, जल्लीकट्टू, तिलदान, उत्तरायण महत्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2935, सूचकांक पंक्ति 1626मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “मकर संक्रान्ति” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक लेख आ “पोंगल, लोहड़ी, थतल संक्रान्ति, जल्लीकट्टू, तिलदान, उत्तरायण महत्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2936 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: राँची चारि दसक बाद

प्रश्न 29293. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राँची चारि दसक बाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राँची चारि दसक बाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1627मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “राँची चारि दसक बाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29294. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29295. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 29296. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. टैगोर हिल, योगदा सत्संग, रॉक गार्डन, राँची यात्रा 1973 से 2017 धरि।

उत्तर: घ. टैगोर हिल, योगदा सत्संग, रॉक गार्डन, राँची यात्रा 1973 से 2017 धरि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “टैगोर हिल, योगदा सत्संग, रॉक गार्डन, राँची यात्रा 1973 से 2017 धरि।” अछि।

प्रश्न 29297. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. टैगोर हिल, योगदा सत्संग, रॉक गार्डन, राँची यात्रा 1973 से 2017 धरि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टैगोर हिल, योगदा सत्संग, रॉक गार्डन, राँची यात्रा 1973 से 2017 धरि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “टैगोर हिल, योगदा सत्संग, रॉक गार्डन, राँची यात्रा 1973 से 2017 धरि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29298. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29299. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29300. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29301. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29302. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “टैगोर हिल, योगदा सत्संग, रॉक गार्डन, राँची यात्रा 1973 से 2017 धरि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2936, सूचकांक पंक्ति 1627मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “राँची चारि दसक बाद” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “टैगोर हिल, योगदा सत्संग, रॉक गार्डन, राँची यात्रा 1973 से 2017 धरि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2937 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: गामक बात (ग्राम संस्मरण)

प्रश्न 29303. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गामक बात (ग्राम संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक बात (ग्राम संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1628मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “गामक बात (ग्राम संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29304. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29305. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 29306. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परम्परा, दुगोला, अल्हा, भूत-प्रेत विश्वास, ग्राम जीवन परिवर्तन।

उत्तर: घ. परम्परा, दुगोला, अल्हा, भूत-प्रेत विश्वास, ग्राम जीवन परिवर्तन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परम्परा, दुगोला, अल्हा, भूत-प्रेत विश्वास, ग्राम जीवन परिवर्तन।” अछि।

प्रश्न 29307. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परम्परा, दुगोला, अल्हा, भूत-प्रेत विश्वास, ग्राम जीवन परिवर्तन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परम्परा, दुगोला, अल्हा, भूत-प्रेत विश्वास, ग्राम जीवन परिवर्तन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परम्परा, दुगोला, अल्हा, भूत-प्रेत विश्वास, ग्राम जीवन परिवर्तन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29308. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29309. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29310. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29311. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29312. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “परम्परा, दुगोला, अल्हा, भूत-प्रेत विश्वास, ग्राम जीवन परिवर्तन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2937, सूचकांक पंक्ति 1628मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “गामक बात (ग्राम संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “परम्परा, दुगोला, अल्हा, भूत-प्रेत विश्वास, ग्राम जीवन परिवर्तन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2938 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: हिन्दू महिलाकेँ सम्पैतमे अधिकार

प्रश्न 29313. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकेँ सम्पैतमे अधिकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हिन्दू महिलाकेँ सम्पैतमे अधिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिन्दू महिलाकेँ सम्पैतमे अधिकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1629मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “हिन्दू महिलाकेँ सम्पैतमे अधिकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29314. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकेँ सम्पैतमे अधिकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29315. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकें सम्पैतमे अधिकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विधि विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विधि विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विधि विमर्श” अछि।

प्रश्न 29316. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकें सम्पैतमे अधिकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 1956/2005 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, बेटीक पैतृक सम्पत्ति अधिकार।

उत्तर: घ. 1956/2005 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, बेटीक पैतृक सम्पत्ति अधिकार।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “1956/2005 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, बेटीक पैतृक सम्पत्ति अधिकार।” अछि।

प्रश्न 29317. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकें सम्पैतमे अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 1956/2005 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, बेटीक पैतृक सम्पत्ति अधिकार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 1956/2005 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, बेटीक पैतृक सम्पत्ति अधिकार।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “1956/2005 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, बेटीक पैतृक सम्पत्ति अधिकार।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29318. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकें सम्पैतमे अधिकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा विधि विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा विधि विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29319. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकें सम्पैतमे अधिकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29320. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकें सम्पैतमे अधिकार”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विधि विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विधि विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29321. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकें सम्पैतमे अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29322. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकें सम्पैतमे अधिकार” प्रविष्टि गद्य, विधि विमर्श आ “1956/2005 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, बेटीक पैतृक सम्पत्ति अधिकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2938, सूचकांक पंक्ति 1629मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “हिन्दू महिलाकें सम्पैतमे अधिकार” प्रविष्टि गद्य, विधि विमर्श आ “1956/2005 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, बेटीक पैतृक सम्पत्ति अधिकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2939 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)

प्रश्न 29323. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1630मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29324. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29325. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक न्याय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक न्याय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक न्याय” अछि।

प्रश्न 29326. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वृद्धाश्रम, माता-पिता भरण-पोषण कानून, वृद्धक शोषण, अपना घर।

उत्तर: घ. वृद्धाश्रम, माता-पिता भरण-पोषण कानून, वृद्धक शोषण, अपना घर।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वृद्धाश्रम, माता-पिता भरण-पोषण कानून, वृद्धक शोषण, अपना घर।” अछि।

प्रश्न 29327. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वृद्धाश्रम, माता-पिता भरण-पोषण कानून, वृद्धक शोषण, अपना घर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृद्धाश्रम, माता-पिता भरण-पोषण कानून, वृद्धक शोषण, अपना घर।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृद्धाश्रम, माता-पिता भरण-पोषण कानून, वृद्धक शोषण, अपना घर।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29328. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा सामाजिक न्याय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा सामाजिक न्याय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29329. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29330. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक न्यायक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक न्यायक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29331. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29332. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)” प्रविष्टि गद्य, सामाजिक न्याय आ “वृद्धाश्रम, माता-पिता भरण-पोषण कानून, वृद्धक शोषण, अपना घर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2939, सूचकांक पंक्ति 1630मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “वरिष्ठ नागरिक (सामाजिक विमर्श)” प्रविष्टि गद्य, सामाजिक न्याय आ “वृद्धाश्रम, माता-पिता भरण-पोषण कानून, वृद्धक शोषण, अपना घर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2940 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)

प्रश्न 29333. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1631मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29334. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29335. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आत्मकथा-संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आत्मकथा-संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आत्मकथा-संस्मरण” अछि।

प्रश्न 29336. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बालक्रीडा, दादा, खेती-बाडी, खेल-कूद, पोखर, ग्रामीण संस्कार।

उत्तर: घ. बालक्रीडा, दादा, खेती-बाडी, खेल-कूद, पोखर, ग्रामीण संस्कार।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बालक्रीडा, दादा, खेती-बाडी, खेल-कूद, पोखर, ग्रामीण संस्कार।” अछि।

प्रश्न 29337. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बालक्रीडा, दादा, खेती-बाडी, खेल-कूद, पोखर, ग्रामीण संस्कार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बालक्रीडा, दादा, खेती-बाडी, खेल-कूद, पोखर, ग्रामीण संस्कार।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बालक्रीडा, दादा, खेती-बाडी, खेल-कूद, पोखर, ग्रामीण संस्कार।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29338. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आत्मकथा-संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आत्मकथा-संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29339. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29340. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आत्मकथा-संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आत्मकथा-संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29341. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29342. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, आत्मकथा-संस्मरण आ “बालक्रीडा, दादा, खेती-बाडी, खेल-कूद, पोखर, ग्रामीण संस्कार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2940, सूचकांक पंक्ति 1631मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “बाल्यकाल (भाग १-२ संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, आत्मकथा-संस्मरण आ “बालक्रीडा, दादा, खेती-बाडी, खेल-कूद, पोखर, ग्रामीण संस्कार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2941 : विदेह-सदेह 20 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: क्रोध (नैतिक निबन्ध)

प्रश्न 29343. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. क्रोध (नैतिक निबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्रोध (नैतिक निबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1632मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “क्रोध (नैतिक निबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29344. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29345. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दार्शनिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दार्शनिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 29346. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्रोधक मनोविज्ञान, कारण, नियन्त्रण, सामाजिक हानि।

उत्तर: घ. क्रोधक मनोविज्ञान, कारण, नियन्त्रण, सामाजिक हानि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “क्रोधक मनोविज्ञान, कारण, नियन्त्रण, सामाजिक हानि।” अछि।

प्रश्न 29347. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. क्रोधक मनोविज्ञान, कारण, नियन्त्रण, सामाजिक हानि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्रोधक मनोविज्ञान, कारण, नियन्त्रण, सामाजिक हानि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्रोधक मनोविज्ञान, कारण, नियन्त्रण, सामाजिक हानि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29348. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29349. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29350. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दार्शनिकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दार्शनिकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29351. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29352. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक आ “क्रोधक मनोविज्ञान, कारण, नियन्त्रण, सामाजिक हानि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2941, सूचकांक पंक्ति 1632मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक “क्रोध (नैतिक निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक आ “क्रोधक मनोविज्ञान, कारण, नियन्त्रण, सामाजिक हानि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2942 : विदेह-सदेह 20 — बी.एन. लाल दास: चिचडी वाली भौजी (कथा)

प्रश्न 29353. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633: बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चिचडी वाली भौजी (कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिचडी वाली भौजी (कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1633मे बी.एन. लाल दासक प्रविष्टि “चिचडी वाली भौजी (कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29354. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633: बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29355. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633: बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29356. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633: बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विधवा जस्सी केर पुनर्विवाह, लाल ककाक निर्णय, सामाजिक बहिष्कारक चुनौती।

उत्तर: घ. विधवा जस्सी केर पुनर्विवाह, लाल ककाक निर्णय, सामाजिक बहिष्कारक चुनौती।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विधवा जस्सी केर पुनर्विवाह, लाल ककाक निर्णय, सामाजिक बहिष्कारक चुनौती।” अछि।

प्रश्न 29357. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633: बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विधवा जस्सी केर पुनर्विवाह, लाल ककाक निर्णय, सामाजिक बहिष्कारक चुनौती।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विधवा जस्सी केर पुनर्विवाह, लाल ककाक निर्णय, सामाजिक बहिष्कारक चुनौती।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विधवा जस्सी केर पुनर्विवाह, लाल ककाक निर्णय, सामाजिक बहिष्कारक चुनौती।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29358. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633: बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बी.एन. लाल दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बी.एन. लाल दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29359. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633: बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29360. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633: बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29361. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633: बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29362. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633मे बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विधवा जस्सी केर पुनर्विवाह, लाल ककाक निर्णय, सामाजिक बहिष्कारक चुनौती।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2942, सूचकांक पंक्ति 1633मे बी.एन. लाल दासक “चिचडी वाली भौजी (कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विधवा जस्सी केर पुनर्विवाह, लाल ककाक निर्णय, सामाजिक बहिष्कारक चुनौती।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2943 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. शिव कुमार प्रसाद: दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन

प्रश्न 29363. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634: डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1634मे डॉ. शिव कुमार प्रसादक प्रविष्टि “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29364. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634: डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29365. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634: डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना/विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना/विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/विमर्श” अछि।

प्रश्न 29366. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634: डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित साहित्य विभाजन पर प्रश्न, प्रेमचंद सँ रेणु, मैथिली साहित्य में सूची।

उत्तर: घ. दलित साहित्य विभाजन पर प्रश्न, प्रेमचंद सँ रेणु, मैथिली साहित्य में सूची।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित साहित्य विभाजन पर प्रश्न, प्रेमचंद सँ रेणु, मैथिली साहित्य में सूची।” अछि।

प्रश्न 29367. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634: डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित साहित्य विभाजन पर प्रश्न, प्रेमचंद सँ रेणु, मैथिली साहित्य में सूची।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित साहित्य विभाजन पर प्रश्न, प्रेमचंद सँ रेणु, मैथिली साहित्य में सूची।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित साहित्य विभाजन पर प्रश्न, प्रेमचंद सँ रेणु, मैथिली साहित्य में सूची।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29368. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634: डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शिव कुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शिव कुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29369. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634: डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29370. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634: डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना/विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना/विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29371. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634: डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29372. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634मे डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/विमर्श आ “दलित साहित्य विभाजन पर प्रश्न, प्रेमचंद सँ रेणु, मैथिली साहित्य में सूची।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2943, सूचकांक पंक्ति 1634मे डॉ. शिव कुमार प्रसादक “दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेँबाक प्रयोजन” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/विमर्श आ “दलित साहित्य विभाजन पर प्रश्न, प्रेमचंद सँ रेणु, मैथिली साहित्य में सूची।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2944 : विदेह-सदेह 20 — ओम प्रकाश झा: बिहनि कथा- विचोहक नोर

प्रश्न 29373. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635: ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिहनि कथा- विचोहक नोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहनि कथा- विचोहक नोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1635मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “बिहनि कथा- विचोहक नोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29374. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635: ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29375. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635: ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अतिलघु कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अतिलघु कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अतिलघु कथा” अछि।

प्रश्न 29376. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635: ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोटा छोडैत समय बेटी-पिता विछोह, भावनात्मक वर्णन।

उत्तर: घ. कोटा छोडैत समय बेटी-पिता विछोह, भावनात्मक वर्णन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोटा छोडैत समय बेटी-पिता विछोह, भावनात्मक वर्णन।” अछि।

प्रश्न 29377. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635: ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोटा छोडैत समय बेटी-पिता विछोह, भावनात्मक वर्णन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोटा छोडैत समय बेटी-पिता विछोह, भावनात्मक वर्णन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोटा छोडैत समय बेटी-पिता विछोह, भावनात्मक वर्णन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29378. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635: ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा अतिलघु कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा अतिलघु कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29379. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635: ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29380. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635: ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अतिलघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अतिलघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29381. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635: ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29382. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635मे ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर” प्रविष्टि गद्य, अतिलघु कथा आ “कोटा छोडैत समय बेटी-पिता विछोह, भावनात्मक वर्णन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2944, सूचकांक पंक्ति 1635मे ओम प्रकाश झाक “बिहनि कथा- विचोहक नोर” प्रविष्टि गद्य, अतिलघु कथा आ “कोटा छोडैत समय बेटी-पिता विछोह, भावनात्मक वर्णन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2945 : विदेह-सदेह 20 — राजदेव मण्डल: बीहैन कथा (मितरिया चोट)

प्रश्न 29383. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहैन कथा (मितरिया चोट)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहैन कथा (मितरिया चोट)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1636मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बीहैन कथा (मितरिया चोट)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29384. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29385. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29386. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एम.एल.एस. चुनाव, साइकल हटाबाक उपकारी, सेनानीक डाँट, अन्तर्मे चोट।

उत्तर: घ. एम.एल.एस. चुनाव, साइकल हटाबाक उपकारी, सेनानीक डाँट, अन्तर्मे चोट।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एम.एल.एस. चुनाव, साइकल हटाबाक उपकारी, सेनानीक डाँट, अन्तर्मे चोट।” अछि।

प्रश्न 29387. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एम.एल.एस. चुनाव, साइकल हटाबाक उपकारी, सेनानीक डाँट, अन्तर्मे चोट।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एम.एल.एस. चुनाव, साइकल हटाबाक उपकारी, सेनानीक डाँट, अन्तर्मे चोट।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एम.एल.एस. चुनाव, साइकल हटाबाक उपकारी, सेनानीक डाँट, अन्तर्मे चोट।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29388. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29389. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29390. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29391. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29392. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636मे राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एम.एल.एस. चुनाव, साइकल हटाबाक उपकारी, सेनानीक डाँट, अन्तर्मे चोट।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2945, सूचकांक पंक्ति 1636मे राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (मितरिया चोट)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एम.एल.एस. चुनाव, साइकल हटाबाक उपकारी, सेनानीक डाँट, अन्तर्मे चोट।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2946 : विदेह-सदेह 20 — राजदेव मण्डल: बीहैन कथा (छोटकू दोस)

प्रश्न 29393. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहैन कथा (छोटकू दोस)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहैन कथा (छोटकू दोस)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1637मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बीहैन कथा (छोटकू दोस)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29394. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29395. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29396. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृष्ण-सुदामा दोस्ती, पुलिस अफिसर अपन आदर्श, 'छोटकू दोस' विडम्बना।

उत्तर: घ. कृष्ण-सुदामा दोस्ती, पुलिस अफिसर अपन आदर्श, 'छोटकू दोस' विडम्बना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृष्ण-सुदामा दोस्ती, पुलिस अफिसर अपन आदर्श, 'छोटकू दोस' विडम्बना।” अछि।

प्रश्न 29397. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृष्ण-सुदामा दोस्ती, पुलिस अफिसर अपन आदर्श, 'छोटकू दोस' विडम्बना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृष्ण-सुदामा दोस्ती, पुलिस अफिसर अपन आदर्श, 'छोटकू दोस' विडम्बना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृष्ण-सुदामा दोस्ती, पुलिस अफिसर अपन आदर्श, 'छोटकू दोस' विडम्बना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29398. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29399. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29400. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29401. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637: राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29402. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637मे राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “कृष्ण-सुदामा दोस्ती, पुलिस अफिसर अपन आदर्श, 'छोटकू दोस' विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2946, सूचकांक पंक्ति 1637मे राजदेव मण्डलक “बीहैन कथा (छोटकू दोस)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “कृष्ण-सुदामा दोस्ती, पुलिस अफिसर अपन आदर्श, 'छोटकू दोस' विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2947 : विदेह-सदेह 20 — सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी): "ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)

प्रश्न 29403. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638: सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क ""ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1638मे सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क प्रविष्टि ""ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29404. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638: सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क ""ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29405. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638: सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क ""ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा / अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा / अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "लघुकथा / अनुवाद" अछि।

प्रश्न 29406. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638: सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क ""ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शीतक ठंढ, राजाइ सीरक, ठंढी रजाइ जुगाड़, गरमाई देबाक ताना।

उत्तर: घ. शीतक ठंढ, राजाइ सीरक, ठंढी रजाइ जुगाड़, गरमाई देबाक ताना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "शीतक ठंढ, राजाइ सीरक, ठंढी रजाइ जुगाड़, गरमाई देबाक ताना।" अछि।

प्रश्न 29407. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638: सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क ""ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शीतक ठंढ, राजाइ सीरक, ठंढी रजाइ जुगाड़, गरमाई देबाक ताना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शीतक ठंढ, राजाइ सीरक, ठंढी रजाइ जुगाड़, गरमाई देबाक ताना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "शीतक ठंढ, राजाइ सीरक, ठंढी रजाइ जुगाड़, गरमाई देबाक ताना।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29408. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638: सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क “"ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा / अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा / अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29409. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638: सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क “"ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29410. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638: सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क “"ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा / अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा / अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29411. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638: सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क “"ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29412. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638मे सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क “"ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा / अनुवाद आ “शीतक ठंढ, राजाइ सीरक, ठंढी रजाइ जुगाड़, गरमाई देबाक ताना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2947, सूचकांक पंक्ति 1638मे सुकेश साहनी (अनुवाद: मुत्रा जी)क “"ठंदी रजाइ" (हिन्दी लघुकथा मैथिली रूपान्तरण)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा / अनुवाद आ “शीतक ठंढ, राजाइ सीरक, ठंढी रजाइ जुगाड़, गरमाई देबाक ताना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2948 : विदेह-सदेह 20 — मुन्रा जी: बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)

प्रश्न 29413. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639: मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1639मे मुन्रा जीक प्रविष्टि “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29414. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639: मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29415. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639: मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अतिलघु कथा शृंखला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अतिलघु कथा शृंखला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अतिलघु कथा शृंखला” अछि।

प्रश्न 29416. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639: मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विधान-झंडा, बेटी-बेटा भेद, समाजक आत्मचिंतन, मिथिला-संविधान बहस।

उत्तर: घ. विधान-झंडा, बेटी-बेटा भेद, समाजक आत्मचिंतन, मिथिला-संविधान बहस।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विधान-झंडा, बेटी-बेटा भेद, समाजक आत्मचिंतन, मिथिला-संविधान बहस।” अछि।

प्रश्न 29417. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639: मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विधान-झंडा, बेटी-बेटा भेद, समाजक आत्मचिंतन, मिथिला-संविधान बहस।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विधान-झंडा, बेटी-बेटा भेद, समाजक आत्मचिंतन, मिथिला-संविधान बहस।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विधान-झंडा, बेटी-बेटा भेद, समाजक आत्मचिंतन, मिथिला-संविधान बहस।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29418. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639: मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्रा जी, विधा गद्य, उप-विधा अतिलघु कथा शृंखला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्रा जी, विधा गद्य, उप-विधा अतिलघु कथा शृंखला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29419. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639: मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29420. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639: मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अतिलघु कथा शृंखलाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अतिलघु कथा शृंखलाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29421. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639: मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29422. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639मे मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)” प्रविष्टि गद्य, अतिलघु कथा शृंखला आ “विधान-झंडा, बेटी-बेटा भेद, समाजक आत्मचिंतन, मिथिला-संविधान बहस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2948, सूचकांक पंक्ति 1639मे मुन्रा जीक “बीहिन कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुवा)” प्रविष्टि गद्य, अतिलघु कथा शृंखला आ “विधान-झंडा, बेटी-बेटा भेद, समाजक आत्मचिंतन, मिथिला-संविधान बहस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2949 : विदेह-सदेह 20 — जवाहर लाल कश्यप: बीहिन कथा- कृक्कर

प्रश्न 29423. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640: जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा- कृक्कर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा- कृक्कर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1640मे जवाहर लाल कश्यपक प्रविष्टि “बीहिन कथा- कृक्कर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29424. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640: जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29425. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640: जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29426. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640: जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गाडीमे कुकुर, मांसक बुट्टी देबाक रणनीति, शक्ति आधिपत्यक व्यंग्य।

उत्तर: घ. गाडीमे कुकुर, मांसक बुट्टी देबाक रणनीति, शक्ति आधिपत्यक व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गाडीमे कुकुर, मांसक बुट्टी देबाक रणनीति, शक्ति आधिपत्यक व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 29427. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640: जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गाडीमे कुकुर, मांसक बुट्टी देबाक रणनीति, शक्ति आधिपत्यक व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाडीमे कुकुर, मांसक बुट्टी देबाक रणनीति, शक्ति आधिपत्यक व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गाडीमे कुकुर, मांसक बुट्टी देबाक रणनीति, शक्ति आधिपत्यक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29428. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640: जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29429. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640: जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29430. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640: जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29431. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640: जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29432. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640मे जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “गाडीमे कुकुर, मांसक बुट्टी देबाक रणनीति, शक्ति आधिपत्यक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2949, सूचकांक पंक्ति 1640मे जवाहर लाल कश्यपक “बीहिन कथा- कृक्कर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “गाडीमे कुकुर, मांसक बुट्टी देबाक रणनीति, शक्ति आधिपत्यक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2950 : विदेह-सदेह 20 — अब्दूर रज्जाक: बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)

प्रश्न 29433. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1641मे अब्दूर रज्जाकक प्रविष्टि “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29434. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29435. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29436. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासक आर्थिक अस्थिरता, अण्डाक दामक विसंगति, हास्यप्रधान मार्मिकता।

उत्तर: घ. प्रवासक आर्थिक अस्थिरता, अण्डाक दामक विसंगति, हास्यप्रधान मार्मिकता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासक आर्थिक अस्थिरता, अण्डाक दामक विसंगति, हास्यप्रधान मार्मिकता।” अछि।

प्रश्न 29437. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासक आर्थिक अस्थिरता, अण्डाक दामक विसंगति, हास्यप्रधान मार्मिकता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासक आर्थिक अस्थिरता, अण्डाक दामक विसंगति, हास्यप्रधान मार्मिकता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासक आर्थिक अस्थिरता, अण्डाक दामक विसंगति, हास्यप्रधान मार्मिकता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29438. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अब्दूर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अब्दूर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29439. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29440. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29441. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29442. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641मे अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रवासक आर्थिक अस्थिरता, अण्डाक दामक विसंगति, हास्यप्रधान मार्मिकता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2950, सूचकांक पंक्ति 1641मे अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा (परदेश गेलाक अण्डा कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रवासक आर्थिक अस्थिरता, अण्डाक दामक विसंगति, हास्यप्रधान मार्मिकता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2951 : विदेह-सदेह 20 — बृषेश चन्द्र लाल: बुद्धिचौ (लघुकथा)

प्रश्न 29443. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642: बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुद्धिचौ (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुद्धिचौ (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1642मे बृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “बुद्धिचौ (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29444. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642: बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29445. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642: बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य-लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य-लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य-लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29446. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642: बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बुद्धिक शक्ति, परिवार निर्माण, रामबहादुरक बुद्धिचौ निकललाक व्यंग्य।

उत्तर: घ. बुद्धिक शक्ति, परिवार निर्माण, रामबहादुरक बुद्धिचौ निकललाक व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बुद्धिक शक्ति, परिवार निर्माण, रामबहादुरक बुद्धिचौ निकललाक व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 29447. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642: बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बुद्धिक शक्ति, परिवार निर्माण, रामबहादुरक बुद्धिचौ निकललाक व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुद्धिक शक्ति, परिवार निर्माण, रामबहादुरक बुद्धिचौ निकललाक व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बुद्धिक शक्ति, परिवार निर्माण, रामबहादुरक बुद्धिचौ निकललाक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29448. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642: बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य-लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य-लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29449. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642: बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29450. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642: बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य-लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य-लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29451. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642: बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29452. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642मे बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य-लघुकथा आ “बुद्धिक शक्ति, परिवार निर्माण, रामबहादुरक बुद्धिचौ निकललाक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2951, सूचकांक पंक्ति 1642मे बृषेश चन्द्र लालक “बुद्धिचौ (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य-लघुकथा आ “बुद्धिक शक्ति, परिवार निर्माण, रामबहादुरक बुद्धिचौ निकललाक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2952 : विदेह-सदेह 20 — मिथिलेश कुमार सिन्हा: बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)

प्रश्न 29453. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643: मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1643मे मिथिलेश कुमार सिन्हाक प्रविष्टि “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29454. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643: मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29455. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643: मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा त्रयी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा त्रयी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा त्रयी” अछि।

प्रश्न 29456. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643: मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेममे चुप्पी, कृष्णजन्म आजादी, माया सँ पीडित पति-पत्नी संवाद।

उत्तर: घ. प्रेममे चुप्पी, कृष्णजन्म आजादी, माया सँ पीडित पति-पत्नी संवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेममे चुप्पी, कृष्णजन्म आजादी, माया सँ पीडित पति-पत्नी संवाद।” अछि।

प्रश्न 29457. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643: मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेममे चुप्पी, कृष्णजन्म आजादी, माया सँ पीडित पति-पत्नी संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेममे चुप्पी, कृष्णजन्म आजादी, माया सँ पीडित पति-पत्नी संवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेममे चुप्पी, कृष्णजन्म आजादी, माया सँ पीडित पति-पत्नी संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29458. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643: मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश कुमार सिन्हा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा त्रयी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार सिन्हा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा त्रयी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29459. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643: मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29460. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643: मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा त्रयीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा त्रयीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29461. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643: मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29462. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643मे मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा त्रयी आ “प्रेममे चुप्पी, कृष्णजन्म आजादी, माया सँ पीडित पति-पत्नी संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2952, सूचकांक पंक्ति 1643मे मिथिलेश कुमार सिन्हाक “बीहिन कथा (चुप्पी, आजादी, माया)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा त्रयी आ “प्रेममे चुप्पी, कृष्णजन्म आजादी, माया सँ पीडित पति-पत्नी संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2953 : विदेह-सदेह 20 — शिवशंकर: कंबल

प्रश्न 29463. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644: शिवशंकरक “कंबल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कंबल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कंबल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1644मे शिवशंकरक प्रविष्टि “कंबल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29464. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644: शिवशंकरक “कंबल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29465. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644: शिवशंकरक “कंबल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29466. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644: शिवशंकरक “कंबल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बैंक अधिकारीक पुरान कम्बल, पत्नी-विदेशी संस्कार, कम्बल बिक्री, आत्मा विदा।

उत्तर: घ. बैंक अधिकारीक पुरान कम्बल, पत्नी-विदेशी संस्कार, कम्बल बिक्री, आत्मा विदा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बैंक अधिकारीक पुरान कम्बल, पत्नी-विदेशी संस्कार, कम्बल बिक्री, आत्मा विदा।” अछि।

प्रश्न 29467. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644: शिवशंकरक “कंबल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बैंक अधिकारीक पुरान कम्बल, पत्नी-विदेशी संस्कार, कम्बल बिक्री, आत्मा विदा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बैंक अधिकारीक पुरान कम्बल, पत्नी-विदेशी संस्कार, कम्बल बिक्री, आत्मा विदा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बैंक अधिकारीक पुरान कम्बल, पत्नी-विदेशी संस्कार, कम्बल बिक्री, आत्मा विदा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29468. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644: शिवशंकरक “कंबल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिवशंकर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिवशंकर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29469. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644: शिवशंकरक “कंबल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29470. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644: शिवशंकरक “कंबल”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29471. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644: शिवशंकरक “कंबल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29472. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644मे शिवशंकरक “कंबल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बैंक अधिकारीक पुरान कम्बल, पत्नी-विदेशी संस्कार, कम्बल बिक्री, आत्मा विदा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2953, सूचकांक पंक्ति 1644मे शिवशंकरक “कंबल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बैंक अधिकारीक पुरान कम्बल, पत्नी-विदेशी संस्कार, कम्बल बिक्री, आत्मा विदा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2954 : विदेह-सदेह 20 — कपिलेश्वर राउत: चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व

प्रश्न 29473. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645: कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1645मे कपिलेश्वर राउतक प्रविष्टि “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29474. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645: कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29475. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645: कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/गद्य कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/गद्य कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/गद्य कथा” अछि।

प्रश्न 29476. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645: कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चाहक दोकानक सङ्घर्ष, ग्राम पलायन, आगि लागल गप्प, छोट रिश्वतक चुनौती, भूकम्प आ बुझाइ, विकास अवरोधक।

उत्तर: घ. चाहक दोकानक सङ्घर्ष, ग्राम पलायन, आगि लागल गप्प, छोट रिश्वतक चुनौती, भूकम्प आ बुझाइ, विकास अवरोधक।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चाहक दोकानक सङ्घर्ष, ग्राम पलायन, आगि लागल गप्प, छोट रिश्वतक चुनौती, भूकम्प आ बुझाइ, विकास अवरोधक।” अछि।

प्रश्न 29477. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645: कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चाहक दोकानक सङ्घर्ष, ग्राम पलायन, आगि लागल गप्प, छोट रिश्वतक चुनौती, भूकम्प आ बुझाइ, विकास अवरोधक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चाहक दोकानक सङ्घर्ष, ग्राम पलायन, आगि लागल गप्प, छोट रिश्वतक चुनौती, भूकम्प आ बुझाइ, विकास अवरोधक।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चाहक दोकानक सङ्घर्ष, ग्राम पलायन, आगि लागल गप्प, छोट रिश्वतक चुनौती, भूकम्प आ बुझाइ, विकास अवरोधक।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29478. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645: कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/गद्य कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लघुकथा/गद्य कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29479. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645: कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29480. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645: कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व”कें विदेह-सदेह 20क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/गद्य कथाक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/गद्य कथाक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29481. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645: कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29482. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645मे कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/गद्य कथा आ “चाहक दोकानक सङ्घर्ष, ग्राम पलायन, आगि लागल गप्प, छोट रिश्वतक चुनौती, भूकम्प आ बुझाइ, विकास अवरोधक।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2954, सूचकांक पंक्ति 1645मे कपिलेश्वर राउतक “चाहबला, गामे बीरान भड गेल, तीलकें तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कहिया चेतब, विघटनकारी तत्त्व” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लघुकथा/गद्य कथा आ “चाहक दोकानक सङ्घर्ष, ग्राम पलायन, आगि लागल गप्प, छोट रिश्वतक चुनौती, भूकम्प आ बुझाइ, विकास अवरोधक।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2955 : विदेह-सदेह 20 — नारायण यादव: चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी

प्रश्न 29483. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646: नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1646मे नारायण यादवक प्रविष्टि “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29484. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646: नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29485. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646: नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा / लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा / लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा / लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29486. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646: नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चौदह नम्बर कोर्ट पेशाब मुकदमा, चौरचन पावनिक घराना, छोटकी पुतोहुक सुधार, गोबर बिछनी आ बालिका शिक्षा।

उत्तर: घ. चौदह नम्बर कोर्ट पेशाब मुकदमा, चौरचन पावनिक घराना, छोटकी पुतोहुक सुधार, गोबर बिछनी आ बालिका शिक्षा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चौदह नम्बर कोर्ट पेशाब मुकदमा, चौरचन पावनिक घराना, छोटकी पुतोहुक सुधार, गोबर बिछनी आ बालिका शिक्षा।” अछि।

प्रश्न 29487. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646: नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चौदह नम्बर कोर्ट पेशाब मुकदमा, चौरचन पावनिक घराना, छोटकी पुतोहुक सुधार, गोबर बिछनी आ बालिका शिक्षा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चौदह नम्बर कोर्ट पेशाब मुकदमा, चौरचन पावनिक घराना, छोटकी पुतोहुक सुधार, गोबर बिछनी आ बालिका शिक्षा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चौदह नम्बर कोर्ट पेशाब मुकदमा, चौरचन पावनिक घराना, छोटकी पुतोहुक सुधार, गोबर बिछनी आ बालिका शिक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29488. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646: नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नारायण यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा / लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नारायण यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा / लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29489. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646: नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29490. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646: नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा / लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा / लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29491. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646: नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29492. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646मे नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी” प्रविष्टि गद्य, कथा / लघुकथा आ “चौदह नम्बर कोर्ट पेशाब मुकदमा, चौरचन पावनिक घराना, छोटकी पुतोहुक सुधार, गोबर बिछनी आ बालिका शिक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2955, सूचकांक पंक्ति 1646मे नारायण यादवक “चौदह नम्बर कोटा, चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोह, गोबर बिछनी” प्रविष्टि गद्य, कथा / लघुकथा आ “चौदह नम्बर कोर्ट पेशाब मुकदमा, चौरचन पावनिक घराना, छोटकी पुतोहुक सुधार, गोबर बिछनी आ बालिका शिक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2956 : विदेह-सदेह 20 — राजेश वर्मा "भवादित्य": बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)

प्रश्न 29493. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647: राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1647मे राजेश वर्मा "भवादित्य"क प्रविष्टि “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29494. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647: राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29495. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647: राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा / लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा / लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा / लेख” अछि।

प्रश्न 29496. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647: राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रशासनिक सेवाक साँगर (सौतन), स्त्री-पुरुष समानता असफलता, अन्तर्निहित व्यंग्य।

उत्तर: घ. प्रशासनिक सेवाक साँगर (सौतन), स्त्री-पुरुष समानता असफलता, अन्तर्निहित व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रशासनिक सेवाक साँगर (सौतन), स्त्री-पुरुष समानता असफलता, अन्तर्निहित व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 29497. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647: राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रशासनिक सेवाक साँगर (सौतन), स्त्री-पुरुष समानता असफलता, अन्तर्निहित व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रशासनिक सेवाक साँगर (सौतन), स्त्री-पुरुष समानता असफलता, अन्तर्निहित व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रशासनिक सेवाक साँगर (सौतन), स्त्री-पुरुष समानता असफलता, अन्तर्निहित व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29498. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647: राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश वर्मा "भवादित्य", विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा / लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश वर्मा "भवादित्य", विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा / लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29499. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647: राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29500. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647: राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा / लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा / लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29501. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647: राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29502. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647मे राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा / लेख आ “प्रशासनिक सेवाक साँगर (सौतन), स्त्री-पुरुष समानता असफलता, अन्तर्निहित व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2956, सूचकांक पंक्ति 1647मे राजेश वर्मा "भवादित्य"क “बीहिनि कथा (साँगर), बीहिनि लेख (वैशिष्टय)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा / लेख आ “प्रशासनिक सेवाक साँगर (सौतन), स्त्री-पुरुष समानता असफलता, अन्तर्निहित व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2957 : विदेह-सदेह 20 — प्रणव झा: सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम

प्रश्न 29503. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648: प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1648मे प्रणव झाक प्रविष्टि “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29504. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648: प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29505. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648: प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक/संस्मरण/लघुकथा/थखस्सा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक/संस्मरण/लघुकथा/थखस्सा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक/संस्मरण/लघुकथा/थखस्सा” अछि।

प्रश्न 29506. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648: प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भ्रष्टाचार तावीजक व्यंग्य, राजवंशीय पहचान, फेसबुकक लत, सुखैल पोखर आ पानी संकट, रक्षता सैन्य डॉक्टर।

उत्तर: घ. भ्रष्टाचार तावीजक व्यंग्य, राजवंशीय पहचान, फेसबुकक लत, सुखैल पोखर आ पानी संकट, रक्षता सैन्य डॉक्टर।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार तावीजक व्यंग्य, राजवंशीय पहचान, फेसबुकक लत, सुखैल पोखर आ पानी संकट, रक्षता सैन्य डॉक्टर।” अछि।

प्रश्न 29507. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648: प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भ्रष्टाचार तावीजक व्यंग्य, राजवंशीय पहचान, फेसबुकक लत, सुखैल पोखर आ पानी संकट, रक्षता सैन्य डॉक्टर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचार तावीजक व्यंग्य, राजवंशीय पहचान, फेसबुकक लत, सुखैल पोखर आ पानी संकट, रक्षता सैन्य डॉक्टर।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार तावीजक व्यंग्य, राजवंशीय पहचान, फेसबुकक लत, सुखैल पोखर आ पानी संकट, रक्षता सैन्य डॉक्टर।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29508. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648: प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा नाटक/संस्मरण/लघुकथा/थखस्सा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा नाटक/संस्मरण/लघुकथा/थखस्सा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29509. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648: प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29510. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648: प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक/संस्मरण/लघुकथा/थखस्साक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक/संस्मरण/लघुकथा/थखस्साक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29511. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648: प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29512. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648मे प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम” प्रविष्टि गद्य/पद्य, नाटक/संस्मरण/लघुकथा/थखस्सा आ “भ्रष्टाचार तावीजक व्यंग्य, राजवंशीय पहचान, फेसबुकक लत, सुखैल पोखर आ पानी संकट, रक्षता सैन्य डॉक्टर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2957, सूचकांक पंक्ति 1648मे प्रणव झाक “सदाचार क तावीज (लघु नाटिका), राजा खानदान (संस्मरण), फैसबुक केर चक्रर, चक्रफाँस, अरजल जमीन, रक्षता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम” प्रविष्टि गद्य/पद्य, नाटक/संस्मरण/लघुकथा/थखस्सा आ “भ्रष्टाचार तावीजक व्यंग्य, राजवंशीय पहचान, फेसबुकक लत, सुखैल पोखर आ पानी संकट, रक्षता सैन्य डॉक्टर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2958 : विदेह-सदेह 20 — कल्पना झा: बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)

प्रश्न 29513. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649: कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1649मे कल्पना झाक प्रविष्टि “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29514. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649: कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29515. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649: कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 29516. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649: कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चम्मच सँ परोसन, नारी सशक्तिकरण, बेटी-जन्म आंसुक व्यंग्यात्मक प्रश्न।

उत्तर: घ. चम्मच सँ परोसन, नारी सशक्तिकरण, बेटी-जन्म आंसुक व्यंग्यात्मक प्रश्न।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चम्मच सँ परोसन, नारी सशक्तिकरण, बेटी-जन्म आंसुक व्यंग्यात्मक प्रश्न।” अछि।

प्रश्न 29517. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649: कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चम्मच सँ परोसन, नारी सशक्तिकरण, बेटी-जन्म आंसुक व्यंग्यात्मक प्रश्न।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चम्मच सँ परोसन, नारी सशक्तिकरण, बेटी-जन्म आंसुक व्यंग्यात्मक प्रश्न।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चम्मच सँ परोसन, नारी सशक्तिकरण, बेटी-जन्म आंसुक व्यंग्यात्मक प्रश्न।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29518. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649: कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कल्पना झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कल्पना झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29519. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649: कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29520. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649: कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29521. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649: कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29522. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649मे कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चम्मच सँ परोसन, नारी सशक्तिकरण, बेटी-जन्म आंसुक व्यंग्यात्मक प्रश्न।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2958, सूचकांक पंक्ति 1649मे कल्पना झाक “बीहिनि कथा (निर्वहन, निरुत्तर)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चम्मच सँ परोसन, नारी सशक्तिकरण, बेटी-जन्म आंसुक व्यंग्यात्मक प्रश्न।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2959 : विदेह-सदेह 20 — अभिलाष ठाकूर: बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)

प्रश्न 29523. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650: अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1650मे अभिलाष ठाकूरक प्रविष्टि “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29524. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650: अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29525. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650: अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अतिलघु कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अतिलघु कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अतिलघु कथा” अछि।

प्रश्न 29526. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650: अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भैया-भौजी साँठ, नोटबन्दीक बैंक कतार, व्यंग्य।

उत्तर: घ. भैया-भौजी साँठ, नोटबन्दीक बैंक कतार, व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भैया-भौजी साँठ, नोटबन्दीक बैंक कतार, व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 29527. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650: अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भैया-भौजी साँठ, नोटबन्दीक बैंक कतार, व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भैया-भौजी साँठ, नोटबन्दीक बैंक कतार, व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भैया-भौजी साँठ, नोटबन्दीक बैंक कतार, व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29528. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650: अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अभिलाष ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा अतिलघु कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अभिलाष ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा अतिलघु कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29529. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650: अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29530. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650: अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अतिलघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अतिलघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29531. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650: अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29532. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650मे अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)” प्रविष्टि गद्य, अतिलघु कथा आ “भैया-भौजी साँठ, नोटबन्दीक बैंक कतार, व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2959, सूचकांक पंक्ति 1650मे अभिलाष ठाकूरक “बीहिन कथा (साँठ गाँठ, नोटबन्दी)” प्रविष्टि गद्य, अतिलघु कथा आ “भैया-भौजी साँठ, नोटबन्दीक बैंक कतार, व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2960 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. वीणा कर्ण: मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)

प्रश्न 29533. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651: डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1651मे डॉ. वीणा कर्णक प्रविष्टि “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29534. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651: डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29535. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651: डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 29536. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651: डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महाकाव्य परक विवेचना, रस-छंद-अलंकार, सीता चरित्र आदर्श।

उत्तर: घ. महाकाव्य परक विवेचना, रस-छंद-अलंकार, सीता चरित्र आदर्श।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महाकाव्य परक विवेचना, रस-छंद-अलंकार, सीता चरित्र आदर्श।” अछि।

प्रश्न 29537. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651: डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महाकाव्य परक विवेचना, रस-छंद-अलंकार, सीता चरित्र आदर्श।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाकाव्य परक विवेचना, रस-छंद-अलंकार, सीता चरित्र आदर्श।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महाकाव्य परक विवेचना, रस-छंद-अलंकार, सीता चरित्र आदर्श।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29538. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651: डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. वीणा कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. वीणा कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29539. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651: डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29540. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651: डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29541. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651: डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29542. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651मे डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “महाकाव्य परक विवेचना, रस-छंद-अलंकार, सीता चरित्र आदर्श।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2960, सूचकांक पंक्ति 1651मे डॉ. वीणा कर्णक “मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खड्गबल्लभ दास स्वजनक काव्य विवेचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “महाकाव्य परक विवेचना, रस-छंद-अलंकार, सीता चरित्र आदर्श।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2961 : विदेह-सदेह 20 — उमेश मण्डल: 'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया

प्रश्न 29543. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652: उमेश मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1652मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29544. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652: उमेश मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29545. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652: उमेश मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ट/सूची

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ट/सूची

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ट/सूची” अछि।

प्रश्न 29546. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652: उमेश मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सगर राति दीप जरयक आयोजन विवरण, लोक कलाकार झाथल-खजरी वादक सूची।

उत्तर: घ. सगर राति दीप जरयक आयोजन विवरण, लोक कलाकार झाथल-खजरी वादक सूची।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सगर राति दीप जरयक आयोजन विवरण, लोक कलाकार झाथल-खजरी वादक सूची।” अछि।

प्रश्न 29547. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652: उमेश मण्डलक “'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सगर राति दीप जरयक आयोजन विवरण, लोक कलाकार झाथल-खजरी वादक सूची।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सगर राति दीप जरयक आयोजन विवरण, लोक कलाकार झाथल-खजरी वादक सूची।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सगर राति दीप जरयक आयोजन विवरण, लोक कलाकार झाथल-खजरी वादक सूची।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29548. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652: उमेश मण्डलक "'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ट/सूची

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ट/सूची

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29549. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652: उमेश मण्डलक "'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29550. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652: उमेश मण्डलक "'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया"केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ट/सूचीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ट/सूचीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29551. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652: उमेश मण्डलक "'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया" प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29552. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652मे उमेश मण्डलक "'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया" प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ट/सूची आ "सगर राति दीप जरयक आयोजन विवरण, लोक कलाकार झाथल-खजरी वादक सूची।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2961, सूचकांक पंक्ति 1652मे उमेश मण्डलक "'सगर राति दीप जरय'क 93म आ 94 म आयोजन, मिथिलाक लोक संगीत-भगैत गबैया" प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ट/सूची आ "सगर राति दीप जरयक आयोजन विवरण, लोक कलाकार झाथल-खजरी वादक सूची।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2962 : विदेह-सदेह 20 — बेचन ठाकूर: नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)

प्रश्न 29553. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653: बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1653मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29554. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653: बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29555. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653: बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक/एकांकी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक/एकांकी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक/एकांकी” अछि।

प्रश्न 29556. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653: बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मद्यपान विरुद्ध नीशा मुक्ति आन्दोलन, बरहम बाबा लोकदेवता अभिनय।

उत्तर: घ. मद्यपान विरुद्ध नीशा मुक्ति आन्दोलन, बरहम बाबा लोकदेवता अभिनय।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मद्यपान विरुद्ध नीशा मुक्ति आन्दोलन, बरहम बाबा लोकदेवता अभिनय।” अछि।

प्रश्न 29557. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653: बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मद्यपान विरुद्ध नीशा मुक्ति आन्दोलन, बरहम बाबा लोकदेवता अभिनय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मद्यपान विरुद्ध नीशा मुक्ति आन्दोलन, बरहम बाबा लोकदेवता अभिनय।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मद्यपान विरुद्ध नीशा मुक्ति आन्दोलन, बरहम बाबा लोकदेवता अभिनय।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29558. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653: बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक/एकांकी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक/एकांकी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29559. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653: बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29560. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653: बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)”केँ विदेह-सदेह 20क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक/एकांकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक/एकांकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29561. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653: बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29562. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653मे बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)” प्रविष्टि गद्य, नाटक/एकांकी आ “मद्यपान विरुद्ध नीशा मुक्ति आन्दोलन, बरहम बाबा लोकदेवता अभिनय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2962, सूचकांक पंक्ति 1653मे बेचन ठाकूरक “नीशा मुक्ति (एकांकी), बरहम बाबा (एकांकी)” प्रविष्टि गद्य, नाटक/एकांकी आ “मद्यपान विरुद्ध नीशा मुक्ति आन्दोलन, बरहम बाबा लोकदेवता अभिनय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2963 : विदेह-सदेह 20 — रश्मि किरण झा: किछु हाइकू

प्रश्न 29563. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654: रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु हाइकू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु हाइकू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1654मे रश्मि किरण झाक प्रविष्टि “किछु हाइकू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29564. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654: रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29565. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654: रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू / कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू / कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू / कविता” अछि।

प्रश्न 29566. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654: रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जाड़-रौद, माघ, सहज जीवन दर्शन, न्यूनतम शब्द मे बिम्ब।

उत्तर: घ. जाड़-रौद, माघ, सहज जीवन दर्शन, न्यूनतम शब्द मे बिम्ब।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जाड़-रौद, माघ, सहज जीवन दर्शन, न्यूनतम शब्द मे बिम्ब।” अछि।

प्रश्न 29567. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654: रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जाड़-रौद, माघ, सहज जीवन दर्शन, न्यूनतम शब्द मे बिम्ब।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाड़-रौद, माघ, सहज जीवन दर्शन, न्यूनतम शब्द मे बिम्ब।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाड़-रौद, माघ, सहज जीवन दर्शन, न्यूनतम शब्द मे बिम्ब।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29568. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654: रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रश्मि किरण झा, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू / कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रश्मि किरण झा, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू / कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29569. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654: रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29570. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654: रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू”कें विदेह-सदेह 20क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू / कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू / कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29571. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654: रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29572. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654मे रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू / कविता आ “जाड़-रौद, माघ, सहज जीवन दर्शन, न्यूनतम शब्द मे बिम्ब।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2963, सूचकांक पंक्ति 1654मे रश्मि किरण झाक “किछु हाइकू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू / कविता आ “जाड़-रौद, माघ, सहज जीवन दर्शन, न्यूनतम शब्द मे बिम्ब।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2964 : विदेह-सदेह 20 — राम विलास साहु: किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)

प्रश्न 29573. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655: राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1655मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29574. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655: राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29575. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655: राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता संग्रह

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता संग्रह

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता संग्रह” अछि।

प्रश्न 29576. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655: राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुख्य रूप सँ भावात्मक, लोक-जीवन, विरह-प्रेम-प्रकृति चित्रण।

उत्तर: घ. मुख्य रूप सँ भावात्मक, लोक-जीवन, विरह-प्रेम-प्रकृति चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुख्य रूप सँ भावात्मक, लोक-जीवन, विरह-प्रेम-प्रकृति चित्रण।” अछि।

प्रश्न 29577. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655: राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुख्य रूप सँ भावात्मक, लोक-जीवन, विरह-प्रेम-प्रकृति चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुख्य रूप सँ भावात्मक, लोक-जीवन, विरह-प्रेम-प्रकृति चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुख्य रूप सँ भावात्मक, लोक-जीवन, विरह-प्रेम-प्रकृति चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29578. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655: राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता संग्रह

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता संग्रह

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29579. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655: राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29580. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655: राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)”केँ विदेह-सदेह 20क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता संग्रहक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता संग्रहक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29581. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655: राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29582. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655मे राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)” प्रविष्टि पद्य, कविता संग्रह आ “मुख्य रूप सँ भावात्मक, लोक-जीवन, विरह-प्रेम-प्रकृति चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2964, सूचकांक पंक्ति 1655मे राम विलास साहुक “किछु कविता (हमर लॉटरी निकललसँ भिन्न – देखल पृष्ठ ६६५-९४०)” प्रविष्टि पद्य, कविता संग्रह आ “मुख्य रूप सँ भावात्मक, लोक-जीवन, विरह-प्रेम-प्रकृति चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2965 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)

प्रश्न 29583. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1656मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29584. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29585. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत / लोक-वियोग

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत / लोक-वियोग

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत / लोक-वियोग” अछि।

प्रश्न 29586. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गामक पुरान याद, जीवन शहरीकरण सँ विस्थापन, उदासीनता।

उत्तर: घ. गामक पुरान याद, जीवन शहरीकरण सँ विस्थापन, उदासीनता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक पुरान याद, जीवन शहरीकरण सँ विस्थापन, उदासीनता।” अछि।

प्रश्न 29587. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक पुरान याद, जीवन शहरीकरण सँ विस्थापन, उदासीनता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक पुरान याद, जीवन शहरीकरण सँ विस्थापन, उदासीनता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक पुरान याद, जीवन शहरीकरण सँ विस्थापन, उदासीनता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29588. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा गीत / लोक-वियोग

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा गीत / लोक-वियोग

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29589. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29590. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)”केँ विदेह-सदेह 20क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत / लोक-वियोगक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत / लोक-वियोगक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29591. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29592. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, गीत / लोक-वियोग आ “गामक पुरान याद, जीवन शहरीकरण सँ विस्थापन, उदासीनता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2965, सूचकांक पंक्ति 1656मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट (कविता/गद्यात्मक)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, गीत / लोक-वियोग आ “गामक पुरान याद, जीवन शहरीकरण सँ विस्थापन, उदासीनता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2966 : विदेह-सदेह 20 — राजेश वर्मा 'भवादित्य': नवगीत

प्रश्न 29593. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657: राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नवगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवगीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1657मे राजेश वर्मा 'भवादित्य'क प्रविष्टि “नवगीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29594. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657: राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29595. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657: राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नवगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नवगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नवगीत” अछि।

प्रश्न 29596. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657: राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन राष्ट्र-प्रेम, ईद-चौरचन समन्वय।

उत्तर: घ. समकालीन राष्ट्र-प्रेम, ईद-चौरचन समन्वय।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन राष्ट्र-प्रेम, ईद-चौरचन समन्वय।” अछि।

प्रश्न 29597. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657: राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन राष्ट्र-प्रेम, ईद-चौरचन समन्वय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन राष्ट्र-प्रेम, ईद-चौरचन समन्वय।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन राष्ट्र-प्रेम, ईद-चौरचन समन्वय।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29598. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657: राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश वर्मा 'भवादित्य', विधा पद्य, उप-विधा नवगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश वर्मा 'भवादित्य', विधा पद्य, उप-विधा नवगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29599. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657: राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29600. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657: राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत”केँ विदेह-सदेह 20क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नवगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नवगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29601. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657: राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29602. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657मे राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत” प्रविष्टि पद्य, नवगीत आ “समकालीन राष्ट्र-प्रेम, ईद-चौरचन समन्वय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2966, सूचकांक पंक्ति 1657मे राजेश वर्मा 'भवादित्य'क “नवगीत” प्रविष्टि पद्य, नवगीत आ “समकालीन राष्ट्र-प्रेम, ईद-चौरचन समन्वय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2967 : विदेह-सदेह 20 — बृषेश चन्द्र लाल: ३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)

प्रश्न 29603. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658: बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1658मे बृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29604. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658: बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29605. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658: बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 29606. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658: बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वात्सल्य, सरल बाल-दृष्टि, प्रकृति प्रेम, नाना-पोती स्नेह।

उत्तर: घ. वात्सल्य, सरल बाल-दृष्टि, प्रकृति प्रेम, नाना-पोती स्नेह।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य, सरल बाल-दृष्टि, प्रकृति प्रेम, नाना-पोती स्नेह।” अछि।

प्रश्न 29607. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658: बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वात्सल्य, सरल बाल-दृष्टि, प्रकृति प्रेम, नाना-पोती स्नेह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वात्सल्य, सरल बाल-दृष्टि, प्रकृति प्रेम, नाना-पोती स्नेह।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वात्सल्य, सरल बाल-दृष्टि, प्रकृति प्रेम, नाना-पोती स्नेह।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29608. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658: बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29609. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658: बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29610. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658: बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)”केँ विदेह-सदेह 20क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29611. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658: बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29612. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658मे बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “वात्सल्य, सरल बाल-दृष्टि, प्रकृति प्रेम, नाना-पोती स्नेह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2967, सूचकांक पंक्ति 1658मे बृषेश चन्द्र लालक “३ टा बालगीत (सोन थचरैया, चौरचन उगल चान, हमर पोती)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “वात्सल्य, सरल बाल-दृष्टि, प्रकृति प्रेम, नाना-पोती स्नेह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2968 : विदेह-सदेह 20 — कमलेश प्रमेन्द्र: जरल कपार (कविता)

प्रश्न 29613. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659: कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जरल कपार (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जरल कपार (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1659मे कमलेश प्रमेन्द्रक प्रविष्टि “जरल कपार (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29614. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659: कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29615. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659: कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29616. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659: कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परदेसी आर्थिक अवस्था, बेटी-बेटा भेद, विवाहक व्यंग्य।

उत्तर: घ. परदेसी आर्थिक अवस्था, बेटी-बेटा भेद, विवाहक व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परदेसी आर्थिक अवस्था, बेटी-बेटा भेद, विवाहक व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 29617. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659: कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परदेसी आर्थिक अवस्था, बेटी-बेटा भेद, विवाहक व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परदेसी आर्थिक अवस्था, बेटी-बेटा भेद, विवाहक व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परदेसी आर्थिक अवस्था, बेटी-बेटा भेद, विवाहक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29618. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659: कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कमलेश प्रमेन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कमलेश प्रमेन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29619. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659: कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29620. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659: कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)”केँ विदेह-सदेह 20क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29621. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659: कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29622. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659मे कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परदेसी आर्थिक अवस्था, बेटी-बेटा भेद, विवाहक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2968, सूचकांक पंक्ति 1659मे कमलेश प्रमेन्द्रक “जरल कपार (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परदेसी आर्थिक अवस्था, बेटी-बेटा भेद, विवाहक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2969 : विदेह-सदेह 20 — अम्बिकेश कुमार मिश्र: सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली

प्रश्न 29623. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660: अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1660मे अम्बिकेश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29624. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660: अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29625. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660: अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / छोट गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / छोट गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / छोट गीत” अछि।

प्रश्न 29626. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660: अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासक पीड़ा, मिथिला रुदन, शहरी यांत्रिकता।

उत्तर: घ. प्रवासक पीड़ा, मिथिला रुदन, शहरी यांत्रिकता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासक पीड़ा, मिथिला रुदन, शहरी यांत्रिकता।” अछि।

प्रश्न 29627. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660: अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासक पीड़ा, मिथिला रुदन, शहरी यांत्रिकता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासक पीड़ा, मिथिला रुदन, शहरी यांत्रिकता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासक पीड़ा, मिथिला रुदन, शहरी यांत्रिकता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29628. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660: अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अम्बिकेश कुमार मिश्र, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता / छोट गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अम्बिकेश कुमार मिश्र, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता / छोट गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29629. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660: अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29630. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660: अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली”कैं विदेह-सदेह 20क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / छोट गीतक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / छोट गीतक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29631. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660: अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29632. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660मे अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता / छोट गीत आ “प्रवासक पीड़ा, मिथिला रुदन, शहरी यांत्रिकता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2969, सूचकांक पंक्ति 1660मे अम्बिकेश कुमार मिश्रक “सुतारु, मिथिलाक आह, मौगयाहा नैइतन, ददल्ली” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता / छोट गीत आ “प्रवासक पीड़ा, मिथिला रुदन, शहरी यांत्रिकता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2970 : विदेह-सदेह 20 — कुमार रवि: वर्षा मेघक सङ्ग एलैय

प्रश्न 29633. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661: कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वर्षा मेघक सङ्ग एलैय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्षा मेघक सङ्ग एलैय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1661मे कुमार रविक प्रविष्टि “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29634. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661: कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29635. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661: कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत / कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत / कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत / कविता” अछि।

प्रश्न 29636. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661: कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्षा ऋतु, पोखर-नदीक दृश्य, प्रेम प्रकृति समागम।

उत्तर: घ. वर्षा ऋतु, पोखर-नदीक दृश्य, प्रेम प्रकृति समागम।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा ऋतु, पोखर-नदीक दृश्य, प्रेम प्रकृति समागम।” अछि।

प्रश्न 29637. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661: कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्षा ऋतु, पोखर-नदीक दृश्य, प्रेम प्रकृति समागम।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्षा ऋतु, पोखर-नदीक दृश्य, प्रेम प्रकृति समागम।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा ऋतु, पोखर-नदीक दृश्य, प्रेम प्रकृति समागम।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29638. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661: कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार रवि, विधा पद्य, उप-विधा गीत / कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार रवि, विधा पद्य, उप-विधा गीत / कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29639. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661: कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29640. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661: कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय”केँ विदेह-सदेह 20क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत / कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत / कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29641. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661: कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29642. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661मे कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय” प्रविष्टि पद्य, गीत / कविता आ “वर्षा ऋतु, पोखर-नदीक दृश्य, प्रेम प्रकृति समागम।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2970, सूचकांक पंक्ति 1661मे कुमार रविक “वर्षा मेघक सङ्ग एलैय” प्रविष्टि पद्य, गीत / कविता आ “वर्षा ऋतु, पोखर-नदीक दृश्य, प्रेम प्रकृति समागम।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2971 : विदेह-सदेह 20 — नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार): ५६ टा कविता

प्रश्न 29643. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662: नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ५६ टा कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ५६ टा कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1662मे नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क प्रविष्टि “५६ टा कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29644. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662: नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29645. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662: नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता संग्रह

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता संग्रह

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता संग्रह” अछि।

प्रश्न 29646. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662: नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन विसंगति, शहरी-ग्रामीण द्वन्द्व, अस्तित्व बोध, आधुनिक मैथिली रचना।

उत्तर: घ. समकालीन विसंगति, शहरी-ग्रामीण द्वन्द्व, अस्तित्व बोध, आधुनिक मैथिली रचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन विसंगति, शहरी-ग्रामीण द्वन्द्व, अस्तित्व बोध, आधुनिक मैथिली रचना।” अछि।

प्रश्न 29647. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662: नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन विसंगति, शहरी-ग्रामीण द्वन्द्व, अस्तित्व बोध, आधुनिक मैथिली रचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन विसंगति, शहरी-ग्रामीण द्वन्द्व, अस्तित्व बोध, आधुनिक मैथिली रचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन विसंगति, शहरी-ग्रामीण द्वन्द्व, अस्तित्व बोध, आधुनिक मैथिली रचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29648. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662: नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार), विधा पद्य, उप-विधा कविता संग्रह

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार), विधा पद्य, उप-विधा कविता संग्रह

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29649. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662: नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29650. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662: नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता”केँ विदेह-सदेह 20क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता संग्रहक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता संग्रहक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29651. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662: नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 20क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29652. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662मे नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता संग्रह आ “समकालीन विसंगति, शहरी-ग्रामीण द्वन्द्व, अस्तित्व बोध, आधुनिक मैथिली रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2971, सूचकांक पंक्ति 1662मे नीलमाधव चौधरी (प्रस्तुत: आशीष अनचिन्हार)क “५६ टा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता संग्रह आ “समकालीन विसंगति, शहरी-ग्रामीण द्वन्द्व, अस्तित्व बोध, आधुनिक मैथिली रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 20क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2972 : विदेह-सदेह 21 — राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७): 'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य

प्रश्न 29653. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663: राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1663मे राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क प्रविष्टि “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29654. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663: राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29655. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663: राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/विद्रोही काव्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/विद्रोही काव्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/विद्रोही काव्य” अछि।

प्रश्न 29656. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663: राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रौद्र+वीभत्स+भयानक रस

उत्तर: घ. रौद्र+वीभत्स+भयानक रस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र+वीभत्स+भयानक रस” अछि।

प्रश्न 29657. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663: राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रौद्र+वीभत्स+भयानक रस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौद्र+वीभत्स+भयानक रस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रौद्र+वीभत्स+भयानक रस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29658. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663: राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा कथा/विद्रोही काव्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा कथा/विद्रोही काव्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29659. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663: राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29660. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663: राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/विद्रोही काव्यक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/विद्रोही काव्यक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29661. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663: राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29662. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663मे राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य” प्रविष्टि गद्य/पद्य, कथा/विद्रोही काव्य आ “रौद्र+वीभत्स+भयानक रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2972, सूचकांक पंक्ति 1663मे राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७)क “'अपराजिता' कथा; विद्रोही काव्य” प्रविष्टि गद्य/पद्य, कथा/विद्रोही काव्य आ “रौद्र+वीभत्स+भयानक रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2973 : विदेह-सदेह 21 — गंगेश गुंजन: 'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन

प्रश्न 29663. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664: गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1664मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29664. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664: गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/मिश्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/मिश्र

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/मिश्र” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29665. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664: गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गद्य-पद्य/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गद्य-पद्य/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गद्य-पद्य/गजल” अछि।

प्रश्न 29666. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664: गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 29667. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664: गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29668. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664: गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य/मिश्र, उप-विधा गद्य-पद्य/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य/मिश्र, उप-विधा गद्य-पद्य/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29669. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664: गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29670. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664: गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य/मिश्र-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गद्य-पद्य/गजलक रूपमे पद्य/मिश्र-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गद्य-पद्य/गजलक रूपमे पद्य/मिश्र-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29671. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664: गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29672. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664मे गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन” प्रविष्टि पद्य/मिश्र, गद्य-पद्य/गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2973, सूचकांक पंक्ति 1664मे गंगेश गुंजनक “'राधा' (गद्य-पद्य मिश्रित); गजल; वैचारिक मंथन” प्रविष्टि पद्य/मिश्र, गद्य-पद्य/गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2974 : विदेह-सदेह 21 — राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४): दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार

प्रश्न 29673. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665: राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1665मे राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क प्रविष्टि “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29674. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665: राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29675. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665: राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 29676. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665: राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” अछि।

प्रश्न 29677. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665: राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29678. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665: राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४), विधा गद्य, उप-विधा कथा/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४), विधा गद्य, उप-विधा कथा/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29679. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665: राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29680. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665: राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29681. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665: राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29682. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665मे राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार” प्रविष्टि गद्य, कथा/समीक्षा आ “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2974, सूचकांक पंक्ति 1665मे राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)क “दस कथा-संग्रह; चारि समालोचनात्मक पोथी; साक्षात्कार” प्रविष्टि गद्य, कथा/समीक्षा आ “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2975 : विदेह-सदेह 21 — हृदय नारायण झा: कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना

प्रश्न 29683. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666: हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1666मे हृदय नारायण झाक प्रविष्टि “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29684. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666: हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29685. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666: हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/लोकगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/लोकगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/लोकगीत” अछि।

प्रश्न 29686. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666: हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक-राजनैतिक चेतना

उत्तर: घ. सामाजिक-राजनैतिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक-राजनैतिक चेतना” अछि।

प्रश्न 29687. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666: हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक-राजनैतिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक-राजनैतिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक-राजनैतिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29688. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666: हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हृदय नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लोकगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हृदय नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लोकगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29689. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666: हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29690. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666: हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29691. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666: हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29692. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666मे हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना” प्रविष्टि पद्य, कविता/लोकगीत आ “सामाजिक-राजनैतिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2975, सूचकांक पंक्ति 1666मे हृदय नारायण झाक “कविता; लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — प्राती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, सोहर, खेलउना” प्रविष्टि पद्य, कविता/लोकगीत आ “सामाजिक-राजनैतिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2976 : विदेह-सदेह 21 — जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम): अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज

प्रश्न 29693. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667: जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1667मे जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क प्रविष्टि “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29694. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667: जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29695. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667: जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार/रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 29696. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667: जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर, नेपाल

उत्तर: घ. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर, नेपाल” अछि।

प्रश्न 29697. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667: जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकपुर, नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर, नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29698. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667: जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम), विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम), विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29699. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667: जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29700. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667: जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कार/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29701. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667: जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29702. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667मे जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार/रिपोर्ताज आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2976, सूचकांक पंक्ति 1667मे जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)क “अंशुमाला साक्षात्कार; मैथिली संगीतपर रिपोर्ताज” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार/रिपोर्ताज आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2977 : विदेह-सदेह 21 — जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५): 'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत

प्रश्न 29703. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668: जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क "'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1668मे जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क प्रविष्टि "'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29704. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668: जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क "'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य/पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29705. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668: जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क "'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख/भक्तिगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख/भक्तिगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "लेख/भक्तिगीत" अछि।

प्रश्न 29706. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668: जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क "'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुम्बई

उत्तर: घ. मुम्बई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "मुम्बई" अछि।

प्रश्न 29707. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668: जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क "'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुम्बई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुम्बई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "मुम्बई" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29708. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668: जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क “'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लेख/भक्तिगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा लेख/भक्तिगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29709. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668: जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क “'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29710. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668: जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क “'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेख/भक्तिगीतक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेख/भक्तिगीतक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29711. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668: जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क “'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29712. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668मे जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क “'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लेख/भक्तिगीत आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2977, सूचकांक पंक्ति 1668मे जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)क “'कन्या भ्रूण हत्या — कृतिक संग खिलवार' (लेख); भक्तिगीत” प्रविष्टि गद्य/पद्य, लेख/भक्तिगीत आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2978 : विदेह-सदेह 21 — ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८): कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला

प्रश्न 29713. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669: ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1669मे ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क प्रविष्टि “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29714. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669: ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29715. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669: ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/हाइकू/चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/हाइकू/चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/हाइकू/चित्रकला” अछि।

प्रश्न 29716. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669: ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लन्डन

उत्तर: घ. लन्डन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लन्डन” अछि।

प्रश्न 29717. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669: ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लन्डन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लन्डन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लन्डन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29718. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669: ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८), विधा पद्य, उप-विधा कविता/हाइकू/चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८), विधा पद्य, उप-विधा कविता/हाइकू/चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29719. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669: ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29720. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669: ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/हाइकू/चित्रकलाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/हाइकू/चित्रकलाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29721. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669: ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29722. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669मे ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि पद्य, कविता/हाइकू/चित्रकला आ “लन्डन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2978, सूचकांक पंक्ति 1669मे ज्योति झा चौधरी (जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)क “कविता-संग्रह (हाइकू सहित); मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि पद्य, कविता/हाइकू/चित्रकला आ “लन्डन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2979 : विदेह-सदेह 21 — ज्योति प्रकाश लाल: 'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)

प्रश्न 29723. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670: ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1670मे ज्योति प्रकाश लालक प्रविष्टि “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29724. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670: ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29725. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670: ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 29726. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670: ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगतपुर, सुपौल

उत्तर: घ. जगतपुर, सुपौल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगतपुर, सुपौल” अछि।

प्रश्न 29727. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670: ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगतपुर, सुपौल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगतपुर, सुपौल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगतपुर, सुपौल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29728. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670: ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति प्रकाश लाल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति प्रकाश लाल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29729. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670: ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29730. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670: ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29731. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670: ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29732. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670मे ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “जगतपुर, सुपौल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2979, सूचकांक पंक्ति 1670मे ज्योति प्रकाश लालक “'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “जगतपुर, सुपौल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2980 : विदेह-सदेह 21 — तारानन्द वियोगी: 'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)

प्रश्न 29733. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671: तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1671मे तारानन्द वियोगीक प्रविष्टि “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29734. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671: तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29735. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671: तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/सम्पादन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/सम्पादन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/सम्पादन” अछि।

प्रश्न 29736. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671: तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महत्वपूर्ण कवि-अनुवादक

उत्तर: घ. महत्वपूर्ण कवि-अनुवादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महत्वपूर्ण कवि-अनुवादक” अछि।

प्रश्न 29737. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671: तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महत्वपूर्ण कवि-अनुवादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महत्वपूर्ण कवि-अनुवादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महत्वपूर्ण कवि-अनुवादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29738. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671: तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तारानन्द वियोगी, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा अनुवाद/सम्पादन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तारानन्द वियोगी, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा अनुवाद/सम्पादन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29739. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671: तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29740. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671: तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/सम्पादनक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/सम्पादनक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29741. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671: तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29742. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671मे तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, अनुवाद/सम्पादन आ “महत्वपूर्ण कवि-अनुवादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2980, सूचकांक पंक्ति 1671मे तारानन्द वियोगीक “'मूलभूत' (अंग्रेजी अनुवाद); 'देसिल बयना' (सम्पादन)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, अनुवाद/सम्पादन आ “महत्वपूर्ण कवि-अनुवादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2981 : विदेह-सदेह 21 — दिगम्बर झा 'दिनमणि': कविता

प्रश्न 29743. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672: दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1672मे दिगम्बर झा 'दिनमणि'क प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29744. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672: दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29745. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672: दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29746. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672: दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पूर्णियाँ

उत्तर: घ. पूर्णियाँ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पूर्णियाँ” अछि।

प्रश्न 29747. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672: दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पूर्णियाँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूर्णियाँ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पूर्णियाँ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29748. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672: दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दिगम्बर झा 'दिनमणि', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दिगम्बर झा 'दिनमणि', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29749. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672: दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29750. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672: दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29751. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672: दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29752. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672मे दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पूर्णियाँ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2981, सूचकांक पंक्ति 1672मे दिगम्बर झा 'दिनमणि'क “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पूर्णियाँ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2982 : विदेह-सदेह 21 — देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२): 'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना

प्रश्न 29753. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673: देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क “'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1673मे देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क प्रविष्टि “'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29754. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673: देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क "'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29755. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673: देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क "'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/सम्पादन/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/सम्पादन/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "निबन्ध/सम्पादन/आलोचना" अछि।

प्रश्न 29756. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673: देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क "'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'राजकमल चौधरीक रचनाकर्म'

उत्तर: घ. 'राजकमल चौधरीक रचनाकर्म'

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "'राजकमल चौधरीक रचनाकर्म'" अछि।

प्रश्न 29757. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673: देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क "'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'राजकमल चौधरीक रचनाकर्म'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'राजकमल चौधरीक रचनाकर्म'

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "'राजकमल चौधरीक रचनाकर्म'" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29758. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673: देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क "'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२), विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/सम्पादन/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२), विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/सम्पादन/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29759. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673: देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क "'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29760. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673: देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क “'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/सम्पादन/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/सम्पादन/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29761. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673: देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क “'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29762. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673मे देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क “'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/सम्पादन/आलोचना आ “'राजकमल चौधरीक रचनाकर्म'” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2982, सूचकांक पंक्ति 1673मे देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)क “'अद्धी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध); 'उदाहरण' (सम्पादन); राजकमल-आलोचना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/सम्पादन/आलोचना आ “'राजकमल चौधरीक रचनाकर्म'” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2983 : विदेह-सदेह 21 — देवांशु वत्स: साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा

प्रश्न 29763. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674: देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1674मे देवांशु वत्सक प्रविष्टि “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29764. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674: देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29765. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674: देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 29766. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674: देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ीक आलोचक

उत्तर: घ. नव पीढ़ीक आलोचक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ीक आलोचक” अछि।

प्रश्न 29767. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674: देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ीक आलोचक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ीक आलोचक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ीक आलोचक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29768. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674: देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवांशु वत्स, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवांशु वत्स, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29769. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674: देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29770. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674: देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29771. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674: देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29772. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674मे देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “नव पीढ़ीक आलोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2983, सूचकांक पंक्ति 1674मे देवांशु वत्सक “साहित्यिक निबन्ध; समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “नव पीढ़ीक आलोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2984 : विदेह-सदेह 21 — धर्मविजय: कविता

प्रश्न 29773. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675: धर्मविजयक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1675मे धर्मविजयक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29774. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675: धर्मविजयक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29775. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675: धर्मविजयक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29776. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675: धर्मविजयक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चेतना प्रधान

उत्तर: घ. सामाजिक चेतना प्रधान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चेतना प्रधान” अछि।

प्रश्न 29777. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675: धर्मविजयक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चेतना प्रधान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चेतना प्रधान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चेतना प्रधान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29778. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675: धर्मविजयक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धर्मविजय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धर्मविजय, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29779. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675: धर्मविजयक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29780. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675: धर्मविजयक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29781. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675: धर्मविजयक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29782. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675मे धर्मविजयक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2984, सूचकांक पंक्ति 1675मे धर्मविजयक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2985 : विदेह-सदेह 21 — धीरेन्द्र मिश्र: संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम

प्रश्न 29783. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676: धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1676मे धीरेन्द्र मिश्रक प्रविष्टि “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29784. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676: धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “संगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29785. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676: धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत-संगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत-संगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत-संगीत” अछि।

प्रश्न 29786. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676: धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'भोर' एल्बम

उत्तर: घ. 'भोर' एल्बम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'भोर' एल्बम” अछि।

प्रश्न 29787. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676: धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'भोर' एल्बम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'भोर' एल्बम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'भोर' एल्बम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29788. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676: धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र मिश्र, विधा संगीत, उप-विधा गीत-संगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र मिश्र, विधा संगीत, उप-विधा गीत-संगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29789. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676: धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29790. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676: धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम”केँ विदेह-सदेह 21क संगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत-संगीतक रूपमे संगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत-संगीतक रूपमे संगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29791. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676: धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29792. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676मे धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम” प्रविष्टि संगीत, गीत-संगीत आ “'भोर' एल्बम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2985, सूचकांक पंक्ति 1676मे धीरेन्द्र मिश्रक “संगीत-निर्देशन; 'भोर' एल्बम” प्रविष्टि संगीत, गीत-संगीत आ “'भोर' एल्बम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2986 : विदेह-सदेह 21 — नरेश मोहन झा: कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)

प्रश्न 29793. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677: नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1677मे नरेश मोहन झाक प्रविष्टि “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29794. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677: नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29795. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677: नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 29796. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677: नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 29797. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677: नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29798. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677: नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नरेश मोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नरेश मोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29799. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677: नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29800. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677: नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)”कें विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29801. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677: नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29802. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677मे नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2986, सूचकांक पंक्ति 1677मे नरेश मोहन झाक “कथा (बालपन मनोविज्ञानपर)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2987 : विदेह-सदेह 21 — नवीन नाथ झा 'नवनीत': कविता

प्रश्न 29803. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678: नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1678मे नवीन नाथ झा 'नवनीत'क प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29804. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678: नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29805. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678: नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29806. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678: नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. काव्यात्मक अभिव्यक्ति

उत्तर: घ. काव्यात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “काव्यात्मक अभिव्यक्ति” अछि।

प्रश्न 29807. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678: नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. काव्यात्मक अभिव्यक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काव्यात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काव्यात्मक अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29808. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678: नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन नाथ झा 'नवनीत', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन नाथ झा 'नवनीत', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29809. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678: नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29810. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678: नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29811. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678: नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29812. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678मे नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “काव्यात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2987, सूचकांक पंक्ति 1678मे नवीन नाथ झा 'नवनीत'क “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “काव्यात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2988 : विदेह-सदेह 21 — नवेन्दु कुमार झा: कविता

प्रश्न 29813. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679: नवेन्दु कुमार झाक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1679मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29814. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679: नवेन्दु कुमार झाक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29815. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679: नवेन्दु कुमार झाक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29816. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679: नवेन्दु कुमार झाक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ी

उत्तर: घ. नव पीढ़ी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।

प्रश्न 29817. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679: नवेन्दु कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29818. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679: नवेन्दु कुमार झाक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29819. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679: नवेन्दु कुमार झाक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29820. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679: नवेन्दु कुमार झाक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29821. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679: नवेन्दु कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29822. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679मे नवेन्दु कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2988, सूचकांक पंक्ति 1679मे नवेन्दु कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2989 : विदेह-सदेह 21 — नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ): 'पञ्जी' पर शोध-लेख

प्रश्न 29823. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680: नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पञ्जी' पर शोध-लेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पञ्जी' पर शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1680मे नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क प्रविष्टि “'पञ्जी' पर शोध-लेख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29824. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680: नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29825. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680: नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

प्रश्न 29826. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680: नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पञ्जी परम्परा

उत्तर: घ. पञ्जी परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पञ्जी परम्परा” अछि।

प्रश्न 29827. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680: नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पञ्जी परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पञ्जी परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पञ्जी परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29828. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680: नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ), विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ), विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29829. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680: नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29830. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680: नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29831. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680: नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29832. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680मे नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “पञ्जी परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2989, सूचकांक पंक्ति 1680मे नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)क “'पञ्जी' पर शोध-लेख” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “पञ्जी परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2990 : विदेह-सदेह 21 — निमिष झा: कविता

प्रश्न 29833. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681: निमिष झाक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1681मे निमिष झाक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29834. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681: निमिष झाक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29835. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681: निमिष झाक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29836. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681: निमिष झाक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर+रौद्र रस

उत्तर: घ. वीर+रौद्र रस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर+रौद्र रस” अछि।

प्रश्न 29837. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681: निमिष झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर+रौद्र रस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर+रौद्र रस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीर+रौद्र रस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29838. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681: निमिष झाक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक निमिष झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक निमिष झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29839. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681: निमिष झाक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29840. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681: निमिष झाक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29841. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681: निमिष झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29842. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681मे निमिष झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर+रौद्र रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2990, सूचकांक पंक्ति 1681मे निमिष झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर+रौद्र रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2991 : विदेह-सदेह 21 — नीलिमा: कविता

प्रश्न 29843. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682: नीलिमाक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1682मे नीलिमाक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29844. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682: नीलिमाक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29845. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682: नीलिमाक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29846. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682: नीलिमाक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 29847. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682: नीलिमाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29848. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682: नीलिमाक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नीलिमा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नीलिमा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29849. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682: नीलिमाक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29850. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682: नीलिमाक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29851. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682: नीलिमाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29852. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682मे नीलिमाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2991, सूचकांक पंक्ति 1682मे नीलिमाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2992 : विदेह-सदेह 21 — नूतन झा: कविता

प्रश्न 29853. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683: नूतन झाक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1683मे नूतन झाक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29854. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683: नूतन झाक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29855. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683: नूतन झाक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29856. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683: नूतन झाक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भावात्मक अभिव्यक्ति

उत्तर: घ. भावात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भावात्मक अभिव्यक्ति” अछि।

प्रश्न 29857. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683: नूतन झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भावात्मक अभिव्यक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भावात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावात्मक अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29858. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683: नूतन झाक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29859. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683: नूतन झाक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29860. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683: नूतन झाक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29861. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683: नूतन झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29862. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683मे नूतन झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2992, सूचकांक पंक्ति 1683मे नूतन झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2993 : विदेह-सदेह 21 — पद्मा विवेदी: कविता

प्रश्न 29863. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684: पद्मा विवेदीक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1684मे पद्मा विवेदीक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29864. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684: पद्मा विवेदीक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29865. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684: पद्मा विवेदीक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29866. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684: पद्मा विवेदीक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी दृष्टिकोण

उत्तर: घ. नारी दृष्टिकोण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी दृष्टिकोण” अछि।

प्रश्न 29867. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684: पद्मा विवेदीक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी दृष्टिकोण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी दृष्टिकोण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी दृष्टिकोण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29868. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684: पद्मा विवेदीक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पद्मा विवेदी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पद्मा विवेदी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29869. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684: पद्मा विवेदीक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29870. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684: पद्मा विवेदीक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29871. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684: पद्मा विवेदीक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29872. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684मे पद्मा विवेदीक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2993, सूचकांक पंक्ति 1684मे पद्मा विवेदीक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2994 : विदेह-सदेह 21 — परमेश्वर कापड़ि: कविता; निबन्ध

प्रश्न 29873. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685: परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता; निबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता; निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1685मे परमेश्वर कापड़िक प्रविष्टि “कविता; निबन्ध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29874. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685: परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29875. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685: परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 29876. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685: परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 29877. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685: परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29878. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685: परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29879. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685: परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29880. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685: परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/निबन्धक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/निबन्धक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29881. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685: परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29882. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685मे परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/निबन्ध आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2994, सूचकांक पंक्ति 1685मे परमेश्वर कापड़िक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/निबन्ध आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2995 : विदेह-सदेह 21 — पालन झा: गजल; कविता

प्रश्न 29883. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686: पालन झाक “गजल; कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल; कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल; कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1686मे पालन झाक प्रविष्टि “गजल; कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29884. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686: पालन झाक “गजल; कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29885. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686: पालन झाक “गजल; कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कविता” अछि।

प्रश्न 29886. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686: पालन झाक “गजल; कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल परम्परा

उत्तर: घ. गजल परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल परम्परा” अछि।

प्रश्न 29887. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686: पालन झाक “गजल; कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29888. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686: पालन झाक “गजल; कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पालन झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पालन झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29889. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686: पालन झाक “गजल; कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29890. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686: पालन झाक “गजल; कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29891. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686: पालन झाक “गजल; कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29892. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686मे पालन झाक “गजल; कविता” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2995, सूचकांक पंक्ति 1686मे पालन झाक “गजल; कविता” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2996 : विदेह-सदेह 21 — पीयूष ठाकुर: कविता

प्रश्न 29893. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687: पीयूष ठाकुरक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1687मे पीयूष ठाकुरक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29894. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687: पीयूष ठाकुरक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29895. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687: पीयूष ठाकुरक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29896. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687: पीयूष ठाकुरक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ी

उत्तर: घ. नव पीढ़ी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।

प्रश्न 29897. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687: पीयूष ठाकुरक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29898. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687: पीयूष ठाकुरक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पीयूष ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पीयूष ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29899. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687: पीयूष ठाकुरक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29900. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687: पीयूष ठाकुरक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29901. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687: पीयूष ठाकुरक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29902. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687मे पीयूष ठाकुरक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2996, सूचकांक पंक्ति 1687मे पीयूष ठाकुरक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2997 : विदेह-सदेह 21 — प्रकाश झा: कविता; रिपोर्ताज

प्रश्न 29903. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688: प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता; रिपोर्ताज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता; रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1688मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “कविता; रिपोर्ताज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29904. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688: प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29905. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688: प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 29906. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688: प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक रिपोर्टिंग

उत्तर: घ. सामाजिक रिपोर्टिंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक रिपोर्टिंग” अछि।

प्रश्न 29907. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688: प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक रिपोर्टिंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक रिपोर्टिंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक रिपोर्टिंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29908. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688: प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29909. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688: प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29910. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688: प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/रिपोर्ताजक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/रिपोर्ताजक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29911. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688: प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29912. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688मे प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/रिपोर्ताज आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2997, सूचकांक पंक्ति 1688मे प्रकाश झाक “कविता; रिपोर्ताज” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/रिपोर्ताज आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2998 : विदेह-सदेह 21 — डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८): 'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास

प्रश्न 29913. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689: डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क "'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1689मे डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क प्रविष्टि "'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29914. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689: डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क "'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29915. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689: डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क "'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "शोध-निबन्ध" अछि।

प्रश्न 29916. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689: डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क "'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पवित्र भूगोल

उत्तर: घ. मिथिलाक पवित्र भूगोल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "मिथिलाक पवित्र भूगोल" अछि।

प्रश्न 29917. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689: डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क "'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पवित्र भूगोल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पवित्र भूगोल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "मिथिलाक पवित्र भूगोल" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29918. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689: डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क “'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८), विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८), विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29919. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689: डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क “'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29920. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689: डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क “'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29921. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689: डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क “'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29922. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689मे डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क “'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मिथिलाक पवित्र भूगोल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2998, सूचकांक पंक्ति 1689मे डॉ. फूल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)क “'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध); नेपालक मैथिली साहित्य-इतिहास” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मिथिलाक पवित्र भूगोल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 2999 : विदेह-सदेह 21 — प्रीति: कविता

प्रश्न 29923. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690: प्रीतिक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1690मे प्रीतिक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29924. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690: प्रीतिक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29925. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690: प्रीतिक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29926. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690: प्रीतिक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 29927. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690: प्रीतिक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29928. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690: प्रीतिक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रीति, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रीति, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29929. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690: प्रीतिक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29930. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690: प्रीतिक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29931. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690: प्रीतिक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29932. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690मे प्रीतिक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 2999, सूचकांक पंक्ति 1690मे प्रीतिक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3000 : विदेह-सदेह 21 — प्रीति ठाकुर: कविता

प्रश्न 29933. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691: प्रीति ठाकुरक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1691मे प्रीति ठाकुरक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29934. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691: प्रीति ठाकुरक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29935. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691: प्रीति ठाकुरक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 29936. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691: प्रीति ठाकुरक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भावनात्मक अभिव्यक्ति

उत्तर: घ. भावनात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भावनात्मक अभिव्यक्ति” अछि।

प्रश्न 29937. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691: प्रीति ठाकुरक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भावनात्मक अभिव्यक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भावनात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावनात्मक अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29938. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691: प्रीति ठाकुरक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रीति ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रीति ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29939. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691: प्रीति ठाकुरक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29940. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691: प्रीति ठाकुरक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29941. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691: प्रीति ठाकुरक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29942. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691मे प्रीति ठाकुरक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावनात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3000, सूचकांक पंक्ति 1691मे प्रीति ठाकुरक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावनात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3001 : विदेह-सदेह 21 — प्रेमचन्द्र मिश्र: गजल

प्रश्न 29943. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692: प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1692मे प्रेमचन्द्र मिश्रक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29944. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692: प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29945. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692: प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 29946. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692: प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल परम्परा

उत्तर: घ. गजल परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल परम्परा” अछि।

प्रश्न 29947. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692: प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29948. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692: प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमचन्द्र मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमचन्द्र मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29949. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692: प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29950. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692: प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29951. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692: प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29952. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692मे प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3001, सूचकांक पंक्ति 1692मे प्रेमचन्द्र मिश्रक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3002 : विदेह-सदेह 21 — डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२): आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख

प्रश्न 29953. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693: डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1693मे डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क प्रविष्टि “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29954. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693: डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29955. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693: डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आध्यात्मिक निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आध्यात्मिक निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आध्यात्मिक निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 29956. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693: डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 29957. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693: डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29958. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693: डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२), विधा गद्य, उप-विधा आध्यात्मिक निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२), विधा गद्य, उप-विधा आध्यात्मिक निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29959. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693: डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29960. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693: डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आध्यात्मिक निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आध्यात्मिक निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29961. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693: डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29962. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693मे डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख” प्रविष्टि गद्य, आध्यात्मिक निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3002, सूचकांक पंक्ति 1693मे डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)क “आध्यात्मिक निबन्ध; शोध-लेख” प्रविष्टि गद्य, आध्यात्मिक निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3003 : विदेह-सदेह 21 — बलभद्र मिश्र: कविता; निबन्ध

प्रश्न 29963. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694: बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता; निबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता; निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1694मे बलभद्र मिश्रक प्रविष्टि “कविता; निबन्ध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29964. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694: बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29965. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694: बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 29966. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694: बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चेतना

उत्तर: घ. सामाजिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चेतना” अछि।

प्रश्न 29967. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694: बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29968. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694: बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बलभद्र मिश्र, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बलभद्र मिश्र, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29969. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694: बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29970. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694: बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/निबन्धक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/निबन्धक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29971. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694: बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29972. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694मे बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/निबन्ध आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3003, सूचकांक पंक्ति 1694मे बलभद्र मिश्रक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/निबन्ध आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3004 : विदेह-सदेह 21 — बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल): 'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी

प्रश्न 29973. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695: बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1695मे बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क प्रविष्टि “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29974. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695: बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29975. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695: बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 29976. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695: बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लिलतपुर, नेपाल

उत्तर: घ. लिलतपुर, नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लिलतपुर, नेपाल” अछि।

प्रश्न 29977. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695: बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लिलतपुर, नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लिलतपुर, नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लिलतपुर, नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29978. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695: बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल), विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल), विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29979. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695: बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29980. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695: बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29981. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695: बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29982. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695मे बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लिलतपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3004, सूचकांक पंक्ति 1695मे बिनीत ठाकुर (लिलतपुर, नेपाल)क “'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) — मिथिलाक्षर आ देवनागरी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लिलतपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3005 : विदेह-सदेह 21 — बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३): 'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)

प्रश्न 29983. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696: बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1696मे बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क प्रविष्टि “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29984. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696: बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29985. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696: बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 29986. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696: बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइटीएचआइएलए ईएक्सआइएसटीईएनटीआइएएल सीआरआइएसआइएस

उत्तर: घ. एमआइटीएचआइएलए ईएक्सआइएसटीईएनटीआइएएल सीआरआइएसआइएस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमआइटीएचआइएलए ईएक्सआइएसटीईएनटीआइएएल सीआरआइएसआइएस” अछि।

प्रश्न 29987. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696: बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइटीएचआइएलए ईएक्सआइएसटीईएनटीआइएएल सीआरआइएसआइएस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइटीएचआइएलए ईएक्सआइएसटीईएनटीआइएएल सीआरआइएसआइएस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमआइटीएचआइएलए ईएक्सआइएसटीईएनटीआइएएल सीआरआइएसआइएस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29988. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696: बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३), विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३), विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29989. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696: बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 29990. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696: बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 29991. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696: बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 29992. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696मे बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “एमआइटीएचआइएलए ईएक्सआइएसटीईएनटीआइएएल सीआरआइएसआइएस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3005, सूचकांक पंक्ति 1696मे बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)क “'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “एमआइटीएचआइएलए ईएक्सआइएसटीईएनटीआइएएल सीआरआइएसआइएस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3006 : विदेह-सदेह 21 — बैकुण्ठ झा: निबन्ध

प्रश्न 29993. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697: बैकुण्ठ झाक “निबन्ध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1697मे बैकुण्ठ झाक प्रविष्टि “निबन्ध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 29994. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697: बैकुण्ठ झाक “निबन्ध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 29995. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697: बैकुण्ठ झाक “निबन्ध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 29996. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697: बैकुण्ठ झाक “निबन्ध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परम्परावादी विमर्श

उत्तर: घ. परम्परावादी विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परम्परावादी विमर्श” अछि।

प्रश्न 29997. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697: बैकुण्ठ झाक “निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परम्परावादी विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परम्परावादी विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परम्परावादी विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 29998. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697: बैकुण्ठ झाक “निबन्ध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बैकुण्ठ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बैकुण्ठ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 29999. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697: बैकुण्ठ झाक “निबन्ध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30000. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697: बैकुण्ठ झाक “निबन्ध”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30001. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697: बैकुण्ठ झाक “निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30002. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697मे बैकुण्ठ झाक “निबन्ध” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “परम्परावादी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3006, सूचकांक पंक्ति 1697मे बैकुण्ठ झाक “निबन्ध” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “परम्परावादी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3007 : विदेह-सदेह 21 — भरत माँझी: कविता

प्रश्न 30003. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698: भरत माँझीक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1698मे भरत माँझीक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30004. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698: भरत माँझीक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30005. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698: भरत माँझीक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30006. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698: भरत माँझीक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित स्वर

उत्तर: घ. दलित स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित स्वर” अछि।

प्रश्न 30007. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698: भरत माँझीक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30008. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698: भरत माँझीक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भरत माँझी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भरत माँझी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30009. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698: भरत माँझीक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30010. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698: भरत माँझीक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30011. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698: भरत माँझीक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30012. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698मे भरत माँझीक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3007, सूचकांक पंक्ति 1698मे भरत माँझीक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3008 : विदेह-सदेह 21 — भवनाथ दीपक: कविता; गजल

प्रश्न 30013. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699: भवनाथ दीपकक “कविता; गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता; गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता; गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1699मे भवनाथ दीपकक प्रविष्टि “कविता; गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30014. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699: भवनाथ दीपकक “कविता; गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30015. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699: भवनाथ दीपकक “कविता; गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गजल” अछि।

प्रश्न 30016. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699: भवनाथ दीपकक “कविता; गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार+वियोग

उत्तर: घ. शृंगार+वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार+वियोग” अछि।

प्रश्न 30017. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699: भवनाथ दीपकक “कविता; गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार+वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार+वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार+वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30018. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699: भवनाथ दीपकक “कविता; गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भवनाथ दीपक, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भवनाथ दीपक, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30019. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699: भवनाथ दीपकक “कविता; गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30020. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699: भवनाथ दीपकक “कविता; गजल”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30021. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699: भवनाथ दीपकक “कविता; गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30022. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699मे भवनाथ दीपकक “कविता; गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता/गजल आ “शृंगार+वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3008, सूचकांक पंक्ति 1699मे भवनाथ दीपकक “कविता; गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता/गजल आ “शृंगार+वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3009 : विदेह-सदेह 21 — भालचन्द्र झा: नाटक; रंगमञ्च-लेखन

प्रश्न 30023. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700: भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटक; रंगमञ्च-लेखन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक; रंगमञ्च-लेखन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1700मे भालचन्द्र झाक प्रविष्टि “नाटक; रंगमञ्च-लेखन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30024. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700: भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30025. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700: भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 30026. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700: भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमञ्च परम्परा

उत्तर: घ. रंगमञ्च परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च परम्परा” अछि।

प्रश्न 30027. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700: भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमञ्च परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमञ्च परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30028. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700: भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भालचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भालचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30029. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700: भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30030. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700: भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30031. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700: भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30032. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700मे भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “रंगमञ्च परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3009, सूचकांक पंक्ति 1700मे भालचन्द्र झाक “नाटक; रंगमञ्च-लेखन” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “रंगमञ्च परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3010 : विदेह-सदेह 21 — मनोज मुक्ति: 'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)

प्रश्न 30033. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701: मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1701मे मनोज मुक्तिक प्रविष्टि “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30034. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701: मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30035. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701: मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30036. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701: मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 30037. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701: मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30038. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701: मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज मुक्ति, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज मुक्ति, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30039. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701: मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30040. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701: मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30041. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701: मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30042. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701मे मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3010, सूचकांक पंक्ति 1701मे मनोज मुक्तिक “'स्वाभिमानक लड़ाई' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3011 : विदेह-सदेह 21 — महाकाश: कविता

प्रश्न 30043. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702: महाकाशक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1702मे महाकाशक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30044. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702: महाकाशक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30045. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702: महाकाशक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30046. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702: महाकाशक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिकतावादी

उत्तर: घ. आधुनिकतावादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिकतावादी” अछि।

प्रश्न 30047. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702: महाकाशक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिकतावादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिकतावादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिकतावादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30048. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702: महाकाशक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महाकाश, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महाकाश, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30049. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702: महाकाशक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30050. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702: महाकाशक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30051. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702: महाकाशक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30052. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702मे महाकाशक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आधुनिकतावादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3011, सूचकांक पंक्ति 1702मे महाकाशक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आधुनिकतावादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3012 : विदेह-सदेह 21 — महेन्द्र मलंगिया: नाटक; रंगमञ्च-निदेशन

प्रश्न 30053. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703: महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटक; रंगमञ्च-निदेशन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक; रंगमञ्च-निदेशन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1703मे महेन्द्र मलंगियाक प्रविष्टि “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30054. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703: महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30055. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703: महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 30056. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703: महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमएआइटीएचआइएलआइ टीएचईएटीआरई आरईवीआइवीएएल

उत्तर: घ. एमएआइटीएचआइएलआइ टीएचईएटीआरई आरईवीआइवीएएल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमएआइटीएचआइएलआइ टीएचईएटीआरई आरईवीआइवीएएल” अछि।

प्रश्न 30057. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703: महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमएआइटीएचआइएलआइ टीएचईएटीआरई आरईवीआइवीएएल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमएआइटीएचआइएलआइ टीएचईएटीआरई आरईवीआइवीएएल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमएआइटीएचआइएलआइ टीएचईएटीआरई आरईवीआइवीएएल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30058. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703: महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30059. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703: महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30060. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703: महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30061. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703: महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30062. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703मे महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “एमएआइटीएचआइएलआइ टीएचईएटीआरई आरईवीआइवीएएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3012, सूचकांक पंक्ति 1703मे महेन्द्र मलंगियाक “नाटक; रंगमञ्च-निदेशन” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “एमएआइटीएचआइएलआइ टीएचईएटीआरई आरईवीआइवीएएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3013 : विदेह-सदेह 21 — महेन्द्र कुमार मिश्र: कविता

प्रश्न 30063. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704: महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1704मे महेन्द्र कुमार मिश्रक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30064. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704: महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30065. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704: महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30066. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704: महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 30067. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704: महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30068. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704: महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेन्द्र कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेन्द्र कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30069. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704: महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30070. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704: महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30071. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704: महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30072. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704मे महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3013, सूचकांक पंक्ति 1704मे महेन्द्र कुमार मिश्रक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3014 : विदेह-सदेह 21 — महेश मिश्र 'विभूति': कविता

प्रश्न 30073. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705: महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1705मे महेश मिश्र 'विभूति'क प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30074. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705: महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30075. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705: महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30076. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705: महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भावात्मक

उत्तर: घ. भावात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भावात्मक” अछि।

प्रश्न 30077. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705: महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भावात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भावात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30078. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705: महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेश मिश्र 'विभूति', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेश मिश्र 'विभूति', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30079. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705: महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30080. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705: महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता”कें विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30081. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705: महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30082. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705मे महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3014, सूचकांक पंक्ति 1705मे महेश मिश्र 'विभूति'क “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3015 : विदेह-सदेह 21 — मायानन्द मिश्र: 'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास

प्रश्न 30083. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706: मायानन्द मिश्रक “'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1706मे मायानन्द मिश्रक प्रविष्टि “'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30084. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706: मायानन्द मिश्रक “'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30085. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706: मायानन्द मिश्रक "'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता/उपन्यास" अछि।

प्रश्न 30086. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706: मायानन्द मिश्रक "'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइटीएचआइएलए आइडीईएनटीआइटीवाई

उत्तर: घ. एमआइटीएचआइएलए आइडीईएनटीआइटीवाई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "एमआइटीएचआइएलए आइडीईएनटीआइटीवाई" अछि।

प्रश्न 30087. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706: मायानन्द मिश्रक "'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइटीएचआइएलए आइडीईएनटीआइटीवाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइटीएचआइएलए आइडीईएनटीआइटीवाई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "एमआइटीएचआइएलए आइडीईएनटीआइटीवाई" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30088. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706: मायानन्द मिश्रक "'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मायानन्द मिश्र, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मायानन्द मिश्र, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30089. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706: मायानन्द मिश्रक "'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30090. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706: मायानन्द मिश्रक "'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास"केँ विदेह-सदेह 21क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/उपन्यासक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/उपन्यासक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30091. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706: मायानन्द मिश्रक "'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30092. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706मे मायानन्द मिश्रक "'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास" प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/उपन्यास आ "एमआइटीएचआइएलए आइडीईएनटीआइटीवाई" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3015, सूचकांक पंक्ति 1706मे मायानन्द मिश्रक "'अहाँ की छी' (कविता); उपन्यास; मिथिला इतिहास" प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/उपन्यास आ "एमआइटीएचआइएलए आइडीईएनटीआइटीवाई" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3016 : विदेह-सदेह 21 — डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६): 'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख

प्रश्न 30093. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707: डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क "'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1707मे डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क प्रविष्टि "'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30094. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707: डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क "'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य/गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30095. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707: डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क "'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता/शोध" अछि।

प्रश्न 30096. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707: डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क "'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल एचआइएसटीओआरवाई

उत्तर: घ. एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल एचआइएसटीओआरवाई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल एचआइएसटीओआरवाई" अछि।

प्रश्न 30097. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707: डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क "'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल एचआइएसटीओआरवाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल एचआइएसटीओआरवाई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल एचआइएसटीओआरवाई" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30098. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707: डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क "'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30099. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707: डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क "'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30100. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707: डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क "'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख"केँ विदेह-सदेह 21क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/शोधक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/शोधक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30101. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707: डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क "'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30102. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707मे डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क “'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/शोध आ “एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल एचआइएसटीओआरवाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3016, सूचकांक पंक्ति 1707मे डॉ. मिश्रनाथ झा (जन्म: १९५६)क “'विदेह-वैभव' (कविता); शोध-लेख” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/शोध आ “एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल एचआइएसटीओआरवाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3017 : विदेह-सदेह 21 — मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल): 'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा

प्रश्न 30103. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708: मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1708मे मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क प्रविष्टि “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30104. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708: मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30105. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708: मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/संगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/संगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/संगीत” अछि।

प्रश्न 30106. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708: मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बुटवल, नेपाल

उत्तर: घ. बुटवल, नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बुटवल, नेपाल” अछि।

प्रश्न 30107. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708: मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बुटवल, नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुटवल, नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बुटवल, नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30108. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708: मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल), विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/संगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल), विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/संगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30109. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708: मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30110. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708: मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/संगीतक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/संगीतक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30111. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708: मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30112. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708मे मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/संगीत आ “बुटवल, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3017, सूचकांक पंक्ति 1708मे मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)क “'समझौता नेपाल — भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/संगीत आ “बुटवल, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3018 : विदेह-सदेह 21 — मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा): 'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी

प्रश्न 30113. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709: मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क "'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1709मे मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क प्रविष्टि "'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30114. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709: मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क "'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य/पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30115. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709: मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क "'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आध्यात्मिक निबन्ध/भक्तिगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आध्यात्मिक निबन्ध/भक्तिगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "आध्यात्मिक निबन्ध/भक्तिगीत" अछि।

प्रश्न 30116. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709: मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क "'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "भक्ति परम्परा" अछि।

प्रश्न 30117. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709: मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क "'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "भक्ति परम्परा" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30118. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709: मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क “'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आध्यात्मिक निबन्ध/भक्तिगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा आध्यात्मिक निबन्ध/भक्तिगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30119. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709: मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क “'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30120. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709: मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क “'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आध्यात्मिक निबन्ध/भक्तिगीतक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आध्यात्मिक निबन्ध/भक्तिगीतक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30121. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709: मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क “'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30122. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709मे मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क “'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आध्यात्मिक निबन्ध/भक्तिगीत आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3018, सूचकांक पंक्ति 1709मे मैथिलीपुत्र दीप (जन्म: १९३६, कथवार, दरभंगा)क “'ॐ (मा)' — आध्यात्मिक निबन्ध; भक्तिगीत; साहेब रामदास जीवनी” प्रविष्टि गद्य/पद्य, आध्यात्मिक निबन्ध/भक्तिगीत आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3019 : विदेह-सदेह 21 — रमेन्द्र मिश्र: कथा

प्रश्न 30123. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710: रमेन्द्र मिश्रक “कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1710मे रमेन्द्र मिश्रक प्रविष्टि “कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30124. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710: रमेन्द्र मिश्रक “कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30125. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710: रमेन्द्र मिश्रक “कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 30126. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710: रमेन्द्र मिश्रक “कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यथार्थवादी कथा

उत्तर: घ. यथार्थवादी कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थवादी कथा” अछि।

प्रश्न 30127. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710: रमेन्द्र मिश्रक “कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यथार्थवादी कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यथार्थवादी कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थवादी कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30128. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710: रमेन्द्र मिश्रक “कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमेन्द्र मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमेन्द्र मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30129. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710: रमेन्द्र मिश्रक “कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30130. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710: रमेन्द्र मिश्रक “कथा”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30131. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710: रमेन्द्र मिश्रक “कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30132. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710मे रमेन्द्र मिश्रक “कथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यथार्थवादी कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3019, सूचकांक पंक्ति 1710मे रमेन्द्र मिश्रक “कथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यथार्थवादी कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3020 : विदेह-सदेह 21 — डा. रमानन्द झा 'रमण': 'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा

प्रश्न 30133. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711: डा. रमानन्द झा 'रमण'क “'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1711मे डा. रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30134. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711: डा. रमानन्द झा 'रमण'क “'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30135. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711: डा. रमानन्द झा 'रमण'क "'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इतिहास/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इतिहास/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "इतिहास/कथा" अछि।

प्रश्न 30136. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711: डा. रमानन्द झा 'रमण'क "'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास

उत्तर: घ. साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास" अछि।

प्रश्न 30137. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711: डा. रमानन्द झा 'रमण'क "'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30138. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711: डा. रमानन्द झा 'रमण'क "'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा इतिहास/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा इतिहास/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30139. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711: डा. रमानन्द झा 'रमण'क "'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30140. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711: डा. रमानन्द झा 'रमण'क "'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा"केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ इतिहास/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ इतिहास/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30141. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711: डा. रमानन्द झा 'रमण'क “'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30142. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711मे डा. रमानन्द झा 'रमण'क “'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा” प्रविष्टि गद्य, इतिहास/कथा आ “साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3020, सूचकांक पंक्ति 1711मे डा. रमानन्द झा 'रमण'क “'सगर रातिक दीप जरय' इतिहास; कथा” प्रविष्टि गद्य, इतिहास/कथा आ “साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3021 : विदेह-सदेह 21 — राजमोहन झा: (अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)

प्रश्न 30143. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712: राजमोहन झाक “(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. (अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1712मे राजमोहन झाक प्रविष्टि “(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30144. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712: राजमोहन झाक “(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30145. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712: राजमोहन झाक “(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 30146. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712: राजमोहन झाक “(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीएफ. क्रम ३

उत्तर: घ. सीएफ. क्रम ३

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीएफ. क्रम ३” अछि।

प्रश्न 30147. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712: राजमोहन झाक "(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीएफ. क्रम ३

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीएफ. क्रम ३

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "सीएफ. क्रम ३" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30148. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712: राजमोहन झाक "(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30149. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712: राजमोहन झाक "(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30150. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712: राजमोहन झाक "(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)"केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30151. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712: राजमोहन झाक "(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30152. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712मे राजमोहन झाक "(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)" प्रविष्टि गद्य, कथा/समीक्षा आ "सीएफ. क्रम ३" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3021, सूचकांक पंक्ति 1712मे राजमोहन झाक "(अनुभाग ३.३ मे विस्तृत)" प्रविष्टि गद्य, कथा/समीक्षा आ "सीएफ. क्रम ३" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3022 : विदेह-सदेह 21 — राजेन्द्र पटेल: कविता

प्रश्न 30153. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713: राजेन्द्र पटेलक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1713मे राजेन्द्र पटेलक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30154. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713: राजेन्द्र पटेलक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30155. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713: राजेन्द्र पटेलक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30156. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713: राजेन्द्र पटेलक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भावात्मक अभिव्यक्ति

उत्तर: घ. भावात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भावात्मक अभिव्यक्ति” अछि।

प्रश्न 30157. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713: राजेन्द्र पटेलक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भावात्मक अभिव्यक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भावात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावात्मक अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30158. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713: राजेन्द्र पटेलक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेन्द्र पटेल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेन्द्र पटेल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30159. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713: राजेन्द्र पटेलक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30160. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713: राजेन्द्र पटेलक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30161. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713: राजेन्द्र पटेलक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30162. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713मे राजेन्द्र पटेलक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3022, सूचकांक पंक्ति 1713मे राजेन्द्र पटेलक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3023 : विदेह-सदेह 21 — राजेन्द्र विमल: गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')

प्रश्न 30163. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714: राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1714मे राजेन्द्र विमलक प्रविष्टि “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30164. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714: राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30165. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714: राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 30166. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714: राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति+शृंगार

उत्तर: घ. भक्ति+शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति+शृंगार” अछि।

प्रश्न 30167. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714: राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति+शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति+शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति+शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30168. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714: राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेन्द्र विमल, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेन्द्र विमल, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30169. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714: राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30170. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714: राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30171. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714: राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30172. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714मे राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “भक्ति+शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3023, सूचकांक पंक्ति 1714मे राजेन्द्र विमलक “गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “भक्ति+शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3024 : विदेह-सदेह 21 — डा. राम दयाल राकेश: 'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)

प्रश्न 30173. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715: डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1715मे डा. राम दयाल राकेशक प्रविष्टि “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30174. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715: डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30175. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715: डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सांस्कृतिक निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सांस्कृतिक निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सांस्कृतिक निबन्ध” अछि।

प्रश्न 30176. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715: डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल सीएएलईएनडीएआर

उत्तर: घ. एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल सीएएलईएनडीएआर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल सीएएलईएनडीएआर” अछि।

प्रश्न 30177. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715: डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल सीएएलईएनडीएआर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल सीएएलईएनडीएआर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल सीएएलईएनडीएआर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30178. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715: डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. राम दयाल राकेश, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. राम दयाल राकेश, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30179. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715: डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30180. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715: डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सांस्कृतिक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सांस्कृतिक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30181. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715: डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30182. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715मे डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक निबन्ध आ “एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल सीएएलईएनडीएआर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3024, सूचकांक पंक्ति 1715मे डा. राम दयाल राकेशक “'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक निबन्ध आ “एमआइटीएचआइएलए सीयूएलटीयूआरएएल सीएएलईएनडीएआर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3025 : विदेह-सदेह 21 — राम नारायण देव: कविता

प्रश्न 30183. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716: राम नारायण देवक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1716मे राम नारायण देवक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30184. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716: राम नारायण देवक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30185. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716: राम नारायण देवक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30186. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716: राम नारायण देवक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चेतना

उत्तर: घ. सामाजिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चेतना” अछि।

प्रश्न 30187. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716: राम नारायण देवक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30188. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716: राम नारायण देवक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम नारायण देव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम नारायण देव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30189. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716: राम नारायण देवक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30190. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716: राम नारायण देवक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30191. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716: राम नारायण देवक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30192. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716मे राम नारायण देवक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3025, सूचकांक पंक्ति 1716मे राम नारायण देवक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3026 : विदेह-सदेह 21 — राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१): कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन

प्रश्न 30193. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1717मे राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क प्रविष्टि “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30194. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30195. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/कथा/लोकगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/कथा/लोकगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/कथा/लोकगीत” अछि।

प्रश्न 30196. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

उत्तर: घ. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” अछि।

प्रश्न 30197. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30198. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा/लोकगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१), विधा गद्य/पद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा/लोकगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30199. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30200. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/कथा/लोकगीतक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/कथा/लोकगीतक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30201. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717: राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30202. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717मे राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन” प्रविष्टि गद्य/पद्य, निबन्ध/कथा/लोकगीत आ “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3026, सूचकांक पंक्ति 1717मे राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)क “कोसी बाढ़ि निबन्ध; कथा; जट-जटिन” प्रविष्टि गद्य/पद्य, निबन्ध/कथा/लोकगीत आ “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3027 : विदेह-सदेह 21 — रामलोचन ठाकुर: 'अनुरोध' कविता (१९६२)

प्रश्न 30203. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718: रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अनुरोध' कविता (१९६२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनुरोध' कविता (१९६२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1718मे रामलोचन ठाकुरक प्रविष्टि “'अनुरोध' कविता (१९६२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30204. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718: रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30205. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718: रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30206. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718: रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ऐतिहासिक रचना

उत्तर: घ. ऐतिहासिक रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ऐतिहासिक रचना” अछि।

प्रश्न 30207. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718: रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ऐतिहासिक रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऐतिहासिक रचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऐतिहासिक रचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30208. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718: रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामलोचन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामलोचन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30209. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718: रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30210. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718: रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30211. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718: रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30212. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718मे रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ऐतिहासिक रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3027, सूचकांक पंक्ति 1718मे रामलोचन ठाकुरक “'अनुरोध' कविता (१९६२)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ऐतिहासिक रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3028 : विदेह-सदेह 21 — रामजी चौधरी: निबन्ध

प्रश्न 30213. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719: रामजी चौधरीक “निबन्ध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1719मे रामजी चौधरीक प्रविष्टि “निबन्ध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30214. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719: रामजी चौधरीक “निबन्ध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30215. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719: रामजी चौधरीक “निबन्ध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 30216. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719: रामजी चौधरीक “निबन्ध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विचारात्मक गद्य

उत्तर: घ. विचारात्मक गद्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विचारात्मक गद्य” अछि।

प्रश्न 30217. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719: रामजी चौधरीक “निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विचारात्मक गद्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विचारात्मक गद्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विचारात्मक गद्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30218. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719: रामजी चौधरीक “निबन्ध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामजी चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामजी चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30219. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719: रामजी चौधरीक “निबन्ध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30220. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719: रामजी चौधरीक “निबन्ध”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30221. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719: रामजी चौधरीक “निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30222. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719मे रामजी चौधरीक “निबन्ध” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “विचारात्मक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3028, सूचकांक पंक्ति 1719मे रामजी चौधरीक “निबन्ध” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “विचारात्मक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3029 : विदेह-सदेह 21 — रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डे: विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार

प्रश्न 30223. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720: रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1720मे रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक प्रविष्टि “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30224. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720: रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30225. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720: रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 30226. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720: रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन

उत्तर: घ. वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” अछि।

प्रश्न 30227. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720: रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30228. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720: रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डे, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डे, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30229. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720: रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30230. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720: रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30231. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720: रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30232. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720मे रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3029, सूचकांक पंक्ति 1720मे रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) + अभिनव भातखण्डेक “विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3030 : विदेह-सदेह 21 — रूपा धीरू: गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत

प्रश्न 30233. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721: रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1721मे रूपा धीरूक प्रविष्टि “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30234. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721: रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30235. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721: रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 30236. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721: रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 30237. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721: रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30238. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721: रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूपा धीरू, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूपा धीरू, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30239. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721: रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30240. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721: रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30241. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721: रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30242. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721मे रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3030, सूचकांक पंक्ति 1721मे रूपा धीरूक “गीत ('भोर' एल्बम); शिक्षा-जागरण गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3031 : विदेह-सदेह 21 — रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न': कविता

प्रश्न 30243. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722: रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1722मे रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30244. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722: रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30245. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722: रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30246. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722: रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ी

उत्तर: घ. नव पीढ़ी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।

प्रश्न 30247. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722: रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30248. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722: रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30249. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722: रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30250. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722: रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30251. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722: रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30252. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722मे रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3031, सूचकांक पंक्ति 1722मे रूपेश कुमार झा 'ज्योत्स्न'क “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3032 : विदेह-सदेह 21 — डा. रेवती रमण लाल: टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त

प्रश्न 30253. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723: डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1723मे डा. रेवती रमण लालक प्रविष्टि “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30254. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723: डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30255. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723: डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 30256. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723: डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एलओएनडीओएन डीआइएएसपीओआरए

उत्तर: घ. एलओएनडीओएन डीआइएएसपीओआरए

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एलओएनडीओएन डीआइएएसपीओआरए” अछि।

प्रश्न 30257. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723: डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एलओएनडीओएन डीआइएएसपीओआरए

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एलओएनडीओएन डीआइएएसपीओआरए

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एलओएनडीओएन डीआइएएसपीओआरए” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30258. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723: डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. रेवती रमण लाल, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. रेवती रमण लाल, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30259. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723: डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30260. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723: डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त”कें विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30261. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723: डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30262. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723मे डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “एलओएनडीओएन डीआइएएसपीओआरए” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3032, सूचकांक पंक्ति 1723मे डा. रेवती रमण लालक “टेम्स नदीमे नौकाविहार — यात्रा-वृत्तान्त” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “एलओएनडीओएन डीआइएएसपीओआरए” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3033 : विदेह-सदेह 21 — रोशन जनकपुरी: कविता; गजल

प्रश्न 30263. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724: रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता; गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता; गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1724मे रोशन जनकपुरीक प्रविष्टि “कविता; गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30264. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724: रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30265. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724: रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गजल” अछि।

प्रश्न 30266. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724: रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर, नेपाल

उत्तर: घ. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर, नेपाल” अछि।

प्रश्न 30267. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724: रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकपुर, नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर, नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30268. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724: रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रोशन जनकपुरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रोशन जनकपुरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30269. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724: रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30270. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724: रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30271. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724: रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30272. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724मे रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता/गजल आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3033, सूचकांक पंक्ति 1724मे रोशन जनकपुरीक “कविता; गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता/गजल आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3034 : विदेह-सदेह 21 — लक्ष्मी ठाकुर: कविता; मिथिला चित्रकला

प्रश्न 30273. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725: लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता; मिथिला चित्रकला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता; मिथिला चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1725मे लक्ष्मी ठाकुरक प्रविष्टि “कविता; मिथिला चित्रकला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30274. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725: लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30275. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725: लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/चित्रकला

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/चित्रकला

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/चित्रकला” अछि।

प्रश्न 30276. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725: लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 30277. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725: लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30278. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725: लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक लक्ष्मी ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता/चित्रकला

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक लक्ष्मी ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता/चित्रकला

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30279. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725: लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30280. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725: लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/चित्रकलाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/चित्रकलाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30281. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725: लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30282. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725मे लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि पद्य, कविता/चित्रकला आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3034, सूचकांक पंक्ति 1725मे लक्ष्मी ठाकुरक “कविता; मिथिला चित्रकला” प्रविष्टि पद्य, कविता/चित्रकला आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3035 : विदेह-सदेह 21 — वासुदेव सुनानी: निबन्ध

प्रश्न 30283. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726: वासुदेव सुनानीक “निबन्ध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1726मे वासुदेव सुनानीक प्रविष्टि “निबन्ध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30284. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726: वासुदेव सुनानीक “निबन्ध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30285. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726: वासुदेव सुनानीक “निबन्ध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 30286. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726: वासुदेव सुनानीक “निबन्ध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विचारात्मक

उत्तर: घ. विचारात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विचारात्मक” अछि।

प्रश्न 30287. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726: वासुदेव सुनानीक “निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विचारात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विचारात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विचारात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30288. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726: वासुदेव सुनानीक “निबन्ध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वासुदेव सुनानी, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वासुदेव सुनानी, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30289. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726: वासुदेव सुनानीक “निबन्ध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30290. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726: वासुदेव सुनानीक “निबन्ध”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30291. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726: वासुदेव सुनानीक “निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30292. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726मे वासुदेव सुनानीक “निबन्ध” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “विचारात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3035, सूचकांक पंक्ति 1726मे वासुदेव सुनानीक “निबन्ध” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “विचारात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3036 : विदेह-सदेह 21 — विज्ञानन्द झा: शोध-लेख

प्रश्न 30293. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727: विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शोध-लेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1727मे विज्ञानन्द झाक प्रविष्टि “शोध-लेख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30294. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727: विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30295. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727: विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

प्रश्न 30296. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727: विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमएआइटीएचआइएलआइ एलआइएनजीयूआइएसटीआइसी आरईएसईएआरसीएच

उत्तर: घ. एमएआइटीएचआइएलआइ एलआइएनजीयूआइएसटीआइसी आरईएसईएआरसीएच

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमएआइटीएचआइएलआइ एलआइएनजीयूआइएसटीआइसी आरईएसईएआरसीएच” अछि।

प्रश्न 30297. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727: विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमएआइटीएचआइएलआइ एलआइएनजीयूआइएसटीआइसी आरईएसईएआरसीएच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमएआइटीएचआइएलआइ एलआइएनजीयूआइएसटीआइसी आरईएसईएआरसीएच

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमएआइटीएचआइएलआइ एलआइएनजीयूआइएसटीआइसी आरईएसईएआरसीएच” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30298. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727: विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विज्ञानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विज्ञानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30299. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727: विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30300. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727: विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30301. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727: विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30302. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727मे विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “एमएआइटीएचआइएलआइ एलआइएनजीयूआइएसटीआइसी आरईएसईएआरसीएच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3036, सूचकांक पंक्ति 1727मे विज्ञानन्द झाक “शोध-लेख” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “एमएआइटीएचआइएलआइ एलआइएनजीयूआइएसटीआइसी आरईएसईएआरसीएच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3037 : विदेह-सदेह 21 — विनीत उत्पल: साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)

प्रश्न 30303. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728: विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1728मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30304. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728: विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30305. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728: विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 30306. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728: विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच

उत्तर: घ. जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच” अछि।

प्रश्न 30307. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728: विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30308. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728: विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30309. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728: विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30310. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728: विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30311. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728: विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30312. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728मे विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3037, सूचकांक पंक्ति 1728मे विनीत उत्पलक “साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिहासिक संवाद)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3038 : विदेह-सदेह 21 — विभा रानी: कथा

प्रश्न 30313. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729: विभा रानीक “कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1729मे विभा रानीक प्रविष्टि “कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30314. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729: विभा रानीक “कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30315. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729: विभा रानीक “कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 30316. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729: विभा रानीक “कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-दृष्टि

उत्तर: घ. नारी-दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-दृष्टि” अछि।

प्रश्न 30317. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729: विभा रानीक “कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30318. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729: विभा रानीक “कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30319. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729: विभा रानीक “कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30320. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729: विभा रानीक “कथा”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30321. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729: विभा रानीक “कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30322. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729मे विभा रानीक “कथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3038, सूचकांक पंक्ति 1729मे विभा रानीक “कथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3039 : विदेह-सदेह 21 — वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५): 'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन

प्रश्न 30323. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730: वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क “'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1730मे वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क प्रविष्टि “'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30324. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730: वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क “'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30325. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730: वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क “'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/राजनीतिक लेखन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/राजनीतिक लेखन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/राजनीतिक लेखन” अछि।

प्रश्न 30326. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730: वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क “'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एनईपीएएल

उत्तर: घ. एनईपीएएल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एनईपीएएल” अछि।

प्रश्न 30327. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730: वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क “'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एनईपीएएल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एनईपीएएल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एनईपीएएल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30328. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730: वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क "'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/राजनीतिक लेखन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/राजनीतिक लेखन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30329. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730: वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क "'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30330. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730: वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क "'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन"केँ विदेह-सदेह 21क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/राजनीतिक लेखनक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/राजनीतिक लेखनक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30331. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730: वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क "'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन" प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30332. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730मे वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क "'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन" प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/राजनीतिक लेखन आ "एनईपीएएल" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3039, सूचकांक पंक्ति 1730मे वृषेश चन्द्र लाल 'विश्वेश्वर' (जन्म: २९ मार्च १९५५)क "'फेकनाक दियाबाती' (कविता); नेपाली राजनीतिपर लेखन" प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/राजनीतिक लेखन आ "एनईपीएएल" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3040 : विदेह-सदेह 21 — छवि झा / कुमुद सिंह: 'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)

प्रश्न 30333. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731: छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1731मे छवि झा / कुमुद सिंहक प्रविष्टि “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30334. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731: छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30335. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731: छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

प्रश्न 30336. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731: छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइटीएचआइएलए पीएआइएनटीआइएनजी एसईएमआइओटीआइसीएस

उत्तर: घ. एमआइटीएचआइएलए पीएआइएनटीआइएनजी एसईएमआइओटीआइसीएस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमआइटीएचआइएलए पीएआइएनटीआइएनजी एसईएमआइओटीआइसीएस” अछि।

प्रश्न 30337. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731: छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइटीएचआइएलए पीएआइएनटीआइएनजी एसईएमआइओटीआइसीएस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइटीएचआइएलए पीएआइएनटीआइएनजी एसईएमआइओटीआइसीएस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमआइटीएचआइएलए पीएआइएनटीआइएनजी एसईएमआइओटीआइसीएस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30338. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731: छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक छवि झा / कुमुद सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक छवि झा / कुमुद सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30339. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731: छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30340. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731: छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30341. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731: छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30342. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731मे छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “एमआइटीएचआइएलए पीएआइएनटीआइएनजी एसईएमआइओटीआइसीएस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3040, सूचकांक पंक्ति 1731मे छवि झा / कुमुद सिंहक “'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “एमआइटीएचआइएलए पीएआइएनटीआइएनजी एसईएमआइओटीआइसीएस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3041 : विदेह-सदेह 21 — आचाचरण झा (जन्म: १९२०): भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'

प्रश्न 30343. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732: आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1732मे आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क प्रविष्टि “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30344. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732: आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30345. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732: आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्तिगीत/जीवनी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्तिगीत/जीवनी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्तिगीत/जीवनी” अछि।

प्रश्न 30346. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732: आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सबसँ वरिष्ठ

उत्तर: घ. सबसँ वरिष्ठ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सबसँ वरिष्ठ” अछि।

प्रश्न 30347. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732: आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सबसँ वरिष्ठ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सबसँ वरिष्ठ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सबसँ वरिष्ठ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30348. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732: आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आचाचरण झा (जन्म: १९२०), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा भक्तिगीत/जीवनी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आचाचरण झा (जन्म: १९२०), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा भक्तिगीत/जीवनी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30349. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732: आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30350. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732: आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्तिगीत/जीवनीक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्तिगीत/जीवनीक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30351. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732: आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30352. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732मे आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'” प्रविष्टि पद्य/गद्य, भक्तिगीत/जीवनी आ “सबसँ वरिष्ठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3041, सूचकांक पंक्ति 1732मे आचाचरण झा (जन्म: १९२०)क “भक्तिगीत; 'साहेब रामदासक जीवनी'” प्रविष्टि पद्य/गद्य, भक्तिगीत/जीवनी आ “सबसँ वरिष्ठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3042 : विदेह-सदेह 21 — आभाष लाभ (जनकपुरधाम): मैथिली गायन; संगीत

प्रश्न 30353. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733: आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली गायन; संगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली गायन; संगीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1733मे आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क प्रविष्टि “मैथिली गायन; संगीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30354. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733: आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. संगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. संगीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “संगीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30355. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733: आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गायन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गायन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गायन” अछि।

प्रश्न 30356. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733: आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर

उत्तर: घ. जनकपुर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर” अछि।

प्रश्न 30357. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733: आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकपुर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30358. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733: आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभाष लाभ (जनकपुरधाम), विधा संगीत, उप-विधा गायन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभाष लाभ (जनकपुरधाम), विधा संगीत, उप-विधा गायन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30359. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733: आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30360. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733: आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत”केँ विदेह-सदेह 21क संगीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गायनक रूपमे संगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गायनक रूपमे संगीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30361. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733: आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30362. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733मे आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत” प्रविष्टि संगीत, गायन आ “जनकपुर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3042, सूचकांक पंक्ति 1733मे आभाष लाभ (जनकपुरधाम)क “मैथिली गायन; संगीत” प्रविष्टि संगीत, गायन आ “जनकपुर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3043 : विदेह-सदेह 21 — आशीष अनचिन्हार: कविता

प्रश्न 30363. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734: आशीष अनचिन्हारक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1734मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30364. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734: आशीष अनचिन्हारक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30365. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734: आशीष अनचिन्हारक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30366. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734: आशीष अनचिन्हारक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक

उत्तर: घ. वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 30367. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734: आशीष अनचिन्हारक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30368. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734: आशीष अनचिन्हारक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30369. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734: आशीष अनचिन्हारक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30370. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734: आशीष अनचिन्हारक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30371. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734: आशीष अनचिन्हारक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30372. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734मे आशीष अनचिन्हारक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3043, सूचकांक पंक्ति 1734मे आशीष अनचिन्हारक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3044 : विदेह-सदेह 21 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता': नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक

प्रश्न 30373. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1735मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क प्रविष्टि “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30374. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30375. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 30376. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीआइआइएल

उत्तर: घ. सीआइआइएल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीआइआइएल” अछि।

प्रश्न 30377. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीआइआइएल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीआइआइएल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीआइआइएल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30378. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', विधा गद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', विधा गद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30379. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30380. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30381. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30382. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “सीआइआइएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3044, सूचकांक पंक्ति 1735मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “नाटक; केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “सीआइआइएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3045 : विदेह-सदेह 21 — उमेश कुमार महतो: कविता; निबन्ध

प्रश्न 30383. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736: उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता; निबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता; निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1736मे उमेश कुमार महतोक प्रविष्टि “कविता; निबन्ध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30384. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736: उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30385. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736: उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 30386. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736: उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई

उत्तर: घ. ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई” अछि।

प्रश्न 30387. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736: उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30388. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736: उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश कुमार महतो, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश कुमार महतो, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30389. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736: उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30390. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736: उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/निबन्धक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/निबन्धक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30391. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736: उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30392. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736मे उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/निबन्ध आ “ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3045, सूचकांक पंक्ति 1736मे उमेश कुमार महतोक “कविता; निबन्ध” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/निबन्ध आ “ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3046 : विदेह-सदेह 21 — तूलिका: कविता

प्रश्न 30393. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737: तूलिकाक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1737मे तूलिकाक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30394. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737: तूलिकाक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30395. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737: तूलिकाक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30396. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737: तूलिकाक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 30397. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737: तूलिकाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30398. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737: तूलिकाक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तूलिका, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तूलिका, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30399. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737: तूलिकाक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30400. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737: तूलिकाक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30401. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737: तूलिकाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30402. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737मे तूलिकाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3046, सूचकांक पंक्ति 1737मे तूलिकाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3047 : विदेह-सदेह 21 — अंकुर काशीनाथ झा: कविता

प्रश्न 30403. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738: अंकुर काशीनाथ झाक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1738मे अंकुर काशीनाथ झाक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30404. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738: अंकुर काशीनाथ झाक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30405. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738: अंकुर काशीनाथ झाक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30406. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738: अंकुर काशीनाथ झाक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ी

उत्तर: घ. नव पीढ़ी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।

प्रश्न 30407. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738: अंकुर काशीनाथ झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30408. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738: अंकुर काशीनाथ झाक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अंकुर काशीनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अंकुर काशीनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30409. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738: अंकुर काशीनाथ झाक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30410. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738: अंकुर काशीनाथ झाक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30411. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738: अंकुर काशीनाथ झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30412. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738मे अंकुर काशीनाथ झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3047, सूचकांक पंक्ति 1738मे अंकुर काशीनाथ झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3048 : विदेह-सदेह 21 — अजय सरवैया: कविता

प्रश्न 30413. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739: अजय सरवैयाक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1739मे अजय सरवैयाक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30414. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739: अजय सरवैयाक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30415. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739: अजय सरवैयाक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30416. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739: अजय सरवैयाक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव आवाज

उत्तर: घ. नव आवाज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव आवाज” अछि।

प्रश्न 30417. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739: अजय सरवैयाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव आवाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव आवाज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव आवाज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30418. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739: अजय सरवैयाक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अजय सरवैया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अजय सरवैया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30419. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739: अजय सरवैयाक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30420. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739: अजय सरवैयाक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30421. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739: अजय सरवैयाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30422. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739मे अजय सरवैयाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव आवाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3048, सूचकांक पंक्ति 1739मे अजय सरवैयाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव आवाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3049 : विदेह-सदेह 21 — अजीत कुमार झा: कविता

प्रश्न 30423. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740: अजीत कुमार झाक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1740मे अजीत कुमार झाक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30424. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740: अजीत कुमार झाक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30425. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740: अजीत कुमार झाक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30426. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740: अजीत कुमार झाक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 30427. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740: अजीत कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30428. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740: अजीत कुमार झाक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अजीत कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अजीत कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30429. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740: अजीत कुमार झाक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30430. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740: अजीत कुमार झाक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30431. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740: अजीत कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30432. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740मे अजीत कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3049, सूचकांक पंक्ति 1740मे अजीत कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3050 : विदेह-सदेह 21 — अनलकांत: कविता; लघुकथा

प्रश्न 30433. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741: अनलकांतक “कविता; लघुकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता; लघुकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता; लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1741मे अनलकांतक प्रविष्टि “कविता; लघुकथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30434. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741: अनलकांतक “कविता; लघुकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30435. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741: अनलकांतक “कविता; लघुकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30436. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741: अनलकांतक “कविता; लघुकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

उत्तर: घ. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” अछि।

प्रश्न 30437. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741: अनलकांतक “कविता; लघुकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30438. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741: अनलकांतक “कविता; लघुकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनलकांत, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनलकांत, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30439. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741: अनलकांतक “कविता; लघुकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30440. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741: अनलकांतक “कविता; लघुकथा”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/लघुकथाक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/लघुकथाक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30441. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741: अनलकांतक “कविता; लघुकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30442. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741मे अनलकांतक “कविता; लघुकथा” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/लघुकथा आ “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3050, सूचकांक पंक्ति 1741मे अनलकांतक “कविता; लघुकथा” प्रविष्टि पद्य/गद्य, कविता/लघुकथा आ “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3051 : विदेह-सदेह 21 — अबू सुथार: गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद

प्रश्न 30443. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742: अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1742मे अबू सुथारक प्रविष्टि “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30444. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742: अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30445. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742: अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद” अछि।

प्रश्न 30446. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742: अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीयूजेएआरएटीआइ-एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन

उत्तर: घ. जीयूजेएआरएटीआइ-एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीयूजेएआरएटीआइ-एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन” अछि।

प्रश्न 30447. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742: अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीयूजेएआरएटीआइ-एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीयूजेएआरएटीआइ-एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीयूजेएआरएटीआइ-एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30448. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742: अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अबू सुथार, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अबू सुथार, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30449. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742: अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30450. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742: अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवादक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवादक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30451. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742: अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30452. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742मे अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद आ “जीयूजेएआरएटीआइ-एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3051, सूचकांक पंक्ति 1742मे अबू सुथारक “गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद आ “जीयूजेएआरएटीआइ-एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3052 : विदेह-सदेह 21 — अमरेश यादव: कविता

प्रश्न 30453. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743: अमरेश यादवक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1743मे अमरेश यादवक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30454. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743: अमरेश यादवक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30455. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743: अमरेश यादवक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30456. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743: अमरेश यादवक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई

उत्तर: घ. ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” अछि।

प्रश्न 30457. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743: अमरेश यादवक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30458. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743: अमरेश यादवक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरेश यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरेश यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30459. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743: अमरेश यादवक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30460. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743: अमरेश यादवक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30461. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743: अमरेश यादवक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30462. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743मे अमरेश यादवक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3052, सूचकांक पंक्ति 1743मे अमरेश यादवक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3053 : विदेह-सदेह 21 — अमित कुमार झा: कविता

प्रश्न 30463. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744: अमित कुमार झाक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1744मे अमित कुमार झाक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30464. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744: अमित कुमार झाक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30465. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744: अमित कुमार झाक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30466. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744: अमित कुमार झाक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ी

उत्तर: घ. नव पीढ़ी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।

प्रश्न 30467. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744: अमित कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30468. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744: अमित कुमार झाक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30469. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744: अमित कुमार झाक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30470. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744: अमित कुमार झाक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30471. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744: अमित कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30472. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744मे अमित कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3053, सूचकांक पंक्ति 1744मे अमित कुमार झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3054 : विदेह-सदेह 21 — अयोध्यानाथ चौधरी: कविता

प्रश्न 30473. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745: अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1745मे अयोध्यानाथ चौधरीक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30474. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745: अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30475. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745: अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30476. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745: अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अस्तित्ववादी

उत्तर: घ. अस्तित्ववादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अस्तित्ववादी” अछि।

प्रश्न 30477. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745: अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अस्तित्ववादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्ववादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अस्तित्ववादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30478. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745: अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अयोध्यानाथ चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अयोध्यानाथ चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30479. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745: अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30480. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745: अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30481. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745: अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30482. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745मे अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अस्तित्ववादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3054, सूचकांक पंक्ति 1745मे अयोध्यानाथ चौधरीक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अस्तित्ववादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3055 : विदेह-सदेह 21 — अशोक दास: 'तानपूरा' (कथा)

प्रश्न 30483. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746: अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'तानपूरा' (कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'तानपूरा' (कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1746मे अशोक दासक प्रविष्टि “'तानपूरा' (कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30484. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746: अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30485. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746: अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 30486. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746: अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमयूएसआइसीएएल एमईटीएपीएचओआर

उत्तर: घ. एमयूएसआइसीएएल एमईटीएपीएचओआर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमयूएसआइसीएएल एमईटीएपीएचओआर” अछि।

प्रश्न 30487. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746: अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमयूएसआइसीएएल एमईटीएपीएचओआर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमयूएसआइसीएएल एमईटीएपीएचओआर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमयूएसआइसीएएल एमईटीएपीएचओआर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30488. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746: अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दास, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दास, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30489. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746: अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30490. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746: अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30491. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746: अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30492. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746मे अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “एमयूएसआइसीएएल एमईटीएपीएचओआर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3055, सूचकांक पंक्ति 1746मे अशोक दासक “'तानपूरा' (कथा)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “एमयूएसआइसीएएल एमईटीएपीएचओआर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3056 : विदेह-सदेह 21 — एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद): 'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद

प्रश्न 30493. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747: एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1747मे एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क प्रविष्टि “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30494. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747: एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30495. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747: एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद” अछि।

प्रश्न 30496. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747: एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. टीईएलयूजीयू→ईएनजीएलआइएसएच→एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन सीएचएआइएन

उत्तर: घ. टीईएलयूजीयू→ईएनजीएलआइएसएच→एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन सीएचएआइएन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “टीईएलयूजीयू→ईएनजीएलआइएसएच→एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन सीएचएआइएन” अछि।

प्रश्न 30497. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747: एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. टीईएलयूजीयू→ईएनजीएलआइएसएच→एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन सीएचएआइएन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टीईएलयूजीयू→ईएनजीएलआइएसएच→एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन सीएचएआइएन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “टीईएलयूजीयू→ईएनजीएलआइएसएच→एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन सीएचएआइएन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30498. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747: एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30499. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747: एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30500. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747: एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद”केँ विदेह-सदेह 21क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30501. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747: एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30502. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747मे एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद आ “टीईएलयूजीयू→ईएनजीएलआइएसएच→एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन सीएचएआइएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3056, सूचकांक पंक्ति 1747मे एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)क “'ई सेहो अछि वास' — तेलुगुसँ अंग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद आ “टीईएलयूजीयू→ईएनजीएलआइएसएच→एमएआइटीएचआइएलआइ टीआरएएनएसएलएटीआइओएन सीएचएआइएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3057 : विदेह-सदेह 21 — ओम प्रकाश झा: कविता

प्रश्न 30503. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748: ओम प्रकाश झाक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1748मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30504. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748: ओम प्रकाश झाक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30505. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748: ओम प्रकाश झाक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 30506. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748: ओम प्रकाश झाक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भावात्मक

उत्तर: घ. भावात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भावात्मक” अछि।

प्रश्न 30507. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748: ओम प्रकाश झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भावात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भावात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30508. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748: ओम प्रकाश झाक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30509. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748: ओम प्रकाश झाक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30510. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748: ओम प्रकाश झाक “कविता”केँ विदेह-सदेह 21क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30511. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748: ओम प्रकाश झाक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 21क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30512. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748मे ओम प्रकाश झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3057, सूचकांक पंक्ति 1748मे ओम प्रकाश झाक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 21क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3058 : विदेह-सदेह 22 — आशीष अनिचन्हार: 'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)

प्रश्न 30513. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749: आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1749मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30514. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749: आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30515. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749: आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 30516. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749: आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरविन्द ठाकुरजीक 'सबद मितारथ धाप्या' कविता संग्रह पर विस्तृत आलोचना। भाषा, शिल्प, आ मितार्थक अवधारणाक सूक्ष्म विश्लेषण।

उत्तर: घ. अरविन्द ठाकुरजीक 'सबद मितारथ धाप्या' कविता संग्रह पर विस्तृत आलोचना। भाषा, शिल्प, आ मितार्थक अवधारणाक सूक्ष्म विश्लेषण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरजीक 'सबद मितारथ धाप्या' कविता संग्रह पर विस्तृत आलोचना। भाषा, शिल्प, आ मितार्थक अवधारणाक सूक्ष्म विश्लेषण।” अछि।

प्रश्न 30517. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749: आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरविन्द ठाकुरजीक 'सबद मितारथ धाप्या' कविता संग्रह पर विस्तृत आलोचना। भाषा, शिल्प, आ मितार्थक अवधारणाक सूक्ष्म विश्लेषण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरविन्द ठाकुरजीक 'सबद मितारथ धाप्या' कविता संग्रह पर विस्तृत आलोचना। भाषा, शिल्प, आ मितार्थक अवधारणाक सूक्ष्म विश्लेषण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरजीक 'सबद मितारथ धाप्या' कविता संग्रह पर विस्तृत आलोचना। भाषा, शिल्प, आ मितार्थक अवधारणाक सूक्ष्म विश्लेषण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30518. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749: आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30519. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749: आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30520. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749: आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30521. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749: आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30522. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749मे आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “अरविन्द ठाकुरजीक 'सबद मितारथ धाप्या' कविता संग्रह पर विस्तृत आलोचना। भाषा, शिल्प, आ मितार्थक अवधारणाक सूक्ष्म विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3058, सूचकांक पंक्ति 1749मे आशीष अनिचन्हारक “'लाल लंगोटी करे पहचान करेत कविता' (आलोचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “अरविन्द ठाकुरजीक 'सबद मितारथ धाप्या' कविता संग्रह पर विस्तृत आलोचना। भाषा, शिल्प, आ मितार्थक अवधारणाक सूक्ष्म विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3059 : विदेह-सदेह 22 — आशीष अनिचन्हार: किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)

प्रश्न 30523. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750: आशीष अनिचन्हारक “किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1750मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30524. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750: आशीष अनिचन्हारक “किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30525. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750: आशीष अनिचन्हारक “किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 30526. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750: आशीष अनिचन्हारक “किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विभिन्न मात्राक्रममे रचित बहुसंख्यक गजल। समसामयिक विषय, सामाजिक विसंगति, आ व्यक्तिगत अनुभूतिक मार्मिक अभिव्यक्ति।

उत्तर: घ. विभिन्न मात्राक्रममे रचित बहुसंख्यक गजल। समसामयिक विषय, सामाजिक विसंगति, आ व्यक्तिगत अनुभूतिक मार्मिक अभिव्यक्ति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विभिन्न मात्राक्रममे रचित बहुसंख्यक गजल। समसामयिक विषय, सामाजिक विसंगति, आ व्यक्तिगत अनुभूतिक मार्मिक अभिव्यक्ति।” अछि।

प्रश्न 30527. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750: आशीष अनिचन्हारक “किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विभिन्न मात्राक्रममे रचित बहुसंख्यक गजल। समसामयिक विषय, सामाजिक विसंगति, आ व्यक्तिगत अनुभूतिक मार्मिक अभिव्यक्ति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विभिन्न मात्राक्रममे रचित बहुसंख्यक गजल। समसामयिक विषय, सामाजिक विसंगति, आ व्यक्तिगत अनुभूतिक मार्मिक अभिव्यक्ति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विभिन्न मात्राक्रममे रचित बहुसंख्यक गजल। समसामयिक विषय, सामाजिक विसंगति, आ व्यक्तिगत अनुभूतिक मार्मिक अभिव्यक्ति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30528. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750: आशीष अनिचन्हारक “किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30529. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750: आशीष अनिचन्हारक “किठ्ठ गजल (गजल संग्रह)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30530. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750: आशीष अनिचन्हारक “किठु गजल (गजल संग्रह)”केँ विदेह-सदेह 22क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30531. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750: आशीष अनिचन्हारक “किठु गजल (गजल संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30532. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750मे आशीष अनिचन्हारक “किठु गजल (गजल संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विभिन्न मात्राक्रममे रचित बहुसंख्यक गजल। समसामयिक विषय, सामाजिक विसंगति, आ व्यक्तिगत अनुभूतिक मार्मिक अभिव्यक्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3059, सूचकांक पंक्ति 1750मे आशीष अनिचन्हारक “किठु गजल (गजल संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विभिन्न मात्राक्रममे रचित बहुसंख्यक गजल। समसामयिक विषय, सामाजिक विसंगति, आ व्यक्तिगत अनुभूतिक मार्मिक अभिव्यक्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3060 : विदेह-सदेह 22 — दुगानन्द मण्डल: 'सोन्हगर' (समीक्षा)

प्रश्न 30533. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751: दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सोन्हगर' (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सोन्हगर' (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1751मे दुगानन्द मण्डलक प्रविष्टि “'सोन्हगर' (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30534. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751: दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30535. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751: दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 30536. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751: दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' काव्य संग्रहक समीक्षा। ग्रामीण जीवन, शिक्षा, आ समाजिक चित्रणक सराहना।

उत्तर: घ. डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' काव्य संग्रहक समीक्षा। ग्रामीण जीवन, शिक्षा, आ समाजिक चित्रणक सराहना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' काव्य संग्रहक समीक्षा। ग्रामीण जीवन, शिक्षा, आ समाजिक चित्रणक सराहना।” अछि।

प्रश्न 30537. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751: दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' काव्य संग्रहक समीक्षा। ग्रामीण जीवन, शिक्षा, आ समाजिक चित्रणक सराहना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' काव्य संग्रहक समीक्षा। ग्रामीण जीवन, शिक्षा, आ समाजिक चित्रणक सराहना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' काव्य संग्रहक समीक्षा। ग्रामीण जीवन, शिक्षा, आ समाजिक चित्रणक सराहना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30538. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751: दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30539. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751: दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30540. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751: दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30541. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751: दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30542. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751मे दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' काव्य संग्रहक समीक्षा। ग्रामीण जीवन, शिक्षा, आ समाजिक चित्रणक सराहना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3060, सूचकांक पंक्ति 1751मे दुगानन्द मण्डलक “'सोन्हगर' (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' काव्य संग्रहक समीक्षा। ग्रामीण जीवन, शिक्षा, आ समाजिक चित्रणक सराहना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3061 : विदेह-सदेह 22 — मुन्राजी: 'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)

प्रश्न 30543. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752: मुन्राजीक “'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1752मे मुन्राजीक प्रविष्टि “'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30544. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752: मुन्राजीक “'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30545. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752: मुन्राजीक “'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 30546. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752: मुत्राजीक "'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीहिन कथा विधाक सैद्धान्तिक आ मानकीकरण सम्बन्धी गम्भीर निबन्ध। विधाक उत्पत्ति, परिभाषा, आ हिन्दी लघुकथासँ तुलनात्मक विश्लेषण।

उत्तर: घ. बीहिन कथा विधाक सैद्धान्तिक आ मानकीकरण सम्बन्धी गम्भीर निबन्ध। विधाक उत्पत्ति, परिभाषा, आ हिन्दी लघुकथासँ तुलनात्मक विश्लेषण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "बीहिन कथा विधाक सैद्धान्तिक आ मानकीकरण सम्बन्धी गम्भीर निबन्ध। विधाक उत्पत्ति, परिभाषा, आ हिन्दी लघुकथासँ तुलनात्मक विश्लेषण।" अछि।

प्रश्न 30547. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752: मुत्राजीक "'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीहिन कथा विधाक सैद्धान्तिक आ मानकीकरण सम्बन्धी गम्भीर निबन्ध। विधाक उत्पत्ति, परिभाषा, आ हिन्दी लघुकथासँ तुलनात्मक विश्लेषण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा विधाक सैद्धान्तिक आ मानकीकरण सम्बन्धी गम्भीर निबन्ध। विधाक उत्पत्ति, परिभाषा, आ हिन्दी लघुकथासँ तुलनात्मक विश्लेषण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "बीहिन कथा विधाक सैद्धान्तिक आ मानकीकरण सम्बन्धी गम्भीर निबन्ध। विधाक उत्पत्ति, परिभाषा, आ हिन्दी लघुकथासँ तुलनात्मक विश्लेषण।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30548. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752: मुत्राजीक "'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुत्राजी, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुत्राजी, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30549. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752: मुत्राजीक "'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30550. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752: मुत्राजीक "'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)"केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30551. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752: मुत्राजीक “'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30552. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752मे मुत्राजीक “'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बीहिन कथा विधाक सैद्धान्तिक आ मानकीकरण सम्बन्धी गम्भीर निबन्ध। विधाक उत्पत्ति, परिभाषा, आ हिन्दी लघुकथासँ तुलनात्मक विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3061, सूचकांक पंक्ति 1752मे मुत्राजीक “'बीहिन कथा (मानकीकरण औ तुलनात्मक पक्ष)' (निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बीहिन कथा विधाक सैद्धान्तिक आ मानकीकरण सम्बन्धी गम्भीर निबन्ध। विधाक उत्पत्ति, परिभाषा, आ हिन्दी लघुकथासँ तुलनात्मक विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3062 : विदेह-सदेह 22 — मुत्राजी: गजल

प्रश्न 30553. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753: मुत्राजीक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1753मे मुत्राजीक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30554. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753: मुत्राजीक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30555. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753: मुत्राजीक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 30556. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753: मुत्राजीक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी आ जीवनक संघर्ष पर केन्द्रित रचना।

उत्तर: घ. गरीबी आ जीवनक संघर्ष पर केन्द्रित रचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी आ जीवनक संघर्ष पर केन्द्रित रचना।” अछि।

प्रश्न 30557. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753: मुत्राजीक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी आ जीवनक संघर्ष पर केन्द्रित रचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी आ जीवनक संघर्ष पर केन्द्रित रचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी आ जीवनक संघर्ष पर केन्द्रित रचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30558. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753: मुत्राजीक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुत्राजी, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुत्राजी, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30559. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753: मुत्राजीक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30560. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753: मुत्राजीक “गजल”केँ विदेह-सदेह 22क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30561. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753: मुत्राजीक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30562. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753मे मुत्राजीक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “गरीबी आ जीवनक संघर्ष पर केन्द्रित रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3062, सूचकांक पंक्ति 1753मे मुत्राजीक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “गरीबी आ जीवनक संघर्ष पर केन्द्रित रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3063 : विदेह-सदेह 22 — प्रणव झा: 'गिठ्ठ' (लघुकथा)

प्रश्न 30563. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754: प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'गिठ्ठ' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गिठ्ठ' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1754मे प्रणव झाक प्रविष्टि “'गिठ्ठ' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30564. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754: प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30565. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754: प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30566. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754: प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बालमनोविज्ञान आ सामाजिक पाखण्डक मर्मस्पर्शी कथा। पशुहड्डी व्यवसाय आ बालकक दृष्टिसँ गिद्ध पक्षीक प्रतीकात्मक प्रयोग।

उत्तर: घ. बालमनोविज्ञान आ सामाजिक पाखण्डक मर्मस्पर्शी कथा। पशुहड्डी व्यवसाय आ बालकक दृष्टिसँ गिद्ध पक्षीक प्रतीकात्मक प्रयोग।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बालमनोविज्ञान आ सामाजिक पाखण्डक मर्मस्पर्शी कथा। पशुहड्डी व्यवसाय आ बालकक दृष्टिसँ गिद्ध पक्षीक प्रतीकात्मक प्रयोग।” अछि।

प्रश्न 30567. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754: प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बालमनोविज्ञान आ सामाजिक पाखण्डक मर्मस्पर्शी कथा। पशुहड्डी व्यवसाय आ बालकक दृष्टिसँ गिद्ध पक्षीक प्रतीकात्मक प्रयोग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बालमनोविज्ञान आ सामाजिक पाखण्डक मर्मस्पर्शी कथा। पशुहड्डी व्यवसाय आ बालकक दृष्टिसँ गिद्ध पक्षीक प्रतीकात्मक प्रयोग।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बालमनोविज्ञान आ सामाजिक पाखण्डक मर्मस्पर्शी कथा। पशुहड्डी व्यवसाय आ बालकक दृष्टिसँ गिद्ध पक्षीक प्रतीकात्मक प्रयोग।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30568. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754: प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30569. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754: प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30570. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754: प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30571. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754: प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30572. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754मे प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बालमनोविज्ञान आ सामाजिक पाखण्डक मर्मस्पर्शी कथा। पशुहड्डी व्यवसाय आ बालकक दृष्टिसँ गिद्ध पक्षीक प्रतीकात्मक प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3063, सूचकांक पंक्ति 1754मे प्रणव झाक “'गिठ्ठ' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बालमनोविज्ञान आ सामाजिक पाखण्डक मर्मस्पर्शी कथा। पशुहड्डी व्यवसाय आ बालकक दृष्टिसँ गिद्ध पक्षीक प्रतीकात्मक प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3064 : विदेह-सदेह 22 — प्रणव झा: 'एन.पी.एस.' (लघुकथा)

प्रश्न 30573. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755: प्रणव झाक “'एन.पी.एस.' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'एन.पी.एस.' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'एन.पी.एस.' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1755मे प्रणव झाक प्रविष्टि “'एन.पी.एस.' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30574. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755: प्रणव झाक "'एन.पी.एस.' (लघुकथा)"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30575. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755: प्रणव झाक "'एन.पी.एस.' (लघुकथा)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "लघुकथा" अछि।

प्रश्न 30576. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755: प्रणव झाक "'एन.पी.एस.' (लघुकथा)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के माध्यम सँ वृद्धावस्थाक सुरक्षा आ अर्थिक जागरूकताक सन्देश दैत सामाजिक कथा।

उत्तर: घ. नव पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के माध्यम सँ वृद्धावस्थाक सुरक्षा आ अर्थिक जागरूकताक सन्देश दैत सामाजिक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "नव पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के माध्यम सँ वृद्धावस्थाक सुरक्षा आ अर्थिक जागरूकताक सन्देश दैत सामाजिक कथा।" अछि।

प्रश्न 30577. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755: प्रणव झाक "'एन.पी.एस.' (लघुकथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के माध्यम सँ वृद्धावस्थाक सुरक्षा आ अर्थिक जागरूकताक सन्देश दैत सामाजिक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के माध्यम सँ वृद्धावस्थाक सुरक्षा आ अर्थिक जागरूकताक सन्देश दैत सामाजिक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "नव पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के माध्यम सँ वृद्धावस्थाक सुरक्षा आ अर्थिक जागरूकताक सन्देश दैत सामाजिक कथा।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30578. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755: प्रणव झाक "'एन.पी.एस.' (लघुकथा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30579. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755: प्रणव झाक "'एन.पी.एस.' (लघुकथा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30580. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755: प्रणव झाक “'एन.पी.एस.' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30581. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755: प्रणव झाक “'एन.पी.एस.' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30582. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755मे प्रणव झाक “'एन.पी.एस.' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नव पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के माध्यम सँ वृद्धावस्थाक सुरक्षा आ अर्थिक जागरूकताक सन्देश दैत सामाजिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3064, सूचकांक पंक्ति 1755मे प्रणव झाक “'एन.पी.एस.' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नव पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के माध्यम सँ वृद्धावस्थाक सुरक्षा आ अर्थिक जागरूकताक सन्देश दैत सामाजिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3065 : विदेह-सदेह 22 — डॉ. बचेशर झा: संस्मरण

प्रश्न 30583. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756: डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संस्मरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1756मे डॉ. बचेशर झाक प्रविष्टि “संस्मरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30584. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756: डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30585. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756: डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 30586. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756: डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखकक आत्मकथात्मक संस्मरण। वैयक्तिक जीवन संघर्ष, शिक्षक जीवन, आ साहित्यिक यात्राक सरल वर्णन।

उत्तर: घ. लेखकक आत्मकथात्मक संस्मरण। वैयक्तिक जीवन संघर्ष, शिक्षक जीवन, आ साहित्यिक यात्राक सरल वर्णन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखकक आत्मकथात्मक संस्मरण। वैयक्तिक जीवन संघर्ष, शिक्षक जीवन, आ साहित्यिक यात्राक सरल वर्णन।” अछि।

प्रश्न 30587. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756: डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लेखकक आत्मकथात्मक संस्मरण। वैयक्तिक जीवन संघर्ष, शिक्षक जीवन, आ साहित्यिक यात्राक सरल वर्णन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेखकक आत्मकथात्मक संस्मरण। वैयक्तिक जीवन संघर्ष, शिक्षक जीवन, आ साहित्यिक यात्राक सरल वर्णन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लेखकक आत्मकथात्मक संस्मरण। वैयक्तिक जीवन संघर्ष, शिक्षक जीवन, आ साहित्यिक यात्राक सरल वर्णन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30588. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756: डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. बचेशर झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. बचेशर झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30589. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756: डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30590. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756: डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30591. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756: डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30592. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756मे डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “लेखकक आत्मकथात्मक संस्मरण। वैयक्तिक जीवन संघर्ष, शिक्षक जीवन, आ साहित्यिक यात्राक सरल वर्णन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3065, सूचकांक पंक्ति 1756मे डॉ. बचेशर झाक “संस्मरण” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “लेखकक आत्मकथात्मक संस्मरण। वैयक्तिक जीवन संघर्ष, शिक्षक जीवन, आ साहित्यिक यात्राक सरल वर्णन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3066 : विदेह-सदेह 22 — पूनम झा: 'कृसी' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30593. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757: पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कृसी' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कृसी' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1757मे पूनम झाक प्रविष्टि “'कृसी' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30594. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757: पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30595. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757: पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30596. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757: पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक सम्बन्ध आ स्त्री-स्वाभिमानक मार्मिक अभिव्यक्ति देल गेल कथा।

उत्तर: घ. पारिवारिक सम्बन्ध आ स्त्री-स्वाभिमानक मार्मिक अभिव्यक्ति देल गेल कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध आ स्त्री-स्वाभिमानक मार्मिक अभिव्यक्ति देल गेल कथा।” अछि।

प्रश्न 30597. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757: पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक सम्बन्ध आ स्त्री-स्वाभिमानक मार्मिक अभिव्यक्ति देल गेल कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक सम्बन्ध आ स्त्री-स्वाभिमानक मार्मिक अभिव्यक्ति देल गेल कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध आ स्त्री-स्वाभिमानक मार्मिक अभिव्यक्ति देल गेल कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30598. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757: पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30599. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757: पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30600. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757: पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30601. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757: पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30602. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757मे पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध आ स्त्री-स्वाभिमानक मार्मिक अभिव्यक्ति देल गेल कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3066, सूचकांक पंक्ति 1757मे पूनम झाक “'कृसी' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध आ स्त्री-स्वाभिमानक मार्मिक अभिव्यक्ति देल गेल कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3067 : विदेह-सदेह 22 — नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषक: 'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)

प्रश्न 30603. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758: नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1758मे नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक प्रविष्टि “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30604. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758: नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30605. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758: नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. धार्मिक/अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. धार्मिक/अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “धार्मिक/अनुवाद” अछि।

प्रश्न 30606. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758: नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गोस्वामी तुलसीदासकृत 'श्रीरामचरितमानस' के बालकाण्ड आ अरण्यकाण्डक मैथिली भाषामे विस्तृत सार वा अनुवाद।

उत्तर: घ. गोस्वामी तुलसीदासकृत 'श्रीरामचरितमानस' के बालकाण्ड आ अरण्यकाण्डक मैथिली भाषामे विस्तृत सार वा अनुवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गोस्वामी तुलसीदासकृत 'श्रीरामचरितमानस' के बालकाण्ड आ अरण्यकाण्डक मैथिली भाषामे विस्तृत सार वा अनुवाद।” अछि।

प्रश्न 30607. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758: नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गोस्वामी तुलसीदासकृत 'श्रीरामचरितमानस' के बालकाण्ड आ अरण्यकाण्डक मैथिली भाषामे विस्तृत सार वा अनुवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोस्वामी तुलसीदासकृत 'श्रीरामचरितमानस' के बालकाण्ड आ अरण्यकाण्डक मैथिली भाषामे विस्तृत सार वा अनुवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गोस्वामी तुलसीदासकृत 'श्रीरामचरितमानस' के बालकाण्ड आ अरण्यकाण्डक मैथिली भाषामे विस्तृत सार वा अनुवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30608. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758: नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषक, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा धार्मिक/अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषक, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा धार्मिक/अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30609. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758: नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30610. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758: नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)”केँ विदेह-सदेह 22क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ धार्मिक/अनुवादक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ धार्मिक/अनुवादक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30611. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758: नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30612. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758मे नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, धार्मिक/अनुवाद आ “गोस्वामी तुलसीदासकृत 'श्रीरामचरितमानस' के बालकाण्ड आ अरण्यकाण्डक मैथिली भाषामे विस्तृत सार वा अनुवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3067, सूचकांक पंक्ति 1758मे नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषकक “'श्रीरामचरितमानस' (बालकाण्ड आ अरुण्यकाण्डक मैथिली अनुवाद/सार)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, धार्मिक/अनुवाद आ “गोस्वामी तुलसीदासकृत 'श्रीरामचरितमानस' के बालकाण्ड आ अरण्यकाण्डक मैथिली भाषामे विस्तृत सार वा अनुवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3068 : विदेह-सदेह 22 — रबीन्द्र नारायण मिश्र: 'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)

प्रश्न 30613. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1759मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रविष्टि “'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30614. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30615. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 30616. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बिहार शराबबन्दी कानून २०१६क विस्तृत विवेचन। कानूनक प्रावधान, दुरुपयोग, सामाजिक प्रभाव, आ संशोधन सहित आलोचनात्मक विश्लेषण।

उत्तर: घ. बिहार शराबबन्दी कानून २०१६क विस्तृत विवेचन। कानूनक प्रावधान, दुरुपयोग, सामाजिक प्रभाव, आ संशोधन सहित आलोचनात्मक विश्लेषण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बिहार शराबबन्दी कानून २०१६क विस्तृत विवेचन। कानूनक प्रावधान, दुरुपयोग, सामाजिक प्रभाव, आ संशोधन सहित आलोचनात्मक विश्लेषण।” अछि।

प्रश्न 30617. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759: रबीन्द्र नारायण मिश्रक “'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बिहार शराबबन्दी कानून २०१६क विस्तृत विवेचन। कानूनक प्रावधान, दुरुपयोग, सामाजिक प्रभाव, आ संशोधन सहित आलोचनात्मक विश्लेषण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहार शराबबन्दी कानून २०१६क विस्तृत विवेचन। कानूनक प्रावधान, दुरुपयोग, सामाजिक प्रभाव, आ संशोधन सहित आलोचनात्मक विश्लेषण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बिहार शराबबन्दी कानून २०१६क विस्तृत विवेचन। कानूनक प्रावधान, दुरुपयोग, सामाजिक प्रभाव, आ संशोधन सहित आलोचनात्मक विश्लेषण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30618. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759: रबीन्द्र नारायण मिश्रक "'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लेख/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबीन्द्र नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लेख/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30619. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759: रबीन्द्र नारायण मिश्रक "'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30620. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759: रबीन्द्र नारायण मिश्रक "'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)"केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेख/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेख/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30621. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759: रबीन्द्र नारायण मिश्रक "'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30622. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक "'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)" प्रविष्टि गद्य, लेख/निबन्ध आ "बिहार शराबबन्दी कानून २०१६क विस्तृत विवेचन। कानूनक प्रावधान, दुरुपयोग, सामाजिक प्रभाव, आ संशोधन सहित आलोचनात्मक विश्लेषण।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3068, सूचकांक पंक्ति 1759मे रबीन्द्र नारायण मिश्रक "'बिहार शराबबंदी कानून' (लेख)" प्रविष्टि गद्य, लेख/निबन्ध आ "बिहार शराबबन्दी कानून २०१६क विस्तृत विवेचन। कानूनक प्रावधान, दुरुपयोग, सामाजिक प्रभाव, आ संशोधन सहित आलोचनात्मक विश्लेषण।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3069 : विदेह-सदेह 22 — उमेश मण्डल: जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला

प्रश्न 30623. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760: उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1760मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30624. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760: उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30625. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760: उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 30626. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760: उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा साहित्य, उपन्यास, आ जीवन-संघर्षक विस्तृत आलोचनात्मक आ जीवनीपरक निबन्ध श्रृंखला।

उत्तर: घ. श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा साहित्य, उपन्यास, आ जीवन-संघर्षक विस्तृत आलोचनात्मक आ जीवनीपरक निबन्ध श्रृंखला।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा साहित्य, उपन्यास, आ जीवन-संघर्षक विस्तृत आलोचनात्मक आ जीवनीपरक निबन्ध श्रृंखला।” अछि।

प्रश्न 30627. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760: उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा साहित्य, उपन्यास, आ जीवन-संघर्षक विस्तृत आलोचनात्मक आ जीवनीपरक निबन्ध श्रृंखला।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा साहित्य, उपन्यास, आ जीवन-संघर्षक विस्तृत आलोचनात्मक आ जीवनीपरक निबन्ध श्रृंखला।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा साहित्य, उपन्यास, आ जीवन-संघर्षक विस्तृत आलोचनात्मक आ जीवनीपरक निबन्ध श्रृंखला।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30628. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760: उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30629. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760: उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30630. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760: उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30631. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760: उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30632. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760मे उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा साहित्य, उपन्यास, आ जीवन-संघर्षक विस्तृत आलोचनात्मक आ जीवनीपरक निबन्ध श्रृंखला।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3069, सूचकांक पंक्ति 1760मे उमेश मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक अवदान पर निबन्ध श्रृंखला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा साहित्य, उपन्यास, आ जीवन-संघर्षक विस्तृत आलोचनात्मक आ जीवनीपरक निबन्ध श्रृंखला।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3070 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30633. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761: केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1761मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30634. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761: केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30635. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761: केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30636. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761: केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बालपनक एक स्मृतिपरक कथा।

उत्तर: घ. बालपनक एक स्मृतिपरक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बालपनक एक स्मृतिपरक कथा।” अछि।

प्रश्न 30637. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761: केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बालपनक एक स्मृतिपरक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बालपनक एक स्मृतिपरक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बालपनक एक स्मृतिपरक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30638. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761: केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30639. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761: केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30640. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761: केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30641. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761: केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30642. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761मे केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बालपनक एक स्मृतिपरक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3070, सूचकांक पंक्ति 1761मे केशव भारद्वाजक “'ओ बच्चा' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बालपनक एक स्मृतिपरक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3071 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)

प्रश्न 30643. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762: केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1762मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30644. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762: केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30645. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762: केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30646. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762: केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक उत्तरदायित्व आ नैतिक प्रतिबद्धताक कथा।

उत्तर: घ. पारिवारिक उत्तरदायित्व आ नैतिक प्रतिबद्धताक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक उत्तरदायित्व आ नैतिक प्रतिबद्धताक कथा।” अछि।

प्रश्न 30647. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762: केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक उत्तरदायित्व आ नैतिक प्रतिबद्धताक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक उत्तरदायित्व आ नैतिक प्रतिबद्धताक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक उत्तरदायित्व आ नैतिक प्रतिबद्धताक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30648. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762: केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30649. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762: केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30650. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762: केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)”कें विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30651. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762: केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30652. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762मे केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पारिवारिक उत्तरदायित्व आ नैतिक प्रतिबद्धताक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3071, सूचकांक पंक्ति 1762मे केशव भारद्वाजक “'कमिटमेंट' (बीहिनकथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पारिवारिक उत्तरदायित्व आ नैतिक प्रतिबद्धताक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3072 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'मनुःगंध' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30653. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763: केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मनुःगंध' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मनुःगंध' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1763मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30654. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763: केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30655. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763: केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30656. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763: केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सेवानिवृत्त एक पूर्व अधिकारीक एकाकीपन आ सामाजिक उपेक्षाक व्यथा।

उत्तर: घ. सेवानिवृत्त एक पूर्व अधिकारीक एकाकीपन आ सामाजिक उपेक्षाक व्यथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सेवानिवृत्त एक पूर्व अधिकारीक एकाकीपन आ सामाजिक उपेक्षाक व्यथा।” अछि।

प्रश्न 30657. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763: केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सेवानिवृत्त एक पूर्व अधिकारीक एकाकीपन आ सामाजिक उपेक्षाक व्यथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सेवानिवृत्त एक पूर्व अधिकारीक एकाकीपन आ सामाजिक उपेक्षाक व्यथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सेवानिवृत्त एक पूर्व अधिकारीक एकाकीपन आ सामाजिक उपेक्षाक व्यथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30658. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763: केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30659. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763: केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30660. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763: केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30661. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763: केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30662. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763मे केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सेवानिवृत्त एक पूर्व अधिकारीक एकाकीपन आ सामाजिक उपेक्षाक व्यथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3072, सूचकांक पंक्ति 1763मे केशव भारद्वाजक “'मनुःगंध' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सेवानिवृत्त एक पूर्व अधिकारीक एकाकीपन आ सामाजिक उपेक्षाक व्यथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3073 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'सोच' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30663. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764: केशव भारद्वाजक “'सोच' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सोच' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सोच' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1764मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'सोच' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30664. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764: केशव भारद्वाजक “'सोच' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30665. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764: केशव भारद्वाजक “'सोच' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30666. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764: केशव भारद्वाजक “'सोच' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक कार्यकर्ताक एक नीक सोचक सराहना।

उत्तर: घ. सामाजिक कार्यकर्ताक एक नीक सोचक सराहना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक कार्यकर्ताक एक नीक सोचक सराहना।” अछि।

प्रश्न 30667. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764: केशव भारद्वाजक “'सोच' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक कार्यकर्ताक एक नीक सोचक सराहना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक कार्यकर्ताक एक नीक सोचक सराहना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक कार्यकर्ताक एक नीक सोचक सराहना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30668. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764: केशव भारद्वाजक "'सोच' (बीहिन कथा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30669. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764: केशव भारद्वाजक "'सोच' (बीहिन कथा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30670. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764: केशव भारद्वाजक "'सोच' (बीहिन कथा)"केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30671. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764: केशव भारद्वाजक "'सोच' (बीहिन कथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30672. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764मे केशव भारद्वाजक "'सोच' (बीहिन कथा)" प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ "सामाजिक कार्यकर्ताक एक नीक सोचक सराहना।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3073, सूचकांक पंक्ति 1764मे केशव भारद्वाजक "'सोच' (बीहिन कथा)" प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ "सामाजिक कार्यकर्ताक एक नीक सोचक सराहना।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3074 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30673. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765: केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1765मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30674. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765: केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30675. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765: केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30676. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765: केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेमेल विवाहक कारण उपजल पारिवारिक विघटनक मार्मिक कथा।

उत्तर: घ. बेमेल विवाहक कारण उपजल पारिवारिक विघटनक मार्मिक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेमेल विवाहक कारण उपजल पारिवारिक विघटनक मार्मिक कथा।” अछि।

प्रश्न 30677. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765: केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेमेल विवाहक कारण उपजल पारिवारिक विघटनक मार्मिक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेमेल विवाहक कारण उपजल पारिवारिक विघटनक मार्मिक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेमेल विवाहक कारण उपजल पारिवारिक विघटनक मार्मिक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30678. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765: केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30679. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765: केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30680. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765: केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30681. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765: केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30682. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765मे केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेमेल विवाहक कारण उपजल पारिवारिक विघटनक मार्मिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3074, सूचकांक पंक्ति 1765मे केशव भारद्वाजक “'गलत निर्णय' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेमेल विवाहक कारण उपजल पारिवारिक विघटनक मार्मिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3075 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'खाली हाथ' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30683. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766: केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'खाली हाथ' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'खाली हाथ' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1766मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30684. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766: केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30685. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766: केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30686. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766: केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सन्तानक भविष्य लेल सर्वस्व न्योछावर करयबला पिताक अन्ततः खाली हाथ रहबाक विडम्बना।

उत्तर: घ. सन्तानक भविष्य लेल सर्वस्व न्योछावर करयबला पिताक अन्ततः खाली हाथ रहबाक विडम्बना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सन्तानक भविष्य लेल सर्वस्व न्योछावर करयबला पिताक अन्ततः खाली हाथ रहबाक विडम्बना।” अछि।

प्रश्न 30687. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766: केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सन्तानक भविष्य लेल सर्वस्व न्योछावर करयबला पिताक अन्ततः खाली हाथ रहबाक विडम्बना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सन्तानक भविष्य लेल सर्वस्व न्योछावर करयबला पिताक अन्ततः खाली हाथ रहबाक विडम्बना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सन्तानक भविष्य लेल सर्वस्व न्योछावर करयबला पिताक अन्ततः खाली हाथ रहबाक विडम्बना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30688. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766: केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30689. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766: केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30690. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766: केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30691. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766: केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30692. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766मे केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सन्तानक भविष्य लेल सर्वस्व न्योछावर करयबला पिताक अन्ततः खाली हाथ रहबाक विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3075, सूचकांक पंक्ति 1766मे केशव भारद्वाजक “'खाली हाथ' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सन्तानक भविष्य लेल सर्वस्व न्योछावर करयबला पिताक अन्ततः खाली हाथ रहबाक विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3076 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'नबका धनिक' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30693. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767: केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'नबका धनिक' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'नबका धनिक' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1767मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30694. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767: केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30695. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767: केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30696. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767: केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नवधनाढ्यताक कारण पारिवारिक सम्बन्धमे आयल परिवर्तन आ दूरीक व्यंग्य।

उत्तर: घ. नवधनाढ्यताक कारण पारिवारिक सम्बन्धमे आयल परिवर्तन आ दूरीक व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नवधनाढ्यताक कारण पारिवारिक सम्बन्धमे आयल परिवर्तन आ दूरीक व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 30697. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767: केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नवधनाढ्यताक कारण पारिवारिक सम्बन्धमे आयल परिवर्तन आ दूरीक व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवधनाढ्यताक कारण पारिवारिक सम्बन्धमे आयल परिवर्तन आ दूरीक व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नवधनाढ्यताक कारण पारिवारिक सम्बन्धमे आयल परिवर्तन आ दूरीक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30698. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767: केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30699. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767: केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30700. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767: केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30701. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767: केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30702. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767मे केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नवधनाढ्यताक कारण पारिवारिक सम्बन्धमे आयल परिवर्तन आ दूरीक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3076, सूचकांक पंक्ति 1767मे केशव भारद्वाजक “'नबका धनिक' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नवधनाढ्यताक कारण पारिवारिक सम्बन्धमे आयल परिवर्तन आ दूरीक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3077 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'किस्मत' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30703. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768: केशव भारद्वाजक “'किस्मत' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'किस्मत' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'किस्मत' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1768मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'किस्मत' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30704. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768: केशव भारद्वाजक “'किस्मत' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30705. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768: केशव भारद्वाजक “'किस्मत' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30706. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768: केशव भारद्वाजक "'किस्मत' (बीहिन कथा)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवनक उतार-चढ़ाव आ नियतिक अकाट्यताक चित्रण करयबला कथा।

उत्तर: घ. जीवनक उतार-चढ़ाव आ नियतिक अकाट्यताक चित्रण करयबला कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "जीवनक उतार-चढ़ाव आ नियतिक अकाट्यताक चित्रण करयबला कथा।" अछि।

प्रश्न 30707. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768: केशव भारद्वाजक "'किस्मत' (बीहिन कथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवनक उतार-चढ़ाव आ नियतिक अकाट्यताक चित्रण करयबला कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवनक उतार-चढ़ाव आ नियतिक अकाट्यताक चित्रण करयबला कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "जीवनक उतार-चढ़ाव आ नियतिक अकाट्यताक चित्रण करयबला कथा।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30708. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768: केशव भारद्वाजक "'किस्मत' (बीहिन कथा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30709. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768: केशव भारद्वाजक "'किस्मत' (बीहिन कथा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30710. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768: केशव भारद्वाजक "'किस्मत' (बीहिन कथा)"केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30711. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768: केशव भारद्वाजक "'किस्मत' (बीहिन कथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30712. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768मे केशव भारद्वाजक “'किस्मत' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “जीवनक उतार-चढ़ाव आ नियतिक अकाट्यताक चित्रण करयबला कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3077, सूचकांक पंक्ति 1768मे केशव भारद्वाजक “'किस्मत' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “जीवनक उतार-चढ़ाव आ नियतिक अकाट्यताक चित्रण करयबला कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3078 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30713. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769: केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1769मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30714. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769: केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30715. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769: केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30716. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769: केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम विवाहक एक सकारात्मक पहलु आ सुलझल पारिवारिक दृष्टिकोणक कथा।

उत्तर: घ. प्रेम विवाहक एक सकारात्मक पहलु आ सुलझल पारिवारिक दृष्टिकोणक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम विवाहक एक सकारात्मक पहलु आ सुलझल पारिवारिक दृष्टिकोणक कथा।” अछि।

प्रश्न 30717. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769: केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम विवाहक एक सकारात्मक पहलु आ सुलझल पारिवारिक दृष्टिकोणक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम विवाहक एक सकारात्मक पहलु आ सुलझल पारिवारिक दृष्टिकोणक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम विवाहक एक सकारात्मक पहलु आ सुलझल पारिवारिक दृष्टिकोणक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30718. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769: केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30719. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769: केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30720. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769: केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30721. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769: केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30722. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769मे केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रेम विवाहक एक सकारात्मक पहलु आ सुलझल पारिवारिक दृष्टिकोणक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3078, सूचकांक पंक्ति 1769मे केशव भारद्वाजक “'प्रेम विवाह- नब प्रयोग' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रेम विवाहक एक सकारात्मक पहलु आ सुलझल पारिवारिक दृष्टिकोणक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3079 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30723. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770: केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1770मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30724. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770: केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30725. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770: केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30726. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770: केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक वृद्धाक अपन बेटाक लेल ममता आ न्याय व्यवस्थापर विश्वासक मार्मिक कथा।

उत्तर: घ. एक वृद्धाक अपन बेटाक लेल ममता आ न्याय व्यवस्थापर विश्वासक मार्मिक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक वृद्धाक अपन बेटाक लेल ममता आ न्याय व्यवस्थापर विश्वासक मार्मिक कथा।” अछि।

प्रश्न 30727. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770: केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक वृद्धाक अपन बेटाक लेल ममता आ न्याय व्यवस्थापर विश्वासक मार्मिक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक वृद्धाक अपन बेटाक लेल ममता आ न्याय व्यवस्थापर विश्वासक मार्मिक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक वृद्धाक अपन बेटाक लेल ममता आ न्याय व्यवस्थापर विश्वासक मार्मिक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30728. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770: केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30729. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770: केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30730. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770: केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30731. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770: केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30732. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770मे केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “एक वृद्धाक अपन बेटाक लेल ममता आ न्याय व्यवस्थापर विश्वासक मार्मिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3079, सूचकांक पंक्ति 1770मे केशव भारद्वाजक “'दही वाली बुढी' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “एक वृद्धाक अपन बेटाक लेल ममता आ न्याय व्यवस्थापर विश्वासक मार्मिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3080 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30733. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771: केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1771मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30734. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771: केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30735. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771: केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30736. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771: केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एकटा समृद्ध परिवार केर पतन आ हवेलीक उजड़बाक जीवन्त आलख्य।

उत्तर: घ. एकटा समृद्ध परिवार केर पतन आ हवेलीक उजड़बाक जीवन्त आलख्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एकटा समृद्ध परिवार केर पतन आ हवेलीक उजड़बाक जीवन्त आलख्य।” अछि।

प्रश्न 30737. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771: केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एकटा समृद्ध परिवार केर पतन आ हवेलीक उजड़बाक जीवन्त आलख्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा समृद्ध परिवार केर पतन आ हवेलीक उजड़बाक जीवन्त आलख्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकटा समृद्ध परिवार केर पतन आ हवेलीक उजड़बाक जीवन्त आलख्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30738. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771: केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30739. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771: केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30740. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771: केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30741. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771: केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30742. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771मे केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “एकटा समृद्ध परिवार केर पतन आ हवेलीक उजड़बाक जीवन्त आलख्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3080, सूचकांक पंक्ति 1771मे केशव भारद्वाजक “'भुत-बंगला' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “एकटा समृद्ध परिवार केर पतन आ हवेलीक उजड़बाक जीवन्त आलख्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3081 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30743. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772: केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1772मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30744. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772: केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30745. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772: केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30746. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772: केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्राम्य समाजमे मध्यस्थक भूमिका आ समयक सङ्ग बदलल परिवेशमे ओकर महत्वक कथा।

उत्तर: घ. ग्राम्य समाजमे मध्यस्थक भूमिका आ समयक सङ्ग बदलल परिवेशमे ओकर महत्वक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम्य समाजमे मध्यस्थक भूमिका आ समयक सङ्ग बदलल परिवेशमे ओकर महत्वक कथा।” अछि।

प्रश्न 30747. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772: केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्राम्य समाजमे मध्यस्थक भूमिका आ समयक सङ्ग बदलल परिवेशमे ओकर महत्वक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्राम्य समाजमे मध्यस्थक भूमिका आ समयक सङ्ग बदलल परिवेशमे ओकर महत्वक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम्य समाजमे मध्यस्थक भूमिका आ समयक सङ्ग बदलल परिवेशमे ओकर महत्वक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30748. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772: केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30749. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772: केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30750. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772: केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30751. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772: केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30752. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772मे केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “ग्राम्य समाजमे मध्यस्थक भूमिका आ समयक सङ्ग बदलल परिवेशमे ओकर महत्वक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3081, सूचकांक पंक्ति 1772मे केशव भारद्वाजक “'मध्यस्थ' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “ग्राम्य समाजमे मध्यस्थक भूमिका आ समयक सङ्ग बदलल परिवेशमे ओकर महत्वक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3082 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)

प्रश्न 30753. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773: केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1773मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30754. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773: केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30755. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773: केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 30756. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773: केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गामक माटि आ संस्कृतिसँ अनन्य लगाव रखयबला व्यक्तिक अपनहि गाममे उपेक्षित भएस मरबाक विडम्बनापूर्ण कथा।

उत्तर: घ. गामक माटि आ संस्कृतिसँ अनन्य लगाव रखयबला व्यक्तिक अपनहि गाममे उपेक्षित भएस मरबाक विडम्बनापूर्ण कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक माटि आ संस्कृतिसँ अनन्य लगाव रखयबला व्यक्तिक अपनहि गाममे उपेक्षित भएस मरबाक विडम्बनापूर्ण कथा।” अछि।

प्रश्न 30757. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773: केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक माटि आ संस्कृतिसँ अनन्य लगाव रखयबला व्यक्तिक अपनहि गाममे उपेक्षित भएस मरबाक विडम्बनापूर्ण कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक माटि आ संस्कृतिसँ अनन्य लगाव रखयबला व्यक्तिक अपनहि गाममे उपेक्षित भएस मरबाक विडम्बनापूर्ण कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक माटि आ संस्कृतिसँ अनन्य लगाव रखयबला व्यक्तिक अपनहि गाममे उपेक्षित भएस मरबाक विडम्बनापूर्ण कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30758. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773: केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30759. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773: केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30760. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773: केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30761. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773: केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30762. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773मे केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “गामक माटि आ संस्कृतिसँ अनन्य लगाव रखयबला व्यक्तिक अपनहि गाममे उपेक्षित भएस मरबाक विडम्बनापूर्ण कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3082, सूचकांक पंक्ति 1773मे केशव भारद्वाजक “'गामक माइट नसीब नचि' (बीहिन कथा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “गामक माटि आ संस्कृतिसँ अनन्य लगाव रखयबला व्यक्तिक अपनहि गाममे उपेक्षित भएस मरबाक विडम्बनापूर्ण कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3083 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'मुड़नक केश' (लघुकथा)

प्रश्न 30763. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774: केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मुड़नक केश' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मुड़नक केश' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1774मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'मुड़नक केश' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30764. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774: केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30765. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774: केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30766. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774: केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पोता लेल दादा-दादीक वात्सल्य आ आधुनिक जीवनशैलीक त्रासदीपर व्यंग्य।

उत्तर: घ. पोता लेल दादा-दादीक वात्सल्य आ आधुनिक जीवनशैलीक त्रासदीपर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पोता लेल दादा-दादीक वात्सल्य आ आधुनिक जीवनशैलीक त्रासदीपर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 30767. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774: केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पोता लेल दादा-दादीक वात्सल्य आ आधुनिक जीवनशैलीक त्रासदीपर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोता लेल दादा-दादीक वात्सल्य आ आधुनिक जीवनशैलीक त्रासदीपर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पोता लेल दादा-दादीक वात्सल्य आ आधुनिक जीवनशैलीक त्रासदीपर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30768. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774: केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30769. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774: केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30770. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774: केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30771. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774: केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30772. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774मे केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पोता लेल दादा-दादीक वात्सल्य आ आधुनिक जीवनशैलीक त्रासदीपर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3083, सूचकांक पंक्ति 1774मे केशव भारद्वाजक “'मुड़नक केश' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पोता लेल दादा-दादीक वात्सल्य आ आधुनिक जीवनशैलीक त्रासदीपर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3084 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'कन्यादान' (लघुकथा)

प्रश्न 30773. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775: केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कन्यादान' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कन्यादान' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1775मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'कन्यादान' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30774. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775: केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30775. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775: केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30776. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775: केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज प्रथाक विडम्बना आ कन्यादान जेहन पुण्यकर्मक सार्थकताक चित्रण।

उत्तर: घ. दहेज प्रथाक विडम्बना आ कन्यादान जेहन पुण्यकर्मक सार्थकताक चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज प्रथाक विडम्बना आ कन्यादान जेहन पुण्यकर्मक सार्थकताक चित्रण।” अछि।

प्रश्न 30777. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775: केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज प्रथाक विडम्बना आ कन्यादान जेहन पुण्यकर्मक सार्थकताक चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज प्रथाक विडम्बना आ कन्यादान जेहन पुण्यकर्मक सार्थकताक चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज प्रथाक विडम्बना आ कन्यादान जेहन पुण्यकर्मक सार्थकताक चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30778. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775: केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30779. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775: केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30780. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775: केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30781. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775: केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30782. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775मे केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दहेज प्रथाक विडम्बना आ कन्यादान जेहन पुण्यकर्मक सार्थकताक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3084, सूचकांक पंक्ति 1775मे केशव भारद्वाजक “'कन्यादान' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दहेज प्रथाक विडम्बना आ कन्यादान जेहन पुण्यकर्मक सार्थकताक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3085 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पछतावा' (लघुकथा)

प्रश्न 30783. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776: केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पछतावा' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पछतावा' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1776मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पछतावा' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30784. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776: केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30785. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776: केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30786. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776: केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पैतृक गाम-घरसँ विमुख भएस गेलाक पश्चातापक जीवन्त चित्रण।

उत्तर: घ. पैतृक गाम-घरसँ विमुख भएस गेलाक पश्चातापक जीवन्त चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पैतृक गाम-घरसँ विमुख भएस गेलाक पश्चातापक जीवन्त चित्रण।” अछि।

प्रश्न 30787. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776: केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पैतृक गाम-घरसँ विमुख भएस गेलाक पश्चातापक जीवन्त चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पैतृक गाम-घरसँ विमुख भएस गेलाक पश्चातापक जीवन्त चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पैतृक गाम-घरसँ विमुख भएस गेलाक पश्चातापक जीवन्त चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30788. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776: केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30789. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776: केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30790. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776: केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30791. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776: केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30792. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776मे केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पैतृक गाम-घरसँ विमुख भएस गेलाक पश्चातापक जीवन्त चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3085, सूचकांक पंक्ति 1776मे केशव भारद्वाजक “'पछतावा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पैतृक गाम-घरसँ विमुख भएस गेलाक पश्चातापक जीवन्त चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3086 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'उपराग' (लघुकथा)

प्रश्न 30793. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777: केशव भारद्वाजक “'उपराग' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'उपराग' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'उपराग' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1777मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'उपराग' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30794. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777: केशव भारद्वाजक "'उपराग' (लघुकथा)"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30795. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777: केशव भारद्वाजक "'उपराग' (लघुकथा)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "लघुकथा" अछि।

प्रश्न 30796. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777: केशव भारद्वाजक "'उपराग' (लघुकथा)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेशमे बैसल भाइक संग बहिनक संवेदना आ संबंधक उपरागक मर्मस्पर्शी कथा।

उत्तर: घ. विदेशमे बैसल भाइक संग बहिनक संवेदना आ संबंधक उपरागक मर्मस्पर्शी कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेशमे बैसल भाइक संग बहिनक संवेदना आ संबंधक उपरागक मर्मस्पर्शी कथा।" अछि।

प्रश्न 30797. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777: केशव भारद्वाजक "'उपराग' (लघुकथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेशमे बैसल भाइक संग बहिनक संवेदना आ संबंधक उपरागक मर्मस्पर्शी कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेशमे बैसल भाइक संग बहिनक संवेदना आ संबंधक उपरागक मर्मस्पर्शी कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "विदेशमे बैसल भाइक संग बहिनक संवेदना आ संबंधक उपरागक मर्मस्पर्शी कथा।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30798. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777: केशव भारद्वाजक "'उपराग' (लघुकथा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30799. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777: केशव भारद्वाजक "'उपराग' (लघुकथा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30800. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777: केशव भारद्वाजक “'उपराग' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30801. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777: केशव भारद्वाजक “'उपराग' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30802. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777मे केशव भारद्वाजक “'उपराग' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेशमे बैसल भाइक संग बहिनक संवेदना आ संबंधक उपरागक मर्मस्पर्शी कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3086, सूचकांक पंक्ति 1777मे केशव भारद्वाजक “'उपराग' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेशमे बैसल भाइक संग बहिनक संवेदना आ संबंधक उपरागक मर्मस्पर्शी कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3087 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'अएना' (लघुकथा)

प्रश्न 30803. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778: केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अएना' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अएना' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1778मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'अएना' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30804. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778: केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30805. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778: केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30806. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778: केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महत्वाकांक्षा आ छल-कपटक बल पर एक सफल वकीलक नैतिक पतनक कथा।

उत्तर: घ. महत्वाकांक्षा आ छल-कपटक बल पर एक सफल वकीलक नैतिक पतनक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महत्वाकांक्षा आ छल-कपटक बल पर एक सफल वकीलक नैतिक पतनक कथा।” अछि।

प्रश्न 30807. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778: केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महत्वाकांक्षा आ छल-कपटक बल पर एक सफल वकीलक नैतिक पतनक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महत्वाकांक्षा आ छल-कपटक बल पर एक सफल वकीलक नैतिक पतनक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महत्वाकांक्षा आ छल-कपटक बल पर एक सफल वकीलक नैतिक पतनक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30808. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778: केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30809. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778: केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30810. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778: केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30811. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778: केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30812. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778मे केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “महत्वाकांक्षा आ छल-कपटक बल पर एक सफल वकीलक नैतिक पतनक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3087, सूचकांक पंक्ति 1778मे केशव भारद्वाजक “'अएना' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “महत्वाकांक्षा आ छल-कपटक बल पर एक सफल वकीलक नैतिक पतनक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3088 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'हत्यारा' (लघुकथा)

प्रश्न 30813. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779: केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'हत्यारा' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'हत्यारा' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1779मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'हत्यारा' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30814. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779: केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30815. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779: केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30816. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779: केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शोषणसँ त्रस्त एक बाल श्रमिक द्वारा कृत हत्याक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

उत्तर: घ. शोषणसँ त्रस्त एक बाल श्रमिक द्वारा कृत हत्याक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शोषणसँ त्रस्त एक बाल श्रमिक द्वारा कृत हत्याक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।” अछि।

प्रश्न 30817. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779: केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शोषणसँ त्रस्त एक बाल श्रमिक द्वारा कृत हत्याक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शोषणसँ त्रस्त एक बाल श्रमिक द्वारा कृत हत्याक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शोषणसँ त्रस्त एक बाल श्रमिक द्वारा कृत हत्याक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30818. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779: केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30819. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779: केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30820. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779: केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)”कैं विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30821. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779: केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30822. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779मे केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शोषणसँ त्रस्त एक बाल श्रमिक द्वारा कृत हत्याक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3088, सूचकांक पंक्ति 1779मे केशव भारद्वाजक “'हत्यारा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शोषणसँ त्रस्त एक बाल श्रमिक द्वारा कृत हत्याक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3089 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'हुब्बा' (लघुकथा)

प्रश्न 30823. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780: केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'हुब्बा' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'हुब्बा' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1780मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'हुब्बा' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30824. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780: केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30825. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780: केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30826. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780: केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण राजनीति आ सत्ता-प्रतिष्ठाक दम्भक सजीव चित्रण।

उत्तर: घ. ग्रामीण राजनीति आ सत्ता-प्रतिष्ठाक दम्भक सजीव चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण राजनीति आ सत्ता-प्रतिष्ठाक दम्भक सजीव चित्रण।” अछि।

प्रश्न 30827. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780: केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण राजनीति आ सत्ता-प्रतिष्ठाक दम्भक सजीव चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण राजनीति आ सत्ता-प्रतिष्ठाक दम्भक सजीव चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण राजनीति आ सत्ता-प्रतिष्ठाक दम्भक सजीव चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30828. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780: केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30829. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780: केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30830. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780: केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30831. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780: केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30832. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780मे केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण राजनीति आ सत्ता-प्रतिष्ठाक दम्भक सजीव चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3089, सूचकांक पंक्ति 1780मे केशव भारद्वाजक “'हुब्बा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण राजनीति आ सत्ता-प्रतिष्ठाक दम्भक सजीव चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3090 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'इच्छा' (लघुकथा)

प्रश्न 30833. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781: केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'इच्छा' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'इच्छा' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1781मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'इच्छा' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30834. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781: केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30835. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781: केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30836. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781: केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक सहृदय व्यक्तिक अंतिम इच्छा वा विनम्र आग्रहक मर्मस्पर्शी कथा।

उत्तर: घ. एक सहृदय व्यक्तिक अंतिम इच्छा वा विनम्र आग्रहक मर्मस्पर्शी कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक सहृदय व्यक्तिक अंतिम इच्छा वा विनम्र आग्रहक मर्मस्पर्शी कथा।” अछि।

प्रश्न 30837. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781: केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक सहृदय व्यक्तिक अंतिम इच्छा वा विनम्र आग्रहक मर्मस्पर्शी कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक सहृदय व्यक्तिक अंतिम इच्छा वा विनम्र आग्रहक मर्मस्पर्शी कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक सहृदय व्यक्तिक अंतिम इच्छा वा विनम्र आग्रहक मर्मस्पर्शी कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30838. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781: केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30839. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781: केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30840. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781: केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30841. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781: केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30842. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781मे केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एक सहृदय व्यक्तिक अंतिम इच्छा वा विनम्र आग्रहक मर्मस्पर्शी कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3090, सूचकांक पंक्ति 1781मे केशव भारद्वाजक “'इच्छा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एक सहृदय व्यक्तिक अंतिम इच्छा वा विनम्र आग्रहक मर्मस्पर्शी कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3091 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)

प्रश्न 30843. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782: केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1782मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30844. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782: केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30845. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782: केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30846. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782: केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षा व्यवस्थामे व्याप्त स्वार्थ, भ्रष्टाचार, आ अवसरवादक व्यंग्यात्मक कथा।

उत्तर: घ. शिक्षा व्यवस्थामे व्याप्त स्वार्थ, भ्रष्टाचार, आ अवसरवादक व्यंग्यात्मक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा व्यवस्थामे व्याप्त स्वार्थ, भ्रष्टाचार, आ अवसरवादक व्यंग्यात्मक कथा।” अछि।

प्रश्न 30847. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782: केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षा व्यवस्थामे व्याप्त स्वार्थ, भ्रष्टाचार, आ अवसरवादक व्यंग्यात्मक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा व्यवस्थामे व्याप्त स्वार्थ, भ्रष्टाचार, आ अवसरवादक व्यंग्यात्मक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा व्यवस्थामे व्याप्त स्वार्थ, भ्रष्टाचार, आ अवसरवादक व्यंग्यात्मक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30848. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782: केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30849. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782: केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30850. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782: केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30851. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782: केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30852. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782मे केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शिक्षा व्यवस्थामे व्याप्त स्वार्थ, भ्रष्टाचार, आ अवसरवादक व्यंग्यात्मक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3091, सूचकांक पंक्ति 1782मे केशव भारद्वाजक “'मिशन एडमिशन' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शिक्षा व्यवस्थामे व्याप्त स्वार्थ, भ्रष्टाचार, आ अवसरवादक व्यंग्यात्मक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3092 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'अपन लोक' (लघुकथा)

प्रश्न 30853. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783: केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अपन लोक' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अपन लोक' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1783मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'अपन लोक' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30854. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783: केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30855. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783: केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30856. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783: केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बिछड़ल बालपनक मित्रक संग वर्षों बाद सोशल मीडिया पर भेट आ आत्मीयताक नवीन अनुभूति।

उत्तर: घ. बिछड़ल बालपनक मित्रक संग वर्षों बाद सोशल मीडिया पर भेट आ आत्मीयताक नवीन अनुभूति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बिछड़ल बालपनक मित्रक संग वर्षों बाद सोशल मीडिया पर भेट आ आत्मीयताक नवीन अनुभूति।” अछि।

प्रश्न 30857. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783: केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बिछड़ल बालपनक मित्रक संग वर्षों बाद सोशल मीडिया पर भेट आ आत्मीयताक नवीन अनुभूति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिछड़ल बालपनक मित्रक संग वर्षों बाद सोशल मीडिया पर भेट आ आत्मीयताक नवीन अनुभूति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बिछड़ल बालपनक मित्रक संग वर्षों बाद सोशल मीडिया पर भेट आ आत्मीयताक नवीन अनुभूति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30858. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783: केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30859. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783: केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30860. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783: केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30861. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783: केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30862. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783मे केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बिछड़ल बालपनक मित्रक संग वर्षों बाद सोशल मीडिया पर भेट आ आत्मीयताक नवीन अनुभूति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3092, सूचकांक पंक्ति 1783मे केशव भारद्वाजक “'अपन लोक' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बिछड़ल बालपनक मित्रक संग वर्षों बाद सोशल मीडिया पर भेट आ आत्मीयताक नवीन अनुभूति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3093 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'बख्शीश' (लघुकथा)

प्रश्न 30863. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784: केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बख्शीश' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बख्शीश' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1784मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'बख्शीश' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30864. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784: केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30865. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784: केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30866. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784: केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दान-दक्षिणा आ ईनामक मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण करयबला कथा।

उत्तर: घ. दान-दक्षिणा आ ईनामक मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण करयबला कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दान-दक्षिणा आ ईनामक मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण करयबला कथा।” अछि।

प्रश्न 30867. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784: केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दान-दक्षिणा आ ईनामक मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण करयबला कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दान-दक्षिणा आ ईनामक मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण करयबला कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दान-दक्षिणा आ ईनामक मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण करयबला कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30868. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784: केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30869. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784: केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30870. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784: केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30871. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784: केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30872. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784मे केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दान-दक्षिणा आ ईनामक मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण करयबला कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3093, सूचकांक पंक्ति 1784मे केशव भारद्वाजक “'बख्शीश' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दान-दक्षिणा आ ईनामक मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण करयबला कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3094 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'टीस' (लघुकथा)

प्रश्न 30873. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785: केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'टीस' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'टीस' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1785मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'टीस' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30874. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785: केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30875. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785: केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30876. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785: केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शहरी जीवनमे आवासक समस्या आ डेरा खोजबाक क्रममे भेल अपमानजनक स्थितिक मार्मिक चित्रण।

उत्तर: घ. शहरी जीवनमे आवासक समस्या आ डेरा खोजबाक क्रममे भेल अपमानजनक स्थितिक मार्मिक चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शहरी जीवनमे आवासक समस्या आ डेरा खोजबाक क्रममे भेल अपमानजनक स्थितिक मार्मिक चित्रण।” अछि।

प्रश्न 30877. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785: केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शहरी जीवनमे आवासक समस्या आ डेरा खोजबाक क्रममे भेल अपमानजनक स्थितिक मार्मिक चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शहरी जीवनमे आवासक समस्या आ डेरा खोजबाक क्रममे भेल अपमानजनक स्थितिक मार्मिक चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शहरी जीवनमे आवासक समस्या आ डेरा खोजबाक क्रममे भेल अपमानजनक स्थितिक मार्मिक चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30878. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785: केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30879. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785: केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30880. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785: केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30881. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785: केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30882. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785मे केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शहरी जीवनमे आवासक समस्या आ डेरा खोजबाक क्रममे भेल अपमानजनक स्थितिक मार्मिक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3094, सूचकांक पंक्ति 1785मे केशव भारद्वाजक “'टीस' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शहरी जीवनमे आवासक समस्या आ डेरा खोजबाक क्रममे भेल अपमानजनक स्थितिक मार्मिक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3095 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'विश्वासघात' (लघुकथा)

प्रश्न 30883. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786: केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'विश्वासघात' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'विश्वासघात' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1786मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'विश्वासघात' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30884. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786: केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30885. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786: केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30886. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786: केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवनक आधारभूत संरचना आ संबंधक विघटनक कथा।

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवनक आधारभूत संरचना आ संबंधक विघटनक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवनक आधारभूत संरचना आ संबंधक विघटनक कथा।” अछि।

प्रश्न 30887. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786: केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवनक आधारभूत संरचना आ संबंधक विघटनक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवनक आधारभूत संरचना आ संबंधक विघटनक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवनक आधारभूत संरचना आ संबंधक विघटनक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30888. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786: केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30889. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786: केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30890. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786: केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30891. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786: केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30892. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786मे केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण जीवनक आधारभूत संरचना आ संबंधक विघटनक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3095, सूचकांक पंक्ति 1786मे केशव भारद्वाजक “'विश्वासघात' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण जीवनक आधारभूत संरचना आ संबंधक विघटनक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3096 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पापक फल' (लघुकथा)

प्रश्न 30893. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787: केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पापक फल' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पापक फल' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1787मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पापक फल' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30894. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787: केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30895. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787: केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30896. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787: केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कर्मफल सिद्धान्त आ सामाजिक प्रतिशोधक भावनाक प्रबल अभिव्यक्ति देल गेल कथा।

उत्तर: घ. कर्मफल सिद्धान्त आ सामाजिक प्रतिशोधक भावनाक प्रबल अभिव्यक्ति देल गेल कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कर्मफल सिद्धान्त आ सामाजिक प्रतिशोधक भावनाक प्रबल अभिव्यक्ति देल गेल कथा।” अछि।

प्रश्न 30897. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787: केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कर्मफल सिद्धान्त आ सामाजिक प्रतिशोधक भावनाक प्रबल अभिव्यक्ति देल गेल कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कर्मफल सिद्धान्त आ सामाजिक प्रतिशोधक भावनाक प्रबल अभिव्यक्ति देल गेल कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कर्मफल सिद्धान्त आ सामाजिक प्रतिशोधक भावनाक प्रबल अभिव्यक्ति देल गेल कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30898. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787: केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30899. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787: केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30900. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787: केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30901. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787: केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30902. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787मे केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “कर्मफल सिद्धान्त आ सामाजिक प्रतिशोधक भावनाक प्रबल अभिव्यक्ति देल गेल कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3096, सूचकांक पंक्ति 1787मे केशव भारद्वाजक “'पापक फल' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “कर्मफल सिद्धान्त आ सामाजिक प्रतिशोधक भावनाक प्रबल अभिव्यक्ति देल गेल कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3097 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'हाथक लकीर' (लघुकथा)

प्रश्न 30903. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788: केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'हाथक लकीर' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'हाथक लकीर' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1788मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'हाथक लकीर' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30904. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788: केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30905. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788: केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30906. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788: केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एकटा पंडित केर माध्यम सँ भाग्य, भविष्यवाणी, आ सांसारिक मोह-मायाक दार्शनिक विवेचना।

उत्तर: घ. एकटा पंडित केर माध्यम सँ भाग्य, भविष्यवाणी, आ सांसारिक मोह-मायाक दार्शनिक विवेचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एकटा पंडित केर माध्यम सँ भाग्य, भविष्यवाणी, आ सांसारिक मोह-मायाक दार्शनिक विवेचना।” अछि।

प्रश्न 30907. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788: केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एकटा पंडित केर माध्यम सँ भाग्य, भविष्यवाणी, आ सांसारिक मोह-मायाक दार्शनिक विवेचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा पंडित केर माध्यम सँ भाग्य, भविष्यवाणी, आ सांसारिक मोह-मायाक दार्शनिक विवेचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकटा पंडित केर माध्यम सँ भाग्य, भविष्यवाणी, आ सांसारिक मोह-मायाक दार्शनिक विवेचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30908. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788: केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30909. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788: केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30910. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788: केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30911. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788: केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30912. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788मे केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा पंडित केर माध्यम सँ भाग्य, भविष्यवाणी, आ सांसारिक मोह-मायाक दार्शनिक विवेचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3097, सूचकांक पंक्ति 1788मे केशव भारद्वाजक “'हाथक लकीर' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा पंडित केर माध्यम सँ भाग्य, भविष्यवाणी, आ सांसारिक मोह-मायाक दार्शनिक विवेचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3098 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'छक्का-पुराण' (लघुकथा)

प्रश्न 30913. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789: केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'छक्का-पुराण' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'छक्का-पुराण' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1789मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30914. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789: केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30915. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789: केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30916. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789: केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लिंग परिवर्तन जेहन जटिल सामाजिक विषय पर आधारित एक अद्भुत, त्रासद, आ स्तब्धकारी कथा।

उत्तर: घ. लिंग परिवर्तन जेहन जटिल सामाजिक विषय पर आधारित एक अद्भुत, त्रासद, आ स्तब्धकारी कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लिंग परिवर्तन जेहन जटिल सामाजिक विषय पर आधारित एक अद्भुत, त्रासद, आ स्तब्धकारी कथा।” अछि।

प्रश्न 30917. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789: केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लिंग परिवर्तन जेहन जटिल सामाजिक विषय पर आधारित एक अद्भुत, त्रासद, आ स्तब्धकारी कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लिंग परिवर्तन जेहन जटिल सामाजिक विषय पर आधारित एक अद्भुत, त्रासद, आ स्तब्धकारी कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लिंग परिवर्तन जेहन जटिल सामाजिक विषय पर आधारित एक अद्भुत, त्रासद, आ स्तब्धकारी कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30918. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789: केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30919. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789: केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30920. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789: केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30921. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789: केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30922. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789मे केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “लिंग परिवर्तन जेहन जटिल सामाजिक विषय पर आधारित एक अद्भुत, त्रासद, आ स्तब्धकारी कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3098, सूचकांक पंक्ति 1789मे केशव भारद्वाजक “'छक्का-पुराण' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “लिंग परिवर्तन जेहन जटिल सामाजिक विषय पर आधारित एक अद्भुत, त्रासद, आ स्तब्धकारी कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3099 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'सरप्राइज' (लघुकथा)

प्रश्न 30923. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790: केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सरप्राइज' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सरप्राइज' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1790मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'सरप्राइज' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30924. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790: केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30925. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790: केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30926. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790: केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेशमे रहल बेटा आ गाममे रहल माँक बीच फोन वार्ताक माध्यमसँ प्रवासी जीवन आ मातृ-पितृ वात्सल्यक मार्मिक चित्रण।

उत्तर: घ. विदेशमे रहल बेटा आ गाममे रहल माँक बीच फोन वार्ताक माध्यमसँ प्रवासी जीवन आ मातृ-पितृ वात्सल्यक मार्मिक चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेशमे रहल बेटा आ गाममे रहल माँक बीच फोन वार्ताक माध्यमसँ प्रवासी जीवन आ मातृ-पितृ वात्सल्यक मार्मिक चित्रण।” अछि।

प्रश्न 30927. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790: केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेशमे रहल बेटा आ गाममे रहल माँक बीच फोन वार्ताक माध्यमसँ प्रवासी जीवन आ मातृ-पितृ वात्सल्यक मार्मिक चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेशमे रहल बेटा आ गाममे रहल माँक बीच फोन वार्ताक माध्यमसँ प्रवासी जीवन आ मातृ-पितृ वात्सल्यक मार्मिक चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेशमे रहल बेटा आ गाममे रहल माँक बीच फोन वार्ताक माध्यमसँ प्रवासी जीवन आ मातृ-पितृ वात्सल्यक मार्मिक चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30928. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790: केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30929. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790: केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30930. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790: केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30931. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790: केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30932. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790मे केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेशमे रहल बेटा आ गाममे रहल माँक बीच फोन वार्ताक माध्यमसँ प्रवासी जीवन आ मातृ-पितृ वात्सल्यक मार्मिक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3099, सूचकांक पंक्ति 1790मे केशव भारद्वाजक “'सरप्राइज' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेशमे रहल बेटा आ गाममे रहल माँक बीच फोन वार्ताक माध्यमसँ प्रवासी जीवन आ मातृ-पितृ वात्सल्यक मार्मिक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3100 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'अफेयर' (लघुकथा)

प्रश्न 30933. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791: केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अफेयर' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अफेयर' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1791मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'अफेयर' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30934. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791: केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30935. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791: केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30936. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791: केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एकटा आदर्शवादी प्रोफेसरक चारित्रिक हनन आ संबंधक जटिलताक अन्वेषण करयबला कथा।

उत्तर: घ. एकटा आदर्शवादी प्रोफेसरक चारित्रिक हनन आ संबंधक जटिलताक अन्वेषण करयबला कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एकटा आदर्शवादी प्रोफेसरक चारित्रिक हनन आ संबंधक जटिलताक अन्वेषण करयबला कथा।” अछि।

प्रश्न 30937. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791: केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एकटा आदर्शवादी प्रोफेसरक चारित्रिक हनन आ संबंधक जटिलताक अन्वेषण करयबला कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा आदर्शवादी प्रोफेसरक चारित्रिक हनन आ संबंधक जटिलताक अन्वेषण करयबला कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकटा आदर्शवादी प्रोफेसरक चारित्रिक हनन आ संबंधक जटिलताक अन्वेषण करयबला कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30938. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791: केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30939. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791: केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30940. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791: केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30941. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791: केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30942. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791मे केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा आदर्शवादी प्रोफेसरक चारित्रिक हनन आ संबंधक जटिलताक अन्वेषण करयबला कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3100, सूचकांक पंक्ति 1791मे केशव भारद्वाजक “'अफेयर' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा आदर्शवादी प्रोफेसरक चारित्रिक हनन आ संबंधक जटिलताक अन्वेषण करयबला कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3101 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)

प्रश्न 30943. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792: केशव भारद्वाजक “'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1792मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30944. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792: केशव भारद्वाजक “'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30945. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792: केशव भारद्वाजक “'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30946. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792: केशव भारद्वाजक “'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्रीक शोषण, सामाजिक उपेक्षा, आ जीवनक प्रति विवशताक मार्मिक कथा।

उत्तर: घ. स्त्रीक शोषण, सामाजिक उपेक्षा, आ जीवनक प्रति विवशताक मार्मिक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्रीक शोषण, सामाजिक उपेक्षा, आ जीवनक प्रति विवशताक मार्मिक कथा।” अछि।

प्रश्न 30947. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792: केशव भारद्वाजक "'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्रीक शोषण, सामाजिक उपेक्षा, आ जीवनक प्रति विवशताक मार्मिक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्रीक शोषण, सामाजिक उपेक्षा, आ जीवनक प्रति विवशताक मार्मिक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "स्त्रीक शोषण, सामाजिक उपेक्षा, आ जीवनक प्रति विवशताक मार्मिक कथा।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30948. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792: केशव भारद्वाजक "'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30949. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792: केशव भारद्वाजक "'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30950. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792: केशव भारद्वाजक "'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)"कैं विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30951. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792: केशव भारद्वाजक "'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30952. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792मे केशव भारद्वाजक “'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “स्त्रीक शोषण, सामाजिक उपेक्षा, आ जीवनक प्रति विवशताक मार्मिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3101, सूचकांक पंक्ति 1792मे केशव भारद्वाजक “'केतकीक व्यथा- की कहू कथा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “स्त्रीक शोषण, सामाजिक उपेक्षा, आ जीवनक प्रति विवशताक मार्मिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3102 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)

प्रश्न 30953. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793: केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1793मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30954. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793: केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30955. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793: केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30956. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793: केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जबरन विवाह (पकड़ुआ विवाह) के सामाजिक कुरीतिक चित्रण करयबला कथा, जकर अंत सुखद होइत अछि।

उत्तर: घ. जबरन विवाह (पकड़ुआ विवाह) के सामाजिक कुरीतिक चित्रण करयबला कथा, जकर अंत सुखद होइत अछि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जबरन विवाह (पकड़ुआ विवाह) के सामाजिक कुरीतिक चित्रण करयबला कथा, जकर अंत सुखद होइत अछि।” अछि।

प्रश्न 30957. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793: केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जबरन विवाह (पकड़ुआ विवाह) के सामाजिक कुरीतिक चित्रण करयबला कथा, जकर अंत सुखद होइत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जबरन विवाह (पकड़ुआ विवाह) के सामाजिक कुरीतिक चित्रण करयबला कथा, जकर अंत सुखद होइत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जबरन विवाह (पकड़ुआ विवाह) के सामाजिक कुरीतिक चित्रण करयबला कथा, जकर अंत सुखद होइत अछि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30958. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793: केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30959. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793: केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30960. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793: केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30961. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793: केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30962. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793मे केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जबरन विवाह (पकड़ुआ विवाह) के सामाजिक कुरीतिक चित्रण करयबला कथा, जकर अंत सुखद होइत अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3102, सूचकांक पंक्ति 1793मे केशव भारद्वाजक “'उठऊआ बिया ह' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जबरन विवाह (पकड़ुआ विवाह) के सामाजिक कुरीतिक चित्रण करयबला कथा, जकर अंत सुखद होइत अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3103 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)

प्रश्न 30963. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794: केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1794मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30964. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794: केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30965. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794: केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30966. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794: केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उच्चवर्गीय परिवारमे विवाहित बेटीक मायकेसँ बिछोह आ पारिवारिक मर्यादाक जटिल समीकरणक मार्मिक कथा।

उत्तर: घ. उच्चवर्गीय परिवारमे विवाहित बेटीक मायकेसँ बिछोह आ पारिवारिक मर्यादाक जटिल समीकरणक मार्मिक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उच्चवर्गीय परिवारमे विवाहित बेटीक मायकेसँ बिछोह आ पारिवारिक मर्यादाक जटिल समीकरणक मार्मिक कथा।” अछि।

प्रश्न 30967. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794: केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उच्चवर्गीय परिवारमे विवाहित बेटीक मायकेसँ बिछोह आ पारिवारिक मर्यादाक जटिल समीकरणक मार्मिक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उच्चवर्गीय परिवारमे विवाहित बेटीक मायकेसँ बिछोह आ पारिवारिक मर्यादाक जटिल समीकरणक मार्मिक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उच्चवर्गीय परिवारमे विवाहित बेटीक मायकेसँ बिछोह आ पारिवारिक मर्यादाक जटिल समीकरणक मार्मिक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30968. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794: केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30969. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794: केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30970. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794: केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30971. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794: केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30972. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794मे केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “उच्चवर्गीय परिवारमे विवाहित बेटीक मायकेसँ बिछोह आ पारिवारिक मर्यादाक जटिल समीकरणक मार्मिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3103, सूचकांक पंक्ति 1794मे केशव भारद्वाजक “'बडका घरक बहुरिया' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “उच्चवर्गीय परिवारमे विवाहित बेटीक मायकेसँ बिछोह आ पारिवारिक मर्यादाक जटिल समीकरणक मार्मिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3104 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'दरबार' (लघुकथा)

प्रश्न 30973. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795: केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'दरबार' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'दरबार' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1795मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'दरबार' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30974. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795: केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30975. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795: केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30976. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795: केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बदलल समयमे सामाजिक-सांस्कृतिक 'दरबार' प्रथाक एक अनोख आ रोचक संस्मरण।

उत्तर: घ. बदलल समयमे सामाजिक-सांस्कृतिक 'दरबार' प्रथाक एक अनोख आ रोचक संस्मरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बदलल समयमे सामाजिक-सांस्कृतिक 'दरबार' प्रथाक एक अनोख आ रोचक संस्मरण।” अछि।

प्रश्न 30977. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795: केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बदलल समयमे सामाजिक-सांस्कृतिक 'दरबार' प्रथाक एक अनोख आ रोचक संस्मरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बदलल समयमे सामाजिक-सांस्कृतिक 'दरबार' प्रथाक एक अनोख आ रोचक संस्मरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बदलल समयमे सामाजिक-सांस्कृतिक 'दरबार' प्रथाक एक अनोख आ रोचक संस्मरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30978. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795: केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30979. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795: केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30980. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795: केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30981. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795: केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30982. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795मे केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बदलल समयमे सामाजिक-सांस्कृतिक 'दरबार' प्रथाक एक अनोख आ रोचक संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3104, सूचकांक पंक्ति 1795मे केशव भारद्वाजक “'दरबार' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बदलल समयमे सामाजिक-सांस्कृतिक 'दरबार' प्रथाक एक अनोख आ रोचक संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3105 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'समयक चक्र' (लघुकथा)

प्रश्न 30983. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796: केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'समयक चक्र' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'समयक चक्र' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1796मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'समयक चक्र' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30984. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796: केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30985. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796: केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30986. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796: केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एकटा सम्भ्रांत परिवारक पतन आ समयक अटल गतिक माध्यमसँ कर्मफल सिद्धान्तक स्थापना करयबला कथा।

उत्तर: घ. एकटा सम्भ्रांत परिवारक पतन आ समयक अटल गतिक माध्यमसँ कर्मफल सिद्धान्तक स्थापना करयबला कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एकटा सम्भ्रांत परिवारक पतन आ समयक अटल गतिक माध्यमसँ कर्मफल सिद्धान्तक स्थापना करयबला कथा।” अछि।

प्रश्न 30987. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796: केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एकटा सम्भ्रांत परिवारक पतन आ समयक अटल गतिक माध्यमसँ कर्मफल सिद्धान्तक स्थापना करयबला कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा सम्भ्रांत परिवारक पतन आ समयक अटल गतिक माध्यमसँ कर्मफल सिद्धान्तक स्थापना करयबला कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकटा सम्भ्रांत परिवारक पतन आ समयक अटल गतिक माध्यमसँ कर्मफल सिद्धान्तक स्थापना करयबला कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30988. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796: केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30989. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796: केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 30990. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796: केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 30991. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796: केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 30992. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796मे केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा सम्भ्रांत परिवारक पतन आ समयक अटल गतिक माध्यमसँ कर्मफल सिद्धान्तक स्थापना करयबला कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3105, सूचकांक पंक्ति 1796मे केशव भारद्वाजक “'समयक चक्र' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा सम्भ्रांत परिवारक पतन आ समयक अटल गतिक माध्यमसँ कर्मफल सिद्धान्तक स्थापना करयबला कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3106 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'बदलल बेबहार' (लघुकथा)

प्रश्न 30993. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797: केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बदलल बेबहार' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बदलल बेबहार' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1797मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 30994. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797: केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 30995. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797: केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 30996. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797: केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बदलल सामाजिक परिवेशमे नयाँ पीढ़ीक नैतिक मूल्य आ व्यवहारमे आयल गिरावट केर चित्रण।

उत्तर: घ. बदलल सामाजिक परिवेशमे नयाँ पीढ़ीक नैतिक मूल्य आ व्यवहारमे आयल गिरावट केर चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बदलल सामाजिक परिवेशमे नयाँ पीढ़ीक नैतिक मूल्य आ व्यवहारमे आयल गिरावट केर चित्रण।” अछि।

प्रश्न 30997. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797: केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बदलल सामाजिक परिवेशमे नयाँ पीढ़ीक नैतिक मूल्य आ व्यवहारमे आयल गिरावट केर चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बदलल सामाजिक परिवेशमे नयाँ पीढ़ीक नैतिक मूल्य आ व्यवहारमे आयल गिरावट केर चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बदलल सामाजिक परिवेशमे नयाँ पीढ़ीक नैतिक मूल्य आ व्यवहारमे आयल गिरावट केर चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 30998. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797: केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 30999. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797: केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31000. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797: केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31001. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797: केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31002. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797मे केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बदलल सामाजिक परिवेशमे नयाँ पीढ़ीक नैतिक मूल्य आ व्यवहारमे आयल गिरावट केर चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3106, सूचकांक पंक्ति 1797मे केशव भारद्वाजक “'बदलल बेबहार' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बदलल सामाजिक परिवेशमे नयाँ पीढ़ीक नैतिक मूल्य आ व्यवहारमे आयल गिरावट केर चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3107 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'अनघोल' (लघुकथा)

प्रश्न 31003. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798: केशव भारद्वाजक “'अनघोल' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अनघोल' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनघोल' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1798मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'अनघोल' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31004. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798: केशव भारद्वाजक “'अनघोल' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31005. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798: केशव भारद्वाजक “'अनघोल' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31006. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798: केशव भारद्वाजक “'अनघोल' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी पति आ गाममे रहल पत्नीक बीचक संबंधक विघटन आ लापता व्यक्तिक चिन्ताक कथा।

उत्तर: घ. प्रवासी पति आ गाममे रहल पत्नीक बीचक संबंधक विघटन आ लापता व्यक्तिक चिन्ताक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी पति आ गाममे रहल पत्नीक बीचक संबंधक विघटन आ लापता व्यक्तिक चिन्ताक कथा।” अछि।

प्रश्न 31007. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798: केशव भारद्वाजक "'अनघोल' (लघुकथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी पति आ गाममे रहल पत्नीक बीचक संबंधक विघटन आ लापता व्यक्तिक चिन्ताक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी पति आ गाममे रहल पत्नीक बीचक संबंधक विघटन आ लापता व्यक्तिक चिन्ताक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "प्रवासी पति आ गाममे रहल पत्नीक बीचक संबंधक विघटन आ लापता व्यक्तिक चिन्ताक कथा।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31008. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798: केशव भारद्वाजक "'अनघोल' (लघुकथा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31009. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798: केशव भारद्वाजक "'अनघोल' (लघुकथा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31010. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798: केशव भारद्वाजक "'अनघोल' (लघुकथा)"केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31011. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798: केशव भारद्वाजक "'अनघोल' (लघुकथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31012. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798मे केशव भारद्वाजक “'अनघोल' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रवासी पति आ गाममे रहल पत्नीक बीचक संबंधक विघटन आ लापता व्यक्तिक चिन्ताक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3107, सूचकांक पंक्ति 1798मे केशव भारद्वाजक “'अनघोल' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रवासी पति आ गाममे रहल पत्नीक बीचक संबंधक विघटन आ लापता व्यक्तिक चिन्ताक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3108 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'देहक नेह' (लघुकथा)

प्रश्न 31013. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799: केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'देहक नेह' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'देहक नेह' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1799मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'देहक नेह' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31014. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799: केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31015. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799: केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31016. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799: केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विधवा विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध, आ मातृत्वक एक अनोखी कथा।

उत्तर: घ. विधवा विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध, आ मातृत्वक एक अनोखी कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विधवा विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध, आ मातृत्वक एक अनोखी कथा।” अछि।

प्रश्न 31017. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799: केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विधवा विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध, आ मातृत्वक एक अनोखी कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विधवा विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध, आ मातृत्वक एक अनोखी कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विधवा विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध, आ मातृत्वक एक अनोखी कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31018. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799: केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31019. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799: केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31020. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799: केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31021. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799: केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31022. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799मे केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विधवा विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध, आ मातृत्वक एक अनोखी कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3108, सूचकांक पंक्ति 1799मे केशव भारद्वाजक “'देहक नेह' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विधवा विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध, आ मातृत्वक एक अनोखी कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3109 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)

प्रश्न 31023. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800: केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1800मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31024. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800: केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31025. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800: केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31026. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800: केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण समाजक एक अनाथ, निस्वार्थ, आ करुणामयी महिलाक जीवन चरित्र पर आधारित भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

उत्तर: घ. ग्रामीण समाजक एक अनाथ, निस्वार्थ, आ करुणामयी महिलाक जीवन चरित्र पर आधारित भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण समाजक एक अनाथ, निस्वार्थ, आ करुणामयी महिलाक जीवन चरित्र पर आधारित भावपूर्ण श्रद्धांजलि।” अछि।

प्रश्न 31027. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800: केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण समाजक एक अनाथ, निस्वार्थ, आ करुणामयी महिलाक जीवन चरित्र पर आधारित भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण समाजक एक अनाथ, निस्वार्थ, आ करुणामयी महिलाक जीवन चरित्र पर आधारित भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण समाजक एक अनाथ, निस्वार्थ, आ करुणामयी महिलाक जीवन चरित्र पर आधारित भावपूर्ण श्रद्धांजलि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31028. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800: केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31029. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800: केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31030. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800: केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31031. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800: केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31032. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800मे केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण समाजक एक अनाथ, निस्वार्थ, आ करुणामयी महिलाक जीवन चरित्र पर आधारित भावपूर्ण श्रद्धांजलि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3109, सूचकांक पंक्ति 1800मे केशव भारद्वाजक “'लछमी बहुरिया' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण समाजक एक अनाथ, निस्वार्थ, आ करुणामयी महिलाक जीवन चरित्र पर आधारित भावपूर्ण श्रद्धांजलि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3110 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'अजादी' (लघुकथा)

प्रश्न 31033. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801: केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अजादी' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अजादी' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1801मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'अजादी' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31034. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801: केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31035. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801: केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31036. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801: केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वैवाहिक जीवनमे स्त्रीक 'आजादी'क अवधारणाक पारिवारिक त्रासदीमे बदलबाक कथा।

उत्तर: घ. वैवाहिक जीवनमे स्त्रीक 'आजादी'क अवधारणाक पारिवारिक त्रासदीमे बदलबाक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वैवाहिक जीवनमे स्त्रीक 'आजादी'क अवधारणाक पारिवारिक त्रासदीमे बदलबाक कथा।” अछि।

प्रश्न 31037. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801: केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वैवाहिक जीवनमे स्त्रीक 'आजादी'क अवधारणाक पारिवारिक त्रासदीमे बदलबाक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वैवाहिक जीवनमे स्त्रीक 'आजादी'क अवधारणाक पारिवारिक त्रासदीमे बदलबाक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वैवाहिक जीवनमे स्त्रीक 'आजादी'क अवधारणाक पारिवारिक त्रासदीमे बदलबाक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31038. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801: केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31039. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801: केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31040. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801: केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)”कें विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31041. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801: केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31042. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801मे केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वैवाहिक जीवनमे स्त्रीक 'आजादी'क अवधारणाक पारिवारिक त्रासदीमे बदलबाक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3110, सूचकांक पंक्ति 1801मे केशव भारद्वाजक “'अजादी' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वैवाहिक जीवनमे स्त्रीक 'आजादी'क अवधारणाक पारिवारिक त्रासदीमे बदलबाक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3111 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'गोलकी फ्रेमक चश्मा' (लघुकथा)

प्रश्न 31043. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802: केशव भारद्वाजक “'गोलकी फ्रेमक चश्मा' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'गोलकी फ्रेमक चश्मा' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गोलकी फ्रेमक चश्मा' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1802मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'गोलकी फ्रेमक चश्मा' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31044. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802: केशव भारद्वाजक “'गोलकी फ्रेमक चश्मा' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31045. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802: केशव भारद्वाजक “'गोलकी प्रेमक चश्मा' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31046. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802: केशव भारद्वाजक “'गोलकी प्रेमक चश्मा' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एकटा स्त्रीक त्याग आ संघर्षक मार्मिक गाथा, जे अपन परिवारक लेल स्वयं अपराधिनी बनि जाइत अछि।

उत्तर: घ. एकटा स्त्रीक त्याग आ संघर्षक मार्मिक गाथा, जे अपन परिवारक लेल स्वयं अपराधिनी बनि जाइत अछि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एकटा स्त्रीक त्याग आ संघर्षक मार्मिक गाथा, जे अपन परिवारक लेल स्वयं अपराधिनी बनि जाइत अछि।” अछि।

प्रश्न 31047. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802: केशव भारद्वाजक “'गोलकी प्रेमक चश्मा' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एकटा स्त्रीक त्याग आ संघर्षक मार्मिक गाथा, जे अपन परिवारक लेल स्वयं अपराधिनी बनि जाइत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा स्त्रीक त्याग आ संघर्षक मार्मिक गाथा, जे अपन परिवारक लेल स्वयं अपराधिनी बनि जाइत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकटा स्त्रीक त्याग आ संघर्षक मार्मिक गाथा, जे अपन परिवारक लेल स्वयं अपराधिनी बनि जाइत अछि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31048. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802: केशव भारद्वाजक “'गोलकी प्रेमक चश्मा' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31049. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802: केशव भारद्वाजक “'गोलकी प्रेमक चश्मा' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31050. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802: केशव भारद्वाजक “'गोलकी प्रेमक चश्मा' (लघुकथा)”कैँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31051. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802: केशव भारद्वाजक “'गोलकी फ्रेमक चश्मा' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31052. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802मे केशव भारद्वाजक “'गोलकी फ्रेमक चश्मा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा स्त्रीक त्याग आ संघर्षक मार्मिक गाथा, जे अपन परिवारक लेल स्वयं अपराधिनी बनि जाइत अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3111, सूचकांक पंक्ति 1802मे केशव भारद्वाजक “'गोलकी फ्रेमक चश्मा' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा स्त्रीक त्याग आ संघर्षक मार्मिक गाथा, जे अपन परिवारक लेल स्वयं अपराधिनी बनि जाइत अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3112 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'अंत' (लघुकथा)

प्रश्न 31053. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803: केशव भारद्वाजक “'अंत' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अंत' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अंत' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1803मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'अंत' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31054. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803: केशव भारद्वाजक “'अंत' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31055. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803: केशव भारद्वाजक “'अंत' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31056. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803: केशव भारद्वाजक "'अंत' (लघुकथा)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक लोभी, स्वार्थी, आ परस्त्रीगामी पुरुषक दुखद अंतक कथा।

उत्तर: घ. एक लोभी, स्वार्थी, आ परस्त्रीगामी पुरुषक दुखद अंतक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "एक लोभी, स्वार्थी, आ परस्त्रीगामी पुरुषक दुखद अंतक कथा।" अछि।

प्रश्न 31057. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803: केशव भारद्वाजक "'अंत' (लघुकथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक लोभी, स्वार्थी, आ परस्त्रीगामी पुरुषक दुखद अंतक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक लोभी, स्वार्थी, आ परस्त्रीगामी पुरुषक दुखद अंतक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "एक लोभी, स्वार्थी, आ परस्त्रीगामी पुरुषक दुखद अंतक कथा।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31058. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803: केशव भारद्वाजक "'अंत' (लघुकथा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31059. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803: केशव भारद्वाजक "'अंत' (लघुकथा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31060. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803: केशव भारद्वाजक "'अंत' (लघुकथा)"केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31061. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803: केशव भारद्वाजक "'अंत' (लघुकथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31062. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803मे केशव भारद्वाजक “'अंत' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एक लोभी, स्वार्थी, आ परस्त्रीगामी पुरुषक दुखद अंतक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3112, सूचकांक पंक्ति 1803मे केशव भारद्वाजक “'अंत' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एक लोभी, स्वार्थी, आ परस्त्रीगामी पुरुषक दुखद अंतक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3113 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'फैसला' (लघुकथा)

प्रश्न 31063. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804: केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'फैसला' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'फैसला' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1804मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'फैसला' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31064. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804: केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31065. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804: केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31066. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804: केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एकटा स्त्रीक अपन वैवाहिक जीवनक विडम्बना आ पुरुषक कुण्ठाक मनोवैज्ञानिक अन्वेषण।

उत्तर: घ. एकटा स्त्रीक अपन वैवाहिक जीवनक विडम्बना आ पुरुषक कुण्ठाक मनोवैज्ञानिक अन्वेषण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एकटा स्त्रीक अपन वैवाहिक जीवनक विडम्बना आ पुरुषक कुण्ठाक मनोवैज्ञानिक अन्वेषण।” अछि।

प्रश्न 31067. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804: केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एकटा स्त्रीक अपन वैवाहिक जीवनक विडम्बना आ पुरुषक कुण्ठाक मनोवैज्ञानिक अन्वेषण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा स्त्रीक अपन वैवाहिक जीवनक विडम्बना आ पुरुषक कुण्ठाक मनोवैज्ञानिक अन्वेषण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकटा स्त्रीक अपन वैवाहिक जीवनक विडम्बना आ पुरुषक कुण्ठाक मनोवैज्ञानिक अन्वेषण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31068. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804: केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31069. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804: केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31070. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804: केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31071. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804: केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31072. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804मे केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा स्त्रीक अपन वैवाहिक जीवनक विडम्बना आ पुरुषक कुण्ठाक मनोवैज्ञानिक अन्वेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3113, सूचकांक पंक्ति 1804मे केशव भारद्वाजक “'फैसला' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा स्त्रीक अपन वैवाहिक जीवनक विडम्बना आ पुरुषक कुण्ठाक मनोवैज्ञानिक अन्वेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3114 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'आत्मग्लानि' (लघुकथा)

प्रश्न 31073. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805: केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'आत्मग्लानि' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'आत्मग्लानि' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1805मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31074. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805: केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31075. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805: केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31076. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805: केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक मुकदमेबाजी, लोभ, आ हत्याक परिणाम स्वरूप भेल आत्मग्लानि आ सामाजिक बहिष्कारक कथा।

उत्तर: घ. पारिवारिक मुकदमेबाजी, लोभ, आ हत्याक परिणाम स्वरूप भेल आत्मग्लानि आ सामाजिक बहिष्कारक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक मुकदमेबाजी, लोभ, आ हत्याक परिणाम स्वरूप भेल आत्मग्लानि आ सामाजिक बहिष्कारक कथा।” अछि।

प्रश्न 31077. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805: केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक मुकदमेबाजी, लोभ, आ हत्याक परिणाम स्वरूप भेल आत्मग्लानि आ सामाजिक बहिष्कारक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक मुकदमेबाजी, लोभ, आ हत्याक परिणाम स्वरूप भेल आत्मग्लानि आ सामाजिक बहिष्कारक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक मुकदमेबाजी, लोभ, आ हत्याक परिणाम स्वरूप भेल आत्मग्लानि आ सामाजिक बहिष्कारक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31078. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805: केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31079. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805: केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31080. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805: केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31081. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805: केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31082. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805मे केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारिवारिक मुकदमेबाजी, लोभ, आ हत्याक परिणाम स्वरूप भेल आत्मग्लानि आ सामाजिक बहिष्कारक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3114, सूचकांक पंक्ति 1805मे केशव भारद्वाजक “'आत्मग्लानि' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारिवारिक मुकदमेबाजी, लोभ, आ हत्याक परिणाम स्वरूप भेल आत्मग्लानि आ सामाजिक बहिष्कारक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3115 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'खेलौना' (लघुकथा)

प्रश्न 31083. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806: केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'खेलौना' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'खेलौना' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1806मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'खेलौना' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31084. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806: केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31085. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806: केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31086. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806: केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण सामन्ती व्यवस्थाक अवशेष, लगनशील सेवक, आ बदलल समाजिक समीकरणक मर्मस्पर्शी चित्रण।

उत्तर: घ. ग्रामीण सामन्ती व्यवस्थाक अवशेष, लगनशील सेवक, आ बदलल समाजिक समीकरणक मर्मस्पर्शी चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण सामन्ती व्यवस्थाक अवशेष, लगनशील सेवक, आ बदलल समाजिक समीकरणक मर्मस्पर्शी चित्रण।” अछि।

प्रश्न 31087. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806: केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण सामन्ती व्यवस्थाक अवशेष, लगनशील सेवक, आ बदलल समाजिक समीकरणक मर्मस्पर्शी चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण सामन्ती व्यवस्थाक अवशेष, लगनशील सेवक, आ बदलल समाजिक समीकरणक मर्मस्पर्शी चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण सामन्ती व्यवस्थाक अवशेष, लगनशील सेवक, आ बदलल समाजिक समीकरणक मर्मस्पर्शी चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31088. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806: केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31089. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806: केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31090. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806: केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31091. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806: केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31092. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806मे केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण सामन्ती व्यवस्थाक अवशेष, लगनशील सेवक, आ बदलल समाजिक समीकरणक मर्मस्पर्शी चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3115, सूचकांक पंक्ति 1806मे केशव भारद्वाजक “'खेलौना' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण सामन्ती व्यवस्थाक अवशेष, लगनशील सेवक, आ बदलल समाजिक समीकरणक मर्मस्पर्शी चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3116 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'कल्पवास' (लघुकथा)

प्रश्न 31093. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807: केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कल्पवास' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कल्पवास' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1807मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'कल्पवास' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31094. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807: केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31095. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807: केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31096. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807: केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कुम्भक कल्पवासक अनुभव आ तकर माध्यमसँ मोह-माया, आ आत्मबोधक यथार्थवादी दार्शनिक कथा।

उत्तर: घ. कुम्भक कल्पवासक अनुभव आ तकर माध्यमसँ मोह-माया, आ आत्मबोधक यथार्थवादी दार्शनिक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कुम्भक कल्पवासक अनुभव आ तकर माध्यमसँ मोह-माया, आ आत्मबोधक यथार्थवादी दार्शनिक कथा।” अछि।

प्रश्न 31097. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807: केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कुम्भक कल्पवासक अनुभव आ तकर माध्यमसँ मोह-माया, आ आत्मबोधक यथार्थवादी दार्शनिक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुम्भक कल्पवासक अनुभव आ तकर माध्यमसँ मोह-माया, आ आत्मबोधक यथार्थवादी दार्शनिक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कुम्भक कल्पवासक अनुभव आ तकर माध्यमसँ मोह-माया, आ आत्मबोधक यथार्थवादी दार्शनिक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31098. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807: केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31099. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807: केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31100. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807: केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31101. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807: केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31102. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807मे केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “कुम्भक कल्पवासक अनुभव आ तकर माध्यमसँ मोह-माया, आ आत्मबोधक यथार्थवादी दार्शनिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3116, सूचकांक पंक्ति 1807मे केशव भारद्वाजक “'कल्पवास' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “कुम्भक कल्पवासक अनुभव आ तकर माध्यमसँ मोह-माया, आ आत्मबोधक यथार्थवादी दार्शनिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3117 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'बच्चनक बचन' (लघुकथा)

प्रश्न 31103. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808: केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बच्चनक बचन' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बच्चनक बचन' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1808मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31104. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808: केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31105. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808: केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31106. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808: केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक सड़क दुर्घटनामे अनाथ भेल बालकक अपन दादाकेँ देल गेल 'बचन' (वचन) के आजीवन निर्वाह करबाक मार्मिक कथा।

उत्तर: घ. एक सड़क दुर्घटनामे अनाथ भेल बालकक अपन दादाकेँ देल गेल 'बचन' (वचन) के आजीवन निर्वाह करबाक मार्मिक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक सड़क दुर्घटनामे अनाथ भेल बालकक अपन दादाकेँ देल गेल 'बचन' (वचन) के आजीवन निर्वाह करबाक मार्मिक कथा।” अछि।

प्रश्न 31107. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808: केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक सड़क दुर्घटनामे अनाथ भेल बालकक अपन दादाकेँ देल गेल 'बचन' (वचन) के आजीवन निर्वाह करबाक मार्मिक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक सड़क दुर्घटनामे अनाथ भेल बालकक अपन दादाकेँ देल गेल 'बचन' (वचन) के आजीवन निर्वाह करबाक मार्मिक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक सड़क दुर्घटनामे अनाथ भेल बालकक अपन दादाकेँ देल गेल 'बचन' (वचन) के आजीवन निर्वाह करबाक मार्मिक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31108. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808: केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31109. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808: केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31110. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808: केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31111. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808: केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31112. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808मे केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एक सड़क दुर्घटनामे अनाथ भेल बालकक अपन दादाकेँ देल गेल 'बचन' (वचन) के आजीवन निर्वाह करबाक मार्मिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3117, सूचकांक पंक्ति 1808मे केशव भारद्वाजक “'बच्चनक बचन' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एक सड़क दुर्घटनामे अनाथ भेल बालकक अपन दादाकेँ देल गेल 'बचन' (वचन) के आजीवन निर्वाह करबाक मार्मिक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3118 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'रखबार' (लघुकथा)

प्रश्न 31113. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809: केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'रखबार' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'रखबार' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1809मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'रखबार' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31114. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809: केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31115. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809: केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31116. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809: केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण समाजक पारिवारिक विघटन, राजनीति, आ सत्ता हथियाबाक क्रममे आयल हिंसाक प्रति सजग करयबला कथा।

उत्तर: घ. ग्रामीण समाजक पारिवारिक विघटन, राजनीति, आ सत्ता हथियाबाक क्रममे आयल हिंसाक प्रति सजग करयबला कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण समाजक पारिवारिक विघटन, राजनीति, आ सत्ता हथियाबाक क्रममे आयल हिंसाक प्रति सजग करयबला कथा।” अछि।

प्रश्न 31117. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809: केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण समाजक पारिवारिक विघटन, राजनीति, आ सत्ता हथियाबाक क्रममे आयल हिंसाक प्रति सजग करयबला कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण समाजक पारिवारिक विघटन, राजनीति, आ सत्ता हथियाबाक क्रममे आयल हिंसाक प्रति सजग करयबला कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण समाजक पारिवारिक विघटन, राजनीति, आ सत्ता हथियाबाक क्रममे आयल हिंसाक प्रति सजग करयबला कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31118. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809: केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31119. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809: केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31120. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809: केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31121. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809: केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31122. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809मे केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण समाजक पारिवारिक विघटन, राजनीति, आ सत्ता हथियाबाक क्रममे आयल हिंसाक प्रति सजग करयबला कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3118, सूचकांक पंक्ति 1809मे केशव भारद्वाजक “'रखबार' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण समाजक पारिवारिक विघटन, राजनीति, आ सत्ता हथियाबाक क्रममे आयल हिंसाक प्रति सजग करयबला कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3119 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'चंसगर' (लघुकथा)

प्रश्न 31123. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810: केशव भारद्वाजक “'चंसगर' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'चंसगर' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'चंसगर' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1810मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'चंसगर' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31124. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810: केशव भारद्वाजक “'चंसगर' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31125. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810: केशव भारद्वाजक “'चंसगर' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31126. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810: केशव भारद्वाजक “'चंसगर' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवनक जटिल पारिवारिक सम्बन्ध, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक सूक्ष्म विश्लेषण।

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवनक जटिल पारिवारिक सम्बन्ध, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक सूक्ष्म विश्लेषण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवनक जटिल पारिवारिक सम्बन्ध, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक सूक्ष्म विश्लेषण।” अछि।

प्रश्न 31127. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810: केशव भारद्वाजक "'चंसगर' (लघुकथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवनक जटिल पारिवारिक सम्बन्ध, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक सूक्ष्म विश्लेषण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवनक जटिल पारिवारिक सम्बन्ध, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक सूक्ष्म विश्लेषण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "ग्रामीण जीवनक जटिल पारिवारिक सम्बन्ध, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक सूक्ष्म विश्लेषण।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31128. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810: केशव भारद्वाजक "'चंसगर' (लघुकथा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31129. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810: केशव भारद्वाजक "'चंसगर' (लघुकथा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31130. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810: केशव भारद्वाजक "'चंसगर' (लघुकथा)"केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31131. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810: केशव भारद्वाजक "'चंसगर' (लघुकथा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31132. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810मे केशव भारद्वाजक “'चंसगर' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण जीवनक जटिल पारिवारिक सम्बन्ध, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक सूक्ष्म विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3119, सूचकांक पंक्ति 1810मे केशव भारद्वाजक “'चंसगर' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण जीवनक जटिल पारिवारिक सम्बन्ध, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक सूक्ष्म विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3120 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'दोषी के?' (लघुकथा)

प्रश्न 31133. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811: केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'दोषी के?' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'दोषी के?' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1811मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'दोषी के?' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31134. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811: केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31135. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811: केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31136. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811: केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अवैध प्रेम सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष अधिकार, आ न्याय व्यवस्थाक दुरुपयोगक जटिल प्रश्न पर केन्द्रित कथा।

उत्तर: घ. अवैध प्रेम सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष अधिकार, आ न्याय व्यवस्थाक दुरुपयोगक जटिल प्रश्न पर केन्द्रित कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अवैध प्रेम सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष अधिकार, आ न्याय व्यवस्थाक दुरुपयोगक जटिल प्रश्न पर केन्द्रित कथा।” अछि।

प्रश्न 31137. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811: केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अवैध प्रेम सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष अधिकार, आ न्याय व्यवस्थाक दुरुपयोगक जटिल प्रश्न पर केन्द्रित कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अवैध प्रेम सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष अधिकार, आ न्याय व्यवस्थाक दुरुपयोगक जटिल प्रश्न पर केन्द्रित कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अवैध प्रेम सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष अधिकार, आ न्याय व्यवस्थाक दुरुपयोगक जटिल प्रश्न पर केन्द्रित कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31138. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811: केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31139. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811: केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31140. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811: केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31141. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811: केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31142. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811मे केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “अवैध प्रेम सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष अधिकार, आ न्याय व्यवस्थाक दुरुपयोगक जटिल प्रश्न पर केन्द्रित कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3120, सूचकांक पंक्ति 1811मे केशव भारद्वाजक “'दोषी के?' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “अवैध प्रेम सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष अधिकार, आ न्याय व्यवस्थाक दुरुपयोगक जटिल प्रश्न पर केन्द्रित कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3121 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'बतहिया गाछी' (लघुकथा)

प्रश्न 31143. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812: केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बतहिया गाछी' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बतहिया गाछी' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1812मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31144. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812: केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31145. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812: केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31146. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812: केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण समाजमे एकटा मानसिक आ सामाजिक रूपसँ उपेक्षित स्त्रीक दारुण जीवन आ ओकर मृत्यु पश्चात् सम्मानक कथा।

उत्तर: घ. ग्रामीण समाजमे एकटा मानसिक आ सामाजिक रूपसँ उपेक्षित स्त्रीक दारुण जीवन आ ओकर मृत्यु पश्चात् सम्मानक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण समाजमे एकटा मानसिक आ सामाजिक रूपसँ उपेक्षित स्त्रीक दारुण जीवन आ ओकर मृत्यु पश्चात् सम्मानक कथा।” अछि।

प्रश्न 31147. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812: केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण समाजमे एकटा मानसिक आ सामाजिक रूपसँ उपेक्षित स्त्रीक दारुण जीवन आ ओकर मृत्यु पश्चात् सम्मानक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण समाजमे एकटा मानसिक आ सामाजिक रूपसँ उपेक्षित स्त्रीक दारुण जीवन आ ओकर मृत्यु पश्चात् सम्मानक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण समाजमे एकटा मानसिक आ सामाजिक रूपसँ उपेक्षित स्त्रीक दारुण जीवन आ ओकर मृत्यु पश्चात् सम्मानक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31148. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812: केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31149. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812: केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31150. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812: केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31151. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812: केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31152. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812मे केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण समाजमे एकटा मानसिक आ सामाजिक रूपसँ उपेक्षित स्त्रीक दारुण जीवन आ ओकर मृत्यु पश्चात् सम्मानक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3121, सूचकांक पंक्ति 1812मे केशव भारद्वाजक “'बतहिया गाछी' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण समाजमे एकटा मानसिक आ सामाजिक रूपसँ उपेक्षित स्त्रीक दारुण जीवन आ ओकर मृत्यु पश्चात् सम्मानक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3122 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)

प्रश्न 31153. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813: केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1813मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31154. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813: केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31155. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813: केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31156. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813: केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एकटा हास्य-व्यंग्य प्रधान कथा, जाहिमे नारियल तेलक स्थान पर डालडा लगा देबाक घटनाक माध्यमसँ ग्रामीण समाजक चित्रण करल गेल अछि।

उत्तर: घ. एकटा हास्य-व्यंग्य प्रधान कथा, जाहिमे नारियल तेलक स्थान पर डालडा लगा देबाक घटनाक माध्यमसँ ग्रामीण समाजक चित्रण करल गेल अछि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एकटा हास्य-व्यंग्य प्रधान कथा, जाहिमे नारियल तेलक स्थान पर डालडा लगा देबाक घटनाक माध्यमसँ ग्रामीण समाजक चित्रण करल गेल अछि।” अछि।

प्रश्न 31157. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813: केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एकटा हास्य-व्यंग्य प्रधान कथा, जाहिमे नारियल तेलक स्थान पर डालडा लगा देबाक घटनाक माध्यमसँ ग्रामीण समाजक चित्रण करल गेल अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा हास्य-व्यंग्य प्रधान कथा, जाहिमे नारियल तेलक स्थान पर डालडा लगा देबाक घटनाक माध्यमसँ ग्रामीण समाजक चित्रण करल गेल अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकटा हास्य-व्यंग्य प्रधान कथा, जाहिमे नारियल तेलक स्थान पर डालडा लगा देबाक घटनाक माध्यमसँ ग्रामीण समाजक चित्रण करल गेल अछि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31158. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813: केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31159. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813: केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31160. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813: केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31161. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813: केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31162. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813मे केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा हास्य-व्यंग्य प्रधान कथा, जाहिमे नारियल तेलक स्थान पर डालडा लगा देबाक घटनाक माध्यमसँ ग्रामीण समाजक चित्रण करल गेल अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3122, सूचकांक पंक्ति 1813मे केशव भारद्वाजक “'डालडा प्रसाद' (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एकटा हास्य-व्यंग्य प्रधान कथा, जाहिमे नारियल तेलक स्थान पर डालडा लगा देबाक घटनाक माध्यमसँ ग्रामीण समाजक चित्रण करल गेल अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3123 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)

प्रश्न 31163. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1814मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31164. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31165. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दीर्घकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दीर्घकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घकथा” अछि।

प्रश्न 31166. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रुचिका देबी नामक एक सफल, स्वावलम्बी, आ अविवाहित स्त्रीक जीवन आ मनोदशाक गहन चित्रण।

उत्तर: घ. रुचिका देबी नामक एक सफल, स्वावलम्बी, आ अविवाहित स्त्रीक जीवन आ मनोदशाक गहन चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रुचिका देबी नामक एक सफल, स्वावलम्बी, आ अविवाहित स्त्रीक जीवन आ मनोदशाक गहन चित्रण।” अछि।

प्रश्न 31167. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रुचिका देबी नामक एक सफल, स्वावलम्बी, आ अविवाहित स्त्रीक जीवन आ मनोदशाक गहन चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रुचिका देबी नामक एक सफल, स्वावलम्बी, आ अविवाहित स्त्रीक जीवन आ मनोदशाक गहन चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रुचिका देबी नामक एक सफल, स्वावलम्बी, आ अविवाहित स्त्रीक जीवन आ मनोदशाक गहन चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31168. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31169. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31170. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दीर्घकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दीर्घकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31171. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31172. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814मे केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घकथा आ “रुचिका देबी नामक एक सफल, स्वावलम्बी, आ अविवाहित स्त्रीक जीवन आ मनोदशाक गहन चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3123, सूचकांक पंक्ति 1814मे केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, पहिल भाग)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घकथा आ “रुचिका देबी नामक एक सफल, स्वावलम्बी, आ अविवाहित स्त्रीक जीवन आ मनोदशाक गहन चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3124 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)

प्रश्न 31173. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1815मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31174. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31175. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दीर्घकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दीर्घकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घकथा” अछि।

प्रश्न 31176. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रुचिका देबी आ श्री मिश्राक बीच विकसित होइत प्रेम सम्बन्ध आ दुनूक भावनात्मक द्वन्द्वक विश्लेषण।

उत्तर: घ. रुचिका देबी आ श्री मिश्राक बीच विकसित होइत प्रेम सम्बन्ध आ दुनूक भावनात्मक द्वन्द्वक विश्लेषण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रुचिका देबी आ श्री मिश्राक बीच विकसित होइत प्रेम सम्बन्ध आ दुनूक भावनात्मक द्वन्द्वक विश्लेषण।” अछि।

प्रश्न 31177. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रुचिका देबी आ श्री मिश्राक बीच विकसित होइत प्रेम सम्बन्ध आ दुनूक भावनात्मक द्वन्द्वक विश्लेषण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रुचिका देबी आ श्री मिश्राक बीच विकसित होइत प्रेम सम्बन्ध आ दुनूक भावनात्मक द्वन्द्वक विश्लेषण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रुचिका देबी आ श्री मिश्राक बीच विकसित होइत प्रेम सम्बन्ध आ दुनूक भावनात्मक द्वन्द्वक विश्लेषण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31178. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31179. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31180. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दीर्घकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दीर्घकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31181. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31182. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815मे केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घकथा आ “रुचिका देबी आ श्री मिश्राक बीच विकसित होइत प्रेम सम्बन्ध आ दुनूक भावनात्मक द्वन्द्वक विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3124, सूचकांक पंक्ति 1815मे केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, दोसर भाग)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घकथा आ “रुचिका देबी आ श्री मिश्राक बीच विकसित होइत प्रेम सम्बन्ध आ दुनूक भावनात्मक द्वन्द्वक विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3125 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)

प्रश्न 31183. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1816मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31184. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31185. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दीर्घकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दीर्घकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घकथा” अछि।

प्रश्न 31186. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शारीरिक संबंधक बाद उपजल मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल, पारिवारिक विरोध, आ अन्तमे एकटा अलौकिक समझौताक संग समापन।

उत्तर: घ. शारीरिक संबंधक बाद उपजल मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल, पारिवारिक विरोध, आ अन्तमे एकटा अलौकिक समझौताक संग समापन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शारीरिक संबंधक बाद उपजल मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल, पारिवारिक विरोध, आ अन्तमे एकटा अलौकिक समझौताक संग समापन।” अछि।

प्रश्न 31187. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शारीरिक संबंधक बाद उपजल मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल, पारिवारिक विरोध, आ अन्तमे एकटा अलौकिक समझौताक संग समापन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शारीरिक संबंधक बाद उपजल मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल, पारिवारिक विरोध, आ अन्तमे एकटा अलौकिक समझौताक संग समापन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शारीरिक संबंधक बाद उपजल मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल, पारिवारिक विरोध, आ अन्तमे एकटा अलौकिक समझौताक संग समापन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31188. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31189. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31190. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दीर्घकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दीर्घकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31191. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816: केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31192. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816मे केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घकथा आ “शारीरिक संबंधक बाद उपजल मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल, पारिवारिक विरोध, आ अन्तमे एकटा अलौकिक समझौताक संग समापन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3125, सूचकांक पंक्ति 1816मे केशव भारद्वाजक “'की सोचल- की लीखल' (दीर्घकथा, अन्तिम भाग)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घकथा आ “शारीरिक संबंधक बाद उपजल मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल, पारिवारिक विरोध, आ अन्तमे एकटा अलौकिक समझौताक संग समापन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3126 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)

प्रश्न 31193. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1817मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31194. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31195. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 31196. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'बदरी' केन्द्रमे ग्रामीण जीवन, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक कथा 'पैबंद' केर आरम्भ।

उत्तर: घ. 'बदरी' केन्द्रमे ग्रामीण जीवन, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक कथा 'पैबंद' केर आरम्भ।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'बदरी' केन्द्रमे ग्रामीण जीवन, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक कथा 'पैबंद' केर आरम्भ।” अछि।

प्रश्न 31197. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'बदरी' केन्द्रमे ग्रामीण जीवन, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक कथा 'पैबंद' केर आरम्भ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बदरी' केन्द्रमे ग्रामीण जीवन, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक कथा 'पैबंद' केर आरम्भ।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'बदरी' केन्द्रमे ग्रामीण जीवन, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक कथा 'पैबंद' केर आरम्भ।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31198. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31199. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31200. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31201. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31202. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “'बदरी' केन्द्रमे ग्रामीण जीवन, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक कथा 'पैबंद' केर आरम्भ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3126, सूचकांक पंक्ति 1817मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पहिल भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “'बदरी' केन्द्रमे ग्रामीण जीवन, गरीबी, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक कथा 'पैबंद' केर आरम्भ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3127 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)

प्रश्न 31203. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1818मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31204. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31205. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 31206. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बदरीक कलकत्ता प्रवास, जीवन संघर्ष, आ ओकर पत्नी 'रचति' केर माध्यमसँ नारी सशक्तिकरणक कथा।

उत्तर: घ. बदरीक कलकत्ता प्रवास, जीवन संघर्ष, आ ओकर पत्नी 'रचति' केर माध्यमसँ नारी सशक्तिकरणक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बदरीक कलकत्ता प्रवास, जीवन संघर्ष, आ ओकर पत्नी 'रचति' केर माध्यमसँ नारी सशक्तिकरणक कथा।” अछि।

प्रश्न 31207. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बदरीक कलकत्ता प्रवास, जीवन संघर्ष, आ ओकर पत्नी 'रचति' केर माध्यमसँ नारी सशक्तिकरणक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बदरीक कलकत्ता प्रवास, जीवन संघर्ष, आ ओकर पत्नी 'रचति' केर माध्यमसँ नारी सशक्तिकरणक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बदरीक कलकत्ता प्रवास, जीवन संघर्ष, आ ओकर पत्नी 'रचति' केर माध्यमसँ नारी सशक्तिकरणक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31208. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31209. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31210. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31211. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31212. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “बदरीक कलकत्ता प्रवास, जीवन संघर्ष, आ ओकर पत्नी 'रचति' केर माध्यमसँ नारी सशक्तिकरणक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3127, सूचकांक पंक्ति 1818मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, दोसर भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “बदरीक कलकत्ता प्रवास, जीवन संघर्ष, आ ओकर पत्नी 'रचति' केर माध्यमसँ नारी सशक्तिकरणक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3128 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)

प्रश्न 31213. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1819मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31214. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31215. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 31216. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बदरीक बेटा 'बिजय' के आइएएस बनला पर सामाजिक स्थितिमे आयल परिवर्तन आ बदरीक मनोदशाक चित्रण।

उत्तर: घ. बदरीक बेटा 'बिजय' के आइएएस बनला पर सामाजिक स्थितिमे आयल परिवर्तन आ बदरीक मनोदशाक चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बदरीक बेटा 'बिजय' के आइएएस बनला पर सामाजिक स्थितिमे आयल परिवर्तन आ बदरीक मनोदशाक चित्रण।” अछि।

प्रश्न 31217. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बदरीक बेटा 'बिजय' के आइएएस बनला पर सामाजिक स्थितिमे आयल परिवर्तन आ बदरीक मनोदशाक चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बदरीक बेटा 'बिजय' के आइएएस बनला पर सामाजिक स्थितिमे आयल परिवर्तन आ बदरीक मनोदशाक चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बदरीक बेटा 'बिजय' के आइएएस बनला पर सामाजिक स्थितिमे आयल परिवर्तन आ बदरीक मनोदशाक चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31218. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31219. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31220. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31221. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31222. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “बदरीक बेटा 'बिजय' के आइएएस बनला पर सामाजिक स्थितिमे आयल परिवर्तन आ बदरीक मनोदशाक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3128, सूचकांक पंक्ति 1819मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, तेसर भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “बदरीक बेटा 'बिजय' के आइएएस बनला पर सामाजिक स्थितिमे आयल परिवर्तन आ बदरीक मनोदशाक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3129 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)

प्रश्न 31223. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1820मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31224. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31225. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 31226. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बिजयक विवाह आ एक धनाढ्य ससुरालमे बदरीक स्थिति आ ओकर ग्राम्य जड़सँ कटबाक मनोवैज्ञानिक पीड़ा।

उत्तर: घ. बिजयक विवाह आ एक धनाढ्य ससुरालमे बदरीक स्थिति आ ओकर ग्राम्य जड़सँ कटबाक मनोवैज्ञानिक पीड़ा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बिजयक विवाह आ एक धनाढ्य ससुरालमे बदरीक स्थिति आ ओकर ग्राम्य जड़सँ कटबाक मनोवैज्ञानिक पीड़ा।” अछि।

प्रश्न 31227. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बिजयक विवाह आ एक धनाढ्य ससुरालमे बदरीक स्थिति आ ओकर ग्राम्य जड़सँ कटबाक मनोवैज्ञानिक पीड़ा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिजयक विवाह आ एक धनाढ्य ससुरालमे बदरीक स्थिति आ ओकर ग्राम्य जड़सँ कटबाक मनोवैज्ञानिक पीड़ा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बिजयक विवाह आ एक धनाढ्य ससुरालमे बदरीक स्थिति आ ओकर ग्राम्य जड़सँ कटबाक मनोवैज्ञानिक पीड़ा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31228. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31229. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31230. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31231. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31232. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “बिजयक विवाह आ एक धनाढ्य ससुरालमे बदरीक स्थिति आ ओकर ग्राम्य जड़सँ कटबाक मनोवैज्ञानिक पीड़ा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3129, सूचकांक पंक्ति 1820मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, चारिम भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “बिजयक विवाह आ एक धनाढ्य ससुरालमे बदरीक स्थिति आ ओकर ग्राम्य जड़सँ कटबाक मनोवैज्ञानिक पीड़ा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3130 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)

प्रश्न 31233. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1821मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31234. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31235. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 31236. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कलक्टर बिजयक व्यवसायिक जीवन, भ्रष्टाचार, आ एक ईमानदार अधिकारीक बाध्यता आ विवशताक चित्रण।

उत्तर: घ. कलक्टर बिजयक व्यवसायिक जीवन, भ्रष्टाचार, आ एक ईमानदार अधिकारीक बाध्यता आ विवशताक चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कलक्टर बिजयक व्यवसायिक जीवन, भ्रष्टाचार, आ एक ईमानदार अधिकारीक बाध्यता आ विवशताक चित्रण।” अछि।

प्रश्न 31237. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कलक्टर बिजयक व्यवसायिक जीवन, भ्रष्टाचार, आ एक ईमानदार अधिकारीक बाध्यता आ विवशताक चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कलक्टर बिजयक व्यवसायिक जीवन, भ्रष्टाचार, आ एक ईमानदार अधिकारीक बाध्यता आ विवशताक चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कलक्टर बिजयक व्यवसायिक जीवन, भ्रष्टाचार, आ एक ईमानदार अधिकारीक बाध्यता आ विवशताक चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31238. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31239. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31240. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31241. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31242. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “कलक्टर बिजयक व्यवसायिक जीवन, भ्रष्टाचार, आ एक ईमानदार अधिकारीक बाध्यता आ विवशताक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3130, सूचकांक पंक्ति 1821मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, पाँचम भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “कलक्टर बिजयक व्यवसायिक जीवन, भ्रष्टाचार, आ एक ईमानदार अधिकारीक बाध्यता आ विवशताक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3131 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)

प्रश्न 31243. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1822मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31244. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31245. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 31246. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गामक पैतृक सम्पत्तिक बिक्री, पारिवारिक अविश्वास, आ बिजयक पारिवारिक पृष्ठभूमिक मार्मिक विवरण।

उत्तर: घ. गामक पैतृक सम्पत्तिक बिक्री, पारिवारिक अविश्वास, आ बिजयक पारिवारिक पृष्ठभूमिक मार्मिक विवरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक पैतृक सम्पत्तिक बिक्री, पारिवारिक अविश्वास, आ बिजयक पारिवारिक पृष्ठभूमिक मार्मिक विवरण।” अछि।

प्रश्न 31247. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक पैतृक सम्पत्तिक बिक्री, पारिवारिक अविश्वास, आ बिजयक पारिवारिक पृष्ठभूमिक मार्मिक विवरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक पैतृक सम्पत्तिक बिक्री, पारिवारिक अविश्वास, आ बिजयक पारिवारिक पृष्ठभूमिक मार्मिक विवरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक पैतृक सम्पत्तिक बिक्री, पारिवारिक अविश्वास, आ बिजयक पारिवारिक पृष्ठभूमिक मार्मिक विवरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31248. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31249. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31250. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31251. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31252. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “गामक पैतृक सम्पत्तिक बिक्री, पारिवारिक अविश्वास, आ बिजयक पारिवारिक पृष्ठभूमिक मार्मिक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3131, सूचकांक पंक्ति 1822मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, छअम भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “गामक पैतृक सम्पत्तिक बिक्री, पारिवारिक अविश्वास, आ बिजयक पारिवारिक पृष्ठभूमिक मार्मिक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3132 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)

प्रश्न 31253. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1823मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31254. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31255. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 31256. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुत्रक उपनयन संस्कारक बहाने पारिवारिक सम्बन्धक गहराइ आ बिखण्डनक जटिल चित्रण।

उत्तर: घ. पुत्रक उपनयन संस्कारक बहाने पारिवारिक सम्बन्धक गहराइ आ बिखण्डनक जटिल चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुत्रक उपनयन संस्कारक बहाने पारिवारिक सम्बन्धक गहराइ आ बिखण्डनक जटिल चित्रण।” अछि।

प्रश्न 31257. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुत्रक उपनयन संस्कारक बहाने पारिवारिक सम्बन्धक गहराइ आ बिखण्डनक जटिल चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुत्रक उपनयन संस्कारक बहाने पारिवारिक सम्बन्धक गहराइ आ बिखण्डनक जटिल चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुत्रक उपनयन संस्कारक बहाने पारिवारिक सम्बन्धक गहराइ आ बिखण्डनक जटिल चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31258. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31259. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31260. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31261. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31262. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “पुत्रक उपनयन संस्कारक बहाने पारिवारिक सम्बन्धक गहराइ आ बिखण्डनक जटिल चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3132, सूचकांक पंक्ति 1823मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, सातम भाग)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “पुत्रक उपनयन संस्कारक बहाने पारिवारिक सम्बन्धक गहराइ आ बिखण्डनक जटिल चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3133 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)

प्रश्न 31263. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1824मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31264. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31265. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 31266. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बिजयक नशाक लत, माँ-बापक उपेक्षा, आ दुनूक एकाकी मृत्युक मार्मिक अन्त।

उत्तर: घ. बिजयक नशाक लत, माँ-बापक उपेक्षा, आ दुनूक एकाकी मृत्युक मार्मिक अन्त।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बिजयक नशाक लत, माँ-बापक उपेक्षा, आ दुनूक एकाकी मृत्युक मार्मिक अन्त।” अछि।

प्रश्न 31267. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बिजयक नशाक लत, माँ-बापक उपेक्षा, आ दुनूक एकाकी मृत्युक मार्मिक अन्त।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिजयक नशाक लत, माँ-बापक उपेक्षा, आ दुनूक एकाकी मृत्युक मार्मिक अन्त।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बिजयक नशाक लत, माँ-बापक उपेक्षा, आ दुनूक एकाकी मृत्युक मार्मिक अन्त।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31268. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31269. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31270. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31271. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31272. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “बिजयक नशाक लत, माँ-बापक उपेक्षा, आ दुनूक एकाकी मृत्युक मार्मिक अन्त।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3133, सूचकांक पंक्ति 1824मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग १)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “बिजयक नशाक लत, माँ-बापक उपेक्षा, आ दुनूक एकाकी मृत्युक मार्मिक अन्त।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3134 : विदेह-सदेह 22 — केशव भारद्वाज: 'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)

प्रश्न 31273. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1825मे केशव भारद्वाजक प्रविष्टि “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31274. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31275. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 31276. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अगिला पीढ़ी (बिपुल आ दीप्ति) द्वारा गाममे आबि कएस खेती आ समाज सेवाक माध्यमसँ परिवारक पुनरुत्थानक आदर्शवादी समापन।

उत्तर: घ. अगिला पीढ़ी (बिपुल आ दीप्ति) द्वारा गाममे आबि कएस खेती आ समाज सेवाक माध्यमसँ परिवारक पुनरुत्थानक आदर्शवादी समापन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अगिला पीढ़ी (बिपुल आ दीप्ति) द्वारा गाममे आबि कएस खेती आ समाज सेवाक माध्यमसँ परिवारक पुनरुत्थानक आदर्शवादी समापन।” अछि।

प्रश्न 31277. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अगिला पीढ़ी (बिपुल आ दीप्ति) द्वारा गाममे आबि कएस खेती आ समाज सेवाक माध्यमसँ परिवारक पुनरुत्थानक आदर्शवादी समापन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अगिला पीढ़ी (बिपुल आ दीप्ति) द्वारा गाममे आबि कएस खेती आ समाज सेवाक माध्यमसँ परिवारक पुनरुत्थानक आदर्शवादी समापन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अगिला पीढ़ी (बिपुल आ दीप्ति) द्वारा गाममे आबि कएस खेती आ समाज सेवाक माध्यमसँ परिवारक पुनरुत्थानक आदर्शवादी समापन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31278. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केशव भारद्वाज, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31279. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31280. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)”केँ विदेह-सदेह 22क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31281. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825: केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31282. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “अगिला पीढ़ी (बिपुल आ दीप्ति) द्वारा गाममे आबि कएस खेती आ समाज सेवाक माध्यमसँ परिवारक पुनरुत्थानक आदर्शवादी समापन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3134, सूचकांक पंक्ति 1825मे केशव भारद्वाजक “'पैबंद' (उपन्यास, अन्तिम भाग २)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “अगिला पीढ़ी (बिपुल आ दीप्ति) द्वारा गाममे आबि कएस खेती आ समाज सेवाक माध्यमसँ परिवारक पुनरुत्थानक आदर्शवादी समापन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3135 : विदेह-सदेह 22 — नन्द विलास राय: 'सरस्वती वन्दना'

प्रश्न 31283. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826: नन्द विलास रायक “'सरस्वती वन्दना'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सरस्वती वन्दना'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सरस्वती वन्दना'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1826मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “'सरस्वती वन्दना'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31284. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826: नन्द विलास रायक “'सरस्वती वन्दना'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31285. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826: नन्द विलास रायक “'सरस्वती वन्दना'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वन्दना/गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वन्दना/गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “वन्दना/गीत” अछि।

प्रश्न 31286. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826: नन्द विलास रायक “'सरस्वती वन्दना'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्तिभावपूर्ण सरस्वती वन्दना गीत।

उत्तर: घ. भक्तिभावपूर्ण सरस्वती वन्दना गीत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्तिभावपूर्ण सरस्वती वन्दना गीत।” अछि।

प्रश्न 31287. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826: नन्द विलास रायक "'सरस्वती वन्दना'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्तिभावपूर्ण सरस्वती वन्दना गीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्तिभावपूर्ण सरस्वती वन्दना गीत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "भक्तिभावपूर्ण सरस्वती वन्दना गीत।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31288. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826: नन्द विलास रायक "'सरस्वती वन्दना'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा वन्दना/गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा वन्दना/गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31289. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826: नन्द विलास रायक "'सरस्वती वन्दना'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31290. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826: नन्द विलास रायक "'सरस्वती वन्दना'"कैँ विदेह-सदेह 22क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ वन्दना/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ वन्दना/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31291. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826: नन्द विलास रायक "'सरस्वती वन्दना'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31292. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826मे नन्द विलास रायक "'सरस्वती वन्दना'" प्रविष्टि पद्य, वन्दना/गीत आ "भक्तिभावपूर्ण सरस्वती वन्दना गीत।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3135, सूचकांक पंक्ति 1826मे नन्द विलास रायक "'सरस्वती वन्दना'" प्रविष्टि पद्य, वन्दना/गीत आ "भक्तिभावपूर्ण सरस्वती वन्दना गीत।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3136 : विदेह-सदेह 22 — नन्द विलास राय: 'धनवान'

प्रश्न 31293. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827: नन्द विलास रायक “'धनवान'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'धनवान'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'धनवान'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1827मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “'धनवान'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31294. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827: नन्द विलास रायक “'धनवान'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31295. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827: नन्द विलास रायक “'धनवान'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता” अछि।

प्रश्न 31296. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827: नन्द विलास रायक “'धनवान'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गामक एक आदर्श धनवान व्यक्तिक चरित्र चित्रण करयबला गीत।

उत्तर: घ. गामक एक आदर्श धनवान व्यक्तिक चरित्र चित्रण करयबला गीत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक एक आदर्श धनवान व्यक्तिक चरित्र चित्रण करयबला गीत।” अछि।

प्रश्न 31297. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827: नन्द विलास रायक “'धनवान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक एक आदर्श धनवान व्यक्तिक चरित्र चित्रण करयबला गीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक एक आदर्श धनवान व्यक्तिक चरित्र चित्रण करयबला गीत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक एक आदर्श धनवान व्यक्तिक चरित्र चित्रण करयबला गीत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31298. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827: नन्द विलास रायक “'धनवान'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31299. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827: नन्द विलास रायक “'धनवान'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31300. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827: नन्द विलास रायक “'धनवान'”केँ विदेह-सदेह 22क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31301. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827: नन्द विलास रायक “'धनवान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31302. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827मे नन्द विलास रायक “'धनवान'” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “गामक एक आदर्श धनवान व्यक्तिक चरित्र चित्रण करयबला गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3136, सूचकांक पंक्ति 1827मे नन्द विलास रायक “'धनवान'” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “गामक एक आदर्श धनवान व्यक्तिक चरित्र चित्रण करयबला गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3137 : विदेह-सदेह 22 — रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’: 'किल्ड झारू'

प्रश्न 31303. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'किल्ड झारू'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'किल्ड झारू'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1828मे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क प्रविष्टि “'किल्ड झारू'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31304. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31305. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 31306. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीब बाल श्रमिक 'किल्ड झारू' के जीवन पर आधारित सामाजिक गीत।

उत्तर: घ. गरीब बाल श्रमिक 'किल्ड झारू' के जीवन पर आधारित सामाजिक गीत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीब बाल श्रमिक 'किल्ड झारू' के जीवन पर आधारित सामाजिक गीत।” अछि।

प्रश्न 31307. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीब बाल श्रमिक 'किल्ड झारू' के जीवन पर आधारित सामाजिक गीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीब बाल श्रमिक 'किल्ड झारू' के जीवन पर आधारित सामाजिक गीत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीब बाल श्रमिक 'किल्ड झारू' के जीवन पर आधारित सामाजिक गीत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31308. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31309. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31310. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'”केँ विदेह-सदेह 22क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31311. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828: रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31312. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828मे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गरीब बाल श्रमिक 'किल्ड झारू' के जीवन पर आधारित सामाजिक गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3137, सूचकांक पंक्ति 1828मे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारुदार’क “'किल्ड झारू'” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गरीब बाल श्रमिक 'किल्ड झारू' के जीवन पर आधारित सामाजिक गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3138 : विदेह-सदेह 22 — प्रदीप पुष्प: किछु गजल

प्रश्न 31313. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829: प्रदीप पुष्पक “किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1829मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31314. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829: प्रदीप पुष्पक “किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31315. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829: प्रदीप पुष्पक “किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 31316. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829: प्रदीप पुष्पक “किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम, सामाजिक व्यंग्य, आ जीवन दर्शन पर रचित बहुसंख्यक गजल।

उत्तर: घ. प्रेम, सामाजिक व्यंग्य, आ जीवन दर्शन पर रचित बहुसंख्यक गजल।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, सामाजिक व्यंग्य, आ जीवन दर्शन पर रचित बहुसंख्यक गजल।” अछि।

प्रश्न 31317. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829: प्रदीप पुष्पक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम, सामाजिक व्यंग्य, आ जीवन दर्शन पर रचित बहुसंख्यक गजल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम, सामाजिक व्यंग्य, आ जीवन दर्शन पर रचित बहुसंख्यक गजल।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, सामाजिक व्यंग्य, आ जीवन दर्शन पर रचित बहुसंख्यक गजल।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31318. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829: प्रदीप पुष्पक “किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31319. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829: प्रदीप पुष्पक “किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31320. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829: प्रदीप पुष्पक “किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 22क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31321. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829: प्रदीप पुष्पक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31322. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829मे प्रदीप पुष्पक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम, सामाजिक व्यंग्य, आ जीवन दर्शन पर रचित बहुसंख्यक गजल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3138, सूचकांक पंक्ति 1829मे प्रदीप पुष्पक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम, सामाजिक व्यंग्य, आ जीवन दर्शन पर रचित बहुसंख्यक गजल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3139 : विदेह-सदेह 22 — संतोष कुमार राय ‘बटोही’: 'कमला-बलानक मारल'

प्रश्न 31323. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कमला-बलानक मारल'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कमला-बलानक मारल'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1830मे संतोष कुमार राय ‘बटोही’क प्रविष्टि “'कमला-बलानक मारल'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31324. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31325. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गीत” अछि।

प्रश्न 31326. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोसी बाढ़ि आ ओकर विनाशलीलाक मार्मिक चित्रण करयबला कविता।

उत्तर: घ. कोसी बाढ़ि आ ओकर विनाशलीलाक मार्मिक चित्रण करयबला कविता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोसी बाढ़ि आ ओकर विनाशलीलाक मार्मिक चित्रण करयबला कविता।” अछि।

प्रश्न 31327. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोसी बाढ़ि आ ओकर विनाशलीलाक मार्मिक चित्रण करयबला कविता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसी बाढ़ि आ ओकर विनाशलीलाक मार्मिक चित्रण करयबला कविता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोसी बाढ़ि आ ओकर विनाशलीलाक मार्मिक चित्रण करयबला कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31328. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार राय ‘बटोही’, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार राय ‘बटोही’, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31329. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31330. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'”केँ विदेह-सदेह 22क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31331. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31332. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830मे संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “कोसी बाढ़ि आ ओकर विनाशलीलाक मार्मिक चित्रण करयबला कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3139, सूचकांक पंक्ति 1830मे संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'कमला-बलानक मारल'” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “कोसी बाढ़ि आ ओकर विनाशलीलाक मार्मिक चित्रण करयबला कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3140 : विदेह-सदेह 22 — संतोष कुमार राय ‘बटोही’: 'रौदी आऔर दहार'

प्रश्न 31333. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'रौदी आऔर दहार'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'रौदी आऔर दहार'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1831मे संतोष कुमार राय ‘बटोही’क प्रविष्टि “'रौदी आऔर दहार'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31334. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31335. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गीत” अछि।

प्रश्न 31336. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक सुखाड़ (रौदी) आ कोसीक दहार (बाढ़ि) के दोहरा संकट आ किसानक पीड़ाक चित्रण।

उत्तर: घ. मिथिलाक सुखाड़ (रौदी) आ कोसीक दहार (बाढ़ि) के दोहरा संकट आ किसानक पीड़ाक चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक सुखाड़ (रौदी) आ कोसीक दहार (बाढ़ि) के दोहरा संकट आ किसानक पीड़ाक चित्रण।” अछि।

प्रश्न 31337. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक सुखाड़ (रौदी) आ कोसीक दहार (बाढ़ि) के दोहरा संकट आ किसानक पीड़ाक चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक सुखाड़ (रौदी) आ कोसीक दहार (बाढ़ि) के दोहरा संकट आ किसानक पीड़ाक चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक सुखाड़ (रौदी) आ कोसीक दहार (बाढ़ि) के दोहरा संकट आ किसानक पीड़ाक चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31338. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार राय ‘बटोही’, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार राय ‘बटोही’, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31339. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31340. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'”केँ विदेह-सदेह 22क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31341. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 22क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31342. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831मे संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “मिथिलाक सुखाड़ (रौदी) आ कोसीक दहार (बाढ़ि) के दोहरा संकट आ किसानक पीड़ाक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3140, सूचकांक पंक्ति 1831मे संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “'रौदी आऔर दहार'” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “मिथिलाक सुखाड़ (रौदी) आ कोसीक दहार (बाढ़ि) के दोहरा संकट आ किसानक पीड़ाक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 22क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3141 : विदेह-सदेह 23 — गजेन्द्र ठाकूर: एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)

प्रश्न 31343. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832: गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1832मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31344. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832: गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31345. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832: गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय / परिचयात्मक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय / परिचयात्मक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय / परिचयात्मक” अछि।

प्रश्न 31346. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832: गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेहक 123 अंक धरिक सम्पादकीय चयन

उत्तर: घ. विदेहक 123 अंक धरिक सम्पादकीय चयन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेहक 123 अंक धरिक सम्पादकीय चयन” अछि।

प्रश्न 31347. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832: गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेहक 123 अंक धरिक सम्पादकीय चयन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेहक 123 अंक धरिक सम्पादकीय चयन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेहक 123 अंक धरिक सम्पादकीय चयन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31348. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832: गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय / परिचयात्मक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय / परिचयात्मक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31349. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832: गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31350. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832: गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीय / परिचयात्मकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीय / परिचयात्मकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31351. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832: गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31352. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832मे गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय / परिचयात्मक आ “विदेहक 123 अंक धरिक सम्पादकीय चयन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3141, सूचकांक पंक्ति 1832मे गजेन्द्र ठाकूरक “एडिटर्स चोइस सीरीज (1-9)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय / परिचयात्मक आ “विदेहक 123 अंक धरिक सम्पादकीय चयन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3142 : विदेह-सदेह 23 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)

प्रश्न 31353. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1833मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31354. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31355. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सन्दर्भ सूची

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सन्दर्भ सूची

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सन्दर्भ सूची” अछि।

प्रश्न 31356. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत, भगैत, नाच

उत्तर: घ. लोकगीत, भगैत, नाच

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत, भगैत, नाच” अछि।

प्रश्न 31357. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत, भगैत, नाच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत, भगैत, नाच

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत, भगैत, नाच” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31358. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सन्दर्भ सूची

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सन्दर्भ सूची

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31359. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31360. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सन्दर्भ सूचीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सन्दर्भ सूचीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31361. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31362. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)” प्रविष्टि गद्य, सन्दर्भ सूची आ “लोकगीत, भगैत, नाच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3142, सूचकांक पंक्ति 1833मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली सी.डी. एल्बम (सूची)” प्रविष्टि गद्य, सन्दर्भ सूची आ “लोकगीत, भगैत, नाच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3143 : विदेह-सदेह 23 — गजेन्द्र ठाकूर: मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी

प्रश्न 31363. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834: गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1834मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31364. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834: गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31365. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834: गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध / शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध / शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध / शोध” अछि।

प्रश्न 31366. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834: गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संगणक, छायांकन, कूँजीपटल, अन्तर्जाल

उत्तर: घ. संगणक, छायांकन, कूँजीपटल, अन्तर्जाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संगणक, छायांकन, कूँजीपटल, अन्तर्जाल” अछि।

प्रश्न 31367. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834: गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संगणक, छायांकन, कूँजीपटल, अन्तर्जाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संगणक, छायांकन, कूँजीपटल, अन्तर्जाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संगणक, छायांकन, कूँजीपटल, अन्तर्जाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31368. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834: गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध / शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध / शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31369. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834: गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31370. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834: गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध / शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध / शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31371. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834: गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31372. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834मे गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध / शोध आ “संगणक, छायांकन, कूँजीपटल, अन्तर्जाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3143, सूचकांक पंक्ति 1834मे गजेन्द्र ठाकूरक “मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध / शोध आ “संगणक, छायांकन, कूँजीपटल, अन्तर्जाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3144 : विदेह-सदेह 23 — गजेन्द्र ठाकूर: तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास

प्रश्न 31373. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835: गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1835मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31374. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835: गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31375. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835: गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 31376. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835: गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ब्राह्मी, कुटिल, मिथिलाक्षर

उत्तर: घ. ब्राह्मी, कुटिल, मिथिलाक्षर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ब्राह्मी, कुटिल, मिथिलाक्षर” अछि।

प्रश्न 31377. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835: गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ब्राह्मी, कुटिल, मिथिलाक्षर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ब्राह्मी, कुटिल, मिथिलाक्षर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ब्राह्मी, कुटिल, मिथिलाक्षर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31378. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835: गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31379. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835: गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31380. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835: गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31381. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835: गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31382. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835मे गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “ब्राह्मी, कुटिल, मिथिलाक्षर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3144, सूचकांक पंक्ति 1835मे गजेन्द्र ठाकूरक “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “ब्राह्मी, कुटिल, मिथिलाक्षर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3145 : विदेह-सदेह 23 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली

प्रश्न 31383. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1836मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31384. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31385. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तुलनात्मक भाषाशास्त्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तुलनात्मक भाषाशास्त्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तुलनात्मक भाषाशास्त्र” अछि।

प्रश्न 31386. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा-तुलना

उत्तर: घ. भाषा-तुलना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा-तुलना” अछि।

प्रश्न 31387. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा-तुलना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा-तुलना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-तुलना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31388. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा तुलनात्मक भाषाशास्त्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा तुलनात्मक भाषाशास्त्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31389. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31390. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली”कें विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ तुलनात्मक भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ तुलनात्मक भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31391. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31392. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली” प्रविष्टि गद्य, तुलनात्मक भाषाशास्त्र आ “भाषा-तुलना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3145, सूचकांक पंक्ति 1836मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली” प्रविष्टि गद्य, तुलनात्मक भाषाशास्त्र आ “भाषा-तुलना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3146 : विदेह-सदेह 23 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध

प्रश्न 31393. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1837मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31394. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31395. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तुलनात्मक भाषाशास्त्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तुलनात्मक भाषाशास्त्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तुलनात्मक भाषाशास्त्र” अछि।

प्रश्न 31396. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बांग्ला, असमिया, ओडिया

उत्तर: घ. बांग्ला, असमिया, ओडिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बांग्ला, असमिया, ओडिया” अछि।

प्रश्न 31397. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बांग्ला, असमिया, ओडिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बांग्ला, असमिया, ओडिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बांग्ला, असमिया, ओडिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31398. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा तुलनात्मक भाषाशास्त्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा तुलनात्मक भाषाशास्त्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31399. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31400. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ तुलनात्मक भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ तुलनात्मक भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31401. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31402. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध” प्रविष्टि गद्य, तुलनात्मक भाषाशास्त्र आ “बांग्ला, असमिया, ओडिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3146, सूचकांक पंक्ति 1837मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध” प्रविष्टि गद्य, तुलनात्मक भाषाशास्त्र आ “बांग्ला, असमिया, ओडिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3147 : विदेह-सदेह 23 — इरा मल्लिक: असमंजस

प्रश्न 31403. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838: इरा मल्लिकक “असमंजस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. असमंजस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असमंजस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1838मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “असमंजस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31404. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838: इरा मल्लिकक “असमंजस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31405. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838: इरा मल्लिकक “असमंजस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31406. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838: इरा मल्लिकक “असमंजस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-मनोविज्ञान, पाठक-प्रतिक्रिया

उत्तर: घ. बाल-मनोविज्ञान, पाठक-प्रतिक्रिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान, पाठक-प्रतिक्रिया” अछि।

प्रश्न 31407. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838: इरा मल्लिकक “असमंजस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मनोविज्ञान, पाठक-प्रतिक्रिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मनोविज्ञान, पाठक-प्रतिक्रिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान, पाठक-प्रतिक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31408. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838: इरा मल्लिकक “असमंजस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31409. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838: इरा मल्लिकक “असमंजस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31410. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838: इरा मल्लिकक “असमंजस”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31411. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838: इरा मल्लिकक “असमंजस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31412. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838मे इरा मल्लिकक “असमंजस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बाल-मनोविज्ञान, पाठक-प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3147, सूचकांक पंक्ति 1838मे इरा मल्लिकक “असमंजस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बाल-मनोविज्ञान, पाठक-प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3148 : विदेह-सदेह 23 — इरा मल्लिक: पाहुन एलिखन

प्रश्न 31413. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839: इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पाहुन एलिखन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाहुन एलिखन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1839मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “पाहुन एलिखन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31414. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839: इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31415. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839: इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31416. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839: इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण परिवेश, अतिथि-सत्कार

उत्तर: घ. ग्रामीण परिवेश, अतिथि-सत्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण परिवेश, अतिथि-सत्कार” अछि।

प्रश्न 31417. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839: इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण परिवेश, अतिथि-सत्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण परिवेश, अतिथि-सत्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण परिवेश, अतिथि-सत्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31418. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839: इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31419. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839: इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31420. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839: इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31421. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839: इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31422. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839मे इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “ग्रामीण परिवेश, अतिथि-सत्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3148, सूचकांक पंक्ति 1839मे इरा मल्लिकक “पाहुन एलिखन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “ग्रामीण परिवेश, अतिथि-सत्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3149 : विदेह-सदेह 23 — अरुण लाल दास: कर्म प्रधान विश्व किर राखा

प्रश्न 31423. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840: अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कर्म प्रधान विश्व किर राखा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कर्म प्रधान विश्व किर राखा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1840मे अरुण लाल दासक प्रविष्टि “कर्म प्रधान विश्व किर राखा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31424. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840: अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31425. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840: अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोक-कथा (राजस्थानी)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोक-कथा (राजस्थानी)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक-कथा (राजस्थानी)” अछि।

प्रश्न 31426. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840: अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोककथा, कर्म-सिद्धान्त

उत्तर: घ. लोककथा, कर्म-सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोककथा, कर्म-सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 31427. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840: अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोककथा, कर्म-सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोककथा, कर्म-सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोककथा, कर्म-सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31428. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840: अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरुण लाल दास, विधा गद्य, उप-विधा लोक-कथा (राजस्थानी)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरुण लाल दास, विधा गद्य, उप-विधा लोक-कथा (राजस्थानी)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31429. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840: अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31430. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840: अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोक-कथा (राजस्थानी)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोक-कथा (राजस्थानी)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31431. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840: अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31432. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840मे अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा” प्रविष्टि गद्य, लोक-कथा (राजस्थानी) आ “लोककथा, कर्म-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3149, सूचकांक पंक्ति 1840मे अरुण लाल दासक “कर्म प्रधान विश्व किर राखा” प्रविष्टि गद्य, लोक-कथा (राजस्थानी) आ “लोककथा, कर्म-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3150 : विदेह-सदेह 23 — अरुण लाल दास: लहास

प्रश्न 31433. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841: अरुण लाल दासक “लहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लहास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1841मे अरुण लाल दासक प्रविष्टि “लहास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31434. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841: अरुण लाल दासक “लहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31435. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841: अरुण लाल दासक “लहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31436. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841: अरुण लाल दासक “लहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य, ग्रामीण जीवन

उत्तर: घ. व्यंग्य, ग्रामीण जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य, ग्रामीण जीवन” अछि।

प्रश्न 31437. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841: अरुण लाल दासक “लहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य, ग्रामीण जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य, ग्रामीण जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य, ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31438. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841: अरुण लाल दासक “लहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरुण लाल दास, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरुण लाल दास, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31439. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841: अरुण लाल दासक “लहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31440. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841: अरुण लाल दासक “लहास”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31441. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841: अरुण लाल दासक “लहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31442. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841मे अरुण लाल दासक “लहास” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “व्यंग्य, ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3150, सूचकांक पंक्ति 1841मे अरुण लाल दासक “लहास” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “व्यंग्य, ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3151 : विदेह-सदेह 23 — अरुण लाल दास: गाछ बिरिछ सँ प्रेम

प्रश्न 31443. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842: अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गाछ बिरिछ सँ प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाछ बिरिछ सँ प्रेम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1842मे अरुण लाल दासक प्रविष्टि “गाछ बिरिछ सँ प्रेम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31444. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842: अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31445. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842: अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31446. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842: अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पर्यावरण-प्रेम

उत्तर: घ. पर्यावरण-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरण-प्रेम” अछि।

प्रश्न 31447. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842: अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पर्यावरण-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पर्यावरण-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पर्यावरण-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31448. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842: अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरुण लाल दास, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरुण लाल दास, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31449. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842: अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31450. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842: अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31451. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842: अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31452. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842मे अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पर्यावरण-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3151, सूचकांक पंक्ति 1842मे अरुण लाल दासक “गाछ बिरिछ सँ प्रेम” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पर्यावरण-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3152 : विदेह-सदेह 23 — अरुण लाल दास: दर्शन

प्रश्न 31453. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843: अरुण लाल दासक “दर्शन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दर्शन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1843मे अरुण लाल दासक प्रविष्टि “दर्शन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31454. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843: अरुण लाल दासक “दर्शन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31455. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843: अरुण लाल दासक “दर्शन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31456. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843: अरुण लाल दासक “दर्शन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आध्यात्मिक संवाद

उत्तर: घ. आध्यात्मिक संवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आध्यात्मिक संवाद” अछि।

प्रश्न 31457. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843: अरुण लाल दासक “दर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आध्यात्मिक संवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आध्यात्मिक संवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आध्यात्मिक संवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31458. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843: अरुण लाल दासक “दर्शन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरुण लाल दास, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरुण लाल दास, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31459. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843: अरुण लाल दासक “दर्शन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31460. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843: अरुण लाल दासक “दर्शन”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31461. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843: अरुण लाल दासक “दर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31462. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843मे अरुण लाल दासक “दर्शन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “आध्यात्मिक संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3152, सूचकांक पंक्ति 1843मे अरुण लाल दासक “दर्शन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “आध्यात्मिक संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3153 : विदेह-सदेह 23 — आभा झा: पिघलैत हिमखण्ड

प्रश्न 31463. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844: आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पिघलैत हिमखण्ड

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिघलैत हिमखण्ड

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1844मे आभा झाक प्रविष्टि “पिघलैत हिमखण्ड” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31464. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844: आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31465. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844: आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31466. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844: आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-मनोविज्ञान, सम्बन्ध

उत्तर: घ. नारी-मनोविज्ञान, सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-मनोविज्ञान, सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 31467. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844: आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-मनोविज्ञान, सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-मनोविज्ञान, सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-मनोविज्ञान, सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31468. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844: आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31469. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844: आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31470. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844: आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31471. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844: आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31472. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844मे आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नारी-मनोविज्ञान, सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3153, सूचकांक पंक्ति 1844मे आभा झाक “पिघलैत हिमखण्ड” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नारी-मनोविज्ञान, सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3154 : विदेह-सदेह 23 — आभा झा: किनये

प्रश्न 31473. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845: आभा झाक “किनये” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किनये

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किनये

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1845मे आभा झाक प्रविष्टि “किनये” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31474. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845: आभा झाक “किनये”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31475. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845: आभा झाक “किनये”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31476. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845: आभा झाक “किनये” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परम्परा, युवा-पीढ़ी

उत्तर: घ. परम्परा, युवा-पीढ़ी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परम्परा, युवा-पीढ़ी” अछि।

प्रश्न 31477. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845: आभा झाक “किनये” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परम्परा, युवा-पीढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परम्परा, युवा-पीढ़ी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परम्परा, युवा-पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31478. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845: आभा झाक “किनये”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31479. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845: आभा झाक “किनये” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31480. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845: आभा झाक “किनये”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31481. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845: आभा झाक “किनये” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31482. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845मे आभा झाक “किनये” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “परम्परा, युवा-पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3154, सूचकांक पंक्ति 1845मे आभा झाक “किनये” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “परम्परा, युवा-पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3155 : विदेह-सदेह 23 — आभा झा: साम्राज्य

प्रश्न 31483. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846: आभा झाक “साम्राज्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साम्राज्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साम्राज्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1846मे आभा झाक प्रविष्टि “साम्राज्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31484. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846: आभा झाक “साम्राज्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31485. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846: आभा झाक “साम्राज्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31486. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846: आभा झाक “साम्राज्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवार, शक्ति-संघर्ष

उत्तर: घ. परिवार, शक्ति-संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवार, शक्ति-संघर्ष” अछि।

प्रश्न 31487. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846: आभा झाक “साम्राज्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिवार, शक्ति-संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवार, शक्ति-संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवार, शक्ति-संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31488. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846: आभा झाक “साम्राज्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31489. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846: आभा झाक “साम्राज्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31490. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846: आभा झाक “साम्राज्य”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31491. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846: आभा झाक “साम्राज्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31492. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846मे आभा झाक “साम्राज्य” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “परिवार, शक्ति-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3155, सूचकांक पंक्ति 1846मे आभा झाक “साम्राज्य” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “परिवार, शक्ति-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3156 : विदेह-सदेह 23 — आभा झा: भरोस

प्रश्न 31493. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847: आभा झाक “भरोस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भरोस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भरोस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1847मे आभा झाक प्रविष्टि “भरोस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31494. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847: आभा झाक “भरोस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31495. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847: आभा झाक “भरोस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31496. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847: आभा झाक “भरोस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विश्वास

उत्तर: घ. विश्वास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विश्वास” अछि।

प्रश्न 31497. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847: आभा झाक “भरोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विश्वास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विश्वास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विश्वास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31498. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847: आभा झाक “भरोस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31499. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847: आभा झाक “भरोस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31500. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847: आभा झाक “भरोस”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31501. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847: आभा झाक “भरोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31502. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847मे आभा झाक “भरोस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “विश्वास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3156, सूचकांक पंक्ति 1847मे आभा झाक “भरोस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “विश्वास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3157 : विदेह-सदेह 23 — आभा झा: नाटक

प्रश्न 31503. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848: आभा झाक “नाटक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1848मे आभा झाक प्रविष्टि “नाटक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31504. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848: आभा झाक “नाटक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31505. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848: आभा झाक “नाटक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31506. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848: आभा झाक “नाटक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 31507. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848: आभा झाक “नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31508. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848: आभा झाक “नाटक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31509. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848: आभा झाक “नाटक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31510. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848: आभा झाक “नाटक”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31511. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848: आभा झाक “नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31512. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848मे आभा झाक “नाटक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3157, सूचकांक पंक्ति 1848मे आभा झाक “नाटक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3158 : विदेह-सदेह 23 — आभा झा: भय

प्रश्न 31513. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849: आभा झाक “भय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1849मे आभा झाक प्रविष्टि “भय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31514. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849: आभा झाक “भय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31515. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849: आभा झाक “भय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31516. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849: आभा झाक “भय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मनोवैज्ञानिक

उत्तर: घ. मनोवैज्ञानिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मनोवैज्ञानिक” अछि।

प्रश्न 31517. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849: आभा झाक “भय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मनोवैज्ञानिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनोवैज्ञानिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनोवैज्ञानिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31518. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849: आभा झाक “भय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31519. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849: आभा झाक “भय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31520. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849: आभा झाक “भय”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31521. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849: आभा झाक “भय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31522. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849मे आभा झाक “भय” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “मनोवैज्ञानिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3158, सूचकांक पंक्ति 1849मे आभा झाक “भय” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “मनोवैज्ञानिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3159 : विदेह-सदेह 23 — आभा झा: विमोचन

प्रश्न 31523. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850: आभा झाक “विमोचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विमोचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विमोचन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1850मे आभा झाक प्रविष्टि “विमोचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31524. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850: आभा झाक “विमोचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31525. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850: आभा झाक “विमोचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31526. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850: आभा झाक “विमोचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वृद्धाश्रम, परिवार

उत्तर: घ. वृद्धाश्रम, परिवार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वृद्धाश्रम, परिवार” अछि।

प्रश्न 31527. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850: आभा झाक “विमोचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वृद्धाश्रम, परिवार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृद्धाश्रम, परिवार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृद्धाश्रम, परिवार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31528. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850: आभा झाक “विमोचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31529. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850: आभा झाक “विमोचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31530. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850: आभा झाक “विमोचन”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31531. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850: आभा झाक “विमोचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31532. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850मे आभा झाक “विमोचन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “वृद्धाश्रम, परिवार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3159, सूचकांक पंक्ति 1850मे आभा झाक “विमोचन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “वृद्धाश्रम, परिवार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3160 : विदेह-सदेह 23 — आभा झा: स्वार्थक रंग

प्रश्न 31533. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851: आभा झाक “स्वार्थक रंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्वार्थक रंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वार्थक रंग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1851मे आभा झाक प्रविष्टि “स्वार्थक रंग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31534. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851: आभा झाक “स्वार्थक रंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31535. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851: आभा झाक “स्वार्थक रंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31536. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851: आभा झाक “स्वार्थक रंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वार्थ, सम्बन्ध

उत्तर: घ. स्वार्थ, सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वार्थ, सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 31537. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851: आभा झाक “स्वार्थक रंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वार्थ, सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वार्थ, सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वार्थ, सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31538. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851: आभा झाक “स्वार्थक रंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31539. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851: आभा झाक “स्वार्थक रंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31540. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851: आभा झाक “स्वार्थक रंग”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31541. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851: आभा झाक “स्वार्थक रंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31542. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851मे आभा झाक “स्वार्थक रंग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “स्वार्थ, सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3160, सूचकांक पंक्ति 1851मे आभा झाक “स्वार्थक रंग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “स्वार्थ, सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3161 : विदेह-सदेह 23 — आभा झा: बौक

प्रश्न 31543. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852: आभा झाक “बौक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बौक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बौक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1852मे आभा झाक प्रविष्टि “बौक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31544. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852: आभा झाक “बौक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31545. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852: आभा झाक “बौक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31546. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852: आभा झाक “बौक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेतक छाया, पारिवारिक दायित्व

उत्तर: घ. प्रेतक छाया, पारिवारिक दायित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेतक छाया, पारिवारिक दायित्व” अछि।

प्रश्न 31547. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852: आभा झाक “बौक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेतक छाया, पारिवारिक दायित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेतक छाया, पारिवारिक दायित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेतक छाया, पारिवारिक दायित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31548. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852: आभा झाक “बौक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31549. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852: आभा झाक “बौक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31550. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852: आभा झाक “बौक”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31551. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852: आभा झाक “बौक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31552. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852मे आभा झाक “बौक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रेतक छाया, पारिवारिक दायित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3161, सूचकांक पंक्ति 1852मे आभा झाक “बौक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रेतक छाया, पारिवारिक दायित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3162 : विदेह-सदेह 23 — श्याम सुन्दर शिश: कतारक मैथिल भेडा चरवाह

प्रश्न 31553. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853: श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कतारक मैथिल भेडा चरवाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतारक मैथिल भेडा चरवाह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1853मे श्याम सुन्दर शिशक प्रविष्टि “कतारक मैथिल भेडा चरवाह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31554. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853: श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31555. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853: श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त / रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त / रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त / रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 31556. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853: श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी-श्रम, कतार, नेपाल-भारत

उत्तर: घ. प्रवासी-श्रम, कतार, नेपाल-भारत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी-श्रम, कतार, नेपाल-भारत” अछि।

प्रश्न 31557. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853: श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी-श्रम, कतार, नेपाल-भारत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी-श्रम, कतार, नेपाल-भारत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी-श्रम, कतार, नेपाल-भारत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31558. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853: श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्याम सुन्दर शिश, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त / रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्याम सुन्दर शिश, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त / रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31559. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853: श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31560. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853: श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त / रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त / रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31561. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853: श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31562. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853मे श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त / रिपोर्ताज आ “प्रवासी-श्रम, कतार, नेपाल-भारत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3162, सूचकांक पंक्ति 1853मे श्याम सुन्दर शिशक “कतारक मैथिल भेडा चरवाह” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त / रिपोर्ताज आ “प्रवासी-श्रम, कतार, नेपाल-भारत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3163 : विदेह-सदेह 23 — उमेश कूमार महतो: बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)

प्रश्न 31563. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854: उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1854मे उमेश कूमार महतोक प्रविष्टि “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31564. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854: उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31565. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854: उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 31566. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854: उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाढ़ि, ग्रामीण जीवन, नेपाल-भारत सीमा

उत्तर: घ. बाढ़ि, ग्रामीण जीवन, नेपाल-भारत सीमा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाढ़ि, ग्रामीण जीवन, नेपाल-भारत सीमा” अछि।

प्रश्न 31567. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854: उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाढ़ि, ग्रामीण जीवन, नेपाल-भारत सीमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाढ़ि, ग्रामीण जीवन, नेपाल-भारत सीमा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाढ़ि, ग्रामीण जीवन, नेपाल-भारत सीमा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31568. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854: उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश कूमार महतो, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश कूमार महतो, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31569. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854: उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31570. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854: उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31571. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854: उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31572. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854मे उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “बाढ़ि, ग्रामीण जीवन, नेपाल-भारत सीमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3163, सूचकांक पंक्ति 1854मे उमेश कूमार महतोक “बाढिक स्थिति (पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज स’ रिपोर्ट)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “बाढ़ि, ग्रामीण जीवन, नेपाल-भारत सीमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3164 : विदेह-सदेह 23 — सुमित आनन्द: भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना

प्रश्न 31573. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855: सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1855मे सुमित आनन्दक प्रविष्टि “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31574. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855: सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31575. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855: सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज / संगोष्ठी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज / संगोष्ठी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज / संगोष्ठी” अछि।

प्रश्न 31576. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855: सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधुबनी, हस्तशिल्प, नेपाल राजदूतावास

उत्तर: घ. मधुबनी, हस्तशिल्प, नेपाल राजदूतावास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुबनी, हस्तशिल्प, नेपाल राजदूतावास” अछि।

प्रश्न 31577. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855: सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मधुबनी, हस्तशिल्प, नेपाल राजदूतावास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुबनी, हस्तशिल्प, नेपाल राजदूतावास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुबनी, हस्तशिल्प, नेपाल राजदूतावास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31578. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855: सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज / संगोष्ठी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज / संगोष्ठी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31579. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855: सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31580. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855: सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज / संगोष्ठीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज / संगोष्ठीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31581. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855: सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31582. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855मे सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज / संगोष्ठी आ “मधुबनी, हस्तशिल्प, नेपाल राजदूतावास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3164, सूचकांक पंक्ति 1855मे सुमित आनन्दक “भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज / संगोष्ठी आ “मधुबनी, हस्तशिल्प, नेपाल राजदूतावास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3165 : विदेह-सदेह 23 — सुभाष कूमार कामत: तनखाह

प्रश्न 31583. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856: सुभाष कूमार कामतक “तनखाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तनखाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तनखाह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1856मे सुभाष कूमार कामतक प्रविष्टि “तनखाह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31584. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856: सुभाष कूमार कामतक “तनखाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31585. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856: सुभाष कूमार कामतक “तनखाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31586. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856: सुभाष कूमार कामतक “तनखाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षा, नेता

उत्तर: घ. शिक्षा, नेता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा, नेता” अछि।

प्रश्न 31587. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856: सुभाष कूमार कामतक “तनखाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षा, नेता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा, नेता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा, नेता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31588. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856: सुभाष कूमार कामतक “तनखाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31589. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856: सुभाष कूमार कामतक “तनखाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31590. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856: सुभाष कूमार कामतक “तनखाह”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31591. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856: सुभाष कूमार कामतक “तनखाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31592. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856मे सुभाष कूमार कामतक “तनखाह” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “शिक्षा, नेता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3165, सूचकांक पंक्ति 1856मे सुभाष कूमार कामतक “तनखाह” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “शिक्षा, नेता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3166 : विदेह-सदेह 23 — सुभाष कूमार कामत: भूख

प्रश्न 31593. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857: सुभाष कूमार कामतक “भूख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भूख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भूख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1857मे सुभाष कूमार कामतक प्रविष्टि “भूख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31594. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857: सुभाष कूमार कामतक “भूख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31595. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857: सुभाष कूमार कामतक “भूख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31596. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857: सुभाष कूमार कामतक “भूख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 31597. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857: सुभाष कूमार कामतक “भूख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31598. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857: सुभाष कूमार कामतक “भूख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31599. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857: सुभाष कूमार कामतक “भूख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31600. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857: सुभाष कूमार कामतक “भूख”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31601. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857: सुभाष कूमार कामतक “भूख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31602. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857मे सुभाष कूमार कामतक “भूख” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3166, सूचकांक पंक्ति 1857मे सुभाष कूमार कामतक “भूख” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3167 : विदेह-सदेह 23 — सुभाष कूमार कामत: बुद्धा पेंशन

प्रश्न 31603. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858: सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुद्धा पेंशन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुद्धा पेंशन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1858मे सुभाष कूमार कामतक प्रविष्टि “बुद्धा पेंशन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31604. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858: सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31605. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858: सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31606. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858: सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य, गरीबी

उत्तर: घ. व्यंग्य, गरीबी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य, गरीबी” अछि।

प्रश्न 31607. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858: सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य, गरीबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य, गरीबी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य, गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31608. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858: सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31609. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858: सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31610. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858: सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31611. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858: सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31612. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858मे सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “व्यंग्य, गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3167, सूचकांक पंक्ति 1858मे सुभाष कूमार कामतक “बुद्धा पेंशन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “व्यंग्य, गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3168 : विदेह-सदेह 23 — सुभाष कूमार कामत: मैथिली

प्रश्न 31613. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859: सुभाष कूमार कामतक “मैथिली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1859मे सुभाष कूमार कामतक प्रविष्टि “मैथिली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31614. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859: सुभाष कूमार कामतक “मैथिली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31615. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859: सुभाष कूमार कामतक “मैथिली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31616. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859: सुभाष कूमार कामतक “मैथिली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा-अधिकार, पहचान

उत्तर: घ. भाषा-अधिकार, पहचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा-अधिकार, पहचान” अछि।

प्रश्न 31617. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859: सुभाष कूमार कामतक “मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा-अधिकार, पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा-अधिकार, पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-अधिकार, पहचान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31618. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859: सुभाष कूमार कामतक “मैथिली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31619. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859: सुभाष कूमार कामतक “मैथिली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31620. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859: सुभाष कूमार कामतक “मैथिली”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31621. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859: सुभाष कूमार कामतक “मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31622. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859मे सुभाष कूमार कामतक “मैथिली” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “भाषा-अधिकार, पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3168, सूचकांक पंक्ति 1859मे सुभाष कूमार कामतक “मैथिली” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “भाषा-अधिकार, पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3169 : विदेह-सदेह 23 — सुभाष कूमार कामत: औंठा

प्रश्न 31623. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860: सुभाष कूमार कामतक “औंठा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. औंठा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. औंठा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1860मे सुभाष कूमार कामतक प्रविष्टि “औंठा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31624. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860: सुभाष कूमार कामतक “औंठा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31625. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860: सुभाष कूमार कामतक “औंठा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31626. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860: सुभाष कूमार कामतक “औंठा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साक्षरता, हस्ताक्षर

उत्तर: घ. साक्षरता, हस्ताक्षर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साक्षरता, हस्ताक्षर” अछि।

प्रश्न 31627. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860: सुभाष कूमार कामतक “औंठा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साक्षरता, हस्ताक्षर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साक्षरता, हस्ताक्षर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साक्षरता, हस्ताक्षर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31628. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860: सुभाष कूमार कामतक “औंठा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31629. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860: सुभाष कूमार कामतक “औंठा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31630. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860: सुभाष कूमार कामतक “औंठा”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31631. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860: सुभाष कूमार कामतक “औंठा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31632. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860मे सुभाष कूमार कामतक “औंठा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “साक्षरता, हस्ताक्षर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3169, सूचकांक पंक्ति 1860मे सुभाष कूमार कामतक “औंठा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “साक्षरता, हस्ताक्षर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3170 : विदेह-सदेह 23 — सुभाष कूमार कामत: मुनाफा

प्रश्न 31633. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861: सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुनाफा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुनाफा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1861मे सुभाष कूमार कामतक प्रविष्टि “मुनाफा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31634. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861: सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31635. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861: सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31636. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861: सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यापार, नैतिकता

उत्तर: घ. व्यापार, नैतिकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यापार, नैतिकता” अछि।

प्रश्न 31637. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861: सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यापार, नैतिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यापार, नैतिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यापार, नैतिकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31638. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861: सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष कूमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31639. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861: सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31640. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861: सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31641. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861: सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31642. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861मे सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “व्यापार, नैतिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3170, सूचकांक पंक्ति 1861मे सुभाष कूमार कामतक “मुनाफा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “व्यापार, नैतिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3171 : विदेह-सदेह 23 — मनोज झा मुक्ति: अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब

प्रश्न 31643. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862: मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1862मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31644. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862: मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31645. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862: मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वैचारिक लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वैचारिक लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “वैचारिक लेख” अछि।

प्रश्न 31646. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862: मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली आन्दोलन, नेपाल-भारत

उत्तर: घ. मैथिली आन्दोलन, नेपाल-भारत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली आन्दोलन, नेपाल-भारत” अछि।

प्रश्न 31647. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862: मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली आन्दोलन, नेपाल-भारत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली आन्दोलन, नेपाल-भारत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली आन्दोलन, नेपाल-भारत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31648. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862: मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31649. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862: मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31650. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862: मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ वैचारिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ वैचारिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31651. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862: मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31652. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862मे मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब” प्रविष्टि गद्य, वैचारिक लेख आ “मैथिली आन्दोलन, नेपाल-भारत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3171, सूचकांक पंक्ति 1862मे मनोज झा मुक्तिक “अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब” प्रविष्टि गद्य, वैचारिक लेख आ “मैथिली आन्दोलन, नेपाल-भारत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3172 : विदेह-सदेह 23 — मनोज झा मुक्ति: निष्कर्षविहीन समेलन !

प्रश्न 31653. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863: मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निष्कर्षविहीन समेलन !

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निष्कर्षविहीन समेलन !

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1863मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “निष्कर्षविहीन समेलन !” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31654. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863: मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31655. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863: मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 31656. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863: मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन

उत्तर: घ. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन” अछि।

प्रश्न 31657. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863: मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31658. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863: मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31659. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863: मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31660. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863: मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31661. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863: मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31662. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863मे मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3172, सूचकांक पंक्ति 1863मे मनोज झा मुक्तिक “निष्कर्षविहीन समेलन !” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3173 : विदेह-सदेह 23 — नवेन्दु कुमार झा: अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब

प्रश्न 31663. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864: नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1864मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31664. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864: नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31665. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864: नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 31666. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864: नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पटना, चेतना समिति

उत्तर: घ. पटना, चेतना समिति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पटना, चेतना समिति” अछि।

प्रश्न 31667. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864: नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पटना, चेतना समिति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पटना, चेतना समिति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पटना, चेतना समिति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31668. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864: नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31669. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864: नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31670. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864: नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31671. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864: नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31672. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864मे नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “पटना, चेतना समिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3173, सूचकांक पंक्ति 1864मे नवेन्दु कुमार झाक “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्ब” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “पटना, चेतना समिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3174 : विदेह-सदेह 23 — सुशांत झा: की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

प्रश्न 31673. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865: सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1865मे सुशांत झाक प्रविष्टि “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31674. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865: सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31675. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865: सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पुरातात्विक / ऐतिहासिक शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पुरातात्विक / ऐतिहासिक शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पुरातात्विक / ऐतिहासिक शोध” अछि।

प्रश्न 31676. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865: सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बलिराजपुर, पालवंश, रामायण

उत्तर: घ. बलिराजपुर, पालवंश, रामायण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बलिराजपुर, पालवंश, रामायण” अछि।

प्रश्न 31677. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865: सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बलिराजपुर, पालवंश, रामायण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बलिराजपुर, पालवंश, रामायण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बलिराजपुर, पालवंश, रामायण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31678. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865: सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा पुरातात्विक / ऐतिहासिक शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा पुरातात्विक / ऐतिहासिक शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31679. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865: सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31680. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865: सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पुरातात्विक / ऐतिहासिक शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पुरातात्विक / ऐतिहासिक शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31681. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865: सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31682. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865मे सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि गद्य, पुरातात्विक / ऐतिहासिक शोध आ “बलिराजपुर, पालवंश, रामायण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3174, सूचकांक पंक्ति 1865मे सुशांत झाक “की बलिराज गढ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि गद्य, पुरातात्विक / ऐतिहासिक शोध आ “बलिराजपुर, पालवंश, रामायण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3175 : विदेह-सदेह 23 — सुशांत झा: मिथिला मंथन

प्रश्न 31683. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866: सुशांत झाक “मिथिला मंथन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला मंथन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला मंथन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1866मे सुशांत झाक प्रविष्टि “मिथिला मंथन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31684. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866: सुशांत झाक “मिथिला मंथन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31685. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866: सुशांत झाक “मिथिला मंथन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वैचारिक लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वैचारिक लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “वैचारिक लेख” अछि।

प्रश्न 31686. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866: सुशांत झाक “मिथिला मंथन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला-विकास, अर्थशास्त्र

उत्तर: घ. मिथिला-विकास, अर्थशास्त्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला-विकास, अर्थशास्त्र” अछि।

प्रश्न 31687. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866: सुशांत झाक “मिथिला मंथन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला-विकास, अर्थशास्त्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला-विकास, अर्थशास्त्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला-विकास, अर्थशास्त्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31688. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866: सुशांत झाक “मिथिला मंथन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31689. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866: सुशांत झाक “मिथिला मंथन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31690. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866: सुशांत झाक “मिथिला मंथन”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ वैचारिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ वैचारिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31691. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866: सुशांत झाक “मिथिला मंथन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31692. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866मे सुशांत झाक “मिथिला मंथन” प्रविष्टि गद्य, वैचारिक लेख आ “मिथिला-विकास, अर्थशास्त्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3175, सूचकांक पंक्ति 1866मे सुशांत झाक “मिथिला मंथन” प्रविष्टि गद्य, वैचारिक लेख आ “मिथिला-विकास, अर्थशास्त्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3176 : विदेह-सदेह 23 — सुभाष साह: लन्दनमै नेपाल मेला २००६

प्रश्न 31693. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867: सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लन्दनमै नेपाल मेला २००६

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लन्दनमै नेपाल मेला २००६

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1867मे सुभाष साहक प्रविष्टि “लन्दनमै नेपाल मेला २००६” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31694. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867: सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31695. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867: सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 31696. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867: सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लन्डन, प्रवासी

उत्तर: घ. लन्डन, प्रवासी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लन्डन, प्रवासी” अछि।

प्रश्न 31697. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867: सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लन्डन, प्रवासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लन्डन, प्रवासी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लन्डन, प्रवासी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31698. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867: सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष साह, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष साह, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31699. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867: सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31700. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867: सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31701. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867: सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31702. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867मे सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “लन्डन, प्रवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3176, सूचकांक पंक्ति 1867मे सुभाष साहक “लन्दनमै नेपाल मेला २००६” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “लन्डन, प्रवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3177 : विदेह-सदेह 23 — हितेन्द्र गुप्ता: आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान

प्रश्न 31703. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868: हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1868मे हितेन्द्र गुप्ताक प्रविष्टि “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31704. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868: हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31705. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868: हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार / टिप्पणी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार / टिप्पणी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार / टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 31706. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868: हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बिहार, मद्य-निषेध

उत्तर: घ. बिहार, मद्य-निषेध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बिहार, मद्य-निषेध” अछि।

प्रश्न 31707. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868: हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बिहार, मद्य-निषेध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहार, मद्य-निषेध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बिहार, मद्य-निषेध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31708. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868: हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हितेन्द्र गुप्ता, विधा गद्य, उप-विधा समाचार / टिप्पणी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हितेन्द्र गुप्ता, विधा गद्य, उप-विधा समाचार / टिप्पणी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31709. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868: हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31710. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868: हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार / टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार / टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31711. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868: हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31712. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868मे हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान” प्रविष्टि गद्य, समाचार / टिप्पणी आ “बिहार, मद्य-निषेध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3177, सूचकांक पंक्ति 1868मे हितेन्द्र गुप्ताक “आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान” प्रविष्टि गद्य, समाचार / टिप्पणी आ “बिहार, मद्य-निषेध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3178 : विदेह-सदेह 23 — गंगेश गुंजन: भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ

प्रश्न 31713. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1869मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31714. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31715. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 31716. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पीढ़ी-संवाद, मैथिली समाज

उत्तर: घ. पीढ़ी-संवाद, मैथिली समाज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पीढ़ी-संवाद, मैथिली समाज” अछि।

प्रश्न 31717. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पीढ़ी-संवाद, मैथिली समाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पीढ़ी-संवाद, मैथिली समाज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पीढ़ी-संवाद, मैथिली समाज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31718. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31719. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31720. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31721. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31722. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869मे गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पीढ़ी-संवाद, मैथिली समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3178, सूचकांक पंक्ति 1869मे गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पीढ़ी-संवाद, मैथिली समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3179 : विदेह-सदेह 23 — गंगेश गुंजन: मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप

प्रश्न 31723. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1870मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31724. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31725. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 31726. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली, कॉरपोरेट, पूँजी-निवेश

उत्तर: घ. मैथिली, कॉरपोरेट, पूँजी-निवेश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली, कॉरपोरेट, पूँजी-निवेश” अछि।

प्रश्न 31727. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली, कॉरपोरेट, पूँजी-निवेश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली, कॉरपोरेट, पूँजी-निवेश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली, कॉरपोरेट, पूँजी-निवेश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31728. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31729. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31730. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31731. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31732. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870मे गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली, कॉरपोरेट, पूँजी-निवेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3179, सूचकांक पंक्ति 1870मे गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उवर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली, कॉरपोरेट, पूँजी-निवेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3180 : विदेह-सदेह 23 — गंगेश गुंजन: किछु एहनो बात विषय

प्रश्न 31733. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु एहनो बात विषय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु एहनो बात विषय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1871मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “किछु एहनो बात विषय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31734. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31735. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 31736. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक नैतिकता

उत्तर: घ. साहित्यिक नैतिकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक नैतिकता” अछि।

प्रश्न 31737. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक नैतिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक नैतिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक नैतिकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31738. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31739. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31740. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31741. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31742. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871मे गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक नैतिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3180, सूचकांक पंक्ति 1871मे गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक नैतिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3181 : विदेह-सदेह 23 — डॉ कैलाश कुमार मिश्र: यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)

प्रश्न 31743. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872: डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1872मे डॉ कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31744. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872: डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31745. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872: डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 31746. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872: डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. असम, डीमासा, जटींगा

उत्तर: घ. असम, डीमासा, जटींगा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “असम, डीमासा, जटींगा” अछि।

प्रश्न 31747. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872: डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. असम, डीमासा, जटींगा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असम, डीमासा, जटींगा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “असम, डीमासा, जटींगा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31748. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872: डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31749. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872: डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31750. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872: डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31751. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872: डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31752. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872मे डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “असम, डीमासा, जटींगा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3181, सूचकांक पंक्ति 1872मे डॉ कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी (नॉर्थ कछार हिल्स)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “असम, डीमासा, जटींगा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3182 : विदेह-सदेह 23 — जितेन्द्र झा: रिपोताज (स्वरक माला गाँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)

प्रश्न 31753. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873: जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गाँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रिपोताज (स्वरक माला गाँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिपोताज (स्वरक माला गाँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1873मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “रिपोताज (स्वरक माला गाँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31754. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873: जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गाँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31755. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873: जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गाँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज / साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज / साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज / साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 31756. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873: जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गाँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अंशुमाला, नेपाल-वान, कोसी बाढ़ि

उत्तर: घ. अंशुमाला, नेपाल-वान, कोसी बाढ़ि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अंशुमाला, नेपाल-वान, कोसी बाढ़ि” अछि।

प्रश्न 31757. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873: जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अंशुमाला, नेपाल-वान, कोसी बाढ़ि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंशुमाला, नेपाल-वान, कोसी बाढ़ि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अंशुमाला, नेपाल-वान, कोसी बाढ़ि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31758. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873: जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज / साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज / साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31759. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873: जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31760. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873: जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज / साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज / साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31761. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873: जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गँिती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31762. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873मे जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गाँ̃ती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज / साक्षात्कार आ “अंशुमाला, नेपाल-वान, कोसी बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3182, सूचकांक पंक्ति 1873मे जितेन्द्र झाक “रिपोताज (स्वरक माला गाँ̃ती अंशु; नेपाल वान टीभी; कोसी)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज / साक्षात्कार आ “अंशुमाला, नेपाल-वान, कोसी बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3183 : विदेह-सदेह 23 — उमेश मण्डल: लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन

प्रश्न 31763. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874: उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1874मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31764. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874: उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31765. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874: उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सन्दर्भ सूची

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सन्दर्भ सूची

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सन्दर्भ सूची” अछि।

प्रश्न 31766. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874: उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाच-पाटी, लोक-कला, मधुबनी-सुपौल-नेपाल

उत्तर: घ. नाच-पाटी, लोक-कला, मधुबनी-सुपौल-नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाच-पाटी, लोक-कला, मधुबनी-सुपौल-नेपाल” अछि।

प्रश्न 31767. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874: उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाच-पाटी, लोक-कला, मधुबनी-सुपौल-नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाच-पाटी, लोक-कला, मधुबनी-सुपौल-नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाच-पाटी, लोक-कला, मधुबनी-सुपौल-नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31768. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874: उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा सन्दर्भ सूची

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा सन्दर्भ सूची

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31769. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874: उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31770. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874: उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सन्दर्भ सूचीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सन्दर्भ सूचीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31771. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874: उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31772. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874मे उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन” प्रविष्टि गद्य, सन्दर्भ सूची आ “नाच-पाटी, लोक-कला, मधुबनी-सुपौल-नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3183, सूचकांक पंक्ति 1874मे उमेश मण्डलक “लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन” प्रविष्टि गद्य, सन्दर्भ सूची आ “नाच-पाटी, लोक-कला, मधुबनी-सुपौल-नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3184 : विदेह-सदेह 23 — उमेश मण्डल: मैथिलीमे ई-पत्रकारिता

प्रश्न 31773. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875: उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीमे ई-पत्रकारिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीमे ई-पत्रकारिता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1875मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31774. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875: उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31775. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875: उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध / इतिहास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध / इतिहास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध / इतिहास” अछि।

प्रश्न 31776. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875: उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह, ब्लॉग, वेबसाइट

उत्तर: घ. विदेह, ब्लॉग, वेबसाइट

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह, ब्लॉग, वेबसाइट” अछि।

प्रश्न 31777. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875: उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह, ब्लॉग, वेबसाइट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह, ब्लॉग, वेबसाइट

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह, ब्लॉग, वेबसाइट” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31778. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875: उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध / इतिहास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध / इतिहास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31779. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875: उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31780. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875: उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध / इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध / इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31781. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875: उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31782. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875मे उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध / इतिहास आ “विदेह, ब्लॉग, वेबसाइट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3184, सूचकांक पंक्ति 1875मे उमेश मण्डलक “मैथिलीमे ई-पत्रकारिता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध / इतिहास आ “विदेह, ब्लॉग, वेबसाइट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3185 : विदेह-सदेह 23 — कीर्तिनाथ झा: लघुकथा-नपुंसक

प्रश्न 31783. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876: कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा-नपुंसक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा-नपुंसक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1876मे कीर्तिनाथ झाक प्रविष्टि “लघुकथा-नपुंसक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31784. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876: कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31785. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876: कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31786. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876: कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन, पलायन

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन, पलायन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन, पलायन” अछि।

प्रश्न 31787. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876: कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवन, पलायन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवन, पलायन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन, पलायन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31788. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876: कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कीर्तिनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कीर्तिनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31789. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876: कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31790. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876: कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31791. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876: कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31792. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876मे कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण जीवन, पलायन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3185, सूचकांक पंक्ति 1876मे कीर्तिनाथ झाक “लघुकथा-नपुंसक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण जीवन, पलायन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3186 : विदेह-सदेह 23 — आनन्द कुमार झा: मैथिलीक वर्तमान रंगमंच

प्रश्न 31793. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877: आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीक वर्तमान रंगमंच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक वर्तमान रंगमंच

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1877मे आनन्द कुमार झाक प्रविष्टि “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31794. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877: आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31795. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877: आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 31796. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877: आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमंच, साहित्य

उत्तर: घ. रंगमंच, साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमंच, साहित्य” अछि।

प्रश्न 31797. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877: आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमंच, साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमंच, साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमंच, साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31798. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877: आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31799. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877: आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31800. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877: आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31801. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877: आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31802. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877मे आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रंगमंच, साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3186, सूचकांक पंक्ति 1877मे आनन्द कुमार झाक “मैथिलीक वर्तमान रंगमंच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रंगमंच, साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3187 : विदेह-सदेह 23 — आनन्द कुमार झा: धर्मिता आ स्वतन्त्रता

प्रश्न 31803. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878: आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. धर्मिता आ स्वतन्त्रता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धर्मिता आ स्वतन्त्रता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1878मे आनन्द कुमार झाक प्रविष्टि “धर्मिता आ स्वतन्त्रता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31804. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878: आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31805. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878: आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 31806. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878: आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमंच-दर्शन

उत्तर: घ. रंगमंच-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमंच-दर्शन” अछि।

प्रश्न 31807. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878: आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमंच-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमंच-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमंच-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31808. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878: आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31809. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878: आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31810. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878: आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31811. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878: आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31812. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878मे आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रंगमंच-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3187, सूचकांक पंक्ति 1878मे आनन्द कुमार झाक “धर्मिता आ स्वतन्त्रता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रंगमंच-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3188 : विदेह-सदेह 23 — आनन्द कुमार झा: मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच

प्रश्न 31813. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879: आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1879मे आनन्द कुमार झाक प्रविष्टि “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31814. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879: आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31815. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879: आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 31816. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879: आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण-रंगमंच

उत्तर: घ. ग्रामीण-रंगमंच

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण-रंगमंच” अछि।

प्रश्न 31817. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879: आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण-रंगमंच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण-रंगमंच

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण-रंगमंच” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31818. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879: आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31819. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879: आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31820. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879: आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच”कें विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31821. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879: आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31822. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879मे आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ग्रामीण-रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3188, सूचकांक पंक्ति 1879मे आनन्द कुमार झाक “मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ग्रामीण-रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3189 : विदेह-सदेह 23 — आनन्द कुमार झा: कने हंसि लिअ

प्रश्न 31823. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880: आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कने हंसि लिअ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कने हंसि लिअ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1880मे आनन्द कुमार झाक प्रविष्टि “कने हंसि लिअ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31824. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880: आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31825. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880: आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 31826. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880: आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य, डिजिटल गोष्ठी

उत्तर: घ. हास्य, डिजिटल गोष्ठी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य, डिजिटल गोष्ठी” अछि।

प्रश्न 31827. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880: आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य, डिजिटल गोष्ठी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य, डिजिटल गोष्ठी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य, डिजिटल गोष्ठी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31828. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880: आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31829. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880: आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31830. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880: आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31831. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880: आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31832. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880मे आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “हास्य, डिजिटल गोष्ठी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3189, सूचकांक पंक्ति 1880मे आनन्द कुमार झाक “कने हंसि लिअ” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “हास्य, डिजिटल गोष्ठी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3190 : विदेह-सदेह 23 — आनन्द कुमार झा: एक बाल नाटक- बोलूक बेदना

प्रश्न 31833. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881: आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एक बाल नाटक- बोलूक बेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक बाल नाटक- बोलूक बेदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1881मे आनन्द कुमार झाक प्रविष्टि “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31834. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881: आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31835. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881: आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-नाटक” अछि।

प्रश्न 31836. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881: आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-श्रम, शिक्षा

उत्तर: घ. बाल-श्रम, शिक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-श्रम, शिक्षा” अछि।

प्रश्न 31837. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881: आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-श्रम, शिक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-श्रम, शिक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-श्रम, शिक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31838. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881: आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा बाल-नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा बाल-नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31839. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881: आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31840. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881: आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31841. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881: आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31842. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881मे आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना” प्रविष्टि गद्य, बाल-नाटक आ “बाल-श्रम, शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3190, सूचकांक पंक्ति 1881मे आनन्द कुमार झाक “एक बाल नाटक- बोलूक बेदना” प्रविष्टि गद्य, बाल-नाटक आ “बाल-श्रम, शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3191 : विदेह-सदेह 23 — नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार): तीन खेपमे (रचना-संकलन)

प्रश्न 31843. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882: नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तीन खेपमे (रचना-संकलन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीन खेपमे (रचना-संकलन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1882मे नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क प्रविष्टि “तीन खेपमे (रचना-संकलन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31844. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882: नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31845. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882: नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा / संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा / संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा / संस्मरण” अछि।

प्रश्न 31846. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882: नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोलकाता, साहित्यकार-जीवन

उत्तर: घ. कोलकाता, साहित्यकार-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोलकाता, साहित्यकार-जीवन” अछि।

प्रश्न 31847. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882: नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोलकाता, साहित्यकार-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोलकाता, साहित्यकार-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोलकाता, साहित्यकार-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31848. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882: नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार), विधा गद्य, उप-विधा कथा / संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार), विधा गद्य, उप-विधा कथा / संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31849. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882: नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31850. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882: नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा / संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा / संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31851. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882: नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31852. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882मे नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)” प्रविष्टि गद्य, कथा / संस्मरण आ “कोलकाता, साहित्यकार-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3191, सूचकांक पंक्ति 1882मे नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति: आशीष अनचिन्हार)क “तीन खेपमे (रचना-संकलन)” प्रविष्टि गद्य, कथा / संस्मरण आ “कोलकाता, साहित्यकार-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3192 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: पत्नीभक्त

प्रश्न 31853. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883: आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पत्नीभक्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्नीभक्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1883मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “पत्नीभक्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31854. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883: आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31855. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883: आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31856. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883: आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 31857. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883: आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31858. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883: आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31859. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883: आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31860. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883: आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31861. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883: आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31862. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883मे आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3192, सूचकांक पंक्ति 1883मे आशीष अनचिन्हारक “पत्नीभक्त” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3193 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: अंतर

प्रश्न 31863. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884: आशीष अनचिन्हारक “अंतर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अंतर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंतर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1884मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “अंतर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31864. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884: आशीष अनचिन्हारक “अंतर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31865. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884: आशीष अनचिन्हारक “अंतर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31866. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884: आशीष अनचिन्हारक “अंतर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दाम्पत्य

उत्तर: घ. दाम्पत्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दाम्पत्य” अछि।

प्रश्न 31867. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884: आशीष अनचिन्हारक “अंतर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दाम्पत्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दाम्पत्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दाम्पत्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31868. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884: आशीष अनचिन्हारक “अंतर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31869. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884: आशीष अनचिन्हारक “अंतर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31870. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884: आशीष अनचिन्हारक “अंतर”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31871. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884: आशीष अनचिन्हारक “अंतर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31872. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884मे आशीष अनचिन्हारक “अंतर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दाम्पत्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3193, सूचकांक पंक्ति 1884मे आशीष अनचिन्हारक “अंतर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दाम्पत्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3194 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: लक्ष्मी

प्रश्न 31873. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885: आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लक्ष्मी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लक्ष्मी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1885मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “लक्ष्मी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31874. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885: आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31875. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885: आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31876. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885: आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज

उत्तर: घ. दहेज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज” अछि।

प्रश्न 31877. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885: आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31878. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885: आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31879. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885: आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31880. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885: आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31881. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885: आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31882. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885मे आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दहेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3194, सूचकांक पंक्ति 1885मे आशीष अनचिन्हारक “लक्ष्मी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दहेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3195 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: खाए बला पाटी

प्रश्न 31883. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886: आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खाए बला पाटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खाए बला पाटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1886मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “खाए बला पाटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31884. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886: आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31885. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886: आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31886. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886: आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीति

उत्तर: घ. राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीति” अछि।

प्रश्न 31887. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886: आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31888. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886: आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31889. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886: आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31890. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886: आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31891. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886: आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31892. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886मे आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3195, सूचकांक पंक्ति 1886मे आशीष अनचिन्हारक “खाए बला पाटी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3196 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: भविष्य

प्रश्न 31893. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887: आशीष अनचिन्हारक “भविष्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भविष्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भविष्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1887मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “भविष्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31894. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887: आशीष अनचिन्हारक “भविष्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31895. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887: आशीष अनचिन्हारक “भविष्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31896. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887: आशीष अनचिन्हारक “भविष्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षा-संस्कार

उत्तर: घ. शिक्षा-संस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा-संस्कार” अछि।

प्रश्न 31897. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887: आशीष अनचिन्हारक “भविष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षा-संस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा-संस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा-संस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31898. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887: आशीष अनचिन्हारक “भविष्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31899. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887: आशीष अनचिन्हारक “भविष्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31900. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887: आशीष अनचिन्हारक “भविष्य”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31901. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887: आशीष अनचिन्हारक “भविष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31902. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887मे आशीष अनचिन्हारक “भविष्य” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “शिक्षा-संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3196, सूचकांक पंक्ति 1887मे आशीष अनचिन्हारक “भविष्य” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “शिक्षा-संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3197 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: प्रतिभाशाली

प्रश्न 31903. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888: आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रतिभाशाली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतिभाशाली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1888मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “प्रतिभाशाली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31904. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888: आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31905. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888: आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31906. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888: आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यकार-जीवन

उत्तर: घ. साहित्यकार-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यकार-जीवन” अछि।

प्रश्न 31907. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888: आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यकार-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यकार-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यकार-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31908. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888: आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31909. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888: आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31910. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888: आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31911. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888: आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31912. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888मे आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “साहित्यकार-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3197, सूचकांक पंक्ति 1888मे आशीष अनचिन्हारक “प्रतिभाशाली” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “साहित्यकार-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3198 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: सोति

प्रश्न 31913. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889: आशीष अनचिन्हारक “सोति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सोति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सोति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1889मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “सोति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31914. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889: आशीष अनचिन्हारक “सोति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31915. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889: आशीष अनचिन्हारक “सोति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31916. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889: आशीष अनचिन्हारक “सोति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जाति

उत्तर: घ. जाति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जाति” अछि।

प्रश्न 31917. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889: आशीष अनचिन्हारक “सोति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जाति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31918. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889: आशीष अनचिन्हारक “सोति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31919. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889: आशीष अनचिन्हारक “सोति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31920. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889: आशीष अनचिन्हारक “सोति”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31921. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889: आशीष अनचिन्हारक “सोति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31922. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889मे आशीष अनचिन्हारक “सोति” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “जाति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3198, सूचकांक पंक्ति 1889मे आशीष अनचिन्हारक “सोति” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “जाति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3199 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: मतलब

प्रश्न 31923. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890: आशीष अनचिन्हारक “मतलब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मतलब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मतलब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1890मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “मतलब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31924. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890: आशीष अनचिन्हारक “मतलब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31925. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890: आशीष अनचिन्हारक “मतलब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31926. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890: आशीष अनचिन्हारक “मतलब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अभियान

उत्तर: घ. अभियान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अभियान” अछि।

प्रश्न 31927. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890: आशीष अनचिन्हारक “मतलब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अभियान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभियान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अभियान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31928. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890: आशीष अनचिन्हारक “मतलब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31929. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890: आशीष अनचिन्हारक “मतलब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31930. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890: आशीष अनचिन्हारक “मतलब”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31931. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890: आशीष अनचिन्हारक “मतलब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31932. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890मे आशीष अनचिन्हारक “मतलब” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “अभियान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3199, सूचकांक पंक्ति 1890मे आशीष अनचिन्हारक “मतलब” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “अभियान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3200 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: नकं

प्रश्न 31933. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891: आशीष अनचिन्हारक “नकं” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नकं

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नकं

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1891मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “नकं” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31934. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891: आशीष अनचिन्हारक “नकं”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31935. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891: आशीष अनचिन्हारक “नकं”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31936. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891: आशीष अनचिन्हारक “नकं” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भोजन, नैतिकता

उत्तर: घ. भोजन, नैतिकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भोजन, नैतिकता” अछि।

प्रश्न 31937. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891: आशीष अनचिन्हारक “नकं” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भोजन, नैतिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोजन, नैतिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोजन, नैतिकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31938. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891: आशीष अनचिन्हारक “नकं”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31939. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891: आशीष अनचिन्हारक “नकं” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31940. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891: आशीष अनचिन्हारक “नकं”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31941. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891: आशीष अनचिन्हारक “नकं” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31942. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891मे आशीष अनचिन्हारक “नकं” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “भोजन, नैतिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3200, सूचकांक पंक्ति 1891मे आशीष अनचिन्हारक “नकं” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “भोजन, नैतिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3201 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: सपना आ भ्रम

प्रश्न 31943. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892: आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सपना आ भ्रम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सपना आ भ्रम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1892मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “सपना आ भ्रम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31944. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892: आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31945. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892: आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31946. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892: आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक, अस्तित्व

उत्तर: घ. दार्शनिक, अस्तित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक, अस्तित्व” अछि।

प्रश्न 31947. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892: आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक, अस्तित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक, अस्तित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक, अस्तित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31948. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892: आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31949. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892: आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31950. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892: आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31951. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892: आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31952. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892मे आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दार्शनिक, अस्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3201, सूचकांक पंक्ति 1892मे आशीष अनचिन्हारक “सपना आ भ्रम” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दार्शनिक, अस्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3202 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: घर

प्रश्न 31953. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893: आशीष अनचिन्हारक “घर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1893मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “घर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31954. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893: आशीष अनचिन्हारक “घर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31955. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893: आशीष अनचिन्हारक “घर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 31956. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893: आशीष अनचिन्हारक “घर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतीकात्मक

उत्तर: घ. प्रतीकात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीकात्मक” अछि।

प्रश्न 31957. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893: आशीष अनचिन्हारक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रतीकात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतीकात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31958. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893: आशीष अनचिन्हारक “घर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31959. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893: आशीष अनचिन्हारक “घर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31960. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893: आशीष अनचिन्हारक “घर”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31961. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893: आशीष अनचिन्हारक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31962. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893मे आशीष अनचिन्हारक “घर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3202, सूचकांक पंक्ति 1893मे आशीष अनचिन्हारक “घर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3203 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे

प्रश्न 31963. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894: आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1894मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31964. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894: आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31965. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894: आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 31966. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894: आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल, बहर, दुष्यंत कुमार

उत्तर: घ. गजल, बहर, दुष्यंत कुमार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल, बहर, दुष्यंत कुमार” अछि।

प्रश्न 31967. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894: आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल, बहर, दुष्यंत कुमार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल, बहर, दुष्यंत कुमार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल, बहर, दुष्यंत कुमार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31968. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894: आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31969. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894: आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31970. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894: आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31971. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894: आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31972. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894मे आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “गजल, बहर, दुष्यंत कुमार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3203, सूचकांक पंक्ति 1894मे आशीष अनचिन्हारक “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “गजल, बहर, दुष्यंत कुमार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3204 : विदेह-सदेह 23 — प्रभाष अकिंचन: धरलिफ

प्रश्न 31973. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895: प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. धरलिफ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धरलिफ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1895मे प्रभाष अकिंचनक प्रविष्टि “धरलिफ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31974. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895: प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31975. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895: प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31976. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895: प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाढ़ि-पीड़ित

उत्तर: घ. बाढ़ि-पीड़ित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाढ़ि-पीड़ित” अछि।

प्रश्न 31977. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895: प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाढ़ि-पीड़ित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाढ़ि-पीड़ित

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाढ़ि-पीड़ित” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31978. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895: प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रभाष अकिंचन, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रभाष अकिंचन, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31979. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895: प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31980. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895: प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31981. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895: प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31982. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895मे प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बाढ़ि-पीड़ित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3204, सूचकांक पंक्ति 1895मे प्रभाष अकिंचनक “धरलिफ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बाढ़ि-पीड़ित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3205 : विदेह-सदेह 23 — प्रभाष अकिंचन: जतरा

प्रश्न 31983. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896: प्रभाष अकिंचनक “जतरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जतरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जतरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1896मे प्रभाष अकिंचनक प्रविष्टि “जतरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31984. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896: प्रभाष अकिंचनक “जतरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31985. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896: प्रभाष अकिंचनक “जतरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 31986. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896: प्रभाष अकिंचनक “जतरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी, भोजन

उत्तर: घ. गरीबी, भोजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी, भोजन” अछि।

प्रश्न 31987. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896: प्रभाष अकिंचनक “जतरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी, भोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी, भोजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी, भोजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31988. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896: प्रभाष अकिंचनक “जतरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रभाष अकिंचन, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रभाष अकिंचन, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31989. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896: प्रभाष अकिंचनक “जतरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 31990. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896: प्रभाष अकिंचनक “जतरा”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 31991. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896: प्रभाष अकिंचनक “जतरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 31992. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896मे प्रभाष अकिंचनक “जतरा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “गरीबी, भोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3205, सूचकांक पंक्ति 1896मे प्रभाष अकिंचनक “जतरा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “गरीबी, भोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3206 : विदेह-सदेह 23 — पूनम मण्डल: टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११

प्रश्न 31993. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897: पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1897मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 31994. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897: पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 31995. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897: पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 31996. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897: पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डल

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डल” अछि।

प्रश्न 31997. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897: पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 31998. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897: पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 31999. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897: पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32000. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897: पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड 3206 : विदेह-सदेह 23 — पूनम मण्डल: टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११

प्रश्न 32001. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897: पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32002. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897मे पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “जगदीश प्रसाद मण्डल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3206, सूचकांक पंक्ति 1897मे पूनम मण्डलक “टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “जगदीश प्रसाद मण्डल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3207 : विदेह-सदेह 23 — मीना झा: मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह

प्रश्न 32003. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898: मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1898मे मीना झाक प्रविष्टि “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32004. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898: मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32005. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898: मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 32006. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898: मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लन्डन, डॉ. नेफालिका झा

उत्तर: घ. लन्डन, डॉ. नेफालिका झा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लन्डन, डॉ. नेफालिका झा” अछि।

प्रश्न 32007. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898: मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लन्डन, डॉ. नेफालिका झा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लन्डन, डॉ. नेफालिका झा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लन्डन, डॉ. नेफालिका झा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32008. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898: मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मीना झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मीना झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32009. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898: मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32010. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898: मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32011. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898: मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32012. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898मे मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “लन्डन, डॉ. नेफालिका झा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3207, सूचकांक पंक्ति 1898मे मीना झाक “मैथिल समाज ऑफ यु. के. केर तेसर वार्षिक समारोह” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “लन्डन, डॉ. नेफालिका झा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3208 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: परंपरा

प्रश्न 32013. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899: प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परंपरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परंपरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1899मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “परंपरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32014. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899: प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32015. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899: प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32016. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899: प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक मूल्य

उत्तर: घ. सामाजिक मूल्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक मूल्य” अछि।

प्रश्न 32017. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899: प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक मूल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक मूल्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक मूल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32018. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899: प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32019. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899: प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32020. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899: प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32021. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899: प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32022. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899मे प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सामाजिक मूल्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3208, सूचकांक पंक्ति 1899मे प्रियंवदा तारा झाक “परंपरा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सामाजिक मूल्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3209 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: अजगुत

प्रश्न 32023. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900: प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अजगुत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अजगुत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1900मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “अजगुत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32024. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900: प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32025. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900: प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32026. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900: प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृषि-कानून

उत्तर: घ. कृषि-कानून

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृषि-कानून” अछि।

प्रश्न 32027. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900: प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृषि-कानून

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृषि-कानून

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृषि-कानून” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32028. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900: प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32029. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900: प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32030. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900: प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत”कें विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32031. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900: प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32032. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900मे प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कृषि-कानून” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3209, सूचकांक पंक्ति 1900मे प्रियंवदा तारा झाक “अजगुत” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कृषि-कानून” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3210 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: मोनक गप्प

प्रश्न 32033. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901: प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मोनक गप्प

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोनक गप्प

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1901मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “मोनक गप्प” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32034. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901: प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32035. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901: प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32036. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901: प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-जीवन

उत्तर: घ. नारी-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-जीवन” अछि।

प्रश्न 32037. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901: प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32038. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901: प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32039. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901: प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32040. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901: प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32041. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901: प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32042. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901मे प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नारी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3210, सूचकांक पंक्ति 1901मे प्रियंवदा तारा झाक “मोनक गप्प” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नारी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3211 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: पर उपदेस कुसल बहुतेरे

प्रश्न 32043. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902: प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पर उपदेस कुसल बहुतेरे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पर उपदेस कुसल बहुतेरे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1902मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “पर उपदेस कुसल बहुतेरे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32044. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902: प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32045. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902: प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32046. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902: प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य, उपदेश

उत्तर: घ. व्यंग्य, उपदेश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य, उपदेश” अछि।

प्रश्न 32047. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902: प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य, उपदेश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य, उपदेश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य, उपदेश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32048. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902: प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32049. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902: प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32050. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902: प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32051. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902: प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32052. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902मे प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “व्यंग्य, उपदेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3211, सूचकांक पंक्ति 1902मे प्रियंवदा तारा झाक “पर उपदेस कुसल बहुतेरे” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “व्यंग्य, उपदेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3212 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: सम्मान

प्रश्न 32053. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903: प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सम्मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्मान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1903मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “सम्मान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32054. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903: प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32055. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903: प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32056. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903: प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माता-पिता

उत्तर: घ. माता-पिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माता-पिता” अछि।

प्रश्न 32057. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903: प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माता-पिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माता-पिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माता-पिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32058. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903: प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32059. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903: प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32060. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903: प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32061. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903: प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32062. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903मे प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “माता-पिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3212, सूचकांक पंक्ति 1903मे प्रियंवदा तारा झाक “सम्मान” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “माता-पिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3213 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: स्वाभिमान

प्रश्न 32063. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904: प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्वाभिमान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वाभिमान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1904मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “स्वाभिमान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32064. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904: प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32065. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904: प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32066. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904: प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज

उत्तर: घ. दहेज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज” अछि।

प्रश्न 32067. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904: प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32068. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904: प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32069. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904: प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32070. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904: प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32071. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904: प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32072. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904मे प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दहेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3213, सूचकांक पंक्ति 1904मे प्रियंवदा तारा झाक “स्वाभिमान” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दहेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3214 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: की बुझबै

प्रश्न 32073. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905: प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की बुझबै

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की बुझबै

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1905मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “की बुझबै” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32074. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905: प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32075. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905: प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32076. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905: प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दाम्पत्य-संवाद

उत्तर: घ. दाम्पत्य-संवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दाम्पत्य-संवाद” अछि।

प्रश्न 32077. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905: प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दाम्पत्य-संवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दाम्पत्य-संवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दाम्पत्य-संवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32078. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905: प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32079. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905: प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32080. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905: प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32081. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905: प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32082. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905मे प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दाम्पत्य-संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3214, सूचकांक पंक्ति 1905मे प्रियंवदा तारा झाक “की बुझबै” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दाम्पत्य-संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3215 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: दूरक ढोल सोहाओन

प्रश्न 32083. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906: प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दूरक ढोल सोहाओन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दूरक ढोल सोहाओन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1906मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “दूरक ढोल सोहाओन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32084. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906: प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32085. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906: प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32086. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906: प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक

उत्तर: घ. पारिवारिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक” अछि।

प्रश्न 32087. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906: प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32088. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906: प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32089. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906: प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32090. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906: प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32091. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906: प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32092. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906मे प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3215, सूचकांक पंक्ति 1906मे प्रियंवदा तारा झाक “दूरक ढोल सोहाओन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3216 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: विकल्प

प्रश्न 32093. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907: प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विकल्प

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विकल्प

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1907मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “विकल्प” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32094. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907: प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32095. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907: प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32096. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907: प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-अधिकार

उत्तर: घ. नारी-अधिकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-अधिकार” अछि।

प्रश्न 32097. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907: प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-अधिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-अधिकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-अधिकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32098. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907: प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32099. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907: प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32100. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907: प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32101. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907: प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32102. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907मे प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नारी-अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3216, सूचकांक पंक्ति 1907मे प्रियंवदा तारा झाक “विकल्प” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नारी-अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3217 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: वापसी

प्रश्न 32103. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908: प्रियंवदा तारा झाक “वापसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वापसी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वापसी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1908मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “वापसी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32104. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908: प्रियंवदा तारा झाक “वापसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32105. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908: प्रियंवदा तारा झाक “वापसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32106. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908: प्रियंवदा तारा झाक “वापसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवास, परिवार

उत्तर: घ. प्रवास, परिवार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवास, परिवार” अछि।

प्रश्न 32107. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908: प्रियंवदा तारा झाक “वापसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवास, परिवार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवास, परिवार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवास, परिवार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32108. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908: प्रियंवदा तारा झाक “वापसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32109. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908: प्रियंवदा तारा झाक “वापसी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32110. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908: प्रियंवदा तारा झाक “वापसी”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32111. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908: प्रियंवदा तारा झाक “वापसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32112. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908मे प्रियंवदा तारा झाक “वापसी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रवास, परिवार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3217, सूचकांक पंक्ति 1908मे प्रियंवदा तारा झाक “वापसी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रवास, परिवार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3218 : विदेह-सदेह 23 — संतोष कुमार राय 'बटोही': गाम

प्रश्न 32113. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1909मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क प्रविष्टि "गाम" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32114. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32115. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा / संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा / संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कथा / संस्मरण" अछि।

प्रश्न 32116. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण-जीवन, पंचायत

उत्तर: घ. ग्रामीण-जीवन, पंचायत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "ग्रामीण-जीवन, पंचायत" अछि।

प्रश्न 32117. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम" प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण-जीवन, पंचायत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण-जीवन, पंचायत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "ग्रामीण-जीवन, पंचायत" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32118. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा गद्य, उप-विधा कथा / संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा गद्य, उप-विधा कथा / संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32119. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32120. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम"केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा / संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा / संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32121. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम" प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32122. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम" प्रविष्टि गद्य, कथा / संस्मरण आ "ग्रामीण-जीवन, पंचायत" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3218, सूचकांक पंक्ति 1909मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गाम" प्रविष्टि गद्य, कथा / संस्मरण आ "ग्रामीण-जीवन, पंचायत" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3219 : विदेह-सदेह 23 — डॉ. अपर्णा: नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना

प्रश्न 32123. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910: डॉ. अपर्णाक "नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1910मे डॉ. अपर्णाक प्रविष्टि "नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32124. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910: डॉ. अपर्णाक “नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32125. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910: डॉ. अपर्णाक “नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 32126. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910: डॉ. अपर्णाक “नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषाशास्त्र, स्त्री-विमर्श

उत्तर: घ. भाषाशास्त्र, स्त्री-विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषाशास्त्र, स्त्री-विमर्श” अछि।

प्रश्न 32127. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910: डॉ. अपर्णाक “नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषाशास्त्र, स्त्री-विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषाशास्त्र, स्त्री-विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषाशास्त्र, स्त्री-विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32128. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910: डॉ. अपर्णाक “नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अपर्णा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अपर्णा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32129. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910: डॉ. अपर्णाक “नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32130. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910: डॉ. अपर्णाक “नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना”कें विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32131. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910: डॉ. अपर्णाक “नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32132. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910मे डॉ. अपर्णाक “नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “भाषाशास्त्र, स्त्री-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3219, सूचकांक पंक्ति 1910मे डॉ. अपर्णाक “नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “भाषाशास्त्र, स्त्री-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3220 : विदेह-सदेह 23 — डॉ. अपर्णा: रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’

प्रश्न 32133. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1911मे डॉ. अपर्णाक प्रविष्टि “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32134. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32135. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 32136. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लालदास, रामायण

उत्तर: घ. लालदास, रामायण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लालदास, रामायण” अछि।

प्रश्न 32137. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लालदास, रामायण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लालदास, रामायण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लालदास, रामायण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32138. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अपर्णा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अपर्णा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32139. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32140. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32141. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32142. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911मे डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “लालदास, रामायण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3220, सूचकांक पंक्ति 1911मे डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे ‘कौसल्या’” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “लालदास, रामायण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3221 : विदेह-सदेह 23 — डॉ. अपर्णा: रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता

प्रश्न 32143. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1912मे डॉ. अपर्णाक प्रविष्टि “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32144. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32145. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 32146. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शाक्त-मत, सीता

उत्तर: घ. शाक्त-मत, सीता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शाक्त-मत, सीता” अछि।

प्रश्न 32147. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शाक्त-मत, सीता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शाक्त-मत, सीता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शाक्त-मत, सीता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32148. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अपर्णा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अपर्णा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32149. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32150. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32151. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912: डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32152. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912मे डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “शाक्त-मत, सीता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3221, सूचकांक पंक्ति 1912मे डॉ. अपर्णाक “रमेश्वर चरित मिथिला रामायणे पुष्कर काण्डक विशेषता” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “शाक्त-मत, सीता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3222 : विदेह-सदेह 23 — डॉ. अपर्णा: लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन

प्रश्न 32153. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913: डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1913मे डॉ. अपर्णाक प्रविष्टि “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32154. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913: डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32155. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913: डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 32156. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913: डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकाचार, विवाह

उत्तर: घ. लोकाचार, विवाह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकाचार, विवाह” अछि।

प्रश्न 32157. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913: डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकाचार, विवाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकाचार, विवाह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकाचार, विवाह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32158. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913: डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अपर्णा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अपर्णा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32159. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913: डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32160. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913: डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32161. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913: डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32162. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913मे डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “लोकाचार, विवाह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3222, सूचकांक पंक्ति 1913मे डॉ. अपर्णाक “लालदासक रामायणे विधि-व्यवहारक वर्णन” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “लोकाचार, विवाह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3223 : विदेह-सदेह 23 — डॉ. चितलेखा: मिथिलामे गीत नादक महत्व

प्रश्न 32163. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलामे गीत नादक महत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलामे गीत नादक महत्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1914मे डॉ. चितलेखाक प्रविष्टि “मिथिलामे गीत नादक महत्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32164. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32165. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 32166. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत, संस्कार

उत्तर: घ. लोकगीत, संस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत, संस्कार” अछि।

प्रश्न 32167. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत, संस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत, संस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत, संस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32168. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32169. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32170. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32171. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32172. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “लोकगीत, संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3223, सूचकांक पंक्ति 1914मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे गीत नादक महत्व” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “लोकगीत, संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3224 : विदेह-सदेह 23 — डॉ. चितलेखा: मिथिलामे पावनि-तिहार

प्रश्न 32173. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलामे पावनि-तिहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलामे पावनि-तिहार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1915मे डॉ. चितलेखाक प्रविष्टि “मिथिलामे पावनि-तिहार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32174. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32175. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 32176. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पर्व-त्योहार

उत्तर: घ. पर्व-त्योहार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्व-त्योहार” अछि।

प्रश्न 32177. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पर्व-त्योहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पर्व-त्योहार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पर्व-त्योहार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32178. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32179. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32180. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32181. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915: डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32182. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “पर्व-त्योहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3224, सूचकांक पंक्ति 1915मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलामे पावनि-तिहार” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “पर्व-त्योहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3225 : विदेह-सदेह 23 — डॉ. चितलेखा: मिथिलाक परिचय

प्रश्न 32183. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक परिचय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1916मे डॉ. चितलेखाक प्रविष्टि “मिथिलाक परिचय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32184. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32185. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 32186. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इतिहास, भूगोल

उत्तर: घ. इतिहास, भूगोल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इतिहास, भूगोल” अछि।

प्रश्न 32187. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. इतिहास, भूगोल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इतिहास, भूगोल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इतिहास, भूगोल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32188. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32189. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32190. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32191. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32192. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “इतिहास, भूगोल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3225, सूचकांक पंक्ति 1916मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक परिचय” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “इतिहास, भूगोल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3226 : विदेह-सदेह 23 — डॉ. चितलेखा: मिथिलाक भाषा एवं साहित्य

प्रश्न 32193. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक भाषा एवं साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक भाषा एवं साहित्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1917मे डॉ. चितलेखाक प्रविष्टि “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32194. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32195. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 32196. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बोली, केन्द्रीय-मैथिली

उत्तर: घ. बोली, केन्द्रीय-मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बोली, केन्द्रीय-मैथिली” अछि।

प्रश्न 32197. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बोली, केन्द्रीय-मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बोली, केन्द्रीय-मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बोली, केन्द्रीय-मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32198. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32199. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32200. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32201. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32202. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “बोली, केन्द्रीय-मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3226, सूचकांक पंक्ति 1917मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक भाषा एवं साहित्य” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “बोली, केन्द्रीय-मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3227 : विदेह-सदेह 23 — डॉ. चितलेखा: मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव

प्रश्न 32203. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1918मे डॉ. चितलेखाक प्रविष्टि “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32204. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32205. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 32206. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह, तिरहुत

उत्तर: घ. विदेह, तिरहुत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह, तिरहुत” अछि।

प्रश्न 32207. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह, तिरहुत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह, तिरहुत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह, तिरहुत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32208. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32209. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32210. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32211. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32212. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “विदेह, तिरहुत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3227, सूचकांक पंक्ति 1918मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “विदेह, तिरहुत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3228 : विदेह-सदेह 23 — डॉ. चितलेखा: मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा

प्रश्न 32213. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1919मे डॉ. चितलेखाक प्रविष्टि “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32214. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32215. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 32216. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-पर्व, गीत

उत्तर: घ. लोक-पर्व, गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-पर्व, गीत” अछि।

प्रश्न 32217. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-पर्व, गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-पर्व, गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-पर्व, गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32218. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. चितलेखा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32219. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32220. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32221. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919: डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32222. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “लोक-पर्व, गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3228, सूचकांक पंक्ति 1919मे डॉ. चितलेखाक “मिथिलाक प्रसिद्ध लोक पर्व सामा-चकेबा” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “लोक-पर्व, गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3229 : विदेह-सदेह 23 — अमरेश कुमार लाभ: लेबलीटिये बड़ड छिन्ह

प्रश्न 32223. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920: अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लेबलीटिये बड़ड छिन्ह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेबलीटिये बड़ड छिन्ह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1920मे अमरेश कुमार लाभक प्रविष्टि “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32224. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920: अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32225. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920: अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32226. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920: अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह, दायित्व

उत्तर: घ. विवाह, दायित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह, दायित्व” अछि।

प्रश्न 32227. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920: अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाह, दायित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाह, दायित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह, दायित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32228. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920: अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरेश कुमार लाभ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरेश कुमार लाभ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32229. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920: अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32230. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920: अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32231. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920: अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32232. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920मे अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “विवाह, दायित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3229, सूचकांक पंक्ति 1920मे अमरेश कुमार लाभक “लेबलीटिये बड़ड छिन्ह” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “विवाह, दायित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3230 : विदेह-सदेह 23 — अमरेश कुमार लाभ: बेटी बचाबू

प्रश्न 32233. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921: अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटी बचाबू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी बचाबू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1921मे अमरेश कुमार लाभक प्रविष्टि “बेटी बचाबू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32234. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921: अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32235. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921: अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32236. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921: अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लिंग-चयन

उत्तर: घ. लिंग-चयन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लिंग-चयन” अछि।

प्रश्न 32237. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921: अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लिंग-चयन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लिंग-चयन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लिंग-चयन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32238. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921: अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरेश कुमार लाभ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरेश कुमार लाभ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32239. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921: अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32240. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921: अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32241. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921: अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32242. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921मे अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “लिंग-चयन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3230, सूचकांक पंक्ति 1921मे अमरेश कुमार लाभक “बेटी बचाबू” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “लिंग-चयन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3231 : विदेह-सदेह 23 — ममता कर्ण: उपराग

प्रश्न 32243. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922: ममता कर्णक “उपराग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उपराग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपराग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1922मे ममता कर्णक प्रविष्टि “उपराग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32244. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922: ममता कर्णक “उपराग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32245. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922: ममता कर्णक “उपराग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 32246. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922: ममता कर्णक “उपराग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक, ग्रामीण

उत्तर: घ. सामाजिक, ग्रामीण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक, ग्रामीण” अछि।

प्रश्न 32247. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922: ममता कर्णक “उपराग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक, ग्रामीण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक, ग्रामीण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक, ग्रामीण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32248. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922: ममता कर्णक “उपराग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ममता कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ममता कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32249. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922: ममता कर्णक “उपराग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32250. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922: ममता कर्णक “उपराग”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32251. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922: ममता कर्णक “उपराग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32252. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922मे ममता कर्णक “उपराग” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “सामाजिक, ग्रामीण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3231, सूचकांक पंक्ति 1922मे ममता कर्णक “उपराग” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “सामाजिक, ग्रामीण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3232 : विदेह-सदेह 23 — सुचिता कुमारी: पोतीक बियाह

प्रश्न 32253. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923: सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोतीक बियाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोतीक बियाह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1923मे सुचिता कुमारीक प्रविष्टि “पोतीक बियाह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32254. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923: सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32255. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923: सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 32256. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923: सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक, वृद्धावस्था

उत्तर: घ. पारिवारिक, वृद्धावस्था

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक, वृद्धावस्था” अछि।

प्रश्न 32257. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923: सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक, वृद्धावस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक, वृद्धावस्था

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक, वृद्धावस्था” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32258. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923: सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुचिता कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुचिता कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32259. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923: सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32260. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923: सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32261. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923: सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32262. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923मे सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पारिवारिक, वृद्धावस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3232, सूचकांक पंक्ति 1923मे सुचिता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पारिवारिक, वृद्धावस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3233 : विदेह-सदेह 23 — दीपा झा: दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)

प्रश्न 32263. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924: दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1924मे दीपा झाक प्रविष्टि “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32264. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924: दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32265. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924: दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कथा” अछि।

प्रश्न 32266. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924: दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मेहँदी, पारिवारिक

उत्तर: घ. मेहँदी, पारिवारिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मेहँदी, पारिवारिक” अछि।

प्रश्न 32267. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924: दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मेहँदी, पारिवारिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेहँदी, पारिवारिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मेहँदी, पारिवारिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32268. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924: दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दीपा झा, विधा गद्य, उप-विधा बाल-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दीपा झा, विधा गद्य, उप-विधा बाल-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32269. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924: दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32270. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924: दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32271. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924: दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32272. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924मे दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)” प्रविष्टि गद्य, बाल-कथा आ “मेहँदी, पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3233, सूचकांक पंक्ति 1924मे दीपा झाक “दादी परी (नेत्रा -भुटका लेल)” प्रविष्टि गद्य, बाल-कथा आ “मेहँदी, पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3234 : विदेह-सदेह 23 — विद्या रश्मि: गलतीक बोध (संस्मरण)

प्रश्न 32273. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925: विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गलतीक बोध (संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गलतीक बोध (संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1925मे विद्या रश्मिक प्रविष्टि “गलतीक बोध (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32274. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925: विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32275. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925: विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 32276. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925: विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चोरौका बियाह, दहेज

उत्तर: घ. चोरौका बियाह, दहेज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चोरौका बियाह, दहेज” अछि।

प्रश्न 32277. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925: विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चोरौका बियाह, दहेज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चोरौका बियाह, दहेज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चोरौका बियाह, दहेज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32278. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925: विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विद्या रश्मि, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विद्या रश्मि, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32279. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925: विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32280. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925: विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32281. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925: विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32282. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925मे विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “चोरौका बियाह, दहेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3234, सूचकांक पंक्ति 1925मे विद्या रश्मिक “गलतीक बोध (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “चोरौका बियाह, दहेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3235 : विदेह-सदेह 23 — डॉ मालती मधु: स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम

प्रश्न 32283. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926: डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1926मे डॉ मालती मधुक प्रविष्टि “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32284. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926: डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32285. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926: डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्वास्थ्य-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्वास्थ्य-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्वास्थ्य-लेख” अछि।

प्रश्न 32286. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926: डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चिकित्सा, जागरूकता

उत्तर: घ. चिकित्सा, जागरूकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चिकित्सा, जागरूकता” अछि।

प्रश्न 32287. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926: डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चिकित्सा, जागरूकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिकित्सा, जागरूकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चिकित्सा, जागरूकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32288. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926: डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ मालती मधु, विधा गद्य, उप-विधा स्वास्थ्य-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ मालती मधु, विधा गद्य, उप-विधा स्वास्थ्य-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32289. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926: डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32290. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926: डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम”कें विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ स्वास्थ्य-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ स्वास्थ्य-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32291. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926: डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32292. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926मे डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम” प्रविष्टि गद्य, स्वास्थ्य-लेख आ “चिकित्सा, जागरूकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3235, सूचकांक पंक्ति 1926मे डॉ मालती मधुक “स्तन कैंसरक शुरुआती लक्षण आ रोकथाम” प्रविष्टि गद्य, स्वास्थ्य-लेख आ “चिकित्सा, जागरूकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3236 : विदेह-सदेह 23 — पल्लवी सिन्हा: तीसी गुणक खान अछि

प्रश्न 32293. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927: पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तीसी गुणक खान अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीसी गुणक खान अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1927मे पल्लवी सिन्हाक प्रविष्टि “तीसी गुणक खान अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32294. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927: पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32295. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927: पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्वास्थ्य-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्वास्थ्य-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्वास्थ्य-लेख” अछि।

प्रश्न 32296. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927: पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आहार, पोषण

उत्तर: घ. आहार, पोषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आहार, पोषण” अछि।

प्रश्न 32297. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927: पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आहार, पोषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आहार, पोषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आहार, पोषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32298. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927: पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पल्लवी सिन्हा, विधा गद्य, उप-विधा स्वास्थ्य-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पल्लवी सिन्हा, विधा गद्य, उप-विधा स्वास्थ्य-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32299. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927: पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32300. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927: पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ स्वास्थ्य-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ स्वास्थ्य-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32301. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927: पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32302. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927मे पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि” प्रविष्टि गद्य, स्वास्थ्य-लेख आ “आहार, पोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3236, सूचकांक पंक्ति 1927मे पल्लवी सिन्हाक “तीसी गुणक खान अछि” प्रविष्टि गद्य, स्वास्थ्य-लेख आ “आहार, पोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3237 : विदेह-सदेह 23 — जवाहर लाल कश्यप: स्ट्रेश बस्टर

प्रश्न 32303. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्ट्रेश बस्टर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्ट्रेश बस्टर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1928मे जवाहर लाल कश्यपक प्रविष्टि “स्ट्रेश बस्टर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32304. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32305. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 32306. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दाम्पत्य, नारी-श्रम

उत्तर: घ. दाम्पत्य, नारी-श्रम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दाम्पत्य, नारी-श्रम” अछि।

प्रश्न 32307. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दाम्पत्य, नारी-श्रम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दाम्पत्य, नारी-श्रम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दाम्पत्य, नारी-श्रम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32308. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32309. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32310. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर”केँ विदेह-सदेह 23क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32311. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32312. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928मे जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दाम्पत्य, नारी-श्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3237, सूचकांक पंक्ति 1928मे जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेश बस्टर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दाम्पत्य, नारी-श्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3238 : विदेह-सदेह 23 — जयंती कुमारी: गजल

प्रश्न 32313. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929: जयंती कुमारीक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1929मे जयंती कुमारीक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32314. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929: जयंती कुमारीक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32315. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929: जयंती कुमारीक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 32316. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929: जयंती कुमारीक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-वेदना

उत्तर: घ. प्रेम-वेदना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-वेदना” अछि।

प्रश्न 32317. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929: जयंती कुमारीक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-वेदना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-वेदना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32318. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929: जयंती कुमारीक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जयंती कुमारी, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जयंती कुमारी, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32319. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929: जयंती कुमारीक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32320. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929: जयंती कुमारीक “गजल”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32321. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929: जयंती कुमारीक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32322. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929मे जयंती कुमारीक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम-वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3238, सूचकांक पंक्ति 1929मे जयंती कुमारीक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम-वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3239 : विदेह-सदेह 23 — कल्पना झा: अम्मा, साओन, हम कतय छी?

प्रश्न 32323. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930: कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अम्मा, साओन, हम कतय छी?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अम्मा, साओन, हम कतय छी?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1930मे कल्पना झाक प्रविष्टि “अम्मा, साओन, हम कतय छी?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32324. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930: कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32325. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930: कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32326. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930: कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-प्रेम, प्रकृति

उत्तर: घ. मातृ-प्रेम, प्रकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-प्रेम, प्रकृति” अछि।

प्रश्न 32327. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930: कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-प्रेम, प्रकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-प्रेम, प्रकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-प्रेम, प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32328. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930: कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कल्पना झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कल्पना झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32329. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930: कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32330. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930: कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32331. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930: कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32332. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930मे कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-प्रेम, प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3239, सूचकांक पंक्ति 1930मे कल्पना झाक “अम्मा, साओन, हम कतय छी?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-प्रेम, प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3240 : विदेह-सदेह 23 — आशीष नीरज: कोरोना

प्रश्न 32333. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931: आशीष नीरजक “कोरोना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोरोना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोरोना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1931मे आशीष नीरजक प्रविष्टि “कोरोना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32334. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931: आशीष नीरजक “कोरोना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32335. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931: आशीष नीरजक “कोरोना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32336. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931: आशीष नीरजक “कोरोना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महामारी, सामाजिक

उत्तर: घ. महामारी, सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महामारी, सामाजिक” अछि।

प्रश्न 32337. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931: आशीष नीरजक “कोरोना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महामारी, सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महामारी, सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महामारी, सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32338. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931: आशीष नीरजक “कोरोना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष नीरज, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष नीरज, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32339. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931: आशीष नीरजक “कोरोना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32340. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931: आशीष नीरजक “कोरोना”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32341. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931: आशीष नीरजक “कोरोना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32342. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931मे आशीष नीरजक “कोरोना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “महामारी, सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3240, सूचकांक पंक्ति 1931मे आशीष नीरजक “कोरोना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “महामारी, सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3241 : विदेह-सदेह 23 — आभा झा: जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख

प्रश्न 32343. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932: आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1932मे आभा झाक प्रविष्टि “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32344. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932: आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32345. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932: आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32346. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932: आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अध्यात्म, सामाजिक

उत्तर: घ. अध्यात्म, सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अध्यात्म, सामाजिक” अछि।

प्रश्न 32347. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932: आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अध्यात्म, सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अध्यात्म, सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अध्यात्म, सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32348. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932: आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32349. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932: आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32350. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932: आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32351. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932: आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32352. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932मे आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अध्यात्म, सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3241, सूचकांक पंक्ति 1932मे आभा झाक “जोड़- घटाव, चेतना, अपन घेर, व्यथा, कृष्ण केर माहात्म्य, श्रमिक, मतिविभेख” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अध्यात्म, सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3242 : विदेह-सदेह 23 — बाबा बैद्यनाथ: "कुण्डलिया छंद", किछु गजल

प्रश्न 32353. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933: बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "कुण्डलिया छंद", किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "कुण्डलिया छंद", किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1933मे बाबा बैद्यनाथक प्रविष्टि “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32354. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933: बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32355. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933: बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल / छन्द

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल / छन्द

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल / छन्द” अछि।

प्रश्न 32356. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933: बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नीति, भक्ति

उत्तर: घ. नीति, भक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नीति, भक्ति” अछि।

प्रश्न 32357. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933: बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नीति, भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नीति, भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नीति, भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32358. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933: बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बाबा बैद्यनाथ, विधा पद्य, उप-विधा गजल / छन्द

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बाबा बैद्यनाथ, विधा पद्य, उप-विधा गजल / छन्द

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32359. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933: बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32360. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933: बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल / छन्दक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल / छन्दक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32361. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933: बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32362. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933मे बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल / छन्द आ “नीति, भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3242, सूचकांक पंक्ति 1933मे बाबा बैद्यनाथक “"कुण्डलिया छंद", किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल / छन्द आ “नीति, भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3243 : विदेह-सदेह 23 — आनन्द दास: चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि

प्रश्न 32363. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934: आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1934मे आनन्द दासक प्रविष्टि “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32364. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934: आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32365. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934: आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32366. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934: आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम, ग्रामीण

उत्तर: घ. प्रेम, ग्रामीण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, ग्रामीण” अछि।

प्रश्न 32367. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934: आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम, ग्रामीण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम, ग्रामीण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, ग्रामीण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32368. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934: आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आनन्द दास, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आनन्द दास, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32369. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934: आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32370. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934: आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि”कें विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32371. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934: आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32372. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934मे आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम, ग्रामीण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3243, सूचकांक पंक्ति 1934मे आनन्द दासक “चिठ्ठी, नींद आब जाइत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम, ग्रामीण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3244 : विदेह-सदेह 23 — प्रियंवदा तारा झा: उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ

प्रश्न 32373. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935: प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1935मे प्रियंवदा तारा झाक प्रविष्टि “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32374. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935: प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32375. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935: प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32376. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935: प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक, आत्म-चिन्तन

उत्तर: घ. सामाजिक, आत्म-चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक, आत्म-चिन्तन” अछि।

प्रश्न 32377. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935: प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक, आत्म-चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक, आत्म-चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक, आत्म-चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32378. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935: प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रियंवदा तारा झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32379. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935: प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32380. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935: प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32381. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935: प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32382. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935मे प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक, आत्म-चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3244, सूचकांक पंक्ति 1935मे प्रियंवदा तारा झाक “उम्मीदक आश्रय, हम गाम छी, व्यूह, मोन होइछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक, आत्म-चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3245 : विदेह-सदेह 23 — सर्वता 'सुमन': स्त्री

प्रश्न 32383. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936: सर्वता 'सुमन'क “स्त्री” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्त्री

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1936मे सर्वता 'सुमन'क प्रविष्टि “स्त्री” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32384. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936: सर्वता 'सुमन'क “स्त्री”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32385. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936: सर्वता 'सुमन'क “स्त्री”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32386. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936: सर्वता 'सुमन'क “स्त्री” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-जीवन

उत्तर: घ. नारी-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-जीवन” अछि।

प्रश्न 32387. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936: सर्वता 'सुमन'क “स्त्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32388. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936: सर्वता 'सुमन'क “स्त्री”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सर्वता 'सुमन', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सर्वता 'सुमन', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32389. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936: सर्वता 'सुमन'क “स्त्री” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32390. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936: सर्वता 'सुमन'क “स्त्री”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32391. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936: सर्वता 'सुमन'क “स्त्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32392. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936मे सर्वता 'सुमन'क “स्त्री” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3245, सूचकांक पंक्ति 1936मे सर्वता 'सुमन'क “स्त्री” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3246 : विदेह-सदेह 23 — कंचन कंठ: हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया

प्रश्न 32393. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937: कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1937मे कंचन कंठक प्रविष्टि “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32394. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937: कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32395. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937: कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32396. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937: कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-कविता, प्रेरणा

उत्तर: घ. बाल-कविता, प्रेरणा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-कविता, प्रेरणा” अछि।

प्रश्न 32397. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937: कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-कविता, प्रेरणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-कविता, प्रेरणा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-कविता, प्रेरणा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32398. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937: कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कंचन कंठ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कंचन कंठ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32399. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937: कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32400. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937: कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32401. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937: कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32402. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937मे कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल-कविता, प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3246, सूचकांक पंक्ति 1937मे कंचन कंठक “हमर नानीगाम, अजगुत बुधचया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल-कविता, प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3247 : विदेह-सदेह 23 — प्रभाष अकिंचन: पंच राम दीप, पावस मिलन

प्रश्न 32403. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938: प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पंच राम दीप, पावस मिलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंच राम दीप, पावस मिलन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1938मे प्रभाष अकिंचनक प्रविष्टि “पंच राम दीप, पावस मिलन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32404. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938: प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32405. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938: प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32406. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938: प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम-भक्ति, प्रकृति

उत्तर: घ. राम-भक्ति, प्रकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम-भक्ति, प्रकृति” अछि।

प्रश्न 32407. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938: प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम-भक्ति, प्रकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम-भक्ति, प्रकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम-भक्ति, प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32408. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938: प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रभाष अकिंचन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रभाष अकिंचन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32409. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938: प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32410. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938: प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन”कें विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32411. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938: प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32412. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938मे प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राम-भक्ति, प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3247, सूचकांक पंक्ति 1938मे प्रभाष अकिंचनक “पंच राम दीप, पावस मिलन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राम-भक्ति, प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3248 : विदेह-सदेह 23 — संतोष कुमार राय 'बटोही': आउट इनकम

प्रश्न 32413. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आउट इनकम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आउट इनकम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1939मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क प्रविष्टि “आउट इनकम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32414. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32415. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32416. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य, भ्रष्टाचार

उत्तर: घ. व्यंग्य, भ्रष्टाचार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य, भ्रष्टाचार” अछि।

प्रश्न 32417. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य, भ्रष्टाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य, भ्रष्टाचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य, भ्रष्टाचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32418. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32419. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32420. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32421. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32422. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य, भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3248, सूचकांक पंक्ति 1939मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “आउट इनकम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य, भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3249 : विदेह-सदेह 23 — आशीष अनचिन्हार: किछु गजल, किछु भक्ति गजल

प्रश्न 32423. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940: आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु गजल, किछु भक्ति गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु गजल, किछु भक्ति गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1940मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “किछु गजल, किछु भक्ति गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32424. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940: आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32425. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940: आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 32426. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940: आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रगीत-मुक्तक

उत्तर: घ. प्रगीत-मुक्तक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रगीत-मुक्तक” अछि।

प्रश्न 32427. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940: आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रगीत-मुक्तक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रगीत-मुक्तक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रगीत-मुक्तक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32428. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940: आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32429. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940: आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32430. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940: आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32431. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940: आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32432. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940मे आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रगीत-मुक्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3249, सूचकांक पंक्ति 1940मे आशीष अनचिन्हारक “किछु गजल, किछु भक्ति गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रगीत-मुक्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3250 : विदेह-सदेह 23 — विजय इस्सर "वत्स": अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल

प्रश्न 32433. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941: विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1941मे विजय इस्सर "वत्स"क प्रविष्टि “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32434. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941: विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32435. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941: विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल / कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल / कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल / कविता” अछि।

प्रश्न 32436. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941: विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्म-स्वीकार, हास्य

उत्तर: घ. आत्म-स्वीकार, हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्म-स्वीकार, हास्य” अछि।

प्रश्न 32437. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941: विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्म-स्वीकार, हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्म-स्वीकार, हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्म-स्वीकार, हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32438. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941: विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजय इस्सर "वत्स", विधा पद्य, उप-विधा गजल / कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजय इस्सर "वत्स", विधा पद्य, उप-विधा गजल / कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32439. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941: विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32440. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941: विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल / कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल / कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32441. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941: विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32442. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941मे विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल / कविता आ “आत्म-स्वीकार, हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3250, सूचकांक पंक्ति 1941मे विजय इस्सर "वत्स"क “अपराधी छी हम, बचबिहऽ हो कक्का, आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल / कविता आ “आत्म-स्वीकार, हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3251 : विदेह-सदेह 23 — नबोनारायण मिश्र: ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना

प्रश्न 32443. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942: नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1942मे नबोनारायण मिश्रक प्रविष्टि “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32444. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942: नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32445. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942: नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32446. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942: नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यथार्थ, आलोचना

उत्तर: घ. यथार्थ, आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थ, आलोचना” अछि।

प्रश्न 32447. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942: नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यथार्थ, आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यथार्थ, आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थ, आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32448. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942: नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नबोनारायण मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नबोनारायण मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32449. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942: नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32450. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942: नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32451. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942: नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32452. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942मे नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “यथार्थ, आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3251, सूचकांक पंक्ति 1942मे नबोनारायण मिश्रक “ई कीर्तिमान बनल, नवगीत, बिम्बना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “यथार्थ, आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3252 : विदेह-सदेह 23 — ज्ञानवर्धन कण्ठ: मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...

प्रश्न 32453. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943: ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1943मे ज्ञानवर्धन कण्ठक प्रविष्टि “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32454. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943: ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32455. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943: ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गीत” अछि।

प्रश्न 32456. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943: ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक, लोकगीत

उत्तर: घ. दार्शनिक, लोकगीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक, लोकगीत” अछि।

प्रश्न 32457. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943: ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक, लोकगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक, लोकगीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक, लोकगीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32458. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943: ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्धन कण्ठ, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्धन कण्ठ, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32459. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943: ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32460. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943: ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...”कैं विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32461. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943: ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32462. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943मे ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “दार्शनिक, लोकगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3252, सूचकांक पंक्ति 1943मे ज्ञानवर्धन कण्ठक “मधुर-मधुर..., के छथि?, नरक, हमर मुनियाँ..., भगवान..., सम्हरिक'..., रहमत आजु..., बिरजू पियासल...” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “दार्शनिक, लोकगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3253 : विदेह-सदेह 23 — आशुतोष: कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।

प्रश्न 32463. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944: आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1944मे आशुतोषक प्रविष्टि “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32464. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944: आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32465. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944: आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32466. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944: आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य, भूख

उत्तर: घ. व्यंग्य, भूख

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य, भूख” अछि।

प्रश्न 32467. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944: आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य, भूख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य, भूख

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य, भूख” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32468. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944: आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशुतोष, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशुतोष, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32469. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944: आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32470. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944: आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32471. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944: आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32472. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944मे आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य, भूख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3253, सूचकांक पंक्ति 1944मे आशुतोषक “कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देस अछि।” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य, भूख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3254 : विदेह-सदेह 23 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': किछु बाल गजल, किछु गजल

प्रश्न 32473. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु बाल गजल, किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु बाल गजल, किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1945मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “किछु बाल गजल, किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32474. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32475. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 32476. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-साहित्य, नीति

उत्तर: घ. बाल-साहित्य, नीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-साहित्य, नीति” अछि।

प्रश्न 32477. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-साहित्य, नीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-साहित्य, नीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-साहित्य, नीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32478. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32479. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32480. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32481. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32482. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बाल-साहित्य, नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3254, सूचकांक पंक्ति 1945मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “किछु बाल गजल, किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बाल-साहित्य, नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3255 : विदेह-सदेह 23 — मुन्ना जी: पथराइत डीह

प्रश्न 32483. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946: मुन्ना जीक “पथराइत डीह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पथराइत डीह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पथराइत डीह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1946मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “पथराइत डीह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32484. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946: मुन्ना जीक “पथराइत डीह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32485. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946: मुन्ना जीक “पथराइत डीह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32486. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946: मुन्ना जीक “पथराइत डीह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण-यथार्थ

उत्तर: घ. ग्रामीण-यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण-यथार्थ” अछि।

प्रश्न 32487. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946: मुन्ना जीक “पथराइत डीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण-यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण-यथार्थ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण-यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32488. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946: मुन्ना जीक “पथराइत डीह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32489. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946: मुन्ना जीक “पथराइत डीह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32490. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946: मुन्ना जीक “पथराइत डीह”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32491. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946: मुन्ना जीक “पथराइत डीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32492. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946मे मुन्ना जीक “पथराइत डीह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण-यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3255, सूचकांक पंक्ति 1946मे मुन्ना जीक “पथराइत डीह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण-यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3256 : विदेह-सदेह 23 — अमरेश कुमार लाभ: संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकें..., किछु गजल

प्रश्न 32493. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947: अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकें..., किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकें..., किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकें..., किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1947मे अमरेश कुमार लाभक प्रविष्टि “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकें..., किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32494. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947: अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकें..., किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32495. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947: अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकें..., किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल / कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल / कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल / कविता” अछि।

प्रश्न 32496. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947: अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकें..., किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गाँधी, नीति

उत्तर: घ. गाँधी, नीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गाँधी, नीति” अछि।

प्रश्न 32497. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947: अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकें..., किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गाँधी, नीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाँधी, नीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गाँधी, नीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32498. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947: अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकेँ..., किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरेश कुमार लाभ, विधा पद्य, उप-विधा गजल / कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरेश कुमार लाभ, विधा पद्य, उप-विधा गजल / कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32499. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947: अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकेँ..., किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32500. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947: अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकेँ..., किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल / कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल / कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32501. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947: अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकेँ..., किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32502. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947मे अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकेँ..., किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल / कविता आ “गाँधी, नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3256, सूचकांक पंक्ति 1947मे अमरेश कुमार लाभक “संतान, राग अलापने..., लागल छथि, सब के बापु, मिझल आगिकेँ..., किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल / कविता आ “गाँधी, नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3257 : विदेह-सदेह 23 — इरा मल्लिक: ३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल

प्रश्न 32503. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948: इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1948मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32504. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948: इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32505. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948: इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता / गीत / गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता / गीत / गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गीत / गजल” अछि।

प्रश्न 32506. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948: इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-स्वर, प्रेम, बाल-साहित्य

उत्तर: घ. नारी-स्वर, प्रेम, बाल-साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-स्वर, प्रेम, बाल-साहित्य” अछि।

प्रश्न 32507. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948: इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-स्वर, प्रेम, बाल-साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-स्वर, प्रेम, बाल-साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-स्वर, प्रेम, बाल-साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32508. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948: इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत / गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत / गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32509. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948: इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32510. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948: इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता / गीत / गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता / गीत / गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32511. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948: इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32512. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948मे इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत / गजल आ “नारी-स्वर, प्रेम, बाल-साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3257, सूचकांक पंक्ति 1948मे इरा मल्लिकक “३३ टा कविता-गीत, ७ टा शूनार गीत, ६ टा बाल गीत/ कविता, ५ टा गजल, तीन टा शेर, २ टा बाल गजल, ५ टा शृंगार गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत / गजल आ “नारी-स्वर, प्रेम, बाल-साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3258 : विदेह-सदेह 23 — अशोक जे. दुलार: बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता

प्रश्न 32513. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949: अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1949मे अशोक जे. दुलारक प्रविष्टि “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32514. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949: अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32515. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949: अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32516. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949: अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-साहित्य

उत्तर: घ. बाल-साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-साहित्य” अछि।

प्रश्न 32517. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949: अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32518. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949: अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक जे. दुलार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक जे. दुलार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32519. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949: अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32520. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949: अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32521. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949: अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32522. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949मे अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल-साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3258, सूचकांक पंक्ति 1949मे अशोक जे. दुलारक “बाल-कविता- प्रिया रानी, १ टा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल-साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3259 : विदेह-सदेह 23 — विष्णु कान्त मिश्र: चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी

प्रश्न 32523. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950: विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1950मे विष्णु कान्त मिश्रक प्रविष्टि “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32524. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950: विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32525. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950: विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32526. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950: विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक, व्यंग्य

उत्तर: घ. सामाजिक, व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक, व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 32527. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950: विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक, व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक, व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक, व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32528. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950: विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विष्णु कान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विष्णु कान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32529. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950: विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32530. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950: विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी”कें विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32531. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950: विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32532. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950मे विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक, व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3259, सूचकांक पंक्ति 1950मे विष्णु कान्त मिश्रक “चीर हरण, बालबोध, सामा चक्केबा, अनुत्तरित प्रश्न, पथिक, कुरसी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक, व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3260 : विदेह-सदेह 23 — डा विजयाउर रहमान जाफरी: किछु आजाद गजल

प्रश्न 32533. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951: डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु आजाद गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1951मे डा विजयाउर रहमान जाफरीक प्रविष्टि “किछु आजाद गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32534. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951: डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32535. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951: डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 32536. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951: डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रगीत-मुक्तक

उत्तर: घ. प्रगीत-मुक्तक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रगीत-मुक्तक” अछि।

प्रश्न 32537. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951: डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रगीत-मुक्तक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रगीत-मुक्तक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रगीत-मुक्तक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32538. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951: डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा विजयाउर रहमान जाफरी, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा विजयाउर रहमान जाफरी, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32539. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951: डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32540. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951: डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32541. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951: डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32542. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951मे डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रगीत-मुक्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3260, सूचकांक पंक्ति 1951मे डा विजयाउर रहमान जाफरीक “किछु आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रगीत-मुक्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3261 : विदेह-सदेह 23 — प्रदीप पुष्प: किछु रुबाइ, किछु गजल

प्रश्न 32543. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952: प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु रुबाइ, किछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु रुबाइ, किछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1952मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “किछु रुबाइ, किछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32544. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952: प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32545. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952: प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रुबाइ / गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रुबाइ / गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रुबाइ / गजल” अछि।

प्रश्न 32546. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952: प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रगीत-मुक्तक

उत्तर: घ. प्रगीत-मुक्तक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रगीत-मुक्तक” अछि।

प्रश्न 32547. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952: प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रगीत-मुक्तक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रगीत-मुक्तक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रगीत-मुक्तक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32548. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952: प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ / गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ / गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32549. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952: प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32550. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952: प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रुबाइ / गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रुबाइ / गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32551. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952: प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32552. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952मे प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ / गजल आ “प्रगीत-मुक्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3261, सूचकांक पंक्ति 1952मे प्रदीप पुष्पक “किछु रुबाइ, किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ / गजल आ “प्रगीत-मुक्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3262 : विदेह-सदेह 23 — बिनय भूषण: कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार

प्रश्न 32553. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953: बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1953मे बिनय भूषणक प्रविष्टि “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32554. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953: बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32555. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953: बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32556. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953: बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महामारी, श्रमिक-जीवन

उत्तर: घ. महामारी, श्रमिक-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महामारी, श्रमिक-जीवन” अछि।

प्रश्न 32557. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953: बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महामारी, श्रमिक-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महामारी, श्रमिक-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महामारी, श्रमिक-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32558. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953: बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिनय भूषण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिनय भूषण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32559. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953: बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32560. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953: बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32561. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953: बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32562. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953मे बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “महामारी, श्रमिक-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3262, सूचकांक पंक्ति 1953मे बिनय भूषणक “कोरोना-अवकाश, टौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर, महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “महामारी, श्रमिक-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3263 : विदेह-सदेह 23 — आनन्द कुमार झा: प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास

प्रश्न 32563. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954: आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1954मे आनन्द कुमार झाक प्रविष्टि “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32564. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954: आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32565. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954: आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 32566. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954: आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचनात्मकता, सामाजिक

उत्तर: घ. रचनात्मकता, सामाजिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रचनात्मकता, सामाजिक” अछि।

प्रश्न 32567. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954: आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रचनात्मकता, सामाजिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रचनात्मकता, सामाजिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रचनात्मकता, सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32568. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954: आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आनन्द कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32569. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954: आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32570. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954: आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास”केँ विदेह-सदेह 23क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32571. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954: आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 23क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32572. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954मे आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रचनात्मकता, सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3263, सूचकांक पंक्ति 1954मे आनन्द कुमार झाक “प्रतिमुख, एकटा नव कहानी गढबाक अछि, दुर्दशावस्था, मात्सर्य, मुक्तिक तरास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रचनात्मकता, सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 23क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3264 : विदेह-सदेह 24 — डॉ. किशन कारीगर: विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच

प्रश्न 32573. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955: डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1955मे डॉ. किशन कारीगरक प्रविष्टि “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32574. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955: डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32575. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955: डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोक संस्कृति/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोक संस्कृति/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक संस्कृति/आलेख” अछि।

प्रश्न 32576. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955: डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लुप्तप्राय लोकनृत्य ‘घोड़ा नाच’, ‘नटुआ नाच’ आ ‘कठघोड़वा’ पर विस्तृत चर्चा।

उत्तर: घ. लुप्तप्राय लोकनृत्य ‘घोड़ा नाच’, ‘नटुआ नाच’ आ ‘कठघोड़वा’ पर विस्तृत चर्चा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लुप्तप्राय लोकनृत्य ‘घोड़ा नाच’, ‘नटुआ नाच’ आ ‘कठघोड़वा’ पर विस्तृत चर्चा।” अछि।

प्रश्न 32577. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955: डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लुप्तप्राय लोकनृत्य ‘घोड़ा नाच’, ‘नटुआ नाच’ आ ‘कठघोड़वा’ पर विस्तृत चर्चा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लुप्तप्राय लोकनृत्य ‘घोड़ा नाच’, ‘नटुआ नाच’ आ ‘कठघोड़वा’ पर विस्तृत चर्चा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लुप्तप्राय लोकनृत्य ‘घोड़ा नाच’, ‘नटुआ नाच’ आ ‘कठघोड़वा’ पर विस्तृत चर्चा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32578. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955: डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा लोक संस्कृति/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा लोक संस्कृति/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32579. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955: डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32580. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955: डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोक संस्कृति/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोक संस्कृति/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32581. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955: डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32582. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955मे डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच” प्रविष्टि गद्य, लोक संस्कृति/आलेख आ “लुप्तप्राय लोकनृत्य ‘घोड़ा नाच’, ‘नटुआ नाच’ आ ‘कठघोड़वा’ पर विस्तृत चर्चा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3264, सूचकांक पंक्ति 1955मे डॉ. किशन कारीगरक “विलुप्त होइत मिथिलाक लोक संस्कृति घोड़ा (कठघोड़वा) नाच” प्रविष्टि गद्य, लोक संस्कृति/आलेख आ “लुप्तप्राय लोकनृत्य ‘घोड़ा नाच’, ‘नटुआ नाच’ आ ‘कठघोड़वा’ पर विस्तृत चर्चा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3265 : विदेह-सदेह 24 — डॉ. किशन कारीगर: कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?

प्रश्न 32583. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956: डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1956मे डॉ. किशन कारीगरक प्रविष्टि “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32584. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956: डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32585. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956: डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोक संस्कृति/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोक संस्कृति/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक संस्कृति/आलेख” अछि।

प्रश्न 32586. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956: डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नटुआ नाचक ऐतिहासिक स्थिति आ संरक्षणक आवश्यकता पर आलेख।

उत्तर: घ. नटुआ नाचक ऐतिहासिक स्थिति आ संरक्षणक आवश्यकता पर आलेख।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नटुआ नाचक ऐतिहासिक स्थिति आ संरक्षणक आवश्यकता पर आलेख।” अछि।

प्रश्न 32587. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956: डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नटुआ नाचक ऐतिहासिक स्थिति आ संरक्षणक आवश्यकता पर आलेख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नटुआ नाचक ऐतिहासिक स्थिति आ संरक्षणक आवश्यकता पर आलेख।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नटुआ नाचक ऐतिहासिक स्थिति आ संरक्षणक आवश्यकता पर आलेख।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32588. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956: डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा लोक संस्कृति/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा लोक संस्कृति/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32589. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956: डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32590. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956: डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोक संस्कृति/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोक संस्कृति/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32591. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956: डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32592. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956मे डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?” प्रविष्टि गद्य, लोक संस्कृति/आलेख आ “नटुआ नाचक ऐतिहासिक स्थिति आ संरक्षणक आवश्यकता पर आलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3265, सूचकांक पंक्ति 1956मे डॉ. किशन कारीगरक “कोन बिरडो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिलाक नटुआ नाच?” प्रविष्टि गद्य, लोक संस्कृति/आलेख आ “नटुआ नाचक ऐतिहासिक स्थिति आ संरक्षणक आवश्यकता पर आलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3266 : विदेह-सदेह 24 — डॉ. किशन कारीगर: भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)

प्रश्न 32593. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957: डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1957मे डॉ. किशन कारीगरक प्रविष्टि “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32594. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957: डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32595. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957: डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हास्य/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 32596. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957: डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भोजकाजी मनेजर सभक मनमानी, लूट-खसोट पर हास्य कटाक्ष।

उत्तर: घ. भोजकाजी मनेजर सभक मनमानी, लूट-खसोट पर हास्य कटाक्ष।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भोजकाजी मनेजर सभक मनमानी, लूट-खसोट पर हास्य कटाक्ष।” अछि।

प्रश्न 32597. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957: डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भोजकाजी मनेजर सभक मनमानी, लूट-खसोट पर हास्य कटाक्ष।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोजकाजी मनेजर सभक मनमानी, लूट-खसोट पर हास्य कटाक्ष।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोजकाजी मनेजर सभक मनमानी, लूट-खसोट पर हास्य कटाक्ष।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32598. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957: डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा हास्य/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा हास्य/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32599. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957: डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32600. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957: डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हास्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हास्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32601. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957: डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32602. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957मे डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)” प्रविष्टि गद्य, हास्य/व्यंग्य आ “भोजकाजी मनेजर सभक मनमानी, लूट-खसोट पर हास्य कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3266, सूचकांक पंक्ति 1957मे डॉ. किशन कारीगरक “भोजकाजी मनेजर (हास्य कटाक्ष)” प्रविष्टि गद्य, हास्य/व्यंग्य आ “भोजकाजी मनेजर सभक मनमानी, लूट-खसोट पर हास्य कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3267 : विदेह-सदेह 24 — डॉ. किशन कारीगर: पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)

प्रश्न 32603. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958: डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1958मे डॉ. किशन कारीगरक प्रविष्टि “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32604. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958: डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32605. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958: डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हास्य/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हास्य/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हास्य/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 32606. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958: डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पोसलाहा छागर (बकरा) केर बलि प्रथा पर समाजिक द्वन्द्व आ अंधविश्वास।

उत्तर: घ. पोसलाहा छागर (बकरा) केर बलि प्रथा पर समाजिक द्वन्द्व आ अंधविश्वास।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पोसलाहा छागर (बकरा) केर बलि प्रथा पर समाजिक द्वन्द्व आ अंधविश्वास।” अछि।

प्रश्न 32607. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958: डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पोसलाहा छागर (बकरा) केर बलि प्रथा पर समाजिक द्वन्द्व आ अंधविश्वास।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोसलाहा छागर (बकरा) केर बलि प्रथा पर समाजिक द्वन्द्व आ अंधविश्वास।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पोसलाहा छागर (बकरा) केर बलि प्रथा पर समाजिक द्वन्द्व आ अंधविश्वास।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32608. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958: डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा हास्य/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा हास्य/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32609. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958: डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32610. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958: डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हास्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हास्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32611. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958: डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32612. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958मे डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)” प्रविष्टि गद्य, हास्य/व्यंग्य आ “पोसलाहा छागर (बकरा) केर बलि प्रथा पर समाजिक द्वन्द्व आ अंधविश्वास।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3267, सूचकांक पंक्ति 1958मे डॉ. किशन कारीगरक “पोसलाहा छागर सब आई गेले घर छह? (हास्य कटाक्ष)” प्रविष्टि गद्य, हास्य/व्यंग्य आ “पोसलाहा छागर (बकरा) केर बलि प्रथा पर समाजिक द्वन्द्व आ अंधविश्वास।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3268 : विदेह-सदेह 24 — सोनी कर्ण (विराटनगर): स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा

प्रश्न 32613. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959: सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1959मे सोनी कर्ण (विराटनगर)क प्रविष्टि “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32614. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959: सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32615. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959: सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नारी विमर्श/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नारी विमर्श/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नारी विमर्श/आलेख” अछि।

प्रश्न 32616. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959: सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री विमर्शक परिभाषा, पाश्चात्य सन्दर्भ, मैथिली समाजमे स्त्रीक स्थिति विश्लेषण।

उत्तर: घ. स्त्री विमर्शक परिभाषा, पाश्चात्य सन्दर्भ, मैथिली समाजमे स्त्रीक स्थिति विश्लेषण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री विमर्शक परिभाषा, पाश्चात्य सन्दर्भ, मैथिली समाजमे स्त्रीक स्थिति विश्लेषण।” अछि।

प्रश्न 32617. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959: सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्री विमर्शक परिभाषा, पाश्चात्य सन्दर्भ, मैथिली समाजमे स्त्रीक स्थिति विश्लेषण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री विमर्शक परिभाषा, पाश्चात्य सन्दर्भ, मैथिली समाजमे स्त्रीक स्थिति विश्लेषण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री विमर्शक परिभाषा, पाश्चात्य सन्दर्भ, मैथिली समाजमे स्त्रीक स्थिति विश्लेषण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32618. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959: सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सोनी कर्ण (विराटनगर), विधा गद्य, उप-विधा नारी विमर्श/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सोनी कर्ण (विराटनगर), विधा गद्य, उप-विधा नारी विमर्श/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32619. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959: सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32620. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959: सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नारी विमर्श/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नारी विमर्श/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32621. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959: सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32622. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959मे सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, नारी विमर्श/आलेख आ “स्त्री विमर्शक परिभाषा, पाश्चात्य सन्दर्भ, मैथिली समाजमे स्त्रीक स्थिति विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3268, सूचकांक पंक्ति 1959मे सोनी कर्ण (विराटनगर)क “स्त्री विमर्श केर परिभाषा आर अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, नारी विमर्श/आलेख आ “स्त्री विमर्शक परिभाषा, पाश्चात्य सन्दर्भ, मैथिली समाजमे स्त्रीक स्थिति विश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3269 : विदेह-सदेह 24 — रमा नाथ मिश्र: लघुकथा- पुनर्जनम्

प्रश्न 32623. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960: रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- पुनर्जनम्

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- पुनर्जनम्

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1960मे रमा नाथ मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा- पुनर्जनम्” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32624. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960: रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32625. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960: रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 32626. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960: रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुनर्जन्म, प्रेम, कामाख्या (गौहाटी) मे पत्नीक मृत्यु आ बेटीसँ पुनर्मिलनक कथा।

उत्तर: घ. पुनर्जन्म, प्रेम, कामाख्या (गौहाटी) मे पत्नीक मृत्यु आ बेटीसँ पुनर्मिलनक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुनर्जन्म, प्रेम, कामाख्या (गौहाटी) मे पत्नीक मृत्यु आ बेटीसँ पुनर्मिलनक कथा।” अछि।

प्रश्न 32627. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960: रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुनर्जन्म, प्रेम, कामाख्या (गौहाटी) मे पत्नीक मृत्यु आ बेटीसँ पुनर्मिलनक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुनर्जन्म, प्रेम, कामाख्या (गौहाटी) मे पत्नीक मृत्यु आ बेटीसँ पुनर्मिलनक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुनर्जन्म, प्रेम, कामाख्या (गौहाटी) मे पत्नीक मृत्यु आ बेटीसँ पुनर्मिलनक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32628. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960: रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमा नाथ मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमा नाथ मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32629. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960: रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32630. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960: रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32631. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960: रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32632. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960मे रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पुनर्जन्म, प्रेम, कामाख्या (गौहाटी) मे पत्नीक मृत्यु आ बेटीसँ पुनर्मिलनक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3269, सूचकांक पंक्ति 1960मे रमा नाथ मिश्रक “लघुकथा- पुनर्जनम्” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पुनर्जन्म, प्रेम, कामाख्या (गौहाटी) मे पत्नीक मृत्यु आ बेटीसँ पुनर्मिलनक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3270 : विदेह-सदेह 24 — कंचन कण्ठ: स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन

प्रश्न 32633. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961: कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1961मे कंचन कण्ठक प्रविष्टि “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32634. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961: कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32635. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961: कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नारी-विमर्श/सौन्दर्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नारी-विमर्श/सौन्दर्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नारी-विमर्श/सौन्दर्य” अछि।

प्रश्न 32636. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961: कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिल महिलाक सिन्दूर, टीका, पटवासि, मिथिला चित्रकला, आधुनिक फैशनक बीच बदलाव।

उत्तर: घ. मैथिल महिलाक सिन्दूर, टीका, पटवासि, मिथिला चित्रकला, आधुनिक फैशनक बीच बदलाव।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिल महिलाक सिन्दूर, टीका, पटवासि, मिथिला चित्रकला, आधुनिक फैशनक बीच बदलाव।” अछि।

प्रश्न 32637. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961: कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिल महिलाक सिन्दूर, टीका, पटवासि, मिथिला चित्रकला, आधुनिक फैशनक बीच बदलाव।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल महिलाक सिन्दूर, टीका, पटवासि, मिथिला चित्रकला, आधुनिक फैशनक बीच बदलाव।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिल महिलाक सिन्दूर, टीका, पटवासि, मिथिला चित्रकला, आधुनिक फैशनक बीच बदलाव।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32638. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961: कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कंचन कण्ठ, विधा गद्य, उप-विधा नारी-विमर्श/सौन्दर्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कंचन कण्ठ, विधा गद्य, उप-विधा नारी-विमर्श/सौन्दर्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32639. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961: कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32640. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961: कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नारी-विमर्श/सौन्दर्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नारी-विमर्श/सौन्दर्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32641. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961: कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32642. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961मे कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन” प्रविष्टि गद्य, नारी-विमर्श/सौन्दर्य आ “मैथिल महिलाक सिन्दूर, टीका, पटवासि, मिथिला चित्रकला, आधुनिक फैशनक बीच बदलाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3270, सूचकांक पंक्ति 1961मे कंचन कण्ठक “स्त्री- सज्जा-परंपरा-फैशन” प्रविष्टि गद्य, नारी-विमर्श/सौन्दर्य आ “मैथिल महिलाक सिन्दूर, टीका, पटवासि, मिथिला चित्रकला, आधुनिक फैशनक बीच बदलाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3271 : विदेह-सदेह 24 — कंचन कण्ठ: टूटल रिकाडं

प्रश्न 32643. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962: कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टूटल रिकाडं

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टूटल रिकाडं

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1962मे कंचन कण्ठक प्रविष्टि “टूटल रिकाडं” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32644. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962: कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32645. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962: कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा (लघु)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा (लघु)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा (लघु)” अछि।

प्रश्न 32646. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962: कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अशिक्षित परिवारमे पढ़ल बेटा 'आदित्य'क ‘टूटल रिकाडं’ आ बाप-मायक उलझन।

उत्तर: घ. अशिक्षित परिवारमे पढ़ल बेटा 'आदित्य'क ‘टूटल रिकाडं’ आ बाप-मायक उलझन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अशिक्षित परिवारमे पढ़ल बेटा 'आदित्य'क ‘टूटल रिकाडं’ आ बाप-मायक उलझन।” अछि।

प्रश्न 32647. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962: कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अशिक्षित परिवारमे पढ़ल बेटा 'आदित्य'क ‘टूटल रिकाडं’ आ बाप-मायक उलझन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अशिक्षित परिवारमे पढ़ल बेटा 'आदित्य'क ‘टूटल रिकाडं’ आ बाप-मायक उलझन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अशिक्षित परिवारमे पढ़ल बेटा 'आदित्य'क ‘टूटल रिकाडं’ आ बाप-मायक उलझन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32648. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962: कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कंचन कण्ठ, विधा गद्य, उप-विधा कथा (लघु)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कंचन कण्ठ, विधा गद्य, उप-विधा कथा (लघु)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32649. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962: कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32650. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962: कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा (लघु)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा (लघु)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32651. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962: कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32652. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962मे कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं” प्रविष्टि गद्य, कथा (लघु) आ “अशिक्षित परिवारमे पढ़ल बेटा 'आदित्य'क ‘टूटल रिकाडं’ आ बाप-मायक उलझन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3271, सूचकांक पंक्ति 1962मे कंचन कण्ठक “टूटल रिकाडं” प्रविष्टि गद्य, कथा (लघु) आ “अशिक्षित परिवारमे पढ़ल बेटा 'आदित्य'क ‘टूटल रिकाडं’ आ बाप-मायक उलझन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3272 : विदेह-सदेह 24 — नन्द विलास राय: गंगा नहेलौं

प्रश्न 32653. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963: नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गंगा नहेलौं

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गंगा नहेलौं

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1963मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “गंगा नहेलौं” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32654. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963: नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32655. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963: नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/कथा” अछि।

प्रश्न 32656. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963: नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नन्दा भायक ‘गंगा नहेलौं’ कहलाक पाछू आर्थिक आ सामाजिक मजबूरीक व्यंग्यात्मक प्रस्तुति।

उत्तर: घ. नन्दा भायक ‘गंगा नहेलौं’ कहलाक पाछू आर्थिक आ सामाजिक मजबूरीक व्यंग्यात्मक प्रस्तुति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नन्दा भायक ‘गंगा नहेलौं’ कहलाक पाछू आर्थिक आ सामाजिक मजबूरीक व्यंग्यात्मक प्रस्तुति।” अछि।

प्रश्न 32657. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963: नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नन्दा भायक ‘गंगा नहेलौं’ कहलाक पाछू आर्थिक आ सामाजिक मजबूरीक व्यंग्यात्मक प्रस्तुति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नन्दा भायक ‘गंगा नहेलौं’ कहलाक पाछू आर्थिक आ सामाजिक मजबूरीक व्यंग्यात्मक प्रस्तुति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नन्दा भायक ‘गंगा नहेलौं’ कहलाक पाछू आर्थिक आ सामाजिक मजबूरीक व्यंग्यात्मक प्रस्तुति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32658. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963: नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32659. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963: नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32660. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963: नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32661. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963: नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32662. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963मे नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/कथा आ “नन्दा भायक ‘गंगा नहेलौं’ कहलाक पाछू आर्थिक आ सामाजिक मजबूरीक व्यंग्यात्मक प्रस्तुति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3272, सूचकांक पंक्ति 1963मे नन्द विलास रायक “गंगा नहेलौं” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/कथा आ “नन्दा भायक ‘गंगा नहेलौं’ कहलाक पाछू आर्थिक आ सामाजिक मजबूरीक व्यंग्यात्मक प्रस्तुति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3273 : विदेह-सदेह 24 — नन्द विलास राय: करौना

प्रश्न 32663. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964: नन्द विलास रायक “करौना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. करौना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करौना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1964मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “करौना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32664. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964: नन्द विलास रायक “करौना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32665. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964: नन्द विलास रायक “करौना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/संवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/संवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/संवाद” अछि।

प्रश्न 32666. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964: नन्द विलास रायक “करौना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बखरीमे बैस गप-सप, भैया-भतीजाक बीच पारिवारिक-आर्थिक परिस्थितिपर चर्चा।

उत्तर: घ. बखरीमे बैस गप-सप, भैया-भतीजाक बीच पारिवारिक-आर्थिक परिस्थितिपर चर्चा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बखरीमे बैस गप-सप, भैया-भतीजाक बीच पारिवारिक-आर्थिक परिस्थितिपर चर्चा।” अछि।

प्रश्न 32667. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964: नन्द विलास रायक “करौना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बखरीमे बैस गप-सप, भैया-भतीजाक बीच पारिवारिक-आर्थिक परिस्थितिपर चर्चा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बखरीमे बैस गप-सप, भैया-भतीजाक बीच पारिवारिक-आर्थिक परिस्थितिपर चर्चा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बखरीमे बैस गप-सप, भैया-भतीजाक बीच पारिवारिक-आर्थिक परिस्थितिपर चर्चा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32668. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964: नन्द विलास रायक “करौना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा/संवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा/संवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32669. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964: नन्द विलास रायक “करौना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32670. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964: नन्द विलास रायक “करौना”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/संवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/संवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32671. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964: नन्द विलास रायक “करौना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32672. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964मे नन्द विलास रायक “करौना” प्रविष्टि गद्य, कथा/संवाद आ “बखरीमे बैस गप-सप, भैया-भतीजाक बीच पारिवारिक-आर्थिक परिस्थितिपर चर्चा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3273, सूचकांक पंक्ति 1964मे नन्द विलास रायक “करौना” प्रविष्टि गद्य, कथा/संवाद आ “बखरीमे बैस गप-सप, भैया-भतीजाक बीच पारिवारिक-आर्थिक परिस्थितिपर चर्चा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3274 : विदेह-सदेह 24 — नन्द विलास राय: जान-मे-जान आएल

प्रश्न 32673. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965: नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जान-मे-जान आएल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जान-मे-जान आएल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1965मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “जान-मे-जान आएल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32674. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965: नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32675. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965: नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/प्रेरक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/प्रेरक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/प्रेरक” अछि।

प्रश्न 32676. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965: नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रक्तदानक आवश्यकता आ ‘सुच्चा मैथिल’ संगठनक सहयोग।

उत्तर: घ. रक्तदानक आवश्यकता आ ‘सुच्चा मैथिल’ संगठनक सहयोग।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रक्तदानक आवश्यकता आ ‘सुच्चा मैथिल’ संगठनक सहयोग।” अछि।

प्रश्न 32677. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965: नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रक्तदानक आवश्यकता आ ‘सुच्चा मैथिल’ संगठनक सहयोग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रक्तदानक आवश्यकता आ ‘सुच्चा मैथिल’ संगठनक सहयोग।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रक्तदानक आवश्यकता आ ‘सुच्चा मैथिल’ संगठनक सहयोग।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32678. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965: नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा/प्रेरक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा/प्रेरक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32679. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965: नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32680. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965: नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/प्रेरकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/प्रेरकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32681. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965: नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32682. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965मे नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल” प्रविष्टि गद्य, कथा/प्रेरक आ “रक्तदानक आवश्यकता आ ‘सुच्चा मैथिल’ संगठनक सहयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3274, सूचकांक पंक्ति 1965मे नन्द विलास रायक “जान-मे-जान आएल” प्रविष्टि गद्य, कथा/प्रेरक आ “रक्तदानक आवश्यकता आ ‘सुच्चा मैथिल’ संगठनक सहयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3275 : विदेह-सदेह 24 — नन्द विलास राय: संस्कारी कन्या

प्रश्न 32683. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966: नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संस्कारी कन्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कारी कन्या

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1966मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “संस्कारी कन्या” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32684. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966: नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32685. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966: नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/सामाजिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/सामाजिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/सामाजिक” अछि।

प्रश्न 32686. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966: नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'संस्कारी कन्या' बुझौनिहार गोपी बाबूक पत्नीक व्यवहार पर कटाक्ष।

उत्तर: घ. 'संस्कारी कन्या' बुझौनिहार गोपी बाबूक पत्नीक व्यवहार पर कटाक्ष।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'संस्कारी कन्या' बुझौनिहार गोपी बाबूक पत्नीक व्यवहार पर कटाक्ष।” अछि।

प्रश्न 32687. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966: नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'संस्कारी कन्या' बुझौनिहार गोपी बाबूक पत्नीक व्यवहार पर कटाक्ष।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'संस्कारी कन्या' बुझौनिहार गोपी बाबूक पत्नीक व्यवहार पर कटाक्ष।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'संस्कारी कन्या' बुझौनिहार गोपी बाबूक पत्नीक व्यवहार पर कटाक्ष।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32688. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966: नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/सामाजिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/सामाजिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32689. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966: नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32690. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966: नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/सामाजिकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/सामाजिकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32691. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966: नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32692. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966मे नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/सामाजिक आ “'संस्कारी कन्या' बुझौनिहार गोपी बाबूक पत्नीक व्यवहार पर कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3275, सूचकांक पंक्ति 1966मे नन्द विलास रायक “संस्कारी कन्या” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/सामाजिक आ “'संस्कारी कन्या' बुझौनिहार गोपी बाबूक पत्नीक व्यवहार पर कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3276 : विदेह-सदेह 24 — नन्द विलास राय: फोचाइ कक्काक बेमारी

प्रश्न 32693. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967: नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फोचाइ कक्काक बेमारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फोचाइ कक्काक बेमारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1967मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “फोचाइ कक्काक बेमारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32694. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967: नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32695. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967: नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/कोविड-सामाजिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/कोविड-सामाजिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/कोविड-सामाजिक” अछि।

प्रश्न 32696. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967: नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लॉकडाउन, कोरोना वायरस, पुलिस, दवाइ-राशन खरीदी, फोचाइ ककाक आर्थिक व्यथा।

उत्तर: घ. लॉकडाउन, कोरोना वायरस, पुलिस, दवाइ-राशन खरीदी, फोचाइ ककाक आर्थिक व्यथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लॉकडाउन, कोरोना वायरस, पुलिस, दवाइ-राशन खरीदी, फोचाइ ककाक आर्थिक व्यथा।” अछि।

प्रश्न 32697. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967: नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लॉकडाउन, कोरोना वायरस, पुलिस, दवाइ-राशन खरीदी, फोचाइ ककाक आर्थिक व्यथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लॉकडाउन, कोरोना वायरस, पुलिस, दवाइ-राशन खरीदी, फोचाइ ककाक आर्थिक व्यथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लॉकडाउन, कोरोना वायरस, पुलिस, दवाइ-राशन खरीदी, फोचाइ ककाक आर्थिक व्यथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32698. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967: नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा/कोविड-सामाजिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा/कोविड-सामाजिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32699. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967: नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32700. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967: नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/कोविड-सामाजिकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/कोविड-सामाजिकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32701. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967: नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32702. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967मे नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी” प्रविष्टि गद्य, कथा/कोविड-सामाजिक आ “लॉकडाउन, कोरोना वायरस, पुलिस, दवाइ-राशन खरीदी, फोचाइ ककाक आर्थिक व्यथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3276, सूचकांक पंक्ति 1967मे नन्द विलास रायक “फोचाइ कक्काक बेमारी” प्रविष्टि गद्य, कथा/कोविड-सामाजिक आ “लॉकडाउन, कोरोना वायरस, पुलिस, दवाइ-राशन खरीदी, फोचाइ ककाक आर्थिक व्यथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3277 : विदेह-सदेह 24 — विदू मिश्र वत्स: दू गोट बटोहीक गप

प्रश्न 32703. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968: विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दू गोट बटोहीक गप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू गोट बटोहीक गप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1968मे विदू मिश्र वत्सक प्रविष्टि “दू गोट बटोहीक गप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32704. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968: विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32705. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968: विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु कथा/संवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु कथा/संवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा/संवाद” अछि।

प्रश्न 32706. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968: विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मोटरसाइकिल आ साइकिल पर दू बटोहीक छोट-सन गप्प (नेपाल-महोत्तरी)।

उत्तर: घ. मोटरसाइकिल आ साइकिल पर दू बटोहीक छोट-सन गप्प (नेपाल-महोत्तरी)।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मोटरसाइकिल आ साइकिल पर दू बटोहीक छोट-सन गप्प (नेपाल-महोत्तरी)।” अछि।

प्रश्न 32707. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968: विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मोटरसाइकिल आ साइकिल पर दू बटोहीक छोट-सन गप्प (नेपाल-महोत्तरी)।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोटरसाइकिल आ साइकिल पर दू बटोहीक छोट-सन गप्प (नेपाल-महोत्तरी)।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मोटरसाइकिल आ साइकिल पर दू बटोहीक छोट-सन गप्प (नेपाल-महोत्तरी)।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32708. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968: विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विदू मिश्र वत्स, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा/संवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विदू मिश्र वत्स, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा/संवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32709. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968: विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32710. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968: विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु कथा/संवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु कथा/संवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32711. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968: विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32712. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968मे विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा/संवाद आ “मोटरसाइकिल आ साइकिल पर दू बटोहीक छोट-सन गप्प (नेपाल-महोत्तरी)।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3277, सूचकांक पंक्ति 1968मे विदू मिश्र वत्सक “दू गोट बटोहीक गप” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा/संवाद आ “मोटरसाइकिल आ साइकिल पर दू बटोहीक छोट-सन गप्प (नेपाल-महोत्तरी)।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3278 : विदेह-सदेह 24 — उमेश मण्डल: १०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)

प्रश्न 32713. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969: उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. १०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. १०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1969मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32714. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969: उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32715. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969: उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/सूची

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/सूची

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/सूची” अछि।

प्रश्न 32716. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969: उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तिथि-स्थान, कथा पाठकर्ता, समालोचक, पोथी लोकार्पणक विवरण।

उत्तर: घ. तिथि-स्थान, कथा पाठकर्ता, समालोचक, पोथी लोकार्पणक विवरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तिथि-स्थान, कथा पाठकर्ता, समालोचक, पोथी लोकार्पणक विवरण।” अछि।

प्रश्न 32717. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969: उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तिथि-स्थान, कथा पाठकर्ता, समालोचक, पोथी लोकार्पणक विवरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तिथि-स्थान, कथा पाठकर्ता, समालोचक, पोथी लोकार्पणक विवरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तिथि-स्थान, कथा पाठकर्ता, समालोचक, पोथी लोकार्पणक विवरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32718. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969: उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/सूची

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/सूची

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32719. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969: उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32720. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969: उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/सूचीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/सूचीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32721. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969: उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32722. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969मे उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/सूची आ “तिथि-स्थान, कथा पाठकर्ता, समालोचक, पोथी लोकार्पणक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3278, सूचकांक पंक्ति 1969मे उमेश मण्डलक “१०५ म ‘सगर राति दीप जरय’ कथा चेतना रैली (समाचार/सूचना)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/सूची आ “तिथि-स्थान, कथा पाठकर्ता, समालोचक, पोथी लोकार्पणक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3279 : विदेह-सदेह 24 — लालदेव कामत: पानक बरैब

प्रश्न 32723. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970: लालदेव कामतक “पानक बरैब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पानक बरैब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पानक बरैब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1970मे लालदेव कामतक प्रविष्टि “पानक बरैब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32724. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970: लालदेव कामतक “पानक बरैब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्यमिश्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्यमिश्र

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्यमिश्र” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32725. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970: लालदेव कामतक “पानक बरैब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख/सांस्कृतिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख/सांस्कृतिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख/सांस्कृतिक” अछि।

प्रश्न 32726. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970: लालदेव कामतक “पानक बरैब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पानक उद्भव, प्रजाति, कृषि, औषधीय गुण, बरैबक वैज्ञानिक विधि।

उत्तर: घ. पानक उद्भव, प्रजाति, कृषि, औषधीय गुण, बरैबक वैज्ञानिक विधि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पानक उद्भव, प्रजाति, कृषि, औषधीय गुण, बरैबक वैज्ञानिक विधि।” अछि।

प्रश्न 32727. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970: लालदेव कामतक “पानक बरैब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पानक उद्भव, प्रजाति, कृषि, औषधीय गुण, बरैबक वैज्ञानिक विधि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पानक उद्भव, प्रजाति, कृषि, औषधीय गुण, बरैबक वैज्ञानिक विधि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पानक उद्भव, प्रजाति, कृषि, औषधीय गुण, बरैबक वैज्ञानिक विधि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32728. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970: लालदेव कामतक “पानक बरैब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक लालदेव कामत, विधा गद्य/पद्यमिश्र, उप-विधा लेख/सांस्कृतिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक लालदेव कामत, विधा गद्य/पद्यमिश्र, उप-विधा लेख/सांस्कृतिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32729. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970: लालदेव कामतक “पानक बरैब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32730. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970: लालदेव कामतक “पानक बरैब”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य/पद्यमिश्र-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेख/सांस्कृतिकक रूपमे गद्य/पद्यमिश्र-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेख/सांस्कृतिकक रूपमे गद्य/पद्यमिश्र-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32731. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970: लालदेव कामतक “पानक बरैब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32732. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970मे लालदेव कामतक “पानक बरैब” प्रविष्टि गद्य/पद्यमिश्र, लेख/सांस्कृतिक आ “पानक उद्भव, प्रजाति, कृषि, औषधीय गुण, बरैबक वैज्ञानिक विधि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3279, सूचकांक पंक्ति 1970मे लालदेव कामतक “पानक बरैब” प्रविष्टि गद्य/पद्यमिश्र, लेख/सांस्कृतिक आ “पानक उद्भव, प्रजाति, कृषि, औषधीय गुण, बरैबक वैज्ञानिक विधि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3280 : विदेह-सदेह 24 — विधा/संपादक (नोट): रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)

प्रश्न 32733. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971: विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1971मे विधा/संपादक (नोट)क प्रविष्टि “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32734. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971: विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32735. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971: विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी/परिचय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी/परिचय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/परिचय” अछि।

प्रश्न 32736. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971: विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामलोचन ठाकूरक छद्म नाम, प्रमुख पुस्तकसभक सूची, पुरस्कार, अल्जाइमर, अस्वस्थता, मृत्यु (२५ मार्च २०२१)क सूचना।

उत्तर: घ. रामलोचन ठाकूरक छद्म नाम, प्रमुख पुस्तकसभक सूची, पुरस्कार, अल्जाइमर, अस्वस्थता, मृत्यु (२५ मार्च २०२१)क सूचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूरक छद्म नाम, प्रमुख पुस्तकसभक सूची, पुरस्कार, अल्जाइमर, अस्वस्थता, मृत्यु (२५ मार्च २०२१)क सूचना।” अछि।

प्रश्न 32737. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971: विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामलोचन ठाकूरक छद्म नाम, प्रमुख पुस्तकसभक सूची, पुरस्कार, अल्जाइमर, अस्वस्थता, मृत्यु (२५ मार्च २०२१)क सूचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूरक छद्म नाम, प्रमुख पुस्तकसभक सूची, पुरस्कार, अल्जाइमर, अस्वस्थता, मृत्यु (२५ मार्च २०२१)क सूचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूरक छद्म नाम, प्रमुख पुस्तकसभक सूची, पुरस्कार, अल्जाइमर, अस्वस्थता, मृत्यु (२५ मार्च २०२१)क सूचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32738. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971: विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विधा/संपादक (नोट), विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/परिचय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विधा/संपादक (नोट), विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/परिचय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32739. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971: विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32740. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971: विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनी/परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनी/परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32741. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971: विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32742. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971मे विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/परिचय आ “रामलोचन ठाकूरक छद्म नाम, प्रमुख पुस्तकसभक सूची, पुरस्कार, अल्जाइमर, अस्वस्थता, मृत्यु (२५ मार्च २०२१)क सूचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3280, सूचकांक पंक्ति 1971मे विधा/संपादक (नोट)क “रामलोचन ठाकूरजीक संक्षिप्त परिचय (सूची)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/परिचय आ “रामलोचन ठाकूरक छद्म नाम, प्रमुख पुस्तकसभक सूची, पुरस्कार, अल्जाइमर, अस्वस्थता, मृत्यु (२५ मार्च २०२१)क सूचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3281 : विदेह-सदेह 24 — डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर): प्राश्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)

प्रश्न 32743. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972: डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राश्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्राश्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्राश्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1972मे डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क प्रविष्टि “प्राश्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32744. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972: डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राश्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32745. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972: डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राश्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार/रंगमंच

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार/रंगमंच

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार/रंगमंच” अछि।

प्रश्न 32746. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972: डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राश्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोलकाताक मैथिली रंगमंचमे महिला कलाकारक अभाव, बंगाली कलाकार, सामाजिक बाधा।

उत्तर: घ. कोलकाताक मैथिली रंगमंचमे महिला कलाकारक अभाव, बंगाली कलाकार, सामाजिक बाधा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोलकाताक मैथिली रंगमंचमे महिला कलाकारक अभाव, बंगाली कलाकार, सामाजिक बाधा।” अछि।

प्रश्न 32747. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972: डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राश्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोलकाताक मैथिली रंगमंचमे महिला कलाकारक अभाव, बंगाली कलाकार, सामाजिक बाधा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोलकाताक मैथिली रंगमंचमे महिला कलाकारक अभाव, बंगाली कलाकार, सामाजिक बाधा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोलकाताक मैथिली रंगमंचमे महिला कलाकारक अभाव, बंगाली कलाकार, सामाजिक बाधा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32748. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972: डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राथ्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर), विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार/रंगमंच

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर), विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार/रंगमंच

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32749. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972: डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राथ्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32750. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972: डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राथ्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कार/रंगमंचक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कार/रंगमंचक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32751. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972: डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राथ्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32752. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972मे डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राथ्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार/रंगमंच आ “कोलकाताक मैथिली रंगमंचमे महिला कलाकारक अभाव, बंगाली कलाकार, सामाजिक बाधा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3281, सूचकांक पंक्ति 1972मे डॉ. वन्दना कुमारी (वन्दना किशोर)क “प्राथ्रिक (साक्षात्कार) - एहन जडिआयल समाजमे महिला कोना उत्तरतीह मैथिली रंगमंचपर (रामलोचन ठाकूर)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार/रंगमंच आ “कोलकाताक मैथिली रंगमंचमे महिला कलाकारक अभाव, बंगाली कलाकार, सामाजिक बाधा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3282 : विदेह-सदेह 24 — अमरकांत लाल: रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद

प्रश्न 32753. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973: अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1973मे अमरकांत लालक प्रविष्टि “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32754. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973: अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32755. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973: अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 32756. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973: अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ठाकूर जीक अनुवाद ‘प्रतिध्वनि’क अध्यात्म, सर्वहारा संस्कार आ क्रान्तिकारी दृष्टि पर टिप्पणी।

उत्तर: घ. ठाकूर जीक अनुवाद ‘प्रतिध्वनि’क अध्यात्म, सर्वहारा संस्कार आ क्रान्तिकारी दृष्टि पर टिप्पणी।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ठाकूर जीक अनुवाद ‘प्रतिध्वनि’क अध्यात्म, सर्वहारा संस्कार आ क्रान्तिकारी दृष्टि पर टिप्पणी।” अछि।

प्रश्न 32757. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973: अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ठाकूर जीक अनुवाद ‘प्रतिध्वनि’क अध्यात्म, सर्वहारा संस्कार आ क्रान्तिकारी दृष्टि पर टिप्पणी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ठाकूर जीक अनुवाद ‘प्रतिध्वनि’क अध्यात्म, सर्वहारा संस्कार आ क्रान्तिकारी दृष्टि पर टिप्पणी।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ठाकूर जीक अनुवाद ‘प्रतिध्वनि’क अध्यात्म, सर्वहारा संस्कार आ क्रान्तिकारी दृष्टि पर टिप्पणी।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32758. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973: अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरकांत लाल, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरकांत लाल, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32759. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973: अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32760. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973: अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32761. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973: अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32762. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973मे अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/समीक्षा आ “ठाकूर जीक अनुवाद ‘प्रतिध्वनि’क अध्यात्म, सर्वहारा संस्कार आ क्रान्तिकारी दृष्टि पर टिप्पणी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3282, सूचकांक पंक्ति 1973मे अमरकांत लालक “रामलोचन ठाकूर जीक अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/समीक्षा आ “ठाकूर जीक अनुवाद ‘प्रतिध्वनि’क अध्यात्म, सर्वहारा संस्कार आ क्रान्तिकारी दृष्टि पर टिप्पणी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3283 : विदेह-सदेह 24 — प्रदीप पुष्प: गीतकार रामलोचन ठाकूर

प्रश्न 32763. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974: प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीतकार रामलोचन ठाकूर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीतकार रामलोचन ठाकूर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1974मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “गीतकार रामलोचन ठाकूर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32764. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974: प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32765. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974: प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/गीत” अछि।

प्रश्न 32766. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974: प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ठाकूरक अन्य विधा, गीतमे प्रगतिशीलता, शोषण, पलायन, शिल्पक कमी आ विशेषता।

उत्तर: घ. ठाकूरक अन्य विधा, गीतमे प्रगतिशीलता, शोषण, पलायन, शिल्पक कमी आ विशेषता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ठाकूरक अन्य विधा, गीतमे प्रगतिशीलता, शोषण, पलायन, शिल्पक कमी आ विशेषता।” अछि।

प्रश्न 32767. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974: प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ठाकूरक अन्य विधा, गीतमे प्रगतिशीलता, शोषण, पलायन, शिल्पक कमी आ विशेषता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ठाकूरक अन्य विधा, गीतमे प्रगतिशीलता, शोषण, पलायन, शिल्पक कमी आ विशेषता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ठाकूरक अन्य विधा, गीतमे प्रगतिशीलता, शोषण, पलायन, शिल्पक कमी आ विशेषता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32768. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974: प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32769. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974: प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32770. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974: प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/गीतक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/गीतक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32771. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974: प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32772. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974मे प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/गीत आ “ठाकूरक अन्य विधा, गीतमे प्रगतिशीलता, शोषण, पलायन, शिल्पक कमी आ विशेषता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3283, सूचकांक पंक्ति 1974मे प्रदीप पुष्पक “गीतकार रामलोचन ठाकूर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/गीत आ “ठाकूरक अन्य विधा, गीतमे प्रगतिशीलता, शोषण, पलायन, शिल्पक कमी आ विशेषता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3284 : विदेह-सदेह 24 — शैलेन्द्र मिश्र: एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार

प्रश्न 32773. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975: शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1975मे शैलेन्द्र मिश्रक प्रविष्टि “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32774. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975: शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32775. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975: शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/कविता” अछि।

प्रश्न 32776. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975: शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनैतिक-मार्क्सवादी दृष्टि, ‘इतिहासहंता’मे आक्रोश, मिथिला-मैथिली-प्रेम।

उत्तर: घ. राजनैतिक-मार्क्सवादी दृष्टि, ‘इतिहासहंता’मे आक्रोश, मिथिला-मैथिली-प्रेम।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनैतिक-मार्क्सवादी दृष्टि, ‘इतिहासहंता’मे आक्रोश, मिथिला-मैथिली-प्रेम।” अछि।

प्रश्न 32777. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975: शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनैतिक-मार्क्सवादी दृष्टि, ‘इतिहासहंता’मे आक्रोश, मिथिला-मैथिली-प्रेम।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनैतिक-मार्क्सवादी दृष्टि, ‘इतिहासहंता’मे आक्रोश, मिथिला-मैथिली-प्रेम।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनैतिक-मार्क्सवादी दृष्टि, ‘इतिहासहंता’मे आक्रोश, मिथिला-मैथिली-प्रेम।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32778. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975: शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शैलेन्द्र मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शैलेन्द्र मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32779. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975: शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32780. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975: शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/कविताक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/कविताक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32781. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975: शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32782. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975मे शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/कविता आ “राजनैतिक-मार्क्सवादी दृष्टि, ‘इतिहासहंता’मे आक्रोश, मिथिला-मैथिली-प्रेम।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3284, सूचकांक पंक्ति 1975मे शैलेन्द्र मिश्रक “एकटा खाँटी मैथिल: रामलोचन ठाकूर आ हुनकर काव्यसंसार” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/कविता आ “राजनैतिक-मार्क्सवादी दृष्टि, ‘इतिहासहंता’मे आक्रोश, मिथिला-मैथिली-प्रेम।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3285 : विदेह-सदेह 24 — भौमनाथ झा: बचा दिअ भाइकें

प्रश्न 32783. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976: भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बचा दिअ भाइकें

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बचा दिअ भाइकें

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1976मे भौमनाथ झाक प्रविष्टि “बचा दिअ भाइकें” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32784. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976: भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32785. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976: भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 32786. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976: भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामलोचन आ भौमनाथक नर्सरीक साथी

उत्तर: घ. रामलोचन आ भौमनाथक नर्सरीक साथी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन आ भौमनाथक नर्सरीक साथी” अछि।

प्रश्न 32787. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976: भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामलोचन आ भौमनाथक नर्सरीक साथी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन आ भौमनाथक नर्सरीक साथी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन आ भौमनाथक नर्सरीक साथी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32788. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976: भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भौमनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भौमनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32789. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976: भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32790. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976: भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32791. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976: भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32792. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976मे भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “रामलोचन आ भौमनाथक नर्सरीक साथी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3285, सूचकांक पंक्ति 1976मे भौमनाथ झाक “बचा दिअ भाइकें” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “रामलोचन आ भौमनाथक नर्सरीक साथी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3286 : विदेह-सदेह 24 — महाकांत ठाकूर: माटि परहक लोक

प्रश्न 32793. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977: महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माटि परहक लोक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माटि परहक लोक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1977मे महाकांत ठाकूरक प्रविष्टि “माटि परहक लोक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32794. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977: महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32795. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977: महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी/संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी/संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/संस्मरण” अछि।

प्रश्न 32796. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977: महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामलोचन ठाकूरक गाम पाली-मोहन, बाल्यकाल, मैट्रिक धरिक संस्मरण।

उत्तर: घ. रामलोचन ठाकूरक गाम पाली-मोहन, बाल्यकाल, मैट्रिक धरिक संस्मरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूरक गाम पाली-मोहन, बाल्यकाल, मैट्रिक धरिक संस्मरण।” अछि।

प्रश्न 32797. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977: महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामलोचन ठाकूरक गाम पाली-मोहन, बाल्यकाल, मैट्रिक धरिक संस्मरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूरक गाम पाली-मोहन, बाल्यकाल, मैट्रिक धरिक संस्मरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूरक गाम पाली-मोहन, बाल्यकाल, मैट्रिक धरिक संस्मरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32798. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977: महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महाकांत ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महाकांत ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32799. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977: महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32800. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977: महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनी/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनी/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32801. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977: महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32802. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977मे महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/संस्मरण आ “रामलोचन ठाकूरक गाम पाली-मोहन, बाल्यकाल, मैट्रिक धरिक संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3286, सूचकांक पंक्ति 1977मे महाकांत ठाकूरक “माटि परहक लोक” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/संस्मरण आ “रामलोचन ठाकूरक गाम पाली-मोहन, बाल्यकाल, मैट्रिक धरिक संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3287 : विदेह-सदेह 24 — अरविन्द ठाकुर: अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)

प्रश्न 32803. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978: अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1978मे अरविन्द ठाकुरक प्रविष्टि “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32804. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978: अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32805. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978: अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/आलोचना” अछि।

प्रश्न 32806. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978: अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ठाकुरक ‘इतिहासहंता’क मूल्यांकन, तामस-कवि, आक्रोशक सीमा आ मार्क्सवादी परम्परा।

उत्तर: घ. ठाकुरक ‘इतिहासहंता’क मूल्यांकन, तामस-कवि, आक्रोशक सीमा आ मार्क्सवादी परम्परा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ठाकुरक ‘इतिहासहंता’क मूल्यांकन, तामस-कवि, आक्रोशक सीमा आ मार्क्सवादी परम्परा।” अछि।

प्रश्न 32807. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978: अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ठाकुरक ‘इतिहासहंता’क मूल्यांकन, तामस-कवि, आक्रोशक सीमा आ मार्क्सवादी परम्परा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ठाकुरक ‘इतिहासहंता’क मूल्यांकन, तामस-कवि, आक्रोशक सीमा आ मार्क्सवादी परम्परा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ठाकुरक ‘इतिहासहंता’क मूल्यांकन, तामस-कवि, आक्रोशक सीमा आ मार्क्सवादी परम्परा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32808. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978: अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरविन्द ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरविन्द ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32809. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978: अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32810. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978: अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32811. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978: अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32812. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978मे अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलोचना आ “ठाकुरक ‘इतिहासहंता’क मूल्यांकन, तामस-कवि, आक्रोशक सीमा आ मार्क्सवादी परम्परा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3287, सूचकांक पंक्ति 1978मे अरविन्द ठाकुरक “अपूर्णता जखन वनयवत हुआए (रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलोचना आ “ठाकुरक ‘इतिहासहंता’क मूल्यांकन, तामस-कवि, आक्रोशक सीमा आ मार्क्सवादी परम्परा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3288 : विदेह-सदेह 24 — सांत्िना मिश्रा: बीहिन कथा- बडदक घंटी

प्रश्न 32813. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979: सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा- बडदक घंटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा- बडदक घंटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1979मे सांत्िना मिश्राक प्रविष्टि “बीहिन कथा- बडदक घंटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32814. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979: सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32815. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979: सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा (लघु कथा)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा (लघु कथा)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा (लघु कथा)” अछि।

प्रश्न 32816. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979: सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भोचगया आ वकील गोपाल जीक ‘बडदक घंटी’ पर हास्य-व्यंग्य।

उत्तर: घ. भोचगया आ वकील गोपाल जीक ‘बडदक घंटी’ पर हास्य-व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भोचगया आ वकील गोपाल जीक ‘बडदक घंटी’ पर हास्य-व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 32817. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979: सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भोचगया आ वकील गोपाल जीक ‘बडदक घंटी’ पर हास्य-व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोचगया आ वकील गोपाल जीक ‘बडदक घंटी’ पर हास्य-व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोचगया आ वकील गोपाल जीक ‘बडदक घंटी’ पर हास्य-व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32818. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979: सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सांत्िना मिश्रा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा (लघु कथा)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सांत्िना मिश्रा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा (लघु कथा)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32819. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979: सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32820. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979: सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथा (लघु कथा)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथा (लघु कथा)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32821. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979: सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32822. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979मे सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा (लघु कथा) आ “भोचगया आ वकील गोपाल जीक ‘बडदक घंटी’ पर हास्य-व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3288, सूचकांक पंक्ति 1979मे सांत्िना मिश्राक “बीहिन कथा- बडदक घंटी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा (लघु कथा) आ “भोचगया आ वकील गोपाल जीक ‘बडदक घंटी’ पर हास्य-व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3289 : विदेह-सदेह 24 — रूचि स्मृति: खोज

प्रश्न 32823. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980: रूचि स्मृतिक “खोज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खोज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खोज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1980मे रूचि स्मृतिक प्रविष्टि “खोज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32824. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980: रूचि स्मृतिक “खोज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32825. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980: रूचि स्मृतिक “खोज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32826. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980: रूचि स्मृतिक “खोज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवनक खोज, पहचानक द्वन्द्व।

उत्तर: घ. जीवनक खोज, पहचानक द्वन्द्व।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवनक खोज, पहचानक द्वन्द्व।” अछि।

प्रश्न 32827. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980: रूचि स्मृतिक “खोज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवनक खोज, पहचानक द्वन्द्व।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवनक खोज, पहचानक द्वन्द्व।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवनक खोज, पहचानक द्वन्द्व।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32828. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980: रूचि स्मृतिक “खोज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूचि स्मृति, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूचि स्मृति, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32829. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980: रूचि स्मृतिक “खोज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32830. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980: रूचि स्मृतिक “खोज”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32831. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980: रूचि स्मृतिक “खोज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32832. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980मे रूचि स्मृतिक “खोज” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “जीवनक खोज, पहचानक द्वन्द्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3289, सूचकांक पंक्ति 1980मे रूचि स्मृतिक “खोज” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “जीवनक खोज, पहचानक द्वन्द्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3290 : विदेह-सदेह 24 — रूचि स्मृति: आत्िनभगर

प्रश्न 32833. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981: रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आत्िनभगर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्िनभगर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1981मे रूचि स्मृतिक प्रविष्टि “आत्िनभगर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32834. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981: रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32835. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981: रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32836. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981: रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बबीया नामक खेती-प्रेमी महिलाक आत्मनिर्भरता।

उत्तर: घ. बबीया नामक खेती-प्रेमी महिलाक आत्मनिर्भरता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बबीया नामक खेती-प्रेमी महिलाक आत्मनिर्भरता।” अछि।

प्रश्न 32837. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981: रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बबीया नामक खेती-प्रेमी महिलाक आत्मनिर्भरता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बबीया नामक खेती-प्रेमी महिलाक आत्मनिर्भरता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बबीया नामक खेती-प्रेमी महिलाक आत्मनिर्भरता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32838. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981: रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूचि स्मृति, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूचि स्मृति, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32839. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981: रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32840. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981: रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32841. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981: रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32842. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981मे रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बबीया नामक खेती-प्रेमी महिलाक आत्मनिर्भरता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3290, सूचकांक पंक्ति 1981मे रूचि स्मृतिक “आत्िनभगर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बबीया नामक खेती-प्रेमी महिलाक आत्मनिर्भरता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3291 : विदेह-सदेह 24 — देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल): एकता

प्रश्न 32843. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982: देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1982मे देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क प्रविष्टि “एकता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32844. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982: देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32845. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982: देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32846. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982: देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तीनटा सिंहेसरा पाडाक एकता आ द्वन्द्वक बात।

उत्तर: घ. तीनटा सिंहेसरा पाडाक एकता आ द्वन्द्वक बात।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तीनटा सिंहेसरा पाडाक एकता आ द्वन्द्वक बात।” अछि।

प्रश्न 32847. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982: देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तीनटा सिंहेसरा पाडाक एकता आ द्वन्द्वक बात।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीनटा सिंहेसरा पाडाक एकता आ द्वन्द्वक बात।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीनटा सिंहेसरा पाडाक एकता आ द्वन्द्वक बात।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32848. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982: देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32849. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982: देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32850. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982: देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32851. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982: देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32852. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982मे देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “तीनटा सिंहेसरा पाडाक एकता आ द्वन्द्वक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3291, सूचकांक पंक्ति 1982मे देवेन्द्र मिश्र, राजविराज (नेपाल)क “एकता” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “तीनटा सिंहेसरा पाडाक एकता आ द्वन्द्वक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3292 : विदेह-सदेह 24 — चिन्नी मिश्र (पटना): के सहारि इ गृहस्थीक भार!

प्रश्न 32853. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983: चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. के सहारि इ गृहस्थीक भार!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. के सहारि इ गृहस्थीक भार!

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1983मे चिन्नी मिश्र (पटना)क प्रविष्टि “के सहारि इ गृहस्थीक भार!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32854. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983: चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32855. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983: चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32856. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983: चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रोफेसर पति आ ‘गृहस्थीक भार’ पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. प्रोफेसर पति आ ‘गृहस्थीक भार’ पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रोफेसर पति आ ‘गृहस्थीक भार’ पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 32857. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983: चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रोफेसर पति आ ‘गृहस्थीक भार’ पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रोफेसर पति आ ‘गृहस्थीक भार’ पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रोफेसर पति आ ‘गृहस्थीक भार’ पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32858. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983: चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चिन्नी मिश्र (पटना), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चिन्नी मिश्र (पटना), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32859. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983: चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32860. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983: चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32861. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983: चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32862. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983मे चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रोफेसर पति आ ‘गृहस्थीक भार’ पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3292, सूचकांक पंक्ति 1983मे चिन्नी मिश्र (पटना)क “के सहारि इ गृहस्थीक भार!” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रोफेसर पति आ ‘गृहस्थीक भार’ पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3293 : विदेह-सदेह 24 — गौरी शंकर साह (मधुबनी): भिा

प्रश्न 32863. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984: गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भिा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भिा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1984मे गौरी शंकर साह (मधुबनी)क प्रविष्टि “भिा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32864. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984: गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32865. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984: गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32866. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984: गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मास्टर साहेब, भाड़-दाल-भुजिया पर हास्य।

उत्तर: घ. मास्टर साहेब, भाड़-दाल-भुजिया पर हास्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मास्टर साहेब, भाड़-दाल-भुजिया पर हास्य।” अछि।

प्रश्न 32867. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984: गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मास्टर साहेब, भाड़-दाल-भुजिया पर हास्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मास्टर साहेब, भाड़-दाल-भुजिया पर हास्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मास्टर साहेब, भाड़-दाल-भुजिया पर हास्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32868. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984: गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गौरी शंकर साह (मधुबनी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गौरी शंकर साह (मधुबनी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32869. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984: गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32870. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984: गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32871. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984: गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32872. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984मे गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “मास्टर साहेब, भाड़-दाल-भुजिया पर हास्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3293, सूचकांक पंक्ति 1984मे गौरी शंकर साह (मधुबनी)क “भिा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “मास्टर साहेब, भाड़-दाल-भुजिया पर हास्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3294 : विदेह-सदेह 24 — सत्यनारायण झा: लखन बाबू

प्रश्न 32873. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985: सत्यनारायण झाक “लखन बाबू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लखन बाबू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लखन बाबू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1985मे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “लखन बाबू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32874. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985: सत्यनारायण झाक “लखन बाबू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32875. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985: सत्यनारायण झाक “लखन बाबू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32876. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985: सत्यनारायण झाक “लखन बाबू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिश्रम, सत्यनिष्ठा आ पारिवारिक सफलता।

उत्तर: घ. परिश्रम, सत्यनिष्ठा आ पारिवारिक सफलता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिश्रम, सत्यनिष्ठा आ पारिवारिक सफलता।” अछि।

प्रश्न 32877. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985: सत्यनारायण झाक “लखन बाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिश्रम, सत्यनिष्ठा आ पारिवारिक सफलता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिश्रम, सत्यनिष्ठा आ पारिवारिक सफलता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिश्रम, सत्यनिष्ठा आ पारिवारिक सफलता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32878. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985: सत्यनारायण झाक “लखन बाबू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32879. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985: सत्यनारायण झाक “लखन बाबू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32880. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985: सत्यनारायण झाक “लखन बाबू”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32881. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985: सत्यनारायण झाक “लखन बाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32882. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985मे सत्यनारायण झाक “लखन बाबू” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “परिश्रम, सत्यनिष्ठा आ पारिवारिक सफलता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3294, सूचकांक पंक्ति 1985मे सत्यनारायण झाक “लखन बाबू” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “परिश्रम, सत्यनिष्ठा आ पारिवारिक सफलता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3295 : विदेह-सदेह 24 — घनश्याम घनेरो: बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा

प्रश्न 32883. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986: घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1986मे घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32884. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986: घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32885. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986: घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा/परिचय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा/परिचय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा/परिचय” अछि।

प्रश्न 32886. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986: घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीहिनकथा (एसईईडी एसटीओआरवाई)क सिद्धान्त आ परिभाषा।

उत्तर: घ. बीहिनकथा (एसईईडी एसटीओआरवाई)क सिद्धान्त आ परिभाषा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीहिनकथा (एसईईडी एसटीओआरवाई)क सिद्धान्त आ परिभाषा।” अछि।

प्रश्न 32887. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986: घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीहिनकथा (एसईईडी एसटीओआरवाई)क सिद्धान्त आ परिभाषा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिनकथा (एसईईडी एसटीओआरवाई)क सिद्धान्त आ परिभाषा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीहिनकथा (एसईईडी एसटीओआरवाई)क सिद्धान्त आ परिभाषा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32888. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986: घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक घनश्याम घनेरो, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा/परिचय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक घनश्याम घनेरो, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा/परिचय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32889. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986: घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32890. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986: घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथा/परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथा/परिचयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32891. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986: घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32892. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986मे घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा/परिचय आ “बीहिनकथा (एसईईडी एसटीओआरवाई)क सिद्धान्त आ परिभाषा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3295, सूचकांक पंक्ति 1986मे घनश्याम घनेरोक “बीहिनकथा आ ‘घनेरो’क अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा/परिचय आ “बीहिनकथा (एसईईडी एसटीओआरवाई)क सिद्धान्त आ परिभाषा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3296 : विदेह-सदेह 24 — लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री): लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)

प्रश्न 32893. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987: लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1987मे लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क प्रविष्टि “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32894. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987: लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32895. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987: लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32896. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987: लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साडी, फैशन आ पुरानपन पर संवाद।

उत्तर: घ. साडी, फैशन आ पुरानपन पर संवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साडी, फैशन आ पुरानपन पर संवाद।” अछि।

प्रश्न 32897. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987: लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साडी, फैशन आ पुरानपन पर संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साडी, फैशन आ पुरानपन पर संवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साडी, फैशन आ पुरानपन पर संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32898. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987: लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32899. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987: लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32900. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987: लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32901. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987: लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32902. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987मे लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “साडी, फैशन आ पुरानपन पर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3296, सूचकांक पंक्ति 1987मे लैह-लैहे गुलबिया (स्त्री)क “लैह-लैहे गुलबिया (पुरान साडीक बातचीत)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “साडी, फैशन आ पुरानपन पर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3297 : विदेह-सदेह 24 — अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर): टकध्यान

प्रश्न 32903. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988: अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टकध्यान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टकध्यान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1988मे अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क प्रविष्टि “टकध्यान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32904. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988: अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32905. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988: अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32906. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988: अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पोखरि बगुलाक टकध्यान-शिक्षा पर नीतिपरक बात।

उत्तर: घ. पोखरि बगुलाक टकध्यान-शिक्षा पर नीतिपरक बात।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पोखरि बगुलाक टकध्यान-शिक्षा पर नीतिपरक बात।” अछि।

प्रश्न 32907. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988: अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पोखरि बगुलाक टकध्यान-शिक्षा पर नीतिपरक बात।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोखरि बगुलाक टकध्यान-शिक्षा पर नीतिपरक बात।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पोखरि बगुलाक टकध्यान-शिक्षा पर नीतिपरक बात।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32908. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988: अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32909. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988: अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32910. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988: अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32911. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988: अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32912. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988मे अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पोखरि बगुलाक टकध्यान-शिक्षा पर नीतिपरक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3297, सूचकांक पंक्ति 1988मे अभिलाष ठाकुर (झंझारपुर)क “टकध्यान” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पोखरि बगुलाक टकध्यान-शिक्षा पर नीतिपरक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3298 : विदेह-सदेह 24 — अखिलानन्द झा ‘रण’: सत्य

प्रश्न 32913. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989: अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सत्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सत्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1989मे अखिलानन्द झा ‘रण’क प्रविष्टि “सत्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32914. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989: अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32915. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989: अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32916. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989: अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटीक अस्मिता आ परिवारक संकोच पर करुण कथा।

उत्तर: घ. बेटीक अस्मिता आ परिवारक संकोच पर करुण कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटीक अस्मिता आ परिवारक संकोच पर करुण कथा।” अछि।

प्रश्न 32917. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989: अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेटीक अस्मिता आ परिवारक संकोच पर करुण कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटीक अस्मिता आ परिवारक संकोच पर करुण कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटीक अस्मिता आ परिवारक संकोच पर करुण कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32918. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989: अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अखिलानन्द झा ‘रण’, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अखिलानन्द झा ‘रण’, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32919. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989: अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32920. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989: अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32921. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989: अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32922. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989मे अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेटीक अस्मिता आ परिवारक संकोच पर करुण कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3298, सूचकांक पंक्ति 1989मे अखिलानन्द झा ‘रण’क “सत्य” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेटीक अस्मिता आ परिवारक संकोच पर करुण कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3299 : विदेह-सदेह 24 — सबिता झा ‘सोनी’: सेहेन्ता / बेगरला

प्रश्न 32923. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990: सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सेहेन्ता / बेगरला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सेहेन्ता / बेगरला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1990मे सबिता झा ‘सोनी’क प्रविष्टि “सेहेन्ता / बेगरला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32924. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990: सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32925. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990: सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32926. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990: सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘सेहेन्ता’ (सहेलता) आ ‘बेगरला’ विषयक संवाद माध्यमे कथा।

उत्तर: घ. ‘सेहेन्ता’ (सहेलता) आ ‘बेगरला’ विषयक संवाद माध्यमे कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘सेहेन्ता’ (सहेलता) आ ‘बेगरला’ विषयक संवाद माध्यमे कथा।” अछि।

प्रश्न 32927. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990: सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘सेहेन्ता’ (सहेलता) आ ‘बेगरला’ विषयक संवाद माध्यमे कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘सेहेन्ता’ (सहेलता) आ ‘बेगरला’ विषयक संवाद माध्यमे कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘सेहेन्ता’ (सहेलता) आ ‘बेगरला’ विषयक संवाद माध्यमे कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32928. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990: सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सबिता झा ‘सोनी’, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सबिता झा ‘सोनी’, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32929. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990: सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32930. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990: सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32931. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990: सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32932. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990मे सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘सेहेन्ता’ (सहेलता) आ ‘बेगरला’ विषयक संवाद माध्यमे कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3299, सूचकांक पंक्ति 1990मे सबिता झा ‘सोनी’क “सेहेन्ता / बेगरला” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘सेहेन्ता’ (सहेलता) आ ‘बेगरला’ विषयक संवाद माध्यमे कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3300 : विदेह-सदेह 24 — पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद): सेल्फी

प्रश्न 32933. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991: पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सेल्फी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सेल्फी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1991मे पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क प्रविष्टि “सेल्फी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32934. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991: पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32935. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991: पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32936. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991: पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नानीक मृत्यु, सेल्फी, डिजिटल दुनियाँ आ पुरान पीढ़ीक दूरी।

उत्तर: घ. नानीक मृत्यु, सेल्फी, डिजिटल दुनियाँ आ पुरान पीढ़ीक दूरी।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नानीक मृत्यु, सेल्फी, डिजिटल दुनियाँ आ पुरान पीढ़ीक दूरी।” अछि।

प्रश्न 32937. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991: पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नानीक मृत्यु, सेल्फी, डिजिटल दुनियाँ आ पुरान पीढ़ीक दूरी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नानीक मृत्यु, सेल्फी, डिजिटल दुनियाँ आ पुरान पीढ़ीक दूरी।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नानीक मृत्यु, सेल्फी, डिजिटल दुनियाँ आ पुरान पीढ़ीक दूरी।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32938. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991: पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32939. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991: पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32940. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991: पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32941. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991: पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32942. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991मे पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नानीक मृत्यु, सेल्फी, डिजिटल दुनियाँ आ पुरान पीढ़ीक दूरी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3300, सूचकांक पंक्ति 1991मे पूनम झा “सुधा” (फरीदाबाद)क “सेल्फी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नानीक मृत्यु, सेल्फी, डिजिटल दुनियाँ आ पुरान पीढ़ीक दूरी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3301 : विदेह-सदेह 24 — मनोज मण्डल: मां

प्रश्न 32943. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992: मनोज मण्डलक “मां” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मां

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मां

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1992मे मनोज मण्डलक प्रविष्टि “मां” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32944. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992: मनोज मण्डलक “मां”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32945. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992: मनोज मण्डलक “मां”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32946. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992: मनोज मण्डलक “मां” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृत्व, बेटाक अर्पण, भावनात्मक कथा।

उत्तर: घ. मातृत्व, बेटाक अर्पण, भावनात्मक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृत्व, बेटाक अर्पण, भावनात्मक कथा।” अछि।

प्रश्न 32947. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992: मनोज मण्डलक “मां” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृत्व, बेटाक अर्पण, भावनात्मक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृत्व, बेटाक अर्पण, भावनात्मक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृत्व, बेटाक अर्पण, भावनात्मक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32948. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992: मनोज मण्डलक “मां”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32949. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992: मनोज मण्डलक “मां” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32950. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992: मनोज मण्डलक “मां”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32951. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992: मनोज मण्डलक “मां” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32952. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992मे मनोज मण्डलक “मां” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “मातृत्व, बेटाक अर्पण, भावनात्मक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3301, सूचकांक पंक्ति 1992मे मनोज मण्डलक “मां” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “मातृत्व, बेटाक अर्पण, भावनात्मक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3302 : विदेह-सदेह 24 — चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी): प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद

प्रश्न 32953. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993: चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1993मे चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क प्रविष्टि “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32954. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993: चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (चारि कथा)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (चारि कथा)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (चारि कथा)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32955. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993: चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32956. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993: चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘प्रेम दिवस’, ‘वरदान’ (सीओवीआइडी बेला बेड), ‘मोह’, ‘रौद’ – लघु व्यंग्यात्मक/यथार्थ कथा।

उत्तर: घ. ‘प्रेम दिवस’, ‘वरदान’ (सीओवीआइडी बेला बेड), ‘मोह’, ‘रौद’ – लघु व्यंग्यात्मक/यथार्थ कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘प्रेम दिवस’, ‘वरदान’ (सीओवीआइडी बेला बेड), ‘मोह’, ‘रौद’ – लघु व्यंग्यात्मक/यथार्थ कथा।” अछि।

प्रश्न 32957. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993: चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘प्रेम दिवस’, ‘वरदान’ (सीओवीआइडी बेला बेड), ‘मोह’, ‘रौद’ – लघु व्यंग्यात्मक/यथार्थ कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘प्रेम दिवस’, ‘वरदान’ (सीओवीआइडी बेला बेड), ‘मोह’, ‘रौद’ – लघु व्यंग्यात्मक/यथार्थ कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘प्रेम दिवस’, ‘वरदान’ (सीओवीआइडी बेला बेड), ‘मोह’, ‘रौद’ – लघु व्यंग्यात्मक/यथार्थ कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32958. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993: चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी), विधा गद्य (चारि कथा), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी), विधा गद्य (चारि कथा), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32959. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993: चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32960. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993: चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (चारि कथा)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (चारि कथा)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (चारि कथा)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32961. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993: चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32962. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993मे चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद” प्रविष्टि गद्य (चारि कथा), बीहिन कथा आ “‘प्रेम दिवस’, ‘वरदान’ (सीओवीआइडी बेला बेड), ‘मोह’, ‘रौद’ – लघु व्यंग्यात्मक/यथार्थ कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3302, सूचकांक पंक्ति 1993मे चन्दना दत्त (राँची-मधुबनी)क “प्रेम दिवस, वरदान, मोह, रौद” प्रविष्टि गद्य (चारि कथा), बीहिन कथा आ “‘प्रेम दिवस’, ‘वरदान’ (सीओवीआइडी बेला बेड), ‘मोह’, ‘रौद’ – लघु व्यंग्यात्मक/यथार्थ कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3303 : विदेह-सदेह 24 — विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार): घुस्सा-घुस्सी

प्रश्न 32963. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994: विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घुस्सा-घुस्सी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घुस्सा-घुस्सी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1994मे विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क प्रविष्टि “घुस्सा-घुस्सी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32964. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994: विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32965. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994: विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32966. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994: विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कार्यक्रम बन्द, सरस्वती पूजा, दारु-रंगदारी आ नाम-छेङक झगड़ा।

उत्तर: घ. कार्यक्रम बन्द, सरस्वती पूजा, दारु-रंगदारी आ नाम-छेङक झगड़ा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कार्यक्रम बन्द, सरस्वती पूजा, दारु-रंगदारी आ नाम-छेङक झगड़ा।” अछि।

प्रश्न 32967. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994: विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कार्यक्रम बन्द, सरस्वती पूजा, दारु-रंगदारी आ नाम-छेङक झगड़ा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कार्यक्रम बन्द, सरस्वती पूजा, दारु-रंगदारी आ नाम-छेङक झगड़ा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कार्यक्रम बन्द, सरस्वती पूजा, दारु-रंगदारी आ नाम-छेङक झगड़ा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32968. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994: विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32969. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994: विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32970. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994: विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32971. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994: विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32972. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994मे विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कार्यक्रम बन्द, सरस्वती पूजा, दारु-रंगदारी आ नाम-छेङक झगड़ा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3303, सूचकांक पंक्ति 1994मे विच्देश्वर ठाकूर (नेपाल, दोहा/कतार)क “घुस्सा-घुस्सी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कार्यक्रम बन्द, सरस्वती पूजा, दारु-रंगदारी आ नाम-छेङक झगड़ा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3304 : विदेह-सदेह 24 — कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज): आओर छिछियाउ

प्रश्न 32973. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995: कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आओर छिछियाउ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आओर छिछियाउ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1995मे कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क प्रविष्टि “आओर छिछियाउ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32974. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995: कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32975. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995: कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32976. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995: कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लॉकडाउन, सोहन बाबूक घरमे ‘गरुड पुराण’ पाठक हाल।

उत्तर: घ. लॉकडाउन, सोहन बाबूक घरमे ‘गरुड पुराण’ पाठक हाल।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लॉकडाउन, सोहन बाबूक घरमे ‘गरुड पुराण’ पाठक हाल।” अछि।

प्रश्न 32977. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995: कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लॉकडाउन, सोहन बाबूक घरमे ‘गरुड पुराण’ पाठक हाल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लॉकडाउन, सोहन बाबूक घरमे ‘गरुड पुराण’ पाठक हाल।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लॉकडाउन, सोहन बाबूक घरमे ‘गरुड पुराण’ पाठक हाल।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32978. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995: कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32979. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995: कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32980. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995: कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32981. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995: कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32982. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995मे कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “लॉकडाउन, सोहन बाबूक घरमे ‘गरुड पुराण’ पाठक हाल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3304, सूचकांक पंक्ति 1995मे कुन्दन कर्ण (दिल्ली/मुरलीगंज)क “आओर छिछियाउ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “लॉकडाउन, सोहन बाबूक घरमे ‘गरुड पुराण’ पाठक हाल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3305 : विदेह-सदेह 24 — सोनी नीलू झा: अदनाबालीक आंगन

प्रश्न 32983. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996: सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अदनाबालीक आंगन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अदनाबालीक आंगन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1996मे सोनी नीलू झाक प्रविष्टि “अदनाबालीक आंगन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32984. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996: सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32985. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996: सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32986. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996: सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अदनाबाली साँझमे रसोई करैत, पुत्र संवाद, ‘अपना आंगन’क व्यंग्य।

उत्तर: घ. अदनाबाली साँझमे रसोई करैत, पुत्र संवाद, ‘अपना आंगन’क व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अदनाबाली साँझमे रसोई करैत, पुत्र संवाद, ‘अपना आंगन’क व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 32987. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996: सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अदनाबाली साँझमे रसोई करैत, पुत्र संवाद, ‘अपना आंगन’क व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अदनाबाली साँझमे रसोई करैत, पुत्र संवाद, ‘अपना आंगन’क व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अदनाबाली साँझमे रसोई करैत, पुत्र संवाद, ‘अपना आंगन’क व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32988. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996: सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सोनी नीलू झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सोनी नीलू झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32989. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996: सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 32990. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996: सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन”कैं विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 32991. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996: सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 32992. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996मे सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “अदनाबाली साँझमे रसोई करैत, पुत्र संवाद, ‘अपना आंगन’क व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3305, सूचकांक पंक्ति 1996मे सोनी नीलू झाक “अदनाबालीक आंगन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “अदनाबाली साँझमे रसोई करैत, पुत्र संवाद, ‘अपना आंगन’क व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3306 : विदेह-सदेह 24 — विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा): किसान

प्रश्न 32993. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997: विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किसान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किसान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1997मे विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क प्रविष्टि “किसान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 32994. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997: विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (पद्यमिश्र)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (पद्यमिश्र)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य (पद्यमिश्र)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 32995. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997: विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 32996. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997: विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रौ फेकुआ आ बाबूक प्रवास आ किसानी पर बात।

उत्तर: घ. रौ फेकुआ आ बाबूक प्रवास आ किसानी पर बात।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रौ फेकुआ आ बाबूक प्रवास आ किसानी पर बात।” अछि।

प्रश्न 32997. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997: विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रौ फेकुआ आ बाबूक प्रवास आ किसानी पर बात।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौ फेकुआ आ बाबूक प्रवास आ किसानी पर बात।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रौ फेकुआ आ बाबूक प्रवास आ किसानी पर बात।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 32998. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997: विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा), विधा गद्य (पद्यमिश्र), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा), विधा गद्य (पद्यमिश्र), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 32999. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997: विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33000. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997: विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (पद्यमिश्र)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (पद्यमिश्र)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (पद्यमिश्र)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33001. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997: विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33002. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997मे विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान” प्रविष्टि गद्य (पद्यमिश्र), बीहिन कथा आ “रौ फेकुआ आ बाबूक प्रवास आ किसानी पर बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3306, सूचकांक पंक्ति 1997मे विनीता ठाकूर (सोनीपत, हरियाणा)क “किसान” प्रविष्टि गद्य (पद्यमिश्र), बीहिन कथा आ “रौ फेकुआ आ बाबूक प्रवास आ किसानी पर बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3307 : विदेह-सदेह 24 — डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी): ढहलेल छी

प्रश्न 33003. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998: डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ढहलेल छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ढहलेल छी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1998मे डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क प्रविष्टि “ढहलेल छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33004. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998: डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33005. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998: डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33006. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998: डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साडी ढंगसें पहिरब, फूल-फूलिया बहु पर पति-पत्नीक संवाद।

उत्तर: घ. साडी ढंगसें पहिरब, फूल-फूलिया बहु पर पति-पत्नीक संवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साडी ढंगसें पहिरब, फूल-फूलिया बहु पर पति-पत्नीक संवाद।” अछि।

प्रश्न 33007. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998: डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साडी ढंगसें पहिरब, फूल-फूलिया बहु पर पति-पत्नीक संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साडी ढंगसें पहिरब, फूल-फूलिया बहु पर पति-पत्नीक संवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साडी ढंगसें पहिरब, फूल-फूलिया बहु पर पति-पत्नीक संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33008. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998: डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33009. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998: डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33010. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998: डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33011. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998: डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33012. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998मे डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “साडी ढंगसेँ पहिरब, फूल-फूलिया बहु पर पति-पत्नीक संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3307, सूचकांक पंक्ति 1998मे डॉ प्रमोद कुमार (पांचडेरी)क “ढहलेल छी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “साडी ढंगसेँ पहिरब, फूल-फूलिया बहु पर पति-पत्नीक संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3308 : विदेह-सदेह 24 — इरा मल्लिक (गुजरात): बेटीक महिमा

प्रश्न 33013. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999: इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटीक महिमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटीक महिमा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 1999मे इरा मल्लिक (गुजरात)क प्रविष्टि “बेटीक महिमा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33014. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999: इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33015. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999: इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33016. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999: इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नीरा अपन बेटीक चहल-कदमी, दादीक संतोष।

उत्तर: घ. नीरा अपन बेटीक चहल-कदमी, दादीक संतोष।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नीरा अपन बेटीक चहल-कदमी, दादीक संतोष।” अछि।

प्रश्न 33017. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999: इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नीरा अपन बेटीक चहल-कदमी, दादीक संतोष।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नीरा अपन बेटीक चहल-कदमी, दादीक संतोष।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नीरा अपन बेटीक चहल-कदमी, दादीक संतोष।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33018. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999: इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इरा मल्लिक (गुजरात), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इरा मल्लिक (गुजरात), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33019. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999: इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33020. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999: इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33021. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999: इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33022. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999मे इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नीरा अपन बेटीक चहल-कदमी, दादीक संतोष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3308, सूचकांक पंक्ति 1999मे इरा मल्लिक (गुजरात)क “बेटीक महिमा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नीरा अपन बेटीक चहल-कदमी, दादीक संतोष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3309 : विदेह-सदेह 24 — सत्येन्द्र कर्ण: बनिया बाबा

प्रश्न 33023. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000: सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बनिया बाबा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बनिया बाबा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2000मे सत्येन्द्र कर्णक प्रविष्टि “बनिया बाबा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33024. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000: सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33025. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000: सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33026. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000: सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जमींदारक कारिन्दर बनियां बाबाक सीधा व्यवहारक प्रशंसा।

उत्तर: घ. जमींदारक कारिन्दर बनियां बाबाक सीधा व्यवहारक प्रशंसा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जमींदारक कारिन्दर बनियां बाबाक सीधा व्यवहारक प्रशंसा।” अछि।

प्रश्न 33027. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000: सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जमींदारक कारिन्दर बनियां बाबाक सीधा व्यवहारक प्रशंसा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जमींदारक कारिन्दर बनियां बाबाक सीधा व्यवहारक प्रशंसा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जमींदारक कारिन्दर बनियां बाबाक सीधा व्यवहारक प्रशंसा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33028. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000: सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्येन्द्र कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्येन्द्र कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33029. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000: सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33030. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000: सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33031. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000: सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33032. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000मे सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “जमींदारक कारिन्दर बनियां बाबाक सीधा व्यवहारक प्रशंसा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3309, सूचकांक पंक्ति 2000मे सत्येन्द्र कर्णक “बनिया बाबा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “जमींदारक कारिन्दर बनियां बाबाक सीधा व्यवहारक प्रशंसा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3310 : विदेह-सदेह 24 — जवाहर लाल कश्यप: पहिल प्रेम

प्रश्न 33033. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001: जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पहिल प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पहिल प्रेम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2001मे जवाहर लाल कश्यपक प्रविष्टि “पहिल प्रेम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33034. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001: जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33035. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001: जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33036. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001: जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामलीलाक रामसँ प्रेम-प्रस्ताव आ पहिल प्रेमक व्यंग्य।

उत्तर: घ. रामलीलाक रामसँ प्रेम-प्रस्ताव आ पहिल प्रेमक व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलीलाक रामसँ प्रेम-प्रस्ताव आ पहिल प्रेमक व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 33037. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001: जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामलीलाक रामसँ प्रेम-प्रस्ताव आ पहिल प्रेमक व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलीलाक रामसँ प्रेम-प्रस्ताव आ पहिल प्रेमक व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलीलाक रामसँ प्रेम-प्रस्ताव आ पहिल प्रेमक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33038. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001: जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33039. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001: जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33040. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001: जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33041. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001: जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33042. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001मे जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “रामलीलाक रामसँ प्रेम-प्रस्ताव आ पहिल प्रेमक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3310, सूचकांक पंक्ति 2001मे जवाहर लाल कश्यपक “पहिल प्रेम” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “रामलीलाक रामसँ प्रेम-प्रस्ताव आ पहिल प्रेमक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3311 : विदेह-सदेह 24 — जयंती कुमारी (भागलपुर): दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी

प्रश्न 33043. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002: जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2002मे जयंती कुमारी (भागलपुर)क प्रविष्टि “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33044. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002: जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33045. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002: जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33046. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002: जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘हीरा’ – रंग, वर गुणवान बुझब

उत्तर: घ. ‘हीरा’ – रंग, वर गुणवान बुझब

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘हीरा’ – रंग, वर गुणवान बुझब” अछि।

प्रश्न 33047. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002: जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘हीरा’ – रंग, वर गुणवान बुझब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘हीरा’ – रंग, वर गुणवान बुझब

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘हीरा’ – रंग, वर गुणवान बुझब” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33048. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002: जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जयंती कुमारी (भागलपुर), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जयंती कुमारी (भागलपुर), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33049. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002: जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33050. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002: जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33051. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002: जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33052. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002मे जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘हीरा’ – रंग, वर गुणवान बुझब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3311, सूचकांक पंक्ति 2002मे जयंती कुमारी (भागलपुर)क “दू टा बीहिन कथा : 1. हीरा 2. नीक लडकी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘हीरा’ – रंग, वर गुणवान बुझब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3312 : विदेह-सदेह 24 — डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर): छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)

प्रश्न 33053. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003: डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2003मे डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क प्रविष्टि “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33054. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003: डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33055. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003: डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33056. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003: डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषाक चतुराई, जीवनक बात, वृद्धजनक समस्या।

उत्तर: घ. भाषाक चतुराई, जीवनक बात, वृद्धजनक समस्या।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषाक चतुराई, जीवनक बात, वृद्धजनक समस्या।” अछि।

प्रश्न 33057. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003: डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषाक चतुराई, जीवनक बात, वृद्धजनक समस्या।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषाक चतुराई, जीवनक बात, वृद्धजनक समस्या।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषाक चतुराई, जीवनक बात, वृद्धजनक समस्या।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33058. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003: डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33059. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003: डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33060. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003: डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33061. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003: डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33062. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003मे डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “भाषाक चतुराई, जीवनक बात, वृद्धजनक समस्या।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3312, सूचकांक पंक्ति 2003मे डा. शिव कुमार प्रसाद (झंझारपुर)क “छौंक, जनि, फिगलटी, बहीर (४ टा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “भाषाक चतुराई, जीवनक बात, वृद्धजनक समस्या।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3313 : विदेह-सदेह 24 — विद्या चन्द्र झा “बमबम”: साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु

प्रश्न 33063. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2004मे विद्या चन्द्र झा “बमबम”क प्रविष्टि “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33064. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33065. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/कथा” अछि।

प्रश्न 33066. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।

उत्तर: घ. बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।” अछि।

प्रश्न 33067. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33068. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विद्या चन्द्र झा “बमबम”, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विद्या चन्द्र झा “बमबम”, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33069. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33070. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु”कँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33071. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33072. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004मे विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/कथा आ “बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3313, सूचकांक पंक्ति 2004मे विद्या चन्द्र झा “बमबम”क “साहित्य मंथन आ बीहिनि कथा, अधलाह बस्तु” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/कथा आ “बीहिनकथाक चर्चा, अधलाह बस्तु पर विचार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3314 : विदेह-सदेह 24 — भावना मिश्रा (नई दिल्ली): गरीब लोक

प्रश्न 33073. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गरीब लोक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीब लोक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2005मे भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क प्रविष्टि “गरीब लोक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33074. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33075. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33076. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।

उत्तर: घ. कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।” अछि।

प्रश्न 33077. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33078. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भावना मिश्रा (नई दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भावना मिश्रा (नई दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33079. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33080. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33081. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33082. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005मे भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3314, सूचकांक पंक्ति 2005मे भावना मिश्रा (नई दिल्ली)क “गरीब लोक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना, बाढ़, कर्ज, गरीबी आ बच्चाक भूख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3315 : विदेह-सदेह 24 — अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर): उघार

प्रश्न 33083. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उघार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उघार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2006मे अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क प्रविष्टि “उघार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33084. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33085. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33086. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘उघार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. ‘उघार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘उघार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 33087. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘उघार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘उघार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘उघार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33088. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33089. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33090. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33091. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33092. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006मे अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘उघार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3315, सूचकांक पंक्ति 2006मे अमर कान्त लाल (रघुनंदनपुर)क “उघार” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘उघार’ (खुला) – नाङ्गापन, कपड़ा-लाज पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3316 : विदेह-सदेह 24 — अमल कुमार झा (मधुबनी): हिरो

प्रश्न 33093. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हिरो

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिरो

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2007मे अमल कुमार झा (मधुबनी)क प्रविष्टि “हिरो” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33094. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33095. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33096. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।

उत्तर: घ. बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।” अछि।

प्रश्न 33097. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33098. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमल कुमार झा (मधुबनी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमल कुमार झा (मधुबनी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33099. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33100. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33101. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33102. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007मे अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3316, सूचकांक पंक्ति 2007मे अमल कुमार झा (मधुबनी)क “हिरो” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेटीक चेहरा-चित्रबनाए ‘हिरो’ – पितृ-स्नेह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3317 : विदेह-सदेह 24 — प्रभात कुमार कर्ण: प्रकृति तांडब

प्रश्न 33103. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रकृति तांडब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति तांडब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2008मे प्रभात कुमार कर्णक प्रविष्टि “प्रकृति तांडब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33104. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33105. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33106. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।

उत्तर: घ. प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।” अछि।

प्रश्न 33107. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33108. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रभात कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रभात कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33109. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33110. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33111. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33112. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008मे प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3317, सूचकांक पंक्ति 2008मे प्रभात कुमार कर्णक “प्रकृति तांडब” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “प्रकृति, आपदा, कोरोनाक समयमे संवाद शैली कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3318 : विदेह-सदेह 24 — डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी): २ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग

प्रश्न 33113. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. २ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2009मे डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क प्रविष्टि “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33114. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33115. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33116. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य

उत्तर: घ. ‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य” अछि।

प्रश्न 33117. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33118. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33119. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33120. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33121. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33122. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009मे डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3318, सूचकांक पंक्ति 2009मे डॉ.प्रमोद झा “गोकुल” (मधुबनी)क “२ टा बीहिनि कथा : सुपक गोपी, अनुराग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘सुपक गोपी’ – आम, पक्षी, प्रकृति सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3319 : विदेह-सदेह 24 — निवेदिता झा (दिल्ली): दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग

प्रश्न 33123. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2010मे निवेदिता झा (दिल्ली)क प्रविष्टि “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33124. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33125. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33126. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 33127. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33128. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक निवेदिता झा (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक निवेदिता झा (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33129. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33130. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33131. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33132. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010मे निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3319, सूचकांक पंक्ति 2010मे निवेदिता झा (दिल्ली)क “दू टा बीहिनि कथा : मुंहबजना, स्टैण्डिंग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “विवाह, सासु-बहु, साडी, स्टैण्डर्ड पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3320 : विदेह-सदेह 24 — ओम चौधरी (दिल्ली): सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल

प्रश्न 33133. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/ विषय कोन अछि?

क. सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2011मे ओम चौधरी (दिल्ली)क प्रविष्टि “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33134. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33135. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33136. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।

उत्तर: घ. वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।” अछि।

प्रश्न 33137. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33138. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम चौधरी (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम चौधरी (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33139. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33140. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33141. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33142. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011मे ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3320, सूचकांक पंक्ति 2011मे ओम चौधरी (दिल्ली)क “सुरज माटि-कादो/ गिरजेत छल” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “वर्षा, कीचड़, गाछक बच्ची, जीवनक सच।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3321 : विदेह-सदेह 24 — कल्पना झा (पटना): २ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली

प्रश्न 33143. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. २ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2012मे कल्पना झा (पटना)क प्रविष्टि “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33144. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33145. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33146. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा

उत्तर: घ. पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा” अछि।

प्रश्न 33147. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33148. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कल्पना झा (पटना), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कल्पना झा (पटना), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33149. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33150. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33151. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33152. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012मे कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3321, सूचकांक पंक्ति 2012मे कल्पना झा (पटना)क “२ टा बीहिनि कथा : नबका जोड़ी, हेराइत बोली” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पुरान चोली/पद्मश्रीक प्रतीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3322 : विदेह-सदेह 24 — भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’: संजय करे अँडख

प्रश्न 33153. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संजय करे अँडख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संजय करे अँडख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2013मे भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क प्रविष्टि “संजय करे अँडख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33154. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33155. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33156. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।

उत्तर: घ. संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 33157. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33158. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33159. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33160. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33161. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33162. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013मे भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3322, सूचकांक पंक्ति 2013मे भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’क “संजय करे अँडख” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “संजय आ धृतराष्ट्र – महाभारत प्रसंग पर नूतन व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3323 : विदेह-सदेह 24 — जगतरंजन झा: बीहिनि कथा (संवाद)

प्रश्न 33163. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिनि कथा (संवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिनि कथा (संवाद)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2014मे जगतरंजन झाक प्रविष्टि “बीहिनि कथा (संवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33164. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33165. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33166. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।

उत्तर: घ. अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।” अछि।

प्रश्न 33167. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33168. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगतरंजन झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगतरंजन झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33169. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33170. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33171. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33172. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014मे जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3323, सूचकांक पंक्ति 2014मे जगतरंजन झाक “बीहिनि कथा (संवाद)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन, लोकतंत्र, राजनीति पर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3324 : विदेह-सदेह 24 — शेफालिका वर्मा (दिल्ली): हँ एहनो होयत छैक

प्रश्न 33173. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हँ एहनो होयत छैक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हँ एहनो होयत छैक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2015मे शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क प्रविष्टि “हँ एहनो होयत छैक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33174. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33175. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33176. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।

उत्तर: घ. सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।” अछि।

प्रश्न 33177. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33178. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शेफालिका वर्मा (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शेफालिका वर्मा (दिल्ली), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33179. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33180. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33181. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33182. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015मे शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3324, सूचकांक पंक्ति 2015मे शेफालिका वर्मा (दिल्ली)क “हँ एहनो होयत छैक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सासु-बहु, रीना-परेशक रिश्ता आ सहगामिनी संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3325 : विदेह-सदेह 24 — प्रभाष अकिंचन: भरोस

प्रश्न 33183. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भरोस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भरोस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2016मे प्रभाष अकिंचनक प्रविष्टि “भरोस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33184. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33185. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33186. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।

उत्तर: घ. एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।” अछि।

प्रश्न 33187. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33188. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रभाष अकिंचन, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रभाष अकिंचन, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33189. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33190. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33191. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: प्रभाष अकिंचनक “भरोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33192. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016मे प्रभाष अकिंचनक “भरोस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3325, सूचकांक पंक्ति 2016मे प्रभाष अकिंचनक “भरोस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “एटीएम, वृद्ध, बेटाक भरोसा, दवाईक पैसाक चिंता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3326 : विदेह-सदेह 24 — मुन्नी कामत: दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग

प्रश्न 33193. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2017मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33194. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33195. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33196. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा

उत्तर: घ. ‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा” अछि।

प्रश्न 33197. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33198. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33199. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33200. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33201. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33202. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017मे मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3326, सूचकांक पंक्ति 2017मे मुन्नी कामतक “दू टा बीहिनि कथा : 1. चसिया 2. दरेग” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘चसिया’ – बेटाक सेनामे जाएबाक इच्छा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3327 : विदेह-सदेह 24 — मिसिदा: ट्राय एगेन लैटर

प्रश्न 33203. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ट्राय एगेन लैटर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ट्राय एगेन लैटर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2018मे मिसिदाक प्रविष्टि “ट्राय एगेन लैटर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33204. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33205. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33206. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।

उत्तर: घ. कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।” अछि।

प्रश्न 33207. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33208. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिसिदा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिसिदा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33209. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33210. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33211. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33212. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018मे मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3327, सूचकांक पंक्ति 2018मे मिसिदाक “ट्राय एगेन लैटर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना लॉकडाउन, बुजुर्ग जोडी, मोबाइल/फेसबुक प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3328 : विदेह-सदेह 24 — मृणाल आशुतोष: आँदोलन

प्रश्न 33213. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आँदोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आँदोलन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2019मे मृणाल आशुतोषक प्रविष्टि “आँदोलन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33214. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33215. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33216. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।

उत्तर: घ. किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।” अछि।

प्रश्न 33217. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33218. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मृणाल आशुतोष, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मृणाल आशुतोष, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33219. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33220. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33221. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: मृणाल आशुतोषक “आँदोलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33222. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019मे मृणाल आशुतोषक “आँदोलन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3328, सूचकांक पंक्ति 2019मे मृणाल आशुतोषक “आँदोलन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “किसान (गनेशी), सरकारी सहायता नै, भूख-आन्दोलन पर चर्चा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3329 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता):

प्रश्न 33223. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2020मे ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33224. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33225. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 33226. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 33227. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33228. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता), विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता), विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33229. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33230. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “”केँ विदेह-सदेह 24क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33231. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33232. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020मे ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3329, सूचकांक पंक्ति 2020मे ज्ञानबद्धन कंठ (कलकत्ता)क “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3330 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: फैदाबला बिजनेस

प्रश्न 33233. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फैदाबला बिजनेस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फैदाबला बिजनेस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2021मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “फैदाबला बिजनेस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33234. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33235. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33236. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।

उत्तर: घ. बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।” अछि।

प्रश्न 33237. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33238. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33239. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33240. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33241. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33242. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3330, सूचकांक पंक्ति 2021मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “फैदाबला बिजनेस” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यंग्यात्मक बिजनेस सुझाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3331 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: लालदाइ

प्रश्न 33243. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लालदाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लालदाइ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2022मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “लालदाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33244. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33245. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33246. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।

उत्तर: घ. बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।” अछि।

प्रश्न 33247. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33248. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33249. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33250. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33251. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33252. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3331, सूचकांक पंक्ति 2022मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “लालदाइ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बालसखी लालदाइ फोन पर, गाम-शहरक संस्कार, फेसबुक-प्रीति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3332 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: औकवर्ड ट्रेडिशन

प्रश्न 33253. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. औकवर्ड ट्रेडिशन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. औकवर्ड ट्रेडिशन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2023मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “औकवर्ड ट्रेडिशन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33254. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33255. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33256. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 33257. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33258. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33259. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33260. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33261. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33262. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3332, सूचकांक पंक्ति 2023मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “औकवर्ड ट्रेडिशन” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बच्चा बेरिया-बेरी, कनियाँ विवाह, पुरान दिन-प्रथा पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3333 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: भोल्टेज

प्रश्न 33263. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भोल्टेज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोल्टेज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2024मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “भोल्टेज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33264. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33265. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33266. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।

उत्तर: घ. भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।” अछि।

प्रश्न 33267. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33268. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33269. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33270. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33271. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33272. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3333, सूचकांक पंक्ति 2024मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “भोल्टेज” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “भोल्टेज नामक बालक, हेडमास्टर आ ग्रामीण नामकरणक विसंगति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3334 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’

प्रश्न 33273. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2025मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33274. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33275. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक "'नीक' आ 'बडा नीक'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "बीहिन कथा" अछि।

प्रश्न 33276. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक "'नीक' आ 'बडा नीक'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक प्रतीक – 'नीक' आ 'बडा नीक'क व्यंग्यात्मक तुलना।

उत्तर: घ. राजनीतिक प्रतीक – 'नीक' आ 'बडा नीक'क व्यंग्यात्मक तुलना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "राजनीतिक प्रतीक – 'नीक' आ 'बडा नीक'क व्यंग्यात्मक तुलना।" अछि।

प्रश्न 33277. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक "'नीक' आ 'बडा नीक'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक प्रतीक – 'नीक' आ 'बडा नीक'क व्यंग्यात्मक तुलना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक प्रतीक – 'नीक' आ 'बडा नीक'क व्यंग्यात्मक तुलना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "राजनीतिक प्रतीक – 'नीक' आ 'बडा नीक'क व्यंग्यात्मक तुलना।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33278. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक "'नीक' आ 'बडा नीक'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33279. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक "'नीक' आ 'बडा नीक'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33280. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक "'नीक' आ 'बडा नीक'"केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33281. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33282. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “राजनीतिक प्रतीक – ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’क व्यंग्यात्मक तुलना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3334, सूचकांक पंक्ति 2025मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “‘नीक’ आ ‘बडा नीक’” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “राजनीतिक प्रतीक – ‘नीक’ आ ‘बडा नीक’क व्यंग्यात्मक तुलना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3335 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: उषा मैडमक विदागरी

प्रश्न 33283. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उषा मैडमक विदागरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उषा मैडमक विदागरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2026मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “उषा मैडमक विदागरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33284. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33285. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33286. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।

उत्तर: घ. उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।” अछि।

प्रश्न 33287. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33288. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33289. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33290. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33291. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33292. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3335, सूचकांक पंक्ति 2026मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “उषा मैडमक विदागरी” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “उषा मैडम ऑटोसँ गिरल, ग्रामीण देखभाल, स्त्री-पुरुष भिन्नता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3336 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: दाबा

प्रश्न 33293. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दाबा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दाबा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2027मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “दाबा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33294. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33295. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33296. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।

उत्तर: घ. ‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।” अछि।

प्रश्न 33297. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33298. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33299. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33300. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33301. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33302. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3336, सूचकांक पंक्ति 2027मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “दाबा” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘दाबा’ शीर्षक – दबंगई, पंचायत, दबाव आ न्याय पर कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3337 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: पराश्रित

प्रश्न 33303. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पराश्रित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पराश्रित

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2028मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “पराश्रित” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33304. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33305. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33306. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।

उत्तर: घ. बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।” अछि।

प्रश्न 33307. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33308. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33309. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33310. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33311. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33312. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3337, सूचकांक पंक्ति 2028मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “पराश्रित” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “बच्ची नौकरी करय, पराश्रित – वृद्ध माता-पिताक आत्मनिर्भरता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3338 : विदेह-सदेह 24 — राजीव कर्ण: झूठक महत्व

प्रश्न 33313. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. झूठक महत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झूठक महत्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2029मे राजीव कर्णक प्रविष्टि “झूठक महत्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33314. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33315. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33316. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।

उत्तर: घ. सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।” अछि।

प्रश्न 33317. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33318. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजीव कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजीव कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33319. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33320. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33321. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: राजीव कर्णक “झूठक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33322. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029मे राजीव कर्णक “झूठक महत्व” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3338, सूचकांक पंक्ति 2029मे राजीव कर्णक “झूठक महत्व” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सत्यनिष्ठ युवक इंटरव्यूमे असफल – बाजारमे झूठक महत्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3339 : विदेह-सदेह 24 — जगदानन्द झा ‘मनु’: उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)

प्रश्न 33323. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2030मे जगदानन्द झा ‘मनु’क प्रविष्टि “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33324. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33325. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33326. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।

उत्तर: घ. दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।” अछि।

प्रश्न 33327. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33328. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33329. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33330. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33331. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33332. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3339, सूचकांक पंक्ति 2030मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “उचितिकता, मनुक्खक जीवन, अरबाइउर, छबि (४ टा)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “दर्जी, सामाजिक पहर, फोटो-प्रेम-पत्नी, सासु-ननदी बातचीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3340 : विदेह-सदेह 24 — विरेन्द्र कुमार झा: कोना बुझब

प्रश्न 33333. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोना बुझब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोना बुझब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2031मे विरेन्द्र कुमार झाक प्रविष्टि “कोना बुझब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33334. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33335. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33336. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।

उत्तर: घ. मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।” अछि।

प्रश्न 33337. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33338. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विरेन्द्र कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विरेन्द्र कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33339. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33340. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33341. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33342. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031मे विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3340, सूचकांक पंक्ति 2031मे विरेन्द्र कुमार झाक “कोना बुझब” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “मैथिली-मैथिल बीच मैथिलीमे बात नै करबाक विडम्बना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3341 : विदेह-सदेह 24 — मुन्ना जी (कलकत्ता): संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व

प्रश्न 33343. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2032मे मुन्ना जी (कलकत्ता)क प्रविष्टि “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33344. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33345. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा/विमर्श

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा/विमर्श

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा/विमर्श” अछि।

प्रश्न 33346. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।

उत्तर: घ. बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।” अछि।

प्रश्न 33347. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33348. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी (कलकत्ता), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा/विमर्श

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी (कलकत्ता), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा/विमर्श

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33349. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33350. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व”कैँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथा/विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथा/विमर्शक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33351. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33352. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032मे मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा/विमर्श आ “बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3341, सूचकांक पंक्ति 2032मे मुन्ना जी (कलकत्ता)क “संवेदनाक सीढीपर ठाढ- ‘ताल बेताल’, बीहिन कथाक आधार स्तम्भ छलाह- श्री राज, आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत बीहिन कथा, बीहिन कथाक दशा- दिशा, बीहिन कथाक विकास मे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा/विमर्श आ “बीहिन कथाक व्यापक विमर्श, ‘श्री राज’, सीड स्टोरीक तुलना, लघुकथासँ अन्तर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3342 : विदेह-सदेह 24 — अनामिका मिश्र: २ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास

प्रश्न 33353. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. २ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2033मे अनामिका मिश्रक प्रविष्टि “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33354. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33355. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33356. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।

उत्तर: घ. ‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।” अछि।

प्रश्न 33357. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33358. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनामिका मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनामिका मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33359. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33360. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33361. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33362. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033मे अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3342, सूचकांक पंक्ति 2033मे अनामिका मिश्रक “२ टा बीहिन कथा – तलाक, एहसास” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “‘तलाक’ (जज-पत्नी मुक्ति), ‘एहसास’ (ननदी-दहेज-सासुक व्यवहार)।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3343 : विदेह-सदेह 24 — नीरज कर्ण: बीहिन कथा- “छुच्छे”

प्रश्न 33363. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा- “छुच्छे”

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा- “छुच्छे”

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2034मे नीरज कर्णक प्रविष्टि “बीहिन कथा- “छुच्छे”” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33364. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे””क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33365. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे””क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33366. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।

उत्तर: घ. नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।” अछि।

प्रश्न 33367. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33368. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे””क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नीरज कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नीरज कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33369. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33370. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे””केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33371. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33372. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034मे नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3343, सूचकांक पंक्ति 2034मे नीरज कर्णक “बीहिन कथा- “छुच्छे”” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नेता भाषण, भीड़, घरीली रोटी-तरकारी संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3344 : विदेह-सदेह 24 — सुनीता कुमारी: अनेरुआ

प्रश्न 33373. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनेरुआ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनेरुआ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2035मे सुनीता कुमारीक प्रविष्टि “अनेरुआ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33374. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33375. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33376. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।

उत्तर: घ. वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।” अछि।

प्रश्न 33377. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33378. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुनीता कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुनीता कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33379. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33380. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33381. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33382. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035मे सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3344, सूचकांक पंक्ति 2035मे सुनीता कुमारीक “अनेरुआ” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “वर्षा, बेटा स्कूल जाएबाक आग्रह, बारिशमे ‘अनेरुआ’(कटिहर) घूमैत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3345 : विदेह-सदेह 24 — सुनीता कुमारी: पोतीक बियाह

प्रश्न 33383. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोतीक बियाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोतीक बियाह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2036मे सुनीता कुमारीक प्रविष्टि “पोतीक बियाह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33384. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33385. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33386. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।

उत्तर: घ. पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।” अछि।

प्रश्न 33387. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33388. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुनीता कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुनीता कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33389. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33390. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह”कें विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33391. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33392. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036मे सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3345, सूचकांक पंक्ति 2036मे सुनीता कुमारीक “पोतीक बियाह” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “पोतीक विवाह, पुरान गहना, माँ-बेटाक आर्थिक द्वन्द्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3346 : विदेह-सदेह 24 — –: ऑनलाइन क्लास

प्रश्न 33393. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: –क “ऑनलाइन क्लास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ऑनलाइन क्लास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऑनलाइन क्लास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2037मे –क प्रविष्टि “ऑनलाइन क्लास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33394. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: –क “ऑनलाइन क्लास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33395. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: –क “ऑनलाइन क्लास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33396. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: –क “ऑनलाइन क्लास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।

उत्तर: घ. कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।” अछि।

प्रश्न 33397. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: –क “ऑनलाइन क्लास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33398. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: –क “ऑनलाइन क्लास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33399. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: –क “ऑनलाइन क्लास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33400. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: –क “ऑनलाइन क्लास”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33401. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: –क “ऑनलाइन क्लास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33402. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037मे –क “ऑनलाइन क्लास” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3346, सूचकांक पंक्ति 2037मे –क “ऑनलाइन क्लास” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “कोरोना काल, प्राइवेट-सरकारी स्कूलक ऑनलाइन क्लासमे असमानता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3347 : विदेह-सदेह 24 — –: ईनर

प्रश्न 33403. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ईनर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ईनर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2038मे –क प्रविष्टि “ईनर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33404. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33405. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33406. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।

उत्तर: घ. रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।” अछि।

प्रश्न 33407. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33408. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33409. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33410. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33411. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: –क “ईनर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33412. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038मे –क “ईनर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3347, सूचकांक पंक्ति 2038मे –क “ईनर” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “रीश बाबू – सुइटर-ईनर (आइएनएनईआर) पहिरबाक असमंजस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3348 : विदेह-सदेह 24 — अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी): मुखिया

प्रश्न 33413. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुखिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुखिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2039मे अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क प्रविष्टि “मुखिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33414. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33415. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33416. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।

उत्तर: घ. रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।” अछि।

प्रश्न 33417. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33418. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33419. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33420. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33421. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33422. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039मे अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3348, सूचकांक पंक्ति 2039मे अंजू खरबंदा (मूल हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “रीता-सुलभ, सुरक्षित कपड़ा, पुरुषक उपस्थितिक आभास।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3349 : विदेह-सदेह 24 — रति प्रभाकर (हिन्दी): अदकल जीह

प्रश्न 33423. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अदकल जीह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अदकल जीह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2040मे रति प्रभाकर (हिन्दी)क प्रविष्टि “अदकल जीह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33424. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33425. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33426. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।

उत्तर: घ. पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।” अछि।

प्रश्न 33427. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33428. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रति प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रति प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33429. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33430. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33431. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33432. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040मे रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3349, सूचकांक पंक्ति 2040मे रति प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पड़ोसनसँ बेटी रखबाक अनुरोध (परीक्षा समय)।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3350 : विदेह-सदेह 24 — सुरीश खन्ना (हिन्दी): घुरपेंट

प्रश्न 33433. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घुरपेंट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घुरपेंट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2041मे सुरीश खन्ना (हिन्दी)क प्रविष्टि “घुरपेंट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33434. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33435. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33436. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 33437. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33438. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुरीश खन्ना (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुरीश खन्ना (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33439. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33440. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33441. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33442. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041मे सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3350, सूचकांक पंक्ति 2041मे सुरीश खन्ना (हिन्दी)क “घुरपेंट” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “मन्त्री, सरकार, आन्दोलन, सेक्रेटरी-राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3351 : विदेह-सदेह 24 — विजय ‘विभोर’ (हिन्दी): अन्नदाता

प्रश्न 33443. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्नदाता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्नदाता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2042मे विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क प्रविष्टि “अन्नदाता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33444. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33445. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33446. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात

उत्तर: घ. पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात” अछि।

प्रश्न 33447. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33448. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजय ‘विभोर’ (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजय ‘विभोर’ (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33449. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33450. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33451. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33452. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042मे विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3351, सूचकांक पंक्ति 2042मे विजय ‘विभोर’ (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पीपर गाछ पर बैसल मुखिया, भोट देबाक बात” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3352 : विदेह-सदेह 24 — योगराज प्रभाकर (हिन्दी): ताल आ किल

प्रश्न 33453. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ताल आ किल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ताल आ किल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2043मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क प्रविष्टि “ताल आ किल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33454. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33455. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33456. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।

उत्तर: घ. बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।” अछि।

प्रश्न 33457. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33458. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगराज प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगराज प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33459. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33460. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33461. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33462. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3352, सूचकांक पंक्ति 2043मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “ताल आ किल” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “बरखा, पोखरि, किल फूटलक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3353 : विदेह-सदेह 24 — सदानन्द काशीराम (हिन्दी): नाचर चहलेबाक फयदा

प्रश्न 33463. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाचर चहलेबाक फयदा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाचर चहलेबाक फयदा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2044मे सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क प्रविष्टि “नाचर चहलेबाक फयदा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33464. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33465. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33466. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 33467. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33468. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सदानन्द काशीराम (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सदानन्द काशीराम (हिन्दी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33469. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33470. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33471. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33472. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044मे सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3353, सूचकांक पंक्ति 2044मे सदानन्द काशीराम (हिन्दी)क “नाचर चहलेबाक फयदा” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “भूरा कुकुर, नाचर-टटकारी, प्रमोशनक लाभ पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3354 : विदेह-सदेह 24 — डा. पुष्कर‌राज भट्ट (नेपाली): बहिष्करण

प्रश्न 33473. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्कर‌राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बहिष्करण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहिष्करण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2045मे डा. पुष्कर‌राज भट्ट (नेपाली)क प्रविष्टि “बहिष्करण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33474. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्कर‌राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33475. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्कर‌राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33476. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्कर‌राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।

उत्तर: घ. कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।” अछि।

प्रश्न 33477. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33478. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33479. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33480. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33481. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33482. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045मे डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3354, सूचकांक पंक्ति 2045मे डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “कोरोना, पृथक्करण, समाजसँ दूरीक दबाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3355 : विदेह-सदेह 24 — प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली): सौन्दर्य आ सभ्यता

प्रश्न 33483. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सौन्दर्य आ सभ्यता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सौन्दर्य आ सभ्यता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2046मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क प्रविष्टि “सौन्दर्य आ सभ्यता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33484. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33485. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33486. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लडका-लडकी खेल, भार ढुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।

उत्तर: घ. लडका-लडकी खेल, भार ढुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लडका-लडकी खेल, भार ढुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।” अछि।

प्रश्न 33487. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लडका-लडकी खेल, भार ढुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लडका-लडकी खेल, भार ढुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लडका-लडकी खेल, भार ढुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33488. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33489. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33490. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33491. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33492. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लडका-लडकी खेल, भार ढुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3355, सूचकांक पंक्ति 2046मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ सभ्यता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लडका-लडकी खेल, भार ढुवानी, पहिनावामे सौन्दर्यबोध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3356 : विदेह-सदेह 24 — हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली): २ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)

प्रश्न 33493. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. २ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2047मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क प्रविष्टि “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33494. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33495. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33496. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।

उत्तर: घ. प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।” अछि।

प्रश्न 33497. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33498. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33499. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33500. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33501. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33502. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3356, सूचकांक पंक्ति 2047मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “२ टा बीहिन कथा: (नाम उल्लेख नै)” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “प्रहरी भ्यान, राजनीति, पच्छिमक आधिपत्य आस्था।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3357 : विदेह-सदेह 24 — तारा केसी (नेपाली): अपन परिचय

प्रश्न 33503. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन परिचय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2048मे तारा केसी (नेपाली)क प्रविष्टि “अपन परिचय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33504. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33505. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33506. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।

उत्तर: घ. लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।” अछि।

प्रश्न 33507. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33508. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तारा केसी (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तारा केसी (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33509. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33510. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33511. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33512. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048मे तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3357, सूचकांक पंक्ति 2048मे तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लडकादेखाब, दहेज, आत्म-सम्मान आ बेटीक विवाह नै करबाक निर्णय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3358 : विदेह-सदेह 24 — रीना शर्मा (नेपाली): चरित्र

प्रश्न 33513. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चरित्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चरित्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2049मे रीना शर्मा (नेपाली)क प्रविष्टि “चरित्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33514. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33515. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33516. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।

उत्तर: घ. ‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।” अछि।

प्रश्न 33517. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33518. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रीना शर्मा (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रीना शर्मा (नेपाली), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33519. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33520. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33521. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33522. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049मे रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3358, सूचकांक पंक्ति 2049मे रीना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “‘चरित्रबहादुर अधिकारी’ सर, स्कूल, फेसबुक फ्रेंड आ नौकरी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3359 : विदेह-सदेह 24 — डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी): तलाक

प्रश्न 33523. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तलाक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तलाक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2050मे डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क प्रविष्टि “तलाक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33524. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33525. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33526. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।

उत्तर: घ. दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।” अछि।

प्रश्न 33527. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33528. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33529. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33530. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33531. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33532. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050मे डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3359, सूचकांक पंक्ति 2050मे डॉ. प्रदीप कौरा (पंजाबी)क “तलाक” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “दू व्यक्ति – तलाक एक दशक बाद नै हो सकबाक बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3360 : विदेह-सदेह 24 — रंजन बोहा (पंजाबी): करूगर सत्य

प्रश्न 33533. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. करूगर सत्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करूगर सत्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2051मे रंजन बोहा (पंजाबी)क प्रविष्टि “करूगर सत्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33534. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33535. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33536. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।

उत्तर: घ. आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।” अछि।

प्रश्न 33537. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33538. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रंजन बोहा (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रंजन बोहा (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33539. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33540. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33541. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33542. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051मे रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3360, सूचकांक पंक्ति 2051मे रंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “आतंकवादी हमला मे मारल, शोकसभा, आर्थिक मुआवजा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3361 : विदेह-सदेह 24 — जगदीश अर्जानी (पंजाबी): कथानक

प्रश्न 33543. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कथानक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथानक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2052मे जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क प्रविष्टि “कथानक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33544. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33545. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33546. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।

उत्तर: घ. लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।” अछि।

प्रश्न 33547. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33548. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश अर्जानी (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश अर्जानी (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33549. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33550. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33551. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33552. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052मे जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3361, सूचकांक पंक्ति 2052मे जगदीश अर्जानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “लेखक कथा-दृश्य देखि उत्साह, कीचड़ फसल गाडी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3362 : विदेह-सदेह 24 — जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी): अस्थिरता

प्रश्न 33553. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अस्थिरता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्थिरता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2053मे जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क प्रविष्टि “अस्थिरता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33554. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33555. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33556. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।

उत्तर: घ. मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।” अछि।

प्रश्न 33557. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33558. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33559. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33560. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33561. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33562. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053मे जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3362, सूचकांक पंक्ति 2053मे जंगबहादुर सिंह घुम्ण (पंजाबी)क “अस्थिरता” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “मुआवजा, हत्याराक पत्नी-पुत्र, दया-भीख पर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3363 : विदेह-सदेह 24 — दीपक बुदकी (उर्दू): जन्नत

प्रश्न 33563. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जन्नत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्नत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2054मे दीपक बुदकी (उर्दू)क प्रविष्टि “जन्नत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33564. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33565. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33566. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।

उत्तर: घ. जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।” अछि।

प्रश्न 33567. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33568. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दीपक बुदकी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दीपक बुदकी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33569. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33570. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33571. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33572. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054मे दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3363, सूचकांक पंक्ति 2054मे दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “जन्नतक द्वार, आतंकी-हिंसाक कर्म पर प्रश्न।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3364 : विदेह-सदेह 24 — मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू): ईनाम

प्रश्न 33573. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ईनाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ईनाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2055मे मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क प्रविष्टि “ईनाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33574. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33575. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33576. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।

उत्तर: घ. सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।” अछि।

प्रश्न 33577. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33578. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33579. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33580. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33581. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33582. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055मे मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3364, सूचकांक पंक्ति 2055मे मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “सपना-बिक्री, जमींदारीक बंटवारा, सरकारी नौकरी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3365 : विदेह-सदेह 24 — इब्न आसी (उर्दू): फेर मनुक्खक की भेले?

प्रश्न 33583. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फेर मनुक्खक की भेले?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फेर मनुक्खक की भेले?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2056मे इब्न आसी (उर्दू)क प्रविष्टि “फेर मनुक्खक की भेले?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33584. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33585. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33586. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।

उत्तर: घ. नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।” अछि।

प्रश्न 33587. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33588. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इब्न आसी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इब्न आसी (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33589. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33590. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33591. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33592. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056मे इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3365, सूचकांक पंक्ति 2056मे इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “नूहक नाव, मानव उत्पत्ति, नस्ल-गणित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3366 : विदेह-सदेह 24 — रतन सिंह (उर्दू): बिना शीर्षकक

प्रश्न 33593. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिना शीर्षकक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिना शीर्षकक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2057मे रतन सिंह (उर्दू)क प्रविष्टि “बिना शीर्षकक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33594. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33595. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33596. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।

उत्तर: घ. उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 33597. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33598. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रतन सिंह (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रतन सिंह (उर्दू), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33599. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33600. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33601. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33602. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057मे रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3366, सूचकांक पंक्ति 2057मे रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “उल्लू आ मानव – भण्डारणक सलाह, मानवक संचयशीलता पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3367 : विदेह-सदेह 24 — सच्चिदानन्द कर (ओडिया): तितली आ प्रेम

प्रश्न 33603. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तितली आ प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तितली आ प्रेम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2058मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क प्रविष्टि “तितली आ प्रेम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33604. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33605. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33606. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।

उत्तर: घ. तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।” अछि।

प्रश्न 33607. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33608. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सच्चिदानन्द कर (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सच्चिदानन्द कर (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33609. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33610. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33611. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33612. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3367, सूचकांक पंक्ति 2058मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “तितली-पछाड़, लड़का-लड़की प्रेम कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3368 : विदेह-सदेह 24 — प्रज्ञा महान्ति (ओडिया): मेमोरीचिप्स

प्रश्न 33613. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मेमोरीचिप्स

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेमोरीचिप्स

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2059मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क प्रविष्टि “मेमोरीचिप्स” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33614. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33615. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33616. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।

उत्तर: घ. पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।” अछि।

प्रश्न 33617. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33618. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रज्ञा महान्ति (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रज्ञा महान्ति (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33619. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33620. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33621. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33622. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3368, सूचकांक पंक्ति 2059मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “पोस्टमार्टम, डॉक्टरक मेमोरी-चिपक तलाश।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3369 : विदेह-सदेह 24 — विनय कुमार दास (ओडिया): कर्मफल

प्रश्न 33623. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कर्मफल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कर्मफल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2060मे विनय कुमार दास (ओडिया)क प्रविष्टि “कर्मफल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33624. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33625. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33626. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।

उत्तर: घ. बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।” अछि।

प्रश्न 33627. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33628. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनय कुमार दास (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनय कुमार दास (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33629. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33630. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33631. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33632. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060मे विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3369, सूचकांक पंक्ति 2060मे विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “बाप-बेटा संवाद, स्त्रीक मृत्यु, पुत्रक उपेक्षा पर कर्मफल बात।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3370 : विदेह-सदेह 24 — गायत्री दास (ओडिया): बुझौँअलि

प्रश्न 33633. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुझौँअलि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुझौँअलि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2061मे गायत्री दास (ओडिया)क प्रविष्टि “बुझौँअलि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33634. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33635. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33636. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।

उत्तर: घ. ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।” अछि।

प्रश्न 33637. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33638. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गायत्री दास (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गायत्री दास (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33639. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33640. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33641. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौँअलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33642. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061मे गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौंअलि” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3370, सूचकांक पंक्ति 2061मे गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौंअलि” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “ड्रग एडिक्ट बेटा, बाप-डाक्टर संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3371 : विदेह-सदेह 24 — मिनती प्रधान (ओडिया): संगी

प्रश्न 33643. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संगी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संगी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2062मे मिनती प्रधान (ओडिया)क प्रविष्टि “संगी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33644. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (अनुवाद)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (अनुवाद)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (अनुवाद)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33645. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 33646. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।

उत्तर: घ. कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।” अछि।

प्रश्न 33647. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33648. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिनती प्रधान (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिनती प्रधान (ओडिया), विधा गद्य (अनुवाद), उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33649. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33650. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (अनुवाद)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य (अनुवाद)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33651. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33652. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062मे मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3371, सूचकांक पंक्ति 2062मे मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि गद्य (अनुवाद), बीहिन कथा आ “कोरोना काल, दुई सखी-प्रतिद्वंद्विता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3372 : विदेह-सदेह 24 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग

प्रश्न 33653. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2063मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33654. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य (पद्य/गद्य)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य (पद्य/गद्य)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य (पद्य/गद्य)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33655. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गद्य/परिचय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गद्य/परिचय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गद्य/परिचय” अछि।

प्रश्न 33656. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।

उत्तर: घ. ‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।” अछि।

प्रश्न 33657. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33658. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य (पद्य/गद्य), उप-विधा गद्य/परिचय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य (पद्य/गद्य), उप-विधा गद्य/परिचय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33659. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33660. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य (पद्य/गद्य)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गद्य/परिचयक रूपमे गद्य (पद्य/गद्य)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गद्य/परिचयक रूपमे गद्य (पद्य/गद्य)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33661. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33662. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” प्रविष्टि गद्य (पद्य/गद्य), गद्य/परिचय आ “‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3372, सूचकांक पंक्ति 2063मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अपूर्वा, राम लोचन ठाकूर प्रसंग” प्रविष्टि गद्य (पद्य/गद्य), गद्य/परिचय आ “‘अपूर्वा’ (1996) काव्य-संग्रहक चर्चा, रामलोचन ठाकूर प्रसंग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3373 : विदेह-सदेह 24 — आशीष अनचिन्हार: पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति

प्रश्न 33663. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2064मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33664. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य/बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य/बीहिन कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य/बीहिन कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33665. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बहुविधा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बहुविधा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बहुविधा” अछि।

प्रश्न 33666. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लॉकडाउन-व्यंग्य।

उत्तर: घ. रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लॉकडाउन-व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लॉकडाउन-व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 33667. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लॉकडाउन-व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लॉकडाउन-व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लॉकडाउन-व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33668. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य/पद्य/बीहिन कथा, उप-विधा बहुविधा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य/पद्य/बीहिन कथा, उप-विधा बहुविधा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33669. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33670. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति”केँ विदेह-सदेह 24क गद्य/पद्य/बीहिन कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बहुविधाक रूपमे गद्य/पद्य/बीहिन कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बहुविधाक रूपमे गद्य/पद्य/बीहिन कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33671. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33672. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064मे आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” प्रविष्टि गद्य/पद्य/बीहिन कथा, बहुविधा आ “रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लॉकडाउन-व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3373, सूचकांक पंक्ति 2064मे आशीष अनचिन्हारक “पारंपरिक-प्रगतिशील (रामलोचन ठाकूर), अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकूर, ४ टा बीहिन कथा (बूझब, मजबूरी, स्थिति, भूत), बीहिनकथा की छै?, लौकडाउन कर कथा, पाठक हमर पोथी किर पद्धति” प्रविष्टि गद्य/पद्य/बीहिन कथा, बहुविधा आ “रामलोचन ठाकूर पर बृहद् लेख, बीहिन कथा विमर्श, लॉकडाउन-व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3374 : विदेह-सदेह 24 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: गजल – किल्लु गजल (पद्य)

प्रश्न 33673. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल – किल्लु गजल (पद्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल – किल्लु गजल (पद्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2065मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33674. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33675. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 33676. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।

उत्तर: घ. छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।” अछि।

प्रश्न 33677. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33678. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33679. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33680. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33681. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33682. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3374, सूचकांक पंक्ति 2065मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “गजल – किल्लु गजल (पद्य)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “छन्दबद्ध गजल – पुस्तक पढ़नाइ, समसामयिक स्थिति, ‘अनिल’ संकेत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3375 : विदेह-सदेह 24 — ज्ञानवर्द्धन कंठ: गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि

प्रश्न 33683. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2066मे ज्ञानवर्द्धन कंठक प्रविष्टि “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33684. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33685. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 33686. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।

उत्तर: घ. बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।” अछि।

प्रश्न 33687. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33688. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33689. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33690. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33691. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33692. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3375, सूचकांक पंक्ति 2066मे ज्ञानवर्द्धन कंठक “गजल (किल्लु गजल) / किल्लु गजल, ‘काज भेलै ओकर ओ दफा’, ‘हमरा सन केओ नीक’, ‘सबहक जय विसयाराम’ आदि” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “बहुशेर गजल, व्यंग्य, सामाजिक, राजनैतिक व्यङ्ग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3376 : विदेह-सदेह 24 — सुभाष कुमार कामत: फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम

प्रश्न 33693. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2067मे सुभाष कुमार कामतक प्रविष्टि “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33694. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33695. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33696. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।

उत्तर: घ. फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।” अछि।

प्रश्न 33697. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33698. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष कुमार कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष कुमार कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33699. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33700. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33701. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33702. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067मे सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3376, सूचकांक पंक्ति 2067मे सुभाष कुमार कामतक “फाटल जिंस, जनगणना मे, हरायल गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “फटल जीन्स, जनगणना मे मैथिली लिखाबाक आग्रह, गामक हाल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3377 : विदेह-सदेह 24 — मुन्ना जी: बाल कविता- सुसंस्कार

प्रश्न 33703. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल कविता- सुसंस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल कविता- सुसंस्कार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2068मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “बाल कविता- सुसंस्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33704. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33705. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 33706. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।

उत्तर: घ. बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।” अछि।

प्रश्न 33707. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33708. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33709. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33710. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33711. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33712. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068मे मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3377, सूचकांक पंक्ति 2068मे मुन्ना जीक “बाल कविता- सुसंस्कार” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल संस्कार, सपना, शिक्षा, संस्कारक उपदेश।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3378 : विदेह-सदेह 24 — आशीष अनचिन्हार: गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)

प्रश्न 33713. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2069मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33714. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33715. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 33716. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।

उत्तर: घ. विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।” अछि।

प्रश्न 33717. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33718. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33719. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33720. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33721. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33722. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069मे आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3378, सूचकांक पंक्ति 2069मे आशीष अनचिन्हारक “गजल (बाहर बाहर जोड़ल भिड़ार, निशानापर बूढ़, पानि कादो, बात हुनकर, एक आँगन बहुते, सभटा सुविधा, आइ जे इतिहास, गरीबक नाम, मोन बनलै, मोनक उपर, मोन मीलै, जेना-तेना, लंफ लंपा, पेटक लड़ाइ, दुबहि जान, अपने जन्मल इफ आ, बाजै घंटी)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विविध विषय – अस्मिता, भ्रष्टाचार, प्रेम, राजनीति, व्यंग्य गजल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3379 : विदेह-सदेह 24 — आभा झा: अस्मिता, महामानव

प्रश्न 33723. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अस्मिता, महामानव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्मिता, महामानव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2070मे आभा झाक प्रविष्टि “अस्मिता, महामानव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33724. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33725. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33726. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।

उत्तर: घ. स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।” अछि।

प्रश्न 33727. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33728. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आभा झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आभा झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33729. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33730. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33731. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: आभा झाक “अस्मिता, महामानव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33732. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070मे आभा झाक “अस्मिता, महामानव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3379, सूचकांक पंक्ति 2070मे आभा झाक “अस्मिता, महामानव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्त्री अस्मिता, अहिल्या, सीता, मानवता, करुणा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3380 : विदेह-सदेह 24 — आकांक्षा कर्ण: बेटी हमर अभिमान

प्रश्न 33733. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटी हमर अभिमान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी हमर अभिमान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2071मे आकांक्षा कर्णक प्रविष्टि “बेटी हमर अभिमान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33734. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33735. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33736. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।

उत्तर: घ. बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।” अछि।

प्रश्न 33737. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33738. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आकांक्षा कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आकांक्षा कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33739. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33740. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33741. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33742. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071मे आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3380, सूचकांक पंक्ति 2071मे आकांक्षा कर्णक “बेटी हमर अभिमान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेटी, लक्ष्मी, दुर्गा, सीता – अभिमान आ सशक्तिकरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3381 : विदेह-सदेह 24 — सोनी कर्ण: बेटी

प्रश्न 33743. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2072मे सोनी कर्णक प्रविष्टि “बेटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33744. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33745. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33746. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।

उत्तर: घ. बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।” अछि।

प्रश्न 33747. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33748. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सोनी कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सोनी कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33749. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33750. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33751. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: सोनी कर्णक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33752. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072मे सोनी कर्णक “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3381, सूचकांक पंक्ति 2072मे सोनी कर्णक “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेटीक जन्म पर अनिच्छा, सामाजिक भेदभाव।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3382 : विदेह-सदेह 24 — रागिनी प्रीत: सखी, (बीहिन कथाक पद्य)

प्रश्न 33753. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सखी, (बीहिन कथाक पद्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सखी, (बीहिन कथाक पद्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2073मे रागिनी प्रीतक प्रविष्टि “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33754. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33755. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता” अछि।

प्रश्न 33756. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल सखी, याद, नेनपन।

उत्तर: घ. बाल सखी, याद, नेनपन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल सखी, याद, नेनपन।” अछि।

प्रश्न 33757. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल सखी, याद, नेनपन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल सखी, याद, नेनपन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल सखी, याद, नेनपन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33758. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रागिनी प्रीत, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रागिनी प्रीत, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33759. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33760. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33761. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33762. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073मे रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “बाल सखी, याद, नेनपन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3382, सूचकांक पंक्ति 2073मे रागिनी प्रीतक “सखी, (बीहिन कथाक पद्य)” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “बाल सखी, याद, नेनपन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3383 : विदेह-सदेह 24 — रागिनी मनोरथ: शिक्षा

प्रश्न 33763. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शिक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2074मे रागिनी मनोरथक प्रविष्टि “शिक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33764. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33765. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33766. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षाक ज्योति, उद्धार।

उत्तर: घ. शिक्षाक ज्योति, उद्धार।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षाक ज्योति, उद्धार।” अछि।

प्रश्न 33767. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षाक ज्योति, उद्धार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षाक ज्योति, उद्धार।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षाक ज्योति, उद्धार।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33768. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रागिनी मनोरथ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रागिनी मनोरथ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33769. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33770. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33771. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: रागिनी मनोरथक “शिक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33772. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074मे रागिनी मनोरथक “शिक्षा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शिक्षाक ज्योति, उद्धार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3383, सूचकांक पंक्ति 2074मे रागिनी मनोरथक “शिक्षा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शिक्षाक ज्योति, उद्धार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3384 : विदेह-सदेह 24 — प्रीति प्रभा (जमशेदपुर): मनोरथ

प्रश्न 33773. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मनोरथ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनोरथ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2075मे प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क प्रविष्टि “मनोरथ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33774. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33775. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33776. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।

उत्तर: घ. माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।” अछि।

प्रश्न 33777. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33778. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रीति प्रभा (जमशेदपुर), विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रीति प्रभा (जमशेदपुर), विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33779. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33780. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33781. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33782. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075मे प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3384, सूचकांक पंक्ति 2075मे प्रीति प्रभा (जमशेदपुर)क “मनोरथ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माता अम्बे, मनोरथ पूर्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3385 : विदेह-सदेह 24 — संतोष कुमार राय ‘बटोही’: गडबडझाला

प्रश्न 33783. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “गडबडझाला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गडबडझाला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गडबडझाला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2076मे संतोष कुमार राय ‘बटोही’क प्रविष्टि “गडबडझाला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33784. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “गडबडझाला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33785. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “गडबडझाला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33786. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय ‘बटोही’क “गडबडझाला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।

उत्तर: घ. पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।” अछि।

प्रश्न 33787. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33788. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33789. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33790. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला"केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33791. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला" प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33792. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3385, सूचकांक पंक्ति 2076मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क "गडबडझाला" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "पंचायत, भ्रष्टाचार, गडबडझालाक गीत।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3386 : विदेह-सदेह 24 — अनिल ठाकुर: आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)

प्रश्न 33793. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2077मे अनिल ठाकुरक प्रविष्टि “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33794. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33795. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. देश/सामाजिक कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. देश/सामाजिक कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “देश/सामाजिक कविता” अछि।

प्रश्न 33796. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान

उत्तर: घ. मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान” अछि।

प्रश्न 33797. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33798. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनिल ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा देश/सामाजिक कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनिल ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा देश/सामाजिक कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33799. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33800. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ देश/सामाजिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ देश/सामाजिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33801. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33802. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077मे अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” प्रविष्टि पद्य, देश/सामाजिक कविता आ “मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3386, सूचकांक पंक्ति 2077मे अनिल ठाकुरक “आह्वान, जरैत जोबिला (दो कविता)” प्रविष्टि पद्य, देश/सामाजिक कविता आ “मिथिलाक रोजगार, करुण मुखर आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3387 : विदेह-सदेह 24 — विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.): स्थन, योनि आ गर्भाशय

प्रश्न 33803. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्थन, योनि आ गर्भाशय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्थन, योनि आ गर्भाशय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2078मे विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क प्रविष्टि “स्थन, योनि आ गर्भाशय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33804. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य (कविता)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य (कविता)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य (कविता)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33805. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नारीवादी कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नारीवादी कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नारीवादी कविता” अछि।

प्रश्न 33806. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।

उत्तर: घ. स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।” अछि।

प्रश्न 33807. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33808. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.), विधा पद्य (कविता), उप-विधा नारीवादी कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.), विधा पद्य (कविता), उप-विधा नारीवादी कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33809. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33810. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य (कविता)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नारीवादी कविताक रूपमे पद्य (कविता)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नारीवादी कविताक रूपमे पद्य (कविता)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33811. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33812. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078मे विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय” प्रविष्टि पद्य (कविता), नारीवादी कविता आ “स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3387, सूचकांक पंक्ति 2078मे विभा रानी (मूल हिन्दी ‘स्थन, योनि आ गर्भाशय’ अनु.)क “स्थन, योनि आ गर्भाशय” प्रविष्टि पद्य (कविता), नारीवादी कविता आ “स्तन, योनि, गर्भाशय – स्त्री देह पर चिकित्सा-सामाजिक दृष्टि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3388 : विदेह-सदेह 24 — कल्पना झा (बोकारो): किछु छुटि गेल

प्रश्न 33813. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु छुटि गेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु छुटि गेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2079मे कल्पना झा (बोकारो)क प्रविष्टि “किछु छुटि गेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33814. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33815. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33816. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।

उत्तर: घ. गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।” अछि।

प्रश्न 33817. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33818. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कल्पना झा (बोकारो), विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कल्पना झा (बोकारो), विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33819. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33820. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33821. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33822. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079मे कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3388, सूचकांक पंक्ति 2079मे कल्पना झा (बोकारो)क “किछु छुटि गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक पुरान दिन, खट्टा-मिठाई-पुरातन स्मृति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3389 : विदेह-सदेह 24 — ममता कर्ण (जमशेदपुर): बरसात

प्रश्न 33823. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बरसात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बरसात

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2080मे ममता कर्ण (जमशेदपुर)क प्रविष्टि “बरसात” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33824. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33825. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33826. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।

उत्तर: घ. वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।” अछि।

प्रश्न 33827. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33828. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ममता कर्ण (जमशेदपुर), विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ममता कर्ण (जमशेदपुर), विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33829. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33830. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33831. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33832. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080मे ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3389, सूचकांक पंक्ति 2080मे ममता कर्ण (जमशेदपुर)क “बरसात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्षा, पानीक संकट, कोरोनाक कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3390 : विदेह-सदेह 24 — –: निर्भर

प्रश्न 33833. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निर्भर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निर्भर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2081मे –क प्रविष्टि “निर्भर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33834. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33835. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33836. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।

उत्तर: घ. जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।” अछि।

प्रश्न 33837. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33838. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33839. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33840. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33841. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: –क “निर्भर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33842. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081मे –क “निर्भर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3390, सूचकांक पंक्ति 2081मे –क “निर्भर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जनकसुता सीता, आत्मनिर्भरता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3391 : विदेह-सदेह 24 — –: वक्ताब

प्रश्न 33843. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वक्ताब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वक्ताब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2082मे –क प्रविष्टि “वक्ताब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33844. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33845. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33846. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।

उत्तर: घ. किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।” अछि।

प्रश्न 33847. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33848. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33849. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33850. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33851. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: –क “वक्ताब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33852. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082मे –क “वक्ताब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3391, सूचकांक पंक्ति 2082मे –क “वक्ताब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किताब पढ़नाइक मुश्किल, सवेरे-सवेरे याद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3392 : विदेह-सदेह 24 — –: ताकल मजदूर

प्रश्न 33853. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: –क “ताकल मजदूर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ताकल मजदूर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ताकल मजदूर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2083मे –क प्रविष्टि “ताकल मजदूर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33854. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: –क “ताकल मजदूर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33855. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: –क “ताकल मजदूर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33856. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: –क “ताकल मजदूर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।

उत्तर: घ. प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।” अछि।

प्रश्न 33857. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: –क “ताकल मजदूर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33858. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: –क “ताकल मजदूर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33859. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: –क “ताकल मजदूर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33860. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: –क “ताकल मजदूर”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33861. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: –क “ताकल मजदूर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33862. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083मे –क “ताकल मजदूर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3392, सूचकांक पंक्ति 2083मे –क “ताकल मजदूर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी मजदूरक दर्द, ईश्वरसँ अपन गाम पहुँचायबाक प्रार्थना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3393 : विदेह-सदेह 24 — –: आरती (प्रकृति)

प्रश्न 33863. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आरती (प्रकृति)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आरती (प्रकृति)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2084मे –क प्रविष्टि “आरती (प्रकृति)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33864. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33865. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33866. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।

उत्तर: घ. प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।” अछि।

प्रश्न 33867. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33868. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33869. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33870. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33871. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: –क “आरती (प्रकृति)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33872. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084मे –क “आरती (प्रकृति)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3393, सूचकांक पंक्ति 2084मे –क “आरती (प्रकृति)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति, काल, मनुष्यक संहार पर चिन्तन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3394 : विदेह-सदेह 24 — सत्या ‘सुनील’ (सहरसा): उदंग

प्रश्न 33873. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उदंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उदंग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2085मे सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क प्रविष्टि “उदंग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33874. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33875. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33876. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।

उत्तर: घ. लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।” अछि।

प्रश्न 33877. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33878. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्या ‘सुनील’ (सहरसा), विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्या ‘सुनील’ (सहरसा), विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33879. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33880. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33881. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33882. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085मे सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3394, सूचकांक पंक्ति 2085मे सत्या ‘सुनील’ (सहरसा)क “उदंग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लॉकडाउन, हेयरकट, स्कूल, घरक चिन्ता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3395 : विदेह-सदेह 24 — –: उम्मीद

प्रश्न 33883. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: –क “उम्मीद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उम्मीद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उम्मीद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2086मे –क प्रविष्टि “उम्मीद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33884. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: –क “उम्मीद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33885. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: –क “उम्मीद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33886. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: –क “उम्मीद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।

उत्तर: घ. किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।” अछि।

प्रश्न 33887. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: –क “उम्मीद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33888. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: –क “उम्मीद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33889. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: –क “उम्मीद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33890. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: –क “उम्मीद”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33891. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: –क “उम्मीद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33892. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086मे –क “उम्मीद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3395, सूचकांक पंक्ति 2086मे –क “उम्मीद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किसानक आस, फसल, बच्ची, सपना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3396 : विदेह-सदेह 24 — –: माँ

प्रश्न 33893. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: –क “माँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2087मे –क प्रविष्टि “माँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33894. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: –क “माँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33895. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: –क “माँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33896. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: –क “माँ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।

उत्तर: घ. मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।” अछि।

प्रश्न 33897. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: –क “माँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33898. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: –क “माँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33899. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: –क “माँ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33900. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: –क “माँ”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33901. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: –क “माँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33902. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087मे –क “माँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3396, सूचकांक पंक्ति 2087मे –क “माँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-स्तुति, आशीर्वाद, स्नेह।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3397 : विदेह-सदेह 24 — आनन्द दास “गौरव”: संवेदना खत्म भ’ रहल अवि

प्रश्न 33903. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संवेदना खत्म भ’ रहल अवि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संवेदना खत्म भ’ रहल अवि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2088मे आनन्द दास “गौरव”क प्रविष्टि “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33904. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33905. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33906. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।

उत्तर: घ. कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।” अछि।

प्रश्न 33907. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33908. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आनन्द दास “गौरव”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आनन्द दास “गौरव”, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33909. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33910. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33911. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33912. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088मे आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3397, सूचकांक पंक्ति 2088मे आनन्द दास “गौरव”क “संवेदना खत्म भ’ रहल अवि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोरोना, नेता, नेतागिरीक व्यंग्यात्मक आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3398 : विदेह-सदेह 24 — –: फागु

प्रश्न 33913. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: –क “फागु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फागु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फागु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2089मे –क प्रविष्टि “फागु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33914. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: –क “फागु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33915. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: –क “फागु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोक गीत / फगुआ

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोक गीत / फगुआ

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक गीत / फगुआ” अछि।

प्रश्न 33916. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: –क “फागु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।

उत्तर: घ. होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।” अछि।

प्रश्न 33917. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: –क “फागु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33918. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: –क “फागु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा लोक गीत / फगुआ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा लोक गीत / फगुआ

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33919. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: –क “फागु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33920. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: –क “फागु”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोक गीत / फगुआक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोक गीत / फगुआक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33921. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: –क “फागु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33922. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089मे –क “फागु” प्रविष्टि पद्य, लोक गीत / फगुआ आ “होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3398, सूचकांक पंक्ति 2089मे –क “फागु” प्रविष्टि पद्य, लोक गीत / फगुआ आ “होली, रंग, भांग, ढोल, नटुआ पर फगुआ गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3399 : विदेह-सदेह 24 — सोनी दास: मौन

प्रश्न 33923. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मौन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मौन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2090मे सोनी दासक प्रविष्टि “मौन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33924. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33925. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 33926. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।

उत्तर: घ. मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।” अछि।

प्रश्न 33927. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33928. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सोनी दास, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सोनी दास, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33929. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33930. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33931. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: सोनी दासक “मौन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33932. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090मे सोनी दासक “मौन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3399, सूचकांक पंक्ति 2090मे सोनी दासक “मौन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मौन, अपन सँ गप्प, सत्य-संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3400 : विदेह-सदेह 24 — कंचन कंठ: आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति

प्रश्न 33933. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2091मे कंचन कंठक प्रविष्टि “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33934. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33935. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्तुति/देशभक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्तुति/देशभक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्तुति/देशभक्ति” अछि।

प्रश्न 33936. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।

उत्तर: घ. माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।” अछि।

प्रश्न 33937. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33938. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कंचन कंठ, विधा पद्य, उप-विधा स्तुति/देशभक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कंचन कंठ, विधा पद्य, उप-विधा स्तुति/देशभक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33939. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33940. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ स्तुति/देशभक्तिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ स्तुति/देशभक्तिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33941. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33942. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091मे कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” प्रविष्टि पद्य, स्तुति/देशभक्ति आ “माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3400, सूचकांक पंक्ति 2091मे कंचन कंठक “आराधना (जानकी), जय माँ अम्बे, विसंगति” प्रविष्टि पद्य, स्तुति/देशभक्ति आ “माता, कोरोना महामारीक हनन, सामाजिक विसंगति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3401 : विदेह-सदेह 24 — महेन्द्र हजारी: से छि रामलोचन

प्रश्न 33943. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. से छि रामलोचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. से छि रामलोचन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2092मे महेन्द्र हजारीक प्रविष्टि “से छि रामलोचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33944. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33945. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रशस्ति/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रशस्ति/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रशस्ति/कविता” अछि।

प्रश्न 33946. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।

उत्तर: घ. रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।” अछि।

प्रश्न 33947. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33948. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेन्द्र हजारी, विधा पद्य, उप-विधा प्रशस्ति/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेन्द्र हजारी, विधा पद्य, उप-विधा प्रशस्ति/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33949. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33950. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रशस्ति/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रशस्ति/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33951. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33952. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092मे महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” प्रविष्टि पद्य, प्रशस्ति/कविता आ “रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3401, सूचकांक पंक्ति 2092मे महेन्द्र हजारीक “से छि रामलोचन” प्रविष्टि पद्य, प्रशस्ति/कविता आ “रामलोचन ठाकूरक सम्मानमे कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3402 : विदेह-सदेह 24 — नारायणजी: श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)

प्रश्न 33953. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2093मे नारायणजीक प्रविष्टि “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33954. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33955. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्मरण/संवेदना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्मरण/संवेदना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्मरण/संवेदना” अछि।

प्रश्न 33956. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।

उत्तर: घ. चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।” अछि।

प्रश्न 33957. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकें स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33958. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकेँ स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नारायणजी, विधा पद्य, उप-विधा स्मरण/संवेदना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नारायणजी, विधा पद्य, उप-विधा स्मरण/संवेदना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33959. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकेँ स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33960. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकेँ स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ स्मरण/संवेदनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ स्मरण/संवेदनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33961. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकेँ स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33962. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093मे नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकेँ स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” प्रविष्टि पद्य, स्मरण/संवेदना आ “चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3402, सूचकांक पंक्ति 2093मे नारायणजीक “श्रद्धेय रामलोचन ठाकूरकेँ स्मरण करैत (विदा / चिट्ठी - मिथिला)” प्रविष्टि पद्य, स्मरण/संवेदना आ “चिट्ठी पर ‘मिथिला’ शब्द देखि रामलोचनक याद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3403 : विदेह-सदेह 24 — विनोद कुमार झा: राम लोचन हमर प्रेरणा

प्रश्न 33963. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राम लोचन हमर प्रेरणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम लोचन हमर प्रेरणा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2094मे विनोद कुमार झाक प्रविष्टि “राम लोचन हमर प्रेरणा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33964. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33965. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्रद्धांजलि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्रद्धांजलि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्रद्धांजलि” अछि।

प्रश्न 33966. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।

उत्तर: घ. रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।” अछि।

प्रश्न 33967. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33968. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनोद कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा श्रद्धांजलि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनोद कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा श्रद्धांजलि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33969. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33970. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ श्रद्धांजलिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ श्रद्धांजलिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33971. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33972. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094मे विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” प्रविष्टि पद्य, श्रद्धांजलि आ “रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3403, सूचकांक पंक्ति 2094मे विनोद कुमार झाक “राम लोचन हमर प्रेरणा” प्रविष्टि पद्य, श्रद्धांजलि आ “रामलोचन ठाकूरक कर्मठता, ‘इतिहास हन्ता’, अग्रदूत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3404 : विदेह-सदेह 24 — बिनय भूषण: रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)

प्रश्न 33973. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2095मे बिनय भूषणक प्रविष्टि “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33974. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य (बहुभागी)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य (बहुभागी)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य (बहुभागी)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33975. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्रद्धांजलि /स्मृति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्रद्धांजलि /स्मृति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्रद्धांजलि /स्मृति” अछि।

प्रश्न 33976. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।

उत्तर: घ. रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।” अछि।

प्रश्न 33977. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33978. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिनय भूषण, विधा पद्य (बहुभागी), उप-विधा श्रद्धांजलि /स्मृति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिनय भूषण, विधा पद्य (बहुभागी), उप-विधा श्रद्धांजलि /स्मृति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33979. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33980. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य (बहुभागी)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ श्रद्धांजलि /स्मृतिक रूपमे पद्य (बहुभागी)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ श्रद्धांजलि /स्मृतिक रूपमे पद्य (बहुभागी)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33981. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33982. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095मे बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” प्रविष्टि पद्य (बहुभागी), श्रद्धांजलि /स्मृति आ “रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3404, सूचकांक पंक्ति 2095मे बिनय भूषणक “रामलोचन ठाकूरक विविरकोना आ... (1-5)” प्रविष्टि पद्य (बहुभागी), श्रद्धांजलि /स्मृति आ “रामलोचन ठाकूरसँ वियोग, उनकर स्मृति, फगुआ, मिथिला, प्रेरणा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3405 : विदेह-सदेह 24 — –: आइ पृथ्वी दिवस अछि

प्रश्न 33983. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आइ पृथ्वी दिवस अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आइ पृथ्वी दिवस अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2096मे –क प्रविष्टि “आइ पृथ्वी दिवस अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33984. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33985. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पर्यावरण/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पर्यावरण/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पर्यावरण/कविता” अछि।

प्रश्न 33986. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।

उत्तर: घ. पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।” अछि।

प्रश्न 33987. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33988. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा पर्यावरण/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा पर्यावरण/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33989. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 33990. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पर्यावरण/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पर्यावरण/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 33991. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 33992. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096मे –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” प्रविष्टि पद्य, पर्यावरण/कविता आ “पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3405, सूचकांक पंक्ति 2096मे –क “आइ पृथ्वी दिवस अछि” प्रविष्टि पद्य, पर्यावरण/कविता आ “पृथ्वी दिवस, पर्यावरणीय चिन्ता, राजनीति, विकास।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3406 : विदेह-सदेह 24 — –: आखिर एना कियैक लागि रहल अछि

प्रश्न 33993. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आखिर एना कियैक लागि रहल अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आखिर एना कियैक लागि रहल अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2097मे –क प्रविष्टि “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 33994. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 33995. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कोरोना कालीन कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कोरोना कालीन कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कोरोना कालीन कविता” अछि।

प्रश्न 33996. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।

उत्तर: घ. सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।” अछि।

प्रश्न 33997. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 33998. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कोरोना कालीन कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा कोरोना कालीन कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 33999. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34000. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कोरोना कालीन कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कोरोना कालीन कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34001. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34002. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097मे –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” प्रविष्टि पद्य, कोरोना कालीन कविता आ “सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3406, सूचकांक पंक्ति 2097मे –क “आखिर एना कियैक लागि रहल अछि” प्रविष्टि पद्य, कोरोना कालीन कविता आ “सूर्य, पंकज, खजुरैया, कोरोनाक डर, जीवन-मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3407 : विदेह-सदेह 24 — –: माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...

प्रश्न 34003. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2098मे –क प्रविष्टि “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34004. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34005. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आस्था/भक्ति कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आस्था/भक्ति कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आस्था/भक्ति कविता” अछि।

प्रश्न 34006. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->

उत्तर: घ. आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->” अछि।

प्रश्न 34007. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34008. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा आस्था/भक्ति कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक –, विधा पद्य, उप-विधा आस्था/भक्ति कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34009. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34010. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...”केँ विदेह-सदेह 24क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आस्था/भक्ति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आस्था/भक्ति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34011. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 24क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34012. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098मे –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” प्रविष्टि पद्य, आस्था/भक्ति कविता आ “आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3407, सूचकांक पंक्ति 2098मे –क “माँक आँचरक स्नेह भरल बासना...” प्रविष्टि पद्य, आस्था/भक्ति कविता आ “आइजीईएसआइएमएएलमाँ / देवी, स्नेह, करुणा, जीवन सहारा।-->” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 24क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3408 : विदेह-सदेह 25 — गजेन्द्र ठाकूर: 'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा

प्रश्न 34013. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2099मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34014. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34015. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 34016. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।

प्रश्न 34017. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34018. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34019. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34020. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34021. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34022. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099मे गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विदेह सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3408, सूचकांक पंक्ति 2099मे गजेन्द्र ठाकूरक “'सहिया रोपनि' (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सहिया संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विदेह सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3409 : विदेह-सदेह 25 — नबोनारायण मिश्र: डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'

प्रश्न 34023. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2100मे नबोनारायण मिश्रक प्रविष्टि “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34024. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34025. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 34026. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम

उत्तर: घ. बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” अछि।

प्रश्न 34027. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34028. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नबोनारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नबोनारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34029. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34030. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34031. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34032. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100मे नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3409, सूचकांक पंक्ति 2100मे नबोनारायण मिश्रक “डा. वीरेन्द्र मल्ललक जीक साक्षात्कार — 'मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिरें हम निराश नहि छी'” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3410 : विदेह-सदेह 25 — डा. योगानन्द झा: 'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'

प्रश्न 34033. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2101मे डा. योगानन्द झाक प्रविष्टि “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34034. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34035. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34036. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक "'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी मैथिलक अनुभूति

उत्तर: घ. प्रवासी मैथिलक अनुभूति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "प्रवासी मैथिलक अनुभूति" अछि।

प्रश्न 34037. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक "'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी मैथिलक अनुभूति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी मैथिलक अनुभूति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "प्रवासी मैथिलक अनुभूति" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34038. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक "'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34039. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक "'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34040. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक "'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34041. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: डा. योगानन्द झाक "'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34042. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101मे डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “प्रवासी मैथिलक अनुभूति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3410, सूचकांक पंक्ति 2101मे डा. योगानन्द झाक “'प्रवासीक स्नेहसँ औतप्रोत मातृभूमि'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “प्रवासी मैथिलक अनुभूति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3411 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'

प्रश्न 34043. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2102मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34044. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34045. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34046. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक कलाकारक संरक्षण

उत्तर: घ. लोक कलाकारक संरक्षण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक कलाकारक संरक्षण” अछि।

प्रश्न 34047. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक कलाकारक संरक्षण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक कलाकारक संरक्षण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक कलाकारक संरक्षण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34048. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34049. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34050. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34051. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34052. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'” प्रविष्टि गद्य, आलेख/निबन्ध आ “लोक कलाकारक संरक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3411, सूचकांक पंक्ति 2102मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भेंट(घूमह्कर वाचक), लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत?'” प्रविष्टि गद्य, आलेख/निबन्ध आ “लोक कलाकारक संरक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3412 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'

प्रश्न 34053. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2103मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34054. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34055. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/आलेख” अछि।

प्रश्न 34056. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति

उत्तर: घ. साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति” अछि।

प्रश्न 34057. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34058. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34059. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34060. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'”कैँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34061. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34062. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103मे डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/आलेख आ “साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3412, सूचकांक पंक्ति 2103मे डा. किशन कारीगरक “'पुरूस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत, महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै?'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/आलेख आ “साहित्यिक पुरस्कारक राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3413 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'

प्रश्न 34063. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2104मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34064. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34065. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 34066. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा

उत्तर: घ. पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा” अछि।

प्रश्न 34067. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34068. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34069. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34070. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'”कैँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34071. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34072. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3413, सूचकांक पंक्ति 2104मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब), मिथिला मैथिली के दुदर्शा लैए दोखी के सब हइ/अछि?'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “पलायन आ मैथिली भाषाक दुर्दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3414 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'

प्रश्न 34073. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2105मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34074. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34075. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 34076. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक “'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिकताक प्रभाव

उत्तर: घ. आधुनिकताक प्रभाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिकताक प्रभाव” अछि।

प्रश्न 34077. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक "'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिकताक प्रभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिकताक प्रभाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "आधुनिकताक प्रभाव" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34078. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक "'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34079. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक "'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34080. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक "'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34081. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: डा. किशन कारीगरक "'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34082. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105मे डा. किशन कारीगरक "'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'" प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ "आधुनिकताक प्रभाव" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3414, सूचकांक पंक्ति 2105मे डा. किशन कारीगरक "'बोंगपाद बौआक बखारी, भगम भग्गी फैशन'" प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ "आधुनिकताक प्रभाव" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3415 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'

प्रश्न 34083. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2106मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34084. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34085. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34086. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण

उत्तर: घ. मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 34087. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34088. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक "'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34089. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक "'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34090. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक "'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34091. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: डा. किशन कारीगरक "'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34092. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106मे डा. किशन कारीगरक "'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'" प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ "मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3415, सूचकांक पंक्ति 2106मे डा. किशन कारीगरक "'मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान?'" प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ "मैथिली आन्दोलनक आलोचनात्मक विश्लेषण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3416 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मोछ वाली मौगी'

प्रश्न 34093. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मोछ वाली मौगी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मोछ वाली मौगी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2107मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मोछ वाली मौगी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34094. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34095. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/कथा” अछि।

प्रश्न 34096. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण

उत्तर: घ. लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण” अछि।

प्रश्न 34097. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34098. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34099. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34100. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34101. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34102. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107मे डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/कथा आ “लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3416, सूचकांक पंक्ति 2107मे डा. किशन कारीगरक “'मोछ वाली मौगी'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/कथा आ “लोक-जीवनक हास्य-व्यंग्य चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3417 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'

प्रश्न 34103. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2108मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34104. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34105. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 34106. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक चोरीक मुद्दा

उत्तर: घ. साहित्यिक चोरीक मुद्दा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक चोरीक मुद्दा” अछि।

प्रश्न 34107. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक चोरीक मुद्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक चोरीक मुद्दा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक चोरीक मुद्दा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34108. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34109. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34110. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34111. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34112. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108मे डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यिक चोरीक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3417, सूचकांक पंक्ति 2108मे डा. किशन कारीगरक “'मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यिक चोरीक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3418 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'

प्रश्न 34113. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2109मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34114. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34115. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 34116. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली सिनेमाक स्थिति

उत्तर: घ. मैथिली सिनेमाक स्थिति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली सिनेमाक स्थिति” अछि।

प्रश्न 34117. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली सिनेमाक स्थिति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली सिनेमाक स्थिति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली सिनेमाक स्थिति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34118. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34119. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34120. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34121. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34122. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109मे डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली सिनेमाक स्थिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3418, सूचकांक पंक्ति 2109मे डा. किशन कारीगरक “'मैथिली फिल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली सिनेमाक स्थिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3419 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'

प्रश्न 34123. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2110मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34124. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34125. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 34126. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता

उत्तर: घ. मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता” अछि।

प्रश्न 34127. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34128. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34129. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34130. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34131. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34132. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3419, सूचकांक पंक्ति 2110मे डा. किशन कारीगरक “'मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “मैथिली आन्दोलनक नाम पर स्वार्थपरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3420 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'

प्रश्न 34133. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2111मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34134. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34135. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 34136. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहिन कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीहनि कथा विधामे योगदान

उत्तर: घ. बीहनि कथा विधामे योगदान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीहनि कथा विधामे योगदान” अछि।

प्रश्न 34137. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहनि कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीहनि कथा विधामे योगदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहनि कथा विधामे योगदान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीहनि कथा विधामे योगदान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34138. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहनि कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34139. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहनि कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34140. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहनि कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34141. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: डा. किशन कारीगरक “'बीहनि कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34142. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111मे डा. किशन कारीगरक “'बीहनि कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा/व्यंग्य आ “बीहनि कथा विधामे योगदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3420, सूचकांक पंक्ति 2111मे डा. किशन कारीगरक “'बीहनि कथा- बाबा भक्त कटाक्ष'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा/व्यंग्य आ “बीहनि कथा विधामे योगदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3421 : विदेह-सदेह 25 — संतोष कुमार राय 'बटोही': 'बकरी संस्कृधत' (गद्य)

प्रश्न 34143. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बकरी संस्कृधत' (गद्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बकरी संस्कृधत' (गद्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2112मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क प्रविष्टि “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34144. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34145. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34146. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-संस्कृतिपर आधारित

उत्तर: घ. लोक-संस्कृतिपर आधारित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-संस्कृतिपर आधारित” अछि।

प्रश्न 34147. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-संस्कृतिपर आधारित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-संस्कृतिपर आधारित

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-संस्कृतिपर आधारित” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34148. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34149. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34150. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34151. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34152. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक-संस्कृतिपर आधारित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3421, सूचकांक पंक्ति 2112मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'बकरी संस्कृधत' (गद्य)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक-संस्कृतिपर आधारित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3422 : विदेह-सदेह 25 — मधकांत ठाकुर: 'धचंता मामा'

प्रश्न 34153. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधकांत ठाकुरक “'धचंता मामा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'धचंता मामा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'धचंता मामा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2113मे मधकांत ठाकुरक प्रविष्टि “'धचंता मामा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34154. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधकांत ठाकुरक “'धचंता मामा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34155. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कांत ठाकुरक “'धचंता मामा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/संस्मरण” अछि।

प्रश्न 34156. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कांत ठाकुरक “'धचंता मामा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक संस्मरण

उत्तर: घ. पारिवारिक संस्मरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक संस्मरण” अछि।

प्रश्न 34157. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कांत ठाकुरक “'धचंता मामा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक संस्मरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक संस्मरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक संस्मरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34158. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कांत ठाकुरक “'धचंता मामा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मधर्कांत ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा/संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मधर्कांत ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा/संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34159. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कांत ठाकुरक “'धचंता मामा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34160. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कांत ठाकुरक “'धचंता मामा'”कैँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34161. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: मधर्कांत ठाकुरक “'धचंता मामा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34162. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113मे मधर्कांत ठाकुरक “'धचंता मामा'” प्रविष्टि गद्य, कथा/संस्मरण आ “पारिवारिक संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3422, सूचकांक पंक्ति 2113मे मधर्कांत ठाकुरक “'धचंता मामा'” प्रविष्टि गद्य, कथा/संस्मरण आ “पारिवारिक संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3423 : विदेह-सदेह 25 — िधिकांत कर्ण: 'बीहधन कथा-बड़का भक्त'

प्रश्न 34163. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बीहधन कथा-बड़का भक्त'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बीहधन कथा-बड़का भक्त'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2114मे िधिकांत कर्णक प्रविष्टि “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34164. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34165. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 34166. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक “'बीहधन कथा-बड़का भक्त'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति

उत्तर: घ. बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति” अछि।

प्रश्न 34167. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक "'बीहधन कथा-बड़का भक्त'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34168. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक "'बीहधन कथा-बड़का भक्त'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक िधिकांत कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक िधिकांत कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34169. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक "'बीहधन कथा-बड़का भक्त'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34170. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक "'बीहधन कथा-बड़का भक्त'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34171. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: िधिकांत कर्णक "'बीहधन कथा-बड़का भक्त'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34172. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114मे िधिकांत कर्णक "'बीहधन कथा-बड़का भक्त'" प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ "बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3423, सूचकांक पंक्ति 2114मे िधिकांत कर्णक "'बीहधन कथा-बड़का भक्त'" प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ "बीहनि कथा विधामे सशक्त उपस्थिति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3424 : विदेह-सदेह 25 — सुभरा धमश्र 'भाव्या': 'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'

प्रश्न 34173. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2115मे सुभरा धमश्र 'भाव्या'क प्रविष्टि “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34174. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34175. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 34176. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली लघु कथा विधा

उत्तर: घ. मैथिली लघु कथा विधा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लघु कथा विधा” अछि।

प्रश्न 34177. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली लघु कथा विधा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लघु कथा विधा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लघु कथा विधा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34178. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभरा धमश्र 'भाव्या', विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभरा धमश्र 'भाव्या', विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34179. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34180. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34181. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34182. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115मे सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “मैथिली लघु कथा विधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3424, सूचकांक पंक्ति 2115मे सुभरा धमश्र 'भाव्या'क “'बीहधन कथा (हकार, प्रपंच)'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “मैथिली लघु कथा विधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3425 : विदेह-सदेह 25 — ज्ञानवर्द्‌णन कंठ: 'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'

प्रश्न 34183. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2116मे ज्ञानवर्द्‌णन कंठक प्रविष्टि “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34184. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34185. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34186. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा-चिन्तन

उत्तर: घ. भाषा-चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा-चिन्तन” अछि।

प्रश्न 34187. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा-चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा-चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34188. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्‌णन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्‌णन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34189. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'िज्ञ, भाषाक ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34190. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'ि◌ज्ञ, भाषाक ◌ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34191. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'ि◌ज्ञ, भाषाक ◌ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34192. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116मे ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'ि◌ज्ञ, भाषाक ◌ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/निबन्ध आ “भाषा-चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3425, सूचकांक पंक्ति 2116मे ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'ि◌ज्ञ, भाषाक ◌ौहधर, केकर मौसा धछयौ?'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/निबन्ध आ “भाषा-चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3426 : विदेह-सदेह 25 — ज्ञानवर्द्‌णन कंठ: 'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'

प्रश्न 34193. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2117मे ज्ञानवर्द्‌णन कंठक प्रविष्टि “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34194. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34195. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34196. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली शिक्षाक दुर्दशा

उत्तर: घ. मैथिली शिक्षाक दुर्दशा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली शिक्षाक दुर्दशा” अछि।

प्रश्न 34197. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली शिक्षाक दुर्दशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली शिक्षाक दुर्दशा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली शिक्षाक दुर्दशा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34198. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्‌णन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्‌णन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34199. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34200. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34201. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34202. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117मे ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/निबन्ध आ “मैथिली शिक्षाक दुर्दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3426, सूचकांक पंक्ति 2117मे ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'मैधथलीक पढ़ाइ, भोगी बनलाह बाघ'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/निबन्ध आ “मैथिली शिक्षाक दुर्दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3427 : विदेह-सदेह 25 — ज्ञानवर्द्‌णन कंठ: 'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'

प्रश्न 34203. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2118मे ज्ञानवर्द्‌णन कंठक प्रविष्टि “'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34204. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34205. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक “'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 34206. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक "'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यात्रा साहित्य

उत्तर: घ. यात्रा साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "यात्रा साहित्य" अछि।

प्रश्न 34207. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक "'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यात्रा साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रा साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "यात्रा साहित्य" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34208. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक "'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्ञानवर्द्‌णन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्ञानवर्द्‌णन कंठ, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34209. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक "'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34210. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक "'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34211. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: ज्ञानवर्द्‌णन कंठक "'अधभनर्व दिीधच, जालंिर-यिाा'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34212. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118मे ज्ञानर्वर्द्णन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंिर-यिाा'” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “यात्रा साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3427, सूचकांक पंक्ति 2118मे ज्ञानर्वर्द्णन कंठक “'अधभनर्व दीधच, जालंिर-यिाा'” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “यात्रा साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3428 : विदेह-सदेह 25 — दीधपका ि: 'अपरिी तय अधछ'

प्रश्न 34213. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िाक “'अपरिी तय अधछ'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अपरिी तय अधछ'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अपरिी तय अधछ'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2119मे दीधपका िाक प्रविष्टि “'अपरिी तय अधछ'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34214. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िाक “'अपरिी तय अधछ'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34215. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िाक “'अपरिी तय अधछ'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/आलेख” अछि।

प्रश्न 34216. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िाक “'अपरिी तय अधछ'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 34217. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िाक “'अपरिी तय अधछ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34218. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िाक "'अपरिी तय अधछ'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दीधपका ि, विधा गद्य, उप-विधा कथा/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दीधपका ि, विधा गद्य, उप-विधा कथा/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34219. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िाक "'अपरिी तय अधछ'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34220. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िाक "'अपरिी तय अधछ'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34221. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: दीधपका िाक "'अपरिी तय अधछ'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34222. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119मे दीधपका िाक "'अपरिी तय अधछ'" प्रविष्टि गद्य, कथा/आलेख आ "नारी स्वर" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3428, सूचकांक पंक्ति 2119मे दीधपका िाक "'अपरिी तय अधछ'" प्रविष्टि गद्य, कथा/आलेख आ "नारी स्वर" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3429 : विदेह-सदेह 25 — राजनहदन लाल दास: रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)

प्रश्न 34223. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2120मे राजनहदन लाल दासक प्रविष्टि “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34224. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. —

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. —

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “—” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34225. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. —

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. —

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।

प्रश्न 34226. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनन्दन लाल दास विशेषांक

उत्तर: घ. राजनन्दन लाल दास विशेषांक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन लाल दास विशेषांक” अछि।

प्रश्न 34227. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनन्दन लाल दास विशेषांक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनन्दन लाल दास विशेषांक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन लाल दास विशेषांक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34228. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजनहदन लाल दास, विधा —, उप-विधा —

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजनहदन लाल दास, विधा —, उप-विधा —

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34229. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34230. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)”केँ विदेह-सदेह 25क —-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ —क रूपमे —-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ —क रूपमे —-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34231. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34232. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120मे राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” प्रविष्टि —, — आ “राजनन्दन लाल दास विशेषांक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3429, सूचकांक पंक्ति 2120मे राजनहदन लाल दासक “रचना-सूची; स्मृति-लेख (विविध लेखकद्वारा विशेषांक)” प्रविष्टि —, — आ “राजनन्दन लाल दास विशेषांक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3430 : विदेह-सदेह 25 — मुकि दर्त्त: 'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'

प्रश्न 34233. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्त्तक "'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2121मे मुकि दर्त्तक प्रविष्टि "'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34234. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्त्तक "'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34235. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्त्तक "'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचनात्मक निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचनात्मक निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "आलोचनात्मक निबन्ध" अछि।

प्रश्न 34236. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्त्तक "'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व

उत्तर: घ. राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व" अछि।

प्रश्न 34237. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्त्तक "'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34238. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुकि दर्त्त, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुकि दर्त्त, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34239. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34240. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34241. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: मुकि दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34242. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121मे मुकि दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3430, सूचकांक पंक्ति 2121मे मुकि दर्त्तक “'एकटा सिक्त सम्पाधदत व्यधक्तत्र्व: राजनहदन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्व एवं कृतित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3431 : विदेह-सदेह 25 — दिलीप कुमार झा: 'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'

प्रश्न 34243. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2122मे दिलीप कुमार झाक प्रविष्टि “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34244. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34245. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 34246. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा शिक्षा पर बल

उत्तर: घ. भाषा शिक्षा पर बल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा शिक्षा पर बल” अछि।

प्रश्न 34247. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा शिक्षा पर बल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा शिक्षा पर बल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा शिक्षा पर बल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34248. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दिलीप कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दिलीप कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34249. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34250. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34251. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34252. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122मे दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “भाषा शिक्षा पर बल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3431, सूचकांक पंक्ति 2122मे दिलीप कुमार झाक “'मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएइ छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “भाषा शिक्षा पर बल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3432 : विदेह-सदेह 25 — अिजत कृमार झा: 'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'

प्रश्न 34253. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अिजत कृमार झाक “'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2123मे अिजत कृमार झाक प्रविष्टि “'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34254. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अिजत कृमार झाक “'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34255. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अिजत कृमार झाक “'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण/आलेख” अछि।

प्रश्न 34256. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अिजत कृमार झाक “'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति

उत्तर: घ. दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति” अछि।

प्रश्न 34257. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अिजत कृमार झाक “'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34258. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अिजत कृमार झाक "'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अिजत कृमार झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अिजत कृमार झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34259. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अिजत कृमार झाक "'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34260. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अिजत कृमार झाक "'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरण/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरण/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34261. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: अिजत कृमार झाक "'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34262. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123मे अिजत कृमार झाक "'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'" प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/आलेख आ "दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3432, सूचकांक पंक्ति 2123मे अिजत कृमार झाक "'वन मैन आमाा: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास, मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी'" प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/आलेख आ "दू आन्दोलन-पुरुषक स्मृति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3433 : विदेह-सदेह 25 — अशोक: 'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'

प्रश्न 34263. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2124मे अशोकक प्रविष्टि “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34264. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34265. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 34266. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान

उत्तर: घ. 'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान” अछि।

प्रश्न 34267. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34268. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34269. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34270. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34271. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34272. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124मे अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3433, सूचकांक पंक्ति 2124मे अशोकक “'सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कणामृत'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “'कणामृत' पत्रिकाक सम्पादकीय योगदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3434 : विदेह-सदेह 25 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: 'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'

प्रश्न 34273. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2125मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34274. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34275. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 34276. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व

उत्तर: घ. राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व” अछि।

प्रश्न 34277. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34278. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकें नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34279. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34280. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरण/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरण/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34281. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34282. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/समीक्षा आ “राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3434, सूचकांक पंक्ति 2125मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “'साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास, भरि नगरीमे शोर, सभटा सोनारकेँ नहि गढबाक कला होइछ (गजलक समीक्षा : पोथी ‘लेखनी एक रंग अनेक’)'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/समीक्षा आ “राजनन्दन जीक बहुआयामी व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3435 : विदेह-सदेह 25 — चन्दना दत्त: 'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'

प्रश्न 34283. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2126मे चन्दना दत्तक प्रविष्टि “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34284. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34285. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 34286. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन

उत्तर: घ. नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 34287. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34288. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्दना दत्त, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्दना दत्त, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34289. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34290. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34291. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34292. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126मे चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3435, सूचकांक पंक्ति 2126मे चन्दना दत्तक “'श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उजाचित् व्यवितव'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “नारी दृष्टिकोणसँ मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3436 : विदेह-सदेह 25 — अमोद झा: 'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'

प्रश्न 34293. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2127मे अमोद झाक प्रविष्टि “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34294. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34295. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 34296. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाट्य-समीक्षा

उत्तर: घ. नाट्य-समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाट्य-समीक्षा” अछि।

प्रश्न 34297. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाट्य-समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाट्य-समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाट्य-समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34298. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमोद झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमोद झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34299. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34300. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34301. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34302. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127मे अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाट्य-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3436, सूचकांक पंक्ति 2127मे अमोद झाक “'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक ‘संतो’ (लेखक स्व. राजनन्दन लाल दास जी)'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाट्य-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3437 : विदेह-सदेह 25 — अखिलेश झा: 'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'

प्रश्न 34303. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2128मे अखिलेश झाक प्रविष्टि “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34304. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34305. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचनात्मक निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचनात्मक निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचनात्मक निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34306. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य साधनाक मूल्यांकन

उत्तर: घ. साहित्य साधनाक मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य साधनाक मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 34307. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य साधनाक मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य साधनाक मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य साधनाक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34308. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अखिलेश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अखिलेश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34309. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34310. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34311. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34312. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128मे अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “साहित्य साधनाक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3437, सूचकांक पंक्ति 2128मे अखिलेश झाक “'मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “साहित्य साधनाक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3438 : विदेह-सदेह 25 — कामेश्वर झा ‘कमल’: 'कणा॓मृत प्रिका आ सꣳपादक ओी राजन३दन लाल दास'

प्रश्न 34313. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणा॓मृत प्रिका आ सꣳपादक ओी राजन३दन लाल दास'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कणा॓मृत प्रिका आ सꣳपादक ओी राजन३दन लाल दास'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कणा॓मृत प्रिका आ सꣳपादक ओी राजन३दन लाल दास'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2129मे कामेश्वर झा ‘कमल’क प्रविष्टि “'कणा॓मृत प्रिका आ सꣳपादक ओी राजन३दन लाल दास'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34314. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणा॓मृत प्रिका आ सꣳपादक ओी राजन३दन लाल दास'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34315. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणा॓मृत प्रिका आ सꣳपादक ओी राजन३दन लाल दास'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 34316. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणा॓मृत प्रिका आ सꣳपादक ओी राजन३दन लाल दास'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रिकाक इतिहास

उत्तर: घ. पत्रिकाक इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रिकाक इतिहास” अछि।

प्रश्न 34317. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणाभ्रामृत प्रिका आ सञ्पादक ओी राजनउदन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रिकाक इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रिकाक इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रिकाक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34318. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणाभ्रामृत प्रिका आ सञ्पादक ओी राजनउदन लाल दास'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कामेश्वर झा ‘कमल’, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कामेश्वर झा ‘कमल’, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34319. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणाभ्रामृत प्रिका आ सञ्पादक ओी राजनउदन लाल दास'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34320. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणाभ्रामृत प्रिका आ सञ्पादक ओी राजनउदन लाल दास'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34321. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणाभ्रामृत प्रिका आ सञ्पादक ओी राजनउदन लाल दास'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34322. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129मे कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणा्फ्नामृत पुिका आ स॰पादक Oी राजन३दन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “पत्रिकाक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3438, सूचकांक पंक्ति 2129मे कामेश्वर झा ‘कमल’क “'कणा्फ्नामृत पुिका आ स॰पादक Oी राजन३दन लाल दास'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “पत्रिकाक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3439 : विदेह-सदेह 25 — प्रदीप बिहारी: 'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'

प्रश्न 34323. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2130मे प्रदीप बिहारीक प्रविष्टि “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34324. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34325. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 34326. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक “'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. निजी जीवनक झाँकी

उत्तर: घ. निजी जीवनक झाँकी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “निजी जीवनक झाँकी” अछि।

प्रश्न 34327. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक "'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. निजी जीवनक झाँकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निजी जीवनक झाँकी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "निजी जीवनक झाँकी" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34328. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक "'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रदीप बिहारी, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रदीप बिहारी, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34329. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक "'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34330. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक "'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34331. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: प्रदीप बिहारीक "'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34332. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130मे प्रदीप बिहारीक "'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'" प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ "निजी जीवनक झाँकी" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3439, सूचकांक पंक्ति 2130मे प्रदीप बिहारीक "'संस्मरण: राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री'" प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ "निजी जीवनक झाँकी" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3440 : विदेह-सदेह 25 — अरिवन्द ठाकूर: '"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'

प्रश्न 34333. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. '"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. '"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2131मे अरिवन्द ठाकूरक प्रविष्टि “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34334. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34335. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 34336. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिल आदिमतावाद

उत्तर: घ. मैथिल आदिमतावाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिल आदिमतावाद” अछि।

प्रश्न 34337. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिल आदिमतावाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल आदिमतावाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिल आदिमतावाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34338. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अरिवन्द ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अरिवन्द ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34339. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34340. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34341. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34342. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131मे अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध/आलोचना आ “मैथिल आदिमतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3440, सूचकांक पंक्ति 2131मे अरिवन्द ठाकूरक “'"चित्रा-विचित्रा" सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध/आलोचना आ “मैथिल आदिमतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3441 : विदेह-सदेह 25 — विजय इस्सर "वत्स": 'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'

प्रश्न 34343. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2132मे विजय इस्सर "वत्स"क प्रविष्टि “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34344. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34345. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 34346. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक विभूतिक स्मृति

उत्तर: घ. साहित्यिक विभूतिक स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक विभूतिक स्मृति” अछि।

प्रश्न 34347. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक विभूतिक स्मृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक विभूतिक स्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक विभूतिक स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34348. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजय इस्सर "वत्स", विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजय इस्सर "वत्स", विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34349. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34350. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34351. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34352. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132मे विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “साहित्यिक विभूतिक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3441, सूचकांक पंक्ति 2132मे विजय इस्सर "वत्स"क “'विभूति संग प्रतिभूति -स्व०राजनंन्दन लाल दास जी'” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “साहित्यिक विभूतिक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3442 : विदेह-सदेह 25 — शिव शंकर श्रीनिवास: 'राजनन्दन लालदासक नाटक'

प्रश्न 34353. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक "'राजनन्दन लालदासक नाटक'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'राजनन्दन लालदासक नाटक'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'राजनन्दन लालदासक नाटक'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2133मे शिव शंकर श्रीनिवासक प्रविष्टि "'राजनन्दन लालदासक नाटक'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34354. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक "'राजनन्दन लालदासक नाटक'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34355. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक "'राजनन्दन लालदासक नाटक'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "समीक्षा" अछि।

प्रश्न 34356. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक "'राजनन्दन लालदासक नाटक'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाटक-समीक्षा

उत्तर: घ. नाटक-समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "नाटक-समीक्षा" अछि।

प्रश्न 34357. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक "'राजनन्दन लालदासक नाटक'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाटक-समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक-समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "नाटक-समीक्षा" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34358. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक "'राजनन्दन लालदासक नाटक'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव शंकर श्रीनिवास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव शंकर श्रीनिवास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34359. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34360. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34361. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34362. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133मे शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3442, सूचकांक पंक्ति 2133मे शिव शंकर श्रीनिवासक “'राजनन्दन लालदासक नाटक'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3443 : विदेह-सदेह 25 — शैलेन्द्र मिश्र: 'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'

प्रश्न 34363. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2134मे शैलेन्द्र मिश्रक प्रविष्टि “'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34364. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक "'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34365. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक "'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "आलेख" अछि।

प्रश्न 34366. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक "'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक साधनाकेँ योग आ युद्धक संज्ञा

उत्तर: घ. साहित्यिक साधनाकेँ योग आ युद्धक संज्ञा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "साहित्यिक साधनाकेँ योग आ युद्धक संज्ञा" अछि।

प्रश्न 34367. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक "'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक साधनाकेँ योग आ युद्धक संज्ञा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक साधनाकेँ योग आ युद्धक संज्ञा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "साहित्यिक साधनाकेँ योग आ युद्धक संज्ञा" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34368. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक "'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शैलेन्द्र मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शैलेन्द्र मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34369. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक "'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34370. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34371. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34372. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134मे शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यिक साधनाकें योग आ युद्धक संज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3443, सूचकांक पंक्ति 2134मे शैलेन्द्र मिश्रक “'राजनन्दन लाल दासः मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यिक साधनाकें योग आ युद्धक संज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3444 : विदेह-सदेह 25 — मुन्त्रा जी: 'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'

प्रश्न 34373. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्त्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2135मे मुन्त्रा जीक प्रविष्टि “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34374. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुन्त्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34375. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुत्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 34376. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुत्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यमे जातिवाद विरोध

उत्तर: घ. साहित्यमे जातिवाद विरोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यमे जातिवाद विरोध” अछि।

प्रश्न 34377. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुत्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यमे जातिवाद विरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यमे जातिवाद विरोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यमे जातिवाद विरोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34378. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुत्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुत्रा जी, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुत्रा जी, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34379. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुत्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34380. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुत्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34381. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: मुत्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34382. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135मे मुत्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समीक्षा आ “साहित्यमे जातिवाद विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3444, सूचकांक पंक्ति 2135मे मुत्रा जीक “'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोडलिन राजनन्दन जी, बीहिन कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान'” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समीक्षा आ “साहित्यमे जातिवाद विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3445 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'

प्रश्न 34383. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2136मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34384. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34385. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 34386. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जातिवादी सीमाक विरोध

उत्तर: घ. जातिवादी सीमाक विरोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिवादी सीमाक विरोध” अछि।

प्रश्न 34387. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातिवादी सीमाक विरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातिवादी सीमाक विरोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवादी सीमाक विरोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34388. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34389. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34390. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34391. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34392. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136मे आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “जातिवादी सीमाक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3445, सूचकांक पंक्ति 2136मे आशीष अनिचन्हारक “'जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “जातिवादी सीमाक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3446 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'

प्रश्न 34393. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2137मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34394. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34395. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 34396. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा

उत्तर: घ. मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 34397. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34398. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34399. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34400. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34401. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34402. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137मे आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3446, सूचकांक पंक्ति 2137मे आशीष अनिचन्हारक “'गजलक रखबार सूतल अछि, भूमिका एक: फाँक अनेक (आलोचना)'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “मैथिली गजलक आलोचनात्मक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3447 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'

प्रश्न 34403. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2138मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34404. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34405. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 34406. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक “'हे शिव “एकरा गजल कहितहुँ” होइछ लाज'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल विधाक मानकीकरण

उत्तर: घ. गजल विधाक मानकीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल विधाक मानकीकरण” अछि।

प्रश्न 34407. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक "'हे शिव "एकरा गजल कहितहुँ" होइछ लाज'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल विधाक मानकीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल विधाक मानकीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "गजल विधाक मानकीकरण" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34408. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक "'हे शिव "एकरा गजल कहितहुँ" होइछ लाज'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34409. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक "'हे शिव "एकरा गजल कहितहुँ" होइछ लाज'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34410. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक "'हे शिव "एकरा गजल कहितहुँ" होइछ लाज'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34411. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: आशीष अनिचन्हारक "'हे शिव "एकरा गजल कहितहुँ" होइछ लाज'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34412. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138मे आशीष अनिचन्हारक "'हे शिव "एकरा गजल कहितहुँ" होइछ लाज'" प्रविष्टि गद्य, आलोचना/व्यंग्य आ "गजल विधाक मानकीकरण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3447, सूचकांक पंक्ति 2138मे आशीष अनिचन्हारक "'हे शिव "एकरा गजल कहितहुँ" होइछ लाज'" प्रविष्टि गद्य, आलोचना/व्यंग्य आ "गजल विधाक मानकीकरण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3448 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'

प्रश्न 34413. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2139मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34414. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34415. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वैचारिक निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वैचारिक निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "वैचारिक निबन्ध" अछि।

प्रश्न 34416. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य आ समाजक सिद्धान्त

उत्तर: घ. साहित्य आ समाजक सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "साहित्य आ समाजक सिद्धान्त" अछि।

प्रश्न 34417. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य आ समाजक सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य आ समाजक सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "साहित्य आ समाजक सिद्धान्त" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34418. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा वैचारिक निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34419. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34420. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'"केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ वैचारिक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ वैचारिक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34421. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34422. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139मे आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'" प्रविष्टि गद्य, वैचारिक निबन्ध आ "साहित्य आ समाजक सिद्धान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3448, सूचकांक पंक्ति 2139मे आशीष अनिचन्हारक "'अनुशासन+विद्रोह=परिवर्तनः अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता'" प्रविष्टि गद्य, वैचारिक निबन्ध आ "साहित्य आ समाजक सिद्धान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3449 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'साहित्य केंद्रित जोगीरा'

प्रश्न 34423. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'साहित्य केंद्रित जोगीरा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'साहित्य केंद्रित जोगीरा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2140मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34424. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34425. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 34426. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-साहित्यक विवेचना

उत्तर: घ. लोक-साहित्यक विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-साहित्यक विवेचना” अछि।

प्रश्न 34427. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-साहित्यक विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-साहित्यक विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-साहित्यक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34428. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34429. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34430. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34431. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34432. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140मे आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “लोक-साहित्यक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3449, सूचकांक पंक्ति 2140मे आशीष अनिचन्हारक “'साहित्य केंद्रित जोगीरा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “लोक-साहित्यक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3450 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'

प्रश्न 34433. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2141मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34434. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34435. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 34436. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन

उत्तर: घ. वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 34437. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34438. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34439. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34440. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34441. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34442. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141मे आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3450, सूचकांक पंक्ति 2141मे आशीष अनिचन्हारक “'राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “वरिष्ठ साहित्यकारक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3451 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'

प्रश्न 34443. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2142मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34444. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34445. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विवेचनात्मक आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विवेचनात्मक आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विवेचनात्मक आलोचना” अछि।

प्रश्न 34446. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस

उत्तर: घ. गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस” अछि।

प्रश्न 34447. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34448. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विवेचनात्मक आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विवेचनात्मक आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34449. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34450. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'”कें विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विवेचनात्मक आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विवेचनात्मक आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34451. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34452. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142मे आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'” प्रविष्टि गद्य, विवेचनात्मक आलोचना आ “गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3451, सूचकांक पंक्ति 2142मे आशीष अनिचन्हारक “'रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक "कथित गजल"'” प्रविष्टि गद्य, विवेचनात्मक आलोचना आ “गजल विधा पर सैद्धान्तिक बहस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3452 : विदेह-सदेह 25 — श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूर: रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)

प्रश्न 34453. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2143मे श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक प्रविष्टि “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34454. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. —

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. —

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “—” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34455. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. —

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. —

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।

प्रश्न 34456. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर

उत्तर: घ. आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर” अछि।

प्रश्न 34457. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34458. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूर, विधा —, उप-विधा —

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूर, विधा —, उप-विधा —

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34459. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34460. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)”केँ विदेह-सदेह 25क —-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ —क रूपमे —-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ —क रूपमे —-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34461. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34462. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143मे श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” प्रविष्टि —, — आ “आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3452, सूचकांक पंक्ति 2143मे श्री रवीन्द्र नाथ ठाकूरक “रवीन्द्र नाथ ठाकूर विशेषांक (परिचय एवं रचना)” प्रविष्टि —, — आ “आधुनिक मैथिली गीतक प्रमुख हस्ताक्षर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3453 : विदेह-सदेह 25 — प्रदीप पुष्प: 'गीतक अप्रतिम शिल्पकारः रवीन्द्र नाथ ठाकूर'

प्रश्न 34463. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकारः रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'गीतक अप्रतिम शिल्पकारः रवीन्द्र नाथ ठाकूर'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'गीतक अप्रतिम शिल्पकारः रवीन्द्र नाथ ठाकूर'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2144मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “'गीतक अप्रतिम शिल्पकारः रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34464. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकारः रवीन्द्र नाथ ठाकूर'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34465. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकारः रवीन्द्र नाथ ठाकूर'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचनात्मक निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचनात्मक निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचनात्मक निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34466. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकारः रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन

उत्तर: घ. रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 34467. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34468. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा गद्य, उप-विधा आलोचनात्मक निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34469. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34470. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनात्मक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34471. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34472. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144मे प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3453, सूचकांक पंक्ति 2144मे प्रदीप पुष्पक “'गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकूर'” प्रविष्टि गद्य, आलोचनात्मक निबन्ध आ “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक गीत-शिल्पक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3454 : विदेह-सदेह 25 — नारायणजी: 'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'

प्रश्न 34473. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2145मे नारायणजीक प्रविष्टि “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34474. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34475. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34476. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान

उत्तर: घ. रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान” अछि।

प्रश्न 34477. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34478. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नारायणजी, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नारायणजी, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34479. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34480. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34481. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34482. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145मे नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3454, सूचकांक पंक्ति 2145मे नारायणजीक “'आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रवीन्द्रनाथ ठाकूरक अवदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3455 : विदेह-सदेह 25 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: 'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'

प्रश्न 34483. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2146मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34484. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34485. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 34486. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध

उत्तर: घ. साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 34487. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34488. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34489. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34490. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'”केँ विदेह-सदेह 25क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34491. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34492. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3455, सूचकांक पंक्ति 2146मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “'रवीन्द्रनाथ ठाकूर, हुनक रचना आ जनमानस कर उदासीनता'” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3456 : विदेह-सदेह 25 — प्रदीप पुष्प: २ टा रुबाइ आ २ टा गजल

प्रश्न 34493. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. २ टा रुबाइ आ २ टा गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २ टा रुबाइ आ २ टा गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2147मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34494. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34495. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रुबाइ/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रुबाइ/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रुबाइ/गजल” अछि।

प्रश्न 34496. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल परम्परा

उत्तर: घ. गजल परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल परम्परा” अछि।

प्रश्न 34497. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34498. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34499. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34500. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रुबाइ/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रुबाइ/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34501. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34502. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147मे प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ/गजल आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3456, सूचकांक पंक्ति 2147मे प्रदीप पुष्पक “२ टा रुबाइ आ २ टा गजल” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ/गजल आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3457 : विदेह-सदेह 25 — धदनकर कुमार: ३० टा कधर्वता

प्रश्न 34503. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ३० टा कधर्वता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ३० टा कधर्वता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2148मे धदनकर कुमारक प्रविष्टि “३० टा कधर्वता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34504. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34505. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34506. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता-संग्रह

उत्तर: घ. कविता-संग्रह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता-संग्रह” अछि।

प्रश्न 34507. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता-संग्रह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता-संग्रह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता-संग्रह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34508. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धदनकर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धदनकर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34509. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34510. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34511. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34512. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148मे धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कविता-संग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3457, सूचकांक पंक्ति 2148मे धदनकर कुमारक “३० टा कधर्वता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कविता-संग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3458 : विदेह-सदेह 25 — कुमुद "अनुहजया": 'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'

प्रश्न 34513. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2149मे कुमुद "अनुहजया"क प्रविष्टि “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34514. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34515. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34516. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक कटाक्ष

उत्तर: घ. सामाजिक कटाक्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक कटाक्ष” अछि।

प्रश्न 34517. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक कटाक्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक कटाक्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक कटाक्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34518. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमुद "अनुहजया", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमुद "अनुहजया", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34519. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34520. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34521. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34522. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149मे कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक कटाक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3458, सूचकांक पंक्ति 2149मे कुमुद "अनुहजया"क “'सुक्खा धसम्मड़ कर्त्तै जोगलो जाय'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक कटाक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3459 : विदेह-सदेह 25 — आशीष अनिचन्हार: भधक्त गजल, धकछु गजल

प्रश्न 34523. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भधक्त गजल, धकछु गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भधक्त गजल, धकछु गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2150मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “भधक्त गजल, धकछु गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34524. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34525. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 34526. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन

उत्तर: घ. वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 34527. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34528. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34529. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34530. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34531. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34532. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150मे आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3459, सूचकांक पंक्ति 2150मे आशीष अनिचन्हारक “भधक्त गजल, धकछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “वीआइडीईएचए गजल आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3460 : विदेह-सदेह 25 — राज धकिोर धमश्र: 'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'

प्रश्न 34533. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2151मे राज धकिोर धमश्रक प्रविष्टि “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34534. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34535. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक "'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

प्रश्न 34536. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक "'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चेतना

उत्तर: घ. सामाजिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "सामाजिक चेतना" अछि।

प्रश्न 34537. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक "'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "सामाजिक चेतना" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34538. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक "'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राज धकिोर धमश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राज धकिोर धमश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34539. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक "'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34540. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक "'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'"केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34541. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34542. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151मे राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3460, सूचकांक पंक्ति 2151मे राज धकिोर धमश्रक “'आमक गा छी, सुख, नर्व-संस्कृधत ओ गा म, इजोधरआ'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3461 : विदेह-सदेह 25 — संतोष कुमार राय 'बटोही': 'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'

प्रश्न 34543. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2152मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क प्रविष्टि “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34544. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34545. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34546. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 34547. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34548. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34549. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34550. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34551. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34552. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3461, सूचकांक पंक्ति 2152मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'मनुख बनर्वा मे पै लगैत छै, घरर्वाली, माए, धपता, भैय्यारी'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3462 : विदेह-सदेह 25 — संतोष कुमार राय 'बटोही': 'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'

प्रश्न 34553. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2153मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क प्रविष्टि “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34554. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34555. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34556. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 34557. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34558. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार राय 'बटोही', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34559. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34560. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34561. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34562. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3462, सूचकांक पंक्ति 2153मे संतोष कुमार राय 'बटोही'क “'िआलदार चुनार्व, राजगद्दी पर उल्लू, पधहल परेम, के बनतै सारथी अइ जन-मन-गर् के?'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3463 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'

प्रश्न 34563. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2154मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34564. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34565. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34566. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत शैली

उत्तर: घ. लोकगीत शैली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत शैली” अछि।

प्रश्न 34567. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत शैली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत शैली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत शैली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34568. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34569. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34570. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'”कैँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34571. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34572. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154मे डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोकगीत शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3463, सूचकांक पंक्ति 2154मे डा. किशन कारीगरक “'हौ तोरे त गौंआ धछयअह, प्रकृधत के बसाबह, हो हो त हो हो'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोकगीत शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3464 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'

प्रश्न 34573. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2155मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34574. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34575. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34576. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानव जीवनक प्रश्न

उत्तर: घ. मानव जीवनक प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानव जीवनक प्रश्न” अछि।

प्रश्न 34577. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानव जीवनक प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानव जीवनक प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानव जीवनक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34578. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34579. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34580. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34581. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34582. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155मे डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मानव जीवनक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3464, सूचकांक पंक्ति 2155मे डा. किशन कारीगरक “'कतअ हेरा गेलै मनुक्खक धजनगी, धमधथला मैधथली के ठीकेदारी?'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मानव जीवनक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3465 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'

प्रश्न 34583. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2156मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34584. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34585. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34586. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 34587. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34588. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34589. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34590. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34591. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34592. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156मे डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3465, सूचकांक पंक्ति 2156मे डा. किशन कारीगरक “'धकछो ने करू, जेकरा देखू सैह नेता?, के दिणक आ के सब कधर्व?'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3466 : विदेह-सदेह 25 — डा. किशन कारीगर: 'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'

प्रश्न 34593. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2157मे डा. किशन कारीगरक प्रविष्टि “'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34594. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34595. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/बाल कविता” अछि।

प्रश्न 34596. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य

उत्तर: घ. बाल साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।

प्रश्न 34597. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक “'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34598. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक "'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता/बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता/बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34599. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक "'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34600. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक "'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'"केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34601. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: डा. किशन कारीगरक "'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34602. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157मे डा. किशन कारीगरक "'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'" प्रविष्टि पद्य, कविता/बाल कविता आ "बाल साहित्य" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3466, सूचकांक पंक्ति 2157मे डा. किशन कारीगरक "'बधहन के अंगना भरदुधतया नत पूरब, आबू यौ देखू धमधथला के गाम, आ रे सुग्गा आ आ (बाल कधर्वता)'" प्रविष्टि पद्य, कविता/बाल कविता आ "बाल साहित्य" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3467 : विदेह-सदेह 25 — कल्पना झा: 'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'

प्रश्न 34603. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2158मे कल्पना झाक प्रविष्टि “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34604. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34605. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34606. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी स्वर

उत्तर: घ. नारी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।

प्रश्न 34607. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34608. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कल्पना झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कल्पना झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34609. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34610. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34611. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34612. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158मे कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3467, सूचकांक पंक्ति 2158मे कल्पना झाक “'पान, इजोत, कोइली रे, दीप, नहि रहल लचारी'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3468 : विदेह-सदेह 25 — मुन्ना जी: 'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'

प्रश्न 34613. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुन्ना जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2159मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34614. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुन्ना जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34615. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुन्ना जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/ताँका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/ताँका

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/ताँका” अछि।

प्रश्न 34616. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुन्ना जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ताँका विधामे मैथिली प्रयोग

उत्तर: घ. ताँका विधामे मैथिली प्रयोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ताँका विधामे मैथिली प्रयोग” अछि।

प्रश्न 34617. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुन्ना जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ताँका विधामे मैथिली प्रयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ताँका विधामे मैथिली प्रयोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ताँका विधामे मैथिली प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34618. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुन्ना जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा पद्य, उप-विधा कविता/ताँका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा पद्य, उप-विधा कविता/ताँका

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34619. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34620. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/ताँकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/ताँकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34621. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34622. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159मे मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'” प्रविष्टि पद्य, कविता/ताँका आ “ताँका विधामे मैथिली प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3468, सूचकांक पंक्ति 2159मे मुत्रा जीक “'कविता- दलाल, किछु ताँका (टीएएनकेए)'” प्रविष्टि पद्य, कविता/ताँका आ “ताँका विधामे मैथिली प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3469 : विदेह-सदेह 25 — आशीष नीरज: 'राजनंदन लाल दास' (कविता)

प्रश्न 34623. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'राजनंदन लाल दास' (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'राजनंदन लाल दास' (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2160मे आशीष नीरजक प्रविष्टि “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34624. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34625. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/श्रद्धांजलि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/श्रद्धांजलि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/श्रद्धांजलि” अछि।

प्रश्न 34626. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि

उत्तर: घ. राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि” अछि।

प्रश्न 34627. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34628. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष नीरज, विधा पद्य, उप-विधा कविता/श्रद्धांजलि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष नीरज, विधा पद्य, उप-विधा कविता/श्रद्धांजलि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34629. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34630. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)”केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/श्रद्धांजलिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/श्रद्धांजलिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34631. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34632. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160मे आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/श्रद्धांजलि आ “राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3469, सूचकांक पंक्ति 2160मे आशीष नीरजक “'राजनंदन लाल दास' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/श्रद्धांजलि आ “राजनन्दन लाल दासकेँ श्रद्धांजलि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3470 : विदेह-सदेह 25 — सारस्वत: 'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर "]'

प्रश्न 34633. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर "]'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर "]'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर "]'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2161मे सारस्वतक प्रविष्टि “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर "]'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34634. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर "]'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34635. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक "'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. "निमोछिया अबीर "]'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

प्रश्न 34636. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक "'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. "निमोछिया अबीर "]'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. होली पर्व पर आधारित

उत्तर: घ. होली पर्व पर आधारित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "होली पर्व पर आधारित" अछि।

प्रश्न 34637. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक "'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. "निमोछिया अबीर "]'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 25मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. होली पर्व पर आधारित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होली पर्व पर आधारित

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "होली पर्व पर आधारित" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34638. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक "'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. "निमोछिया अबीर "]'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सारस्वत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सारस्वत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34639. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक "'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. "निमोछिया अबीर "]'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34640. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक "'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. "निमोछिया अबीर "]'"केँ विदेह-सदेह 25क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34641. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर "]'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 25क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34642. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161मे सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर "]'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “होली पर्व पर आधारित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3470, सूचकांक पंक्ति 2161मे सारस्वतक “'कविता सारस्वतक [१ आ २ (२५ टा); ३. “निमोछिया अबीर "]'” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “होली पर्व पर आधारित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 25क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3471 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

प्रश्न 34643. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2162मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34644. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34645. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 34646. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन

उत्तर: घ. मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन” अछि।

प्रश्न 34647. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34648. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34649. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34650. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34651. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34652. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध/आलोचना आ “मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3471, सूचकांक पंक्ति 2162मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध/आलोचना आ “मैथिली साहित्यक इतिहास-विभाजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3472 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'मैथिली साहित्यक आदिकाल'

प्रश्न 34653. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली साहित्यक आदिकाल'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली साहित्यक आदिकाल'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2163मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34654. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34655. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34656. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना

उत्तर: घ. आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना” अछि।

प्रश्न 34657. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34658. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34659. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34660. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34661. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34662. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3472, सूचकांक पंक्ति 2163मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली साहित्यक आदिकाल'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “आदिकालीन मैथिली साहित्यक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3473 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'

प्रश्न 34663. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2164मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34664. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34665. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34666. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना

उत्तर: घ. मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना” अछि।

प्रश्न 34667. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34668. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34669. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34670. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34671. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34672. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3473, सूचकांक पंक्ति 2164मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मैथिली उपभाषाक भौगोलिक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3474 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)

प्रश्न 34673. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2165मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34674. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34675. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34676. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण

उत्तर: घ. मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण” अछि।

प्रश्न 34677. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34678. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34679. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34680. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34681. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34682. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3474, सूचकांक पंक्ति 2165मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मैथिली नाटकमे आर्थिक विपन्नताक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3475 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)

प्रश्न 34683. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2166मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34684. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34685. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34686. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम

उत्तर: घ. स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम” अछि।

प्रश्न 34687. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34688. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34689. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34690. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)"केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34691. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34692. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)" प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ "स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3475, सूचकांक पंक्ति 2166मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या' (यू.पी.एस.सी. हेतु)" प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ "स्त्री-पुरुष सम्बन्धक नव आयाम" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3476 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'

प्रश्न 34693. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2167मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34694. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34695. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संकलन/पाठ्य सामग्री

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संकलन/पाठ्य सामग्री

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संकलन/पाठ्य सामग्री” अछि।

प्रश्न 34696. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य

उत्तर: घ. मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य” अछि।

प्रश्न 34697. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34698. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा संकलन/पाठ्य सामग्री

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा संकलन/पाठ्य सामग्री

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34699. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34700. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संकलन/पाठ्य सामग्रीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संकलन/पाठ्य सामग्रीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34701. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34702. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” प्रविष्टि गद्य, संकलन/पाठ्य सामग्री आ “मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3476, सूचकांक पंक्ति 2167मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन'” प्रविष्टि गद्य, संकलन/पाठ्य सामग्री आ “मैथिली साहित्य, संस्कृति, इतिहासक प्रामाणिक तथ्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3477 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'

प्रश्न 34703. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2168मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि "'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34704. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34705. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "आलोचना/समीक्षा" अछि।

प्रश्न 34706. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. 'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना

उत्तर: घ. 'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना" अछि।

प्रश्न 34707. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. 'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34708. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34709. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34710. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34711. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34712. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/समीक्षा आ “'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3477, सूचकांक पंक्ति 2168मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'घसल अठन्नी: एकटा विमर्श'” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/समीक्षा आ “'मधुप' जीक कविताक मार्क्सवादी आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3478 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'

प्रश्न 34713. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2169मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34714. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34715. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 34716. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनुवाद कार्यशालाक समाचार

उत्तर: घ. अनुवाद कार्यशालाक समाचार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवाद कार्यशालाक समाचार” अछि।

प्रश्न 34717. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनुवाद कार्यशालाक समाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुवाद कार्यशालाक समाचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनुवाद कार्यशालाक समाचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34718. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34719. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34720. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34721. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34722. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “अनुवाद कार्यशालाक समाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3478, सूचकांक पंक्ति 2169मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'रिपोर्ताज- मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न'” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “अनुवाद कार्यशालाक समाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3479 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'

प्रश्न 34723. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2170मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34724. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34725. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "निबन्ध/व्यंग्य" अछि।

प्रश्न 34726. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य

उत्तर: घ. सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य" अछि।

प्रश्न 34727. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34728. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34729. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34730. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'"केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34731. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34732. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/व्यंग्य आ “सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3479, सूचकांक पंक्ति 2170मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'जाग' जाग' महादेव! (समसामयिक निर्बंध)'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/व्यंग्य आ “सामाजिक विसंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3480 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'

प्रश्न 34733. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2171मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34734. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34735. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34736. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बरगाछ आ मैथिलीक रूपक

उत्तर: घ. बरगाछ आ मैथिलीक रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "बरगाछ आ मैथिलीक रूपक" अछि।

प्रश्न 34737. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बरगाछ आ मैथिलीक रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बरगाछ आ मैथिलीक रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "बरगाछ आ मैथिलीक रूपक" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34738. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा कथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा कथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34739. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34740. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'"केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34741. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34742. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'” प्रविष्टि गद्य, कथा/निबन्ध आ “बरगाछ आ मैथिलीक रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3480, सूचकांक पंक्ति 2171मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'भाय-बहिनक व्यथा कथा (कथा निर्बंध)'” प्रविष्टि गद्य, कथा/निबन्ध आ “बरगाछ आ मैथिलीक रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3481 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'बीहनि कथा: जेठ'

प्रश्न 34743. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बीहनि कथा: जेठ'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बीहनि कथा: जेठ'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2172मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'बीहनि कथा: जेठ'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34744. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34745. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 34746. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज प्रथाक विडम्बना

उत्तर: घ. दहेज प्रथाक विडम्बना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज प्रथाक विडम्बना” अछि।

प्रश्न 34747. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: जेठ'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज प्रथाक विडम्बना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज प्रथाक विडम्बना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज प्रथाक विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34748. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'बीहनि कथा: जेठ'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34749. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'बीहनि कथा: जेठ'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34750. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'बीहनि कथा: जेठ'"केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34751. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'बीहनि कथा: जेठ'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34752. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'बीहनि कथा: जेठ'" प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ "दहेज प्रथाक विडम्बना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3481, सूचकांक पंक्ति 2172मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "'बीहनि कथा: जेठ'" प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ "दहेज प्रथाक विडम्बना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3482 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'बीहनि कथा: पूस'

प्रश्न 34753. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बीहनि कथा: पूस'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बीहनि कथा: पूस'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2173मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'बीहनि कथा: पूस'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34754. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34755. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 34756. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण

उत्तर: घ. दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण” अछि।

प्रश्न 34757. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34758. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34759. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34760. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34761. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34762. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3482, सूचकांक पंक्ति 2173मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: पूस'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “दहेज हिंसाक तीव्र चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3483 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'बीहनि कथा: सौदागर'

प्रश्न 34763. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बीहनि कथा: सौदागर'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बीहनि कथा: सौदागर'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2174मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'बीहनि कथा: सौदागर'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34764. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34765. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 34766. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देह-व्यापारक भयावह विडम्बना

उत्तर: घ. देह-व्यापारक भयावह विडम्बना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देह-व्यापारक भयावह विडम्बना” अछि।

प्रश्न 34767. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देह-व्यापारक भयावह विडम्बना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देह-व्यापारक भयावह विडम्बना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देह-व्यापारक भयावह विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34768. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34769. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34770. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34771. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34772. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “देह-व्यापारक भयावह विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3483, सूचकांक पंक्ति 2174मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: सौदागर'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “देह-व्यापारक भयावह विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3484 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'बीहनि कथा: गरमी'

प्रश्न 34773. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बीहनि कथा: गरमी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बीहनि कथा: गरमी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2175मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'बीहनि कथा: गरमी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34774. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34775. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहनि कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहनि कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

प्रश्न 34776. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शोषित वर्गक शोषण

उत्तर: घ. शोषित वर्गक शोषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शोषित वर्गक शोषण” अछि।

प्रश्न 34777. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शोषित वर्गक शोषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शोषित वर्गक शोषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शोषित वर्गक शोषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34778. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34779. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34780. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34781. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34782. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “शोषित वर्गक शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3484, सूचकांक पंक्ति 2175मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'बीहनि कथा: गरमी'” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “शोषित वर्गक शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3485 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'लघुकथा: अवसरक निर्माण'

प्रश्न 34783. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'लघुकथा: अवसरक निर्माण'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'लघुकथा: अवसरक निर्माण'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2176मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34784. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34785. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 34786. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-संघर्ष

उत्तर: घ. जीवन-संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-संघर्ष” अछि।

प्रश्न 34787. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34788. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34789. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34790. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34791. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34792. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जीवन-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3485, सूचकांक पंक्ति 2176मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: अवसरक निर्माण'” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जीवन-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3486 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'लघुकथा: दूभि'

प्रश्न 34793. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'लघुकथा: दूभि'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'लघुकथा: दूभि'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2177मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'लघुकथा: दूभि'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34794. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34795. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 34796. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना

उत्तर: घ. पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना” अछि।

प्रश्न 34797. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34798. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34799. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34800. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34801. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34802. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3486, सूचकांक पंक्ति 2177मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लघुकथा: दूभि'” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पर्यावरण एवं शिक्षा पद्धतिक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3487 : विदेह-सदेह 26 — रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'

प्रश्न 34803. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2178मे रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34804. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34805. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनूदित लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनूदित लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "अनूदित लघुकथा" अछि।

प्रश्न 34806. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोंकणीसँ मैथिली

उत्तर: घ. कोंकणीसँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "कोंकणीसँ मैथिली" अछि।

प्रश्न 34807. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोंकणीसँ मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोंकणीसँ मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "कोंकणीसँ मैथिली" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34808. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34809. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34810. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'"कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34811. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34812. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178मे रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'" प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ "कोंकणीसँ मैथिली" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3487, सूचकांक पंक्ति 2178मे रबि-गैस्पर अल्मीडा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: एकटा आर रबि'" प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ "कोंकणीसँ मैथिली" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3488 : विदेह-सदेह 26 — वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'

प्रश्न 34813. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2179मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34814. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34815. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनूदित लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनूदित लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "अनूदित लघुकथा" अछि।

प्रश्न 34816. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोंकणीसँ मैथिली

उत्तर: घ. कोंकणीसँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "कोंकणीसँ मैथिली" अछि।

प्रश्न 34817. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोंकणीसँ मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोंकणीसँ मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "कोंकणीसँ मैथिली" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34818. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34819. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34820. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकें टारब'"कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34821. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34822. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'" प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ "कोंकणीसँ मैथिली" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3488, सूचकांक पंक्ति 2179मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: मृत्युकेँ टारब'" प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ "कोंकणीसँ मैथिली" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3489 : विदेह-सदेह 26 — सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'अनूदित लघुकथा: सौंगर'

प्रश्न 34823. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: सौंगर'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अनूदित लघुकथा: सौंगर'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनूदित लघुकथा: सौंगर'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2180मे सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि "'अनूदित लघुकथा: सौंगर'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34824. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: सौंगर'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34825. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: सौंगर'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनूदित लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनूदित लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "अनूदित लघुकथा" अछि।

प्रश्न 34826. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: सौंगर'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोंकणीसँ मैथिली

उत्तर: घ. कोंकणीसँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "कोंकणीसँ मैथिली" अछि।

प्रश्न 34827. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: सौंगर'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोंकणीसँ मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोंकणीसँ मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "कोंकणीसँ मैथिली" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34828. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: सौंगर'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34829. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: सौंगर'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34830. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: सौंगर'"केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34831. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: सौंगर'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34832. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180मे सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3489, सूचकांक पंक्ति 2180मे सेबी फर्नान्डीस / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: सौंगर'” प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ “कोंकणीसँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3490 : विदेह-सदेह 26 — वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'

प्रश्न 34833. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2181मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34834. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34835. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनूदित लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनूदित लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित लघुकथा” अछि।

प्रश्न 34836. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोंकणीसँ मैथिली

उत्तर: घ. कोंकणीसँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोंकणीसँ मैथिली” अछि।

प्रश्न 34837. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोंकणीसँ मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोंकणीसँ मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "कोंकणीसँ मैथिली" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34838. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34839. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34840. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'"केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनूदित लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34841. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34842. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'" प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ "कोंकणीसँ मैथिली" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3490, सूचकांक पंक्ति 2181मे वसंत भगवंत सावंत / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित लघुकथा: नागपंचमी'" प्रविष्टि गद्य, अनूदित लघुकथा आ "कोंकणीसँ मैथिली" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3491 : विदेह-सदेह 26 — तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'अनूदित उपन्यास: पाखलो'

प्रश्न 34843. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अनूदित उपन्यास: पाखलो'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अनूदित उपन्यास: पाखलो'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2182मे तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34844. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34845. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनूदित उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनूदित उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित उपन्यास” अछि।

प्रश्न 34846. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोंकणीसँ मैथिली

उत्तर: घ. कोंकणीसँ मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोंकणीसँ मैथिली” अछि।

प्रश्न 34847. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'अनूदित उपन्यास: पाखलो'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोंकणीसँ मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोंकणीसँ मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोंकणीसँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34848. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित उपन्यास: पाखलो'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनूदित उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34849. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित उपन्यास: पाखलो'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34850. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित उपन्यास: पाखलो'"केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनूदित उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनूदित उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34851. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित उपन्यास: पाखलो'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34852. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182मे तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित उपन्यास: पाखलो'" प्रविष्टि गद्य, अनूदित उपन्यास आ "कोंकणीसँ मैथिली" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3491, सूचकांक पंक्ति 2182मे तुकाराम रामा शेट / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क "'अनूदित उपन्यास: पाखलो'" प्रविष्टि गद्य, अनूदित उपन्यास आ "कोंकणीसँ मैथिली" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3492 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

प्रश्न 34853. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2183मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34854. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34855. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34856. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित चेतना

उत्तर: घ. दलित चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित चेतना” अछि।

प्रश्न 34857. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34858. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34859. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34860. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34861. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34862. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “दलित चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3492, सूचकांक पंक्ति 2183मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'स्वातन्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “दलित चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3493 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

प्रश्न 34863. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2184मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34864. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34865. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34866. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित साहित्य

उत्तर: घ. दलित साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित साहित्य” अछि।

प्रश्न 34867. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34868. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34869. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34870. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34871. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34872. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “दलित साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3493, सूचकांक पंक्ति 2184मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना' (परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “दलित साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3494 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'

प्रश्न 34873. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2185मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34874. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34875. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34876. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार

उत्तर: घ. मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार” अछि।

प्रश्न 34877. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34878. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34879. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34880. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34881. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34882. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3494, सूचकांक पंक्ति 2185मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषाक शैक्षिक अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3495 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'

प्रश्न 34883. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2186मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34884. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34885. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "निबन्ध" अछि।

प्रश्न 34886. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक भाषाविज्ञान

उत्तर: घ. सामाजिक भाषाविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "सामाजिक भाषाविज्ञान" अछि।

प्रश्न 34887. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक भाषाविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक भाषाविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "सामाजिक भाषाविज्ञान" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34888. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34889. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34890. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'”कें विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34891. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34892. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3495, सूचकांक पंक्ति 2186मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3496 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'

प्रश्न 34893. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2187मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34894. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34895. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 34896. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग

उत्तर: घ. स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग” अछि।

प्रश्न 34897. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34898. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34899. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34900. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34901. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34902. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख/रिपोर्ताज आ “स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3496, सूचकांक पंक्ति 2187मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा'” प्रविष्टि गद्य, आलेख/रिपोर्ताज आ “स्वतन्त्र मिथिला राज्यक मांग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3497 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'कोशीमे बिताओल एक दिन'

प्रश्न 34903. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'कोशीमे बिताओल एक दिन'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'कोशीमे बिताओल एक दिन'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2188मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34904. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34905. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण” अछि।

प्रश्न 34906. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोशी अंचलक यथार्थ

उत्तर: घ. कोशी अंचलक यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोशी अंचलक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 34907. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोशी अंचलक यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोशी अंचलक यथार्थ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोशी अंचलक यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34908. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34909. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34910. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34911. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34912. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण आ “कोशी अंचलक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3497, सूचकांक पंक्ति 2188मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'कोशीमे बिताओल एक दिन'” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/संस्मरण आ “कोशी अंचलक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3498 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'

प्रश्न 34913. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2189मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34914. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34915. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 34916. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि

उत्तर: घ. एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि” अछि।

प्रश्न 34917. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34918. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34919. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34920. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?'"केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34921. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34922. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?'" प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ "एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3498, सूचकांक पंक्ति 2189मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'उजड़ेत गाम: बसैत शहर?'" प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ "एहि आलेख सदेह २६ मे दू बेर अछि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3499 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'

प्रश्न 34923. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2190मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34924. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34925. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 34926. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान

उत्तर: घ. कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान” अछि।

प्रश्न 34927. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34928. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34929. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34930. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34931. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34932. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3499, सूचकांक पंक्ति 2190मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'मैथिलेतर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कॅम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3500 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'

प्रश्न 34933. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2191मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि "'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34934. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34935. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "शोध-निबन्ध" अछि।

प्रश्न 34936. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग

उत्तर: घ. मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग" अछि।

प्रश्न 34937. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34938. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34939. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34940. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34941. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34942. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3500, सूचकांक पंक्ति 2191मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'अभिकलनात्मक/संगनणात्मक (सीओएमपीयूटीएटीआइओएनएएल) मैथिली व्याकरण'” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मैथिलीक कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3501 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)

प्रश्न 34943. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2192मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34944. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34945. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 34946. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला

उत्तर: घ. भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला” अछि।

प्रश्न 34947. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34948. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34949. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34950. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)”केँ विदेह-सदेह 26क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34951. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34952. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3501, सूचकांक पंक्ति 2192मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन' (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3502 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'अतीत' (कविता)

प्रश्न 34953. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अतीत' (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अतीत' (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2193मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'अतीत' (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34954. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34955. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34956. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक

उत्तर: घ. दार्शनिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 34957. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34958. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34959. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34960. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)”केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34961. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34962. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3502, सूचकांक पंक्ति 2193मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'अतीत' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3503 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'आस' (कविता)

प्रश्न 34963. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'आस' (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'आस' (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2194मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'आस' (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34964. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34965. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34966. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आशावादी

उत्तर: घ. आशावादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आशावादी” अछि।

प्रश्न 34967. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आशावादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आशावादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आशावादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34968. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34969. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34970. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)”केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34971. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34972. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आशावादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3503, सूचकांक पंक्ति 2194मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आस' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आशावादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3504 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'लोरी' (कविता)

प्रश्न 34973. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'लोरी' (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'लोरी' (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2195मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'लोरी' (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34974. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34975. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/लोरी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/लोरी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/लोरी” अछि।

प्रश्न 34976. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित-शोषित जीवन

उत्तर: घ. दलित-शोषित जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित-शोषित जीवन” अछि।

प्रश्न 34977. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित-शोषित जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित-शोषित जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित-शोषित जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34978. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लोरी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लोरी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34979. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34980. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)”केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/लोरीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/लोरीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34981. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34982. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/लोरी आ “दलित-शोषित जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3504, सूचकांक पंक्ति 2195मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'लोरी' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/लोरी आ “दलित-शोषित जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3505 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: 'आह्वान' (कविता)

प्रश्न 34983. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'आह्वान' (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'आह्वान' (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2196मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “'आह्वान' (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34984. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34985. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 34986. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देशभक्ति

उत्तर: घ. देशभक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देशभक्ति” अछि।

प्रश्न 34987. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देशभक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देशभक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देशभक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34988. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34989. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 34990. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)”केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 34991. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 34992. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3505, सूचकांक पंक्ति 2196मे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “'आह्वान' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3506 : विदेह-सदेह 26 — प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)

प्रश्न 34993. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2197मे प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 34994. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 34995. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 34996. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. डोगरी-मैथिली

उत्तर: घ. डोगरी-मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “डोगरी-मैथिली” अछि।

प्रश्न 34997. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. डोगरी-मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डोगरी-मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “डोगरी-मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 34998. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 34999. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35000. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35001. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35002. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197मे प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “डोगरी-मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3506, सूचकांक पंक्ति 2197मे प्रो. चम्पा शर्मा / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'स्नेह-भरल सनेस' (डोगरी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “डोगरी-मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3507 : विदेह-सदेह 26 — कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): 'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)

प्रश्न 35003. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2198मे कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क प्रविष्टि “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35004. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35005. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35006. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल कविता

उत्तर: घ. बाल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 35007. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35008. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35009. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35010. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35011. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35012. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198मे कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3507, सूचकांक पंक्ति 2198मे कुमार संभव ‘भारद्वाज’ / डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “'हमर भारत देश महान' (हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3508 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)

प्रश्न 35013. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2199मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35014. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35015. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 35016. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिलीक पहचानक प्रश्न

उत्तर: घ. मैथिलीक पहचानक प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलीक पहचानक प्रश्न” अछि।

प्रश्न 35017. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिलीक पहचानक प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक पहचानक प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिलीक पहचानक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35018. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35019. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35020. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)"केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35021. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35022. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "मैथिलीक पहचानक प्रश्न" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3508, सूचकांक पंक्ति 2199मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक "'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली' (कविता)" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "मैथिलीक पहचानक प्रश्न" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3509 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'सोधनपाल' (कविता)

प्रश्न 35023. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'सोधनपाल' (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'सोधनपाल' (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2200मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'सोधनपाल' (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35024. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35025. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35026. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 35027. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35028. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35029. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35030. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)”केँ विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/लघुकथाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/लघुकथाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35031. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35032. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/लघुकथा आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3509, सूचकांक पंक्ति 2200मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'सोधनपाल' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/लघुकथा आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3510 : विदेह-सदेह 26 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: 'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)

प्रश्न 35033. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2201मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35034. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35035. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/पत्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/पत्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/पत्र” अछि।

प्रश्न 35036. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित

उत्तर: घ. सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित” अछि।

प्रश्न 35037. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35038. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/पत्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता/पत्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35039. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35040. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)”कैं विदेह-सदेह 26क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/पत्रक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/पत्रक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35041. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 26क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35042. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/पत्र आ “सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3510, सूचकांक पंक्ति 2201मे डॉ. अरुण कुमार सिंहक “'प्रियवर सम्पादकजी' (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता/पत्र आ “सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रति समर्पित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 26क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3511 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)

प्रश्न 35043. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2202मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35044. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35045. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कथा” अछि।

प्रश्न 35046. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35047. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35048. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35049. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35050. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)”केँ विदेह-सदेह 27क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35051. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35052. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202मे गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद/कथा आ “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3511, सूचकांक पंक्ति 2202मे गजेन्द्र ठाकूरक “जुम्मा (तेलुगु लघुकथा, मूल: शेख मोहम्मद शरीफ)” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद/कथा आ “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3512 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)

प्रश्न 35053. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2203मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35054. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35055. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35056. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35057. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35058. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35059. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35060. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35061. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35062. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203मे गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3512, सूचकांक पंक्ति 2203मे गजेन्द्र ठाकूरक “गप (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3513 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)

प्रश्न 35063. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2204मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35064. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35065. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35066. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35067. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35068. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35069. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35070. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35071. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35072. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204मे गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3513, सूचकांक पंक्ति 2204मे गजेन्द्र ठाकूरक “हिलकोर (ओडिया कविता, मूल: इप्सिता सारंगी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3514 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)

प्रश्न 35073. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2205मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35074. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35075. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35076. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35077. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35078. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35079. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35080. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35081. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35082. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205मे गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3514, सूचकांक पंक्ति 2205मे गजेन्द्र ठाकूरक “फूसि (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3515 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)

प्रश्न 35083. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2206मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35084. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35085. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35086. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35087. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35088. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35089. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35090. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35091. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35092. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206मे गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3515, सूचकांक पंक्ति 2206मे गजेन्द्र ठाकूरक “अनुमति (ओडिया कविता, मूल: वासुदेव सुनानी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3516 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)

प्रश्न 35093. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2207मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35094. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35095. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35096. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35097. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35098. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35099. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35100. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35101. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35102. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207मे गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3516, सूचकांक पंक्ति 2207मे गजेन्द्र ठाकूरक “हमर घुरलाक बाद (ओडिया कविता, मूल: भरत माँझी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “ओडिया→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3517 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)

प्रश्न 35103. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2208मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35104. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35105. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35106. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35107. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35108. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35109. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35110. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35111. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35112. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208मे गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3517, सूचकांक पंक्ति 2208मे गजेन्द्र ठाकूरक “अंतिम शब्द (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3518 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)

प्रश्न 35113. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2209मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35114. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35115. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35116. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35117. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35118. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35119. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35120. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35121. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35122. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209मे गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3518, सूचकांक पंक्ति 2209मे गजेन्द्र ठाकूरक “पानि अछि, मात्र आँखिक नोर (तेलुगु कविता, मूल: अन्नावरन देवेन्दर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3519 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)

प्रश्न 35123. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2210मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35124. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35125. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35126. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35127. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35128. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35129. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35130. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35131. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35132. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210मे गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3519, सूचकांक पंक्ति 2210मे गजेन्द्र ठाकूरक “पसीझक काँट (तेलुगु कविता, मूल: शीला सुभद्रा देवी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3520 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)

प्रश्न 35133. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2211मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35134. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35135. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35136. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35137. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35138. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35139. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35140. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35141. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35142. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211मे गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3520, सूचकांक पंक्ति 2211मे गजेन्द्र ठाकूरक “ई सेहो अछि प्रवास (तेलुगु कविता, मूल: एन. अरुणा)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3521 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)

प्रश्न 35143. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2212मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35144. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35145. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35146. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35147. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35148. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35149. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35150. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35151. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35152. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212मे गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3521, सूचकांक पंक्ति 2212मे गजेन्द्र ठाकूरक “समीकरण (गुजराती कविता, मूल: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3522 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)

प्रश्न 35153. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2213मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35154. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35155. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35156. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35157. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35158. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35159. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35160. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35161. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35162. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213मे गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3522, सूचकांक पंक्ति 2213मे गजेन्द्र ठाकूरक “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती कविता, मूल: अजय सरवैया)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3523 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)

प्रश्न 35163. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2214मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35164. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35165. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35166. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35167. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35168. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35169. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35170. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35171. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35172. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214मे गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3523, सूचकांक पंक्ति 2214मे गजेन्द्र ठाकूरक “बिनु शीर्षकक (गुजराती कविता, मूल: राजेन्द्र पटेल)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3524 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)

प्रश्न 35173. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2215मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35174. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35175. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35176. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35177. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35178. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35179. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35180. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35181. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35182. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215मे गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3524, सूचकांक पंक्ति 2215मे गजेन्द्र ठाकूरक “सांध्य बेला (गुजराती कविता, मूल: पीयूष ठक्कर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3525 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)

प्रश्न 35183. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2216मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35184. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35185. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35186. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35187. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35188. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35189. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35190. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35191. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35192. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216मे गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3525, सूचकांक पंक्ति 2216मे गजेन्द्र ठाकूरक “आमद (गुजराती कविता, मूल: पन्ना त्रिवेदी)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3526 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)

प्रश्न 35193. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2217मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35194. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35195. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35196. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35197. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35198. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35199. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35200. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35201. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35202. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217मे गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3526, सूचकांक पंक्ति 2217मे गजेन्द्र ठाकूरक “गृहमोह (गुजराती कविता, मूल: बाबू सुथार)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3527 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)

प्रश्न 35203. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2218मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35204. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35205. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/बिरहा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/बिरहा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/बिरहा” अछि।

प्रश्न 35206. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भोजपुरी→मैथिली

उत्तर: घ. भोजपुरी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भोजपुरी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35207. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भोजपुरी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोजपुरी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोजपुरी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35208. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/बिरहा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/बिरहा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35209. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35210. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/बिरहाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/बिरहाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35211. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35212. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218मे गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/बिरहा आ “भोजपुरी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3527, सूचकांक पंक्ति 2218मे गजेन्द्र ठाकूरक “वृद्धाश्रमक पक्षमे बिरहा १ (भोजपुरी, मूल: भिखारी ठाकुर)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/बिरहा आ “भोजपुरी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3528 : विदेह-सदेह 27 — गजेन्द्र ठाकूर: छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)

प्रश्न 35213. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2219मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35214. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35215. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/कविता” अछि।

प्रश्न 35216. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कश्मीरी→अंग्रेजी→मैथिली

उत्तर: घ. कश्मीरी→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कश्मीरी→अंग्रेजी→मैथिली” अछि।

प्रश्न 35217. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कश्मीरी→अंग्रेजी→मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कश्मीरी→अंग्रेजी→मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कश्मीरी→अंग्रेजी→मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35218. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35219. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35220. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35221. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35222. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219मे गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “कश्मीरी→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3528, सूचकांक पंक्ति 2219मे गजेन्द्र ठाकूरक “छाह सभ (कश्मीरी कविता, मूल: रहमान राही)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/कविता आ “कश्मीरी→अंग्रेजी→मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3529 : विदेह-सदेह 27 — रवि भूषण पाठक: निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद

प्रश्न 35223. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2220मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35224. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35225. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद/आलोचना” अछि।

प्रश्न 35226. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कवि: निराला

उत्तर: घ. कवि: निराला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि: निराला” अछि।

प्रश्न 35227. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कवि: निराला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि: निराला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि: निराला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35228. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35229. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35230. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद”केँ विदेह-सदेह 27क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवाद/आलोचनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवाद/आलोचनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35231. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 27क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35232. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220मे रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/आलोचना आ “कवि: निराला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3529, सूचकांक पंक्ति 2220मे रवि भूषण पाठकक “निरालादेह विदेह (१-४) — हिन्दी अनुवाद” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद/आलोचना आ “कवि: निराला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 27क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3530 : विदेह-सदेह 28 — शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु): जुम्मा

प्रश्न 35233. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जुम्मा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जुम्मा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2221मे शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क प्रविष्टि “जुम्मा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35234. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35235. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35236. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।

उत्तर: घ. स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।” अछि।

प्रश्न 35237. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35238. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35239. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35240. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35241. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35242. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221मे शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3530, सूचकांक पंक्ति 2221मे शेख मोहम्मद शरीफ (तेलुगु)क “जुम्मा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “स्त्रीवादी-अस्तित्ववादी: माँक पुत्र-प्रेम नै, आतंकक बीच ‘अल्ला-मस्जिद’ सँ डर। विदेह-समानान्तर: बम विस्फोटक पीड़ित माँक सत्य। ध्वनि: ‘जुम्मा नहि जाएब’ मे व्यञ्जित विश्वास-शून्यता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3531 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 35243. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2222मे अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35244. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35245. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35246. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35247. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35248. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35249. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक "" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35250. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक ""केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35251. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक "" प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35252. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222मे अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक "" प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ "" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3531, सूचकांक पंक्ति 2222मे अनुवाद:जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुरक "" प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ "" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3532 : विदेह-सदेह 28 — डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी): छिन्नमस्ता

प्रश्न 35253. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क "छिन्नमस्ता" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छिन्नमस्ता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छिन्नमस्ता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2223मे डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क प्रविष्टि "छिन्नमस्ता" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35254. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क "छिन्नमस्ता"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35255. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 35256. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।

उत्तर: घ. स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।” अछि।

प्रश्न 35257. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35258. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35259. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35260. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35261. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35262. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223मे डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3532, सूचकांक पंक्ति 2223मे डॉ. प्रभा खेतान (हिन्दी)क “छिन्नमस्ता” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “स्त्रीवादी-मनोवैज्ञानिक उत्कृष्ट पाठ। नव्य-न्याय पंचलक्षणी: नारी-मुक्ति लेल आत्म-स्वीकार अनिवार्य। फ्रायडियन स्मृति-आघात, पाश्चात्य अस्तित्ववादी ‘स्व-प्रेम’ स्वीकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3533 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सुशीला झा:

प्रश्न 35263. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2224मे अनुवाद: सुशीला झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35264. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35265. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35266. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35267. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35268. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: सुशीला झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: सुशीला झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35269. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35270. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35271. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: अनुवाद: सुशीला झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35272. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224मे अनुवाद: सुशीला झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3533, सूचकांक पंक्ति 2224मे अनुवाद: सुशीला झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3534 : विदेह-सदेह 28 — खलील जिब्रान (अंग्रेजी): गोल्डन बेल्ट

प्रश्न 35273. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गोल्डन बेल्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोल्डन बेल्ट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2225मे खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क प्रविष्टि “गोल्डन बेल्ट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35274. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35275. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रतीकात्मक कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रतीकात्मक कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रतीकात्मक कथा” अछि।

प्रश्न 35276. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी

उत्तर: घ. उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी” अछि।

प्रश्न 35277. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35278. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक खलील जिब्रान (अंग्रेजी), विधा गद्य, उप-विधा प्रतीकात्मक कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक खलील जिब्रान (अंग्रेजी), विधा गद्य, उप-विधा प्रतीकात्मक कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35279. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35280. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रतीकात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रतीकात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35281. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35282. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225मे खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” प्रविष्टि गद्य, प्रतीकात्मक कथा आ “उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3534, सूचकांक पंक्ति 2225मे खलील जिब्रान (अंग्रेजी)क “गोल्डन बेल्ट” प्रविष्टि गद्य, प्रतीकात्मक कथा आ “उत्तर-औपनिवेशिक: ‘सुनहर बेल्ट’ – पत्नी-बच्चा लेल कमाएल सोनाक करधनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3535 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: मुन्नाजी:

प्रश्न 35283. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2226मे अनुवाद: मुन्नाजीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35284. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35285. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35286. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35287. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35288. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35289. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35290. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35291. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35292. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3535, सूचकांक पंक्ति 2226मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3536 : विदेह-सदेह 28 — ग्रिगोरी गोरिन (रूसी): एकटा ईमानदार आदमी

प्रश्न 35293. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकटा ईमानदार आदमी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा ईमानदार आदमी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2227मे ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क प्रविष्टि “एकटा ईमानदार आदमी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35294. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35295. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटकीय लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटकीय लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटकीय लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35296. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त

उत्तर: घ. मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त” अछि।

प्रश्न 35297. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35298. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ग्रिगोरी गोरिन (रूसी), विधा गद्य, उप-विधा नाटकीय लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ग्रिगोरी गोरिन (रूसी), विधा गद्य, उप-विधा नाटकीय लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35299. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35300. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकीय लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकीय लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35301. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35302. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227मे ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” प्रविष्टि गद्य, नाटकीय लघुकथा आ “मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3536, सूचकांक पंक्ति 2227मे ग्रिगोरी गोरिन (रूसी)क “एकटा ईमानदार आदमी” प्रविष्टि गद्य, नाटकीय लघुकथा आ “मार्क्सवादी-अस्तित्ववादी: ईमानदारी आ पूँजीवादक भिड़न्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3537 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: मुन्नाजी:

प्रश्न 35303. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2228मे अनुवाद: मुन्नाजीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35304. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35305. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35306. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35307. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35308. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35309. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35310. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35311. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35312. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3537, सूचकांक पंक्ति 2228मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3538 : विदेह-सदेह 28 — बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन): गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि

प्रश्न 35313. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2229मे बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क प्रविष्टि “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35314. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35315. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रयोगात्मक कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रयोगात्मक कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रयोगात्मक कथा” अछि।

प्रश्न 35316. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग

उत्तर: घ. ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग” अछि।

प्रश्न 35317. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35318. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन), विधा गद्य, उप-विधा प्रयोगात्मक कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन), विधा गद्य, उप-विधा प्रयोगात्मक कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35319. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35320. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि”कैं विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रयोगात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रयोगात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35321. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35322. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229मे बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” प्रविष्टि गद्य, प्रयोगात्मक कथा आ “ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3538, सूचकांक पंक्ति 2229मे बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन)क “गपशप, महाशय “क” जखन कोनो व्यक्तिसँ प्रेम करैत अछि” प्रविष्टि गद्य, प्रयोगात्मक कथा आ “ब्रेख्तीय ‘अलगीकरण प्रभाव’ सँ प्रेमक रूमानियत भंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3539 : विदेह-सदेह 28 — विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा): शरीरक मूल्य

प्रश्न 35323. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शरीरक मूल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शरीरक मूल्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2230मे विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क प्रविष्टि “शरीरक मूल्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35324. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35325. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोक बालबोधिनी कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोक बालबोधिनी कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक बालबोधिनी कथा” अछि।

प्रश्न 35326. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपनिषदीय दृष्टि

उत्तर: घ. उपनिषदीय दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपनिषदीय दृष्टि” अछि।

प्रश्न 35327. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपनिषदीय दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपनिषदीय दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपनिषदीय दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35328. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा), विधा गद्य, उप-विधा लोक बालबोधिनी कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा), विधा गद्य, उप-विधा लोक बालबोधिनी कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35329. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35330. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोक बालबोधिनी कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोक बालबोधिनी कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35331. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35332. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230मे विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” प्रविष्टि गद्य, लोक बालबोधिनी कथा आ “उपनिषदीय दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3539, सूचकांक पंक्ति 2230मे विपिन कुमार झा (संस्कृत-चन्दमामा)क “शरीरक मूल्य” प्रविष्टि गद्य, लोक बालबोधिनी कथा आ “उपनिषदीय दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3540 : विदेह-सदेह 28 — देवज्ञत बसु (संस्कृत): सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू

प्रश्न 35333. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2231मे देवज्ञत बसु (संस्कृत)क प्रविष्टि “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35334. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35335. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दार्शनिक लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दार्शनिक लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दार्शनिक लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35336. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।

उत्तर: घ. भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।” अछि।

प्रश्न 35337. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35338. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवज्ञत बसु (संस्कृत), विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवज्ञत बसु (संस्कृत), विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35339. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35340. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू”कँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दार्शनिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दार्शनिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35341. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35342. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231मे देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक लघुकथा आ “भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3540, सूचकांक पंक्ति 2231मे देवज्ञत बसु (संस्कृत)क “सुख कँ मृगमरीचिका बुद्धू” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक लघुकथा आ “भारतीय मायावाद / अद्वैत – सुख मृगतृष्णा। पाश्चात्य आनन्द-सिद्धान्तसँ अलग, वैदिक मूल्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3541 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विपिन कुमार झा:

प्रश्न 35343. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2232मे अनुवाद: विपिन कुमार झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35344. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35345. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35346. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35347. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35348. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विपिन कुमार झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विपिन कुमार झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35349. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35350. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35351. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35352. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232मे अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3541, सूचकांक पंक्ति 2232मे अनुवाद: विपिन कुमार झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3542 : विदेह-सदेह 28 — डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत): वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्

प्रश्न 35353. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2233मे डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क प्रविष्टि “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35354. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35355. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्कृत लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्कृत लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्कृत लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35356. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।

उत्तर: घ. स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।” अछि।

प्रश्न 35357. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35358. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत), विधा गद्य, उप-विधा संस्कृत लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत), विधा गद्य, उप-विधा संस्कृत लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35359. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35360. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्कृत लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्कृत लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35361. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35362. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233मे डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” प्रविष्टि गद्य, संस्कृत लघुकथा आ “स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3542, सूचकांक पंक्ति 2233मे डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र (संस्कृत)क “वीरभोग्या वसुन्धरा, अतिसर्वत्र वर्जयेत्” प्रविष्टि गद्य, संस्कृत लघुकथा आ “स्त्री-परामर्श: माधुरीप्रति सहानुभूति ‘अति’केँ ‘सन्देह’मे बदलैत अछि – सामाजिक मनोविज्ञानक पाठ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3543 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. योगानन्द झा:

प्रश्न 35363. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2234मे अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35364. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35365. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35366. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35367. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35368. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. योगानन्द झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. योगानन्द झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35369. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35370. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35371. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35372. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234मे अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3543, सूचकांक पंक्ति 2234मे अनुवाद: डॉ. योगानन्द झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3544 : विदेह-सदेह 28 — असगर वजाहत (हिन्दी): हम हिन्दू छी

प्रश्न 35373. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम हिन्दू छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम हिन्दू छी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2235मे असगर वजाहत (हिन्दी)क प्रविष्टि “हम हिन्दू छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35374. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35375. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साम्प्रदायिक लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साम्प्रदायिक लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साम्प्रदायिक लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35376. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि

उत्तर: घ. उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि” अछि।

प्रश्न 35377. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35378. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक असगर वजाहत (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा साम्प्रदायिक लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक असगर वजाहत (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा साम्प्रदायिक लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35379. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35380. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साम्प्रदायिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साम्प्रदायिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35381. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35382. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235मे असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” प्रविष्टि गद्य, साम्प्रदायिक लघुकथा आ “उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3544, सूचकांक पंक्ति 2235मे असगर वजाहत (हिन्दी)क “हम हिन्दू छी” प्रविष्टि गद्य, साम्प्रदायिक लघुकथा आ “उत्तर-औपनिवेशिक/समानान्तर इतिहास: सांप्रदायिक दंगाक बीच निर्दोष मुसलमान बच्चा ‘हिन्दू’ बनि प्राण बचाबैत अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3545 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

प्रश्न 35383. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2236मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35384. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35385. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35386. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35387. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35388. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35389. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35390. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35391. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35392. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3545, सूचकांक पंक्ति 2236मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3546 : विदेह-सदेह 28 — आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी): कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत

प्रश्न 35393. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2237मे आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क प्रविष्टि “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35394. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35395. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. धार्मिक अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. धार्मिक अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “धार्मिक अनुवाद” अछि।

प्रश्न 35396. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु

उत्तर: घ. अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु” अछि।

प्रश्न 35397. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35398. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा धार्मिक अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा धार्मिक अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35399. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35400. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ धार्मिक अनुवादक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ धार्मिक अनुवादक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35401. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35402. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237मे आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” प्रविष्टि पद्य/गद्य, धार्मिक अनुवाद आ “अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3546, सूचकांक पंक्ति 2237मे आशीष अनचिन्हार (अरबी-हिन्दी)क “कुरानक पहिल अध्यायक सात टा आयत” प्रविष्टि पद्य/गद्य, धार्मिक अनुवाद आ “अन्तर्धार्मिक संवादक सेतु” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3547 : विदेह-सदेह 28 — तुकाराम रामा शेट (कोंकणी): पाखलो

प्रश्न 35403. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पाखलो

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाखलो

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2238मे तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क प्रविष्टि “पाखलो” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35404. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35405. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 35406. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठ्ठल’ आन्तरिक पहिचान।

उत्तर: घ. विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठ्ठल’ आन्तरिक पहिचान।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठ्ठल’ आन्तरिक पहिचान।” अछि।

प्रश्न 35407. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठ्ठल’ आन्तरिक पहिचान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठ्ठल’ आन्तरिक पहिचान।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठ्ठल’ आन्तरिक पहिचान।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35408. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तुकाराम रामा शेट (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तुकाराम रामा शेट (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35409. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35410. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35411. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35412. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238मे तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठ्ठल’ आन्तरिक पहिचान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3547, सूचकांक पंक्ति 2238मे तुकाराम रामा शेट (कोंकणी)क “पाखलो” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “विदेह-समानान्तर इतिहासक आदर्श पाठ: ‘पाखलो’ (यूरोपीय) आ गोवाक आदिवासी संसर्ग। नव्य-न्याय: उपनिवेशक बीजक अवधारणा। ध्वनि: ‘हवठ्ठल’ आन्तरिक पहिचान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3548 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह:

प्रश्न 35413. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2239मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35414. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35415. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35416. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35417. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35418. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35419. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35420. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35421. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35422. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3548, सूचकांक पंक्ति 2239मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3549 : विदेह-सदेह 28 — अशोक मनभुटकर (कोंकणी): हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’

प्रश्न 35423. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2240मे अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क प्रविष्टि “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35424. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35425. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षात्मक आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षात्मक आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षात्मक आलेख” अछि।

प्रश्न 35426. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण

उत्तर: घ. पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण” अछि।

प्रश्न 35427. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35428. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक मनभुटकर (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा समीक्षात्मक आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक मनभुटकर (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा समीक्षात्मक आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35429. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35430. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षात्मक आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षात्मक आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35431. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35432. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240मे अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” प्रविष्टि गद्य, समीक्षात्मक आलेख आ “पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3549, सूचकांक पंक्ति 2240मे अशोक मनभुटकर (कोंकणी)क “हर एक लोक आ माटिक कथा ‘पाखलो’” प्रविष्टि गद्य, समीक्षात्मक आलेख आ “पाखलो उपन्यासक पृष्ठभूमि: गोवाक माटि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, आदिवासी-शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3550 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह:

प्रश्न 35433. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2241मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35434. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35435. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35436. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35437. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35438. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35439. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35440. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35441. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35442. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3550, सूचकांक पंक्ति 2241मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3551 : विदेह-सदेह 28 — हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी): मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग

प्रश्न 35443. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2242मे हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क प्रविष्टि “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35444. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35445. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/शोध” अछि।

प्रश्न 35446. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन

उत्तर: घ. पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन” अछि।

प्रश्न 35447. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35448. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35449. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35450. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35451. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35452. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242मे हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3551, सूचकांक पंक्ति 2242मे हरिशंकर श्रीवास्तव ‘शलभ’ (हिन्दी)क “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “पुराणोक्त चरित्रक पुनर्स्थापना। समानान्तर इतिहास – मुख्य रामायण-प्रवचनसँ ओझेल ऋषिक उद्घाटन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3552 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

प्रश्न 35453. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2243मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35454. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35455. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35456. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35457. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35458. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35459. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35460. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35461. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35462. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3552, सूचकांक पंक्ति 2243मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3553 : विदेह-सदेह 28 — उदय प्रकाश (हिन्दी): मोहनदास

प्रश्न 35463. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मोहनदास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोहनदास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2244मे उदय प्रकाश (हिन्दी)क प्रविष्टि “मोहनदास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35464. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35465. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दीर्घ कथा / उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दीर्घ कथा / उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घ कथा / उपन्यास” अछि।

प्रश्न 35466. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।

उत्तर: घ. उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।” अछि।

प्रश्न 35467. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35468. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उदय प्रकाश (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा / उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उदय प्रकाश (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा / उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35469. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35470. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दीर्घ कथा / उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दीर्घ कथा / उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35471. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35472. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244मे उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा / उपन्यास आ “उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3553, सूचकांक पंक्ति 2244मे उदय प्रकाश (हिन्दी)क “मोहनदास” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा / उपन्यास आ “उत्तर-आधुनिक / मार्क्सवादी: ‘नकली मोहनदास’ असली बनि जाइत अछि। पहिचान, डिग्रीक बाजारीकरण। अस्तित्ववादी संकट।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3554 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

प्रश्न 35473. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2245मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35474. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35475. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35476. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35477. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35478. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35479. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35480. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35481. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35482. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3555 : विदेह-सदेह 28 — काशीनाथ सिंह (हिन्दी): रेहन पर रघ्घू

प्रश्न 35483. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्घू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रेहन पर रघ्घू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रेहन पर रघ्घू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2246मे काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क प्रविष्टि “रेहन पर रघ्घू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35484. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्घू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35485. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्घू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 35486. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्घू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन

उत्तर: घ. मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन” अछि।

प्रश्न 35487. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्घू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35488. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्घू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक काशीनाथ सिंह (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक काशीनाथ सिंह (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35489. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रग्घू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35490. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रग्घू”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35491. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रग्घू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35492. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246मे काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रग्घू” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246मे काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रग्घू” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3556 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

प्रश्न 35493. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2247मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35494. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35495. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35496. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35497. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35498. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35499. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35500. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35501. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35502. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3557 : विदेह-सदेह 28 — गीतेश शर्मा (हिन्दी): भारतीय मुसलमान आ भारतीयता

प्रश्न 35503. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भारतीय मुसलमान आ भारतीयता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारतीय मुसलमान आ भारतीयता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2248मे गीतेश शर्मा (हिन्दी)क प्रविष्टि “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35504. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35505. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 35506. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।

उत्तर: घ. दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।” अछि।

प्रश्न 35507. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35508. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गीतेश शर्मा (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गीतेश शर्मा (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35509. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35510. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35511. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35512. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248मे गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248मे गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3558 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: उमेश मण्डल:

प्रश्न 35513. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2249मे अनुवाद: उमेश मण्डलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35514. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35515. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35516. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35517. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35518. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: उमेश मण्डल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: उमेश मण्डल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35519. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35520. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35521. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35522. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249मे अनुवाद: उमेश मण्डलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249मे अनुवाद: उमेश मण्डलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3559 : विदेह-सदेह 28 — सुकेश साहनी (हिन्दी): ठ'रल सीरक

प्रश्न 35523. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ठ'रल सीरक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ठ'रल सीरक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2250मे सुकेश साहनी (हिन्दी)क प्रविष्टि “ठ'रल सीरक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35524. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35525. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बीहिन कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बीहिन कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।

प्रश्न 35526. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।

उत्तर: घ. स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।” अछि।

प्रश्न 35527. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35528. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुकेश साहनी (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुकेश साहनी (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35529. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35530. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35531. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35532. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250मे सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250मे सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3560 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: मुन्नाजी:

प्रश्न 35533. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2251मे अनुवाद: मुन्नाजीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35534. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35535. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35536. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35537. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35538. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35539. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35540. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35541. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35542. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3561 : विदेह-सदेह 28 — वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी): दायित्व

प्रश्न 35543. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दायित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दायित्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2252मे वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क प्रविष्टि “दायित्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35544. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35545. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35546. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।

उत्तर: घ. पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।” अछि।

प्रश्न 35547. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35548. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35549. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35550. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35551. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35552. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252मे वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252मे वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3562 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आशीष अनचिन्हार:

प्रश्न 35553. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2253मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35554. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35555. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35556. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35557. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35558. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35559. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35560. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35561. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35562. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3563 : विदेह-सदेह 28 — अंजू खरबंदा (हिन्दी): मुखिया

प्रश्न 35563. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुखिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुखिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2254मे अंजू खरबंदा (हिन्दी)क प्रविष्टि “मुखिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35564. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35565. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35566. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।

उत्तर: घ. स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।” अछि।

प्रश्न 35567. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35568. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अंजू खरबंदा (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अंजू खरबंदा (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35569. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35570. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35571. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35572. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254मे अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254मे अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3564 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: घनश्याम घनेरो:

प्रश्न 35573. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2255मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35574. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35575. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35576. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35577. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35578. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35579. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35580. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35581. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35582. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3565 : विदेह-सदेह 28 — रवि प्रभाकर (हिन्दी): अदकल जीह

प्रश्न 35583. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अदकल जीह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अदकल जीह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2256मे रवि प्रभाकर (हिन्दी)क प्रविष्टि “अदकल जीह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35584. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35585. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35586. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।

उत्तर: घ. वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।” अछि।

प्रश्न 35587. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35588. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35589. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35590. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35591. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35592. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256मे रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256मे रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3566 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: घनश्याम घनेरो:

प्रश्न 35593. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2257मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35594. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35595. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35596. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35597. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35598. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35599. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35600. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35601. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35602. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3567 : विदेह-सदेह 28 — सतीश खनगवाल (हिन्दी): घुरपेंच

प्रश्न 35603. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घुरपेंच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घुरपेंच

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2258मे सतीश खनगवाल (हिन्दी)क प्रविष्टि “घुरपेंच” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35604. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35605. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35606. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’

उत्तर: घ. मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’” अछि।

प्रश्न 35607. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35608. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश खनगवाल (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश खनगवाल (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35609. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35610. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35611. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35612. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258मे सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य लघुकथा आ “मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258मे सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य लघुकथा आ “मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3568 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: घनश्याम घनेरो:

प्रश्न 35613. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2259मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35614. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35615. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35616. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35617. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35618. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35619. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35620. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35621. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35622. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3569 : विदेह-सदेह 28 — विजय 'विभोर' (हिन्दी): अन्नदाता

प्रश्न 35623. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्नदाता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्नदाता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2260मे विजय 'विभोर' (हिन्दी)क प्रविष्टि “अन्नदाता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35624. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35625. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35626. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।

उत्तर: घ. वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।” अछि।

प्रश्न 35627. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35628. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजय 'विभोर' (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजय 'विभोर' (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35629. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35630. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35631. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35632. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260मे विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260मे विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3570 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: घनश्याम घनेरो:

प्रश्न 35633. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2261मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35634. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35635. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35636. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35637. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35638. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35639. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35640. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35641. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35642. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3571 : विदेह-सदेह 28 — योगराज प्रभाकर (हिन्दी): थाल आ कमल

प्रश्न 35643. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. थाल आ कमल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. थाल आ कमल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2262मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क प्रविष्टि “थाल आ कमल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35644. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35645. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35646. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।

उत्तर: घ. प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।” अछि।

प्रश्न 35647. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35648. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक योगराज प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक योगराज प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35649. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35650. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35651. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35652. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3572 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: घनश्याम घनेरो:

प्रश्न 35653. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2263मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35654. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35655. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35656. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35657. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35658. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35659. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35660. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35661. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35662. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3573 : विदेह-सदेह 28 — सदानन्द कविश्वर (हिन्दी): नाडिर हिलेबाक फयदा

प्रश्न 35663. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाडिर हिलेबाक फयदा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाडिर हिलेबाक फयदा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2264मे सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क प्रविष्टि “नाडिर हिलेबाक फयदा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35664. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35665. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुव्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुव्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुव्यंग्य” अछि।

प्रश्न 35666. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक

उत्तर: घ. कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक” अछि।

प्रश्न 35667. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35668. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सदानन्द कविश्वर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुव्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सदानन्द कविश्वर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुव्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35669. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35670. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुव्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुव्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35671. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35672. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264मे सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” प्रविष्टि गद्य, लघुव्यंग्य आ “कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264मे सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” प्रविष्टि गद्य, लघुव्यंग्य आ “कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3574 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: मुन्नाजी:

प्रश्न 35673. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2265मे अनुवाद: मुन्नाजीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35674. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35675. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35676. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35677. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35678. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35679. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35680. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35681. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35682. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3575 : विदेह-सदेह 28 — डा. पुष्कर्राज भट्ट (नेपाली): बहिष्करण

प्रश्न 35683. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्कर्राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बहिष्करण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहिष्करण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2266मे डा. पुष्कर्राज भट्ट (नेपाली)क प्रविष्टि “बहिष्करण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35684. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्कर्राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35685. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्कराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नेपाली लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नेपाली लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नेपाली लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35686. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्कराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान

उत्तर: घ. कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 35687. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्कराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35688. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्कराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. पुष्कराज भट्ट (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा नेपाली लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. पुष्कराज भट्ट (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा नेपाली लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35689. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्कराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35690. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्कराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नेपाली लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नेपाली लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35691. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35692. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266मे डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि गद्य, नेपाली लघुकथा आ “कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266मे डा. पुष्कर‍राज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि गद्य, नेपाली लघुकथा आ “कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3576 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर:

प्रश्न 35693. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2267मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35694. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35695. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35696. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35697. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35698. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35699. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35700. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35701. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35702. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3577 : विदेह-सदेह 28 — प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली): सौन्दर्य आ समानता

प्रश्न 35703. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सौन्दर्य आ समानता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सौन्दर्य आ समानता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2268मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क प्रविष्टि “सौन्दर्य आ समानता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35704. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35705. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रयोगात्मक लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रयोगात्मक लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रयोगात्मक लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35706. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उघार

उत्तर: घ. स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उघार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उघार” अछि।

प्रश्न 35707. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उघार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उघार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उघार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35708. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा प्रयोगात्मक लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा प्रयोगात्मक लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35709. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35710. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रयोगात्मक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रयोगात्मक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35711. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35712. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” प्रविष्टि गद्य, प्रयोगात्मक लघुकथा आ “स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उघार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” प्रविष्टि गद्य, प्रयोगात्मक लघुकथा आ “स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उघार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3578 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर:

प्रश्न 35713. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2269मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35714. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35715. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35716. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35717. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35718. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35719. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35720. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35721. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35722. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3579 : विदेह-सदेह 28 — हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली): दू टा बीहिन कथा (अखियार, दृश्यकोण)

प्रश्न 35723. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अखियार, दृश्यकोण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दू टा बीहिन कथा (अखियार, दृश्यकोण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू टा बीहिन कथा (अखियार, दृश्यकोण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2270मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क प्रविष्टि “दू टा बीहिन कथा (अखियार, दृश्यकोण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35724. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अखियार, दृश्यकोण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35725. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा युग्म

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा युग्म

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा युग्म” अछि।

प्रश्न 35726. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार

उत्तर: घ. सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार” अछि।

प्रश्न 35727. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35728. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा युग्म

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा युग्म

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35729. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35730. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा युग्मक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा युग्मक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35731. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35732. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा युग्म आ “सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा युग्म आ “सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3580 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर:

प्रश्न 35733. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2271मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35734. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35735. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35736. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35737. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35738. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35739. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35740. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35741. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35742. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3581 : विदेह-सदेह 28 — तारा केसी (नेपाली): अपन परिचय

प्रश्न 35743. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन परिचय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2272मे तारा केसी (नेपाली)क प्रविष्टि “अपन परिचय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35744. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35745. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्त्री-चेतना कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्त्री-चेतना कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्त्री-चेतना कथा” अछि।

प्रश्न 35746. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।

उत्तर: घ. आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।” अछि।

प्रश्न 35747. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35748. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तारा केसी (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा स्त्री-चेतना कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तारा केसी (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा स्त्री-चेतना कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35749. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35750. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ स्त्री-चेतना कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ स्त्री-चेतना कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35751. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35752. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272मे तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि गद्य, स्त्री-चेतना कथा आ “आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272मे तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि गद्य, स्त्री-चेतना कथा आ “आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3582 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर:

प्रश्न 35753. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2273मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35754. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35755. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35756. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35757. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35758. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35759. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35760. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”कैं विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35761. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35762. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3583 : विदेह-सदेह 28 — रचना शर्मा (नेपाली): चरित्र

प्रश्न 35763. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चरित्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चरित्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2274मे रचना शर्मा (नेपाली)क प्रविष्टि “चरित्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35764. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35765. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35766. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड

उत्तर: घ. नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड” अछि।

प्रश्न 35767. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35768. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रचना शर्मा (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रचना शर्मा (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35769. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35770. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35771. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35772. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274मे रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274मे रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3584 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर:

प्रश्न 35773. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2275मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35774. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35775. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35776. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35777. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35778. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35779. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35780. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35781. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35782. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3585 : विदेह-सदेह 28 — डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी): क्रांति

प्रश्न 35783. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. क्रांति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्रांति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2276मे डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क प्रविष्टि “क्रांति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35784. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35785. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पंजाबी लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पंजाबी लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पंजाबी लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35786. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्रान्ति-चिन्तन

उत्तर: घ. क्रान्ति-चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “क्रान्ति-चिन्तन” अछि।

प्रश्न 35787. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. क्रान्ति-चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्रान्ति-चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्रान्ति-चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35788. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा पंजाबी लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा पंजाबी लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35789. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35790. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पंजाबी लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पंजाबी लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35791. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35792. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276मे डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” प्रविष्टि गद्य, पंजाबी लघुकथा आ “क्रान्ति-चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276मे डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” प्रविष्टि गद्य, पंजाबी लघुकथा आ “क्रान्ति-चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3586 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सान्त्वना मिश्र:

प्रश्न 35793. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2277मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35794. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35795. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35796. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35797. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35798. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35799. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35800. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35801. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35802. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3587 : विदेह-सदेह 28 — निरंजन बोहा (पंजाबी): करूगर सत्य

प्रश्न 35803. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. करूगर सत्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करूगर सत्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2278मे निरंजन बोहा (पंजाबी)क प्रविष्टि “करूगर सत्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35804. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35805. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35806. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।

उत्तर: घ. पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।” अछि।

प्रश्न 35807. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35808. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक निरंजन बोहा (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक निरंजन बोहा (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35809. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35810. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35811. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35812. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278मे निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278मे निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3588 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सान्त्वना मिश्र:

प्रश्न 35813. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2279मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35814. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35815. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35816. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35817. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35818. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35819. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35820. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35821. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35822. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3589 : विदेह-सदेह 28 — जगदीश अरमानी (पंजाबी): कथानक

प्रश्न 35823. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कथानक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथानक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2280मे जगदीश अरमानी (पंजाबी)क प्रविष्टि “कथानक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35824. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35825. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35826. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन

उत्तर: घ. लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन” अछि।

प्रश्न 35827. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35828. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश अरमानी (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश अरमानी (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35829. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35830. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35831. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35832. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280मे जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280मे जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3590 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सान्त्वना मिश्र:

प्रश्न 35833. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2281मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35834. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35835. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35836. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35837. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35838. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35839. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35840. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35841. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35842. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3591 : विदेह-सदेह 28 — जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी): आचरण

प्रश्न 35843. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आचरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आचरण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2282मे जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क प्रविष्टि “आचरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35844. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35845. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35846. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।

उत्तर: घ. शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।” अछि।

प्रश्न 35847. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35848. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35849. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35850. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35851. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35852. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282मे जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282मे जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3592 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सान्त्वना मिश्र:

प्रश्न 35853. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2283मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35854. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35855. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35856. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35857. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35858. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35859. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35860. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35861. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35862. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3593 : विदेह-सदेह 28 — दीपक बुदकी (उर्दू): जन्नत (स्वर्ग)

प्रश्न 35863. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जन्नत (स्वर्ग)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जन्नत (स्वर्ग)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2284मे दीपक बुदकी (उर्दू)क प्रविष्टि “जन्नत (स्वर्ग)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35864. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35865. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उर्दू लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उर्दू लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उर्दू लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35866. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।

उत्तर: घ. समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।” अछि।

प्रश्न 35867. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35868. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दीपक बुदकी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा उर्दू लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दीपक बुदकी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा उर्दू लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35869. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35870. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उर्दू लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उर्दू लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35871. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35872. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284मे दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” प्रविष्टि गद्य, उर्दू लघुकथा आ “समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284मे दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” प्रविष्टि गद्य, उर्दू लघुकथा आ “समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3594 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. आभा झा:

प्रश्न 35873. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2285मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35874. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35875. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35876. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35877. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35878. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35879. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35880. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35881. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35882. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3595 : विदेह-सदेह 28 — मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू): ईनाम

प्रश्न 35883. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ईनाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ईनाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2286मे मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क प्रविष्टि “ईनाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35884. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35885. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35886. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।

उत्तर: घ. सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।” अछि।

प्रश्न 35887. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35888. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35889. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35890. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”कैं विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35891. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35892. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286मे मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य लघुकथा आ “सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286मे मुबश्शिर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य लघुकथा आ “सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3596 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. आभा झा:

प्रश्न 35893. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2287मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35894. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35895. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35896. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35897. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35898. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35899. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35900. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35901. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35902. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3597 : विदेह-सदेह 28 — इब्न आसी (उर्दू): फेर मनुक्खक की भेले?

प्रश्न 35903. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फेर मनुक्खक की भेले?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फेर मनुक्खक की भेले?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2288मे इब्न आसी (उर्दू)क प्रविष्टि “फेर मनुक्खक की भेले?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35904. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35905. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दार्शनिक लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दार्शनिक लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दार्शनिक लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35906. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।

उत्तर: घ. नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।” अछि।

प्रश्न 35907. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35908. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इब्न आसी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इब्न आसी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35909. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35910. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दार्शनिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दार्शनिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35911. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35912. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288मे इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक लघुकथा आ “नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288मे इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक लघुकथा आ “नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3598 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. आभा झा:

प्रश्न 35913. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2289मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35914. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35915. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35916. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35917. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35918. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35919. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35920. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35921. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35922. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3599 : विदेह-सदेह 28 — रतन सिंह (उर्दू): बिना शीर्षकक

प्रश्न 35923. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिना शीर्षकक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिना शीर्षकक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2290मे रतन सिंह (उर्दू)क प्रविष्टि “बिना शीर्षकक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35924. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35925. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/सूक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/सूक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/सूक्ति” अछि।

प्रश्न 35926. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य

उत्तर: घ. तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य” अछि।

प्रश्न 35927. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35928. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रतन सिंह (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/सूक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रतन सिंह (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/सूक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35929. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35930. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/सूक्तिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/सूक्तिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35931. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35932. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290मे रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/सूक्ति आ “तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290मे रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/सूक्ति आ “तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3600 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. आभा झा:

प्रश्न 35933. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2291मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35934. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35935. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35936. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35937. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35938. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35939. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35940. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35941. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35942. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3601 : विदेह-सदेह 28 — सच्चिदानन्द कर (ओडिया): तितली आ प्रेम

प्रश्न 35943. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तितली आ प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तितली आ प्रेम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2292मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क प्रविष्टि “तितली आ प्रेम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35944. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्यात्मक गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्यात्मक गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्यात्मक गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35945. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रेम-आख्यानिका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रेम-आख्यानिका

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रेम-आख्यानिका” अछि।

प्रश्न 35946. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।

उत्तर: घ. भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।” अछि।

प्रश्न 35947. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35948. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सच्चिदानन्द कर (ओडिया), विधा पद्यात्मक गद्य, उप-विधा प्रेम-आख्यानिका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सच्चिदानन्द कर (ओडिया), विधा पद्यात्मक गद्य, उप-विधा प्रेम-आख्यानिका

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35949. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35950. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”केँ विदेह-सदेह 28क पद्यात्मक गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रेम-आख्यानिकाक रूपमे पद्यात्मक गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रेम-आख्यानिकाक रूपमे पद्यात्मक गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35951. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35952. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि पद्यात्मक गद्य, प्रेम-आख्यानिका आ “भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि पद्यात्मक गद्य, प्रेम-आख्यानिका आ “भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3602 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जोनासलका महान्ति:

प्रश्न 35953. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2293मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35954. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35955. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35956. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35957. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35958. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35959. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35960. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35961. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35962. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3603 : विदेह-सदेह 28 — प्रज्ञा महान्ति (ओडिया): मेमोरीचिप्स

प्रश्न 35963. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मेमोरीचिप्स

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेमोरीचिप्स

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2294मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क प्रविष्टि “मेमोरीचिप्स” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35964. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35965. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. वैज्ञानिक लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. वैज्ञानिक लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “वैज्ञानिक लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35966. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।

उत्तर: घ. मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।” अछि।

प्रश्न 35967. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35968. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रज्ञा महान्ति (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा वैज्ञानिक लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रज्ञा महान्ति (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा वैज्ञानिक लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35969. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35970. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ वैज्ञानिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ वैज्ञानिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35971. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35972. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि गद्य, वैज्ञानिक लघुकथा आ “मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि गद्य, वैज्ञानिक लघुकथा आ “मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3604 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जोनासलका महान्ति:

प्रश्न 35973. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2295मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35974. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35975. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35976. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35977. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35978. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35979. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35980. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35981. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35982. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3605 : विदेह-सदेह 28 — विनय कुमार दास (ओडिया): कर्मफल

प्रश्न 35983. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कर्मफल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कर्मफल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2296मे विनय कुमार दास (ओडिया)क प्रविष्टि “कर्मफल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35984. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35985. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 35986. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश

उत्तर: घ. भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश” अछि।

प्रश्न 35987. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35988. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनय कुमार दास (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनय कुमार दास (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35989. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 35990. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 35991. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 35992. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296मे विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296मे विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3606 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जोनासलका महान्ति:

प्रश्न 35993. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2297मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 35994. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 35995. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 35996. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 35997. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 35998. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 35999. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36000. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड 3606 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जोनासलका महान्ति:

प्रश्न 36001. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36002. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3607 : विदेह-सदेह 28 — गायत्री दास (ओडिया): बुझौअलि

प्रश्न 36003. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुझौअलि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुझौअलि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2298मे गायत्री दास (ओडिया)क प्रविष्टि “बुझौअलि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36004. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36005. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 36006. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उघार।

उत्तर: घ. ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उघार।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उघार।” अछि।

प्रश्न 36007. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उघार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उघार।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उघार।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36008. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गायत्री दास (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गायत्री दास (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36009. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36010. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36011. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36012. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298मे गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उघार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298मे गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उघार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3608 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: तन्मया तपस्विनी:

प्रश्न 36013. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2299मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36014. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36015. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36016. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36017. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36018. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: तन्मया तपस्विनी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: तन्मया तपस्विनी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36019. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36020. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36021. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36022. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3609 : विदेह-सदेह 28 — मिनती प्रधान (ओडिया): संगी

प्रश्न 36023. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संगी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संगी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2300मे मिनती प्रधान (ओडिया)क प्रविष्टि “संगी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36024. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36025. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 36026. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मित्रताक अन्तरंगता

उत्तर: घ. मित्रताक अन्तरंगता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मित्रताक अन्तरंगता” अछि।

प्रश्न 36027. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मित्रताक अन्तरंगता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मित्रताक अन्तरंगता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मित्रताक अन्तरंगता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36028. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिनती प्रधान (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिनती प्रधान (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36029. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36030. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36031. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36032. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300मे मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मित्रताक अन्तरंगता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300मे मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मित्रताक अन्तरंगता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3610 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: तन्मया तपस्विनी:

प्रश्न 36033. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2301मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36034. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36035. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36036. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36037. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36038. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: तन्मया तपस्विनी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: तन्मया तपस्विनी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36039. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36040. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36041. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36042. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3611 : विदेह-सदेह 28 — गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी): एकटा आर रबि

प्रश्न 36043. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकटा आर रबि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा आर रबि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2302मे गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क प्रविष्टि “एकटा आर रबि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36044. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36045. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 36046. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या

उत्तर: घ. अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या” अछि।

प्रश्न 36047. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36048. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36049. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36050. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36051. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36052. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302मे गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302मे गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3612 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह:

प्रश्न 36053. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2303मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36054. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36055. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36056. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36057. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36058. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36059. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36060. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36061. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36062. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3613 : विदेह-सदेह 28 — सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी): सोंगर

प्रश्न 36063. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सोंगर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सोंगर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2304मे सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क प्रविष्टि “सोंगर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36064. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36065. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोक-व्यवहार कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोक-व्यवहार कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक-व्यवहार कथा” अछि।

प्रश्न 36066. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन

उत्तर: घ. बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन” अछि।

प्रश्न 36067. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36068. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा लोक-व्यवहार कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा लोक-व्यवहार कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36069. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36070. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोक-व्यवहार कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोक-व्यवहार कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36071. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36072. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304मे सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” प्रविष्टि गद्य, लोक-व्यवहार कथा आ “बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304मे सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” प्रविष्टि गद्य, लोक-व्यवहार कथा आ “बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3614 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह:

प्रश्न 36073. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2305मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36074. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36075. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36076. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36077. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36078. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36079. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36080. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36081. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36082. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3615 : विदेह-सदेह 28 — वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी): मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी

प्रश्न 36083. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2306मे वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क प्रविष्टि “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36084. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36085. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 36086. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण

उत्तर: घ. मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण” अछि।

प्रश्न 36087. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36088. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36089. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36090. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36091. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36092. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306मे वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306मे वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3616 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीस:

प्रश्न 36093. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2307मे अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36094. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36095. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36096. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36097. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36098. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीस, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीस, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36099. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36100. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “”कैं विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36101. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36102. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307मे अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307मे अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3617 : विदेह-सदेह 28 — इस्मिता सारंगी (ओडिया): गप, हिलकोर

प्रश्न 36103. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गप, हिलकोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गप, हिलकोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2308मे इस्मिता सारंगी (ओडिया)क प्रविष्टि “गप, हिलकोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36104. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36105. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आधुनिक कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आधुनिक कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आधुनिक कविता” अछि।

प्रश्न 36106. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री-मनक तरंग

उत्तर: घ. स्त्री-मनक तरंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-मनक तरंग” अछि।

प्रश्न 36107. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्री-मनक तरंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री-मनक तरंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-मनक तरंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36108. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक इस्मिता सारंगी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा आधुनिक कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक इस्मिता सारंगी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा आधुनिक कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36109. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36110. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आधुनिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आधुनिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36111. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36112. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308मे इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” प्रविष्टि पद्य, आधुनिक कविता आ “स्त्री-मनक तरंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308मे इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” प्रविष्टि पद्य, आधुनिक कविता आ “स्त्री-मनक तरंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3618 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36113. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2309मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36114. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36115. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36116. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36117. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36118. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36119. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36120. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36121. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36122. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3619 : विदेह-सदेह 28 — अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु): अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर

प्रश्न 36123. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2310मे अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क प्रविष्टि “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36124. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36125. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तेलुगु कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तेलुगु कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तेलुगु कविता” अछि।

प्रश्न 36126. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष

उत्तर: घ. तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष” अछि।

प्रश्न 36127. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36128. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36129. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36130. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36131. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36132. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310मे अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310मे अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3620 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36133. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2311मे अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36134. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36135. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36136. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36137. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36138. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36139. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36140. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “”कैं विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36141. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36142. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311मे अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311मे अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3621 : विदेह-सदेह 28 — हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती): पद्य

प्रश्न 36143. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पद्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पद्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2312मे हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क प्रविष्टि “पद्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36144. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गुजराती कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गुजराती कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गुजराती कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36145. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।” अछि।

प्रश्न 36146. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पद्य

उत्तर: घ. पद्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पद्य” अछि।

प्रश्न 36147. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पद्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पद्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पद्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36148. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती), विधा गुजराती कविता, उप-विधा उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती), विधा गुजराती कविता, उप-विधा उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36149. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36150. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य”केँ विदेह-सदेह 28क गुजराती कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।क रूपमे गुजराती कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।क रूपमे गुजराती कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36151. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36152. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312मे हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” प्रविष्टि गुजराती कविता, उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता। आ “पद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312मे हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” प्रविष्टि गुजराती कविता, उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता। आ “पद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3622 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36153. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2313मे अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36154. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36155. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36156. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36157. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36158. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36159. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36160. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36161. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36162. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313मे अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313मे अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3623 : विदेह-सदेह 28 — अजय सरवैया (गुजराती): अहाँक तामस हमर स्वागतपथ

प्रश्न 36163. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अहाँक तामस हमर स्वागतपथ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अहाँक तामस हमर स्वागतपथ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2314मे अजय सरवैया (गुजराती)क प्रविष्टि “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36164. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36165. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गुजराती कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गुजराती कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गुजराती कविता” अछि।

प्रश्न 36166. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व

उत्तर: घ. प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 36167. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36168. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अजय सरवैया (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अजय सरवैया (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36169. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36170. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36171. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36172. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314मे अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314मे अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3624 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36173. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2315मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36174. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36175. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36176. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36177. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36178. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36179. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36180. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36181. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36182. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3625 : विदेह-सदेह 28 — राजेन्द्र पटेल (गुजराती): गुजराती कविता

प्रश्न 36183. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गुजराती कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुजराती कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2316मे राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क प्रविष्टि “गुजराती कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36184. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36185. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36186. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गुजराती कविता

उत्तर: घ. गुजराती कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गुजराती कविता” अछि।

प्रश्न 36187. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गुजराती कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुजराती कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुजराती कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36188. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेन्द्र पटेल (गुजराती), विधा हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेन्द्र पटेल (गुजराती), विधा हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36189. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36190. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता”केँ विदेह-सदेह 28क हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36191. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36192. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316मे राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” प्रविष्टि हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।, प्रविष्टि आ “गुजराती कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316मे राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” प्रविष्टि हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।, प्रविष्टि आ “गुजराती कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3626 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36193. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2317मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36194. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36195. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36196. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36197. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36198. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36199. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36200. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36201. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36202. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3627 : विदेह-सदेह 28 — पीयूष ठक्कर (गुजराती): सांध्य बेला

प्रश्न 36203. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सांध्य बेला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांध्य बेला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2318मे पीयूष ठक्कर (गुजराती)क प्रविष्टि “सांध्य बेला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36204. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36205. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गुजराती कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गुजराती कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गुजराती कविता” अछि।

प्रश्न 36206. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।

उत्तर: घ. साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।” अछि।

प्रश्न 36207. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36208. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पीयूष ठक्कर (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पीयूष ठक्कर (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36209. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36210. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36211. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36212. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318मे पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318मे पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3628 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36213. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2319मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36214. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36215. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36216. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36217. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36218. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36219. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36220. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36221. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36222. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3629 : विदेह-सदेह 28 — पन्ना त्रिवेदी (गुजराती): आमद

प्रश्न 36223. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आमद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आमद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2320मे पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क प्रविष्टि “आमद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36224. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36225. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गुजराती कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गुजराती कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गुजराती कविता” अछि।

प्रश्न 36226. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श

उत्तर: घ. प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श” अछि।

प्रश्न 36227. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36228. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पन्ना त्रिवेदी (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पन्ना त्रिवेदी (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36229. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36230. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36231. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36232. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320मे पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320मे पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3630 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36233. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2321मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36234. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36235. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36236. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36237. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36238. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36239. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36240. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36241. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36242. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3631 : विदेह-सदेह 28 — बाबू सुथार (गुजराती): गृहमोह

प्रश्न 36243. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गृहमोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गृहमोह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2322मे बाबू सुथार (गुजराती)क प्रविष्टि “गृहमोह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36244. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36245. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गुजराती कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गुजराती कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गुजराती कविता” अछि।

प्रश्न 36246. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गृह-प्रति आसक्ति

उत्तर: घ. गृह-प्रति आसक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गृह-प्रति आसक्ति” अछि।

प्रश्न 36247. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गृह-प्रति आसक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गृह-प्रति आसक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गृह-प्रति आसक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36248. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बाबू सुथार (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बाबू सुथार (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36249. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36250. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36251. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36252. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322मे बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “गृह-प्रति आसक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322मे बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “गृह-प्रति आसक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3632 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36253. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2323मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36254. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36255. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36256. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36257. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36258. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36259. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36260. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36261. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36262. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3633 : विदेह-सदेह 28 — वासुदेव सुनानी (ओडिया): फूसि, अनुमति

प्रश्न 36263. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फूसि, अनुमति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फूसि, अनुमति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2324मे वासुदेव सुनानी (ओडिया)क प्रविष्टि “फूसि, अनुमति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36264. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36265. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ओडिया कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ओडिया कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “ओडिया कविता” अछि।

प्रश्न 36266. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित-चेतना

उत्तर: घ. दलित-चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित-चेतना” अछि।

प्रश्न 36267. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित-चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित-चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित-चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36268. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वासुदेव सुनानी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा ओडिया कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वासुदेव सुनानी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा ओडिया कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36269. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36270. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ ओडिया कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ ओडिया कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36271. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36272. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324मे वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” प्रविष्टि पद्य, ओडिया कविता आ “दलित-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324मे वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” प्रविष्टि पद्य, ओडिया कविता आ “दलित-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3634 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36273. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2325मे अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36274. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36275. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36276. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36277. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36278. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36279. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36280. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36281. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36282. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325मे अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325मे अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3635 : विदेह-सदेह 28 — भरत माँझी (ओडिया): हमर घुरलाक बाद

प्रश्न 36283. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर घुरलाक बाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर घुरलाक बाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2326मे भरत माँझी (ओडिया)क प्रविष्टि “हमर घुरलाक बाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36284. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36285. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. ओडिया कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. ओडिया कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “ओडिया कविता” अछि।

प्रश्न 36286. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न

उत्तर: घ. प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न” अछि।

प्रश्न 36287. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36288. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भरत माँझी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा ओडिया कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भरत माँझी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा ओडिया कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36289. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36290. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ ओडिया कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ ओडिया कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36291. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36292. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326मे भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” प्रविष्टि पद्य, ओडिया कविता आ “प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326मे भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” प्रविष्टि पद्य, ओडिया कविता आ “प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3636 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36293. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2327मे अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36294. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36295. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36296. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36297. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36298. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36299. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36300. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36301. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36302. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327मे अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327मे अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3637 : विदेह-सदेह 28 — शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु): पसीझक काँट

प्रश्न 36303. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पसीझक काँट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पसीझक काँट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2328मे शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क प्रविष्टि “पसीझक काँट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36304. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36305. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तेलुगु कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तेलुगु कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तेलुगु कविता” अछि।

प्रश्न 36306. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि

उत्तर: घ. समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि” अछि।

प्रश्न 36307. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36308. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36309. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36310. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36311. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36312. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328मे शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328मे शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3638 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36313. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2329मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36314. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36315. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36316. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36317. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36318. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36319. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36320. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36321. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36322. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3639 : विदेह-सदेह 28 — एन. अरुणा (तेलुगु): ई सेहो अछि प्रवास

प्रश्न 36323. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई सेहो अछि प्रवास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई सेहो अछि प्रवास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2330मे एन. अरुणा (तेलुगु)क प्रविष्टि “ई सेहो अछि प्रवास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36324. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36325. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तेलुगु कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तेलुगु कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तेलुगु कविता” अछि।

प्रश्न 36326. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना

उत्तर: घ. नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना” अछि।

प्रश्न 36327. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36328. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक एन. अरुणा (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक एन. अरुणा (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36329. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36330. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास”कैं विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36331. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36332. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330मे एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330मे एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3640 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36333. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2331मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36334. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36335. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36336. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36337. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36338. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36339. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36340. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36341. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36342. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3641 : विदेह-सदेह 28 — भिखारी ठाकुर (भोजपुरी): वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२

प्रश्न 36343. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2332मे भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क प्रविष्टि “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36344. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36345. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भोजपुरी लोकपद्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भोजपुरी लोकपद्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भोजपुरी लोकपद्य” अछि।

प्रश्न 36346. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध

उत्तर: घ. लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध” अछि।

प्रश्न 36347. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36348. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भिखारी ठाकुर (भोजपुरी), विधा पद्य, उप-विधा भोजपुरी लोकपद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भिखारी ठाकुर (भोजपुरी), विधा पद्य, उप-विधा भोजपुरी लोकपद्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36349. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36350. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भोजपुरी लोकपद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भोजपुरी लोकपद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36351. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36352. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332मे भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” प्रविष्टि पद्य, भोजपुरी लोकपद्य आ “लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332मे भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” प्रविष्टि पद्य, भोजपुरी लोकपद्य आ “लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3642 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36353. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2333मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36354. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36355. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36356. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36357. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36358. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36359. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36360. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36361. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36362. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3643 : विदेह-सदेह 28 — परिचय दास (भोजपुरी): बेसीकाल शब्द जखन

प्रश्न 36363. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेसीकाल शब्द जखन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेसीकाल शब्द जखन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2334मे परिचय दास (भोजपुरी)क प्रविष्टि “बेसीकाल शब्द जखन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36364. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36365. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भोजपुरी पद्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भोजपुरी पद्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भोजपुरी पद्य” अछि।

प्रश्न 36366. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन

उत्तर: घ. स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन” अछि।

प्रश्न 36367. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36368. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक परिचय दास (भोजपुरी), विधा पद्य, उप-विधा भोजपुरी पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक परिचय दास (भोजपुरी), विधा पद्य, उप-विधा भोजपुरी पद्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36369. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36370. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भोजपुरी पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भोजपुरी पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36371. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36372. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334मे परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” प्रविष्टि पद्य, भोजपुरी पद्य आ “स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334मे परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” प्रविष्टि पद्य, भोजपुरी पद्य आ “स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3644 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

प्रश्न 36373. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2335मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36374. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36375. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36376. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36377. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36378. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36379. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36380. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36381. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36382. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3645 : विदेह-सदेह 28 — निराला (हिन्दी): देह विदेह (१-४)

प्रश्न 36383. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देह विदेह (१-४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देह विदेह (१-४)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2336मे निराला (हिन्दी)क प्रविष्टि “देह विदेह (१-४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36384. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36385. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मुक्तक/दार्शनिक कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मुक्तक/दार्शनिक कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “मुक्तक/दार्शनिक कविता” अछि।

प्रश्न 36386. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ

उत्तर: घ. पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ” अछि।

प्रश्न 36387. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36388. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक निराला (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा मुक्तक/दार्शनिक कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक निराला (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा मुक्तक/दार्शनिक कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36389. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36390. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ मुक्तक/दार्शनिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ मुक्तक/दार्शनिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36391. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36392. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336मे निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि पद्य, मुक्तक/दार्शनिक कविता आ “पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336मे निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि पद्य, मुक्तक/दार्शनिक कविता आ “पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3646 : विदेह-सदेह 28 — पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी): डायरी खण्ड आ कविता खंड

प्रश्न 36393. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डायरी खण्ड आ कविता खंड

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डायरी खण्ड आ कविता खंड

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2337मे पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क प्रविष्टि “डायरी खण्ड आ कविता खंड” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36394. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36395. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. डायरी/सूक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. डायरी/सूक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “डायरी/सूक्ति” अछि।

प्रश्न 36396. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग

उत्तर: घ. नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग” अछि।

प्रश्न 36397. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36398. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा डायरी/सूक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा डायरी/सूक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36399. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36400. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ डायरी/सूक्तिक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ डायरी/सूक्तिक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36401. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36402. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337मे पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” प्रविष्टि पद्य/गद्य, डायरी/सूक्ति आ “नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337मे पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” प्रविष्टि पद्य/गद्य, डायरी/सूक्ति आ “नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3647 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आशीष अनचिन्हार:

प्रश्न 36403. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2338मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36404. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36405. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36406. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36407. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36408. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36409. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36410. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36411. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36412. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3648 : विदेह-सदेह 28 — संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी): गिट्ठ, मेघक दूभि

प्रश्न 36413. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठ, मेघक दूभि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गिट्ठ, मेघक दूभि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गिट्ठ, मेघक दूभि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2339मे संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क प्रविष्टि “गिट्ठ, मेघक दूभि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36414. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठ, मेघक दूभि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36415. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठ, मेघक दूभि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हिन्दी कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हिन्दी कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दी कविता” अछि।

प्रश्न 36416. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठ, मेघक दूभि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण

उत्तर: घ. प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण” अछि।

प्रश्न 36417. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठ, मेघक दूभि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36418. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठु, मेघक दूभि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36419. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठु, मेघक दूभि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36420. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठु, मेघक दूभि”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36421. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठु, मेघक दूभि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36422. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339मे संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठु, मेघक दूभि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339मे संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ठु, मेघक दूभि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3649 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आशीष अनचिन्हार:

प्रश्न 36423. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2340मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36424. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36425. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36426. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36427. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36428. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36429. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36430. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36431. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36432. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3650 : विदेह-सदेह 28 — वीरू सोनकर (हिन्दी): उपलब्धि, नून, दिन

प्रश्न 36433. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उपलब्धि, नून, दिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपलब्धि, नून, दिन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2341मे वीरू सोनकर (हिन्दी)क प्रविष्टि “उपलब्धि, नून, दिन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36434. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36435. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हिन्दी कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हिन्दी कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दी कविता” अछि।

प्रश्न 36436. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शोषित मजदूरक तीन पाठ

उत्तर: घ. शोषित मजदूरक तीन पाठ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शोषित मजदूरक तीन पाठ” अछि।

प्रश्न 36437. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शोषित मजदूरक तीन पाठ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शोषित मजदूरक तीन पाठ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शोषित मजदूरक तीन पाठ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36438. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वीरू सोनकर (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वीरू सोनकर (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36439. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36440. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36441. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36442. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341मे वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “शोषित मजदूरक तीन पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341मे वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “शोषित मजदूरक तीन पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3651 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आशीष अनचिन्हार:

प्रश्न 36443. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2342मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36444. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36445. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36446. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36447. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36448. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36449. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36450. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36451. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36452. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3652 : विदेह-सदेह 28 — मंगलेश डबराल (हिन्दी): कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि

प्रश्न 36453. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2343मे मंगलेश डबराल (हिन्दी)क प्रविष्टि “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36454. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36455. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हिन्दी कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हिन्दी कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दी कविता” अछि।

प्रश्न 36456. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास

उत्तर: घ. शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास” अछि।

प्रश्न 36457. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36458. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मंगलेश डबराल (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मंगलेश डबराल (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36459. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36460. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि”कैँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36461. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36462. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343मे मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343मे मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3653 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

प्रश्न 36463. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2344मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36464. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36465. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36466. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36467. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36468. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36469. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36470. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36471. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36472. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3654 : विदेह-सदेह 28 — नित्यानन्द गायेन (हिन्दी): हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि

प्रश्न 36473. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2345मे नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क प्रविष्टि “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36474. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36475. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हिन्दी कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हिन्दी कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दी कविता” अछि।

प्रश्न 36476. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप

उत्तर: घ. मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप” अछि।

प्रश्न 36477. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36478. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नित्यानन्द गायेन (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नित्यानन्द गायेन (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36479. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36480. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36481. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36482. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345मे नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345मे नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3655 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आशीष अनचिन्हार:

प्रश्न 36483. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2346मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36484. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36485. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36486. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36487. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36488. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36489. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36490. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36491. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36492. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3656 : विदेह-सदेह 28 — प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी): स्नेह-भरल सनेस

प्रश्न 36493. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्नेह-भरल सनेस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्नेह-भरल सनेस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2347मे प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क प्रविष्टि “स्नेह-भरल सनेस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36494. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36495. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. डोगरी कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. डोगरी कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “डोगरी कविता” अछि।

प्रश्न 36496. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।

उत्तर: घ. सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।” अछि।

प्रश्न 36497. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36498. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी), विधा पद्य, उप-विधा डोगरी कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी), विधा पद्य, उप-विधा डोगरी कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36499. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36500. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ डोगरी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ डोगरी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36501. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36502. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347मे प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” प्रविष्टि पद्य, डोगरी कविता आ “सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347मे प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” प्रविष्टि पद्य, डोगरी कविता आ “सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3657 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह:

प्रश्न 36503. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2348मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36504. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36505. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36506. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36507. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36508. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36509. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36510. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36511. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36512. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3658 : विदेह-सदेह 28 — कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी): हमर भारत देश महान

प्रश्न 36513. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर भारत देश महान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर भारत देश महान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2349मे कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क प्रविष्टि “हमर भारत देश महान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36514. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36515. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. देशभक्ति कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. देशभक्ति कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “देशभक्ति कविता” अछि।

प्रश्न 36516. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरल देहाती देश-प्रेम

उत्तर: घ. सरल देहाती देश-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल देहाती देश-प्रेम” अछि।

प्रश्न 36517. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरल देहाती देश-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरल देहाती देश-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल देहाती देश-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36518. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा देशभक्ति कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा देशभक्ति कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36519. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36520. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ देशभक्ति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ देशभक्ति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36521. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36522. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349मे कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” प्रविष्टि पद्य, देशभक्ति कविता आ “सरल देहाती देश-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349मे कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” प्रविष्टि पद्य, देशभक्ति कविता आ “सरल देहाती देश-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3659 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह:

प्रश्न 36523. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2350मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36524. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36525. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36526. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36527. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36528. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36529. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36530. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36531. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36532. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3660 : विदेह-सदेह 28 — पसुपुलेटि गीता (तेलुगु): दुमर्जा

प्रश्न 36533. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दुमर्जा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुमर्जा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2351मे पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क प्रविष्टि “दुमर्जा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36534. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36535. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. तेलुगु कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. तेलुगु कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तेलुगु कविता” अछि।

प्रश्न 36536. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश

उत्तर: घ. दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश” अछि।

प्रश्न 36537. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36538. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पसुपुलेटि गीता (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पसुपुलेटि गीता (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36539. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36540. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36541. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36542. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351मे पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351मे पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3661 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पल:

प्रश्न 36543. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2352मे अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36544. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36545. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36546. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36547. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36548. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36549. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36550. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36551. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36552. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352मे अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352मे अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3662 : विदेह-सदेह 28 — रहमान राही (कश्मीरी): छाह सभ

प्रश्न 36553. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छाह सभ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छाह सभ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2353मे रहमान राही (कश्मीरी)क प्रविष्टि “छाह सभ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36554. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36555. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)” अछि।

प्रश्न 36556. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।

उत्तर: घ. ‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।” अछि।

प्रश्न 36557. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36558. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रहमान राही (कश्मीरी), विधा पद्य, उप-विधा कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रहमान राही (कश्मीरी), विधा पद्य, उप-विधा कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36559. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36560. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36561. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36562. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353मे रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” प्रविष्टि पद्य, कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ) आ “‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353मे रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” प्रविष्टि पद्य, कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ) आ “‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3663 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुर:

प्रश्न 36563. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2354मे अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36564. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36565. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36566. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36567. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36568. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36569. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36570. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36571. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36572. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354मे अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354मे अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3664 : विदेह-सदेह 28 — रजनी छाबड़ा (हिन्दी): किछु हिन्दी कविता (संग्रह)

प्रश्न 36573. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु हिन्दी कविता (संग्रह)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु हिन्दी कविता (संग्रह)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2355मे रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क प्रविष्टि “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36574. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36575. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हिन्दी कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हिन्दी कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दी कविता” अछि।

प्रश्न 36576. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार

उत्तर: घ. प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार” अछि।

प्रश्न 36577. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36578. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रजनी छाबड़ा (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रजनी छाबड़ा (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36579. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36580. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36581. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36582. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355मे रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355मे रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3665 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापति:

प्रश्न 36583. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2356मे अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36584. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. साहित्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. साहित्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36585. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 36586. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ.

उत्तर: घ.

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “” अछि।

प्रश्न 36587. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क.

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क.

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36588. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36589. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36590. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36591. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36592. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356मे अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356मे अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3666 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: घर १-३

प्रश्न 36593. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घर १-३

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घर १-३

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2357मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “घर १-३” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36594. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36595. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु कथा/रेखाचित्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु कथा/रेखाचित्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा/रेखाचित्र” अछि।

प्रश्न 36596. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ''डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन'...'' सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण

उत्तर: घ. ''डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन'...'' सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “''डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन'...'' सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण” अछि।

प्रश्न 36597. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ''डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन'...'' सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ''डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन'...'' सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “''डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन'...'' सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36598. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा/रेखाचित्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा/रेखाचित्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36599. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36600. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु कथा/रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु कथा/रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36601. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36602. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357मे रवि भूषण पाठकक “घर १-३” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा/रेखाचित्र आ “''डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन'...'' सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357मे रवि भूषण पाठकक “घर १-३” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा/रेखाचित्र आ “''डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन'...'' सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3667 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: औझका डायरी

प्रश्न 36603. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. औझका डायरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. औझका डायरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2358मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “औझका डायरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36604. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36605. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. डायरी/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. डायरी/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “डायरी/आलेख” अछि।

प्रश्न 36606. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार

उत्तर: घ. साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार” अछि।

प्रश्न 36607. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36608. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा डायरी/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा डायरी/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36609. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36610. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ डायरी/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ डायरी/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36611. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36612. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358मे रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” प्रविष्टि गद्य, डायरी/आलेख आ “साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358मे रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” प्रविष्टि गद्य, डायरी/आलेख आ “साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3668 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ

प्रश्न 36613. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2359मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36614. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36615. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 36616. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विभा रानीक नाटक "भाग रौ" कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि

उत्तर: घ. विभा रानीक नाटक "भाग रौ" कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विभा रानीक नाटक "भाग रौ" कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि” अछि।

प्रश्न 36617. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विभा रानीक नाटक "भाग रौ" कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विभा रानीक नाटक "भाग रौ" कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विभा रानीक नाटक "भाग रौ" कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36618. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36619. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36620. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36621. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36622. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359मे रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/निबन्ध आ “विभा रानीक नाटक "भाग रौ" कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359मे रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/निबन्ध आ “विभा रानीक नाटक "भाग रौ" कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3669 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: झमेलिया बिआह

प्रश्न 36623. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. झमेलिया बिआह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झमेलिया बिआह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2360मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “झमेलिया बिआह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36624. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36625. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक-आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक-आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-आलोचना” अछि।

प्रश्न 36626. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन” अछि।

प्रश्न 36627. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36628. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा नाटक-आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा नाटक-आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36629. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36630. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक-आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक-आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36631. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36632. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360मे रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह” प्रविष्टि गद्य, नाटक-आलोचना आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360मे रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह” प्रविष्टि गद्य, नाटक-आलोचना आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3670 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन

प्रश्न 36633. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2361मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36634. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36635. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास-आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास-आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास-आलोचना” अछि।

प्रश्न 36636. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा” अछि।

प्रश्न 36637. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतनः उत्थान -पतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36638. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतनः उत्थान -पतन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास-आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास-आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36639. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतनः उत्थान -पतन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36640. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतनः उत्थान -पतन”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यास-आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यास-आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36641. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतनः उत्थान -पतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36642. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361मे रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास-आलोचना आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361मे रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास-आलोचना आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3671 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू

प्रश्न 36643. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2362मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36644. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36645. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/समालोचना” अछि।

प्रश्न 36646. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन

उत्तर: घ. उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 36647. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36648. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36649. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36650. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36651. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36652. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362मे रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समालोचना आ “उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362मे रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समालोचना आ “उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3672 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: गामक जिनगीक समीक्षा

प्रश्न 36653. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गामक जिनगीक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक जिनगीक समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2363मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “गामक जिनगीक समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36654. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36655. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा-संग्रह समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा-संग्रह समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा-संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 36656. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना” अछि।

प्रश्न 36657. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36658. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा कथा-संग्रह समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा कथा-संग्रह समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36659. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36660. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36661. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36662. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363मे रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, कथा-संग्रह समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363मे रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, कथा-संग्रह समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3673 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: निरालाःदेह विदेह (१-४)

प्रश्न 36663. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निरालाःदेह विदेह (१-४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निरालाःदेह विदेह (१-४)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2364मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “निरालाःदेह विदेह (१-४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36664. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36665. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद” अछि।

प्रश्न 36666. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद

उत्तर: घ. हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद” अछि।

प्रश्न 36667. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36668. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36669. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36670. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवादक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवादक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36671. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36672. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364मे रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद आ “हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364मे रवि भूषण पाठकक “निरालाःदेह विदेह (१-४)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद आ “हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3674 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: आचार्य भामहक चिंतन

प्रश्न 36673. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आचार्य भामहक चिंतन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आचार्य भामहक चिंतन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2365मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “आचार्य भामहक चिंतन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36674. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36675. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 36676. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थैं सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या

उत्तर: घ. संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थैं सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थैं सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या” अछि।

प्रश्न 36677. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थैं सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थैं सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थैं सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36678. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36679. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36680. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36681. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36682. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365मे रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थैं सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365मे रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थैं सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3675 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: दण्डी आ काव्यलक्षण

प्रश्न 36683. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दण्डी आ काव्यलक्षण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दण्डी आ काव्यलक्षण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2366मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दण्डी आ काव्यलक्षण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36684. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36685. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 36686. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना

उत्तर: घ. आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना” अछि।

प्रश्न 36687. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36688. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36689. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36690. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36691. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36692. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366मे रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366मे रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3676 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: लघुकथा- बोधिसत्व

प्रश्न 36693. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- बोधिसत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- बोधिसत्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2367मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “लघुकथा- बोधिसत्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36694. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36695. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु/दीर्घ कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु/दीर्घ कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु/दीर्घ कथा” अछि।

प्रश्न 36696. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृतान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण

उत्तर: घ. एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृतान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृतान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण” अछि।

प्रश्न 36697. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृतान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृतान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृतान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36698. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु/दीर्घ कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु/दीर्घ कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36699. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36700. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु/दीर्घ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु/दीर्घ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36701. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36702. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367मे रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” प्रविष्टि गद्य, लघु/दीर्घ कथा आ “एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृतान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367मे रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” प्रविष्टि गद्य, लघु/दीर्घ कथा आ “एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृतान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3677 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: तीनटा बीहनि कथा

प्रश्न 36703. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तीनटा बीहनि कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीनटा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2368मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “तीनटा बीहनि कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36704. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36705. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा” अछि।

प्रश्न 36706. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।

उत्तर: घ. तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।” अछि।

प्रश्न 36707. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36708. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36709. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36710. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36711. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36712. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368मे रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368मे रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3678 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)

प्रश्न 36713. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2369मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36714. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36715. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दीर्घ कथा/उपन्यासिका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दीर्घ कथा/उपन्यासिका

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घ कथा/उपन्यासिका” अछि।

प्रश्न 36716. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. "सूर्यकांत" पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण

उत्तर: घ. "सूर्यकांत" पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “"सूर्यकांत" पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण” अछि।

प्रश्न 36717. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. "सूर्यकांत" पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "सूर्यकांत" पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “"सूर्यकांत" पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36718. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा/उपन्यासिका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा/उपन्यासिका

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36719. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36720. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दीर्घ कथा/उपन्यासिकाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दीर्घ कथा/उपन्यासिकाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36721. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36722. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369मे रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा/उपन्यासिका आ “"सूर्यकांत" पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369मे रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा/उपन्यासिका आ “"सूर्यकांत" पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3679 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: ओइ साल

प्रश्न 36723. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ओइ साल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओइ साल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2370मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “ओइ साल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36724. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36725. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण/लघु कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण/लघु कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण/लघु कथा” अछि।

प्रश्न 36726. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि

उत्तर: घ. एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि” अछि।

प्रश्न 36727. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36728. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/लघु कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/लघु कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36729. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36730. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरण/लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरण/लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36731. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36732. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370मे रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/लघु कथा आ “एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370मे रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/लघु कथा आ “एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3680 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: घर

प्रश्न 36733. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2371मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “घर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36734. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36735. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रेखाचित्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रेखाचित्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रेखाचित्र” अछि।

प्रश्न 36736. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण

उत्तर: घ. एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण” अछि।

प्रश्न 36737. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36738. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा रेखाचित्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा रेखाचित्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36739. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36740. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36741. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36742. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371मे रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि गद्य, रेखाचित्र आ “एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371मे रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि गद्य, रेखाचित्र आ “एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3681 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बाबूक चट्टी

प्रश्न 36743. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाबूक चट्टी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबूक चट्टी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2372मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाबूक चट्टी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36744. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36745. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरणात्मक कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरणात्मक कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरणात्मक कथा” अछि।

प्रश्न 36746. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा

उत्तर: घ. पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा” अछि।

प्रश्न 36747. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36748. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरणात्मक कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरणात्मक कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36749. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36750. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36751. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36752. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372मे रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि गद्य, संस्मरणात्मक कथा आ “पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372मे रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि गद्य, संस्मरणात्मक कथा आ “पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3682 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय

प्रश्न 36753. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2373मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36754. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36755. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 36756. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।

उत्तर: घ. कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 36757. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36758. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36759. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36760. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36761. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36762. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373मे रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373मे रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3683 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस

प्रश्न 36763. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2374मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36764. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36765. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/लघु कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/लघु कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/लघु कथा” अछि।

प्रश्न 36766. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. "रंजन जी" पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य

उत्तर: घ. "रंजन जी" पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “"रंजन जी" पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 36767. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. "रंजन जी" पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "रंजन जी" पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “"रंजन जी" पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36768. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/लघु कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/लघु कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36769. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36770. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस”कैँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36771. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36772. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374मे रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/लघु कथा आ “"रंजन जी" पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374मे रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/लघु कथा आ “"रंजन जी" पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3684 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)

प्रश्न 36773. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2375मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36774. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36775. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 36776. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 36777. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36778. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36779. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36780. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36781. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36782. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375मे रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375मे रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3685 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: फसाद आ आनंद (लघु कथा)

प्रश्न 36783. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फसाद आ आनंद (लघु कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फसाद आ आनंद (लघु कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2376मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36784. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36785. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघु कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघु कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा” अछि।

प्रश्न 36786. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण” अछि।

प्रश्न 36787. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36788. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36789. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36790. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36791. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36792. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376मे रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376मे रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3686 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)

प्रश्न 36793. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2377मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36794. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36795. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 36796. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।

उत्तर: घ. मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।” अछि।

प्रश्न 36797. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36798. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36799. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36800. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36801. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36802. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377मे रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377मे रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3687 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: नाटक ‘रिहर्सल’

प्रश्न 36803. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटक ‘रिहर्सल’

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक ‘रिहर्सल’

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2378मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “नाटक ‘रिहर्सल’” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36804. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36805. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 36806. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक

उत्तर: घ. मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक” अछि।

प्रश्न 36807. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36808. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36809. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36810. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’”कें विदेह-सदेह 29क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36811. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36812. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378मे रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” प्रविष्टि गद्य/पद्य, नाटक आ “मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकें ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378मे रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” प्रविष्टि गद्य/पद्य, नाटक आ “मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकें ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3688 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: टिल्लू जी (शिव कुमार झा)

प्रश्न 36813. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टिल्लू जी (शिव कुमार झा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टिल्लू जी (शिव कुमार झा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2379मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36814. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36815. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्र/प्रशस्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्र/प्रशस्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र/प्रशस्ति” अछि।

प्रश्न 36816. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र

उत्तर: घ. शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र” अछि।

प्रश्न 36817. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36818. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा पत्र/प्रशस्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा पत्र/प्रशस्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36819. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36820. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्र/प्रशस्तिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्र/प्रशस्तिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36821. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36822. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379मे रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” प्रविष्टि गद्य, पत्र/प्रशस्ति आ “शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379मे रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” प्रविष्टि गद्य, पत्र/प्रशस्ति आ “शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3689 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बाल कविता- 'क'

प्रश्न 36823. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल कविता- 'क'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल कविता- 'क'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2380मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाल कविता- 'क'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36824. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36825. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 36826. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ङ' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन

उत्तर: घ. वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ङ' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ङ' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन” अछि।

प्रश्न 36827. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ङ' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ङ' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ङ' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36828. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36829. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36830. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36831. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36832. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ङ' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ङ' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3690 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बाल कविता- मानसून

प्रश्न 36833. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल कविता- मानसून

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल कविता- मानसून

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2381मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाल कविता- मानसून” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36834. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36835. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 36836. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति

उत्तर: घ. मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति” अछि।

प्रश्न 36837. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36838. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36839. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36840. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36841. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36842. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3691 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बाल कविता- सुन वौआ सुन

प्रश्न 36843. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल कविता- सुन वौआ सुन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल कविता- सुन वौआ सुन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2382मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाल कविता- सुन वौआ सुन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36844. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36845. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 36846. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. "ऊ एिुन" के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।

उत्तर: घ. "ऊ एिुन" के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “"ऊ एिुन" के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।” अछि।

प्रश्न 36847. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. "ऊ एिुन" के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "ऊ एिुन" के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “"ऊ एिुन" के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36848. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36849. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36850. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36851. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36852. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “"ऊ एिन" के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “"ऊ एिन" के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3692 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बाल कविता- ब्लेक होल

प्रश्न 36853. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल कविता- ब्लेक होल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल कविता- ब्लेक होल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2383मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाल कविता- ब्लेक होल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36854. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36855. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 36856. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता

उत्तर: घ. खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता” अछि।

प्रश्न 36857. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36858. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36859. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36860. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36861. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36862. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3693 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे

प्रश्न 36863. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2384मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36864. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36865. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36866. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।

उत्तर: घ. एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।” अछि।

प्रश्न 36867. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36868. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36869. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36870. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36871. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36872. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384मे रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384मे रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3694 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: हजार-लाख मे

प्रश्न 36873. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हजार-लाख मे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हजार-लाख मे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2385मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “हजार-लाख मे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36874. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36875. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36876. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता

उत्तर: घ. समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता” अछि।

प्रश्न 36877. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36878. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36879. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36880. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36881. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36882. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385मे रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385मे रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3695 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: डहकन

प्रश्न 36883. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डहकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डहकन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2386मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “डहकन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36884. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36885. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. डहकन (लोकगीति शैली)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. डहकन (लोकगीति शैली)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “डहकन (लोकगीति शैली)” अछि।

प्रश्न 36886. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य

उत्तर: घ. पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 36887. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36888. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा डहकन (लोकगीति शैली)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा डहकन (लोकगीति शैली)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36889. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36890. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ डहकन (लोकगीति शैली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ डहकन (लोकगीति शैली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36891. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36892. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386मे रवि भूषण पाठकक “डहकन” प्रविष्टि पद्य, डहकन (लोकगीति शैली) आ “पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386मे रवि भूषण पाठकक “डहकन” प्रविष्टि पद्य, डहकन (लोकगीति शैली) आ “पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3696 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: खट्टा चूक्क

प्रश्न 36893. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खट्टा चूक्क

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खट्टा चूक्क

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2387मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “खट्टा चूक्क” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36894. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36895. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36896. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण

उत्तर: घ. ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण” अछि।

प्रश्न 36897. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36898. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36899. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36900. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36901. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36902. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387मे रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387मे रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3697 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: हरियर

प्रश्न 36903. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हरियर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हरियर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2388मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “हरियर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36904. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36905. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36906. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना

उत्तर: घ. रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना” अछि।

प्रश्न 36907. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36908. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36909. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36910. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36911. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36912. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388मे रवि भूषण पाठकक “हरियर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388मे रवि भूषण पाठकक “हरियर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3698 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बहुत किछु विदा भ' गेल रहै

प्रश्न 36913. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बहुत किछु विदा भ' गेल रहै

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुत किछु विदा भ' गेल रहै

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2389मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36914. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36915. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36916. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता

उत्तर: घ. आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता” अछि।

प्रश्न 36917. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36918. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36919. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36920. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36921. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36922. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389मे रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389मे रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3699 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: व्यर्थ प्रलापी

प्रश्न 36923. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. व्यर्थ प्रलापी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यर्थ प्रलापी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2390मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “व्यर्थ प्रलापी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36924. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36925. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36926. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता

उत्तर: घ. साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता” अछि।

प्रश्न 36927. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36928. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36929. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36930. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36931. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36932. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390मे रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390मे रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3700 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: झाबाद

प्रश्न 36933. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. झाबाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झाबाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2391मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “झाबाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36934. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36935. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36936. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष

उत्तर: घ. विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष” अछि।

प्रश्न 36937. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36938. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36939. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36940. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36941. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36942. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391मे रवि भूषण पाठकक “झाबाद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391मे रवि भूषण पाठकक “झाबाद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3701 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: तीनटा कविता

प्रश्न 36943. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तीनटा कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीनटा कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2392मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “तीनटा कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36944. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36945. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36946. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. "समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह

उत्तर: घ. "समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “"समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह” अछि।

प्रश्न 36947. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. "समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “"समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36948. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36949. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36950. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36951. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36952. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392मे रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “"समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392मे रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “"समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3702 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: फसली पद्य १-७

प्रश्न 36953. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फसली पद्य १-७

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फसली पद्य १-७

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2393मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “फसली पद्य १-७” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36954. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36955. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता (शृंखला)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता (शृंखला)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता (शृंखला)” अछि।

प्रश्न 36956. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. "मकइ जिन्दाबाद", "खेसारी नवहतन", "भगिान मरूआ आ मिथिला", "अरुआ कऽ सप्पत", "महिक्का धान", "कविता आ धान", "कनियाँ आ कविता" — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक श्रृंखला।

उत्तर: घ. "मकइ जिन्दाबाद", "खेसारी नवहतन", "भगिान मरूआ आ मिथिला", "अरुआ कऽ सप्पत", "महिक्का धान", "कविता आ धान", "कनियाँ आ कविता" — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक श्रृंखला।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “"मकइ जिन्दाबाद", "खेसारी नवहतन", "भगिान मरूआ आ मिथिला", "अरुआ कऽ सप्पत", "महिक्का धान", "कविता आ धान", "कनियाँ आ कविता" — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक श्रृंखला।” अछि।

प्रश्न 36957. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. "मकइ जिन्दाबाद", "खेसारी नवहतन", "भगिान मरूआ आ मिथिला", "अरुआ कऽ सप्पत", "महिक्का धान", "कविता आ धान", "कनियाँ आ कविता" — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक श्रृंखला।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "मकइ जिन्दाबाद", "खेसारी नवहतन", "भगिान मरूआ आ मिथिला", "अरुआ कऽ सप्पत", "महिक्का धान", "कविता आ धान", "कनियाँ आ कविता" — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक श्रृंखला।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “"मकइ जिन्दाबाद", "खेसारी नवहतन", "भगिान मरूआ आ मिथिला", "अरुआ कऽ सप्पत", "महिक्का धान", "कविता आ धान", "कनियाँ आ कविता" — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक श्रृंखला।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36958. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36959. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36960. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता (शृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता (शृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36961. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36962. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393मे रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंखला) आ “"मकइ जिन्दाबाद", "खेसारी नवहतन", "भगिान मरूआ आ मिथिला", "अरुआ कऽ सप्पत", "महिक्का धान", "कविता आ धान", "कनियाँ आ कविता" — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक श्रृंखला।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393मे रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंखला) आ “"मकइ जिन्दाबाद", "खेसारी नवहतन", "भगिान मरूआ आ मिथिला", "अरुआ कऽ सप्पत", "महिक्का धान", "कविता आ धान", "कनियाँ आ कविता" — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक श्रृंखला।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3703 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: एहि बेर छठि मे

प्रश्न 36963. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एहि बेर छठि मे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एहि बेर छठि मे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2394मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “एहि बेर छठि मे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36964. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36965. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36966. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण

उत्तर: घ. छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण” अछि।

प्रश्न 36967. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36968. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36969. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36970. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36971. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36972. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394मे रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394मे रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3704 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: हमर मैथिली

प्रश्न 36973. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर मैथिली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2395मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “हमर मैथिली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36974. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36975. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36976. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा

उत्तर: घ. मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा” अछि।

प्रश्न 36977. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36978. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36979. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36980. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36981. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36982. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395मे रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395मे रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3705 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: होली

प्रश्न 36983. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. होली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2396मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “होली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36984. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36985. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 36986. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता

उत्तर: घ. उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता” अछि।

प्रश्न 36987. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36988. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36989. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 36990. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 36991. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 36992. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396मे रवि भूषण पाठकक “होली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396मे रवि भूषण पाठकक “होली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3706 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)

प्रश्न 36993. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2397मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 36994. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 36995. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता (व्यंग्य)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता (व्यंग्य)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता (व्यंग्य)” अछि।

प्रश्न 36996. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण

उत्तर: घ. हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण” अछि।

प्रश्न 36997. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 36998. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (व्यंग्य)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (व्यंग्य)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 36999. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37000. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता (व्यंग्य)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता (व्यंग्य)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37001. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37002. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397मे रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” प्रविष्टि पद्य, कविता (व्यंग्य) आ “हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397मे रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” प्रविष्टि पद्य, कविता (व्यंग्य) आ “हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3707 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: मरणोपरांत-१-४

प्रश्न 37003. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मरणोपरांत-१-४

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मरणोपरांत-१-४

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2398मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “मरणोपरांत-१-४” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37004. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37005. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता (शृंखला)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता (शृंखला)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता (शृंखला)” अछि।

प्रश्न 37006. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक श्रृंखला

उत्तर: घ. मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक श्रृंखला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक श्रृंखला” अछि।

प्रश्न 37007. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक श्रृंखला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक श्रृंखला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक श्रृंखला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37008. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37009. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37010. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता (शृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता (शृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37011. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37012. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398मे रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंखला) आ “मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकेँ केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक शृंखला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398मे रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंखला) आ “मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकेँ केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक शृंखला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3708 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बर्फ भोर

प्रश्न 37013. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बर्फ भोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बर्फ भोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2399मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बर्फ भोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37014. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37015. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37016. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण

उत्तर: घ. अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण” अछि।

प्रश्न 37017. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37018. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37019. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37020. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37021. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37022. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399मे रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399मे रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3709 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: देश आ गेयर

प्रश्न 37023. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देश आ गेयर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देश आ गेयर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2400मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “देश आ गेयर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37024. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37025. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37026. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

उत्तर: घ. बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति” अछि।

प्रश्न 37027. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37028. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37029. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37030. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37031. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37032. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400मे रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400मे रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3710 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: पाँच केबी

प्रश्न 37033. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पाँच केबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाँच केबी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2401मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “पाँच केबी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37034. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37035. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37036. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव

उत्तर: घ. इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव” अछि।

प्रश्न 37037. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37038. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37039. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37040. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37041. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37042. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401मे रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401मे रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3711 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: दोस महिम

प्रश्न 37043. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दोस महिम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोस महिम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2402मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दोस महिम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37044. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37045. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37046. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. "दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण

उत्तर: घ. "दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “"दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण” अछि।

प्रश्न 37047. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. "दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “"दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37048. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37049. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37050. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37051. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37052. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402मे रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “"दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402मे रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “"दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3712 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत

प्रश्न 37053. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2403मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37054. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37055. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37056. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण

उत्तर: घ. एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण” अछि।

प्रश्न 37057. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37058. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37059. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37060. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37061. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37062. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403मे रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403मे रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3713 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: मनोज भाय क चिट्ठी

प्रश्न 37063. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मनोज भाय क चिट्ठी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनोज भाय क चिट्ठी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2404मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “मनोज भाय क चिट्ठी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37064. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37065. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/पत्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/पत्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/पत्र” अछि।

प्रश्न 37066. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र

उत्तर: घ. प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र” अछि।

प्रश्न 37067. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37068. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता/पत्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता/पत्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37069. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37070. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/पत्रक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/पत्रक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37071. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37072. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404मे रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” प्रविष्टि पद्य, कविता/पत्र आ “प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404मे रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” प्रविष्टि पद्य, कविता/पत्र आ “प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3714 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बियाह आ मौछ

प्रश्न 37073. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बियाह आ मौछ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बियाह आ मौछ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2405मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बियाह आ मौछ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37074. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37075. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37076. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाब, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण

उत्तर: घ. विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाब, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाब, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण” अछि।

प्रश्न 37077. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाब, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाब, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाब, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37078. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37079. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37080. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37081. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37082. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405मे रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाब, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405मे रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाब, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3715 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: प्लेटो आ हमर कनिया

प्रश्न 37083. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्लेटो आ हमर कनिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्लेटो आ हमर कनिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2406मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “प्लेटो आ हमर कनिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37084. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37085. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37086. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक प्लेटोक "योग्य शिष्य" आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता

उत्तर: घ. दार्शनिक प्लेटोक "योग्य शिष्य" आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक प्लेटोक "योग्य शिष्य" आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता” अछि।

प्रश्न 37087. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक प्लेटोक "योग्य शिष्य" आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक प्लेटोक "योग्य शिष्य" आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक प्लेटोक "योग्य शिष्य" आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37088. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37089. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37090. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37091. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37092. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406मे रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक प्लेटोक "योग्य शिष्य" आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406मे रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक प्लेटोक "योग्य शिष्य" आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3716 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: टिप्स फ्राम खट्टरकका

प्रश्न 37093. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टिप्स फ्राम खट्टरकका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टिप्स फ्राम खट्टरकका

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2407मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “टिप्स फ्राम खट्टरकका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37094. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37095. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37096. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य

उत्तर: घ. साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 37097. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37098. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37099. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37100. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37101. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37102. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407मे रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407मे रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3717 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बर्फ पानि भाफ

प्रश्न 37103. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बर्फ पानि भाफ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बर्फ पानि भाफ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2408मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बर्फ पानि भाफ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37104. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37105. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37106. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन

उत्तर: घ. एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन” अछि।

प्रश्न 37107. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37108. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37109. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37110. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37111. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37112. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408मे रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408मे रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3718 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बस तीने दिन

प्रश्न 37113. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बस तीने दिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बस तीने दिन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2409मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बस तीने दिन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37114. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37115. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37116. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण

उत्तर: घ. पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण” अछि।

प्रश्न 37117. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37118. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37119. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37120. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37121. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37122. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409मे रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409मे रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3719 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: उत्थर लोक

प्रश्न 37123. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उत्थर लोक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उत्थर लोक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2410मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “उत्थर लोक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37124. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37125. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37126. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण

उत्तर: घ. उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण” अछि।

प्रश्न 37127. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37128. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37129. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37130. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37131. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37132. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410मे रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410मे रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3720 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: चमारक ऋण

प्रश्न 37133. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चमारक ऋण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चमारक ऋण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2411मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “चमारक ऋण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37134. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37135. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37136. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार

उत्तर: घ. चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार” अछि।

प्रश्न 37137. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37138. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37139. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37140. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37141. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37142. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411मे रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411मे रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3721 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: दीवाली क पहिले

प्रश्न 37143. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दीवाली क पहिले

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीवाली क पहिले

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2412मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दीवाली क पहिले” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37144. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37145. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37146. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण

उत्तर: घ. दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण” अछि।

प्रश्न 37147. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37148. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37149. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37150. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37151. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37152. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412मे रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412मे रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3722 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: धनतेरस राति

प्रश्न 37153. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. धनतेरस राति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धनतेरस राति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2413मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “धनतेरस राति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37154. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37155. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37156. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण

उत्तर: घ. धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण” अछि।

प्रश्न 37157. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37158. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37159. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37160. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37161. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37162. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413मे रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413मे रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3723 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: हम पुरहितिया

प्रश्न 37163. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम पुरहितिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम पुरहितिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2414मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “हम पुरहितिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37164. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37165. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37166. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण

उत्तर: घ. एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण” अछि।

प्रश्न 37167. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37168. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37169. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37170. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37171. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37172. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414मे रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414मे रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3724 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: चालीसक बात

प्रश्न 37173. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चालीसक बात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चालीसक बात

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2415मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “चालीसक बात” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37174. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37175. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37176. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता

उत्तर: घ. चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता” अछि।

प्रश्न 37177. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37178. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37179. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37180. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37181. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37182. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415मे रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415मे रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3725 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बामे गाम दहिने गाम १-६

प्रश्न 37183. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बामे गाम दहिने गाम १-६

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बामे गाम दहिने गाम १-६

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2416मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बामे गाम दहिने गाम १-६” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37184. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37185. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता (शृंखला)

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता (शृंखला)

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता (शृंखला)” अछि।

प्रश्न 37186. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण

उत्तर: घ. बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण” अछि।

प्रश्न 37187. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37188. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला)

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37189. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37190. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता (शृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता (शृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37191. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37192. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416मे रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंखला) आ “बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416मे रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंखला) आ “बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3726 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै

प्रश्न 37193. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2417मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37194. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37195. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37196. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण

उत्तर: घ. नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण” अछि।

प्रश्न 37197. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37198. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37199. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37200. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37201. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37202. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417मे रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417मे रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3727 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: महाकवि विद्यापति-१

प्रश्न 37203. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाकवि विद्यापति-१

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाकवि विद्यापति-१

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2418मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “महाकवि विद्यापति-१” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37204. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37205. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37206. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया

उत्तर: घ. युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया” अछि।

प्रश्न 37207. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37208. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37209. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37210. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37211. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37212. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418मे रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418मे रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3728 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: महाकवि विद्यापति-२

प्रश्न 37213. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाकवि विद्यापति-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाकवि विद्यापति-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2419मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “महाकवि विद्यापति-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37214. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37215. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37216. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया

उत्तर: घ. विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया” अछि।

प्रश्न 37217. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37218. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37219. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37220. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37221. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37222. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419मे रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419मे रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3729 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: हाइकू

प्रश्न 37223. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाइकू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2420मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “हाइकू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37224. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37225. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू” अछि।

प्रश्न 37226. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।

उत्तर: घ. ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।” अछि।

प्रश्न 37227. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37228. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37229. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37230. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37231. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37232. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420मे रवि भूषण पाठकक “हाइकू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420मे रवि भूषण पाठकक “हाइकू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3730 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: कि भेलए एकरा

प्रश्न 37233. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कि भेलए एकरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कि भेलए एकरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2421मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “कि भेलए एकरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37234. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37235. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37236. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता

उत्तर: घ. एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता” अछि।

प्रश्न 37237. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37238. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37239. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37240. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37241. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37242. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421मे रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421मे रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3731 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा- पण्डिताइन

प्रश्न 37243. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- पण्डिताइन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- पण्डिताइन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2422मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा- पण्डिताइन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37244. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37245. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 37246. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा

उत्तर: घ. जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा” अछि।

प्रश्न 37247. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37248. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37249. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37250. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37251. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37252. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3732 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: बुरिराज (लघुकथा)

प्रश्न 37253. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुरिराज (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुरिराज (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2423मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “बुरिराज (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37254. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37255. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 37256. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा

उत्तर: घ. आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा” अछि।

प्रश्न 37257. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37258. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37259. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37260. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37261. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37262. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3733 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना

प्रश्न 37263. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2424मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37264. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37265. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 37266. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन

उत्तर: घ. मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन” अछि।

प्रश्न 37267. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37268. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37269. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37270. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37271. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37272. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3734 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)

प्रश्न 37273. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2425मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37274. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्सः धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37275. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्सः धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 37276. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्सः धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृतान्त।

उत्तर: घ. असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृतान्त।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृतान्त।” अछि।

प्रश्न 37277. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्सः धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृतान्त।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृतान्त।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृतान्त।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37278. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्सः धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37279. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्सः धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37280. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्सः धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37281. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्सः धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37282. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्सः धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृतान्त।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्सः धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृतान्त।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3735 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)

प्रश्न 37283. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2426मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37284. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37285. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 37286. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम

उत्तर: घ. नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम” अछि।

प्रश्न 37287. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37288. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37289. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37290. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37291. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37292. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3736 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)

प्रश्न 37293. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2427मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37294. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37295. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 37296. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा

उत्तर: घ. अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा” अछि।

प्रश्न 37297. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37298. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37299. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37300. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37301. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37302. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3737 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर

प्रश्न 37303. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2428मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37304. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37305. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 37306. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगाइप्राऊ केर यात्रा

उत्तर: घ. मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगाइप्राऊ केर यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगाइप्राऊ केर यात्रा” अछि।

प्रश्न 37307. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगाइप्राऊ केर यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगाइप्राऊ केर यात्रा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगाइप्राऊ केर यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37308. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37309. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37310. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37311. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37312. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगाइप्राऊ केर यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगाइप्राऊ केर यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3738 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात

प्रश्न 37313. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2429मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37314. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37315. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 37316. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण

उत्तर: घ. उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण” अछि।

प्रश्न 37317. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37318. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37319. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37320. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37321. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37322. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3739 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन

प्रश्न 37323. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2430मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37324. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37325. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 37326. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृतान्त

उत्तर: घ. वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृतान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृतान्त” अछि।

प्रश्न 37327. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृतान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृतान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृतान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37328. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37329. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37330. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37331. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37332. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृतान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृतान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3740 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन

प्रश्न 37333. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2431मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37334. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37335. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप” अछि।

प्रश्न 37336. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी

उत्तर: घ. मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी” अछि।

प्रश्न 37337. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37338. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37339. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37340. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालापक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालापक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37341. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37342. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप आ “मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप आ “मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3741 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना

प्रश्न 37343. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2432मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37344. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37345. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा-संग्रह समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा-संग्रह समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा-संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37346. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा

उत्तर: घ. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37347. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37348. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा-संग्रह समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा-संग्रह समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37349. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37350. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37351. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37352. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” प्रविष्टि गद्य, कथा-संग्रह समीक्षा आ “सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” प्रविष्टि गद्य, कथा-संग्रह समीक्षा आ “सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3742 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना

प्रश्न 37353. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2433मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37354. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37355. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37356. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामलोचन ठाकूरक पोथी "मैथिली लोककथा" केर विवेचना

उत्तर: घ. रामलोचन ठाकूरक पोथी "मैथिली लोककथा" केर विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूरक पोथी "मैथिली लोककथा" केर विवेचना” अछि।

प्रश्न 37357. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामलोचन ठाकूरक पोथी "मैथिली लोककथा" केर विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामलोचन ठाकूरक पोथी "मैथिली लोककथा" केर विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूरक पोथी "मैथिली लोककथा" केर विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37358. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37359. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37360. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37361. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37362. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रामलोचन ठाकूरक पोथी "मैथिली लोककथा" केर विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रामलोचन ठाकूरक पोथी "मैथिली लोककथा" केर विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3743 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता

प्रश्न 37363. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2434मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37364. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37365. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37366. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।

उत्तर: घ. स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।” अछि।

प्रश्न 37367. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37368. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37369. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37370. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37371. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37372. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3744 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: इंद्रधनुषी अकास

प्रश्न 37373. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इंद्रधनुषी अकास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इंद्रधनुषी अकास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2435मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “इंद्रधनुषी अकास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37374. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37375. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता-संग्रह समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता-संग्रह समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता-संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37376. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह "इंद्रधनुषी अकास" केर आमुखीय समीक्षा

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह "इंद्रधनुषी अकास" केर आमुखीय समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह "इंद्रधनुषी अकास" केर आमुखीय समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37377. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह "इंद्रधनुषी अकास" केर आमुखीय समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह "इंद्रधनुषी अकास" केर आमुखीय समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह "इंद्रधनुषी अकास" केर आमुखीय समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37378. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कविता-संग्रह समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कविता-संग्रह समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37379. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37380. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37381. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37382. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” प्रविष्टि गद्य, कविता-संग्रह समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह "इंद्रधनुषी अकास" केर आमुखीय समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” प्रविष्टि गद्य, कविता-संग्रह समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह "इंद्रधनुषी अकास" केर आमुखीय समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3745 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल

प्रश्न 37383. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2436मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37384. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37385. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पोथी समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पोथी समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पोथी समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37386. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक "गामक जिनगी" पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक "गामक जिनगी" पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक "गामक जिनगी" पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37387. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक "गामक जिनगी" पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक "गामक जिनगी" पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक "गामक जिनगी" पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37388. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा पोथी समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा पोथी समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37389. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37390. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पोथी समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पोथी समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37391. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37392. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” प्रविष्टि गद्य, पोथी समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक "गामक जिनगी" पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” प्रविष्टि गद्य, पोथी समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक "गामक जिनगी" पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3746 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)

प्रश्न 37393. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2437मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37394. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37395. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37396. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "जीवन संघर्ष" केर समीक्षा

उत्तर: घ. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "जीवन संघर्ष" केर समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "जीवन संघर्ष" केर समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37397. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "जीवन संघर्ष" केर समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "जीवन संघर्ष" केर समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "जीवन संघर्ष" केर समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37398. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37399. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37400. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यास समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यास समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37401. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37402. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "जीवन संघर्ष" केर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "जीवन संघर्ष" केर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3747 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य

प्रश्न 37403. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2438मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37404. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37405. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 37406. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना

उत्तर: घ. मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना” अछि।

प्रश्न 37407. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37408. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37409. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37410. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37411. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37412. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3748 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय

प्रश्न 37413. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2439मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37414. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37415. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37416. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन

उत्तर: घ. राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन” अछि।

प्रश्न 37417. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37418. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37419. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37420. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37421. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37422. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3749 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा- चन्दा

प्रश्न 37423. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- चन्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- चन्दा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2440मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा- चन्दा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37424. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37425. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 37426. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा

उत्तर: घ. चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा” अछि।

प्रश्न 37427. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37428. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37429. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37430. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37431. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37432. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3750 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री

प्रश्न 37433. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2441मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37434. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37435. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 37436. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा

उत्तर: घ. छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा” अछि।

प्रश्न 37437. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37438. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37439. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37440. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37441. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37442. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3751 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा- सखी कृन्ती

प्रश्न 37443. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- सखी कृन्ती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- सखी कृन्ती

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2442मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा- सखी कृन्ती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37444. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37445. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 37446. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अधेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा

उत्तर: घ. बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अधेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अधेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा” अछि।

प्रश्न 37447. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अधेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अधेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अधेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37448. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37449. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37450. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37451. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37452. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अधेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अधेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3752 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग

प्रश्न 37453. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2443मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37454. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37455. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37456. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख

उत्तर: घ. प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख” अछि।

प्रश्न 37457. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37458. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37459. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37460. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37461. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37462. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3753 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)

प्रश्न 37463. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2444मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37464. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37465. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. परिचर्चा/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. परिचर्चा/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “परिचर्चा/आलेख” अछि।

प्रश्न 37466. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना

उत्तर: घ. परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना” अछि।

प्रश्न 37467. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37468. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा परिचर्चा/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा परिचर्चा/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37469. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37470. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ परिचर्चा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ परिचर्चा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37471. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37472. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” प्रविष्टि गद्य, परिचर्चा/आलेख आ “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” प्रविष्टि गद्य, परिचर्चा/आलेख आ “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3754 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?

प्रश्न 37473. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2445मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37474. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37475. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/विवेचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/विवेचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/विवेचना” अछि।

प्रश्न 37476. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या

उत्तर: घ. मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या” अछि।

प्रश्न 37477. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37478. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/विवेचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/विवेचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37479. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37480. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?”कैँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/विवेचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/विवेचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37481. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37482. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” प्रविष्टि गद्य, आलेख/विवेचना आ “मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” प्रविष्टि गद्य, आलेख/विवेचना आ “मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3755 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे

प्रश्न 37483. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2446मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37484. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37485. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 37486. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन

उत्तर: घ. आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन” अछि।

प्रश्न 37487. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37488. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37489. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37490. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37491. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37492. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3756 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना

प्रश्न 37493. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2447मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37494. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37495. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37496. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना

उत्तर: घ. रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना” अछि।

प्रश्न 37497. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37498. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37499. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37500. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37501. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37502. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3757 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन

प्रश्न 37503. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2448मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37504. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37505. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 37506. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या

उत्तर: घ. मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या” अछि।

प्रश्न 37507. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37508. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37509. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37510. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37511. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37512. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3758 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव

प्रश्न 37513. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2449मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37514. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37515. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37516. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना

उत्तर: घ. मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना” अछि।

प्रश्न 37517. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37518. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37519. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37520. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37521. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37522. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3759 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति

प्रश्न 37523. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2450मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37524. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37525. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37526. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण

उत्तर: घ. मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण” अछि।

प्रश्न 37527. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37528. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37529. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37530. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37531. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37532. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3760 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?

प्रश्न 37533. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2451मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37534. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37535. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37536. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न

उत्तर: घ. मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न” अछि।

प्रश्न 37537. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37538. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37539. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37540. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37541. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37542. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3761 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज

प्रश्न 37543. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2452मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37544. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37545. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास” अछि।

प्रश्न 37546. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा

उत्तर: घ. मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा” अछि।

प्रश्न 37547. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37548. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37549. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37550. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37551. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37552. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास आ “मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास आ “मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3762 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका

प्रश्न 37553. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2453मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37554. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37555. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दीर्घ कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दीर्घ कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घ कथा” अछि।

प्रश्न 37556. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा

उत्तर: घ. प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा” अछि।

प्रश्न 37557. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37558. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37559. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37560. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दीर्घ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दीर्घ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37561. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37562. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा आ “प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा आ “प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3763 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे

प्रश्न 37563. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2454मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37564. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37565. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37566. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर श्रृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना

उत्तर: घ. मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर श्रृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर श्रृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना” अछि।

प्रश्न 37567. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर शृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर शृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर शृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37568. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37569. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37570. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37571. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37572. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर श्रृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर श्रृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3764 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक

प्रश्न 37573. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2455मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37574. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37575. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37576. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना

उत्तर: घ. मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना” अछि।

प्रश्न 37577. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37578. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37579. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37580. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37581. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37582. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3765 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना

प्रश्न 37583. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2456मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37584. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37585. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37586. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र

उत्तर: घ. मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र” अछि।

प्रश्न 37587. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37588. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37589. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37590. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37591. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37592. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3766 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली संस्कृति करे अवयव

प्रश्न 37593. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली संस्कृति करे अवयव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली संस्कृति करे अवयव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2457मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली संस्कृति करे अवयव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37594. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37595. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37596. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. "मिथिलाम" संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण

उत्तर: घ. "मिथिलाम" संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “"मिथिलाम" संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 37597. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. "मिथिलाम" संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "मिथिलाम" संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “"मिथिलाम" संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37598. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37599. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37600. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37601. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37602. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “"मिथिलाम" संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “"मिथिलाम" संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3767 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद

प्रश्न 37603. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2458मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37604. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37605. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख/लोकगाथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख/लोकगाथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/लोकगाथा” अछि।

प्रश्न 37606. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना

उत्तर: घ. नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना” अछि।

प्रश्न 37607. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37608. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/लोकगाथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/लोकगाथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37609. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37610. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेख/लोकगाथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेख/लोकगाथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37611. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37612. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” प्रविष्टि गद्य, आलेख/लोकगाथा आ “नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” प्रविष्टि गद्य, आलेख/लोकगाथा आ “नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3768 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण

प्रश्न 37613. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2459मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37614. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37615. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त/शोध” अछि।

प्रश्न 37616. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृतान्त

उत्तर: घ. राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृतान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृतान्त” अछि।

प्रश्न 37617. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृतान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृतान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृतान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37618. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37619. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37620. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37621. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37622. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/शोध आ “राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृतान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाहः लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/शोध आ “राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृतान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3769 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य

प्रश्न 37623. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2460मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37624. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37625. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37626. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध

उत्तर: घ. दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध” अछि।

प्रश्न 37627. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37628. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37629. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37630. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37631. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37632. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3770 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास

प्रश्न 37633. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2461मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37634. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37635. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 37636. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना

उत्तर: घ. मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना” अछि।

प्रश्न 37637. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37638. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37639. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37640. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37641. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37642. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3771 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)

प्रश्न 37643. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2462मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37644. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37645. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

प्रश्न 37646. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज

उत्तर: घ. मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज” अछि।

प्रश्न 37647. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37648. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37649. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37650. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37651. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37652. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3772 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: गामक कचोट

प्रश्न 37653. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गामक कचोट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक कचोट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2463मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “गामक कचोट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37654. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37655. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 37656. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण

उत्तर: घ. गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण” अछि।

प्रश्न 37657. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37658. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37659. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37660. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट”कैँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37661. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37662. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3773 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश

प्रश्न 37663. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2464मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37664. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37665. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37666. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।

प्रश्न 37667. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37668. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37669. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37670. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37671. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37672. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464मे गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” प्रविष्टि गद्य, नाटक समीक्षा आ “विदेह सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464मे गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” प्रविष्टि गद्य, नाटक समीक्षा आ “विदेह सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3774 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता

प्रश्न 37673. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2465मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37674. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37675. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 37676. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन

उत्तर: घ. मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 37677. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37678. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37679. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37680. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37681. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37682. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3775 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

प्रश्न 37683. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2466मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37684. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37685. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 37686. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तुलनात्मक साहित्य अध्ययन

उत्तर: घ. तुलनात्मक साहित्य अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तुलनात्मक साहित्य अध्ययन” अछि।

प्रश्न 37687. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तुलनात्मक साहित्य अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तुलनात्मक साहित्य अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तुलनात्मक साहित्य अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37688. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37689. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37690. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37691. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37692. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “तुलनात्मक साहित्य अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “तुलनात्मक साहित्य अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3776 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"

प्रश्न 37693. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2467मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37694. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37695. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक समालोचना” अछि।

प्रश्न 37696. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन

उत्तर: घ. उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन” अछि।

प्रश्न 37697. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37698. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37699. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37700. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37701. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37702. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467मे गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” प्रविष्टि गद्य, नाटक समालोचना आ “उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467मे गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” प्रविष्टि गद्य, नाटक समालोचना आ “उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3777 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: इन्फॉरमेशन सोसाइटी

प्रश्न 37703. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इन्फॉरमेशन सोसाइटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इन्फॉरमेशन सोसाइटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2468मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “इन्फॉरमेशन सोसाइटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37704. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37705. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 37706. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सूचना समाज दर्शन

उत्तर: घ. सूचना समाज दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सूचना समाज दर्शन” अछि।

प्रश्न 37707. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सूचना समाज दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूचना समाज दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सूचना समाज दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37708. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37709. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37710. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37711. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37712. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468मे गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सूचना समाज दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468मे गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉरमेशन सोसाइटी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सूचना समाज दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3778 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान

प्रश्न 37713. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2469मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37714. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37715. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 37716. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विधि आ अधिकार चिन्तन

उत्तर: घ. विधि आ अधिकार चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विधि आ अधिकार चिन्तन” अछि।

प्रश्न 37717. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विधि आ अधिकार चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विधि आ अधिकार चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विधि आ अधिकार चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37718. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37719. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37720. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37721. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37722. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469मे गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “विधि आ अधिकार चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469मे गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “विधि आ अधिकार चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3779 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन

प्रश्न 37723. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2470मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37724. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37725. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37726. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक कृति समीक्षा

उत्तर: घ. साहित्यिक कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37727. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37728. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37729. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37730. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37731. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37732. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470मे गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470मे गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3780 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन

प्रश्न 37733. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2471मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37734. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37735. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषाशास्त्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषाशास्त्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषाशास्त्र” अछि।

प्रश्न 37736. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण

उत्तर: घ. मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 37737. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37738. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37739. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37740. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37741. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37742. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471मे गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471मे गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3781 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त

प्रश्न 37743. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2472मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37744. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37745. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

प्रश्न 37746. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन

उत्तर: घ. अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन” अछि।

प्रश्न 37747. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37748. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37749. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37750. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37751. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37752. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3782 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

प्रश्न 37753. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2473मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37754. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37755. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषाशास्त्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषाशास्त्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषाशास्त्र” अछि।

प्रश्न 37756. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान

उत्तर: घ. मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान” अछि।

प्रश्न 37757. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37758. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37759. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37760. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37761. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37762. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473मे गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473मे गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3783 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

प्रश्न 37763. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2474मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37764. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37765. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 37766. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आम्बेडकरवादी चिन्तन

उत्तर: घ. आम्बेडकरवादी चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आम्बेडकरवादी चिन्तन” अछि।

प्रश्न 37767. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आम्बेडकरवादी चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आम्बेडकरवादी चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आम्बेडकरवादी चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37768. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37769. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37770. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनी/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनी/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37771. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37772. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474मे गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/निबन्ध आ “आम्बेडकरवादी चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474मे गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/निबन्ध आ “आम्बेडकरवादी चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3784 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता

प्रश्न 37773. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2475मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37774. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37775. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 37776. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा

उत्तर: घ. जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37777. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37778. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37779. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37780. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37781. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37782. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475मे गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475मे गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3785 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: साहित्यिक रचना

प्रश्न 37783. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साहित्यिक रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक रचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2476मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “साहित्यिक रचना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37784. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37785. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 37786. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त

उत्तर: घ. रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 37787. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37788. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37789. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37790. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37791. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37792. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476मे गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476मे गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3786 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा

प्रश्न 37793. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2477मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37794. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37795. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37796. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37797. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37798. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37799. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37800. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37801. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37802. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477मे गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477मे गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3787 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर

प्रश्न 37803. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2478मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37804. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37805. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37806. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपन्यास समीक्षा

उत्तर: घ. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37807. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपन्यास समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37808. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37809. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37810. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37811. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37812. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478मे गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478मे गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3788 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

प्रश्न 37813. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2479मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37814. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37815. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 37816. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्षेत्रीय अध्ययन

उत्तर: घ. क्षेत्रीय अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “क्षेत्रीय अध्ययन” अछि।

प्रश्न 37817. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. क्षेत्रीय अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षेत्रीय अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्षेत्रीय अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37818. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37819. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37820. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37821. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37822. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479मे गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “क्षेत्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479मे गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “क्षेत्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3789 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: वर्णमाला शिक्षा: अंकिता

प्रश्न 37823. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वर्णमाला शिक्षा: अंकिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्णमाला शिक्षा: अंकिता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2480मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37824. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37825. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शिक्षा निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शिक्षा निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शिक्षा निबन्ध” अछि।

प्रश्न 37826. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली वर्णमाला शिक्षण

उत्तर: घ. मैथिली वर्णमाला शिक्षण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली वर्णमाला शिक्षण” अछि।

प्रश्न 37827. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली वर्णमाला शिक्षण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली वर्णमाला शिक्षण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली वर्णमाला शिक्षण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37828. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शिक्षा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शिक्षा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37829. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37830. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शिक्षा निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शिक्षा निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37831. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37832. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480मे गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” प्रविष्टि गद्य, शिक्षा निबन्ध आ “मैथिली वर्णमाला शिक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480मे गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” प्रविष्टि गद्य, शिक्षा निबन्ध आ “मैथिली वर्णमाला शिक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3790 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)

प्रश्न 37833. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2481मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37834. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37835. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37836. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजलकार समीक्षा

उत्तर: घ. गजलकार समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजलकार समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37837. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजलकार समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलकार समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजलकार समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37838. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37839. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37840. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37841. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37842. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481मे गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गजलकार समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481मे गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गजलकार समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3791 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह

प्रश्न 37843. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2482मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37844. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37845. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37846. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लघुकथा संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. लघुकथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लघुकथा संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37847. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लघुकथा संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लघुकथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37848. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37849. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37850. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37851. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37852. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482मे गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “लघुकथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482मे गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “लघुकथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3792 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: राजदेव मण्डलक अम्बरा

प्रश्न 37853. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राजदेव मण्डलक अम्बरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजदेव मण्डलक अम्बरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2483मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “राजदेव मण्डलक अम्बरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37854. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37855. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37856. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37857. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37858. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37859. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37860. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37861. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37862. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483मे गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483मे गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3793 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"

प्रश्न 37863. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2484मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37864. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37865. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37866. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा

उत्तर: घ. लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा” अछि।

प्रश्न 37867. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37868. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै""क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37869. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37870. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै""केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37871. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37872. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"" प्रविष्टि गद्य, शोध/समीक्षा आ “लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"" प्रविष्टि गद्य, शोध/समीक्षा आ “लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3794 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"

प्रश्न 37873. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2485मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37874. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37875. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37876. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता समीक्षा

उत्तर: घ. कविता समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37877. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37878. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37879. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37880. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37881. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37882. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485मे गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485मे गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3795 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"

प्रश्न 37883. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2486मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37884. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक" ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37885. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक" ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37886. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक" ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37887. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक" ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37888. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक" ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37889. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक" ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37890. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37891. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37892. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486मे गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486मे गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3796 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"

प्रश्न 37893. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2487मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37894. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37895. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट""क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37896. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37897. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37898. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट""क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37899. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37900. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट""केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37901. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37902. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487मे गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487मे गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3797 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह

प्रश्न 37903. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2488मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37904. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37905. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37906. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37907. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37908. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37909. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37910. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37911. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37912. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488मे गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488मे गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3798 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"

प्रश्न 37913. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2489मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37914. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37915. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37916. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37917. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37918. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37919. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37920. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37921. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37922. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489मे गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489मे गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3799 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: सुजीतक जिद्दी

प्रश्न 37923. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुजीतक जिद्दी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुजीतक जिद्दी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2490मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “सुजीतक जिद्दी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37924. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37925. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37926. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37927. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37928. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37929. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37930. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37931. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37932. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490मे गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490मे गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3800 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज

प्रश्न 37933. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2491मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37934. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37935. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37936. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गीत-संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. गीत-संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गीत-संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37937. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गीत-संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत-संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गीत-संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37938. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37939. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37940. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37941. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37942. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491मे गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गीत-संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491मे गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गीत-संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3801 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"

प्रश्न 37943. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2492मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37944. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37945. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?""”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37946. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37947. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37948. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?""क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37949. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37950. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?""केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37951. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37952. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492मे गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492मे गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3802 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी

प्रश्न 37953. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2493मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37954. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37955. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37956. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह-मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा

उत्तर: घ. मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा” अछि।

प्रश्न 37957. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह-मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37958. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह-मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37959. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह-मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37960. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह-मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37961. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह-मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37962. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493मे गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493मे गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3803 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

प्रश्न 37963. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2494मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37964. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37965. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 37966. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन

उत्तर: घ. लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन” अछि।

प्रश्न 37967. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37968. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37969. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37970. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37971. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37972. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494मे गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494मे गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3804 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: पंजी-प्रबन्ध

प्रश्न 37973. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पंजी-प्रबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंजी-प्रबन्ध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2495मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “पंजी-प्रबन्ध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37974. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37975. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 37976. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पञ्जी परम्परा परिचय

उत्तर: घ. पञ्जी परम्परा परिचय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पञ्जी परम्परा परिचय” अछि।

प्रश्न 37977. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पञ्जी परम्परा परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पञ्जी परम्परा परिचय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पञ्जी परम्परा परिचय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37978. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37979. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37980. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37981. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37982. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495मे गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पञ्जी परम्परा परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495मे गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पञ्जी परम्परा परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3805 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मिथिला कला

प्रश्न 37983. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला कला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला कला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2496मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मिथिला कला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37984. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37985. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 37986. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला चित्रकला परिचय

उत्तर: घ. मिथिला चित्रकला परिचय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला चित्रकला परिचय” अछि।

प्रश्न 37987. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला चित्रकला परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला चित्रकला परिचय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला चित्रकला परिचय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37988. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37989. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 37990. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 37991. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 37992. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496मे गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिला चित्रकला परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496मे गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिला चित्रकला परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3806 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)

प्रश्न 37993. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2497मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 37994. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 37995. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/शोध” अछि।

प्रश्न 37996. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विस्मृत साहित्यकारक उद्धार

उत्तर: घ. विस्मृत साहित्यकारक उद्धार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विस्मृत साहित्यकारक उद्धार” अछि।

प्रश्न 37997. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विस्मृत साहित्यकारक उद्धार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विस्मृत साहित्यकारक उद्धार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विस्मृत साहित्यकारक उद्धार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 37998. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 37999. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38000. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38001. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38002. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497मे गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “विस्मृत साहित्यकारक उद्धार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497मे गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “विस्मृत साहित्यकारक उद्धार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3807 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'

प्रश्न 38003. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2498मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38004. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38005. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38006. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संगीत परम्परा

उत्तर: घ. संगीत परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संगीत परम्परा” अछि।

प्रश्न 38007. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संगीत परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संगीत परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संगीत परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38008. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38009. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38010. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38011. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38012. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498मे गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “संगीत परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498मे गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “संगीत परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3808 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)

प्रश्न 38013. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2499मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38014. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38015. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/शोध” अछि।

प्रश्न 38016. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध

उत्तर: घ. ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध” अछि।

प्रश्न 38017. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38018. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38019. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38020. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38021. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38022. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499मे गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499मे गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3809 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य

प्रश्न 38023. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2500मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38024. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38025. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 38026. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक दार्शनिक परम्परा

उत्तर: घ. मिथिलाक दार्शनिक परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक दार्शनिक परम्परा” अछि।

प्रश्न 38027. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक दार्शनिक परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक दार्शनिक परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक दार्शनिक परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38028. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38029. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38030. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38031. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38032. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500मे गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “मिथिलाक दार्शनिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500मे गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “मिथिलाक दार्शनिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3810 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली भाषापाक १-३

प्रश्न 38033. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली भाषापाक १-३

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषापाक १-३

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2501मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिली भाषापाक १-३” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38034. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38035. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषाशास्त्र

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषाशास्त्र

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषाशास्त्र” अछि।

प्रश्न 38036. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषा अध्ययन

उत्तर: घ. मैथिली भाषा अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा अध्ययन” अछि।

प्रश्न 38037. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली भाषा अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38038. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38039. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38040. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38041. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38042. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषा अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषा अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3811 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: की अहाँकेँ बुझल अछि?

प्रश्न 38043. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की अहाँकेँ बुझल अछि?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की अहाँकेँ बुझल अछि?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2502मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “की अहाँकेँ बुझल अछि?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38044. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38045. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38046. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा चेतना जागरण

उत्तर: घ. भाषा चेतना जागरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा चेतना जागरण” अछि।

प्रश्न 38047. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा चेतना जागरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा चेतना जागरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा चेतना जागरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38048. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38049. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38050. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38051. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38052. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502मे गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चेतना जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502मे गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चेतना जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3812 : विदेह-सदेह 30 — श्री मैथिली पुत्र प्रदीप: आध्यात्म

प्रश्न 38053. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आध्यात्म

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आध्यात्म

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2503मे श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक प्रविष्टि “आध्यात्म” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38054. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38055. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आध्यात्मिक निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आध्यात्मिक निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आध्यात्मिक निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38056. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा

उत्तर: घ. आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा” अछि।

प्रश्न 38057. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38058. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्री मैथिली पुत्र प्रदीप, विधा गद्य, उप-विधा आध्यात्मिक निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्री मैथिली पुत्र प्रदीप, विधा गद्य, उप-विधा आध्यात्मिक निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38059. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38060. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आध्यात्मिक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आध्यात्मिक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38061. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38062. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503मे श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” प्रविष्टि गद्य, आध्यात्मिक निबन्ध आ “आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503मे श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” प्रविष्टि गद्य, आध्यात्मिक निबन्ध आ “आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3813 : विदेह-सदेह 30 — धनाकर ठाकुर: प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा

प्रश्न 38063. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2504मे धनाकर ठाकुरक प्रविष्टि “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38064. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38065. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38066. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनुवाद कृति समीक्षा

उत्तर: घ. अनुवाद कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवाद कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38067. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनुवाद कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुवाद कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनुवाद कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38068. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38069. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38070. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38071. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38072. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504मे धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अनुवाद कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504मे धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अनुवाद कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3814 : विदेह-सदेह 30 — धनाकर ठाकुर: जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा

प्रश्न 38073. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2505मे धनाकर ठाकुरक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38074. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38075. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38076. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38077. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38078. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38079. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38080. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38081. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38082. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505मे धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505मे धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3815 : विदेह-सदेह 30 — धनाकर ठाकुर: फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा

प्रश्न 38083. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2506मे धनाकर ठाकुरक प्रविष्टि “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38084. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38085. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38086. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य समीक्षा

उत्तर: घ. बाल साहित्य समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38087. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38088. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38089. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38090. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38091. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38092. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506मे धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “बाल साहित्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506मे धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “बाल साहित्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3816 : विदेह-सदेह 30 — मुन्ना जी: बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा

प्रश्न 38093. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2507मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38094. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38095. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 38096. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक

उत्तर: घ. बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक” अछि।

प्रश्न 38097. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38098. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38099. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38100. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38101. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38102. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507मे मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507मे मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3817 : विदेह-सदेह 30 — मुन्ना जी: विहनि कथा संसार

प्रश्न 38103. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विहनि कथा संसार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विहनि कथा संसार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2508मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “विहनि कथा संसार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38104. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38105. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/आलोचना” अछि।

प्रश्न 38106. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा साहित्य समीक्षा

उत्तर: घ. कथा साहित्य समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा साहित्य समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38107. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा साहित्य समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा साहित्य समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा साहित्य समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38108. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38109. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38110. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38111. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38112. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508मे मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलोचना आ “कथा साहित्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508मे मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलोचना आ “कथा साहित्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3818 : विदेह-सदेह 30 — मुन्ना जी: अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"

प्रश्न 38113. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2509मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38114. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38115. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38116. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38117. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38118. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38119. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38120. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38121. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38122. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509मे मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509मे मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3819 : विदेह-सदेह 30 — मुन्ना जी: अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!

प्रश्न 38123. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2510मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38124. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38125. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38126. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38127. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38128. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38129. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38130. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38131. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38132. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510मे मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510मे मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3820 : विदेह-सदेह 30 — डा. रमण झा: फोंका-एक विहगावलोकन

प्रश्न 38133. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फोंका-एक विहगावलोकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फोंका-एक विहगावलोकन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2511मे डा. रमण झाक प्रविष्टि “फोंका-एक विहगावलोकन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38134. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38135. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/आलोचना” अछि।

प्रश्न 38136. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38137. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38138. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. रमण झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. रमण झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38139. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38140. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38141. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38142. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511मे डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलोचना आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511मे डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलोचना आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3821 : विदेह-सदेह 30 — डा. रमण झा: मैथिली चित्रकथा

प्रश्न 38143. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली चित्रकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली चित्रकथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2512मे डा. रमण झाक प्रविष्टि “मैथिली चित्रकथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38144. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38145. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 38146. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चित्रकथा विधाक अध्ययन

उत्तर: घ. चित्रकथा विधाक अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकथा विधाक अध्ययन” अछि।

प्रश्न 38147. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चित्रकथा विधाक अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्रकथा विधाक अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकथा विधाक अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38148. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. रमण झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. रमण झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38149. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38150. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38151. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38152. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512मे डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “चित्रकथा विधाक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512मे डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “चित्रकथा विधाक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3822 : विदेह-सदेह 30 — जीवकान्त: उत्तराधिकारी आ लेखक

प्रश्न 38153. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उत्तराधिकारी आ लेखक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उत्तराधिकारी आ लेखक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2513मे जीवकान्तक प्रविष्टि “उत्तराधिकारी आ लेखक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38154. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38155. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38156. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखकीय दृष्टि

उत्तर: घ. लेखकीय दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखकीय दृष्टि” अछि।

प्रश्न 38157. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लेखकीय दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेखकीय दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लेखकीय दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38158. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38159. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38160. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38161. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38162. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513मे जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लेखकीय दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513मे जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लेखकीय दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3823 : विदेह-सदेह 30 — जीवकान्त: जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर

प्रश्न 38163. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2514मे जीवकान्तक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38164. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38165. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38166. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपन्यास समीक्षा

उत्तर: घ. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38167. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपन्यास समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38168. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38169. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38170. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38171. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38172. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514मे जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514मे जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3824 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. राजीव कुमार वर्मा: कारी घटा बरसैत मेघ

प्रश्न 38173. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कारी घटा बरसैत मेघ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कारी घटा बरसैत मेघ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2515मे डॉ. राजीव कुमार वर्माक प्रविष्टि “कारी घटा बरसैत मेघ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38174. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38175. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/कथा” अछि।

प्रश्न 38176. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति आ भावनात्मक गद्य

उत्तर: घ. प्रकृति आ भावनात्मक गद्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति आ भावनात्मक गद्य” अछि।

प्रश्न 38177. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति आ भावनात्मक गद्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति आ भावनात्मक गद्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति आ भावनात्मक गद्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38178. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. राजीव कुमार वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. राजीव कुमार वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38179. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38180. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38181. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38182. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515मे डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/कथा आ “प्रकृति आ भावनात्मक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515मे डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/कथा आ “प्रकृति आ भावनात्मक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3825 : विदेह-सदेह 30 — मानेश्वर मनुज: मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता

प्रश्न 38183. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2516मे मानेश्वर मनुजक प्रविष्टि “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38184. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38185. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38186. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक आलोचना

उत्तर: घ. साहित्यिक आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आलोचना” अछि।

प्रश्न 38187. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38188. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38189. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38190. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38191. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38192. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516मे मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516मे मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3826 : विदेह-सदेह 30 — मानेश्वर मनुज: मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू

प्रश्न 38193. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2517मे मानेश्वर मनुजक प्रविष्टि “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38194. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38195. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्र/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्र/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38196. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श

उत्तर: घ. सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श” अछि।

प्रश्न 38197. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38198. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा पत्र/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा पत्र/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38199. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38200. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्र/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्र/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38201. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38202. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517मे मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” प्रविष्टि गद्य, पत्र/निबन्ध आ “सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517मे मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” प्रविष्टि गद्य, पत्र/निबन्ध आ “सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3827 : विदेह-सदेह 30 — ओम प्रकाश झा: भोथ हथियार

प्रश्न 38203. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भोथ हथियार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोथ हथियार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2518मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “भोथ हथियार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38204. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38205. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38206. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार

उत्तर: घ. गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार” अछि।

प्रश्न 38207. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38208. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38209. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38210. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38211. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38212. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518मे ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518मे ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3828 : विदेह-सदेह 30 — ओम प्रकाश झा: मैथिली बाल गजलक अवधारणा

प्रश्न 38213. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली बाल गजलक अवधारणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली बाल गजलक अवधारणा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2519मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38214. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38215. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38216. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल गजल सिद्धान्त

उत्तर: घ. बाल गजल सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल गजल सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 38217. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल गजल सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गजल सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38218. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38219. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38220. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचना/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचना/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38221. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38222. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519मे ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/निबन्ध आ “बाल गजल सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519मे ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/निबन्ध आ “बाल गजल सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3829 : विदेह-सदेह 30 — ओम प्रकाश झा: बहुरूपिया रचना मे

प्रश्न 38223. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बहुरूपिया रचना मे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुरूपिया रचना मे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2520मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “बहुरूपिया रचना मे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38224. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38225. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38226. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रचना प्रक्रिया विमर्श

उत्तर: घ. रचना प्रक्रिया विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रचना प्रक्रिया विमर्श” अछि।

प्रश्न 38227. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रचना प्रक्रिया विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रचना प्रक्रिया विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रचना प्रक्रिया विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38228. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38229. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38230. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38231. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38232. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520मे ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रचना प्रक्रिया विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520मे ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रचना प्रक्रिया विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3830 : विदेह-सदेह 30 — ओम प्रकाश झा: घोघ उठबैत गजल

प्रश्न 38233. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घोघ उठबैत गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घोघ उठबैत गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2521मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “घोघ उठबैत गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38234. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38235. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 38236. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल आन्दोलन

उत्तर: घ. गजल आन्दोलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 38237. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल आन्दोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38238. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38239. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38240. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38241. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38242. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521मे ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521मे ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3831 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. बचेश्वर झा: समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल

प्रश्न 38243. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2522मे डॉ. बचेश्वर झाक प्रविष्टि “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38244. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38245. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38246. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38247. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38248. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38249. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38250. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38251. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38252. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522मे डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522मे डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3832 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान

प्रश्न 38253. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2523मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38254. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38255. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 38256. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाटक इतिहास

उत्तर: घ. नाटक इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक इतिहास” अछि।

प्रश्न 38257. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाटक इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38258. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38259. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38260. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38261. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38262. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “नाटक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “नाटक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3833 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)

प्रश्न 38263. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2524मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38264. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38265. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38266. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38267. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38268. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38269. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38270. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38271. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38272. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3834 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा

प्रश्न 38273. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2525मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38274. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38275. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38276. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38277. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38278. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38279. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38280. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38281. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38282. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3835 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा (अर्चिस)

प्रश्न 38283. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा (अर्चिस)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा (अर्चिस)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2526मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा (अर्चिस)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38284. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38285. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38286. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38287. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38288. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38289. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38290. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38291. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38292. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3836 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस

प्रश्न 38293. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2527मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38294. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38295. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38296. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षा निबन्ध

उत्तर: घ. शिक्षा निबन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38297. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षा निबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा निबन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा निबन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38298. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38299. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38300. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38301. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38302. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शिक्षा निबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शिक्षा निबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3837 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)

प्रश्न 38303. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2528मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38304. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38305. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38306. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाटक समीक्षा

उत्तर: घ. नाटक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38307. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाटक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38308. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38309. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38310. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38311. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38312. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3838 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा

प्रश्न 38313. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2529मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38314. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38315. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38316. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाटक समीक्षा

उत्तर: घ. नाटक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38317. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाटक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38318. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38319. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38320. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38321. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38322. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3839 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)

प्रश्न 38323. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2530मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38324. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38325. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38326. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38327. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38328. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38329. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38330. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38331. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38332. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3840 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान

प्रश्न 38333. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2531मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38334. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38335. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 38336. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपन्यास साहित्य इतिहास

उत्तर: घ. उपन्यास साहित्य इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास साहित्य इतिहास” अछि।

प्रश्न 38337. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपन्यास साहित्य इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपन्यास साहित्य इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास साहित्य इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38338. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38339. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38340. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38341. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38342. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “उपन्यास साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “उपन्यास साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3841 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': पृथ्वीपुत्र

प्रश्न 38343. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पृथ्वीपुत्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पृथ्वीपुत्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2532मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “पृथ्वीपुत्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38344. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38345. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38346. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38347. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38348. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38349. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38350. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38351. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38352. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3842 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान

प्रश्न 38353. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2533मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38354. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38355. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 38356. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा साहित्य इतिहास

उत्तर: घ. कथा साहित्य इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा साहित्य इतिहास” अछि।

प्रश्न 38357. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा साहित्य इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा साहित्य इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा साहित्य इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38358. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38359. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38360. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38361. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38362. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “कथा साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “कथा साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3843 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात

प्रश्न 38363. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2534मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38364. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38365. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38366. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथाकाव्य समीक्षा

उत्तर: घ. कथाकाव्य समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथाकाव्य समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38367. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथाकाव्य समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथाकाव्य समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथाकाव्य समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38368. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38369. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38370. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38371. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38372. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथाकाव्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथाकाव्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3844 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': क्षणप्रभा

प्रश्न 38373. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. क्षणप्रभा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षणप्रभा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2535मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “क्षणप्रभा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38374. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38375. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38376. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38377. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38378. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38379. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38380. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38381. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38382. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3845 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': बहिरा नाचए अपने ताल

प्रश्न 38383. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बहिरा नाचए अपने ताल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहिरा नाचए अपने ताल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2536मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “बहिरा नाचए अपने ताल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38384. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38385. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38386. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38387. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38388. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38389. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38390. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38391. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38392. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3846 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मिथिलाक लोक देवता

प्रश्न 38393. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक लोक देवता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक लोक देवता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2537मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मिथिलाक लोक देवता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38394. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38395. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38396. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक संस्कृति अध्ययन

उत्तर: घ. लोक संस्कृति अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक संस्कृति अध्ययन” अछि।

प्रश्न 38397. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक संस्कृति अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक संस्कृति अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक संस्कृति अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38398. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38399. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38400. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38401. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38402. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “लोक संस्कृति अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “लोक संस्कृति अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3847 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श

प्रश्न 38403. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2538मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38404. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38405. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38406. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक विमर्श

उत्तर: घ. सामाजिक विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विमर्श” अछि।

प्रश्न 38407. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38408. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38409. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38410. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38411. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38412. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3848 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श

प्रश्न 38413. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2539मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38414. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38415. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38416. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी विमर्श समीक्षा

उत्तर: घ. नारी विमर्श समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी विमर्श समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38417. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी विमर्श समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी विमर्श समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी विमर्श समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38418. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38419. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38420. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38421. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38422. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3849 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि

प्रश्न 38423. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2540मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38424. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38425. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38426. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38427. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38428. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38429. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38430. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38431. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38432. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3850 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': निश्तुकी

प्रश्न 38433. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निश्तुकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निश्तुकी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2541मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “निश्तुकी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38434. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38435. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38436. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38437. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38438. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38439. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38440. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38441. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38442. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3851 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)

प्रश्न 38443. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2542मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38444. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38445. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38446. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38447. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38448. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38449. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38450. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38451. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38452. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3852 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)

प्रश्न 38453. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2543मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38454. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38455. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38456. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता संकलन समीक्षा

उत्तर: घ. कविता संकलन समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संकलन समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38457. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता संकलन समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता संकलन समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संकलन समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38458. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38459. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38460. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38461. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38462. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संकलन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संकलन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3853 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)

प्रश्न 38463. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2544मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38464. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38465. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38466. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38467. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38468. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38469. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38470. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38471. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38472. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3854 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

प्रश्न 38473. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2545मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38474. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38475. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38476. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चित्रकथा समीक्षा

उत्तर: घ. चित्रकथा समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकथा समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38477. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चित्रकथा समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्रकथा समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38478. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38479. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38480. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38481. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38482. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3855 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- तरेगन

प्रश्न 38483. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- तरेगन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- तरेगन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2546मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- तरेगन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38484. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38485. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38486. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38487. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38488. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38489. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38490. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38491. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38492. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3856 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)

प्रश्न 38493. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2547मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38494. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38495. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38496. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38497. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38498. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38499. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38500. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)”कँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38501. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38502. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3857 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान

प्रश्न 38503. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2548मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38504. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38505. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 38506. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य इतिहास

उत्तर: घ. बाल साहित्य इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य इतिहास” अछि।

प्रश्न 38507. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38508. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38509. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38510. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38511. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38512. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “बाल साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “बाल साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3858 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण

प्रश्न 38513. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2549मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38514. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38515. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 38516. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित विमर्श समालोचक

उत्तर: घ. दलित विमर्श समालोचक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित विमर्श समालोचक” अछि।

प्रश्न 38517. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित विमर्श समालोचक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित विमर्श समालोचक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित विमर्श समालोचक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38518. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38519. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38520. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38521. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38522. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “दलित विमर्श समालोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “दलित विमर्श समालोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3859 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': पोथी- समीक्षा-भावांजलि

प्रश्न 38523. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोथी- समीक्षा-भावांजलि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोथी- समीक्षा-भावांजलि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2550मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38524. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38525. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38526. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38527. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38528. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38529. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38530. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38531. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38532. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3860 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': रमाजीक काव्य यात्रा

प्रश्न 38533. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रमाजीक काव्य यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रमाजीक काव्य यात्रा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2551मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “रमाजीक काव्य यात्रा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38534. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38535. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38536. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. काव्य यात्रा समीक्षा

उत्तर: घ. काव्य यात्रा समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “काव्य यात्रा समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38537. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. काव्य यात्रा समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काव्य यात्रा समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काव्य यात्रा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38538. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38539. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38540. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38541. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38542. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “काव्य यात्रा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “काव्य यात्रा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3861 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)

प्रश्न 38543. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2552मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38544. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38545. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38546. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता संकलन समीक्षा

उत्तर: घ. कविता संकलन समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संकलन समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38547. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता संकलन समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता संकलन समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संकलन समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38548. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38549. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38550. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38551. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38552. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संकलन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संकलन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3862 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- बिन वाती दीप जरय

प्रश्न 38553. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- बिन वाती दीप जरय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- बिन वाती दीप जरय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2553मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38554. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38555. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38556. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38557. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38558. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38559. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38560. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38561. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38562. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3863 : विदेह-सदेह 30 — रमाकान्त राय 'रमा': गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा

प्रश्न 38563. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2554मे रमाकान्त राय 'रमा'क प्रविष्टि “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38564. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38565. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38566. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38567. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38568. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38569. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38570. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38571. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38572. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554मे रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554मे रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3864 : विदेह-सदेह 30 — रमाकान्त राय 'रमा': मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु

प्रश्न 38573. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2555मे रमाकान्त राय 'रमा'क प्रविष्टि “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38574. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38575. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38576. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली पत्रकारिता इतिहास

उत्तर: घ. मैथिली पत्रकारिता इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली पत्रकारिता इतिहास” अछि।

प्रश्न 38577. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली पत्रकारिता इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली पत्रकारिता इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली पत्रकारिता इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38578. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38579. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38580. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38581. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38582. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555मे रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “मैथिली पत्रकारिता इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555मे रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “मैथिली पत्रकारिता इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3865 : विदेह-सदेह 30 — रमाकान्त राय 'रमा': नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी

प्रश्न 38583. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2556मे रमाकान्त राय 'रमा'क प्रविष्टि “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38584. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38585. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 38586. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कवि व्यक्तित्व आलोचना

उत्तर: घ. कवि व्यक्तित्व आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि व्यक्तित्व आलोचना” अछि।

प्रश्न 38587. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कवि व्यक्तित्व आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि व्यक्तित्व आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि व्यक्तित्व आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38588. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38589. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38590. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38591. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38592. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556मे रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “कवि व्यक्तित्व आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556मे रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “कवि व्यक्तित्व आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3866 : विदेह-सदेह 30 — रमाकान्त राय 'रमा': पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास

प्रश्न 38593. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2557मे रमाकान्त राय 'रमा'क प्रविष्टि “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38594. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38595. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38596. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपन्यास समीक्षा

उत्तर: घ. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38597. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपन्यास समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38598. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38599. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38600. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38601. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38602. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557मे रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557मे रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3867 : विदेह-सदेह 30 — देवशंकर नवीन: लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व

प्रश्न 38603. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2558मे देवशंकर नवीनक प्रविष्टि “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38604. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38605. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 38606. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लघुकथा शिल्प

उत्तर: घ. लघुकथा शिल्प

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लघुकथा शिल्प” अछि।

प्रश्न 38607. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लघुकथा शिल्प

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा शिल्प

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लघुकथा शिल्प” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38608. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38609. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38610. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38611. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38612. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558मे देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/आलोचना आ “लघुकथा शिल्प” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558मे देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/आलोचना आ “लघुकथा शिल्प” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3868 : विदेह-सदेह 30 — देवशंकर नवीन: अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता

प्रश्न 38613. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2559मे देवशंकर नवीनक प्रविष्टि “अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38614. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38615. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38616. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता

उत्तर: घ. साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता” अछि।

प्रश्न 38617. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38618. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38619. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38620. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38621. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38622. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559मे देवशंकर नवीनक “अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559मे देवशंकर नवीनक “अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3869 : विदेह-सदेह 30 — देवशंकर नवीन: बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)

प्रश्न 38623. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2560मे देवशंकर नवीनक प्रविष्टि “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38624. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38625. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 38626. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपन्यास समालोचना

उत्तर: घ. उपन्यास समालोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समालोचना” अछि।

प्रश्न 38627. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपन्यास समालोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपन्यास समालोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समालोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38628. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38629. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38630. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38631. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38632. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560मे देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “उपन्यास समालोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560मे देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “उपन्यास समालोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3870 : विदेह-सदेह 30 — मुन्नी कामत: कतऽ जा रहल छी हम!

प्रश्न 38633. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कतऽ जा रहल छी हम!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतऽ जा रहल छी हम!

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2561मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “कतऽ जा रहल छी हम!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38634. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38635. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38636. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्मचिन्तनपरक गद्य

उत्तर: घ. आत्मचिन्तनपरक गद्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मचिन्तनपरक गद्य” अछि।

प्रश्न 38637. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्मचिन्तनपरक गद्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मचिन्तनपरक गद्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मचिन्तनपरक गद्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38638. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38639. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38640. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38641. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38642. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561मे मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आत्मचिन्तनपरक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561मे मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आत्मचिन्तनपरक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3871 : विदेह-सदेह 30 — जगदानन्द झा 'मनु': करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह

प्रश्न 38643. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2562मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38644. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38645. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।

प्रश्न 38646. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेरक जीवनी

उत्तर: घ. प्रेरक जीवनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरक जीवनी” अछि।

प्रश्न 38647. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेरक जीवनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेरक जीवनी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरक जीवनी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38648. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38649. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38650. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38651. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38652. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562मे जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “प्रेरक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562मे जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “प्रेरक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3872 : विदेह-सदेह 30 — जगदानन्द झा 'मनु': संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ

प्रश्न 38653. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2563मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38654. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38655. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।

प्रश्न 38656. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेरक जीवनी

उत्तर: घ. प्रेरक जीवनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरक जीवनी” अछि।

प्रश्न 38657. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेरक जीवनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेरक जीवनी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरक जीवनी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38658. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38659. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38660. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38661. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38662. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563मे जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “प्रेरक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563मे जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “प्रेरक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3873 : विदेह-सदेह 30 — जगदानन्द झा 'मनु': बाल गजलक अवधारणा

प्रश्न 38663. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजलक अवधारणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजलक अवधारणा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2564मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “बाल गजलक अवधारणा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38664. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38665. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38666. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य चिन्तन

उत्तर: घ. बाल साहित्य चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य चिन्तन” अछि।

प्रश्न 38667. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38668. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38669. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38670. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38671. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38672. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564मे जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564मे जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3874 : विदेह-सदेह 30 — चंदन कुमार झा: मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल

प्रश्न 38673. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2565मे चंदन कुमार झाक प्रविष्टि “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38674. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38675. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 38676. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य समीक्षक

उत्तर: घ. बाल साहित्य समीक्षक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य समीक्षक” अछि।

प्रश्न 38677. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य समीक्षक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य समीक्षक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38678. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38679. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38680. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38681. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38682. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565मे चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565मे चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3875 : विदेह-सदेह 30 — चंदन कुमार झा: मिथिला-मैथिली आंदोलन

प्रश्न 38683. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला-मैथिली आंदोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला-मैथिली आंदोलन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2566मे चंदन कुमार झाक प्रविष्टि “मिथिला-मैथिली आंदोलन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38684. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38685. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38686. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक आन्दोलन समीक्षक

उत्तर: घ. सामाजिक आन्दोलन समीक्षक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक आन्दोलन समीक्षक” अछि।

प्रश्न 38687. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक आन्दोलन समीक्षक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक आन्दोलन समीक्षक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक आन्दोलन समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38688. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38689. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38690. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38691. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38692. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566मे चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक आन्दोलन समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566मे चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक आन्दोलन समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3876 : विदेह-सदेह 30 — उमेश मण्डल: मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य

प्रश्न 38693. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2567मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38694. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38695. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 38696. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. युवा साहित्य विश्लेषण

उत्तर: घ. युवा साहित्य विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “युवा साहित्य विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 38697. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. युवा साहित्य विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युवा साहित्य विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “युवा साहित्य विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38698. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38699. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38700. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38701. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38702. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567मे उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “युवा साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567मे उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “युवा साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3877 : विदेह-सदेह 30 — श्री राज: यात्रीक कवितामे गाम

प्रश्न 38703. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यात्रीक कवितामे गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रीक कवितामे गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2568मे श्री राजक प्रविष्टि “यात्रीक कवितामे गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38704. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38705. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 38706. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण

उत्तर: घ. कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 38707. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38708. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्री राज, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्री राज, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38709. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38710. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38711. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38712. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568मे श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568मे श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3878 : विदेह-सदेह 30 — मिहिर झा: बाल गजल

प्रश्न 38713. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2569मे मिहिर झाक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38714. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38715. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 38716. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल गजल विमर्श

उत्तर: घ. बाल गजल विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल गजल विमर्श” अछि।

प्रश्न 38717. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल गजल विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गजल विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38718. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिहिर झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिहिर झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38719. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38720. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38721. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38722. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569मे मिहिर झाक “बाल गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल गजल विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569मे मिहिर झाक “बाल गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल गजल विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3879 : विदेह-सदेह 30 — अमित मिश्र: बाल गजल: कोमल करेजक आखर

प्रश्न 38723. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल गजल: कोमल करेजक आखर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल: कोमल करेजक आखर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2570मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38724. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38725. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 38726. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य विश्लेषण

उत्तर: घ. बाल साहित्य विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 38727. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38728. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38729. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38730. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38731. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38732. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570मे अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570मे अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3880 : विदेह-सदेह 30 — अमित मिश्र: कतिआएल आखर

प्रश्न 38733. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कतिआएल आखर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतिआएल आखर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2571मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “कतिआएल आखर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38734. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38735. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38736. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा शैली विश्लेषण

उत्तर: घ. भाषा शैली विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा शैली विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 38737. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा शैली विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा शैली विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा शैली विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38738. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38739. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38740. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38741. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38742. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571मे अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा शैली विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571मे अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा शैली विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3881 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हार: आधुनिकताक समस्या (आलोचना)

प्रश्न 38743. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आधुनिकताक समस्या (आलोचना)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिकताक समस्या (आलोचना)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2572मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38744. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38745. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 38746. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल आन्दोलनक प्रणेता

उत्तर: घ. गजल आन्दोलनक प्रणेता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल आन्दोलनक प्रणेता” अछि।

प्रश्न 38747. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल आन्दोलनक प्रणेता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल आन्दोलनक प्रणेता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल आन्दोलनक प्रणेता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38748. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38749. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38750. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38751. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38752. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572मे आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल आन्दोलनक प्रणेता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572मे आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल आन्दोलनक प्रणेता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3882 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हार: गजलक साक्ष्य- समालोचना

प्रश्न 38753. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजलक साक्ष्य- समालोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजलक साक्ष्य- समालोचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2573मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “गजलक साक्ष्य- समालोचना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38754. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38755. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 38756. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल शिल्प आलोचक

उत्तर: घ. गजल शिल्प आलोचक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल शिल्प आलोचक” अछि।

प्रश्न 38757. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल शिल्प आलोचक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल शिल्प आलोचक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल शिल्प आलोचक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38758. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38759. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38760. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38761. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38762. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573मे आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “गजल शिल्प आलोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573मे आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “गजल शिल्प आलोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3883 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हार: की थिक बाल गजल

प्रश्न 38763. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की थिक बाल गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की थिक बाल गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2574मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “की थिक बाल गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38764. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38765. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38766. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल गजल सिद्धान्त

उत्तर: घ. बाल गजल सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल गजल सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 38767. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल गजल सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल गजल सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गजल सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38768. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38769. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38770. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38771. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38772. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574मे आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल गजल सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574मे आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल गजल सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3884 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हार: अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि

प्रश्न 38773. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2575मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38774. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38775. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38776. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चिन्तन

उत्तर: घ. सामाजिक चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चिन्तन” अछि।

प्रश्न 38777. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38778. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38779. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38780. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38781. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38782. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575मे आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575मे आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3885 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हार: बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान

प्रश्न 38783. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2576मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38784. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38785. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38786. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाट्य समीक्षा

उत्तर: घ. नाट्य समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाट्य समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38787. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाट्य समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाट्य समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाट्य समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38788. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38789. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38790. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38791. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38792. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576मे आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” प्रविष्टि गद्य, नाटक समीक्षा आ “नाट्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576मे आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” प्रविष्टि गद्य, नाटक समीक्षा आ “नाट्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3886 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हार: काफिया, काफिया आ बहर

प्रश्न 38793. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. काफिया, काफिया आ बहर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काफिया, काफिया आ बहर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2577मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “काफिया, काफिया आ बहर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38794. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38795. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38796. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल शिल्प गहन अध्ययन

उत्तर: घ. गजल शिल्प गहन अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल शिल्प गहन अध्ययन” अछि।

प्रश्न 38797. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल शिल्प गहन अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल शिल्प गहन अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल शिल्प गहन अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38798. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38799. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38800. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38801. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38802. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577मे आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “गजल शिल्प गहन अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577मे आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “गजल शिल्प गहन अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3887 : विदेह-सदेह 30 — बलराम साहु: विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति

प्रश्न 38803. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2578मे बलराम साहुक प्रविष्टि “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38804. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38805. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38806. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक संस्कृति चिन्तन

उत्तर: घ. लोक संस्कृति चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक संस्कृति चिन्तन” अछि।

प्रश्न 38807. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक संस्कृति चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक संस्कृति चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक संस्कृति चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38808. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बलराम साहु, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बलराम साहु, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38809. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38810. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38811. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38812. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578मे बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578मे बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3888 : विदेह-सदेह 30 — शत्रुधन प्रसाद साह: मैथिली महिला आ जिद्दी

प्रश्न 38813. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली महिला आ जिद्दी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली महिला आ जिद्दी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2579मे शत्रुधन प्रसाद साहक प्रविष्टि “मैथिली महिला आ जिद्दी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38814. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38815. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38816. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी विमर्श आ कथा समीक्षा

उत्तर: घ. नारी विमर्श आ कथा समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी विमर्श आ कथा समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38817. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी विमर्श आ कथा समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी विमर्श आ कथा समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी विमर्श आ कथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38818. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शत्रुधन प्रसाद साह, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शत्रुधन प्रसाद साह, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38819. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38820. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38821. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38822. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579मे शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श आ कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579मे शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श आ कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3889 : विदेह-सदेह 30 — विजय मस्त: सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक

प्रश्न 38823. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2580मे विजय मस्तक प्रविष्टि “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38824. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38825. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38826. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन

उत्तर: घ. कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 38827. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38828. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विजय मस्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विजय मस्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38829. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38830. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38831. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38832. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580मे विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580मे विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3890 : विदेह-सदेह 30 — कैलास दास: महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'

प्रश्न 38833. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2581मे कैलास दासक प्रविष्टि “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38834. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38835. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 38836. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी साहित्य समालोचक

उत्तर: घ. नारी साहित्य समालोचक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी साहित्य समालोचक” अछि।

प्रश्न 38837. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी साहित्य समालोचक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी साहित्य समालोचक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी साहित्य समालोचक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38838. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38839. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38840. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38841. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38842. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581मे कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी साहित्य समालोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581मे कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी साहित्य समालोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3891 : विदेह-सदेह 30 — कैलास दास: 'अंगना सुखल घरमे पानि'

प्रश्न 38843. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक “'अंगना सुखल घरमे पानि'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'अंगना सुखल घरमे पानि'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'अंगना सुखल घरमे पानि'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2582मे कैलास दासक प्रविष्टि “'अंगना सुखल घरमे पानि'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38844. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38845. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "समीक्षा" अछि।

प्रश्न 38846. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "कृति समीक्षा" अछि।

प्रश्न 38847. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "कृति समीक्षा" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38848. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38849. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38850. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक “'अंगना सुखल घरमे पानि'”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38851. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक “'अंगना सुखल घरमे पानि'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38852. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582मे कैलास दासक “'अंगना सुखल घरमे पानि'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582मे कैलास दासक “'अंगना सुखल घरमे पानि'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3892 : विदेह-सदेह 30 — कैलास दास: खोजय पड़त मातृत्व बालगीत

प्रश्न 38853. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खोजय पड़त मातृत्व बालगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खोजय पड़त मातृत्व बालगीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2583मे कैलास दासक प्रविष्टि “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38854. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38855. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38856. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य खोज

उत्तर: घ. बाल साहित्य खोज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य खोज” अछि।

प्रश्न 38857. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य खोज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य खोज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य खोज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38858. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38859. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38860. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38861. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38862. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583मे कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य खोज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583मे कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य खोज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3893 : विदेह-सदेह 30 — कैलास दास: म्याराथन दौड़ आ जनकपुर

प्रश्न 38863. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. म्याराथन दौड़ आ जनकपुर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. म्याराथन दौड़ आ जनकपुर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2584मे कैलास दासक प्रविष्टि “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38864. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38865. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38866. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक सरोकार

उत्तर: घ. सामाजिक सरोकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सरोकार” अछि।

प्रश्न 38867. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक सरोकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक सरोकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सरोकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38868. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38869. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38870. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38871. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38872. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584मे कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक सरोकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584मे कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक सरोकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3894 : विदेह-सदेह 30 — डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन": पंचदेवोपासक भूमि मिथिला

प्रश्न 38873. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पंचदेवोपासक भूमि मिथिला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंचदेवोपासक भूमि मिथिला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2585मे डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क प्रविष्टि “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38874. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38875. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38876. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पवित्र भूगोल

उत्तर: घ. मिथिलाक पवित्र भूगोल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पवित्र भूगोल” अछि।

प्रश्न 38877. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पवित्र भूगोल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पवित्र भूगोल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पवित्र भूगोल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38878. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन", विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन", विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38879. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38880. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38881. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38882. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585मे डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मिथिलाक पवित्र भूगोल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585मे डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मिथिलाक पवित्र भूगोल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3895 : विदेह-सदेह 30 — मनोज मुक्ति: त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास

प्रश्न 38883. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2586मे मनोज मुक्तिक प्रविष्टि “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38884. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38885. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38886. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली प्रविधि

उत्तर: घ. मैथिली प्रविधि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली प्रविधि” अछि।

प्रश्न 38887. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली प्रविधि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली प्रविधि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली प्रविधि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38888. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38889. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38890. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38891. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38892. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586मे मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली प्रविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586मे मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली प्रविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3896 : विदेह-सदेह 30 — मनोज मुक्ति: मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत

प्रश्न 38893. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2587मे मनोज मुक्तिक प्रविष्टि “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38894. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38895. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38896. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक पर्व

उत्तर: घ. लोक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक पर्व” अछि।

प्रश्न 38897. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38898. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38899. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38900. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38901. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38902. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587मे मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587मे मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3897 : विदेह-सदेह 30 — मनोज मुक्ति: जितिया पावनि

प्रश्न 38903. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जितिया पावनि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जितिया पावनि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2588मे मनोज मुक्तिक प्रविष्टि “जितिया पावनि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38904. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38905. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38906. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक पर्व

उत्तर: घ. लोक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक पर्व” अछि।

प्रश्न 38907. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38908. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38909. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38910. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38911. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38912. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588मे मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588मे मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3898 : विदेह-सदेह 30 — मनोज मुक्ति: मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)

प्रश्न 38913. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2589मे मनोज मुक्तिक प्रविष्टि “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38914. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38915. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 38916. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक पत्रकारिता

उत्तर: घ. सांस्कृतिक पत्रकारिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक पत्रकारिता” अछि।

प्रश्न 38917. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक पत्रकारिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक पत्रकारिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38918. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38919. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38920. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38921. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38922. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589मे मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “सांस्कृतिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589मे मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “सांस्कृतिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3899 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': शब्द विभक्ति सम्वाद

प्रश्न 38923. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शब्द विभक्ति सम्वाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शब्द विभक्ति सम्वाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2590मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “शब्द विभक्ति सम्वाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38924. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38925. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।

प्रश्न 38926. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास

उत्तर: घ. साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास” अछि।

प्रश्न 38927. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38928. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38929. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38930. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38931. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38932. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3900 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': अनुवाद

प्रश्न 38933. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2591मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “अनुवाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38934. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38935. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38936. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनुवाद चिन्तन

उत्तर: घ. अनुवाद चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवाद चिन्तन” अछि।

प्रश्न 38937. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनुवाद चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुवाद चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनुवाद चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38938. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38939. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38940. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38941. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38942. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “अनुवाद चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “अनुवाद चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3901 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी

प्रश्न 38943. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2592मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38944. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38945. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इतिहास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इतिहास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास” अछि।

प्रश्न 38946. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली शिक्षा इतिहास

उत्तर: घ. मैथिली शिक्षा इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली शिक्षा इतिहास” अछि।

प्रश्न 38947. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली शिक्षा इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली शिक्षा इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली शिक्षा इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38948. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा इतिहास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा इतिहास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38949. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38950. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38951. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38952. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” प्रविष्टि गद्य, इतिहास आ “मैथिली शिक्षा इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” प्रविष्टि गद्य, इतिहास आ “मैथिली शिक्षा इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3902 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे

प्रश्न 38953. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2593मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38954. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38955. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इतिहास/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इतिहास/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 38956. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह आर्काइव

उत्तर: घ. विदेह आर्काइव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह आर्काइव” अछि।

प्रश्न 38957. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह आर्काइव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह आर्काइव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह आर्काइव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38958. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा इतिहास/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा इतिहास/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38959. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38960. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ इतिहास/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ इतिहास/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38961. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38962. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” प्रविष्टि गद्य, इतिहास/निबन्ध आ “विदेह आर्काइव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” प्रविष्टि गद्य, इतिहास/निबन्ध आ “विदेह आर्काइव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3903 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री

प्रश्न 38963. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2594मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38964. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38965. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।

प्रश्न 38966. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दलित लोकगाथा शोध

उत्तर: घ. दलित लोकगाथा शोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित लोकगाथा शोध” अछि।

प्रश्न 38967. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दलित लोकगाथा शोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दलित लोकगाथा शोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित लोकगाथा शोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38968. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38969. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38970. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38971. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38972. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “दलित लोकगाथा शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “दलित लोकगाथा शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3904 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा

प्रश्न 38973. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2595मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38974. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38975. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुवाद

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुवाद

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद” अछि।

प्रश्न 38976. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानवाधिकार अनुवाद

उत्तर: घ. मानवाधिकार अनुवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानवाधिकार अनुवाद” अछि।

प्रश्न 38977. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानवाधिकार अनुवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानवाधिकार अनुवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानवाधिकार अनुवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38978. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38979. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38980. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38981. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38982. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद आ “मानवाधिकार अनुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद आ “मानवाधिकार अनुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3905 : विदेह-सदेह 30 — हृदय नारायण झा: लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत

प्रश्न 38983. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2596मे हृदय नारायण झाक प्रविष्टि “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38984. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38985. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/संकलन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/संकलन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/संकलन” अछि।

प्रश्न 38986. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत संरक्षण

उत्तर: घ. लोकगीत संरक्षण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत संरक्षण” अछि।

प्रश्न 38987. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत संरक्षण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत संरक्षण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत संरक्षण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38988. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हृदय नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध/संकलन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हृदय नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध/संकलन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38989. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 38990. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/संकलनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/संकलनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 38991. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 38992. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596मे हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” प्रविष्टि गद्य, शोध/संकलन आ “लोकगीत संरक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596मे हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” प्रविष्टि गद्य, शोध/संकलन आ “लोकगीत संरक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3906 : विदेह-सदेह 30 — कृपानन्द झा: मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र

प्रश्न 38993. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2597मे कृपानन्द झाक प्रविष्टि “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 38994. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 38995. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।

प्रश्न 38996. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक कथा

उत्तर: घ. राजनीतिक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक कथा” अछि।

प्रश्न 38997. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 38998. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कृपानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कृपानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 38999. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39000. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39001. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39002. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597मे कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “राजनीतिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597मे कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “राजनीतिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3907 : विदेह-सदेह 30 — कृपानन्द झा: चौकपर आणविक समझौता

प्रश्न 39003. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चौकपर आणविक समझौता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चौकपर आणविक समझौता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2598मे कृपानन्द झाक प्रविष्टि “चौकपर आणविक समझौता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39004. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39005. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 39006. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परमाणु राजनीति

उत्तर: घ. परमाणु राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परमाणु राजनीति” अछि।

प्रश्न 39007. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परमाणु राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परमाणु राजनीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परमाणु राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39008. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कृपानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कृपानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39009. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39010. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39011. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39012. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598मे कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “परमाणु राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598मे कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “परमाणु राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3908 : विदेह-सदेह 30 — महेन्द्र मलंगिया: मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व

प्रश्न 39013. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2599मे महेन्द्र मलंगियाक प्रविष्टि “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39014. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39015. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक/आलोचना” अछि।

प्रश्न 39016. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण

उत्तर: घ. मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण” अछि।

प्रश्न 39017. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39018. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा नाटक/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा नाटक/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39019. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39020. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39021. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39022. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599मे महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि गद्य, नाटक/आलोचना आ “मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599मे महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि गद्य, नाटक/आलोचना आ “मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3909 : विदेह-सदेह 30 — महेन्द्र मलंगिया: प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन

प्रश्न 39023. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2600मे महेन्द्र मलंगियाक प्रविष्टि “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39024. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39025. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 39026. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगकर्मी व्यक्तित्व आलोचना

उत्तर: घ. रंगकर्मी व्यक्तित्व आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगकर्मी व्यक्तित्व आलोचना” अछि।

प्रश्न 39027. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगकर्मी व्यक्तित्व आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगकर्मी व्यक्तित्व आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगकर्मी व्यक्तित्व आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39028. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39029. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39030. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39031. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39032. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600मे महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगकर्मी व्यक्तित्व आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600मे महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगकर्मी व्यक्तित्व आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3910 : विदेह-सदेह 30 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

प्रश्न 39033. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2601मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रविष्टि “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39034. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39035. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 39036. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल शिल्प विश्लेषण

उत्तर: घ. गजल शिल्प विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल शिल्प विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 39037. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल शिल्प विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल शिल्प विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल शिल्प विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39038. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39039. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39040. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39041. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39042. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल शिल्प विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल शिल्प विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3911 : विदेह-सदेह 30 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: नव भोर जोहैत मिथिला

प्रश्न 39043. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नव भोर जोहैत मिथिला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव भोर जोहैत मिथिला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2602मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रविष्टि “नव भोर जोहैत मिथिला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39044. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39045. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39046. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक अध्ययन

उत्तर: घ. सांस्कृतिक अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक अध्ययन” अछि।

प्रश्न 39047. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39048. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39049. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39050. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39051. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39052. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3912 : विदेह-सदेह 30 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून

प्रश्न 39053. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2603मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रविष्टि “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39054. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39055. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39056. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक पर्व विश्लेषण

उत्तर: घ. लोक पर्व विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक पर्व विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 39057. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक पर्व विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक पर्व विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक पर्व विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39058. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39059. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39060. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39061. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39062. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3913 : विदेह-सदेह 30 — अमरनाथ झा: हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही

प्रश्न 39063. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2604मे अमरनाथ झाक प्रविष्टि “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39064. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39065. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 39066. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक संस्मरण

उत्तर: घ. साहित्यिक संस्मरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक संस्मरण” अछि।

प्रश्न 39067. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक संस्मरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक संस्मरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक संस्मरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39068. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39069. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39070. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39071. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39072. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604मे अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “साहित्यिक संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604मे अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “साहित्यिक संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3914 : विदेह-सदेह 30 — अमरनाथ झा: विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।

प्रश्न 39073. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2605मे अमरनाथ झाक प्रविष्टि “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39074. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39075. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 39076. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यक्तित्व रेखांकन

उत्तर: घ. व्यक्तित्व रेखांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यक्तित्व रेखांकन” अछि।

प्रश्न 39077. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यक्तित्व रेखांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यक्तित्व रेखांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यक्तित्व रेखांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39078. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39079. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39080. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39081. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39082. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605मे अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605मे अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3915 : विदेह-सदेह 30 — अमरनाथ झा: पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम

प्रश्न 39083. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2606मे अमरनाथ झाक प्रविष्टि “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39084. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39085. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39086. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्मकथात्मक

उत्तर: घ. आत्मकथात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मकथात्मक” अछि।

प्रश्न 39087. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्मकथात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मकथात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मकथात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39088. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39089. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39090. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39091. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39092. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606मे अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606मे अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3916 : विदेह-सदेह 30 — अमरनाथ झा: आचार्य पंकज

प्रश्न 39093. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आचार्य पंकज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आचार्य पंकज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2607मे अमरनाथ झाक प्रविष्टि “आचार्य पंकज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39094. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39095. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39096. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यक्तित्व रेखांकन

उत्तर: घ. व्यक्तित्व रेखांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यक्तित्व रेखांकन” अछि।

प्रश्न 39097. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यक्तित्व रेखांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यक्तित्व रेखांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यक्तित्व रेखांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39098. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39099. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39100. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39101. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39102. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607मे अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607मे अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3917 : विदेह-सदेह 30 — उदय नारायण सिंह "नचिकेता": गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

प्रश्न 39103. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2608मे उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क प्रविष्टि “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39104. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39105. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39106. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीआइआइएल

उत्तर: घ. सीआइआइएल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीआइआइएल” अछि।

प्रश्न 39107. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीआइआइएल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीआइआइएल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीआइआइएल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39108. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उदय नारायण सिंह "नचिकेता", विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उदय नारायण सिंह "नचिकेता", विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39109. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39110. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39111. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39112. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608मे उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सीआइआइएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608मे उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सीआइआइएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3918 : विदेह-सदेह 30 — उदय नारायण सिंह "नचिकेता": गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर

प्रश्न 39113. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2609मे उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क प्रविष्टि “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39114. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39115. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39116. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली मानकीकरणक प्रणेता

उत्तर: घ. मैथिली मानकीकरणक प्रणेता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली मानकीकरणक प्रणेता” अछि।

प्रश्न 39117. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली मानकीकरणक प्रणेता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली मानकीकरणक प्रणेता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली मानकीकरणक प्रणेता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39118. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उदय नारायण सिंह "नचिकेता", विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उदय नारायण सिंह "नचिकेता", विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39119. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39120. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39121. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39122. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609मे उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मैथिली मानकीकरणक प्रणेता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609मे उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मैथिली मानकीकरणक प्रणेता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3919 : विदेह-सदेह 30 — विनीत उत्पल: आजुक कालमे बाबा

प्रश्न 39123. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आजुक कालमे बाबा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजुक कालमे बाबा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2610मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “आजुक कालमे बाबा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39124. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39125. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39126. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श

उत्तर: घ. पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श” अछि।

प्रश्न 39127. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39128. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39129. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39130. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39131. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39132. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610मे विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610मे विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3920 : विदेह-सदेह 30 — विनीत उत्पल: कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार

प्रश्न 39133. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2611मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39134. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39135. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39136. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाख्तिनीय संवाद

उत्तर: घ. बाख्तिनीय संवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाख्तिनीय संवाद” अछि।

प्रश्न 39137. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाख्तिनीय संवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाख्तिनीय संवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाख्तिनीय संवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39138. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39139. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39140. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार”कँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39141. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39142. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611मे विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाख्तिनीय संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611मे विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाख्तिनीय संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3921 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. गंगेश गुंजन: कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर

प्रश्न 39143. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2612मे डॉ. गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39144. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39145. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39146. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 39147. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39148. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39149. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39150. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39151. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्तिःकविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39152. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612मे डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्तिःकविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612मे डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्तिःकविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3922 : विदेह-सदेह 30 — रामभरोस कापडि 'भ्रमर': यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट

प्रश्न 39153. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2613मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क प्रविष्टि “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39154. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39155. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 39156. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिस्थितिक लेखन

उत्तर: घ. पारिस्थितिक लेखन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिस्थितिक लेखन” अछि।

प्रश्न 39157. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिस्थितिक लेखन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिस्थितिक लेखन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिस्थितिक लेखन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39158. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39159. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39160. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39161. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39162. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “पारिस्थितिक लेखन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “पारिस्थितिक लेखन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3923 : विदेह-सदेह 30 — रामभरोस कापडि 'भ्रमर': यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !

प्रश्न 39163. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2614मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क प्रविष्टि “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39164. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39165. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 39166. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक परम्परा

उत्तर: घ. लोक परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक परम्परा” अछि।

प्रश्न 39167. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39168. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39169. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39170. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39171. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39172. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “लोक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “लोक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3924 : विदेह-सदेह 30 — रामभरोस कापडि 'भ्रमर': संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा

प्रश्न 39173. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2615मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क प्रविष्टि “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39174. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39175. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39176. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोसी बाढ़ि आख्यान

उत्तर: घ. कोसी बाढ़ि आख्यान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोसी बाढ़ि आख्यान” अछि।

प्रश्न 39177. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोसी बाढ़ि आख्यान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसी बाढ़ि आख्यान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोसी बाढ़ि आख्यान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39178. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39179. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39180. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39181. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39182. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कोसी बाढ़ि आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कोसी बाढ़ि आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3925 : विदेह-सदेह 30 — कमलानन्द झा: मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण

प्रश्न 39183. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2616मे कमलानन्द झाक प्रविष्टि “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39184. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39185. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39186. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अकादमिक साहित्यिक समीक्षा

उत्तर: घ. अकादमिक साहित्यिक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अकादमिक साहित्यिक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39187. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अकादमिक साहित्यिक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकादमिक साहित्यिक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अकादमिक साहित्यिक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39188. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कमलानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कमलानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39189. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39190. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39191. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39192. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616मे कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अकादमिक साहित्यिक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616मे कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अकादमिक साहित्यिक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3926 : विदेह-सदेह 30 — डॉ पालन झा: सन्त साहेब रामदास

प्रश्न 39193. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सन्त साहेब रामदास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सन्त साहेब रामदास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2617मे डॉ पालन झाक प्रविष्टि “सन्त साहेब रामदास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39194. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39195. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/शोध” अछि।

प्रश्न 39196. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 39197. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39198. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ पालन झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ पालन झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39199. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39200. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39201. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39202. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617मे डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617मे डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3927 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

प्रश्न 39203. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2618मे सुशांत झाक प्रविष्टि “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39204. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39205. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।

प्रश्न 39206. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला राज्य चिन्तक

उत्तर: घ. मिथिला राज्य चिन्तक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला राज्य चिन्तक” अछि।

प्रश्न 39207. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला राज्य चिन्तक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला राज्य चिन्तक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला राज्य चिन्तक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39208. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39209. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39210. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39211. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39212. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618मे सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “मिथिला राज्य चिन्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618मे सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “मिथिला राज्य चिन्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3928 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य

प्रश्न 39213. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2619मे सुशांत झाक प्रविष्टि “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39214. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39215. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39216. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक पहचान

उत्तर: घ. सांस्कृतिक पहचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक पहचान” अछि।

प्रश्न 39217. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक पहचान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39218. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39219. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39220. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39221. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39222. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619मे सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619मे सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3929 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...

प्रश्न 39223. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2620मे सुशांत झाक प्रविष्टि “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39224. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39225. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39226. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चिन्ता

उत्तर: घ. सामाजिक चिन्ता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चिन्ता” अछि।

प्रश्न 39227. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चिन्ता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चिन्ता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चिन्ता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39228. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39229. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39230. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39231. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39232. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620मे सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620मे सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3930 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: हमर सपना केर मिथिला

प्रश्न 39233. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर सपना केर मिथिला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर सपना केर मिथिला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2621मे सुशांत झाक प्रविष्टि “हमर सपना केर मिथिला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39234. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39235. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39236. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भविष्यक मिथिला

उत्तर: घ. भविष्यक मिथिला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भविष्यक मिथिला” अछि।

प्रश्न 39237. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भविष्यक मिथिला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भविष्यक मिथिला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भविष्यक मिथिला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39238. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39239. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39240. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39241. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39242. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621मे सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भविष्यक मिथिला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621मे सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भविष्यक मिथिला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3931 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..

प्रश्न 39243. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2622मे सुशांत झाक प्रविष्टि “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39244. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39245. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39246. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा आन्दोलन

उत्तर: घ. भाषा आन्दोलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 39247. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा आन्दोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39248. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39249. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39250. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39251. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39252. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622मे सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622मे सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3932 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?

प्रश्न 39253. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2623मे सुशांत झाक प्रविष्टि “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39254. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39255. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39256. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आपदा प्रबन्धन

उत्तर: घ. आपदा प्रबन्धन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आपदा प्रबन्धन” अछि।

प्रश्न 39257. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आपदा प्रबन्धन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आपदा प्रबन्धन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आपदा प्रबन्धन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39258. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39259. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39260. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39261. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39262. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623मे सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आपदा प्रबन्धन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623मे सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आपदा प्रबन्धन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3933 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: मिथिला मंथन १-२

प्रश्न 39263. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला मंथन १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला मंथन १-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2624मे सुशांत झाक प्रविष्टि “मिथिला मंथन १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39264. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39265. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39266. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्षेत्रीय विकास

उत्तर: घ. क्षेत्रीय विकास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “क्षेत्रीय विकास” अछि।

प्रश्न 39267. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. क्षेत्रीय विकास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षेत्रीय विकास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्षेत्रीय विकास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39268. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39269. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39270. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39271. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39272. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624मे सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “क्षेत्रीय विकास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624मे सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “क्षेत्रीय विकास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3934 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि

प्रश्न 39273. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2625मे सुशांत झाक प्रविष्टि “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39274. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39275. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39276. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा सांस्कृतिक सक्रियता

उत्तर: घ. भाषा सांस्कृतिक सक्रियता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा सांस्कृतिक सक्रियता” अछि।

प्रश्न 39277. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा सांस्कृतिक सक्रियता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा सांस्कृतिक सक्रियता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा सांस्कृतिक सक्रियता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39278. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39279. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39280. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39281. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39282. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625मे सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा सांस्कृतिक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625मे सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा सांस्कृतिक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3935 : विदेह-सदेह 30 — शक्ति शेखर: कखन बदलब हम

प्रश्न 39283. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कखन बदलब हम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कखन बदलब हम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2626मे शक्ति शेखरक प्रविष्टि “कखन बदलब हम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39284. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39285. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39286. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक परिवर्तन चिन्तन

उत्तर: घ. सामाजिक परिवर्तन चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक परिवर्तन चिन्तन” अछि।

प्रश्न 39287. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक परिवर्तन चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक परिवर्तन चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक परिवर्तन चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39288. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शक्ति शेखर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शक्ति शेखर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39289. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39290. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39291. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39292. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626मे शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक परिवर्तन चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626मे शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक परिवर्तन चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3936 : विदेह-सदेह 30 — ओमप्रकाश झा: मिथिले तक नहि छथि मैथिल

प्रश्न 39293. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिले तक नहि छथि मैथिल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिले तक नहि छथि मैथिल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2627मे ओमप्रकाश झाक प्रविष्टि “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39294. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39295. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39296. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिल पहचान

उत्तर: घ. मैथिल पहचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिल पहचान” अछि।

प्रश्न 39297. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिल पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिल पहचान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39298. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39299. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39300. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39301. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39302. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627मे ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिल पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627मे ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिल पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3937 : विदेह-सदेह 30 — बी.के कर्ण: संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन

प्रश्न 39303. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2628मे बी.के कर्णक प्रविष्टि “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39304. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39305. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

प्रश्न 39306. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त

उत्तर: घ. बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 39307. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39308. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बी.के कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बी.के कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39309. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39310. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39311. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39312. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628मे बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628मे बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3938 : विदेह-सदेह 30 — जितेन्द्र झा: स्वरक माला गँथती अंशु

प्रश्न 39313. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्वरक माला गँथती अंशु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वरक माला गँथती अंशु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2629मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “स्वरक माला गँथती अंशु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39314. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39315. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 39316. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर, नेपाल

उत्तर: घ. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर, नेपाल” अछि।

प्रश्न 39317. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकपुर, नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर, नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39318. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39319. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39320. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39321. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39322. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629मे जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629मे जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3939 : विदेह-सदेह 30 — जितेन्द्र झा: प्रिय पाहुन

प्रश्न 39323. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रिय पाहुन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रिय पाहुन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2630मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “प्रिय पाहुन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39324. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39325. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39326. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह क्रॉस-बोर्डर

उत्तर: घ. विदेह क्रॉस-बोर्डर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह क्रॉस-बोर्डर” अछि।

प्रश्न 39327. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह क्रॉस-बोर्डर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह क्रॉस-बोर्डर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह क्रॉस-बोर्डर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39328. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39329. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39330. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39331. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39332. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630मे जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “विदेह क्रॉस-बोर्डर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630मे जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “विदेह क्रॉस-बोर्डर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3940 : विदेह-सदेह 30 — महाप्रकाश: सुभाष चन्द्र यादव

प्रश्न 39333. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुभाष चन्द्र यादव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुभाष चन्द्र यादव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2631मे महाप्रकाशक प्रविष्टि “सुभाष चन्द्र यादव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39334. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39335. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. परिचय/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. परिचय/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “परिचय/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39336. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथाकारक रेखांकन

उत्तर: घ. कथाकारक रेखांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथाकारक रेखांकन” अछि।

प्रश्न 39337. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथाकारक रेखांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथाकारक रेखांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथाकारक रेखांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39338. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महाप्रकाश, विधा गद्य, उप-विधा परिचय/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महाप्रकाश, विधा गद्य, उप-विधा परिचय/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39339. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39340. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ परिचय/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ परिचय/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39341. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39342. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631मे महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” प्रविष्टि गद्य, परिचय/समीक्षा आ “कथाकारक रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631मे महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” प्रविष्टि गद्य, परिचय/समीक्षा आ “कथाकारक रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3941 : विदेह-सदेह 30 — ज्योति प्रकाश लाल: आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व

प्रश्न 39343. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2632मे ज्योति प्रकाश लालक प्रविष्टि “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39344. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39345. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39346. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सॉफ्टवेयर इंजीनियर

उत्तर: घ. सॉफ्टवेयर इंजीनियर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सॉफ्टवेयर इंजीनियर” अछि।

प्रश्न 39347. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सॉफ्टवेयर इंजीनियर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सॉफ्टवेयर इंजीनियर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सॉफ्टवेयर इंजीनियर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39348. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ज्योति प्रकाश लाल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ज्योति प्रकाश लाल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39349. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39350. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39351. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39352. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632मे ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सॉफ्टवेयर इंजीनियर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632मे ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सॉफ्टवेयर इंजीनियर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3942 : विदेह-सदेह 30 — जितमोहन झा: वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी

प्रश्न 39353. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2633मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39354. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39355. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

प्रश्न 39356. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुम्बई

उत्तर: घ. मुम्बई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुम्बई” अछि।

प्रश्न 39357. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुम्बई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुम्बई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुम्बई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39358. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39359. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39360. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39361. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39362. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633मे जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633मे जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3943 : विदेह-सदेह 30 — जितमोहन झा: कन्या भ्रूण हत्या

प्रश्न 39363. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कन्या भ्रूण हत्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कन्या भ्रूण हत्या

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2634मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “कन्या भ्रूण हत्या” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39364. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39365. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

प्रश्न 39366. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बोउआ

उत्तर: घ. बोउआ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बोउआ” अछि।

प्रश्न 39367. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बोउआ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बोउआ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बोउआ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39368. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39369. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39370. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39371. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39372. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634मे जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “बोउआ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634मे जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “बोउआ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3944 : विदेह-सदेह 30 — जितमोहन झा: प्रकृति के साथ खिलवार

प्रश्न 39373. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रकृति के साथ खिलवार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति के साथ खिलवार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2635मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “प्रकृति के साथ खिलवार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39374. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39375. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

प्रश्न 39376. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पर्यावरण चेतना

उत्तर: घ. पर्यावरण चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरण चेतना” अछि।

प्रश्न 39377. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पर्यावरण चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पर्यावरण चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पर्यावरण चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39378. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39379. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39380. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39381. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39382. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635मे जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “पर्यावरण चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635मे जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “पर्यावरण चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3945 : विदेह-सदेह 30 — जितमोहन झा: हम लड़की वला छी जनाब ...

प्रश्न 39383. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम लड़की वला छी जनाब ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम लड़की वला छी जनाब ...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2636मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “हम लड़की वला छी जनाब ...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39384. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39385. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

प्रश्न 39386. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारीवादी विमर्श

उत्तर: घ. नारीवादी विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारीवादी विमर्श” अछि।

प्रश्न 39387. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारीवादी विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारीवादी विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारीवादी विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39388. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39389. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39390. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39391. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39392. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636मे जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “नारीवादी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636मे जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “नारीवादी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3946 : विदेह-सदेह 30 — जितमोहन झा: नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?

प्रश्न 39393. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2637मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39394. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39395. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

प्रश्न 39396. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लैंगिक असमानता

उत्तर: घ. लैंगिक असमानता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लैंगिक असमानता” अछि।

प्रश्न 39397. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लैंगिक असमानता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लैंगिक असमानता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लैंगिक असमानता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39398. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39399. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39400. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39401. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39402. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637मे जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “लैंगिक असमानता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637मे जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक ....?” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “लैंगिक असमानता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3947 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: बिहारक लोक पर्व-छठि

प्रश्न 39403. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिहारक लोक पर्व-छठि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहारक लोक पर्व-छठि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2638मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “बिहारक लोक पर्व-छठि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39404. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39405. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39406. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक पर्व

उत्तर: घ. लोक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक पर्व” अछि।

प्रश्न 39407. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39408. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39409. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39410. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39411. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39412. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638मे नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638मे नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3948 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र

प्रश्न 39413. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2639मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39414. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39415. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39416. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक पत्रकारिता

उत्तर: घ. सांस्कृतिक पत्रकारिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक पत्रकारिता” अछि।

प्रश्न 39417. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक पत्रकारिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक पत्रकारिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39418. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39419. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39420. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39421. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39422. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639मे नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सांस्कृतिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639मे नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सांस्कृतिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3949 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति

प्रश्न 39423. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2640मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39424. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39425. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39426. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक स्मृति

उत्तर: घ. साहित्यिक स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक स्मृति” अछि।

प्रश्न 39427. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक स्मृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक स्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39428. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39429. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39430. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39431. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39432. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640मे नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640मे नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3950 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला

प्रश्न 39433. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2641मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39434. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39435. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39436. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक पत्रकारिता

उत्तर: घ. सामाजिक पत्रकारिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक पत्रकारिता” अछि।

प्रश्न 39437. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक पत्रकारिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक पत्रकारिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39438. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39439. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39440. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39441. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39442. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641मे नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641मे नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3951 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर

प्रश्न 39443. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2642मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39444. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39445. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39446. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक मुद्दा

उत्तर: घ. सामाजिक मुद्दा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक मुद्दा” अछि।

प्रश्न 39447. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक मुद्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक मुद्दा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक मुद्दा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39448. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39449. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39450. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39451. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39452. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642मे नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642मे नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3952 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ

प्रश्न 39453. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2643मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39454. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39455. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39456. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक सक्रियता

उत्तर: घ. सामाजिक सक्रियता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सक्रियता” अछि।

प्रश्न 39457. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक सक्रियता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक सक्रियता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सक्रियता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39458. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39459. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39460. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39461. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39462. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643मे नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643मे नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3953 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी

प्रश्न 39463. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2644मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39464. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39465. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39466. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विज्ञान चेतना

उत्तर: घ. विज्ञान चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विज्ञान चेतना” अछि।

प्रश्न 39467. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विज्ञान चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विज्ञान चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विज्ञान चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39468. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39469. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39470. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी”कैँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39471. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39472. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644मे नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “विज्ञान चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644मे नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कैँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “विज्ञान चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3954 : विदेह-सदेह 30 — सुजीत कुमार झा: सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी

प्रश्न 39473. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2645मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39474. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39475. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।

प्रश्न 39476. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक जीवनी

उत्तर: घ. सामाजिक जीवनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक जीवनी” अछि।

प्रश्न 39477. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक जीवनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक जीवनी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक जीवनी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39478. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39479. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39480. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39481. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39482. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645मे सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “सामाजिक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645मे सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “सामाजिक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3955 : विदेह-सदेह 30 — सुजीत कुमार झा: एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर

प्रश्न 39483. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2646मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39484. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39485. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।

प्रश्न 39486. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कलाकार व्यक्तित्व

उत्तर: घ. कलाकार व्यक्तित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कलाकार व्यक्तित्व” अछि।

प्रश्न 39487. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कलाकार व्यक्तित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कलाकार व्यक्तित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कलाकार व्यक्तित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39488. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39489. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39490. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39491. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39492. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646मे सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “कलाकार व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646मे सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “कलाकार व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3956 : विदेह-सदेह 30 — सुजीत कुमार झा: थाल माटिक पावनि

प्रश्न 39493. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. थाल माटिक पावनि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. थाल माटिक पावनि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2647मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “थाल माटिक पावनि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39494. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39495. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39496. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साक्षात्कार शैली

उत्तर: घ. साक्षात्कार शैली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साक्षात्कार शैली” अछि।

प्रश्न 39497. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साक्षात्कार शैली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साक्षात्कार शैली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साक्षात्कार शैली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39498. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39499. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39500. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39501. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39502. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647मे सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “साक्षात्कार शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647मे सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “साक्षात्कार शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3957 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. उमेश मंडल: मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर

प्रश्न 39503. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2648मे डॉ. उमेश मंडलक प्रविष्टि “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39504. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39505. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 39506. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपन्यास समीक्षा

उत्तर: घ. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39507. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपन्यास समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39508. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39509. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39510. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39511. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39512. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648मे डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648मे डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3958 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. उमेश मंडल: कबिलपुरक कथा गोष्ठी

प्रश्न 39513. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कबिलपुरक कथा गोष्ठी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कबिलपुरक कथा गोष्ठी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2649मे डॉ. उमेश मंडलक प्रविष्टि “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39514. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39515. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39516. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक आयोजन

उत्तर: घ. साहित्यिक आयोजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आयोजन” अछि।

प्रश्न 39517. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक आयोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक आयोजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आयोजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39518. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39519. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39520. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39521. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39522. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649मे डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “साहित्यिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649मे डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “साहित्यिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3959 : विदेह-सदेह 30 — प्रा परमेश्वर कापड़ि: मानकताक बात विखपाद अछि !

प्रश्न 39523. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मानकताक बात विखपाद अछि !

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानकताक बात विखपाद अछि !

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2650मे प्रा परमेश्वर कापड़िक प्रविष्टि “मानकताक बात विखपाद अछि !” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39524. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39525. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39526. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल

उत्तर: घ. नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

प्रश्न 39527. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39528. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रा परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रा परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39529. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39530. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39531. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39532. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650मे प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650मे प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3960 : विदेह-सदेह 30 — प्रा परमेश्वर कापड़ि: छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व

प्रश्न 39533. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2651मे प्रा परमेश्वर कापड़िक प्रविष्टि “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39534. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39535. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39536. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक पर्व

उत्तर: घ. लोक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक पर्व” अछि।

प्रश्न 39537. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39538. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रा परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रा परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39539. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39540. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39541. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39542. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651मे प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651मे प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3961 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: सोचब आवश्यक जे.....

प्रश्न 39543. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सोचब आवश्यक जे.....

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सोचब आवश्यक जे.....

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2652मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “सोचब आवश्यक जे.....” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39544. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39545. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39546. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषा चिन्तक

उत्तर: घ. मैथिली भाषा चिन्तक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा चिन्तक” अछि।

प्रश्न 39547. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली भाषा चिन्तक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा चिन्तक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा चिन्तक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39548. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39549. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39550. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39551. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39552. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652मे अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषा चिन्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652मे अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषा चिन्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3962 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: मातृभाषा दिवस क बहन्ने

प्रश्न 39553. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मातृभाषा दिवस क बहन्ने

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभाषा दिवस क बहन्ने

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2653मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39554. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39555. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39556. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा दिवस

उत्तर: घ. भाषा दिवस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा दिवस” अछि।

प्रश्न 39557. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा दिवस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा दिवस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा दिवस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39558. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39559. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39560. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39561. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39562. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653मे अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा दिवस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653मे अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा दिवस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3963 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती

प्रश्न 39563. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2654मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39564. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39565. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39566. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक संस्कृति

उत्तर: घ. लोक संस्कृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक संस्कृति” अछि।

प्रश्न 39567. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक संस्कृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39568. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39569. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39570. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39571. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39572. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654मे अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654मे अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3964 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: तीन तिरहुतिया तेरह पाक

प्रश्न 39573. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तीन तिरहुतिया तेरह पाक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीन तिरहुतिया तेरह पाक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2655मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39574. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39575. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39576. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक कहावत

उत्तर: घ. लोक कहावत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक कहावत” अछि।

प्रश्न 39577. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक कहावत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक कहावत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक कहावत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39578. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39579. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39580. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39581. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39582. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655मे अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक कहावत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655मे अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक कहावत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3965 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत

प्रश्न 39583. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2656मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39584. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39585. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39586. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक सम्वाद

उत्तर: घ. साहित्यिक सम्वाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक सम्वाद” अछि।

प्रश्न 39587. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक सम्वाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक सम्वाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक सम्वाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39588. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39589. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39590. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39591. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39592. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656मे अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक सम्वाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656मे अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक सम्वाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3966 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: यात्रीक प्रसंग

प्रश्न 39593. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यात्रीक प्रसंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रीक प्रसंग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2657मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “यात्रीक प्रसंग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39594. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39595. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39596. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कवि आलोचना

उत्तर: घ. कवि आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि आलोचना” अछि।

प्रश्न 39597. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कवि आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39598. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39599. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39600. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39601. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39602. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657मे अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कवि आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657मे अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कवि आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3967 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा

प्रश्न 39603. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2658मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39604. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39605. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39606. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा राजनीति

उत्तर: घ. भाषा राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा राजनीति” अछि।

प्रश्न 39607. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा राजनीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39608. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39609. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39610. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39611. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39612. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658मे अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658मे अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3968 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: वैश्विक सोच ?

प्रश्न 39613. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वैश्विक सोच ?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वैश्विक सोच ?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2659मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “वैश्विक सोच ?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39614. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39615. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39616. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वैश्वीकरण

उत्तर: घ. वैश्वीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वैश्वीकरण” अछि।

प्रश्न 39617. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वैश्वीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वैश्वीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वैश्वीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39618. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39619. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39620. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39621. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39622. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659मे अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “वैश्वीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659मे अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “वैश्वीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3969 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: भाषाक प्रति एक नव सोच

प्रश्न 39623. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाषाक प्रति एक नव सोच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषाक प्रति एक नव सोच

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2660मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “भाषाक प्रति एक नव सोच” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39624. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39625. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39626. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा चिन्तन

उत्तर: घ. भाषा चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा चिन्तन” अछि।

प्रश्न 39627. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39628. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39629. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39630. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39631. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39632. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660मे अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660मे अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3970 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति

प्रश्न 39633. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2661मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39634. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39635. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39636. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा मानकीकरण

उत्तर: घ. भाषा मानकीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा मानकीकरण” अछि।

प्रश्न 39637. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा मानकीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा मानकीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा मानकीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39638. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39639. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39640. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39641. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39642. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661मे अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा मानकीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661मे अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा मानकीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3971 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई

प्रश्न 39643. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2662मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39644. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39645. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39646. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहुलतावाद

उत्तर: घ. बहुलतावाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुलतावाद” अछि।

प्रश्न 39647. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बहुलतावाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुलतावाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बहुलतावाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39648. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39649. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39650. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39651. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39652. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662मे अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बहुलतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662मे अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बहुलतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3972 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: 'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर

प्रश्न 39653. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2663मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39654. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39655. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39656. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्रॉस-बोर्डर कथा

उत्तर: घ. क्रॉस-बोर्डर कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “क्रॉस-बोर्डर कथा” अछि।

प्रश्न 39657. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. क्रॉस-बोर्डर कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्रॉस-बोर्डर कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्रॉस-बोर्डर कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39658. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39659. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39660. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39661. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39662. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663मे अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “क्रॉस-बोर्डर कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663मे अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “क्रॉस-बोर्डर कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3973 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: 'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना

प्रश्न 39663. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2664मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39664. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39665. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 39666. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक आलोचना

उत्तर: घ. साहित्यिक आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आलोचना” अछि।

प्रश्न 39667. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39668. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39669. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39670. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39671. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39672. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664मे अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “साहित्यिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664मे अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “साहित्यिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3974 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: मैथिली : पंडिताम वा आम?

प्रश्न 39673. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली : पंडिताम वा आम?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली : पंडिताम वा आम?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2665मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “मैथिली : पंडिताम वा आम?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39674. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39675. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39676. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा चेतना

उत्तर: घ. भाषा चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा चेतना” अछि।

प्रश्न 39677. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39678. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39679. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडितामा वा आम?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39680. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडितामा वा आम?”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39681. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडितामा वा आम?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39682. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665मे अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडितामा वा आम?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665मे अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडितामा वा आम?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3975 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: पंडित गोविन्द झा

प्रश्न 39683. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पंडित गोविन्द झा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंडित गोविन्द झा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2666मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “पंडित गोविन्द झा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39684. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39685. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39686. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यक्तित्व रेखांकन

उत्तर: घ. व्यक्तित्व रेखांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यक्तित्व रेखांकन” अछि।

प्रश्न 39687. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यक्तित्व रेखांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यक्तित्व रेखांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यक्तित्व रेखांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39688. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39689. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39690. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39691. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39692. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666मे अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666मे अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3976 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: मैथिली आ अध्ययन

प्रश्न 39693. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली आ अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली आ अध्ययन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2667मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “मैथिली आ अध्ययन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39694. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39695. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39696. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा अध्ययन

उत्तर: घ. भाषा अध्ययन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा अध्ययन” अछि।

प्रश्न 39697. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा अध्ययन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा अध्ययन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39698. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39699. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39700. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39701. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39702. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667मे अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667मे अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3977 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: उजरैत गाम बसैत शहर.....

प्रश्न 39703. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उजरैत गाम बसैत शहर.....

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उजरैत गाम बसैत शहर.....

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2668मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “उजरैत गाम बसैत शहर.....” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39704. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39705. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39706. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण पलायन

उत्तर: घ. ग्रामीण पलायन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण पलायन” अछि।

प्रश्न 39707. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण पलायन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण पलायन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण पलायन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39708. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39709. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39710. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39711. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39712. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668मे अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ग्रामीण पलायन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668मे अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ग्रामीण पलायन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3978 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: विद्यापति समारोह

प्रश्न 39713. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विद्यापति समारोह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापति समारोह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2669मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “विद्यापति समारोह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39714. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39715. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39716. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक आयोजन

उत्तर: घ. साहित्यिक आयोजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आयोजन” अछि।

प्रश्न 39717. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक आयोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक आयोजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आयोजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39718. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39719. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39720. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39721. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39722. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669मे अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “साहित्यिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669मे अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “साहित्यिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3979 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: बिहार गीत आ मैथिल

प्रश्न 39723. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिहार गीत आ मैथिल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहार गीत आ मैथिल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2670मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “बिहार गीत आ मैथिल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39724. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39725. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39726. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक पहचान

उत्तर: घ. सांस्कृतिक पहचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक पहचान” अछि।

प्रश्न 39727. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक पहचान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39728. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39729. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39730. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39731. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39732. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670मे अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670मे अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3980 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने

प्रश्न 39733. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2671मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39734. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39735. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39736. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा सेमिनार

उत्तर: घ. भाषा सेमिनार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा सेमिनार” अछि।

प्रश्न 39737. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा सेमिनार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा सेमिनार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा सेमिनार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39738. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39739. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39740. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39741. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39742. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671मे अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “भाषा सेमिनार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671मे अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “भाषा सेमिनार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3981 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ

प्रश्न 39743. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2672मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39744. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39745. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39746. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्तर्भाषिक सम्मान

उत्तर: घ. अन्तर्भाषिक सम्मान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्तर्भाषिक सम्मान” अछि।

प्रश्न 39747. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्तर्भाषिक सम्मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तर्भाषिक सम्मान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्तर्भाषिक सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39748. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39749. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39750. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39751. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39752. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672मे अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “अन्तर्भाषिक सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672मे अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “अन्तर्भाषिक सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3982 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य

प्रश्न 39753. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2673मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39754. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39755. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39756. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गुरु-शिष्य परम्परा

उत्तर: घ. गुरु-शिष्य परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गुरु-शिष्य परम्परा” अछि।

प्रश्न 39757. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गुरु-शिष्य परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गुरु-शिष्य परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुरु-शिष्य परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39758. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39759. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39760. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39761. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39762. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673मे अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “गुरु-शिष्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673मे अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “गुरु-शिष्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3983 : विदेह-सदेह 30 — डॉ॰ शशिधर कुमर: पोथी समीक्षा : गामक जिनगी

प्रश्न 39763. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोथी समीक्षा : गामक जिनगी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोथी समीक्षा : गामक जिनगी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2674मे डॉ॰ शशिधर कुमरक प्रविष्टि “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39764. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39765. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39766. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अकादमिक समीक्षक

उत्तर: घ. अकादमिक समीक्षक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अकादमिक समीक्षक” अछि।

प्रश्न 39767. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अकादमिक समीक्षक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकादमिक समीक्षक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अकादमिक समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39768. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ॰ शशिधर कुमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ॰ शशिधर कुमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39769. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39770. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39771. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39772. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674मे डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अकादमिक समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674मे डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अकादमिक समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3984 : विदेह-सदेह 30 — डॉ॰ शशिधर कुमर: पोथी समीक्षा -- अम्बरा

प्रश्न 39773. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोथी समीक्षा -- अम्बरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोथी समीक्षा -- अम्बरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2675मे डॉ॰ शशिधर कुमरक प्रविष्टि “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39774. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39775. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39776. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39777. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39778. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ॰ शशिधर कुमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ॰ शशिधर कुमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39779. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39780. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39781. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39782. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675मे डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675मे डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3985 : विदेह-सदेह 30 — सुमित आनन्द: अक्षरपुरूष-विश्वनाथ

प्रश्न 39783. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अक्षरपुरूष-विश्वनाथ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अक्षरपुरूष-विश्वनाथ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2676मे सुमित आनन्दक प्रविष्टि “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39784. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39785. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।

प्रश्न 39786. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यकार व्यक्तित्व

उत्तर: घ. साहित्यकार व्यक्तित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यकार व्यक्तित्व” अछि।

प्रश्न 39787. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यकार व्यक्तित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यकार व्यक्तित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यकार व्यक्तित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39788. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39789. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39790. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39791. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39792. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676मे सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “साहित्यकार व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676मे सुमित आनन्दक “अक्षरपुरूष-विश्वनाथ” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “साहित्यकार व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3986 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी

प्रश्न 39793. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2677मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39794. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39795. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39796. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी विमर्श समीक्षक

उत्तर: घ. नारी विमर्श समीक्षक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी विमर्श समीक्षक” अछि।

प्रश्न 39797. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी विमर्श समीक्षक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी विमर्श समीक्षक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी विमर्श समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39798. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39799. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39800. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39801. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39802. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677मे डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677मे डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3987 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा

प्रश्न 39803. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2678मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39804. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39805. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39806. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य

उत्तर: घ. बाल साहित्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।

प्रश्न 39807. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39808. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39809. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39810. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39811. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39812. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678मे डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678मे डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3988 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा

प्रश्न 39813. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2679मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39814. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39815. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39816. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी अस्मिता

उत्तर: घ. नारी अस्मिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी अस्मिता” अछि।

प्रश्न 39817. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी अस्मिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी अस्मिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी अस्मिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39818. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39819. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39820. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39821. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39822. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679मे डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी अस्मिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679मे डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी अस्मिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3989 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल

प्रश्न 39823. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2680मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39824. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39825. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39826. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39827. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39828. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39829. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39830. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39831. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39832. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680मे डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680मे डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3990 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह

प्रश्न 39833. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2681मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39834. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39835. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39836. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक प्रवृत्ति

उत्तर: घ. साहित्यिक प्रवृत्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक प्रवृत्ति” अछि।

प्रश्न 39837. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक प्रवृत्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक प्रवृत्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक प्रवृत्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39838. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39839. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39840. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39841. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39842. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681मे डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक प्रवृत्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681मे डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक प्रवृत्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3991 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि

प्रश्न 39843. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2682मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39844. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39845. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 39846. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वार्षिक सर्वेक्षण

उत्तर: घ. वार्षिक सर्वेक्षण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वार्षिक सर्वेक्षण” अछि।

प्रश्न 39847. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वार्षिक सर्वेक्षण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वार्षिक सर्वेक्षण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वार्षिक सर्वेक्षण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39848. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39849. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39850. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39851. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39852. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682मे डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “वार्षिक सर्वेक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682मे डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “वार्षिक सर्वेक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3992 : विदेह-सदेह 30 — राजेश्वर नेपाली: कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

प्रश्न 39853. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2683मे राजेश्वर नेपालीक प्रविष्टि “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39854. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39855. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्रद्धाञ्जलि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्रद्धाञ्जलि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्रद्धाञ्जलि” अछि।

प्रश्न 39856. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि

उत्तर: घ. साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि” अछि।

प्रश्न 39857. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39858. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश्वर नेपाली, विधा गद्य, उप-विधा श्रद्धाञ्जलि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश्वर नेपाली, विधा गद्य, उप-विधा श्रद्धाञ्जलि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39859. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39860. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ श्रद्धाञ्जलिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ श्रद्धाञ्जलिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39861. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39862. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683मे राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” प्रविष्टि गद्य, श्रद्धाञ्जलि आ “साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683मे राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” प्रविष्टि गद्य, श्रद्धाञ्जलि आ “साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3993 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'

प्रश्न 39863. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2684मे बिपिन झाक प्रविष्टि “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39864. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39865. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39866. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध

उत्तर: घ. संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 39867. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39868. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39869. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39870. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39871. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39872. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684मे बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684मे बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3994 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा

प्रश्न 39873. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2685मे बिपिन झाक प्रविष्टि “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39874. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39875. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39876. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रन्थ समीक्षा

उत्तर: घ. ग्रन्थ समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रन्थ समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39877. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रन्थ समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रन्थ समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रन्थ समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39878. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39879. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39880. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39881. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39882. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685मे बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ग्रन्थ समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685मे बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ग्रन्थ समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3995 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म

प्रश्न 39883. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2686मे बिपिन झाक प्रविष्टि “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39884. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39885. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39886. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक विश्लेषण

उत्तर: घ. सामाजिक विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 39887. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39888. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39889. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39890. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39891. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39892. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686मे बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686मे बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3996 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य

प्रश्न 39893. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2687मे बिपिन झाक प्रविष्टि “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39894. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39895. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।

प्रश्न 39896. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक परम्परा

उत्तर: घ. दार्शनिक परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक परम्परा” अछि।

प्रश्न 39897. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39898. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39899. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39900. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39901. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39902. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687मे बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “दार्शनिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687मे बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “दार्शनिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3997 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्

प्रश्न 39903. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2688मे बिपिन झाक प्रविष्टि “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39904. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39905. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।

प्रश्न 39906. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संस्कृत भाषा चिन्तन

उत्तर: घ. संस्कृत भाषा चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृत भाषा चिन्तन” अछि।

प्रश्न 39907. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संस्कृत भाषा चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कृत भाषा चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्कृत भाषा चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39908. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39909. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39910. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39911. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39912. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688मे बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “संस्कृत भाषा चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688मे बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “संस्कृत भाषा चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3998 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: ये बान्धवाऽबान्धवा वा

प्रश्न 39913. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ये बान्धवाऽबान्धवा वा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ये बान्धवाऽबान्धवा वा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2689मे बिपिन झाक प्रविष्टि “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39914. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39915. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39916. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. सामाजिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 39917. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39918. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39919. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39920. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39921. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39922. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689मे बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689मे बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 3999 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: चहकैत चौक आ कनैत दलान

प्रश्न 39923. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चहकैत चौक आ कनैत दलान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चहकैत चौक आ कनैत दलान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2690मे बिपिन झाक प्रविष्टि “चहकैत चौक आ कनैत दलान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39924. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39925. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39926. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्राम संस्कृति

उत्तर: घ. ग्राम संस्कृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम संस्कृति” अछि।

प्रश्न 39927. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्राम संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्राम संस्कृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39928. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39929. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39930. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39931. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39932. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690मे बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ग्राम संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690मे बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ग्राम संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4000 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक

प्रश्न 39933. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2691मे बिपिन झाक प्रविष्टि “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39934. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39935. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 39936. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चिन्तन

उत्तर: घ. सामाजिक चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चिन्तन” अछि।

प्रश्न 39937. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39938. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39939. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39940. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39941. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39942. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691मे बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691मे बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4001 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका

प्रश्न 39943. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2692मे बिपिन झाक प्रविष्टि “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39944. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39945. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।

प्रश्न 39946. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक इतिहास

उत्तर: घ. साहित्यिक इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक इतिहास” अछि।

प्रश्न 39947. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39948. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39949. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39950. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39951. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39952. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692मे बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “साहित्यिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692मे बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “साहित्यिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4002 : विदेह-सदेह 30 — डा. राजेन्द्र विमल: साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल

प्रश्न 39953. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2693मे डा. राजेन्द्र विमलक प्रविष्टि “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39954. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39955. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39956. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गीत-संगीत समीक्षा

उत्तर: घ. गीत-संगीत समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गीत-संगीत समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39957. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गीत-संगीत समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत-संगीत समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गीत-संगीत समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39958. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39959. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39960. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39961. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39962. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693मे डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गीत-संगीत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693मे डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गीत-संगीत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4003 : विदेह-सदेह 30 — डा. राजेन्द्र विमल: 'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया

प्रश्न 39963. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक "'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2694मे डा. राजेन्द्र विमलक प्रविष्टि "'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया" रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39964. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक "'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया"क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39965. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक "'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "समीक्षा" अछि।

प्रश्न 39966. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक "'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति प्रभाव

उत्तर: घ. कृति प्रभाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "कृति प्रभाव" अछि।

प्रश्न 39967. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक "'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति प्रभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति प्रभाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "कृति प्रभाव" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39968. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक "'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39969. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39970. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39971. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39972. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694मे डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति प्रभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694मे डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति प्रभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4004 : विदेह-सदेह 30 — डा. राजेन्द्र विमल: नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी

प्रश्न 39973. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2695मे डा. राजेन्द्र विमलक प्रविष्टि “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39974. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39975. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39976. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा समीक्षा

उत्तर: घ. कथा समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा समीक्षा” अछि।

प्रश्न 39977. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39978. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39979. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39980. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39981. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39982. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695मे डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695मे डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4005 : विदेह-सदेह 30 — नीलिमा: मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा

प्रश्न 39983. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2696मे नीलिमाक प्रविष्टि “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39984. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39985. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पाकविधि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पाकविधि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाकविधि” अछि।

प्रश्न 39986. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक खानपान संस्कृति

उत्तर: घ. मिथिलाक खानपान संस्कृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक खानपान संस्कृति” अछि।

प्रश्न 39987. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक खानपान संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक खानपान संस्कृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक खानपान संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39988. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नीलिमा, विधा गद्य, उप-विधा पाकविधि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नीलिमा, विधा गद्य, उप-विधा पाकविधि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39989. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 39990. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पाकविधिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पाकविधिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 39991. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 39992. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696मे नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” प्रविष्टि गद्य, पाकविधि आ “मिथिलाक खानपान संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696मे नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” प्रविष्टि गद्य, पाकविधि आ “मिथिलाक खानपान संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4006 : विदेह-सदेह 30 — छवि झा/ कुमुद सिंह: मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता

प्रश्न 39993. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2697मे छवि झा/ कुमुद सिंहक प्रविष्टि “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 39994. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 39995. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

प्रश्न 39996. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सॉसुर संकेत सिद्धान्त

उत्तर: घ. सॉसुर संकेत सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सॉसुर संकेत सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 39997. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सॉसुर संकेत सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सॉसुर संकेत सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सॉसुर संकेत सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 39998. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक छवि झा/ कुमुद सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक छवि झा/ कुमुद सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 39999. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40000. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड 4006 : विदेह-सदेह 30 — छवि झा/ कुमुद सिंह: मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता

प्रश्न 40001. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40002. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697मे छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “सॉसुर संकेत सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697मे छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “सॉसुर संकेत सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4007 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: जानकी-नवमी

प्रश्न 40003. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जानकी-नवमी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जानकी-नवमी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2698मे नूतन झाक प्रविष्टि “जानकी-नवमी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40004. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40005. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40006. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पर्व

उत्तर: घ. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।

प्रश्न 40007. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40008. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40009. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40010. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40011. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40012. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698मे नूतन झाक “जानकी-नवमी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698मे नूतन झाक “जानकी-नवमी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4008 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: वटसावित्री

प्रश्न 40013. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वटसावित्री

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वटसावित्री

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2699मे नूतन झाक प्रविष्टि “वटसावित्री” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40014. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40015. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40016. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पर्व

उत्तर: घ. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।

प्रश्न 40017. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40018. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40019. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40020. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40021. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40022. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699मे नूतन झाक “वटसावित्री” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699मे नूतन झाक “वटसावित्री” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4009 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी

प्रश्न 40023. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2700मे नूतन झाक प्रविष्टि “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40024. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40025. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40026. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पर्व

उत्तर: घ. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।

प्रश्न 40027. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40028. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40029. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40030. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40031. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40032. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700मे नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700मे नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4010 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या

प्रश्न 40033. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2701मे नूतन झाक प्रविष्टि “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40034. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40035. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40036. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पर्व

उत्तर: घ. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।

प्रश्न 40037. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40038. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40039. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40040. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40041. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40042. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701मे नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701मे नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4011 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: दुर्गा पूजा

प्रश्न 40043. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दुर्गा पूजा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुर्गा पूजा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2702मे नूतन झाक प्रविष्टि “दुर्गा पूजा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40044. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40045. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40046. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पर्व

उत्तर: घ. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।

प्रश्न 40047. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40048. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40049. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40050. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40051. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40052. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702मे नूतन झाक “दुर्गा पूजा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702मे नूतन झाक “दुर्गा पूजा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4012 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: शरत्पूर्णिमा / कोजगरा

प्रश्न 40053. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शरत्पूर्णिमा / कोजगरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शरत्पूर्णिमा / कोजगरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2703मे नूतन झाक प्रविष्टि “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40054. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40055. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40056. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पर्व

उत्तर: घ. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।

प्रश्न 40057. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40058. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40059. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40060. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40061. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40062. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703मे नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703मे नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4013 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: दीपावली

प्रश्न 40063. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दीपावली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीपावली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2704मे नूतन झाक प्रविष्टि “दीपावली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40064. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40065. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40066. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पर्व

उत्तर: घ. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।

प्रश्न 40067. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40068. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40069. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40070. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40071. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40072. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704मे नूतन झाक “दीपावली” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704मे नूतन झाक “दीपावली” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4014 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया

प्रश्न 40073. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2705मे नूतन झाक प्रविष्टि “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40074. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40075. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40076. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पर्व

उत्तर: घ. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।

प्रश्न 40077. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40078. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40079. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40080. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40081. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40082. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705मे नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705मे नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4015 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: बाराती-सत्कार

प्रश्न 40083. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाराती-सत्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाराती-सत्कार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2706मे नूतन झाक प्रविष्टि “बाराती-सत्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40084. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40085. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40086. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक संस्कृति

उत्तर: घ. लोक संस्कृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक संस्कृति” अछि।

प्रश्न 40087. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक संस्कृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40088. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40089. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40090. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40091. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40092. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706मे नूतन झाक “बाराती-सत्कार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706मे नूतन झाक “बाराती-सत्कार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4016 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: चौठचन्द्र पूजा

प्रश्न 40093. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चौठचन्द्र पूजा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चौठचन्द्र पूजा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2707मे नूतन झाक प्रविष्टि “चौठचन्द्र पूजा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40094. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40095. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40096. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक पर्व

उत्तर: घ. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।

प्रश्न 40097. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40098. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40099. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40100. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40101. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40102. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707मे नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707मे नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4017 : विदेह-सदेह 30 — विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी': पंजी प्रबंध

प्रश्न 40103. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पंजी प्रबंध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंजी प्रबंध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2708मे विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क प्रविष्टि “पंजी प्रबंध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40104. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40105. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

प्रश्न 40106. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पञ्जी परम्परा

उत्तर: घ. पञ्जी परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पञ्जी परम्परा” अछि।

प्रश्न 40107. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पञ्जी परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पञ्जी परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पञ्जी परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40108. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी', विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी', विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40109. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40110. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40111. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40112. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708मे विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “पञ्जी परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708मे विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “पञ्जी परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4018 : विदेह-सदेह 30 — राजेन्द्र कुमार प्रधान: २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना

प्रश्न 40113. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2709मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक प्रविष्टि “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40114. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40115. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध/आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध/आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।

प्रश्न 40116. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन उपन्यास विश्लेषण

उत्तर: घ. समकालीन उपन्यास विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन उपन्यास विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 40117. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन उपन्यास विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन उपन्यास विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन उपन्यास विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40118. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40119. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40120. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40121. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40122. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “समकालीन उपन्यास विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “समकालीन उपन्यास विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4019 : विदेह-सदेह 30 — खुशबू झा: हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी

प्रश्न 40123. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2710मे खुशबू झाक प्रविष्टि “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40124. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40125. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40126. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पाठकीय प्रतिक्रिया

उत्तर: घ. पाठकीय प्रतिक्रिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पाठकीय प्रतिक्रिया” अछि।

प्रश्न 40127. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पाठकीय प्रतिक्रिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाठकीय प्रतिक्रिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पाठकीय प्रतिक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40128. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40129. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40130. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40131. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40132. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710मे खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पाठकीय प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710मे खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पाठकीय प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4020 : विदेह-सदेह 30 — खुशबू झा: मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर

प्रश्न 40133. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2711मे खुशबू झाक प्रविष्टि “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40134. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40135. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40136. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40137. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40138. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40139. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40140. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40141. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40142. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711मे खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711मे खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4021 : विदेह-सदेह 30 — चन्द्रकिशोर: समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी

प्रश्न 40143. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2712मे चन्द्रकिशोरक प्रविष्टि “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40144. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40145. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40146. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन

उत्तर: घ. रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 40147. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40148. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रकिशोर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रकिशोर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40149. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40150. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40151. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40152. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712मे चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712मे चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4022 : विदेह-सदेह 30 — सुदीप झा: सामाजिक मूल्य मान्यताकेँ चोच मारैत 'चिड़ै'

प्रश्न 40153. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकेँ चोच मारैत 'चिड़ै'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सामाजिक मूल्य मान्यताकेँ चोच मारैत 'चिड़ै'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक मूल्य मान्यताकेँ चोच मारैत 'चिड़ै'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2713मे सुदीप झाक प्रविष्टि “सामाजिक मूल्य मान्यताकेँ चोच मारैत 'चिड़ै'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40154. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकेँ चोच मारैत 'चिड़ै'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40155. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकेँ चोच मारैत 'चिड़ै'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40156. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा संग्रह आलोचना

उत्तर: घ. कथा संग्रह आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह आलोचना” अछि।

प्रश्न 40157. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा संग्रह आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा संग्रह आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40158. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुदीप झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुदीप झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40159. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40160. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40161. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40162. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713मे सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713मे सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4023 : विदेह-सदेह 30 — राजेश कुमार कर्ण: चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै

प्रश्न 40163. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2714मे राजेश कुमार कर्णक प्रविष्टि “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40164. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40165. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40166. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40167. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40168. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजेश कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजेश कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40169. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40170. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40171. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40172. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714मे राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714मे राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4024 : विदेह-सदेह 30 — चन्द्रेश: रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'

प्रश्न 40173. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2715मे चन्द्रेशक प्रविष्टि “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40174. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40175. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40176. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक समीक्षा

उत्तर: घ. साहित्यिक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40177. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40178. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40179. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40180. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40181. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40182. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715मे चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715मे चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4025 : विदेह-सदेह 30 — चन्द्रेश: संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा

प्रश्न 40183. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2716मे चन्द्रेशक प्रविष्टि “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40184. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40185. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40186. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40187. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40188. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40189. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40190. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40191. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40192. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716मे चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716मे चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4026 : विदेह-सदेह 30 — चन्द्रेश: यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव

प्रश्न 40193. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2717मे चन्द्रेशक प्रविष्टि “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40194. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40195. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 40196. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक आयोजन

उत्तर: घ. सांस्कृतिक आयोजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक आयोजन” अछि।

प्रश्न 40197. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक आयोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक आयोजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक आयोजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40198. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40199. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40200. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40201. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40202. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717मे चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सांस्कृतिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717मे चन्द्रेशक “यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सांस्कृतिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4027 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण

प्रश्न 40203. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2718मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40204. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40205. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40206. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमञ्च समीक्षक

उत्तर: घ. रंगमञ्च समीक्षक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च समीक्षक” अछि।

प्रश्न 40207. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमञ्च समीक्षक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमञ्च समीक्षक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40208. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40209. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40210. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40211. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40212. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718मे प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रंगमञ्च समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718मे प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रंगमञ्च समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4028 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: 'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि

प्रश्न 40213. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. 'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. 'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2719मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40214. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40215. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 40216. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाटक समीक्षा

उत्तर: घ. नाटक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40217. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाटक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40218. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40219. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40220. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40221. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40222. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719मे प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719मे प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4029 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग

प्रश्न 40223. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2720मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40224. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40225. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 40226. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमञ्च प्रयोग

उत्तर: घ. रंगमञ्च प्रयोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च प्रयोग” अछि।

प्रश्न 40227. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमञ्च प्रयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमञ्च प्रयोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40228. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40229. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40230. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40231. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40232. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720मे प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगमञ्च प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720मे प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगमञ्च प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4030 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा

प्रश्न 40233. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2721मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40234. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40235. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40236. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40237. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40238. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40239. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40240. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40241. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40242. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721मे प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721मे प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4031 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: रंगदृष्टि

प्रश्न 40243. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रंगदृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगदृष्टि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2722मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “रंगदृष्टि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40244. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40245. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 40246. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमञ्च सिद्धान्त

उत्तर: घ. रंगमञ्च सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 40247. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमञ्च सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमञ्च सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40248. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40249. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40250. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40251. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40252. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722मे प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगमञ्च सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722मे प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगमञ्च सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4032 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि

प्रश्न 40253. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2723मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40254. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40255. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 40256. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन रंगकला

उत्तर: घ. समकालीन रंगकला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन रंगकला” अछि।

प्रश्न 40257. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन रंगकला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन रंगकला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन रंगकला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40258. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40259. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40260. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40261. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40262. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723मे प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “समकालीन रंगकला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723मे प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “समकालीन रंगकला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4033 : विदेह-सदेह 30 — गोपाल प्रसाद: मिथिला कवि कोकिल विद्यापति

प्रश्न 40263. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला कवि कोकिल विद्यापति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला कवि कोकिल विद्यापति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2724मे गोपाल प्रसादक प्रविष्टि “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40264. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40265. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40266. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषा गति

उत्तर: घ. मैथिली भाषा गति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा गति” अछि।

प्रश्न 40267. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली भाषा गति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषा गति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा गति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40268. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40269. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40270. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40271. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40272. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724मे गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषा गति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724मे गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषा गति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4034 : विदेह-सदेह 30 — गोपाल प्रसाद: हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा

प्रश्न 40273. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2725मे गोपाल प्रसादक प्रविष्टि “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40274. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40275. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40276. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा सम्बन्ध

उत्तर: घ. भाषा सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 40277. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40278. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40279. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40280. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40281. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40282. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725मे गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725मे गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4035 : विदेह-सदेह 30 — गोपाल प्रसाद: सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा

प्रश्न 40283. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2726मे गोपाल प्रसादक प्रविष्टि “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40284. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40285. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 40286. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषा आ समाज

उत्तर: घ. भाषा आ समाज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा आ समाज” अछि।

प्रश्न 40287. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषा आ समाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा आ समाज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा आ समाज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40288. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40289. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40290. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40291. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40292. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726मे गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “भाषा आ समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726मे गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “भाषा आ समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4036 : विदेह-सदेह 30 — पंचानन मिश्र: मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा

प्रश्न 40293. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2727मे पंचानन मिश्रक प्रविष्टि “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40294. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40295. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 40296. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल

उत्तर: घ. मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल” अछि।

प्रश्न 40297. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40298. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंचानन मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंचानन मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40299. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40300. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40301. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40302. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727मे पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727मे पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4037 : विदेह-सदेह 30 — पंचानन मिश्र: मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ

प्रश्न 40303. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2728मे पंचानन मिश्रक प्रविष्टि “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40304. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40305. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।

प्रश्न 40306. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धार्मिक स्थल शोध

उत्तर: घ. धार्मिक स्थल शोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धार्मिक स्थल शोध” अछि।

प्रश्न 40307. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धार्मिक स्थल शोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धार्मिक स्थल शोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धार्मिक स्थल शोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40308. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पंचानन मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पंचानन मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40309. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40310. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40311. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40312. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728मे पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “धार्मिक स्थल शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728मे पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “धार्मिक स्थल शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4038 : विदेह-सदेह 30 — भीमनाथ झा: चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ

प्रश्न 40313. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2729मे भीमनाथ झाक प्रविष्टि “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40314. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40315. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40316. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक इतिहास

उत्तर: घ. साहित्यिक इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक इतिहास” अछि।

प्रश्न 40317. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40318. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भीमनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भीमनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40319. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40320. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40321. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40322. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729मे भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729मे भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4039 : विदेह-सदेह 30 — भीमनाथ झा: मखान खानि ई मिथिला

प्रश्न 40323. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मखान खानि ई मिथिला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मखान खानि ई मिथिला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2730मे भीमनाथ झाक प्रविष्टि “मखान खानि ई मिथिला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40324. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40325. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40326. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृषि संस्कृति

उत्तर: घ. कृषि संस्कृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृषि संस्कृति” अछि।

प्रश्न 40327. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृषि संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृषि संस्कृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृषि संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40328. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भीमनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भीमनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40329. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40330. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40331. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40332. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730मे भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कृषि संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730मे भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कृषि संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4040 : विदेह-सदेह 30 — कुमार राधारमण: पाकिस्तान मे सेक्स-विचार

प्रश्न 40333. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पाकिस्तान मे सेक्स-विचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाकिस्तान मे सेक्स-विचार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2731मे कुमार राधारमणक प्रविष्टि “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40334. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40335. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40336. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक विमर्श

उत्तर: घ. सामाजिक विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विमर्श” अछि।

प्रश्न 40337. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40338. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार राधारमण, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार राधारमण, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40339. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40340. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40341. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40342. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731मे कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731मे कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4041 : विदेह-सदेह 30 — डा. शंकरदेवझा: मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली

प्रश्न 40343. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2732मे डा. शंकरदेवझाक प्रविष्टि “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40344. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40345. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

प्रश्न 40346. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ऐतिहासिक पुरातत्व

उत्तर: घ. ऐतिहासिक पुरातत्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ऐतिहासिक पुरातत्व” अछि।

प्रश्न 40347. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ऐतिहासिक पुरातत्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऐतिहासिक पुरातत्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऐतिहासिक पुरातत्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40348. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डा. शंकरदेवझा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डा. शंकरदेवझा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40349. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40350. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40351. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40352. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732मे डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “ऐतिहासिक पुरातत्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732मे डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “ऐतिहासिक पुरातत्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4042 : विदेह-सदेह 30 — राजदेव मंडल: जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन

प्रश्न 40353. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2733मे राजदेव मंडलक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40354. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40355. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40356. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्र शैलीक समीक्षा

उत्तर: घ. पत्र शैलीक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्र शैलीक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40357. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्र शैलीक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्र शैलीक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्र शैलीक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40358. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40359. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40360. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40361. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40362. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733मे राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्र शैलीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733मे राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्र शैलीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4043 : विदेह-सदेह 30 — राजदेव मंडल: जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर

प्रश्न 40363. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2734मे राजदेव मंडलक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40364. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40365. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40366. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपन्यास मूल्यांकन

उत्तर: घ. उपन्यास मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 40367. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपन्यास मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपन्यास मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40368. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40369. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40370. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40371. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40372. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734मे राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734मे राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4044 : विदेह-सदेह 30 — राजदेव मंडल: कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)

प्रश्न 40373. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2735मे राजदेव मंडलक प्रविष्टि “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40374. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40375. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40376. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रोत्तर समीक्षा

उत्तर: घ. पत्रोत्तर समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रोत्तर समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40377. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रोत्तर समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रोत्तर समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रोत्तर समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40378. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40379. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40380. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40381. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40382. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735मे राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्रोत्तर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735मे राजदेव मंडलक “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्रोत्तर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4045 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. मेघन प्रसाद: मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास

प्रश्न 40383. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2736मे डॉ. मेघन प्रसादक प्रविष्टि “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40384. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40385. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

प्रश्न 40386. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनुवाद सिद्धान्त

उत्तर: घ. अनुवाद सिद्धान्त

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवाद सिद्धान्त” अछि।

प्रश्न 40387. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनुवाद सिद्धान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुवाद सिद्धान्त

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनुवाद सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40388. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. मेघन प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. मेघन प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40389. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40390. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40391. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40392. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736मे डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “अनुवाद सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736मे डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “अनुवाद सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4046 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. इन्दुधर झा: दू-पत्र: एक विश्लेषण

प्रश्न 40393. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दू-पत्र: एक विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दू-पत्र: एक विश्लेषण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2737मे डॉ. इन्दुधर झाक प्रविष्टि “दू-पत्र: एक विश्लेषण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40394. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40395. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40396. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्र साहित्य विश्लेषण

उत्तर: घ. पत्र साहित्य विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्र साहित्य विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 40397. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्र साहित्य विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्र साहित्य विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्र साहित्य विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40398. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. इन्दुधर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. इन्दुधर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40399. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40400. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40401. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40402. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737मे डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्र साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737मे डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्र साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4047 : विदेह-सदेह 30 — रामलोचन ठाकुर: समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा

प्रश्न 40403. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2738मे रामलोचन ठाकुरक प्रविष्टि “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40404. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40405. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 40406. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन कथा यथार्थवोध

उत्तर: घ. समकालीन कथा यथार्थवोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन कथा यथार्थवोध” अछि।

प्रश्न 40407. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन कथा यथार्थवोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन कथा यथार्थवोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन कथा यथार्थवोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40408. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामलोचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामलोचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40409. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40410. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40411. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40412. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738मे रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “समकालीन कथा यथार्थवोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738मे रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “समकालीन कथा यथार्थवोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4048 : विदेह-सदेह 30 — केदार कानन: जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि

प्रश्न 40413. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2739मे केदार काननक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40414. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40415. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40416. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति विशेष समीक्षा

उत्तर: घ. कृति विशेष समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति विशेष समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40417. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति विशेष समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति विशेष समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति विशेष समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40418. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40419. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40420. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40421. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40422. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739मे केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति विशेष समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739मे केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति विशेष समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4049 : विदेह-सदेह 30 — श्यामसुन्दर शशि: साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव

प्रश्न 40423. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2740मे श्यामसुन्दर शशिक प्रविष्टि “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40424. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40425. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्रद्धाञ्जलि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्रद्धाञ्जलि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्रद्धाञ्जलि” अछि।

प्रश्न 40426. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल परम्परा

उत्तर: घ. गजल परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल परम्परा” अछि।

प्रश्न 40427. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40428. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा श्रद्धाञ्जलि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा श्रद्धाञ्जलि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40429. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40430. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ श्रद्धाञ्जलिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ श्रद्धाञ्जलिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40431. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40432. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740मे श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” प्रविष्टि गद्य, श्रद्धाञ्जलि आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740मे श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” प्रविष्टि गद्य, श्रद्धाञ्जलि आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4050 : विदेह-सदेह 30 — फूल चन्द्र झा 'प्रवीण': मैथिली शिशु साहित्य लोक

प्रश्न 40433. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली शिशु साहित्य लोक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली शिशु साहित्य लोक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2741मे फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क प्रविष्टि “मैथिली शिशु साहित्य लोक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40434. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40435. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. अनुसन्धान

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. अनुसन्धान

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुसन्धान” अछि।

प्रश्न 40436. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल साहित्य सर्वेक्षण

उत्तर: घ. बाल साहित्य सर्वेक्षण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य सर्वेक्षण” अछि।

प्रश्न 40437. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल साहित्य सर्वेक्षण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल साहित्य सर्वेक्षण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य सर्वेक्षण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40438. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक फूल चन्द्र झा 'प्रवीण', विधा गद्य, उप-विधा अनुसन्धान

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक फूल चन्द्र झा 'प्रवीण', विधा गद्य, उप-विधा अनुसन्धान

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40439. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40440. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ अनुसन्धानक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ अनुसन्धानक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40441. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40442. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741मे फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” प्रविष्टि गद्य, अनुसन्धान आ “बाल साहित्य सर्वेक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741मे फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” प्रविष्टि गद्य, अनुसन्धान आ “बाल साहित्य सर्वेक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4052 : विदेह-सदेह 30 — रमेश: प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...

प्रश्न 40443. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2743मे रमेशक प्रविष्टि “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40444. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40445. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आलोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आलोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

प्रश्न 40446. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषागत समीक्षा

उत्तर: घ. भाषागत समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषागत समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40447. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषागत समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषागत समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषागत समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40448. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमेश, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमेश, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40449. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40450. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40451. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40452. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743मे रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “भाषागत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743मे रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “भाषागत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4053 : विदेह-सदेह 30 — मन्त्रेश्वर झा: चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल

प्रश्न 40453. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2744मे मन्त्रेश्वर झाक प्रविष्टि “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40454. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40455. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40456. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चरित्र चित्रण कला

उत्तर: घ. चरित्र चित्रण कला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चरित्र चित्रण कला” अछि।

प्रश्न 40457. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चरित्र चित्रण कला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चरित्र चित्रण कला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चरित्र चित्रण कला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40458. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मन्त्रेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मन्त्रेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40459. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40460. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40461. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40462. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744मे मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चरित्र चित्रण कला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744मे मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चरित्र चित्रण कला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4054 : विदेह-सदेह 30 — सुभाष चन्द्र यादव: रचनाक पाठ आ लेखक

प्रश्न 40463. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रचनाक पाठ आ लेखक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रचनाक पाठ आ लेखक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2745मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “रचनाक पाठ आ लेखक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40464. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40465. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40466. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी आख्यान

उत्तर: घ. ओबीसी आख्यान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी आख्यान” अछि।

प्रश्न 40467. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी आख्यान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी आख्यान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी आख्यान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40468. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40469. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40470. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40471. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40472. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745मे सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ओबीसी आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745मे सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ओबीसी आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4055 : विदेह-सदेह 30 — सुभाष चन्द्र यादव: जगदीश प्रसाद मंडल

प्रश्न 40473. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जगदीश प्रसाद मंडल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जगदीश प्रसाद मंडल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2746मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मंडल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40474. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40475. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40476. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यथार्थवाद

उत्तर: घ. यथार्थवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थवाद” अछि।

प्रश्न 40477. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यथार्थवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यथार्थवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40478. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40479. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40480. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40481. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40482. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746मे सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “यथार्थवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746मे सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “यथार्थवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4056 : विदेह-सदेह 30 — सुभाष चन्द्र यादव: मैथिली लोक-कथा

प्रश्न 40483. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली लोक-कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोक-कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2747मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “मैथिली लोक-कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40484. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40485. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40486. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक कथा परम्परा

उत्तर: घ. लोक कथा परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक कथा परम्परा” अछि।

प्रश्न 40487. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक कथा परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक कथा परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक कथा परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40488. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40489. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40490. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40491. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40492. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747मे सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक कथा परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747मे सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक कथा परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4057 : विदेह-सदेह 30 — अच्छेलाल शास्त्री: रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द

प्रश्न 40493. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2748मे अच्छेलाल शास्त्रीक प्रविष्टि “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40494. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40495. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40496. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कविता टिप्पणी

उत्तर: घ. कविता टिप्पणी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 40497. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कविता टिप्पणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता टिप्पणी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता टिप्पणी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40498. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अच्छेलाल शास्त्री, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अच्छेलाल शास्त्री, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40499. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40500. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40501. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40502. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748मे अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748मे अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4058 : विदेह-सदेह 30 — दुर्गानन्द मंडल: शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द

प्रश्न 40503. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2749मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40504. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40505. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40506. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा समीक्षा

उत्तर: घ. कथा समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40507. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40508. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40509. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40510. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40511. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40512. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749मे दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749मे दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4059 : विदेह-सदेह 30 — दुर्गानन्द मंडल: नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि

प्रश्न 40513. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2750मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40514. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40515. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40516. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाटक समीक्षा

उत्तर: घ. नाटक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40517. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाटक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40518. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40519. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40520. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40521. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40522. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750मे दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750मे दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4060 : विदेह-सदेह 30 — दुर्गानन्द मंडल: जीवन-मरण

प्रश्न 40523. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जीवन-मरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-मरण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2751मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “जीवन-मरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40524. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40525. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40526. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक निबन्ध

उत्तर: घ. दार्शनिक निबन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40527. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक निबन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक निबन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक निबन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40528. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40529. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40530. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40531. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40532. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751मे दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “दार्शनिक निबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751मे दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “दार्शनिक निबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4061 : विदेह-सदेह 30 — दुर्गानन्द मंडल: पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल

प्रश्न 40533. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2752मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40534. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40535. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40536. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कृति समीक्षा

उत्तर: घ. कृति समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40537. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कृति समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृति समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40538. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40539. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40540. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40541. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40542. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752मे दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752मे दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4062 : विदेह-सदेह 30 — दुर्गानन्द मंडल: टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त

प्रश्न 40543. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2753मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40544. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40545. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 40546. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुरस्कार यात्रा

उत्तर: घ. पुरस्कार यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुरस्कार यात्रा” अछि।

प्रश्न 40547. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुरस्कार यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुरस्कार यात्रा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुरस्कार यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40548. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40549. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40550. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त”कँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40551. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40552. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753मे दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “पुरस्कार यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753मे दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “पुरस्कार यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4063 : विदेह-सदेह 30 — प्रो. वीणा ठाकुर: प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान

प्रश्न 40553. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2754मे प्रो. वीणा ठाकुरक प्रविष्टि “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40554. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40555. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।

प्रश्न 40556. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक इतिहास

उत्तर: घ. सांस्कृतिक इतिहास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक इतिहास” अछि।

प्रश्न 40557. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक इतिहास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40558. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40559. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40560. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40561. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40562. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754मे प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “सांस्कृतिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754मे प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “सांस्कृतिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4064 : विदेह-सदेह 30 — प्रो. वीणा ठाकुर: गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

प्रश्न 40563. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2755मे प्रो. वीणा ठाकुरक प्रविष्टि “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40564. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40565. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40566. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चित्रकथा समीक्षा

उत्तर: घ. चित्रकथा समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकथा समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40567. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चित्रकथा समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्रकथा समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40568. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40569. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40570. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40571. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40572. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755मे प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755मे प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4065 : विदेह-सदेह 30 — प्रो. वीणा ठाकुर: जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा

प्रश्न 40573. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2756मे प्रो. वीणा ठाकुरक प्रविष्टि “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40574. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40575. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40576. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपन्यास समीक्षा

उत्तर: घ. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40577. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपन्यास समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपन्यास समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40578. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40579. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40580. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40581. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40582. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756मे प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756मे प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4066 : विदेह-सदेह 30 — प्रो. वीणा ठाकुर: महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी

प्रश्न 40583. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2757मे प्रो. वीणा ठाकुरक प्रविष्टि “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40584. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40585. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40586. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कवि व्यक्तित्व

उत्तर: घ. कवि व्यक्तित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि व्यक्तित्व” अछि।

प्रश्न 40587. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कवि व्यक्तित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि व्यक्तित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि व्यक्तित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40588. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40589. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40590. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40591. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40592. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757मे प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कवि व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757मे प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कवि व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4067 : विदेह-सदेह 30 — अशोक: बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह

प्रश्न 40593. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2758मे अशोकक प्रविष्टि “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40594. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40595. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40596. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कथा संग्रह समीक्षा

उत्तर: घ. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40597. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कथा संग्रह समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा संग्रह समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40598. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40599. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40600. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40601. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40602. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758मे अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758मे अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4068 : विदेह-सदेह 30 — उषाकिरण खान: अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया

प्रश्न 40603. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2759मे उषाकिरण खानक प्रविष्टि “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40604. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40605. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रतिक्रिया

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रतिक्रिया

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रतिक्रिया” अछि।

प्रश्न 40606. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पाठकीय प्रतिक्रिया

उत्तर: घ. पाठकीय प्रतिक्रिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पाठकीय प्रतिक्रिया” अछि।

प्रश्न 40607. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पाठकीय प्रतिक्रिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाठकीय प्रतिक्रिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पाठकीय प्रतिक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40608. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उषाकिरण खान, विधा गद्य, उप-विधा प्रतिक्रिया

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उषाकिरण खान, विधा गद्य, उप-विधा प्रतिक्रिया

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40609. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40610. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रतिक्रियाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रतिक्रियाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40611. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40612. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759मे उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” प्रविष्टि गद्य, प्रतिक्रिया आ “पाठकीय प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759मे उषाकिरण खानक “अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” प्रविष्टि गद्य, प्रतिक्रिया आ “पाठकीय प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4069 : विदेह-सदेह 30 — नागेन्द्र कुमार कर्ण: मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा

प्रश्न 40613. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2760मे नागेन्द्र कुमार कर्णक प्रविष्टि “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40614. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40615. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा-वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 40616. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धार्मिक यात्रा

उत्तर: घ. धार्मिक यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धार्मिक यात्रा” अछि।

प्रश्न 40617. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धार्मिक यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धार्मिक यात्रा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धार्मिक यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40618. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नागेन्द्र कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नागेन्द्र कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40619. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40620. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40621. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40622. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760मे नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “धार्मिक यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760मे नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “धार्मिक यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4070 : विदेह-सदेह 30 — नागेन्द्र कुमार कर्ण: सुजित कुमार झा पर

प्रश्न 40623. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुजित कुमार झा पर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुजित कुमार झा पर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2761मे नागेन्द्र कुमार कर्णक प्रविष्टि “सुजित कुमार झा पर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40624. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40625. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40626. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखक परिचय

उत्तर: घ. लेखक परिचय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखक परिचय” अछि।

प्रश्न 40627. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लेखक परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेखक परिचय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लेखक परिचय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40628. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नागेन्द्र कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नागेन्द्र कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40629. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40630. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40631. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40632. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761मे नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “लेखक परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761मे नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “लेखक परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4071 : विदेह-सदेह 30 — भालचन्द्र झा: बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा

प्रश्न 40633. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2762मे भालचन्द्र झाक प्रविष्टि “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40634. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40635. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 40636. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षा दर्शन

उत्तर: घ. शिक्षा दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा दर्शन” अछि।

प्रश्न 40637. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षा दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40638. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भालचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भालचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40639. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40640. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40641. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40642. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762मे भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शिक्षा दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762मे भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शिक्षा दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4072 : विदेह-सदेह 30 — ब्युटी कुमारी: राहुलजी एक नजरिमे

प्रश्न 40643. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राहुलजी एक नजरिमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राहुलजी एक नजरिमे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2763मे ब्युटी कुमारीक प्रविष्टि “राहुलजी एक नजरिमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40644. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40645. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यक्तित्व रेखांकन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यक्तित्व रेखांकन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यक्तित्व रेखांकन” अछि।

प्रश्न 40646. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यक्ति परिचय

उत्तर: घ. व्यक्ति परिचय

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यक्ति परिचय” अछि।

प्रश्न 40647. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यक्ति परिचय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यक्ति परिचय

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यक्ति परिचय” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40648. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ब्युटी कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा व्यक्तित्व रेखांकन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ब्युटी कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा व्यक्तित्व रेखांकन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40649. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40650. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यक्तित्व रेखांकनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यक्तित्व रेखांकनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40651. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40652. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763मे ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि गद्य, व्यक्तित्व रेखांकन आ “व्यक्ति परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763मे ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि गद्य, व्यक्तित्व रेखांकन आ “व्यक्ति परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4073 : विदेह-सदेह 30 — बसन्त झा: उगना

प्रश्न 40653. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उगना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उगना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2764मे बसन्त झाक प्रविष्टि “उगना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40654. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40655. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/कथा” अछि।

प्रश्न 40656. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सृजनात्मक गद्य

उत्तर: घ. सृजनात्मक गद्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सृजनात्मक गद्य” अछि।

प्रश्न 40657. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सृजनात्मक गद्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सृजनात्मक गद्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सृजनात्मक गद्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40658. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बसन्त झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बसन्त झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40659. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40660. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40661. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40662. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764मे बसन्त झाक “उगना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/कथा आ “सृजनात्मक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764मे बसन्त झाक “उगना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/कथा आ “सृजनात्मक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4074 : विदेह-सदेह 30 — धीरेन्द्र कुमार: नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')

प्रश्न 40663. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2765मे धीरेन्द्र कुमारक प्रविष्टि “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40664. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40665. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40666. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाटक समीक्षा

उत्तर: घ. नाटक समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40667. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाटक समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाटक समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40668. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40669. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40670. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')”कैं विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40671. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40672. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765मे धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765मे धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4075 : विदेह-सदेह 30 — धीरेन्द्र कुमार: प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि

प्रश्न 40673. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2766मे धीरेन्द्र कुमारक प्रविष्टि “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40674. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40675. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40676. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चित्रकथा समीक्षा

उत्तर: घ. चित्रकथा समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकथा समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40677. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चित्रकथा समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्रकथा समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40678. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40679. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40680. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40681. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40682. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766मे धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766मे धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4076 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. शेफालिका वर्मा: प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा

प्रश्न 40683. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2767मे डॉ. शेफालिका वर्माक प्रविष्टि “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40684. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40685. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40686. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चित्रकथा विधा समीक्षा

उत्तर: घ. चित्रकथा विधा समीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकथा विधा समीक्षा” अछि।

प्रश्न 40687. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चित्रकथा विधा समीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चित्रकथा विधा समीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकथा विधा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40688. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40689. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40690. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40691. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40692. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767मे डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा विधा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767मे डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा विधा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4077 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मिथिलाक ध्वज गीत

प्रश्न 40693. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक ध्वज गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक ध्वज गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2768मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मिथिलाक ध्वज गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40694. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40695. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 40696. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला पहचानक प्रतीक गीत

उत्तर: घ. मिथिला पहचानक प्रतीक गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला पहचानक प्रतीक गीत” अछि।

प्रश्न 40697. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला पहचानक प्रतीक गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला पहचानक प्रतीक गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला पहचानक प्रतीक गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40698. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40699. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40700. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत”केँ विदेह-सदेह 30क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40701. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40702. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768मे गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मिथिला पहचानक प्रतीक गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768मे गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मिथिला पहचानक प्रतीक गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4078 : विदेह-सदेह 30 — (सम्पादक संकलन): किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन

प्रश्न 40703. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2769मे (सम्पादक संकलन)क प्रविष्टि “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40704. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40705. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सुभाषित

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सुभाषित

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सुभाषित” अछि।

प्रश्न 40706. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन

उत्तर: घ. संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन” अछि।

प्रश्न 40707. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40708. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा सुभाषित

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा सुभाषित

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40709. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40710. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन”केँ विदेह-सदेह 30क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सुभाषितक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सुभाषितक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40711. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40712. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769मे (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” प्रविष्टि पद्य, सुभाषित आ “संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769मे (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” प्रविष्टि पद्य, सुभाषित आ “संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4079 : विदेह-सदेह 30 — (सम्पादक संकलन): बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक

प्रश्न 40713. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2770मे (सम्पादक संकलन)क प्रविष्टि “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40714. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40715. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. श्लोक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. श्लोक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्लोक” अछि।

प्रश्न 40716. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षाप्रद श्लोक संकलन

उत्तर: घ. शिक्षाप्रद श्लोक संकलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षाप्रद श्लोक संकलन” अछि।

प्रश्न 40717. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षाप्रद श्लोक संकलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षाप्रद श्लोक संकलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षाप्रद श्लोक संकलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40718. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा श्लोक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा श्लोक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40719. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40720. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक”केँ विदेह-सदेह 30क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ श्लोकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ श्लोकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40721. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40722. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770मे (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” प्रविष्टि पद्य, श्लोक आ “शिक्षाप्रद श्लोक संकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770मे (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” प्रविष्टि पद्य, श्लोक आ “शिक्षाप्रद श्लोक संकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4080 : विदेह-सदेह 30 — (सम्पादक संकलन): संदेश

प्रश्न 40723. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संदेश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संदेश

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2771मे (सम्पादक संकलन)क प्रविष्टि “संदेश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40724. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40725. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता” अछि।

प्रश्न 40726. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षाप्रद कविता

उत्तर: घ. शिक्षाप्रद कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षाप्रद कविता” अछि।

प्रश्न 40727. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षाप्रद कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षाप्रद कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षाप्रद कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40728. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40729. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40730. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश”केँ विदेह-सदेह 30क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40731. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40732. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771मे (सम्पादक संकलन)क “संदेश” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “शिक्षाप्रद कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771मे (सम्पादक संकलन)क “संदेश” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “शिक्षाप्रद कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4081 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)

प्रश्न 40733. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2772मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40734. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “यात्रा-वृत्तान्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40735. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40736. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कम्बोडिया यात्रा

उत्तर: घ. कम्बोडिया यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कम्बोडिया यात्रा” अछि।

प्रश्न 40737. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कम्बोडिया यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कम्बोडिया यात्रा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कम्बोडिया यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40738. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा यात्रा-वृत्तान्त, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा यात्रा-वृत्तान्त, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40739. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40740. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)”केँ विदेह-सदेह 31क यात्रा-वृत्तान्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे यात्रा-वृत्तान्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे यात्रा-वृत्तान्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40741. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40742. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772मे डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)” प्रविष्टि यात्रा-वृत्तान्त, प्रविष्टि आ “कम्बोडिया यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772मे डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेंह (नोम्पेंह)” प्रविष्टि यात्रा-वृत्तान्त, प्रविष्टि आ “कम्बोडिया यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4082 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत

प्रश्न 40743. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2773मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40744. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. यात्रा-वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. यात्रा-वृत्तान्त

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “यात्रा-वृत्तान्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40745. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40746. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अंकोरवाट केन्द्रित

उत्तर: घ. अंकोरवाट केन्द्रित

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अंकोरवाट केन्द्रित” अछि।

प्रश्न 40747. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अंकोरवाट केन्द्रित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंकोरवाट केन्द्रित

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अंकोरवाट केन्द्रित” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40748. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा यात्रा-वृत्तान्त, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा यात्रा-वृत्तान्त, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40749. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40750. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत”केँ विदेह-सदेह 31क यात्रा-वृत्तान्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे यात्रा-वृत्तान्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे यात्रा-वृत्तान्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40751. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40752. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” प्रविष्टि यात्रा-वृत्तान्त, प्रविष्टि आ “अंकोरवाट केन्द्रित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” प्रविष्टि यात्रा-वृत्तान्त, प्रविष्टि आ “अंकोरवाट केन्द्रित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4083 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: लघुकथा- भागमंती

प्रश्न 40753. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- भागमंती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- भागमंती

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2774मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “लघुकथा- भागमंती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40754. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40755. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40756. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण पारिवारिक कथा

उत्तर: घ. ग्रामीण पारिवारिक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण पारिवारिक कथा” अछि।

प्रश्न 40757. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण पारिवारिक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण पारिवारिक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण पारिवारिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40758. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40759. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40760. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40761. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40762. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण पारिवारिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण पारिवारिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4084 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: सोर

प्रश्न 40763. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2775मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “सोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40764. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40765. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40766. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानसिक संघर्ष

उत्तर: घ. मानसिक संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानसिक संघर्ष” अछि।

प्रश्न 40767. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानसिक संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानसिक संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानसिक संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40768. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40769. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40770. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40771. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40772. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मानसिक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मानसिक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4085 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: कोन डिर पर केकर खोता

प्रश्न 40773. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिर पर केकर खोता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोन डिर पर केकर खोता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोन डिर पर केकर खोता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2776मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “कोन डिर पर केकर खोता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40774. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिर पर केकर खोता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40775. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिर पर केकर खोता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40776. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिर पर केकर खोता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता

उत्तर: घ. पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता” अछि।

प्रश्न 40777. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिार पर केकर खोता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40778. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिार पर केकर खोता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40779. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिार पर केकर खोता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40780. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिार पर केकर खोता”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40781. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिार पर केकर खोता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40782. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिार पर केकर खोता” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डिार पर केकर खोता” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4086 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: घुहर ताकू

प्रश्न 40783. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घुहर ताकू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घुहर ताकू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2777मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “घुहर ताकू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40784. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40785. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40786. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।

प्रश्न 40787. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40788. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40789. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40790. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40791. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40792. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4087 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: माटीक मुस्त

प्रश्न 40793. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माटीक मुस्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माटीक मुस्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2778मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “माटीक मुस्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40794. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40795. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40796. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारीक संघर्ष

उत्तर: घ. नारीक संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारीक संघर्ष” अछि।

प्रश्न 40797. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारीक संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारीक संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारीक संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40798. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40799. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40800. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40801. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40802. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778मे डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “नारीक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778मे डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “नारीक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4088 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: विलायत वाली किनया

प्रश्न 40803. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विलायत वाली किनया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विलायत वाली किनया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2779मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “विलायत वाली किनया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40804. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40805. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40806. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी जीवन

उत्तर: घ. प्रवासी जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवन” अछि।

प्रश्न 40807. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40808. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40809. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40810. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40811. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40812. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779मे डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “प्रवासी जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779मे डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “प्रवासी जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4089 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: सूटक कपडा

प्रश्न 40813. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सूटक कपडा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूटक कपडा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2780मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “सूटक कपडा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40814. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40815. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40816. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य-व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 40817. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40818. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40819. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40820. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40821. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40822. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “हास्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “हास्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4090 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: घुमौन (चुमोन)

प्रश्न 40823. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घुमौन (चुमोन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घुमौन (चुमोन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2781मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “घुमौन (चुमोन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40824. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40825. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40826. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह-रीति

उत्तर: घ. विवाह-रीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह-रीति” अछि।

प्रश्न 40827. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाह-रीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाह-रीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह-रीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40828. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40829. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40830. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40831. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40832. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “विवाह-रीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “विवाह-रीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4091 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)

प्रश्न 40833. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2782मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40834. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40835. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40836. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल्यकालीन स्मृति

उत्तर: घ. बाल्यकालीन स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल्यकालीन स्मृति” अछि।

प्रश्न 40837. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल्यकालीन स्मृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल्यकालीन स्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल्यकालीन स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40838. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40839. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40840. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40841. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40842. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “बाल्यकालीन स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “बाल्यकालीन स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4092 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: भरोस

प्रश्न 40843. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भरोस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भरोस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2783मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “भरोस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40844. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40845. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40846. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।

प्रश्न 40847. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40848. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40849. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40850. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40851. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40852. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4093 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: लाल काकी

प्रश्न 40853. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लाल काकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाल काकी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2784मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “लाल काकी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40854. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40855. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40856. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वृद्धा जीवन

उत्तर: घ. वृद्धा जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वृद्धा जीवन” अछि।

प्रश्न 40857. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वृद्धा जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृद्धा जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृद्धा जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40858. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40859. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40860. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40861. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40862. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धा जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धा जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4094 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: अभिशप्त

प्रश्न 40863. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अभिशप्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिशप्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2785मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “अभिशप्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40864. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40865. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40866. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-पुरुष सम्बन्ध

उत्तर: घ. नारी-पुरुष सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-पुरुष सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 40867. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-पुरुष सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-पुरुष सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-पुरुष सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40868. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40869. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40870. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40871. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40872. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “नारी-पुरुष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “नारी-पुरुष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4095 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: समय काल

प्रश्न 40873. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समय काल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समय काल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2786मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “समय काल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40874. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40875. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40876. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवार

उत्तर: घ. परिवार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवार” अछि।

प्रश्न 40877. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिवार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40878. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40879. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40880. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40881. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40882. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786मे डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “परिवार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786मे डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “परिवार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4096 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: कठजीब (पुरनी दाय)

प्रश्न 40883. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कठजीब (पुरनी दाय)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कठजीब (पुरनी दाय)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2787मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “कठजीब (पुरनी दाय)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40884. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40885. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40886. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक शोषण

उत्तर: घ. सामाजिक शोषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक शोषण” अछि।

प्रश्न 40887. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक शोषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक शोषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक शोषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40888. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40889. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40890. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40891. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40892. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “सामाजिक शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “सामाजिक शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4097 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: कलंकित चान

प्रश्न 40893. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कलंकित चान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कलंकित चान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2788मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “कलंकित चान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40894. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40895. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40896. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण प्रेम

उत्तर: घ. ग्रामीण प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण प्रेम” अछि।

प्रश्न 40897. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40898. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40899. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40900. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान”कैं विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40901. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40902. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4098 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: उत्तराक नोर

प्रश्न 40903. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उत्तराक नोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उत्तराक नोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2789मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “उत्तराक नोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40904. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40905. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40906. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 40907. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40908. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40909. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40910. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40911. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40912. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789मे डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789मे डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4099 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: महानगर मे सुनीता

प्रश्न 40913. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महानगर मे सुनीता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महानगर मे सुनीता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2790मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “महानगर मे सुनीता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40914. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40915. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40916. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शहरी गरीबी

उत्तर: घ. शहरी गरीबी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शहरी गरीबी” अछि।

प्रश्न 40917. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शहरी गरीबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शहरी गरीबी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शहरी गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40918. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40919. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40920. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40921. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40922. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790मे डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “शहरी गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790मे डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “शहरी गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4100 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: संदूक उपनैन

प्रश्न 40923. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संदूक उपनैन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संदूक उपनैन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2791मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “संदूक उपनैन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40924. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40925. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40926. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक आयोजन

उत्तर: घ. पारिवारिक आयोजन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक आयोजन” अछि।

प्रश्न 40927. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक आयोजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक आयोजन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक आयोजन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40928. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40929. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40930. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40931. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40932. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791मे डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791मे डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4101 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: शाश्वत कथा

प्रश्न 40933. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शाश्वत कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शाश्वत कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2792मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “शाश्वत कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40934. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40935. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40936. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्त्री-जीवनक शाश्वतता

उत्तर: घ. स्त्री-जीवनक शाश्वतता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-जीवनक शाश्वतता” अछि।

प्रश्न 40937. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्त्री-जीवनक शाश्वतता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्त्री-जीवनक शाश्वतता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-जीवनक शाश्वतता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40938. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40939. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40940. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40941. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40942. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792मे डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “स्त्री-जीवनक शाश्वतता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792मे डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “स्त्री-जीवनक शाश्वतता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4102 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: किनया पूतरा के विवाह

प्रश्न 40943. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किनया पूतरा के विवाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किनया पूतरा के विवाह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2793मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “किनया पूतरा के विवाह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40944. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40945. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40946. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 40947. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40948. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40949. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40950. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40951. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40952. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793मे डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793मे डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4103 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: डाइवनिक बानर

प्रश्न 40953. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डाइवनिक बानर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डाइवनिक बानर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2794मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “डाइवनिक बानर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40954. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40955. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40956. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मनोवैज्ञानिक

उत्तर: घ. मनोवैज्ञानिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मनोवैज्ञानिक” अछि।

प्रश्न 40957. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मनोवैज्ञानिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनोवैज्ञानिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनोवैज्ञानिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40958. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40959. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40960. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40961. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40962. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794मे डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मनोवैज्ञानिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794मे डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मनोवैज्ञानिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4104 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: टूटल तारा

प्रश्न 40963. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टूटल तारा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टूटल तारा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2795मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “टूटल तारा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40964. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40965. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40966. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

उत्तर: घ. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ऐतिहासिक पृष्ठभूमि” अछि।

प्रश्न 40967. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऐतिहासिक पृष्ठभूमि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40968. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40969. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40970. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40971. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40972. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795मे डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ऐतिहासिक पृष्ठभूमि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795मे डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ऐतिहासिक पृष्ठभूमि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4105 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: अपन राज्य

प्रश्न 40973. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन राज्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन राज्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2796मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “अपन राज्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40974. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. व्यंग्य-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. व्यंग्य-कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “व्यंग्य-कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40975. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40976. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 40977. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40978. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा व्यंग्य-कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा व्यंग्य-कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40979. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40980. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य”केँ विदेह-सदेह 31क व्यंग्य-कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे व्यंग्य-कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे व्यंग्य-कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40981. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40982. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” प्रविष्टि व्यंग्य-कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” प्रविष्टि व्यंग्य-कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4106 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: विवसता

प्रश्न 40983. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विवसता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवसता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2797मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “विवसता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40984. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा/लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा/लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा/लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40985. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40986. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवन

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।

प्रश्न 40987. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40988. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा/लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा/लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40989. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 40990. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता”केँ विदेह-सदेह 31क कथा/लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा/लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा/लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 40991. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 40992. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797मे कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” प्रविष्टि कथा/लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797मे कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” प्रविष्टि कथा/लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4107 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: मरीचका

प्रश्न 40993. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मरीचका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मरीचका

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2798मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “मरीचका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 40994. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 40995. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 40996. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वृद्धावस्था

उत्तर: घ. वृद्धावस्था

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वृद्धावस्था” अछि।

प्रश्न 40997. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वृद्धावस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृद्धावस्था

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृद्धावस्था” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 40998. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 40999. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41000. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41001. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41002. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798मे कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धावस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798मे कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धावस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4108 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: परजा

प्रश्न 41003. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परजा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परजा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2799मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “परजा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41004. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41005. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41006. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक चेतना

उत्तर: घ. राजनीतिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक चेतना” अछि।

प्रश्न 41007. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41008. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41009. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41010. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41011. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41012. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799मे कुमार मनोज कश्यपक “परजा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799मे कुमार मनोज कश्यपक “परजा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4109 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: मर्यादाक हनन

प्रश्न 41013. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मर्यादाक हनन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मर्यादाक हनन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2800मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “मर्यादाक हनन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41014. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41015. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41016. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पिता-पुत्र सम्बन्ध

उत्तर: घ. पिता-पुत्र सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पिता-पुत्र सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 41017. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पिता-पुत्र सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिता-पुत्र सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिता-पुत्र सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41018. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41019. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41020. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41021. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41022. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800मे कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पिता-पुत्र सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800मे कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पिता-पुत्र सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4110 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: प्रतिरोध

प्रश्न 41023. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रतिरोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतिरोध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2801मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “प्रतिरोध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41024. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41025. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41026. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतीकात्मक

उत्तर: घ. प्रतीकात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीकात्मक” अछि।

प्रश्न 41027. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रतीकात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतीकात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41028. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41029. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41030. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41031. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41032. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801मे कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801मे कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4111 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: दृष्टिकोण

प्रश्न 41033. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दृष्टिकोण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दृष्टिकोण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2802मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “दृष्टिकोण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41034. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41035. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41036. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरकारी सेवा

उत्तर: घ. सरकारी सेवा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरकारी सेवा” अछि।

प्रश्न 41037. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरकारी सेवा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरकारी सेवा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरकारी सेवा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41038. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41039. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41040. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41041. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41042. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802मे कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “सरकारी सेवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802मे कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “सरकारी सेवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4112 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: ओ तड बताह अछि

प्रश्न 41043. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ओ तड बताह अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ तड बताह अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2803मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “ओ तड बताह अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41044. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41045. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41046. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानसिक अस्वस्थता

उत्तर: घ. मानसिक अस्वस्थता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानसिक अस्वस्थता” अछि।

प्रश्न 41047. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानसिक अस्वस्थता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानसिक अस्वस्थता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानसिक अस्वस्थता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41048. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41049. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41050. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41051. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41052. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803मे कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मानसिक अस्वस्थता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803मे कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मानसिक अस्वस्थता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4113 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: धर्मात्मा

प्रश्न 41053. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. धर्मात्मा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धर्मात्मा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2804मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “धर्मात्मा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41054. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41055. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41056. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धार्मिक पाखण्ड

उत्तर: घ. धार्मिक पाखण्ड

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धार्मिक पाखण्ड” अछि।

प्रश्न 41057. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धार्मिक पाखण्ड

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धार्मिक पाखण्ड

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धार्मिक पाखण्ड” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41058. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41059. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41060. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41061. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41062. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804मे कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “धार्मिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804मे कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “धार्मिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4114 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: मनस्ताप

प्रश्न 41063. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मनस्ताप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनस्ताप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2805मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “मनस्ताप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41064. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41065. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41066. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भ्रष्टाचार

उत्तर: घ. भ्रष्टाचार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार” अछि।

प्रश्न 41067. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भ्रष्टाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41068. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41069. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41070. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41071. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41072. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805मे कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805मे कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4115 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: गिरैत देवाल

प्रश्न 41073. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गिरैत देवाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गिरैत देवाल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2806मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “गिरैत देवाल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41074. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41075. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41076. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी

उत्तर: घ. गरीबी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।

प्रश्न 41077. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41078. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41079. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41080. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41081. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41082. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806मे कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806मे कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4116 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: कलाकार

प्रश्न 41083. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कलाकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कलाकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2807मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “कलाकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41084. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41085. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41086. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-श्रम

उत्तर: घ. बाल-श्रम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-श्रम” अछि।

प्रश्न 41087. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-श्रम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-श्रम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-श्रम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41088. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41089. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41090. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41091. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41092. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807मे कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “बाल-श्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807मे कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “बाल-श्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4117 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: नोर अंगोर

प्रश्न 41093. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नोर अंगोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोर अंगोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2808मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “नोर अंगोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41094. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41095. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41096. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण समाज

उत्तर: घ. ग्रामीण समाज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण समाज” अछि।

प्रश्न 41097. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण समाज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण समाज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण समाज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41098. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41099. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41100. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41101. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41102. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808मे कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808मे कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4118 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: फ्यूज बल्ब

प्रश्न 41103. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फ्यूज बल्ब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फ्यूज बल्ब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2809मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “फ्यूज बल्ब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41104. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41105. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41106. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सेवानिवृत्ति

उत्तर: घ. सेवानिवृत्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सेवानिवृत्ति” अछि।

प्रश्न 41107. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सेवानिवृत्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सेवानिवृत्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सेवानिवृत्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41108. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41109. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41110. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41111. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41112. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809मे कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “सेवानिवृत्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809मे कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्ब” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “सेवानिवृत्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4119 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: पहिल चिट्ठी

प्रश्न 41113. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पहिल चिट्ठी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पहिल चिट्ठी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2810मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “पहिल चिट्ठी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41114. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा (पत्र-शैली)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा (पत्र-शैली)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा (पत्र-शैली)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41115. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41116. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारीवादी चेतना

उत्तर: घ. नारीवादी चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारीवादी चेतना” अछि।

प्रश्न 41117. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारीवादी चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारीवादी चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारीवादी चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41118. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा (पत्र-शैली), उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा (पत्र-शैली), उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41119. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41120. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी”केँ विदेह-सदेह 31क कथा (पत्र-शैली)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा (पत्र-शैली)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा (पत्र-शैली)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41121. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41122. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810मे कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” प्रविष्टि कथा (पत्र-शैली), प्रविष्टि आ “नारीवादी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810मे कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” प्रविष्टि कथा (पत्र-शैली), प्रविष्टि आ “नारीवादी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4120 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: दिन धराबय तीन नाम

प्रश्न 41123. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दिन धराबय तीन नाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिन धराबय तीन नाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2811मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “दिन धराबय तीन नाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41124. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41125. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41126. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दृष्टिकोणक भिन्नता

उत्तर: घ. दृष्टिकोणक भिन्नता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दृष्टिकोणक भिन्नता” अछि।

प्रश्न 41127. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दृष्टिकोणक भिन्नता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दृष्टिकोणक भिन्नता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दृष्टिकोणक भिन्नता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41128. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41129. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41130. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41131. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41132. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811मे कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोणक भिन्नता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811मे कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोणक भिन्नता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4121 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: घूरि आऊ निशा

प्रश्न 41133. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घूरि आऊ निशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घूरि आऊ निशा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2812मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “घूरि आऊ निशा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41134. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41135. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41136. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 41137. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41138. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41139. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41140. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41141. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41142. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812मे कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812मे कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4122 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: अन्हेर

प्रश्न 41143. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्हेर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हेर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2813मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “अन्हेर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41144. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41145. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41146. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पलायन

उत्तर: घ. पलायन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पलायन” अछि।

प्रश्न 41147. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पलायन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पलायन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पलायन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41148. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41149. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41150. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41151. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41152. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813मे कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पलायन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813मे कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पलायन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4123 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: सीमान

प्रश्न 41153. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सीमान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीमान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2814मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “सीमान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41154. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41155. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41156. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दृष्टिकोण

उत्तर: घ. दृष्टिकोण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दृष्टिकोण” अछि।

प्रश्न 41157. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दृष्टिकोण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दृष्टिकोण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दृष्टिकोण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41158. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41159. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41160. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41161. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41162. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814मे कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814मे कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4124 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: उजडल खोंता

प्रश्न 41163. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उजडल खोंता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उजडल खोंता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2815मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “उजडल खोंता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41164. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41165. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41166. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-श्रम

उत्तर: घ. बाल-श्रम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-श्रम” अछि।

प्रश्न 41167. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-श्रम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-श्रम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-श्रम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41168. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41169. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41170. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41171. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41172. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815मे कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाल-श्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815मे कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाल-श्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4125 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: मरिचिका (पुनः)

प्रश्न 41173. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मरिचिका (पुनः)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मरिचिका (पुनः)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2816मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “मरिचिका (पुनः)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41174. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41175. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41176. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वृद्धावस्था

उत्तर: घ. वृद्धावस्था

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वृद्धावस्था” अछि।

प्रश्न 41177. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वृद्धावस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वृद्धावस्था

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृद्धावस्था” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41178. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41179. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41180. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41181. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41182. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816मे कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धावस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816मे कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धावस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4126 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: परजा (पुनः)

प्रश्न 41183. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परजा (पुनः)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परजा (पुनः)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2817मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “परजा (पुनः)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41184. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41185. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41186. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक चेतना

उत्तर: घ. राजनीतिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक चेतना” अछि।

प्रश्न 41187. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41188. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41189. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41190. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41191. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41192. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817मे कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817मे कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4127 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: बदलेत समय

प्रश्न 41193. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बदलेत समय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बदलेत समय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2818मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “बदलेत समय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41194. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41195. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41196. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवर्तन

उत्तर: घ. परिवर्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवर्तन” अछि।

प्रश्न 41197. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिवर्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवर्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवर्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41198. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41199. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41200. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41201. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41202. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818मे कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “परिवर्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818मे कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “परिवर्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4128 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: जरल पेट

प्रश्न 41203. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जरल पेट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जरल पेट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2819मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “जरल पेट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41204. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41205. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41206. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भूख

उत्तर: घ. भूख

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भूख” अछि।

प्रश्न 41207. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भूख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भूख

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भूख” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41208. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41209. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41210. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41211. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41212. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819मे कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “भूख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819मे कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “भूख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4129 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: जीतक आगू

प्रश्न 41213. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जीतक आगू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीतक आगू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2820मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “जीतक आगू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41214. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41215. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41216. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाढ़ि

उत्तर: घ. बाढ़ि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाढ़ि” अछि।

प्रश्न 41217. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाढ़ि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाढ़ि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाढ़ि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41218. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41219. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41220. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41221. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41222. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820मे कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820मे कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4130 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: माता कुमाता न भवति

प्रश्न 41223. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माता कुमाता न भवति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माता कुमाता न भवति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2821मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “माता कुमाता न भवति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41224. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41225. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41226. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 41227. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41228. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41229. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41230. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41231. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41232. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821मे कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821मे कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4131 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: ईमानदार

प्रश्न 41233. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ईमानदार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ईमानदार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2822मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “ईमानदार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41234. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41235. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41236. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भ्रष्टाचार

उत्तर: घ. भ्रष्टाचार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार” अछि।

प्रश्न 41237. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भ्रष्टाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41238. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41239. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41240. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41241. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41242. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822मे कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822मे कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4132 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: मास्टर साहेब

प्रश्न 41243. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मास्टर साहेब

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मास्टर साहेब

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2823मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “मास्टर साहेब” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41244. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41245. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41246. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षक जीवन

उत्तर: घ. शिक्षक जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षक जीवन” अछि।

प्रश्न 41247. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षक जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षक जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षक जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41248. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41249. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41250. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41251. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41252. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823मे कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “शिक्षक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823मे कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “शिक्षक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4133 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: कचोट

प्रश्न 41253. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कचोट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कचोट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2824मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “कचोट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41254. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41255. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41256. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वैवाहिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. वैवाहिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वैवाहिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 41257. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वैवाहिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वैवाहिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वैवाहिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41258. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41259. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41260. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41261. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41262. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824मे कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “वैवाहिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824मे कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “वैवाहिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4134 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: नव-वर्ष

प्रश्न 41263. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नव-वर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव-वर्ष

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2825मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “नव-वर्ष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41264. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41265. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41266. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी

उत्तर: घ. गरीबी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।

प्रश्न 41267. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41268. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41269. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41270. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41271. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41272. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825मे कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825मे कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4135 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: थाकल बाट

प्रश्न 41273. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. थाकल बाट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. थाकल बाट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2826मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “थाकल बाट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41274. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41275. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41276. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सरकारी सेवा

उत्तर: घ. सरकारी सेवा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सरकारी सेवा” अछि।

प्रश्न 41277. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सरकारी सेवा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरकारी सेवा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरकारी सेवा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41278. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41279. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41280. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41281. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41282. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826मे कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “सरकारी सेवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826मे कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “सरकारी सेवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4136 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: हारल मनुक्ख

प्रश्न 41283. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हारल मनुक्ख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हारल मनुक्ख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2827मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “हारल मनुक्ख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41284. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41285. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41286. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानवता

उत्तर: घ. मानवता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानवता” अछि।

प्रश्न 41287. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानवता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानवता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानवता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41288. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41289. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41290. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41291. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41292. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827मे कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “मानवता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827मे कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “मानवता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4137 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: भावना

प्रश्न 41293. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भावना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भावना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2828मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “भावना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41294. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41295. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41296. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्ग-भेद

उत्तर: घ. वर्ग-भेद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्ग-भेद” अछि।

प्रश्न 41297. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्ग-भेद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्ग-भेद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्ग-भेद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41298. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41299. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41300. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41301. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41302. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828मे कुमार मनोज कश्यपक “भावना” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वर्ग-भेद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828मे कुमार मनोज कश्यपक “भावना” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वर्ग-भेद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4138 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: बी०डी०ओ०

प्रश्न 41303. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बी०डी०ओ०

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बी०डी०ओ०

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2829मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “बी०डी०ओ०” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41304. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लघुकथा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41305. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41306. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण राजनीति

उत्तर: घ. ग्रामीण राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण राजनीति” अछि।

प्रश्न 41307. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण राजनीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41308. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41309. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41310. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41311. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41312. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829मे कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829मे कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4139 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: अंकोरवट मंदिर

प्रश्न 41313. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अंकोरवट मंदिर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंकोरवट मंदिर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2830मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “अंकोरवट मंदिर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41314. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41315. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41316. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यात्रा-वर्णन

उत्तर: घ. यात्रा-वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यात्रा-वर्णन” अछि।

प्रश्न 41317. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यात्रा-वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रा-वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यात्रा-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41318. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41319. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41320. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41321. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41322. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “यात्रा-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “यात्रा-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4140 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: जहिया ओ इतिहास सुनौलक

प्रश्न 41323. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जहिया ओ इतिहास सुनौलक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जहिया ओ इतिहास सुनौलक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2831मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41324. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41325. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41326. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इतिहास-दर्शन

उत्तर: घ. इतिहास-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इतिहास-दर्शन” अछि।

प्रश्न 41327. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. इतिहास-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इतिहास-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इतिहास-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41328. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41329. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41330. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41331. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41332. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831मे डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “इतिहास-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831मे डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “इतिहास-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4141 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: संग दिअ सदिखन अहिना

प्रश्न 41333. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संग दिअ सदिखन अहिना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संग दिअ सदिखन अहिना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2832मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “संग दिअ सदिखन अहिना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41334. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41335. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41336. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सहयात्री भाव

उत्तर: घ. सहयात्री भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सहयात्री भाव” अछि।

प्रश्न 41337. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सहयात्री भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सहयात्री भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सहयात्री भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41338. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41339. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41340. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41341. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41342. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832मे डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सहयात्री भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832मे डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सहयात्री भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4142 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: वसंत

प्रश्न 41343. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वसंत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसंत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2833मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “वसंत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41344. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41345. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41346. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-वर्णन

उत्तर: घ. प्रकृति-वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-वर्णन” अछि।

प्रश्न 41347. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41348. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41349. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41350. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41351. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41352. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833मे डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833मे डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4143 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: बाजार मे स्त्री

प्रश्न 41353. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाजार मे स्त्री

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाजार मे स्त्री

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2834मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “बाजार मे स्त्री” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41354. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41355. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41356. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-सशक्तिकरण

उत्तर: घ. नारी-सशक्तिकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-सशक्तिकरण” अछि।

प्रश्न 41357. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-सशक्तिकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-सशक्तिकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-सशक्तिकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41358. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41359. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41360. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41361. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41362. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834मे डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “नारी-सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834मे डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “नारी-सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4144 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: बंजारा मोन

प्रश्न 41363. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बंजारा मोन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बंजारा मोन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2835मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “बंजारा मोन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41364. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41365. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41366. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मनक चंचलता

उत्तर: घ. मनक चंचलता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मनक चंचलता” अछि।

प्रश्न 41367. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मनक चंचलता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनक चंचलता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनक चंचलता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41368. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41369. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41370. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41371. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41372. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835मे डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “मनक चंचलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835मे डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “मनक चंचलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4145 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: द्रौपदी

प्रश्न 41373. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. द्रौपदी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. द्रौपदी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2836मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “द्रौपदी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41374. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दीर्घ-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दीर्घ-कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “दीर्घ-कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41375. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41376. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-विमर्श

उत्तर: घ. नारी-विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-विमर्श” अछि।

प्रश्न 41377. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41378. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41379. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41380. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी”केँ विदेह-सदेह 31क दीर्घ-कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41381. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41382. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836मे डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “नारी-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836मे डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “नारी-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4146 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: यशोधरा

प्रश्न 41383. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यशोधरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यशोधरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2837मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “यशोधरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41384. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दीर्घ-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दीर्घ-कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “दीर्घ-कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41385. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41386. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बौद्ध-दर्शन

उत्तर: घ. बौद्ध-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बौद्ध-दर्शन” अछि।

प्रश्न 41387. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बौद्ध-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बौद्ध-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बौद्ध-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41388. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41389. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41390. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा”केँ विदेह-सदेह 31क दीर्घ-कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41391. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41392. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837मे डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “बौद्ध-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837मे डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “बौद्ध-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4147 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: गांधारी

प्रश्न 41393. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गांधारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गांधारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2838मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “गांधारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41394. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दीर्घ-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दीर्घ-कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “दीर्घ-कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41395. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41396. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महाभारत-पुनर्पाठ

उत्तर: घ. महाभारत-पुनर्पाठ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महाभारत-पुनर्पाठ” अछि।

प्रश्न 41397. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महाभारत-पुनर्पाठ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाभारत-पुनर्पाठ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महाभारत-पुनर्पाठ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41398. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41399. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41400. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी”केँ विदेह-सदेह 31क दीर्घ-कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41401. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41402. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838मे डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “महाभारत-पुनर्पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838मे डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “महाभारत-पुनर्पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4148 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: शकुनतला (सकुन)

प्रश्न 41403. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शकुनतला (सकुन)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शकुनतला (सकुन)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2839मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “शकुनतला (सकुन)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41404. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दीर्घ-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दीर्घ-कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “दीर्घ-कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41405. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41406. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पौराणिक प्रेम

उत्तर: घ. पौराणिक प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पौराणिक प्रेम” अछि।

प्रश्न 41407. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पौराणिक प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पौराणिक प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पौराणिक प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41408. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41409. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41410. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)”केँ विदेह-सदेह 31क दीर्घ-कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41411. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41412. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839मे डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “पौराणिक प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839मे डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “पौराणिक प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4149 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: फागुन राग

प्रश्न 41413. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फागुन राग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फागुन राग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2840मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “फागुन राग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41414. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41415. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41416. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-उत्सव

उत्तर: घ. लोक-उत्सव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-उत्सव” अछि।

प्रश्न 41417. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-उत्सव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-उत्सव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-उत्सव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41418. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41419. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41420. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41421. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41422. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840मे डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “लोक-उत्सव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840मे डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “लोक-उत्सव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4150 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: काशीक घाट

प्रश्न 41423. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. काशीक घाट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काशीक घाट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2841मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “काशीक घाट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41424. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41425. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41426. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आध्यात्मिक

उत्तर: घ. आध्यात्मिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आध्यात्मिक” अछि।

प्रश्न 41427. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आध्यात्मिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आध्यात्मिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आध्यात्मिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41428. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41429. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41430. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41431. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41432. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841मे डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आध्यात्मिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841मे डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आध्यात्मिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4151 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: चिडैक अभिलाष

प्रश्न 41433. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चिडैक अभिलाष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिडैक अभिलाष

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2842मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “चिडैक अभिलाष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41434. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41435. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41436. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतीकात्मक

उत्तर: घ. प्रतीकात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीकात्मक” अछि।

प्रश्न 41437. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रतीकात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतीकात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41438. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41439. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41440. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41441. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41442. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842मे डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842मे डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4152 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: भटकैत स्वप्न

प्रश्न 41443. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भटकैत स्वप्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भटकैत स्वप्न

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2843मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “भटकैत स्वप्न” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41444. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41445. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41446. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक जीवन

उत्तर: घ. आधुनिक जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक जीवन” अछि।

प्रश्न 41447. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41448. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41449. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41450. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41451. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41452. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आधुनिक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आधुनिक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4153 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: आजुक विद्यार्थी

प्रश्न 41453. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आजुक विद्यार्थी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजुक विद्यार्थी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2844मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “आजुक विद्यार्थी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41454. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41455. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41456. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षा-व्यवस्था

उत्तर: घ. शिक्षा-व्यवस्था

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा-व्यवस्था” अछि।

प्रश्न 41457. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षा-व्यवस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षा-व्यवस्था

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा-व्यवस्था” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41458. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41459. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41460. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41461. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41462. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “शिक्षा-व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “शिक्षा-व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4154 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: असमंजस

प्रश्न 41463. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. असमंजस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असमंजस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2845मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “असमंजस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41464. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41465. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41466. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेरणा

उत्तर: घ. प्रेरणा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरणा” अछि।

प्रश्न 41467. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेरणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेरणा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरणा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41468. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41469. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41470. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41471. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41472. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845मे डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845मे डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4155 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: आतंकी गाम

प्रश्न 41473. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आतंकी गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आतंकी गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2846मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “आतंकी गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41474. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41475. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41476. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक बदलाव

उत्तर: घ. सामाजिक बदलाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक बदलाव” अछि।

प्रश्न 41477. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक बदलाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक बदलाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक बदलाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41478. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41479. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41480. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41481. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41482. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सामाजिक बदलाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सामाजिक बदलाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4156 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: लिखत के प्रेम गीत

प्रश्न 41483. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लिखत के प्रेम गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लिखत के प्रेम गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2847मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “लिखत के प्रेम गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41484. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41485. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41486. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम

उत्तर: घ. प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

प्रश्न 41487. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41488. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41489. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41490. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41491. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41492. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4157 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: आखिर कहिया धरि

प्रश्न 41493. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आखिर कहिया धरि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आखिर कहिया धरि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2848मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “आखिर कहिया धरि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41494. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41495. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41496. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक आलोचना

उत्तर: घ. सामाजिक आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक आलोचना” अछि।

प्रश्न 41497. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41498. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41499. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41500. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41501. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41502. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सामाजिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सामाजिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4158 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: भाषा

प्रश्न 41503. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाषा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2849मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “भाषा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41504. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41505. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41506. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभाषा-प्रेम

उत्तर: घ. मातृभाषा-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभाषा-प्रेम” अछि।

प्रश्न 41507. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृभाषा-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभाषा-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृभाषा-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41508. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41509. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41510. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41511. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41512. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “मातृभाषा-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “मातृभाषा-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4159 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: चक्का

प्रश्न 41513. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चक्का

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चक्का

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2850मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “चक्का” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41514. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41515. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41516. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिकताक प्रभाव

उत्तर: घ. आधुनिकताक प्रभाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिकताक प्रभाव” अछि।

प्रश्न 41517. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिकताक प्रभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिकताक प्रभाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिकताक प्रभाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41518. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41519. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41520. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41521. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41522. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850मे डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आधुनिकताक प्रभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850मे डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आधुनिकताक प्रभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4160 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: ई केक्रर शोणित?

प्रश्न 41523. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई केक्रर शोणित?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई केक्रर शोणित?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2851मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “ई केक्रर शोणित?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41524. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41525. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41526. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी श्रमिक

उत्तर: घ. प्रवासी श्रमिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी श्रमिक” अछि।

प्रश्न 41527. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी श्रमिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी श्रमिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी श्रमिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41528. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41529. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41530. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41531. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41532. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851मे डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रवासी श्रमिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851मे डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केक्रर शोणित?” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रवासी श्रमिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4161 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: खिडकी

प्रश्न 41533. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खिडकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खिडकी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2852मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “खिडकी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41534. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41535. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41536. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दृष्टिकोण

उत्तर: घ. दृष्टिकोण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दृष्टिकोण” अछि।

प्रश्न 41537. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दृष्टिकोण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दृष्टिकोण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दृष्टिकोण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41538. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41539. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41540. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41541. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41542. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852मे डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852मे डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4162 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: भरोस (कविता)

प्रश्न 41543. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भरोस (कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भरोस (कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2853मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “भरोस (कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41544. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41545. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41546. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विश्वास-भंग

उत्तर: घ. विश्वास-भंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विश्वास-भंग” अछि।

प्रश्न 41547. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विश्वास-भंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विश्वास-भंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विश्वास-भंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41548. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41549. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41550. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41551. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41552. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “विश्वास-भंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “विश्वास-भंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4163 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: पुष्पांजलि

प्रश्न 41553. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पुष्पांजलि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुष्पांजलि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2854मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “पुष्पांजलि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41554. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41555. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41556. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति

उत्तर: घ. प्रकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।

प्रश्न 41557. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41558. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41559. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41560. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41561. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41562. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854मे डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854मे डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4164 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: आस्थाक पूर्ण कलश

प्रश्न 41563. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आस्थाक पूर्ण कलश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आस्थाक पूर्ण कलश

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2855मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “आस्थाक पूर्ण कलश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41564. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41565. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41566. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तीर्थ-यात्रा

उत्तर: घ. तीर्थ-यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तीर्थ-यात्रा” अछि।

प्रश्न 41567. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तीर्थ-यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीर्थ-यात्रा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीर्थ-यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41568. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41569. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41570. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41571. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41572. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “तीर्थ-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “तीर्थ-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4165 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: खिलैत पलास वन

प्रश्न 41573. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खिलैत पलास वन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खिलैत पलास वन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2856मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “खिलैत पलास वन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41574. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41575. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41576. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति

उत्तर: घ. प्रकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।

प्रश्न 41577. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41578. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41579. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41580. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41581. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41582. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856मे डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856मे डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4166 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: आधुनिक स्त्रीगण १-५

प्रश्न 41583. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आधुनिक स्त्रीगण १-५

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक स्त्रीगण १-५

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2857मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “आधुनिक स्त्रीगण १-५” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41584. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. कविता (श्रृंखला)

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. कविता (श्रृंखला)

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता (श्रृंखला)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41585. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41586. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-सशक्तिकरण

उत्तर: घ. नारी-सशक्तिकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-सशक्तिकरण” अछि।

प्रश्न 41587. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-सशक्तिकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-सशक्तिकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-सशक्तिकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41588. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता (श्रृंखला), उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता (श्रृंखला), उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41589. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41590. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५”केँ विदेह-सदेह 31क कविता (श्रृंखला)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता (श्रृंखला)-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता (श्रृंखला)-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41591. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41592. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” प्रविष्टि कविता (श्रृंखला), प्रविष्टि आ “नारी-सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” प्रविष्टि कविता (श्रृंखला), प्रविष्टि आ “नारी-सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4167 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: वसंती दोहा

प्रश्न 41593. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वसंती दोहा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसंती दोहा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2858मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “वसंती दोहा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41594. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. दोहा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. दोहा

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “दोहा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41595. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41596. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दोहा परम्परा

उत्तर: घ. दोहा परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दोहा परम्परा” अछि।

प्रश्न 41597. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दोहा परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दोहा परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दोहा परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41598. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा दोहा, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा दोहा, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41599. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41600. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा”केँ विदेह-सदेह 31क दोहा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दोहा-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दोहा-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41601. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41602. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858मे कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” प्रविष्टि दोहा, प्रविष्टि आ “दोहा परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858मे कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” प्रविष्टि दोहा, प्रविष्टि आ “दोहा परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4168 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि

प्रश्न 41603. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2859मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41604. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. देशभक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. देशभक्ति गीत

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “देशभक्ति गीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41605. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41606. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राष्ट्रीय चेतना

उत्तर: घ. राष्ट्रीय चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राष्ट्रीय चेतना” अछि।

प्रश्न 41607. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राष्ट्रीय चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राष्ट्रीय चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राष्ट्रीय चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41608. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा देशभक्ति गीत, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा देशभक्ति गीत, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41609. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41610. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि”कैं विदेह-सदेह 31क देशभक्ति गीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे देशभक्ति गीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे देशभक्ति गीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41611. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41612. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859मे कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” प्रविष्टि देशभक्ति गीत, प्रविष्टि आ “राष्ट्रीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859मे कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” प्रविष्टि देशभक्ति गीत, प्रविष्टि आ “राष्ट्रीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4169 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: किछु गजल (गजल १)

प्रश्न 41613. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु गजल (गजल १)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु गजल (गजल १)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2860मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “किछु गजल (गजल १)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41614. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजल

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गजल” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41615. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41616. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गजल परम्परा

उत्तर: घ. गजल परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल परम्परा” अछि।

प्रश्न 41617. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गजल परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41618. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गजल, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गजल, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41619. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41620. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)”केँ विदेह-सदेह 31क गजल-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41621. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41622. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860मे कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” प्रविष्टि गजल, प्रविष्टि आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860मे कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” प्रविष्टि गजल, प्रविष्टि आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4170 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: किछु गजल (गजल २)

प्रश्न 41623. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु गजल (गजल २)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु गजल (गजल २)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2861मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “किछु गजल (गजल २)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41624. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गजल

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गजल” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41625. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रविष्टि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रविष्टि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

प्रश्न 41626. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक

उत्तर: घ. दार्शनिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 41627. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41628. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गजल, उप-विधा प्रविष्टि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गजल, उप-विधा प्रविष्टि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41629. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41630. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)”केँ विदेह-सदेह 31क गजल-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41631. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41632. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861मे कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” प्रविष्टि गजल, प्रविष्टि आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861मे कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” प्रविष्टि गजल, प्रविष्टि आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4171 : विदेह-सदेह 32 — जगदानन्द झा 'मनु': माटिक बासन

प्रश्न 41633. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माटिक बासन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माटिक बासन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2862मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “माटिक बासन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41634. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41635. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. —

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. —

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।

प्रश्न 41636. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण यथार्थ

उत्तर: घ. ग्रामीण यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण यथार्थ” अछि।

प्रश्न 41637. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण यथार्थ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41638. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा —

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा —

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41639. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41640. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41641. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41642. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862मे जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” प्रविष्टि गद्य, — आ “ग्रामीण यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862मे जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” प्रविष्टि गद्य, — आ “ग्रामीण यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4172 : विदेह-सदेह 32 — भालचन्द्र झा: चूल्हि

प्रश्न 41643. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चूल्हि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चूल्हि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2863मे भालचन्द्र झाक प्रविष्टि “चूल्हि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41644. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41645. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 41646. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमञ्च परम्परा

उत्तर: घ. रंगमञ्च परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च परम्परा” अछि।

प्रश्न 41647. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमञ्च परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमञ्च परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41648. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भालचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भालचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41649. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41650. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41651. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41652. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863मे भालचन्द्र झाक “चूल्हि” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “रंगमञ्च परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863मे भालचन्द्र झाक “चूल्हि” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “रंगमञ्च परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4173 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ

प्रश्न 41653. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2864मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41654. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41655. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. —

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. —

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।

प्रश्न 41656. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 41657. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41658. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41659. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41660. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41661. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41662. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864मे गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864मे गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4174 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप

प्रश्न 41663. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2865मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41664. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41665. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. —

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. —

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।

प्रश्न 41666. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 41667. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41668. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41669. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41670. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41671. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41672. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865मे गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865मे गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4175 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: किछु एहनो बात विषय

प्रश्न 41673. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किछु एहनो बात विषय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किछु एहनो बात विषय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2866मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “किछु एहनो बात विषय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41674. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41675. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. —

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. —

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।

प्रश्न 41676. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 41677. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41678. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41679. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41680. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41681. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41682. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866मे गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866मे गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4176 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: गोबरक मूल्य

प्रश्न 41683. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गोबरक मूल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोबरक मूल्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2867मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “गोबरक मूल्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41684. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41685. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. —

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. —

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।

प्रश्न 41686. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 41687. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41688. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41689. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41690. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41691. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41692. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867मे गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867मे गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4177 : विदेह-सदेह 32 — उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’: ने एंट्रीः मा प्रविश (गद्य)

प्रश्न 41693. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क “ने एंट्रीः मा प्रविश (गद्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ने एंट्रीः मा प्रविश (गद्य)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ने एंट्रीः मा प्रविश (गद्य)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2868मे उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क प्रविष्टि “ने एंट्रीः मा प्रविश (गद्य)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41694. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क “ने एंट्रीः मा प्रविश (गद्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41695. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क “ने एंट्रीः मा प्रविश (गद्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 41696. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क “ने एंट्रीः मा प्रविश (गद्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीआइआइएल

उत्तर: घ. सीआइआइएल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीआइआइएल” अछि।

प्रश्न 41697. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीआइआइएल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीआइआइएल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "सीआइआइएल" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41698. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', विधा गद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', विधा गद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41699. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41700. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)"केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41701. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41702. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)" प्रविष्टि गद्य, नाटक आ "सीआइआइएल" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)" प्रविष्टि गद्य, नाटक आ "सीआइआइएल" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4178 : विदेह-सदेह 32 — राधाकृष्ण चौधरी: मिथिलाक इतिहास

प्रश्न 41703. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक इतिहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक इतिहास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2869मे राधाकृष्ण चौधरीक प्रविष्टि “मिथिलाक इतिहास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41704. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41705. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. इतिहास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. इतिहास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास” अछि।

प्रश्न 41706. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ऐतिहासिक शोध

उत्तर: घ. ऐतिहासिक शोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ऐतिहासिक शोध” अछि।

प्रश्न 41707. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ऐतिहासिक शोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऐतिहासिक शोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऐतिहासिक शोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41708. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राधाकृष्ण चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राधाकृष्ण चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41709. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41710. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41711. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41712. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869मे राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, इतिहास आ “ऐतिहासिक शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869मे राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, इतिहास आ “ऐतिहासिक शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4179 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग

प्रश्न 41713. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2870मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41714. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41715. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41716. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41717. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41718. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41719. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41720. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41721. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41722. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870मे प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870मे प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4180 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: सामाजिक विवर्तक जीवन झा

प्रश्न 41723. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सामाजिक विवर्तक जीवन झा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विवर्तक जीवन झा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2871मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41724. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41725. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41726. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41727. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41728. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41729. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41730. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41731. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41732. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871मे प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871मे प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4181 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: मैथिली भाषाक साहित्य

प्रश्न 41733. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली भाषाक साहित्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषाक साहित्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2872मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “मैथिली भाषाक साहित्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41734. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41735. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41736. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41737. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41738. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41739. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41740. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41741. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41742. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872मे प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872मे प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4182 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: लोकनाट्य

प्रश्न 41743. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लोकनाट्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकनाट्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2873मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “लोकनाट्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41744. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41745. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41746. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41747. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41748. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41749. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41750. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41751. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41752. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873मे प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873मे प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4183 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: पारंपरिक नाटक

प्रश्न 41753. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पारंपरिक नाटक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारंपरिक नाटक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2874मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “पारंपरिक नाटक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41754. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41755. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41756. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41757. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41758. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41759. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41760. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41761. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41762. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874मे प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874मे प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4184 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: मायानन्दक रेडिया-रूपक

प्रश्न 41763. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मायानन्दक रेडिया-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मायानन्दक रेडिया-रूपक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2875मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “मायानन्दक रेडिया-रूपक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41764. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41765. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41766. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41767. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41768. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41769. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41770. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41771. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41772. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875मे प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875मे प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4185 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: हुनकासँ भेट भेल छल

प्रश्न 41773. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हुनकासँ भेट भेल छल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हुनकासँ भेट भेल छल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2876मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “हुनकासँ भेट भेल छल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41774. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41775. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41776. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41777. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41778. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41779. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41780. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41781. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41782. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876मे प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876मे प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4186 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ

प्रश्न 41783. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2877मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41784. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41785. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41786. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41787. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41788. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41789. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41790. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ”कैं विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41791. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41792. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877मे प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877मे प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4187 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: लोकगाथा ओ मणिपद्मम

प्रश्न 41793. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्मम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लोकगाथा ओ मणिपद्मम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगाथा ओ मणिपद्मम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2878मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “लोकगाथा ओ मणिपद्मम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41794. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्मम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41795. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्मम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41796. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्रम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41797. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्रम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41798. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्रम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41799. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्रम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41800. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्रम”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41801. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्रम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41802. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878मे प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्मम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878मे प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्मम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4188 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: चेतना समिति ओ नाट्यमंच

प्रश्न 41803. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चेतना समिति ओ नाट्यमंच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेतना समिति ओ नाट्यमंच

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2879मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41804. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41805. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41806. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41807. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41808. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41809. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41810. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41811. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41812. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879मे प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879मे प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4189 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना

प्रश्न 41813. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2880मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41814. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41815. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/शोध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/शोध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।

प्रश्न 41816. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 41817. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41818. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41819. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41820. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41821. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41822. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880मे प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880मे प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4190 : विदेह-सदेह 32 — डॉ. कैलाश कूमार मिश्र: समीक्षा- बनैत बिगडैत

प्रश्न 41823. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- बनैत बिगडैत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- बनैत बिगडैत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2881मे डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक प्रविष्टि “समीक्षा- बनैत बिगडैत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41824. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41825. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 41826. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यात्रा-वृत्तान्तकार

उत्तर: घ. यात्रा-वृत्तान्तकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यात्रा-वृत्तान्तकार” अछि।

प्रश्न 41827. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यात्रा-वृत्तान्तकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रा-वृत्तान्तकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यात्रा-वृत्तान्तकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41828. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. कैलाश कूमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. कैलाश कूमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41829. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41830. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41831. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41832. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881मे डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “यात्रा-वृत्तान्तकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881मे डॉ. कैलाश कूमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “यात्रा-वृत्तान्तकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4191 : विदेह-सदेह 32 — गजेन्द्र ठाकूर: समीक्षा- बनैत बिगड़ैत

प्रश्न 41833. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ैत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीक्षा- बनैत बिगड़ैत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीक्षा- बनैत बिगड़ैत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2882मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “समीक्षा- बनैत बिगड़ैत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41834. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ैत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41835. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ैत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 41836. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. —

उत्तर: घ. —

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “—” अछि।

प्रश्न 41837. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. —

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. —

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “—” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41838. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41839. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41840. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41841. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41842. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882मे गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ैत” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “—” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882मे गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ैत” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “—” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4192 : विदेह-सदेह 32 — महाप्रकाश: सुभाष चन्द्र यादव पर

प्रश्न 41843. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुभाष चन्द्र यादव पर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुभाष चन्द्र यादव पर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2883मे महाप्रकाशक प्रविष्टि “सुभाष चन्द्र यादव पर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41844. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41845. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. —

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. —

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।

प्रश्न 41846. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. —

उत्तर: घ. —

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “—” अछि।

प्रश्न 41847. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. —

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. —

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “—” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41848. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक महाप्रकाश, विधा गद्य, उप-विधा —

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक महाप्रकाश, विधा गद्य, उप-विधा —

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41849. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41850. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41851. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41852. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883मे महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” प्रविष्टि गद्य, — आ “—” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883मे महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” प्रविष्टि गद्य, — आ “—” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4193 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: बनैत बिगड़ौत

प्रश्न 41853. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बनैत बिगड़ौत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बनैत बिगड़ौत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2884मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “बनैत बिगड़ौत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41854. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41855. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41856. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41857. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41858. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41859. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41860. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41861. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41862. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884मे सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884मे सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4194 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: अपन-अपन दुख

प्रश्न 41863. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन-अपन दुख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन-अपन दुख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2885मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “अपन-अपन दुख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41864. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41865. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41866. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41867. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41868. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41869. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41870. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41871. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41872. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885मे सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885मे सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4195 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: असुरक्षित

प्रश्न 41873. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. असुरक्षित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असुरक्षित

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2886मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “असुरक्षित” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41874. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41875. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41876. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41877. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41878. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41879. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41880. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41881. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41882. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886मे सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886मे सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4196 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: आतंक

प्रश्न 41883. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आतंक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आतंक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2887मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “आतंक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41884. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41885. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41886. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41887. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41888. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41889. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41890. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41891. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41892. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887मे सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887मे सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4197 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: ओ लड़की

प्रश्न 41893. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ओ लड़की

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लड़की

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2888मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “ओ लड़की” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41894. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41895. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41896. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41897. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41898. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41899. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41900. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41901. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41902. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888मे सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888मे सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4198 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: एकटा अंत

प्रश्न 41903. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकटा अंत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा अंत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2889मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “एकटा अंत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41904. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41905. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41906. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41907. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41908. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41909. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41910. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41911. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41912. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4199 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: एकटा प्रेम कथा

प्रश्न 41913. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकटा प्रेम कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा प्रेम कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2890मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “एकटा प्रेम कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41914. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41915. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41916. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41917. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41918. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41919. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41920. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41921. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41922. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4200 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: एकाकी

प्रश्न 41923. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकाकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकाकी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2891मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “एकाकी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41924. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41925. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41926. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41927. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41928. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41929. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41930. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41931. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41932. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4201 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: कनियाँ-पुतरा

प्रश्न 41933. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कनियाँ-पुतरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कनियाँ-पुतरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2892मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “कनियाँ-पुतरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41934. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41935. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41936. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41937. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41938. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41939. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41940. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41941. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41942. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892मे सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892मे सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4202 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: कबाछू

प्रश्न 41943. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कबाछू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कबाछू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2893मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “कबाछू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41944. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41945. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41946. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41947. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41948. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41949. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41950. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41951. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41952. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893मे सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893मे सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4203 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: कारबार

प्रश्न 41953. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कारबार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कारबार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2894मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “कारबार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41954. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41955. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41956. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41957. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41958. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41959. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41960. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41961. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41962. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894मे सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894मे सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4204 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: कुश्ती

प्रश्न 41963. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुश्ती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुश्ती

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2895मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “कुश्ती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41964. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41965. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41966. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41967. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41968. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41969. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41970. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41971. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41972. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895मे सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895मे सुभाष चन्द्र यादवक “कुश्ती” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4205 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: कैनरी आइलैण्डक लॉरेल

प्रश्न 41973. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कैनरी आइलैण्डक लॉरेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कैनरी आइलैण्डक लॉरेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2896मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41974. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41975. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41976. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41977. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41978. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41979. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41980. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41981. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41982. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896मे सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896मे सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4206 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: तृष्णा

प्रश्न 41983. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तृष्णा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तृष्णा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2897मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “तृष्णा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41984. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41985. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41986. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41987. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41988. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41989. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 41990. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 41991. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 41992. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897मे सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897मे सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4207 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: दाना

प्रश्न 41993. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दाना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दाना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2898मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “दाना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 41994. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 41995. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 41996. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 41997. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 41998. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 41999. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42000. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42001. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42002. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898मे सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898मे सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4208 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: दृष्टि

प्रश्न 42003. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दृष्टि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2899मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “दृष्टि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42004. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42005. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42006. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 42007. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42008. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42009. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42010. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42011. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42012. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899मे सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899मे सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4209 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: नदी

प्रश्न 42013. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नदी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नदी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2900मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “नदी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42014. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42015. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42016. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 42017. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42018. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42019. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42020. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42021. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42022. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900मे सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900मे सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4210 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: परलय

प्रश्न 42023. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परलय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परलय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2901मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “परलय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42024. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42025. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42026. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 42027. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42028. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42029. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42030. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42031. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42032. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901मे सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901मे सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4211 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: बात

प्रश्न 42033. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बात

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2902मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “बात” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42034. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42035. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42036. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 42037. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42038. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42039. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42040. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42041. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42042. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902मे सुभाष चन्द्र यादवक “बात” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902मे सुभाष चन्द्र यादवक “बात” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4212 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: रंभा

प्रश्न 42043. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रंभा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंभा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2903मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “रंभा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42044. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42045. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42046. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 42047. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42048. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42049. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42050. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42051. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42052. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903मे सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903मे सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4213 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: हमर गाम

प्रश्न 42053. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2904मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “हमर गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42054. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42055. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42056. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 42057. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42058. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42059. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42060. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42061. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42062. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904मे सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904मे सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4214 : विदेह-सदेह 32 — विभा रानी: माउगि

प्रश्न 42063. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माउगि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माउगि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2905मे विभा रानीक प्रविष्टि “माउगि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42064. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42065. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42066. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-दृष्टि

उत्तर: घ. नारी-दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-दृष्टि” अछि।

प्रश्न 42067. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42068. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42069. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42070. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42071. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42072. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905मे विभा रानीक “माउगि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905मे विभा रानीक “माउगि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4215 : विदेह-सदेह 32 — विभा रानी: भाग रौ

प्रश्न 42073. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाग रौ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाग रौ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2906मे विभा रानीक प्रविष्टि “भाग रौ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42074. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42075. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42076. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-दृष्टि

उत्तर: घ. नारी-दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-दृष्टि” अछि।

प्रश्न 42077. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42078. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42079. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42080. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42081. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42082. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906मे विभा रानीक “भाग रौ” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906मे विभा रानीक “भाग रौ” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4216 : विदेह-सदेह 32 — विभा रानी: बलचन्दा

प्रश्न 42083. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बलचन्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बलचन्दा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2907मे विभा रानीक प्रविष्टि “बलचन्दा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42084. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42085. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42086. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-दृष्टि

उत्तर: घ. नारी-दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-दृष्टि” अछि।

प्रश्न 42087. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42088. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42089. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42090. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42091. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42092. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907मे विभा रानीक “बलचन्दा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907मे विभा रानीक “बलचन्दा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4217 : विदेह-सदेह 32 — डॉ शिव प्रसाद यादव: साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार

प्रश्न 42093. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2908मे डॉ शिव प्रसाद यादवक प्रविष्टि “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42094. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42095. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 42096. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम

उत्तर: घ. बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” अछि।

प्रश्न 42097. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42098. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ शिव प्रसाद यादव, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ शिव प्रसाद यादव, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42099. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42100. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42101. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42102. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908मे डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908मे डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4218 : विदेह-सदेह 32 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता': अन्तर्द्वन्द्व

प्रश्न 42103. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्तर्द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तर्द्वन्द्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2909मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क प्रविष्टि “अन्तर्द्वन्द्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42104. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42105. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42106. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीआइआइएल

उत्तर: घ. सीआइआइएल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीआइआइएल” अछि।

प्रश्न 42107. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीआइआइएल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीआइआइएल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीआइआइएल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42108. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42109. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42110. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42111. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42112. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीआइआइएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीआइआइएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4219 : विदेह-सदेह 32 — शैलेन्द्र मोहन झा: सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!

प्रश्न 42113. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2910मे शैलेन्द्र मोहन झाक प्रविष्टि “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42114. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42115. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42116. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भावात्मक अभिव्यक्ति

उत्तर: घ. भावात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भावात्मक अभिव्यक्ति” अछि।

प्रश्न 42117. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भावात्मक अभिव्यक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भावात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावात्मक अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42118. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शैलेन्द्र मोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शैलेन्द्र मोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42119. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42120. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42121. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42122. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910मे शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910मे शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4220 : विदेह-सदेह 32 — जितमोहन झा: भक्तिगीत

प्रश्न 42123. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भक्तिगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्तिगीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2911मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “भक्तिगीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42124. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42125. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्तिगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्तिगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्तिगीत” अछि।

प्रश्न 42126. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुम्बई

उत्तर: घ. मुम्बई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुम्बई” अछि।

प्रश्न 42127. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुम्बई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुम्बई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुम्बई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42128. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा भक्तिगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा भक्तिगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42129. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42130. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्तिगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्तिगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42131. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42132. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911मे जितमोहन झाक “भक्तिगीत” प्रविष्टि पद्य, भक्तिगीत आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911मे जितमोहन झाक “भक्तिगीत” प्रविष्टि पद्य, भक्तिगीत आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4221 : विदेह-सदेह 32 — प्रकाश झा: हमर मिथिलाक दर्शन

प्रश्न 42133. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर मिथिलाक दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर मिथिलाक दर्शन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2912मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “हमर मिथिलाक दर्शन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42134. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42135. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42136. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक रिपोर्टिंग

उत्तर: घ. सामाजिक रिपोर्टिंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक रिपोर्टिंग” अछि।

प्रश्न 42137. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक रिपोर्टिंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक रिपोर्टिंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक रिपोर्टिंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42138. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42139. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42140. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42141. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42142. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912मे प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912मे प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4222 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)

प्रश्न 42143. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2913मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42144. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42145. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गद्य-पद्य/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गद्य-पद्य/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गद्य-पद्य/गजल” अछि।

प्रश्न 42146. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42147. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42148. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गद्य-पद्य/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गद्य-पद्य/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42149. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42150. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गद्य-पद्य/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गद्य-पद्य/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42151. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42152. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913मे गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” प्रविष्टि पद्य, गद्य-पद्य/गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913मे गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” प्रविष्टि पद्य, गद्य-पद्य/गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4223 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: बाल कविता- आउ हनुमान

प्रश्न 42153. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल कविता- आउ हनुमान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल कविता- आउ हनुमान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2914मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “बाल कविता- आउ हनुमान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42154. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42155. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42156. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42157. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42158. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42159. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42160. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42161. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42162. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914मे गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914मे गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4224 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: भेटताह अनन्त?

प्रश्न 42163. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भेटताह अनन्त?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भेटताह अनन्त?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2915मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “भेटताह अनन्त?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42164. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42165. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42166. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42167. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42168. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42169. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42170. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42171. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42172. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915मे गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915मे गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4225 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू

प्रश्न 42173. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2916मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42174. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42175. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42176. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42177. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42178. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42179. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42180. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42181. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42182. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916मे गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916मे गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4226 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: आयुर्दा

प्रश्न 42183. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आयुर्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आयुर्दा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2917मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “आयुर्दा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42184. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42185. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42186. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42187. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42188. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42189. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42190. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42191. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42192. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917मे गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917मे गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4227 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: परिवर्त्तन

प्रश्न 42193. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परिवर्त्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवर्त्तन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2918मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “परिवर्त्तन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42194. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42195. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42196. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42197. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42198. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42199. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42200. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42201. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42202. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918मे गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918मे गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4228 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: देश छोड़ि कत' गेल

प्रश्न 42203. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देश छोड़ि कत' गेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देश छोड़ि कत' गेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2919मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “देश छोड़ि कत' गेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42204. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42205. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42206. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42207. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42208. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42209. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42210. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42211. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42212. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919मे गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919मे गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4229 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: देश छोड़ि कियेक गेलय?

प्रश्न 42213. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देश छोड़ि कियेक गेलय?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देश छोड़ि कियेक गेलय?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2920मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “देश छोड़ि कियेक गेलय?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42214. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42215. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42216. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42217. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42218. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42219. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42220. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42221. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42222. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920मे गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920मे गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4230 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: गाम

प्रश्न 42223. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2921मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42224. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42225. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42226. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42227. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42228. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42229. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42230. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42231. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42232. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921मे गंगेश गुंजनक “गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921मे गंगेश गुंजनक “गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4231 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: बीच बाट पर खसल लाल गमछा

प्रश्न 42233. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीच बाट पर खसल लाल गमछा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीच बाट पर खसल लाल गमछा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2922मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42234. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42235. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42236. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42237. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42238. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42239. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42240. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42241. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42242. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922मे गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922मे गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4232 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: गीत १-२

प्रश्न 42243. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत १-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2923मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “गीत १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42244. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42245. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 42246. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42247. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42248. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42249. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42250. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42251. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42252. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923मे गंगेश गुंजनक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923मे गंगेश गुंजनक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4233 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु

प्रश्न 42253. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2924मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42254. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42255. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 42256. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42257. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42258. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42259. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42260. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42261. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42262. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924मे गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924मे गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4234 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३

प्रश्न 42263. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2925मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42264. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42265. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 42266. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42267. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42268. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42269. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42270. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42271. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42272. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925मे गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925मे गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4235 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)

प्रश्न 42273. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2926मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42274. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42275. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 42276. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42277. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42278. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42279. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42280. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42281. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42282. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926मे गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926मे गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4236 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: स्वतंत्रता-दिवस २०१०

प्रश्न 42283. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्वतंत्रता-दिवस २०१०

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वतंत्रता-दिवस २०१०

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2927मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42284. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42285. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42286. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

प्रश्न 42287. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42288. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42289. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42290. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42291. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42292. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927मे गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927मे गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4237 : विदेह-सदेह 33 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द

प्रश्न 42293. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2928मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42294. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42295. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास" अछि।

प्रश्न 42296. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द

उत्तर: घ. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत "मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द" अछि।

प्रश्न 42297. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द" प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द" रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42298. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42299. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42300. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द"केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42301. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द" प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42302. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” प्रविष्टि गद्य, हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास आ “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पॅजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4238 : विदेह-सदेह 33 — गजेन्द्र ठाकूर: मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

प्रश्न 42303. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2929मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42304. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42305. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली” अछि।

प्रश्न 42306. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

उत्तर: घ. मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” अछि।

प्रश्न 42307. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42308. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42309. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42310. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचना/शोध-लेख/शब्दावलीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचना/शोध-लेख/शब्दावलीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42311. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42312. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929मे गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली आ “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929मे गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली आ “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4239 : विदेह-सदेह 33 — विभा रानी: आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)

प्रश्न 42313. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2930मे विभा रानीक प्रविष्टि “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42314. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42315. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42316. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौंअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-दृष्टि

उत्तर: घ. नारी-दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-दृष्टि” अछि।

प्रश्न 42317. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौंअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42318. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौंअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42319. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौंअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42320. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौंअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42321. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौंअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42322. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930मे विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौंअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930मे विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौंअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4240 : विदेह-सदेह 33 — रामभरोस कापिड “भ्रमर”: बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)

प्रश्न 42323. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2931मे रामभरोस कापिड “भ्रमर”क प्रविष्टि “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42324. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42325. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42326. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

उत्तर: घ. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” अछि।

प्रश्न 42327. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42328. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापिड “भ्रमर”, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापिड “भ्रमर”, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42329. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42330. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42331. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42332. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931मे रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931मे रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4241 : विदेह-सदेह 33 — जितेन्द्र झा: अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)

प्रश्न 42333. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2932मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42334. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42335. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख/रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख/रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख/रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 42336. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जनकपुर, नेपाल

उत्तर: घ. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर, नेपाल” अछि।

प्रश्न 42337. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जनकपुर, नेपाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुर, नेपाल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर, नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42338. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख/रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख/रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42339. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42340. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेख/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेख/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42341. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42342. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932मे जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” प्रविष्टि गद्य, लेख/रिपोर्ताज आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932मे जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” प्रविष्टि गद्य, लेख/रिपोर्ताज आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4242 : विदेह-सदेह 33 — उमेश कुमार महतो: बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)

प्रश्न 42343. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2933मे उमेश कुमार महतोक प्रविष्टि “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42344. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42345. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 42346. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई

उत्तर: घ. ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई” अछि।

प्रश्न 42347. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42348. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश कुमार महतो, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश कुमार महतो, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42349. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42350. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42351. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42352. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933मे उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933मे उमेश कुमार महतोक “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4243 : विदेह-सदेह 33 — अनलकान्त: कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)

प्रश्न 42353. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2934मे अनलकान्तक प्रविष्टि “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42354. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42355. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/लघुकथा” अछि।

प्रश्न 42356. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

उत्तर: घ. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” अछि।

प्रश्न 42357. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42358. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनलकान्त, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनलकान्त, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42359. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42360. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/लघुकथाक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/लघुकथाक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42361. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42362. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934मे अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, कविता/लघुकथा आ “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934मे अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, कविता/लघुकथा आ “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4244 : विदेह-सदेह 33 — मनोज झा मुक्ति: अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)

प्रश्न 42363. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2935मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42364. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42365. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख/अन्तर्वाता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख/अन्तर्वाता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख/अन्तर्वाता” अछि।

प्रश्न 42366. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई

उत्तर: घ. एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

प्रश्न 42367. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42368. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वार्ता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा लेख/अन्तर्वार्ता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा लेख/अन्तर्वार्ता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42369. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वार्ता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42370. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वार्ता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेख/अन्तर्वार्ताक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेख/अन्तर्वार्ताक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42371. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वार्ता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42372. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935मे मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वार्ता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” प्रविष्टि गद्य, लेख/अन्तर्वार्ता आ “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935मे मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वार्ता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” प्रविष्टि गद्य, लेख/अन्तर्वार्ता आ “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4245 : विदेह-सदेह 33 — कृमार शुशान्त: छोटकी काकी (प. २५८-२५९)

प्रश्न 42373. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छोटकी काकी (प. २५८-२५९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छोटकी काकी (प. २५८-२५९)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2936मे कृमार शुशान्तक प्रविष्टि “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42374. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42375. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42376. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ी

उत्तर: घ. नव पीढ़ी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।

प्रश्न 42377. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42378. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कृमार शुशान्त, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कृमार शुशान्त, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42379. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42380. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42381. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42382. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936मे कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936मे कृमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4246 : विदेह-सदेह 33 — श्यामसुन्दर शशि: आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भः राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)

प्रश्न 42383. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भः राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भः राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भः राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2937मे श्यामसुन्दर शशिक प्रविष्टि “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भः राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42384. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भः राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42385. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भः राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 42386. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भः राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार+वियोग

उत्तर: घ. शृंगार+वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार+वियोग” अछि।

प्रश्न 42387. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भः राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार+वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार+वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार+वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42388. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भः राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42389. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42390. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42391. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42392. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937मे श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शृंगार+वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937मे श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शृंगार+वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4247 : विदेह-सदेह 33 — अंकुर काशीनाथ झा: नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)

प्रश्न 42393. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2938मे अंकुर काशीनाथ झाक प्रविष्टि “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42394. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42395. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

प्रश्न 42396. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ी

उत्तर: घ. नव पीढ़ी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।

प्रश्न 42397. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42398. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अंकुर काशीनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अंकुर काशीनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42399. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42400. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)”कें विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42401. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42402. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938मे अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938मे अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4248 : विदेह-सदेह 33 — लललन ठाकूर: (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि

प्रश्न 42403. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2939मे लललन ठाकूरक प्रविष्टि “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42404. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42405. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मिश्रित

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मिश्रित

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “मिश्रित” अछि।

प्रश्न 42406. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि

उत्तर: घ. (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” अछि।

प्रश्न 42407. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42408. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक लललन ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा मिश्रित

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक लललन ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा मिश्रित

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42409. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42410. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ मिश्रितक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ मिश्रितक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42411. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42412. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939मे लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” प्रविष्टि गद्य, मिश्रित आ “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939मे लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” प्रविष्टि गद्य, मिश्रित आ “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4249 : विदेह-सदेह 33 — साकेतानन्द: कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)

प्रश्न 42413. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2940मे साकेतानन्दक प्रविष्टि “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42414. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42415. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42416. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)

उत्तर: घ. कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” अछि।

प्रश्न 42417. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42418. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक साकेतानन्द, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक साकेतानन्द, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42419. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42420. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42421. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42422. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940मे साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940मे साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4250 : विदेह-सदेह 33 — बूषेश चन्द्र लाल: आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)

प्रश्न 42423. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2941मे बूषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42424. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42425. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42426. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एनईपीएएल

उत्तर: घ. एनईपीएएल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एनईपीएएल” अछि।

प्रश्न 42427. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एनईपीएएल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एनईपीएएल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एनईपीएएल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42428. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बूषेश चन्द्र लाल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बूषेश चन्द्र लाल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42429. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42430. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42431. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42432. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941मे बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “एनईपीएएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941मे बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “एनईपीएएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4251 : विदेह-सदेह 33 — राजमोहन झा: (प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)

प्रश्न 42433. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. (प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2942मे राजमोहन झाक प्रविष्टि “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42434. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42435. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 42436. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” अछि।

प्रश्न 42437. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42438. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42439. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42440. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42441. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42442. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942मे राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942मे राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4252 : विदेह-सदेह 33 — रामाश्रय झा "रामरंग": प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)

प्रश्न 42443. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2943मे रामाश्रय झा "रामरंग"क प्रविष्टि “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42444. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42445. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 42446. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन

उत्तर: घ. वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” अछि।

प्रश्न 42447. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42448. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामाश्रय झा "रामरंग", विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामाश्रय झा "रामरंग", विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42449. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42450. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42451. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42452. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943मे रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943मे रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4253 : विदेह-सदेह 33 — शिव कृमार झा ‘टिल्लू’: हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)

प्रश्न 42453. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2944मे शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42454. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42455. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 42456. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)

उत्तर: घ. हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” अछि।

प्रश्न 42457. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42458. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कृमार झा ‘टिल्लू’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कृमार झा ‘टिल्लू’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42459. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42460. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42461. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42462. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944मे शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/निबन्ध आ “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944मे शिव कृमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/निबन्ध आ “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4254 : विदेह-सदेह 33 — मुत्राजी: साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)

प्रश्न 42463. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुत्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2945मे मुत्राजीक प्रविष्टि “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42464. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुत्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42465. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुत्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 42466. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुत्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)

उत्तर: घ. साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” अछि।

प्रश्न 42467. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुत्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42468. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुत्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुत्राजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुत्राजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42469. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुन्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42470. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुन्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42471. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुन्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42472. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945मे मुत्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945मे मुत्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कृमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कृमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कृमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकूर)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4255 : विदेह-सदेह 33 — मुत्राजी: प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)

प्रश्न 42473. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2946मे मुत्राजीक प्रविष्टि “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42474. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42475. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/लघुकथा” अछि।

प्रश्न 42476. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)

उत्तर: घ. प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” अछि।

प्रश्न 42477. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42478. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुत्राजी, विधा गद्य, उप-विधा कथा/लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुत्राजी, विधा गद्य, उप-विधा कथा/लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42479. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42480. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42481. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42482. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946मे मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” प्रविष्टि गद्य, कथा/लघुकथा आ “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946मे मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” प्रविष्टि गद्य, कथा/लघुकथा आ “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4256 : विदेह-सदेह 33 — गजेन्द्र ठाकूर: बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)

प्रश्न 42483. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2947मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42484. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42485. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कविता” अछि।

प्रश्न 42486. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)

उत्तर: घ. बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” अछि।

प्रश्न 42487. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42488. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42489. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42490. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42491. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42492. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947मे गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947मे गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4257 : विदेह-सदेह 33 — कोसी लोकगीत: कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)

प्रश्न 42493. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2948मे कोसी लोकगीतक प्रविष्टि “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42494. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42495. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोकगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोकगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोकगीत” अछि।

प्रश्न 42496. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

उत्तर: घ. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” अछि।

प्रश्न 42497. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42498. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कोसी लोकगीत, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कोसी लोकगीत, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42499. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42500. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42501. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42502. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948मे कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” प्रविष्टि पद्य, लोकगीत आ “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948मे कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” प्रविष्टि पद्य, लोकगीत आ “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4258 : विदेह-सदेह 33 — बैकुण्ठ झा: चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)

प्रश्न 42503. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2949मे बैकुण्ठ झाक प्रविष्टि “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42504. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42505. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42506. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परम्परावादी विमर्श

उत्तर: घ. परम्परावादी विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परम्परावादी विमर्श” अछि।

प्रश्न 42507. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परम्परावादी विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परम्परावादी विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परम्परावादी विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42508. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बैकुण्ठ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बैकुण्ठ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42509. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42510. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)”कैं विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42511. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42512. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949मे बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परम्परावादी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949मे बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परम्परावादी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4259 : विदेह-सदेह 33 — प्रकाश झा: हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)

प्रश्न 42513. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2950मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42514. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42515. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42516. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक रिपोर्टिंग

उत्तर: घ. सामाजिक रिपोर्टिंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक रिपोर्टिंग” अछि।

प्रश्न 42517. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक रिपोर्टिंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक रिपोर्टिंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक रिपोर्टिंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42518. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42519. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42520. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42521. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42522. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950मे प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950मे प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4260 : विदेह-सदेह 33 — जितमोहन झा: दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)

प्रश्न 42523. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2951मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42524. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42525. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शायरी/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शायरी/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शायरी/कविता” अछि।

प्रश्न 42526. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मुम्बई

उत्तर: घ. मुम्बई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मुम्बई” अछि।

प्रश्न 42527. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मुम्बई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुम्बई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुम्बई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42528. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा शायरी/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा शायरी/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42529. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42530. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शायरी/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शायरी/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42531. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42532. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951मे जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” प्रविष्टि पद्य, शायरी/कविता आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951मे जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” प्रविष्टि पद्य, शायरी/कविता आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4261 : विदेह-सदेह 33 — कृष्णमोहन झा: एक दिन (पृ. ६२५-६२५)

प्रश्न 42533. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एक दिन (पृ. ६२५-६२५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक दिन (पृ. ६२५-६२५)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2952मे कृष्णमोहन झाक प्रविष्टि “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42534. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42535. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42536. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भावात्मक

उत्तर: घ. भावात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भावात्मक” अछि।

प्रश्न 42537. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भावात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भावात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42538. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कृष्णमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कृष्णमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42539. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42540. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42541. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42542. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952मे कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952मे कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4262 : विदेह-सदेह 33 — अमरेन्द्र यादव: टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)

प्रश्न 42543. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2953मे अमरेन्द्र यादवक प्रविष्टि “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42544. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42545. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42546. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई

उत्तर: घ. ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” अछि।

प्रश्न 42547. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42548. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरेन्द्र यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरेन्द्र यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42549. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42550. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42551. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42552. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953मे अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953मे अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4263 : विदेह-सदेह 33 — निमिष झा: जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)

प्रश्न 42553. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2954मे निमिष झाक प्रविष्टि “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42554. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42555. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/हाइकू

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/हाइकू

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/हाइकू” अछि।

प्रश्न 42556. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीर+रौद्र रस

उत्तर: घ. वीर+रौद्र रस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर+रौद्र रस” अछि।

प्रश्न 42557. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वीर+रौद्र रस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीर+रौद्र रस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीर+रौद्र रस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42558. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक निमिष झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता/हाइकू

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक निमिष झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता/हाइकू

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42559. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42560. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42561. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42562. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954मे निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” प्रविष्टि पद्य, कविता/हाइकू आ “वीर+रौद्र रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954मे निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” प्रविष्टि पद्य, कविता/हाइकू आ “वीर+रौद्र रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4264 : विदेह-सदेह 33 — भालचन्द्र झा: अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पृ. ६३८- ६४०)

प्रश्न 42563. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पृ. ६३८- ६४०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पृ. ६३८- ६४०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पृ. ६३८- ६४०)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2955मे भालचन्द्र झाक प्रविष्टि “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पृ. ६३८- ६४०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42564. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पृ. ६३८- ६४०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42565. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42566. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंगमञ्च परम्परा

उत्तर: घ. रंगमञ्च परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च परम्परा” अछि।

प्रश्न 42567. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंगमञ्च परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगमञ्च परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42568. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भालचन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भालचन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42569. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42570. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42571. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42572. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955मे भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रंगमञ्च परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955मे भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रंगमञ्च परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4265 : विदेह-सदेह 33 — अंकुर काशीनाथ झा: पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)

प्रश्न 42573. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2956मे अंकुर काशीनाथ झाक प्रविष्टि “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42574. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42575. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42576. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव पीढ़ी

उत्तर: घ. नव पीढ़ी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।

प्रश्न 42577. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव पीढ़ी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव पीढ़ी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42578. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अंकुर काशीनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अंकुर काशीनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42579. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42580. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42581. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42582. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956मे अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956मे अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4266 : विदेह-सदेह 33 — प्रकाश झा: बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)

प्रश्न 42583. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2957मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42584. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42585. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल-कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल-कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कविता” अछि।

प्रश्न 42586. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक रिपोर्टिंग

उत्तर: घ. सामाजिक रिपोर्टिंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक रिपोर्टिंग” अछि।

प्रश्न 42587. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक रिपोर्टिंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक रिपोर्टिंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक रिपोर्टिंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42588. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल-कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल-कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42589. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42590. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल-कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42591. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42592. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957मे प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” प्रविष्टि पद्य, बाल-कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957मे प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” प्रविष्टि पद्य, बाल-कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4267 : विदेह-सदेह 33 — सुबोध ठाकूर: मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)

प्रश्न 42593. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2958मे सुबोध ठाकूरक प्रविष्टि “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42594. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42595. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42596. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)

उत्तर: घ. मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” अछि।

प्रश्न 42597. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42598. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42599. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42600. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42601. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42602. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958मे सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958मे सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4268 : विदेह-सदेह 33 — रुपेश कुमार झा 'त्योंथ': आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)

प्रश्न 42603. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2959मे रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क प्रविष्टि “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42604. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42605. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42606. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)

उत्तर: घ. आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” अछि।

प्रश्न 42607. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42608. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रुपेश कुमार झा 'त्योंथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रुपेश कुमार झा 'त्योंथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42609. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42610. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42611. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42612. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959मे रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959मे रुपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4269 : विदेह-सदेह 33 — मनीष झा "बौआभाई": माय (पृ. ६५४-६५५)

प्रश्न 42613. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माय (पृ. ६५४-६५५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माय (पृ. ६५४-६५५)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2960मे मनीष झा "बौआभाई"क प्रविष्टि “माय (पृ. ६५४-६५५)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42614. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42615. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42616. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माय (पृ. ६५४-६५५)

उत्तर: घ. माय (पृ. ६५४-६५५)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माय (पृ. ६५४-६५५)” अछि।

प्रश्न 42617. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माय (पृ. ६५४-६५५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माय (पृ. ६५४-६५५)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माय (पृ. ६५४-६५५)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42618. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनीष झा "बौआभाई", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनीष झा "बौआभाई", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42619. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42620. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42621. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42622. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960मे मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माय (पृ. ६५४-६५५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960मे मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माय (पृ. ६५४-६५५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4270 : विदेह-सदेह 33 — सतीश चन्द्र झा: मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)

प्रश्न 42623. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2961मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42624. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42625. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42626. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-कविता

उत्तर: घ. जीवन-कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-कविता” अछि।

प्रश्न 42627. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42628. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42629. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42630. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42631. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42632. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961मे सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961मे सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4271 : विदेह-सदेह 33 — विवेकानंद झा: सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)

प्रश्न 42633. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2962मे विवेकानंद झाक प्रविष्टि “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42634. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42635. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42636. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)

उत्तर: घ. सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” अछि।

प्रश्न 42637. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42638. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विवेकानंद झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विवेकानंद झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42639. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42640. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42641. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42642. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962मे विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962मे विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4272 : विदेह-सदेह 33 — अमित मिश्र: नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)

प्रश्न 42643. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2963मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42644. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42645. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/कविता/रुबाइ

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/कविता/रुबाइ

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कविता/रुबाइ” अछि।

प्रश्न 42646. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)

उत्तर: घ. नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” अछि।

प्रश्न 42647. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42648. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता/रुबाइ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता/रुबाइ

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42649. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42650. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/कविता/रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/कविता/रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42651. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42652. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963मे अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता/रुबाइ आ “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963मे अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता/रुबाइ आ “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4273 : विदेह-सदेह 33 — चंदन कुमार झा: मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)

प्रश्न 42653. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2964मे चंदन कुमार झाक प्रविष्टि “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42654. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42655. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/रुबाइ/कता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/रुबाइ/कता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/रुबाइ/कता” अछि।

प्रश्न 42656. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)

उत्तर: घ. मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” अछि।

प्रश्न 42657. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42658. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चंदन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42659. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42660. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42661. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42662. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964मे चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964मे चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4274 : विदेह-सदेह 33 — विनीत उत्पल: हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)

प्रश्न 42663. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2965मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42664. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42665. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42666. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच

उत्तर: घ. जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच” अछि।

प्रश्न 42667. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42668. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42669. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42670. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42671. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42672. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965मे विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965मे विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4275 : विदेह-सदेह 33 — ओम प्रकाश झा: कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)

प्रश्न 42673. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2966मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42674. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42675. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/रुबाइ/कता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/रुबाइ/कता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/रुबाइ/कता” अछि।

प्रश्न 42676. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भावात्मक

उत्तर: घ. भावात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भावात्मक” अछि।

प्रश्न 42677. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भावात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भावात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42678. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42679. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42680. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42681. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42682. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966मे ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966मे ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4276 : विदेह-सदेह 33 — उमेश मंडल: निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)

प्रश्न 42683. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2967मे उमेश मंडलक प्रविष्टि “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42684. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42685. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/हाइकू/गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/हाइकू/गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/हाइकू/गजल” अछि।

प्रश्न 42686. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)

उत्तर: घ. निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” अछि।

प्रश्न 42687. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42688. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता/हाइकू/गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता/हाइकू/गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42689. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42690. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/हाइकू/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/हाइकू/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42691. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42692. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967मे उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” प्रविष्टि पद्य, कविता/हाइकू/गजल आ “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967मे उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” प्रविष्टि पद्य, कविता/हाइकू/गजल आ “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4277 : विदेह-सदेह 33 — उमेश पासवान: वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)

प्रश्न 42693. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2968मे उमेश पासवानक प्रविष्टि “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42694. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42695. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 42696. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)

उत्तर: घ. वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” अछि।

प्रश्न 42697. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42698. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश पासवान, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश पासवान, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42699. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42700. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42701. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42702. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968मे उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968मे उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4278 : विदेह-सदेह 33 — शिव कूमार झा “टिल्लू”: क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)

प्रश्न 42703. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2969मे शिव कूमार झा “टिल्लू”क प्रविष्टि “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42704. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42705. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/हाइकू/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/हाइकू/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/हाइकू/कविता” अछि।

प्रश्न 42706. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)

उत्तर: घ. क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” अछि।

प्रश्न 42707. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42708. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शिव कूमार झा “टिल्लू”, विधा पद्य, उप-विधा गजल/हाइकू/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शिव कूमार झा “टिल्लू”, विधा पद्य, उप-विधा गजल/हाइकू/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42709. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42710. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/हाइकू/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/हाइकू/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42711. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42712. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969मे शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” प्रविष्टि पद्य, गजल/हाइकू/कविता आ “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969मे शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” प्रविष्टि पद्य, गजल/हाइकू/कविता आ “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4279 : विदेह-सदेह 33 — सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण): बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)

प्रश्न 42713. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2970मे सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क प्रविष्टि “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42714. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42715. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आत्मकथा/कविता/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आत्मकथा/कविता/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आत्मकथा/कविता/कथा” अछि।

प्रश्न 42716. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)

उत्तर: घ. बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” अछि।

प्रश्न 42717. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42718. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा आत्मकथा/कविता/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा आत्मकथा/कविता/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42719. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42720. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आत्मकथा/कविता/कथाक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आत्मकथा/कविता/कथाक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42721. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42722. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970मे सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, आत्मकथा/कविता/कथा आ “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970मे सन्दीप कूमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, आत्मकथा/कविता/कथा आ “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4280 : विदेह-सदेह 33 — मुन्नाजी: माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)

प्रश्न 42723. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2971मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42724. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42725. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/रुबाइ

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/रुबाइ

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/रुबाइ” अछि।

प्रश्न 42726. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)

उत्तर: घ. माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” अछि।

प्रश्न 42727. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42728. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42729. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42730. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)”कैं विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42731. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42732. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971मे मुन्नाजीक “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ आ “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971मे मुन्नाजीक “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ आ “माँझ आंृगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4281 : विदेह-सदेह 33 — विन्देश्वर ठाकुर: नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)

प्रश्न 42733. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2972मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42734. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य/गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य/गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42735. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/शायरी/कथा/कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/शायरी/कथा/कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/शायरी/कथा/कविता” अछि।

प्रश्न 42736. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)

उत्तर: घ. नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” अछि।

प्रश्न 42737. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42738. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा गजल/शायरी/कथा/कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा गजल/शायरी/कथा/कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42739. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42740. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)”कैं विदेह-सदेह 33क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/शायरी/कथा/कविताक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/शायरी/कथा/कविताक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42741. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42742. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972मे विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, गजल/शायरी/कथा/कविता आ “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972मे विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, गजल/शायरी/कथा/कविता आ “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4282 : विदेह-सदेह 33 — आशीष अनवचन्हार: मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृंविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)

प्रश्न 42743. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृंविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृंविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृंविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2973मे आशीष अनवचन्हारक प्रविष्टि “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृंविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42744. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृंविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42745. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक संविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल/रुबाइ/कता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल/रुबाइ/कता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/रुबाइ/कता” अछि।

प्रश्न 42746. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक संविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक

उत्तर: घ. वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 42747. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक संविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42748. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक संविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनवचन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनवचन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42749. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक संविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42750. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक संविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)”कैँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42751. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक संविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42752. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973मे आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक संविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973मे आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक संविप्त पवरचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4283 : विदेह-सदेह 34 — गजेन्द्र ठाकुर: बेचन ठाकुरक नाटक

प्रश्न 42753. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेचन ठाकुरक नाटक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेचन ठाकुरक नाटक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2974मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “बेचन ठाकुरक नाटक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42754. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42755. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति” अछि।

प्रश्न 42756. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह पत्रिकाक सम्पादक

उत्तर: घ. विदेह पत्रिकाक सम्पादक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह पत्रिकाक सम्पादक” अछि।

प्रश्न 42757. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह पत्रिकाक सम्पादक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह पत्रिकाक सम्पादक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह पत्रिकाक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42758. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42759. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42760. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटक-समीक्षा/प्रस्तुतिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटक-समीक्षा/प्रस्तुतिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42761. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42762. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974मे गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति आ “विदेह पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974मे गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति आ “विदेह पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4284 : विदेह-सदेह 34 — डॉ. प्रेमशंकर सिंह: मणिपद्मक कथा--यात्रा

प्रश्न 42763. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मणिपद्मक कथा--यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मणिपद्मक कथा--यात्रा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2975मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “मणिपद्मक कथा--यात्रा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42764. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42765. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 42766. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 42767. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42768. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42769. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42770. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आध्यात्मिक/शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आध्यात्मिक/शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42771. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42772. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” प्रविष्टि गद्य, आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” प्रविष्टि गद्य, आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4285 : विदेह-सदेह 34 — डॉ. प्रेमशंकर सिंह: हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा

प्रश्न 42773. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2976मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42774. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42775. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।

प्रश्न 42776. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हरिमोहन झाक हास्यव्यंग्य परम्परा

उत्तर: घ. हरिमोहन झाक हास्यव्यंग्य परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हरिमोहन झाक हास्यव्यंग्य परम्परा” अछि।

प्रश्न 42777. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हरिमोहन झाक हास्यव्यंग्य परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हरिमोहन झाक हास्यव्यंग्य परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हरिमोहन झाक हास्यव्यंग्य परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42778. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42779. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42780. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42781. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42782. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “हरिमोहन झाक हास्यव्यंग्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4285, सूचकांक पंक्ति 2976मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “हरिमोहन झाक हास्यव्यंग्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4286 : विदेह-सदेह 34 — डॉ. प्रेमशंकर सिंह: हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव

प्रश्न 42783. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2977मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42784. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42785. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना/प्रभाव-अध्ययन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना/प्रभाव-अध्ययन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना/प्रभाव-अध्ययन” अछि।

प्रश्न 42786. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एलआइटीईआरएआरवाई आइएनएफएलयूईएनसीई एसटीयूडीवाई

उत्तर: घ. एलआइटीईआरएआरवाई आइएनएफएलयूईएनसीई एसटीयूडीवाई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एलआइटीईआरएआरवाई आइएनएफएलयूईएनसीई एसटीयूडीवाई” अछि।

प्रश्न 42787. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एलआइटीईआरएआरवाई आइएनएफएलयूईएनसीई एसटीयूडीवाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एलआइटीईआरएआरवाई आइएनएफएलयूईएनसीई एसटीयूडीवाई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एलआइटीईआरएआरवाई आइएनएफएलयूईएनसीई एसटीयूडीवाई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42788. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना/प्रभाव-अध्ययन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना/प्रभाव-अध्ययन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42789. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42790. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव”कैं विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचना/प्रभाव-अध्ययनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचना/प्रभाव-अध्ययनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42791. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42792. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, समालोचना/प्रभाव-अध्ययन आ “एलआइटीईआरएआरवाई आइएनएफएलयूईएनसीई एसटीयूडीवाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4286, सूचकांक पंक्ति 2977मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, समालोचना/प्रभाव-अध्ययन आ “एलआइटीईआरएआरवाई आइएनएफएलयूईएनसीई एसटीयूडीवाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4287 : विदेह-सदेह 34 — मिथिलेश कुमार झा: समय---संकेत

प्रश्न 42793. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978: मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समय---संकेत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समय---संकेत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2978मे मिथिलेश कुमार झाक प्रविष्टि “समय---संकेत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42794. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978: मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42795. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978: मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/टिप्पणी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/टिप्पणी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 42796. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978: मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन सामाजिक-साहित्यिक विमर्श

उत्तर: घ. समकालीन सामाजिक-साहित्यिक विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन सामाजिक-साहित्यिक विमर्श” अछि।

प्रश्न 42797. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978: मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन सामाजिक-साहित्यिक विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन सामाजिक-साहित्यिक विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन सामाजिक-साहित्यिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42798. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978: मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/टिप्पणी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/टिप्पणी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42799. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978: मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42800. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978: मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत”कँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42801. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978: मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42802. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978मे मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/टिप्पणी आ “समकालीन सामाजिक-साहित्यिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4287, सूचकांक पंक्ति 2978मे मिथिलेश कुमार झाक “समय---संकेत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/टिप्पणी आ “समकालीन सामाजिक-साहित्यिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4288 : विदेह-सदेह 34 — मिथिलेश कुमार झा: "हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण

प्रश्न 42803. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979: मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2979मे मिथिलेश कुमार झाक प्रविष्टि “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42804. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979: मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42805. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979: मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/समीक्षा” अछि।

प्रश्न 42806. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979: मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली पत्रकारिता

उत्तर: घ. मैथिली पत्रकारिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली पत्रकारिता” अछि।

प्रश्न 42807. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979: मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली पत्रकारिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली पत्रकारिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42808. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979: मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42809. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979: मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42810. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979: मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42811. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979: मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42812. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979मे मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/समीक्षा आ “मैथिली पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4288, सूचकांक पंक्ति 2979मे मिथिलेश कुमार झाक “"हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/समीक्षा आ “मैथिली पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4289 : विदेह-सदेह 34 — मिथिलेश कुमार झा: "संपर्क"क मासिक बैसार

प्रश्न 42813. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980: मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. "संपर्क"क मासिक बैसार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. "संपर्क"क मासिक बैसार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2980मे मिथिलेश कुमार झाक प्रविष्टि “"संपर्क"क मासिक बैसार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42814. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980: मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42815. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980: मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 42816. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980: मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक आयोजनक दस्तावेजीकरण

उत्तर: घ. साहित्यिक आयोजनक दस्तावेजीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आयोजनक दस्तावेजीकरण” अछि।

प्रश्न 42817. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980: मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक आयोजनक दस्तावेजीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक आयोजनक दस्तावेजीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आयोजनक दस्तावेजीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42818. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980: मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42819. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980: मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42820. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980: मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42821. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980: मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42822. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980मे मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “साहित्यिक आयोजनक दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4289, सूचकांक पंक्ति 2980मे मिथिलेश कुमार झाक “"संपर्क"क मासिक बैसार” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “साहित्यिक आयोजनक दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4290 : विदेह-सदेह 34 — हेमचन्द्र झा: अग्रसोची

प्रश्न 42823. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981: हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अग्रसोची

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अग्रसोची

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2981मे हेमचन्द्र झाक प्रविष्टि “अग्रसोची” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42824. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981: हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42825. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981: हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 42826. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981: हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक चेतना

उत्तर: घ. सामाजिक चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चेतना” अछि।

प्रश्न 42827. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981: हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42828. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981: हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42829. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981: हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42830. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981: हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42831. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981: हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42832. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981मे हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4290, सूचकांक पंक्ति 2981मे हेमचन्द्र झाक “अग्रसोची” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “सामाजिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4291 : विदेह-सदेह 34 — हेमचन्द्र झा: गोनू झाक पंचैती

प्रश्न 42833. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982: हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गोनू झाक पंचैती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोनू झाक पंचैती

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2982मे हेमचन्द्र झाक प्रविष्टि “गोनू झाक पंचैती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42834. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982: हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42835. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982: हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 42836. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982: हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण जीवनक व्यंग्यात्मक चित्रण

उत्तर: घ. ग्रामीण जीवनक व्यंग्यात्मक चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवनक व्यंग्यात्मक चित्रण” अछि।

प्रश्न 42837. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982: हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण जीवनक व्यंग्यात्मक चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण जीवनक व्यंग्यात्मक चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवनक व्यंग्यात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42838. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982: हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42839. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982: हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42840. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982: हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42841. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982: हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42842. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982मे हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “ग्रामीण जीवनक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4291, सूचकांक पंक्ति 2982मे हेमचन्द्र झाक “गोनू झाक पंचैती” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “ग्रामीण जीवनक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4292 : विदेह-सदेह 34 — हेमचन्द्र झा: साढ़े तीनो लाख

प्रश्न 42843. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983: हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साढ़े तीनो लाख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साढ़े तीनो लाख

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2983मे हेमचन्द्र झाक प्रविष्टि “साढ़े तीनो लाख” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42844. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983: हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42845. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983: हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 42846. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983: हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आर्थिक असमानता

उत्तर: घ. आर्थिक असमानता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आर्थिक असमानता” अछि।

प्रश्न 42847. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983: हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आर्थिक असमानता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आर्थिक असमानता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आर्थिक असमानता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42848. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983: हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42849. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983: हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42850. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983: हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42851. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983: हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42852. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983मे हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “आर्थिक असमानता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4292, सूचकांक पंक्ति 2983मे हेमचन्द्र झाक “साढ़े तीनो लाख” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “आर्थिक असमानता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4293 : विदेह-सदेह 34 — हेमचन्द्र झा: एना किएक?

प्रश्न 42853. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984: हेमचन्द्र झाक “एना किएक?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एना किएक?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एना किएक?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2984मे हेमचन्द्र झाक प्रविष्टि “एना किएक?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42854. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984: हेमचन्द्र झाक “एना किएक?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42855. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984: हेमचन्द्र झाक “एना किएक?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 42856. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984: हेमचन्द्र झाक “एना किएक?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अस्तित्ववादी प्रश्न

उत्तर: घ. अस्तित्ववादी प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अस्तित्ववादी प्रश्न” अछि।

प्रश्न 42857. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984: हेमचन्द्र झाक “एना किएक?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अस्तित्ववादी प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्ववादी प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अस्तित्ववादी प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42858. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984: हेमचन्द्र झाक “एना किएक?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42859. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984: हेमचन्द्र झाक “एना किएक?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42860. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984: हेमचन्द्र झाक “एना किएक?”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42861. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984: हेमचन्द्र झाक “एना किएक?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42862. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984मे हेमचन्द्र झाक “एना किएक?” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “अस्तित्ववादी प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4293, सूचकांक पंक्ति 2984मे हेमचन्द्र झाक “एना किएक?” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “अस्तित्ववादी प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4294 : विदेह-सदेह 34 — हेमचन्द्र झा: कुंठा

प्रश्न 42863. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985: हेमचन्द्र झाक “कुंठा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुंठा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुंठा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2985मे हेमचन्द्र झाक प्रविष्टि “कुंठा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42864. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985: हेमचन्द्र झाक “कुंठा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42865. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985: हेमचन्द्र झाक “कुंठा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42866. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985: हेमचन्द्र झाक “कुंठा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मनोवैज्ञानिक यथार्थ

उत्तर: घ. मनोवैज्ञानिक यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मनोवैज्ञानिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 42867. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985: हेमचन्द्र झाक “कुंठा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मनोवैज्ञानिक यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनोवैज्ञानिक यथार्थ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनोवैज्ञानिक यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42868. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985: हेमचन्द्र झाक “कुंठा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42869. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985: हेमचन्द्र झाक “कुंठा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42870. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985: हेमचन्द्र झाक “कुंठा”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42871. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985: हेमचन्द्र झाक “कुंठा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42872. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985मे हेमचन्द्र झाक “कुंठा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “मनोवैज्ञानिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4294, सूचकांक पंक्ति 2985मे हेमचन्द्र झाक “कुंठा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “मनोवैज्ञानिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4295 : विदेह-सदेह 34 — हेमचन्द्र झा: मास्टर साहेब नहि रहलाह

प्रश्न 42873. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986: हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मास्टर साहेब नहि रहलाह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मास्टर साहेब नहि रहलाह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2986मे हेमचन्द्र झाक प्रविष्टि “मास्टर साहेब नहि रहलाह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42874. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986: हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42875. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986: हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 42876. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986: हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध

उत्तर: घ. शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 42877. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986: हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42878. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986: हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42879. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986: हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42880. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986: हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42881. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986: हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42882. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986मे हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4295, सूचकांक पंक्ति 2986मे हेमचन्द्र झाक “मास्टर साहेब नहि रहलाह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4296 : विदेह-सदेह 34 — उमेश मंडल: संस्कार गीत

प्रश्न 42883. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987: उमेश मंडलक “संस्कार गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संस्कार गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कार गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2987मे उमेश मंडलक प्रविष्टि “संस्कार गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42884. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987: उमेश मंडलक “संस्कार गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42885. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987: उमेश मंडलक “संस्कार गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोकगीत संकलन/विवेचन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोकगीत संकलन/विवेचन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोकगीत संकलन/विवेचन” अछि।

प्रश्न 42886. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987: उमेश मंडलक “संस्कार गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन

उत्तर: घ. बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन” अछि।

प्रश्न 42887. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987: उमेश मंडलक “संस्कार गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42888. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987: उमेश मंडलक “संस्कार गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लोकगीत संकलन/विवेचन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लोकगीत संकलन/विवेचन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42889. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987: उमेश मंडलक “संस्कार गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42890. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987: उमेश मंडलक “संस्कार गीत”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोकगीत संकलन/विवेचनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोकगीत संकलन/विवेचनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42891. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987: उमेश मंडलक “संस्कार गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42892. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987मे उमेश मंडलक “संस्कार गीत” प्रविष्टि गद्य, लोकगीत संकलन/विवेचन आ “बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4296, सूचकांक पंक्ति 2987मे उमेश मंडलक “संस्कार गीत” प्रविष्टि गद्य, लोकगीत संकलन/विवेचन आ “बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4297 : विदेह-सदेह 34 — जगदीश प्रसाद मंडल: संस्कार गीत/ लोक गीत नाद

प्रश्न 42893. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988: जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संस्कार गीत/ लोक गीत नाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्कार गीत/ लोक गीत नाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2988मे जगदीश प्रसाद मंडलक प्रविष्टि “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42894. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988: जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42895. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988: जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोकगीत संकलन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोकगीत संकलन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोकगीत संकलन” अछि।

प्रश्न 42896. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988: जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत पीआरईएसईआरवीएटीआइओएन

उत्तर: घ. लोकगीत पीआरईएसईआरवीएटीआइओएन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत पीआरईएसईआरवीएटीआइओएन” अछि।

प्रश्न 42897. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988: जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत पीआरईएसईआरवीएटीआइओएन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत पीआरईएसईआरवीएटीआइओएन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत पीआरईएसईआरवीएटीआइओएन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42898. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988: जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लोकगीत संकलन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लोकगीत संकलन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42899. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988: जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42900. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988: जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद”कें विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोकगीत संकलनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोकगीत संकलनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42901. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988: जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42902. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988मे जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद” प्रविष्टि गद्य, लोकगीत संकलन आ “लोकगीत पीआरईएसईआरवीएटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4297, सूचकांक पंक्ति 2988मे जगदीश प्रसाद मंडलक “संस्कार गीत/ लोक गीत नाद” प्रविष्टि गद्य, लोकगीत संकलन आ “लोकगीत पीआरईएसईआरवीएटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4298 : विदेह-सदेह 34 — पन्ना झा: असामान्य के

प्रश्न 42903. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989: पन्ना झाक “असामान्य के” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. असामान्य के

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असामान्य के

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2989मे पन्ना झाक प्रविष्टि “असामान्य के” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42904. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989: पन्ना झाक “असामान्य के”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42905. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989: पन्ना झाक “असामान्य के”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 42906. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989: पन्ना झाक “असामान्य के” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. असामान्यताक दार्शनिक अन्वेषण

उत्तर: घ. असामान्यताक दार्शनिक अन्वेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “असामान्यताक दार्शनिक अन्वेषण” अछि।

प्रश्न 42907. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989: पन्ना झाक “असामान्य के” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. असामान्यताक दार्शनिक अन्वेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. असामान्यताक दार्शनिक अन्वेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “असामान्यताक दार्शनिक अन्वेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42908. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989: पन्ना झाक “असामान्य के”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक पन्ना झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक पन्ना झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42909. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989: पन्ना झाक “असामान्य के” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42910. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989: पन्ना झाक “असामान्य के”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42911. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989: पन्ना झाक “असामान्य के” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42912. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989मे पन्ना झाक “असामान्य के” प्रविष्टि गद्य, कथा/निबन्ध आ “असामान्यताक दार्शनिक अन्वेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4298, सूचकांक पंक्ति 2989मे पन्ना झाक “असामान्य के” प्रविष्टि गद्य, कथा/निबन्ध आ “असामान्यताक दार्शनिक अन्वेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4299 : विदेह-सदेह 34 — शीतल झा: नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!

प्रश्न 42913. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990: शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2990मे शीतल झाक प्रविष्टि “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42914. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990: शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42915. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990: शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीतिक/सामाजिक लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीतिक/सामाजिक लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक/सामाजिक लेख” अछि।

प्रश्न 42916. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990: शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीमापार मैथिली

उत्तर: घ. सीमापार मैथिली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीमापार मैथिली” अछि।

प्रश्न 42917. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990: शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीमापार मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीमापार मैथिली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीमापार मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42918. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990: शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शीतल झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक/सामाजिक लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शीतल झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक/सामाजिक लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42919. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990: शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42920. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990: शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीतिक/सामाजिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीतिक/सामाजिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42921. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990: शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42922. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990मे शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक/सामाजिक लेख आ “सीमापार मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4299, सूचकांक पंक्ति 2990मे शीतल झाक “नेपालमे मधेशीकेँ समस्या आ सामाधान!” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक/सामाजिक लेख आ “सीमापार मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4300 : विदेह-सदेह 34 — अतिश कुमार मिश्र: नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली

प्रश्न 42923. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991: अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2991मे अतिश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42924. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991: अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42925. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991: अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीतिक लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीतिक लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक लेख” अछि।

प्रश्न 42926. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991: अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी डीआइएससीओयूआरएसई

उत्तर: घ. एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी डीआइएससीओयूआरएसई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी डीआइएससीओयूआरएसई” अछि।

प्रश्न 42927. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991: अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी डीआइएससीओयूआरएसई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी डीआइएससीओयूआरएसई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी डीआइएससीओयूआरएसई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42928. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991: अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अतिश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अतिश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42929. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991: अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42930. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991: अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीतिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीतिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42931. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991: अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42932. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991मे अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक लेख आ “एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी डीआइएससीओयूआरएसई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4300, सूचकांक पंक्ति 2991मे अतिश कुमार मिश्रक “नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक लेख आ “एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी डीआइएससीओयूआरएसई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4301 : विदेह-सदेह 34 — रामभरोस कापडि भ्रमर: एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत

प्रश्न 42933. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992: रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2992मे रामभरोस कापडि भ्रमरक प्रविष्टि “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42934. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992: रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42935. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992: रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 42936. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992: रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन

उत्तर: घ. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन” अछि।

प्रश्न 42937. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992: रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42938. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992: रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापडि भ्रमर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापडि भ्रमर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42939. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992: रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42940. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992: रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42941. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992: रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42942. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992मे रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4301, सूचकांक पंक्ति 2992मे रामभरोस कापडि भ्रमरक “एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4302 : विदेह-सदेह 34 — रामभरोस कापडि भ्रमर: जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ

प्रश्न 42943. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993: रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2993मे रामभरोस कापडि भ्रमरक प्रविष्टि “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42944. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993: रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42945. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993: रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 42946. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993: रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सांस्कृतिक महोत्सव

उत्तर: घ. सांस्कृतिक महोत्सव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक महोत्सव” अछि।

प्रश्न 42947. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993: रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सांस्कृतिक महोत्सव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सांस्कृतिक महोत्सव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक महोत्सव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42948. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993: रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापडि भ्रमर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापडि भ्रमर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42949. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993: रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42950. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993: रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42951. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993: रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42952. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993मे रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सांस्कृतिक महोत्सव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4302, सूचकांक पंक्ति 2993मे रामभरोस कापडि भ्रमरक “जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सांस्कृतिक महोत्सव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4303 : विदेह-सदेह 34 — श्यामसुन्दर शशि: जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द

प्रश्न 42953. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994: श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2994मे श्यामसुन्दर शशिक प्रविष्टि “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42954. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994: श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42955. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994: श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 42956. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994: श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रकारिता

उत्तर: घ. पत्रकारिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रकारिता” अछि।

प्रश्न 42957. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994: श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रकारिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रकारिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42958. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994: श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42959. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994: श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42960. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994: श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42961. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994: श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42962. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994मे श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/व्यंग्य आ “पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4303, सूचकांक पंक्ति 2994मे श्यामसुन्दर शशिक “जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/व्यंग्य आ “पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4304 : विदेह-सदेह 34 — श्यामसुन्दर शशि: नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'

प्रश्न 42963. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995: श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2995मे श्यामसुन्दर शशिक प्रविष्टि “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42964. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995: श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42965. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995: श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य-लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य-लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य-लेख” अछि।

प्रश्न 42966. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995: श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 42967. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995: श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42968. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995: श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य-लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य-लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42969. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995: श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42970. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995: श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'”कैं विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42971. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995: श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42972. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995मे श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य-लेख आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4304, सूचकांक पंक्ति 2995मे श्यामसुन्दर शशिक “नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा'” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य-लेख आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4305 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: हमर टोल (उपन्यास)

प्रश्न 42973. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996: राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर टोल (उपन्यास)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर टोल (उपन्यास)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2996मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “हमर टोल (उपन्यास)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42974. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996: राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42975. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996: राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।

प्रश्न 42976. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996: राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास

उत्तर: घ. सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास” अछि।

प्रश्न 42977. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996: राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42978. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996: राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42979. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996: राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42980. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996: राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42981. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996: राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42982. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996मे राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4305, सूचकांक पंक्ति 2996मे राजदेव मण्डलक “हमर टोल (उपन्यास)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4306 : विदेह-सदेह 34 — सुजीत कुमार झा: लघुकथा- चिड़ै

प्रश्न 42983. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- चिड़ै

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- चिड़ै

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2997मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “लघुकथा- चिड़ै” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42984. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42985. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 42986. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

उत्तर: घ. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” अछि।

प्रश्न 42987. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42988. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42989. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 42990. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 42991. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 42992. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997मे सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4306, सूचकांक पंक्ति 2997मे सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- चिड़ै” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4307 : विदेह-सदेह 34 — सुजीत कुमार झा: लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि

प्रश्न 42993. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2998मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 42994. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 42995. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 42996. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक विसंगति

उत्तर: घ. सामाजिक विसंगति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विसंगति” अछि।

प्रश्न 42997. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक विसंगति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विसंगति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विसंगति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 42998. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 42999. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43000. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43001. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998: सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43002. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998मे सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4307, सूचकांक पंक्ति 2998मे सुजीत कुमार झाक “लघुकथा- धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4308 : विदेह-सदेह 34 — सुजीत कुमार झा: हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष

प्रश्न 43003. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999: सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 2999मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43004. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999: सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43005. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999: सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/लेख” अछि।

प्रश्न 43006. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999: सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रकारिता

उत्तर: घ. पत्रकारिता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रकारिता” अछि।

प्रश्न 43007. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999: सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रकारिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रकारिता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43008. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999: सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43009. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999: सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43010. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999: सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43011. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999: सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43012. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999मे सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/लेख आ “पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4308, सूचकांक पंक्ति 2999मे सुजीत कुमार झाक “हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/लेख आ “पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4309 : विदेह-सदेह 34 — सुजीत कुमार झा: नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?

प्रश्न 43013. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000: सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3000मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43014. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000: सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43015. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000: सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीतिक लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीतिक लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक लेख” अछि।

प्रश्न 43016. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000: सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी

उत्तर: घ. एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी” अछि।

प्रश्न 43017. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000: सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43018. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000: सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43019. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000: सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43020. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000: सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीतिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीतिक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43021. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000: सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43022. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000मे सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक लेख आ “एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4309, सूचकांक पंक्ति 3000मे सुजीत कुमार झाक “नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक लेख आ “एमआइटीएचआइएलए एसटीएटीईएचओओडी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4310 : विदेह-सदेह 34 — सुजीत कुमार झा: सपथमे मैथिली

प्रश्न 43023. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001: सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सपथमे मैथिली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सपथमे मैथिली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3001मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “सपथमे मैथिली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43024. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001: सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43025. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001: सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

प्रश्न 43026. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001: सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषिक अधिकार

उत्तर: घ. भाषिक अधिकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषिक अधिकार” अछि।

प्रश्न 43027. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001: सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषिक अधिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषिक अधिकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषिक अधिकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43028. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001: सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43029. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001: सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43030. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001: सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43031. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001: सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43032. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001मे सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “भाषिक अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4310, सूचकांक पंक्ति 3001मे सुजीत कुमार झाक “सपथमे मैथिली” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “भाषिक अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4311 : विदेह-सदेह 34 — निमिष झा: मैथिलीक युगद्रष्टा

प्रश्न 43033. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002: निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिलीक युगद्रष्टा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिलीक युगद्रष्टा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3002मे निमिष झाक प्रविष्टि “मैथिलीक युगद्रष्टा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43034. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002: निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43035. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002: निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचना/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचना/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43036. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002: निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यकारक मूल्यांकन

उत्तर: घ. साहित्यकारक मूल्यांकन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यकारक मूल्यांकन” अछि।

प्रश्न 43037. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002: निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यकारक मूल्यांकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यकारक मूल्यांकन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यकारक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43038. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002: निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक निमिष झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक निमिष झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43039. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002: निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43040. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002: निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समालोचना/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समालोचना/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43041. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002: निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43042. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002मे निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा” प्रविष्टि गद्य, समालोचना/निबन्ध आ “साहित्यकारक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4311, सूचकांक पंक्ति 3002मे निमिष झाक “मैथिलीक युगद्रष्टा” प्रविष्टि गद्य, समालोचना/निबन्ध आ “साहित्यकारक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4312 : विदेह-सदेह 34 — आशीष चौधरी: २ टा बीहनि कथा

प्रश्न 43043. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003: आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. २ टा बीहनि कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. २ टा बीहनि कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3003मे आशीष चौधरीक प्रविष्टि “२ टा बीहनि कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43044. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003: आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43045. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003: आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 43046. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003: आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

उत्तर: घ. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” अछि।

प्रश्न 43047. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003: आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमआइएनआइएमएएलआइएसएम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43048. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003: आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43049. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003: आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43050. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003: आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43051. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003: आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43052. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003मे आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4312, सूचकांक पंक्ति 3003मे आशीष चौधरीक “२ टा बीहनि कथा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4313 : विदेह-सदेह 34 — नवेन्दु कुमार झा: पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण

प्रश्न 43053. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004: नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3004मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43054. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004: नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43055. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004: नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मीडिया इतिहास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मीडिया इतिहास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “मीडिया इतिहास” अछि।

प्रश्न 43056. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004: नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. एमएआइटीएचआइएलआइ एमईडीआइए एसटीयूडीआईईएस

उत्तर: घ. एमएआइटीएचआइएलआइ एमईडीआइए एसटीयूडीआईईएस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “एमएआइटीएचआइएलआइ एमईडीआइए एसटीयूडीआईईएस” अछि।

प्रश्न 43057. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004: नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. एमएआइटीएचआइएलआइ एमईडीआइए एसटीयूडीआईईएस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एमएआइटीएचआइएलआइ एमईडीआइए एसटीयूडीआईईएस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमएआइटीएचआइएलआइ एमईडीआइए एसटीयूडीआईईएस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43058. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004: नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा मीडिया इतिहास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा मीडिया इतिहास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43059. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004: नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43060. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004: नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ मीडिया इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ मीडिया इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43061. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004: नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43062. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004मे नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण” प्रविष्टि गद्य, मीडिया इतिहास आ “एमएआइटीएचआइएलआइ एमईडीआइए एसटीयूडीआइईएस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4313, सूचकांक पंक्ति 3004मे नवेन्दु कुमार झाक “पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण” प्रविष्टि गद्य, मीडिया इतिहास आ “एमएआइटीएचआइएलआइ एमईडीआइए एसटीयूडीआइईएस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4314 : विदेह-सदेह 34 — नवेन्दु कुमार झा: सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य

प्रश्न 43063. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005: नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3005मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43064. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005: नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43065. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005: नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीतिक टिप्पणी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीतिक टिप्पणी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 43066. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005: नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन राजनीति

उत्तर: घ. समकालीन राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन राजनीति” अछि।

प्रश्न 43067. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005: नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन राजनीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43068. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005: नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक टिप्पणी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक टिप्पणी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43069. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005: नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43070. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005: नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीतिक टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीतिक टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43071. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005: नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43072. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005मे नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक टिप्पणी आ “समकालीन राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4314, सूचकांक पंक्ति 3005मे नवेन्दु कुमार झाक “सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक टिप्पणी आ “समकालीन राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4315 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: हमहूँ कहाँ बुझलियै

प्रश्न 43073. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006: सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमहूँ कहाँ बुझलियै

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमहूँ कहाँ बुझलियै

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3006मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “हमहूँ कहाँ बुझलियै” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43074. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006: सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43075. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006: सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43076. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006: सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्मकथात्मक

उत्तर: घ. आत्मकथात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मकथात्मक” अछि।

प्रश्न 43077. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006: सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्मकथात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मकथात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मकथात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43078. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006: सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43079. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006: सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43080. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006: सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरण/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरण/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43081. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006: सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43082. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006मे सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/निबन्ध आ “आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4315, सूचकांक पंक्ति 3006मे सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कहाँ बुझलियै” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/निबन्ध आ “आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4316 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: रिलेशन

प्रश्न 43083. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007: अनमोल झाक “रिलेशन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रिलेशन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिलेशन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3007मे अनमोल झाक प्रविष्टि “रिलेशन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43084. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007: अनमोल झाक “रिलेशन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43085. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007: अनमोल झाक “रिलेशन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43086. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007: अनमोल झाक “रिलेशन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सम्बन्धक मनोविज्ञान

उत्तर: घ. सम्बन्धक मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्बन्धक मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 43087. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007: अनमोल झाक “रिलेशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सम्बन्धक मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्बन्धक मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सम्बन्धक मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43088. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007: अनमोल झाक “रिलेशन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43089. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007: अनमोल झाक “रिलेशन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43090. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007: अनमोल झाक “रिलेशन”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43091. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007: अनमोल झाक “रिलेशन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43092. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007मे अनमोल झाक “रिलेशन” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “सम्बन्धक मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4316, सूचकांक पंक्ति 3007मे अनमोल झाक “रिलेशन” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “सम्बन्धक मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4317 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: अधिकार

प्रश्न 43093. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008: अनमोल झाक “अधिकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अधिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधिकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3008मे अनमोल झाक प्रविष्टि “अधिकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43094. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008: अनमोल झाक “अधिकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43095. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008: अनमोल झाक “अधिकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43096. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008: अनमोल झाक “अधिकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अधिकार-चेतना

उत्तर: घ. अधिकार-चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अधिकार-चेतना” अछि।

प्रश्न 43097. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008: अनमोल झाक “अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अधिकार-चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधिकार-चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अधिकार-चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43098. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008: अनमोल झाक “अधिकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43099. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008: अनमोल झाक “अधिकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43100. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008: अनमोल झाक “अधिकार”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43101. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008: अनमोल झाक “अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43102. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008मे अनमोल झाक “अधिकार” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “अधिकार-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4317, सूचकांक पंक्ति 3008मे अनमोल झाक “अधिकार” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “अधिकार-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4318 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: युगान्त

प्रश्न 43103. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009: अनमोल झाक “युगान्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. युगान्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युगान्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3009मे अनमोल झाक प्रविष्टि “युगान्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43104. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009: अनमोल झाक “युगान्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43105. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009: अनमोल झाक “युगान्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43106. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009: अनमोल झाक “युगान्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवर्तनक दर्शन

उत्तर: घ. परिवर्तनक दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवर्तनक दर्शन” अछि।

प्रश्न 43107. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009: अनमोल झाक “युगान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिवर्तनक दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवर्तनक दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवर्तनक दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43108. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009: अनमोल झाक “युगान्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43109. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009: अनमोल झाक “युगान्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43110. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009: अनमोल झाक “युगान्त”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43111. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009: अनमोल झाक “युगान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43112. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009मे अनमोल झाक “युगान्त” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “परिवर्तनक दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4318, सूचकांक पंक्ति 3009मे अनमोल झाक “युगान्त” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “परिवर्तनक दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4319 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: अधिकार

प्रश्न 43113. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010: अनमोल झाक “अधिकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अधिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधिकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3010मे अनमोल झाक प्रविष्टि “अधिकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43114. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010: अनमोल झाक “अधिकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43115. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010: अनमोल झाक “अधिकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43116. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010: अनमोल झाक “अधिकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. (दोसर रचना) अधिकारक भिन्न आयाम

उत्तर: घ. (दोसर रचना) अधिकारक भिन्न आयाम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “(दोसर रचना) अधिकारक भिन्न आयाम” अछि।

प्रश्न 43117. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010: अनमोल झाक “अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. (दोसर रचना) अधिकारक भिन्न आयाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (दोसर रचना) अधिकारक भिन्न आयाम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “(दोसर रचना) अधिकारक भिन्न आयाम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43118. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010: अनमोल झाक “अधिकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43119. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010: अनमोल झाक “अधिकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43120. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010: अनमोल झाक “अधिकार”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43121. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010: अनमोल झाक “अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43122. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010मे अनमोल झाक “अधिकार” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “(दोसर रचना) अधिकारक भिन्न आयाम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4319, सूचकांक पंक्ति 3010मे अनमोल झाक “अधिकार” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “(दोसर रचना) अधिकारक भिन्न आयाम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4320 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: चेतना

प्रश्न 43123. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011: अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेतना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3011मे अनमोल झाक प्रविष्टि “चेतना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43124. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011: अनमोल झाक “चेतना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43125. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011: अनमोल झाक “चेतना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43126. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011: अनमोल झाक “चेतना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जागरणक स्वर

उत्तर: घ. जागरणक स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जागरणक स्वर” अछि।

प्रश्न 43127. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011: अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जागरणक स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जागरणक स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जागरणक स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43128. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011: अनमोल झाक “चेतना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43129. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011: अनमोल झाक “चेतना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43130. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011: अनमोल झाक “चेतना”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43131. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011: अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43132. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011मे अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “जागरणक स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4320, सूचकांक पंक्ति 3011मे अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “जागरणक स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4321 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: भारतीय डाक

प्रश्न 43133. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012: अनमोल झाक “भारतीय डाक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भारतीय डाक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारतीय डाक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3012मे अनमोल झाक प्रविष्टि “भारतीय डाक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43134. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012: अनमोल झाक “भारतीय डाक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43135. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012: अनमोल झाक “भारतीय डाक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 43136. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012: अनमोल झाक “भारतीय डाक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संस्थागत व्यवस्थापर व्यंग्य

उत्तर: घ. संस्थागत व्यवस्थापर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्थागत व्यवस्थापर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 43137. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012: अनमोल झाक “भारतीय डाक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संस्थागत व्यवस्थापर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संस्थागत व्यवस्थापर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्थागत व्यवस्थापर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43138. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012: अनमोल झाक “भारतीय डाक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43139. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012: अनमोल झाक “भारतीय डाक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43140. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012: अनमोल झाक “भारतीय डाक”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43141. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012: अनमोल झाक “भारतीय डाक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43142. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012मे अनमोल झाक “भारतीय डाक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/व्यंग्य आ “संस्थागत व्यवस्थापर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4321, सूचकांक पंक्ति 3012मे अनमोल झाक “भारतीय डाक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/व्यंग्य आ “संस्थागत व्यवस्थापर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4322 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: युद्ध

प्रश्न 43143. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013: अनमोल झाक “युद्ध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. युद्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युद्ध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3013मे अनमोल झाक प्रविष्टि “युद्ध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43144. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013: अनमोल झाक “युद्ध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43145. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013: अनमोल झाक “युद्ध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43146. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013: अनमोल झाक “युद्ध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. युद्धक विभीषिका

उत्तर: घ. युद्धक विभीषिका

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “युद्धक विभीषिका” अछि।

प्रश्न 43147. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013: अनमोल झाक “युद्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. युद्धक विभीषिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युद्धक विभीषिका

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “युद्धक विभीषिका” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43148. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013: अनमोल झाक “युद्ध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43149. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013: अनमोल झाक “युद्ध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43150. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013: अनमोल झाक “युद्ध”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43151. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013: अनमोल झाक “युद्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43152. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013मे अनमोल झाक “युद्ध” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “युद्धक विभीषिका” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4322, सूचकांक पंक्ति 3013मे अनमोल झाक “युद्ध” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “युद्धक विभीषिका” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4323 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: टेकनोलजी

प्रश्न 43153. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014: अनमोल झाक “टेकनोलजी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टेकनोलजी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टेकनोलजी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3014मे अनमोल झाक प्रविष्टि “टेकनोलजी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43154. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014: अनमोल झाक “टेकनोलजी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43155. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014: अनमोल झाक “टेकनोलजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43156. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014: अनमोल झाक “टेकनोलजी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. टीईसीएचएनओएलओजीवाई-एसओसीआइईटीवाई एनईएक्सयूएस

उत्तर: घ. टीईसीएचएनओएलओजीवाई-एसओसीआइईटीवाई एनईएक्सयूएस

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “टीईसीएचएनओएलओजीवाई-एसओसीआइईटीवाई एनईएक्सयूएस” अछि।

प्रश्न 43157. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014: अनमोल झाक “टेकनोलजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. टीईसीएचएनओएलओजीवाई-एसओसीआइईटीवाई एनईएक्सयूएस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टीईसीएचएनओएलओजीवाई-एसओसीआइईटीवाई एनईएक्सयूएस

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “टीईसीएचएनओएलओजीवाई-एसओसीआइईटीवाई एनईएक्सयूएस” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43158. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014: अनमोल झाक “टेकनोलजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43159. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014: अनमोल झाक “टेकनोलजी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43160. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014: अनमोल झाक “टेकनोलजी”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43161. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014: अनमोल झाक “टेकनोलजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43162. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014मे अनमोल झाक “टेकनोलजी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “टीईसीएचएनओएलओजीवाई-एसओसीआइईटीवाई एनईएक्सयूएस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4323, सूचकांक पंक्ति 3014मे अनमोल झाक “टेकनोलजी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “टीईसीएचएनओएलओजीवाई-एसओसीआइईटीवाई एनईएक्सयूएस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4324 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: कोर बैंकिंग

प्रश्न 43163. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015: अनमोल झाक “कोर बैंकिंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोर बैंकिंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोर बैंकिंग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3015मे अनमोल झाक प्रविष्टि “कोर बैंकिंग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43164. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015: अनमोल झाक “कोर बैंकिंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43165. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015: अनमोल झाक “कोर बैंकिंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 43166. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015: अनमोल झाक “कोर बैंकिंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आर्थिक व्यवस्थापर प्रहार

उत्तर: घ. आर्थिक व्यवस्थापर प्रहार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आर्थिक व्यवस्थापर प्रहार” अछि।

प्रश्न 43167. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015: अनमोल झाक “कोर बैंकिंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आर्थिक व्यवस्थापर प्रहार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आर्थिक व्यवस्थापर प्रहार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आर्थिक व्यवस्थापर प्रहार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43168. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015: अनमोल झाक “कोर बैंकिंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43169. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015: अनमोल झाक “कोर बैंकिंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43170. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015: अनमोल झाक “कोर बैंकिंग”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43171. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015: अनमोल झाक “कोर बैंकिंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43172. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015मे अनमोल झाक “कोर बैंकिंग” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/व्यंग्य आ “आर्थिक व्यवस्थापर प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4324, सूचकांक पंक्ति 3015मे अनमोल झाक “कोर बैंकिंग” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/व्यंग्य आ “आर्थिक व्यवस्थापर प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4325 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: अन्हरजाली

प्रश्न 43173. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016: अनमोल झाक “अन्हरजाली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्हरजाली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हरजाली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3016मे अनमोल झाक प्रविष्टि “अन्हरजाली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43174. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016: अनमोल झाक “अन्हरजाली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43175. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016: अनमोल झाक “अन्हरजाली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43176. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016: अनमोल झाक “अन्हरजाली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दृश्य-अदृश्यक खेल

उत्तर: घ. दृश्य-अदृश्यक खेल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दृश्य-अदृश्यक खेल” अछि।

प्रश्न 43177. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016: अनमोल झाक “अन्हरजाली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दृश्य-अदृश्यक खेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दृश्य-अदृश्यक खेल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दृश्य-अदृश्यक खेल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43178. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016: अनमोल झाक “अन्हरजाली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43179. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016: अनमोल झाक “अन्हरजाली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43180. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016: अनमोल झाक “अन्हरजाली”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43181. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016: अनमोल झाक “अन्हरजाली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43182. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016मे अनमोल झाक “अन्हरजाली” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “दृश्य-अदृश्यक खेल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4325, सूचकांक पंक्ति 3016मे अनमोल झाक “अन्हरजाली” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “दृश्य-अदृश्यक खेल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4326 : विदेह-सदेह 34 — अनमोल झा: सुरक्षित

प्रश्न 43183. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017: अनमोल झाक “सुरक्षित” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुरक्षित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुरक्षित

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3017मे अनमोल झाक प्रविष्टि “सुरक्षित” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43184. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017: अनमोल झाक “सुरक्षित”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43185. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017: अनमोल झाक “सुरक्षित”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43186. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017: अनमोल झाक “सुरक्षित” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुरक्षा आ असुरक्षाक मनोविज्ञान

उत्तर: घ. सुरक्षा आ असुरक्षाक मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुरक्षा आ असुरक्षाक मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 43187. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017: अनमोल झाक “सुरक्षित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुरक्षा आ असुरक्षाक मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुरक्षा आ असुरक्षाक मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुरक्षा आ असुरक्षाक मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43188. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017: अनमोल झाक “सुरक्षित”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43189. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017: अनमोल झाक “सुरक्षित” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43190. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017: अनमोल झाक “सुरक्षित”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43191. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017: अनमोल झाक “सुरक्षित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43192. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017मे अनमोल झाक “सुरक्षित” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “सुरक्षा आ असुरक्षाक मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4326, सूचकांक पंक्ति 3017मे अनमोल झाक “सुरक्षित” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “सुरक्षा आ असुरक्षाक मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4327 : विदेह-सदेह 34 — दुर्गानन्द मंडल: लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर

प्रश्न 43193. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018: दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3018मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43194. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018: दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43195. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018: दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 43196. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018: दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चिकित्सक-समाज सम्बन्ध

उत्तर: घ. चिकित्सक-समाज सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चिकित्सक-समाज सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 43197. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018: दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चिकित्सक-समाज सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिकित्सक-समाज सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चिकित्सक-समाज सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43198. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018: दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43199. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018: दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43200. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018: दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43201. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018: दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43202. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018मे दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चिकित्सक-समाज सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4327, सूचकांक पंक्ति 3018मे दुर्गानन्द मंडलक “लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चिकित्सक-समाज सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4328 : विदेह-सदेह 34 — दयाकान्त: समीकरण

प्रश्न 43203. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019: दयाकान्तक “समीकरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. समीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समीकरण

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3019मे दयाकान्तक प्रविष्टि “समीकरण” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43204. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019: दयाकान्तक “समीकरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43205. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019: दयाकान्तक “समीकरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43206. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019: दयाकान्तक “समीकरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक समीकरण

उत्तर: घ. सामाजिक समीकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक समीकरण” अछि।

प्रश्न 43207. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019: दयाकान्तक “समीकरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक समीकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक समीकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक समीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43208. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019: दयाकान्तक “समीकरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दयाकान्त, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दयाकान्त, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43209. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019: दयाकान्तक “समीकरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43210. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019: दयाकान्तक “समीकरण”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43211. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019: दयाकान्तक “समीकरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43212. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019मे दयाकान्तक “समीकरण” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “सामाजिक समीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4328, सूचकांक पंक्ति 3019मे दयाकान्तक “समीकरण” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “सामाजिक समीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4329 : विदेह-सदेह 34 — दयाकान्त: फार्मुला

प्रश्न 43213. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020: दयाकान्तक “फार्मुला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फार्मुला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फार्मुला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3020मे दयाकान्तक प्रविष्टि “फार्मुला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43214. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020: दयाकान्तक “फार्मुला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43215. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020: दयाकान्तक “फार्मुला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43216. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020: दयाकान्तक “फार्मुला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यान्त्रिक जीवनपर व्यंग्य

उत्तर: घ. यान्त्रिक जीवनपर व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यान्त्रिक जीवनपर व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 43217. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020: दयाकान्तक “फार्मुला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यान्त्रिक जीवनपर व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यान्त्रिक जीवनपर व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यान्त्रिक जीवनपर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43218. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020: दयाकान्तक “फार्मुला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दयाकान्त, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दयाकान्त, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43219. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020: दयाकान्तक “फार्मुला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43220. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020: दयाकान्तक “फार्मुला”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43221. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020: दयाकान्तक “फार्मुला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43222. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020मे दयाकान्तक “फार्मुला” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “यान्त्रिक जीवनपर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4329, सूचकांक पंक्ति 3020मे दयाकान्तक “फार्मुला” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “यान्त्रिक जीवनपर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4330 : विदेह-सदेह 34 — दयाकान्त: तिरंगा

प्रश्न 43223. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021: दयाकान्तक “तिरंगा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तिरंगा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तिरंगा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3021मे दयाकान्तक प्रविष्टि “तिरंगा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43224. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021: दयाकान्तक “तिरंगा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43225. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021: दयाकान्तक “तिरंगा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43226. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021: दयाकान्तक “तिरंगा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राष्ट्रवाद

उत्तर: घ. राष्ट्रवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राष्ट्रवाद” अछि।

प्रश्न 43227. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021: दयाकान्तक “तिरंगा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राष्ट्रवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राष्ट्रवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राष्ट्रवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43228. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021: दयाकान्तक “तिरंगा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दयाकान्त, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दयाकान्त, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43229. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021: दयाकान्तक “तिरंगा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43230. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021: दयाकान्तक “तिरंगा”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43231. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021: दयाकान्तक “तिरंगा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43232. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021मे दयाकान्तक “तिरंगा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “राष्ट्रवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4330, सूचकांक पंक्ति 3021मे दयाकान्तक “तिरंगा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/निबन्ध आ “राष्ट्रवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4331 : विदेह-सदेह 34 — अमरेन्द्र यादव: रिपोर्ट

प्रश्न 43233. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022: अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रिपोर्ट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिपोर्ट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3022मे अमरेन्द्र यादवक प्रविष्टि “रिपोर्ट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43234. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022: अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43235. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022: अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 43236. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022: अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक यथार्थ

उत्तर: घ. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक यथार्थ” अछि।

प्रश्न 43237. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022: अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक यथार्थ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43238. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022: अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अमरेन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अमरेन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43239. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022: अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43240. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022: अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43241. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022: अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43242. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022मे अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4331, सूचकांक पंक्ति 3022मे अमरेन्द्र यादवक “रिपोर्ट” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4332 : विदेह-सदेह 34 — मनोज झा मुक्ति: देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति

प्रश्न 43243. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023: मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3023मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43244. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023: मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43245. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023: मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीतिक-सामाजिक टिप्पणी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीतिक-सामाजिक टिप्पणी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक-सामाजिक टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 43246. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023: मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन समाज-राजनीति विश्लेषण

उत्तर: घ. समकालीन समाज-राजनीति विश्लेषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन समाज-राजनीति विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 43247. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023: मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन समाज-राजनीति विश्लेषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन समाज-राजनीति विश्लेषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन समाज-राजनीति विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43248. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023: मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक-सामाजिक टिप्पणी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक-सामाजिक टिप्पणी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43249. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023: मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43250. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023: मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीतिक-सामाजिक टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीतिक-सामाजिक टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43251. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023: मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43252. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023मे मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक-सामाजिक टिप्पणी आ “समकालीन समाज-राजनीति विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4332, सूचकांक पंक्ति 3023मे मनोज झा मुक्तिक “देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक-सामाजिक टिप्पणी आ “समकालीन समाज-राजनीति विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4333 : विदेह-सदेह 34 — मनोज झा मुक्ति: महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?

प्रश्न 43253. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3024मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43254. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43255. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. खोजमूलक रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. खोजमूलक रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “खोजमूलक रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 43256. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भ्रष्टाचार अनुसन्धान

उत्तर: घ. भ्रष्टाचार अनुसन्धान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार अनुसन्धान” अछि।

प्रश्न 43257. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भ्रष्टाचार अनुसन्धान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचार अनुसन्धान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार अनुसन्धान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43258. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा खोजमूलक रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा खोजमूलक रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43259. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43260. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ खोजमूलक रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ खोजमूलक रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43261. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43262. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024मे मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?” प्रविष्टि गद्य, खोजमूलक रिपोर्ताज आ “भ्रष्टाचार अनुसन्धान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4333, सूचकांक पंक्ति 3024मे मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?” प्रविष्टि गद्य, खोजमूलक रिपोर्ताज आ “भ्रष्टाचार अनुसन्धान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4334 : विदेह-सदेह 34 — मनोज झा मुक्ति: रिपोर्ताज

प्रश्न 43263. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025: मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?
क. रिपोर्ताज
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. रिपोर्ताज
व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3025मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “रिपोर्ताज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43264. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025: मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज”क मुख्य विधा कोन अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. गद्य
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. गद्य
व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43265. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025: मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. रिपोर्ताज
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ग. रिपोर्ताज
व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 43266. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025: मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
घ. सामाजिक रिपोर्टिंग
उत्तर: घ. सामाजिक रिपोर्टिंग
व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक रिपोर्टिंग” अछि।

प्रश्न 43267. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025: मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
क. सामाजिक रिपोर्टिंग
ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: क. सामाजिक रिपोर्टिंग
व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक रिपोर्टिंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43268. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025: मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43269. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025: मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43270. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025: मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43271. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025: मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43272. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025मे मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4334, सूचकांक पंक्ति 3025मे मनोज झा मुक्तिक “रिपोर्ताज” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4335 : विदेह-सदेह 34 — मनोज झा मुक्ति: चाँद के टुकडा

प्रश्न 43273. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026: मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चाँद के टुकडा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चाँद के टुकडा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3026मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “चाँद के टुकडा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43274. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026: मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43275. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026: मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/निबन्ध” अछि।

प्रश्न 43276. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026: मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतीकात्मक आख्यान

उत्तर: घ. प्रतीकात्मक आख्यान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीकात्मक आख्यान” अछि।

प्रश्न 43277. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026: मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रतीकात्मक आख्यान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतीकात्मक आख्यान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीकात्मक आख्यान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43278. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026: मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा कथा/निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा कथा/निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43279. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026: मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43280. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026: मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा”कैँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43281. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026: मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43282. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026मे मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा” प्रविष्टि गद्य, कथा/निबन्ध आ “प्रतीकात्मक आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4335, सूचकांक पंक्ति 3026मे मनोज झा मुक्तिक “चाँद के टुकडा” प्रविष्टि गद्य, कथा/निबन्ध आ “प्रतीकात्मक आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4336 : विदेह-सदेह 34 — मनोज झा मुक्ति: इज्जतिक खातिर

प्रश्न 43283. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027: मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. इज्जतिक खातिर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इज्जतिक खातिर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3027मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “इज्जतिक खातिर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43284. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027: मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43285. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027: मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/लेख” अछि।

प्रश्न 43286. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027: मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक प्रतिष्ठा

उत्तर: घ. सामाजिक प्रतिष्ठा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक प्रतिष्ठा” अछि।

प्रश्न 43287. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027: मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक प्रतिष्ठा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक प्रतिष्ठा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक प्रतिष्ठा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43288. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027: मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा कथा/लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा कथा/लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43289. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027: मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43290. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027: मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43291. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027: मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43292. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027मे मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर” प्रविष्टि गद्य, कथा/लेख आ “सामाजिक प्रतिष्ठा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4336, सूचकांक पंक्ति 3027मे मनोज झा मुक्तिक “इज्जतिक खातिर” प्रविष्टि गद्य, कथा/लेख आ “सामाजिक प्रतिष्ठा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4337 : विदेह-सदेह 34 — सुशांत झा: अहां कोना रहै छी भौजी....

प्रश्न 43293. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028: सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अहां कोना रहै छी भौजी....

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अहां कोना रहै छी भौजी....

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3028मे सुशांत झाक प्रविष्टि “अहां कोना रहै छी भौजी....” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43294. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028: सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43295. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028: सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्र/संस्मरणात्मक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्र/संस्मरणात्मक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र/संस्मरणात्मक” अछि।

प्रश्न 43296. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028: सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 43297. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028: सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43298. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028: सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा पत्र/संस्मरणात्मक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा पत्र/संस्मरणात्मक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43299. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028: सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43300. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028: सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्र/संस्मरणात्मकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्र/संस्मरणात्मकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43301. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028: सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43302. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028मे सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....” प्रविष्टि गद्य, पत्र/संस्मरणात्मक आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4337, सूचकांक पंक्ति 3028मे सुशांत झाक “अहां कोना रहै छी भौजी....” प्रविष्टि गद्य, पत्र/संस्मरणात्मक आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4338 : विदेह-सदेह 34 — कुसुम ठाकुर: प्रत्यावर्तन

प्रश्न 43303. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029: कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रत्यावर्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रत्यावर्तन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3029मे कुसुम ठाकुरक प्रविष्टि “प्रत्यावर्तन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43304. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029: कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43305. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029: कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. उपन्यास/लम्बा कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. उपन्यास/लम्बा कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास/लम्बा कथा” अछि।

प्रश्न 43306. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029: कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मनोवैज्ञानिक आख्यान

उत्तर: घ. मनोवैज्ञानिक आख्यान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मनोवैज्ञानिक आख्यान” अछि।

प्रश्न 43307. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029: कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मनोवैज्ञानिक आख्यान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनोवैज्ञानिक आख्यान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनोवैज्ञानिक आख्यान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43308. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029: कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास/लम्बा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास/लम्बा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43309. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029: कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43310. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029: कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ उपन्यास/लम्बा कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ उपन्यास/लम्बा कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43311. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029: कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43312. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029मे कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास/लम्बा कथा आ “मनोवैज्ञानिक आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4338, सूचकांक पंक्ति 3029मे कुसुम ठाकुरक “प्रत्यावर्तन” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास/लम्बा कथा आ “मनोवैज्ञानिक आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4339 : विदेह-सदेह 34 — बेचन ठाकुर: बाप भेल पित्ती

प्रश्न 43313. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030: बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाप भेल पित्ती

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाप भेल पित्ती

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3030मे बेचन ठाकुरक प्रविष्टि “बाप भेल पित्ती” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43314. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030: बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43315. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030: बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 43316. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030: बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्यव्यंग्य नाटक

उत्तर: घ. हास्यव्यंग्य नाटक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्यव्यंग्य नाटक” अछि।

प्रश्न 43317. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030: बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्यव्यंग्य नाटक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्यव्यंग्य नाटक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्यव्यंग्य नाटक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43318. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030: बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43319. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030: बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43320. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030: बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43321. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030: बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43322. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030मे बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “हास्यव्यंग्य नाटक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4339, सूचकांक पंक्ति 3030मे बेचन ठाकुरक “बाप भेल पित्ती” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “हास्यव्यंग्य नाटक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4340 : विदेह-सदेह 34 — बेचन ठाकुर: अधिकार

प्रश्न 43323. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031: बेचन ठाकुरक “अधिकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अधिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधिकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3031मे बेचन ठाकुरक प्रविष्टि “अधिकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43324. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031: बेचन ठाकुरक “अधिकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43325. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031: बेचन ठाकुरक “अधिकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

प्रश्न 43326. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031: बेचन ठाकुरक “अधिकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अधिकारक द्वन्द्व

उत्तर: घ. अधिकारक द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अधिकारक द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 43327. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031: बेचन ठाकुरक “अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अधिकारक द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधिकारक द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अधिकारक द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43328. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031: बेचन ठाकुरक “अधिकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43329. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031: बेचन ठाकुरक “अधिकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43330. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031: बेचन ठाकुरक “अधिकार”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43331. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031: बेचन ठाकुरक “अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43332. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031मे बेचन ठाकुरक “अधिकार” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “अधिकारक द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4340, सूचकांक पंक्ति 3031मे बेचन ठाकुरक “अधिकार” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “अधिकारक द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4341 : विदेह-सदेह 34 — ऋषि वशिष्ठ: पूत कमाल

प्रश्न 43333. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032: ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पूत कमाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पूत कमाल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3032मे ऋषि वशिष्ठक प्रविष्टि “पूत कमाल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43334. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032: ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43335. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032: ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/लघुकथा” अछि।

प्रश्न 43336. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032: ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य-व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 43337. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032: ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43338. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032: ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक ऋषि वशिष्ठ, विधा गद्य, उप-विधा कथा/लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक ऋषि वशिष्ठ, विधा गद्य, उप-विधा कथा/लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43339. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032: ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43340. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032: ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43341. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032: ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43342. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032मे ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल” प्रविष्टि गद्य, कथा/लघुकथा आ “हास्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4341, सूचकांक पंक्ति 3032मे ऋषि वशिष्ठक “पूत कमाल” प्रविष्टि गद्य, कथा/लघुकथा आ “हास्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4342 : विदेह-सदेह 34 — देवांशु वत्स: बनभोज

प्रश्न 43343. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033: देवांशु वत्सक “बनभोज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बनभोज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बनभोज

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3033मे देवांशु वत्सक प्रविष्टि “बनभोज” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43344. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033: देवांशु वत्सक “बनभोज”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43345. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033: देवांशु वत्सक “बनभोज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 43346. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033: देवांशु वत्सक “बनभोज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक जीवन

उत्तर: घ. सामाजिक जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक जीवन” अछि।

प्रश्न 43347. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033: देवांशु वत्सक “बनभोज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43348. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033: देवांशु वत्सक “बनभोज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवांशु वत्स, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवांशु वत्स, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43349. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033: देवांशु वत्सक “बनभोज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43350. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033: देवांशु वत्सक “बनभोज”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43351. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033: देवांशु वत्सक “बनभोज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43352. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033मे देवांशु वत्सक “बनभोज” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “सामाजिक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4342, सूचकांक पंक्ति 3033मे देवांशु वत्सक “बनभोज” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “सामाजिक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4343 : विदेह-सदेह 34 — देवांशु वत्स: बुल्लुक टॉफी

प्रश्न 43353. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034: देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुल्लुक टॉफी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुल्लुक टॉफी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3034मे देवांशु वत्सक प्रविष्टि “बुल्लुक टॉफी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43354. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034: देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43355. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034: देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 43356. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034: देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 43357. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034: देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43358. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034: देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवांशु वत्स, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवांशु वत्स, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43359. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034: देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43360. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034: देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43361. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034: देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43362. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034मे देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4343, सूचकांक पंक्ति 3034मे देवांशु वत्सक “बुल्लुक टॉफी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “बाल मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4344 : विदेह-सदेह 34 — देवांशु वत्स: नताशा

प्रश्न 43363. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035: देवांशु वत्सक “नताशा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नताशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नताशा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3035मे देवांशु वत्सक प्रविष्टि “नताशा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43364. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035: देवांशु वत्सक “नताशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43365. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035: देवांशु वत्सक “नताशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

प्रश्न 43366. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035: देवांशु वत्सक “नताशा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक सम्बन्ध

उत्तर: घ. आधुनिक सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 43367. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035: देवांशु वत्सक “नताशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43368. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035: देवांशु वत्सक “नताशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवांशु वत्स, विधा गद्य, उप-विधा कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवांशु वत्स, विधा गद्य, उप-विधा कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43369. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035: देवांशु वत्सक “नताशा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43370. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035: देवांशु वत्सक “नताशा”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43371. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035: देवांशु वत्सक “नताशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43372. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035मे देवांशु वत्सक “नताशा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “आधुनिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4344, सूचकांक पंक्ति 3035मे देवांशु वत्सक “नताशा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “आधुनिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4345 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: चुनाव

प्रश्न 43373. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036: सतीश चन्द्र झाक “चुनाव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चुनाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चुनाव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3036मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “चुनाव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43374. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036: सतीश चन्द्र झाक “चुनाव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43375. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036: सतीश चन्द्र झाक “चुनाव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43376. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036: सतीश चन्द्र झाक “चुनाव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजनीतिक व्यंग्य

उत्तर: घ. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 43377. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036: सतीश चन्द्र झाक “चुनाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजनीतिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजनीतिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43378. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036: सतीश चन्द्र झाक “चुनाव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43379. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036: सतीश चन्द्र झाक “चुनाव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43380. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036: सतीश चन्द्र झाक “चुनाव”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43381. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036: सतीश चन्द्र झाक “चुनाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43382. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036मे सतीश चन्द्र झाक “चुनाव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4345, सूचकांक पंक्ति 3036मे सतीश चन्द्र झाक “चुनाव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4346 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: भाषा आ राजनीति

प्रश्न 43383. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाषा आ राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा आ राजनीति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3037मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “भाषा आ राजनीति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43384. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43385. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43386. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाषिक राजनीति

उत्तर: घ. भाषिक राजनीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषिक राजनीति” अछि।

प्रश्न 43387. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाषिक राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषिक राजनीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषिक राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43388. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43389. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43390. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43391. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43392. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037मे सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाषिक राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4346, सूचकांक पंक्ति 3037मे सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाषिक राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4347 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: भूखल पेट

प्रश्न 43393. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038: सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भूखल पेट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भूखल पेट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3038मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “भूखल पेट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43394. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038: सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43395. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038: सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43396. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038: सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी चित्रण

उत्तर: घ. गरीबी चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी चित्रण” अछि।

प्रश्न 43397. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038: सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43398. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038: सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43399. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038: सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43400. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038: सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43401. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038: सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43402. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038मे सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गरीबी चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4347, सूचकांक पंक्ति 3038मे सतीश चन्द्र झाक “भूखल पेट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गरीबी चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4348 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: पाँच साल

प्रश्न 43403. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039: सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पाँच साल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाँच साल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3039मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “पाँच साल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43404. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039: सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43405. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039: सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43406. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039: सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समयक गतिकी

उत्तर: घ. समयक गतिकी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समयक गतिकी” अछि।

प्रश्न 43407. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039: सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समयक गतिकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समयक गतिकी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समयक गतिकी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43408. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039: सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43409. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039: सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43410. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039: सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43411. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039: सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43412. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039मे सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समयक गतिकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4348, सूचकांक पंक्ति 3039मे सतीश चन्द्र झाक “पाँच साल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समयक गतिकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4349 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: सत्यक जीत

प्रश्न 43413. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040: सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सत्यक जीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सत्यक जीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3040मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “सत्यक जीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43414. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040: सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43415. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040: सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43416. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040: सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आशावादी स्वर

उत्तर: घ. आशावादी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आशावादी स्वर” अछि।

प्रश्न 43417. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040: सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आशावादी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आशावादी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आशावादी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43418. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040: सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43419. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040: सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43420. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040: सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43421. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040: सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43422. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040मे सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आशावादी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4349, सूचकांक पंक्ति 3040मे सतीश चन्द्र झाक “सत्यक जीत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आशावादी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4350 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: गरीबक स्वर्ग

प्रश्न 43423. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041: सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गरीबक स्वर्ग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबक स्वर्ग

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3041मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “गरीबक स्वर्ग” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43424. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041: सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43425. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041: सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43426. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041: सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्ग-दृष्टि

उत्तर: घ. वर्ग-दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्ग-दृष्टि” अछि।

प्रश्न 43427. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041: सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्ग-दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्ग-दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्ग-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43428. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041: सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43429. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041: सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43430. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041: सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43431. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041: सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43432. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041मे सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्ग-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4350, सूचकांक पंक्ति 3041मे सतीश चन्द्र झाक “गरीबक स्वर्ग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्ग-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4351 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: नव वर्ष

प्रश्न 43433. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042: सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नव वर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव वर्ष

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3042मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “नव वर्ष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43434. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042: सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43435. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042: सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43436. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042: सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नवीन आशा

उत्तर: घ. नवीन आशा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नवीन आशा” अछि।

प्रश्न 43437. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042: सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नवीन आशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवीन आशा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नवीन आशा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43438. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042: सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43439. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042: सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43440. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042: सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43441. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042: सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43442. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042मे सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नवीन आशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4351, सूचकांक पंक्ति 3042मे सतीश चन्द्र झाक “नव वर्ष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नवीन आशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4352 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: भाषा आ राजनीति

प्रश्न 43443. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाषा आ राजनीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषा आ राजनीति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3043मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “भाषा आ राजनीति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43444. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43445. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43446. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. (दोसर रचना) भाषिक अधिकारक भिन्न पक्ष

उत्तर: घ. (दोसर रचना) भाषिक अधिकारक भिन्न पक्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “(दोसर रचना) भाषिक अधिकारक भिन्न पक्ष” अछि।

प्रश्न 43447. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. (दोसर रचना) भाषिक अधिकारक भिन्न पक्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. (दोसर रचना) भाषिक अधिकारक भिन्न पक्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “(दोसर रचना) भाषिक अधिकारक भिन्न पक्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43448. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43449. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43450. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43451. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043: सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43452. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043मे सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “(दोसर रचना) भाषिक अधिकारक भिन्न पक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4352, सूचकांक पंक्ति 3043मे सतीश चन्द्र झाक “भाषा आ राजनीति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “(दोसर रचना) भाषिक अधिकारक भिन्न पक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4353 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: मैथिल

प्रश्न 43453. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044: सतीश चन्द्र झाक “मैथिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3044मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “मैथिल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43454. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044: सतीश चन्द्र झाक “मैथिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43455. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044: सतीश चन्द्र झाक “मैथिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43456. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044: सतीश चन्द्र झाक “मैथिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पहचानक स्वर

उत्तर: घ. पहचानक स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पहचानक स्वर” अछि।

प्रश्न 43457. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044: सतीश चन्द्र झाक “मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पहचानक स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पहचानक स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पहचानक स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43458. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044: सतीश चन्द्र झाक “मैथिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43459. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044: सतीश चन्द्र झाक “मैथिल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43460. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044: सतीश चन्द्र झाक “मैथिल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43461. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044: सतीश चन्द्र झाक “मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43462. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044मे सतीश चन्द्र झाक “मैथिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पहचानक स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4353, सूचकांक पंक्ति 3044मे सतीश चन्द्र झाक “मैथिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पहचानक स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4354 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: कविता आ कनियाँ

प्रश्न 43463. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045: सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता आ कनियाँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता आ कनियाँ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3045मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “कविता आ कनियाँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43464. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045: सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43465. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045: सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43466. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045: सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रूपक काव्य

उत्तर: घ. रूपक काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रूपक काव्य” अछि।

प्रश्न 43467. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045: सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रूपक काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रूपक काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रूपक काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43468. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045: सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43469. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045: सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43470. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045: सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43471. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045: सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43472. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045मे सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रूपक काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4354, सूचकांक पंक्ति 3045मे सतीश चन्द्र झाक “कविता आ कनियाँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रूपक काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4355 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: पंखहीन कल्पना

प्रश्न 43473. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046: सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पंखहीन कल्पना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पंखहीन कल्पना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3046मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “पंखहीन कल्पना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43474. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046: सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43475. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046: सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43476. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046: सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अस्तित्ववादी

उत्तर: घ. अस्तित्ववादी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अस्तित्ववादी” अछि।

प्रश्न 43477. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046: सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अस्तित्ववादी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्ववादी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अस्तित्ववादी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43478. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046: सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43479. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046: सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43480. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046: सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43481. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046: सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43482. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046मे सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अस्तित्ववादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4355, सूचकांक पंक्ति 3046मे सतीश चन्द्र झाक “पंखहीन कल्पना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अस्तित्ववादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4356 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: बुधनी

प्रश्न 43483. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047: सतीश चन्द्र झाक “बुधनी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुधनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुधनी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3047मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “बुधनी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43484. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047: सतीश चन्द्र झाक “बुधनी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43485. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047: सतीश चन्द्र झाक “बुधनी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43486. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047: सतीश चन्द्र झाक “बुधनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-जीवन

उत्तर: घ. नारी-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-जीवन” अछि।

प्रश्न 43487. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047: सतीश चन्द्र झाक “बुधनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43488. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047: सतीश चन्द्र झाक “बुधनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43489. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047: सतीश चन्द्र झाक “बुधनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43490. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047: सतीश चन्द्र झाक “बुधनी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43491. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047: सतीश चन्द्र झाक “बुधनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43492. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047मे सतीश चन्द्र झाक “बुधनी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4356, सूचकांक पंक्ति 3047मे सतीश चन्द्र झाक “बुधनी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4357 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: सृजन

प्रश्न 43493. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048: सतीश चन्द्र झाक “सृजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सृजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सृजन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3048मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “सृजन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43494. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048: सतीश चन्द्र झाक “सृजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43495. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048: सतीश चन्द्र झाक “सृजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43496. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048: सतीश चन्द्र झाक “सृजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. काव्य-प्रक्रिया

उत्तर: घ. काव्य-प्रक्रिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “काव्य-प्रक्रिया” अछि।

प्रश्न 43497. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048: सतीश चन्द्र झाक “सृजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. काव्य-प्रक्रिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काव्य-प्रक्रिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काव्य-प्रक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43498. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048: सतीश चन्द्र झाक “सृजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43499. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048: सतीश चन्द्र झाक “सृजन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43500. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048: सतीश चन्द्र झाक “सृजन”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43501. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048: सतीश चन्द्र झाक “सृजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43502. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048मे सतीश चन्द्र झाक “सृजन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “काव्य-प्रक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4357, सूचकांक पंक्ति 3048मे सतीश चन्द्र झाक “सृजन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “काव्य-प्रक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4358 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: कन्यादान

प्रश्न 43503. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049: सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कन्यादान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कन्यादान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3049मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “कन्यादान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43504. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049: सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43505. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049: सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43506. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049: सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक परम्परा

उत्तर: घ. सामाजिक परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक परम्परा” अछि।

प्रश्न 43507. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049: सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43508. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049: सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43509. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049: सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43510. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049: सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43511. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049: सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43512. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049मे सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4358, सूचकांक पंक्ति 3049मे सतीश चन्द्र झाक “कन्यादान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4359 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: चानक प्रेम

प्रश्न 43513. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050: सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चानक प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चानक प्रेम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3050मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “चानक प्रेम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43514. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050: सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43515. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050: सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43516. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050: सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-कविता

उत्तर: घ. प्रेम-कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-कविता” अछि।

प्रश्न 43517. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050: सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43518. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050: सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43519. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050: सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43520. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050: सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43521. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050: सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43522. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050मे सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4359, सूचकांक पंक्ति 3050मे सतीश चन्द्र झाक “चानक प्रेम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4360 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: सिंगरहारक फूल

प्रश्न 43523. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051: सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सिंगरहारक फूल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सिंगरहारक फूल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3051मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “सिंगरहारक फूल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43524. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051: सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43525. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051: सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43526. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051: सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-प्रेम

उत्तर: घ. प्रकृति-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-प्रेम” अछि।

प्रश्न 43527. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051: सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43528. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051: सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43529. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051: सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43530. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051: सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43531. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051: सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43532. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051मे सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4360, सूचकांक पंक्ति 3051मे सतीश चन्द्र झाक “सिंगरहारक फूल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4361 : विदेह-सदेह 34 — सतीश चन्द्र झा: सोनाक पिजरा

प्रश्न 43533. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052: सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सोनाक पिजरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सोनाक पिजरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3052मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “सोनाक पिजरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43534. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052: सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43535. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052: सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43536. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052: सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बन्धन-मुक्ति

उत्तर: घ. बन्धन-मुक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बन्धन-मुक्ति” अछि।

प्रश्न 43537. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052: सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बन्धन-मुक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बन्धन-मुक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बन्धन-मुक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43538. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052: सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43539. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052: सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43540. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052: सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43541. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052: सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43542. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052मे सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बन्धन-मुक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4361, सूचकांक पंक्ति 3052मे सतीश चन्द्र झाक “सोनाक पिजरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बन्धन-मुक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4362 : विदेह-सदेह 34 — सुबोध कुमार ठाकुर: आशा

प्रश्न 43543. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053: सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आशा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3053मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “आशा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43544. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053: सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43545. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053: सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43546. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053: सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आशावादी स्वर

उत्तर: घ. आशावादी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आशावादी स्वर” अछि।

प्रश्न 43547. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053: सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आशावादी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आशावादी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आशावादी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43548. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053: सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43549. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053: सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43550. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053: सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43551. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053: सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43552. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053मे सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आशावादी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4362, सूचकांक पंक्ति 3053मे सुबोध कुमार ठाकुरक “आशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आशावादी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4363 : विदेह-सदेह 34 — सुबोध कुमार ठाकुर: जुग बदलि गेल

प्रश्न 43553. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054: सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जुग बदलि गेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जुग बदलि गेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3054मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “जुग बदलि गेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43554. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054: सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43555. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054: सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43556. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054: सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवर्तन चेतना

उत्तर: घ. परिवर्तन चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवर्तन चेतना” अछि।

प्रश्न 43557. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054: सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिवर्तन चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवर्तन चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवर्तन चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43558. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054: सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43559. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054: सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43560. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054: सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43561. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054: सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43562. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054मे सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परिवर्तन चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4363, सूचकांक पंक्ति 3054मे सुबोध कुमार ठाकुरक “जुग बदलि गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परिवर्तन चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4364 : विदेह-सदेह 34 — सुबोध कुमार ठाकुर: सुन्न लागए गाम

प्रश्न 43563. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055: सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुन्न लागए गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुन्न लागए गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3055मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “सुन्न लागए गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43564. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055: सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43565. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055: सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43566. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055: सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पलायन पीड़ा

उत्तर: घ. पलायन पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पलायन पीड़ा” अछि।

प्रश्न 43567. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055: सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पलायन पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पलायन पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पलायन पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43568. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055: सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43569. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055: सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43570. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055: सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43571. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055: सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43572. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055मे सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पलायन पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4364, सूचकांक पंक्ति 3055मे सुबोध कुमार ठाकुरक “सुन्न लागए गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पलायन पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4365 : विदेह-सदेह 34 — सुबोध कुमार ठाकुर: अधूरा प्रेम आर चान

प्रश्न 43573. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056: सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अधूरा प्रेम आर चान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधूरा प्रेम आर चान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3056मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “अधूरा प्रेम आर चान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43574. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056: सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43575. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056: सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43576. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056: सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-वियोग

उत्तर: घ. प्रेम-वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-वियोग” अछि।

प्रश्न 43577. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056: सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43578. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056: सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43579. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056: सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43580. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056: सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43581. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056: सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43582. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056मे सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4365, सूचकांक पंक्ति 3056मे सुबोध कुमार ठाकुरक “अधूरा प्रेम आर चान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4366 : विदेह-सदेह 34 — सुबोध कुमार ठाकुर: नेनाक प्रश्न

प्रश्न 43583. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057: सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेनाक प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेनाक प्रश्न

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3057मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “नेनाक प्रश्न” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43584. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057: सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43585. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057: सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43586. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057: सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-दृष्टि

उत्तर: घ. बाल-दृष्टि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-दृष्टि” अछि।

प्रश्न 43587. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057: सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-दृष्टि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-दृष्टि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43588. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057: सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43589. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057: सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43590. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057: सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43591. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057: सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43592. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057मे सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4366, सूचकांक पंक्ति 3057मे सुबोध कुमार ठाकुरक “नेनाक प्रश्न” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4367 : विदेह-सदेह 34 — सुबोध कुमार ठाकुर: सनेश

प्रश्न 43593. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058: सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सनेश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सनेश

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3058मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “सनेश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43594. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058: सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43595. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058: सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43596. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058: सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सन्देश-काव्य

उत्तर: घ. सन्देश-काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सन्देश-काव्य” अछि।

प्रश्न 43597. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058: सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सन्देश-काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सन्देश-काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सन्देश-काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43598. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058: सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43599. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058: सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43600. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058: सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43601. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058: सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43602. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058मे सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सन्देश-काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4367, सूचकांक पंक्ति 3058मे सुबोध कुमार ठाकुरक “सनेश” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सन्देश-काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4368 : विदेह-सदेह 34 — सुबोध कुमार ठाकुर: हम नहि छी अभिशाप

प्रश्न 43603. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059: सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम नहि छी अभिशाप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम नहि छी अभिशाप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3059मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “हम नहि छी अभिशाप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43604. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059: सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43605. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059: सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43606. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059: सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्मस्वीकृति

उत्तर: घ. आत्मस्वीकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मस्वीकृति” अछि।

प्रश्न 43607. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059: सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्मस्वीकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मस्वीकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मस्वीकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43608. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059: सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43609. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059: सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43610. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059: सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43611. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059: सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43612. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059मे सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्मस्वीकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4368, सूचकांक पंक्ति 3059मे सुबोध कुमार ठाकुरक “हम नहि छी अभिशाप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्मस्वीकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4369 : विदेह-सदेह 34 — सुबोध कुमार ठाकुर: जीवन यात्रा

प्रश्न 43613. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060: सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जीवन यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन यात्रा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3060मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “जीवन यात्रा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43614. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060: सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43615. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060: सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43616. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060: सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-दर्शन

उत्तर: घ. जीवन-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-दर्शन” अछि।

प्रश्न 43617. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060: सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43618. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060: सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43619. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060: सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43620. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060: सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43621. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060: सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43622. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060मे सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4369, सूचकांक पंक्ति 3060मे सुबोध कुमार ठाकुरक “जीवन यात्रा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4370 : विदेह-सदेह 34 — सुबोध कुमार ठाकुर: अओताह मन भावन

प्रश्न 43623. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061: सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अओताह मन भावन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अओताह मन भावन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3061मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “अओताह मन भावन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43624. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061: सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43625. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061: सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43626. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061: सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाव-कविता

उत्तर: घ. भाव-कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाव-कविता” अछि।

प्रश्न 43627. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061: सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाव-कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाव-कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाव-कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43628. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061: सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43629. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061: सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43630. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061: सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43631. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061: सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43632. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061मे सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाव-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4370, सूचकांक पंक्ति 3061मे सुबोध कुमार ठाकुरक “अओताह मन भावन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाव-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4371 : विदेह-सदेह 34 — विनीत ठाकुर: जाढ़

प्रश्न 43633. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062: विनीत ठाकुरक “जाढ़” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जाढ़

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाढ़

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3062मे विनीत ठाकुरक प्रविष्टि “जाढ़” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43634. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062: विनीत ठाकुरक “जाढ़”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43635. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062: विनीत ठाकुरक “जाढ़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43636. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062: विनीत ठाकुरक “जाढ़” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-चित्रण

उत्तर: घ. प्रकृति-चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-चित्रण” अछि।

प्रश्न 43637. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062: विनीत ठाकुरक “जाढ़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43638. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062: विनीत ठाकुरक “जाढ़”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43639. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062: विनीत ठाकुरक “जाढ़” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43640. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062: विनीत ठाकुरक “जाढ़”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43641. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062: विनीत ठाकुरक “जाढ़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43642. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062मे विनीत ठाकुरक “जाढ़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4371, सूचकांक पंक्ति 3062मे विनीत ठाकुरक “जाढ़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4372 : विदेह-सदेह 34 — विनीत ठाकुर: नव वर्ष

प्रश्न 43643. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063: विनीत ठाकुरक “नव वर्ष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नव वर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव वर्ष

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3063मे विनीत ठाकुरक प्रविष्टि “नव वर्ष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43644. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063: विनीत ठाकुरक “नव वर्ष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43645. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063: विनीत ठाकुरक “नव वर्ष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43646. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063: विनीत ठाकुरक “नव वर्ष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नवीनता

उत्तर: घ. नवीनता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नवीनता” अछि।

प्रश्न 43647. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063: विनीत ठाकुरक “नव वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नवीनता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवीनता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नवीनता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43648. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063: विनीत ठाकुरक “नव वर्ष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43649. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063: विनीत ठाकुरक “नव वर्ष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43650. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063: विनीत ठाकुरक “नव वर्ष”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43651. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063: विनीत ठाकुरक “नव वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43652. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063मे विनीत ठाकुरक “नव वर्ष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नवीनता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4372, सूचकांक पंक्ति 3063मे विनीत ठाकुरक “नव वर्ष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नवीनता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4373 : विदेह-सदेह 34 — विनीत ठाकुर: अएनाके की मोल

प्रश्न 43653. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064: विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अएनाके की मोल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अएनाके की मोल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3064मे विनीत ठाकुरक प्रविष्टि “अएनाके की मोल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43654. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064: विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43655. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064: विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43656. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064: विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मूल्य-प्रश्न

उत्तर: घ. मूल्य-प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मूल्य-प्रश्न” अछि।

प्रश्न 43657. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064: विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मूल्य-प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मूल्य-प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मूल्य-प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43658. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064: विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43659. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064: विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43660. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064: विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43661. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064: विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43662. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064मे विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मूल्य-प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4373, सूचकांक पंक्ति 3064मे विनीत ठाकुरक “अएनाके की मोल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मूल्य-प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4374 : विदेह-सदेह 34 — विनीत ठाकुर: गीत १-२

प्रश्न 43663. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065: विनीत ठाकुरक “गीत १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत १-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3065मे विनीत ठाकुरक प्रविष्टि “गीत १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43664. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065: विनीत ठाकुरक “गीत १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43665. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065: विनीत ठाकुरक “गीत १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 43666. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065: विनीत ठाकुरक “गीत १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गेयता

उत्तर: घ. गेयता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गेयता” अछि।

प्रश्न 43667. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065: विनीत ठाकुरक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गेयता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गेयता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गेयता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43668. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065: विनीत ठाकुरक “गीत १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43669. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065: विनीत ठाकुरक “गीत १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43670. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065: विनीत ठाकुरक “गीत १-२”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43671. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065: विनीत ठाकुरक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43672. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065मे विनीत ठाकुरक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4374, सूचकांक पंक्ति 3065मे विनीत ठाकुरक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4375 : विदेह-सदेह 34 — विनीत ठाकुर: अभ्यागत

प्रश्न 43673. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066: विनीत ठाकुरक “अभ्यागत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अभ्यागत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभ्यागत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3066मे विनीत ठाकुरक प्रविष्टि “अभ्यागत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43674. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066: विनीत ठाकुरक “अभ्यागत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43675. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066: विनीत ठाकुरक “अभ्यागत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43676. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066: विनीत ठाकुरक “अभ्यागत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अतिथि-भाव

उत्तर: घ. अतिथि-भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अतिथि-भाव” अछि।

प्रश्न 43677. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066: विनीत ठाकुरक “अभ्यागत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अतिथि-भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अतिथि-भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अतिथि-भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43678. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066: विनीत ठाकुरक “अभ्यागत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43679. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066: विनीत ठाकुरक “अभ्यागत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43680. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066: विनीत ठाकुरक “अभ्यागत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43681. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066: विनीत ठाकुरक “अभ्यागत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43682. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066मे विनीत ठाकुरक “अभ्यागत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अतिथि-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4375, सूचकांक पंक्ति 3066मे विनीत ठाकुरक “अभ्यागत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अतिथि-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4376 : विदेह-सदेह 34 — विनीत ठाकुर: उठू मैथिल भेलै भोर

प्रश्न 43683. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067: विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उठू मैथिल भेलै भोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उठू मैथिल भेलै भोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3067मे विनीत ठाकुरक प्रविष्टि “उठू मैथिल भेलै भोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43684. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067: विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43685. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067: विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/जागरण गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/जागरण गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/जागरण गीत” अछि।

प्रश्न 43686. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067: विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जातीय चेतना

उत्तर: घ. जातीय चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जातीय चेतना” अछि।

प्रश्न 43687. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067: विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातीय चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातीय चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातीय चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43688. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067: विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता/जागरण गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता/जागरण गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43689. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067: विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43690. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067: विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/जागरण गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/जागरण गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43691. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067: विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43692. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067मे विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर” प्रविष्टि पद्य, कविता/जागरण गीत आ “जातीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4376, सूचकांक पंक्ति 3067मे विनीत ठाकुरक “उठू मैथिल भेलै भोर” प्रविष्टि पद्य, कविता/जागरण गीत आ “जातीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4377 : विदेह-सदेह 34 — निशाप्रभा झा: लोकगीत संकलन

प्रश्न 43693. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068: निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लोकगीत संकलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत संकलन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3068मे निशाप्रभा झाक प्रविष्टि “लोकगीत संकलन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43694. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068: निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43695. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068: निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोकगीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोकगीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोकगीत” अछि।

प्रश्न 43696. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068: निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन

उत्तर: घ. बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन” अछि।

प्रश्न 43697. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068: निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43698. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068: निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक निशाप्रभा झा, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक निशाप्रभा झा, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43699. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068: निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43700. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068: निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43701. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068: निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43702. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068मे निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन” प्रविष्टि पद्य, लोकगीत आ “बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4377, सूचकांक पंक्ति 3068मे निशाप्रभा झाक “लोकगीत संकलन” प्रविष्टि पद्य, लोकगीत आ “बीईएनजेएएमआइएन ओआरएएल टीआरएडीआइटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4378 : विदेह-सदेह 34 — हिमांशु चौधरी: नियति

प्रश्न 43703. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069: हिमांशु चौधरीक “नियति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नियति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नियति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3069मे हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि “नियति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43704. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069: हिमांशु चौधरीक “नियति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43705. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069: हिमांशु चौधरीक “नियति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43706. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069: हिमांशु चौधरीक “नियति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाग्य-दर्शन

उत्तर: घ. भाग्य-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाग्य-दर्शन” अछि।

प्रश्न 43707. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069: हिमांशु चौधरीक “नियति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाग्य-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाग्य-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाग्य-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43708. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069: हिमांशु चौधरीक “नियति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43709. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069: हिमांशु चौधरीक “नियति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43710. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069: हिमांशु चौधरीक “नियति”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43711. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069: हिमांशु चौधरीक “नियति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43712. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069मे हिमांशु चौधरीक “नियति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाग्य-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4378, सूचकांक पंक्ति 3069मे हिमांशु चौधरीक “नियति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाग्य-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4379 : विदेह-सदेह 34 — हिमांशु चौधरी: टप-टप नोर आ ज्वाला

प्रश्न 43713. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070: हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टप-टप नोर आ ज्वाला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टप-टप नोर आ ज्वाला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3070मे हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि “टप-टप नोर आ ज्वाला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43714. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070: हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43715. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070: हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43716. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070: हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विरह-दुःख

उत्तर: घ. विरह-दुःख

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विरह-दुःख” अछि।

प्रश्न 43717. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070: हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विरह-दुःख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विरह-दुःख

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विरह-दुःख” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43718. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070: हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43719. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070: हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43720. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070: हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43721. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070: हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43722. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070मे हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विरह-दुःख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4379, सूचकांक पंक्ति 3070मे हिमांशु चौधरीक “टप-टप नोर आ ज्वाला” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विरह-दुःख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4380 : विदेह-सदेह 34 — हिमांशु चौधरी: आतङकक राजकुमार

प्रश्न 43723. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071: हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आतङकक राजकुमार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आतङकक राजकुमार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3071मे हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि “आतङकक राजकुमार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43724. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071: हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43725. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071: हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43726. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071: हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक आतंक

उत्तर: घ. सामाजिक आतंक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक आतंक” अछि।

प्रश्न 43727. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071: हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक आतंक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक आतंक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक आतंक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43728. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071: हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43729. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071: हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43730. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071: हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43731. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071: हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43732. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071मे हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक आतंक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4380, सूचकांक पंक्ति 3071मे हिमांशु चौधरीक “आतङकक राजकुमार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक आतंक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4381 : विदेह-सदेह 34 — हिमांशु चौधरी: पाथर

प्रश्न 43733. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072: हिमांशु चौधरीक “पाथर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पाथर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाथर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3072मे हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि “पाथर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43734. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072: हिमांशु चौधरीक “पाथर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43735. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072: हिमांशु चौधरीक “पाथर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43736. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072: हिमांशु चौधरीक “पाथर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कठोरता चित्रण

उत्तर: घ. कठोरता चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कठोरता चित्रण” अछि।

प्रश्न 43737. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072: हिमांशु चौधरीक “पाथर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कठोरता चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कठोरता चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कठोरता चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43738. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072: हिमांशु चौधरीक “पाथर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43739. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072: हिमांशु चौधरीक “पाथर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43740. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072: हिमांशु चौधरीक “पाथर”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43741. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072: हिमांशु चौधरीक “पाथर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43742. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072मे हिमांशु चौधरीक “पाथर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कठोरता चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4381, सूचकांक पंक्ति 3072मे हिमांशु चौधरीक “पाथर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कठोरता चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4382 : विदेह-सदेह 34 — हिमांशु चौधरी: कथा

प्रश्न 43743. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073: हिमांशु चौधरीक “कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3073मे हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि “कथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43744. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073: हिमांशु चौधरीक “कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43745. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073: हिमांशु चौधरीक “कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43746. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073: हिमांशु चौधरीक “कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आख्यानात्मक काव्य

उत्तर: घ. आख्यानात्मक काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आख्यानात्मक काव्य” अछि।

प्रश्न 43747. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073: हिमांशु चौधरीक “कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आख्यानात्मक काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आख्यानात्मक काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आख्यानात्मक काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43748. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073: हिमांशु चौधरीक “कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43749. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073: हिमांशु चौधरीक “कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43750. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073: हिमांशु चौधरीक “कथा”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43751. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073: हिमांशु चौधरीक “कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43752. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073मे हिमांशु चौधरीक “कथा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आख्यानात्मक काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4382, सूचकांक पंक्ति 3073मे हिमांशु चौधरीक “कथा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आख्यानात्मक काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4383 : विदेह-सदेह 34 — हिमांशु चौधरी: की भार सांठू

प्रश्न 43753. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074: हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की भार सांठू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की भार सांठू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3074मे हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि “की भार सांठू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43754. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074: हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43755. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074: हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43756. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074: हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-भार

उत्तर: घ. जीवन-भार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-भार” अछि।

प्रश्न 43757. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074: हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-भार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-भार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-भार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43758. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074: हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43759. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074: हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43760. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074: हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43761. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074: हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43762. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074मे हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-भार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4383, सूचकांक पंक्ति 3074मे हिमांशु चौधरीक “की भार सांठू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-भार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4384 : विदेह-सदेह 34 — हिमांशु चौधरी: गीत

प्रश्न 43763. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075: हिमांशु चौधरीक “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3075मे हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43764. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075: हिमांशु चौधरीक “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43765. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075: हिमांशु चौधरीक “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 43766. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075: हिमांशु चौधरीक “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गेय-कविता

उत्तर: घ. गेय-कविता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गेय-कविता” अछि।

प्रश्न 43767. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075: हिमांशु चौधरीक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गेय-कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गेय-कविता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गेय-कविता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43768. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075: हिमांशु चौधरीक “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43769. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075: हिमांशु चौधरीक “गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43770. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075: हिमांशु चौधरीक “गीत”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43771. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075: हिमांशु चौधरीक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43772. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075मे हिमांशु चौधरीक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेय-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4384, सूचकांक पंक्ति 3075मे हिमांशु चौधरीक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेय-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4385 : विदेह-सदेह 34 — रूपेश कुमार झा 'त्योंथ': चाही हमरा मिथिला

प्रश्न 43773. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चाही हमरा मिथिला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चाही हमरा मिथिला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3076मे रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क प्रविष्टि “चाही हमरा मिथिला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43774. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43775. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43776. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला-प्रेम

उत्तर: घ. मिथिला-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला-प्रेम” अछि।

प्रश्न 43777. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43778. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूपेश कुमार झा 'त्योंथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूपेश कुमार झा 'त्योंथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43779. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43780. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43781. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43782. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076मे रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4385, सूचकांक पंक्ति 3076मे रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “चाही हमरा मिथिला” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4386 : विदेह-सदेह 34 — रूपेश कुमार झा 'त्योंथ': जय हिन्द! जय जय मिथिला!!

प्रश्न 43783. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जय हिन्द! जय जय मिथिला!!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जय हिन्द! जय जय मिथिला!!

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3077मे रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क प्रविष्टि “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43784. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43785. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43786. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देशभक्ति+क्षेत्रीयता

उत्तर: घ. देशभक्ति+क्षेत्रीयता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देशभक्ति+क्षेत्रीयता” अछि।

प्रश्न 43787. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देशभक्ति+क्षेत्रीयता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देशभक्ति+क्षेत्रीयता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देशभक्ति+क्षेत्रीयता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43788. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रूपेश कुमार झा 'त्योंथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रूपेश कुमार झा 'त्योंथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43789. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43790. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43791. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077: रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43792. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077मे रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति+क्षेत्रीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4386, सूचकांक पंक्ति 3077मे रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'क “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति+क्षेत्रीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4387 : विदेह-सदेह 34 — अजित कुमार मिश्र: अप्पन माटि

प्रश्न 43793. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078: अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अप्पन माटि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अप्पन माटि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3078मे अजित कुमार मिश्रक प्रविष्टि “अप्पन माटि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43794. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078: अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43795. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078: अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43796. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078: अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभूमि प्रेम

उत्तर: घ. मातृभूमि प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभूमि प्रेम” अछि।

प्रश्न 43797. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078: अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृभूमि प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभूमि प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृभूमि प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43798. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078: अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अजित कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अजित कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43799. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078: अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43800. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078: अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43801. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078: अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43802. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078मे अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृभूमि प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4387, सूचकांक पंक्ति 3078मे अजित कुमार मिश्रक “अप्पन माटि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृभूमि प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4388 : विदेह-सदेह 34 — अजित कुमार मिश्र: नववर्ष

प्रश्न 43803. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079: अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नववर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नववर्ष

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3079मे अजित कुमार मिश्रक प्रविष्टि “नववर्ष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43804. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079: अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43805. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079: अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43806. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079: अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नवीन आगमन

उत्तर: घ. नवीन आगमन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नवीन आगमन” अछि।

प्रश्न 43807. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079: अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नवीन आगमन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवीन आगमन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नवीन आगमन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43808. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079: अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अजित कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अजित कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43809. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079: अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43810. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079: अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43811. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079: अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43812. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079मे अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नवीन आगमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4388, सूचकांक पंक्ति 3079मे अजित कुमार मिश्रक “नववर्ष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नवीन आगमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4389 : विदेह-सदेह 34 — दयाकान्त: हे मैथिल आबो जागु

प्रश्न 43813. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080: दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हे मैथिल आबो जागु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हे मैथिल आबो जागु

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3080मे दयाकान्तक प्रविष्टि “हे मैथिल आबो जागु” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43814. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080: दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43815. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080: दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/जागरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/जागरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/जागरण” अछि।

प्रश्न 43816. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080: दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जातीय चेतना

उत्तर: घ. जातीय चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जातीय चेतना” अछि।

प्रश्न 43817. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080: दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातीय चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातीय चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातीय चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43818. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080: दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता/जागरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता/जागरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43819. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080: दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43820. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080: दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/जागरणक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/जागरणक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43821. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080: दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43822. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080मे दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु” प्रविष्टि पद्य, कविता/जागरण आ “जातीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4389, सूचकांक पंक्ति 3080मे दयाकान्तक “हे मैथिल आबो जागु” प्रविष्टि पद्य, कविता/जागरण आ “जातीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4390 : विदेह-सदेह 34 — दयाकान्त: ई बुढिया अछि हक्कल डइन

प्रश्न 43823. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081: दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई बुढिया अछि हक्कल डइन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई बुढिया अछि हक्कल डइन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3081मे दयाकान्तक प्रविष्टि “ई बुढिया अछि हक्कल डइन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43824. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081: दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43825. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081: दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 43826. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081: दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक कुरीति

उत्तर: घ. सामाजिक कुरीति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक कुरीति” अछि।

प्रश्न 43827. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081: दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक कुरीति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक कुरीति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक कुरीति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43828. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081: दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43829. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081: दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43830. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081: दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता/व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता/व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43831. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081: दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43832. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081मे दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन” प्रविष्टि पद्य, कविता/व्यंग्य आ “सामाजिक कुरीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4390, सूचकांक पंक्ति 3081मे दयाकान्तक “ई बुढिया अछि हक्कल डइन” प्रविष्टि पद्य, कविता/व्यंग्य आ “सामाजिक कुरीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4391 : विदेह-सदेह 34 — दयाकान्त: बाढ़ि

प्रश्न 43833. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082: दयाकान्तक “बाढ़ि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाढ़ि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाढ़ि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3082मे दयाकान्तक प्रविष्टि “बाढ़ि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43834. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082: दयाकान्तक “बाढ़ि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43835. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082: दयाकान्तक “बाढ़ि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43836. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082: दयाकान्तक “बाढ़ि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोसी बाढ़ि

उत्तर: घ. कोसी बाढ़ि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोसी बाढ़ि” अछि।

प्रश्न 43837. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082: दयाकान्तक “बाढ़ि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोसी बाढ़ि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसी बाढ़ि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोसी बाढ़ि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43838. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082: दयाकान्तक “बाढ़ि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43839. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082: दयाकान्तक “बाढ़ि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43840. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082: दयाकान्तक “बाढ़ि”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43841. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082: दयाकान्तक “बाढ़ि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43842. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082मे दयाकान्तक “बाढ़ि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोसी बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4391, सूचकांक पंक्ति 3082मे दयाकान्तक “बाढ़ि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोसी बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4392 : विदेह-सदेह 34 — दयाकान्त: माँ मिथिला ताकय संतान

प्रश्न 43843. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083: दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माँ मिथिला ताकय संतान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँ मिथिला ताकय संतान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3083मे दयाकान्तक प्रविष्टि “माँ मिथिला ताकय संतान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43844. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083: दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43845. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083: दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43846. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083: दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला-वेदना

उत्तर: घ. मिथिला-वेदना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला-वेदना” अछि।

प्रश्न 43847. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083: दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला-वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला-वेदना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला-वेदना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43848. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083: दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43849. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083: दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43850. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083: दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43851. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083: दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43852. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083मे दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4392, सूचकांक पंक्ति 3083मे दयाकान्तक “माँ मिथिला ताकय संतान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4393 : विदेह-सदेह 34 — मिथिलेश कुमार झा: खब्बरदार

प्रश्न 43853. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084: मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खब्बरदार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खब्बरदार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3084मे मिथिलेश कुमार झाक प्रविष्टि “खब्बरदार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43854. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084: मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43855. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084: मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43856. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084: मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चेतावनी स्वर

उत्तर: घ. चेतावनी स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चेतावनी स्वर” अछि।

प्रश्न 43857. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084: मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चेतावनी स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेतावनी स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चेतावनी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43858. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084: मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43859. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084: मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43860. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084: मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43861. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084: मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43862. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084मे मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चेतावनी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4393, सूचकांक पंक्ति 3084मे मिथिलेश कुमार झाक “खब्बरदार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चेतावनी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4394 : विदेह-सदेह 34 — मिथिलेश कुमार झा: आजाद गजल

प्रश्न 43863. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085: मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आजाद गजल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजाद गजल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3085मे मिथिलेश कुमार झाक प्रविष्टि “आजाद गजल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43864. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085: मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43865. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085: मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गजल

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गजल

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

प्रश्न 43866. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085: मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विदेह गजल आन्दोलन

उत्तर: घ. विदेह गजल आन्दोलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह गजल आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 43867. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085: मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विदेह गजल आन्दोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेह गजल आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह गजल आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43868. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085: मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43869. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085: मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43870. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085: मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43871. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085: मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43872. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085मे मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विदेह गजल आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4394, सूचकांक पंक्ति 3085मे मिथिलेश कुमार झाक “आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विदेह गजल आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4395 : विदेह-सदेह 34 — सन्तोष कुमार मिश्र: केकरा करु किलोल हो मिता

प्रश्न 43873. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086: सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. केकरा करु किलोल हो मिता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. केकरा करु किलोल हो मिता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3086मे सन्तोष कुमार मिश्रक प्रविष्टि “केकरा करु किलोल हो मिता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43874. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086: सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43875. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086: सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43876. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086: सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्मीय सम्बोधन

उत्तर: घ. आत्मीय सम्बोधन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मीय सम्बोधन” अछि।

प्रश्न 43877. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086: सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्मीय सम्बोधन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मीय सम्बोधन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मीय सम्बोधन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43878. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086: सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43879. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086: सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43880. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086: सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43881. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086: सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43882. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086मे सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्मीय सम्बोधन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4395, सूचकांक पंक्ति 3086मे सन्तोष कुमार मिश्रक “केकरा करु किलोल हो मिता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्मीय सम्बोधन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4396 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": मातृवंदना

प्रश्न 43883. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087: कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मातृवंदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृवंदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3087मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “मातृवंदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43884. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087: कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43885. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087: कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति/वन्दना गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति/वन्दना गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति/वन्दना गीत” अछि।

प्रश्न 43886. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087: कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-भक्ति

उत्तर: घ. मातृ-भक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-भक्ति” अछि।

प्रश्न 43887. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087: कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43888. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087: कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति/वन्दना गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति/वन्दना गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43889. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087: कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43890. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087: कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति/वन्दना गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति/वन्दना गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43891. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087: कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43892. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087मे कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना” प्रविष्टि पद्य, भक्ति/वन्दना गीत आ “मातृ-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4396, सूचकांक पंक्ति 3087मे कालीकांत झा "बूच"क “मातृवंदना” प्रविष्टि पद्य, भक्ति/वन्दना गीत आ “मातृ-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4397 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": कपीश वंदना

प्रश्न 43893. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088: कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कपीश वंदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कपीश वंदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3088मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “कपीश वंदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43894. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088: कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43895. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088: कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 43896. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088: कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हनुमान वन्दना

उत्तर: घ. हनुमान वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हनुमान वन्दना” अछि।

प्रश्न 43897. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088: कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हनुमान वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हनुमान वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हनुमान वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43898. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088: कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43899. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088: कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43900. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088: कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43901. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088: कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43902. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088मे कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “हनुमान वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4397, सूचकांक पंक्ति 3088मे कालीकांत झा "बूच"क “कपीश वंदना” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “हनुमान वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4398 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": आउ हमर हे राम प्रवासी

प्रश्न 43903. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089: कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आउ हमर हे राम प्रवासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आउ हमर हे राम प्रवासी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3089मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “आउ हमर हे राम प्रवासी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43904. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089: कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43905. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089: कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 43906. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089: कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम-भक्ति

उत्तर: घ. राम-भक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम-भक्ति” अछि।

प्रश्न 43907. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089: कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम-भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम-भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम-भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43908. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089: कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43909. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089: कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43910. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089: कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43911. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089: कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43912. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089मे कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “राम-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4398, सूचकांक पंक्ति 3089मे कालीकांत झा "बूच"क “आउ हमर हे राम प्रवासी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “राम-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4399 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": गौरी रहथु कुमारी

प्रश्न 43913. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गौरी रहथु कुमारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गौरी रहथु कुमारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3090मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “गौरी रहथु कुमारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43914. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43915. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 43916. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गौरी-वन्दना

उत्तर: घ. गौरी-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गौरी-वन्दना” अछि।

प्रश्न 43917. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गौरी-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गौरी-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गौरी-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43918. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43919. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43920. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43921. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43922. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090मे कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गौरी-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4399, सूचकांक पंक्ति 3090मे कालीकांत झा "बूच"क “गौरी रहथु कुमारी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गौरी-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4400 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": गै खुशबू

प्रश्न 43923. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091: कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गै खुशबू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गै खुशबू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3091मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “गै खुशबू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43924. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091: कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43925. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091: कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 43926. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091: कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-सौन्दर्य

उत्तर: घ. प्रकृति-सौन्दर्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-सौन्दर्य” अछि।

प्रश्न 43927. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091: कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-सौन्दर्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-सौन्दर्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-सौन्दर्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43928. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091: कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43929. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091: कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43930. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091: कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43931. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091: कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43932. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091मे कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रकृति-सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4400, सूचकांक पंक्ति 3091मे कालीकांत झा "बूच"क “गै खुशबू” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रकृति-सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4401 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": वंदना

प्रश्न 43933. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092: कालीकांत झा "बूच"क “वंदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वंदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वंदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3092मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “वंदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43934. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092: कालीकांत झा "बूच"क “वंदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43935. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092: कालीकांत झा "बूच"क “वंदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 43936. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092: कालीकांत झा "बूच"क “वंदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देव-वन्दना

उत्तर: घ. देव-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देव-वन्दना” अछि।

प्रश्न 43937. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092: कालीकांत झा "बूच"क “वंदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देव-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देव-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देव-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43938. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092: कालीकांत झा "बूच"क “वंदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43939. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092: कालीकांत झा "बूच"क “वंदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43940. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092: कालीकांत झा "बूच"क “वंदना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43941. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092: कालीकांत झा "बूच"क “वंदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43942. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092मे कालीकांत झा "बूच"क “वंदना” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “देव-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4401, सूचकांक पंक्ति 3092मे कालीकांत झा "बूच"क “वंदना” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “देव-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4402 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": हे तात

प्रश्न 43943. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093: कालीकांत झा "बूच"क “हे तात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हे तात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हे तात

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3093मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “हे तात” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43944. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093: कालीकांत झा "बूच"क “हे तात”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43945. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093: कालीकांत झा "बूच"क “हे तात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 43946. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093: कालीकांत झा "बूच"क “हे तात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पितृ-सम्बोधन

उत्तर: घ. पितृ-सम्बोधन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृ-सम्बोधन” अछि।

प्रश्न 43947. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093: कालीकांत झा "बूच"क “हे तात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पितृ-सम्बोधन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पितृ-सम्बोधन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृ-सम्बोधन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43948. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093: कालीकांत झा "बूच"क “हे तात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43949. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093: कालीकांत झा "बूच"क “हे तात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43950. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093: कालीकांत झा "बूच"क “हे तात”कैँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43951. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093: कालीकांत झा "बूच"क “हे तात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43952. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093मे कालीकांत झा "बूच"क “हे तात” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “पितृ-सम्बोधन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4402, सूचकांक पंक्ति 3093मे कालीकांत झा "बूच"क “हे तात” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “पितृ-सम्बोधन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4403 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": झूला

प्रश्न 43953. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094: कालीकांत झा "बूच"क “झूला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. झूला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झूला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3094मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “झूला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43954. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094: कालीकांत झा "बूच"क “झूला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43955. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094: कालीकांत झा "बूच"क “झूला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 43956. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094: कालीकांत झा "बूच"क “झूला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शृंगार+वात्सल्य

उत्तर: घ. शृंगार+वात्सल्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार+वात्सल्य” अछि।

प्रश्न 43957. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094: कालीकांत झा "बूच"क “झूला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शृंगार+वात्सल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शृंगार+वात्सल्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार+वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43958. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094: कालीकांत झा "बूच"क “झूला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43959. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094: कालीकांत झा "बूच"क “झूला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43960. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094: कालीकांत झा "बूच"क “झूला”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43961. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094: कालीकांत झा "बूच"क “झूला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43962. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094मे कालीकांत झा "बूच"क “झूला” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार+वात्सल्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4403, सूचकांक पंक्ति 3094मे कालीकांत झा "बूच"क “झूला” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार+वात्सल्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4404 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": राधिकाक विलाप

प्रश्न 43963. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095: कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राधिकाक विलाप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राधिकाक विलाप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3095मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “राधिकाक विलाप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43964. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095: कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43965. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095: कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विरह गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विरह गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विरह गीत” अछि।

प्रश्न 43966. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095: कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राधा-कृष्ण

उत्तर: घ. राधा-कृष्ण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राधा-कृष्ण” अछि।

प्रश्न 43967. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095: कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राधा-कृष्ण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राधा-कृष्ण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राधा-कृष्ण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43968. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095: कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43969. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095: कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43970. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095: कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43971. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095: कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43972. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095मे कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “राधा-कृष्ण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4404, सूचकांक पंक्ति 3095मे कालीकांत झा "बूच"क “राधिकाक विलाप” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “राधा-कृष्ण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4405 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": करूण गीत

प्रश्न 43973. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096: कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. करूण गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करूण गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3096मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “करूण गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43974. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096: कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43975. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096: कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 43976. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096: कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. करुण रस प्रधान

उत्तर: घ. करुण रस प्रधान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण रस प्रधान” अछि।

प्रश्न 43977. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096: कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. करुण रस प्रधान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करुण रस प्रधान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “करुण रस प्रधान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43978. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096: कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43979. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096: कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43980. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096: कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43981. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096: कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43982. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096मे कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “करुण रस प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4405, सूचकांक पंक्ति 3096मे कालीकांत झा "बूच"क “करूण गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “करुण रस प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4406 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": वेदना

प्रश्न 43983. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097: कालीकांत झा "बूच"क “वेदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वेदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वेदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3097मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “वेदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43984. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097: कालीकांत झा "बूच"क “वेदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43985. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097: कालीकांत झा "बूच"क “वेदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43986. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097: कालीकांत झा "बूच"क “वेदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आन्तरिक पीड़ा

उत्तर: घ. आन्तरिक पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आन्तरिक पीड़ा” अछि।

प्रश्न 43987. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097: कालीकांत झा "बूच"क “वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आन्तरिक पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्तरिक पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आन्तरिक पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43988. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097: कालीकांत झा "बूच"क “वेदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43989. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097: कालीकांत झा "बूच"क “वेदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 43990. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097: कालीकांत झा "बूच"क “वेदना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 43991. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097: कालीकांत झा "बूच"क “वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 43992. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097मे कालीकांत झा "बूच"क “वेदना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4406, सूचकांक पंक्ति 3097मे कालीकांत झा "बूच"क “वेदना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4407 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": उदासी

प्रश्न 43993. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098: कालीकांत झा "बूच"क “उदासी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उदासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उदासी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3098मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “उदासी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 43994. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098: कालीकांत झा "बूच"क “उदासी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 43995. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098: कालीकांत झा "बूच"क “उदासी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 43996. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098: कालीकांत झा "बूच"क “उदासी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विषाद-भाव

उत्तर: घ. विषाद-भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विषाद-भाव” अछि।

प्रश्न 43997. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098: कालीकांत झा "बूच"क “उदासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विषाद-भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विषाद-भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विषाद-भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 43998. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098: कालीकांत झा "बूच"क “उदासी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 43999. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098: कालीकांत झा "बूच"क “उदासी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44000. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098: कालीकांत झा "बूच"क “उदासी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

खण्ड 4407 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": उदासी

प्रश्न 44001. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098: कालीकांत झा "बूच"क “उदासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44002. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098मे कालीकांत झा "बूच"क “उदासी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विषाद-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4407, सूचकांक पंक्ति 3098मे कालीकांत झा "बूच"क “उदासी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विषाद-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4408 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": परिचय पात

प्रश्न 44003. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099: कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परिचय पात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिचय पात

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3099मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “परिचय पात” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44004. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099: कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44005. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099: कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44006. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099: कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिचय-आख्यान

उत्तर: घ. परिचय-आख्यान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिचय-आख्यान” अछि।

प्रश्न 44007. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099: कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिचय-आख्यान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिचय-आख्यान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिचय-आख्यान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44008. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099: कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44009. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099: कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44010. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099: कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44011. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099: कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44012. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099मे कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “परिचय-आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4408, सूचकांक पंक्ति 3099मे कालीकांत झा "बूच"क “परिचय पात” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “परिचय-आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4409 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": जागू मॉ आद्या

प्रश्न 44013. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100: कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जागू मॉ आद्या

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जागू मॉ आद्या

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3100मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “जागू मॉ आद्या” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44014. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100: कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44015. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100: कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जागरण गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जागरण गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जागरण गीत” अछि।

प्रश्न 44016. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100: कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देवी आह्वान

उत्तर: घ. देवी आह्वान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देवी आह्वान” अछि।

प्रश्न 44017. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100: कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देवी आह्वान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देवी आह्वान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देवी आह्वान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44018. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100: कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा जागरण गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा जागरण गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44019. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100: कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44020. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100: कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जागरण गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जागरण गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44021. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100: कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44022. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100मे कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या” प्रविष्टि पद्य, जागरण गीत आ “देवी आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4409, सूचकांक पंक्ति 3100मे कालीकांत झा "बूच"क “जागू मॉ आद्या” प्रविष्टि पद्य, जागरण गीत आ “देवी आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4410 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": देसिल वयना क अस्तित्व

प्रश्न 44023. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101: कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. देसिल वयना क अस्तित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देसिल वयना क अस्तित्व

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3101मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “देसिल वयना क अस्तित्व” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44024. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101: कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44025. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101: कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44026. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101: कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृभाषा पहचान

उत्तर: घ. मातृभाषा पहचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभाषा पहचान” अछि।

प्रश्न 44027. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101: कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृभाषा पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभाषा पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृभाषा पहचान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44028. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101: कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44029. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101: कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44030. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101: कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44031. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101: कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44032. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101मे कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृभाषा पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4410, सूचकांक पंक्ति 3101मे कालीकांत झा "बूच"क “देसिल वयना क अस्तित्व” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृभाषा पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4411 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": भैयाक विआह

प्रश्न 44033. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102: कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भैयाक विआह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भैयाक विआह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3102मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “भैयाक विआह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44034. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102: कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44035. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102: कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44036. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102: कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह-संस्कार

उत्तर: घ. विवाह-संस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह-संस्कार” अछि।

प्रश्न 44037. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102: कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाह-संस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाह-संस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह-संस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44038. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102: कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44039. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102: कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44040. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102: कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44041. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102: कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44042. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102मे कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “विवाह-संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4411, सूचकांक पंक्ति 3102मे कालीकांत झा "बूच"क “भैयाक विआह” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “विवाह-संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4412 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": नारि सुनू

प्रश्न 44043. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103: कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नारि सुनू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारि सुनू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3103मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “नारि सुनू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44044. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103: कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44045. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103: कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44046. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103: कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-सम्बोधन

उत्तर: घ. नारी-सम्बोधन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-सम्बोधन” अछि।

प्रश्न 44047. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103: कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-सम्बोधन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-सम्बोधन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-सम्बोधन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44048. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103: कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44049. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103: कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44050. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103: कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44051. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103: कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44052. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103मे कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “नारी-सम्बोधन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4412, सूचकांक पंक्ति 3103मे कालीकांत झा "बूच"क “नारि सुनू” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “नारी-सम्बोधन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4413 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": चैती दुर्गा

प्रश्न 44053. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104: कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चैती दुर्गा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चैती दुर्गा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3104मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “चैती दुर्गा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44054. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104: कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44055. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104: कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44056. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104: कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चैत नवरात्रि

उत्तर: घ. चैत नवरात्रि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चैत नवरात्रि” अछि।

प्रश्न 44057. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104: कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चैत नवरात्रि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चैत नवरात्रि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चैत नवरात्रि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44058. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104: कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44059. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104: कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44060. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104: कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44061. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104: कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44062. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104मे कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “चैत नवरात्रि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4413, सूचकांक पंक्ति 3104मे कालीकांत झा "बूच"क “चैती दुर्गा” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “चैत नवरात्रि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4414 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": गीत

प्रश्न 44063. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105: कालीकांत झा "बूच"क “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3105मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44064. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105: कालीकांत झा "बूच"क “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44065. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105: कालीकांत झा "बूच"क “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44066. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105: कालीकांत झा "बूच"क “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामान्य गेय रचना

उत्तर: घ. सामान्य गेय रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामान्य गेय रचना” अछि।

प्रश्न 44067. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105: कालीकांत झा "बूच"क “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामान्य गेय रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामान्य गेय रचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामान्य गेय रचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44068. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105: कालीकांत झा "बूच"क “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44069. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105: कालीकांत झा "बूच"क “गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44070. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105: कालीकांत झा "बूच"क “गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44071. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105: कालीकांत झा "बूच"क “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44072. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105मे कालीकांत झा "बूच"क “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सामान्य गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4414, सूचकांक पंक्ति 3105मे कालीकांत झा "बूच"क “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सामान्य गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4415 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": हमर गाम

प्रश्न 44073. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106: कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3106मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “हमर गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44074. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106: कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44075. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106: कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44076. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106: कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्राम-प्रेम

उत्तर: घ. ग्राम-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम-प्रेम” अछि।

प्रश्न 44077. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106: कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्राम-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्राम-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44078. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106: कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44079. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106: कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44080. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106: कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44081. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106: कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44082. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106मे कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्राम-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4415, सूचकांक पंक्ति 3106मे कालीकांत झा "बूच"क “हमर गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्राम-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4416 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": नवदुर्गा

प्रश्न 44083. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107: कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नवदुर्गा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवदुर्गा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3107मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “नवदुर्गा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44084. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107: कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44085. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107: कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44086. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107: कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नवदुर्गा वन्दना

उत्तर: घ. नवदुर्गा वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नवदुर्गा वन्दना” अछि।

प्रश्न 44087. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107: कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नवदुर्गा वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवदुर्गा वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नवदुर्गा वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44088. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107: कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44089. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107: कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44090. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107: कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44091. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107: कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44092. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107मे कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “नवदुर्गा वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4416, सूचकांक पंक्ति 3107मे कालीकांत झा "बूच"क “नवदुर्गा” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “नवदुर्गा वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4417 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": रामावतार

प्रश्न 44093. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108: कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रामावतार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रामावतार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3108मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “रामावतार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44094. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108: कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44095. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108: कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44096. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108: कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम-कथा

उत्तर: घ. राम-कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम-कथा” अछि।

प्रश्न 44097. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108: कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम-कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम-कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम-कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44098. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108: कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44099. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108: कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44100. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108: कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44101. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108: कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44102. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108मे कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “राम-कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4417, सूचकांक पंक्ति 3108मे कालीकांत झा "बूच"क “रामावतार” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “राम-कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4418 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": डहकन

प्रश्न 44103. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109: कालीकांत झा "बूच"क “डहकन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. डहकन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. डहकन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3109मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “डहकन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44104. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109: कालीकांत झा "बूच"क “डहकन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44105. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109: कालीकांत झा "बूच"क “डहकन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44106. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109: कालीकांत झा "बूच"क “डहकन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-आख्यान

उत्तर: घ. लोक-आख्यान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-आख्यान” अछि।

प्रश्न 44107. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109: कालीकांत झा "बूच"क “डहकन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-आख्यान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-आख्यान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-आख्यान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44108. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109: कालीकांत झा "बूच"क “डहकन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44109. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109: कालीकांत झा "बूच"क “डहकन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44110. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109: कालीकांत झा "बूच"क “डहकन”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44111. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109: कालीकांत झा "बूच"क “डहकन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44112. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109मे कालीकांत झा "बूच"क “डहकन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोक-आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4418, सूचकांक पंक्ति 3109मे कालीकांत झा "बूच"क “डहकन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोक-आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4419 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": राघव सरकार

प्रश्न 44113. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110: कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राघव सरकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राघव सरकार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3110मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “राघव सरकार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44114. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110: कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44115. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110: कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44116. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110: कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम-भक्ति

उत्तर: घ. राम-भक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम-भक्ति” अछि।

प्रश्न 44117. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110: कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम-भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम-भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम-भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44118. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110: कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44119. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110: कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44120. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110: कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44121. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110: कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44122. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110मे कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “राम-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4419, सूचकांक पंक्ति 3110मे कालीकांत झा "बूच"क “राघव सरकार” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “राम-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4420 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": माथ पर धान

प्रश्न 44123. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111: कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माथ पर धान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माथ पर धान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3111मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “माथ पर धान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44124. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111: कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44125. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111: कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44126. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111: कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. श्रम-गीत

उत्तर: घ. श्रम-गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “श्रम-गीत” अछि।

प्रश्न 44127. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111: कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. श्रम-गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रम-गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “श्रम-गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44128. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111: कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44129. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111: कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44130. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111: कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44131. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111: कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44132. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111मे कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “श्रम-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4420, सूचकांक पंक्ति 3111मे कालीकांत झा "बूच"क “माथ पर धान” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “श्रम-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4421 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": बुढ़ारी मे घीढ़ारी

प्रश्न 44133. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112: कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुढ़ारी मे घीढ़ारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुढ़ारी मे घीढ़ारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3112मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “बुढ़ारी मे घीढ़ारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44134. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112: कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44135. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112: कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44136. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112: कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत शैली

उत्तर: घ. लोकगीत शैली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत शैली” अछि।

प्रश्न 44137. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112: कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत शैली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत शैली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत शैली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44138. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112: कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44139. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112: कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44140. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112: कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी”कैं विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44141. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112: कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44142. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112मे कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोकगीत शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4421, सूचकांक पंक्ति 3112मे कालीकांत झा "बूच"क “बुढ़ारी मे घीढ़ारी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोकगीत शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4422 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": सारिक पत्र पाहुनक नाम

प्रश्न 44143. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113: कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सारिक पत्र पाहुनक नाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सारिक पत्र पाहुनक नाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3113मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “सारिक पत्र पाहुनक नाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44144. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113: कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44145. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113: कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्र-काव्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्र-काव्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र-काव्य” अछि।

प्रश्न 44146. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113: कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सन्देश काव्य

उत्तर: घ. सन्देश काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सन्देश काव्य” अछि।

प्रश्न 44147. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113: कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सन्देश काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सन्देश काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सन्देश काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44148. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113: कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा पत्र-काव्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा पत्र-काव्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44149. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113: कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44150. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113: कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्र-काव्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्र-काव्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44151. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113: कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44152. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113मे कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम” प्रविष्टि पद्य, पत्र-काव्य आ “सन्देश काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4422, सूचकांक पंक्ति 3113मे कालीकांत झा "बूच"क “सारिक पत्र पाहुनक नाम” प्रविष्टि पद्य, पत्र-काव्य आ “सन्देश काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4423 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": राम बिना अवधपुरी

प्रश्न 44153. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114: कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राम बिना अवधपुरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम बिना अवधपुरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3114मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “राम बिना अवधपुरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44154. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114: कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44155. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114: कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विरह गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विरह गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विरह गीत” अछि।

प्रश्न 44156. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114: कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम-वियोग

उत्तर: घ. राम-वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम-वियोग” अछि।

प्रश्न 44157. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114: कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम-वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम-वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम-वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44158. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114: कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44159. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114: कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44160. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114: कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44161. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114: कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44162. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114मे कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “राम-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4423, सूचकांक पंक्ति 3114मे कालीकांत झा "बूच"क “राम बिना अवधपुरी” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “राम-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4424 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": शिव शक्ति पूजन

प्रश्न 44163. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115: कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शिव शक्ति पूजन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिव शक्ति पूजन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3115मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “शिव शक्ति पूजन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44164. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115: कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44165. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115: कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44166. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115: कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिव-शक्ति

उत्तर: घ. शिव-शक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिव-शक्ति” अछि।

प्रश्न 44167. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115: कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिव-शक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिव-शक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिव-शक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44168. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115: कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44169. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115: कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44170. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115: कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44171. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115: कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44172. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115मे कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “शिव-शक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4424, सूचकांक पंक्ति 3115मे कालीकांत झा "बूच"क “शिव शक्ति पूजन” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “शिव-शक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4425 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": विरहिनी

प्रश्न 44173. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116: कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विरहिनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विरहिनी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3116मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “विरहिनी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44174. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116: कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44175. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116: कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विरह गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विरह गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विरह गीत” अछि।

प्रश्न 44176. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116: कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वियोग-शृंगार

उत्तर: घ. वियोग-शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वियोग-शृंगार” अछि।

प्रश्न 44177. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116: कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वियोग-शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वियोग-शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वियोग-शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44178. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116: कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44179. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116: कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44180. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116: कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44181. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116: कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44182. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116मे कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “वियोग-शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4425, सूचकांक पंक्ति 3116मे कालीकांत झा "बूच"क “विरहिनी” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “वियोग-शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4426 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": नचारी

प्रश्न 44183. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नचारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नचारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3117मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “नचारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44184. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44185. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44186. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति संगीत

उत्तर: घ. भक्ति संगीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति संगीत” अछि।

प्रश्न 44187. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति संगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति संगीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति संगीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44188. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44189. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44190. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44191. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44192. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117मे कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “भक्ति संगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4426, सूचकांक पंक्ति 3117मे कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “भक्ति संगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4427 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": गीत

प्रश्न 44193. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118: कालीकांत झा "बूच"क “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3118मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44194. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118: कालीकांत झा "बूच"क “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44195. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118: कालीकांत झा "बूच"क “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44196. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118: कालीकांत झा "बूच"क “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामान्य गेय रचना

उत्तर: घ. सामान्य गेय रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामान्य गेय रचना” अछि।

प्रश्न 44197. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118: कालीकांत झा "बूच"क “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामान्य गेय रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामान्य गेय रचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामान्य गेय रचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44198. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118: कालीकांत झा "बूच"क “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44199. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118: कालीकांत झा "बूच"क “गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44200. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118: कालीकांत झा "बूच"क “गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44201. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118: कालीकांत झा "बूच"क “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44202. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118मे कालीकांत झा "बूच"क “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सामान्य गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4427, सूचकांक पंक्ति 3118मे कालीकांत झा "बूच"क “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सामान्य गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4428 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": गय नानी

प्रश्न 44203. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119: कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गय नानी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गय नानी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3119मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “गय नानी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44204. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119: कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44205. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119: कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44206. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119: कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य-गीत

उत्तर: घ. हास्य-गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य-गीत” अछि।

प्रश्न 44207. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119: कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य-गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य-गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य-गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44208. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119: कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44209. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119: कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44210. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119: कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44211. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119: कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44212. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119मे कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “हास्य-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4428, सूचकांक पंक्ति 3119मे कालीकांत झा "बूच"क “गय नानी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “हास्य-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4429 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": हीरा-बेटी

प्रश्न 44213. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120: कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हीरा-बेटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हीरा-बेटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3120मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “हीरा-बेटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44214. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120: कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44215. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120: कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44216. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120: कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुत्री-प्रेम

उत्तर: घ. पुत्री-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुत्री-प्रेम” अछि।

प्रश्न 44217. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120: कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुत्री-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुत्री-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुत्री-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44218. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120: कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44219. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120: कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44220. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120: कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44221. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120: कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44222. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120मे कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “पुत्री-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4429, सूचकांक पंक्ति 3120मे कालीकांत झा "बूच"क “हीरा-बेटी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “पुत्री-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4430 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": स्वागत गान

प्रश्न 44223. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121: कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्वागत गान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वागत गान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3121मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “स्वागत गान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44224. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121: कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44225. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121: कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44226. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121: कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वागत परम्परा

उत्तर: घ. स्वागत परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वागत परम्परा” अछि।

प्रश्न 44227. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121: कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वागत परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वागत परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वागत परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44228. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121: कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44229. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121: कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44230. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121: कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44231. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121: कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44232. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121मे कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “स्वागत परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4430, सूचकांक पंक्ति 3121मे कालीकांत झा "बूच"क “स्वागत गान” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “स्वागत परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4431 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": मातृ गीत

प्रश्न 44233. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122: कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मातृ गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3122मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “मातृ गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44234. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122: कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44235. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122: कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44236. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122: कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-वन्दना

उत्तर: घ. मातृ-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-वन्दना” अछि।

प्रश्न 44237. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122: कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44238. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122: कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44239. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122: कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44240. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122: कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44241. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122: कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44242. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122मे कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मातृ-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4431, सूचकांक पंक्ति 3122मे कालीकांत झा "बूच"क “मातृ गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मातृ-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4432 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": सोन दाइ

प्रश्न 44243. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123: कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सोन दाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सोन दाइ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3123मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “सोन दाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44244. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123: कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44245. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123: कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44246. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123: कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाई-प्रेम

उत्तर: घ. भाई-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाई-प्रेम” अछि।

प्रश्न 44247. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123: कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाई-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाई-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाई-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44248. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123: कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44249. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123: कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44250. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123: कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44251. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123: कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44252. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123मे कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “भाई-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4432, सूचकांक पंक्ति 3123मे कालीकांत झा "बूच"क “सोन दाइ” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “भाई-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4433 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": हील हाइ-हाइ

प्रश्न 44253. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124: कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हील हाइ-हाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हील हाइ-हाइ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3124मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “हील हाइ-हाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44254. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124: कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44255. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124: कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44256. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124: कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य-व्यंग्य

उत्तर: घ. हास्य-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 44257. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124: कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44258. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124: कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44259. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124: कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44260. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124: कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44261. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124: कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44262. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124मे कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “हास्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4433, सूचकांक पंक्ति 3124मे कालीकांत झा "बूच"क “हील हाइ-हाइ” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “हास्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4434 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": मिथिला क बेटी

प्रश्न 44263. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला क बेटी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला क बेटी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3125मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “मिथिला क बेटी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44264. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44265. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44266. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-गरिमा

उत्तर: घ. नारी-गरिमा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-गरिमा” अछि।

प्रश्न 44267. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-गरिमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-गरिमा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-गरिमा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44268. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44269. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44270. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44271. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44272. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125मे कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “नारी-गरिमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4434, सूचकांक पंक्ति 3125मे कालीकांत झा "बूच"क “मिथिला क बेटी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “नारी-गरिमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4435 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": जेठी करेह

प्रश्न 44273. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126: कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जेठी करेह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जेठी करेह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3126मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “जेठी करेह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44274. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126: कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44275. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126: कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44276. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126: कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत

उत्तर: घ. लोकगीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत” अछि।

प्रश्न 44277. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126: कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44278. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126: कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44279. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126: कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44280. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126: कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44281. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126: कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44282. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126मे कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोकगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4435, सूचकांक पंक्ति 3126मे कालीकांत झा "बूच"क “जेठी करेह” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोकगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4436 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": ऊँ नमः शिवाय

प्रश्न 44283. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127: कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ऊँ नमः शिवाय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऊँ नमः शिवाय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3127मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “ऊँ नमः शिवाय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44284. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127: कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44285. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127: कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44286. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127: कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिव-वन्दना

उत्तर: घ. शिव-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिव-वन्दना” अछि।

प्रश्न 44287. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127: कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिव-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिव-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिव-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44288. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127: कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44289. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127: कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44290. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127: कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44291. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127: कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44292. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127मे कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “शिव-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4436, सूचकांक पंक्ति 3127मे कालीकांत झा "बूच"क “ऊँ नमः शिवाय” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “शिव-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4437 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": मणिद्वीपक महरानी

प्रश्न 44293. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128: कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मणिद्वीपक महरानी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मणिद्वीपक महरानी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3128मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “मणिद्वीपक महरानी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44294. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128: कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44295. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128: कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44296. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128: कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देवी-वन्दना

उत्तर: घ. देवी-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देवी-वन्दना” अछि।

प्रश्न 44297. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128: कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देवी-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देवी-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देवी-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44298. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128: कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44299. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128: कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44300. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128: कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44301. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128: कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44302. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128मे कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “देवी-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4437, सूचकांक पंक्ति 3128मे कालीकांत झा "बूच"क “मणिद्वीपक महरानी” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “देवी-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4438 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": सरस्वती वंदना

प्रश्न 44303. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129: कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सरस्वती वंदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सरस्वती वंदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3129मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “सरस्वती वंदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44304. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129: कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44305. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129: कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44306. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129: कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विद्या-देवी

उत्तर: घ. विद्या-देवी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विद्या-देवी” अछि।

प्रश्न 44307. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129: कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विद्या-देवी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्या-देवी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विद्या-देवी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44308. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129: कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44309. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129: कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44310. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129: कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44311. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129: कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44312. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129मे कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “विद्या-देवी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4438, सूचकांक पंक्ति 3129मे कालीकांत झा "बूच"क “सरस्वती वंदना” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “विद्या-देवी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4439 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": भदैया होली

प्रश्न 44313. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130: कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भदैया होली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भदैया होली

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3130मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “भदैया होली” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44314. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130: कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44315. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130: कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44316. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130: कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. होली पर्व

उत्तर: घ. होली पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “होली पर्व” अछि।

प्रश्न 44317. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130: कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. होली पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होली पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “होली पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44318. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130: कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44319. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130: कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44320. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130: कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44321. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130: कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44322. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130मे कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “होली पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4439, सूचकांक पंक्ति 3130मे कालीकांत झा "बूच"क “भदैया होली” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “होली पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4440 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": वनिवासक अंत

प्रश्न 44323. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131: कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वनिवासक अंत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वनिवासक अंत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3131मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “वनिवासक अंत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44324. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131: कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44325. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131: कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44326. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131: कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम-कथा प्रसंग

उत्तर: घ. राम-कथा प्रसंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम-कथा प्रसंग” अछि।

प्रश्न 44327. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131: कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम-कथा प्रसंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम-कथा प्रसंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम-कथा प्रसंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44328. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131: कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44329. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131: कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44330. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131: कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44331. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131: कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44332. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131मे कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राम-कथा प्रसंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4440, सूचकांक पंक्ति 3131मे कालीकांत झा "बूच"क “वनिवासक अंत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राम-कथा प्रसंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4441 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": मिथिलाक दुःदशा

प्रश्न 44333. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिलाक दुःदशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक दुःदशा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3132मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “मिथिलाक दुःदशा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44334. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44335. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44336. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्षेत्रीय पीड़ा

उत्तर: घ. क्षेत्रीय पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “क्षेत्रीय पीड़ा” अछि।

प्रश्न 44337. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. क्षेत्रीय पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षेत्रीय पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्षेत्रीय पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44338. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44339. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44340. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44341. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132: कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44342. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132मे कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “क्षेत्रीय पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4441, सूचकांक पंक्ति 3132मे कालीकांत झा "बूच"क “मिथिलाक दुःदशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “क्षेत्रीय पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4442 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": माला

प्रश्न 44343. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133: कालीकांत झा "बूच"क “माला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3133मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “माला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44344. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133: कालीकांत झा "बूच"क “माला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44345. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133: कालीकांत झा "बूच"क “माला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44346. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133: कालीकांत झा "बूच"क “माला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुष्प-रूपक

उत्तर: घ. पुष्प-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुष्प-रूपक” अछि।

प्रश्न 44347. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133: कालीकांत झा "बूच"क “माला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुष्प-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुष्प-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुष्प-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44348. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133: कालीकांत झा "बूच"क “माला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44349. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133: कालीकांत झा "बूच"क “माला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44350. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133: कालीकांत झा "बूच"क “माला”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44351. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133: कालीकांत झा "बूच"क “माला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44352. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133मे कालीकांत झा "बूच"क “माला” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “पुष्प-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4442, सूचकांक पंक्ति 3133मे कालीकांत झा "बूच"क “माला” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “पुष्प-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4443 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": जागरण गान

प्रश्न 44353. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134: कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जागरण गान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जागरण गान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3134मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “जागरण गान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44354. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134: कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44355. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134: कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जागरण गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जागरण गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जागरण गीत” अछि।

प्रश्न 44356. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134: कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देवी आह्वान

उत्तर: घ. देवी आह्वान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देवी आह्वान” अछि।

प्रश्न 44357. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134: कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देवी आह्वान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देवी आह्वान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देवी आह्वान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44358. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134: कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा जागरण गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा जागरण गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44359. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134: कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44360. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134: कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जागरण गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जागरण गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44361. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134: कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44362. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134मे कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान” प्रविष्टि पद्य, जागरण गीत आ “देवी आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4443, सूचकांक पंक्ति 3134मे कालीकांत झा "बूच"क “जागरण गान” प्रविष्टि पद्य, जागरण गीत आ “देवी आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4444 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": तोहर ठोर

प्रश्न 44363. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135: कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तोहर ठोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तोहर ठोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3135मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “तोहर ठोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44364. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135: कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44365. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135: कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44366. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135: कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम गीत

उत्तर: घ. प्रेम गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम गीत” अछि।

प्रश्न 44367. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135: कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44368. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135: कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44369. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135: कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44370. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135: कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44371. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135: कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44372. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135मे कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रेम गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4444, सूचकांक पंक्ति 3135मे कालीकांत झा "बूच"क “तोहर ठोर” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रेम गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4445 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": नचारी

प्रश्न 44373. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नचारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नचारी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3136मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “नचारी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44374. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44375. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44376. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नचारी परम्परा

उत्तर: घ. नचारी परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नचारी परम्परा” अछि।

प्रश्न 44377. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नचारी परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नचारी परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नचारी परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44378. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44379. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44380. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44381. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136: कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44382. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136मे कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “नचारी परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4445, सूचकांक पंक्ति 3136मे कालीकांत झा "बूच"क “नचारी” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “नचारी परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4446 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": सुनू आब मन जेहन लगैए

प्रश्न 44383. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137: कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुनू आब मन जेहन लगैए

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुनू आब मन जेहन लगैए

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3137मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “सुनू आब मन जेहन लगैए” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44384. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137: कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44385. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137: कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44386. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137: कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपदेशात्मक

उत्तर: घ. उपदेशात्मक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपदेशात्मक” अछि।

प्रश्न 44387. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137: कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपदेशात्मक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपदेशात्मक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपदेशात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44388. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137: कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44389. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137: कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44390. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137: कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44391. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137: कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44392. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137मे कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “उपदेशात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4446, सूचकांक पंक्ति 3137मे कालीकांत झा "बूच"क “सुनू आब मन जेहन लगैए” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “उपदेशात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4447 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": गहवर जननी केर

प्रश्न 44393. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138: कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गहवर जननी केर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गहवर जननी केर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3138मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “गहवर जननी केर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44394. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138: कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44395. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138: कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44396. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138: कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-वन्दना

उत्तर: घ. मातृ-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-वन्दना” अछि।

प्रश्न 44397. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138: कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44398. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138: कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44399. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138: कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44400. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138: कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44401. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138: कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44402. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138मे कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मातृ-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4447, सूचकांक पंक्ति 3138मे कालीकांत झा "बूच"क “गहवर जननी केर” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मातृ-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4448 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": भगवती वंदना

प्रश्न 44403. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139: कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भगवती वंदना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भगवती वंदना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3139मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “भगवती वंदना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44404. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139: कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44405. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139: कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44406. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139: कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दुर्गा वन्दना

उत्तर: घ. दुर्गा वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दुर्गा वन्दना” अछि।

प्रश्न 44407. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139: कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दुर्गा वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुर्गा वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दुर्गा वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44408. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139: कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44409. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139: कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44410. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139: कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44411. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139: कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44412. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139मे कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “दुर्गा वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4448, सूचकांक पंक्ति 3139मे कालीकांत झा "बूच"क “भगवती वंदना” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “दुर्गा वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4449 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": भौजीक अवाहन

प्रश्न 44413. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140: कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भौजीक अवाहन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भौजीक अवाहन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3140मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “भौजीक अवाहन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44414. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140: कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44415. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140: कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44416. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140: कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह संस्कार

उत्तर: घ. विवाह संस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह संस्कार” अछि।

प्रश्न 44417. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140: कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाह संस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाह संस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह संस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44418. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140: कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44419. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140: कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44420. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140: कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44421. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140: कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44422. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140मे कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “विवाह संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4449, सूचकांक पंक्ति 3140मे कालीकांत झा "बूच"क “भौजीक अवाहन” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “विवाह संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4450 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": स्वप्न सुन्दरि

प्रश्न 44423. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141: कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्वप्न सुन्दरि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वप्न सुन्दरि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3141मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “स्वप्न सुन्दरि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44424. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141: कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44425. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141: कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44426. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141: कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वप्न-प्रेम

उत्तर: घ. स्वप्न-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वप्न-प्रेम” अछि।

प्रश्न 44427. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141: कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वप्न-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वप्न-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वप्न-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44428. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141: कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44429. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141: कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44430. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141: कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44431. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141: कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44432. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141मे कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “स्वप्न-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4450, सूचकांक पंक्ति 3141मे कालीकांत झा "बूच"क “स्वप्न सुन्दरि” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “स्वप्न-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4451 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": कचोट

प्रश्न 44433. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142: कालीकांत झा "बूच"क “कचोट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कचोट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कचोट

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3142मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “कचोट” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44434. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142: कालीकांत झा "बूच"क “कचोट”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44435. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142: कालीकांत झा "बूच"क “कचोट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44436. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142: कालीकांत झा "बूच"क “कचोट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानसिक पीड़ा

उत्तर: घ. मानसिक पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानसिक पीड़ा” अछि।

प्रश्न 44437. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142: कालीकांत झा "बूच"क “कचोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानसिक पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानसिक पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानसिक पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44438. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142: कालीकांत झा "बूच"क “कचोट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44439. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142: कालीकांत झा "बूच"क “कचोट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44440. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142: कालीकांत झा "बूच"क “कचोट”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44441. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142: कालीकांत झा "बूच"क “कचोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44442. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142मे कालीकांत झा "बूच"क “कचोट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मानसिक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4451, सूचकांक पंक्ति 3142मे कालीकांत झा "बूच"क “कचोट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मानसिक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4452 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": श्रृंगार वा वैराग्य

प्रश्न 44443. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143: कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. श्रृंगार वा वैराग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रृंगार वा वैराग्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3143मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “श्रृंगार वा वैराग्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44444. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143: कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44445. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143: कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44446. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143: कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दर्शन

उत्तर: घ. दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दर्शन” अछि।

प्रश्न 44447. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143: कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44448. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143: कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44449. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143: कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44450. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143: कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44451. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143: कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44452. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143मे कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4452, सूचकांक पंक्ति 3143मे कालीकांत झा "बूच"क “श्रृंगार वा वैराग्य” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4453 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": अकाल

प्रश्न 44453. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144: कालीकांत झा "बूच"क “अकाल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अकाल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकाल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3144मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “अकाल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44454. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144: कालीकांत झा "बूच"क “अकाल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44455. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144: कालीकांत झा "बूच"क “अकाल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44456. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144: कालीकांत झा "बूच"क “अकाल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अकाल चित्रण

उत्तर: घ. अकाल चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अकाल चित्रण” अछि।

प्रश्न 44457. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144: कालीकांत झा "बूच"क “अकाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अकाल चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अकाल चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अकाल चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44458. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144: कालीकांत झा "बूच"क “अकाल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44459. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144: कालीकांत झा "बूच"क “अकाल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44460. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144: कालीकांत झा "बूच"क “अकाल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44461. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144: कालीकांत झा "बूच"क “अकाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44462. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144मे कालीकांत झा "बूच"क “अकाल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अकाल चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4453, सूचकांक पंक्ति 3144मे कालीकांत झा "बूच"क “अकाल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अकाल चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4454 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": नोर

प्रश्न 44463. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145: कालीकांत झा "बूच"क “नोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3145मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “नोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44464. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145: कालीकांत झा "बूच"क “नोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44465. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145: कालीकांत झा "बूच"क “नोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44466. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145: कालीकांत झा "बूच"क “नोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अश्रु-भाव

उत्तर: घ. अश्रु-भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अश्रु-भाव” अछि।

प्रश्न 44467. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145: कालीकांत झा "बूच"क “नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अश्रु-भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अश्रु-भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अश्रु-भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44468. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145: कालीकांत झा "बूच"क “नोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44469. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145: कालीकांत झा "बूच"क “नोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44470. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145: कालीकांत झा "बूच"क “नोर”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44471. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145: कालीकांत झा "बूच"क “नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44472. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145मे कालीकांत झा "बूच"क “नोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अश्रु-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4454, सूचकांक पंक्ति 3145मे कालीकांत झा "बूच"क “नोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अश्रु-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4455 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": श्रावणी

प्रश्न 44473. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146: कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. श्रावणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रावणी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3146मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “श्रावणी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44474. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146: कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44475. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146: कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44476. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146: कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. श्रावण मास

उत्तर: घ. श्रावण मास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “श्रावण मास” अछि।

प्रश्न 44477. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146: कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. श्रावण मास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रावण मास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “श्रावण मास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44478. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146: कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44479. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146: कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44480. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146: कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44481. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146: कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44482. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146मे कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “श्रावण मास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4455, सूचकांक पंक्ति 3146मे कालीकांत झा "बूच"क “श्रावणी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “श्रावण मास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4456 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": गामे मोन पड़ैए

प्रश्न 44483. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147: कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गामे मोन पड़ैए

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामे मोन पड़ैए

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3147मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “गामे मोन पड़ैए” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44484. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147: कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44485. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147: कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44486. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147: कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्राम-स्मृति

उत्तर: घ. ग्राम-स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम-स्मृति” अछि।

प्रश्न 44487. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147: कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्राम-स्मृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्राम-स्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम-स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44488. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147: कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44489. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147: कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44490. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147: कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44491. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147: कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44492. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147मे कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्राम-स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4456, सूचकांक पंक्ति 3147मे कालीकांत झा "बूच"क “गामे मोन पड़ैए” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्राम-स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4457 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": भगतालाभ

प्रश्न 44493. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148: कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भगतालाभ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भगतालाभ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3148मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “भगतालाभ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44494. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148: कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44495. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148: कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44496. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148: कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति फल

उत्तर: घ. भक्ति फल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति फल” अछि।

प्रश्न 44497. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148: कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति फल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति फल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति फल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44498. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148: कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44499. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148: कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44500. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148: कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44501. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148: कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44502. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148मे कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “भक्ति फल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4457, सूचकांक पंक्ति 3148मे कालीकांत झा "बूच"क “भगतालाभ” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “भक्ति फल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4458 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": सिया सँ रामक परतर

प्रश्न 44503. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149: कालीकांत झा "बूच"क “सिया सँ रामक परतर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सिया सँ रामक परतर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सिया सँ रामक परतर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3149मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “सिया सँ रामक परतर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44504. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149: कालीकांत झा "बूच"क “सिया सँ रामक परतर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44505. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149: कालीकांत झा "बूच"क “सिया सँ रामक परतर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44506. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149: कालीकांत झा "बूच"क “सिया सँ रामक परतर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीता-राम

उत्तर: घ. सीता-राम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीता-राम” अछि।

प्रश्न 44507. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149: कालीकांत झा "बूच"क “सिया सँ रामक परतर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीता-राम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीता-राम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीता-राम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44508. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149: कालीकांत झा "बूच"क “सिया सॅ रामक परतर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44509. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149: कालीकांत झा "बूच"क “सिया सॅ रामक परतर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44510. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149: कालीकांत झा "बूच"क “सिया सॅ रामक परतर”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44511. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149: कालीकांत झा "बूच"क “सिया सॅ रामक परतर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44512. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149मे कालीकांत झा "बूच"क “सिया सॅ रामक परतर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीता-राम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4458, सूचकांक पंक्ति 3149मे कालीकांत झा "बूच"क “सिया सॅ रामक परतर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीता-राम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4459 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": गौरी बनलि जोगिनिया

प्रश्न 44513. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गौरी बनलि जोगिनिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गौरी बनलि जोगिनिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3150मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “गौरी बनलि जोगिनिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44514. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44515. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44516. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गौरी-रूपक

उत्तर: घ. गौरी-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गौरी-रूपक” अछि।

प्रश्न 44517. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गौरी-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गौरी-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गौरी-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44518. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44519. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44520. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44521. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150: कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44522. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150मे कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गौरी-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4459, सूचकांक पंक्ति 3150मे कालीकांत झा "बूच"क “गौरी बनलि जोगिनिया” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गौरी-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4460 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": काली रूप वर्णन

प्रश्न 44523. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151: कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. काली रूप वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काली रूप वर्णन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3151मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “काली रूप वर्णन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44524. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151: कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44525. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151: कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 44526. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151: कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. काली-वर्णन

उत्तर: घ. काली-वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “काली-वर्णन” अछि।

प्रश्न 44527. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151: कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. काली-वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काली-वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काली-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44528. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151: कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44529. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151: कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44530. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151: कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन”कैं विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44531. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151: कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44532. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151मे कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “काली-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4460, सूचकांक पंक्ति 3151मे कालीकांत झा "बूच"क “काली रूप वर्णन” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “काली-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4461 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": चलि अबियौ पटना सँ गाम

प्रश्न 44533. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152: कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सँ गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चलि अबियौ पटना सँ गाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चलि अबियौ पटना सँ गाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3152मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “चलि अबियौ पटना सँ गाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44534. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152: कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सँ गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44535. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152: कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सॅ गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44536. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152: कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सॅ गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी पीड़ा

उत्तर: घ. प्रवासी पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी पीड़ा” अछि।

प्रश्न 44537. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152: कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सॅ गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44538. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152: कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सॅ गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44539. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152: कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सॅ गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44540. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152: कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सॅ गाम”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44541. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152: कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सॅ गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44542. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152मे कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सॅ गाम” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रवासी पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4461, सूचकांक पंक्ति 3152मे कालीकांत झा "बूच"क “चलि अबियौ पटना सॅ गाम” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रवासी पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4462 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": पहुना

प्रश्न 44543. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153: कालीकांत झा "बूच"क “पहुना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पहुना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पहुना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3153मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “पहुना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44544. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153: कालीकांत झा "बूच"क “पहुना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44545. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153: कालीकांत झा "बूच"क “पहुना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44546. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153: कालीकांत झा "बूच"क “पहुना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अतिथि-सत्कार

उत्तर: घ. अतिथि-सत्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अतिथि-सत्कार” अछि।

प्रश्न 44547. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153: कालीकांत झा "बूच"क “पहुना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अतिथि-सत्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अतिथि-सत्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अतिथि-सत्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44548. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153: कालीकांत झा "बूच"क “पहुना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44549. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153: कालीकांत झा "बूच"क “पहुना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44550. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153: कालीकांत झा "बूच"क “पहुना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44551. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153: कालीकांत झा "बूच"क “पहुना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44552. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153मे कालीकांत झा "बूच"क “पहुना” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “अतिथि-सत्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4462, सूचकांक पंक्ति 3153मे कालीकांत झा "बूच"क “पहुना” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “अतिथि-सत्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4463 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": बेटी बनलि पहाड़

प्रश्न 44553. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154: कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेटी बनलि पहाड़

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेटी बनलि पहाड़

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3154मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “बेटी बनलि पहाड़” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44554. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154: कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44555. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154: कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44556. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154: कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी सशक्तिकरण

उत्तर: घ. नारी सशक्तिकरण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी सशक्तिकरण” अछि।

प्रश्न 44557. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154: कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी सशक्तिकरण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी सशक्तिकरण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी सशक्तिकरण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44558. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154: कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44559. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154: कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44560. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154: कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44561. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154: कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44562. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154मे कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4463, सूचकांक पंक्ति 3154मे कालीकांत झा "बूच"क “बेटी बनलि पहाड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4464 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": हमर जिनगी

प्रश्न 44563. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155: कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर जिनगी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर जिनगी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3155मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “हमर जिनगी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44564. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155: कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44565. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155: कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44566. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155: कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-दर्शन

उत्तर: घ. जीवन-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-दर्शन” अछि।

प्रश्न 44567. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155: कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44568. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155: कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44569. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155: कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44570. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155: कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44571. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155: कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44572. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155मे कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4464, सूचकांक पंक्ति 3155मे कालीकांत झा "बूच"क “हमर जिनगी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4465 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": मुन्ना कक्का सासुर चलला

प्रश्न 44573. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156: कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुन्ना कक्का सासुर चलला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुन्ना कक्का सासुर चलला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3156मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “मुन्ना कक्का सासुर चलला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44574. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156: कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44575. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156: कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44576. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156: कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य-गीत

उत्तर: घ. हास्य-गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य-गीत” अछि।

प्रश्न 44577. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156: कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य-गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य-गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य-गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44578. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156: कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44579. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156: कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44580. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156: कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44581. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156: कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44582. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156मे कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “हास्य-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4465, सूचकांक पंक्ति 3156मे कालीकांत झा "बूच"क “मुन्ना कक्का सासुर चलला” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “हास्य-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4466 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": नोतक प्रेमी

प्रश्न 44583. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157: कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नोतक प्रेमी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नोतक प्रेमी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3157मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “नोतक प्रेमी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44584. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157: कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44585. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157: कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44586. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157: कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत

उत्तर: घ. लोकगीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत” अछि।

प्रश्न 44587. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157: कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44588. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157: कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44589. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157: कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44590. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157: कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44591. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157: कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44592. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157मे कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोकगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4466, सूचकांक पंक्ति 3157मे कालीकांत झा "बूच"क “नोतक प्रेमी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोकगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4467 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": अप्पन मिथिला

प्रश्न 44593. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158: कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अप्पन मिथिला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अप्पन मिथिला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3158मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “अप्पन मिथिला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44594. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158: कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44595. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158: कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44596. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158: कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला-प्रेम

उत्तर: घ. मिथिला-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला-प्रेम” अछि।

प्रश्न 44597. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158: कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44598. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158: कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44599. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158: कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44600. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158: कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44601. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158: कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44602. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158मे कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4467, सूचकांक पंक्ति 3158मे कालीकांत झा "बूच"क “अप्पन मिथिला” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4468 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": अय काकी

प्रश्न 44603. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159: कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अय काकी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अय काकी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3159मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “अय काकी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44604. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159: कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44605. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159: कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44606. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159: कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सम्बोधन गीत

उत्तर: घ. सम्बोधन गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्बोधन गीत” अछि।

प्रश्न 44607. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159: कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सम्बोधन गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्बोधन गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सम्बोधन गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44608. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159: कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44609. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159: कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44610. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159: कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44611. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159: कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44612. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159मे कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सम्बोधन गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4468, सूचकांक पंक्ति 3159मे कालीकांत झा "बूच"क “अय काकी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सम्बोधन गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4469 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": संशय

प्रश्न 44613. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160: कालीकांत झा "बूच"क “संशय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संशय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संशय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3160मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “संशय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44614. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160: कालीकांत झा "बूच"क “संशय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44615. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160: कालीकांत झा "बूच"क “संशय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44616. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160: कालीकांत झा "बूच"क “संशय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक

उत्तर: घ. दार्शनिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक” अछि।

प्रश्न 44617. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160: कालीकांत झा "बूच"क “संशय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44618. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160: कालीकांत झा "बूच"क “संशय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44619. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160: कालीकांत झा "बूच"क “संशय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44620. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160: कालीकांत झा "बूच"क “संशय”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44621. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160: कालीकांत झा "बूच"क “संशय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44622. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160मे कालीकांत झा "बूच"क “संशय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4469, सूचकांक पंक्ति 3160मे कालीकांत झा "बूच"क “संशय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4470 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": युग परिवर्तन

प्रश्न 44623. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161: कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. युग परिवर्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युग परिवर्तन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3161मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “युग परिवर्तन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44624. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161: कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44625. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161: कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44626. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161: कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक परिवर्तन

उत्तर: घ. सामाजिक परिवर्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक परिवर्तन” अछि।

प्रश्न 44627. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161: कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक परिवर्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक परिवर्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक परिवर्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44628. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161: कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44629. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161: कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44630. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161: कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44631. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161: कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44632. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161मे कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक परिवर्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4470, सूचकांक पंक्ति 3161मे कालीकांत झा "बूच"क “युग परिवर्तन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक परिवर्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4471 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": वसन्ते-बिरहिनी

प्रश्न 44633. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162: कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. वसन्ते-बिरहिनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसन्ते-बिरहिनी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3162मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “वसन्ते-बिरहिनी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44634. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162: कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44635. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162: कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विरह गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विरह गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विरह गीत” अछि।

प्रश्न 44636. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162: कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वसन्त-वियोग

उत्तर: घ. वसन्त-वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वसन्त-वियोग” अछि।

प्रश्न 44637. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162: कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वसन्त-वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसन्त-वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वसन्त-वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44638. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162: कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44639. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162: कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44640. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162: कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44641. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162: कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44642. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162मे कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “वसन्त-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4471, सूचकांक पंक्ति 3162मे कालीकांत झा "बूच"क “वसन्ते-बिरहिनी” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “वसन्त-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4472 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": दीनक नेना

प्रश्न 44643. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163: कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दीनक नेना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीनक नेना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3163मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “दीनक नेना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44644. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163: कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44645. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163: कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44646. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163: कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दीन-दुखिया

उत्तर: घ. दीन-दुखिया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दीन-दुखिया” अछि।

प्रश्न 44647. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163: कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दीन-दुखिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीन-दुखिया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दीन-दुखिया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44648. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163: कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44649. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163: कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44650. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163: कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44651. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163: कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44652. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163मे कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीन-दुखिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4472, सूचकांक पंक्ति 3163मे कालीकांत झा "बूच"क “दीनक नेना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीन-दुखिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4473 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": पतनी व्रता

प्रश्न 44653. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164: कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पतनी व्रता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पतनी व्रता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3164मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “पतनी व्रता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44654. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164: कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44655. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164: कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44656. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164: कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पतिव्रता धर्म

उत्तर: घ. पतिव्रता धर्म

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पतिव्रता धर्म” अछि।

प्रश्न 44657. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164: कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पतिव्रता धर्म

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पतिव्रता धर्म

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पतिव्रता धर्म” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44658. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164: कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44659. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164: कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44660. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164: कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44661. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164: कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44662. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164मे कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “पतिव्रता धर्म” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4473, सूचकांक पंक्ति 3164मे कालीकांत झा "बूच"क “पतनी व्रता” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “पतिव्रता धर्म” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4474 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": अन्हर मारि

प्रश्न 44663. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165: कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्हर मारि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हर मारि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3165मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “अन्हर मारि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44664. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165: कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44665. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165: कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44666. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165: कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्धकार-प्रकाश

उत्तर: घ. अन्धकार-प्रकाश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्धकार-प्रकाश” अछि।

प्रश्न 44667. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165: कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्धकार-प्रकाश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्धकार-प्रकाश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्धकार-प्रकाश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44668. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165: कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44669. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165: कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44670. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165: कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44671. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165: कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44672. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165मे कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अन्धकार-प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4474, सूचकांक पंक्ति 3165मे कालीकांत झा "बूच"क “अन्हर मारि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अन्धकार-प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4475 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": उद्यनाचार्य

प्रश्न 44673. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166: कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उद्यनाचार्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उद्यनाचार्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3166मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “उद्यनाचार्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44674. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166: कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44675. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166: कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44676. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166: कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उद्यान-रूपक

उत्तर: घ. उद्यान-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उद्यान-रूपक” अछि।

प्रश्न 44677. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166: कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उद्यान-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उद्यान-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उद्यान-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44678. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166: कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44679. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166: कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44680. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166: कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44681. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166: कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44682. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166मे कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उद्यान-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4475, सूचकांक पंक्ति 3166मे कालीकांत झा "बूच"क “उद्यनाचार्य” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उद्यान-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4476 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": काटरक परिणाम

प्रश्न 44683. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167: कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. काटरक परिणाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काटरक परिणाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3167मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “काटरक परिणाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44684. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167: कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44685. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167: कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44686. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167: कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कटाई-पीड़ा

उत्तर: घ. कटाई-पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कटाई-पीड़ा” अछि।

प्रश्न 44687. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167: कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कटाई-पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कटाई-पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कटाई-पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44688. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167: कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44689. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167: कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44690. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167: कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44691. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167: कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44692. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167मे कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कटाई-पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4476, सूचकांक पंक्ति 3167मे कालीकांत झा "बूच"क “काटरक परिणाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कटाई-पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4477 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": कवि कोकिल - विद्यापति

प्रश्न 44693. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168: कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कवि कोकिल - विद्यापति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि कोकिल - विद्यापति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3168मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “कवि कोकिल - विद्यापति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44694. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168: कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44695. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168: कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. स्तुति काव्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. स्तुति काव्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्तुति काव्य” अछि।

प्रश्न 44696. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168: कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विद्यापति-वन्दना

उत्तर: घ. विद्यापति-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विद्यापति-वन्दना” अछि।

प्रश्न 44697. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168: कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विद्यापति-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापति-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विद्यापति-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44698. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168: कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा स्तुति काव्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा स्तुति काव्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44699. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168: कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44700. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168: कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ स्तुति काव्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ स्तुति काव्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44701. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168: कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44702. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168मे कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति” प्रविष्टि पद्य, स्तुति काव्य आ “विद्यापति-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4477, सूचकांक पंक्ति 3168मे कालीकांत झा "बूच"क “कवि कोकिल - विद्यापति” प्रविष्टि पद्य, स्तुति काव्य आ “विद्यापति-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4478 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": रौ घुरना

प्रश्न 44703. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169: कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रौ घुरना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रौ घुरना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3169मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “रौ घुरना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44704. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169: कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44705. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169: कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44706. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169: कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोकगीत

उत्तर: घ. लोकगीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत” अछि।

प्रश्न 44707. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169: कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोकगीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोकगीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44708. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169: कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44709. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169: कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44710. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169: कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44711. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169: कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44712. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169मे कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोकगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4478, सूचकांक पंक्ति 3169मे कालीकांत झा "बूच"क “रौ घुरना” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोकगीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4479 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": एक पर सँ एक

प्रश्न 44713. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170: कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सँ एक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एक पर सँ एक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक पर सँ एक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3170मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “एक पर सँ एक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44714. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170: कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सँ एक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44715. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170: कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सँ एक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44716. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170: कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सँ एक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. श्रेष्ठता-द्वन्द्व

उत्तर: घ. श्रेष्ठता-द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “श्रेष्ठता-द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 44717. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170: कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सॅ एक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. श्रेष्ठता-द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रेष्ठता-द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “श्रेष्ठता-द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44718. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170: कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सॅ एक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44719. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170: कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सॅ एक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44720. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170: कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सॅ एक”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44721. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170: कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सॅ एक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44722. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170मे कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सॅ एक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “श्रेष्ठता-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4479, सूचकांक पंक्ति 3170मे कालीकांत झा "बूच"क “एक पर सॅ एक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “श्रेष्ठता-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4480 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": अजुकी दाइ

प्रश्न 44723. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171: कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अजुकी दाइ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अजुकी दाइ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3171मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “अजुकी दाइ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44724. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171: कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44725. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171: कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44726. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171: कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य-गीत

उत्तर: घ. हास्य-गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य-गीत” अछि।

प्रश्न 44727. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171: कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य-गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य-गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य-गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44728. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171: कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44729. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171: कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44730. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171: कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44731. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171: कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44732. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171मे कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “हास्य-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4480, सूचकांक पंक्ति 3171मे कालीकांत झा "बूच"क “अजुकी दाइ” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “हास्य-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4481 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": श्री राम केवट संवाद

प्रश्न 44733. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172: कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. श्री राम केवट संवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्री राम केवट संवाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3172मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “श्री राम केवट संवाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44734. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172: कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44735. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172: कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संवाद काव्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संवाद काव्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संवाद काव्य” अछि।

प्रश्न 44736. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172: कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राम-केवट प्रसंग

उत्तर: घ. राम-केवट प्रसंग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राम-केवट प्रसंग” अछि।

प्रश्न 44737. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172: कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राम-केवट प्रसंग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राम-केवट प्रसंग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम-केवट प्रसंग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44738. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172: कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा संवाद काव्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा संवाद काव्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44739. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172: कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44740. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172: कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद”कैं विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संवाद काव्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संवाद काव्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकैं स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44741. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172: कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44742. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172मे कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद” प्रविष्टि पद्य, संवाद काव्य आ “राम-केवट प्रसंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4481, सूचकांक पंक्ति 3172मे कालीकांत झा "बूच"क “श्री राम केवट संवाद” प्रविष्टि पद्य, संवाद काव्य आ “राम-केवट प्रसंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4482 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": राधा विरह

प्रश्न 44743. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173: कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राधा विरह

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राधा विरह

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3173मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “राधा विरह” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44744. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173: कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकैं “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44745. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173: कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विरह गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विरह गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विरह गीत” अछि।

प्रश्न 44746. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173: कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राधा-कृष्ण वियोग

उत्तर: घ. राधा-कृष्ण वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राधा-कृष्ण वियोग” अछि।

प्रश्न 44747. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173: कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राधा-कृष्ण वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राधा-कृष्ण वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राधा-कृष्ण वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44748. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173: कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44749. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173: कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44750. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173: कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44751. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173: कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44752. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173मे कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “राधा-कृष्ण वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4482, सूचकांक पंक्ति 3173मे कालीकांत झा "बूच"क “राधा विरह” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “राधा-कृष्ण वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4483 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": विरक्ति

प्रश्न 44753. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174: कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विरक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विरक्ति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3174मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “विरक्ति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44754. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174: कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44755. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174: कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44756. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174: कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वैराग्य भाव

उत्तर: घ. वैराग्य भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वैराग्य भाव” अछि।

प्रश्न 44757. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174: कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वैराग्य भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वैराग्य भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वैराग्य भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44758. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174: कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44759. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174: कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44760. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174: कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44761. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174: कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44762. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174मे कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वैराग्य भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4483, सूचकांक पंक्ति 3174मे कालीकांत झा "बूच"क “विरक्ति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वैराग्य भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4484 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": कमौतिन भौजी

प्रश्न 44763. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175: कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कमौतिन भौजी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कमौतिन भौजी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3175मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “कमौतिन भौजी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44764. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175: कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44765. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175: कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44766. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175: कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. श्रम-नारी

उत्तर: घ. श्रम-नारी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “श्रम-नारी” अछि।

प्रश्न 44767. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175: कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. श्रम-नारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रम-नारी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “श्रम-नारी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44768. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175: कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44769. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175: कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44770. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175: कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44771. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175: कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44772. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175मे कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “श्रम-नारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4484, सूचकांक पंक्ति 3175मे कालीकांत झा "बूच"क “कमौतिन भौजी” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “श्रम-नारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4485 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": कन्यादान

प्रश्न 44773. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176: कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कन्यादान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कन्यादान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3176मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “कन्यादान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44774. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176: कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44775. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176: कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44776. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176: कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह संस्कार

उत्तर: घ. विवाह संस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह संस्कार” अछि।

प्रश्न 44777. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176: कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाह संस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाह संस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह संस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44778. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176: कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44779. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176: कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44780. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176: कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44781. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176: कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44782. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176मे कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “विवाह संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4485, सूचकांक पंक्ति 3176मे कालीकांत झा "बूच"क “कन्यादान” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “विवाह संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4486 : विदेह-सदेह 34 — कालीकांत झा "बूच": पोताक अट्ठहास

प्रश्न 44783. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177: कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पोताक अट्ठहास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पोताक अट्ठहास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3177मे कालीकांत झा "बूच"क प्रविष्टि “पोताक अट्ठहास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44784. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177: कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44785. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177: कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44786. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177: कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हास्य

उत्तर: घ. हास्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य” अछि।

प्रश्न 44787. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177: कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हास्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हास्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44788. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177: कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कालीकांत झा "बूच", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44789. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177: कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44790. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177: कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44791. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177: कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44792. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177मे कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4486, सूचकांक पंक्ति 3177मे कालीकांत झा "बूच"क “पोताक अट्ठहास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4487 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)

प्रश्न 44793. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178: राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3178मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44794. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178: राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44795. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178: राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता-संग्रह

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता-संग्रह

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता-संग्रह” अछि।

प्रश्न 44796. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178: राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दार्शनिक काव्य

उत्तर: घ. दार्शनिक काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक काव्य” अछि।

प्रश्न 44797. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178: राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दार्शनिक काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दार्शनिक काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44798. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178: राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता-संग्रह

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता-संग्रह

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44799. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178: राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44800. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178: राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता-संग्रहक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता-संग्रहक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44801. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178: राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44802. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178मे राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, कविता-संग्रह आ “दार्शनिक काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4487, सूचकांक पंक्ति 3178मे राजदेव मण्डलक “आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, कविता-संग्रह आ “दार्शनिक काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4488 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: रहब अहीं सभक संग...

प्रश्न 44803. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179: राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रहब अहीं सभक संग...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रहब अहीं सभक संग...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3179मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “रहब अहीं सभक संग...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44804. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179: राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44805. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179: राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44806. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179: राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामूहिक पहचान

उत्तर: घ. सामूहिक पहचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामूहिक पहचान” अछि।

प्रश्न 44807. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179: राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामूहिक पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामूहिक पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामूहिक पहचान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44808. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179: राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44809. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179: राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44810. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179: राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44811. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179: राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44812. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179मे राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामूहिक पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4488, सूचकांक पंक्ति 3179मे राजदेव मण्डलक “रहब अहीं सभक संग...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामूहिक पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4489 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: नदीक माछ...

प्रश्न 44813. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180: राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नदीक माछ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नदीक माछ...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3180मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “नदीक माछ...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44814. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180: राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44815. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180: राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44816. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180: राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-रूपक

उत्तर: घ. प्रकृति-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-रूपक” अछि।

प्रश्न 44817. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180: राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44818. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180: राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44819. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180: राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44820. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180: राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...”कैं विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44821. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180: राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44822. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180मे राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4489, सूचकांक पंक्ति 3180मे राजदेव मण्डलक “नदीक माछ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4490 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: बाट-बटोही...

प्रश्न 44823. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181: राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाट-बटोही...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाट-बटोही...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3181मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बाट-बटोही...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44824. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181: राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44825. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181: राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44826. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181: राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. यात्रा-दर्शन

उत्तर: घ. यात्रा-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “यात्रा-दर्शन” अछि।

प्रश्न 44827. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181: राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. यात्रा-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यात्रा-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यात्रा-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44828. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181: राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44829. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181: राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44830. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181: राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44831. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181: राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44832. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181मे राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “यात्रा-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4490, सूचकांक पंक्ति 3181मे राजदेव मण्डलक “बाट-बटोही...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “यात्रा-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4491 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: सीमा परक झूला...

प्रश्न 44833. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182: राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सीमा परक झूला...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीमा परक झूला...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3182मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “सीमा परक झूला...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44834. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182: राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44835. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182: राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44836. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182: राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सीमा-द्वन्द्व

उत्तर: घ. सीमा-द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सीमा-द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 44837. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182: राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सीमा-द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सीमा-द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीमा-द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44838. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182: राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44839. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182: राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44840. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182: राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44841. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182: राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44842. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182मे राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीमा-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4491, सूचकांक पंक्ति 3182मे राजदेव मण्डलक “सीमा परक झूला...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीमा-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4492 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: चीड़ीक जाति...

प्रश्न 44843. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183: राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चीड़ीक जाति...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चीड़ीक जाति...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3183मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “चीड़ीक जाति...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44844. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183: राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44845. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183: राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44846. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183: राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जाति-व्यवस्था

उत्तर: घ. जाति-व्यवस्था

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जाति-व्यवस्था” अछि।

प्रश्न 44847. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183: राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जाति-व्यवस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाति-व्यवस्था

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाति-व्यवस्था” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44848. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183: राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44849. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183: राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44850. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183: राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...”कैँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44851. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183: राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44852. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183मे राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जाति-व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4492, सूचकांक पंक्ति 3183मे राजदेव मण्डलक “चीड़ीक जाति...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जाति-व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4493 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: बाढ़िक चित्र...

प्रश्न 44853. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184: राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाढ़िक चित्र...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाढ़िक चित्र...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3184मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बाढ़िक चित्र...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44854. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184: राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44855. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184: राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44856. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184: राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोसी बाढ़ि

उत्तर: घ. कोसी बाढ़ि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोसी बाढ़ि” अछि।

प्रश्न 44857. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184: राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोसी बाढ़ि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसी बाढ़ि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोसी बाढ़ि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44858. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184: राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44859. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184: राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44860. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184: राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44861. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184: राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44862. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184मे राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोसी बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4493, सूचकांक पंक्ति 3184मे राजदेव मण्डलक “बाढ़िक चित्र...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोसी बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4494 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: दिलक बोल...

प्रश्न 44863. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185: राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दिलक बोल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दिलक बोल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3185मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “दिलक बोल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44864. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185: राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44865. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185: राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44866. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185: राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आन्तरिक स्वर

उत्तर: घ. आन्तरिक स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आन्तरिक स्वर” अछि।

प्रश्न 44867. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185: राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आन्तरिक स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्तरिक स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आन्तरिक स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44868. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185: राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44869. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185: राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44870. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185: राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44871. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185: राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44872. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185मे राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4494, सूचकांक पंक्ति 3185मे राजदेव मण्डलक “दिलक बोल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4495 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: अहिंसक वीर...

प्रश्न 44873. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186: राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अहिंसक वीर...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अहिंसक वीर...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3186मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अहिंसक वीर...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44874. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186: राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44875. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186: राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44876. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186: राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीएएनडीएचआइएएन

उत्तर: घ. जीएएनडीएचआइएएन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीएएनडीएचआइएएन” अछि।

प्रश्न 44877. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186: राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीएएनडीएचआइएएन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीएएनडीएचआइएएन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीएएनडीएचआइएएन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44878. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186: राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44879. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186: राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44880. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186: राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...”कैं विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44881. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186: राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44882. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186मे राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीएएनडीएचआइएएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4495, सूचकांक पंक्ति 3186मे राजदेव मण्डलक “अहिंसक वीर...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीएएनडीएचआइएएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4496 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: मनोवांछित चान...

प्रश्न 44883. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187: राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मनोवांछित चान...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनोवांछित चान...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3187मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “मनोवांछित चान...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44884. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187: राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44885. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187: राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44886. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187: राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चन्द्र-रूपक

उत्तर: घ. चन्द्र-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चन्द्र-रूपक” अछि।

प्रश्न 44887. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187: राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चन्द्र-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चन्द्र-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चन्द्र-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44888. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187: राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44889. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187: राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44890. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187: राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44891. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187: राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44892. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187मे राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चन्द्र-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4496, सूचकांक पंक्ति 3187मे राजदेव मण्डलक “मनोवांछित चान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चन्द्र-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4497 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: परेमक अधिकार...

प्रश्न 44893. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188: राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परेमक अधिकार...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परेमक अधिकार...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3188मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “परेमक अधिकार...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44894. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188: राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44895. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188: राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44896. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188: राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-अधिकार

उत्तर: घ. प्रेम-अधिकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-अधिकार” अछि।

प्रश्न 44897. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188: राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-अधिकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-अधिकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-अधिकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44898. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188: राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44899. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188: राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44900. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188: राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44901. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188: राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44902. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188मे राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4497, सूचकांक पंक्ति 3188मे राजदेव मण्डलक “परेमक अधिकार...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-अधिकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4498 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: मधुर गीत...

प्रश्न 44903. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189: राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मधुर गीत...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मधुर गीत...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3189मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “मधुर गीत...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44904. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189: राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44905. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189: राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44906. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189: राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गेयता

उत्तर: घ. गेयता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गेयता” अछि।

प्रश्न 44907. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189: राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गेयता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गेयता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गेयता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44908. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189: राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44909. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189: राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44910. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189: राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44911. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189: राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44912. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189मे राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4498, सूचकांक पंक्ति 3189मे राजदेव मण्डलक “मधुर गीत...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4499 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: सिर बिहून धड़...

प्रश्न 44913. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190: राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सिर बिहून धड़...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सिर बिहून धड़...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3190मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “सिर बिहून धड़...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44914. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190: राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44915. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190: राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44916. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190: राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हिंसा-चित्रण

उत्तर: घ. हिंसा-चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हिंसा-चित्रण” अछि।

प्रश्न 44917. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190: राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हिंसा-चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिंसा-चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हिंसा-चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44918. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190: राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44919. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190: राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44920. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190: राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...”कैँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44921. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190: राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44922. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190मे राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हिंसा-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4499, सूचकांक पंक्ति 3190मे राजदेव मण्डलक “सिर बिहून धड़...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हिंसा-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4500 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: हथियारक सभा...

प्रश्न 44923. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191: राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हथियारक सभा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हथियारक सभा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3191मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “हथियारक सभा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44924. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191: राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44925. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191: राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44926. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191: राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शस्त्र-आलोचना

उत्तर: घ. शस्त्र-आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शस्त्र-आलोचना” अछि।

प्रश्न 44927. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191: राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शस्त्र-आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शस्त्र-आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शस्त्र-आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44928. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191: राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44929. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191: राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44930. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191: राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44931. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191: राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44932. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191मे राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शस्त्र-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4500, सूचकांक पंक्ति 3191मे राजदेव मण्डलक “हथियारक सभा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शस्त्र-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4501 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: घातक गंध...

प्रश्न 44933. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192: राजदेव मण्डलक “घातक गंध...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घातक गंध...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घातक गंध...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3192मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “घातक गंध...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44934. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192: राजदेव मण्डलक “घातक गंध...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44935. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192: राजदेव मण्डलक “घातक गंध...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44936. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192: राजदेव मण्डलक “घातक गंध...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विनाश-बोध

उत्तर: घ. विनाश-बोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विनाश-बोध” अछि।

प्रश्न 44937. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192: राजदेव मण्डलक “घातक गंध...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विनाश-बोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विनाश-बोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विनाश-बोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44938. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192: राजदेव मण्डलक “घातक गंध...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44939. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192: राजदेव मण्डलक “घातक गंध...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44940. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192: राजदेव मण्डलक “घातक गंध...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44941. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192: राजदेव मण्डलक “घातक गंध...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44942. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192मे राजदेव मण्डलक “घातक गंध...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विनाश-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4501, सूचकांक पंक्ति 3192मे राजदेव मण्डलक “घातक गंध...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विनाश-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4502 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: कुहेसक परदा...

प्रश्न 44943. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193: राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कुहेसक परदा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुहेसक परदा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3193मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “कुहेसक परदा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44944. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193: राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44945. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193: राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44946. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193: राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कुहासा-रूपक

उत्तर: घ. कुहासा-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कुहासा-रूपक” अछि।

प्रश्न 44947. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193: राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कुहासा-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कुहासा-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कुहासा-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44948. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193: राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44949. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193: राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44950. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193: राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44951. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193: राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44952. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193मे राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कुहासा-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4502, सूचकांक पंक्ति 3193मे राजदेव मण्डलक “कुहेसक परदा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कुहासा-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4503 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: युग्मक फाग-पत्री...

प्रश्न 44953. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194: राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. युग्मक फाग-पत्री...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युग्मक फाग-पत्री...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3194मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “युग्मक फाग-पत्री...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44954. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194: राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44955. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194: राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 44956. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194: राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. होली

उत्तर: घ. होली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “होली” अछि।

प्रश्न 44957. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194: राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. होली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “होली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44958. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194: राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44959. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194: राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44960. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194: राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44961. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194: राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44962. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194मे राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “होली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4503, सूचकांक पंक्ति 3194मे राजदेव मण्डलक “युग्मक फाग-पत्री...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “होली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4504 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: आगमन...

प्रश्न 44963. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195: राजदेव मण्डलक “आगमन...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आगमन...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आगमन...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3195मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “आगमन...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44964. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195: राजदेव मण्डलक “आगमन...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44965. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195: राजदेव मण्डलक “आगमन...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44966. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195: राजदेव मण्डलक “आगमन...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आगमन-प्रतीक्षा

उत्तर: घ. आगमन-प्रतीक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आगमन-प्रतीक्षा” अछि।

प्रश्न 44967. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195: राजदेव मण्डलक “आगमन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आगमन-प्रतीक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आगमन-प्रतीक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आगमन-प्रतीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44968. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195: राजदेव मण्डलक “आगमन...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44969. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195: राजदेव मण्डलक “आगमन...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44970. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195: राजदेव मण्डलक “आगमन...”कैँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44971. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195: राजदेव मण्डलक “आगमन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44972. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195मे राजदेव मण्डलक “आगमन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आगमन-प्रतीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4504, सूचकांक पंक्ति 3195मे राजदेव मण्डलक “आगमन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आगमन-प्रतीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4505 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: जाति बदलैत बाट...

प्रश्न 44973. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196: राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जाति बदलैत बाट...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाति बदलैत बाट...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3196मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “जाति बदलैत बाट...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44974. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196: राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44975. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196: राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44976. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196: राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जाति-परिवर्तन

उत्तर: घ. जाति-परिवर्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जाति-परिवर्तन” अछि।

प्रश्न 44977. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196: राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जाति-परिवर्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाति-परिवर्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाति-परिवर्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44978. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196: राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44979. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196: राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44980. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196: राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...”कैँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44981. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196: राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44982. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196मे राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जाति-परिवर्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4505, सूचकांक पंक्ति 3196मे राजदेव मण्डलक “जाति बदलैत बाट...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जाति-परिवर्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4506 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: भितरिया जानवर...

प्रश्न 44983. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197: राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भितरिया जानवर...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भितरिया जानवर...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3197मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “भितरिया जानवर...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44984. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197: राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44985. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197: राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44986. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197: राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आन्तरिक पाशविकता

उत्तर: घ. आन्तरिक पाशविकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आन्तरिक पाशविकता” अछि।

प्रश्न 44987. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197: राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आन्तरिक पाशविकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्तरिक पाशविकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आन्तरिक पाशविकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44988. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197: राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44989. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197: राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 44990. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197: राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 44991. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197: राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 44992. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197मे राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक पाशविकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4506, सूचकांक पंक्ति 3197मे राजदेव मण्डलक “भितरिया जानवर...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक पाशविकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4507 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: बाउल परक माछ...

प्रश्न 44993. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198: राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाउल परक माछ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाउल परक माछ...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3198मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बाउल परक माछ...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 44994. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198: राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 44995. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198: राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 44996. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198: राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पागलपन-रूपक

उत्तर: घ. पागलपन-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पागलपन-रूपक” अछि।

प्रश्न 44997. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198: राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पागलपन-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पागलपन-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पागलपन-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 44998. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198: राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 44999. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198: राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45000. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198: राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45001. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198: राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45002. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198मे राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पागलपन-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4507, सूचकांक पंक्ति 3198मे राजदेव मण्डलक “बाउल परक माछ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पागलपन-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4508 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: कांध परक मुरदा...

प्रश्न 45003. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199: राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कांध परक मुरदा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कांध परक मुरदा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3199मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “कांध परक मुरदा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45004. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199: राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45005. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199: राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45006. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199: राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मृत्यु-बोध

उत्तर: घ. मृत्यु-बोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु-बोध” अछि।

प्रश्न 45007. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199: राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मृत्यु-बोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मृत्यु-बोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृत्यु-बोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45008. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199: राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45009. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199: राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45010. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199: राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45011. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199: राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45012. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199मे राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मृत्यु-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4508, सूचकांक पंक्ति 3199मे राजदेव मण्डलक “कांध परक मुरदा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मृत्यु-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4509 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: मिझाइत दीया...

प्रश्न 45013. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200: राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिझाइत दीया...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिझाइत दीया...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3200मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “मिझाइत दीया...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45014. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200: राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45015. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200: राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45016. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200: राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकाश-लोप

उत्तर: घ. प्रकाश-लोप

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकाश-लोप” अछि।

प्रश्न 45017. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200: राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकाश-लोप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकाश-लोप

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकाश-लोप” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45018. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200: राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45019. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200: राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45020. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200: राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45021. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200: राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45022. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200मे राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकाश-लोप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4509, सूचकांक पंक्ति 3200मे राजदेव मण्डलक “मिझाइत दीया...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकाश-लोप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4510 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: हित-अहित...

प्रश्न 45023. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201: राजदेव मण्डलक “हित-अहित...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हित-अहित...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हित-अहित...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3201मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “हित-अहित...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45024. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201: राजदेव मण्डलक “हित-अहित...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45025. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201: राजदेव मण्डलक “हित-अहित...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45026. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201: राजदेव मण्डलक “हित-अहित...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. द्वन्द्व-दर्शन

उत्तर: घ. द्वन्द्व-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “द्वन्द्व-दर्शन” अछि।

प्रश्न 45027. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201: राजदेव मण्डलक “हित-अहित...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. द्वन्द्व-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. द्वन्द्व-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “द्वन्द्व-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45028. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201: राजदेव मण्डलक “हित-अहित...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45029. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201: राजदेव मण्डलक “हित-अहित...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45030. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201: राजदेव मण्डलक “हित-अहित...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45031. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201: राजदेव मण्डलक “हित-अहित...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45032. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201मे राजदेव मण्डलक “हित-अहित...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “द्वन्द्व-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4510, सूचकांक पंक्ति 3201मे राजदेव मण्डलक “हित-अहित...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “द्वन्द्व-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4511 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: प्रयास...

प्रश्न 45033. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202: राजदेव मण्डलक “प्रयास...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रयास...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रयास...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3202मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “प्रयास...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45034. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202: राजदेव मण्डलक “प्रयास...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45035. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202: राजदेव मण्डलक “प्रयास...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45036. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202: राजदेव मण्डलक “प्रयास...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रयास-महत्ता

उत्तर: घ. प्रयास-महत्ता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रयास-महत्ता” अछि।

प्रश्न 45037. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202: राजदेव मण्डलक “प्रयास...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रयास-महत्ता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रयास-महत्ता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रयास-महत्ता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45038. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202: राजदेव मण्डलक “प्रयास...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45039. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202: राजदेव मण्डलक “प्रयास...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45040. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202: राजदेव मण्डलक “प्रयास...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45041. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202: राजदेव मण्डलक “प्रयास...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45042. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202मे राजदेव मण्डलक “प्रयास...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रयास-महत्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4511, सूचकांक पंक्ति 3202मे राजदेव मण्डलक “प्रयास...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रयास-महत्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4512 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: ऑफिसक भूत...

प्रश्न 45043. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203: राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ऑफिसक भूत...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऑफिसक भूत...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3203मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “ऑफिसक भूत...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45044. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203: राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45045. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203: राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45046. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203: राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कार्यालय-व्यंग्य

उत्तर: घ. कार्यालय-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कार्यालय-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 45047. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203: राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कार्यालय-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कार्यालय-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कार्यालय-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45048. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203: राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45049. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203: राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45050. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203: राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45051. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203: राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45052. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203मे राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कार्यालय-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4512, सूचकांक पंक्ति 3203मे राजदेव मण्डलक “ऑफिसक भूत...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कार्यालय-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4513 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: कठुआएल-रूप...

प्रश्न 45053. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204: राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कठुआएल-रूप...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कठुआएल-रूप...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3204मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “कठुआएल-रूप...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45054. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204: राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45055. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204: राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45056. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204: राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विकृत रूप

उत्तर: घ. विकृत रूप

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विकृत रूप” अछि।

प्रश्न 45057. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204: राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विकृत रूप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विकृत रूप

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विकृत रूप” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45058. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204: राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45059. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204: राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45060. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204: राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45061. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204: राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45062. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204मे राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विकृत रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4513, सूचकांक पंक्ति 3204मे राजदेव मण्डलक “कठुआएल-रूप...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विकृत रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4514 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: सुनगैत चिनगी...

प्रश्न 45063. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205: राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुनगैत चिनगी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुनगैत चिनगी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3205मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “सुनगैत चिनगी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45064. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205: राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45065. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205: राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45066. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205: राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चिनगारी-रूपक

उत्तर: घ. चिनगारी-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चिनगारी-रूपक” अछि।

प्रश्न 45067. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205: राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चिनगारी-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिनगारी-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चिनगारी-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45068. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205: राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45069. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205: राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45070. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205: राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45071. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205: राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45072. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205मे राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चिनगारी-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4514, सूचकांक पंक्ति 3205मे राजदेव मण्डलक “सुनगैत चिनगी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चिनगारी-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4515 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: अहाँक अगवानीमे...

प्रश्न 45073. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206: राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अहाँक अगवानीमे...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अहाँक अगवानीमे...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3206मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अहाँक अगवानीमे...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45074. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206: राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45075. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206: राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 45076. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206: राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्वागत

उत्तर: घ. स्वागत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वागत” अछि।

प्रश्न 45077. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206: राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्वागत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वागत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वागत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45078. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206: राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45079. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206: राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45080. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206: राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45081. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206: राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45082. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206मे राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “स्वागत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4515, सूचकांक पंक्ति 3206मे राजदेव मण्डलक “अहाँक अगवानीमे...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “स्वागत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4516 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: महत्वाकांक्षाक गाम...

प्रश्न 45083. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207: राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महत्वाकांक्षाक गाम...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महत्वाकांक्षाक गाम...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3207मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “महत्वाकांक्षाक गाम...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45084. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207: राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45085. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207: राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45086. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207: राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महत्वाकांक्षा

उत्तर: घ. महत्वाकांक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महत्वाकांक्षा” अछि।

प्रश्न 45087. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207: राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महत्वाकांक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महत्वाकांक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महत्वाकांक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45088. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207: राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45089. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207: राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45090. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207: राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45091. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207: राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45092. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207मे राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “महत्वाकांक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4516, सूचकांक पंक्ति 3207मे राजदेव मण्डलक “महत्वाकांक्षाक गाम...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “महत्वाकांक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4517 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: एकटा चुप्पी...

प्रश्न 45093. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208: राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकटा चुप्पी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा चुप्पी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3208मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “एकटा चुप्पी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45094. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208: राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45095. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208: राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45096. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208: राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मौन-दर्शन

उत्तर: घ. मौन-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मौन-दर्शन” अछि।

प्रश्न 45097. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208: राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मौन-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मौन-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मौन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45098. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208: राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45099. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208: राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45100. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208: राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45101. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208: राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45102. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208मे राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मौन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4517, सूचकांक पंक्ति 3208मे राजदेव मण्डलक “एकटा चुप्पी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मौन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4518 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: छड़पटाइत लहाश...

प्रश्न 45103. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209: राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छड़पटाइत लहाश...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छड़पटाइत लहाश...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3209मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “छड़पटाइत लहाश...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45104. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209: राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45105. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209: राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45106. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209: राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेचैनी

उत्तर: घ. बेचैनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेचैनी” अछि।

प्रश्न 45107. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209: राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेचैनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेचैनी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेचैनी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45108. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209: राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45109. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209: राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45110. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209: राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45111. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209: राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45112. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209मे राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेचैनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4518, सूचकांक पंक्ति 3209मे राजदेव मण्डलक “छड़पटाइत लहाश...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेचैनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4519 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: रूसल धीया...

प्रश्न 45113. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210: राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रूसल धीया...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रूसल धीया...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3210मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “रूसल धीया...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45114. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210: राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45115. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210: राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45116. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210: राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारिवारिक

उत्तर: घ. पारिवारिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक” अछि।

प्रश्न 45117. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210: राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारिवारिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारिवारिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45118. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210: राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45119. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210: राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45120. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210: राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45121. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210: राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45122. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210मे राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4519, सूचकांक पंक्ति 3210मे राजदेव मण्डलक “रूसल धीया...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4520 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: बसातक धुजिनी...

प्रश्न 45123. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211: राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बसातक धुजिनी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बसातक धुजिनी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3211मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बसातक धुजिनी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45124. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211: राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45125. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211: राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45126. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211: राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बसात-रूपक

उत्तर: घ. बसात-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बसात-रूपक” अछि।

प्रश्न 45127. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211: राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बसात-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बसात-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बसात-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45128. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211: राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45129. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211: राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45130. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211: राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45131. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211: राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45132. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211मे राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बसात-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4520, सूचकांक पंक्ति 3211मे राजदेव मण्डलक “बसातक धुजिनी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बसात-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4521 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: अदृश्य आगि...

प्रश्न 45133. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212: राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अदृश्य आगि...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अदृश्य आगि...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3212मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अदृश्य आगि...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45134. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212: राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45135. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212: राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45136. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212: राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अदृश्य शक्ति

उत्तर: घ. अदृश्य शक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अदृश्य शक्ति” अछि।

प्रश्न 45137. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212: राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अदृश्य शक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अदृश्य शक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अदृश्य शक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45138. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212: राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45139. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212: राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45140. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212: राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45141. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212: राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45142. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212मे राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अदृश्य शक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4521, सूचकांक पंक्ति 3212मे राजदेव मण्डलक “अदृश्य आगि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अदृश्य शक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4522 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: तीन मित्रक गपशप...

प्रश्न 45143. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213: राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तीन मित्रक गपशप...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीन मित्रक गपशप...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3213मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “तीन मित्रक गपशप...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45144. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213: राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45145. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213: राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45146. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213: राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैत्री

उत्तर: घ. मैत्री

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैत्री” अछि।

प्रश्न 45147. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213: राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैत्री

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैत्री

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैत्री” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45148. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213: राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45149. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213: राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45150. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213: राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45151. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213: राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45152. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213मे राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मैत्री” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4522, सूचकांक पंक्ति 3213मे राजदेव मण्डलक “तीन मित्रक गपशप...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मैत्री” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4523 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: नव बिहार...

प्रश्न 45153. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214: राजदेव मण्डलक “नव बिहार...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नव बिहार...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नव बिहार...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3214मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “नव बिहार...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45154. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214: राजदेव मण्डलक “नव बिहार...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45155. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214: राजदेव मण्डलक “नव बिहार...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45156. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214: राजदेव मण्डलक “नव बिहार...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बिहार-पहचान

उत्तर: घ. बिहार-पहचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बिहार-पहचान” अछि।

प्रश्न 45157. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214: राजदेव मण्डलक “नव बिहार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बिहार-पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहार-पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बिहार-पहचान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45158. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214: राजदेव मण्डलक “नव बिहार...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45159. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214: राजदेव मण्डलक “नव बिहार...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45160. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214: राजदेव मण्डलक “नव बिहार...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45161. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214: राजदेव मण्डलक “नव बिहार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45162. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214मे राजदेव मण्डलक “नव बिहार...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बिहार-पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4523, सूचकांक पंक्ति 3214मे राजदेव मण्डलक “नव बिहार...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बिहार-पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4524 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: मुँहझप्पा...

प्रश्न 45163. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215: राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुँहझप्पा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुँहझप्पा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3215मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “मुँहझप्पा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45164. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215: राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45165. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215: राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45166. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215: राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छिपाव-व्यंग्य

उत्तर: घ. छिपाव-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छिपाव-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 45167. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215: राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छिपाव-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छिपाव-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छिपाव-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45168. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215: राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45169. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215: राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45170. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215: राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45171. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215: राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45172. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215मे राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छिपाव-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4524, सूचकांक पंक्ति 3215मे राजदेव मण्डलक “मुँहझप्पा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छिपाव-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4525 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: टूटल बन्हन...

प्रश्न 45173. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216: राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. टूटल बन्हन...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टूटल बन्हन...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3216मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “टूटल बन्हन...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45174. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216: राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45175. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216: राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45176. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216: राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बन्धन-मुक्ति

उत्तर: घ. बन्धन-मुक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बन्धन-मुक्ति” अछि।

प्रश्न 45177. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216: राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बन्धन-मुक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बन्धन-मुक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बन्धन-मुक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45178. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216: राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45179. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216: राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45180. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216: राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45181. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216: राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45182. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216मे राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बन्धन-मुक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4525, सूचकांक पंक्ति 3216मे राजदेव मण्डलक “टूटल बन्हन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बन्धन-मुक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4526 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: अढ़ाइ हाथक सांगि...

प्रश्न 45183. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217: राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अढ़ाइ हाथक सांगि...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अढ़ाइ हाथक सांगि...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3217मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अढ़ाइ हाथक सांगि...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45184. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217: राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45185. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217: राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45186. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217: राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शस्त्र-रूपक

उत्तर: घ. शस्त्र-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शस्त्र-रूपक” अछि।

प्रश्न 45187. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217: राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शस्त्र-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शस्त्र-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शस्त्र-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45188. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217: राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45189. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217: राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45190. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217: राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45191. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217: राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45192. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217मे राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शस्त्र-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4526, सूचकांक पंक्ति 3217मे राजदेव मण्डलक “अढ़ाइ हाथक सांगि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शस्त्र-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4527 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: कानैत अधिकार...

प्रश्न 45193. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218: राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कानैत अधिकार...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कानैत अधिकार...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3218मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “कानैत अधिकार...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45194. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218: राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45195. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218: राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45196. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218: राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अधिकार-चेतना

उत्तर: घ. अधिकार-चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अधिकार-चेतना” अछि।

प्रश्न 45197. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218: राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अधिकार-चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधिकार-चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अधिकार-चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45198. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218: राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45199. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218: राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45200. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218: राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45201. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218: राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45202. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218मे राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अधिकार-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4527, सूचकांक पंक्ति 3218मे राजदेव मण्डलक “कानैत अधिकार...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अधिकार-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4528 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: आबद्ध...

प्रश्न 45203. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219: राजदेव मण्डलक “आबद्ध...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आबद्ध...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आबद्ध...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3219मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “आबद्ध...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45204. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219: राजदेव मण्डलक “आबद्ध...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45205. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219: राजदेव मण्डलक “आबद्ध...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45206. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219: राजदेव मण्डलक “आबद्ध...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बन्धन

उत्तर: घ. बन्धन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बन्धन” अछि।

प्रश्न 45207. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219: राजदेव मण्डलक “आबद्ध...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बन्धन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बन्धन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बन्धन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45208. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219: राजदेव मण्डलक “आबद्ध...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45209. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219: राजदेव मण्डलक “आबद्ध...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45210. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219: राजदेव मण्डलक “आबद्ध...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45211. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219: राजदेव मण्डलक “आबद्ध...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45212. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219मे राजदेव मण्डलक “आबद्ध...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बन्धन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4528, सूचकांक पंक्ति 3219मे राजदेव मण्डलक “आबद्ध...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बन्धन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4529 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: हम पुनः उठब...

प्रश्न 45213. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220: राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हम पुनः उठब...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हम पुनः उठब...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3220मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “हम पुनः उठब...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45214. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220: राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45215. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220: राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45216. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220: राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुनरुत्थान

उत्तर: घ. पुनरुत्थान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुनरुत्थान” अछि।

प्रश्न 45217. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220: राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुनरुत्थान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुनरुत्थान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुनरुत्थान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45218. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220: राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45219. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220: राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45220. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220: राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45221. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220: राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45222. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220मे राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पुनरुत्थान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4529, सूचकांक पंक्ति 3220मे राजदेव मण्डलक “हम पुनः उठब...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पुनरुत्थान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4530 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: एकबेर दरपनक स्थिति...

प्रश्न 45223. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221: राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकबेर दरपनक स्थिति...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकबेर दरपनक स्थिति...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3221मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “एकबेर दरपनक स्थिति...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45224. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221: राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45225. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221: राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45226. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221: राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्म-दर्शन

उत्तर: घ. आत्म-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्म-दर्शन” अछि।

प्रश्न 45227. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221: राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्म-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्म-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्म-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45228. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221: राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45229. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221: राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45230. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221: राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45231. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221: राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45232. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221मे राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4530, सूचकांक पंक्ति 3221मे राजदेव मण्डलक “एकबेर दरपनक स्थिति...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4531 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: मिलन बाध...

प्रश्न 45233. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222: राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिलन बाध...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिलन बाध...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3222मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “मिलन बाध...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45234. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222: राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45235. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222: राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45236. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222: राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिलन-बाधा

उत्तर: घ. मिलन-बाधा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिलन-बाधा” अछि।

प्रश्न 45237. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222: राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिलन-बाधा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिलन-बाधा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिलन-बाधा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45238. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222: राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45239. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222: राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45240. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222: राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45241. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222: राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45242. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222मे राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिलन-बाधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4531, सूचकांक पंक्ति 3222मे राजदेव मण्डलक “मिलन बाध...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिलन-बाधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4532 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: शिष्ट-अशिष्ट...

प्रश्न 45243. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223: राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शिष्ट-अशिष्ट...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिष्ट-अशिष्ट...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3223मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “शिष्ट-अशिष्ट...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45244. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223: राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45245. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223: राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45246. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223: राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिष्टता-द्वन्द्व

उत्तर: घ. शिष्टता-द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिष्टता-द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 45247. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223: राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिष्टता-द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिष्टता-द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिष्टता-द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45248. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223: राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45249. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223: राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45250. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223: राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45251. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223: राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45252. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223मे राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शिष्टता-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4532, सूचकांक पंक्ति 3223मे राजदेव मण्डलक “शिष्ट-अशिष्ट...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शिष्टता-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4533 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: ढहैत महल...

प्रश्न 45253. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224: राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ढहैत महल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ढहैत महल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3224मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “ढहैत महल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45254. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224: राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45255. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224: राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45256. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224: राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पतन-दर्शन

उत्तर: घ. पतन-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पतन-दर्शन” अछि।

प्रश्न 45257. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224: राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पतन-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पतन-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पतन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45258. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224: राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45259. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224: राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45260. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224: राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45261. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224: राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45262. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224मे राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पतन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4533, सूचकांक पंक्ति 3224मे राजदेव मण्डलक “ढहैत महल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पतन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4534 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: अश्रुधार...

प्रश्न 45263. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225: राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अश्रुधार...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अश्रुधार...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3225मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अश्रुधार...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45264. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225: राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45265. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225: राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45266. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225: राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अश्रु

उत्तर: घ. अश्रु

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अश्रु” अछि।

प्रश्न 45267. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225: राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अश्रु

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अश्रु

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अश्रु” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45268. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225: राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45269. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225: राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45270. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225: राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45271. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225: राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45272. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225मे राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अश्रु” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4534, सूचकांक पंक्ति 3225मे राजदेव मण्डलक “अश्रुधार...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अश्रु” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4535 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: नाचैत भूत...

प्रश्न 45273. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226: राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाचैत भूत...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाचैत भूत...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3226मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “नाचैत भूत...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45274. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226: राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45275. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226: राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45276. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226: राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भूत-रूपक

उत्तर: घ. भूत-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भूत-रूपक” अछि।

प्रश्न 45277. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226: राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भूत-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भूत-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भूत-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45278. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226: राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45279. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226: राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45280. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226: राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45281. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226: राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45282. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226मे राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भूत-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4535, सूचकांक पंक्ति 3226मे राजदेव मण्डलक “नाचैत भूत...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भूत-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4536 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: माय...

प्रश्न 45283. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227: राजदेव मण्डलक “माय...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माय...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माय...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3227मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “माय...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45284. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227: राजदेव मण्डलक “माय...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45285. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227: राजदेव मण्डलक “माय...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45286. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227: राजदेव मण्डलक “माय...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-वन्दना

उत्तर: घ. मातृ-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-वन्दना” अछि।

प्रश्न 45287. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227: राजदेव मण्डलक “माय...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45288. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227: राजदेव मण्डलक “माय...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45289. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227: राजदेव मण्डलक “माय...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45290. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227: राजदेव मण्डलक “माय...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45291. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227: राजदेव मण्डलक “माय...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45292. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227मे राजदेव मण्डलक “माय...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4536, सूचकांक पंक्ति 3227मे राजदेव मण्डलक “माय...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4537 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: यत्न...

प्रश्न 45293. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228: राजदेव मण्डलक “यत्न...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. यत्न...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. यत्न...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3228मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “यत्न...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45294. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228: राजदेव मण्डलक “यत्न...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45295. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228: राजदेव मण्डलक “यत्न...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45296. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228: राजदेव मण्डलक “यत्न...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रयत्न

उत्तर: घ. प्रयत्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रयत्न” अछि।

प्रश्न 45297. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228: राजदेव मण्डलक “यत्न...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रयत्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रयत्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रयत्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45298. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228: राजदेव मण्डलक “यत्न...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45299. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228: राजदेव मण्डलक “यत्न...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45300. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228: राजदेव मण्डलक “यत्न...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45301. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228: राजदेव मण्डलक “यत्न...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45302. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228मे राजदेव मण्डलक “यत्न...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रयत्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4537, सूचकांक पंक्ति 3228मे राजदेव मण्डलक “यत्न...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रयत्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4538 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: बघनखा...

प्रश्न 45303. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229: राजदेव मण्डलक “बघनखा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बघनखा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बघनखा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3229मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बघनखा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45304. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229: राजदेव मण्डलक “बघनखा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45305. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229: राजदेव मण्डलक “बघनखा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45306. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229: राजदेव मण्डलक “बघनखा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाघ-नख रूपक

उत्तर: घ. बाघ-नख रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाघ-नख रूपक” अछि।

प्रश्न 45307. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229: राजदेव मण्डलक “बघनखा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाघ-नख रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाघ-नख रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाघ-नख रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45308. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229: राजदेव मण्डलक “बघनखा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45309. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229: राजदेव मण्डलक “बघनखा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45310. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229: राजदेव मण्डलक “बघनखा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45311. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229: राजदेव मण्डलक “बघनखा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45312. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229मे राजदेव मण्डलक “बघनखा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाघ-नख रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4538, सूचकांक पंक्ति 3229मे राजदेव मण्डलक “बघनखा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाघ-नख रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4539 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: रंगक खोज...

प्रश्न 45313. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230: राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रंगक खोज...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंगक खोज...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3230मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “रंगक खोज...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45314. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230: राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45315. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230: राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45316. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230: राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. रंग-प्रतीक

उत्तर: घ. रंग-प्रतीक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “रंग-प्रतीक” अछि।

प्रश्न 45317. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230: राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. रंग-प्रतीक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रंग-प्रतीक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंग-प्रतीक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45318. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230: राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45319. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230: राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45320. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230: राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45321. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230: राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45322. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230मे राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रंग-प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4539, सूचकांक पंक्ति 3230मे राजदेव मण्डलक “रंगक खोज...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रंग-प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4540 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: कंटकमय...

प्रश्न 45323. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231: राजदेव मण्डलक “कंटकमय...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कंटकमय...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कंटकमय...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3231मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “कंटकमय...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45324. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231: राजदेव मण्डलक “कंटकमय...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45325. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231: राजदेव मण्डलक “कंटकमय...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45326. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231: राजदेव मण्डलक “कंटकमय...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. काँटा-पथ

उत्तर: घ. काँटा-पथ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “काँटा-पथ” अछि।

प्रश्न 45327. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231: राजदेव मण्डलक “कंटकमय...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. काँटा-पथ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काँटा-पथ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काँटा-पथ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45328. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231: राजदेव मण्डलक “कंटकमय...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45329. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231: राजदेव मण्डलक “कंटकमय...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45330. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231: राजदेव मण्डलक “कंटकमय...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45331. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231: राजदेव मण्डलक “कंटकमय...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45332. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231मे राजदेव मण्डलक “कंटकमय...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “काँटा-पथ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4540, सूचकांक पंक्ति 3231मे राजदेव मण्डलक “कंटकमय...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “काँटा-पथ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4541 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: नवनीत...

प्रश्न 45333. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232: राजदेव मण्डलक “नवनीत...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नवनीत...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवनीत...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3232मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “नवनीत...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45334. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232: राजदेव मण्डलक “नवनीत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45335. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232: राजदेव मण्डलक “नवनीत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45336. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232: राजदेव मण्डलक “नवनीत...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नवनीत-रूपक

उत्तर: घ. नवनीत-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नवनीत-रूपक” अछि।

प्रश्न 45337. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232: राजदेव मण्डलक “नवनीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नवनीत-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नवनीत-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नवनीत-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45338. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232: राजदेव मण्डलक “नवनीत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45339. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232: राजदेव मण्डलक “नवनीत...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45340. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232: राजदेव मण्डलक “नवनीत...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45341. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232: राजदेव मण्डलक “नवनीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45342. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232मे राजदेव मण्डलक “नवनीत...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नवनीत-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4541, सूचकांक पंक्ति 3232मे राजदेव मण्डलक “नवनीत...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नवनीत-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4542 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: लाज...

प्रश्न 45343. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233: राजदेव मण्डलक “लाज...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लाज...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाज...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3233मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “लाज...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45344. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233: राजदेव मण्डलक “लाज...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45345. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233: राजदेव मण्डलक “लाज...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45346. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233: राजदेव मण्डलक “लाज...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लज्जा-भाव

उत्तर: घ. लज्जा-भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लज्जा-भाव” अछि।

प्रश्न 45347. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233: राजदेव मण्डलक “लाज...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लज्जा-भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लज्जा-भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लज्जा-भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45348. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233: राजदेव मण्डलक “लाज...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45349. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233: राजदेव मण्डलक “लाज...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45350. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233: राजदेव मण्डलक “लाज...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45351. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233: राजदेव मण्डलक “लाज...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45352. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233मे राजदेव मण्डलक “लाज...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लज्जा-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4542, सूचकांक पंक्ति 3233मे राजदेव मण्डलक “लाज...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लज्जा-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4543 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: मिलन-बिछुड़न...

प्रश्न 45353. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234: राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिलन-बिछुड़न...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिलन-बिछुड़न...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3234मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “मिलन-बिछुड़न...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45354. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234: राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45355. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234: राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45356. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234: राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिलन-वियोग

उत्तर: घ. मिलन-वियोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिलन-वियोग” अछि।

प्रश्न 45357. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234: राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिलन-वियोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिलन-वियोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिलन-वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45358. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234: राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45359. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234: राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45360. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234: राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45361. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234: राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45362. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234मे राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिलन-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4543, सूचकांक पंक्ति 3234मे राजदेव मण्डलक “मिलन-बिछुड़न...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिलन-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4544 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: परिवारक गाछ...

प्रश्न 45363. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235: राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परिवारक गाछ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवारक गाछ...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3235मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “परिवारक गाछ...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45364. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235: राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45365. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235: राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45366. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235: राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवार-रूपक

उत्तर: घ. परिवार-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवार-रूपक” अछि।

प्रश्न 45367. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235: राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिवार-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवार-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवार-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45368. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235: राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45369. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235: राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45370. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235: राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45371. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235: राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45372. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235मे राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परिवार-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4544, सूचकांक पंक्ति 3235मे राजदेव मण्डलक “परिवारक गाछ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परिवार-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4545 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: त्रिशंकु...

प्रश्न 45373. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236: राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. त्रिशंकु...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. त्रिशंकु...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3236मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “त्रिशंकु...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45374. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236: राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45375. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236: राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45376. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236: राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अधर-स्थिति

उत्तर: घ. अधर-स्थिति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अधर-स्थिति” अछि।

प्रश्न 45377. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236: राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अधर-स्थिति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अधर-स्थिति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अधर-स्थिति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45378. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236: राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45379. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236: राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45380. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236: राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45381. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236: राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45382. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236मे राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अधर-स्थिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4545, सूचकांक पंक्ति 3236मे राजदेव मण्डलक “त्रिशंकु...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अधर-स्थिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4546 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: अनमोल जिनगी...

प्रश्न 45383. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237: राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनमोल जिनगी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनमोल जिनगी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3237मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अनमोल जिनगी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45384. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237: राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45385. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237: राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45386. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237: राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-मूल्य

उत्तर: घ. जीवन-मूल्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-मूल्य” अछि।

प्रश्न 45387. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237: राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-मूल्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-मूल्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-मूल्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45388. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237: राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45389. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237: राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45390. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237: राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45391. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237: राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45392. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237मे राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-मूल्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4546, सूचकांक पंक्ति 3237मे राजदेव मण्डलक “अनमोल जिनगी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-मूल्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4547 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)

प्रश्न 45393. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238: राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3238मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45394. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238: राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45395. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238: राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 45396. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238: राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-मनोविज्ञान

उत्तर: घ. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 45397. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238: राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45398. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238: राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45399. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238: राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45400. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238: राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45401. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238: राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45402. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238मे राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4547, सूचकांक पंक्ति 3238मे राजदेव मण्डलक “मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4548 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: कथीक गाछ (बाल कविता)

प्रश्न 45403. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239: राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कथीक गाछ (बाल कविता)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कथीक गाछ (बाल कविता)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3239मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “कथीक गाछ (बाल कविता)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45404. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239: राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45405. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239: राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 45406. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239: राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-कथा काव्य

उत्तर: घ. बाल-कथा काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-कथा काव्य” अछि।

प्रश्न 45407. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239: राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-कथा काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-कथा काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-कथा काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45408. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239: राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45409. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239: राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45410. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239: राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45411. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239: राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45412. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239मे राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-कथा काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4548, सूचकांक पंक्ति 3239मे राजदेव मण्डलक “कथीक गाछ (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-कथा काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4549 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: नेहाइपर लेखनी...

प्रश्न 45413. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240: राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेहाइपर लेखनी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेहाइपर लेखनी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3240मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “नेहाइपर लेखनी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45414. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240: राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45415. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240: राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45416. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240: राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखन-कला

उत्तर: घ. लेखन-कला

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखन-कला” अछि।

प्रश्न 45417. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240: राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लेखन-कला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेखन-कला

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लेखन-कला” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45418. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240: राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45419. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240: राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45420. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240: राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45421. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240: राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45422. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240मे राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लेखन-कला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4549, सूचकांक पंक्ति 3240मे राजदेव मण्डलक “नेहाइपर लेखनी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लेखन-कला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4550 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: झगड़लगौना...

प्रश्न 45423. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241: राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. झगड़लगौना...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झगड़लगौना...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3241मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “झगड़लगौना...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45424. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241: राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45425. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241: राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45426. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241: राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. झगड़ा-रूपक

उत्तर: घ. झगड़ा-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “झगड़ा-रूपक” अछि।

प्रश्न 45427. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241: राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. झगड़ा-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झगड़ा-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “झगड़ा-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45428. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241: राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45429. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241: राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45430. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241: राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45431. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241: राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45432. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241मे राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “झगड़ा-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4550, सूचकांक पंक्ति 3241मे राजदेव मण्डलक “झगड़लगौना...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “झगड़ा-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4551 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: पिशाच...

प्रश्न 45433. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242: राजदेव मण्डलक “पिशाच...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पिशाच...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिशाच...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3242मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “पिशाच...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45434. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242: राजदेव मण्डलक “पिशाच...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45435. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242: राजदेव मण्डलक “पिशाच...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45436. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242: राजदेव मण्डलक “पिशाच...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पिशाच-रूपक

उत्तर: घ. पिशाच-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पिशाच-रूपक” अछि।

प्रश्न 45437. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242: राजदेव मण्डलक “पिशाच...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पिशाच-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पिशाच-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिशाच-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45438. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242: राजदेव मण्डलक “पिशाच...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45439. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242: राजदेव मण्डलक “पिशाच...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45440. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242: राजदेव मण्डलक “पिशाच...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45441. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242: राजदेव मण्डलक “पिशाच...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45442. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242मे राजदेव मण्डलक “पिशाच...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पिशाच-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4551, सूचकांक पंक्ति 3242मे राजदेव मण्डलक “पिशाच...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पिशाच-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4552 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: गाछक बलिदान...

प्रश्न 45443. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243: राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गाछक बलिदान...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाछक बलिदान...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3243मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “गाछक बलिदान...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45444. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243: राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45445. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243: राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45446. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243: राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-बलिदान

उत्तर: घ. प्रकृति-बलिदान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-बलिदान” अछि।

प्रश्न 45447. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243: राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-बलिदान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-बलिदान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-बलिदान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45448. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243: राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45449. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243: राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45450. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243: राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45451. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243: राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45452. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243मे राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति-बलिदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4552, सूचकांक पंक्ति 3243मे राजदेव मण्डलक “गाछक बलिदान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति-बलिदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4553 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: हेराएल गाछक हिस्सा...

प्रश्न 45453. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244: राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हेराएल गाछक हिस्सा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हेराएल गाछक हिस्सा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3244मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “हेराएल गाछक हिस्सा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45454. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244: राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45455. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244: राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45456. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244: राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्षति-बोध

उत्तर: घ. क्षति-बोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “क्षति-बोध” अछि।

प्रश्न 45457. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244: राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. क्षति-बोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्षति-बोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्षति-बोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45458. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244: राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45459. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244: राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45460. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244: राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45461. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244: राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45462. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244मे राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “क्षति-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4553, सूचकांक पंक्ति 3244मे राजदेव मण्डलक “हेराएल गाछक हिस्सा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “क्षति-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4554 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: लाल ज्योति...

प्रश्न 45463. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245: राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लाल ज्योति...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाल ज्योति...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3245मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “लाल ज्योति...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45464. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245: राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45465. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245: राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45466. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245: राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लाल-प्रकाश

उत्तर: घ. लाल-प्रकाश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लाल-प्रकाश” अछि।

प्रश्न 45467. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245: राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लाल-प्रकाश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाल-प्रकाश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लाल-प्रकाश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45468. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245: राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45469. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245: राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45470. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245: राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45471. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245: राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45472. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245मे राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लाल-प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4554, सूचकांक पंक्ति 3245मे राजदेव मण्डलक “लाल ज्योति...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लाल-प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4555 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: बीखक घैल...

प्रश्न 45473. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246: राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बीखक घैल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बीखक घैल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3246मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बीखक घैल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45474. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246: राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45475. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246: राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45476. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246: राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विष-रूपक

उत्तर: घ. विष-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विष-रूपक” अछि।

प्रश्न 45477. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246: राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विष-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विष-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विष-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45478. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246: राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45479. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246: राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45480. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246: राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...”कैँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45481. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246: राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45482. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246मे राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विष-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4555, सूचकांक पंक्ति 3246मे राजदेव मण्डलक “बीखक घैल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विष-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4556 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: पत्रोत्तर...

प्रश्न 45483. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247: राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पत्रोत्तर...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रोत्तर...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3247मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “पत्रोत्तर...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45484. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247: राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45485. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247: राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. पत्र-काव्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. पत्र-काव्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र-काव्य” अछि।

प्रश्न 45486. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247: राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्र-शैली

उत्तर: घ. पत्र-शैली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्र-शैली” अछि।

प्रश्न 45487. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247: राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्र-शैली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्र-शैली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्र-शैली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45488. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247: राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा पत्र-काव्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा पत्र-काव्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45489. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247: राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45490. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247: राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ पत्र-काव्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ पत्र-काव्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45491. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247: राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45492. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247मे राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...” प्रविष्टि पद्य, पत्र-काव्य आ “पत्र-शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4556, सूचकांक पंक्ति 3247मे राजदेव मण्डलक “पत्रोत्तर...” प्रविष्टि पद्य, पत्र-काव्य आ “पत्र-शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4557 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: अन्हारक खेल...

प्रश्न 45493. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248: राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अन्हारक खेल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्हारक खेल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3248मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अन्हारक खेल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45494. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248: राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45495. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248: राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45496. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248: राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्धकार-क्रीड़ा

उत्तर: घ. अन्धकार-क्रीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्धकार-क्रीड़ा” अछि।

प्रश्न 45497. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248: राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्धकार-क्रीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्धकार-क्रीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्धकार-क्रीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45498. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248: राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45499. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248: राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45500. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248: राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45501. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248: राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45502. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248मे राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अन्धकार-क्रीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4557, सूचकांक पंक्ति 3248मे राजदेव मण्डलक “अन्हारक खेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अन्धकार-क्रीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4558 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: नाचक बिखाद...

प्रश्न 45503. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249: राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाचक बिखाद...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाचक बिखाद...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3249मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “नाचक बिखाद...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45504. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249: राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45505. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249: राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45506. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249: राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नृत्य-विषाद

उत्तर: घ. नृत्य-विषाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नृत्य-विषाद” अछि।

प्रश्न 45507. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249: राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नृत्य-विषाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नृत्य-विषाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नृत्य-विषाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45508. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249: राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45509. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249: राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45510. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249: राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45511. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249: राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45512. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249मे राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नृत्य-विषाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4558, सूचकांक पंक्ति 3249मे राजदेव मण्डलक “नाचक बिखाद...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नृत्य-विषाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4559 : विदेह-सदेह 34 — राजदेव मण्डल: आँखिक प्रतीक्षा...

प्रश्न 45513. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250: राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आँखिक प्रतीक्षा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आँखिक प्रतीक्षा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3250मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “आँखिक प्रतीक्षा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45514. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250: राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45515. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250: राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45516. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250: राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रतीक्षा-भाव

उत्तर: घ. प्रतीक्षा-भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीक्षा-भाव” अछि।

प्रश्न 45517. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250: राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रतीक्षा-भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रतीक्षा-भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीक्षा-भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45518. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250: राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45519. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250: राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45520. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250: राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45521. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250: राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45522. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250मे राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रतीक्षा-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4559, सूचकांक पंक्ति 3250मे राजदेव मण्डलक “आँखिक प्रतीक्षा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रतीक्षा-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4560 : विदेह-सदेह 34 — मनीष ठाकुर: विरह गीत

प्रश्न 45523. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251: मनीष ठाकुरक “विरह गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विरह गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विरह गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3251मे मनीष ठाकुरक प्रविष्टि “विरह गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45524. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251: मनीष ठाकुरक “विरह गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45525. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251: मनीष ठाकुरक “विरह गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विरह गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विरह गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विरह गीत” अछि।

प्रश्न 45526. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251: मनीष ठाकुरक “विरह गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वियोग-शृंगार

उत्तर: घ. वियोग-शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वियोग-शृंगार” अछि।

प्रश्न 45527. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251: मनीष ठाकुरक “विरह गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वियोग-शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वियोग-शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वियोग-शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45528. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251: मनीष ठाकुरक “विरह गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनीष ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनीष ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा विरह गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45529. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251: मनीष ठाकुरक “विरह गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45530. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251: मनीष ठाकुरक “विरह गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विरह गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45531. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251: मनीष ठाकुरक “विरह गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45532. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251मे मनीष ठाकुरक “विरह गीत” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “वियोग-शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4560, सूचकांक पंक्ति 3251मे मनीष ठाकुरक “विरह गीत” प्रविष्टि पद्य, विरह गीत आ “वियोग-शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4561 : विदेह-सदेह 34 — कुसुम ठाकुर: चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ

प्रश्न 45533. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252: कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3252मे कुसुम ठाकुरक प्रविष्टि “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45534. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252: कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45535. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252: कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45536. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252: कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी जीवन

उत्तर: घ. नारी जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी जीवन” अछि।

प्रश्न 45537. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252: कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45538. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252: कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45539. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252: कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45540. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252: कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45541. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252: कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45542. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252मे कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4561, सूचकांक पंक्ति 3252मे कुसुम ठाकुरक “चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4562 : विदेह-सदेह 34 — कुसुम ठाकुर: अभिलाषा

प्रश्न 45543. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253: कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अभिलाषा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभिलाषा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3253मे कुसुम ठाकुरक प्रविष्टि “अभिलाषा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45544. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253: कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45545. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253: कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45546. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253: कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इच्छा-काव्य

उत्तर: घ. इच्छा-काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इच्छा-काव्य” अछि।

प्रश्न 45547. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253: कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. इच्छा-काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इच्छा-काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इच्छा-काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45548. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253: कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45549. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253: कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45550. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253: कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45551. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253: कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45552. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253मे कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “इच्छा-काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4562, सूचकांक पंक्ति 3253मे कुसुम ठाकुरक “अभिलाषा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “इच्छा-काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4563 : विदेह-सदेह 34 — चन्द्रकान्त मिश्र: खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर

प्रश्न 45553. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254: चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3254मे चन्द्रकान्त मिश्रक प्रविष्टि “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45554. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254: चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45555. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254: चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य कविता” अछि।

प्रश्न 45556. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254: चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक व्यंग्य

उत्तर: घ. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 45557. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254: चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45558. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254: चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रकान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रकान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45559. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254: चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45560. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254: चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45561. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254: चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45562. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254मे चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य कविता आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4563, सूचकांक पंक्ति 3254मे चन्द्रकान्त मिश्रक “खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य कविता आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4564 : विदेह-सदेह 34 — चन्द्रकान्त मिश्र: जागु-जागु मैथिल

प्रश्न 45563. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255: चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जागु-जागु मैथिल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जागु-जागु मैथिल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3255मे चन्द्रकान्त मिश्रक प्रविष्टि “जागु-जागु मैथिल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45564. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255: चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45565. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255: चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जागरण गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जागरण गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जागरण गीत” अछि।

प्रश्न 45566. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255: चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जातीय चेतना

उत्तर: घ. जातीय चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जातीय चेतना” अछि।

प्रश्न 45567. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255: चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जातीय चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जातीय चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातीय चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45568. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255: चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रकान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा जागरण गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रकान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा जागरण गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45569. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255: चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45570. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255: चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जागरण गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जागरण गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45571. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255: चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45572. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255मे चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल” प्रविष्टि पद्य, जागरण गीत आ “जातीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4564, सूचकांक पंक्ति 3255मे चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल” प्रविष्टि पद्य, जागरण गीत आ “जातीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4565 : विदेह-सदेह 34 — चन्द्रकान्त मिश्र: पी-पी-पी दारु पी

प्रश्न 45573. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256: चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पी-पी-पी दारु पी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पी-पी-पी दारु पी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3256मे चन्द्रकान्त मिश्रक प्रविष्टि “पी-पी-पी दारु पी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45574. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256: चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45575. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256: चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य कविता” अछि।

प्रश्न 45576. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256: चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मद्यपान आलोचना

उत्तर: घ. मद्यपान आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मद्यपान आलोचना” अछि।

प्रश्न 45577. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256: चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मद्यपान आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मद्यपान आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मद्यपान आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45578. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256: चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चन्द्रकान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चन्द्रकान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45579. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256: चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45580. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256: चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45581. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256: चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45582. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256मे चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य कविता आ “मद्यपान आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4565, सूचकांक पंक्ति 3256मे चन्द्रकान्त मिश्रक “पी-पी-पी दारु पी” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य कविता आ “मद्यपान आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4566 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: दूधक धार

प्रश्न 45583. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257: रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दूधक धार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दूधक धार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3257मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “दूधक धार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45584. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257: रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45585. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257: रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45586. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257: रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. श्वेत-सौन्दर्य

उत्तर: घ. श्वेत-सौन्दर्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “श्वेत-सौन्दर्य” अछि।

प्रश्न 45587. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257: रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. श्वेत-सौन्दर्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्वेत-सौन्दर्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “श्वेत-सौन्दर्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45588. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257: रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45589. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257: रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45590. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257: रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45591. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257: रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45592. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257मे रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “श्वेत-सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4566, सूचकांक पंक्ति 3257मे रघुनाथ मुखियाक “दूधक धार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “श्वेत-सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4567 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: छाँहक--सुआद

प्रश्न 45593. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258: रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. छाँहक--सुआद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छाँहक--सुआद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3258मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “छाँहक--सुआद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45594. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258: रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45595. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258: रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45596. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258: रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. छाया-रूपक

उत्तर: घ. छाया-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “छाया-रूपक” अछि।

प्रश्न 45597. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258: रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. छाया-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. छाया-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छाया-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45598. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258: रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45599. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258: रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45600. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258: रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45601. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258: रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45602. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258मे रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छाया-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4567, सूचकांक पंक्ति 3258मे रघुनाथ मुखियाक “छाँहक--सुआद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छाया-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4568 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: मनुक्खक सूखौंत

प्रश्न 45603. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259: रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मनुक्खक सूखौंत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मनुक्खक सूखौंत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3259मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “मनुक्खक सूखौंत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45604. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259: रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45605. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259: रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45606. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259: रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानव शोषण

उत्तर: घ. मानव शोषण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानव शोषण” अछि।

प्रश्न 45607. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259: रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानव शोषण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानव शोषण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानव शोषण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45608. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259: रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45609. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259: रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45610. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259: रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45611. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259: रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45612. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259मे रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मानव शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4568, सूचकांक पंक्ति 3259मे रघुनाथ मुखियाक “मनुक्खक सूखौंत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मानव शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4569 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: जमल शोणित

प्रश्न 45613. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260: रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जमल शोणित

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जमल शोणित

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3260मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “जमल शोणित” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45614. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260: रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45615. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260: रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45616. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260: रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हिंसा-चित्रण

उत्तर: घ. हिंसा-चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हिंसा-चित्रण” अछि।

प्रश्न 45617. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260: रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हिंसा-चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिंसा-चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हिंसा-चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45618. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260: रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45619. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260: रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45620. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260: रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45621. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260: रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45622. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260मे रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हिंसा-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4569, सूचकांक पंक्ति 3260मे रघुनाथ मुखियाक “जमल शोणित” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हिंसा-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4570 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: कालचक्र

प्रश्न 45623. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261: रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कालचक्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कालचक्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3261मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “कालचक्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45624. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261: रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45625. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261: रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45626. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261: रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समय-दर्शन

उत्तर: घ. समय-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समय-दर्शन” अछि।

प्रश्न 45627. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261: रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समय-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समय-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समय-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45628. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261: रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45629. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261: रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45630. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261: रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45631. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261: रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45632. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261मे रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समय-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4570, सूचकांक पंक्ति 3261मे रघुनाथ मुखियाक “कालचक्र” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समय-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4571 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: कोशीक आगमन

प्रश्न 45633. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262: रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोशीक आगमन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोशीक आगमन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3262मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “कोशीक आगमन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45634. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262: रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45635. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262: रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45636. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262: रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नदी-वर्णन

उत्तर: घ. नदी-वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नदी-वर्णन” अछि।

प्रश्न 45637. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262: रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नदी-वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नदी-वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नदी-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45638. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262: रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45639. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262: रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45640. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262: रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45641. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262: रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45642. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262मे रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नदी-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4571, सूचकांक पंक्ति 3262मे रघुनाथ मुखियाक “कोशीक आगमन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नदी-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4572 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: एक सालमे तेरह महीना

प्रश्न 45643. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263: रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एक सालमे तेरह महीना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक सालमे तेरह महीना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3263मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “एक सालमे तेरह महीना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45644. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263: रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45645. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263: रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45646. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263: रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समय-विडम्बना

उत्तर: घ. समय-विडम्बना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समय-विडम्बना” अछि।

प्रश्न 45647. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263: रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समय-विडम्बना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समय-विडम्बना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समय-विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45648. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263: रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45649. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263: रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45650. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263: रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45651. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263: रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45652. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263मे रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समय-विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4572, सूचकांक पंक्ति 3263मे रघुनाथ मुखियाक “एक सालमे तेरह महीना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समय-विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4573 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: बिखाह चाङुर

प्रश्न 45653. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264: रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिखाह चाङुर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिखाह चाङुर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3264मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “बिखाह चाङुर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45654. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264: रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45655. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264: रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 45656. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264: रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह-गीत

उत्तर: घ. विवाह-गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह-गीत” अछि।

प्रश्न 45657. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264: रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाह-गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाह-गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह-गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45658. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264: रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45659. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264: रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45660. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264: रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45661. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264: रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45662. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264मे रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “विवाह-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4573, सूचकांक पंक्ति 3264मे रघुनाथ मुखियाक “बिखाह चाङुर” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “विवाह-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4574 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: ई नेना

प्रश्न 45663. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265: रघुनाथ मुखियाक “ई नेना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई नेना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई नेना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3265मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “ई नेना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45664. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265: रघुनाथ मुखियाक “ई नेना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45665. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265: रघुनाथ मुखियाक “ई नेना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45666. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265: रघुनाथ मुखियाक “ई नेना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-वर्णन

उत्तर: घ. बाल-वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-वर्णन” अछि।

प्रश्न 45667. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265: रघुनाथ मुखियाक “ई नेना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45668. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265: रघुनाथ मुखियाक “ई नेना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45669. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265: रघुनाथ मुखियाक “ई नेना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45670. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265: रघुनाथ मुखियाक “ई नेना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45671. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265: रघुनाथ मुखियाक “ई नेना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45672. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265मे रघुनाथ मुखियाक “ई नेना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4574, सूचकांक पंक्ति 3265मे रघुनाथ मुखियाक “ई नेना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4575 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: आइ पहिल बेर

प्रश्न 45673. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266: रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आइ पहिल बेर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आइ पहिल बेर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3266मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “आइ पहिल बेर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45674. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266: रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45675. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266: रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45676. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266: रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रथम अनुभूति

उत्तर: घ. प्रथम अनुभूति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रथम अनुभूति” अछि।

प्रश्न 45677. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266: रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रथम अनुभूति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रथम अनुभूति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रथम अनुभूति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45678. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266: रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45679. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266: रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45680. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266: रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45681. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266: रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45682. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266मे रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रथम अनुभूति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4575, सूचकांक पंक्ति 3266मे रघुनाथ मुखियाक “आइ पहिल बेर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रथम अनुभूति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4576 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: दादागिरी

प्रश्न 45683. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267: रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दादागिरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दादागिरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3267मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “दादागिरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45684. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267: रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45685. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267: रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45686. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267: रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शक्ति-दम्भ

उत्तर: घ. शक्ति-दम्भ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शक्ति-दम्भ” अछि।

प्रश्न 45687. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267: रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शक्ति-दम्भ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शक्ति-दम्भ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शक्ति-दम्भ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45688. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267: रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45689. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267: रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45690. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267: रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45691. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267: रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45692. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267मे रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शक्ति-दम्भ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4576, सूचकांक पंक्ति 3267मे रघुनाथ मुखियाक “दादागिरी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शक्ति-दम्भ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4577 : विदेह-सदेह 34 — रघुनाथ मुखिया: राजमहल

प्रश्न 45693. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268: रघुनाथ मुखियाक “राजमहल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राजमहल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजमहल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3268मे रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि “राजमहल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45694. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268: रघुनाथ मुखियाक “राजमहल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45695. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268: रघुनाथ मुखियाक “राजमहल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45696. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268: रघुनाथ मुखियाक “राजमहल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राजमहल-वर्णन

उत्तर: घ. राजमहल-वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राजमहल-वर्णन” अछि।

प्रश्न 45697. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268: रघुनाथ मुखियाक “राजमहल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राजमहल-वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजमहल-वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजमहल-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45698. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268: रघुनाथ मुखियाक “राजमहल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45699. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268: रघुनाथ मुखियाक “राजमहल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45700. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268: रघुनाथ मुखियाक “राजमहल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45701. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268: रघुनाथ मुखियाक “राजमहल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45702. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268मे रघुनाथ मुखियाक “राजमहल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजमहल-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4577, सूचकांक पंक्ति 3268मे रघुनाथ मुखियाक “राजमहल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजमहल-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4578 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: कविता- आह्वान

प्रश्न 45703. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269: अशोक दत्तक “कविता- आह्वान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता- आह्वान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता- आह्वान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3269मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “कविता- आह्वान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45704. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269: अशोक दत्तक “कविता- आह्वान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45705. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269: अशोक दत्तक “कविता- आह्वान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45706. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269: अशोक दत्तक “कविता- आह्वान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आह्वान स्वर

उत्तर: घ. आह्वान स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आह्वान स्वर” अछि।

प्रश्न 45707. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269: अशोक दत्तक “कविता- आह्वान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आह्वान स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आह्वान स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आह्वान स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45708. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269: अशोक दत्तक “कविता- आह्वान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45709. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269: अशोक दत्तक “कविता- आह्वान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45710. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269: अशोक दत्तक “कविता- आह्वान”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45711. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269: अशोक दत्तक “कविता- आह्वान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45712. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269मे अशोक दत्तक “कविता- आह्वान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आह्वान स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4578, सूचकांक पंक्ति 3269मे अशोक दत्तक “कविता- आह्वान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आह्वान स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4579 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)

प्रश्न 45713. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270: अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3270मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45714. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270: अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45715. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270: अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत नाटक” अछि।

प्रश्न 45716. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270: अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाट्य-गीत

उत्तर: घ. नाट्य-गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाट्य-गीत” अछि।

प्रश्न 45717. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270: अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाट्य-गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाट्य-गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाट्य-गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45718. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270: अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा गीत नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा गीत नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45719. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270: अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45720. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270: अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीत नाटकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीत नाटकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45721. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270: अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45722. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270मे अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)” प्रविष्टि पद्य, गीत नाटक आ “नाट्य-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4579, सूचकांक पंक्ति 3270मे अशोक दत्तक “गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए)” प्रविष्टि पद्य, गीत नाटक आ “नाट्य-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4580 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२

प्रश्न 45723. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271: अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3271मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45724. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271: अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45725. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271: अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. नौटंकी नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. नौटंकी नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नौटंकी नाटक” अछि।

प्रश्न 45726. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271: अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक नाट्य परम्परा

उत्तर: घ. लोक नाट्य परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक नाट्य परम्परा” अछि।

प्रश्न 45727. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271: अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक नाट्य परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक नाट्य परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक नाट्य परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45728. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271: अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा नौटंकी नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा नौटंकी नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45729. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271: अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45730. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271: अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ नौटंकी नाटकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ नौटंकी नाटकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45731. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271: अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45732. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271मे अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२” प्रविष्टि पद्य, नौटंकी नाटक आ “लोक नाट्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4580, सूचकांक पंक्ति 3271मे अशोक दत्तक “नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२” प्रविष्टि पद्य, नौटंकी नाटक आ “लोक नाट्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4581 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: गीत

प्रश्न 45733. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272: अशोक दत्तक “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3272मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45734. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272: अशोक दत्तक “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45735. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272: अशोक दत्तक “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 45736. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272: अशोक दत्तक “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामान्य गेय रचना

उत्तर: घ. सामान्य गेय रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामान्य गेय रचना” अछि।

प्रश्न 45737. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272: अशोक दत्तक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामान्य गेय रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामान्य गेय रचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामान्य गेय रचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45738. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272: अशोक दत्तक “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45739. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272: अशोक दत्तक “गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45740. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272: अशोक दत्तक “गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45741. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272: अशोक दत्तक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45742. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272मे अशोक दत्तक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सामान्य गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4581, सूचकांक पंक्ति 3272मे अशोक दत्तक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सामान्य गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4582 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: कविता

प्रश्न 45743. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273: अशोक दत्तक “कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3273मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “कविता” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45744. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273: अशोक दत्तक “कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45745. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273: अशोक दत्तक “कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45746. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273: अशोक दत्तक “कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामान्य काव्य रचना

उत्तर: घ. सामान्य काव्य रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामान्य काव्य रचना” अछि।

प्रश्न 45747. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273: अशोक दत्तक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामान्य काव्य रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामान्य काव्य रचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामान्य काव्य रचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45748. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273: अशोक दत्तक “कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45749. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273: अशोक दत्तक “कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45750. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273: अशोक दत्तक “कविता”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45751. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273: अशोक दत्तक “कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45752. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273मे अशोक दत्तक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामान्य काव्य रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4582, सूचकांक पंक्ति 3273मे अशोक दत्तक “कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामान्य काव्य रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4583 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: गीत १२

प्रश्न 45753. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274: अशोक दत्तक “गीत १२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत १२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत १२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3274मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “गीत १२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45754. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274: अशोक दत्तक “गीत १२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45755. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274: अशोक दत्तक “गीत १२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 45756. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274: अशोक दत्तक “गीत १२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गेय रचना

उत्तर: घ. गेय रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गेय रचना” अछि।

प्रश्न 45757. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274: अशोक दत्तक “गीत १२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गेय रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गेय रचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गेय रचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45758. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274: अशोक दत्तक “गीत १२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45759. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274: अशोक दत्तक “गीत १२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45760. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274: अशोक दत्तक “गीत १२”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45761. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274: अशोक दत्तक “गीत १२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45762. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274मे अशोक दत्तक “गीत १२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4583, सूचकांक पंक्ति 3274मे अशोक दत्तक “गीत १२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4584 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: शिव गीत

प्रश्न 45763. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275: अशोक दत्तक “शिव गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शिव गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिव गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3275मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “शिव गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45764. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275: अशोक दत्तक “शिव गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45765. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275: अशोक दत्तक “शिव गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 45766. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275: अशोक दत्तक “शिव गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिव-वन्दना

उत्तर: घ. शिव-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिव-वन्दना” अछि।

प्रश्न 45767. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275: अशोक दत्तक “शिव गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिव-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिव-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिव-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45768. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275: अशोक दत्तक “शिव गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45769. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275: अशोक दत्तक “शिव गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45770. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275: अशोक दत्तक “शिव गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45771. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275: अशोक दत्तक “शिव गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45772. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275मे अशोक दत्तक “शिव गीत” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “शिव-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4584, सूचकांक पंक्ति 3275मे अशोक दत्तक “शिव गीत” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “शिव-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4585 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: कविता- अहुरिया

प्रश्न 45773. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276: अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता- अहुरिया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता- अहुरिया

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3276मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “कविता- अहुरिया” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45774. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276: अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45775. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276: अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45776. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276: अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अहुरिया-सम्बन्ध

उत्तर: घ. अहुरिया-सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अहुरिया-सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 45777. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276: अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अहुरिया-सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अहुरिया-सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अहुरिया-सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45778. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276: अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45779. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276: अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45780. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276: अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45781. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276: अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45782. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276मे अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अहुरिया-सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4585, सूचकांक पंक्ति 3276मे अशोक दत्तक “कविता- अहुरिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अहुरिया-सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4586 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: कविता- सङ्केत

प्रश्न 45783. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277: अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता- सङ्केत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता- सङ्केत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3277मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “कविता- सङ्केत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45784. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277: अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45785. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277: अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45786. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277: अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. संकेत काव्य

उत्तर: घ. संकेत काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “संकेत काव्य” अछि।

प्रश्न 45787. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277: अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. संकेत काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संकेत काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संकेत काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45788. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277: अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45789. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277: अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45790. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277: अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45791. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277: अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45792. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277मे अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “संकेत काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4586, सूचकांक पंक्ति 3277मे अशोक दत्तक “कविता- सङ्केत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “संकेत काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4587 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: शिव गीत

प्रश्न 45793. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278: अशोक दत्तक “शिव गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शिव गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिव गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3278मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “शिव गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45794. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278: अशोक दत्तक “शिव गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45795. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278: अशोक दत्तक “शिव गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 45796. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278: अशोक दत्तक “शिव गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिव-स्तुति

उत्तर: घ. शिव-स्तुति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिव-स्तुति” अछि।

प्रश्न 45797. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278: अशोक दत्तक “शिव गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिव-स्तुति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिव-स्तुति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिव-स्तुति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45798. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278: अशोक दत्तक “शिव गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45799. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278: अशोक दत्तक “शिव गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45800. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278: अशोक दत्तक “शिव गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45801. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278: अशोक दत्तक “शिव गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45802. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278मे अशोक दत्तक “शिव गीत” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “शिव-स्तुति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4587, सूचकांक पंक्ति 3278मे अशोक दत्तक “शिव गीत” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “शिव-स्तुति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4588 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: कविता-अभियान

प्रश्न 45803. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279: अशोक दत्तक “कविता-अभियान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कविता-अभियान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कविता-अभियान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3279मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “कविता-अभियान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45804. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279: अशोक दत्तक “कविता-अभियान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45805. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279: अशोक दत्तक “कविता-अभियान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45806. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279: अशोक दत्तक “कविता-अभियान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अभियान स्वर

उत्तर: घ. अभियान स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अभियान स्वर” अछि।

प्रश्न 45807. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279: अशोक दत्तक “कविता-अभियान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अभियान स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अभियान स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अभियान स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45808. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279: अशोक दत्तक “कविता-अभियान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45809. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279: अशोक दत्तक “कविता-अभियान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45810. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279: अशोक दत्तक “कविता-अभियान”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45811. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279: अशोक दत्तक “कविता-अभियान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45812. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279मे अशोक दत्तक “कविता-अभियान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अभियान स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4588, सूचकांक पंक्ति 3279मे अशोक दत्तक “कविता-अभियान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अभियान स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4589 : विदेह-सदेह 34 — अशोक दत्त: गीत

प्रश्न 45813. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280: अशोक दत्तक “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3280मे अशोक दत्तक प्रविष्टि “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45814. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280: अशोक दत्तक “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45815. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280: अशोक दत्तक “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 45816. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280: अशोक दत्तक “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामान्य गेय रचना

उत्तर: घ. सामान्य गेय रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामान्य गेय रचना” अछि।

प्रश्न 45817. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280: अशोक दत्तक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामान्य गेय रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामान्य गेय रचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामान्य गेय रचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45818. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280: अशोक दत्तक “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45819. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280: अशोक दत्तक “गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45820. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280: अशोक दत्तक “गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45821. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280: अशोक दत्तक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45822. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280मे अशोक दत्तक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सामान्य गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4589, सूचकांक पंक्ति 3280मे अशोक दत्तक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सामान्य गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4590 : विदेह-सदेह 34 — शीतल झा: मुक्तक

प्रश्न 45823. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281: शीतल झाक “मुक्तक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मुक्तक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मुक्तक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3281मे शीतल झाक प्रविष्टि “मुक्तक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45824. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281: शीतल झाक “मुक्तक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45825. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281: शीतल झाक “मुक्तक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. मुक्तक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. मुक्तक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “मुक्तक” अछि।

प्रश्न 45826. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281: शीतल झाक “मुक्तक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लघु काव्य

उत्तर: घ. लघु काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लघु काव्य” अछि।

प्रश्न 45827. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281: शीतल झाक “मुक्तक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लघु काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघु काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लघु काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45828. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281: शीतल झाक “मुक्तक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा मुक्तक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा मुक्तक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45829. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281: शीतल झाक “मुक्तक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45830. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281: शीतल झाक “मुक्तक”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ मुक्तकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ मुक्तकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45831. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281: शीतल झाक “मुक्तक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45832. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281मे शीतल झाक “मुक्तक” प्रविष्टि पद्य, मुक्तक आ “लघु काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4590, सूचकांक पंक्ति 3281मे शीतल झाक “मुक्तक” प्रविष्टि पद्य, मुक्तक आ “लघु काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4591 : विदेह-सदेह 34 — शीतल झा: बोकरे सन

प्रश्न 45833. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282: शीतल झाक “बोकरे सन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बोकरे सन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बोकरे सन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3282मे शीतल झाक प्रविष्टि “बोकरे सन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45834. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282: शीतल झाक “बोकरे सन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45835. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282: शीतल झाक “बोकरे सन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45836. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282: शीतल झाक “बोकरे सन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य

उत्तर: घ. व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 45837. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282: शीतल झाक “बोकरे सन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45838. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282: शीतल झाक “बोकरे सन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45839. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282: शीतल झाक “बोकरे सन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45840. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282: शीतल झाक “बोकरे सन”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45841. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282: शीतल झाक “बोकरे सन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45842. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282मे शीतल झाक “बोकरे सन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4591, सूचकांक पंक्ति 3282मे शीतल झाक “बोकरे सन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4592 : विदेह-सदेह 34 — शीतल झा: शांति!!!

प्रश्न 45843. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283: शीतल झाक “शांति!!!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. शांति!!!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शांति!!!

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3283मे शीतल झाक प्रविष्टि “शांति!!!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45844. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283: शीतल झाक “शांति!!!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45845. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283: शीतल झाक “शांति!!!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45846. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283: शीतल झाक “शांति!!!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शान्ति-आकांक्षा

उत्तर: घ. शान्ति-आकांक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्ति-आकांक्षा” अछि।

प्रश्न 45847. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283: शीतल झाक “शांति!!!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शान्ति-आकांक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शान्ति-आकांक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शान्ति-आकांक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45848. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283: शीतल झाक “शांति!!!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45849. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283: शीतल झाक “शांति!!!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45850. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283: शीतल झाक “शांति!!!”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45851. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283: शीतल झाक “शांति!!!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45852. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283मे शीतल झाक “शांति!!!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्ति-आकांक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4592, सूचकांक पंक्ति 3283मे शीतल झाक “शांति!!!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्ति-आकांक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4593 : विदेह-सदेह 34 — शीतल झा: सब केव उदास रहैअ!

प्रश्न 45853. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284: शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सब केव उदास रहैअ!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सब केव उदास रहैअ!

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3284मे शीतल झाक प्रविष्टि “सब केव उदास रहैअ!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45854. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284: शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45855. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284: शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45856. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284: शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विषाद-स्वर

उत्तर: घ. विषाद-स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विषाद-स्वर” अछि।

प्रश्न 45857. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284: शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विषाद-स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विषाद-स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विषाद-स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45858. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284: शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45859. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284: शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45860. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284: शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45861. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284: शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45862. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284मे शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विषाद-स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4593, सूचकांक पंक्ति 3284मे शीतल झाक “सब केव उदास रहैअ!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विषाद-स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4594 : विदेह-सदेह 34 — शीतल झा: हमर संस्कारक गीत

प्रश्न 45863. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285: शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर संस्कारक गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर संस्कारक गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3285मे शीतल झाक प्रविष्टि “हमर संस्कारक गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45864. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285: शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45865. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285: शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45866. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285: शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लोक-संस्कार

उत्तर: घ. लोक-संस्कार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-संस्कार” अछि।

प्रश्न 45867. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285: शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लोक-संस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोक-संस्कार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-संस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45868. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285: शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45869. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285: शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45870. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285: शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45871. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285: शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45872. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285मे शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोक-संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4594, सूचकांक पंक्ति 3285मे शीतल झाक “हमर संस्कारक गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोक-संस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4595 : विदेह-सदेह 34 — शीतल झा: कवि जी तबाह छथि

प्रश्न 45873. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286: शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कवि जी तबाह छथि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि जी तबाह छथि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3286मे शीतल झाक प्रविष्टि “कवि जी तबाह छथि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45874. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286: शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45875. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286: शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य कविता” अछि।

प्रश्न 45876. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286: शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कवि-व्यंग्य

उत्तर: घ. कवि-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 45877. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286: शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कवि-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कवि-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45878. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286: शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45879. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286: शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45880. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286: शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45881. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286: शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45882. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286मे शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य कविता आ “कवि-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4595, सूचकांक पंक्ति 3286मे शीतल झाक “कवि जी तबाह छथि” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य कविता आ “कवि-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4596 : विदेह-सदेह 34 — डॉ. शेफालिका वर्मा: हमर माय

प्रश्न 45883. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287: डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर माय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर माय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3287मे डॉ. शेफालिका वर्माक प्रविष्टि “हमर माय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45884. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287: डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45885. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287: डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45886. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287: डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-प्रेम

उत्तर: घ. मातृ-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-प्रेम” अछि।

प्रश्न 45887. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287: डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45888. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287: डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45889. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287: डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45890. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287: डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45891. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287: डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45892. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287मे डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4596, सूचकांक पंक्ति 3287मे डॉ. शेफालिका वर्माक “हमर माय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4597 : विदेह-सदेह 34 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: फेर आबि गेल नवका साल

प्रश्न 45893. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फेर आबि गेल नवका साल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फेर आबि गेल नवका साल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3288मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रविष्टि “फेर आबि गेल नवका साल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45894. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45895. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45896. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नववर्ष

उत्तर: घ. नववर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नववर्ष” अछि।

प्रश्न 45897. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नववर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नववर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नववर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45898. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45899. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45900. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45901. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45902. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नववर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4597, सूचकांक पंक्ति 3288मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “फेर आबि गेल नवका साल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नववर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4598 : विदेह-सदेह 34 — रामभरोस कापडि भ्रमर: गीत १-२

प्रश्न 45903. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289: रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत १-२

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत १-२

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3289मे रामभरोस कापडि भ्रमरक प्रविष्टि “गीत १-२” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45904. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289: रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45905. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289: रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 45906. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289: रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गेय रचना

उत्तर: घ. गेय रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गेय रचना” अछि।

प्रश्न 45907. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289: रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गेय रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गेय रचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गेय रचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45908. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289: रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापडि भ्रमर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापडि भ्रमर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45909. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289: रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45910. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289: रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45911. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289: रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45912. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289मे रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4598, सूचकांक पंक्ति 3289मे रामभरोस कापडि भ्रमरक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4599 : विदेह-सदेह 34 — मनीष झा "बौआभाई": ऋतुपति बसंत

प्रश्न 45913. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290: मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ऋतुपति बसंत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ऋतुपति बसंत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3290मे मनीष झा "बौआभाई"क प्रविष्टि “ऋतुपति बसंत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45914. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290: मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45915. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290: मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45916. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290: मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वसन्त वर्णन

उत्तर: घ. वसन्त वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वसन्त वर्णन” अछि।

प्रश्न 45917. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290: मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वसन्त वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसन्त वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वसन्त वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45918. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290: मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनीष झा "बौआभाई", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनीष झा "बौआभाई", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45919. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290: मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45920. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290: मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45921. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290: मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45922. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290मे मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वसन्त वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4599, सूचकांक पंक्ति 3290मे मनीष झा "बौआभाई"क “ऋतुपति बसंत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वसन्त वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4600 : विदेह-सदेह 34 — मनोज कुमार मंडल: जाहि प्रांत रहैत छी हम

प्रश्न 45923. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291: मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जाहि प्रांत रहैत छी हम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जाहि प्रांत रहैत छी हम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3291मे मनोज कुमार मंडलक प्रविष्टि “जाहि प्रांत रहैत छी हम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45924. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291: मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45925. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291: मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45926. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291: मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी पहचान

उत्तर: घ. प्रवासी पहचान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी पहचान” अछि।

प्रश्न 45927. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291: मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी पहचान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी पहचान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी पहचान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45928. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291: मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45929. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291: मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45930. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291: मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45931. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291: मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45932. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291मे मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4600, सूचकांक पंक्ति 3291मे मनोज कुमार मंडलक “जाहि प्रांत रहैत छी हम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4601 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": अंतरकलह आ विचार

प्रश्न 45933. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292: नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अंतरकलह आ विचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंतरकलह आ विचार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3292मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “अंतरकलह आ विचार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45934. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292: नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45935. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292: नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45936. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292: नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आन्तरिक द्वन्द्व

उत्तर: घ. आन्तरिक द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आन्तरिक द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 45937. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292: नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आन्तरिक द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्तरिक द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आन्तरिक द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45938. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292: नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45939. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292: नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45940. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292: नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45941. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292: नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45942. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292मे नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4601, सूचकांक पंक्ति 3292मे नवीन कुमार "आशा"क “अंतरकलह आ विचार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4602 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": बैसल-बैसल सोची मनमे

प्रश्न 45943. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293: नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बैसल-बैसल सोची मनमे

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बैसल-बैसल सोची मनमे

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3293मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “बैसल-बैसल सोची मनमे” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45944. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293: नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45945. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293: नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45946. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293: नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चिन्तन

उत्तर: घ. चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चिन्तन” अछि।

प्रश्न 45947. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293: नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45948. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293: नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45949. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293: नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45950. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293: नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45951. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293: नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45952. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293मे नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4602, सूचकांक पंक्ति 3293मे नवीन कुमार "आशा"क “बैसल-बैसल सोची मनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4603 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": हमरा भेटल

प्रश्न 45953. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294: नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमरा भेटल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमरा भेटल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3294मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “हमरा भेटल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45954. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294: नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45955. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294: नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45956. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294: नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भेंट-वर्णन

उत्तर: घ. भेंट-वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भेंट-वर्णन” अछि।

प्रश्न 45957. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294: नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भेंट-वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भेंट-वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भेंट-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45958. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294: नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45959. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294: नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45960. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294: नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45961. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294: नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45962. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294मे नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भेंट-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4603, सूचकांक पंक्ति 3294मे नवीन कुमार "आशा"क “हमरा भेटल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भेंट-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4604 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": सुनू सुनाउ अपन खबरि

प्रश्न 45963. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295: नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुनू सुनाउ अपन खबरि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुनू सुनाउ अपन खबरि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3295मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “सुनू सुनाउ अपन खबरि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45964. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295: नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45965. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295: नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45966. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295: नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समाचार-काव्य

उत्तर: घ. समाचार-काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समाचार-काव्य” अछि।

प्रश्न 45967. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295: नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समाचार-काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समाचार-काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समाचार-काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45968. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295: नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45969. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295: नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45970. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295: नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45971. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295: नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45972. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295मे नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समाचार-काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4604, सूचकांक पंक्ति 3295मे नवीन कुमार "आशा"क “सुनू सुनाउ अपन खबरि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समाचार-काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4605 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": की लिखू तोरा लेल

प्रश्न 45973. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की लिखू तोरा लेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की लिखू तोरा लेल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3296मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “की लिखू तोरा लेल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45974. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45975. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45976. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखन-द्वन्द्व

उत्तर: घ. लेखन-द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखन-द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 45977. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लेखन-द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेखन-द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लेखन-द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45978. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45979. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45980. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45981. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45982. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296मे नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लेखन-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4605, सूचकांक पंक्ति 3296मे नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू तोरा लेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लेखन-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4606 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": नै बिसरलौं चारि साल

प्रश्न 45983. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297: नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नै बिसरलौं चारि साल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नै बिसरलौं चारि साल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3297मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “नै बिसरलौं चारि साल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45984. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297: नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45985. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297: नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 45986. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297: नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्मृति

उत्तर: घ. स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्मृति” अछि।

प्रश्न 45987. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297: नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्मृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45988. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297: नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45989. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297: नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 45990. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297: नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 45991. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297: नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 45992. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297मे नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4606, सूचकांक पंक्ति 3297मे नवीन कुमार "आशा"क “नै बिसरलौं चारि साल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4607 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू

प्रश्न 45993. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298: नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3298मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 45994. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298: नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 45995. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298: नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 45996. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298: नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मस्ती गीत

उत्तर: घ. मस्ती गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मस्ती गीत” अछि।

प्रश्न 45997. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298: नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मस्ती गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मस्ती गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मस्ती गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 45998. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298: नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 45999. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298: नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46000. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298: नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46001. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298: नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46002. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298मे नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मस्ती गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4607, सूचकांक पंक्ति 3298मे नवीन कुमार "आशा"क “मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मस्ती गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4608 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": आव मोन करें कमाई

प्रश्न 46003. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299: नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आव मोन करें कमाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आव मोन करें कमाई

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3299मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “आव मोन करें कमाई” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46004. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299: नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46005. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299: नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46006. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299: नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. श्रम-प्रेरणा

उत्तर: घ. श्रम-प्रेरणा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “श्रम-प्रेरणा” अछि।

प्रश्न 46007. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299: नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. श्रम-प्रेरणा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. श्रम-प्रेरणा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “श्रम-प्रेरणा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46008. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299: नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46009. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299: नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46010. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299: नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46011. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299: नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46012. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299मे नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “श्रम-प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4608, सूचकांक पंक्ति 3299मे नवीन कुमार "आशा"क “आव मोन करें कमाई” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “श्रम-प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4609 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": तोहर गोर गोर गाल .....

प्रश्न 46013. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300: नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तोहर गोर गोर गाल .....

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तोहर गोर गोर गाल .....

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3300मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “तोहर गोर गोर गाल .....” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46014. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300: नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46015. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300: नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46016. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300: नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सौन्दर्य वर्णन

उत्तर: घ. सौन्दर्य वर्णन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सौन्दर्य वर्णन” अछि।

प्रश्न 46017. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300: नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सौन्दर्य वर्णन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सौन्दर्य वर्णन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सौन्दर्य वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46018. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300: नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46019. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300: नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46020. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300: नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46021. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300: नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46022. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300मे नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सौन्दर्य वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4609, सूचकांक पंक्ति 3300मे नवीन कुमार "आशा"क “तोहर गोर गोर गाल .....” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सौन्दर्य वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4610 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": किया ने पावी तोहर टोन

प्रश्न 46023. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301: नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किया ने पावी तोहर टोन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किया ने पावी तोहर टोन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3301मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “किया ने पावी तोहर टोन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46024. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301: नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46025. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301: नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46026. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301: नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. टोन-प्रेम

उत्तर: घ. टोन-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “टोन-प्रेम” अछि।

प्रश्न 46027. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301: नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. टोन-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. टोन-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “टोन-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46028. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301: नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46029. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301: नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46030. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301: नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46031. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301: नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46032. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301मे नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “टोन-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4610, सूचकांक पंक्ति 3301मे नवीन कुमार "आशा"क “किया ने पावी तोहर टोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “टोन-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4611 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": अनामिका

प्रश्न 46033. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302: नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनामिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनामिका

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3302मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “अनामिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46034. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302: नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46035. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302: नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46036. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302: नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अज्ञात प्रेमिका

उत्तर: घ. अज्ञात प्रेमिका

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अज्ञात प्रेमिका” अछि।

प्रश्न 46037. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302: नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अज्ञात प्रेमिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अज्ञात प्रेमिका

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अज्ञात प्रेमिका” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46038. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302: नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46039. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302: नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46040. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302: नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46041. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302: नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46042. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302मे नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अज्ञात प्रेमिका” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4611, सूचकांक पंक्ति 3302मे नवीन कुमार "आशा"क “अनामिका” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अज्ञात प्रेमिका” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4612 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": हमहूँ तँ छी इंसान

प्रश्न 46043. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303: नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमहूँ तँ छी इंसान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमहूँ तँ छी इंसान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3303मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “हमहूँ तँ छी इंसान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46044. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303: नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46045. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303: नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46046. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303: नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मानवीय स्वीकृति

उत्तर: घ. मानवीय स्वीकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मानवीय स्वीकृति” अछि।

प्रश्न 46047. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303: नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मानवीय स्वीकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मानवीय स्वीकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानवीय स्वीकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46048. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303: नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46049. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303: नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46050. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303: नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46051. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303: नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46052. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303मे नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मानवीय स्वीकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4612, सूचकांक पंक्ति 3303मे नवीन कुमार "आशा"क “हमहूँ तँ छी इंसान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मानवीय स्वीकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4613 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": अनाथ

प्रश्न 46053. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304: नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अनाथ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनाथ

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3304मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “अनाथ” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46054. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304: नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46055. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304: नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46056. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304: नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अनाथ पीड़ा

उत्तर: घ. अनाथ पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अनाथ पीड़ा” अछि।

प्रश्न 46057. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304: नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अनाथ पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अनाथ पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनाथ पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46058. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304: नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46059. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304: नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46060. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304: नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ”कैँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46061. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304: नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46062. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304मे नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अनाथ पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4613, सूचकांक पंक्ति 3304मे नवीन कुमार "आशा"क “अनाथ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अनाथ पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4614 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": एक दिन बाबु कहला हमरा

प्रश्न 46063. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305: नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एक दिन बाबु कहला हमरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एक दिन बाबु कहला हमरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3305मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “एक दिन बाबु कहला हमरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46064. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305: नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46065. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305: नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46066. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305: नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पितृ-उपदेश

उत्तर: घ. पितृ-उपदेश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृ-उपदेश” अछि।

प्रश्न 46067. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305: नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पितृ-उपदेश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पितृ-उपदेश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृ-उपदेश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46068. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305: नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46069. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305: नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46070. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305: नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46071. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305: नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46072. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305मे नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पितृ-उपदेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4614, सूचकांक पंक्ति 3305मे नवीन कुमार "आशा"क “एक दिन बाबु कहला हमरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पितृ-उपदेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4615 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": माँ छिन्नमस्तिका

प्रश्न 46073. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306: नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माँ छिन्नमस्तिका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँ छिन्नमस्तिका

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3306मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “माँ छिन्नमस्तिका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46074. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306: नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46075. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306: नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति कविता” अछि।

प्रश्न 46076. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306: नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देवी-वन्दना

उत्तर: घ. देवी-वन्दना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देवी-वन्दना” अछि।

प्रश्न 46077. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306: नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देवी-वन्दना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देवी-वन्दना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देवी-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46078. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306: नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा भक्ति कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46079. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306: नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46080. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306: नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46081. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306: नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46082. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306मे नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका” प्रविष्टि पद्य, भक्ति कविता आ “देवी-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4615, सूचकांक पंक्ति 3306मे नवीन कुमार "आशा"क “माँ छिन्नमस्तिका” प्रविष्टि पद्य, भक्ति कविता आ “देवी-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4616 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": दफ्तर

प्रश्न 46083. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307: नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दफ्तर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दफ्तर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3307मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “दफ्तर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46084. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307: नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46085. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307: नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46086. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307: नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कार्यालय जीवन

उत्तर: घ. कार्यालय जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कार्यालय जीवन” अछि।

प्रश्न 46087. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307: नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कार्यालय जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कार्यालय जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कार्यालय जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46088. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307: नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46089. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307: नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46090. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307: नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46091. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307: नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46092. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307मे नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कार्यालय जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4616, सूचकांक पंक्ति 3307मे नवीन कुमार "आशा"क “दफ्तर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कार्यालय जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4617 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": कोना बिसरू तोरा

प्रश्न 46093. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308: नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोना बिसरू तोरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोना बिसरू तोरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3308मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “कोना बिसरू तोरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46094. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308: नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46095. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308: नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46096. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308: नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्मृति-प्रेम

उत्तर: घ. स्मृति-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्मृति-प्रेम” अछि।

प्रश्न 46097. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308: नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्मृति-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्मृति-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्मृति-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46098. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308: नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46099. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308: नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46100. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308: नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46101. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308: नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46102. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308मे नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्मृति-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4617, सूचकांक पंक्ति 3308मे नवीन कुमार "आशा"क “कोना बिसरू तोरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्मृति-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4618 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": करेजक प्यास

प्रश्न 46103. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309: नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. करेजक प्यास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. करेजक प्यास

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3309मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “करेजक प्यास” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46104. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309: नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46105. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309: नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46106. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309: नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आन्तरिक तृष्णा

उत्तर: घ. आन्तरिक तृष्णा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आन्तरिक तृष्णा” अछि।

प्रश्न 46107. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309: नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आन्तरिक तृष्णा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आन्तरिक तृष्णा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आन्तरिक तृष्णा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46108. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309: नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46109. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309: नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46110. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309: नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46111. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309: नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46112. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309मे नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक तृष्णा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4618, सूचकांक पंक्ति 3309मे नवीन कुमार "आशा"क “करेजक प्यास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक तृष्णा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4619 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": परी छी

प्रश्न 46113. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310: नवीन कुमार "आशा"क “परी छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परी छी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परी छी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3310मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “परी छी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46114. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310: नवीन कुमार "आशा"क “परी छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46115. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310: नवीन कुमार "आशा"क “परी छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46116. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310: नवीन कुमार "आशा"क “परी छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परी-रूपक

उत्तर: घ. परी-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परी-रूपक” अछि।

प्रश्न 46117. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310: नवीन कुमार "आशा"क “परी छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परी-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परी-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परी-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46118. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310: नवीन कुमार "आशा"क “परी छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46119. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310: नवीन कुमार "आशा"क “परी छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46120. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310: नवीन कुमार "आशा"क “परी छी”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46121. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310: नवीन कुमार "आशा"क “परी छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46122. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310मे नवीन कुमार "आशा"क “परी छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परी-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4619, सूचकांक पंक्ति 3310मे नवीन कुमार "आशा"क “परी छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परी-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4620 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": माए बाबु ..

प्रश्न 46123. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311: नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माए बाबु ..

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माए बाबु ..

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3311मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “माए बाबु ..” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46124. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311: नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46125. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311: नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46126. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311: नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माता-पिता सम्बोधन

उत्तर: घ. माता-पिता सम्बोधन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माता-पिता सम्बोधन” अछि।

प्रश्न 46127. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311: नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माता-पिता सम्बोधन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माता-पिता सम्बोधन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माता-पिता सम्बोधन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46128. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311: नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46129. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311: नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46130. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311: नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46131. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311: नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46132. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311मे नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माता-पिता सम्बोधन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4620, सूचकांक पंक्ति 3311मे नवीन कुमार "आशा"क “माए बाबु ..” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माता-पिता सम्बोधन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4621 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": आस

प्रश्न 46133. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312: नवीन कुमार "आशा"क “आस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आस

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आस

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3312मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “आस” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46134. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312: नवीन कुमार "आशा"क “आस”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46135. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312: नवीन कुमार "आशा"क “आस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46136. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312: नवीन कुमार "आशा"क “आस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आशा-भाव

उत्तर: घ. आशा-भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आशा-भाव” अछि।

प्रश्न 46137. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312: नवीन कुमार "आशा"क “आस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आशा-भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आशा-भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आशा-भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46138. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312: नवीन कुमार "आशा"क “आस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46139. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312: नवीन कुमार "आशा"क “आस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46140. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312: नवीन कुमार "आशा"क “आस”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46141. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312: नवीन कुमार "आशा"क “आस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46142. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312मे नवीन कुमार "आशा"क “आस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आशा-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4621, सूचकांक पंक्ति 3312मे नवीन कुमार "आशा"क “आस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आशा-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4622 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि

प्रश्न 46143. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313: नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3313मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46144. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313: नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46145. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313: नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46146. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313: नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तीर्थ यात्रा

उत्तर: घ. तीर्थ यात्रा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तीर्थ यात्रा” अछि।

प्रश्न 46147. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313: नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तीर्थ यात्रा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीर्थ यात्रा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीर्थ यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46148. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313: नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46149. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313: नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46150. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313: नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46151. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313: नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46152. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313मे नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “तीर्थ यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4622, सूचकांक पंक्ति 3313मे नवीन कुमार "आशा"क “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “तीर्थ यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4623 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": राखह माता पिताक ध्यान

प्रश्न 46153. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314: नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राखह माता पिताक ध्यान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राखह माता पिताक ध्यान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3314मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “राखह माता पिताक ध्यान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46154. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314: नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46155. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314: नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46156. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314: नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मातृ-पितृ सेवा

उत्तर: घ. मातृ-पितृ सेवा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-पितृ सेवा” अछि।

प्रश्न 46157. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314: नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मातृ-पितृ सेवा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृ-पितृ सेवा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-पितृ सेवा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46158. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314: नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46159. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314: नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46160. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314: नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46161. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314: नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46162. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314मे नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-पितृ सेवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4623, सूचकांक पंक्ति 3314मे नवीन कुमार "आशा"क “राखह माता पिताक ध्यान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-पितृ सेवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4624 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": की लिखू

प्रश्न 46163. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की लिखू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की लिखू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3315मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “की लिखू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46164. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46165. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46166. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लेखन द्वन्द्व

उत्तर: घ. लेखन द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखन द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 46167. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लेखन द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लेखन द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लेखन द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46168. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46169. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46170. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46171. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315: नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46172. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315मे नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लेखन द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4624, सूचकांक पंक्ति 3315मे नवीन कुमार "आशा"क “की लिखू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लेखन द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4625 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": अविस्मरणीय

प्रश्न 46173. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316: नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अविस्मरणीय

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अविस्मरणीय

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3316मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “अविस्मरणीय” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46174. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316: नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46175. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316: नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46176. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316: नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. स्मृति

उत्तर: घ. स्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “स्मृति” अछि।

प्रश्न 46177. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316: नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. स्मृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46178. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316: नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46179. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316: नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46180. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316: नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46181. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316: नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46182. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316मे नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4625, सूचकांक पंक्ति 3316मे नवीन कुमार "आशा"क “अविस्मरणीय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4626 : विदेह-सदेह 34 — नवीन कुमार "आशा": कि जीवनक ई अछि सत्य

प्रश्न 46183. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317: नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कि जीवनक ई अछि सत्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कि जीवनक ई अछि सत्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3317मे नवीन कुमार "आशा"क प्रविष्टि “कि जीवनक ई अछि सत्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46184. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317: नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46185. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317: नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46186. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317: नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-दर्शन

उत्तर: घ. जीवन-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-दर्शन” अछि।

प्रश्न 46187. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317: नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46188. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317: नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवीन कुमार "आशा", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46189. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317: नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46190. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317: नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46191. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317: नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46192. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317मे नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4626, सूचकांक पंक्ति 3317मे नवीन कुमार "आशा"क “कि जीवनक ई अछि सत्य” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4627 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: अप्पन गप... (कविता-संग्रह)

प्रश्न 46193. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318: राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अप्पन गप... (कविता-संग्रह)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अप्पन गप... (कविता-संग्रह)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3318मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46194. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318: राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46195. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318: राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता-संग्रह

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता-संग्रह

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता-संग्रह” अछि।

प्रश्न 46196. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318: राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहुविध काव्य

उत्तर: घ. बहुविध काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुविध काव्य” अछि।

प्रश्न 46197. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318: राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बहुविध काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुविध काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बहुविध काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46198. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318: राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता-संग्रह

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता-संग्रह

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46199. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318: राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46200. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318: राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता-संग्रहक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता-संग्रहक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46201. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318: राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46202. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318मे राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, कविता-संग्रह आ “बहुविध काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4627, सूचकांक पंक्ति 3318मे राम विलास साहुक “अप्पन गप... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, कविता-संग्रह आ “बहुविध काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4628 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: महगाइ...

प्रश्न 46203. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319: राम विलास साहुक “महगाइ...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महगाइ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महगाइ...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3319मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “महगाइ...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46204. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319: राम विलास साहुक “महगाइ...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46205. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319: राम विलास साहुक “महगाइ...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46206. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319: राम विलास साहुक “महगाइ...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महँगाई

उत्तर: घ. महँगाई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महँगाई” अछि।

प्रश्न 46207. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319: राम विलास साहुक “महगाइ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महँगाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महँगाई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महँगाई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46208. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319: राम विलास साहुक “महगाइ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46209. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319: राम विलास साहुक “महगाइ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46210. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319: राम विलास साहुक “महगाइ...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46211. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319: राम विलास साहुक “महगाइ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46212. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319मे राम विलास साहुक “महगाइ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “महँगाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4628, सूचकांक पंक्ति 3319मे राम विलास साहुक “महगाइ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “महँगाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4629 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: कोइली कुहकै आमक डारि...

प्रश्न 46213. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320: राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोइली कुहकै आमक डारि...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोइली कुहकै आमक डारि...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3320मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “कोइली कुहकै आमक डारि...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46214. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320: राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46215. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320: राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 46216. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320: राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-शृंगार

उत्तर: घ. प्रकृति-शृंगार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-शृंगार” अछि।

प्रश्न 46217. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320: राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-शृंगार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-शृंगार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46218. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320: राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46219. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320: राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46220. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320: राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46221. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320: राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46222. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320मे राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रकृति-शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4629, सूचकांक पंक्ति 3320मे राम विलास साहुक “कोइली कुहकै आमक डारि...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रकृति-शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4630 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: प्रीतक गीत...

प्रश्न 46223. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321: राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रीतक गीत...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रीतक गीत...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3321मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “प्रीतक गीत...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46224. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321: राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46225. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321: राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 46226. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321: राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-गीत

उत्तर: घ. प्रेम-गीत

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-गीत” अछि।

प्रश्न 46227. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321: राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-गीत

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-गीत” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46228. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321: राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46229. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321: राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46230. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321: राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46231. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321: राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46232. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321मे राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रेम-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4630, सूचकांक पंक्ति 3321मे राम विलास साहुक “प्रीतक गीत...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “प्रेम-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4631 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: गंजन...

प्रश्न 46233. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322: राम विलास साहुक “गंजन...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गंजन...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गंजन...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3322मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “गंजन...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46234. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322: राम विलास साहुक “गंजन...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46235. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322: राम विलास साहुक “गंजन...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46236. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322: राम विलास साहुक “गंजन...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. उपेक्षा

उत्तर: घ. उपेक्षा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “उपेक्षा” अछि।

प्रश्न 46237. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322: राम विलास साहुक “गंजन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. उपेक्षा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपेक्षा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपेक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46238. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322: राम विलास साहुक “गंजन...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46239. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322: राम विलास साहुक “गंजन...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46240. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322: राम विलास साहुक “गंजन...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46241. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322: राम विलास साहुक “गंजन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46242. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322मे राम विलास साहुक “गंजन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उपेक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4631, सूचकांक पंक्ति 3322मे राम विलास साहुक “गंजन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उपेक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4632 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: कर्मक फल...

प्रश्न 46243. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323: राम विलास साहुक “कर्मक फल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कर्मक फल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कर्मक फल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3323मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “कर्मक फल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46244. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323: राम विलास साहुक “कर्मक फल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46245. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323: राम विलास साहुक “कर्मक फल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46246. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323: राम विलास साहुक “कर्मक फल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कर्म-दर्शन

उत्तर: घ. कर्म-दर्शन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कर्म-दर्शन” अछि।

प्रश्न 46247. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323: राम विलास साहुक “कर्मक फल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कर्म-दर्शन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कर्म-दर्शन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कर्म-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46248. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323: राम विलास साहुक “कर्मक फल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46249. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323: राम विलास साहुक “कर्मक फल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46250. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323: राम विलास साहुक “कर्मक फल...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46251. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323: राम विलास साहुक “कर्मक फल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46252. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323मे राम विलास साहुक “कर्मक फल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कर्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4632, सूचकांक पंक्ति 3323मे राम विलास साहुक “कर्मक फल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कर्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4633 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: प्रेमक बान्ह...

प्रश्न 46253. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324: राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेमक बान्ह...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक बान्ह...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3324मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “प्रेमक बान्ह...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46254. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324: राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46255. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324: राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46256. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324: राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-बन्धन

उत्तर: घ. प्रेम-बन्धन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-बन्धन” अछि।

प्रश्न 46257. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324: राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-बन्धन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-बन्धन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-बन्धन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46258. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324: राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46259. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324: राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46260. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324: राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46261. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324: राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46262. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324मे राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-बन्धन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4633, सूचकांक पंक्ति 3324मे राम विलास साहुक “प्रेमक बान्ह...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-बन्धन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4634 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: जीबैत चलू...

प्रश्न 46263. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325: राम विलास साहुक “जीबैत चलू...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जीबैत चलू...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीबैत चलू...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3325मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “जीबैत चलू...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46264. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325: राम विलास साहुक “जीबैत चलू...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46265. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325: राम विलास साहुक “जीबैत चलू...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46266. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325: राम विलास साहुक “जीबैत चलू...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-गति

उत्तर: घ. जीवन-गति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-गति” अछि।

प्रश्न 46267. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325: राम विलास साहुक “जीबैत चलू...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-गति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-गति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-गति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46268. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325: राम विलास साहुक “जीबैत चलू...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46269. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325: राम विलास साहुक “जीबैत चलू...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46270. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325: राम विलास साहुक “जीबैत चलू...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46271. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325: राम विलास साहुक “जीबैत चलू...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46272. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325मे राम विलास साहुक “जीबैत चलू...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-गति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4634, सूचकांक पंक्ति 3325मे राम विलास साहुक “जीबैत चलू...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-गति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4635 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: बिसरल गीत...

प्रश्न 46273. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326: राम विलास साहुक “बिसरल गीत...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिसरल गीत...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिसरल गीत...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3326मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बिसरल गीत...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46274. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326: राम विलास साहुक “बिसरल गीत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46275. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326: राम विलास साहुक “बिसरल गीत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46276. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326: राम विलास साहुक “बिसरल गीत...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विस्मृति

उत्तर: घ. विस्मृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विस्मृति” अछि।

प्रश्न 46277. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326: राम विलास साहुक “बिसरल गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विस्मृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विस्मृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विस्मृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46278. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326: राम विलास साहुक “बिसरल गीत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46279. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326: राम विलास साहुक “बिसरल गीत...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46280. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326: राम विलास साहुक “बिसरल गीत...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46281. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326: राम विलास साहुक “बिसरल गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46282. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326मे राम विलास साहुक “बिसरल गीत...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विस्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4635, सूचकांक पंक्ति 3326मे राम विलास साहुक “बिसरल गीत...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विस्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4636 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: जड़ैत दीप...

प्रश्न 46283. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327: राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जड़ैत दीप...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जड़ैत दीप...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3327मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “जड़ैत दीप...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46284. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327: राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46285. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327: राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46286. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327: राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दीप-प्रतीक

उत्तर: घ. दीप-प्रतीक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दीप-प्रतीक” अछि।

प्रश्न 46287. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327: राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दीप-प्रतीक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दीप-प्रतीक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दीप-प्रतीक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46288. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327: राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46289. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327: राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46290. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327: राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46291. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327: राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46292. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327मे राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीप-प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4636, सूचकांक पंक्ति 3327मे राम विलास साहुक “जड़ैत दीप...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीप-प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4637 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: गामक नारी...

प्रश्न 46293. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328: राम विलास साहुक “गामक नारी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गामक नारी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गामक नारी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3328मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “गामक नारी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46294. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328: राम विलास साहुक “गामक नारी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46295. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328: राम विलास साहुक “गामक नारी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46296. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328: राम विलास साहुक “गामक नारी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण नारी

उत्तर: घ. ग्रामीण नारी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण नारी” अछि।

प्रश्न 46297. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328: राम विलास साहुक “गामक नारी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण नारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण नारी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण नारी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46298. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328: राम विलास साहुक “गामक नारी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46299. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328: राम विलास साहुक “गामक नारी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46300. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328: राम विलास साहुक “गामक नारी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46301. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328: राम विलास साहुक “गामक नारी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46302. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328मे राम विलास साहुक “गामक नारी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण नारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4637, सूचकांक पंक्ति 3328मे राम विलास साहुक “गामक नारी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण नारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4638 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: पियासल धरती...

प्रश्न 46303. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329: राम विलास साहुक “पियासल धरती...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पियासल धरती...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पियासल धरती...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3329मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “पियासल धरती...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46304. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329: राम विलास साहुक “पियासल धरती...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46305. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329: राम विलास साहुक “पियासल धरती...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46306. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329: राम विलास साहुक “पियासल धरती...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सूखा

उत्तर: घ. सूखा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सूखा” अछि।

प्रश्न 46307. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329: राम विलास साहुक “पियासल धरती...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सूखा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सूखा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सूखा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46308. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329: राम विलास साहुक “पियासल धरती...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46309. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329: राम विलास साहुक “पियासल धरती...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46310. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329: राम विलास साहुक “पियासल धरती...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46311. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329: राम विलास साहुक “पियासल धरती...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46312. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329मे राम विलास साहुक “पियासल धरती...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सूखा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4638, सूचकांक पंक्ति 3329मे राम विलास साहुक “पियासल धरती...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सूखा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4639 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: चिंता-चिता...

प्रश्न 46313. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330: राम विलास साहुक “चिंता-चिता...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चिंता-चिता...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिंता-चिता...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3330मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “चिंता-चिता...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46314. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330: राम विलास साहुक “चिंता-चिता...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46315. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330: राम विलास साहुक “चिंता-चिता...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46316. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330: राम विलास साहुक “चिंता-चिता...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चिन्ता-रूपक

उत्तर: घ. चिन्ता-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चिन्ता-रूपक” अछि।

प्रश्न 46317. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330: राम विलास साहुक “चिंता-चिता...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चिन्ता-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिन्ता-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चिन्ता-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46318. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330: राम विलास साहुक “चिंता-चिता...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46319. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330: राम विलास साहुक “चिंता-चिता...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46320. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330: राम विलास साहुक “चिंता-चिता...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46321. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330: राम विलास साहुक “चिंता-चिता...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46322. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330मे राम विलास साहुक “चिंता-चिता...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चिन्ता-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4639, सूचकांक पंक्ति 3330मे राम विलास साहुक “चिंता-चिता...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चिन्ता-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4640 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...

प्रश्न 46323. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331: राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3331मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46324. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331: राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46325. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331: राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46326. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331: राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला-प्रेम

उत्तर: घ. मिथिला-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला-प्रेम” अछि।

प्रश्न 46327. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331: राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46328. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331: राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46329. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331: राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46330. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331: राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46331. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331: राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46332. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331मे राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4640, सूचकांक पंक्ति 3331मे राम विलास साहुक “मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4641 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: ई की केलौं अहाँ...

प्रश्न 46333. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332: राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ई की केलौं अहाँ...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ई की केलौं अहाँ...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3332मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “ई की केलौं अहाँ...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46334. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332: राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46335. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332: राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46336. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332: राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रश्न-स्वर

उत्तर: घ. प्रश्न-स्वर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रश्न-स्वर” अछि।

प्रश्न 46337. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332: राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रश्न-स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रश्न-स्वर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रश्न-स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46338. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332: राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46339. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332: राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46340. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332: राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46341. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332: राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46342. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332मे राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रश्न-स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4641, सूचकांक पंक्ति 3332मे राम विलास साहुक “ई की केलौं अहाँ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रश्न-स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4642 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: केकरा संग खेलब होरी...

प्रश्न 46343. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333: राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. केकरा संग खेलब होरी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. केकरा संग खेलब होरी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3333मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “केकरा संग खेलब होरी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46344. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333: राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46345. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333: राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 46346. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333: राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. होली

उत्तर: घ. होली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “होली” अछि।

प्रश्न 46347. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333: राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. होली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “होली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46348. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333: राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46349. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333: राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46350. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333: राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46351. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333: राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46352. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333मे राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “होली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4642, सूचकांक पंक्ति 3333मे राम विलास साहुक “केकरा संग खेलब होरी...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “होली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4643 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: गाए-माए...

प्रश्न 46353. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334: राम विलास साहुक “गाए-माए...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गाए-माए...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाए-माए...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3334मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “गाए-माए...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46354. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334: राम विलास साहुक “गाए-माए...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46355. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334: राम विलास साहुक “गाए-माए...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46356. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334: राम विलास साहुक “गाए-माए...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गाय-रूपक

उत्तर: घ. गाय-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गाय-रूपक” अछि।

प्रश्न 46357. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334: राम विलास साहुक “गाए-माए...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गाय-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गाय-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गाय-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46358. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334: राम विलास साहुक “गाए-माए...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46359. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334: राम विलास साहुक “गाए-माए...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46360. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334: राम विलास साहुक “गाए-माए...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46361. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334: राम विलास साहुक “गाए-माए...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46362. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334मे राम विलास साहुक “गाए-माए...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गाय-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4643, सूचकांक पंक्ति 3334मे राम विलास साहुक “गाए-माए...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गाय-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4644 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: खेतिहरक जिनगी...

प्रश्न 46363. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335: राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. खेतिहरक जिनगी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. खेतिहरक जिनगी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3335मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “खेतिहरक जिनगी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46364. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335: राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46365. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335: राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46366. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335: राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. किसान जीवन

उत्तर: घ. किसान जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “किसान जीवन” अछि।

प्रश्न 46367. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335: राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. किसान जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किसान जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसान जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46368. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335: राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46369. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335: राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46370. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335: राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46371. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335: राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46372. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335मे राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किसान जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4644, सूचकांक पंक्ति 3335मे राम विलास साहुक “खेतिहरक जिनगी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “किसान जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4645 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: ज्ञानक दीप...

प्रश्न 46373. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336: राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ज्ञानक दीप...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्ञानक दीप...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3336मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “ज्ञानक दीप...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46374. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336: राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46375. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336: राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46376. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336: राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ज्ञान-प्रकाश

उत्तर: घ. ज्ञान-प्रकाश

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ज्ञान-प्रकाश” अछि।

प्रश्न 46377. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336: राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ज्ञान-प्रकाश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्ञान-प्रकाश

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ज्ञान-प्रकाश” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46378. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336: राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46379. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336: राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46380. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336: राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46381. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336: राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46382. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336मे राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ज्ञान-प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4645, सूचकांक पंक्ति 3336मे राम विलास साहुक “ज्ञानक दीप...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ज्ञान-प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4646 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: दुखाएल गंगा...

प्रश्न 46383. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337: राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दुखाएल गंगा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुखाएल गंगा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3337मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “दुखाएल गंगा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46384. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337: राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46385. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337: राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46386. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337: राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गंगा-पीड़ा

उत्तर: घ. गंगा-पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गंगा-पीड़ा” अछि।

प्रश्न 46387. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337: राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गंगा-पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गंगा-पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गंगा-पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46388. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337: राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46389. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337: राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46390. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337: राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46391. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337: राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46392. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337मे राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गंगा-पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4646, सूचकांक पंक्ति 3337मे राम विलास साहुक “दुखाएल गंगा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गंगा-पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4647 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: बेंगक बरियाती...

प्रश्न 46393. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338: राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेंगक बरियाती...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेंगक बरियाती...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3338मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बेंगक बरियाती...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46394. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338: राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46395. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338: राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46396. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338: राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मेंढक-रूपक

उत्तर: घ. मेंढक-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मेंढक-रूपक” अछि।

प्रश्न 46397. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338: राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मेंढक-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मेंढक-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मेंढक-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46398. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338: राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46399. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338: राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46400. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338: राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46401. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338: राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46402. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338मे राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मेंढक-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4647, सूचकांक पंक्ति 3338मे राम विलास साहुक “बेंगक बरियाती...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मेंढक-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4648 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: बलानक बाढ़ि...

प्रश्न 46403. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339: राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बलानक बाढ़ि...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बलानक बाढ़ि...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3339मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बलानक बाढ़ि...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46404. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339: राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46405. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339: राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46406. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339: राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाढ़ि

उत्तर: घ. बाढ़ि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाढ़ि” अछि।

प्रश्न 46407. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339: राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाढ़ि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाढ़ि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाढ़ि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46408. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339: राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46409. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339: राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46410. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339: राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46411. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339: राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46412. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339मे राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4648, सूचकांक पंक्ति 3339मे राम विलास साहुक “बलानक बाढ़ि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4649 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: पानिक बून्न...

प्रश्न 46413. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340: राम विलास साहुक “पानिक बून्न...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पानिक बून्न...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पानिक बून्न...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3340मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “पानिक बून्न...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46414. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340: राम विलास साहुक “पानिक बून्न...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46415. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340: राम विलास साहुक “पानिक बून्न...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46416. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340: राम विलास साहुक “पानिक बून्न...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जल-बूंद

उत्तर: घ. जल-बूंद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जल-बूंद” अछि।

प्रश्न 46417. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340: राम विलास साहुक “पानिक बून्न...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जल-बूंद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जल-बूंद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जल-बूंद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46418. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340: राम विलास साहुक “पानिक बून्न...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46419. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340: राम विलास साहुक “पानिक बून्न...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46420. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340: राम विलास साहुक “पानिक बून्न...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46421. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340: राम विलास साहुक “पानिक बून्न...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46422. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340मे राम विलास साहुक “पानिक बून्न...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जल-बूंद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4649, सूचकांक पंक्ति 3340मे राम विलास साहुक “पानिक बून्न...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जल-बूंद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4650 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: हेराएल भगवान...

प्रश्न 46423. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341: राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हेराएल भगवान...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हेराएल भगवान...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3341मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “हेराएल भगवान...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46424. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341: राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46425. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341: राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46426. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341: राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भगवान-खोज

उत्तर: घ. भगवान-खोज

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भगवान-खोज” अछि।

प्रश्न 46427. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341: राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भगवान-खोज

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भगवान-खोज

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भगवान-खोज” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46428. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341: राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46429. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341: राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46430. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341: राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46431. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341: राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46432. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341मे राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भगवान-खोज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4650, सूचकांक पंक्ति 3341मे राम विलास साहुक “हेराएल भगवान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भगवान-खोज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4651 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: जीबए लेल...

प्रश्न 46433. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342: राम विलास साहुक “जीबए लेल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जीबए लेल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीबए लेल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3342मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “जीबए लेल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46434. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342: राम विलास साहुक “जीबए लेल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46435. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342: राम विलास साहुक “जीबए लेल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46436. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342: राम विलास साहुक “जीबए लेल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-संघर्ष

उत्तर: घ. जीवन-संघर्ष

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-संघर्ष” अछि।

प्रश्न 46437. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342: राम विलास साहुक “जीबए लेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-संघर्ष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-संघर्ष

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46438. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342: राम विलास साहुक “जीबए लेल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46439. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342: राम विलास साहुक “जीबए लेल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46440. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342: राम विलास साहुक “जीबए लेल...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46441. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342: राम विलास साहुक “जीबए लेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46442. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342मे राम विलास साहुक “जीबए लेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4651, सूचकांक पंक्ति 3342मे राम विलास साहुक “जीबए लेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4652 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: चैताबर गीत...

प्रश्न 46443. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343: राम विलास साहुक “चैताबर गीत...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चैताबर गीत...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चैताबर गीत...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3343मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “चैताबर गीत...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46444. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343: राम विलास साहुक “चैताबर गीत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46445. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343: राम विलास साहुक “चैताबर गीत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 46446. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343: राम विलास साहुक “चैताबर गीत...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चेतावनी

उत्तर: घ. चेतावनी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चेतावनी” अछि।

प्रश्न 46447. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343: राम विलास साहुक “चैताबर गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चेतावनी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चेतावनी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चेतावनी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46448. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343: राम विलास साहुक “चैताबर गीत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46449. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343: राम विलास साहुक “चैताबर गीत...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46450. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343: राम विलास साहुक “चैताबर गीत...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46451. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343: राम विलास साहुक “चैताबर गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46452. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343मे राम विलास साहुक “चैताबर गीत...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “चेतावनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4652, सूचकांक पंक्ति 3343मे राम विलास साहुक “चैताबर गीत...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “चेतावनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4653 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: चैती गीत...

प्रश्न 46453. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344: राम विलास साहुक “चैती गीत...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चैती गीत...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चैती गीत...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3344मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “चैती गीत...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46454. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344: राम विलास साहुक “चैती गीत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46455. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344: राम विलास साहुक “चैती गीत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 46456. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344: राम विलास साहुक “चैती गीत...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चैत पर्व

उत्तर: घ. चैत पर्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चैत पर्व” अछि।

प्रश्न 46457. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344: राम विलास साहुक “चैती गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चैत पर्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चैत पर्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चैत पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46458. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344: राम विलास साहुक “चैती गीत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46459. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344: राम विलास साहुक “चैती गीत...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46460. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344: राम विलास साहुक “चैती गीत...”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46461. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344: राम विलास साहुक “चैती गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46462. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344मे राम विलास साहुक “चैती गीत...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “चैत पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4653, सूचकांक पंक्ति 3344मे राम विलास साहुक “चैती गीत...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “चैत पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4654 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: प्रेमक भूखल...

प्रश्न 46463. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345: राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेमक भूखल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेमक भूखल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3345मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “प्रेमक भूखल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46464. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345: राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46465. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345: राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46466. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345: राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-क्षुधा

उत्तर: घ. प्रेम-क्षुधा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-क्षुधा” अछि।

प्रश्न 46467. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345: राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-क्षुधा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-क्षुधा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-क्षुधा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46468. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345: राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46469. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345: राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46470. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345: राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46471. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345: राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46472. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345मे राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-क्षुधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4654, सूचकांक पंक्ति 3345मे राम विलास साहुक “प्रेमक भूखल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-क्षुधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4655 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: मरूआक मान...

प्रश्न 46473. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346: राम विलास साहुक “मरूआक मान...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मरूआक मान...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मरूआक मान...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3346मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “मरूआक मान...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46474. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346: राम विलास साहुक “मरूआक मान...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46475. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346: राम विलास साहुक “मरूआक मान...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46476. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346: राम विलास साहुक “मरूआक मान...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मरुआ-रूपक

उत्तर: घ. मरुआ-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मरुआ-रूपक” अछि।

प्रश्न 46477. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346: राम विलास साहुक “मरूआक मान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मरुआ-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मरुआ-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मरुआ-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46478. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346: राम विलास साहुक “मरूआक मान...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46479. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346: राम विलास साहुक “मरूआक मान...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46480. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346: राम विलास साहुक “मरूआक मान...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46481. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346: राम विलास साहुक “मरूआक मान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46482. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346मे राम विलास साहुक “मरूआक मान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मरुआ-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4655, सूचकांक पंक्ति 3346मे राम विलास साहुक “मरूआक मान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मरुआ-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4656 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: अरमान...

प्रश्न 46483. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347: राम विलास साहुक “अरमान...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अरमान...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अरमान...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3347मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “अरमान...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46484. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347: राम विलास साहुक “अरमान...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46485. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347: राम विलास साहुक “अरमान...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46486. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347: राम विलास साहुक “अरमान...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. इच्छा

उत्तर: घ. इच्छा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “इच्छा” अछि।

प्रश्न 46487. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347: राम विलास साहुक “अरमान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. इच्छा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. इच्छा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इच्छा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46488. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347: राम विलास साहुक “अरमान...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46489. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347: राम विलास साहुक “अरमान...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46490. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347: राम विलास साहुक “अरमान...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46491. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347: राम विलास साहुक “अरमान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46492. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347मे राम विलास साहुक “अरमान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “इच्छा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4656, सूचकांक पंक्ति 3347मे राम विलास साहुक “अरमान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “इच्छा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4657 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: भारत माता...

प्रश्न 46493. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348: राम विलास साहुक “भारत माता...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भारत माता...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भारत माता...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3348मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “भारत माता...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46494. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348: राम विलास साहुक “भारत माता...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46495. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348: राम विलास साहुक “भारत माता...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46496. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348: राम विलास साहुक “भारत माता...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. देशभक्ति

उत्तर: घ. देशभक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “देशभक्ति” अछि।

प्रश्न 46497. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348: राम विलास साहुक “भारत माता...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. देशभक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. देशभक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देशभक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46498. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348: राम विलास साहुक “भारत माता...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46499. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348: राम विलास साहुक “भारत माता...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46500. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348: राम विलास साहुक “भारत माता...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46501. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348: राम विलास साहुक “भारत माता...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46502. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348मे राम विलास साहुक “भारत माता...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4657, सूचकांक पंक्ति 3348मे राम विलास साहुक “भारत माता...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4658 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: परदेशी...

प्रश्न 46503. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349: राम विलास साहुक “परदेशी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परदेशी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परदेशी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3349मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “परदेशी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46504. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349: राम विलास साहुक “परदेशी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46505. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349: राम विलास साहुक “परदेशी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46506. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349: राम विलास साहुक “परदेशी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी

उत्तर: घ. प्रवासी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी” अछि।

प्रश्न 46507. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349: राम विलास साहुक “परदेशी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46508. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349: राम विलास साहुक “परदेशी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46509. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349: राम विलास साहुक “परदेशी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46510. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349: राम विलास साहुक “परदेशी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46511. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349: राम विलास साहुक “परदेशी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46512. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349मे राम विलास साहुक “परदेशी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4658, सूचकांक पंक्ति 3349मे राम विलास साहुक “परदेशी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4659 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: मोनक बात...

प्रश्न 46513. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350: राम विलास साहुक “मोनक बात...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मोनक बात...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोनक बात...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3350मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “मोनक बात...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46514. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350: राम विलास साहुक “मोनक बात...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46515. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350: राम विलास साहुक “मोनक बात...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46516. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350: राम विलास साहुक “मोनक बात...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मन-की बात

उत्तर: घ. मन-की बात

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मन-की बात” अछि।

प्रश्न 46517. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350: राम विलास साहुक “मोनक बात...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मन-की बात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मन-की बात

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मन-की बात” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46518. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350: राम विलास साहुक “मोनक बात...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46519. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350: राम विलास साहुक “मोनक बात...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46520. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350: राम विलास साहुक “मोनक बात...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46521. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350: राम विलास साहुक “मोनक बात...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46522. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350मे राम विलास साहुक “मोनक बात...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मन-की बात” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4659, सूचकांक पंक्ति 3350मे राम विलास साहुक “मोनक बात...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मन-की बात” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4660 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: की कहब...

प्रश्न 46523. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351: राम विलास साहुक “की कहब...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. की कहब...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. की कहब...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3351मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “की कहब...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46524. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351: राम विलास साहुक “की कहब...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46525. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351: राम विलास साहुक “की कहब...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46526. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351: राम विलास साहुक “की कहब...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मौन-द्वन्द्व

उत्तर: घ. मौन-द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मौन-द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 46527. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351: राम विलास साहुक “की कहब...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मौन-द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मौन-द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मौन-द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46528. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351: राम विलास साहुक “की कहब...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46529. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351: राम विलास साहुक “की कहब...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46530. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351: राम विलास साहुक “की कहब...”कैँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46531. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351: राम विलास साहुक “की कहब...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46532. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351मे राम विलास साहुक “की कहब...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मौन-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4660, सूचकांक पंक्ति 3351मे राम विलास साहुक “की कहब...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मौन-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4661 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: धनरोपनी...

प्रश्न 46533. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352: राम विलास साहुक “धनरोपनी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. धनरोपनी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धनरोपनी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3352मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “धनरोपनी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46534. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352: राम विलास साहुक “धनरोपनी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46535. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352: राम विलास साहुक “धनरोपनी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46536. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352: राम विलास साहुक “धनरोपनी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धान-रोपाई

उत्तर: घ. धान-रोपाई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धान-रोपाई” अछि।

प्रश्न 46537. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352: राम विलास साहुक “धनरोपनी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धान-रोपाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धान-रोपाई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धान-रोपाई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46538. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352: राम विलास साहुक “धनरोपनी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46539. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352: राम विलास साहुक “धनरोपनी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46540. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352: राम विलास साहुक “धनरोपनी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46541. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352: राम विलास साहुक “धनरोपनी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46542. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352मे राम विलास साहुक “धनरोपनी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धान-रोपाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4661, सूचकांक पंक्ति 3352मे राम विलास साहुक “धनरोपनी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धान-रोपाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4662 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: लफंगा...

प्रश्न 46543. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353: राम विलास साहुक “लफंगा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लफंगा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लफंगा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3353मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “लफंगा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46544. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353: राम विलास साहुक “लफंगा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46545. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353: राम विलास साहुक “लफंगा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46546. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353: राम विलास साहुक “लफंगा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आवारा-व्यंग्य

उत्तर: घ. आवारा-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आवारा-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 46547. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353: राम विलास साहुक “लफंगा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आवारा-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आवारा-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आवारा-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46548. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353: राम विलास साहुक “लफंगा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46549. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353: राम विलास साहुक “लफंगा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46550. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353: राम विलास साहुक “लफंगा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46551. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353: राम विलास साहुक “लफंगा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46552. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353मे राम विलास साहुक “लफंगा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आवारा-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4662, सूचकांक पंक्ति 3353मे राम विलास साहुक “लफंगा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आवारा-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4663 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: बेरोजगारी...

प्रश्न 46553. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354: राम विलास साहुक “बेरोजगारी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बेरोजगारी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेरोजगारी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3354मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बेरोजगारी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46554. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354: राम विलास साहुक “बेरोजगारी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46555. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354: राम विलास साहुक “बेरोजगारी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46556. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354: राम विलास साहुक “बेरोजगारी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बेरोज़गारी

उत्तर: घ. बेरोज़गारी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बेरोज़गारी” अछि।

प्रश्न 46557. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354: राम विलास साहुक “बेरोजगारी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बेरोज़गारी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बेरोज़गारी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बेरोज़गारी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46558. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354: राम विलास साहुक “बेरोजगारी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46559. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354: राम विलास साहुक “बेरोजगारी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46560. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354: राम विलास साहुक “बेरोजगारी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46561. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354: राम विलास साहुक “बेरोजगारी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46562. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354मे राम विलास साहुक “बेरोजगारी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेरोज़गारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4663, सूचकांक पंक्ति 3354मे राम विलास साहुक “बेरोजगारी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बेरोज़गारी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4664 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: रूपैआक ढेरी...

प्रश्न 46563. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355: राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रूपैआक ढेरी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रूपैआक ढेरी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3355मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “रूपैआक ढेरी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46564. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355: राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46565. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355: राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46566. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355: राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धन-दम्भ

उत्तर: घ. धन-दम्भ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धन-दम्भ” अछि।

प्रश्न 46567. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355: राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धन-दम्भ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धन-दम्भ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धन-दम्भ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46568. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355: राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46569. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355: राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46570. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355: राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46571. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355: राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46572. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355मे राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धन-दम्भ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4664, सूचकांक पंक्ति 3355मे राम विलास साहुक “रूपैआक ढेरी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धन-दम्भ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4665 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: भ्रष्टाचारी...

प्रश्न 46573. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356: राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भ्रष्टाचारी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचारी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3356मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “भ्रष्टाचारी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46574. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356: राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46575. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356: राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46576. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356: राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भ्रष्टाचार

उत्तर: घ. भ्रष्टाचार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार” अछि।

प्रश्न 46577. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356: राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भ्रष्टाचार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भ्रष्टाचार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46578. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356: राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46579. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356: राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46580. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356: राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46581. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356: राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46582. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356मे राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4665, सूचकांक पंक्ति 3356मे राम विलास साहुक “भ्रष्टाचारी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4666 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: आएल वसन्त...

प्रश्न 46583. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357: राम विलास साहुक “आएल वसन्त...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आएल वसन्त...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आएल वसन्त...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3357मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “आएल वसन्त...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46584. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357: राम विलास साहुक “आएल वसन्त...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46585. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357: राम विलास साहुक “आएल वसन्त...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46586. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357: राम विलास साहुक “आएल वसन्त...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वसन्तागम

उत्तर: घ. वसन्तागम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वसन्तागम” अछि।

प्रश्न 46587. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357: राम विलास साहुक “आएल वसन्त...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वसन्तागम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वसन्तागम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वसन्तागम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46588. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357: राम विलास साहुक “आएल वसन्त...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46589. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357: राम विलास साहुक “आएल वसन्त...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46590. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357: राम विलास साहुक “आएल वसन्त...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46591. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357: राम विलास साहुक “आएल वसन्त...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46592. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357मे राम विलास साहुक “आएल वसन्त...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वसन्तागम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4666, सूचकांक पंक्ति 3357मे राम विलास साहुक “आएल वसन्त...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वसन्तागम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4667 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: अप्पन-पराया...

प्रश्न 46593. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358: राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अप्पन-पराया...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अप्पन-पराया...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3358मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “अप्पन-पराया...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46594. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358: राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46595. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358: राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46596. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358: राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अपनापन-द्वन्द्व

उत्तर: घ. अपनापन-द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अपनापन-द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 46597. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358: राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अपनापन-द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपनापन-द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अपनापन-द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46598. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358: राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46599. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358: राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46600. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358: राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46601. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358: राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46602. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358मे राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अपनापन-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4667, सूचकांक पंक्ति 3358मे राम विलास साहुक “अप्पन-पराया...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अपनापन-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4668 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: बाट बटोही...

प्रश्न 46603. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359: राम विलास साहुक “बाट बटोही...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाट बटोही...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाट बटोही...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3359मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बाट बटोही...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46604. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359: राम विलास साहुक “बाट बटोही...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46605. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359: राम विलास साहुक “बाट बटोही...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46606. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359: राम विलास साहुक “बाट बटोही...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पथिक

उत्तर: घ. पथिक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पथिक” अछि।

प्रश्न 46607. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359: राम विलास साहुक “बाट बटोही...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पथिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पथिक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पथिक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46608. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359: राम विलास साहुक “बाट बटोही...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46609. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359: राम विलास साहुक “बाट बटोही...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46610. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359: राम विलास साहुक “बाट बटोही...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46611. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359: राम विलास साहुक “बाट बटोही...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46612. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359मे राम विलास साहुक “बाट बटोही...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पथिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4668, सूचकांक पंक्ति 3359मे राम विलास साहुक “बाट बटोही...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पथिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4669 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: हाटक चाउर...

प्रश्न 46613. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360: राम विलास साहुक “हाटक चाउर...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाटक चाउर...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाटक चाउर...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3360मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “हाटक चाउर...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46614. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360: राम विलास साहुक “हाटक चाउर...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46615. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360: राम विलास साहुक “हाटक चाउर...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46616. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360: राम विलास साहुक “हाटक चाउर...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हाट-बाजार

उत्तर: घ. हाट-बाजार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हाट-बाजार” अछि।

प्रश्न 46617. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360: राम विलास साहुक “हाटक चाउर...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हाट-बाजार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाट-बाजार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हाट-बाजार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46618. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360: राम विलास साहुक “हाटक चाउर...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46619. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360: राम विलास साहुक “हाटक चाउर...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46620. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360: राम विलास साहुक “हाटक चाउर...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46621. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360: राम विलास साहुक “हाटक चाउर...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46622. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360मे राम विलास साहुक “हाटक चाउर...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हाट-बाजार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4669, सूचकांक पंक्ति 3360मे राम विलास साहुक “हाटक चाउर...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हाट-बाजार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4670 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: बाटक पानि...

प्रश्न 46623. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361: राम विलास साहुक “बाटक पानि...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बाटक पानि...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाटक पानि...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3361मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बाटक पानि...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46624. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361: राम विलास साहुक “बाटक पानि...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46625. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361: राम विलास साहुक “बाटक पानि...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46626. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361: राम विलास साहुक “बाटक पानि...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जल-पथ

उत्तर: घ. जल-पथ

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जल-पथ” अछि।

प्रश्न 46627. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361: राम विलास साहुक “बाटक पानि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जल-पथ

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जल-पथ

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जल-पथ” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46628. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361: राम विलास साहुक “बाटक पानि...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46629. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361: राम विलास साहुक “बाटक पानि...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46630. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361: राम विलास साहुक “बाटक पानि...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46631. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361: राम विलास साहुक “बाटक पानि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46632. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361मे राम विलास साहुक “बाटक पानि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जल-पथ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4670, सूचकांक पंक्ति 3361मे राम विलास साहुक “बाटक पानि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जल-पथ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4671 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: ज्ञान बाँटैत चलू...

प्रश्न 46633. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362: राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. ज्ञान बाँटैत चलू...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्ञान बाँटैत चलू...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3362मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “ज्ञान बाँटैत चलू...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46634. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362: राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46635. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362: राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46636. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362: राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ज्ञान-दान

उत्तर: घ. ज्ञान-दान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ज्ञान-दान” अछि।

प्रश्न 46637. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362: राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ज्ञान-दान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ज्ञान-दान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ज्ञान-दान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46638. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362: राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46639. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362: राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46640. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362: राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46641. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362: राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46642. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362मे राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ज्ञान-दान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4671, सूचकांक पंक्ति 3362मे राम विलास साहुक “ज्ञान बाँटैत चलू...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ज्ञान-दान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4672 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: प्रेम आकि...

प्रश्न 46643. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363: राम विलास साहुक “प्रेम आकि...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रेम आकि...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम आकि...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3363मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “प्रेम आकि...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46644. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363: राम विलास साहुक “प्रेम आकि...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46645. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363: राम विलास साहुक “प्रेम आकि...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46646. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363: राम विलास साहुक “प्रेम आकि...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-अग्नि

उत्तर: घ. प्रेम-अग्नि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-अग्नि” अछि।

प्रश्न 46647. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363: राम विलास साहुक “प्रेम आकि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-अग्नि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-अग्नि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-अग्नि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46648. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363: राम विलास साहुक “प्रेम आकि...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46649. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363: राम विलास साहुक “प्रेम आकि...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46650. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363: राम विलास साहुक “प्रेम आकि...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46651. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363: राम विलास साहुक “प्रेम आकि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46652. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363मे राम विलास साहुक “प्रेम आकि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-अग्नि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4672, सूचकांक पंक्ति 3363मे राम विलास साहुक “प्रेम आकि...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-अग्नि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4673 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: पैसा कालक पहरा...

प्रश्न 46653. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364: राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पैसा कालक पहरा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पैसा कालक पहरा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3364मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “पैसा कालक पहरा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46654. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364: राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46655. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364: राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46656. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364: राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धन-पहरा

उत्तर: घ. धन-पहरा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धन-पहरा” अछि।

प्रश्न 46657. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364: राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धन-पहरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धन-पहरा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धन-पहरा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46658. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364: राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46659. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364: राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46660. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364: राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...”कैँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46661. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364: राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46662. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364मे राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धन-पहरा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4673, सूचकांक पंक्ति 3364मे राम विलास साहुक “पैसा कालक पहरा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धन-पहरा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4674 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: पियासल मन...

प्रश्न 46663. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365: राम विलास साहुक “पियासल मन...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पियासल मन...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पियासल मन...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3365मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “पियासल मन...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46664. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365: राम विलास साहुक “पियासल मन...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46665. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365: राम विलास साहुक “पियासल मन...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46666. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365: राम विलास साहुक “पियासल मन...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मन-प्यास

उत्तर: घ. मन-प्यास

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मन-प्यास” अछि।

प्रश्न 46667. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365: राम विलास साहुक “पियासल मन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मन-प्यास

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मन-प्यास

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मन-प्यास” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46668. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365: राम विलास साहुक “पियासल मन...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46669. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365: राम विलास साहुक “पियासल मन...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46670. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365: राम विलास साहुक “पियासल मन...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46671. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365: राम विलास साहुक “पियासल मन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46672. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365मे राम विलास साहुक “पियासल मन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मन-प्यास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4674, सूचकांक पंक्ति 3365मे राम विलास साहुक “पियासल मन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मन-प्यास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4675 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: दहेजक खेल...

प्रश्न 46673. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366: राम विलास साहुक “दहेजक खेल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दहेजक खेल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेजक खेल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3366मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “दहेजक खेल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46674. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366: राम विलास साहुक “दहेजक खेल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46675. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366: राम विलास साहुक “दहेजक खेल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46676. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366: राम विलास साहुक “दहेजक खेल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दहेज-आलोचना

उत्तर: घ. दहेज-आलोचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज-आलोचना” अछि।

प्रश्न 46677. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366: राम विलास साहुक “दहेजक खेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दहेज-आलोचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दहेज-आलोचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज-आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46678. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366: राम विलास साहुक “दहेजक खेल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46679. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366: राम विलास साहुक “दहेजक खेल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46680. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366: राम विलास साहुक “दहेजक खेल...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46681. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366: राम विलास साहुक “दहेजक खेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46682. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366मे राम विलास साहुक “दहेजक खेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दहेज-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4675, सूचकांक पंक्ति 3366मे राम विलास साहुक “दहेजक खेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दहेज-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4676 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: घर परदेश...

प्रश्न 46683. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367: राम विलास साहुक “घर परदेश...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घर परदेश...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घर परदेश...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3367मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “घर परदेश...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46684. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367: राम विलास साहुक “घर परदेश...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46685. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367: राम विलास साहुक “घर परदेश...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46686. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367: राम विलास साहुक “घर परदेश...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवास-पीड़ा

उत्तर: घ. प्रवास-पीड़ा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवास-पीड़ा” अछि।

प्रश्न 46687. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367: राम विलास साहुक “घर परदेश...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवास-पीड़ा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवास-पीड़ा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवास-पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46688. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367: राम विलास साहुक “घर परदेश...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46689. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367: राम विलास साहुक “घर परदेश...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46690. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367: राम विलास साहुक “घर परदेश...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46691. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367: राम विलास साहुक “घर परदेश...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46692. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367मे राम विलास साहुक “घर परदेश...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवास-पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4676, सूचकांक पंक्ति 3367मे राम विलास साहुक “घर परदेश...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवास-पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4677 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: गहुमक कटनी-दौनी...

प्रश्न 46693. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368: राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गहुमक कटनी-दौनी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गहुमक कटनी-दौनी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3368मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “गहुमक कटनी-दौनी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46694. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368: राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46695. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368: राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46696. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368: राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गेहूँ-कटाई

उत्तर: घ. गेहूँ-कटाई

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गेहूँ-कटाई” अछि।

प्रश्न 46697. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368: राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गेहूँ-कटाई

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गेहूँ-कटाई

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गेहूँ-कटाई” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46698. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368: राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46699. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368: राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46700. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368: राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46701. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368: राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46702. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368मे राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गेहूँ-कटाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4677, सूचकांक पंक्ति 3368मे राम विलास साहुक “गहुमक कटनी-दौनी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गेहूँ-कटाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4678 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: बिआह की थिक?

प्रश्न 46703. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369: राम विलास साहुक “बिआह की थिक?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिआह की थिक?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिआह की थिक?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3369मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बिआह की थिक?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46704. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369: राम विलास साहुक “बिआह की थिक?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46705. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369: राम विलास साहुक “बिआह की थिक?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46706. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369: राम विलास साहुक “बिआह की थिक?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विवाह-प्रश्न

उत्तर: घ. विवाह-प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह-प्रश्न” अछि।

प्रश्न 46707. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369: राम विलास साहुक “बिआह की थिक?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विवाह-प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विवाह-प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह-प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46708. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369: राम विलास साहुक “बिआह की थिक?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46709. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369: राम विलास साहुक “बिआह की थिक?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46710. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369: राम विलास साहुक “बिआह की थिक?”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46711. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369: राम विलास साहुक “बिआह की थिक?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46712. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369मे राम विलास साहुक “बिआह की थिक?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विवाह-प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4678, सूचकांक पंक्ति 3369मे राम विलास साहुक “बिआह की थिक?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विवाह-प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4679 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: आजुक दिन...

प्रश्न 46713. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370: राम विलास साहुक “आजुक दिन...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आजुक दिन...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आजुक दिन...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3370मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “आजुक दिन...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46714. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370: राम विलास साहुक “आजुक दिन...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46715. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370: राम विलास साहुक “आजुक दिन...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46716. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370: राम विलास साहुक “आजुक दिन...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वर्तमान-चित्रण

उत्तर: घ. वर्तमान-चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्तमान-चित्रण” अछि।

प्रश्न 46717. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370: राम विलास साहुक “आजुक दिन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वर्तमान-चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वर्तमान-चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्तमान-चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46718. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370: राम विलास साहुक “आजुक दिन...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46719. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370: राम विलास साहुक “आजुक दिन...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46720. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370: राम विलास साहुक “आजुक दिन...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46721. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370: राम विलास साहुक “आजुक दिन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46722. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370मे राम विलास साहुक “आजुक दिन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्तमान-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4679, सूचकांक पंक्ति 3370मे राम विलास साहुक “आजुक दिन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्तमान-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4680 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: पुत्र कुपुत्र...

प्रश्न 46723. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371: राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पुत्र कुपुत्र...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुत्र कुपुत्र...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3371मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “पुत्र कुपुत्र...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46724. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371: राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46725. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371: राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46726. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371: राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुत्र-द्वन्द्व

उत्तर: घ. पुत्र-द्वन्द्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुत्र-द्वन्द्व” अछि।

प्रश्न 46727. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371: राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुत्र-द्वन्द्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुत्र-द्वन्द्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुत्र-द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46728. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371: राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46729. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371: राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46730. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371: राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46731. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371: राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46732. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371मे राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पुत्र-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4680, सूचकांक पंक्ति 3371मे राम विलास साहुक “पुत्र कुपुत्र...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पुत्र-द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4681 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: कतेक दुख काटब...

प्रश्न 46733. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372: राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कतेक दुख काटब...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कतेक दुख काटब...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3372मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “कतेक दुख काटब...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46734. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372: राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46735. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372: राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46736. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372: राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. दुःख-बोध

उत्तर: घ. दुःख-बोध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “दुःख-बोध” अछि।

प्रश्न 46737. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372: राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. दुःख-बोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुःख-बोध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दुःख-बोध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46738. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372: राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46739. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372: राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46740. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372: राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46741. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372: राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46742. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372मे राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दुःख-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4681, सूचकांक पंक्ति 3372मे राम विलास साहुक “कतेक दुख काटब...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दुःख-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4682 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: हरि हे...

प्रश्न 46743. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373: राम विलास साहुक “हरि हे...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हरि हे...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हरि हे...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3373मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “हरि हे...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46744. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373: राम विलास साहुक “हरि हे...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46745. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373: राम विलास साहुक “हरि हे...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति” अछि।

प्रश्न 46746. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373: राम विलास साहुक “हरि हे...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हरि-पुकार

उत्तर: घ. हरि-पुकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हरि-पुकार” अछि।

प्रश्न 46747. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373: राम विलास साहुक “हरि हे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हरि-पुकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हरि-पुकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हरि-पुकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46748. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373: राम विलास साहुक “हरि हे...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46749. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373: राम विलास साहुक “हरि हे...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46750. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373: राम विलास साहुक “हरि हे...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्तिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्तिक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46751. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373: राम विलास साहुक “हरि हे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46752. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373मे राम विलास साहुक “हरि हे...” प्रविष्टि पद्य, भक्ति आ “हरि-पुकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4682, सूचकांक पंक्ति 3373मे राम विलास साहुक “हरि हे...” प्रविष्टि पद्य, भक्ति आ “हरि-पुकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4683 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: बारहो मास...

प्रश्न 46753. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374: राम विलास साहुक “बारहो मास...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बारहो मास...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बारहो मास...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3374मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बारहो मास...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46754. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374: राम विलास साहुक “बारहो मास...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46755. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374: राम विलास साहुक “बारहो मास...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46756. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374: राम विलास साहुक “बारहो मास...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बारहमासा

उत्तर: घ. बारहमासा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बारहमासा” अछि।

प्रश्न 46757. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374: राम विलास साहुक “बारहो मास...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बारहमासा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बारहमासा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बारहमासा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46758. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374: राम विलास साहुक “बारहो मास...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46759. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374: राम विलास साहुक “बारहो मास...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46760. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374: राम विलास साहुक “बारहो मास...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46761. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374: राम विलास साहुक “बारहो मास...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46762. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374मे राम विलास साहुक “बारहो मास...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बारहमासा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4683, सूचकांक पंक्ति 3374मे राम विलास साहुक “बारहो मास...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बारहमासा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4684 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: सड़क बीच नाला...

प्रश्न 46763. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375: राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सड़क बीच नाला...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सड़क बीच नाला...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3375मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “सड़क बीच नाला...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46764. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375: राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46765. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375: राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46766. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375: राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नाला-व्यंग्य

उत्तर: घ. नाला-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नाला-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 46767. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375: राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नाला-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाला-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाला-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46768. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375: राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46769. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375: राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46770. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375: राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46771. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375: राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46772. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375मे राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नाला-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4684, सूचकांक पंक्ति 3375मे राम विलास साहुक “सड़क बीच नाला...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नाला-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4685 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: आँखि रहितो आन्हर...

प्रश्न 46773. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376: राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आँखि रहितो आन्हर...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आँखि रहितो आन्हर...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3376मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “आँखि रहितो आन्हर...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46774. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376: राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46775. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376: राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46776. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376: राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अंधता-व्यंग्य

उत्तर: घ. अंधता-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अंधता-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 46777. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376: राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अंधता-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अंधता-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अंधता-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46778. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376: राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46779. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376: राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46780. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376: राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...”कें विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46781. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376: राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46782. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376मे राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अंधता-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4685, सूचकांक पंक्ति 3376मे राम विलास साहुक “आँखि रहितो आन्हर...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अंधता-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4686 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: भाग भरोसे...

प्रश्न 46783. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377: राम विलास साहुक “भाग भरोसे...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाग भरोसे...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाग भरोसे...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3377मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “भाग भरोसे...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46784. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377: राम विलास साहुक “भाग भरोसे...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46785. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377: राम विलास साहुक “भाग भरोसे...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46786. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377: राम विलास साहुक “भाग भरोसे...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भाग्य-भरोसा

उत्तर: घ. भाग्य-भरोसा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भाग्य-भरोसा” अछि।

प्रश्न 46787. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377: राम विलास साहुक “भाग भरोसे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भाग्य-भरोसा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाग्य-भरोसा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाग्य-भरोसा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46788. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377: राम विलास साहुक “भाग भरोसे...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46789. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377: राम विलास साहुक “भाग भरोसे...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46790. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377: राम विलास साहुक “भाग भरोसे...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46791. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377: राम विलास साहुक “भाग भरोसे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46792. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377मे राम विलास साहुक “भाग भरोसे...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाग्य-भरोसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4686, सूचकांक पंक्ति 3377मे राम विलास साहुक “भाग भरोसे...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाग्य-भरोसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4687 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: फूल-पत्ता...

प्रश्न 46793. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378: राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. फूल-पत्ता...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फूल-पत्ता...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3378मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “फूल-पत्ता...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46794. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378: राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46795. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378: राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46796. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378: राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रकृति-सौन्दर्य

उत्तर: घ. प्रकृति-सौन्दर्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-सौन्दर्य” अछि।

प्रश्न 46797. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378: राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रकृति-सौन्दर्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रकृति-सौन्दर्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-सौन्दर्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46798. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378: राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46799. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378: राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46800. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378: राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46801. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378: राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46802. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378मे राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति-सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4687, सूचकांक पंक्ति 3378मे राम विलास साहुक “फूल-पत्ता...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रकृति-सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4688 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: भदबा बाबा...

प्रश्न 46803. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379: राम विलास साहुक “भदबा बाबा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भदबा बाबा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भदबा बाबा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3379मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “भदबा बाबा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46804. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379: राम विलास साहुक “भदबा बाबा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46805. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379: राम विलास साहुक “भदबा बाबा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46806. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379: राम विलास साहुक “भदबा बाबा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साधु-रूपक

उत्तर: घ. साधु-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साधु-रूपक” अछि।

प्रश्न 46807. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379: राम विलास साहुक “भदबा बाबा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साधु-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साधु-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साधु-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46808. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379: राम विलास साहुक “भदबा बाबा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46809. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379: राम विलास साहुक “भदबा बाबा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46810. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379: राम विलास साहुक “भदबा बाबा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46811. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379: राम विलास साहुक “भदबा बाबा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46812. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379मे राम विलास साहुक “भदबा बाबा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साधु-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4688, सूचकांक पंक्ति 3379मे राम विलास साहुक “भदबा बाबा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साधु-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4689 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: बले फौदारी...

प्रश्न 46813. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380: राम विलास साहुक “बले फौदारी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बले फौदारी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बले फौदारी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3380मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बले फौदारी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46814. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380: राम विलास साहुक “बले फौदारी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46815. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380: राम विलास साहुक “बले फौदारी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46816. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380: राम विलास साहुक “बले फौदारी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. फौजदारी-व्यंग्य

उत्तर: घ. फौजदारी-व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “फौजदारी-व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 46817. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380: राम विलास साहुक “बले फौदारी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. फौजदारी-व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. फौजदारी-व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “फौजदारी-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46818. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380: राम विलास साहुक “बले फौदारी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46819. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380: राम विलास साहुक “बले फौदारी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46820. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380: राम विलास साहुक “बले फौदारी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46821. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380: राम विलास साहुक “बले फौदारी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46822. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380मे राम विलास साहुक “बले फौदारी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “फौजदारी-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4689, सूचकांक पंक्ति 3380मे राम विलास साहुक “बले फौदारी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “फौजदारी-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4690 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: केकरा ले कानब...

प्रश्न 46823. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381: राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. केकरा ले कानब...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. केकरा ले कानब...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3381मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “केकरा ले कानब...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46824. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381: राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46825. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381: राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46826. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381: राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुनवाई-प्रश्न

उत्तर: घ. सुनवाई-प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुनवाई-प्रश्न” अछि।

प्रश्न 46827. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381: राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुनवाई-प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुनवाई-प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुनवाई-प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46828. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381: राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46829. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381: राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46830. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381: राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46831. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381: राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46832. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381मे राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सुनवाई-प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4690, सूचकांक पंक्ति 3381मे राम विलास साहुक “केकरा ले कानब...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सुनवाई-प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4691 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: परिवर्त्तन...

प्रश्न 46833. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382: राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परिवर्त्तन...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवर्त्तन...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3382मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “परिवर्त्तन...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46834. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382: राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46835. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382: राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46836. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382: राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. परिवर्तन-आशा

उत्तर: घ. परिवर्तन-आशा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवर्तन-आशा” अछि।

प्रश्न 46837. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382: राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. परिवर्तन-आशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिवर्तन-आशा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवर्तन-आशा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46838. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382: राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46839. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382: राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46840. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382: राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46841. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382: राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46842. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382मे राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परिवर्तन-आशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4691, सूचकांक पंक्ति 3382मे राम विलास साहुक “परिवर्त्तन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परिवर्तन-आशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4692 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: माइयक ममता...

प्रश्न 46843. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383: राम विलास साहुक “माइयक ममता...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माइयक ममता...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माइयक ममता...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3383मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “माइयक ममता...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46844. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383: राम विलास साहुक “माइयक ममता...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46845. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383: राम विलास साहुक “माइयक ममता...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46846. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383: राम विलास साहुक “माइयक ममता...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ममता

उत्तर: घ. ममता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ममता” अछि।

प्रश्न 46847. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383: राम विलास साहुक “माइयक ममता...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ममता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ममता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ममता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46848. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383: राम विलास साहुक “माइयक ममता...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46849. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383: राम विलास साहुक “माइयक ममता...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46850. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383: राम विलास साहुक “माइयक ममता...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46851. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383: राम विलास साहुक “माइयक ममता...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46852. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383मे राम विलास साहुक “माइयक ममता...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ममता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4692, सूचकांक पंक्ति 3383मे राम विलास साहुक “माइयक ममता...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ममता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4693 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: परदेशिया...

प्रश्न 46853. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384: राम विलास साहुक “परदेशिया...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परदेशिया...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परदेशिया...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3384मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “परदेशिया...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46854. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384: राम विलास साहुक “परदेशिया...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46855. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384: राम विलास साहुक “परदेशिया...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46856. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384: राम विलास साहुक “परदेशिया...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी

उत्तर: घ. प्रवासी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी” अछि।

प्रश्न 46857. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384: राम विलास साहुक “परदेशिया...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46858. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384: राम विलास साहुक “परदेशिया...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46859. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384: राम विलास साहुक “परदेशिया...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46860. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384: राम विलास साहुक “परदेशिया...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46861. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384: राम विलास साहुक “परदेशिया...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46862. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384मे राम विलास साहुक “परदेशिया...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4693, सूचकांक पंक्ति 3384मे राम विलास साहुक “परदेशिया...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4694 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: पाहुन...

प्रश्न 46863. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385: राम विलास साहुक “पाहुन...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पाहुन...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पाहुन...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3385मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “पाहुन...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46864. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385: राम विलास साहुक “पाहुन...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46865. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385: राम विलास साहुक “पाहुन...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46866. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385: राम विलास साहुक “पाहुन...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अतिथि

उत्तर: घ. अतिथि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अतिथि” अछि।

प्रश्न 46867. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385: राम विलास साहुक “पाहुन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अतिथि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अतिथि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अतिथि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46868. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385: राम विलास साहुक “पाहुन...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46869. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385: राम विलास साहुक “पाहुन...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46870. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385: राम विलास साहुक “पाहुन...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46871. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385: राम विलास साहुक “पाहुन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46872. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385मे राम विलास साहुक “पाहुन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अतिथि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4694, सूचकांक पंक्ति 3385मे राम विलास साहुक “पाहुन...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अतिथि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4695 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: धरतीक सुख...

प्रश्न 46873. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386: राम विलास साहुक “धरतीक सुख...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. धरतीक सुख...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धरतीक सुख...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3386मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “धरतीक सुख...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46874. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386: राम विलास साहुक “धरतीक सुख...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46875. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386: राम विलास साहुक “धरतीक सुख...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46876. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386: राम विलास साहुक “धरतीक सुख...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धरती-सुख

उत्तर: घ. धरती-सुख

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धरती-सुख” अछि।

प्रश्न 46877. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386: राम विलास साहुक “धरतीक सुख...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धरती-सुख

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धरती-सुख

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धरती-सुख” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46878. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386: राम विलास साहुक “धरतीक सुख...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46879. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386: राम विलास साहुक “धरतीक सुख...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46880. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386: राम विलास साहुक “धरतीक सुख...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46881. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386: राम विलास साहुक “धरतीक सुख...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46882. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386मे राम विलास साहुक “धरतीक सुख...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धरती-सुख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4695, सूचकांक पंक्ति 3386मे राम विलास साहुक “धरतीक सुख...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धरती-सुख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4696 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: साओनक राति...

प्रश्न 46883. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387: राम विलास साहुक “साओनक राति...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साओनक राति...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साओनक राति...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3387मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “साओनक राति...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46884. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387: राम विलास साहुक “साओनक राति...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46885. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387: राम विलास साहुक “साओनक राति...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46886. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387: राम विलास साहुक “साओनक राति...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सावन-रात

उत्तर: घ. सावन-रात

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सावन-रात” अछि।

प्रश्न 46887. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387: राम विलास साहुक “साओनक राति...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सावन-रात

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सावन-रात

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सावन-रात” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46888. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387: राम विलास साहुक “साओनक राति...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46889. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387: राम विलास साहुक “साओनक राति...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46890. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387: राम विलास साहुक “साओनक राति...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46891. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387: राम विलास साहुक “साओनक राति...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46892. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387मे राम विलास साहुक “साओनक राति...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सावन-रात” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4696, सूचकांक पंक्ति 3387मे राम विलास साहुक “साओनक राति...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सावन-रात” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4697 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: लोभी भोम्हरा...

प्रश्न 46893. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388: राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लोभी भोम्हरा...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लोभी भोम्हरा...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3388मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “लोभी भोम्हरा...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46894. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388: राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46895. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388: राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46896. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388: राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भौंरा-रूपक

उत्तर: घ. भौंरा-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भौंरा-रूपक” अछि।

प्रश्न 46897. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388: राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भौंरा-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भौंरा-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भौंरा-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46898. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388: राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46899. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388: राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46900. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388: राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46901. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388: राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46902. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388मे राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भौंरा-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4697, सूचकांक पंक्ति 3388मे राम विलास साहुक “लोभी भोम्हरा...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भौंरा-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4698 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: भोरक क्षण...

प्रश्न 46903. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389: राम विलास साहुक “भोरक क्षण...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भोरक क्षण...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोरक क्षण...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3389मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “भोरक क्षण...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46904. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389: राम विलास साहुक “भोरक क्षण...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46905. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389: राम विलास साहुक “भोरक क्षण...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46906. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389: राम विलास साहुक “भोरक क्षण...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भोर-सौन्दर्य

उत्तर: घ. भोर-सौन्दर्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भोर-सौन्दर्य” अछि।

प्रश्न 46907. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389: राम विलास साहुक “भोरक क्षण...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भोर-सौन्दर्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भोर-सौन्दर्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोर-सौन्दर्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46908. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389: राम विलास साहुक “भोरक क्षण...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46909. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389: राम विलास साहुक “भोरक क्षण...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46910. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389: राम विलास साहुक “भोरक क्षण...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46911. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389: राम विलास साहुक “भोरक क्षण...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46912. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389मे राम विलास साहुक “भोरक क्षण...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भोर-सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4698, सूचकांक पंक्ति 3389मे राम विलास साहुक “भोरक क्षण...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भोर-सौन्दर्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4699 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: गरीबक मान...

प्रश्न 46913. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390: राम विलास साहुक “गरीबक मान...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गरीबक मान...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबक मान...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3390मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “गरीबक मान...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46914. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390: राम विलास साहुक “गरीबक मान...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46915. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390: राम विलास साहुक “गरीबक मान...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46916. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390: राम विलास साहुक “गरीबक मान...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीब-गरिमा

उत्तर: घ. गरीब-गरिमा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीब-गरिमा” अछि।

प्रश्न 46917. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390: राम विलास साहुक “गरीबक मान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीब-गरिमा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीब-गरिमा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीब-गरिमा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46918. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390: राम विलास साहुक “गरीबक मान...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46919. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390: राम विलास साहुक “गरीबक मान...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46920. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390: राम विलास साहुक “गरीबक मान...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46921. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390: राम विलास साहुक “गरीबक मान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46922. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390मे राम विलास साहुक “गरीबक मान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गरीब-गरिमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4699, सूचकांक पंक्ति 3390मे राम विलास साहुक “गरीबक मान...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गरीब-गरिमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4700 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: माए...

प्रश्न 46923. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391: राम विलास साहुक “माए...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माए...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माए...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3391मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “माए...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46924. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391: राम विलास साहुक “माए...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46925. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391: राम विलास साहुक “माए...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46926. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391: राम विलास साहुक “माए...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माँ-पुकार

उत्तर: घ. माँ-पुकार

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माँ-पुकार” अछि।

प्रश्न 46927. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391: राम विलास साहुक “माए...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माँ-पुकार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँ-पुकार

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माँ-पुकार” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46928. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391: राम विलास साहुक “माए...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46929. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391: राम विलास साहुक “माए...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46930. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391: राम विलास साहुक “माए...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46931. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391: राम विलास साहुक “माए...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46932. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391मे राम विलास साहुक “माए...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माँ-पुकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4700, सूचकांक पंक्ति 3391मे राम विलास साहुक “माए...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माँ-पुकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4701 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: हमर गाम...

प्रश्न 46933. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392: राम विलास साहुक “हमर गाम...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर गाम...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर गाम...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3392मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “हमर गाम...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46934. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392: राम विलास साहुक “हमर गाम...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46935. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392: राम विलास साहुक “हमर गाम...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46936. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392: राम विलास साहुक “हमर गाम...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्राम-प्रेम

उत्तर: घ. ग्राम-प्रेम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम-प्रेम” अछि।

प्रश्न 46937. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392: राम विलास साहुक “हमर गाम...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्राम-प्रेम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्राम-प्रेम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46938. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392: राम विलास साहुक “हमर गाम...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46939. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392: राम विलास साहुक “हमर गाम...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46940. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392: राम विलास साहुक “हमर गाम...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46941. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392: राम विलास साहुक “हमर गाम...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46942. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392मे राम विलास साहुक “हमर गाम...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्राम-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4701, सूचकांक पंक्ति 3392मे राम विलास साहुक “हमर गाम...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्राम-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4702 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: घर अगिलगी...

प्रश्न 46943. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393: राम विलास साहुक “घर अगिलगी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घर अगिलगी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घर अगिलगी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3393मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “घर अगिलगी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46944. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393: राम विलास साहुक “घर अगिलगी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46945. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393: राम विलास साहुक “घर अगिलगी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46946. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393: राम विलास साहुक “घर अगिलगी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. घर-अगिलगी

उत्तर: घ. घर-अगिलगी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “घर-अगिलगी” अछि।

प्रश्न 46947. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393: राम विलास साहुक “घर अगिलगी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. घर-अगिलगी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घर-अगिलगी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “घर-अगिलगी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46948. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393: राम विलास साहुक “घर अगिलगी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46949. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393: राम विलास साहुक “घर अगिलगी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46950. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393: राम विलास साहुक “घर अगिलगी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46951. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393: राम विलास साहुक “घर अगिलगी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46952. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393मे राम विलास साहुक “घर अगिलगी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “घर-अगिलगी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4702, सूचकांक पंक्ति 3393मे राम विलास साहुक “घर अगिलगी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “घर-अगिलगी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4703 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: काली मैयाक गीत...

प्रश्न 46953. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394: राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. काली मैयाक गीत...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काली मैयाक गीत...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3394मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “काली मैयाक गीत...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46954. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394: राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46955. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394: राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भक्ति गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भक्ति गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गीत” अछि।

प्रश्न 46956. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394: राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. काली-भक्ति

उत्तर: घ. काली-भक्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “काली-भक्ति” अछि।

प्रश्न 46957. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394: राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. काली-भक्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काली-भक्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काली-भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46958. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394: राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46959. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394: राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46960. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394: राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भक्ति गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46961. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394: राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46962. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394मे राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “काली-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4703, सूचकांक पंक्ति 3394मे राम विलास साहुक “काली मैयाक गीत...” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गीत आ “काली-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4704 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: हमर बिखरल समाज...

प्रश्न 46963. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395: राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हमर बिखरल समाज...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हमर बिखरल समाज...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3395मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “हमर बिखरल समाज...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46964. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395: राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46965. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395: राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46966. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395: राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक विघटन

उत्तर: घ. सामाजिक विघटन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विघटन” अछि।

प्रश्न 46967. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395: राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक विघटन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक विघटन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विघटन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46968. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395: राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46969. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395: राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46970. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395: राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46971. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395: राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46972. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395मे राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक विघटन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4704, सूचकांक पंक्ति 3395मे राम विलास साहुक “हमर बिखरल समाज...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक विघटन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4705 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: चिड़ै चुनमुन्नी...

प्रश्न 46973. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396: राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. चिड़ै चुनमुन्नी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिड़ै चुनमुन्नी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3396मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “चिड़ै चुनमुन्नी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46974. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396: राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46975. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396: राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. बाल कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. बाल कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

प्रश्न 46976. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396: राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. चिड़िया

उत्तर: घ. चिड़िया

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “चिड़िया” अछि।

प्रश्न 46977. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396: राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. चिड़िया

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. चिड़िया

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चिड़िया” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46978. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396: राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46979. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396: राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46980. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396: राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46981. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396: राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46982. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396मे राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “चिड़िया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4705, सूचकांक पंक्ति 3396मे राम विलास साहुक “चिड़ै चुनमुन्नी...” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “चिड़िया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4706 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: माइक लाल...

प्रश्न 46983. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397: राम विलास साहुक “माइक लाल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. माइक लाल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माइक लाल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3397मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “माइक लाल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46984. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397: राम विलास साहुक “माइक लाल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46985. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397: राम विलास साहुक “माइक लाल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46986. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397: राम विलास साहुक “माइक लाल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. माँ-बेटा

उत्तर: घ. माँ-बेटा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “माँ-बेटा” अछि।

प्रश्न 46987. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397: राम विलास साहुक “माइक लाल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. माँ-बेटा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. माँ-बेटा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माँ-बेटा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46988. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397: राम विलास साहुक “माइक लाल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46989. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397: राम विलास साहुक “माइक लाल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 46990. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397: राम विलास साहुक “माइक लाल...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 46991. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397: राम विलास साहुक “माइक लाल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 46992. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397मे राम विलास साहुक “माइक लाल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माँ-बेटा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4706, सूचकांक पंक्ति 3397मे राम विलास साहुक “माइक लाल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माँ-बेटा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4707 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: के गरीब?

प्रश्न 46993. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398: राम विलास साहुक “के गरीब?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. के गरीब?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. के गरीब?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3398मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “के गरीब?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 46994. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398: राम विलास साहुक “के गरीब?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 46995. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398: राम विलास साहुक “के गरीब?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 46996. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398: राम विलास साहुक “के गरीब?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गरीबी-प्रश्न

उत्तर: घ. गरीबी-प्रश्न

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी-प्रश्न” अछि।

प्रश्न 46997. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398: राम विलास साहुक “के गरीब?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गरीबी-प्रश्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गरीबी-प्रश्न

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी-प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 46998. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398: राम विलास साहुक “के गरीब?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 46999. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398: राम विलास साहुक “के गरीब?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47000. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398: राम विलास साहुक “के गरीब?”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47001. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398: राम विलास साहुक “के गरीब?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47002. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398मे राम विलास साहुक “के गरीब?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गरीबी-प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4707, सूचकांक पंक्ति 3398मे राम विलास साहुक “के गरीब?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गरीबी-प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4708 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: नैनाक खेल...

प्रश्न 47003. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399: राम विलास साहुक “नैनाक खेल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नैनाक खेल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नैनाक खेल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3399मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “नैनाक खेल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47004. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399: राम विलास साहुक “नैनाक खेल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47005. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399: राम विलास साहुक “नैनाक खेल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 47006. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399: राम विलास साहुक “नैनाक खेल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नयन-खेल

उत्तर: घ. नयन-खेल

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नयन-खेल” अछि।

प्रश्न 47007. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399: राम विलास साहुक “नैनाक खेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नयन-खेल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नयन-खेल

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नयन-खेल” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47008. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399: राम विलास साहुक “नैनाक खेल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47009. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399: राम विलास साहुक “नैनाक खेल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47010. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399: राम विलास साहुक “नैनाक खेल...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47011. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399: राम विलास साहुक “नैनाक खेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47012. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399मे राम विलास साहुक “नैनाक खेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नयन-खेल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4708, सूचकांक पंक्ति 3399मे राम विलास साहुक “नैनाक खेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नयन-खेल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4709 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: कोइली कूहकै आमक डारि...

प्रश्न 47013. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400: राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोइली कूहकै आमक डारि...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोइली कूहकै आमक डारि...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3400मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “कोइली कूहकै आमक डारि...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47014. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400: राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47015. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400: राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 47016. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400: राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोयल-कूक

उत्तर: घ. कोयल-कूक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोयल-कूक” अछि।

प्रश्न 47017. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400: राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोयल-कूक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोयल-कूक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोयल-कूक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47018. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400: राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47019. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400: राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47020. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400: राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47021. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400: राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47022. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400मे राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “कोयल-कूक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4709, सूचकांक पंक्ति 3400मे राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि...” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “कोयल-कूक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4710 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: नींदिया बैरी भेल...

प्रश्न 47023. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401: राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नींदिया बैरी भेल...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नींदिया बैरी भेल...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3401मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “नींदिया बैरी भेल...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47024. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401: राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47025. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401: राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 47026. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401: राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नींद-वैरी

उत्तर: घ. नींद-वैरी

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नींद-वैरी” अछि।

प्रश्न 47027. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401: राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नींद-वैरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नींद-वैरी

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नींद-वैरी” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47028. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401: राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47029. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401: राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47030. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401: राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47031. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401: राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47032. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401मे राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नींद-वैरी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4710, सूचकांक पंक्ति 3401मे राम विलास साहुक “नींदिया बैरी भेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नींद-वैरी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4711 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: पहुना...

प्रश्न 47033. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402: राम विलास साहुक “पहुना...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पहुना...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पहुना...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3402मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “पहुना...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47034. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402: राम विलास साहुक “पहुना...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47035. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402: राम विलास साहुक “पहुना...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 47036. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402: राम विलास साहुक “पहुना...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अतिथि

उत्तर: घ. अतिथि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अतिथि” अछि।

प्रश्न 47037. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402: राम विलास साहुक “पहुना...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अतिथि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अतिथि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अतिथि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47038. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402: राम विलास साहुक “पहुना...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47039. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402: राम विलास साहुक “पहुना...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47040. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402: राम विलास साहुक “पहुना...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47041. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402: राम विलास साहुक “पहुना...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47042. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402मे राम विलास साहुक “पहुना...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अतिथि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4711, सूचकांक पंक्ति 3402मे राम विलास साहुक “पहुना...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अतिथि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4712 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: पागल प्रेमी...

प्रश्न 47043. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403: राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पागल प्रेमी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पागल प्रेमी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3403मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “पागल प्रेमी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47044. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403: राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47045. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403: राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 47046. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403: राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रेम-पागलपन

उत्तर: घ. प्रेम-पागलपन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-पागलपन” अछि।

प्रश्न 47047. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403: राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रेम-पागलपन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रेम-पागलपन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-पागलपन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47048. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403: राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47049. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403: राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47050. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403: राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47051. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403: राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47052. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403मे राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-पागलपन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4712, सूचकांक पंक्ति 3403मे राम विलास साहुक “पागल प्रेमी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-पागलपन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4713 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: कोसीमे समाएल जिनगी...

प्रश्न 47053. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404: राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोसीमे समाएल जिनगी...

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसीमे समाएल जिनगी...

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3404मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “कोसीमे समाएल जिनगी...” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47054. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404: राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47055. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404: राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 47056. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404: राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कोसी-जीवन

उत्तर: घ. कोसी-जीवन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कोसी-जीवन” अछि।

प्रश्न 47057. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404: राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कोसी-जीवन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोसी-जीवन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोसी-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47058. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404: राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47059. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404: राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47060. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404: राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47061. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404: राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47062. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404मे राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोसी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4713, सूचकांक पंक्ति 3404मे राम विलास साहुक “कोसीमे समाएल जिनगी...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोसी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4714 : विदेह-सदेह 34 — राम विलास साहु: हाइकू/ शेनर्यू/ टनका

प्रश्न 47063. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405: राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हाइकू/ शेनर्यू/ टनका

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हाइकू/ शेनर्यू/ टनका

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3405मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47064. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405: राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47065. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405: राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. हाइकू/शेनर्यू/टनका

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. हाइकू/शेनर्यू/टनका

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू/शेनर्यू/टनका” अछि।

प्रश्न 47066. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405: राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जापानी शैली

उत्तर: घ. जापानी शैली

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जापानी शैली” अछि।

प्रश्न 47067. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405: राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जापानी शैली

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जापानी शैली

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जापानी शैली” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47068. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405: राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू/शेनर्यू/टनका

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू/शेनर्यू/टनका

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47069. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405: राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47070. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405: राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ हाइकू/शेनर्यू/टनकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ हाइकू/शेनर्यू/टनकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47071. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405: राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47072. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405मे राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका” प्रविष्टि पद्य, हाइकू/शेनर्यू/टनका आ “जापानी शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4714, सूचकांक पंक्ति 3405मे राम विलास साहुक “हाइकू/ शेनर्यू/ टनका” प्रविष्टि पद्य, हाइकू/शेनर्यू/टनका आ “जापानी शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4715 : विदेह-सदेह 34 — रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार": अपन गप... (कविता-संग्रह)

प्रश्न 47073. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अपन गप... (कविता-संग्रह)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अपन गप... (कविता-संग्रह)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3406मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क प्रविष्टि “अपन गप... (कविता-संग्रह)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47074. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47075. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता-संग्रह

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता-संग्रह

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता-संग्रह” अछि।

प्रश्न 47076. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. व्यंग्य काव्य

उत्तर: घ. व्यंग्य काव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य काव्य” अछि।

प्रश्न 47077. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. व्यंग्य काव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. व्यंग्य काव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य काव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47078. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार", विधा पद्य, उप-विधा कविता-संग्रह

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार", विधा पद्य, उप-विधा कविता-संग्रह

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47079. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47080. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविता-संग्रहक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविता-संग्रहक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47081. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47082. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, कविता-संग्रह आ “व्यंग्य काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4715, सूचकांक पंक्ति 3406मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “अपन गप... (कविता-संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, कविता-संग्रह आ “व्यंग्य काव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4716 : विदेह-सदेह 34 — रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार": प्रार्थना

प्रश्न 47083. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रार्थना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रार्थना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3407मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क प्रविष्टि “प्रार्थना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47084. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47085. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रार्थना

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रार्थना

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रार्थना” अछि।

प्रश्न 47086. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रार्थना-भाव

उत्तर: घ. प्रार्थना-भाव

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रार्थना-भाव” अछि।

प्रश्न 47087. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रार्थना-भाव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रार्थना-भाव

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रार्थना-भाव” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47088. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार", विधा पद्य, उप-विधा प्रार्थना

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार", विधा पद्य, उप-विधा प्रार्थना

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47089. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47090. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रार्थनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रार्थनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47091. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47092. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना” प्रविष्टि पद्य, प्रार्थना आ “प्रार्थना-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4716, सूचकांक पंक्ति 3407मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “प्रार्थना” प्रविष्टि पद्य, प्रार्थना आ “प्रार्थना-भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4717 : विदेह-सदेह 34 — रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार": गीत

प्रश्न 47093. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गीत

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गीत

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3408मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क प्रविष्टि “गीत” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47094. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47095. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. गीत

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. गीत

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

प्रश्न 47096. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. गेय रचना

उत्तर: घ. गेय रचना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “गेय रचना” अछि।

प्रश्न 47097. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. गेय रचना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गेय रचना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गेय रचना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47098. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार", विधा पद्य, उप-विधा गीत

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार", विधा पद्य, उप-विधा गीत

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47099. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47100. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47101. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47102. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4717, सूचकांक पंक्ति 3408मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गेय रचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4718 : विदेह-सदेह 34 — रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार": झारू

प्रश्न 47103. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. झारू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झारू

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3409मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क प्रविष्टि “झारू” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47104. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47105. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 47106. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. झाड़ू-रूपक

उत्तर: घ. झाड़ू-रूपक

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “झाड़ू-रूपक” अछि।

प्रश्न 47107. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. झाड़ू-रूपक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. झाड़ू-रूपक

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “झाड़ू-रूपक” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47108. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47109. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47110. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47111. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47112. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “झाड़ू-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4718, सूचकांक पंक्ति 3409मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “झारू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “झाड़ू-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4719 : विदेह-सदेह 34 — रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार": महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)

प्रश्न 47113. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3410मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क प्रविष्टि “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47114. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47115. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कविता

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कविता

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

प्रश्न 47116. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. महाझाड़ू

उत्तर: घ. महाझाड़ू

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “महाझाड़ू” अछि।

प्रश्न 47117. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. महाझाड़ू

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाझाड़ू

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महाझाड़ू” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47118. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार", विधा पद्य, उप-विधा कविता

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार", विधा पद्य, उप-विधा कविता

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47119. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47120. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47121. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410: रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47122. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “महाझाड़ू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4719, सूचकांक पंक्ति 3410मे रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"क “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “महाझाड़ू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4720 : विदेह-सदेह 34 — विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२): विविध भजनावली- १-४५

प्रश्न 47123. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विविध भजनावली- १-४५

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विविध भजनावली- १-४५

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3411मे विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क प्रविष्टि “विविध भजनावली- १-४५” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47124. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. पद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. पद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47125. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भजन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भजन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भजन” अछि।

प्रश्न 47126. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. भक्ति परम्परा

उत्तर: घ. भक्ति परम्परा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।

प्रश्न 47127. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. भक्ति परम्परा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भक्ति परम्परा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47128. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२), विधा पद्य, उप-विधा भजन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२), विधा पद्य, उप-विधा भजन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47129. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47130. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५”केँ विदेह-सदेह 34क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47131. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47132. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411मे विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4720, सूचकांक पंक्ति 3411मे विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)क “विविध भजनावली- १-४५” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4721 : विदेह-सदेह 34 — विदेह सम्पादकीय: संदेश

प्रश्न 47133. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412: विदेह सम्पादकीयक “संदेश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. संदेश

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. संदेश

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3412मे विदेह सम्पादकीयक प्रविष्टि “संदेश” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47134. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412: विदेह सम्पादकीयक “संदेश”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47135. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412: विदेह सम्पादकीयक “संदेश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।

प्रश्न 47136. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412: विदेह सम्पादकीयक “संदेश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पत्रिकाक वक्तव्य

उत्तर: घ. पत्रिकाक वक्तव्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रिकाक वक्तव्य” अछि।

प्रश्न 47137. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412: विदेह सम्पादकीयक “संदेश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पत्रिकाक वक्तव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पत्रिकाक वक्तव्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रिकाक वक्तव्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47138. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412: विदेह सम्पादकीयक “संदेश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विदेह सम्पादकीय, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विदेह सम्पादकीय, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47139. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412: विदेह सम्पादकीयक “संदेश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47140. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412: विदेह सम्पादकीयक “संदेश”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47141. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412: विदेह सम्पादकीयक “संदेश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47142. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412मे विदेह सम्पादकीयक “संदेश” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “पत्रिकाक वक्तव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4721, सूचकांक पंक्ति 3412मे विदेह सम्पादकीयक “संदेश” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “पत्रिकाक वक्तव्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4722 : विदेह-सदेह 35 — आशीष अनचिन्हार: बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त

प्रश्न 47143. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413: आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3413मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47144. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413: आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47145. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413: आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. आत्मकथात्मक/व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. आत्मकथात्मक/व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आत्मकथात्मक/व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 47146. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413: आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक जीवनशैली आ पत्नी-भक्तिक मार्मिक चित्रण। व्यवसायिक सफलता आ नारी संबंध पर तीखा कटाक्ष।

उत्तर: घ. आधुनिक जीवनशैली आ पत्नी-भक्तिक मार्मिक चित्रण। व्यवसायिक सफलता आ नारी संबंध पर तीखा कटाक्ष।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक जीवनशैली आ पत्नी-भक्तिक मार्मिक चित्रण। व्यवसायिक सफलता आ नारी संबंध पर तीखा कटाक्ष।” अछि।

प्रश्न 47147. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413: आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक जीवनशैली आ पत्नी-भक्तिक मार्मिक चित्रण। व्यवसायिक सफलता आ नारी संबंध पर तीखा कटाक्ष।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक जीवनशैली आ पत्नी-भक्तिक मार्मिक चित्रण। व्यवसायिक सफलता आ नारी संबंध पर तीखा कटाक्ष।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक जीवनशैली आ पत्नी-भक्तिक मार्मिक चित्रण। व्यवसायिक सफलता आ नारी संबंध पर तीखा कटाक्ष।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47148. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413: आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आत्मकथात्मक/व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आत्मकथात्मक/व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47149. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413: आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47150. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413: आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ आत्मकथात्मक/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ आत्मकथात्मक/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47151. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413: आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47152. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413मे आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त” प्रविष्टि गद्य, आत्मकथात्मक/व्यंग्य आ “आधुनिक जीवनशैली आ पत्नी-भक्तिक मार्मिक चित्रण। व्यवसायिक सफलता आ नारी संबंध पर तीखा कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4722, सूचकांक पंक्ति 3413मे आशीष अनचिन्हारक “बिजनेसमे अपन नाम करितों, पत्नीभक्त” प्रविष्टि गद्य, आत्मकथात्मक/व्यंग्य आ “आधुनिक जीवनशैली आ पत्नी-भक्तिक मार्मिक चित्रण। व्यवसायिक सफलता आ नारी संबंध पर तीखा कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4723 : विदेह-सदेह 35 — वीरेन्द्र कुमार यादव: राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर

प्रश्न 47153. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414: वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3414मे वीरेन्द्र कुमार यादवक प्रविष्टि “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47154. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414: वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47155. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414: वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. चित्रसमीक्षा/लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. चित्रसमीक्षा/लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “चित्रसमीक्षा/लेख” अछि।

प्रश्न 47156. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414: वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाढ़ पीड़ित मिथिलाक यथार्थ चित्रांकन। सामाजिक संवेदना आ प्रकृतिक विपदाक दस्तावेजीकरण।

उत्तर: घ. बाढ़ पीड़ित मिथिलाक यथार्थ चित्रांकन। सामाजिक संवेदना आ प्रकृतिक विपदाक दस्तावेजीकरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाढ़ पीड़ित मिथिलाक यथार्थ चित्रांकन। सामाजिक संवेदना आ प्रकृतिक विपदाक दस्तावेजीकरण।” अछि।

प्रश्न 47157. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414: वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाढ़ पीड़ित मिथिलाक यथार्थ चित्रांकन। सामाजिक संवेदना आ प्रकृतिक विपदाक दस्तावेजीकरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाढ़ पीड़ित मिथिलाक यथार्थ चित्रांकन। सामाजिक संवेदना आ प्रकृतिक विपदाक दस्तावेजीकरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाढ़ पीड़ित मिथिलाक यथार्थ चित्रांकन। सामाजिक संवेदना आ प्रकृतिक विपदाक दस्तावेजीकरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47158. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414: वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा चित्रसमीक्षा/लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा चित्रसमीक्षा/लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47159. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414: वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47160. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414: वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ चित्रसमीक्षा/लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ चित्रसमीक्षा/लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47161. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414: वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47162. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414मे वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर” प्रविष्टि गद्य, चित्रसमीक्षा/लेख आ “बाढ़ पीड़ित मिथिलाक यथार्थ चित्रांकन। सामाजिक संवेदना आ प्रकृतिक विपदाक दस्तावेजीकरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4723, सूचकांक पंक्ति 3414मे वीरेन्द्र कुमार यादवक “राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर” प्रविष्टि गद्य, चित्रसमीक्षा/लेख आ “बाढ़ पीड़ित मिथिलाक यथार्थ चित्रांकन। सामाजिक संवेदना आ प्रकृतिक विपदाक दस्तावेजीकरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4724 : विदेह-सदेह 35 — वीरेन्द्र कुमार यादव: नाह आओर जिनगी (कथा)

प्रश्न 47163. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415: वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नाह आओर जिनगी (कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नाह आओर जिनगी (कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3415मे वीरेन्द्र कुमार यादवक प्रविष्टि “नाह आओर जिनगी (कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47164. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415: वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47165. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415: वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47166. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415: वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-केन्द्रित कथा

उत्तर: घ. नारी-केन्द्रित कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-केन्द्रित कथा” अछि।

प्रश्न 47167. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415: वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-केन्द्रित कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-केन्द्रित कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-केन्द्रित कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47168. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415: वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक वीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक वीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47169. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415: वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47170. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415: वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47171. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415: वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47172. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415मे वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नारी-केन्द्रित कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4724, सूचकांक पंक्ति 3415मे वीरेन्द्र कुमार यादवक “नाह आओर जिनगी (कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नारी-केन्द्रित कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4725 : विदेह-सदेह 35 — विनीत उत्पल: निमंत्रण (लघुकथा)

प्रश्न 47173. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416: विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निमंत्रण (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निमंत्रण (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3416मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “निमंत्रण (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47174. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416: विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47175. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416: विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47176. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416: विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सम्बन्धक मनोविज्ञान

उत्तर: घ. सम्बन्धक मनोविज्ञान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्बन्धक मनोविज्ञान” अछि।

प्रश्न 47177. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416: विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सम्बन्धक मनोविज्ञान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सम्बन्धक मनोविज्ञान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सम्बन्धक मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47178. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416: विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47179. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416: विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47180. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416: विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47181. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416: विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47182. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416मे विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सम्बन्धक मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4725, सूचकांक पंक्ति 3416मे विनीत उत्पलक “निमंत्रण (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सम्बन्धक मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4726 : विदेह-सदेह 35 — विनीत उत्पल: घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)

प्रश्न 47183. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417: विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3417मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47184. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417: विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47185. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417: विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दीर्घकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दीर्घकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घकथा” अछि।

प्रश्न 47186. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417: विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. शिक्षाक व्यंग्य

उत्तर: घ. शिक्षाक व्यंग्य

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षाक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 47187. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417: विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. शिक्षाक व्यंग्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. शिक्षाक व्यंग्य

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षाक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47188. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417: विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47189. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417: विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47190. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417: विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दीर्घकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दीर्घकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47191. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417: विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47192. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417मे विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घकथा आ “शिक्षाक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4726, सूचकांक पंक्ति 3417मे विनीत उत्पलक “घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री (दीर्घकथा)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घकथा आ “शिक्षाक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4727 : विदेह-सदेह 35 — विनीत उत्पल: प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार

प्रश्न 47193. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418: विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3418मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47194. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418: विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47195. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418: विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 47196. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418: विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली साहित्यक धुरन्धर मायानन्द मिश्रक दृष्टि। ऐतिहासिक संवाद।

उत्तर: घ. मैथिली साहित्यक धुरन्धर मायानन्द मिश्रक दृष्टि। ऐतिहासिक संवाद।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली साहित्यक धुरन्धर मायानन्द मिश्रक दृष्टि। ऐतिहासिक संवाद।” अछि।

प्रश्न 47197. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418: विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली साहित्यक धुरन्धर मायानन्द मिश्रक दृष्टि। ऐतिहासिक संवाद।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली साहित्यक धुरन्धर मायानन्द मिश्रक दृष्टि। ऐतिहासिक संवाद।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली साहित्यक धुरन्धर मायानन्द मिश्रक दृष्टि। ऐतिहासिक संवाद।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47198. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418: विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47199. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418: विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47200. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418: विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47201. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418: विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47202. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418मे विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “मैथिली साहित्यक धुरन्धर मायानन्द मिश्रक दृष्टि। ऐतिहासिक संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4727, सूचकांक पंक्ति 3418मे विनीत उत्पलक “प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “मैथिली साहित्यक धुरन्धर मायानन्द मिश्रक दृष्टि। ऐतिहासिक संवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4728 : विदेह-सदेह 35 — सुजीत कुमार झा: नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककेँ किया नहि पचि रहल!

प्रश्न 47203. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419: सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककेँ किया नहि पचि रहल!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककेँ किया नहि पचि रहल!

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककेँ किया नहि पचि रहल!

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3419मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककेँ किया नहि पचि रहल!” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47204. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419: सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककेँ किया नहि पचि रहल!”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47205. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419: सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककेँ किया नहि पचि रहल!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीतिक टिप्पणी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीतिक टिप्पणी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 47206. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419: सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककेँ किया नहि पचि रहल!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल-भारत मैथिली अन्तरसम्बन्ध

उत्तर: घ. नेपाल-भारत मैथिली अन्तरसम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल-भारत मैथिली अन्तरसम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 47207. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419: सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककें किया नहि पचि रहल!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल-भारत मैथिली अन्तरसम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल-भारत मैथिली अन्तरसम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल-भारत मैथिली अन्तरसम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47208. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419: सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककें किया नहि पचि रहल!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक टिप्पणी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक टिप्पणी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47209. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419: सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककें किया नहि पचि रहल!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47210. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419: सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककें किया नहि पचि रहल!”कैँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीतिक टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीतिक टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47211. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419: सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककें किया नहि पचि रहल!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47212. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419मे सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककें किया नहि पचि रहल!” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक टिप्पणी आ “नेपाल-भारत मैथिली अन्तरसम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4728, सूचकांक पंक्ति 3419मे सुजीत कुमार झाक “नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककें किया नहि पचि रहल!” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक टिप्पणी आ “नेपाल-भारत मैथिली अन्तरसम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4729 : विदेह-सदेह 35 — सुजीत कुमार झा: मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)

प्रश्न 47213. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420: सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3420मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47214. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420: सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47215. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420: सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 47216. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420: सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवासी अनुभव, समयक अनवरत बहावक रूपक।

उत्तर: घ. प्रवासी अनुभव, समयक अनवरत बहावक रूपक।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी अनुभव, समयक अनवरत बहावक रूपक।” अछि।

प्रश्न 47217. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420: सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवासी अनुभव, समयक अनवरत बहावक रूपक।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवासी अनुभव, समयक अनवरत बहावक रूपक।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी अनुभव, समयक अनवरत बहावक रूपक।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47218. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420: सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47219. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420: सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47220. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420: सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47221. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420: सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47222. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420मे सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “प्रवासी अनुभव, समयक अनवरत बहावक रूपक।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4729, सूचकांक पंक्ति 3420मे सुजीत कुमार झाक “मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “प्रवासी अनुभव, समयक अनवरत बहावक रूपक।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4730 : विदेह-सदेह 35 — सुजीत कुमार झा: बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि

प्रश्न 47223. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421: सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3421मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47224. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421: सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47225. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421: सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 47226. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421: सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली भाषाक राजभाषा आन्दोलन

उत्तर: घ. मैथिली भाषाक राजभाषा आन्दोलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषाक राजभाषा आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 47227. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421: सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली भाषाक राजभाषा आन्दोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली भाषाक राजभाषा आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषाक राजभाषा आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47228. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421: सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47229. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421: सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47230. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421: सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47231. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421: सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47232. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421मे सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मैथिली भाषाक राजभाषा आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4730, सूचकांक पंक्ति 3421मे सुजीत कुमार झाक “बिहारोमे मैथिली-मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मैथिली भाषाक राजभाषा आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4731 : विदेह-सदेह 35 — सुजीत कुमार झा: नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी

प्रश्न 47233. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422: सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3422मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47234. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422: सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47235. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422: सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. विश्लेषण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. विश्लेषण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 47236. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422: सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाली शिक्षापद्धतिमे मैथिलीक स्थिति

उत्तर: घ. नेपाली शिक्षापद्धतिमे मैथिलीक स्थिति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाली शिक्षापद्धतिमे मैथिलीक स्थिति” अछि।

प्रश्न 47237. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422: सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाली शिक्षापद्धतिमे मैथिलीक स्थिति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाली शिक्षापद्धतिमे मैथिलीक स्थिति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाली शिक्षापद्धतिमे मैथिलीक स्थिति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47238. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422: सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विश्लेषण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विश्लेषण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47239. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422: सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47240. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422: सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ विश्लेषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ विश्लेषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47241. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422: सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47242. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422मे सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी” प्रविष्टि गद्य, विश्लेषण आ “नेपाली शिक्षापद्धतिमे मैथिलीक स्थिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4731, सूचकांक पंक्ति 3422मे सुजीत कुमार झाक “नेपालोमे सपथ, नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी” प्रविष्टि गद्य, विश्लेषण आ “नेपाली शिक्षापद्धतिमे मैथिलीक स्थिति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4732 : विदेह-सदेह 35 — सुजीत कुमार झा: होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन

प्रश्न 47243. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423: सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3423मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47244. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423: सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47245. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423: सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 47246. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423: सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. होरी पर्वक आधुनिक विकृति

उत्तर: घ. होरी पर्वक आधुनिक विकृति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “होरी पर्वक आधुनिक विकृति” अछि।

प्रश्न 47247. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423: सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. होरी पर्वक आधुनिक विकृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. होरी पर्वक आधुनिक विकृति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “होरी पर्वक आधुनिक विकृति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47248. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423: सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47249. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423: सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47250. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423: सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47251. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423: सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47252. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423मे सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “होरी पर्वक आधुनिक विकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4732, सूचकांक पंक्ति 3423मे सुजीत कुमार झाक “होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “होरी पर्वक आधुनिक विकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4733 : विदेह-सदेह 35 — सुजीत कुमार झा: जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव

प्रश्न 47253. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3424मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47254. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47255. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सांस्कृतिक रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सांस्कृतिक रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सांस्कृतिक रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 47256. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिलाक कोजागरा परम्पराक समसामयिक स्वरूप।

उत्तर: घ. मिथिलाक कोजागरा परम्पराक समसामयिक स्वरूप।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक कोजागरा परम्पराक समसामयिक स्वरूप।” अछि।

प्रश्न 47257. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिलाक कोजागरा परम्पराक समसामयिक स्वरूप।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिलाक कोजागरा परम्पराक समसामयिक स्वरूप।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक कोजागरा परम्पराक समसामयिक स्वरूप।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47258. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47259. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47260. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सांस्कृतिक रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सांस्कृतिक रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47261. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47262. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424मे सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक रिपोर्ताज आ “मिथिलाक कोजागरा परम्पराक समसामयिक स्वरूप।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4733, सूचकांक पंक्ति 3424मे सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक रिपोर्ताज आ “मिथिलाक कोजागरा परम्पराक समसामयिक स्वरूप।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4734 : विदेह-सदेह 35 — सुजीत कुमार झा: मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार

प्रश्न 47263. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425: सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3425मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47264. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425: सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47265. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425: सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समाचार/उपलब्धि

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समाचार/उपलब्धि

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/उपलब्धि” अछि।

प्रश्न 47266. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425: सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली सेवी संस्थाक सम्मान

उत्तर: घ. मैथिली सेवी संस्थाक सम्मान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली सेवी संस्थाक सम्मान” अछि।

प्रश्न 47267. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425: सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली सेवी संस्थाक सम्मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली सेवी संस्थाक सम्मान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली सेवी संस्थाक सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47268. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425: सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/उपलब्धि

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा समाचार/उपलब्धि

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47269. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425: सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47270. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425: सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समाचार/उपलब्धिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समाचार/उपलब्धिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47271. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425: सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47272. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425मे सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार” प्रविष्टि गद्य, समाचार/उपलब्धि आ “मैथिली सेवी संस्थाक सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4734, सूचकांक पंक्ति 3425मे सुजीत कुमार झाक “मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार” प्रविष्टि गद्य, समाचार/उपलब्धि आ “मैथिली सेवी संस्थाक सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4735 : विदेह-सदेह 35 — सुजीत कुमार झा: जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?

प्रश्न 47273. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3426मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47274. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47275. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/विश्लेषण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/विश्लेषण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/विश्लेषण” अछि।

प्रश्न 47276. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पागक पारम्परिक प्रतीकत्व आ बजारीकरण पर तीक्ष्ण टिप्पणी।

उत्तर: घ. पागक पारम्परिक प्रतीकत्व आ बजारीकरण पर तीक्ष्ण टिप्पणी।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पागक पारम्परिक प्रतीकत्व आ बजारीकरण पर तीक्ष्ण टिप्पणी।” अछि।

प्रश्न 47277. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पागक पारम्परिक प्रतीकत्व आ बजारीकरण पर तीक्ष्ण टिप्पणी।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पागक पारम्परिक प्रतीकत्व आ बजारीकरण पर तीक्ष्ण टिप्पणी।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पागक पारम्परिक प्रतीकत्व आ बजारीकरण पर तीक्ष्ण टिप्पणी।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47278. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/विश्लेषण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/विश्लेषण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47279. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47280. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?”कैँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/विश्लेषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/विश्लेषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47281. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426: सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47282. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426मे सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/विश्लेषण आ “पागक पारम्परिक प्रतीकत्व आ बजारीकरण पर तीक्ष्ण टिप्पणी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4735, सूचकांक पंक्ति 3426मे सुजीत कुमार झाक “जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/विश्लेषण आ “पागक पारम्परिक प्रतीकत्व आ बजारीकरण पर तीक्ष्ण टिप्पणी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4736 : विदेह-सदेह 35 — सुजीत कुमार झा: भौजी (लघुकथा)

प्रश्न 47283. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427: सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भौजी (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भौजी (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3427मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “भौजी (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47284. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427: सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47285. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427: सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47286. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427: सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक गाथा

उत्तर: घ. नारी-सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक गाथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक गाथा” अछि।

प्रश्न 47287. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427: सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक गाथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक गाथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक गाथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47288. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427: सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47289. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427: सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47290. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427: सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47291. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427: सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47292. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427मे सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नारी-सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक गाथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4736, सूचकांक पंक्ति 3427मे सुजीत कुमार झाक “भौजी (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नारी-सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक गाथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4737 : विदेह-सदेह 35 — सुमित आनन्द: भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना

प्रश्न 47293. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428: सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3428मे सुमित आनन्दक प्रविष्टि “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47294. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428: सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47295. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428: सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषण/लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषण/लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषण/लेख” अछि।

प्रश्न 47296. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428: सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. हस्तशिल्प आर्थिक सशक्तिकरणक माध्यम

उत्तर: घ. हस्तशिल्प आर्थिक सशक्तिकरणक माध्यम

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “हस्तशिल्प आर्थिक सशक्तिकरणक माध्यम” अछि।

प्रश्न 47297. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428: सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. हस्तशिल्प आर्थिक सशक्तिकरणक माध्यम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हस्तशिल्प आर्थिक सशक्तिकरणक माध्यम

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हस्तशिल्प आर्थिक सशक्तिकरणक माध्यम” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47298. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428: सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा भाषण/लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा भाषण/लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47299. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428: सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47300. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428: सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भाषण/लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भाषण/लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47301. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428: सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47302. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428मे सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” प्रविष्टि गद्य, भाषण/लेख आ “हस्तशिल्प आर्थिक सशक्तिकरणक माध्यम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4737, सूचकांक पंक्ति 3428मे सुमित आनन्दक “भाषणमाला, भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना” प्रविष्टि गद्य, भाषण/लेख आ “हस्तशिल्प आर्थिक सशक्तिकरणक माध्यम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4738 : विदेह-सदेह 35 — सुमित आनन्द: आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला

प्रश्न 47303. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429: सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3429मे सुमित आनन्दक प्रविष्टि “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47304. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429: सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47305. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429: सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. जीवनी/भाषण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. जीवनी/भाषण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/भाषण” अछि।

प्रश्न 47306. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429: सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली विद्वत परम्पराक अभिलेख।

उत्तर: घ. मैथिली विद्वत परम्पराक अभिलेख।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली विद्वत परम्पराक अभिलेख।” अछि।

प्रश्न 47307. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429: सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली विद्वत परम्पराक अभिलेख।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली विद्वत परम्पराक अभिलेख।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली विद्वत परम्पराक अभिलेख।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47308. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429: सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/भाषण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/भाषण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47309. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429: सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47310. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429: सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ जीवनी/भाषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ जीवनी/भाषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47311. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429: सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47312. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429मे सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/भाषण आ “मैथिली विद्वत परम्पराक अभिलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4738, सूचकांक पंक्ति 3429मे सुमित आनन्दक “आचार्य सुरेन्द्र झा “सुमन” जयन्ती-२०१०, आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/भाषण आ “मैथिली विद्वत परम्पराक अभिलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4739 : विदेह-सदेह 35 — मनोज झा मुक्ति: महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान

प्रश्न 47313. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3430मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47314. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47315. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज/आन्दोलन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज/आन्दोलन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज/आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 47316. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. युवा आन्दोलन

उत्तर: घ. युवा आन्दोलन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “युवा आन्दोलन” अछि।

प्रश्न 47317. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. युवा आन्दोलन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. युवा आन्दोलन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “युवा आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47318. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/आन्दोलन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज/आन्दोलन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47319. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47320. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताज/आन्दोलनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताज/आन्दोलनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47321. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430: मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47322. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430मे मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/आन्दोलन आ “युवा आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4739, सूचकांक पंक्ति 3430मे मनोज झा मुक्तिक “महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज/आन्दोलन आ “युवा आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4740 : विदेह-सदेह 35 — मनोज झा मुक्ति: अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र

प्रश्न 47323. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431: मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3431मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47324. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431: मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47325. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431: मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शहीद कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शहीद कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शहीद कथा” अछि।

प्रश्न 47326. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431: मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. क्रान्तिकारी चेतना

उत्तर: घ. क्रान्तिकारी चेतना

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “क्रान्तिकारी चेतना” अछि।

प्रश्न 47327. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431: मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. क्रान्तिकारी चेतना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. क्रान्तिकारी चेतना

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्रान्तिकारी चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47328. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431: मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा शहीद कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा शहीद कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47329. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431: मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47330. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431: मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शहीद कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शहीद कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47331. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431: मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47332. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431मे मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र” प्रविष्टि गद्य, शहीद कथा आ “क्रान्तिकारी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4740, सूचकांक पंक्ति 3431मे मनोज झा मुक्तिक “अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र” प्रविष्टि गद्य, शहीद कथा आ “क्रान्तिकारी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4741 : विदेह-सदेह 35 — मनोज झा मुक्ति: मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न

प्रश्न 47333. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432: मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3432मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47334. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432: मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47335. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432: मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सांस्कृतिक वृत्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सांस्कृतिक वृत्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सांस्कृतिक वृत्त” अछि।

प्रश्न 47336. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432: मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली दिवसक लोकप्रियता आ भाषिक जागरूकता।

उत्तर: घ. मैथिली दिवसक लोकप्रियता आ भाषिक जागरूकता।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली दिवसक लोकप्रियता आ भाषिक जागरूकता।” अछि।

प्रश्न 47337. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432: मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली दिवसक लोकप्रियता आ भाषिक जागरूकता।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली दिवसक लोकप्रियता आ भाषिक जागरूकता।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली दिवसक लोकप्रियता आ भाषिक जागरूकता।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47338. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432: मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक वृत्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक वृत्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47339. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432: मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47340. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432: मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सांस्कृतिक वृत्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सांस्कृतिक वृत्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47341. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432: मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47342. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432मे मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक वृत्त आ “मैथिली दिवसक लोकप्रियता आ भाषिक जागरूकता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4741, सूचकांक पंक्ति 3432मे मनोज झा मुक्तिक “मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक वृत्त आ “मैथिली दिवसक लोकप्रियता आ भाषिक जागरूकता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4742 : विदेह-सदेह 35 — मनोज झा मुक्ति: मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि

प्रश्न 47343. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433: मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3433मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47344. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433: मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47345. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433: मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. महोत्सव रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. महोत्सव रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “महोत्सव रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 47346. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433: मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मिथिला सांस्कृतिक धरोहरक उत्सवीय दस्तावेजीकरण।

उत्तर: घ. मिथिला सांस्कृतिक धरोहरक उत्सवीय दस्तावेजीकरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला सांस्कृतिक धरोहरक उत्सवीय दस्तावेजीकरण।” अछि।

प्रश्न 47347. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433: मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मिथिला सांस्कृतिक धरोहरक उत्सवीय दस्तावेजीकरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिथिला सांस्कृतिक धरोहरक उत्सवीय दस्तावेजीकरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला सांस्कृतिक धरोहरक उत्सवीय दस्तावेजीकरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47348. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433: मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा महोत्सव रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा महोत्सव रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47349. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433: मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47350. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433: मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ महोत्सव रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ महोत्सव रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47351. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433: मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47352. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433मे मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि” प्रविष्टि गद्य, महोत्सव रिपोर्ताज आ “मिथिला सांस्कृतिक धरोहरक उत्सवीय दस्तावेजीकरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4742, सूचकांक पंक्ति 3433मे मनोज झा मुक्तिक “मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि” प्रविष्टि गद्य, महोत्सव रिपोर्ताज आ “मिथिला सांस्कृतिक धरोहरक उत्सवीय दस्तावेजीकरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4743 : विदेह-सदेह 35 — मनोज झा मुक्ति: महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार

प्रश्न 47353. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434: मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3434मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47354. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434: मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47355. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434: मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सामाजिक व्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक व्यंग्य” अछि।

प्रश्न 47356. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434: मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. धार्मिक मेलाक व्यावसायीकरण आ अवैध व्यापार पर प्रहार।

उत्तर: घ. धार्मिक मेलाक व्यावसायीकरण आ अवैध व्यापार पर प्रहार।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “धार्मिक मेलाक व्यावसायीकरण आ अवैध व्यापार पर प्रहार।” अछि।

प्रश्न 47357. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434: मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. धार्मिक मेलाक व्यावसायीकरण आ अवैध व्यापार पर प्रहार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. धार्मिक मेलाक व्यावसायीकरण आ अवैध व्यापार पर प्रहार।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धार्मिक मेलाक व्यावसायीकरण आ अवैध व्यापार पर प्रहार।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47358. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434: मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा सामाजिक व्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47359. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434: मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47360. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434: मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सामाजिक व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सामाजिक व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47361. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434: मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47362. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434मे मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार” प्रविष्टि गद्य, सामाजिक व्यंग्य आ “धार्मिक मेलाक व्यावसायीकरण आ अवैध व्यापार पर प्रहार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4743, सूचकांक पंक्ति 3434मे मनोज झा मुक्तिक “महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार” प्रविष्टि गद्य, सामाजिक व्यंग्य आ “धार्मिक मेलाक व्यावसायीकरण आ अवैध व्यापार पर प्रहार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4744 : विदेह-सदेह 35 — मनोज झा मुक्ति: मिडिया सेन्दरक स्थापना

प्रश्न 47363. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435: मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मिडिया सेन्दरक स्थापना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मिडिया सेन्दरक स्थापना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3435मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “मिडिया सेन्दरक स्थापना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47364. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435: मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47365. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435: मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सूचना प्रौद्योगिकी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सूचना प्रौद्योगिकी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सूचना प्रौद्योगिकी” अछि।

प्रश्न 47366. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435: मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली मीडिया सेन्टर: डिजिटल युगमे भाषाक सशक्तिकरण।

उत्तर: घ. मैथिली मीडिया सेन्टर: डिजिटल युगमे भाषाक सशक्तिकरण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली मीडिया सेन्टर: डिजिटल युगमे भाषाक सशक्तिकरण।” अछि।

प्रश्न 47367. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435: मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली मीडिया सेन्टर: डिजिटल युगमे भाषाक सशक्तिकरण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली मीडिया सेन्टर: डिजिटल युगमे भाषाक सशक्तिकरण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली मीडिया सेन्टर: डिजिटल युगमे भाषाक सशक्तिकरण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47368. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435: मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा सूचना प्रौद्योगिकी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा सूचना प्रौद्योगिकी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47369. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435: मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47370. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435: मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सूचना प्रौद्योगिकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सूचना प्रौद्योगिकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47371. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435: मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47372. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435मे मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना” प्रविष्टि गद्य, सूचना प्रौद्योगिकी आ “मैथिली मीडिया सेन्टर: डिजिटल युगमे भाषाक सशक्तिकरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4744, सूचकांक पंक्ति 3435मे मनोज झा मुक्तिक “मिडिया सेन्दरक स्थापना” प्रविष्टि गद्य, सूचना प्रौद्योगिकी आ “मैथिली मीडिया सेन्टर: डिजिटल युगमे भाषाक सशक्तिकरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4745 : विदेह-सदेह 35 — रमानन्द झा "रमण": मैथिली लोक गीतक अवस्था

प्रश्न 47373. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436: रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. मैथिली लोक गीतक अवस्था

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोक गीतक अवस्था

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3436मे रमानन्द झा "रमण"क प्रविष्टि “मैथिली लोक गीतक अवस्था” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47374. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436: रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47375. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436: रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोकगीत समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोकगीत समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोकगीत समीक्षा” अछि।

प्रश्न 47376. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436: रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली लोकगीतक संकट आ संरक्षणक आवश्यकता

उत्तर: घ. मैथिली लोकगीतक संकट आ संरक्षणक आवश्यकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लोकगीतक संकट आ संरक्षणक आवश्यकता” अछि।

प्रश्न 47377. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436: रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली लोकगीतक संकट आ संरक्षणक आवश्यकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोकगीतक संकट आ संरक्षणक आवश्यकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लोकगीतक संकट आ संरक्षणक आवश्यकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47378. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436: रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमानन्द झा "रमण", विधा गद्य, उप-विधा लोकगीत समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमानन्द झा "रमण", विधा गद्य, उप-विधा लोकगीत समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47379. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436: रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47380. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436: रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोकगीत समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोकगीत समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47381. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436: रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47382. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436मे रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था” प्रविष्टि गद्य, लोकगीत समीक्षा आ “मैथिली लोकगीतक संकट आ संरक्षणक आवश्यकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4745, सूचकांक पंक्ति 3436मे रमानन्द झा "रमण"क “मैथिली लोक गीतक अवस्था” प्रविष्टि गद्य, लोकगीत समीक्षा आ “मैथिली लोकगीतक संकट आ संरक्षणक आवश्यकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4746 : विदेह-सदेह 35 — रमानन्द झा "रमण": नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति

प्रश्न 47383. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437: रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3437मे रमानन्द झा "रमण"क प्रविष्टि “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47384. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437: रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47385. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437: रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा-इतिहास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा-इतिहास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा-इतिहास” अछि।

प्रश्न 47386. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437: रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाल मैथिली कथाको आधुनिक प्रवृत्ति

उत्तर: घ. नेपाल मैथिली कथाको आधुनिक प्रवृत्ति

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल मैथिली कथाको आधुनिक प्रवृत्ति” अछि।

प्रश्न 47387. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437: रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाल मैथिली कथाको आधुनिक प्रवृत्ति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाल मैथिली कथाको आधुनिक प्रवृत्ति

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल मैथिली कथाको आधुनिक प्रवृत्ति” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47388. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437: रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रमानन्द झा "रमण", विधा गद्य, उप-विधा कथा-इतिहास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रमानन्द झा "रमण", विधा गद्य, उप-विधा कथा-इतिहास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47389. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437: रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47390. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437: रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा-इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा-इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47391. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437: रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47392. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437मे रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति” प्रविष्टि गद्य, कथा-इतिहास आ “नेपाल मैथिली कथाको आधुनिक प्रवृत्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4746, सूचकांक पंक्ति 3437मे रमानन्द झा "रमण"क “नेपालमे मैथिली कथाक विकास औ प्रवृत्ति” प्रविष्टि गद्य, कथा-इतिहास आ “नेपाल मैथिली कथाको आधुनिक प्रवृत्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4747 : विदेह-सदेह 35 — बृषेश चन्द्र लाल: गोलबा (लघुकथा)

प्रश्न 47393. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गोलबा (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गोलबा (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3438मे बृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “गोलबा (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47394. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47395. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47396. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण परिवेशक व्यंग्यात्मक कथा

उत्तर: घ. ग्रामीण परिवेशक व्यंग्यात्मक कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण परिवेशक व्यंग्यात्मक कथा” अछि।

प्रश्न 47397. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण परिवेशक व्यंग्यात्मक कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण परिवेशक व्यंग्यात्मक कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण परिवेशक व्यंग्यात्मक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47398. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47399. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47400. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47401. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438: बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47402. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438मे बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण परिवेशक व्यंग्यात्मक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4747, सूचकांक पंक्ति 3438मे बृषेश चन्द्र लालक “गोलबा (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ग्रामीण परिवेशक व्यंग्यात्मक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4748 : विदेह-सदेह 35 — दुर्गानन्द मंडल: पारस (लघुकथा)

प्रश्न 47403. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439: दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. पारस (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारस (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3439मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “पारस (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47404. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439: दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47405. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439: दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47406. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439: दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पारसक प्रतीकात्मकता

उत्तर: घ. पारसक प्रतीकात्मकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पारसक प्रतीकात्मकता” अछि।

प्रश्न 47407. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439: दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पारसक प्रतीकात्मकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पारसक प्रतीकात्मकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारसक प्रतीकात्मकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47408. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439: दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47409. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439: दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47410. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439: दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47411. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439: दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47412. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439मे दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारसक प्रतीकात्मकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4748, सूचकांक पंक्ति 3439मे दुर्गानन्द मंडलक “पारस (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारसक प्रतीकात्मकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4749 : विदेह-सदेह 35 — दुर्गानन्द मंडल: बुढ़िया फूसि (लघुकथा)

प्रश्न 47413. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440: दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बुढ़िया फूसि (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुढ़िया फूसि (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3440मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47414. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440: दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47415. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440: दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47416. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440: दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बुजुर्ग महिलाक दुर्दशा

उत्तर: घ. बुजुर्ग महिलाक दुर्दशा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बुजुर्ग महिलाक दुर्दशा” अछि।

प्रश्न 47417. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440: दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बुजुर्ग महिलाक दुर्दशा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बुजुर्ग महिलाक दुर्दशा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बुजुर्ग महिलाक दुर्दशा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47418. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440: दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47419. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440: दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47420. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440: दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47421. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440: दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47422. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440मे दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बुजुर्ग महिलाक दुर्दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4749, सूचकांक पंक्ति 3440मे दुर्गानन्द मंडलक “बुढ़िया फूसि (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बुजुर्ग महिलाक दुर्दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4750 : विदेह-सदेह 35 — दुर्गानन्द मंडल: दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना

प्रश्न 47423. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441: दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3441मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47424. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441: दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47425. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441: दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. शुभेच्छा/सन्देश

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. शुभेच्छा/सन्देश

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शुभेच्छा/सन्देश” अछि।

प्रश्न 47426. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441: दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. राखी पर्वक मैथिली सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।

उत्तर: घ. राखी पर्वक मैथिली सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “राखी पर्वक मैथिली सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।” अछि।

प्रश्न 47427. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441: दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. राखी पर्वक मैथिली सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. राखी पर्वक मैथिली सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राखी पर्वक मैथिली सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47428. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441: दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा शुभेच्छा/सन्देश

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा शुभेच्छा/सन्देश

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47429. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441: दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47430. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441: दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ शुभेच्छा/सन्देशक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ शुभेच्छा/सन्देशक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47431. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441: दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47432. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441मे दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना” प्रविष्टि गद्य, शुभेच्छा/सन्देश आ “राखी पर्वक मैथिली सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4750, सूचकांक पंक्ति 3441मे दुर्गानन्द मंडलक “दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना” प्रविष्टि गद्य, शुभेच्छा/सन्देश आ “राखी पर्वक मैथिली सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4751 : विदेह-सदेह 35 — उमेश मंडल: रोहिनयाँ आम

प्रश्न 47433. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442: उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रोहिनयाँ आम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रोहिनयाँ आम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3442मे उमेश मंडलक प्रविष्टि “रोहिनयाँ आम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47434. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442: उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47435. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442: उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा/यात्रा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा/यात्रा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/यात्रा” अछि।

प्रश्न 47436. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442: उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बाल-स्मृति, आमक मिठास आ ग्रामीण बालमनोविज्ञान।

उत्तर: घ. बाल-स्मृति, आमक मिठास आ ग्रामीण बालमनोविज्ञान।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-स्मृति, आमक मिठास आ ग्रामीण बालमनोविज्ञान।” अछि।

प्रश्न 47437. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442: उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बाल-स्मृति, आमक मिठास आ ग्रामीण बालमनोविज्ञान।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बाल-स्मृति, आमक मिठास आ ग्रामीण बालमनोविज्ञान।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-स्मृति, आमक मिठास आ ग्रामीण बालमनोविज्ञान।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47438. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442: उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा/यात्रा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा/यात्रा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47439. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442: उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47440. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442: उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा/यात्राक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा/यात्राक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47441. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442: उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47442. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442मे उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम” प्रविष्टि गद्य, कथा/यात्रा आ “बाल-स्मृति, आमक मिठास आ ग्रामीण बालमनोविज्ञान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4751, सूचकांक पंक्ति 3442मे उमेश मंडलक “रोहिनयाँ आम” प्रविष्टि गद्य, कथा/यात्रा आ “बाल-स्मृति, आमक मिठास आ ग्रामीण बालमनोविज्ञान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4752 : विदेह-सदेह 35 — उमेश मंडल: जेहन मन तेहन जिनगी

प्रश्न 47443. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443: उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जेहन मन तेहन जिनगी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जेहन मन तेहन जिनगी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3443मे उमेश मंडलक प्रविष्टि “जेहन मन तेहन जिनगी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47444. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443: उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47445. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443: उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. दार्शनिक कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. दार्शनिक कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दार्शनिक कथा” अछि।

प्रश्न 47446. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443: उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवनदर्शन। करुण आ शान्त रसक सुन्दर मिश्रण।

उत्तर: घ. जीवनदर्शन। करुण आ शान्त रसक सुन्दर मिश्रण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवनदर्शन। करुण आ शान्त रसक सुन्दर मिश्रण।” अछि।

प्रश्न 47447. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443: उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवनदर्शन। करुण आ शान्त रसक सुन्दर मिश्रण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवनदर्शन। करुण आ शान्त रसक सुन्दर मिश्रण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवनदर्शन। करुण आ शान्त रसक सुन्दर मिश्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47448. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443: उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47449. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443: उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47450. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443: उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ दार्शनिक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ दार्शनिक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47451. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443: उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47452. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443मे उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक कथा आ “जीवनदर्शन। करुण आ शान्त रसक सुन्दर मिश्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4752, सूचकांक पंक्ति 3443मे उमेश मंडलक “जेहन मन तेहन जिनगी” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक कथा आ “जीवनदर्शन। करुण आ शान्त रसक सुन्दर मिश्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4753 : विदेह-सदेह 35 — उमेश मंडल: निर्मलीसँ जनकपुर धाम

प्रश्न 47453. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444: उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. निर्मलीसँ जनकपुर धाम

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. निर्मलीसँ जनकपुर धाम

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3444मे उमेश मंडलक प्रविष्टि “निर्मलीसँ जनकपुर धाम” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47454. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444: उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47455. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444: उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. यात्रा वृत्तान्त

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. यात्रा वृत्तान्त

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा वृत्तान्त” अछि।

प्रश्न 47456. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444: उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. तीर्थयात्रा-कथा

उत्तर: घ. तीर्थयात्रा-कथा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “तीर्थयात्रा-कथा” अछि।

प्रश्न 47457. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444: उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. तीर्थयात्रा-कथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तीर्थयात्रा-कथा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीर्थयात्रा-कथा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47458. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444: उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा वृत्तान्त

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा वृत्तान्त

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47459. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444: उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47460. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444: उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ यात्रा वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ यात्रा वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47461. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444: उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47462. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444मे उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम” प्रविष्टि गद्य, यात्रा वृत्तान्त आ “तीर्थयात्रा-कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4753, सूचकांक पंक्ति 3444मे उमेश मंडलक “निर्मलीसँ जनकपुर धाम” प्रविष्टि गद्य, यात्रा वृत्तान्त आ “तीर्थयात्रा-कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4754 : विदेह-सदेह 35 — उमेश मंडल: कबिलपुरक कथा गोष्ठी

प्रश्न 47463. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445: उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कबिलपुरक कथा गोष्ठी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कबिलपुरक कथा गोष्ठी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3445मे उमेश मंडलक प्रविष्टि “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47464. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445: उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47465. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445: उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. कथा-गोष्ठी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. कथा-गोष्ठी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा-गोष्ठी” अछि।

प्रश्न 47466. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445: उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्यिक गोष्ठीक जीवन्त चित्रण

उत्तर: घ. साहित्यिक गोष्ठीक जीवन्त चित्रण

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक गोष्ठीक जीवन्त चित्रण” अछि।

प्रश्न 47467. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445: उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्यिक गोष्ठीक जीवन्त चित्रण

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्यिक गोष्ठीक जीवन्त चित्रण

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक गोष्ठीक जीवन्त चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47468. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445: उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा-गोष्ठी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा-गोष्ठी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47469. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445: उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47470. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445: उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ कथा-गोष्ठीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ कथा-गोष्ठीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47471. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445: उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47472. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445मे उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि गद्य, कथा-गोष्ठी आ “साहित्यिक गोष्ठीक जीवन्त चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4754, सूचकांक पंक्ति 3445मे उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि गद्य, कथा-गोष्ठी आ “साहित्यिक गोष्ठीक जीवन्त चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4755 : विदेह-सदेह 35 — उमेश मंडल: सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि

प्रश्न 47473. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446: उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3446मे उमेश मंडलक प्रविष्टि “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47474. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446: उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47475. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446: उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रतीकात्मक कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रतीकात्मक कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रतीकात्मक कथा” अछि।

प्रश्न 47476. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446: उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. जीवन-सागर

उत्तर: घ. जीवन-सागर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-सागर” अछि।

प्रश्न 47477. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446: उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. जीवन-सागर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जीवन-सागर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-सागर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47478. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446: उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा प्रतीकात्मक कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा प्रतीकात्मक कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47479. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446: उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47480. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446: उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि”कें विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रतीकात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रतीकात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47481. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446: उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47482. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446मे उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि” प्रविष्टि गद्य, प्रतीकात्मक कथा आ “जीवन-सागर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4755, सूचकांक पंक्ति 3446मे उमेश मंडलक “सगर राति श्रोता कथा- सागरमे डुबकी लगेलन्हि” प्रविष्टि गद्य, प्रतीकात्मक कथा आ “जीवन-सागर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4756 : विदेह-सदेह 35 — उमेश मंडल: सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०

प्रश्न 47483. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447: उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3447मे उमेश मंडलक प्रविष्टि “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47484. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447: उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47485. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447: उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 47486. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447: उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सुपौलक मैथिली साहित्यिक गतिविधि

उत्तर: घ. सुपौलक मैथिली साहित्यिक गतिविधि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सुपौलक मैथिली साहित्यिक गतिविधि” अछि।

प्रश्न 47487. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447: उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सुपौलक मैथिली साहित्यिक गतिविधि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सुपौलक मैथिली साहित्यिक गतिविधि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुपौलक मैथिली साहित्यिक गतिविधि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47488. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447: उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47489. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447: उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47490. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447: उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47491. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447: उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47492. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447मे उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सुपौलक मैथिली साहित्यिक गतिविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4756, सूचकांक पंक्ति 3447मे उमेश मंडलक “सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१०” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सुपौलक मैथिली साहित्यिक गतिविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4757 : विदेह-सदेह 35 — मुन्ना जी: सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा

प्रश्न 47493. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448: मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3448मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47494. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448: मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47495. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448: मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा/आलेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा/आलेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/आलेख” अछि।

प्रश्न 47496. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448: मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली लघुकथाक सामाजिक दायित्व

उत्तर: घ. मैथिली लघुकथाक सामाजिक दायित्व

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लघुकथाक सामाजिक दायित्व” अछि।

प्रश्न 47497. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448: मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली लघुकथाक सामाजिक दायित्व

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लघुकथाक सामाजिक दायित्व

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लघुकथाक सामाजिक दायित्व” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47498. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448: मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47499. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448: मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47500. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448: मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47501. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448: मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47502. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448मे मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलेख आ “मैथिली लघुकथाक सामाजिक दायित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4757, सूचकांक पंक्ति 3448मे मुन्ना जीक “सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलेख आ “मैथिली लघुकथाक सामाजिक दायित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4758 : विदेह-सदेह 35 — मुन्ना जी: विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)

प्रश्न 47503. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449: मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3449मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47504. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449: मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47505. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449: मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सम्पादकीय

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सम्पादकीय

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।

प्रश्न 47506. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449: मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विशेषांकक उपलब्धि

उत्तर: घ. विशेषांकक उपलब्धि

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विशेषांकक उपलब्धि” अछि।

प्रश्न 47507. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449: मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विशेषांकक उपलब्धि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विशेषांकक उपलब्धि

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विशेषांकक उपलब्धि” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47508. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449: मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47509. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449: मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47510. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449: मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47511. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449: मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47512. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449मे मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “विशेषांकक उपलब्धि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4758, सूचकांक पंक्ति 3449मे मुन्ना जीक “विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “विशेषांकक उपलब्धि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4759 : विदेह-सदेह 35 — मुन्ना जी: किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा

प्रश्न 47513. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450: मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3450मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47514. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450: मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47515. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450: मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समीक्षा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समीक्षा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

प्रश्न 47516. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450: मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. लघुकथाक स्वरूप आ चुनौतीपर गहन विचार।

उत्तर: घ. लघुकथाक स्वरूप आ चुनौतीपर गहन विचार।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “लघुकथाक स्वरूप आ चुनौतीपर गहन विचार।” अछि।

प्रश्न 47517. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450: मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. लघुकथाक स्वरूप आ चुनौतीपर गहन विचार।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लघुकथाक स्वरूप आ चुनौतीपर गहन विचार।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लघुकथाक स्वरूप आ चुनौतीपर गहन विचार।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47518. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450: मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47519. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450: मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47520. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450: मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47521. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450: मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47522. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450मे मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “लघुकथाक स्वरूप आ चुनौतीपर गहन विचार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4759, सूचकांक पंक्ति 3450मे मुन्ना जीक “किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “लघुकथाक स्वरूप आ चुनौतीपर गहन विचार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4760 : विदेह-सदेह 35 — मुन्ना जी: रिपोर्ताज (विधागत)

प्रश्न 47523. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451: मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रिपोर्ताज (विधागत)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिपोर्ताज (विधागत)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3451मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “रिपोर्ताज (विधागत)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47524. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451: मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47525. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451: मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रिपोर्ताज

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रिपोर्ताज

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

प्रश्न 47526. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451: मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समसामयिक घटनाक पत्रकारीय प्रस्तुति।

उत्तर: घ. समसामयिक घटनाक पत्रकारीय प्रस्तुति।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समसामयिक घटनाक पत्रकारीय प्रस्तुति।” अछि।

प्रश्न 47527. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451: मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समसामयिक घटनाक पत्रकारीय प्रस्तुति।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समसामयिक घटनाक पत्रकारीय प्रस्तुति।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समसामयिक घटनाक पत्रकारीय प्रस्तुति।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47528. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451: मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47529. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451: मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47530. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451: मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47531. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451: मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47532. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451मे मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “समसामयिक घटनाक पत्रकारीय प्रस्तुति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4760, सूचकांक पंक्ति 3451मे मुन्ना जीक “रिपोर्ताज (विधागत)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “समसामयिक घटनाक पत्रकारीय प्रस्तुति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4761 : विदेह-सदेह 35 — अनिल गौतम: तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप

प्रश्न 47533. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452: अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3452मे अनिल गौतमक प्रविष्टि “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47534. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452: अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47535. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452: अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. साक्षात्कार

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. साक्षात्कार

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

प्रश्न 47536. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452: अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. वरिष्ठ साहित्यकार तारानन्द वियोगीक साहित्य-यात्रा।

उत्तर: घ. वरिष्ठ साहित्यकार तारानन्द वियोगीक साहित्य-यात्रा।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “वरिष्ठ साहित्यकार तारानन्द वियोगीक साहित्य-यात्रा।” अछि।

प्रश्न 47537. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452: अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. वरिष्ठ साहित्यकार तारानन्द वियोगीक साहित्य-यात्रा।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. वरिष्ठ साहित्यकार तारानन्द वियोगीक साहित्य-यात्रा।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वरिष्ठ साहित्यकार तारानन्द वियोगीक साहित्य-यात्रा।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47538. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452: अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनिल गौतम, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनिल गौतम, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47539. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452: अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47540. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452: अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47541. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452: अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47542. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452मे अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “वरिष्ठ साहित्यकार तारानन्द वियोगीक साहित्य-यात्रा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4761, सूचकांक पंक्ति 3452मे अनिल गौतमक “तारानन्द वियोगीक संग वार्तालाप” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “वरिष्ठ साहित्यकार तारानन्द वियोगीक साहित्य-यात्रा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4762 : विदेह-सदेह 35 — तारानन्द वियोगी: साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य

प्रश्न 47543. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453: तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3453मे तारानन्द वियोगीक प्रविष्टि “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47544. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453: तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47545. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453: तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. भाषण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. भाषण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषण” अछि।

प्रश्न 47546. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453: तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. साहित्य अकादेमी सम्मान

उत्तर: घ. साहित्य अकादेमी सम्मान

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी सम्मान” अछि।

प्रश्न 47547. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453: तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. साहित्य अकादेमी सम्मान

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. साहित्य अकादेमी सम्मान

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47548. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453: तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक तारानन्द वियोगी, विधा गद्य, उप-विधा भाषण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक तारानन्द वियोगी, विधा गद्य, उप-विधा भाषण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47549. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453: तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47550. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453: तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ भाषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ भाषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47551. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453: तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47552. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453मे तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य” प्रविष्टि गद्य, भाषण आ “साहित्य अकादेमी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4762, सूचकांक पंक्ति 3453मे तारानन्द वियोगीक “साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य” प्रविष्टि गद्य, भाषण आ “साहित्य अकादेमी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4763 : विदेह-सदेह 35 — गंगेश गुंजन: लाट साहेबक किरानी

प्रश्न 47553. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. लाट साहेबक किरानी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. लाट साहेबक किरानी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3454मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “लाट साहेबक किरानी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47554. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47555. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य/कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य/कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/कथा” अछि।

प्रश्न 47556. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. औपनिवेशिक मानसिकता

उत्तर: घ. औपनिवेशिक मानसिकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “औपनिवेशिक मानसिकता” अछि।

प्रश्न 47557. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. औपनिवेशिक मानसिकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. औपनिवेशिक मानसिकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “औपनिवेशिक मानसिकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47558. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47559. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47560. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47561. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454: गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47562. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454मे गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/कथा आ “औपनिवेशिक मानसिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4763, सूचकांक पंक्ति 3454मे गंगेश गुंजनक “लाट साहेबक किरानी” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/कथा आ “औपनिवेशिक मानसिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4764 : विदेह-सदेह 35 — किशन कारीगर: किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी

प्रश्न 47563. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455: किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3455मे किशन कारीगरक प्रविष्टि “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47564. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455: किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47565. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455: किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोकव्यंग्य

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोकव्यंग्य

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोकव्यंग्य” अछि।

प्रश्न 47566. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455: किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ग्रामीण उपमाक प्रयोग

उत्तर: घ. ग्रामीण उपमाक प्रयोग

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण उपमाक प्रयोग” अछि।

प्रश्न 47567. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455: किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. ग्रामीण उपमाक प्रयोग

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ग्रामीण उपमाक प्रयोग

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण उपमाक प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47568. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455: किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा लोकव्यंग्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा लोकव्यंग्य

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47569. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455: किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47570. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455: किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोकव्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोकव्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47571. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455: किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47572. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455मे किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी” प्रविष्टि गद्य, लोकव्यंग्य आ “ग्रामीण उपमाक प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4764, सूचकांक पंक्ति 3455मे किशन कारीगरक “किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ, मूरही-कचरी” प्रविष्टि गद्य, लोकव्यंग्य आ “ग्रामीण उपमाक प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4765 : विदेह-सदेह 35 — सत्येन्द्र कुमार झा: हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक

प्रश्न 47573. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456: सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3456मे सत्येन्द्र कुमार झाक प्रविष्टि “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47574. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456: सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47575. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456: सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य-निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य-निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य-निबन्ध” अछि।

प्रश्न 47576. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456: सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामाजिक बुराई पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष।

उत्तर: घ. सामाजिक बुराई पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक बुराई पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष।” अछि।

प्रश्न 47577. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456: सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामाजिक बुराई पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामाजिक बुराई पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक बुराई पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47578. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456: सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्येन्द्र कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य-निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्येन्द्र कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य-निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47579. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456: सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47580. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456: सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47581. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456: सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47582. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456मे सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य-निबन्ध आ “सामाजिक बुराई पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4765, सूचकांक पंक्ति 3456मे सत्येन्द्र कुमार झाक “हिस्सक, भैयारी, स्थानान्तरित दोष, अप्रासंगिक” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य-निबन्ध आ “सामाजिक बुराई पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4766 : विदेह-सदेह 35 — मिथिलेश कुमार झा: कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति

प्रश्न 47583. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457: मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3457मे मिथिलेश कुमार झाक प्रविष्टि “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47584. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457: मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47585. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457: मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

प्रश्न 47586. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457: मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. कानूनी-दार्शनिक विमर्श

उत्तर: घ. कानूनी-दार्शनिक विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “कानूनी-दार्शनिक विमर्श” अछि।

प्रश्न 47587. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457: मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. कानूनी-दार्शनिक विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कानूनी-दार्शनिक विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कानूनी-दार्शनिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47588. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457: मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47589. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457: मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47590. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457: मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47591. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457: मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47592. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457मे मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कानूनी-दार्शनिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4766, सूचकांक पंक्ति 3457मे मिथिलेश कुमार झाक “कानून, दर्शन, कन्यादानक चिन्ता, महानगर-संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कानूनी-दार्शनिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4767 : विदेह-सदेह 35 — चण्डेश्वर खाँ: कोटा

प्रश्न 47593. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458: चण्डेश्वर खाँक “कोटा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कोटा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कोटा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3458मे चण्डेश्वर खाँक प्रविष्टि “कोटा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47594. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458: चण्डेश्वर खाँक “कोटा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47595. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458: चण्डेश्वर खाँक “कोटा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47596. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458: चण्डेश्वर खाँक “कोटा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अल्पसंख्यक मुद्दा

उत्तर: घ. अल्पसंख्यक मुद्दा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अल्पसंख्यक मुद्दा” अछि।

प्रश्न 47597. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458: चण्डेश्वर खाँक “कोटा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अल्पसंख्यक मुद्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अल्पसंख्यक मुद्दा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अल्पसंख्यक मुद्दा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47598. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458: चण्डेश्वर खाँक “कोटा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक चण्डेश्वर खाँ, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक चण्डेश्वर खाँ, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47599. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458: चण्डेश्वर खाँक “कोटा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47600. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458: चण्डेश्वर खाँक “कोटा”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47601. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458: चण्डेश्वर खाँक “कोटा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47602. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458मे चण्डेश्वर खाँक “कोटा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “अल्पसंख्यक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4767, सूचकांक पंक्ति 3458मे चण्डेश्वर खाँक “कोटा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “अल्पसंख्यक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4768 : विदेह-सदेह 35 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: विचार टिप्पणी

प्रश्न 47603. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विचार टिप्पणी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विचार टिप्पणी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3459मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रविष्टि “विचार टिप्पणी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47604. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47605. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. टिप्पणी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. टिप्पणी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “टिप्पणी” अछि।

प्रश्न 47606. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. सामयिक मुद्दा

उत्तर: घ. सामयिक मुद्दा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “सामयिक मुद्दा” अछि।

प्रश्न 47607. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. सामयिक मुद्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. सामयिक मुद्दा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामयिक मुद्दा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47608. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा टिप्पणी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा टिप्पणी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47609. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47610. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ टिप्पणीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47611. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47612. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी” प्रविष्टि गद्य, टिप्पणी आ “सामयिक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4768, सूचकांक पंक्ति 3459मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “विचार टिप्पणी” प्रविष्टि गद्य, टिप्पणी आ “सामयिक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4769 : विदेह-सदेह 35 — जितेन्द्र झा: के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि

प्रश्न 47613. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460: जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3460मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47614. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460: जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47615. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460: जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीतिक/सामाजिक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीतिक/सामाजिक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक/सामाजिक” अछि।

प्रश्न 47616. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460: जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नेपाली राजनीति आ युगान्तर

उत्तर: घ. नेपाली राजनीति आ युगान्तर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाली राजनीति आ युगान्तर” अछि।

प्रश्न 47617. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460: जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नेपाली राजनीति आ युगान्तर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नेपाली राजनीति आ युगान्तर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाली राजनीति आ युगान्तर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47618. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460: जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक/सामाजिक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीतिक/सामाजिक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47619. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460: जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47620. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460: जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीतिक/सामाजिकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीतिक/सामाजिकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47621. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460: जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47622. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460मे जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक/सामाजिक आ “नेपाली राजनीति आ युगान्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4769, सूचकांक पंक्ति 3460मे जितेन्द्र झाक “के राखत रुमालक इज्जति, नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि, नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि” प्रविष्टि गद्य, राजनीतिक/सामाजिक आ “नेपाली राजनीति आ युगान्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4770 : विदेह-सदेह 35 — जितेन्द्र झा: काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि

प्रश्न 47623. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461: जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3461मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47624. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461: जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47625. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461: जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. प्रवासी अनुभव

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. प्रवासी अनुभव

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रवासी अनुभव” अछि।

प्रश्न 47626. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461: जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्रवास आ परम्पराक बीच संवाद

उत्तर: घ. प्रवास आ परम्पराक बीच संवाद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवास आ परम्पराक बीच संवाद” अछि।

प्रश्न 47627. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461: जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्रवास आ परम्पराक बीच संवाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्रवास आ परम्पराक बीच संवाद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवास आ परम्पराक बीच संवाद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47628. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461: जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा प्रवासी अनुभव

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा प्रवासी अनुभव

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47629. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461: जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47630. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461: जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ प्रवासी अनुभवक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ प्रवासी अनुभवक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47631. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461: जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47632. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461मे जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि” प्रविष्टि गद्य, प्रवासी अनुभव आ “प्रवास आ परम्पराक बीच संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4770, सूचकांक पंक्ति 3461मे जितेन्द्र झाक “काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी, काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा, परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि” प्रविष्टि गद्य, प्रवासी अनुभव आ “प्रवास आ परम्पराक बीच संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4771 : विदेह-सदेह 35 — जितेन्द्र झा: उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष

प्रश्न 47633. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462: जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3462मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47634. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462: जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47635. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462: जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. सांस्कृतिक कोष

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. सांस्कृतिक कोष

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सांस्कृतिक कोष” अछि।

प्रश्न 47636. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462: जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विद्यापति कोषक आवश्यकता

उत्तर: घ. विद्यापति कोषक आवश्यकता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विद्यापति कोषक आवश्यकता” अछि।

प्रश्न 47637. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462: जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विद्यापति कोषक आवश्यकता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विद्यापति कोषक आवश्यकता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विद्यापति कोषक आवश्यकता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47638. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462: जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक कोष

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा सांस्कृतिक कोष

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47639. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462: जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47640. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462: जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ सांस्कृतिक कोषक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ सांस्कृतिक कोषक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47641. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462: जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47642. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462मे जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक कोष आ “विद्यापति कोषक आवश्यकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4771, सूचकांक पंक्ति 3462मे जितेन्द्र झाक “उपदैत गाम बसाओत बाबा, महाकवि विद्यापति अक्षयकोष” प्रविष्टि गद्य, सांस्कृतिक कोष आ “विद्यापति कोषक आवश्यकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4772 : विदेह-सदेह 35 — बिपिन झा: कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि

प्रश्न 47643. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463: बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3463मे बिपिन झाक प्रविष्टि “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47644. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463: बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47645. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463: बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. निबन्ध/विकास चिन्तन

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. निबन्ध/विकास चिन्तन

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/विकास चिन्तन” अछि।

प्रश्न 47646. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463: बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. विकास, चुनाव, गांधी दर्शन, बाल मजदूर, शहीद चिता धुंआ – बहुविध विषय पर गहन मैथिली निबन्ध।

उत्तर: घ. विकास, चुनाव, गांधी दर्शन, बाल मजदूर, शहीद चिता धुंआ – बहुविध विषय पर गहन मैथिली निबन्ध।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “विकास, चुनाव, गांधी दर्शन, बाल मजदूर, शहीद चिता धुंआ – बहुविध विषय पर गहन मैथिली निबन्ध।” अछि।

प्रश्न 47647. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463: बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. विकास, चुनाव, गांधी दर्शन, बाल मजदूर, शहीद चिता धुंआ – बहुविध विषय पर गहन मैथिली निबन्ध।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विकास, चुनाव, गांधी दर्शन, बाल मजदूर, शहीद चिता धुंआ – बहुविध विषय पर गहन मैथिली निबन्ध।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विकास, चुनाव, गांधी दर्शन, बाल मजदूर, शहीद चिता धुंआ – बहुविध विषय पर गहन मैथिली निबन्ध।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47648. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463: बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/विकास चिन्तन

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/विकास चिन्तन

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47649. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463: बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47650. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463: बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ निबन्ध/विकास चिन्तनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ निबन्ध/विकास चिन्तनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47651. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463: बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47652. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463मे बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/विकास चिन्तन आ “विकास, चुनाव, गांधी दर्शन, बाल मजदूर, शहीद चिता धुंआ – बहुविध विषय पर गहन मैथिली निबन्ध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4772, सूचकांक पंक्ति 3463मे बिपिन झाक “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र), प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल..! गाँधीविचार आदि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/विकास चिन्तन आ “विकास, चुनाव, गांधी दर्शन, बाल मजदूर, शहीद चिता धुंआ – बहुविध विषय पर गहन मैथिली निबन्ध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4773 : विदेह-सदेह 35 — खड़ानन्द यादव: गहूमक बोरा

प्रश्न 47653. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464: खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. गहूमक बोरा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. गहूमक बोरा

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3464मे खड़ानन्द यादवक प्रविष्टि “गहूमक बोरा” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47654. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464: खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47655. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464: खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47656. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464: खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अन्नक संकट

उत्तर: घ. अन्नक संकट

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्नक संकट” अछि।

प्रश्न 47657. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464: खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अन्नक संकट

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अन्नक संकट

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्नक संकट” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47658. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464: खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक खड़ानन्द यादव, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक खड़ानन्द यादव, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47659. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464: खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47660. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464: खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47661. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464: खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47662. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464मे खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “अन्नक संकट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4773, सूचकांक पंक्ति 3464मे खड़ानन्द यादवक “गहूमक बोरा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “अन्नक संकट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4774 : विदेह-सदेह 35 — सत्यानंद पाठक: स्वान विमर्श (लघुकथा)

प्रश्न 47663. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465: सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. स्वान विमर्श (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. स्वान विमर्श (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3465मे सत्यानंद पाठकक प्रविष्टि “स्वान विमर्श (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47664. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465: सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47665. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465: सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47666. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465: सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. प्राणी-मानव सम्बन्ध

उत्तर: घ. प्राणी-मानव सम्बन्ध

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “प्राणी-मानव सम्बन्ध” अछि।

प्रश्न 47667. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465: सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. प्राणी-मानव सम्बन्ध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. प्राणी-मानव सम्बन्ध

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्राणी-मानव सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47668. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465: सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक सत्यानंद पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक सत्यानंद पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47669. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465: सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47670. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465: सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47671. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465: सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47672. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465मे सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्राणी-मानव सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4774, सूचकांक पंक्ति 3465मे सत्यानंद पाठकक “स्वान विमर्श (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्राणी-मानव सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4775 : विदेह-सदेह 35 — प्रो. वीणा ठाकुर: परिणीता (लघुकथा)

प्रश्न 47673. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466: प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. परिणीता (लघुकथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. परिणीता (लघुकथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3466मे प्रो. वीणा ठाकुरक प्रविष्टि “परिणीता (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47674. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466: प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47675. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466: प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47676. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466: प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी विवाहित जीवनक सूक्ष्म मनोविश्लेषण।

उत्तर: घ. नारी विवाहित जीवनक सूक्ष्म मनोविश्लेषण।

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी विवाहित जीवनक सूक्ष्म मनोविश्लेषण।” अछि।

प्रश्न 47677. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466: प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी विवाहित जीवनक सूक्ष्म मनोविश्लेषण।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी विवाहित जीवनक सूक्ष्म मनोविश्लेषण।

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी विवाहित जीवनक सूक्ष्म मनोविश्लेषण।” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47678. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466: प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47679. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466: प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47680. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466: प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47681. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466: प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47682. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466मे प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नारी विवाहित जीवनक सूक्ष्म मनोविश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4775, सूचकांक पंक्ति 3466मे प्रो. वीणा ठाकुरक “परिणीता (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नारी विवाहित जीवनक सूक्ष्म मनोविश्लेषण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4776 : विदेह-सदेह 35 — साकेतानन्द: आछे दिन पाछे गए

प्रश्न 47683. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467: साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आछे दिन पाछे गए

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आछे दिन पाछे गए

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3467मे साकेतानन्दक प्रविष्टि “आछे दिन पाछे गए” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47684. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467: साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47685. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467: साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. संस्मरण

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. संस्मरण

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

प्रश्न 47686. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467: साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. पुरान दिनक याद

उत्तर: घ. पुरान दिनक याद

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “पुरान दिनक याद” अछि।

प्रश्न 47687. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467: साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. पुरान दिनक याद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. पुरान दिनक याद

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुरान दिनक याद” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47688. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467: साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक साकेतानन्द, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक साकेतानन्द, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47689. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467: साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47690. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467: साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47691. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467: साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47692. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467मे साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “पुरान दिनक याद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4776, सूचकांक पंक्ति 3467मे साकेतानन्दक “आछे दिन पाछे गए” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “पुरान दिनक याद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4777 : विदेह-सदेह 35 — नवेन्दु कुमार झा: रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद

प्रश्न 47693. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468: नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3468मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47694. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468: नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47695. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468: नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. राजनीति/विकास

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. राजनीति/विकास

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीति/विकास” अछि।

प्रश्न 47696. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468: नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. समकालीन राजनीति, जाति, औद्योगिकीकरण आ मैथिली मीडियाक समीक्षा।</टीआर>

उत्तर: घ. समकालीन राजनीति, जाति, औद्योगिकीकरण आ मैथिली मीडियाक समीक्षा।</टीआर>

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन राजनीति, जाति, औद्योगिकीकरण आ मैथिली मीडियाक समीक्षा।</टीआर>” अछि।

प्रश्न 47697. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468: नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. समकालीन राजनीति, जाति, औद्योगिकीकरण आ मैथिली मीडियाक समीक्षा।</टीआर>

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. समकालीन राजनीति, जाति, औद्योगिकीकरण आ मैथिली मीडियाक समीक्षा।</टीआर>

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन राजनीति, जाति, औद्योगिकीकरण आ मैथिली मीडियाक समीक्षा।</टीआर>” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47698. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468: नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीति/विकास

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा राजनीति/विकास

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47699. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468: नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47700. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468: नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ राजनीति/विकासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ राजनीति/विकासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47701. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468: नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47702. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468मे नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद” प्रविष्टि गद्य, राजनीति/विकास आ “समकालीन राजनीति, जाति, औद्योगिकीकरण आ मैथिली मीडियाक समीक्षा।</टीआर>” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4777, सूचकांक पंक्ति 3468मे नवेन्दु कुमार झाक “रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल, जाति व्यवस्था, मिथिलांचलमे उद्योग, मतदान, राहुलक मिशन बिहार, मैथिली दैनिक मिथिला समाद” प्रविष्टि गद्य, राजनीति/विकास आ “समकालीन राजनीति, जाति, औद्योगिकीकरण आ मैथिली मीडियाक समीक्षा।</टीआर>” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4778 : विदेह-सदेह 35 — देवशंकर नवीन: बिलाड़ि, मोटर साइकिल

प्रश्न 47703. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469: देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. बिलाड़ि, मोटर साइकिल

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बिलाड़ि, मोटर साइकिल

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3469मे देवशंकर नवीनक प्रविष्टि “बिलाड़ि, मोटर साइकिल” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47704. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469: देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47705. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469: देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. व्यंग्य-कथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. व्यंग्य-कथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य-कथा” अछि।

प्रश्न 47706. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469: देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आधुनिक उपभोक्तावादी विचित्रता

उत्तर: घ. आधुनिक उपभोक्तावादी विचित्रता

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक उपभोक्तावादी विचित्रता” अछि।

प्रश्न 47707. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469: देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आधुनिक उपभोक्तावादी विचित्रता

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आधुनिक उपभोक्तावादी विचित्रता

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक उपभोक्तावादी विचित्रता” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47708. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469: देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य-कथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य-कथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47709. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469: देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47710. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469: देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ व्यंग्य-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ व्यंग्य-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47711. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469: देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47712. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469मे देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य-कथा आ “आधुनिक उपभोक्तावादी विचित्रता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4778, सूचकांक पंक्ति 3469मे देवशंकर नवीनक “बिलाड़ि, मोटर साइकिल” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य-कथा आ “आधुनिक उपभोक्तावादी विचित्रता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4779 : विदेह-सदेह 35 — डॉ. शेफालिका वर्मा: एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर

प्रश्न 47713. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470: डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3470मे डॉ. शेफालिका वर्माक प्रविष्टि “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47714. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470: डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47715. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470: डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एकांकी/नाटक

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. एकांकी/नाटक

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “एकांकी/नाटक” अछि।

प्रश्न 47716. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470: डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. नारी-विमर्श

उत्तर: घ. नारी-विमर्श

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-विमर्श” अछि।

प्रश्न 47717. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470: डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. नारी-विमर्श

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. नारी-विमर्श

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47718. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470: डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी/नाटक

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी/नाटक

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47719. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470: डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47720. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470: डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ एकांकी/नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ एकांकी/नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47721. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470: डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47722. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470मे डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर” प्रविष्टि गद्य, एकांकी/नाटक आ “नारी-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4779, सूचकांक पंक्ति 3470मे डॉ. शेफालिका वर्माक “एकटा आर महाभिनिष्क्रमण, शैतानक वारिस, प्रतिवादक स्वर” प्रविष्टि गद्य, एकांकी/नाटक आ “नारी-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4780 : विदेह-सदेह 35 — भारत भूषण झा: आत्मबल (लघु कथा)

प्रश्न 47723. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471: भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. आत्मबल (लघु कथा)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मबल (लघु कथा)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3471मे भारत भूषण झाक प्रविष्टि “आत्मबल (लघु कथा)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47724. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471: भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47725. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471: भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

प्रश्न 47726. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471: भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. आत्मविश्वास आ मनुष्यक आन्तरिक शक्ति।</टीआर>

उत्तर: घ. आत्मविश्वास आ मनुष्यक आन्तरिक शक्ति।</टीआर>

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मविश्वास आ मनुष्यक आन्तरिक शक्ति।</टीआर>” अछि।

प्रश्न 47727. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471: भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. आत्मविश्वास आ मनुष्यक आन्तरिक शक्ति।</टीआर>

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. आत्मविश्वास आ मनुष्यक आन्तरिक शक्ति।</टीआर>

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मविश्वास आ मनुष्यक आन्तरिक शक्ति।</टीआर>” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47728. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471: भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक भारत भूषण झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक भारत भूषण झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47729. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471: भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47730. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471: भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47731. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471: भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47732. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471मे भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “आत्मविश्वास आ मनुष्यक आन्तरिक शक्ति।</टीआर>” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4780, सूचकांक पंक्ति 3471मे भारत भूषण झाक “आत्मबल (लघु कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “आत्मविश्वास आ मनुष्यक आन्तरिक शक्ति।</टीआर>” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4781 : विदेह-सदेह 35 — कपिलेश्वर राउत: अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)

प्रश्न 47733. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472: कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3472मे कपिलेश्वर राउतक प्रविष्टि “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47734. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472: कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/पद्य मिश्रित

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/पद्य मिश्रित

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य मिश्रित” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47735. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472: कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुकथा-संग्रह

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुकथा-संग्रह

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा-संग्रह” अछि।

प्रश्न 47736. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472: कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. बहुविध सामाजिक मुद्दा

उत्तर: घ. बहुविध सामाजिक मुद्दा

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुविध सामाजिक मुद्दा” अछि।

प्रश्न 47737. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472: कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. बहुविध सामाजिक मुद्दा

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. बहुविध सामाजिक मुद्दा

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बहुविध सामाजिक मुद्दा” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47738. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472: कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य/पद्य मिश्रित, उप-विधा लघुकथा-संग्रह

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य/पद्य मिश्रित, उप-विधा लघुकथा-संग्रह

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47739. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472: कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47740. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472: कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य/पद्य मिश्रित-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुकथा-संग्रहक रूपमे गद्य/पद्य मिश्रित-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुकथा-संग्रहक रूपमे गद्य/पद्य मिश्रित-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47741. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472: कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47742. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472मे कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)” प्रविष्टि गद्य/पद्य मिश्रित, लघुकथा-संग्रह आ “बहुविध सामाजिक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4781, सूचकांक पंक्ति 3472मे कपिलेश्वर राउतक “अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा (वंश, उलहन, थरथरी, भोग, कुमारि भोजन, कीर्तन, मूर्दा, सतमाए, तकरीर, पान, मई दिवस, भूख, बेथा, किसानक पूजी, छूआ-छूत, कलियुगक निर्णय)” प्रविष्टि गद्य/पद्य मिश्रित, लघुकथा-संग्रह आ “बहुविध सामाजिक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4782 : विदेह-सदेह 35 — प्रकाश झा: विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च

प्रश्न 47743. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473: प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3473मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47744. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473: प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47745. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473: प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. रंगमंच लेख

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. रंगमंच लेख

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रंगमंच लेख” अछि।

प्रश्न 47746. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473: प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली रंगमञ्चक अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।</टीआर>

उत्तर: घ. मैथिली रंगमञ्चक अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।</टीआर>

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगमञ्चक अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।</टीआर>” अछि।

प्रश्न 47747. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473: प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली रंगमञ्चक अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।</टीआर>

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली रंगमञ्चक अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।</टीआर>

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगमञ्चक अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।</टीआर>” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47748. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473: प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा रंगमंच लेख

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा रंगमंच लेख

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47749. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473: प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47750. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473: प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ रंगमंच लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ रंगमंच लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47751. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473: प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47752. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473मे प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च” प्रविष्टि गद्य, रंगमंच लेख आ “मैथिली रंगमञ्चक अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।</टीआर>” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4782, सूचकांक पंक्ति 3473मे प्रकाश झाक “विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च” प्रविष्टि गद्य, रंगमंच लेख आ “मैथिली रंगमञ्चक अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।</टीआर>” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4783 : विदेह-सदेह 35 — अनमोल झा: रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध

प्रश्न 47753. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474: अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3474मे अनमोल झाक प्रविष्टि “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47754. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474: अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/कविता मिश्रित

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/कविता मिश्रित

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/कविता मिश्रित” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47755. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474: अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लघुगद्य/सूक्ति

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लघुगद्य/सूक्ति

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुगद्य/सूक्ति” अछि।

प्रश्न 47756. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474: अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. अस्तित्ववादी चिन्तन

उत्तर: घ. अस्तित्ववादी चिन्तन

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “अस्तित्ववादी चिन्तन” अछि।

प्रश्न 47757. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474: अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. अस्तित्ववादी चिन्तन

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. अस्तित्ववादी चिन्तन

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अस्तित्ववादी चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47758. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474: अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य/कविता मिश्रित, उप-विधा लघुगद्य/सूक्ति

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक अनमोल झा, विधा गद्य/कविता मिश्रित, उप-विधा लघुगद्य/सूक्ति

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47759. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474: अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47760. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474: अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य/कविता मिश्रित-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लघुगद्य/सूक्तिक रूपमे गद्य/कविता मिश्रित-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लघुगद्य/सूक्तिक रूपमे गद्य/कविता मिश्रित-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47761. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474: अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47762. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474मे अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध” प्रविष्टि गद्य/कविता मिश्रित, लघुगद्य/सूक्ति आ “अस्तित्ववादी चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4783, सूचकांक पंक्ति 3474मे अनमोल झाक “रिलेशन-२, तंग, डेरायल, पिछड़ल राज्य, एटेचमेन्ट, बढ़ैत चलू, दुःख, समाज, रिटर्न, फर्ज, तेल, प्रश्न, पाप, माता न कुमाता भवति, आँखिक पानि, चिन्ता, बुद्धि, कंट्रोल, चिन्तन, बोध” प्रविष्टि गद्य/कविता मिश्रित, लघुगद्य/सूक्ति आ “अस्तित्ववादी चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4784 : विदेह-सदेह 35 — रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’: जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी

प्रश्न 47763. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475: रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

क. जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी

व्याख्या: सूचकांक पंक्ति 3475मे रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क प्रविष्टि “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी” रूपमे देल अछि।

प्रश्न 47764. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475: रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी”क मुख्य विधा कोन अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. गद्य/नाट्य

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. गद्य/नाट्य

व्याख्या: विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/नाट्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

प्रश्न 47765. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475: रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. लोकनाट्य/एकांकी

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. लोकनाट्य/एकांकी

व्याख्या: उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोकनाट्य/एकांकी” अछि।

प्रश्न 47766. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475: रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. मैथिली लोकगाथाक रूपान्तर

उत्तर: घ. मैथिली लोकगाथाक रूपान्तर

व्याख्या: टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लोकगाथाक रूपान्तर” अछि।

प्रश्न 47767. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475: रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

क. मैथिली लोकगाथाक रूपान्तर

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. मैथिली लोकगाथाक रूपान्तर

व्याख्या: समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लोकगाथाक रूपान्तर” रूपमे देखाइत अछि।

प्रश्न 47768. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475: रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. लेखक रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’, विधा गद्य/नाट्य, उप-विधा लोकनाट्य/एकांकी

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. लेखक रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’, विधा गद्य/नाट्य, उप-विधा लोकनाट्य/एकांकी

व्याख्या: सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

प्रश्न 47769. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475: रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ग. समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

व्याख्या: टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

प्रश्न 47770. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475: रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी”केँ विदेह-सदेह 35क गद्य/नाट्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

ग. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

घ. ई पाठ लोकनाट्य/एकांकीक रूपमे गद्य/नाट्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

उत्तर: घ. ई पाठ लोकनाट्य/एकांकीक रूपमे गद्य/नाट्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

व्याख्या: विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

प्रश्न 47771. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475: रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 35क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

ख. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: क. ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

व्याख्या: प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

प्रश्न 47772. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475: एहि खण्डक सार की अछि?

क. ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

ख. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475मे रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी” प्रविष्टि गद्य/नाट्य, लोकनाट्य/एकांकी आ “मैथिली लोकगाथाक रूपान्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

ग. ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

घ. एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तर: ख. खण्ड 4784, सूचकांक पंक्ति 3475मे रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क “जट--जटिन (लोकनाट्य- रुपान्तर), एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज, राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी” प्रविष्टि गद्य/नाट्य, लोकनाट्य/एकांकी आ “मैथिली लोकगाथाक रूपान्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 35क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

व्याख्या: ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

खण्ड 4783 : विदेह-सदेह 35 — राधा कान्त मंडल ‘रमण’ — कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)

प्रश्न 47773. ‘कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47774. ‘कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47775. ‘कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47776. ‘कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47777. ‘कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47778. ‘कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47779. ‘कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47780. ‘कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47781. ‘कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47782. ‘कने हमहूँ पढ़व (मैथिली एकांकी)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शिक्षाक महत्ता; ग्रामीण बालकक जिज्ञासा।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4784 : विदेह-सदेह 35 — ऋषि वशिष्ठ — अन्हरजाली

प्रश्न 47783. ‘अन्हरजाली’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47784. ‘अन्हरजाली’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47785. ‘अन्हरजाली’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47786. ‘अन्हरजाली’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47787. ‘अन्हरजाली’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47788. ‘अन्हरजाली’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47789. ‘अन्हरजाली’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47790. ‘अन्हरजाली’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47791. ‘अन्हरजाली’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47792. ‘अन्हरजाली’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अन्धविश्वास आ जादू-टोनाक विसंगति।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4785 : विदेह-सदेह 35 — नन्द विलास राय — चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)

प्रश्न 47793. ‘चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47794. ‘चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47795. ‘चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47796. ‘चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47797. ‘चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47798. ‘चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47799. ‘चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47800. ‘चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47801. ‘चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47802. ‘चौठचन्द्रक दही (लघुकथा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं लोक विश्वास; हास्य-व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4786 : विदेह-सदेह 35 — धीरेन्द्र कुमार — अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)

प्रश्न 47803. ‘अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47804. ‘अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47805. ‘अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47806. ‘अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47807. ‘अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47808. ‘अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47809. ‘अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47810. ‘अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47811. ‘अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47812. ‘अहींक लेल, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं मौलाइल गाछक फूल: उपन्यासक मूल्यांकन।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4787 : विदेह-सदेह 35 — जीवकान्त — जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)

प्रश्न 47813. ‘जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47814. ‘जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47815. ‘जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’कें गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47816. ‘जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47817. ‘जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47818. ‘जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47819. ‘जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47820. ‘जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47821. ‘जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47822. ‘जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल” (समीक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ विस्तृत समीक्षा; मिथिलाक आधुनिक उपन्यास परम्परा।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4788 : विदेह-सदेह 35 — बेचन ठाकुर — बेटीक अपमान, छीनरदेवी

प्रश्न 47823. ‘बेटीक अपमान, छीनरदेवी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47824. ‘बेटीक अपमान, छीनरदेवी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47825. ‘बेटीक अपमान, छीनरदेवी’कैँ गद्य\/नाट्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47826. ‘बेटीक अपमान, छीनरदेवी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47827. ‘बेटीक अपमान, छीनरदेवी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47828. ‘बेटीक अपमान, छीनरदेवी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47829. ‘बेटीक अपमान, छीनरदेवी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47830. ‘बेटीक अपमान, छीनरदेवी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47831. ‘बेटीक अपमान, छीनरदेवी’मे गद्य\/नाट्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्य\/नाट्यक रूप बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्य\/नाट्यक रूप बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47832. ‘बेटीक अपमान, छीनरदेवी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ बेटीक सम्मान; नारी सशक्तिकरण पर करारा व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4789 : विदेह-सदेह 35 — अर्चना कुमर — आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा

प्रश्न 47833. ‘आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47834. ‘आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47835. ‘आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47836. ‘आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47837. ‘आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47838. ‘आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47839. ‘आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47840. ‘आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47841. ‘आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47842. ‘आस, विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन), बेटा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं लोककथाक समकालीन पुनर्कथन; नारी परिप्रेक्ष्य।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4790 : विदेह-सदेह 35 — शिव कुमार झा ‘टिल्लू’ — समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा

प्रश्न 47843. ‘समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47844. ‘समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47845. ‘समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47846. ‘समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47847. ‘समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47848. ‘समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47849. ‘समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47850. ‘समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47851. ‘समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47852. ‘समीक्षा- सूर्यमुखी, मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान, ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा, चित्रकथा समीक्षा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ मैथिली समकालीन कविता, कथा आ चित्रकला पर गहन आलोचना।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4791 : विदेह-सदेह 35 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर

प्रश्न 47853. ‘सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47854. ‘सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47855. ‘सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर’कें गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47856. ‘सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47857. ‘सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47858. ‘सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47859. ‘सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47860. ‘सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47861. ‘सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47862. ‘सहस्रं शीर्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, मैथिली गजल शास्त्र, मैथिली समीक्षाशास्त्र, बाल गुरु, एकटा पत्र, माए-बेटाक मनोविज्ञान, शारदानगर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं मैथिली गजलशास्त्र आ समीक्षाक महाकाय रचना; विदेहक प्रणेता।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4792 : विदेह-सदेह 35 — प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह — मैथिली बाल काव्यधारा

प्रश्न 47863. ‘मैथिली बाल काव्यधारा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47864. ‘मैथिली बाल काव्यधारा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47865. ‘मैथिली बाल काव्यधारा’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47866. ‘मैथिली बाल काव्यधारा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47867. ‘मैथिली बाल काव्यधारा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47868. ‘मैथिली बाल काव्यधारा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47869. ‘मैथिली बाल काव्यधारा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47870. ‘मैथिली बाल काव्यधारा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47871. ‘मैथिली बाल काव्यधारा’मे गद्यक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr> कें स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr> कें स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47872. ‘मैथिली बाल काव्यधारा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकें मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकें मैथिली बालकविताक परम्परा; शिक्षाप्रद आलोचना।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4793 : विदेह-सदेह 35 — देवांशु वत्स — प्रगतिक रहस्य

प्रश्न 47873. ‘प्रगतिक रहस्य’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47874. ‘प्रगतिक रहस्य’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47875. ‘प्रगतिक रहस्य’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47876. ‘प्रगतिक रहस्य’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47877. ‘प्रगतिक रहस्य’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47878. ‘प्रगतिक रहस्य’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47879. ‘प्रगतिक रहस्य’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47880. ‘प्रगतिक रहस्य’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47881. ‘प्रगतिक रहस्य’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47882. ‘प्रगतिक रहस्य’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रगतिक अर्थ; सामाजिक विकासक सूत्र।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4794 : विदेह-सदेह 35 — डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’ — किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)

प्रश्न 47883. ‘किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47884. ‘किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47885. ‘किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47886. ‘किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47887. ‘किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47888. ‘किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47889. ‘किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47890. ‘किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47891. ‘किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47892. ‘किछु आजाद गजल (पृ १४५१-१४५५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ मुक्त गजल परम्परा, प्रेम-विरह आ आधुनिकता।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4795 : विदेह-सदेह 35 — सुबोध ठाकुर — नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा

प्रश्न 47893. ‘नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47894. ‘नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47895. ‘नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47896. ‘नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47897. ‘नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47898. ‘नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47899. ‘नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47900. ‘नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47901. ‘नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47902. ‘नव वर्षक रंग, प्रयास, प्रतीक्षा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं नव वर्षक उमंग; आशावादी स्वर।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4796 : विदेह-सदेह 35 — सतीश चन्द्र झा — सौंसे बिहार एखनो बेहाल

प्रश्न 47903. ‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47904. ‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47905. ‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47906. ‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47907. ‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47908. ‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47909. ‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47910. ‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47911. ‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47912. ‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बिहारक दुर्दशा। सामाजिक चेतना।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4797 : विदेह-सदेह 35 — जीवकान्त — बबलू बनबय छक्का-सत्ता

प्रश्न 47913. ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47914. ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47915. ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47916. ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47917. ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47918. ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47919. ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47920. ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47921. ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47922. ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं राजनीतिक भ्रष्टाचार पर चोट।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4798 : विदेह-सदेह 35 — राजेश मोहन झा — घुरना मोन पड़ैए

प्रश्न 47923. ‘घुरना मोन पड़ैए’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47924. ‘घुरना मोन पड़ैए’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47925. ‘घुरना मोन पड़ैए’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47926. ‘घुरना मोन पड़ैए’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47927. ‘घुरना मोन पड़ैए’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47928. ‘घुरना मोन पड़ैए’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47929. ‘घुरना मोन पड़ैए’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47930. ‘घुरना मोन पड़ैए’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47931. ‘घुरना मोन पड़ैए’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47932. ‘घुरना मोन पड़ैए’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं प्रेम-स्मृति, करुण रस।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4799 : विदेह-सदेह 35 — अरविन्द ठाकुर — आजाद गजल-१-२

प्रश्न 47933. ‘आजाद गजल-१-२’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47934. ‘आजाद गजल-१-२’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47935. ‘आजाद गजल-१-२’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47936. ‘आजाद गजल-१-२’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47937. ‘आजाद गजल-१-२’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47938. ‘आजाद गजल-१-२’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47939. ‘आजाद गजल-१-२’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47940. ‘आजाद गजल-१-२’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47941. ‘आजाद गजल-१-२’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47942. ‘आजाद गजल-१-२’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं उर्दू-मैथिली गजल सम्मिलन।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4800 : विदेह-सदेह 35 — रवि भूषण पाठक — कि भेलए एकरा?

प्रश्न 47943. ‘कि भेलए एकरा?’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47944. ‘कि भेलए एकरा?’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47945. ‘कि भेलए एकरा?’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47946. ‘कि भेलए एकरा?’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47947. ‘कि भेलए एकरा?’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47948. ‘कि भेलए एकरा?’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47949. ‘कि भेलए एकरा?’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47950. ‘कि भेलए एकरा?’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47951. ‘कि भेलए एकरा?’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47952. ‘कि भेलए एकरा?’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रश्नात्मक अतियथार्थवाद।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4801 : विदेह-सदेह 35 — प्रवीण कश्यप — पौरुष पिशाच

प्रश्न 47953. ‘पौरुष पिशाच’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47954. ‘पौरुष पिशाच’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47955. ‘पौरुष पिशाच’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47956. ‘पौरुष पिशाच’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47957. ‘पौरुष पिशाच’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47958. ‘पौरुष पिशाच’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47959. ‘पौरुष पिशाच’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47960. ‘पौरुष पिशाच’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47961. ‘पौरुष पिशाच’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47962. ‘पौरुष पिशाच’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं पितृसत्तात्मक पौरुष पर व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4802 : विदेह-सदेह 35 — राम विलास साहु — चौवनिया नेता

प्रश्न 47963. ‘चौवनिया नेता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47964. ‘चौवनिया नेता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47965. ‘चौवनिया नेता’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47966. ‘चौवनिया नेता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47967. ‘चौवनिया नेता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47968. ‘चौवनिया नेता’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47969. ‘चौवनिया नेता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47970. ‘चौवनिया नेता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47971. ‘चौवनिया नेता’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47972. ‘चौवनिया नेता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं चुनावी राजनीति पैंतरेबाजी।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4803 : विदेह-सदेह 35 — महाकान्त ठाकुर — साहेब

प्रश्न 47973. ‘साहेब’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47974. ‘साहेब’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47975. ‘साहेब’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47976. ‘साहेब’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47977. ‘साहेब’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47978. ‘साहेब’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47979. ‘साहेब’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47980. ‘साहेब’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47981. ‘साहेब’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47982. ‘साहेब’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अधिकारी वर्गक सामाजिक विसंगति।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4804 : विदेह-सदेह 35 — डॉ. शेफालिका वर्मा — स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश

प्रश्न 47983. ‘स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47984. ‘स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47985. ‘स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47986. ‘स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47987. ‘स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47988. ‘स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47989. ‘स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 47990. ‘स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 47991. ‘स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 47992. ‘स्मृति-शेष, बच्चा आ व्यवस्था, देश’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं राष्ट्रप्रेम, बाल अधिकार, नारी स्मृति।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4805 : विदेह-सदेह 35 — सरोज ‘खिलाडी’ — गीत

प्रश्न 47993. ‘गीत’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 47994. ‘गीत’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 47995. ‘गीत’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 47996. ‘गीत’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 47997. ‘गीत’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 47998. ‘गीत’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 47999. ‘गीत’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48000. ‘गीत’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड 4805 : विदेह-सदेह 35 — सरोज ‘खिलाडी’ — गीत

प्रश्न 48001. ‘गीत’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48002. ‘गीत’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ प्रेमगीत; लोक-सुर बोध।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4806 : विदेह-सदेह 35 — श्यामल सुमन — कहू कि फूसि बजय छी?

प्रश्न 48003. ‘कहू कि फूसि बजय छी?’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48004. ‘कहू कि फूसि बजय छी?’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48005. ‘कहू कि फूसि बजय छी?’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48006. ‘कहू कि फूसि बजय छी?’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48007. ‘कहू कि फूसि बजय छी?’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48008. ‘कहू कि फूसि बजय छी?’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48009. ‘कहू कि फूसि बजय छी?’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48010. ‘कहू कि फूसि बजय छी?’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48011. ‘कहू कि फूसि बजय छी?’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48012. ‘कहू कि फूसि बजय छी?’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं प्रश्नोत्तर शैली, दार्शनिकता।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4807 : विदेह-सदेह 35 — काली नाथ ठाकुर — दहेज़ विरोधी रचना

प्रश्न 48013. ‘दहेज़ विरोधी रचना’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48014. ‘दहेज़ विरोधी रचना’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48015. ‘दहेज़ विरोधी रचना’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48016. ‘दहेज़ विरोधी रचना’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48017. ‘दहेज़ विरोधी रचना’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48018. ‘दहेज़ विरोधी रचना’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48019. ‘दहेज़ विरोधी रचना’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48020. ‘दहेज़ विरोधी रचना’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48021. ‘दहेज़ विरोधी रचना’मे पद्यक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr> कें स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr> कें स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48022. ‘दहेज़ विरोधी रचना’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकें सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकें सामाजिक बुराई पर प्रहार; नारी हितेषी।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4808 : विदेह-सदेह 35 — किशन कारीगर — दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता

प्रश्न 48023. ‘दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48024. ‘दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48025. ‘दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48026. ‘दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48027. ‘दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48028. ‘दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48029. ‘दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48030. ‘दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48031. ‘दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48032. ‘दौगल चलि जाएब गाम, आबि गेल नव वर्ष, बँटवारा, एकटा तऽ ओ छलीह, गलचोटका बर, लिखैत रही, नबकनियाँ, किडनी चोर, बीर जबान, हमरो जीबऽ दिअ, हाकिम भऽ गेलाह, पियक्कर, दहेज, देशऽक चिन्ता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ बहुमुखी ग्रामीण कविता; बोली-ठाठ आ हास्य-व्यंग्य।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4809 : विदेह-सदेह 35 — नवीन कुमार “आशा” — मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा

प्रश्न 48033. ‘मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48034. ‘मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48035. ‘मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48036. ‘मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48037. ‘मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48038. ‘मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48039. ‘मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48040. ‘मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48041. ‘मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48042. ‘मच्छर मच्छर, याद अबैए बाबाक लावा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ मच्छर पर व्यंग्य; पितृ स्मृति।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4810 : विदेह-सदेह 35 — मनीष झा “बौआभाई” — फहराइयै पताका

प्रश्न 48043. ‘फहराइयै पताका’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48044. ‘फहराइयै पताका’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48045. ‘फहराइयै पताका’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48046. ‘फहराइयै पताका’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48047. ‘फहराइयै पताका’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48048. ‘फहराइयै पताका’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48049. ‘फहराइयै पताका’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48050. ‘फहराइयै पताका’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48051. ‘फहराइयै पताका’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48052. ‘फहराइयै पताका’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ राष्ट्रध्वज आ गौरव बोध।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4811 : विदेह-सदेह 35 — मुन्नी कामत — समाजक विडम्बना

प्रश्न 48053. ‘समाजक विडम्बना’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ नारी देह पर राजनीति।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48054. ‘समाजक विडम्बना’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48055. ‘समाजक विडम्बना’कँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी देह पर राजनीति।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48056. ‘समाजक विडम्बना’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नारी देह पर राजनीति।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नारी देह पर राजनीति।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48057. ‘समाजक विडम्बना’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी देह पर राजनीति।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48058. ‘समाजक विडम्बना’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48059. ‘समाजक विडम्बना’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी देह पर राजनीति।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48060. ‘समाजक विडम्बना’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नारी देह पर राजनीति।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48061. ‘समाजक विडम्बना’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप नारी देह पर राजनीति।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप नारी देह पर राजनीति।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48062. ‘समाजक विडम्बना’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ नारी देह पर राजनीति।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ नारी देह पर राजनीति।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4812 : विदेह-सदेह 35 — मृदुला प्रधान — ई त बूझू

प्रश्न 48063. ‘ई त बूझू’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48064. ‘ई त बूझू’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48065. ‘ई त बूझू’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48066. ‘ई त बूझू’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48067. ‘ई त बूझू’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48068. ‘ई त बूझू’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48069. ‘ई त बूझू’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48070. ‘ई त बूझू’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48071. ‘ई त बूझू’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48072. ‘ई त बूझू’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं बूझौल परम्पराक आधुनिक कविता।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4813 : विदेह-सदेह 35 — रमा कान्त झा — की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)

प्रश्न 48073. 'की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48074. 'की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48075. 'की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)'कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48076. 'की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48077. 'की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48078. ‘की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48079. ‘की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48080. ‘की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48081. ‘की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48082. ‘की होइत अछि कश्मीरमे आब, रही रही मोन पड़ै अछि गामक, हम की हमर पहचान, माता के चरण कमलमे आरती, बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल, मिथिला नगरी, सौराठ गाम, नचारी, बसन्त आबि गेल (बहुविध)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ मिथिला-प्रेम, कश्मीर मुद्दा, बसंतक गीत; बहुआयामी संवेदना।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4814 : विदेह-सदेह 35 — मनोज कुमार मंडल — बूढ़, किसान

प्रश्न 48083. ‘बूढ़, किसान’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48084. ‘बूढ़, किसान’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48085. ‘बूढ़, किसान’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48086. ‘बूढ़, किसान’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48087. ‘बूढ़, किसान’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48088. ‘बूढ़, किसान’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48089. ‘बूढ़, किसान’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48090. ‘बूढ़, किसान’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48091. ‘बूढ़, किसान’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48092. ‘बूढ़, किसान’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ ग्रामीण बुढ़ापा आ किसान पीड़ा।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4815 : विदेह-सदेह 35 — बेचन ठाकुर — घरनी-बीसा

प्रश्न 48093. ‘घरनी-बीसा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48094. ‘घरनी-बीसा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48095. ‘घरनी-बीसा’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48096. ‘घरनी-बीसा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48097. ‘घरनी-बीसा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48098. ‘घरनी-बीसा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48099. ‘घरनी-बीसा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48100. ‘घरनी-बीसा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48101. ‘घरनी-बीसा’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48102. ‘घरनी-बीसा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गृहिणी-अधिकार; स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4816 : विदेह-सदेह 35 — नन्द विलास राय — अकाल, प्रदूषण रोकू कविता

प्रश्न 48103. ‘अकाल, प्रदूषण रोकू कविता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48104. ‘अकाल, प्रदूषण रोकू कविता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48105. ‘अकाल, प्रदूषण रोकू कविता’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48106. ‘अकाल, प्रदूषण रोकू कविता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48107. ‘अकाल, प्रदूषण रोकू कविता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48108. ‘अकाल, प्रदूषण रोकू कविता’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48109. ‘अकाल, प्रदूषण रोकू कविता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48110. ‘अकाल, प्रदूषण रोकू कविता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48111. ‘अकाल, प्रदूषण रोकू कविता’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48112. ‘अकाल, प्रदूषण रोकू कविता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं प्रदूषण आ कृषि संकट पर चिन्तन।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4817 : विदेह-सदेह 35 — गजेन्द्र ठाकुर — घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)

प्रश्न 48113. 'घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48114. 'घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48115. 'घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)'कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48116. 'घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48117. 'घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48118. ‘घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48119. ‘घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48120. ‘घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48121. ‘घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)’मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr> केँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr> केँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48122. ‘घृणाक तरहरिमे, घड़ी पूजा, नजरि लागि जाइ छै, ठाढ लत्तीकेँ पढ़ैत छी, हमर आकांक्षाक अग्नि, उजाहिमे उपलाइत, कटिहारी, भाग्यशाली, हाइकू\/शेनर्यू, कुण्डलिया, रुबाइ, कता, गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ विविध काव्यरूप; आधुनिक चेतना आ प्रयोगधर्मिता।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4818 : विदेह-सदेह 35 — श्वेता झा चौधरी — मिथिला चित्रकला (चित्र)

प्रश्न 48123. ‘मिथिला चित्रकला (चित्र)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48124. ‘मिथिला चित्रकला (चित्र)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48125. ‘मिथिला चित्रकला (चित्र)’कैँ चित्रकला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48126. ‘मिथिला चित्रकला (चित्र)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48127. ‘मिथिला चित्रकला (चित्र)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48128. ‘मिथिला चित्रकला (चित्र)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48129. ‘मिथिला चित्रकला (चित्र)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48130. ‘मिथिला चित्रकला (चित्र)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48131. ‘मिथिला चित्रकला (चित्र)’मे चित्रकलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. चित्रकलाक रूप मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. चित्रकलाक रूप मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48132. ‘मिथिला चित्रकला (चित्र)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिला चित्रकला; परम्परागत मधुबनी शैली।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4819 : विदेह-सदेह 35 — अनुपमा प्रियदर्शिनी — चित्रकला

प्रश्न 48133. ‘चित्रकला’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48134. ‘चित्रकला’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48135. ‘चित्रकला’कँ चित्रकला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48136. ‘चित्रकला’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48137. ‘चित्रकला’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48138. ‘चित्रकला’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48139. ‘चित्रकला’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48140. ‘चित्रकला’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48141. ‘चित्रकला’मे चित्रकलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. चित्रकलाक रूप समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. चित्रकलाक रूप समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48142. ‘चित्रकला’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं समसामयिक मैथिली महिला चित्रकारक रचना।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4820 : विदेह-सदेह 35 — श्वेता झा (सिंगापुर) — चित्रकला

प्रश्न 48143. ‘चित्रकला’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48144. ‘चित्रकला’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48145. ‘चित्रकला’कैं चित्रकला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48146. ‘चित्रकला’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48147. ‘चित्रकला’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48148. ‘चित्रकला’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48149. ‘चित्रकला’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48150. ‘चित्रकला’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48151. ‘चित्रकला’मे चित्रकलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. चित्रकलाक रूप सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. चित्रकलाक रूप सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48152. ‘चित्रकला’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं सिंगापुर प्रवासमे मिथिला पेंटिंग; वैश्विक विस्तार।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4821 : विदेह-सदेह 35 — गुंजन कर्ण — चित्रकला

प्रश्न 48153. ‘चित्रकला’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48154. ‘चित्रकला’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48155. ‘चित्रकला’कैँ चित्रकला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48156. ‘चित्रकला’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48157. ‘चित्रकला’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48158. ‘चित्रकला’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48159. ‘चित्रकला’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48160. ‘चित्रकला’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48161. ‘चित्रकला’मे चित्रकलाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. चित्रकलाक रूप नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. चित्रकलाक रूप नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48162. ‘चित्रकला’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr> धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ नारी दृष्टि सँ समसामयिक शैली।<\/tr> धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4822 : विदेह-सदेह 35 — तुनिशा प्रियम — किछु चित्र

प्रश्न 48163. ‘किछु चित्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48164. ‘किछु चित्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48165. ‘किछु चित्र’कें चित्रकला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48166. ‘किछु चित्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48167. ‘किछु चित्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48168. ‘किछु चित्र’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48169. ‘किछु चित्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48170. ‘किछु चित्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48171. ‘किछु चित्र’मे चित्रकलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. चित्रकलाक रूप बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. चित्रकलाक रूप बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48172. ‘किछु चित्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं बाल चित्रकला आ कल्पनाशीलता।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4823 : विदेह-सदेह 35 — बिपिन झा (लम्बा निबन्ध संग्रह सँ अलग प्रविष्टि) — प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)

प्रश्न 48173. ‘प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48174. ‘प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48175. ‘प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48176. ‘प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48177. ‘प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48178. ‘प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48179. ‘प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48180. ‘प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48181. ‘प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr> कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48182. ‘प्रदेश करे विकास, बिहार-विकास, विरासत करे संरक्षण, गुरुशिष्य परम्परा, बालमजदूर, शहीद चिता धुँआ, पर्वक औचित्य आदि (बहुविध)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ गहन सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक आ नैतिक निबन्ध।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4824 : विदेह-सदेह 35 — मिथिलेश कुमार झा — कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख

प्रश्न 48183. ‘कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48184. ‘कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48185. ‘कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48186. ‘कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48187. ‘कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48188. ‘कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48189. ‘कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48190. ‘कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48191. ‘कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48192. ‘कानून, दर्शन, कन्यादान, महानगर संस्कृति (पृ २९९-३०३) पहिने सँ उल्लेख’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं आधुनिकता-परम्परा बीच समन्वय।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4825 : विदेह-सदेह 35 — बिपिन झा (पृ ३३८-३७४) already counted सँ अलग रचनासभ — “कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा

प्रश्न 48193. ‘“कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr> सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48194. ‘“कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48195. ‘“कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr> धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48196. ‘“कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr> दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48197. ‘“कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr> सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48198. ‘“कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48199. ‘“कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48200. ‘“कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr>क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48201. ‘“कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr> कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48202. ‘“कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्” सफलताक मूलसूत्र, हे हृदयेश्वरी: कटाक्षालोचन, की नब साल की पुरान साल, गाँधीविचारक महत्ता, मिथिलांचल आ बिहार चुनाव, विरासत संरक्षण, विषवेलक सिञ्चन, गुरुशिष्य, भारत-नेपाल, मजदूर दिवस, शहीद धुँआ, पर्वक उपेक्षा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr> धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं विस्तृत सांस्कृतिक आ राजनीतिक विश्लेषण।<\/tr> धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4826 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण

प्रश्न 48203. ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48204. ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48205. ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48206. ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48207. ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48208. ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48209. ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48210. ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48211. ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48212. ‘विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सम्पादक; विद्यापति पुनर्पाठ; ऐतिहासिक सत्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4827 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — रुबाइ: कता: गजल: हाइकू

प्रश्न 48213. ‘रुबाइ: कता: गजल: हाइकू’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48214. ‘रुबाइ: कता: गजल: हाइकू’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48215. ‘रुबाइ: कता: गजल: हाइकू’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48216. ‘रुबाइ: कता: गजल: हाइकू’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48217. ‘रुबाइ: कता: गजल: हाइकू’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48218. ‘रुबाइ: कता: गजल: हाइकू’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48219. ‘रुबाइ: कता: गजल: हाइकू’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तरक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48220. ‘रुबाइ: कता: गजल: हाइकू’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तरक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तरक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48221. ‘रुबाइ: कता: गजल: हाइकू’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48222. ‘रुबाइ: कता: गजल: हाइकू’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं फ़ारसी-जापानी शैली; मैथिली रूपान्तर धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4828 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — प्राकृत आ पालि

प्रश्न 48223. ‘प्राकृत आ पालि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48224. ‘प्राकृत आ पालि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48225. ‘प्राकृत आ पालि’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48226. ‘प्राकृत आ पालि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48227. ‘प्राकृत आ पालि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48228. ‘प्राकृत आ पालि’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48229. ‘प्राकृत आ पालि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्धक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48230. ‘प्राकृत आ पालि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्धक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्धक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48231. ‘प्राकृत आ पालि’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48232. ‘प्राकृत आ पालि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं भाषिक इतिहास; मैथिली-प्राकृत सम्बन्ध धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4829 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिली गजल- दू युग

प्रश्न 48233. ‘मैथिली गजल- दू युग’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. गजल आन्दोलनक विकासक्रम

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. गजल आन्दोलनक विकासक्रम

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गजल आन्दोलनक विकासक्रम सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48234. ‘मैथिली गजल- दू युग’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. गजल आन्दोलनक विकासक्रम

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. गजल आन्दोलनक विकासक्रम

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48235. ‘मैथिली गजल- दू युग’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. गजल आन्दोलनक विकासक्रम

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. गजल आन्दोलनक विकासक्रम

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गजल आन्दोलनक विकासक्रम धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48236. ‘मैथिली गजल- दू युग’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक गजल आन्दोलनक विकासक्रम दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक गजल आन्दोलनक विकासक्रम दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48237. ‘मैथिली गजल- दू युग’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. गजल आन्दोलनक विकासक्रम

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. गजल आन्दोलनक विकासक्रम

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गजल आन्दोलनक विकासक्रम सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48238. ‘मैथिली गजल- दू युग’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. गजल आन्दोलनक विकासक्रम

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48239. ‘मैथिली गजल- दू युग’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गजल आन्दोलनक विकासक्रम
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गजल आन्दोलनक विकासक्रम
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गजल आन्दोलनक विकासक्रमक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48240. ‘मैथिली गजल- दू युग’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गजल आन्दोलनक विकासक्रमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गजल आन्दोलनक विकासक्रमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48241. ‘मैथिली गजल- दू युग’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप गजल आन्दोलनक विकासक्रम कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप गजल आन्दोलनक विकासक्रम कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48242. ‘मैथिली गजल- दू युग’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गजल आन्दोलनक विकासक्रम धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गजल आन्दोलनक विकासक्रम धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4830 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव

प्रश्न 48243. ‘विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं भूमण्डलीकरण; भाषा संकट सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48244. ‘विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48245. ‘विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भूमण्डलीकरण; भाषा संकट धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48246. ‘विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक भूमण्डलीकरण; भाषा संकट दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक भूमण्डलीकरण; भाषा संकट दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48247. ‘विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भूमण्डलीकरण; भाषा संकट सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48248. ‘विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48249. ‘विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकट

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भूमण्डलीकरण; भाषा संकटक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48250. ‘विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकटक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. भूमण्डलीकरण; भाषा संकटक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48251. ‘विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप भूमण्डलीकरण; भाषा संकट कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप भूमण्डलीकरण; भाषा संकट कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48252. ‘विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ भूमण्डलीकरण; भाषा संकट धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ भूमण्डलीकरण; भाषा संकट धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4831 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — होलीपर व्यंग्य

प्रश्न 48253. ‘होलीपर व्यंग्य’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48254. ‘होलीपर व्यंग्य’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48255. ‘होलीपर व्यंग्य’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48256. ‘होलीपर व्यंग्य’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48257. ‘होलीपर व्यंग्य’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48258. ‘होलीपर व्यंग्य’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48259. ‘होलीपर व्यंग्य’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48260. ‘होलीपर व्यंग्य’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48261. ‘होलीपर व्यंग्य’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48262. ‘होलीपर व्यंग्य’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सामाजिक विसंगतिपर तीखी टिप्पणी धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4832 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ

प्रश्न 48263. ‘मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48264. ‘मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48265. ‘मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48266. ‘मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48267. ‘मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48268. ‘मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48269. ‘मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48270. ‘मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48271. ‘मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48272. ‘मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं वैकल्पिक मीडिया; सिनेमा-नाट्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4833 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच

प्रश्न 48273. ‘मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48274. ‘मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48275. ‘मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच’कें गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48276. ‘मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48277. ‘मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48278. ‘मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48279. ‘मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभावक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48280. ‘मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभावक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभावक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48281. ‘मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48282. ‘मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं रंगमंचीय अभिनव प्रयोग; Brecht-प्रभाव धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4834 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह

प्रश्न 48283. ‘प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48284. ‘प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48285. ‘प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48286. ‘प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48287. ‘प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48288. ‘प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48289. ‘प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48290. ‘प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48291. ‘प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48292. ‘प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं समकालीन गजलकारक मूल्याङ्कन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4835 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ

प्रश्न 48293. ‘चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48294. ‘चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48295. ‘चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48296. ‘चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48297. ‘चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48298. ‘चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48299. ‘चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48300. ‘चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48301. ‘चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48302. ‘चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं Marlowe-Milton-Eliot; विश्व नाट्य; तुलनात्मक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4836 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — उल्कामुख

प्रश्न 48303. ‘उल्कामुख’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रतीकात्मक; समसामयिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रतीकात्मक; समसामयिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रतीकात्मक; समसामयिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48304. ‘उल्कामुख’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रतीकात्मक; समसामयिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रतीकात्मक; समसामयिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48305. ‘उल्कामुख’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रतीकात्मक; समसामयिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रतीकात्मक; समसामयिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रतीकात्मक; समसामयिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48306. ‘उल्कामुख’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रतीकात्मक; समसामयिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रतीकात्मक; समसामयिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48307. ‘उल्कामुख’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रतीकात्मक; समसामयिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रतीकात्मक; समसामयिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रतीकात्मक; समसामयिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48308. ‘उल्कामुख’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रतीकात्मक; समसामयिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48309. ‘उल्कामुख’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रतीकात्मक; समसामयिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रतीकात्मक; समसामयिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रतीकात्मक; समसामयिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48310. ‘उल्कामुख’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रतीकात्मक; समसामयिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रतीकात्मक; समसामयिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48311. ‘उल्कामुख’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप प्रतीकात्मक; समसामयिक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप प्रतीकात्मक; समसामयिक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48312. ‘उल्कामुख’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं प्रतीकात्मक; समसामयिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं प्रतीकात्मक; समसामयिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4837 : विदेह-सदेह 36 — गजेन्द्र ठाकुर — सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकैं सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ कैं मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकैं... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)

प्रश्न 48313. ‘सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकैं सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ कैं मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकैं... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48314. ‘सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ केँ मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48315. ‘सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ केँ मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48316. ‘सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ केँ मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48317. ‘सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ केँ मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48318. ‘सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ केँ मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48319. ‘सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ केँ मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावादक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48320. ‘सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ केँ मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48321. ‘सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ केँ मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)’मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद केँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद केँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48322. ‘सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ केँ मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ... साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषदक... पुरस्कार, साहित्य अकादेमी दिल्लीक महत्तर सदस्यता, विनीत उत्पलक सूचना... खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी... सम्पादकीय लेखमाला)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ साहित्यिक राजनीति; अकादेमी विरोध; संस्थागत आलोचना; सक्रियतावाद धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4838 : विदेह-सदेह 36 — डॉ रमानन्द झा "रमण" — मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण

प्रश्न 48323. ‘मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48324. ‘मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48325. ‘मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48326. ‘मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48327. ‘मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48328. ‘मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48329. ‘मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञानक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48330. ‘मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञानक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञानक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48331. ‘मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण’मे गद्यक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान कें स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान कें स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48332. ‘मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकें भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकें भाषाविज्ञान; Grierson पुनर्मूल्याङ्कन; औपनिवेशिक ज्ञान धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4839 : विदेह-सदेह 36 — वीरेन्द्र यादव — लघुकथा- बाबा गाछी

प्रश्न 48333. ‘लघुकथा- बाबा गाछी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लोकजीवन; OBC परिवेश
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लोकजीवन; OBC परिवेश
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें लोकजीवन; OBC परिवेश सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48334. ‘लघुकथा- बाबा गाछी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लोकजीवन; OBC परिवेश
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लोकजीवन; OBC परिवेश
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48335. ‘लघुकथा- बाबा गाछी’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लोकजीवन; OBC परिवेश
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लोकजीवन; OBC परिवेश
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोकजीवन; OBC परिवेश धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48336. ‘लघुकथा- बाबा गाछी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लोकजीवन; OBC परिवेश दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लोकजीवन; OBC परिवेश दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48337. ‘लघुकथा- बाबा गाछी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. लोकजीवन; OBC परिवेश
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. लोकजीवन; OBC परिवेश
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोकजीवन; OBC परिवेश सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48338. ‘लघुकथा- बाबा गाछी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. लोकजीवन; OBC परिवेश
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48339. ‘लघुकथा- बाबा गाछी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लोकजीवन; OBC परिवेश
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लोकजीवन; OBC परिवेश
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोकजीवन; OBC परिवेशक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48340. ‘लघुकथा- बाबा गाछी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लोकजीवन; OBC परिवेशक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लोकजीवन; OBC परिवेशक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48341. ‘लघुकथा- बाबा गाछी’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप लोकजीवन; OBC परिवेश कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप लोकजीवन; OBC परिवेश कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48342. ‘लघुकथा- बाबा गाछी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लोकजीवन; OBC परिवेश धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लोकजीवन; OBC परिवेश धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4840 : विदेह-सदेह 36 — बेचन ठाकुर — नोमीनेशन

प्रश्न 48343. ‘नोमीनेशन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48344. ‘नोमीनेशन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48345. ‘नोमीनेशन’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48346. ‘नोमीनेशन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48347. ‘नोमीनेशन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48348. ‘नोमीनेशन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48349. ‘नोमीनेशन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48350. ‘नोमीनेशन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48351. ‘नोमीनेशन’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48352. ‘नोमीनेशन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं राजनैतिक व्यंग्य; चुनावी हास्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4841 : विदेह-सदेह 36 — बेचन ठाकुर — छल-बल

प्रश्न 48353. ‘छल-बल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सामाजिक षड्यन्त्र
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सामाजिक षड्यन्त्र
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सामाजिक षड्यन्त्र सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48354. ‘छल-बल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सामाजिक षड्यन्त्र
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सामाजिक षड्यन्त्र
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48355. ‘छल-बल’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सामाजिक षड्यन्त्र
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सामाजिक षड्यन्त्र
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक षड्यन्त्र धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48356. ‘छल-बल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सामाजिक षड्यन्त्र दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक षड्यन्त्र दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48357. ‘छल-बल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सामाजिक षड्यन्त्र
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सामाजिक षड्यन्त्र
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक षड्यन्त्र सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48358. ‘छल-बल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सामाजिक षड्यन्त्र
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48359. ‘छल-बल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सामाजिक षड्यन्त्र
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सामाजिक षड्यन्त्र
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक षड्यन्त्रक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48360. ‘छल-बल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सामाजिक षड्यन्त्रक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सामाजिक षड्यन्त्रक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48361. ‘छल-बल’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सामाजिक षड्यन्त्र कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सामाजिक षड्यन्त्र कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48362. ‘छल-बल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सामाजिक षड्यन्त्र धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सामाजिक षड्यन्त्र धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4842 : विदेह-सदेह 36 — बेचन ठाकुर — चल आइये

प्रश्न 48363. ‘चल आइये’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं आप्रवासन; पलायन पीड़ा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48364. ‘चल आइये’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48365. ‘चल आइये’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आप्रवासन; पलायन पीड़ा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48366. ‘चल आइये’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक आप्रवासन; पलायन पीड़ा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक आप्रवासन; पलायन पीड़ा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48367. ‘चल आइये’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आप्रवासन; पलायन पीड़ा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48368. ‘चल आइये’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48369. ‘चल आइये’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आप्रवासन; पलायन पीड़ा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आप्रवासन; पलायन पीड़ाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48370. ‘चल आइये’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आप्रवासन; पलायन पीड़ाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आप्रवासन; पलायन पीड़ाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48371. ‘चल आइये’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप आप्रवासन; पलायन पीड़ा कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप आप्रवासन; पलायन पीड़ा कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48372. ‘चल आइये’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ आप्रवासन; पलायन पीड़ा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ आप्रवासन; पलायन पीड़ा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4843 : विदेह-सदेह 36 — बेचन ठाकुर — डाक डकोबलि

प्रश्न 48373. ‘डाक डकोबलि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ डाक-व्यवस्था परिक्षेप सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48374. ‘डाक डकोबलि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48375. ‘डाक डकोबलि’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार डाक-व्यवस्था परिक्षेप धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48376. ‘डाक डकोबलि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक डाक-व्यवस्था परिक्षेप दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक डाक-व्यवस्था परिक्षेप दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48377. ‘डाक डकोबलि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल डाक-व्यवस्था परिक्षेप सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48378. ‘डाक डकोबलि’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48379. ‘डाक डकोबलि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. डाक-व्यवस्था परिक्षेप
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ डाक-व्यवस्था परिक्षेपक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48380. ‘डाक डकोबलि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. डाक-व्यवस्था परिक्षेपक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. डाक-व्यवस्था परिक्षेपक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48381. ‘डाक डकोबलि’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप डाक-व्यवस्था परिक्षेप कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप डाक-व्यवस्था परिक्षेप कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48382. ‘डाक डकोबलि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं डाक-व्यवस्था परिक्षेप धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं डाक-व्यवस्था परिक्षेप धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4844 : विदेह-सदेह 36 — आशीष अनचिन्हार — बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी

प्रश्न 48383. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48384. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48385. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48386. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48387. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48388. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48389. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48390. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48391. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48392. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बेचन ठाकुरक ग्रामीण नारी चित्रण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4845 : विदेह-सदेह 36 — आशीष अनचिन्हार — बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान

प्रश्न 48393. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नारी शोषणक विमर्श
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नारी शोषणक विमर्श
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नारी शोषणक विमर्श सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48394. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नारी शोषणक विमर्श
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नारी शोषणक विमर्श
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48395. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नारी शोषणक विमर्श
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नारी शोषणक विमर्श
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी शोषणक विमर्श धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48396. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नारी शोषणक विमर्श दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नारी शोषणक विमर्श दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48397. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नारी शोषणक विमर्श
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नारी शोषणक विमर्श
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी शोषणक विमर्श सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48398. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नारी शोषणक विमर्श
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48399. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नारी शोषणक विमर्श
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नारी शोषणक विमर्श
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी शोषणक विमर्शक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48400. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नारी शोषणक विमर्शक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नारी शोषणक विमर्शक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48401. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप नारी शोषणक विमर्श कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप नारी शोषणक विमर्श कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48402. ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नारी शोषणक विमर्श धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नारी शोषणक विमर्श धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4846 : विदेह-सदेह 36 — आशीष अनचिन्हार — विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच

प्रश्न 48403. ‘विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48404. ‘विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48405. ‘विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48406. ‘विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48407. ‘विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48408. ‘विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48409. ‘विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावादक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48410. ‘विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48411. ‘विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48412. ‘विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ वैकल्पिक रंगमंच; सक्रियतावाद धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4847 : विदेह-सदेह 36 — आशीष अनचिन्हार — मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला

प्रश्न 48413. ‘मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48414. ‘मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48415. ‘मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48416. ‘मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48417. ‘मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48418. ‘मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48419. ‘मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48420. ‘मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48421. ‘मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48422. ‘मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गजल आन्दोलन; साहित्यिक पत्रकारिता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4848 : विदेह-सदेह 36 — आशीष अनचिन्हार — १९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार

प्रश्न 48423. ‘१९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48424. ‘१९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48425. ‘१९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48426. ‘१९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48427. ‘१९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48428. ‘१९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48429. ‘१९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंगक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48430. ‘१९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंगक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंगक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48431. ‘१९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48432. ‘१९ जुलाइ २०१२ कैं श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं Bakhtin dialogism; समकालीन कविक अन्तरंग धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4849 : विदेह-सदेह 36 — मनोज झा मुक्ति — विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा

प्रश्न 48433. ‘विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48434. ‘विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48435. ‘विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48436. ‘विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48437. ‘विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48438. ‘विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48439. ‘विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सवक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48440. ‘विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सवक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सवक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48441. ‘विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48442. ‘विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सांस्कृतिक रिपोर्टिंग; विद्यापति उत्सव धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4850 : विदेह-सदेह 36 — मनोज झा मुक्ति — जनगणनामे मातृभाषा

प्रश्न 48443. ‘जनगणनामे मातृभाषा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48444. ‘जनगणनामे मातृभाषा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48445. ‘जनगणनामे मातृभाषा’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48446. ‘जनगणनामे मातृभाषा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48447. ‘जनगणनामे मातृभाषा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48448. ‘जनगणनामे मातृभाषा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48449. ‘जनगणनामे मातृभाषा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48450. ‘जनगणनामे मातृभाषा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48451. ‘जनगणनामे मातृभाषा’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48452. ‘जनगणनामे मातृभाषा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ भाषिक अस्मिता; जनगणना राजनीति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4851 : विदेह-सदेह 36 — नरेन्द्र मिश्र — दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल

प्रश्न 48453. ‘दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48454. ‘दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48455. ‘दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48456. ‘दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48457. ‘दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48458. ‘दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48459. ‘दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48460. ‘दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48461. ‘दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48462. ‘दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ पर्वकालीन नाट्य; लोकधर्मी धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4852 : विदेह-सदेह 36 — महाकवि भास/ बिपिन कुमार झा (अनुवादक) — कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)

प्रश्न 48463. ‘कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48464. ‘कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48465. ‘कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48466. ‘कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48467. ‘कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48468. ‘कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48469. ‘कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48470. ‘कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48471. ‘कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48472. ‘कर्णभारम् (मैथिली अनुवाद)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं संस्कृत क्लासिक; भासक ट्रेजेडी धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4853 : विदेह-सदेह 36 — बिपिन कुमार झा — बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ

प्रश्न 48473. ‘बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48474. ‘बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48475. ‘बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48476. ‘बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48477. ‘बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48478. ‘बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48479. ‘बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48480. ‘बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48481. ‘बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48482. ‘बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर, जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता, एकटा प्रश्न मीडिया सँ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं भाषा-प्रविधि; शिक्षा; सामाजिक टिप्पणी धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4854 : विदेह-सदेह 36 — जितेन्द्र झा — नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित

प्रश्न 48483. ‘नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48484. ‘नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48485. ‘नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48486. ‘नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48487. ‘नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48488. ‘नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48489. ‘नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ Cross-border साहित्य; नेपाल-भारतक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48490. ‘नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारतक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. Cross-border साहित्य; नेपाल-भारतक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48491. ‘नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48492. ‘नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ Cross-border साहित्य; नेपाल-भारत धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4855 : विदेह-सदेह 36 — जितेन्द्र झा — मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता

प्रश्न 48493. ‘मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्राचीन काव्य पुनर्पाठ सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48494. ‘मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48495. ‘मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्राचीन काव्य पुनर्पाठ धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48496. ‘मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्राचीन काव्य पुनर्पाठ दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्राचीन काव्य पुनर्पाठ दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48497. ‘मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्राचीन काव्य पुनर्पाठ सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48498. ‘मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48499. ‘मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठ
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्राचीन काव्य पुनर्पाठक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48500. ‘मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्राचीन काव्य पुनर्पाठक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48501. ‘मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप प्राचीन काव्य पुनर्पाठ कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप प्राचीन काव्य पुनर्पाठ कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48502. ‘मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्राचीन काव्य पुनर्पाठ धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्राचीन काव्य पुनर्पाठ धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4856 : विदेह-सदेह 36 — जितेन्द्र झा — अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला

प्रश्न 48503. ‘अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48504. ‘अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48505. ‘अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48506. ‘अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48507. ‘अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48508. ‘अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48509. ‘अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48510. ‘अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48511. ‘अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48512. ‘अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं Mithila painting; सांस्कृतिक संरक्षण धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4857 : विदेह-सदेह 36 — जितेन्द्र झा — विमलक गजल आ सुजितक कथा

प्रश्न 48513. ‘विमलक गजल आ सुजितक कथा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48514. ‘विमलक गजल आ सुजितक कथा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48515. ‘विमलक गजल आ सुजितक कथा’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48516. ‘विमलक गजल आ सुजितक कथा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48517. ‘विमलक गजल आ सुजितक कथा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48518. ‘विमलक गजल आ सुजितक कथा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48519. ‘विमलक गजल आ सुजितक कथा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48520. ‘विमलक गजल आ सुजितक कथा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48521. ‘विमलक गजल आ सुजितक कथा’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48522. ‘विमलक गजल आ सुजितक कथा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं समकालीन रचनाकार मूल्याङ्कन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4858 : विदेह-सदेह 36 — जितेन्द्र झा — सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)

प्रश्न 48523. ‘सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं डायरी-शैली; आत्मकथात्मक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48524. ‘सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48525. ‘सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार डायरी-शैली; आत्मकथात्मक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48526. ‘सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक डायरी-शैली; आत्मकथात्मक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक डायरी-शैली; आत्मकथात्मक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48527. ‘सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल डायरी-शैली; आत्मकथात्मक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48528. ‘सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48529. ‘सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ डायरी-शैली; आत्मकथात्मकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48530. ‘सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. डायरी-शैली; आत्मकथात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48531. ‘सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप डायरी-शैली; आत्मकथात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप डायरी-शैली; आत्मकथात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48532. ‘सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं डायरी-शैली; आत्मकथात्मक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं डायरी-शैली; आत्मकथात्मक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4859 : विदेह-सदेह 36 — एस.सी सुमन — सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार

प्रश्न 48533. ‘सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सरकारी नीति आलोचना
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सरकारी नीति आलोचना
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सरकारी नीति आलोचना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48534. ‘सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सरकारी नीति आलोचना
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सरकारी नीति आलोचना
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48535. ‘सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सरकारी नीति आलोचना
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सरकारी नीति आलोचना
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सरकारी नीति आलोचना धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48536. ‘सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सरकारी नीति आलोचना दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सरकारी नीति आलोचना दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48537. ‘सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सरकारी नीति आलोचना
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सरकारी नीति आलोचना
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सरकारी नीति आलोचना सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48538. ‘सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सरकारी नीति आलोचना
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48539. ‘सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सरकारी नीति आलोचना
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सरकारी नीति आलोचना
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सरकारी नीति आलोचनाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48540. ‘सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सरकारी नीति आलोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सरकारी नीति आलोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48541. ‘सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सरकारी नीति आलोचना कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सरकारी नीति आलोचना कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48542. ‘सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सरकारी नीति आलोचना धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सरकारी नीति आलोचना धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4860 : विदेह-सदेह 36 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि — प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला

प्रश्न 48543. ‘प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं चित्रकलाक आधुनिक यात्रा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48544. ‘प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48545. ‘प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार चित्रकलाक आधुनिक यात्रा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48546. ‘प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक चित्रकलाक आधुनिक यात्रा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक चित्रकलाक आधुनिक यात्रा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48547. ‘प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चित्रकलाक आधुनिक यात्रा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48548. ‘प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48549. ‘प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. चित्रकलाक आधुनिक यात्रा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चित्रकलाक आधुनिक यात्राक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48550. ‘प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. चित्रकलाक आधुनिक यात्राक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. चित्रकलाक आधुनिक यात्राक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48551. ‘प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप चित्रकलाक आधुनिक यात्रा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप चित्रकलाक आधुनिक यात्रा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48552. ‘प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं चित्रकलाक आधुनिक यात्रा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं चित्रकलाक आधुनिक यात्रा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4861 : विदेह-सदेह 36 — शम्मी वत्स/ रूपेश — हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह

प्रश्न 48553. ‘हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48554. ‘हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48555. ‘हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48556. ‘हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48557. ‘हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48558. ‘हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48559. ‘हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ Diaspora सांस्कृतिक गतिविधिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48560. ‘हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. Diaspora सांस्कृतिक गतिविधिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48561. ‘हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48562. ‘हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं Diaspora सांस्कृतिक गतिविधि धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4862 : विदेह-सदेह 36 — प्रवीण नारायण चौधरी — बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011

प्रश्न 48563. ‘बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नेपाल मैथिली आन्दोलन
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नेपाल मैथिली आन्दोलन
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नेपाल मैथिली आन्दोलन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48564. ‘बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नेपाल मैथिली आन्दोलन
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नेपाल मैथिली आन्दोलन
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48565. ‘बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नेपाल मैथिली आन्दोलन
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नेपाल मैथिली आन्दोलन
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नेपाल मैथिली आन्दोलन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48566. ‘बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नेपाल मैथिली आन्दोलन दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नेपाल मैथिली आन्दोलन दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48567. ‘बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नेपाल मैथिली आन्दोलन

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नेपाल मैथिली आन्दोलन

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नेपाल मैथिली आन्दोलन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48568. ‘बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नेपाल मैथिली आन्दोलन

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48569. ‘बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नेपाल मैथिली आन्दोलन

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नेपाल मैथिली आन्दोलन

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नेपाल मैथिली आन्दोलनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48570. ‘बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नेपाल मैथिली आन्दोलनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नेपाल मैथिली आन्दोलनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48571. ‘बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप नेपाल मैथिली आन्दोलन कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप नेपाल मैथिली आन्दोलन कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48572. ‘बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ नेपाल मैथिली आन्दोलन धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ नेपाल मैथिली आन्दोलन धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4863 : विदेह-सदेह 36 — रमेश रंजन — रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"

प्रश्न 48573. ‘रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48574. ‘रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48575. ‘रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48576. ‘रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48577. ‘रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48578. ‘रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48579. ‘रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नाट्य-प्रस्तुति समीक्षाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48580. ‘रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नाट्य-प्रस्तुति समीक्षाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48581. ‘रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48582. ‘रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस"’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं नाट्य-प्रस्तुति समीक्षा धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4864 : विदेह-सदेह 36 — मुन्ना जी — विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)

प्रश्न 48583. ‘विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48584. ‘विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48585. ‘विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48586. ‘विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48587. ‘विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48588. ‘विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48589. ‘विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48590. ‘विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48591. ‘विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48592. ‘विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ..., सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए..., भूख, टेट्टर, गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण!, चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (लगभग ४३ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं प्रयोगधर्मी; अतिलघु कथात्मकता धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4865 : विदेह-सदेह 36 — श्यामसुन्दर शशि — कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल

प्रश्न 48593. ‘कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48594. ‘कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48595. ‘कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48596. ‘कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48597. ‘कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48598. ‘कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48599. ‘कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डरक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48600. ‘कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डरक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डरक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48601. ‘कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48602. ‘कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लोकपर्व; मिथिला कैलेण्डर धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4866 : विदेह-सदेह 36 — राम भरोस कापड़ि भ्रमर — बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व

प्रश्न 48603. ‘बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नेपाल साहित्यिक उत्सव
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नेपाल साहित्यिक उत्सव
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नेपाल साहित्यिक उत्सव सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48604. ‘बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नेपाल साहित्यिक उत्सव
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नेपाल साहित्यिक उत्सव
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48605. ‘बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नेपाल साहित्यिक उत्सव
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नेपाल साहित्यिक उत्सव
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नेपाल साहित्यिक उत्सव धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48606. ‘बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नेपाल साहित्यिक उत्सव दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नेपाल साहित्यिक उत्सव दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48607. ‘बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नेपाल साहित्यिक उत्सव
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नेपाल साहित्यिक उत्सव
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नेपाल साहित्यिक उत्सव सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48608. ‘बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नेपाल साहित्यिक उत्सव
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48609. ‘बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नेपाल साहित्यिक उत्सव
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नेपाल साहित्यिक उत्सव
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नेपाल साहित्यिक उत्सवक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48610. ‘बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नेपाल साहित्यिक उत्सवक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नेपाल साहित्यिक उत्सवक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48611. ‘बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप नेपाल साहित्यिक उत्सव कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप नेपाल साहित्यिक उत्सव कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48612. ‘बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ नेपाल साहित्यिक उत्सव धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ नेपाल साहित्यिक उत्सव धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4867 : विदेह-सदेह 36 — जगदानंद झा 'मनु' — मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति

प्रश्न 48613. ‘मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48614. ‘मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48615. ‘मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48616. ‘मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48617. ‘मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48618. ‘मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48619. ‘मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्नक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48620. ‘मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्नक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्नक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48621. ‘मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48622. ‘मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ सामाजिक यथार्थ; जाति प्रश्न धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4868 : विदेह-सदेह 36 — प्रियंका झा — सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...

प्रश्न 48623. ‘सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48624. ‘सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48625. ‘सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48626. ‘सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48627. ‘सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48628. ‘सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48629. ‘सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ साहित्यिक राजनीति; नारी स्वरक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48630. ‘सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वरक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. साहित्यिक राजनीति; नारी स्वरक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48631. ‘सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48632. ‘सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल...’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ साहित्यिक राजनीति; नारी स्वर धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4869 : विदेह-सदेह 36 — आशीष चौधरी — विहनि कथा- ठक

प्रश्न 48633. ‘विहनि कथा- ठक’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. अतिलघु; व्यंग्यात्मक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. अतिलघु; व्यंग्यात्मक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अतिलघु; व्यंग्यात्मक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48634. ‘विहनि कथा- ठक’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. अतिलघु; व्यंग्यात्मक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. अतिलघु; व्यंग्यात्मक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48635. ‘विहनि कथा- ठक’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. अतिलघु; व्यंग्यात्मक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. अतिलघु; व्यंग्यात्मक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अतिलघु; व्यंग्यात्मक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48636. ‘विहनि कथा- ठक’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अतिलघु; व्यंग्यात्मक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अतिलघु; व्यंग्यात्मक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48637. ‘विहनि कथा- ठक’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अतिलघु; व्यंग्यात्मक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अतिलघु; व्यंग्यात्मक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अतिलघु; व्यंग्यात्मक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48638. ‘विहनि कथा- ठक’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अतिलघु; व्यंग्यात्मक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48639. ‘विहनि कथा- ठक’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अतिलघु; व्यंग्यात्मक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अतिलघु; व्यंग्यात्मक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अतिलघु; व्यंग्यात्मकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48640. ‘विहनि कथा- ठक’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अतिलघु; व्यंग्यात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अतिलघु; व्यंग्यात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48641. ‘विहनि कथा- ठक’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप अतिलघु; व्यंग्यात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप अतिलघु; व्यंग्यात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48642. ‘विहनि कथा- ठक’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ अतिलघु; व्यंग्यात्मक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ अतिलघु; व्यंग्यात्मक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4870 : विदेह-सदेह 36 — चंदन कुमार झा — आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र

प्रश्न 48643. ‘आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लोकतंत्र आलोचना
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लोकतंत्र आलोचना
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ लोकतंत्र आलोचना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48644. ‘आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लोकतंत्र आलोचना
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लोकतंत्र आलोचना
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48645. ‘आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लोकतंत्र आलोचना
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लोकतंत्र आलोचना
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोकतंत्र आलोचना धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48646. ‘आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लोकतंत्र आलोचना दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लोकतंत्र आलोचना दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48647. ‘आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. लोकतंत्र आलोचना
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. लोकतंत्र आलोचना
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोकतंत्र आलोचना सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48648. ‘आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. लोकतंत्र आलोचना
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48649. ‘आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लोकतंत्र आलोचना
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लोकतंत्र आलोचना
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोकतंत्र आलोचनाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48650. ‘आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लोकतंत्र आलोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लोकतंत्र आलोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48651. ‘आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप लोकतंत्र आलोचना कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप लोकतंत्र आलोचना कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48652. ‘आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लोकतंत्र आलोचना धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लोकतंत्र आलोचना धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4871 : विदेह-सदेह 36 — चंदन कुमार झा — विहनि-कथा- सद्गति

प्रश्न 48653. ‘विहनि-कथा- सद्गति’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मृत्यु-दर्शन
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मृत्यु-दर्शन
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मृत्यु-दर्शन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48654. ‘विहनि-कथा- सद्गति’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मृत्यु-दर्शन
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मृत्यु-दर्शन
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48655. ‘विहनि-कथा- सद्गति’कें गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मृत्यु-दर्शन
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मृत्यु-दर्शन
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मृत्यु-दर्शन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48656. ‘विहनि-कथा- सद्गति’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मृत्यु-दर्शन दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मृत्यु-दर्शन दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48657. ‘विहनि-कथा- सद्गति’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मृत्यु-दर्शन
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मृत्यु-दर्शन
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मृत्यु-दर्शन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48658. ‘विहनि-कथा- सद्गति’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मृत्यु-दर्शन
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48659. ‘विहनि-कथा- सद्गति’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मृत्यु-दर्शन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मृत्यु-दर्शन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मृत्यु-दर्शनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48660. ‘विहनि-कथा- सद्गति’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मृत्यु-दर्शनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मृत्यु-दर्शनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48661. ‘विहनि-कथा- सद्गति’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मृत्यु-दर्शन कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मृत्यु-दर्शन कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48662. ‘विहनि-कथा- सद्गति’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ मृत्यु-दर्शन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ मृत्यु-दर्शन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4872 : विदेह-सदेह 36 — अतुलेश्वर — सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा

प्रश्न 48663. ‘सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48664. ‘सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48665. ‘सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48666. ‘सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48667. ‘सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48668. ‘सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48669. ‘सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48670. ‘सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48671. ‘सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48672. ‘सोचब आवश्यक जे....., मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ मिथिला राज्य आन्दोलन; शहीद स्मृति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4873 : विदेह-सदेह 36 — सुभाष चन्द्र यादव — गजेन्द्र ठाकुर

प्रश्न 48673. ‘गजेन्द्र ठाकुर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सम्पादक व्यक्तित्व
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सम्पादक व्यक्तित्व
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ सम्पादक व्यक्तित्व सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48674. ‘गजेन्द्र ठाकुर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सम्पादक व्यक्तित्व
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सम्पादक व्यक्तित्व
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48675. ‘गजेन्द्र ठाकुर’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सम्पादक व्यक्तित्व
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सम्पादक व्यक्तित्व
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सम्पादक व्यक्तित्व धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48676. ‘गजेन्द्र ठाकुर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सम्पादक व्यक्तित्व दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सम्पादक व्यक्तित्व दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48677. ‘गजेन्द्र ठाकुर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सम्पादक व्यक्तित्व
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सम्पादक व्यक्तित्व
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सम्पादक व्यक्तित्व सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48678. ‘गजेन्द्र ठाकुर’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सम्पादक व्यक्तित्व
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48679. ‘गजेन्द्र ठाकुर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सम्पादक व्यक्तित्व
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सम्पादक व्यक्तित्व
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सम्पादक व्यक्तित्वक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48680. ‘गजेन्द्र ठाकुर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सम्पादक व्यक्तित्वक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सम्पादक व्यक्तित्वक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48681. ‘गजेन्द्र ठाकुर’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सम्पादक व्यक्तित्व कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सम्पादक व्यक्तित्व कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48682. ‘गजेन्द्र ठाकुर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सम्पादक व्यक्तित्व धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सम्पादक व्यक्तित्व धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4874 : विदेह-सदेह 36 — मुन्नी कामत — नाटक- अंधविश्वास

प्रश्न 48683. ‘नाटक- अंधविश्वास’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48684. ‘नाटक- अंधविश्वास’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48685. ‘नाटक- अंधविश्वास’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48686. ‘नाटक- अंधविश्वास’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48687. ‘नाटक- अंधविश्वास’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48688. ‘नाटक- अंधविश्वास’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48689. ‘नाटक- अंधविश्वास’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्नक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48690. ‘नाटक- अंधविश्वास’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्नक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्नक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48691. ‘नाटक- अंधविश्वास’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48692. ‘नाटक- अंधविश्वास’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सामाजिक कुरीति; स्त्री-प्रश्न धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4875 : विदेह-सदेह 36 — सत्यनारायण झा — दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर

प्रश्न 48693. ‘दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. वात्सल्य; पारिवारिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. वात्सल्य; पारिवारिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं वात्सल्य; पारिवारिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48694. ‘दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. वात्सल्य; पारिवारिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. वात्सल्य; पारिवारिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48695. ‘दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. वात्सल्य; पारिवारिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. वात्सल्य; पारिवारिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वात्सल्य; पारिवारिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48696. ‘दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक वात्सल्य; पारिवारिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक वात्सल्य; पारिवारिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48697. ‘दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. वात्सल्य; पारिवारिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. वात्सल्य; पारिवारिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वात्सल्य; पारिवारिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48698. ‘दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. वात्सल्य; पारिवारिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48699. ‘दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. वात्सल्य; पारिवारिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. वात्सल्य; पारिवारिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वात्सल्य; पारिवारिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48700. ‘दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. वात्सल्य; पारिवारिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. वात्सल्य; पारिवारिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48701. ‘दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप वात्सल्य; पारिवारिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप वात्सल्य; पारिवारिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48702. ‘दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ वात्सल्य; पारिवारिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ वात्सल्य; पारिवारिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4876 : विदेह-सदेह 36 — सुजीत कुमार झा — लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)

प्रश्न 48703. ‘लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रयोगशील; बहुआयामी

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रयोगशील; बहुआयामी

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ प्रयोगशील; बहुआयामी सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48704. ‘लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रयोगशील; बहुआयामी

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रयोगशील; बहुआयामी

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48705. ‘लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रयोगशील; बहुआयामी

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रयोगशील; बहुआयामी

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रयोगशील; बहुआयामी धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48706. ‘लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रयोगशील; बहुआयामी दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रयोगशील; बहुआयामी दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48707. ‘लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रयोगशील; बहुआयामी

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रयोगशील; बहुआयामी

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रयोगशील; बहुआयामी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48708. ‘लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रयोगशील; बहुआयामी

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48709. ‘लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रयोगशील; बहुआयामी

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रयोगशील; बहुआयामी

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रयोगशील; बहुआयामीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48710. ‘लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रयोगशील; बहुआयामीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रयोगशील; बहुआयामीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48711. ‘लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)’मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप प्रयोगशील; बहुआयामी केँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप प्रयोगशील; बहुआयामी केँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48712. ‘लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ प्रयोगशील; बहुआयामी धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ प्रयोगशील; बहुआयामी धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4877 : विदेह-सदेह 36 — सुजीत कुमार झा — झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी

प्रश्न 48713. ‘झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48714. ‘झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48715. ‘झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48716. ‘झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48717. ‘झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48718. ‘झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48719. ‘झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48720. ‘झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48721. ‘झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48722. ‘झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे..., नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना..., मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ नेपाल मैथिली; खेल-संस्कृति धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4878 : विदेह-सदेह 36 — सन्तोष कुमार मिश्र — एकटा पत्र

प्रश्न 48723. ‘एकटा पत्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48724. ‘एकटा पत्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48725. ‘एकटा पत्र’कें गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48726. ‘एकटा पत्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48727. ‘एकटा पत्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48728. ‘एकटा पत्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48729. ‘एकटा पत्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आत्मकथात्मक; सम्पादक नामक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48730. ‘एकटा पत्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नामक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आत्मकथात्मक; सम्पादक नामक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48731. ‘एकटा पत्र’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48732. ‘एकटा पत्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं आत्मकथात्मक; सम्पादक नाम धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4879 : विदेह-सदेह 36 — मनोज कुमार मण्डल — "बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन

प्रश्न 48733. ‘"बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. ग्रामीण नाट्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. ग्रामीण नाट्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं ग्रामीण नाट्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48734. ‘"बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. ग्रामीण नाट्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. ग्रामीण नाट्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48735. ‘"बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. ग्रामीण नाट्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. ग्रामीण नाट्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ग्रामीण नाट्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48736. ‘"बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक ग्रामीण नाट्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक ग्रामीण नाट्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48737. ‘"बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. ग्रामीण नाट्य
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. ग्रामीण नाट्य
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ग्रामीण नाट्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48738. ‘"बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. ग्रामीण नाट्य
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48739. ‘"बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. ग्रामीण नाट्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. ग्रामीण नाट्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ग्रामीण नाट्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48740. ‘"बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. ग्रामीण नाट्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. ग्रामीण नाट्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48741. ‘"बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन’मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप ग्रामीण नाट्य केँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप ग्रामीण नाट्य केँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48742. ‘"बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटकक सफल मंचन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ ग्रामीण नाट्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ ग्रामीण नाट्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4880 : विदेह-सदेह 36 — शेफालिका वर्मा — डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार

प्रश्न 48743. ‘डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ शोध-संवाद; भाषाविज्ञान सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48744. ‘डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48745. ‘डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शोध-संवाद; भाषाविज्ञान धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48746. ‘डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक शोध-संवाद; भाषाविज्ञान दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक शोध-संवाद; भाषाविज्ञान दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48747. ‘डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शोध-संवाद; भाषाविज्ञान सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48748. ‘डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48749. ‘डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञान
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शोध-संवाद; भाषाविज्ञानक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48750. ‘डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञानक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शोध-संवाद; भाषाविज्ञानक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48751. ‘डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप शोध-संवाद; भाषाविज्ञान कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप शोध-संवाद; भाषाविज्ञान कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48752. ‘डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शोध-संवाद; भाषाविज्ञान धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शोध-संवाद; भाषाविज्ञान धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4881 : विदेह-सदेह 36 — शेफालिका वर्मा — रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)

प्रश्न 48753. ‘रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48754. ‘रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48755. ‘रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48756. ‘रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48757. ‘रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48758. ‘रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48759. ‘रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48760. ‘रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48761. ‘रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48762. ‘रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह..., संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं स्त्री अनुभव; प्रवासी पीड़ा धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4882 : विदेह-सदेह 36 — दुर्गानन्द मण्डल — नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास

प्रश्न 48763. ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48764. ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48765. ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48766. ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48767. ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48768. ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48769. ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाल मनोविज्ञान; देशभक्तिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48770. ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान; देशभक्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48771. ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48772. ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ बाल मनोविज्ञान; देशभक्ति धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4883 : विदेह-सदेह 36 — नवीन ठाकुर — मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२

प्रश्न 48773. ‘मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिला अस्मिता

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिला अस्मिता

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मिथिला अस्मिता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48774. ‘मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिला अस्मिता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिला अस्मिता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48775. ‘मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिला अस्मिता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिला अस्मिता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिला अस्मिता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48776. ‘मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिला अस्मिता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिला अस्मिता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48777. ‘मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिला अस्मिता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिला अस्मिता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिला अस्मिता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48778. ‘मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिला अस्मिता
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48779. ‘मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिला अस्मिता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिला अस्मिता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिला अस्मिताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48780. ‘मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिला अस्मिताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिला अस्मिताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48781. ‘मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मिथिला अस्मिता कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मिथिला अस्मिता कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48782. ‘मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ मिथिला अस्मिता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ मिथिला अस्मिता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4884 : विदेह-सदेह 36 — नवेंदु कुमार झा — मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)

प्रश्न 48783. ‘मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48784. ‘मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48785. ‘मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)’कें गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48786. ‘मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48787. ‘मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48788. ‘मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48789. ‘मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकासक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48790. ‘मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकासक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकासक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48791. ‘मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48792. ‘मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश... (सहित ४०+ समाचार/निबन्ध शीर्षक जेना: ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण... अदिक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ राजनीतिक पत्रकारिता; मिथिला विकास धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4885 : विदेह-सदेह 36 — शांतिलक्ष्मी चौधरी — नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान

प्रश्न 48793. ‘नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ लैंगिक अध्ययन; शिक्षा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48794. ‘नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48795. ‘नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लैंगिक अध्ययन; शिक्षा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48796. ‘नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लैंगिक अध्ययन; शिक्षा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लैंगिक अध्ययन; शिक्षा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48797. ‘नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लैंगिक अध्ययन; शिक्षा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48798. ‘नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48799. ‘नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षा

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लैंगिक अध्ययन; शिक्षाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48800. ‘नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. लैंगिक अध्ययन; शिक्षाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48801. ‘नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप लैंगिक अध्ययन; शिक्षा कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप लैंगिक अध्ययन; शिक्षा कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48802. ‘नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक... मैथिल नारि केर समस्याक समाधान’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ लैंगिक अध्ययन; शिक्षा धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ लैंगिक अध्ययन; शिक्षा धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4886 : विदेह-सदेह 36 — किशन कारीगर — हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा

प्रश्न 48803. ‘हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48804. ‘हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48805. ‘हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48806. ‘हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48807. ‘हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48808. ‘हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48809. ‘हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रसक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48810. ‘हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रसक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रसक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48811. ‘हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48812. ‘हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया, मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ लोक ठसक; व्यंग्य; हास्य रस धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4887 : विदेह-सदेह 36 — राम प्रवेश मण्डल — विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!

प्रश्न 48813. ‘विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. भाषा-प्रेम

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. भाषा-प्रेम

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ भाषा-प्रेम सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48814. ‘विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. भाषा-प्रेम

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. भाषा-प्रेम

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48815. ‘विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. भाषा-प्रेम

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. भाषा-प्रेम

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भाषा-प्रेम धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48816. ‘विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक भाषा-प्रेम दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक भाषा-प्रेम दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48817. ‘विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. भाषा-प्रेम

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. भाषा-प्रेम

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भाषा-प्रेम सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48818. ‘विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. भाषा-प्रेम
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48819. ‘विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. भाषा-प्रेम
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. भाषा-प्रेम
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भाषा-प्रेमक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48820. ‘विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. भाषा-प्रेमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. भाषा-प्रेमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48821. ‘विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप भाषा-प्रेम कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप भाषा-प्रेम कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48822. ‘विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली!’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं भाषा-प्रेम धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं भाषा-प्रेम धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4888 : विदेह-सदेह 36 — शैल झा "सागर" — एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन

प्रश्न 48823. ‘एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. साहित्यिक संवाद
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. साहित्यिक संवाद
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं साहित्यिक संवाद सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48824. ‘एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. साहित्यिक संवाद
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. साहित्यिक संवाद
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48825. ‘एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. साहित्यिक संवाद
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. साहित्यिक संवाद
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार साहित्यिक संवाद धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48826. ‘एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक साहित्यिक संवाद दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक साहित्यिक संवाद दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48827. ‘एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. साहित्यिक संवाद
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. साहित्यिक संवाद
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल साहित्यिक संवाद सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48828. ‘एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. साहित्यिक संवाद
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48829. ‘एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. साहित्यिक संवाद
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. साहित्यिक संवाद
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ साहित्यिक संवादक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48830. ‘एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. साहित्यिक संवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. साहित्यिक संवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48831. ‘एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप साहित्यिक संवाद कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप साहित्यिक संवाद कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48832. ‘एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं साहित्यिक संवाद धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं साहित्यिक संवाद धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4889 : विदेह-सदेह 36 — रमाकान्त राय "रमा" (आचार्य दिव्यचक्षु) — आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...

प्रश्न 48833. ‘आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. साहित्यिक सेमिनार
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. साहित्यिक सेमिनार
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं साहित्यिक सेमिनार सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48834. ‘आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. साहित्यिक सेमिनार
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. साहित्यिक सेमिनार
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48835. ‘आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. साहित्यिक सेमिनार
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. साहित्यिक सेमिनार
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार साहित्यिक सेमिनार धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48836. ‘आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक साहित्यिक सेमिनार दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक साहित्यिक सेमिनार दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48837. ‘आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. साहित्यिक सेमिनार
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. साहित्यिक सेमिनार
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल साहित्यिक सेमिनार सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48838. ‘आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. साहित्यिक सेमिनार
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48839. ‘आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. साहित्यिक सेमिनार
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. साहित्यिक सेमिनार
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ साहित्यिक सेमिनारक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48840. ‘आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. साहित्यिक सेमिनारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. साहित्यिक सेमिनारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48841. ‘आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप साहित्यिक सेमिनार कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप साहित्यिक सेमिनार कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48842. ‘आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर...’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ साहित्यिक सेमिनार धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ साहित्यिक सेमिनार धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4890 : विदेह-सदेह 36 — शिव कुमार झा 'टिल्लू' — मैथिलीपर जातिवादी कलंक

प्रश्न 48843. ‘मैथिलीपर जातिवादी कलंक’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ जाति-विमर्श; भाषा राजनीति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48844. ‘मैथिलीपर जातिवादी कलंक’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48845. ‘मैथिलीपर जातिवादी कलंक’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार जाति-विमर्श; भाषा राजनीति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48846. ‘मैथिलीपर जातिवादी कलंक’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक जाति-विमर्श; भाषा राजनीति दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक जाति-विमर्श; भाषा राजनीति दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48847. ‘मैथिलीपर जातिवादी कलंक’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल जाति-विमर्श; भाषा राजनीति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48848. ‘मैथिलीपर जातिवादी कलंक’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48849. ‘मैथिलीपर जातिवादी कलंक’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीति
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ जाति-विमर्श; भाषा राजनीतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48850. ‘मैथिलीपर जातिवादी कलंक’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. जाति-विमर्श; भाषा राजनीतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48851. ‘मैथिलीपर जातिवादी कलंक’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप जाति-विमर्श; भाषा राजनीति कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप जाति-विमर्श; भाषा राजनीति कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48852. ‘मैथिलीपर जातिवादी कलंक’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ जाति-विमर्श; भाषा राजनीति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ जाति-विमर्श; भाषा राजनीति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4891 : विदेह-सदेह 36 — रवि भूषण पाठक — टिल्लू जी (शिव कुमार झा)

प्रश्न 48853. ‘टिल्लू जी (शिव कुमार झा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लेखक परिचय
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लेखक परिचय
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ लेखक परिचय सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48854. ‘टिल्लू जी (शिव कुमार झा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लेखक परिचय
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लेखक परिचय
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48855. ‘टिल्लू जी (शिव कुमार झा)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लेखक परिचय
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लेखक परिचय
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लेखक परिचय धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48856. ‘टिल्लू जी (शिव कुमार झा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लेखक परिचय दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लेखक परिचय दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48857. ‘टिल्लू जी (शिव कुमार झा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. लेखक परिचय
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. लेखक परिचय
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लेखक परिचय सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48858. ‘टिल्लू जी (शिव कुमार झा)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. लेखक परिचय
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48859. ‘टिल्लू जी (शिव कुमार झा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लेखक परिचय
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लेखक परिचय
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लेखक परिचयक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48860. ‘टिल्लू जी (शिव कुमार झा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लेखक परिचयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लेखक परिचयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48861. ‘टिल्लू जी (शिव कुमार झा)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप लेखक परिचय कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप लेखक परिचय कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48862. ‘टिल्लू जी (शिव कुमार झा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लेखक परिचय धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लेखक परिचय धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4892 : विदेह-सदेह 36 — बृषेशचन्द्र लाल — बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...

प्रश्न 48863. ‘बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सांस्कृतिक स्मृति
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सांस्कृतिक स्मृति
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सांस्कृतिक स्मृति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48864. ‘बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सांस्कृतिक स्मृति
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सांस्कृतिक स्मृति
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48865. ‘बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सांस्कृतिक स्मृति
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सांस्कृतिक स्मृति
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सांस्कृतिक स्मृति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48866. ‘बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सांस्कृतिक स्मृति दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सांस्कृतिक स्मृति दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48867. ‘बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सांस्कृतिक स्मृति
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सांस्कृतिक स्मृति
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सांस्कृतिक स्मृति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48868. ‘बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सांस्कृतिक स्मृति
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48869. ‘बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सांस्कृतिक स्मृति
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सांस्कृतिक स्मृति
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सांस्कृतिक स्मृतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48870. ‘बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सांस्कृतिक स्मृतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सांस्कृतिक स्मृतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48871. ‘बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...’मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सांस्कृतिक स्मृति केँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सांस्कृतिक स्मृति केँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48872. ‘बिद्यापति--स्मृति पर्व मादेँ --- बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ...’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ सांस्कृतिक स्मृति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ सांस्कृतिक स्मृति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4893 : विदेह-सदेह 36 — नारायण झा — रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...

प्रश्न 48873. ‘रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. शैक्षिक सक्रियता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. शैक्षिक सक्रियता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ शैक्षिक सक्रियता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48874. ‘रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. शैक्षिक सक्रियता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. शैक्षिक सक्रियता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48875. ‘रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. शैक्षिक सक्रियता
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. शैक्षिक सक्रियता
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शैक्षिक सक्रियता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48876. ‘रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक शैक्षिक सक्रियता दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक शैक्षिक सक्रियता दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48877. ‘रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. शैक्षिक सक्रियता
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. शैक्षिक सक्रियता
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शैक्षिक सक्रियता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48878. ‘रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. शैक्षिक सक्रियता
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48879. ‘रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शैक्षिक सक्रियता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शैक्षिक सक्रियता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शैक्षिक सक्रियताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48880. ‘रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शैक्षिक सक्रियताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शैक्षिक सक्रियताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48881. ‘रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप शैक्षिक सक्रियता कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप शैक्षिक सक्रियता कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48882. ‘रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर...’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ शैक्षिक सक्रियता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ शैक्षिक सक्रियता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4894 : विदेह-सदेह 36 — सुमित आनन्द — शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)

प्रश्न 48883. ‘शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अकादमिक; काव्यशास्त्र
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अकादमिक; काव्यशास्त्र
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अकादमिक; काव्यशास्त्र सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48884. ‘शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. अकादमिक; काव्यशास्त्र

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. अकादमिक; काव्यशास्त्र

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48885. ‘शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. अकादमिक; काव्यशास्त्र

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. अकादमिक; काव्यशास्त्र

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अकादमिक; काव्यशास्त्र धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48886. ‘शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक अकादमिक; काव्यशास्त्र दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक अकादमिक; काव्यशास्त्र दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48887. ‘शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. अकादमिक; काव्यशास्त्र

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. अकादमिक; काव्यशास्त्र

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अकादमिक; काव्यशास्त्र सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48888. ‘शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. अकादमिक; काव्यशास्त्र

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48889. ‘शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. अकादमिक; काव्यशास्त्र

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. अकादमिक; काव्यशास्त्र

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अकादमिक; काव्यशास्त्रक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48890. ‘शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. अकादमिक; काव्यशास्त्रक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. अकादमिक; काव्यशास्त्रक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48891. ‘शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप अकादमिक; काव्यशास्त्र कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप अकादमिक; काव्यशास्त्र कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48892. ‘शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण... (कुल ६ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं अकादमिक; काव्यशास्त्र धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं अकादमिक; काव्यशास्त्र धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4895 : विदेह-सदेह 36 — मिथिलेश मंडल — मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ

प्रश्न 48893. ‘मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. ग्रामीण स्त्री जीवन

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. ग्रामीण स्त्री जीवन

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं ग्रामीण स्त्री जीवन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48894. ‘मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. ग्रामीण स्त्री जीवन

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. ग्रामीण स्त्री जीवन

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48895. ‘मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. ग्रामीण स्त्री जीवन

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. ग्रामीण स्त्री जीवन

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ग्रामीण स्त्री जीवन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48896. ‘मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक ग्रामीण स्त्री जीवन दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक ग्रामीण स्त्री जीवन दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48897. ‘मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. ग्रामीण स्त्री जीवन
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. ग्रामीण स्त्री जीवन
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ग्रामीण स्त्री जीवन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48898. ‘मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. ग्रामीण स्त्री जीवन
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48899. ‘मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. ग्रामीण स्त्री जीवन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. ग्रामीण स्त्री जीवन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ग्रामीण स्त्री जीवनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48900. ‘मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. ग्रामीण स्त्री जीवनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. ग्रामीण स्त्री जीवनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48901. ‘मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप ग्रामीण स्त्री जीवन कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप ग्रामीण स्त्री जीवन कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48902. ‘मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ ग्रामीण स्त्री जीवन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ ग्रामीण स्त्री जीवन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4896 : विदेह-सदेह 36 — नवीन कुमार आशा — फेर सॅ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म

प्रश्न 48903. ‘फेर सॅ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पारिवारिक; सामाजिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पारिवारिक; सामाजिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ पारिवारिक; सामाजिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48904. ‘फेर सॅ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पारिवारिक; सामाजिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पारिवारिक; सामाजिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48905. ‘फेर सॅ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पारिवारिक; सामाजिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पारिवारिक; सामाजिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पारिवारिक; सामाजिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48906. ‘फेर सॅ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पारिवारिक; सामाजिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पारिवारिक; सामाजिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48907. ‘फेर सॅ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पारिवारिक; सामाजिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पारिवारिक; सामाजिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पारिवारिक; सामाजिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48908. ‘फेर सँ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पारिवारिक; सामाजिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48909. ‘फेर सँ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पारिवारिक; सामाजिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पारिवारिक; सामाजिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पारिवारिक; सामाजिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48910. ‘फेर सँ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पारिवारिक; सामाजिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पारिवारिक; सामाजिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48911. ‘फेर सँ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म’मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप पारिवारिक; सामाजिक केँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप पारिवारिक; सामाजिक केँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48912. ‘फेर सँ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ पारिवारिक; सामाजिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ पारिवारिक; सामाजिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4897 : विदेह-सदेह 36 — उमेश मण्डल — कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)

प्रश्न 48913. ‘कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48914. ‘कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48915. ‘कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48916. ‘कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48917. ‘कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48918. ‘कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48919. ‘कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48920. ‘कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48921. ‘कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48922. ‘कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग... (साक्षात्कार सहित कुल ८+ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ आन्दोलन इतिहास; विदेह सक्रियता धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4898 : विदेह-सदेह 36 — परमेश झा आ अनिलचन्द्र झा — मिथिला राज्य आन्दोलन

प्रश्न 48923. ‘मिथिला राज्य आन्दोलन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिला राज्यक मुद्दा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिला राज्यक मुद्दा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मिथिला राज्यक मुद्दा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48924. ‘मिथिला राज्य आन्दोलन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिला राज्यक मुद्दा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिला राज्यक मुद्दा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48925. ‘मिथिला राज्य आन्दोलन’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिला राज्यक मुद्दा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिला राज्यक मुद्दा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिला राज्यक मुद्दा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48926. ‘मिथिला राज्य आन्दोलन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिला राज्यक मुद्दा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिला राज्यक मुद्दा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48927. ‘मिथिला राज्य आन्दोलन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिला राज्यक मुद्दा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिला राज्यक मुद्दा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिला राज्यक मुद्दा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48928. ‘मिथिला राज्य आन्दोलन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिला राज्यक मुद्दा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48929. ‘मिथिला राज्य आन्दोलन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिला राज्यक मुद्दा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिला राज्यक मुद्दा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिला राज्यक मुद्दाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48930. ‘मिथिला राज्य आन्दोलन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिला राज्यक मुद्दाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिला राज्यक मुद्दाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48931. ‘मिथिला राज्य आन्दोलन’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मिथिला राज्यक मुद्दा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मिथिला राज्यक मुद्दा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48932. ‘मिथिला राज्य आन्दोलन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ मिथिला राज्यक मुद्दा धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ मिथिला राज्यक मुद्दा धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4899 : विदेह-सदेह 36 — प्रा.परमेश्वर कापड़ि — मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न

प्रश्न 48933. ‘मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नेपाल मैथिली; कथालोचना

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; कथालोचना

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ नेपाल मैथिली; कथालोचना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48934. ‘मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नेपाल मैथिली; कथालोचना

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; कथालोचना

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48935. ‘मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नेपाल मैथिली; कथालोचना

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; कथालोचना

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नेपाल मैथिली; कथालोचना धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48936. ‘मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नेपाल मैथिली; कथालोचना दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नेपाल मैथिली; कथालोचना दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48937. ‘मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नेपाल मैथिली; कथालोचना

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; कथालोचना

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नेपाल मैथिली; कथालोचना सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48938. ‘मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नेपाल मैथिली; कथालोचना

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48939. ‘मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नेपाल मैथिली; कथालोचना

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; कथालोचना

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नेपाल मैथिली; कथालोचनाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48940. ‘मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नेपाल मैथिली; कथालोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नेपाल मैथिली; कथालोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48941. ‘मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप नेपाल मैथिली; कथालोचना कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप नेपाल मैथिली; कथालोचना कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48942. ‘मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति..., जनकपुरमे कथा--गोष्ठी सम्पन्न’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ नेपाल मैथिली; कथालोचना धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ नेपाल मैथिली; कथालोचना धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4900 : विदेह-सदेह 36 — कुमार पृथु — कथा--गोष्ठी

प्रश्न 48943. ‘कथा--गोष्ठी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. साहित्यिक आयोजन

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. साहित्यिक आयोजन

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ साहित्यिक आयोजन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48944. ‘कथा--गोष्ठी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. साहित्यिक आयोजन

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. साहित्यिक आयोजन

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48945. ‘कथा--गोष्ठी’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. साहित्यिक आयोजन

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. साहित्यिक आयोजन

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार साहित्यिक आयोजन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48946. ‘कथा--गोष्ठी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक साहित्यिक आयोजन दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक साहित्यिक आयोजन दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48947. ‘कथा--गोष्ठी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. साहित्यिक आयोजन

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. साहित्यिक आयोजन

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल साहित्यिक आयोजन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48948. ‘कथा--गोष्ठी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. साहित्यिक आयोजन

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48949. ‘कथा--गोष्ठी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. साहित्यिक आयोजन

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. साहित्यिक आयोजन

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ साहित्यिक आयोजनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48950. ‘कथा--गोष्ठी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. साहित्यिक आयोजनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. साहित्यिक आयोजनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48951. ‘कथा--गोष्ठी’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप साहित्यिक आयोजन कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप साहित्यिक आयोजन कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48952. ‘कथा--गोष्ठी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं साहित्यिक आयोजन धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं साहित्यिक आयोजन धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4901 : विदेह-सदेह 36 — पूनम मंडल — दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)

प्रश्न 48953. ‘दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48954. ‘दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48955. ‘दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48956. ‘दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48957. ‘दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48958. ‘दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48959. ‘दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्टक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48960. ‘दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्टक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्टक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48961. ‘दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48962. ‘दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज... (बहु शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ नारी सक्रियता; आन्दोलन रिपोर्ट धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4902 : विदेह-सदेह 36 — नबो नारायण मिश्र — मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार

प्रश्न 48963. ‘मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. साहित्यिक संवाद; विरासत

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. साहित्यिक संवाद; विरासत

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ साहित्यिक संवाद; विरासत सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48964. ‘मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. साहित्यिक संवाद; विरासत

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. साहित्यिक संवाद; विरासत

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48965. ‘मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. साहित्यिक संवाद; विरासत

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. साहित्यिक संवाद; विरासत

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार साहित्यिक संवाद; विरासत धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48966. ‘मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक साहित्यिक संवाद; विरासत दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक साहित्यिक संवाद; विरासत दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48967. ‘मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. साहित्यिक संवाद; विरासत

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. साहित्यिक संवाद; विरासत

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल साहित्यिक संवाद; विरासत सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48968. ‘मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. साहित्यिक संवाद; विरासत

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48969. ‘मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. साहित्यिक संवाद; विरासत

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. साहित्यिक संवाद; विरासत

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ साहित्यिक संवाद; विरासतक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48970. ‘मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. साहित्यिक संवाद; विरासतक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. साहित्यिक संवाद; विरासतक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48971. ‘मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप साहित्यिक संवाद; विरासत कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप साहित्यिक संवाद; विरासत कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48972. ‘मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, किशोरीकान्त मिश्र जी सँ साक्षात्कार’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं साहित्यिक संवाद; विरासत धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं साहित्यिक संवाद; विरासत धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4903 : विदेह-सदेह 36 — लक्ष्मी दास — अपन सन मुँह

प्रश्न 48973. ‘अपन सन मुँह’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. आत्मालोचना

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. आत्मालोचना

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं आत्मालोचना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48974. ‘अपन सन मुँह’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. आत्मालोचना

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. आत्मालोचना

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48975. ‘अपन सन मुँह’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. आत्मालोचना

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. आत्मालोचना

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आत्मालोचना धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48976. ‘अपन सन मुँह’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक आत्मालोचना दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक आत्मालोचना दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48977. ‘अपन सन मुँह’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. आत्मालोचना

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. आत्मालोचना

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आत्मालोचना सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48978. ‘अपन सन मुँह’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. आत्मालोचना

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48979. ‘अपन सन मुँह’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आत्मालोचना
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आत्मालोचना
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आत्मालोचनाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48980. ‘अपन सन मुँह’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आत्मालोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आत्मालोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48981. ‘अपन सन मुँह’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप आत्मालोचना कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप आत्मालोचना कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48982. ‘अपन सन मुँह’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं आत्मालोचना धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं आत्मालोचना धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4904 : विदेह-सदेह 36 — संस्कृति वर्मा — मेहनत

प्रश्न 48983. ‘मेहनत’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बाल/नव पीढ़ी
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बाल/नव पीढ़ी
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बाल/नव पीढ़ी सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48984. ‘मेहनत’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बाल/नव पीढ़ी
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बाल/नव पीढ़ी
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48985. ‘मेहनत’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बाल/नव पीढ़ी
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बाल/नव पीढ़ी
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाल/नव पीढ़ी धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48986. ‘मेहनत’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बाल/नव पीढ़ी दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बाल/नव पीढ़ी दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48987. ‘मेहनत’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बाल/नव पीढ़ी
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बाल/नव पीढ़ी
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाल/नव पीढ़ी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48988. ‘मेहनत’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बाल/नव पीढ़ी
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48989. ‘मेहनत’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बाल/नव पीढ़ी
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बाल/नव पीढ़ी
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाल/नव पीढ़ीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 48990. ‘मेहनत’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बाल/नव पीढ़ीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बाल/नव पीढ़ीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 48991. ‘मेहनत’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप बाल/नव पीढ़ी कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप बाल/नव पीढ़ी कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 48992. ‘मेहनत’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ बाल/नव पीढ़ी धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ बाल/नव पीढ़ी धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4905 : विदेह-सदेह 36 — प्रभात राय भट्ट — मिथिला गर्भपुत्र

प्रश्न 48993. ‘मिथिला गर्भपुत्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिला गौरव
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिला गौरव
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मिथिला गौरव सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 48994. ‘मिथिला गर्भपुत्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिला गौरव
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिला गौरव
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 48995. ‘मिथिला गर्भपुत्र’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिला गौरव
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिला गौरव
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिला गौरव धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 48996. ‘मिथिला गर्भपुत्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिला गौरव दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिला गौरव दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 48997. ‘मिथिला गर्भपुत्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिला गौरव
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिला गौरव
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिला गौरव सँ बनैत अछि।

प्रश्न 48998. ‘मिथिला गर्भपुत्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिला गौरव
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 48999. ‘मिथिला गर्भपुत्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिला गौरव
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिला गौरव
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिला गौरवक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49000. ‘मिथिला गर्भपुत्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिला गौरवक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिला गौरवक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49001. ‘मिथिला गर्भपुत्र’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मिथिला गौरव कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मिथिला गौरव कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49002. ‘मिथिला गर्भपुत्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिला गौरव धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिला गौरव धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4906 : विदेह-सदेह 36 — डॉ॰ शशिधर कुमर — उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...

प्रश्न 49003. ‘उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49004. ‘उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49005. ‘उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49006. ‘उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49007. ‘उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49008. ‘उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49009. ‘उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49010. ‘उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49011. ‘उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...’मे गद्यक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन कें स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन कें स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49012. ‘उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष...’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकें वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकें वैज्ञानिक चेतना; विश्व-दर्शन धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4907 : विदेह-सदेह 36 — राजेश मोहन झा 'गुंजन' — ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन

प्रश्न 49013. ‘ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49014. ‘ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49015. ‘ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49016. ‘ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49017. ‘ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49018. ‘ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49019. ‘ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगारक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49020. ‘ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49021. ‘ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49022. ‘ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ व्यंग्य; पारिवारिक; शृंगार धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4908 : विदेह-सदेह 36 — आनंद कुमार झा — गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)

प्रश्न 49023. ‘गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ देशभक्ति; मैथिली अस्मिता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49024. ‘गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49025. ‘गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार देशभक्ति; मैथिली अस्मिता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49026. ‘गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक देशभक्ति; मैथिली अस्मिता दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक देशभक्ति; मैथिली अस्मिता दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49027. ‘गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल देशभक्ति; मैथिली अस्मिता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49028. ‘गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49029. ‘गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ देशभक्ति; मैथिली अस्मिताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49030. ‘गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. देशभक्ति; मैथिली अस्मिताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49031. ‘गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप देशभक्ति; मैथिली अस्मिता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप देशभक्ति; मैथिली अस्मिता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49032. ‘गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी... (कुल १० शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ देशभक्ति; मैथिली अस्मिता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ देशभक्ति; मैथिली अस्मिता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4909 : विदेह-सदेह 36 — रमाकान्त राय 'रमा' — बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास

प्रश्न 49033. ‘बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. चुनावी राजनीति
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. चुनावी राजनीति
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ चुनावी राजनीति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49034. ‘बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. चुनावी राजनीति
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. चुनावी राजनीति
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49035. ‘बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. चुनावी राजनीति
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. चुनावी राजनीति
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार चुनावी राजनीति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49036. ‘बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक चुनावी राजनीति दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक चुनावी राजनीति दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49037. ‘बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. चुनावी राजनीति
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. चुनावी राजनीति
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चुनावी राजनीति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49038. ‘बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. चुनावी राजनीति
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49039. ‘बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. चुनावी राजनीति
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. चुनावी राजनीति
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चुनावी राजनीतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49040. ‘बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. चुनावी राजनीतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. चुनावी राजनीतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49041. ‘बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप चुनावी राजनीति कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप चुनावी राजनीति कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49042. ‘बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ चुनावी राजनीति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ चुनावी राजनीति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4910 : विदेह-सदेह 36 — चन्दन झा — बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे

प्रश्न 49043. ‘बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सामाजिक; सांस्कृतिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सामाजिक; सांस्कृतिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ सामाजिक; सांस्कृतिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49044. ‘बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. सामाजिक; सांस्कृतिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. सामाजिक; सांस्कृतिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49045. ‘बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सामाजिक; सांस्कृतिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सामाजिक; सांस्कृतिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक; सांस्कृतिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49046. ‘बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सामाजिक; सांस्कृतिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक; सांस्कृतिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49047. ‘बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सामाजिक; सांस्कृतिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सामाजिक; सांस्कृतिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक; सांस्कृतिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49048. ‘बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सामाजिक; सांस्कृतिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49049. ‘बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. सामाजिक; सांस्कृतिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. सामाजिक; सांस्कृतिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक; सांस्कृतिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49050. ‘बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. सामाजिक; सांस्कृतिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. सामाजिक; सांस्कृतिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49051. ‘बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप सामाजिक; सांस्कृतिक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप सामाजिक; सांस्कृतिक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49052. ‘बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं सामाजिक; सांस्कृतिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं सामाजिक; सांस्कृतिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4911 : विदेह-सदेह 36 — संजय कुमार मंडल — डेंगू, माघक जाड़

प्रश्न 49053. ‘डेंगू, माघक जाड़’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49054. ‘डेंगू, माघक जाड़’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49055. ‘डेंगू, माघक जाड़’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49056. ‘डेंगू, माघक जाड़’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49057. ‘डेंगू, माघक जाड़’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49058. ‘डेंगू, माघक जाड़’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49059. ‘डेंगू, माघक जाड़’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49060. ‘डेंगू, माघक जाड़’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49061. ‘डेंगू, माघक जाड़’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49062. ‘डेंगू, माघक जाड़’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ स्वास्थ्य; प्रकृति-चित्रण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4912 : विदेह-सदेह 36 — संस्कृति वर्मा — हमर देश

प्रश्न 49063. ‘हमर देश’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. देशभक्ति; बाल कविता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. देशभक्ति; बाल कविता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ देशभक्ति; बाल कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49064. ‘हमर देश’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. देशभक्ति; बाल कविता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. देशभक्ति; बाल कविता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49065. ‘हमर देश’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. देशभक्ति; बाल कविता
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. देशभक्ति; बाल कविता
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार देशभक्ति; बाल कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49066. ‘हमर देश’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक देशभक्ति; बाल कविता दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक देशभक्ति; बाल कविता दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49067. ‘हमर देश’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. देशभक्ति; बाल कविता
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. देशभक्ति; बाल कविता
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल देशभक्ति; बाल कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49068. ‘हमर देश’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. देशभक्ति; बाल कविता
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49069. ‘हमर देश’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. देशभक्ति; बाल कविता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. देशभक्ति; बाल कविता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ देशभक्ति; बाल कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49070. ‘हमर देश’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. देशभक्ति; बाल कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. देशभक्ति; बाल कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49071. ‘हमर देश’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप देशभक्ति; बाल कविता कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप देशभक्ति; बाल कविता कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49072. ‘हमर देश’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ देशभक्ति; बाल कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ देशभक्ति; बाल कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4913 : विदेह-सदेह 36 — जगदीश प्रसाद मण्डल — कविता/ गीत- मधुमाछी

प्रश्न 49073. ‘कविता/ गीत- मधुमाछी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49074. ‘कविता/ गीत- मधुमाछी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49075. ‘कविता/ गीत- मधुमाछी’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49076. ‘कविता/ गीत- मधुमाछी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49077. ‘कविता/ गीत- मधुमाछी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49078. ‘कविता/ गीत- मधुमाछी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49079. ‘कविता/ गीत- मधुमाछी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैलीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49080. ‘कविता/ गीत- मधुमाछी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैलीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैलीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49081. ‘कविता/ गीत- मधुमाछी’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49082. ‘कविता/ गीत- मधुमाछी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रकृति-प्रेम; लोकगीत शैली धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4914 : विदेह-सदेह 36 — नन्द विलास राय — किछु पद्य

प्रश्न 49083. ‘किछु पद्य’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. भावात्मक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. भावात्मक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं भावात्मक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49084. ‘किछु पद्य’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. भावात्मक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. भावात्मक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49085. ‘किछु पद्य’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. भावात्मक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. भावात्मक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भावात्मक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49086. ‘किछु पद्य’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक भावात्मक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक भावात्मक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49087. ‘किछु पद्य’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. भावात्मक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. भावात्मक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भावात्मक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49088. ‘किछु पद्य’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. भावात्मक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49089. ‘किछु पद्य’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. भावात्मक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. भावात्मक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भावात्मकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49090. ‘किछु पद्य’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. भावात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. भावात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49091. ‘किछु पद्य’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप भावात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप भावात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49092. ‘किछु पद्य’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ भावात्मक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ भावात्मक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4915 : विदेह-सदेह 36 — डॉ शेफालिका वर्मा — नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा

प्रश्न 49093. ‘नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ नारी-विमर्श; इतिहास-बोध सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49094. ‘नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49095. ‘नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी-विमर्श; इतिहास-बोध धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49096. ‘नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नारी-विमर्श; इतिहास-बोध दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नारी-विमर्श; इतिहास-बोध दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49097. ‘नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी-विमर्श; इतिहास-बोध सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49098. ‘नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49099. ‘नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोध

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी-विमर्श; इतिहास-बोधक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49100. ‘नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नारी-विमर्श; इतिहास-बोधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49101. ‘नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप नारी-विमर्श; इतिहास-बोध कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप नारी-विमर्श; इतिहास-बोध कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49102. ‘नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं नारी-विमर्श; इतिहास-बोध धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं नारी-विमर्श; इतिहास-बोध धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4916 : विदेह-सदेह 36 — मनोज झा मुक्ति — ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन

प्रश्न 49103. ‘ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49104. ‘ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49105. ‘ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49106. ‘ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49107. ‘ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49108. ‘ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49109. ‘ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेमक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49110. ‘ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49111. ‘ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49112. ‘ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सामाजिक न्याय; प्रकृति-प्रेम धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4917 : विदेह-सदेह 36 — प्रभात राय भट्ट — किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)

प्रश्न 49113. ‘किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सामाजिक सरोकार; शृंगार
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सामाजिक सरोकार; शृंगार
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सामाजिक सरोकार; शृंगार सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49114. ‘किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सामाजिक सरोकार; शृंगार
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सामाजिक सरोकार; शृंगार
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49115. ‘किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)’कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सामाजिक सरोकार; शृंगार

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सामाजिक सरोकार; शृंगार

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक सरोकार; शृंगार धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49116. ‘किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सामाजिक सरोकार; शृंगार दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक सरोकार; शृंगार दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49117. ‘किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सामाजिक सरोकार; शृंगार

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सामाजिक सरोकार; शृंगार

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक सरोकार; शृंगार सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49118. ‘किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सामाजिक सरोकार; शृंगार

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49119. ‘किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. सामाजिक सरोकार; शृंगार

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. सामाजिक सरोकार; शृंगार

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक सरोकार; शृंगारक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49120. ‘किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. सामाजिक सरोकार; शृंगारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. सामाजिक सरोकार; शृंगारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49121. ‘किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप सामाजिक सरोकार; शृंगार कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप सामाजिक सरोकार; शृंगार कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49122. ‘किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू... (कुल २०+ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ सामाजिक सरोकार; शृंगार धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ सामाजिक सरोकार; शृंगार धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4918 : विदेह-सदेह 36 — डॉ जया वर्मा — सागर आ मोन

प्रश्न 49123. ‘सागर आ मोन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रकृति-दर्शन

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रकृति-दर्शन

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रकृति-दर्शन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49124. ‘सागर आ मोन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रकृति-दर्शन

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रकृति-दर्शन

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49125. ‘सागर आ मोन’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रकृति-दर्शन

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रकृति-दर्शन

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रकृति-दर्शन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49126. ‘सागर आ मोन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रकृति-दर्शन दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रकृति-दर्शन दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49127. ‘सागर आ मोन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रकृति-दर्शन
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रकृति-दर्शन
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रकृति-दर्शन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49128. ‘सागर आ मोन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रकृति-दर्शन
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49129. ‘सागर आ मोन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रकृति-दर्शन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रकृति-दर्शन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रकृति-दर्शनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49130. ‘सागर आ मोन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रकृति-दर्शनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रकृति-दर्शनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49131. ‘सागर आ मोन’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रकृति-दर्शन कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रकृति-दर्शन कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49132. ‘सागर आ मोन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रकृति-दर्शन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रकृति-दर्शन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4919 : विदेह-सदेह 36 — संजय कुमार झा — बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम

प्रश्न 49133. ‘बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मातृभाषा प्रेम

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मातृभाषा प्रेम

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मातृभाषा प्रेम सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49134. ‘बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मातृभाषा प्रेम

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मातृभाषा प्रेम

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49135. ‘बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मातृभाषा प्रेम

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मातृभाषा प्रेम

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मातृभाषा प्रेम धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49136. ‘बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मातृभाषा प्रेम दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मातृभाषा प्रेम दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49137. ‘बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मातृभाषा प्रेम

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मातृभाषा प्रेम

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मातृभाषा प्रेम सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49138. ‘बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मातृभाषा प्रेम

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49139. ‘बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मातृभाषा प्रेम

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मातृभाषा प्रेम

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मातृभाषा प्रेमक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49140. ‘बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मातृभाषा प्रेमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मातृभाषा प्रेमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49141. ‘बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप मातृभाषा प्रेम कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप मातृभाषा प्रेम कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49142. ‘बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं मातृभाषा प्रेम धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं मातृभाषा प्रेम धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4920 : विदेह-सदेह 36 — जीवकान्त — एक दिन

प्रश्न 49143. ‘एक दिन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. दार्शनिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. दार्शनिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दार्शनिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49144. ‘एक दिन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. दार्शनिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. दार्शनिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49145. ‘एक दिन’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दार्शनिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दार्शनिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दार्शनिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49146. ‘एक दिन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दार्शनिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दार्शनिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49147. ‘एक दिन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दार्शनिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दार्शनिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दार्शनिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49148. ‘एक दिन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दार्शनिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49149. ‘एक दिन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दार्शनिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दार्शनिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दार्शनिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49150. ‘एक दिन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दार्शनिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दार्शनिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49151. ‘एक दिन’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप दार्शनिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप दार्शनिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49152. ‘एक दिन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं दार्शनिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं दार्शनिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4921 : विदेह-सदेह 36 — सदरे आलम "गौहर" — किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ

प्रश्न 49153. ‘किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49154. ‘किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49155. ‘किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49156. ‘किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49157. ‘किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49158. ‘किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49159. ‘किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभावक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49160. ‘किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभावक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभावक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49161. ‘किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ’मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव केँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव केँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49162. ‘किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ मुस्लिम मैथिल स्वर; उर्दू प्रभाव धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4922 : विदेह-सदेह 36 — जितमोहन झा (जितू) — मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत

प्रश्न 49163. ‘मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. होली परम्परा; लोक स्वर

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. होली परम्परा; लोक स्वर

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ होली परम्परा; लोक स्वर सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49164. ‘मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. होली परम्परा; लोक स्वर

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. होली परम्परा; लोक स्वर

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49165. ‘मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. होली परम्परा; लोक स्वर

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. होली परम्परा; लोक स्वर

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार होली परम्परा; लोक स्वर धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49166. ‘मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक होली परम्परा; लोक स्वर दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक होली परम्परा; लोक स्वर दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49167. ‘मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. होली परम्परा; लोक स्वर

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. होली परम्परा; लोक स्वर

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल होली परम्परा; लोक स्वर सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49168. ‘मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. होली परम्परा; लोक स्वर

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49169. ‘मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. होली परम्परा; लोक स्वर
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. होली परम्परा; लोक स्वर
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ होली परम्परा; लोक स्वरक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49170. ‘मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. होली परम्परा; लोक स्वरक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. होली परम्परा; लोक स्वरक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49171. ‘मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप होली परम्परा; लोक स्वर कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप होली परम्परा; लोक स्वर कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49172. ‘मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं होली परम्परा; लोक स्वर धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं होली परम्परा; लोक स्वर धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4923 : विदेह-सदेह 36 — अक्षय कुमार चौधरी — दियाद बलजोर

प्रश्न 49173. ‘दियाद बलजोर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रेम कविता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रेम कविता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रेम कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49174. ‘दियाद बलजोर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रेम कविता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रेम कविता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49175. ‘दियाद बलजोर’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रेम कविता
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रेम कविता
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रेम कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49176. ‘दियाद बलजोर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रेम कविता दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रेम कविता दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49177. ‘दियाद बलजोर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रेम कविता
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रेम कविता
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रेम कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49178. ‘दियाद बलजोर’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रेम कविता
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49179. ‘दियाद बलजोर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रेम कविता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रेम कविता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रेम कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49180. ‘दियाद बलजोर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रेम कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रेम कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49181. ‘दियाद बलजोर’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप प्रेम कविता कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप प्रेम कविता कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49182. ‘दियाद बलजोर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ प्रेम कविता धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ प्रेम कविता धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4924 : विदेह-सदेह 36 — जवाहर लाल कश्यप — हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)

प्रश्न 49183. ‘हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रयोगधर्मी; सामाजिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49184. ‘हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49185. ‘हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रयोगधर्मी; सामाजिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49186. ‘हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रयोगधर्मी; सामाजिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रयोगधर्मी; सामाजिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49187. ‘हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रयोगधर्मी; सामाजिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49188. ‘हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49189. ‘हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; सामाजिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रयोगधर्मी; सामाजिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49190. ‘हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रयोगधर्मी; सामाजिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; सामाजिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49191. ‘हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)’मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप प्रयोगधर्मी; सामाजिक केँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप प्रयोगधर्मी; सामाजिक केँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49192. ‘हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत..., ई की भेल?, ... (कुल ८ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ प्रयोगधर्मी; सामाजिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ प्रयोगधर्मी; सामाजिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4925 : विदेह-सदेह 36 — मुन्ना जी — सबला

प्रश्न 49193. ‘सबला’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नारी सशक्तिकरण
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नारी सशक्तिकरण
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नारी सशक्तिकरण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49194. ‘सबला’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नारी सशक्तिकरण
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नारी सशक्तिकरण
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49195. ‘सबला’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नारी सशक्तिकरण
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नारी सशक्तिकरण
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी सशक्तिकरण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49196. ‘सबला’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नारी सशक्तिकरण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नारी सशक्तिकरण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49197. ‘सबला’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नारी सशक्तिकरण
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नारी सशक्तिकरण
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी सशक्तिकरण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49198. ‘सबला’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नारी सशक्तिकरण
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49199. ‘सबला’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नारी सशक्तिकरण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नारी सशक्तिकरण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी सशक्तिकरणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49200. ‘सबला’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नारी सशक्तिकरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नारी सशक्तिकरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49201. ‘सबला’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप नारी सशक्तिकरण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप नारी सशक्तिकरण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49202. ‘सबला’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नारी सशक्तिकरण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नारी सशक्तिकरण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4926 : विदेह-सदेह 36 — गणेश कुमार झा "बावरा" — विरह, कैंचा

प्रश्न 49203. ‘विरह, कैंचा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. शृंगार; वियोग
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. शृंगार; वियोग
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं शृंगार; वियोग सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49204. ‘विरह, कैंचा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. शृंगार; वियोग
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. शृंगार; वियोग
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49205. ‘विरह, कैंचा’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. शृंगार; वियोग
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. शृंगार; वियोग
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शृंगार; वियोग धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49206. ‘विरह, कैंचा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक शृंगार; वियोग दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक शृंगार; वियोग दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49207. ‘विरह, कैंचा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. शृंगार; वियोग
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. शृंगार; वियोग
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शृंगार; वियोग सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49208. ‘विरह, कैंचा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. शृंगार; वियोग
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49209. ‘विरह, कैंचा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शृंगार; वियोग
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शृंगार; वियोग
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शृंगार; वियोगक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49210. ‘विरह, कैंचा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शृंगार; वियोगक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शृंगार; वियोगक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49211. ‘विरह, कैंचा’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप शृंगार; वियोग कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप शृंगार; वियोग कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49212. ‘विरह, कैंचा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शृंगार; वियोग धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शृंगार; वियोग धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4927 : विदेह-सदेह 36 — सुबोध कुमार ठाकुर — एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली

प्रश्न 49213. ‘एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सामाजिक; वैराग्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सामाजिक; वैराग्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सामाजिक; वैराग्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49214. ‘एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सामाजिक; वैराग्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सामाजिक; वैराग्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49215. ‘एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सामाजिक; वैराग्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सामाजिक; वैराग्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक; वैराग्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49216. ‘एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सामाजिक; वैराग्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक; वैराग्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49217. ‘एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सामाजिक; वैराग्य
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सामाजिक; वैराग्य
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक; वैराग्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49218. ‘एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सामाजिक; वैराग्य
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49219. ‘एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सामाजिक; वैराग्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सामाजिक; वैराग्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक; वैराग्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49220. ‘एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सामाजिक; वैराग्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सामाजिक; वैराग्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49221. ‘एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप सामाजिक; वैराग्य कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप सामाजिक; वैराग्य कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49222. ‘एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सामाजिक; वैराग्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सामाजिक; वैराग्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4928 : विदेह-सदेह 36 — किशन कारीगर — चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)

प्रश्न 49223. ‘चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. व्यंग्य; लोकजीवन

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. व्यंग्य; लोकजीवन

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ व्यंग्य; लोकजीवन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49224. ‘चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. व्यंग्य; लोकजीवन

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. व्यंग्य; लोकजीवन

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49225. ‘चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. व्यंग्य; लोकजीवन

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. व्यंग्य; लोकजीवन

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार व्यंग्य; लोकजीवन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49226. ‘चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक व्यंग्य; लोकजीवन दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक व्यंग्य; लोकजीवन दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49227. ‘चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. व्यंग्य; लोकजीवन

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. व्यंग्य; लोकजीवन

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल व्यंग्य; लोकजीवन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49228. ‘चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. व्यंग्य; लोकजीवन

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49229. ‘चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. व्यंग्य; लोकजीवन

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. व्यंग्य; लोकजीवन

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ व्यंग्य; लोकजीवनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49230. ‘चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. व्यंग्य; लोकजीवनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. व्यंग्य; लोकजीवनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49231. ‘चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप व्यंग्य; लोकजीवन कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप व्यंग्य; लोकजीवन कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49232. ‘चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि... (कुल ८ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ व्यंग्य; लोकजीवन धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ व्यंग्य; लोकजीवन धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4929 : विदेह-सदेह 36 — पंकज कुमार झा — ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)

प्रश्न 49233. ‘ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. दार्शनिक; आध्यात्मिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. दार्शनिक; आध्यात्मिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ दार्शनिक; आध्यात्मिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49234. ‘ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. दार्शनिक; आध्यात्मिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. दार्शनिक; आध्यात्मिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49235. ‘ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दार्शनिक; आध्यात्मिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दार्शनिक; आध्यात्मिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दार्शनिक; आध्यात्मिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49236. ‘ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दार्शनिक; आध्यात्मिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दार्शनिक; आध्यात्मिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49237. ‘ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दार्शनिक; आध्यात्मिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दार्शनिक; आध्यात्मिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दार्शनिक; आध्यात्मिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49238. ‘ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दार्शनिक; आध्यात्मिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49239. ‘ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दार्शनिक; आध्यात्मिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दार्शनिक; आध्यात्मिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दार्शनिक; आध्यात्मिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49240. ‘ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दार्शनिक; आध्यात्मिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दार्शनिक; आध्यात्मिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49241. ‘ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप दार्शनिक; आध्यात्मिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप दार्शनिक; आध्यात्मिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49242. ‘ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य... (कुल ८ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ दार्शनिक; आध्यात्मिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ दार्शनिक; आध्यात्मिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4930 : विदेह-सदेह 36 — उमेश मण्डल — संस्कार गीत (संकलन)

प्रश्न 49243. ‘संस्कार गीत (संकलन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मिथिला संस्कार; लोक परम्परा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49244. ‘संस्कार गीत (संकलन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49245. ‘संस्कार गीत (संकलन)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिला संस्कार; लोक परम्परा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49246. ‘संस्कार गीत (संकलन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिला संस्कार; लोक परम्परा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिला संस्कार; लोक परम्परा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49247. ‘संस्कार गीत (संकलन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिला संस्कार; लोक परम्परा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49248. ‘संस्कार गीत (संकलन)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49249. ‘संस्कार गीत (संकलन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिला संस्कार; लोक परम्परा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिला संस्कार; लोक परम्पराक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49250. ‘संस्कार गीत (संकलन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिला संस्कार; लोक परम्पराक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिला संस्कार; लोक परम्पराक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49251. ‘संस्कार गीत (संकलन)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप मिथिला संस्कार; लोक परम्परा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप मिथिला संस्कार; लोक परम्परा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49252. ‘संस्कार गीत (संकलन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिला संस्कार; लोक परम्परा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिला संस्कार; लोक परम्परा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4931 : विदेह-सदेह 36 — दुर्गानन्द मण्डल — हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी

प्रश्न 49253. ‘हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. देशभक्ति
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. देशभक्ति
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं देशभक्ति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49254. ‘हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. देशभक्ति
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. देशभक्ति
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49255. ‘हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. देशभक्ति
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. देशभक्ति
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार देशभक्ति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49256. ‘हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक देशभक्ति दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक देशभक्ति दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49257. ‘हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. देशभक्ति
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. देशभक्ति
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल देशभक्ति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49258. ‘हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. देशभक्ति
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49259. ‘हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. देशभक्ति
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. देशभक्ति
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ देशभक्तिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49260. ‘हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. देशभक्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. देशभक्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49261. ‘हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप देशभक्ति कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप देशभक्ति कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49262. ‘हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं देशभक्ति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं देशभक्ति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4932 : विदेह-सदेह 36 — डॉ. अजीत मिश्र — दुर्गा चालीसा

प्रश्न 49263. ‘दुर्गा चालीसा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धार्मिक; स्तुति
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धार्मिक; स्तुति
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धार्मिक; स्तुति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49264. ‘दुर्गा चालीसा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धार्मिक; स्तुति
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धार्मिक; स्तुति
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49265. ‘दुर्गा चालीसा’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धार्मिक; स्तुति
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धार्मिक; स्तुति
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धार्मिक; स्तुति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49266. ‘दुर्गा चालीसा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धार्मिक; स्तुति दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धार्मिक; स्तुति दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49267. ‘दुर्गा चालीसा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धार्मिक; स्तुति
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धार्मिक; स्तुति
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धार्मिक; स्तुति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49268. ‘दुर्गा चालीसा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धार्मिक; स्तुति
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49269. ‘दुर्गा चालीसा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धार्मिक; स्तुति
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धार्मिक; स्तुति
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धार्मिक; स्तुतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49270. ‘दुर्गा चालीसा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धार्मिक; स्तुतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धार्मिक; स्तुतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49271. ‘दुर्गा चालीसा’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप धार्मिक; स्तुति कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप धार्मिक; स्तुति कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49272. ‘दुर्गा चालीसा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ धार्मिक; स्तुति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ धार्मिक; स्तुति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4933 : विदेह-सदेह 36 — सुनील कुमार झा — हाइकू / शेनर्यू

प्रश्न 49273. ‘हाइकू / शेनर्यू’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49274. ‘हाइकू / शेनर्यू’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49275. ‘हाइकू / शेनर्यू’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49276. ‘हाइकू / शेनर्यू’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49277. ‘हाइकू / शेनर्यू’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49278. ‘हाइकू / शेनर्यू’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49279. ‘हाइकू / शेनर्यू’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ जापानी शैली; प्रकृति-चित्रणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49280. ‘हाइकू / शेनर्यू’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. जापानी शैली; प्रकृति-चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49281. ‘हाइकू / शेनर्यू’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49282. ‘हाइकू / शेनर्यू’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं जापानी शैली; प्रकृति-चित्रण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4934 : विदेह-सदेह 36 — आशीष अनचिन्हार — पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता

प्रश्न 49283. ‘पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49284. ‘पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49285. ‘पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49286. ‘पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49287. ‘पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49288. ‘पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49289. ‘पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49290. ‘पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49291. ‘पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49292. ‘पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रयोगधर्मी; आधुनिकतावादी धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4935 : विदेह-सदेह 36 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि — आजाद गजल

प्रश्न 49293. ‘आजाद गजल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मुक्त छन्द; प्रेम
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मुक्त छन्द; प्रेम
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मुक्त छन्द; प्रेम सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49294. ‘आजाद गजल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मुक्त छन्द; प्रेम
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मुक्त छन्द; प्रेम
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49295. ‘आजाद गजल’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मुक्त छन्द; प्रेम
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मुक्त छन्द; प्रेम
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मुक्त छन्द; प्रेम धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49296. ‘आजाद गजल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मुक्त छन्द; प्रेम दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मुक्त छन्द; प्रेम दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49297. ‘आजाद गजल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मुक्त छन्द; प्रेम
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मुक्त छन्द; प्रेम
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मुक्त छन्द; प्रेम सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49298. ‘आजाद गजल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मुक्त छन्द; प्रेम
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49299. ‘आजाद गजल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मुक्त छन्द; प्रेम
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मुक्त छन्द; प्रेम
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मुक्त छन्द; प्रेमक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49300. ‘आजाद गजल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मुक्त छन्द; प्रेमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मुक्त छन्द; प्रेमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49301. ‘आजाद गजल’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप मुक्त छन्द; प्रेम कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप मुक्त छन्द; प्रेम कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49302. ‘आजाद गजल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ मुक्त छन्द; प्रेम धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ मुक्त छन्द; प्रेम धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4936 : विदेह-सदेह 36 — रूबी झा — १४ टा कविता, किछु गजल

प्रश्न 49303. ‘१४ टा कविता, किछु गजल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नारी स्वर; शृंगार
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नारी स्वर; शृंगार
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ नारी स्वर; शृंगार सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49304. ‘१४ टा कविता, किछु गजल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नारी स्वर; शृंगार
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नारी स्वर; शृंगार
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49305. ‘१४ टा कविता, किछु गजल’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नारी स्वर; शृंगार
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नारी स्वर; शृंगार
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी स्वर; शृंगार धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49306. ‘१४ टा कविता, किछु गजल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नारी स्वर; शृंगार दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नारी स्वर; शृंगार दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49307. ‘१४ टा कविता, किछु गजल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नारी स्वर; शृंगार
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नारी स्वर; शृंगार
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी स्वर; शृंगार सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49308. ‘१४ टा कविता, किछु गजल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नारी स्वर; शृंगार
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49309. ‘१४ टा कविता, किछु गजल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नारी स्वर; शृंगार
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नारी स्वर; शृंगार
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी स्वर; शृंगारक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49310. ‘१४ टा कविता, किछु गजल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नारी स्वर; शृंगारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नारी स्वर; शृंगारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49311. ‘१४ टा कविता, किछु गजल’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप नारी स्वर; शृंगार कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप नारी स्वर; शृंगार कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49312. ‘१४ टा कविता, किछु गजल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नारी स्वर; शृंगार धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नारी स्वर; शृंगार धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4937 : विदेह-सदेह 36 — मुन्नी कामत — जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)

प्रश्न 49313. ‘जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49314. ‘जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49315. ‘जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49316. ‘जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49317. ‘जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49318. ‘जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49319. ‘जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी पीड़ा; अस्तित्ववादक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49320. ‘जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नारी पीड़ा; अस्तित्ववादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49321. ‘जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49322. ‘जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी... विदाइ (कुल ८ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ नारी पीड़ा; अस्तित्ववाद धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4938 : विदेह-सदेह 36 — चंदन कुमार झा — हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)

प्रश्न 49323. ‘हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49324. ‘हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49325. ‘हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49326. ‘हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49327. ‘हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49328. ‘हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49329. ‘हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक; व्यंग्य; प्रणयक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49330. ‘हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. सामाजिक; व्यंग्य; प्रणयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49331. ‘हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49332. ‘हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर... (कुल २०+ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ सामाजिक; व्यंग्य; प्रणय धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4939 : विदेह-सदेह 36 — पवन कुमार साह — गीत

प्रश्न 49333. ‘गीत’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. भावात्मक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. भावात्मक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ भावात्मक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49334. ‘गीत’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. भावात्मक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. भावात्मक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49335. ‘गीत’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. भावात्मक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. भावात्मक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भावात्मक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49336. ‘गीत’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक भावात्मक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक भावात्मक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49337. ‘गीत’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. भावात्मक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. भावात्मक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भावात्मक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49338. ‘गीत’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. भावात्मक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49339. ‘गीत’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. भावात्मक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. भावात्मक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भावात्मकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49340. ‘गीत’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. भावात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. भावात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49341. ‘गीत’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप भावात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप भावात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49342. ‘गीत’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं भावात्मक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं भावात्मक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4940 : विदेह-सदेह 36 — श्यामल सुमन — किछु गजल सन

प्रश्न 49343. ‘किछु गजल सन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रयोगशील
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रयोगशील
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रयोगशील सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49344. ‘किछु गजल सन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रयोगशील
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रयोगशील
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49345. ‘किछु गजल सन’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रयोगशील
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रयोगशील
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रयोगशील धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49346. ‘किछु गजल सन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रयोगशील दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रयोगशील दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49347. ‘किछु गजल सन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रयोगशील
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रयोगशील
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रयोगशील सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49348. ‘किछु गजल सन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रयोगशील
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49349. ‘किछु गजल सन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रयोगशील
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रयोगशील
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रयोगशीलक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49350. ‘किछु गजल सन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रयोगशीलक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रयोगशीलक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49351. ‘किछु गजल सन’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रयोगशील कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रयोगशील कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49352. ‘किछु गजल सन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रयोगशील धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रयोगशील धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4941 : विदेह-सदेह 36 — नवीन कुमार "आशा" — बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण

प्रश्न 49353. ‘बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49354. ‘बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49355. ‘बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49356. ‘बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49357. ‘बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49358. ‘बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49359. ‘बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी-गौरव; मिथिला अस्मिताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49360. ‘बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नारी-गौरव; मिथिला अस्मिताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49361. ‘बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49362. ‘बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं नारी-गौरव; मिथिला अस्मिता धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4942 : विदेह-सदेह 36 — डॉ. शशिधर कुमर — मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)

प्रश्न 49363. ‘मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49364. ‘मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49365. ‘मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49366. ‘मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49367. ‘मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49368. ‘मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49369. ‘मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49370. ‘मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49371. ‘मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49372. ‘मधुश्रवणी गीत- १,२, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत... (कुल १००+ शीर्षक; लोकगीत, कविता, गजल, बाल कविता)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं लोकगीत पुनर्सृजन; बाल कविता; प्रकृति धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4943 : विदेह-सदेह 36 — सत्यनारायण झा — ठुठ पीपर

प्रश्न 49373. ‘ठुठ पीपर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रतीकात्मक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रतीकात्मक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रतीकात्मक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49374. ‘ठुठ पीपर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रतीकात्मक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रतीकात्मक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49375. ‘ठुठ पीपर’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रतीकात्मक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रतीकात्मक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रतीकात्मक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49376. ‘ठुठ पीपर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रतीकात्मक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रतीकात्मक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49377. ‘ठुठ पीपर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रतीकात्मक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रतीकात्मक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रतीकात्मक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49378. ‘ठुठ पीपर’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रतीकात्मक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49379. ‘ठुठ पीपर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रतीकात्मक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रतीकात्मक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रतीकात्मकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49380. ‘ठुठ पीपर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रतीकात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रतीकात्मकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49381. ‘ठुठ पीपर’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रतीकात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रतीकात्मक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49382. ‘ठुठ पीपर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रतीकात्मक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रतीकात्मक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4944 : विदेह-सदेह 36 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — किछु गजल

प्रश्न 49383. ‘किछु गजल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. शृंगार; वियोग
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. शृंगार; वियोग
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं शृंगार; वियोग सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49384. ‘किछु गजल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. शृंगार; वियोग
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. शृंगार; वियोग
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49385. ‘किछु गजल’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. शृंगार; वियोग
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. शृंगार; वियोग
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शृंगार; वियोग धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49386. ‘किछु गजल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक शृंगार; वियोग दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक शृंगार; वियोग दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49387. ‘किछु गजल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. शृंगार; वियोग
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. शृंगार; वियोग
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शृंगार; वियोग सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49388. ‘किछु गजल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. शृंगार; वियोग
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49389. ‘किछु गजल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शृंगार; वियोग
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शृंगार; वियोग
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शृंगार; वियोगक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49390. ‘किछु गजल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शृंगार; वियोगक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शृंगार; वियोगक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49391. ‘किछु गजल’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप शृंगार; वियोग कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप शृंगार; वियोग कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49392. ‘किछु गजल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शृंगार; वियोग धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शृंगार; वियोग धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4945 : विदेह-सदेह 36 — रमा कान्त झा — देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात

प्रश्न 49393. ‘देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राजनीतिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राजनीतिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राजनीतिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49394. ‘देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राजनीतिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राजनीतिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49395. ‘देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राजनीतिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राजनीतिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजनीतिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49396. ‘देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राजनीतिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राजनीतिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49397. ‘देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. राजनीतिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. राजनीतिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजनीतिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49398. ‘देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. राजनीतिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49399. ‘देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राजनीतिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राजनीतिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजनीतिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49400. ‘देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राजनीतिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राजनीतिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49401. ‘देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप राजनीतिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप राजनीतिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49402. ‘देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं राजनीतिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं राजनीतिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4946 : विदेह-सदेह 36 — सन्तोष कुमार मिश्र — इतिहासहिन इतिहास

प्रश्न 49403. ‘इतिहासहिन इतिहास’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. सामाजिक इतिहास

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. सामाजिक इतिहास

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सामाजिक इतिहास सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49404. ‘इतिहासहिन इतिहास’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. सामाजिक इतिहास

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. सामाजिक इतिहास

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49405. ‘इतिहासहिन इतिहास’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सामाजिक इतिहास

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सामाजिक इतिहास

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सामाजिक इतिहास धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49406. ‘इतिहासहिन इतिहास’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सामाजिक इतिहास दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सामाजिक इतिहास दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49407. ‘इतिहासहिन इतिहास’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सामाजिक इतिहास

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सामाजिक इतिहास

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सामाजिक इतिहास सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49408. ‘इतिहासहिन इतिहास’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सामाजिक इतिहास

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49409. ‘इतिहासहिन इतिहास’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. सामाजिक इतिहास

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. सामाजिक इतिहास

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सामाजिक इतिहासक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49410. ‘इतिहासहिन इतिहास’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. सामाजिक इतिहासक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. सामाजिक इतिहासक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49411. ‘इतिहासहिन इतिहास’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप सामाजिक इतिहास कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप सामाजिक इतिहास कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49412. ‘इतिहासहिन इतिहास’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं सामाजिक इतिहास धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं सामाजिक इतिहास धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4947 : विदेह-सदेह 36 — जगदानंद झा 'मनु' — किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)

प्रश्न 49413. ‘किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बहुरंगी; सामाजिक; हास्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49414. ‘किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49415. ‘किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बहुरंगी; सामाजिक; हास्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49416. ‘किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बहुरंगी; सामाजिक; हास्य दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बहुरंगी; सामाजिक; हास्य दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49417. ‘किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बहुरंगी; सामाजिक; हास्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49418. ‘किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49419. ‘किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्य

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बहुरंगी; सामाजिक; हास्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49420. ‘किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. बहुरंगी; सामाजिक; हास्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49421. ‘किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप बहुरंगी; सामाजिक; हास्य कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप बहुरंगी; सामाजिक; हास्य कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49422. ‘किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल... मिथिला राज, गुमान (कुल १५+ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ बहुरंगी; सामाजिक; हास्य धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ बहुरंगी; सामाजिक; हास्य धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4948 : विदेह-सदेह 36 — नवीन ठाकुर — आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)

प्रश्न 49423. ‘आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रेम; सामाजिक व्यंग्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49424. ‘आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49425. ‘आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रेम; सामाजिक व्यंग्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49426. ‘आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रेम; सामाजिक व्यंग्य दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रेम; सामाजिक व्यंग्य दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49427. ‘आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रेम; सामाजिक व्यंग्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49428. ‘आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49429. ‘आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्य

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रेम; सामाजिक व्यंग्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49430. ‘आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रेम; सामाजिक व्यंग्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49431. ‘आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप प्रेम; सामाजिक व्यंग्य कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप प्रेम; सामाजिक व्यंग्य कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49432. ‘आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा... (कुल १० शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ प्रेम; सामाजिक व्यंग्य धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ प्रेम; सामाजिक व्यंग्य धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4949 : विदेह-सदेह 36 — अमित मिश्र — १५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल

प्रश्न 49433. ‘१५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49434. ‘१५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49435. ‘१५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49436. ‘१५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49437. ‘१५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49438. ‘१५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49439. ‘१५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49440. ‘१५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49441. ‘१५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49442. ‘१५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं देशभक्ति; प्रकृति; बाल साहित्य धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4950 : विदेह-सदेह 36 — शिव कुमार यादव — बाल गजल

प्रश्न 49443. ‘बाल गजल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. बाल मनोविज्ञान

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बाल मनोविज्ञान सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49444. ‘बाल गजल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. बाल मनोविज्ञान

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49445. ‘बाल गजल’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बाल मनोविज्ञान
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाल मनोविज्ञान धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49446. ‘बाल गजल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बाल मनोविज्ञान दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बाल मनोविज्ञान दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49447. ‘बाल गजल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बाल मनोविज्ञान
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाल मनोविज्ञान सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49448. ‘बाल गजल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बाल मनोविज्ञान
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49449. ‘बाल गजल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बाल मनोविज्ञान
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बाल मनोविज्ञान
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाल मनोविज्ञानक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49450. ‘बाल गजल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बाल मनोविज्ञानक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बाल मनोविज्ञानक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49451. ‘बाल गजल’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप बाल मनोविज्ञान कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप बाल मनोविज्ञान कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49452. ‘बाल गजल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ बाल मनोविज्ञान धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ बाल मनोविज्ञान धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4951 : विदेह-सदेह 36 — विकास झा रंजन — किछु रुबाइ, किछु गजल

प्रश्न 49453. ‘किछु रुबाइ, किछु गजल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. शृंगार
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. शृंगार
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ शृंगार सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49454. ‘किछु रुबाइ, किछु गजल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. शृंगार
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. शृंगार
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49455. ‘किछु रुबाइ, किछु गजल’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. शृंगार
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. शृंगार
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शृंगार धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49456. ‘किछु रुबाइ, किछु गजल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक शृंगार दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक शृंगार दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49457. ‘किछु रुबाइ, किछु गजल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. शृंगार
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. शृंगार
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शृंगार सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49458. ‘किछु रुबाइ, किछु गजल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. शृंगार
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49459. ‘किछु रुबाइ, किछु गजल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शृंगार
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शृंगार
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शृंगारक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49460. ‘किछु रुबाइ, किछु गजल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शृंगारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शृंगारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49461. ‘किछु रुबाइ, किछु गजल’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप शृंगार कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप शृंगार कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49462. ‘किछु रुबाइ, किछु गजल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शृंगार धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शृंगार धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4952 : विदेह-सदेह 36 — झा हेमन्त बापी — अभिलाषा

प्रश्न 49463. ‘अभिलाषा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रेम कविता

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रेम कविता

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रेम कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49464. ‘अभिलाषा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रेम कविता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रेम कविता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49465. ‘अभिलाषा’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रेम कविता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रेम कविता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रेम कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49466. ‘अभिलाषा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रेम कविता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रेम कविता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49467. ‘अभिलाषा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रेम कविता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रेम कविता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रेम कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49468. ‘अभिलाषा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रेम कविता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49469. ‘अभिलाषा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रेम कविता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रेम कविता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रेम कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49470. ‘अभिलाषा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रेम कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रेम कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49471. ‘अभिलाषा’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रेम कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रेम कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49472. ‘अभिलाषा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रेम कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रेम कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4953 : विदेह-सदेह 36 — सत्येन्द्र कुमार झा — पाँच गोट लघु कविता

प्रश्न 49473. ‘पाँच गोट लघु कविता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. हाइकू-सम
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. हाइकू-सम
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं हाइकू-सम सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49474. ‘पाँच गोट लघु कविता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. हाइकू-सम
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. हाइकू-सम
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49475. ‘पाँच गोट लघु कविता’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. हाइकू-सम
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. हाइकू-सम
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार हाइकू-सम धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49476. ‘पाँच गोट लघु कविता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक हाइकू-सम दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक हाइकू-सम दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49477. ‘पाँच गोट लघु कविता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. हाइकू-सम
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. हाइकू-सम
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल हाइकू-सम सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49478. ‘पाँच गोट लघु कविता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. हाइकू-सम
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49479. ‘पाँच गोट लघु कविता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. हाइकू-सम
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. हाइकू-सम
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ हाइकू-समक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49480. ‘पाँच गोट लघु कविता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. हाइकू-समक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. हाइकू-समक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49481. ‘पाँच गोट लघु कविता’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप हाइकू-सम कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप हाइकू-सम कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49482. ‘पाँच गोट लघु कविता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ हाइकू-सम धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ हाइकू-सम धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4954 : विदेह-सदेह 36 — विवेकानन्द झा — हाइकू

प्रश्न 49483. ‘हाइकू’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. जापानी शैली
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. जापानी शैली
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ जापानी शैली सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49484. ‘हाइकू’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. जापानी शैली
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. जापानी शैली
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49485. ‘हाइकू’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. जापानी शैली
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. जापानी शैली
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार जापानी शैली धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49486. ‘हाइकू’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक जापानी शैली दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक जापानी शैली दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49487. ‘हाइकू’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. जापानी शैली
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. जापानी शैली
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल जापानी शैली सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49488. ‘हाइकू’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. जापानी शैली
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49489. ‘हाइकू’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. जापानी शैली
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. जापानी शैली
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ जापानी शैलीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49490. ‘हाइकू’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. जापानी शैलीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. जापानी शैलीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49491. ‘हाइकू’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप जापानी शैली कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप जापानी शैली कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49492. ‘हाइकू’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं जापानी शैली धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं जापानी शैली धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4955 : विदेह-सदेह 36 — विद्यानन्द झा "विदू" — शिक्षाक मौलिकता

प्रश्न 49493. ‘शिक्षाक मौलिकता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. शिक्षा दर्शन
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. शिक्षा दर्शन
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ शिक्षा दर्शन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49494. ‘शिक्षाक मौलिकता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. शिक्षा दर्शन
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. शिक्षा दर्शन
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49495. ‘शिक्षाक मौलिकता’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. शिक्षा दर्शन
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. शिक्षा दर्शन
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शिक्षा दर्शन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49496. ‘शिक्षाक मौलिकता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक शिक्षा दर्शन दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक शिक्षा दर्शन दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49497. ‘शिक्षाक मौलिकता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. शिक्षा दर्शन
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. शिक्षा दर्शन
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शिक्षा दर्शन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49498. ‘शिक्षाक मौलिकता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. शिक्षा दर्शन
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49499. ‘शिक्षाक मौलिकता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शिक्षा दर्शन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शिक्षा दर्शन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शिक्षा दर्शनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49500. ‘शिक्षाक मौलिकता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शिक्षा दर्शनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शिक्षा दर्शनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49501. ‘शिक्षाक मौलिकता’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप शिक्षा दर्शन कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप शिक्षा दर्शन कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49502. ‘शिक्षाक मौलिकता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शिक्षा दर्शन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शिक्षा दर्शन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4956 : विदेह-सदेह 36 — बिनोद मिश्र — गामक सनेस

प्रश्न 49503. ‘गामक सनेस’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. ग्रामीण जीवन
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं ग्रामीण जीवन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49504. ‘गामक सनेस’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. ग्रामीण जीवन
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49505. ‘गामक सनेस’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. ग्रामीण जीवन
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ग्रामीण जीवन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49506. ‘गामक सनेस’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक ग्रामीण जीवन दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक ग्रामीण जीवन दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49507. ‘गामक सनेस’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. ग्रामीण जीवन
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ग्रामीण जीवन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49508. ‘गामक सनेस’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. ग्रामीण जीवन
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49509. ‘गामक सनेस’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. ग्रामीण जीवन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ग्रामीण जीवनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49510. ‘गामक सनेस’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. ग्रामीण जीवनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. ग्रामीण जीवनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49511. ‘गामक सनेस’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप ग्रामीण जीवन कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप ग्रामीण जीवन कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49512. ‘गामक सनेस’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं ग्रामीण जीवन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं ग्रामीण जीवन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4957 : विदेह-सदेह 36 — प्रकाश प्रेमी — बौवा करबा की?

प्रश्न 49513. ‘बौवा करबा की?’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. वात्सल्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. वात्सल्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं वात्सल्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49514. ‘बौवा करबा की?’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. वात्सल्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. वात्सल्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49515. ‘बौवा करबा की?’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. वात्सल्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. वात्सल्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वात्सल्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49516. ‘बौवा करबा की?’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक वात्सल्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक वात्सल्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49517. ‘बौवा करबा की?’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. वात्सल्य
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. वात्सल्य
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वात्सल्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49518. ‘बौवा करबा की?’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. वात्सल्य
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49519. ‘बौवा करबा की?’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. वात्सल्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. वात्सल्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वात्सल्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49520. ‘बौवा करबा की?’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. वात्सल्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. वात्सल्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49521. ‘बौवा करबा की?’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप वात्सल्य कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप वात्सल्य कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49522. ‘बौवा करबा की?’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ वात्सल्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ वात्सल्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4958 : विदेह-सदेह 36 — विनीत उत्पल — किछु गजल, गुटु रानी

प्रश्न 49523. ‘किछु गजल, गुटु रानी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. समसामयिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. समसामयिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ समसामयिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49524. ‘किछु गजल, गुटु रानी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. समसामयिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. समसामयिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49525. ‘किछु गजल, गुटु रानी’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. समसामयिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. समसामयिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार समसामयिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49526. ‘किछु गजल, गुटु रानी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक समसामयिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक समसामयिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49527. ‘किछु गजल, गुटु रानी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. समसामयिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. समसामयिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल समसामयिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49528. ‘किछु गजल, गुटु रानी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. समसामयिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49529. ‘किछु गजल, गुटु रानी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. समसामयिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. समसामयिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ समसामयिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49530. ‘किछु गजल, गुटु रानी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. समसामयिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. समसामयिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49531. ‘किछु गजल, गुटु रानी’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप समसामयिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप समसामयिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49532. ‘किछु गजल, गुटु रानी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं समसामयिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं समसामयिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4959 : विदेह-सदेह 36 — रामकृष्ण मण्डल 'छोटू' — कविता- माइ, रेल, रुसनी

प्रश्न 49533. ‘कविता- माइ, रेल, रुसनी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. ग्रामीण; वात्सल्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. ग्रामीण; वात्सल्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं ग्रामीण; वात्सल्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49534. ‘कविता- माइ, रेल, रुसनी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. ग्रामीण; वात्सल्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. ग्रामीण; वात्सल्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49535. ‘कविता- माइ, रेल, रुसनी’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. ग्रामीण; वात्सल्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. ग्रामीण; वात्सल्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ग्रामीण; वात्सल्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49536. ‘कविता- माइ, रेल, रुसनी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक ग्रामीण; वात्सल्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक ग्रामीण; वात्सल्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49537. ‘कविता- माइ, रेल, रुसनी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. ग्रामीण; वात्सल्य
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. ग्रामीण; वात्सल्य
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ग्रामीण; वात्सल्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49538. ‘कविता- माइ, रेल, रुसनी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. ग्रामीण; वात्सल्य
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49539. ‘कविता- माइ, रेल, रुसनी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. ग्रामीण; वात्सल्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. ग्रामीण; वात्सल्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ग्रामीण; वात्सल्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49540. ‘कविता- माइ, रेल, रुसनी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. ग्रामीण; वात्सल्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. ग्रामीण; वात्सल्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49541. ‘कविता- माइ, रेल, रुसनी’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप ग्रामीण; वात्सल्य कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप ग्रामीण; वात्सल्य कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49542. ‘कविता- माइ, रेल, रुसनी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं ग्रामीण; वात्सल्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं ग्रामीण; वात्सल्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4960 : विदेह-सदेह 36 — मुन्नाजी — हाइकू

प्रश्न 49543. ‘हाइकू’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रकृति-चित्रण
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रकृति-चित्रण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49544. ‘हाइकू’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रकृति-चित्रण
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49545. ‘हाइकू’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रकृति-चित्रण
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रकृति-चित्रण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49546. ‘हाइकू’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रकृति-चित्रण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रकृति-चित्रण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49547. ‘हाइकू’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रकृति-चित्रण
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रकृति-चित्रण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49548. ‘हाइकू’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रकृति-चित्रण
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49549. ‘हाइकू’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रकृति-चित्रण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रकृति-चित्रण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रकृति-चित्रणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49550. ‘हाइकू’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रकृति-चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रकृति-चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49551. ‘हाइकू’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रकृति-चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रकृति-चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49552. ‘हाइकू’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रकृति-चित्रण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रकृति-चित्रण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4961 : विदेह-सदेह 36 — अन्जनी कुमार वर्मा — बहैत बसात, परिभाषा

प्रश्न 49553. ‘बहैत बसात, परिभाषा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रेम; दार्शनिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रेम; दार्शनिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रेम; दार्शनिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49554. ‘बहैत बसात, परिभाषा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रेम; दार्शनिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रेम; दार्शनिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49555. ‘बहैत बसात, परिभाषा’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रेम; दार्शनिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रेम; दार्शनिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रेम; दार्शनिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49556. ‘बहैत बसात, परिभाषा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रेम; दार्शनिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रेम; दार्शनिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49557. ‘बहैत बसात, परिभाषा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रेम; दार्शनिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रेम; दार्शनिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रेम; दार्शनिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49558. ‘बहैत बसात, परिभाषा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रेम; दार्शनिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49559. ‘बहैत बसात, परिभाषा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रेम; दार्शनिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रेम; दार्शनिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रेम; दार्शनिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49560. ‘बहैत बसात, परिभाषा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रेम; दार्शनिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रेम; दार्शनिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49561. ‘बहैत बसात, परिभाषा’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रेम; दार्शनिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रेम; दार्शनिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49562. ‘बहैत बसात, परिभाषा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रेम; दार्शनिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रेम; दार्शनिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4962 : विदेह-सदेह 36 — रवि मिश्रा भारद्वाज — आजाद गजल

प्रश्न 49563. ‘आजाद गजल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रेम; वियोग
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रेम; वियोग
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रेम; वियोग सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49564. ‘आजाद गजल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रेम; वियोग
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रेम; वियोग
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49565. ‘आजाद गजल’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रेम; वियोग
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रेम; वियोग
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रेम; वियोग धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49566. ‘आजाद गजल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रेम; वियोग दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रेम; वियोग दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49567. ‘आजाद गजल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रेम; वियोग
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रेम; वियोग
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रेम; वियोग सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49568. ‘आजाद गजल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रेम; वियोग
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49569. ‘आजाद गजल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रेम; वियोग
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रेम; वियोग
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रेम; वियोगक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49570. ‘आजाद गजल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रेम; वियोगक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रेम; वियोगक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49571. ‘आजाद गजल’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप प्रेम; वियोग कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप प्रेम; वियोग कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49572. ‘आजाद गजल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ प्रेम; वियोग धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ प्रेम; वियोग धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4963 : विदेह-सदेह 36 — अमित मोहन झा — काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ

प्रश्न 49573. ‘काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रेम; स्मृति

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रेम; स्मृति

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रेम; स्मृति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49574. ‘काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रेम; स्मृति

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रेम; स्मृति

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49575. ‘काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रेम; स्मृति

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रेम; स्मृति

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रेम; स्मृति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49576. ‘काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रेम; स्मृति दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रेम; स्मृति दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49577. ‘काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रेम; स्मृति

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रेम; स्मृति

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रेम; स्मृति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49578. ‘काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रेम; स्मृति

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49579. ‘काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रेम; स्मृति

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रेम; स्मृति

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रेम; स्मृतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49580. ‘काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रेम; स्मृतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रेम; स्मृतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49581. ‘काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप प्रेम; स्मृति कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप प्रेम; स्मृति कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49582. ‘काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ प्रेम; स्मृति धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ प्रेम; स्मृति धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4964 : विदेह-सदेह 36 — शिवशंकर सिंह ठाकुर — कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...

प्रश्न 49583. ‘कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. शृंगार; कोहबर परम्परा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. शृंगार; कोहबर परम्परा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं शृंगार; कोहबर परम्परा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49584. ‘कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. शृंगार; कोहबर परम्परा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. शृंगार; कोहबर परम्परा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49585. ‘कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. शृंगार; कोहबर परम्परा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. शृंगार; कोहबर परम्परा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शृंगार; कोहबर परम्परा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49586. ‘कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक शृंगार; कोहबर परम्परा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक शृंगार; कोहबर परम्परा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49587. ‘कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. शृंगार; कोहबर परम्परा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. शृंगार; कोहबर परम्परा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शृंगार; कोहबर परम्परा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49588. ‘कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. शृंगार; कोहबर परम्परा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49589. ‘कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. शृंगार; कोहबर परम्परा

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. शृंगार; कोहबर परम्परा

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शृंगार; कोहबर परम्पराक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49590. ‘कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. शृंगार; कोहबर परम्पराक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. शृंगार; कोहबर परम्पराक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49591. ‘कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप शृंगार; कोहबर परम्परा कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप शृंगार; कोहबर परम्परा कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49592. ‘कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित..., लुटा गेलौंह..., किए दूरेसँ..., हे स्वर्णमयी...’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं शृंगार; कोहबर परम्परा धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं शृंगार; कोहबर परम्परा धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4965 : विदेह-सदेह 36 — मिहिर झा — सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)

प्रश्न 49593. ‘सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. लोक परम्परा; सामाजिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. लोक परम्परा; सामाजिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लोक परम्परा; सामाजिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49594. ‘सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. लोक परम्परा; सामाजिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. लोक परम्परा; सामाजिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49595. ‘सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लोक परम्परा; सामाजिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लोक परम्परा; सामाजिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोक परम्परा; सामाजिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49596. ‘सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लोक परम्परा; सामाजिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लोक परम्परा; सामाजिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49597. ‘सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लोक परम्परा; सामाजिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लोक परम्परा; सामाजिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोक परम्परा; सामाजिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49598. ‘सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लोक परम्परा; सामाजिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49599. ‘सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. लोक परम्परा; सामाजिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. लोक परम्परा; सामाजिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोक परम्परा; सामाजिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49600. ‘सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. लोक परम्परा; सामाजिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. लोक परम्परा; सामाजिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49601. ‘सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप लोक परम्परा; सामाजिक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप लोक परम्परा; सामाजिक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49602. ‘सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस... भोज (कुल ८ शीर्षक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं लोक परम्परा; सामाजिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं लोक परम्परा; सामाजिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4966 : विदेह-सदेह 36 — मनीष झा बौआभाई — नव बरखक, हम ऋणी छी

प्रश्न 49603. ‘नव बरखक, हम ऋणी छी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नववर्ष; आत्मालोचना

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नववर्ष; आत्मालोचना

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नववर्ष; आत्मालोचना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49604. ‘नव बरखक, हम ऋणी छी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नववर्ष; आत्मालोचना

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नववर्ष; आत्मालोचना

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49605. ‘नव बरखक, हम ऋणी छी’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नववर्ष; आत्मालोचना

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नववर्ष; आत्मालोचना

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नववर्ष; आत्मालोचना धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49606. ‘नव बरखक, हम ऋणी छी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नववर्ष; आत्मालोचना दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नववर्ष; आत्मालोचना दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49607. ‘नव बरखक, हम ऋणी छी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नववर्ष; आत्मालोचना
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नववर्ष; आत्मालोचना
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नववर्ष; आत्मालोचना सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49608. ‘नव बरखक, हम ऋणी छी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नववर्ष; आत्मालोचना
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49609. ‘नव बरखक, हम ऋणी छी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नववर्ष; आत्मालोचना
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नववर्ष; आत्मालोचना
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नववर्ष; आत्मालोचनाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49610. ‘नव बरखक, हम ऋणी छी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नववर्ष; आत्मालोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नववर्ष; आत्मालोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49611. ‘नव बरखक, हम ऋणी छी’मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप नववर्ष; आत्मालोचना केँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप नववर्ष; आत्मालोचना केँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49612. ‘नव बरखक, हम ऋणी छी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ नववर्ष; आत्मालोचना धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ नववर्ष; आत्मालोचना धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4967 : विदेह-सदेह 36 — इरा मल्लिक — जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!

प्रश्न 49613. ‘जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नारी जीवन; सामाजिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नारी जीवन; सामाजिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ नारी जीवन; सामाजिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49614. ‘जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नारी जीवन; सामाजिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नारी जीवन; सामाजिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49615. ‘जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नारी जीवन; सामाजिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नारी जीवन; सामाजिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी जीवन; सामाजिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49616. ‘जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नारी जीवन; सामाजिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नारी जीवन; सामाजिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49617. ‘जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नारी जीवन; सामाजिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नारी जीवन; सामाजिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी जीवन; सामाजिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49618. ‘जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नारी जीवन; सामाजिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49619. ‘जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नारी जीवन; सामाजिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नारी जीवन; सामाजिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी जीवन; सामाजिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49620. ‘जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नारी जीवन; सामाजिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नारी जीवन; सामाजिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49621. ‘जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप नारी जीवन; सामाजिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप नारी जीवन; सामाजिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49622. ‘जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै!’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नारी जीवन; सामाजिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नारी जीवन; सामाजिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4968 : विदेह-सदेह 36 — प्रवीण नारायण चौधरी — ३० टा कविता

प्रश्न 49623. ‘३० टा कविता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49624. ‘३० टा कविता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49625. ‘३० टा कविता’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49626. ‘३० टा कविता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49627. ‘३० टा कविता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49628. ‘३० टा कविता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49629. ‘३० टा कविता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बहुआयामी; प्रकृति-प्रेमक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49630. ‘३० टा कविता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. बहुआयामी; प्रकृति-प्रेमक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49631. ‘३० टा कविता’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49632. ‘३० टा कविता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ बहुआयामी; प्रकृति-प्रेम धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4969 : विदेह-सदेह 36 — शांतिलक्ष्मी चौधरी — किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी

प्रश्न 49633. ‘किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49634. ‘किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49635. ‘किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49636. ‘किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49637. ‘किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49638. ‘किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49639. ‘किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49640. ‘किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49641. ‘किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49642. ‘किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ नारी स्वर; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4970 : विदेह-सदेह 36 — पल्लवी मण्डल — १० टा पद्य

प्रश्न 49643. ‘१० टा पद्य’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नारी स्वर

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ नारी स्वर सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49644. ‘१० टा पद्य’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नारी स्वर

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49645. ‘१० टा पद्य’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नारी स्वर

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी स्वर धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49646. ‘१० टा पद्य’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नारी स्वर दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नारी स्वर दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49647. ‘१० टा पद्य’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नारी स्वर

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नारी स्वर

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी स्वर सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49648. ‘१० टा पद्य’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नारी स्वर
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49649. ‘१० टा पद्य’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नारी स्वर
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नारी स्वर
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी स्वरक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49650. ‘१० टा पद्य’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नारी स्वरक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नारी स्वरक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49651. ‘१० टा पद्य’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप नारी स्वर कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप नारी स्वर कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49652. ‘१० टा पद्य’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नारी स्वर धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नारी स्वर धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4971 : विदेह-सदेह 36 — श्वेता झा (सिंगापुर) — किछु चित्र

प्रश्न 49653. ‘किछु चित्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रवासी मैथिल कला
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रवासी मैथिल कला
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रवासी मैथिल कला सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49654. ‘किछु चित्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रवासी मैथिल कला
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रवासी मैथिल कला
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49655. ‘किछु चित्र’केँ दृश्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रवासी मैथिल कला
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रवासी मैथिल कला
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी मैथिल कला धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49656. ‘किछु चित्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रवासी मैथिल कला दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रवासी मैथिल कला दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49657. ‘किछु चित्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रवासी मैथिल कला
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रवासी मैथिल कला
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी मैथिल कला सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49658. ‘किछु चित्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रवासी मैथिल कला
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49659. ‘किछु चित्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रवासी मैथिल कला
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रवासी मैथिल कला
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी मैथिल कलाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49660. ‘किछु चित्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रवासी मैथिल कलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रवासी मैथिल कलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49661. ‘किछु चित्र’मे दृश्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. दृश्यक रूप प्रवासी मैथिल कला कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. दृश्यक रूप प्रवासी मैथिल कला कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49662. ‘किछु चित्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रवासी मैथिल कला धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रवासी मैथिल कला धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4972 : विदेह-सदेह 36 — गुंजन कर्ण — किछु चित्र

प्रश्न 49663. ‘किछु चित्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिला चित्रकला
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिला चित्रकला
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिला चित्रकला सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49664. ‘किछु चित्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिला चित्रकला
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिला चित्रकला
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49665. ‘किछु चित्र’कैं दृश्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिला चित्रकला
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिला चित्रकला
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिला चित्रकला धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49666. ‘किछु चित्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिला चित्रकला दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिला चित्रकला दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49667. ‘किछु चित्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिला चित्रकला
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिला चित्रकला
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिला चित्रकला सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49668. ‘किछु चित्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिला चित्रकला
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49669. ‘किछु चित्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिला चित्रकला
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिला चित्रकला
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिला चित्रकलाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49670. ‘किछु चित्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिला चित्रकलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिला चित्रकलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49671. ‘किछु चित्र’मे दृश्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. दृश्यक रूप मिथिला चित्रकला कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. दृश्यक रूप मिथिला चित्रकला कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49672. ‘किछु चित्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ मिथिला चित्रकला धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ मिथिला चित्रकला धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4973 : विदेह-सदेह 36 — इरा मल्लिक — किछु चित्र

प्रश्न 49673. ‘किछु चित्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कविता+चित्रकला
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कविता+चित्रकला
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ कविता+चित्रकला सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49674. ‘किछु चित्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कविता+चित्रकला
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कविता+चित्रकला
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49675. ‘किछु चित्र’कैँ दृश्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कविता+चित्रकला
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कविता+चित्रकला
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कविता+चित्रकला धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49676. ‘किछु चित्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कविता+चित्रकला दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कविता+चित्रकला दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49677. ‘किछु चित्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कविता+चित्रकला
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कविता+चित्रकला
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कविता+चित्रकला सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49678. ‘किछु चित्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कविता+चित्रकला
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49679. ‘किछु चित्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कविता+चित्रकला
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कविता+चित्रकला
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कविता+चित्रकलाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49680. ‘किछु चित्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कविता+चित्रकलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कविता+चित्रकलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49681. ‘किछु चित्र’मे दृश्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. दृश्यक रूप कविता+चित्रकला कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. दृश्यक रूप कविता+चित्रकला कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49682. ‘किछु चित्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कविता+चित्रकला धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कविता+चित्रकला धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4974 : विदेह-सदेह 36 — प्रवीण कुमार ठाकुर — किछु चित्र

प्रश्न 49683. ‘किछु चित्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दृश्य कला
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दृश्य कला सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49684. ‘किछु चित्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दृश्य कला
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49685. ‘किछु चित्र’केँ दृश्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दृश्य कला
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दृश्य कला धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49686. ‘किछु चित्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दृश्य कला दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दृश्य कला दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49687. ‘किछु चित्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दृश्य कला
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दृश्य कला सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49688. ‘किछु चित्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दृश्य कला
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49689. ‘किछु चित्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दृश्य कला
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दृश्य कलाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49690. ‘किछु चित्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दृश्य कलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दृश्य कलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49691. ‘किछु चित्र’मे दृश्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. दृश्यक रूप दृश्य कला कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. दृश्यक रूप दृश्य कला कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49692. ‘किछु चित्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं दृश्य कला धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं दृश्य कला धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4975 : विदेह-सदेह 36 — गणेश ठाकुर — किछु चित्र

प्रश्न 49693. ‘किछु चित्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दृश्य कला
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दृश्य कला सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49694. ‘किछु चित्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दृश्य कला
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49695. ‘किछु चित्र’कैं दृश्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दृश्य कला
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दृश्य कला धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49696. ‘किछु चित्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दृश्य कला दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दृश्य कला दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49697. ‘किछु चित्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दृश्य कला
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दृश्य कला सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49698. ‘किछु चित्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दृश्य कला
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49699. ‘किछु चित्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दृश्य कला
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दृश्य कलाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49700. ‘किछु चित्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दृश्य कलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दृश्य कलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49701. ‘किछु चित्र’मे दृश्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. दृश्यक रूप दृश्य कला कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. दृश्यक रूप दृश्य कला कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49702. ‘किछु चित्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ दृश्य कला धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ दृश्य कला धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4976 : विदेह-सदेह 36 — कैलाश कुमार कामत — किछु चित्र

प्रश्न 49703. ‘किछु चित्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दृश्य कला
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ दृश्य कला सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49704. ‘किछु चित्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दृश्य कला
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49705. ‘किछु चित्र’केँ दृश्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दृश्य कला
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दृश्य कला धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49706. ‘किछु चित्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दृश्य कला दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दृश्य कला दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49707. ‘किछु चित्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दृश्य कला
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दृश्य कला सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49708. ‘किछु चित्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दृश्य कला
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49709. ‘किछु चित्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दृश्य कला
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दृश्य कलाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49710. ‘किछु चित्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दृश्य कलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दृश्य कलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49711. ‘किछु चित्र’मे दृश्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. दृश्यक रूप दृश्य कला कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. दृश्यक रूप दृश्य कला कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49712. ‘किछु चित्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं दृश्य कला धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं दृश्य कला धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4977 : विदेह-सदेह 36 — मोना पाण्डेय — चित्र

प्रश्न 49713. ‘चित्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दृश्य कला
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दृश्य कला सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49714. ‘चित्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दृश्य कला
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49715. ‘चित्र’केँ दृश्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दृश्य कला
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दृश्य कला धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49716. ‘चित्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दृश्य कला दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दृश्य कला दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49717. ‘चित्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दृश्य कला
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दृश्य कला सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49718. ‘चित्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दृश्य कला
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49719. ‘चित्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दृश्य कला
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दृश्य कला
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दृश्य कलाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49720. ‘चित्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दृश्य कलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दृश्य कलाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49721. ‘चित्र’मे दृश्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. दृश्यक रूप दृश्य कला कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. दृश्यक रूप दृश्य कला कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49722. ‘चित्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ दृश्य कला धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ दृश्य कला धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4978 : विदेह-सदेह 37 — पेहिंति अशोक कुमार — सदा लेल मित्र (जिगरी)

प्रश्न 49723. ‘सदा लेल मित्र (जिगरी)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49724. ‘सदा लेल मित्र (जिगरी)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49725. ‘सदा लेल मित्र (जिगरी)’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49726. ‘सदा लेल मित्र (जिगरी)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49727. ‘सदा लेल मित्र (जिगरी)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49728. ‘सदा लेल मित्र (जिगरी)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49729. ‘सदा लेल मित्र (जिगरी)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49730. ‘सदा लेल मित्र (जिगरी)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49731. ‘सदा लेल मित्र (जिगरी)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49732. ‘सदा लेल मित्र (जिगरी)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ पशु-मानव सम्बन्ध; बायोपॉलिटिक्स; आदिवासी/घुमन्तु समुदायक विलोपन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4979 : विदेह-सदेह 37 — कोलकलुरी इनोच — कौआ (काकी)

प्रश्न 49733. ‘कौआ (काकी)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49734. ‘कौआ (काकी)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49735. ‘कौआ (काकी)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49736. ‘कौआ (काकी)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49737. ‘कौआ (काकी)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49738. ‘कौआ (काकी)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49739. ‘कौआ (काकी)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49740. ‘कौआ (काकी)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49741. ‘कौआ (काकी)’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49742. ‘कौआ (काकी)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ दलित-प्रतिरोधक प्रतीक; 'बण्डोडु' आ कौआक उपमान; श्रम-याचनाक 'अभाव'। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4980 : विदेह-सदेह 37 — विनोदिनी — कारी मसि (ब्लैक इंक)

प्रश्न 49743. ‘कारी मसि (ब्लैक इंक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49744. ‘कारी मसि (ब्लैक इंक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49745. ‘कारी मसि (ब्लैक इंक)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49746. ‘कारी मसि (ब्लैक इंक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49747. ‘कारी मसि (ब्लैक इंक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49748. ‘कारी मसि (ब्लैक इंक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49749. ‘कारी मसि (ब्लैक इंक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49750. ‘कारी मसि (ब्लैक इंक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49751. ‘कारी मसि (ब्लैक इंक)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49752. ‘कारी मसि (ब्लैक इंक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बालिका दृष्टिसँ जातिगत धारणाक 'डबल कॉन्शसनेस'; 'हरिजन' शब्दक अर्थापत्ति। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4981 : विदेह-सदेह 37 — आदिव बापिराजू — ध्वस्त मन्दिर

प्रश्न 49753. ‘ध्वस्त मन्दिर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49754. ‘ध्वस्त मन्दिर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49755. ‘ध्वस्त मन्दिर’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49756. ‘ध्वस्त मन्दिर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49757. ‘ध्वस्त मन्दिर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49758. ‘ध्वस्त मन्दिर’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49759. ‘ध्वस्त मन्दिर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49760. ‘ध्वस्त मन्दिर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49761. ‘ध्वस्त मन्दिर’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49762. ‘ध्वस्त मन्दिर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ विध्वंसक पुनर्निर्माण; 'शब्द' सँ 'दीप'क प्रत्यक्ष; पुरातत्वीय चेतना। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4982 : विदेह-सदेह 37 — वेकट सुब्बेया वी — अनुवादक कला (अंश)

प्रश्न 49763. ‘अनुवादक कला (अंश)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49764. ‘अनुवादक कला (अंश)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49765. ‘अनुवादक कला (अंश)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49766. ‘अनुवादक कला (अंश)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49767. ‘अनुवादक कला (अंश)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49768. ‘अनुवादक कला (अंश)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49769. ‘अनुवादक कला (अंश)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49770. ‘अनुवादक कला (अंश)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49771. ‘अनुवादक कला (अंश)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49772. ‘अनुवादक कला (अंश)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नव्यन्याय ('व्याप्ति', 'स्वर') आधारित अनुवाद सिद्धान्त; पाश्चात्य 'टोन' पर बल। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4983 : विदेह-सदेह 37 — करुणा टी. — क्रूरता

प्रश्न 49773. ‘क्रूरता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49774. ‘क्रूरता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49775. ‘क्रूरता’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49776. ‘क्रूरता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49777. ‘क्रूरता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49778. ‘क्रूरता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49779. ‘क्रूरता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49780. ‘क्रूरता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49781. ‘क्रूरता’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49782. ‘क्रूरता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'हँसबाक' क्रियाक दमन; पितृसत्ताक 'शरीर-राजनीति'; फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4984 : विदेह-सदेह 37 — एन. गोपी — नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)

प्रश्न 49783. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49784. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49785. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49786. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49787. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49788. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49789. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49790. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49791. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49792. ‘नानीलु: द लिटिल वन्स (सिद्धान्त)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ 'नानीलु' शब्दक सृजन; 'स्नैपशॉट' सिद्धान्त; हाइकु सँ भिन्न पूर्वीय 'मुक्तक' परम्परा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4985 : विदेह-सदेह 37 — खदीर बाबू — हमर चित्रकला गुरु

प्रश्न 49793. ‘हमर चित्रकला गुरु’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49794. ‘हमर चित्रकला गुरु’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49795. ‘हमर चित्रकला गुरु’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49796. ‘हमर चित्रकला गुरु’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49797. ‘हमर चित्रकला गुरु’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49798. ‘हमर चित्रकला गुरु’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49799. ‘हमर चित्रकला गुरु’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49800. ‘हमर चित्रकला गुरु’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49801. ‘हमर चित्रकला गुरु’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49802. ‘हमर चित्रकला गुरु’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक 'समानान्तर'; 'गलीक शिक्षा'क मार्जिनलिया। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4986 : विदेह-सदेह 37 — वेम्पल्ले शरीफ — जुम्मा

प्रश्न 49803. ‘जुम्मा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49804. ‘जुम्मा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49805. ‘जुम्मा’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49806. ‘जुम्मा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49807. ‘जुम्मा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49808. ‘जुम्मा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49809. ‘जुम्मा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49810. ‘जुम्मा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49811. ‘जुम्मा’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49812. ‘जुम्मा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ मस्जिदमे बम; 'धार्मिक आतंक'क उत्तर-औपनिवेशिक व्याख्या; मातृ-व्यथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4987 : विदेह-सदेह 37 — रामा राव वी.वी.बी. — अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)

प्रश्न 49813. ‘अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49814. ‘अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49815. ‘अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)’कैँ पद्य/गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49816. ‘अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49817. ‘अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49818. ‘अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49819. ‘अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49820. ‘अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49821. ‘अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)’मे पद्य/गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्य/गद्यक रूप 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्य/गद्यक रूप 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49822. ‘अभिशप्त (उपन्यास/पद्य)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ 'काला जादू'क राजनीति; पोस्टमॉडर्न कोलाज; अनुमान सँ न्याय। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4988 : विदेह-सदेह 37 — सरोजिनी साहू — दुःख अप्रमिता

प्रश्न 49823. ‘दुःख अप्रमिता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49824. ‘दुःख अप्रमिता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49825. ‘दुःख अप्रमिता’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49826. ‘दुःख अप्रमिता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49827. ‘दुःख अप्रमिता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49828. ‘दुःख अप्रमिता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49829. ‘दुःख अप्रमिता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49830. ‘दुःख अप्रमिता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49831. ‘दुःख अप्रमिता’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49832. ‘दुःख अप्रमिता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सीखैत बालिकाक 'प्रदर्शन-चिन्ता'; माता-पिताक उपमान; अर्थापत्ति सँ आत्म-बोध। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4989 : विदेह-सदेह 37 — सुन्दरम (टी.पी. लुहार) — माताक कोरामे

प्रश्न 49833. ‘माताक कोरामे’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49834. ‘माताक कोरामे’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49835. ‘माताक कोरामे’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49836. ‘माताक कोरामे’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49837. ‘माताक कोरामे’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49838. ‘माताक कोरामे’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49839. ‘माताक कोरामे’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49840. ‘माताक कोरामे’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49841. ‘माताक कोरामे’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49842. ‘माताक कोरामे’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'सुनसान रस्ता', 'पियास', 'बालु'; इकोफेमिनिज्म (प्रकृति-स्त्री पीडाक अद्वैत)। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4990 : विदेह-सदेह 37 — सुन्दरम — माजा वेलोक निधन

प्रश्न 49843. ‘माजा वेलोक निधन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49844. ‘माजा वेलोक निधन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49845. ‘माजा वेलोक निधन’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49846. ‘माजा वेलोक निधन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49847. ‘माजा वेलोक निधन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49848. ‘माजा वेलोक निधन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49849. ‘माजा वेलोक निधन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49850. ‘माजा वेलोक निधन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49851. ‘माजा वेलोक निधन’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49852. ‘माजा वेलोक निधन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ बूढ़ अपराधीक 'स्मृति' आ 'विस्मृतिक' स्तरीकरण; 'अतीत'क भोजन-प्रतीक। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4991 : विदेह-सदेह 37 — दलपत चौहान — डर

प्रश्न 49853. ‘डर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49854. ‘डर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49855. ‘डर’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49856. ‘डर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49857. ‘डर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49858. ‘डर’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49859. ‘डर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49860. ‘डर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49861. ‘डर’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49862. ‘डर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ कसाईक 'मांस-हत्या'क अस्तित्ववादी बोध; कामूक 'अस्वीकार'। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4992 : विदेह-सदेह 37 — नजीर मंसूरी — समुद्री बाज

प्रश्न 49863. ‘समुद्री बाज’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49864. ‘समुद्री बाज’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49865. ‘समुद्री बाज’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49866. ‘समुद्री बाज’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49867. ‘समुद्री बाज’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49868. ‘समुद्री बाज’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49869. ‘समुद्री बाज’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49870. ‘समुद्री बाज’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49871. ‘समुद्री बाज’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49872. ‘समुद्री बाज’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी; 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा'क अनुमान। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4993 : विदेह-सदेह 37 — अशोक हेगडे — अन्हार

प्रश्न 49873. ‘अन्हार’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49874. ‘अन्हार’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49875. ‘अन्हार’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49876. ‘अन्हार’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49877. ‘अन्हार’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49878. ‘अन्हार’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49879. ‘अन्हार’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49880. ‘अन्हार’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49881. ‘अन्हार’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49882. ‘अन्हार’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार'; दुर्घटना-प्रति उदासीनता; सिनिकल रियलिज्म। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4994 : विदेह-सदेह 37 — बोयी भीमन्ना — जरैत खोपड़ी

प्रश्न 49883. ‘जरैत खोपड़ी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49884. ‘जरैत खोपड़ी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49885. ‘जरैत खोपड़ी’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49886. ‘जरैत खोपड़ी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49887. ‘जरैत खोपड़ी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49888. ‘जरैत खोपड़ी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49889. ‘जरैत खोपड़ी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49890. ‘जरैत खोपड़ी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49891. ‘जरैत खोपड़ी’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49892. ‘जरैत खोपड़ी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ 'जरैत खोपड़ी'क प्रत्यक्ष भयावहता; दलित इतिहासक "अन्त्येष्टि" (मार्जिनलिया)। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4995 : विदेह-सदेह 37 — बोयी भीमन्ना — हमर पैतृक अधिकार

प्रश्न 49893. ‘हमर पैतृक अधिकार’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49894. ‘हमर पैतृक अधिकार’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49895. ‘हमर पैतृक अधिकार’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49896. ‘हमर पैतृक अधिकार’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49897. ‘हमर पैतृक अधिकार’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49898. ‘हमर पैतृक अधिकार’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49899. ‘हमर पैतृक अधिकार’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49900. ‘हमर पैतृक अधिकार’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49901. ‘हमर पैतृक अधिकार’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49902. ‘हमर पैतृक अधिकार’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं ब्राह्मण्यवादक विध्वंस; व्यास, वशिष्ठक उपमान; 'कब्रिस्तान'क शब्द। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4996 : विदेह-सदेह 37 — जे. सुभद्रा — लोढ़ब

प्रश्न 49903. ‘लोढ़ब’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49904. ‘लोढ़ब’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49905. ‘लोढ़ब’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49906. ‘लोढ़ब’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49907. ‘लोढ़ब’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49908. ‘लोढ़ब’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49909. ‘लोढ़ब’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49910. ‘लोढ़ब’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49911. ‘लोढ़ब’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49912. ‘लोढ़ब’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ 'मेहनत', 'भीख', 'दम'; श्रमक प्रत्यक्ष; फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी व्याख्या। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4997 : विदेह-सदेह 37 — जे. सुभद्रा — लाण्डा

प्रश्न 49913. ‘लाण्डा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49914. ‘लाण्डा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49915. ‘लाण्डा’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49916. ‘लाण्डा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49917. ‘लाण्डा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49918. ‘लाण्डा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49919. ‘लाण्डा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49920. ‘लाण्डा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49921. ‘लाण्डा’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49922. ‘लाण्डा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कोण्ड); अशुद्ध श्रमक मार्जिनलिया। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4998 : विदेह-सदेह 37 — जे. सुभद्रा — साडीक कोर

प्रश्न 49923. ‘साडीक कोर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49924. ‘साडीक कोर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49925. ‘साडीक कोर’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49926. ‘साडीक कोर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49927. ‘साडीक कोर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49928. ‘साडीक कोर’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49929. ‘साडीक कोर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49930. ‘साडीक कोर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49931. ‘साडीक कोर’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49932. ‘साडीक कोर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'साडीक आँचर' एक बहु-प्रतीक; 'कपडा' नहि, 'हृदयक परत' (शब्द)। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 4999 : विदेह-सदेह 37 — जे. सुभद्रा — अव्वा

प्रश्न 49933. ‘अव्वा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49934. ‘अव्वा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49935. ‘अव्वा’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49936. ‘अव्वा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49937. ‘अव्वा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49938. ‘अव्वा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49939. ‘अव्वा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49940. ‘अव्वा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49941. ‘अव्वा’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49942. ‘अव्वा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ माताक 'दुख' आ 'सम्पत्ति'क अर्थापत्ति; देवी सँ 'दलित दासी' धरि यात्रा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5000 : विदेह-सदेह 37 — चल्लपल्लि स्वरूपरानी — मान्केनापुव्वु

प्रश्न 49943. ‘मान्केनापुव्वु’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49944. ‘मान्केनापुव्वु’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49945. ‘मान्केनापुव्वु’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49946. ‘मान्केनापुव्वु’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49947. ‘मान्केनापुव्वु’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49948. ‘मान्केनापुव्वु’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49949. ‘मान्केनापुव्वु’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49950. ‘मान्केनापुव्वु’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49951. ‘मान्केनापुव्वु’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49952. ‘मान्केनापुव्वु’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'काँट-फंसल चिड़ै' (उपमान); जाति-पितृसत्ता दोहरो उपनिवेशक 'जलन'। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5001 : विदेह-सदेह 37 — चल्लपल्लि स्वरूपरानी — माटि-भेल हाथ

प्रश्न 49953. ‘माटि-भेल हाथ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49954. ‘माटि-भेल हाथ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49955. ‘माटि-भेल हाथ’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49956. ‘माटि-भेल हाथ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49957. ‘माटि-भेल हाथ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49958. ‘माटि-भेल हाथ’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49959. ‘माटि-भेल हाथ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49960. ‘माटि-भेल हाथ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49961. ‘माटि-भेल हाथ’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49962. ‘माटि-भेल हाथ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ गर्भवती मजदूरक 'शरीर'क बायोपॉलिटिक्स; हाथ मे 'माटि'। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5002 : विदेह-सदेह 37 — दरिशे शिशिरनिर्मला — हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं

प्रश्न 49963. ‘हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49964. ‘हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49965. ‘हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49966. ‘हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49967. ‘हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49968. ‘हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49969. ‘हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49970. ‘हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49971. ‘हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49972. ‘हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ वैवाहिक हिंसाक 'स्वीकार'; 'आसित' आ 'मालनकन'क अभाव। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5003 : विदेह-सदेह 37 — दरिशे शिशिरनिर्मला — हम रजस्वला कपड़ा

प्रश्न 49973. ‘हम रजस्वला कपड़ा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49974. ‘हम रजस्वला कपड़ा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49975. ‘हम रजस्वला कपड़ा’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49976. ‘हम रजस्वला कपड़ा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49977. ‘हम रजस्वला कपड़ा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49978. ‘हम रजस्वला कपड़ा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49979. ‘हम रजस्वला कपड़ा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49980. ‘हम रजस्वला कपड़ा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49981. ‘हम रजस्वला कपड़ा’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49982. ‘हम रजस्वला कपड़ा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ रजस्वला अवस्था मे 'बलात्कार'क धमकी; 'अशुद्धता' पर फेमिनिस्ट व्याख्या। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5004 : विदेह-सदेह 37 — दरिशे शिशिरनिर्मला — एक दलित स्त्री

प्रश्न 49983. ‘एक दलित स्त्री’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49984. ‘एक दलित स्त्री’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49985. ‘एक दलित स्त्री’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49986. ‘एक दलित स्त्री’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49987. ‘एक दलित स्त्री’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49988. ‘एक दलित स्त्री’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49989. ‘एक दलित स्त्री’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 49990. ‘एक दलित स्त्री’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 49991. ‘एक दलित स्त्री’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 49992. ‘एक दलित स्त्री’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ दलित स्त्रीक 'वस्तु'क रूप मे उपमान; 'मिट्टी', 'खाइ', 'बकरी'। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5005 : विदेह-सदेह 37 — एम. गौरी — मेहदी लागल हाथ

प्रश्न 49993. ‘मेहदी लागल हाथ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 49994. ‘मेहदी लागल हाथ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 49995. ‘मेहदी लागल हाथ’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 49996. ‘मेहदी लागल हाथ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 49997. ‘मेहदी लागल हाथ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 49998. ‘मेहदी लागल हाथ’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 49999. ‘मेहदी लागल हाथ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50000. ‘मेहदी लागल हाथ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50001. ‘मेहदी लागल हाथ’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50002. ‘मेहदी लागल हाथ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ 'मेहदी' (शृङ्गार) आ 'हाथ' (श्रम)क शब्द-समीकरण; पुरुष आख्यानक विध्वंस। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5006 : विदेह-सदेह 37 — महूरी विजयश्री — अलिसम्माक खाप

प्रश्न 50003. ‘अलिसम्माक खाप’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50004. ‘अलिसम्माक खाप’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50005. ‘अलिसम्माक खाप’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50006. ‘अलिसम्माक खाप’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50007. ‘अलिसम्माक खाप’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50008. ‘अलिसम्माक खाप’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50009. ‘अलिसम्माक खाप’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50010. ‘अलिसम्माक खाप’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50011. ‘अलिसम्माक खाप’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50012. ‘अलिसम्माक खाप’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'अलिसम्मा' (न्याय प्रतीक); 'राम'द्वारा अपमान; राज्य-हिंसाक अभिशप्त। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5007 : विदेह-सदेह 37 — के. शिवा रेड्डी — बरखा पर कविता (तीन)

प्रश्न 50013. ‘बरखा पर कविता (तीन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50014. ‘बरखा पर कविता (तीन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50015. ‘बरखा पर कविता (तीन)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50016. ‘बरखा पर कविता (तीन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50017. ‘बरखा पर कविता (तीन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50018. ‘बरखा पर कविता (तीन)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50019. ‘बरखा पर कविता (तीन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50020. ‘बरखा पर कविता (तीन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50021. ‘बरखा पर कविता (तीन)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50022. ‘बरखा पर कविता (तीन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'पहिल बरखा'क प्रत्यक्ष; 'सुखायल धरती' आ 'स्तनपान'क उपमान; इकोक्रिटिसिज्म। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5008 : विदेह-सदेह 37 — अन्नवरम देवेन्द्र — हृदयक गीत

प्रश्न 50023. ‘हृदयक गीत’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50024. ‘हृदयक गीत’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50025. ‘हृदयक गीत’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50026. ‘हृदयक गीत’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50027. ‘हृदयक गीत’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50028. ‘हृदयक गीत’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50029. ‘हृदयक गीत’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50030. ‘हृदयक गीत’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50031. ‘हृदयक गीत’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50032. ‘हृदयक गीत’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ तेलंगाना आन्दोलन; स्मृति, 'बतुकम्मा', 'बोनालु'; इको-नेशनलिज्म। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5009 : विदेह-सदेह 37 — नरसिंह मेहता — अन्हर-डबहारि उठल

प्रश्न 50033. ‘अन्हर-डबहारि उठल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50034. ‘अन्हर-डबहारि उठल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50035. ‘अन्हर-डबहारि उठल’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50036. ‘अन्हर-डबहारि उठल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50037. ‘अन्हर-डबहारि उठल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50038. ‘अन्हर-डबहारि उठल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50039. ‘अन्हर-डबहारि उठल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50040. ‘अन्हर-डबहारि उठल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50041. ‘अन्हर-डबहारि उठल’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50042. ‘अन्हर-डबहारि उठल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ गोपीक व्यथा आ 'श्याम'क प्रतीक; 'वियोग शृङ्गार'क परम्परागत भाव। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5010 : विदेह-सदेह 37 — हेमांग देसाई — स्थिरता

प्रश्न 50043. ‘स्थिरता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50044. ‘स्थिरता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50045. ‘स्थिरता’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50046. ‘स्थिरता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50047. ‘स्थिरता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50048. ‘स्थिरता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50049. ‘स्थिरता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50050. ‘स्थिरता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50051. ‘स्थिरता’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50052. ‘स्थिरता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ फुटपाथक 'स्थिरता'; इतिहासक 'अभाव'; डेरिडाक 'डिफरेंस'। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5011 : विदेह-सदेह 37 — हेमांग देसाई — हनुमान आ श्वान

प्रश्न 50053. ‘हनुमान आ श्वान’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50054. ‘हनुमान आ श्वान’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50055. ‘हनुमान आ श्वान’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50056. ‘हनुमान आ श्वान’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50057. ‘हनुमान आ श्वान’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50058. ‘हनुमान आ श्वान’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50059. ‘हनुमान आ श्वान’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50060. ‘हनुमान आ श्वान’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50061. ‘हनुमान आ श्वान’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50062. ‘हनुमान आ श्वान’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ हनुमान आ 'डैचशंड' कुकुरक कोलाज; उत्तर-आधुनिक 'ऊँच-नीच'क विघटन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5012 : विदेह-सदेह 37 — राजेन्द्र पटेल — शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै

प्रश्न 50063. ‘शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50064. ‘शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50065. ‘शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50066. ‘शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50067. ‘शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50068. ‘शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50069. ‘शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50070. ‘शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50071. ‘शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50072. ‘शीर्षकहीन, अन्त जालक सपना, गर्दा, सेहो सत्य नै’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'हाथ', 'मुट्ठी'क प्रतीक; 'धूलि' आ 'गर्दा'क नव्यन्याय (अभाव: समयक चिह्न)। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5013 : विदेह-सदेह 37 — पीयूष ठक्कर — साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज

प्रश्न 50073. ‘साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50074. ‘साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50075. ‘साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50076. ‘साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50077. ‘साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50078. ‘साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50079. ‘साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50080. ‘साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50081. ‘साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50082. ‘साँझ, एकटा पुरान घर, अंधकारक तीनटा दस्तावेज’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'अन्धार' आ 'उजियार'क द्वन्द्व; 'डर' आ 'प्रतीक्षा'क प्रत्यक्ष; ट्रामा स्टडीज। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5014 : विदेह-सदेह 37 — पन्ना त्रिवेदी — राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति

प्रश्न 50083. ‘राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50084. ‘राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50085. ‘राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50086. ‘राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50087. ‘राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50088. ‘राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50089. ‘राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50090. ‘राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50091. ‘राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50092. ‘राजस्व, गरीबी-रोटी, अनुपस्थिति’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ 'रोटी' आ 'चन्द्रमा'क उपमान; 'गरीबी'क अर्थापत्ति; 'अनुपस्थिति'क फेमिनिस्ट व्याख्या। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5015 : विदेह-सदेह 37 — बाबू सुथार — घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)

प्रश्न 50093. ‘घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50094. ‘घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50095. ‘घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50096. ‘घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50097. ‘घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50098. ‘घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50099. ‘घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50100. ‘घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50101. ‘घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50102. ‘घर-सँ-दूरीक पीडा (3 भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बरखा, माटी, गामक स्मृति; 'दूरी'क पीडा; गंगेशक 'पृथकत्व'। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5016 : विदेह-सदेह 37 — अनीश गारंगे — पोस्टर

प्रश्न 50103. ‘पोस्टर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50104. ‘पोस्टर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50105. ‘पोस्टर’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50106. ‘पोस्टर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50107. ‘पोस्टर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50108. ‘पोस्टर’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50109. ‘पोस्टर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50110. ‘पोस्टर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50111. ‘पोस्टर’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50112. ‘पोस्टर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ 'पोस्टर' मे मुँह; उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता (अभाव)। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5017 : विदेह-सदेह 37 — राजेन्द्र वडेल — सम्भोग

प्रश्न 50113. ‘सम्भोग’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50114. ‘सम्भोग’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50115. ‘सम्भोग’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50116. ‘सम्भोग’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50117. ‘सम्भोग’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50118. ‘सम्भोग’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50119. ‘सम्भोग’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50120. ‘सम्भोग’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50121. ‘सम्भोग’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50122. ‘सम्भोग’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ 'दलित स्त्री'क देह; 'बलात्कार'क इतिहास; बटलरक 'परफॉर्मेटिविटी'। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5018 : विदेह-सदेह 37 — उमेश सोलंकी — लोक, जमि जाय

प्रश्न 50123. ‘लोक, जमि जाय’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50124. ‘लोक, जमि जाय’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50125. ‘लोक, जमि जाय’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50126. ‘लोक, जमि जाय’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50127. ‘लोक, जमि जाय’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50128. ‘लोक, जमि जाय’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50129. ‘लोक, जमि जाय’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50130. ‘लोक, जमि जाय’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50131. ‘लोक, जमि जाय’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50132. ‘लोक, जमि जाय’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'लोक'क माटि मे 'जमि जायब'; 'स्थिरता' आ 'प्रवाह'क द्वन्द्व। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5019 : विदेह-सदेह 37 — उमेश सोलंकी — खरडाक डाँट सभ

प्रश्न 50133. ‘खरडाक डाँट सभ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50134. ‘खरडाक डाँट सभ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50135. ‘खरडाक डाँट सभ’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50136. ‘खरडाक डाँट सभ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50137. ‘खरडाक डाँट सभ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50138. ‘खरडाक डाँट सभ’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50139. ‘खरडाक डाँट सभ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50140. ‘खरडाक डाँट सभ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50141. ‘खरडाक डाँट सभ’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50142. ‘खरडाक डाँट सभ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ; 'प्रतिमाक विध्वंस' सँ 'नव प्रतिरोध'। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5020 : विदेह-सदेह 37 — गुलाम मोहम्मद शेख — नग्र (1-6)

प्रश्न 50143. ‘नग्र (1-6)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50144. ‘नग्र (1-6)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50145. ‘नग्र (1-6)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50146. ‘नग्र (1-6)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50147. ‘नग्र (1-6)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50148. ‘नग्र (1-6)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50149. ‘नग्र (1-6)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50150. ‘नग्र (1-6)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50151. ‘नग्र (1-6)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50152. ‘नग्र (1-6)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ दिल्लीक खण्डहर, 'लाल किला', 'खोमचा'; इतिहासक फोटोग्राफिक परत। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5021 : विदेह-सदेह 37 — अजय सरवैया — अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)

प्रश्न 50153. ‘अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50154. ‘अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50155. ‘अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50156. ‘अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50157. ‘अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50158. ‘अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50159. ‘अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50160. ‘अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50161. ‘अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50162. ‘अहाँक वेदना हमर प्रवेश-द्वार (शृंखला)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रेम, स्मृति, विस्मृतिक 'पहेली'; नेरुदाक तर्ज; 'शब्द', 'हाथ', 'चुम्बन'क अभाव। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5022 : विदेह-सदेह 37 — गनी दहीवाला — केकर सुन्दर नजरि

प्रश्न 50163. ‘केकर सुन्दर नजरि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50164. ‘केकर सुन्दर नजरि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50165. ‘केकर सुन्दर नजरि’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50166. ‘केकर सुन्दर नजरि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50167. ‘केकर सुन्दर नजरि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50168. ‘केकर सुन्दर नजरि’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50169. ‘केकर सुन्दर नजरि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50170. ‘केकर सुन्दर नजरि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50171. ‘केकर सुन्दर नजरि’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50172. ‘केकर सुन्दर नजरि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'नील चोला' ओढ़निहारी धरती; वात्सल्य-शृङ्गारक परम्परागत सौन्दर्य। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5023 : विदेह-सदेह 37 — बासुदेव सुनानी — फूसस

प्रश्न 50173. ‘फूसस’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50174. ‘फूसस’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50175. ‘फूसस’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50176. ‘फूसस’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50177. ‘फूसस’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50178. ‘फूसस’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50179. ‘फूसस’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50180. ‘फूसस’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50181. ‘फूसस’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50182. ‘फूसस’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ 'शबनम भौजी'क 'फूसस' (prank); 'पहुँच' आ 'नाप'क अभाव; मार्जिनलिया। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5024 : विदेह-सदेह 37 — बासुदेव सुनानी — अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि

प्रश्न 50183. ‘अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50184. ‘अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50185. ‘अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50186. ‘अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50187. ‘अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50188. ‘अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50189. ‘अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50190. ‘अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50191. ‘अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50192. ‘अनुमति, अखनो बहुत किछु होएब बाकी अछि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'श्रीमान' सँ 'निवेदन'; शुद्धि, स्वेद, दुर्गन्धक 'नव्यन्याय'; श्रमक दर्शन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5025 : विदेह-सदेह 37 — बासुदेव सुनानी — पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि

प्रश्न 50193. ‘पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50194. ‘पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50195. ‘पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50196. ‘पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50197. ‘पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50198. ‘पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50199. ‘पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50200. ‘पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50201. ‘पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50202. ‘पता, सद्दै, सदानन्द समुद्र देखि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'बगुला', 'लहर', 'नदी'क प्रतीक; 'गलत बुझबाक' सौन्दर्य। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5026 : विदेह-सदेह 37 — भरत माँझी — हमर घुरलाक बाद

प्रश्न 50203. ‘हमर घुरलाक बाद’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद'; सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50204. ‘हमर घुरलाक बाद’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50205. ‘हमर घुरलाक बाद’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद'; धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50206. ‘हमर घुरलाक बाद’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद'; दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद'; दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50207. ‘हमर घुरलाक बाद’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद'; सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50208. ‘हमर घुरलाक बाद’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50209. ‘हमर घुरलाक बाद’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50210. ‘हमर घुरलाक बाद’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद';क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50211. ‘हमर घुरलाक बाद’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद'; कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद'; कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50212. ‘हमर घुरलाक बाद’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद'; धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ प्रस्थान' आ 'घुरलाक बाद'; धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5027 : विदेह-सदेह 37 — इप्सिता सारंगी — गप/ हिलकोर

प्रश्न 50213. ‘गप/ हिलकोर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50214. ‘गप/ हिलकोर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50215. ‘गप/ हिलकोर’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50216. ‘गप/ हिलकोर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50217. ‘गप/ हिलकोर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50218. ‘गप/ हिलकोर’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50219. ‘गप/ हिलकोर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50220. ‘गप/ हिलकोर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50221. ‘गप/ हिलकोर’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50222. ‘गप/ हिलकोर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ नाखुन', 'किरी', 'छोट राजकुमार'; इकोफेमिनिज्म; बाल-कल्पनाक प्रत्यक्ष।/ स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5028 : विदेह-सदेह 37 — इप्सिता सारंगी — हिलकोर

प्रश्न 50223. ‘हिलकोर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50224. ‘हिलकोर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50225. ‘हिलकोर’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50226. ‘हिलकोर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50227. ‘हिलकोर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50228. ‘हिलकोर’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50229. ‘हिलकोर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50230. ‘हिलकोर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50231. ‘हिलकोर’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50232. ‘हिलकोर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं निलकोर' (भँवर)क प्रतीक; आत्म-विसर्जन आ पुनर्जन्मक 'शब्द'। स्त्री-मनक 'निलकोर'; लैङ्गिकता पर बटलर। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5029 : विदेह-सदेह 37 — इप्सिता सारंगी — बुति

प्रश्न 50233. ‘बुति’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50234. ‘बुति’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50235. ‘बुति’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50236. ‘बुति’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50237. ‘बुति’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50238. ‘बुति’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50239. ‘बुति’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50240. ‘बुति’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50241. ‘बुति’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50242. ‘बुति’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ 'बुद्ध', 'शरीर', 'दुख'क नव्यन्याय; 'बेर-बेर सत्य ताकब'क व्यर्थता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5030 : विदेह-सदेह 37 — इप्सिता सारंगी — बमिया

प्रश्न 50243. ‘बमिया’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50244. ‘बमिया’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50245. ‘बमिया’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50246. ‘बमिया’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50247. ‘बमिया’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50248. ‘बमिया’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50249. ‘बमिया’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50250. ‘बमिया’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50251. ‘बमिया’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50252. ‘बमिया’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'बमिया' (बम), 'फ्राक', 'लहर'; युद्ध, विनाश, स्त्री-स्वप्नक ट्रामा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5031 : विदेह-सदेह 37 — भिखारी ठाकुर — निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)

प्रश्न 50253. ‘निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50254. ‘निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50255. ‘निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50256. ‘निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50257. ‘निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50258. ‘निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50259. ‘निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50260. ‘निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50261. ‘निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50262. ‘निरहुआ 1 (वृद्धाश्रम)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'बूढ़-बूढ़ी'क सामूहिक आवाज; लोक चेतनाक 'बहुस्वरता' (पॉलीफनी)। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5032 : विदेह-सदेह 37 — भिखारी ठाकुर — निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)

प्रश्न 50263. ‘निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50264. ‘निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50265. ‘निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50266. ‘निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50267. ‘निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50268. ‘निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50269. ‘निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50270. ‘निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50271. ‘निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50272. ‘निरहुआ 2 (वृद्धाश्रम)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ 'हिन्दू-मुसलमान' एकता; सामन्तवादक व्यंग्य; मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5033 : विदेह-सदेह 37 — रहमान राही — छाह सभ

प्रश्न 50273. ‘छाह सभ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50274. ‘छाह सभ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50275. ‘छाह सभ’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50276. ‘छाह सभ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50277. ‘छाह सभ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50278. ‘छाह सभ’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50279. ‘छाह सभ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50280. ‘छाह सभ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50281. ‘छाह सभ’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50282. ‘छाह सभ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं युद्ध, भूकंप, घाटीक 'छाह'; 'बोन-मियां' रचना; उत्तर-औपनिवेशिक व्यथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5034 : विदेह-सदेह 1 — गजेन्द्र ठाकुर — (प्रारम्भिक)

प्रश्न 50283. ‘(प्रारम्भिक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रथम अंकक संपादकीय

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रथम अंकक संपादकीय

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रथम अंकक संपादकीय सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50284. ‘(प्रारम्भिक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रथम अंकक संपादकीय

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रथम अंकक संपादकीय

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50285. ‘(प्रारम्भिक)’कैं संपादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रथम अंकक संपादकीय

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रथम अंकक संपादकीय

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रथम अंकक संपादकीय धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50286. ‘(प्रारम्भिक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रथम अंकक संपादकीय दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रथम अंकक संपादकीय दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50287. ‘(प्रारम्भिक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रथम अंकक संपादकीय

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रथम अंकक संपादकीय

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रथम अंकक संपादकीय सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50288. ‘(प्रारम्भिक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रथम अंकक संपादकीय

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50289. ‘(प्रारम्भिक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रथम अंकक संपादकीय
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रथम अंकक संपादकीय
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रथम अंकक संपादकीयक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50290. ‘(प्रारम्भिक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रथम अंकक संपादकीयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रथम अंकक संपादकीयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50291. ‘(प्रारम्भिक)’मे संपादकीयक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संपादकीयक रूप प्रथम अंकक संपादकीय कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संपादकीयक रूप प्रथम अंकक संपादकीय कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50292. ‘(प्रारम्भिक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रथम अंकक संपादकीय धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रथम अंकक संपादकीय धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5035 : विदेह-सदेह 1 — -- — विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी

प्रश्न 50293. ‘विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अंक १ केर शोध-लेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अंक १ केर शोध-लेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अंक १ केर शोध-लेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50294. ‘विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अंक १ केर शोध-लेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अंक १ केर शोध-लेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50295. ‘विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी’केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अंक १ केर शोध-लेख
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अंक १ केर शोध-लेख
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंक १ केर शोध-लेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50296. ‘विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अंक १ केर शोध-लेख दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अंक १ केर शोध-लेख दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50297. ‘विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अंक १ केर शोध-लेख
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अंक १ केर शोध-लेख
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंक १ केर शोध-लेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50298. ‘विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अंक १ केर शोध-लेख
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50299. ‘विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अंक १ केर शोध-लेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अंक १ केर शोध-लेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंक १ केर शोध-लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50300. ‘विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अंक १ केर शोध-लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अंक १ केर शोध-लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50301. ‘विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप अंक १ केर शोध-लेख कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप अंक १ केर शोध-लेख कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50302. ‘विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ अंक १ केर शोध-लेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ अंक १ केर शोध-लेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5036 : विदेह-सदेह 1 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक १)

प्रश्न 50303. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक – प्रथम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50304. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50305. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १)’कैँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक – प्रथम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50306. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक – प्रथम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक – प्रथम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50307. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक – प्रथम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50308. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक – प्रथम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50309. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिक – प्रथम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50310. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिक – प्रथम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50311. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप धारावाहिक – प्रथम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप धारावाहिक – प्रथम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50312. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक – प्रथम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक – प्रथम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5037 : विदेह-सदेह 1 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक १)

प्रश्न 50313. ‘महाभारत (अंक १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक – प्रथम किस्त

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्त

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक – प्रथम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50314. ‘महाभारत (अंक १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक – प्रथम किस्त

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्त

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50315. ‘महाभारत (अंक १)’कैँ महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक – प्रथम किस्त

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्त

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक – प्रथम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50316. ‘महाभारत (अंक १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक – प्रथम किस्त दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक – प्रथम किस्त दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50317. ‘महाभारत (अंक १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक – प्रथम किस्त

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्त

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक – प्रथम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50318. ‘महाभारत (अंक १)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक – प्रथम किस्त

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50319. ‘महाभारत (अंक १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिक – प्रथम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50320. ‘महाभारत (अंक १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिक – प्रथम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिक – प्रथम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50321. ‘महाभारत (अंक १)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. महाकाव्यक रूप धारावाहिक – प्रथम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महाकाव्यक रूप धारावाहिक – प्रथम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50322. ‘महाभारत (अंक १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक – प्रथम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक – प्रथम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5038 : विदेह-सदेह 1 — गजेन्द्र ठाकुर — शनैः-शनैः

प्रश्न 50323. ‘शनैः-शनैः’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अंक १ केर पूर्ण कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अंक १ केर पूर्ण कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अंक १ केर पूर्ण कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50324. ‘शनैः-शनैः’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अंक १ केर पूर्ण कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अंक १ केर पूर्ण कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50325. ‘शनैः-शनैः’केँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अंक १ केर पूर्ण कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अंक १ केर पूर्ण कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंक १ केर पूर्ण कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50326. ‘शनैः-शनैः’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अंक १ केर पूर्ण कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अंक १ केर पूर्ण कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50327. ‘शनैः-शनैः’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अंक १ केर पूर्ण कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अंक १ केर पूर्ण कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंक १ केर पूर्ण कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50328. ‘शनैः-शनैः’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अंक १ केर पूर्ण कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50329. ‘शनैः-शनैः’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अंक १ केर पूर्ण कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अंक १ केर पूर्ण कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंक १ केर पूर्ण कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50330. ‘शनैः-शनैः’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अंक १ केर पूर्ण कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अंक १ केर पूर्ण कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50331. ‘शनैः-शनैः’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप अंक १ केर पूर्ण कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप अंक १ केर पूर्ण कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50332. ‘शनैः-शनैः’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अंक १ केर पूर्ण कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अंक १ केर पूर्ण कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5039 : विदेह-सदेह 1 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक १ केर पद्य भाग)

प्रश्न 50333. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50334. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50335. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50336. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50337. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50338. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50339. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50340. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50341. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50342. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5040 : विदेह-सदेह 1 — -- — VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)

प्रश्न 50343. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50344. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50345. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)'कैँ अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50346. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50347. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50348. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)'क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50349. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50350. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50351. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजी-गद्यक रूप प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजी-गद्यक रूप प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50352. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5041 : विदेह-सदेह 1 — ज्योति झा चौधरी — A Moonless Summer Night Of My Village

प्रश्न 50353. ‘A Moonless Summer Night Of My Village’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रवासी स्तंभक कविता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रवासी स्तंभक कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50354. ‘A Moonless Summer Night Of My Village’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रवासी स्तंभक कविता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50355. ‘A Moonless Summer Night Of My Village’कैं अंग्रेजी-पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रवासी स्तंभक कविता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी स्तंभक कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50356. ‘A Moonless Summer Night Of My Village’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रवासी स्तंभक कविता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रवासी स्तंभक कविता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50357. ‘A Moonless Summer Night Of My Village’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रवासी स्तंभक कविता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी स्तंभक कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50358. ‘A Moonless Summer Night Of My Village’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रवासी स्तंभक कविता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50359. ‘A Moonless Summer Night Of My Village’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. प्रवासी स्तंभक कविता

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविता

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी स्तंभक कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50360. ‘A Moonless Summer Night Of My Village’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. प्रवासी स्तंभक कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50361. ‘A Moonless Summer Night Of My Village’मे अंग्रेजी-पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभक कविता कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभक कविता कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50362. ‘A Moonless Summer Night Of My Village’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ प्रवासी स्तंभक कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ प्रवासी स्तंभक कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5042 : विदेह-सदेह 2 — -- — मैथिली राम चरित मानस (भाग १)

प्रश्न 50363. ‘मैथिली राम चरित मानस (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक समालोचना
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक समालोचना
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक समालोचना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50364. ‘मैथिली राम चरित मानस (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक समालोचना
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक समालोचना
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50365. ‘मैथिली राम चरित मानस (भाग १)’कैँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक समालोचना
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक समालोचना
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक समालोचना धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50366. ‘मैथिली राम चरित मानस (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक समालोचना दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक समालोचना दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50367. ‘मैथिली राम चरित मानस (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक समालोचना

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक समालोचना

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक समालोचना सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50368. ‘मैथिली राम चरित मानस (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक समालोचना

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50369. ‘मैथिली राम चरित मानस (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक समालोचना

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक समालोचना

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिक समालोचनाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50370. ‘मैथिली राम चरित मानस (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिक समालोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिक समालोचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50371. ‘मैथिली राम चरित मानस (भाग १)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. शोध-लेखक रूप धारावाहिक समालोचना कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. शोध-लेखक रूप धारावाहिक समालोचना कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50372. ‘मैथिली राम चरित मानस (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं धारावाहिक समालोचना धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक समालोचना धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5043 : विदेह-सदेह 2 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक २)

प्रश्न 50373. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. दोसर किस्त

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. दोसर किस्त

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दोसर किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50374. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. दोसर किस्त

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. दोसर किस्त

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50375. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक २)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. दोसर किस्त

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. दोसर किस्त

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दोसर किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50376. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक दोसर किस्त दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक दोसर किस्त दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50377. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. दोसर किस्त

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. दोसर किस्त

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दोसर किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50378. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक २)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. दोसर किस्त

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50379. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दोसर किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दोसर किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50380. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दोसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दोसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50381. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक २)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप दोसर किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप दोसर किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50382. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं दोसर किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं दोसर किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5044 : विदेह-सदेह 2 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक २)

प्रश्न 50383. ‘महाभारत (अंक २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दोसर किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दोसर किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50384. ‘महाभारत (अंक २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दोसर किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50385. ‘महाभारत (अंक २)’केँ महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दोसर किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दोसर किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50386. ‘महाभारत (अंक २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दोसर किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दोसर किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50387. ‘महाभारत (अंक २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दोसर किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दोसर किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50388. ‘महाभारत (अंक २)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दोसर किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50389. ‘महाभारत (अंक २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दोसर किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दोसर किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50390. ‘महाभारत (अंक २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दोसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दोसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50391. ‘महाभारत (अंक २)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. महाकाव्यक रूप दोसर किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महाकाव्यक रूप दोसर किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50392. ‘महाभारत (अंक २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ दोसर किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ दोसर किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5045 : विदेह-सदेह 2 — गजेन्द्र ठाकुर — गंगा-ब्रिज

प्रश्न 50393. ‘गंगा-ब्रिज’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अंक २ केर कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अंक २ केर कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अंक २ केर कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50394. ‘गंगा-ब्रिज’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अंक २ केर कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अंक २ केर कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50395. ‘गंगा-ब्रिज’कैँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अंक २ केर कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अंक २ केर कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंक २ केर कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50396. ‘गंगा-ब्रिज’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अंक २ केर कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अंक २ केर कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50397. ‘गंगा-ब्रिज’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अंक २ केर कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अंक २ केर कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंक २ केर कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50398. ‘गंगा-ब्रिज’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अंक २ केर कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50399. ‘गंगा-ब्रिज’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अंक २ केर कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अंक २ केर कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंक २ केर कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50400. ‘गंगा-ब्रिज’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अंक २ केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अंक २ केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50401. ‘गंगा-ब्रिज’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप अंक २ केर कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप अंक २ केर कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50402. ‘गंगा-ब्रिज’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अंक २ केर कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अंक २ केर कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5046 : विदेह-सदेह 2 — -- — प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)

प्रश्न 50403. ‘प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50404. ‘प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50405. ‘प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)’कैँ संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50406. ‘प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50407. ‘प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50408. ‘प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50409. ‘प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50410. ‘प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50411. ‘प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50412. ‘प्रारम्भिक संस्कृत पाठ (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5047 : विदेह-सदेह 2 — -- — अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)

प्रश्न 50413. ‘अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. चित्र सहित
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. चित्र सहित
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं चित्र सहित सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50414. ‘अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. चित्र सहित
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. चित्र सहित
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50415. ‘अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)’केँ मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. चित्र सहित
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. चित्र सहित
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार चित्र सहित धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50416. ‘अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक चित्र सहित दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक चित्र सहित दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50417. ‘अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. चित्र सहित
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. चित्र सहित
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चित्र सहित सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50418. ‘अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. चित्र सहित
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50419. ‘अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. चित्र सहित
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. चित्र सहित
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चित्र सहितक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50420. ‘अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. चित्र सहितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. चित्र सहितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50421. ‘अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. मिथिला कलाक रूप चित्र सहित कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. मिथिला कलाक रूप चित्र सहित कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50422. ‘अरिपन (पृथ्वी पूजा, गौरी)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ चित्र सहित धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ चित्र सहित धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5048 : विदेह-सदेह 2 — -- — डाकूरौहिणेय

प्रश्न 50423. ‘डाकूरौहिणेय’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बाल-साहित्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बाल-साहित्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ बाल-साहित्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50424. ‘डाकूरौहिणेय’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बाल-साहित्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बाल-साहित्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50425. ‘डाकूरौहिणेय’कैँ बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बाल-साहित्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बाल-साहित्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाल-साहित्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50426. ‘डाकूरौहिणेय’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बाल-साहित्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बाल-साहित्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50427. ‘डाकूरौहिणेय’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बाल-साहित्य
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बाल-साहित्य
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाल-साहित्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50428. ‘डाकूरौहिणेय’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बाल-साहित्य
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50429. ‘डाकूरौहिणेय’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बाल-साहित्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बाल-साहित्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाल-साहित्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50430. ‘डाकूरौहिणेय’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बाल-साहित्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बाल-साहित्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50431. ‘डाकूरौहिणेय’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप बाल-साहित्य कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप बाल-साहित्य कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50432. ‘डाकूरौहिणेय’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बाल-साहित्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बाल-साहित्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5049 : विदेह-सदेह 2 — विद्यानन्द झा 'पञ्जीकार' — पंजी-प्रबंध (भाग १)

प्रश्न 50433. ‘पंजी-प्रबंध (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50434. ‘पंजी-प्रबंध (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50435. ‘पंजी-प्रबंध (भाग १)’कैँ पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50436. ‘पंजी-प्रबंध (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50437. ‘पंजी-प्रबंध (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50438. ‘पंजी-प्रबंध (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50439. ‘पंजी-प्रबंध (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50440. ‘पंजी-प्रबंध (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50441. ‘पंजी-प्रबंध (भाग १)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50442. ‘पंजी-प्रबंध (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5050 : विदेह-सदेह 2 — -- — संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)

प्रश्न 50443. ‘संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50444. ‘संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50445. ‘संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)’केँ मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50446. ‘संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50447. ‘संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50448. ‘संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50449. ‘संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50450. ‘संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50451. ‘संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)’मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50452. ‘संस्कृत वि.वि. प्रासंगिकता (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5051 : विदेह-सदेह 2 — -- — टाइपिंग तकनीक (भाग १)

प्रश्न 50453. ‘टाइपिंग तकनीक (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50454. ‘टाइपिंग तकनीक (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50455. ‘टाइपिंग तकनीक (भाग १)’कैं भाषा-प्रौद्योगिकी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50456. ‘टाइपिंग तकनीक (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50457. ‘टाइपिंग तकनीक (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50458. ‘टाइपिंग तकनीक (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50459. ‘टाइपिंग तकनीक (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50460. ‘टाइपिंग तकनीक (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50461. ‘टाइपिंग तकनीक (भाग १)’मे भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50462. ‘टाइपिंग तकनीक (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5052 : विदेह-सदेह 2 — -- — छन्द, मात्रा, गण (भाग १)

प्रश्न 50463. ‘छन्द, मात्रा, गण (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50464. ‘छन्द, मात्रा, गण (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50465. ‘छन्द, मात्रा, गण (भाग १)’कैँ रचना लेखन रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50466. ‘छन्द, मात्रा, गण (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50467. ‘छन्द, मात्रा, गण (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50468. ‘छन्द, मात्रा, गण (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50469. ‘छन्द, मात्रा, गण (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50470. ‘छन्द, मात्रा, गण (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50471. ‘छन्द, मात्रा, गण (भाग १)’मे रचना लेखनक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रचना लेखनक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रचना लेखनक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50472. ‘छन्द, मात्रा, गण (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5053 : विदेह-सदेह 2 — -- — VIDEHA MITHILA... (भाग २)

प्रश्न 50473. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50474. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50475. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग २)’केँ अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50476. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50477. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50478. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50479. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50480. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50481. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग २)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50482. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5054 : विदेह-सदेह 2 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक २ केर पद्य भाग)

प्रश्न 50483. ‘(अंक २ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विविध
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विविध सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50484. ‘(अंक २ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विविध
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50485. ‘(अंक २ केर पद्य भाग)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. विविध
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विविध धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50486. ‘(अंक २ केर पद्य भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक विविध दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक विविध दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50487. ‘(अंक २ केर पद्य भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. विविध
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विविध सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50488. ‘(अंक २ केर पद्य भाग)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. विविध
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50489. ‘(अंक २ केर पद्य भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विविध
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विविधक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50490. ‘(अंक २ केर पद्य भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विविधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विविधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50491. ‘(अंक २ केर पद्य भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप विविध कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप विविध कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50492. ‘(अंक २ केर पद्य भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विविध धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विविध धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5055 : विदेह-सदेह 2 — ज्योति झा चौधरी — My Village

प्रश्न 50493. ‘My Village’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रवासी स्तंभक कविता

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविता

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रवासी स्तंभक कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50494. ‘My Village’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रवासी स्तंभक कविता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50495. ‘My Village’कैँ अंग्रेजी-पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रवासी स्तंभक कविता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी स्तंभक कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50496. ‘My Village’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रवासी स्तंभक कविता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रवासी स्तंभक कविता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50497. ‘My Village’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रवासी स्तंभक कविता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी स्तंभक कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50498. ‘My Village’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रवासी स्तंभक कविता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50499. ‘My Village’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रवासी स्तंभक कविता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी स्तंभक कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50500. ‘My Village’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रवासी स्तंभक कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50501. ‘My Village’मे अंग्रेजी-पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभक कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभक कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50502. ‘My Village’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रवासी स्तंभक कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रवासी स्तंभक कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5056 : विदेह-सदेह 2 — -- — Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक

प्रश्न 50503. ‘Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. तिथि, अंक उल्लेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. तिथि, अंक उल्लेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं तिथि, अंक उल्लेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50504. ‘Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. तिथि, अंक उल्लेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. तिथि, अंक उल्लेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50505. ‘Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक’केँ पत्रिका-शीर्षक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. तिथि, अंक उल्लेख

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. तिथि, अंक उल्लेख

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तिथि, अंक उल्लेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50506. ‘Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक तिथि, अंक उल्लेख दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक तिथि, अंक उल्लेख दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50507. ‘Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. तिथि, अंक उल्लेख

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. तिथि, अंक उल्लेख

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तिथि, अंक उल्लेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50508. ‘Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. तिथि, अंक उल्लेख

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50509. ‘Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. तिथि, अंक उल्लेख

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. तिथि, अंक उल्लेख

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तिथि, अंक उल्लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50510. ‘Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. तिथि, अंक उल्लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. तिथि, अंक उल्लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50511. ‘Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक’मे पत्रिका-शीर्षकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पत्रिका-शीर्षकक रूप तिथि, अंक उल्लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पत्रिका-शीर्षकक रूप तिथि, अंक उल्लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50512. ‘Videha ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं तिथि, अंक उल्लेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं तिथि, अंक उल्लेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5057 : विदेह-सदेह 3 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)

प्रश्न 50513. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50514. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50515. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50516. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50517. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50518. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50519. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50520. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50521. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. शोध-लेखक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. शोध-लेखक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50522. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5058 : विदेह-सदेह 3 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ३)

प्रश्न 50523. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. तेसर किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ तेसर किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50524. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. तेसर किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50525. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’कैँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. तेसर किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तेसर किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50526. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50527. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. तेसर किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तेसर किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50528. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. तेसर किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50529. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. तेसर किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तेसर किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50530. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50531. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप तेसर किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप तेसर किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50532. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं तेसर किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं तेसर किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5059 : विदेह-सदेह 3 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ३)

प्रश्न 50533. ‘महाभारत (अंक ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. तेसर किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं तेसर किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50534. ‘महाभारत (अंक ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. तेसर किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50535. ‘महाभारत (अंक ३)’कैं महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. तेसर किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तेसर किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50536. ‘महाभारत (अंक ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50537. ‘महाभारत (अंक ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. तेसर किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तेसर किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50538. ‘महाभारत (अंक ३)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. तेसर किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50539. ‘महाभारत (अंक ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. तेसर किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तेसर किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50540. ‘महाभारत (अंक ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50541. ‘महाभारत (अंक ३)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. महाकाव्यक रूप तेसर किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महाकाव्यक रूप तेसर किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50542. ‘महाभारत (अंक ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ तेसर किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ तेसर किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5060 : विदेह-सदेह 3 — गजेन्द्र ठाकुर — भारत रत्न

प्रश्न 50543. ‘भारत रत्न’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अंक ३ केर कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अंक ३ केर कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अंक ३ केर कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50544. ‘भारत रत्न’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अंक ३ केर कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अंक ३ केर कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50545. ‘भारत रत्न’कैँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अंक ३ केर कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अंक ३ केर कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंक ३ केर कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50546. ‘भारत रत्न’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अंक ३ केर कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अंक ३ केर कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50547. ‘भारत रत्न’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अंक ३ केर कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अंक ३ केर कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंक ३ केर कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50548. ‘भारत रत्न’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अंक ३ केर कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50549. ‘भारत रत्न’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अंक ३ केर कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अंक ३ केर कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंक ३ केर कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50550. ‘भारत रत्न’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अंक ३ केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अंक ३ केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50551. ‘भारत रत्न’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप अंक ३ केर कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप अंक ३ केर कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50552. ‘भारत रत्न’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अंक ३ केर कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अंक ३ केर कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5061 : विदेह-सदेह 3 — -- — (अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)

प्रश्न 50553. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50554. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50555. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’कैँ संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50556. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50557. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50558. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50559. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50560. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50561. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50562. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5062 : विदेह-सदेह 3 — -- — अरिपन, गौरी पूजा

प्रश्न 50563. ‘अरिपन, गौरी पूजा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. --
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. --
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50564. ‘अरिपन, गौरी पूजा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. --
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. --
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50565. ‘अरिपन, गौरी पूजा’कँ मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. --

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. --

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50566. ‘अरिपन, गौरी पूजा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50567. ‘अरिपन, गौरी पूजा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. --

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50568. ‘अरिपन, गौरी पूजा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. --

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50569. ‘अरिपन, गौरी पूजा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. --

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. --

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50570. ‘अरिपन, गौरी पूजा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50571. ‘अरिपन, गौरी पूजा’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. मिथिला कलाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. मिथिला कलाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50572. ‘अरिपन, गौरी पूजा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5063 : विदेह-सदेह 3 — -- — स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)

प्रश्न 50573. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50574. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50575. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’कैँ संगीत शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50576. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50577. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50578. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50579. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50580. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50581. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’मे संगीत शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50582. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5064 : विदेह-सदेह 3 — -- — महुआ घटवारिन

प्रश्न 50583. ‘महुआ घटवारिन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. लोककथाक बाल-संस्करण

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. लोककथाक बाल-संस्करण

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लोककथाक बाल-संस्करण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50584. ‘महुआ घटवारिन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. लोककथाक बाल-संस्करण

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. लोककथाक बाल-संस्करण

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50585. ‘महुआ घटवारिन’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लोककथाक बाल-संस्करण

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लोककथाक बाल-संस्करण

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोककथाक बाल-संस्करण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50586. ‘महुआ घटवारिन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लोककथाक बाल-संस्करण दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लोककथाक बाल-संस्करण दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50587. ‘महुआ घटवारिन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लोककथाक बाल-संस्करण

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लोककथाक बाल-संस्करण

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोककथाक बाल-संस्करण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50588. ‘महुआ घटवारिन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लोककथाक बाल-संस्करण

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50589. ‘महुआ घटवारिन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लोककथाक बाल-संस्करण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लोककथाक बाल-संस्करण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोककथाक बाल-संस्करणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50590. ‘महुआ घटवारिन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लोककथाक बाल-संस्करणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लोककथाक बाल-संस्करणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50591. ‘महुआ घटवारिन’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप लोककथाक बाल-संस्करण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप लोककथाक बाल-संस्करण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50592. ‘महुआ घटवारिन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लोककथाक बाल-संस्करण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लोककथाक बाल-संस्करण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5065 : विदेह-सदेह 3 — विद्यानन्द झा — पंजी-प्रबंध (भाग २)

प्रश्न 50593. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50594. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50595. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’केँ पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50596. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50597. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50598. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50599. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50600. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50601. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50602. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5066 : विदेह-सदेह 3 — -- — (भाग २)

प्रश्न 50603. ‘(भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50604. ‘(भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50605. ‘(भाग २)’कैँ मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50606. ‘(भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50607. ‘(भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50608. ‘(भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50609. ‘(भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50610. ‘(भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50611. ‘(भाग २)’मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50612. ‘(भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5067 : विदेह-सदेह 3 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक ३ केर पद्य भाग)

प्रश्न 50613. ‘(अंक ३ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. हास्य-व्यंग्य प्रधान

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य प्रधान

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं हास्य-व्यंग्य प्रधान सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50614. ‘(अंक ३ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. हास्य-व्यंग्य प्रधान

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य प्रधान

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50615. ‘(अंक ३ केर पद्य भाग)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. हास्य-व्यंग्य प्रधान

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य प्रधान

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार हास्य-व्यंग्य प्रधान धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50616. ‘(अंक ३ केर पद्य भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक हास्य-व्यंग्य प्रधान दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक हास्य-व्यंग्य प्रधान दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50617. ‘(अंक ३ केर पद्य भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. हास्य-व्यंग्य प्रधान

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य प्रधान

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल हास्य-व्यंग्य प्रधान सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50618. ‘(अंक ३ केर पद्य भाग)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. हास्य-व्यंग्य प्रधान

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50619. ‘(अंक ३ केर पद्य भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. हास्य-व्यंग्य प्रधान
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य प्रधान
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ हास्य-व्यंग्य प्रधानक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50620. ‘(अंक ३ केर पद्य भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. हास्य-व्यंग्य प्रधानक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य प्रधानक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50621. ‘(अंक ३ केर पद्य भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप हास्य-व्यंग्य प्रधान कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप हास्य-व्यंग्य प्रधान कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50622. ‘(अंक ३ केर पद्य भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं हास्य-व्यंग्य प्रधान धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं हास्य-व्यंग्य प्रधान धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5068 : विदेह-सदेह 4 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)

प्रश्न 50623. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दोसर किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दोसर किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50624. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दोसर किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50625. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दोसर किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दोसर किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50626. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दोसर किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दोसर किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50627. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दोसर किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दोसर किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50628. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दोसर किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50629. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दोसर किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दोसर किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दोसर किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50630. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दोसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दोसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50631. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप दोसर किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप दोसर किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50632. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ दोसर किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ दोसर किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5069 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ४)

प्रश्न 50633. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. चारिम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. चारिम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ चारिम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50634. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. चारिम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. चारिम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50635. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’कैँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. चारिम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. चारिम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार चारिम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50636. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50637. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. चारिम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. चारिम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चारिम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50638. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. चारिम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50639. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. चारिम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. चारिम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चारिम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50640. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50641. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप चारिम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप चारिम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50642. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं चारिम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं चारिम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5070 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ४)

प्रश्न 50643. ‘महाभारत (अंक ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. चारिम किस्त

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. चारिम किस्त

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ चारिम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50644. ‘महाभारत (अंक ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. चारिम किस्त

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. चारिम किस्त

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50645. ‘महाभारत (अंक ४)’कैँ महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. चारिम किस्त

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. चारिम किस्त

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार चारिम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50646. ‘महाभारत (अंक ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50647. ‘महाभारत (अंक ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. चारिम किस्त

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. चारिम किस्त

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चारिम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50648. ‘महाभारत (अंक ४)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. चारिम किस्त

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50649. ‘महाभारत (अंक ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. चारिम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. चारिम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चारिम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50650. ‘महाभारत (अंक ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50651. ‘महाभारत (अंक ४)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. महाकाव्यक रूप चारिम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महाकाव्यक रूप चारिम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50652. ‘महाभारत (अंक ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं चारिम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं चारिम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5071 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर — इमानदारीक ग्लैमर

प्रश्न 50653. ‘इमानदारीक ग्लैमर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अंक ४ केर कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अंक ४ केर कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अंक ४ केर कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50654. ‘इमानदारीक ग्लैमर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अंक ४ केर कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अंक ४ केर कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50655. ‘इमानदारीक ग्लैमर’कँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अंक ४ केर कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अंक ४ केर कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंक ४ केर कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50656. ‘इमानदारीक ग्लैमर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अंक ४ केर कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अंक ४ केर कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50657. ‘इमानदारीक ग्लैमर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अंक ४ केर कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अंक ४ केर कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंक ४ केर कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50658. ‘इमानदारीक ग्लैमर’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अंक ४ केर कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50659. ‘इमानदारीक ग्लैमर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अंक ४ केर कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अंक ४ केर कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंक ४ केर कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50660. ‘इमानदारीक ग्लैमर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अंक ४ केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अंक ४ केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50661. ‘इमानदारीक ग्लैमर’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप अंक ४ केर कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप अंक ४ केर कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50662. ‘इमानदारीक ग्लैमर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अंक ४ केर कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अंक ४ केर कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5072 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक ४ केर पद्य भाग)

प्रश्न 50663. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विविध
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विविध सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50664. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विविध
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50665. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. विविध
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विविध धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50666. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक विविध दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक विविध दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50667. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. विविध
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विविध सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50668. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. विविध
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50669. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विविध
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विविधक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50670. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विविधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विविधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50671. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप विविध कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप विविध कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50672. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विविध धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विविध धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5073 : विदेह-सदेह 4 — -- — (अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)

प्रश्न 50673. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50674. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50675. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’कैँ संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50676. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50677. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50678. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50679. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50680. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50681. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50682. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5074 : विदेह-सदेह 4 — प्रीति — अरिपन (कोहबर)

प्रश्न 50683. ‘अरिपन (कोहबर)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. --
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. --
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50684. ‘अरिपन (कोहबर)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. --
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. --
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50685. ‘अरिपन (कोहबर)’कें मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. --

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. --

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50686. ‘अरिपन (कोहबर)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50687. ‘अरिपन (कोहबर)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. --

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50688. ‘अरिपन (कोहबर)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. --

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50689. ‘अरिपन (कोहबर)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. --

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. --

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50690. ‘अरिपन (कोहबर)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50691. ‘अरिपन (कोहबर)’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. मिथिला कलाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. मिथिला कलाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50692. ‘अरिपन (कोहबर)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5075 : विदेह-सदेह 4 — -- — सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)

प्रश्न 50693. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50694. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50695. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’कैँ संगीत शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50696. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50697. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50698. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50699. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50700. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50701. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’मे संगीत शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50702. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5076 : विदेह-सदेह 4 — -- — बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल

प्रश्न 50703. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मैथिली लोककथा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मैथिली लोककथा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मैथिली लोककथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50704. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मैथिली लोककथा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मैथिली लोककथा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50705. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’कैँ बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मैथिली लोककथा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मैथिली लोककथा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिली लोककथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50706. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मैथिली लोककथा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मैथिली लोककथा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50707. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मैथिली लोककथा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मैथिली लोककथा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिली लोककथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50708. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मैथिली लोककथा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50709. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मैथिली लोककथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मैथिली लोककथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिली लोककथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50710. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मैथिली लोककथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मैथिली लोककथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50711. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप मैथिली लोककथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप मैथिली लोककथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50712. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मैथिली लोककथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मैथिली लोककथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5077 : विदेह-सदेह 4 — विद्यानन्द झा — पंजी-प्रबंध (भाग ३)

प्रश्न 50713. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50714. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50715. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’केँ पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50716. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50717. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50718. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50719. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50720. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50721. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50722. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5078 : विदेह-सदेह 4 — -- — (भाग ३)

प्रश्न 50723. ‘(भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50724. ‘(भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50725. ‘(भाग ३)’कैं मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50726. ‘(भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50727. ‘(भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50728. ‘(भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50729. ‘(भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50730. ‘(भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50731. ‘(भाग ३)’मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50732. ‘(भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5079 : विदेह-सदेह 4 — -- — यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)

प्रश्न 50733. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50734. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50735. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’कैँ भाषा-प्रौद्योगिकी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50736. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50737. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50738. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50739. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50740. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50741. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’मे भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50742. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5080 : विदेह-सदेह 4 — -- — स्वर, उदात्त (भाग २)

प्रश्न 50743. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50744. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50745. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’केँ रचना लिखबासँ पहिने... रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50746. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50747. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50748. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50749. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50750. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50751. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’मे रचना लिखबासँ पहिने...क रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50752. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5081 : विदेह-सदेह 4 — -- — VIDEHA MITHILA... (भाग ३)

प्रश्न 50753. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50754. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50755. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’कैं अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50756. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50757. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50758. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50759. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50760. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50761. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50762. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5082 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर — दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ

प्रश्न 50763. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं स्थानीय इतिहास-प्रेरणा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50764. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50765. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’कैं संपादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार स्थानीय इतिहास-प्रेरणा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50766. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक स्थानीय इतिहास-प्रेरणा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक स्थानीय इतिहास-प्रेरणा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50767. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल स्थानीय इतिहास-प्रेरणा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50768. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50769. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ स्थानीय इतिहास-प्रेरणाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50770. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. स्थानीय इतिहास-प्रेरणाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50771. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’मे संपादकीयक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संपादकीयक रूप स्थानीय इतिहास-प्रेरणा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संपादकीयक रूप स्थानीय इतिहास-प्रेरणा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50772. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं स्थानीय इतिहास-प्रेरणा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं स्थानीय इतिहास-प्रेरणा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5083 : विदेह-सदेह 4 — -- — उपासना (भाग ४)

प्रश्न 50773. ‘उपासना (भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रवासी स्तंभक अनुवाद सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50774. ‘उपासना (भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50775. ‘उपासना (भाग ४)’केँ अंग्रेजी-पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी स्तंभक अनुवाद धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50776. ‘उपासना (भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रवासी स्तंभक अनुवाद दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रवासी स्तंभक अनुवाद दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50777. ‘उपासना (भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी स्तंभक अनुवाद सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50778. ‘उपासना (भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50779. ‘उपासना (भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक अनुवाद
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी स्तंभक अनुवादक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50780. ‘उपासना (भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रवासी स्तंभक अनुवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक अनुवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50781. ‘उपासना (भाग ४)’मे अंग्रेजी-पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभक अनुवाद कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभक अनुवाद कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50782. ‘उपासना (भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रवासी स्तंभक अनुवाद धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रवासी स्तंभक अनुवाद धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5084 : विदेह-सदेह 5 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)

प्रश्न 50783. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. तेसर किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं तेसर किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50784. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. तेसर किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50785. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. तेसर किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तेसर किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50786. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50787. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. तेसर किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तेसर किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50788. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. तेसर किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50789. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. तेसर किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. तेसर किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तेसर किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50790. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50791. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप तेसर किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप तेसर किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50792. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं तेसर किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं तेसर किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5085 : विदेह-सदेह 5 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ५)

प्रश्न 50793. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पाँचम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50794. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50795. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पाँचम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पाँचम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50796. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50797. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पाँचम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50798. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पाँचम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50799. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पाँचम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50800. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50801. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप पाँचम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप पाँचम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50802. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं पाँचम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं पाँचम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5086 : विदेह-सदेह 5 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ५)

प्रश्न 50803. ‘महाभारत (अंक ५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पाँचम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50804. ‘महाभारत (अंक ५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50805. ‘महाभारत (अंक ५)’केँ महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पाँचम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पाँचम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50806. ‘महाभारत (अंक ५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50807. ‘महाभारत (अंक ५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पाँचम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50808. ‘महाभारत (अंक ५)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पाँचम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50809. ‘महाभारत (अंक ५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पाँचम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50810. ‘महाभारत (अंक ५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50811. ‘महाभारत (अंक ५)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. महाकाव्यक रूप पाँचम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महाकाव्यक रूप पाँचम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50812. ‘महाभारत (अंक ५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ पाँचम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ पाँचम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5087 : विदेह-सदेह 5 — गजेन्द्र ठाकुर — आर्या/प्लाइवुड (अंश)

प्रश्न 50813. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दू कथा मिश्रित
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दू कथा मिश्रित
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ दू कथा मिश्रित सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50814. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दू कथा मिश्रित
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दू कथा मिश्रित
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50815. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’कैँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दू कथा मिश्रित
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दू कथा मिश्रित
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दू कथा मिश्रित धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50816. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दू कथा मिश्रित दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दू कथा मिश्रित दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50817. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दू कथा मिश्रित
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दू कथा मिश्रित
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दू कथा मिश्रित सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50818. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दू कथा मिश्रित
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50819. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दू कथा मिश्रित
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दू कथा मिश्रित
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दू कथा मिश्रितक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50820. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दू कथा मिश्रितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दू कथा मिश्रितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50821. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप दू कथा मिश्रित कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप दू कथा मिश्रित कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50822. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं दू कथा मिश्रित धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं दू कथा मिश्रित धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5088 : विदेह-सदेह 5 — ज्योति झा चौधरी — (अंक ५ केर पद्य भाग)

प्रश्न 50823. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रवासी जीवन

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रवासी जीवन

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रवासी जीवन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50824. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रवासी जीवन

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रवासी जीवन

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50825. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रवासी जीवन

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रवासी जीवन

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी जीवन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50826. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रवासी जीवन दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रवासी जीवन दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50827. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रवासी जीवन

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रवासी जीवन

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी जीवन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50828. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रवासी जीवन

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50829. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रवासी जीवन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रवासी जीवन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी जीवनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50830. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रवासी जीवनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रवासी जीवनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50831. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रवासी जीवन कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रवासी जीवन कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50832. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ प्रवासी जीवन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ प्रवासी जीवन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5089 : विदेह-सदेह 5 — -- — (अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)

प्रश्न 50833. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50834. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50835. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’कैं संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50836. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50837. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50838. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50839. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50840. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50841. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50842. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5090 : विदेह-सदेह 5 — उमेश कुमार महतो — अरिपन (मधुश्रावणी)

प्रश्न 50843. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. --
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. --
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50844. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. --
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. --
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50845. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’कैं मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. --
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. --
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50846. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50847. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. --

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50848. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. --

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50849. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. --

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. --

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50850. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50851. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. मिथिला कलाक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. मिथिला कलाक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50852. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5091 : विदेह-सदेह 5 — -- — थाट, वर्ण (भाग ३)

प्रश्न 50853. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50854. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50855. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’कैँ संगीत शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50856. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50857. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50858. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50859. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50860. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50861. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’मे संगीत शिक्षाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50862. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5092 : विदेह-सदेह 5 — -- — राजा सलहेस

प्रश्न 50863. ‘राजा सलहेस’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50864. ‘राजा सलहेस’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50865. ‘राजा सलहेस’केँ बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50866. ‘राजा सलहेस’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50867. ‘राजा सलहेस’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50868. ‘राजा सलहेस’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50869. ‘राजा सलहेस’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50870. ‘राजा सलहेस’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50871. ‘राजा सलहेस’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50872. ‘राजा सलहेस’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5093 : विदेह-सदेह 5 — विद्यानन्द झा — पंजी-प्रबंध (भाग ४)

प्रश्न 50873. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50874. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50875. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’कैँ पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50876. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50877. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50878. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50879. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50880. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50881. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50882. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5094 : विदेह-सदेह 5 — -- — विश्वमनीषा पत्रिका

प्रश्न 50883. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. --

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. --

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50884. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. --

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50885. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’कैं मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. --

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. --

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50886. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50887. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. --

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50888. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. --

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50889. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. --

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. --

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50890. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50891. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50892. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5095 : विदेह-सदेह 5 — -- — VIDEHA MITHILA... (भाग ४)

प्रश्न 50893. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50894. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50895. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’केँ अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50896. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50897. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50898. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50899. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50900. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50901. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50902. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5096 : विदेह-सदेह 5 — -- — (मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १

प्रश्न 50903. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मानक निर्धारण
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मानक निर्धारण
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मानक निर्धारण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50904. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मानक निर्धारण
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मानक निर्धारण
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50905. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’कैं रचना लेखन रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मानक निर्धारण
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मानक निर्धारण
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मानक निर्धारण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50906. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मानक निर्धारण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मानक निर्धारण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50907. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मानक निर्धारण
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मानक निर्धारण
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मानक निर्धारण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50908. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मानक निर्धारण
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50909. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मानक निर्धारण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मानक निर्धारण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मानक निर्धारणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50910. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मानक निर्धारणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मानक निर्धारणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50911. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’मे रचना लेखनक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?
क. रचना लेखनक रूप मानक निर्धारण केँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रचना लेखनक रूप मानक निर्धारण केँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50912. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ मानक निर्धारण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ मानक निर्धारण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5097 : विदेह-सदेह 6 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)

प्रश्न 50913. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. चारिम किस्त

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. चारिम किस्त

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ चारिम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50914. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. चारिम किस्त

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. चारिम किस्त

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50915. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’कैँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. चारिम किस्त

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. चारिम किस्त

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार चारिम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50916. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50917. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. चारिम किस्त

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. चारिम किस्त

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चारिम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50918. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. चारिम किस्त

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50919. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. चारिम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. चारिम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चारिम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50920. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50921. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप चारिम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप चारिम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50922. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं चारिम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं चारिम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5098 : विदेह-सदेह 6 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ६)

प्रश्न 50923. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. छठम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं छठम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50924. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. छठम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50925. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’केँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. छठम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार छठम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50926. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक छठम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक छठम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50927. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. छठम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल छठम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50928. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. छठम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50929. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. छठम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ छठम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50930. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. छठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. छठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50931. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप छठम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप छठम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50932. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ छठम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ छठम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5099 : विदेह-सदेह 6 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ६)

प्रश्न 50933. ‘महाभारत (अंक ६)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. छठम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ छठम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50934. ‘महाभारत (अंक ६)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. छठम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50935. ‘महाभारत (अंक ६)’कैँ महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. छठम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार छठम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50936. ‘महाभारत (अंक ६)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक छठम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक छठम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50937. ‘महाभारत (अंक ६)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. छठम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल छठम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50938. ‘महाभारत (अंक ६)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. छठम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50939. ‘महाभारत (अंक ६)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. छठम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ छठम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50940. ‘महाभारत (अंक ६)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. छठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. छठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50941. ‘महाभारत (अंक ६)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. महाकाव्यक रूप छठम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महाकाव्यक रूप छठम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50942. ‘महाभारत (अंक ६)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ छठम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ छठम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5100 : विदेह-सदेह 6 — गजेन्द्र ठाकुर — प्लाइवुड (पूर्ण)

प्रश्न 50943. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पूर्ण कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पूर्ण कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पूर्ण कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50944. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पूर्ण कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पूर्ण कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50945. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पूर्ण कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पूर्ण कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पूर्ण कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50946. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पूर्ण कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पूर्ण कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50947. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पूर्ण कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पूर्ण कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पूर्ण कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50948. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पूर्ण कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50949. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पूर्ण कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पूर्ण कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पूर्ण कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50950. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पूर्ण कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पूर्ण कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50951. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप पूर्ण कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप पूर्ण कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50952. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं पूर्ण कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं पूर्ण कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5101 : विदेह-सदेह 6 — ज्योति झा चौधरी, गजेन्द्र ठाकुर — (अंक ६ केर पद्य भाग)

प्रश्न 50953. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. --
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. --
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50954. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. --
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. --
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50955. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’कँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. --

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. --

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50956. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50957. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. --

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50958. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. --

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50959. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. --

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. --

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50960. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50961. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50962. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकेँ -- धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकेँ -- धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5102 : विदेह-सदेह 6 — उमेश कुमार महतो — अरिपन (मधुश्रावणी)

प्रश्न 50963. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. --

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. --

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ -- सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50964. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. --

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50965. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’कैँ मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. --

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. --

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50966. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50967. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. --

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50968. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. --

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50969. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. --

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. --

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50970. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50971. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. मिथिला कलाक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. मिथिला कलाक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50972. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5103 : विदेह-सदेह 6 — -- — अपाला आत्रेयी

प्रश्न 50973. ‘अपाला आत्रेयी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. एकांकी

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. एकांकी

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं एकांकी सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50974. ‘अपाला आत्रेयी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. एकांकी

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. एकांकी

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50975. ‘अपाला आत्रेयी’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. एकांकी

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. एकांकी

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार एकांकी धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50976. ‘अपाला आत्रेयी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक एकांकी दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक एकांकी दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50977. ‘अपाला आत्रेयी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. एकांकी

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. एकांकी

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल एकांकी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50978. ‘अपाला आत्रेयी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. एकांकी

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50979. ‘अपाला आत्रेयी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. एकांकी
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. एकांकी
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ एकांकीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50980. ‘अपाला आत्रेयी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. एकांकीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. एकांकीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50981. ‘अपाला आत्रेयी’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप एकांकी कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप एकांकी कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50982. ‘अपाला आत्रेयी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं एकांकी धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं एकांकी धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5104 : विदेह-सदेह 6 — विद्यानन्द झा — पंजी-प्रबंध (भाग ५)

प्रश्न 50983. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50984. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50985. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’केँ पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50986. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50987. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50988. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50989. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 50990. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 50991. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 50992. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5105 : विदेह-सदेह 6 — -- — बच्चा झाक जीवनी (भाग १)

प्रश्न 50993. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 50994. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 50995. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’कैँ मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 50996. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 50997. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 50998. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 50999. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51000. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51001. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51002. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5106 : विदेह-सदेह 6 — -- — (भाग २)

प्रश्न 51003. ‘(भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51004. ‘(भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51005. ‘(भाग २)’कैँ भाषा-प्रौद्योगिकी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51006. ‘(भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51007. ‘(भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51008. ‘(भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51009. ‘(भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51010. ‘(भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51011. ‘(भाग २)’मे भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51012. ‘(भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5107 : विदेह-सदेह 6 — -- — (भाग ३)

प्रश्न 51013. ‘(भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51014. ‘(भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51015. ‘(भाग ३)’केँ रचना लिखबासँ पहिने... रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51016. ‘(भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51017. ‘(भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51018. ‘(भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51019. ‘(भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51020. ‘(भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51021. ‘(भाग ३)’मे रचना लिखबासँ पहिने...क रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51022. ‘(भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5108 : विदेह-सदेह 6 — -- — VIDEHA MITHILA... (भाग ५)

प्रश्न 51023. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51024. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51025. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’कैं अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51026. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51027. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51028. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51029. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51030. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51031. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51032. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5109 : विदेह-सदेह 6 — -- — (अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)

प्रश्न 51033. '(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51034. '(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51035. '(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)'कैँ संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51036. '(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51037. '(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51038. '(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)'क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51039. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51040. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51041. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51042. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5110 : विदेह-सदेह 7 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)

प्रश्न 51043. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पाँचम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51044. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51045. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’कें शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पाँचम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पाँचम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51046. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51047. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पाँचम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51048. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पाँचम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51049. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पाँचम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पाँचम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पाँचम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51050. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51051. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप पाँचम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप पाँचम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51052. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ पाँचम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ पाँचम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5111 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ७)

प्रश्न 51053. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सातम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सातम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ सातम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51054. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सातम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सातम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51055. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’कैँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सातम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सातम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सातम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51056. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सातम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सातम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51057. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सातम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सातम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सातम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51058. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सातम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51059. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सातम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सातम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सातम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51060. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सातम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सातम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51061. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप सातम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप सातम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51062. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सातम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सातम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5112 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ७)

प्रश्न 51063. ‘महाभारत (अंक ७)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. सातम किस्त

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. सातम किस्त

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ सातम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51064. ‘महाभारत (अंक ७)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. सातम किस्त

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. सातम किस्त

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51065. ‘महाभारत (अंक ७)’कैँ महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सातम किस्त

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सातम किस्त

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सातम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51066. ‘महाभारत (अंक ७)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सातम किस्त दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सातम किस्त दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51067. ‘महाभारत (अंक ७)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सातम किस्त

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सातम किस्त

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सातम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51068. ‘महाभारत (अंक ७)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सातम किस्त

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51069. ‘महाभारत (अंक ७)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सातम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सातम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सातम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51070. ‘महाभारत (अंक ७)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सातम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सातम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51071. ‘महाभारत (अंक ७)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. महाकाव्यक रूप सातम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महाकाव्यक रूप सातम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51072. ‘महाभारत (अंक ७)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सातम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सातम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5113 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर — हम नहि जायब विदेश

प्रश्न 51073. ‘हम नहि जायब विदेश’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रवास-प्रेरित कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रवास-प्रेरित कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रवास-प्रेरित कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51074. ‘हम नहि जायब विदेश’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रवास-प्रेरित कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रवास-प्रेरित कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51075. ‘हम नहि जायब विदेश’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रवास-प्रेरित कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रवास-प्रेरित कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवास-प्रेरित कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51076. ‘हम नहि जायब विदेश’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रवास-प्रेरित कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रवास-प्रेरित कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51077. ‘हम नहि जायब विदेश’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रवास-प्रेरित कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रवास-प्रेरित कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवास-प्रेरित कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51078. ‘हम नहि जायब विदेश’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रवास-प्रेरित कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51079. ‘हम नहि जायब विदेश’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रवास-प्रेरित कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रवास-प्रेरित कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवास-प्रेरित कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51080. ‘हम नहि जायब विदेश’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रवास-प्रेरित कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रवास-प्रेरित कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51081. ‘हम नहि जायब विदेश’मे कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप प्रवास-प्रेरित कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप प्रवास-प्रेरित कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51082. ‘हम नहि जायब विदेश’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ प्रवास-प्रेरित कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ प्रवास-प्रेरित कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5114 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक ७ केर पद्य भाग)

प्रश्न 51083. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विविध
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ विविध सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51084. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विविध
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51085. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. विविध
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विविध धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51086. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक विविध दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक विविध दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51087. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. विविध
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विविध सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51088. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. विविध
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51089. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विविध
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विविध
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विविधक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51090. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विविधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विविधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51091. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप विविध कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप विविध कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51092. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विविध धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विविध धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5115 : विदेह-सदेह 7 — -- — (अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)

प्रश्न 51093. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51094. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51095. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’कैँ संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51096. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51097. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51098. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51099. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51100. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51101. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51102. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5116 : विदेह-सदेह 7 — प्रीति — दशपात अरिपन

प्रश्न 51103. ‘दशपात अरिपन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. --
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. --
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51104. ‘दशपात अरिपन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. --
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. --
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51105. ‘दशपात अरिपन’केँ मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. --

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. --

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51106. ‘दशपात अरिपन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51107. ‘दशपात अरिपन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. --

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51108. ‘दशपात अरिपन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. --

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51109. ‘दशपात अरिपन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. --

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. --

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51110. ‘दशपात अरिपन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51111. ‘दशपात अरिपन’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. मिथिला कलाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. मिथिला कलाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51112. ‘दशपात अरिपन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5117 : विदेह-सदेह 7 — -- — (भाग ४)

प्रश्न 51113. ‘(भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51114. ‘(भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51115. ‘(भाग ४)’कैँ संगीत शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51116. ‘(भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51117. ‘(भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51118. ‘(भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51119. ‘(भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51120. ‘(भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51121. ‘(भाग ४)’मे संगीत शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51122. ‘(भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5118 : विदेह-सदेह 7 — -- — अपाला आत्रेयी (पूर्ण)

प्रश्न 51123. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. एकांकी

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. एकांकी

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ एकांकी सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51124. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. एकांकी

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. एकांकी

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51125. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’कैँ बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. एकांकी

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. एकांकी

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार एकांकी धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51126. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक एकांकी दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक एकांकी दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51127. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. एकांकी

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. एकांकी

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल एकांकी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51128. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. एकांकी

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51129. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. एकांकी
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. एकांकी
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ एकांकीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51130. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. एकांकीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. एकांकीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51131. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप एकांकी कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप एकांकी कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51132. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं एकांकी धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं एकांकी धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5119 : विदेह-सदेह 7 — विद्यानन्द झा — पंजी-प्रबंध (भाग ६)

प्रश्न 51133. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51134. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51135. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’केँ पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51136. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51137. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51138. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51139. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51140. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51141. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51142. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5120 : विदेह-सदेह 7 — -- — बच्चा झाक जीवनी (भाग २)

प्रश्न 51143. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51144. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51145. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’कैँ मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51146. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51147. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51148. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51149. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51150. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51151. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51152. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5121 : विदेह-सदेह 7 — -- — (भाग ३)

प्रश्न 51153. ‘(भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51154. ‘(भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51155. ‘(भाग ३)’कैँ भाषा-प्रौद्योगिकी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51156. ‘(भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51157. ‘(भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51158. ‘(भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51159. ‘(भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51160. ‘(भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51161. ‘(भाग ३)’मे भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51162. ‘(भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5122 : विदेह-सदेह 7 — -- — (भाग ४)

प्रश्न 51163. ‘(भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51164. ‘(भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51165. ‘(भाग ४)’केँ रचना लिखबासँ पहिने... रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51166. ‘(भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51167. ‘(भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51168. ‘(भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51169. ‘(भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51170. ‘(भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51171. ‘(भाग ४)’मे रचना लिखबासँ पहिने...क रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51172. ‘(भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5123 : विदेह-सदेह 7 — विवेकानन्द झा — Globalization (VN Jha)

प्रश्न 51173. ‘Globalization (VN Jha)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. --
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. --
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51174. ‘Globalization (VN Jha)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. --
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. --
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51175. ‘Globalization (VN Jha)’कैं अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. --
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. --
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51176. ‘Globalization (VN Jha)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51177. ‘Globalization (VN Jha)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. --

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51178. ‘Globalization (VN Jha)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. --

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51179. ‘Globalization (VN Jha)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. --

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. --

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51180. ‘Globalization (VN Jha)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51181. ‘Globalization (VN Jha)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. अंग्रेजी-गद्यक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. अंग्रेजी-गद्यक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51182. ‘Globalization (VN Jha)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5124 : विदेह-सदेह 8 — नचिकेता — नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)

प्रश्न 51183. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. २५ वर्षक मौन भंग

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. २५ वर्षक मौन भंग

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं २५ वर्षक मौन भंग सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51184. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. २५ वर्षक मौन भंग

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. २५ वर्षक मौन भंग

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51185. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)’कैं नाटक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. २५ वर्षक मौन भंग

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. २५ वर्षक मौन भंग

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार २५ वर्षक मौन भंग धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51186. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक २५ वर्षक मौन भंग दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक २५ वर्षक मौन भंग दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51187. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. २५ वर्षक मौन भंग

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. २५ वर्षक मौन भंग

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल २५ वर्षक मौन भंग सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51188. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. २५ वर्षक मौन भंग

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51189. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. २५ वर्षक मौन भंग
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. २५ वर्षक मौन भंग
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ २५ वर्षक मौन भंगक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51190. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. २५ वर्षक मौन भंगक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. २५ वर्षक मौन भंगक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51191. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)’मे नाटकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. नाटकक रूप २५ वर्षक मौन भंग कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. नाटकक रूप २५ वर्षक मौन भंग कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51192. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (प्रथम अंक)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं २५ वर्षक मौन भंग धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं २५ वर्षक मौन भंग धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5125 : विदेह-सदेह 8 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)

प्रश्न 51193. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. छठम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं छठम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51194. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. छठम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51195. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)’केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. छठम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार छठम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51196. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक छठम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक छठम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51197. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. छठम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल छठम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51198. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. छठम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51199. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. छठम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. छठम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ छठम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51200. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. छठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. छठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51201. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप छठम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप छठम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51202. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ६)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ छठम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ छठम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5126 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ८)

प्रश्न 51203. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ८)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. आठम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. आठम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ आठम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51204. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ८)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. आठम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. आठम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51205. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ८)’कैँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. आठम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. आठम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आठम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51206. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ८)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक आठम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक आठम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51207. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ८)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. आठम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. आठम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आठम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51208. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ८)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. आठम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51209. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ८)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आठम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आठम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आठम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51210. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ८)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51211. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ८)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप आठम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप आठम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51212. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ८)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं आठम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं आठम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5127 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ८)

प्रश्न 51213. ‘महाभारत (अंक ८)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. आठम किस्त

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. आठम किस्त

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं आठम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51214. ‘महाभारत (अंक ८)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. आठम किस्त

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. आठम किस्त

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51215. ‘महाभारत (अंक ८)’कैं महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. आठम किस्त

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. आठम किस्त

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आठम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51216. ‘महाभारत (अंक ८)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक आठम किस्त दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक आठम किस्त दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51217. ‘महाभारत (अंक ८)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. आठम किस्त

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. आठम किस्त

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आठम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51218. ‘महाभारत (अंक ८)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. आठम किस्त

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51219. ‘महाभारत (अंक ८)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आठम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आठम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आठम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51220. ‘महाभारत (अंक ८)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51221. ‘महाभारत (अंक ८)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. महाकाव्यक रूप आठम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महाकाव्यक रूप आठम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51222. ‘महाभारत (अंक ८)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं आठम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं आठम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5128 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक ८ केर कथा भाग)

प्रश्न 51223. ‘(अंक ८ केर कथा भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. --
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. --
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51224. ‘(अंक ८ केर कथा भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. --
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. --
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51225. ‘(अंक ८ केर कथा भाग)’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. --

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. --

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51226. ‘(अंक ८ केर कथा भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51227. ‘(अंक ८ केर कथा भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. --

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51228. ‘(अंक ८ केर कथा भाग)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. --

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51229. ‘(अंक ८ केर कथा भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. --

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. --

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51230. ‘(अंक ८ केर कथा भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51231. ‘(अंक ८ केर कथा भाग)’मे कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51232. ‘(अंक ८ केर कथा भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ -- धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ -- धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5129 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक ८ केर पद्य भाग)

प्रश्न 51233. ‘(अंक ८ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. --
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. --
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ -- सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51234. ‘(अंक ८ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. --
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. --
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51235. ‘(अंक ८ केर पद्य भाग)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. --
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. --
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51236. ‘(अंक ८ केर पद्य भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51237. '(अंक ८ केर पद्य भाग)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. --

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. --

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51238. '(अंक ८ केर पद्य भाग)'क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. --

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51239. '(अंक ८ केर पद्य भाग)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. --

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. --

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51240. '(अंक ८ केर पद्य भाग)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51241. '(अंक ८ केर पद्य भाग)'मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51242. '(अंक ८ केर पद्य भाग)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5130 : विदेह-सदेह 8 — -- — Awakened Maithili

प्रश्न 51243. ‘Awakened Maithili’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. प्रवासी स्तंभ

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभ

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रवासी स्तंभ सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51244. ‘Awakened Maithili’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. प्रवासी स्तंभ

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभ

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51245. ‘Awakened Maithili’कैँ अंग्रेजी-पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. प्रवासी स्तंभ

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभ

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी स्तंभ धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51246. ‘Awakened Maithili’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक प्रवासी स्तंभ दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक प्रवासी स्तंभ दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51247. ‘Awakened Maithili’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. प्रवासी स्तंभ

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. प्रवासी स्तंभ

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी स्तंभ सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51248. ‘Awakened Maithili’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. प्रवासी स्तंभ

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51249. ‘Awakened Maithili’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रवासी स्तंभ
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभ
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी स्तंभक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51250. ‘Awakened Maithili’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रवासी स्तंभक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रवासी स्तंभक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51251. ‘Awakened Maithili’मे अंग्रेजी-पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभ कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभ कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51252. ‘Awakened Maithili’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रवासी स्तंभ धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रवासी स्तंभ धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5131 : विदेह-सदेह 8 — -- — (अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)

प्रश्न 51253. ‘(अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51254. ‘(अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51255. ‘(अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)’कैं संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51256. ‘(अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51257. ‘(अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. धारावाहिक
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51258. ‘(अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. धारावाहिक
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51259. ‘(अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51260. ‘(अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51261. ‘(अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51262. ‘(अंक ८ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5132 : विदेह-सदेह 8 — -- — (भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)

प्रश्न 51263. ‘(भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. धारावाहिक
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51264. ‘(भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. धारावाहिक
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51265. ‘(भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)’कैं रचना लिखबासँ पहिने... रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. धारावाहिक
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51266. ‘(भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51267. ‘(भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51268. ‘(भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51269. ‘(भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. धारावाहिक

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51270. ‘(भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51271. ‘(भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)’मे रचना लिखबासँ पहिने...क रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51272. ‘(भाग ५, पद्य प्रशिक्षण)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5133 : विदेह-सदेह 8 — -- — VIDEHA MITHILA... (भाग ६)

प्रश्न 51273. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ६)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51274. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ६)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51275. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ६)'कैँ अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51276. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ६)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51277. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ६)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51278. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ६)'क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51279. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ६)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51280. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ६)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51281. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ६)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51282. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ६)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5134 : विदेह-सदेह 9 — नचिकेता — नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)

प्रश्न 51283. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. द्वितीय खेप
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. द्वितीय खेप
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं द्वितीय खेप सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51284. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. द्वितीय खेप
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. द्वितीय खेप
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51285. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)’केँ नाटक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. द्वितीय खेप
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. द्वितीय खेप
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार द्वितीय खेप धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51286. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक द्वितीय खेप दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक द्वितीय खेप दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51287. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. द्वितीय खेप
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. द्वितीय खेप
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल द्वितीय खेप सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51288. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. द्वितीय खेप
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51289. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. द्वितीय खेप
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. द्वितीय खेप
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ द्वितीय खेपक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51290. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. द्वितीय खेपक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. द्वितीय खेपक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51291. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)’मे नाटकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. नाटकक रूप द्वितीय खेप कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. नाटकक रूप द्वितीय खेप कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51292. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (दोसर भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं द्वितीय खेप धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं द्वितीय खेप धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5135 : विदेह-सदेह 9 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)

प्रश्न 51293. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अन्तिम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अन्तिम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अन्तिम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51294. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अन्तिम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अन्तिम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51295. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अन्तिम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अन्तिम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अन्तिम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51296. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अन्तिम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अन्तिम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51297. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अन्तिम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अन्तिम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अन्तिम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51298. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अन्तिम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51299. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अन्तिम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अन्तिम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अन्तिम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51300. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अन्तिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अन्तिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51301. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप अन्तिम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप अन्तिम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51302. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ७)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अन्तिम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अन्तिम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5136 : विदेह-सदेह 9 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ९)

प्रश्न 51303. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ९)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नवम किस्त

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नवम किस्त

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नवम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51304. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ९)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नवम किस्त

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नवम किस्त

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51305. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ९)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नवम किस्त

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नवम किस्त

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नवम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51306. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ९)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नवम किस्त दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नवम किस्त दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51307. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ९)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नवम किस्त

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नवम किस्त

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नवम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51308. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ९)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नवम किस्त

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51309. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ९)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नवम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नवम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नवम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51310. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ९)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नवम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नवम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51311. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ९)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप नवम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप नवम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51312. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ९)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नवम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नवम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5137 : विदेह-सदेह 9 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ९)

प्रश्न 51313. ‘महाभारत (अंक ९)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नवम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नवम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नवम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51314. ‘महाभारत (अंक ९)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नवम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नवम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51315. ‘महाभारत (अंक ९)’केँ महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नवम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नवम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नवम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51316. ‘महाभारत (अंक ९)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नवम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नवम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51317. ‘महाभारत (अंक ९)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नवम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नवम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नवम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51318. ‘महाभारत (अंक ९)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नवम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51319. ‘महाभारत (अंक ९)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नवम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नवम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नवम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51320. ‘महाभारत (अंक ९)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नवम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नवम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51321. ‘महाभारत (अंक ९)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. महाकाव्यक रूप नवम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महाकाव्यक रूप नवम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51322. ‘महाभारत (अंक ९)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ नवम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ नवम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5138 : विदेह-सदेह 9 — गजेन्द्र ठाकुर — पसीधक काँट

प्रश्न 51323. ‘पसीधक काँट’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अंक ९ केर व्यंग्य कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51324. ‘पसीधक काँट’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51325. ‘पसीधक काँट’कैँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंक ९ केर व्यंग्य कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51326. ‘पसीधक काँट’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अंक ९ केर व्यंग्य कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अंक ९ केर व्यंग्य कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51327. ‘पसीधक काँट’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंक ९ केर व्यंग्य कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51328. ‘पसीधक काँट’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51329. ‘पसीधक काँट’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अंक ९ केर व्यंग्य कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंक ९ केर व्यंग्य कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51330. ‘पसीधक काँट’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अंक ९ केर व्यंग्य कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अंक ९ केर व्यंग्य कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51331. ‘पसीधक काँट’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप अंक ९ केर व्यंग्य कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप अंक ९ केर व्यंग्य कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51332. ‘पसीधक काँट’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अंक ९ केर व्यंग्य कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अंक ९ केर व्यंग्य कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5139 : विदेह-सदेह 9 — रामजी चौधरी — (रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)

प्रश्न 51333. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. विस्मृत कविता

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. विस्मृत कविता

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विस्मृत कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51334. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. विस्मृत कविता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. विस्मृत कविता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51335. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. विस्मृत कविता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. विस्मृत कविता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विस्मृत कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51336. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक विस्मृत कविता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक विस्मृत कविता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51337. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. विस्मृत कविता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. विस्मृत कविता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विस्मृत कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51338. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. विस्मृत कविता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51339. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विस्मृत कविता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विस्मृत कविता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विस्मृत कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51340. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विस्मृत कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विस्मृत कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51341. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप विस्मृत कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप विस्मृत कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51342. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग १-३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विस्मृत कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विस्मृत कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5140 : विदेह-सदेह 9 — गंगेश गुंजन, ज्योति झा चौधरी — (देश छोड़ि..., विकास)

प्रश्न 51343. ‘(देश छोड़ि..., विकास)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. आधुनिक पद्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. आधुनिक पद्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं आधुनिक पद्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51344. ‘(देश छोड़ि..., विकास)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. आधुनिक पद्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. आधुनिक पद्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51345. ‘(देश छोड़ि..., विकास)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. आधुनिक पद्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. आधुनिक पद्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आधुनिक पद्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51346. ‘(देश छोड़ि..., विकास)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक आधुनिक पद्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक आधुनिक पद्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51347. ‘(देश छोड़ि..., विकास)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. आधुनिक पद्य
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. आधुनिक पद्य
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आधुनिक पद्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51348. ‘(देश छोड़ि..., विकास)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. आधुनिक पद्य
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51349. ‘(देश छोड़ि..., विकास)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आधुनिक पद्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आधुनिक पद्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आधुनिक पद्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51350. ‘(देश छोड़ि..., विकास)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आधुनिक पद्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आधुनिक पद्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51351. ‘(देश छोड़ि..., विकास)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप आधुनिक पद्य कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप आधुनिक पद्य कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51352. ‘(देश छोड़ि..., विकास)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं आधुनिक पद्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं आधुनिक पद्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5141 : विदेह-सदेह 9 — नूतन झा — जानकी नवमी (पाबनि)

प्रश्न 51353. ‘जानकी नवमी (पाबनि)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सांस्कृतिक निबंध
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंध
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सांस्कृतिक निबंध सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51354. ‘जानकी नवमी (पाबनि)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सांस्कृतिक निबंध
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंध
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51355. ‘जानकी नवमी (पाबनि)’कैं निबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सांस्कृतिक निबंध
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंध
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सांस्कृतिक निबंध धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51356. ‘जानकी नवमी (पाबनि)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सांस्कृतिक निबंध दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सांस्कृतिक निबंध दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51357. ‘जानकी नवमी (पाबनि)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सांस्कृतिक निबंध

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंध

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सांस्कृतिक निबंध सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51358. ‘जानकी नवमी (पाबनि)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सांस्कृतिक निबंध

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51359. ‘जानकी नवमी (पाबनि)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. सांस्कृतिक निबंध

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंध

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सांस्कृतिक निबंधक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51360. ‘जानकी नवमी (पाबनि)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. सांस्कृतिक निबंधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51361. ‘जानकी नवमी (पाबनि)’मे निबंधक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. निबंधक रूप सांस्कृतिक निबंध कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. निबंधक रूप सांस्कृतिक निबंध कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51362. ‘जानकी नवमी (पाबनि)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं सांस्कृतिक निबंध धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं सांस्कृतिक निबंध धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5142 : विदेह-सदेह 10 — नचिकेता — नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)

प्रश्न 51363. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. द्वितीय अंक प्रारम्भ

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. द्वितीय अंक प्रारम्भ

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ द्वितीय अंक प्रारम्भ सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51364. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. द्वितीय अंक प्रारम्भ

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. द्वितीय अंक प्रारम्भ

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51365. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)’कैँ नाटक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. द्वितीय अंक प्रारम्भ

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. द्वितीय अंक प्रारम्भ

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार द्वितीय अंक प्रारम्भ धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51366. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक द्वितीय अंक प्रारम्भ दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक द्वितीय अंक प्रारम्भ दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51367. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. द्वितीय अंक प्रारम्भ

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. द्वितीय अंक प्रारम्भ

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल द्वितीय अंक प्रारम्भ सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51368. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. द्वितीय अंक प्रारम्भ

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51369. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. द्वितीय अंक प्रारम्भ
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. द्वितीय अंक प्रारम्भ
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ द्वितीय अंक प्रारम्भक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51370. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. द्वितीय अंक प्रारम्भक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. द्वितीय अंक प्रारम्भक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51371. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)’मे नाटकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. नाटकक रूप द्वितीय अंक प्रारम्भ कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. नाटकक रूप द्वितीय अंक प्रारम्भ कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51372. ‘नो एंट्री : मा प्रविश (द्वितीय अंक शुरू)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं द्वितीय अंक प्रारम्भ धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं द्वितीय अंक प्रारम्भ धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5143 : विदेह-सदेह 10 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक १०)

प्रश्न 51373. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १०)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दसम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दसम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दसम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51374. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १०)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दसम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दसम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51375. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १०)’केँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दसम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दसम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दसम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51376. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १०)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दसम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दसम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51377. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १०)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दसम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दसम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दसम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51378. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १०)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दसम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51379. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १०)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दसम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दसम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दसम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51380. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १०)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दसम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दसम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51381. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १०)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप दसम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप दसम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51382. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक १०)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ दसम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ दसम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5144 : विदेह-सदेह 10 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक १०)

प्रश्न 51383. ‘महाभारत (अंक १०)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दसम किस्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दसम किस्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ दसम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51384. ‘महाभारत (अंक १०)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दसम किस्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दसम किस्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51385. ‘महाभारत (अंक १०)’कैँ महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दसम किस्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दसम किस्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दसम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51386. ‘महाभारत (अंक १०)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दसम किस्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दसम किस्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51387. ‘महाभारत (अंक १०)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दसम किस्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दसम किस्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दसम किस्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51388. ‘महाभारत (अंक १०)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दसम किस्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51389. ‘महाभारत (अंक १०)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दसम किस्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दसम किस्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दसम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51390. ‘महाभारत (अंक १०)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दसम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दसम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51391. ‘महाभारत (अंक १०)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. महाकाव्यक रूप दसम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महाकाव्यक रूप दसम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51392. ‘महाभारत (अंक १०)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं दसम किस्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं दसम किस्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5145 : विदेह-सदेह 10 — गजेन्द्र ठाकुर — फूसि-फटक

प्रश्न 51393. ‘फूसि-फटक’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. अंक १० केर कथा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. अंक १० केर कथा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अंक १० केर कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51394. ‘फूसि-फटक’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. अंक १० केर कथा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. अंक १० केर कथा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51395. ‘फूसि-फटक’कैँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. अंक १० केर कथा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. अंक १० केर कथा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंक १० केर कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51396. ‘फूसि-फटक’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक अंक १० केर कथा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक अंक १० केर कथा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51397. ‘फूसि-फटक’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. अंक १० केर कथा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. अंक १० केर कथा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंक १० केर कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51398. ‘फूसि-फटक’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. अंक १० केर कथा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51399. ‘फूसि-फटक’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अंक १० केर कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अंक १० केर कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंक १० केर कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51400. ‘फूसि-फटक’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अंक १० केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अंक १० केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51401. ‘फूसि-फटक’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप अंक १० केर कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप अंक १० केर कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51402. ‘फूसि-फटक’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अंक १० केर कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अंक १० केर कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5146 : विदेह-सदेह 10 — रामजी चौधरी — (रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)

प्रश्न 51403. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विस्मृत कविता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विस्मृत कविता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विस्मृत कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51404. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विस्मृत कविता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विस्मृत कविता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51405. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. विस्मृत कविता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. विस्मृत कविता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विस्मृत कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51406. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक विस्मृत कविता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक विस्मृत कविता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51407. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. विस्मृत कविता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. विस्मृत कविता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विस्मृत कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51408. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. विस्मृत कविता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51409. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. विस्मृत कविता

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. विस्मृत कविता

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विस्मृत कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51410. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. विस्मृत कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. विस्मृत कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51411. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप विस्मृत कविता कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप विस्मृत कविता कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51412. ‘(रामजी चौधरी पद्य भाग ४-७)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ विस्मृत कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ विस्मृत कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5147 : विदेह-सदेह 10 — गंगेश गुंजन, ज्योति झा चौधरी — (परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)

प्रश्न 51413. ‘(परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. आधुनिक पद्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. आधुनिक पद्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ आधुनिक पद्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51414. ‘(परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. आधुनिक पद्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. आधुनिक पद्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51415. ‘(परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. आधुनिक पद्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. आधुनिक पद्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आधुनिक पद्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51416. ‘(परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक आधुनिक पद्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक आधुनिक पद्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51417. ‘(परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. आधुनिक पद्य

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. आधुनिक पद्य

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आधुनिक पद्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51418. ‘(परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. आधुनिक पद्य

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51419. ‘(परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. आधुनिक पद्य

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. आधुनिक पद्य

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आधुनिक पद्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51420. ‘(परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. आधुनिक पद्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. आधुनिक पद्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51421. ‘(परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप आधुनिक पद्य कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप आधुनिक पद्य कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51422. ‘(परिवर्त्तन, आधुनिक कविता)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं आधुनिक पद्य धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं आधुनिक पद्य धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5148 : विदेह-सदेह 10 — -- — (अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)

प्रश्न 51423. ‘(अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धारावाहिक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51424. ‘(अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धारावाहिक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51425. ‘(अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)’कैँ संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धारावाहिक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51426. ‘(अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51427. ‘(अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धारावाहिक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धारावाहिक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51428. ‘(अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धारावाहिक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51429. ‘(अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धारावाहिक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धारावाहिक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51430. ‘(अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51431. ‘(अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51432. ‘(अंक १० केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5149 : विदेह-सदेह 10 — श्रीमती लक्ष्मी ठाकुर — कोजगराक अरिपन

प्रश्न 51433. ‘कोजगराक अरिपन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. चित्र सहित
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. चित्र सहित
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं चित्र सहित सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51434. ‘कोजगराक अरिपन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. चित्र सहित
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. चित्र सहित
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51435. ‘कोजगराक अरिपन’केँ मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. चित्र सहित
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. चित्र सहित
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार चित्र सहित धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51436. ‘कोजगराक अरिपन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक चित्र सहित दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक चित्र सहित दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51437. ‘कोजगराक अरिपन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. चित्र सहित
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. चित्र सहित
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चित्र सहित सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51438. ‘कोजगराक अरिपन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. चित्र सहित
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51439. ‘कोजगराक अरिपन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. चित्र सहित
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. चित्र सहित
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चित्र सहितक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51440. ‘कोजगराक अरिपन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. चित्र सहितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. चित्र सहितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51441. ‘कोजगराक अरिपन’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. मिथिला कलाक रूप चित्र सहित कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. मिथिला कलाक रूप चित्र सहित कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51442. ‘कोजगराक अरिपन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं चित्र सहित धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं चित्र सहित धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5150 : विदेह-सदेह 10 — गजेन्द्र ठाकुर — बगियाक गाछ

प्रश्न 51443. ‘बगियाक गाछ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लोककथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लोककथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लोककथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51444. ‘बगियाक गाछ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लोककथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लोककथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51445. ‘बगियाक गाछ’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लोककथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लोककथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोककथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51446. ‘बगियाक गाछ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लोककथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लोककथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51447. ‘बगियाक गाछ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. लोककथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. लोककथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोककथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51448. ‘बगियाक गाछ’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. लोककथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51449. ‘बगियाक गाछ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लोककथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लोककथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोककथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51450. ‘बगियाक गाछ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लोककथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लोककथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51451. ‘बगियाक गाछ’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप लोककथा कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप लोककथा कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51452. ‘बगियाक गाछ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ लोककथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ लोककथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5151 : विदेह-सदेह 10 — नूतन झा — वटसावित्री (पाबनि)

प्रश्न 51453. ‘वटसावित्री (पाबनि)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. सांस्कृतिक निबंध

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंध

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सांस्कृतिक निबंध सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51454. ‘वटसावित्री (पाबनि)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. सांस्कृतिक निबंध

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंध

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51455. ‘वटसावित्री (पाबनि)’कैं निबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सांस्कृतिक निबंध

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंध

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सांस्कृतिक निबंध धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51456. ‘वटसावित्री (पाबनि)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सांस्कृतिक निबंध दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सांस्कृतिक निबंध दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51457. ‘वटसावित्री (पाबनि)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सांस्कृतिक निबंध

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंध

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सांस्कृतिक निबंध सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51458. ‘वटसावित्री (पाबनि)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सांस्कृतिक निबंध

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51459. ‘वटसावित्री (पाबनि)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सांस्कृतिक निबंध
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंध
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सांस्कृतिक निबंधक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51460. ‘वटसावित्री (पाबनि)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सांस्कृतिक निबंधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सांस्कृतिक निबंधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51461. ‘वटसावित्री (पाबनि)’मे निबंधक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. निबंधक रूप सांस्कृतिक निबंध कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. निबंधक रूप सांस्कृतिक निबंध कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51462. ‘वटसावित्री (पाबनि)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सांस्कृतिक निबंध धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सांस्कृतिक निबंध धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5152 : विदेह-सदेह 11 — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर — विदेह प्रवेशिका (अंक ११)

प्रश्न 51463. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक ११)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51464. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक ११)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51465. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक ११)’केँ सम्पादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51466. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक ११)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51467. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक ११)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51468. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक ११)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51469. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक ११)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51470. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक ११)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51471. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक ११)’मे सम्पादकीयक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. सम्पादकीयक रूप पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. सम्पादकीयक रूप पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51472. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक ११)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं पत्रिकाक उद्देश्य, स्तम्भ-परिचय, आ सहयोगी साहित्यकारक सूची। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5153 : विदेह-सदेह 11 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)

प्रश्न 51473. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51474. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51475. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)’कैं नाटक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51476. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51477. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51478. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51479. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51480. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51481. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)’मे नाटकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. नाटकक रूप प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. नाटकक रूप प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51482. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (दोसर कल्लोलक दोसर खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रयोगधर्मी नाटक; स्वर्ग-द्वारक प्रतीकात्मक कथा; राजनीतिक व्यंग्य। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5154 : विदेह-सदेह 11 — मायानन्द मिश्र — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)

प्रश्न 51483. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51484. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51485. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)’कैं शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51486. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51487. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51488. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51489. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51490. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51491. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51492. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं पाश्चात्य विचारधारा आ मिथिलाक प्राचीन इतिहासक अन्तर्सम्बन्ध। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5155 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (आगाँ)

प्रश्न 51493. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51494. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51495. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51496. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51497. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51498. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51499. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51500. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51501. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51502. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ नन्दक पारिवारिक जीवन; गंगा पुल निर्माणक भ्रष्टाचार। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5156 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (आगाँ): विराट पर्व

प्रश्न 51503. ‘महाभारत (आगाँ): विराट पर्व’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51504. ‘महाभारत (आगाँ): विराट पर्व’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51505. ‘महाभारत (आगाँ): विराट पर्व’कैँ पद्य-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51506. ‘महाभारत (आगाँ): विराट पर्व’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51507. ‘महाभारत (आगाँ): विराट पर्व’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51508. ‘महाभारत (आगाँ): विराट पर्व’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51509. ‘महाभारत (आगाँ): विराट पर्व’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51510. ‘महाभारत (आगाँ): विराट पर्व’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51511. ‘महाभारत (आगाँ): विराट पर्व’मे पद्य-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्य-कथाक रूप पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्य-कथाक रूप पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51512. ‘महाभारत (आगाँ): विराट पर्व’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं पाण्डवक अज्ञातवास आ कीचक-वधक लयबद्ध पद्यानुवाद। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5157 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकुर — संगीत (कथा अंक ११)

प्रश्न 51513. ‘संगीत (कथा अंक ११)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51514. ‘संगीत (कथा अंक ११)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51515. ‘संगीत (कथा अंक ११)’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51516. ‘संगीत (कथा अंक ११)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51517. ‘संगीत (कथा अंक ११)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51518. ‘संगीत (कथा अंक ११)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51519. ‘संगीत (कथा अंक ११)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51520. ‘संगीत (कथा अंक ११)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51521. ‘संगीत (कथा अंक ११)’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51522. ‘संगीत (कथा अंक ११)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं उदित नामक बालकक संगीत-साधनाक प्रेरक आत्मकथात्मक कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5158 : विदेह-सदेह 11 — रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)

प्रश्न 51523. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51524. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51525. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51526. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51527. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51528. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51529. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51530. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51531. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51532. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विनय/महेशवानी)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ भक्ति रस प्रधान; शिव-विष्णुक स्तुति; लोक-राग परम्परा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5159 : विदेह-सदेह 11 — गंगेश गुंजन — गाम (कविता)

प्रश्न 51533. ‘गाम (कविता)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51534. ‘गाम (कविता)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51535. ‘गाम (कविता)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51536. ‘गाम (कविता)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51537. ‘गाम (कविता)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51538. ‘गाम (कविता)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51539. ‘गाम (कविता)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51540. ‘गाम (कविता)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51541. ‘गाम (कविता)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51542. ‘गाम (कविता)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं मातृभूमि प्रति श्रद्धा आ स्मृतिक मार्मिक चित्रण। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5160 : विदेह-सदेह 11 — ज्योति झा चौधरी — बालश्रम

प्रश्न 51543. ‘बालश्रम’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51544. ‘बालश्रम’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51545. ‘बालश्रम’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51546. ‘बालश्रम’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51547. ‘बालश्रम’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51548. ‘बालश्रम’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51549. ‘बालश्रम’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51550. ‘बालश्रम’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51551. ‘बालश्रम’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51552. ‘बालश्रम’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं समाजक संवेदनहीनताक विरुद्ध तीखा काव्यात्मक प्रश्न। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5161 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकुर — मोनक जड़िमे

प्रश्न 51553. ‘मोनक जड़िमे’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51554. ‘मोनक जड़िमे’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51555. ‘मोनक जड़िमे’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51556. ‘मोनक जड़िमे’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51557. ‘मोनक जड़िमे’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51558. ‘मोनक जड़िमे’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51559. ‘मोनक जड़िमे’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51560. ‘मोनक जड़िमे’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51561. ‘मोनक जड़िमे’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51562. ‘मोनक जड़िमे’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कर्तव्यपथक दार्शनिक अभिव्यक्ति। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5162 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकुर — संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)

प्रश्न 51563. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51564. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51565. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’कैं शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51566. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51567. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51568. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51569. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51570. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51571. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शिक्षाक रूप प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शिक्षाक रूप प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51572. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रश्नार्थक शब्द (किम्, कुत्र, कति)क सरल संस्कृत-मैथिली सम्भाषण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5163 : विदेह-सदेह 11 — लक्ष्मी ठाकुर — मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन

प्रश्न 51573. ‘मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51574. ‘मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51575. ‘मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन’कैं कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51576. ‘मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51577. ‘मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51578. ‘मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51579. ‘मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51580. ‘मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51581. ‘मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन’मे कलाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. कलाक रूप देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कलाक रूप देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51582. ‘मिथिला कला (आगां): षडदल अरिपन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ देवी भागवत यंत्र आधारित पारम्परिक अरिपनक सचित्र विवरण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5164 : विदेह-सदेह 11 — नूतन झा — पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार

प्रश्न 51583. ‘पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51584. ‘पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51585. ‘पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार’कँ निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51586. ‘पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51587. ‘पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51588. ‘पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51589. ‘पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51590. ‘पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51591. ‘पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार’मे निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. निबन्धक रूप विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. निबन्धक रूप विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51592. ‘पाबनि-संस्कार-तीर्थ: बारातीसत्कार’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विवाहमे फिजूलखर्ची आ सामाजिक दबावक आलोचना। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5165 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकुर — संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी

प्रश्न 51593. ‘संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51594. ‘संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51595. ‘संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी’कैं शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51596. ‘संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51597. ‘संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51598. ‘संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51599. ‘संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51600. ‘संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51601. ‘संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51602. ‘संगीत शिक्षा: श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' जीवनी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ अभिनव भातखण्डेक सांगीतिक अवदान; मैथिली रागक रचना। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5166 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकुर — गोनू झा आ दस ठोप बाबा

प्रश्न 51603. ‘गोनू झा आ दस ठोप बाबा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51604. ‘गोनू झा आ दस ठोप बाबा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51605. ‘गोनू झा आ दस ठोप बाबा’कैं बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51606. ‘गोनू झा आ दस ठोप बाबा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51607. ‘गोनू झा आ दस ठोप बाबा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51608. ‘गोनू झा आ दस ठोप बाबा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51609. ‘गोनू झा आ दस ठोप बाबा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51610. ‘गोनू झा आ दस ठोप बाबा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51611. ‘गोनू झा आ दस ठोप बाबा’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51612. ‘गोनू झा आ दस ठोप बाबा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं हास्य-व्यंग्य सहित ढोंगी साधुक पोल-खोल। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5167 : विदेह-सदेह 11 — विद्यानन्द झा पञ्जीकार — पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय

प्रश्न 51613. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51614. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51615. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय’केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51616. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51617. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51618. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51619. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51620. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51621. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51622. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): वैवाहिक अधिकार निर्णय’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मूल-गोत्र जाँचक शास्त्रीय पद्धति; षोडश छठि गणनाक विधान। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5168 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकुर — चाणक्य/कौटिल्य

प्रश्न 51623. ‘चाणक्य/कौटिल्य’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51624. ‘चाणक्य/कौटिल्य’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51625. ‘चाणक्य/कौटिल्य’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51626. ‘चाणक्य/कौटिल्य’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51627. ‘चाणक्य/कौटिल्य’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51628. ‘चाणक्य/कौटिल्य’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51629. ‘चाणक्य/कौटिल्य’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51630. ‘चाणक्य/कौटिल्य’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51631. ‘चाणक्य/कौटिल्य’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. शोध-लेखक रूप अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. शोध-लेखक रूप अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51632. ‘चाणक्य/कौटिल्य’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं अर्थशास्त्रक राज्य-सिद्धान्त; कौटिल्यक मिथिला सम्बन्ध। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5169 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकुर — रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)

प्रश्न 51633. ‘रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51634. ‘रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51635. ‘रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)’कैं भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51636. ‘रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51637. ‘रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51638. ‘रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51639. ‘रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51640. ‘रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51641. ‘रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)’मे भाषाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51642. ‘रचना लेखन (ध्वनि-विज्ञान आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया; अघोष-घोष, अल्पप्राण-महाप्राण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5170 : विदेह-सदेह 11 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिलीक मानक लेखन-शैली

प्रश्न 51643. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51644. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51645. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’केँ भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51646. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51647. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51648. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51649. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51650. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51651. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’मे भाषाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51652. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ वर्तनी, कारक, अनुनासिक आदिक मानकीकरण नियमावली। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5171 : विदेह-सदेह 11 — सम्पादकीय — Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)

प्रश्न 51653. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51654. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51655. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)’कैँ ऐतिहासिक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51656. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51657. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51658. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51659. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51660. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51661. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)’मे ऐतिहासिकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. ऐतिहासिकक रूप गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. ऐतिहासिकक रूप गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51662. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (प्राचीन इतिहास)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं गुप्त-कालीन मिथिलाक प्रशासनिक व्यवस्था। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5172 : विदेह-सदेह 12 — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर — विदेह प्रवेशिका (अंक १२)

प्रश्न 51663. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १२)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51664. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १२)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51665. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १२)’कैं सम्पादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51666. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १२)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51667. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १२)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51668. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १२)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51669. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १२)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51670. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १२)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51671. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १२)’मे सम्पादकीयक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. सम्पादकीयक रूप हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. सम्पादकीयक रूप हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51672. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १२)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं हाइकू विधाक प्रवेश; नेपाल-भारतक साहित्यकारक सन्देश। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5173 : विदेह-सदेह 12 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)

प्रश्न 51673. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51674. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51675. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)’कैं नाटक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51676. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51677. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51678. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51679. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51680. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51681. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)’मे नाटकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. नाटकक रूप यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. नाटकक रूप यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51682. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल पहिल खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं यमराजक दरबारक प्रहसन; नेता-अभिनेता-वामपंथीक संवाद। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5174 : विदेह-सदेह 12 — मायानन्द मिश्र — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)

प्रश्न 51683. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51684. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51685. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)’कैं शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51686. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51687. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51688. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51689. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51690. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51691. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51692. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (पुरोहित आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं पुरोहित उपन्यासक सर्ग-वार विश्लेषण; वैदिक समाज। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5175 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (आगाँ)

प्रश्न 51693. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51694. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51695. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51696. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51697. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51698. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51699. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51700. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51701. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51702. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ गंगा पुल उद्घाटन आ पारिवारिक द्वन्द्वक कथा-विस्तार। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5176 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व

प्रश्न 51703. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51704. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51705. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व’केँ पद्य-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51706. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51707. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51708. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51709. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51710. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51711. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व’मे पद्य-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्य-कथाक रूप कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्य-कथाक रूप कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51712. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग पर्व’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कृष्ण-दुर्योधन संवाद; पाँच गाम याचना आ युद्ध-घोषणा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5177 : विदेह-सदेह 12 — गंगेश गुंजन — गोबरक मूल्य

प्रश्न 51713. ‘गोबरक मूल्य’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51714. ‘गोबरक मूल्य’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51715. ‘गोबरक मूल्य’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51716. ‘गोबरक मूल्य’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51717. ‘गोबरक मूल्य’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51718. ‘गोबरक मूल्य’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51719. ‘गोबरक मूल्य’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51720. ‘गोबरक मूल्य’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51721. ‘गोबरक मूल्य’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51722. ‘गोबरक मूल्य’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गोबर बेचए बला गरीब बच्चाक दयनीय स्थिति। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5178 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — पहरराति

प्रश्न 51723. ‘पहरराति’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51724. ‘पहरराति’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51725. ‘पहरराति’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51726. ‘पहरराति’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51727. ‘पहरराति’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51728. ‘पहरराति’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51729. ‘पहरराति’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51730. ‘पहरराति’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51731. ‘पहरराति’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51732. ‘पहरराति’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं धौम्य ऋषिक प्रयोगशाला; बहुआयामी ब्रह्माण्डक विज्ञान-कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5179 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादकीय) — मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)

प्रश्न 51733. ‘मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51734. ‘मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51735. ‘मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)’कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51736. ‘मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51737. ‘मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51738. ‘मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51739. ‘मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51740. ‘मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51741. ‘मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51742. ‘मैथिली हाइकू पद्य (निअम आ प्रस्तुति)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं हाइकू विधाक शास्त्रीय नियम; बाशोक परम्परा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5180 : विदेह-सदेह 12 — ज्योति झा चौधरी — मैथिली हाइकू (१ सँ १००)

प्रश्न 51743. ‘मैथिली हाइकू (१ सँ १००)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51744. ‘मैथिली हाइकू (१ सँ १००)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51745. ‘मैथिली हाइकू (१ सँ १००)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51746. ‘मैथिली हाइकू (१ सँ १००)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51747. ‘मैथिली हाइकू (१ सँ १००)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51748. ‘मैथिली हाइकू (१ सँ १००)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51749. ‘मैथिली हाइकू (१ सँ १००)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51750. ‘मैथिली हाइकू (१ सँ १००)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51751. ‘मैथिली हाइकू (१ सँ १००)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51752. ‘मैथिली हाइकू (१ सँ १००)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रकृति-ऋतुक सुन्दर चित्रण; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद सहित। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5181 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — हाइकू (१२ टा) आ हैबून १

प्रश्न 51753. ‘हाइकू (१२ टा) आ हैबून १’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51754. ‘हाइकू (१२ टा) आ हैबून १’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51755. ‘हाइकू (१२ टा) आ हैबून १’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51756. ‘हाइकू (१२ टा) आ हैबून १’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51757. ‘हाइकू (१२ टा) आ हैबून १’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51758. ‘हाइकू (१२ टा) आ हैबून १’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51759. ‘हाइकू (१२ टा) आ हैबून १’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51760. ‘हाइकू (१२ टा) आ हैबून १’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51761. ‘हाइकू (१२ टा) आ हैबून १’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51762. ‘हाइकू (१२ टा) आ हैबून १’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं ग्रामीण जीवन आ बाढ़िक दृश्यक हाइकू। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5182 : विदेह-सदेह 12 — रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)

प्रश्न 51763. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51764. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51765. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51766. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51767. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51768. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51769. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51770. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51771. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51772. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/विहाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ शिव-गौरीक प्रणय-विरहक लोक-रागात्मक भक्ति पद्य। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5183 : विदेह-सदेह 12 — ज्योति झा चौधरी — मेघक उत्पात

प्रश्न 51773. ‘मेघक उत्पात’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51774. ‘मेघक उत्पात’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51775. ‘मेघक उत्पात’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51776. ‘मेघक उत्पात’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51777. ‘मेघक उत्पात’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51778. ‘मेघक उत्पात’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51779. ‘मेघक उत्पात’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51780. ‘मेघक उत्पात’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51781. ‘मेघक उत्पात’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51782. ‘मेघक उत्पात’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं कृषक-जीवन आ मौसमक अनिश्चितताक मार्मिक चित्रण। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5184 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — पथक पथ

प्रश्न 51783. ‘पथक पथ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51784. ‘पथक पथ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51785. ‘पथक पथ’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51786. ‘पथक पथ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51787. ‘पथक पथ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51788. ‘पथक पथ’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51789. ‘पथक पथ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51790. ‘पथक पथ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51791. ‘पथक पथ’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51792. ‘पथक पथ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं जीवन-यात्राक दार्शनिक अभिव्यक्ति। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5185 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)

प्रश्न 51793. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51794. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51795. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’कैं शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51796. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51797. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51798. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51799. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51800. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51801. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शिक्षाक रूप एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शिक्षाक रूप एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51802. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं एकवचन-बहुवचन परिवर्तन; शिवाजी महाराजक कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5186 : विदेह-सदेह 12 — लक्ष्मी ठाकुर — मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र

प्रश्न 51803. ‘मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51804. ‘मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51805. ‘मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र’कैं कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51806. ‘मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51807. ‘मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51808. ‘मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51809. ‘मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51810. ‘मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51811. ‘मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र’मे कलाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. कलाक रूप गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कलाक रूप गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51812. ‘मिथिला कला (आगां): सरोवर चित्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ गोसाउनि घरमे बनाओल जायबला सरोवर चित्रक महत्त्व। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5187 : विदेह-सदेह 12 — सम्पादकीय — डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)

प्रश्न 51813. ‘डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51814. ‘डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51815. ‘डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)’कैं शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51816. ‘डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51817. ‘डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51818. ‘डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51819. ‘डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51820. ‘डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51821. ‘डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51822. ‘डिस्कवरी ऑफ मिथिला (धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गौरी-शंकर, कमलादित्य, जनकपुर धरिक ५१ टा तीर्थ-स्थल। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5188 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)

प्रश्न 51823. ‘संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51824. ‘संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51825. ‘संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)’केँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51826. ‘संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51827. ‘संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51828. ‘संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51829. ‘संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51830. ‘संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51831. ‘संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51832. ‘संगीत शिक्षा: रामाश्रय झा 'रामरंग' (वाग्गेयकार परिचय)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ लाक्षणिक तत्त्व, छन्द-कोष-अलंकारक ज्ञान। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5189 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — मूर्खाधिराज

प्रश्न 51833. ‘मूर्खाधिराज’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51834. ‘मूर्खाधिराज’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51835. ‘मूर्खाधिराज’कैँ बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51836. ‘मूर्खाधिराज’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51837. ‘मूर्खाधिराज’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51838. ‘मूर्खाधिराज’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51839. ‘मूर्खाधिराज’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51840. ‘मूर्खाधिराज’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51841. ‘मूर्खाधिराज’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51842. ‘मूर्खाधिराज’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं महामूर्ख बालकक वैवाहिक जीवनक हास्य-कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5190 : विदेह-सदेह 12 — ज्योति झा चौधरी — देवीजी: पिंजराक पक्षी

प्रश्न 51843. ‘देवीजी: पिंजराक पक्षी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51844. ‘देवीजी: पिंजराक पक्षी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51845. ‘देवीजी: पिंजराक पक्षी’कैं बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51846. ‘देवीजी: पिंजराक पक्षी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51847. ‘देवीजी: पिंजराक पक्षी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51848. ‘देवीजी: पिंजराक पक्षी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51849. ‘देवीजी: पिंजराक पक्षी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51850. ‘देवीजी: पिंजराक पक्षी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51851. ‘देवीजी: पिंजराक पक्षी’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51852. ‘देवीजी: पिंजराक पक्षी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं पशु-पक्षीक स्वतन्त्रता आ दयाक शिक्षाप्रद कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5191 : विदेह-सदेह 12 — विद्यानन्द झा पञ्जीकार — पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम

प्रश्न 51853. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51854. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51855. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम’केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51856. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51857. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51858. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51859. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51860. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51861. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51862. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): सपिण्ड नियम’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मनुस्मृति आधारित मातृ-पितृकुलक विवाह-निषेधक विधान। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5192 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)

प्रश्न 51863. ‘जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51864. ‘जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51865. ‘जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51866. ‘जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51867. ‘जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51868. ‘जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51869. ‘जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51870. ‘जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51871. ‘जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51872. ‘जनक (ऋगवेद सँ बुद्धचरित धरि)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ निमि, मिथि, सीरध्वज, कराल जनकक वंशावली। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5193 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)

प्रश्न 51873. ‘रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51874. ‘रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51875. ‘रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)’कैं भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51876. ‘रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51877. ‘रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51878. ‘रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51879. ‘रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51880. ‘रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51881. ‘रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)’मे भाषाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51882. ‘रचना लेखन (वर्णोच्चारण-स्थान)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य वर्णक उच्चारण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5194 : विदेह-सदेह 12 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)

प्रश्न 51883. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51884. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51885. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’कें भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51886. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51887. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51888. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51889. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51890. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51891. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे भाषाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51892. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ मानक मैथिली वर्तनी कोष (तका-तकाए, पैरे-पएरे)। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5195 : विदेह-सदेह 12 — सम्पादकीय — Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)

प्रश्न 51893. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51894. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51895. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)’कैँ ऐतिहासिक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51896. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51897. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51898. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51899. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51900. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51901. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)’मे ऐतिहासिकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. ऐतिहासिकक रूप लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. ऐतिहासिकक रूप लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51902. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (गुप्त-काल)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं लिच्छवि, तीरभुक्ति प्रशासन; ह्वेनसांगक यात्रा-विवरण। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5196 : विदेह-सदेह 13 — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर — विदेह प्रवेशिका (अंक १३)

प्रश्न 51903. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51904. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51905. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १३)’कैं सम्पादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51906. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51907. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51908. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १३)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51909. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51910. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51911. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १३)’मे सम्पादकीयक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. सम्पादकीयक रूप साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. सम्पादकीयक रूप साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51912. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं साहित्य अकादमी कवि-सम्मेलनक रिपोर्ताज। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5197 : विदेह-सदेह 13 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)

प्रश्न 51913. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51914. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51915. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)’केँ नाटक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51916. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51917. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51918. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51919. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51920. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51921. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)’मे नाटकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. नाटकक रूप यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. नाटकक रूप यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51922. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (तेसर कल्लोल दोसर खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं यमराज-चित्रगुप्तक दरबारक जारी प्रहसन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5198 : विदेह-सदेह 13 — मायानन्द मिश्र — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)

प्रश्न 51923. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51924. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51925. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)’कैं शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51926. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51927. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51928. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51929. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51930. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51931. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51932. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (महाभारत-समीक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं वेबरक जय-संहिता सिद्धान्तक खण्डन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5199 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (आगाँ)

प्रश्न 51933. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51934. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51935. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51936. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51937. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51938. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51939. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51940. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51941. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51942. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ नन्दक पारिवारिक एकान्तता; भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5200 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व

प्रश्न 51943. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51944. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51945. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व’केँ पद्य-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51946. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51947. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51948. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51949. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51950. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51951. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व’मे पद्य-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्य-कथाक रूप कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्य-कथाक रूप कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51952. ‘महाभारत (आगाँ): उद्योग-भीष्म पर्व’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कर्ण-कुन्ती संवाद; कर्णक प्रतिज्ञा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5201 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकुर — बैसाखी

प्रश्न 51953. ‘बैसाखी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51954. ‘बैसाखी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51955. ‘बैसाखी’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51956. ‘बैसाखी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51957. ‘बैसाखी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51958. ‘बैसाखी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51959. ‘बैसाखी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51960. ‘बैसाखी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51961. ‘बैसाखी’मे कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51962. ‘बैसाखी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ दू मित्रक भेट; पारिवारिक संघर्ष आ विकलांगता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5202 : विदेह-सदेह 13 — रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)

प्रश्न 51963. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51964. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51965. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51966. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51967. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51968. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51969. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51970. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51971. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51972. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन/महेशवाणी/विहाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं राम-शिवक भिन्न-भिन्न रागात्मक स्तुति। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5203 : विदेह-सदेह 13 — गंगेश गुंजन — बीच बाट पर खसल लाल गमछा

प्रश्न 51973. ‘बीच बाट पर खसल लाल गमछा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51974. ‘बीच बाट पर खसल लाल गमछा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51975. ‘बीच बाट पर खसल लाल गमछा’कँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51976. ‘बीच बाट पर खसल लाल गमछा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51977. ‘बीच बाट पर खसल लाल गमछा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51978. ‘बीच बाट पर खसल लाल गमछा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51979. ‘बीच बाट पर खसल लाल गमछा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51980. ‘बीच बाट पर खसल लाल गमछा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51981. ‘बीच बाट पर खसल लाल गमछा’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51982. ‘बीच बाट पर खसल लाल गमछा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ राजधानीक सड़क पर उपेक्षाक प्रतीकात्मक कविता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5204 : विदेह-सदेह 13 — ज्योति झा चौधरी — बरखा तू आब कहिया जेबैं

प्रश्न 51983. ‘बरखा तू आब कहिया जेबैं’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51984. ‘बरखा तू आब कहिया जेबैं’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51985. ‘बरखा तू आब कहिया जेबैं’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51986. ‘बरखा तू आब कहिया जेबैं’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51987. ‘बरखा तू आब कहिया जेबैं’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51988. ‘बरखा तू आब कहिया जेबैं’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51989. ‘बरखा तू आब कहिया जेबैं’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 51990. ‘बरखा तू आब कहिया जेबैं’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 51991. ‘बरखा तू आब कहिया जेबैं’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 51992. ‘बरखा तू आब कहिया जेबैं’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अतिवृष्टिक विपदा आ ग्रामीण जीवनक संत्रास। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5205 : विदेह-सदेह 13 — शैलेन्द्र मोहन झा — चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय

प्रश्न 51993. ‘चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 51994. ‘चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 51995. ‘चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 51996. ‘चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 51997. ‘चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 51998. ‘चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 51999. ‘चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52000. ‘चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

खण्ड 5205 : विदेह-सदेह 13 — शैलेन्द्र मोहन झा — चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय

प्रश्न 52001. ‘चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52002. ‘चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ युवा प्रेमक असफल प्रयासक रोचक गीतात्मक कविता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5206 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकुर — पुनः स्मृति

प्रश्न 52003. ‘पुनः स्मृति’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52004. ‘पुनः स्मृति’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52005. ‘पुनः स्मृति’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52006. ‘पुनः स्मृति’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52007. ‘पुनः स्मृति’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52008. ‘पुनः स्मृति’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52009. ‘पुनः स्मृति’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52010. ‘पुनः स्मृति’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52011. ‘पुनः स्मृति’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52012. ‘पुनः स्मृति’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अतीतक अनवरत चक्र; स्मृति-शापक दार्शनिक कविता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5207 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकुर — संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)

प्रश्न 52013. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52014. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52015. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’कैं शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52016. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52017. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52018. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52019. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52020. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52021. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शिक्षाक रूप अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शिक्षाक रूप अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52022. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अशोक-मंत्री संवाद; 'यदि-तर्हि' वाक्य-रचना। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5208 : विदेह-सदेह 13 — लक्ष्मी ठाकुर — मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र

प्रश्न 52023. ‘मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52024. ‘मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52025. ‘मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र’कैं कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52026. ‘मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52027. ‘मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52028. ‘मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52029. ‘मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52030. ‘मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52031. ‘मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र’मे कलाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. कलाक रूप सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कलाक रूप सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52032. ‘मिथिला कला (आगां): विभिन्न भार-चित्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ सिन्दूर-पिठारसँ बनल पारम्परिक भार चित्र। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5209 : विदेह-सदेह 13 — प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' — पंचदेवोपासक भूमि मिथिला

प्रश्न 52033. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52034. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52035. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला’कैँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52036. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52037. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52038. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52039. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52040. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52041. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52042. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलाक शैव-शाक्त-वैष्णव-सौर-गाणपत्य परम्परा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5210 : विदेह-सदेह 13 — रामाश्रय झा 'रामरंग' — रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)

प्रश्न 52043. ‘रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52044. ‘रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52045. ‘रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)’कैं साक्षात्कार रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52046. ‘रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52047. ‘रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52048. ‘रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52049. ‘रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52050. ‘रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52051. ‘रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)’मे साक्षात्कारक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. साक्षात्कारक रूप तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. साक्षात्कारक रूप तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52052. ‘रामरंगजीसँ गप शप (६ जुलाई २००८)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ तीनू मैथिली रागक शास्त्रीय विवरण लिखबाक आग्रह। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5211 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकुर — कौआ आ फुद्दी

प्रश्न 52053. ‘कौआ आ फुद्दी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52054. ‘कौआ आ फुद्दी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52055. ‘कौआ आ फुद्दी’केँ बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52056. ‘कौआ आ फुद्दी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52057. ‘कौआ आ फुद्दी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52058. ‘कौआ आ फुद्दी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52059. ‘कौआ आ फुद्दी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52060. ‘कौआ आ फुद्दी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52061. ‘कौआ आ फुद्दी’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52062. ‘कौआ आ फुद्दी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लोक-कथा; धूर्त फुद्दी आ भोला कौआक रोचक प्रसंग। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5212 : विदेह-सदेह 13 — ज्योति झा चौधरी — देवीजी: विद्यार्थी बनल माली

प्रश्न 52063. ‘देवीजी: विद्यार्थी बनल माली’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52064. ‘देवीजी: विद्यार्थी बनल माली’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52065. ‘देवीजी: विद्यार्थी बनल माली’कैं बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52066. ‘देवीजी: विद्यार्थी बनल माली’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52067. ‘देवीजी: विद्यार्थी बनल माली’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52068. ‘देवीजी: विद्यार्थी बनल माली’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52069. ‘देवीजी: विद्यार्थी बनल माली’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52070. ‘देवीजी: विद्यार्थी बनल माली’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52071. ‘देवीजी: विद्यार्थी बनल माली’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52072. ‘देवीजी: विद्यार्थी बनल माली’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ प्रकृति-प्रेम आ विद्यालयक सौन्दर्यीकरणक कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5213 : विदेह-सदेह 13 — विद्यानन्द झा पञ्जीकार — पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि

प्रश्न 52073. ‘पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52074. ‘पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52075. ‘पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52076. ‘पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52077. ‘पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52078. ‘पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52079. ‘पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52080. ‘पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52081. ‘पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52082. ‘पञ्जी प्रबंध: द्वितीय छठि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं वृद्ध-पितामहक श्वसुर-पक्षसँ छठि-गणनाक विस्तृत उदाहरण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5214 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकुर — याज्ञवल्क्य

प्रश्न 52083. ‘याज्ञवल्क्य’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52084. ‘याज्ञवल्क्य’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52085. ‘याज्ञवल्क्य’केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52086. ‘याज्ञवल्क्य’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52087. ‘याज्ञवल्क्य’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52088. ‘याज्ञवल्क्य’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52089. ‘याज्ञवल्क्य’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52090. ‘याज्ञवल्क्य’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52091. ‘याज्ञवल्क्य’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52092. ‘याज्ञवल्क्य’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, स्मृतिक दृष्टा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5215 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकुर — रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली

प्रश्न 52093. ‘रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52094. ‘रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52095. ‘रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली’कैं भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52096. ‘रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52097. ‘रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52098. ‘रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52099. ‘रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52100. ‘रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52101. ‘रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली’मे भाषाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52102. ‘रचना लेखन: विद्यापति शब्दावली’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विद्यापतिक पदावलीसँ चुनल प्राचीन शब्द-भण्डार। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5216 : विदेह-सदेह 13 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)

प्रश्न 52103. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52104. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52105. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’कैं भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52106. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52107. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52108. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52109. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52110. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52111. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे भाषाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52112. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5217 : विदेह-सदेह 13 — सम्पादकीय — Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)

प्रश्न 52113. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52114. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52115. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)’कैं ऐतिहासिक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52116. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52117. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52118. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52119. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52120. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52121. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)’मे ऐतिहासिकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. ऐतिहासिकक रूप नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. ऐतिहासिकक रूप नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52122. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (पाल-सेन-कर्णाट काल)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं नान्यदेवक शासन; कर्णाट वंशक उत्थान। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5218 : विदेह-सदेह 14 — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर — विदेह प्रवेशिका (अंक १४)

प्रश्न 52123. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52124. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52125. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १४)’कैं सम्पादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52126. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52127. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52128. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १४)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52129. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52130. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52131. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १४)’मे सम्पादकीयक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. सम्पादकीयक रूप नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम। कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. सम्पादकीयक रूप नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम। कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52132. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ नाटक प्रिन्ट प्रकाशन; मैलोरंग-मिथिलांगन कार्यक्रम। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5219 : विदेह-सदेह 14 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)

प्रश्न 52133. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52134. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52135. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)’कैं नाटक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52136. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52137. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52138. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52139. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52140. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52141. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)’मे नाटकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. नाटकक रूप दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. नाटकक रूप दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52142. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल पहिल खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं दरबज्जाक पाछाँक रहस्य; स्वप्न-भ्रमक मोहभंग। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5220 : विदेह-सदेह 14 — सुभाष चन्द्र यादव — कनियाँ-पुतरा

प्रश्न 52143. ‘कनियाँ-पुतरा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52144. ‘कनियाँ-पुतरा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52145. ‘कनियाँ-पुतरा’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52146. ‘कनियाँ-पुतरा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52147. ‘कनियाँ-पुतरा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52148. ‘कनियाँ-पुतरा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52149. ‘कनियाँ-पुतरा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52150. ‘कनियाँ-पुतरा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52151. ‘कनियाँ-पुतरा’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52152. ‘कनियाँ-पुतरा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं ट्रेन-यात्रामे एकटा असहाय बालिकाक मार्मिक कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5221 : विदेह-सदेह 14 — पालन झा — सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)

प्रश्न 52153. ‘सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52154. ‘सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52155. ‘सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)’कैं शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52156. ‘सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52157. ‘सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52158. ‘सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52159. ‘सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52160. ‘सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52161. ‘सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52162. ‘सन्त साहेब रामदास (जीवनी आ काव्य-मूल्यांकन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ पुत्र-वियोगी सन्तक वैराग्य; भक्तिक पदावली। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5222 : विदेह-सदेह 14 — मैथिलीपुत्र प्रदीप — ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष

प्रश्न 52163. ‘ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52164. ‘ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52165. ‘ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष’कैं आध्यात्मिक निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52166. ‘ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52167. ‘ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52168. ‘ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52169. ‘ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52170. ‘ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52171. ‘ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष’मे आध्यात्मिक निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. आध्यात्मिक निबन्धक रूप निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. आध्यात्मिक निबन्धक रूप निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52172. ‘ॐ (मा): वैदिक कर्म आ मोक्ष’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं निष्काम कर्मक वैदिक व्याख्या; गीता-उपनिषद। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5223 : विदेह-सदेह 14 — ज्योति झा चौधरी — दैनिकी (तेसर दिन)

प्रश्न 52173. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52174. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52175. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’कँ यात्रा-वृत्तान्त रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52176. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52177. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52178. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52179. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52180. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52181. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’मे यात्रा-वृत्तान्तक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. यात्रा-वृत्तान्तक रूप कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. यात्रा-वृत्तान्तक रूप कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52182. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कोलकाता भ्रमणक सजीव संस्मरण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5224 : विदेह-सदेह 14 — शिव प्रसाद यादव — साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)

प्रश्न 52183. ‘साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52184. ‘साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52185. ‘साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)’कैं साक्षात्कार रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52186. ‘साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52187. ‘साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52188. ‘साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52189. ‘साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52190. ‘साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52191. ‘साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)’मे साक्षात्कारक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. साक्षात्कारक रूप पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. साक्षात्कारक रूप पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52192. ‘साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (पहिल भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं पुरस्कार, पत्रिका-सम्पादन, अभिव्यंजनावाद। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5225 : विदेह-सदेह 14 — मायानन्द मिश्र — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन

प्रश्न 52193. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52194. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52195. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन’कैं शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52196. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52197. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52198. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52199. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52200. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52201. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52202. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सूत्र-स्मृति कालीन मिथिला; कराल जनकक अत्याचार। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5226 : विदेह-सदेह 14 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन

प्रश्न 52203. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52204. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52205. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन’कँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52206. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52207. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52208. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52209. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52210. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52211. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52212. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ): शोभा बाबू आगमन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं जमीन्दारी परिवारक पतन; शोभा बाबूक संघर्ष। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5227 : विदेह-सदेह 14 — रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)

प्रश्न 52213. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52214. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52215. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52216. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52217. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52218. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52219. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52220. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52221. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52222. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन विहाग/महेशवानी)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विपत्ति-निवारण आ शिव-स्तुतिक भक्ति पद्य। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5228 : विदेह-सदेह 14 — गंगेश गुंजन — आयुर्दा

प्रश्न 52223. ‘आयुर्दा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52224. ‘आयुर्दा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52225. ‘आयुर्दा’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52226. ‘आयुर्दा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52227. ‘आयुर्दा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52228. ‘आयुर्दा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52229. ‘आयुर्दा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52230. ‘आयुर्दा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52231. ‘आयुर्दा’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52232. ‘आयुर्दा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अतीत-स्मृति, मृत्यु-दर्शन आ जीवनक नश्वरता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5229 : विदेह-सदेह 14 — ज्योति झा चौधरी — मिथिलाक विस्तार

प्रश्न 52233. ‘मिथिलाक विस्तार’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52234. ‘मिथिलाक विस्तार’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52235. ‘मिथिलाक विस्तार’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52236. ‘मिथिलाक विस्तार’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52237. ‘मिथिलाक विस्तार’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52238. ‘मिथिलाक विस्तार’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52239. ‘मिथिलाक विस्तार’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52240. ‘मिथिलाक विस्तार’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52241. ‘मिथिलाक विस्तार’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52242. ‘मिथिलाक विस्तार’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ सांस्कृतिक विरासतक संरक्षणक आह्वान। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5230 : विदेह-सदेह 14 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)

प्रश्न 52243. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52244. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52245. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)’कैँ पद्य-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52246. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52247. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52248. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52249. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52250. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52251. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)’मे पद्य-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्य-कथाक रूप भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्य-कथाक रूप भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52252. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (प्रथम-दसम दिन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं भीष्म-अर्जुन युद्ध; शिखण्डीक सामने शर-शय्या। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5231 : विदेह-सदेह 14 — आद्याचरण झा / गजेन्द्र ठाकुर — भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा

प्रश्न 52253. ‘भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52254. ‘भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52255. ‘भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा’कैं शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52256. ‘भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52257. ‘भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52258. ‘भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52259. ‘भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52260. ‘भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52261. ‘भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा’मे शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शिक्षाक रूप अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शिक्षाक रूप अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52262. ‘भगवत्याः सीतायाः संरक्षको जनकः / संस्कृत-मैथिली शिक्षा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अष्टावक्र-जनक संवाद; 'यथा-तथा' वाक्य रचना। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5232 : विदेह-सदेह 14 — तूलिका — मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन

प्रश्न 52263. ‘मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52264. ‘मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52265. ‘मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन’कें कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52266. ‘मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52267. ‘मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52268. ‘मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52269. ‘मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52270. ‘मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52271. ‘मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन’मे कलाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. कलाक रूप तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कलाक रूप तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52272. ‘मिथिला कला: देवोत्थान एकादशी अरिपन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला अरिपनक सचित्र विधान। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5233 : विदेह-सदेह 14 — प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' — पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य

प्रश्न 52273. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52274. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52275. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य’कैँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52276. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52277. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52278. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52279. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52280. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52281. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52282. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: शिव-विष्णु-सूर्य’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं अर्धनारीश्वर, हरिहर; वराह-नरसिंह अवतार। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5234 : विदेह-सदेह 14 — नूतन झा — रक्षाबन्धन

प्रश्न 52283. ‘रक्षाबन्धन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52284. ‘रक्षाबन्धन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52285. ‘रक्षाबन्धन’कैं निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52286. ‘रक्षाबन्धन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52287. ‘रक्षाबन्धन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52288. ‘रक्षाबन्धन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52289. ‘रक्षाबन्धन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52290. ‘रक्षाबन्धन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52291. ‘रक्षाबन्धन’मे निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. निबन्धक रूप रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. निबन्धक रूप रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52292. ‘रक्षाबन्धन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं रक्षाबन्धनक पौराणिक कथा आ मिथिलाक मौलिक स्वरूप। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5235 : विदेह-सदेह 14 — रामाश्रय झा 'रामरंग' — राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)

प्रश्न 52293. ‘राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52294. ‘राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52295. ‘राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)’केँ संगीत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52296. ‘राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52297. ‘राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52298. ‘राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52299. ‘राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52300. ‘राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52301. ‘राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)’मे संगीतक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. संगीतक रूप गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संगीतक रूप गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52302. ‘राग विद्यापति कल्याण (एकताल विलम्बित)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ गणेश-विद्यापति स्तुति पर मैथिली खयालक स्वरलिपि। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5236 : विदेह-सदेह 14 — गजेन्द्र ठाकुर — नैका बनिजारा

प्रश्न 52303. ‘नैका बनिजारा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52304. ‘नैका बनिजारा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52305. ‘नैका बनिजारा’कैँ बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52306. ‘नैका बनिजारा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52307. ‘नैका बनिजारा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52308. ‘नैका बनिजारा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52309. ‘नैका बनिजारा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52310. ‘नैका बनिजारा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52311. ‘नैका बनिजारा’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52312. ‘नैका बनिजारा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मैथिल लोक-गाथा; शोभा-बारीक प्रेम आ यात्रा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5237 : विदेह-सदेह 14 — ज्योति झा चौधरी — देवीजी: गरीबक सहायता

प्रश्न 52313. ‘देवीजी: गरीबक सहायता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52314. ‘देवीजी: गरीबक सहायता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52315. ‘देवीजी: गरीबक सहायता’कैं बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52316. ‘देवीजी: गरीबक सहायता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52317. ‘देवीजी: गरीबक सहायता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52318. ‘देवीजी: गरीबक सहायता’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52319. ‘देवीजी: गरीबक सहायता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52320. ‘देवीजी: गरीबक सहायता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52321. ‘देवीजी: गरीबक सहायता’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52322. ‘देवीजी: गरीबक सहायता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ समाजक कमजोर वर्ग प्रति सहानुभूति जगाबैत कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5238 : विदेह-सदेह 14 — विद्यानन्द झा पञ्जीकार — पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि

प्रश्न 52323. ‘पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52324. ‘पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52325. ‘पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52326. ‘पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52327. ‘पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52328. ‘पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52329. ‘पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52330. ‘पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52331. ‘पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52332. ‘पञ्जी प्रबंध: तृतीय छठि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रपितामहक श्वसुर पक्षसँ छठि-गणना। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5239 : विदेह-सदेह 14 — गजेन्द्र ठाकुर — श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)

प्रश्न 52333. ‘श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52334. ‘श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52335. ‘श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52336. ‘श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52337. ‘श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52338. ‘श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52339. ‘श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52340. ‘श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52341. ‘श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52342. ‘श्रीकर (प्रथम मैथिल निबन्धकार)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कल्पतरु ग्रन्थ; निर्धनक अधिकारक सिद्धान्त। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5240 : विदेह-सदेह 14 — गजेन्द्र ठाकुर — रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली

प्रश्न 52343. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52344. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52345. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली’कैं भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52346. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52347. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52348. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52349. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52350. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52351. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली’मे भाषाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52352. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं चौदहम शताब्दीक मैथिली गद्य-शब्दावली। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5241 : विदेह-सदेह 14 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)

प्रश्न 52353. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52354. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52355. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’कें भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52356. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52357. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52358. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52359. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52360. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52361. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे भाषाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52362. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मानक मैथिली कोष (करबाइए सँ साहेब)। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5242 : विदेह-सदेह 14 — सम्पादकीय — Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)

प्रश्न 52363. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52364. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52365. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)’कैं ऐतिहासिक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52366. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52367. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52368. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)'क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52369. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52370. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52371. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)'मे ऐतिहासिकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. ऐतिहासिकक रूप नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. ऐतिहासिकक रूप नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52372. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (कर्णाट-ओइनवार काल)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं नान्यदेवक मिथिला-शासन; ओइनवार वंश। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5243 : विदेह-सदेह 14 — ज्योति झा चौधरी — The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)

प्रश्न 52373. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52374. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52375. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)'कैं अनुवाद रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52376. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52377. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52378. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)'क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52379. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52380. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52381. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)’मे अनुवादक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. अनुवादक रूप मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण। कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. अनुवादक रूप मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण। कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52382. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद प्रथम किस्त)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ मिथिला-उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5244 : विदेह-सदेह 14 — सम्पादकीय — Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)

प्रश्न 52383. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52384. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52385. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)'कें सूची रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52386. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52387. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52388. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)'क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52389. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52390. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52391. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)’मे सूचीक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?
क. सूचीक रूप मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची। कें स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. सूचीक रूप मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची। कें स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52392. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण तिथि-कैलेंडर)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकें मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकें मैथिल पंचांगीय पाबनि-तिहारक तिथि-सूची। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5245 : विदेह-सदेह 15 — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर — विदेह प्रवेशिका (अंक १५)

प्रश्न 52393. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52394. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52395. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’कें सम्पादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52396. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52397. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52398. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52399. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52400. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52401. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’मे सम्पादकीयक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. सम्पादकीयक रूप कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. सम्पादकीयक रूप कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52402. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5246 : विदेह-सदेह 15 — जितेन्द्र झा — नेपाल वन आ मधेश स्पेशल

प्रश्न 52403. ‘नेपाल वन आ मधेश स्पेशल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52404. ‘नेपाल वन आ मधेश स्पेशल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52405. ‘नेपाल वन आ मधेश स्पेशल’कैं रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52406. ‘नेपाल वन आ मधेश स्पेशल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52407. ‘नेपाल वन आ मधेश स्पेशल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52408. ‘नेपाल वन आ मधेश स्पेशल’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52409. ‘नेपाल वन आ मधेश स्पेशल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52410. ‘नेपाल वन आ मधेश स्पेशल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52411. ‘नेपाल वन आ मधेश स्पेशल’मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. रिपोर्ताजक रूप नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रिपोर्ताजक रूप नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52412. ‘नेपाल वन आ मधेश स्पेशल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5247 : विदेह-सदेह 15 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)

प्रश्न 52413. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52414. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52415. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)’केँ नाटक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52416. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52417. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52418. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52419. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52420. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52421. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)’मे नाटकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. नाटकक रूप यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. नाटकक रूप यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52422. ‘नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5248 : विदेह-सदेह 15 — भालचन्द्र झा — चूल्हि

प्रश्न 52423. ‘चूल्हि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52424. ‘चूल्हि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52425. ‘चूल्हि’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52426. ‘चूल्हि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52427. ‘चूल्हि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52428. ‘चूल्हि’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52429. ‘चूल्हि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52430. ‘चूल्हि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52431. ‘चूल्हि’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52432. ‘चूल्हि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5249 : विदेह-सदेह 15 — विभा रानी — माउगि

प्रश्न 52433. ‘माउगि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52434. ‘माउगि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52435. ‘माउगि’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52436. ‘माउगि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52437. ‘माउगि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52438. ‘माउगि’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52439. ‘माउगि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52440. ‘माउगि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52441. ‘माउगि’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52442. ‘माउगि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5250 : विदेह-सदेह 15 — मैथिलीपुत्र प्रदीप — ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त

प्रश्न 52443. ‘ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52444. ‘ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52445. ‘ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त’केँ आध्यात्मिक निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52446. ‘ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52447. ‘ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52448. ‘ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52449. ‘ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52450. ‘ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52451. ‘ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त’मे आध्यात्मिक निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. आध्यात्मिक निबन्धक रूप नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. आध्यात्मिक निबन्धक रूप नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52452. ‘ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋगवेदक सृष्टि-सूक्त। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5251 : विदेह-सदेह 15 — पालन झा — सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)

प्रश्न 52453. ‘सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52454. ‘सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52455. ‘सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)’कैं जीवनी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52456. ‘सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52457. ‘सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52458. ‘सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52459. ‘सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52460. ‘सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52461. ‘सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)’मे जीवनीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. जीवनीक रूप प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. जीवनीक रूप प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52462. ‘सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5252 : विदेह-सदेह 15 — ज्योति झा चौधरी — दैनिकी (दोसर दिन)

प्रश्न 52463. ‘दैनिकी (दोसर दिन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52464. ‘दैनिकी (दोसर दिन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52465. ‘दैनिकी (दोसर दिन)’कैं यात्रा-वृत्तान्त रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52466. ‘दैनिकी (दोसर दिन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52467. ‘दैनिकी (दोसर दिन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52468. ‘दैनिकी (दोसर दिन)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52469. ‘दैनिकी (दोसर दिन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52470. ‘दैनिकी (दोसर दिन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52471. ‘दैनिकी (दोसर दिन)’मे यात्रा-वृत्तान्तक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. यात्रा-वृत्तान्तक रूप कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. यात्रा-वृत्तान्तक रूप कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52472. ‘दैनिकी (दोसर दिन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5253 : विदेह-सदेह 15 — प्रेम शंकर सिंह — बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)

प्रश्न 52473. ‘बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52474. ‘बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52475. ‘बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)’कें साहित्येतिहास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52476. ‘बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52477. ‘बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52478. ‘बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52479. ‘बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52480. ‘बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52481. ‘बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)’मे साहित्येतिहासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. साहित्येतिहासक रूप शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. साहित्येतिहासक रूप शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52482. ‘बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5254 : विदेह-सदेह 15 — शिव प्रसाद यादव — मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)

प्रश्न 52483. ‘मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52484. ‘मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52485. ‘मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)’कैं साक्षात्कार रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52486. ‘मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52487. ‘मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52488. ‘मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52489. ‘मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52490. ‘मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52491. ‘मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)’मे साक्षात्कारक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. साक्षात्कारक रूप मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. साक्षात्कारक रूप मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52492. ‘मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5255 : विदेह-सदेह 15 — मायानन्द मिश्र — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)

प्रश्न 52493. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52494. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52495. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)’कैं शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52496. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52497. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52498. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52499. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52500. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52501. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। कें स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। कें स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52502. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकें उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकें उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5256 : विदेह-सदेह 15 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (आगाँ)

प्रश्न 52503. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52504. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52505. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’केँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52506. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52507. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52508. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52509. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52510. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52511. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52512. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5257 : विदेह-सदेह 15 — रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)

प्रश्न 52513. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52514. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52515. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52516. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52517. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52518. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52519. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52520. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52521. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52522. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5258 : विदेह-सदेह 15 — गंगेश गुंजन — भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू

प्रश्न 52523. ‘भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52524. ‘भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52525. ‘भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52526. ‘भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52527. ‘भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52528. ‘भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52529. ‘भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52530. ‘भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52531. ‘भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52532. ‘भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5259 : विदेह-सदेह 15 — ज्योति झा चौधरी — ईशक अराधना

प्रश्न 52533. ‘ईशक अराधना’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52534. ‘ईशक अराधना’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52535. ‘ईशक अराधना’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52536. ‘ईशक अराधना’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52537. ‘ईशक अराधना’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52538. ‘ईशक अराधना’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52539. ‘ईशक अराधना’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52540. ‘ईशक अराधना’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52541. ‘ईशक अराधना’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52542. ‘ईशक अराधना’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5260 : विदेह-सदेह 15 — प्रकाश झा — हमर मिथिलाक दर्शन

प्रश्न 52543. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52544. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52545. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52546. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52547. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52548. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52549. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52550. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52551. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52552. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5261 : विदेह-सदेह 15 — जितमोहन झा — मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)

प्रश्न 52553. ‘मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52554. ‘मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52555. ‘मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52556. ‘मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52557. ‘मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52558. ‘मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52559. ‘मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52560. ‘मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52561. ‘मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52562. ‘मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5262 : विदेह-सदेह 15 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व

प्रश्न 52563. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52564. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52565. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52566. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52567. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52568. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52569. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52570. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52571. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52572. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5263 : विदेह-सदेह 15 — गजेन्द्र ठाकुर — संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)

प्रश्न 52573. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52574. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52575. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’कैं शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52576. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52577. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52578. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52579. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52580. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52581. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शिक्षाक रूप 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शिक्षाक रूप 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52582. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5264 : विदेह-सदेह 15 — तूलिका — मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)

प्रश्न 52583. ‘मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52584. ‘मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52585. ‘मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)’कैं कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52586. ‘मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52587. ‘मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52588. ‘मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52589. ‘मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52590. ‘मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52591. ‘मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)’मे कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कलाक रूप विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कलाक रूप विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52592. ‘मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5265 : विदेह-सदेह 15 — प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' — पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव

प्रश्न 52593. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52594. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52595. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव’कैं शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52596. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52597. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52598. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52599. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52600. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52601. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52602. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5266 : विदेह-सदेह 15 — गजेन्द्र ठाकुर — मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)

प्रश्न 52603. ‘मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52604. ‘मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52605. ‘मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)’कैं निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52606. ‘मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52607. ‘मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52608. ‘मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52609. ‘मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52610. ‘मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52611. ‘मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)’मे निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. निबन्धक रूप मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. निबन्धक रूप मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52612. ‘मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5267 : विदेह-सदेह 16 — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर — विदेह प्रवेशिका (अंक १६)

प्रश्न 52613. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52614. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52615. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’कैं सम्पादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52616. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52617. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52618. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52619. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52620. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52621. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’मे सम्पादकीयक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. सम्पादकीयक रूप गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. सम्पादकीयक रूप गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52622. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5268 : विदेह-सदेह 16 — जितेन्द्र झा — जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार

प्रश्न 52623. ‘जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52624. ‘जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52625. ‘जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार’केँ रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52626. ‘जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52627. ‘जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52628. ‘जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52629. ‘जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52630. ‘जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52631. ‘जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार’मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रिपोर्ताजक रूप भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रिपोर्ताजक रूप भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52632. ‘जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5269 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति प्रकाश लाल — आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व

प्रश्न 52633. ‘आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52634. ‘आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52635. ‘आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व’कैं निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52636. ‘आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52637. ‘आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52638. ‘आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52639. ‘आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52640. ‘आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52641. ‘आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व’मे निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. निबन्धक रूप कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. निबन्धक रूप कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52642. ‘आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5270 : विदेह-सदेह 16 — सुशांत झा — की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

प्रश्न 52643. ‘की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52644. ‘की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52645. ‘की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?’कैँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52646. ‘की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52647. ‘की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52648. ‘की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52649. ‘की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52650. ‘की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52651. ‘की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52652. ‘की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5271 : विदेह-सदेह 16 — प्रेमशंकर सिंह — बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)

प्रश्न 52653. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52654. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52655. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)’केँ साहित्येतिहास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52656. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52657. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52658. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52659. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52660. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52661. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)’मे साहित्येतिहासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. साहित्येतिहासक रूप हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. साहित्येतिहासक रूप हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52662. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5272 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (आगाँ)

प्रश्न 52663. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52664. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52665. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52666. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52667. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52668. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52669. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52670. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52671. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. उपन्यासक रूप नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. उपन्यासक रूप नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52672. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5273 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति झा चौधरी — दैनिकी (तेसर दिन)

प्रश्न 52673. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52674. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52675. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’कैं यात्रा-वृत्तान्त रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52676. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52677. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52678. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52679. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52680. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52681. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’मे यात्रा-वृत्तान्तक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. यात्रा-वृत्तान्तक रूप बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. यात्रा-वृत्तान्तक रूप बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52682. ‘दैनिकी (तेसर दिन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5274 : विदेह-सदेह 16 — सम्पादकीय — हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)

प्रश्न 52683. ‘हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52684. ‘हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52685. ‘हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)’कें शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52686. ‘हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52687. ‘हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52688. ‘हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52689. ‘हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52690. ‘हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52691. ‘हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52692. ‘हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5275 : विदेह-सदेह 16 — जितमोहन झा — थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)

प्रश्न 52693. ‘थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52694. ‘थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52695. ‘थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)’कैं सामाजिक लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52696. ‘थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52697. ‘थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52698. ‘थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52699. ‘थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52700. ‘थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52701. ‘थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)’मे सामाजिक लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. सामाजिक लेखक रूप बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. सामाजिक लेखक रूप बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52702. ‘थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5276 : विदेह-सदेह 16 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)

प्रश्न 52703. ‘अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52704. ‘अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52705. ‘अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52706. ‘अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52707. ‘अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52708. ‘अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52709. ‘अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52710. ‘अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52711. ‘अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52712. ‘अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5277 : विदेह-सदेह 16 — विनीत उत्पल — ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)

प्रश्न 52713. ‘ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52714. ‘ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52715. ‘ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)’कँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52716. ‘ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52717. ‘ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52718. ‘ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52719. ‘ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52720. ‘ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52721. ‘ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52722. ‘ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5278 : विदेह-सदेह 16 — रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)

प्रश्न 52723. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52724. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52725. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52726. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52727. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52728. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52729. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52730. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52731. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52732. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5279 : विदेह-सदेह 16 — गंगेश गुंजन — राधा (दोसर खेप)

प्रश्न 52733. ‘राधा (दोसर खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52734. ‘राधा (दोसर खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52735. ‘राधा (दोसर खेप)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52736. ‘राधा (दोसर खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52737. ‘राधा (दोसर खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52738. ‘राधा (दोसर खेप)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52739. ‘राधा (दोसर खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52740. ‘राधा (दोसर खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52741. ‘राधा (दोसर खेप)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52742. ‘राधा (दोसर खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5280 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति झा चौधरी — खरहाक भोज

प्रश्न 52743. ‘खरहाक भोज’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52744. ‘खरहाक भोज’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52745. ‘खरहाक भोज’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52746. ‘खरहाक भोज’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52747. ‘खरहाक भोज’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52748. ‘खरहाक भोज’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52749. ‘खरहाक भोज’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52750. ‘खरहाक भोज’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52751. ‘खरहाक भोज’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52752. ‘खरहाक भोज’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5281 : विदेह-सदेह 16 — प्रकाश झा — हमर मिथिलाक दर्शन

प्रश्न 52753. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52754. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52755. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52756. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52757. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52758. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52759. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52760. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52761. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52762. ‘हमर मिथिलाक दर्शन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5282 : विदेह-सदेह 16 — शैलेन्द्र मोहन झा — सपना

प्रश्न 52763. ‘सपना’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52764. ‘सपना’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52765. ‘सपना’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52766. ‘सपना’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52767. ‘सपना’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52768. ‘सपना’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52769. ‘सपना’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52770. ‘सपना’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52771. ‘सपना’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52772. ‘सपना’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5283 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व

प्रश्न 52773. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52774. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52775. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व’केँ पद्य-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52776. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52777. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52778. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52779. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52780. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52781. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व’मे पद्य-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्य-कथाक रूप भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्य-कथाक रूप भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52782. ‘महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5284 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)

प्रश्न 52783. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52784. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52785. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’कैं शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52786. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52787. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52788. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52789. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52790. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52791. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शिक्षाक रूप आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शिक्षाक रूप आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52792. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5285 : विदेह-सदेह 16 — तूलिका — मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन

प्रश्न 52793. ‘मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52794. ‘मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52795. ‘मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन’कैं कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52796. ‘मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52797. ‘मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52798. ‘मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52799. ‘मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52800. ‘मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52801. ‘मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन’मे कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कलाक रूप तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कलाक रूप तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52802. ‘मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5286 : विदेह-सदेह 16 — प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' — पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती

प्रश्न 52803. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52804. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52805. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती’केँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52806. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52807. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52808. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52809. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52810. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52811. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52812. ‘पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5287 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर / नूतन झा — कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या

प्रश्न 52813. ‘कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52814. ‘कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52815. ‘कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या’कैं निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52816. ‘कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52817. ‘कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52818. ‘कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52819. ‘कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52820. ‘कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52821. ‘कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या’मे निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. निबन्धक रूप व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. निबन्धक रूप व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52822. ‘कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5288 : विदेह-सदेह 16 — रामाश्रय झा 'रामरंग' — राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)

प्रश्न 52823. ‘राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52824. ‘राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52825. ‘राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)’कैँ संगीत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52826. ‘राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52827. ‘राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52828. ‘राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52829. ‘राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52830. ‘राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52831. ‘राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)’मे संगीतक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संगीतक रूप शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संगीतक रूप शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52832. ‘राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5289 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — रघुनी मरर

प्रश्न 52833. ‘रघुनी मरर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52834. ‘रघुनी मरर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52835. ‘रघुनी मरर’कैं बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52836. ‘रघुनी मरर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52837. ‘रघुनी मरर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52838. ‘रघुनी मरर’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52839. ‘रघुनी मरर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52840. ‘रघुनी मरर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52841. ‘रघुनी मरर’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52842. ‘रघुनी मरर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5290 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति झा चौधरी — देवीजी: व्यायाम आवश्यक

प्रश्न 52843. ‘देवीजी: व्यायाम आवश्यक’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52844. ‘देवीजी: व्यायाम आवश्यक’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52845. ‘देवीजी: व्यायाम आवश्यक’कैँ बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52846. ‘देवीजी: व्यायाम आवश्यक’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52847. ‘देवीजी: व्यायाम आवश्यक’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52848. ‘देवीजी: व्यायाम आवश्यक’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52849. ‘देवीजी: व्यायाम आवश्यक’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52850. ‘देवीजी: व्यायाम आवश्यक’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52851. ‘देवीजी: व्यायाम आवश्यक’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52852. ‘देवीजी: व्यायाम आवश्यक’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5291 : विदेह-सदेह 16 — विद्यानन्द झा पञ्जीकार — पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि

प्रश्न 52853. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52854. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52855. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52856. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52857. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52858. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52859. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52860. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52861. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52862. ‘पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5292 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)

प्रश्न 52863. ‘लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52864. ‘लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52865. ‘लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)’केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52866. ‘लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52867. ‘लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52868. ‘लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52869. ‘लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52870. ‘लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52871. ‘लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52872. ‘लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5293 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)

प्रश्न 52873. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52874. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52875. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)’कैं भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52876. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52877. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52878. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52879. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52880. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52881. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)’मे भाषाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52882. ‘रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5294 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)

प्रश्न 52883. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52884. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52885. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’कैँ भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52886. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52887. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52888. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52889. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52890. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52891. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे भाषाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52892. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5295 : विदेह-सदेह 16 — सम्पादकीय — Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)

प्रश्न 52893. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52894. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52895. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'कैं ऐतिहासिक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52896. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52897. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52898. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52899. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52900. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52901. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'मे ऐतिहासिकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. ऐतिहासिकक रूप तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. ऐतिहासिकक रूप तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52902. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5296 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति झा चौधरी — The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)

प्रश्न 52903. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52904. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52905. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)'कैं अनुवाद रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52906. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52907. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52908. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52909. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52910. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52911. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)’मे अनुवादक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. अनुवादक रूप नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. अनुवादक रूप नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52912. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5297 : विदेह-सदेह 16 — सम्पादकीय — Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)

प्रश्न 52913. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52914. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52915. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)’कैँ सूची रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52916. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52917. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52918. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52919. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52920. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52921. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)’मे सूचीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. सूचीक रूप मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. सूचीक रूप मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52922. ‘Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5298 : विदेह-सदेह 16 — अजय ठाकुर — Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)

प्रश्न 52923. ‘Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52924. ‘Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52925. ‘Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)’कें ऐतिहासिक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52926. ‘Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52927. ‘Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52928. ‘Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52929. ‘Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52930. ‘Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52931. ‘Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)’मे ऐतिहासिकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. ऐतिहासिकक रूप परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. ऐतिहासिकक रूप परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52932. ‘Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5299 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति झा चौधरी — The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)

प्रश्न 52933. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52934. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52935. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)’कैं अनुवाद रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52936. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52937. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52938. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52939. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52940. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52941. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)’मे अनुवादक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. अनुवादक रूप नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. अनुवादक रूप नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52942. ‘The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5300 : विदेह-सदेह 17 — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर — विदेह प्रवेशिका (अंक १७)

प्रश्न 52943. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52944. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52945. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’कैं सम्पादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52946. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52947. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52948. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52949. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52950. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52951. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’मे सम्पादकीयक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. सम्पादकीयक रूप कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. सम्पादकीयक रूप कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52952. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5301 : विदेह-सदेह 17 — जितेन्द्र झा — मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)

प्रश्न 52953. ‘मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52954. ‘मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52955. ‘मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)’केँ रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52956. ‘मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52957. ‘मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52958. ‘मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52959. ‘मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52960. ‘मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52961. ‘मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)’मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रिपोर्ताजक रूप नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रिपोर्ताजक रूप नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52962. ‘मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5302 : विदेह-सदेह 17 — ज्योति झा चौधरी — ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम

प्रश्न 52963. ‘ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52964. ‘ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52965. ‘ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम’कैं रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52966. ‘ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52967. ‘ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52968. ‘ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52969. ‘ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52970. ‘ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52971. ‘ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम’मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रिपोर्ताजक रूप लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रिपोर्ताजक रूप लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52972. ‘ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5303 : विदेह-सदेह 17 — शम्भू कुमार सिंह — दूभि

प्रश्न 52973. ‘दूभि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52974. ‘दूभि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52975. ‘दूभि’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52976. ‘दूभि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52977. ‘दूभि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52978. ‘दूभि’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52979. ‘दूभि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52980. ‘दूभि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52981. ‘दूभि’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52982. ‘दूभि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5304 : विदेह-सदेह 17 — अनलकांत — तर्पण

प्रश्न 52983. ‘तर्पण’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52984. ‘तर्पण’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52985. ‘तर्पण’केँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52986. ‘तर्पण’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52987. ‘तर्पण’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52988. ‘तर्पण’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52989. ‘तर्पण’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 52990. ‘तर्पण’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 52991. ‘तर्पण’मे कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. कथाक रूप पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कथाक रूप पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 52992. ‘तर्पण’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5305 : विदेह-सदेह 17 — श्याम सुन्दर 'शशि' — मरदे कि बरदे

प्रश्न 52993. ‘मरदे कि बरदे’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 52994. ‘मरदे कि बरदे’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 52995. ‘मरदे कि बरदे’कैँ लघुकथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 52996. ‘मरदे कि बरदे’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 52997. ‘मरदे कि बरदे’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 52998. ‘मरदे कि बरदे’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 52999. ‘मरदे कि बरदे’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53000. ‘मरदे कि बरदे’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53001. ‘मरदे कि बरदे’मे लघुकथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. लघुकथाक रूप प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. लघुकथाक रूप प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53002. ‘मरदे कि बरदे’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5306 : विदेह-सदेह 17 — कुमार मनोज कश्यप — थाकल बाट

प्रश्न 53003. ‘थाकल बाट’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53004. ‘थाकल बाट’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53005. ‘थाकल बाट’कैं लघुकथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53006. ‘थाकल बाट’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53007. ‘थाकल बाट’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53008. ‘थाकल बाट’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53009. ‘थाकल बाट’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53010. ‘थाकल बाट’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53011. ‘थाकल बाट’मे लघुकथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. लघुकथाक रूप रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. लघुकथाक रूप रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53012. ‘थाकल बाट’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ रिश्वतखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5307 : विदेह-सदेह 17 — प्रेमशंकर सिंह — बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)

प्रश्न 53013. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53014. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53015. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)’केँ साहित्येतिहास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53016. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53017. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53018. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53019. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53020. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53021. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)’मे साहित्येतिहासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. साहित्येतिहासक रूप निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. साहित्येतिहासक रूप निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53022. ‘बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5308 : विदेह-सदेह 17 — कैलाश कुमार मिश्र — यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)

प्रश्न 53023. ‘यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53024. ‘यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53025. ‘यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)’कैं यात्रा-वृत्तान्त रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53026. ‘यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53027. ‘यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53028. ‘यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53029. ‘यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53030. ‘यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53031. ‘यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)’मे यात्रा-वृत्तान्तक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. यात्रा-वृत्तान्तक रूप असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. यात्रा-वृत्तान्तक रूप असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53032. ‘यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5309 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (आगाँ)

प्रश्न 53033. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53034. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53035. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53036. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53037. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53038. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53039. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53040. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53041. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. उपन्यासक रूप तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. उपन्यासक रूप तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53042. ‘सहस्रबाढ़नि (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5310 : विदेह-सदेह 17 — ज्योति झा चौधरी — दैनिकी (चारिम दिन)

प्रश्न 53043. ‘दैनिकी (चारिम दिन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53044. ‘दैनिकी (चारिम दिन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53045. ‘दैनिकी (चारिम दिन)’केँ यात्रा-वृत्तान्त रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53046. ‘दैनिकी (चारिम दिन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53047. ‘दैनिकी (चारिम दिन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53048. ‘दैनिकी (चारिम दिन)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53049. ‘दैनिकी (चारिम दिन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53050. ‘दैनिकी (चारिम दिन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53051. ‘दैनिकी (चारिम दिन)’मे यात्रा-वृत्तान्तक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. यात्रा-वृत्तान्तक रूप बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. यात्रा-वृत्तान्तक रूप बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53052. ‘दैनिकी (चारिम दिन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डेन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5311 : विदेह-सदेह 17 — सम्पादकीय — हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)

प्रश्न 53053. ‘हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53054. ‘हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53055. ‘हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)’कैँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53056. ‘हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53057. ‘हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53058. ‘हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53059. ‘हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53060. ‘हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53061. ‘हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53062. ‘हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5312 : विदेह-सदेह 17 — जितमोहन झा — कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार

प्रश्न 53063. ‘कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53064. ‘कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53065. ‘कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार’कैं सामाजिक लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53066. ‘कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53067. ‘कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53068. ‘कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53069. ‘कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53070. ‘कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53071. ‘कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार’मे सामाजिक लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. सामाजिक लेखक रूप लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. सामाजिक लेखक रूप लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53072. ‘कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5313 : विदेह-सदेह 17 — सुशांत झा — बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?

प्रश्न 53073. ‘बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53074. ‘बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53075. ‘बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?’केँ कोसी गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53076. ‘बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53077. ‘बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53078. ‘बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53079. ‘बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53080. ‘बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53081. ‘बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?’मे कोसी गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. कोसी गद्यक रूप बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कोसी गद्यक रूप बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53082. ‘बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5314 : विदेह-सदेह 17 — बी.के. कर्ण — संकट गुणक आ मैथिल

प्रश्न 53083. ‘संकट गुणक आ मैथिल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53084. ‘संकट गुणक आ मैथिल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53085. ‘संकट गुणक आ मैथिल’कैँ कोसी गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53086. ‘संकट गुणक आ मैथिल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53087. ‘संकट गुणक आ मैथिल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53088. ‘संकट गुणक आ मैथिल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53089. ‘संकट गुणक आ मैथिल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53090. ‘संकट गुणक आ मैथिल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53091. ‘संकट गुणक आ मैथिल’मे कोसी गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कोसी गद्यक रूप मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कोसी गद्यक रूप मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53092. ‘संकट गुणक आ मैथिल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5315 : विदेह-सदेह 17 — शक्ति शेखर — कखन बदलब हम

प्रश्न 53093. ‘कखन बदलब हम’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53094. ‘कखन बदलब हम’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53095. ‘कखन बदलब हम’कैं कोसी गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53096. ‘कखन बदलब हम’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53097. ‘कखन बदलब हम’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53098. ‘कखन बदलब हम’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53099. ‘कखन बदलब हम’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53100. ‘कखन बदलब हम’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53101. ‘कखन बदलब हम’मे कोसी गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. कोसी गद्यक रूप बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कोसी गद्यक रूप बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53102. ‘कखन बदलब हम’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5316 : विदेह-सदेह 17 — ओमप्रकाश झा — मिथिले तक नहि छथि मैथिल

प्रश्न 53103. ‘मिथिले तक नहि छथि मैथिल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53104. ‘मिथिले तक नहि छथि मैथिल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53105. ‘मिथिले तक नहि छथि मैथिल’केँ कोसी गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53106. ‘मिथिले तक नहि छथि मैथिल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53107. ‘मिथिले तक नहि छथि मैथिल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53108. ‘मिथिले तक नहि छथि मैथिल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53109. ‘मिथिले तक नहि छथि मैथिल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53110. ‘मिथिले तक नहि छथि मैथिल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53111. ‘मिथिले तक नहि छथि मैथिल’मे कोसी गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कोसी गद्यक रूप गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कोसी गद्यक रूप गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53112. ‘मिथिले तक नहि छथि मैथिल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5317 : विदेह-सदेह 17 — मित्रनाथ झा — विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन

प्रश्न 53113. ‘विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53114. ‘विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53115. ‘विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53116. ‘विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53117. ‘विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53118. ‘विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53119. ‘विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53120. ‘विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53121. ‘विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53122. ‘विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5318 : विदेह-सदेह 17 — शम्भू कुमार सिंह — आह्वान

प्रश्न 53123. ‘आह्वान’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53124. ‘आह्वान’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53125. ‘आह्वान’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53126. ‘आह्वान’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53127. ‘आह्वान’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53128. ‘आह्वान’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53129. ‘आह्वान’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53130. ‘आह्वान’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53131. ‘आह्वान’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53132. ‘आह्वान’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5319 : विदेह-सदेह 17 — विनीत उत्पल — अंगप्रदेश / परीक्षा

प्रश्न 53133. ‘अंगप्रदेश / परीक्षा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53134. ‘अंगप्रदेश / परीक्षा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53135. ‘अंगप्रदेश / परीक्षा’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53136. ‘अंगप्रदेश / परीक्षा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53137. ‘अंगप्रदेश / परीक्षा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53138. ‘अंगप्रदेश / परीक्षा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53139. ‘अंगप्रदेश / परीक्षा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53140. ‘अंगप्रदेश / परीक्षा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53141. ‘अंगप्रदेश / परीक्षा’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53142. ‘अंगप्रदेश / परीक्षा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5320 : विदेह-सदेह 17 — रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)

प्रश्न 53143. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53144. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53145. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53146. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53147. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53148. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53149. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53150. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53151. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53152. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5321 : विदेह-सदेह 17 — गंगेश गुंजन — राधा (दोसर खेप आगाँ)

प्रश्न 53153. ‘राधा (दोसर खेप आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53154. ‘राधा (दोसर खेप आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53155. ‘राधा (दोसर खेप आगाँ)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53156. ‘राधा (दोसर खेप आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53157. ‘राधा (दोसर खेप आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53158. ‘राधा (दोसर खेप आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53159. ‘राधा (दोसर खेप आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53160. ‘राधा (दोसर खेप आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53161. ‘राधा (दोसर खेप आगाँ)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53162. ‘राधा (दोसर खेप आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5322 : विदेह-सदेह 17 — बैकुण्ठ झा — दुनियॉं

प्रश्न 53163. ‘दुनियॉं’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53164. ‘दुनियॉं’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53165. ‘दुनियॉं’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53166. ‘दुनियॉं’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53167. ‘दुनियॉं’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53168. ‘दुनियॉं’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53169. ‘दुनियॉं’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53170. ‘दुनियॉं’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53171. ‘दुनियाँ’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53172. ‘दुनियाँ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5323 : विदेह-सदेह 17 — ज्योति झा चौधरी — कल्पनालोक

प्रश्न 53173. ‘कल्पनालोक’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53174. ‘कल्पनालोक’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53175. ‘कल्पनालोक’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53176. ‘कल्पनालोक’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53177. ‘कल्पनालोक’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53178. ‘कल्पनालोक’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53179. ‘कल्पनालोक’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53180. ‘कल्पनालोक’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53181. ‘कल्पनालोक’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53182. ‘कल्पनालोक’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5324 : विदेह-सदेह 17 — प्रकाश झा — हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक

प्रश्न 53183. ‘हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53184. ‘हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53185. ‘हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53186. ‘हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53187. ‘हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53188. ‘हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53189. ‘हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53190. ‘हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53191. ‘हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53192. ‘हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5325 : विदेह-सदेह 17 — जितमोहन झा — मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)

प्रश्न 53193. ‘मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53194. ‘मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53195. ‘मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53196. ‘मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53197. ‘मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53198. ‘मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53199. ‘मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53200. ‘मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53201. ‘मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53202. ‘मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5326 : विदेह-सदेह 17 — शैलेन्द्र मोहन झा — हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे

प्रश्न 53203. ‘हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53204. ‘हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53205. ‘हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53206. ‘हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53207. ‘हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53208. ‘हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53209. ‘हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53210. ‘हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53211. ‘हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53212. ‘हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहैं गे’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5327 : विदेह-सदेह 17 — लोक-संकलित — कोसी लोकगीत (तीन गोट)

प्रश्न 53213. ‘कोसी लोकगीत (तीन गोट)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53214. ‘कोसी लोकगीत (तीन गोट)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53215. ‘कोसी लोकगीत (तीन गोट)’कैं लोकगीत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53216. ‘कोसी लोकगीत (तीन गोट)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53217. ‘कोसी लोकगीत (तीन गोट)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53218. ‘कोसी लोकगीत (तीन गोट)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53219. ‘कोसी लोकगीत (तीन गोट)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53220. ‘कोसी लोकगीत (तीन गोट)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53221. ‘कोसी लोकगीत (तीन गोट)’मे लोकगीतक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. लोकगीतक रूप कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. लोकगीतक रूप कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53222. ‘कोसी लोकगीत (तीन गोट)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5328 : विदेह-सदेह 17 — रामकृष्ण झा 'किसुन' — कोशीक बाढ़ि

प्रश्न 53223. ‘कोशीक बाढ़ि’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53224. ‘कोशीक बाढ़ि’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53225. ‘कोशीक बाढ़ि’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53226. ‘कोशीक बाढ़ि’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53227. ‘कोशीक बाढ़ि’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53228. ‘कोशीक बाढ़ि’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53229. ‘कोशीक बाढ़ि’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53230. ‘कोशीक बाढ़ि’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53231. ‘कोशीक बाढ़ि’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53232. ‘कोशीक बाढ़ि’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5329 : विदेह-सदेह 17 — विनीत उत्पल — गाम (डूबि गेल)

प्रश्न 53233. ‘गाम (डूबि गेल)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53234. ‘गाम (डूबि गेल)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53235. ‘गाम (डूबि गेल)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53236. ‘गाम (डूबि गेल)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53237. ‘गाम (डूबि गेल)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53238. ‘गाम (डूबि गेल)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53239. ‘गाम (डूबि गेल)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53240. ‘गाम (डूबि गेल)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53241. ‘गाम (डूबि गेल)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53242. ‘गाम (डूबि गेल)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5330 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)

प्रश्न 53243. ‘महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53244. ‘महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53245. ‘महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)’कैं पद्य-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53246. ‘महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53247. ‘महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53248. ‘महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53249. ‘महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53250. ‘महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53251. ‘महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)’मे पद्य-कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्य-कथाक रूप दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्य-कथाक रूप दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53252. ‘महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5331 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — बुद्ध चरित (प्रारम्भ)

प्रश्न 53253. ‘बुद्ध चरित (प्रारम्भ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53254. ‘बुद्ध चरित (प्रारम्भ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53255. ‘बुद्ध चरित (प्रारम्भ)’केँ पद्य-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53256. ‘बुद्ध चरित (प्रारम्भ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53257. ‘बुद्ध चरित (प्रारम्भ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53258. ‘बुद्ध चरित (प्रारम्भ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53259. ‘बुद्ध चरित (प्रारम्भ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53260. ‘बुद्ध चरित (प्रारम्भ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53261. ‘बुद्ध चरित (प्रारम्भ)’मे पद्य-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्य-कथाक रूप इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्य-कथाक रूप इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53262. ‘बुद्ध चरित (प्रारम्भ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5332 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)

प्रश्न 53263. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53264. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53265. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’कैं शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53266. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53267. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53268. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53269. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53270. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53271. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’मे शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. शिक्षाक रूप न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. शिक्षाक रूप न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53272. ‘संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5333 : विदेह-सदेह 17 — तूलिका — मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)

प्रश्न 53273. ‘मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53274. ‘मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53275. ‘मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)’कैं कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53276. ‘मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53277. ‘मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53278. ‘मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53279. ‘मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53280. ‘मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53281. ‘मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)’मे कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कलाक रूप विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कलाक रूप विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53282. ‘मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5334 : विदेह-सदेह 17 — रामाश्रय झा 'रामरंग' — श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)

प्रश्न 53283. ‘श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53284. ‘श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53285. ‘श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)’कें संगीत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53286. ‘श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53287. ‘श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53288. ‘श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53289. ‘श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53290. ‘श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53291. ‘श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)’मे संगीतक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. संगीतक रूप मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संगीतक रूप मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53292. ‘श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5335 : विदेह-सदेह 17 — प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' — मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)

प्रश्न 53293. ‘मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53294. ‘मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53295. ‘मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)’कैँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53296. ‘मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53297. ‘मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53298. ‘मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53299. ‘मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53300. ‘मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53301. ‘मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)’मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-निबन्धक रूप तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-निबन्धक रूप तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53302. ‘मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5336 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर / नूतन झा — हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी

प्रश्न 53303. ‘हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53304. ‘हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53305. ‘हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी’कैं निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53306. ‘हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53307. ‘हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53308. ‘हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53309. ‘हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53310. ‘हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53311. ‘हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी’मे निबन्धक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. निबन्धक रूप तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. निबन्धक रूप तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53312. ‘हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5337 : विदेह-सदेह 17 — जितमोहन झा — महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या

प्रश्न 53313. ‘महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53314. ‘महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53315. ‘महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या’कँ सामाजिक लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53316. ‘महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53317. ‘महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53318. ‘महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53319. ‘महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53320. ‘महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53321. ‘महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या’मे सामाजिक लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. सामाजिक लेखक रूप हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. सामाजिक लेखक रूप हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53322. ‘महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5338 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — जट-जटिन

प्रश्न 53323. ‘जट-जटिन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53324. ‘जट-जटिन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53325. ‘जट-जटिन’कैँ बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53326. ‘जट-जटिन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53327. ‘जट-जटिन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53328. ‘जट-जटिन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53329. ‘जट-जटिन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53330. ‘जट-जटिन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53331. ‘जट-जटिन’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53332. ‘जट-जटिन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5339 : विदेह-सदेह 17 — ज्योति झा चौधरी — देवीजी: शिक्षक दिवस

प्रश्न 53333. ‘देवीजी: शिक्षक दिवस’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53334. ‘देवीजी: शिक्षक दिवस’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53335. ‘देवीजी: शिक्षक दिवस’कैं बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53336. ‘देवीजी: शिक्षक दिवस’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53337. ‘देवीजी: शिक्षक दिवस’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53338. ‘देवीजी: शिक्षक दिवस’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53339. ‘देवीजी: शिक्षक दिवस’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53340. ‘देवीजी: शिक्षक दिवस’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53341. ‘देवीजी: शिक्षक दिवस’मे बाल-कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बाल-कथाक रूप गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बाल-कथाक रूप गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53342. ‘देवीजी: शिक्षक दिवस’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5340 : विदेह-सदेह 17 — विद्यानन्द झा पञ्जीकार — पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता

प्रश्न 53343. ‘पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53344. ‘पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53345. ‘पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53346. ‘पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53347. ‘पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53348. ‘पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53349. ‘पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53350. ‘पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53351. ‘पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शोध-लेखक रूप गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शोध-लेखक रूप गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53352. ‘पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5341 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)

प्रश्न 53353. ‘लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53354. ‘लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53355. ‘लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53356. ‘लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53357. ‘लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53358. ‘लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53359. ‘लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53360. ‘लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53361. ‘लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. शोध-लेखक रूप राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. शोध-लेखक रूप राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53362. ‘लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5342 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली

प्रश्न 53363. ‘रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53364. ‘रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53365. ‘रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली’कैं भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53366. ‘रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53367. ‘रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53368. ‘रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53369. ‘रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53370. ‘रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53371. ‘रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली’मे भाषाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53372. ‘रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5343 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)

प्रश्न 53373. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53374. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53375. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’कें भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53376. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53377. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53378. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53379. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53380. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53381. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’मे भाषाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53382. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5344 : विदेह-सदेह 17 — सम्पादकीय — Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)

प्रश्न 53383. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53384. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53385. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)’कैं ऐतिहासिक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53386. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53387. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53388. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53389. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53390. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53391. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)’मे ऐतिहासिकक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. ऐतिहासिकक रूप शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. ऐतिहासिकक रूप शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53392. ‘Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5345 : विदेह-सदेह 17 — ज्योति झा चौधरी — The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day

प्रश्न 53393. ‘The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53394. ‘The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53395. ‘The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day’कैं अनुवाद/कविता रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53396. ‘The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53397. ‘The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53398. ‘The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53399. ‘The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53400. ‘The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53401. ‘The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day’मे अनुवाद/कविताक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. अनुवाद/कविताक रूप बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. अनुवाद/कविताक रूप बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53402. ‘The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5346 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)

प्रश्न 53403. ‘Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53404. ‘Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53405. ‘Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)’कैं शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53406. ‘Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53407. ‘Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53408. ‘Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53409. ‘Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53410. ‘Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53411. ‘Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)’मे शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शिक्षाक रूप संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शिक्षाक रूप संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53412. ‘Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5347 : विदेह-सदेह 18 — गजेन्द्र ठाकुर — संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)

प्रश्न 53413. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53414. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53415. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’कैं संपादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53416. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53417. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53418. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53419. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53420. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53421. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’मे संपादकीयक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संपादकीयक रूप कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संपादकीयक रूप कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53422. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5348 : विदेह-सदेह 18 — श्याम सुन्दर शशि — कतारसँ

प्रश्न 53423. ‘कतारसँ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53424. ‘कतारसँ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53425. ‘कतारसँ’कैं रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53426. ‘कतारसँ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53427. ‘कतारसँ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53428. ‘कतारसँ’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53429. ‘कतारसँ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारितक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53430. ‘कतारसँ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53431. ‘कतारसँ’मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. रिपोर्ताजक रूप कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रिपोर्ताजक रूप कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53432. ‘कतारसँ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5349 : विदेह-सदेह 18 — जितेन्द्र झा — कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद

प्रश्न 53433. ‘कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53434. ‘कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53435. ‘कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद’केँ रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53436. ‘कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53437. ‘कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53438. ‘कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53439. ‘कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्टक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53440. ‘कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्टक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्टक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53441. ‘कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद’मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रिपोर्ताजक रूप दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रिपोर्ताजक रूप दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53442. ‘कोशी सन बेदर्दी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5350 : विदेह-सदेह 18 — नवेन्दु कुमार झा — पटनासँ

प्रश्न 53443. ‘पटनासँ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53444. ‘पटनासँ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53445. ‘पटनासँ’कैं रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53446. ‘पटनासँ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53447. ‘पटनासँ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53448. ‘पटनासँ’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53449. ‘पटनासँ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53450. ‘पटनासँ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53451. ‘पटनासँ’मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रिपोर्ताजक रूप बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रिपोर्ताजक रूप बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53452. ‘पटनासँ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5351 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. गंगेश गुंजन — गुंजनजीक विचार-टिप्पणी

प्रश्न 53453. ‘गुंजनजीक विचार-टिप्पणी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53454. ‘गुंजनजीक विचार-टिप्पणी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53455. ‘गुंजनजीक विचार-टिप्पणी’कैँ रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53456. ‘गुंजनजीक विचार-टिप्पणी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53457. ‘गुंजनजीक विचार-टिप्पणी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53458. ‘गुंजनजीक विचार-टिप्पणी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53459. ‘गुंजनजीक विचार-टिप्पणी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53460. ‘गुंजनजीक विचार-टिप्पणी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53461. ‘गुंजनजीक विचार-टिप्पणी’मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रिपोर्ताजक रूप मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रिपोर्ताजक रूप मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53462. ‘गुंजनजीक विचार-टिप्पणी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5352 : विदेह-सदेह 18 — बी.के. कर्ण — बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन

प्रश्न 53463. ‘बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53464. ‘बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53465. ‘बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन’केँ रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53466. ‘बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53467. ‘बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53468. ‘बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53469. ‘बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53470. ‘बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53471. ‘बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन’मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. रिपोर्ताजक रूप मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रिपोर्ताजक रूप मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53472. ‘बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5353 : विदेह-सदेह 18 — शम्भू कुमार सिंह — जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)

प्रश्न 53473. ‘जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53474. ‘जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53475. ‘जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53476. ‘जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53477. ‘जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53478. ‘जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53479. ‘जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53480. ‘जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53481. ‘जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53482. ‘जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5354 : विदेह-सदेह 18 — कुमार मनोज कश्यप — हारल मनुक्ख (लघु-कथा)

प्रश्न 53483. ‘हारल मनुक्ख (लघु-कथा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53484. ‘हारल मनुक्ख (लघु-कथा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53485. ‘हारल मनुक्ख (लघु-कथा)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53486. ‘हारल मनुक्ख (लघु-कथा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53487. ‘हारल मनुक्ख (लघु-कथा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53488. ‘हारल मनुक्ख (लघु-कथा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53489. ‘हारल मनुक्ख (लघु-कथा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53490. ‘हारल मनुक्ख (लघु-कथा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53491. ‘हारल मनुक्ख (लघु-कथा)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53492. ‘हारल मनुक्ख (लघु-कथा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5355 : विदेह-सदेह 18 — प्रो. प्रेमशंकर सिंह / गजेन्द्र ठाकुर — पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश

प्रश्न 53493. ‘पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53494. ‘पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53495. ‘पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53496. ‘पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53497. ‘पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53498. ‘पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53499. ‘पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53500. ‘पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53501. ‘पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53502. ‘पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5356 : विदेह-सदेह 18 — कमलानन्द झा / देवशंकर नवीन — उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)

प्रश्न 53503. ‘उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53504. ‘उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53505. ‘उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53506. ‘उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53507. ‘उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53508. ‘उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53509. ‘उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53510. ‘उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53511. ‘उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. गद्यक रूप देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. गद्यक रूप देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53512. ‘उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5357 : विदेह-सदेह 18 — देवशंकर नवीन — शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी

प्रश्न 53513. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53514. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53515. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53516. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53517. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53518. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53519. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोधक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53520. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53521. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53522. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5358 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — यायावरी

प्रश्न 53523. ‘यायावरी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53524. ‘यायावरी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53525. ‘यायावरी’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53526. ‘यायावरी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53527. ‘यायावरी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53528. ‘यायावरी’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53529. ‘यायावरी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53530. ‘यायावरी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53531. ‘यायावरी’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53532. ‘यायावरी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5359 : विदेह-सदेह 18 — स्व. राजकमल चौधरी — कोसी गद्य: अपराजिता

प्रश्न 53533. ‘कोसी गद्य: अपराजिता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53534. ‘कोसी गद्य: अपराजिता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53535. ‘कोसी गद्य: अपराजिता’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53536. ‘कोसी गद्य: अपराजिता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53537. ‘कोसी गद्य: अपराजिता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53538. ‘कोसी गद्य: अपराजिता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53539. ‘कोसी गद्य: अपराजिता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53540. ‘कोसी गद्य: अपराजिता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53541. ‘कोसी गद्य: अपराजिता’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53542. ‘कोसी गद्य: अपराजिता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5360 : विदेह-सदेह 18 — रामभरोस कापड़ि "भ्रमर" — कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध

प्रश्न 53543. ‘कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53544. ‘कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53545. ‘कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53546. ‘कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53547. ‘कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53548. ‘कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53549. ‘कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53550. ‘कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53551. ‘कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53552. ‘कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5361 : विदेह-सदेह 18 — स्व. रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी

प्रश्न 53553. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53554. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53555. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53556. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53557. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53558. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53559. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)क आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53560. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53561. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53562. ‘विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5362 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. गंगेश गुंजन — बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)

प्रश्न 53563. ‘बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53564. ‘बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53565. ‘बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53566. ‘बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53567. ‘बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53568. ‘बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53569. ‘बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजलक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53570. ‘बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजलक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजलक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53571. ‘बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)’मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल केँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल केँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53572. ‘बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5363 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. गंगेश गुंजन — राधा (चारिम खेप)

प्रश्न 53573. ‘राधा (चारिम खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53574. ‘राधा (चारिम खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53575. ‘राधा (चारिम खेप)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53576. ‘राधा (चारिम खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53577. ‘राधा (चारिम खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53578. ‘राधा (चारिम खेप)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53579. ‘राधा (चारिम खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्तिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53580. ‘राधा (चारिम खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53581. ‘राधा (चारिम खेप)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53582. ‘राधा (चारिम खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5364 : विदेह-सदेह 18 — ज्योति झा चौधरी — कोसीक प्रकोप

प्रश्न 53583. ‘कोसीक प्रकोप’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53584. ‘कोसीक प्रकोप’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53585. ‘कोसीक प्रकोप’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53586. ‘कोसीक प्रकोप’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53587. ‘कोसीक प्रकोप’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53588. ‘कोसीक प्रकोप’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53589. ‘कोसीक प्रकोप’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53590. ‘कोसीक प्रकोप’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53591. ‘कोसीक प्रकोप’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53592. ‘कोसीक प्रकोप’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5365 : विदेह-सदेह 18 — गजेन्द्र ठाकुर — बुद्ध चरित (प्रथम खेप)

प्रश्न 53593. ‘बुद्ध चरित (प्रथम खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53594. ‘बुद्ध चरित (प्रथम खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53595. ‘बुद्ध चरित (प्रथम खेप)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53596. ‘बुद्ध चरित (प्रथम खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53597. ‘बुद्ध चरित (प्रथम खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53598. ‘बुद्ध चरित (प्रथम खेप)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53599. ‘बुद्ध चरित (प्रथम खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंशक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53600. ‘बुद्ध चरित (प्रथम खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंशक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंशक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53601. ‘बुद्ध चरित (प्रथम खेप)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53602. ‘बुद्ध चरित (प्रथम खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5366 : विदेह-सदेह 18 — विनीत उत्पल — पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल

प्रश्न 53603. ‘पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53604. ‘पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53605. ‘पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53606. ‘पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53607. ‘पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53608. ‘पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53609. ‘पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53610. ‘पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53611. ‘पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53612. ‘पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5367 : विदेह-सदेह 18 — अंकुर झा — सरकारी योजना

प्रश्न 53613. ‘सरकारी योजना’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53614. ‘सरकारी योजना’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53615. ‘सरकारी योजना’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53616. ‘सरकारी योजना’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53617. ‘सरकारी योजना’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53618. ‘सरकारी योजना’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53619. ‘सरकारी योजना’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53620. ‘सरकारी योजना’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53621. ‘सरकारी योजना’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53622. ‘सरकारी योजना’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5368 : विदेह-सदेह 18 — ज्योति झा चौधरी / नूतन झा — मिथिला कला/ दुर्गा पूजा

प्रश्न 53623. ‘मिथिला कला/ दुर्गा पूजा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53624. ‘मिथिला कला/ दुर्गा पूजा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53625. ‘मिथिला कला/ दुर्गा पूजा’कैं कला/संस्कृति रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53626. ‘मिथिला कला/ दुर्गा पूजा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53627. ‘मिथिला कला/ दुर्गा पूजा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53628. ‘मिथिला कला/ दुर्गा पूजा’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53629. ‘मिथिला कला/ दुर्गा पूजा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53630. ‘मिथिला कला/ दुर्गा पूजा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53631. ‘मिथिला कला/ दुर्गा पूजा’मे कला/संस्कृतिक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. कला/संस्कृतिक रूप ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. कला/संस्कृतिक रूप ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53632. ‘मिथिला कला/ दुर्गा पूजा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5369 : विदेह-सदेह 18 — नूतन झा — शरत्पूर्णिमा/कोजगरा

प्रश्न 53633. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53634. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53635. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’कैं संस्कृति रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53636. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53637. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53638. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53639. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53640. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53641. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’मे संस्कृतिक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृतिक रूप मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृतिक रूप मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53642. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5370 : विदेह-सदेह 18 — जितमोहन झा — नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?

प्रश्न 53643. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53644. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53645. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’कँ महिला-स्तंभ रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53646. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53647. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53648. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53649. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53650. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53651. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’मे महिला-स्तंभक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. महिला-स्तंभक रूप समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महिला-स्तंभक रूप समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53652. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5371 : विदेह-सदेह 18 — गजेन्द्र ठाकुर — भाट-भाटिन/ बत्तू

प्रश्न 53653. ‘भाट-भाटिन/ बत्तू’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सचित्र बाल-कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सचित्र बाल-कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं सचित्र बाल-कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53654. ‘भाट-भाटिन/ बत्तू’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सचित्र बाल-कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सचित्र बाल-कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53655. ‘भाट-भाटिन/ बत्तू’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सचित्र बाल-कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सचित्र बाल-कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सचित्र बाल-कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53656. ‘भाट-भाटिन/ बत्तू’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सचित्र बाल-कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सचित्र बाल-कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53657. ‘भाट-भाटिन/ बत्तू’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. सचित्र बाल-कथा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. सचित्र बाल-कथा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सचित्र बाल-कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53658. ‘भाट-भाटिन/ बत्तू’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. सचित्र बाल-कथा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53659. ‘भाट-भाटिन/ बत्तू’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. सचित्र बाल-कथा

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. सचित्र बाल-कथा

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सचित्र बाल-कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53660. ‘भाट-भाटिन/ बत्तू’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. सचित्र बाल-कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. सचित्र बाल-कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53661. ‘भाट-भाटिन/ बत्तू’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. बालानां कृतेक रूप सचित्र बाल-कथा कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप सचित्र बाल-कथा कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53662. ‘भाट-भाटिन/ बत्तू’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं सचित्र बाल-कथा धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं सचित्र बाल-कथा धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5372 : विदेह-सदेह 18 — ज्योति झा चौधरी — देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक

प्रश्न 53663. ‘देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53664. ‘देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53665. ‘देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53666. ‘देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53667. ‘देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53668. ‘देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53669. ‘देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53670. ‘देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53671. ‘देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53672. ‘देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5373 : विदेह-सदेह 18 — - (सम्पादकीय) — मैथिलीक मानक लेखन-शैली

प्रश्न 53673. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53674. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53675. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’केँ भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53676. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53677. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53678. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53679. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53680. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53681. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’मे भाषाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. भाषाक रूप मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. भाषाक रूप मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53682. ‘मैथिलीक मानक लेखन-शैली’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5374 : विदेह-सदेह 18 — - (सम्पादकीय) — Marriage dates / Festivals of Mithila

प्रश्न 53683. ‘Marriage dates / Festivals of Mithila’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53684. ‘Marriage dates / Festivals of Mithila’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53685. ‘Marriage dates / Festivals of Mithila’कैँ सूची रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53686. ‘Marriage dates / Festivals of Mithila’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53687. ‘Marriage dates / Festivals of Mithila’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53688. ‘Marriage dates / Festivals of Mithila’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53689. ‘Marriage dates / Festivals of Mithila’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूचीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53690. ‘Marriage dates / Festivals of Mithila’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूचीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूचीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53691. ‘Marriage dates / Festivals of Mithila’मे सूचीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. सूचीक रूप वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. सूचीक रूप वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53692. ‘Marriage dates / Festivals of Mithila’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5375 : विदेह-सदेह 18 — ज्योति झा चौधरी — SahasraBarhani: The Comet (भाग १)

प्रश्न 53693. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53694. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53695. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग १)’कैं अंग्रेजी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53696. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53697. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53698. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53699. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवादक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53700. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53701. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग १)’मे अंग्रेजीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजीक रूप गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजीक रूप गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53702. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5376 : विदेह-सदेह 18 — - (सम्पादकीय) — VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT

प्रश्न 53703. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53704. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53705. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT’कें अंग्रेजी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53706. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53707. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53708. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53709. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53710. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53711. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT’मे अंग्रेजीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजीक रूप मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजीक रूप मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53712. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5377 : विदेह-सदेह 18 — गजेन्द्र ठाकुर — VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR

प्रश्न 53713. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53714. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53715. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’कैं शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53716. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53717. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53718. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53719. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53720. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53721. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’मे शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. शिक्षाक रूप अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. शिक्षाक रूप अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53722. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5378 : विदेह-सदेह 19 — गजेन्द्र ठाकुर — संपादकीय

प्रश्न 53723. ‘संपादकीय’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53724. ‘संपादकीय’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53725. ‘संपादकीय’कैँ संपादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53726. ‘संपादकीय’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53727. ‘संपादकीय’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53728. ‘संपादकीय’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53729. ‘संपादकीय’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचयक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53730. ‘संपादकीय’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53731. ‘संपादकीय’मे संपादकीयक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संपादकीयक रूप पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संपादकीयक रूप पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53732. ‘संपादकीय’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं पत्रिकाक नव अंकक सूचना आ एहि अंकक विषय-परिचय धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5379 : विदेह-सदेह 19 — सुभाष साह — लन्दनमे नेपाल मेला २००८

प्रश्न 53733. ‘लन्दनमे नेपाल मेला २००८’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53734. ‘लन्दनमे नेपाल मेला २००८’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53735. ‘लन्दनमे नेपाल मेला २००८’केँ रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53736. ‘लन्दनमे नेपाल मेला २००८’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53737. ‘लन्दनमे नेपाल मेला २००८’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53738. ‘लन्दनमे नेपाल मेला २००८’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53739. ‘लन्दनमे नेपाल मेला २००८’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहितक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53740. ‘लन्दनमे नेपाल मेला २००८’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53741. ‘लन्दनमे नेपाल मेला २००८’मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. रिपोर्ताजक रूप लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. रिपोर्ताजक रूप लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53742. ‘लन्दनमे नेपाल मेला २००८’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लन्दनमे आयोजित नेपाल मेलाक रिपोर्ट, फोटो सहित धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5380 : विदेह-सदेह 19 — सुभाषचन्द्र यादव — बनैत बिगड़ैत (कथा)

प्रश्न 53743. ‘बनैत बिगड़ैत (कथा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53744. ‘बनैत बिगड़ैत (कथा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53745. ‘बनैत बिगड़ैत (कथा)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53746. ‘बनैत बिगड़ैत (कथा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53747. ‘बनैत बिगड़ैत (कथा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53748. ‘बनैत बिगड़ैत (कथा)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53749. ‘बनैत बिगड़ैत (कथा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53750. ‘बनैत बिगड़ैत (कथा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53751. ‘बनैत बिगड़ैत (कथा)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53752. ‘बनैत बिगड़ैत (कथा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं एकटा बुढ़िया मालाक अपन संतानक प्रति व्याकुलताक मार्मिक कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5381 : विदेह-सदेह 19 — कुमार मनोज कश्यप — भावना (लघु-कथा)

प्रश्न 53753. ‘भावना (लघु-कथा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53754. ‘भावना (लघु-कथा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53755. ‘भावना (लघु-कथा)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53756. ‘भावना (लघु-कथा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53757. ‘भावना (लघु-कथा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53758. ‘भावना (लघु-कथा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53759. ‘भावना (लघु-कथा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53760. ‘भावना (लघु-कथा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53761. ‘भावना (लघु-कथा)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53762. ‘भावना (लघु-कथा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मानवीय संवेदना आ स्टेटस सिम्बलक द्वन्द्व पर लघुकथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5382 : विदेह-सदेह 19 — शक्ति शेखर — जोगार (निबन्ध)

प्रश्न 53763. ‘जोगार (निबन्ध)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53764. ‘जोगार (निबन्ध)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53765. ‘जोगार (निबन्ध)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53766. ‘जोगार (निबन्ध)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53767. ‘जोगार (निबन्ध)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53768. ‘जोगार (निबन्ध)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53769. ‘जोगार (निबन्ध)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53770. ‘जोगार (निबन्ध)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53771. ‘जोगार (निबन्ध)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53772. ‘जोगार (निबन्ध)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं पत्रकारिता क्षेत्रमे नौकरी प्राप्ति हेतु 'सिफारिश' पर व्यंग्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5383 : विदेह-सदेह 19 — ओमप्रकाश झा — मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)

प्रश्न 53773. ‘मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53774. ‘मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53775. ‘मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53776. ‘मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53777. ‘मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53778. ‘मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53779. ‘मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53780. ‘मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53781. ‘मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53782. ‘मीडिया कतअ ल जा रहल अछि? (निबन्ध)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मीडियाक दोहरा चरित्र आ पतनशील मूल्यांकन पर आलेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5384 : विदेह-सदेह 19 — प्रो. प्रेमशंकर सिंह — जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)

प्रश्न 53783. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53784. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53785. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53786. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53787. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53788. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53789. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53790. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53791. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53792. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक जनक पर शोध लेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5385 : विदेह-सदेह 19 — डॉ. देवशंकर नवीन — शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)

प्रश्न 53793. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53794. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53795. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53796. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53797. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53798. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53799. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचनाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53800. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53801. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53802. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ राजकमल चौधरीक उपन्यास 'आन्दोलन' केर विस्तृत विवेचना धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5386 : विदेह-सदेह 19 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)

प्रश्न 53803. ‘यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53804. ‘यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53805. ‘यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53806. ‘यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53807. ‘यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53808. ‘यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53809. ‘यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53810. ‘यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53811. ‘यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53812. ‘यायावरी: लोअर दिवांग घाटी (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसारक यात्रा-वर्णन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5387 : विदेह-सदेह 19 — ज्योति झा चौधरी — दैनिकी (सातम दिन)

प्रश्न 53813. ‘दैनिकी (सातम दिन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53814. ‘दैनिकी (सातम दिन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53815. ‘दैनिकी (सातम दिन)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53816. ‘दैनिकी (सातम दिन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53817. ‘दैनिकी (सातम दिन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53818. ‘दैनिकी (सातम दिन)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53819. ‘दैनिकी (सातम दिन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53820. ‘दैनिकी (सातम दिन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53821. ‘दैनिकी (सातम दिन)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53822. ‘दैनिकी (सातम दिन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं शिक्षामूलक यात्राक समापनक व्यक्तिगत संस्मरण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5388 : विदेह-सदेह 19 — गजेन्द्र ठाकुर — उनटा आँचर (उपन्यास)

प्रश्न 53823. ‘उनटा आँचर (उपन्यास)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53824. ‘उनटा आँचर (उपन्यास)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53825. ‘उनटा आँचर (उपन्यास)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53826. ‘उनटा आँचर (उपन्यास)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53827. ‘उनटा आँचर (उपन्यास)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53828. ‘उनटा आँचर (उपन्यास)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53829. ‘उनटा आँचर (उपन्यास)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53830. ‘उनटा आँचर (उपन्यास)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53831. ‘उनटा आँचर (उपन्यास)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53832. ‘उनटा आँचर (उपन्यास)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं विधवा ‘कनियाँ काकी’ केर सामाजिक-आर्थिक संघर्षक कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5389 : विदेह-सदेह 19 — श्यामल सुमन — आत्म-दर्शन

प्रश्न 53833. ‘आत्म-दर्शन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53834. ‘आत्म-दर्शन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53835. ‘आत्म-दर्शन’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53836. ‘आत्म-दर्शन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53837. ‘आत्म-दर्शन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53838. ‘आत्म-दर्शन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53839. ‘आत्म-दर्शन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53840. ‘आत्म-दर्शन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53841. ‘आत्म-दर्शन’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. पद्यक रूप मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. पद्यक रूप मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53842. ‘आत्म-दर्शन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं मैथिल समाजक आत्मावलोकन आ एकताक आह्वान करैत कविता धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5390 : विदेह-सदेह 19 — डॉ. गंगेश गुंजन — राधा (चारिम खेप, आगाँ)

प्रश्न 53843. ‘राधा (चारिम खेप, आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53844. ‘राधा (चारिम खेप, आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53845. ‘राधा (चारिम खेप, आगाँ)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53846. ‘राधा (चारिम खेप, आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53847. ‘राधा (चारिम खेप, आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53848. ‘राधा (चारिम खेप, आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53849. ‘राधा (चारिम खेप, आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्तिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53850. ‘राधा (चारिम खेप, आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53851. ‘राधा (चारिम खेप, आगाँ)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53852. ‘राधा (चारिम खेप, आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं राधाक श्रीकृष्ण प्रति अनुराग आ विरह वेदनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5391 : विदेह-सदेह 19 — ज्योति झा चौधरी — असल राज

प्रश्न 53853. ‘असल राज’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53854. ‘असल राज’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53855. ‘असल राज’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53856. ‘असल राज’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53857. ‘असल राज’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53858. ‘असल राज’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53859. ‘असल राज’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53860. ‘असल राज’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53861. ‘असल राज’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53862. ‘असल राज’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लन्दनक भागमभाग जीवनमे आत्मनिर्भरताक महत्व पर कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5392 : विदेह-सदेह 19 — गजेन्द्र ठाकुर — बुद्ध चरित (दोसर खेप)

प्रश्न 53863. ‘बुद्ध चरित (दोसर खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53864. ‘बुद्ध चरित (दोसर खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53865. ‘बुद्ध चरित (दोसर खेप)’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53866. ‘बुद्ध चरित (दोसर खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53867. ‘बुद्ध चरित (दोसर खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53868. ‘बुद्ध चरित (दोसर खेप)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53869. ‘बुद्ध चरित (दोसर खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53870. ‘बुद्ध चरित (दोसर खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53871. ‘बुद्ध चरित (दोसर खेप)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53872. ‘बुद्ध चरित (दोसर खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं महाकाव्य; सिद्धार्थक नामकरण आ बाल्यकालक वर्णन धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5393 : विदेह-सदेह 19 — विनीत उत्पल — समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक

प्रश्न 53873. ‘समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53874. ‘समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53875. ‘समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53876. ‘समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53877. ‘समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53878. ‘समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53879. ‘समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53880. ‘समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53881. ‘समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53882. ‘समर्पण / इतिहासक लिखल / आतंक’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नर्तकीक समर्पण, इतिहास-दर्शन आ घृणाक मनोविज्ञान पर कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5394 : विदेह-सदेह 19 — महेश मिश्र "विभूति" — पन्थीसँ

प्रश्न 53883. ‘पन्थीसँ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53884. ‘पन्थीसँ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53885. ‘पन्थीसँ’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53886. ‘पन्थीसँ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53887. ‘पन्थीसँ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53888. ‘पन्थीसँ’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53889. ‘पन्थीसँ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53890. ‘पन्थीसँ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53891. ‘पन्थीसँ’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53892. ‘पन्थीसँ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं जीवन-पथिक हेतु प्रेरणादायी कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5395 : विदेह-सदेह 19 — ज्योति झा चौधरी — देवी-दुर्गा (चित्र)

प्रश्न 53893. ‘देवी-दुर्गा (चित्र)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53894. ‘देवी-दुर्गा (चित्र)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53895. ‘देवी-दुर्गा (चित्र)’कैं कला/संस्कृति रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53896. ‘देवी-दुर्गा (चित्र)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53897. ‘देवी-दुर्गा (चित्र)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53898. ‘देवी-दुर्गा (चित्र)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53899. ‘देवी-दुर्गा (चित्र)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्रक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53900. ‘देवी-दुर्गा (चित्र)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्रक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्रक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53901. ‘देवी-दुर्गा (चित्र)’मे कला/संस्कृतिक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कला/संस्कृतिक रूप नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कला/संस्कृतिक रूप नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53902. ‘देवी-दुर्गा (चित्र)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नवदुर्गा आ विजयादशमीक मिथिला चित्रकला शैलीक चित्र धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5396 : विदेह-सदेह 19 — डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' — मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र

प्रश्न 53903. ‘मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53904. ‘मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53905. ‘मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र’कैं संस्कृति रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53906. ‘मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53907. ‘मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53908. ‘मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53909. ‘मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53910. ‘मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53911. ‘मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र’मे संस्कृतिक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृतिक रूप मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृतिक रूप मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53912. ‘मिथिलांचलक गाणपत्य क्षेत्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलामे गणेश उपासनाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक महत्ताक शोध-लेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5397 : विदेह-सदेह 19 — नूतन झा — शरत्पूर्णिमा/कोजगरा

प्रश्न 53913. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53914. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53915. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’कैं संस्कृति रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53916. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53917. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53918. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53919. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53920. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53921. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’मे संस्कृतिक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृतिक रूप कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृतिक रूप कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53922. ‘शरत्पूर्णिमा/कोजगरा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ कोजगरा पाबनिक संक्षिप्त विवरण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5398 : विदेह-सदेह 19 — जितमोहन झा — नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?

प्रश्न 53923. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53924. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53925. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’कैँ महिला-स्तंभ रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53926. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53927. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53928. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53929. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्तिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53930. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53931. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’मे महिला-स्तंभक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. महिला-स्तंभक रूप नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महिला-स्तंभक रूप नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53932. ‘नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं नारी-जीवनक विसंगतिक पुनरावृत्ति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5399 : विदेह-सदेह 19 — गजेन्द्र ठाकुर — भाट-भाटिन

प्रश्न 53933. ‘भाट-भाटिन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. लोकप्रचलित बाल-कथा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. लोकप्रचलित बाल-कथा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लोकप्रचलित बाल-कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53934. ‘भाट-भाटिन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. लोकप्रचलित बाल-कथा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. लोकप्रचलित बाल-कथा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53935. ‘भाट-भाटिन’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. लोकप्रचलित बाल-कथा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. लोकप्रचलित बाल-कथा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोकप्रचलित बाल-कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53936. ‘भाट-भाटिन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक लोकप्रचलित बाल-कथा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक लोकप्रचलित बाल-कथा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53937. ‘भाट-भाटिन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. लोकप्रचलित बाल-कथा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. लोकप्रचलित बाल-कथा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोकप्रचलित बाल-कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53938. ‘भाट-भाटिन’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. लोकप्रचलित बाल-कथा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53939. ‘भाट-भाटिन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. लोकप्रचलित बाल-कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. लोकप्रचलित बाल-कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोकप्रचलित बाल-कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53940. ‘भाट-भाटिन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. लोकप्रचलित बाल-कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. लोकप्रचलित बाल-कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53941. ‘भाट-भाटिन’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप लोकप्रचलित बाल-कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप लोकप्रचलित बाल-कथा कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53942. ‘भाट-भाटिन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं लोकप्रचलित बाल-कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं लोकप्रचलित बाल-कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5400 : विदेह-सदेह 19 — ज्योति झा चौधरी — देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम

प्रश्न 53943. ‘देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53944. ‘देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53945. ‘देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53946. ‘देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53947. ‘देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53948. ‘देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53949. ‘देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53950. ‘देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53951. ‘देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53952. ‘देवीजी: यातायात एवम् अन्य सुरक्षा नियम’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं बाल-सुरक्षा सम्बन्धी शिक्षाप्रद आलेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5401 : विदेह-सदेह 19 — - (सम्पादकीय) — महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)

प्रश्न 53953. ‘महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53954. ‘महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53955. ‘महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)’कैं एलान रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53956. ‘महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53957. ‘महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53958. ‘महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53959. ‘महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचनाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53960. ‘महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53961. ‘महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)’मे एलानक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

क. एलानक रूप नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना कैँ स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. एलानक रूप नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना कैँ स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53962. ‘महत्त्वपूर्ण सूचना (४-६)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैँ नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैँ नचिकेताजीक नाटकक प्रिंट संस्करण आ पत्रिकाक २५म अंकक सूचना धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5402 : विदेह-सदेह 19 — ज्योति झा चौधरी — SahasraBarhani: The Comet (भाग २)

प्रश्न 53963. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53964. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53965. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग २)’कैँ अंग्रेजी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53966. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53967. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53968. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53969. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवादक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53970. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53971. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग २)’मे अंग्रेजीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. अंग्रेजीक रूप 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद कें स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. अंग्रेजीक रूप 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53972. ‘SahasraBarhani: The Comet (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक दोसर खेपक अनुवाद धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5403 : विदेह-सदेह 19 — गजेन्द्र ठाकुर — VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR

प्रश्न 53973. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53974. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53975. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’केँ शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53976. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53977. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53978. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53979. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालापक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53980. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालापक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालापक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53981. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’मे शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. शिक्षाक रूप यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. शिक्षाक रूप यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53982. ‘VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं यात्रा, ट्रेन, परीक्षा आदि विषयक संस्कृत-मैथिली वार्तालाप धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5404 : विदेह-सदेह 20 — गजेन्द्र ठाकुर — संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता

प्रश्न 53983. ‘संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53984. ‘संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53985. ‘संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता’कैं संपादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53986. ‘संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53987. ‘संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53988. ‘संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53989. ‘संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीयक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 53990. ‘संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 53991. ‘संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता’मे संपादकीयक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संपादकीयक रूप साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संपादकीयक रूप साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 53992. ‘संपादकीय; नोबल पुरस्कार विजेता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं साहित्यक नोबेल पुरस्कार २००८ पर केन्द्रित सम्पादकीय धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5405 : विदेह-सदेह 20 — सुभाषचन्द्र यादव — अपन-अपन दुख (कथा)

प्रश्न 53993. ‘अपन-अपन दुख (कथा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 53994. ‘अपन-अपन दुख (कथा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 53995. ‘अपन-अपन दुख (कथा)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 53996. ‘अपन-अपन दुख (कथा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 53997. ‘अपन-अपन दुख (कथा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 53998. ‘अपन-अपन दुख (कथा)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 53999. ‘अपन-अपन दुख (कथा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54000. ‘अपन-अपन दुख (कथा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54001. ‘अपन-अपन दुख (कथा)’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54002. ‘अपन-अपन दुख (कथा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ पति-पत्नीक बीच भावनात्मक दूरी आ एकलापन पर कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5406 : विदेह-सदेह 20 — विभारानी — आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)

प्रश्न 54003. ‘आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकैँ पुनराविष्कृत करैत कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकैँ पुनराविष्कृत करैत कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकैँ पुनराविष्कृत करैत कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54004. ‘आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकैँ पुनराविष्कृत करैत कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकैँ पुनराविष्कृत करैत कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54005. ‘आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54006. ‘आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54007. ‘आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54008. ‘आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54009. ‘आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54010. ‘आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54011. ‘आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54012. ‘आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (कथा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ वर्षों बाद दम्पति द्वारा अपन प्रेम आ वर्जनाकेँ पुनराविष्कृत करैत कथा धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5407 : विदेह-सदेह 20 — ब्रज कु. कर्ण — रिस्क आऽ मैथिल

प्रश्न 54013. ‘रिस्क आऽ मैथिल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54014. ‘रिस्क आऽ मैथिल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54015. ‘रिस्क आऽ मैथिल’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54016. ‘रिस्क आऽ मैथिल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54017. ‘रिस्क आऽ मैथिल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54018. ‘रिस्क आऽ मैथिल’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54019. ‘रिस्क आऽ मैथिल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्धक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54020. ‘रिस्क आऽ मैथिल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्धक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्धक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54021. ‘रिस्क आऽ मैथिल’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54022. ‘रिस्क आऽ मैथिल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलामे व्यवसायिक जोखिम उठाबै मे मैथिलक पिछड़ापन पर निबन्ध धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5408 : विदेह-सदेह 20 — ओमप्रकाश झा — कोना बचत मिथिलाक स्मिता?

प्रश्न 54023. ‘कोना बचत मिथिलाक स्मिता?’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54024. ‘कोना बचत मिथिलाक स्मिता?’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54025. ‘कोना बचत मिथिलाक स्मिता?’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54026. ‘कोना बचत मिथिलाक स्मिता?’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54027. ‘कोना बचत मिथिलाक स्मिता?’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54028. ‘कोना बचत मिथिलाक स्मिता?’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54029. ‘कोना बचत मिथिलाक स्मिता?’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54030. ‘कोना बचत मिथिलाक स्मिता?’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54031. ‘कोना बचत मिथिलाक स्मिता?’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54032. ‘कोना बचत मिथिलाक स्मिता?’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक विरासत (रामलीला, संस्कार) केर पतन पर चिन्ता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5409 : विदेह-सदेह 20 — महाप्रकाश — सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख

प्रश्न 54033. ‘सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54034. ‘सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54035. ‘सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54036. ‘सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54037. ‘सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54038. ‘सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54039. ‘सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54040. ‘सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54041. ‘सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54042. ‘सुभाषचन्द्र यादव पर आलेख’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ सुभाषचन्द्र यादवक कथा-यात्रा आ भाषा-संस्कार पर आलेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5410 : विदेह-सदेह 20 — जितेन्द्र झा — स्वरक माला गँथती अंशु

प्रश्न 54043. ‘स्वरक माला गँथती अंशु’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54044. ‘स्वरक माला गँथती अंशु’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54045. ‘स्वरक माला गँथती अंशु’कैँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54046. ‘स्वरक माला गँथती अंशु’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54047. ‘स्वरक माला गँथती अंशु’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54048. ‘स्वरक माला गँथती अंशु’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54049. ‘स्वरक माला गँथती अंशु’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कारक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54050. ‘स्वरक माला गँथती अंशु’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कारक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54051. ‘स्वरक माला गँथती अंशु’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54052. ‘स्वरक माला गँथती अंशु’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं गायिका-संगीतज्ञ अंशुमालाक साक्षात्कार धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5411 : विदेह-सदेह 20 — प्रो. प्रेमशंकर सिंह — जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)

प्रश्न 54053. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54054. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54055. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54056. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54057. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54058. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54059. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54060. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54061. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’मे गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54062. ‘जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' केर सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5412 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. देवशंकर नवीन — शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)

प्रश्न 54063. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54064. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54065. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54066. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54067. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54068. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54069. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54070. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54071. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54072. ‘शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी पर (आगाँ)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं 'आदिकथा' उपन्यासक पात्र चरित्र आ मनोविश्लेषण धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5413 : विदेह-सदेह 20 — ज्योति झा चौधरी — दैनिकी (आठम दिन)

प्रश्न 54073. ‘दैनिकी (आठम दिन)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54074. ‘दैनिकी (आठम दिन)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54075. ‘दैनिकी (आठम दिन)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54076. ‘दैनिकी (आठम दिन)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54077. ‘दैनिकी (आठम दिन)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54078. ‘दैनिकी (आठम दिन)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54079. ‘दैनिकी (आठम दिन)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ यात्राक अन्तिम दिनक अनुभवक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54080. ‘दैनिकी (आठम दिन)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभवक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. यात्राक अन्तिम दिनक अनुभवक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54081. ‘दैनिकी (आठम दिन)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54082. ‘दैनिकी (आठम दिन)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं यात्राक अन्तिम दिनक अनुभव धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5414 : विदेह-सदेह 20 — श्यामल सुमन — अभियान (पद्य)

प्रश्न 54083. ‘अभियान (पद्य)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54084. ‘अभियान (पद्य)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54085. ‘अभियान (पद्य)’कैं गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54086. ‘अभियान (पद्य)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54087. ‘अभियान (पद्य)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54088. ‘अभियान (पद्य)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54089. ‘अभियान (पद्य)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54090. ‘अभियान (पद्य)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54091. ‘अभियान (पद्य)’मे गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. गद्यक रूप मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. गद्यक रूप मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54092. ‘अभियान (पद्य)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलाक विकास आ अधिकारक प्रश्न उठाबैत सवाल-जवाब शैलीक कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5415 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. गंगेश गुंजन — राधा (पाँचम खेप)

प्रश्न 54093. ‘राधा (पाँचम खेप)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकैं चित्रित करैत पद्य
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकैं चित्रित करैत पद्य
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकैं चित्रित करैत पद्य सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54094. ‘राधा (पाँचम खेप)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकैं चित्रित करैत पद्य
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकैं चित्रित करैत पद्य
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54095. ‘राधा (पाँचम खेप)’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54096. ‘राधा (पाँचम खेप)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54097. ‘राधा (पाँचम खेप)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54098. ‘राधा (पाँचम खेप)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54099. ‘राधा (पाँचम खेप)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्यक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54100. ‘राधा (पाँचम खेप)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54101. ‘राधा (पाँचम खेप)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54102. ‘राधा (पाँचम खेप)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ राधाक मानसिक उद्वेग, सृष्टिक स्तब्धता आ शून्यताकेँ चित्रित करैत पद्य धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5416 : विदेह-सदेह 20 — ज्योति झा चौधरी — पतझड़क आगमन

प्रश्न 54103. ‘पतझड़क आगमन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54104. ‘पतझड़क आगमन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54105. ‘पतझड़क आगमन’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54106. ‘पतझड़क आगमन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54107. ‘पतझड़क आगमन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54108. ‘पतझड़क आगमन’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54109. ‘पतझड़क आगमन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54110. ‘पतझड़क आगमन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54111. ‘पतझड़क आगमन’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54112. ‘पतझड़क आगमन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं ऋतु-परिवर्तनक प्रकृतिक सौन्दर्य पर कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5417 : विदेह-सदेह 20 — विनीत उत्पल — इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत

प्रश्न 54113. ‘इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54114. ‘इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54115. ‘इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत’कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54116. ‘इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54117. ‘इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54118. ‘इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54119. ‘इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54120. ‘इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54121. ‘इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54122. ‘इन्द्रप्रस्थक कथा / नौकरी उर्फ़ आजीवन कारावास / जाइत-पाइत’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं दिल्लीक बदलत स्वरूप, नौकरीक द्वन्द्व आ धार्मिक आग्रह पर कविता धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5418 : विदेह-सदेह 20 — महेश मिश्र "विभूति" — गङ्गा-स्तुति

प्रश्न 54123. ‘गङ्गा-स्तुति’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54124. ‘गङ्गा-स्तुति’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54125. ‘गङ्गा-स्तुति’केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54126. ‘गङ्गा-स्तुति’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54127. ‘गङ्गा-स्तुति’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54128. ‘गङ्गा-स्तुति’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54129. ‘गङ्गा-स्तुति’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54130. ‘गङ्गा-स्तुति’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54131. ‘गङ्गा-स्तुति’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. पद्यक रूप गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. पद्यक रूप गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54132. ‘गङ्गा-स्तुति’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ गंगा मैयाक भक्तिपूर्ण स्तुति धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5419 : विदेह-सदेह 20 — ज्योति झा चौधरी — काली पूजा (चित्र)

प्रश्न 54133. ‘काली पूजा (चित्र)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54134. ‘काली पूजा (चित्र)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54135. ‘काली पूजा (चित्र)’कैँ कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54136. ‘काली पूजा (चित्र)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54137. ‘काली पूजा (चित्र)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54138. ‘काली पूजा (चित्र)’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54139. ‘काली पूजा (चित्र)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्रक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54140. ‘काली पूजा (चित्र)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्रक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्रक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54141. ‘काली पूजा (चित्र)’मे कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. कलाक रूप काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. कलाक रूप काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54142. ‘काली पूजा (चित्र)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं काली पूजा पर केन्द्रित मिथिला शैलीक चित्र धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5420 : विदेह-सदेह 20 — डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' — मिथिलांचलक शैव क्षेत्र

प्रश्न 54143. ‘मिथिलांचलक शैव क्षेत्र’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54144. ‘मिथिलांचलक शैव क्षेत्र’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54145. ‘मिथिलांचलक शैव क्षेत्र’कैं संस्कृति रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54146. ‘मिथिलांचलक शैव क्षेत्र’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54147. ‘मिथिलांचलक शैव क्षेत्र’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54148. ‘मिथिलांचलक शैव क्षेत्र’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54149. ‘मिथिलांचलक शैव क्षेत्र’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54150. ‘मिथिलांचलक शैव क्षेत्र’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54151. ‘मिथिलांचलक शैव क्षेत्र’मे संस्कृतिक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृतिक रूप मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृतिक रूप मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख कैं स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54152. ‘मिथिलांचलक शैव क्षेत्र’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैं मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलामे शैव मतक ऐतिहासिकता, मन्दिर, मूर्तिकला पर शोध लेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5421 : विदेह-सदेह 20 — जितमोहन झा — दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)

प्रश्न 54153. ‘दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54154. ‘दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54155. ‘दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)’केँ महिला-स्तंभ रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54156. ‘दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54157. ‘दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54158. ‘दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54159. ‘दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख

ख. निजी लाभक हिसाब

ग. सैनिक आदेश

घ. खेलक परिणाम

उत्तर: क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख

व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54160. ‘दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

ख. क्रमांकक गिनती पूछब

ग. कागजक आकार पूछब

घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब

उत्तर: क. दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54161. ‘दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)’मे महिला-स्तंभक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. महिला-स्तंभक रूप दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. महिला-स्तंभक रूप दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54162. ‘दिवालीक सार्थकता (ज्योतिपर्व पर विशेष)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ दिवाली पर्वक पारिवारिकता आ सामाजिक बन्धनक महत्ता पर लेख धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5422 : विदेह-सदेह 20 — नूतन झा — दीपावली

प्रश्न 54163. ‘दीपावली’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54164. ‘दीपावली’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54165. ‘दीपावली’कैँ संस्कृति रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54166. ‘दीपावली’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54167. ‘दीपावली’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54168. ‘दीपावली’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54169. ‘दीपावली’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामनाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54170. ‘दीपावली’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54171. ‘दीपावली’मे संस्कृतिक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. संस्कृतिक रूप दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. संस्कृतिक रूप दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54172. ‘दीपावली’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकैँ दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकैँ दीपावली पर्वक संक्षिप्त विवरण आ शुभकामना धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5423 : विदेह-सदेह 20 — प्रकाश झा — बाल कविता संग्रह

प्रश्न 54173. ‘बाल कविता संग्रह’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत

ख. केवल क्रमांक-सूची

ग. बाहरी सजावट

घ. असम्बद्ध सूचना

उत्तर: क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत

व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54174. ‘बाल कविता संग्रह’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत

ख. कागजक आकार

ग. सिरिफ तिथि

घ. प्रचारात्मक वाक्य

उत्तर: क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत

व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54175. ‘बाल कविता संग्रह’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन

ग. स्रोत-बाह्य घटना

घ. यादृच्छिक अनुमान

उत्तर: क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत

व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54176. ‘बाल कविता संग्रह’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

क. शीर्षक पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत दिस संकेत करैत अछि

ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि

उत्तर: क. शीर्षक पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत दिस संकेत करैत अछि

व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54177. ‘बाल कविता संग्रह’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत

ख. सूचीगणना मात्र

ग. असम्बद्ध हास्य

घ. बाहरी विज्ञापन

उत्तर: क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत

व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54178. ‘बाल कविता संग्रह’क गलत पठन कोन होएत?

क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

ख. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत

ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

घ. अर्थाधारित पठन करब

उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54179. ‘बाल कविता संग्रह’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीतक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54180. ‘बाल कविता संग्रह’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीतक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीतक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54181. ‘बाल कविता संग्रह’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?
क. बालानां कृतेक रूप पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत कैँ स्पष्ट करैत अछि
ख. रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि
उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत कैँ स्पष्ट करैत अछि
व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54182. ‘बाल कविता संग्रह’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?
क. उत्तरकेँ पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत धरि सीमित राखब
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब
उत्तर: क. उत्तरकेँ पशु-पक्षी आ फूल-पात पर आधारित बाल-गीत धरि सीमित राखब
व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

खण्ड 5424 : विदेह-सदेह 20 — गजेन्द्र ठाकुर — गांगोदेवीक भगता

प्रश्न 54183. ‘गांगोदेवीक भगता’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
ख. केवल क्रमांक-सूची
ग. बाहरी सजावट
घ. असम्बद्ध सूचना
उत्तर: क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
व्याख्या: स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा सँ जोड़ैत अछि।

प्रश्न 54184. ‘गांगोदेवीक भगता’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
ख. कागजक आकार
ग. सिरिफ तिथि
घ. प्रचारात्मक वाक्य
उत्तर: क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
व्याख्या: एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

प्रश्न 54185. ‘गांगोदेवीक भगता’कें बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन
ग. स्रोत-बाह्य घटना
घ. यादृच्छिक अनुमान
उत्तर: क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
व्याख्या: सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा धरि सीमित रहैत अछि।

प्रश्न 54186. ‘गांगोदेवीक भगता’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
क. शीर्षक मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा दिस संकेत करैत अछि
ख. शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
ग. शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
घ. शीर्षक मात्र सजावट अछि
उत्तर: क. शीर्षक मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा दिस संकेत करैत अछि
व्याख्या: शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

प्रश्न 54187. ‘गांगोदेवीक भगता’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
ख. सूचीगणना मात्र
ग. असम्बद्ध हास्य
घ. बाहरी विज्ञापन
उत्तर: क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
व्याख्या: एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा सँ बनैत अछि।

प्रश्न 54188. ‘गांगोदेवीक भगता’क गलत पठन कोन होएत?
क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
ख. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
ग. स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
घ. अर्थाधारित पठन करब
उत्तर: क. स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
व्याख्या: एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

प्रश्न 54189. ‘गांगोदेवीक भगता’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
ख. निजी लाभक हिसाब
ग. सैनिक आदेश
घ. खेलक परिणाम
उत्तर: क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा
व्याख्या: सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

प्रश्न 54190. ‘गांगोदेवीक भगता’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
ख. क्रमांकक गिनती पूछब
ग. कागजक आकार पूछब
घ. बाहरी रंग-सज्जा पूछब
उत्तर: क. मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
व्याख्या: दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रश्न 54191. ‘गांगोदेवीक भगता’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

क. बालानां कृतेक रूप मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा कैं स्पष्ट करैत अछि

ख. रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

ग. रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

घ. ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

उत्तर: क. बालानां कृतेक रूप मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा कैं स्पष्ट करैत अछि

व्याख्या: रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

प्रश्न 54192. ‘गांगोदेवीक भगता’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

क. उत्तरकैं मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा धरि सीमित राखब

ख. लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

ग. स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

घ. अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तर: क. उत्तरकैं मिथिलाक मलाह समाजक लोकदेवी गांगोक कथा धरि सीमित राखब

व्याख्या: विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

विदेह सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन

मैथिली साहित्य, संस्कृति, कला, भाषा, इतिहास, कथा, पद्य, नाटक आ आलोचनाक विस्तृत अध्ययनक प्रश्नोत्तरी-आधारित संदर्भ संस्करण।

Gajendra Thakur, Editor

Videha First Maithili Fortnightly eJournal

ISSN 2229-547X

www.videha.co.in